कोश

०-१७

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी.........
पु०सं० 2024
भारती पुस्तकालय

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी..........
पु०सं०....2024....
भारती पुस्तकालय

ज्ञान शब्द कोश

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि.........
पु०सं० 2024
भारती पुस्तकालय

ज्ञान शब्द कोश

शब्द संख्या ७२५५५

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी......
पु०सं० 2025
भारती पुस्तकालय

सम्पादक

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

बनारस
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य १५)

प्रथम संस्करण, माघी पूर्णिमा २०११
परिवर्द्धित संस्करण, ज्येष्ठ २०१३

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस १.
मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस. २०१२

द्वितीय संस्करणकी भूमिका

'ज्ञान शव्द कोश'का यह परिवर्द्धित संस्करण हमें कुछ शीघ्रतामें तैयार करना पड़ा है, इस कारण हम इसमें उतना सुधार तो नहीं कर सके जितना हम करना चाहते थे। फिर भी हमने सरसरी तौरसे इसे दोहरा जाने तथा यत्र-तत्र आवश्यक संशोधन करनेका प्रयत्न किया है। छूटे हुए शव्द वीचमें न वढ़ाकर हमने अलग परिशिष्टके रूपमें रख दिये हैं। आशा है, यह परिवर्द्धित संस्करण हिन्दी प्रेमियोंके लिए और भी अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा।

एक वात और। कागजका तथा जिल्दबन्दीमें लगनेवाली चीजोंका दाम अधिक वढ़ जानेके कारण हमें विवश होकर इसके मूल्यमें वृद्धि करनी पड़ी है, यद्यपि वास्तवमें ऐसा करनेका पहले हमारा कोई इरादा न था। हम अपनी इस विवशताके लिए अपने कृपालु ग्राहकों तथा अनुग्राहकोंसे क्षमा-याचना करते हैं और आशा करते हैं कि वे इस संस्करणको भी पूर्ववत् अपनाकर हमें प्रोत्साहित करनेमें सहायक बनेंगे।

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

2024

प्रथम संस्करणकी भूमिका

यह कोश वस्तुतः 'बृहत् हिन्दी कोश'का ही समधिक संक्षिप्त रूप है, जैसा कि उसके साथ इसके दो-चार पृष्ठोंका मिलान करनेपर स्पष्ट हो जायगा। 'बृहत्' कोशका मूल्य सामान्य स्थितिके पाठकोंके लिए कुछ अधिक होनेके कारण उनमेंसे कितने ही उससे लाभ उठा सकनेके सु-अवसरसे वंचित रह जाते थे, अतः उनकी माँग पूरी करनेकी दृष्टिसे ही इसका निर्माण किया गया है। इसमें आज-कलकी या पुरानी हिन्दीमें प्रचलित प्रायः सभी शब्दोंका समावेश करनेकी चेष्टा की गयी है। केवल वे ही शब्द—अरबी, फारसी, संस्कृत आदिके—निकाले गये हैं जिनका प्रयोग हिन्दीके किसी कवि या लेखकने शायद ही कभी, भूले-भटके एकाध बार किया हो अथवा भविष्यमें भी जिनके प्रयुक्त होनेकी कम ही संभावना हो।

शब्दोंका चयन करते समय हमने हिन्दी साहित्यके सामान्य पाठकोंकी आवश्यकताका बराबर ध्यान रखा है और इसे उनके लिए अधिकसे अधिक उपयोगी बनानेका भरपूर प्रयत्न किया है। इसीसे इसमें हमें लगभग ६६ हजार शब्दों या रूपोंका समावेश करना पड़ा है, जितने संभवतः हिन्दीके इसी आकार-प्रकारके अन्य किसी कोशमें सन्निविष्ट नहीं हो सके हैं।

समास-पद्धतिका प्रयोग

संस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्यान्य भाषाओंकी तरह हिन्दीमें भी समस्त पदोंका प्रयोग प्रचुर रूपसे होता है। ऐसे पद प्रायः मूल शब्दके साथ ही कोशमें रखे गये हैं, जिससे स्पष्ट हो जाय कि वे स्वतंत्र शब्द न होकर दो या अधिक शब्दोंके योगसे बने हैं। ऐसे समस्त या संयुक्त शब्दोंको एक साथ रखनेमें उनका प्रायिक सम्बन्ध दिखलानेके अतिरिक्त एक उद्देश्य और था—स्थानकी बचत करना। हाँ, जिन समस्त पदोंके रूपमें सन्धि-सम्बन्धी नियमोंके कारण कुछ विकार हो जाता है, वे प्रायः मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं, जिससे उन्हें पहचाननेमें सन्धिके नियमोंसे अपरिचित सामान्य पाठकोंको कठिनाई न हो। मुहावरे भी मूल शब्दके साथ ही, समस्त पदोंका सिलसिला समाप्त होनेके बाद, दिये गये हैं। इन सब स्थलोंपर मूल शब्दके स्थानपर डैश (—) का प्रयोग किया गया है और जहाँ मुहावरोंमें मूल शब्दके रूपमें किञ्चित् परिवर्त्तन हो जाता है, वहाँ डैशके बजाय या तो पूरा शब्द दे दिया गया है या कोष्ठकके भीतर परिवर्त्तनका संकेत कर दिया गया है।

व्युत्पन्न शब्द

संस्कृतके समस्त पदोंके साथ ही व्युत्पन्न शब्दोंके भी दे देनेसे स्थानकी बचत तो होती किन्तु एक ही स्थानपर बहुतसे शब्दोंका जमघट हो जानेके कारण उन्हें ढूँढ़नेमें अधिक कठिनाईकी संभावना थी। इस विचारसे प्रत्ययोंकी सहायतासे बनाये गये संस्कृतके शब्द मूल शब्दसे पृथक, क्रमके अनुसार, यथा-स्थान रखे गये हैं। अन्य भाषाओंके शब्दोंके साथ भी केवल वे ही प्रत्ययान्त शब्द रखे गये हैं जिनके मूल रूपमें प्रत्यय लगनेके कारण कोई विकार नहीं होता।

यदि कोई शब्द अपने स्थानपर अर्थात् क्रममें न मिले तो पाठकोंको एक बार यह देख लेना चाहिये कि वह समस्त पद तो नहीं है। ऐसा करनेसे उन्हें सम्भवतः निराश न होना पड़ेगा। उदाहरणके लिए अरघट्ट, कमजोर, दरकार, दरबार, दुविधा, नटसाल, नाहक, पसोपेश, सकर-

पाला, स्वतंत्र आदि शब्द क्रमशः अर, कम, दर, दर, दु, नट, ना, पस, सकर तथा स्वके साथ मिलेंगे।

एक बात और। समास-पद्धति द्वारा बनाये जा सकनेवाले शब्दोंकी संख्या अगण्य है, अतः थोड़ेसे अधिक प्रचलित शब्द ही कोशोंमें दिये जा सकते हैं। विशिष्ट कवियों अथवा लेखकों द्वारा प्रयुक्त कितने ही अनोखे और अटपटे सामासिक शब्दोंका छोड़ दिया जाना स्वाभाविक एवं अनिवार्य-सा है। उदाहरणके लिए एक सु-कविने रणभूमिके लिए 'समर-वसुमती, रण-मेदिनी' जैसे शब्दोंका तथा मेघनादके लिए 'घनध्वनि, घननाद, जलदनाद, पयोद-निनाद' आदिका प्रयोग किया है। ऐसे स्थलोंपर अंगीभूत विभिन्न शब्दोंके आधारपर ही पाठकोंको सम्पूर्ण समस्त पदका अर्थ निकालनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

आर्ष-पाणिनि-प्रोक्त-अनुसन्धान
तिथि.........
पु०सं० 2224
भारती पुस्तकालय

शब्दोंके मूल रूप

हिन्दीमें संस्कृत शब्दों (संज्ञाओं) का प्रायः कर्त्ता कारकके एक वचनका रूप ही प्रयुक्त होता है किन्तु समस्त पदोंका ठीक-ठीक रूप समझनेके लिए मूल रूपकी जानकारी होना भी आवश्यक है, अतः 'बृहत् हिन्दी कोश'की तरह इस कोशमें भी हमने संस्कृत शब्दोंके सामने कोष्ठकमें मूल रूप भी दे दिया है। समास बनाते समय पूर्व पदका अन्तिम 'न' लुप्त हो जाता है, इसीसे 'स्वामी' तथा 'मन्त्री' से स्वामिभक्ति, स्वामिसेवा, मंत्रिमंडल, मंत्रिपरिषद् आदि शब्द बनते हैं। कितने ही शब्दोंका कर्त्ता कारकका रूप अलग दिया है और समास बनानेके पूर्वका रूप, उचित क्रममें, उससे पृथक् रखकर उसीके साथ समस्त पद दिये गये हैं। उदाहरणके लिए 'राजा (जन्)' तथा 'पिता (तृ)' शब्द यथास्थान देकर उनके अर्थ भी वहीं रखे गये हैं किन्तु उनसे बननेवाले सामासिक शब्द 'राज (न्)' तथा 'पितृ' के साथ दिखाये गये हैं, जिससे उन्हें पहचानने, समझनेमें कठिनाई न हो।

अरबी-फारसी शब्दोंके मूल रूप जहाँ आवश्यकता प्रतीति हुई, वहाँ ही दिये गये हैं, अन्यथा वे प्रायः उच्चारणके अनुसार रखे गये हैं, जैसे उमदा, हमेशा। व्रजभाषा, अवधी आदिके शब्दोंके विभिन्न रूप कवियोंने प्रयुक्त किये हैं, अतः हमें भी कोशमें उन्हें स्थान देना पड़ा है, यद्यपि अर्थ केवल मुख्य शब्द या अधिक प्रचलित रूपके साथ ही दिये गये हैं। उदाहरणके लिए घी, घिअ, घिउ, घिय, घिव, धरहरा, धराहर, धौरहा, धौलह, धौलाहर, धवरहर, धवराहर, आदि शब्द देखे जा सकते हैं।

व्याकरण-सम्बन्धी कठिनाई

हिन्दीमें कितने ही शब्द ऐसे हैं जो देखनेमें तो विशेषण जैसे प्रतीत होते हैं किंतु बहुधा संज्ञाकी तरह भी प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्द प्रायः कर्तृवाचक हुआ करते हैं, जैसे खेवैया, गवैया, जनैया, कर्त्ता, विधाता, प्रहारक, विचारक, मारक, अनुयायी, विरोधी, आदि अथवा पतंगबाज, ग़लेबाज, नशेबाज या मुफ्तखोर, जूताखोर, चुगुलखोर आदि। इनमेंसे जिनका प्रयोग बहुलांशमें संज्ञावत् होता है, उन्हें हमने संज्ञा तथा जिनका प्रयोग बहुधा विशेषणवत् होता है उन्हें विशेषण माना है और कितने ही शब्दोंके साथ वि०, पु० दोनों ही दिया है। वस्तुतः स्थल-विशेषमें प्रयोगके अनुसार ही इनका शब्दभेद समझना चाहिये।

दूसरी कठिनाई शब्दोंके लिंग-निर्धारणकी है। कुछ लेखक और विद्वान् एक शब्दको पुंलिंग मानते हैं, तो दूसरे उसका प्रयोग स्त्रीलिंगमें करते हैं। रहन-सहन, झंझट, बय, बर्फ़, मैल, मिठास, चरागाह, नमाजगाह आदि ऐसे ही शब्द हैं। इस तरहके कितने ही शब्दोंको हमें

उभयलिंग लिखना पड़ा है किंतु कुछको हमने, उनके अधिकतर प्रयोगके आधारपर, केवल पुंलिंग या स्त्रीलिंगका ही माना है। महिमा, लघिमा, गरिमा, अग्नि आदि शब्द संस्कृतमें पुंलिंग होते हुए भी हिंदीमें स्त्रीलिंगमें ही आते हैं और जय, विजय, आत्मा आदि भी अब अधिकतर लेखकों द्वारा स्त्रीलिंगमें ही प्रयुक्त होते हैं। हाँ, 'सामर्थ्य' अब भी प्रायः दोनों लिंगोंमें प्रयुक्त होता है, यद्यपि 'सामर्थ' केवल स्त्रीलिंगमें ही देख पड़ता है।

पारिभाषिक शब्द

पारिभाषिक शब्दोंके निर्माणमें हमें प्रायः संस्कृतसे ही सहायता लेनी पड़ी है। इसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दीके सिवा देशकी अन्यान्य भाषाओं—बंगला, मराठी, गुजराती, तेलगू आदिमें भी संस्कृतके शब्द प्रचुर संख्यामें पाये जाते हैं; अतः इसके आधारपर बनाये गये शब्द अन्य प्रदेशवालोंके लिए भी बोधगम्य एवं ग्राह्य हो सकते हैं। इसके सिवा धातुओंके पूर्व उपसर्ग लगाकर तथा तद्धित-प्रत्ययों द्वारा संस्कृतसे भिन्न-भिन्न अर्थोंका द्योतन करनेवाले अगणित शब्द आसानीसे गढ़े जा सकते हैं। फिर भी हमने इस बातका भरसक प्रयत्न किया है कि पारिभाषिक शब्द अधिक कठिन और दुरूह न हों। यों नये शब्दोंका प्रयोग आरम्भ करनेमें कुछ दिनोंतक थोड़ी-सी कठिनाई तथा अरुचि या अप्रवृत्ति जैसा अनुभव होता ही है किंतु राष्ट्रभाषाके विकास एवं देशहितकी दृष्टिसे इसका सामना करनेके लिए हमें समुद्यत रहना चाहिये।

हिन्दी इस समय संक्रमणकालकी स्थितिमें है, अतः पारिभाषिक शब्दोंके सम्बन्धमें एकरूपता और ऐकमत्यकी आशा करना व्यर्थ है, विशेषकर यह देखते हुए कि इस दिशामें कोई सुव्यवस्थित और सुसंघटित प्रयत्न नहीं हो रहा है। केन्द्रीय सरकार यदि चाहती तो यह काम अधिक तेजीसे और अधिक अच्छे ढंगसे हो सकता था पर उसकी कार्य-पद्धति एवं मन्थरगतिसे हमें निराश-सा होना पड़ रहा है। फिर भी काम तो कुछ हो ही रहा है और विभिन्न विषयोंकी जो नयी-नयी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, उनमें तथा समाचारपत्रोंके स्तम्भोंमें कितने हीं पारिभाषिक शब्दोंका प्रयोग हो रहा है। इनकी संख्या भी क्रमशः बढ़ती जा रही है।

हमने इस कोशमें अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दोंके जो पर्याय दिये हैं, उन्हें अंग्रेजी बिलकुल न जाननेवाले या कम जाननेवाले पाठक भी भली भाँति समझ सकें, इस दृष्टिसे शब्दके साथ ही सरल हिन्दीमें उसकी व्याख्या देने या आशय समझानेका भी प्रयत्न किया है। अंतके पृष्ठोंमें समस्त पारिभाषिक शब्दोंकी सूची भी पृथक् रूपसे अंग्रेजी-हिंदीमें दे दी गयी है जिससे अंग्रेजी शब्दोंका पर्याय ढूँढ़नेमें विशेष सुविधा हो।

विभिन्न कवियों या लेखकों द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट शब्दोंका अर्थ और अधिक स्पष्ट करनेके उद्देश्यसे उनकी रचनाओंसे सैकड़ों उदाहरण भी, जहाँ आवश्यक प्रतीत हुआ, वहाँ दे दिये गये हैं।

इस प्रकार इस 'ज्ञान शब्द कोश'को हमने हिन्दीप्रेमियों और पाठकोंके लिए अधिकसे अधिक उपयोगी बनानेका प्रयत्न किया है। यदि इससे उन्हें यथेष्ट सहायता मिल सकी तो इन पंक्तियोंके लेखकको और साथ ही प्रकाशकको भी इससे परम सन्तोष होगा।

निवेदक

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी........
पुस्तक सं० 2024
पाणिनी पुस्तकालय

संकेत-सूची

*—पद्यमें प्रयुक्त
†—स्थानिक
अ०—अव्यय
[अ०]—अरबी
अ० क्रि०—अकर्मक क्रिया
(आ०)—आधुनिक
(आयु०), (आ० वे०)—आयुर्वेद
(इ०)—इत्यादि
(उ०)—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
कबीर—कबीर-ग्रंथावली
क० कौ०—कविताकौमुदी, प्र० भाग
कविता०—कवितावली
(का०)—कानून
(कौ०)—कौटिल्य
(क्व०)—क्वचित्
गीता०—गीतावली
(ग्रा०)—ग्राम्य
ग्राम०—ग्रामगीत
(ज०)—जरमन
(ज्या०)—ज्यामिति
(ज्यो०)—ज्योतिष
[तु०]—तुर्की
दीन०—दीनदयाल-ग्रंथावली
दे०—देखिये
(ना०)—नाटक
(न्या०)—न्याय
प०—पद्मावत
[पा०]—पाली
पु०—पुंलिंग
(पु०)—पुराण
प्र०—प्रत्यय
(प्रा०)—प्राचीन
[फा०]—फारसी
[फ्रें०]—फ्रेंच
(बहु०), (बहुव०)—बहुवचन
बि०—बिहारी-रत्नाकर
बुंदेल०—बुंदेलखंडी
(बो०), (बोल०)—बोल-चाल
(बौद्ध०)—बौद्धसाहित्य
(भाग०)—भागवत
भू०—भूषण-ग्रंथावली
भू० क्रि०—भूतकालिक क्रिया
मति०—मतिराम-ग्रंथावली
(मनु०)—मनुस्मृति
(मी०)—मीमांसा
(मुसल०)—मुसलमानोंमें प्रचलित
[यू०]—यूनानी
(योग०)—योगशास्त्र
(रघु०)—रघुराजसिंह-कृत रामस्वयंवर
रतन०—रतन-हजारा
रत्ना०—रत्नाकर-ग्रंथावली
(रा०)—रामायण
राम०—रामचंद्रिका
रामरसा०—रामरसायन
रामा०—रामायण, तुलसीकृत
ललित०—ललित ललाम
(ला०)—लाक्षणिक
[लै०]—लैटिन
(लोक०)—लोकप्रचलित
(वा०)—वाक्य
वि०—विशेषण
विद्या०—विद्यापति-पदावली
विनय०—विनयपत्रिका, तुलसीकृत
वि० स्त्री०—विशेषण स्त्रीलिंग
(वे०)—वेदांत
(वै०)—वैदिक
(व्यं०)—व्यंग्य
(व्या०)—व्याकरण
[सं०]—संस्कृत
स० क्रि०—सकर्मक क्रिया
सत्यना०—सत्यनारायण कविरत्न
सर्व०—सर्वनाम
(सांख्य०)—सांख्यशास्त्र
(सा०)—साहित्य
साखी०—कबीर साखीसंग्रह
सुंदर—सुंदरविलास
सुजान०—सुजानचरित
सुदामा०—सुदामाचरित
सू०—सूरदास
(सूफी०)—सूफीमत
(स्त्रि०)—स्त्रियोंकी बोल-चाल
स्त्री०—स्त्रीलिंग
(स्मृति०)—स्मृतिग्रंथ
हरि०—हरिश्चंद्र, भारतेन्दु
(हिं०)—हिंदीमें प्रयुक्त अर्थ
[हिं०]—हिंदी भाषाका शब्द

ज्ञान शब्द कोश

अ

अ—देवनागरी और संस्कृत-कुटुंबकी अन्य वर्णमालाओंका पहला अक्षर और स्वर वर्ण। इसका उच्चारणस्थान कंठ है। व्यंजन वर्णोंका उच्चारण इस अक्षरकी सहायताके विना नहीं हो सकता, इसीलिए क, ख, आदि वर्ण 'अकार' के साथ बोले और लिखे जाते हैं।

अंक—पु० [सं०] चिह्न; छाप; संख्याका चिह्न (१, २, ३ आदि); अदद; लिखावट; कलंक, दाग; डिठौना; तप्त मुद्राका सांप्रदायिक चिह्न; भूषण; नाटकका एक खंड या सर्ग; रूपकका एक प्रकार; हुक जैसा टेढ़ा औजार; वक्र रेखा; गोद, क्रोड; बगल; पास; स्थान; देह;* दफा, बार; पाप; अपराध, पर्वत। **—कार**—पु० बाजी आदिका निर्णायक, खेलोंमें हार-जीतका फैसला करनेवाला; वह योद्धा जिसके हारने या जीतनेसे हार या जीत मान ली जाती थी। **—गणित**—पु० संख्याओंका हिसाब; संख्याओंको जोड़ने-घटाने, गुणा-भाग आदि करनेकी विद्या। **—तंत्र**—पु० अंकशास्त्र, पाटीगणित या बीजगणित। **—धारण**—पु० देहपर सांप्रदायिक चिह्न (शंख, चक्र, त्रिशूल आदि) छपवाना, छाप लगवाना। **—धारी (रिन)**—वि० शंख, चक्र आदिके चिह्न धारण करनेवाला। **—पत्र**—पु० (स्टांप) निर्धारित मूल्यपर मिलनेवाला कागजका टुकड़ा जो लिफाफे, अर्जी आदिपर लगाया जाता है; स्टांप, टिकट। **—पत्रित**—वि० (स्टांप्ड) (वह लिफाफा, पत्र या न्यायिक आवेदन-पत्र) जिसपर अंकपत्र (स्टांप) लगा हो। **—परिवर्तन**—पु० करवट बदलना; बच्चेका गोदमें इधरसे उधर होना। **—पलई**—स्त्री० [हि०] अंकोंको अक्षरोंके रूपमें काममें लानेकी विद्या। **—पालि,—पालिका**—स्त्री० गोद; आलिंगन; दाई। **—पाली**—स्त्री० परिचारिका; वेदिका नामक एक गंधद्रव्य; आलिंगन। **—माल**—पु० आलिंगन, अँकवार। **—मालिका**—स्त्री० अंकमाल; छोटी माला। **—मुख**—पु० नाटकका आरंभिक भाग जिसमें बीज-रूपमें कथानक दिया रहता है। **—विद्या**—स्त्री० अंकगणित। **—शायिनी**—वि० स्त्री० बगलमें सोनेवाली। स्त्री० पत्नी। **मु०—देना**—गले लगाना। **—भरना,—लगाना**—गले लगाना, लिपटाना।

अंकक—पु० [सं०] हिसाब लिखनेवाला; चिह्न करनेवाला।

अँकटा†—पु० छोटा कंकड़; कंकड़का छोटा टुकड़ा।

अँकड़ी—स्त्री० टेढ़ी कँटिया; लग्गी; टेढ़ी गाँसी; लता।

अंकन—पु० [सं०] चिह्न करना; लेखन; शरीरपर शंख, चक्र आदि छपवाना; गिनती करना; चिह्न बनानेका साधन।

अँकना—अ० क्रि० आँका जाना; लिखा जाना; अंकित होना। * स० क्रि० आँकना।

अंकनी—स्त्री० [सं०] (पेंसिल) एक प्रकारकी लेखनी जो लकड़ी या धातुके पोले लंबेसे टुकड़ेमें सीसे या विशेष प्रकारके मसालेकी सलाई बैठाकर तैयार की जाती है।

अंकनीय—वि० [सं०] अंकनके योग्य; मुद्रित करने योग्य।

अंकम*—पु० अंक, गोद।

अँकरा—पु० एक घास; अंकुर; कंकड़का टुकड़ा।

अँकरोरी, अँकरौरी—स्त्री० कंकड़ी।

अँकवाना—स० क्रि० अंकित कराना; आँकनेके लिए प्रेरित करना, अँकाना।

अँकवार—स्त्री० गोद, अंक; आलिंगन। **मु०—देना**—गले लगाना। **—भरना**—आलिंगन करना, गले लगाना; गोदमें बच्चेका रहना।

अँकवारना*—स० क्रि० आलिंगन करना, भेंटना।

अँकवारी*—स्त्री० गोद।

अँकाई—स्त्री० आँकनेकी क्रिया या उजरत; कूत, अंदाजा।

अँकाना—स० क्रि० अंदाजा लगवाना; जँचवाना; चिह्न कराना; मूल्य ठहरवाना।

अँकाव—पु० आँकनेका काम, अंदाजा लगानेका काम।

अंकित—वि० [सं०] चिह्नित; लिखित; गिना हुआ। **—मूल्य**—पु० (फेस वैल्यू) वह मूल्य जो किसी मुद्रा, ऋणपत्र आदिपर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियोंमें या विशेष कारणोंसे घटता-बढ़ता रहे।

अँकुड़ा—पु० लोहेका टेढ़ा काँटा; लोहेकी छड़ या कँटियाके बने कुछ औजार; कुलाबा; किवाड़की चूलमें ठोकनेका लोहेका पच्चड़; बुनकरोंका एक औजार; गाय-बैलका एक रोग।

अँकुड़ी—स्त्री० (अँकुड़ाका अल्पा०) हुक; लोहारोंका एक औजार; हलका वह भाग जिसमें फाल लगता है; एक्केके पहियेके जोड़ोंपर लगायी जानेवाली कील। **—दार**—वि० जिसमें अँकुड़ी लगी हो; गड़ारीदार (कशीदा)।

अंकुर—पु० [सं०] अँखुआ, डाभ; कली; रोआँ; अँकुड़ा; संतति; जल; रुधिर; नोक; घावका भराव।

अंकुरण—पु० (जर्मिनेशन) अंकुर निकलनेकी क्रिया; किसी वस्तुकी उत्पत्ति होना, शुरू होना।

अँकुरना,—राना—अ० क्रि० अँखुआ फूटना, अंकुर उगना।

अंकुरित—वि० [सं०] अंकुरयुक्त; अँखुआया हुआ; प्रस्फुटित। **—यौवना**—स्त्री० वह स्त्री जिसमें यौवनके चिह्न प्रकट हो चुके हों।

अंकुश-पु० [सं०] लोहेका काँटा या एक तरहका भाला जिसे महावत हाथीके सिरपर कोंचकर उसे चलाता है; रोक, दबाव, नियंत्रण । **-ग्रह**-पु० महावत, पीलवान ।

अंकुस* -पु० दे० 'अंकुश' ।

अँकुसी-स्त्री० लोहेकी झुकायी हुई कील; हुक; लोहेकी टेढ़ी छड़ जिससे बाहरसे अगड़ी या सिटकिनी खोली जाती है; फल तोड़नेकी लग्गीके सिरेपर बँधी छोटी लकड़ी; भट्ठीकी राख निकालनेका एक औजार; नारियलकी गिरी निकालनेका एक छोटा औजार ।

अंकेक्षित लेखा-पु० (ऑडिटेड अकाउंट) वह लेखा या हिसाब जिसके आय-व्ययादिके आँकड़ोंकी जाँच लेखा-परीक्षक द्वारा कर ली गयी हो ।

अँकोर*-पु० गोद, अँकवार; भेंट, नजर; घूस; कलेवा ।

अँकोरी*-स्त्री० गोद, आलिंगन ।

अंकोल-पु० [सं०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है ।

अंक्य-वि० [सं०] चिह्न करने योग्य; दागने योग्य (अपराधी) । पु० मृदंग, पखावज आदि ।

अँखड़ी*-स्त्री० आँख; चितवन ।

अँखमीचनी-स्त्री०, **अँखमूदनो**-पु० आँखमिचौनी ।

अँखाना*-अ० क्रि० अनखाना ।

अँखिया-स्त्री० नक्काशी करनेकी कलम; * आँख ।

अँखुआ-पु० अंकुर, कल्ला ।

अँखुआना-अ० क्रि० अँखुआ फेंकना ।

अंग-पु० [सं०] देह; अवयव; भाग, विभाग; गौण या आश्रित वस्तु; वस्तु; प्रधान या अंगीका सहायक; उपाय; साधन; मन; जन्मलग्न; (ला०) ६की संख्या; सप्रत्यय शब्दका प्रत्ययरहित भाग, प्रकृति (व्या०); नाटककी पाँच संधियोंके अंतर्गत एक उपविभाग; अंगी या नायकके सहायक पात्र (ना०); एक संबोधन; भागलपुरके आसपासका प्रदेश; [हिं०] ओर; कक्ष; प्रकार । वि० संलग्न; अंगोंवाला; निकट; गौण; प्रतीक ।**-कर्म (न्)**-पु०,**-क्रिया**-स्त्री० शरीरमें उबटन आदि मलना, देहसंस्कार । **-ग्रह**-पु० देहका जकड़ना; देहकी पीड़ा ।**-चालन**-पु० हाथ-पैर हिलाना ।**-च्छेद**-पु० अंगको काटना; शरीरके अंग (हाथ, पाँव, नाक, कान आदि) कटवानेका दंड ।**-ज,-जात** वि० देहसे उत्पन्न । पु० बेटा; पसीना; रोम; काम; मद; सात्त्विक विकारोंमेंसे तीन—हाव, भाव और हेला (सा०); रोग । **-जा,-जाता**-स्त्री० बेटी । **-जाई***-स्त्री० दे० 'अंगजा' ।**-त्राण**-पु० वर्म, बकतर; वस्त्र ।**-दान**-पु० युद्धमें आत्मसमर्पण; (स्त्रीका) देहसमर्पण ।**-द्वार**-पु० मुख आदि शरीरके छिद्र ।**-धारी (रिन्)**-पु० प्राणी; शरीरी । **-न्यास**-पु० मंत्रोच्चार करते हुए एक-एक अंगको हाथसे स्पर्श करना । **-पाक**-पु० अंगोंके पकनेका रोग ।**-पालि,-पाली**-स्त्री० आलिंगन । **-पालिका**-स्त्री० धाय । **-भंग**-पु० किसी अंगका टूट जाना; अंगोंका ऐंठना; * अंगभंगी । वि० विकलांग । **-भंगी**-स्त्री० मोहक-अंगसंचालन, अदा । **-भू**-पु० पुत्र; काम । वि० शरीरसे उत्पन्न । **-मर्द**-पु० हड्डियोंमें दर्द होना; मालिश करनेवाला नौकर ।**-मर्दक,-मर्दी (र्दिन्)**-पु० मालिश करनेवाला नौकर । **-मर्दन**-पु० मालिश । **-मर्ष**-पु० गठिया रोग । **-रक्षक**-पु० राजा-महाराजा आदि बड़े आदमियोंकी रक्षापर नियुक्त जन, शरीर-रक्षक-दल (बॉडी-गार्ड) । **-रस**-पु० पत्ती, फल आदिका कूटकर निचोड़ा हुआ रस । **-राग**—पु० सुगंधित लेप या उबटन; इनका लेपन । **-राज**-पु० अंग देशका राजा; कर्ण या लोमपाद । **-रूह**-पु० बाल; ऊन । **-लेप**-पु० दे० 'अंगराग' । **-विकृति**-स्त्री० देहमें कोई विकार होना; मिरगीकी बीमारी । **-शुद्धि**-स्त्री० स्नानादि द्वारा शरीरकी शुद्धि । **-शैथिल्य**-पु० शरीरका ढीलापन । **-शोष**- पु० सूखा या सुखंडी नामकी बीमारी । **-संचालन**-पु० हाथ-पाँव आदि हिलानेकी क्रिया । **-संस्कार**-पु० देहको सँवारना, सजाना, बनाव-सिंगार । **-सिहरी**-स्त्री० [हि०] जड़ैया बुखारके पहलेकी कँपकँपी, जूड़ी ।**-सेवक**- पु० निजी सेवा-टहल करनेवाला नौकर । **-सौष्ठव**-पु० अंगोंकी बनावटकी सुंदरता । **-हीन**-वि० अंगविशेष-रहित; विकलांग; पु० अनंग, कामदेव । **मु०-टूटना**-अँगड़ाई आना; ज्वरके पहले देह टूटना (?) । **-धरना**-पहनना, धारण करना । **(फूले) -न समाना**-अत्यंत प्रसन्न होना । **-लगना**-लिपटना; आहारका पचकर देहकी पुष्टि करना; परचना । **-लगाना**-लिपटाना; परचाना; विवाहमें देना ।

अंगच्छेद-पु० [सं०] (ऐंप्यूटेशन) दे० 'अंग'के साथ ।

अँगजाई*-स्त्री० दे० 'अंगजा' ।

अंगड़-खंगड़-वि० टूटा-फूटा; बचा-खुचा । पु० टूटा-फूटा सामान ।

अँगड़ाई-स्त्री० जम्हाईके साथ अंगोंको तानना; देहका टूटना । **मु०-तोड़ना**-अँगड़ाई लेते समय किसीके कंधेपर हाथ रखकर अपनी देहका भार देना (जो आम तौरपर मनहूस समझा जाता है); कुछ काम न करना ।

अँगड़ाना-अ० क्रि० अँगड़ाई लेना ।

अंगण-पु० [सं०] दे० 'अंगन' ।

अंगद-पु० [सं०] बाजूबंद, बिजायठ; बालिका बेटा; लक्ष्मणका एक पुत्र; दुर्योधनके पक्षका एक योद्धा ।

अंगन-पु० [सं०] टहलनेका स्थान; आँगन, चौक; टहलना; यान, सवारी ।

अंगना-स्त्री० [सं०] सुंदर अंगोंवाली स्त्री; स्त्री ।**-प्रिय**-पु० अशोक वृक्ष ।

अँगना*-पु० दे० 'आँगन' ।

अँगनाई-स्त्री० भीतर या जनानखानेका आँगन ।

अँगरखा-पु० एक लंबा बंददार मर्दाना पहनावा, अंगा, चपकन ।

अँगरा-पु० अंगार; बैलोंके पैरमें दर्द होनेका एक रोग ।

अँगराना*-अ० क्रि० 'अँगड़ाना' ।

अँगरी*-स्त्री० जिरह, बख्तर; गोहके चमड़ेका दस्ताना ।

अँगरेज-पु० इंगलैंड देशका रहनेवाला (इंगलिशमैन) ।

अँगरेजियत-स्त्री० अँगरेजपन; अँगरेजी चाल-ढाल ।

अँगरेजी-वि० अँगरेज-संबंधी; अँगरेजका । स्त्री० अँगरेजों-

की भाषा।

अंगलेट–पु० शरीरका गठन या ढाँचा।

अँगवना*–स० क्रि० अंगीकार करना; सहना; अपने सिर पर लेना।

अंगांगीभाव–पु० [सं०] अंग और अंगीका संबंध; परस्पर अंग और देह, गौण और मुख्य, उपकारक और उपकार्यका संबंध।

अंगा–पु० अँगरखा।

अंगाकड़ी–स्त्री० बाटी, लिट्टी (जो अंगारोंपर सेंककर बनायी जाती है)।

अंगाधिप, अंगाधीश–पु० [सं०] लग्नका स्वामी ग्रह; राजा कर्ण।

अंगार–पु० [सं०] अंगारा, दहकता हुआ कोयला या काष्ठखंड; कोयला। **–धानिका,–धानी,–पात्री,–शकटी** स्त्री० अँगीठी। **–मणि**–पु० मूँगा। **–वल्लरी, वल्ली**–स्त्री० करंज, घुँघचीकी बेल।

अंगारक–पु० [सं०] अंगारा; मंगल ग्रह; (कार्बन) एक अधात्वीय मूल तत्व जो कितने ही पदार्थोंमें पाया जाता है। कोयला इसीका उदाहरण है। **–मणि**–पु० मूँगा।

अंगारकाम्ल–पु० [सं०] कार्बन और आक्सीजनके मेल से बननेवाला एक अम्ल।

अं(अँ)गारा–पु० दहकता हुआ कोयला, कंडा आदि; अग्निखंड। वि० अँगारे जैसा लाल। **मु०–बनना,–हो जाना,–होना**–गुस्सेसे, क्रोधमें लाल हो जाना। **–(रे) उगलना**–जली-कटी सुनाना। **–फाँकना**–ऐसा काम करना जिसका फल बहुत बुरा हो। **–बरसना**–आग बरसना, सख्त गरमी पड़ना; दैव कोप होना। **–(रों) पर पैर रखना**–जान बूझकर अपनेको खतरेमें डालना, इतराना। **–पर लोटना**–क्रोध या ईर्ष्यासे जलना; तड़पना, विकल होना। **–पर लोटाना**–जलाना; तड़पाना।

अँगारी–स्त्री० गँडासेसे काटे हुए ईखके छोटे-छोटे टुकड़े; ईखके सिरेपरकी पत्ती।

अंगिका–स्त्री० [सं०] अँगिया, कंचुकी।

अँगिया–स्त्री० चोली, कंचुकी; दे० 'अँघिया'।

अंगी (गिन्)–वि० [सं०] देहयुक्त; अवयव विशिष्ट; प्रधान; अंशी। पु० प्रधान पात्र या नायक; प्रधान रस (ना०)।

अंगीकरण–पु० [सं०] स्वीकार या ग्रहण करनेकी क्रिया; वादा करना; राजी होना।

अंगीकार–पु० [सं०] स्वीकार; ग्रहण; ऊपर लेना, उठाना (काम, जिम्मेदारी आदि)।

अंगीकृत–वि० [सं०] अंगीकार किया हुआ।

अँगीठी–स्त्री० आग रखनेका बरतन, आतिशदान, बोरसी।

अंगीय–वि० [सं०] अंग देश संबंधी; शरीर संबंधी।

अँगुठा*–पु० दे० 'अँगूठा'।

अँगुठी–स्त्री० पैरके अँगूठेका एक गहना।

अंगुरि,–री०–स्त्री० [सं०] हाथ या पैरकी उँगली।

अँगुरिया*–स्त्री० दे० 'अँगुरी'।

अंगुरीय,–क–पु० [सं०] उँगलीका एक गहना, अँगूठी।

अंगुल–पु० [सं०] उँगली; एक नाप, उँगलीकी चौड़ाई।

अंगुलांक–पु० (फिंगरप्रिंट) उँगली या उँगलियोंका निशान।

अंगुलि–ली–स्त्री० [सं०] उँगली; हाथीकी सूँड़का अग्रभाग। **–त्राण**–पु० गोहके चमड़ेका दस्ताना जो बाण चलानेमें उँगलियोंको रगड़से बचानेके लिए पहना जाता था। **–निर्देश**–पु० किसीकी ओर उँगली उठाना; निंदा, बदनामी करना। **–पर्व**–पु० उँगलीकी पोर या गाँठ। **–मुद्रा,–मुद्रिका**–स्त्री० नाम खुदी हुई या मुहरका काम देनेवाली अँगूठी। **–वेष्टक,–वेष्टन**–पु० दस्ताना।

अँगुली–स्त्री० दे० 'अंगुलि'।

अंगुलीक, अंगुलीय,–क–पु० [सं०] अँगूठी।

अंगुल्यादेश–पु० [सं०] उँगलीके द्वारा किया हुआ संकेत।

अंगुश्त–पु० [फा०] उँगली। **–नुमाई**–स्त्री० अंगुश्तनुमा होना, बदनामी, लांछन।

अंगुश्तरी–स्त्री० [फा०] अँगूठी।

अंगुश्ताना–पु० [फा०] लोहे या पीतलकी टोपी जो सिलाईमें उँगलीके बचावके लिए उसपर पहन ली जाती है; तीरंदाजीके वक्त उँगलीपर पहननेके लिए सींग या हड्डीकी बनी हुई अँगूठी।

अंगुष्ठ–पु० [सं०] अँगूठा।

अँगुसी–स्त्री० हलका फाल; सुनारोंकी वह नली जिससे चिरागको फूँककर टाँका जोड़ते हैं।

अँगूठा–पु० हाथ या पैरकी पहली और सबसे मोटी उँगली। **मु०–चूमना**–खुशामद करना; सम्मान या अति विनय प्रकट करना। **–दिखाना**–किसीको तुच्छ समझनेका भाव दिखाते हुए, नाहीं करना।

अँगूठी–स्त्री० उँगलीमें पहननेका एक गहना, मुँदरी।

अंगूर–पु० [फा०] एक प्रसिद्ध फल जो पकनेपर बहुत मीठा होता है, द्राक्षा, दाख। [हिं०] भरते हुए घावमें मांसके लाल दाने।* अँखुआ, अंकुर।

अंगूरी–वि० [फा०] अंगूरका बना ('अंगूरी' शराब); अंगूरके रंगका। पु० हलका हरा रंग जो अंगूरके रंगसे मिलता है।

अँगेजना–स० क्रि० सहना; अंगीकार करना।

अँगेरना*–स० क्रि० दे० 'अँगेजना'।

अँगोछना–स० क्रि० गीले गमछेसे बदन पोंछना या रगड़ना।

अँगोछा–पु० देह पोंछनेका कपड़ा, गमछा।

अँगोछी–स्त्री० छोटा गमछा; छोटी धोती।

अँगोजना*–स० क्रि० दे० 'अँगेजना'।

अँगौंगा–पु० अनाज या अन्य किसी वस्तुका वह भाग जो उपयोगमें आनेके पहले धर्मार्थ निकाल दिया जाय; पुरोहितको देने या देवताको चढ़ानेके लिए राशिसे निकाला गया अन्न, अँगऊँ।

अँगौरिया–पु० मजदूरीके बदले हल-बैल लेकर खेती करनेवाला हलवाहा।

अंग्रेज–पु० दे० 'अँगरेज'।

अँघिया–स्त्री० झीने कपड़ेसे मढ़ी छलनी।

अंघ्रि–पु० [सं०] पाँव, चरण; पेड़की जड़; छंदका चरण।

–प–पु० वृक्ष (जड़से पान करनेवाला)।

अँचरा†–पु० दे० 'आँचल'।

अंचल–पु० [सं०] वस्त्रका छोर; साड़ी, ओढ़नी आदिका वह छोर जो छाती और पेटपर रहता है, आँचल; छोर; देशका प्रांत-भाग; कोना; तट, किनारा।

अँचवना–स० क्रि० दे० 'अचवना'।

अंछर–पु० एक मुखरोग। † अक्षर; मंत्र, टोना। **मु०–मारना**–जादू-टोना करना।

अंज–पु० कंज, कमल।

अंजन–पु० [सं०] काजल; सिद्धांजन; सुरमा; स्याही; माया (निरंजन); रात्रि। **–केश**–पु० दीपक। वि० जिसके बाल बहुत काले हों। **–गिरि**–पु० नीलगिरि। **–नामिका**–स्त्री० आँखका एक रोग, बिलनी। **–शलाका**–स्त्री० आँजन या सुरमा लगानेकी सलाई। **–सार**–वि० अंजनयुक्त। **–हारी**–स्त्री० [हि०] बिलनी; भृंगी कीड़ा।

अंजना–स्त्री० [सं०] हनूमान्‌की माता; बिलनी; व्यंजना वृत्ति।

अंजना*–स० क्रि० दे० 'आँजना'।

अंजनी–स्त्री० [सं०] हनूमान्‌की माता; चंदन, कुंकुम आदिसे अनुलिप्त स्त्री; बिलनी; माया। **–नंदन**–पु० हनूमान्।

अंजर-पंजर–पु० शरीरका जोड़; ठठरी; हड्डी-पसली। अ० अगल-बगल। **मु०–ढीले हो जाना**–जोड़-जोड़ हिल जाना, सब अंगोंका शिथिल हो जाना।

अंजरि*–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अंजलि–स्त्री० [सं०] करसंपुट, अंजलिभर वस्तु; अभिवादनका संकेत। **–कर्म (न्)**–पु० आदरपूर्वक नमस्कार करना। **–पुट**–पु० दोनों हथेलियोंको मिलानेसे बननेवाला गड्ढा। **–बद्ध**–वि० करबद्ध।

अँजवाना,–अँजाना–स० क्रि० (प्रे०) अंजन लगवाना।

अंजाम–पु० [फा०] अंत, समाप्ति; पूर्ति; फल, नतीजा।

अंजित–वि० [सं०] अंजन-युक्त।

अंजीर–पु० [फा०] गूलरकी जातिका एक फल या उसका पेड़।

अंजुमन–पु० [फा०] सभा, समिति, मजलिस, महफिल।

अँजुरी, अंजुलि,–ली†–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अंजोर(रा)*–पु० उजाला, प्रकाश।

अंजोरना*–स० क्रि० हरण करना; समेट लेना; (दिया) बालना।

अंजोरी*–स्त्री० उजाला, चाँदनी। वि० (स्त्री०) उजियाली।

अंझा–पु० अनध्याय, छुट्टी, नागा; लोप।

अँटना–अ० क्रि० समाना; ठीक आना, ठीक नापका होना (कपड़ा, जूता इ०); काफी होना; पूरा पड़ना; *खप जाना।

अंटसंट–वि०, पु० दे० 'अंडबंड'।

अंटा–पु० बड़ी गोली; बड़ी कौड़ी; सूत या रेशमका लच्छा; बिलियर्डका खेल। **–घर**–पु० बिलियर्ड खेलनेका कमरा।

अंटाचित–वि० पूरी तरह चित; स्तब्ध; नशेमें चूर, बेसुध; बर्बाद, बेकार (ला०)।

अंटाबंधू–पु० सब कुछ हार जानेपर दाँवपर रखी जानेवाली खेलनेकी कौड़ी।

अँटिया–स्त्री० घास, पतली लकड़ियों, दातुनों आदिका मुट्ठा, गठिया; पूला।

अँटियाना–स० क्रि० उँगलियोंके बीचमें छिपा लेना; गायब करना; अँटिया बनाना; तागेकी पिंडी बनाना।

अंटी–स्त्री० दो उँगलियोंके बीचकी जगह, घाई; धोतीकी कमरके ऊपरकी लपेट; गाँठ; टेंट; पहलवानीका एक दाव; अटेरन; अट्टी; सूत या रेशमकी लच्छी; बिगाड़; छोटी बाली। **–बाज**–वि० दगाबाज, फरेबी। **मु०–करना**–माल उड़ा लेना; सूत लपेटकर अंटी बनाना। **–देना**–गरदनी देना। **–पर चढ़ना**–धोखा खा जाना। **–मारना**–दूसरेकी चीज धीरेसे उड़ा लेना; कम तौलना। डाँड़ी मारना।

अँटौतल–पु० कोल्हूमें जुते हुए बैलकी आँखोंपर लगाये जानेवाले ढक्कन।

अंठी–स्त्री० गुठली; गिलटी; गाँठ; गिरह; अँठली।

अंड–पु० [सं०] अंडा; अंडकोश, फोता; ब्रह्मांड; वीर्य; मृगनाभि; नाफा; शिव। **–कटाह**–पुं० ब्रह्मांड। **–कोश**–पु० फोता, खुसिया; ब्रह्माण्ड। **–ज**–वि० अंडेसे उत्पन्न; पु० अंडेसे उत्पन्न होनेवाले प्राणी (पक्षी, साँप, मछली इ०)। **–जा**–स्त्री० कस्तूरी। **–धर**–पु० शिव। **–वर्धन**–पु०, **–वृद्धि**–स्त्री० फोता बढ़नेकी बीमारी। **–सू**–वि० अंडेसे उत्पन्न होनेवाला।

अंडजेश्वर–पु० [सं०] गरुड़।

अंडबंड–पु० बे-सिर-पैरकी बात। वि० बे-सिर-पैरका; ऊटपटाँग, श्रृंखलाहीन।

अंडस†–स्त्री० अड़चन, कठिनाई।

अंडा–पु० वह गोल पिंड या खोल जिसमेंसे साँप, मछली, चिड़िया आदिका बच्चा निकलता है; *देह, पिंड।

अंडाकार,–कृति–वि० [सं०] अंडेकी आकृतिवाला।

अंडी–स्त्री० रेंड़ या एरंडका पेड़ या बीज; एक रेशमी कपड़ा।

अंडुआ–वि० जो बधिया न किया गया हो। पु० ऐसा पशु। **–बैल**–पु० आँड़ू बैल, साँड़; बड़े अंडकोशवाला या सुस्त आदमी।

अंडुआना–स० क्रि० बधिया करना।

अंडैल–वि० (स्त्री०) जिसके पेटमें अंडे हों।

अंतः–अ० [सं०] दे० 'अंतर्'। **–कथा**–स्त्री० किसी प्रसंगमें संकेतित अन्य कथा, घटना या बात। **–करण**–पु० भीतरी इंद्रिय; ज्ञान, सुख-दुःखके अनुभवका साधन, मन; मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इन चार वृत्तियोंका योग। **–कलह**–पु० आपसी लड़ाई, गृहयुद्ध। **–कुटिल**–वि० भीतरका कुटिल, छली। **–कोण**–पु० भीतरका कोण, 'इंटीरियर ऐंगेल'। **–क्रिया**–स्त्री० भीतरी व्यापार; मनको शुद्ध करनेवाला कर्म। **–क्षिप्त**–वि० (इन्‌जेक्टेड) जो सूई द्वारा भीतर प्रविष्ट कराया गया हो। **–क्षेप,–क्षेपण**–पु० (इन्‌जेक्शन) सूई द्वारा भीतर प्रवेश करानेका कार्य। **–पट**–पु० दूल्हे और दुलहिनके बीच खड़ा किया जानेवाला कपड़ेका परदा; अतरौटा। **–पटी**–स्त्री० वह चित्रपट जिसपर पर्वत, नदी आदिका दृश्य

अंकित हो ।**–पाल**–पु० अंतःपुरका रक्षक । **–पुर**–पु० राजप्रासाद; जनानखाना, हरम ।**–पुरिक**–पु० अंतःपुरका रक्षक, कंचुकी ।**–पुरिका**–स्त्री० अंतःपुरमें रहनेवाली स्त्री ।**–प्रेरणा**–स्त्री० सहज प्रेरणा ।**–शरीर**–पु० सूक्ष्म शरीर । **–शल्य**–वि० भीतर सालनेवाला, गाँसीकी तरह चुभनेवाला । **–शुद्धि**–स्त्री० चित्तशुद्धि । **–संज्ञ**–वि० अपने सुख-दुःखादिके अनुभवोंको प्रकट न कर सकनेवाला (वृक्ष आदि) । **–सलिला**– स्त्री० दे० 'अंतस्सलिला' । **–स्थ**–वि० भीतर या बीचमें स्थित । पु० स्पर्श और ऊष्म वर्णोंके बीचमें पड़नेवाले य, र, ल, व ये चार वर्ण ।

अंत– पु० [सं०] समाप्ति; आखिर; नाश; मृत्यु; अंतकाल; सीमा, छोर, अंतिम भाग; सामीप्य; पड़ोस; परिणाम; निबटारा; निश्चय; भीतरका हिस्सा; भेद; थाह; अंतःकरण ।*अ० अंतमें; अन्यत्र । पु० आँत । **–कर,–करण,–कर्त्ता,–कारक–कारी (रिन्)**–वि० नाश करनेवाला, संहारक । **–कर्म (न्)**–पु० मृत्यु; नाश । **–काल**–पु० मृत्युकाल, आखिरी वक्त । **–कृत्**–वि० अंत करनेवाला । पु० मृत्यु; यमराज । **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टि, मृतक-क्रिया । **–घाई***–वि० अन्तघाती, दगाबाज, धोखा देनेवाला । **–च्छद**–पु० भीतरका परदा, भीतरका आच्छादन । **–ज**–वि० सबसे पीछे उत्पन्न होनेवाला । **–तः**–अ० अंतमें; कमसे कम; अंशतः; भीतर । **–पाल**–पु० सीमारक्षक; द्वारपाल । **–वेला**–स्त्री० दे० 'अन्तकाल' । **–शय्या**–स्त्री० भूमिशय्या; चिता; मृत्यु; अरथी ।

अंतक–वि० [सं०] नाश करनेवाला । पु० मृत्यु; काल; यमराज; ईश्वर ।

अँतड़ी–स्त्री० आँत ।

अंततोगत्वा–अ० [सं०] निदान, आखिरकार, अंतमें ।

अंतरंकित–वि० (इन्सक्राइब्ड) (वह वृत्तादि) जिसके भीतर कोई आकृति (त्रिकोणादि) बनायी या अंकित की गयी हो, जिसके भीतर या जिसके ऊपर कोई लेख, मूर्ति आदि अंकित की गयी हो ।

अंतरंग–वि० [सं०] भीतरी; अतिप्रिय या घनिष्ठ, दिली (दोस्त) । पु० सबसे भीतरके अंग (हृदय, मस्तिष्क); अंतरिंद्रिय ।**–सचिव**–पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) राष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधान मंत्री, आदिका वह सचिव जो उनके निजी या घरेलू मामलोंकी देखरेख करता है । **–सभा**–स्त्री० किसी सभाकी कार्यकारिणी समिति ।

अंतर–वि० [सं०] पु० भीतरका भाग; आशय; छिद्र; आत्मा; मन; हृदय; परमात्मा; बीच; अवकाश; स्थान; प्रवेश; पहुँच; अवधि; काल; अवसर; फर्क; शेष (गणित); फासला, दूरी; विशेषता; निर्बलता; दोष, त्रुटि; निश्चय; लिहाज; प्रयोजन; गोपन; ओट; अभाव; वस्त्र; प्रतिनिधि । अ० दूर; भीतर । **–ज्ञ**–वि० हृदयकी बात जाननेवाला । **–तम**–वि० आत्मीय; अति समीपी । पु० सबसे भीतरका भाग, दिलकी गहराई । **–दिशा**–स्त्री० दो दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिशा । **–पट**–पु० परदा; दुराव; विवाहके समय वर और कन्याके बीच डाला जानेवाला परदा; कपड़मिट्टी, मिट्टीके साथ लपेटा जानेवाला कपड़ा । **–राष्ट्रीय**–वि० दे० 'अन्ताराष्ट्रिय' ।

अंतरग्नि–पु० [सं०] जठराग्नि ।

अंतरण–पु० [सं०] अंतरित करना; व्यवधान डालना; एक व्यक्तिके हाथसे या एक स्थानसे, दूसरे व्यक्तिके हाथमें या दूसरे स्थानमें जाना ।

अंतरराष्ट्रीय–वि० दे० 'अंताराष्ट्रिय' ।

अंतरवाचन–पु० [सं०] (सिलेक्शन) कई वस्तुओंमेंसे अपनी रुचिके अनुसार पसंद करना; विभिन्न अभ्यर्थियोंमेंसे योग्यता आदिके अनुसार कुछ लोगोंका चुनाव करना । (निर्वाचन = इलेक्शन) ।

अंतरस्थापन–पु० [सं०] (इंटरपोज) अपने आपको बीचमें डालने, स्थापित करनेकी क्रिया ।

अंतरा–अ० [सं०] भीतर; बीचमें; निकट । पु० स्थायी या टेकको छोड़कर गीतके और सब चरण ।

अँतरा–पु० कोना; नागा, रुकावट; एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर । वि० एक छोड़कर दूसरा; जो एक दिनके अंतरसे हो या आये (अंतरा बुखार; अंतरे दिन) ।

अंतरागम–पु० (इन्फ्लेक्स) जलराशि या जन-समूहका भीतर आना ।

अंतरात्मा(त्मन्)–स्त्री० [सं०] आत्मा; अंतःकरण ।

अँतराना*–स० क्रि० भीतर करना, छिपाना; अलग करना ।

अंतराय–पु० [सं०] विघ्न; अड़चन; ओट ।

अंतराल–पु० [सं०] मध्यवर्ती स्थान या काल; बीच, भीतरका भाग । **–दिशा**–स्त्री० विदिशा । **–राज्य**–पु० (बफर स्टेट) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाला वह स्वतंत्र राज्य जिसके कारण उन दोनोंमें प्रत्यक्ष संघर्षकी नौबत नहीं आने पाती ।

अंतरिंद्रिय–स्त्री० [सं०] मन, बुद्धि आदि भीतरकी इंद्रियाँ ।

अंतरिका–स्त्री० [सं०] दो मकानोंके बीचकी गली ।

अंतरिक्ष–पु० [सं०] पृथ्वी और स्वर्ग लोकके बीचका स्थान, आकाश । वि० अदृश्य ।**–चर,–चारी (रिन्)**–पु० पक्षी । वि० आकाशमें चलनेवाला । **–विज्ञान**–पु० (मीटिअरॉलॉजी) अंतरिक्षकी स्थिति, विशेषकर मौसिम, का विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

अंतरिख,–रिच्छ*–पु० दे० 'अंतरिक्ष' ।

अंतरित–वि० [सं०] भीतर आया या किया हुआ; छिपा हुआ; बीचमें आया हुआ; ढका हुआ; नष्ट; अदृश्य; पृथक् किया हुआ; तुच्छ समझा हुआ ।

अंतरिम–वि० दो समयोंके बीचका, मध्यवर्ती (इंटेरिम) ।

अँतरिया–पु० एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर ।

अंतरीप–पु० [सं०] भूमिका नुकीला भाग जो समुद्रमें दूरतक चला गया हो, रास ।

अंतरीय–पु० [सं०] अधोवस्त्र, नीचे पहननेका कपड़ा, धोती; अंतरौटा । वि० भीतरका ।

अँतरौटा–पु० बारीक साड़ीके नीचे पहननेका कपड़ा, अस्तर, साया ।

अंतर्–अ० [सं०] भीतर; बीचमें । (उपसर्गके रूपमें व्यवहृत होनेपर संधिके नियमोंके अनुसार कुछ शब्दोंके

पूर्व इसका रूप 'अंतः' और कुछके पूर्व 'अंतस्' हो जाता है। **–गंगा**–स्त्री० गुप्त या छिपी हुई गंगा। **–गत**–वि० भीतर समाया हुआ; शामिल; गुप्त। **–गत वृत्त, –वृत्त**–पु० (इन-सरकिल) किसी ऋजु-भुज क्षेत्रकी सब भुजाएँ जिसका स्पर्श करती हों, वह वृत्त। **–गति**–स्त्री० भावना, मनकी वृत्ति। **–गृह, –गेह**–पु० मकानका भीतरी खंड। **–गृही**–स्त्री० तीर्थस्थानके भीतर पड़नेवाले स्थानोंकी यात्रा। **–ग्रस्त**–वि० (इनवाल्वड) जो किसी विपत्ति, अपराध या कठिनाई आदिमें लिप्त या ग्रस्त हो गया हो। **–जातीय**–वि० दो या कई जातियोंके बीचका (अंतर्जातीय विवाह या भोज इ०)। **–जानु**–वि० हाथोंको घुटनोंके बीच रखे हुए। **–ज्ञान**–पु० अंतःकरणमें अपने आप उपजनेवाला ज्ञान, अंतर्बोध। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० भीतरका प्रकाश। वि० जिसकी आत्मा प्रकाशमान हो। **–ज्वाला**–स्त्री० भीतरकी आग; चिंता, संताप। **–दशा**–स्त्री० महादशाके अंतर्गत प्रत्येक ग्रहका भोगकाल या आधिपत्यकाल (ज्यो०)। **–दशाह**–पु० मृत्युके उपरांत दस दिनोंके भीतर होनेवाले कृत्य। **–दृष्टि**–स्त्री० भीतरकी आँख; ज्ञानचक्षु; अंतर्मुखी दृष्टि। **–देशीय**–वि० (इनलैंड) देशके भीतर होने या उसके भीतरी हिस्सेसे संबंध रखनेवाला। **–॰जलपथ**–पु० (इनलैंड वाटरवेज़) देशके भीतरके जलमार्ग। **–॰वाणिज्य**–पु० दे० 'अंतर्वाणिज्य'। **–द्धान**–पु० लोप, तिरोधान; (हि०) वि० लुप्त, अदृश्य। **–द्वार**–पु० भीतरी या गुप्त दरवाजा। **–धान**–पु० अदृश्य, अलोप हो जाना। **–ध्वंस**–पु० (सैबटेज) असंतुष्ट कर्मियों द्वारा कल-कारखानों, रेलपथों, पुलों आदिका जान-बूझकर किया गया विनाश, तोड़-फोड़। **–नाद**–पु० अंतरात्माकी आवाज या आदेश। **–निविष्ट**–वि० भीतर गया या समाया हुआ। **–निहित**–वि० भीतर स्थित, अंतरमें स्थित। **–बोध**–पु० अंतर्ज्ञान, सहज ज्ञान, आत्मबोध। **–भाव**–पु० अंतर्गत होना; अभाव; तिरोभाव; भीतरका, मनका, भाव; (इनक्लूजन) शामिल या समाविष्ट होना, किसी वस्तुका किसी दूसरीके भीतर आ जाना। **–भावना**–स्त्री० मन ही मन किया जानेवाला चिंतन, अंतस्थ भावना। **–भुक्त**–वि० भीतर आया या मिलाया हुआ। **–भूत**–वि० भीतर समाया हुआ, अंतर्गत। पु० जीवात्मा; प्राण। **–भूमि**–स्त्री० भूगर्भ। **–भौम**–वि० जमीनके अंदरका, भूगर्भस्थ। **–मना (नस्)**–वि० बाहरी दुनियासे उदासीन रहकर अपने विचारोंमें ही डूबा रहनेवाला, समाहितचित्त; उदास; घबड़ाया हुआ। **–मल**–पु० भीतरका मल; चित्तविकार। **–मुख**–वि० भीतरकी ओर मुखवाला; भीतरकी ओर जानेवाला। **–मृत**–वि० मृतजन्मा, गर्भमें ही मर जानेवाला (शिशु)। **–याग**–पु० मानसयज्ञ या पूजन। **–यामी (मिन्)**–वि० दिलकी बात जाननेवाला। पु० अंतःकरणमें स्थित जीवकी प्रेरणा करनेवाला ईश्वर; आत्मा। **–राष्ट्रीय**–दे० 'अंताराष्ट्रिय'। **–लापिका**–स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसीके अक्षरोंसे निकलता हो। **–लिखित**–वि० दे० 'अंतरंकित'। **–लीन**–वि० भीतर छिपा हुआ; डूबा हुआ; ध्यानमग्न। **–वस्तु**–स्त्री० (कंटेंट्स) किसी बरतन, प्रलेख, पुस्तक आदिके भीतर जो कुछ हो, भीतरकी सामग्री आदि। **–वर्ती (र्तिन्)**–वि० भीतर रहनेवाला। **–वाणिज्य**–पु० (इंटरनल ट्रेड) देशके भीतरी भागोंमें होनेवाला वाणिज्य, आभ्यंतर व्यापार। **–वासित करना**–स० क्रि० (टु इण्टर्न) क्षेत्रविशेषकी सीमाके भीतर रहनेको बाध्य करना, स्थानबद्ध करना। **–वासी रोगी**–पु० (इन-डोर पेशंट) दे० 'प्रविष्ट रोगी'। **–विरोध**–पु० भीतरी विरोध, आपसी वैमनस्य। **–वेग**–पु० आंतरिक अशान्ति, चिन्ता; भीतर रहनेवाला ज्वर। **–वेद**–पु० दे० 'अंत- र्वेदि'। **–वेदना**–स्त्री० हृदयकी वेदना। **–वेदि, –दी**–स्त्री० गंगा और यमुनाके बीचका देश, ब्रह्मावर्त। **–व्याधि**–स्त्री० भीतरका रोग। **–व्रण**–पु० भीतरका फोड़ा। **–हास**–पु० खुलकर न हँसी जानेवाली हँसी। **–हित**–पु० अदृश्य, गायब। **–हृदय**–पु० हृदयका भीतरी भाग।

अंतर्जामी–वि० दे० 'अंतर्यामी'।

अंतश्छद–पु० [सं०] भीतरका आवरण।

अंतस्–पु० [सं०] हृदय, अंतःकरण। **–तल**–पु० हृदय। **–ताप**–पु० भीतरी वेदना, मनस्ताप। **–सलिल**–वि० जिसकी धारा भीतर ही भीतर, जमीनके अंदर ही अंदर बहती हो। **–सलिला**–स्त्री० सरस्वती या फल्गु नदी। **–सार**–वि० भीतरसे ठोस, पोढ़ा; बलवान्। पु० भीतरी सार, तत्त्व, ठोसपन; मन, बुद्धि, अहंकारका योग (सां०); अंतरात्मा।

अंतहपुर*–पु० दे० 'अंतःपुर'।

अंताराष्ट्रिय, –राष्ट्रीय–वि० [सं०] दो या अधिक राष्ट्रोंके बीचका, उनसे संबद्ध या उनमें प्रचलित (विधान आदि)।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष–पु० (इंटरनेशनल मनेटरी फंड) संयुक्त राष्ट्रसंघकी देखरेखमें स्थापित निधि जिसका कार्य सदस्य देशोंकी मुद्राओंके विनिमय-मूल्य स्थिर बनाये रखनेमें सहायता देना तथा विदेशी मुद्राओंकी कमी पड़ जानेपर प्राप्यांशसे अधिक मुद्राएँ निकालनेकी सुविधा प्रदान करना है।

अंतावरी–स्त्री० अंतड़ी।

अंतावसायी (यिन्)–पु० [सं०] चांडाल; नाई; नीच जातिका व्यक्ति।

अंतिम–वि० [सं०] सबसे पीछेका, आखिरी, चरम।

अंतिमेत्थम्–पु० (अल्टिमेटम्) अंतिम चेतावनी, अंतिम बार यह कह देना कि इस अवधिके बाद हम न रुकेंगे, अवधिके भीतर यह बात न की गयी तो भयानक परिणाम होगा।

अंतेउर, –वर*–पु० दे० 'अतःपुर'।

अंतेवासी (सिन्)–पु० [सं०] गुरुके पास रहनेवाला शिष्य; चांडाल। वि० पास या साथ रहनेवाला।

अंत्य–वि० [सं०] अंतका, आखिरी; सबसे नीचे या पीछेका; बादका। **–ज**–पु० **–जा**–स्त्री० शूद्र; अछूत।

अंत्याक्षर–पु० [सं०] शब्द या पदका अंतिम अक्षर।

अंत्याक्षरी–स्त्री० [सं०] पद्यपाठकी वह प्रतियोगिता जिसमें

पहले पढ़े हुए पद्यके अंतिम अक्षरसे आरंभ होनेवाला पद्य पढ़ना होता है।

अंत्यानुप्रास–पु० [सं०] पद्यके चरणोंके अन्तिमाक्षरोंका मेल, तुक, काफिया।

अंत्यावसायी (यिन्)–पु० [सं०] अति निम्नजातीय, डोम, चमार आदि।

अंत्याश्रम–पु० [सं०] आखिरी आश्रम, संन्यासाश्रम।

अंत्याश्रमी (मिन्)–वि० [सं०] अंतिम आश्रममें रहनेवाला। पु० संन्यासी।

अंत्येष्टि–स्त्री० [सं०] अंतिम संस्कार, मृतककर्म।

अंत्र–पु० [सं०] आँत, अँतड़ी। **–कूज,–कूजन**,–पु० आँतोंमें होनेवाली गुड़गुड़ाहट। **–प्रदाह**–पु० आँतोंमें जलन होना। **–वृद्धि**–स्त्री० आँत उतरनेकी बीमारी; अंडकोश बढ़नेका रोग।

अंत्री–स्त्री० [सं०] दे० 'अंत्र'।*

अंथऊ–पु० जैनियोंका संध्याकालीन भोजन।

अंदर–अ० [फा०] भीतर। पु० दिल (अंदरका साफ)।

अँदरसा–पु० एक प्रसिद्ध मिठाई।

अंदरी–वि० भीतरका।

अंदरूनी–वि० [फा०] भीतरी, अंदरका।

अंदाज़–पु० [फा०] ढंग, ढब; मोहक ढंग, अदा; अटकल, उचित मात्रा। वि० फेंकनेवाला (संज्ञाके अंतमें–जैसे तीरंदाज़, गोलंदाज़)।

अंदाज़न–अ० [फा०] अटकलसे; लगभग।

अंदाज़ा–पु० [फा०] अटकल, अनुमान; तखमीना।

अँदाना*–स० क्रि० बचाना, बरकाना।

अंदु–पु० [सं०] अंजीर; हाथीके पाँव बाँधनेकी साँकल; पाँवोंमें पहननेका एक गहना, पायजेब, पैरी, नूपुर।

अँदुआ–पु० हाथीके पीछेके पैरमें डालनेके लिए काठका बना हुआ एक काँटेदार यंत्र।

अंदुक, अंदू, अंदूक–पु० [सं०] दे० 'अंदु'।

अंदेशा†–पु० दे० 'अंदेशा'।

अंदेशा–पु० [फा०] सोच, चिंता; शक, आशंका; खतरा; हानि; दुविधा।

अंदेस*–पु० दे० 'अंदेशा'।

अंदोर*–पु० शोरगुल, कोलाहल।

अंदोह–पु० [फा०] दुःख, रंज; खटका।

अंध–वि० [सं०] अंधा; विचारहीन; निर्बुद्धि; अचेत; उन्मत्त। पु० नेत्रहीन व्यक्ति, अंधकार, अज्ञान। **–कार,–काल**–पु० अंधेरा। **–कूप**–पु० अंधेरा कुआँ; सूखा कुआँ जिसका मुँह घास-पातसे ढँका हो; अज्ञान; एक नरक। **–खोपड़ी**–वि० [हि०] नासमझ, मूर्ख। **–तमस,–तामस**–पु० घोर अंधकार, अंधेरा घुप्प। **–तामिश्र,–स्र**–पु० निबिडांधकार; अज्ञान; २१ नरकोंमेंसे एक। **–परंपरा**–स्त्री० बिना सोचे-समझे पुरानी रीतिका अनुसरण, भेड़ियाधँसान। **–बाई***–स्त्री० आँधी। **–मति**–वि० अक्लका अंधा। **–विंदु**–पु० आँखके भीतरी परदेका अप्रकाशग्राही विंदु या स्थल। **–विश्वास**–पु० बिना सोचे-समझे कोई बात मान लेना, विचार रहित विश्वास; वहम।

क

अंधड़–पु० आँधी, तूफ़ान।

अंधधुंध*–पु० अंधेरा, अंधेर, दुराचार।

अंधर*–पु० दे० 'अंधड़', अंधकार।

अँधरा*–पु० अंधा मनुष्य। वि० अंधा।

अंधा–वि० बिना आँखका, देखनेकी शक्तिसे रहित; भला-बुरा सोचनेमें असमर्थ, विचारहीन; बिना सोचे-समझे काम करनेवाला; अंधेरा (अंधी गुफा)। पु० दृष्टिहीन प्राणी। **–आईना**–पु० दे० 'अंधा शीशा'। **–कुआँ**–पु० सूखा कुआँ, अंधकूप, लड़कोंका एक खेल। **–कुप्प**–पु० (ब्लैकआउट) हवाई हमला होनेके समय या उसकी आशंका होते ही सार्वजनिक स्थानोंकी बत्तियोंका बुझा दिया जाना या उन्हें इस तरह ढँक देना जिससे बाहरसे, विशेषकर आसमानसे, रोशनी दिखाई न पड़े, चिरागगुल। **–घोड़ा**–पु० जूता (साधु-फकीर)। **–चिराग,–दीया**–पु० धुँधली रोशनीवाला चिराग। **–तारा**–पु० नेपचून तारा। **–भैंसा**–पु० लड़कोंका एक खेल। **–शीशा**–पु० ऐसा आईना जिसमें चेहरा साफ न दिखाई दे। **–मु०–बनना**–बेवकूफ बनना; धोखा खाना, जान-बूझकर उपेक्षा करना। **–बनाना**–उल्लू बनाना। **–(धे) की लकड़ी,–लाठी**–एकमात्र सहारा।

अंधाधुंध–अ० बिना सोचे विचारे; बेहिसाब; बेतहाशा। वि० विचारहीन। स्त्री० घना अंधकार; अंधेर, धींगाधींगी।

अंधानुकरण–पु० [सं०] आँख मूँदकर किसीके पीछे चलना, किसी व्यक्ति या व्यवहारका बिना विचारे अनुकरण करना।

अँधार*–पु० अंधकार।

अँधियार,–रा*–पु० अंधकार। वि० अँधेरा।

अँधियारी–स्त्री० अंधकार; घोड़ों, शिकारी चिड़ियों आदि की आँखोंपर बाँधी जानेवाली पट्टी।

अंधेर–पु० अनीति, अन्याय, धींगाधींगी; नियमव्यवस्थाका अभाव। **–खाता**–पु० गड़बड़, अव्यवस्था; हिसाब किताब का ठीक न रहना। **–नगरी**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कोई नियम-व्यवस्था न हो।

अंधेरना*–स० क्रि० अंधेर करना; अँधेरा करना।

अँधेरा–पु० अंधकार; नैराश्य; उदासी; छाया (अँधेरा छोड़ो)। वि० प्रकाशरहित; अंधकारमय। **–उजाला**–पु० सफेद और रंगीन कागजोंको विशेष प्रकारसे लपेटकर बनाया हुआ एक खिलौना। **–गुप्प,–घुप्प**–पु० गहरा अँधेरा, घोर अंधकार। **–पाख**–पु० कृष्ण पक्ष। **मु०–**
–छा जाना–अत्यधिक अंधकार होना; बहुत बड़ी हानि आदिके एका-एक होनेपर कुछ दिखाई न देना। **–(रे) उजेले**–समय-कुसमय। **–(रे) घरका उजाला**–अति सुंदर या कांतियुक्त; एकलौता बेटा। **–(रे) मुँह–**पौ फटते, उजाला होनेके पहले।

अँधेरिया–स्त्री० अंधकार; अँधेरा पाख; ईखकी पहली गोड़ाई।

अँधेरी–स्त्री० अंधकार; अंधड़; घोड़े या बैलकी आँखपर डालनेका पर्दा या जाली। वि० स्त्री० अंधकार भरी। **–कोठरी**–स्त्री० गर्भ, कोख; गुप्त भेद। **–० का यार**–गुप्त प्रेमी। **मु०–डालना या देना**–आँख मूँदकर दुर्गति करना; धोखा देना।

अँधोटी–स्त्री० घोड़े या बैलकी आँखपर डालनेका पर्दा, अनवट।

अँधौरी†–स्त्री० दे० 'अम्हौरी'।

अँध्यार *–पु० अंधकार।

अंध्यारी *–स्त्री० अँधियारी, अंधकार।

अंब *–पु० आम। स्त्री० दे० 'अंबा'।

अंबक–पु० [सं०] अ ख; पिता; ताँबा।

अंबर–पु० [सं०] आकाश; वस्त्र; एक विशेष प्रकारकी साड़ी; केसर; एक सुगंधित वस्तु जो समुद्रके किनारे पायी जाती है और दवाके भी काम आती है; कपास; अभ्रक; *बादल। **–चर**–पु० पक्षी; विद्याधर। **–चारी (रिन्)**–पु० ग्रह। **–डंबर**–पु० सूर्यास्तकालमें पश्चिम दिशामें दिखाई देनेवाली लाली। **–पुष्प**–पु० असंभव बात। **–बेल**–स्त्री० [हिं०] आकासबेल। **–मणि**–पु० सूर्य।

अंबरांत–पु० [सं०] क्षितिज; वस्त्रका छोर।

अंबराई–स्त्री०, **अँबराव**–पु० अमराई।

अंबरीष–पु० [सं०] भाड़; दाना भूननेका मिट्टीका बरतन; युद्ध; विष्णु; शिव; अनुपात; एक नरक; सूर्य; अमड़ा; छोटा जानवर, बछड़ा; अयोध्याका एक सूर्यवंशी राजा जो विष्णुभक्तिके लिए प्रसिद्ध था।

अंबल–पु० मादक पदार्थ; खट्टा रस।

अंबष्ठ–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद (लाहौर और उसके आस-पासका प्रदेश) और उसके निवासी; एक जाति; कायस्थोंकी एक उपजाति; महावत।

अंबा–स्त्री० [सं०] माता, अम्मा; दुर्गा, गौरी; काशिराज इंद्रद्युम्नकी तीन कन्याओंमेंसे सबसे बड़ी जिसका भीष्मने अपने भाई विचित्रवीर्यसे विवाह करनेके लिए हरण किया था; पाढ़ा लता। *पु० आम।

अंबापोली–स्त्री० अमावट, अमरस।

अंबार–पु० [फ़ा०] ढेर, राशि। **–ख़ाना**–पु० गोदाम।

अंबारी–पु० दे० 'अम्मारी' (हौदा)।

अंबालिका–स्त्री० [सं०] माता; पाढ़ा लता; काशिराज इंद्रद्युम्नकी भीष्म द्वारा हरी गयी कन्याओंमेंसे सबसे छोटी जो विचित्रवीर्यकी कनिष्ठा पत्नी और पांडुकी माता थी।

अंबिका–स्त्री० [सं०] माता; दुर्गा, पार्वती; पाढ़ा लता; काशिराज इंद्रद्युम्नकी भीष्म द्वारा हरी गयी मँझली कन्या जो विचित्रवीर्य की बड़ी रानी और धृतराष्ट्रकी माता थी। **–पति**–पु० शिव।

अंबिया–स्त्री० छोटा कच्चा आम जिसमें जाली न पड़ी हो, टिकोरा।

अँबिरथा*–वि० वृथा।

अंबु–पु० [सं०] जल; रक्तका जलीय तत्व; जन्मकुंडलीमें चौथा स्थान; चारकी संख्या। मगर। **–क्रिया**–स्त्री० पितृतर्पण। **–चर–चारी (रिन्)**–वि० पानीमें रहनेवाला (मत्स्य आदि जलचर)। **–ज**–वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल; चंद्रमा; शंख; वज्र; बेंत; कपूर; सारस पक्षी। **–द**–वि० जल देनेवाला। पु० बादल। **–धर**–पु० बादल। **–धि**–पु० समुद्र; चारकी संख्या। **–नाथ**–पु० समुद्र। **–निधि**–पु० समुद्र। **–पति**–पु० समुद्र; वरुण। **–भव**–पु० कमल। **–भृत्**–पु० बादल; समुद्र; घोंघा। **–राज**–पु० समुद्र; वरुण। **–राशि**–पु० समुद्र। **–रुह**–पु० कमल। **–वाह**–पु० बादल। **–शायी (यिन)**–पु० विष्णु, नारायण।

अंबुजाक्ष–वि० [सं०] कमलके समान नेत्रोंवाला। पु० विष्णु।

अंबुजासन–पु० [सं०] ब्रह्मा।

अंबुजासना–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

अंबुवा*–पु० आम।

अंभःपति–पु० [सं०] वरुण।

अंभःसार–पु० [सं०] मोती।

अंभ(स्)–पु० [सं०] जल; आकाश; देवता; मनुष्य; शक्ति, तेज; जन्मकुंडलीमें लग्नसे चौथा स्थान; चारकी संख्या।

अंभनिधि–पु० दे० 'अंभोनिधि'।

अंभोज–वि० [सं०] जलमें उत्पन्न। पु० कमल; शंख; चंद्रमा। **–जन्मा (न्मन्)**,**–योनि**–पु० ब्रह्मा।

अंभोजिनी–स्त्री० [सं०] कमलिनी; कमलपुष्पोंका समूह; वह स्थान जहाँ कमलोंकी बहुलता हो।

अंभोद, अंभोधर–पु० [सं०] बादल; मोथा।

अंभोधि,–निधि–पु० [सं०] समुद्र।

अंभोराशि–पु० [सं०] समुद्र।

अंभोरुह–पु० [सं०] कमल; सारस।

अँवरा, अँवला†–पु० दे० 'आँवला'।

अंश–पु० [सं०] भाग, हिस्सा; चौथा भाग; सोलहवाँ भाग; वृत्तकी परिधिका ३६०वाँ भाग; भाज्य अंक; भिन्नकी लकीरके ऊपरका अंक; एक आदित्य; दिन; कंधा। **–करण**–पु० भाग लगाना, बँटवारा करना। **–दान**–पु० (कांट्रिब्यूशन) किसी कोष या सामान्य निधि आदिमें अथवा देशकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक उन्नति आदिमें अन्य लोगोंकी तरह अपना भी उचित अंश या भाग प्रदान करना; योगदान; वह रकम या सहायता जो इस प्रकार प्रदत्त की जाय, अवदान। **–पत्र**–पु० वह लेख-पत्र जिसमें हिस्सेदारोंका हिस्सा लिखा हो। **–धर**–पु० (शेयरहोल्डर) वह व्यक्ति जो किसी प्रमंडल या व्यापारिक संस्था आदिमें लगायी जानेवाली पूँजीके एक या एकाधिक हिस्सोंका स्वामी हो, हिस्सेदार। **–पूँजी**–स्त्री० (स्टॉक) किसी संस्था या निगम आदिमें विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लगायीं गयीं पूँजीके हिस्से। **–भाक्,–भागी (गिन्)**–वि० हिस्सा पानेवाला। **–सुता**–स्त्री० यमुना नदी। **–हर,–हारी (रिन्)** वि० हिस्सा पानेवाला।

अंशक–पु० [सं०] भाग, खंड; दिन; हिस्सेदार; दायाद। वि० हिस्सा पानेवाला।

अंशतः–अ० [सं०] कुछ अंशमें, किसी हदतक।

अंशावतार–पु० [सं०] वह अवतार जिसमें ईश्वर या देव-विशेषकी पूरी कला अवतीर्ण न हुई हो।

अंशी (शिन्)–वि० [सं०] हिस्सेदार; जिसके कई अंश या अवयव हों, अवयवी; सामर्थ्यवान्।

अंशु–पु० [सं०] किरण, प्रभा; छोर, सिरा; वस्त्राभूषण। **–धर,–पति,–भर्ता (र्तृ)**,**–स्वामी (मिन्)**–पु० सूर्य।

–मान्–पु॰ सूर्य; चंद्रमा; सूर्यवंशी राजा सगरका पौत्र। वि॰ अंशुयुक्त; प्रभायुक्त। **–माली (लिन्)**–पु॰ सूर्य।

अंशुक–पु॰ [सं॰] वस्त्र; सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा; रेशमी कपड़ा; उपरना; दुपट्टा।

अंस–पु॰ [सं॰] अंश; कंधा।

अंसल–वि॰ [सं॰] मजबूत कंधोंवाला; तगड़ा।

अंसु*–पु॰ भाग; कंधा; आँसू।

अँसुआ, अँसुवा–पु॰ दे॰ 'आँसू'।

अँसुआना–अ॰ क्रि॰ आँसू भर आना।

अंह (स्)–पु॰ [सं॰] पाप; चिंता; कष्ट।

अंह्रि–पु॰ [सं॰] चरण; वृक्षमूल। **–प**–पु॰ वृक्ष।

अ—अ॰ (उप॰) [सं॰] यह व्यंजनादि संज्ञा और विशेषण शब्दोंके पहले लगाकर सादृश्य (अब्राह्मण), भेद (अपट), अल्पता (अनुदश), अभाव (अरूप, अकाम), विरोध (अनीति, असुर) और अप्राशस्त्य (अकाल, अकार्य)के अर्थ प्रकट करता है। स्वरसे आरंभ होनेवाले शब्दोंके पहले आने पर इसका रूप 'अन्' हो जाता है। पु॰ विष्णु; शिव; ब्रह्मा; वायु; वैश्वानर; विश्व; अमृत।

अइल†–पु॰ मुँह; छेद।

अउ, अउर†–अ॰ और, तथा।

अऊत*–वि॰ निपूता, निस्संतान।

अऊलना–अ॰ क्रि॰ तप्त होना, जलना; गरमी पड़ना; चुभना; छिलना।

अऋण, अऋणी (णिन्)–वि॰ [सं॰] जो ऋणी या कर्जदार न हो; ऋणमुक्त।

अएरना*–स॰ क्रि॰ अंगीकार करना; ग्रहण करना।

अकंटक–वि॰ [सं॰] बिना काँटेका; निर्विघ्न; शत्रुरहित।

अकच–वि॰ [सं॰] केशरहित, गंजा। पुं॰ केतु ग्रह।

अकठोर–वि॰ [सं॰] जो कठोर न हो; कमजोर।

अकड़–स्त्री॰ अकड़नेका भाव, ढिठाई; कड़ापन, तनाव; ऐंठ; घमंड; हठ; स्वाभिमान। **–बाई**–स्त्री॰ एक रोग जिसमें नसें तन जाती हैं। **–बाज़**–वि॰ अकड़कर चलनेवाला, घमंडी। **–बाज़ी**–स्त्री॰ ऐंठ, घमंड।

अकड़ना–अ॰ क्रि॰ सूखकर कड़ा होना; ठिठुरना; तनना, ऐंठना; घमंड करना; स्तब्ध होना; तनना, तनकर चलना; जिद करना; धृष्टता करना; रुष्ट होना।

अकड़ाव–पु॰ अकड़नेकी क्रिया, तनाव, ऐंठन।

अकड़ैत–वि॰ दे॰ 'अकड़बाज'।

अकत्थ*–वि॰ दे॰ 'अकत्थ्य'।

अकथ*–वि॰ दे॰ 'अकत्थ्य'।

अकथनीय–वि॰ [सं॰] दे॰ 'अकत्थ्य'।

अकथित–वि॰ [सं॰] जो न कहा गया हो, अनुक्त; गौण (कर्म–व्या॰)

अकथ्य–वि॰ [सं॰] जो कहा न जा सके, कथनके अयोग्य, अकथनीय।

अकधक *–पु॰ आगापीछा; आशंका।

अकनना*–स॰ क्रि॰ कान लगाकर सुनना; सुनना; आहट लेना या पाना।

अकना–अ॰ क्रि॰ घबड़ाना।

अकन्या–स्त्री॰ [सं॰] वह कन्या जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो।

अकबक–स्त्री॰ अंडबंड बातें; प्रलाप; सुधबुध; चिंता, खटका। वि॰ चकित, निस्तब्ध।

अकबकाना–अ॰ क्रि॰ भौचक्का होना; घबराना।

अकबर–वि॰ [अ॰] बहुत बड़ा, महत्तर; एक मुगल सम्राट्।

अकबरी–वि॰ [अ॰] अकबरका चलाया हुआ, अकबर-संबंधी। स्त्री॰ एक मिठाई; लकड़ीपरकी एक तरहकी नक्काशी।

अक़बाल–पु॰ दे॰ 'इक़बाल'।

अकर–वि॰ [सं॰] बिना हाथका; बिना महसूलका; करसे मुक्त; दुष्कर; निष्क्रिय, जो कार्य न कर रहा हो।

अकरकरा–पु॰ दवाके काम आनेवाला एक पौधा।

अकरखना *–स॰ क्रि॰ आकृष्ट करना, खींचना, तानना।

अकरण–वि॰ [सं॰] इंद्रिय-रहित; देह, इंद्रियादिसे रहित (परमात्मा); अकृत्रिम, स्वाभाविक। पु॰ कुछ न करना, कर्मका अभाव। *वि॰ अकारण, कारणरहित; जिसका करना अनुचित या कठिन हो।

अकरणीय–वि [सं॰] न करने योग्य।

अकरन *–वि॰ अकारण; अकरणीय।

अकरनीय *–वि॰ दे॰ 'अकरणीय'।

अकरा *–वि॰ बहुमूल्य; खरा, चोखा।

अकराथ *–वि॰ व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकराल–वि॰ [सं॰] जो भयंकर न हो, सुंदर, सौम्य। *वि॰ भयानक।

अकरास–पु॰ सुस्ती, आलस्य; अँगड़ाई।

अकरी–स्त्री॰ हलमें लगा हुआ चोंगा जिससे बीज गिराते हैं।

अकरुण–वि॰ [सं॰] करुणारहित, निठुर।

अकर्कश–वि॰ [सं॰] कर्कशतारहित, नरम, मृदु।

अकर्ण–वि॰ [सं॰] जिसके कान छोटे हों; कर्णहीन, बहरा; जिसमें पतवार न हो। पु॰ साँप।

अकर्तव्य–वि॰ [सं॰] न करने योग्य, अविहित, अनुचित। पु॰ अनुचित कर्म।

अकर्ता (र्तृ)–वि॰ [सं॰] जो कर्ता न हो, कर्म न करनेवाला, कर्मसे अलिप्त (पुरुष)।

अकर्तृक–वि॰ [सं॰] जिसका कोई कर्ता न हो।

अकर्तृत्व–पु॰ [सं॰] कर्तृत्व, कर्तापनके अभिमानका अभाव।

अकर्म (न्)–पु॰ [सं॰] कर्मका अभाव, निष्क्रियता; बुरा काम। **–शील**–वि॰ सुस्त, आलसी।

अकर्मक–वि॰ [सं॰] (वह क्रिया) जिसके लिए कर्मकी अपेक्षा न हो (व्या॰)।

अकर्मण्य–वि॰ [सं॰] कर्मके अयोग्य; निकम्मा; आलसी; न करने योग्य।

अकर्मा (र्मन्)–वि॰ [सं॰] कर्मरहित, जो कुछ करता न हो; निकम्मा; संस्कार आदिका अनधिकारी।

अकर्मी (र्मिन्)–वि॰ [सं॰] दुष्कर्म करनेवाला, पापी।

अकर्षण–पु॰ [सं॰] कर्षण या खिंचावका न होना। *पु॰ आकर्षण, खिंचाव।

अकलंक–वि॰ [सं॰] कलंकरहित, निर्दोष; बेदाग।

अकलंकता–स्त्री० [सं०] दोषहीनता ।

अकलंकित–वि० [सं०] निर्दोष, शुद्ध; बेदाग ।

अकल–वि० [सं०] अवयवरहित; अखंड; अंशरहित; निराकार; कलाहीन; गुणहीन । स्त्री० दे० 'अक्ल' । **–दाढ़**–स्त्री० जवान होनेपर निकलने वाली दाढ़, अक्लका दाँत ।

अकलखुरा–वि० अकेला खानेवाला, स्वार्थी; ईर्ष्यालु; जो मिलनसार न हो ।

अकलुष–वि० [सं०] स्वच्छ, मलहीन, निर्दोष ।

अकल्पित–वि० [सं०] कल्पनारहित, अकाल्पनिक; अकृत्रिम ।

अकल्मष–वि० [सं०] बेदाग; निर्दोष, शुद्ध ।

अकल्याण–पु० [सं०] अमंगल; अहित । वि० अशुभ ।

अकवच–वि० [सं०] कवचरहित, जिसके बदनपर बकतर न हो ।

अकवन–पु० अर्क, आकका पेड़ ।

अक़वाम–स्त्री० [अ०] क़ौमका बहुवचन ।

अकस–पु० बैर; द्वेष; ईर्ष्या; बराबरी ।

अकसना*–अ० क्रि० बराबरी करना, बैर करना, झगड़ना ।

अकसर–वि० [अ०] बहुत अधिक । अ० अधिकतर, बहुधा । *वि० अकेला । अ० अकेले, बिना किसीको साथ लिये ।

अकसी–वि० अकस रखनेवाला, शत्रु ।

अकसीर–स्त्री० [अ०] कीमिया, वह दवा जिससे सस्ती धातुसे सोना बनाया जा सके; रोग विशेषकी अत्यंत गुणकारी, अचूक औषधि । वि० अचूक, अव्यर्थ । **–गर**–वि० कीमिया बनानेवाला । **–की बूटी**–सोना-चाँदी बनानेकी बूटी ।

अकस्मात्–अ० [सं०] सहसा, अचानक; हठात्; संयोगवश ।

अकह–वि० अवर्णनीय, न कहने योग्य; अनुचित ।

अकहुआ*–वि० अकथनीय, जिसका वर्णन न हो सके ।

अकांड–वि० [सं०] बिना धड़ या तनेका; अचानक या असमय होनेवाला । अ० अकारण ही, अचानक । **–जात**–वि० अचानक पैदा या असमयमें उत्पन्न । **–तांडव**–पु० व्यर्थकी बहस, उछल-कूद आदि ।

अकाज–पु० कार्यहानि; हर्ज; हानि; विघ्न; दुष्कर्म; बुरा काम । *अ० व्यर्थ ही, निष्प्रयोजन ।

अकाजना–*स० क्रि० हानि करना । अ० क्रि० नष्ट होना, न रहना ।

अकाजी*–वि० अकाज करनेवाला; विघ्न डालनेवाला ।

अकाट–वि० जो कट न सके (दलील इ०), अखंडनीय ।

अकाट्य–वि० दे० 'अकाट' (असाधु) ।

अकातर–वि० [सं०] जो भीरु या हतोत्साह न हो ।

अकाथ*–वि० अकथनीय, न कहने योग्य । अ० अकारथ, व्यर्थ ।

अकाम–वि० [सं०] निष्काम; इच्छारहित; उदासीन । *अ० निष्प्रयोजन, बिना कामके ।

अकामी (मिन्)–वि० [सं०] दे० 'अकाम' ।

अकाय–वि० [सं०] कायरहित, अशरीरी । पु० राहु; परमात्मा ।

अकार–पु० [सं०] 'अ' अक्षर या उसकी उच्चारण-ध्वनि । *पु० आकार ।

अकारज*–पु० दे० 'अकाज' ।

अकारण–अ० [सं०] बिना कारण, बेमतलब । वि० हेतुरहित । पु० कारणका अभाव ।

अकारत (थ)–अ० व्यर्थ, बेकार (जाना, होना) । वि० निष्फल, लाभरहित ।

अकारन*–वि०, अ० दे० 'अकारण' ।

अकारांत–वि० [सं०] जिसके अंतमें 'अ' हो ।

अकार्पण्य–पु० [सं०] दीनता या नीचताका अभाव ।

अकार्य–वि० [सं०] न करने योग्य, अकर्तव्य; अनुचित । पु० बुरा काम, अनुचित कार्य ।

अकाल–पु० [सं०] अयोग्य या अनियत काल; कुसमय; अनवसर; अशुभकाल; कालके परे, परमात्मा; [हिं०] दुर्भिक्ष; कमी । वि० जो काला न हो, सफेद; बेमौसिमका, असामयिक । **–कुसुम**–पु० बेमौसिमका फूल; बेमौसिमकी चीज । **–कुष्मांड, –कूष्मांड**–पु० बेमौसिमका कुम्हड़ा; बलिदान आदिके काम न आनेवाला कुम्हड़ा; बेकार चीज; निरर्थक जन्म । (गांधारीके कूष्मांडाकार मांसपिंडका अकाल-प्रसव हुआ था । उसीसे कुरुकुल नाशक दुर्योधन आदि सौ पुत्रोंका जन्म हुआ ।) **–जलदोदय, –मेघोदय**–पु० बेवक्त, बेमौसिम बादलोंका घिरना । **–जात**–वि० वक्तसे पहले, बेमौसिम उपजा हुआ । **–पक्क**–वि० समयसे पहले पक जानेवाला (फल आदि) । **–पुरुष**–पु० परमेश्वर, परमात्मा (सिख) । **–प्रसव**–पु० स्त्रीको समयसे पहले प्रसव होना । **–मूर्ति**–पु० अविनाशी पुरुष । **–मृत्यु**–स्त्री० असामयिक या अल्पवयमें होनेवाली मृत्यु । **–मृत्यु विचारणा**–स्त्री० (इनक्वेस्ट) अकालमृत्यु आदिके संबंधमें की जानेवाली कानूनी जाँच-पड़ताल । **–वृद्ध**–वि० समयसे पहले बूढ़ा हो जानेवाला ।

अकालिक–वि० [सं०] असामयिक ।

अकाली–पु० सिखोंका एक संप्रदाय; उस संप्रदायका अनुयायी ।

अकालोत्पन्न–वि० [सं०] जो समयसे पहले उत्पन्न हुआ हो ।

अकास*–पु० दे० 'आकाश' **–दीया**–पु० आकाशदीप । **–बानी**–स्त्री० आकाशवाणी । **–बेल**–स्त्री० अमरबेल ।

अकासी–स्त्री० एक पक्षी, चील । ताड़ी ।

अकिंचन–वि० [सं०] जिसके पास कुछ न हो, अतिनिर्धन, दरिद्र; कर्मशून्य; अपरिग्रही । पु० वह वस्तु जिसका कोई मूल्य न हो; दरिद्र व्यक्ति; परिग्रहका त्याग (जैन) । **–वाद**–पु० (पॉपर सूट) वह वाद या मामला जिसमें वादी या प्रतिवादीकी ओरसे यह कहा जाय कि मुकदमेके खर्चके लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है अतः सरकारकी ओरसे मुझे वकील तथा आवश्यक व्यय दिया जाय ।

अकिंचनता–स्त्री० (सं०) निर्धनता; परिग्रहका त्याग (जैन) ।

अकिंचनत्व–पु० [सं०] दे० 'अकिंचनता' ।

अकिंचित्कर–वि० [सं०] जिसके किये कुछ न हो सके; निरर्थक; तुच्छ ।

अकितव–वि० [सं०] जो जुआरी न हो; निष्कपट ।

अकिल–स्त्री० दे० 'अक्ल' । **–दाढ़**–स्त्री० जवानीमें

निकलनेवाला दांत । –का अजीरन–बुद्धिका अतिरेक (व्यंग्य) ।

अकिल्विष–वि० [सं०] पापरहित, निर्मल ।

अकीरति*–स्त्री० दे० 'अकीर्ति' ।

अकीर्ति–स्त्री० [सं०] अपयश, बदनामी । –**कर**–वि० अपयश देनेवाला; अपमान करनेवाला ।

अकुंठ–वि० [सं०] जो कुंठित या भोथरा न हो, कार्यक्षम, शक्तिशाली; खुला हुआ; तीक्ष्ण, पैना; स्थिर ।

अकुंठित–वि० [सं०] दे० 'अकुंठ' ।

अकुटिल–वि० [सं०] सीधा; सरल; भोला-भाला ।

अकुताना*–अ० क्रि० दे० 'उकताना' ।

अकुतोभय–वि० [सं०] जिसे कहीं या किसीसे भय न हो, नितांत भयशून्य, निडर ।

अकुत्सित–वि० [सं०] अनिंदनीय, जो बुरा न हो ।

अकुल–वि० [सं०] अकुलीन; कुलरहित । पु० शिव; बुरा कुल ।

अकुलाना–अ० क्रि० आकुल होना; घबड़ाना; बेचैन होना ।

अकुलिनी*–स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री । वि० स्त्री० व्यभिचारिणी ।

अकुलीन–वि० [सं०] हीन कुलका, कमीना ।

अकुशल–वि० [सं०] अनाड़ी, (किसी) काममें कच्चा; भाग्यहीन; अशुभ । पु० बुराई, अमंगल ।

अकूत–वि० जिसकी कूत या अंदाजा न हो सके; विपुल; अपरिमित । अ० अचानक, अकस्मात् (?) ।

अकूल–वि० [सं०] बिना कूल, किनारेका; सीमारहित ।

अकूहल*–वि० अत्यधिक; अगणित ।

अकृच्छ्र–वि० [सं०] बिना क्लेश, कठिनाईका, आसान । पु० क्लेश या कठिनाईका अभाव ।

अकृत–वि० [सं०] जो पूरा न किया गया हो; बिगाड़ा हुआ या अन्यथा किया हुआ; जो किसीके द्वारा बनाया न गया हो, अकृत्रिम; जिसने कुछ किया न हो; अविकसित; अपक्व । –**कार्य**–वि० विफल । –**ज्ञ**–वि० कृतघ्न, उपकार न माननेवाला ।

अकृतार्थ–वि० [सं०] विफल ।

अकृतास्त्र–वि० [सं०] जिसने अस्त्रोंका चलाना न सीखा हो ।

अकृती (तिन्)–वि० [सं०] अकुशल, अनाड़ी; निकम्मा ।

अकृत्य–वि० [सं०] जो करने योग्य न हो । पु० दुष्कर्म, अपराध ।

अकृत्रिम–वि० [सं०] जो बनावटी न हो; स्वाभाविक; असली; सच्चा ।

अकृत्स्न–वि० [सं०] अधूरा, जो पूरा न हुआ हो ।

अकृप–वि० [सं०] निर्दय, दयाहीन ।

अकृपण–वि० [सं०] जो कृपण न हो, उदार ।

अकृपा–स्त्री० [सं०] कृपाका अभाव, नाराजी ।

अकृश–वि० [सं०] जो दुबला-पतला न हो, सबल, मोटा-ताजा ।

अकृषित–वि० (अनकल्टिवेटेड) जो जोती बोयी न गयी हो (भूमि) ।

अकृष्ट–वि० [सं०] जो खींचा न गया हो; जो जोता न गया हो । पु० परती जमीन, वह जमीन जो जोती न गयी हो ।

अकृष्टपूर्वा भूमि–स्त्री० (वर्जिन साइल) वह भूमि जो पहले कभी जोती-बोयी न गयी हो ।

अकृष्ण–वि० [सं०] जो काला न हो, सफेद; निर्मल ।

अकेतन–वि० [सं०] गृहहीन, बेघर-बारका ।

अकेल*–वि० दे० 'अकेला' ।

अकेला–वि० बिना साथीका, तनहा; बेजोड़; फर्द; खाली (मकान) । पु० निर्जन स्थान ।

अकेले–अ० बिना किसी साथीके, तनहा; केवल । –**अकेले**–अ० बिना किसीको साथ लिये, शरीक किये । –**दुकेले**–वि० अकेले या एक औरके साथ ।

अकेश–वि० [सं०] केशरहित; अल्प केशयुक्त; बुरे बालोंवाला ।

अकैतव–पु० [सं०] निष्कपटता । वि० निष्कपट, निश्छल ।

अकोट–पु० [सं०] सुपारी या उसका पेड़ । * वि० अगणित, करोड़ों ।

अकोतर सौ–वि० सौसे एक अधिक, एक सौ एक; पु० एक सौ एक की संख्या, १०१ ।

अकोप–पु० [सं०] कोपका अभाव; राजा दशरथका एक मंत्री ।

अकोर*–पु० दे० 'अँकोर' ।

अकोरी*–स्त्री० अँकवार, गोद ।

अकोविद–वि० [सं०] अपंडित, मूर्ख, अनाड़ी ।

अकोसना*–स० क्रि० कोसना, बुरा-भला कहना ।

अकौआ–पु० मदार, आक; ललरी, घंटी ।

अकौता–पु० दे० 'उकवत' ।

अकौशल–पु० [सं०] कुशलताका अभाव, अदक्षता ।

अक्का–स्त्री० [सं०] माता, जननी ।

अक्कास–पु० [अ०] अक्स उतारनेवाला, फोटोग्राफर ।

अक्कासी–स्त्री० [अ०] फोटो खींचनेका काम ।

अक्खड़–वि० उजड्ड, अशिष्ट, उद्धत; लड़ाका; दो-टूक कहनेवाला, निडर; झगड़ालू; जड, मूर्ख ।

अक्खर*–पु० दे० 'अक्षर' ।

अक्खा–पु० गोन, खुरजी ।

अक्त–वि० [सं०] अंजन लगा हुआ, लिप्त, लिपा हुआ; व्याप्त; युक्त; व्यक्त; (समासांतमें–जैसे तैलाक्त) ।

अक्टूबर–पु० ईसवी सालका दसवाँ महीना ।

अक्रम–वि० [सं०] क्रमरहित, अव्यवस्थित, बेसिलसिला; गतिहीन, आगे बढ़नेमें असमर्थ । पु० क्रमका अभाव, बेतरतीबी, अव्यवस्था; गतिहीनता ।

अक्रमातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकारका एक भेद, जहाँ कार्य और कारणका एक साथ ही होना दिखलाया जाय ।

अक्रिय–वि० [सं०] निष्क्रिय, काहिल, जो कुछ न करे; कर्मशून्य (परमात्मा); निकम्मा ।

अक्रिया–स्त्री० [सं०] निष्क्रियता; कर्तव्य न करना; दुष्कर्म ।

अक्रूर–वि० [सं०] दयालु, कोमल-चित्त । पु० एक यादव

जो कृष्णके चाचा और भक्त थे।

अक्रोध–पु० [सं०] क्रोधका अभाव; क्रोधका नियंत्रण। वि० क्रोधरहित।

अक़्ल–स्त्री० [अ०] बुद्धि, समझ। **–मंद**–वि० चतुर, बुद्धिमान्। **–मंदी**–स्त्री० चतुराई। **–(क़्ले) इंसानी**–स्त्री० मानव-बुद्धि। **–(क़्ले) हैवानी**–स्त्री० पशुबुद्धि। **मु०–आना**–समझ होना। **–का कसूर होना**–अक़्लकी कमी होना, बुद्धिका दोष। **–का काम न करना**–कुछ समझमें न आना। **–का चक्करमें आना**–हैरान होना, चकित होना। **–का चरने जाना**–समझ जाती रहना। **–का चिराग गुल होना**–अक़्ल जाती रहना। **–का दुश्मन**–मूर्ख। **–का पुतला**–बहुत बुद्धिमान्। **–का पूरा**–मूर्ख, बुद्धू (व्यंग्य)। **–का मारा**–मूर्ख। **–की पुड़िया**–बुद्धिमती। **–के घोड़े दौड़ाना**–तरह-तरहकी कल्पना करना। **–के तोते उड़ जाना**–होश ठिकाने न रहना। **–के पीछे लट्ठ लिये फिरना**–नासमझीके काम करना। **–खर्च करना**–सोचना-समझना, समझको काममें लाना। **–गुम होना**–अक़्ल मारी जाना, अक़्लका काम न करना। **–जाती रहना**–घबड़ा जाना। **–ठिकाने होना**–होशमें आना। **–देना**–समझाना-बुझाना। **–दौड़ाना, –भिड़ाना, –लड़ाना**–सोचना, गौर करना। **–पर पत्थर पड़ना, –पर्दा पड़ना**–अक़्ल जाती रहना। **–मंदकी दुम**–मूर्ख (व्यंग्य)। **–मारी जाना**–हतबुद्धि होना। **–सठियाना**–बुद्धि भ्रष्ट होना। **–से दूर, –बाहर होना**–समझमें न आना।

अक्लांत–वि० जो थका न हो, क्लांतिरहित।

अक्लिष्ट–वि० [सं०] क्लेशरहित, अक्लांत; जो अशांत न हो; अनुद्विग्न; जो क्लिष्ट न हो, सरल।

अक़्ली–वि० [अ०] बुद्धि-संबंधी, अक़्लमें आनेवाली (बात); बुद्धिकृत। **मु०–गद्दा लगाना**–अटकलबाजी करना।

अक्लेद्य–वि०[सं०] जो भिगाया या गीला न किया जा सके।

अक्लेश–पु० [सं०] क्लेशहीनता। वि० क्लेशरहित।

अक्षंतव्य–वि० [सं०] अक्षम्य।

अक्ष–पु० [सं०] खेलनेका पासा; पासोंका खेल; चौसर; पहिया, चक्र; पहियेका धुरा; धरतीकी धुरी; गाड़ी; भूमध्य-रेखाके उत्तर या दक्षिण किसी स्थानका गोलीय अंतर; रुद्राक्ष; सर्प; सोलह माशेकी एक तौल, कर्ष; एक पैमाना; तराजूकी डाँड़ी; अक्षकुमार। **–कर्ण**–पु० समकोण त्रिभुजकी सबसे लंबी भुजा। **–काम**–वि० द्यूतप्रिय। **–कुमार**–पु० रावणका एक पुत्र। **–कुशल, –कोविद, –शौंड**–वि० जुआ खेलनेमें चतुर। **–क्रीड़ा**–स्त्री० पासोंका खेल; जुआ। **–द्यूत**–पु० जुआ। **–धर**–वि० धुरेको धारण करनेवाला। पु० विष्णु; पहिया। **–धूर्त**–वि० जुआ खेलनेमें कुशल। **–बंध**–पु० दृष्टि बाँध देनेकी विद्या, नजरबंदी। **–माला**–स्त्री० रुद्राक्षकी माला; वर्णमाला। **–माली (लिन्)**–पु० रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाला; शिवका एक नाम। **–रेखा**–स्त्री० धुरीकी रेखा। **–विद्**–वि० द्यूतज्ञ। **–विद्या**–स्त्री० द्यतविद्या; जुआ। **–हीन**–वि० अंधा।

अक्षणिक–वि० [सं०] स्थिर, दृढ़; जो क्षणिक न हो!

अक्षत–वि० [सं०] अखंडित, समूचा; क्षतहीन, जिसे चोट न आयी हो। पु० शिव; अखंडित चावल; लावा; जौ; धान्य; हानिका अभाव, कल्याण; हिजड़ा। **–योनि**–वि० जिसका कौमार्य भंग न हुआ हो। स्त्री० ऐसी कन्या (विवाहित या अविवाहित)।

अक्षता–स्त्री० [सं०] कुमारी; अक्षतयोनि; कर्कटशृंगी।

अक्षत्र–वि० [सं०] क्षत्रियोंसे रहित।

अक्षम–वि० [सं०] क्षमा-रहित; असहिष्णु; ईर्ष्या करने-वाला; क्षमता-रहित; असमर्थ।

अक्षमा–स्त्री० [सं०] अधीरता; क्रोध; ईर्ष्या; असमर्थता।

अक्षम्य–वि० [सं०] क्षमा न करने योग्य।

अक्षय–वि० [सं०] क्षयरहित, अविनाशी; निर्धन। पु० परमात्मा। **–तृतीया**–स्त्री० वैशाख शुक्ला तृतीया। **–धाम**–पु० वैकुंठ; मोक्ष। **–नवमी**–स्त्री० कार्त्तिक शुक्ला नवमी। **–पद**–पु० मोक्ष। **–वट, –वृक्ष**–पु० प्रयाग और गयाके वटवृक्ष विशेष। (इनका प्रलयमें भी नाश न होना माना जाता है।)

अक्षयी (यिन्)–वि० [सं०] जिसका नाश न हो।

अक्षय्य–वि० [सं०] क्षय न होने योग्य; कभी न चुकनेवाला।

अक्षर–वि० [सं०] अविनाशी, अपरिवर्तनशील, अच्युत, नित्य, अक्षय। पु० वर्ण, हर्फ; स्वर; शब्द; ब्रह्म; आत्मा; शिव; विष्णु; खड्ग; आकाश; मोक्ष; तपस्या; जल; अपामार्ग। **–जीवक, –जीवी (विन)**–पु० लिखनेका पेशा करनेवाला, लेखक। **–ज्ञान**–पु० लिख-पढ़ लेनेकी योग्यता, साक्षरता। **–तूलिका**–स्त्री० लेखनी। **–न्यास**–पु० लिखावट; तंत्रकी एक क्रिया। **–माला**–स्त्री० वर्णमाला। **–वर्जित, –शत्रु**–वि० अपढ़, निरक्षर। **–विन्यास**–पु० वर्णविन्यास, हिज्जे; लिपि। अ० **अक्षरशः**–एक-एक अक्षर, हर्फ-बहर्फ, सोलहों आने, पूर्णतया।

अक्षरारंभ–पु०[सं०] पहले-पहल अक्षरोंका ज्ञान कराना।

अक्षरार्थ–पु० [सं०] शब्दार्थ; संकुचित अर्थ।

अक्षरी–स्त्री० [सं०] वर्षाऋतु। [हि०] अक्षर-क्रम, हिज्जे, वर्त्तनी।

अक्षरौटी–स्त्री० वर्णमाला; लिपिका ढंग; सितारपर बोल निकालनेकी क्रिया।

अक्षांश–पु० [सं०] भूमध्यरेखासे उत्तर या दक्षिणका अंतर।

अक्षार–वि० [सं०] क्षाररहित। पु० प्राकृतिक लवण। **–लवण**–पु० प्राकृतिक लवण, वह नमक जिसमें खार न हो; विना नमकका हविष्यान्न।

अक्षि–स्त्री० [सं०] आँख; दोकी संख्या। **–कंप**–पु० पलक मारना। **–कूट, –कूटक**–पु० आँखकी पुतली, नेत्रगोलक। **–गत**–वि० दृष्ट, देखा हुआ; विद्यमान; द्वेष्य। **–गोलक**–पु० आँखका ढेंढर। **–तारक**–पु०, **–तारा** स्त्री० आँखकी पुतली। **–निमेष**–पु० पल, क्षण। **–पक्ष्म (न्)**–पु० बरौनी। **–पटल**–पु० आँखका परदा, आँखके गोलकके पीछेकी झिल्ली। **–लोम (न्)**–पु० बरौनी। **–विकूणित,**

विकूशित—पु० कटाक्ष, तिरछी चितवन। **—विक्षेप**—पु० कटाक्ष।

अक्षुण्ण—वि०[सं०] अखंडित, अभग्न; अन्यून; अपराजित।

अक्षुद्र—वि० [सं०] जो नीच, छोटा या तुच्छ न हो।

अक्षुब्ध—वि० [सं०] क्षोभरहित।

अक्षेत्र—वि०[सं०] क्षेत्ररहित; चासके अयोग्य, परती। पु० बुरी जमीन; ज्यामितिका अशुद्ध चित्र; मंदबुद्धि छात्र।

अक्षोट—पु० [सं०] पर्वतीय पीलु वृक्ष, अखरोटका पेड़।

अक्षोनि*—स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।

अक्षोभ—पु० [सं०] क्षोभका अभाव, शांति; हाथी बाँधनेका खूँटा। वि० शांत, धीर; जो क्षुब्ध या घबड़ाया न हो।

अक्षोभ्य—वि० [सं०] धीर, गंभीर, अशांत न होनेवाला।

अक्षौहिणी—स्त्री० [सं०] चतुरंगिणी सेनाका एक परिमाण या विभाग (१,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और इतने ही हाथी)।

अक्स—पु० [अ०] परछाईं, छाया, चित्र; फोटो। **—मु० उतारना**—हूबहू नकशा बनाना; फोटो खींचना। **—लेना**—किसी तसवीरपर बारीक कागज रखकर खाका लेना।

अक्सर—अ० दे० 'अकसर'; प्रायः; बहुधा; एकाकी।

अक्सी—वि० छाया-संबंधी; अक्सके जरिये लिया जानेवाआ (चित्र आदि); फोटोग्राफ संबंधी। **—तसवीर**—स्त्री० फोटो, छायाचित्र।

अखंग*—वि० न चुकनेवाला।

अखंड—वि० [सं०] संपूर्ण; अविकल; अटूट, बाधारहित, जिसका सिलसिला न टूटे। **—सौभाग्य**—पु० स्त्रीका आमरण सौभाग्यवती रहना।

अखंडन—वि० [सं०] अखंडित; अखंडनीय; समूचा। पु० परमात्मा; काल; स्वीकार; खंडन न करना।

अखंडनीय—वि० [सं०] जिसका खंडन न किया जा सके; सुदृढ़; अविभाज्य।

अखंडल*—वि० अखंड, संपूर्ण। पु० आखंडल, इंद्र।

अखंडित—वि० [सं०] अखंड, अटूट, अबाधित; जिसका खंडन न हुआ हो।

अखज*—वि० अखाद्य।

अखड़ैत—पु० पहलवान, मल्ल।

अखतीं—स्त्री० दे० 'अखतीज'।

अखतीज*—स्त्री० अक्षय तृतीया।

अखनी—स्त्री० यखनी, शोरवा।

अख़बार—पु० [अ०] समाचार (खबरका बहुवचन), समाचारपत्र। **—नवीस**—पु० अखबार लिखनेवाला, पत्रकार। **—नवीसी**—स्त्री० पत्रकारी।

अख़बारी—वि० [अ०] समाचारपत्र-संबंधी।

अखय*—वि० दे० 'अक्षय'।

अखर*—पु० दे० 'अक्षर'।

अखरना—अ० क्रि० खलना, बुरा लगना; कठिन या कष्टप्रद जान पड़ना।

अखरा—पु० बिना कुटे जौका आटा; *अक्षर। *वि० जो खरा न हो।

अखरावट,-(टी)—स्त्री० वर्णमाला; अक्षरक्रमके अनुसार आरंभ होनेवाला पद्यसमूह।

अख़रोट—पु० एक प्रसिद्ध मेवा और उसका पेड़, अक्षोट।

अखर्व(र्व्व)—वि० [सं०] जो छोटा न हो; बड़ा; लंबा।

अख़लाक़—पु० [अ०] शिष्टता, सौजन्यः सदाचार।

अखाड़ा—पु० कुश्ती लड़ने या कसरत करनेका स्थान, व्यायामशाला; सांप्रदायिक साधुओंकी मंडली; साधुओंके रहनेका स्थान, मठ; करतब दिखाने या गाने-बजानेवालोंकी जमात; सभा, दरबार; अड्डा, जमघट; आंगन; (इंदरका अखाड़ा) नृत्यशाला, रंगशाला। **मु०—गरम होना**—ज्यादा भीड़ होना। **—जमना**—खेलवाड़ियोंका अखाड़ेमें जमा होना और दर्शकोंकी भीड़ लगना; किसी जगह बहुतसे आदमियोंका जमा होना। **—(ड़े) का जवान**—कसरती बदनका आदमी। **—(ड़े) में आना**—मुकाबलेमें खड़ा होना।

अखाड़िया—वि० दंगली (पहलवान)।

अखात—पु० [सं०] प्राकृतिक झील, ताल; उपसागर (बे), खाड़ी।

अखाद्य—वि० [सं०] न खाने योग्य, अभक्ष्य।

अखारा*—पु० दे० 'अखाड़ा'।

अखिन्न—वि०[सं०] खेदरहित; क्लेशरहित; अक्लांत; प्रसन्न।

अखिल—वि० [सं०] संपूर्ण, सारा।

अखिलात्मा (त्मन)—पु० [सं०] विश्वात्मा।

अखिलेश—पु० [सं०] सबका स्वामी, परमेश्वर।

अखीन*—वि० अक्षीण, न छीजनेवाला; अविनाशी।

अख़ीर—पु० [अ०] अंत, समाप्ति।

अख़ीरी—वि० [अ०] अखीरका, अंतिम।

अखूट—वि० अखंड, जो घटे नहीं, अक्षय; अत्यधिक।

अखेट*—पु० दे० 'आखेट'।

अखेटक*—पु० दे० 'आखेटक'।

अखेटिक—पु० [सं०] वृक्ष; वह कुत्ता जिसे शिकारका पीछा करना सिखलाया गया हो।

अखेद—पु० [सं०] दुःख या खेदका अभाव, प्रसन्नता। वि० प्रसन्न, दुःखरहित। अ० प्रसन्नतापूर्वक।

अखेलत*—वि० जो खेलता न हो; अचंचल; आलस्ययुक्त।

अखै*—वि० दे० 'अक्षय'।

अखैबट,-बर,-वट,-वर—पु० अक्षयवट।

अखोर—वि० निकम्मा, तुच्छ; * अच्छा, भद्र, सुंदर, निर्दोष। पु० निकम्मी चीज, कूड़ा-करकट; खराब घास।

अखोह—पु० ऊबड़-खाबड़ जमीन।

अखौट(टा)—पु० जाँते या चक्कीकी किल्ली; गड़ारीका डंडा।

अख़्ख़ाह—अ० [अ०] आश्चर्य-सूचक उद्गार (किसीके अनपेक्षित आगमन, मिलन या कार्यपर बोलते हैं); बहुत खूब।

अख्तियार—पु० दे० 'इख्तियार'।

अख्यात—वि० [सं०] अप्रसिद्ध, अप्रतिष्ठित, अविदित।

अख्यान*—पु० दे० 'आख्यान'।

अख्यायिका*—स्त्री० दे० 'आख्यायिका'।

अगंड—पु० बिना हाथ-पैरका धड़।

अग—वि० [सं०] चलनेमें असमर्थ, स्थावर; टेढ़ा चलनेवाला; अगम्य; *अज्ञ, अजान। पु० पहाड़; पेड़; साँप; सूर्य; घड़ा; सातकी संख्या। **—ज**—वि० पहाड़ या वृक्षसे

पैदा होनेवाला; पहाड़-पहाड़ घूमनेवाला; जंगली। पु० हाथी। **–जग**–पु० चराचर। **–जा**–स्त्री० पार्वती

अगटना†–अ० क्रि० एकत्र होना।

अगड़*–स्त्री० अकड़, ऐंठ।

अगड़धत्त(त्ता)–वि० लंबा-तगड़ा; ऊँचा; बढ़ा-चढ़ा।

अगड़बगड़–वि० ऊलजलूल, बेसिरपैरका। पु० अंडबंड बात या काम।

अगड़म-बगड़म–पु० तरह-तरहकी चीजों या काठ-कबाड़-का बेतरतीब ढेर।

अगण–पु० [सं०] पिंगलके चार गण–जगण, तगण, रगण, सगण–जो छंदके आदिमें अशुभ माने जाते हैं।

अगणनीय–वि० [सं०] दे० 'अगण्य'।

अगणित–वि० [सं०] अनगिनत, बेहिसाब।

अगण्य–वि० [सं०] असंख्य; तुच्छ, उपेक्षणीय।

अगत*–स्त्री० दे० 'अगति'।

अगति–स्त्री० [सं०] गतिका अभाव; पहुँचका न होना; बुरी गति, असद्गति; गति अर्थात् मोक्षकी अप्राप्ति।

अगतिक–वि० [सं०] निरुपाय; निराश्रय। **–गति**–स्त्री० आश्रयहीनका आश्रय, अंतिम आश्रय (ईश्वर)।

अगत्या–अ० [सं०] अंतमें; सहसा; लाचार होकर।

अगद–वि० [सं०] नीरोग, स्वस्थ; न बोलनेवाला। पु० औषध; स्वास्थ्य, आरोग्य।

अगदित–वि० [सं०] अकथित, जो कहा न गया हो।

अगन†–स्त्री० अग्नि। पु० दुष्ट गण (पिंगल)। वि० अगण, बेशुमार।

अगनत, अगनित*–वि० दे० 'अगणित'।

अगनिउ*–पु० अग्निकोण, दक्षिण-पूर्वका कोना।

अगनी*–वि० अगणित। स्त्री० अग्नि।

अगनू*–स्त्री० आग्नेय कोण।

अगनेउ (त)*–पु० अग्निकोण।

अगम–वि० [सं०] न चलनेवाला, अगंता; सुदृढ़। पु० वृक्ष; पहाड़। *वि० दे० 'अगम्य'। पु० दे० 'आगम'।

अगमन–पु० [सं०] गमनका अभाव, न जाना। * अ० आगेसे; पहले।

अगमनीया–वि० स्त्री० [सं०] दे० 'अगम्या'।

अगमानी*–पु० अगुआ, नायक। स्त्री० अगवानी।

अगमासी–स्त्री० दे० 'अगवाँसी'।

अगम्य–वि० [सं०] दुर्गम; पहुँचके बाहर, अप्राप्य; मन, बुद्धिके परे; कठिन; अपार; अथाह।

अगम्या–वि० स्त्री० [सं०] न गमन करने योग्य (स्त्री)। स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ संभोग निषिद्ध हो; अंत्यजा। **–गमन**–पु० अगम्या स्त्रीसे सहवास (एक महापातक)।

अगर–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीमें सुगंध होती है और धूप, दसांगमें पड़ती है; ऊद।

अगर–अ० [फा०] यदि, जो। **–चे**–यद्यपि। **मु०–मगर करना**–तर्क करना; आगा-पीछा करना।

अगरई–वि० कालापन लिये हुए सुनहले रंगका।

अगरना*–अ० क्रि० आगे जाना या बढ़ना।

अगर-बगर*–अ० दे० 'अगल-बगल'।

अगरा*–दे० 'अगरो'।

अगराना*–स० क्रि० मन बढ़ाना; लाड़-प्यारके कारण धृष्ट बनाना। अ० क्रि० प्यार आदिके कारण धृष्टतापूर्वक व्यवहार करना।

अगरी–स्त्री० [सं०] एक विषनाशक द्रव्य; देवताड़ वृक्ष। [हि०] ब्योंडा; फूसकी छाजनका एक ढंग; * बुरी बात।

अगरु–पु० [सं०] अगरका पेड़ या लकड़ी।

अगरे†–अ० सामने, आगे।

अगरो*–वि० अगला; श्रेष्ठ; अधिक; निपुण।

अगर्व–वि० [सं०] गर्व या अभिमानसे रहित।

अगर्हित–वि० [सं०] जो बुरा न हो, अनिंद्य।

अगल-बगल–अ० इधर-उधर; आस-पास।

अगला–वि० आगेका; बीते समयका, पुराना; आनेवाला; बादका। पु० अगुआ; चतुर, चालाक आदमी; पूर्वज।

अगवना*–स० क्रि० सहना, अंगेजना। अ० क्रि० अग्रसर होना।

अगवाँसी–स्त्री० हलकी वह लकड़ी जिसमें फाल लगता है।

अगवाई–स्त्री० अगवानी। पु० अगुआ।

अगवाड़ा–पु० घरके आगेका भाग या भूमि; 'पिछवाड़ा' का उलटा।

अगवान–पु० अगवानी करनेवाला; अगवानी।

अगवानी–स्त्री० आगे बढ़कर लेना या स्वागत करना, बरातके स्वागतार्थ कन्यापक्षका आगे जाना। *पु० अगुआ।

अगवार†–पु० वह अन्न जो गाँवके पुरोहित, फकीर आदिको देनेके लिए खलिहानमें राशिसे अलग कर दिया जाता है; ओसाते समय भूसेके साथ उड़नेवाला हलका अन्न; गाँवका चमार; दे० 'अगवाड़ा'।

अगसार(री)–*अ० आगे।

अगस्त–पु० ईसवी सालका आठवाँ महीना; दे० 'अगस्त्य'।

अगस्ति, अगस्त्य–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि (पुराणोंमें इनके समुद्रको चुल्लूमें भरकर पी जानेकी बात लिखी है); एक तारा; एक पेड़।

अगह*–वि० अग्राह्य; पकड़में न आने लायक; चंचल; ग्रहणके अयोग्य; दुस्साध्य; वर्णन या चिंतनके बाहर।

अगहन–पु० अग्रहायण या मार्गशीर्ष मास।

अगहनिया–वि० अगहनमें होनेवाला (धान)।

अगहनी–वि० अगहनमें तैयार होनेवाला। स्त्री० अगहनमें तैयार होनेवाली फसल।

अगहर*–अ० आगे, पहले।

अगहुँड़*–अ० आगे; आगेकी ओर। वि० आगे चलनेवाला।

अगाउनी*–अ० अगौनी, आगे।

अगाऊँ(ऊ)–वि० पेशगी, आगेका। अ० आगेसे, पहलेसे।

अगाड़–पु० हुक्केकी निगाली; ढेंकलीके छोरपर लगी पतली लकड़ी।

अगाड़ा†–पु० पहले भेजा जानेवाला यात्राका सामान।

अगाड़ी–अ० आगे; पहले; सामने; भविष्यमें। स्त्री० किसी वस्तुका आगेका हिस्सा; घोड़ेकी गरदनमें बँधी रस्सियाँ; अँगरखे या कुरतेका सामनेका भाग।

अगात्मजा–स्त्री० [सं०] पार्वती।

अगाध–वि० [सं०] अथाह; अपार; अधिक; दुर्बोध ।

अगान*–वि० अज्ञानी, नासमझ । पु० अज्ञान, नासमझी ।

अगामै*–अ० आगे ।

अगार–पु० [सं०] दे० 'आगार' । अ० आगे ।

अगाव–पु० ईखके ऊपरका नीरस भाग ।

अगास*–पु० दे० 'आकाश'; द्वारके सामनेका चबूतरा ।

अगाह*–वि० अथाह; अत्यधिक; उदास, चिंतित; दे० 'आगाह' । अ० आगेसे, पहलेसे ।

अगिदधा*–वि० अग्निदग्ध, आगसे जला हुआ ।

अगिदाह*–पु० दे० 'अग्निदाह' ।

अगिन–स्त्री० आग; एक छोटी चिड़िया; एक घास; ऊखका ऊपरका हिस्सा । वि० बहुत अधिक; अगणित । **–गोला**–पु० एक तरहका बम जिसके फटने पर आग लग जाय । **–बाव**–पु० चौपायों, विशेषकर घोड़ोंको होनेवाला एक रोग । **–बोट**–पु० स्टीमर, धुआँकश ।

अगिनत, अगिनित–वि० दे० 'अगणित' ।

अगिया–स्त्री० अगिन घास । पु० एक पौधा; घोड़ों-बैलोंका एक रोग; एक रोग जिसमें पैरमें छाले पड़ जाते हैं । **–बैताल**–पु० विक्रमादित्यको सिद्ध दो बैतालोंमेंसे एक; मुँहसे आग उगलनेवाला प्रेत; दलदल आदिसे निकलनेवाली गैस जो आगके समान जलती दिखाई देती है ।

अगियाना†–अ० क्रि० गरम होना; उत्तेजित होना । स० क्रि० बरतनको आगमें डालकर शुद्ध करना ।

अगियार–पु० पूजाके लिए जलायी जानेवाली आग । †वि० जिसकी आग अधिक समयतक रहे या अधिक तेज हो (लकड़ी, कोयला इ०) ।

अगियारी†–स्त्री० धूपकी तरह अग्निमें डालनेकी वस्तु ।

अगीठा–पु० सामनेका हिस्सा, अगवाड़ा ।

अगीत-पछीत*–पु० अगवाड़ा-पिछवाड़ा । अ० आगे-पीछे ।

अगुआ–पु० आगे चलनेवाला; मुखिया; पथप्रदर्शक; विवाह तय करानेवाला, बिचुआ; आगेका हिस्सा ।

अगुआई–स्त्री० नेतृत्व, मार्गप्रदर्शन; अगवानी ।

अगुआना–स० क्रि० अगुआ बनाना । अ० क्रि० आगे जाना ।

अगुआनी–स्त्री० आगे जाकर स्वागत करना ।

अगुण–वि० [सं०] निर्गुण; गुणरहित; अनाड़ी । पु० अवगुण, दोष । **–ज्ञ**–वि० जिसे गुणकी परख न हो, गँवार ।

अगुणी (णिन्)–वि० [सं०] गुणहीन ।

अगुरु–पु० [सं०] अगर या शीशमका पेड़ । वि० हलका; लघु (वर्ण); निगुरा; गुरुसे भिन्न ।

अगुवा–पु० दे० 'अगुआ' ।

अगुसरना*–अ० क्रि० आगे बढ़ना ।

अगुसारना*–स० क्रि० आगे बढ़ाना ।

अगूठना*–स० क्रि० अगोटना, घेर लेना ।

अगूठा†–पु० घेरा ।

अगूढ़–वि० [सं०] प्रकट; स्पष्ट; सहज । **–गंध**–पु०, **–गंधा**–स्त्री० हींग । **–भाव**–वि० जिसका भाव, अर्थ छिपा हुआ न हो; सरल-चित्त ।

अगूता*–अ० आगे; सामने ।

अगृह–वि० [सं०] गृहहीन, बेघरबारका । पु० वानप्रस्थ ।

अगेह–वि० [सं०] दे० 'अगृह' ।

अगोई*–वि० स्त्री० जो गुप्त न हो, प्रकट ।

अगोचर–वि० [सं०] जिसका ज्ञान इंद्रियोंसे न हो सके, इंद्रियातीत; अप्रकट । पु० वह जो इंद्रियातीत हो; ब्रह्म ।

अगोट*–पु० आड़, रोक; आश्रय, सहारा; सुरक्षित स्थान । वि० अकेला, गुटरहित; सुरक्षित ।

अगोटना*–स० क्रि० छेड़ना, घेरना; छिपा या रोक रखना, कैद करना; स्वीकार करना; चुनना । अ० क्रि० रुकना; फँसना, उलझना ।

अगोता*–अ० सम्मुख, आगे । पु० अगवानी ।

अगोरना†–स० क्रि० बाट जोहना;* रखवाली करना; रोकना ।

अगोरिया†–पु० खेत आदिकी रखवाली करनेवाला ।

अगौढ़†–पु० पेशगी दी जानेवाली रकम ।

अगौता*–अ० आगे । पु० अगवानी; पेशगी ।

अगौनी*–स्त्री० दे० 'अगवानी'; बरात आनेपर द्वार-पूजाके समय छोड़ी जानेवाली आतिशबाजी । अ० आगे ।

अगौरा–पु० दे० 'अगाव' ।

अगौहैं*–अ० आगे; आगेकी ओर ।

अग्नि–स्त्री० [सं०] आग; पंचमहाभूतोंमेंसे तेज तत्त्व; प्रकाश; उष्णता; गरमी; जठराग्नि; पित्त; अग्निकर्म, जलानेकी क्रिया; सोना; ३की संख्या; भिलावाँ; **–कण**–पु० चिनगारी । **–कर्म(न्)**–पु० अग्निहोत्र; होम; शव-दाह; गरम लोहेसे दागना; । **–कुंड**–पु० वेदी, हवनकुंड । **–कुमार**–पु० शिवके पुत्र कार्त्तिकेय; एक अग्निवर्धक रस । **–कुल**–पु० क्षत्रियोंका एक वंश जिसकी उत्पत्ति अग्निकुंडसे मानी जाती है—प्रमार, परिहार, चालुक्य या सोलंकी और चौहान । **–केतु**–पु० धुआँ; शिव । **–कोण**–पु०, **– दिक(श)**–स्त्री० पूरब और दक्खिन-का कोना । **–क्रिया**–स्त्री० शवका दाह; दागना । **–क्रीडा**–स्त्री० आतिशबाजी । **–गर्भ**–वि० जिसके भीतर आग हो या जिससे आग पैदा हो । पु० अरणि; सूर्यकांत मणि; आतिशी शीशा । **–ज, –जन्मा(न्मन्), –जात**–पु० सुवर्ण; कार्त्तिकेय; विष्णु । वि० अग्निसे उत्पन्न; **–जिह्वा**–स्त्री० आगकी लपट; अग्निकी जीभें जो ७ बतायी जाती हैं । **–जीवी(विन्)**–पु० अग्निके आधार-पर काम करनेवाले—जैसे सुनार, लुहार आदि । **–त्रय**–पु०, **–त्रेता**–स्त्री० यथाविधि स्थापित तीन प्रकारकी अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय और रक्षित) । **–दान**–पु० चिताको आग लगाना । **–दाह**–पु० जलाना; शव-दाह । **–दिव्य**–पु० अग्निपरीक्षा । **–दीपक**–वि० पाचनशक्ति बढ़ानेवाला । **–परीक्षा**–स्त्री० अग्नि द्वारा परीक्षा; जलती आग, खौलते तेल आदिके जरिये किसीके दोषी-निर्दोष होनेकी जाँच; सोना-चाँदी आदिको आगमें तपाकर परखना; कठिन परीक्षा । **–पर्वत**–पु० ज्वालामुखी पहाड़ । **–पूजक**–पु० आगकी पूजा करनेवाला; पारसी । **–प्रणयन**–पु० अग्निहोत्रकी अग्निका मंत्रपूर्वक संस्कार करना । **–प्रवेश**–पु० आगमें प्रवेश

स्त्रीका पतिकी चितामें प्रवेश। **-प्रस्तर**-पु० चकमक पत्थर। **-बाण**-पु० वह वाण जिससे आगकी लपट निकले। **-बीज**-पु० सोना; 'र्' अक्षर। **-मंथ, -मंथन**-पु० अरणीसे रगड़कर आग उत्पन्न करना; इस कार्यमें प्रयुक्त मंत्र; गनियारीका पेड़। **-मणि**-पु० सूर्यकांत मणि; आतशी शीशा। **-मांद्य**-पु० जठराग्निका मंद हो जाना, हाजमेकी खराबी। **-मान् (मत्)- -मुख**-पु० ब्राह्मण; देवता; प्रेत; अग्निहोत्री; चीतेका पेड़; भिलावाँ; एक अग्निवर्द्धक चूर्ण। **-लिंग**-पु० आगकी लपट देखकर शुभाशुभ फल बतानेकी विद्या। **-लोक**-पु० एक लोक जिसके अधिकारी अग्निदेव माने गये हैं। **-वंश**-पु० अग्निकुल। **-वधू**-स्त्री० स्वाहा। **-वर्द्धक,-वर्द्धन**-वि० पाचनशक्ति बढ़ानेवाला। **-वर्षा**-स्त्री० आगकी या तोपके गोलों, बमों आदिकी वर्षा। **-बिंदु**-पु० चिनगारी। **-वारक**-वि० (फायर प्रूफ) अग्निका प्रभाव रोकनेवाला; वह जो आगके संपर्कमें आनेपर भी न जले, सफलतापूर्वक उसके प्रभावका वारण कर सके। **-शामक दल**-पु० (फायर ब्रिगेड) किसी मकान आदिमें लगी हुई आग बुझानेका काम करनेके लिए संघटित प्रशिक्षित व्यक्तियोंका दल। **-शिखा**-स्त्री० आगकी ज्वाला या लपट; कलियारी पौधा। **-शुद्धि**-स्त्री० आगमें तपाकर शुद्ध करना; अग्निपरीक्षा। **-संस्कार**-पु० आग जलाना; तप्त करना; अग्नि द्वारा शुद्धि करना; मृतक-दाह; श्राद्धमें एक विधि। **-सखा,-सहाय**-पु० वायु; धुआँ; जंगली कबूतर। **-सेवन**-पु० आग तापना। **-होत्र**-पु० वैदिक मंत्रोंसे अग्निमें आहुति देना। **-होत्री(त्रिन्)**-पु० अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्न्यस्त्र-पु० [सं०] मंत्र-प्रेरित वाण जिससे आग निकले; अग्नि-चालित अस्त्र (बंदूक, तमंचा आदि)।

अग्न्याधान-पु० [सं०] वेदमंत्र द्वारा अग्निकी स्थापना; अग्निहोत्र।

अग्य*-वि० दे० 'अज्ञ'।

अग्या*-स्त्री० दे० 'आज्ञा'।

अग्यारी-स्त्री० आगमें गुड़, दशांग आदि डालना; अग्यारी करनेका पात्र।

अग्र-वि० [सं०] अगला; पहला; मुख्य; अधिक। अ०-आगे। पु० अगला भाग, नोक; शिखर। **-गण्य**-वि० गणनामें पहले आनेवाला, मुख्य। **-गामी(मिन्)**-वि० आगे चलनेवाला। पु० नायक, अगुआ। **-गामी दल**-पु० (फारवर्ड ब्लाक) भारतका एक राजनीतिक दल जिसकी संस्थापना नेताजी सुभाषचंद्र बसुने की थी। **-ज**-वि० पहले जनमा हुआ; * श्रेष्ठ। पु० बड़ा भाई; ब्राह्मण; *अगुआ। **-जन्मा (न्मन्)**-पु० बड़ा भाई; ब्राह्मण। **-जा**-स्त्री० बड़ी बहन। **-णी**-वि० आगे चलनेवाला; श्रेष्ठ। पु० नेता; अगुआ; एक अग्नि। **-तर**-वि० (फरदर) और आगेका, कहे हुएके बादका। **-दूत**-पु० पहलेसे पहुँचकर किसीके आनेकी सूचना देनेवाला। **-भाग**-पु० श्रेष्ठ या अगला भाग; सिरा, नोक; श्राद्ध आदिमें पहले दी जानेवाली वस्तु। **-लेख**-पु० समाचारपत्रका मुख्य (संपादकीय) लेख, 'लीडिंग आर्टिकिल'। **-वर्ती(र्तिन्)**-वि० आगे रहनेवाला। **-सर**-वि०, पु० आगे जानेवाला, अग्रगामी, प्रधान, अगुआ। **-सारण**-पु० आगेकी तरफ बढ़ाना; किसीका आवेदन पत्रादि अपनेसे बड़े अधिकारीके पास स्वीकृति, आदेश आदिके लिए भेजना। **-सारित**-वि० (फारवर्डेड) (आवेदन पत्रादि) जो आगे (ऊँचे अधिकारीके पास) भेज दिया गया हो, जो आगे बढ़ा दिया गया हो। **-सोची**-वि० [हि०] आगेकी बात सोचनेवाला, दूरदर्शी।

अग्रजाधिकार-पु० (प्राइमोजेनीचर) अपने पिताका राज्य, सम्पत्ति आदि वरासतमें पानेका ज्येष्ठ पुत्रका अधिकार।

अग्राशन-पु० [सं०] भोजनका वह अंश जो देवता, गौ आदिके लिए पहले निकाल दिया जाय।

अग्रासन-पु० [सं०] सम्मानका आसन या स्थान।

अग्राह्य-वि० [सं०] ग्रहणके अयोग्य; त्याज्य; अमान्य। **-व्यक्ति**-पु० (परसोना नान्-ग्रेटा) (किसी देशका) वह राजदूत, राजपुरुष या अन्य व्यक्ति जो (अन्य देशके) उच्चाधिकारियों आदिको अग्राह्य या अमान्य जान पड़े।

अग्रिम-वि० [सं०] पहला, अगला; [हि०] श्रेष्ठ, उत्तम; पेशगी; आगामी; सबसे बड़ा। **-देय**-पु० (इम्प्रेस्ट मनी) किसी कार्य-विशेषमें खर्च करनेके लिए पहलेसे दिया गया धन, जिसका हिसाब बादमें किया जाय। **-धन**-पु० (एडवांस) किसीके वेतन, कार्यके पारिश्रमिक, वस्तुके मूल्यादिका वह अंश जो उसे नियत तिथिसे पहले ही या वस्तु प्राप्त होनेके पूर्व ही दे दिया जाय।

अग्रेमूल्य-पु० (फारवर्ड प्राइस) आगे मिलने या लगाया जानेवाला मूल्य; बादमें बेची जानेवाली वस्तुका अभीसे लगाया जानेवाला मूल्य।

अग्रेसर-वि०, पु० [सं०] आगे जानेवाला; अगुआ।

अग्रेसरिक-पु० [सं०] नेता; मालिकके आगे जानेवाला नौकर।

अघ-पु० [सं०] पाप; दुष्कर्म; दुःख; विपत्ति; अशौच।

अघट-वि० [सं०] न होने योग्य, कठिन; *बेमेल, अयोग्य। वि० [हि०] जो घटे नहीं; जो एकसा बना रहे।

अघटित-वि० [सं०] जो हुआ न हो; न होनेवाला, असंभव; अयोग्य, अनुचित; * अवश्यंभावी; * न घटनेवाला। **-घटनापटीयसी**-वि० (स्त्री०) जो कुछ नहीं हुआ है उसे करनेमें कुशल (माया)।

अघट्ट*-वि० दे० 'अघट'।

अघाउ*-पु० तृप्ति, संतोष।

अघात-पु० [सं०] घात या क्षतिका अभाव; * आघात, प्रहार, चोट। वि० पेटभर; ज्यादा, बहुत।

अघाना-अ० क्रि० अफरना, तृप्त होना, छकना; किसी वस्तुके सेवन या उपभोगसे जी भरना; * प्रसन्न होना।

अघारि-पु० [सं०] पापका नाश करनेवाला; अघ नामक दैत्यके मारनेवाले, कृष्ण।

अघासुर-पु० [सं०] कृष्णके समयका एक दैत्य (यह पूतनाका छोटा भाई और कंसका सेनापति था)।

अघी(घिन्)-वि० [सं०] पापी।

अघेरन†-पु० जौका मोटा आटा।

अघोड़ी-वि० पु० 'अघोरी'।

अघोर–पु० [सं०] शिवका एक रूप; एक शिवोपासक पंथ। वि० जो घोर या भयानक न हो, सौम्य। **–नाथ** –पु० शिव। **–पंथ**–पु० [हि०] अघोरियोंका पंथ वा संप्रदाय। **–पंथी**–पु० [हि०] अघोर मतका अनुयायी।

अघोरी (ड़ी)–पु० अघोरपंथी, औघड़; घिनौनी चीजें खाने-पीनेवाला। वि० घृणित; गंदा।

अघोष–वि० [सं०] बिना शब्दका; अल्प ध्वनिवाला; ग्वालोंसे रहित। पु० एक वर्ण-समूह (प्रत्येक वर्गके प्रथम दो अक्षर तथा श, ष, स)।

अघौघ–पु० [सं०] पापसमूह।

अघ्रान*–पु० दे० 'अघ्राण'।

अघ्रानना*–स० क्रि० गंध लेना, सूँघना।

अचंचल–वि० [सं०] जो चंचल न हो, स्थिर; धीर।

अचंभव, अचंभो,-भौ*–पु० अचंभा, आश्चर्य।

अचंभा–पु० आश्चर्य, विस्मय; आश्चर्यजनक बात।

अचंभित*–वि० चकित, विस्मित।

अचक–वि० भरपूर, न चुकनेवाला। *स्त्री० भौचक्कापन।

अचकचाना–अ० क्रि० भौंचक्का होना, विस्मित होना, चौंक उठना।

अचकन–पु० लंबा कलीदार अंगरखा जिसमें पहले गरेबाँसे कमरपट्टीतक अर्धचंद्राकार बंद लगते थे और अब सीधे बटन टँकते हैं।

अचकाँ*–अ० अचानक।

अचक्का†–पु० अनजान। **–(क्के) में**–अचानक, धोखेमें।

अचगरा*–वि० उत्पाती, नटखट, शरारती।

अचगरी*–स्त्री० नटखटी, शरारत।

अचना*–स० क्रि० दे० 'अचवना'।

अचपल–वि० [सं०] अचंचल, धीर, स्थिर; * वि० चंचल, शोख।

अचपली*–स्त्री० छेड़छाड़, क्रीडा।

अचभौन*–पु० अचरजकी बात; दे० 'अचंभा'।

अचमन*–पु० दे० 'आचमन'।

अचर–वि० [सं०] अचल, स्थावर। पु० स्थावर प्राणी या पदार्थ।

अचरज–पु० आश्चर्य, अचंभा।

अचरित–वि० [सं०] जिसपर कोई चला न हो; अव्यवहृत; अछूता। पु० गतिरोध।

अचल–वि० [सं०] गतिहीन, स्थिर; चिरस्थायी, अटल। पु० पहाड़; कील; ७की संख्या (७ कुल पर्वतोंपरसे); **–कन्यका,–दुहिता,–सुता**–स्त्री० पार्वती। **–पति,–राज**–पु० हिमालय। **–संपत्ति**–स्त्री० न हटायी जा सकनेवाली सम्पत्ति (घर, खेत इ०)।

अचला–स्त्री० [सं०] पृथ्वी। **–सप्तमी**–स्त्री० माघ शुक्ला सप्तमी।

अचवन†–पु० दे० 'आचमन'।

अचवना†–स० क्रि० आचमन करना, पीना; छोड़ देना। अ० क्रि० भोजनोपरांत कुल्ली आदि करना।

अचवाई*–वि० प्रक्षालित, स्वच्छ।

अचवाना–स० क्रि० आचमन कराना।

अचाक, अचाका*–अ० अचानक।

अचान*–अ० अचानक, सहसा।

अचानक–अ० यकायक, जिसकी पहलेसे सूचना, प्रतीक्षा न हो; औचटमें।

अचार–पु० चिरौंजीका फल * दे० 'आचार'; † फल या तरकारीमें मिर्च-मसाले लगाकर कुछ दिनोंतक तेल या सिरकेमें रखनेसे बना चटपटा खाद्य।

अचारज*–पु० दे० 'आचार्य'।

अचारी†–वि०, पु० दे० 'आचारी'। स्त्री० आमोंकी फाँकोंको धूपमें सिझाकर बनाया हुआ अचार।

अचारु–वि० [सं०] असुंदर।

अचाह*–स्त्री० चाहका अभाव, अनिच्छा। वि० इच्छा-रहित, निष्काम।

अचाहा*–वि० जिसकी चाह न हो; जो प्रेमपात्र न हो; पु० वह व्यक्ति जिसपर प्रेम न हो या जो प्रेम न करे।

अचाही*–वि० इच्छारहित, निष्काम।

अचिंत*–वि० चिंता-रहित, बेफिक्र।

अचिंतनीय–वि० [सं०] जिसका चिंतन न हो सके; अज्ञेय; आकस्मिक, अप्रत्याशित।

अचिंतित–वि० [सं०] जो सोचा न गया हो; अतर्कित, आकस्मिक, अप्रत्याशित; उपेक्षित।

अचिंत्य–वि० [सं०] दे० 'अचिंतनीय'।

अचिकित्स्य–वि० [सं०] जो चिकित्साके योग्य न हो, असाध्य, लाइलाज (रोग) (इनक्योरबिल)।

अचिकीर्षु–वि० [सं०] जिसे (कोई काम) करनेकी इच्छा न हो, जो कुछ करना न चाहता हो, आलसी।

अचित्–वि० [सं०] अचेतन, जड। पु० जड जगत्।

अचिर–अ० [सं०] शीघ्र; हालमें; कुछ ही पहले। वि० क्षणस्थायी; हालका। **–द्युति,–प्रभा**–स्त्री० बिजली।

अचिरम्,–रात्,–अ०[सं०] शीघ्र, अविलंब; कुछ ही पहले।

अचीता–वि० अनसोचा, आकस्मिक; बहुत अधिक; निश्चित।

अचूक–वि० खाली न जानेवाला, अव्यर्थ; निश्चित, भ्रम-रहित।* अ० कौशलपूर्वक; सफाईसे; निश्चय-पूर्वक।

अचेत (स्)–वि० [सं०] संज्ञा-रहित, बेहोश; व्याकुल; नासमझ; जड।* पु० जड पदार्थ; जडता, माया।

अचेतन–वि० [सं०] चेतना-रहित; अज्ञान; निर्जीव; संज्ञा-रहित, बेसुध। पु० जड पदार्थ।

अचेतनक–पु० (अनीस्थेटिक) चेतनाहीन, बेहोश, बना देनेवाला पदार्थ (जैसे क्लोरोफार्म)।

अचेतनीकरण–पु० (एनीस्थेसिस) अचेतन या बेहोश कर दिया जाना, चेतना-हीन हो जाना।

अचैतन्य–वि० [सं०] चेतना-रहित, जड। पु० चेतनाका अभाव, अज्ञान; बेहोशी; जड पदार्थ।

अचैन*–वि० बेचैन। पु० बेचैनी।

अचोना*–पु० आचमनका पात्र।

अच्छ–वि० [सं०] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक; * अच्छा। पु० * आँख; रुद्राक्ष; रावणका पुत्र अक्षकुमार।

अच्छत–पु० दे० 'अक्षत'। वि० अखंडित; लगातार।

अच्छर†–पु० दे० 'अक्षर'।

अच्छरा(री)*–स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अच्छा–वि० भला, बढ़िया; ठीक, सुंदर; खरा; सकुशल;

चंगा, निरोग; सुधरता हुआ; स्वास्थ्यकर (जलवायु); संपन्न, प्रतिष्ठित; दाममें मुनासिब, सस्ता (?); जो बुरा न हो; कामचलाऊ। पु० श्रेष्ठ पुरुष, गुरुजन; बड़ा-बूढ़ा। अ० अच्छी तरह; स्वीकार सूचक उत्तर, हाँ; खैर (यह आश्चर्य भी प्रकट करता है–अच्छा, आप हैं!)।–**खासा**–वि० काफी अच्छा। –**बुरा**–वि० भला-बुरा। **मु०–आना**–ठीक वक्तपर आना (व्यंगमें इसका उलटा); सुंदर बनना।–**करना**–तंदुरुस्त करना; आफतसे बचाना; अच्छा काम करना।–**कहना**–तारीफ करना।–**लगना**–सुंदर लगना, पसंद आना, भला मालूम होना। –**(च्छी) कटना,–गुजरना,–बीतना**–आरामसे दिन बीतना।–**(च्छे)अच्छे**–बड़े आदमी।–**वक्त**–जरूरतके वक्त।–**से पाला पड़ना**–बड़े बेढब आदमीसे वास्ता पड़ना।

अच्छाई–स्त्री० भलाई, अच्छापन, खूबी।

अच्छापन–पु० उत्तमता, सुंदरता।

अच्छिन्न–वि० [सं०] जो कटा न हो, अखंडित।

अच्छोहिन, अच्छौहिनी–स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी।

अच्युत–वि० [सं०] जो अपने स्वरूप, सामर्थ्य, स्थानसे च्युत न हुआ हो; अचल, अस्खलित, निर्विकार; स्थिर; न चूनेवाला। पु० परमेश्वर, विष्णु; कृष्ण।

अच्युताग्रज–पु० [सं०] बलराम।

अच्युतात्मज–पु० [सं०] कामदेव; कृष्णका पुत्र।

अछक*–वि० जो छका न हो, अतृप्त।

अछकना*–अ० क्रि० न छकना, तृप्त न होना।

अछत*–अ० (क्र०) विद्यमानतामें, रहते हुए। वि०अविद्यमान, ('छतहूँ अछत समान'); सिवा; अलावा।

अछताना-पछताना–अ० क्रि० बार-बार पछताना या खेद करना।

अछन*–पु० बहुत दिन। अ० धीरे-धीरे।

अछना*–अ० क्रि० विद्यमान रहना।

अछप*–वि० न छिपने लायक, प्रकट।

अछय*–वि० दे० 'अक्षय'।

अछरा(री)–स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अछरौटी–स्त्री० वर्णमाला।

अछल–वि० [सं०] निश्छल, सीधा-सादा।

अछवाई*–स्त्री० सफाई।

अछवाना*–स० क्रि० साफ करना, सँवारना।

अछवानी–स्त्री० एक तरहका अवलेह जो प्रसूता स्त्रियोंको दिया जाता है।

अछाम*–वि० जो दुबला न हो, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट।

अछिद्र–वि० [सं०] छिद्ररहित; निर्दोष।

अछूत*–वि० दे० 'अछूता'; अस्पृश्य। पु० अछूत जातिका मनुष्य, अंत्यज, हरिजन।

अछूता–वि० जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट; जो काममें न लाया गया हो, कोरा, नया।

अछूतोद्धार–पु० अछूतोंका उद्धार या सुधार; इसका यत्न या आंदोलन।

अछेद*–वि० अभेद्य। पु० छल-छिद्रका अभाव; निष्कपटता; अभेद।

अछेद्य–वि० [सं०] जिसका छेदन या खंडन न हो सके, अविभाज्य; अविनश्वर।

अछेय*–वि० छिद्र-रहित, निर्दोष।

अछेह*–वि० लगातार, निरंतर; अत्यधिक।

अछोप*–वि० नंगा, तुच्छ, नीच; दीन।

अछोभ*–वि० क्षोभरहित; गंभीर, शांत; निर्भीक; मोहरहित; निडर; नीच।

अछोर*–वि० ओर-छोर-रहित।

अछोह–पु० स्नेह, ममता या क्षोभका अभाव; शांति; निर्दयता। वि० निर्दय, निष्ठुर; स्नेहरहित, क्षोभरहित।

अछोही–वि० दे० 'अछोह'।

अज–वि० [सं०] अजन्मा, अनादि कालसे विद्यमान। पु० ईश्वर; ब्रह्मा, विष्णु; शिव; जीवात्मा; दशरथके पिता; एक ऋषि; बकरा; भेंड़ा; कामदेव; चंद्रमा; मेष राशि।–**गर**–पु० अजदहा, एक विशाल सर्प जो बकरी, हिरन आदिको निगल जाता है; एक असुर।–**०वृत्ति**–स्त्री० निरुद्यम या भगवानके भरोसे रहनेकी वृत्ति।–**गरी**–वि० अजगरकी, बिना परिश्रमकी। स्त्री० अजगरी वृत्ति; एक पौधा।

अज़–अ० [फा०] से, साथ। –**खुद**–अ० खुद-बखुद, अपने आप।–**ग़ैब**–अ० गैबसे, परोक्षसे, अलक्षित स्थानसे। *पु० अदृष्ट स्थान। –**ग़ैबी**–वि० गैब, अलक्षित स्थानसे आनेवाला, आकस्मिक, आस्मानी (अज़गैबी गोला,–तमाचा,–मार=अचानक आनेवाली विपदा, दैवी कोप)। –**हद**–अ० बेहद, अत्यधिक।

अजगर–दे० 'अज' के साथ।

अजगव–पु० [सं०] शिवका धनुष्।

अजगुत*–पु० अचंभेकी बात, विचित्र व्यापार; अयुक्त बात। वि० आश्चर्योत्पादक; अनुपमेय।

अजड–वि० [सं०] जो जड न हो, चेतन, समझदार। पु० चेतन पदार्थ।

अज़दहा–पु० [फा०] अजगर।

अजन–पु० [सं०] ब्रह्मा; तुच्छ व्यक्ति; गमन। वि०निर्जन, जनहीन;* जन्मरहित; अजन्मा।

अजनबी–वि० [फा०] अपरिचित; परदेशी; अनजान।

अजन्मा (न्मन्)–वि० [सं०] जन्म-रहित; अनादि।

अजपा–पु० [सं०] एक मंत्र जिसका उच्चारण साँसके भीतर-बाहर आने-जाने मात्रसे किया जाता है; हंस-मंत्र; 'सोऽहम्'। –**जप**–पु० अजपा मंत्रका जप।

अजब–वि० [अ०] विचित्र, अनोखा। पु० अचरज।

अज़मत–स्त्री० [अ०] बड़ाई, बुज़ुर्गी; गौरव; चमत्कार।

अजमी–वि० [अ०] अजमका। पु० ईरानी, तूरानी।

अजय–स्त्री० [सं०] पराजय। वि० अजेय।

अजया–स्त्री० [सं०] भाँग; माया; दुर्गाकी एक सहचरी; *बकरी।

अजय्य–वि० [सं०] जो जीता न जा सके, अजेय।

अजर–वि० [सं०] जरारहित, जो सदा जवान रहे; क्षयरहित; *जो पचे नहीं। पु० परब्रह्म; देवता।

अजरायल*–वि० जीर्ण न होनेवाला, चिरस्थायी, टिकाऊ!

अजवायन–स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा और उसके दाने।

अजस*–पु० दे० 'अयश'।

अजसी*–वि० बदनाम, जिसके हाथमें यश न हो।

अजस्र–वि० [सं०] अविच्छिन्न, अनवरत। अ० निरंतर।

अजहत्–वि० [सं०] जो छोड़े या खोये नहीं। **–स्वार्था** –स्त्री० वह लक्षणा जिसमें वाच्यार्थका त्याग किये विना अन्यार्थका बोध होता है. उपादान लक्षणा (सा०)

अजहुँ,–हूँ*–अ० आज भी; अवतक।

अजा–स्त्री० [सं०] प्रकृति, माया; शक्ति; बकरी। **–गलस्तन**–पु० बकरीके गलेमें लटकनेवाली स्तनाकार थैली; (ला०) उस जैसी निरर्थक वस्तु।

अजाच*–वि० दे० 'अजाचक'।

अजाचक,* अजाची*–वि० जिसे किसीसे कुछ माँगनेकी आवश्यकता न हो, धन-धान्यसे भरपूर।

अजात–वि० [सं०] अजन्मा; अनुत्पन्न; अविकसित। **–शत्रु**–वि० शत्रुविहीन, जिसका कोई शत्रु न (जनमा) हो। पु० युधिष्ठिर; शिव; काशीका एक राजा; भगवान् बुद्धका समकालीन एक मगधनरेश। **–श्मश्रु**–वि०जिसे दाढ़ी-मूँछ न निकली हो, अल्पवयस्क।

अजान–वि० अज्ञान; नासमझ; अज्ञात। पु० नासमझी, अनभिज्ञता (मेंके साथ)। **–पन**–पु० नासमझी।

अज़ान (ज़ाँ)–स्त्री० [अ०] नमाजके समयकी सूचना जो मस्जिदकी छत या दूसरी ऊँची जगहपर खड़ा होकर दी जाती है, बाँग।

अजानता*–स्त्री० अज्ञान; अबोधता।

अजामिल–पु० [सं०] पुराण-वर्णित एक पातकी जो मरते समय अपने बेटे 'नारायण'का नाम लेनेसे सद्गति पा गया।

अजाय*–वि० वेजा, अनुचित।

अजायब–पु० [अ०] अद्भुत, अनोखी वस्तुओंका समूह या संग्रह, (अजीबका बहुवचन)। **–ख़ाना,–घर**–पु० अद्भुतालय, म्यूज़ियम।

अजाया*–वि० मृत।

अजार*–पु० बीमारी।

अजिऔरा–पु० आजीके पिताका घर।

अजित–वि० [सं०] जिसे कोई जीत न सका हो, अपराजित; अजेय। पु० विष्णु; शिव; बुद्ध।

अजितेंद्रिय–वि० [सं०] असंयमी, विषयासक्त, जिसे अपनी इंद्रियोंपर अधिकार न हो।

अजिन–पु० [सं०] खाल, चर्म; छाल; धौंकनी।

अजिर–पु० [सं०] आँगन; शरीर; वायु; इन्द्रिय-विषय।

अजिह्व–वि० [सं०] जिह्वारहित। पु० मेढक।

अजी–अ० संबोधन, 'एजी'का लघु रूप।

अज़ीज़–वि०[फ़ा०] प्रिय, प्यारा। पु०निकट संबंधी;मित्र।

अजीत–वि० *अजित; अजेय।

अजीब–वि० [अ०] अद्भुत, अनोखा।

अजीबोगरीब–वि० [अ०] अनोखा; दुष्प्राप्य।

अजीरन–पु० दे० 'अजीर्ण'।

अजीर्ण–पु० [सं०] अपच, बदहजमी; अतिरेक, अतिशयता। वि० जो पचा न हो; जो गला न हो; जो पुराना न हुआ हो।

अजीव–वि० [सं०] जीव-रहित, मृत; जड। पु० मृत्यु; जड पदार्थ; जड जगत् (जैन)।

अजुगत, अजुगुत–पु० दे० 'अजगुत'।

अजूज़ा*–पु० बिज्जू जैसा एक मुर्दाखोर जानवर।

अजूबा–पु० [अं०] अनोखी, अचरजमें डालनेवाली चीज।

अजूरा*–वि० न जुड़ा हुआ; पृथक; अप्राप्त। पु० मजदूरी।

अजूह*–पु० युद्ध।

अजे, अजेई, अजै*–वि० दे० 'अजेय'।

अजेय–वि० [सं०] जिसे कोई जीत न सके।

अजैव–वि० [सं०] जो जीव-संबंधी न हो; अप्राणिज (इनऑर्गैनिक)।

अजोग*–वि० अनुचित, अयोग्य; बेमेल, बेजोड़।

अजोरना*–स० क्रि० छीनना, बटोरना; प्रकाशित करना।

अजौं*–अ० आज भी; आजतक, अबतक।

अज्ञ–वि० [सं०] ज्ञान-रहित; मूर्ख, नासमझ; अचेतन।

अज्ञता–स्त्री०, **अज्ञत्व**–पु०[सं०] अज्ञान, नासमझी अचैतन्य।

अज्ञा*–स्त्री० दे० 'आज्ञा'।

अज्ञात–वि० [सं०] न जाना हुआ; अप्रकट; अप्रत्याशित। **–नामा (मन्)**–वि० जिसका नाम ज्ञात न हो, अप्रसिद्ध। **–यौवना**–स्त्री० मुग्धा नायिका जिसे यौवनागमका पता न हो। **–वास**–पु० गुप्तवास **–स्वामिक**–वि० (वह धन) जिसके स्वामीका पता न हो।

अज्ञान–पु० [सं०] ज्ञानका अभाव; मिथ्या ज्ञान, अविद्या। वि० ज्ञान-रहित, मूर्ख। **–ता**–स्त्री०,**–पन**–पु० [हि०] मूर्खता, नादानी, नासमझी।

अज्ञानी (निन्)–वि० [सं०] अज्ञ, मूर्ख, नासमझ।

अज्ञेय–वि० [सं०] जो जाना न जा सके, ज्ञानातीत; जो जानने योग्य न हो। **–वाद**–पु० ईश्वर या परमतत्त्व अज्ञेय है—यह मत।

अज्यों*–अ० दे० अजौं।

अझर*–वि० जो न झरे; न बरसनेवाला (बादल)।

अझोरी*–स्त्री० झोली (जो कंधेपर लटकायी जाती है)।

अटंबर–पु० ढेर, राशि।

अट–स्त्री० प्रतिबंध, शर्त।

अटक–वि० [सं०] भ्रमण करनेवाला, भ्रमणशील। स्त्री० [हि०] अड़चन; उलझन; हिचक।

अटकन–स्त्री० रोक, अड़चन; उलझन, हिचक; अकाज।

अटकन-बटकन–पु० बच्चोंका एक खेल।

अटकना–अ० क्रि० रुकना; बोलने या पढ़नेमें रुकना; उलझना; बहस करना; गलेसे न उतरना; प्रेमपाशमें बँधना।

अटकर–स्त्री० दे० 'अटकल'।

अटकरना, अटकलना–स० क्रि० अनुमान करना; अंदाज लगाना।

अटकल–स्त्री० अंदाज, अनुमान; पहचान। **–पच्चू**–वि० अंदाजी, अनुमानाश्रित। अ० अंदाजन, अटकलके सहारे। **–बाज़**–वि० जो अटकल लगानेमें तेज हो, अनुमानकुशल। **–बाज़ी**–स्त्री० अटकल लगाना।

अटका–पु० जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात। स्त्री० रुकावट; जरूरत।

अटकाना–स० क्रि० रोकना; उलझाना; देर लगाना।

अटकाव–पु० प्रतिबंध, रुकावट; अड़चन, बाधा।

अटखट*–वि० अंड-बंड; टूटा-फूटा (सामान) ।

अटखेली–स्त्री० दे० 'अठखेली' ।

अटन–पु० [सं०] घूमना, चलना, भ्रमण ।

अटना–अ० क्रि० पूरा पड़ना; काफी होना; बीचमें पड़कर ओट करना; अटन करना, भ्रमण या यात्रा करना ।

अटपट*–वि० दे० 'अटपटा' । स्त्री० कठिनाई ।

अटपटा–वि० टेढ़ा, कठिन; ऊटपटांग; अनोखा; *लड़खड़ाता हुआ ।

अटपटाना*–अ० क्रि० अटकना; घबराना; हिचकना; लड़खड़ाना ।

अटपटी*–स्त्री० नटखटपन; शरारत ।

अटब्बर*–पु० आडंबर; कुटुंब ।

अटल–वि० अचल; स्थिर, निश्चित, अवश्यंभावी, पक्का ।

अटवाटी-खटवाटी–स्त्री० खाट-खटोला, बोरिया-बँधना । **मु० –लेकर पड़ना**–रूठकर अलग़ जा बैठना ।

अटवि, अटवी–स्त्री० [सं०] वन ।

अटहर–पु० ढेर; फेंटा; अड़चन ।

अटा–स्त्री० [हि०] अटारी* पु० अटाला, ढेर ।

अटाउ*–पु० बिगाड़; शरारत ।

अटाटूट–वि० अनगिनत, बेशुमार ।

अटारी–स्त्री० कोठा, अट्टालिका ।

अटाला–पु० ढेर, अंबार; असबाब; कसाइयोंकी बस्ती ।

अटूट–वि० न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत; अखंडित; न चुकनेवाला, बहुत, अपार; अजेय ।

अटेरन–पु० सूतकी आँटी बनानेका यंत्र; कुश्तीका एक पेंच; घोड़ा फेरनेका चक्कर ।

अटेरना–स० क्रि० सूतकी आँटी बनाना; † बहुत अधिक शराब पीना ।

अटोक*–वि० प्रतिबंध-हीन ।

अट्ट–वि० [सं०] ऊँचा, उच्च स्वरयुक्तः सूखा हुआ; निरंतर । पु० कोठा, अटारी; महल; बुर्ज; अन्न; भात; हाट; रेशमी कपड़ा; वध, घायल करना; अतिशयता, प्राधान्य । **हसित,–हास,–हास्य**–पु० जोरकी हँसी; ठहाका ।

अट्टसट्ट–वि० अंडबंड, अगड़म-बगड़म । पु० निरर्थक बात ।

अट्टालिका–स्त्री० [सं०] महल; पक्की इमारत; अटारी ।

अट्टी–स्त्री० सूत या ऊनका लच्छा ।

अट्ठा–पु० ताशका वह पत्ता जिसपर आठ बूटियाँ हों ।

अट्ठाइस,–ईस–वि० बीस और आठ । पु० २८की संख्या ।

अट्ठानबे–वि० नब्बे और आठ । पु० ९८ की संख्या ।

अट्ठारह–वि०, पु० दे० 'अठारह' ।

अट्ठावन–वि० पचास और आठ । पु० ५८ की संख्या ।

अट्ठासी–वि० अस्सी और आठ । पु० ८८ की संख्या ।

अठंग*पु० अष्टांग योगकी साधना करनेवाला ।

अठ–पु० आठका समासमें प्रयुक्त रूप । **–पतिया**–स्त्री० एक तरहकी नक्काशी । **–पहला**–वि० आठ पहलोंवाला, जिसमें आठ पार्श्व हों । **–पृष्ठी, –पेजी**–वि० (आक्टेवो) (छपी हुई पुस्तक या फार्मका वह आकार) जिसमें एक ही तरफ छपे एक कागजमें आठ पृष्ठ किये गये हों । **–मासा**–पु० दे० अठवाँसा । **–वाँसा**–पु० गर्भके आठवें महीने होनेवाला संस्कार; आठ ही मासमें जन्म लेनेवाला बच्चा; वह खेत जो आठ महीने तक जोतकर बिना बोये छोड़ दिया गया हो । वि० आठ ही मासमें उत्पन्न होनेवाला । **–वारा**–पु० आठ दिनका समय । **–वाली**–स्त्री० आठ कहारोंसे चलनेवाली पालकी; सेंगरेसे उठानेके लिए भारी चीजमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा । **–सिल्या***–पु० (?) सिंहासन ।

अठई*–स्त्री० अष्टमी ।

अठकरी–स्त्री० दे० 'अठवाली' ।

अठकौसल–पु० पंचायत; मंत्रणा, सलाह ।

अठखेल–वि० शोख, चुलबुला, खिलाड़ी (अप्र०) । **–पन**–पु० चुलबुलापन;, शोखी ।

अठखेली–स्त्री० किलोल, शोखी, चुलबुलापन; ठसकभरी या मस्तानी चाल । (प्रायः बहुवचनमें ही व्यवहृत ।) **मु०– (लियाँ) करना**–किलोल करना, इतराकर, नाजके साथ चलना ।

अठत्तर–वि०, पु० दे० अठहत्तर' ।

अठन्नी–स्त्री० आठ आनेका सिक्का ।

अठपाव–पु० शरारत, नटखटी ।

अठलाना*–अ० क्रि० दे० 'इठलाना' ।

अठवना*–अ० क्रि० जमना, ठनना ।

अठहत्तर–वि० सत्तर और आठ । पु० ७८ की संख्या ।

अठाई*–वि० उत्पाती; नटखट ।

अठान–वि० न ठानने, न करने योग्य (काम); कठिन (काम) । पु० वैर, विरोध ।

अठाना*–स० क्रि० सताना; ठानना; छेड़ना; जमाना ।

अठारह–वि० दस और आठ । पु० १८ की संख्या ।

अठासी–वि०, पु० दे० 'अट्ठासी' ।

अठिलाना*–अ० क्रि० दे० 'इठलाना' ।

अठोठ*–पु० ढोंग, आडंबर ।

अठोतर सौ–वि० एक सौ आठ ।

अठोतरी–स्त्री० एक सौ आठ दानोंकी माला ।

अड़ंगा–पु० अटकाव, रोक, रुकावट, बाधा; कुश्तीका एक पेंच । **–(गे)बाज़**–पु० अड़ंगे लगानेवाला ।

अडंड–वि० दे० 'अदंड्य' ।

अडंबर*–पु० दे० 'आडंबर' ।

अड़–स्त्री० टेक, हठ ।

अड़काना†–स० क्रि० अड़ाना, टिकाना; उलझाना ।

अडग–वि० न डिगनेवाला, स्थिर ।

अड़गड़ा–पु० बैलगाड़ियोंके ठहरने या बैलों आदिके बिकनेका स्थान ।

अड़गोड़ा–पु० नटखट चौपायोंके गलेमें बाँधी जानेवाली एक लकड़ी जो तेज दौड़नेमें बाधक होती है ।

अड़चन(ल)–स्त्री० रुकावट, बाधा ।

अड़तल–पु० ओट; बहाना; आश्रय; छाया ।

अड़तालिस,–तालीस–वि० चालीस और आठ । पु० ४८ की संख्या ।

अड़तीस–वि० तीस और आठ । पु० ३८ की संख्या ।

अड़दार–वि० अड़नेवाला; मस्त (हाथी) ।

अड़ना–अ० क्रि० रुकना, अटकाना; हठ करना ।

अड़पना–स० क्रि० डाँटना-डपटना ।

अड़बंग,अड़बंगा†–वि० टेढ़ा, विकट; विलक्षण; बेढब, टेढ़े मिजाजवाला।

अड़र*–वि० निडर।

अड़सठ–वि० साठ और आठ। पु० ६८ की संख्या।

अड़हुल–पु० लाल रंगका एक फूल, जपाकुसुम।

अड़ाअड़ी–स्त्री० होड़, लाग-डाट।

अड़ाड़–पु० चौपायोंको रखनेका घेरा, खरक; अड़ार।

अड़ान–पु० रुकनेकी जगह; पड़ाव।

अड़ाना–स० क्रि० रोकना, अटकाना; डाट लगाना; ठूँसना; ढरकाना। पु० एक राग; डाट; थूनी, चाँड।

अड़ानी–पु० बड़ा पंखा। स्त्री० कुश्तीका एक पेंच, अड़ंगा; लकड़ीकी रोक जो खिड़की-दरवाजेमें लगायी जाती है।

अड़ायती*–वि० आड़ करनेवाला।

अड़ार–पु० ढेर; जलानेकी लकड़ीका ढेर; लकड़ीकी दुकान। *वि० नुकीला; तिरछा।

अड़ारना*–स० क्रि० डालना; देना।

अडिग–वि० जो अपनी जगहसे डिगे, हिले नहीं, अटल।

अड़ियल–वि० अड़कर चलनेवाला; मट्ठर; हठी।

अड़िया–स्त्री० साधुओंकी कुबड़ी।

अड़ी–स्त्री० दे० 'अड़'; जरूरतका वक्त।

अडीठ–वि० जो दिखाई न दे; गुप्त।

अडूलना*–स० क्रि० ढालना, उड़ेलना।

अडूसा–पु० एक पौधा जिसके पत्तों और फूलोंका रस कास-श्वासकी उत्तम औषधि है।

अडोर*–पु० शोर-गुल, अंदोर।

अडोल*–वि० अटल, अडिग; स्तब्ध।

अड़ोस-पड़ोस–पु० आस-पास, पास-पड़ोस।

अड़ोसी-पड़ोसी–पु० पास-पड़ोसमें रहनेवाले।

अड्डा–पु० मिलने या इकट्ठा होनेकी जगह; चोरों, जुआड़ियों, रंडियों आदिके मिलनेकी जगह; कुटनियोंका डेरा; डोली ढोनेवाले कहारोंके रहनेका स्थान; इक्कों, ताँगों आदिके रुकने, ठहरनेकी जगह; किसीके उठने-बैठनेकी खास जगह; केंद्रस्थान; पिंजड़ेके भीतर चिड़ियाके बैठनेके लिए लगी आड़ी लकड़ी या छड़; कबूतरोंकी छतरी; कपड़ेका गद्दा जिसपर छीपी कपड़ा रखकर छापते हैं; जुलाहेका करघा; जाली काढ़नेका चौखटा; वह पाई जिसपर बैठकर गोटा बुनते हैं।

अढ़तिया–पु० आढ़तका कारबार करनेवाला; एजेंट।

अढ़वना*–स० क्रि० आज्ञा देना।

अढ़वायक†–पु० वह व्यक्ति जो दूसरोंको काम करनेमें नियुक्त करता हो।

अढ़िया†–स्त्री० काठ या पत्थरका बना छोटा बरतन; गारा आदि ढोनेकी लोहेकी हलकी छोटी कड़ाही।

अढ़ुकना*–अ० क्रि० ठोकर खाना; सहारा लेना।

अढ़ैया–पु० ढाई सेरकी तौल या बाट; ढाई गुनेका पहाड़ा।

अणिमा (मन्)–स्त्री० [सं०] अणुत्व; सूक्ष्मता; योगकी ८ सिद्धियोंमेंसे पहली जिससे योगी अणुरूप ग्रहण कर अदृश्य हो सकता है।

अणु–पु० [सं०] पदार्थका सबसे छोटा इंद्रिय-ग्राह्य विभाग जो मौलिक वस्तुके गुण रखता है (मॉलेक्यूल); ६० परमाणुओंका संघात; परमाणु; कण, जर्रा; मात्राका चतुर्थांश (छंद); वि० अतिसूक्ष्म। **–बम**–पु० एक अति संहारकारी बम। **–वाद**–पु० जीवको अणु माननेवाला दर्शन, वल्लभाचार्यका मत; अणुको नित्य और प्रपंचका कारण माननेवाला सिद्धांत, न्यायवैशेषिक दर्शन। **–वीक्षण**–पु० सूक्ष्मदर्शक यंत्र, खुर्दबीन।

अतंक*–पु० दे० 'आतंक'।

अतंत्र–वि० [सं०] तंत्र या तंतु-रहित। पु० अनियंत्रित कार्य।

अतंद्र–वि० [सं०] तंद्रारहित, जागरूक, सतर्क।

अतंद्रित,–ल, अतंद्री (द्रिन्)–वि० [सं०] दे० 'अतंद्र'।

अतः–अ० [सं०] इसलिए, इस कारण; अबसे; इस स्थानसे; इससे, इसकी अपेक्षा।

अतएव–अ० [सं०] इसलिए, इस कारण; इसीसे।

अतथ्य–वि० [सं०] असत्य, अयथार्थ, गलत।

अतद्गुण–पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें संगति आदि कारण मौजूद होते हुए दूसरेका गुण ग्रहण न करना दिखाया जाता है।

अतनु–वि० [सं०] देहरहित; मोटा। पु० कामदेव।

अतप्त–वि० [सं०] जो तपा या गरम न हो।

अतर–पु०इत्र,पुष्पसार। **–दान**–पु०अतर रखनेका पात्र।

अतरल–वि० [सं०] जो तरल या द्रव न हो, गाढ़ा, ठोस।

अतरसों–अ० परसोंके बाद या पहलेका दिन, आजसे बादका या पहलेका चौथा दिन।

अतरिख–पु० दे० 'अंतरिक्ष'।

अतर्क–वि० [सं०] तर्कहीन, असंगत, अहेतुक। पु० तर्कका अभाव; तर्कहीन बहस करनेवाला।

अतर्कित–वि० [सं०] अनसोचा, अननुमित; आकस्मिक।

अतर्क्य–वि० [सं०] तर्क न करने योग्य; अचिंत्य।

अतल–पु० [सं०] सात पातालोंमेंसे पहला; शिव। वि० तलहीन, अथाह।

अतलस–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।

अतवान*–वि० बहुत अधिक।

अताई–वि० जिसने खुद सीखा हो, जो बिना सीखे हुए कोई काम करे; चतुर, चालाक; दक्ष; अनाड़ी; जिसे ईश्वरकी देनके रूपमें कोई विद्या प्राप्त हुई हो (व्यंग्य)। पु० वह गवैया या वैद्य जिसने अपने कामकी शिक्षा न पायी हो। **–नुस्खा**–पु० फकीरी नुस्खा; इधर-उधरसे सीखा हुआ नुस्खा।

अतापी*–वि० तापरहित; शांत।

अतारांकित प्रश्न–पु० (अन-स्टार्ड क्वेश्चन) विधानसभा आदिके अधिवेशनमें प्रश्नोत्तरके समय पूछा जानेवाला वह प्रश्न जिसमें तारांक लगाकर विभेद न किया गया हो और जिसका उत्तर मौखिक न देकर लिखित दिया जाय।

अति–अ० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञाके पूर्व आनेपर अतिशयता, सीमोल्लंघन, श्रेष्ठता, प्रशंसा आदिका और विशेषण तथा अव्ययके पूर्व आनेपर आधिक्यका सूचन करता है। स्त्री० अधिकता, अतिशयता, अतिरेक; सीमोल्लंघन।

अति-उत्पादन–पु० (ओवर-प्रॉडक्शन) खपत या माँगसे अधिक मात्रामें पण्य वस्तुओंका उत्पादन।

अतिकाय–वि० [सं०] भारी डील-डौलवाला; विशालकाय। पु० रावणका एक बेटा।

अतिकाल–पु० [सं०] वेलाका बीत जाना; अबेर।

अतिक्रम,–क्रमण–पु० [सं०] (क्षेत्र, अधिकार आदिकी) सीमाका उल्लंघन; कर्तव्यका उल्लंघन; दुरुपयोग; प्रबल आक्रमण; बीतना; बढ़ जाना (बल, संख्या आदिका); जीतना; काबू पाना; (एंक्रोचमेंट) अपनी भूमि, अधिकार, कर्तव्य आदिकी सीमाका उल्लंघन कर दूसरेकी भूमि, अधिकार आदिकी सीमामें प्रवेश, कब्जा या हस्तक्षेप करना, सीमोल्लंघन; (वायोलेशन) संधि आदिकी शर्तोंका अपालन वा उल्लंघन।

अतिक्रांत–वि० [सं०] आगे बढ़ा हुआ; बीता हुआ; अतीत; क्रमका उल्लंघन किया हुआ। पु० बीती हुई बात।

अतिक्रामक–पु० [सं०] क्रम या मर्यादाका उल्लंघन करनेवाला।

अतिगति–स्त्री० [सं०] उत्तम गति; मुक्ति।

अतिचरण–पु० [सं०] जितना करना हो उससे अधिक करना; (ट्रांसग्रेशन) सीमा या अधिकारके बाहर जाना।

अतिचार–पु० [सं०] अतिक्रमण, आगे बढ़ जाना; एक-राशिका भोगकाल समाप्त हुए बिना दूसरीमें चला जाना; मर्यादाका उल्लंघन।

अतिचारी (रिन्)–वि० [सं०] अतिक्रमण करनेवाला, आगे निकल जानेवाला।

अतिजीवन–पु० (सरवाइवल) अन्य व्यक्तियों, प्रजातियों, प्रथाओं आदिके समाप्त हो जानेके बाद भी किसी व्यक्ति, प्रजाति, प्रथा आदिका जीवित या बना रहना।

अतिथि–पु० [सं०] अभ्यागत; वह संन्यासी जो कहीं एक रातसे अधिक न ठहरे; यज्ञमें सोम-संबंधी कार्य करनेवाला अनुचर। **–क्रिया**–स्त्री० आतिथ्य। **–गृह,–भवन**–पु० (गेस्ट-हाउस) अतिथियों, अभ्यागतोंको ठहरानेके लिए निर्धारित गृह, प्रकोष्ठादि। **–देव**–वि० जिसके लिए अतिथि देवरूप हो। **–पति**–पु० मेजबान। **–पूजा**–स्त्री० अतिथिका स्वागत-सत्कार। **–शाला**–स्त्री० (गेस्ट-हाउस) दे० 'अतिथिगृह'। **–सत्कार**–पु०, **–सेवा**–स्त्री० अतिथिपूजा, मेहमानकी आवभगत।

अतिदर्प–पु० [सं०] अत्यधिक अभिमान।

अतिदेश–पु० [सं०] अन्य वस्तुके धर्मका अन्यपर आरोपण; निर्दिष्ट विषयके अलावा और विषयोंपर भी लागू होनेवाला नियम; सादृश्य, उपमा; निष्कर्ष।

अतिदोष–पु० [सं०] बहुत बड़ा दोष, अपराध।

अतिपात–पु० [सं०] अतिक्रम; नियम वा मर्यादाका उल्लंघन; (कालका) व्यतीत हो जाना; अव्यवस्था; विरोध; विघ्न।

अतिपातक–पु० [सं०] धर्मशास्त्रमें बताये हुए ९ महापातकोंमेंसे सबसे बड़ा।

अतिप्रजनन–पु० (ओवर पॉपुलेशन) किसी देश या क्षेत्रकी आबादीका इतना अधिक बढ़ जाना कि उसके लिए वहाँ समुचित रूपसे निर्वाह करना कठिन हो गया हो।

अतिबल–वि० [सं०] अति बलवान्; (ऐसा योद्धा) जो बहुतोंसे अकेले लड़ सके। पु० बहुत बड़ा बल; शक्तिशाली सैन्य।

अतिबला–स्त्री० [सं०] एक अस्त्रविद्या जो विश्वामित्रने रामको सिखायी थी; एक पौधा जो दवाके काम आता है।

अतिमुक्त–वि० [सं०] जिसे मुक्ति मिल गयी हो; वीतराग। पु० दे० 'अतिमुक्तक'।

अतिमुक्तक–पु० [सं०] माधवी लता; एक वृक्ष।

अतिमूत्र–पु० [सं०] बहुमूत्र रोग।

अतिमैथुन–पु० [सं०] अत्यधिक स्त्री-संभोग।

अतिमोदा–स्त्री० [सं०] सुगंधकी अधिक मात्रा; नवमल्लिका, नेवारी।

अतियोग–पु० [सं०] अतिशयता; रेल-पेल; औषधमें द्रव्यविशेषको नियत मात्रासे अधिक मिलाना।

अतिरंजन–पु० [सं०] बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

अतिरंजना–स्त्री० [सं०] बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति।

अतिरथ, अतिरथी (थिन्)–पु० [सं०] अकेले बहुतोंसे लड़नेवाला रथारूढ़ योद्धा।

अतिरिक्त–वि० [सं०] बढ़ा हुआ, नियत परिमाणसे अधिक; फाजिल; भिन्न; अद्वितीय। अ० सिवाय, अलावा। **–पत्र**–पु० वह समाचार या विज्ञप्ति आदि जो अलग छापकर समाचार-पत्रके साथ बाँटी जाय, क्रोडपत्र। **–लाभ**–(एक्सेस प्रॉफिट) साधारण या नियमितसे अधिक लाभ।

अति(ती)रेक–पु० [सं०] आधिक्य, अतिशयता; आवश्यकतासे अधिक, फाजिल होना; अंतर।

अतिरोग–पु० [सं०] राजयक्ष्मा, क्षयरोग।

अतिवक्ता (क्तृ)–वि० [सं०] बकवादी, बहुत बोलनेवाला।

अतिवाद–पु० [सं०] कठोर वचन; डींग; अतिरंजना।

अतिवादी (दिन्)–वि० [सं०] बहुत बोलनेवाला; सबके मतका खंडन कर अपने पक्षकी स्थापना करनेवाला; खरी बात कहनेवाला; डींग मारनेवाला।

अतिवाहन–पु० [सं०] बिताना, यापन; भेजना।

अतिवृष्टि–स्त्री० [सं०] अत्यधिक वर्षा।

अतिवेला–स्त्री० [सं०] अतिकाल, अबेर; वेलाका अतिक्रम।

अतिव्याप्ति–स्त्री० [सं०] लक्षणमें लक्ष्यके अतिरिक्त अन्य वस्तुका भी आ जाना (न्याय); लक्षणके तीन दोषोंमेंसे एक।

अतिशय–वि० [सं०] बहुत ज्यादा; अत्यधिक। पु० अधिकता; अतिरेक; श्रेष्ठता; एक अर्थालंकार।

अतिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] किसी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिरंजना; एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तुका अतिरंजित वर्णन होता है।

अतिसंधान–पु० [सं०] धोखा, छल-कपट; अतिक्रमण; उचित लक्ष्यसे आगे निशान लगाना (ओवर हिटिंग, ओवर शूटिंग)।

अतिसंधि–स्त्री० [सं०] शक्तिसे अधिक सहायता देनेकी प्रतिज्ञा; एक मित्रकी सहायतासे दूसरे मित्र या सहायककी प्राप्ति।

अति(ती)सार–पु० [सं०] दस्त या आँवकी बीमारी।

अतिसौरभ–वि० [सं०] अत्यधिक सुगंधवाला। पु० बहुत अधिक सुगंध; आम।

अतिहसित–पु० [सं०] हासके छः भेदोंमेंसे एक; जोरकी हँसी।

अतींद्रिय–वि० [सं०] इंद्रियोंकी पहुँचके बाहर; अगोचर।

अतीचार–पु० दे० 'अतिचार'।

अतीत–वि० [सं०] बीता हुआ, गत; मृत; परे, पार गया हुआ; निर्लेप; न्यारा। पु० भूतकाल; साधु, संन्यासी; गोसाइँयोंकी एक जाति; *अतिथि, साधु। अ० परे।

अतीतना*–अ० क्रि० बीतना, गुजरना।

अतीथ*–पु० दे० 'अतिथि'; गोसाइँयोंकी एक जाति।

अतीव–अ० [सं०] बहुत अधिक, अत्यंत।

अतीस–पु० [सं०] एक वनौषधि, अतिविषा।

अतुंग–वि० [सं०] जो ऊँचा न हो, नाटा; ठिंगना।

अतुराई*–स्त्री० आतुरता; चंचलता।

अतुराना*–अ० क्रि० आतुर होना, जल्दी मचाना।

अतुल–वि० [सं०] जिसकी तौल-माप न हो सके; अमित, तुलनारहित। पु० तिलक वृक्ष; अनुकूल नायक (केशव)।

अतुलनीय–वि० [सं०] जिसकी तुलना न हो सके; अपरिमित।

अतुलित–वि० [सं०] बिना तौला हुआ; बेहिसाब; बेजोड़।

अतुल्य–वि० [सं०] बेजोड़।

अतुष–वि० [सं०] बिना भूसीका।

अतुष्टि–स्त्री० [सं०] अप्रसन्नता, असंतोष।

अतुहिन–वि० [सं०] जो ठंढा न हो। **–कर,–रश्मि,–रुचि**–पु० सूर्य।

अतूथ*–वि० अपूर्व, अतुल्य।

अतूल*–वि० दे० 'अतुल'।

अतृप्त–वि० [सं०] असंतुष्ट; भूखा।

अतृप्ति–स्त्री० [सं०] संतुष्ट न होनेकी अवस्था; असंतुष्टि।

अतोर*–वि० अटूट।

अतोल, अतौल–वि० बिना तौला हुआ; बेजोड़; बेहिसाब।

अत्ता–स्त्री० अति, ज्यादती।

अत्तार–पु० [अ०] इत्र बेचनेवाला; यूनानी दवाएँ बनाने, बेचनेवाला।

अत्ति*–स्त्री० अति, ज्यादती, ऊधम।

अत्यंत–वि० [सं०] हदसे ज्यादा; अतिशय; पूर्ण, नितांत; अ० अत्यधिक, पूरे तौरसे।

अत्यंताभाव–पु० [सं०] किसी वस्तुका पूर्ण अभाव; तीनों कालोंमें संभव न होना (जैसे आकाश कुसुम)

अत्यंतिक–वि० [सं०] बहुत चलने या घूमनेवाला; अति समीपी।

अत्यम्ल–पु० [सं०] इमलीका पेड़। वि० बहुत खट्टा।

अत्यय–पु० [सं०] बीतना; अभाव; विनाश; मृत्यु; अंत; दंड; अपराध; आक्रमण; मर्यादाका अतिक्रमण; कष्ट।

अत्याचार–पु० [सं०] अनुचित आचरण, दुराचार; ढोंग; जुल्म, उत्पीडन, अन्याय।

अत्याचारी(रिन्)–वि० [सं०] अत्याचार करनेवाला।

अत्याज्य–वि० [सं०] जो छोड़ा न जा सके।

अत्याहारी(रिन्)–वि०[सं०] अधिक आहार करनेवाला।

अत्युक्ति–स्त्री० [सं०] किसी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहना, मुबालिगा; एक अलंकार जिसमें उदारता, वीरता आदिका बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है।

अत्युत्पादन–पु० [सं०] मालका अत्यधिक मात्रामें उत्पादन।

अत्र–अ० [सं०] यहाँ, इस जगह; इस संबंधमें; वहाँ। **–स्थ**–यहाँ रहनेवाला; इस जगहका।

अत्वरा–स्त्री० [सं०] शीघ्रताका अभाव।

अथ–अ० [सं०] आरंभ तथा मंगल-सूचक शब्द; अब; तब, अनंतर; अगर। पु० आरंभ, आदि। **–किम्**–अ० और क्या; हाँ; अवश्य। **–च**–अ० और; और भी। **–से इतितक**–आदिसे अंततक।

अथक–वि० न थकनेवाला।

अथना, अथयना *–अ० क्रि० अस्त होना।

अथरा–पु० नाद, मिट्टीका एक बरतन जो कपड़ा रँगने आदिके काममें आता है।

अथरी–स्त्री० छोटा अथरा, मिट्टीका छिछला बरतन जिसमें दही जमाते हैं और कुम्हार हंडी रखकर थापीसे पीटते हैं।

अथर्व–पु० [सं०] एक वेद जो चौथा वेद माना जाता है।

अथर्वणि–पु० [सं०] अथर्ववेदोक्त कर्मोंको जाननेवाला ब्राह्मण; पुरोहित।

अथर्वनी*–पु० यज्ञादि करानेवाला; पुरोहित।

अथवना*–अ० क्रि० अस्त होना।

अथवा–अ० [सं०] वा, या।

अथाई–स्त्री० बैठक, चौपाल; गाँववालोंके एकत्र होनेका स्थान; गोष्ठी; मंडली।

अथान, अथाना*–पु० अचार।

अथाना*–अ० क्रि० दे० 'अथवना'। सं० क्रि० थाह लेना; ढूँढ़ना।

अथावत*–वि० अस्त, डूबा हुआ।

अथाह–वि० बहुत गहरा, अगाध; अपार, बेहिसाब; अगम्य। पु० समुद्र; गहराई।

अथिर*–वि० अस्थिर; क्षणस्थायी।

अथोर*–वि० जो कम न हो, अधिक, बहुत।

अदंक*–पु० डर, भय।

अदंड–वि० [सं०] अदंडनीय; * निर्भय; बिना महसूलका।

अदंडनीय,–ड्य–वि० [सं०] दंडका अनधिकारी; दंडमुक्त।

अदंडमान*–वि० अदंड्य।

अदंत–वि० [सं०] बे-दाँतका; जिसे दाँत न निकले हों।

अदंभ–वि० [सं०] दंभरहित; सच्चा; सरल; * अकृत्रिम, स्वाभाविक।

अदक्ष–वि० [सं०] अकुशल; भद्दा, बदशकल।

अदग*–वि० बेदाग, निर्दोष, अछूता।

अदत्त–वि० [सं०] नहीं दिया हुआ; अनुचित तरीकेसे दिया हुआ; जो दिया न गया हो; विवाहमें जिसे न दिया गया हो।

अदत्ता–स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या। वि० स्त्री० न दी हुई।

अदद–पु० [अ०] संख्या, अंक।

अदन–पु० [सं०] भक्षण, खानेकी क्रिया। पु० [अ०] स्वर्गका उद्यान जहाँ ईश्वरने आदमको रखा था।

अदना–वि० [अ०] छोटा; तुच्छ।

अदब–पु० [अ०] विनय, शिष्टाचार; बड़ोंका सम्मान।

अदबदाकर–अ० हठ करके; अवश्य।

अदभ्र–वि० [सं०] अनल्प; प्रचुर; * अपार।

अदम–पु० [अ०] अभाव, अनस्तित्व; अनुपस्थिति; परलोक। **–पैरवी**–स्त्री० मुकदमेमें किसी फरीककी ओरसे जरूरी काररवाईका न होना।

अदम्य–वि० [सं०] जो दवाया न जा सके; उत्कट, प्रवल।

अदय–वि० [सं०] निष्ठुर, निर्दय।

अदरक–पु० एक पौधा जिसकी गाँठें दवा, चटनी, अचार आदिके रूपमें खायी जाती हैं।

अदरकी–स्त्री० सोंठौरा।

अदरा†–स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

अदराना–अ० क्रि० आदर-मनुहारसे गर्ववृद्धि होना, मिजाज बिगड़ना; इतराना। स० क्रि० आदर-मनुहारसे मिजाज बिगाड़ना।

अदर्शन–पु० [सं०] दर्शनका अभाव; दिखाई न देना; लोप, नाश; उपेक्षा।

अदर्शनीय–वि० [सं०] जो देखने योग्य न हो, भद्दा।

अदल–वि० [सं०] बिना पत्तेका; बिना सेनाका। पु० [अ०] दे० 'अद्ल'।

अदल-बदल–पु० हेर-फेर, परिवर्तन।

अदली*–वि० न्यायी, न्यायशील।

अदलीय–वि० (इंडिपेंडेंट) जो किसी विशेष दलसे संबद्ध न हो; उन लोगोंसे संबंध रखनेवाला जो किसी दल-विशेषमें शामिल न हों।

अदवाइन*–स्त्री० दे० 'अदवान'।

अदवान–स्त्री० चारपाईके पैतानेकी रस्सी, ओनचन।

अदहन–पु० दाल-चावल आदि पकानेके लिए आगपर चढ़ाया गया पानी; खौलता हुआ पानी।

अदांत–वि० [सं०] जो दवाया न गया हो, काबूमें न किया हुआ; जिसने अपनी इंद्रियोंका निग्रह न किया हो।

अदाँत–वि० बिना दाँतका (पशु)।

अदा–स्त्री० [अ०] देना, चुकाना, पूरा करना; बयान करना। [फ़ा०] हाव-भाव, मोहक चेष्टा; ढंग; तर्ज। **–कार**–पु० अभिनेता। **–यगी**–स्त्री० भुगतान, चुकता करना।

अदाई*–वि० चालबाज; चतुर।

अदाग, अदागी*–वि० वेदाग, साफ, स्वच्छ; निष्कलंक।

अदाता (तृ)–वि० [सं०] जो न दे, अनुदार, कृपण; विवाहके लिए (कन्या) न देनेवाला; जिसे चुकाना न हो।

अदान–वि० [सं०] न देनेवाला, कंजूस। * वि० नादान, नासमझ।

अदानी*–वि० कृपण, कंजूस।

अदाय–वि० [सं०] हिस्सा पानेका अनधिकारी।

अदायाँ*–वि० वाम, प्रतिकूल; बुरा।

अदालत–स्त्री० [अ०] न्यायालय।

अदालती–वि० अदालत-संबंधी; मुकदमेबाज।

अदावँ–पु० कुदावँ, कठिनाई।

अदावत–स्त्री० [अ०] वैर, शत्रुता।

अदावती–वि० अदावत रखनेवाला; द्वेषसे किया गया।

अदाह*–स्त्री० हाव-भाव, अदा।

अदाहक–वि० [सं०] न जलानेवाला।

अदित*–पु० आदित्य; रविवार।

अदिति–स्त्री० दक्षकी पुत्री जो देवताओंकी माता मानी जाती हैं; पृथ्वी; प्रकृति; वाणी।

अदिन–पु० कुदिन, कुसमय, अभाग्य।

अदिव्य–वि० [सं०] लौकिक; स्थूल। पु० लौकिक नायक।

अदिष्ट†–पु० दे० 'अदृष्ट'; दुर्भाग्य।

अदिष्टी*–वि० अदूरदर्शी; दुष्ट; अभागा।

अदीक्षित–वि० [सं०] जिसने दीक्षा नहीं ली है।

अदीठ*–वि० अदृष्ट, न देखा हुआ; छिपा हुआ।

अदीन–वि० [सं०] दीनता-रहित; अकातर; न दवनेवाला; तेजस्वी; उदार।

अदीयमान–वि० [सं०] जो दिया न जा सके, अदेय।

अदीह*–वि० अदीर्घ, छोटा।

अदुंद*–वि० निर्द्वंद्व, वेफिक्र; शांत; वेजोड़।

अदुतिय*–वि० अद्वितीय, वेजोड़।

अदूजा*–वि० अद्वितीय।

अदूर–अ० [सं०] निकट, पास। वि० पासका। पु० सामीप्य। **–दर्शी (र्शिन्)**–वि० दूरतक न सोचनेवाला; अविचारी।

अदूषण–वि० [सं०] दूषणरहित, निर्दोष।

अदूषित–वि० [सं०] अविकृत, शुद्ध, निर्दोष।

अदृश्य–वि० [सं०] जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर; लुप्त, गायब।

अदृष्ट–वि० [सं०] न देखा हुआ; अदृश्य; अज्ञात, अननुभूत; अस्वीकृत, अवैध। पु० भाग्य, प्रारब्ध; कर्मजन्य संस्कार, पूर्वजन्मोंमें संचित पुण्य-पाप जो इस जन्मके सुख-दुःखके कारण माने जाते हैं। **–पूर्व**–वि० जो पहले न देखा गया हो; अद्भुत, विलक्षण। **–वाद**–पु० प्रारब्धवाद, नियतिवाद।

अदृष्टाक्षर–पु० [सं०] ऐसी स्याहीसे लिखे अक्षर जो साधारण अवस्था में अदृश्य रहें, विशेष उपायसे ही पढ़े जा सकें।

अदृष्टार्थ–वि० [सं०] आध्यात्मिक या गूढ अर्थ रखनेवाला; जिसका विषय इंद्रियगोचर न हो।

अदेख*–वि० अदृश्य; न देखा हुआ, जो न देखा जाय।

अदेखी–वि० जो दूसरेका सुख-उत्कर्ष न देख सके, डाही।

अदेय–वि० [सं०] न देने योग्य; जिसका दान उचित या वैध न हो; जिसे देनेको कोई विवश न किया जा सके।

अदेस*–पु० आदेश; प्रणाम; दे० 'अंदेशा'।

अदेह–वि० [सं०] देहरहित। पु० कामदेव।

अदैन्य–वि० [सं०] दीनता या हीनतासे रहित। पु० दीनताका अभाव।

अदोख, अदोखिल*–वि० दे० 'अदोष'।

अदोष–वि० [सं०] दोषरहित, वेऐब; निरपराध।

अदोस*–वि० दे० 'अदोष'।

अदौरी†–स्त्री० उर्दकी सुखाई हुई बरी।

अद्ध*–वि० दे० 'अर्द्ध'।

अद्धरज–पु० दे० अध्वर्यु'।

अद्धा–पु० किसी चीजकी आधी तौल या नाप; बोतलका आधा, बोतली; एक बोतली या एक पाइंट शराब; आधे घंटेपर बजनेवाला घंटा; रसीद आदिका आधा भाग जो देनेवालेके पास रह जाता है, मुसन्ना।

अद्धी–स्त्री० दमड़ीका आधा, पैसेका सोलहवाँ भाग; मलमलकी किस्मका एक तरहका बढ़िया बारीक कपड़ा।

अद्भुत–वि० [सं०] विचित्र, अनोखा, विस्मयजनक। पु० काव्यके ९ रसोंमेंसे एक रस जिसका स्थायीभाव विस्मय है।

अद्भुतालय–पु० [सं०] जहाँ अद्भुत वस्तुओंका संग्रह हो, अजायबघर।

अद्भुतोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद।

अद्य–अ० [सं०] आजकल, आज; अभी। वि० खानेयोग्य।

अद्यतन–वि० [सं०] आजका, आजसे संबंध रखनेवाला।

अद्यापि–अ० [सं०] आज भी; आजतक; अबतक।

अद्यावधि–अ० [सं०] आजतक; अबतक।

अद्यावधिक–वि० (अपटुडेट) बिलकुल आज तकका, हाल तकका; जिसमें बिल्कुल हाल तकके तथ्य तथा आँकड़े आदि आ गये हों; जो अभी-अभीतकके भूषाचारों, तौरतरीकों आदिसे परिचित हो।

अद्रा*–स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

अद्रि–पु० [सं०] पहाड़; पत्थर; सातकी संख्या। **–कन्या, –तनया, –नंदिनी, –सुता**–स्त्री० पार्वती। **–पति, –राज**–पु० हिमालय।

अद्ल–पु० [अ०] न्याय, इंसाफ। **–परवर**–वि० न्यायशील, इंसाफ करनेवाला।

अद्वितीय–वि० [सं०] जैसा कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी; अकेला; अद्भुत, अनोखा।

अद्वैत–पु० [सं०] द्वैत या भेदका अभाव; जीव-ब्रह्म या जडचेतनकी एकता; ब्रह्म। वि० अद्वितीय। **–वाद**–पु० जीव और ब्रह्मका अभेद बतानेवाला दर्शन; जगतका मूल तत्त्व एक ही है यह मत, वेदांत। **–वादी (दिन्)**–वि० अद्वैतवादके सिद्धांतको माननेवाला, वेदांती।

अधः (धस्)–अ० [सं०] नीचे; नीचेके लोकमें, पाताल या नरकमें। (समासमें नाम या विशेषणके पहले लगकर 'नीचे' या 'नीचेका' अर्थ प्रकट करता है।) **–पतन, –पात**–पु० नीचे गिरना; पतन, अधोगति, अवनति।

अध–वि० 'आधा' का समासमें व्यवहृत लघु रूप। **–कचरा**–वि० अपक्व; अधूरा; अधूरी जानकारी रखनेवाला, अकुशल; अधकुटा। **–कपारी**–स्त्री० आधे सिरका दर्द, आधासीसी। **–करी**–स्त्री० मालगुजारी, लगान आदिकी आधी किस्त। **–कहा**–वि० अस्पष्ट रूपसे कहा हुआ। **–खिला**–वि० अर्द्धविकसित। **–खुला**–वि० आधा खुला हुआ; अर्द्धोन्मीलित (आँखें, कली इ०)। **–गोरा**–वि० यूरोपियन और एशियाई मा-बापकी संतति, यूरेशियन, ऐंग्लोइंडियन। **–घट***–वि० जो पूरा न घटे; अस्पष्ट अर्थवाला, कठिन। **–जर***–वि० आधा जला हुआ। **–जल**–वि० आधा भरा हुआ (घड़ा इ०)। **–जला**–वि० अर्द्धदग्ध, आधा जला हुआ। **–पई**–स्त्री० एक बाट जो आधा पाव होता है। **–बुध***–वि० अर्द्धशिक्षित। **–बैसू***–वि० अधेड़। **–मरा, –मुआ**–वि० अर्द्धमृत, मृतप्राय।

अधड़ी*–वि० अधरमें स्थित; ऊटपटाँग।

अधन–वि० [सं०] धनहीन, कंगाल।

अधनिया–वि० आध आनेका; जो दो पैसेमें मिले।

अधन्ना–पु०, **अधन्नी**–स्त्री० आध आनेका सिक्का।

अधफर*–पु० अधर, अंतरिक्ष।

अधम–वि० [सं०] नीच, निकृष्ट; दुष्ट; पापी, निर्लज्ज।

अधमई, अधमाई*–स्त्री० अधमता, नीचता।

अधमर्ण–पु० [सं०] ऋण लेनेवाला, कर्जदार (डेटर)।

अधमांग–पु० [सं०] शरीरका नीचेवाला भाग, पैर।

अधमा–स्त्री० [सं०] नायिकाका एक भेद; निम्न श्रेणीकी स्त्री; कर्कशा स्त्री।

अधमुख*–वि० दे० 'अधोमुख'।

अधमोद्धारक–वि० [सं०] पापियोंको तारनेवाला।

अधर–वि० [सं०] नीचा; नीचेका; नीच, बुरा; घटिया; (हि०) जो पकड़ा न जा सके। पु० नीचेका ओंठ; होंठ; धरती और आकाशके बीचका स्थान; पाताल; अंतरिक्ष; **–पान**–पु० होंठ चूमना, चुंबन। **–बुद्धि**–वि० क्षुद्र या नीच बुद्धिवाला। **–मधु, –रस**–पु० अधरामृत। **–में झूलना, –में पड़ना–में लटकना**–बीचमें पड़ा रहना; अधूरा रहना; दुविधामें पड़ा रहना।

अधरज–पु० ओठोंकी लाली या पानकी लकीर।

अधरम–पु० दे० 'अधर्म'।

अधराधर–पु० [सं०] नीचेका ओंठ।

अधरामृत–पु० [सं०] अधररसके रूपमें रहनेवाला अमृत।

अधरोष्ठ, अधरौष्ठ–पु० [सं०] नीचेका ओंठ; नीचे और ऊपरके ओंठ।

अधर्म–पु० [सं०] धर्म-विरुद्ध कार्य, शास्त्र-विरुद्ध कर्म या आचरण; पाप, दुष्कर्म; अन्याय; अकर्तव्य।

अधर्मी (र्मिन्)–वि० [सं०] अधर्म करनेवाला, पापी।

अधर्म्य–वि० [सं०] धर्म-विरुद्ध; अधर्मी; अवैध; अन्याय।

अधवा–स्त्री० [सं०] विधवा, पतिरहिता, राँड़।

अधश्चर–पु० [सं०] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर। वि० नीचे-नीचे या जमीनपर रेंगकर चलनेवाला।

अधात्वीय–वि० [सं०] जो धातुका न बना हो, धातुसे भिन्न पदार्थसे बना हुआ।

अधार*–पु० दे० 'आधार'।

अधारिया–पु० बैलगाड़ीमें गाड़ीवानके बैठनेका स्थान, मोढ़ा।

अधारी*–स्त्री० आधार, सहारा; साधुओंकी लकड़ी; मुसाफिरी थैला। पु० बे-निकाला हुआ बैल। वि० स्त्री० अच्छी, भली लगनेवाली; सहारा देनेवाली।

अधार्मिक–वि० [सं०] अधर्मी, धर्मसे संबंध न रखनेवाला; पापी, दुष्कर्मी।

अधावट–वि० औटाकर आधा किया हुआ (दूध इ०)।

अधि–अ० (उप०) [सं] यह ऊपर, मुख्य, प्रधान (अधिराज), अधिक, अतिरिक्त (अधिमास), संबंधी, विषयक (अधिदैव, अध्यात्म) आदि अर्थोंका द्योतन करता है।

अधिक–वि० [सं०] बहुत, ज्यादा; बढ़ा हुआ; असाधारण; अतिरिक्त, फाजिल; विशेष; बादका; गौण। पु० एक अलंकार जिसमें आधेयका आधारसे अधिक होना कहा जाता है; एक निग्रहस्थान—हेतु, व्याप्ति और दृष्टान्तसे जो सिद्ध

हो उससे अधिक सिद्ध करना (न्या०)। **–कोण**–पु० (आब्ट्यूस एंगिल) एक समकोणसे वड़ा, किंतु दो समकोणोंसे छोटा कोण ।**–कोण त्रिभुज**–पु० (आब्ट्यूस एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण अधिक कोण हो । **–तर**—वि० और अधिक, किसीकी तुलनामें अधिक वड़ा । अ० वहुत करके,ज्यादातर ।**–तिथि**–स्त्री० दो दिन मानी जानेवाली तिथि। **–दिन,–दिवस**–दे० ‘अधिकतिथि’ ।**–मास**–पु० लौंदका महीना, मलमास ।

अधिकता–स्त्री० [सं०] वहुतायत, वढ़ती; विशेपता ।

अधि (क) प्रतिनिधित्व–पु० (वेटेज) किसी अल्पसंख्यक संप्रदाय या वर्गको दिया जानेवाला उसकी संख्याके अनुपातसे अधिक प्रतिनिधित्व ।

अधिकर–पु० (सूपर टैक्स) अधिक आयपर या किसी विशेप अवस्थामें लगनेवाला अतिरिक्त कर ।

अधिकरण–पु० [सं०] आधार, आश्रय, अधिष्ठान; संवंध; सामान, पदार्थ; दावा; प्राधान्य; व्याकरणमें क्रियाका आधार, सातवाँ कारक; न्यायालय; प्रकरण, अध्याय, वह प्रकरण या परिच्छेद जिसमें किसी विपयकी पूर्ण विवेचना की जाय; अधिकार-प्रदान; (ट्रिब्यूनल) न्यायालय; राज्यका कोई मुख्य विभाग (जैसे नावधिकरण) ।

अधिकरणिक–पु० [सं०] न्यायाधीश; अधिकारी ।

अधिकर्म (न्)–पु० [सं०] निगरानी, निरीक्षण; निरीक्षक, अध्यक्ष । **–कर, –कृत**–पु० मजदूरों आदिके कामकी देखभाल करनेवाला, मेठ ।

अधिकर्मी–पु० (ओहरसीयर) कुछ लोगोंपर निगरानी रखते हुए उनके कामोंकी देखभाल करनेवाला अधिकारी ।

अधिकांग–पु० [सं०] अतिरिक्त अंग । वि० अतिरिक्त अंगवाला ।

अधिकांश–पु० [सं०] वड़ा भाग । वि० अधिकतर । अ० वहुधा, अकसर ।

अधिकाई–स्त्री० अधिकता; विशेपता; महत्त्व ।

अधिकाधिक–वि०[सं०]अधिकसे अधिक,ज्यादासे ज्यादा ।

अधिकाना*–अ० क्रि० अधिक होना, वढ़ना ।

अधिकार–पु० [सं०] प्रभुत्व; शक्ति, इख्तियार; हक, निरीक्षण; कर्तव्य; पद; प्रयत्न; स्थान; स्वत्व, कब्जा; राज्य, हुकूमत; पात्रता, योग्यता; ज्ञान; कर्म-विशेपकी पात्रता; प्रकरण, विपय; नाटकके प्रधान फलका प्रभुत्व या उसको प्राप्त करनेकी योग्यता ।**–क्षेत्र**–पु० (जूरिस्डिक्शन) किसी न्यायाधीश आदिके अधिकारकी सीमा या क्षेत्र । **–का अवक्रमण**–पु० (डिवॉल्यूशन ऑफ पावर) अधिकारका एक व्यक्ति या संस्थाके हाथसे दूसरेके हाथमें चला जाना या दे दिया जाना; अप्रयुक्त अधिकारोंका अंतिम हकदारको प्राप्त हो जाना । **–पत्र**–पु० (चार्टर)अधिकार प्रदान करनेवाला वह लिखित प्रलेख जो राज्य, राजा या प्रधान शासकसे प्राप्त हुआ हो । **–पृच्छा**–स्त्री० (क्वो वारंटो) वह लिखित आदेशपत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या निगमित संस्थासे पूछा जाय कि किस अधिकारके आधारपर उसकी ओरसे किसी पद या मताधिकारका दावा किया जा रहा है ।

अधिकारिका सेना–स्त्री० (आरमी ऑफ आकुपेशन) जीते हुए देशपर तवतक अधिकार वनाये रखनेवाली सेना जवतक वहाँ नियमित शासनकी व्यवस्था कायम न हो जाय ।

अधिकारिराज्य–पु० (व्यूरोक्रैसी) वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था मुख्य रूपसे अधिकारियोंकी परंपरापर आश्रित हो; नौकरशाही; कर्मचारितंत्र ।

अधिकारी (रिन्)–वि० [सं०] अधिकार रखनेवाला, हकदार । पु० वह जिसमें पात्रता हो; मालिक; शासक; अफसर; पुरुप (सृष्टिकर्ता); नाटकका वह पात्र जिसे मुख्य फलकी प्राप्ति होती है ।

अधिकृत–वि० [सं०] अधिकार या कब्जेमें आया हुआ, अधिकार-संपन्न; आवश्यक योग्यता रखनेवाला । पु० अधिकारी, अध्यक्ष । **–गणक**–पु० (चार्टर्ड अकाउंटेंट) हिसाव-कितावकी जाँच इत्यादिका काम भली-भाँति जाननेवाला व्यक्ति जिसे उपयुक्त परीक्षाके वाद सरकारसे इसका प्रमाणपत्र मिला हो ।

अधिकृति–स्त्री० [सं०] अधिकार, स्वत्व ।

अधिकोष–पु० (बैंक) लोगोंका रुपया जमा करने और माँगनेपर व्याज सहित लौटा देने, ऋण देने आदिका काम करनेवाली कोठी या संस्था ।

अधिकोपण कार्य (व्यापार)–पु० (वैंकिंग विजिनेस) दूसरोंका रुपया जमा करने, लोगोंको ऋण देने आदिका कारवार, कोठीवाली, महाजनी ।

अधिक्रम,–क्रमण–पु० [सं०] आरोहण; चढ़ाई, हमला ।

अधिक्षेत्र–पु० (जूरिस्डिक्शन) दे० ‘अधिकारक्षेत्र’ ।

अधिगत–वि० [सं०] प्राप्त; ज्ञात; पढ़ा हुआ ।

अधिगम–पु० [सं०] प्राप्ति; पहुँचना; जानना; सीखना; धनादिकी प्राप्ति; व्यापारिक लाभ ।

अधिग्रहण–पु० (ऐक्विजिशन) अधिकार या अभियाचन द्वारा किसीकी संपत्ति आदि ले लेना ।

अधिज्य–वि० [सं०] (धनुप्) जिसका चिल्ला चढ़ा हुआ हो, तना हुआ ।

अधित्यका–स्त्री० [सं०] पहाड़ आदिके ऊपरकी समतल भूमि, ‘टेवुललैंड’ ।

अधिदंत–पु० [सं०] दाँतके ऊपर निकलनेवाला दाँत ।

अधिदार्व–वि० [सं०] काष्ठ-संवंधी, काठका ।

अधिदिन–पु० [सं०] दे० ‘अधिक दिन’ ।

अधिदेय–पु०(अलाउंस) यात्रा-व्यय,भोजन-व्यय, मकानके किराये आदिके संवंधमें या किसी अतिरिक्त कामके लिए कर्मचारीको दी जानेवाली बँधी हुई रकम, भत्ता !

अधिदेव–पु० [सं०] इष्ट देव; प्रधान देव; देवाधिप; परमेश्वर । वि० देव-संवंधी ।

अधिदैव, अधिदैवत–पु० [सं०] दे० ‘अधिदेव’ ।

अधिनाथ–पु० [सं०] अधीश्वर; प्रधान अधिकारी ।

अधिनायक–पु० [सं०] मुखिया, नेता; अनियंत्रित, सर्वाधिकार-संपन्न शासक या अधिकारी, ‘डिक्टेटर’ । **–तंत्र**–पु० (डिक्टेटरशिप) एक व्यक्ति या व्यक्तिसमूहका स्वेच्छापूर्ण शासन, जिसमें शासित वर्गकी स्वीकृति लेने या इच्छा जाननेकी आवश्यकता न समझी जाय ।

अधिनियम–पु० (ऐक्ट) विधानमंडल (अथवा राजा या प्रधान शासक) द्वारा पारित या स्वीकृत विधि ।

अधिनियमन–पु० (इनैक्टमेंट) दे० ‘विधायन’।

अधिनिर्वाचित करना–स० क्रि० (कोऑप्ट) किसी संस्थाके विद्यमान सदस्योंका अपने अधिकारसे किसी बाहरी व्यक्तिको भी संस्थाका सदस्य निर्वाचित कर लेना।

अधिनिष्कासन–पु० (इविक्शन) विधि-विहित कार्यवाही द्वारा किसीको भूमि, मकान आदिसे बाहर निकाल देना।

अधिप–पु०[सं०] मालिक, स्वामी; राजा, शासक; प्रधान।

अधिपति–पु० [सं०] दे० ‘अधिप’।

अधिपत्र–पु० (वारंट) वह पत्र जिसमें किसीको कोई काम करनेका अधिकार, अनुमति या आज्ञा दी जाय, लिखित आदेशपत्र; किसीको पकड़ने या उसका माल जब्त करनेकी न्यायालयकी लिखित आज्ञा।

अधिपुरुष–पु० (बॉस) किसी संस्था आदिका प्रमुख अधिकारी; अधिकारप्राप्त व्यक्ति।

अधिभार–पु० (सरचार्ज) कर या शुल्कादिका वह अतिरिक्त भार जो विशेष परिस्थितिमें या विशेष कार्यके लिए किसीपर डाला जाय; निर्धारित परिमाणसे अधिक कर, शुल्क इत्यादि।

अधिमान–पु०(प्रेफरेंस) किसी वस्तु, देश, व्यक्ति आदिको औरोंसे अधिक महत्त्व या मान देना, वरीयता, तरजीह।

अधिमान्य–वि० (प्रेफरेबिल) जो औरोंसे अधिक अच्छा, महत्त्वपूर्ण या ग्रहण करने योग्य हो अथवा समझा जाय।

अधिमान्यता–स्त्री० (प्रेफरेंस) अधिमान्य होनेका भाव, वरीयता (राजकीय अधिमान्यता = इंपीरियल प्रेफरेंस)।

अधिमास–पु० [सं०] हर तीसरे वर्ष बढ़नेवाला चांद्र मास, लौंदका महीना।

अधिमूल्यपर–अ० (अबव्ह पार) निर्धारित या अंकित मूल्यसे अधिक दामपर।

अधिया–पु० आधेका हिस्सेदार। स्त्री० आधेकी साझेदारी; ऐसी व्यवस्था जिसमें उपजका आधा मालिकको और आधा खेत जोतने-बोनेवालेको मिलता है।

अधियाचन–पु० (रेक्विजिशन) किसी विशेष कार्यके लिए किसीसे कोई चीज अधिकारपूर्वक माँगना या कोई काम करनेकी (लिखित) माँग करना; किसी सभाके सदस्यों द्वारा सभाका अधिवेशन करनेकी लिखित माँग करना।

अधियान*–पु० गोमुखी, जपनी; सुमिरनी।

अधियाना–स० क्रि० आधे-आध बाँट देना। अ० क्रि० आधा हो जाना या रह जाना।

अधियार–पु० आधा हिस्सा या आधेका हिस्सेदार; वह जमींदार या काश्तकार जिसका आधा संबंध एक गाँवसे और आधा दूसरेसे हो।

अधियारिन†–स्त्री० सौत; आधे हिस्सेकी हकदार स्त्री।

अधियारी–स्त्री० किसी जायदादमें आधी हिस्सेदारी; किसीकी जमींदारी या काश्तका दो गाँवोंमें होना।

अधियुक्त–वि० (एम्प्लॉयड) दे० ‘नियोजित’।

अधियोक्ता, अधियोजक–पु०(एम्प्लायर) दे० ‘नियोजक’।

अधियोग–पु० [सं०] ग्रहोंका एक योग जो यात्राके लिए शुभ माना जाता है।

अधियोजन–पु० (एम्प्लॉयमेंट) दे० ‘नियोजन’।

अधियोजनालय–पु० (एम्प्लायमेंट् ब्यूरो) दे० ‘नियोजनालय’, काम-दिलाऊ दफ्तर।

अधिरथ–वि० [सं०] रथारूढ़। पु० रथ हाँकनेवाला, सारथि; कर्णको पालनेवाला सूत।

अधिराज–पु० [सं०] सम्राट्, अधीश्वर।

अधिराज्य–पु० [सं०] सम्राट्का पद या अधिकार; साम्राज्य। पु० (डोमिन्यन) स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेश, स्वतंत्र उपनिवेश।

अधिरूढ–वि० [सं०] चढ़ा हुआ; बढ़ा हुआ।

अधिरोप–पु० (चार्ज) किराया, दंड आदिके रूपमें किसीपर अधिरोपित की जानेवाली रकम।

अधिरोहण–पु० [सं०] ऊपर चढ़ना, सवार होना, धनुष्पर चिल्ला चढ़ाना।

अधिलाभांश–पु० वह लाभांश जो किसी कारखाने या व्यापारिक संस्थाके कर्मियों या हिस्सेदारोंको वेतन या साधारण लाभांशके अतिरिक्त दिया जाय।

अधिवक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] किसी पक्षका समर्थन करनेवाला (एडवोकेट), न्यायालय आदिमें किसीके मामलेकी पैरवी करनेवाला; वकील; वक्ता।

अधिवर्ष–पु० (लीप-ईयर) (अधिक दिन या अधिक मासवाला वर्ष) वह चांद्र वर्ष जिसमें मलमास पड़ता हो; वह ईसवी सन् जिसमें फरवरी २९ दिनका हो; वह सौर वर्ष जिसमें फाल्गुन ३१ दिनका हो।

अधिवसित–वि० [सं०] अध्युषित, आबाद, बसा हुआ।

अधिवास–पु० [सं०] वासस्थान, बस्ती; विलंबतक ठहरना; दूसरेके घर जाकर रहना। पु० (डोमिसाइल) एक देश, प्रांत या राज्यसे हटकर किसी दूसरे देश, प्रांतादिमें स्थायी रूपसे बस जाना; सुगंध; सुगंधित उबटन आदिका उपयोग; विवाहके पहले हल्दी आदि चढ़ानेकी एक रीति; लबादा।

अधिवासित–वि० [सं०] सुगंधित, बसाया हुआ।

अधिवासी (सिन्)–वि०, पु० [सं०] बसनेवाला, रहनेवाला; (डोमिसाइल्ड पर्सन) दूसरे देश या राज्यादिमें स्थायी रूपसे जा बसनेवाला; सुवासित करनेवाला।

अधिविकर्ष–पु० (ओव्हर ड्राफ्ट) अधिकोष या बैंकमें किसीके खातेमें जितना रुपया जमा हो, उससे अधिककी हुंडी या धनादेश काटना या इस तरह काटी हुई हुंडी।

अधिशिक्षक–पु० (रेक्टर) किसी विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदिका प्रधान; किसी विद्यालयका प्रधान शिक्षक (स्काटलैंड); मुख्याधिष्ठाता।

अधिशुल्क–पु० (प्रीमियम) अंकित या वास्तविक मूल्यसे अधिक ली जानेवाली रकम या शुल्क; किसी मुद्राको उससे अधिक मूल्यकी मुद्रामें परिणत करनेपर अलगसे लिया जानेवाला शुल्क।

अधिष्ठाता (तृ)–पु० [सं०] देखभाल करनेवाला; नियामकः अध्यक्ष; मुखिया; ईश्वर।

अधिष्ठान–पु० [सं०] रहनेका स्थान; वास; आश्रय; बस्ती; नगर; भ्रांति या अभ्यासका आधार (वेदांत); पासमें होना, सन्निधि; अधिकार; शासन; राज्य।

अधिष्ठापन–पु० (इंस्टलेशन) विद्युद्यंत्र, तापयंत्र आदिका बैठाया, स्थापित किया जाना।

अधिष्ठित–वि० [सं०] स्थित; स्थापित; अधिकृत; नियोजित।

अधिसूचना—स्त्री० (नोटिफिकेशन) प्रज्ञापन, अधिकृत सूचना, सरकार द्वारा प्रकाशित या सरकारी गजटमें छपी हुई सूचना।

अधीक्षक—पु० (सुपरिंटेंडेंट) किसी कार्यालय या विभागका वह प्रधान अधिकारी जो अपने अधीन काम करनेवाले समस्त कर्मचारियोंकी निगरानी करे।

अधीक्षण—पु० (सुपरिंटेंडेंस) मातहत कर्मचारियोंके काम-काजकी देख रेख करना।

अधीत—वि० [सं०] पढ़ा हुआ (विषय); जिसने किसी वस्तुका अध्ययन कर लिया हो।

अधीन—वि० [सं०] वशवर्त्ती; मातहत; आश्रित। **—अधिकारी**—पु० (सबॉर्डिनेट आफिसर) किसी बड़े या मुख्य अधिकारीके नीचे काम करनेवाला अफसर, मातहत अफसर। **—न्यायालय**—पु० (सबार्डिनेट कोर्ट) वह छोटी अदालत जो किसी बड़ी अदालत (उच्च न्यायालय आदि) के मातहत या अधीन हो। **—स्थ**—वि० किसीकी अधीनता, मातहतीमें रहनेवाला (कर्मचारी)।

अधीनता—स्त्री० [सं०] परवशता; विवशता; दीनता।

अधीनना*—अ० क्रि० अधीन होना।

अधीनीकरण—पु० (सब्जुगेशन) वशमें करने, जीतने या अधीनतामें लानेका कार्य।

अधीर—वि० [सं०] धैर्यरहित, उतावला; उद्विग्न, आकुल; दृढ़तारहित; अस्थिरचित्त; भीरु।

अधीरा—स्त्री० [सं०] बिजली; मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओंका एक भेद।

अधीश, अधीश्वर—पु० [सं०] मालिक; अध्यक्ष; राजा; सर्वोपरि या सार्वभौम नरेश।

अधुना—अ० [सं०] अब; इस समय; इन दिनों।

अधूरा—वि० अपूर्ण; नातमाम; अस्पष्ट।

अधृति—स्त्री० [सं०] धीरताका अभाव; असंयम।

अधृष्ट—वि० [सं०] जो ढीठ न हो; सलज्ज; विनम्र; अजेय।

अधेड़—वि० आधी उम्रका; ढलती उम्रका।

अधेला—पु० पैसेका आधा, धेला।

अधेली—स्त्री० आठ आनेका सिक्का, अठन्नी।

अधैर्य—पु० [सं०] अधीरता। वि० धैर्यरहित; आतुर।

अधो—अ० [सं०] ('अधः'का संधिगत रूप)। **—गति**—स्त्री० पतन; गिरावट; अवनति; दुर्गति; दुर्दशा; नरक जाना। **—गमन**—पु० दे० 'अधोगति'। **—गामी (मिन्)**—वि० पतन या अवनतिकी ओर जानेवाला; नरक जानेवाला। **—भुवन**—पु० पाताल; नीचेका लोक। **—भूमि**—स्त्री० पर्वतके नीचेकी भूमि। **—मार्ग**—पु० सुरंगका रास्ता; गुदा। **—मुख,—वदन**—वि० जिसका मुख नीचेकी ओर हो; औंधा। अ० मुँहके बल। **—यंत्र**—पु० भभका। **—लंब**—पु० लंब, साहुल। **—लोक**—पु० नीचेका लोक, पाताल। **—वायु**—स्त्री० अपान वायु, गोज़। **—विंदु**—पु० पैरके नीचेका विंदु।

अधोरध*—अ० दे० 'अधोर्द्ध'।

अधोर्द्ध—अ० नीचे-ऊपर, तले-ऊपर।

अधौड़ी—स्त्री० आधा चरसा; मोटा चमड़ा।

अध्यक्ष—पु० [सं०] निरीक्षणकर्ता; नियामक; संचालक; मुख्य अधिकारी; अधिष्ठाता; (चेयरमैन) किसी सभा, संस्था या नगरपालिकाका प्रधान; (स्पीकर) संसद या विधान-सभाके सदस्यों द्वारा चुना गया वह मुख्य अधिकारी जो उसकी बैठकोंमें अध्यक्षता करे, विवादके समय शांतिभंग न होने दे तथा किसी प्रस्तावके पक्ष-विपक्षमें समसंख्यक मत प्राप्त होने पर अपना निर्णायक मत दे; प्रमुख। **—पीठ**—पु० (चेयर) अध्यक्ष या प्रमुखके बैठनेकी कुरसी या आसन। **—दीर्घा**—स्त्री० (स्पीकर्स गैलरी) संसद या विधानसभाके अध्यक्षके पीछेकी वह दीर्घा जहाँ बैठकर विशिष्ट अतिथिगण अथवा अध्यक्षसे अनुमतिप्राप्त विशिष्ट व्यक्ति, सभाकी काररवाई देखते तथा वक्ताओंके भाषणादि सुनते हैं।

अध्यच्छ*—पु० दे० 'अध्यक्ष'।

अध्ययन—पु० [सं०] पढ़ना; पढ़ाई। **—कक्ष**—पु० (स्टडी) लिखने-पढ़ने, अध्ययनादिका कमरा।

अध्यवसान—पु० [सं०] निश्चय; प्रयत्न; अध्यवसाय।

अध्यवसाय—पु० [सं०] यत्न, उद्यम; लगातार कोशिश; निश्चय; उत्साह।

अध्यवसायी (यिन्)—वि० [सं०] अध्यवसाय करनेवाला; उत्साही; उद्यमशील।

अध्यवसित—वि० [सं०] जिसके लिए प्रयत्न या संकल्प किया गया हो।

अध्यात्म—वि० [सं०] आत्मासे संबंध रखनेवाला। पु० आत्मा-परमात्मा-संबंधी विचार; परमात्मा। **—ज्ञान**—पु० परमात्मा या आत्मा-संबंधी ज्ञान। **—दर्शी (र्शिन्)**—वि० परमात्माको जाननेवाला। **—योग**—पु० इंद्रियोंके विषयोंसे मनको हटाकर परमात्माके ध्यानमें केंद्रित करना **—विद्या**—स्त्री० आत्मा-परमात्माके स्वरूप, संबंध आदिका विचार करनेवाला शास्त्र; ब्रह्मविचार। **—शास्त्र**—पु० अध्यात्म-विद्या।

अध्यादेश—पु० (आर्डिनेंस) राज्यके अधिपति द्वारा जारी किया गया वह आधिकारिक आदेश जो किसी आकस्मिक या विशेष स्थितिमें थोड़े समयतक लागू हो और जो उक्त स्थितिके न रहनेपर वापस ले लिया जाय या आवश्यकता बनी रहनेपर संसद या विधानसभा द्वारा अधिनियमके रूपमें स्वीकृत कर लिया जाय।

अध्यापक—पु० [सं०] पढ़ानेवाला, शिक्षक।

अध्यापकी—स्त्री० शिक्षण-कार्य, पाठन, पढ़ानेका काम।

अध्यापन—पु० [सं०] पढ़ाना; ब्राह्मणोंके छः कर्मोंमेंसे एक।

अध्यापयिता (तृ)—पु० [सं०] पढ़ानेवाला।

अध्यापिका—स्त्री० [सं०] पढ़ानेवाली, शिक्षिका।

अध्याय—पु० [सं०] पढ़ना, अध्ययन; पाठ, परिच्छेद।

अध्यारूढ—वि० [सं०] सवार, चढ़ा हुआ।

अध्यारोप,—रोपण—पु० [सं०] एक वस्तुके गुण-धर्मका भ्रमवश अन्य वस्तुमें आरोप करना; अध्यास; मिथ्या ज्ञान।

अध्यारोपित—वि० [सं०] भ्रमवश (एक वस्तुका गुणधर्म अन्य वस्तुमें) आरोपित।

अध्यास—पु० [सं०] मिथ्या ज्ञान; भ्रांत ज्ञान या प्रतीति (रस्सीमें साँप, सीपमें चाँदीका भ्रम)।

अध्याहार—पु० [सं०] वाक्यमें छूटे हुए पद या पदोंको

अर्थपूर्तिके लिए ऊपरसे जोड़ लेना; तर्क-वितर्क; (इंफरेंस) घटनावली आदिसे कोई निष्कर्ष निकालना, तथ्योंके आधारपर कुछ अनुमान लगाना, अनुमान।

अध्यूढा–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले, प्रथम विवाहिता स्त्री।

अध्येतव्य, अध्येय–वि०]सं०] पढ़नेके योग्य।

अध्येता (तृ)–पु० [सं०] अध्ययन करनेवाला।

अध्रुव–वि० [सं०] अस्थिर; अस्थायी; अनिश्चित; संदिग्ध।

अध्वर–पु० [सं०[यज्ञ; सोमयज्ञ; आकाश।

अध्वर्यु–पु० [सं०] चार ऋत्विजों–यज्ञ करानेवालोंमेंसे एक, यजुर्वेदज्ञ ऋत्विज।

अनंग–वि० [सं०] देह-रहित। पु० कामदेव; आकाश; मन। **–शत्रु**–पु० शिव।

अनंगना*–अ० क्रि० बेसुध होना, विदेह होना।

अनंगारि–पु० [सं०] शिव।

अनंगी (गिन्)–वि० [सं०] विना अंगका, अशरीरी। पु० परमेश्वर; कामदेव।

अनंगीकार करना–स० क्रि० (रिपुडिएट) किसीकी सत्ता, प्रभाव या आज्ञा न मानना; ऋण, दायित्व आदिसे इनकार करना; किसीके कथन, आरोप आदिको न मानना।

अनंत–वि० [सं०] जिसका अंत न हो; असीम, अपार; अक्षय। पु० विष्णु; विष्णुका शंख; शेषनाग; लक्ष्मण; असीमता; नित्यता; बलराम; वासुकि; आकाश; बाँहपर पहननेका एक गहना; अनंत चतुर्दशीके व्रतमें पहननेका एक गंडा। **–विजय**–पु० युधिष्ठिरके शंखका नाम। **–शक्ति**–वि० सर्वशक्तिमान् (परमेश्वर)।

अनंतर–अ० [सं०] तुरंत बाद; पीछे। वि० अंतर-रहित; सटा या लगा हुआ; पास या पड़ोसका।

अनंता–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; पार्वती; अनंतमूल; दूब आदि।

अनंद*–पु० दे० 'आनंद'।

अनंदना*–अ० क्रि० आनंदित होना।

अन–पु० [सं०] श्वास-प्रश्वास। * अ० विना, बगैर (उपसर्गके तौरपर यह व्यंजनादि शब्दोंके पूर्व भी लगता है–जैसे अनहोनी, अनमेल)। वि० दूसरा।

अनअहिवात*–पु० वैधव्य।

अनइच्छित*–वि० जिसकी इच्छा न की गयी हो।

अनइस, अनइसा–वि० दे० 'अनैस', 'अनैसा'।

अनऋतु*–स्त्री० विरुद्ध ऋतु; अनुपयुक्त समय।

अनकंप*–वि० कंपनरहित, स्थिर। पु० कंपनका अभाव।

अनक–*पु० दे० 'आनक'।

अनकना*–स० क्रि० सुनना; लुक-छिपकर सुनना।

अनक़रीब–अ० [अ०] शीघ्र; करीब-करीब; पास; प्रायः।

अनकहा–वि०, विना कहा हुआ, अनुक्त। [स्त्री० अनकही।] **मु०–(ही) देना***–चुप रहना।

अनख–पु० क्रोध, रोष; ग्लानि; डाह, जलन; * झंझट; डिठौना। वि० [सं०] नखहीन।

अनखना*–अ० क्रि० रुष्ट होना, खीझना।

अनखाना–अ० क्रि० रुष्ट होना, खीझना। स० क्रि० रुष्ट करना, खिझाना।

अनखाहट–स्त्री० दे० 'अनख'।

अनखी*–वि० अनख करनेवाला, क्रोधी।

अनखुला–वि० जो खुला न हो; जिसका कारण अज्ञात हो।

अनखौहाँ*–वि० अनख-भरा, कुपित; चिड़चिड़ा; अनुचित; क्रोधोत्पादक।

अनगढ़–वि० बिना गढ़ा हुआ; बे-डौल; टेढ़ा-मेढ़ा; असंस्कृत; उजड्ड; *स्वयंभू।

अनगन, अनगिन,*–वि० दे० 'अनगिनत'।

अनगना–वि० जो गिना न गया हो, बेशुमार। पु० गर्भका आठवाँ मास।

अनगनिया*–वि० अगणित, बे-शुमार।

अनगवना*–अ० क्रि० जान-बूझकर देर लगाना; टालमटोल करना।

अनगाना*–अ० क्रि० देर लगाना। स० क्रि० सुलझाना (केशादि)।

अनगिनत–वि० अगणित, बेहिसाब।

अनगिना–वि० दे० 'अनगिनत'; जो गिना न गया हो।

अनगिनित–वि० दे० 'अनगिनत'।

अनगैरी*–वि० अपरिचित; बे-जाना; गैर।

अनघ–वि० [सं०] अघहीन, निष्पाप; पवित्र, अकलुष; निर्मल। पु० वह जो पाप न हो, पुण्य; विष्णु।

अनघरी*–स्त्री० कुसमय, असमय।

अनघैरी*–वि० अनिमंत्रित; अनाहूत।

अनघोर*–पु० अन्याय, ज्यादती।

अनघोरी*–अ० चुपकेसे, अचानक 'जीति पाइ अनघोरी आये'–छत्र०।

अनचहा*–वि० जो चाहा न गया हो, अप्रिय, अनिच्छित।

अनचाखा*–वि० न चखा हुआ।

अनचाहत*–वि० न चाहनेवाला, प्रेम-रहित। पु० न चाहनेवाला व्यक्ति।

अनचीता–वि० बिना सोचा हुआ, न चाहा हुआ।

अनचीन्हा*–वि० अपरिचित, बे-जाना।

अनचैन*–पु० बे-चैनी।

अनजान–वि० अज्ञान; न जाननेवाला, अनभिज्ञ; नासमझ; अपरिचित। पु० अज्ञानावस्था; अज्ञान।

अनट*–पु० अन्याय, अनाचार, अनीति।

अनडीठ*–वि० न देखा हुआ, अदृष्ट।

अनत–वि० [सं०] न झुका हुआ, अनम्र। * अ० अन्यत्र, और कहीं।

अनति–स्त्री० [सं०] नम्रता या विनयका अभाव; घमंड। वि० अतिका उलटा, थोड़ा।

अनदेखा–वि० न देखा हुआ।

अनद्यतन–वि० [सं०] आजके दिनसे संबंध न रखनेवाला; आजसे पहले वा पीछेका। पु० अद्यतनसे भिन्न काल।

अनधिक–वि० [सं०] जो अधिक न हो; असीम; पूर्ण।

अनधिकार–पु० [सं०] अधिकार, शक्ति, योग्यता, पात्रता, हक आदिका अभाव। वि० अधिकाररहित। **–चर्चा**–स्त्री० विना जाने-समझे या योग्यताके बाहर किसी विषयमें बोलना, दखल देना। **–चेष्टा**–स्त्री० जिस बात या कार्यका अधिकार न हो वह करना।

अनधिकारिक, अनधिकृत–वि० (अन-अथॉराइज्ड)जिसके

पीछे समुचित अधिकार न हो; जो अधिकारके बाहर हो (चेष्टा इ०); जो किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा दिया या जारी न किया गया हो (वक्तव्य, विवरण इ०)।

अनधिकारी (रिन्)–वि० [सं०] अधिकार न रखनेवाला; किसी विषयकी योग्यता, पात्रता न रखनेवाला।

अनधिकृत–वि० [सं०] जिसकी अधिकारीके पदपर नियुक्ति न हुई हो; जो अधिकारमें न किया गया हो; अनधिकारिक।

अनधिगत–वि० [सं०] न जाना हुआ; अप्राप्त।**–मनोरथ**–वि० जिसकी अभिलाषा पूरी न हुई हो, निराश।

अनध्ययन–पु० [सं०] अध्ययन न करना; अध्ययन करते समय बीचमें होनेवाला विराम।

अनध्यवसाय–पु० [सं०] अध्यवसायका अभाव; ढिलाई,

अनध्याय–पु० [सं०] पढ़ाई न होना; पढ़ाई बंद रहनेका दिन, छुट्टी।

अननुज्ञापित–वि० (डिस-अलाउड) (वह प्रस्तावादि) जिसे सभामें उपस्थापित करनेकी अनुज्ञा न दी गयी हो।

अननुभूत–वि० [सं०] जिसका अनुभव न किया गया हो।

अननुरूप–वि० (इंकॉम्पैटिबिल) जो रूप, स्वभाव आदिकी दृष्टिसे अनुरूप न हो, मेल न खाता हो।

अनन्नास–पु० एक पौधा जिसमें ऊपरके हिस्सेमें फल जैसी एक गाँठ बन जाती है। इसका स्वाद खटमीठा होता है।

अनन्य–वि० [सं०] एकनिष्ठ; एकाश्रयी; अन्यकी ओर न जानेवाला; अभिन्न; वही; अद्वितीय; एकाग्र; अविभक्त। **–गति**–स्त्री० एकमात्र सहारा। वि० दे० 'अनन्यगतिक'। **–गतिक**–वि० जिसको दूसरा उपाय या सहारा न हो।

अनन्याधिकार–पु० [सं०] किसी वस्तुके बनाने-बेचने आदिका एकाधिकार, इजारा।

अनन्वय–पु० [सं०] अन्वय–संबंधका अभाव; एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय स्वयं ही अपना उपमान होता है।

अनन्वित–वि० [सं०] असंबद्ध; बे-लगाम; असंगत; रहित।

अनपकारक–वि० [सं०] अहानिकर; निर्दोष।

अनपच–पु० बदहजमी, अपच।

अनपढ़–वि० बे-पढ़ा, निरक्षर।

अनपत्य–वि० [सं०] संतानहीन; जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो; जो बच्चोंके अनुकूल न हो।

अनपराध–वि० [सं०] निर्दोष, बेगुनाह। पु० निर्दोषता।

अनपाकरण, अनपा कर्म (न्)–पु० [सं०] इकरार पूरा न करना; ऋण या मजदूरी न चुकाना।

अनपायी (यिन्)–वि० [सं०] अचल, स्थायी, स्थिर; नाशरहित; अविकारी। [स्त्री० अनपायिनी।]

अनपेक्ष, अनपेक्षी (क्षिन्)–वि० [सं०] चाह या परवाह न रखनेवाला; तटस्थ; निष्पक्ष; असंबद्ध; स्वतंत्र।

अनपेक्षित, अनपेक्ष्य–वि० [सं०] जिसकी चाह या परवाह न हो।

अनफाँस*–पु० बंधका उलटा, मुक्ति।

अनबन–स्त्री० बिगाड़; झगड़ा। * वि० विविध, अनेक।

अनबिध*–वि० दे० 'अनबिधा'।

अनबिधा–वि० बिन-बिधा (मोती)।

अनबूझ*–वि० दे० 'अबूझ'।

अनबूड़ा*–वि० न डूबा हुआ; वि० गहराईमें न पैठ

अनबेधा–वि० दे० 'अनबिधा'।

अनबोल, अनबोला–वि० न बोलनेवाला; बे-जबान (पशु, शिशु, इ०)।

अनबोलता–वि० दे० 'अनबोल'।

अनब्याहा–वि० जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित।

अनभल*–पु० अहित; हानि।

अनभला*–वि० बुरा, कुत्सित, निंद्य।

अनभाय, अनभाया–वि० न भानेवाला, अप्रिय, अरुचिकर।

अनभावता*–वि० दे० 'अनभाया'।

अनभिज्ञ–वि०[सं०]मूर्ख, अनजान, अनाड़ी; अपरिचित।

अनभिभूत–वि० [सं०] अपराजित; अबाधित।

अनभिव्यक्त–वि० [सं०] जो व्यक्त न हो, गुप्त, अस्पष्ट।

अनभीष्ट–वि० [सं०] अवांछित, अप्रिय।

अनभेदी*–वि० भेद न जाननेवाला।

अनभो*–पु० अनहोनी बात, अचरज। वि० अलौकिक, अद्भुत।

अनभोरी*–स्त्री० भुलावा, धोखा।

अनभ्यस्त–वि० [सं०] जिसका अभ्यास न किया गया हो; जिसने अभ्यास न किया हो।

अनभ्यास–पु० [सं०] अभ्यासका अभाव; अनुशीलन मश्क या आदतका न होना।

अनम–पु० [सं०] ब्राह्मण (जो दूसरेको नमस्कार न कर * वि० उद्धत।

अनमद*–वि० मदरहित; निरहंकार।

अनमन*, अनमना–वि० उदास, खिन्न; अस्वस्थ।

अनमाँगा–वि० बिना माँगा हुआ, अयाचित।

अनमापा*–वि० जिसकी माप न हो सके, जो नापा न गया हो।

अनमारग*–पु० कुमार्ग, अधर्म, दुष्कर्म।

अनमिख*–वि० दे० 'अनिमिष'।

अनमिल,–मिलत*–वि० बे-मेल, असंबद्ध; निर्लिप्त।

अनमिलता*–वि० न मिलनेवाला, अप्राप्य।

अनमीलना*–स० क्रि० आँखें खोलना।

अनमेल–वि० बे-मेल; खालिस।

अनमोल–वि० अमूल्य; बहुमूल्य।

अनम्र–वि० [सं०] अविनीत; उद्दंड, घमंडी।

अनय–पु० [सं०] अनीति; अन्याय; व्यसन; विपद।

अनयन–वि० [सं०] नेत्ररहित, अंधा।

अनयस*–वि० दे० 'अनैस'।

अनयास*–अ० दे० 'अनायास'।

अनरथ*–पु० दे० 'अनर्थ'।

अनरना*–स० क्रि० अनादर करना।

अनरस–पु० रसका अभाव; रुखाई; रोष; बिगाड़; दुःख

अनरसना*–अ० क्रि० उदास होना; खिन्न होना।

अनरसा–पु० एक मिठाई। * वि० अनमना।

अनराता*–वि० न रँगा हुआ; अनुराग-विहीन।

अनरीति–स्त्री० कुरीति; अनीति; अनुचित व्यवहार।

अनरुच*–वि० अरुचिकर।

ी० अरुचि, अनिच्छा; मंदाग्नि ।

अर्थ ० कुरूप; असदृश ।

वि० [सं०] बेरोक, लगातार; अनियंत्रित; मनमाना; विचारहीन । **–प्रलाप**–पु० मनमानी बकवास ।

अनर्घ–वि० [सं०] अमूल्य; कम मूल्यका । पु० गलत कीमत, अनुचित मूल्य ।

र्जित–वि० [सं०] न कमाया हुआ; जिसका अर्जन न गया हो (अनअर्ण्ड); अप्राप्त । **–आय**–स्त्री० ाके दाम यकायक चढ़ जानेसे होनेवाली आय ाभ ।

नर्थ–वि० [सं०] निकम्मा; भाग्यहीन; हानिकारक; बुरा; अर्थहीन; भिन्न अर्थवाला । पु० उलटा अर्थ; अर्थका अभाव; अर्थहानि; मूल्यका न होना; नैराश्यजनक घटना; विष्णु; अनिष्ट; खराबी; निकम्मी चीज । **–कर, –कारी (रिन्)**–वि० अनर्थ करनेवाला; हानि या निष्ट करनेवाला ।

र्थक–वि० [सं०] अर्थरहित; निष्प्रयोजन, बे-मतलब; भकर; भाग्यहीन ।

-वि० [सं०] अयोग्य; अनुपयुक्त; अनधिकारी

अनर्हता–स्त्री० (डिस्क्वालिफिकेशन) किसी कार्य, पद दिके योग्य न होनेका भाव, अयोग्यता; नाकाबिलीयत ।

ीकरण–पु० (डिस्क्वालिफाई) किसीको किसी कार्य, देके अयोग्य ठहराना ।

ु० [सं०] अग्नि, आग; पाचनशक्ति, पाचन-रस; की संख्या; कृत्तिका नक्षत्र; **–चूर्ण**–पु० बारूद । –ा–स्त्री० आग्नेयी; स्वाहा । **–मुख**–पु० देवता; ब्राह्मण; त्रक; भिलावाँ ।

स–वि० [सं०] आलस्य-रहित, जागरूक, चुस्त ।

पक*–वि० अयोग्य ।

ेख*–वि० अलख; अगोचर ।

प–वि० [सं०] थोड़ेका उल्टा, अधिक ।

नवकाश–पु० [सं०] अवकाशका अभाव, फुरसत या ाइशका न होना ।

च्छिन्न–वि० [सं०] न बिलगाया हुआ, अखंडित, -रहित; जुड़ा हुआ ।

ट–पु० एक आभूषण जो पैरके अँगूठेमें पहना जाता कोल्हूके बैलकी आँखोंका ढक्कन ।

द्य–वि० [सं०] अनिंद्य; निर्दोष ।

धान–पु० [सं०] अमनोयोग; असावधानता । वि० ादी, लापरवाह ।

ग*–पु० वंश, कुल; दे० 'अन्वय' ।

अ त–वि० [सं०] निरंतर; अविराम । अ० लगातार ।

र–पु० [सं०] निरवकाश; कुसमय ।

स्था–स्त्री० [सं०] अवस्थितिका अभाव; अस्थिरता; व्यवस्था; एक तर्कदोष ।

स्थित–वि० [सं०] अस्थिर; अस्थिरचित्त ।

वस्थिति–स्त्री० [सं०] चापल्य, अस्थिरता; अधैर्य; श्रयका अभाव; आचरणहीनता; समाधि प्राप्त होने पर ी चित्तका स्थिर न होना ।

अनवाँसना–स० क्रि० नये बरतन आदि प्रथम बार काममें लाना ।

अनवांसी–स्त्री० बिस्वांसीका बीसवाँ भाग ।

अनवाद*–पु० कुबोल, कटुवचन ।

अनवाप्ति–स्त्री० [सं०] प्राप्तिका अभाव, अप्राप्ति ।

अनशन–पु० [सं०] आहारत्याग, उपवास; किसी विशेष संकल्पके साथ आहार-त्याग ।

अनश्वर–वि० [सं०] अविनाशी, सनातन, शाश्वत; ध्रुव ।

अनसखरी–स्त्री० पक्की रसोई ।

अनसत्त*–वि० असत्य ।

अनसमझ*–वि० नासमझ ।

अनसमझा*–वि० नासमझ; जो समझा हुआ न हो ।

अनसहत*–वि० असह्य ।

अनसाना†–अ० क्रि० झुँझलाना, क्रुद्ध होना ।

अनसुनी–वि० न सुनी हुई । **मु०–करना**–सुनकर भीं न सुनने जैसा ओचरण करना; जान-बूझकर उपेक्षा करना ।

अनसूया–स्त्री० [सं०] दूसरेके गुणोंमें दोष ढूँढनेकी वृत्तिका न होना; ईर्ष्याका अभाव; दक्षकी एक कन्या, अत्रि ऋषिकी पत्नी; शकुंतलाकी एक सखी ।

अनस्तित्व–पु० [सं०] अस्तित्वका अभाव; अविद्यमानता ।

अनहद–पु० दे० 'अनाहत' । **–नाद**–पु० दे० 'अनाहत नाद' ।

अनहित*–पु० बुराई, अहित । वि० अप्रिय, अहितकारी ।

अनहितू–वि० अशुभ चाहनेवाला, अपकारी ।

अनहोनी–वि० स्त्री० न होनेवाली; असंभव; अलौकिक । स्त्री० अनहोनी बात ।

अनाकनी, अनाकानी–स्त्री० दे० 'आनाकानी' ।

अनाकार–वि० [सं०] निराकार, आकारहीन ।

अनाक्रमण–पु० [सं०] देशादिपर आक्रमण न करना । **–सन्धि**–स्त्री० (नॉन-ऐग्रेशन पैक्ट) दो राष्ट्रोंके बीच की गयी वह संधि जिसमें एक दूसरेके विरुद्ध सैनिक बलका प्रयोग न करने तथा मतभेद या झगड़ा उत्पन्न होनेपर आपसकी बातचीत अथवा पंचायत द्वारा उसे निपटानेकी बात स्वीकार की गयी हो ।

अनागत–वि० [सं०] न आया हुआ; अप्राप्त; अज्ञात; आनेवाला; भावी; * अनादि; अपूर्व । **–विधाता (तृ)**–पु० आनेवाले अनिष्टको पहलेसे सोचकर उसके निराकरणका उपाय करनेवाला ।

अनागम–पु० [सं०] न आना; अप्राप्ति ।

अनागार, अनागारिक–वि० [सं०] बिना घरका । पु० साधु-संन्यासी ।

अनाघ्रात–वि० [सं०] जो सूँघा न गया हो ।

अनाचरण–पु० [सं०] किसी (निर्दिष्ट या निर्धारित) कामका न करना । दे० 'अनाचार' ।

अनाचार–पु० [सं०] अयोग्य आचरण; दुराचरण, कुरीति ।

अनाचारी (रिन्)–वि० [सं०] बुरे आचरणवाला ।

अनाज–पु० अन्न, नाज ।

अनाड़ी–वि० अज्ञान; अकुशल ।

अनातप–वि० [सं०] आतपहीन, छायादार; ठंडा । पु० आतपका अभाव, छाया, ठंड ।

अनाथ–वि० [सं०] जिसका कोई मालिक या रक्षक न हो;

असहाय, निराश्रय, दीन।

अनाथालय, अनाथाश्रम-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विना माँ-वापके वच्चे आदि रखे जायँ, यतीमखाना।

अनादर-पु० [सं०] आदरका अभाव; तिरस्कार; एक अर्थालंकार, जिसमें अधिक अच्छी लगनेवाली किसी अप्राप्त वस्तुको पाकर या देखकर प्राप्त वस्तुका अनादर किया जाय।

अनादरण-पु० [सं०] उपेक्षा या तिरस्कार करना। पु० (डिस-ऑनर) (खातेमें या शिल्लकमें धनकी कमी आदिके कारण) धनादेश (चेक), हुंडी या प्राप्यक (विल)का रुपया देनेसे इनकार करना।

अनादि-वि० [सं०] आदिरहित; नित्य।

अनादिष्ट-वि० [सं०] आदेश न दिया हुआ।

अनादृत-वि० [सं०] जिसका आदर न किया गया हो; तिरस्कृत।

अनाद्यंत-वि० [सं०] जिसका आदि-अंत न हो। पु० शिव।

अनाधार-वि० [सं०] निराधार, निरवलंब, वे-सहारा।

अनाना*-स० क्रि० मँगाना।

अनाप-शनाप-पु० अंडबंड, वेतुकी वकवास।

अनापा-वि० विना नापा हुआ; अपरिमित।

अनाप्त-वि० [सं०] जो आप्त-आत्मीय, यथार्थज्ञाता, विश्वसनीय या कुशल न हो; जो प्राप्त न हुआ हो।

अनाम (न्)-वि० [सं०] नामरहित; अप्रसिद्ध।

अनामय-वि० [सं०] रोगरहित;; स्वस्थ। पु० आरोग्य।

अनामा, अनामिका-स्त्री० [सं०] कानी और विचली उँगलियोंके वीचकी उँगली।

अनायत्त-वि० [सं०] जो दूसरोंके वशमें न हो, अवशीभूत, स्वाधीन।

अनायास-अ० [सं०] विना परिश्रमके, आसानीसे; अचानक।

अनायासिक विजय-स्त्री० (वॉकओह्वर) विना विशेष आयासके, आसानीसे, प्राप्त विजय, अनायास-प्राप्त विजय।

अनार-पु० एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़; एक आतिशवाजी; * अन्याय; ऊधम (बुंदेल)। **-दाना**-पु० अनारके सुखाये हुए दाने।

अनारी*वि० अनारके रंगका, लाल; दे० 'अनाड़ी'।

अनार्जव-पु० [सं०] कपट; कुटिलता; वेईमानी।

अनार्तव-पु० [सं०] रजोधर्मका अवरोध।

अनार्य-पु० [सं०] जो आर्य न हो, शूद्र, म्लेच्छ। वि० असभ्य, अप्रतिष्ठित, नीच; अनार्योचित।

अनावरित करना-स० क्रि० (अनवील) किसी प्रसिद्ध व्यक्तिकी मूर्त्ति या चित्रके ऊपर पड़ा हुआ आवरण हटाकर उसे जनताके दर्शनार्थ खोल देना।

अनावरण-पु० (अनवीलिंग) किसी महापुरुषकी मूर्त्ति या चित्रको अनावरित करनेका कार्य या तत्संबंधी सार्वजनिक समारोह।

अनावर्त्तक, अनावर्त्ती-वि० जो वार-वार न हो, जो एक ही वार दिया या किया जाय (नॉनरेकरिंग)।

अनावश्यक-वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता न हो, गैरजरूरी।

अनावासिक-वि० अन्यत्र निवास करनेवाला, कर्त्तव्यादि संवंधी दायित्वके क्षेत्रमें न रहनेवाला (नॉनरेजिडेंट)। **-छात्र**-पु० (डे स्कालर) वह जो विश्वविद्यालयके वाहर, किसी निकटवर्त्ती नगर या ग्राममें, रहते हुए केवल विद्या अर्जनके लिए वहाँकी पढ़ाई आदिमें सम्मिलित होता हो।

अनाविद्ध-वि० [सं०] न विधा हुआ; अनाहत।

अनावृत-वि० [सं०] जो ढका न हो; खुला।

अनावृत्त-वि० [सं०] जो लौटा न हो; जो दोहराया न गया हो।

अनावृष्टि-स्त्री० [सं०] अवर्षण, सूखा।

अनावेदित-वि० [सं०] जिसकी विज्ञप्ति न की गयी हो, जो जनाया न गया हो।

अनाश्रमी (मिन्)-वि० [सं०] जो किसी आश्रममें न हो; आश्रमधर्मका अनुसरण न करनेवाला।

अनाश्रय-वि० [सं०] आश्रयरहित, वे-सहारा।

अनाश्रित-वि० [सं०] जो दूसरेपर आश्रित न हो, स्वाधीन।

अनासक्त-वि० [सं०] आसक्तिरहित।

अनासक्ति-स्त्री० [सं०] आसक्तिका अभाव।

अनासिक-वि० [सं०] विना नाकका, नकटा।

अनासीन-वि० (अनूसीटेड) जिसे किसी कारणवश अपने स्थान, पद आदिसे हट जाना पड़ा हो, स्थानवंचित।

अनास्था-स्त्री० [सं०] आस्थाका अभाव, अश्रद्धा; अनादर।

अनास्वादित-वि० [सं०] जिसका स्वाद न लिया गया हो।

अनाहक*-अ० दे० "नाहक"।

अनाहत-वि० [सं०] आघातरहित; कोरा। पु० हठयोगके अनुसार शरीरके ६ चक्रोंमेंसे एक जिसका स्थान हृदय बताया जाता है। **-नाद, -शब्द**-पु० योगियोंको सुनाई देनेवाली एक आंतरिक ध्वनि; ओम्-ध्वनि।

अनाहार-पु० [सं०] आहारका अभाव या त्याग। वि० निराहार; जिसमें कुछ न खाया जाय।

अनाहूत-वि० [सं०] विन-बुलाया, अनिमंत्रित। **-प्रवेश**-पु० (इन्ट्रूज़न) विना बुलाये किसीके घरमें प्रविष्ट हो जाना, किसीके सामने जबरन अपने आपको उपस्थित कर देना।

अनिंद*-वि० दे० 'अनिंद्य'।

अनिंदनीय-वि० [सं०] जो निंदाके योग्य न हो, निर्दोष।

अनिंदित-वि० [सं०] निर्दोष, उत्तम, निंदारहित।

अनिंद्य-वि० [सं०] निर्दोष, प्रशंसनीय; सुंदर।

अनिआई*-वि० अन्यायी।

अनिकेत-वि० [सं०] जिसका कोई नियत वासस्थान न हो; संन्यासी; खानावदोश।

अनिग्रह-पु० [सं०] वंधन, रोक या दंडका अभाव; तर्कमें हार न मानना। वि० अनियंत्रित; अजेय।

अनिच्छ, अनिच्छक, अनिच्छु, अनिच्छुक-वि० [सं०] इच्छारहित, न चाहनेवाला।

अनिच्छा-स्त्री० [सं०] इच्छाका अभाव; अरुचि।

अनिच्छित-वि० [सं०] जो न चाहा गया हो।

अनित्य-वि० [सं०] जो सदा न रहे, नश्वर, क्षणस्थायी, अनियमित।

अनिद्रा—स्त्री० [सं०] नींद न आनेकी बीमारी।

अनिद्रित—वि० [सं०] जो सोया न हो, जाग्रत्।

अनिप*—पु० सेनापति।

अनिपुण—वि० [सं०] अकुशल, अधकचरा। **—श्रमिक**—पु० (अनस्किल्ड लेबर) किसी कारखाने आदिमें काम करनेवाला वह श्रमिक जिसने अपना काम करनेकी विशेष योग्यता, कुशलता न प्राप्त कर ली हो।

अनिमंत्रित—वि० [सं०] बिना बुलाया हुआ, अनाहूत।

अनिमा*—स्त्री० दे० 'अणिमा'।

अनिमिप, —मेष—वि०[सं०] जिसकी पलक न गिरे, स्थिर-दृष्टि; जागरूक; खुला हुआ, विकसित। अ० बिना पलक गिराये, एकटक। पु० देवता; मछली; महाकाल। **—दृष्टि, —नयन, —लोचन**—वि० एकटक देखनेवाला।

अनियंत्रित—वि०[सं०] प्रतिबंधरहित; स्वच्छंद; निरंकुश।

अनियत—वि० [सं०] अनिश्चित; अनियमित; अस्थिर; असीम; असाधारण; आकस्मिक।

अनियम—पु० [सं०] नियमका अभाव; व्यवस्थाका अभाव; बेकायदगी; निश्चित आदेशका न होना।

अनियमित—वि० [सं०] नियमरहित; नियमविरुद्ध।

अनियाउ (व)*—पु० दे० 'अन्याय'।

अनियारा—वि० अनीदार, पैना; कँटीला; बाँका, बहादुर। 'चम्पतिराय बड़े अनियारे'—छत्र०।

अनिरुद्ध—वि० [सं०] जिसका निरोध न हुआ हो या न हो सके; बेरोक; स्वच्छंद। पु० कृष्णके पौत्र, प्रद्युम्नके पुत्र।

अनिर्णय—पु० [सं०] निर्णयका अभाव, अनिश्चय।

अनिर्दिष्ट—वि० [सं०] जिसका निर्देश न किया गया हो; न बताया हुआ; अनादिष्ट।

अनिर्द्धारित—वि० [सं०] अनिश्चित।

अनिर्वचनीय—वि० [सं०] निर्वाचनके अयोग्य; जिसके लक्षण आदि न बताये जा सकें; वर्णनके अयोग्य।

अनिर्वाच्य—वि० [सं०] जिसका निर्वाचन न हो सके, जो चुना न जा सके। दे० 'अनिर्वचनीय'।

अनिल—पु० [सं०] वायु, पवन, हवा; पवन देव; अष्ट वसुओंमेंसे एक; वातरोग; ४९ पवनोंमेंसे एक; ४९की संख्या। **—कुमार**—पु० हनूमान्; भीम।

अनिलात्मज—पु० [सं०] हनूमान्; भीम।

अनिलामय—पु० [सं०] वातरोग।

अनिलाशन, अनिलाशी (शिन्)—पु० [सं०] साँप।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके;; अटल; जो छोड़ा न जा सके; अत्यावश्यक। **—भरती**—स्त्री० (कॉन्स्क्रिप्शन) स्थल-सेना, जलसेना आदिमें सेवाके लिए अनिवार्य रूपसे भरती कर लिया जाना।

अनिश्चय—पु० [सं०] निश्चयका अभाव; संदेह।

अनिश्चित—वि० [सं०] जिसका निश्चथ न हुआ हो या न हो; कच्चा; संदिग्ध।

अनिषिद्ध—वि० [सं०] जो वर्जित या अविहित न हो।

अनिष्ट—वि० [सं०] जो इष्ट न हो; अवांछित; हानिकर; बुरा। पु० अहित; हानि; अमंगल; विपत्। **—कर**—वि० हानिकारक। **—ग्रह**—पु० बुरा या हानिकारक ग्रह।

अनी—स्त्री० नोक, कोर; लगने, चुभनेवाली बात; ग्लानि; समूह; सेना।

अनीक—पु० [सं०] सेना; समूह; सैन्यपंक्ति; युद्ध; किनारी। *वि० जो नीक अर्थात् अच्छा न हो, खराब।

अनीकिनी—स्त्री० [सं०] सेना; अक्षौहिणी या पूरी सेनाका दसवाँ भाग—२१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ पैदल।

अनीठ*—वि० अनिष्ट; अप्रिय; बुरा।

अनीठि*—स्त्री० बुराई, क्रोध।

अनीत*—स्त्री० अन्याय, दुर्व्यवहार; दुष्कर्म।

अनीति—स्त्री० [सं०] अन्याय; अनुचित व्यवहार; दुराचार।

अनीप्सित—वि० [सं०] अनभिलषित, अनिच्छित।

अनीश—वि० [सं०] जिसका कोई स्वामी या नियंता न हो; प्रधान; असमर्थ।

अनीश्वरवाद—[सं०] —पु० ईश्वरका अस्तित्व न मानना; नास्तिक मत। **—वादी (दिन्)**—वि० ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला; नास्तिक।

अनीस*—वि० अनाथ; दे० 'अनीश'।

अनीह—वि० [सं०] इच्छारहित; उदासीन; बे-परवाह।

अनीहा—स्त्री० [सं०] अनिच्छा; उदासीनता; निश्चेष्टता।

अनु—अ० (उप०) [सं०] शब्दोंके पहले मिलकर यह पीछे (अनुचर), समान (अनुरूप), साथ (अनुपात), बारंबार (अनुशीलन), प्रत्येक (अनुदिन), ओर, योग्य, मुनासिब, हीन, गौण आदि अर्थोंका द्योतन करता है। पु० ययातिका एक पुत्र। * अ० अब; हाँ; ठीक। * पु० दे० 'अणु'।

अनुकंपा—स्त्री० [सं०] दया, हमदर्दी।

अनुकंपित—वि० [सं०] जिसपर अनुकंपा की गयी हो।

अनुकरण—पु० [सं०] नकल; देखादेखी करना।

अनुकरणीय—वि० [सं०] अनुकरण करने योग्य।

अनुकारक, अनुकारी (रिन्)—वि० [सं०] नकल या देखादेखी करनेवाला; आज्ञाकारी।

अनुकूल—वि० [सं०] मेल रखनेवाला, मुआफिक; सहायक; प्रसन्न।*अ० ओर, अभिमुख। पु० विवाहिता पत्नीमें अनुरक्त रहनेवाला नायक; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें प्रतिकूल वस्तुसे अनुकूलकी सिद्धि दिखायी जाती है।

अनुकूलन—पु० (एडेप्टेशन) आवश्यक परिवर्तन कर अनुकूल बनाना; किसी कार्यादिके उपयुक्त बनाना।

अनुकूलना*—अ० क्रि० प्रसन्न होना; मुआफिक होना।

अनुकूलित—वि० (एडैप्टेड) आवश्यक परिवर्त्तन करनेके बाद जो (स्थिति आदिके) अनुकूल बना लिया गया हो।

अनुकूलीकरण—पु० (एडैप्टेशन) दे० 'अनुकूलन'।

अनुकृत—वि० [सं०] जिसकी नकल की गयी हो।

अनुकृति—स्त्री० [सं०] नकल; देखादेखी; एक काव्यालंकार। **—काव्य**—पु० (पैरोडी) किसी प्रसिद्ध कविकी कविताका ऐसा अनुकरण जिसमें शब्द-विन्यास एवं विचार-परंपरा इस तरह बदल दी जाय कि उसके पढ़नेसे हास्यमिश्रित आनंदकी सृष्टि हो।

अनुक्त—वि० [सं०] अकथित, न कहा हुआ।

अनुक्रम—वि० [सं०] क्रमबद्ध। पु० उचित क्रम, सिलसिला; एकके बाद एक होनेकी क्रिया; दे० 'अनुक्रमणी'।

अनुक्रमण-पु० [सं०] क्रमपूर्वक आगे बढ़ना; अनुगमन।

अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी-स्त्री० [सं०] विषयसूची; क्रमबद्ध शब्दसूची।

अनुक्षण-अ० [सं०] प्रतिक्षण, लगातार।

अनुग-वि० [सं०] पीछे चलनेवाला (समासमें)। पु० अनुचर; साथी।

अनुगत-वि० [सं०] अनुगामी; अनुकूल; उपयुक्त; अधीन। पु० सेवक; खुशामद, मनुहार।

अनुगतार्थ-वि० [सं०] मिलते-जुलते अर्थका।

अनुगति-स्त्री० [सं०] अनुगमन; अनुकरण।

अनुगम, अनुगमन-पु०[सं०] पीछे चलना; नकल करना; सहमरण; अर्थबोध; समझना।

अनुगुण-वि० [सं०] समान गुणवाला; अनुकूल, अनुगत। पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें पहलेसे विद्यमान गुणका अन्य वस्तुकी संगति या संसर्गसे बढ़ जाना दिखलाया जाय।

अनुगृहीत-वि० [सं०] जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत; एहसानमंद।

अनुग्रह-पु० [सं०] कृपा, प्रसाद; राज्यकी कृपासे प्राप्त सहायता या सुभीता; सेनाके पृष्ठभागकी रक्षा करनेवाला दल; * अनिष्टनिवारण। -काल-पु० (डेज ऑफ ग्रेस) किसी हुंडी या बीमाकी किस्तकी निर्धारित अवधि बीत जानेके बाद उसके भुगतान या अदायगीके लिए अनुग्रहपूर्वक दिया गया अतिरिक्त समय। -धन-पु० (ग्रेचुइटी) दीर्घकालीन सेवाके बदले अनुग्रहके रूपमें दिया जानेवाला धन, सेवोपहार।

अनुग्राहक, अनुग्राही (हिन्)-वि० [सं०] अनुग्रह करनेवाला, मेहरबान।

अनुचर-पु० [सं०] पीछे चलनेवाला; नौकर; साथी।

अनुचित-वि० [सं०] नामुनासिब; बेजा, बुरा।

अनुच्छित्ति-स्त्री०, [सं०] कटकर अलग न होना; नाश न होना, अनश्वरता।

अनुच्छिष्ट-वि० [सं०] जो जूठा न हो, अभुक्त; शुद्ध।

अनुच्छेद-पु० (आर्टिकिल; पैराग्राफ) किसी अधिनियम, विधान, नियमावली, संविदा आदिका वह विशिष्ट अंग या अंश जिसमें एक विषय और उसके प्रतिबंधों आदिका उल्लेख हो; लेख आदिका वह अंश जिसमें कोई एक बात कही गयी हो और जिसकी पहली पंक्ति आरंभमें कुछ स्थान छोड़कर लिखी गयी हो; दे० 'अनुच्छित्ति'।

अनुछन*-अ० दे० 'अनुक्षण'।

अनुज, अनुजात-वि० [सं०] पीछे जनमा हुआ। पु० छोटा भाई।

अनुजन्मा (न्मन्)-पु० [सं०] दे० 'अनुज'।

अनुजा, अनुजाता-स्त्री० [सं०] छोटी बहन।

अनुजीवी (विन्)-वि०]सं०] किसीके सहारे जीनेवाला; आश्रित। पु० सेवक।

अनुज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] दे० 'अनुज्ञापन'; (लाइसेंस) कोई वस्तु बेचने-खरीदने आदिकी अनुमति जो उचित शुल्क देनेपर सरकारसे प्राप्त की गयी हो; 'अनुज्ञापत्र'।

अनुज्ञा-स्त्री० [सं०] अनुमति, स्वीकृति, आज्ञा; एक काव्यालंकार जहाँ अच्छे गुणकी लालसासे दोषवाली वस्तुकी भी इच्छा की जाय; वह अनुमति (या स्वीकृति) जो किसी अधिकारी या मान्य व्यक्ति द्वारा कोई काम करनेके लिए दी गयी हो (परमिशन); -धारी-पु० वह व्यक्ति जिसे कोई वस्तु बेचने या कोई काम करनेके लिए (सरकारसे) अनुज्ञापत्र दिया गया हो; प्राप्तानुज्ञ (लाइसेंसी)। -पत्र-पु० (लाइसेंस) सरकारसे प्राप्त वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिको उचित शुल्क देनेपर कोई वस्तु बेचने-खरीदने या ऐसा ही कोई अन्य काम करनेकी अनुमति दी गयी हो।

अनुज्ञात-वि० [सं०] अनुमति-प्राप्त; आदिष्ट।

अनुज्ञापक-पु० [सं०] अनुमति या आज्ञा देनेवाला।

अनुज्ञापन-पु० [सं०] आज्ञा देना; अनुमति या अधिकार देना।

अनुतप्त-वि० [सं०] अनुताप-युक्त; रंजीदा, खिन्न।

अनुताप-पु० [सं०] खेद, रंज; पछतावा; जलन, ताप।

अनुतोषण-पु० (ग्रैटिफिकेशन) संतुष्ट या प्रसन्न करना; रुपया-पैसा, भेंट आदि देकर किसीको अपने अनुकूल बनाना, परितोषण।

अनुत्तरदायी-वि० [सं०] जो अपना उत्तरदायित्व न समझे, कर्त्तव्यपालन और जिम्मेदारीका खयाल न रखे (इर्रेस्पॉन्सिबिल)।

अनुत्तान-वि०[सं०]चित नहीं पट, सीनेके बल लेटा हुआ।

अनुत्तीर्ण-वि० [सं०] जो परीक्षामें उत्तीर्ण (सफल) न हुआ हो।

अनुत्पादक-वि० [सं०] जो उत्पन्न न करे या जिससे उत्पन्न न हो; अलाभकर।

अनुत्साह-पु० [सं०] चेष्टा, प्रयास या संकल्पका अभाव।

अनुदत्त-वि० [सं०] स्वीकृत; माफ किया हुआ; लौटाया हुआ।

अनुदात्त-वि० [सं०] उदात्तका उलटा, छोटा, नीचा। पु० नीचा स्वर।

अनुदार-वि० [सं०] अदाता; कंजूस; संकीर्ण-हृदय।

अनुदिन, अनुदिवस-अ० [सं०] प्रतिदिन।

अनुदृष्टि-स्त्री० [सं०] अनुकूल दृष्टि। वि० अनुकूल दृष्टि रखनेवाला।

अनुदेश-पु० (इन्स्ट्रक्शन) कोई काम करनेके लिए विशेष रूपसे समझाना या आदेश देना, हिदायत।

अनुद्धत-वि० [सं०] विनीत; शिष्ट; सौम्य।

अनुद्यमी (मिन्)-वि० [सं०] उद्यम न करनेवाला; आलसी।

अनुद्योगी (गिन्)-वि० [सं०] उद्योग न करनेवाला; निष्क्रिय; उदासीन।

अनुद्विग्न-वि० [सं०] जिसका मन शांत हो, आशंका, चिंता आदिसे मुक्त।

अनुद्वेग-पु० [सं०] भय, आशंका आदिका अभाव।

अनुधावन-पु० [सं०] अनुसरण; अनुकरण; चिंतन; अनुसंधान।

अनुनय-वि० [सं०] विनय, प्रार्थना, मनावन।

अनुनाद-पु० [सं०] प्रतिध्वनि, गूँज।

अनुनादित–वि०[सं०] प्रतिध्वनित, जिसकी गूँज हुई हो ।

अनुनासिक–वि० [सं०] जिसका उच्चारण मुँह और नाकसे हो–(ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार)। पु० अनुनासिक वर्ण ।

अनुन्नत–वि० [सं०] जो ऊपर उठाया न गया हो; जिसने उन्नति न की हो ।

अनुन्मुक्त–वि० (अन-डिस्चार्जड) (वह ऋण) जिसका परिशोधन न किया गया हो; (वह बंदी) जो कारागृहसे मुक्त न किया गया हो ।

अनुपम–वि० [सं०] उपमारहित, बे-जोड़, सर्वोत्तम ।

अनुपमेय–वि० [सं०] अतुलनीय ।

अनुपयुक्त–वि० [सं०] अयोग्य; अनुचित; नामौजूँ; निकम्मा ।

अनुपयोग–पु० उपयोगी न होना; उपयोगमें न आना ।

अनुपयोगिता–स्त्री०[सं०] उपयोगी न होना, निरर्थकता ।

अनुपयोगी (गिन्)–वि०[सं०]उपयोगरहित, बे-मसरफ ।

अनुपलब्ध–वि० [सं०] अप्राप्त; जो जाना न गया हो ।

अनुपलब्धि–स्त्री० [सं०] अप्राप्ति; जानकारी न होना ।

अनुपस्थित–वि० [सं०] जो सामने या पासमें न हो, गैरहाजिर, अविद्यमान ।

अनुपस्थिति–स्त्री० [सं०] अविद्यमानता, गैरहाजिरी ।

अनुपात–पु० [सं०] सापेक्षिक संबंध; तीन ज्ञात संख्याओंके आधारपर चौथीको निकालना; त्रैराशिक (गणित); एकके बाद दूसरेका गिरना; अनुसरण ।

अनुपातक–पु० [सं०] ब्रह्महत्यादि महापातकोंके बराबरके पाप–चोरी, हत्या, परस्त्रीगमनादि ।

अनुपाती प्रतिनिधित्व–दे० 'आनुपातिक प्रतिनिधित्व' ।

अनुपान–पु० [सं०] दवाके साथ या पीछे ली जानेवाली वस्तु ।

अनुपालन–पु० [सं०] रक्षण; आज्ञापालन, मानना ।

अनुपूरक–पु० (सप्लिमेंट) वह अंश जो छूटी हुई बात या कोई कमी पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा जाय । वि० (सप्लिमेंटरी) जो कमी रह गयी हो उसे पूरा करनेके लिए जो बादमें रखा जाय, जोड़ा जाय, प्रकाशित किया जाय, पूछा जाय । **–प्रश्न**–पु० कोई प्रश्न पूछनेके बाद छूटी हुई बात या तत्संबंधी अन्य जानकारी प्राप्त करनेके लिए उसी सिलसिलेमें पूछा गया प्रश्न ।

अनुपूर्व–वि० [सं०] क्रमबद्ध, सिलसिलेवार ।

अनुपूरित–वि० (सप्लिमेंटेड) जो कोई कमी, छूट आदि पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा, रखा या प्रकाशित किया गया हो ।

अनुपूरण–पु० (सप्लिमेंट) छूट, कमी आदि पूरी करनेके लिए बादमें कुछ बढ़ाना या मिलाना ।

अनुप्राणन–पु० [सं०] प्राणसंचार, प्रेरण, स्फूर्ति ।

अनुप्राणित–वि० [सं०] जिसे जीवन या स्फूर्ति दी गयी हो; प्रेरित; समर्थित; पोषित ।

अनुप्रास–पु० [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें वर्ण-विशेष या वर्ग-विशेषके वर्णोंकी आवृत्ति होती है; वर्णसाम्य ।

अनुबंध–पु० [सं०] बंधन; संबंध; सिलसिला; आरंभ; नतीजा; मार्ग; क्षुद्रांश; संबंध जोड़नेवाला ।

अनुबद्ध–वि० [सं०] संबद्ध,लगाव रखनेवाला । **–करना**–स० क्रि० (टु एनेक्स) अंतमें जोड़ना, साथमें रखना या मिला देना ।

अनुबल–पु० [सं०] पीछे स्थित रक्षक सेना; पृष्ठरक्षक सेना (रेयर गार्ड)।

अनुबोध–पु० [सं०] स्मरण; पीछे होनेवाला स्मरण ।

अनुभव–पु० [सं०] प्रत्यक्ष ज्ञान, देख-सुनकर या प्रयोग-परीक्षासे प्राप्त ज्ञान, मनसे जानना; संवेदन, महसूस करना: सुख-दुःखरूपमें उपलब्धि । **–सिद्ध**–पु० अनुभव करके देखा हुआ; परीक्षा-सिद्ध ।

अनुभवना*–स० क्रि० अनुभव करना ।

अनुभवी (विन्)–वि० [सं०] अनुभव रखनेवाला, तजुर्बेकार; भुक्तभोगी ।

अनुभवोक्ति–स्त्री० (मैक्सिम) अनुभवके आधारपर कही जानेवाली बात, कहावत आदि ।

अनुभाव–पु० [सं०] मनोगत भावकी सूचक बाह्य क्रियाएँ (सा०); प्रभाव; बड़ाई; संकल्प; दृढ़ विश्वास ।

अनुभावक–वि० [सं०] अनुभव करानेवाला ।

अनुभावन–पु० [सं०] अंगभंगी द्वारा मनोगत भावोंको व्यक्त करना ।

अनुभावी (विन्)–वि० [सं०] अनुभव करनेवाला; चश्मदीद गवाह; भावजन्य चिह्न प्रकट करनेवाला; पीछे होने या आनेवाला ।

अनुभूत–वि० [सं०] अनुभव किया हुआ; आजमाया हुआ, परीक्षित ।

अनुभूति–स्त्री० [सं०] अनुभव; समवेदना; प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्दबोध द्वारा प्राप्त ज्ञान (न्या०) ।

अनुभूतिवाद–पु० (एम्पीरिसिज्म) पूर्वज्ञात बातों आदिपर नहीं, केवल अनुभव तथा परीक्षणादिपर आश्रित तत्त्ववाद ।

अनुभोग–पु० [सं०] उपभोग; सेवाके बदले मिलनेवाली माफी जमीन ।

अनुमति–स्त्री० [सं०] स्वीकृति, इजाजत । **–पत्र**–पु० स्वीकृति-सूचक पत्र या लेख ।

अनुमरण–पु० [सं०] सती होना, सहमरण ।

अनुमाता (तृ)–वि० [सं०] अनुमान करनेवाला ।

अनुमान–पु० [सं०], अटकल, अंदाज; प्रत्यक्षसे अप्रत्यक्षका ज्ञान (धुआँ देखकर आगका ज्ञान), न्यायशास्त्रके माने हुए चार प्रमाणोंमेंसे एक; अनुमति, स्वीकृति । **–तः**–पु० अनुमानसे, अंदाजन ।

अनुमानना*–स० क्रि० अनुमान करना, सोचना; समझना ।

अनुमित–वि० [सं०] अनुमान किया हुआ ।

अनुमेय–वि० [सं०] अनुमान करने योग्य ।

अनुमोदक–वि० [सं०] अनुमोदन, समर्थन करनेवाला ।

अनुमोदन–पु० [सं०] प्रसन्न करना या होना; समर्थन; स्वीकृति; पु० (ऐप्रूह्वल) किसीके कार्य, मत या प्रस्तावको ठीक मानते हुए अपनी सहमति प्रकट करने या उसका समर्थन करनेकी क्रिया ।

अनुमोदित–वि० समर्थित; (ऐप्रूव्ड) (कार्य या प्रस्ताव) जिसका किसीने अनुमोदन किया हो या ठीक समझकर स्वीकार कर लिया हो; प्रसन्न किया हुआ ।

अनुयाचक-पु० (कैनवैसर) माल खरीदनेके लिए दूसरोंको राजी करनेका प्रयत्न करनेवाला; मतदाताके पास जाकर उसे अपने पक्षमें मतदान करनेके लिए तैयार करनेवाला, मतप्रार्थी; मतानुयाचक।

अनुयाचन-पु० (कैनवैसिंग) किसीको समझा-बुझाकर अपने पक्षमें करते हुए उससे कोई काम करनेके लिए नम्रतापूर्वक कहना; पदपर नियुक्त करने, मत देने या माल खरीदनेकी स्वीकृति प्राप्त करनेका प्रयत्न करना; मतप्रार्थना।

अनुयाता (तृ) पु० [सं०] अनुसरण करनेवाला, पीछे चलनेवाला, अनुयायी।

अनुयायी (यिन्)-वि० [सं०] पीछे चलनेवाला, अनुगामी; किसी मत या नेताका अनुसरण करनेवाला; समान, सदृश। पु० पीछे चलनेवाला; अनुचर।

अनुयोग-पु० [सं०] प्रश्न; जिज्ञासा; पूछताछ।

अनुयोज्य-वि० [सं०] जिससे प्रश्न किया जा सके; पु० सेवक, आज्ञाकारी सेवक।

अनुरंजक-पु० [सं०] प्रसन्न, संतुष्ट करनेवाला।

अनुरंजन-पु० [सं०] प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।

अनुरंजित-वि० [सं०] प्रसन्न, संतुष्ट।

अनुरक्त-वि० [सं०] अनुराग-युक्त, प्रेमी, आसक्त; वफादार; प्रसन्न, संतुष्ट; लाल।

अनुरक्ति-स्त्री० [सं०] प्रेम, आसक्ति; भक्ति।

अनुरणन-पु० [सं०] घंटा, नूपुर आदिकी प्रतिध्वनि, गूँज; व्यंजना।

अनुराग-पु० [सं०] प्रेम, आसक्ति; भक्ति; लाल रंग।

अनुरागना*-स० क्रि० प्रेम करना। अ० क्रि० अनुराग-युक्त होना; प्रेममें मग्न होना।

अनुरागी (गिन्)-वि० [सं०] प्रेमी, आसक्त; भक्त।

अनुराध*-पु० विनती, अनुरोध।

अनुराधना*-स० क्रि० विनती करना।

अनुराधा-स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र।

अनुरूप-वि० [सं०] समान रूपवाला, सदृश; योग्य, उपयुक्त।

अनुरूपना*-स० क्रि० सदृश बनाना।

अनुरोध-पु० [सं०] अनुसरण; लिहाज; विचार; प्रार्थना; विनय; आग्रह; बाधा, रुकावट।

अनुरोधक-पु० (मेमोरैंडम) शिकायतों, माँगों आदिका संक्षेपमें स्पष्टीकरण करते हुए अधिकारियोंके समक्ष उपस्थित किया गया अनुरोध-पत्र।

अनुलंब-पु० (ऑफसेट) बहुभुजके दो शीर्षोंको मिलानेवाली सरल रेखा (आधाररेखा) पर किसी अन्य शीर्षसे गिराया गया लंब। **-खाता**-पु० (सस्पेंस अकाउंट) वह खाता जिसमें किसीको दी गयी ऐसी रकम या रकमें अस्थायी रूपसे डाल दी जाती हैं जिनकी पक्की खतिऔनी बादमें हिसाब प्राप्त होनेपर की जाय, उचंत खाता, अमानत खाता।

अनुलंबन-पु० (सस्पेंशन) दे० 'निलंबन'।

अनुलंबित-वि० (सस्पेंडेड) दे० 'निलंबित', मुअत्तिल।

अनुलाप-पु० [सं०] पुनरुक्ति; घुमा-फिराकर बार-बार एक ही बात कहना।

अनुलाभ-पु० (परक्विजिट) दे० 'परिलब्धि'।

अनुलिपि-स्त्री० (फैक्सिमिलि) लेख, चित्र आदिकी ज्यों-की-त्यों प्रतिलिपि या अनुकृति।

अनुलेप-पु० [सं०] सुगंधित लेप, उबटन आदि; ऐसी वस्तुओंका लेप या मालिश।

अनुलेपन-पु० [सं०] दे० 'अनुलेप'।

अनुलोम-वि० [सं०] ऊपरसे नीचेकी ओर आनेवाला; यथाक्रम; अविलोम। पु० संगीतमें स्वरोंका उतार, अवरोह **-ज,-जन्मा (न्मन्)**-वि० अनुलोम विवाहसे उत्पन्न। **-विवाह**-पु० उच्च वर्णके पुरुषका अपनेसे हीन वर्णकी स्त्रीसे विवाह।

अनुलोमा-स्त्री० [सं०] पतिसे हीन वर्णकी स्त्री।

अनुवचन-पु० [सं०] दुहराना; पाठ; शिक्षण; भाषण; अध्याय।

अनुवर्तन-पु० [सं०] अनुसरण, अनुगमन; आज्ञापालन।

अनुवर्ती (तिन्)-वि० [सं०] अनुसरण करनेवाला, अनुयायी; आज्ञाकारी; समान; उपयुक्त। **-प्रस्ताव**-पु० (सबसीक्वेंट मोशन) बादमें आनेवाला या रखा जानेवाला प्रस्ताव।

अनुवाद-पु० [सं०] फिरसे कहना; व्याख्या या समर्थनरूपमें पुनरुक्ति; समर्थन; जनश्रुति; उलथा, भाषांतर।

अनुवादक-पु० [सं०] अनुवाद करनेवाला, उलथाकार।

अनुवादित-वि० [सं०] अनुवाद किया हुआ, अनूदित; भाषांतरित।

अनुवाद्य-वि० [सं०] अनुवाद करने योग्य।

अनुविद्ध-वि० [सं०] विधा हुआ, छिद्रित; मिश्रित, संयुक्त; जड़ा हुआ (जैसे रत्न)।

अनुविभाग-पु० (सेक्शन) पुस्तकादिके मुख्य खंडोंमेंसे किसी एकका छोटा विभाग; किसी समाज, सम्प्रदाय या वर्गका वह खंड या समूह जिसकी अपनी अलग विशेषता, स्वार्थ, रीति-रिवाज आदि हों, उपभेद; किसी कक्षाके विषयादिकी भिन्नताके कारण किये गये विभाग; किसी चिकित्सालय, निर्माणशाला आदिके पृथक्-पृथक् हिस्से जिनमें अलग-अलग तरहका काम होता हो।

अनुवृत्ति-स्त्री० [सं०] अनुसरण; स्वीकृति; आज्ञापालन; आवृत्ति; अनुकरण; वाक्यार्थ स्पष्ट करनेके लिए पूर्ववर्ती वाक्यका कुछ अंश लेना।

अनुवेशपत्र-पु० (वीजा) पारपत्रका निरीक्षण कर लेनेके बाद उसकी पीठ पर लिखा हुआ यह लेख कि उसकी विधिवत् जाँच की जा चुकी है और यात्रार्थी उसे लेकर आगे बढ़ सकता है।

अनुशंसा-स्त्री० (रेकॉमेण्डेशन) दे० 'अभिस्ताव'।

अनुशंसित-वि० (रेकॉमेण्डेड) जिसके संबंधमें अनुशंसा या अभिस्ताव किया गया हो।

अनुशयाना-स्त्री० [सं०] मिलन-स्थानके नष्ट होनेसे दुःखित परकीया नायिका।

अनुशासक-पु० [सं०] अनुशासन करनेवाला; शासक।

अनुशासन-पु० [सं०] आदेश; शिक्षा; (किसी विषयका) निरूपण; नियंत्रण, नियमन; नियम-पालन।

अनुशासित—वि० [सं०] जिसका अनुशासन किया गया हो; आदिष्ट; दंडित।

अनुशीलन—पु० [सं०] सतत तथा गंभीर अभ्यास; नियमित अध्ययन; मनन।

अनुश्रुत—वि० [सं०] परंपरासे प्राप्त (ज्ञान आदि)।

अनुश्रुति—स्त्री० [सं०] श्रुति-परंपरासे प्राप्त कथा, ज्ञान इं०।

अनुषंग—पु० [सं०] संबंध, लगाव; मिश्रण, अर्थपूर्तिके लिए किसी वस्तुकी प्रासंगिक चर्चा या शब्दादिकी आवृत्ति; अवश्यंभावी परिणाम, एक शब्दका अन्य शब्दके साथ या कारण और कार्यका संबंध।

अनुषंगी (गिन्)—वि० [सं०] संबद्ध; अनिवार्य परिणामके रूपमें आनेवाला; सामान्य रूपसे प्रयुक्त होनेवाला; आसक्त, अनुरक्त।

अनुष्टुप्—स्त्री० [सं०] ३२ अक्षरोंका एक प्रसिद्ध छंद।

अनुष्ठाता (तृ)—वि० [सं०] अनुष्ठान करनेवाला, कार्य आरंभ करनेवाला।

अनुष्ठान—पु० [सं०] करना; आरंभ करना; कोई धार्मिक कृत्य; फल-विशेषके लिए किसी देवताका आराधन।

अनुष्ठित—वि० [सं०] विधिपूर्वक किया हुआ; आचरित।

अनुष्ठेय—वि० [सं०] अनुष्ठानके योग्य; करणीय।

अनुसंधान—पु० [सं०] अन्वेषण, खोज, जाँच-पड़ताल; प्रयत्न; योजना; आयोजन (इनवेस्टिगेशन) अच्छी तरह देख-सुनकर या जाँच-पड़ताल द्वारा वस्तु-स्थितिका पता लगाना। **—लेख**—पु० (मेमॉइर) स्वयं पता लगाकर ज्ञात की गयी बातों या सामग्रीके आधारपर लिखा गया लेख।

अनुसंधानना*—स० क्रि० ढूँढ़ना; विचारना।

अनुसंधि—स्त्री० [सं०] गुप्त मंत्रणा, गुप्त योजना।

अनुसमर्थन—पु० (रैटिफिकेशन) (प्रतिनिधियों द्वारा) किये गये समझौते आदिका जाब्तेसे—संधिपत्र, संविदापत्रपर हस्ताक्षर आदि द्वारा—समर्थन या अभिपुष्टि।

अनुसयाना*—स्त्री० दे० 'अनुशयाना'।

अनुसर—वि० [सं०] अनुसरण करनेवाला, अनुचर, हमराही, साथी; * दे० 'अनुसार'।

अनुसरण—पु० [सं०] पीछे चलना; अनुकरण; अनुकूल आचरण; अभ्यास।

अनुसरना*—स० क्रि० अनुसरण करना; अनुकरण करना; किसीके अनुकूल कार्य करना।

अनुसार—वि० अनुकूल; अनुरूप, मुताबिक। क्रि० वि० किसीकी तरह।

अनुसारक—वि० [सं०] अनुसरण करनेवाला, खोज करनेवाला, अनुरूप।

अनुसारना*—स० क्रि० अनुसरण करना; कोई काम करना; आरंभ करना; चलाना; भेजना, पठाना।

अनुसारी (रिन्)—वि० [सं०] दे० 'अनुसारक'।

अनुसाल*—पु० दर्द, पीड़ा।

अनुसूचित जाति—स्त्री० (शेड्यूल्ड कास्ट) अनुसूचीमें उल्लिखित या निर्दिष्ट जाति।

अनुसूची—स्त्री० (शेड्यूल) खानापूरी, कोष्ठक या व्यवस्थित सूचीके रूपमें दी गयी वह नामावली जो प्रायः किसी विवरण, नियमावली आदिके परिशिष्टकी तरह दी जाय।

अनुस्मरण—पु० [सं०] बार-बार स्मरण, भूली बातको याद करना।

अनुस्मारक—पु० (रिमाइंडर) स्मरण दिलानेवाला पत्र (या व्यक्ति)।

अनुस्यूत—वि० [सं०] ग्रथित; पिरोया हुआ; सिला हुआ।

अनुस्वार—पु० [सं०] स्वरके बाद बोला जानेवाला हलंत अनुनासिक वर्ण जिसका चिह्न यह है; (ं) अनुस्वार-सूचक बिंदी।

अनुहरत*—वि० अनुसरण करता हुआ; अनुरूप; उपयुक्त; योग्य।

अनुहरना*—स० क्रि० अनुसरण करना; नकल करना।

अनुहरिया*—स्त्री० आकृति, चेहरा। वि० तुल्य, सदृश।

अनुहस्ताक्षरण—पु० (सब्सक्राइबिंग) किसी प्रलेख, आवेदन-पत्रादिमें अपने हस्ताक्षर करना; किसी सिद्धांत या वक्तव्य आदिके संबंधमें अपनी स्वीकृति सूचित करनेके लिए हस्ताक्षर करना।

अनुहार—पु० [सं०] अनुकरण, नकल; समानता। वि० तुल्य, समान। स्त्री० [हिं०] भेद, प्रकार; आकृति।

अनुहारना*—स० क्रि० समता करना, उपमा देना।

अनुहारि*—वि० अनुसार, समान; योग्य; उपयुक्त। स्त्री० मुखाकृति, चेहरा; वेश।

अनुहारी (रिन्)—वि० [सं०] अनुकरण करनेवाला।

अनूअर*—अ० लगातार, निरंतर।

अनूजरा*—वि० अनुज्ज्वल, मैला।

अनूठा—वि० अद्भुत; अनोखा; सुंदर।

अनूढ—वि० [सं०] अविवाहित; अवहित।

अनूढा—स्त्री० [सं०] अविवाहिता स्त्री। **—गमन**—पु० अविवाहिता स्त्रीसे संबंध करना।

अनूत्तर*—वि० निरुत्तर; मौन।

अनूदित—वि०[सं०] पीछे कहा हुआ; उलथा किया हुआ।

अनून—वि० [सं०] अधिक; अन्यून; जो हीन या घटिया न हो; संपूर्ण, समग्र।

अनूप—वि० उपमारहित, बेजोड़; अति सुंदर। पु० जलप्राय स्थान या देश; दलदल।

अनृत—पु० [सं०] असत्य, झूठ; खेती। वि० झूठा (शब्द, वाक्य); * अन्यथा, उलटा। **—भाषण,—वादन**—पु० झूठ बोलना। **—वादी (दिन्)**—वि० झूठा।

अनृतक, अनृती(तिन्)—वि० [सं०] झूठ बोलनेवाला।

अनेऊ*—वि० बुरा; कुटिल।

अनेक—वि० [सं०] एकसे अधिक; कई; बहुत। **—वाद**—पु० (प्लूरलिज्म) जीवोंको भी पृथक् और वास्तविक सत्ता माननेवाला दर्शन, जगत्में दोसे अधिक परम सत्ताओंमें विश्वास करनेका सिद्धांत।

अनेकार्थक—वि० [सं०] जिसके कई अर्थ हों।

अनेग*—वि० दे० 'अनेक'।

अनेड—वि० [सं०] मूर्ख; निकम्मा; खराब;। टेढा 'पियका मारग सुगम है, तेरा चलन अनेड'—कबीर।

अनेरा*—वि० स्वच्छंद विचरनेवाला, निरंकुश; बे-रोक-टोक; दुष्ट; झूठा; व्यर्थ; निकम्मा। अ० व्यर्थ ही।

अनेस*—वि० अनिष्ट, अप्रिय, बुरा। पु० अंदेशा, चिंता।

अनै*–पु० दे० 'अनय'।

अनैक्य–पु० [सं०] एकताका अभाव; बहुत्व; फूट।

अनैच्छिक–वि० [सं०] जो स्वेच्छासे न किया गया हो; इच्छाके विरुद्ध (इनवालंटरी)।

अनैतिक–वि० [सं०] नीति-विरुद्ध।

अनैतिहासिक–वि० [सं०] जो इतिहासमें न आया हो या जो इतिहाससे प्रमाणित न होता हो, इतिहास-विरुद्ध।

अनैस* पु० अनिष्ट, बुराई; अंदेशा। वि० बुरा।

अनैसना*–अ० क्रि० रूठना, अप्रसन्न होना।

अनैसा*–वि० अनिष्ट, बुरा।

अनैसे*–अ० बुरे भावसे।

अनैहा*–पु० उत्पात; मचलना।

अनोखा–वि० अनूठा, अद्भुत; अपूर्व; नया, सुंदर। **–पन**–पु० विलक्षणता; सुंदरता; नयापन।

अनोसर*–पु० ठाकुरजीको शयन कराना।

अनौचित्य–पु० [सं०] औचित्यका अभाव या उलटा।

अनौट*–पु० दे० 'अनवट'।

अनौद्धत्य–पु० [सं०] उच्छृंखलता या दर्पका अभाव; विनम्रता; शांति; (नदीके पानीका) ऊँचा न होना।

अनौधि*–अ० शीघ्र, बिना देर किये।

अनौरस–वि० [सं०] जो औरस–विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न–न हो, अवैध या गोद लिया हुआ (पुत्र)।

अन्–उप० [सं०] 'अ' (नञ्) का स्वरादि शब्दोंके पहले लगनेवाला रूप (दे० 'अ')।

अन्न–पु० [सं०] खानेकी चीज, भोज्य पदार्थ;पका अन्न: भात; अनाज, धान्य; जल; पृथ्वी; सूर्य; विष्णु। *वि० अन्य, दूसरा। **–कूट**–पु० भात या मिष्ठान्नादिका पहाड़ या ढेर; कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदाको होनेवाला एक उत्सव। **–जल**–पु० दाना-पानी, आब-दाना; स्थानविशेषमें रहनेका संयोग। **–दा**–स्त्री० दुर्गा, अन्नपूर्णा। **–दाता (तृ)**–वि० अन्न देनेवाला; प्रतिपालन करनेवाला। पु० मालिकोंके लिए सेवकों द्वारा प्रयुक्त संबोधन। **–दास**–वि० भोजनमात्र लेकर काम करनेवाला (नौकर)। **–दोष**–दूषित अन्न खानेसे होनेवाला रोग इ०; निषिद्ध अन्न खाने या अग्राह्य अन्नके प्रतिग्रहसे होनेवाला पाप। **–पाक**–पु० अग्निपर या पेटमें खाद्य पदार्थका पकना। **–पूर्णा**–स्त्री० अन्नकी अधिष्ठात्री देवी, दुर्गाका एक रूप। **–प्राशन**–पु० बच्चेको पहली बार अन्न खिलानेकी रस्म या संस्कार, चटावन। **–शेष**–पु० जूठन; भूसी-चोकर आदि। **–सत्र**–पु० वह संस्थान जहाँ साधु-फकीरों, गरीबों-अपाहिजोंको भोजन दिया जाता है। **मु०–जल उठना**–रहनेका संयोग या सहारा न होना।

अन्नमय–वि०[सं०]अन्नसे बना; अन्नसे भरा। **–कोश(ष)**–पु० वेदांतमें माने हुए पाँच कोशोंमें पहला, स्थूल शरीर।

अन्ना–स्त्री० धाय; माता।

अन्नोपलब्धि–स्त्री० (प्रोक्यूरमेंट) किसानों, ग्रामीणों आदिसे उचित मूल्यपर खाद्यान्न प्राप्त करना, गल्ला-वसूली।

अन्य–वि० [सं०] दूसरा, गैर; भिन्न; साधारण; अतिरिक्त, **–तः**–अ० दूसरेसे; दूसरे स्थानसे। **–तम**–वि०बहुतोंमेंसे एक; सर्वश्रेष्ठ (?)। **–तर**–वि० दोमेंसे एक; दूसरा, भिन्न। **–त्र**–अ० दूसरी जगह, और कहीं। **–था**–वि० उलटा विरुद्ध; झूठ। अ० नहीं तो। **–पुरुष**–पु० सर्वनामका एक भेद; दूसरा आदमी। **–पुष्टा**–स्त्री० कोयल। **–भृता**–स्त्री० कोयल। **–भृत्**–वि० दूसरेका पालन करनेवाला। पु० काक। **–मनस्क,–मना(नस्),–मानस**–वि० जिसका चित्त कहीं और हो। **–मातृज**–पु० दूसरी मातासे उत्पन्न, सौतेला भाई। **–संभोग-दुःखिता**–स्त्री० वह नायिका जो अन्य स्त्रीमें प्रियके संभोगचिह्न देखकर दुःखित हो।

अन्यच्च–अ० [सं०] और भी; इसके सिवा।

अन्याय–पु० [सं०] न्यायविरुद्ध कार्य, बे-इंसाफी; अनौचित्य, जुल्म, अत्याचार।

अन्यायी(यिन्)–वि० [सं०] अन्याय करनेवाला।

अन्याय्य–वि० [सं०] न्यायविरुद्ध, अनुचित।

अन्यारा*–वि० जो जुदा न हो, अभिन्न; अनोखा; अनीदार, नुकीला; बहुत।

अन्याश्रित–वि० [सं०] दूसरेपर अवलंबित।

अन्यास*–अ० दे० 'अनायास'; अकस्मात् 'मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास'–सू०

अन्यून–वि० [सं०] अनल्प, अधिक, बहुत।

अन्येद्युः–अ० [सं०] दूसरे दिन; एक समय।

अन्योक्ति–स्त्री० [सं०] ऐसी उक्ति जो साधर्म्यके कारण कथित वस्तुके अतिरिक्त औरोंपर भी घटित हो सके; अर्थालंकारका एक भेद।

अन्योन्य–वि० [सं०] परस्पर; एक दूसरेको या पर। पु० अर्थालंकारका एक भेद। **–प्रजनन**–पु० (क्रॉसब्रीडिंग) विभिन्न जातिके पशु-पौधोंके पारस्परिक संसर्ग द्वारा उत्पादन कराना।

अन्योन्याभाव–पु० [सं०] अभावका एक भेद, किसी एक पदार्थका अन्य पदार्थ न होना।

अन्योन्याश्रय–पु० [सं०] एकका दूसरेपर अवलंबित होना, परस्पर कार्य-कारण संबंध।

अन्वय–पु० [सं०] अनुगमन; संबंध; मेल; अवकाश; वाक्यमें पदोंका परस्पर उचित संबंध; आशय; वंश; नियमानुसार यथास्थान रखना; हेतु और साध्यका साहचर्य (न्या०); कारण-कार्यका संबंध।

अन्वयार्थ–पु० [सं०] अन्वयसे निकलनेवाला अर्थ।

अन्वर्थ–वि० [सं०] अर्थका अनुसरण करता हुआ, यथार्थ; स्पष्ट अर्थवाला।

अन्वित–वि० [सं०] युक्त, सहित; ग्रस्त (शोकान्वित); संबद्ध; समझा हुआ।

अन्वितार्थ–पु० [सं०] ऐसा अर्थ जो अन्वय करनेसे सहज ही समझमें आ जाय। वि० ऐसा अर्थ रखनेवाला।

अन्वीक्षण–पु० [सं०] बारीकीसे देखना; खोज, अन्वेषण।

अन्वीक्षा–स्त्री० [सं०] अन्वीक्षण।

अन्वेष, अन्वेषण–पु०[सं०] खोज करना, जाँच-पड़ताल।

अन्वेषक–वि० [सं०] अन्वेषण करनेवाला, खोजी। **–प्रकाश**–पु० (सर्चलाइट) वह तेज प्रकाश जो अँधेरेमें किसी भी दिशाकी ओर दूरतक इस आशयसे प्रक्षिप्त किया जाय कि उससे शत्रुके विमानों या उसकी गतिविधि

आदिका अथवा भागते हुए या कहीं छिपे हुए चोर आदिका पता चल सके या उस तरफकी सब चीजें साफ-साफ देखी जा सकें।

अन्वेषण–पु० (रिसर्च) लगातार परिश्रमपूर्वक छानबीन करते हुए ऐतिहासिक बातों तथा अन्य तथ्योंका पता लगाना, गवेषणा, शोध।

अन्वेषी(षिन्), अन्वेष्टा(ष्ट)–वि० [सं०] अन्वेषक।

अन्वेष्टव्य, अन्वेष्य–वि० [सं०] अन्वेषणके योग्य।

अन्हवाना*–स० क्रि० नहलाना।

अन्हाना*–अ० क्रि० नहाना।

अपंकिल–वि० [सं०] बिना कीचड़का, सूखा; निर्मल।

अपंग–वि० अंगहीन; लँगड़ा-लूला; अशक्त।

अपंडित–वि० [सं०] मूर्ख, निरक्षर, ज्ञानहीन।

अप–अ० [सं०] एक उपसर्ग जो वैपरीत्य, वैरुद्ध्य, बुराई, आधिक्य, निषेध, हीनता, दूषण, विकृति, विशेषता इत्यादिका द्योतन करता है।

अपकरण–पु० [सं०] दुर्व्यवहार; दुष्कर्म।

अपकर्ता (तृ)–वि० [सं०] अपकार करनेवाला, हानि या बुराई करनेवाला; शत्रुभाव रखनेवाला।

अपकर्म(न्)–पु०[सं०] बुरा काम, दुष्कर्म;ऋणपरिशोध।

अपकर्ष–पु० [सं०] नीचेकी ओर खींचना या लाना; अवनति, गिराव; हीनता; क्षय; अपमान; अपयश।

अपकर्षक–वि० [सं०] अपकर्ष करनेवाला।

अपकर्षण–पु० [सं०] दे० 'अपकर्ष'।

अपकाजी*–वि० स्वार्थी, खुदगर्ज।

अपकार–पु० [सं०] उपकारका उलटा; बुराई; अहित; अनिष्टचिंता; नुकसान; शत्रुता; अपमान; अत्याचार; नीच कर्म।

अपकारक,–कारी(रिन्)–वि०[सं०]अपकार करनेवाला।

अपकारीचार*–वि० अपकार करनेवाला; विघ्नकर्ता।

अपकीरति*–स्त्री० दे० 'अपकीर्ति'।

अपकीर्ति–स्त्री० [सं०] अपयश, बदनामी।

अपकृत–वि० [सं०] जिसका अपकार किया गया हो।

अपकृति–स्त्री०–**अपकृत्य**–पु० [सं०] अपकार।

अपकृष्ट–वि० [सं०] हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ; गिराया हुआ; घटिया, खराब।

अपक्रम–पु० [सं०] पीछे हटना; भागना, बाहर चले आना; भागनेकी सीमा; व्यतीत होना (समयका)। वि० क्रमरहित, जिसका क्रम ठीक न हो।

अपक्रमण–पु० [सं०] दे० 'अपक्रम'।

अपक्रमी (मिन्)–वि० [सं०] जानेवाला, हटनेवाला।

अपक्रिया–स्त्री० [सं०] हानि, क्षति; अहित; द्रोह; दुष्कर्म; ऋणपरिशोध।

अपक्रोश–पु०[सं०]निंदा करना, अपशब्दका प्रयोग करना।

अपक्व–वि० [सं०] कच्चा; न पकाया हुआ; अनभ्यस्त।

अपक्ष–वि० [सं०] बिना पंखका; जिसके साथी-समर्थक न हों। पु० वह जो राज्यके पक्षमें न हो; वह जिससे राज्यको कोई लाभ न हो; वह जिसका किसीसे मेल-जोल न हो। **–पात**–पु० पक्षपातका अभाव। **–पाती (तिन्)**–वि० पक्षपात न करनेवाला, निष्पक्ष।

अपक्षय–पु०[सं०] छीजना, ह्रास; नाश।

अपखंड–पु० (फ्रैगमेंट) किसी वस्तुका टूटा हुआ हिस्सा, अपूर्ण भाग; विनष्ट या लुप्त वस्तुका बचा हुआ अंश।

अपगत–वि० [सं०] गया हुआ; बीता हुआ; भागा हुआ; तिरोहित; मृत।

अपगति–स्त्री० [सं०] अधोगति; दुर्गति; दुर्भाग्य।

अपगमन–पु० (मिस्कैरिज) (किसी पत्रादिका) भूलसे अन्यत्र चले जाना, निर्दिष्ट व्यक्तिके पास न पहुँचकर अन्य किसीके पास चले जाना।

अपगुण–पु० [सं०] दोष, ऐब।

अपघात–पु० [सं०] रोकना; हत्या; आघात या दुर्घटनासे मरना; धोखा।

अपघाती (तिन्)–वि० [सं०] अपघात करनेवाला।

अपच–पु० [सं०] वह जो पाककार्य कपनेमें असमर्थ हो; वह जो अपने लिए पाककार्य न करे। [हि०] बदहजमी।

अपचक्र–पु० (विशस सर्किल) (दलीलों आदिका) ऐसा दुश्चक्र जिसमें दोष भरे पड़े हों तथा जिसमेंसे बाहर आ सकना कठिन हो; विषम वृत्त।

अपचय–पु०[सं०] हानि; छीजना; व्यय; असफलता; दोष।

अपचरण–पु० (ट्रेसपासिंग) अपनी सीमा या अधिकार-क्षेत्रसे आगे बढ़कर दूसरेकी ऐसी सीमा या अधिकार-क्षेत्रमें चले जाना जहाँ प्रवेश करना अनुचित हो; अनधिकार-प्रवेश।

अपचार–पु०[सं०] दोष; अनुचित कर्म; दुराचार, अपथ्य।

अपचारक, अपचारी–पु० (ट्रेसपासर) दूसरेकी सीमा या अधिकार-क्षेत्रमें अनधिकार प्रवेश करनेवाला।

अपचारी (रिन्)–वि० [सं०] दुष्कर्मी; बुरा, नीच; पृथक् होनेवाला; अविश्वासी। पु० दे० 'अपचारक'।

अपचाल*–स्त्री० कुचाल, खोटाई।

अपची–स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें गलेकी ग्रंथियाँ बढ़ जाती हैं।

अपच्छी*–वि० विपक्षी, वैरी; बिना पंखका।

अपछरा*–स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अपजस*–पु० अपयश, बदनामी; लांछन।

अपजात–पु० [सं०] कपूत; वह पुत्र जो अपने माता-पितासे गुणादिकी दृष्टिसे हीन हो। वि० (डिजेनरेट) जो जाति, वंश आदिके श्रेष्ठ गुणों या विशेषताओंसे रहित हो गया हो; जो ऊँचे वंश, परम्परा आदिसे स्खलित होकर क्षुद्र या निकृष्ट श्रेणीका बन गया हो।

अपटु–वि० [सं०] अकुशल, कच्चा, बोदा; सुस्त, अस्वस्थ।

अपढ़मान*–वि० न पढ़ने योग्य, अपाठ्य।

अपठ–वि० [सं०] अपढ़, निरक्षर।

अपठित–वि० [सं०] अपढ़; जो पढ़ा न गया हो।

अपडर*–पु० डर, शंका।

अपडरना*–अ० क्रि० डरना, शंकित होना।

अपड़ाना*–अ० क्रि० खीचातानी करना, झगड़ना।

अपड़ाव*–पु० झगड़ा, तकरार, खींचातानी, 'जन्महिते अपड़ाव करत है गुनि गुनि हृदय कहै'–सू०

अपढ़–वि० बेपढ़ा, अशिक्षित।

अपण्य–वि० [सं०] न बेचने योग्य; जिसका बेचना

निषिद्ध हो। पु० न बेचने योग्य वस्तु ।

अपत*–वि०पत्रहीन; नंगा; निर्लज्ज; अधम । स्त्री०विपत्ति।

अपतई*–स्त्री० निर्लज्जता; ढिठाई; चंचलता ।

अपताना*–पु० जंजाल, झंझट ।

अपति–वि० [सं०] पतिहीन, बिना मालिकका । वि०स्त्री० विधवा; * निर्लज्ज, दुराचारी। स्त्री० दुर्दशा; अप्रतिष्ठा।

अपतिक–वि० [सं०] जिसका कोई मालिक न हो; पतिहीन; कुमारी; विधवा ।

अपतोस*–पु० अफसोस, दुःख ।

अपत्नीक–वि० [सं०] बिना पत्नीका, रँडुआ ।

अपत्य–पु० [सं०] संतान, बेटा या बेटी । **–काम**–वि० संतानका इच्छुक ।

अपत्र–वि० [सं०] बिना पत्तोंका; पंखहीन ।

अपथ–[सं०] पु० कुपथ, गलत या बुरी राह । **–गामी (मिन्)**–वि० कुमार्गगामी ।

अपथ्य–वि० [सं०] बुरा, अयुक्त; अहितकर; स्वास्थ्यनाशक। पु० प्रतिकूल आहार-विहार ।

अपद–वि० [सं०] बिना पैरका; बिना ओहदेका। पु० रेंगनेवाला जंतु । * अ० अनधिकारपूर्वक; अनुचित रूप से 'सजनी अपद न मोहिं परबोध'–विद्या० ।

अपदस्थ–वि० [सं०] पदसे हटाया हुआ, पदच्युत ।

अपदेखा*–वि० घमंडी ।

अपद्रव्य–पु० [सं०] बुरा द्रव्य, बुरी वस्तु ।

अपध्वंस–पु० [सं०] पतन; नाश; अपमान; निंदा ।

अपध्वस्त–वि० [सं०] निंदित; अपमानित; पराजित ।

अपन* सर्व० दे० 'अपना'; † हम ।

अपनपो,–पौ*–पु० अपनापन, आत्मीयता; अपना स्वरूप; होश, सुध-बुध; आत्मगौरव; गर्व ।

अपनय–पु० [सं०] दूर करना; स्थानांतरित करना; खंडन; दुर्नीति; अपकार ।

अपनयन–पु० [सं०] दूर करना; दूसरी जगह ले जाना; (रोगादिका) दूर होना; ऋण-परिशोध; खंडन; घटाना; (ऐबडक्शन) भगा ले जाना, किसी स्त्री, बालक आदिको उसके पति या माता-पिताके पाससे हटाकर अन्यत्र ले जाना।

अपना–सर्व० आत्म-संबंधी, निजका, स्वीय; आप, निज। पु० स्वजन। **–पन**–पु० आत्मीयता; स्वाभिमान। मु०**–करना**–मित्र या अनुकूल बना लेना; हाथमें कर लेना। **–पराया,–बेगाना**–स्वजन-परजन, दोस्त-दुश्मन। **–सा मुँह लेकर रह जाना**–लज्जित होना; बेवकूफ बनना। **–(नी)-अपनी पड़ना**–सबको अपनी चिंता होना। **–(नी) गाना**–अपनी ही बात कहना। **–(नी)गुड़िया सँवार देना**–सामर्थ्यानुसार कन्याका विवाह करना।**–(नी)नींद सोना**–अपनी मर्जीसे सोना-जागना; इच्छानुसार काम करना। **–(नी) बातका एक**–जो अपनी बातपर डटा रहे। **–(नी) बातपर आना**–हठ करना । **–(ने)तक रखना**–किसीसे न कहना। **–(ने) मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**–आत्मप्रशंसा करना।

अपनाना–स० क्रि० स्वीकार कर लेना; अपना बना लेना; अपने पक्ष या वशमें कर लेना।

अपनापन, अपनापा–पु० आत्मीयता, अपनायत; स्वाभिमान।

अपनाम–पु० [सं०] बदनामी, निंदा।

अपनायत–स्त्री० आत्मीयता, आपसदारी।

अपनीत–वि० [सं०] दूर किया हुआ; निकाला हुआ; जिसे कोई भगा ले गया हो।

अपने-आप–अ० स्वतः, खुद, अपनेसे।

अपभ्रंश–पु० [सं०] नीचे गिरना, पतन; बिगाड़; शब्दका विकृत रूप; प्राकृत भाषाओंका परवर्ती रूप जिनसे उत्तर भारतकी आधुनिक आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति मानी जाती है। वि० बिगड़ा हुआ।

अपभ्रष्ट–वि० [सं०] बिगड़ा हुआ; गिरा हुआ।

अपमान–पु० [सं०] मानभंग, बेइज्जती, अनादर, तिरस्कार। **–लेख**–पु० (लाइबेल) वह लेख, वक्तव्य आदि जिससे किसी व्यक्तिकी अप्रतिष्ठा, बदनामी या अपमान हो। **–वचन**–पु० (स्लैंडर) किसीकी बदनामी फैलानेके लिए गढ़ी हुई झूठी बात कहना या सुनना, निंदावाणी।

अपमानना*–स० क्रि० अपमान करना।

अपमानित–वि० [सं०] जिसका अपमान किया गया हो, तिरस्कृत, निरादृत।

अपमानी (निन्)–वि० [सं०] अपमान करनेवाला।

अपमार्जन–पु० (डिलीशन) रद्द करने, मिटा देने या निकाल देनेकी क्रिया।

अपमार्जित करना–स०क्रि० (डिलीट) (किसी लेख, वाक्य, शब्द इत्यादिसे कोई अंश) निकाल देना, मिटा देना या रद्द कर देना।

अपमिश्रण–पु० (एडुलटरेशन) घी, दूध या अन्य किसी चीजमें दूषित अथवा घटिया वस्तुकी मिलावट करना।

अपमृत्यु–स्त्री० [सं०] अकाल मृत्यु, साँप काटने, विष खाने, कोई दुर्घटना हो जाने आदिसे होनेवाली मृत्यु।

अपयश(स्)–पु० [सं०] अपकीर्ति, बदनामी।

अपयोग–पु० [सं०] कुयोग; कुसमय; कुचाल।

अपयोजन–पु० (मिस्ऐप्रोप्रियेशन) दे० 'दुरुपयोजन'।

अपरंच–अ० [सं०] और भी; दूसरा भी; फिर।

अपरंपार–वि० अपार, असीम।

अपर–वि० [सं०] अन्य, दूसरा; पिछला; निकृष्ट; साधारण; दूसरेका; पश्चिमी; दूरवर्ती; जिससे बढ़कर या जिसकी बराबरी करनेवाला कोई न हो। **–न्यायाधीश**–पु०(एडीशनल जज) अतिरिक्त या दूसरा न्यायाधीश। **–पक्ष**–पु० महीनेका दूसरा पक्ष; प्रतिवादी पक्ष।**–लोक**–पु०परलोक; स्वर्ग। **–सचिव**–पु० (एडीशनल सेक्रेटरी)सचिवका बढ़ा काम सँभालनेके लिए रखा गया अतिरिक्त सचिव।

अपरछन*–वि० अनावृत, अप्रच्छन्न, जो छिपा न हो; आवृत, प्रच्छन्न, छिपा हुआ, गुप्त।

अपरतंत्र–वि० [सं०] जो किसीके वशमें न हो, स्वतंत्र।

अपरती*–स्त्री० स्वार्थ।

अपरना*–स्त्री० दे० 'अपर्णा'।

अपरबल*–वि० प्रबल; उद्धत; प्रचंड।

अपरस–पु० एक चर्मरोग। * वि० अस्पृश्य।

अपरांत–पु० [सं०] पश्चिमी सीमांत; पश्चिमी सीमांतका

देश या निवासी ।

अपरा–स्त्री० [सं०] अध्यात्म-विद्याको छोड़कर शेष संपूर्ण विद्या; लौकिक विद्या, वेद-वेदांगादि; पश्चिमी दिशा ।

अपराग–पु० [सं०] अरुचि, असंतोष; शत्रुता ।

अपराजित–वि० [सं०] जो जीता न गया हो ।

अपराजिता–स्त्री० [सं०] दुर्गा; शेफालिका, जयंती, विष्णुक्रांता, शंखिनी आदि पौधे; अयोध्या नगरी ।

अपराजेय–वि० [सं०] जो जीता न जा सके ।

अपराद्ध–वि० [सं०] जिसने अपराध किया हो; जो निशाना चूक गया हो; दोषी, गलती करनेवाला; अतिक्रांत । **–नरहत्या**–स्त्री० (कल्पेबिल होमिसाइड) ऐसी नरहत्या जो अपराध मानी जाय तथा जिसके लिए दंडकी व्यवस्था हो ।

अपराध–पु० [सं०] दोष; दंड योग्य कर्म; जुर्म; गलती; पाप । **–भंजन**–पु० अपराधों या पापोंका नाश करनेवाला; शिव । **–लेखा**–पु० (हिस्ट्री शीट) दे० 'वृत्तफलक' । **–विज्ञान**–पु० (क्रिमिनॉलॉजी) वह विज्ञान जिसमें अपराध करनेके प्रेरक कारणों तथा निवारक उपायोंका विवेचन हो । **–शील**–वि० (क्रिमिनल) जो अपराधोंकी ओर प्रवृत्त हो, जो अपराध करते रहनेका आदी हो (जैसे–अपराधशील जन-जातियाँ) । **–स्वीकरण**–पु० (कन्फेशन) पुरोहित इत्यादिके सामने अपना अपराध या पाप स्वयं स्वीकार करना; वह कथन जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया गया हो ।

अपराधी((धन्)–वि० [सं०] अपराध करनेवाला; दोषी ।

अपरार्द्ध–पु० [सं०] उत्तरार्द्ध ।

अपरावर्तनीय–वि० (नॉन-ट्रांसफरेबल) दे० 'अहस्तांतरणीय' ।

अपराह्ण–पु० [सं०] दोपहरके बादका काल, तीसरा पहर ।

अपराह्न–पु० दे० 'अपराह्ण' ।

अपरिग्रह–पु० [सं०] दानका अस्वीकार; शरीरयात्राके लिए जितना आवश्यक हो उससे अधिक पैसा, अन्न आदि न लेना; निर्धनता; योगदर्शनोक्त यमोंमेंसे एक ।

अपरिचय–पु० [सं०] परिचयका अभाव, जान-पहचान न होना ।

अपरिचित–वि० [सं०] जिससे परिचय न हो, अज्ञात; अनभिज्ञ; परिचयहीन; अजनबी ।

अपरिच्छद–वि० [सं०] वस्त्रहीन; फटेहाल, गरीब ।

अपरिच्छन्न, अपरिच्छादित–वि० [सं०] आवरणरहित, जो ढका न हो, नंगा ।

अपरिच्छिन्न–वि० [सं०] अंतररहित, मिला हुआ; सीमारहित; विभागरहित ।

अपरिच्छेद–पु० [सं०] विभाग, बिलगाव या सीमाका अभाव; क्रम या व्यवस्थाका अभाव; नैरंतर्य; विचार या विवेकका अभाव ।

अपरिणत–वि० [सं०] अनपका, कच्चा; अपरिवर्तित, ज्योंका त्यों ।

अपरिणाम–पु० [सं०] विकाररahित्य । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० अदूरदर्शी ।

अपरिणामी (मिन्)–वि० [सं०] जो बदले नहीं, निर्विकार, एकरस ।

अपरिणीत–वि० [सं०] अविवाहित, कॉरा ।

अपरिपक्व–वि० [सं०] कच्चा, पक्का नहीं; अधकचरा ।

अपरिमित–वि० [सं०] बे-हद; बे-हिसाब; अत्यधिक ।

अपरिमेय–वि० [सं०] जिसकी तोल-नाप न हो सके, बे-अंदाज; अनगिनत ।

अपरिवर्तनीय–वि० [सं०] न बदलनेवाला; अटल; अवश्यंभावी; जो बदलेमें न दिया जा सके ।

अपरिवर्तित–वि० [सं०] जिसमें कोई परिवर्तन, हेर-फेर न हुआ हो; अविकृत ।

अपरिवाद्य–वि० [सं०] जो भर्त्सनाके योग्य न हो ।

अपरिवृत–वि० [सं०] जो चारों ओरसे घिरा न हो (खेत); अपरिच्छन्न ।

अपरिष्कृत–वि० [सं०] जो माँजा-धोया न गया हो; मैला; भद्दा; असंस्कृत ।

अपरिहार्य–वि० [सं०] जिसका परिहार न हो सके, अनिवार्य; अवश्यंभावी; अत्याज्य ।

अपरीक्षित–वि० [सं०] जिसकी परीक्षा न हुई हो, न आजमाया हुआ; मूर्खतापूर्ण, विचारशून्य; अप्रमाणित ।

अपरुष–वि० [सं०] क्रोधरहित; अकठोर, मृदुल ।

अपरूप–वि० [सं०] कुरूप, भद्दा; अपूर्व (बँगला) । पु० भद्दापन, कुरूपता ।

अपरोक्ष–वि० [सं०] जो परोक्ष न हो, प्रत्यक्ष, इंद्रियगोचर; जो दूर न हो ।

अपर्णा–स्त्री० [सं०] पार्वती (शिवकी प्राप्तिके निमित्त तप करते समय पहले तो पत्ते खाती रहीं, किन्तु आगे चलकर उन्होंने पत्तोंका खाना भी छोड़ दिया, इसीसे अपर्णा नाम पड़ गया ।); दुर्गा ।

अपर्याप्त–वि० [सं०] नाकाफी; अधूरा; असीम; अयोग्य ।

अपलक–अ० एकटक, निर्निमेष ।

अपलक्षण–पु० [सं०] कुलक्षण; अव्याप्ति अथवा, अतिव्याप्ति-दोषयुक्त लक्षण ।

अपलाप–पु० [सं०] छिपाना; (दोषादिसे) इनकार करना; सत्यका गोपन; बेमतलबकी बकवास ।

अपलाभ–पु० (प्रोफिटियरिंग) जनताकी या सरकारकी विपत्तिसे अनुचित लाभ उठानेकी चेष्टा ।

अपलेखन–पु० (राइटिंग ऑफ) ऋण या पावनेकी रकम वसूल न होनेकी आशा न रह जानेपर उसे रद्द कर देना, बट्टेखाते डाल देना ।

अपलोक*–पु० अपवाद; बदनामी ।

अपवचन–पु० [सं०] निंदा, अपशब्द ।

अपवर्ग–पु० [सं०] मोक्ष, निर्वाण; त्याग; दान ।

अपवर्जन–पु० [सं०] त्याग; दान; चुकाना (ऋण आदि) ।

अपवर्जित–वि० [सं०] त्याग किया हुआ; दिया हुआ ।

अपवर्तक–वि० [सं०] सामान्य विभाजक ।

अपवर्तन–पु० [सं०] परिवर्तन; हटाना, स्थानांतरण; निःशेष भाग; विभाजक ।

अपवर्तित–वि० [सं०] परिवर्तित; हटाया हुआ, पृथक् किया हुआ; सामान्य विभाजकसे निःशेष विभक्त किया हुआ ।

अपवर्त्य–वि० [सं०] जिसका सामान्य विभाजकसे निःशेष

विभाग किया जा सके।

अपवश*-वि० अपने वशमें, स्वाधीन।

अपवाद-पु० [सं०] निंदा, बदनामी; लांछन; सामान्य नियमको बाधित या मर्यादित करनेवाला विशेष नियम, खंडन, प्रतिवाद; भ्रांत धारणाका निराकरण;।

अपवादक, अपवादी(दिन्)-वि० [सं०] निंदा,बदनामी, खंडन आदि करनेवाला; बाधक।

अपवारण-पु० [सं०] छिपना; ढकना; गायब हो जाना; व्यवधानकारक वस्तु।

अपवित्र-वि० [सं०] अशुद्ध, नापाक; मैला।

अपविद्ध-वि० [सं०] छोड़ा हुआ; बेधा हुआ; नीच। **-पुत्र**-पु० वह पुत्र जो माता-पिता द्वारा त्यक्त होनेपर अन्य द्वारा पालित हो; बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक।

अपव्यय-पु० [सं०] अनुचित व्यय, फिज़ूलखर्ची।

अपव्ययी (यिन्)-वि० [सं०] व्यर्थ या अनुचित व्यय करनेवाला, फिज़ूलखर्च, उड़ाऊ।

अपशकुन-पु० [सं०] असगुन, अनिष्ट-सूचक शकुन।

अपशब्द-पु० [सं०] अशुद्ध, बिगड़ा हुआ शब्द; ग्राम्य शब्द; दुर्वचन; गाली-गलौज़; अपानवायुका त्याग।

अपसंग्रह, अपसंचय-पु० (होर्डिंग) बादमें अधिक दाम प्राप्त करनेकी गरजसे बड़ी संख्या या परिमाणमें वस्तुओंका संग्रह करना।

अपसगुन-पु० दे० 'अपशकुन'।

अपसना, अपसवना*-अ० क्रि० भागना; चुपकेसे चल देना; अपसरण।

अपसर-पु० [सं०] प्रस्थान, पलायन; उचित कारण; दूरी (ज्या०)।

अपसरण-पु० [सं०] हट जाना; पीछे हटना; भागना।

अपसर्जन-पु० [सं०] त्याग; दान; मोक्ष।

अपसव्य-वि० [सं०] सव्य (बायाँ) का उलटा, दाहिना; उलटा; जिसका यज्ञोपवीत दाहिने कंधेपर हो।

अपसारण-पु० [सं०] दूर ले जाना; बाहर कर देना; फेंक देना; (एक्सपल्शन) किसी स्थान, संस्था आदिसे बलपूर्वक या नियमभंग आदिके कारण हटा दिया जाना।

अपसारित-वि० [सं०] हटाया हुआ; दूर किया हुआ।

अपसिद्धांत-पु० [सं०] गलत या भ्रमयुक्त निर्णय; एक निग्रहस्थान (न्या०); विरुद्ध सिद्धांत (जैन)।

अपसृत-वि० [सं०] गया हुआ; भागा हुआ; च्युत; फैलाया हुआ; फेंका हुआ; युद्धसे भागा हुआ (कौ०)।

अपसोस*-पु० दे० 'अफसोस'।

अपसोसना*-अ० क्रि० अफसोस करना।

अपसौन*-पु० अपशकुन।

अपस्नान-पु० [सं०] कुटुंबी या संबंधीके मरनेपर किया जानेवाला स्नान, मृतकस्नान।

अपस्फीति-स्त्री० (डीफ्लेशन) दे० 'विस्फीति'।

अपस्मार-पु० [सं०] मृगी रोग; स्मरणशक्तिकी हानि।

अपस्मारी (रिन्)-वि० [सं०] अपस्मार रोगवाला।

अपस्वर-पु० [सं०] बुरा या गलत स्वर (संगीत)।

अपस्वार्थी-वि० मतलबी, खुदगरज।

अपहत-वि० [सं०] नष्ट या दूर किया हुआ; मारा हुआ।

अपहरण-पु० [सं०] छीन लेना; उठा ले जाना; चुराना; लूट लेना; छिपाना, गायब करना; महसूली मालको दूसरी चीजोंमें छिपाकर महसूल बचाना (कौ०); (किडनैपिंग) रुपया ऐंठने, स्वार्थ-सिद्ध करने आदिके उद्देश्यसे किसी बालक-बालिका या धनी व्यक्ति आदिको बलपूर्वक उठाकर ले जाना या गायब कर देना।

अपहरना*-स० क्रि० अपहरण करना।

अपहर्ता (तृ)-वि० [सं०] अपहरण करनेवाला।

अपहसित-पु० [सं०] अकारण हँसी।

अपहार-पु० [सं०] अपहरण; दूसरेकी संपत्तिका दुरुपयोग; (एंबेजिलमेंट) किसी दूसरेका माल या धन अनुचित रूपसे अपने अधिकारमें कर उसे अपने काममें लाना; गबन; हानि, क्षति।

अपहारक-वि० [सं०] अपहरण करनेवाला। पु० चोर, डाकू।

अपहारित-वि० [सं०] छीना हुआ, लूटा हुआ; छिपाया हुआ।

अपहारी (रिन्)-वि० [सं०] दे० 'अपहारक'।

अपहार्य-वि० [सं०] छीनने या चुराने योग्य।

अपहास-पु० [सं०] अकारण या बे-मौका हँसी; उपहास, चिढ़ाना।

अपहृत-वि० [सं०] अपहरण किया हुआ, छीना या चुराया हुआ।

अपह्नुति-स्त्री० [सं०] अपह्नव; अर्थालंकारका एक भेद-उपमेयका निषेध कर उपमानकी स्थापना करना।

अपांक्त, अपांक्तेय,-वि० [सं०] पंक्तिमें बैठने-साथ भोजन करने-का अनधिकारी (ब्राह्मण), जाति-बहिष्कृत।

अपांग-वि० [सं०] अंगहीन; अशरीरी; पंगु। पु० संप्रदाय-सूचक तिलक; आँखकी कोर; कामदेव; अपामार्ग। **-दर्शन**-पु०,**-दृष्टि**-स्त्री० तिरछी चितवन।

अपा*-स्त्री० दे० 'आपा'।

अपाकरण-पु०, **अपाकृति**-स्त्री० [सं०] दूर करना, निराकरण, अस्वीकृति; (ऋणादि) चुकता करना।

अपाकर्म (न्)-पु० [सं०] चुकाना, अदायगी।

अपाच्य-वि० [सं०] जो पकाया (पचाया) न जा सके।

अपाटव-पु० [सं०] अपटुता, अनाड़ीपन; भद्दापन; रोग।

अपात्र-वि० [सं०] अयोग्य, मूर्ख; अनधिकारी; दान, श्राद्ध आदिमें निमंत्रणका अनधिकारी (ब्राह्मण)। पु० निकम्मा बरतन; अयोग्य व्यक्ति; दान आदि पानेका अनधिकारी ब्राह्मण।

अपादान-पु० [सं०] हटाना, दूर करना; बिलगाव; व्याकरणमें पाँचवाँ कारक।

अपान-पु० [सं०] पाँच प्राणोंमेंसे एक; भीतरको खींची जानेवाली साँस; गुदामार्गसे बाहर निकलनेवाली हवा; गुदा। * पु० आत्मज्ञान; आत्मगौरव; होश-हवास; अहंकार। सर्व० अपना।**-द्वार**-पु० गुदा।**-पवन**-पु०,**-वायु**-स्त्री० गुदा मार्गसे निकलनेवाली वायु; पाद, गोज़।

अपाप-वि० [सं०] पापरहित, निर्दोष। पु० पुण्य।

अपामार्ग-पु० [सं०] एक बूटी, चिचिड़ा।

अपाय-पु० [सं०] जाना; बिलगाव; लोप; नाश; हानि; अंत; बुराई; खतरा; विपत्ति; * उपद्रव। वि० [हि०]

बिना पैरका; निरुपाय।

अपार–वि० [सं०] जिसका पार न हो; असीम, असंख्य; अत्यधिक; पहुँचके बाहर।

अपारदर्शिता–स्त्री० (ओपेसिटी) आरपार न देखे जा सकनेका गुण, अपारदर्शी होनेका भाव या गुण।

अपार्थिव–वि० [सं०] जो पृथ्वी या मिट्टी-संबंधी न हो या उससे उत्पन्न न हुआ हो।

अपाव*–पु० दे० 'अपाय'*।

अपावन–वि० [हं०] अपवित्र; मैला, गंदा।

अपावर्त्तन–पु०, **अपावृत्ति**–स्त्री० [सं०] लौटना; पीछे हटना अस्वीकृति; घूमना, चक्कर देना।

अपासन–पु० [सं०] फेंकना; प्रार्थना आदिकी अस्वीकृति (रिजेक्शन), अलग करना; वध करना।

अपासु–वि० [सं०] निर्जीव, मृत।

अपाहज, अपाहिज–पु० अपंग; निकम्मा; आलसी; अकर्मण्य।

अपिंडी (डिन्)–वि० [सं०] पिंडरहित, अशरीरी।

अपि–अ० [सं०] और, भी; अगरचे। **–च**–अ० और भी, बल्कि। **–तु**–अ० किंतु।

अपिच्छिल–वि० [सं०] अपंकिल, स्वच्छ; गहरा, गाढ़ा।

अपिधान–पु० [सं०] ढकना; छिपाना; ढक्कन; आच्छादन।

अपीच*–वि० (अपीच्य), अति सुंदर, गुप्त।

अपीडन–पु० [सं०] पीड़ा न देना; दया, अनुकंपा।

अपीत–वि० [सं०] जिसने मद्यपान नहीं किया है। पु० पीतसे भिन्न वर्ण।

अपील–स्त्री० [अं०] साग्रह प्रार्थना; चंदे आदिके लिए सार्वजनिक प्रार्थना; किसी अदालतका फैसला बदलवानेके लिए उससे ऊपरकी अदालतमें दरख्वास्त देना, पुनर्विचारकी प्रार्थना। **–अदालत**–स्त्री०अपील सुननेकी अधिकारिणी या मातहत अदालतोंके फैसल किये हुए मुकदमे सुननेवाली अदालत।

अपुण्य–वि० [सं०] अधार्मिक, अपवित्र, बुरा। पु० पुण्यका अभाव।

अपुत्र, अपुत्रक–वि० [सं०] पुत्रहीन, निपूता।

अपुत्रिक–पु० [सं०] ऐसी लड़कीका पिता जो अपुत्र होनेके कारण उत्तराधिकारिणी न बनायी जा सके।

अपुनपो, अपुनपौ–पु० दे० 'अपनपौ'।

अपुनरावर्तन–पु० [सं०] फिर न लौटना; मोक्ष।

अपुनीत–वि० [सं०] अपवित्र, दूषित।

अपुष्ट–वि० [सं०] जिसका पोषण या बाढ़ ठीक तरहसे न हुई हो; कमजोर; मंद (स्वर); एक अर्थदोष (सा०)।

अपुष्प–वि० [सं०] पुष्पहीन, जो न फूले। पु० गूलर नामक वृक्ष। **–फल,–फलद**–वि० बिना फूले फल देनेवाला। पु० कटहल; गूलर।

अपूजा–स्त्री० [सं०] अनादर, अभक्ति।

अपूज्य–वि० [सं०] पूजा या सम्मानके अयोग्य।

अपूठा*–वि० अपुष्ट; अधकचरा; अनभिज्ञ; अविकसित।

अपूत–वि० [सं०] अपवित्र, अशुद्ध; अपरिष्कृत;*निपूता।

अपूप–पु० [सं०] मालपूआ; गेहूँ; मधुचक्र।

अपूर*–वि० भरपूर, प्रचुर।

अपूरना*–स० क्रि० भरना; फूँकना, बजाना।

अपूरब–*–वि० दे० 'अपूर्व'।

अपूरा*–वि० दे० 'अपूर'; व्याप्त।

अपूर्ण–वि० [सं०] जो पूरा या भरा न हो; अधूरा; न्यून। **–भूत**–पु० क्रियाके कालका एक भेद जिसमें भूतकाल तो पाया जाय, पर क्रियाकी समाप्ति न हुई हो (व्या०)।

अपूर्व–वि० [सं०] जो या जैसा पहले न हुआ हो; अद्भुत, बे-जोड़; उत्तम। **–रूप**–पु० अर्थालंकारका एक भेद।

अपेक्षण–पु० [सं०] अपेक्षा करना या रखना; चाह, आशा या आवश्यकता; विचारणा।

अपेक्षणीय, अपेक्ष्य–वि० [सं०] अपेक्षा करने योग्य।

अपेक्षा–स्त्री० [सं०] दे० 'अपेक्षण'। **–कृत**–अ० किसीकी तुलनामें (न्यूनाधिक)।

अपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी चाह, प्रतीक्षा या आवश्यकता हो।

अपेक्षी (क्षिन्)–वि० [सं०] अपेक्षा करनेवाला; आकांक्षा, प्रतीक्षा करनेवाला (परमुखापेक्षी)।

अपेच्छा–†स्त्री० दे० 'अपेक्षा'।

अपेय–वि० [सं०] न पीने योग्य।

अपेल*–वि० अटल; अकाट।

अपैठ*–वि० पैठ या पहुँचके बाहर, दुर्गम।

अपोगंड–वि० [सं०] सोलह बरससे अधिक अवस्थावाला, बालिग; भीरु; विकलांग।

अपौरुष,अपौरुषेय–वि०[सं०] पुरुषार्थहीन;भीरु; अपुरुषोचित, अलौकिक, ईश्वरीय; मनुष्यकृत नहीं, ईश्वरकृत।

अप्रकाशित–वि० [सं०] प्रकाशहीन; अप्रकट; न छपा हुआ, जो छपकर जनसाधारणके सामने न आया हो।

अप्रकृत–वि० [सं०] अयथार्थ; बनावटी; अप्रधान, आनुषंगिक, गौण; आकस्मिक; विषयसे असंबद्ध।

अप्रखर–वि० [सं०] अतीक्ष्ण; सुस्त; कोमल।

अप्रगल्भ–वि० [सं०] सलज्ज; विनीत; दब्बू; जो प्रौढ़ या ढीठ न हो; ढीला।

अप्रचलित–वि० [सं०] जिसका चलन या व्यवहार न हो।

अप्रच्छन्न–वि० [सं०] अनावृत, प्रकट, खुला हुआ।

अप्रज–वि० [सं०] निस्संतान; अजात, न जनमा हुआ।

अप्रतिकारी (रिन्)–वि० [सं०] प्रतिकार न करनेवाला।

अप्रतिबंध–पु० [सं०] रोक-टोक न होना, स्वच्छंदता। वि०बे-रोक-टोक,स्वच्छंद; बिना किसी झगड़ेके प्राप्त (का०)।

अप्रतिबद्ध–वि० [सं०] बे-रोक; मनमाना।

अप्रतिभ–वि० [सं०] प्रतिभाहीन, जिसे जवाब या बचाव न सूझे, अप्रत्युत्पन्नमति; उदास; मंद।

अप्रतिभट–वि० [सं०] प्रतिभटहीन, जिसका मुकाबला करनेवाला कोई न हो। पु० ऐसा योद्धा।

अप्रतिभाव्य–वि० [सं०] (नॉन-बेलेबिल) (वह अपराध) जिसमें किसीके जामिन बनने या जमानत देनेको तैयार होनेपर भी अपराधीके अस्थायी रूपसे रिहा किये जानेकी गुंजाइश न हो।

अप्रतिम–वि० [सं०] बे-जोड़, अनुपम।

अप्रतिष्ठा–स्त्री० [सं०] आदर-मानका अभाव; बे-इज्जती;

बदनामी, अपकीर्त्ति।

अप्रतिष्ठित–वि० [सं०] प्रतिष्ठाहीन, समाजमें जिसका आदर-सम्मान न हो।

अप्रतिसंबद्धा भूमि–स्त्री० [सं०] वह भूमि जो दूसरीसे सटी न हो। (कौ०)।

अप्रतिहत–वि० [सं०] जिसे कोई रोकनेवाला न हो, अबाधित; अपराजित; अक्षुण्ण। **–गति**–वि० जिसकी गति किसी प्रकार रोकी न जा सके।

अप्रतिहार्य–वि० [सं०] जिसका निरोध न किया जा सके।

अप्रतीत–वि० [सं०] अप्रसन्न; अगम्य; विरोधरहित; अस्पष्ट (अर्थवाला–एक शब्ददोष)।

अप्रतीति–स्त्री० [सं०] प्रतीतिका अभाव, अविश्वास; (अर्थादिका) स्पष्ट न होना।

अप्रत्यक्ष–वि० [सं०] जो दिखाई न दे, अगोचर; परोक्ष। **–कर**–पु० (इनडाइरेक्ट टैक्स) वह कर जो प्रत्यक्ष रूपसे न लिया जाकर विक्रेय वस्तुओं आदिकी बढ़ी हुई कीमतके रूपमें उपभोक्ताओंसे उद्‌गृहीत किया जाय।

अप्रत्यय–पु० [सं०] विश्वासका अभाव; प्रतीतिका, ज्ञानका अभाव। वि० विश्वासरहित; अनभिज्ञ।

अप्रत्यादेय–वि०[सं०] (इर्रिकव्हरेबिल) जो फिर प्राप्त या वसूल न किया जा सके।

अप्रत्याशित–वि० [सं०] जिसकी आशा न रही हो; अनसोचा, आकस्मिक।

अप्रधान–वि० [सं०] गौण; छोटा।

अप्रमत्त–वि० [सं०] लापरवाह नहीं, सावधान, जागरूक।

अप्रमेय–वि० [सं०] जिसकी नाप न हो सके; बे-हद, बे-हिसाब; जो सिद्ध या प्रमाणित न किया जा सके; अज्ञेय।

अप्रयुक्त–वि० [सं०] जो काममें न लाया गया हो, अव्यवहृत; अप्रचलित (शब्द)।

अप्रवर्ती–वि०[सं०] (इन-आपरेटिव्ह) जो लागू न हो; जो अपनी क्रिया न कर रहा हो, प्रभाव न डाल रहा हो।

अप्रवृत्ति–स्त्री० [सं०] प्रवृत्तिका अभाव; कोष्ठबद्धता।

अप्रशस्त–वि० [सं०] अप्रशंसित; निंद्य; क्षीण।

अप्रसन्न–वि० [सं०] खिन्न; उदास; नाखुश, नाराज।

अप्रसाद–पु० [सं०] अकृपा, अनुकूलता।

अप्रसिद्ध–वि० [सं०] जिसे अधिक लोग न जानते हों, गुमनाम; असामान्य।

अप्रसूता–स्त्री० [सं०] बंध्या स्त्री। वि०स्त्री० बिनब्यायी।

अप्रस्तुत–वि० [सं०] अनुपस्थित; अप्रसक्त; अवर्ण्य; गौण, अप्रधान; अनुद्यत। पु० उपमान। **–प्रशंसा**–स्त्री० एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुतके अर्थ अप्रस्तुतका वर्णन किया जाय।

अप्राकरणिक–वि० [सं०] जिसका प्रकरण या विषयसे संबंध न हो।

अप्राकृत–वि० [सं०] अस्वाभाविक; अलौकिक; असाधारण।

अप्राकृतिक–वि० [सं०] अस्वाभाविक, प्रकृति-विरुद्ध।

अप्राज्ञ–वि० [सं०] ज्ञानहीन; अशिक्षित।

अप्राप्त–वि० [सं०] न मिला हुआ; न आया हुआ; न पहुँचा हुआ; अप्रस्तुत। **–यौवन**–वि० युवावस्थाको न पहुँचा हुआ। [स्त्री०–यौवना।] **–वय (स)**–वि० कच्ची उम्रका, ना-बालिग।

अप्राप्ति–स्त्री० [सं०] न मिलना, अलाभ; पूर्वनियमसे प्रमाणित न होना; अनुपपत्ति।

अप्राप्य–वि० [सं०] न मिलनेवाला, अलभ्य।

अप्रामाणिक–वि० [सं०] प्रमाणरहित; न मानने योग्य; अविश्वसनीय।

अप्रासंगिक–वि० [सं०] प्रस्तुत विषयसे असंबद्ध; प्रसंगके विरुद्ध या बाहरका।

अप्रियंवद–वि० [सं०] दे० 'अप्रियवादी'।

अप्रिय–वि० [सं०] जो प्यारा न हो; अरुचिकर, नापसंद; वैर करनेवाला। **–कर,–कारक,–कारी (रिन्)**–वि० अरुचिकर। **–वादी (दिन)**–वि० कटुभाषी, कठोर बात करनेवाला।

अप्रीति–स्त्री० [सं०] अरुचि; वैर; दुर्भाव; स्नेहाभाव। **–कर**–वि० कठोर; अनुकूल; अप्रिय।

अप्रैल–पु० ईसवी सालका चौथा महीना, एप्रिल।

अप्रौढ–वि० [सं०] अधृष्ट; भीरु; नम्र; अशक्त; ना-बालिग।

अप्रौढा–स्त्री० [सं०] कुमारी कन्या; वह कन्या जिसका हालमें ही विवाह हुआ हो, पर रजस्वला न हुई हो।

अप्सर–* स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अप्सरा (रस्)–स्त्री० [सं०] स्वर्गलोक-वासिनी वेश्या, परी। **–पति**–पु० [हिं०] इंद्र।

अफ़ग़ान–वि० [फ़ा०] अफगानिस्तानका रहनेवाला।

अफताली*–पु० पड़ावपर पहलेसे जाकर आरामका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

अफनाना–अ० क्रि० उबलना; क्रुद्ध होना।

अफ़यून–स्त्री० [अ०] अफीम।

अफरना–अ० क्रि० जीभर खाना; अघाना; ऊबना।

अफरा–पु० पेट फूलनेका रोग; अपच या वायुविकारसे पेटका फूलना।

अफ़रा-तफ़री–स्त्री०[फ़ा०] गोलमाल; बदहवासी; आतंक।

अफराना*–अ० क्रि० दे० 'अफरना'।

अफल–वि० [सं०] फलरहित; निरर्थक; बाँझ।

अफ़लातून–पु० [फ़ा०] प्राचीन यूनानका एक प्रमुख विद्वान् तथा दार्शनिक, प्लेटो। **–का नाती**–अपने बड़प्पनकी डींग मारनेवाला।

अफ़वाह–स्त्री० [अ०] किंवदंती, उड़ती खबर; गप्प।

अफ़सर–पु० [फ़ा०] प्रधान अधिकारी; हाकिम, सरदार।

अफ़सरी–स्त्री० प्रधानता; हुकूमत; अधिकार।

अफ़साना–पु० [फ़ा०] कहानी, आख्यान; उपन्यास। **–नवीस,–निगार**–पु० कहानी-लेखक; उपन्यासकार।

अफ़सोस–पु० [फ़ा०] दुःख; खेद; पछतावा।

अफ़ीम–स्त्री० पोस्तेके ढोंढ़का गोंद जो नशे और दवाके काम आता है। **–ची**–वि० अफीम खानेका आदी।

अफ़ीमी–वि० दे० 'अफीमची'।

अफुल्ल–वि० [सं०] अविकसित (पुष्प)।

अबंधु, अबांधव–वि० [सं०] मित्रहीन, अकेला; जिसके कोई न हो।

अब–अ० इस समय; इस क्षण, फिलहाल; आगेसे। पु०

–की,–के–इस वार, अगली बार। **–जाकर**–इतनी देर वाद। **–भी**–आज भी; इतनेपर भी। **–से**–आगेसे, आइंदा। **मु०–तब करना**–आज-कल करना, टाल-मटोल करना। **–तब लगना या होना**–मरणासन्न होना, कुछ देरका मेहमान होना।

अबतर–वि० [फा०] विगड़ा हुआ; बुरा, खराव।

अबतरी–स्त्री० [फा०] विगाड़; अवनति, खराबी।

अबद्ध–वि० [सं०] न बँधा हुआ, मुक्त; स्वच्छंद, आजाद; **–पत्र-प्रपंजी**–स्त्री० (लूज लीफ लेजर) वह प्रपंजी जो खुले या बिना सिले पन्नोंके रूपमें हो। **–मुख**–वि० जो मनमें आये वह बकनेवाला, वदजवान। **–मूल**–वि० जिसकी जड़ दृढ़ न हो।

अबध*–वि० अवाध।

अबधू*–पु० अवधूत, संन्यासी। वि० अबोध।

अबध्य–वि० [सं०] न मारने योग्य; वधदंडके अयोग्य।

अबर*–वि० दे० 'अवल'।

अबरक, अबरख–पु० अभ्रक धातु; एक तरहका पत्थर।

अबरन*–वि० अवर्णनीय; विना रंग-रूपका; भिन्न रंगका। पु० आवरण।

अबरस–वि० [अ०] चितकवरा। पु० चितकवरा घोड़ा; ऐसा रंग।

अबरा–पु० [फा०] ऊपरका पल्ला, उपल्ला; न खुलनेवाली गाँठ; उलझन। † वि० निर्वल।

अबरी–वि० [फा०] वादलकी-सी धारियोंवाला; रंगदार; धब्बादार। स्त्री० एक तरहका रंगदार कागज जो जिल्दके ऊपर लगाया जाता है, 'मार्बुल'; एक तरहका पत्थर; एक तरहकी लाखकी रँगाई।

अबरू (ब्रू)–स्त्री० [फा०] भौं। **मु०–पर मैल न आना**–(आघात आदिका) असर न होना; अविचलित रहना।

अबल–वि० [सं०] कमजोर; अरक्षित। पु० निर्वलता।

अबलक–वि० [फा०] सफेद-काला; सफेद और लाल रंगका; चितकवरा। पु० ऐसे रंगका घोड़ा।

अबलख–वि० दे० 'अवलक'।

अबलखा–स्त्री० एक चिड़िया।

अबला–स्त्री० [सं०] स्त्री, नारी।

अबवाब–पु० [अ०] मालगुजारी या लगानपर लगनेवाला अतिरिक्त कर; गाँवके व्यापारी आदिसे जमींदारको मिलनेवाला कर।

अबस–वि० निरर्थक, वे-फायदा; *जो अपने वशमें न हो।

अबाँह*–वि० विना बाँहका; अनाथ।

अबाती*–वि० निर्वात; स्थिर रूपसे जलनेवाला।

अबाद*–वि० निर्विवाद।

अबादान–वि० आबाद; समृद्ध।

अबादानी–स्त्री०दे०'आबादानी'। (सभ्यता, आवादी…)।

अबाध–वि० [सं०] बाधारहित, बे-रोक; निर्विघ्न; कष्ट-रहित; * अपार, असीम। पु० बाधा या खंडन न होना। **–व्यापार**–पु० (फ्री ट्रेड) वह व्यापार जिसमें संरक्षक कर आदि लगाकर बाधा न डाली जाय, दे० 'मुक्त वाणिज्य'।

अबाधित–वि० [सं०] जो रोका न गया हो, स्वाधीन; जिसका खंडन न किया गया हो; अनिषिद्ध।

अबाध्य–वि० [सं०] जो रोका न जा सके।

अबान*–वि० निहत्था।

अबाबील–स्त्री० [फा०] एक छोटी चिड़िया जो प्रायः खँडहरोंमें घोंसला बनाती है।

अबार*–स्त्री० अवेर, देर; अ० शीघ्र '…जहँ स्वयंवर होन हार अवार' (रघु०)।

अबास*–पु० आवास, घर।

अबीर–पु० [अ०] वह लाल रंग जिसे हिंदू अधिकतर होली खेलनेके काममें लाते हैं; गुलाल।

अबीरी–वि० अबीरके रंगका।

अबुझ*–वि० अबूझ, नासमझ।

अबुद्ध–वि० [सं०] दे० 'अबुध'।

अबुद्धि–स्त्री० [सं०] अज्ञान, नासमझी। वि० नासमझ।

अबुध–वि० [सं०] मूर्ख, नासमझ। पु० मूर्ख व्यक्ति।

अबुहाना*–अ० क्रि० प्रेतादिसे आविष्ट होकर हाथ-पैर पटकना; बक उठना।

अबूझ–वि० नासमझ, निर्बुद्धि, अज्ञान।

अबूत*–वि० व्यर्थ, वेकार। –'अरु सब गया अबूत'–साखी।

अबे–अ० तिरस्कार-सूचक संबोधन, क्योंरे, अरे। **मु०–तबे करना**–अपमान-जनक ढंगसे बात करना।

अबेध*–वि० जो विधा न हो, अनविधा।

अबेर*–स्त्री० देर, अतिकाल। पु० वरुण।

अबेश*–वि० अधिक, बहुत।

अबैन*–वि० चुप, मौन।

अबोध–वि० [सं०] अज्ञान, नासमझ; घवड़ाया हुआ। पु० ज्ञानका अभाव। **–गम्य**–वि० अचिंतनीय, धारणा-शक्तिसे परे।

अबोल–वि० न बोलनेवाला, मूक, मौन; अनिर्वचनीय। पु० कुबोल। अ० विना बोले हुए।

अब्ज–वि० [सं०] जलसे उत्पन्न। पु०कमल; शंख; चंद्रमा; धन्वंतरि; निचुल वृक्ष; कपूर; अरब (१,००,००,००,०००)। **–नयन,–नेत्र,–लोचन**–वि० कमल जैसे बड़े और सुंदर नेत्रोंवाला। **–बांधव**–पु० सूर्य। **–भव,–भू,–योनि**–पु० ब्रह्मा।

अब्जा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; सीपी (मोतीवाली)।

अब्द–पु० [सं०] वर्ष; वादल; एक पर्वत; आकाश।

अब्धि–पु० [सं०] समुद्र; झील, ताल; सातकी संख्या। **–कफ**–पु० समुद्रका फेन। **–ज**–पु० चंद्रमा; शंख; अश्विनीकुमार। **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी; वारुणी।

अब्बर*–वि० अवल, कमजोर।

अब्बा–पु० [अ०] बाप, पिता।

अब्रह्मण्य–वि० [सं०] ब्राह्मणके अयोग्य, अब्राह्मणोचित। पु० ब्राह्मणके अयोग्य कर्म; हिंसादि कर्म।

अब्राह्मण–पु० [सं०] वह जो ब्राह्मण न हो; ब्राह्मणेतर।

अभंग–वि० [सं०] अखंडित, न टूटा हुआ; न टूटनेवाला। **–पद**–पु० श्लेष अलंकारका एक भेद जिसमें शब्दको बिना तोड़े दूसरा अर्थ निकाल लिया जाता है।

अभंगी (गिन्)–वि०* जिसका कोई कुछ न ले सके।

अभंगुर–वि० [सं०] स्थिर; अनश्वर।

अभंजन–वि० [सं०] जिसका भंजन न हो सके, अखंड।

अभक्त–वि० [सं०] जिसमें भक्ति या आस्था न हो; असंबद्धः अपूजक; अस्वीकृत; न पकाया हुआ; जिसके टुकड़े न हुए हों, समूचा। पु० आहार नहीं, खाद्येतर पदार्थ।

अभक्ष, अभक्षण–पु० [सं०] आहार न ग्रहण करना, उपवास।

अभक्ष्य–वि० [सं०] न खाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो।

अभगत*–वि० दे० 'अभक्त'।

अभग्न–वि० [सं०] न टूटा हुआ, अखंडित, अबाधित।

अभद्र–वि० [सं०] अशुभ, अमंगल; असभ्य, अशिष्ट। पु० अहित, बुराई; शोक; पाप।

अभय–पु० [सं०] भयका अभाव, निर्भयता; परमात्मा। वि० भयरहित, निडर; निरापद। **–दान**–पु० रक्षाका वचन देना; शरण देना। **–पत्र**–पु० रक्षाका लिखित आश्वासन; (सेफ कांडक्ट) किसी देशके शासक या सेनापति आदि द्वारा दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि यह व्यक्ति गिरफ्तार न किया जाय और न इसे किसी तरहकी क्षति पहुँचायी जाय। **–प्रद**–वि० अभय देनेवाला। **–मुद्रा**–स्त्री० अभयदानकी मुद्रा; एक तंत्रोक्त मुद्रा। **–वचन**–पु० रक्षाकी प्रतिज्ञा।

अभर*–वि० दुर्वह, जो उठाया या ढोया न जा सके।

अभरन*–पु० दे० 'आभरण'।

अभरम(र्म)*–वि० भ्रमरहित; निःशंक।

अभल*–वि० भला नहीं, बुरा, खराब। पु० अमंगल।

अभव्य–वि० [सं०] न होने योग्य; अयोग्य; असुंदर; अमांगलिक; अभागा।

अभाऊ*–वि० अरुचिकर; असुंदर, अशोभन; अभद्र।

अभाग–वि०[सं०] जिसका कोई हिस्सा न हो; अविभक्त। पु० [हिं०] दे० 'अभाग्य'।

अभागा–वि० भाग्यहीन, बदनसीब।

अभागी (गिन्)–वि० [सं०] जायदादमें हिस्सा पानेका अनधिकारी; [हिं०] अभागा।

अभाग्य–पु० [सं०] भाग्यहीनता, बदकिस्मती।

अभाव–पु० [सं०] न होना, अनस्तित्व; मृत्यु; लोप; कमी; * दुर्भाव। :वि० स्नेहहीन। **–ग्रस्त क्षेत्र**–पु० (डेफिसिट एरिया) वह जिला या भूक्षेत्र जहाँ खाद्यान्न आदिकी कमी हो; कमीवाला क्षेत्र।

अभावनीय–वि० [सं०] जिसका चिंतन न किया जा सके, अचिंतनीय।

अभावी(विन्), अभाव्य–वि० [सं०] न होनेवाला।

अभाषित–वि० [सं०] अकथित, अनुक्त।

अभास*–पु० दे० 'आभास'।

अभि–उप० [सं०] यह शब्दोंके पूर्व आकर ओर, सामने (अभ्यागत), पास, समीप (अभिसार), ऊपर (अभिषेक), श्रेष्ठ (अभिधर्म), अति, अत्यधिक (अभिनव), बारंबार, पुनः पुनः (अभ्यास) आदि अर्थोंका द्योतन करता है।

अभिकथन–पु०[सं०] (एलेगेशन) किसीके संबंधमें ऐसी बात कहना या ऐसा आरोप लगाना जिसके लिए कोई निश्चित प्रमाण न हो; इस प्रकार कही गयी बात।

अभिकरण–पु० [सं०] (एजेंसी) किसीकी ओरसे उसके प्रतिनिधि या अभिकर्ताके रूपमें कार्य करना; अभिकर्ता (एजेंट) के कार्य करनेका स्थान।

अभिकर्ता–पु० [सं०] (एजेंट) किसी व्यापारी, व्यापारिक संस्था या राज्यकी ओरसे प्रतिनिधिरूपमें काम करनेवाला या कमीशनपर माल बेचनेवाला व्यक्ति।

अभिक्रम–पु०[सं०] आरंभ; प्रयत्न; आक्रमण; आरोहण।

अभिक्रमण–पु०,**–क्रांति**–स्त्री० [सं०] दे० 'अभिक्रम'।

अभिगम, अभिगमन–पु० [सं०] पास जाना; संभोग।

अभिगामी(मिन्)–वि० [सं०] अभिगमन करनेवाला।

अभिगृहीत–वि० [सं०] (एडॉप्टेड) जिसका अभिग्रहण किया गया हो।

अभिगोप्ता(प्तृ)–वि० [सं०] रक्षा करनेवाला।

अभिग्रहण–पु०[सं०] (एडॉप्शन) चुन कर लेना, (दूसरेके पुत्र, नियम, प्रथा आदिको) अपना बना लेना या अपना कहकर स्वीकार करना।

अभिघात–पु० [सं०] प्रहार, आघात, चोट पहुँचाना।

अभिघातक, अभिघाती (तिन्)–वि० [सं०] अभिघात करनेवाला।

अभिचार–पु० [सं०] तंत्रोक्त मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अनुष्ठान, पुरश्चरण; बुरे कामोंके लिए मंत्रका प्रयोग।

अभिचारक, अभिचारी(रिन्)–वि० [सं०] अभिचार करनेवाला।

अभिजन–पु० [सं०] कुल, वंश; जन्म; उच्च कुलमें जन्म; जन्मभूमि; घरका मुखिया या श्रेष्ठ व्यक्ति; ख्याति।

अभिजात–वि० [सं०] उच्च कुलमें उत्पन्न, कुलीन; योग्य; सुंदर; श्रेष्ठ; विद्वान्; बुद्धिमान्।

अभिजित–पु०[सं०] एक नक्षत्र; दिनका आठवाँ मुहूर्त।

अभिजित्–वि० [सं०] विजय प्राप्त करनेवाला; अभिजित् नक्षत्रमें उत्पन्न। पु० एक नक्षत्र; एक लग्न।

अभिज्ञ–वि० [सं०] जाननेवाला; कुशल।

अभिज्ञा–स्त्री०[सं०] पहचानना; (रेकॉगनिशन) अस्तित्व-स्वीकृति, मान्यता।

अभिज्ञात–वि० [सं०] (रेकगनाइज्ड) पहचाना हुआ; जिसका अस्तित्व मान लिया गया हो; सरकारने जिसे मान्यता दे दी हो।

अभिज्ञान–पु० [सं०] पहचानना; याद करना; जानना; पहचान; निशानी; मुद्राकी छाप, मुहर; (आइडेंटिफिकेशन) किसीको देखकर या पहचानकर बतलाना कि वह अमुक व्यक्ति ही है।

अभिज्ञापक–वि० [सं०] जतानेवाला; (एनाउंसर) सूचना देने या बतलानेवाला, रेडियोपर समाचार सुनाने या कार्यक्रम आदि बतानेवाला; उद्घोषक।

अभिज्ञापन–पु० [सं०] (एनाउंसमेंट) कोई बात घोषित करना या बताना, संवाद आदि सुनाना, सूचित करना।

अभिदाता–पु० (सब्सक्राइबर) किसी कामके लिए बहुतोंसे प्राप्त सहायता रूपमें कुछ धन देनेवाला; चंदा देनेवाला।

अभिदान–पु० [सं०] (सब्स्क्रिप्शन) किसी कामके लिए

विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिया हुआ धन, चंदा ।

अभिधर्म–पु० [सं०] श्रेष्ठ धर्म; अध्यात्मतत्त्व (बौद्ध)। **–पिटक**–पु० बुद्धदेवके उपदेशोंके तीन संग्रहोंमेंसे एक जो बौद्ध दर्शनका मूल है ।

अभिधा–स्त्री० [सं०] नाम, पदवी; शब्दका वाच्यार्थ; वाच्यार्थ प्रकट करनेवाली शब्दकी शक्ति ।

अभिधान–पु० [सं०] नाम, उपाधि; कथन; शब्द; शब्दकोश ।

अभिधायक–पु० [सं०] (अर्थविशेषका) वाचक; नाम देने, कहने या प्रकट करनेवाला ।

अभिधावन–पु० [सं०] आक्रमण, धावा ।

अभिधेय–वि० [सं०] नाम देने योग्य; कथनीय; वाच्य; प्रतिपाद्य; नामवाला । पु० भावार्थ; वाच्यार्थ; नाम ।

अभिनंदन–पु० [सं०] आनंदित या प्रसन्न करना; सराहना करना; प्रोत्साहन, बधाई देना; स्वागत करना; विनती । **–पत्र**–पु० मानपत्र (ऐड्रेस ऑफ वेलकम), किसी बड़े अधिकारी, नेता आदिके आगमनपर उसके सम्मान एवं प्रशंसामें पढ़ा जानेवाला स्वागत-भाषण; मानपत्र ।

अभिनंदनीय,–नंद्य–वि० [सं०] अभिनंदन करने योग्य ।

अभिनंदित–वि० [सं०] जिसका अभिनंदन किया गया हो।

अभिनय–पु० [सं०] मनोगत भाव व्यक्त करनेवाली शरीर-चेष्टा आदि; किसीके कार्य, चेष्टादिकी नकल करना; नाटक खेलना; नकल, स्वाँग ।

अभिनव–वि० [सं०] नया; बिलकुल नया; ताजा ।

अभिनवीकरण–पु० [सं०] (रैशनैलिजेशन) दे० 'उद्योग समी करण' ।

अभिनिर्णय–पु० (वर्डिक्ट) किसी मामलेमें न्यायसभ्य द्वारा दिया गया निर्णयात्मक मत; किसीके संबंधमें उद्घोषित या सूचित जनता, निर्वाचकों आदिका मत; अंतिम निर्णय ।

अभिनिर्णायक–पु० (रेफरी) वह व्यक्ति जिससे दो पक्षोंके बीच कोई विवाद या झगड़ा उत्पन्न होनेपर, निर्णय करनेकी प्रार्थना या अनुरोध किया जाय; दे० 'खेल-मध्यस्थ'।

अभिनिर्णयाधीन–पु०[सं०](सब-जुडिसी) जो अभिनिर्णयके लिए न्यायालयके पास भेज दिया गया हो और जिसपर अभी विचार हो रहा हो, विचाराधीन ।

अभिनिवेश–पु० [सं०] आग्रह; संकल्प; दृढ़ अनुराग; पक्की लगन, योगदर्शनमें बताये पाँच क्लेशोंमेंसे एक–मरणभय-जन्य अज्ञान ।

अभिनिषेध–पु० (एब्रोगेशन) दे० 'निराकरण' ।

अभिनिष्क्रमण–पु० [सं०] बाहर जाना; प्रव्रज्याके लिए गृहत्याग (बौद्ध) ।

अभिनीत–वि० [सं०] अभिनय किया हुआ; अनुकृत; निकट लाया हुआ; सुसज्जित; अलंकृत ।

अभिनेतव्य, अभिनेय–[सं०] अभिनय करने योग्य ।

अभिनेता (तृ)–पु० [सं०] अभिनय करनेवाला, 'ऐक्टर'। [स्त्री० अभिनेत्री, 'ऐक्ट्रेस' ।]

अभिन्न–वि० [सं०] जो अलग न हो; भेद या अंतर न रखनेवाला; एकरूप; अविकृत; अपरिवर्तित; अविभक्त । **–पद**–पु० दे० 'अभंगपद' । **–हृदय**–वि० एकदिल, एकजान ।

अभिन्नता–स्त्री० [सं०] भेद या बिलगावका अभाव; गहरी मित्रता; एकरूपता ।

अभिन्यास–पु० [सं०] (ले-आउट) किसी परिकल्पना (प्लैन) के अनुसार गृह, उद्यान, आदिका निर्माण,विस्तार आदि करना ।

अभिपुष्टि–स्त्री०[सं०] (कॉनफर्मेशन) किसी कथन, बयान, संवाद आदिकी सत्यता पुनः स्वीकार कर उसे अधिक दृढ़ एवं विश्वसनीय बनाना; किसी पदपर किसीकी नियुक्तिका स्थायी और दृढ़ बना दिया जाना । **–सापेक्ष**–वि० (सबजेक्ट टु कनफर्मेशन) अभिपुष्टि हो जानेपर ही जिसका होना निर्भर हो, अभिपुष्टिके बाद ही जो पक्की समझी जाय ।

अभिपूर्त्ति करना–स० क्रि० (इम्प्लेमेंट) ठेके आदिकी शर्तें पूरी करना, दिया हुआ वचन पूरा करना ।

अभिप्राय–पु० [सं०] उद्देश्य, प्रयोजन; इच्छा; आशय, मतलब; राय ।

अभिप्रेत–वि० [सं०] उद्दिष्ट, अभिलषित; स्वीकृत; प्रिय ।

अभिभव–पु० [सं०] हराना, दबा लेना; आक्रमण; तिरस्कार, अपमान; प्रबलता ।

अभिभावक, अभिभावी (विन्)–वि० [सं०] हरानेवाला, वशमें करनेवाला, दबा रखनेवाला; आक्रमण करनेवाला, तिरस्कार करनेवाला; (गार्जियन) (किसी बालक, अवयस्क व्यक्ति आदिका) संरक्षक ।

अभिभावी होना–अ० क्रि० (टु प्रिवेल) प्रभावयुक्त या प्रबल होना, मान्य होना, बेकार न समझा जाना ।

अभिभाषण–पु० [सं०] बोलना, भाषण करना; भाषण; सभापतिका (लिखित) भाषण ।

अभिभूत–वि० [सं०] पराजित; वशमें किया हुआ; आक्रांत; पीड़ित ।

अभिमंता (तृ)–वि० [सं०] गर्व करनेवाला, घमंडी ।

अभिमंत्रण–पु० [सं०] मंत्र द्वारा संस्कार या पवित्र करना; आवाहन ।

अभिमंत्रित–वि० [सं०] मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ; आवाहित ।

अभिमत–वि० [सं०] इष्ट, प्रिय, मनचाहा; सम्मत; स्वीकृत; आदृत । पु० इच्छा; राय; मनचाही बात ।

अभिमान–पु० [सं०] गर्व, घमंड ।

अभिमानी (निन्)–वि० [सं०] घमंडी, दर्पी, अपनेको बड़ा समझनेवाला ।

अभिमुख–वि० [सं०] (किसी की) ओर मुख किये हुए; प्रवृत्त; उद्यत । अ० ओर, सामने ।

अभियाचना–स्त्री० [स०] (डिमांड) दृढ़ताके साथ या अधिकारपूर्वक याचना करना, माँग ।

अभियान–पु० [सं०] सामने जाना; युद्धके लिए आगे बढ़ना, चढ़ाई, आक्रमण; (कैंपेन) किसी निश्चित क्षेत्रमें या किसी विशेष लक्ष्यकी ओर किये गये सैनिक आक्रमणोंकी परम्परा; किसी लक्ष्यकी दृष्टिसे अथवा जनताको किसी नीतिके पक्षमें प्रभावित करनेके लिए की जानेवाली संघटित कारवाई ।

अभियुक्त–वि० [सं०] जिसपर अभियोग लगाया गया हो, मुलजिम; अध्यवसायी; संलग्न; आक्रांत; नियुक्त।

अभियुक्ति–स्त्री० [सं०](चार्ज)न्यायालयमें किसी व्यक्तिपर अपराध या नियमविरोधी कार्य करनेका आरोप लगाना, अभियोग।

अभियोक्ता (**क्तृ**) पु० [सं०] अभियोग लगानेवाला, आरोपी, फरियादी; आक्रमण करनेवाला।

अभियोग–पु० [सं०] (किसीपर) अपराध-विशेपका आरोप (ऐक्यूज़ेशन) फौजदारी नालिश; मनोयोग, लगकर कोशिश करना, लगन; आक्रमण।

अभियोगाधीन–वि० [सं०] (अंडर ट्रायल) (वह व्यक्ति या वंदी) जिसका अभियोग अभी अदालतमें चल रहा हो।

अभियोजन–पु० [सं०] (प्रासिक्यूशन) किसीपर फौजदारी मामला चलानेका कार्य (विशेपतः पुलिस द्वारा)। **–कारी**–पु०(प्रासिक्यूटर) (पुलिसकी ओरसे) न्यायालयके सामने रखे गये फौजदारी मामलेका संचालन करनेवाला।

अभिरक्षक–पु० [सं०] (कस्टोडियन)सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी वस्तु या व्यक्तिको अपने अधिकार, देखरेख या संरक्षणमें रखनेवाला; किसी संस्थाके अधिकारों आदिकी रक्षाका विशेप रूपसे ध्यान रखनेवाला।

अभिरक्षण–पु० [सं०] पूरा-पूरा वचाव।

अभिरक्षा–स्त्री०[सं०](कस्टोडी) (किसी वस्तुया व्यक्तिका) किसीके पास या किसीकी देखरेखमें सुरक्षित रूपसे रखा जाना।

अभिरत–वि० [सं०] प्रसन्न; अनुरक्त; लगा हुआ;* युक्त।

अभिरति–स्त्री० [सं०] अनुराग; लगन; सुखानुभव।

अभिरना*–अ० क्रि० भिड़ना; किसीका सहारा लेना; टकराना।

अभिराम–वि० [सं०] सुखद; सुंदर; मोहक।

अभिरुचि–स्त्री० [सं०] चाह; शौक; झुकाव; विशेष रुचि।

अभिलषित–वि० [सं०] चाहा हुआ, वांछित।

अभिलाख*–पु० दे० 'अभिलाप'।

अभिलाखना–स० क्रि० चाहना, अभिलापा करना।

अभिलाष, अभिलास–पु० [सं०] चाह, इच्छा; लोभ, प्रियसे मिलनेकी इच्छा।

अभिलाषा, अभिलासा–स्त्री० दे० 'अभिलाष'।

अभिलाषी (षिन्)–वि० [सं०] चाहनेवाला, इच्छुक।

अभिलिखित–वि० [सं०] लिखा या खोदा हुआ;(रेकॉर्डेड) नियमित रूपसे लिखकर सुरक्षित रखा हुआ, अभिलेखके रूपमें लाया हुआ।

अभिलेख–पु० [सं०] लेख; पत्थर, ताम्रपट आदिपर खुदा हुआ लेख; (रेकॉर्ड) किसी तथ्य, विषय या काररवाई आदिके संवंधमें नियमित रूपसे लिखी हुई सब वातें; न्यायालयके कागज-पत्रों, पंजी आदिमें लिखकर सुरक्षित रूपसे रखा गया गवाहों, वादी प्रतिवादी आदिका वक्तव्य या न्यायाधीशका फैसला।**–न्यायालय**–पु० (कोर्ट ऑफ रेकॉर्ड) राज्यके प्रधान अभिलेख-विभागका वह न्यायालय जिसे लिपि-संवंधी या ऐसी ही अन्य भूलें ठीक करनेका अधिकार होता है। **–पाल**–पु० (रेकार्डकीपर) किसी न्यायालय, कार्यालय आदिके अभिलेखोंकी देखभाल करनेवाला कर्मचारी।

अभिलेखन–पु० [सं०] लिखना; खोदना।

अभिलोपन करना–स० क्रि० (आब्लिटरेट) मिटा देना, उड़ा देना, नष्ट कर देना, कोई चिह्न वा अवशेष न छोड़ना।

अभिवंदन, अभिवंदना–स्त्री० [सं०] प्रणाम, नमस्कार; स्तुति।

अभिवंदनीय, अभिवंद्य–वि० [सं०] प्रणाम करने योग्य, वंदनीय; स्तुति करने योग्य।

अभिवंदित–वि० [सं०] अभिवादित, वंदित।

अभिवक्ता–पु० [सं०] (प्लीडर) न्यायालयमें किसीकी ओरसे मुकदमेकी पैरवी करनेवाला, वकील।

अभिवचन–पु० [सं०] प्रतिज्ञा, वादा; (प्लीडिंग) न्यायालयमें उपस्थित किसी वादमें किसी पक्षका विधिक प्रतिनिधि वनकर उसके समर्थनमें प्रमाण, तर्क आदि देते हुए भाषण करना।

अभिवांछा–स्त्री० [सं०] इच्छा, अभिलाषा।

अभिवांछित–वि० [सं०] अभिलषित, मनचाहा। पु० इच्छा, अभिलाषा।

अभिवाद, अभिवादन–पु० [सं०] प्रणाम करना; छोटेकी ओरसे वड़ेको नमस्कार।

अभिवादक, अभिवादयिता(तृ),अभिवादी(दिन्)–वि० [सं०] अभिवादन करनेवाला।

अभिवाद्य–वि० [सं०] अभिवादन करने योग्य।

अभिवृद्धि–स्त्री० [सं०] वढ़ती; सफलता, अभ्युदय।

अभिव्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करनेवाला; वोधक।

अभिव्यंजन–पु० [सं०] अभिव्यक्ति।

अभिव्यंजना–स्त्री० [सं०] अभिव्यंजन।

अभिव्यक्त–वि० [सं०] प्रकट, स्पष्ट, प्रकाशित।

अभिव्यक्ति–स्त्री० [सं०] व्यक्त, प्रकट होना; कारणका कार्यरूपमें आविर्भाव; प्रकाशन।

अभिशंसन–पु० [सं०] दोष लगाना; झूठा दोष लगाना; चोट पहुँचाना।

अभिशंसा–स्त्री० [सं०] (कनविक्शन) अदालत या पंचों द्वारा किसी व्यक्तिका अपराधी घोषित किया जाना, यह प्रख्यापित करना कि उसपर जो आरोप लगाया गया था वह प्रमाणित हो गया।

अभिशंसित–वि०[सं०] (कनविक्टेड) न्यायालयमें जिसका दोषी होना प्रमाणित हो गया हो।

अभिशप्त–वि० [सं०] शापित; अभियुक्त; जिसपर झूठी तुहमत लगायी गयी हो।

अभिशस्त–वि० [सं०] अभिशप्त; (कनविक्टेड) दे० 'अभिशंसित'; दोषसिद्ध।

अभिशस्ति–स्त्री० [सं०] अभिशाप; विपत्ति।

अभिशाप–पु० [सं०] शाप, किसीका बुरा मानना; लांछन; मिथ्या आरोप; बुराई; अनिष्टका हेतु।

अभिशापन–पु० [सं०] शाप देना; कोसना।

अभिशून्यन–पु० [सं०] (एनलिंग) विधि, आज्ञप्ति (डिक्री), न्यायालयके निर्णय आदिको रद्द कर देना, मंसूख करना।

अभिशून्यीकृत–वि० [सं०] (एनल्ड) जो रद्द या मंसूख

कर दिया गया हो (निर्णय, विधि, आदि) ।

अभिषंग, अभिषंजन–पु० [सं०] पूर्ण संबंध या मिलन; आलिंगन; संभोग; हार खाना; शपथ; कोसना; प्रेतादिका आवेश ।

अभिषंगी–पु० [सं०] (एकॉमप्लिस) दे० 'सहापराधी' ।

अभिषद्–स्त्री०[सं०]]सिंडिकेट) किसी व्यापारिक वस्तुके उत्पादन या पूर्ति आदिका एकाधिकार प्राप्त करने या किसी अन्य सामान्य उद्देश्यकी सिद्धिके लिए स्थापित व्यापारिक संस्थाओंकी समिति; लेख, कहानियाँ आदि प्राप्त कर निर्धारित पुरस्कारकी शर्तपर उन्हें एक साथ कई समाचार-पत्रों, मासिकों आदिमें प्रकाशित करानेवाली संस्था; 'सिनेट'की प्रबंध-समिति ।

अभिषिक्त–वि० [सं०] जिसका अभिषेक हो चुका हो, जिसपर बाधा दूर करनेके लिए अभिमंत्रित जल छिड़का गया हो; अधिकार-प्राप्त; पदारूढ़ ।

अभिषेक–पु० [सं०[जल छिड़कना; राजाका सिंहासनारोहण, गद्दीनशीनी; यज्ञादिके अंतमें शांतिके लिए किया जानेवाला स्नान; अभिषेकमें काम आनेवाला पवित्र जल ।

अभिषेक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] अभिषेक करनेवाला ।

अभिषेचन–पु० [सं०] अभिषेक करना ।

अभिषेचनीय, अभिषेच्य–वि० [सं०] अभिषेकके योग्य; राज्यारोहणका अधिकारी; अभिषेक संबंधी ।

अभिष्यं(स्यं)द–पु० [सं०] आँखका एक रोग; आँख आना; चूना, रसना, स्राव ।

अभिसंधि–स्त्री० [सं०] धोखेबाजी, प्रतारणा; कुचक्र, षड्यंत्र ।

अभिसमय–पु०[सं०](कॉनवेंशन)(१)परस्पर संबंध रखनेवाले (डाक, तार आदि) कतिपय विषयोंके संबंधमें किया गया विभिन्न राज्योंका समझौता; (२) युद्धलिप्त देशोंके सैनिक अधिकारियोंका युद्धस्थगन आदि-संबंधी वह समझौता जो दोनों ओरके प्रतिनिधियोंकी बातचीत द्वारा किया जाय और जिसका पालन दोनोंके लिए पक्की संधिके सदृश ही आवश्यक हो; (३) इस तरहका समझौता करनेके लिए होनेवाला उक्त राज्योंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन; (४) कोई प्रथा या परिपाटी जो परंपरासे चल पड़ी हो और जो अलिखित होते हुए भी सबके लिए मान्य हो ।

अभिसरण, अभिसारण–पु० [सं०] मिलनेके लिए जाना; नायक या नायिकाका मिलनेके लिए संकेतस्थलपर जाना ।

अभिसरन*–पु० आश्रय, सहारा; अभिसरण ।

अभिसरना,अभिसारना*–अ०क्रि० जाना; संकेत स्थलपर प्रियसे मिलनेके लिए जाना ।

अभिसर्ग–पु० [सं०] रचना, सृष्टि ।

अभिसर्जन–पु० [सं०] दान, देन; वध ।

अभिसामयिक–वि०[सं०] (कनवेंशनल) जो पहलेसे चली आती हुई परंपरा या परिपाटीके अनुरूप हो ।

अभिसार–पु० [सं०] अभिसरण; प्रियसे मिलनेके लिए जाना; संकेतस्थल; साथी; अनुचर; युद्ध; शक्ति; यंत्र ।

अभिसारना*–अ० क्रि० दे० 'अभिसरना'

अभिसारिका–स्त्री० [सं०] प्रियसे मिलनेके लिए निर्दिष्ट स्थानपर जानेवाली स्त्री ।

अभिसारी(रिन्)–पु० [सं०] अभिसार करनेवाला; धावा करनेवाला; सहायक, साथी, हमराही ।

अभिसूचना–पु० [सं०] (इंस्ट्रक्शन) कोई काम करनेके लिए विशेष रूपसे दी गयी हिदायत या आदेश ।

अभिसेख*–पु० दे० 'अभिषेक' ।

अभिस्ताव–पु०[सं०] (रेकामेंडेशन): किसीके पक्षमें अनुकूल प्रभाव डालनेके लिए या किसीकी प्रशंसामें कुछ कहना या लिखना; कोई सुझाव या सलाह देते हुए उसके पक्षमें अपना भाव प्रकट करना, सिफारिश ।

अभिस्थगित–पु० [सं०] (डेफर्ड) (वेतन, मुनाफा आदि) जिसका दिया या चुकाया जाना निर्धारित अवधितक अथवा कोई खास शर्त पूरी होनेतक स्थगित रखा जाय ।

अभिस्रावण–पु०[सं०](डिस्टिलेशन) पातालयंत्र (भभके) की सहायतासे मद्य या अर्क चुलाने, जल शुद्ध करनेकी क्रिया ।

अभिस्रावणी–स्त्री० [सं०] (डिस्टिलरी) शराब या अर्क चुलाने का यंत्र, भट्ठी या घर ।

अभिहत–वि०[सं०] पीटा गया, आहत; आक्रांत; पराभूत ।

अभिहरण–पु० [सं०] निकट लाना; लूटना; (डिस्ट्रेस) ऋण, किराये आदिकी वसूलीके लिए न्यायालयके आदेशसे किसीकी जायदाद, जमीन आदि जब्त कर लेना या नीलाम कर देना । **–अधिपत्र**–पु० अभिहरणके लिए जारी किया गया अधिपत्र (वारंट) ।

अभिहर्ता(र्तृ)–पु० [सं०] लेकर चल देनेवाला; अपहरण करनेवाला, डाकू ।

अभिहस्तांकन–पु० [सं०] (असाइनमेंट) किसी भूमि, अधिकार आदिका लिखकर वैध रूपसे हस्तांतरण करना; किसीके लिए कोई हिस्सा, कार्य आदि निर्धारित करना ।

अभिहारी(रिन्)–वि० [सं०] हरण करनेवाला, चुरानेवाला–'राधासी न और अभिहारिणी लखाई है'–रा०ना० ।

अभिहास–पु० [सं०] दिल्लगी, मसखरी, मजाक; विनोद ।

अभिहित–वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त; अभिधा वृत्ति द्वारा बोधित । **–परिव्यय**–पु० (नॉमिनल कॉस्ट) कहने भरके लिए, नाममात्रका परिव्यय (लागत) । **–पूँजी**–स्त्री०[हिं०] (नॉमिनल कैपिटल) कहने भरके लिए, नाम मात्रकी पूँजी । **–संधि**–स्त्री० बिना लिखा-पढ़ीकी संधि (कौ०) ।

अभी–अ० इसी वक्त, इसी क्षण; तत्काल; अबतक ।

अभीत–वि० [सं०] निडर, निर्भीक ।

अभीति–स्त्री [सं०] निर्भीकता; हमला, धावा; नैकट्य ।

अभीप्सित–वि० [सं०] वांछित, चाहा हुआ, अभिलषित ।

अभीर–पु० [सं०] अहीर; एक छंद ।

अभीरी–स्त्री० [सं०] अहीरोंकी बोली ।

अभीष्ट–वि० [सं०] चाहा हुआ, अभिलषित; अभिप्रेत; प्रिय; ऐच्छिक, वैकल्पिक । पु० अभिलषित वस्तु; मनोरथ; प्रिय व्यक्ति । **–लाभ**–पु० अभीष्ट वस्तुकी प्राप्ति । **–सिद्धि**–स्त्री० अभीष्ट कार्यकी सिद्धि ।

अभुआना*–अ० क्रि० प्रेतावेशमें हाथ-पाँव पटकना, बकझक करना आदि ।

अभुक्त–वि० [सं०] न खाया हुआ; न भोगा हुआ;

(अनकैश्ड) जिसका उपभोग या भुगतान न किया गया हो; अछूता, अव्यवहृत; जिसने भोजन या भोग न किया हो। **–पूर्व**–वि० जिसका पहले उपभोग न किया गया हो। **–मूल**–पु० ज्येष्ठा नक्षत्रके अंत और मूल नक्षत्रके आदिकी दो-दो घड़ियाँ।

अभुज–वि० [सं०] बाहुरहित, लूला।

अभू–* अ० अब भी।

अभूखन*–पु० दे० 'आभूषण'।

अभूत–वि० [सं०] जो हुआ न हो; अविद्यमान; मिथ्या; असाधारण। **–पूर्व**–वि० जो पहले न हुआ हो; अनोखा; अद्‌भुत।

अभूपित–वि० [सं०] अनलंकृत, बिना गहनेका।

अभेद–पु० [सं०] भेदका अभाव, एकता; एकरूपता। वि० भेद-रहित, अनुरूप; अविभक्त; * दे० 'अभेद्य'। **–रूपक**–पु० रूपकालंकारका एक भेद जिसमें उपमान और उपमेयकी एकता बतायी जाती है।

अभेद्य–वि० [सं०] जिसका भेदन न हो सके; जिसमें घुसा न जा सके; अविभाज्य। पु० हीरा।

अभेय(व)*–पु० अभेद, एकता। वि० अभिन्न, एक।

अभेरना–स०क्रि० संयुक्त करना; मिश्रण करना, मिलाना।

अभेरा*–पु० रगड़, टक्कर, मुठभेड़।

अभै*–वि० दे० 'अभय'।

अभोक्तव्य–वि० [सं०] जिसका उपभोग या उपयोग न किया जाय।

अभोक्ता (क्तृ)–वि० [सं०] उपभोग न करनेवाला; परहेज करनेवाला, विरक्त।

अभोग–पु० [सं०] भोगका अभाव। * वि० अभुक्त।

अभोगी (गिन्)–वि० [सं०] अभोक्ता; विरक्त।

अभोग्य–वि० [सं०] जो भोग करने योग्य न हो, जिसे भोगना वर्जित हो।

अभोज*–वि० दे० 'अभोज्य'।

अभोजन–पु० [सं०] न खाना, खानेसे परहेज, उपवास।

अभोज्य–वि० [सं०] न खाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो।

अभौतिक–वि०[सं०]जो पंचभूतोंसे न बना हो, अपार्थिव।

अभ्यंग–पु० [सं०] लेपन; तेल-उबटन आदिकी मालिश।

अभ्यंजन–पु० [सं०] दे० 'अभ्यंग'; आँखोंमें सुरमा या अंजन लगाना; तेल, अंगरागादि।

अभ्यंतर–पु० [सं०] वस्तुका भीतरी भाग; भीतरका या बीचका अवकाश; अंतःकरण। अ० भीतर, अंदर।

अभ्यंश–पु० [सं०] (कोटा) दे० वंटितांश', 'नियतांश'।

अभ्यर्चन–पु०, **अभ्यर्चना**–स्त्री० [सं०] पूजा, आराधन।

अभ्यर्थन–पु०, **अभ्यर्थना**–स्त्री० [सं०] विनती, प्रार्थना; दरख्वास्त; अगवानी, स्वागत।

अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थ्य–वि०[सं०] अभ्यर्थना करने योग्य।

अभ्यर्थित–वि० [सं०] जिसकी अभ्यर्थना की गयी हो।

अभ्यर्थी (र्थिन्)–वि० [सं०] अभ्यर्थना करनेवाला। पु० (कैंडिडेट) किसी परीक्षामें बैठने या नौकरी आदिके लिए आवेदन-पत्र देनेवाला।

अभ्यर्पित–वि०[सं०](सर्वेन्ड) (वह सरकारी आदेश, आह्वान पत्रादि) जो किसीको विधिवत् अर्पित या संप्रदत्त कर दिया गया हो, तामील।

अभ्यसनीय,अभ्यसितव्य–वि०[सं०] अभ्यास करने योग्य।

अभ्यस्त–वि० [सं०] अच्छी तरह सीखा हुआ, मश्क किया हुआ; अधीत, पढ़ा हुआ; जिसने अभ्यास किया हो, कुशल; पक्का; आदी।

अभ्यागत–वि० [सं०] सामने या पास आया हुआ; अतिथिके रूपमें आया हुआ। पु० अतिथि, मेहमान।

अभ्यास–पु० [सं०] किसी कामको बार-बार करना, मश्क; सीखना; अध्ययन; आदत; सैनिक अनुशासन आदि।

अभ्यासी (सिन्)–वि० [सं०] अभ्यास करनेवाला, साधक।

अभ्युक्ति–स्त्री०[सं०](रिमार्क) आलोचना या व्यंग्यके ढंगपर कही गयी कोई बात; किसीके कथनपर या किसी विषयके संबंधमें की गयी उक्ति।

अभ्युत्थान–पु० [सं०] उठना; किसीके सम्मानमें उठकर खड़ा हो जाना; बढ़ती, उत्कर्ष; उदय।

अभ्युदय–पु० [सं०] सूर्य-चंद्रादिका उदय; वृद्धि, समृद्धि; उत्तरोत्तर वृद्धि; इष्टलाभ; उत्सव; आरंभ।

अभ्युदाहरण–पु० [सं०] मिसाल या विपरीत बातके द्वारा किसी विषयका स्पष्टीकरण।

अभ्युपगम–पु० [सं०] पास जाना, पहुँचना; पाना; वादा करना; मानना, स्वीकार करना। **–सिद्धांत**–पु० परीक्षाके लिए पहले स्वीकार कर पीछे खंडन करना।

अभ्रंकप–वि० [सं०] गगनचुंबी, बहुत ऊँचा। पु० हवा।

अभ्रंलिह–वि० [सं०] बहुत ऊँचा। पु० वायु।

अभ्र–पु० [सं०] बादल; आकाश; सोना; अभ्रक; कपूर; **–भेदी(दिन्)**–वि० गगनचुंबी।

अभ्रक–पु० [सं०] एक धातु, अबरक।

अभ्रांत–वि० [सं०] भ्रमरहित, यथार्थ ज्ञाता; धीर।

अमंगल–वि० [सं०] अशुभ, अकल्याणकर; भाग्यहीन। पु० अकल्याण, अनिष्ट; दुर्भाग्य; एरंड वृक्ष।

अमंद–वि० [सं०] सुस्त नहीं, तेज; परिश्रमी; उग्र; कम नहीं, ज्यादा; सुंदर; कुशल।

अमका†–वि० ऐसा-ऐसा; अमुक, फलाना।

अमचु(चू)र–पु० सुखाये हुए कच्चे आमका चूर।

अमड़ा–पु० एक खट्टा फल।

अमतदेय व्यय–पु० [सं०] (नॉन-वोटेबिल एक्सपेंडिचर) वह व्यय जिसके संबंधमें (धारासभाके) सदस्योंको मत देनेका अधिकार न हो।

अमत्त–वि० [सं०] जो नशेमें न हो; सही दिमागका; सावधान; विचारशील।

अमधुर–वि० [सं०] कड़वा, अरुचिकर।

अमन–पु० [अ०] शांति, इतमीनान; रक्षा। **–अमान**–पु० शांति और सुरक्षा या सुव्यवस्था। **–चैन**–पु० सुख-शांति। **–पसंद**–वि० शांतिप्रिय।

अमनिया*–वि० पवित्र, शुद्ध; अछूता। स्त्री० भोजन बनानेकी क्रिया; रसोई पकाना।

अमनैक–पु० सरदार; अवधमें काश्तकारोंका एक विशेष वर्ग। वि० दावेदार, अधिकारी; ढीठ।

अमनैकी–स्त्री० अमनैकपन।

अमनोज्ञ–वि० [सं०) चित्तको प्रिय न लगनेवाला, अरुचिकर।

अमर–वि० [सं०] न मरनेवाला; अविनाशी। पु० देवता; पारा; सोना। **–कोश (प)**–पु० अमरसिंहका बनाया संस्कृतका प्रसिद्ध कोश। **–गुरु**–पु० बृहस्पति। **–तटिनी**–स्त्री० देवनदी, गंगा। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–पति**–पु० इंद्र। **–पद**–पु० देवपद; मोक्ष। **–पुर**–पु०, **–पुरी**–स्त्री०इंद्रपुरी, अमरावती। **–बेल**–स्त्री०[हि०] पीले रंगकी बिना जड़वाली एक लता, अकासबेल। **–लोक**–पु० देवलोक, स्वर्ग। **–वल्लरी**, **–वल्ली**–स्त्री० आकाशलता।

अमरख*–पु० दे० 'अमर्ष'।

अमरता–स्त्री०, **अमरत्व**–पु० [सं०] अमर होना, देवत्व।

अमरस–पु० अमावट।

अमरांगना–स्त्री० [सं०] देवपत्नी; अप्सरा।

अमराई–स्त्री० आमका बाग; सुरकानन; उद्यान, 'दान सो बिराजै सुरतरु अमराईमें'–लछिराम।

अमराउ*–पु० आमका बाग।

अमराचार्य–पु० [सं०] बृहस्पति।

अमराधिप–पु० [सं०] इंद्र।

अमरापगा–स्त्री० [सं०] स्वर्गंगा।

अमरारि–पु० [सं०] देवशत्रु, असुर।

अमरालय–पु० [सं०] स्वर्ग।

अमरावती–स्त्री० [सं०] इंद्रपुरी।

अमरू–पु० एक रेशमी कपड़ा।

अमरूत, **अमरूद**–पु० एक प्रसिद्ध फल, बिही।

अमरेश, **अमरेश्वर**–पु० [सं०] देवराज, इंद्र।

अमर्त्य–वि० [सं०] अनश्वर, मृत्युरहित; दिव्य। पु० अमर; मानवभिन्न, देवादि। **–भुवन**–पु० स्वर्ग।

अमर्दित–वि० [मं०] जिसका मर्दन न हुआ हो; अपराभूत, अपराजित।

अमर्याद–वि० [सं०] सीमारहित; सीमाका उल्लंघन करनेवाला; प्रतिष्ठारहित।

अमर्यादा–स्त्री० [सं०] सीमोल्लंघन; आचरणहीनता; अप्रतिष्ठा।

अमर्ष–पु० [सं०] असहिष्णुता; क्रोध, कोप; एक संचारी भाव; अपनी अवज्ञा, तिरस्कार आदिसे उत्पन्न क्षोभ।

अमर्षी (र्षिन्)–वि० [सं०] अमर्ष करनेवाला।

अमल–वि [सं०] मलरहित, स्वच्छ, उज्ज्वल; निष्पाप।

अमल–पु० [अ०] काम, व्यवहार; कर्म; आचरण; उम्मीद। [हि०] बान, आदत, अधिकार; लत; नशा; प्रभाव; समय। **–दारी**–स्त्री० राज्य; हुकूमत; अधिकार। **मु०–दरामद होना**–काममें लाया जाना। **–पानी करना**–नशा करना, भंग पीना।

अमलतास–पु० एक पेड़।

अमलबेत–पु० एक लता; एक खट्टा फल।

अमला–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; आँवला। पु० [अ०] कर्मचारिमंडल; दफ्तर (अमिलका बहुवचन), गिरे हुए मकानका सामान, काठ-कबाड़।

अमलिन–वि० [सं०] निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष।

अमली–वि० व्यावहारिक; कामकाजी कार्यरूपमें; नशेबाज। स्त्री० इमली; एक झाड़ीदार पेड़।

अमलोनी–स्त्री० नोनी या क़ुलफा नामक साग।

अमसृण–वि० [सं०] मुलायम नहीं, कड़ा।

अमहर–स्त्री० कच्चे आमकी सुखायी हुई फाँक।

अमहल*–वि० जिसका कोई नियत आवास न हो, लामकान; व्यापक।

अमा–स्त्री० [सं०] अमावास्या; चंद्रमाकी १६ वीं कला; घर; आत्मा; अमित होनेकी अवस्था; प्रामाणिक न होना।

अमातना*–स० क्रि० आमंत्रित करना, न्योतना।

अमातृक–वि० [सं०] मातृहीन, बिना माँका।

अमात्य–पु० [सं०] मंत्री।

अमान–वि० [सं०] परिमाण-रहित; असीम; अत्यधिक; बहुसंख्यक; निरभिमान, सरल; जिसका आदर या प्रतिष्ठा न हो। पु० रक्षा; अभय; शरण; आश्रय; शांति।

अमानत–स्त्री० [अ०] धरोहर, थाती; थाती रखना; पैमाइशका काम; अमीनका पद; अमन। **–खाता**–पु० बंक या कोठीका वह खाता जिसमें अमानती रकमें जमा की जायँ। **–ख़ाना**–पु० वह जगह जहाँ चीज़ें अमानतमें रखी जायँ। **–दार**–पु० अमानत रखनेवाला; अमीन। **–में ख़यानत**–अमानतकी रकम खा जाना।

अमानन–पु०, **अमानना**–स्त्री० [सं०] अनादर, अवज्ञा।

अमाना–अ० क्रि० अँटना, समाना; * इतराना।

अमानी(निन्)–वि० [सं०] निरभिमान, विनीत।

अमानी–स्त्री० वह तामीरी काम जो ठीकेपर न दिया गया हो; जिस चीजपर कोई रोक-टोक न हो; वह भूमि जो सरकारके अधिकारमें हो और जिसका प्रबंध सरकारी कर्मचारी करता हो; लगानकी वसूली जिसमें फसल खराब होनेके कारण कुछ छूट दी जाय; † अंधेर।

अमानुष–वि० [सं०] मनुष्यसे न होनेवाला; अलौकिक; अमनुष्योचित; पाशव; पैशाचिक। पु० मनुष्य नहीं, देवता आदि। [स्त्री० अमानुषी।]

अमानुषी–वि० अलौकिक; पैशाचिक।

अमानुषीय, **अमानुष्य**–वि० [सं०] अलौकिक।

अमान्य–वि० [सं०] अमाननीय; न मानने योग्य।

अमान्यन–पु० (डिसमिसल) किसी व्यवहार (मुकदमे), पुनर्न्याय प्रार्थना, दावे आदिका अमान्य, न्यायालयमें अविचारणीय, ठहरा दिया जाना।

अमाप–वि० [सं०] अपरिमित; बहुत अधिक।

अमाय–वि० [सं०] मायारहित; छल-कपटसे रहित; ईमानदार; जो मापा न जा सके। पु० परब्रह्म।

अमाया–स्त्री०[सं०] छल-कपटका अभाव; अविद्या, भ्रांतिका अभाव; ईमानदारी।

अमारग*–पु० दे० 'अमार्ग'।

अमारी–स्त्री० [अ०] दे० 'अम्मारी'।

अमार्ग–पु० [सं०] बुरा रास्ता, कुमार्ग; मार्गका अभाव।

अमार्जित–वि०[सं०]जो साफ न किया गया हो; अपरिष्कृत।

अमार्ज्य–वि० [सं०] जिसका मार्जन न हो सके।

अमाल*–पु० अधिकारी; शासक।

अमावट–स्त्री० पके आमका रस सुखाकर बनायी हुई मोटी

परत; एक तरहकी मछली।

अमावना*–अ० क्रि० अमाना, भीतर आ सकना।

अमावस–स्त्री० दे० 'अमावस्या'।

अमावस्या, अमावास्या–स्त्री० [सं०] कृष्ण पक्षकी पंद्रहवीं या अंतिम तिथि।

अमाह–पु० आँखकी एक बीमारी, नाखूना।

अमिख*–पु० आमिष, मांस।

अमिट–वि० न मिटनेवाला; सदा रहनेवाला; अटल।

अमित–वि०[सं०] बे-हद, बे-हिसाब; अत्यधिक।**–वीर्य**–वि० बे-अंदाज ताकतवाला।

अमिताभ–वि० [सं०] अति कांतियुक्त या तेजस्वी। पु० बुद्धका एक नाम।

अमिताशन–वि० [सं०] बहुत खानेवाला; सर्वभक्षी। पु० अग्नि; विष्णु।

अमिति–स्त्री० [सं०] असीमता।

अमित्र–वि० [सं०] मित्रहीन; वैरी, विरोधी। पु० मित्र नहीं, शत्रु, प्रतिपक्षी।

अमिय*–पु० अमृत। **–मूरि**–स्त्री० संजीवनी बूटी।

अमिल*–वि० बे-मेल; भिन्न वर्गका; जिससे मेल-जोल न हो; ऊबड़-खावड़; न मिलनेवाला, अप्राप्य।

अमिलित–वि० [सं०] जो मिला न हो, पृथक्।

अमिली*–स्त्री० वैमनस्य, अनबन; इमली।

अमिश्र–वि० [सं०] बिना मिलावटका; खालिस; असंयुक्त।

अमिश्रित–वि० [सं०] अमिश्र।

अमी*–पु० दे० 'अमिय'।**–कर**–पु० चंद्रमा।

अमीत–वि० [सं०] जिसे क्षति न पहुँची हो।*पु० शत्रु।

अमीन–वि० [अ०] अमानत रखनेवाला। पु० एक दीवानी अहलकार जो पैमाइश, बँटवारे आदिका काम करता है।

अमीर–पु०[अ०] अधिकारी; सरदार; रईस; धनी व्यक्ति। वि० धनवान्। **–ज़ादा**–पु० धनिक-पुत्र।

अमीराना–वि० [अ०] अमीरी जतानेवाला; धनिकोचित।

अमीरी–स्त्री० [अ०] दौलतमंदी। वि० अमीरके योग्य।

अमुक–वि० [सं०] कोई खास (आदमी या चीज जिसका नाम नहीं लिया जा रहा है), फलाँ।

अमुक्त–वि० [सं०] जो मुक्त न हो, बँधा हुआ; जिसका मोक्ष न हुआ हो। **–हस्त**–वि० कम-खर्च, अल्पव्ययी।

अमुख्य–वि० [सं०] अप्रधान, गौण; निम्न श्रेणीका।

अमूर्त–वि० [सं०] आकार-रहित; देह-रहित; निरवयव (आकाश, काल, वायु, आत्मा, परमात्मा, आदि)।

अमूर्ति–वि० [सं०] आकार-रहित। पु० विष्णु।

अमूल–वि० [सं०] बिना जड़का; निराधार; प्रमाण-रहित, मनगढंत; मिथ्या।

अमूलक–वि० [सं०] दे० 'अमूल'; *अमूल्य, अनमोल।

अमूल्य–वि० [सं०] अनमोल; बहुमूल्य।

अमृत–वि० [सं०] न मरा हुआ; न मरनेवाला; अमर। पु० अमरत्व; वह वस्तु जिसके पीनेसे मुर्दा जी उठे और जीवित प्राणी अजर-अमर हो जाय, सुधा, आबेहयात; अति मधुर, हितकर वस्तु; जल; घी; सोमरस; दूध; यज्ञशेष; अन्न; भात; अयाचित भिक्षा; औषध; वार-नक्षत्रके कुछ विशेष योग; चारकी संख्या, **–कर**–पु० चंद्रमा। **–दीधिति**–पु० चंद्रमा। **–फल**–पु० नाशपाती; परवल। **–भुक्(ज्)**–पु० अमृतपान करनेवाला; देवता। **–मूरि**–स्त्री० संजीवनी जड़ी। **–योग**–पु० फलित ज्योतिषमें एक शुभ योग। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा। **–लता,–लतिका**–स्त्री० गुडुच। **–लोक**–पु० स्वर्ग। **–वल्लरी,–वल्ली,–संभवा**–स्त्री० गुडुच।

अमृतत्व–पु० [सं०] अमरता; मोक्ष।

अमृतदान–पु० एक ढकनेदार बरतन।

अमृतबान–पु० एक तरहका रोगन किया हुआ मिट्टीका बरतन।

अमृतांशु–पु० [सं०] चंद्रमा।

अमृता–स्त्री०[सं०]मद्य; आमलकी;हरीतकी;गुडुच; तुलसी।

अमृताशन, अमृताशी(शिन्)–पु० [सं०] देवता।

अमेजना*–स० क्रि० मिलाना, मिलावट करना। अ० क्रि० मिलना।

अमे(मै)ठना*–स० क्रि० उमेठना।

अमेध्य–वि० [सं०] यज्ञके अयोग्य; यज्ञका अनधिकारी; अपवित्र। पु० अपवित्र वस्तु; मल आदि; अपशकुन।

अमेय–वि० [सं०] सीमारहित; परिमाणरहित; अज्ञेय।

अमेली*–वि० असंबद्ध; अनाप-शनाप।

अमेव*–वि० दे० 'अमेय'।

अमोघ–यि० [सं०] अचूक, अव्यर्थ।

अमौरी–स्त्री० अँबिया; आमड़ा।

अमोल, अमोलक*–वि० अनमोल; बहुमूल्य।

अमोला–पु० आमका उगता हुआ पौधा।

अमोही*–वि० निष्ठुर, निर्मोही।

अमौआ–वि० आमके रंगका। पु० जर्दीकी झलक लिये मूँगिया रंग।

अमौलिक–वि० [सं०] निर्मूल; जो मौलिक या स्वतंत्र रचना न हो, अन्यकी कृतिके आधारपर या अनुवाद रूपमें रचित; अयथार्थ।

अम्माँ–स्त्री० माता, माँ।

अम्मारी–स्त्री० [अ०] हौदा, महमिल।

अम्ल–वि० [सं०] खट्टा। पु० खट्टापन, खटाई; सिरका; तेजाब; अमलबेत; वमन; मट्ठा; एक नीबू। **–पंचक**–पु० पाँच मुख्य खट्टे फल–जंबीरी नीबू, खट्टा अनार, इमली, नारंगी और अमलबेत। **–पित्त**–पु० एक रोग जिसमें आहार आमाशयमें पहुँचकर अम्ल हो जाता है।

अम्लान–वि० [सं०] जो मुरझाया न हो; प्रफुल्ल, प्रसन्न।

अम्लिमा (मन्)–स्त्री० [सं०] खट्टापन।

अम्लोद्गार–पु० [सं०] खट्टी डकार।

अम्हौरी–स्त्री० अधिक पसीना निकलनेके कारण बदनमें निकलनेवाली छोटी-छोटी फुंसियाँ।

अयत्न–पु० [सं०] यत्नका अभाव। **–कृत**–वि० जो बिना प्रयत्न किये ही, आसानीसे हो जाय। **–लभ्य**–वि० बिना उद्योगके प्राप्त होनेवाला।

अयथा–वि० [सं०] जैसे होना चाहिये वैसे नहीं; अनुचित या गलत तरीकेसे। **–तथ**–वि० जैसा चाहिये वैसा नहीं, अयोग्य, अनुकूल नहीं; विपरीत; अयथार्थ। **–तथ्य**–पु०

अयथार्थता; अनौचित्य; अयोग्यता।

अयथार्थ–वि० [सं०] झूठ, गलत।–**नाम**–पु० (मिस-नोमर) दे० 'मिथ्यानाम'।

अयन–पु० [सं०] गति, चलना; सूर्यकी विषुवत् रेखासे उत्तर या दक्षिणको गति; इस गतिका काल; राशिचक्रकी गति; मार्ग, रास्ता; गृह; आश्रय (नारायण); थनका वह भाग जिसमें दूध रहता है। –**काल**–पु० सूर्यके उत्तरायण या दक्षिणायन रहनेका काल।

अयश (स्)–पु० [सं०] अपयश, बदनामी; लांछन।

अयशस्कर, अयशस्य–वि० [सं०] बदनामी करनेवाला; अयशका हेतु।

अयशी–वि० यशोहीन, बदनाम।

अयश्चूर्ण–पु० [सं०] लोहेका चूर।

अयस्–पु० [सं०] लोहा; फौलाद; धातु; हथियार; सोना; अगुरु नामक वृक्ष। –**कांत,–कांतमणि**–पु० चुंबक। –**कार**–पु० लोहार। –**कीट**–पु० मोरचा, जंग।

अयाचक–वि० [सं०] न माँगनेवाला; कामनारहित; संतुष्ट।

अयाचित–वि० [सं०] न माँगा हुआ, अप्रार्थित।

अयाची (चिन्)–वि० [सं०] दे० 'अयाचक'।

अयान–वि० [सं०] बिना सवारीका, पैदल; * अजान।

अयानता*–स्त्री० अजानपन, अज्ञान।

अयानप, अयानपन*–पु० अनजानपन; भोलापन।

अयाल–पु० [फा०] घोड़े या सिंहकी गर्दनपरके बाल।

अयि–अ० [सं०] (संबोधन) हे, ए, अरी।

अयुक्त–वि० [सं०] न जोता हुआ; न जोड़ा हुआ; बे-लगाव; अधार्मिक; अयोग्य; असंबद्ध; अनुपयुक्त, बे-ठीक; अन्य-मनस्क; अनभ्यस्त।

अयुक्ति–स्त्री० [सं०] संबंध या लगावका अभाव; पार्थक्य; युक्ति, तर्कका अभाव; अनौचित्य।

अयुग, अयुगल–वि० [सं०] अलग; अकेला; विषम।

अयुग्म–वि० [सं०] जो जोड़ा न हो, अकेला। –**नयन,–नेत्र**–पु० (तीन आँखोंवाले) शिव। –**बाण,–शर**–पु० कामदेव (पंचशर)।

अयुत–पु० [सं०] १० हजारकी संख्या। वि० असंबद्ध, पृथक्।

अयुद्धग्रस्तता, अयुद्धलिप्सि–स्त्री० (नान-बेलिजरेन्सी) किसी राष्ट्रका, कहनेके लिए युद्धसे पृथक् रहते हुए भी, खुल्लमखुल्ला युद्धलिप्त राष्ट्रकी सहायता करते रहना।

अयुध–पु० [सं०] वह जो न लड़े; * दे० 'आयुध'।

अयोग–पु० [सं०] बिलगाव; अयुक्तता; अप्राप्ति; अनौचित्य; संकट; दुष्ट ग्रहादिका योग; कुयोग।

अयोगी*–वि० अयोग्य।

अयोग्य–वि० [सं०] योग्यताहीन, नाकाबिल; निकम्मा; अनधिकारी; नामुनासिब।

अयोघन–पु० [सं०] हथौड़ा।

अयोद्धा (द्धृ)–पु० [सं०] वह जो योद्धा नहीं है; निम्न-श्रेणीका योद्धा।

अयोध्य–वि० [सं०] जिससे युद्ध न किया जा सके; अजेय।

अयोनि–वि० [सं०] अजन्मा; नित्य; कोखसे उत्पन्न नहीं। पु० ब्रह्मा; शिव। –**ज**–वि० जो जरायुसे उत्पन्न न हो। पु० विष्णु; शिव। –**जा,–संभवा**–स्त्री० सीता।

अयोमय–वि० [सं०] लोहेका बना हुआ।

अयोमल–पु० [सं०] जंग, मोरचा।

अयोमार्ग–पु० (रेलवे) लोहेकी पटरियोंको सिलसिलेसे जोड़कर बनाया हुआ मार्ग जिसपर यात्रियों या सामानको ढोनेवाली रेलगाड़ी दौड़ती है, रेल-पथ।

अयोमुख–वि० [सं०] जिसके मुँह या सिरेपर लोहा लगा हो।

अयोहृदय–वि० [सं०] जिसका हृदय लोहेकी तरह कठिन हो, निष्ठुर।

अयौक्तिक–वि० [सं०] युक्तिविरुद्ध, असंगत।

अरंड–पु० दे० 'एरंड'।

अरंभ*–पु० दे० 'आरंभ'।

अरंभना*–अ० क्रि० बोलना; आरंभ होना। स० क्रि० आरंभ करना।

अर–पु० [सं०] पहियेकी नाभि और नेमिके बीचकी लकड़ी, आरा; कोण; सिवार; चक्रवाक पक्षी; पित्तपापड़ा। वि० तेज; थोड़ा। * स्त्री० दे० 'अड़'। –**घट्ट,–घट्टक**–पु० रहट; कूप।

अरइल*–वि० दे० 'अड़ियल'।

अरई–स्त्री० पैनेकी नोकपर लगी हुई कील जिससे तेज चलानेके लिए बैलको कोंचते हैं।

अरक*–पु० सूर्य; अकवन; दे० 'अर्क'।

अरकना*–अ० क्रि० टकराना, भिड़ना; दरकना।–**बरकना**–अ० क्रि० पकड़में न आनेके लिए हटना, बचना।

अरकला*–पु० रोक, मर्यादा; अर्गल।

अरकाटी–पु० गिरमिटिया कुलियोंकी भरती करनेवाला।

अरकान–पु० [अ०] प्रधान कार्यकर्ता या कर्मचारी; वे लोग जिनपर किसी कार्य या प्रबंधका दारमदार हो; * प्रमुख राजकर्मचारी।

अरक्षित–वि० [सं०] जिसकी रक्षा न की गयी या की जाती हो; बिना बचावका।

अरग–पु० दे० 'अरगजा'।

अरगजा–पु० एक सुगंधित लेप जो चंदन, केसर आदि मिलाकर तैयार किया जाता है।

अरगजी–वि० अरगजा जैसे रंग या सुगंधवाला। पु० अरगजेके रंगसे मिलता हुआ पीला रंग।

अरगट–*वि० अलग, भिन्न।

अरगनी–स्त्री० कपड़ा टाँगनेके लिए बँधी हुई रस्सी, बाँस आदि।

अरगल–पु० किवाड़को भीतरसे बंद करनेके लिए लगायी जानेवाली आड़ी लकड़ी, ब्योंड़ा।

अरगाना*–अ० क्रि० अलग होना; चुप्पी साधना–'सूने सदन मथनियाके ढिग बैठि रहे अरगाई'–सू०। स० क्रि० अलग करना।

अरघ*–पु० दे० 'अर्घ'।

अरघट्ट–पु० [सं०] दे० 'अर' के साथ।

अरघा–पु० अर्घ-पात्र; अर्घ-पात्रके आकारका बना पत्थरका आधार जिसमें शिवलिंगकी स्थापना की जाती है, जलहरी; वह पात्र जिसमें अर्घ रखकर दिया जाय; कुएँकी जगतपर

पानीके निकासके लिए बना हुआ रास्ता।

अरघान, अरघानि*—स्त्री० गंध।

अरचन*—पु०, **अरचना***—स्त्री० दे० 'अर्चन', 'अर्चना'।

अरचल*—स्त्री० दे० 'अड़चन'।

अरचि*—स्त्री० ज्योति, प्रकाश।

अरचित*—वि० दे० 'अर्चित'।

अरज—स्त्री० दे० 'अर्ज़'।

अरजना*—स० क्रि० अर्ज करना; प्राप्त करना।

अरजी—स्त्री० दे० 'अर्ज़ी'। * वि० अरज करनेवाला, प्रार्थी।

अरणि, अरणी—स्त्री० [सं०] एक वृक्ष, गनियार, अँगेथू; काठका एक यंत्र जिससे (विशेषतः) यज्ञके लिए आग उत्पन्न करते हैं; सूर्य; अग्नि; चकमक पत्थर।

अरण्य—पु० [सं०] वन, जंगल; कायफल; संन्यासियोंका एक भेद। **-रोदन,-विलाप**—पु० ऐसा रोना जिसे कोई सुननेवाला न हो, निष्फल कथन, निवेदन इ०। **-श्वान**—पु० भेड़िया; गीदड़।

अरण्यानि,अरण्यानी—स्त्री०[सं०]बहुत बड़ा जंगल;वनदेवी।

अरत—वि० [सं०] सुस्त; विरक्त; अनासक्त; असंतुष्ट।

अरति—स्त्री० [सं०] विरक्ति; असंतोष; उचाट।

अरथ*—पु० दे० 'अर्थ'।

अरथाना*—स० क्रि० समझाकर कहना; व्याख्या करते हुए कहना।

अरथी—स्त्री० एक सीढ़ी जैसी चीज जिसपर मुर्देको सुलाकर श्मशान ले जाते हैं, टिकठी। वि० दे० 'अर्थी'।

अरथी (थिन्)—वि० [सं०] जो रथपर सवार न होकर लड़े, पैदल।

अरद—वि० [सं०] बिना दाँतका; जिसके दाँत टूट गये हों। * पु० कष्ट पहुँचाना; विनाश।

अरदन—वि० [सं०] दे० 'अरद', पु० दे० 'अर्दन'।

अरदना*—स० क्रि० मसलना; कुचलना; मसल-कुचलकर मार डालना।

अरदली—पु० किसी बड़े अफसरके साथ रहनेवाला खास चपरासी।

अरदावा—पु० दला हुआ अन्न; भरता।

अरदास—स्त्री० प्रार्थना; प्रार्थना-पत्र; नानकपंथी ईश्वर-प्रार्थना; भेंट, नजर।

अरधंग*—पु० दे० 'अर्द्धांग'।

अरधंगी, अरधाँगी—पु० दे० 'अर्द्धांगी'।

अरध—वि० दे० 'अर्द्ध'। * अ० अंदर, भीतर।

अरन—पु० एक तरहकी निहाई; * दे० 'अरण्य'।

अरना—पु० जंगली भैंसा। * अ० क्रि० दे० 'अड़ना'।

अरनि—स्त्री० दे० 'अरणि'; * अड़ना; रुकना; हठ करना।

अरनी—स्त्री० अरणि, यज्ञका अग्निमंथन काष्ठ; जलन।

अरन्य*—पु० दे० 'अरण्य'।

अरपन*—पु० दे० 'अर्पण'।

अरपना*—स० क्रि० अर्पण करना, भेंट करना।

अरपित*—वि० दे० 'अर्पित'।

अरब—वि० सौ करोड़। पु० सौ करोड़की संख्या; * घोड़ा; इंद्र; [अ०] एक देश या वहाँका निवासी।

अरबर*—वि० अंडबंड; कठिन; टेढ़ा।

अरबराना*—अ० क्रि० घबड़ाना; लटपटाना।

अरबरी—स्त्री० हड़बड़ी।

अरबी—वि० अरब देशका। पु० अरब-निवासी, अरबका या अरबी नस्लका घोड़ा; एक बाजा। स्त्री० अरबकी भाषा।

अरबीला*—वि० अंडबंड, निरर्थक; गर्वयुक्त (?)।

अरभक*—पु० दे० 'अर्भक'।

अरमा*—स्त्री० चमक-'मैथिली-विलास बीजुरीकी अरमा सो है'—लछिराम।

अरमान—पु० [फ़ा०] लालसा, इच्छा, कामना।

अरर—अ० विस्मय, उल्लास आदिका सूचक शब्द।

अरराना*—अ० क्रि० 'अररर'की ध्वनिके साथ (दीवार, पेड़, डाल आदिका) टूटकर गिरना; भहराना।

अरवा—पु० बिना उबाले धानका चावल; ताखा।

अरवाती*—स्त्री० ओलती।

अरविंद—पु० [सं०] कमल; सारस; ताँबा। **-नयन,-लोचन**—पु० विष्णु। **-नाभि**—पु० विष्णु। **-बंधु**—पु० सूर्य। **-योनि**—पु० ब्रह्मा।

अरविंदिनी—स्त्री० [सं०] नलिनी; कमल-लता; कमलसमूह; कमलपूर्ण स्थान।

अरवी—स्त्री० एक कंद, घुइयाँ।

अरस—वि० [सं०] रसहीन, नीरस, फीका; असभ्य; सुस्त। पु० रसका अभाव; *आलस्य; आकाश, 'जाकी तेग अरसमें झूलें'—छत्र०; छत; महल।

अरसना*—अ० क्रि० ढीला या सुस्त पड़ना।

अरसना-परसना—स० क्रि० छूना; आलिंगन करना।

अरस-परस—पु० आँखमिचौनीका एक खेल; दरस-परस।

अरसा—पु० [अ०] समय; अवधि; मैदान; देर; बहुत दिन।

अरसाना*—अ० क्रि० अलसाना।

अरसिक—वि० [सं०] अरसज्ञ; काव्य, संगीत आदिका रस लेनेमें असमर्थ; स्वादहीन, रूखा; रूखे स्वभावका।

अरसी*—स्त्री० अलसी, तीसी।

अरसीला, अरसौंहा*—वि० अलसाया हुआ।

अरहंत*—पु० दे० 'अर्हंत'।

अरहट—पु० कुएँसे पानी निकालनेका यंत्र, रहट।

अरहन—पु० साग-भाजीमें पकाते समय मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

अरहना*—स्त्री० पूजा।

अरहर—स्त्री० दालके काम आनेवाला एक अनाज, तुअर।

अरा*—पु० आरा; झगड़ा।

अराअरी—स्त्री० दे० 'अड़ाअड़ी'।

अराजक—वि० [सं०] बिना राजा या राज्यका; अराजकतावादी। पु० राजाका न होना; विप्लव।

अराजकता—स्त्री० [सं०] शासनका अभाव; अव्यवस्था, बदअमली। **-वाद**—पु० राज्यहीन समाज-व्यवस्थाका प्रतिपादन करनेवाला मतवाद।

अराजपत्रित—वि० (नॉन-गजेटेड) (अधिकारी, कर्मचारी) जिसका नाम या जिसकी पदवृद्धि, स्थानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिके संबंधमें कोई सूचना सरकारी समाचारपत्रमें न छपती हो।

अराज़ी—स्त्री० [अ०] जमीन, धरती (अर्जका बहुवचन-

अत्र एकवचनमें प्रयुक्त)।

अरात*–पु० दे० 'अराति'।

अराति–पु० [सं०] दुश्मन, शत्रु; कुंडलीका छठा स्थान; काम-क्रोधादि षड्रिपु; ६की संख्या।

अराधन*–पु० दे० 'आराधन'।

अराधना*–स० क्रि० आराधन करना।

अराधी*–पु० आराधन करनेवाला।

अराबा–पु० [अ०] गाड़ी, रथ; तोप लादनेकी गाड़ी; जहाजपर एक ओर एक बार तोप दागना।

अराम*–पु० आराम, बाग।

अरारूट, अरारोट–पु० एक पौधा; उसकी जड़से निकलनेवाला सत जो तीखुर जैसा होता है और प्रायः बीमारोंको दिया जाता है।

अराल–वि० [सं०] टेढ़ा। पु० मतवाला हाथी।

अरावल–पु० हरावल, अग्रगामी सैन्य।

अरिंद*–पु० शत्रु।

अरिंदम–वि०[सं०]शत्रुओंका दमन करनेवाला,शत्रुविजयी।

अरि–पु० [सं०] शत्रु; काम, क्रोध आदि षड्रिपु; जन्मकुंडलीमें लग्नसे छठा स्थान; ६ की संख्या; एक तरहका खदिर।

अरियाना*–स० क्रि० अपमानजनक शब्दसे संबोधन करना।

अरिवन–पु० रस्सीका फँदा जिसमें घड़ा आदि फँसाया जाता है।

अरिष्ट–पु० [सं०] दुर्भाग्य; अशुभ; विपत्ति; शत्रु; अनिष्ट ग्रह या ग्रहयोग; मृत्युकारक योग; (रोगीके) मृत्युसूचक लक्षण; भूकंपादि उत्पात; दवाओंके खमीरसे बनाया जानेवाला मादक अर्क; रीठा। वि० निरापद; अशुभ।

अरिहन*–पु० शत्रुघ्न।

अरिहा(हन्)–वि० [सं०] शत्रुका नाश करनेवाला। पु० शत्रुघ्न।

अरी–अ० स्त्रियोंके लिए व्यवहृत संबोधन।

अरुंतुद–वि० [सं०] मर्मस्थलोंको छेदनेवाला; मर्मपीड़क; लगनेवाला। पु० शत्रु।

अरुंधती–स्त्री० [सं०] वसिष्ठ ऋषिकी पत्नी; दक्षकी एक कन्या; सप्तर्षि-मंडलके पासका एक छोटा तारा।

अरु*–अ० औंर।

अरुई†–स्त्री० दे० 'अरवी'।

अरुग्ण–वि० [सं०] नीरोग, स्वस्थ।

अरुचि–स्त्री० [सं०] (किसी वस्तुका) अच्छा न लगना, अनिच्छा; घृणा; विरक्ति; भूख न लगना, अग्निमांद्य रोग। **–कर**–वि० जो पसंद न आये, न रुचनेवाला।

अरुचिर, अरुच्य–वि० [सं०] भला न लगनेवाला, अरुचिकर; कुढ़न पैदा करनेवाला।

अरुज–वि० [सं०] नीरोग, तंदुरुस्त।

अरुझना*–अ० क्रि० उलझना; फँसना, अटकना; झगड़ना; युद्धमें संलग्न होना।

अरुझाना*–स० कि० उलझाना। अ० क्रि० उलझना।

अरुण–वि० [सं०] लाल, ऊषा या सिंदूरके रंगका; घबड़ाया हुआ। पु० लाल रंग, उगते हुए सूर्यका रंग; सांध्य लालिमा; सूर्य; सूर्यका सारथि; सिंदूर; सोना; कुंकुम; एक तरहका कुष्ठ रोग। **–कर,–किरण**–पु० सूर्य। **–चूड,–शिखा**–पु० मुर्गा। **–नेत्र,–लोचन**–पु० कबूतर। **–प्रिया**–स्त्री० सूर्यकी पत्नी, संज्ञा, छाया।

अरुणा–स्त्री० [सं०] ऊषा; मजीठ; घुँघची; अतिविषा।

अरुणाई–स्त्री० लालिमा।

अरुणात्मज–पु० [सं०] शनि; यम; जटायु; सुग्रीव; कर्ण इ०।

अरुणात्मजा–स्त्री० [सं०] यमुना और ताप्ती।

अरुणाभ–वि० [सं०] लाल आभा-युक्त, लालिमा लिये हुए।

अरुणार–वि० दे० 'अरुनारा'।

अरुणिमा (मन्)–स्त्री० [सं०] लाली।

अरुणोदय–पु० [सं०] उषःकाल, तड़का, भोर।

अरुन*–वि० दे० 'अरुण'। **–चूड़,–सिखा**–पु० दे० 'अरुणचूड़,–शिखा'।

अरुनई*–स्त्री० दे० 'अरुनाई'।

अरुनता*–स्त्री० अरुणता, लालिमा।

अरुनाई*–स्त्री० ललाई।

अरुनाना*–अ० क्रि० सुर्खी आना, लाल होना। स० क्रि० लाल करना।

अरुनारा*–वि० लाल।

अरुनोदय*–पु० दे० 'अरुणोदय'।

अरुरना*–अ० क्रि० सिकुड़ना, बल खाना।

अरुराना*–स० क्रि० सिकोड़ना; ऐंठना, मरोड़ना।

अरूझना*–अ० क्रि० भिड़ना, झगड़ना।

अरूढ–वि० [सं०] जो रूढ न हो, अप्रचलित; * दे० 'आरूढ'।

अरूप–वि० [सं०] आकृतिहीन, विना रूप-आकारका; कुरूप; असमान। पु० भद्दी शक्ल।

अरूरना*–अ० क्रि० व्यथित होना, पीड़ित होना।

अरूलना*–अ० क्रि० छिलना; कटना।

अरे–अ० छोटोंके लिए व्यवहृत और प्रायः तिरस्कार-सूचक संबोधन; आश्चर्य, दुःख, आकुलता आदि प्रकट करनेवाला उद्गार।

अरेरना*–स० क्रि० रगड़ना।

अरोगना*–स० क्रि० खाना।

अरोच*–पु० अरुचि, अनिच्छा।

अरोचक–वि० [सं०] जो चमकीला न हो; भूख मंद करनेवाला; अरुचि पैदा करनेवाला, अरुचिकर।

अरोध्य–वि० [सं०] जो रोका न जा सके, अबाधित।

अरोर*–वि० शब्दरहित, शांत।

अरोहन*–पु० दे० 'आरोहण'।

अरोहना*–अ० क्रि० चढ़ना, आरोहण करना।

अरोही*–वि० दे० 'आरोही'।

अरौद्र–वि० [सं०] जो भयंकर न हो।

अर्क–पु० [सं०] ज्योति, प्रकाश-किरण; सूर्य; अग्नि; रविवार; ताँबा; स्फटिक; आक, मदार; इंद्र; विष्णु; १२ की संख्या। वि० पूजा करने योग्य। **–ज,–तनय**–पु० कर्ण; यम; सुग्रीव आदि। **–जा,–तनया**–स्त्री० यमुना; ताप्ती। **–नंदन,–पुत्र,–सुत,–सूनु**–पु० शनि; कर्ण; यम आदि। **–रिपु**–पु० राहु। **–वल्लभ**–पु० बंधूक;

कमल । **–विवाह**–पु० मदारके पेड़के साथ किया जानेवाला विवाह (तीसरा विवाह करनेवाले पुरुषके लिए पहले मदारसे विवाह करनेका विधान किया गया है, ताकि तीसरी पत्नी चौथी हो जाय) । **–व्रत**–पु० सूर्यका एक व्रत (यह माघ शुक्ला सप्तमीको किया जाता है); राजाका प्रजासे कर लेनेमें सूर्यके नियमका अनुसरण करना (सूर्य ८ महीने अपनी किरणोंसे पानी सोखता और बरसातमें उसे कई गुना करके बरसा देता है, अर्थात् लोककी वृद्धिके लिए ही रस ग्रहण करता है) ।

अर्क़–पु० [अ०] रस; किसी चीजका भभकेसे खींचा हुआ रस; पसीना ।

अर्कोपल–पु० [सं०] सूर्यकांत मणि; चुन्नी ।

अर्गजा*–पु० दे० 'अरगजा' ।

अर्गल–पु० [सं०] ब्योंड़ा, अगड़ी; रोक; किवाड़; लहर; एक नरक; मांस ।

अर्गला–स्त्री० [सं०] अगड़ी; सिटकिनी; हाथी बाँधनेकी जंजीर ।

अर्गलिका–स्त्री० [सं०] छोटी अर्गला ।

अर्गलित–वि० [सं०] अगड़ीसे बंद किया हुआ ।

अर्गली–स्त्री० [सं०] दे० 'अर्गला' ।

अर्घ–पु० [सं०] पूजनके १६ उपचारोंमेंसे एक; दूब, दूध, चावल आदि मिला हुआ जल जो देवता या पूजनीय पुरुषके सामने रखा जाय; हाथ धोनेके लिए दिया गया जल; दाम, मूल्य; अश्व, घोड़ा; मधु, शहद । **–दान**–पु० अर्घ अर्पण करना । **–पतन**–पु० सस्ती होना, भाव गिरना; (स्लंप) दे० 'मूल्यावपात' । **–पात्र**–पु० अर्घ अर्पण करनेका पात्र, अरघा । **–वृद्धि**–स्त्री० भाव बढ़ना, महँगी होना । **–संस्थापन**–पु० व्यापारिक वस्तुओंका मूल्य निर्धारित करना ।

अर्घा–पु० दे० 'अरघा' ।

अर्घ्य–वि० [सं०] पूजनीय; बहुमूल्य । पु० पूजामें देनेयोग्य वस्तु, अर्घके उपयुक्त द्रव्य; एक प्रकारका मधु ।

अर्चक–वि० [सं०] पूजा करनेवाला ।

अर्चन–पु०, **अर्चना**–स्त्री० [सं०] पूजन, वंदन ।

अर्चनीय, अर्च्य–वि० [सं०] पूजनीय; सम्मान्य ।

अर्चमान–वि० [सं०] दे० 'अर्चनीय' ।

अर्चा–स्त्री० [सं०] पूजा; प्रतिमा जिसकी पूजा करनी हो ।

अर्चि(स्)–स्त्री० [सं०] किरण; अग्नि-शिखा; प्रकाश, द्युति ।

अर्चित–वि० [सं०] पूजित; सम्मानित । पु० विष्णु ।

अर्चिष्मान् (मन्)–वि० [सं०] चमकवाला; लपटवाला । पु० अग्नि; सूर्य ।

अर्ज़–पु० [अ०] निवेदन; प्रार्थना; चौड़ाई ।

अर्जन–पु० [सं०] कमाना; संग्रह करना ।

अर्जनीय–वि० [सं०] संग्रह या प्राप्त करने योग्य ।

अर्जित–वि० [सं०] कमाया हुआ; बटोरा हुआ । **–छुट्टी**–स्त्री० (अर्न्ड लीव) वह छुट्टी जिसे पानेका वह कर्मचारी अधिकारी माना जाता है जिसने निर्धारित समयतक काम करनेके बाद उसका अर्जन कर लिया हो ।

अर्ज़ी–स्त्री० [अ०] प्रार्थनापत्र, दरख्वास्त । **–दावा**–पु० दीवानी या मालके मुकदमेमें वादी पक्षका प्रार्थनापत्र । **–नवीस**–पु० अर्जी लिखनेवाला ।

अर्जुन–पु० [सं०] पांडुके पाँच पुत्रोंमेंसे मझले जो महाभारत-युद्धमें पांडवपक्षके नायक थे; हैहयनरेश कार्तवीर्य; इंद्र; सफेद रंग; एक पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है ।

अर्णव–पु० [सं०] समुद्र; धारा; अंतरिक्ष; इंद्र; सूर्य; एक वृत्त; चारकी संख्या; रत्न, मणि ।

अर्णवोद्भव–पु० [सं०] चंद्रमा; अमृत ।

अर्णवोद्भवा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

अर्थ–पु० [सं०] शब्दका अभिप्राय, मानी; मतलब; प्रयोजन; काम; मामला; हेतु, निमित्त; इंद्रियोंके विषय–शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध; धन, शारीरिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका साधन; पैसा कमाना जो जीवनके चार पुरुषार्थोंमेंसे एक माना गया है; उपयोग; लाभ; दिलचस्पी; स्वार्थ; इच्छा; प्रार्थना; मूल्य; निवारण; फल, परिणाम; कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान । **–कर**–वि० जिससे पैसा मिले । [स्त्री० 'अर्थकरी' ।] **–गौरव**–पु० अर्थकी गंभीरता । **–चिंतन**–पु० द्रव्योपार्जनका उपाय सोचना । **–चिंता**–स्त्री० धन या पैसेकी चिंता । **–दंड**–पु० जुर्मानेकी सजा । **–दोष**–पु० अर्थ-संबंधी दोष । **–पति**–पु० कुबेर; राजा । **–पिशाच**–पु० अति कृपण धनी । **–प्रबंध**–पु० आय-व्ययकी व्यवस्था । **–भृत**–पु० तनखाह लेकर काम करनेवाला, वेतनभोगी । **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० मंत्रिमंडलका वह मंत्री जिसके जिम्मे राज्यका अर्थप्रबंध हो । **–व्यवस्था**–स्त्री० सार्वजनिक राजस्व और उसके आय-व्ययकी पद्धति । **–शास्त्र**–पु० अर्थविज्ञान (राजनीतिविज्ञान; नीतिशास्त्र) । **–सिद्ध**–वि० प्रसंगसे ही जिसका अर्थ स्पष्ट हो । **–सिद्धि**–स्त्री० अभीष्टकी प्राप्ति; उद्देश्यकी सिद्धि । **–हीन**–वि० निर्धन; बे-मानी; असफल ।

अर्थतः–अ० [सं०] अर्थकी दृष्टिसे; वस्तुतः, सचमुच ।

अर्थांतर–पु० [सं०] दूसरा विषय; नयी स्थिति; दूसरा मतलब । **–न्यास**–पु० अर्थालंकार जहाँ सामान्यसे विशेषका, विशेषका सामान्यसे अथवा कारणसे कार्यका या कार्यसे कारणका समर्थन हो ।

अर्थागम–पु० [सं०] धनागम, आय ।

अर्थात्–अ० [सं०] यानी; दूसरे शब्दोंमें ।

अर्थाना*–स० क्रि० अर्थ लगाना, व्याख्या करना ।

अर्थापत्ति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार 'जिसमें यह दिखलाया जाय कि जब इतनी बड़ी बात हो गयी तो इस छोटी-सी बातके होनेमें क्या संदेह हो सकता है;' परिणाम; एक प्रमाण जिसमें एक बातसे दूसरी बातकी सिद्धि होती है ।

अर्थापन–पु० (इंटरप्रेटेशन) अर्थ लगाना; विशेष ढंगसे समझना या समझाना; व्याख्या ।

अर्थार्थी (र्थिन्)–वि० [सं०] धनकी कामना रखने या उसकी प्राप्तिके लिए प्रयास करनेवाला; गरज रखनेवाला ।

अर्थालंकार–पु० [सं०] वह अलंकार जो शब्द-प्रयोगपर नहीं, किंतु अर्थपर आश्रित हो ।

अर्थिक–वि० [स०] किसी वस्तुका चाहनेवाला ।

अर्थित–वि० [सं०] माँगा हुआ; चाहा हुआ ।

अर्थी (र्थिन्)–वि० [सं०] चाह, गरज रखनेवाला; प्रार्थी; धनी । पु० मांगनेवाला; भिक्षुक; वादी ।

अर्दन, अर्द्दन-पु० [सं०] पीडन; वध; याचना; जाना ।

अर्दना-स्त्री० [सं०] दे० 'अर्दन' (पु०) ।*-स० क्रि० कष्ट पहुँचाना ।

अर्दित-वि० [सं०] पीडित; हत; याचित; गया हुआ ।

अर्द्ध (र्ध)-वि० [सं०] आधा । पु० आधा भाग; भाग । **-चंद्र**-पु० आधा चंद्रमा; सानुनासिकका चिह्न, चंद्रबिंदु; वह बाण जिसका फल अर्द्धचंद्राकार हो; मोरपंखकी आँख; निकाल बाहर करनेके लिए गर्दनमें हाथ लगाना, गर्दनिया (देना); एक प्रकारका त्रिपुंड्र । **-जल**-पु० शवको स्नान कराकर :आधा बाहर आधा जलमें रखनेकी क्रिया । **-नारीश,-नारीश्वर**-पु० शिवका वह रूप जिसमें आधा भाग पार्वतीका होता है, शिव-पार्वतीका संयुक्त रूप । **-निशा,-रात्रि**-स्त्री० आधी रात । **-पारावत**-पु० तीतर । **-मागधी**-स्त्री० प्राकृतका वह रूप जो पटना और मथुराके बीच बोला जाता था । **-वृत्त**-पु० (सेमिसरकिल) वृत्तका आधा भाग जो व्यासके एक ओर या दूसरी ओर हो । **-वृद्ध**-वि० अधेड़ उम्रका । **-व्यास**-पु० केंद्रसे परिधितककी दूरी ।**-शेष**-वि० जिसका आधा ही बचा हो । **-सम**-वि० आधेके बराबर । पु० वह वृत्त या छंद जिसके पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे चरण समान हों (जैसे दोहा और सोरठा) । **-साप्ताहिक**-वि० सप्ताहमें दो बार निकलने या होनेवाला । पु० सप्ताहमें दो बार निकलनेवाला पत्र ।

अर्द्धक-पु० (बाइसेक्टर) किसी कोण आदिको दो समान भागोंमें बाँटनेवाली रेखा ।

अर्द्धां(र्धां)ग-पु० [सं०] आधी देह; पक्षाघात रोग, फालिज; शिव ।

अर्द्धां(र्धां)गिनी-स्त्री० [सं०] पत्नी, सहधर्मिणी ।

अर्द्धां(र्धां)गी (गिन्)-पु० [सं०] शिव ।

अर्द्धा(र्धा)ली-स्त्री० आधी चौपाई ।

अर्द्धा(र्धा)सन-पु० [सं०] आधा आसन; बहुत अधिक सम्मानकी जगह; बराबरीका स्थान ।

अर्द्धें(र्धें)दु-पु० [सं०] अर्द्ध चंद्र । **-मौलि**-पु० शिव ।

अर्द्धोत्तोलित ध्वज-पु० (हाफमास्ट फ्लैग) किसी महान् व्यक्तिके मरनेपर उसके सम्मानमें आधी ऊँचाईतक झुकाया हुआ राष्ट्रीय झंडा, अधझुका झंडा ।

अर्द्धो(र्धो)दक-पु० [सं०] आधे शरीरतक गहरा पानी; मरणासन्न व्यक्तिको आधा पानीमें, आधा बाहर रखना ।

अर्द्धो(र्धो)दय-पु० [सं०] एक पर्व जिसमें स्नान सूर्यग्रहण-स्नानका पुण्य देनेवाला माना जाता है ।

अर्धंग*-पु० दे० 'अर्द्धांग' ।

अर्धंगी*-पु० दे० 'अर्द्धांगी' ।

अर्पण-पु० [सं०] देना, दान करना; भेंट करना; वापस करना; रखना (पदार्पण); छेदन । **-प्रतिभू**-पु० ऐसी जमानत करनेवाला प्रतिभू जो ऋणीके न दे सकनेपर स्वयं धन देना स्वीकार करे ।

अर्पना*-स० क्रि० दे० 'अरपना' ।

अर्पित-वि० [सं०] अर्पण किया हुआ ।

अर्ब-दर्ब*-पु० धन-संपत्ति, माल-दौलत ।

अर्बुद-पु० [सं०] दस करोड़की संख्या; आबू पहाड़; एक रोग जिसमें शरीरमें कहीं बड़े ढेले जैसा मांसपिंड निकल आता है; दो महीनेका गर्भ; बादल ।

अर्भ-पु० [सं०] शिशु, बच्चा; छात्र; नेत्रबाला; कुशा ।

अर्भक-पु० [सं०] बच्चा; छौना; नेत्रबाला; कुशा ।

अर्यमा (मन्)-पु० [सं०] सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे एक ।

अर्वाचीन-वि० [सं०] इधरका; हालका; आधुनिक ।

अर्श-पु०[अ०] छत; आकाश; बिहिश्त ।**-मु० (दिमाग) -पर होना**-अपनेको बहुत बड़ा समझना; अपनी शक्ति-सामर्थ्यपर इतराना; बड़े-बड़े मनसूबे बाँधना ।

अर्श (स्)-पु० [सं०] एक रोग, बवासीर ।

अर्शोघ्न-पु० [सं०] शूरण; भिलावाँ; सज्जीखार; तेजबल; सफेद सरसों ।

अर्शोहर-पु० [सं०] दे० 'अर्शोघ्न' ।

अर्शोहित-पु० [सं०] भल्लातक, भिलावाँ ।

अर्हत-वि० [सं०] योग्य । पु० बुद्ध; जिन; शिव ।

अर्ह-वि० [सं०] पूजनीय; सम्मान्य; योग्य; उपयुक्त ।

अर्हण-पु०, **अर्हणा, अर्हा**-स्त्री० [सं०] पूजा; सम्मान ।

अर्हणीय-वि० [सं०] पूजा या सम्मानके योग्य ।

अर्हंत-पु० [सं०] परम ज्ञानी; बुद्ध; तीर्थंकर । वि० पूज्य ।

अर्हता-स्त्री० (क्वालिफिकेशन) किसी स्थान या पदके योग्य बनानेवाली विशिष्टता, गुणराशि या योग्यता ।

अर्हित-वि० [सं०] पूजित; सम्मानित ।

अर्ह्य-वि० [सं०] पूजनीय; प्रशंसनीय; योग्य; अधिकारी ।

अलं-अ० [सं०] दे० 'अलम्' । **-करण**-पु० सजाना; सजावट; आभूषण ।**-कर्ता**-वि० सजानेवाला । **-कार**-पु० सजावट; भूषा; आभूषण, गहना; रचनामें शब्दयोजना या अर्थका चमत्कार; उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि; वह हाव-भाव या क्रिया आदि जिससे स्त्रियोंका सौंदर्य बढ़े । **-०शास्त्र**-पु० अलंकारका वर्णन, विवेचन आदि करनेवाला शास्त्र । **-कृत**-वि० अलंकार-युक्त; भूषित । **-कृति**-स्त्री० अलंकार; सजावट ।

अलँग*-अ० ओर, तरफ ।

अलंघनीय, अलंघ्य-वि० [सं०] जो लाँघा या पार न किया जा सके; अटल ।

अलंब*-पु० दे० 'आलंब' ।

अलक-स्त्री०[सं०] सिरके लटकते हुए बाल; जुल्फ; हरताल; सफेद मदार ।

अलकतरा-पु० काले रंगका एक गाढ़ा द्रव जो लकड़ी आदि रँगनेके काम आता है, 'कोलतार' ।

अलकलड़ैता, अलकसलोरा-वि० लाड़ला, दुलारा ।

अलका-स्त्री० [सं०] कुबेरपुरी; आठ और दस बरसके बीचकी लड़की । **-पति**-पु० कुबेर ।

अलकाधिप, अलकेश्वर-पु० [सं०] कुबेर ।

अलकावलि-स्त्री० [सं०] केश-समूह; लटें; घुँघराले बाल ।

अलक्त, अलक्तक-पु० [सं०] लाख; महावर ।

अलक्षण-वि० [सं०] चिह्नरहित, जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो; अशुभ । पु० अपशकुन; बुरा चिह्न ।

अलक्षित-वि० [सं०] न देखा हुआ; अज्ञात; अदृश्य; गुप्त ।

अलक्ष्मी-स्त्री० [सं०] दुर्भाग्य; दारिद्र्य ।

अलक्ष्य-वि० [सं०] अदृश्य; अज्ञेय; चिह्नरहित; जिसका

लक्षण न किया जा सके ।

अलख–वि० जो देखा न जा सके; अलक्ष्य; अगोचर । पु० परमेश्वर । **–धारी,–नामी**–पु० गोरख-पंथियोंका एक संप्रदाय और उसका अनुयायी । **–निरंजन,–पुरुष**–पु० परमात्मा । **मु०–जगाना**–'अलख'-'अलख' पुकारकर परमात्माको याद करना; 'अलख'-'अलख' पुकारकर भीख माँगना ।

अलखित*–वि० दे० 'अलक्षित' ।

अलग–वि० जुदा; भिन्न; दूर; तटस्थ; सुरक्षित; न्यारा, विशिष्ट । **–अलग**–अ० व्यक्तिशः प्रत्येकको या प्रत्येकसे । **–थलग**–वि० जुदा; दूर । **मु०–करना**–दूर करना, हटाना; बेचना; पृथक् करनाः छाँटना । **–होना**–दूर या किनारे होना; संयुक्त परिवारसे पृथक् होना; नौकरी छोड़ना ।

अलगनी–स्त्री०कपड़े टाँगनेके लिए बाँधी गयी रस्सी या बाँस ।

अलगरजा†–वि० लापरवाह ।

अलगरजी†–वि० लापरवाह । स्त्री० लापरवाही ।

अलगाऊ–वि० अलग करनेवाला; जो अलग करनेके पक्षमें हो ।

अलगाना–स० क्रि० अलग करना; दूर करना; छाँटना । अ० क्रि० अलग होना ।

अलग़ोज़ा–पु० [अ०] एक तरहकी बाँसुरी ।

अलगौझा†–पु० संयुक्त कुटुंबसे अलग होना, बँटवारा ।

अलघु–वि० [सं०] हलका नहीं, भारी; लंबा; उग्र; गंभीर ।

अलच्छ*–वि० दे० 'अलक्ष्य' ।

अलज*–वि० दे० 'अलज्ज' ।

अलज्ज–वि० [सं०] लज्जारहित, बेहया ।

अलता–पु० स्त्रियोंके पैरोंमें लगानेके काम आनेवाला एक प्रकारका लाल रंग ।

अलप*–वि० दे० 'अल्प' ।

अलपाका–पु० दक्षिणी अमेरिकाका एक जानवर जिसके बालोंका बढ़िया ऊन बनता है; अलपाकेका ऊन; अलपाकेका ऊन और रेशम या सूत मिलाकर बुना हुआ कपड़ा ।

अलफ़ा–पु० [अ०] बिनां बाँहका ढीलाढाला कुरता जिसे प्रायः मुसलमान फकीर पहना करते हैं ।

अलबत्ता–अ० [अ०] बेशक, निस्संदेह; हाँ ।

अलबेला–वि० सुंदर; अनूठा; बाँका; मनमौजी । पु० नारियलका हुक्का ।

अलब्ध–वि० [सं०] अप्राप्त । **–निद्र**–वि० जिसे नींद न आती हो ।

अलभ*–वि० दे० 'अलभ्य' ।

अलभ्य–वि० [सं०] जो न मिलता हो, अप्राप्य; दुर्लभ; बहुमूल्य; अनमोल ।

अलम–पु० [अ०] दुख; झंडा, निशान; भाला ।

अलमस्त–वि० मस्त, मतवाला; मौजी; बे-फ़िक्र ।

अलमारी–स्त्री०पुस्तक आदि रखनेके लिए बना कई खानोंवाला ऊँचा संदूक या आला ।

अलम्–अ० [सं०] पर्याप्त, काफी, पूरा; बस ।

अलर्क–पु० [सं०] पागल कुत्ता; सफेद मदार ।

अललटप्पू–वि० अटकलपच्चू ।

अललबछेड़ा–पु० घोड़ेका जवान बच्चा; अल्हड़ आदमी ।

अललहिसाब–अ० [अ०] बिना हिसाब किये । **मु०–देना**–पावनेका हिसाब किये बिना कुछ रकम दे देना ।

अललाना†–अ० क्रि० चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना ।

अलवाँत, अलवाँती†–स्त्री० प्रसूता, जच्चा ।

अलवाई–वि० (स्त्री०) जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो (गाय-भैंस) ।

अलवान–पु० [अ०] एक तरहका ऊनी शाल ।

अलस–वि० [सं०] आलसी, सुस्त; अलसाया हुआ, श्रांत ।

अलसना, अलसाना–अ० क्रि० थकावट या सुस्ती मालूम होना; कुछ करनेको जी न चाहना ।

अलसान, अलसानि*–स्त्री० आलस्य ।

अलसी–स्त्री० एक पौधा और उसके बीज जिनसे तेल निकलता है, तीसी । * वि० आलसी ।

अलसेट–पु० अड़चन; अड़ंगा; ढिलाई, टालमटूल ।

अलसेटिया–वि० अलसेट डालनेवाला ।

अलसौंहा–वि० अलसाया हुआ, क्लांत ।

अलहदगी–स्त्री० [अ०] बिलगाव, अलगौझा ।

अलहदा–वि० [अ०] अलग, जुदा ।

अलाई–वि० आलसी, काहिल । पु० घोड़ेकी एक जाति ।

अलात–पु० [सं०] अंगार; लुकाठी । **–चक्र**–पु० लुकाठी या लुकको घुमानेसे बननेवाला मंडल; जलती बनेठी ।

अलान–पु० हाथी बाँधनेका खूँटा या सीकड़; बेड़ी; बेल चढ़ानेके लिए गाड़ी हुई लकड़ी ।

अलानिया–अ० [अ०] खुले खजाने, डंकेकी चोट ।

अलाप–पु० दे० 'आलाप' ।

अलापना–अ० क्रि० बात करना; बोलना; गाना, तान लगाना ।

अलापी*–वि०अलाप करनेवाला; बोलनेवाला; गानेवाला ।

अलाभकर जोत–स्त्री० (अनएकॉनामिक होल्डिंग) किसी काश्तकार द्वारा जोती-बोयी जानेवाली वह भूमि जिसकी उपज उसके परिवारके भरण-पोषणके लिए पर्याप्त न हो ।

अलाम*–वि० बात बनानेवाला; मिथ्यावादी ।

अलामत–स्त्री० [अ०] चिह्न, पहचान, लक्षण ।

अलायक*–वि० अयोग्य, निकम्मा ।

अलार–पु० [सं०] किवाड़; * अलाव, आगका ढेर ।

अलाल*–वि० अकर्मण्य, काहिल ।

अलाव–पु० [फ़ा०] तापनेके लिए जलायी हुई आग, कौड़ा ।

अलावा–अ० [अ०] सिवा, अतिरिक्त ।

अलिंग–वि० [सं०] बिना चिह्न या लक्षणका; जिसका लक्षण न किया जा सके; बुरे चिह्नोंवाला; (वह शब्द) जिसका कोई लिंग न हो या जो सब लिंगोंमें व्यवहृत हो सके (हम, तुम आदि–व्या०) । पु० ईश्वर, परमात्मा ।

अलिंद–पु० [सं०] बाहरी दरवाजेके सामनेका चौतरा या छज्जा; * भौंरा ।

अलि–पु०[सं०]भौंरा; बिच्छू; कोयल; कौआ; वृश्चिक राशि; मदिरा । स्त्री० दे० 'अली' । **–कुल**–पु० भौंरोंका समूह ।

अलिखित–वि० [सं०] जो लिखित न हो ।

अलिप्त–वि० [सं०] बिना लेपका, असंलग्न; बे-लाग; अनावृत; निर्दोष ।

अली—स्त्री० सखी (प्रायः संबोधनमें प्रयुक्त); पांत । * पु० भौंरा ।

अली (लिन्)—पु० [सं०] भ्रमर; बिच्छू ।

अलीक—वि०[सं०] अप्रिय; मिथ्या, झूठ, मनगढ़ंत; अल्प । * स्त्री० अप्रतिष्ठा ।

अलीजा*—वि० प्रचुर, बहुत-सा ।

अलीन—पु० दरवाजेकी चौखटका साह; बरामदे आदिका खंभा जो दीवारसे लगा हो। वि० अलग; अनुचित; अग्राह्य।

अलीपित*—वि० अलिप्त ।

अलील—वि० [अ०] बीमार ।

अलीह*—वि० अलीक, असत्य; अनुचित ।

अलुक्—पु० [सं०] एक समास जिसमें पूर्वपदकी विभक्तिका लोप नहीं होता (सरसिज, असूर्यंपश्या) ।

अलुझना*—अ० क्रि० दे० 'अरुझना' ।

अलुटना*—अ० क्रि० लोटना; लड़खड़ाना ।

अलूप*—वि० दे० 'अलोप' ।

अलूला*—पु० बुलबुला; लपट; उद्गार ।

अलेख—वि० बे-हिसाब; अज्ञेय; अदृश्य ।

अलेखा*—वि० अनगिनत; वृथा ।

अलेखी*—वि० अन्यायी, अंधेर करनेवाला ।

अलोक—वि० [सं०] अदृश्य; निर्जन । पु० जगत् नहीं, पातालादि लोक; संसारका विनाश; आध्यात्मिक जगत्; * अपयश, बदनामी ।

अलोकना*—स० क्रि० देखना, अवलोकन करना ।

अलोचन—वि० [सं०] नेत्रहीन; बिना खिड़कीका (मकान)।

अलोना—वि० बिना नमकका; बे-मजा ।

अलोप—पु० [सं०] लुप्त न होना (वर्ण आदिका) । * वि० लुप्त, अदृश्य, गायब ।.

अलोल—वि० [सं०] अचंचल, स्थिर; इच्छारहित ।

अलोलिक*—पु० अचंचलता, स्थिरता ।

अलोलुप—वि० [सं०] जो लालची न हो, लोभरहित ।

अलौकिक—वि० [सं०] जो लोकमें न मिलता हो, लोकोत्तर; अमानुषी; अतिप्रकृत; असाधारण; अद्भुत; विरल ।

अल्प—वि० [सं०] तुच्छ; थोड़ा, कम; छोटा । **—कालीन ऋण**—पु० (शार्ट टर्म लोन) वह ऋण जो थोड़े ही समयके लिए लिया गया हो अतः जो शीघ्र ही (प्रायः ५-१० वर्षोंके भीतर) अदा कर दिया जाय । **—जीवी (विन्)**—वि० अल्पायु । **—ज्ञ**—वि० थोड़ा जाननेवाला; मूर्ख । **—धी**—वि० थोड़ी बुद्धि रखनेवाला, मूर्ख । **—प्राण**—पु० प्रत्येक व्यंजन वर्गका पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल, व (व्या०) । **—बुद्धि,—मति**—वि० दे० 'अल्पधी' । **—भाषी (षिन्)**—वि० कम बोलनेवाला । **—भोग योजना**—स्त्री० (ऑस्टेरिटी स्कीम) आवश्यक वस्तुओंका कम प्रयोग करने, कष्ट उठाते हुए थोड़ेसे पदार्थोंसे ही काम चला लेनेपर जोर देनेवाली योजना, मितोपभोग योजना, कष्ट-सहन योजना । **—मत**—पु० छोटा, अल्पसंख्यक पक्ष या समुदाय, बहुमतका उलटा । **—वयस,—वयस्क**—वि० छोटी उम्रका, कमसिन । **—वादी सदस्य**—पु० (बैकबेंचर) दे० 'क्वचिद्भाषी सदस्य ।' **—विराम**—पु० अर्थबोधके लिए किसी शब्दके बाद थोड़ा ठहरना; इसका चिह्न (,) । **—संख्य,—संख्यक**—वि० कम जनसंख्यावाला (समुदाय) । **—संतोषी (षिन्)**—वि० थोड़ेसे संतोष कर लेनेवाला । **—सूचित प्रश्न**—पु० (शार्ट नोटिस क्वेश्चन) संसद् या विधानसभा आदिमें पूछा जानेवाला ऐसा प्रश्न जिसके लिए सामान्यसे कम सूचना दी गयी हो ।

अल्पशः—अ० [सं०] थोड़-थोड़ा करके ।

अल्पायु (स्)—वि० [सं०] जिसकी आयु थोड़ी हो, छोटी उम्रमें मरनेवाला ।

अल्पावकाश—पु० [सं०] (रिसेस) विद्यालयों, न्यायालयों या खेल आदिमें बीचमें थोड़े समयके लिए जलपान या विश्रामके लिए मिलनेवाला अवकाश ।

अल्पाहार, अल्पाहारी (रिन्)—वि० [सं०] जिसका आहार थोड़ा या संयत रहता हो ।

अल्पिष्ठ—वि० [सं०] (मिनिमम) कमसे कम; न्यूनतम ।

अल्पीकरण—पु० [सं०] (डेरोगेशन) अधिकार, प्रतिष्ठा, महत्त्व, शक्ति आदिका घट जाना या उसमें कमी हो जाना ।

अल्ल—पु० वंश या कुलका नाम (तिवारी, पाँड़े, मिसिर इ०)।

अल्लम-गल्लम—पु० अंड-बंड, अनाप-शनाप ।

अल्ला—पु० [अ०] दे० 'अल्लाह' ।

अल्लाना*—अ० क्रि० चिल्लाना ।

अल्लाह—पु० [अ०] परमेश्वर, खुदा ।—**अल्लाह**—अ० विस्मय और श्लाघा-सूचक उद्गार ।

अल्लाहो अकबर—अ० [अ०] ईश्वर महान् है ।

अल्हजा*—पु० इधर-उधरकी बात, गप ।

अल्हड़—वि० बालोचित सरलताके साथ मस्त और लापरवाह; दुनियादारी न जाननेवाला; भोला । **—पन**—पु० अल्हड़ स्वभाव; भोलापन और लापरवाही ।

अल्हर*—वि० दे० 'अल्हड़' ।.

अवंति, अवंती—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगर, आधुनिक उज्जैन; मालव जनपद ।

अवंतिका—स्त्री० [सं०] उज्जैन; उज्जैनकी भाषा ।

अवंश—वि० [सं०] निःसंतान । पु० नीच या खराब कुल ।

अव—उप० [सं०] यह दूर या नीचे होने, निश्चय, व्याप्ति, अल्पता, ह्रास, ज्ञान आदिका बोध कराता है ।

अवकर—पु० [सं०] बहारनेसे निकली हुई धूल आदि, कूड़ा। **—पात्र**—पु० (डस्टबिन) झाड़ने-बुहारनेसे निकला हुआ कूड़ा रखनेकी टोकरी, अवकरी ।

अवकरी—स्त्री० (डस्टबिन) 'अवकर-पात्र' ।

अवकलन—पु० [सं०] देखना; जानना; ग्रहण ।

अवकलना*—अ० क्रि० सूझना; समझमें आना ।

अवकलित—वि० [सं०] देखा हुआ; ज्ञात; गृहीत ।

अवकाश—पु० [सं०] स्थान; शून्य स्थान; अंतर, व्यवधान, फासला; अवसर, दरार, छिद्र; गुंजाइश, फुरसत, छुट्टी; दृष्टिपात । **—ग्रहण**—पु० काम या नौकरीसे अलग होना, पेंशन लेना, रिटायर होना ।**—प्राप्त**—वि० जो काम या नौकरीसे अलग हो चुका हो; 'रिटायर्ड' ।

अवकिरण—पु० [सं०] बिखेरना; दे० 'अवकर' ।

अवकीर्ण—वि० [सं०] बिखेरा हुआ; फैलाया हुआ; चूर किया हुआ; ध्वस्त; जिसका ब्रह्मचर्य व्रत भंग हो गया हो।

अवक्खन*–पु० दे० 'अवेक्षण'।

अवक्तव्य–वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो, अश्लील; अनुचित; निंद्य; असत्य; वर्णनातीत।

अवक्त्र–वि० [सं०] बिना मुँहका (फोड़ा, बरतन)।

अवक्रम–पु० [सं०] नीचे आना, गिराव, अधोगमन। **–करना**–स० क्रि० (सूपरसीड) पहले नियुक्त किये हुए किसी व्यक्तिके स्थानपर और किसीको नियुक्त करना; किसीका स्थान ग्रहण करना, अधिक्रांत होना; अपने उच्चतर अधिकारसे (किसी आदेशादिको) व्यर्थ बना देना।

अवक्रय–पु० [सं०] मूल्य; भाड़ा; उजरत; कर, महसूल; किरायेपर देना।

अवक्रांति–स्त्री० [सं०] दे० 'अवक्रम'।

अवक्रोश–पु० [सं०] कोसना; शाप देना; निंदा।

अवक्षय–पु० [सं०] नाश, बर्बादी।

अवक्षेप–पु० [सं०] लांछन; निंदा; आक्षेप; आपत्ति, उज्र; (प्रेसिपिटेट) वह अवशिष्ट पदार्थ जो छन्ना-पत्रादिकी सहायतासे किसी द्रवके छाननेपर छन्ना-पत्रके ऊपर रह जाता है।

अवगणित–वि० [सं०] अवज्ञात; तिरस्कृत; पराभूत; निंदित।

अवगत–वि० [सं०] जाना हुआ, ज्ञात; गया या गिरा हुआ।

अवगतना*–स० क्रि० सोचना, विचारना।

अवगति–स्त्री० [सं०] ज्ञान, बोध; बुरी गति।

अवगारना*–स० क्रि० समझाना।

अवगाह–पु० [सं०] पानीमें उतरकर नहाना; भीतर पैठना, डूबना; थाह लेना; खोज, छानबीन; नहानेका स्थान; खतरेकी जगह; कठिनाई। *वि० अथाह; कठिन।

अवगाहन–पु० [सं०] अवगाहकी क्रिया।

अवगाहना*–स० क्रि० विलोड़ना; हलचल मचाना; पार करना; देखना; विचारना; छानबीन करना; ग्रहण करना। अ० क्रि० डुबकी लगाना; जलमें घुसकर स्नान करना।

अवगाह्य–वि० [सं०] नहाने या डुबकी लगाने योग्य।

अवगुंठन–पु० [सं०] घूँघट; स्त्रीका माथा और मुँह ढकना, घूँघट निकालना; बुर्का; पर्दा।

अवगुंठनवती–वि० स्त्री० [सं०] घूँघटवाली।

अवगुंठित–वि० [सं०] ढका, छिपा हुआ; चूर्णित।

अवगुंफित–वि० [सं०] गूँथा हुआ; बुना हुआ।

अवगुण–पु० [सं०] दोष, ऐब, बुराई।

अवगुन–पु० दे० 'अवगुण'।

अवग्रह–पु० [सं०] रुकावट, बाधा; संधि-विच्छेद (व्या०); शब्दके बीचमें ए और ओ के बाद आनेवाला लुप्त 'अ'; अवर्षण; दंड (अनुग्रह का उलटा); हाथीका ललाट; प्रकृति, स्वभाव; कोसना; भ्रांत मत।

अवघट–वि० विकट, दुर्गम।

अवघर्षण–पु० [सं०] रगड़ना; पीसना; साफ करना।

अवघात–पु० [सं०] मारना; आघात करना; धान आदिको कूटना; अपमृत्यु।

अवचट–पु० दे० 'औचट'। अ० अचानक।

अवचनीय–वि० [सं०] कहने योग्य नहीं, अश्लील।

अवचय, अवचाय–पु० [सं०] पुष्पादिका चयन; तोड़कर इकट्ठा करना।

अवचित–वि० [सं०] बटोरा हुआ; अधिवसित।

अवचूर्णित–वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ।

अवचेतना–स्त्री० [सं०] अंतःसंज्ञा; अर्द्ध चेतना।

अवच्छिन्न–वि० [सं०] अलगाया हुआ; सीमित; सविशेषण।

अवच्छेद–पु० [सं०] खंड, अंश; परिच्छेद; बिलगाव; सीमा; (शब्दार्थकी) सीमा बाँधना; निश्चय; पदार्थका वह गुण जो उसे औरोंसे अलग कर दे; व्याप्ति।

अवच्छेदक–वि० [सं०] अवच्छेद करनेवाला। पु० विशेषण; सीमा।

अवच्छेदन–पु० [सं०] काटकर अलग करना, विभाजन, हद बाँधना इ०।

अवछंग–पु० दे० 'उछंग'।

अवजय–स्त्री० [सं०] पराजय।

अवजित–वि० [सं०] पराजित, विजित; तिरस्कृत।

अवज्ञा–स्त्री० [सं०] अनादर; अपमान; उपेक्षा, किसी आज्ञा या कानूनको न मानना; अर्थालंकार जिसमें एकके गुण-दोषसे दूसरेके गुण-दोषका न होना दिखलाया जाय।

अवज्ञात–वि० [सं०] जिसकी अवज्ञा की गयी हो; तिरस्कृत।

अवज्ञेय–वि० [सं०] अवज्ञाके योग्य।

अवटना–स० क्रि० दे० 'औटना'। **मु०–(टि) मरना*** –कष्ट उठाना, ठोकरें खाना।

अवडेर†–पु० झंझट, बखेड़ा।

अवडेरना*–स० क्रि० रहने न देना, उदवासना; परेशान करना।

अवडेरा–वि० झंझटवाला; चक्करदार; भद्दा।

अवतंस–पु० [सं०] बाली; करनफूल; टीका; मुकुट; भूषण; हार; श्रेष्ठ व्यक्ति; †दूल्हा।

अवतंसक–पु० [सं०] बाली; करनफूल; आभूषण।

अवतरण–पु० [सं०] उतरना; नीचे आना या जाना; नहानेके लिए जलमें उतरना; पार होना; देवादिका पार्थिव रूपमें प्रकट होना; नदीका घाट; घाटकी सीढ़ी; अनुवाद; भूमिका; (कोटेशन) किसीके कहे हुए शब्दों, संदेश आदिको (उलटे विराम चिह्नोंके बीच) उद्धृत करना; उद्धृत अंश, उद्धरण; एकाएक गायब हो जाना; तीर्थ। **–चिह्न**–पु० अवतरित अंशके ठीक पहले तथा अंतमें दिये जानेवाले उलटे विराम-चिह्न। **–पथ**–पु० (रनवे) वायुयानोंके लिए बना वह लंबा-सा पथ जिसपर उन्हें ऊपर उठनेके पूर्व या नीचे उतरनेके बाद कुछ दूरतक चलना पड़ता है। **–भूमि**–स्त्री० (लैंडिंग-ग्राउंड) हवाई जहाजोंके लिए आकाशसे नीचे उतरनेका स्थान।

अवतरणिका–स्त्री० [सं०] ग्रंथारंभमें सरस्वती आदिकी संक्षिप्त वंदना; प्रस्तावना; परिपाटी।

अवतरना*–अ० क्रि० अवतार लेना; प्रकट होना; उत्पन्न होना।

अवतरित–वि० उतरा हुआ; अवतारके रूपमें उत्पन्न; पार पहुँचा हुआ; उद्धृत।

अवतान–पु० [सं०] फैलाना; कमानकी डोरी ढीली करना; मुँह लटकाना; पौधेका फैलना; आवरण; चँदोवा।

अवतार–पु० [सं०] उतरना; नीचे आना; किसी देवता

या ईश्वरका मनुष्यादिके रूपमें जन्म लेना या वैसी अभिव्यक्ति; विष्णुके १० या २४ अवतारोंमेंसे कोई एक; विशिष्ट व्यक्ति; सरोवर; भूमिका; पार करना; * सृष्टि, रचना। **–वाद**–पु० धर्मग्लानि होनेपर उसकी पुनः स्थापनाके लिए ईश्वर पृथ्वीपर जन्म लिया करता है, यह मत या विश्वास।

अवतारण–पु० [सं०] उतारना; नीचे लाना; भूत-प्रेतका आवेश; अनुवाद; भूमिका; वस्त्रका छोर; उद्धरण।

अवतारणा–स्त्री० [सं०] दे० ‘अवतारण’।

अवतारना*–स० क्रि० जन्म देना; पैदा करना।

अवतारी (रिन्)–वि० [सं०] अवतार-लेनेवाला; जिसने किसी देवताका अवतार ग्रहण किया है।

अवतीर्ण–वि० [सं०] उतरा हुआ, नीचे आया हुआ; प्रादुर्भूत; अवतारके रूपमें उत्पन्न; जलमें उतरा या स्नान किया हुआ; पार गया हुआ।

अवदंश–पु० [सं०] उत्तेजक या प्यास उत्पन्न करनेवाली चटपटी चीज जो मद्यपानके समय खायी जाती है, गजक।

अवदंस–पु० दे० ‘अवदंश’।

अवदरण–पु० [सं०] फोड़ना; फाड़ना; अलग करना।

अवदात–वि० [सं०] उज्ज्वल; निर्मल; सुंदर; पीला; गुणविशिष्ट।

अवदान–पु० [सं०] प्रशस्त कर्म; उज्ज्वल कर्म; पराक्रम; उल्लंघन; विभाजन; खंड; वीरणमूल; (कांट्रिब्यूशन) दे० ‘अंशदान’, योगदान।

अवदान्य–वि० [सं०] पराक्रमी; कंजूस।

अवदारण–पु० [सं०] चीरना; विभाजन करना; खोदना; काटकर टुकड़े-टुकड़े करना; कुदाल, खंता।

अवद्य–वि० [सं०] निंद्य; त्याज्य; अधम; पापी; दोषी; चर्चाके अयोग्य। पु० अपराध; पाप; दोष; निंदा; लज्जा।

अवध–पु० [सं०] कोशल; अयोध्या; उत्तर प्रदेशका एक अंश; वध न करना। वि० जो वधके योग्य न हो। * स्त्री० दे० ‘अवधि’।

अवधा–स्त्री० (सेगमेंट आफ ए सरकिल) वह आकृति जो किसी जीवा और उस जीवाके एक ओर के चापसे घिरी हो।

अवधाता–पु० [सं०] (केयरटेकर) वह व्यक्ति जो असली मालिककी अविद्यमानतामें मकान आदिकी निगरानी करे।

अवधात्री सरकार–स्त्री० (केयरटेकर गवर्नमेंट) वह सरकार जो निर्वाचन आदि होनेके वाद नयी सरकारके कार्यभार ग्रहण कर लेनेतक शासन-व्यवस्थाकी निगरानी करती रहे।

अवधान–पु० [सं०] ध्यान; मनोयोग; किसी विषयमें मनकी एकाग्रता; चौकन्नापन; (केयर, चार्ज) किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्यकी देखभाल करने या उसपर नजर रखनेका कार्य; * गर्भ।

अवधानी (निन्)–वि० [सं०] ध्यान देनेवाला; मनोयोगयुक्त।

अवधायक अधिकारी–पु० (आफिसर इनचार्ज) वह अधिकारी जिसकी देखभाल या अधीनतामें कोई कार्य अथवा कार्यालय हो।

अवधायक सरकार–स्त्री० (केयरटेकर गवर्नमेंट) दे० ‘अवधात्री सरकार’।

अवधारक–वि० [सं०] अवधारण करनेवाला।

अवधारण–पु० [सं०] निश्चय करना; हद बाँधना; शब्दार्थकी सीमा बाँधना; (शब्दविशेषपर) जोर देना।

अवधारणा–स्त्री० [सं०] (कॉन्सेप्शन) मनमें किसी धारणा, कल्पना या विचारका उदय होना, बनना या स्थिर होना।

अवधारणीय–वि० [सं०] निश्चय करने योग्य; विचारणीय।

अवधारना*–स० क्रि० ग्रहण करना, धारण करना।

अवधारित–वि० [सं०] निश्चित; सुज्ञात।

अवधार्य–वि० [सं०] दे० ‘अवधारणीय’

अवधि–स्त्री० [सं०] सीमा; अंतिम सीमा; नियत काल, मीयाद। अ० तक। **मु०–देना, –धरना, –बदना**–समय नियत करना, मुद्दत बाँधना।

अवधिमान*–पु० समुद्र।

अवधी–वि० अवधसे संबंध रखनेवाला। स्त्री० अवधकी बोली; * दे० ‘अवधि’।

अवधू*–पु० दे० ‘अवधूत’।

अवधूक–वि० [सं०] पत्नीरहित।

अवधूत–पु० [सं०] संन्यासी; साधुओंका एक भेद।

अवधेय–वि० [सं०] ध्यान देने योग्य; रखने योग्य; जानने योग्य।

अवधेश–पु० [सं०] अवध-नरेश; दशरथ।

अवध्य–वि० [सं०] वधके अयोग्य।

अवन–पु० [सं०] रक्षण; प्रसन्न करना। * स्त्री० रास्ता; भूमि।

अवनत–वि० [सं०] झुका हुआ; गिरा हुआ; पिछड़ा हुआ; हीन; अस्त होता हुआ; विनीत।

अवनति–स्त्री० [सं०] झुकाव; गिराव; अधःपतन; उतार; अस्त होना; दंडवत; विनम्रता।

अवनद्ध–वि० [सं०] निर्मित; ढका हुआ; बँधा हुआ।

अवना*–अ० क्रि० आना।

अवनि, अवनी–स्त्री० [सं०] धरती, जमीन। **–सुत**–पु० मंगल ग्रह। **–प, –पति, –पाल, –भृत्**–पु० राजा।

अवनींद्र–पु० [सं०] राजा।

अवनीश, अवनीश्वर–पु० [सं०] राजा।

अवपात–पु० [सं०] अधःपतन; झपट्टा; रंध्र; गर्त।

अवबाहुक–पु० [सं०] भुजस्तंभ, भुजाकी गति रुक जानेका रोग।

अवबोध–पु० [सं०] जागना; ज्ञान, बोध; विवेक; जताना।

अवबोधक–वि० [सं०] ज्ञापक। पु० जगानेवाला–सूर्य; वंदी; चौकीदार; शिक्षक; विचार।

अवबोधन–पु० [सं०] वताना, जताना; ज्ञान।

अवभृथ–पु० [सं०] यज्ञका अंत; यज्ञके अंतमें शुद्धिके लिए किया जानेवाला स्नान; मुख्य यज्ञकी समाप्तिपर दोष-त्रुटियोंके प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला यज्ञ। **–स्नान**–पु० यज्ञकी पूर्णाहुतिके बाद किया जानेवाला स्नान।

अवम–वि० [सं०] अंतिम; अधम। पु० चांद्र और सौर दिनका अंतर; पितरोंका एक वर्ग। **–तिथि**–स्त्री० वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।

अवमर्दन–पु० [सं०] कुचलना; दमन; उत्पीड़न; मालिश करना।

अवमर्दित–वि० [सं०] रौंदा हुआ; मर्दन किया हुआ।

अवमर्श–पु० [सं०] स्पर्श; संपर्क। **–संधि**–स्त्री० नाट्य-

शास्त्रके अनुसार पाँच प्रकारकी संधियोंमेंसे एक ।

अवमर्ष-पु० [सं०] आलोचना; नाटककी पाँच मुख्य संधियों-(मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्ष और निर्वहण) मेंसे एक।

अवमान-पु० [सं०] अवज्ञा, अपमान; तिरस्कार; (कंटेम्प्ट) न्याय-व्यवस्थामें हस्तक्षेप; शासकादिके आदेशोंकी अवज्ञा ।

अवमानन-पु०, **अवमानना**-स्त्री० [सं०] तिरस्करण ।

अवमानित-वि० [सं०] अपमानित; तिरस्कृत ।

अवमूल्यन-पु० [सं०] (डीवेलुएशन) किसी सरकार द्वारा अन्य देश या देशोंकी मुद्राओंकी तुलनामें अपने देशकी मुद्राका मूल्य घटा दिया जाना, मुद्राका विनिमय मूल्य या सापेक्ष मूल्य गिरा देना ।

अवमूल्यपर-अ० (बिलो पार) निर्धारित या अंकित मूल्यसे कम दामपर ।

अवयव-पु० [सं०] शरीर या शरीरका कोई भाग, (हाथ-पाँव आदि) अंग, (वस्तुका) अंश; तर्क या वाक्यके पाँच अंगों (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) मेंसे कोई एक; उपकरण ।

अवयवार्थ-पु० [सं०] शब्दके अवयवों(प्रकृति-प्रत्यय)से निकलनेवाला अर्थ ।

अवयस्क-वि० [सं०] जो अभी प्राप्तवयस्क न हो, नाबालिग (माइनर)।

अवर-वि० [सं०] छोटा; दरजे, कोटि, गुण आदिमें नीचा; हीन; पीछे होनेवाला; बादका; अंतिम; * और, दूसरा; बलहीन। **-सदन**-पु० (लोअर हाउस) दे० 'निम्न सदन', अवरागार ।

अवरत-वि० [सं०] रुका हुआ; निवृत्त; विरामयुक्त । * पु० आवर्त्त, पानीका भँवर ।

अवरागार-पु० [सं०] (लोअर हाउस) संसद या विधानमंडलका निम्न सदन-लोकसभा, कामंस सभा, प्रतिनिधिसभा, विधानसभा, इ०; प्रथम सदन ।

अवराधक*-वि० आराधना करनेवाला ।

अवराधन*-पु० आराधन ।

अवराधना*-स० क्रि० पूजा करना; सेवा करना ।

अवराधी*-वि० दे० 'अवराधक' ।

अवरार्ध-वि० [सं०] उत्तरार्द्ध । पु० पीछे या नीचेका आधा भाग ।

अवरुद्ध-वि० [सं०] रुका या रोका हुआ; प्रच्छन्न; घिरा हुआ; बंद ।

अवरुद्धा-स्त्री० [सं०] रखेली ।

अवरूढ-वि० [सं०] उतरा हुआ, आरूढका उलटा ।

अवरेखना*-स० क्रि० उरेहना, तसवीर खींचना; देखना; जानना; सोचना ।

अवरेब-पु० कपड़ेकी तिरछी काट; वक्र गति; * उलझन, कठिनाई; झगड़ा; व्यंग्य, उक्तिकी वक्रता । **-दार**-वि० तिरछी काटका (कपड़ा) ।

अवरोक्त-वि० [सं०] जिसका अंतमें या बादमें उल्लेख हुआ हो (लैटर) ।

अवरोध-पु० [सं०] रोक, अटकाव; चारों तरफ डाला गया घेरा; आवरण, ढक्कन; बाड़ा; अंतःपुर; किसी राजाकी रानियोंका समूह ।

अवरोधक-वि० [सं०] घेरा डालनेवाला; रोकनेवाला ।

अवरोधन-पु० [सं०] घेरना, घेरकर रोक रखना; घेरा, रोक ।

अवरोधना*-स० क्रि० रोकना, मना करना; बाधा डालना।

अवरोधिक-पु० [सं०] अंतःपुरका प्रहरी । वि० बाधा डालनेवाला; रोक डालनेवाला ।

अवरोधी (धिन्)-वि० [सं०] दे० 'अवरोधक' ।

अवरोप-पु० [सं०] (डिस्चार्ज) किसी आरोप या अभियोगसे मुक्त करना या होना ।

अवरोह-पु० [सं०] उतार, ऊपरसे नीचे आना; संगीतमें स्वरोंके ऊपरसे नीचे आनेका क्रम; बरोह ।

अवरोहण-पु० [सं०] उतरना, नीचे आनेकी क्रिया; ऊपर जाना, चढ़ना ।

अवरोहना*-अ० क्रि० उतरना; चढ़ना । स० क्रि० रोकना; अंकित करना ।

अवरोही (हिन्)-वि० [सं०] नीचे आनेवाला । पु० ऊपरसे नीचे आनेवाला स्वर; वटवृक्ष ।

अवर्ण-वि० [सं०] बिना रंगका; बदरंग; वर्ण-धर्म-रहित ।

अवर्ण्य-वि० [सं०] वर्णनके अयोग्य । पु० उपमान ।

अवर्त्त*-पु० दे० 'आवर्त्त' ।

अवर्धमान-वि० [सं०] न बढ़नेवाला ।

अवर्ष, अवर्षण-पु० [सं०] वर्षा न होना, सूखा ।

अवलंघना*-स० क्रि० लाँघना ।

अवलंब-पु० [सं०] सहारा, आश्रय; भरोसा; लकुट ।

अवलंबन-पु० [सं०] सहारा लेना; अपनाना; अवलंब ।

अवलंबना*-स० क्रि० आश्रय लेना ।

अवलंबित-वि० [सं०] आश्रित, मुनहसर ।

अवलंबी (बिन्)-वि० [सं०] अवलंबन करनेवाला ।

अवलि*-स्त्री० दे० 'अवली' ।

अवली-स्त्री० पाँत; समूह; नवान्नके लिए खेतसे काटकर लाया हुआ कुछ अंश ।

अवलीक-वि० निष्पाप; दोषरहित; शुद्ध ।

अवलेखना*-स० क्रि० खुरचना; चिह्न करना ।

अवलेखनी-स्त्री० [सं०] कंघी; ब्रश ।

अवलेप-पु० [सं०] लेप, उबटन, चंदन आदि; लेप करना ।

अवलेपन-पु० [सं०] लेपन; उबटन, तेल आदि; लेपनकी क्रिया; लगाव; घमंड; चंदन वृक्ष ।

अवलेह-पु० [सं०] चटनी; चाटकर खायी जानेवाली दवा; माजून ।

अवलेहन-पु० [सं०] चाटना; चटनी ।

अवलोक, अवलोकन-पु० [सं०] देखना; अनुसंधान; निरीक्षण; दृष्टि; दृष्टिपात ।

अवलोकक-वि० [सं०] देखनेकी इच्छा रखनेवाला (गुप्तचरके रूपमें) ।

अवलोकना*-स० क्रि० देखना; जाँचना ।

अवलोकनि*-स्त्री० देखनेका ढंग, दृष्टि; चितवन ।

अवलोकनीय-वि० [सं०] देखने योग्य ।

अवलोकित-वि० [सं०] देखा हुआ । पु० एक बुद्ध; चितवन ।

अवलोक्य-वि० [सं०] देखने योग्य ।

अवलोचना*–स० क्रि० निवारण करना; दूर-करना।

अवलोप–पु० [सं०] काटकर अलग करना; नष्ट करना; दाँत काटना; चूमना।

अवश–वि० [सं०] बे-बस, लाचार; इंद्रियोंका दास; जो दूसरेके वशमें न हो; निरंकुश।

अवशप्त–वि० [सं०] अभिशप्त, जिसे शाप दिया गया हो।

अवशिष्ट–वि० [सं०] बचा हुआ, बाकी, फाजिल। **–शक्तियाँ**–स्त्री० (रेसीडुअरी पावर्स) किसी संविधान आदिमें जिन शक्तियों या अधिकारोंकी स्पष्ट रूपसे व्याख्या या चर्चा कर दी गयी हो, उनके बाद बची हुई अन्य सब शक्तियाँ या अधिकार।

अवशीर्ष–वि० [सं०] जिसका सिर झुका हो। पु० एक नेत्ररोग।

अवशेष–पु०[सं०] वह जो बच रहे या बाकी रहे; समाप्ति। वि० बचा हुआ; समाप्त।

अवशेषित–वि० [सं०] दे० 'अवशिष्ट'।

अवश्यंभावी (विन्)–वि० [सं०] अटल, जिसका होना निश्चित हो।

अवश्य–वि०[सं०] जो वशमें न किया जा सके; अनिवार्य। अ० जरूर, निश्चय।

अवश्यमेव–अ० [सं०] निस्संदेह, यकीनन्।

अवस*–अ० दे० 'अवश्य'। वि० लाचार।

अवसन्न–वि० [सं०] सुस्त, बे-दम; उदास, खिन्न; अपना कार्य करनेमें असमर्थ; नाशोन्मुख।

अवसर–पु० [सं०] मौका; सुयोग; अवकाश; अर्थालंकारका एक भेद। **–ग्रहण**–पु० (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाश-ग्रहण'। **–प्राप्त**–वि० (रिटायर्ड) नौकरीकी अवधि या सेवाकाल समाप्त हो जानेपर कार्यसे पृथक् होनेवाला, जिसने नौकरी आदिसे अवकाश ग्रहण कर लिया हो। **–वाद**–पु० (अपॉरच्यूनिज्म) प्रत्येक सुअवसरसे लाभ उठानेकी प्रवृत्ति या नीति। **–वादी**–वि० (अपारच्यूनिस्ट) जो किसी स्थिर नीतिपर दृढ़ न रहकर प्रत्येक उपयुक्त अवसरसे पूरा-पूरा लाभ उठानेका प्रयत्न करे।

अवसर्ग–पु० [सं०] मुक्त करना; ढीला करना, दंड आदि में कमी कर देना; रोक न लगाना।

अवसर्पण–पु० [सं०] नीचे उतरना, अधोगमन।

अवसाद–पु० [सं०] सुस्ती, शिथिलता; थकावट; उदासी; नाश; अंत; हार (कानून)।

अवसान–पु० [सं०] विराम; समाप्ति; मृत्यु; हद।

अवसि*–अ० अवश्य।

अवसित–वि० [सं०] समाप्त; गत; ज्ञात; परिपक्व; निश्चित; माँड़ा हुआ (अनाज); संबद्ध; अ-वसित = न बसा हुआ।

अवसेख*–पु० दे० 'अवशेष'।

अवसेचन–पु० [सं०] सींचना; छिड़कना; सींचने इत्यादिके काममें आनेवाला पानी; पसीना निकलना; पसीना निकालनेकी क्रिया; जोंक, फस्द आदिके जरिये रक्त निकालना।

अवसेर*–स्त्री० देर; उलझन; क्लेश–'गाइनके अवसेर मिटावहु' सू०; चिंता; व्याकुलता।

अवसेरना*–स० क्रि० कष्ट देना, परेशान करना।

अवसेषित*–वि० दे० 'अवशिष्ट'।

अवस्कंदक–पु० [सं०] वह जो लोगोंको अकारण, राह चलते मारे-पीटे, गुंडा।

अवस्त्र–वि० [सं०] वस्त्रहीन, नग्न।

अवस्था–स्त्री० [सं०] हालत, दशा; देहादिकी कालकृत अवस्था–लड़कपन, जवानी, बुढ़ापा आदि; उम्र; स्थिति; स्थिरता; आकृति; भग। **–चतुष्टय**–पु० जीवनकी चार अवस्थाएँ–बाल्य, कौमार, यौवन और वार्द्धक्य। **–त्रय**–पु० जीवात्मा या चित्तकी तीन अवस्थाएँ–जागर्ति, स्वप्न, सुषुप्ति। **–दशक**–पु० प्रेमीकी दस अवस्थाएँ–अभिलाष; चिंता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, संलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण। **–द्वय**–पु० जीवनकी दो अवस्थाएँ–सुख और दुःख।

अवस्थान–पु० [सं०] ठहरना; रहना; रहने, ठहरनेका स्थान, घर; (स्टेशन) यात्रा-मार्ग तय करते समय रेलगाड़ी, बस आदिके बीच-बीचमें कुछ समयतक रुकनेकी जगह जहाँ यात्रियों या मालके चढ़ने-चढ़ानेकी व्यवस्था हो; वह स्थान जहाँ सैनिक या पुलिसके आदमी रक्षा आदिकी व्यवस्थाके लिए रखे गये हों या रहते हों; (स्टेज) दे० 'प्रक्रम'; मौका; अवस्थितिकी विशेष परिस्थिति; ठहरनेका काल।

अवस्थापन–पु० [सं०] रखना; बिठाना; स्थापित करना।

अवस्थित–वि०[सं०] ठहरा हुआ; टिका हुआ; मौजूद; खड़ा।

अवस्थिति–स्त्री० [सं०] अवस्थान।

अवहार–पु० [सं०] अपहरण; लौटाना; रणविराम; (रिबेट) प्राप्य धन (महसूल आदि) का विशेष स्थितिमें कुछ अंश छोड़ दिया जाना, छूट।

अवहित्थ–पु०, **अवहित्था**–स्त्री० [सं०] एक संचारी भाव जिसमें लज्जा, भय आदि छिपानेका प्रयत्न होता है; भावगोपन।

अवहेलना, अवहेला–स्त्री०[सं०] अनादर, अवज्ञा; उपेक्षा।

अवहेलित–वि० [सं०] अवज्ञात; तिरस्कृत।

अवाँ–पु० दे० 'आवाँ'।

अवांछनीय–वि० [सं०] जिसकी चाहना न की जाय, अनभिलषणीय; अप्रिय।

अवांतर–वि० [सं०] बीचमें स्थित, मध्यवर्ती; अंतर्गत; गौण। **–दिशा**–स्त्री० विदिशा, दो दिशाओंके बीचका कोण। **–भेद**–पु० गौण भेद, उपविभाग।

अवाई–स्त्री० आगमन; गहरी जोताई।

अवाक् (च्)–वि० [सं०] मौन; चुप; स्तब्ध। पु० ब्रह्म। **–श्रुति**–वि० गूँगा और बहरा।

अवागी*–वि० मौन।

अवाङ्मुख–वि० [सं०] अधोमुख, जिसका मुख नीचेकी ओर हो; लज्जित।

अवाच्य–वि० [सं०] न कहने योग्य; बात करनेके अयोग्य; अस्पष्ट; दक्षिणी। पु० अपशब्द; न कहने योग्य बात।

अवाज*–स्त्री० दे० 'आवाज'।

अवाजी*–वि० आवाज़ करनेवाला।

अवाप्ति–स्त्री० [सं०] प्राप्ति।

अवाप्य–वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; न काटने योग्य (केशादि)।

अवाय*–वि० अनिवार्य; उद्धत, निरंकुश ।

अवार–पु० [सं०] नदीका इधरका किनारा, पारका उलटा; इस ओर ।

अवारजा, अवारिजा–पु० [फा०] खतियौनी; जमाखर्चकी बही; गोशवारा, रोजनामचा ।

अवारणीय–वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके, लाइलाज ।

अवारना*–स० क्रि० रोकना, वारण करना ।

अवारा–वि० दे० 'आवारा' ।

अवास*–पु० दे० 'आवास' ।

अविकच, अविकचित–वि० [सं०] बंद, अविकसित ।

अविकत्थ, अविकत्थन–वि० [सं०] घमंड न करनेवाला, डींग न मारनेवाला ।

अविकल–वि० [सं०] जो घटाया-बढ़ाया या बदला न गया हो, ज्योंका त्यों; व्यवस्थित; जो बे-चैन न हो, शांत ।

अविकल्प–वि० [सं०] विकल्परहित; अपरिवर्तनीय; निश्चित । पु० विकल्प या संदेहका अभाव ।

अविकार–वि० [सं०] विकार-रहित, न बदलनेवाला ।

अविकारी (रिन्)–वि० [सं०] दे० 'अविकार' ।

अविकार्य–वि० [सं०] जिसमें विकार या परिवर्तन न हो, अपरिवर्तनशील ।

अविकाशी (शिन्), अविकासी (सिन्)–वि०[सं०] जिसका विकास न हो, न खिलनेवाला; न चमकनेवाला ।

अविकृत–वि० [सं०] जो बदला या बिगड़ा न हो ।

अविक्रम–वि० [सं०] शक्तिहीन, कमजोर । पु० भीरुता ।

अविक्रेय–वि० [सं०] जो बिक्रीके लिए न हो ।

अविगत–वि० [सं०] जो गया या बीता न हो, मौजूद; * अज्ञेय; अज्ञात; अविनाशी ।

अविग्रह–वि० [सं०] निराकार, देहरहित; अज्ञात ।

अविचल–वि० [सं०] अचल, स्थिर ।

अविचार–पु०[सं०] अविवेक, नासमझी; अन्याय, अनीति ।

अविचारी (रिन्)–वि० [सं०] विवेकहीन, उचित-अनुचितका विचार न रखनेवाला ।

अविच्छिन्न–वि० [सं०] अविभक्त; जो लगातार हो ।

अविच्छेद–वि० [सं०] विच्छेदरहित । पु० विच्छेद, बिलगावका अभाव ।

अविछीन*–वि० अविच्छिन्न, अटूट ।

अविजन*–पु० दे० 'अभिजन' ।

अविजित–वि० [सं०] जो जीता न गया हो ।

अविज्ञ–वि० [सं०] अजान, अनाड़ी ।

अविज्ञात–वि० [सं०] बे-जाना-समझा; संदिग्ध; अस्पष्ट ।

अविज्ञेय–वि० [सं०] जो पहचाना न जा सके; जो जाना न जा सके; न जानने योग्य । पु० परमेश्वर ।

अविदित–वि० [सं०] अज्ञात; अप्रकट ।

अविद्यमान–वि० [सं०] अनुपस्थित; असत् ।

अविद्या–स्त्री० [सं०] विद्या या ज्ञानका अभाव; विपरीत ज्ञान; भ्रांति; वह भ्रांति जिसके कारण ब्रह्ममें जगत्की प्रतीति होती है, माया, प्रकृति (सांख्य०) । **–कृत,–जन्य**–वि० अविद्यासे उत्पन्न ।

अविधि–वि० [सं०] अवैध, विधिविरुद्ध । स्त्री० विधि या विधानका अभाव ।

अविधिक–वि० [सं०] विधि यानी कानूनके विरुद्ध, (इल्लीगल) ।

अविनय–स्त्री० [सं०] विनय या नम्रताका अभाव; धृष्टता; अशिष्टता; उजड्डपन; घमंड; अपराध । वि० विनयहीन ।

अविनश्वर–वि० [सं०] जिसका नाश न हो । पु० परब्रह्म ।

अविनाभाव–पु० [सं०] अविच्छेद्य संबंध (जैसे आग और धुएँका); संबंध, लगाव ।

अविनाशी (शिन्)–वि०[सं०] नाशरहित, अक्षय,नित्य ।

अविनासी*–वि० दे० 'अविनाशी' । पु० ईश्वर ।

अविनीत–वि०[सं०]अनम्र,अशिष्ट; गुस्ताख, उजड्ड; घमंडी ।

अविनीता–स्त्री० [सं०] कुलटा, व्यभिचारिणी ।

अविभक्त–वि० [सं०] अखंड; साबित, समूचा; एक ।

अविभाज्य–वि० [सं०] जो बाँटा न जा सके । पु० वह राशि जिसका किसी गुणकसे भाग न किया जा सके ।

अविमुक्त–वि० [सं०] अमुक्त, बद्ध ।

अविरत–वि० [सं०] विरामहीन; अनिवृत्त, लगा हुआ; परित्यक्त । अ० लगातार, निरंतर ।

अविरति–स्त्री० [सं०] विरामका अभाव; आसक्ति ।

अविरथा*–अ० नाहक, बेकार ।

अविरल–वि० [सं०] मिला, सटा हुआ; अविरत; घना ।

अविराम–वि० [सं०] विरामहीन । अ० लगातार, बिना ठहरे-सुस्ताये ।

अविरुद्ध–वि० [सं०]जो विरुद्ध न हो, अप्रतिकूल; अनुकूल ।

अविरेचन–पु० [सं०] कब्ज करनेवाली चीज ।

अविरोध–पु० [सं०] विरोधका अभाव, मेल; सामंजस्य ।

अविलंब–वि० [सं०] विलंबरहित । अ० झटपट, तुरत ।

अविलंब्य–वि० [सं०] (अर्जेण्ट) जिसकी ओर तुरन्त ध्यान देना आवश्यक हो; जिसे करने, पूरा करने, भेजने, पहुँचाने आदिमें विलंब न किया जा सके ।

अविलोकना*–स० क्रि० दे० 'अवलोकना' ।

अविवक्षित–वि० [सं०] अनुद्दिष्ट; जिसके विषयमें कहना न हो ।

अविवाहित–वि० [सं०] बिन-ब्याहा, क्वाँरा ।

अविवेक–पु० [सं०] भला-बुरा समझनेकी शक्तिका अभाव; अविचार; नासमझी ।

अविवेकिता–स्त्री० [सं०] अविवेक ।

अविवेकी (किन्)–वि० [सं०] विवेकरहित, नासमझ ।

अविशंक–वि० [सं०] शंकारहित; निडर ।

अविशुद्ध–वि० [सं०] जो शुद्ध न हो, अपवित्र; मिलावटी ।

अविशेष–वि० [सं०] भेदरहित, समान । पु० भेदक धर्मका अभाव, समानता; एकता; सूक्ष्म भूत (सांख्य०) ।

अविश्रंभ–पु० [सं०] विश्वासका अभाव, अविश्वास ।

अविश्रांत–वि० [सं०] न थकनेवाला; अविराम । अ० लगातार ।

अविश्वसनीय–वि० [सं०] जो विश्वासके योग्य न हो ।

अविश्वस्त–वि० [सं०] जिसका विश्वास न हो, संदिग्ध ।

अविश्वास–पु० [सं०] विश्वास न होना, बे-एतबारी; शंका, संदेह । **–प्रस्ताव**–पु० (मोशन ऑफ नो-कानफिडेंस) मंत्रिमंडल या उसके किसी सदस्य अथवा किसी

संस्थाके अध्यक्ष आदिमें विश्वास न रह जानेका प्रस्ताव जो विधानसभा या उक्त संस्थामें पुरःस्थापित किया जाय।

अविश्वासी (सिन्)–वि० [सं०] विश्वास न करनेवाला; श्रद्धाहीन; जो विश्वासके योग्य न हो।

अविष–वि० [सं०] विषहीन; विषहारक; रक्षक। पु० समुद्र; राजा; आकाश।

अविषय–वि० [सं०] जो किसी इंद्रियका विषय न हो, अगोचर; प्रतिपादनके अयोग्य; निर्विषय।

अविसर्गी (र्गिन्)–वि० [सं०] न हटनेवाला, लगातार बना रहनेवाला (ज्वर)।

अविस्तीर्ण–वि० [सं०] जो अधिक न फैलाकर छोटा कर दिया गया हो।

अविस्तृत–वि० [सं०] ठसा हुआ, घना।

अविहड़*–वि० अविनाशी; बीहड़।

अवृथा–अ० [सं०] व्यर्थ नहीं, सफलतापूर्वक।

अवृष्टि–स्त्री० [सं०] अवर्षण, सूखा।

अवेक्षण–पु० [सं०] देखना; निरीक्षण, देख-भाल।

अवेक्षणीय–वि० [सं०] देखने योग्य; निरीक्षण योग्य।

अवेक्षा–स्त्री० [सं०] देखना; ध्यान, खयाल।

अवेज*–पु० बदला।

अवेला–स्त्री० [सं०] अनुपयुक्त समय, कुवेला; चर्वित ताम्बूल या पूग।

अवेश*–पु० दे० 'आवेश'।

अवेस्ता–स्त्री० [पह० ?] पारसियोंकी मूल धर्म-पुस्तक, जेंद-अवेस्ता।

अवैतनिक–वि० [सं०] वेतन न पाने या न लेनेवाला, 'ऑनरेरी'।

अवैदिक–वि० [सं०] वेदविरुद्ध; अवेदोक्त।

अवैद्य–वि० [सं०] जो वैद्य या विद्वान् नहीं है।

अवैध–वि० [सं०] विधिविरुद्ध, (इल्लीगल) कानूनके विरुद्ध, अविहित; विधानविरुद्ध, गैर-आइनी। **–जात**–वि० (इल्लिसिट) अवैध रूपसे उत्पन्न या प्राप्त (सन्तान, आमदनी इ०)। **–निरोधन**–पु० (रांगफुल कनफाइनमेंट) किसी व्यक्तिको अवैध रूपसे रोक रखना, कमरे या घर आदिमें बन्द कर देना। **–प्रेषण**–पु० (स्मगिलंग) चुंगी आदिसे बचानेके लिए (कोई माल) अवैध रूपसे भेजना या मँगाना; अपहरण (कौ०)।

अवैधाचरण–पु० [सं०] (इल्लीगल प्रैक्टिस) विधि या कानूनके विरुद्ध किया जानेवाला व्यवहार या आचरण।

अवैमत्य–पु० [सं०] ऐक्यमत; मतभेदका अभाव।

अव्यक्त–वि० [सं०] अप्रकट, अदृश्य; अज्ञेय; अनाविर्भूत; अज्ञात; अनुच्चार्य; अनिश्चित। पु० मूल प्रकृति; अविद्या; ब्रह्म; आत्मा; सूक्ष्म शरीर; शिव; विष्णु; कामदेव; मूर्ख व्यक्ति; सुषुप्ति अवस्था। **–गति**–वि० अलक्षित गमन करनेवाला। **–राग**–वि० हलका लाल, गुलाबी। **–राशि** –स्त्री० वह राशि जिसका मान निश्चित न हो (बी०ग०)। **–साम्य**–पु० अव्यक्त राशियोंका समीकरण।

अव्यभिचार–पु० [सं०] एकनिष्ठता, वफादारी; नित्य साहचर्य।

अव्यभिचारी (रिन्)–वि० [सं०] अविरोधी, अनुकूल; अपवादरहित; स्थायी, नित्य; सदाचारी।

अव्यय–वि० [सं०] अविकारी; अक्षय; नित्य; कंजूस। पु० वह शब्द जिसका रूप सब वचनों, लिंगों, विभक्तियोंमें एक ही रहे; ब्रह्म; शिव; विष्णु; कंजूसी।

अव्ययित शेष–पु० [सं०] (अनस्पेंट बैलेंस) किसी कामके लिए निर्धारित या जमा किये हुए धनका वह अंश जो व्यय न किये जानेके कारण बच गया हो।

अव्ययीभाव–पु० [सं०] वह समास जिसमें पूर्वपद अव्यय हो; अनश्वरता; व्ययाभाव (निर्धनताके कारण)।

अव्यर्थ–वि० [सं०] व्यर्थ न होनेवाला; सफल; अचूक।

अव्यवसायी (यिन्)–वि० [सं०] उद्यमहीन।

अव्यवस्था–स्त्री० [सं०] नियम, व्यवस्थाका अभाव, बेकायदगी, गड़बड़, बदअमली; शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था।

अव्यवस्थित–वि० [सं०] व्यवस्थाहीन; शास्त्रमर्यादाके विरुद्ध; अस्थिर। **–चित्त**–वि० जिसके विचार बदलते रहें, अस्थिरचित्त।

अव्यवहार्य–वि० [सं०] व्यवहारके अयोग्य, जो काममें न लाया जा सके; जिसके साथ खान-पानका व्यवहार न रखा जा सके, जातिच्युत।

अव्यवहृत–वि० [सं०] जिसका व्यवहार न किया गया हो।

अव्यसन–वि० [सं०] व्यसनहीन, जिसे कोई बुरी लत न लगी हो। पु० व्यसनका अभाव।

अव्याख्यात–वि० [सं०] जिसकी व्याख्या या स्पष्टीकरण न किया गया हो।

अव्याज–वि० [सं०] बिना छल-कपटका। पु० छल-कपटका अभाव; सरलता; ईमानदारी।

अव्यापन्न–वि० [सं०] जो मरा न हो, जीवित।

अव्यापी (पिन्)–वि० [सं०] जो सर्वव्यापी न हो; सीमित, परिच्छिन्न; जो सामान्य न हो, विशेष।

अव्याप्त–वि० [सं०] जो सर्वत्र व्याप्त न हो; परिच्छिन्न।

अव्याप्ति–स्त्री० [सं०] अधूरी व्याप्ति; लक्षणका लक्ष्यपर घटित न होना (न्या०)।

अव्युत्पन्न–वि० [सं०] अकुशल, अदक्ष, अनुभवहीन; जो (शब्द) व्याकरणसे सिद्ध न हो सके; व्युत्पत्तिरहित।

अव्रत–वि० [सं०] शास्त्रविहित नियमों, कर्तव्योंका पालन न करनेवाला, व्रतहीन। पु० व्रतत्याग (जैन)।

अव्वल–वि० [अ०] पहला, प्रथम; सर्वश्रेष्ठ। पु० आदि, आरंभ। **–तो**–पहले तो, प्रथमतः। **मु०–आना,–रहना**–प्रतियोगितामें सर्वप्रथम आना।

अशंक, अशंकित–वि० [सं०] शंकारहित; निर्भय; निरापद।

अशकुन–पु० [सं०] असगुन, अशुभ लक्षण।

अशक्त–वि० [सं०] शक्तिहीन, कमजोर; असमर्थ; अयोग्य।

अशक्ति–स्त्री० [सं०] निर्बलता; असामर्थ्य।

अशक्य–वि० [सं०] जो न हो सके, असाध्य; जो काबूमें न किया जा सके।

अशत्रु–वि० [सं०] शत्रुरहित; जिसका शत्रुओंकी ओरसे विरोध न हो। पु० चंद्रमा; शत्रुरहित होनेकी अवस्था।

अशन–पु० [सं०] भोजन; भोज्य पदार्थ; भक्षण; पहुँचना।

अशनि–पु० [सं०] वज्र, बिजली; अस्त्र; स्वामी; इंद्र; अग्नि।

अशब्द–वि० [सं०] जो शब्दोंमें व्यक्त न हुआ हो; मूक;

शब्दरहित । पु०ब्रह्म ।

अशरण–वि० [सं०] आश्रयहीन, असहाय ।–**शरण**–वि० अशरणको शरण देनेवाला (भगवान्) ।

अशरफ़–वि० [फ़ा०] बहुत शरीफ, उच्चतर ।

अशरफ़ी–स्त्री० [फ़ा०] सोनेका सिक्का, मुहर ।

अशरा–पु० [अ०] मुहर्रमका दसवाँ दिन ।

अशराफ़–पु० [फ़ा०] भले और प्रतिष्ठित लोग (शरीफ़का बहुवचन) ।

अशरीर–वि० [सं०] शरीररहित, निराकार । पु० परमात्मा; कामदेव; संन्यासी ।

अशरीरी (रिन्)–वि० [सं०] शरीरहीन; अपार्थिव । पु० ब्रह्मा; देवता ।

अशर्फी–स्त्री० दे० 'अशरफी' ।

अशस्त्र–वि० [सं०] शस्त्रहीन, निःशस्त्र । पु० शस्त्र नहीं ।

अशांत–वि० [सं०] शांतिरहित, वेचैन, उद्विग्न; अस्थिर; अपवित्र; अधार्मिक ।

अशांति–स्त्री० [सं०] बेचैनी; क्षोभ; खलबली ।

अशालीन–वि० [सं०] विनयहीन, ढीठ ।

अशास्त्रीय–वि० [सं०] शास्त्रविरुद्ध, अविहित ।

अशिक्षित–वि० [सं०] अपढ़; गँवार ।

अशिव–वि० [सं०] अकल्याणकर; अमंगल-सूचक; डरावना । पु० अमंगल; दुर्भाग्य; अहित ।

अशिष्ट–वि० [सं०] शिष्टतारहित, असभ्य, उजड्डु; अविनीत; अधार्मिक; अविहित ।

अशिष्टता–स्त्री० [सं०] अशिष्ट व्यवहार, असभ्यता, उजड्डुपन ।

अशीत–वि०[सं०]ठंढा नहीं,गरम ।–**कर**,–**रश्मि**–पु०सूर्य ।

अशीति–स्त्री० [सं०] ८०, अस्सीकी संख्या ।

अशील–वि० [सं०] शीलरहित, उद्दण्ड । पु० उद्दंडता ।

अशुचि–वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; मैला; काला । स्त्री० अपवित्रता; अपकर्ष ।

अशुद्ध–वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; साफ न किया हुआ; अशोधित; सदोष; गलत ।

अशुद्धि–स्त्री० [सं०] अशुद्धता; गलती; गंदगी ।

अशुन*–पु० अश्विनी नक्षत्र ।

अशुभ–वि० [सं०] अमंगलकारी; अनिष्टसूचक; अपवित्र; भाग्यहीन । पु० अमंगल; पाप; दुर्भाग्य ।

अशुश्रूषा–स्त्री० [सं०] अभिभावककी आज्ञामें न रहनेका अपराध ।

अशून्य–वि० [सं०] खाली नहीं; पूरा किया हुआ । –**शयन**–पु०, –**शयनद्वितीया**–स्त्री०, –**शयनव्रत**–पु० श्रावण कृष्णा द्वितीयाको होनेवाला एक व्रत ।

अशेष–वि० [सं०] संपूर्ण, समूचा; सबका सब; अपार; असंख्य । –**साम्राज्य**–पु० शिव ।

अशोक–वि० [सं०] शोकरहित । पु० एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ लहरदार और सुंदर होती हैं और विशेषकर बंदनवार बाँधनेमें काम आती हैं; कटुक; राजा दशरथका एक मंत्री; मौर्यवंशका एक यशस्वी सम्राट्; विष्णु ।–**पूर्णिमा**–स्त्री० फाल्गुनकी पूर्णिमा । –**वाटिका**–स्त्री० अशोककी बाड़ी; वह बगीचा जहाँ रावणने सीताको कैद कर रखा था ।

अशोकाष्टमी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्ला अष्टमी ।

अशोच–पु० [सं०] चिंताका अभाव; शांति; नम्रता ।

अशोच्य–वि० [सं०] शोक न करने योग्य ।

अशोधित–वि० [सं०] जिसका शोधन या संस्कार न हुआ हो, साफ न किया हुआ । –**शेष**–पु० (अनरिडीम्ड बैलेंस) किसी ऋण आदिका वह बचा हुआ अंश जिसका भुगतान या अदायगी न हुई हो ।

अशोभन–वि० [सं०] असुंदर, अभद्र, न फबनेवाला ।

अशौच–पु० [सं०] अपवित्रता; जन्म-मरणके कारण कुटुंबियों और सपिंड जनोंको लगनेवाली छूत ।

अश्म (न्)–पु० [सं०] पहाड़; पत्थर; चकमक; बादल; सोनामाखी; लोहा । –**ज**–पु० लोहा; गेरू; शिलाजतु । –**जतु**,–**जतुक**–पु० शिलाजतु ।

अश्मरी–स्त्री० [सं०] पथरी नामक रोग ।

अश्र–पु०[सं०] आँसू; रक्त । –**प**–पु० राक्षस, नरभक्षक ।

अश्रद्धा–स्त्री० [सं०] श्रद्धाका अभाव; अविश्वास ।

अश्रांत–वि० [सं०] न थका हुआ, अथक ।

अश्राव्य–वि० [सं०] न सुनने योग्य ।

अश्रु–पु० [सं०] आँसू ।–**कला**–स्त्री० अश्रुबिंदु ।–**गैस**–स्त्री० (टियरगैस) एक तरहकी जहरीली गैस जो आँखोंमें लगनेसे तेज जलन पैदा कर देती है जिससे आँसू निकल पड़ते और देखनेमें कठिनाई होती है (इसका प्रयोग पुलिस द्वारा उपद्रवोन्मुख भीड़को तितर-बितर करने और कभी-कभी युद्धस्थलमें शत्रुसेनाकी बाढ़ रोकनेके लिए किया जाता है) । –**पात**–पु० आँसू गिरना; रोना । –**मुख**–वि० रुआँसा; एकाएक रो पड़नेवाला ।

अश्रुत–वि० [सं०] न सुना हुआ; विद्याहीन, अशिक्षित; अवैदिक । –**पूर्व**–वि० पहले न सुना हुआ; अद्भुत ।

अश्रुति–वि० [सं०] कर्णहीन । स्त्री० न सुनना; विस्मृति ।

अश्लाघ्य–वि० [सं०] प्रशंसाके अयोग्य; निंद्य ।

अश्लिष्ट–वि० [सं०] श्लेषरहित, जिससे एकाधिक अर्थ न निकलते हों; असंयुक्त; असंगत ।

अश्लील–वि० [सं०] भद्दा; ग्राम्य; गंदा; लज्जा, घृणा या अमंगलकी व्यंजना करनेवाला ।

अश्लीलता–स्त्री० [सं०] भद्दापन; ग्राम्यता; रचनामें अश्लील शब्दोंका प्रयोग ।

अश्लेष–वि० [सं०] श्लेषरहित, जिसमें दुहरा अर्थ न हो ।

अश्लेषा–स्त्री० [सं०]एक नक्षत्र ।–**भव**,–**भू**–पु०केतु ग्रह ।

अश्व–पु० [सं०] घोड़ा; ७ की संख्या (सूर्यके रथके घोड़ोंकी संख्या सात मानी गयी है) । –**चिकित्सा**–स्त्री० पशुचिकित्सा-शास्त्र । –**तर**–पु० खच्चर; एक सर्पराज; एक गंधर्ववर्ग । –**दंष्ट्रा**–स्त्री० गोखरू । –**दूत**–पु० घुड़सवार दूत । –**निबंधिक**,–**पाल**,–**पालक**,–**रक्ष**–पु० साईस । –**पति**–पु० घुड़सवार; घोड़ोंका मालिक; भरतके मामा । –**मुख**–पु० किन्नर, गंधर्व । –**मेध**–पु० एक प्रसिद्ध वैदिक यज्ञ जिसे कोई चक्रवर्ती राजा या सम्राट् ही कर सकता था और जिसमें सभी देशोंका भ्रमण करके लौटनेवाले घोड़ेको मारकर उसकी चर्बीसे हवन किया जाता था; एक तान जिसमें षड्ज स्वर नहीं लगता । –**यूप**–पु० अश्वमेधके घोड़ेको बाँधनेका खूँटा । –**वह**,–

वाहक–पु० घुड़सवार। **–वार,–धारक**–पु० घुड़सवार; साईस। **–व्यूह**–पु० घुड़सवार सेनाको सामने और अगल-बगल रखकर रचा हुआ व्यूह। **–शक्ति**–स्त्री० (हार्सपावर) उतनी शक्ति जितनी प्रति सेकंड ५५० पौंड (=६॥। मन) वजनको एक फुट ऊपर उठानेके लिए आवश्यक होती है। **–शास्त्र**–पु० घोड़ेके शुभाशुभ लक्षण बतानेवाला शास्त्र; शालिहोत्र।

अश्वत्थ–पु० [सं०] पीपल; पीपलका गोदा।

अश्वत्थामा (मन्)–पु०[सं०] महाभारतमें कौरवपक्षका एक महारथी, द्रोणाचार्यका पुत्र; महाभारतमें हत एक हाथी।

अश्वस्तन, अश्वस्तनिक–वि०[सं०] आजसे ही संबंध रखने वाला; अगले दिनके खानेका ठिकाना न रखनेवाला।

अश्वाध्यक्ष–पु० [सं०] घुड़सवार सेनाका नायक।

अश्वानीक–स्त्री० [सं०] घुड़सवार सेना, रिसाला।

अश्वायुर्वेद–पु० [सं०] अश्व-चिकित्सा-शास्त्र।

अश्वरूढ, अश्वारोही (हिन्)–पु० [सं०] घुड़सवार।

अश्विनी–स्त्री० [सं०] घोड़ी; २७ नक्षत्रोंमेंसे पहला नक्षत्र; जटामासी। **–कुमार,–पुत्र,–सुत**–पु० सूर्यकी पत्नी प्रभाके घोड़ीका रूप ग्रहण कर लेनेपर उससे उत्पन्न दो पुत्र जो देवताओंके वैद्य माने जाते हैं, स्ववैंद्य।

अष्ट (न्)–पु० [सं०] आठकी संख्या। वि० ७ से १ अधिक या ९ से १ कम, आठ। **–कमल**–पु० हठयोगमें मूलाधारसे मस्तकतक माने गये आठ चक्र। **–कुल**–पु० पुराणोंमें बताये गये सर्पोंके आठ कुल। **–कृष्ण**–पु० वल्लभ-संप्रदायमें माने गये कृष्णके आठ रूप–श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन। **–कोण**–वि० अठकोना, अठपहल। **–गंध**–पु० पूजनमें व्यवहृत आठ सुगंधित वस्तुओंका समूह, गंधाष्टक। **–छाप**–पु० [हिं०] आठ पुष्टि मार्गी कवियोंका वर्ग, जिसमें सूरदास, नंददास, कुंदनदासादि थे। **–दल**–वि० अठपहला, अठकोना। पु० आठ दलोंका कमल। **–द्रव्य**–पु० यज्ञकी सामग्रीके आठ द्रव्य–पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद, तिल, सरसों, पायस और घृत। **–धाती**–वि० [हिं०] जिसके माता-पिताका ठीक पता न हो, वर्णसंकर। **–धातु**–स्त्री० आठ मुख्य धातुएँ–सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा। **–पत्र**–पु० आठ दलोंका कमल। **–पद**–वि० आठ पैरोंवाला। पु० मकड़ा; कीड़ा; शरभ; कैलास। **–पदी**–स्त्री० एक छंद; एक प्रकारका गीत; एक तरहकी चमेली; वेलेका फूल और पौधा।

अष्टक–पु० [सं०] आठ वस्तुओंका समूह या योग; आठ ऋषियोंका एक गण; विश्वामित्रका एक पुत्र; अष्टाध्यायी (व्या०)।

अष्टम, अष्टमक–वि० [सं०] आठवाँ।

अष्टमी–स्त्री० [सं०] सित या असित पक्षकी आठवीं तिथि।

अष्टांग–वि० [सं०] जिसके आठ अंग या भाग हों। पु० शरीरके वे आठ अंग जिनसे साष्टांग प्रणाम किया जाता है–घुटना, हाथ, पाँव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि। **–योग**–पु० योगके आठ अंग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

अष्टाध्यायी (यिन्)–वि० [सं०] आठ अध्यायोंवाला।

अष्टावक्र–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि। वि० जिसके आठ अंग टेढ़े हों; कुरूप।

असंक*–वि० दे० 'अशंक'।

असंका–स्त्री० दे० 'आशंका'।

असंकुल–वि० [सं०] जहाँ भीड़ न हो; खुला हुआ; चौड़ा।

असंक्रांत–वि० [सं०] जिसका संक्रमण न हुआ हो, जो एक क्षेत्रसे दूसरेमें न गया हो। पु० अधिक मास।

असंख*–वि० दे० 'असंख्य'।

असंख्य, असंख्यक, असंख्यात–वि० [सं०] अगणित, बे-हिसाब, बे-शुमार।

असंख्येय–वि० [सं०] अगणित, बे-शुमार।

असंग–वि० [सं०] अनाशक्त, बंधनरहित, निर्लिप्त; अकेला। पु० अनाशक्ति; पुरुष, आत्मा (सांख्य०)।

असंगत–वि० [सं०] बेमेल, असंबद्ध, प्रसंगविरुद्ध; अनुचित, अयुक्त; असमान; उजड्ड।

असंगति–स्त्री० [सं०] मेलका न होना, अनौचित्य; एक अर्थालंकार जिसमें कार्य-कारण, देश, काल-संबंधी असंगति (अन्यथात्व) का वर्णन किया जाय–कार्य कहीं, कारण कहीं दिखाया जाय।

असंचय–वि० [सं०] संभारहीन, जिसके पास आवश्यक वस्तुएँ मौजूद न हों। पु० संचय या संभारका अभाव।

असंचयिक, असंचयी (यिन्)–वि० [सं०] संचय न करनेवाला।

असंज्ञ–वि० [सं०] संज्ञाहीन।

असंत–वि० असाधु, खल।

असंतुष्ट–पु० [सं०] अतृप्त; अप्रसन्न।

असंतोष–पु० [सं०] अतृप्ति; अप्रसन्नता, नाराजगी; बेसब्री, लोभ।

असंतोषी (षिन्)–वि० [सं०] संतुष्ट न होनेवाला; बेसब्र; लोभी।

असंदिग्ध–वि० [सं०] संदेहरहित; निश्चित, पक्का।

असंप्रज्ञात–वि० [सं०] सम्यक् प्रकारसे न जाना हुआ। **–समाधि**–स्त्री० वह समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञानका भेद नहीं रह जाता, निर्विकल्प समाधि।

असंबद्ध–वि० [सं०] संबंधहीन; बे-मेल; बे-लगाव; असंगत, बेतुका। **–प्रलाप**–पु० बेतुकी बकवास।

असंभव–वि०[सं०] न होने या हो सकनेवाला, नामुमकिन। पु० वह अर्थालंकार जिसमें यह दिखलाया जाय कि जो बात हो गयी, उसका होना असंभव था; अनस्तित्व; असंभावना; असाधारण घटना।

असंभार*–वि० जो सँभाला न जा सके; विशाल; अपार।

असंभावना–स्त्री० [सं०] संभावनाका न होना; होने योग्य न होना; अशक्यता।

असंभावनीय, असंभाव्य–वि० [सं०] दुर्बोध; असंभव।

असंभावित–वि०[सं०] जिसकी संभावना न रही हो; असंभव।

असंभाष्य–वि० [सं०] न कहने योग्य; वार्तालाप न करने योग्य। पु० कुवचन।

असंयत–वि० [सं०] संयमरहित; अनियंत्रित; बंधनहीन।

असंयम–पु० [सं०] संयमका अभाव; मन, इंद्रिय आदिको

वशमें न रखना; विलासिता।

असंयुक्त-वि० [सं०] विलग, न जुड़ा हुआ, जुदा।

असंयोग-पु० [सं०] योग या मेल न होना। वि० जिसके साथ संपर्क निषिद्ध हो।

असंशय-पु० [सं०] संशयका अभाव, संदेहका न होना। वि० संशयशून्य, शंकारहित।

असंश्लिष्ट-वि० [सं०] असंयुक्त। पु० शिव।

असंसक्ति-स्त्री० [सं०] अनासक्ति, विरक्ति; संबंधका अभाव।

असंसारी (रिन्)-वि० [सं०] जिसका संसारसे कोई संबंध न हो, विरक्त।

असंस्कृत-वि० [सं०] संस्कारहीन, जिसका कोई संस्कार न हुआ हो, जो सँवारा-सुधारा न गया हो; असभ्य।

अस*-वि० ऐसा, जैसा, समान, तुल्य।

असकताना-अ० क्रि० आलस्य अनुभव करना।

असक्त-वि० [सं०] आसक्तिरहित; बे-लगाव; उदासीन; *अशक्त, दुर्बल।

असगंध-पु० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है, अश्वगंधा।

असगुन-पु० अपशकुन।

असगोत्र-वि० [सं०] भिन्न गोत्र या कुलका।

असज्जन-वि० [सं०) जो भला आदमी न हो। पु० बुरा, दुष्ट आदमी।

असती-वि० स्त्री० [सं०] अपतिव्रता, पुंश्चली।

असत्-वि० [सं०] अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो; मिथ्या; बुरा; अनुचित। पु० अनस्तित्व; अहित; मिथ्यात्व। **-कार्य**-पु० बुरा पेशा या काम।

असत्कार-पु० [सं०] अनादर, आवभगत न होना; अहित।

असत्ता-स्त्री० [सं०] सत्ताका अभाव, नेस्ती; असाधुता।

असत्त्व-वि० [सं०] अशक्त, निर्बल; सत्त्वगुणरहित। पु० असत्ता; असाधुता।

असत्य-वि० [सं०] झूठ, मिथ्या, गलत। पु० झुठाई; झूठ बोलनेवाला व्यक्ति। **-वाद**-पु० झूठ बोलना। **-वादी (दिन्)**-वि० झूठ बोलनेवाला। **-शील**-वि० जिसकी झूठ बोलनेकी ओर प्रवृत्ति हो।

असत्यता-स्त्री० [सं०] झुठाई।

असदृश-वि० [सं०] असमान; अयोग्य, अनुचित।

असद्भाव-पु० [सं०] अस्तित्वका अभाव, अनुपस्थिति; बुरी भावना; बुरा स्वभाव।

असन*-पु० भोजन।

असनान*-पु० स्नान, नहाना।

असन्नद्ध-वि० [सं०] जो हथियार न बाँधे हो या तैयार न हो; घमंडी।

असपिंड-वि० [सं०] जो अपने कुलका या कुलमें सात पीढ़ियोंके अंदर न हो।

असफल-वि० [सं०] विफल, नाकामयाब।

असफलता-स्त्री० [सं०] विफलता।

असबाब-पु० [अ०] (सबबका बहुवचन) कारण; आवश्यक सामग्री; चीज, वस्तु; मुसाफिरके साथका सामान।

असभ्य-वि० [सं०] सभाके अयोग्य; अशिष्ट; गँवार, सामाजिक व्यवस्थामें पिछड़ा हुआ; जंगली।

असमंजस-पु० [सं०] दुबिधा, कठिनाई; अनौचित्य; अंतर; सगरका ज्येष्ठ पुत्र (०जस्), अंशुमान्का पिता।

असमंत*-पु० चूल्हा।

असम-वि० [सं०] जो बराबर न हो; असदृश; बेजोड़; विषम, ताक; ऊँचा-नीचा, नाहमवार। पु० अर्थालंकार जिसमें उपमानका मिलना असंभव दिखलाया जाय; बुद्ध। **-नयन, -नेत्र, -लोचन**-पु० तीन आँखोंवाले शिव। **-बाण**-पु० कामदेव। **-वृत्त**-पु० वह वर्णवृत्त जिसके सब चरणोंमें समान गण न हों, विषमवृत्त। **-शर**-पु० कामदेव, पंचशर।

असमत-स्त्री० [अ०] पवित्रता, निष्पापता; सतीत्व। **-फ़रोशी**-स्त्री० सतीत्वविक्रय, व्यभिचार।

असमय-पु० [सं०] समयका उलटा; अयोग्य काल; कुसमय। अ० बेवक्त, बेमौके।

असमयोचित-वि० [सं०] (इनएक्सपीडिएंट) जो समय-विशेष या स्थिति-विशेषको देखते हुए उचित न हो।

असमर्थ-वि० [सं०] अशक्त, अपेक्षित शक्ति या योग्यता न रखनेवाला; अभीष्ट अर्थ व्यक्त न कर सकनेवाला।

असमर्थता-निवृत्तिवेतन-पु० [सं०] (इनवैलिडिटी पेंशन) रोग, दुर्घटना आदिके कारण किसी कर्मचारीके कामकरनेमें स्थायी रूपसे असमर्थ हो जानेपर उसे भरण-पोषणके लिए मिलनेवाली वृत्ति।

असमान-वि० [सं०] जो बराबर न हो, असदृश। * पु० आसमान, आकाश।

असमाप्त-वि० [सं०] अपूर्ण, नातमाम, अधूरा।

असमेध*-पु० दे० 'अश्वमेध'।

असम्मत-वि० [सं०] मतभेद रखनेवाला, विरुद्ध; अनादृत; अस्वीकृत, नामंजूर। पु० शत्रु, विरोधी।

असम्मति-स्त्री० [सं०] मतभेद; अस्वीकृति; विकर्षण।

असम्मान-पु० [सं०] निरादर।

असयाना*-वि० अचतुर, सीधा, भोला।

असर-पु० [अ०] खोज; पदचिह्न; खँडहर; छाप, प्रभाव; गुण; दबाव; फल; दे० 'अस्र'।

असरार*-अ० लगातार।

असल-वि० [अ०] दे० 'अस्ल'। †पु० एक झाड़ जिसकी छालसे चमड़ा सिझाते हैं।

असलियत-स्त्री० [अ०] असल बात, वास्तविकता; जड़, मूल तत्त्व।

असली-वि० सच्चा, शुद्ध; खालिस।

असलेउ*-वि० दे० 'असह्य'।

असवर्ण-वि० [सं०] भिन्न वर्ण या जातिका।

असवार†-पु० दे० 'सवार'।

असवारी†-स्त्री० दे० 'सवारी'।

असह-वि० [सं०] असहिष्णु, न सहनेवाला; अधीर।

असहकार-पु० [सं०] दे० 'असहयोग'।

असहन-वि० [सं०] असहिष्णु; ईर्ष्यालु। **-शील**-वि० असहिष्णु, चिड़चिड़ा, क्रोधी।

असहनीय, असहितव्य-वि० [सं०] दे० 'असह्य'।

असहयोग-पु० [सं०] सहयोगका अभाव या उलटा; मिलकर या साथ काम न करना; सरकारसे या शासनकार्यमें

सहयोग न करना । **-वाद्-**पु॰ असहयोग द्वारा सरकार पर दबाव डालनेका सिद्धांत । **-वादी (दिन्)-**वि॰ असहयोगवादको माननेवाला ।

असहाय-वि॰ [सं॰] जिसका कोई साथी, सहायक न हो, निराश्रय, बे-सहारा; निरुपाय ।

असहिष्णु-वि॰ [सं॰] बर्दाश्त न करनेवाला, चिड़चिड़ा, क्रोधी; झगड़ालू ।

असही*-वि॰ जो दूसरेकी बढ़ती न देख सके, अदेखा ।

असह्य-वि [सं॰] न सहने लायक, असहनीय ।

असाँच*-वि॰ असत्य, झूठ ।

असांद्र-वि॰ [सं॰] विरल, जो घना न हो ।

असांप्रत-वि॰ [सं॰] असामयिक; वर्तमान कालका नहीं ।

असांप्रदायिक-वि॰ [सं॰] जिसका किसी संप्रदायसे संबंध न हो ।

असांसद-वि॰ [सं॰] (अनपार्लिमेंटरी) संसदकी मर्यादा, कार्यविधि, परंपरा आदिके प्रतिकूल; जो संसदमें कहने या करने योग्य न हो (अशिष्ट) ।

असा-पु॰ [अ॰] डंडा, सोंटा; चाँदी या सोना मढ़ा हुआ सोंटा । **-बरदार-**पु॰ राजा, दूल्हे आदिकी सवारीके आगे-आगे असा लेकर चलनेवाला ।

असाई*-वि॰ अज्ञ, मूर्ख ।

असाक्षिक-वि॰ [सं॰] जिसका कोई साक्षी न हो; जिसकी तसदीक न हुई हो ।

असाक्षी (क्षिन्)-वि॰ [सं॰] जो चश्मदीद गवाह न हो; गवाह बननेके अयोग्य ।

असाक्ष्य-पु॰ [सं॰] गवाहका न होना ।

असाढ़-पु॰ आषाढ़ मास ।

असाढ़ा-पु॰ रेशमका बटा हुआ तागा; एक तरहकी कच्ची चीनी ।

असाढ़ी-वि॰ असाढ़का । स्त्री॰ असाढ़में बोयी जानेवाली फसल; आषाढ़की पूर्णिमा ।

असाढ़ू†-पु॰ मोटी सिल्ली, भोट (?) ।

असाध*-वि॰ असाध्य; असाधु ।

असाधन-वि॰ [सं॰] साधनहीन । पु॰ साधन या सिद्धि न होना ।

असाधारण-वि॰[सं॰] जो साधारण, आम न हो, विशेष, गैरमामूली । **-राजदूत-**पु॰ (एंबैसेडर एक्स्ट्राआर्डिनरी) विशेष अवसरपर या विशेष उद्देश्यसे भेजा गया राजदूत ।

असाधु-वि॰ [सं॰] दुर्जन, दुष्ट; असदाचारी; खोटा; अप्रामाणिक; असंस्कृत (शब्द) । पु॰ बुरा आदमी ।

असाध्य-वि॰ [सं॰] जिसका साधन या सिद्धि न हो सके; अच्छा न होनेवाला, लाइलाज (रोग); अति कठिन ।**-साधन-**पु॰न हो सकनेवाले कामको कर लेना ।

असाध्वी-स्त्री॰ [सं॰] व्यभिचारिणी, असती ।

असामयिक-वि॰ [सं॰] जो नियत समयपर न हो, बेवक्त, बेमौका ।

असामर्थ्य-स्त्री॰[सं॰]अक्षमता,सामर्थ्यहीनता; निर्बलता ।

असामान्य-वि॰ [सं॰] असाधारण, जो औरोंमें न मिले, विशेष ।

असामी-पु॰ [अ॰] नाम; नामसूची [इस्म-नामका बहुवचन]; पद, नौकरी; काश्तकार; कर्जदार; ग्राहक; गुलाजिम; आदमी (लाखोंका असामी) ।

असाम्य-पु॰ [सं॰] अंतर; असमानता; अननुकूलता ।

असार-वि॰ [सं॰] सारहीन, सत्त्वशून्य; पोला, निरर्थक ।

असावधान-वि॰ [सं॰] जो सजग-चौकन्ना न हो, गाफिल, बेखबर ।

असावधानता-स्त्री॰ [सं॰] गफलत, बेखबरी ।

असावधानी-स्त्री॰ दे॰ 'असावधानता' ।

असावरी-स्त्री॰ एक रागिनी जो भैरव रागकी स्त्री मानी जाती है ।

असि-स्त्री॰ [सं॰] तलवार; खड्ग; भुजाली; श्वास । **-चर्या-**स्त्री॰ खड्ग चलानेका अभ्यास ।**-जीवी (विन्)** -वि॰ तलवारसे जीविका करनेवाला, सिपाही । **-दंत, -दंष्ट्र,-दंष्ट्रक-**पु॰ मगर, घड़ियाल । **-पुत्रिका, -पुत्री-**स्त्री॰ छुरी ।

असित-वि॰ [सं॰] अश्वेत; काला; नीला । पु॰ काला या नीला रंग; शनि; कृष्ण पक्ष; धव वृक्ष । **-केशा-**स्त्री॰ काले बालोंवाली स्त्री । **-गिरि,-नग-**पु॰ नील गिरि, नीलाचल । **-पक्ष-**पु॰ कृष्ण पक्ष ।

असितांबुज-पु॰ [सं॰] नील कमल ।

असितार्चि (स्)-पु॰ [सं॰] अग्नि ।

असितोपल-पु॰ [सं॰] नीलम ।

असिद्ध-वि॰ [सं॰] अप्रमाणित; न पका हुआ, कच्चा; अपूर्ण; असफल; जिसे योगसिद्धि न मिली हो । पु॰ एक हेत्वाभास जिसमें हेतु स्वयं असिद्ध होता है ।

असिद्धि-स्त्री॰[सं॰]अपूर्णता; विफलता; साबित न होना ।

असिव*-वि॰ दे॰ 'अशिव' ।

असीम-वि॰[सं॰] जिसकी सीमा न हो,बे-हद; बे-हिसाब अपार ।

असीमित-वि॰ [सं॰] जिसकी हद न बाँधी गयी हो; अपरिमित ।

असीर-वि॰ [अ॰] बंदी, कैदी ।

असीरी-स्त्री॰ [अ॰] कैद ।

असील-वि॰ [अ॰] कुलीन, शुद्ध रक्तवाला; नेक; *असल ।

असीस*-स्त्री॰ आशीर्वाद ।

असीसना*-स॰ क्रि॰ आशीर्वाद देना ।

असुंदर-वि॰ [सं॰] भद्दा, जो सुंदर न हो; अप्रशस्त ।

असु-पु॰ [सं॰] प्राण; प्राण वायु; चित्त; पलकका छठा भाग; विचार; हृदय; शोक; * घोड़ा । **-त्याग-**पु॰ प्राणत्याग ।

असुकर-वि॰ [सं॰] जिसे करना कठिन हो ।

असुख-वि॰ [सं॰] अप्रसन्न, दुःखी; । पुं॰ दुःख, कष्ट ।

असुखी (खिन्)-वि॰ [सं॰] दुःखमय, दुखी; शोकपूर्ण ।

असुखोदय-वि॰ [सं॰] दुःखकारक; दुःखांत ।

असुग*-वि॰, पु॰ दे॰ 'आशुग' ।

असुचि*-वि॰ दे॰ 'अशुचि' ।

असुप्त-वि॰ [सं॰] जो सोया न हो, जागता हुआ ।

असुभ*-वि॰ दे॰ 'अशुभ' ।

असुर-पु॰ [सं॰] दैत्य, दानव; सूर्य; राहु; बादल; खल,

दुष्ट । वि० जीवित; अपार्थिव; ब्रह्म या वरुणका एक विशेषण । **–गुरु**–पु० शुक्राचार्य । **–राज**–पु० राजा बलि । **–रिपु,–सूदन**–पु० विष्णु ।

असुराई*–स्त्री० असुरत्व; उत्पात ।

असुराचार्य–पु० [सं०] शुक्राचार्य; शुक्र ग्रह ।

असुराधिप–पु० [सं०] राजा बलि ।

असुरारि–पु० [सं०] विष्णु; देवता ।

असुरी–स्त्री० [सं०] राक्षसी; राई ।

असुविधा–स्त्री० सुभीता न होना; अड़चन; कठिनाई ।

असुस्थ–वि० [सं०] अस्वस्थ, बीमार ।

असुहाती*–वि० स्त्री० अच्छी न लगनेवाली, बुरी ।

असूझ*–वि० अंधकारमय; जिसका वारापार न सूझे, अपार; विकट । स्त्री० अदूरदर्शिता ।

असूत*–वि० असंबद्ध ।

असूया–स्त्री० [सं०] दूसरेके गुण, सुख, समृद्धि आदिको सहन न कर सकना; दूसरेके गुणमें दोष निकालना; जलन, ईर्ष्या; रोष; एक संचारी भाव ।

असूयिता (तृ), असूयु–वि० [सं०] ईर्ष्यालु; असंतुष्ट ।

असूर्यंपश्या–वि० स्त्री० [सं०] ऐसे कड़े पर्देमें रहनेवाली कि सूर्यको भी न देख सके । स्त्री० राजमहिषी; पतिव्रता स्त्री ।

असृग्दोह–पु० [सं०] खून आना ।

असेग*–वि० असह्य, कठिन ।

असेचन, असेचनक, असेचनीय–वि० [सं०] जिसको देखनेसे तृप्ति न हो, अत्यधिक सुंदर ।

असेवन–वि० [सं०] सेवा न करनेवाला; उपेक्षा करनेवाला; अभ्यास न कर परित्याग करनेवाला । पु० उपेक्षा; त्याग; ध्यान न देना ।

असेवा–स्त्री० [सं०] (रोगी आदिकी) सेवा-शुश्रूषा न करना, उपेक्षा ।

असेवित–वि० [सं०] उपेक्षित; जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो; जिससे परहेज किया गया हो ।

असैनिक–वि० [सं०] जो सैनिक न हो; सैनिकसे भिन्न; (सिविल) देश या समाजके शासन इत्यादिसे संबंध रखनेवाला (सैनिकका उलटा), मुल्की (फौजी नहीं) । **–व्यय**–पु० (सिविल एक्सपेंडिचर) असैनिक कार्योंके लिए होनेवाला व्यय !

असैनिकीकरण–पु० [सं०] (डीमिलिटैरिजेशन) किसी स्थान या क्षेत्रका सैन्यविहीन कर दिया जाना ।

असैला*–वि० कुमार्गगामी; अनुचित ।

असोक*–वि०, पु० दे० 'अशोक' ।

असोच–वि० चिंतारहित, निर्द्वंद्व ।

असोज†–पु० आश्विन मास, क्वार ।

असोढ–वि० [सं०] जिसका सहन न किया जा सके; जो वशमें न लाया जा सके ।

असोस*–वि० न सूखनेवाला, अशोष्य ।

असौंदर्य–पु० [सं०] कुरूपता ।

असौंध–पु० दुर्गंध ।

असौच–पु० दे० 'अशौच' ।

असौम्य–वि० [सं०] असुंदर, भद्दा; अप्रिय ।

अस्खलित–वि० [सं०] जो फिसले-डगमगाये नहीं; उच्चारण आदिमें भूल-चूक न करनेवाला; शुद्ध; सत्पथसे न बहकनेवाला; अच्युत ।

अस्तंगत–वि० [सं०] डूबा हुआ; अवनत; नष्ट; लुप्त ।

अस्त–वि० [सं०] डूबा हुआ; फेंका हुआ; गत; समाप्त । पु० (सूर्य-चंद्रका) डूबना; अदृश्य होना; ह्रास; पतन; अंत; नाश; कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ स्थान । **–गमन**–पु० डूबना; लोप; मृत्यु । **–गिरि**–पु० पश्चिमी पर्वत । **–व्यस्त**–वि० तितर-बितर, जहाँ-तहाँ बिखरा हुआ; अव्यवस्थित, बे-तरतीब ।

अस्तन*–पु० दे० 'स्तन' ।

अस्तबल–पु० [अ०] अश्वशाला, तबेला ।

अस्तमन–पु० [सं०] डूबना, अस्त होना ।

अस्तमित–वि० [सं०] अस्तंगत ।

अस्तर–पु० सिले कपड़े, जूते आदिके भीतरकी तह, भितल्ला; अँतरौटा; इत्रकी जमीन; चित्रकी जमीन बाँधनेका मसाला ।

अस्ताचल, अस्ताद्रि–पु० [सं०] पश्चिमका वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्यका अस्त होना माना जाता है ।

अस्ति–स्त्री० [सं०] सत्ता, भाव, विद्यमानता । **–अस्ति***–अ० वाह-वाह !

अस्तित्व–पु० [सं०] सत्ता, हस्ती, विद्यमान होना ।

अस्तिमंत–पु० (दि हैव्ज) धनी या संपन्न व्यक्ति ।

अस्तु–अ० [सं०] जो हो, ऐसा हो ।

अस्तुति–स्त्री० [सं०] प्रशंसा न करना; * दे० 'स्तुति' ।

अस्तुरा–पु० दे० 'उस्तुरा' ।

अस्तेय–पु० [सं०] चोरी न करना; चोरी न करनेका व्रत ।

अस्त्र–पु० [सं०] हथियार; फेंककर चलाया जानेवाला हथियार (बाण आदि); धनुष; मंत्र-प्रेरित बाण आदि; चीर-फाड़का औजार, नश्तर । **–कार,–कारक,–कारी (रिन्)**–पु० हथियार बनानेवाला । **–चिकित्सा**–स्त्री० चीर-फाड़, शल्य-चिकित्सा । **–जीव,–जीवी (विन्),–धारी (रिन्)** पु० सैनिक । **–निर्माणशाला**–स्त्री० (आर्डनेंस फैक्टरी) तोपें, गोला-बारूद बम आदि तैयार करनेका कारखाना । **–मार्जक**–पु० अस्त्र साफ करनेवाला । **–लाघव**–पु० अस्त्र चलानेकी कुशलता । **–विद्या**–स्त्री० अस्त्र-संचालनकी विद्या, बाणविद्या । **–वेद**–पु० धनुर्वेद । **–शस्त्र**–पु० हरबा-हथियार । **–शाला**–स्त्री० अस्त्र-शस्त्र रखनेका स्थान । **–शिक्षा**–स्त्री० अस्त्र-संचालनकी शिक्षा ।

अस्त्रागार–पु० [सं०] हरबा-हथियार रखनेका भंडार, सलहखाना ।

अस्त्री (स्त्रिन्)–वि० [सं०] अस्त्रसे लड़नेवाला, अस्त्रधारी ।

अस्त्रीक–वि० [सं०] बिना स्त्रीका; रँडुआ ।

अस्थल*–पु० दे० 'स्थल' ।

अस्थाई*–वि० दे० 'स्थायी' ।

अस्थान–पु० [सं०] बुरा स्थान या अवसर; *दे० 'स्थान' ।

अस्थायी (यिन्)–वि० [सं०] जो सदा या अधिक दिन रहनेवाला न हो, क्षणिक; अस्थिर । **–संधि**–स्त्री० (आर्मिसटिस) युद्ध समाप्त कर देनेके संबंधमें की गयी अस्थायी संधि ।

अस्थावर–वि० [सं०] जंगम, चल (संपत्ति)।

अस्थि–स्त्री० [सं०] हड्डी; गिरी। **–वंधन**–पु० स्नायुवंधन। **–भंग**–पु० हड्डीका टूट जाना। **–भक्ष**–पु० हड्डियाँ खानेवाला, कुत्ता। **–भुक् (ज्)**–पु० कुत्ता। **–शेष**–वि० जिसके शरीरमें हड्डियाँभर रह गयी हों, वहुत दुवला। **–संचय**–पु० शवदाहके वाद गंगा आदिमें प्रवाहके लिए हड्डियाँ या राख एकत्र करना; अस्थियोंका ढेर। **–संधि**–स्त्री० हड्डीका जोड़। **–संभव**–पु० मज्जा; वज्र। **–समर्पण**–पु० संचित अस्थियोंको गंगा आदिमें फेंकना। **–सार,–स्नेह**–पु० मज्जा।

अस्थिर–वि० [सं०] जो स्थिर न हो; डावाँ-डोल; चंचल; अनिश्चित, वे-भरोसेका * स्थिर।

अस्थैर्य–पु० [सं०] अस्थिरता।

अस्निग्ध–वि० [सं०] जो चिकना न हो; कठिन; शुष्क।

अस्नेह–पु० [सं०] स्नेहका अभाव।

अस्पंद–वि० [सं०] स्पंदन-हीन, न हिलने-डुलनेवाला।

अस्पताल–पु०दवाखाना,चिकित्सालय [अं०'हास्पिटल']।

अस्पष्ट–वि०[सं०] जो साफ दिखाई न दे या साफ समझमें न आये, धुँधला, संदिग्ध।

अस्पृश्य–वि० [सं०] न छूने लायक, अछूत।

अस्पृश्यता–स्त्री० [सं०] स्पर्शकी अयोग्यता, अछूतपन। **–आंदोलन**–पु० अछूतोद्धार–छुआछूत मिटानेका आंदोलन।

अस्पृष्ट–वि० [सं०] न छुआ हुआ, अछूता।

अस्पृह–वि० [सं०] निर्लोभ, जिसे लालच न हो।

अस्फटिक–वि० [सं०] (एमार्फस) जिसका चूर्ण चमकीला तथा खुरदरा न हो वरन् चिकना जान पड़े।

अस्फुट–वि० [सं०] अस्पष्ट; अप्रकट।

अस्मदीय–वि० [सं०] मेरा।

अस्र–पु० [सं०] कोण; रक्त; आँसू; केसर; केश। **–ज**–पु० मांस। **–प**–वि० रक्त पीनेवाला। पु० राक्षस; मूल नक्षत्र। **–पा**–स्त्री० जोंक; डाकिनी; चुड़ैल।

अस्र–पु० [अ०] काल; युग; उम्र; दिनका चौथा पहर। **–की नमाज**–शामकी नमाज।

अस्रु–पु० [सं०] दे० 'अश्रु'।

अस्ल–पु० [अ०] जड़, मूल; वीज; सचाई; मूल धन; मूल वस्तु; नकलका उलटा। वि० दे० 'अस्ली'। **–में**–वास्तवमें, सचमुच।

अस्ली–वि० [अ०] मौलिक; खालिस; खरा; सच्चा।

अस्लीयत–स्त्री० [सं०] वस्तुस्थिति, (घटना) सच्ची स्थिति या रूप; जड़।

अस्वच्छ–वि० [सं०] गंदा; धुँधला।

अस्वाभाविक–वि० [सं०] स्वभावविरुद्ध; अनैसर्गिक, वनावटी।

अस्वामिक–वि०[सं०] विना मालिकका, लावारिस। पु० वह धन या संपत्ति जिसका कोई दावागीर न हो।

अस्वास्थ्य–पु० [सं०] रोग, वीमारी।

अस्वीकार–पु० [सं०] न मानना; इनकार; न लेना।

अस्वीकृत–वि० [सं०] न माना हुआ, नामंजूर; ग्रहण न किया हुआ।

अस्वीकृति–स्त्री० [सं०] अस्वीकार।

अस्वेद, अस्वेदन–पु० [सं०] पसीनेका न निकलना।

अस्सी–पु० ८० की संख्या। वि० सत्तर और दस।

अहंकार–पु० [सं०] अपनी सत्ताका बोध; गर्व, घमंड; अंतःकरणकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (वेदांत, सांख्य०)।

अहंकारी (रिन्)–वि० [सं०] घमंडी।

अहंकृति–स्त्री० [सं०] अहंकार, गर्व।

अहंता–स्त्री०[सं०] घमंड, गर्व।

अहंपूर्विका,अहंप्रथमिका–स्त्री०[सं०] होड़, प्रतिद्वंद्विता।

अहंवाद–पु० [सं०] डींग मारना।

अहंवादी (दिन्)–वि०, पु० [सं०] डींग मारनेवाला।

अह–अ० अचरज, दुःख, क्लेश आदिका सूचक उद्गार।

अह (न्)–पु० [सं०] दिन; सूर्य; विष्णु।

अहक*–पु० लालसा, अतृप्त आकांक्षा।

अहकना*–अ० क्रि० इच्छा करना, कामना करना।

अहटाना*–अ० क्रि० आहट मिलना; दुखना। स० क्रि० पता लगाना।

अहथिर*–वि० दे० 'स्थिर'।

अहद–पु० [अ०] दे० 'अह्द' (प्रतिज्ञा)।

अहदी–वि०[अ०] आलसी। पु० वह सैनिक जिससे असाधारण आवश्यकताके समय ही काम लिया जाय (अकबरकी सेनाकी एक श्रेणी)।

अहना*–अ० क्रि० वर्तमान रहना, होना।

अहनिसि–* अ० दे० 'अहर्निश'।

अहम–वि० [अ०] वहुत जरूरी, महत्त्वपूर्ण।

अहमक़–वि० [अ०] जडमति, मूर्ख, नासमझ।

अहमग्रिका, अहमहमिका–स्त्री०[सं०] चढ़ाऊपरी, होड़, प्रतियोगिता; 'अहंपूर्विका'।

अहमिति*–स्त्री० घमंड, गर्व।

अहमेव–पु० [सं०] घमंड, गर्व।

अहम्–सर्व० [सं०] मैं। पु० अहंभाव, अहंतत्त्व। **–मति**–स्त्री० गर्व, घमंड; ममता। **–मन्य**–वि० अपनेको वहुत बड़ा माननेवाला।

अहरणीय–वि० [सं०] जो हटाने या हरण करने योग्य न हो; दृढ़, स्थिर। पु० पहाड़।

अहरन, अहरनि*–स्त्री० निहाई।

अहरना–स० क्रि० लकड़ी छीलकर सुडौल करना।

अहरह–अ० [सं०] दिन-दिन।

अहरा–पु० आग सुलगानेके लिए लगाये गये कंडे या उपले; इकट्ठा किये हुए कंडेसे तैयार की गयी आग; लोगोंके ठहरनेका स्थान; प्याऊ।

अहर्निश–अ० [सं०] दिन-रात; आठों पहर।

अहर्पति–पु० [सं०] सूर्य।

अहर्मणि–पु० [सं०] सूर्य।

अहर्मुख–पु० [सं०] उषःकाल, सवेरा, भोर।

अहलकार–पु० दे० 'अह्लकार'।

अहलना*–अ० क्रि० हिलना; दहलना।

अहलमद–पु० दे० 'अह्लमद'।

अहल्या–स्त्री० [सं०] गौतम ऋषिकी पत्नी जो शापसे शिला वन गयी थी और जिसने रामके चरण-

स्पर्शसे पुनः पूर्वरूप प्राप्त कर लिया। **–जार**–पु० इंद्र। **–नंदन**–पु० अहल्याके पुत्र, सतानंद।

अहवान*–पु० दे० 'आह्वान'।

अहवाल–पु०[अ०] वृत्तांत, समाचार; हाल ('हाल'का बहु०)।

अहसान–पु० दे० 'एहसान'।

अहस्कर–पु० [सं०] सूर्य।

अहस्तक्षेप-नीति–स्त्री०[सं०](लैसेज फेयर) अर्थ-शास्त्रियों-का यह सिद्धांत कि देशके आर्थिक मामलों (व्यापारादि)-में राज्यको बिलकुल हस्तक्षेप न करना चाहिये।

अहस्तांतरकरणीय–वि० [सं०] (इनएलाइनेबिल) जिसके स्वामित्व या अधिकारका हस्तान्तरण न किया जा सके।

अहस्तांतरणीय–वि० [सं०] (नान-ट्रांसफरेबिल) जो हस्तांतरित न किया जा सके, जिसका हस्तांतरण न हो सके।

अहह–अ० [सं०] दुःख, क्लेश, आश्चर्य और संबोधन-सूचक उद्गार।

अहा, अहाहा–अ० हर्ष तथा विस्मय-सूचक उद्गार।

अहाता–पु० [अ०] दे० 'एहाता'।

अहान*–पु० आह्वान, पुकार।

अहार*–पु० दे० 'आहार'।

अहारना–स० क्रि० लकड़ीको छील-छालकर सुडौल करना; चिपकाना; * आहार करना, खाना।

अहारी*–वि० दे० 'आहारी'।

अहार्य–वि० [सं०] जो हरा, चुराया न जा सके; जो धन या चकमा देकर वशमें न किया जा सके; दृढ़, न बदलनेवाला।

अहिंसक–वि० [सं०] हिंसा न करनेवाला।

अहिंसा–स्त्री० [सं०] किसी प्राणीको न मारना; मन, वचन, कर्मसे किसीको पीडा न देना; हैस नामकी घास। **–वादी (दिन्)**–वि० अहिंसा सिद्धांतको माननेवाला।

अहिंस्र–वि० [सं०] अहिंसक।

अहि–पु० [सं०] साँप; सूर्य; राहु; वृत्रासुर; पथिक; जल; पृथिवी; ठग, वंचक; बादल; नाभि; सीसा; अश्लेषा नक्षत्र। **–कोष**–पु० केंचुल। **–च्छत्रक**–पु० कुकुरमुत्ता। **–जित्**–पु० कृष्ण। **–जिह्वा**–स्त्री० नागफनी। **–तुंडिक**–पु० सँपेरा। **–द्विप,–मार,–रिपु**–पु० गरुड़, नकुल; मयूर; इंद्र। **–नाथ**–पु० शेषनाग। **–नाह***–पु० शेषनाग। **–निर्मोक**–पु० केंचुल। **–पति**–पु० वासुकि नाग; कोई बड़ा साँप। **–फेन**–पु० साँपकी लार या विष; अफीम। **–बेल**–स्त्री० [हि०] दे० 'अहिवल्ली'। **–भुक् (ज्)**–पु० गरुड़; मोर; नेवला। **–भृत्**–पु० शिव। **–माली (लिन्)**–पु० शिव। **–मेध**–पु० सर्पसत्र, नागयज्ञ। **–लता**–स्त्री० नागवल्ली, पान; गंधनाकुली। **–वल्ली**–स्त्री० नागवल्ली, पान। **–विषापहा**–स्त्री० गंधनाकुली। **–साव***–पु० साँपका बच्चा, सँपोला।

अहित–पु० [सं०] हितका अभाव या उलटा, बुराई, अपकार; हानि; शत्रु। वि० अहितकर, अपथ्य; विरोधी। **–कर,–कारी (रिन्)**–वि० हानि, अपकार करनेवाला।

अहिम–वि० [सं०] ठंढा नहीं, गरम। **–कर,–किरण,–रश्मि**–पु० सूर्य।

अहिमांशु–पु० [सं०] सूर्य।

अहिवात–पु० सुहाग।

अहिवातिन, अहिवाती–वि० स्त्री० सौभाग्यवती, सधवा।

अहीर–पु० आभीर, ग्वाला।

अहीश–पु० [सं०] सर्पराज; लक्ष्मण; बलराम।

अहुटना*–अ० क्रि० हटना, अलग होना।

अहुटाना*–स० क्रि० हटाना, दूर करना।

अहुठ*–वि० साढ़े तीन।

अहेतु–वि० [सं०] हेतुरहित। पु० हेतुका अभाव; एक अलंकार, जहाँ कई कारणोंके विद्यमान रहते हुए भी कार्य-का न होना वर्णित किया जाय।

अहे(है)तुक–वि० [सं०] हेतुरहित, अकारण।

अहेर–पु० आखेट, शिकार।

अहेरी–वि० शिकारी। पु० शिकार करनेवाला, आखेटक।

अहो–अ० [सं०] विस्मय, प्रशंसा, खेद, विषाद, धिक्कार-सूचक उद्गार; संबोधनमें भी व्यवहृत। **–रूपमहोध्वनि**–परस्पर प्रशंसा (लोको०)।

अहोरात्र–पु० [सं०] दिन और रात; दो सूर्योदयोंके बीच-का समय।

अहोरा-बहोरा–पु० ब्याह या गौनेमें दुलहिनका ससुराल जाकर उसी दिन वापस आना। अ० बार-बार।

अह्द–पु० [अ०] प्रतिज्ञा; काल; राजत्व। **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र, इकरारनामा।

अह्ल–वि० [अ०] योग्य, अधिकारी, पात्र। पु० कुटुंबी। **–कार**–पु० कर्मचारी; राजकर्मचारी। **–(ह्ले)क़लम**–वि० लेखक; लेखन-व्यवसायी; शिक्षित।

अह्लीयत–स्त्री० [अ०] योग्यता, पात्रता।

आ

आ–देवनागरी वर्णमालाका दूसरा अक्षर और अका दीर्घ रूप।

आँ–अ० विस्मयसूचक शब्द।

आँक–पु० अंक; अदद; चिह्न; अक्षर; अँकवार; गोद; सिद्धांत; निश्चय; अंश; लकीर।

आँकड़ा–पु० अंक; हुक; पशुओंका एक रोग।

आँकना–स० क्रि० कूतना, अनुमान करना; निशान लगाना।

आँकर*–वि० गहरा; महँगा; बहुत ज्यादा।

आँकुड़ा–पु० अँकुड़ा।

आंकुशिक–पु० [सं०] अंकुश मारनेवाला, महावत।

आँकुस*–पु० दे० 'अंकुश'।

आँकू–पु० आँकनेवाला, कूतनेवाला।

आँख–स्त्री० देखने–रूपबोध करनेकी इंद्रिय, नयन, चक्षु; निगाह, दृष्टि; कृपादृष्टि; परख, पहचान; ईखकी गाँठपरकी नोक जिससे अँखुआ निकलता है; अँखुआ; आँखकी शक्लका चिह्न (मोरपंखपरका); छिद्र (सूईका); ध्यान; संतान। **–मिचौनी,–मिचौली,–मीचली**–स्त्री० लड़कोंका एक खेल। **–मुँदाई,–मुचाई**–स्त्री० आँखमिचौनी। मु० **–आना, –उठना**–आँखोंमें लालिमा आकर उनमें पीड़ा और

सूजन होना। **-उठाकर न देखना**-ध्यान न देना, उपेक्षा करना; लज्जा आदिके कारण सामने न देखना। **-उठाना**-निगाह सामने करके देखना; बुरी निगाह या शत्रुभावसे देखना। **-उलट जाना**-मरनेके समय आँखोंका पथरा जाना; घमंड होना। **-ऊँची न होना**-लज्जाके कारण सामने न देखना; नजर वरावर न करना। **-ऊपर न उठाना**-लज्जा या भयसे सामने न देखना। **-ओट, पहाड़ ओट**-सामने न होनेपर दूर-नजदीक एकसा होना। **-कड़ुआना**-आँख गड़ाकर देखने या देरतक ताकनेके कारण आँखमें पीड़ा होना। **-का अंधा गाँठका पूरा**-पैसोंवाला, पर मूर्ख। **-का अंधा नाम नयनसुख**-नाम-गुणमें विरोध, कालेको गोरा कहना। **-का काँटा**-जिसे देखकर कष्ट हो; शत्रु; कार्यमें बाधक। **-का काजल चुराना**-सामने या पासकी वस्तु चुरा लेना, सफाईसे हाथ मारना। **-का कोया,-का डेला**-आँखका उभरा हुआ सफेद भाग जिसपर पुतली रहती है। **-का जाला**-आँखका एक रोग जिसमें पुतलीपर सफेद झिल्ली आ जाती है। **-का तारा,-का तिल**-कनीनिका; प्रिय व्यक्ति। **-का परदा उठना**-भ्रम दूर होना। **-का पानी ढल जाना**-निर्लज्ज हो जाना। **-की किरकिरी**-आँखका काँटा। **-की ठंढक**-प्रिय व्यक्ति या वस्तु। **-की पुतली**-आँखके भीतरके परदेका वह भाग जो बाहरसे काला दिखाई देता है; अति प्रिय व्यक्ति। **-की पुतली फिरना**-आँखका पथराना। **-की बदी भौंके आगे**-किसीका दोष उसके मित्र या संबंधीके सामने कहना। **-खुलना**-पलक खुलना; जागना; भ्रम दूर होना; दिमागपर तरी-ताजगी पहुँचना। **-खुलवाना**-आँख बनवाना। **-खोलना**-आँख बनाना; सावधान करना; होशमें आना। **-गड़ना**-आँख दुखना; दृष्टि जमना। **-गड़ाना**-टकटकी लगाकर देखना। **-चमकाना**-आँखोंसे संकेत करना; आँख मटकाना। **-चर जाना**-नजर गायब होना। **-चुराकर कुछ करना**-छिपकर कुछ करना। **-चुराना,-छिपाना**-कतरा जाना, सामना बचाना; लज्जासे सामने न देखना; बे-मुरौवत हो जाना। **-चूकना**-गाफिल होना। **-जमना**-दृष्टि स्थिर रहना। **-झपकना**-पलक गिरना, नींद आना। **-झपकाना**-आँखसे संकेत करना। **-झेंपना**-लज्जित होना। **-टँगना**-पुतलीका स्तब्ध होना, टकटकी बँधना। **-टेढ़ी करना**-बे-मुरौवती दिखलाना। **-दिखाना**-रोष या अवज्ञासूचक दृष्टिसे देखना। **-न खोलना**-(ज्वर आदिके कारण) गाफिल, बेसुध होना। **-न ठहरना**-चमक आदिके कारण दृष्टिका न टिकना। **-न पसीजना**-आँखमें आँसू न आना। **-निकालना**-आँखके डेलेको निकालना; क्रोधपूर्ण दृष्टिसे देखना। **-नीची करना या होना**-लज्जित होना। **-नीली-पीली या लाल-पीली करना**-गुस्सा दिखाना; धमकाना। **-पटपटा जाना**-आँख फूटना। **-पड़ना**-दृष्टिगत होना; पानेकी इच्छा होना। **-पथराना**-मरनेके समय पुतलीका गतिहीन होना। **-पसारना,-फैलाना**-दूरतक नजर दौड़ाना। **-फड़कना**-पलकका बार-बार हिलना (इसके आधारपर शुभाशुभका अनुमान किया जाता है)। **-फाड़-फाड़कर देखना**-आश्चर्य या औत्सुक्यके साथ देखना। **-फूटना**-अंधा होना; बुरा मालूम होना, देखकर जलना। **-फेरना**-पहलेकासा प्रेम न रखना, निगाह बदलना। **-फोड़ना**-आँख नष्ट करना; आँखपर जोर पड़नेवाला काम करना। **-बंद कर (मूँदकर) कोई काम करना**-बिना सोचे-समझे कोई काम करना; और किसी बातकी परवा न कर अपना काम करते जाना। **-बंद होना,-मुँदना**-आँख झपकना; मृत्यु होना। **-बचाना**-आँख चुराना। **-बनाना**-मोतियाबिंद आदिका शल्योपचार करना। **-बराबर करना**-सामने ताकना; डटकर बात करना। **-बिगड़ना**-आँख खराब होना। **-बिछाना**-आदरपूर्वक स्वागत करना। **-बैठना**-चोट आदिके कारण आँखका नष्ट हो जाना; आर्थिक आघात लगना। **-भर आना**-आँखका अश्रुपूर्ण होना। **-भर देखना**-अच्छी तरह देखना। **-मचकाना**-बार-बार पलकें गिराना; संकेत करना। **-मारना**-आँखोंसे इशारा करना। **-मिलाना**-बराबरीके भावसे देखना। **-मूँद लेना**-न देखना, ध्यान न देना। **-में आँख डालना**-आँख मिलाना; धृष्टतापूर्ण दृष्टिसे देखना। **-में खटकना**-बुरा मालूम होना। **-में गड़ना**-खटकना; मन लुभा लेना। **-में चुभना**-पसंद आना; बुरा लगना। **-में बसना**-ध्यानपर चढ़ना। **-मोड़ना**-आँख फेरना। **-लगना**-नींद आना; दिल लगना। **-लड़ना**-नजर मिलाना; प्रेमदृष्टिसे देखना। **-लड़ाना**-आँख मिलाना, घूरना। **-ललचाना**-देखनेकी इच्छा होना। **-लाल करना**-क्रोधपूर्ण दृष्टिसे देखना। **-सामने न करना**-लज्जा आदिके कारण सामने न ताकना। **-सेंकना**-सौंदर्य-दर्शनका सुख लेना, हसीनोंको घूरना। **-से आँख मिलाना**-नजर बराबर करना; आँख लड़ाना। **(फूटी)-से भी न देखना**-तुच्छ समझना। **-होना**-परख होना, ज्ञान होना। **(खें) चढ़ना**-नींद आदिके कारण पलकोंका चढ़ जाना। **-चार करना,-होना**-देखादेखी होना। **-ठंढी होना**-जी भरना, तृप्त होना। **-डबडबाना**-आँखोंमें आँसू भर आना। **-तरेरना**-क्रोधकी दृष्टिसे देखना। **-दौड़ाना**-नजर दौड़ाना, इधर-उधर देखना। **-फिर जाना**-बे-मुरौवत होना, नजर बदल जाना। **-बदल जाना**-नजर बदल जाना, कृपादृष्टि न रहना। **(खों)की ठंढक**-प्रिय व्यक्ति या वस्तु। **-की सूइयाँ निकालना**-किसीके कोई काम लगभग पूरा कर लेने पर थोड़ा करके सारा श्रेय लेनेका प्रयत्न करना। **-के आगे अँधेरा छाना**-मूर्च्छित होना; निर्बलता आदिके कारण क्षणमात्रके लिए कुछ न देख पड़ना। **-के आगे अँधेरा होना**-विपत्ति आदिमें अपनेको असहाय पाकर निराश होना; मूर्च्छित होना। **-के आगे चिनगारी छूटना**-चोट आदिके कारण चकाचौंध होना। **-के आगे नाचना, या फिरना**-सामने दृश्य मौजूद रहना; स्मृतिमें बना रहना। **-के आगे**

रखना–सामने रखना। **–के डोरे**–आँखोंके सफेद भागपर लाल रंगकी वारीक नसें। **–के तारे छूटना**–चोट आदिके कारण चकाचौंध होना। **–के सामने नाचना**–स्मृतिमें बना रहना; दृश्य सामने रहना। **–देखा हुआ**–स्वयं देखा हुआ। **–पर पट्टी बाँध लेना**–ध्यान न देना। **–पर परदा पड़ना**–भ्रम होना, समझमें न आना।**–पर बैठाना**–आदरके साथ रखना। **–पर रखना**–खातिरदारीके साथ रखना। **–में**–नजरमें, परखमें। **–में काजल घुलना**–काजलका खूब लगना। **–में खून उतरना**–क्रोधसे आँखोंका लाल होना। **–में चढ़ना**–पसंद आना, जँचना। **–में चुभना**–अच्छा न लगना, खटकना। **–में टेसू,–में तीसी,–में सरसों फूलना**–ध्यानमें रहनेवाली वात सर्वत्र दिखाई देना; मस्ती आना। **–में धूल झोंकना या डालना**–धोखा देना। **–में नाचना**–ध्यान वना रहना। दृश्य सामने रहना। **–में फिरना**–ध्यान वना रहना; **–में बसना,–में समाना**–दिलमें घर कर लेना। **–में बैठना**–पसंद आना। **–में भंग घुटना**–भंगके नशेमें होना। **–में रखना**–प्यारसे रखना, हिफाजतसे रखना। **–में रात काटना**–जागकर रात विताना। **–में शील होना**–मुरौवती होना। **–में समाना**–ध्यानपर चढ़ना; स्मरण बना रहना। **–लगना**–ऊपर आना, शरीरपर बीतना। **–से उतरना**–नजरोंसे उतर जाना। **–से ओझल होना**–सामने न रहना, दृष्टिसे परे होना। **–से काम करना**–इशारेसे काम निकालना। **–से गिरना**–आँखोंसे उतरना। **–से लगाकर रखना**–प्यारके साथ रखना।

आँखड़ी*–स्त्री० आँख; अँखड़ी।

आँखा–पु० एक तरहकी छलनी।

आँग*–पु० अंग; शरीर; स्तन।

आँगन–पु० चौक, अजिर, घरके भीतरका सहन।

आंगिक–वि० [सं०] अंग या शरीर-संबंधी; अंगचेष्टा द्वारा व्यंजित या कृत (भाव, अभिनय आदि)। पु० शारीरिक चेष्टा; कायिक अनुभाव। **–अभिनय**–पु० शारीरिक चेष्टाओं द्वारा किया जानेवाला अभिनय।

आँगी*–स्त्री० अँगिया।

आँगुर (ल) पु० अंगुल।

आँगुरिया*–स्त्री० दे० 'आँगुर'।

आँगुरी*–स्त्री० उँगली।

आँवी†–स्त्री० महीन जालीसे मढ़ी छलनी।

आँच–स्त्री० गरमी; जलन; लपट; आग; ताव; तेज; चोट, हानि, अहित; संकट; प्रेम; कामताप। **मु०–आना**–हानि होना; कष्ट, आघात पहुँचना। **–खाना**–आँचपर पकाया जाना; (पकायी जानेवाली चीजका) अधिक आँच खा जाना, ताव खाना।

आंचन, आंछन–पु० [सं०] अस्थिभंग, मोच आदि ठीक करना; शरीरसे काँटा, वाण आदि निकालना।

आँचना*–स० क्रि० जलाना, तपाना।

आँचर*–पु० दे० 'आँचल'।

आँचल–पु० शाल, दुपट्टे आदिका छोर; साड़ी, धोती आदिका सामने रहनेवाला छोर; अँचला; स्तन (ला०)। **मु०–दबाना**–दूध पीना। **–देना**–बच्चेको दूध पिलाना; विवाहकी एक रीति; आँचलसे हवा करना। **–में बाँधना**–गाँठ बाँधना, अच्छी तरह याद कर लेना; (किसी वस्तुको) सर्वदा साथ रखना। **–लेना**–आँचलसे पैर छूकर प्रणाम करना।

आँजन†–पु० अंजन।

आँजना–स० क्रि० अंजन लगाना।

आंजनेय–पु० [सं०] हनूमान्।

आँट–पु० अँगूठे और तर्जनीके वीचकी जगह; दाँव; पूला; लाग-डाट; गाँठ। **–साँट**–स्त्री० साजिश, बंदिश। **मु० –पर चढ़ना**–दाँवपर चढ़ना।

आँटना*–अ० क्रि० अँटना; पूरा पड़ना; पार पाना; पहुँचना; मिलना, हाथ लगना। स० क्रि० अँटाना।

आँटी–स्त्री० गुल्ली-डंडा खेलनेकी गुल्ली; पूला; सूतका लच्छा; कुश्तीका एक पेच; टेंट।

आँठी–स्त्री० दही, वलगम आदिका थक्का; गाँठ; गुठली।

आँड़–पु० अंडकोष।

आँड़ी–स्त्री० गाँठ, कंद; सिरा; पहियेकी सामी।

आँड़ू–वि० जो वधिया न हो, अँड़ुआ (बैल)।

आँत–स्त्री० पाचन-संस्थानका आमाशयके बादसे मलद्वार-तकका भाग जिसमेंसे होकर आहार, रसग्रहणके वाद, मलरूपमें बाहर निकलता है, अंत्र, अँतड़ी। **मु०–उतरना**–आँत उतनेकी वीमारी, अंत्रवृद्धि, 'हानियाँ'। **–ऐंठना**–आँतोंमें ऐंठन होना, मरोड़ होना। **आँतें कुलकु(बु)लाना**–भूखसे बेचैन होना। **–मुँहमें आना**–आँतोंमें वल पड़ना। **–समेटना**–भूख सहना। **–सूखना**–वहुत भूखा होना। **आँतोंका वल खुलना**–छककर खाना।

आँतर–पु० अंतर; खेतका वह भाग जो एक वार जोतनेके लिए घेरा जाता है; पानीकी क्यारियोंके बीच छोड़ा गया रास्ता।

आंतरिक्ष–वि० [सं०] अंतरिक्ष-संबंधी, आकाशीय।

आंत्र–वि० [सं०] आँतसे संबंध रखनेवाला। पु० आँत।

आंत्रिक–वि० [सं०] अंत्र-संबंधी।

आँदू*–पु० सीकड़; बेड़ी।

आंदोलन–पु० [सं०] इधरसे उधर आना-जाना, झूलना, हिलना; हलचल; किसी वातके लिए व्यापक सामूहिक प्रयत्न; तहकीक।

आंदोलित–वि० [सं०] कंपित; झुलाया हुआ; हलचलसे पूर्ण।

आँध–स्त्री० अँधेरा; रतौंधी; आफत।

आँधना*–अ० क्रि० हल्ला वोलना, टूट पड़ना।

आँधर†,आँधरा–* वि० अंधा।

आँधारंभ–पु० अंधेर, मनमाना कार्य।

आँधी–स्त्री० धूलभरी जोरकी हवा, तूफान; भारी हलचल। वि० आँधी-जैसा वेगवान्, बहुत तेज। **मु०–उठना**–हलचल मचना; तूफान उठना।

आँध्रे*–स्त्री० दे० 'आँधी'।

आँवाहलदी–स्त्री० आमाहलदी।

आंबिकेय–पु० [सं०] कार्त्तिकेय; धृतराष्ट्र।

आँय-बाँय–पु० अंडबंड, निरर्थक प्रलाप, बकबक।

आँव–पु० एक तरहका चिकना मल; पेचिश रोग।

आँवठ–पु० किनारा; कपड़े या बरतनका किनारा।

आँवड़ना*–अ० क्रि० उमड़ना, बह निकलना।

आँवड़ा*–वि० गहरा।

आँवरा–पु० आँवला।

आँवल–स्त्री० खेड़ी, वह झिल्ली जिसमें गर्भस्थ शिशु लिपटा रहता है।

आँवलगट्टा–पु० सूखा आँवला।

आँवला–पु० एक पेड़ या उसका फल जो मुरब्बा, अचार बनाकर खाने या दवाके काममें आता है। **–पत्ती**–स्त्री० सिलाईका एक प्रकार। **–सार गंधक**–स्त्री० साफ की हुई गंधक।

आँवाँ–पु० दे० 'आवाँ'।

आंशिक–वि० [सं०] अंश-संबंधी; कुछ, थोड़ा।

आंशुक जल–पु० [सं०] धूप दिखलाया हुआ पानी।

आँस*–पु० आँसू; वेदना, कष्ट। स्त्री० डोरी, रेशा।

आँसी*–स्त्री० बायन, भेंट।

आँसू–पु० नेत्रजल, अश्रु। **–ढाल**–पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें आँखोंसे बहुत पानी गिरता है। मु० **–गिराना, –ढालना**–रोना। **–पीकर रह जाना**–मन मसोसकर रह जाना। **(किसीके)–पोंछना**–ढाढ़स बँधाना। **आँसुओंसे मुँह धोना**–बहुत रोना।

आँहड़–पु० बरतन।

आँहाँ–अ० निषेधसूचक शब्द, नहीं।

आ–उप० [सं०] तक (आसेतु); से (आजन्म); भर (आजीवन); सहित (आबालवृद्ध) आदिका सूचक।

आइंदा–वि० [फ़ा०] आनेवाला, भविष्य। अ० आगे।

आइ*–स्त्री० आयु, जीवन।

आइस(सु)–पु० दे० 'आयसु'।

आई*–स्त्री० आयु; मौत।

आईन–पु० [अ०] विधान, कानून, नियम।

आईना–पु० [फ़ा०] दर्पण, शीशा; [ला०] स्पष्ट, खुला; किवाड़का दिलहा। **–बंदी**–स्त्री० कमरेमें झाड़ आदि सजाना; फ़र्शमें पत्थर आदिकी जुड़ाई; रोशनी करनेके लिए टट्टियाँ खड़ी करना। **–साज़**–पु० आईना बनानेवाला। मु० **आईनेमें मुँह देखना**–अपनी योग्यता समझ लेना।

आईनी–वि० [अ०] वैध, विधानसंगत; नियमबद्ध।

आउ*–स्त्री० दे० 'आयु'।

आउज(झ)*–पु० एक बाजा, ताशा।

आउ-बाउ*–पु० आयँ-बायँ (बकना); प्रलाप।

आकंप, आकंपन–पु० [सं०] हिलना, काँपना।

आकंपित–वि० [सं०] हिला, काँपा हुआ; हिलाया या कँपाया हुआ; क्षुब्ध किया हुआ।

आक–पु० मदार।

आक़(क़ि)बत–स्त्री० [अ०] मृत्यु या प्रलयके बादका काल; परलोक। मु० **–बिगड़ना**–परलोक बिगड़ना।

आकबाक*–पु० दे० 'अकबक'।

आकर–पु० [सं०] खान; उत्पत्तिस्थान; भांडार; भेद। **–ग्रंथ**–पु० शब्दकोश, विश्वकोष आदि ऐसे ग्रंथ जिनमें शब्दों, देशों, व्यक्तियों, घटनाओं इत्यादिका विवरण दिया रहता है और जिनसे ग्रंथादिके प्रणयनमें सहायता ली जाती है, संदर्भ-ग्रन्थ, निर्देश-ग्रंथ (बुक्स ऑव रेफ़रेंस)। **–भाषा**–स्त्री० वह मूल प्राचीन भाषा जिससे कोई नयी भाषा, आवश्यकता होनेपर, शब्द ग्रहण करे।

आकरखना*–स० क्रि० आकृष्ट करना, खींचना।

आकरिक–पु० [सं०] खानके कामकी निगरानी करनेवाला; खान खोदनेवाला।

आकरी–स्त्री० [सं०] खान खोदनेका धंधा; * व्याकुलता, आकली।

आकर्ण–अ० [सं०] कानतक। वि० कानतक पहुँचा हुआ, कानको छूता हुआ।

आकर्णन–पु० [सं०] सुनना।

आकर्णित–वि० [सं०] सुना हुआ।

आकर्ष–पु० [सं०] खींचना; खिंचाव; चुंबक; पासा; पासेका खेल; पासेकी बिसात; कसौटी।

आकर्षक–वि० [सं०] खींचनेवाला; दूसरोंका मन, ध्यान अपनी ओर खींचनेवाला, रोचक, सुंदर।

आकर्षण–पु० [सं०] (अपनी ओर) खींचना; खिंचाव; दूरस्थ व्यक्तिको मन खींचकर बुला लेनेका तांत्रिक प्रयोग। **–शक्ति**–स्त्री० किसी भौतिक पदार्थकी अन्य पदार्थको अपनी ओर खींचनेकी प्राकृतिक शक्ति, चुंबक-शक्ति।

आकर्षन*–पु० दे० 'आकर्षण'।

आकर्षना*–स० क्रि० खींचना।

आकर्षित–वि० [सं०] दे० 'आकृष्ट'।

आकलन–पु० [सं०] ग्रहण, पकड़ना; समझाना; इकट्ठा करना; गिनना; खोज करना, अनुसंधान; इच्छा, आकांक्षा।

आकलित–वि० [सं०] गृहीत; संगृहीत; आबद्ध; गुँथा हुआ; कंपित किया हुआ; समझा हुआ; परिगणित।

आकली*–स्त्री० बेचैनी, व्याकुलता; गौरैया नामक पक्षी।

आकस्मात्*–अ० दे० 'अकस्मात्'।

आकस्मिक–वि० [सं०] अचानक होनेवाला, इत्तिफ़ाक़ी; कारणहीन। **–छुट्टी**–स्त्री० अचानक आवश्यकता पड़नेपर ली जानेवाली छुट्टी।

आकस्मिकतानिधि–स्त्री० [सं०] (कंटिनजेंसी फंड) वह निधि या कोष जिसमेंसे अकस्मात् उपस्थित होनेवाली आवश्यकता आदिके लिए रुपया व्यय किया जा सके।

आकांक्षा–स्त्री० [सं०] चाह, इच्छा; अपेक्षा; वाक्यमें अर्थ-पूर्तिके लिए पदविशेषकी आवश्यकता; खोज-पूछ।

अकांक्षित–वि० [सं०] चाहा हुआ; अपेक्षित।

आकांक्षी (क्षिन्)–वि० [सं०] इच्छा, अपेक्षा रखनेवाला।

आकार–पु० [सं०] रूप, शक्ल; गढ़न, बनावट; लंबाई-चौड़ाई, फैलाव (छोटा-बड़ा आदि); एकरूपता; 'आ' स्वर। **–पत्र**–पु० (फ़ार्म) दे० 'प्रपत्र'।

आकारी*–वि० बुलानेवाला।

आकाश–पु० [सं०] पंच महाभूतोंमेंसे प्रथम जो शब्द गुणवाला माना जाता है, आसमान; ईथर; शून्य (ग०); शून्य स्थान; अवकाश; छिद्र, रंध्र; ब्रह्म; अभ्रक। **–कुसुम**,

–पुष्प–पु० आसमानका फूल, अनहोनी बात। **–गंगा**–स्त्री० आकाशमें उत्तरसे दक्षिणतक फैला हुआ छोटे-छोटे तारोंका समूह; आकाशवाहिनी गंगा, मंदाकिनी। **–चारी (रिन्)**–वि० आकाशमें चलने-फिरनेवाला (पक्षी, ग्रह आदि)। **–दीप, –दीया** [हिं०], **–प्रदीप**–पु० बाँसके सिरेपर बाँधकर जलाया जानेवाला दीया या लालटेन। **–नदी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–निंब**–पु० अकासनीम। **–निद्रा**–स्त्री०, **–शयन**–पु० खुली जगहमें सोना। **–भाषित, –वचन**–पु० अभिनयमें किसी पात्रका आकाशकी ओर देखकर कोई प्रश्न करना और फिर उसका उत्तर देना। **–मंडल**–पु० खगोल। **–वल्ली**–स्त्री० अमरवेल। **–वाणी**–स्त्री० आसमानसे आनेवाली आवाज, अभौतिक वाणी; रेडियो। **–वृत्ति**–स्त्री० ऐसी जीविका जिसका कुछ ठीक-ठिकाना न हो, अनिश्चित वृत्ति। **–सलिल**–पु० मेह; ओस। **मु०–खुलना**–आसमान साफ होना, बादल हटना। **–छूना**–बहुत ऊँचा होना। **–पाताल एक करना**–भारी प्रयास करना, हलचल मचाना। **–पातालका अंतर**–बहुत बड़ा अंतर। **–से बातें करना**–बहुत ऊँचा होना।

आकाशी–स्त्री० धूपसे बचनेके लिए ताना गया चँदोवा।

आकाशीय–वि० [सं०] आकाश-संबंधी; आकाशमें स्थित या उत्पन्न।

आकीर्ण–वि० [सं०] फैलाया; बिखेरा हुआ; भरा हुआ, व्याप्त।

आकुंचन–पु० [सं०] सिकुड़ना; सिमेटना, टेढ़ा होना।

आकुंचित–वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ; कुटिल; घुघराले (केश)।

आकुंटित–वि० [सं०] जड़; लज्जित; कुंद, भोथरा।

आकुल–वि० [सं०] उद्विग्न, परेशान; बेचैन; भरा हुआ; अव्यवस्थित; दबा; अभिभूत (शोकाकुल)।

आकुलता–स्त्री० [सं०] बेचैनी, उद्विग्नता; परेशानी।

आकृति–स्त्री० [सं०] रूप, गढ़न; चेहरा; जाति; एक वर्णवृत्त।

आकृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ।

आक्रंदन–पु० [सं०] रोना, चिल्लाना; पुकारना।

आक्रंदी (दिन्)–वि० [सं०] रोने, चिल्लाने या पुकारनेवाला।

आक्रम–पु० [सं०] निकट जाना; प्राप्त करना; पराभूत करना।

आक्रमण–पु० [सं०] पास जाना; टूट पड़ना; चोट करना; हमला, चढ़ाई; पराभूत करना; आक्षेप।

आक्रमित–वि० [सं०] जिसपर आक्रमण किया गया हो, आक्रांत।

आक्रमिता–वि० स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो मनसा-वाचा-कर्मणा नायकको अपने वशमें करे।

आक्रांत–वि० [सं०] जिसपर हमला किया गया हो; प्राप्त; पराभूत; जिसपर कब्जा किया गया हो; कष्टग्रस्त।

आक्रामक–वि० [सं०] आक्रमण करनेवाला।

आक्रोश–पु० [सं०] कोसना; शाप; निंदा, कुत्सा; कटूक्ति।

आक्रोशक–वि० [सं०] कोसने, शाप देनेवाला।

आक्रोशन–पु० [सं०] कोसना, शाप देना; बुरा-भला कहना।

आक्रोष्टा (ष्टृ)–वि० [सं०] आक्रोशक।

आक्षिप्त–वि० [सं०] फेंका, गिराया हुआ; छीना हुआ; जिसपर आक्षेप किया गया हो; अभिभूत; लांछित; परित्यक्त; निर्दिष्ट; जिसे चुनौती दी गयी हो

आक्षेप–पु० [सं०] फेंकना; उछालना; खींचना; लांछन; आपत्ति, एतराज; एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तुकी कुछ विशेषता प्रतिपादित करनेके लिए निषेध-सा किया जाता है; एक वातरोग।

आक्षेपक–वि० [सं०] आक्षेप करनेवाला; शिकारी।

आखंडल–पु० [सं०] इंद्र।

आखत–पु० अक्षत; विवाह आदिमें नाई आदिके लिए निकाला जानेवाला अन्न; केसर आदिमें रँगा हुआ चावल जो दूल्हे या देवताके मस्तकपर लगाया जाता है।

आखन*–अ० प्रतिक्षण।

आखना*–स० क्रि० कहना; देखना; चाहना; उल्लंघन करना; छलनीसे छानना।

आखनिक–पु० [सं०] खोदनेवाला; खान खोदनेवाला; चूहा; शूकर; चोर; कुदाल।

आखर*–पु० अक्षर, वर्ण।

आखा–पु० झीने कपड़ेसे मढ़ी छलनी; खुरजी। * वि० पूरा, समूचा; अनगढ़ा।

आखात–पु० [सं०] उत्खनन; कुदाल; खंती; उपसागर।

आख़िर–पु० [फा०] अंत, समाप्ति, सीमा; परिणाम। वि० अंतका, पिछला। अ० अंतमें, आखिरको; अवश्य; भला; मगर। **–कार**–अ० अंतमें।

आख़िरी–वि० [अ०] अंतिम, सबसे पीछेका।

आखु–पु० [सं०] चूहा; चोर; सूअर; कुदाल; देवताड़।

आखेट–पु० [सं०] शिकार, मृगया।

आखेटक–पु० [सं०] शिकारी; शिकार।

आख़ोर–पु० [फा०] पानी पीनेकी जगह; चौपायोंके चारा खानेका स्थान, सार, चरनी; उनके आगेकी घास; उनके खानेसे बचा चारा; रद्दी चीज; कूड़ा। वि० निकम्मा; सड़ा-गला; गंदा। **–की भर्ती**–रद्दी चीजोंका ढेर।

आख्या–स्त्री० [सं०] नाम; विवरण; व्याख्या; यश; (रिपोर्ट) दे० 'प्रतिवेदन'।

आख्यात–वि० [सं०] कहा हुआ; प्रसिद्ध।

आख्याति–स्त्री० [सं०] कहना, बताना; नाम; प्रसिद्धि।

आख्यान–पु० [सं०] कहना, वर्णन; वृत्तांत; कथा-कहानी; वह कथा जिसे कवि या लेखक स्वयं कहे; पौराणिक कथा।

आख्यायिका–स्त्री० [सं०] सिलसिलेवार कहानी या वृत्तांत; शिक्षा देनेवाली कल्पित कथा; वह आख्यान जिसमें पात्र भी कहीं-कहीं अपना चरित्र अपने मुँहसे कहते है।

आगंतुक–वि० [सं०] बिना बुलाये आनेवाला; अचानक आने या होनेवाला; अजनबी; प्रक्षिप्त; भूला-भटका (जानवर); आकस्मिक। पु० क्षेपक; अजनबी; अतिथि।

आग–स्त्री० अग्नि; कामाग्नि; वात्सल्य प्रेम; जलन; झगड़ा; संताप, अंतर्ज्वाला। पु० ऊखका अगौर; हरसेकी नोकके पास बना हुआ खड्डा। वि० जलता हुआ, गरम; (ला०) अति क्रुद्ध। *अ० आगे। **मु० –उठाना**–झगड़ा उठाना; दबी वेदनाको जगाना। **–का पुतला**–क्रोधी, अग्निशर्मा। **–के मोल**–बहुत महँगा। **–खाना अंगार हगना**–जैसी करनी वैसी भरनी। **–देना**–दाहकर्म करना; आतशबाजीमें आग लगाना; जलाना; नष्ट करना;

तोपमें बत्ती देना। **–पर आग डालना**–जलेको जलाना। **–पर पानी डालना**–क्रुद्धको शांत करना, लड़नेवालोंको समझाना-बुझाना। **–पर लोटना**–तड़पना, बेचैन होना; ईर्ष्या करना। **–पानीका वैर**–सहज वैर। **–फाँकना**–डींग मारना। **–फूँकना**–क्रुद्ध करना। **–फूसका वैर**–सहज वैर। **–बबूला या भभूका होना**–गुस्सेसे लाल होना, अतिक्रुद्ध होना। **–बरसना**–सख्त गरमी पड़ना या लू चलना; गोले-गोलियोंकी बौछार होना। **–बरसाना**–दुश्मनपर गोले-गोलियोंकी वर्षा करना। **–बुझा लेना**–कसर निकालना। **–बोना**–उत्पात खड़ा करना; झगड़ा लगाना। **–भड़काना**–हलचल मचाना; लड़ाई बढ़ाना; जोश बढ़ाना। **–भूनना**–अति करना। **–में कूदना**–अपने ऊपर विपत्ति लेना। **–में घी छोड़ना या डालना**–क्रोध भड़काना; झगड़ा बढ़ाना। **–में झोंकना**–(किसीको) आफत, खतरे, अनिष्टमें ढकेल देना। **–में पानी डालना**–क्रोध शांत करना; झगड़ा मिटाना। **–लगना**–क्रोध भड़क उठना, गुस्सेसे लाल हो जाना; डाहसे जलने लगना; किसी वस्तुका बहुत महँगा हो जाना; नष्ट होना। **–लगाकर तमाशा देखना**–झगड़ा खड़ा करके उसमें आनंद लेना। **–लगाकर पानीको दौड़ना**–पहले झगड़ा लगाकर फिर उसको शांत करनेका यत्न करना। **–लगाना**–क्रोध या ईर्ष्या भड़काना; चुगली खाना; नाश करना। **–लगेपर कुआँ खोदना**–पहलेसे करनेके कामको ऐन वक्तपर करने चलना **–लेने आना**–उलटे पाँव लौट जाना। **–से पानी होना**–क्रोध करनेके बाद शांत होना। **–होना**–क्रुद्ध होना।

आगणन–पु० [सं०] (एस्टिमेट) दे० 'प्राक्कलन'।

आगत–वि० [सं०] आया हुआ, पहुँचा हुआ; घटित; प्राप्त; बाहरसे आया हुआ (माल)। **–पतिका,–भर्तृका**–स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेशसे लौटा हो। **–स्वागत**–पु० अतिथि, निमंत्रितका स्वागत-सत्कार, आव-भगत।

आग-पीछ*–पु० आगा-पीछा।

आगम–पु० [सं०] आना, अवाई; समागम; प्राप्ति; जन्म; वृद्धि; संचय; (धनागम), आमदनी; (रेवेन्यू) दे० 'राजस्व'; प्रवाह; ज्ञान; वेद; शास्त्र; दर्शन; तंत्र-शास्त्र; नीतिशास्त्र; न्यायमें माने हुए चार प्रमाणोंमेंसे एक, शब्द-प्रमाण; सिद्धांत; साक्षिपत्र; शब्दसाधनमें किसी वर्णकी वृद्धि (व्या०); होनहार; आनेवाला समय; उपक्रम। वि० आगामी। **–जानी**–वि० [हिं०] होनहार–भविष्यको समझनेवाला। **–ज्ञानी (निन्)**–वि० दे० 'आगम-जानी'। **–वक्ता (क्तृ)**–वि, पु० भविष्य बतलानेवाला। **–सोची**–वि० [हिं०] आगेकी बात सोचनेवाला। **मु०–जनाना**–होनहारकी सूचना देना। **–बाँधना**–आनेवाली बातका निश्चय करना।

आगमन–पु० [सं०] आना; लौटना; प्राप्ति; उत्पत्ति।

आगमी (मिन्)–वि० [सं०] ज्योतिषी; सामुद्रिक जाननेवाला; शास्त्रज्ञ; आनेवाला; भावी।

आगर–पु० आकर, खान; ढेर; खजाना; घर; छप्पर; नमक जमानेका गड्ढा; * अगाड़ी, ब्योंड़ा। वि० बढ़कर, अधिक; कुशल, चतुर।

आगरी–पु० नमक बनानेवाला।

आगल*–पु० अगाड़ी। वि० अगला। अ० आगे, सामने।

आगला*–वि० अगला।

आगवन*–पु० दे० 'आगमन'।

आगा–पु० वस्तुका आगेकी ओरका भाग; अँगरखे आदिमें आगेका पल्ला या टुकड़ा; मकानके आगेका सहन, अगवारा; सेनाका अग्रभाग; लिंगेंद्रिय; चेहरा; माथा; गलही; भविष्य; आगम। **–पीछा**–पु० आगे पीछे होनेवाली बातें; (कार्यका) परिणाम, नतीजा; हिचक, पसोपेश; देहका अगला-पिछला भाग, विशेषतः गोपनीय अंग। **मु०–काटना**–किसी अपशकुन-कारक व्यक्ति या प्राणीका आगेसे निकल जाना। **–भारी होना**–गर्भवती होना।

आग़ा–पु० [सं०] बड़ा भाई; मालिक; काबुलका रहनेवाला।

आगान*–पु० प्रसंग; हाल, वृत्तांत।

आगामिक–वि० [सं०] भविष्यत् कालसे संबंध रखनेवाला; आनेवाला।

आगामी (मिन्)–वि० [सं०] आनेवाला; भावी।

आगार–पु० [सं०] घर; स्थान; भांडार (अन्नागार); खजाना। **–गोधिका**–स्त्री० छिपकली।

आगाह–वि० [फ़ा०] जानकार, खबर रखनेवाला, अभिज्ञ। पु० होनहार, भवितव्य।

आगाही–स्त्री० जानकारी, सूचना।

आगि*–स्त्री० आग।

आगिल(ला)–*वि० अगला।

आगी*–स्त्री० आग।

आगू*–अ० आगे। पु० परिणाम।

आगृहीत–वि० [सं०] (ड्रान) जमा किये हुए धनमेंसे पुनः निकाला या लिया हुआ।

आगृहीता, आग्राहक–पु० [सं०] (ड्राअर) जमा किये हुए धनमेंसे कुछ अंश निकालनेवाला।

आगे–अ० सामने; सामनेकी ओर कुछ दूरपर; पहले; पीछे; बादमें; अधिक; आइंदा; गोदमें। **–आगे**–अ० क्रमशः कुछ दिन बाद; आगे चलकर। **–पीछे**–अ० एक के बाद एक; मुँहपर और पीठ पीछे; अव्यवस्थित रूपसे; पास-पास; थोड़ा आगे या पीछे; वंशमें (उसके आगे-पीछे कोई नहीं)। **मु०–आना**–सामना करना; कर्मका फल मिलना; घटित होना। **–करना**–सामने रखना, हाजिर करना; अगुआ बनाना; खतरे आदिके सामने कर देना, आड़ लेना। **–को**–आगेसे, आइंदा। **–डालना**–खानेके लिए सामने रखना। **–दौड़ पीछे चौड़**–आगे करते जाना और पीछेका खयाल न रखना। **–धरना,–रखना**–हाजिर करना; भेंट करना; आदर्श बनाना। **–निकलना**–साथियों, प्रतिस्पर्द्धियोंसे आगे बढ़ जाना। **–लेना**–अगवानी करना, आगे जाकर मिलना। **–से**–पहलेसे; भविष्यमें; सामनेसे। **–से लेना**–स्वागत करना। **–होकर लेना**–आगे बढ़कर स्वागत करना। **–होना**–अग्रसर होना; बढ़ जाना; सामना करना; परदा करना; स्वागत करना।

आगौन*–पु० आगमन।

आग्नेय–वि०[सं०] अग्नि-संबंधी; अग्निको अर्पित; अग्नि-

से उत्पन्न; अग्निगर्भ; जिससे आग निकले; अग्निदीपन; अग्नि-जैसा (कीड़ा)। पु० स्कंद; अगस्त्य; किष्किंधाके पासका एक प्राचीन जनपद; अग्नि-पूजक; अग्निको अर्पित हवि आदि; कृत्तिका नक्षत्र; सोना; रक्त; लाख; बारूद; आग्नेयास्त्र; वह कीड़ा जिसके काटनेसे जलन हो (भिड़ आदि); ज्वालामुखी पर्वत, आग्नेयी दिशा। **–पुराण**–पु० अग्निपुराण।

आग्नेयास्त्र–पु० [सं०] अभिमंत्रित बाण जिससे आग निकले; तोप-बंदूक आदि (फायर आर्म्स)।

आग्नेयी–स्त्री० [सं०] अग्निपत्नी, स्वाहा; पूर्व-दक्षिणके बीचकी दिशा; प्रतिपदा; अग्नि उद्दीप्त करनेवाली औषध।

आग्रह–पु०[सं०] लेना, पकड़ना; अनुरोध; हठ; अनुग्रह; नैतिक बल; निश्चय; जोर देना; मुस्तैदी।

आग्रहायण–पु० [सं०] अगहनका महीना।

आग्रही (हिन्)–वि० [सं०] आग्रह करनेवाला, हठी।

आघ*–पु० अर्घ, मूल्य।

आघर्षणी–स्त्री० [सं०] ब्रश; रबर।

आघाट–पु० [सं०] सरहद, सिवान; अपामार्ग; नृत्यके साथ बजाया जानेवाला एक वाद्य।

आघात–पु० [सं०] चोट; प्रहार; घाव; धक्का; वध; बूचड़खाना; विपत्ति; पेशाबका रुकना। **–स्थान**–पु० वधालय।

आघूर्ण–वि० [सं०] चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ।

आघूर्णित–वि० [सं०] घुमाया या चक्कर खाया हुआ।

आघोष–पु० [सं०] जोरसे पुकारना, ऊँची आवाजमें कहना; मुनादी।

आघ्राण–पु० [सं०] सूँघना; तृप्ति।

आघ्रात–वि० [सं०] सूँघा हुआ; तृप्त; स्पृष्ट।

आघ्रेय–वि० [सं०] जो सूँघा जाय; सूँघने योग्य।

आचमन–पु० [सं०] पूजन आदिके पहले शुद्धिके लिए हथेलीपर जल लेकर पीना; इस प्रकार पीनेका जल; गरगर शब्दके साथ कुल्ली करना।

आचमनक–पु० [सं०] थूकनेका पात्र, पीकदान।

आचमनी–स्त्री० कलछीके आकारका चम्मच जिसमें जल लेकर आचमन करते हैं।

आचरज*–पु० दे० 'अचरज'।

आचरजित*–वि० दे० 'आश्चर्यित'।

आचरण–पु० [सं०] करना; बताना; अनुसरण; शुद्धि; लक्षण; चरित्र; चाल-चलन; आगमन; नियम; रथ, गाड़ी। **–पंजी,–पुस्तक**–स्त्री० (कांडक्टबुक) वह पुस्तक (पंजी) जिसमें कर्मचारीके आचरण, व्यवहार, कर्तव्य-पालन इत्यादिसे संबंध रखनेवाली बातें समय-समयपर लिखी जाती है।

आचरणीय–वि०[सं०]आचरण करने योग्य, अनुसरणीय।

आचरन*–पु० दे० 'आचरण'।

आचरना*–स० क्रि० व्यवहार करना।

आचरित–वि० [सं०] किया हुआ, अनुसृत; निर्दिष्ट।

आचार–पु० [सं०] चरित्र, चाल; अच्छा चाल-चलन; शील; व्यवहार; शास्त्रोक्त आचार; रिवाजी या रूढ़ व्यवहार (लोकाचार, कुलाचार); व्यवहारका तरीका; आहार; आचरण-संबंधी नियम। **–भ्रष्ट**–वि० जिसका आचार-व्यवहार बिगड़ गया हो, पतित। **–विचार**–पु० आचार और शौचादिका ध्यान।

आचारज*–पु० दे० 'आचार्य'।

आचारजी*–स्त्री० पौरोहित्य; आचार्य होनेका भाव।

आचारवान् (वत्)–वि० [सं०] शास्त्रोक्त कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ, सदाचारी।

आचारी(रिन्)–वि० [सं०] आचारवान्; शुद्ध आचरणवाला। पु० रामानुज संप्रदायका अनुयायी, श्रीवैष्णव।

आचार्य–पु० [सं०] गुरु, शिक्षक; उपनयन करने और वेद पढ़ानेवाला गुरु; (किसी विषयका) असाधारण पंडित; पूज्य पुरुष; मतप्रवर्त्तक; यज्ञमें कर्मका उपदेश करनेवाला; पांडवों आदिके गुरु, द्रोणका उपनाम; महाविद्यालयका प्रधान अधिकारी (प्रिंसिपल)। **–देव**–वि० जो आचार्यको अपना आराध्य देव मानता है।

आचार्या–स्त्री० [सं०] स्त्री गुरु; मंत्रकी व्याख्या करनेवाली।

आचार्यानी–स्त्री० [सं०] आचार्यपत्नी।

आचिंत्य*–वि० जो चिंतनमें न आ सके। पु० ईश्वर।

आच्छन्न–वि० [सं०] छिपा हुआ; ढका हुआ।

आच्छादक–वि० [सं०] ढकने, छिपानेवाला।

आच्छादन–पु० [सं०] ढकना; छिपाना; ढक्कन; खोल; वस्त्र, पहनावा; छाजन, ठाट; लोप।

आच्छादित–वि० [सं०] ढका, छिपा हुआ।

आछत*–अ० होते, रहते हुए, मौजूदगीमें।

आछना*–अ० क्रि० होना, मौजूद होना।

आछा*–वि० दे० 'अच्छा'।

आछी*–वि० स्त्री० अच्छी। वि० खानेवाला।

आछे*–अ० अच्छी तरह।

आछेप*–पु० दे० 'आक्षेप'।

आज–पु० वर्तमान, बीतता हुआ दिन। अ० वर्तमान दिनमें; वर्तमान कालमें; इस घड़ी, इस वक्त। **–कल**–पु० वर्तमान काल; नया जमाना। अ० वर्तमान कालमें, इन दिनों। **मु०–कल करना,–बताना**–टालमटोल करना। **–कलका**–हालका; नये जमानेका। **–कलमें**–दो-चार दिनोंमें ही, बहुत जल्द। **–कल लगाना**–मौत करीब होना। **–को**–इस समय।

आजन्म–अ० [सं०] जन्मसे, जन्मकालसे लगाकर; जन्मभर, आजीवन।

आज़माइश–स्त्री० [फा०] परीक्षा, जाँच; परीक्षार्थ प्रयोग।

आज़माइशी–वि० [फा०] परीक्षाके लिए किया गया।

आजमाना–स० क्रि० परीक्षा करना; परीक्षार्थ प्रयोग करना।

आज़मूदा–वि० [फा०] आजमाया हुआ, परीक्षित, अनुभूत।

आजा–पु० दादा, पितामह।

आज़ाद–वि० [फा०] स्वाधीन, जो दास या बँधुआ न हो; निडर; उद्धत; हाजिरजवाब; शास्त्र या लोकाचारके बंधनको न माननेवाला; बे-परवाह। **–ख़याल**–वि० स्वतंत्र विचारका। **–तबीयत**–वि० खुले दिलका, सरल।

आज़ादी–स्त्री० [फा०] स्वाधीनता, मुक्ति।

आजानु–अ० [सं०] जाँघके अंत या घुटनेतक। **–बाहु**–वि० जिसकी बाँहें घुटनेतक पहुँचती हों।

आज़ार–पु० [फा०] रोग; कष्ट, पीड़ा।

आजि–पु० [सं०] युद्ध; युद्धस्थल; दौड़का मैदान; सीमा।

आजिज़–वि० [अ०] दीन, लाचार, अशक्त; तंग आया हुआ; नम्र। [**–आना**–तंग आना, ऊब जाना।]

आजिज़ी–स्त्री० [अ०] लाचारी, अशक्तता; विनय; दीनता।

आजी–स्त्री० दादी, पितामही।

आजीवन–अ० जीवनपर्यंत, जिंदगीभर।

आजीविका–स्त्री० [सं०] रोजी; रोजगार, धंधा।

आज्ञप्त–वि० [सं०] आदिष्ट; जिसके संबंधमें आज्ञा दी गयी हो।

आज्ञप्ति–स्त्री० [सं०] आज्ञा, आदेश; (डिक्री) दीवानी मुकदमेमें न्यायालय द्वारा किसीके पक्षमें दिया गया निर्णय; किसी उच्चाधिकारी या परिषद् आदिका वह आदेश जो किसी व्यवस्था आदिके संबंधमें हो तथा जिसका मानना आवश्यक हो। **–हर**–पु० आज्ञावाहक, दूत।

आज्ञा–स्त्री० [सं०] हुक्म, आदेश; अनुमति। **–करण,–पालन**–पु० आदेशका पालन। **–कारी (रिन्)** वि० आज्ञापालक। **–पत्र**–पु० हुक्मनामा, आदेशज्ञापक पत्र। **–फलक**–वि० वह पत्र जिसपर किसी विषयादिकी आज्ञा लिखी हो। **–भंग**–पु० आज्ञाका उल्लंघन, आज्ञाके विरुद्ध कार्य करना।

आज्ञाता (तृ)–वि० [सं०] आज्ञा देनेवाला।

आज्ञापक–वि० [सं०] आज्ञा देनेवाला; मालिक, स्वामी।

आज्ञापन–पु० [सं०] हुक्म देना; जताना।

आज्ञापित–वि० [सं०] आदिष्ट; सूचित।

आज्य–पु० [सं०] घी; घीकी जगह काम आनेवाला पदार्थ।

आटना–स० क्रि० तोपना, ढक देना।

आटविक–पु० [सं०] वनवासी; सेनाका एक भेद।

आटा–पु० पिसा हुआ अन्न, पिसान। **मु०–(मुफलिसीमें)–गीला होना**–कठिनाईमें कठिनाई पैदा हो जाना। **आटे के साथ घुन पीसना**–बड़े आदमीके साथ छोटेको नुकसान पहुँचाना। **–दालका भाव मालूम होना**–असलियतका पता चलना; कियेका फल मिलना। **–दालकी फिक्र**–गृहस्थीकी चिंता। **–में नमक**–थोड़ा-सा, जरासा।

आटोप–पु० [सं०] फूलना, फैलाव; घमंड; आडंबर।

आठ–वि० सात और एक, चारका दूना। पु० आठकी संख्या। **मु०–अठारह होना**–तितर-बितर होना; हैरान होना। **–आठ आँसू रोना**–बहुत विलाप करना। **–पहर चौंसठ घड़ी**–हर वक्त। **आठों गाँठ कुम्मैत**–वह घोड़ा जिसके सब अंग दुरुस्त हों और रंग कुम्मैत हो; दुष्ट; चालाक। **–पहर**–हर वक्त। **–पहर सूलीपर रहना**–हमेशा कष्टमें रहना।

आठक*–वि० आठ।

आठें, आठों–स्त्री० अष्टमी तिथि।

आडंबर–पु० [सं०] दिखावा, ठाट-बाट; अनावश्यक या दिखाऊ आयोजन; बादलोंका गर्जना या हाथीका चिग्घाड़ना; लड़ाईका डंका; डंका बजना; युद्धका कोलाहल; तंबू।

आडंबरी (रिन्)–वि० [सं०] आडंबर करनेवाला; ढोंगी।

आड़–स्त्री० ओट, परदा; बचाव, आश्रय; रोक; टेक; एक भूषण; लंबी टिकली; आड़ा तिलक; टीका; संगीतमें एक ताल; डंक। **मु० आड़े देना***–ओट करना।

आड़ना*–स० क्रि० रोकना; बाँधना; बंधक रखना।

आड़ा–वि० देखनेवालेके दाहिनेसे बायें या बायेंसे दाहिने गया हुआ, खड़ा या सीधाका उलटा, पड़ा। पु० एक धारीदार कपड़ा; जहाजका लट्टा; शहतीर; बुनाईमें सूत फैलानेकी लकड़ी। **मु०–तिरछा होना**–क्रुद्ध होना। **–पड़ना,–होना**–बाधक होना; रुकावट डालना। **आड़े आना**–संकटमें सहायक होना, कठिनाईमें काम आना; बाधक होना। **–हाथों लेना**–व्यंग्य-बाणोंसे वेधना, बुरी तरह बनाना।

आड़ि*–स्त्री० हठ।

आड़ी–स्त्री० संगीतका एक ताल; ओर, तरफ। वि० अपने पक्षका।

आड़ू–पु० एक खटमिट्ठा फल और उसका पेड़।

आढ़–पु० अनाजका एक वजन या परिमाण जो लगभग चार सेरके बराबर होता है। स्त्री० आड़; अंतर; एक आभूषण, टीका। वि० कुशल। **मु०–करना**–टालमटूल करना।

आढक–पु० [सं०] आढ़, चार सेरका वजन या माप।

आढ़त–स्त्री० दूसरेके मालको कमीशन लेकर बिकवा देनेका रोजगार; वह स्थान जहाँ ऐसा माल रहे। **–दार**–पु० अढ़तिया।

आढ़तिया–पु० अढ़तिया।

आढ्य–वि० [सं०] (किसी वस्तुसे) संपन्न, भरा-पूरा (धनाढ्य, बलाढ्य); धनवान्; प्रचुर।

आणक–पु० [सं०] रतिका एक आसन; आना (?)।

आणविक–वि० (ऐटमिक) अणु-संबंधी, अणुशक्ति-संबंधी।

आतंक–पु० [सं०] रोग; ज्वर; पीड़ा; भय, दहशत; दबदबा; संदेह; अनिश्चय; डंकेका शब्द। **–युद्ध**–पु० (वार ऑफ नर्व्ज) प्रचारादि द्वारा ऐसा आतंक उत्पन्न करना जिससे शत्रुपक्षका नैतिक साहस छिन्न-भिन्न हो जाय और उसकी युद्ध-क्षमता क्षीण होने लगे। **–वाद**–पु० राज्य या विरोधिवर्गको दबानेके लिए भयोत्पादक उपायोंका अवलंबन, 'टेरोरिज्म'। **–वादी(दिन्)**–वि० आतंकवादका आश्रय लेनेवाला; राजनीतिक लक्ष्यकी सिद्धिके लिए हत्या और डकैतीका सहारा लेनेवाला।

आतंचन–पु० [सं०] दूधको जमानेके लिए जामन देना; जामन।

आततायी (यिन्)–वि० [सं०] जिसकी कमान दूसरेकी जान लेनेके लिए खिंच चुकी हो, वधोद्यत, हत्यारा; निदारुण अपराध करनेवाला। पु० आग लगानेवाला; जहर देनेवाला; शस्त्रधारी; धन, धरती, स्त्रीका हरण करनेवाला (स्मृतिकारोंने इसके वधमें दोष नहीं माना है)।

आतप–पु० [सं०] धूप; गरमी; प्रकाश; ज्वर (?)। **–त्र–त्रक,–वारण**–पु० छतरी, छाता। **–स्नान**–पु० (सनबाथ) विवस्त्र होकर धूपमें कुछ समय इस प्रकार बैठना या लेटना जिससे समस्त शरीरपर सूर्यकी किरणें पड़ें।

आतपी(पिन्)–पु० [सं०] सूर्य। वि० धूप-संबंधी।

आतम–वि० दे० 'आत्म'।

आत(ति)श–पु० [फ़ा०] आग। **–ख़ाना,–गाह**–पु० अग्नि-पूजकों(पारसियों)का अग्निमंदिर; आग रखनेका

2224

स्थान। **–ज़नी**–स्त्री० आग लगाना। **–दान**–पु० अँगीठी। **–परस्त**–पु० अग्निपूजक; पारसी। **–बाज़**–पु० आतिशबाजी बनाने या जलानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० बारूद भरकर बनाये हुए खिलौने (अनार, महताबी, छछूँदर, पटाखा इत्यादि); इनके जलानेका दृश्य या तमाशा। **–मिज़ाज**–वि० झट क्रुद्ध हो जानेवाला, बिगड़ैल।

आतशक–स्त्री० [फ़ा०] गरमीकी बीमारी, उपदंश।

आतशी–वि० [फ़ा०] अग्नि-संबंधी; अग्निसे उत्पन्न; अग्नि-उत्पादक। **–आईना,–शीशा**–पु० वह शीशा जिसे सूर्यके सामने करनेसे उसके मध्यबिंदुके नीचे रखी रुई, तिनका आदि जल उठते हैं।

आतापि–पु०[सं०]एक असुर जिसे अगस्त्यने चबा डाला था।

आतापी (पिन्), आतायी(यिन्)–पु० [सं०] चील।

आतिथेय–वि० [सं०] अतिथि-निमित्तक, अतिथिके लिए उपयुक्त (भोजनादि); अतिथिसेवापरायण। पु० अतिथि-सत्कार; अतिथि-सत्कारकी सामग्री; अतिथि-सत्कार करनेवाला, अतिथिपति, मेजबान।

आतिथ्य–पु० [सं०] अतिथि-सत्कार, आवभगत।

आतिशय्य–पु० [सं०] अतिशयता, बहुतायत।

आती-पाती–स्त्री० लड़कोंका छिपने और छूनेका एक खेल।

आतुर–वि० [सं०] पीडित; बीमार; अशक्त; व्याकुल; अधीर, बेसब्र; उत्सुक। * अ० जल्द, शीघ्र। **–शाला**–स्त्री० दे० 'आतुरालय'। **–संन्यास**–पु० ऐसे रोगी द्वारा लिया हुआ संन्यास जिसके बचनेकी आशा न रह गयी हो।

आतुरता–स्त्री०[सं०]अधीरता, उतावली; बेचैनी; शीघ्रता।

आतुरताई*–स्त्री० आतुरता।

आतुराना*–अ० क्रि० उतावला होना; उत्सुक होना।

आतुरालय–पु० [सं०] चिकित्सालय, अस्पताल।

आतुरी*–स्त्री० आतुरता।

आत्मंभरि–वि०[सं०]अपना ही पेट पालनेवाला; खुदगर्ज।

आत्म–वि० [सं०] ('आत्मन्' शब्दका समासमें व्यवहृत रूप।) अपना, निजका; आत्माका, मनका। **–कथा**–स्त्री० अपनी जीवन-कहानी; स्वलिखित जीवनचरित। **–कल्याण**–पु० अपना भला, हित। **–काम**–वि० अभिमानी; आत्माको जानने, पानेका अभिलाषी। **–गत**–वि० मनके भीतरका, स्वगत। **–गौरव**–पु० अपना गौरव; प्रतिष्ठा; आत्मसम्मान। **–घात**–पु० आत्महत्या, खुदकुशी। **–घातक,–घाती (तिन्)**–वि० आत्महत्या करनेवाला। **–घोष**–पु०(अपनेको ही पुकारनेवाला) कौआ; मुर्गा। **–चरित,–चरित्र**–पु० आत्मकथा। **–ज**–पु० बेटा, वंशधर; कामदेव। **–जय**–स्त्री० अपनेको जीतना, मन, इंद्रियादिको वशमें कर लेना। **–जा**–स्त्री० बेटी। **–जात**–पु० बेटा, वंशधर; कामदेव। **–जिज्ञासा**–स्त्री० अपनेको जाननेकी इच्छा। **–ज्ञान**–पु० अपनेको जानना; अध्यात्मज्ञान; ब्रह्मका साक्षात्कार। **–तत्त्व**–पु० आत्माका स्वरूप, रहस्य। **–तुष्टि**–स्त्री० आत्मसंतोष। **–त्याग**–पु० दूसरेके भलेके लिए अपने स्वार्थका त्याग। **–त्राण**–पु० आत्मरक्षा। **–द्रोह**–पु० अपनेको ही पीड़ा पहुँचाना; अपनी ही हानि करना। **–निंदा**–स्त्री० अपनी निंदा। **–निरीक्षण**–पु० अपनेको देखना-समझना, अपने भावों, वृत्तियों, त्रुटियों, दोषोंको जानने-समझनेका प्रयत्न। **–निवेदन**–पु० अपना तन-मन-धन अपने आराध्य देवको अर्पित कर देना; नवधा भक्तिका एक अंग; अपनी कैफियत। **–निष्ठ**–वि० आत्मामें निष्ठा रखनेवाला; आत्मसाधनमें निरत। **–प्रशंसा**–स्त्री० अपने मुँह अपनी तारीफ करना। **–बल**–पु० आत्माका, मनका बल। **–बोध**–पु० आत्मज्ञान। **–भरित योजना**–स्त्री० (सेल्फसफीशियेन्सी प्लैन) देशको, प्रदेशको आवश्यक वस्तुओंके संबंधमें स्वावलंबी बनानेकी योजना। **–भू**–वि० स्वयं उत्पन्न। पु० ब्रह्मा; शिव; विष्णु; कामदेव; पुत्र। **–मंथन**–पु० अंतःकरणमें अनेक वृत्तियों, भावोंका मंथन होना। **–रक्षा**–स्त्री० अपना बचाव; इंद्रवारुणी वृक्ष। **–रत**–वि० ब्रह्मज्ञानी। **–वंचक**–वि० अपनेको धोखा देनेवाला। **–वंचना**–स्त्री० अपनेको धोखा देना, अपने दोषको गुणरूपमें देखना। **–वध**–पु० आत्महत्या। **–वाद**–पु० आत्माके अस्तित्वका प्रतिपादन। **–वादी (दिन्)**–वि० आत्माका अस्तित्व माननेवाला। **–विक्रय**–पु० अपनेको, अपनी आजादीको बेच देना। **–विद्या**–स्त्री० अध्यात्मतत्त्व। **–विश्वास**–पु० अपनी शक्ति, योग्यतापर विश्वास। **–विस्मृति**–स्त्री० अपनेको भूल जाना, सुध-बुध न रहना, बेखुदी। **–वृत्तांत**–पु०आत्मकथा। **–शासन**–पु०दे० 'स्वराज्य'। **–श्लाघा,–स्तुति**–स्त्री० आत्मप्रशंसा। **–संभव**–पु० पुत्र; शिव; ब्रह्मा; कामदेव; ईश्वर। **–संयम**–पु० अपने मन, इंद्रियादिको वशमें रखना। **–संवेदन**–पु० आत्मबोध। **–संस्कार**–पु० अपना सुधार। **–समर्पण**–पु० अपनेको (पुलिस, शत्रुसेना आदिके हाथ) सौंप देना; हथियार डाल देना। **–साक्षात्कार**–पु० आत्माका अपरोक्ष ज्ञान। **–सात्**–अ० अपने अधिकारमें। **–साधन**–पु० आत्मसाक्षात्कारकी साधना, मोक्ष-साधन। **–सिद्ध**–वि० आप ही आप होनेवाला। **–हत्या**–स्त्री०, **–हनन**–पु०, **–हिंसा**–स्त्री० अपने हाथों अपना वध, खुदकुशी।

आत्मा (मन्)–स्त्री०, पु० [सं०] जीव, जीवनतत्व; व्यष्टि जीव, जीवात्मा; चेतन तत्त्व; परमात्मतत्त्व; अंतःकरण; मन, बुद्धि, स्वरूप, जात; स्वभाव; देही; सार तत्त्व; विचारशक्ति; साहस; शक्ति; पुत्र; सूर्य; अग्नि; वायु। **मु०–ठंडी होना**–संतोष होना।

आत्माधीन–वि० [सं०] अपने वशका।

आत्मानंद–पु० [सं०] आत्मज्ञान, आत्म-साक्षात्कारसे मिलनेवाला आनंद।

आत्मानुभव–पु० [सं०] अपना तजर्बा।

आत्मानुभूति–स्त्री० [सं०] आत्म-साक्षात्कार।

आत्मानुरूप–वि० [सं०] गुण आदिमें अपने समान।

आत्माभिमान–पु० [सं०] आत्म-सम्मान, स्वाभिमान।

आत्माभिमुख–वि० [सं०] आत्माकी ओर लौटा हुआ, अंतर्मुख।

आत्माराम–पु०[सं०] आत्मज्ञानका प्रयासी योगी; आत्मामें रमण करनेवाला।

आत्मार्पण–पु० [सं०] आत्मनिवेदन, अपनेको अर्पित कर देना ।

आत्मावलंबी (बिन्)–वि० [सं०] अपने भरोसे सब काम करनेवाला ।

आत्मिक–वि० [सं०] आत्म-संबंधी ।

आत्मीय–वि० [सं०] अपना । पु० स्वजन, निकटसंबंधी ।

आत्मीयता–स्त्री० [सं०] अपनापन, मैत्री ।

आत्मोत्कर्ष–पु० [सं०] अपना अभ्युदय, आत्मोन्नति ।

आत्मोत्सर्ग–पु०[सं०] दूसरेके हितके लिए अपनेको संकटमें डालना; अपना जीवन अर्पित कर देना ।

आत्मोदय–पु० [सं०] अपना अभ्युदय ।

आत्मोद्धार–पु० [सं०] अपना उद्धार, मुक्ति; अपने ही प्रयत्नसे अपना छुटकारा ।

आत्मोन्नति–स्त्री० [सं०] अपनी या अपनी आत्माकी उन्नति ।

आत्मोपजीवी (विन्)–पु० [सं०] अपने ही श्रमसे जीविका चलानेवाला; मजदूर; अभिनेता ।

आत्यंतिक–वि० [सं०] जिसकी अतिशयता हो, अत्यधिक।

आत्रेय–वि० [सं०] अत्रि-संबंधी; अत्रिसे या उनके गोत्रमें उत्पन्न । पु० अत्रि-पुत्र (दत्त, दुर्वासा, चंद्रमा); अत्रिका वंशज ।

आत्रेयी–स्त्री० [सं०] अत्रि-पत्नी; अत्रिगोत्रकी स्त्री; रजस्वला ।

आथना*–अ० क्रि० होना ।

आथर्वण–वि० [सं०] अथर्ववेद या अथर्वण ऋषिसे संबंध रखनेवाला अथवा उनसे उत्पन्न । पु० अथर्ववेदका ज्ञाता ब्राह्मण; अथर्ववेदोक्त कर्म करानेवाला पुरोहित ।

आथी*–स्त्री० पूँजी ।

आद*–स्त्री० (?) दे० ‘आदि’ ।

आदत–स्त्री० [अ०] अभ्यास, बान, टेक, लत; व्यसन ।

आदतन्–[अ०] अभ्यासतः, स्वभावतः; स्वभावानुरोधसे ।

आदम–पु० [अ०] यहूदी, इसलाम आदि धर्मोंके अनुसार ईश्वरसृष्ट प्रथम मनुष्य, आदि-मानव; मनुष्य । **–क़द**–वि० मनुष्यके आकारका । **–ख़ोर**–वि०, पु० नरमांसभक्षी । **–ज़ाद**–पु० आदम-संतान, मनुष्य ।

आदमियत–स्त्री० दे० ‘आदमीयत’ ।

आदमी–पु० [अ०] मनुष्य; व्यक्ति; नौकर; पति (बोलचाल) । **मु०–बनना**–मनुष्यता आना, सभ्यता, शिष्टता सीखना; संपन्न होना, पैसा पैदा कर लेना ।

आदमीयत–स्त्री० [अ०] मनुष्यता, इनसानियत; भलमनसी ।

आदर–पु० [सं०] सम्मान; इज्जत; पूज्यभाव; कद्र; उत्सुकता; प्रयत्न; आरंभ; प्रेम । **–भाव**–पु० आदर-सत्कार ।

आदरण–पु० [सं०] आदर करना ।

आदरणीय–वि० [सं०] आदरके योग्य, सम्मान्य ।

आदरना*–स० क्रि० सम्मान करना ।

आदरस*–पु० दे० ‘आदर्श’ ।

आदर्श–पु० [सं०] आईना; मूल लेख; असल; वह व्यक्ति या कार्यादि जो अनुकरणीय हो; नमूना; टीका, व्याख्या । **–बिंब**–पु० गोल आईना । **–मंदिर**–पु० शीशमहल । **–वाद**–पु० वह वाद या मत जिसके अनुसार रचनामें आदर्श चरित्र आदिकी स्थापना की जाती है; ऊँचे सिद्धान्तोंके अनुसरणपर जोर देना ।

आदाता (तृ)–वि० [सं०] लेने, पानेवाला ।

आदान–पु० [सं०] लेना, ग्रहण; रोग-लक्षण; बाँधना; अश्वसज्जा । **–प्रदान**–पु० लेना-देना, अदल बदल ।

आदाब–पु० [फा०] व्यवहार-नियम; अदब-कायदा; शिष्टाचार; नमस्कार । (‘अदब’का बहु०)। **–अर्ज़**–पु० नमस्कार ।

आदायी (यिन)–वि० [सं०] लेने, पानेवाला ।

आदि–वि० [सं०] प्रथम; मूल; प्रधान । पु० आरंभ; मूलकारण; परमेश्वर; । अ० वगैरह, इत्यादि । **–कर्ता (र्तृ)**–पु० स्रष्टा । **–कवि**–पु० वाल्मीकि; ब्रह्मा । **–कांड**–पु० रामायणका प्रथम कांड, बालकांड । **–कारण**–पु० सृष्टिका मूल कारण, उपादान (सांख्यमतसे मूल प्रकृति, वैशेषिकमतसे परमाणु, वेदांतमतसे ब्रह्म) । **–काव्य**–पु० वाल्मीकीय रामायण । **–देव**–पु० परमेश्वर, नारायण, विष्णु । **–पर्व (न्)**–पु० महाभारतका पहला पर्व । **–पुराण**–पु० ब्रह्मपुराण । **–पु(पू)रुष**–पु० परमेश्वर, नारायण, विष्णु । **–रस**–पु० शृंगार (सा०)। **–राज**–पु० पृथु; मनु । **–शक्ति**–स्त्री० महामाया; दुर्गा । **–वासी(सिन्)**–पु० किसी देशके मूल निवासी ।

आदिक–अ० [सं०] वगैरह, इत्यादि ।

आदित्य–पु० [सं०] सूर्य; देव; अदितिके इन बारह पुत्रोंमेंसे कोई जो सभी सूर्य माने जाते हैं–धाता; मित्र, अर्यमा, रुद्र, वरुण, सूर्य, भग, विवस्वान्, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु; विष्णुका वामन अवतार; १२ की संख्या; मदार । वि० अदितिसे उत्पन्न; आदित्य-संबंधी या आदित्यसे उत्पन्न । **–मंडल**–पु० सूर्यके चारों ओरका प्रभा-मंडल । **–वार**–पु० रविवार । **–सूनु**–पु० सूर्यपुत्र–सुग्रीव, यम, शनि और कर्ण ।

आदिम–वि० [सं०] आदिमें उत्पन्न; पहला; पुराना ।

आदिल–वि० [अ०] अदल–इंसाफ करनेवाला, न्यायी ।

आदिष्ट–वि० [सं०] आदेश-प्राप्त; जिसे (कार्यका) आदेश किया गया हो, कथित । **–धनादेश**–पु० (आर्डरचेक) वह धनादेश जिसकी पीठपर पानेवालेको अर्थात् जिसके नाम वह जारी किया गया हो उसे, पहलेसे हस्ताक्षर करना पड़ता है, तभी उसका भुगतान किसी अन्य आदिष्ट आदमीके हाथ किया जा सकता है ।

आदी–वि० [अ०] अभ्यस्त; जिसे किसी चीजकी आदत, लत लग गयी हो, व्यसनी । * अ० निपट; तनिक भी । †स्त्री० अदरक ।

आदीपन–पु० [सं०] आग लगाना; उत्तेजित करना; दीवारकी सफेदी करना ।

आदृत–वि० [सं०] आदर-प्राप्त; सम्मानित ।

आदेय–वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; जिसपर शुल्कादि लिया जा सके । पु० (.असेट्स्.) वह धन जो हमें दूसरोंसे पावना हो या जो हमें अपनी संपत्ति–घर, मेज, कुरसी आदि—बेचनेसे प्राप्त हो सकता हो, परिसंपत् ।

आदेश–पु० [सं०] आज्ञा, हुक्म; हिदायत; सलाह; विवरण; भविष्यकथन; एक अक्षरके स्थानपर दूसरे अक्षरका आना

(न्या०); ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थितिका फल (ज्यो०); *प्रणाम। **-देय**-वि०(पेयेबिल टु आर्डर) (वह हुंडी आदि) जिसका रुपया किसीको देनेका आदेश प्राप्त होनेपर दिया जाय।

आदेशक-वि० [सं०] आदेश-आज्ञा करनेवाला।

आदेशी (शिन्)-वि० [सं०] आदेश करनेवाल;ज्यौतिषी।

आदेष्टा (ष्टृ)-वि० [सं०] दे० 'आदेशक'।

आदेस*-पु० दे० 'आदेश'।

आद्यंत-अ० [सं०] आदिसे अंततक। पु० आदि-अंत।

आद्य-वि० [सं०] आदिका; पहला, प्रथम; प्रधान।

आद्यक्षर-पु० [सं०] (इनीशल्स) किसी व्यक्तिके नामके विभिन्न शब्दों या खंडोंके आरंभके अक्षर जो पूरे नामके बदले (प्रायः संक्षिप्त हस्ताक्षरके रूपमें) लिख दिये जाते हैं।

आद्यक्षरित-वि०[सं०] (इनीशल्ड) जिसपर पूरे हस्ताक्षरके बजाय नामके आरंभके अक्षर मात्र लिख दिये गये हों।

आद्या-स्त्री० [सं०] दुर्गा; प्रतिपदा।

आद्योपांत-अ० [सं०] आदिसे अंततक।

आद्रा-स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

आध-वि० दे० 'आधा'।

आधमर्ण्य-पु० [सं०] कर्जदार होना।

आधा-वि० वस्तुके सम द्विभागोंमेंसे किसी एकके बराबर, अर्द्ध, नीम, निस्फ। **-सीसी**-स्त्री० आधे सिरका दर्द। **मु०-तीतर, आधा बटेर**-कुछ एक तरहका, कुछ दूसरी तरहका, बेमेल। **-होना**-दुबला होना, सूखना। **आधी बात न पूछना**-कदर न करना। **आधे आध**-दो बराबर या अर्द्ध भाग।

आधाझारा-पु० चिचड़ा।

आधाता (तृ)-वि०[सं०] आधान करनेवाला; बंधक रखनेवाला।

आधान-पु० [सं०] रखना, स्थापन; ग्रहण, लेना; अग्निहोत्रके लिए अग्निका स्थापन; धारण करना; पूरा करना; रखने या जमा करनेका स्थान; घेरा; बंधक, धरोहर।

आधार-पु० [सं०] सहारा, आलंबन; वह जो किसी वस्तुको धारण करे; बरतन; तालाब; बाँध; अधिष्ठान; पात्र (ना०); थाला; संबंध; अधिकरण कारक; (बेस) त्रिभुजकी कोई भी भुजा जो बेंड़ी दिशामें खींची गयी हो या आवश्यकतानुसार ऐसी मान ली गयी हो। **-स्तंभ**-पु० किसी कार्य या वस्तुका मुख्य आधार।

आधाराधेयभाव-पु० [सं०] आश्रयाश्रयिभाव।

आधारित-वि० दे० 'आधृत'।

आधि-स्त्री० [सं०] मानसिक पीड़ा; अभिशाप; विपत्ति; बंधक, धरोहर। **-कर्ता (र्तृ)**-पु० (पॉनर) कोई वस्तु या किसी व्यक्तिको किसीके पास धरोहर या जमानतके रूपमें रखनेवाला। **-ग्राही**-पु० (पॉनी) वह जो कोई धरोहर या जमानतकी वस्तु अपने पास रखे। **-पाल**-पु० धरोहरका रक्षाप्रबंध करनेवाला राजकर्मचारी। **-भोग**-पु० धरोहरकी चीजका उपयोग। **-मोचन**-पु० बंधक छुड़ाना। **-व्याधि**-स्त्री० मन और शरीरकी पीड़ा।

आधिक*-वि० आधा या आधेके लगभग। अ० लगभग आधा; किंचित्।

आधिकरणिक-पु० [सं०] न्यायाधीश। वि० न्यायालय-संबंधी; न्यायालयके आदेशसे होनेवाला।

आधिकारिक-वि० [सं०] अधिकार या अधिकारीसे संबद्ध; साधिकार; सरकारी, 'आफिशल'। पु० मूल कथावस्तु।

आधिकोषिक-पु० [सं०] (बैंकर) किसी अधिकोष (बैंक)का मालिक, साझेदार, संचालक आदि।

आधिक्य-पु० [सं०] अधिकता, बहुतायत; प्राधान्य।

आधिदैविक-वि० [सं०] दैवकृत या भूत-प्रेतकृत (क्लेशादि)।

आधिपत्य-पु० [सं०] प्रभुत्व; राज्य।

आधिभौतिक-वि० [सं०] प्राणियों या पंचभूतोंसे संबद्ध या उनसे उत्पन्न।

आधीन*-वि० दे० 'अधीन'।

आधीनता*-स्त्री० दे० 'अधीनता'।

आधुनिक-वि० [सं०] आजकलका, वर्तमान कालका।

आधृत-वि० [सं०] किसीके सहारे टिका हुआ, अवलंबित।

आधेक*-वि० अ० दे० 'आधिक'।

आधेय-वि० [सं०] जो रखा या स्थापित किया जाय; जो धारण किया जाय; जो बंधक रखा जाय; किसी आधारपर टिका हुआ; ठहराने या रखने योग्य। पु० किसी आधारपर रखी या टिकायी हुई वस्तु; रखनेकी क्रिया।

आध्यात्मिक-वि० [सं०] परमात्मा या आत्मासे संबंध रखनेवाला; मनसे संबंध रखनेवाला।

आनंत्य-पु० [सं०] असीमता; अमरत्व।

आनंद-पु० [सं०] मोद, हर्ष, खुशी, मौज; ब्रह्मा; मदिरा; ४८वाँ संवत्सर। **-कानन**-पु० काशी। **-जल,-बाष्प**-पु० आनंदजन्य अश्रु। **-बधाई**-स्त्री०, **-बधावा**-पु० [हिं०] उछाह-बधावा; उत्सव-मंगल। **-मंगल**-पु० सुख-चैन, हँसी-खुशी। **-मत्ता**-स्त्री० दे० 'आनंदसम्मोहिता'। **-वन**-पु० काशी। **-सम्मोहिता**-स्त्री० संभोगके आनन्दमें विभोर प्रौढ़ा नायिका।

आनंदना*-अ० क्रि० आनंदित होना।

आनन्दमय-वि० [सं०] आनंदसे भरा हुआ। **-कोश**-पु० वेदांतमें माने हुए आत्माके पाँच कोशों या आवरणोंमेंसे अंतिम।

आनंदयिता (तृ)-वि० [सं०] आनंद देनेवाला।

आनंदाश्रु-पु० [सं०] आनंदके अतिरेकसे निकलनेवाले आँसू।

आनंदित-वि० [सं०] प्रसन्न, खुश।

आनंदी (दिन्)-वि० [सं०] प्रसन्न, मुदित; प्रसन्न करनेवाला।

आन-स्त्री० मर्यादा, गौरव, गर्व; ठसक; दुहाई; शपथ; ढंग; शर्म; भय; अदब, लिहाज; घोषणा; हठ। * वि० अन्य, दूसरा। **-बान**-पु० सजधज; ठसक। **मु० -तोड़ना**-प्रतिज्ञा भंग करना; हठ छोड़ना। **-रखना**-अपनी बात रखना।

आन-स्त्री० [अ०] क्षण, लहज़ा। **मु०-की आनमें**-बातकी बातमें।

आनक-पु०[सं०] डंका, नगाड़ा; गड़गड़ाता हुआ बादल। **-दुंदुभि**-पु० कृष्णके पिता वसुदेव। **-दुंदुभी**-स्त्री० नगाड़ा।

आनत-वि० [सं०] झुका हुआ; नम्र, विनीत।

आनति–स्त्री०[सं०]झुकना; प्रणाम करना; सत्कार; संतुष्टि।

आनद्ध–वि० [सं०] बँधा या मढ़ा हुआ; कोष्ठबद्ध। पु० मढ़ा हुआ बाजा–ढोल, मृदंग आदि; बनाव-सिंगार।

आनन–पु०[सं०] मुँह; चेहरा; ग्रंथका बड़ा खंड, अध्याय।

आननफानन–अ० तुरत, अति शीघ्र।

आनना*–स० क्रि० लाना।

आनमित–वि० [सं०] झुकाया हुआ, नवाया हुआ।

आनम्य संविधान–पु० [सं०] (फ्लेक्सिबिल कांस्टिट्यूशन) किसी राज्यका ऐसा संविधान जिसमें देश-कालकी आवश्यकताके अनुसार आसानीसे परिवर्तन किया जा सके।

आनयन–पु०[सं०]लाना; पास ले जाना; उपनयन-संस्कार।

आनर्त्त–पु०[सं०]सौराष्ट्र देश या वहाँका निवासी;रंगशाला; नृत्यशाला; नृत्य; युद्ध; जल; एक सूर्यवंशीय नरेश।

आनर्तन–पु० [सं०] नाचना।

आना–अ० क्रि० एक जगहसे चलकर दूसरी जगह (कहने या सुननेवालेके पास या उसके स्थानपर) पहुँचना; वहाँके लिए रवाना होना; लौटना; शुरू होना; फल-फूल लगना; मिलना; भोज्य वस्तुका पकना; स्खलित होना; ज्ञान या अभ्यास होना; अँटना; बैठना; बढ़ना (धान कमरतक आ गये हैं); आविर्भाव होना, (क्रोधादिका) उत्पन्न होना। पु० रुपयेका सोलहवाँ भाग, चार पैसे; सोलहवाँ भाग। **आता-जाता**–आने-जानेवाला। **आना-जाना**–आमद-रफ्त, मिलना-जुलना। **आनी-जानी**–आने-जाने बनने-बिगड़नेवाली, अस्थिर, नश्वर। **मु० आ धमकना**–अचानक आ जाना। **आ निकलना**–अचानक पहुँच जाना। **आ पड़ना**–यकायक आ जाना, टूट पड़ना; संकट, विपद् आना। **आ बनना**–अवसर हाथ लगना। **आया गया**–मेहमान, अतिथि। **आयेदिन**–नित्यप्रति। **आ रहना**–गिर पड़ना। **आ लगना**–आरंभ होना; साथ लगना; ठिकाने पहुँचना।

आनाकानी–स्त्री० टालमटूल, उज्र, एतराज; कानाफूसी।

आनाह–पु० [सं०] बंधन; मलावरोध; मल-मूत्रके अवरोधसे पेटका फूलना; लंबाई (कपड़े आदिकी)।

आनि*–स्त्री० दे० 'आन'।

आनीत–वि० [सं०] लाया हुआ; पास लाया हुआ।

आनुक्रमिक–वि०[सं०](ग्रैडूएटेड) जिसमें अंशोंके चिह्न बने हों; जिसमें ऊँचे-नीचे, कठिन-सरलका सिलसिला निबाहा गया हो, जो अनुक्रमसे हो; क्रमशः वर्द्धमान।

आनुगत्य–पु० [सं०] अनुगत होना; अनुगमन; परिचय।

आनुग्रहिक–वि०[सं०]अनुग्रह-प्रेरित।–**कर-नीति**–स्त्री० कुछ चीजोंपर रिआयती कर लेनेकी नीति।

आनुग्रामिक–वि० [सं०] ग्राम-संबंधी, ग्रामीण।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व–पु०[सं०] (प्रपोर्शनल रिप्रेजेंटेशन) विधानसभा आदिके चुनावकी वह प्रणाली जिसके अनुसार सभी दलोंको, उन्हें प्राप्त हुए कुल मतोंके अनुपातसे, प्रतिनिधित्व दिये जानेकी व्यवस्था की जाती है।

आनुपूर्व, आनुपूर्व्य–पु० [सं०] एकके बाद एक होना, सिलसिला, क्रम; वर्णव्यवस्था या उसका क्रम; (सक्सेशन) वस्तुओं या व्यक्तियोंका एक पहले, दूसरा बादमें, इस सिलसिलेसे आना; सिलसिला, अनुक्रम।

आनुमानिक–वि० [सं०] अनुमान, अटकलपर आश्रित।

आनुवंशिक–वि० [सं०] वंशपरंपरासे प्राप्त, पुश्तैनी।

आनुषंगिक–वि० [सं०] संबद्ध; अप्रधान, गौण; प्रासंगिक।

आप–पु० [सं०] पानी; प्राप्ति; एक वसु; आकाश। वि० प्राप्य। –**गा**–स्त्री० नदी। –**निधि**–पु० समुद्र।

आप–सर्व० खुद, स्वयं; तुम, वे, येका आदरार्थक रूप। पु० परमात्मा। –**काज**–पु० अपना काम। –**काजी**–वि० अपना मतलब देखनेवाला। –**बीती**–स्त्री० अपने ऊपर बीती हुई बात; अपने जीवन या तदंतर्गत घटना-विशेषकी कहानी। –**स्वार्थी**–वि० खुदगर्ज, मतलबी। **मु०–आप करना**–खुशामद करना। –**आपकी पड़ना**–अपने-अपने कामोंमें व्यस्त रहना। –**आपको**–अलग-अलग, अपने-अपने; अपनेको। –**से आप**–खुद-बखुद, अपने आप। –**ही आप**–स्वतः, अपने मनसे; मन ही मन।

आपण–पु० [सं०] बाजार; दुकान।

आपणिक–वि० [सं०] बाजार-संबंधी; बाजारसे प्राप्त (कर आदि)। पु० दुकानदार; बाजार; दुकानका कर।

आपतिक–वि० [सं०] आकस्मिक; दैवी; अदृष्ट। पु० बाज।

आपत्–स्त्री० [सं०] दे० 'आपद्'। –**काल**–पु० मुसीबत,कष्ट, कठिनाईके दिन। –**कालिक**–वि० आपत्कालमें होनेवाला; आपत्कालके लिए उचित। –**सहायकार्य**–पु० (रिलीफ वर्क) दुष्काल या बाढ़, भूकंपादि जैसे संकटके समय आर्त्त और असहाय जनताकी सहायताके लिए आरंभ किया गया सार्वजनिक निर्माण-कार्य।

आपत्ति–स्त्री० [सं०] विपत्, संकट; दोष; उज्र, एतराज।

आपदा–स्त्री० [सं०] विपत्।

आपद्–स्त्री० [सं०] विपत्, मुसीबत; कष्ट, कठिनाई। –**गत,**–**ग्रस्त**–वि० मुसीबतमें फँसा हुआ; भाग्यहीन। –**धर्म**–पु० वह आचरण, वृत्ति आदि जिसकी इजाजत केवल आपत्कालके लिए हो।

आपन, आपना, आपनो*–सर्व० दे० 'अपना'।

आपन्न–वि० [सं०] आपद्ग्रस्त; प्राप्त; संकटको पहुँचा हुआ।

आपयिता (तृ)–वि० [सं०] पाने, जुटानेवाला।

आपराह्णिक–वि० [सं०] तीसरे पहर होनेवाला।

आपस–पु० संबंध, हेलमेल, नाता; परस्परका संबंध। –**का**–स्वजनों, संबंधियों, मित्रोंके बीचका (–का मामला –की फूट)। –**दारी**–स्त्री० परस्पर निकट संबंध, भाई-चारा। –**में**–परस्पर, एक दूसरेके साथ।

आपसी–वि० आपसका।

आपा–पु० अपना स्वरूप; सत्ता, जात; अपनी सत्ताका ज्ञान, अहंभाव, खुदी; अहंकार, गर्व; सुध-बुध। स्त्री० बड़ी बहन (मुसल०)। **मु०–खोना**–घमंड छोड़ना; अपनेको बरबाद करना; मरना। –**तजना,**–**मेटना**–द्वैत भावका त्याग; घमंड छोड़ना। –**दिखलाना**–दर्शन देना। –**बिसराना**–अपनेको भूल जाना; सुध-बुध खो देना। –**सँभालना**–चेतना, सजग होना। **आपेमें आना या होना**–होश-हवासमें होना; मनोभावोंपर काबू होना। –**में न रहना,** –**से निकलना,** –**से बाहर होना**–क्रोधादिके अतिरेकसे मनपर काबू न रहना; विवेक खो देना।

आपात–पु० [सं०] गिराना; गिराव; अचानक आ धमकना,

टूट पड़ना; वर्तमान क्षण या काल; प्रथम दर्शन, पहली निगाह; (इमर्जेंसी) अकस्मात् आयी हुई संकटकी स्थिति, आकस्मिक आवश्यकता।

आपाततः–अ० [सं०] पहली निगाहमें, ऊपरसे देखनेमें; तत्क्षण, तुरत; अकस्मात्; अन्तमें।

आपातिक, आपाती–वि० [सं०] (इमर्जेंट) आकस्मिक आवश्यकताके कारण उत्पन्न, आहूत या सामने आनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला।

आपादमस्तक–अ० [सं०] सिरसे पैरतक।

आपाधापी–स्त्री० हरएककी अपनी चिंता होना; धाँधली।

आपान–पु० [सं०] कुछ लोगोंका मिलकर शराब पीना, पानगोष्ठी; इकट्ठा होकर शराब पीनेका स्थान। **–गोष्ठी**–स्त्री० कई व्यक्तियोंका एक साथ मिलकर मद्य पीना। **–भूमि**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कई आदमी बैठकर मद्यपान करें।

आपीड–वि० [सं०] पीड़ा देनेवाला; दबानेवाला। पु० सिरपर पहननेकी चीज; किरीट; माला; मुकुटमणि।

आपीडन–पु० [सं०] दबाना; मसलना; पीड़ा देना।

आपु*–सर्व० दे० 'आप'।

आपुन, आपुनो*–सर्व० दे० 'अपना'; स्वयं।

आपूर–पु० [सं०] जलधारा; बाढ़; भरना।

आपूरना–*अ० क्रि० भरना।

आपूरित, आपूर्ण–वि० [सं०] पूरी तरह भरा हुआ।

आपेक्षिक–वि० [सं०] अपेक्षा रखनेवाला; जिसका अस्तित्व दूसरी वस्तुपर आश्रित हो; तुलनात्मक, निस्वती। **–गुरुत्व**–पु० दो वस्तुओंका तुलनात्मक घनत्व। **–ताप**–पु० (स्पेसिफिक हीट) किसी वस्तुका तापक्रम एक अंश बढ़ानेके लिए जितने तापकी आवश्यकता हो और उसके समान मात्राके पानीका तापक्रम एक अंश बढ़ानेमें जितने तापकी आवश्यकता हो, उन दोनों तापोंकी मात्राओंका अनुपात।

आप्त–वि० [सं०] प्राप्त, पाया, मिला हुआ; पहुँचा हुआ; प्रामाणिक; विश्वसनीय; यथार्थ ज्ञान रखनेवाला; कुशल; घनिष्ठ। पु० विश्वस्त व्यक्ति; मित्र; संबंधी। **–काम**–वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो, संतुष्ट; जिसमें सांसारिक कामनाएँ और आसक्तियाँ न रह गयी हों। **–वचन,–वाक्य**–पु० श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि; प्रमादादिशून्य वचन।

आप्यायन–पु० [सं०] बाढ़, वर्द्धन; तृप्ति; तृप्त करना; प्रसन्नता; मोटा करना; बढ़ाना।

आप्यायित–वि० [सं०] तृप्त; प्रसन्न; वर्द्धित; बलवान्।

आप्रवास–पु० [सं०] (इमिग्रेशन) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जाना।

आप्रवासी–वि० [सं०] (इमिग्रैण्ट) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जानेवाला।

आप्लावन–पु० [सं०] स्नान; सिंचन; डुबाना, बोरना।

आप्लावित–वि० [सं०] स्नात; सिक्त; डुबाया हुआ।

आफ़त–स्त्री० [अ०] विपद्, मुसीबत; दुःख, क्लेश; संकट, बला; ऊधम। **मु०–उठाना**–ऊधम मचाना। **–का टुकड़ा,–का परकाला**–बहुत तेज, चलता, धूर्त आदमी तूफ़ानी। **–का मारा**–विपद्ग्रस्त, दुर्दैव-पीडित। **–ढाना**–उपद्रव मचाना; कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना; अनहोनी बात कहना। **–मचाना**–उपद्रव मचाना, शोरगुल करना; (किसी काममें) बहुत उतावली करना। **–मोल लेना,–सिरपर लेना**–कोई झंझट, बखेड़ा अपने सिर लेना; संकटको न्योता देना।

आफ़ताब–पु० [फा०] सूर्य; धूप।

आफ़ताबा–पु० [फा०] हाथ-मुँह धुलानेका गडुआ।

आफ़ताबी–वि० [फा०] सूर्य-संबंधी; धूपमें बनाया या सिझाया हुआ। स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी; जरीके कामका पंखा जिसपर सूर्यका चित्र कढ़ा होता है; झाँप।

आफू–स्त्री० अफीम।

आब–पु० [फा०] पानी; पसीना; आँसू; शराब। स्त्री० चमक, कांति; शोभा; धार; प्रतिष्ठा; उत्कर्ष। **–कार**–पु० शराब बनाने, बेचनेवाला, कलाल। **–कारी**–स्त्री० शराब बनाने, बेचनेका स्थान; मद्य या मादक वस्तुओंका व्यवसाय। **–० महकमा**–पु० नशीली चीजोंके उत्पादन, विक्रय आदिका नियमन करनेवाला विभाग, 'एक्साइज डिपार्टमेंट'। **–खोरा**–पु० एक तरहका गिलास जो मुँहपर कुछ सकरा होता है। **–जोश**–पु० लाल मुनक्का। **–दार**–वि० चमकदार; धारदार। **–(बो) ताब**–स्त्री० चमक-दमक; शोभा। **–दस्त**–पु० सौंचना, पानी छूना; आबदस्तका पानी। **–,(बो) दाना**–पु० अन्न-जल। **–पाशी**–स्त्री० खेतकी सिंचाई। **–रू**–स्त्री० मान, प्रतिष्ठा। **–(बे) रवाँ**–पु० बहुत बारीक मलमल। **–(बे) हयात**–पु० अमृत। **–,(बो) हवा**–स्त्री० जल-वायु। **–(बे) हैवाँ**–पु० अमृत। **मु०–,(बो) दाना उठना**–स्थानविशेषमें जीविकाका उपाय (नौकरी आदि) न रह जाना।

आबद्ध–वि० [सं०] बँधा हुआ; जकड़ा हुआ।

आबनूस–पु० तेंदू नामक एक जंगली वृक्ष।

आबनूसी–वि० आबनूसका; गहरा काला।

आबाद–वि० [फा०] बसा हुआ, बस्तीवाला; संपन्न, खुशहाल, फलता-फूलता।

आबादानी–स्त्री० आबाद जगह; सभ्यता, संस्कृति; अभ्युदय; कृषि; आबादी; बहुतायत; करवृद्धि; आमोद-प्रमोद।

आबादी–स्त्री० [फा०] बस्ती; जनसंख्या; खुशहाली।

आबी–वि० [फा०] जलीय; जलचर; हलका नीला।

आब्दिक–वि० [सं०] प्रतिवर्ष होनेवाला, वार्षिक, सालाना।

आभ*–स्त्री० दे० 'आभा'। पु० पानी।

आभरण–पु० [सं०] आभूषण, गहना; पोषण।

आभरन*–पु० दे० 'आभरण'।

आभरित–वि० [सं०] भरा हुआ; सँवारा हुआ; भूषित।

आभा–स्त्री० [सं०] चमक; द्युति; झलक; छाया; प्रतीति।

आभार–पु० [सं०] बोझ; एहसान।

आभारी (रिन्)–वि० [सं०] एहसानमंद, ऋणी।

आभास–पु० [सं०] द्युति, चमक; झलक; छाया; सादृश्य; प्रतीति; भ्रम; संकेत; अभिप्राय।

आभिचारिक–वि० [सं०] अभिचार-संबंधी, अभिचारात्मक।

आभिजात्य–पु० [सं०] कुलीनता, ऊँचे कुलमें उत्पत्ति।

आभिधानिक–वि०[सं०]कोशमें लिखित। पु० कोशकार।

आभीर–पु० [सं०] अहीर; एक जनपद या उसके निवासी; एक राग। **–पल्ली**–स्त्री० अहीरोंका पुरवा या गाँव।

आभीरी–स्त्री० [सं०] अहीरिन; अहीरोंकी बोली।

आभूषण–पु० [सं०] गहना, अलंकार; सजावट, शृंगार।

आभूषन*–पु० दे० 'आभूषण'।

आभूषित–वि० [सं०] अलंकृत, सजाया हुआ; शोभित।

आभोग–पु० [सं०] विस्तार; परिपूर्णता; भोजन; तृप्ति; साँपका फैला हुआ फन; पद्यमें कविका नामोल्लेख।

आभ्यंतर–वि० [सं०] भीतरका, अंदरूनी, आंतर। **–व्यापार**–पु० दे० 'अंतर्वाणिज्य'।

आभ्यंतरिक–वि० [सं०] दे० 'आभ्यंतर'; भीतरी।

आमंत्रण–पु० [सं०] संबोधन, बुलाना, पुकारना; निमंत्रण; स्वागत; अनुमति; सलाह-मशिवरा।

आमंत्रित–वि० [सं०] निमंत्रित, न्योता, बुलाया हुआ।

आम–वि० [सं०] कच्चा, अनपका; न पचा हुआ। पु० अपक्व आहार-रस; आँव; अजीर्ण। **–गर्भ**–पु० भ्रूण। **–शूल**–पु० अजीर्णके कारण होनेवाली भयंकर पीड़ा; आँवके कारण पेट मरोड़नेका रोग।

आम–पु० एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़, आम्र, रसाल। **मु०–के आम, गुठलीके दाम**–दोहरा लाभ।

आम–वि० [अ०] फैला हुआ, व्यापक; प्रसिद्ध; साधारण, सामान्य। **–दरबार**–पु० खुला दरबार जिसमें सब लोग जा सकें। **–फहम्**–वि० जो सबकी समझमें आ जाय, सुबोध। **–राय**–स्त्री० लोकमत। **–लोग**–पु० जनसाधारण।

आमड़ा–पु० एक खट्टा फल और उसका पेड़।

आमद–स्त्री० [फा०] आना, अवाई; आमदनी।

आमदनी–स्त्री० [फा०] आय; प्राप्ति; देसावरसे आनेवाला माल, आयात।

आमन–पु० अगहनी धान (बंगाल); एकफसला खेत।

आमना-सामना–पु० सामना; भेंट।

आमने-सामने–अं० एक दूसरेके सामने, मुकाबलेमें।

आमय–पु० [सं०] रोग, बीमारी; क्षति; अग्निमांद्य।

आमरख*–पु० क्रोध; अमर्ष।

आमरखना*–अ० क्रि० क्रोध करना।

आमरण–अ० [सं०] मरणपर्यंत, जीवनके अंततक।

आमर्द, आमर्दन–पु० [सं०] मसलना, रगड़ना; दबाना।

आमर्ष–पु० [सं०] दे० 'अमर्ष'।

आमलक–पु० [सं०] आँवला।

आमलकी–स्त्री० [सं०] छोटा आँवला।

आमला–पु० आँवला।

आमातिसार–पु० [सं०] आँव, पेचिशकी बीमारी जिसमें मलके साथ सफेद आँव आता है।

आमादगी–स्त्री० [फा०] आमादा–तैयार होना, तत्परता।

आमादा–वि० [फा०] तैयार, तत्पर, उद्यत।

आमाशय–पु० [सं०] पाचन-संस्थानका वह थैलीनुमा भाग जिसमें आहार इकट्ठा होकर पचता है, मेदा।

आमिख*–पु० दे० 'आमिष'।

आमिर–वि० [अ०] हुक्म देनेवाला। पु० हाकिम।

आमिल–वि०, पु० [अ०] अमल–काम करनेवाला, साधक; अधिकारी; झाड़-फूँक करनेवाला। वि० सिद्ध; *खट्टा।

आमिष–पु० [सं०] मांस; शिकार; भोग्य वस्तु; लुभावनी वस्तु, चारा; घूस। **–भोजी(जिन्)**–वि० मांसभक्षी।

आमुख–पु० [सं०] आरंभ; भूमिका; नाटककी प्रस्तावना।

आमूल–अ० [सं०] मूलपर्यंत, जड़तक; जड़से। **–सुधारवाद**–मु० (रैडिकलिज्म) जड़से या पूर्णतः सुधार करनेपर जोर देनेवाला राजनीतिक सिद्धांत।

आमेजना*–स० क्रि० मिलाना।

आमोद–पु० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता; बिखरने, फैलनेवाली सुगंध, सुरभि।**–प्रमोद**–पु० मौज-चैन, रंग-रलियाँ।

आमोदित–वि० [सं०] प्रसन्न, आनंदित; सुवासित।

आम्र–पु० [सं०] आम। **–वन**–पु० अमराई।

आम्रातक–पु० [सं०] आमड़ा।

आम्लिका–स्त्री० [सं०] इमली; खट्टी डकार।

आयँती-पायँती–स्त्री० सिरहाना-पायताना।

आयंदा–वि०, अ० दे० 'आइंदा'।

आय–स्त्री [सं०] धनागम, आमदनी; लाभ। **–व्यय**–पु० आमद-खर्च। **–व्ययक**–पु० (बजट) किसी राज्यकी या किसी व्यक्ति अथवा संस्थाकी सालभरमें या किसी निश्चित कालतक होनेवाली संभावित आय एवं उसी अवधिके संभावित व्ययके अनुमानका लेखा, बजट। **–व्यय-फलक**–पु०(बैलेंसशीट) दे०'देयादेय-फलक',चिट्ठा।

आयत–स्त्री० [अ०] कुरानका वाक्य; चिह्न, निशान। वि० [सं०] लंबा; विस्तृत; विशाल; आकृष्ट। पु० (रेक्टेंगिल) वह सामानांतर चतुर्भुज जिसका प्रत्येक कोण समकोण हो। **–नेत्र,–लोचन**–वि० बड़ी-बड़ी या लंबी आँखोंवाला।

आयतन–पु० [सं०] स्थान; घर; आश्रय; देवस्थान; यज्ञस्थान; बखार; मकान बनानेका स्थान; किसी पात्रादिके अंदरका स्थान जिसमें कोई चीज अँट सके (कैपेसिटी)।

आयति–स्त्री० [सं०] लंबाई; विस्तार; वह सीमा जहाँतक कोई वस्तु पहुँच सकती हो।

आयत्त–वि० [सं०] अधीन; आश्रित, अवलंबित।

आयथातथ्य–पु०[सं०] जैसा होना चाहिये वैसा न होना, अयथार्थता; अनौचित्य।

आयद–वि० [अ०] लौटनेवाला; घटित होनेवाला।

आयस–पु० [सं०] लोहा; लोहेकी बनी चीज; हथियार। वि० लौहनिर्मित; लोहेके रंगका। * स्त्री० दे० 'आयसु'।

आयसु*–स्त्री, पु० आदेश, आज्ञा।

आया–स्त्री० [पुर्त०] बच्चेको दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय। [फा०] अ० क्या; या।

आयात–वि०[सं०] आगत; देसावरसे आया हुआ (माल)। पु० देसावरसे माल आना या मँगाना, आमदनी।

आयातक–पु० [सं०] (इंपोर्टर) विदेशोंसे बड़ी मात्रामें माल मँगानेवाला व्यवसायी।

आयाम–पु० [सं०] लंबाई; खींचना; रोक (प्राणायाम)।

आयास–पु० [सं०] यत्न; कड़ी कोशिश; श्रम; थकावट।

आयासी (सिन्)–वि० [सं०] आयास करनेवाला।

आयु (स्)–स्त्री० [सं०] जीवन; जीवनकाल; जीवनी शक्ति; आहार। **मु०–खुटाना***–आयु कम होना।

आयुक्त–वि० [सं०] संयुक्त; नियुक्त। पु० मंत्री; कारिंदा; (कमिश्नर) किसी विशेष कार्यके लिए नियुक्त 'आयोग' का सदस्य जिसे विशेष अधिकार दिया गया हो; विशेष कार्यके लिए जिसकी नियुक्ति की गयी हो, किस्मत या कमिश्नरीका प्रधान अधिकारी। **–अधिकारी**–पु० (कमिशंड आफिसर) लेफ्टनेण्टसे बड़ा या वह अधिकारी जिसकी नियुक्ति आयोग द्वारा की जाय।

आयुध–पु० [सं०] युद्धका साधन, हथियार। **–जीवी-(विन्)**–वि० अस्त्रसे जीविका करनेवाला, सिपाही। **–पाल**–पु० शस्त्रागारका अफसर। **–शाला**–स्त्री० शस्त्रागार।

आयुधागार–पु० [सं०] हरबे-हथियारका गोदाम, सिलहखाना।

आयुर्बल–पु० [सं०] आयु, जिंदगी।

आयुर्वृद्धि–स्त्री० [सं०] उम्र बढ़ना।

आयुर्वेद–पु०.[सं०] स्वास्थ्य-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र।

आयुर्वेदिक, आयुर्वेदी(दिन्)–पु० [सं०] आयुर्वेदका ज्ञाता; चिकित्सक। वि० चिकित्सा-शास्त्र-संबंधी।

आयुष्कर–वि० [सं०] आयु बढ़ानेवाला।

आयुष्काम–वि० [सं०] दीर्घायु चाहनेवाला।

आयुष्मान्(ष्मत्)–वि०[सं०] चिरंजीव, लंबी उम्रवाला।

आयुष्य–वि० [सं०] दीर्घायु देनेवाला। पु० उम्र; आयु।

आयोग–पु० [सं०] नियुक्ति; कोई काम देना या किसी काममें लगाना; कार्य-संपादन; (कमीशन) कोई विशेष कार्य संपन्न करनेके लिए नियुक्त व्यक्तियोंका मंडल।

आयोजक–वि० [सं०] आयोजन करनेवाला।

आयोजन–पु० [सं०] जोड़ना, इकट्ठा करना; ग्रहण; उद्योग; प्रबंध; तैयारी।

आयोजित–वि० [सं०] जिसका आयोजन किया गया हो; संगृहीत; संबद्ध किया हुआ।

आरंभ–पु० [सं०] शुरू, इब्तिदा, श्रीगणेश; कार्य; प्रयत्न; उपक्रम; शुरूका हिस्सा; उत्पत्ति; तीव्रता; अभिमान; वध।

आरंभक–वि० [सं०] आरंभ करनेवाला।

आरंभना*–स० क्रि० शुरू करना। अ०क्रि० शुरू होना।

आरंभिक–वि० [सं०] आरंभका, शुरूमें होनेवाला।

आर–स्त्री० शत्रुता; घृणा; सूजा; अनी; डंक; सोंटे या पहियेमें लगी कील; *हठ, जिद; [अ०] शर्म, लज्जा।

आरकाटी–पु० शर्तबन्द कुलियोंकी भरती करनेवाला व्यक्ति।

आरक्त–वि० [सं०] हलका लाल; सुर्ख।

आरक्षक–पु० [सं०] प्रहरी, पहरेदार; (पुलिस) देशमें आंतरिक शांति बनाये रखने तथा अपराधियों आदिको न्यायालयोंके समक्ष उपस्थित करनेका काम करनेवाला कर्मचारी, पुलिसका सिपाही। **–बल**–पु० (पुलीसफोर्स) आरक्षकोंका दल या समूह।

आरक्षिक–पु० [सं०] दे० 'आरक्षक'।

आरक्षित कोष–पु० [सं०] (रिजर्व्ड फंड) विशेष आवश्यकता या संकटके समय काम आ सके, इस दृष्टिसे इकट्ठा किया जानेवाला कोष।

आरक्षित विषय–पु०[सं०] (रिजर्व्ड सबजेक्ट्स) वे विषय जो किसी विशेष दृष्टिसे या विशेष व्यक्तियोंके लिए, अथवा स्वयं अपने हाथमें, सुरक्षित रखे गये हों।

आरक्षी(क्षिन्)–वि०[सं०] रक्षा करनेवाला। पु० (पुलीस) दे० 'आरक्षक'। **–त्वरितदल**–पु० (फ्लाइंगस्क्वैड ऑफ दि पुलीस) पुलिसके सिपाहियोंका वह विशेष दल जो मोटर-गाड़ियों, मोटर-साइकिलों आदिसे सज्जित हो, जिससे वह त्वरित गतिसे चोर-डाकुओं, उपद्रवियोंका पीछा कर सके; पुलिसका तूफ़ानी दस्ता, द्रुतगामी आरक्षी-दल।

आरज*–वि० दे० 'आर्य'।

आरजू–स्त्री० [फा०] इच्छा, कामना; विनती। **–मंद**–वि० इच्छुक।

आरण्य–वि० [सं०] जंगलका, वनैला। पु० जंगल।

आरण्यक–वि० [सं०] वन्य; वनमें उत्पन्न। पु० वनवासी।

आरत–वि० [सं०] शांत; सौम्य; * दे० 'आर्त'।

आरति–स्त्री० [सं०] विराम, रोक; [हि०] दे० 'आरती'; * दे० 'आर्ति'।

आरती–स्त्री० पूजन-अभिनंदन आदिमें देवता या अभिनंदनीय व्यक्तिके मुखके चारों ओर कपूर-दीपक घुमाना; वह पात्र जिसमें कपूर या दीपक रखा जाय; उस समय पढ़ा जानेवाला स्तोत्र। **मु०–उतारना**–अभिनंदन करना।

आरन*–पु० दे० 'आरण्य'।

आर-पार–पु० नदीके दोनों किनारे। अ० इस पार्श्वसे उस पार्श्वतक।

आरबल*–पु० दे० 'आयुर्बल'।

आरब्ध–वि० [सं०] शुरू किया हुआ। पु० आरंभ।

आरब्धि–स्त्री० [सं०] आरंभ।

आरभटी–स्त्री० [सं०] साहस; वह वृत्ति जो रौद्र, भयानक और वीर रसोंके वर्णनमें प्रयुक्त होती है (ना०)।

आरव–पु० [सं०] आहट; चिल्लाहट; आवाज।

आरषी*–वि० स्त्री० दे० 'आर्ष'।

आरस*–पु० आलस्य। स्त्री० दे० 'आरसी'।

आरसी–स्त्री० आईना; आइना जड़ा छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथके अँगूठेमें पहनती हैं।

आरा–पु० [सं०] लकड़ी चीरनेका एक दाँतीदार औजार; चमड़ा सीनेका सूजा; पहियेकी गड़ारी और पुट्ठीके बीचकी पटरी; घोड़िया बैठानेके लिए दीवारपर रखी जानेवाली लकड़ी या पत्थरकी पटरी; * आला, ताखा। **–कश**–पु० आरा खींचनेवाला।

आराइश–स्त्री० [फा०] सजावट, श्रृंगार; कागजके फूल-पत्ते।

आराज़ी–स्त्री० [अ०] दे० 'अराज़ी'।

आराति–पु० [सं०] शत्रु।

आराधक–वि० [सं०] आराधना करनेवाला, पूजा करनेवाला।

आराधन–पु० [सं०] पूजा, उपासना करना; तुष्ट, प्रसन्न करना; सेवा करना; सम्मान करना; पाककार्य; अर्जन।

आराधना–स्त्री० [सं०] पूजा, उपासना; सेवा। * स० क्रि० पूजा, उपासना करना, आराधन करना।

आराधनीय–वि० [सं०] आराधनके योग्य, पूज्य।

आराधित–वि० [सं०] पूजित; सेवित।

आराध्य–वि० [सं०] आराधन करने योग्य।

आराम–पु० [सं०] सुख, प्रसन्नता; बगीचा, उद्यान, उपवन; [फा०] सुख; चैन; विश्राम; आरोग्य। वि० चंगा, नीरोग। **–कुरसी**–स्त्री० लंबी कुरसी जिसपर लेटा भी जा सकता है। **–गाह**–पु० सोनेका कमरा, शयनागार। **–तलब**–वि० सुख चाहनेवाला; आलसी। **मु० –करना**–सोना; चंगा कर देना। **–से**–धीरे-धीरे; फुरसतमें। **–होना**–चंगा होना।

आरि*–स्त्री० हठ, जिद; मर्यादा।

आरिज़ी–वि० [अ०] आकस्मिक; अस्थायी, चंदरोजा।

आरी–स्त्री० छोटा आरा; पैनेकी नोकमें खुँसी कील; सुतारी; * किनारा, कोर।

आरूढ–वि० [सं०] सवार; आसीन; जमकर बैठा हुआ।

आरेस*–पु० ईर्ष्या, डाह।

आरो*–पु० दे० 'आरव'।

आरोग–*वि० नीरोग, स्वस्थ।

आरोगना*–स० क्रि० खाना, भक्षण करना।

आरोग्य–पु० [सं०] रोगका अभाव, तंदुरुस्ती। **–लाभ**–पु० (कॉनवेलेसेंस) बीमारी खानेके बाद क्रमशः स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करना, दे० 'रोगोत्तर स्वास्थ्यलाभ'। **–शाला**–स्त्री० चिकित्सालय, अस्पताल; (सैनेटोरियम) दे० 'स्वास्थ्य-निवास'। **–स्नान**–पु० रोगमुक्तिके बादका स्नान।

आरोधना*–स० क्रि० रोकना।

आरोप–पु० [सं०] एक पदार्थमें दूसरेके गुण-धर्मकी कल्पना; लगाना; न्यास, संस्थापना; इलजाम। **–पत्र**, **–फलक**–पु० (चार्जशीट) (न्यायालय द्वारा तैयार किया हुआ) वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिपर लगाये गये आरोपोंका ब्यौरा दिया रहता है।

आरोपक–वि० [सं०] आरोप करनेवाला।

आरोपण–पु० [सं०] ऊपर चढ़ाना; मढ़ना; संस्थापन, रखना; रोपना; लगाना; झूठी कल्पना; भ्रम।

आरोपित–वि० [सं०] आरोप किया हुआ; रोपा हुआ।

आरोह–पु० [सं०] चढ़नेवाला; चढ़ना, ऊपरको जाना; (घोड़े आदिपर) सवार होना; संगीतमें स्वरोंका चढ़ाव।

आरोहक–वि [सं०] आरोहण करनेवाला। पु० सवार।

आरोहण–पु० [सं०] चढ़ना; सवार होना; ऊपरको जाना।

आरोही (हिन्)–वि० [सं०] आरोह करनेवाला; ऊपरकी ओर–षड्जसे निषादकी ओर–जानेवाला। पु० सवार।

आर्जव–पु० [सं०] ऋजुता, सीधापन; नम्रता।

आर्त–वि० [सं०] पीड़ित, किसी कष्ट-पीड़ासे बेचैन, दुःखी; बीमार। **–ध्वनि**–स्त्री०, **–नाद**, **–स्वर**–पु० दुखियाकी पुकार; दर्दभरी ऊँची आवाज।

आर्तव–वि० [सं०] ऋतु-संबंधी; ऋतुमें उत्पन्न; मासिक स्राव-संबंधी। पु० स्त्रियोंको मासिक धर्मके समय होनेवाला रजःस्राव; स्त्री-रज। **–दोष**–पु० मासिक धर्मकी गड़बड़; ऋतुदोष।

आर्ति–स्त्री० [सं०] क्लेश, पीड़ा; रोग; मनोव्यथा; बुराई।

आर्थिक–वि० [सं०] अर्थ-संबंधी, माली, रुपये-पैसेसे संबंध रखनेवाला। **–अवस्था**–स्त्री० माली हालत।

आर्द्र–वि० [सं०] गीला, तर, नम; रसयुक्त; द्रवित, पिघला हुआ (स्नेहार्द्र, करुणार्द्र)।

आर्द्रा–स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र जो प्रायः शुरू आषाढ़में पड़ता है।

आर्य–पु० [सं०] अनार्यों और शूद्रोंसे भिन्न भारतकी एक प्राचीन सभ्य जाति; अपने धर्म और नियमोंके प्रति आस्था रखनेवाला व्यक्ति; सम्मान्य और सदाचारी व्यक्ति; आचार्य; मित्र; श्वशुर। वि० आर्य जातिका; आर्यके योग्य; आदरणीय; भद्र, श्रेष्ठ। **–धर्म**–पु० सदाचार, उत्तम आचरण; हिन्दूधर्म। **–पुत्र**–पु० आदरणीय व्यक्तिका पुत्र; पतिका संबोधन (ना०)। **–समाज**–पु० स्वामी दयानंद द्वारा प्रवर्तित एक धार्मिक समाज।

आर्यभट्ट–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी जिन्होंने बीजगणितका आविष्कार किया था।

आर्या–स्त्री० [सं०] पार्वती; एक वृत्त; सास; श्रेष्ठ स्त्री।

आर्यावर्त्त–पु० [सं०] उत्तर भारत।

आर्ष–वि० [सं०] ऋषिकृत; ऋषिप्रयुक्त; वैदिक। पु० विवाहके ८ प्रकारोंमेंसे एक; वेद। **–ग्रंथ**–पु० वेदादि। **–प्रयोग**–पु० ऋषियों या बड़े विद्वानों द्वारा किया गया शब्दोंका व्याकरण-विरुद्ध-प्रयोग।

आलंकारिक–वि० [सं०] अलंकार-संबंधी; अलंकारयुक्त; अलंकार-शास्त्र-वेत्ता।

आलंब–पु० [सं०] सहारा, आधार; लटकन, 'पेंडुलम'।

आलंबन–पु० [सं०] सहारा; सहारा लेना; आधार; रसकी उत्पत्तिका आधार (सा०)।

आलक्षित–वि० [सं०] देखा हुआ; समझा हुआ; अनुभूत।

आलजाल*–पु० ऊटपटाँग, ऊलजलूल।

आलथी-पालथी–स्त्री० दाहिनी एड़ी बायीं और बायीं एड़ी दाहिनी जाँघपर रखकर बैठना।

आलन–पु० मिट्टीके गारे आदिमें मिलाया जानेवाला भूसा आदि; सागमें मिलाया जानेवाला बेसन।

आलबाल–पु० दे० 'आलवाल'।

आलम–पु० [अ०] दुनिया, जगत्; अवस्था; भीड़।

आलमारी–स्त्री० दे० 'अलमारी'।

आलय–पु० [सं०] घर, मकान; आधार, आश्रय-स्थान।

आलर्क–वि० [सं०] पागल कुत्तेका (विष)।

आलवाल–पु० [सं०] थाला; मेघ।

आलस–वि० [सं०] आलसी। * पु० आलस्य।

आलसी (सिन्)–वि० [सं०] सुस्त, काहिल।

आलस्य–पु० [सं०] काम करनेकी अनिच्छा, सुस्ती।

आला–पु० ताक, ताखा; पजावा। * वि० गीला; ताजा; हरा। पु० [अ०] औजार, उपकरण, साधन। वि० बहुत ऊँचा; श्रेष्ठ। **–दरजेका**–बहुत बढ़िया, उत्तम।

आलात–पु० [सं०] जलती हुई लकड़ी, लुक। **–चक्र**–पु० जलते हुए लुकको घुमानेसे बननेवाला मंडल।

आलान–पु० [सं०] हाथी बाँधनेका खंभा, खूँटा या रस्सा; बेड़ी, जंजीर; बंधन।

आलाप–पु० [सं०] कथन; बातचीत; संगीतके सातों स्वर; स्वरोंका साधन, अलाप।

आलापक–वि० [सं०] गानेवाला; बातचीत करनेवाला।

आलापना–स० क्रि० आलाप लेना; गाना।

आलापी (पिन्)–वि० [सं०] बातचीत करनेवाला;

गानेवाला ।

आलिंगन–पु० [सं०] लपटाना; गले लगाना ।

आलिंगना*–स० क्रि० गले लगाना; भेंटना ।

आलि–पु० [सं०] बिच्छू; भ्रमर । स्त्री० दे० 'आली' ।

आलिम–वि० [अ०] जाननेवाला, विद्वान् , पंडित ।

आली–स्त्री० [सं०] सखी, सहेली; पंक्ति; रेखा । वि० [अ०] ऊँचा; बड़ा । **–जाह**–वि० ऊँचे पद, मर्तबेवाला । **–शान**–वि० बड़ी शानवाला, शानदार ।

आलुलित–वि० [सं०] क्षुब्ध, चंचल ।

आलू–पु० एक प्रसिद्ध कंदशाक (पोटैटो) । **–दम**–पु० दे० 'दमआलू' ।

आलूचा–पु० एक पेड़ या उसका फल ।

आलूबुखारा–पु० आलूचेका सुखाया हुआ फल ।

आलेख–पु० [सं०] लिखावट, लिखाई; पत्र; लेख, तहरीर; (डिक्टेशन) जोरसे कहना या इस तरह पढ़ना कि सुनकर लिखनेवाला उसे लिख ले; इस तरह सुनकर लिखा गया लेख या इबारत; श्रुतिलेख, इमला ।

आलेखन–पु० [सं०] लिखना; तसवीर बनाना, चित्रांकन । **–विद्या**–स्त्री० चित्रकला, तसवीरकशी ।

आलेखनी–स्त्री० [सं०] कूची, ब्रश; पेंसिल ।

आलेख्य–वि० [सं०] लिखने, चित्रित करने योग्य । पु० लेख; चित्र ।

आलेप–पु० [सं०] लेप, उबटन आदि; पलस्तर ।

आलेपन–पु० [सं०] लेप करना; पलस्तर करना; उबटन, लेप ।

आलोक–पु० [सं०] प्रकाश, उजाला । **–कर**–वि० प्रकाश करनेवाला **–चित्रण**–पु० (फोटोग्राफी) रासायनिक मसालोंसे तैयार किये गये विशेष पटलपर प्रकाशकी प्रतिक्रिया द्वारा चित्र उतारना । **–पथ,–मार्ग**– पु० दृष्टिपथ ।

आलोकन–पु० [सं०] देखना, दर्शन; विचार करना ।

आलोकनीय–वि० [सं०] देखने योग्य ।

आलोकित–वि० [सं०] देखा हुआ; प्रकाशित ।

आलोचक–वि० [सं०] देखनेवाला; समीक्षक ।

आलोचन–पु०, **आलोचना**–स्त्री० [सं०] देखना; गुण-दोषका विवेचन, परख; समीक्षा ।

आलोच्य–वि० [सं०] आलोचना करने योग्य ।

आलोडन–वि० [सं०] मंथन, बिलोना; मर्दन; छान-बीन ।

आलोड़ना*–स० क्रि० मंथना; ऊहा-पोह करना ।

आलोडित–वि० [सं०] मथित; हिलोरा हुआ; विचारित ।

आलोल–वि० [सं०] थोड़ा हिलता हुआ, ईषच्चंचल ।

आल्हा–पु० महोबेके एक प्रसिद्ध वीर; वह वीरगाथा जिसमें आल्हा और उनके अनुज ऊदलके कार्योंका वर्णन है; उक्त वीरगाथाका छंद, वीरछंद; बहुत लंबा वर्णन । **–का पँवारा**–निरर्थक लंबा वर्णन ।

आवंटन–पु० [सं०] (एलॉटमेंट) भूमि, संपत्ति आदिका हिस्सोंमें बाँटा जाना; विभाजन; किसीके लिए भूमि आदिका कोई हिस्सा निर्धारित करना, (**भूमिका–** =एलाटमेंट ऑफ लैंड । **राजस्वका–** =एलाटमेंट ऑफ रेवेन्यू) ।

आवंट्य–पु० [सं०] (एलॉटी) वह जिसे कोई वस्तु आवंटन में दी गयी हो ।

आव*–स्त्री० आयु ।

आवज, आवझ†–पु० एक बाजा, ताशा ।

आवटना*–स० क्रि० औटना, खौलाना । पु० हलचल ।

आवन*–पु०, **आवनि***–स्त्री० आगमन ।

आव-भगत–स्त्री० स्वागत-सत्कार, खातिर-बात ।

आव-भाव–पु० आव-भगत ।

आवरण–पु० [सं०] ढकना; छिपाना; घेरना; ढक्कन, वेठन; परदा; बचाव; ढाल; चहारदीवारी; ताला; ब्योंड़ा । **–पत्र**–पु० पुस्तककी जिल्दके रक्षार्थ उसपर चढ़ाया हुआ कागज जिसपर उसका नाम दाम भी रहता है, 'कवर' ।

आवर्त–पु० [सं०] घुमाव, चक्कर; भँवर; (घोड़ेकी) भँवरी; घनी आबादी; लाजवर्द नामक रत्न; किसी बातको बार-बार सोचना-विचारना; चिंता; संसार ।

आवर्तक, आवर्ती (र्तिन्)–वि० [सं०] घूमने, चक्कर खानेवाला; (रेकरिंग) बार-बार होने या दिया जानेवाला (व्यय, अनुदान इ०) ।

आवर्तन–पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; मंथन, आलोडन; (धातु) गलाना; दुहराना, फिर-फिर करना या होना । **–मणि**–पु० राजावर्त मणि ।

आवश्यक–वि० [सं०] जरूरी; अवश्यंभावी ।

आवश्यकता–स्त्री० [सं०] जरूरत ।

आवश्यकीय–वि० जरूरी ।

आवह–वि० [सं०] (समासांतमें) जनक, उत्पादक (भयावह, क्लेशावह) ।

आवाँ–पु० मिट्टीके बरतन पकानेका भट्ठा ।

आवागमन–पु० [सं०] आना-जाना; जन्म-मरणका चक्र या बंधन, संसृति । [**–छूटना**–मुक्ति मिलना ।]

आवागवन, आवागौन*–पु० दे० 'आवागमन' ।

आवाज़–स्त्री० [फा०] बोल, ध्वनि; स्वर; पुकार; शोर । **मु०–उठाना,–ऊँची करना**–किसी बातके पक्ष या विपक्षमें कहना, बोलना । **–खुलना**–गला ठीक हो जानेके बाद शब्दका पुनः साफ निकलना । **–गिरना**–स्वरका मंद होना । **–देना**–पुकारना, बुलाना । **–निकालना**–बोलना । **–फटना**– आवाज भर्राना । **–बैठना**–गला बैठना, स्वरभंग होना । **–लगाना**–आवाज देना, ऊँची तान लगाना ।

आवाज़ा–पु० [फा०] प्रसिद्धि, शुहरत; व्यंग्य, ताना । **मु०–कसना**–बोली बोलना, व्यंग्य करना ।

आवा-जानी–स्त्री० जन्म-मरण ।

आवा-जाही†–स्त्री० आना-जाना, आमद-रफ्त ।

आवारगी–स्त्री० [फा०] आवारापन ।

आवारजा–पु० [फा०] जमा-खर्च-बही; रोजनामचा ।

आवारा–वि० [फा०] जो बेकार घूमता-फिरता, भटकता रहे; कुमार्गगामी; निकम्मा । **–गर्द**–वि० बेकार घूमने, भटकता रहनेवाला । **–गर्दी**–स्त्री० बेकार घूमना, भटकना ।

आवास–पु० [सं०] वासस्थान, घर; कमरा ।

आवासिक–वि० [सं०] (रेजिडेंट) उसी स्थानपर रहनेवाला (आवासिक चिकित्सक, अध्यापक आदि) ।

आवासी (सिन्)–वि० [सं०] रहनेवाला, बास करनेवाला;

दे० 'आवासिक'। **–प्रतिनिधि**–पु० (रेज़िडेंट) किसी अर्द्ध स्वतंत्र राज्यमें स्थायी रूपसे रहनेवाला अन्य देशका प्रतिनिधि।

आवाहन–पु० [सं०] बुलाना, पुकारना; पूजनमें किसी देवताको मंत्र द्वारा बुलाना; अग्निको होम अर्पित करना।

आवाहना*–स० क्रि० आमंत्रित करना।

आविद्ध–वि० [सं०] बिधा, छेदा हुआ; जोरसे फेंका हुआ। पु० तलवारका एक हाथ।

आविर्भाव–पु०[सं०] प्रकट होना, सामने आना; उत्पत्ति; अवतार; वस्तुधर्म।

आविर्भावन–पु० [सं०] (इनवेंशन) दे० 'उद्भावन'।

आविर्भूत–वि० [सं०] प्रकटित, अभिव्यक्त; अवतीर्ण।

आविष्करण–पु०[सं०]प्रकट करना, दिखाना; कोई अज्ञात बात खोज निकालना; नयी चीज बनाना, ईजाद।

आविष्कर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार–पु० [सं०] दे० 'आविष्करण'।

आविष्कारक–वि० [सं०] दे० 'आविष्कर्ता'।

आविष्कृत–वि० [सं०] प्रकट किया हुआ; ईजाद किया हुआ।

आविष्ट–वि० [सं०] आवेशयुक्त; प्रेतादिसे ग्रस्त; तत्पर; भरा हुआ, अभिभूत (क्रोधाविष्ट); प्रविष्ट।

आवृत–वि० [सं०] ढँका, छिपा, लपेटा हुआ; घेरा हुआ।

आवृति–स्त्री० [सं०] आवरण।

आवृत्ति–स्त्री० [सं०] घूमना; लौटना; चक्कर लगाना; पलायन; दुहराना; बार-बार पढ़ना, अभ्यास; संसृति; पुस्तकादिका फिरसे छपना, संस्करण; उपयोग, प्रयोग। **–दीपक**–पु० दीपक अलंकारका वह भेद जिसमें क्रिया-पदोंकी आवृत्ति हो।

आवेग–पु० [सं०] प्रबल मनोवेग, बिना सोचे-बिचारे कुछ कर बैठनेकी अंतःप्रेरणा, झोंक; अशांति; उतावली; एक संचारी भाव।

आवेदक–वि० [सं०] आवेदन करनेवाला। पु० मुद्दई; प्रार्थी।

आवेदन–पु० [सं०] निवेदन, अर्जी; प्रार्थना करना; नालिश। **–पत्र**–पु० अर्जी, प्रार्थनापत्र।

आवेश–पु० [सं०] प्रवेश, व्याप्ति; दबा लेना, हावी हो जाना (क्रोधावेश); प्रेतादिका पकड़ लेना; जोश; गुस्सा; घमंड; लगन, अभिनिवेश; मूर्च्छा; मृगी।

आवेष्टन–पु०[सं०] लपेटना; ढकना; बेठन, खोल; चहारदीवारी, घेरा।

आवेष्टित–वि० [सं०] छिपा, ढका, घिरा हुआ।

आशंका–स्त्री० [सं०] भय, खतरे, अनिष्टकी संभावना; संदेह, अविश्वास।

आशंकित–वि० [सं०] जिसकी आशंका हो; आशंकायुक्त।

आशंसा–स्त्री०[सं०] इच्छा, अपेक्षा; आशा; कथन; चर्चा।

आश–* स्त्री० आशा। पु० [फा०] पेय; लपसी। **–जौ**–पु० जौका जूस या लपसी।

आशना–वि० [फा०] परिचित, जान-पहचानवाला। पु०, स्त्री० प्रेमी, यार; प्रेमपात्र; रखेली।

आशनाई–स्त्री० [फा०] दोस्ती; प्रेम; अवैध संबंध।

आशय–पु० [सं०] शयनस्थान, विश्रामस्थान; रहनेकी जगह; घर; आधार; अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य।

आशर–पु० [सं०] राक्षस; अग्नि; वायु।

आशा–स्त्री० [सं०] किसी वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा और किंचित् विश्वास; उम्मीद, साधारण विश्वास या भरोसा; आसरा; दिशा। **–पाल**–पु० दिक्पाल। **–भंग**–पु० आशाका टूटना, आशा पूरी न होना। **–बसन**–वि० दिगंबर, नग्न। **–वाद**–पु० (ऑप्टिमिज्म) प्रत्येक घटना और प्रत्येक वस्तुके संबंधमें आशामयी दृष्टि रखना, सदा अच्छी बातों और अच्छे परिणामोंकी आशा करनेका स्वभाव। **–वादी (दिन्)**–वि० (ऑप्टिमिस्ट) सर्वदा अच्छी बातों और कल्याणमय परिणामोंकी आशा करनेवाला। **मु०–टूटना**–आशा भंग होना। **–तोड़ना**–निराश करना। **–देना**–उम्मीद बँधाना। **–पूजना**–आशा पूरी होना। **–बँधना**–आशा उत्पन्न होना।

आशातीत–वि० [सं०] आशासे अधिक।

आशिक़–वि० [अ०] इश्क–प्रेम करनेवाला, अनुरक्त, आसक्त। पु० प्रेम करनेवाला व्यक्ति। **–माशूक़**–पु० प्रेमी और प्रेमपात्र। **–मिज़ाज**–वि० प्रेमप्रवण; दिलफेंक।

आशिक़ाना–वि० [अ०] प्रेमीके अनुरूप या उपयुक्त; प्रेमसूचक, अनुरागमय।

आशियाँ, आशियाना–पु० [फा०] घोंसला; बसेरा; घर।

आशीर्वचन, आशीर्वाद–पु० [सं०] असीस।

आशु–वि० [सं०] तेज, द्रुत। अ० तेजीसे, फौरन। **–कवि**–पु० तुरत कविता बनानेमें समर्थ कवि। **–ग**–वि० शीघ्रगामी; जल्द जाने या पहुँचनेवाला (एक्सप्रेस तार या गाड़ी)। **–तोष**–वि० झट प्रसन्न होनेवाला। पु० शिव। **–पत्र**–पु० (एक्सप्रेस लेटर) शीघ्रतापूर्वक भेजा जानेवाला पत्र, वह पत्र जो पत्रालय (डाकघर) में पहुँचते ही हरकारे द्वारा तुरंत पानेवालेके पास भेज दिया जाय। **–बोध**–वि० जल्द सिखलानेवाला। **–लिपि**–स्त्री० (शार्टहैंड) विशेष संकेतों द्वारा भाषणादि शीघ्र लिख लेनेकी एक प्रणाली। **–लिपिक**–पु० (स्टेनोग्राफर) आशुलिपि (शीघ्रलिपि) की सहायतासे कोई भाषण या बोला-सुनाया गया मजमून शीघ्रतापूर्वक लिख लेनेवाला कर्मचारी (व्यक्ति)।

आश्चर्य–पु० [सं०] अचरज, अचंभा, विस्मय; अद्भुत रसका स्थायी भाव।

आश्चर्यित–वि० चकित, विस्मित।

आश्रम–पु० [सं०] साधु-संतकी कुटी, मठ; तपोवन; साधक-समुदायके रहनेका स्थान; वर्णाश्रम-धर्मी द्विजके जीवनके चार विभाग या अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास); विद्यालय। **–गुरु**–पु० आचार्य। **–धर्म**–पु० आश्रमविहित धर्म; ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदिके विशेष धर्म। **–वासी (सिन्)**–वि० आश्रममें रहनेवाला। पु० वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमी (मिन्)–वि० [सं०] आश्रममें रहनेवाला; चार आश्रमोंमेंसे किसी आश्रमका।

आश्रय–पु० [सं०] आधार; विषय; शरण, ठिकाना; घर;

सहायता; सहारा; संरक्षक।

आश्रयी (यिन्)–वि० [सं०] आश्रय लेनेवाला।

आश्रित–वि० [सं०] (किसीके सहारे) ठहरा, टिका हुआ; अवलंवित; अधीन; जो भरण-पोषणके लिए किसीपर अवलंवित हो।

आश्लिष्ट–वि० [सं०]लगा, जुड़ा हुआ; संवद्ध;आलिंगित।

आश्लेष–पु० [सं०] लगाव, संबंध; आलिंगन।

आश्वस्त–वि० [सं०] आश्वास-प्राप्त, जिसका डर दूर कर दिया गया हो; जिसे ढाढ़स बँधाया गया हो; उत्साहित।

आश्वासक–वि० [सं०] आश्वासन देनेवाला।

आश्वासन–पु० [सं०] दिलासा देना; भयनिवारण; प्रोत्साहन।

आश्विन–पु० [सं०] वह महीना जिसमें चंद्रमा अश्विनी नक्षत्रके पास रहता है, क्वार।

आश्विनेय–पु० [सं०] अश्विनीकुमार; नकुल-सहदेव।

आषाढ–पु० [सं०] असाढ़का महीना।

आषाढी–स्त्री० [सं०] आषाढ़की पूर्णिमा; इस दिन होनेवाला कृत्य।

आसंग–पु० [सं०] आसक्ति, लगाव; साथ; संलग्नता।

आसंगी(गिन्)–वि० [सं०] आसक्त; संवद्ध।

आसंजन–पु० [सं०] वाँधना; धारण करना; उलझ जाना; संवंध; मूठ।

आसंदिका–स्त्री [सं०] छोटी कुरसी; मचिया।

आसंदी–स्त्री० [सं०] मचिया; आराम-कुरसी; वेदी।

आस–स्त्री० आशा; भरोसा; सहारा; कामना; * दिशा। **मु०** **–होना**–आशा या सहारा होना; गर्भ रहना।

आसकता†–स्त्री० सुस्ती, आलस्य।

आसकती†–वि० आलसी।

आसक्त–वि० [सं०] आसक्तियुक्त; मनका प्रवल लगाव रखनेवाला, अनुरक्त; फँसा हुआ, लिप्त (विषयासक्त)।

आसक्ति–स्त्री० [सं०] मनका लगाव; अनुराग, लगन।

आसति*–स्त्री० सत्य; आसक्ति; समीपता; मुक्ति।

आसतीन–स्त्री० दे० 'आस्तीन'।

आसते*–अ० दे० 'आहिस्ता'।

आसतोष*–वि०, पु० दे० 'आशुतोष'।

आसत्ति–स्त्री० [सं०] निकट संवंध, समीपता; मेल; वाक्यमें संवद्ध पदोंका पास-पास रहना; लाभ, प्राप्ति।

आसथान*–पु० दे० 'आस्थान'।

आसन–पु० [सं०] वैठना; वह चीज जिसपर वैठा जाय (चटाई, कुरसी आदि); वैठनेका ढंग; रुकना; रहना; फेंकना; हठयोगके अंदर वैठने और विभिन्न अंगोंके व्यायामकी विधियाँ; रतिक्रियाकी कोई विधि। **मु०**–**उखड़ना**–जमकर न वैठ सकना, डगमगाना।–**करना**–योगके अनुसार शरीरको विशेष स्थितिमें रखना; टिकना। –**कसना**–अंगोंको तोड़-मरोड़कर वैठना। –**छोड़ना**–उठकर चल देना।–**जमाना**–जमकर, अडिग भावसे वैठना; अपनी स्थिति, अधिकार दृढ़ कर लेना; डेरा डालना।–**डिगना**, –**डोलना**–चित्तका विचलित हो जाना; मनमें भय या घवराहट पैदा हो जाना; मन ललचाना। –**मारना**,–**लगाना**–आसन जमाना, जमकर वैठना।

आसना*–अ० क्रि० होना।

आसनी–स्त्री० छोटा आसन, वैठनेभरका विछावन।

आसन्न–वि० [सं०] पास आया हुआ; उपस्थितप्राय; लगा, सटा हुआ। –**कोण**–पु० (ऐडजेसेंट) वे कोण जो एक ही विंदुपर एक उभयनिष्ठ भुजाके दोनों ओर वने हों।–**प्रसवा**–वि० स्त्री० जिसे आज-कलमें ही वच्चा होनेवाला हो। –**भूत**–पु० भूत कालका वह भेद जिससे क्रियाकी पूर्णता और भूतकालकी निकटता सूचित होती हो (व्या०)। –**मरण**,–**मृत्यु**–वि० जिसकी मृत्यु पास आ गयी हो, कुछ ही देरका मेहमान।

आस-पास–अ० अगल-वगल, चारों ओर; करीव, पासमें।

आसमान(माँ)–पु० [फा०] आकाश; स्वर्ग। **मु०**–**के तारे तोड़ना**–दुरसाध्य, अनहोनी वात कर डालना। –**छूना**–वहुत ऊँचा होना, गगनचुंवी होना।–**ज़मीनके कुलावे मिलाना**–दूनकी हाँकना,लंवी-चौड़ी वातें करना। –**झाँकना**,–**ताकना**–घमंड करना।–**टूटना**–अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना। –**दिखाना**–कुश्तीमें प्रतिद्वंद्वीको चित कर देना। –**पर उड़ना**, –**पर चढ़ना**–गर्वसे इतराना, मिजाज वहुत वढ़ जाना। –**पर चढ़ाना**–अति प्रशंसाके द्वारा मिज़ाज विगाड़ देना। –**पर थूकना**–वड़े आदमीको निंदित करनेके प्रयत्नमें स्वयं निंदित होना। –**फटना**–अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना। –**में छेद होना**–वर्षाका न थमना, लगातार अतिवृष्टि होना। –**में थिगली या थूनी लगाना**–कठिन, अनहोनी वात करना। –**सिरपर उठा लेना**–वहुत शोर, ऊधम, कोलाहल मचाना। –**सिरपर टूट पड़ना**–दैवकोप होना, अचानक कोई भारी विपद् आ पड़ना।–**से गिरना**,–**से टपकना**–(किसी चीजका) अपने आप उपस्थित हो जाना।–**से वातें करना**–आसमान छूना।

आसमानी–वि० [फा०] आसमानका; आसमानके रंगका; दैवी। स्त्री० हलका नीला रंग; ताड़ी।

आसमुद्र–अ० [सं०] समुद्रतक।

आसय*–पु० दे० 'आशय'।

आसर*–पु० दे० 'आशर'।

आसरना*–स० क्रि० आश्रय लेना।

आसरा–पु० सहारा; अवलंव; भरोसा; आशा; प्रतीक्षा।

आसव–पु० [सं०] मद्य; रस; पुष्परस; अधरामृत; फल आदिके खमीरसे तैयार किया हुआ अर्क; मद्यपात्र।

आसा*–स्त्री० दे० 'आशा'। पु० दे० 'असा'।

आसाइश–स्त्री० [फा०] सुख, आराम।

आसाढ़–पु० दे० 'आषाढ'।

आसादित–वि० [सं०] लब्ध, प्राप्त; रखा हुआ।

आसान–वि० [फा०] सहल, सुगम, सीधा।

आसानी–स्त्री० [फा०] सहल होना, सुगमता।

आसार–पु० [अ०] पदचिह्न; चिह्न, लक्षण; खँडहर।

आसिख(खा)*–स्त्री० आशीर्वाद।

आसिरवचन*–पु० आशीर्वाद।

आसी*वि०खानेवाला (आशी)।

आसीन–वि० [सं०] वैठा हुआ।

आसीस–स्त्री० आशीर्वाद ।

आसु*–सर्व० इसका । अ० दे० 'आशु' । **–ग**–वि० दे० 'आशुग' । **–तोष**–पु० दे० 'आशुतोष' ।

आसुर–वि० [सं०] असुरका; असुर-संबंधी । पु० वह विवाह जिसमें वर कन्याके पिता-माताको धन देकर कन्या खरीदता है; * असुर ।

आसुरी–स्त्री० * असुर-स्त्री, दानवी ।–वि० स्त्री० [सं०] असुरकी; असुर-संबंधिनी; असुरोचित । **–चिकित्सा**–स्त्री० शल्य-चिकित्सा । **–माया**–स्त्री० असुरोंकी माया । **–संपत्**–स्त्री० बुरे तरीकेसे प्राप्त किया हुआ धन ।

आसूदगी–स्त्री० [फ़ा०] आसूदा होना; तृप्ति ।

आसूदा–वि० [फ़ा०] तृप्त, संतुष्ट; सम्पन्न ।

आसेक–पु० [सं०] भिगाना, तर करना, सिंचन करना ।

आसेचन–पु० [सं०] दे० 'आसेक' ।

आसेध–पु० [सं०] (अटैचमेंट) कर्ज या जुर्माने आदिकी वसूलीके लिए न्यायालयकी आज्ञासे किसीकी संपत्तिपर अधिकार किया जाना, कुर्की ।

आसेधक–वि० [सं०] कैद करनेवाला, रोक रखनेवाला ।

आसेब–पु० [फ़ा०] चोट; कष्ट; बाधा; प्रेतबाधा ।

आसोज(जा)†–पु० आश्विन मास ।

आसौं*–अ० इस साल ।

आस्तरण–पु० [सं०] फैलाना; बिछाना; दरी; गद्दा; झूल ।

आस्तिक–वि० [सं०] ईश्वर और परलोकको माननेवाला; वेदको माननेवाला; धर्मनिष्ठ । पु० ईश्वर तथा परलोकमें विश्वास करनेवाला व्यक्ति ।

आस्तिकता–स्त्री०, **–आस्तिकत्व**–पु० [सं०] दे० 'आस्तिक्य' ।

आस्तिक्य–पु०[सं०] ईश्वर आदिमें विश्वास; धार्मिकता ।

आस्तीन–स्त्री० [फ़ा०] सिले कपड़ेका बाँहपरका भाग, बाँही । **मु०–का साँप**–मित्र बनकर शत्रुता करनेवाला, दोस्तनुमा दुश्मन । **–चढ़ाना**–लड़नेको तैयार होना; किसी कामके लिए तैयार होना ।

आस्ते*–अ० दे० 'आहिस्ता' ।

आस्थगन–पु० [सं०] (अबेएंस) कुछ समयके लिए स्थगित कर देना या लागू न करना ।

आस्था–स्त्री० [सं०] आदर; विश्वास; श्रद्धा; आलंबन, सहारा; सभा; वादा; आशा; स्थिति; प्रयत्न ।

आस्थान–पु० [सं०] स्थान; सभा; सभागृह; दरबार; मनोरंजनका स्थान; श्रद्धा; आस्था ।

आस्पद–पु० [सं०] स्थान; अधिष्ठान, आलंबन; पद; अड्डा, कुलकी उपाधि; काम; कुंडलीमें दशम स्थान ।

आस्फालन–पु० [सं०] हिलाना; फड़फड़ाना, घमंड ।

आस्फोट–पु० [सं०] ताली बजाने या ताल ठोकनेकी आवाज; रगड़ या धक्का; हिलना; काँपना ।

आस्मारक–पु० [सं०] (मेमोरियल) वह रचना, कार्य, भवन इत्यादि जिसका लक्ष्य किसीकी याद बनाये रखना हो; कही हुई बातों आदिका मरण दिलानेके लिए किसी अधिकारीके पास भेजा गया पत्रक ।

आस्य–पु० [सं०] मुँह, चेहरा ।

आस्वाद–पु० [सं०] रस, स्वाद, मजा; रसानुभव, चखना ।

आस्वादन–पु० [सं०] रस, स्वाद लेना, चखना; खाना ।

आस्वादित–वि० [सं०] चखा, स्वाद लिया, खाया हुआ ।

आस्वाद्य–वि० [सं०] चखने, स्वाद लेने योग्य; मजेदार ।

आह–अ० क्लेश, शोक, वेदना आदिका सूचक उद्गार, हाय । स्त्री० दुःख, पीड़ा प्रकट करनेवाली ध्वनि, कलपने, कराहनेकी आवाज; हाय, ठंढी साँस; शाप । * पु० साहस; जोर, बल; क्रोध; ललकार । **मु०–करना**–कलपना । **–खींचना**–ठंढी साँसके साथ आह करना, कलपना । **–पड़ना**–शाप पड़ना, किसीको सताने, रुलानेका फल मिलना । **–भरना**–दे० 'आह खींचना' । **–मारना**–ठंढी साँस खींचना । **–लेना**–सतानेका फल अपने ऊपर लेना ।

आहट–स्त्री० किसीके चलने, हिलने आदिसे होनेवाली हल्की आवाज, चाप; किसीकी उपस्थितिका अनुमान करानेवाली ध्वनि; टोह । **मु०–लेना**–आहट पाने, टोह लेनेके लिए कान लगाये रहना ।

आहत–वि० [सं०] जिसपर प्रहार, आघात किया गया हो; बजाया हुआ; घायल; रौंदा हुआ; हटाया, निकाला हुआ; गुणित; व्याघात दोषयुक्त, असंगत (वाक्य) ।

आहतोपचारी दल–पु० [सं०] (ऐंबूलेंसकोर) घायलोंका उपचार करनेवाले डाक्टरों, कंपाउंडरों, परिचारकों आदिका दल, परिचारण-दल ।

आहनन–पु० [सं०] मारना, पीटना; डंडा ।

आहर* –पु० समय; दिन; युद्ध; पशुओंके धोने आदिके लिए बना हुआ जलाधार ।

आहरण–पु० [सं०] लेना; छीन लेना; उठा ले जाना; हटाना ।

आहरन–पु० निहाई ।

आहर्ता (र्तृ)–वि० [सं०] आहरण करनेवाला; छीनने, लेनेवाला; लानेवाला ।

आहवन--पु० [सं०] यज्ञ; होम करना; हवि ।

आहवनीय–वि० [सं०] आहुति देने योग्य ।

आहाँ*–स्त्री० दुहाई, पुकार, आह्वान । † अ० निषेध-सूचक शब्द ।

आहा–अ० हर्ष, आश्चर्य व्यक्त करनेवाला उद्गार, अहाहा ।

आहार–पु० [सं०] ग्रहण, लेना; खाना, भोजन; खानेकी वस्तु । **–विज्ञान**–पु० वह विज्ञान जिसमें खाद्य पदार्थोंके गुण-दोष, योग, पोषणतत्त्व, वर्गीकरण आदिका विचार किया गया हो । **–विहार**–पु० भोजन, शयन, श्रम आदि; रहन-सहन ।

आहारी (रिन्)–वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; खानेवाला; एकत्र करनेवाला ।

आहार्य–वि० [सं०] ग्रहण करने, लेने, छीनने, खाने योग्य । पु० नायक-नायिकाका एक दूसरेका भेस बनाना ।

आहिंडन–पु० [सं०] (वैग्रैंसी) बेघर-द्वारके, बेमतलब इधर-उधर भटकना, बेकार घूमना, आवारागर्दी ।

आहिस्ता–अ०[फ़ा०]धीरेसे; धीरे-धीरे; धीमी आवाजसे । **–आहिस्ता**–अ० धीरे-धीरे; क्रमशः ।

आहुत–वि० [सं०] देवादिके लिए हविरूपमें अर्पित,

होमा हुआ । पु० अतिथि-सत्कार; भूतयज्ञ ।

आहुति–स्त्री० [सं०] यज्ञादिके समय हवनसामग्री अग्निमें डालना; हवनसामग्री; उतनी हवनसामग्री जो एक बारमें अग्निमें डाली जाय; बलि; ललकार ।

आहुती*–स्त्री० यज्ञाग्निमें हवनसामग्री डालना; हवनके रूपमें डाली जानेवाली वस्तु ।

आहूत–वि०[सं०] बुलाया, पुकारा, न्योता हुआ ।**–पूँजी**–स्त्री० [हिं०] (कॉल्ड अप कैपिटल) किसी कारखाने, कंपनी आदिके बिके हुए हिस्सोंका वह अंश जो आवश्यकता पड़नेपर संचालकों द्वारा हिस्सेदारोंसे माँगा जाय ।

आह्निक–वि० [सं०] दैनिक; एक दिन या प्रतिदिनका । **–कर्म(न्)**–पु० नित्यकर्म ।

आह्लाद–पु० [सं०] हर्ष, आनंद, खुशी ।

आह्लादित–वि० [सं०] आह्लादयुक्त, आनंदित ।

आह्वान–पु० [सं०] बुलाना; पुकार, बुलावा; देवताका आवाहन; अदालतमें हाजिर होनेका आदेश, तलबनामा; ललकार, चुनौती; नाम ।**–पत्र**–पु०(समंस) न्यायालयमें उपस्थित होनेका आदेश, समन ।

इ

इ–देवनागरी वर्णमालाका तीसरा (स्वर) वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान तालु है ।

इंगला–स्त्री० इडा नामकी नाडी ।

इंगित–पु० [सं०] संकेत, इशारा; अभिप्राय; मनका भाव बतानेवाली अंगचेष्टा । वि० जिसकी ओर संकेत किया जाय; चलित, कंपित ।

इंगुद–पु०, **इंगुदी**–स्त्री० [सं०] हिंगोटका पेड़ ।

इंगुर*–पु० दे० 'ईंगुर' ।

इँगुरौटी–स्त्री० ईंगुर या सेंदुर रखनेकी डिबिया ।

इंच–स्त्री०[अं०] फुटका बारहवाँ भाग, तीन जौकी लंबाई ।

इँचना*–अ० क्रि० खिंचना ।

इंजन–पु० एंजिन; कल, यंत्र; भाप आदिकी शक्तिको चालक शक्तिमें बदल देनेवाला यंत्र; रेलवे इंजन; देह (ला०) ।

इंजीनियर–पु० [अं०] इंजन बनानेवाला; यंत्रविशेषज्ञ; नहर, पुल आदिके नकशे बनाने और उनके निर्माणकी निगरानी करनेवाला ।

इंजील–स्त्री० [यू०] ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक, बाइबिल ।

इँडुरी*–स्त्री०, **इंडुवा**–पु० गेंडुरी, विड़ई ।

इंति(त)क़ाल–पु०[अ०]हस्तांतरित होना; मरना, मृत्यु ।

इंति(त)ख़ाब–पु० [अ०] छाँटना; चुनाव; खसरे-खतियौनीके किसी कागजकी बाजाब्ता नकल ।

इंति(त)ज़ाम–पु० [अ०] प्रबंध करना; व्यवस्था, उपाय ।

इंति(त)ज़ार–पु० [अ०] प्रतीक्षा करना, राह देखना ।

इंति(त)हा–स्त्री० [अ०] अंत, समाप्ति; सीमा; अति । **–पसंद**–वि० अतिवादी, 'एक्सट्रीमिस्ट' । [**–कर देना**–अति करना, हद कर देना ।]

इंति(त)हाई–वि० [अ०] अतिशय, हद दर्जेकी ।

इंद, इंदर–* पु० दे० 'इंद्र' ।

इंदराज–पु० [फा०] वही या हिसाबमें चढ़ाया जाना ।

इंदव–पु० एक वृत्त; * दे० 'इंदु' ।

इँदारा–पु० कूप ।

इँदारुन–पु० एक लता और उसका फल जो देखनेमें सुंदर पर स्वादमें बहुत कड़वा होता है (यह विष है, पर दवाके काम आता है), इंद्रायन ।

इंदिरा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; कांति, शोभा । **–मंदिर**–पु० विष्णु; नील कमल । **–रमण**–पु० विष्णु ।

इंदि(दी)वर–पु० [सं०] नील कमल ।

इंदु–पु० [सं०] चंद्रमा; एककी संख्या; कपूर । **–कला**–स्त्री० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची । **–कांत**–पु० चंद्रकांत मणि । **–कांता**–स्त्री० रात्रि; केतकी । **–ज,–नंदन,–पुत्र**–पु० बुध ग्रह । **–भूषण,–भृत्,–मौलि,–शेखर**–पु० शिव । **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि; मोती । **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची । **–वदना**–स्त्री० चंद्रमुखी; एक वर्णवृत्त । **–वल्ली**–स्त्री० सोमलता । **–वासर**–पु० सोमवार । **–व्रत**–पु० चांद्रायण व्रत ।

इँदुआ–पु० दे० 'इंडुरी' ।

इंदुमती–स्त्री० [सं०] पूर्णिमा; अजकी पत्नी ।

इंदूर–पु० [सं०] चूहा ।

इंद्र–पु० [सं०] देवराज; अंतरिक्षका देवता; वर्षाका देवता; मेघ; राजा, अधिपति; श्रेष्ठ, प्रधान व्यक्ति आदि (कवींद्र); छप्पय छंदका एक भेद; १४ की संख्या; आत्मा । **–गोप**–पु० बीरबहूटी ।**–चाप**–पु० इंद्रधनुष् । **–जाल**–पु० जादू, नजरबंदीके काम; हाथकी सफाईके काम; बाजीगरी; अर्जुनका एक अस्त्र; एक रणकौशल ।**–जालिक**–पु० इंद्रजाल करनेवाला, जादूगर, बाजीगर । **–जित्**–वि० इंद्रको जीतनेवाला । पु० मेघनाद । **–जौ**–पु० [हिं०] दे० 'इंद्रयव' । **–दमन**–पु० बाढ़में नदीके पानीका किसी वट, पीपल या कुंडतक पहुँच जाना; मेघनाद । **–धनुष्**–पु० बरसातमें आकाशमें अक्सर दिखाई देनेवाला सतरंगा अर्द्धवृत्त । **–नील**–पु० नीलकांत मणि । **–नेत्र**–पु० इंद्रकी आँखें; एक हजारकी संख्या (इंद्रकी आँखोंकी गिनतीसे) । **–प्रहरण**–पु० वज्र । **–मख**–पु० इंद्रकी तुष्टिके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ ।**–मद**–पु० पहली वर्षासे मछलियोंको होनेवाला एक रोग । **–यव**–पु० कुटजका बीज, इंद्रजौ । **–लोक**–पु० स्वर्ग । **–वज्रा**–स्त्री० एक वर्णवृत्त ।**–वधू**–स्त्री० बीरबहूटी । **–वारुणी**–स्त्री० इंद्रायन । **–व्रत**–पु० राजाका प्रजाके समृद्धिसाधनमें इंद्रका अनुसरण करना, जो जल बरसाकर संपूर्ण प्राणियोंका पोषण करता है । **–सारथि**–पु० मातलि; वायु ।**–सुत,–सूनु**–पु० जयंत; अर्जुन; बालि । **–सेनानी**–पु० कार्त्तिकेय । **–का अखाड़ा**–इंद्रसभा; नाच-रंगकी खूब जमी हुई महफिल । **–की परी**–अप्सरा; अति रूपवती स्त्री ।

इंद्राणी–स्त्री० [सं०] इंद्रकी पत्नी; दुर्गा; इंद्रायन ।

इंद्रानी*–स्त्री* दे० 'इंद्राणी' ।

इंद्रानुज, इंद्रावरज–पु० [सं०] विष्णु ।

इंद्रायन–पु० एक लता जिसका फल कड़ुवा होता है ।

इंद्रायुध–पु० [सं०] वज्र; इंद्रधनुष् ।

इंद्रासन–पु० [सं०] इंद्रकी गद्दी; इंद्रपद ।

इंद्रिय–स्त्री० [सं०] शरीरके ज्ञान और कर्मके साधन-रूप अंग, वे अवयव जिनसे बहिर्जगत्‌का बोध होता या शारीरिक क्रियाएँ संपन्न होती हैं; लिंगेंद्रिय । **–गोचर**–वि० इंद्रियोंका विषय होने योग्य, इंद्रियग्राह्य; ज्ञेय । **–जित्**–वि० इंद्रियोंको वशमें रखनेवाला, जितेंद्रिय । **–निग्रह**–पु० इंद्रियों, भोगेच्छाओंको वशमें या अंकुशमें रखना । **–लोलुप**–वि० विषयभोगकी उत्कट इच्छा रखनेवाला । **–सुख**–पु० विषय-सुख, भोग ।

इंद्रियातीत–वि० [सं०] इंद्रियोंका विषय न होने योग्य, अज्ञेय ।

इंद्रियार्थ–पु० [सं०] किसी इंद्रियका विषय, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधमेंसे कोई । **–वाद** पु० (सेंशुअलिज्म) यह सिद्धांत कि हमें सब तरहका ज्ञान इंद्रियों द्वारा होनेवाले अनुभवसे ही प्राप्त होता है, संवेदनवाद; इंद्रियोंकी तृप्तिको ही जीवनका सर्वोच्च लक्ष्य माननेका सिद्धांत ।

इंद्री–स्त्री० दे० 'इंद्रिय' ।**–जुलाब**–पु० अधिक पेशाब लानेवाली दवा ।

इंधन–पु० [सं०] जलानेकी लकड़ी, कोयला, उपले आदि ।

इंसाफ़–पु० [अ०] न्याय; निर्णय, फैसला ।

इ–पु० [सं०] कामदेव ।

इकंक*–अ० निश्चय ही ।

इकंग*–वि० एकतरफा । पु० अर्द्धनारीश्वर, शिव ।

इकंत*–वि०, पु० दे० 'एकांत' ।

इक*–वि० दे० 'एक' । **–आँक***–अ० दे० 'एक-आँक' । **–जोर***–अ० एक साथ । **–तरा**–पु० एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर । **–ताना***–वि० एकनिष्ठ, अनन्यचित्त । **–तार**–वि० एकरस, समान । अ० निरंतर । **–तारा**–पु० दे० 'एकतारा' । **–ताला**–पु० दे० 'एकताला' । **–तीस**–वि० तीस और एक । पु० ३१ की संख्या । **–बारगी**–अ० दे० 'एकबारगी' । **–रदन***–पु० दे० 'एकरदन' । **–रस***–वि० दे० 'एकरस' । **–ला**–वि० दे० 'अकेला' । **–लाई**–स्त्री० एक पाटका बना बारीक दुपट्टा; बारीक फर्दी धोती; अकेलापन । **–लौता**–वि० जो अपने माँ-बापकी एकमात्र संतान हो । **–सठ**–वि० साठ और एक । पु० ६१ की संख्या । **–सूत***–वि० इकट्ठा; एक साथ । **–हरा**–वि० एक परतका । **–हाई***–अ० एक साथ; एकबारगी ।

इकइस*–वि० पु० दे० 'इक्कीस' ।

इकट्ठा–वि० यकजा, एकत्र; एक साथ ।

इकतर, इकत्र*–वि० दे० 'एकत्र' ।

इकता–स्त्री० दे० 'एकता' ।

इकताई*–स्त्री० एक होनेका भाव; एकांतप्रियता ।

इकतीस–वि०, पु० दे० 'इक' में ।

इकन्नी–स्त्री० दे० 'एकन्नी' ।

इक़बाल–पु० [अ०] सौभाग्य, समृद्धि, प्रताप; कबूल करना, स्वीकार ।

इक़बाली गवाह–पु० अपराधि-साक्षी ।

इकराम–पु० [अ०] दान, बख्शिश; अनुग्रह; मान, बड़ाई ।

इक़रार–पु० [अ०] हाँ करना, स्वीकृति; वचन, प्रतिज्ञा । **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र ।

इकलाई–स्त्री० दे० 'इक' में ।

इकल्ला–वि० एकहरा; एकाकी ।

इकसठ–वि०, पु० दे० 'इक' में ।

इकसर–वि० दे० 'अकसर' ।

इकांत*–वि० दे० 'एकांत' ।

इकाई–स्त्री० गणनामें प्रथम अंक या उसका स्थान; वह मान या माप जो दूसरी चीजोंकी नाप-तौलमें मानदंडका काम दे; यौगिक पदार्थके मूल अवयव ।

इकारांत–वि० [सं०] जिसके अंतमें 'इ' हो (शब्द) ।

इकेला*–वि० दे० 'अकेला' ।

इकैठ*–वि० इकट्ठा ।

इकोतर–वि० एक अधिक, एकोत्तर । **–सौ**–वि० एक सौ एक, १०१ ।

इकौंज–स्त्री० वह स्त्री जिसे एक ही संतान हुई हो, काकवंध्या ।

इकौनी–वि० स्त्री० बेजोड़, अद्वितीय ।

इकौसा*–वि० एकांत ।

इक्का–वि० अकेला; अद्वितीय । पु० एक घोड़ेकी गाड़ी; अकेले लड़नेवाला योद्धा; एक मोतीवाली बाली; अपने झुंडसे अलग रहनेवाला पशु; ताशका एक बूटीवाला पत्ता । **–दुक्का**–वि० अकेला-दुकेला ।

इक्कावन–वि०, पु० दे० 'इक्यावन' ।

इक्कासी–वि० दे० 'इक्यासी' ।

इक्की–स्त्री० एक बैलकी गाड़ी; ताशका इक्का ।

इक्कीस–वि० बीस और एक, पु० २१ की संख्या ।

इक्यावन–वि० पचास और एक; पु० ५१ की संख्या ।

इक्यासी–वि० अस्सी और एक; पु० ८१ की संख्या ।

इक्षु–पु० [सं०] ईख; कोकिला वृक्ष; इच्छा ।**–कांड**–पु० ईखका डंठल; ईख; कास; मूँज । **–गंधा**–स्त्री० गोखरू; तालमखाना; कास; शुष्क भूमिकुष्मांड । **–पाक**–पु० गुड़ ।**–मेह**–पु० मधुमेह ।**–यंत्र**–पु० ईख पेरनेकी कल ।**–यष्टि**–स्त्री० ईखका डंठल ।**–रस**–पु० ईखका रस; शीरा; कास ।**–सार**–पु० शीरा, गुड़ आदि ।

इक्षुर–पु० [सं०] ईख; गोखरू; तालमखाना ।

इक्ष्वाकु–पु० [सं०] वैवस्वत मनुका पुत्र और सूर्यवंशका पहला राजा; कड़वी लौकी ।

इखद*–वि०, अ० ईषत्, थोड़ा ।

इख़राज–पु० [अ०] निकालना, बाहर करना ।

इख़राजात–पु० [अ०] खर्चे, व्यय ।

इख़लास–पु० [अ०] पवित्रता; प्रीति; सच्ची मित्रता ।

इखु*–पु० दे० 'इषु' ।

इख़्तियार–पु० [अ०] ग्रहण, पसंद करना; अधिकार; वश; विचाराधिकार ।

इख़्तिलाफ़–पु० [अ०] भेद, अंतर; विरोध; अनबन ।

इगा(ग्या)रह*–वि० दस और एक । पु० ११की संख्या ।

इच्छना*–स० क्रि० इच्छा करना ।

इच्छा–स्त्री० [सं०] चाह, कामना; ख्वाहिश; रुचि । –

—**निवृत्ति**—स्त्री० इच्छाका दमन; विरक्ति। —**पत्र**—पु० (विल) मृत्युके पहले लिखा गया वह पत्र या प्रलेख जिसमें कोई व्यक्ति यह इच्छा प्रकट करता है कि मेरी संपत्ति इस-इस प्रकारसे इन-इन व्यक्तियोंको दी जाय, मेरी दाहक्रिया इस स्थानपर, इस ढंगसे की जाय इत्यादि, वसीयतनामा। —**भेदी (दिन्)**—वि० जितने चाहे उतने दस्त लानेवाला (रेचक)। —**भोजन**—पु० अपनी रुचि, पसंदका भोजन।

इच्छित—वि० [सं०] चाहा हुआ, अभिलषित।

इच्छु—वि० [सं०] चाहनेवाला (समासांतमें), * पु० ईख।

इच्छुक—वि० [सं०] चाहनेवाला।

इजमाल—पु० [अ०] इकट्ठा करना; थोड़ेमें कहना; साझा।

इजमाली—वि० [अ०] साझेका, शिरकती।

इजरा—स्त्री० उर्वरता बढ़ानेके लिए परती छोड़ी हुई जमीन।

इजराय—पु० [अ०] जारी करना, होना; काममें लाना या लाया जाना। —**डिगरी**—पु० डिगरीका जारी किया जाना या अमलमें लाया जाना।

इजलास—पु० [अ०] बैठक; हाकिम या अधिकारीका (विचारके लिए) बैठना; उसके बैठनेका स्थान, कचहरी।

इज़हार—पु० [अ०] जाहिर करना, प्रकट करना; अदालतमें दिया हुआ बयान या गवाही। —**(रे) तहरीरी**—पु० लिखित बयान या गवाही।

इजाज़त—स्त्री० [अ०] अनुमति, परवानगी।

इज़ाफ़ा—पु० [अ०] वृद्धि, बढ़ती। —**लगान**—पु० लगानका बढ़ना, बढ़ती।

इज़ार—पु० [अ०] पाजामा, सुथना। —**बंद**—पु० पाजामा या लहँगा बाँधनेका बंद या फीता, नारा।

इजारा—पु० [अ०] ठेका, पट्टा; एकाधिकार, किसी वस्तुके बनाने, बेचने, भोगने आदिका अकेले अधिकारी होना।

इज़्ज़त—स्त्री० [अ०] मान, प्रतिष्ठा, बड़ाई; आदर। —**दार**—वि० प्रतिष्ठित। **मु०**—**उतारना**, —**बिगाड़ना**, —**लेना**—बेआबरू करना, अपमानित करना। —**खोना**, —**गँवाना**—मर्यादा खोना। —**देना**—मर्यादा खोना; गौरवान्वित करना।

इठलाना—अ० क्रि० गर्वसूचक चेष्टाएँ करना, ठसक, ऐंठ दिखाना, इतराना; नखरा करना; बनना।

इठलाहट—स्त्री० इठलानेका भाव, ऐंठ।

इठाई*—स्त्री० मित्रता, प्रीति; रुचि।

इडा, इला—स्त्री० [सं०] धरती; वाणी; आहुति, हवि; धारावाहिक स्तुति; अन्न; गाय; स्वर्ग; एक नाडी जो रीढ़की हड्डीसे होकर मस्तकतक पहुँचती है; मनुकी पुत्री जो बुधकी पत्नी और पुरूरवाकी माता थी; दुर्गा।

इत*—अ० इधर, यहाँ। —**उत**—अ० यहाँ-वहाँ।

इतक़ाद—पु० दे० 'एतक़ाद'।

इतना—अ० इस मात्रा, मिकदारमें। **इतनेमें**—इसी बीच या अरसेमें, तबतक।

इतमाम*—पु० दे० 'इहतिमाम'।

इतमीनान—पु० [अ०] भरोसा, विश्वास; तसल्ली; शांति।

इतमीनानी—वि० [अ०] विश्वासी, भरोसेका।

इतर—पु० दे० 'इत्र'। वि० [सं०] दूसरा, और; भिन्न।

इतराजी*—स्त्री० दे० 'एतराज़'।

इतराना—अ० क्रि० गर्वसे ऐंठना, गर्वका इतना बढ़ जाना कि वचन, व्यवहारसे प्रकट होने लगे; इठलाना।

इतरेतर—अ० [सं०] परस्पर, एक दूसरेको या से।

इतरेतराश्रय—पु० [सं०] एक तर्कदोष, दो वस्तुओंकी सिद्धिका एक दूसरीकी सिद्धिपर अवलंबित होना।

इतरौंहा*—वि० जिससे इतराना प्रकट हो, गर्वसूचक।

इतवार—पु० रविवार।

इतस्ततः—,अ० [सं०] यहाँ-वहाँ।

इताअत—स्त्री० [अ०] अधीनता, ताबेदारी; आज्ञापालन।

इताति*—स्त्री० दे० 'इताअत'।

इति—अ० [सं०] समाप्ति-सूचक शब्द। स्त्री० समाप्ति; अंत; पूर्णता। —**कर्तव्यता**—स्त्री० (किसी कार्यका) आवश्यक या कर्तव्य होना। —**वृत्त**—पु० घटना; कहानी; पुरानी (राजाओं, ऋषियों आदिकी) कहानियाँ। —**हास**—पु० अबतक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाले व्यक्तियोंका कालक्रमानुसार वर्णन; इस प्रकारके वर्णनवाली पुस्तक। —**०कार**—पु० इतिहास-लेखक।

इतेक†—वि० इतना।

इतो, इत्तो*—वि० इतना।

इत्ति (त्त) फ़ाक़—पु० [अ०] मेल, एकता; सहमति; संयोग।

इत्ति(त्त)फ़ाक़न्—अ० [अ०] संयोगवश, अचानक।

इत्ति(त्त)फ़ाक़िया, इत्ति(त्त)फ़ाक़ी—वि०[अ०] अचानक होनेवाला, आकस्मिक।

इत्ति (त्त) ला—स्त्री० [अ०] सूचना, खबर, जानकारी। —**नामा**—पु० सूचनापत्र।

इत्तिहाद—पु० [अ०] एका, मेल; संयोग।

इत्थम्—अ० [सं०] इस प्रकार, यों।

इत्यादि, इत्यादिक—अ० [सं०] इसी प्रकार और, वगैरह।

इत्र—पु० [अ०] सुगंध; सुगंधसार; चंदनके तेलपर उतारा हुआ पुष्पसार, इतर; सार। —**दान**—पु० इत्र रखनेका पात्र या संदूकची। —**फ़रोश**—पु० इत्र बेचनेवाला, गंधी। —**साज़**—पु० इत्र बनानेवाला।

इधर—अ० इस ओर; यहाँ। —**उधर**—अ० यहाँ-वहाँ; जहाँ-तहाँ; आस-पास; अगल-बगल; सब ओर। **मु०**—**उधर करना**—इधरका उधर, कहींका कहीं कर देना; टालमटूल करना। —**उधरकी**—जहाँ-तहाँकी, सुनी-सुनायी, बाजारी, अप्रामाणिक (बात, खबर)। —**उधरकी हाँकना**—गप मारना। —**उधरसे**—जहाँ-तहाँसे; दूसरोंसे। —**उधर होना**—अव्यवस्थित हो जाना; टाल-मटूल होना। —**का उधर होना**—कहींका कहीं हो जाना, उलट-पुलट जाना। —**की उधर करना या लगाना**—झगड़ा लगाना, चुगली खाना। —**की दुनिया उधर हो जाना**—असंभवका संभव होना। —**या उधर**—अनुकूल या प्रतिकूल, पक्षमें या विपक्षमें; जीत या हार।

इनक़लाब—पु० [अ०] उलट-पलट; भारी उलट-फेर; क्रांति। —**ज़िंदाबाद**—क्रांति जीती रहे! क्रांतिकी जय!

इनकार—पु० [अ०] मुकरना, अस्वीकृति; न मानना।

इनसान—पु० [अ०] मनुष्य, आदमी।

इनसानि(नी)यत—स्त्री० [अ०] मनुष्यता; मनुष्योचित गुण, सहानुभूति; सौजन्य।

इनाम–पु० पुरस्कार, वख्शिश; माफ़ी जमीन । **–दार**–पु० माफ़ीदार ।

इनायत–स्त्री० [अ०] अनुग्रह, कृपा; प्रदान ।**–करना,–फरमाना**–(कृपापूर्वक) देना, प्रदान करना ।]

इनारा–पु० कूप ।

इनारुन–पु० इंद्रायनका फल ।

इने-गिने–वि० गिने-गिनाये, कुछ; थोड़े, कतिपय ।

इफ़रात–स्त्री० [अ०] वहुतायत, प्रचुरता; अतिशयता ।

इवरानी–वि० यहूदी-संवंधी । पु० यहूदी, इसरायली । स्त्री० यहूदियोंकी पुरानी भापा, तोरेतकी भापा ।

इवादत–स्त्री० [अ०] पूजा, उपासना; वंदना ।**–ख़ाना**–पु० उपासना-मंदिर ।

इवारत–स्त्री० [अ०] वाक्यकी वनावट, रचना; लेख; लिखनेका ढंग

इभ–पु० [सं०] हाथी । **–कुंभ**–पु० हाथीका मस्तक । **–केशर**–पु० नागकेशर ।

इभानन–पु० [सं०] गणेश ।

इमदाद–पु० [अ०] मदद, सहायता; मदद करना ।

इमदादी–वि० [अ०] मदद पाने या मददसे चलनेवाला ।

इमरती–स्त्री० जलेवी जैसी एक मिठाई ।

इमलिया–स्त्री० सॉकल जैसा एक साधन जिसे कोंढ़ेमें फँसाकर ताला लगाते हैं ।

इमली–स्त्री० एक पेड़ और उसका फल जो पहले खट्टा, किंतु पकनेपर कुछ मीठा हो जाता है और चटनी, अचार आदिके काम आता है ।

इमाम–पु० [अ०] नेता, अगुआ; धर्मके कार्योंमें नेतृत्व करनेवाला (इसलाम); हसन-हुसैनकी उपाधि । **–वाड़ा**–पु० [हिं०] वह इहाता जिसमें ताजिये दफनाये जाते हैं ।

इमारत–स्त्री० [अ०] मकान; पक्का मकान ।

इमि*–अ० इस प्रकार ।

इम्तहान, इम्तिहान–पु०[अ०] परीक्षा, परख, आजमाइश ।

इयत्ता–स्त्री०, **इयत्त्व**–पु० [सं०] परिमित संख्या या परिमाण; सीमा, हद ।

इरपा, इरिपा*–स्त्री० दे० 'ईर्ष्या' ।

इरपित*–वि० दे० 'ईर्पित' ।

इरा–स्त्री० [सं०] भूमि; वाणी, सरस्वती; जल; मद्य ।

इरादतन्–अ० [अ०] इरादा करके, जान-वूझकर ।

इरादा–पु० [अ०] संकल्प; इच्छा; विचार ।

इर्द-गिर्द–अ० आस-पास, चारों ओर ।

इलज़ाम–पु० [अ०] आरोप, अभियोग, दोप लगाना ।

इलहाम–पु० [अ०] ईश्वरका दिलमें कोई वात डालना, ईश्वरीय प्रेरणा या संदेश, देववाणी ।

इलहामी–वि० [अ०] ईश्वरसे प्रेरित । **–किताव**–स्त्री० ईश्वर-प्रेरणासे रचित, ईश्वरकी भेजी हुई धर्मपुस्तक ।

इला–स्त्री० [सं०] भूमि; गाय; सरस्वती; वैवस्वत मनुकी कन्या जो बुधकी पत्नी और पुरूरवाकी माता थी ।**–धर**–पु० पर्वत । **–वृत्त**–पु० जंबुद्वीपके नौ भागोंमेंसे एक ।

इलाक़ा–पु० [अ०] लगाव, संवंध; जमींदारी; पूरे गाँवकी जमींदारी; रियासत । **–(क़े)दार**–पु० जमींदार ।

इलाज–पु० [अ०] निवारक उपाय, उपचार; चिकित्सा ।

इलाम*–पु० आज्ञा, सूचना ।

इलायची–स्त्री० एक सुगंधित फल जिसके सूखे दाने या वीज मसाले, दवा आदिके काम आते हैं । **–दाना**–पु० चीनीमें पगे हुए इलायची या पोस्तेके दाने ।

इलावर्त*–पु० दे० 'इलावृत्त' ।

इलाही–अ० [अ०] हे ईश्वर, या खुदा ! पु० ईश्वर, खुदा । **–गज़**–पु० अकवरका चलाया हुआ गज जो अव इमारत आदि नापनेके काम आता है ।

इल्ज़ाम–पु० दे० 'इलजाम' ।

इल्म–पु० [अ०] ज्ञान, जानकारी; विद्या, शास्त्र ।

इल्लत–स्त्री० [अ०] कारण; रोग; दोप; झंझट; दुर्व्यसन ।

इल्ली–स्त्री० उड़नेवाले कीड़ोंके वच्चोंका अंडेसे निकलनेके वादका रूप ।

इव–अ० [सं०] समान, सदृश, मानिंद ।

इशारा–पु० [अ०] संकेत, सैन; गुप्त प्रेरणा; छिपी, अस्पष्ट सूचना । **–(रे) बाज़ी**–स्त्री० इशारे करना, आँखोंसे (विशेषतः प्रेमी-प्रेमिकाका) संकेत करना ।

इश्क़–पु० [अ०] प्रेम, चाह, अनुराग; आसक्ति । **–बाज़**–वि० प्रेमी, रसिक, दिलफेंक । पु० ऐसा व्यक्ति ।

इश्ति(श्त)हार–पु० [अ०] प्रसिद्धि; विज्ञापन; सूचना ।

इश्ति(श्त)हारी–वि० [अ०] जिसका इश्तिहार निकला हो, विज्ञापित । **–मुजरिम**–पु० वह फरार अपराधी जिसकी गिरफ्तारीके लिए इश्तिहार निकला हो ।

इषणा*–स्त्री० इच्छा, कामना ।

इषु–पु० [सं०] वाण, तीर; पाँचकी संख्या; जीवाके मध्य-विंदुसे परिधितक खींची गयी सीधी रेखा (ज्या०) ।**–कार**–पु० वाण वनानेवाला । **–धर**–पु० तीरंदाज, वानैत । **–धि,–धी**–पु० तूणीर ।

इष्ट–वि० [सं०] चाहा हुआ, अभिलषित; वांछनीय; प्रिय; उद्दिष्ट; पूजित । पु० ईंट; मित्र; इच्छा; प्रिय व्यक्ति, पति; इष्टदेव । **–काल**–पु० किसी घटनाके घटित होनेका ठीक समय (फ० ज्यो०) । **–देव,–देवता**–पु० आराध्य देव; कुलदेवता । **मु०–होना**–किसी देवताकी आराधनामें सिद्धि प्राप्त कर लेना, उसके आवाहन और अभिलषित कार्य करानेमें समर्थ होना ।

इष्ट(ष्टि)का–स्त्री० [सं०] ईंट ।

इष्टि–स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह; निवेदन ।

इस–सर्व० 'यह'का विभक्तिके पहले प्रयुक्त रूप ।

इसपंज–पु० मुर्दा बादल, स्पंज ।

इसपात–पु० कड़ा और वढ़िया लोहा, फौलाद ।

इसवगोल–पु० एक लुआवदार दाना जो अतीसार आदि रोगोंमें दिया जाता है ।

इसराज–पु० सारंगी जैसा, एक बाजा ।

इसरार–पु० [अ०] आग्रह, हठ; आग्रह करना ।

इसलाम–पु० [अ०] स्वीकार करना; ईश्वरेच्छाके सामने सिर झुका देना; मुहम्मदका चलाया हुआ धर्म; मुसलमानोंकी समष्टि, मुसलिम जगत् ।

इसलाह–पु० [अ०] सुधारना, शोधना, गलती दुरुस्त करना; रचनाका संशोधन (देना, लेना) ।

इसारत*–स्त्री० इशारा, संकेत ।

इस्तिक़बाल–पु० [अ०] अगवानी, स्वागत ।

इस्तिग़ासा–पु० [अ०] न्यायकी प्रार्थना, फरियाद; फौजदारी नालिश ।

इस्तिमरारी–वि० [अ०] सदा रहनेवाला, स्थायी, सार्वकालिक । **–बंदोबस्त**–पु० जमीनका वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदाके लिए निश्चित हो जाती है ।

इस्ति(स्त)री–स्त्री० पीतल या लोहेका वह औजार जिसके भीतर जलते कोयले रखकर धुले या सिले कपड़ोंकी शिकन दूर की और तह बैठायी जाती है ।

इस्तीफ़ा–पु० [अ०] काम, नौकरीसे छुटकारेकी प्रार्थना; त्यागपत्र ।

इस्तेमाल–पु० [अ०] काममें लाना, व्यवहार, उपयोग ।

इस्त्री*–स्त्री० दे० 'स्त्री' ।

इस्म–पु० [अ०] नाम, संज्ञा । **–नवीसी**–स्त्री० नाम-लिखाई; (गवाहों आदिकी) नाम-सूची ।

इह–अ० [सं०] यहाँ, इस जगह; इस लोकमें; अब, इस कालमें । पु० यह लोक । **–लीला**–स्त्री० इस लोकका जीवन । **–लोक**–पु० यह लोक; यह जीवन । **–लौकिक** –वि० इस लोकका, इस लोक-संबंधी; इस लोकमें सुख देनेवाला (असाधु) ।

इहतिमाम–पु० [अ०] प्रबंध; आयोजन; निगरानी ।

इहतियात–स्त्री० [अ०] बचाव, परहेज; सावधानी ।

इहतियातन्–अ० [अ०] सावधानीकी दृष्टिसे ।

इहतियाती–वि० [अ०] दे० 'एहतियाती' । **–काररवाई** –स्त्री० दे० 'एहतियाती-काररवाई' ।

इहसान–पु० [अ०] नेकी, भलाई, उपकार; नेकी, उपकार करना । **–फ़रामोश**–वि० कृतघ्न, उपकार न माननेवाला । **–मंद**–वि० कृतज्ञ, ऋणी ।

ई

ई–देवनागरी वर्णमालाका चौथा(स्वर)वर्ण,'इ'का दीर्घरूप ।

ईँगुर–पु० लाल रंगका एक खनिज द्रव्य (सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माथेपर इसकी बिंदी लगाती हैं) ।

ईँचना*–स० क्रि० ऐंचना, खींचना ।

ईँट–स्त्री० आयताकार साँचेमें ढालकर पकाया हुआ मिट्टीका टुकड़ा जो दीवार बनानेके काममें आता है; धातुका चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा; ताशके चार रंगोंमेंसे एक । **–कारी**–स्त्री० ईंटका काम । **–पत्थर**–पु० कुछ नहीं । मु० **–का छल्ला देना**–कच्ची दीवारकी मजबूतीके लिए उससे सटाकर ईंटें चुनना । **(डेढ़ या ढाई)–की मस्जिद अलग बनाना**–अपनी ही बातपर चलना; निराला ढंग रखना । **–गढ़ना**–ईंटोंको काट-छाँटकर जोड़ाईके काममें आने योग्य बनाना । **–चुनना**–ईंटोंको जोड़कर दीवार उठाना । **–पाथना**–गीली मिट्टीको साँचेमें डालकर ईंटका आकार देना । **(गुड़ दिखाकर)–मारना**–भलाईकी आशा बँधाकर बुराई करना । **–से ईंट बजना**–मकानका ध्वस्त होना । **–से ईंट बजाना**–मकान ध्वस्त करना ।

ईँटा–पु० दे० 'ईंट' ।

ईँडरी, ईँडुरी–स्त्री० गेंडुरी, विड़ई ।

ईँधन–पु० जलावन, जलानेकी लकड़ी, उपला आदि ।

ई–पु० [सं०] कामदेव । स्त्री० लक्ष्मी । * सर्व० यह । * अ० ही ।

ईकारांत–वि० [सं०] जिसके अंतमें 'ई' हो (शब्द) ।

ईक्षण–पु० [सं०] देखना, दर्शन, दृष्टि; देखभाल; आँख; विवेचन; आलोचना ।

ईख–स्त्री० गन्ना, ऊख ।

ईखना*–स० क्रि० देखना । स्त्री० एषणा, इच्छा ।

ईछन*–पु० ईक्षण, आँख ।

ईछना*–स० क्रि० इच्छा करना ।

ईछा*–स्त्री० दे० 'इच्छा' ।

ईजति*–स्त्री० इज्जत, मर्यादा ।

ईजाद–स्त्री० [अ०] कोई नयी चीज बनाना, निकालना ।

ईठ*–वि०, पु० इष्ट, मित्र, प्यारा ।

ईठना*–अ० क्रि० चाहना ।

ईठि*–स्त्री० मित्रता, प्रीति; यत्न; चाह ।

ईडन–पु० [सं०] प्रशंसा करना ।

ईडुरी*–स्त्री० दे० 'ईँडुरी' ।

ईढ़*–स्त्री० हठ ।

ईतर*–वि० इतरानेवाला; ढीठ; साधारण; नीच ।

ईति–स्त्री० [सं०] बाधा; खेतीको नुकसान पहुँचानेवाले छः उपद्रव—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहों, टिड्डियों और पक्षियोंका फसल खा जाना और दूसरे राजाकी चढ़ाई ।

ईद–स्त्री० [अ०] खुशीका दिन, त्योहार; (मुसलमानोंका) मजहबी त्योहार । **–गाह**–पु० ईदके दिन मुसलमानोंके एकत्र होकर नमाज पढ़नेकी जगह । मु० **–का चाँद**–ऐसी वस्तु जिसके दर्शन दुर्लभ हों ।

ईदिया–पु० [अ०] ईद या दूसरे त्योहारोंपर एक दूसरेके यहाँ भेजी जानेवाली सौगात ।

ईदी–स्त्री० [अ०] ईदका इनाम, त्योहारी; ईद या इस प्रकारके त्योहारके अवसरपर उसके बखानमें लिखित पद्य; वह सुंदर हाशियेदार कागज जिसपर वह पद्य लिखा हो ।

ईदुज्जुहा–स्त्री० [अ०] दसवीं जिलहिजको मनायी जानेवाली ईद; बकरीद ।

ईदुलफ़ितर–स्त्री०[अ०] रमजानकी समाप्ति पर नया चाँद होनेके दूसरे दिन मनाया जानेवाला त्योहार ।

ईदृश–वि० [सं०] ऐसा, इस तरहका । अ० ऐसे, इस तरह ।

ईप्सा–स्त्री० [सं०] पानेकी इच्छा; चाह, इच्छा ।

ईप्सित–वि० [सं०] चाहा हुआ; जिसकी चाह हो, प्रिय ।

ईबी-सीबी*–स्त्री० सीत्कार, (रतिकालमें स्त्रीका) सी-सी करना ।

ईमान–पु० [अ०] धर्मविश्वास; ईश्वरपर विश्वास; धर्म; सचाई; खरापन; लेन-देन आदिमें सचाई; दयानत; नीयत । **–दार**–वि० सच्चा, विश्वसनीय; रुपये-पैसेके मामलेमें सच्चा, दयानतदार । मु० **–का सौदा** खरा व्यवहार । **–की कहना**–सच कहना, सच्ची बात कहना । **–ठिकाने**

न रहना–धर्मपर दृढ़ न रहना। **–डिगना**–नीयतमें खामी आना। **–बिगड़ना,–में फ़र्क़ आना**–नीयत बिगाड़ना; धर्ममें सच्ची निष्ठा न रहना। **–लाना**–किसी मत, सिद्धांत या धर्मकी सचाईपर विश्वास करना; उसे धर्मरूपमें स्वीकार करना।

ईरखा*–स्त्री॰ दे॰ 'ईर्ष्या'।

ईरमद*–पु॰ बिजली; वज्राग्नि; वडवाग्नि।

ईरानी–वि॰ [फ़ा॰] ईरान या फारस देशका। पु॰ ईरानवासी।

ईर्पणा*–स्त्री॰ दे॰ 'ईर्ष्या'।

ईर्षा–स्त्री॰ [सं॰] दे॰ 'ईर्ष्या'।

ईर्षित–वि॰ [सं॰] जिससे ईर्ष्या की गयी हो।

ईर्ष्या–स्त्री॰ [सं॰] दूसरेकी बढ़ती न देख सकना, डाह, जलन।

ईर्ष्यालु–वि॰ [सं॰] ईर्ष्या करनेवाला।

ईर्ष्यु–वि॰ [सं॰] डाह करनेवाला।

ईश–पु॰ [सं॰] स्वामी, मालिक; राजा; पति; ईश्वर; शिव; एक रुद्र; ११की संख्या। वि॰ ऐश्वर्ययुक्त; समर्थ।

ईशता–स्त्री॰ [सं॰] प्रभुत्व, स्वामित्व।

ईशा–स्त्री॰ [सं॰] ऐश्वर्य; अधिकार; ऐश्वर्ययुक्त स्त्री; दुर्गा।

ईशान–पु॰ [सं॰] शिव; एक रुद्र; उत्तर-पूर्वका कोना।

ईशिता–स्त्री॰, **ईशित्व**–पु॰ [सं॰] ईश्वरत्व; प्राधान्य; आठ सिद्धियोंमेंसे एक।

ईश्वर–पु॰ [सं॰] स्वामी; राजा; धनी या बड़ा व्यक्ति; पति; जगन्नियंता, परमेश्वर; आत्मा; एक संवत्सर; शिव। वि॰ ऐश्वर्ययुक्त; शक्तिमान्; समर्थ; धनी। **–निष्ठ**–वि॰ ईश्वरमें विश्वास करनेवाला।

ईश्वरा–स्त्री॰ [सं॰] ईश्वरी; दुर्गा; लक्ष्मी या कोई शक्ति।

ईश्वराधीन–वि॰ [सं॰] ईश्वरकी इच्छापर अवलंबित।

ईश्वरी–स्त्री॰[सं॰] दुर्गा; लक्ष्मी; कोई शक्ति। [हिं॰]वि॰दे॰ 'ईश्वरीय'।

ईश्वरीय–वि॰[सं॰] ईश्वरका; ईश्वर-संबंधी।

ईषत्–वि॰ [सं॰] थोड़ा। अ॰ कुछ-कुछ, आंशिक रूपमें।

ईषदुष्ण–वि॰ [सं॰] थोड़ा गरम, कुनकुना।

ईषना*–स्त्री॰ एषणा; बलवती इच्छा।

ईस*–पु॰ दे॰ 'ईश'।

ईसन*–पु॰ ईशान कोण।

ईसब(र)गोल–पु॰ दे॰ 'इसबगोल'।

ईसर*–पु॰ महादेव; ऐश्वर्य।

ईसवी–वि॰ [अ॰] ईसासे संबंध रखनेवाला, मसीही। **–सन्**–पु॰ ईसाके जन्मकालसे चला हुआ सन्।

ईसा–पु॰ [अ॰] ईसाई धर्मके प्रवर्तक, मसीह।

ईसाई–पु॰ [अ॰] ईसा-प्रवर्तित धर्मको माननेवाला।

ईसान*–पु॰ ईशान कोण।

ईहा–स्त्री॰ [सं॰] इच्छा, चाह; उद्यम, चेष्टा। **–मृग**–पु॰ भेड़िया; रूपकका एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।

ईहित–वि॰ [सं॰] चाहा हुआ, अभिलषित; चेष्टित।

उ

उ–देवनागरी वर्णमालाका पाँचवा (स्वर) वर्ण। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है।

उँ–अ॰ प्रश्न, क्रोध आदिका सूचक एक अव्यक्त शब्द।

उँखारी†–स्त्री॰ दे॰ 'उखारी'।

उँगनी–स्त्री॰ ओंगने अर्थात् गाड़ीकी धुरीमें तेल देनेकी क्रिया।

उंगल*–पु॰ दे॰ 'अंगुल'।

उँगली–स्त्री॰ हाथके फलीके आकारवाले अंतिम भाग जो छोटी चीजोंके पकड़ने-उठाने आदिके साधन होते हैं; पाँवके ऐसे ही भाग, अँगुली। **मु॰–उठना**–बदनामी होना, उपहासका पात्र होना। **–उठाना**–दोष, लांछन लगाना; बदनाम करना; बुरी निगाह, हानि पहुँचानेकी दृष्टिसे देखना। **–करना**–परेशान करना, सताना। **–चटकाना**–उँगलियोंसे चट-चट शब्द करना। **–चमकाना**–उँगलियोंको हिलाना। **–पकड़ते पहुँचा पकड़ना**–थोड़ा पाकर अधिक पानेका प्रयत्न करना, किसीकी भलमनसीका अनुचित लाभ उठानेका यत्न करना। **–रखना**–(किसीकी कृतिमें) दोष दिखाना। **–लगाना**–(किसी काममें) नाममात्र सहायता या सहारा देना, हाथ लगाना। **–(लियाँ) नचाना**–उँगलियाँ चमकाना। **–(लियों) पर नचाना**–इच्छानुसार काम कराना, इशारोंपर नचाना; हैरान करना।

उँघाई†–स्त्री॰ ऊँघनेकी क्रिया, झपकी।

उंचन–स्त्री॰ अदवान।

उंचना–स॰ क्रि॰ अदवान कसना।

उँचाई*–स्त्री॰ ऊँचापन; ऊँचेपनकी सीमा; बड़ाई।

उँचान*–पु॰ ऊँचाई।

उँचाना*–स॰ क्रि॰ ऊँचा करना, ऊपर उठाना।

उँचाव*–पु॰ ऊँचाई।

उंचास–वि॰, चालीस और नौ, ४९। पु॰ ४९की संख्या।

उँचास*–स्त्री॰ ऊँचाई।

उंछ–पु॰ [सं॰] खेतमें (लुनाईके बाद) या रास्तेमें पड़े हुए दाने जीविकाके लिए चुनना, सीला बीनना। **–वृत्ति**–स्त्री॰ खेतमें छूटे हुए दाने चुनकर गुजर करना। वि॰ इस प्रकार निर्वाह करनेवाला। **–शील**–वि॰ उंछवृत्तिसे जीविका करनेवाला।

उँजरिया*–स्त्री॰ चाँदनी; रोशनी। वि॰ स्त्री॰ उँजेली।

उँजियार*–पु॰ प्रकाश। वि॰ प्रकाशमान; उज्ज्वल।

उँजियारी, उँज्यारी–स्त्री॰ चाँदनी, प्रकाश। वि॰ स्त्री॰ प्रकाशयुक्त।

उँजेरा, उँजेला–पु॰, वि॰ दे॰ 'उजेला'।

उँटड़ा(रा)–पु॰ गाड़ीका अगला भाग जमीनपर टिकानेके लिए जूएके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी।

उँडेलना–स॰ क्रि॰ दे॰ उड़ेलना'।

उंदुर, उंदुरु–पु॰ [सं॰] चूहा।

उँह–अ॰ अस्वीकार, घृणा, वेदना आदिका सूचक शब्द।

उअना*–अ॰ क्रि॰ उगना, उदय होना।

उआना*–स॰ क्रि॰ उगाना; हाथ या हथियार उठाना।

उऋण–वि॰ ऋणमुक्त; जो किसीके प्रति अपने कर्तव्यका पालन कर चुका हो।

उकचन*–पु० मुचकुंदका फूल ।

उकचना*–अ० क्रि० उखड़ना, उचड़ना; हट जाना ।

उकटना–स० क्रि० किसीपर अपने उपकार या उसके अपकारको बार-बार कहना, उघटना ।

उकटा–वि० उकटनेवाला । पु० उकटनेका कार्य । **–पुरान**–पु० पुरानी शिकायतोंको उघटना, गड़े मुर्दे उखाड़ना ।

उकठना–अ० क्रि० सूखकर ऐंठ जाना ।

उकठा–वि० सूखकर ऐंठा हुआ ।

उकड़ूँ–पु० बैठनेका वह ढंग जिसमें घुटने (खड़े बल) मोड़े जाते हैं (बैठना) ।

उकत*–स्त्री० दे० 'उक्ति' ।

उकताना–अ० क्रि० ऊबना, अधीर होना ।

उकति*–स्त्री० दे० 'उक्ति' ।

उकलना–अ० क्रि० लपेट या ऐंठनका खुलना, उधड़ना ।

उकलाना–अ० क्रि० कै करना ।

उकवथ–पु० एक चर्मरोग, एक तरहकी सूखी या गीली दाद ।

उकसना–अ० क्रि० उभरना; अंकुरित होना ।

ऊकसनि*–स्त्री० उभार ।

उकसाना–स० क्रि० उभारना; भड़काना; उछाल देना; (दीयेकी बत्तीको) आगे सरकाना, बढ़ाना । अ० क्रि० हट जाना–'हाथिनके हौदा उकसाने'–भू० ।

उकसाहट–स्त्री० उकसानेका भाव; उत्तेजना ।

उकसौंहा*–वि० उठता, उभरता हुआ ।

उक़ाब–पु० [अ०] गरुड़; बड़ी जातिका गिद्ध ।

उकासना*–स० क्रि० ऊपरकी ओर फेंकना ।

उकासी*–स्त्री० उघड़ जाना; छुट्टी; उत्सव ।

उकिलना†–अ० क्रि० दे० 'उकलना' ।

उकील*–पु० दे० 'वकील' ।

उकुति*–स्त्री० दे० 'उक्ति' ।

उकुरू–पु० दे० 'उकड़ूँ' ।

उकुसना*–स० क्रि० उधेड़ना; उजाड़ना ।

उकेलना–स० क्रि० खोलना, उधेड़ना; उचाड़ना ।

उकौथ(था)–पु० दे० 'उकवथ' ।

उकौना†–पु० गर्भावस्थामें होनेवाली इच्छाएँ, दोहद ।

उक्त–वि० [सं०] कहा हुआ, कथित ।

उक्ति–स्त्री० [सं०] कथन; वाक्य; कवित्वमय वचन, पद्य ।

उखटना–स० क्रि० खोंटना; कुतरना । अ० क्रि० लड़खड़ाना ।

उखड़ना–अ० क्रि० जमी, गड़ी या जड़ी हुई चीजका ऊपर आ जाना, अपनी जगहसे हटना; टूटना (दम, साँस); निशान पड़ना, उपटना; हड्डीका जोड़से हट जाना; बेताल या बेसुरा हो जाना; तितर-बितर होना; (गाने आदिका) न जमना । मु० **उखड़ी-उखड़ी बातें करना**–बेलौस होकर बात करना । **उखड़ी-पुखड़ी सुनाना**–अंडबंड सुनाना ।

उखम*–पु० गरमी । **–ज**–पु० दे० 'ऊष्मज' ।

उखर*–पु० ऊख बोनेके बाद होनेवाली हलकी पूजा ।

उखरना*–अ० क्रि० दे० 'उखड़ना' ।

उखली–स्त्री० दे० 'ओखली' ।

उखा*–स्त्री० दे० 'ऊषा' ।

उखाड़–पु० उखाड़नेकी क्रिया; पेंच या दलीलकी काट; तोड़; कुश्तीका एक पेंच । **–पछाड़**–स्त्री० उलट-पुलट ।

उखाड़ना–स० क्रि० गड़ी, जमी, बैठायी हुई चीजको उसकी जगहसे हटा देना; ऊपर लाना; हड्डीको जोड़से हटा देना; तितर-बितर कर देना; रंग, प्रभाव आदि न जमने देना; भगाना, उदवासना; नष्ट करना । (गड़े मुरदे उखाड़ना = बीती हुई बातोंकी चर्चा फिर चलाना) ।

उखाड़ू–वि० उखाड़नेवाला ।

उखारना*–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना' ।

उखारी–स्त्री० ईखका खेत ।

उखालिया–पु० सरगही, व्रत आरंभ करनेके पूर्व कुछ रात रहते ग्रहण किया जानेवाला अल्पाहार ।

उखेड़ना–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना' ।

उखेरना*–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना' ।

उखेलना*–स० क्रि० तसवीर बनाना, उरेहना ।

उगटना*–स० क्रि० दे० 'उघटना' ।

उगना–अ० क्रि० उदय होना; जमना; उपजना ।

उगरना†–अ० क्रि० निकलना; कुएँमें जमी हुई मिट्टी आदिकी सफाई होना ।

उगलना–स० क्रि० मुँहमें ली हुई चीज थूक देना; खायी-पी हुई चीजको मुँहकी राह बाहर कर देना; छिपा रखी हुई बात प्रकट कर देना; अपराध स्वीकार कर लेना; दबा, छिपा रखा हुआ माल लौटा देना; बाहर निकालना, बिखेरना (आग, जहर आदि) ।

उगलवाना, उगलाना–स०क्रि० ०उगलनेका काम कराना ।

उगवना*–स० क्रि० उगाना, उपजाना ।

उगसाना–स० क्रि० दे० 'उकसाना' ।

उगसारना*–स० क्रि० कहना; प्रकट करना ।

उगहना–स० क्रि० दे० 'उगाहना' ।

उगहनी†–स्त्री० चंदा ।

उगाना–स० क्रि० जमाना, उपजाना; उदय करना; उठाना; तानना ।

उगार–पु० निचुड़ा या निचोड़ा हुआ पानी; रँगे हुए कपड़ेके निचोड़नेसे निकलनेवाला पानी; दे० 'उगाल' ।

उगारना–स० क्रि० कुएँकी मिट्टी आदि निकालकर सफाई करना ।

उगाल–पु० थूक, खखार; पीक । **–दान**–पु० थूकनेका बरतन, पीकदान ।

उगाहना–स० क्रि० बहुतसे लोगोंसे लेकर इकट्ठा करना; चंदा करना; वसूल करना ।

उगाही*–स्त्री० वसूली; चंदा; लगान ।

उगिलना*–स० क्रि० दे० 'उगलना' ।

उगिलवाना, उगिलाना–स० क्रि० दे० 'उगलवाना' ।

उग्र–वि० [सं०] उत्कट, तीव्र; भयानक; क्रूर; तीखा, तेज; क्रुद्ध; कोपनशील । पु० शिव; रुद्र; रौद्र रस; केरल देश ।

उग्रसेन–पु० [सं०] कंसके पिता, मथुराके राजा ।

उग्रह–पु० ग्रहणसे छूटना, मोक्ष ।

उग्रा–स्त्री० [सं०] दुर्गा, महाकाली; उग्र स्वभाववाली, कर्कशा स्त्री; अजवायन, बच, इ० ।

उघटना–स० क्रि० किसीपर अपने उपकारों या उसके अपकारोंकी उद्धरणी करना, उकटना; कोसना; ताल देना ।

उघटा–वि॰ उघटनेवाला। **–पुरान**–पु॰ दे॰ 'उकटा-पुरान'।

उघड़ना–अ॰ क्रि॰ खुलना; प्रकट होना; नंगा होना; भंडाफोड़ होना। **मु॰ उघड़कर नाचना**–मान-मर्यादाका खयाल छोड़कर मनमानी करना।

उघरना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'उघड़ना'।

उघरारा*–वि॰ खुला हुआ। पु॰ खुला स्थान।

उघाड़ना–स॰ क्रि॰ खोलना; अनावृत करना; वस्त्रहरण।

उघारना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'उघाड़ना'।

उघेलना*–स॰ क्रि॰ उघाड़ना।

उचंत(उचिंत)खाता–पु॰ (सस्पेंस अकाउंट) दे॰ 'अनुलंब खाता'।

उचकन–पु॰ कोई चीज ऊँची करनेके लिए उसके नीचे दिया जानेवाला ईंट आदिका टुकड़ा।

उचकना–अ॰ क्रि॰ पंजेके बल खड़ा होना; किसी चीजको पाने या देखनेके लिए ऊपर उठना; उछलना। स॰ क्रि॰ लपककर ले लेना; उठा लेना।

उचका*–अ॰ सहसा, अचानक।

उचकाना–स॰ क्रि॰ ऊपर उठाना।

उचक्का–पु॰ उचककर, छीन-झपटकर ले जानेवाला, चाई, उठाईगीरा।

उचटना–अ॰ क्रि॰ उचड़ना; अलग होना, बिलगाना; छूटना; मनका हट जाना, न लगना; भड़कना।

उचटाना–स॰ क्रि॰ अलग करना, छुड़ाना; विरक्त करना; बिचकाना, भड़काना।

उचड़ना–अ॰ क्रि॰ सटी, चिपकी हुई चीजका अलग हो जाना; उखड़ना; चल देना, उड़ जाना।

उचना*–अ॰ क्रि॰ उचकना, ऊपर उठना। स॰ क्रि॰ ऊपर उठाना।

उचनि*–स्त्री॰ उठान, उभार।

उचरना–स॰ क्रि॰ उच्चारण करना, बोलना। अ॰ क्रि॰ ध्वनि, शब्द होना, दे॰ 'उचड़ना'।

उचाट–पु॰ विरक्ति, उदासी, जी न लगना। वि॰ उचटा हुआ, जो किसी काममें न लगे (मन उचाट है)।

उचाटन*–पु॰ दे॰ 'उच्चाटन'।

उचाटना–स॰ क्रि उचाट कर देना, उच्चाटन करना।

उचाटी*–स्त्री॰ उचाट, उदासी।

उचाड़ना–स॰ क्रि॰ सटी, चिपकी चीजको जुदा करना; उखाड़ना।

उचाना*–स॰ क्रि॰ ऊँचा करना, उठाना।

उचार*–पु॰ दे॰ 'उच्चार'।

उचारना*–स॰ क्रि॰ उच्चारण करना, बोलना; उखाड़ना।

उचित–वि॰[सं॰] ठीक, योग्य, मुनासिब; स्तुत्य; विहित।

उचेड़ना, उचेलना†–स॰ क्रि॰ दे॰ 'उचाड़ना'।

उचैंहा, उचौंहा*–वि॰ उभरा हुआ, उठा हुआ।

उच्चंड–वि॰ [सं॰] अति उग्र, प्रचंड; अति क्रुद्ध; तेज; उतावला।

उच्च–वि॰ [सं॰] ऊँचा, लंबा; बड़ा, श्रेष्ठ; कुलीन; तेज; जोरदार; शुभ; ऊँचे, दूसरोंपर प्रभाव डालने योग्य स्थलमें बैठा हुआ। **–न्यायालय**–पु॰ (हाई कोर्ट) किसी प्रदेश या राज्यका प्रधान न्यायालय। **–सदन**–पु॰ (अपर हाउस) धन, विद्या, वय आदिकी दृष्टिसे अधिक संपन्न या अनुभवी माने जानेवाले सदस्योंसे निर्मित सदन, द्वितीय सदन।

उच्चरण–पु॰ [सं॰] ऊपर उठना, आना; बाहर आना; ध्वनि, शब्दरूपमें (मुँहसे) बाहर आना।

उच्चरना*–स॰ क्रि॰ उच्चारण करना।

उच्चरित–वि॰ [सं॰] ऊपर, बाहर आया हुआ; कहा हुआ।

उच्चाकांक्षा–स्त्री॰ [सं॰] ऊँची, बड़प्पनकी आकांक्षा।

उच्चाटन–पु॰ [सं॰] हटाना; निकालना; उखाड़ना; किसीके चित्तको किसी व्यक्ति, स्थान, कार्य आदिसे उचटाना; तंत्रके छः अभिचारोंमेंसे एक।

उच्चाटित–वि॰ [सं॰] जिसका उच्चाटन किया गया हो।

उच्चायुक्त–पु॰ [सं॰] (हाई कमिश्नर) राष्ट्रमंडलके किसी एक देशका राजदूत जो मंडलके किसी अन्य देशमें अपने देशका प्रतिनिधि बनकर रहे।

उच्चार–पु॰ [सं॰] (शब्दको) बोलना, कहना; मल, विष्ठा।

उच्चारक–वि॰ [सं॰] उच्चारणं करनेवाला, कहनेवाला।

उच्चारण–पु॰ [सं॰] शब्दको मुँहसे निकालना, बोलना; शब्द या उसके वर्णोंको कहनेका ढंग। **–स्थान**–पु॰ मुँहका वह स्थान जिसके प्रयत्नसे कोई विशेष ध्वनि निकले (कंठ, तालु, ओष्ठ, जिह्वा आदि)।

उच्चारणीय–वि॰ [सं॰] उच्चारण करने योग्य।

उच्चारित–वि॰ [सं॰] कहा, बोला हुआ।

उच्चार्य–वि॰ [सं॰] उच्चारणीय।

उच्चूड, उच्चूल–पु॰ [सं॰] ध्वजा या उसका ऊपरका भाग; झंडेके सिरेपरकी सजावट।

उच्चैःश्रवा(वस्)–पु॰ [सं॰] इंद्रका घोड़ा। वि॰ ऊँचा सुननेवाला; लंबे कानोंवाला।

उच्छरना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'उछलना'।

उच्छलन–पु॰ [सं॰] उछलना, तरंगित होना।

उच्छलना*–अ॰ क्रि॰ छलकना; ऊपर उठकर गिरना।

उच्छलित–वि॰ [सं॰] उछला या उछलता हुआ, तरंगित, क्षुब्ध; कंपित।

उच्छव*–पु॰ उत्सव।

उच्छाव*–पु॰ दे॰ 'उछाव'।

उच्छास*–पु॰ दे॰ 'उच्छ्वास'।

उच्छासन–वि॰ [सं॰] नियंत्रणमें न रहनेवाला, निरंकुश।

उच्छाह*–पु॰ दे॰ 'उछाह'।

उच्छिन्न–वि॰ [सं॰] कटा, उखड़ा हुआ; नष्ट।

उच्छिष्ट–वि॰ [सं॰] खानेसे बचा, खाकर छोड़ा हुआ; परित्यक्त; बासी। पु॰ जूठा अन्न, जूठन। **–भोजी (जिन्)**–वि॰ उच्छिष्ट खानेवाला।

उच्छुल्क–वि॰ [सं॰] जिस(माल)पर चुंगी न दी गयी हो (कौ॰)। अ॰ बिना चुंगी या महसूल दिये।

उच्छू–स्त्री॰ गलेमें कुछ अटकनेसे आनेवाली खाँसी।

उच्छृंखल–वि॰ [सं॰] क्रमरहित; बंधन न माननेवाला, निरंकुश, स्वेच्छाचारी।

उच्छेद, उच्छेदन–पु॰ [सं॰] काटना; जड़ उखाड़ना, उन्मूलन; नाश।

उच्छेष, उच्छेषण–पु० [सं०] अवशेष; जूठन ।

उच्छ्वसन–पु० [सं०] साँस लेना; गहरी साँस लेना ।

उच्छ्वसित–वि० [सं०] उच्छ्वासयुक्त; प्रसन्न; प्रफुल्ल, विकसित; आशानुप्राणित; आश्वासित; चिंतामुक्त; क्षुब्ध ।

उच्छ्वास–पु० [सं०] ऊपर खींची या छोड़ी जानेवाली साँस; आह भरना; प्रोत्साहन; मरण; ग्रंथका अध्याय ।

उच्छ्वासित–वि० [सं०] प्रसन्न किया हुआ; उठाया हुआ; ढाढ़स बँधाया हुआ; मुक्त, ढीला या पृथक् किया हुआ; थका हुआ; अत्यधिक ।

उछंग*–पु० गोद, हृदय ।

उछकना*–अ० क्रि० चौंकना; होशमें आना ।

उछरना*–अ० क्रि० उछलना; कै करना; उतराना; उपटना ।

उछल-कूद–स्त्री० उछलना-कूदना, कूद-फाँद ।

उछलना–अ० क्रि० तेजीके साथ नीचेसे ऊपर उठना, उझकना, कूदना; ऊपर उठकर नीचे गिरना; हर्ष या क्रोधकी अतिशयतासे उझकना; उपटना, उभरना; उतराना ।

उछाँटना*–स० क्रि० उपाटना; चुनना, छाँटना; उचाटना।

उछारना*–स० क्रि० दे० 'उछालना' ।

उछाल–स्त्री० उछलनेकी क्रिया, कुदान, छलाँग; ऊपर उठनेकी हद; उलटी, कै; छींटा; ऊपर उठता हुआ कण ।

उछालना–स० क्रि० जोरसे ऊपर फेंकना; जाहिर करना ।

उछाव–पु० उत्सव, खुशी; उत्साह, उमंग ।–**बधाव**–पु० धूमधाम, आनंद ।

उछाह–पु० उत्साह; हर्ष; उत्सव; चाव, हौसला ।

उछाही*–वि० उत्साही; उछाह करनेवाला ।

उछिन्न*–वि० दे० 'उच्छिन्न' ।

उछीनना*–स० क्रि० उच्छेद, नाश करना ।

उछीर*–पु० अवकाश, दरार ।

उछेद*–पु० दे० 'उच्छेद' ।

उजड़ना–अ० क्रि० जनशून्य, वीरान होना; तबाह होना ।

उजड्ड–वि० अशिष्ट, असभ्य, गँवार; उद्धत ।

उज़बक–पु० [तु०] तातारियोंकी एक जाति । वि० मूर्ख, निर्बुद्धि ।

उजर*–वि० दे० 'ऊजड़'।

उजरत–स्त्री० [अ०] मजदूरी, पारिश्रमिक, मेहनतका बदला।

उजरा*–वि० दे० 'उजला' ।

उजराई*–स्त्री० उजलापन, सफेदी; कांति ।

उजराना*–स० क्रि० उजाला करना; साफ करना; चमकाना ।

उजलत–स्त्री० [अ०] जल्दी, उतावली । –**पसंद**–वि० जल्दबाज ।–**बाज़ी**–स्त्री० उतावली ।

उजला–वि० सफेद, उज्ज्वल; स्वच्छ ।

उजागर–वि० दीप्तिमय; प्रकट, प्रकाशित; प्रसिद्ध । अ० प्रकट रूपसे, खुले आम ।

उजाड़–वि० ध्वस्त, उजड़ा हुआ; वीरान, जनशून्य । पु० उजड़ा हुआ, वीरान स्थान ।

उजाड़ना–स० क्रि० बसे हुएको निकाल बाहर करना, रहने न देना; नष्ट, बर्बाद कर देना; तोड़-फोड़ मचाना ।

उजान–अ० बहावकी उलटी दिशामें,चढ़ावकी ओर, उज्जल।

उजारना*–स० क्रि० दे० 'उजाड़ना' ।

उजारा*–पु० दे० 'उजाला' ।

उजालना–स० क्रि० (गहने आदिका) मैल साफ करना, निखारना; चमकाना; जलाना ।

उजाला–पु० प्रकाश, रौशनी; कुल या जातिमें श्रेष्ठ व्यक्ति। वि० प्रकाशयुक्त, अँजोरा । –**पाख**–पु० शुक्ल पक्ष ।

उजाली–स्त्री० चाँदनी । वि० स्त्री० प्रकाशमयी ।

उजास–पु० उजाला, रौशनी; चमक ।

उजासना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना ।

उजियर*–वि० उजला ।

उजियरिया*–स्त्री० उजाली, चाँदनी ।

उजियार*–पु० उजाला, रौशनी । वि० प्रकाशित,रौशन ।

उजियारना*–स० क्रि० रौशन करना; बालना ।

उजियारा*–पु० प्रकाश, उजेला; प्रतापी व्यक्ति । वि० चमकवाला, कांतिमान्; उज्ज्वल ।

उजियारी–स्त्री० चाँदनी; रौशनी ।

उजियाला–पु० दे० 'उजाला' ।

उजीर*–पु० दे० 'वजीर' ।

उज़ुर–पु० दे० 'उज्र' ।

उजेनी*–स्त्री० उज्जयिनी ।

उजेर, उजेरा*–पु० दे० 'उजेला' ।

उजेला–पु० उजाला; चाँदनी । वि० प्रकाशयुक्त ।

उज्जयि(य)नी–स्त्री० [सं०] आधुनिक उज्जैन ।

उज्जर*–वि० दे० 'उज्ज्वल' ।

उज्जल–अ० [सं०] धाराके प्रतिकूल । *वि० उज्ज्वल ।

उज्जीवन–पु० [सं०] नया जीवन मिलना, पुनः प्राणसंचार होना; मृतप्राय होकर फिर स्वस्थ, चंगा हो जाना ।

उज्जृंभ, उज्जृंभण,–पु०,–**उज्जृंभा**–स्त्री० [सं०] मुँह बाना, जँभाई लेना; फैलना; खिलना; फटना; क्षोभ ।

उज्ज्वल–वि० [सं०] जलता हुआ; चमकता हुआ; उजला; स्वच्छ, निर्मल; सुंदर; खिला हुआ ।

उज्ज्वलन–पु० [सं०] जलना; चमकना; दीप्ति, चमक ।

उज्ज्वलित–वि० [सं०] जलता हुआ; प्रकाशित; चमकाया हुआ ।

उज्यारा*–पु० दे० 'उजाला' ।

उज्यास*–पु० दे० 'उजास' ।

उज्र–पु० [अ०] आपत्ति, विरोध; बहाना; हेतु ।–**दारी**–स्त्री० अदालतकी किसी आज्ञा या उसे प्राप्त करनेकी दरखास्तके खिलाफ दी गयी दरखास्त, आपत्तिनिवेदन ।

उज्रत–स्त्री० [अ०] दे० 'उजरत' ।

उझकना–अ० क्रि० उचकना; चौंकना ।

उझपना–अ० क्रि० खुलना ।

उझरना*–स० क्रि० ऊपर उठाना; सरकाना; ऊपरको सरकाना ।

उझलना–स० क्रि० उड़ेलना । * अ० क्रि० उमड़ना ।

उझिलना†–स० क्रि० दे० 'उझलना' ।

उटंग–वि० जो पहननेमें काफी नीचेतक न आये, उचितसे कम लंबाई या चौड़ाईवाला, ओछा (कपड़ा)।

उटकना*–स० क्रि० अंदाजा लगाना ।

उटक-नाटक–वि० ऊँचा-नीचा; अंड-बंड ।

उटज—पु० [सं०] झोपड़ी, कुटी।

उटड़पा, उटड़ा, उटहड़ा—पु० गाड़ीका अगला हिस्सा जमीनपर टिकानेके लिए जूएके नीचे लगी लकड़ी।

उठँगना—अ० क्रि० बैठनेमें किसी चीजका सहारा लेना; थकावट मिटानेके लिए बैठे-बैठे थोड़ा सो लेना।

उठँगाना†—स० क्रि० किवाड़ोंको बिना साँकल-सिटकिनीके बंद करना जिससे वे केवल धकेलनेसे खुल जायँ; किसी चीजको दूसरी चीजके सहारे टिकाना।

उठना—अ० क्रि० ऊपर की ओर जाना, ऊँचाईमें बढ़ना, जुड़-जुड़कर ऊँचा होना; लेटे हुएका बैठना; बैठेका खड़ा, होना; जागना; शय्या छोड़ना; मनमें उपजना (विचार, शंका इ०); याद आना; अचानक उपस्थित होना (आँधी, पीड़ा इ०); उगना; खमीर या सड़न पैदा होनेसे उफनना; निर्माण होना; खर्च होना; बिकना; भाड़े या लगानपर जाना; कुछ काल या सदाके लिए बंद होना; अंत होना; चलना, प्रस्थान करना; मरना; (गाय आदिका) मस्तीपर आना; उन्नति करना, ऊँची स्थितिको प्राप्त होना; रोगमुक्त होना; आमदा होना; उभरना (छपनेमें अक्षर आदिका)। **मु० उठ खड़ा होना**—चलनेको तैयार होना। **(दुनियासे) उठ जाना**—मर जाना, चल बसना। **उठती जवानी**—किशोरावस्था, उभरती हुई जवानी। **उठते-बैठते**—हर वक्त। **उठना-बैठना**—साथ, मेल-जोल। **उठा-बैठी**—उठने-बैठनेकी कसरत; हैरानी।

उठल्लू—वि० एक स्थानपर जमकर न रहनेवाला, जो कहीं टिके नहीं। **मु०—का चूल्हा**—बेमतलब घूमनेवाला।

उठाईगीरा—पु० जो छोटी-मोटी चीजें उठाकर चलता बने, उचक्का।

उठान—स्त्री० उठनेकी क्रिया; बाढ़; आरंभ; खपत; ऊँचाई।

उठाना—स० क्रि० नीचेसे ऊपर ले जाना; लेटे हुएको बैठाना; बैठे हुएको खड़ा करना; जगाना; ऊपर लेना, वहन या धारण करना; हटा या निकाल देना; अंगीकार करना; छेड़ना, आरंभ करना; कुछ काल या सदाके लिए बंद करना; अंत करना; खर्च करना; भोगना; भाड़ेपर देना; बनाना, निर्माण करना; कसम खानेके लिए हाथमें लेना (गंगाजल, तुलसी आदि।) **मु०—उठा रखना**—कसर रखना, छोड़ रखना या बाकी रखना।

उठाव—पु० उठा, उभरा हुआ भाग; उठान।

उठौआ—वि० जो उठाया जा सके; जो दूसरी जगह ले जाया जा सके।

उठौनी—स्त्री० उठानेकी उजरत; पेशगी दिया हुआ मूल्य, दादनी; पुरहत; उधार लेन-देन; ब्याह पक्का करनेके लिए कन्यापक्षको दिया जानेवाला धन; पूजा आदिके निमित्त अलग रखा हुआ धन; मृतक-संबंधी एक रीति; एक तरहकी धानके खेतकी जोताई; प्रसूताकी शुश्रूषा।

उड़ंकू—वि० उड़नेवाला; चलने-फिरनेवाला।

उड़*—पु० दे० 'उडु'। **—पति,—पाल,—राज**—पु० दे० 'उडुपति'।

उड़द—पु० दे० 'उरद'।

उड़न—स्त्री० उड़नेकी क्रिया, उड़ान। **—खटोला**—पु० उड़नेवाला खटोला, विमान। **—छू**—वि० गायब, लापता।

उड़ना—अ० क्रि० पंखके सहारे हवामें चलना-फिरना; विमान आदिपर बैठकर आकाशमार्गसे यात्रा करना; हवाके साथ डोलना-फिरना (पत्ता, धूल आदि); बिखरना; फैलना; फहराना, लहराना; नष्ट, लुप्त होना; फीका पड़ना; कटकर अलग हो जाना; खर्च होना; (आनंदपूर्वक) भोगा जाना; पड़ना, लगना (जूते, बेंत इ०); छलाँग भरना, घोड़ेका चौफाल कूदना; उछलकर लाँघ जाना; बहुत तेजीसे जाना, भागना; धोखा, चकमा देना; बात उड़ाना; इतराना; बहानेबाजी करना। **उड़ती खबर**—स्त्री० सुनी-सुनायी खबर।

उड़प—पु० एक तरहका नाच; उडुप।

उड़सना*—अ० क्रि० उठना, भंग होना।

उडाँक(कू)*—वि० उड़नेवाला; जिसमें उड़नेकी योग्यता हो।

उड़ाइक*—पु० (गुड्डी आदि) उड़ानेवाला।

उड़ाऊ—वि० पैसा बर्बाद करनेवाला, फुजूलखर्च। **—पन**—पु० फुजूलखर्ची।

उड़ाक—वि० उड़ानेवाला; पतंग उड़ानेवाला।

उड़ाका—पु० उड़नेवाला; हवाई जहाजपर उड़नेवाला; हवाई जहाजका चालक।

उड़ाकू—वि० उड़नेवाला; उड़नेमें समर्थ।

उड़ान—स्त्री० उड़नेकी क्रिया; उड़नेकी सामर्थ्यकी सीमा; हवाई जहाज आदि एक उड़ानमें जहाँतक जा सकें; (लंबी) छलाँग; * कलाई।

उड़ाना—स० क्रि० उड़नेकी क्रिया कराना, उड़नेवाले प्राणी, वस्तुको चलाना; लहराना, फहराना; बिखेरना, फैलाना; गायब करना; सफाईसे चुराना; झटक लेना; नष्ट करना, मिटा देना; अलग कर देना, काटकर फेंक देना; बारूद, गोले आदिसे नष्ट कर देना; खर्च करना; भोगना; (चिड़ियों आदिको) भगा देना; मारना; तेजीसे दौड़ाना; लगाना; चकमा, भुलावा देना; चुपके-चुपके कौशलसे कुछ सीख लेना। * अ० क्रि० उड़ना; छितरा जाना।

उड़ायक*—वि० दे० 'उड़ाइक'।

उड़ास*—स्त्री० वासस्थान।

उड़ासना—स० क्रि० (बिस्तरा आदि) समेटना, उठाना; भगाना, उदवासना; उजाड़ना।

उड़िया—पु० उड़ीसाका निवासी। स्त्री० उड़ीसाकी भाषा।

उड़ी—स्त्री० मालखंभकी एक कसरत; कलाबाजी।

उडुंबर—पु० [सं०] गूलर; दरवाजेकी चौखट।

उडु—पु० [सं०] नक्षत्र; जल। **—प**—पु० चंद्रमा; वरुण; एक तरहकी नाव, मेला; एक तरहका पानपात्र। **—पति,—राज**—पु० चंद्रमा; वरुण। **—पथ**—पु० आकाश।

उ.डुस—पु० खटमल।

उड़ेरना*—स० क्रि० दे० 'उड़ेलना'।

लड़ेलना—स० क्रि० तरल पदार्थको एक बर्तनसे दूसरे बर्तनमें ढालना या जमीनपर गिराना।

उड़ैनी*—स्त्री० जुगनू—'साम रैन जनु चलै उड़ैनी'—प०।

उड़ौहा*—वि० उड़नेवाला।

उड्डयन—पु० [सं०] उड़ना। **—विभाग** पु० हवाई जहाजों आदिकी व्यवस्था करनेवाला सरकारी विभाग।

उड्डीयमान–वि० [सं०] उड़नेवाला; उड़ता हुआ।

उढ़कना–अ० क्रि० ठोकर खाना; सहारा लेना; रुकना।

उढ़काना–स० क्रि० सहारा देकर खड़ा करना, भिड़ाना।

उढ़ना*–स० क्रि० बाहर निकालना।

उढ़रना†–अ० क्रि० स्त्रीका परपुरुषके साथ निकल जाना।

उढ़री–स्त्री० भगाकर लायी हुई स्त्री, रखेली।

उढ़ाना–स० क्रि० दे० 'ओढ़ाना'।

उढ़ारना–स० क्रि० दूसरेकी स्त्रीको भगा लाना।

उढ़ावनी, उढ़ौनी–स्त्री० दे० 'ओढ़नी'।

उतंक*–वि० ऊँचा।

उतंग*–वि० ऊँचा, उत्तुंग।

उतंत*–वि० बड़ा, सयाना, जवान।

उत*–अ० उधर, वहाँ।

उतन*–अ० उधर।

उतना–वि० उस मात्राका; उस कदर। अ० उस मात्रामें।

उतपन्न*–वि० दे० 'उत्पन्न'।

उतपानना*–स० क्रि० उपजाना। अ० क्रि० उपजना, उत्पन्न होना।

उतमंग*–पु० दे० 'उत्तमांग'।

उतर*–पु० दे० 'उत्तर'।

उतरन†–स्त्री० उतारा, पुराने कपड़े। **–पुतरन**–स्त्री० उतारे हुए पुराने कपड़े।

उतरना–अ० क्रि० ऊपरसे नीचे आना, ह्रास, बिगाड़की ओर आना; ढलना; घटना; फीका, हलका पड़ना; दूर होना (ज्वर, क्रोध आदि); हटना; भोगकाल समाप्त होना (मास, नक्षत्र आदिका); कटकर अलग होना; पके फलोंका तोड़ा जाना; (साँचे आदिपर चढ़ी चीजका) बनकर तैयार होना; पार होना; टिकना, ठहरना; सिद्ध होना, निकलना; प्रवेश करना; वसूल होना; ढीला होना; खिंचना, अंकित होना; नकल होना; तौलमें ठीक आना; जन्म लेना; अखाड़ेमें कुश्तीके लिए आना; प्यादेका कोई बड़ा मोहरा बनना (शतरंज); पकती हुई चीजका तैयार होना; बच्चोंका मर जाना; भर आना (नजला आदि); उघड़ना; घटित होना।

उतरवाना–स० क्रि० 'उतारना'का प्रे० रूप।

उतराई–स्त्री० उतरनेकी क्रिया; चढ़ाईका उलटा, ढाल; नदीके पार उतारनेका भाड़ा, खेवा; पुलका महसूल।

उतराना–अ० क्रि० पानीके ऊपर रहना, बहना या आना; उफनना; हर जगह देख पड़ना; छा जाना; पीछे-पीछे लगे फिरना।

उतरायल–वि० उतारा हुआ; पहना हुआ।

उतरावना*–स० क्रि० 'उतारना'का प्रे० रूप।

उतरौहां*–अ० उत्तरकी ओर। वि० उत्तरका।

उतरिन*–वि० ऋणमुक्त।

उतलाना*–अ० क्रि० उतावली करना।

उतल्ला*–अ० दे० 'उताइल'।

उतहसकंठा–स्त्री० उत्कंठा।

उताइ(य)ल*–अ० उतावलीके साथ, जल्दी-जल्दी। वि० उतावला।

उताइ(य)ली*–स्त्री० उतावली।

उतान–वि० चित, पीठके बल लेटा हुआ।

उतार–पु० उतरनेकी क्रिया; चढ़ावका उलटा, ढाल; उतरनेका क्रम, घटाव; भाटा; वह जगह जहाँसे नदी हलकर पार की जा सके; (विष, मंत्रका) प्रभाव दूर करनेवाली दवा, युक्ति; उतारन; *उतारा। **–चढ़ाव**–पु० ऊँचाई-नीचाई; हानि-लाभ।

उतारन–पु० पहना हुआ पुराना कपड़ा जो नौकर आदिको दे दिया जाय; न्योछावर; निकृष्ट वस्तु।

उतारना–स० क्रि० ऊपरसे नीचे लाना; पहनी हुई चीजको अलग करना; दूर करना; मंत्रादि पढ़कर प्रभाव दूर करना; निकाल लेना (मलाई आदि); काटकर जुदा कर देना; कमीकी ओर लाना, घटाना; (साँचे आदिपर चढ़ी वस्तुको) तैयार कर लेना; पका लेना; खींचना, उरेहना; नकल करना; पटाना, चुकाना; कस ढीला करना; मुकाबलेमें लाना; पार पहुँचाना; प्यादेको बढ़ाकर बड़ा मोहरा बनाना; तौलमें पूरा कर देना; टिकाना, ठहरनेका प्रबंध करना; न्योछावर करना; सिर या चेहरेके चारों ओर घुमाना (आरती आदि); उतारा करना; वसूल करना (चंदा आदि); अर्क खींचना; निकालना; तोड़ना।

उतारा–पु० रोग या प्रेतबाधाकी निवृत्तिके लिए पीड़ित व्यक्तिपर कोई चीज वारकर चौराहे आदिपर धर देना; इस क्रियामें व्यवहृत सामग्री; * टिकना; पड़ाव; नदी पार करना।

उतारू–वि० उद्यत, आमादा।

उताल*–अ० शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।

उताली*–स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती।

उतावल*–अ० शीघ्रतापूर्वक, जल्द।

उतावला–वि० उतावली करनेवाला, जल्दबाज; बेसब्र।

उतावली–स्त्री० जल्दी, जल्दबाजी; अधीरता। वि० स्त्री० जल्दी मचानेवाली, अधीर।

उताह(हि)ल*–अ० दे० 'उतावल'।

उतृण*–वि० उऋण, ऋणमुक्त।

उतै*–अ० उस ओर, वहाँ।

उतैला*–वि० उतावला।

उत्, उद्–उप० [सं०] यह शब्दोंके पहले लगकर ऊपर (उद्गमन), अतिक्रमण (उत्क्रांत), उत्कर्ष (उद्बोधन), प्राबल्य (उद्बल), प्राधान्य (उद्दिष्ट), अभाव (उत्पथ), विकास (उत्फुल्ल), शक्ति (उत्साह) आदिका सूचन करता है।

उत्कंठ–वि० [सं०] गरदन ऊपर किये हुए, उद्ग्रीव; उद्यत; उत्कंठायुक्त।

उत्कंठा–स्त्री० [सं०] विलंब न सह सकनेवाली इच्छा, लालसा; बेचैनी; प्रियसे मिलनेकी उत्सुकता।

उत्कंठित–वि० [सं०] उत्कंठायुक्त, उत्सुक; अधीर।

उत्कंठिता–स्त्री० [सं०] प्रियमिलनके लिए बेचैन नायिका; संकेतस्थलपर प्रियके न मिलनेसे चिंता करनेवाली नायिका।

उत्कंधर–वि० [सं०] जिसने गरदन ऊपर उठायी हो, उद्ग्रीव।

उत्कच–वि० [सं०] जिसके बाल खड़े हों; गंजा।

उत्कट–वि० [सं०] तीव्र; उग्र; प्रबल; विकट।

उत्कर्ण–वि० [सं०] जो कान खड़े किये हुए हो; सुननेको उत्सुक।

उत्कर्ष–पु० [सं०] ऊपर खींचना, उठाना; ऊपर चढ़ना, उन्नति; श्रेष्ठता; समृद्धि; इफरात।

उत्कल–पु० [सं०] वर्तमान उड़ीसा; बहेलिया।

उत्का*–स्त्री० उत्कंठिता नायिका।

उत्कीर्ण–वि० [सं०] छितराया हुआ; खुदा हुआ; छिदा हुआ।

उत्कृष्ट–वि० [सं०] उन्नत; श्रेष्ठ; उत्तम।

उत्कोच–पु० [सं०] घूस, रिश्वत।

उत्क्रांति–स्त्री० [सं०] उत्क्रमण; क्रमिक उन्नति या विकास।

उत्क्रोश–पु० [सं०] शोर-गुल; घोषणा; कुररी पक्षी।

उत्खनन–पु० [सं०] खुदाई; खोदकर बाहर निकालना।

उत्खात–वि० [सं०] खोदा हुआ; उखाड़ा हुआ; खोदकर निकाला हुआ; नष्ट किया हुआ। पु० छेद, बिल; गढ़ा।

उत्तंग*–वि० दे० 'उत्तुंग'।

उत्तंस–पु० [सं०] कर्णपूर, कर्णाभरण; शेखर; शिरोभूषण; आभूषण; * दे० 'अवतंस'।

उत्त–* पु० अचरज; संदेह। अ० उधर।

उत्तप्त–वि० [सं०] बहुत ज्यादा गरम; दुःखी; क्रुद्ध।

उत्तम–वि० [सं०] सबसे अच्छा, श्रेष्ठ; प्रधान। **–पुरुष**–पु० बोलनेवालेका सूचक सर्वनाम (मैं, हम); ईश्वर। **–साखपत्र**–पु० [हिं०] (गिल्टएज्ड सिक्यूरिटीज़) वे साखपत्र या प्रतिभूतियाँ जो बिलकुल सुरक्षित मानी जाती हों तथा जिनके डूब जानेका कमसे कम खतरा हो। व्यावसायिक संस्थाएँ, व्यापारी आदि इनमें रुपया लगाना शौकसे पसंद करते हैं (प्रथम श्रेणीके साखपत्र)।

उत्तमता–स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता; अच्छाई।

उत्तमताई*–स्त्री० उत्तमता।

उत्तमर्ण, उत्तमर्णिक–पु० [सं०] महाजन, ऋणदेनेवाला।

उत्तमांग–पु० [सं०] सिर।

उत्तमा–वि० स्त्री० [सं०] भली, नेक। **–दूती**–स्त्री० वह दूती जो नायक या नायिकाको बातोंसे मना ले। **–नायिका**–स्त्री० वह नायिका जो प्रतिकूल पतिके साथ भी अनुकूल आचरण करे।

उत्तमोत्तम–वि० [सं०] अच्छेसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।

उत्तर–वि० [सं०] उत्तर दिशा-संबंधी; ऊपरवाला; ऊँचा; पीछे आनेवाला, पिछला; श्रेष्ठ (लोकोत्तर); अतीत;…से अधिक (अष्टोत्तर शत); वाम; शक्तिशाली; पार करने या किया जानेवाला। पु० दक्षिणकी उलटी दिशा; शुमाल; जवाब; बदला; वादका जवाब, बचाव; भविष्यत् काल। अ० पीछे; बाद। **–काल**–पु० आनेवाला समय, भविष्यत् काल। **–च्छद**–पु० बिछावनकी चादर; आवरण। **–तिथित,–तिथीय**–वि० (पोस्ट डेटेड) जिसपर बादकी तिथि डाली गयी हो (वह प्रलेख, धनादेश आदि)। **–०धनादेश**–पु० (पोस्ट डेटेट चेक) वह धनादेश जिसपर बादकी तिथि डाल दी गयी हो अतः जिसका भुगतान तुरंत न होकर उक्त तिथिको ही या उसके बाद संभव हो सके। **–दाता(तृ),–दायक**–वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार। **–दायित्व**–पु० जवाबदेही, जिम्मेदारी। **–दायी (यिन्)**–वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार। **–पट**–पु० दुपट्टा, चादर। **–पद**–पु० समासका अंतिम पद। **–प्रत्युत्तर**–पु० सवाल-जवाब, बहस-हुज्जत। **–प्रदेश**–पु० दिल्ली-पंजाब और बिहार के बीचका प्रदेश, जिसे पहले संयुक्त प्रांत कहते थे। **–प्राप्य,–भोग्य**–वि० (रिवर्शनरी) जो बादमें, प्रायः मृत्युके उपरांत दिया जाय; जो प्राप्य हो जानेपर भी तुरंत न दिया जाकर पूरी अवधि समाप्त हो जानेपर या मृत्यु हो जानेपर ही मिले। **–वय,–वयस**–स्त्री० बुढ़ापा। **–वस्त्र**–पु० ऊपर पहननेका वस्त्र; दुपट्टा, उपरना। **–वादी (दिन्)**–पु० प्रतिवादी, मुद्दालेह।

उत्तरण–पु० [सं०] पार होना; उतरना; पानीसे निकलना।

उत्तरा–स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा; एक नक्षत्र; अभिमन्युकी पत्नी जिससे परीक्षित्का जन्म हुआ। **–खंड**–पु० भारतवर्षका उत्तरी, हिमालयके पासका भाग। **–फाल्गुनी**–स्त्री० एक नक्षत्र। **–भाद्रपदा**–स्त्री० एक नक्षत्र।

उत्तराधिकार–पु० [सं०] किसीके (मरने या हटनेके) बाद उसकी संपत्ति, पद आदि पानेका हक, वरासत।

उत्तराधिकारी (रिन्)–वि० [सं०] किसीके (मरने या हटनेके) बाद उसकी संपत्ति, पद आदि पानेका हकदार, वारिस।

उत्तराभास–पु० [सं०] झूठा जवाब; बहाना; टालमटूल।

उत्तरायण–पु० [सं०] सूर्यका मकररेखासे उत्तर (कर्करेखा)-की ओर जाना; वह छः महीनेका काल जब सूर्यकी उत्तरकी ओर गति रहती है।

उत्तरार्द्ध, उत्तरार्ध–पु० [सं०] देहका कमरसे ऊपरका भाग; पिछला, अंतकी ओरका आधा भाग (पूर्वार्धका उलटा)।

उत्तराशा–स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।

उत्तराषाढा–स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र।

उत्तरीय, उत्तरीयक–वि० [सं०] उत्तरका; ऊपरका। पु० दुपट्टा, उपरना, ओढ़नी।

उत्तरोत्तर–अ० [सं०] अधिकाधिक; दिन-दिन अधिक; लगातार।

उत्तान–वि० [सं०] ताना, फैलाया हुआ; पीठके बल लेटा हुआ, चित; सीधा (खड़ा);। **–पाद**–वि० जिसकी टाँगें फैला दी गयी हैं। पु० ध्रुवका पिता।

उत्ताप–पु० [सं०] तेज गरमी; दुःख; क्लेश; चिंता; क्षोभ।

उत्तारण–पु० [सं०] पार उतारना; उद्धार करना; विष्णु।

उत्ताल–वि० [सं०] ऊँचा; प्रबल; प्रचंड; भयंकर; विशाल।

उत्तीर्ण–वि० [सं०] पार पहुँचा हुआ; जिसका उद्धार किया गया हो; कर्तव्यसे मुक्त; परीक्षामें पास; चतुर, अनुभवी।

उत्तुंग–वि० [सं०] बहुत ऊँचा, गगनस्पर्शी।

उत्तेजक–वि० [सं०] उभारने, बढ़ावा देनेवाला; काम, क्रोध आदिको भड़कानेवाला।

उत्तेजन–पु० [सं०] उभारना, भड़काना; बढ़ावा देना।

उत्तेजना–स्त्री० [सं०] बढ़ावा; प्रेरणा; रोष; क्रोध। **–जनक**–वि० भड़कानेवाला; क्रोधोत्पादक।

उत्तोलन–पु० [सं०] ऊपर उठाना; तानना; तौलना। **–यंत्र**–पु० (क्रेन) रेलके डब्बे, भारी गाँठें आदि ऊपर उठानेवाला, सारसकी चोंच जैसा यंत्र।

उत्थवना*–स० क्रि० आरंभ करना; उठाना।

उत्थान–पु० [सं०] उठना; उठान; उन्नति, बल-वैभवकी

वृद्धि; जागना । –**पतन**–पु० उठना-गिरना, वृद्धि-ह्रास ।

उत्थानक–पु० [सं०] (लिफ्ट) मकानके नीचेके खंडसे ऊपरके खंडमें पहुँचाने या वहाँसे नीचे उतारनेवाला बिजलीका आसन, उन्नयनयंत्र ।

उत्थापन–पु० [सं०] उठाना; जगाना; उभारना ।

उत्थित–वि० [सं०] उठा हुआ; उठता हुआ; बल-वैभवमें बढ़ा हुआ, उन्नत; उद्धार किया हुआ ।

उत्पत्ति–स्त्री० [सं०] जन्म; उत्पादन; आरंभ; उद्गम; अस्तित्व ग्रहण करना; सृष्टि; उपज; लाभ ।

उत्पन्न–वि० [सं०] जनमा हुआ; उपजा हुआ ।

उत्पल–पु० [सं०] कमल; नील कमल; कुमुद ।

उत्पाटन–पु० [सं०] उखाड़ना; जड़मूलसे नाश करना ।

उत्पाटित–वि० [सं०] जड़से उखाड़ा हुआ; हटाया हुआ ।

उत्पात–पु० [सं०] ऊपर उठना; उछाल; विपत्सूचक, आकस्मिक घटना; आफत, उपद्रव, दंगा ।

उत्पाती(तिन्)–वि० [सं०] उपद्रवी, खुराफाती ।

उत्पाद–वि० [सं०] जिसके पैर ऊपर उठे हों । पु० जन्म, उत्पत्ति । –**शय,–शयन**–पु० शिशु; टिट्टिभ पक्षी ।

उत्पादक, उत्पादी–वि० [सं०] पैदा करनेवाला । –**व्यय**–पु० (प्रॉडक्टिव एक्सपेंडिचर) उत्पादन बढ़ानेवाला व्यय, उत्पादक कार्योंके निमित्त किया जानेवाला व्यय ।

उत्पादन–पु० [सं०] पैदा करना, उपजाना; (माल) तैयार करना; तैयार किया गया माल । –**बाधा**–स्त्री० (बाटिलनेक) वह वस्तु जो उत्पादनका कार्य सुचारुरूपसे चलनेमें बाधक हो । –**शुल्क**–पु० (एक्साइज ड्यूटी) देशमें उत्पादित कतिपय वस्तुओंपर लगनेवाला कर (भारतमें चीनी, तंबाकू आदिपर लगनेवाले करकी आय केंद्रीय सरकारको तथा अफीम, गाँजा आदिपरकी आय राज्यकी सरकारोंको मिलती है) ।

उत्पादित–वि० [सं०] उत्पन्न; उपजाया, पैदा किया हुआ ।

उत्पीडक–वि० [सं०] दबानेवाला; सतानेवाला ।

उत्पीडन–पु० [सं०] दबाना; सताना, जुल्म करना ।

उत्पीडित–वि० [सं०] दबाया, सताया हुआ, मजलूम ।

उत्प्रवासी(सिन्)–पु० [सं०] (एमीग्रैंट) एक देश छोड़कर अन्य देशमें जा बसनेवाला ।

उत्प्रेक्षा–स्त्री० [सं०] उद्भावना, अनुमान; उपेक्षा; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें प्रस्तुत वस्तुमें सादृश्यके कारण अन्य वस्तुकी कल्पना की जाती है ।

उत्प्रेषणलेख, उत्प्रेषणादेश–पु० [सं०] (सर्शीऔररी) अधीन न्यायालयमें विचार किये गये किसी मामलेके कागज-पत्र प्रेषित करनेका उच्च न्यायालयका आदेश ।

उत्फुल्ल–वि० [सं०] खिला हुआ, पूर्णतः विकसित; प्रसन्न ।

उत्संग–पु० [सं०] गोद, अंक; मध्यभाग; नितंबके ऊपरका भाग ।

उत्स–पु० [सं०] स्रोत, सोता; जलमय स्थान ।

उत्सन्न–वि० [सं०] क्षीण; नष्ट, उच्छिन्न, जिसकी जड़ उखाड़ दी गयी हो; उठाया हुआ; अभिशप्त; विलुप्त ।

उत्सर्ग–पु० [सं०] अलग करना; छोड़ना, त्यागना; दान; समापन (अध्ययन आदिका) ।

उत्सर्जन–पु० [सं०] उत्सर्ग करना; त्याग; दान करना; एक वैदिक कर्म जो सालमें दो बार किया जाता है; वेदाध्ययन स्थगित करना ।

उत्सर्जित–वि० [सं०] छोड़ा, त्यागा हुआ ।

उत्सव–पु० [सं०] आनंद, प्रसन्नता; आनंदजनक कार्य, विवाह आदि; जलसा; समारोह; उछाव-बधाव (मनाना); पर्व ।

उत्सादन–पु० [सं०] नाश करना; बाधा डालना; घावका भरना; ऊपर चढ़ना; उठाना; मालिश करना; खेतकी दूसरी जोताई करना; (ऐब्रोगेशन) किसी विधि (कानून), अधिनियम, प्रथा आदिको उठा देना, रद्द कर देना; (एबॉलिशन) नष्ट करना, अंत करना, विनाशन ।

उत्सादित–वि० [सं०] नष्ट किया हुआ; रद्द किया हुआ; आरूढ़; उठाया हुआ ।

उत्साह–पु० [सं०] हौसला, उमंग; उद्यम, चेष्टा; प्रवृत्ति; अध्यवसाय; दृढ़ संकल्प; वीर रसका स्थायी भाव ।

उत्साहिल*–वि० दे० 'उत्साही' ।

उत्साही (हिन्)–वि० [सं०] उत्साहयुक्त; उद्यमी ।

उत्सुक–वि० [सं०] उत्कंठित; अत्यधिक इच्छुक; बेचैन ।

उत्सुकता–स्त्री० [सं०] अधीरता, व्याकुलता, बेचैनी; उत्कंठा; प्रबल इच्छा; आसक्ति, प्रेम; पश्चात्ताप, अफसोस ।

उत्सृष्ट–वि० [सं०] उत्सर्ग किया हुआ, परित्यक्त ।

उत्सेक–पु० [सं०] छिड़कना; बाढ़; प्लावित करना ।

उथपना*–स० क्रि० उठा देना; उजाड़ या उखाड़ देना ।

उथलना*–अ० क्रि० डगमगाना; उलटना । –**पुथलना**–नीचे-ऊपर होना; इधरका उधर होना ।

उथल-पुथल–स्त्री० भारी उलट-फेर; हलचल ।

उथला–वि० छिछला, कम गहरा ।

उदंड*–वि० दे० 'उद्दंड' ।

उदंत*–वि० जिसके (दूधके) टूटे दाँत न जमे हों ।

उदक–पु० [सं०] पानी । –**कर्म (न्),–कार्य,–दान**–पु० दे० 'उदकक्रिया' । –**क्रिया**–स्त्री० पितरोंको जल देना, पितृतर्पण । –**दाता(तृ),–दायी (यिन्)**–वि० पितरोंको पानी देनेवाला; वारिस । –**स्पर्श**–पु० शरीरके विभिन्न अंगोंका जलसे स्पर्श कराना; शपथ, प्रतिज्ञा आदिके पूर्व जलका स्पर्श करना ।

उदकअद्रि*–पु० हिमालय ।

उदकना*–अ० क्रि० उछलना-कूदना; छटकना ।

उदकार्थी (थिन्)–वि० [सं०] प्यासा; जल चाहनेवाला ।

उदकेचर–वि० [सं०] जलचर ।

उदकेशय–वि० [सं०] जलमें सोने या रहनेवाला ।

उदगरना†–अ० क्रि० निकलना, प्रकट होना; उभड़ना ।

उदगार*–पु० दे० 'उद्गार' ।

उदगारना*–स० क्रि० उगलना; डकार लेना; भड़काना ।

उदगारी*–वि० उगलने, डकार लेनेवाला ।

उदग्ग*–वि० दे० 'उदग्र' ।

उदग्र–वि० [सं०] ऊपरको उभरा हुआ; उदार; वयोवृद्ध; ऊँचा; उन्नत; प्रवर्धित; विशाल; असह्य; प्रचंड; प्रबल; उग्र; भयंकर; क्रुद्ध ।

उदघटना*–अ० क्रि० प्रकट होना ।

उदघाटन*–पु० दे० 'उद्घाटन' ।

उदघाटना*–स० क्रि० प्रकट करना; खोलना ।

उदजन–पु० (हाइड्रोजन) दे० 'जलजन' ।

उदथ*–पु० सूर्य ।

उदधि–पु० [सं०] समुद्र । **–कन्या,–तनया**–स्त्री० लक्ष्मी । **–मेखला,–वस्त्रा**–स्त्री० पृथ्वी । **–संभव**–पु० समुद्री नमक । **–सुत**–पु० चंद्रमा, अमृत, शंख आदि । **–सुता**–स्त्री० लक्ष्मी ।

उदन्वान्(न्वत्)–पु० [सं०] समुद्र ।

उदपान*–पु० कमंडलु 'कर उदपान काँध बघछाला।'–प० ।

उदबस*–वि० उजड़ा हुआ, सूना; उद्वासित; जो आज यहाँ, कल वहाँ रमता रहे ।

उदबासना–स० क्रि० किसी स्थानसे हटा, भगा देना ।

उदवेग–पु० दे० 'उद्वेग' ।

उदभव*–पु० दे० 'उद्भव' ।

उदभौत*–पु० अद्भुत घटना, अचंभेकी बात ।

उदमदना*–अ० क्रि० उन्मत्त होना, सुध-बुध खो देना ।

उदमाती–वि० स्त्री० मस्तीसे भरी हुई, मस्तानी ।

उदमाद*–पु० उन्माद; मस्ती ।

उदमान*–वि० मतवाला; उन्मत्त ।

उदमानना*–अ० क्रि० उन्मत्त होना ।

उदय–पु० [सं०] (सूर्यादिका) उगना, निकलना, आकाशमें ऊपरकी ओर उठना; प्रकट होना; बढ़ती, उत्थान; सृष्टि; उद्गमस्थान; उदयाचल, **–गढ़***–पु० उदयगिरि । **–गिरि,–पर्वत,–शैल**–पु० पूर्वका एक (कल्पित) पर्वत जिसके पीछेसे सूर्यका उगना माना जाता है ।

उदयना*–अ० क्रि० उदय होना ।

उदयाचल–पु० [सं०] उदयगिरि ।

उदया तिथि–स्त्री० [सं०] सूर्योदयकालमें वर्तमान तिथि ।

उदयाद्रि–पु० [सं०] उदयगिरि ।

उदयान*–पु० उद्यान, बाग ।

उदयी (यिन्)–वि० [सं०] उगता हुआ, उठता हुआ; प्रवाहित होनेवाला; उन्नतिशील ।

उदरंभर*–वि० दे० 'उदरंभरि' ।

उदरंभरि–वि० [सं०] अपना ही पेट पालनेवाला; पेटू; स्वार्थी ।

उदर–पु० [सं०] पेट; वस्तुका भीतरी भाग; अंतर; विजातीय द्रव्य एकत्र होने या जलोदर आदिके कारण पेटका बढ़ना । **–ज्वाला**–स्त्री० पेटकी आग, भूख । **–दास**–पु० पैदाइशी गुलाम, वह दास जिसके माँ-बाप भी दास रहे हों । **–रेखा**–स्त्री० त्रिवली । **–वृद्धि**–स्त्री० रोगके कारण पेटका बढ़ना । **–सर्पी(र्पिन्)**–वि० पेटके बल रेंगनेवाला ।

उदरना*–अ० क्रि० विदीर्ण होना; (मेड़, दीवार आदिका) कटकर अलग हो जाना; टूट जाना; नष्ट होना; गिरना ।

उदराग्नि–स्त्री० [सं०] जठराग्नि, पाचनशक्ति ।

उदरामय–पु० [सं०] पेटकी बीमारी ।

उदरावर्त–पु० [सं०] नाभि ।

उदरी (रिन्)–वि० [सं०] बड़ी तोंदवाला ।

उदवना*–अ० क्रि० उदय होना ।

उदवाह*–पु० दे० 'उद्वाह' ।

उदसना*–अ० क्रि० उजड़ना; उद्ध्वस्त होना ।

उदात्त–वि० [सं०] ऊँचा; महान् ; श्रेष्ठ; उदार; ऊँचे स्वरमें उच्चरित । पु० स्वरके तीन भेदोंमेंसे एक, ऊँचा स्वर; दान; एक अर्थालंकार, जहाँ अतिशय समृद्धिका वर्णन किया जाय; नायकका एक प्रकार; एक तरहका बड़ा ढोल ।

उदान–पु० [सं०] प्राण वायुके पाँच भेदोंमेंसे एक जिसका स्थान कंठ और गति हृदयसे कंठ-तालुतक है; साँस ।

उदाम*–वि० दे० 'उद्दाम' ।

उदायन*–पु० उद्यान, बाग ।

उदार–वि० [सं०] दानशील; ऊँचे दिलवाला; खरा; उच्च; दयालु; भला; विशाल । **–चरित**–वि० ऊँचे चरित्रवाला । **–चेता (तस्),–मना (नस्)**–वि० ऊँचे दिलवाला । **–दर्शन**–वि० देखनेमें भला लगनेवाला । **–धी**–वि० प्रतिभाशाली; ऊँचे दिलवाला, भला । पु० विष्णु । स्त्री० सद्गुण ।

उदारता–स्त्री० [सं०] दानशीलता; उदार स्वभाव ।

उदाराशय–वि० [सं०] ऊँचे दिलवाला ।

उदावर्त–पु० [सं०] बड़ी आँतका एक रोग, काँच, गुदग्रह ।

उदास–पु० * दुःख । वि० जिसका मन उचटा रहता हो, खिन्न; दुःखी; उदासीन; तटस्थ ।

उदासना–अ० क्रि० उदास होना । *स० क्रि० उजाड़ना; समेटना (विस्तर) ।

उदासिल*–वि० उदासीन ।

उदासी–स्त्री० रंजीदगी, खिन्नता ।

उदासी(सिन्)–वि० [सं०] तटस्थ, निरपेक्ष; विरक्त । पु० संन्यासी, विरागी; नानकशाही साधु ।

उदासीन–वि० [सं०] विरक्त; तटस्थ; निष्पक्ष । पु० अजनबी; तटस्थ व्यक्ति या नरेश; अभियोगसे असंबद्ध व्यक्ति । **–भागीदार**–पु० (स्लीपिंग पार्टनर) ऐसा साझेदार जिसने कारखाने या व्यवसाय आदिमें रुपया तो लगाया हो पर जो प्रबंधादिमें दिलचस्पी न लेता हो ।

उदासीनता–स्त्री० [सं०] विरक्ति; तटस्थता, निरपेक्षिता ।

उदाहरण–पु० [सं०] दृष्टांत, मिसाल; अनुकरणके योग्य कार्य; वाक्यके पाँच अवयवोंमेंसे तीसरा (न्या०); एक अर्थालंकार, जिसमें कोई सामान्य कथन करनेके बाद बानगीके तौरपर कोई बात कही जाय ।

उदाहृत–वि० [सं०] कथित, वर्णित; जिसका दृष्टांत दिया गया हो ।

उदित–वि० [सं०] उगा हुआ, निकला हुआ; प्रकट, प्रकाशित; ऊँचा; बढ़िया । **–यौवना**–स्त्री० मुग्धा नायिकाका एक भेद ।

उदीची–स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा ।

उदीचीन–वि० [सं०] उत्तरी; उत्तराभिमुख ।

उदीच्य–वि० [सं०] उत्तरका रहनेवाला ।

उदीपन*–पु० दे० 'उद्दीपन' ।

उदीपित*–वि० दे० 'उद्दीप्त' ।

उदीयमान–वि० [सं०] उगता, उदय होता हुआ ।

उदीरण–पु० [सं०] कथन, उच्चारण, बोलना ।

उदीरित–वि० [सं०] कहा हुआ ।

उदुंबर–पु० [सं०] दे० 'उडुंबर' ।

उदूलहुक्मी–स्त्री० [अ०] हुक्म न मानना, आज्ञाका उल्लंघन।

उदेग*–पु० दे० 'उद्वेग'।

उदै, उदो, उदौ*–पु० दे० 'उदय'।

उदोत*–पु० प्रकाश; शोभा; वृद्धि, उन्नति। वि० प्रकाशित; शुभ्र। **–कर**–वि० प्रकाश करनेवाला; चमकानेवाला।

उदोती*–वि० उदय करनेवाला; प्रकाश करनेवाला।

उद्गम–पु० [सं०] उठना; उदय, उत्पत्ति; उत्पत्तिस्थान; निकलना; निकास।

उद्गार–पु० [सं०] मुँहसे बाहर आना; थूक; डकार; दिलमें भरी हुई बातका बाहर निकलना; हर्ष, शोक आदिके सूचक शब्द (शोकोद्गार इ०); बार-बार कहना; शब्द।

उद्गारी(रिन्)–वि० [सं०] डकार लेने या वमन करनेवाला; ऊपर जानेवाला; बाहर निकालनेवाला।

उद्गीर्ण–वि० [सं०] उगला हुआ; निकाला हुआ।

उद्ग्रहण–पु० [सं०] (लेवी) कर आदि अधिकारपूर्वक वसूल करना, उगाहना, उगाही।

उद्ग्रीव–वि० [सं०] जिसकी गर्दन ऊपर उठी हो, उत्कंठ।

उद्घाटन–पु० [सं०] खोलना, प्रकट करना; किसी सम्मेलनादिका प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा आरंभ किया जाना; ऊपर उठाना।

उद्घाटित–वि० [सं०] खोला, उघाड़ा हुआ; ऊपर उठाया हुआ, उत्तोलित; आरंभ किया हुआ।

उद्घात–पु० [सं०] आघात; आरंभ; उल्लेख; हवाला।

उद्घातक, उद्घाती (तिन्)–वि०, पु० [सं०] आघात करने, धक्का मारनेवाला; आरंभ करनेवाला।

उद्घोष–पु० [सं०] ऊँची आवाजमें कहना; घोषणा, मुनादी करना; जनतामें चलनेवाली बात।

उद्घोषणा–स्त्री० [सं०] (प्रोक्लेमेशन) सार्वजनिक रूपसे और सरकारी तौरपर घोषित करना; सबकी जानकारीके लिए दी जानेवाली सूचना।

उद्दंड–वि० [सं०] निडर, न दबनेवाला, अक्खड़, उजड्ड।

उद्दत*–वि० दे० 'उद्यत'।

उद्दाम–वि० [सं०] बंधनरहित, निरंकुश; प्रचंड; उग्र; घमंडी; विशाल; असाधारण; असीम; भयंकर।

उद्दित*–वि० दे० 'उदित'; 'उद्धत'; 'उद्यत'।

उद्दिम*–पु० दे० 'उद्यम'।

उद्दिष्ट–वि० [सं०] बताया हुआ; चाहा, सोचा हुआ, अभिप्रेत।

उद्दीपक–वि० [सं०] उत्तेजित या प्रज्वलित करनेवाला।

उद्दीपन–पु० [सं०] उत्तेजित करना, भड़काना; जगाना; रसका पोषण-वर्द्धन करनेवाली वस्तु (सा०); जलाना। वि० उद्दीपन करनेवाला।

उद्दीपित–वि० दे० 'उद्दीप्त'।

उद्दीप्त–वि० [सं०] जगाया, भड़काया हुआ; उत्तेजित; प्रज्वलित; चमकीला।

उद्देश–पु० [सं०] चर्चाका विषय बनाना; संकेत या लक्ष्य करना; अभिप्राय, इरादा; तर्कके लिए रखी जानेवाली प्रतिज्ञा।

उद्देश्य–वि० [सं०] स्पष्ट या इंगित किये जाने योग्य; लक्ष्य। पु० जिसके विषयमें कुछ कहा जाय (व्या०)।

उद्दोत*–वि०, पु० दे० 'उद्द्योत'; प्रकाशित–'पुर पैठत श्री रामके भयो मित्र उद्दोत'–राम०।

उद्दोतिताई*–स्त्री० प्रकाश।

उद्द्योत–वि० [सं०] प्रकाशमान, ज्वलंत। पु० चमकना; प्रकाशित होना; प्रकट होना; प्रकाश; कांति; अध्याय। **–कर, –कारी(रिन्)**–वि० प्रकाशित करनेवाला।

उद्द्योतित–वि० [सं०] प्रकाशित किया हुआ; प्रज्वलित किया हुआ; चमकीला।

उद्ध*–अ० ऊपर।

उद्धत–वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; अतिशय; कठोर; उजड्ड, अक्खड़, अविनीत; घमंडी; प्रचंड। पु० राजमल्ल। **–मनस्क, –मना(नस्)**–वि० अभिमानी।

उद्धना*–अ० क्रि० ऊपर उठना; उड़ना; बिखरना।

उद्धरण–पु०[सं०] उतारना; निकालना; उन्मूलन; सुधार; उद्धार होना या करना; मुक्ति; पढ़ा हुआ दुहराना; कुछ अंश लेना; किसी उक्ति या लेखका दूसरी जगह अविकल रखा जाना, अवतरण।

उद्धरणी–स्त्री०[सं०] पढ़े हुए पाठको दुहराना।

उद्धरना*–स० क्रि० उद्धार करना।

उद्धव–पु० [सं०] एक यादव जो कृष्णके सखा और संबंधी थे; यज्ञाग्नि; उत्सव।

उद्धार–पु०[सं०] ऊपर उठाना; बाहर निकालना (विपत्ति, दुर्दशा आदिसे); छुटकारा, (जन्म-मरणके बंधनसे) मुक्ति; ऋण या ऋणरूप कर्तव्यसे छुटकारा; मरम्मत या सुधार कर कामके योग्य बनाना।

उद्धारक–वि० [सं०] उद्धार करनेवाला।

उद्धारण–पु० [सं०] उबारना, ऊपर उठाना; भाग लेना।

उद्धारना*–स० क्रि० उद्धार करना।

उद्धृत–वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; उबारा, बचाया हुआ; उन्मूलित; पृथक् किया हुआ; अन्य रचनासे (अवतरण-रूपमें) लिया हुआ; वमित।

उद्ध्वस्त–वि० [सं०] ढहा, गिरा हुआ; नष्ट।

उद्बाहु–वि० [सं०] जो बाहें ऊपर उठाये हुए हो।

उद्बुद्ध–वि० [सं०] जगा या जगाया हुआ; विकसित; उद्दीप्त; याद आया या दिलाया हुआ।

उद्बोधक–वि० [सं०] जगाने, उठाने, याद दिलानेवाला; उद्दीपक।

उद्बोधन–पु०[सं०] जगना, चेतना; ज्ञान कराना; जगाना; डाँट-डपटकर समझाना, चेतावनी देना (एडमॉनिशन)।

उद्बोधिता–स्त्री० [सं०] परकीया नायिकाका एक भेद।

उद्भट–वि० [सं०] श्रेष्ठ; असाधारण; जबर्दस्त; प्रचंड।

उद्भव–पु० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; उद्गम, मूल; वृद्धि। **–वेश्म**–पु० (ओरिजिनेटिंग चेंबर) संसद या विधानमंडलका वह सदन जिसमें कोई प्रस्ताव पहले पहल उपस्थापित किया गया तथा स्वीकृत हुआ हो।

उद्भाव–पु० [सं०] उद्भव; कल्पना; उदाराशयता; दे० 'उद्भावन'।

उद्भावन–पु० [सं०] उत्पादन; कल्पना करना; सोचना; (इनवेंशन) किसी नयी प्रणाली, यंत्रादिका निर्माण करना

(जिसका पहले अस्तित्व न रहा हो); आविर्भावन, उपज्ञा ।

उद्भावना–स्त्री० [सं०] उद्भव; कल्पना ।

उद्भास–पु० [सं०] चमक, दीप्ति; प्रकाश ।

उद्भासित–वि० [सं०] व्यक्त; चमकता हुआ; प्रकाशित; अलंकृत ।

उद्भिज्ज–वि० [सं०] धरती फोड़कर बाहर निकलनेवाला; उगनेवाला । पु० पेड़-पौधे, वनस्पति । **–शास्त्र**–पु० वनस्पतिशास्त्र ।

उद्भिद्–वि० [सं०] धरती फोड़कर उगने, निकलनेवाला। पु० अँखुआ; पौधा; उत्स, झरना ।

उद्भूत–वि० [सं०] उत्पन्न, सृष्ट ।

उद्भूति–स्त्री० [सं०] उत्पत्ति; उत्कर्ष, उन्नति ।

उद्भेद–पु० [सं०] बीजका अंकुरित होना, धरती फोड़कर निकलना; प्रकट होना; उत्स; ज्वालामुखीका फूटना ।

उद्भेदन–पु० [सं०] फोड़कर बाहर निकलना; उगना; प्रकट होना ।

उद्भ्रम–पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; घुमाना; पश्चात्ताप ।

उद्भ्रांत–वि० [सं०] घूमा, चक्कर खाया हुआ; भीत; भ्रमितचित्त; हैरान; व्याकुल; उन्मत्त; पागल ।

उद्यत–वि० [सं०] उठाया हुआ, ताना हुआ; तैयार, आमादा।

उद्यम–पु० [सं०] उठाना; श्रम, मेहनत; उद्योग; धंधा ।

उद्यमी(मिन्)–वि० [सं०] मेहनती; उद्योगी ।

उद्यान–पु० [सं०] बगीचा, वाटिका । **–कर्म**–पु० (हार्टिकल्चर) उद्यानमें पेड़-पौधे लगाने तथा उनकी देखभाल आदि करनेका काम । **–गोष्ठी**–स्त्री० (गार्डन पार्टी) किसीके उद्यानमें या दूर्वाक्षेत्र आदिपर आयोजित प्रीतिभोज अथवा प्रीतिसम्मेलन । **–पाल,–रक्षक**–पु० माली ।

उद्यापन–पु० [सं०] व्रतादिकी समाप्ति; व्रतकी समाप्तिपर किया जानेवाला हवनादि ।

उद्यापित–वि० [सं०] विधिपूर्वक पूर्ण किया हुआ; जिसका उद्यापन हो चुका हो ।

उद्योग–पु० [सं०] अध्यवसाय; यत्न; श्रम; उद्यम; कार्य; जीवनके लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करनेका धंधा, ‘इंडस्ट्री’ । **–धंधा**–पु० [हिं०] उत्पादक धंधा । **–पति**–पु० माल तैयार करनेवाले कारखानेका मालिक । **–शाला**–स्त्री० माल तैयार करने या उत्पादक धंधा सिखानेवाली संस्था । **–समीकरण**–पु० (रैशनैलिजेशन आफ इंडस्ट्री) श्रमिकोंके काम, समय तथा सामग्री आदि-संबंधी बरबादी दूर कर उद्योगकी स्थिति सुधारना; अभिनवीकरण ।

उद्योगी(गिन्)–वि० [सं०] उद्योगशील, कोशिशमें लगा रहनेवाला; मेहनती ।

उद्योत–पु० दे० ‘उद्द्योत’ ।

उद्रेक–पु० [सं०] बढ़ती; अधिकता; आरंभ; अर्थालंकारका एक भेद ।

उद्वह–पु० [सं०] बेटा; वायुके सात स्तरोंमेंसे एक ।

उद्वहन–पु० [सं०] उठाकर ले जाना; उठाना; सँभालना; विवाह करना; (किसी वस्तुसे) युक्त या संपन्न होना । **–यंत्र**–पु० (पंप) पानी, तेल आदि ऊपर उठाकर बाहर निकालनेवाला पिचकारी जैसा यंत्र ।

उद्वास–पु० [सं०] निकालना; खदेड़ना; त्याग; वध करनेके लिए ले जाना; वध; मुक्त करना ।

उद्वासन–पु० [सं०] खदेड़ देना; गृहादि नष्ट कर देना, उजाड़ना; मार डालना ।

उद्वासित–वि० [सं०] (डिसप्लेस्ड) दे० ‘विस्थापित’ ।

उद्वाह–पु० [सं०] उठाना; सँभालना; विवाह ।

उद्वाहन–पु० [सं०] उठाना; सँभालना; विवाह करना; एक बार जोते हुए खेतको जोतना; चिंता ।

उद्विकासित–वि०[सं०](इवॉल्वड) जो आरंभिक अवस्थासे धीरे-धीरे पूर्ण विकासकी अवस्थाको पहुँचाया गया हो, जो क्रमशः विकसित किया गया हो ।

उद्विग्न–वि० [सं०] उद्वेगयुक्त, परेशान; चिंतित; खिन्न ।

उद्वेग–पु० [सं०] क्षोभ; घबराहट; परेशानी; चित्तकी अस्थिरता; चिंता; भय; मनोवेग ।

उद्वेजक–वि० [सं०] उद्वेगकारक, क्षोभ उत्पन्न करनेवाला ।

उद्वेल–वि० [सं०] उफनकर बहनेवाला; मर्यादाका अतिक्रमण करनेवाला; अतिशय ।

उद्वेलित–वि० [सं०] ऊपरसे बहाया हुआ ।

उधड़ना–अ० क्रि० खुलना, टूटना (सीवन; टाँका); अलग होना (खाल इ०); बिखरना; उखड़ना ।

उधम*–पु० दे० ‘ऊधम’ ।

उधर–अ० उस ओर, वहाँ; उस पक्षमें । **–से**–उस ओरसे; दूसरे पक्षकी ओरसे । **–ही उधर**–बाहर ही बाहर, वक्ताके पास न आकर ।

उधरना*–अ० क्रि० उद्धार होना; दे० ‘उधड़ना’ । स० क्रि० उद्धार करना ।

उधराना*–अ० क्रि० तितर-बितर होना, बिखरना; उड़ जाना; गायब हो जाना ।

उधार–पु० कर्ज; मँगनी; *उद्धार । **–पट्टा अधिनियम**–पु० (लैंड एंड लीज ऐक्ट) द्वितीय महायुद्धके समय अमेरिका द्वारा प्रवर्तित अधिनियम जिसके अनुसार वह युद्धलिप्त मित्र राष्ट्रोंको आवश्यक सामग्री या सैनिक महत्वके अड्डे उधार अथवा पट्टेपर देता था और उनसे भी इसी प्रकार सहायता प्राप्त करता था । **मु०–खाना**–कर्जपर गुजर करना । **–खाये बैठना**–किसी बातपर तुल जाना; किसी चीजके आसरे रहना ।

उधारक, उधारन*–वि०, पु० उद्धार करनेवाला ।

उधारना*–स० क्रि० उद्धार करना ।

उधारी*–वि०, पु० दे० ‘उधारक’ ।

उधेड़ना–स०क्रि० खोलना, तोड़ना (सीवन, टाँका आदि); उखाड़ना; अलग करना; बिखेरना । **मु० उधेड़कर रख देना**–कच्चा चिट्ठा खोल देना; सब दोष, बुराई उघट देना ।

उधेड़-बुन–पु० सोच-विचार, चिंता; उलझन ।

उधेरना*–स० क्रि० दे० ‘उधेड़ना’ ।

उनंत*–वि० झुका हुआ, नमित ।

उनइस*–वि०, पु० दे० ‘उन्नीस’ ।

उनचन–स्त्री० उंचन, अदवान ।

उनचास–वि० चालीस और नौ, ४९ । पु० ४९ की संख्या ।

उनतीस–वि० बीस और नौ, २९ । पु० २९ की संख्या ।

उनदा, उनदौंहा*–वि० उनींदा ।

उनमत, उनमद*–वि० उन्मत्त; मस्त, मतवाला ।

उनमना*–वि० अनमना, उदास ।

उनमाथना*–स० क्रि० मथना ।

उनमाथी*–वि० मथनेवाला ।

उनमाद*–पु० दे० 'उन्माद' ।

उनमान*–पु० अनुमान, अंदाजा; भाव; थाह; सामर्थ्य । वि० सदृश, अनुरूप ।

उनमानना*–स० क्रि० अनुमान करना; सोचना ।

उनमीलन*–पु० दे० 'उन्मीलन' ।

उनमुना*–वि० चुप, खामोश ।

उनमुनी*–स्त्री० दे० 'उन्मनी' ।

उनमूलना*–स० क्रि० उखाड़ना; नष्ट करना ।

उनमेख*–पु० दे० 'उन्मेष' ।

उनमेखना*–अ० क्रि० विकसित होना; आँख खुलना ।

उनमेद–पु० प्रथम वर्षासे उत्पन्न जहरीला फेन, माँजा ।

उनमोचन*–पु० मुक्त करना; दूर करना ।

उनयना*–अ० क्रि० दे० 'उनवना' ।

उनरना*–अ० क्रि० उमड़ना; उठना; कूदते हुए चलना; उछलना ।

उनवना*–अ० क्रि० झुकना; गिरना; घहराना, ऊपर आना ।

उनवर*–वि० तुच्छ; कम ।

उनवान*–पु० अनुमान, खयाल ।

उनसठ–वि० पचास और नौ, ५९ । पु० ५९की संख्या ।

उनहत्तर–वि० साठ और नौ, ६९ । पु० ६९की संख्या ।

उनहानि*–स्त्री० दे० 'उन्हानि' ।

उनहार*–वि० दे० 'अनुहार' ।

उनहारि*–स्त्री० अनुरूपता, समानता ।

उनाना*–स० क्रि० झुकाना; लगाना; सुनना, आज्ञा मानना ।

उनारना*–स०क्रि० उठाना; उकसाना; खसकाना, बढ़ाना –'ज्योति बढ़ावत दशा उनारि'–राम० ।

उनासी*–वि०, पु० दे० 'उन्नासी' ।

उनींदा–वि० नींदसे भरा हुआ, ऊँघता हुआ ।

उन्नइस*–वि०, पु० दे० 'उन्नीस' ।

उन्नत–वि० [सं०] उठा हुआ; ऊँचा; आगे बढ़ा हुआ; श्रेष्ठ; विद्या, कला आदिमें आगे बढ़ा हुआ; सभ्य ।

उन्नति–स्त्री० [सं०] ऊँचाई; बढ़ती; तरक्की; गरुड़की पत्नी । **–शील**–वि० आगे बढ़ने या उसका यत्न करनेवाला ।

उन्नतोदर–पु० [सं०] वृत्त-खंड आदिका उठा हुआ अंश । वि० जिसका उदर या मध्यवर्ती भाग उठा हो । **–बहुभुज**–पु० (कानवेक्स) वह बहुभुज जिसका कोई भी कोण पुनर्युक्त कोण न हो ।

उन्नयन–पु० [सं०] उठाना, उन्नतिकी ओर ले जाना; निकालना; खींचना (पानी); रेखा या सीमंत बनाना (गर्भवती स्त्रीका) । वि० जिसकी आँखें ऊपर उठी हों । **–यंत्र**–पु० दे० 'उत्थानक' ।

उन्नाब–पु० एक तरहका सूखा बेर जो दवाके काम आता है ।

उन्नायक–वि० [सं०] ऊपर उठानेवाला, उन्नति करानेवाला ।

उन्नासी–वि० सत्तर और नौ, ७९ । पु० ७९की संख्या ।

उन्निद्र–वि० [सं०] जिसे नींद न आती हो; पूर्णतः विकसित । पु० निद्रा न आनेका एक रोग ।

उन्नीस–वि० दस और नौ, १९; कम; छोटा; घटकर । पु० १९की संख्या । **–बिस्वे**–अ० अधिकतर, प्रायः । **मु०–बीस होना**–कम-बेश होना, (एक दूसरेसे) कुछ घट-बढ़कर होना, लगभग बराबर होना; भला-बुरा होना । **–होना**–घटना, कुछ कम होना ।

उन्नैना*–अ० क्रि० झुकना ।

उन्मत्त–वि० [सं०] नशेमें चूर, मतवाला; पागल, सनकी । **–प्रलाप**–पु० पागलकी बहक; मतवालेकी बकवास; अर्थ-संगति-रहित बातें ।

उन्मद–वि० [सं०] मतवाला; पागल; उन्मत्त करनेवाला ।

उन्मन*–वि० दे० 'उन्मना' ।

उन्मना(नस्)· वि० [सं०] उद्विग्न; उत्कंठायुक्त; अन्यमनस्क; उदास ।

उन्मनी–स्त्री० [सं०] हठयोगकी पाँच मुद्राओंमेंसे एक ।

उन्माद–पु० [सं०] पागलपन, सनक; एक संचारी भाव । **–ग्रस्त**–वि० उन्माद रोगसे पीड़ित, पागल ।

उन्मादक–वि० [सं०] उन्मत्त करनेवाला । पु० धतूरा ।

उन्मादन–पु० [सं०] उन्माद उत्पन्न करना, उन्मत्त करना; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक ।

उन्मादी(दिन्)–वि० [सं०] उन्मादग्रस्त; उन्मत्त ।

उन्मार्गी(गिन्)–वि० [सं०] कुमार्गगामी, पथ-भ्रष्ट ।

उन्मीलन–पु० [सं०] खुलना (आँखका); खिलना; विकसित होना ।

उन्मीलना*–स० क्रि० विकसित करना; खोलना ।

उन्मीलित–वि० [सं०] खुला हुआ; खिला हुआ; अंकित । पु० एक काव्यालंकार जहाँ दो वस्तुओंमें, बहुत सादृश्य होनेके कारण, भेद करना कठिन होने पर भी किसी एक बातसे भेद करना संभव हो सके, जैसे 'हिमगिरि तो यशसों मिल्यो छुए परत है जान' ।

उन्मुक्त–वि० [सं०] बंधनरहित, आजाद; मुक्त किया हुआ । **–पोताश्रय**–पु० (फ्री पोर्ट) वह बंदरगाह जहाँ व्यापारिक वस्तुओंपर किसी तरहका कर, चुंगी आदि नहीं लगायी जाती–जो सब राष्ट्रोंके व्यापारके लिए समान रूपसे खुला हो ।

उन्मुक्ति–स्त्री० [सं०] (इम्यूनिटी) कर देने, किसी कर्तव्यके पालन या रोगके आक्रमणकी संभावना आदिसे मुक्ति, विमुक्ति ।

उन्मुख–वि० [सं०] जिसका मुख या दृष्टि ऊपरकी ओर हो; उद्यत; ···की ओर जाता हुआ (पतनोन्मुख); उत्कंठित ।

उन्मूलन–पु० [सं०] जड़ उखाड़ देना; जड़-मूलसे नाश करना (अपरूटिंग); अस्तित्व मिटाना, परिसमाप्ति (अबॉलिशन) ।

उन्मूलित–वि० [सं०] उखाड़ा हुआ; मिटाया हुआ ।

उन्मेष–पु० [सं०] खुलना (आँखका); खिलना; स्फुरण; प्रकाश; दीप्ति ।

उन्मोचन–पु० [सं०] खोलना; ढीला करना; (डिसचार्ज) (सजा पूरी हो जाने पर) कैद या बंधनसे मुक्त कर देना;

ऋणादि चुका देना ।

उन्हानि*–स्त्री० बराबरी ।

उन्हारि*–स्त्री० दे० 'उनहारि' ।

उपंग*–पु० एक तरहका बाजा; उद्धवके पिता ।

उपंत*–वि० उत्पन्न ।

उप–उप० [सं०] यह शब्दोंके पूर्व आकर समीपता (उपनयन, उपकूल), आरंभ (उपक्रम), सामर्थ्य (उपकार), छुटाई, गौणता (उपमंत्री, उपपुराण) इत्यादिका द्योतन करता है ।

उपकंठ–वि. [सं०] पास, समीप । पु० सामीप्य; ग्रामकी सीमाके भीतरका स्थान ।

उपकथा–स्त्री० [सं०] छोटी कहानी ।

उपकनिष्ठिका–स्त्री० [सं०] कानी उँगलीके पासकी उँगली, अनामिका ।

उपकर–पु० [सं०] (सेस) एक तरहका छोटा कर जो विविध वस्तुओंपर विभिन्न स्थितियोंमें लगाया जाता है ।

उपकरण–पु० [सं०] उपकार करना; साधन; औजार; सामग्री; राजाओंके छत्र, चँवर आदि ।

उपकरना*–स० क्रि० उपकार करना ।

उपकर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] उपकार करनेवाला ।

उपकल्पना–स्त्री० [सं०] (हाइपॉथेसिस) कोई बात सिद्ध करनेके लिए पहलेसे ही कुछ मान लेना, जो बात प्रमाणित की जा सकती हो या जिसके सत्य होनेकी संभावना हो उसकी कल्पना पहलेसे कर लेना ।

उपकार–पु० [सं०] भलाई; हित-साधन; सहायता; लाभ । [**–मानना**–एहसान मानना; कृतज्ञता-प्रकाश करना ।]

उपकारक–वि० [सं०] भलाई करनेवाला; लाभदायक ।

उपकारी (रिन्)–वि० [सं०] उपकारक; लाभदायक ।

उपकुलपति–पु० [सं०] (प्रो-वाइस-चांसलर) किसी विश्वविद्यालयका वह अधिकारी जो कुलपतिका मातहत होता है और जो व्यवस्था-संबंधी तथा अन्य कार्योंमें उसकी सहायता करता है ।

उपकृत–वि० [सं०] जिसका उपकार किया गया हो, एहसानमंद ।

उपकृति–स्त्री० [सं०] उपकार, भलाई ।

उपक्रम–पु० [सं०] निकट जाना; आरंभ; लेख या भाषणका उठान, प्रस्तावना; योजना; साहस । **–और जननिर्देश**–पु० (इनीशियेटिव एंड रेफरेंडम) कोई विधि या अधिनियम बनानेके लिए जनता द्वारा स्वयं उपक्रमण किया जाना तथा किसी महत्त्वपूर्ण प्रश्नके संबंधमें समस्त जनताका मत लिया जाना–जनताका वास्तविक मत जाननेके ये दो उपाय ।

उपक्रमणिका–स्त्री० [सं०] प्रस्तावना; विषय-सूची ।

उपक्रमी(मिन्)–पु० [सं०] (एण्टरप्रेन्यूर) किसी कारखाने या उद्योगका वास्तविक नियंत्रण करनेवाला व्यक्ति ।

उपक्षेप–पु० [सं०] किसीकी ओर फेंकना; चर्चा; संकेत; आक्षेप; अभिनयके आरंभमें कथावस्तुका संक्षेपमें कथन ।

उपखंड–पु० [सं०] (विधानकी) किसी धारा या उपधाराके खंडका कोई विभाग (सबक्लॉज) ।

उपखान*–पु० दे० 'उपाख्यान' ।

उपगत–वि० [सं०] पास आया या गया हुआ; घटित; प्राप्त; जाना हुआ; स्वीकृत; प्रतिज्ञात; गत; मृत ।

उपगति–स्त्री० [सं०] जानना; प्राप्ति; अंगीकार करना ।

उपगार*–पु० दे० 'उपकार' ।

उपगारी*–वि० दे० 'उपकारी' ।

उपग्रह–पु० [सं०] बड़े ग्रहकी परिक्रमा करनेवाला छोटा ग्रह; गिरफ्तारी; कैद; कैदी; पराजय । **–संधि**–स्त्री० विजेताको सब कुछ देकर की जानेवाली संधि ।

उपघात–पु० [सं०] आघात; नाश; इंद्रियोंकी असमर्थता; आक्रमण; रोग; पाप ।

उपचय–पु० [सं०] इकट्ठा होना; चयन; वृद्धि; उन्नति; लग्नसे तीसरा, छठा, दसवाँ या ग्यारहवाँ स्थान ।

उपचर्या–स्त्री० [सं०] सेवा; उपचार, इलाज ।

उपचार–पु० [सं०] सेवा; इलाज, चिकित्सा; विधान; पूजानुष्ठान; पूजाके अंग या द्रव्य (षोडशोपचार पूजा); शिष्टाचार; चापलूसी; रस्मी व्यवहार ।

उपचारक–वि० [सं०] इलाज करनेवाला; सेवा, टहल करनेवाला; विधान करनेवाला ।

उपचारना*–स० क्रि० व्यवहार करना; विधान करना ।

उपचारी(रिन्)–वि० [सं०] दे० 'उपचारक' ।

उपचेतना–स्त्री० [सं०] अर्द्ध चेतनावस्था ।

उपज–स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार; सूझ; मनगढ़ंत बात; गानेमें कोई नयी तान लगाना ।

उपजत*–स्त्री० पैदावार ।

उपजना–अ० क्रि० उत्पन्न होना; उगना; सूझना ।

उपजाऊ–वि० जिसमें अधिक उपजे, जरखेज; सूझवाला ।

उपजाति–स्त्री० [सं०] इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवंशा और वंशस्थके मेलसे बननेवाले वर्णवृत्त; जातिका कोई उपभेद ।

उपजाना–स० क्रि० उत्पन्न करना ।

उपजिह्वा, उपजिह्विका–स्त्री० [सं०] जीभके मूलमें स्थित छोटी जीभ, घंटिका; एक कीट ।

उपजीवक, उपजीवी(विन्)–वि० [सं०]……से जीविका करनेवाला, जीविकाके लिए दूसरेपर आश्रित ।

उपजीविका–स्त्री० [सं०] जीवननिर्वाहका साधन; वृत्ति, व्यवसाय ।

उपज्ञा–स्त्री० [सं०] अन्तःकरणमें अपने आप उपजा हुआ, अनुपदिष्ट ज्ञान; आद्य ज्ञान; दे० उद्भाव (इनवेंशन) ।

उपज्ञात–वि० [सं०] बिना किसीके बताये जाना हुआ, मनमें उपजा हुआ; अज्ञातपूर्व; आविष्कृत ।

उपटन–पु० आघात आदिका चिह्न; उबटन ।

उपटना–अ० क्रि० निशान पड़ना; उभरना; उखड़ना ।

उपटाना*–स० क्रि० उखाड़ना; उखड़वाना; उबटन लगाना या लगवाना ।

उपटारना*–स० क्रि० उचाटना–'मधुबनतें उपटारि स्याम कहँ'…सू०; उठाना; हटाना ।

उपत्यका–स्त्री० [सं०] पहाड़के पासकी जमीन, तराई, घाटी ।

उपदंश–पु० [सं०] चाट; गरमीकी बीमारी, आतशक ।

उपदिशा–स्त्री० [सं०] अंतर्दिशा, कोण ।

उपदिष्ट–वि० [सं०] उपदेश किया हुआ; सिखाया हुआ।

उपदेव, उपदेवता–पु० [सं०] छोटा देवता (यक्ष, गंधर्वादि)।

उपदेश–पु० [सं०] शिक्षा, सीख; नेकसलाह; दीक्षा; निर्देश।

उपदेशक–वि०, पु० [सं०] उपदेश करनेवाला, सीख देनेवाला; घूम-घूमकर प्रचार करनेवाला।

उपदेष्टा (ष्टृ)–वि०, पु० [सं०] दे० 'उपदेशक'।

उपदेस*–पु० दे० 'उपदेश'।

उपदेस(श)ना*–स० क्रि० शिक्षा या सलाह देना।

उपद्रव–पु० [सं०] उत्पात; सार्वजनिक संकट या आपत्ति (अतिवर्षण, विप्लव आदि); दंगा-फसाद, बखेड़ा; एक रोगके बीचमें होनेवाला दूसरा गौण रोग; उपसर्ग।

उपद्रवी(विन्)–वि० [सं०] उपद्रव करनेवाला, उत्पाती।

उपद्वार–पु० [सं०] छोटा, बगलका दरवाजा।

उपद्वीप–पु० [सं०] छोटा टापू।

उपधरना*–स० क्रि० अपनाना; सहारा देना।

उपधर्म–पु० [सं०] गौण धर्म।

उपधा–स्त्री० [सं०] छल; दंगा-फरेब; ईमानदारीकी परीक्षा।

उपधातु–स्त्री० [सं०] अप्रधान या अर्ध धातु, मिश्र धातु (ये सात हैं–सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, कांसा, मुर्दासंख, सेंदुर और सिलाजीत); शरीरस्थ सात धातुओंसे उत्पन्न सात गौण धातुएँ–दूध, रज, चर्बी, पसीना, दाँत, केश और ओज।

उपधान–पु० [सं०] वह वस्तु जिसका सहारा लिया जाय; तकिया।

उपधारा–स्त्री० (सब-सेक्शन) किसी अधिनियम आदिके अंतर्गत उसका कोई विभाग या उपांग।

उपनगर–पु० [सं०] नगरका बाहरी भाग, शहरसे सटी हुई या उसके डाँड़ेपरकी बस्ती, शाखानगर (सबर्ब)।

उपनना*–अ० क्रि० उपजना।

उपनय–पु० [सं०] प्राप्ति; नियुक्ति; पास ले जाना; गुरुके पास ले जाना; उपनयन संस्कार; वाक्यके पाँच अवयवोंमेंसे चौथा (न्या०)।

उपनयन–पु० [सं०] पास ले जाना; यज्ञोपवीत संस्कार।

उपना*–अ० क्रि० उत्पन्न होना–'...सुनि हरि हिय गरब गूढ़ उपयो है'–गीता०।

उपनागरिका–स्त्री० [सं०] वृत्त्यनुप्रासकी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें श्रुतिमधुर वर्ण बार-बार आते हैं और समास नहीं होते, यदि होते हैं तो छोटे होते हैं।

उपनाना*–स० क्रि० उपजाना, पैदा करना।

उपनाम(न्)–पु० [सं०] गौण नाम; पुकारनेका नाम; पदवी; लेख-कविता आदिमें व्यवहृत छोटा नाम, तखल्लुस।

उपनायक–पु० [सं०] गौण या अप्रधान नायक; नाटक आदिमें वह पात्र जो नायकका प्रधान सहायक हो।

उपनायिका–स्त्री० [सं०] नायिकाकी प्रधान सहायिका।

उपनिधि–स्त्री० [सं०] धरोहर, अमानत; मुहरबंद अमानत। **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० दूसरेकी धरोहरको स्वयं व्यवहारमें लानेवाला मनुष्य।

उपनियम–पु० [सं०] गौण नियम (सबरूल); म्युनिसिपल बोर्ड, रेलवे कंपनी आदिके बनाये हुए नियम (बाई-ला)।

उपनिर्वाचन–पु० [सं०] (बाई-इलेक्शन) मृत्यु या अन्य कारणसे विधानसभा, नगरपालिका आदिके किसी सदस्यका या किसी पदाधिकारी आदिका स्थान रिक्त हो जानेपर होनेवाला चुनाव।

उपनिवेश–पु० [सं०] दूसरे देशसे आये हुए लोगोंकी बस्ती; विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्रके लोग आकर बस गये हों (कालोनी)। **–पद**–पु० स्वतंत्र उपनिवेशोंका दरजा; उस प्रकारका स्वराज्य या स्वतंत्रता जो उन्हें प्राप्त है (डोमिनियन स्टेटस)।

उपनिवेशन–पु० [सं०] (कोलोनिजेशन) अन्य देशोंमें जाकर अपनी बस्ती या उपनिवेश बसानेकी क्रिया।

उपनिवेशित–वि० [सं०] उपनिवेश बनाया हुआ।

उपनिवेशी (शिन्)–वि० [सं०] दूसरे देशमें बस जानेवाला, उपनिवेशवासी, आबादकार।

उपनिषत्–स्त्री० [सं०] वेदोंका ज्ञानकांड माने जानेवाले ब्रह्मविद्या-प्रतिपादक ग्रंथविशेष; वेदरहस्य; ब्रह्मज्ञान।

उपनीत–वि० [सं०] पास लाया हुआ; जिसका उपनयन हुआ हो।

उपनेता(तृ)–वि०, पु० [सं०] पास ले जानेवाला; उपनयन करानेवाला (गुरु); नेताका नायब या सहकारी।

उपनौकाध्यक्ष–पु० [सं०] (वाइस-एडमिरल) नौ-सेनाका वह अधिकारी जो प्रधान नौकाध्यक्षके ठीक नीचे काम करता हो।

उपन्यास–पु० [सं०] धरोहर, अमानत; वाक्यका उपक्रम; संधिका एक प्रकार; कल्पित और काफी लंबी कहानी (नावेल)। **–कार**–पु० उपन्यास लिखनेवाला।

उपपंजीयक–पु० [सं०] (सबरजिस्ट्रार) पंजीयनका काम करनेवाला मातहत अधिकारी।

उपपति–पु० [सं०] परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला पुरुष, यार।

उपपत्ति–स्त्री० [सं०] घटित होना; प्रकट होना; उत्पन्न होना; हेतु, युक्ति; सिद्धिमें युक्ति-प्रमाण देना; सिद्धि, प्रतिपादन; समाधान; सहारा; प्रमाण (ग०); उपयुक्तता।

उपपत्नी–स्त्री० [सं०] रखेली।

उपपद समास–पु० [सं०] कृदंतके साथ हुआ नाम (संज्ञा) का समास (कुंभकार, घरफूँक आदि)।

उपपन्न–वि० [सं०] युक्तियुक्त; संभव; सिद्ध किया हुआ; योग्य; युक्त; पूर्ण; प्राप्त; नीरोग किया हुआ; (एक्सपीडियेंट) अवसरकेउपयुक्त, सुविधाजनकया लाभकारी, समयोचित।

उपपातक–पु० [सं०] छोटा पाप।

उपपादन–पु० [सं०] युक्ति देकर सिद्ध करना, सम्यक् प्रतिपादन; संपादन; (इंडक्शन) किसी पदार्थको विद्युत् या चुंबक-शक्तिसे युक्त वस्तुके सन्निकट ले जाकर उसमें भी विद्युत् या चुंबक शक्ति उत्पन्न कर देना।

उपपादित–वि० [सं०] प्रमाणित, सिद्ध किया हुआ; पूरा किया हुआ।

उपपाद्य–वि० [सं०] उपपादन करने योग्य; जिसे तर्कसे सिद्ध करना हो।

उपपुर–पु० [सं०] उपनगर।

उपपुराण–पु० [सं०] छोटा या गौण पुराण; व्यासोक्त

अठारह पुराणोंसे भिन्न, अन्य मुनियोंके रचे पुराण।

उपप्रश्न–पु० [सं०] प्रश्नके अंदर पैदा होनेवाला प्रश्न।

उपप्लव–पु० [सं०] उत्पात, उपद्रव; भौतिक दुर्घटना; पीड़न; विघ्न; (इनसरेक्शन) राजसत्ता या सरकारके प्रति छोटे पैमानेपर किया गया या आरंभिक अवस्थाका विद्रोह।

उपबंध–पु० [सं०] संबंध; संयोग; (प्रोविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिके वे खंड या उपखंड जिनमें किसी बातकी संभावना आदिको ध्यानमें रखते हुए पहलेसे कोई प्रबंध या गुंजाइश रख दी जाय; इस तरह रखी गयी गुंजाइश या गुंजाइश रखनेकी क्रिया।

उपबंधित–वि० [सं०] (प्रोवाइडेड) उपबंधके अनुरूप, उपबंधमें निर्दिष्ट।

उपबरहन*–पु० दे० 'उपबर्हण'।

उपबर्ह, उपबर्हण–पु० [सं०] दबाना; तकिया।

उपबाहु–पु० [सं०] हाथका बाहुसे नीचे (कुहनीसे कलाईतक)का भाग, पहुँचा।

उपभुक्त–वि० [सं०] भोगा, काममें लाया हुआ; जूठा।

उपभूमि–स्त्री० [सं०] (सब-सॉइल) भूमिके ऊपरी भाग या तलके नीचेका स्तर।

उपभेद–पु० [सं०] गौण भेद, उपविभाग।

उपभोक्ता(क्तृ)–वि० [सं०] उपभोग करनेवाला; बरतनेवाला; काबिज।

उपभोग–पु० [सं०] भोगना; सुख, स्वाद लेना; बरतना; विषय-सुख।

उपभोग्य–वि० [सं०] भोगने, व्यवहार करने योग्य। पु० भोगकी वस्तु। **–वस्तुएँ**–स्त्री० (कंज्यूमर्स गुड्स) मनुष्यके उपभोग या काममें आनेवाली आवश्यक वस्तुएँ–जैसे गल्ला, कपड़ा आदि।

उपभोज्य–वि० [सं०] खाने योग्य।

उपमंत्री(त्रिन्)–पु० [सं०] सहायक मंत्री।

उपमा–स्त्री० [सं०] समता, तुलना; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें दो वस्तुओंमें भेद होते हुए भी धर्मगत समता दिखायी जाती है।

उपमाता(तृ)–वि० [सं०] उपमा देनेवाला। स्त्री० धाय; मातृतुल्य संबंधिनी–मौसी, चाची आदि।

उपमान–पु० [सं०] वह वस्तु जिससे किसीकी तुलना की जाय। **–लुप्ता**–स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद।

उपमाना*–स० क्रि० तुलना करना।

उपमित–वि० [सं०] जिसकी किसीसे उपमा दी गयी हो। पु० कर्मधारय समासका एक भेद।

उपमिति–स्त्री० [सं०] सादृश्य, पटतर; सादृश्यसे होनेवाला ज्ञान (न्या०)।

उपमेय–वि० [सं०] उपमा देने योग्य। पु० वह वस्तु जिसकी किसीसे तुलना की जाय, वर्ण्य।

उपमेयोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अऌंकारका एक भेद जिसमें उपमेयकी उपमा उपमानसे और उपमानकी उपमेयसे दी गयी हो।

उपयंत्र–पु० [सं०] छोटा यंत्र या औजार।

उपयाचित–वि० [सं०] प्रार्थित, निवेदित।

उपयुक्त–वि० [सं०] उपयोगमें लाया हुआ; प्रयुक्त; उचित, ठीक, मौजूँ; योग्य; अनुकूल।

उपयोग–पु० [सं०] व्यवहार, काम लेना; लाभ; उपयुक्तता; प्रयोग; दवा देना या तैयार करना।

उपयोगिता–स्त्री० [सं०] उपयोगी होना, उपयुक्तता। **–वाद**–पु० अधिकसे अधिक लोगोंका अधिकसे अधिक हितसाधन धर्म है–यह मत (यूटिलिटेरियनिज्म)। **–वादी(दिन्)**–पु० उपयोगितावादका अनुयायी।

उपयोगी(गिन्)–वि० [सं०] काममें आनेवाला, कारामद; लाभजनक; काममें आनेवाला।

उपरंजक–वि० [सं०] रँगनेवाला; प्रभाव डालनेवाला।

उपरंजन–पु० [सं०] रँगना; पासकी चीजपर अपना रंग या असर डालना।

उपरक्त–वि० [सं०] विषयासक्त; पीड़ित; जिसे ग्रहण लगा हो; रंजित; जिसमें उपाधिके सान्निध्यसे उसके गुणकी प्रतीति होती हो।

उपरत–वि० [सं०] विरक्त, रागरहित; निवृत्त।

उपरति–स्त्री० [सं०] विषय-भोगसे विरक्ति; उदासीनता।

उपरत्न–पु०[सं०] घटिया किस्मके रत्न (सीप, स्फटिक इ०)।

उपरना–पु० दुपट्टा, उत्तरीय। * अ० क्रि० उखड़ना।

उपरफट, उबरफट्ट–वि० ऊपरी; बाहरी; निष्प्रयोजन, बेकार; नियमितके अलावा।

उपरस–पु० [सं०] पारेके सदृश गुणवाले पदार्थ–गंधक, अभ्रक, मैनसिल, गेरू आदि; गौण भाव।

उपरांत–अ० [सं०] अनंतर, बाद।

उपराग–पु०[सं०] रंग; लाली; चंद्र-सूर्य-ग्रहण; विषयासक्ति; निकटस्थ वस्तुके प्रभावसे रंग-रूप बदलना (सांख्य०)।

उपरा-चढ़ी–स्त्री० एक दूसरेसे बढ़ जानेकी कोशिश, प्रतिस्पर्धा, लाग-डाट।

उपराज–पु० [सं०] राजाका नायब, राजप्रतिनिधि (वाइसराय)। * स्त्री० उपज, पैदावार।

उपराजदूत, उपराजप्रतिनिधि–पु० [सं०] (लिगेट) अन्य देशमें रहनेवाला किसी राज्य या राष्ट्रका वह कूटनीतिक मंत्री या प्रतिनिधि जिसे अभी मुख्य राजदूतका पद प्राप्त न हुआ हो।

उपराजदूतावास–पु० [सं०] (लिगेशन) उपराजदूतका निवासस्थान।

उपराजना*–स० क्रि० उत्पन्न करना, उपजाना; बनाना; उपार्जन करना।

उपराजसंरक्षक–पु० [सं०] (वाइस रीजेंट) राजसंरक्षककी अनुपस्थितिमें उसका काम सम्हालनेवाला।

उपराना*–अ० क्रि० ऊपर आना; उतराना। स० क्रि० ऊपर करना, उठाना।

उपराम–पु० [सं०] उपरति; निवृत्ति; त्याग।

उपराला*–पु० सहायता; बचाव; पक्षग्रहण।

उपरावटा*–वि० जो सिर ऊपर किये हुए हो, अकड़ता हुआ।

उपराष्ट्रपति–पु० [सं०] (वाइस प्रेसीडेंट) गणतंत्रका वह निर्वाचित पदाधिकारी जो राष्ट्रपतिकी अनुपस्थिति, बीमारी आदिके समय उसके कार्योंका निर्वाहन करता है (भारतमें

यह पदेन राज्यपरिषद्का सभापति होता है)।

उपराहना*–स० क्रि० प्रशंसा करना।

उपराहीं*–अ० ऊपर। वि० बढ़कर।

उपरि–अ० [सं०] ऊपर; उपरांत। **–कथित**–वि० ऊपर कहा गया, उपर्युक्त।

उपरी-उपरा*–पु० चढ़ा-ऊपरी।

उपरूपक–पु०[सं०] गौण रूपक जो १८ प्रकारका होता है।

उपरैना*पु० दे० 'उपरना।

उपरैनी*–स्त्री० ओढ़नी।

उपरोक्त–वि० ऊपर कहा हुआ (उपर्युक्तका अशुद्ध रूप)।

उपरोध–पु० [सं०] रोक, बाधा; घेरना; ढकना।

उपरोधक–वि० [सं०] उपरोध करनेवाला। पु० भीतरका कमरा।

उपरोधी(धिन्)–वि० [सं०] उपरोध करनेवाला।

उपरोहित†–पु० दे० 'पुरोहित'।

उपरोहिती†–स्त्री० दे० 'पुरोहिती'।

उपरौटा–पु० किसी चीजका ऊपरका पल्ला।

उपरौना*–पु० दे० 'उपरना'।

उपर्युक्त–वि० [सं०] ऊपर या पहले कहा हुआ।

उपल–पु० [सं०] पत्थर; रत्न; ओला; बादल।

उपलक्षित–वि० [सं०] लक्ष्य किया हुआ; अनुमान किया हुआ; इशारेसे बतलाया हुआ।

उपलक्ष्य–वि० [सं०] अनुमान करने योग्य; लक्ष्य करने योग्य। पु० सहारा; अनुमान; संकेत; उद्देश्य। **–में**–निमित्तसे (विवाहके उपलक्ष्यमें)।

उपलब्ध–वि० [सं०] मिला हुआ, प्राप्त; ज्ञात।

उपलब्धा(ब्धृ)–वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला; अनुभव करनेवाला। पु० आत्मा।

उपलब्धि–स्त्री०[सं०] प्राप्ति; अनुभव; ज्ञान; प्रत्यक्ष ज्ञान; (एव्हेलेबिलिटी; सप्लाई) किसी पण्यवस्तुकी वह संख्या या परिमाण जो बाजारमें खरीदने या माँगकी पूर्ति करनेके लिए किसी समय प्राप्य हो; (इमाल्यूमेंट) किसी पदपर काम करनेसे वेतन, परिश्रम आदिके-रूपमें मिलनेवाला लाभ; (अचीव्हमेंट) प्राप्त की गयी सफलता 'लोगोंको अपने पूर्वजोंकी उपलब्धियोंपर गर्व हो रहा था'–भारतका वैधानिक विकास।

उपलभ्य–वि० [सं०] मिलने योग्य, प्राप्य; सम्मान्य।

उपला–पु० गोहरा। स्त्री० [सं०] शर्करा।

उपली–स्त्री० गोहरी, चिपड़ी।

उपलेपन–पु० [सं०] लेप लगाना; लेपकी सामग्री।

उपल्ला–पु० ऊपरकी पर्त, भितल्लाका उलटा।

उपवन–पु० [सं०] बगीचा, उद्यान।

उपवना*–अ० क्रि० उड़ जाना, अदृश्य हो जाना; उदय होना।

उपवाक्य–पु०[सं०] बड़े वाक्यके भीतर आया हुआ छोटा वाक्य (क्लॉज)।

उपवाणिज्यदूत–पु० [सं०] (प्रोकॉन्सल) किसी देशके व्यापार वाणिज्य-संबंधी हितोंकी निगरानीके लिए अन्य देशमें नियुक्त वाणिज्यदूतके अधीन काम करनेवाला छोटा दूत जो प्रायः राजधानीके अतिरिक्त अन्य महत्त्वके व्यापारिक केंद्रोंमें रहकर काम करता है।

उपवास–पु० [सं०] भोजनका त्याग या अप्राप्ति, फाका; व्रत-रूपमें भोजनका त्याग।

उपवासक–वि० [सं०] उपवास करनेवाला।

उपवासी (सिन्)–वि० [सं०] उपवास करनेवाला।

उपविद्या–स्त्री० [सं०] गौण विद्या; लौकिक विद्या।

उपविधि–स्त्री० [सं०] (बाई-ला) किसी विधिके अंतर्गत बनायी गयी छोटी विधि; किसी नगर-पालिका या निगम आदि द्वारा निर्मित विधि।

उपविष–पु० [सं०] कृत्रिम या हलके विष (मदार, धतूरा इ०)।

उपविष्ट–वि० [सं०] बैठा हुआ; प्रविष्ट (किसी अवस्थामें)।

उपवीत–पु० [सं०] जनेऊ; उपनयन संस्कार।

उपवेद–पु० [सं०] वेदोंसे निकली लौकिक विद्याएँ–आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और स्थापत्यवेद।

उपवेशन–पु० [सं०] दे०बैठना, जमना; बैठाना; (सिटिंग) सभाकी बैठक होती रहना, बैठक होती रहनेकी स्थिति।

उपवेशिका–स्त्री० [सं०] (लाउंज) एक तरहका सोफा या आरामसे लेटने, बैठनेकी कुरसी।

उपवेशित–वि० [सं०] बैठाया हुआ।

उपवेशी (शिन्),उपवेष्टा(ष्टृ)–वि०[सं०] बैठनेवाला।

उपव्याघ्र–पु० [सं०] चीता।

उपशम–पु० [सं०] शांत होना; तृष्णा, वासनाका नाश; इंद्रिय-निग्रह; रोगकी पीड़ाका घटना; निवृत्ति; उपाय।

उपशमन–पु०[सं०] शांत करना; तुष्ट करना; निवारण; दबाना; घटाना; लुप्त होना; शूल-नाशक औषध।

उपशिक्षक–पु० [सं०] सहायक शिक्षक, नायब मुदर्रिस।

उपशिष्य–पु० [सं०] शिष्यका शिष्य।

उपशीर्षक–पु० [सं०] छोटा शीर्षक, मुख्य शीर्षकके नीचे या बीचमें आनेवाला शीर्षक।

उपशुल्क–पु० [सं०] (रेंट) स्थानीय आवश्यकताओंकी दृष्टिसे नगरपालिका आदि स्थानीय संस्थाओं द्वारा लिया जानेवाला कर, उपकर।

उपसंक्षेप–पु० [सं०] (ऐब्सट्रैक्ट) किसी विवरण, हिसाब आदिका संक्षिप्त रूप; सारांश।

उपसंपादक–पु० [सं०] सहायक संपादक, (सब-एडिटर)।

उपसंहार–पु० [सं०] समाप्ति; समेटना, बटोरना; सारांश, निचोड़; लेख आदिके अंतमें दिया जानेवाला खुलासा; पुस्तकका अंतिम अध्याय; नाश; अंत।

उपसभापति–पु० [सं०] (वाइस प्रेज़ीडेंट) किसी संस्थाका वह अधिकारी जो सभापतिकी अनुपस्थितिमें उसका स्थान ग्रहण करे।

उपसमिति–स्त्री० [सं०] (सब-कमिटी) छोटी समिति, कार्यविशेषके लिए बनी छोटी कमेटी।।

उपसर्ग–पु० [सं०] वह अव्यय जो धातु या धातुसे बने नाम (संज्ञा)के पहले लगकर उसका अर्थ बदल देता है (प्र, अव, उप, सम् आदि); भौतिक या दैवी उपद्रव; एक रोगके बीचमें उत्पन्न दूसरा गौण रोग; उपद्रव; अपशकुन, मृत्युसूचक चिह्न; प्रेतबाधा।

उपसागर–पु० [सं०] चौड़े मुँहकी खाड़ी, आखात।

उपसेवन-पु० [सं०] भोग; सेवन; पूजन; आदी होना।

उपस्कर-पु० [सं०] संस्कार-साधन; (सजानेकी) सामग्री; घरकी सफाई-सजावटके साधन; आभूषणादि।

उपस्करण-पु० [सं०] हिंसा करना; सजाना, सँवारना।

उपस्कृत-वि० [सं०] (फर्निश्ड) मेज, कुर्सी आदि सामानोंसे सजाया हुआ।

उपस्त्री-स्त्री० [सं०] उपपत्नी, रखेली।

उपस्थ-पु० [सं०] शरीरका मध्य भाग; पेड़ू; स्त्री या पुरुषकी जननेंद्रिय; गोद। वि० पास बैठा हुआ।

उपस्थान-पु० [सं०] पास आना; सामने आना; देवताके सामने खड़ा होकर स्तुति या आराधना करना; उपासनास्थल।

उपस्थापक-वि० [सं०] पास लाने या रखनेवाला, उपस्थित करनेवाला; सिखाने-समझानेवाला।

उपस्थापन-पु० [सं०] पास या सामने रखना; (प्रेजेंटेशन) विधान-सभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित करना; किसी अधिकारीके सामने कोई विषय उसकी स्वीकृति प्राप्त करनेके लिए रखना; उपस्थिति।

उपस्थापित करना-स० क्रि० (टु प्रेजेंट) विधान-सभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ रखना।

उपस्थित-वि० [सं०] पास या सामने आया हुआ, मौजूद, हाजिर; याद।

उपस्थिति-स्त्री० [सं०] हाजिरी, मौजूदगी, विद्यमानता।

उपहत-वि० [सं०] चोट खाया हुआ, घायल; नष्ट; दूषित, विकृत; अभिभूत; जिसपर वज्रपात हुआ हो; लांछित।

उपहसित-वि० [सं०] जिसका उपहास किया गया हो। पु० व्यंग्य-कटाक्षभरी हँसी।

उपहार-पु० [सं०] भेंट, सौगात; पूजनद्रव्य; नैवेद्य; क्षतिपूर्ति, संधिके लिए दी जानेवाली रकम।

उपहास-पु० [सं०] निंदासूचक, बनानेवाली हँसी; खिल्ली उड़ाना; निंदा, बदनामी; तमाशा।

उपहासक-वि०, पु० [सं०] उपहास करनेवाला।

उपहासास्पद-वि० [सं०] हँसने योग्य, उपहास्य।

उपहासी*-स्त्री० उपहास।

उपहास्य-वि० [सं०] उपहासके योग्य।

उपही*-पु० अजनबी, बाहरी आदमी, परदेशी-'ये उपही कोउ कुँवर अहेरी'-गीता०।

उपांग-पु० [सं०] छोटा अंग; अंगका विभाग; पूरक वस्तु; वेदांगके पूरक विषय-पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र।

उपांजन-पु० [सं०] लीपना; सफेदी करना।

उपांत-पु० [सं०] छोर, किनारा; हाशिया; आँखका कोना; सान्निध्य; अंतके पासका अक्षर। वि० अंतके पासका। **-स्थ**-वि० हाशियेपर लिखा जानेवाला।

उपांत्य-वि० [सं०] अंतके पासका, आखिरीसे पहलेका।

उपाइ, उपाउ*-पु० दे० 'उपाय'।

उपाकर्म(र्मन्)-पु० [सं०] उपक्रम; आरंभ; वेदपाठ आरंभ करनेके पहले किया जानेवाला एक संस्कार।

उपाख्यान, उपाख्यानक-पु० [सं०] छोटी कथा या कहानी; पौराणिक कहानी।

उपाटना*-स० क्रि० उखाड़ना।

उपाड़ना*-स० क्रि० दे० 'उपाटना'।

उपाती*-स्त्री० उत्पत्ति।

उपादान-पु० [सं०] ग्रहण; स्वीकार; कारण; वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने; कार्यरूप प्राप्त करनेवाला कारण; प्रयोग; उल्लेख; कथन; इंद्रियोंको विषयोंसे पृथक् करना; शरीरका प्रयत्न। **-कारण**-पु० समवायी कारण।

उपादि*-स्त्री० दे० 'उपाधि'।

उपादेय-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; प्रशस्त; उत्कृष्ट।

उपाधि-स्त्री० [सं०] छल, धोखा; विशेष लक्षण; अवच्छेदक गुण-धर्म; चिह्न; योग्यता या प्रतिष्ठा सूचित करनेवाला शब्द, पदवी। **-धारी(रिन्)**-वि० जिसे कोई उपाधि दी गयी हो।

उपाध्यक्ष-पु० [सं०] (डिप्टी चेयरमैन; डिप्टी स्पीकर) किसी सभा, संस्था, विधान-सभा आदिका वह पदाधिकारी जो अध्यक्षके सहायकके रूपमें या उसके अनुपस्थित रहनेपर उसके स्थानपर काम करता है।

उपाध्याय-पु० [सं०] शिक्षक, अध्यापक; वेद-वेदांग पढ़ानेवाला; ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि।

उपाध्याया-स्त्री० [सं०] अध्यापिका।

उपाध्यायानी-स्त्री० [सं०] गुरुपत्नी।

उपाध्यायी-स्त्री० [सं०] अध्यापिका; गुरुपत्नी।

उपानना*-स० क्रि० उत्पन्न करना।

उपानह-पु० जूता।

उपाना*-स० क्रि० उपजाना, उत्पन्न करना; करना।

उपाय-पु० [सं०] पास जाना; साधन; युक्ति, तदबीर; इलाज; यत्न।

उपायन-पु० [सं०] पास जाना; भेंट, उपहार।

उपायी(यिन्)-वि०[सं०] उपायकुशल; उपाय करनेवाला।

उपारना*-स० क्रि० उखाड़ना।

उपार्जन-पु० [सं०] कमाना; पैदा करना; हासिल करना।

उपार्जित-वि० [सं०] कमाया हुआ; प्राप्त; बटोरा हुआ।

उपालंभ, उपालंभन-पु० [सं०] उलाहना, शिकायत; निंदा।

उपाव*-पु० दे० 'उपाय'।

उपास*-पु० उपवास, फाका।

उपासक-वि०, पु० [सं०] उपासना करनेवाला, आराधक; भक्त; अनुयायी। [स्त्री० उपासिका।]

उपासन-पु० [सं०] सेवा, पूजा करना; आराधन।

उपासना-स्त्री० [सं०] सेवा, आराधना; भक्ति। * स० क्रि० आराधना करना, पूजा-सेवा करना।

उपासा-वि० जिसने उपास किया हो, निराहार।

उपासित-वि० [सं०] पूजित, आराधित।

उपासिता(तृ)-वि० [सं०] आराधक, पूजक।

उपास्य-वि० [सं०] पूजाके योग्य, आराध्य, अर्च्य।

उपाहार-पु० [सं०] जलपान, नाश्ता। **-गृह**-पु० वह स्थान या दूकान जहाँ जलपान, चाय आदिकी व्यवस्था हो, होटल।

उपेंद्र-पु० [सं०] इंद्रके छोटे भाई, वामन, विष्णु, कृष्ण। **-वज्रा**-स्त्री० एक छंद।

उपेक्षक–वि० [सं०] उपेक्षा करनेवाला; उदासीन; धीर।

उपेक्षणीय–वि० [सं०] उपेक्षा करने योग्य।

उपेक्षा–स्त्री० [सं०] अपेक्षाका उलटा, उदासीनता, अवहेलना, तिरस्कार, लापरवाही।

उपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गयी हो।

उपेक्ष्य–वि० [सं०] उपेक्षणीय।

उपेखना*–स० क्रि० उपेक्षा करना।

उपेत–वि० [सं०] मिला हुआ, प्राप्त; युक्त।

उपैना*–वि० खुला हुआ, नग्न। अ० क्रि० उड़ जाना।

उपोत्पादन–पु० [सं०] (बाई-प्राडक्ट) वह गौण उत्पादन (उत्पादित वस्तु) जो किसी अन्य मुख्य वस्तुका निर्माण करते समय अनायास तैयार हो जाय या किया जाय।

उपोद्घात–पु० [सं०] आरंभ; प्रस्तावना, भूमिका।

उपोसथ–पु० [पा०] निराहार व्रत (बौद्ध)।

उफ़–अ० [अ०] पीड़ा, पछतावा आदिका सूचक उद्गार, आह। स्त्री० आह, अफसोस।

उफड़ना*–अ० क्रि० उफनना।

उफनना, उफनाना–अ० क्रि० उबलना, जोश खाना।

उफान–स्त्री० उबाल, जोश; जोश खाकर ऊपर उठना।

उफाल–स्त्री० लंबा डग।

उबकना–अ० क्रि० कै करना।

उबकाई–स्त्री० कै, मतली।

उबट*–वि० ऊबड़-खाबड़; टेढ़ा; कठिन (रास्ता)। पु० ऊबड़-खाबड़ रास्ता।

उबटन–पु० सरसों, तिल, चिरौंजी आदिका लेप।

उबटना–अ० क्रि०, स० क्रि० उबटन लगाना, उबटन आदिकी मालिश करना।

उबना*–अ० क्रि० ऊबना; ऊपर उठना।

उबरना–अ० क्रि० बचना, छुटकारा पाना; बाकी बचना।

उबरी–स्त्री० दे० 'ओबरी'; एक तरहकी काश्तकारी।

उबलना–अ० क्रि० खौलना, उफनना, जोश खाना। **मु०** **उबल पड़ना**–क्रुद्ध होकर अंड-बंड बकना।

उबहन (नी)†–[स्त्री]० कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी।

उबहना*–स० क्रि० (तलवार आदि) खींचना; ऊपर उठाना; उलीचना; जोतना। अ० क्रि० ऊपर उठना, उभरना। वि० बिना जूतेका।

उबाँत*–स्त्री० कै, उलटी।

उबाना–स० क्रि० ऊबनेका कारण होना, तंग, परेशान करना; * उगाना। पु० कपड़ा बुननेमें राछके बाहर रह जानेवाला सूत। * वि० नंगे पाँव।

उबार–पु० बचाव; छुटकारा; बचत; ओहार, पर्दा।

उबारना–स० क्रि० बचाना; छुड़ाना, उद्धार करना।

उबाल–पु० खौलकर ऊपर उठना, उफान, जोश; क्रोध आदिका भड़क उठना।

उबालना–स० क्रि० खौलाना, जोश देना; पानीमें (बिना घी, मसालेके) पकाना।

उबासी–स्त्री० जँभाई।

उबाहना–स० क्रि० दे० 'उबहना'।

उबिठना, उबीठना*–स० क्रि० अरुचि पैदा करना, उबाना; विरक्त करना। अ० क्रि० ऊबना, जी भर जाना।

उबीधना*–अ० क्रि० फँसना; धँसना, चुभना।

उबीधा–वि० कँटीला, गड़नेवाला, छेदनेवाला; गड़ा हुआ, धँसा हुआ; फँसा हुआ।

उबेना*–वि० नंगे पाँव।

उबेरना*–स० क्रि० दे० 'उबारना'।

उभइ*–वि० दे० 'उभय'।

उभटना†–अ० क्रि० अहंकार करना।

उभड़ना–अ० क्रि० दे० 'उभरना'।

उभना*–अ० क्रि० उठना।

उभय–वि० [सं०] दोनों, दोमेंसे प्रत्येक। **–चर**–वि० जल-स्थल दोनों जगह रह सकनेवाला (प्राणी)। **–निष्ठ**–वि० दोनोंमें जिसकी निष्ठा हो; जो बीचमें होनेके कारण दोनों ओर सम्मिलित किया जा सके। **–मध्यस्थ**–वि० (इंटरमीडियरी) दो व्यक्तियों या पक्षोंके बीच काम करनेवाला। **–मुखी**–वि० स्त्री० गर्भवती। **–संकट**–पु० धर्मसंकट; धर्मसंकट-जैसी स्थिति।

उभयतः–अ० [सं०] दोनों ओरसे, दोनों प्रकारसे।

उभयान्वयी (यिन्)–वि० [सं०] दोनों (पद और वाक्य)-से जुड़नेवाला (व्या०)।

उभयार्थ–वि० [सं०] द्व्यर्थी; अस्पष्ट।

उभयालंकार–पु० [सं०] वह अलंकार जो शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों हो।

उभरना–अ० क्रि० ऊपर उठना, ऊँचा होना; प्रकट होना; खुलना; बढ़ना; जवानीपर आना; उकसना।

उभरौहाँ*–वि० उभरता हुआ; ऊपर उठा हुआ।

उभाड़–पु० दे० 'उभार'।

उभाड़ना–स० क्रि० दे० 'उभारना'।

उभाना–अ० क्रि० अभुआना, सिर हिलाना और हाथ-पैर पटकना।

उभार–पु० उभरने, बढ़नेकी क्रिया या अवस्था, उठान, बाढ़। **–दार**–वि० उभरा हुआ।

उभारना–स० क्रि० ऊपर उठाना, लाना; बढ़ाना; भड़काना; उकसाना।

उभिटना*–अ० क्रि० हिचकना, अटकना।

उभै*–वि० दे० 'उभय'।

उमंग–स्त्री० उल्लास, मौज; जोश; उभार; आकांक्षा।

उमँगना*–अ० क्रि० उमंगमें आना, उल्लसित होना; जोशमें आना।

उमग, उमगन*–स्त्री० दे० 'उमंग'।

उमगना*–अ० क्रि० उमड़ना, जोशमें आना।

उमगाना–स० क्रि० उमगनेका कारण होना; उत्साहित करना।

उमचना*–अ० क्रि० हुमचना; चौंकना।

उमड़–स्त्री० बाढ़; धावा; घिराव।

उमड़ना–अ० क्रि० बढ़कर फैलना; बह चलना; छाना; जोशमें आना। **मु०**–**घुमड़ना**–घूम-घूमकर फैलना।

उमदना*–अ० क्रि० दे० उमँगना।

उमदा–वि० [अ०] दे० 'उम्दा'।

उमदाना*–अ० क्रि० मस्त होना; जोशमें आना।

उमर–स्त्री० दे० 'उम्र'। **–क़ैद**–स्त्री० जिंदगीभरकी कैद।

उमरती*-स्त्री० एक बाजा।

उमरा-पु० [अ०] धनिक; सरदार; सामंत (अमीरका बहु०)।

उमराव*-पु० दे० 'उमरा'।

उमस-स्त्री० दे० 'ऊमस'।

उमहना*-अ० क्रि० दे० 'उमड़ना'; उमंगमें आना।

उमहाना-स० क्रि० उमड़ाना; उमाहना।

उमा-स्त्री० [सं०] पार्वती दुर्गा; कांति; कीर्ति। **-गुरु,-जनक**-पु० हिमाचल। **-धव,-नाथ,,-पति**-पु० शिव। **-धो***-पु० दे० 'उमा-धव'।

उमाकना*-स० क्रि० दे० 'उखाड़ना'।

उमाकिनी*-स्त्री० उखाड़नेवाली।

उमाचना*-स० क्रि० उभारना, निकालना।

उमाद*-पु० दे० 'उन्माद'।

उमाह*-पु० उत्साह, उमंग; आनंद-'प्रगट करौ सब चातुरी मनमें विपुल उमाह'-चाचा हित०।

उमाहना-अ० क्रि० उमड़ना, उत्साहित होना, आवेशमें आना। स० क्रि० उमड़ाना।

उमाहल*-वि० उत्साह-भरा।

उमेठन-स्त्री० ऐंठन, मरोड़।

उमेठना-स० क्रि० मरोड़ना, ऐंठना।

उमेठवाँ-वि० घुमावदार; ऐंठनवाला।

उमेड़ना*-स० क्रि० दे० उमेठना'।

उमेलना*-स० क्रि० प्रकट करना, खोलकर बताना।

उम्दगी-स्त्री० [अ०] अच्छाई, खूबी।

उम्दा-वि० [अ०] अच्छा, बढ़िया, उत्तम।

उम्मीद-स्त्री० [फा०] आशा; अपेक्षा; आकांक्षा, इच्छा; गर्भ (ला०)। **-वार**-वि० आशा, अपेक्षा रखनेवाला; नौकरी या पदविशेषका प्रार्थी। पु० नौकरीकी आशासे बिना वेतन काम करनेवाला; काम सीखनेवाला; चुनावके लिए खड़ा होनेवाला।

उम्मेद, उम्मैद-स्त्री० [फा०] दे० 'उम्मीद'।

उम्र-स्त्री० [अ०] वयस, अवस्था, आयु। मु० **-का प्याला भर जाना**-मृत्यु निकट होना।

उर (स्)-पु० [सं०] छाती; हृदय, मन। मु० **-आनना***-छातीसे लगाना; सोचना, ध्यान करना। **-धरना***-मनमें रखना। **-लाना***-छातीसे लगाना; सोचना, ध्यान करना।

उरई-स्त्री० खस।

उरकना*-अ० क्रि० रुकना, ठहरना।

उरग-पु० [सं०] (छातीके बल रेंगनेवाला) साँप, नाग। **-भूषण**-पु० शिव। **-राज**-पु० वासुकि; शेषनाग।

उरगना*-स० क्रि० झेलना, अंगीकार करना।

उरगाद-पु० [सं०] गरुड़; मोर।

उरगाय*-वि०, पु० दे० 'उरुगाय'।

उरगारि, उरगाशन-पु० [सं०] गरुड़; मोर।

उरगिनी*-स्त्री० सर्पिणी।

उरगी-स्त्री० [सं०] मादा साँप, सर्पिणी।

उरज, उरजात*-पु० दे० 'उरोज'।

उरझना*-अ० क्रि० दे० 'उलझना'।

उरझाना*-स० क्रि० दे० 'उलझाना'। अ० क्रि० फँसना-'उर उरझाही'-राम०।

उरझेर*-पु० झकोरा।

उरण-पु० [सं०] मेढ़ा, भेड़ा; एक असुर (उरणी = भेड़)।

उरद-पु० दालके वर्गका एक अनाज, माष।

उरदावन†-स्त्री० अदवान, उंचन।

उरदी†-स्त्री० दे० 'उरद'; दे० 'वर्दी'।

उरध*-अ० वि०, अ० 'ऊर्ध्व'।

उरधारना*-स० क्रि० फैलाना, बिखराना; उधेड़ना।

उरना*-अ० क्रि० दे० 'उड़ना'।

उरबसी*-स्त्री० दे० 'उर्वशी'; एक भूषण।

उरबी*-स्त्री० वे० 'उर्वी'।

उरमना*-अ० क्रि० लटकना, झूलना।

उरमाना*-स० क्रि० लटकाना, झुलाना।

उरमाल*-पु० रूमाल।

उरमी*-स्त्री० दे० 'ऊर्मि'।

उरला*-वि० पिछला; विरल, निराला।

उरविज*-पु० धरती-पुत्र, मंगल।

उरश्छद-पु० [सं०] छातीपर बाँधनेका कवच।

उरस-वि० [सं०] चौड़ी छातीवाला; *नीरस, सीठा।

उरसना*-स० क्रि० उठाना-गिराना, ऊपर-नीचे करना।

उरसिज-पु० [सं०] स्तन, उरोज।

उरस्त्राण-पु० [सं०] दे० 'उरश्छद'।

उरहन(ना)*-पु० दे० 'उलाहना'

उरा*-स्त्री० धरती।

उराउ, उराय*-पु० दे० 'उराव'।

उराना*-अ० क्रि० खतम हो जाना, चुक जाना।

उरारा*-वि० प्रशस्त, फैला हुआ, विस्तृत।

उराव*-पु० उत्साह; चाह; उमंग, हौसला; आनंद।

उराहना*-पु० दे० 'उलाहना'। स० क्रि०दे० 'ओगारना।

उरिन*-वि० दे० 'उऋण'।

उरु-वि० [सं०] विशाल, विस्तृत; प्रचुर; बहुल; श्रेष्ठ। *पु० दे० 'ऊरु' (जंघा)। **-गाय**-वि० बहुप्रशंसित; चलने-फिरनेके लायक बिस्तृत। पु० विष्णु; सोम; इंद्र; प्रशस्त स्थान; स्तुति।

उरूजना*-अ० क्रि० दे० 'उलझना'।

उरे*-अ० परे, दूर।

उरेखना*-स० क्रि० उरेहना; सोचना; देखना।

उरेह-पु० चित्रकारी; चित्र; आलेखन।

उरेहना-स० क्रि० तसवीर बनाना, चित्र खींचना-'पुनि धनि सिंध उरेहै लागै'-प०।

उरोज-पु० [सं०] स्तन, कुच।

उरोरुह-पु० दे० 'उरोज'।

उर्द-पु० दे० 'उरद'।

उर्दू-पु० [तु०] लश्कर; छावनी। स्त्री० हिंदी या हिंदुस्तानीका वह रूप जिसमें अरबी-फारसी शब्द अधिक व्यवहृत होते हैं और जो फारसी अक्षरोंमें लिखा जाता है। **-ए मुल्ला**-स्त्री० उच्च उर्दू, टकसाली उर्दू। **-बाज़ार**-पु० लश्करका बाजार; वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।

उर्ध*-वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व'।

उर्फ़-पु० [अ०] अधिक प्रचलित नाम, पुकारनेका नाम।

उर्मि–स्त्री० दे० 'ऊर्मि'।

उर्वर–वि० उपजाऊ, जिससे बहुतसे विचार, सुझाव आदि निकलें (मस्तिष्क)।

उर्वरक–पु० (फर्टिलाइजर) वह रासायनिक खाद जो भूमिकी उर्वरता बढ़ानेमें सहायक हो।

उर्वरता–स्त्री० उपजाऊपन।

उर्वरा–स्त्री० [सं०] उपजाऊ, जरखेज जमीन; जमीन।

उर्वशी–स्त्री० [सं०] इंद्रलोककी एक प्रसिद्ध अप्सरा।

उर्विजा*–स्त्री० दे० 'उर्वीजा'।

उर्वी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जमीन। **–जा**–स्त्री० पृथ्वीसे उत्पन्न, सीता। **–तल**–पु० धरातल, पृथ्वीकी सतह। **–धर**–पु० पर्वत; शेषनाग। **–धव,–पति**–पु० राजा। **–रुह**–पु० पौधा, वृक्ष।

उर्वीश, उर्वीश्वर–पु० [सं०] राजा।

उर्स–पु० [अ०] किसी मुसलमान साधु-संतकी निधनतिथिको मनाया जानेवाला उत्सव।

उलंग–वि० नंगा।

उलंगना, उलंघना*–स० क्रि० लाँघना, उल्लंघन करना; न मानना।

उलका*–स्त्री० दे० 'उल्का'।

उलछना*–स० क्रि० उलीचना; छितराना, फैलाना।

उलछारना*–स० क्रि० ऊपरकी तरफ फेंकना, प्रकट करना।

उलझन–स्त्री० फँसाव; गुत्थी; कठिनाई; चिंता; सोच।

उलझना–अ० क्रि० तागा, डोरी आदिका गुँथ जाना; लिपटना; झगड़ा, तकरार करना; आसक्त होना; लीन या मशगूल होना; अटक जाना। **उलझा-सुलझा**–वि० टेढ़ा-सीधा; बुरा-भला।

उलझाना–स० क्रि० फँसाना; गुत्थियाँ डाल देना; अटकाना; लगाये रखना। * अ० क्रि० उलझना।

उलझाव–पु० उलझन; बखेड़ा; फेर।

उलझौंहा*–वि० उलझानेवाला; फँसाने, लुभानेवाला।

उलटना–अ० क्रि० सीधेका औंधा होना; एकसे दूसरे रुख होना; विपरीत स्थितिमें जाना; पलटना; घूमना, मुड़ना; उमड़ना; टूट पड़ना; कुछका कुछ हो जाना, बिलकुल बदल जाना; अस्त-व्यस्त होना; कै करना; नष्ट होना; चित होना; बेहोश होना; मरना; गर्वसे बदल जाना; ऐंठना। स० क्रि० नीचेका ऊपर कर देना; एकसे दूसरे रुख करना, पलटना; चित करना; नष्ट करना; बदल देना; कुछका कुछ कर देना; बात दुहराना; उड़ेलना; खोदकर फेंक देना; रटना; बोये खेतको फिरसे बोनेके लिए जोतना; सरसरी तौरपर देखना या पढ़ना। **–पलटना**–स० क्रि० ऊपरसे नीचे, इस बलसे उस बल करना; अस्त-व्यस्त करना; कुछका कुछ कर देना। अ० क्रि० इस बलसे उस बल होना, पलटे खाना।

उलट-पलट, उलट-पुलट–पु० अदल-बदल, परिवर्तन; गड़बड़; अस्त-व्यस्तता। वि० अस्त-व्यस्त; परिवर्तित।

उलट-फेर–पु० उलट-पलट, परिवर्तन।

उलटा–वि० जो स्वाभाविक स्थितिमें न होकर विपरीत स्थितिमें हो, जिसका ऊपरका भाग नीचे या दाहिनेका बायें हो; औंधा; विपरीतक्रम; असमान; जो होना चाहिये उसके विपरीत, बेठीक, बेढंगा; विरुद्ध; बर-अक्स। अ० जैसे होना चाहिये उसके विपरीत, अनुचित रूपमें, बेजा तौरपर। पु० एक पकवान, बेसनका पराठा। **–ज़माना**–पु० वह काल जिसमें उलटी रीति चलती हो, अंधेरका जमाना। **–तवा**–वि० (ला०) बहुत काला। **उलटा-पलटा,–पुलटा**–वि० अंडबंड, बेसिर-पैरका। **–सीधा**–वि० सही-गलत; अच्छा-बुरा। **मु० उलटी खोपड़ीका**–मूर्ख, नासमझ, उलटी अक्लवाला। **–गंगा बहाना**–उलटी रीति चलाना; रीतिविरुद्ध बात करना। **–पट्टी पढ़ाना**–बहकाना। **–माला फेरना**–मारण आदिका प्रयोग करना; बुरा मनाना; कोसना। **–साँस चलना**–दम उखड़ना; मरणासन्न होना। **–साँस लेना**–जल्द-जल्द साँस लेना; मरणासन्न होना। **–सीधी सुनाना**–खरी-खोटी सुनाना, फटकारना। **–हवा बहना**–उलटी रीति चलना। **–उलटे काँटे तौलना**–कम तौलना। **–छुरेसे मूँड़ना**–बेवकूफ बनाकर पैसा ऐंठना। **–पाँव फिरना,–पाँव लौटना**–तुरत लौटना। **–मुँह गिरना**–दूसरेकी क्षति करनेके प्रयत्नमें अपनी क्षति कर लेना।

उलटाना*–स० क्रि० दे० 'उलटना'।

उलटाव–पु० चक्कर; पलटाव।

उलटी–स्त्री० कै, वमन; मालखंभकी एक कसरत।

उलटे–अ० जैसा होना चाहिये उसके विपरीत, बेजातौरपर।

उलथना*–अ० क्रि० उलटना; उछलना। स० क्रि० उलट-पलट करना।

उलथा–पु० करवट बदलना; बैठे-बैठे अंगोंको मोड़ना; कलाबाजी; दे० 'उल्था'।

उलद*–स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा।

उलदना*–स० क्रि० उड़ेलना; बरसाना।

उलफ़त–स्त्री० [अ०] प्रेम, मुहब्बत, चाह।

उलमना*–अ० क्रि० दे० 'उरमना'।

उलरना*–अ० क्रि० ऊपर-नीचे होना; उछलना; झपटना।

उलरुआ–पु० गाड़ीको उलार होनेसे रोकनेके लिए पीछेकी ओर लगायी जानेवाली लकड़ी।

उललना*–अ० क्रि० ढरकना; उलटना।

उलसना*–अ० क्रि० शोभित होना; प्रसन्न होना।

उलहना*–अ० क्रि० फूटना; निकलना; खिलना, हुलसना। पु० दे० 'उलाहना'।

उलाँघना*–स० क्रि० लाँघना; आज्ञाका उल्लंघन करना।

उलार†–वि० पीछेकी ओर (अधिक बोझसे) झुका हुआ।

उलारना*–स० क्रि० उछालना; ओलारना।

उलाहना–पु० किसी व्यवहार, बरतावकी शिकायत, उपालंभ। * स० क्रि० दोष देना, गिला करना।

उलिचना, उलीचना–स० क्रि० (पानी) बाहर फेंकना।

उलूक–पु० [सं०] उल्लू पक्षी, घुग्घू; इंद्र; * लुक, उल्का। **–दर्शन**–पु० वैशेषिक दर्शन।

उलूखल–पु० [सं०] ओखली; खल।

उलेड़ना, उलैंड़ना*–स० क्रि० उड़ेलना।

उलेल*–पु० बाढ़; उमंग; उछल-कूद। वि० लापरवाह; अबोध।

उल्का-स्त्री० [सं०] लुक; लौ; रातमें आकाशसे टूटकर गिरनेवाला प्रकाशमय पिंड या तारा; मशाल। **-धारी (रिन्)**-पु० मशालची। **-पात**-पु० आकाशसे जलते पिंडका टूटकर गिरना। **-पाषाण**-पु० जमीनपर गिरी हुई उल्का जो पत्थरकी सिल-जैसी हो (मीटियर स्टोन)। **-मुख**-पु० प्रेतोंका एक भेद, अगियावैताल; गीदड़।

उल्था-पु० भाषांतर, तर्जुमा; अनुवाद।

उल्लंघन-पु० [सं०] लाँघना; विरुद्धाचरण; (आज्ञा, नियम आदिको) तोड़ना।

उल्लंघना*-स० क्रि० उल्लंघन करना।

उल्लंघित-वि० [सं०] लाँघा हुआ; तोड़ा हुआ; अतिक्रांत।

उल्लसन-पु० [सं०] उल्लसित होना; हर्ष; रोमांच, पुलक।

उल्लसित-वि० [सं०] हर्पयुक्त, मुदित; चमकता हुआ।

उल्लाला-पु० एक मात्रिक छंद।

उल्लास-पु० [सं०] हर्ष; आह्लाद; उमंग; आरंभ; कांति; प्रकाश; परिच्छेद; वह अर्थालंकार जहाँ किसीके गुण या दोपसे किसी दूसरेका गुण या दोप होना दिखलाया जाय।

उल्लासना*-स० क्रि० प्रकट करना; प्रसन्न करना।

उल्लिखित-वि० [सं०] लिखा हुआ; पूर्वकथित; वर्णित।

उल्लू-पु० एक पक्षी जिसे दिनमें नहीं दिखाई देता और जो बहुत मनहूस माना जाता है, उलूक। वि० मूर्ख, नासमझ। **मु०-का गोश्त खिलाना**-बेवकूफ बनाना; वशमें कर लेना। **-का पट्ठा**-निपट मूर्ख। **-बनाना**-बेवकूफ बनाना; ठगना। **-बोलना**-उजड़ जाना, वीरान होना।

उल्लेख-पु० [सं०] चर्चा, जिक्र; वर्णन; खुदाई; वह अर्थालंकार जहाँ एक ही वस्तुका विषयभेद या द्रष्टाभेदके कारण अनेक प्रकारसे वर्णन किया जाय।

उल्लेखनीय, उल्लेख्य-वि० [सं०] उल्लेख करने योग्य; कहने योग्य, बताने योग्य।

उल्व-पु० [सं०] गर्भस्थ बच्चेपर लिपटी रहनेवाली झिल्ली, आँवल।

उवना*-अ० क्रि० दे० 'उगना'।

उवनि*-स्त्री० उदय; प्रकट होना।

उशी(षी)र, उशी(षी)रक-पु० [सं०] खस।

उषः (षस्)-स्त्री० [सं०] भोर, तड़का; भोरकी लाली। **-काल**-पु० भोर, तड़का। **-पान**-पु० बहुत सवेरे उठकर नाकके द्वारा पानी पीना।

उषा-स्त्री० [सं०] भोर, प्रत्यूष; तड़का; भोरकी लाली; बाणासुरकी कन्या जिसका ब्याह अनिरुद्धसे हुआ था।

उष्ट्र-पु० [सं०] ऊँट। **-यान**-पु० ऊँट-गाड़ी।

उष्ट्रिका, उष्ट्री-स्त्री० [सं०] ऊँटनी।

उष्ण-वि० [सं०] गरम; गरम तासीरवाला; तीखा। **-कटिबंध**-पु० पृथ्वीका कर्क और मकर रेखाओंके बीचका, अधिक गरम, भाग। **-कर, -दीधिति**-पु० सूर्य।

उष्णता-स्त्री०, **उष्णत्व**-पु० [सं०] गरमी।

उष्णांक-पु० [सं०] (कैलरी) तापकी वह मात्रा जो एक ग्राम पानीको एक अंश सेंटीग्रेडतक गरम बनानेके लिए आवश्यक हो (तापमापक इकाई)।

उष्णिमा (मन्)-स्त्री० [सं०] गरमी।

उष्णीष-पु० [सं०] पगड़ी, साफा; मुकुट।

उष्म-पु० [सं०] गरमी; ऊमस; धूप; ग्रीष्म ऋतु; जोश। **-ज**-पु० पसीने या मैलसे पैदा होनेवाले कीड़े-जूँ, खटमल आदि।

उष्मा (मन्)-स्त्री० [सं०] ताप; वाष्प; ग्रीष्म ऋतु; जोश।

उसकन-पु० बरतन माँजनेका तृणादिका मुट्ठा।

उसकाना, उसकारना*-स० क्रि० उभाड़ना; चला देना; ऊपर उठना।

उसनना-स० क्रि० उबालना, पकाना।

उसनाना-स० क्रि० उसननेके कार्यमें लगाना, उबलवाना।

उसनीस*-पु० दे० 'उष्णीष'।

उसरना*-अ० क्रि० हटना; अलग होना; बीतना; भूलना।

उसलना*-अ० क्रि० दे० 'उसरना'; पानीमें उतराना।

उससना*-अ० क्रि० साँस लेना; उसाँस लेना; खिसकना।

उसाँस-स्त्री० ऊपरको खींची हुई या लंबी साँस; दुःखसूचक साँस; साँस।

उसाना-स० क्रि० दे० 'ओसाना'।

उसार(ल)ना*-स० क्रि० उखाड़ना; भगाना; † मकान या दीवार आदि खड़ी करना।

उसारा-पु०, **उसारि***-स्त्री० सायबान, बरामदा।

उसास-स्त्री० दे० 'उसाँस'।

उसासी*-स्त्री० छनभर सुस्तानेकी मुहलत-'जानै को केशव केतिक बार मैं सेसके सीसन्ह दीन्ह उसासी'-राम०।

उसिनना†-स० क्रि० दे० 'उसनना'।

उसीर*-पु० दे० 'उशीर'।

उसीला*-पु० वसीला; सहायक-'साहब कहूँ न रामसे तोसे न उसीले'-विनय०।

उसीस(सा)*-पु० सिरहाना; तकिया।

उसूल-पु० [अं०] नियम, कायदा; सिद्धांत ('असल' का बहु०)।

उसूली-वि० [अ०] उसूलका; सैद्धांतिक।

उस्तरा-पु० दे० 'उस्तुरा'।

उस्ताद-पु० [अ०] गुरु; शिक्षक। वि० प्रवीण; विज्ञ; धूर्त।

उस्तादी-स्त्री० [अ०] गुरुआई; प्रवीणता; चालाकी।

उस्तानी-स्त्री० [अ०] गुरुआनी; शिक्षिका; धूर्त स्त्री।

उस्तुरा-पु० [फा०] छुरा, बाल मूँड़नेका औजार।

उस्वास*-स्त्री० दे० 'उसाँस'।

उहाँ*-अ० वहाँ।

उहार-पु० पालकी आदिपरका परदेका कपड़ा।

ऊ

ऊ-देवनागरी वर्णमालाका छठा (स्वर) वर्ण।

ऊँघ-स्त्री० नींदका झोंका, निद्रागम; तंद्रा, झपकी।

ऊँघन-स्त्री० झपकी, हलकी नींद।

ऊँघना-अ० क्रि० नींदमें झूमना, उनींदा होना; ढिलाईसे काम करना।

ऊँच*-वि० ऊँचा; बड़ा; कुलीन, ऊँची जातिका। **-नीच**-

वि० छोटा-बड़ा; कुलीन-अकुलीन; भला-बुरा ।

ऊँचा–वि० ऊपरकी ओर अधिक उठा हुआ, बुलंद; लंबाई या अर्जमें छोटा, उटंगा; बड़ा, श्रेष्ठ, उच्च, उदात्त; जोरका; पद-प्रतिष्ठामें बड़ा; सम्मानित। **–नीचा**–वि० ऊबड़-खावड़; भला-बुरा । **मु०–नीचा सुनाना**–भला-बुरा कहना । **–सुनना**–केवल जोरसे कही हुई बात ही सुन सकना, अर्ध-बधिर होना । **ऊँची दुकान फीका पकवान**–नामके अनुरूप काम, गुण आदि न होना ।

ऊँचाई–स्त्री० ऊँचा होना, बुलंदी; बड़ाई ।

ऊँचे–अ० ऊँचाईपर, ऊपरकी ओर ।

ऊँछना*–स० क्रि० कंधी करना ।

ऊँट–पु० बोझ ढोने तथा सवारीके काम आनेवाला एक जानवर जो गरम और रेगिस्तानी प्रदेशोंमें अधिकतर पाया जाता है, उष्ट्र ।**–कटारा,–कटीरा**–पु० एक कँटीली झाड़ी जिसे ऊँट बड़े चावसे खाते हैं । **–वान**–पु० ऊँट चलानेवाला । **मु०–किस करवट बैठता है**–देखिये, मामलेका क्या नतीजा होता है । **–की चोरी और नीचे-नीचे (झुके-झुके)**–न छिपनेवाली बातको छिपानेकी कोशिश । **–के गलेमें बिल्ली**–बेमेल, असंगत बात । **–के मुँहमें जीरा**–अधिक खानेवाले या आवश्यकतावालेको थोड़ी-सी चीज देना ।**–निगल जायँ, दुमसे हिचकियाँ**–बड़ी-बड़ी बातें कर जाना और छोटीमें अटकना ।

ऊँटनी–स्त्री० मादा ऊँट । **–सवार**–पु० साँड़नी-सवार ।

ऊँड़ा*–पु० वह बरतन जिसमें रुपये आदि रखकर गाड़ दिये जायँ; तहखाना ।

ऊँदर*–पु० चूहा ।

ऊँहूँ†–अ० नहीं; कदापि नहीं ।

ऊ–पु० [सं०] शिव; चंद्रमा । * अ० भी । *सर्व० वह ।

ऊअना*–अ० क्रि० उदय होना, उगना ।

ऊआबाई*–वि० व्यर्थ, बेसिर-पैरका। स्त्री० निरर्थक बात।

ऊक*–पु० लुक, उल्का । स्त्री० जलना; आँच; चूक, गलती।

ऊकना*–अ० क्रि० चूकना । स० क्रि० छोड़ना; भूलना; तपाना; जलाना–'लूक वसंतकी ऊकन लागी' ।

ऊकार–पु० [सं०] 'ऊ' अक्षर या उसकी ध्वनि ।

ऊख–पु०, स्त्री० दे० 'ईख' । * वि० गरम, तप्त ।

ऊखम*–पु० दे० 'ऊष्म' ।

ऊखल–पु० दे० 'ओखली'; एक तरहकी घास ।

ऊगना*–अ० क्रि० दे० 'उगना' ।

ऊज*–पु० अंधेर, उपद्रव, उत्पात ।

ऊजड़–वि० उजाड़, वीरान ।

ऊजर*–वि० दे० 'उजला'; दे० 'ऊजड़' ।

ऊजरा*–वि० दे० 'उजला' ।

ऊटक-नाटक–पु० अललटप्पू, अनिश्चित काम ।

ऊटना*–अ० क्रि० जोशमें भरना; सोच-विचार करना ।

ऊटपटाँग–वि० बेतुका, असंगत, बेसिर-पैरका, निरर्थक ।

ऊढ़ना*–स० क्रि० ब्याह करना ।

ऊढ़ा*–पु० टोटा, अभाव; महँगी ।

ऊढ़ी–स्त्री० पनडुब्बी चिड़िया; गोता ।

ऊदना–अ० क्रि० अनुमान करना; सोचना; * विवाह करना ।

ऊढा–स्त्री० [सं०] विवाहिता स्त्री; परकीया नायिकाका एक भेद ।

ऊत–वि० निपूता; बेवकूफ । पु० निःसंतान व्यक्ति ।

ऊतर*–पु० बहाना; दे० 'उत्तर' ।

ऊतला*–वि० उतावला; तेज ।

ऊद–पु० [अ०] अगर; बरबत नामका बाजा; ऊदबिलाव । **–बत्ती**–स्त्री० एक तरहकी अगरबत्ती ।

ऊदबिलाव–पु० नेवलेकी शक्लका एक उभयचर जंतु। वि० मूर्ख, बुद्धू ।

ऊदा–वि० बैंगनी रंगका । पु० बैंगनी रंगका घोड़ा ।

ऊदी–वि० [अ०] ऊदका; ऊदके रंगका । पु० ऊदी रंग ।

ऊधम–पु० शोरगुल, हंगामा; उत्पात ।

ऊधमी–वि० ऊधम मचानेवाला; उत्पाती ।

ऊधव, ऊधो*–पु० दे० 'उद्धव' ।

ऊन–पु० भेड़, दुंबे आदिका कोमल रोम जिसका कपड़ा बनता है । वि० [सं०] न्यून, थोड़ा; छोटा; घटिया । **मु०–मानना**–दिल छोटा करना, दुःखी होना ।

ऊना*–वि० दे० 'ऊन' ।

ऊनी–वि० ऊनका बना, पशमी । स्त्री० कमी; ग्लानि ।

ऊप*–स्त्री० दे० 'ओप' । पु० अन्नका अन्नके ही रूपमें दिया जानेवाला ब्याज ।

ऊपना*–अ० क्रि० उपजना ।

ऊपर–अ० ऊँचाईपर; आकाशकी ओर; नीचेके विरुद्ध कोठे या छतपर, ऊपरकी मंजिलमें; सहारे; सिरपर, जिम्मे; बड़े या ऊँचे दरजेमें; (लेखादिमें) पहले; अधिक; अतिरिक्त; जाहिरा, प्रकटमें; किनारेपर । **–ऊपर**–अ० (वक्तासे) बिना जताये, बाला-बाला; जाहिरा । **–ऊपरसे**–जाहिरा, प्रकटमें ।**–की आमदनी**–वेतन आदिकी बँधी आमदनीसे अतिरिक्त आय, बालाई आमदनी । **मु०–की दोनों जाना***–दोनों आँखे फूट जाना । **–तलेके**–आगे-पीछे होनेवाले, तरपरिया । **–लेना**–सिरपर या जिम्मे लेना । **–से**–ऊँचाईसे,…के अतिरिक्त, अलावा; इधर-उधरसे; जाहिरा । **–होना**–पद या अधिकारमें बड़ा होना; प्रधान होना ।

ऊपरी–वि० ऊपरका, बालाई; बाहरी; दिखाऊ ।**–फसाद, –फेर**–पु० प्रेतबाधा ।

ऊब–स्त्री० ऊबनेका भाव, उकतान; * उमंग; उत्साह ।

ऊबट*–वि० ऊबड़-खाबड़; कठिन । पु० ऊबड़-खाबड़ रास्ता ।

ऊबड़-खाबड़–वि० ऊँचा-नीचा, अटपटा ।

ऊबना–अ० क्रि० देरतक एक ही स्थितिमें रहने, एक ही चीजको देखते-सुनते रहनेसे मनका उकता जाना, घबराना; गरमाना 'मोरी कमरिया पाँच टकाकी सबरी ऊबै देह'–बुंदेल, वै० ।

ऊबर*–वि० ज्यादा ।

ऊबरना*–अ० क्रि० दे० 'उबरना' ।

ऊभ*–वि० ऊँचा । स्त्री० ऊमस; बेचैनी; उत्साह ।

ऊभना*–अ० क्रि० खड़ा होना, उठना; ऊबना ।

ऊभासाँसी–स्त्री० दम फूलना, ऊबना ।

ऊमक*–स्त्री० झपट, झोंक, वेग ।

ऊमना*-अ० क्रि० उमड़ना।

ऊमर-पु० गूलर; एक वैश्य जाति।

ऊमस-स्त्री० हवा न चलनेसे मालूम होनेवाली गरमी, बरसातकी गरमी, हब्स।

ऊमहना*-अ० क्रि० उमंगमें आना; घिरना।

ऊर*-पु० ओर, अंत।

ऊरज-पु० दे० 'ऊर्ज'।

ऊरध*-वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊरु-पु० [सं०] जाँघ, रान। **-जन्मा (न्मन्),-संभव**-वि० जाँघसे उत्पन्न। पु० वैश्य। **-स्तंभ**-पु० एक रोग, जाँघों और पैरोंका जकड़ जाना।

ऊर्ज-वि०[सं०] बली, शक्तिशाली; बलकारक, शक्तिदायक। पु० बल; उत्साह; चेष्टा; उद्यम; जीवन; जननशक्ति; प्राण; अन्नका अत्यंत सारभूत रस; अन्न; जल; कार्त्तिक मास; अर्थालंकारका एक भेद।

ऊर्जस्वल-वि० [सं०] बलवान; तेजस्वी; श्रेष्ठ; उत्कृष्ट।

ऊर्जस्वी (स्विन्)-वि० [सं०] दे० 'ऊर्जस्वल'।

ऊर्जित-वि० [सं०] ओजस्वी (भाषण); बलवान्, शक्तिशाली; समृद्ध; गंभीर; तेजस्वी; श्रेष्ठ।

ऊर्ण-पु० [सं०] ऊन; ऊनी कपड़ा।

ऊर्णायु-वि० [सं०] ऊनी। पु० भेड़ा; मकड़ा; ऊनी कंबल।

ऊर्णावान् (वत्)-वि० [सं०] ऊर्नी।

ऊर्ध्व-वि० [सं०] ऊँचा; सीधा; उठाया हुआ; खड़ा; बिखराये हुए (बाल); ऊपर फेंका हुआ। अ० ऊपर; ऊपरकी ओर; आगे; बाद। पु० ऊँचाई; ठीक ऊपरकी दिशा। **-कंठ**-वि० जिसकी गरदन उठी हो। **-कच,-केश**-वि० जिसके बाल खड़े या बिखरे हों। पु० केतु। **-कर्ण**-वि० जिसके कान उठे हों। **-गति**-स्त्री० ऊपरकी ओर जाना; वृद्धिकी ओर जानेकी प्रवृत्ति (अपवर्ड टेंड)। वि० ऊपरकी ओर जानेवाला। **-गामी (मिन्)**-वि० ऊपरकी ओर जानेवाला; पुण्यात्मा। **-चरण**-वि० जिसकी टाँगें ऊपरकी ओर उठी हों, सिरके बल खड़ा (साधु)। पु० शरभ नामक एक पौराणिक जंतु। **-ताल**-पु० संगीतका एक ताल। **-दृष्टि**-वि० ऊपरको देखनेवाला; महत्त्वाकांक्षी। स्त्री० त्रिकुटीपर दृष्टि जमानेकी क्रिया (यो०)। **-नेत्र**-वि० ऊपरकी ओर देखनेवाला; महत्त्वाकांक्षी। **-पतन**-पु० (सबलिमेशन) स्थूलसे एकदम वायुमें, बिना बीचकी तरल अवस्थाको पार किये, परिणत होना। **-पाद**-वि०, पु० दे० 'ऊर्ध्वचरण'। **-पुंड्र**-पु० खड़ा तिलक, वैष्णव या रामानंदी तिलक। **-बाहु**-पु० वह साधु या तपस्वी जो अपनी एक बाँहको सदा ऊपर उठाये रहे। **-बिंदु**-पु० (जेनिथ) सिरके ठीक ऊपरका सबसे ऊँचाईका स्थान या बिंदु, 'शीर्षबिंदु'; चरमसीमा। **-मुख**-वि० जिसका मुँह ऊपरकी ओर हो। **-रेता (तस्)**-वि० वीर्यपात न होने देनेवाला, नैष्ठिक ब्रह्मचारी। पु० शिव; भीष्म पितामह; हनूमान्। **-लोक**-पु० आकाश; स्वर्ग। **-श्वास**-पु० ऊपरको चढ़नेवाली साँस, उलटी साँस।

ऊर्ध्वारोहण-पु० [सं०] स्वर्गगमन, मृत्यु।

ऊर्मि-स्त्री० [सं०] लहर, तरंग; प्रवाह; प्रकाश; कपड़ेकी शिकन; खेद। **-माला**-स्त्री० तरंगावली, तरंगोंकी एक श्रेणी; एक वृत्त।

ऊर्मिमान् (मत्)-वि० [सं०] तरंगित; टेढ़ा; घुँघराले (केश)।

ऊलजलूल-वि० बेढंगा; बेसिर-पैरका; अनाड़ी; अशिष्ट।

ऊलना*-अ० क्रि० उछलना।

ऊलूक-पु० [सं०] दे० 'उलूक'।

ऊषा-स्त्री [सं०] दे० 'उषा'।

ऊष्म-पु० [सं०] गरमी; ताप; गरमीका मौसम। वि० गरम। **-ज**-पु० जूँ आदि क्षुद्रकीट। वि० गरमीसे उत्पन्न। **-वर्ण**-पु० श्, ष्, स्, ह्।

ऊष्मा(ष्मन्)-स्त्री० [सं०] गरमी; भाप; ग्रीष्म काल; आवेश; उग्रता।

ऊसर-पु० वह जमीन जिसमें रेह हो और कुछ पैदा न हो।

ऊह-पु० [सं०] अनुमान; तर्क-वितर्क।

ऊहा-स्त्री० [सं०] दे० 'ऊह'। **-पोह**-पु० प्रश्नविशेषके पूर्व और उत्तर दोनों पक्षोंपर विचार करना; तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋ-देवनागरी वर्णमालाका सातवाँ (स्वर) वर्ण।

ऋक्(च्)-स्त्री० [सं०] ऋचा, वेदमंत्र; ऋग्वेद।

ऋक्थ-पु० [सं०] धन; उत्तराधिकारमें मिलनेवाली संपत्ति, वरसा, बपौती। **-ग्राह,-भागी (गिन्)**-पु० ऋक्थ पानेवाला, वारिस।

ऋक्ष-पु० [सं०] रीछ, भल्लुक; तारा, नक्षत्र। **-नाथ,-पति,-राज**-पु० चंद्रमा; जांबवान्।

ऋक्षेश-पु० [सं०] चंद्रमा।

ऋग्वेद-पु० [सं०] चारों वेदोंमेंसे एक जो पहला और प्रधान माना जाता है।

ऋग्वेदी(दिन्)-वि० [सं०] ऋग्वेदका ज्ञाता या पढ़नेवाला; जिसके संस्कार ऋग्वेदके अनुसार होते हों।

ऋचा-स्त्री० [सं०] वेदमंत्र; ऋग्वेदका मंत्र।

ऋजु-वि० [सं०] सीधा, सरल, कुटिलतारहित; सच्चा; अनुकूल; हितकर। **-कोण**-पु० (स्ट्रेट एंगिल) वह कोण जो दो समकोणोंके बराबर हो।

ऋजुता-स्त्री० [सं०] सीधापन, सिधाई; सचाई; सरलता।

ऋण-पु० [सं०] कर्ज, देना, उधार ली हुई रकम; एहसानका बोझ; घटाने या बाकीका चिह्न (ग०)। वि० ऋणरूप, ऋणात्मक (नेगेटिव)। **-कर्ता(र्तृ)**-वि० कर्ज लेनेवाला। **-ग्रस्त**-वि० कर्जमें फँसा हुआ। **-ग्राही(हिन्)**-वि० कर्ज लेनेवाला। **-च्छेद**-पु० कर्ज अदा करना। **-त्रय**-पु० देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण। **-दास**-पु० वह दास जो उसका ऋण चुकाकर खरीदा जाय। **-पत्र**-पु० तमस्सुक, रुक्का (बांड)। **-परिशोधकोष**-पु० (सिंकिंग फंड) राज्य या संस्थाविशेषके ऋणके क्रमिक परिशोध(अदायगी)के उद्देश्यसे समय-समयपर पृथक् रूपसे जमा की जानेवाली धनराशि, निक्षेप-निधि। -परि-

समापन–पु० (लिक्विडेशन ऑफ डेट) ऋण पूरा-पूरा चुका देना, बेबाक कर देना।–**बंधनपत्र**–पु० (प्रो-नोट) वह पत्र या रुक्का जो ऋण लेनेवाला शर्तोंके साथ रसीदके तौरपर लिखता है, हैंडनोट। –**मुक्त**–वि० जिसने ऋण चुका दिया हो, उऋण। –**मुक्ति**–स्त्री०, –**मोक्ष**–पु० (रीडेंपशन) ऋणसे छुटकारा पाना, ऋणका चुकाया जाना। –**लेख्य**–पु०ऋणपत्र। –**विद्युत्**–स्त्री० विकर्षण करनेवाली बिजली। –**विद्युदणु**–पु० (इलेक्ट्रान) ऋण-विद्युत् शक्तिकी अविभाज्य इकाई स्वरूप वे कण जो परमाणु (ऐटम)के धनविद्युत् शक्तिकणके चारों तरफ, सूर्यमंडलके ग्रहोंकी तरह घूमते हैं।–**शुद्धि**–स्त्री० ऋणका अदा होना। –**शोधन**–पु० ऋण चुकाना। –**संपिंडन**–पु० (कॉनसॉलिडेशन ऑफ डेट) बहुतसे ऋणोंको मिलाकर एक कर देना, ऋणकी छोटी-छोटी रकमोंको मिलाकर एक बड़े पिंड या राशिमें परिणत कर देना। –**स्थगन**–पु० (मॉरेटोरियम) बैंकों आदि द्वारा (उच्च न्यायालयके या सरकारके आदेशसे) लोगोंका पावना या ऋण चुकाना अस्थायी रूपसे बंद कर दिया जाना। **मु०–उतारना**–कर्ज अदा करना। –**चढ़ना**–कर्ज होना। –**पटाना**–धीरे-धीरे कर्ज अदा करना।

ऋणात्मक–वि० [सं०] ऋणरूप (नेगेटिव।

ऋणापनोदन–पु० [सं०] कर्ज चुकाना।

ऋणी(णिन्)–वि० [सं०] कर्जदार, अधमर्ण; उपकृत।

ऋतु–स्त्री० [सं०] वर्षके वर्षा, शरद् आदि छः विभाग, मौसम; किसी चीजके होनेका नियत काल; रजःस्राव; ६की संख्या। –**काल**–पु० रजोदर्शनके बादकी १६ रातें जिनमें स्त्रीके गर्भधारणकी अधिक सम्भावना रहती है। –**चर्या**–स्त्री० ऋतुविशेषके अनुकूल आहार-विहार। –**दान**–पु० ऋतुस्नाता पत्नीके साथ संतान-कामनासे संभोग। –**नाथ**,–**पति**–पु० वसंत। –**फल**–पु० ऋतु-विशेषमें होनेवाला फल। –**राज**–पु० वसंत ऋतु। –**विज्ञान**–पु० वायुमंडलमें होनेवाले परिवर्तनोंका विज्ञान जिसके आधारपर वर्षा, तूफानका अनुमान किया जाता है (मीटियरालोजी)। –**विपर्यय**–पु० ऋतुके विपरीत बात होना। –**स्नाता**–स्त्री० ऋतुस्नान करके शुद्ध हुई स्त्री। –**स्नान**–पु० रजोदर्शनके बाद चौथे दिन किया जानेवाला स्नान।

ऋतुमती–वि० स्त्री० [सं०] रजस्वला।

ऋत्विज्–पु० [सं०] यज्ञ करानेवाला।

ऋद्ध–वि० [सं०] खुशहाल, धन-धान्यसे संपन्न।

ऋद्धि–स्त्री० [सं०] संपन्नता; वृद्धि, बढ़ती, उत्कर्ष; गौरव; सफलता; पार्वती; लक्ष्मी; पत्नी। –**सिद्धि**–स्त्री० धन-दौलत और सफलता।

ऋनिया, ऋनी–वि० दे० 'ऋणी'।

ऋषभ–पु० [सं०] बैल; संगीतके सात स्वरोंमेंसे दूसरा। वि० उत्तम; श्रेष्ठ (समासांतमें–पुरुषर्षभ, भरतर्षभ इ०)।

ऋषभी–स्त्री० [सं०] गाय; वह स्त्री जिसे मूँछ, दाढ़ी या और कोई पुरुष-चिह्न हो; विधवा।

ऋषि–पु० [सं०] मंत्रद्रष्टा, वेदमंत्रोंका साक्षात्कार और प्रकाशन करनेवाला; बहुत बड़ा तपस्वी, मुनि; प्रकाश-किरण; ७की संख्या। –**ऋण**–पु० मनुष्यका ऋषियोंके प्रति कर्तव्य। (वेद पढ़ने-पढ़ानेसे इससे मुक्ति मिलती है)। –**कल्प**–वि० ऋषितुल्य। –**कुल**–पु० ऋषिका वंश; ऋषिका आश्रम; वह विद्यालय जहाँ ब्रह्मचारियोंको विद्या पढ़ायी जाय। –**पंचमी**–स्त्री० भादों सुदी पंचमी।

ऋष्यशृंग–पु० [सं०] एक ऋषि जिन्हें दशरथ-कन्या शांता ब्याही थी।

ए

ए–देवनागरी वर्णमालाका ८ वाँ (स्वर) वर्ण।

एँच-पँच–पु० उलझन, पेच-पाच; चक्कर; चाल-घात।

एँड़ा-बैंड़ा–वि० उलटा-सीधा।

एँडुआ–पु० गेंडुरी, कुंडली।

ए–पु० [सं०] विष्णु। * सर्व० यह।

एकंगा–वि० एकतरफा, एक ओरका।

एकँड़िया–वि० जिसमें एक ही अंड वा गाँठ हो। पु० एक अंठीवाली लहसुनकी गाँठ; एक अंडकोषवाला बैल।

एकंत*–वि० दे० 'एकांत'।

एक–वि० [सं०] पहले अंक या इकाईसे सूचित, दोका आधा; अकेला; जैसा दूसरा न हो, बेजोड़; वही; अपरिवर्तित; स्थिर; प्रधान; सत्य; ईषत्; कोई; एक भी; कोई या कुछ भी (एक न चलना, न सुनना); जो मिलकर एक चीज, एकरूप हो गया हो, भेदरहित। पु० पहला अंक या इकाई, १; विष्णु; परमात्मा; * ऐक्य, साम्य। –**अंक**,–**आँक**–अ०[हिं०] पक्की बात, निश्चय; निश्चय ही। –**आध**–वि० [हिं०] एक या आधा, एक-दो, दो-एक। –**एक**–वि० [हिं०] हर एक, प्रत्येक। अ० एकके बाद एक, बारी-बारीसे। –**क़लम**–अ० [हिं०] एकबारगी; पूरे तौरसे। –**कालिक**,–**कालीन**–वि० एक ही बार होनेवाला; एक बारका; समकालीन। –**गाछी**–स्त्री० [हिं०] एक ही पेड़के तनेसे बनायी गयी नाव। –**चश्म**–वि० [हिं०] काना। पु० वह तसवीर जिसमें चेहरेका एक ही रुख और एक आँख दिखाई दे। –**चश्मी**–पि० [हिं०] एकरुखी। –**चारिणी**–वि० स्त्री० पतिव्रता स्त्री। –**चित्त**–वि० एक ही विषयको सोचनेवाला, एकाग्र, तल्लीन; एक मन, विचारके। –**चोबा**–वि० [हि०] एक चोब या खंभेपर खड़ा किया जानेवाला (खेमा)। –**च्छत्र**–वि० जिसमें दूसरेका अधिकार, प्रभुत्व न हो, असपत्न, एकतंत्र (राज्य)। –**ज**–पु० सगा भाई। वि० अकेले पैदा होने या बढ़नेवाला; * एकमात्र। –**जात**–वि० एक माता-पितासे उत्पन्न सहोदर। –**जातीय**–वि० (होमोजीनियस) एक ही जाति, वर्ग या किस्मका; जिसके सब अंग या अंश एक सदृश हों। –**जान**–वि० [हिं०] जो घुल-मिलकर एक हो गया हो, एकरूप, एकदिल, अभिन्न-हृदय।

–जीव–वि० एकरूप; अभिन्न। **–टक–**वि०, अ० [हिं०] विना पलक गिरे या गिराये, अनिमेष। **–तंत्र–**वि० जिसमें सब शक्ति, अधिकार एक आदमीके हाथमें हो, एकहत्था (राज्य, शासनप्रबंध); एक व्यक्ति द्वारा, एकके प्रबंधसे परिचालित। **–तरफ़ा–**वि० [हिं०] एकपक्षीय, जिसमें दूसरे पक्षका विचार न किया गया हो। **–०डिग्री–**स्त्री०, **–०फ़ैसला–**पु० [हिं०] वह डिग्री या फैसला जो प्रतिवादी पक्षका जवाब सुने विना (उसकी अनुपस्थितिके कारण) दी जाय या किया जाय। **–तान–**वि० एक ही विषयका ध्यान करनेवाला, एकचित्त, तल्लीन। **–तानता–**स्त्री० (मॉनोटोनी) तान या स्वरकी नींरस एकरूपता। **–तार–**वि० [हिं०] एकसा, एक रंग-रूपका। अ० लगातार। **–तारा–**पु० [हिं०] एक तरहका तँबूरा जिसमें एक ही तार होता है। **–ताल–**वि० जिसमें ताल-सुरका पूरा मेल हो। **–ताला–**पु० [हिं०] संगीतका एक ताल। **–तीस–**वि० [हिं०] तीस और एक, ३१। पु० ३१ की संख्या। **–दंत–**पु० गणेश। वि० एक दाँतवाला। **–दंता–**वि० [हिं०] एक दाँतवाला (हाथी)। **–दंष्ट्र–**पु० गणेश। **–दम–**अ० [हिं०] एकबारगी, तुरत; बिलकुल। **–दरा–**वि० [हिं०] एक दरका दालान, बैठक इ०। **–दलीय शासनतंत्र–**पु० (टोटलिटेरियनिज्म) समूचे देशके लिए एक ही दलके शासनकी प्रणाली जिसकी लपेटमें नागरिकोंका सार्वजनिक जीवन ही नहीं, निजी और व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता है। **–दिल–**वि० [हिं०] एक विचारके; एकचित्त; अभिन्न, एकरूप। **–दिली–**स्त्री० [हिं०] एक दिल होना, एका। **–देशीय–**वि० एक ही देशका; जो किसी विशेष स्थल या अवस्थामें ही लगे, सर्वत्र न लगे। **–धर्मा (र्मन्), –धर्मी (र्मिन्)–**वि० समान धर्म या गुण-स्वभाववाला। **–नयन–**वि० एकाक्ष। पु० शिव; कौवा। **–निष्ठ–**वि० एकके ही ऊपर निष्ठा, रखनेवाला। **–निष्ठा–**स्त्री० एकनिष्ठता; अनन्यता; वफ़ादारी। **–पक्षीय–**वि० एकतरफ़ा; (यूनिलेटरल) एक ही पक्ष या दलसे संबंध रखनेवाला; केवल एक तरफ़से होने या किया जानेवाला। **–पत्नीव्रत–**पु० विवाहिता पत्नीके सिवा और किसी स्त्रीसे प्रेम न करनेका व्रत। **–पाठी (ठिन्)–**वि० जिसे एक ही बार पढ़ने या सुननेसे पाठ याद हो जाय। **–पास*–**अ० पास-पास। **–प्राण–**वि० एकजान, एकदिल। **–फ़सला–**वि० [हिं०] जिस (खेत या जमीन)में सालमें एक ही फसल उपजे। **–ब-एक–**अ० [हिं०] अचानक, यकायक। **–बारगी–**अ० [हिं०] एक ही बारमें; बिलकुल। **–मंजिला–**वि० [हिं०] एक मंजिला या तल्लेवाला (मकान)। **–मत–**वि० एक या समान मत रखनेवाले। **–मुश्त–**अ० [हिं०] इकट्ठा, एक बारमें। **–मोला–**वि० [हिं०] एकदाम कहनेवाला, जो दाममें कमी-वेशी न करे। **–रंग–**वि० एक रंगवाला; एकरूप; बाहर-भीतरसे एक, दुरंगीपनसे रहित, सच्चा, निष्कपट। **–रदन–**पु० गणेश। **–रस–**वि० जो सदा एक रूपमें रहे, कभी बदले नहीं, अपरिणामी; जो मिलकर एक हो गया हो, एकदिल। **–रुखा–**वि० [हिं०] एक रुखवाला, जिसका मुँह एक ही ओर हो; एकतरफ़ा; एकचश्म। **–रूप–**वि० एक ही रूपवाला, जो सब अवस्थाओंमें एकसा रहे; समान रूपवाला; दे० 'एक-जातीय'। **–लौता–**वि०, पु० [हिं०] अपने माँ-बापका अकेला (बेटा)। **–वचन–**वि० एकका वाचक (सिंगुलर)। पु० एकका वाचक वचन या शब्द। **–वस्त्रा–**वि० स्त्री० जो वे ही कपड़े पहने रहे, रजस्वला। **–वाक्यता–**स्त्री० एकराय होना; एकार्थता। **–वेणि, –वेणी–**स्त्री० सीधे-सादे ढंगसे बँधा जूड़ा या चोटी। वि० इस प्रकारका जूड़ा बाँधनेवाली, विधवा, वियोगिनी। **–सठ–**वि० [हिं०] साठ और एक, ६१। पु० ६१ की संख्या। **–सत्ताक–**वि० एकहत्था, एकतंत्र। **–सदनात्मक–**वि० (यूनिकेमरल) जिसमें केवल एक ही सदन, विधानसभा, हो। **–सदस्य-निर्वाचीक्षेत्र–**पु० (सिंगिल मेम्बर कांस्टिटुएंसी) वह निर्वाचनक्षेत्र जहाँसे केवल एक ही सदस्य चुना जानेको हो। **–साँ–**वि० [हिं०] समान, बराबर। **–स्व–**पु० दे० क्रममें (समास भी)। **–हत्था–**वि० [हिं०] एक हाथमें केंद्रित, एक व्यक्ति द्वारा संचालित, एकतंत्र। **मु०–अनार सौ बीमार–**चीज थोड़ी और चाहनेवाले बहुत। **–आँख न भाना–**तनिक भी न भाना, बिलकुल नापसंद होना। **–आँखसे सबको देखना–**एकसा मानना, व्यवहार करना। **–एकके दस-दस करना–**खूब नफ़ा कमाना। **–और एक ग्यारह होते हैं–**दोके मिलकर काम करनेसे शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। **–की चार लगाना–**बढ़ा-चढ़ाकर कहना, शिकायत करना; अपनी ओरसे बातें जोड़-मिलाकर कहना; भड़काना। **–की दवा दो–**एकको दबाने, हरानेके लिए दो बहुत होते हैं। **–की दस सुनाना–**एक कड़ी बातके बदले दस कड़ी बातें सुनाना। **–चना भाड़ नहीं फोड़ सकता–**एक आदमीके किये वह काम नहीं हो सकता जो कई आदमियोंके मिलकर करनेका हो। **–चनेकी दाल–**बिलकुल एकसे, हर बातमें बराबर; सगे भाई। **–जान दो क़ालिब–**बहुत गहरे दोस्त, अभिन्नहृदय होना। **–तवेकी रोटी, क्या मोटी क्या छोटी–**एक कुल, घरानेके सब आदमी बराबर हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं। **–थैलीके चट्टे-बट्टे–**दोनों एक-से हैं, दोनोंमें कोई वास्तविक अंतर नहीं। **–न शुद दो शुद–**एक बला थी ही, दूसरी और आ पड़ी; एक कष्ट या विपत्तिके रहते दूसरीका आ जाना। **–पंथ दो काज–**एक यत्न, उपायसे दो कार्य सिद्ध होना; एक काम करते हुए दूसरा हो जाना। **–पाँव भीतर, एक पाँव बाहर–**कामकी भीड़ या परेशानीसे एक जगह ठहर न सकना, कभी यहाँ, कभी वहाँ आते-जाते रहना। **–पाँव रिकाबमें होना–**यात्राके लिए हर समय तैयार रहना। **–पाँवसे खड़ा रहना–**आज्ञाकी प्रतीक्षामें खड़ा रहना; ताबेदारी बजाना। **–लाठीसे सबको हाँकना–**सबके साथ एक-सा बरताव करना, भले-बुरेका विचार न करना। **–से दो होना–**ब्याह होना, बीवीका घरमें आना।

एकड़–पु० [अं०] एक नाप जो ३२ बिस्वेके लगभग होती है।

एकत*–अ० एक ही स्थानपर, एकत्र।

एकतरा–पु० एक दिनके अन्तरसे आनेवाला ज्वर ।

एकता–स्त्री० [सं०] एक होना, एका, मेल; अभेद ।

एकतालीस–वि० चालीस और एक । पु०४१ की संख्या ।

एकत्र–अ० [सं०] इकट्ठा, यकजा ।

एकत्रित–वि० इकट्ठा किया हुआ, एकत्रीकृत (असाधु) ।

एकत्व–पु० [सं०] दे० 'एकता' ।

एकदा–अ० [सं०] एक बार, एक समय ।

एकन्नी–स्त्री० एक आनेका सिक्का ।

एकबाल–पु० [अ०] स्वीकार, हामी; प्रताप; सौभाग्य ।

एकरार–पु० [अ०] स्वीकार; वादा । **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र ।

एकल–वि० [सं०] अकेला । **–संक्रमणीय मत**–पु० (सिंगिल ट्रांसफरेबल वोट) (आनुपातिक प्रतिनिधित्व-प्रणालीमें) मतदाता द्वारा, किसी निर्वाचन क्षेत्रसे चुने जानेवाले अनेक सदस्योंमेंसे किसी एकको इस शर्तके साथ दिया गया मत कि यदि निर्धारित संख्यामें मत प्राप्त कर लेनेके कारण, उसे इसकी आवश्यकता न रहे, तो वह उसके बादके अधिमान दिये गये उम्मेदवारके पक्षमें संक्रमित हो जायगा ।

एकला*–वि० दे० 'एकल' ।

एकबाँझ–स्त्री० काकवंध्या ।

एकसर–अ० एक सिरेसे दूसरे सिरेतक; एक ही दफा । वि० अकेला; एक पल्लेका ।

एकस्व–पु० [सं०] (पेटेंट) किसी उद्भावित या स्वनिर्मित वस्तुसे होनेवाली आयका एकाधिकार देनेवाला सरकारी मुद्रांकित प्रलेख ।**–पत्र**–पु० (लेटर्स पेटेंट) किसी बातका एकाधिकार प्रदान करनेवाला पत्र । **–भेषज**–स्त्री० (पेटेंट मेडिसिन) वह भेषज या दवा जिसे बेचने-बनानेका एकाधिकार सरकारी मुद्रांकित प्रलेख द्वारा उसके उद्भावक या मूल निर्माताको ही प्राप्त हो ।

एकहत्तर–वि० सत्तर और एक । पु० ७१ की संख्या ।

एकहरा–वि० एक परतका ।

एकांकी(किन्)–वि० [सं०] एक अंकवाला (दृश्य काव्य) ।

एकांग–वि० [सं०] एक अंगवाला; विकलांग । **–वात**–पु० पक्षाघात, फालिज ।

एकांगी(गिन्)–वि० [सं०] एक अंगवाला; एकपक्षीय ।

एकांत–वि० [सं०] अकेला; अलग; एक ही वस्तुको लक्ष्य करनेवाला; अत्यंत; निरपवाद; निश्चित; एक ही ओर लगा हुआ । पु० निराला, सूना स्थान; तनहाई । **–वास**–पु० एकांत स्थानमें रहना ।

एकांतर–वि० [सं०] एकके बाद आने या पड़नेवाला; (आल्टरनेट) बीचमें एकको छोड़कर दूसरा । पु०अँतरा ज्वर ।

एकांतरिक–वि० [सं०] (आल्टरनेट) बीचमें एक दिन छोड़कर दूसरे दिन होने या आनेवाला; बीचमें एकको छोड़कर दूसरेसे संबंध रखनेवाला ।

एकांतिक–वि० [सं०] पक्का, निश्चित ।

एका–पु० एकता, मेल, इत्तिफाक, एकमत होना ।

एकाएक–अ० अचानक, सहसा ।

एकाएकी*–अ० दे० 'एकाएक' । वि० एकाकी ।

एकाकी (किन्)–वि० [सं०] अकेला ।

एकाक्ष–वि० [सं०] काना । पु० कौवा; शिव ।

एकाक्षरी(रिन्)–वि० [सं०] एक अक्षरवाला । **–कोश**–पु० संस्कृतका एक कोश जिसमें अलग-अलग अक्षरोंके अर्थ दिये गये हैं ।

एकाग्र–वि० [सं०] एक ही नोकवाला; जिसका ध्यान एक ही ओर, एक ही वस्तुमें लगा हो; अचंचल । **–चित्त**–वि० स्थिरचित्त ।

एकाग्रता–स्त्री० [सं०] एकाग्र होनेका भाव ।

एकात्म–वि० [सं०] एकप्राण, अभिन्न । **–वाद**–पु० आत्माकी एकता, जीव-ब्रह्मकी एकताका सिद्धांत, अद्वैतवाद ।

एकादश–वि० [सं०] दस और एक, ११ ।

एकादशाह–पु० [सं०] मृत्यु या दाहकी तिथिसे ग्यारहवाँ दिन; उस दिनका कर्म ।

एकादशी–स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्षकी ग्यारहवीं तिथि ।

एकाधिक–वि० [सं०] एकसे अधिक, अनेक ।

एकाधिकार–पु० [सं०] एक या अकेले आदमी या कंपनीका अधिकार; इजारा (मॉनोपाली) ।

एकाधिप, एकाधिपति–पु० [सं०] सारे देशपर एकच्छत्र राज्य करनेवाला, अकेला स्वामी या शासक ।

एकाधिपत्य–पु० [सं०] एकाधिकार, एक आदमीको सर्वाधिकार होना ।

एकानुरूप–वि० [सं०] (होमोलॉगस) जो एक सदृश हो, समान सापेक्ष स्थितिवाला ।

एकार्थ, एकार्थक–वि० [सं०] समान अर्थवाला, हममानी ।

एकावली–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ पूर्व पूर्वके प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओंका विशेषणके रूपमें स्थापन या निषेध किया जाय ।

एकाह–वि० [सं०] एक दिनमें होनेवाला । पु० एक दिन चलनेवाला यज्ञ ।

एकीकरण–पु० [सं०] दो या अधिक वस्तुओंको मिलाकर एक रूप कर देना; (एमलगमेशन) दो या अधिक समितियों, व्यापारिक संस्थाओं आदिका मिलकर एक हो जाना ।

एकीकृत–वि० [सं०] मिलाकर एक किया हुआ ।

एकीभवन, एकीभाव–पु० [सं०] मिलकर एक हो जाना; पूरी तरह मिल जाना ।

एकीभूत–वि० [सं०] जो मिलकर एक हो गया हो ।

एकेंद्रिय–वि० [सं०] (वह प्राणी) जिसे एक ही इंद्रिय (त्वचा) हो (केंचुआ, जोंक इ०) ।

एकेश्वरवाद–पु० [सं०] ईश्वर, जगत्‌का सर्जन-नियमन करनेवाली शक्ति, एक ही है–यह मत ।

एकोत्तर–वि० [सं०] एक अधिक (जैसे पाँचसे छः) ।

एकौझा*–वि० अकेला, तनहा ।

एक्का–वि० अकेला; बेजोड़ । पु० दो पहियोंकी गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है; ताश, गंजीफेका वह पत्ता जिसपर एक ही बूटी हो, एक्की; अकेले कठिन काम कर सकनेवाला सिपाही । **–दुक्का**–वि० अकेला-दुकेला; एक-दो (आदमी) । **–वान**–पु० एक्का हाँकनेवाला ।

एक्की–स्त्री० एक बैलकी गाड़ी; एक बूटीवाला ताश ।

एक्यानबे–वि० नब्बे और एक, ९१ । पु० ९१ की संख्या ।

एक्यावन–वि० पचास और एक, ५१ । पु० ५१ की संख्या ।

एक्यासी–वि० अस्सी और एक, ८१। पु० ८१ की संख्या।

एक्स-रे–पु० [अं०] विजलीकी विशेष किरणें जिनकी सहायतासे शरीर जैसे ठोस पदार्थके भीतरके भागोंका चित्र लिया जा सकता है।

एजेंट–पु० [अं०] किसीकी ओरसे, उसके प्रतिनिधिके रूपमें काम करनेवाला; किसी व्यापारी या फर्मकी ओरसे खरीद-वेची आदि करनेवाला गुमाश्ता; कमीशनपर माल वेचनेवाला; किसी राज्य या उपनिवेशमें प्रतिनिधिरूपसे रहनेवाला अधिकारी

एजेंसी–स्त्री० [अं०] एजेंटका पद, कार्य या कार्यक्षेत्र; वह स्थान जहाँ कमीशनपर माल वेचा जाय; किसी एजेंटके अधीन प्रदेश या इलाका।

एड़–स्त्री० एड़ी। **मु०–देना,–लगाना**–(घोड़ेको) तेज करने या आगे वढ़ानेके लिए एड़ मारना।

एड़ी–स्त्री० तलवेका टखनेके नीचेका भाग। **मु०–चोटीका पसीना एक करना**–वहुत मेहनत, कोशिश करना। **–से चोटीतक**–सिरसे पैरतक। **–(ड़ियाँ) रगड़ना**–वहुत कष्ट भोगना; वहुत श्रम, दौड़-धूप करना।

एण–पु० [सं०] काले रंगके हिरनका एक भेद।

एतक़ाद–पु० [अ०] श्रद्धा, विश्वास, एतवार, भरोसा।

एतदर्थ–अ० [सं०] इसलिए; इसके लिए।

एतद्देशीय–वि० [सं०] इस देशका।

एतबार–पु० [अ०] विश्वास, भरोसा; साख।

एतबारी–वि० [अ०] विश्वास करने योग्य, मातवर।

एतमाद–पु० [अ०] विश्वास, भरोसा।

एतराज़–पु० [अ०] विरोध, आपत्ति; दोप निकालना।

एतवार–पु० दे० 'इतवार'।

एता*–वि० इतना।

एतादृशी–वि० स्त्री० [सं०] इस प्रकारकी, ऐसी।

एतावत्–वि० [सं०] इतना।

एतिक*–वि० स्त्री० इतनी।

एन*–पु० दे० 'एण'।

एरंड–पु० [सं०] रेंड़। **–खरबूजा**–पु० [हिं०] पपीता।

एरंडक–पु० [सं०] दे० 'एरंड'।

एलची–पु० [तु०] दूत; राजदूत।

एला–स्त्री० [सं] इलायची; इलायचीका पेड़।

एलुवा–पु० मुसब्बर।

एवज़–पु० [अ०] वदला, प्रतिफल; (किसीके) वदलेमें काम करनेवाला, स्थानापन्न। अ० वदलेमें।

एवज़ी–वि०,पु० [अ०] वदलेमें काम करनेवाला, स्थानापन्न।

एवमस्तु–अ० [सं०] ऐसा हो।

एवम्–अ० [सं०] ऐसे, इस प्रकार; ऐसे ही और; और।

एषणा–स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह; प्रार्थना; याचना।

एह*–सर्व० दे० 'यह'।

एहतिमाली–वि० [अ०] संदिग्ध।

एहतियात–पु० [अ०] वचना, वचाव; चौकसी, होशियारी।

एहतियातन्–अ० [अ०] एहतियातके तौरपर; वचावकी दृष्टिसे।

एहतियाती–वि० [अ०] खतरेसे वचावके लिए किया जानेवाला; वचाव-संवंधी, हिफाजती। **–काररवाई**–स्त्री० संभाव्य अनिष्ट या खतरेसे वचावके लिए की गयी काररवाई।

एहसान–पु० [अ०] नेकी, भलाई, उपकार; ऋण। **–मंद**–वि० उपकार माननेवाला, कृतज्ञ।

एहाता–पु० [अ०] घेरा; चहारदीवारीसे घेरी हुई जगह; वड़ा सूवा, प्रेसिडेंसी।

एहि*–सर्व० इस, एहका विभक्तिके पहलेवाला रूप।

एहो–अ० संवोधनार्थक अव्यय, हे, ए!

ऐ

ऐ–देवनागरी वर्णमालाका नवाँ (स्वर) वर्ण।

ऐँ–अ० आश्चर्यादि सूचक शब्द।

ऐँचना–स० क्रि० खींचना; अपने जिम्मे लेना; फटकना।

ऐँचाताना–वि० जिसकी पुतली ताकते समय दूसरी तरफ खिंची रहे।

ऐँचातानी–स्त्री० अपनी-अपनी ओर खींचनेकी कोशिश।

ऐँचीला–वि० लचीला; खींचे जाने योग्य।

ऐँछना*–स० क्रि० झाड़ना, कंघी करना–'देह पोंछि पुनि ऐंछि श्याम कच'–रघु०।

ऐँठ–स्त्री० ऐंठन; अकड़, घमंड; द्वेष।

ऐँठन–स्त्री० मरोड़, घुमाव; खिंचाव।

ऐँठना–स० क्रि० मरोड़ना, घुमाव देना; धोखा देकर या भय दिखाकर ले लेना। अ० क्रि० अकड़ना; वल खाना; टर्राना; मरना।

ऐँठा–पु० रस्सी वटनेका एक यंत्र।

ऐँठाना–स० क्रि० ऐंठनेके काममें लगाना।

ऐँठू–वि० घमंडी, अकड़वाज।

ऐँड़–पु० ऐंठ, शान, गर्व; भँवर। **–दार**–वि० शानवाला, गर्वीला, घमंडी।

ऐँड़ना–अ० क्रि० ऐंठना; अँगड़ाना; इतराना; सूखकर कड़ा पड़ जाना। स० क्रि० ऐंठना, वल देना; (वदन) तोड़ना।

ऐँड़-बैँड़*–वि० वक्र, टेढ़ा, तिरछा।

ऐँड़ा–वि० ऐंठा हुआ, दर्पयुक्त 'ऐंड़ो रहै निसंक तासु हाँसी करि डोलै'–दीन०।

ऐँड़ाना–अ० क्रि० अँगड़ाई लेना; ऐंठ दिखलाना, इतराना।

ऐंदव–वि० [सं०] इंदु–चंद्रमा संवंधी। पु० मृगशिरा नक्षत्र; चांद्रायण व्रत; चांद्र मास।

ऐंद्र–वि० [सं०] इंद्र-संवंधी। पु० अर्जुन; वालि।

ऐंद्रजाल–पु० [सं०] जादूगरी, वाजीगरी।

ऐंद्रजालिक–वि० [सं०] इंद्रजाल, जादू, वाजीगरी जाननेवाला। पु० वाजीगर, जादूगर।

ऐंद्रिय–वि० [सं०] इंद्रिय-संवंधी; इंद्रियग्राह्य।

ऐ–अ० [सं०] संवोधन–हे, ए!

ऐकपत्य–पु० [सं०] पूर्ण प्रभुत्व; एकतंत्र शासन।

ऐकमत्य–पु० [सं०] एकराय होना, एका।

ऐकराज्य–पु० [सं०] एकच्छत्र या एकतंत्र राज्य।

ऐकांतिक-वि० [सं०] बिना शर्त या अपवादका; कतई; अकाट्य, पक्का।

ऐकात्म्य-पु० [सं०] एकात्मता, एकरूपता, तादात्म्य।

ऐक्य-पु० [सं०] एकता, एका; एकरूपता; समाहार, जोड़।

ऐगुन*-पु० दे० 'अवगुण'।

ऐच्छिक-वि० [सं०] अपनी इच्छा या मर्जीपर अवलंबित, इख्तियारी; वैकल्पिक।

ऐज़न्-अ० [अ०] ऊपर लिखे या कहे अनुसार; फिर वही, उसी तरह [किसी शब्द या अंककी आवृत्तिसे बचनेके लिए यह शब्द या इसका चिह्न (") लिखा जाता]।

ऐत*-वि० इतना।

ऐतरेय-पु० [सं०] ऋग्वेदका एक ब्राह्मण; एक आरण्यक; एक उपनिषद्।

ऐतिहासिक-वि० [सं०] इतिहास-संबंधी; इतिहासमें वर्णित। पु० इतिहासका ज्ञाता।

ऐन*-पु० दे० 'अयन' और 'एण'। स्त्री० [अ०] आँख; चश्मा, सोता; वस्तुकी अस्लीयत। वि० ठीक, असल; बहुत; परम। अ० हूबहू, ज्योंका त्यों। **-वक्त**-पु० ठीक वक्त, ठीक मौका।

ऐनक-स्त्री० [अ०] चश्मा। **-फ़रोश**-पु० चश्मा बेचनेवाला। **-साज़**-पु० चश्मा बनानेवाला।

ऐना*-पु० दे० 'आईना'।

ऐपन-पु० चावल और हल्दी एक साथ पीसकर बनाया हुआ लेप जो मांगलिक कार्यों, पूजनोंमें काम आता है।

ऐब-पु० [अ०] दोष, खोट, बुराई; धब्बा, लांछन। **-जोई**-स्त्री० ऐब ढूँढ़ना, छिद्रान्वेषण। **-दार**-वि० ऐबवाला, सदोष।

ऐबी-वि० [अ०] जिसमें ऐब या दूषण हो; विकलांग।

ऐयाम-पु० [अ०] दिन; समय ('योम'-दिनका बहु०)।

ऐयार-पु० [अ०] धूर्त, चालाक, चलता-पुरजा व्यक्ति।

ऐयारी-स्त्री० [अ०] धूर्तता, चालाकी।

ऐयाश-वि० [अ०] विलासी, विषयासक्त, कामुक।

ऐयाशी-स्त्री० [अ०] विलासिता, विषयासक्ति, कामुकता।

ऐरा-ग़ैरा-वि० इधर-उधरका; बाहरी; अजनबी; ऐसा-वैसा, तुच्छ, नगण्य। **मु०-नत्थू खैरा**-जिसकी कोई हैसियत न हो, साधारण जन; तुच्छ, नगण्य जन।

ऐरापति*-पु० दे० 'ऐरावत'।

ऐरावत-पु० [सं०] इंद्रका हाथी; पूर्व दिशाका दिग्गज; बिजलीसे चमकता हुआ बादल; इंद्रधनुष्।

ऐरावती-स्त्री० [सं०] ऐरावतकी भार्या; बिजली।

ऐल-*पु० प्रचुरता; बाढ़; कोलाहल; हलचल; समूह।

ऐश-पु० [अ०] सुख, भोग, विलास; विषयसुख। **-गाह**-पु० विलासभवन। **-पसंद**-वि० आरामपसंद, विलासी। **-व आराम**-पु०, **-व इशरत**-स्त्री० सुख-चैन, भोग-विलास।

ऐश्वर-वि० [सं०] ईश्वरीय; शिव-संबंधी; शक्तिशाली।

ऐश्वर्य-पु० [सं०] ईश्वरता; शक्ति; प्रभुत्व; आधिपत्य; धन-वैभव; अणिमादि सिद्धियाँ; सर्वव्यापकता; सर्वशक्तिमत्ता। **-शाली(लिन्)**-वि० ऐश्वर्यवाला।

ऐश्वर्यवान् (वत्)-वि० [सं०] ऐश्वर्यवाला।

ऐस*-वि० दे० 'ऐसा'। पु० दे० 'ऐश'।

ऐसा-वि० इस तरहका। **-वैसा**-वि० साधारण; तुच्छ, नाचीज। **(किसीकी) ऐसी-तैसी**-गाली। **-० में जाय**-चूल्हे, भाड़में जाय (खीझ या उपेक्षाके अर्थमें)।

ऐसे-अ० इस प्रकार, इस ढंगसे।

ऐहलौकिक-वि० [सं०] इस लोकसे संबंध रखनेवाला, ऐहिक।

ऐहिक-वि० [सं०] इस लोकसे संबंध रखनेवाला, सांसारिक।

ओ

ओ-देवनागरी वर्णमालाका दसवाँ वर्ण।

ओँइछना†-स० क्रि० वारना, न्योछावर करना।

ओँकना*-अ० क्रि० कै करना; ऊबना; फिर जाना।

ओंकार-पु० [सं०] 'ओम्' मंत्र या इसका उच्चारण; आरंभ।

ओँगन*-पु० गाड़ीकी धुरीमें दिया जानेवाला तेल।

ओँगना-स० क्रि० गाड़ीकी धुरीमें तेल लगाना।

ओँठ-पु० होंठ; घड़े इत्यादिके मुँहका किनारा। **मु०-चबाना**-ओंठको दाँतों तले दबाना, क्रोध प्रकट करना। **-चाटना**-खा चुकनेपर स्वादके लालचसे ओंठोंपर जीभ फेरना; स्वादकी लालसा रह जाना। **-फड़कना**-क्रोधके कारण ओंठोंका काँपना। **-हिलाना**-मुँहसे शब्द निकालना। **ओंठोंपर**-जबानपर, प्रकट होनेके निकट। **-में कहना**-बहुत धीमी आवाजमें बोलना।

ओंडा*-वि० गहरा। पु० गड्ढा; सेंध।

ओ-पु० [सं०] ब्रह्मा। अ० पुकारनेमें प्रयुक्त-हे, ए, अरे; कोई विस्मृत बात यकायक याद आनेपर भी बोलते हैं (ओ, आपने ठीक कहा); ओह (विस्मयके अर्थमें); और।

ओंक-स्त्री० मतली। पु० अंजलि [सं०] घर; पनाह।

ओकना-अ० कि० कै करना; भैंसकी तरह चिल्लाना।

ओकाई-स्त्री० ओक, वमन।

ओखद*-स्त्री० दे० 'औषध'।

ओखल-पु० ओखली; परती जमीन।

ओखली-स्त्री० पत्थर या काठका वह पात्र जिसमें धान कूटा जाता है, कूँडी। **मु०-में सिर देना**-कोई झंझट सिरपर लेना; कष्ट, हानि सहनेको तैयार होना।

ओखा*-पु० बहाना। वि० कठिन; झीना; मिलावटवाला; रूखा-सूखा।

ओग*-पु० उगहनी, चंदा; कर; गोद।

ओगरना†-अ० क्रि० टपकना, रसना; साफ किया जाना (कूप आदि)।

ओगारना†-स० क्रि० कीचड़ आदि निकालकर कुएँकी सफाई करना।

ओघ-पु० [सं०] धारा, बहाव; समूह, ढेर, राशि।

ओछा-वि० गंभीरता-रहित, छिछोरा; क्षुद्र; खोटा; छोटा; हलका। **-पन**-पु० छिछोरापन; क्षुद्रता; खोटाई।

ओछाई—स्त्री० छिछोरापन, हलकापन; क्षुद्रता, खोटाई।

ओज (स्)—पु० [सं०] शुक्रकी सारभूत और शरीरको कांति, तेज देनेवाली धातु; बल; वीर्य; तेज; कांति; जल; आविर्भाव; रचनाका वह गुण जिससे पढ़ने-सुननेवालेके हृदयमें उत्साह या जोश पैदा हो; शस्त्रकौशल।

ओजना†—स० क्रि० सहना, झेलना, अँगेजना।

ओजस्विता—स्त्री० [सं०] प्रताप; तेज; दीप्ति; प्रभाव; वर्णनका प्रभावोत्पादक ढंग।

ओजस्वी (स्विन्)—वि० [सं०] ओजभरा; जोश पैदा करनेवाला; बल-वीर्य-शाली।

ओझ—पु० पेट; आमाशय, अँतड़ी।

ओझड़ी (री)—स्त्री०, **ओझर**—पु० पेट; आमाशय, मेदा।

ओझल—पु० ओट, आड़।

ओझा—पु० झाड़-फूँक करनेवाला; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

ओझाई—स्त्री० झाड़-फूँक या उसकी उजरत; ओझाका काम।

ओट—स्त्री० आड़; रोक; शरण, सहारा।

ओटना—स० क्रि० रुईसे बिनौलेको अलग करना; किसी बातको बार-बार कहना; ऊपर लेना, ओढ़ना।

ओटनी—स्त्री० वह चरखी जिसमें दबाकर रुईसे बिनौलेको अलग करते हैं।

ओटा—पु० परदेके लिए बनी हुई दीवार।

ओठँगना†—अ० क्रि० किसी चीजका सहारा लेकर बैठना; सुस्तानेके लिए लेटना।

ओठँगाना†—स० क्रि० टिकाकर रखना; साँकल आदि लगाये बिना ही किवाड़से किवाड़ लगा देना।

ओठ—पु० ओष्ठ, होंठ।

ओड़—पु० गधेपर मिट्टी, चूना आदि ढोनेवाला।

ओड़न*—पु० वह चीज जिससे वार रोका जाय, ढाल, फरी।

ओड़ना—स० क्रि० रोकना, ऊपर लेना; (हाथ) पसारना।

ओड़ा†—पु० बड़ा टोकरा; ओंडा; टोटा; टोकरेका मान।

ओढ़ना—स० क्रि० किसी कपड़े, खाल आदिसे बदनको ढँकना, छिपाना; अपने ऊपर, जिम्मे लेना। पु० ओढ़नेकी चीज। मु०—**उतारना**—अपमानित करना।—**ओढ़ाना**—विधवा स्त्रीके साथ सगाई करना।—**बिछौना बना लेना**—हरवक्त काममें लाना; लापरवाहीसे बरतना।

ओढ़नी—स्त्री० स्त्रियोंके ओढ़नेका छोटा दुपट्टा। मु०—**बदलना**—सहेली बनाना, बहनापा जोड़ना।

ओढ़र*—पु० बहाना, व्याज।

ओढ़ाना—स० क्रि० (दूसरेको) कपड़ेसे ढकना।

ओत—स्त्री० आराम, चैन; लाभ, प्राप्ति। वि० [सं०] बुना हुआ; गुँथा हुआ। पु० तानेका सूत। **—प्रोत**— वि० ताने-बानेकी तरह बुना या गुँथा हुआ; भरा हुआ। पु० ताना-बाना।

ओता*—वि० उतना।

ओद†—वि० गीला, भीगा हुआ। पु० गीलापन, तरी।

ओदन—पु० [सं०] भात; बादल।

ओदर*—पु० दे० 'उदर'।

ओदरना*—अ० क्रि० फटना; गिर पड़ना; नष्ट होना।

ओदा—वि० गीला, नम।

ओदारना*—स०क्रि० गिराना, ढाना; फाड़ना; नष्ट करना।

ओधना*—अ० क्रि० (काममें) लगना; फँसना, उलझना।

ओनंत*—वि० अवनत, झुका हुआ।

ओनचन—स्त्री० अदवान, पैतानेकी रस्सी।

ओनचना—स० क्रि० पैतानेकी रस्सी खींचकर कड़ी करना।

ओनवना*—अ० क्रि० झुकना; घिर आना; टूटना।

ओना*—पु० पानी निकलनेका रास्ता।

ओनाना*—स० क्रि० कान लगाकर सुनना; झुकाना; प्रवृत्त करना; आदेशका पालन करना।

ओनामासी—स्त्री० अक्षरारंभ; आरंभ ('ॐ नमः सिद्धम्'-का बिगड़ा हुआ रूप)।

ओप—स्त्री० चमक, कांति, आब; जिला, पालिश।

ओपची—पु० कवचधारी योद्धा; रक्षकयोद्धा।

ओपना—स० क्रि० चमक लानेके लिए माँजना, रगड़ना, पालिश करना। अ० क्रि० चमकना, आब आना।

ओपनि*—स्त्री० झलक, चमक। **—वारी**—वि० स्त्री० चमकवाली।

ओपनी—स्त्री० ईंट या पत्थरका टुकड़ा जिससे तलवार आदि माँजी जाय; मोहरा।

ओफ़—अ० [अ०] दे० 'उफ़'।

ओबरी†—स्त्री० तंग कोठरी, ऐसी कोठरी जिसमें हवा और रोशनीके लिए रास्ता न हो।

ओम्—पु० [सं०] वेदपाठके पहले और पीछे कहा जानेवाला पवित्र शब्द, प्रणव, ॐ।

ओर—स्त्री० तरफ, दिशा, पक्ष। पु० छोर; अंत; आरंभ। मु०—**निबाहना,—निभाना**—अंततक कर्तव्य पूरा करना।

ओरती*—स्त्री० दे० 'ओलती'।

ओरमना*—अ० क्रि० झुकना; लटकना, झूलना।

ओरमाना*—स० क्रि० झुकाना; लटकाना।

ओरा*—पु० ओला।

ओराना†—अ० क्रि० समाप्त होना, चुकना।

ओरिया†—स्त्री० दे० 'ओरी'।

ओरी—स्त्री० ओलती।

ओलंबा*—पु० दे० 'ओलंभा'।

ओलंभा*—पु० उलाहना, शिकायत।

ओल—स्त्री० आड़; आश्रय; गोद; शरण; किसी बातकी जमानतमें रखी या रोक रखी गयी चीज या आदमी; जमानत; बहाना। वि० [सं०] गीला, नम। पु० सूरन।

ओलचा—पु० लकड़ीका दस्तेदार पात्र जो खेतको छिड़ककर सींचनेके काम आता है, हत्था; छिछली दौरी जिससे पानी उलीचने या अनाज ओसानेका काम लेते हैं।

ओलती—स्त्री० छप्पर या छाजनका छोर जहाँसे वर्षाका पानी जमीनपर गिरता है। मु०—**तलेका भूत**—पास रहनेवाला आदमी जो घरके सब भेद जानता हो।

ओलना*—स० क्रि० परदा करना; रोकना; चुभाना; ओड़ना, ऊपर लेना।

ओला—पु० जमे हुए जलकणों या बर्फका गोला जो जाड़ेकी वर्षामें कभी-कभी गिरता है, बिनौली, उपल; मिश्री या दानेदार चीनीका बना हुआ गोला लड्डू; भेद; परदा। वि० बहुत ठंडा, बर्फसा ठंडा।

ओलिक*—पु० आड़, परदा।

ओलियाना†—स० क्रि० गोदमें भरना; घुसाना।

ओली—स्त्री० गोद; अंचल; झोली।

ओल्यो*—पु० बहाना—'बैठी बहू गुरु लोगनिमें लखि लाल गये करिकै कछु ओल्यो'—भावvि०।

ओषध*—स्त्री० दे० 'औषध'।

ओषधि, ओषधी—स्त्री० [सं०] वनस्पति; जड़ी-बूटी।

ओषधीश—पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

ओष्ठ—पु० [सं०] ओठ।

ओष्ठ्य—वि० [सं०] ओठसे संबद्ध; ओठसे उच्चरित। **—वर्ण**—पु० उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्।

ओस—पु० हवाकी भाप जो रातमें जलकणके रूपमें जमीनपर गिरती है, शबनम। **—का मोती**—क्षणभंगुर। **मु०—चाटनेसे प्यास नहीं बुझती**—थोड़ीसी वस्तुसे बड़ी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं हो सकती। **—पड़ना**—बेरौनक हो जाना; उदासी छाना; उत्साह नष्ट हो जाना; ठंडा हो जाना।

ओसरी†—स्त्री० अवसर, बारी।

ओसाई—स्त्री० ओसानेकी मजदूरी या काम।

ओसाना—स० क्रि० माँड़े हुए अनाजको हवामें उड़ाकर दानेको भूसे आदिसे अलग करना।

ओसारा—पु० सायबान, बरामदा।

ओह—अ० दुःख या आश्चर्यसूचक शब्द।

ओहट*—स्त्री० ओट।

ओहदा—पु० [अ०] पद, स्थान। **—(दे)दार**—पु० पदाधिकारी।

ओहार—पु० पालकी आदिपर परदे या शोभाके लिए डाला हुआ कपड़ा।

औ

औ—देवनागरी वर्णमालाका ग्यारहवाँ (स्वर) वर्ण।

औँगना—स० क्रि० दे० 'ओंगना'।

औँगा*—वि० गूँगा।

औँघना, औँघाना†—अ० कि० दे० 'ऊँघना'।

औँजना*—अ० क्रि० ऊबना, व्याकुल होना। स० क्रि० उझिलना, ढालना।

औँटन—पु० चारा आदि काटनेका ठीहा।

औँटना—स० क्रि० दे० 'औटना'।

औँठ—स्त्री० बरतन आदिका उठा हुआ किनारा; ओंठ।

औँड*—पु० ओड़; बेलदार।

औँड़ा*—वि० गहरा; उभड़ा या उभड़ता हुआ।

औँदना, औँदाना*—अ० क्रि० उन्मत्त होना; व्याकुल होना।

औँधना—अ० क्रि० उलट जाना, औँधा होना। स० क्रि० उलट देना।

औँधा—वि० जिसका मुँह नीचेकी ओर हो, उलटा; नीचा। **मु०—हो जाना**—बेसुध होना; गिर पड़ना। **औँधी खोपड़ीका**—वि० मूर्ख। **—समझ**—उलटी बुद्धि। **औँधे मुँह गिरना**—धोखा खाना; भूल करना।

औँधाना—स० क्रि० नीचा या उलटा करना।

औँरा†—पु० आँवला।

औ* अ० दे० 'और'।

औक़ात—पु०[अ०] वक्त, समय; जमाना ('वक्त'का बहु०)। स्त्री० हैसियत।

औगत*—वि० दे० 'अवगत'। * स्त्री० दे० 'अवगति'।

औगाहना*—स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'अवगाहना'।

औगी—स्त्री० चाबुक, पैना; जंगली जानवरको फँसानेके लिए बना हुआ गड्ढा; कारचोबी जूतेका ऊपरका चमड़ा।

औगुन*—पु० दे० 'अवगुण'।

औगुनी*—वि० दोषी; दुर्गुणी।

औग्र्य—पु० [सं०] उग्रता, भयंकरता।

औघट*—वि० कठिन, दुर्गम। पु० दुर्गम मार्ग।

औघड़—पु० अघोरी; फक्कड़; मनमौजी। वि० अटपट।

औघर—वि० अनगढ़; अटपटा, टेढ़ा; विचित्र।

औचक—अ० अचानक, यकायक।

औचट—स्त्री० कठिनाई, संकट। अ० अचानक; भूलसे।

औचिंत*—वि० निश्चिंत, बेखबर।

औचित्य—पु० [सं०] उचित होना, उपयुक्तता, मुनासिबत।

औज—पु० दे० 'ओज'; [अ०] ऊँचाई, बुलंदी; उत्कर्ष।

औजड़*—वि० उजड्ड।

औज़ार—पु० [अ०] कोई काम करनेका साधन, आला, उपकरण।

औज्ज्वल्य—पु० [सं०] उजलापन; चमक।

औझक*—अ० दे० 'औचक'।

औझड़ (र)*—अ० लगातार, निरन्तर।

औटन*—स्त्री० औटनेकी क्रिया; ताव, आँच।

औटना—स० क्रि० दूध, रस आदिको आँच देकर गाढ़ा करना, देरतक उबालना, खौलाना। अ० क्रि० खौलना, आँच खाना; पगना; तपना; * भटकना।

औटनी—स्त्री० औटी जानेवाली चीजको चलानेकी कलछी।

औटाना—स० क्रि० औटना, आँच देकर गाढ़ा करना।

औठपाय*—पु० अठपाव, शरारत, धूर्तता।

औढर—वि० चाहे जिधर ढल जानेवाला; थोड़ेमें प्रसन्न होकर निहाल कर देनेवाला, आशुतोष। **—दानी**—वि० प्रार्थी, भक्तको निहाल कर देनेवाला।

औतरना*—अ० क्रि० अवतार ग्रहण करना, जन्म लेना।

औतार—पु० दे० 'अवतार'।

औत्तरेय—पु० [सं०] उत्तरासे उत्पन्न, परीक्षित।

औत्पत्तिक—वि० [सं०] उत्पत्ति-संबंधी; सहज, पैदाइशी।

औत्स—वि० [सं०] झरनेमें उत्पन्न या झरना-संबंधी।

औत्सुक्य—पु० [सं०] उत्सुकता।

औथरा*—वि० उथला, छिछला।

औदकना*—अ० क्रि० चौंकना।

औदरिक—वि० [सं०[उदर-संबंधी; बहुत खानेवाला, पेटू।

औदसा*—स्त्री० अवदशा, दुर्दशा, विपत्ति।

औदार्य—पु० [सं०] उदारता; महत्ता; अर्थगांभीर्य।

औदासीन्य, औदास्य—पु० [सं०] उदासीनता, उदासी; एकाकीपन, निर्जनता; वैराग्य।

औदुंबर–वि० [सं०] उदुंबर या गूलरका बना हुआ; ताम्र-निर्मित । पु० गूलरकी लकड़ीका बना यज्ञपात्र ।

औद्धत्य–पु० [सं०] उद्धतता, उजड्डपन ।

औद्यानिक योजना–स्त्री० [सं०] (हार्टिकल्चरल स्कीम) उद्यानोंमें पेड़-पौधे लगाने तथा उनके रक्षण आदिकी योजना ।

औद्योगिक–वि० [सं०] उद्योग-संबंधी । **–उन्नति**–स्त्री० उद्योग-धंधों, कल-कारखानोंकी उन्नति या बाढ़ । **–तथ्य**–पु० (इंडस्ट्रियल डेटा) उद्योग-धंधोंसे संबंध रखनेवाली प्रामाणिक बातें । **–वासव्यवस्था**–स्त्री० (इंडस्ट्रियल हाउसिंग) कारखानोंमें काम करनेवाले श्रमिकोंके लिए रहनेके मकान बनानेकी व्यवस्था ।

औद्योगिकीकरण–पु० (इंडस्ट्रियलिजेशन) अनेक कारखानों, उद्योगों आदिकी स्थापना, विस्तार आदि द्वारा देशको उद्योगप्रधान बनाना ।

औध*–पु० दे० 'अवध' । स्त्री० दे० 'अवधि' ।

औधारना*–स० क्रि० दे० 'अवधारना'; प्रारंभ करना ।

औधि*–स्त्री० दे० 'अवधि' ।

औनि*–स्त्री० दे० 'अवनि' । **–प**–पु० राजा ।

औने-पौने–अ० कुछ कम दामपर, कुछ घाटा उठाकर ।

औपचारिक–वि० [सं०] उपचार-संबंधी; रस्मी, दिखाऊ ।

औपटी*–वि० स्त्री० अटपटी, कठिन ।

औपनिवेशिक–वि० [सं०] उपनिवेश-संबंधी; उपनिवेशमें रहनेवाला । **–स्वराज्य**–पु० एक प्रकारका स्वराज्य जो कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि ब्रिटिश उपनिवेशोंको प्राप्त है ।

औपन्यासिक–वि० [सं०] उपन्यास-संबंधी; उपन्यासके ढंगका; अद्भुत । पु० उपन्यासकार ।

औपपत्तिक–वि० [सं०] उपपत्ति-युक्त; युक्ति-संगत, उपयुक्त ।

औपसर्गिक–वि० [सं०] उपसर्ग-संबंधी; उपसर्ग-रूपमें प्राप्त (रोग) ।

औम*–वि० दे० 'अवम' ।

और–अ० दो शब्दों और वाक्योंको जोड़नेवाला एक शब्द; व, तथा । वि० दूसरा, अधिक । मु०**–का और**–कुछका कुछ, उलटा । **–क्या ?**–हाँ, अवश्य, नहीं तो क्या ? **–तो और**–दूसरोंकी बात जाने दो, दूसरोंकी तो बात ही क्या ? **–ही कुछ**–सबसे निराला; जुदा; अनूठा ।

औरत–स्त्री० [अ०] स्त्री०; पत्नी ।

औरना*–अ० क्रि० आगे बढ़ना; सूझना ।

औरस–वि० [सं०] विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न, वैध, जायज । पु० विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न पुत्र ।

औरसना*–अ० क्रि० रूठना, अनखाना ।

औरासा*–वि० विलक्षण; बेढंगा–'कहँ अब काल चाल औरासी'–सू० ।

औरेब–पु० तिरछापन, टेढ़ापन; कपड़ेकी तिरछी काट; पेच, चाल । **–दार**–वि० तिरछी काटवाला ।

औलना†–अ० क्रि० गरमी पड़ना, औसना; तप्त होना ।

औलाद–स्त्री० [अ०] संतान, बेटा-बेटी, वंश ।

औला-दौला–वि० लापरवाह, मौजी ।

औलिया–पु० [अ०] सिद्ध पुरुष, संत, महात्मा, पहुँचा हुआ मुसलमान फकीर ('वली'का बहु०) ।

औवल–वि० [अ०] पहला, प्रथम; प्रधान; सर्वश्रेष्ठ ।

औशि*–अ० दे० 'अवश्य' ।

औषध–स्त्री० [सं०] दवा, ओषधि, जड़ी-बूटी; एक खनिज द्रव्य । वि० जड़ी-बूटियोंसे बनी । **–निर्देश**–पु० (प्रेस्क्रिपशन) किसी रोगके शमनार्थ चिकित्सक द्वारा दवाओंके नाम, मात्रा, प्रयोगादिके संबंधमें दिया गया (लिखित) निर्देश । **–निर्माणशास्त्र**–पु० (फारमाकोपीया) औषध तैयार करनेकी विद्या या उसकी विधि बतानेवाले ग्रंथ ।

औषधालय–पु० [सं०] दवाखाना ।

औषधि, औषधी–स्त्री० [सं०] दे० 'ओषधि' ।

औषधोपचार–पु० [सं०] दवा-इलाज ।

औसत–वि० [अ०] बीचका, दरमियानी; साधारण । पु० बीचकी संख्या या राशि, राशियोंके जोड़को उनकी संख्यासे भाग देनेपर भागफलके रूपमें प्राप्त संख्या, परता । **–दरजेका**–बीचका, न बहुत अच्छा, न बुरा ।

औसना†–अ० क्रि० ऊमस होना; गरमीसे खानेकी चीजका बिगड़ना; फलादिका सूखकर पकना ।

औसर*–पु० दे० 'अवसर' ।

औसान–पु० होश-हवास, चेत–'गै औसान सबन्हंकर देखि समुदकै बाट'–प०; * अंत, अवसान ।

औसाना–स० क्रि० फलादिको भूसे आदिमें रखकर पकाना ।

औसेर*–स्त्री० दे० 'अवसेर' ।

औहत*–स्त्री० अपमृत्यु, कुगति ।

औहाती*–वि० स्त्री० दे० 'अहिवाती' ।

क

क–देवनागरी वर्णमालाका पहला व्यंजन वर्ण ।

कँउधा*–स्त्री० दे० 'कौंधा ।

कंक–पु० [सं०] एक मांसाहारी पक्षी जिसके पंख बाणमें लगाये जाते थे, सफेद चील । **–पत्र**–पु० वह बाण जिसमें कंकका पर लगा हो; कंकका पर ।

कंकड़–पु० जमीनके अंदरसे निकलनेवाला एक तरहका रोड़ा जो सड़क बनानेके काममें आता और जिसे जलाकर चूना बनाया जाता है; पत्थरका छोटा टुकड़ा, गिट्टी; सूखा या सुरतीका चूरा मिला हुआ तंबाकू जिसे गाँजेकी तरह पीते हैं । **–पत्थर**–पु० कूड़ा-करकट, रद्दी चीजें ।

कंकड़ी–स्त्री० छोटा कंकड़, छर्रा; छोटा टुकड़ा, डली, रवा ।

कंकड़ी(री)ला–वि० कंकड़ मिला हुआ; जिसमें कंकड़ अधिक हो ।

कंकण–पु०[सं०] कंगन; विवाहके पहले वर-कन्याके हाथमें बाँधा जानेवाला धागा, विवाहसूत्र ।

कंकणी, कंकणीका–स्त्री० [सं०] कटि आदिमें पहननेके घुँघरूदार गहने; क्षुद्रघंटिका ।

कंकतिका, कंकती–स्त्री० [सं०] कंघी ।

कंकन*-पु० दे० 'कंकण'।

कंकर*-पु० दे० 'कंकड़'।

कंकरीट-स्त्री० [अं० कांक्रीट] कंकड़, सीमेंट बालू आदिके मेलसे बना हुआ छत आदि बनानेका मसाला; छोटी कंकड़ी।

कंकाल-पु० [सं०] हड्डियोंका ढाँचा, ठठरी। **-माली (लिन्)**-वि० हड्डियोंकी माला पहननेवाला। पु० शिव। **-शेष**-वि० जिसकी देहमें ठठरीभर रह गयी हो।

कंकालिनी-स्त्री० [सं०] काली। वि० स्त्री० झगड़ालू, कर्कशा (स्त्री)।

कँखवारी-स्त्री० काँखका फोड़ा।

कँखौरी-स्त्री० दे० 'कँखवारी'; काँख।

कंगन-पु० कलाईमें पहननेका एक गहना, कंकण; वह धागा जिसमें हलदी, लोहेका छल्ला, पीली सरसों, चोकर आदि बाँधकर हलदीकी रस्मके समय वर-कन्याके हाथमें बाँध देते हैं।

कँगना-पु० कंगन बाँधते समय गाया जानेवाला गीत; दे० 'कंगन'। स्त्री० एक तरहकी घास।

कँगनी-स्त्री० छोटा कंगन, कलाईमें पहननेका एक गहना; लाखकी बनी दंदानेदार चूड़ी; दीवारमें उभड़ी हुई लकीर, कार्निस; दंदानेदार चक्कर या चक्करपरके उभड़े हुए दाने; साँवाकी जातिका एक अन्न, काकुन

कँगला-वि० दे० 'कंगाल'।

कँगहेरा*-पु० दे० 'कंघेरा'।

कंगारू-पु० [अं०] आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी आदिमें पाया जानेवाला एक जानवर।

कंगाल-वि० निर्धन, गरीब; मुहताज। **-गुंडा,-बाँका**-पु० वह आदमी जो कंगाल होते हुए शौकीनी करे।

कंगाली-स्त्री० गरीबी, निर्धनता।

कंगुरिया†-स्त्री० दे० 'कनगुरिया'।

कंगूरा-पु० शिखर; बुर्ज। **-(रे) दार**-वि० कंगूरेवाला।

कंघा-पु० बाल सँवारने-सुलझानेका दंदानेदार आला; जुलाहोंका एक औजार।

कंघी-स्त्री० छोटा कंघा; जुलाहोंका एक औजार; एक पौधा।

कँघेरा-पु० कंघी बनानेवाला।

कंच*-पु० दे० 'काँच'।

कंचन-पु० सोना; धन-दौलत; धतूरा; एक जाति। वि० निर्मल; नीरोग। **-पुरुष**-पु० दे० कांचनपुरुष'।

कंचनी-स्त्री० कंचन जातिकी स्त्री; वेश्या।

कंचुक-पु० [सं०] बक्तर; जामा, अँगरखा; चोली, अँगिया; केंचुल; भूसी, छिलका; तसमा।

कंचुकी-स्त्री० चोली, अँगिया; * केंचुल।

कंचुकी (किन्)-वि० [सं०] बक्तरधारी। पु० रनिवासका रक्षक, अंतःपुराध्यक्ष; द्वारपाल।

कंचुरि*-स्त्री० दे० 'केंचुल'।

कंचुलिका, कंचुली-स्त्री० [सं०] चोली, अँगिया।

कँचुली*-स्त्री० दे० 'केंचुल'।

कँचेरा-पु० काँचका काम करनेवाला।

कंज-पु० [सं०] कमल; ब्रह्मा; केश; अमृत। वि० जलसे उत्पन्न। **-ज**-पु० ब्रह्मा। **-नाभ**-पु० विष्णु।

कंजई-वि० कंजेके रंगका, गहरा खाकी। पु० खाकी रंग; इस रंगकी आँखोंवाला घोड़ा।

कंजड़-पु० एक खानाबदोश जाति।

कंजा-पु० एक कँटीली झाड़ी। वि० खाकी रंगका; कंजी आँखोंवाला।

कँजियाना-अ० क्रि० काला-सा पड़ना; मुरझाना।

कंजूस-वि० सूम, कृपण, खसीस।

कंजूसी-स्त्री० कृपणता।

कंट*-पु० काँटा।

कंटक-पु० [सं०] काँटा; सुई या किसी नुकीली चीजकी नोक; बाधा; छोटा शत्रु; परेशान करनेवाला; रोमांच। **-फल**-पु० कटहल; गोखरू; रेंड़ या धतूरेका पेड़। **-भक्षक,-भुक् (ज्)**-पु० ऊँट। **-शोधन**-पु० काँटा निकालना, दूर करना; विघ्न-बाधाओंको दूर करना; उपद्रवियोंका दमन।

कंटकारिका, कंटकारी-स्त्री० [सं०] भटकटैया; सेमल।

कंटकित-वि० [सं०] कँटीला; रोमांचयुक्त।

कंटर-पु० शीशेकी सुराही जो शराब, गुलाबजल आदि रखनेके काम आती है।

कंटिका-स्त्री० [सं०] (पिन) तार आदिका बहुत पतला नुकीला टुकड़ा जिसमें ऊपरकी ओर चिपटी घुंडी या टोपी-सी होती है और जो कागजों, कपड़ों आदिमें खोंसी जाती है, शूक, अलपीन।

कंटिकाधार-पु० [सं०] (पिनकुशन) काठ, पीतल आदिका वह गद्दीदार ढाँचा जिसमें अलपीनें (कंटिकाएँ) खोंसकर रखी जाती है, शूकधानी।

कँटिया-स्त्री० छोटी कील; मछली मारनेकी बंसी; अँकुसीके आकारकी चीज जिसमें कोई चीज फँसायी जाय।

कँटीला-वि० काँटेदार।

कंठ-वि० कंठस्थ, याद। पु० [सं०] गला, हलक; स्वर, आवाज; घड़े आदिका गला; तोते आदिके गलेपरकी रंगीन वृत्ताकार लकीर; कोण; किनारा। **-गत**-वि० गलेमें आया, अटका हुआ। **-च्छेदि स्पर्द्धा**-स्त्री० (कटथ्रोट कांपिटीशन) गला काट देनेवाली, अत्यंत गहरी, प्रतियोगिता। **-तालव्य**-वि० जिसका उच्चारण कंठ और तालु दोनोंसे हो ('ए', 'ऐ'-व्या०)। **-मणि**-पु० गलेमें पहना हुआ मणि; प्रिय वस्तु; घोड़ेकी गरदनकी भँवरी। **-माला**-स्त्री० गलेका एक रोग जिसमें लगातार बहुतसे फोड़े निकलते हैं। **-श्री**-स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना। **-संगीत**-पु० (वोकल म्यूजिक) मानवकंठ द्वारा उच्चरित गीत-ध्वनि। **-सिरी***-स्त्री० कंठश्री। **-स्थ**-वि० कंठमें स्थित; कंठगत; जबानी याद। **मु०-खुलना**-आवाज निकलना। **-फूटना**-आवाज निकलना; जवानी आनेपर आवाजका बदलना। **-बैठना**-गला बैठना; बेसुरा होना। **-होना**-जबानी याद होना।

कँठला-पु० दे० 'कठला'।

कँठहरिया*-स्त्री० कंठी।

कंठा-पु० बड़े मनकोंकी माला जो गलेसे सटी होती है; तोते आदिके गलेकी रंगीन रेखा।

कंठाग्र-वि० [सं०] कंठस्थ, बरजबान।

कंठी–स्त्री० [सं०] कंठ; घोड़ेके गलेकी रस्सी; छोटे मनकोंका कंठा; [हि०] तुलसीके छोटे दानोंकी छोटी माला जो वैष्णवत्वका प्रधान चिह्न है। **मु०–तोड़ना**–वैष्णवत्वका त्याग; मांस-मछली फिर खाने लगना।

कंठो(ठौ)ष्ठ्य–वि० [सं०] जिसका उच्चारण कंठ और ओठ दोनोंसे हो (‘ओ’, ‘औ’–व्या०)।

कंठ्य–वि०[सं०] कंठ-संबंधी; कंठके लिए उपयुक्त या हितकर; कंठसे उच्चरित।–**वर्ण**–पु० वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठसे होता है (अ-आ, क, ख, ग, घ, ह और विसर्ग)।

कंडा–पु० वह गोबर जो यों ही पड़ा-पड़ा सूख गया हो, बिना पाथा उपला; सूखा मल; सरकंडा। **मु०–होना**–मर जाना; ऐंठ जाना।

कंडाल–पु० गोल मुँहका गहरा लोहे-ताँबे आदिका बरतन जो पानी रखनेके काम आता है; नरसिंहा।

कंडी–स्त्री० छोटा कंडा; सूखा मल, गोटा।

कंडील–स्त्री० दे० ‘क़ंदील’।

कंडु, कंडू–स्त्री० [सं०] खाज, खारिश।

कंडुर–वि० [सं०] खुजली पैदा करनेवाला।

कंडूयन–पु० [सं०] खुजलाना।

कंडोल–पु० [सं०] बाँस या बेंतका टोकरा, दौरी।

कंडौरा–पु० कंडे रखनेकी जगह; कंडोंका ढेर।

कंत–* पु० पति; प्यारा; ईश्वर।

कंथ*–पु० दे० ‘कंत’।

कंथा–स्त्री० [सं०] गुदड़ी; कथरी।

कंथी (थिन्)–वि० [सं०] गुदड़ी धारण करनेवाला। पु० साधु, फकीर।

कंद–पु० [सं०] गाँठदार या गूदेदार जड़; सूरन; बादल।

क़ंद–पु० [अ०] सफेद शकर; मिस्री।

कंदर–पु० [सं०] गुफा; अंकुश; सोंठ। * मूल; बादल।

कंदरा, कंदरी–स्त्री० [सं०] गुफा; घाटी।

कंदर्प–पु० [सं०] कामदेव।–**दहन,–मथन**–पु० शिव।

कंदला–पु० तार खींचनेमें व्यवहृत चाँदीकी गुल्ली; पासा; सोने-चाँदीका तार।

कंदा–पु० शकरकंद; अरुई।

क़ंदील–स्त्री० [अ०] कागज, मिट्टी या अबरकका लैंप जिसमें दिया जलाकर लटकाते हैं।

कंदुक–पु० [सं०] गेंद; गलतकिया; सुपारी। –**क्रीड़ा**–स्त्री० गेंदका खेल।

कंदैला*–वि० गँदला; मिट्टी-कीचड़वाला।

कंध–पु० [सं०] बादल; मोथा; * तनेका ऊपरी भाग; कंधा।

कंधनी–स्त्री० करधनी; मेखला।

कंधर–पु० [सं०] गरदन; बादल; मोथा; एक शाक।

कंधरा–स्त्री० [सं०] गरदन।

कंधा–पु० शरीरका गरदन और बाहुमूलके बीचका भाग, स्कंध, शाना, मोढ़ा; बैल या भैंसेकी गरदनके ऊपरका भाग जिसपर जुआ रखा जाता है। **मु०–डाल देना**–बैलका कंधेपर जुआ न लेना; हिम्मत हारना; (कोई) बोझ, जिम्मेदारी उठानेसे भागना। –**देना**–अरथी ढोनेमें कंधा लगाना; मदद देना। –**बदलना**–पालकी, काँवर आदि एकसे दूसरे कंधेपर लेना। –**लगना**–जुएकी रगड़से कंधेमें घाव हो जाना। **कंधेसे कंधा छिलना**–भारी भीड़ होना।

कंधार–पु० अफगानिस्तानका एक नगर और प्रदेश, गांधार; * दे० ‘कर्णधार’।

कंधारी–वि० कंधारका; कंधारमें उपजा हुआ। पु० कंधार देशका घोड़ा।

कँधावर–पु० छोटा दुपट्टा जो कंधेपर डाल लिया जाता है; जुएका वह भाग जो बैलके कंधेपर रहता है।

कंधेला–पु० साड़ीका कंधेपर डाला हुआ छोर।

कँधैया–पु० दे० ‘कन्हैया’।

कंप–पु० [सं०] हिलना; काँपना; एक सात्त्विक भाव।

कँपकँपी–स्त्री० काँपना; कंप।

कंपति–पु० [सं०] समुद्र।

कंपन–पु० [सं०] काँपना; कँपकँपी; शिशिर ऋतु।

कँपना–अ० क्रि० काँपना, हिलना; डरना।

कंपनी–स्त्री० [अं०] संयुक्त धनसे व्यापार करनेवाले व्यक्तियोंका समूह; जत्था; सेनाका एक विभाग।

कंपा–पु० बाँसकी तीलियोंमें लासा लगाकर बनाया हुआ एक तरहका फंदा जिससे बहेलिये चिड़ियोंको फँसाते हैं।

कँपाना–स० क्रि० हिलाना; डराना।

कंपायमान–वि० [सं०] काँपता हुआ।

कंपास–स्त्री० [अं०] दिग्दर्शक यंत्र, कुतुबनुमा; परकार।

कंपित–वि० [सं०] काँपता, हिलता हुआ।

कंपू–पु० [अं० कैंप] फौजकी छावनी, पड़ाव; खेमा; फौज।

कंपोज़िटर–पु० [अं०] टाइप बैठानेवाला।

कंबल–पु० [सं०] कम्मल; गाय-बैलके गलेमें नीचे लटकनेवाली खाल, सास्ना; जल; एक छोटा कीड़ा।

कंबु–पु० [सं०] शंख; गला; हाथी। वि० कई वर्णोंका। –**ग्रीव**–वि० शंख जैसी सुराहीदार गरदनवाला।

कंबुक–पु० [सं०] शंख; घोंघा; अधम व्यक्ति।

कंबोज–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद जो अब अफगानिस्तानका भाग है।

कँवल–पु० दे० ‘कमल’। –**गट्टा**–पु० कमलका बीज।

कंस–पु० [सं०] काँसा; एक माप; कटोरा; सुराही; झाँझ; काँसेका बरतन; उग्रसेनका लड़का, कृष्णका मामा। –**निषूदन,–शत्रु**–पु० कृष्ण।

कँसहँड़–पु० काँसेके बरतनोंके टुकड़े।

कँसहँडी–स्त्री० देग या बटलोहीके ढंगका एक बरतन।

कंसाराति, कंसारि–पु० [सं०] कृष्ण।

क–पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; कामदेव; सूर्य; अग्नि; वायु; यम; मेघ; आनंद; पानी इ०।

कइन, कइनी†–स्त्री० बाँसकी पतली, लंबी टहनी; टहनी।

कई–वि० एकाधिक, कुछ, चंद।

ककड़ी–स्त्री० गरमी और बरसातमें भी होनेवाली एक बेल जिसका फल खीरेसे मिलते-जुलते आकारका होता है।

ककना†–पु० दे० ‘कंगन’।

ककनी–स्त्री० दे० कँगनी’; दानेदार चक्र; कँगनीके आकारकी एक मिठाई।

ककनू*–पु० एक तरहका पक्षी जिसके गानेपर घोंसलेमें

आग लग जाती है और वह जल मरता है ।

ककरी–स्त्री० दे० 'ककड़ी' ।

ककरौल–पु० खेखसा ।

ककहरा–पु० 'क'से 'ह'तक अक्षर, वर्णमाला; किसी विषयकी आरंभिक, मोटी-मोटी बातें, अलिफ-बे ।

ककही–स्त्री० एक तरहकी कपास; चौथगला; दे० 'कंघी' ।

ककुद, ककुद्–पु० [सं०] चोटी, पर्वत-शिखर; बैल या साँड़के कंधेपरका डिल्ला; सींग; राजचिह्न ।

ककुभा–स्त्री० [सं०] दिशा; एक रागिनी ।

ककूना–पु० रेशमके कीड़ेका कोया ।

ककेड़ा, ककोड़ा–पु० खेखसा नामकी तरकारी ।

ककोरना†–स० क्रि० खरोंचना; मोड़ना, सिकोड़ना(बुंदेल०)।

कक्कड़–पु० सुरतीका चूरा मिला और सेककर बनाया हुआ भुरभुरा तमाकू ।

कक्का–पु० केकय देश; दे० 'काका ।

कक्ष–पु० [सं०] काँख; कछोटा; कमरा; कछार; सूखी घास; लता; सूखा जंगल; राजाका अंतःपुर; बगल, बाजू, काँख; सेनाका दाहिना-बाँयाँ बाजू; दलदल जमीन; कटिबंध; अंचल, धोती आदिका छोर ।

कक्षा–स्त्री० [सं०] परिधि, दायरा; दरजा; ग्रहोंका भ्रमण-पथ; काँख; काँखका फोड़ा; कछोटा; चहारदीवारी; आँगन; अंतःपुर; समता; पलड़ा ।

कक्षोन्नति–स्त्री० [सं०] (प्रमोशन) अधिक ऊँची कक्षा या अधिक ऊँची स्थितिमें चढ़ा दिया, पहुँचा दिया, जाना ।

कखौरी–स्त्री० दे० 'कँखौरी' ।

कगर–पु० कगार; बारी; मेड़; कारनिस । *अ० किनारेपर, निकट; अलग ।

कगरी–स्त्री० दे० 'कगार' ।

कगरे*–अ० किनारे, अलग ।

कगार–पु० ऊँचा किनारा; नदीका करारा; टीला ।

कच–पु० [सं०] सिरके बाल, केश; सूखा फोड़ा या घाव; बंध; मेघ; [हिं०] दाँत, काँटे आदिका किसी नरम चीजमें तेजीसे धँसने या कुचले जानेकी आवाज ('कच'से चुभ गया) । वि० 'कच्चा'का समासमें व्यवहृत रूप । **–दिला**–वि० कच्चे दिलका । **–पँदिया**–वि० कच्ची पेंदीका; जिसकी बातका भरोसा न हो, ढुलमुल । **–लोहा**–पु०, **–लोही**–स्त्री० कच्चा लोहा । **–लोहू**–पु० पंछा ।

कचकच–स्त्री० दे० 'किचकिच' ।

कचकचाना–अ० क्रि० कचकचकी आवाज होना; दाँत पीसना ।

कचकोल–पु० दरियाई नारियलका भिक्षापात्र ।

कचड़ा–पु० दे० 'कचरा' ।

कचनार–पु० एक पेड़ जिसकी कली तरकारी और छाल तथा फूल दवाके काम आते हैं, कांचनार ।

कचपच–पु० थोड़ी जगहमें बहुतसी चीजोंका जमा हो जाना, गिचपिच; कचकच ।

कचपचिया, कचपची*–स्त्री० आकाशमें पूर्वकी ओर दिखाई देनेवाला छोटे तारोंका एक समूह; कृत्तिका नक्षत्र; चमकीला बुंदा, सितारा ।

कचबची–स्त्री० चमकदार बुंदा, सितारा ।

कचर-कचर–पु० कच्चा फल खानेका शब्द; कचकच ।

कचरकूट–पु० कसकर पीट देना, पूरी मरम्मत; † डटकर भोजन करना ।

कचरना*–स० क्रि० कुचलना, रौंदना; खूब खाना ।

कचर-पचर–पु० गिचपिच; किचकिच ।

कचरा–पु० कूड़ा-करकट; रुईका बिनौला, मैल आदि; दालका बेकार अंश; कच्चा खरबूजा; ककड़ी; समुद्रा सेवार ।

कचरी–स्त्री० एक लता जिसका फल तरकारीके काम आता है, पहुँटा; पहुँटेके सुखाये हुए गोल टुकड़े ।

कचलोन–पु० एक प्रकारका नमक ।

कचहरी–स्त्री० इजलास; अदालत; दरबार; दफ्तर; जमाव ।

कचाई–स्त्री० कच्चापन; अनुभव-हीनता; दोष; त्रुटि, खामी ।

कचाना–अ० क्रि० कचियाना, आगा-पीछा करना ।

कचायँध–स्त्री० कच्चेपनकी गंध ।

कचायन–स्त्री० लड़ाई-झगड़ा, किचकिच ।

कचारना†–स० क्रि० पछाड़ना, फींचना ।

कचालू–पु० उबाले आलू आदिके टुकड़े जिनपर नमक, मिर्च, खटाई आदि छिड़की हो ।

कचीची*–स्त्री० कचपचिया; जबड़ोंका जोड़; दाढ़ । **मु०–बँधना**–दाँत बैठना ।

कचुल्ला–पु० चौड़ी पेंदीका कटोरा, प्याला ।

कचूमर–पु० कुचली हुई चीज, भर्ता । **मु०–करना,–निकालना**–भर्ता बना देना, पीटकर बेदम कर देना; लापरवाहीसे बरतकर चीजको नष्ट कर देना ।

कचूर–पु० हलदीकी जातिका एक पौधा जो दवाके काम आता है; * कटोरा ।

कचोटना–अ० क्रि० चुभना, गड़ना; किसी प्रिय जनको याद कर दुःखी होना ।

कचोरा*–पु० कटोरा ।

कचोरी*–स्त्री० कटोरी ।

कचौड़ी–स्त्री० दे० 'कचौरी' ।

कचौरी–स्त्री० उरद या किसी और चीजकी पीठी भरकर बनायी हुई पूरी; समोसेका मसाला भरकर बनायी हुई छोटी टिकिया ।

कच्चा–वि० अनपका, अपक्व; हरा (फल), आँचमें न तपाया हुआ (कच्चा घड़ा); अधकचरा, जिसके पकनेमें कसर हो (चावल अभी कुछ कच्चे हैं); असंस्कृत, साफ न किया हुआ; मिट्टीका बना; प्रामाणिक तौल-मापसे कम (कच्चा सेर, कच्चा बीघा); जो पक्के रूपमें न हो; जिसमें काट-छाँट, रद-बदल हो सके (कच्चा मसौदा); जो नियमित रूपमें, बाकायदा न हो (कच्ची रसीद); अधिक दिन न टिकनेवाला (कच्चा रंग); पूरी बाढ़को न पहुँचा हुआ; अपरिपक्व, अनुभवहीन; जिसमें धैर्य, दृढ़ता न हो, कमजोर, बेहिम्मत; अपढ़, अनाड़ी; अनभ्यस्त; नकली (गोटा) । पु० खाका; कच्ची सिलाई; मसौदा; खर्रा; कनपटी । **–असामी**–पु० वह असामी जिसे खेतपर कोई स्थायी अधिकार न हो, शिकमी असामी; जो बातका धनी, लेन-देनमें खरा न हो । **–कागज़**–पु० तेल आदि छाननेका कागज; वह दस्तावेज जिसकी रजिस्टरी न हुई

हो। **-कोढ़**-पु० खुजली; गरमीकी बीमारी। **-घड़ा**-पु० न पका हुआ घड़ा; सीखनेकी उम्रका, संस्कार ग्रहण करने योग्य व्यक्ति (बालक आदि)। **-चिट्ठा**-पु० पूरा विवरण, सच्चा हाल, कथा; किसीकी गुप्त या गोपनीय बातें (खोलना, सुनाना)। **-चूना**-पु० बिना बुझाया हुआ चूना। **-जिन**-पु० मूर्ख; हठी, पीछे पड़ जानेवाला आदमी। **-जोड़,-टाँका**-पु० राँगेका जोड़। **-पक्का**-वि० सिझा-अनसिझा। **-पैसा**-पु० स्थान-विशेपमें प्रचलित पैसा-गोरखपुरी, बालासाही आदि। **-माल**-पु० वह वस्तु जिससे (शिल्प द्वारा) कोई चीज बनायी जाय (जैसे कपड़ेके लिए रुई); कच्चा बाना; कच्चा गोटा। **-हाल**-पु० दे० 'कच्चा चिट्ठा'। **कच्ची कली**-स्त्री० मुँहबँधी कली; अप्राप्त-यौवना स्त्री। **-क़ुर्क़ी**-स्त्री० मुकदमेका फैसला होनेके पहले निकलवायी जानेवाली कुर्की, **-गोटी,-गोली**-स्त्री० चौसरकी वह गोटी जिसने आधा या अधिक रास्ता पार न कर लिया हो। **-चीनी**-स्त्री० राबसे शीरा निकालकर बनायी हुई चीनी जो अधिक साफ नहीं होती। **-ज़बान**-स्त्री० गाली, अपशब्द। **-जाकड़**-स्त्री० वह बही जिसमें कच्ची बिक्री, जाकड़पर गयी हुई चीजका ब्योरा लिखा जाय। **-नकल**-स्त्री० खानगी तौरपर ली हुई सरकारी कागजकी नकल। **-नींद**-स्त्री० वह नींद जो पूरी न हुई हो। **-पक्की बात**-स्त्री० अपशब्द, गाली। **-पेशी**-स्त्री० मुकदमेकी पहली पेशी जिसमें फैसला नहीं होता। **-बही**-स्त्री० वह बही जिसमें कच्चा हिसाब, याददाश्तें आदि लिखी जायँ। **-रसोई**-स्त्री० पानीमें पका हुआ अन्न, पक्की रसोईका उलटा। **-रोकड़**-स्त्री० वह बही जिसमें रोजके आय-व्ययका कच्चा हिसाब लिखा जाय। **-सड़क**-स्त्री० वह सड़क जिसपर गिट्टियाँ या कंकड़ न कूटे गये हों। **-सिलाई**-स्त्री० बखिया करनेके पहले डाला हुआ टाँका जो पीछे खोल दिया जाता है, लंगर। **कच्चे पक्के दिन**-पु० चार-पाँच महीनेका गर्भ; दो ऋतुओंका संधिकाल। **-बच्चे**-पु० छोटे बच्चे; बहुतसे बाल-बच्चे। **मु० कच्चा करना**-बातिल ठहराना, काट देना; लज्जित करना; कच्ची सिलाई करना। **-जाना**-गर्भ गिरना। **-पड़ना**-गलत ठहरना; सकुचाना। **-(च्ची) गोटी, -गोली खेलना**-अनाड़ी, अनुभवहीन होना। **कच्चे घड़े पानी भरना**-कठिन काम करना।

कच्चू-स्त्री० अरवी, बंडा।

कच्छ-पु० [सं०] किनारेकी जमीन, कछार; अनूपदेश, दलदल जमीन; धोतीकी काछ या लाँग; नौकाका भाग-विशेष; कच्छ देश; *कछुआ। **-प**-पु० कछुआ; विष्णुके २४ अवतारोंमेंसे एक।

कच्छटिका-स्त्री० [सं०] धोतीकी लाँग (कछोटा)।

कच्छा-स्त्री० चौड़े छोरवाली बड़ी नाव जिसमें दो पतवारें लगती हैं; कई बड़ी नावोंको मिलाकर बनाया गया बेड़ा।

कच्छी-वि० कच्छ देशका। पु० कच्छ देशका निवासी; कच्छ देशका घोड़ा जिसकी पीठ बीचमें कुछ गहरी होती है।

कछना-पु० दे० 'कछनी'।

कछनी-स्त्री० घुटनेतककी कसी हुई धोती जिसमें दोनों ओर लाँग बाँधी जाती है; छोटी धोती; घुटनेतक रहनेवाला एक तरहका घाँघरा; वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछवाहा-पु० राजपूतोंकी एक उपजाति।

कछान-पु० कछनी काछना।

कछार-पु० नदीके किनारेकी तर और नीची जमीन।

कछियाना-पु० काछियोंकी बस्ती; वह खेत जिसमें तरकारियाँ बोयी जायँ; तरकारियोंकी खेती।

कछु*-वि० दे० 'कुछ'।

कछुआ(वा)-पु० एक प्रसिद्ध जल-जंतु, कच्छप।

कछुक*-वि० दे० 'कुछ'।

कछोटा-पु०, **कछोटी**-स्त्री० कछनी; स्त्रीकी कछनीके ढंगपर पहनी हुई धोती। **मु०-मारना**-स्त्रीका कछोटा बाँधना।

कज-वि० [फा०] टेढ़ा, झुका हुआ, वक्र। पु० ऐब (?)।

कजरा*-पु० काजल; काली आँखोंवाला बैल। वि० काली आँखोंवाला; जिसकी आँखोंमें काजल लगा हो; श्याम।

कजराई*-स्त्री० कालापन।

कजरारा-वि० काजल लगा हुआ, अंजनयुक्त; काला।

कजरी-पु० एक धान। † स्त्री० दे० 'कजली'।

कजरौटा, कजलौटा-पु० काजल पारने-रखनेकी डाँड़ीदार डिबिया।

कजरौटी, कजलौटी-स्त्री० छोटा कजरौटा।

कजला-पु० स्याह रंगका एक पक्षी, मटिया। वि० काली आँखोंवाला; जिसकी आंखोंमें अंजन लगा हो।

कजलाना-अ० क्रि० स्याह पड़ना; आगका झँवाना। स० क्रि० काजल लगाना।

कजली-स्त्री० कालिख; पारे और गंधककी लुगदी; काली आँखोंवाली गाय; एक तरहकी भेड़; स्त्रियोंका एक त्योहार जो भादों बदी तीजको मनाया जाता है; इस अवसरके लिए मिट्टीमें गोदकर उगाये गये जौके पौधे, जई; एक तरहका गीत जो बरसातमें मिर्जापुर आदिमें गाया जाता है।

कजा*-स्त्री० माँड़, काँजी।

क़ज़ा-स्त्री० [अ०] ईश्वरीय आदेश; नियति, भाग्य; मृत्यु; कर्तव्य-पालन; निर्णय या न्याय करना।

कजाक़-पु० दे० 'क़ज़्ज़ाक'।

कजाकी*-स्त्री० दे० 'क़ज़्ज़ाकी'; * छल, धोखेबाजी।

कजावा-पु० एक तरहकी ऊँटकी काठी।

क़ज़िया-पु० [अ०] झगड़ा, टंटा।

कजी-स्त्री० [फा०] टेढ़ापन, वक्रता; दोष।

कज्जल-पु० [सं०] काजल; कालिख; सुरमा; बादल।

कज्जलित-वि० [सं०] कालिखसे पुता हुआ; आँजा हुआ, जिसमें काजल लगा हो।

कज्जली-स्त्री० [सं०] एक तरहकी मछली; रोशनाई; पारे और गंधकके मिश्रणसे बना हुआ एक द्रव्य।

क़ज़्ज़ाक़-पु० [तु०] एशियाई रूसकी एक तुर्क जाति जो वीरताके लिए प्रसिद्ध है; डाकू, लूट-मार करनेवाला।

क़ज़्ज़ाकी-स्त्री० [तु०] लुटेरापन, राहजनी।

कट-पु० [सं०] हाथीका गंडस्थल; कटिदेश, श्रोणि; चटाई,

टट्टी; घास, सरपत; शव; अरथी; श्मशान; [अं०] काट, तराश । **-पीस**-पु० नये कपड़ोंके टुकड़े; वह नया कपड़ा जो बुनाईके समय ही कट गया हो ।

कटक-पु० [सं०] सोना; सोनेका कड़ा; सेना, फौज; समूह; पहाड़का मध्य भाग; राजधानी; लवण; चटाई ।

कटकई*-स्त्री० सेना, फौज ।

कटकट-स्त्री० दाँतोंके एक दूसरेपर लगनेसे होनेवाला शब्द; किचकिच ।

कटकटना*-अ० क्रि० दे० 'कटकटाना' ।

कटकटाना-अ० क्रि० दाँत पीसना ।

कटकाई*-स्त्री० कटक, सेना ।

कटकी (किन्)-पु० [सं०] पहाड़ ।

कटखना-वि० काट खानेवाला; चिड़चिड़ा; क्रोधी ।

कटघरा-पु० दे० 'कठघरा' ।

कटजीरा-पु० स्याहजीरा ।

कटताल-पु० दे० 'करताल' ।

कटती-स्त्री० बिक्री; खपत; छँटना ।

कटना-अ० क्रि० दो टुकड़े होना; टुकड़े होना; विभक्त होना; किसी धारदार चीजका शरीरमें धँसना, जख्मी होना; पिसना; अलग होना; दूर होना; बीतना; खत्म होना; लज्जित होना; काटा जाना; कतरा जाना; युद्धमें मारा जाना; मिलना, हाथ लगना (माल कटना); रद्द होना; खारिज होना; मुजरा या मिनहा होना; खाने या क्यारीके रूपमें विभाजित होना; किसी संख्याका पूर्ण विभाजन या बराबर हिस्सोंमें बँट जाना; गाड़ी आदिसे राहमें मालका चुरा लिया जाना । **मु० कट मरना**-लड़ मरना । **कटेपर नमक छिड़कना**-दुखियाको और दुःख देना, कष्ट पाते हुएको कष्ट पहुँचाना ।

कटनास*-पु० नीलकंठ ।

कटनि*-स्त्री० काट; आसक्ति ।

कटनी-स्त्री० फसलकी कटाई; काटनेका औजार ।

कटरा-पु० छोटा चौकोर बाजार; *कटार ।

कटवाँ-वि० जिसमें कटाईका काम हुआ हो । **-ब्याज**-पु० वह सूद जो कुछ मूल धन चुकता हो जानेपर शेषपर लगे ।

कटवाँसी-पु० एक तरहका ठोस बाँस ।

कटवाना-स० क्रि० दे० 'कटाना' ।

कटसरैया-स्त्री० एक काँटेदार पौधा ।

कटहर*-पु० दे० 'कटहल' ।

कटहरा†-पु० दे० 'कठघरा' । स्त्री० एक छोटी मछली ।

कटहल-पु० एक बड़ा फल जो खानेके तथा तरकारीके काम आता है; इसका पेड़ ।

कटहा†-वि० काटनेवाला ।

कटा*-स्त्री कटाकटी, मारकाट; हत्या; प्रहार, चोट ।

कटाइक*-वि० काटनेवाला ।

कटाई-स्त्री० काटनेका काम; काटनेकी मजदूरी; भटकटैया ।

कटाऊ*-पु० दे० 'कटाव' । वि० काटे जाने लायक ।

कटाकट-पु० कटकट शब्द ।

कटाकटी-स्त्री० मारकाट, खून-खराबा ।

कटाक्ष-पु० [सं०] तिरछी निगाह; आक्षेप, चोट, तनज ।

कटाच्छ*-पु० दे० 'कटाक्ष' ।

कटाछनी-स्त्री० मारकाट ।

कटान-स्त्री० कटने या काटनेकी क्रिया ।

कटाना-स० क्रि० काटनेकी क्रिया दूसरेके कराना; डसवाना; गाड़ी आदि बगलसे घुमाकर ले जाना (गाड़ीवान) ।

कटार-स्त्री० एक दुधारा हथियार, खंजर ।

कटारी-स्त्री० छोटी कटार ।

कटाव-पु० काट; काट या खोदकर बनाये हुए फूल आदि । **-दार**-वि० जिसपर कटावका काम हुआ हो ।

कटावन-पु० कटाई करनेका काम; कतरन । † वि० काटनेवाला, भयंकर ।

कटाह-पु० [सं०] कड़ाह; कछुएकी पीठका कड़ा आवरण; सूप; टूटे हुए घड़ेका टुकड़ा; भैंसका बच्चा ।

कटि-स्त्री० [सं०] कमर; कमरके नीचेका मांसल भाग; पेड़ू; हाथीका गंडस्थल । **-जेब**-पु० [हिं०] करधनी । **-देश**-पु० पेड़ू; श्रोणि । **-बंध**-पु० कमरबंद; सरदी-गरमीकी कमी-बेशीके विचारसे किये गये पृथ्वीके विषुवत् रेखाके समानांतर पाँच विभागोंमेंसे एक । **-बद्ध**-वि० कमरबस्ता, तैयार, आमादा । **-सूत्र**-पु० करधनी, कमरपट्टी ।

कटियाना-अ० क्रि० कंटकित, रोमांचित होना ।

कटीला-वि० काँटेदार; नुकीला, तीक्ष्ण, पैना; तेज असर करनेवाला; मुग्ध करनेवाला; आनबानवाला ।

कटु-वि० [सं०] कड़वा, चरपरा; अप्रिय; बुरा लगनेवाला । पु० ६ रसोंमेसे एक; कड़वापन । **-त्रय**-पु० त्रिकुटा । **-भाषी(षिन्)**-वि० कड़वी बात बोलनेवाला ।

कटुआ†-वि० अनेक टुकड़ोंमें कटा हुआ ।

कटूक्ति-स्त्री० [सं०] कड़वी बात ।

कटैया*-पु० काटनेवाला; फसल काटनेवाला । स्त्री० भटकटैया ।

कटोरदान-पु० पीतल आदिका एक ढक्कनदार बरतन ।

कटोरा-पु० [सं०] फूल, काँसे आदिका प्याला । **मु०-चलाना**-चोरका पता लगानेके लिए मंत्रकी शक्तिसे कटोरेको चलाना ।

कटोरिया-स्त्री० दे० 'कटोरी' ।

कटोरी-स्त्री० छोटा कटोरा; कटोरीकीसी शकलवाली चीज; अँगियाका वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं; तलवारकी मूठमें ऊपरका गोला भाग; हरी पत्तियोंका कटोरीके आकारका वह भाग जिसमें फूल निकलते और रहते हैं ।

कटौती-स्त्री० किसी रकममेंसे (धर्मादा, दस्तूरी आदिके रूपमें) कुछ काट लेना । **-का प्रस्ताव**-किसी विभागके कार्यपर असंतोष प्रकट करनेके लिए उसके खर्चकी माँगसे कोई छोटी रकम घटा देनेका प्रस्ताव ।

कट्टर-वि० काट खानेवाला; दृढ़; जिसे अपने मत या विश्वासका अधिक आग्रह हो, दुराग्रही; असहिष्णु; अनुदार विचारवाला ।

कट्टा-वि० तगड़ा, मोटा-ताजा ।

कट्ठा-पु० जमीनकी एक नाप, जरीबका बीसवाँ भाग; एक प्रकारका (लाल) गेहूँ ।

कटफल-पु० [सं०] कायफल ।

कट्याना*-अ० क्रि० दे० 'कटियाना' ।

कठंगर—वि० मोटा; कड़ा।

कठ—पु० एक बाजा; काठ (केवल समासमें)। वि० काठका बना; घटिया, निकृष्ट; कठोर (समासमें)। **—केला**—पु० एक घटिया जातिका केला, जो कड़ा और कम मीठा होता है। **—कोला**—पु० कठफोड़ा चिड़िया। **—गुलाब**—पु० एक तरहका जंगली गुलाब। **—गूलर**—पु० एक प्रकारका गूलर, कठूमर। **—घरा**—पु० काठका जँगलेदार घर; बड़ा पिंजड़ा जिसमें कोई जंगली जानवर रखा जा सके। **—घोड़ा**—पु० घोड़ेकी सवारीका एक स्वाँग। **—जामुन**—पु० घटिया जामुन, छोटा और अधिक खट्टा जामुन। **—ताल**—पु० दे० 'करताल'। **—पुतली**—स्त्री० काठकी पुतली या गुड़िया जिसे तार या सूत हिलाकर नचाते हैं; दूसरेके आदेश या इशारेपर काम करनेवाला व्यक्ति। **—० का नाच**—एक तमाशा जिसमें कठपुतलियोंका नाच दिखाया जाता है। **—फोड़वा, —फोड़ा**—पु० एक चिड़िया जो अपनी चोंचसे पेड़ोंकी छाल छेदकर उसके नीचेके कीड़ोंको खाती है। **—बाप**—पु० सौतेला बाप। **—मलिया***—वि० जो काठकी माला पहने हो। पु० बना हुआ साधु। **—मस्त, —मस्ता**—वि० मस्त, बेफिक्र; मुस्तंडा। **—मुल्ला**—पु० कम पढ़ा हुआ, कट्टर, अक्षर-पूजक मुल्ला या मौलवी।

कठरा—पु० दे० 'कठघरा'; कठौता; काठका संदूक।

कठला—पु० चाँदीकी चौकियों, बघनखा, बजरबट्टू आदि-की माला जो बच्चोंको पहनायी जाती है।

कठवत—स्त्री०, **कठवता**—पु० दे० 'कठौत'।

कठारा*—पु० नदी आदिका किनारा।

कठिन—वि० [सं०] कड़ा, सख्त; दुस्साध्य, मुश्किल; टेढ़ा। * स्त्री० कठिनाई; कष्ट। **—पृष्ठ**—पु० कछुआ।

कठिनताई*—स्त्री० दे० 'कठिनाई'।

कठिनाई—स्त्री० कठिन, दुस्साध्य होना; कष्ट; संकट; दिक्कत, झंझट।

कठिया—वि० कड़े छिलकेवाला। पु० एक तरहका गेहूँ।

कठुवाना*—अ० क्रि० सूखकर काठकी तरह कड़ा हो जाना।

कठूमर—पु० जंगली गूलर।

कठेठ, कठेठा*—वि० कठोर।

कठोर—वि० [सं०] कड़ा, सख्त; निष्ठुर, बेरहम; विकास-प्राप्त। **—गर्भा**—स्त्री० जिस स्त्रीका गर्भ पूर्ण विकसित—७-८ मासका—हो चुका हो।

कठोरता—स्त्री० [सं०] कड़ापन, सख्ती; निर्दयता।

कठोरताई*—स्त्री० दे० 'कठोरता'।

कठौत—स्त्री० छोटा कठौता।

कठौता—पु० काठका वह छिछला बरतन जिसमें प्रायः खाने-पीनेका सामान रखा जाता है।

कठौती—स्त्री० छोटा कठौता।

कडक—पु० [सं०] समुद्री नमक।

कड़क—स्त्री० बहुत कड़ी और डरावनी आवाज; बिजली चमकनेके बाद होनेवाली आवाज; जोरसे डाँटने, डपटने-की आवाज; बिजली; पेशाबका रुक-रुककर जलनके साथ आना; रुक-रुककर होनेवाला दर्द; घोड़ेकी सरपट चाल; पटेबाजीका एक हाथ। **—नाल**—स्त्री० एक तरहकी तोप।

कड़कड़ाता—वि० जिससे कड़कड़की आवाज निकले, कलफ-दार; तेज।

कड़कड़ाना—अ० क्रि० कड़कड़ शब्द करना; घी-तेलका इतना गरम हो जाना कि उसमेंसे कड़कड़की आवाज निकले। स० क्रि० खूब गरम करना (घी आदि)।

कड़कड़ाहट—स्त्री० कड़कड़की आवाज।

कड़कना—अ० क्रि० बिजली कौंधनेकी आवाज होना, गरजना; डाँटते हुए जोरसे बोलना।

कड़खा—पु० वीरोंकी प्रशंसामें रचित गीत जो योद्धाओंको उत्साहित करनेके लिए गाया जाता है।

कड़खैत—पु० कड़खा गानेवाला, भाट।

कड़वा—वि० जीभको लगनेवाला; झालदार; कटु; अप्रिय; नागवार; क्रोधी; चिड़चिड़ा; रुष्ट, खफा; कठिन; टेढ़ा। **—तेल**—पु० सरसोंका तेल। **—पन**—पु०, **—हट**—स्त्री० कड़वा होनेका भाव, कटुता। **मु०—घूँट पीना**—अति कष्टकर बातको सह लेना।

कड़वाना—अ० क्रि० कड़वा लगना; कड़वा हो जाना।

कड़वी—वि० स्त्री० दे० 'कड़वा'। स्त्री० जुआरके डंठल जो चारेके काममें लाये जायँ। **—खिचड़ी, —रोटी**—स्त्री० वह खाना जो मृत व्यक्तिके निकट-संबंधी या मित्र उसके कुटुंबियोंके लिए भेजते हैं।

कड़ा—वि० सख्त, कठोर; जो नरम या लचीला न हो; कसा हुआ, ठोस; रिआयत न करनेवाला; दृढ़चित्त, धीर; कठिन; दुष्कर; न दबने, न डरनेवाला; तेज; गहरा; कर्कश; तीव्र; असह्य; रोषसूचक (तेवर); कड़ी देहवाला; सशक्त। [स्त्री० कड़ी]। पु० चूड़ीके आकारका गहना जो हाथ या पाँवमें पहना जाता है, वलय; लोहेका बड़ा छल्ला जिसे सिख पहनते हैं; कंडाल-कड़ाही आदिको उठानेके लिए उसमें लगा हुआ छल्ला; एक तरहका कबूतर। **मु०—पड़ना**—दृढ़ता दिखाना, न दबना।

कड़ाई—स्त्री० कड़ापन, सख्ती; कठोर व्यवहार।

कड़ाका—पु० कड़ी चीजके टूटनेकी आवाज; उपवास, फाका। **—(के)का**—तेज, सख्त, जोरका।

कड़ाबीन—स्त्री० घोड़सवारोंके उपयुक्त छोटी बंदूक।

कड़ाह, कड़ाहा—पु० लोहेका गोला, छिछला बरतन जो अधिक मात्रामें पूरियाँ, तरकारी, गुड़ आदि बनानेके काम आता है।

कड़ाही—स्त्री० कड़ाहेकी शकलका छोटा पात्र।

कड़िहरा—स्त्री० कमर।

कड़िहार*—पु० उद्धारक, निकालनेवाला।

कड़ी—स्त्री० कठिनाई, मुसीबत; जंजीरका एक छल्ला; कोई चीज लटकानेका छल्ला; गीतका एक पद; छोटी धरन या शहतीर; मेंड़ आदिकी छातीकी हड्डी; जरीबका १/१०० भाग। वि० दे० 'कड़ा'। **—क़ैद**—स्त्री० वह सजा जिसमें क़ैदी-से कड़ी मेहनतके काम लिये जायँ, सपरिश्रम कारावास।

कड़ुआ—वि० दे० 'कड़वा'। **—कसैला**—वि० अरुचिकर। **—तेल**—पु० सरसोंका तेल।

कड़ुआना—अ० क्रि० कड़ुवा लगना; आँखें गड़ना; खफा होना।

कढ़ना—अ० क्रि० निकलना; खिंचना; * उदय होना; लाभ

होना; बढ़ जाना; काढ़ा जाना; दूधका खौलकर गाढ़ा होना। **मु० कढ़ जाना**–किसी स्त्रीका किसीके साथ निकल जाना।

कढ़राना, कढ़लाना*–स०क्रि० घसीटकर बाहर निकालना।

कढ़वाना–स० क्रि० दे० 'काढ़ना'।

कढ़ाई–स्त्री० बेल-बूटे बनानेका काम या उजरत; निकालनेकी क्रिया या उजरत; दे० 'कड़ाही'।

कढ़ाना–स० क्रि० निकलवाना, बाहर कराना; बेल-बूटे बनवाना।

कढ़ाव–पु० बेल-बूटेका काम; दे० 'कड़ाह'।

कढ़ावना*–स० क्रि० दे० 'कढ़ाना'।

कढ़ी–स्त्री० बेसन, दही और मसालेके योगसे बननेवाला लपसी जैसा एक व्यंजन। **मु०–का(कासा)उबाल**–क्षणिक उत्साह या आवेश।**–में कंकड़ी,–में कोयला**–अत्यंत सुंदर वस्तुमें खटकनेवाला दोष होना।

कढ़ुआ(वा)–पु० मटके आदिसे पानी निकालनेका बरतन; आटा-चावल आदि निकालने या नापनेका काम देनेवाला बरतन; ऋण; बच्चोंके प्रातःकाल खानेके लिए बचाकर रखा गया रातका भोजन। वि० अलग किया हुआ।

कढ़ैया–पु० निकालनेवाला। स्त्री० कड़ाही।

कढ़ोरना, कढ़ोलना*–स० क्रि० घसीटना।

कण–पु० [सं०] अनाजका एक दाना; चावल आदिका बहुत छोटा टुकड़ा; जलसीकर; रवा; भिक्षा। **–जीर, –जीरक**–पु० सफेद जीरा। **–भक्ष,–भुक् (ज्)**–पु० कणाद मुनि।

कणाद–पु० [सं०] वैशेषिक दर्शनके प्रवर्तक उलूक मुनि।

कणिका–स्त्री० [सं०] कण; तिनका; जीरा; अग्निमंथ वृक्ष।

कणी–स्त्री० कणिका; एक अन्न।

कणीकरण–पु० [सं०] (क्रिस्टैलाइजेशन) कणों या रवोंके रूपमें परिणत करना; दे० 'स्फटिकीकरण'।

कण्व–पु० [सं०] शकुंतलाका पालन करनेवाले ऋषि।

कत*–अ० क्यों, किसलिए।

क़तई–वि० [अ०] पक्का, निश्चित; बिना शर्तका। अ० एकदम, नितांत, बिलकुल। **–फ़ैसला**–पु० पक्का, अंतिम निर्णय। **–हुक्म**–पु० पक्का, अवश्यकर्तव्य आदेश।

कतक*– अ० क्यों, किसलिए; कैसे; कितना।

कतना–अ० क्रि० काता जाना।

कतर-छाँट–स्त्री० काट-छाँट।

कतरन–स्त्री० कपड़े, कागज आदिके काटनेके बाद बच रहनेवाले छोटे, रद्दी टुकड़े।

कतरना–स० क्रि० कैंची या सरौतेसे काटना।

कतरनी–स्त्री० कतरनेका साधन, औजार; कैंची।

कतर-ब्योंत–स्त्री० काट-छाँट; हिसाब या खर्चमें काट-छाँट; किफायतशारी; जोड़-तोड़।

कतरवाना–स० क्रि० कतरनेका काम दूसरेसे कराना।

कतरा†–पु० दे० 'क़तला'।

क़तरा–पु० [अ०] बूँद।

कतराई–स्त्री० कतरनेका काम या मजदूरी।

कतराना–अ० क्रि० किसीसे बचनेके लिए थोड़ा हटकर किनारेसे निकल जाना। स० क्रि० कतरवाना, कटवाना।

कतरी†–स्त्री० कोल्हूका पाट; एक गहना; कतरनी; जमी हुई मिठाईका पतला टुकड़ा, कतरी।

क़तल–पु० दे० 'कत्ल'।

कतला–पु० किसी खाद्य वस्तुका तिकोने या चौकोने आकारमें कटा हुआ टुकड़ा, फाँक।

कतली–स्त्री० पकवान आदिके चौकोर कटे टुकड़े; चीनीकी चाशनीमें पगे खरबूजेके बीज, चिरौंजी आदि।

कतवाना–स० क्रि० कातनेका काम कराना।

कतवार–पु० कूड़ा-करकट; * कातनेवाला। **–खाना**–पु० कूड़ा-करकट आदिके फेंकनेका स्थान।

कतहुँ, कतहूँ*–अ० कहीं, किसी जगह।

क़ता–स्त्री० [अ०] काटना; काट, तराश; काट-छाँट; ढंग।

कताई–स्त्री० कातनेकी क्रिया; कातनेकी मजदूरी।

कतान–पु० अधिक ऐंठनेवाले धागेका बारीक रेशमी कपड़ा जिससे साड़ियाँ, दुपट्टे आदि बनाये जाते हैं; पुराने जमानेका एक अत्यंत सुंदर कोमल वस्त्र।

कताना–स० क्रि० 'कातना'का प्रे०, कतवाना।

क़तार–स्त्री० [अ०] पाँत, पंक्ति; क्रम, सिलसिला; समूह।

कति–वि० [सं०] कितना; कितने; * कितने ही; कौन; बहुसंख्यक।

कतिक*–वि० कितना; थोड़ा; बहुत।

कतिपय–वि० [सं०] कई; कुछ।

कतीरा–पु० एक पेड़का गोंद।

कतेक*–वि० दे० 'कितेक'।

कतेब*–स्त्री० किताब, धर्मग्रंथ।

कतौनी–स्त्री० कताई; ढिलाईसे काम करना; बहुत देर लगाना; कातनेकी उजरत।

कत्ता*–पु० बँसफोरोंका बाँस काटनेका एक औजार, बाँक; छोटी और कुछ टेढ़ी तलवार; पासा।

कत्ती–स्त्री० छोटी तलवार; कटार; सोनारोंकी कतरनी; एक तरहकी पगड़ी।

कत्थई–वि० कत्थेके रंगका, खैरा। पु० कत्थई रंग।

कत्थक–पु० गाने-बजानेका पेशा करनेवाली एक हिंदू जाति। **–नृत्य**–पु० कत्थकोंमें प्रचलित एक प्रकारका नाच।

कत्थन–पु० [सं०] डींग मारना। वि० डींग मारनेवाला।

कत्था–पु० खैरकी लकड़ीका सत जो पानमें खाया जाता है।

क़त्ल–पु०[अ०] जानसे मार डालना, वध, हत्या। **–की रात**–स्त्री० मुहर्रमकी दसवीं रात।**–गाह**–पु० वधस्थल। **क़त्ले आम**–पु० अंधाधुंध वध, अपराधी-निरपराध, बच्चे-बूढ़ेका विचार किये बिना सबको कत्ल करना।

कथंचित्–अ० [सं०] शायद।

कथा†–पु० कत्था।

कथक–पु० [सं०] कथा कहनेका पेशा करनेवाला; पुराण बाँचनेवाला; दे० 'कत्थक'।

कथक्कड़–पु० कथा बाँचनेका पेशा करनेवाला; रामायणादिके तरह-तरहके अर्थ करनेवाला।

कथन–पु० [सं०] कहना; वचन, उक्ति; वर्णन; उपन्यासका एक भेद।

कथना*–स० क्रि० कहना; निंदा करना।

कथनी*–स्त्री० वात, कथन; बकवाद ।

कथनीय–वि० [सं०] कहने योग्य ।

कथम्–अ० [सं०] किस रूपमें; कैसे; कहाँसे ।

कथरी–स्त्री० चीथड़े जोड़कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी ।

कथांतर–पु० [सं०] दूसरी कथा; किसी कथाके अंतर्गत दूसरी गौण कथा ।

कथा–स्त्री० [सं०] कहानी; कल्पित कहानी, हिकायत; वृत्तांत-वर्णन; चर्चा, जिक्र; हाल; रामायण-पुराणादिका अर्थसहित वाचन । **–नायक**–पु० कथाका प्रधान पात्र या आलंबन । **–पीठ**–पु० कथाका मुख्य भाग; कहानीकी प्रस्तावना । **–प्रबंध**–पु० कहानी; (कल्पित) आख्यायिका । **–प्रसंग**–पु० वातचीतका सिलसिला; कथावार्त्ता । **–वस्तु**–स्त्री० कथाका मूल रूप । **–वार्त्ता**–स्त्री० पुराणादिकी कथाओंकी चर्चा; अनेक प्रकारके प्रसंग ।

कथानक–पु० [सं०] छोटी कथा; कहानीका खुलासा ।

कथित–वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त ।

कथोद्घात–पु० [सं०] रूपककी प्रस्तावनाके पाँच भेदोंमेंसे दूसरा; कथाका आरंभ ।

कथोपकथन–पु० [सं०] वातचीत, संवाद ।

कदंब–पु० [सं०] एक सुंदर पेड़ जिसमें गोल, पीले फूल लगते हैं, कदम; देवताडक तृण; समूह; सरसोंका पौधा ।

कदंश–पु० [सं०] हीन, निकृष्ट भाग ।

कद–वि० [सं०] जल देनेवाला; सुखद । पु० बादल । * अ० कब, किस समय ।

क़द–पु० [फ़ा०] डील, देहकी ऊँचाई-लंबाई ।

कदधव*–पु० कुमार्ग ।

कदन–पु०[सं०] वध; विनाश; युद्ध; पाप; *छुरी–'बिरह कदन करि मारत लुंजै'–सू० ।

कदन्न–पु० [सं०] खराब, मोटा अन्न–साँवा, कोदो आदि ।

कदम–पु० दे० 'कदंब' ।

क़दम–पु० [अ०] पाँव; डग; चलनेमें दोनों पगोंके बीचका अंतर; पदचिह्न; कार्यविशेषके लिए किया गया यत्न, कोशिश; काम; घोड़ेकी एक चाल । **–चा**–पु० पैर रखनेकी जगह; पाखानेकी खुड्डी; पाखाना **–ब-क़दम**–अ० साथ-साथ । **–बाज़**–वि० कदमकी चाल चलनेवाला (घोड़ा) । **–बोसी**–स्त्री० पाँव चूमना; गुरुजनोचित सम्मान-दर्शन; साक्षात्कार । **मु०–उखड़ना**–पाँव उखड़ना, भाग जाना । **–उठाना**–आगे बढ़ना । **–चूमना**–पाँव छूना; गुरुजनोचित सम्मान करना; गुरु मान लेना । **–छूना**–पाँव पकड़कर प्रणाम करना; किसीकी कसम खाना; खुशामद करना । **–निकालना**–(घोड़ेको) कदमकी चाल सिखाना; बाहर जाना । **–पर क़दम रखना**–पीछे-पीछे चलना, अनुसरण करना । **–ब-क़दम चलना**–साथ-साथ चलना; अनुसरण करना । **–बढ़ाना**–चाल तेज करना; आगे बढ़ना । **–मारना**–दौड़-धूप करना; यत्न-प्रयत्न करना । **–लेना**–पाँव-पड़ना, पाँव छूकर प्रणाम करना; आदर-सम्मान करना । (इस शब्दके बहुतसे मुहावरे 'पाँव'में मिलेंगे ।)

क़दर–स्त्री० [अ०] माप; मात्रा; भाग्य; प्रतिष्ठा, इज्जत । **–दान**–वि० दे० 'क़द्रदान' । **–दानी**–स्त्री दे० 'क़द्रदानी' ।

कदरई*–स्त्री० कायरपन ।

कदरज*–वि०दे० 'कदर्य' । पु० एक प्रसिद्ध पापी; † कूड़ा-करकट ।

कदरमस*–स्त्री० मार-पीट, लड़ाई ।

कदराई–स्त्री० कायरपन ।

कदराना*–अ० क्रि० डरना; कचियाना, पीछे हटना ।

कदर्थ–वि० [सं०] निरर्थक, निकम्मा ।

कदर्थन–पु०, **कदर्थना**–स्त्री० [सं०] सताना, पीड़ा पहुँचाना; तिरस्कार; निंदा; दुर्दशा ।

कदर्थित–वि० [सं०] जिसकी दुर्दशा की गयी हो; तिरस्कृत ।

कदर्य–वि० [सं०] कृपण, कंजूस; तुच्छ; क्षुद्र ।

कदली–स्त्री० [सं०] केला; एक हिरन; झंडा ।

कदा–अ० [सं०] कब, किस समय ।

कदाकार–वि० [सं०] कुरूप, भद्दा, भोंड़ा । पु० बुरा रूप ।

कदाच, कदाचि*–अ० कदाचित् ।

कदाचन–अ० [सं०] दे० 'कदाचित्' ।

कदाचार–पु० [सं०] बुरा, कुत्सित आचार ।

कदाचित्–अ० [सं०] कभी; शायद ।

कदापि–अ० [सं०] कभी, हर्गिज ।

कदाहार–पु० [सं०] बुरा भोजन; खराब चीजें खाना ।

क़दीम–वि० [अ०] पुराना, प्राचीन ।

क़दीमी–वि० दे० 'क़दीम' ।

कदुष्ण–वि० [सं०] थोड़ा गरम, कुनकुना ।

कदे*–अ० कदा; कभी ।

कद्दावर–वि० [अ०] बड़े डील-डौलका, लंबा-चौड़ा ।

कद्दू–पु० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध तरकारी, लौकी । **–कश**–पु० कद्दू, कुम्हड़ा आदि रेतनेका आला ।

क़द्र–स्त्री० [अ०] बड़ाई; इज्जत; दरजा; मरतबा । **–दान**–वि० कद्र समझनेवाला; सिरपरस्त । **–दानी**–स्त्री० सिरपरस्ती; गुणकी पहचान ।

कद्रु, कद्रू–स्त्री० [सं०] कश्यपकी पत्नी जो साँपोंकी माता मानी जाती है । **–ज,–पुत्र,–सुत**–पु० साँप, नाग ।

कधी†–अ० कभी ।

कनंक*–पु० कनक, सोना ।

कन–पु० कण; प्रसाद; भीख; कन्ना; बूँद; सत; 'कान'का समासमें व्यवहृत संक्षिप्त रूप । **–कटा**–वि० जिसका कान कटा हो, बूचा । **–खजूरा**–पु० गोजरकी जातिका एक कीड़ा जो कभी-कभी कानमें घुस जाता है । **–खोदनी**–स्त्री० लोहे, ताँबे आदिका बना कान खुजलाने और उसका मैल निकालनेका एक औजार । **–छेदन**–पु० कान छेदे जानेकी रस्म, कर्णवेध-संस्कार । **–टोप**–पु० वह टोपी जिससे कान ढँके रहें । **–पट**–पु०,**–पटी**–स्त्री० कान और आँखके बीचका स्थान, गंडस्थल । **–फटा**–पु० गोरखपंथी साधु जिसके कान फटे होते हैं । **–फुँकवा**–पु० कान फूँकनेवाला, दीक्षागुरु । **–फुँका**–वि० दीक्षा देने या लेनेवाला । पु० कान फूँकनेवाला गुरु; शिष्य । **–फुसका**–पु० कानमें धीरेसे बात कहनेवाला, चुगुलखोर; बहकानेवाला । **–फुसकी**–स्त्री० दे० 'काना-फूसी' । **–फूल**–पु० दे० 'करनफूल । **–बतिया**–

स्त्री० कानमें धीरेसे कही हुई बात। –**मैलिया**–पु० कानका मैल निकालनेवाला। –**रस**–पु० संगीतका रस; गाने-बजाने या बात सुननेका व्यसन। –**रसिया**–वि० संगीत-प्रिय। –**सुई**–स्त्री० छिपकर सुनना, टोह लेना। –**हार***–पु० दे० 'कर्णधार'।

कनउँगली–स्त्री० कानी उँगली, छिगुनी।

कनउड़*–वि० दे० 'कनौड़ा'।

कनक–पु० [सं०] सोना; गेहूँ या उसका आटा; धतूरा; पलाश; नागकेशर; चंपा। –**कली**–स्त्री० कानमें पहनेकी लौंग। –**कशिपु**–पु० हिरण्यकश्यप। –**क्षार**–पु० सुहागा। –**गिरि,**–**शैल**–पु० सुमेरु पर्वत। –**चंपा**–स्त्री० कनियारीका पेड़। –**रंभा**–स्त्री० स्वर्णकदली।

कनकना–वि० हलकी-सी चोटसे भी टूट जानेवाला; चिड़चिड़ा, तुनुकमिजाज।

कनकनाना–अ० क्रि० चौकन्ना होना; रोमांचित होना; चुनचुनाना; नागवार लगना।

कनकनाहट–स्त्री० कनकनानेका भाव।

क़नका–पु० कनकी; कण।

कनकाचल, कनकाद्रि–पु० [सं०] सुमेरु पर्वत।

कनकाध्यक्ष–पु० [सं०] खजांची, कोषाध्यक्ष।

कनकाना–पु० घोड़ेकी एक जाति।

कनकी–स्त्री० चावलका टूटा हुआ कण; छोटा कण।

कनकूत–पु० जमींदार और असामीमें उपजके बँटवारेके लिए खड़ी फसलका कूत होना।

कनकैया–स्त्री० दे० 'कनकौवा'।

कनकौवा–पु० बड़ा पतँग, गुड्डी। –(**वे**)**बाज़**–पु० पतंग उड़ाने-लड़ानेवाला। **मु०**–(**वे**)**से दुमछल्ला बड़ा**–मुख्य वस्तुसे अंगभूत, उससे उपजी वस्तुका बड़ा होना।

कनखियाना–स० क्रि० कनखीसे देखना; इशारा करना।

कनखी–स्त्री० आँखकी कोर; तिरछी निगाहसे देखना; आँखका इशारा, सैन। **मु०**–**मारना**–आँखसे इशारा करना।

कनखैया*–स्त्री० दे० 'कनखी'।

कनगुरिया–स्त्री० कानी उँगली, छिगुनी।

कनधार*–पु० कर्णधार, केवट।

कनमनाना–अ० क्रि० सोनेमें आहट पाकर या बेचैनीसे हाथ-पाँव हिलाना, सिकोड़ना; विरोध-सूचक चेष्टा करना।

कनय*–पु० कनक, सोना।

कनवास–पु० [अं० कैनवस] सन, पटसन आदिका बना मोटा कपड़ा जिसके पर्दे, जूते आदि बनते हैं, 'किरमिच'।

कनस्तर–पु० [अं० 'कनिस्टर'] टीनका चौखूँटा पीपा।

कनहार*–दे० 'कन'के साथ।

कना–पु० कन; सरकंडा।

कनाई–स्त्री० पतली शाखा, टहनी।

कनाउड़ा*–वि० दे० 'कनौड़ा'।

कनागत*–पु० पितृपक्ष।

क़नात–स्त्री० [तु०] कपड़ेकी दीवार जो खेमे या किसी खुले स्थानके चारों ओर खड़ी करते हैं।

क़नाती–वि० [अ०] कनातसे बनाया हुआ। –**मस्जिद**–स्त्री० कनात खड़ी कर नमाज पढ़नेके लिए बनाया हुआ स्थान।

कनावड़ा–वि० दे० 'कनौड़ा'।

कनिआरी–स्त्री० कनकचंपा।

कनिक–स्त्री० गेहूँ; गेहूँका आटा।

कनिका–स्त्री० दे० 'कणिका'।

कनिगर*–वि० आनवाला।

कनियाँ*–स्त्री० गोद।

कनियाना–अ० क्रि० कतराना, आँख बचाकर निकल जाना; गुड्डीका एक ओर झुकना।

कनियार–पु० कनकचंपा।

कनिष्ठ–वि० [सं०] उम्रमें सबसे छोटा; छोटा; अत्यल्प।

कनिष्ठा–वि० स्त्री० [सं०] सबसे छोटी; छोटी। स्त्री० कानी उँगली; सबसे पीछे ब्याही हुई पत्नी; वह नायिका जो पतिको कम प्यारी हो; छोटे भाईकी स्त्री।

कनिष्ठिका–स्त्री० [सं०] छिगुनी।

कनिहार–पु० कर्णधार, मल्लाह।

कनी–स्त्री० छोटा टुकड़ा; कणिका; हीरेकी कणिका; चावल या भातका वह (छोटा) भाग जो कच्चा रह गया हो; बूँद।

कनीनका–स्त्री० [सं०] क्वाँरी लड़की; आँखकी पुतली।

कनीनिका, कनीनी–स्त्री० [सं०] छिगुनी; आँखकी पुतली।

कनीर*–पु० कनेर वृक्ष या उसका फूल।

कनु*–पु० दे० 'कण'।

कनूका*–पु० दाना; कण।

कनेखी*–स्त्री० दे० 'कनखी'।

कनेठा†–वि० काना; ऐंचा-ताना।

कनेठी–स्त्री० कान ऐंठना, गोशमाली।

कनेर, कनैर–पु० एक पौधा जिसमें सफेद, पीले और लाल रंगके फूल लगते हैं, करवीर।

कनेरिया–वि० कनेरके फूलके रंगका।

कनोई*–पु० कानका मैल, खूँट।

कनोखा–वि० कटाक्षयुक्त।

कनौजिया–वि० कन्नौजका रहनेवाला। पु० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

कनौठा–पु० कोना; किनारा; भाई-बंधु।

कनौड़ा–वि० काना; अपंग; बदनाम; क्षुद्र; हीन; लज्जित; एहसानमंद। पु० क्रीत दास।

कनौती–स्त्री० पशुका कान या उसकी नोक; कान खड़े करनेका ढंग; बाली। **मु० कनौतियाँ बदलना**–घोड़ेका कान खड़ा करना; चौकन्ना होना।

कन्ना–पु० किनारा, कोर; पतंगमें ऊपर-नीचे बँधा हुआ वह धागा जिसमें लंबी डोर बाँधकर उसे उड़ाते हैं; चावलकी धूल जो छाँटनेमें निकलती है; पौधोंका एक रोग। वि० कन्ना लगा हुआ (फल या लकड़ी)। **मु०**–**ढीला होना**–हौसला परत होना; ऐंठ ढीली पड़ जाना। –**साधना**–कन्नेकी गाँठ ठीक जगहपर बाँधनेके लिए उसकी लंबाई नापना।

कन्नी–स्त्री० किनारा; कोर; हाशिया; पतंगका किनारा; वजन बराबर करनेके लिए पतंगकी काँप या कमानीमें बाँधी जानेवाली धज्जी; वह औजार जिससे राजगीर गारा लगाता, पलस्तर करता है; पेड़का नया कल्ला; तंबाकूके

वे कल्ले जो पत्ते काट लेनेपर फिरसे निकलते हैं। **मु०–काटना**–कतराना, किनारेसे निकल जाना। **–खाना**–पतंगका उड़नेमें एक ओर झुकना। **–दबाना**–काबूमें, अधीनतामें लाना।

कन्यका–स्त्री० [सं०] कन्या; अविवाहित लड़की।

कन्या–स्त्री० [सं०] लड़की; क्वाँरी लड़की; दशवर्षीया अविवाहिता बालिका; बारह राशियोंमेंसे छठी; दुर्गा; बड़ी इलायची; घृतकुमारी; एक वर्णवृत्त। **–कुमारी**–स्त्री० एक अंतरीप जो दक्षिणमें भारतकी स्थलसीमा है। **–गत**–वि० कन्या राशिमें स्थित (सूर्य)। **–दान**–पु० विवाहमें वरको कन्याका दान। **–धन**–पु० दहेज, दायज। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० जामाता, कन्याका पति; कार्त्तिकेय। **–रासी**–वि० [हिं०] कन्या राशिमें उत्पन्न; स्त्री-स्वभाववाला; दब्बू; दुर्बल। **–शुल्क**–पु० कन्याका मूल्य जो वरकी ओरसे कन्याके पिताको दिया जाय।

कन्हाई–पु० दे० 'कन्हैया'।

कन्हावर*–पु० दुपट्टा।

कन्हैया–पु० कृष्ण; सुंदर बालक; प्रियजन।

कपट–पु० [सं०] बनावटी व्यवहार; छल, धोखा; मनके भावको छिपाना, दुराव।

कपटना–स० क्रि० वस्तुको ऊपरसे थोड़ा तोड़-नोच लेना; खोंटना; रुपये-पैसे, रकममेंसे कुछ काट-निकाल लेना।

कपटा–पु० धानके पौधोंमें लगनेवाला एक कीड़ा।

कपटाघाती, छलघाती(तिन्)–पु० [सं०] (स्नाइपर) छिपकर या धोखेमें, शत्रुके शिविरपर गोलियोंकी बौछार करनेवाला या इस तरह किसीको मार डालने, आहत करनेवाला।

कपटी (टिन्)–वि०[सं०] छल-कपट करनेवाला, फरेबी।

कपड़–पु० 'कपड़े'का समासमें व्यवहृत रूप। **–कोट**–पु० खेमा, तंबू। **–गंध**–स्त्री० कपड़ा जलनेकी दुर्गंध। **–छन,–छान**–पु० पिसी हुई (सूखी) वस्तुको कपड़ेसे छाननेकी क्रिया (करना)। वि० कपड़ेसे छाना हुआ। **–मिट्टी**–स्त्री० रस-भस्मादि बनानेमें संपुटपर गीली मिट्टी और कपड़ा लपेटनेकी क्रिया (करना)।

कपड़ा–पु० कपास, ऊन आदिके धागोंसे बुनी हुई ओढ़ने-पहननेके काममें आनेवाली वस्तु; पहनावा। **–लत्ता**–पु० पहननेका सामान। **मु०–उतार लेना**–सब कुछ छीन लेना; बदनपर कपड़ा न रहने देना। **–रँगना**–गेरुआ बाना लेना, विरक्त होना। **कपड़ोंमें न समाना**–फूले अंग न समाना। **–से होना**–रजस्वला होना।

कपड़ौ(रौं)टी–स्त्री० दे० 'कपड़मिट्टी'।

कपर्द, कपर्दक–पु० [सं०] कौड़ी; (शिवका) जटा-जूट।

कपर्दिका–स्त्री० [सं०] कौड़ी।

कपर्दिनी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कपर्दी (र्दिन्)–वि० [सं०] जटाजूटधारी। पु० शिव।

कपाट–पु० [सं०] किवाड़, दरवाजा। **–वक्षा (क्षस्)**–वि० किवाड़ जैसी चौड़ी छातीवाला।

कपार*–पु० दे० 'कपाल'।

कपाल–पु० [सं०] खोपड़ी, मस्तक; भाग्यलेख; घड़ेका टुकड़ा; मिट्टीका भिक्षापात्र, खप्पर; वह पात्र जिसमें पुरोडाश पकाया जाता है; अंडेका छिलका; भड़भूजेकी खपड़ी। **–क्रिया**–स्त्री० शवदाहमें मुर्देकी खोपड़ीको बाँससे फोड़नेकी क्रिया; किसी चीजको पूरी तरह नष्ट कर देना। **–माली (लिन्)**–पु० शिव।

कपालिका–स्त्री०[सं०] खोपड़ी; घड़ेका टुकड़ा; काली; दुर्गा।

कपालिनी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कपाली (लिन्)–पु० [सं०] शिव; कपाल लेकर भीख माँगनेवाला; एक वर्णसंकर जाति, कपरिया।

कपास–स्त्री० एक पौधा जिसके डोंड़ेसे रुई निकलती है।

कपासी–वि० कपासके फूलके रंगका। पु० एक रंग जो कपासके फूलसे मिलता और हलका पीला होता है।

कपिंजल–पु० [सं०] पपीहा; गौरा पक्षी; तीतर। वि० पीले रंगका।

कपि–पु० [सं०] बंदर; हाथी; सूर्य; शिलारस; एक धूप। **–केतन,–ध्वज**–पु० अर्जुन।

कपित्थ–पु० [सं०] कैथ।

कपिल–वि० [सं०] भूरा, बादामी। पु० एक मुनि जो राजा सगरके साठ हजार पुत्रोंको शाप देकर भस्म कर देनेवाले, सांख्य-दर्शनके प्रवर्तक और विष्णुके चौबीस अवतारोंमें माने जाते हैं; अग्निका एक रूप; सूर्य; शिलाजतु; कुत्ता।

कपिला–वि० स्त्री० [सं०] भूरे या बादामी रंगवाली। स्त्री० भूरे या सफेद रंगकी गाय; सीधी गाय।

कपिश–वि० [सं०] भूरा, बादामी, जिसमें काला-पीला रंग मिला हो। पु० भूरा या बादामी रंग; धूप।

कपिस*–पु० रेशमी वस्त्र।

कपींद्र–पु० [सं०] सुग्रीव; हनूमान्।

कपीश–पु० [सं०] हनूमान्; सुग्रीव।

कपूत–पु० नालायक बेटा, कुपुत्र।

कपूती–स्त्री० नालायकी; कपूतका काम।

कपूर–पु० स्फटिकके रंग-रूपका एक गंध-द्रव्य जो रखनेसे कुछ दिनोंमें उड़ जाता है।

कपूरी–वि० कपूरके रंगका। पु० हलका पीला रंग; एक तरहका पान। स्त्री० एक जड़ी।

कपोत–पु० [सं०] कबूतर; पंडुक; चिड़िया। **–पालिका, –पाली**–स्त्री० कबूतरोंका दरबा; कबूतरोंकी छतरी।

कपोतारि–पु० [सं०] बाज।

कपोती–स्त्री० [सं०] कबूतरी; पंडुकी।

कपोल–पु० [सं०] गाल। **–कल्पना**–स्त्री० मनसे गढ़ लेना; मनसे गढ़ी हुई बात। **–कल्पित**–वि० मनगढ़ंत। **–राग**–पु० गालपरकी लाली।

कप्तान–पु० [अं० कैप्टेन] जल-स्थल सेनाका एक अफसर; दल-नायक; पुलिस सुपरिंटेंडेंट।

कप्पड़(र)*–पु० कपड़ा।

कफ–पु० [सं०] एक गाढ़ी, लसीली चीज जो अक्सर खाँसनेसे बाहर आती है, बलगम; शरीरकी तीन धातुओं-(वात, पित्त, कफ)मेंसे एक; झाग, फेन। **–कर,–कारक**–वि० कफ पैदा करनेवाला। **–घ्न,–हर**–वि० कफनाशक। **–ज्वर**–पु० कफके संचय और प्रकोपसे होनेवाला बुखार।

कफ़–पु० [अं०] कमीज, कुरते आदिकी आस्तीनका वह

दुहरा भाग जिसमें बटन लगता है; खाँसी। **–दार**–वि० [हिं०] जिसकी आस्तीनमें कफ लगा हो।

कफन–पु० [अ०] मुर्देपर लपेटा जानेवाला कपड़ा, शवाच्छादन। **–खसोट**–वि० कंजूस; दूसरेका माल जबरदस्ती हड़प जानेवाला। **–खसोटी**–स्त्री० श्मशानका कर जिसे डोम कफन फाड़कर वसूल करता था; कंजूसी; नोच-खसोटकर धन बटोरना। **–चोर**–पु० वह जो क़ब्र खोदकर मुर्देका कफन चुराये; भारी चोर; दुष्ट व्यक्ति। **मु०–को कौड़ी न रखना**–जो कुछ कमाना सब खर्च कर डालना। **–को कौड़ी न होना**–बहुत गरीब होना। **–फाड़कर चिल्लाना या बोलना**–बहुत जोरसे बोलना। **–सिर (सर)से बाँधना**–मरनेको तैयार होना; जानपर खेलना।

कफनाना–स० क्रि० मुर्देको कफनमें लपेटना।

कफनी–स्त्री० [अ०] बिना आस्तीनका कुरता जो (मुसलमान) मुर्देको पहनाया जाता है; साधु-फकीरोंका बिना बाँहका पहननेका ढीला-ढाला कुरता।

कबंध–पु० [सं०] सिरकटा या बिना सिरका धड़; पेट; बादल; जल; पुच्छल तारा; राहु; एक राक्षस जो दंडक वनमें रामके हाथों मारा गया।

कब–अ० किस समय; कभी नहीं (वह मेरी बात कब सुनता है)। **–का**–कितनी देरसे; बहुत देरसे; बहुत पहले।

कबड्डी–स्त्री० लड़कोंका एक खेल; कंपा।

क़बर–स्त्री० दे० 'क़ब्र'।

क़बरस्तान, कब्रिस्तान–पु० दे० 'क़ब्रिस्तान'।

कबरा–वि० जिसमें दूसरे रंगके दाग-धब्बे हों; चितकबरा।

क़बल–अ० दे० 'क़ब्ल'।

क़बा–पु० [अ०] एक लंबा, ढीला पहनावा।

कबाड़–पु० टूट-फूटा सामान, रद्दी चीजें।

कबाड़ा–पु० झंझट, बखेड़ा।

कबाड़िया, कबाड़ी–पु० टूटी-फूटी चीजें खरीदने-बेचनेवाला।

कबाब–पु० [फ़ा०] कुटे या बारीक कटे हुए मांसका गोला या टिकिया जो सीखचेमें गोदकर आगपर सुर्ख की गयी हो। वि० भुना हुआ; जला-भुना। **मु०–करना**–भूनना; जलाना; कष्ट पहुँचाना। **–होना**–जलना-भुनना; अति क्रुद्ध होना।

कबाबचीनी–स्त्री० एक दवा जिसके दाने मिर्चकेसे होते हैं।

कबाबी–पु० कबाब बेचनेवाला; मांसभोजी।

कबाय*–पु० दे० 'क़बा'।

कबार–पु० व्यवसाय, व्यापार; छोटा व्यवसाय; रद्दी चीजें।

क़बाला–पु० [अ०] संपत्ति दूसरेको देनेका दस्तावेज; बयनामा; दानपत्र; अधिकारपत्र।

कबाहट–स्त्री० दे० 'क़बाहत'।

क़बाहत–स्त्री० [अ] दोष, खराबी; कठिनाई; झंझट।

कबीर–वि० [अ०] बड़ा; बुजुर्ग; सम्मानित। पु० एक प्रसिद्ध संत, संप्रदाय-प्रवर्तक और हिंदी कवि; होलीमें गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत। **–पंथी**–पु० कबीरके पंथ या संप्रदायका अनुयायी।

कबीला–पु० दे० 'कमीला'।

क़बीला–पु० [अ०] कुल; वंश; जाति; जंगली आदमियोंका व्यक्तिविशेषको नेता माननेवाला समूह। स्त्री० पत्नी, जोरू।

कबुलवाना–स० क्रि० स्वीकार कराना।

कबुलाना*–स० क्रि० दे० 'कबुलवाना'।

कबूतर–पु० एक प्रसिद्ध पक्षी, कपोत। **–खाना**–पु० कबूतर रखनेका दरबा। **–बाज़**–पु० कबूतर पालने, उड़ाने, लड़ानेवाला।

कबूतरी–स्त्री० कबूतरकी मादा, कपोती; नर्तकी; सुंदर स्त्री।

क़बूल–पु० [अ०] मानना, स्वीकार करना, इकबाल करना।

कबूलना–स० क्रि० स्वीकार करना, मान लेना।

कबूलियत–स्त्री० [अ०] स्वीकृति; वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला देनेवालेको लिखकर उसकी शर्तोंकी स्वीकृतिके रूपमें देता है।

कबूली–स्त्री० चनेकी दालकी खिचड़ी या पुलाव।

क़ब्ज़–पु० [अ०] पकड़; अधिकार; अवरोध; कोष्ठबद्धता, मलका आँतोंमें रुकना, पेट साफ न होना।

क़ब्ज़ा–पु० [अ०] दखल; अधिकार; पकड़; काबू; वस; दस्ता, मूठ; बाजू; लोहे या पीतलका पुरजा जिससे किवाड़े आदि चौखटसे जोड़नेपर घूम सकते हैं; कुश्तीका एक पेंच। **–दार**–वि० कब्जा रखनेवाला; अधिकारी; जिसमें कब्जा लगा हो। **मु० क़ब्ज़ेपर हाथ रखना**–तलवार खींचने, किसीपर वार करनेको उद्यत होना।

क़ब्ज़ियत–स्त्री० दे० 'क़ब्ज'।

क़ब्र–स्त्री० [अ०] वह गढ़ा जिसमें मुर्दा गाड़ा जाय; उसके ऊपर रखा हुआ पत्थर या बनवाया हुआ चबूतरा। **–गाह**–स्त्री० कब्रिस्तान। **–का मुँह झाँक आना**–मौतके मुँहसे निकल आना, मरते-मरते बचना। **(अपनी)–खोदना**–अपने सर्वनाशका उपाय करना। **–में पाँव(पैर) लटकाये होना**–मृत्युका दिन करीब होना; अति वृद्ध होना।

क़ब्रिस्तान–पु० [अ०] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जायँ, जहाँ बहुत-सी कब्रें हों।

क़ब्ल–अ० [अ०] पहले, पेश्तर, आगे।

कभी–अ० (कब+ही) किसी समय। **–कभी**–अ० जब-तब, यदा-तदा। **–का**–कबका, अरसेसे।

कभू*–अ० दे० 'कभी'।

कमंगर–पु० [फ़ा०] कमान बनानेवाला; चित्रकार; उखड़ी हुई हड्डी बैठानेवाला।

कमंडल–पु० दे० 'कमंडलु'।

कमंडली–वि० कमंडलधारी; ढोंगी। पु० साधु।

कमंडलु–पु०[सं०] साधु-संन्यासियोंका दरियाई नारियल, तूँबी आदिका बना जलपात्र।

कमंद–*पु० दे० 'कबंध'। स्त्री० [फ़ा०] फंदा; फंदेदार रस्सी जिसके सहारे चोर ऊँचे मकानोंपर चढ़ जाते हैं।

कम–वि० [फ़ा०] थोड़ा, अल्प; छोटा; बुरा, खराब। अ० क्वचित्, बहुत कम। **–अक़्ल**–वि० मूर्ख; निर्बुद्धि। **–असल**–वि० दोगला; कमीना, नीच। **–उम्र**–वि० छोटी उम्रवाला, अल्पवयस्क। **–क़ीमत**–वि० सस्ता, अल्पमूल्य। **–ख़र्च**–वि० किफायतसे चलनेवाला। **(–०बाला नशीं**–सस्ती पर बढ़िया, यथेष्ट उपयोगी।)

–ख़ुराक–वि० कम खानेवाला । **–ख़्वाब**–पु० एक रेशमी कपड़ा जिसपर सोने-चाँदीके तारोंका काम होता है । **–ज़ोर**–वि० दुर्बल, कम ताकत या असरवाला । **–ज़ोरी**–स्त्री० दुर्बलता, अशक्तता । **–(व, मो)ज़्यादा, –बेश**–अ० थोड़ा-बहुत । **–तरीन**–वि० छोटेसे छोटा; कमसे कम; लघुतम । **–तोला**–वि० कम तौलनेवाला, डाँड़ी मारनेवाला । **–नज़र**–वि० जिसकी निगाह थोड़ी ही दूरतक जाय, अदूरदर्शी । **–नसीब**–वि० अभागा, बदनसीब । **–बख़्त**–वि० अभागा, हतभाग्य । **–बख़्ती** –स्त्री० दुर्भाग्य, बदनसीबी । **(–०का मारा**–अभागा ।) **–सिन**–वि० कमउम्र; अल्हड़ । **–हिम्मत**–वि० पस्त-हिम्मत, डरपोक, कायर ।.

कमची–स्त्री० [तु०] पतली, लचकनेवाली छड़ी; बाँस आदिकी पतली टहनी; तीली; पंजा लड़ानेका एक प्रकार ।

कमटी–स्त्री० पतली, नरम टहनी ।

कमठ–पु० [सं०] कछुआ; बाँस; कमंडलु; तूँबी; सलईका वृक्ष; एक दैत्य ।

कमठा–पु० कमान ।

कमना†–अ० क्रि० कम होना, घटना ।

कमनी*–वि० दे० 'कमनीय' ।

कमनीय–वि० [सं०] कामना करने, चाहने योग्य; सुंदर ।

कमनैत–पु० कमान बाँधनेवाला, तीरंदाज ।

कमनैती–स्त्री० तीरंदाजी ।

कमर–स्त्री० [फा०] शरीरका मध्य, पेट और पेड़ूके बीचका भाग, कटि; मध्य भाग; कुश्तीका एक पेंच । **–कोट,–कोटा**–पु० परकोटेके ऊपरकी दीवार जो लगभग कमरभर ऊँची रहती है; रक्षाके लिए घेरी हुई दीवार । **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **–पट्टी**–स्त्री० अँगरखे आदिमें कमरके ऊपर लगायी जानेवाली पट्टी । **–बंद**–पु० कमर बाँधनेका एक दुपट्टा, पटुका, पेटी; इजारबंद । –वि० कटि-बद्ध, मुस्तैद । **–बंदी**–स्त्री० मुस्तैदी; लड़ाईकी तैयारी । **मु०–कसना**–(किसी कामके लिए) तैयार, आमादा होना; पक्का इरादा करना । **–खोलना**–कमरबंद खोलना; दम लेना; (यात्रा या किसी कामका) संकल्प, विचार त्याग देना । **–टूटना**–हिम्मत पस्त होना; दिल बैठ जाना; कुछ करनेका दम न रह जाना । **–बाँधना**–कमरबंद बाँधना; सफरके लिए तैयार होना; कमर कसना । **–बैठ जाना**–दे० 'कमर टूटना' । **–सीधी करना**–थकावट मिटाना, सुस्ताना ।

कमरख–पु० एक वृक्ष या उसका फल जो फाँकदार और कुछ खट्टा होता है ।

कमरखी–वि० कमरख जैसा; कमरखके समान फाँकदार । स्त्री० किसी गोल चीजके किनारे कटी हुई कँगूरेदार फाँकें ।

कमरा–पु० कोठरी; † दे० 'कम्मल' ।

कमरियां–स्त्री० दे० 'कमली'; † कमर ।

कमरी*–स्त्री० दे० 'कमली'; सलूका ।

कमल–पु० [सं०] पानीमें होनेवाला एक प्रसिद्ध पौधा और उसका फूल, पद्म; जल; ताँबा; क्लोम; सारस; ब्रह्मा; औषध; मृगोंका एक भेद; आँखका कोया; गर्भाशयका मुँह; एक वृत्त; पीलिया रोग; मोमबत्ती जलानेका काँचका गिलास; मूत्राशय । **–गट्टा**–पु० [हिं०] कमलका बीज । **–गर्भ**–पु० कमलका छत्ता । **–ज**–पु० ब्रह्मा । **–नयन** –वि० कमलकी पँखुड़ीसी आँखोंवाला । पु० विष्णु; राम; कृष्ण । **–नाभ**–पु० विष्णु । **–नाल**–स्त्री० कमलकी डंडी । **–बंध**–पु० एक चित्रकाव्य । **–बंधु,–बांधव**–पु० सूर्य । **–बाई**–स्त्री० [हिं०] कँवल रोग, पीलिया । **–भव,–भू,–संभव**–पु० ब्रह्मा । **–वन**–पु० कमलोंका समूह । **–वायु**–स्त्री० एक रोग जिसमें आँखें पीली हो जाती हैं, पीलिया ।

कमला–पु० स्पर्शसे खुजली पैदा करनेवाला सूँड़ी नामक एक कीड़ा; सड़े फल आदिमें पड़नेवाला कीड़ा । स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; धन; एक नदी; एक वर्णवृत्त; एक नीबू । **–कांत,–पति**–पु० विष्णु ।

कमलाकर–पु० [सं०] कमलोंका समूह; कमलोंसे भरी झील, तालाब आदि ।

कमलाक्ष–वि० [सं०] कमलसी आँखोंवाला ।

कमलालया–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

कमलासन–पु० [सं०] ब्रह्मा; एक आसन, पद्मासन ।

कमलिनी–स्त्री० [सं०] कमलका पौधा; कमल-समूह; कमल; कमलसे पूर्ण जलाशय । **–कांत,–बंधु**–पु० सूर्य ।

कमली–स्त्री० छोटा कंबल ।

कमलेश–पु० [सं०] विष्णु ।

कमवाना–स० क्रि० 'कमाना'का प्रे० ।

कमसिन–वि० दे० 'कम'के साथ ।

कमाइच*–स्त्री० कमानी; छोटी कमान ।

कमाई–स्त्री० परिश्रमसे पैदा किया हुआ पैसा या माल, उपार्जित धन; श्रम-फल; मजदूरी; पैसा कमानेका धंधा; उद्यम; वस्तुको सुधारने-बनानेका काम ।

कमाऊ–वि० कमानेवाला, कमासुत ।

कमाच–पु० एक रेशमी कपड़ा ।

कमाची–स्त्री० झुकी हुई तीली, कमची ।

कमान–स्त्री० [फा०] धनुष्; इंद्रधनुष्; मेहराब; दो तारोंके कोणांशकी दूरी या क्षितिजसे किसी तारेकी ऊँचाई नापनेका यंत्र; मालखंभकी एक कसरत, * तोप । **–गर**–पु० कमान बनानेवाला । **–चा**–पु० छोटी कमान; सारंगी बजानेका गज; धुनकी । **–दार**–वि० मेहराबदार; कमान बाँधनेवाला ।

कमान–स्त्री० [अ० कमांड] आदेश, हुक्म; फौजी ड्यूटी । **–अफसर**–पु० कमांडर; कमांडिंग अफसर । **मु०–पर जाना**–लड़ाईपर जाना ।

कमाना–स० क्रि० श्रम-उद्यमसे पैसा पैदा करना; अन्नादि उपजाना; पैदा करना; घरकी कुछ विशेष सेवाएँ (नाई, बारी आदिके काम) नियमपूर्वक करना; पाखाना साफ करना; वस्तुको श्रम द्वारा सुधारना, काम लेने लायक बनाना (खेत, चमड़ा इ०); संचय करना (पाप,पुण्य इ०); कसब, वेश्या-वृत्ति करना; † घटाना; छीलकर पतला करना ।

कमानिया–पु० तीरंदाज, कमनैत । वि० मेहराबदार ।

कमानी–स्त्री० लोहे आदिकी लचीली और कुछ झुकायी हुई तीली; घड़ी आदिका तारोंके चक्करकी शक्लका पुरजा;

वह पेटी जो आँत उतरनेकी बीमारीमें पहनी जाती है; सारंगी बजानेका गज; बढ़ई आदिका एक औजार जिसमें बरमा फँसाकर खींचते हैं। **–दार**–वि० कमानीवाला।

कमाल–पु० [अ०] पूर्णता, समाप्ति; पराकाष्ठा; निपुणता, कौशल; गुण, जौहर; अद्‌भुत चमत्कारिक कार्य; कबीरका बेटा। वि० सर्वोत्तम; पूर्ण; अतिशय। **मु०–करना**–अद्‌भुत कुशलता, योग्यताका परिचय देना।

कमालियत–स्त्री० [अ०] दक्षता; पूर्णता।

कमासुत–वि० कमानेवाला, कमाऊ।

कमिश्नरी–स्त्री० [अं०] कमिश्नरके अधीन प्रदेश, विभाग, किस्मत; कमिश्नरकी कचहरी।

कमी–स्त्री० कम होना, अल्पता; त्रुटि; न्यूनता; घाटा; कोताही। **–बेशी**–स्त्री० कम या ज्यादा होना, अल्पता-अधिकता।

कमीज़–स्त्री० कफ और कालरदार कुरता, 'शर्ट'।

कमीना–वि०[फा०]नीच,क्षुद्र,खोटा।**–पन**–पु० नीचता।

कमीला–पु० एक फलदार छोटा पेड़।

कमीशन–पु० [अं०] किसी विषयकी जाँच, विचारके लिए नियुक्त छोटी समिति या मंडल; दूरस्थ व्यक्तिके इजहारके लिए एक या अधिक वकीलोंकी नियुक्ति; एजेंटका काम करनेका अधिकार; दलाली, दस्तूरी।

कमुकंदर*–पु० धनुष् तोड़नेवाले रामचंद्र।

कमेटी–स्त्री० किसी खास कामके लिए बनायी गयी समिति।

कमेरा–पु० काम करनेवाला; नौकर।

कमेला–पु० जानवरोंको जिबह करनेका स्थान, कसाईखाना।

कमोदन*–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कमोदिन*–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कमोरा–पु० मटका।

कमोरी–स्त्री० छोटा कमोरा, मटकी।

कम्मल–पु० ओढ़ने-बिछानेके कामका ऊनका बना मोटा कपड़ा, कंबल।

कया*–स्त्री० दे० 'काया'।

क़याम–पु०[अ०] ठिकाना; ठहराव; उठना; खड़ा होना।

क़यामत–स्त्री० [अ०] मुसलमानों, ईसाइयों आदिके विश्वासानुसार प्राणियोंके कर्मोंका लेखा लेनेका दिन, प्रलय; आफत; हंगामा, हलचल। **–का**–बलाका, गजबका। **–की घड़ी**–प्रलयकाल।

क़यास–पु० [अ०] अनुमान, अटकल; कल्पना।

करंक–पु०[सं०] खोपड़ी; ठटरी; अस्थि; नरियरी, कमंडलु।

करंज, करंजक–पु० [सं०] एक झाड़, कंजा जिसके फल आदि दवाके काम आते हैं; [हिं०] मुरगा। **–ख़ाना**–पु० मुर्गोंको रखनेकी जगह।

करंजा–पु० दे० 'करंज'। वि० भूरी आँखोंवाला।

करंड–पु० कुरुल पत्थर; [सं०] बाँसका बना टोकरा या पिटारा; शहदका छत्ता; तलवार; एक तरहकी बत्तख, कारंडव; एक तरहकी चमेली।

कर–* प्र० का ['ताकर नाम भरत अस होई', रामा०]। * पु० कल, छल, धूर्तता; [सं०] हाथ; किरण; हाथीकी सूँड़; मालगुजारी, महसूल; ओला; हस्त नक्षत्र; लंबाईकी एक माप। वि० करनेवाला (समासांतमें 'सुखकर', 'दुःखकर'।) **–कोष**–पु० पानी लेनेके लिए गहरायी हुई हथेली, चुल्लू। **–गत**–वि० हस्तगत। **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० कर लगाना या वसूल करना; पाणिग्रहण। **–ज**–पु० नाखून; उँगली। **–तल**–पु० हथेली। **–० ध्वनि**–स्त्री० ताली। **–तली**–स्त्री० हथेली; ताली। **–तारी***–स्त्री० दे० 'करताली'; दे० क्रममें। **–ताल**–पु० ताली, करतल-ध्वनि; हाथसे बजानेका, कीर्तन आदिमें व्यवहृत, एक बाजा। **–तालिका**–स्त्री० ताली। **–ताली**–स्त्री० छोटा करताल; ताली। **–द**–वि० कर, खिराज देनेवाला (राजा, राज्य); सहारा देनेवाला। पु० किसान। **–निर्धारण**–पु० (असेसमेंट) मूल्य या लाभादिकी मात्राके आधारपर निश्चय करना कि खेत, घर आदिके स्वामीपर कितना कर लगाया जाय। **–पत्र,–पत्रक**–पु० आरा। **–पल्लव**–पु० उँगली। **–पलई***–स्त्री० उँगलियोंके संकेतसे शब्दोंके द्योतनकी विद्या। **–पात्र**–पु० कुछ लेनेके लिए गहरायी हुई हथेली। **–पात्री (त्रिन्)**–वि० अँजुलीमें ही अन्न-जल लेकर ग्रहण करनेवाला (साधु)। **–पाल**–पु० खड्ग, करवाल। **–पिचकी***–स्त्री० दोनों हाथोंको मिलाकर बनायी हुई पिचकारी। **–पीड़न**–पु० पाणिग्रहण, विवाह; हाथ मिलाना (शेक-हैंड)। **–भार**–पु० कर या करोंका बोझ; भारी कर। **–माली(लिन्)**–पु० सूर्य। **–मूल**–पु० कलाई। **–योग्य मूल्य**–पु० (रेटेबिल या टैक्सेबिल वैल्यू) कर लगानेकी दृष्टिसे आँका गया किसी मकान, संपत्ति आदिका मूल्य (या उससे किराये, सूद आदिके रूपमें हो सकनेवाली आय)। **–रुह**–पु० नाखून। **–वार***–पु० दे० 'करवाल'। **–वाल**–पु० खड्ग; नाखून। **–वाली**–स्त्री० करौली। **–वीर,–वीरक**–पु० कनेर; तलवार; श्मशान। **–संपुट**–पु० दोनों हथेलियोंके मिलानेसे बना गड्ढा, अंजलि। **–सूत्र**–पु० विवाहका कंगन।

करक–स्त्री० पेशाबका थोड़ा-थोड़ा और जलनके साथ होना; थोड़ी-थोड़ी देरके बाद होनेवाली पीड़ा, टीस। पु० [सं०] कमंडलु; करवा; नारियलकी खोपड़ी; अनार।

करकच–पु० समुद्रके पानीसे बनाया जानेवाला नमक।

करकट–पु० कूड़ा, कतवार; † लोहेकी कलईदार चद्दर जिससे बाल्टी बनती है।

करकना–अ० क्रि० आवाजके साथ फटना, तड़कना; चुभना, सालना।

करकरा–वि० दे० 'किरकिरा'।

करकराहट–स्त्री० दे० 'किरकिराहट'।

करकस*–वि० दे० 'कर्कश'।

करका–स्त्री० [सं०] ओला।

करखना–अ० क्रि० जोशमें आना।

करखा–पु० उत्तेजना, ताव; कड़खा; एक पद; कालिख।

करगहना†–पु० भरेठा।

करघा–पु० कपड़े बुननेका यंत्र; वह गड्ढा जिसमें पाँव लटकाकर जुलाहा कपड़ा बुनता है।

करचंग–पु० एक तरहका डफ।

करछाल–स्त्री० छलाँग, कुदान, उछाल।

करछी, करछुली†–स्त्री० दे० 'कलछी'।

करछैयाँ*–वि० स्त्री० कुछ-कुछ काली, श्यामा (गाय)।

करट–पु० [सं०] कौआ; हाथीकी कनपटी; निंद्य जीवन।

करण–पु० [सं०] करना; क्रिया; क्रियाविशेषके लिए अनिवार्य, आवश्यक साधन; औजार; इंद्रिय; तृतीय, साधन बतानेवाला कारक (व्या०); हेतु; देह; क्षेत्र; स्थान; नाचमें हाथकी चेष्टासे भाव बतानेकी क्रिया; कालका एक विशेष मान; दिनका एक विभाग; गणितकी एक क्रिया; दस्तावेज, लिखित प्रमाण; परमात्मा; उच्चारण; एक रतिबंध; वह संख्या जिसका पूरा-पूरा वर्गमूल न निकल सके; * कान (कर्ण)।

करणीय–वि० [सं०] करने योग्य, कार्य।

करतब–पु० काम, कर्म; हुनर, गुण, कौशल; अचरजमें डालनेवाला काम (दिखाना); बाजीगरी।

करतबिया–वि० दे० 'करतबी'।

करतबी–वि० गुणी; पुरुषार्थी; करतब दिखानेवाला।

करतरी*–स्त्री० दे० 'कर्तरी; दे० 'करतली'।

करतव्य*–पु० करने योग्य काम; धर्म। वि० करणीय।

करता–पु० दे० 'कर्ता'; मुखिया, अधिकारी; एक वर्णवृत्त। **–धरता**–पु० जिसकी मरजी, आदेशसे सब काम हों, सर्वाधिकारी।

करतार–पु० दे० 'कर्ता'; * दे० 'करताल'।

करतारी*–स्त्री० करतापन, कर्तृत्व; ईश्वरकी लीला; एक बाजा; ताली।

करतूत–स्त्री० काम, करनी; निंद्य कर्म; गुण; कला।

करतूति*–स्त्री० दे० 'करतूत'।

करद–स्त्री० छुरी, चाकू। वि० [सं०] दे० 'कर'में।

करदम*–पु० कर्दम, कीच; पाप; मांस।

करदा–पु० बिक्रीके अनाज आदिमें मिला हुआ कूड़ा-करकट; कूड़े-करकटकी वजहसे होनेवाली मूल्यमें कमी; बदलाई।

करधन†–स्त्री० दे० 'करधनी'।

करधनी–स्त्री० एक गहना जो कमरमें पहना जाता है; सूत या रेशमकी बनी हुई मेखला।

करन†–पु० दे० 'कर्ण; ज़रिश्क। **–धार**–पु० दे० 'कर्णधार'। **–फूल**–पु० कानमें पहननेका एक गहना, काँप। **–बेध**–पु० कनछेदन।

करना–स० क्रि० किसी कामके होनेमें यत्नवान् होना, अंजाम देना; साधन-संपादन; निबटाना; बनाना, अन्य रूप देना; पकाना; रखना; पहुँचाना; रोजगार, पेशा करना; भाड़ेपर लेना (एक्का-ताँगा आदि); पति या पत्नीके रूपमें ग्रहण करना; पोतना; प्रसंग करना। * पु० करनी, काम।

करनाई–स्त्री० तुरही।

करनाल–स्त्री० एक तरहकी तोप; पु० भोंपा; बड़ा ढोल।

करनी–स्त्री० कर्म, करतूत; अंत्येष्टि; पेसराजोंका एक औजार, कन्नी।

करपर*–पु० खोपड़ी; खप्पर। वि० कृपण।

करबरना*–अ० क्रि० कलरव करना (पक्षियों आदिका)।

करबला–स्त्री० [अ०] इराकके अरबका वह जलहीन मैदान जहाँ इमाम हुसैन अपने साथियों सहित शहीद हुए; वह स्थान जहाँ ताजिये दफन किये जाते हों; जलहीन स्थान।

करबूस–पु० घोड़ेके जीनमें टँकी हुई पट्टी जिसमें हथियार लटकाया जाता है।

करभ–पु० [सं०] करपृष्ठ; हाथीकी सूँड़; हाथीका बच्चा; ऊँटका बच्चा; ऊँट; एक सुगंधित द्रव्य।

करभक–पु० [सं०] ऊँट; हाथीका बच्चा।

करभी–स्त्री० [सं०] ऊँटनी।

करभी (भिन्)–पु० [सं०] हाथी।

करभोरु–वि० स्त्री० [सं०] जिसकी जाँघ हाथीकी सूँड़के समान हो, सुंदर जाँघोंवाली।

करम–पु० कर्म, काम; कर्मफल; भाग्य। **–चँद***–पु० कर्म। **–भोग**–पु० कर्मफल; कर्मफल-रूपमें मिलनेवाला दुःख।

करमकल्ला–पु० पत्तेवाली गोभी, पातगोभी।

करमट्ठा*–वि० कंजूस।

करमठ*–वि० दे० 'कर्मठ'।

करमी*–वि० दे० 'कर्मी'।

करमुँहा, करमुखा–वि० काले मुँहवाला; जिसके मुँहमें कालिख लगी हो; कलंकित।

कररना–अ० क्रि० चर्र-चर्र करके टूटना; कर्कश बोली बोलना।

करराना*–अ० क्रि० दे० 'कररना'।

कररी–स्त्री० वनतुलसी; एक पक्षी, कुररी।

करल*–पु० कड़ाही।

करला–पु०, **करली**–स्त्री० कल्ला, कोमल पत्ता।

करवट–स्त्री० दाहिने या बायें बाजू लेटना; इस तरह लेटनेकी स्थिति; पहलू, बाजू। पु० करवत, आरा। मु० **–न लेना**–कर्तव्यपर ध्यान न देना; चुप्पी साधना। **–बदलना**–लेटनेमें पहलू बदलना, दूसरी ओर हो जाना; बेचैनीसे बार-बार पहलू बदलना, सो न सकना। **–लेना**–लेटे या सोये हुए आदमीका दूसरी ओर घूमना, पहलू बदलना; बदलना, पलटना; स्वर्ग-प्राप्तिकी आशासे काशी, प्रयाग आदिके विशेष आरोंके नीचे कटकर जान देना।

करवत–पु० करपत्र, आरा।

करवर*–स्त्री० घात; संकट, विपत्ति; कठिनाई। पु० करवाल।

करवरना*–अ० क्रि० चहकना, कलरव करना।

करवा–पु० मिट्टी या धातुका टोंटीदार बरतन।

करवानक*–पु० गौरैया पक्षी, चिड़ा।

करवाल–पु० [सं०] दे० 'कर'के साथ।

करवीर–पु० [सं०] दे० 'कर'के साथ।

करवील*–पु० करील।

करवैया†–वि० करनेवाला, करतबी।

करश्मा–पु० [फा०] आँख या भौंका इशारा; नाजनखरा; अनोखी बात; चमत्कार, करामात।

करष*–पु०, स्त्री० खिंचाव; अक्स; वैर; ताप; क्रोध।

करषक*–पु० कृषक, किसान।

करषना*–स० क्रि० तानना, खींचना; सोखना; बुलाना; बटोरना।

करसना*–स० क्रि० दे० 'करषना'।

करसाइल, करसायल–पु० काला हिरन।

करसान*–पु० किसान।

करसी–स्त्री० सूखे गोबर, उपलों आदिका चूर या छोटे टुकड़े।

करहंच*–पु० दे० 'करहंस'।

करहंस–पु० [सं०] एक वर्णवृत्ति।

करह*–पु० ऊँट; पुष्पकलिका।

करहाट,–हाटक–पु० [सं०] कमलकी जड़; कमलका छत्ता।

कराँकुल–पु० क्रौंच पक्षी।

करा*–स्त्री० कला।

कराइत–पु० दे० 'करैत'।

कराई–स्त्री० दालका छिलका जो पशुओंको खिलाया जाता है; करने या करानेका भाव या उजरत; * कालापन।

कराघात–पु० [सं०] हाथका प्रहार, आघात।

करात–पु० एक वजन जो लगभग ३॥ ग्रेनके बराबर होता है और सोना-जवाहरात आदि तौलनेके काम आता है।

कराना–स० क्रि० 'करना'का प्रे०।

करापवंचन–पु० [सं०] (इवेज़न ऑव टैक्स) ऐसी हिकमत या चालाकी करना जिससे कर अदा न करना पड़े।

क़राबा–पु० [अ०] शीशेका सुराही जैसा बरतन।

करामात–स्त्री० [अ०] चमत्कार, सिद्धि; अचरजभरी बात।

करामाती–वि० [अ०] करामात करने-दिखानेवाला, चमत्कारी।

करार–पु० नदीका ऊँचा और कुछ खड़ा किनारा, कगार।

क़रार–पु० [अ०] ठहराव; चैन, आराम; धीरज; प्रतिज्ञा, इकरार।

करारना*–अ० क्रि० क व-काँव करना; कर्कश स्वरमें बोलना।

करारा–वि० कड़ा; तेज; दृढ़; खूब सिंका हुआ; गहरा। पु० कगार; टीला; कौआ।

करारोपण–पु० [सं०] (लेवी) कर आदि प्राधिकृत रूपसे लगाना, वसूल करना या उगाहना।

कराल–वि० [सं०] बड़े-बड़े दाँतोंवाला; डरावना, भयानक।

करालिका–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कराली–स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

कराव–पु० दे० 'करावा'।

करावा–पु० पतिके जीवित रहते हिंदू स्त्रीका दूसरा ब्याह, सगाई।

कराह–स्त्री० दर्द या पीड़ाकी आवाज, आह। * पु० दे० 'कड़ाह'।

कराहना–अ० क्रि० आह-आह करना, पीड़ासे चीखना।

कराहा*–पु० दे० 'कड़ाहा'।

कराही*–स्त्री० दे० 'कड़ाही'।

करिंद*–पु० ऐरावत; बड़ा हाथी।

करि*–पु० हाथी।

करिखई*–स्त्री० कालापन।

करिखा–पु० कालिख।

करिणी–स्त्री० [सं०] हथिनी।

करिनी*–स्त्री० दे० 'करिणी'।

करिया*–पु० ऊखका एक रोग; * पतवार; कर्णधार, माँझी–'ज्यों करिया बिन नाव'–सू०। वि० काला।

करियाई*–स्त्री० कालापन; कालिख।

करियारी*–स्त्री० दे० 'कलियारी'; लगाम।

करिल*–स्त्री० बाँसका नया कल्ला, कोंपल। वि० काला।

करिश्मा–पु० [फ़ा०] दे० 'करश्मा'।

करींद्र–पु० [सं०] ऐरावत; श्रेष्ठ, बहुत बड़ा हाथी।

करी*–स्त्री० कली; † सौरी नामकी मछली; कड़ी, धरन।

करी (रिन्)–पु० [सं०] हाथी (समासमें 'करि')। **–कुंभ**–पु० हाथीका मस्तक। **–दारक**–पु० सिंह। **–प**–पु० महावत। **–पोत,–शाव,–शावक**–पु० हाथीका बच्चा।

क़रीना–पु० [अ०] मेल, समानता; ढंग, सलीक़ा; तरतीब, क्रम, सिलसिला।

क़रीब–वि० [अ०] निकटस्थ, समीपी। अ० पास, निकट; लगभग। **–क़रीब**–अ० लगभग।

क़रीबन्–अ० [अ०] लगभग।

करीबी–वि० [अ०] निकटका (संबंधी)।

करीम–वि० [अ०] उदार; दयालु; नेक। पु० ईश्वर।

करीर–पु० [सं०] बाँसका नया कल्ला; करील; घड़ा।

करील–पु० झाड़ीके रूपमें उगनेवाला एक कँटीला और बिना पत्तेका पेड़।

करीश–पु० [सं०] दे० 'करींद्र'।

करीष–पु० [सं०] सूखा गोबर, बनकंडा, करसी।

करीस*–पु० दे० 'करीश'।

करुआ(वा)*–वि० दे० 'कड़वा'। † पु० करवा; घड़ा।

करुआई*–स्त्री० कड़वापन।

करुआ(वा)ना*–अ० क्रि० दुखना, गडना; कड़ुआ लगना। स० क्रि० कड़वाहटसे मुँह विचकाना।

करुखी*–स्त्री० कनखी, तिरछी चितवन।

करुण–पु० [सं०] अनुकंपा, दया; एक काव्य-रस; परमात्मा। वि० करुणायुक्त; दयनीय; करुणा उत्पन्न करनेवाला।

करुणा–स्त्री० [सं०] अनुकंपा, दया। **–निधान,–निधि**–वि० करुणा, दयासे भरा हुआ।

करुणामय–वि० [सं०] दयालु।

करुना*–स्त्री० दे० 'करुणा'।

करुर*–वि० कड़ुआ।

करुवारि*–स्त्री० पतवार।

करेजा*–पु० दे० 'कलेजा'।

करेजी–स्त्री० दे० 'कलेजी'।

करेणु–पु० [सं०] हाथी; कर्णिकारका पेड़। स्त्री० हथिनी।

करेणुका–स्त्री० [सं०] हथिनी।

करेणू–स्त्री० [सं०] हथिनी। पु० हाथी।

करेनुका*–स्त्री० दे० 'करेणुका'।

करेब–पु० [अं० क्रेप] बारीक और झीनी बुनावटवाला एक रेशमी कपड़ा।

करेमू–पु० पानीमें होनेवाली एक बेल जिसके पत्ते सागकी तरह खाये जाते हैं।

करेर, करेरा*–वि० कड़ा, सख्त।

करेला, करैला–पु० एक तरकारी।

करेली, करैली–स्त्री० छोटी जातिका करेला; जंगली करेला।

करैत–पु० एक जहरीला साँप।

करैल–स्त्री० काली मिट्टी जो गीली होनेपर बहुत लसदार हो जाती है। पु० बाँसका नरम कल्ला।

करोंट–स्त्री० करवट।

करोटन–पु० [अं० क्रोटन] वनस्पतिका एक वर्ग जिसके पौधोंके पत्ते सुंदर और रंग-बिरंगे होते हैं।

करोड़–वि० सौ लाख, एक कोटि। पु० सौ लाखकी संख्या। **–पती**–वि० जिसके पास करोड़ों रुपये हों, बहुत बड़ा अमीर।

करोड़ी–पु० रोकड़िया; महसूल इकट्ठा करनेवाला।

करोदना*–स० क्रि० दे० 'कुरेदना'।

करोना*–स० क्रि० खुरचना, कुरेदना।

करोर*–वि०, पु० दे० 'करोड़'।

करोला*–पु० गड़ुआ।

करौंछा–स्त्री० दे० 'कलौंस'।

करौंछा*–वि० कुछ-कुछ काला।

करौंजी*–स्त्री० दे० 'कलौंजी'।

करौंट*–स्त्री० दे० 'करवट'।

करौंदा–पु० एक काँटेदार झाड़ या उसका फल, करमर्द; एक जंगली फल जो मटरके बराबर होता है और पकनेपर काला हो जाता है।

करौंदिया, करौंदी–वि० करौंदेके रंगका। पु० गुलाबीसे मिलता-जुलता एक रंग।

करौत–पु० आरा। स्त्री० रखेली स्त्री।

करौल, करौला*–पु० [तु० करावल] हँकवा करने, शिकार खेलानेवाला।

करौली–स्त्री० सीधी, मूठदार छुरी।

कर्क–पु० [सं०] केकड़ा; बारह राशियोंमेंसे चौथी।

कर्कट–पु० [सं०] केकड़ा; कर्क राशि; कमलकी जड़; सारसका एक भेद; काँटा; तराजूकी डंडीका सिरा।

कर्कटिका–स्त्री० [सं०] छोटी ककड़ी।

कर्कश–वि० [सं०] कठोर; खुरदरा; तीव्र; परुष; निर्दय।

कर्कशा–वि० स्त्री० [सं०] लड़ाकी; कटुभाषिणी।

कर्घा–पु० दे० 'करघा'।

कर्चूर–पु० [सं०] कचूर; सोना।

क़र्ज़–पु० [अ०] ऋण, उधार, देना। **–ख्वाह**–पु० कर्ज देनेवाला, महाजन। **–दार**–पु० ऋणी, कर्ज लेनेवाला।

कर्जा–पु० दे० 'क़र्ज़'।

कर्ण–पु० [सं०] कान; नावकी पतवार; त्रिभुजके समकोणके सामनेकी भुजा (हाइपॉटेन्यूज); कुंतीका ज्येष्ठ पुत्र जो बड़ा दानी था। **–कटु**–वि० कानोंको अप्रिय लगनेवाला। **–कुहर**–पु० कानका छेद। **–गोचर**–वि० जो सुना जा सके। **–जप**–पु० चुगलखोर। **–धार**–पु० पतवार पकड़नेवाला, माँझी। **–धारसमिति**–स्त्री० (स्टीयरिंग कमिटी) संयुक्त राष्ट्रसंघ, कांग्रेस आदिकी वह समिति जो संघ, कांग्रेस आदिकी विभिन्न समितियोंके कार्यक्रम, विषयक्रम आदिका निर्धारण करती है; (कार्य) संचालन-समिति। **–नाद**–पु० कानमें सुनाई पड़नेवाली गूँज; कानका एक रोग जिसमें गूँज सुनाई पड़ती है। **–पटह**–पु० कानके भीतरी हिस्सेका मध्य भाग। **–पाक**–पु० कानका पकना। **–पाली**–स्त्री० कानकी लौ; बाली। **–पुट**–पु० श्रवणमार्ग। **–फूल**–पु० कानका एक गहना। **–मल**–पु० खूँट। **–रंध्र, –विवर**–पु० कानका छेद। **–रोग**–पु० कानमें उत्पन्न होनेवाले रोग, कर्णपाक आदि। **–वेध**–पु० कनछेदनका संस्कार या रस्म। **–वेधनी, –वेधनिका**–स्त्री० कान छेदनेका औजार। **–वेष्ट, –वेष्टन**–पु० कुंडल। **–शूल**–पु० कानका दर्द। **–स्राव**–पु० कानका बहना। **–हीन**–वि० बहरा। पु० साँप।

कर्णाटी–स्त्री० [सं०] कर्णाट देशकी स्त्री या वहाँकी भाषा; एक राग।

कर्णिका–स्त्री० [सं०] करनफूल; बिचली उँगली; कमलका छत्ता; हाथीकी सूँड़की नोक; लेखनी।

कर्णिकार–पु० [सं०] कनियारका पेड़ या फूल।

कर्णेजप–पु० [सं०] कानमें लगकर परनिंदा करनेवाला, चुगलखोर; भेद बतलानेवाला।

कर्तन–पु० [सं०] काटना; कतरना; कातना।

कर्तनी–स्त्री० [सं०] करतनी, कैंची।

कर्तब*–पु० दे० 'करतब'।

कर्तरिका, कर्तरी–स्त्री० [सं०] कैंची, कतरनी; छुरी।

कर्तव्य–वि० [सं०] जिसे करना उचित या आवश्यक हो, करणीय। पु० करणीय कार्य, फर्ज। **–मूढ**–वि० जो घबराहटके कारण अपने कर्तव्यका निश्चय न कर सके।

कर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] करनेवाला, बनानेवाला। पु० विधाता, ब्रह्मा; ईश्वर; करनेवाला; क्रियाके करनेवालेका बोधक कारक (व्या०)। **–धर्ता**–पु० [हिं०] करने, धरनेवाला; वह जिसे सब कुछ करनेका अधिकार हो। **(र्तृ)–प्रधान**–वि० जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०)। **–वाच्य**–पु० क्रियाका वह रूप जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०)।

कर्तार–पु० कर्ता; ईश्वर।

कर्तृत्व–पु० [सं०] कार्य; करनेवालेकी अवस्थामें होना।

कर्त्रिका, कर्त्री–स्त्री० [सं०] छुरी; कैंची।

कर्दम–पु० [सं०] कीचड़; मांस; पाप (ला०)।

कर्पट–पु० [सं०] फटा, मैला कपड़ा, चीथड़ा।

कर्पटिक, कर्पटी (टिन्)–वि० [सं०] जो चीथड़े लपेटे हो; भिखारी।

कर्पर–पु० [सं०] कड़ाह; कपाल; ठीकरा; एक हथियार।

कर्पूर–पु० [सं०] कपूर। **–गौर**–वि० कपूर जैसा सफेद।

कर्बुर–वि० [सं०] चितकबरा, रंग-बिरंगा। पु० चितकबरा रंग; पाप; राक्षस; सोना; जल; धतूरा; कचूर।

कर्म(र्मन्)–पु० [सं०] शास्त्रविहित नित्य-नैमित्तिक आदि कर्म; काम; क्रिया; धंधा; आचरण; वह पूर्वकृत कर्म जिसका फल इस जन्ममें मिल रहा हो; भाग्य; वह जिसपर क्रियाका फल पड़े (व्या०)। **–कर**–पु० मजदूर, उजरतपर काम करनेवाला। **–कांड**–पु० वेदका वह विभाग जिसमें नित्य-नैमित्तिक आदि कर्मोंका विधान है; यज्ञ, संस्कारादिकी विधि बतानेवाला शास्त्र। **–कांडी(डिन्)**–पु० कर्मकांडका ज्ञाता, पुरोहित। **–कार**–पु० मजदूर; बेगार; कारीगर; लुहार। **–कार-हानिपूरण-अधिनियम**–पु० (वर्कमेंस कंपेनसेशन ऐक्ट) दे० 'श्रमिक-क्षति-पूर्ति-

अधिनियम'। **-क्षेत्र**-पु० कर्मभूमि, कार्यक्षेत्र। **-चांडाल**-पु० वह जो कर्मसे चांडाल माना जाय; नीच कर्म करनेवाला। **-चारी(रिन्)**-पु० काम करनेवाला, अहलकार। **-चारि-तंत्र**-पु० (ब्यूरोक्रैसी) दे० 'अधिकारिराज्य', नौकरशाही। **-चारिवृंद**-पु० (स्टाफ) किसी प्रधान अधिकारीके नीचे काम करनेवाले (किसी संस्था आदिके) कर्मचारियोंका समूह। **-धारय**-पु० तत्पुरुष समासका एक भेद जिसमें विशेष्य और विशेषण समानाधिकरण हों। **-निष्ठ**-वि० शास्त्रविहित कामोंमें आस्था रखने, उन्हें श्रद्धापूर्वक करनेवाला। **-प्रधान**-वि० जिस (क्रियावाक्य) में कर्मकी प्रधानता हो-क्रियाका लिंग, वचन कर्मका अनुसरण करता हो। **-फल**-पु० पूर्वजन्ममें किये हुए कर्मोंका फल (सुख-दुःख)। **-भोग**-पु० कर्मफल; कर्मफलके रूपमें प्राप्त दुःख। **-मार्ग**-पु० विहित कर्तव्य कर्म करते हुए मोक्ष-प्राप्तिका मार्ग। **-योग**-पु० कर्ममार्गकी साधना। **-योगी (गिन्)**-पु० कर्ममार्गकी साधना करनेवाला। **-रंग**-पु० कमरख। **-रेख**-स्त्री० कर्मकी रेखा, तकदीर। **-रोधन**-पु० (स्ट्राइक) किसी अन्याय आदिके विरोधमें काम-काज बंद कर देना, हड़ताल। **-वाच्य**-पु० क्रियाका वह रूप जिसमें कर्मकी प्रधानता हो (व्या०)। **-वाद**-पु० कर्मका फल अवश्य होता और भोगना पड़ता है-यह मत, प्रारब्धवाद। **-वीर**-वि० कर्तव्य, लोकहित कर्म करनेमें वीर; विघ्न-बाधाओंसे भिड़ते हुए कर्तव्य-पालन करनेवाला पुरुषार्थी। **-शाला**-स्त्री० (वर्क्स, वर्कशॉप) कारखाना; लोहे, लकड़ी आदिका या निर्माण-संबंधी अन्य काम करनेका स्थान। **-शील**-वि० उद्योगी; परिश्रमी। **-शूर**-वि० कर्मवीर। **-संन्यास**-पु० कर्मत्याग। **-साक्षी (क्षिन्)**-पु० कार्यविशेषको देखनेवाला, चश्मदीद गवाह; मनुष्यके भले-बुरे कर्मोंके साक्षी देवता (सूर्य, चंद्र, यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। **-हीन**-वि० जिससे कोई अच्छा कार्य न हो; हतभाग्य।

कर्मठ-वि० [सं०] काममें कुशल; मुस्तैदीसे काम करनेवाला; कर्मनिष्ठ।

कर्मणा-अ० [सं०] कर्मसे, कर्मतः।

कर्मण्य-वि० [सं०] कर्मकुशल; उद्यमी।

कर्मना*-अ० दे० 'कर्मणा'।

कर्मिष्ठ-वि० [सं०] कर्मकुशल; कर्मनिष्ठ।

कर्मी (र्मिन्)-वि० [सं०] काम करनेवाला; उद्यमी; कारीगर।

कर्मेंद्रिय-स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे कोई काम किया जाय (हाथ, पाँव, वाणी, गुदा और उपस्थ)।

कर्रा-वि० कड़ा, कठिन।

कर्राना*-अ० क्रि० कड़ा होना, सख्त होना।

कर्ष-पु० [सं०] खींचना; जोतना; जुताई; कूँड़; खरोंच; १६ माशेका मान (५ रत्तीके माशेसे); पुराने जमानेका एक सिक्का, हून; जोश; ताव।

कर्षक-वि० [सं०] खींचनेवाला। पु० किसान।

कर्षण-पु० [सं०] खींचना; जोतना; झुकाना; कृषिकर्म; खरोंचना; समय बढ़ाना; क्षति पहुँचाना।

कर्ष(र्ख)ना*-स० क्रि० खींचना; तानना।

कर्षिणी-स्त्री० [सं०] घोड़ेकी लगाम; खिरनीका पेड़।

कर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ; जोता हुआ; क्षीण।

कलंक-पु० [सं०] धब्बा; काला दाग; लांछन, बदनामी; चंद्रमामें दिखाई देनेवाला काला दाग; दोष; लोहेका मोरचा; पारेकी कजली। **-का टीका**-बदनामीका धब्बा, लांछन।

कलंकित-वि० [सं०] कलंकयुक्त; मोरचा लगा हुआ।

कलंकी (किन्)-वि० [सं०] जिसे कलंक लगा हो; बदनाम। पु० चंद्रमा; कल्कि अवतार।

कलँगी-स्त्री० दे० 'कलगी'।

क़लंदर-पु० [अ०] मुसलमान साधुओंका एक विरक्त समुदाय; उस समुदायका व्यक्ति; बंदर-भालू नचानेवाला।

क़लंदरा-पु० [अ०] एक तरहका रेशमी कपड़ा।

कलंब-पु० [सं०] बाण; कदंब; साग आदिका डंठल।

कल-वि० [सं०] अस्पष्ट मधुर, मंद मधुर (ध्वनि); सुहावना; श्रुतिमधुर, कोमल; ऐसा शब्द उत्पन्न करनेवाला। पु० अस्पष्ट मधुर ध्वनि; वीर्य। **-कंठ**-मीठी आवाजवाला। पु० कोयल; कबूतर; हंस। **-कल**-पु० झरने या नदीके प्रवाह आदिकी कोमल मधुर ध्वनि; अनेक लोगोंके एक साथ बोलनेकी आवाज; शिव; धूना। **-घोष**-पु० कोयल। **-धौत**-पु० सोना, चाँदी; मंद, मधुर ध्वनि। **-ध्वनि**-स्त्री० कोमल, मधुर ध्वनि। पु० कोयल; मोर; कबूतर। **-नाद**-पु० हंस। वि० मंद मधुर स्वरवाला। **-रव**-पु० कोमल, मधुर ध्वनि। **-रौ***-पु० दे० 'कलरव'। **-हंस**-पु० दे० क्रममें।

कल-अ० अगले या पिछले दिन, आगे चलकर, पीछे। **-का**-कुछ ही दिनोंका, बिलकुल हालका (कलकी बात)। **-का छोकरा**-(वक्तासे) उम्रमें बहुत छोटा; नादान, नासमझ। **-की कलपर है**-आगेकी बात आगे, यथासमय देखी जायगी। **-को**-कल, कलके दिन।

कल-वि० कालाका समास-व्यवहृत रूप (कलमुँहाँ, कलसिरा इ०)। **-चोंचा**-पु० वह कबूतर जिसकी सारी देह सफेद पर चोंच काली हो। **-जिब्भा**-वि० काली जीभवाला; जिसकी कही हुई अमंगल बातें सत्य हो जायँ। **-जीहा***-वि० दे० 'कलजिब्भा'। **-मुँहाँ**-वि० काले मुँहवाला; कलंकित। **-सिरी**-स्त्री० एक चिड़िया जिसके सिरका रंग स्याह होता है।

कल-स्त्री० चैन, आराम, शांति; इतमीनान; युक्ति; कौशल; यंत्र, मेशीन; पेच-पुरजा; बंदूकका घोड़ा; करवट, बल; अंग। **-दार**-पु० कलसे ढला हुआ सिक्का, रुपया। वि० कल-पेचवाला। **-बल**-पु० दाव-पेच; जोड़-तोड़। * वि० अस्पष्ट उच्चारित (वचन)। **मु०-ऐंठना,-घुमाना**-कल चलाना; किसीके मनको अभीष्ट दिशामें मोड़ देना; पट्टी पढ़ाना। **-बेकल होना**-बेचैन होना; किसी पेच-पुरजेका ढीला होना, अपनी जगहसे हट जाना।

क़लई-स्त्री० [अ०] राँगा; राँगेका मुलम्मा जो ताँबे, पीतलके बरतनोंपर किया जाता है; लेप; मुलम्मा; चूना; चूनेकी पुताई, सफेदी; असलीयतको छिपानेवाली वस्तु;

बनावट; चाल, तदबीर। **–गर**–पु० कलई करनेवाला। **–दार**–वि० जिसपर कलई की गयी हो। **मु०–खुलना**–असलीयतका प्रकट हो जाना, पोल खुलना।

क़लक–पु०[अ०]दुःख, रंज; पछतावा, ग्लानि; विकलता।

कलकना*–अ० क्रि० चिंघाड़ना, चीत्कार करना।

कलकान (नि)*–स्त्री० दुःख; परेशानी; कलह।

कलक्टर–पु० [अं०] जिलेमें मालका सबसे बड़ा अफसर।

कलक्टरी–स्त्री० कलक्टरकी कचहरी; कलक्टरका पद या कार्य। वि० कलक्टरका; कलक्टरसे संबद्ध।

कलगी–स्त्री० [फ़ा०] टोपी, पगड़ीमें लगाया जानेवाला तुर्रा या फुँदना; मोर या मुर्गेके सिरपरकी चोटी; सिरका एक गहना; ऊँची इमारतका शिखर; लावनीकी एक तर्ज।

कलचुरी–पु० दक्षिण भारतका एक राजवंश।

कलछा–पु० बड़ी कलछी।

कलछी–स्त्री० लंबी डाँड़ीका गोल कटोरीवाला चम्मच जिससे दाल आदि निकालते हैं।

कलछुला–पु० लंबी डाँड़ीका कलछा जिससे भड़भूजा भाड़से जलती बालू निकालता है।

कलजुग–पु० दे० 'कलियुग'।

कलट्टर*†–पु० दे० 'कलक्टर'।

कलत्र–पु० [सं०] पत्नी, भार्या; श्रोणि; दुर्ग।

कलन–पु० [सं०] ग्रहण; जानना; समझना; शब्द करना; गणितकी क्रिया; धब्बा; दोष।

कलना–स्त्री० [सं०] ज्ञान; ग्रहण, लेना; छोड़ना, मोचन।

कलप–पु० दे० 'कलफ़' और 'कल्प'; खिजाब।

कलपना–अ० क्रि० विलाप करना; अंतर्वेदनाको शब्दोंमें व्यक्त करते हुए रोना; विसूरना; दुःख पाना; कुढ़ना; आह करना। †* स० क्रि० काटना–'कलपौं माथ वेगि निस्तरऊँ'–प०। स्त्री० आह, हाय (पड़ना); दे० 'कल्पना'।

कलपाना–स० क्रि० सताना, रुलाना।

कलफ़–पु० धुले कपड़ेमें कड़ाई, चिकनाई लानेके लिए लगायी हुई लेई या माँड़ी; चेहरेपरका काला धब्बा।

कलबूत–पु० ढाँचा; टोपी बनानेका ढाँचा, गोलंबर।

कलभ–पु० [सं०] हाथीका बच्चा; हाथी; ऊँटका बच्चा।

कलभक–पु० [सं०] हाथीका बच्चा।

कलम–स्त्री० [सं०] लेखनी। पु० एक तरहका धान।

क़लम–स्त्री० [अ०] काटना; सरकंडे, नरसल आदिका टुकड़ा जिससे लिखनेका काम लेते हैं; लकड़ी, सेलुलाइड आदिका गोल लंबोतरा टुकड़ा जिसमें लोहे आदिकी जीभ (निब) लगाकर लिखते हैं, लेखनी; किसी पेड़-पौधेकी टहनी जो नया पेड़ तैयार करनेके लिए काटी जाय; ऐसी टहनीसे लगाया हुआ पौधा; कनपटियोंपर सुंदरताके लिए छोड़े और कुछ लंबाईमें कटे हुए बाल; चित्र बनाने या रंग भरनेकी कूँची; काँच या स्फटिकका पहलदार लंबोतरा टुकड़ा; नक्काशी या खोदाई करनेका औजार; हीरेकी कनी जड़ी हुई लकड़ी जिससे शीशा काटा जाता है; शोरे, नौसादर आदिका रवा; लिखावट, लिपि; आदेश, हुक्म; एक तरहकी फुलझड़ी। वि० कटा, तराशा हुआ। **–कसाई**–पु० कुछ लिख-पढ़कर लोगोंकी हानि करनेवाला। **–कार**–पु० लेखक; चित्रकार; चित्रोंकी रेखाओंमें रंग भरनेवाला; एक तरहका बाफ़ता। **–कारी**–स्त्री० कलमकी कारीगरी; कलमसे बनाये हुए बेल-बूटे। **–तराश**–पु० कलम बनानेका चाकू। **–दान**–पु० काठ, पीतल आदिकी लंबी संदूकची या खुला आधार जिसमें कलम-दावात रखी जाय। **–बंद**–वि० लिखा हुआ, लिपिबद्ध। **मु०–करना**–काटना; छाँटना। **–खींचना**–लिखे हुएको काटना। **–घसीटना,–चलाना**–लिखना। **–तोड़ना**–रचनामें ऐसी सुंदर, अनूठी बात कहना जिससे अधिक सुंदर, अनूठी बात न कही जा सके, रचना-कौशलकी पराकाष्ठा कर देना। **–फेरना**–लिखे हुएको काटना, रद्द करना।

कलमख*–पु० दे० 'कल्मष'।

कलमना*–स० क्रि० कलम करना, काटना।

कलमलना*–अ० क्रि० दे० 'कलमलाना'।

कलमलाना–अ० क्रि० कसमसाना; विकल होना।

कलमा–पु० [अ०] सार्थक शब्द; बात, उक्ति; वह वाक्य जो मुसलमानोंके धर्म-विश्वासका मूल मंत्र है–'ला इलाह इल्लिलाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह'। **मु०–पढ़ना**–इसलाम धर्म स्वीकार करना; ईमान लाना। **(किसीका)–पढ़ना,–भरना**–(किसीका) भक्त, अनुगत, प्रेमी, प्रशंसक होना; (किसीके) रूप-गुणपर मुग्ध होना। **–पढ़ाना**–इसलामकी दीक्षा देना, मुसलमान बनाना।

कलमास*–वि० दे० 'कल्माष'।

कलमी–वि० हस्तलिखित; कलम काटकर लगाया हुआ (पेड़); रवादार। **–शोरा**–पु० लंबे रवेवाला और अधिक साफ शोरा।

कलल–पु० [सं०] गर्भका आरंभिक रूप जब वह केवल कुछ कोषोंका गोला रहता है; गर्भाशय।

कलवरिया–स्त्री० कलवारकी दुकान, शराबखाना।

कलवार–पु० एक हिंदू जाति जो पहले शराब बनाने-बेचनेका पेशा करती थी; उस जातिका व्यक्ति, कलाल।

कलश, कलस–पु० [सं०] घड़ा, कलसा; मंदिर आदिका शिखर, कँगूरा; चोटी (ला०); सिरमौर। **–जन्मा(न्मन्), –भव**–पु० अगस्त्य मुनि।

कलशी(सी)–स्त्री० [सं०] छोटा घड़ा, गगरा; छोटा कँगूरा।

कलसा–पु० घड़ा; कँगूरा।

कलहंस–पु० [सं०] राजहंस; उत्तम राजा; परब्रह्म।

कलह–पु० [सं०] झगड़ा, लड़ाई; युद्ध; रास्ता; तलवारका म्यान। **–कार**–वि० झगड़ालू, लड़ाका। **–कारी(रिन्)**–वि० कलह करनेवाला। **–प्रिय**–वि० झगड़ालू। पु० नारद। **–प्रिया**–वि० स्त्री० लड़ाकी।

कलहांतरिता–स्त्री० [सं०] पतिका या नायकका अपमान कर पीछे पछतानेवाली नायिका (सा०)।

कलहारी*–वि० स्त्री० झगड़नेवाली।

कलही(हिन्)–वि० [सं०] झगड़ालू।

कलाँ–वि० [फ़ा०[बड़ा; दीर्घाकार।

कला–स्त्री० [सं०] अंश; छोटा भाग; चंद्रमंडलका सोलहवाँ भाग; राशिके तीसवें अंशका साठवाँ भाग; कालका एक मान (१·६ मिनट); रक्त-मांस-मेद आदिको अलग रखनेवाली शरीरकी झिल्लियाँ; हुनर, गुण; गाने-बजाने आदिकी विद्या; सुंदर रचना या उसकी रीति; व्याज; स्त्रीका रज;

अणु; भ्रूण; लगाव; नौका; छल-कपट; चाल; लीला; मात्रा (छंद); यंत्र; * ज्योति, तेज; छटा, शोभा । **–कार**–पु० ललित कलाओंमेंसे किसीको जानने, उससे जीविका करनेवाला, कलावंत (आर्टिस्ट)। **–कुशल**–वि० किसी कलामें निपुण । **–कृति**–स्त्री० कलामयी रचना । **–कौशल**–पु० कला-विशेषमें निपुणता; हुनर। **–क्षय**–पु० चंद्रमाका घटना । **–धर,–नाथ,–निधि**–पु० चंद्रमा; * कलाविद् । **–पंजी**–स्त्री० (मिनट बुक) वह पंजी या रजिस्टर जिसमें किसी सभा-समितिका संक्षिप्त कार्य-विवरण लिखा जाय । **–बाज़**–पु० [हिं०] कलाबाजी करनेवाला; नटका काम करनेवाला । **–बाज़ी**–स्त्री० [हिं०] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना, लौटनियाँ; नटविद्या; चालाकी, तिकड़म ।

कलाई–स्त्री० हाथमें हथेलीके जोड़के ऊपर, हथेली और पहुँचेके बीचका भाग, गट्टा; कलाई पकड़ने-छुड़ानेकी कसरत; सूतका लच्छा; पूला; हाथीके गलेमें लगायी जानेवाली रस्सी जिसमें पीलवान पैर फँसाता है; अलान ।

कलाकंद–पु० एक तरहकी बरफी ।

कलाद, कलादक–पु० [सं०] सोनार ।

कलादा*–पु० हाथीकी गरदनपरका वह भाग जहाँ पीलवान बैठता है ।

कलाप–पु० [सं०] समूह; पूला; मोरकी पूँछ; एक गहना; करधनी; तरकश; बाण; चंद्रमा; एक अर्द्ध चंद्राकार अस्त्र ।

कलापक–पु० [सं०] समूह; पूला; मोतियोंकी लड़ी; करधनी; चार ऐसे श्लोकोंका समूह जिनके मिलानेसे एक वाक्य होता है; हाथीके गलेकी रस्सी ।

कलापिनी–स्त्री० [सं०] मोरनी; रात ।

कलापी(पिन्)–वि० [सं०] तरकशधारी; दुम फैलानेवाला (मोर)। पु० मोर; कोयल; वटवृक्ष ।

कलाबत्तू–पु० रेशमके धागेपर लपेटा हुआ सोने या चाँदीका तार; सोने-चाँदीका तार; कलाबत्तूका बना पतला फीता ।

कलाबा–पु० [अ०] सूतका लच्छा या गोला; तकलीपर लिपटा हुआ सूत; हाथीके गलेकी रस्सी; हाथीकी गरदन ।

कलाम–पु० [अ०] वचन, उक्ति; बात-चीत; रचना; वादा; उज्र, एतराज ।

कलामत*–पु० कलावंत, संगीतज्ञ ।

कलार–पु० दे० 'कलवार' ।

कलाल–पु० दे० 'कलवार' ।

कलावंत–पु० विधिवत् शिक्षाप्राप्त गायक या वादक । वि० कला-कुशल ।

कलावती–वि० स्त्री० [सं०] कला जाननेवाली; सुंदरी ।

कलावा–पु० दे० 'कलावा' ।

कलिंग–वि० [सं०] चतुर, धूर्त । पु० प्राचीन भारतका एक जनपद; वहाँका निबासी; कुलंग पक्षी; इंद्रजौ; सिरिस; वटवृक्ष; तरबूज; एक राग ।

कलिंगड़ा–पु० एक राग ।

कलिंद–पु० [सं०] वह पर्वत जिससे यमुना निकलती है; बहेड़ा; सूर्य । **–कन्या,–जा,–तनया**–स्त्री० यमुना ।

कलिंदी*–स्त्री० दे० 'कालिंदी' ।

कलि–पु० [सं०] कलह, झगड़ा; युद्ध; चार युगोंमेंसे चौथा जिसकी आयु ४ लाख ३२ हजार मानववर्ष मानी जाती है; पाप-बुद्धि । स्त्री० कली । * वि० काला । **–कर्म(न्)**–पु० संग्राम । **–प्रिय**–वि० झगड़ालू । पु० नारद; बंदर । **–मल**–पु० पाप । **–०सरि***–स्त्री० कर्मनाशा नदी । **–युग**–पु० कलिकाल । **–युगी**–वि० [हिं०] कलियुगका; कलियुगी बुद्धि, प्रवृत्तिवाला । **–वर्ज्य**–वि० जिसका कलियुगमें निषेध हो । पु० कलियुगमें निषिद्ध कर्म ।

कलिका–स्त्री० [सं०] कली; एक छंद; वीणामूल ।

कलिकान*–वि० हैरान, परेशान ।

कलित–वि० [सं०] गृहीत; ज्ञात; प्राप्त; युक्त; विभूषित; गणना किया हुआ; ध्वनित; सुंदर ।

क़लिया–पु० [अ०] पकाया हुआ रसेदार मांस ।

कलियाना–अ० क्रि० कलियोंसे युक्त होना; पक्षियोंका नया पंख निकलना ।

कलियारी–स्त्री० विषैली जड़वाला एक पौधा ।

कलींद, कलींदा–पु० तरबूज ।

कली–स्त्री० [सं०] मुँह बँधा फूल, बोंडी; चिड़ियाका पहले निकलनेवाला छोटा पर; अप्राप्तयौवना कन्या (ला०); [हिं०] कुर्ते आदिमें लगनेवाला तिकोना कपड़ा; पत्थर आदिका फुँका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है । **मु० (दिलकी)–खिलना**–चित्तका प्रसन्न होना ।

कलीट*–वि० काला, कलूटा ।

कलुख*–पु०, **कलुखाई***–स्त्री० दे० 'कलुष' ।

कलुखी*–वि० दोषी, कलुषयुक्त ।

कलुष–पु० [सं०] मैल, गंदगी; पाप; क्रोध; भैंसा । वि० मैला, गंदा; पापी; निंदित; क्रुद्ध; क्रूर ।

कलुषाई*–स्त्री० दोष; अपवित्रता ।

कलुषित–वि० [सं०] कलुषयुक्त; रुष्ट ।

कलूटा–वि० काले रंगका, काला ।

कलूला*–पु० कुल्ली ।

कलेऊ*–पु० दे० 'कलेवा' ।

कलेजा–पु० प्राणियोंका एक भीतरी अवयव जो सीनेके अंदर बाँयी ओर रहता है और जिससे पित्त बनता तथा दूषित रक्त शुद्ध होता है; यकृत, जिगर; छाती, दिल; साहस, हिम्मत; अति प्रिय व्यक्ति या वस्तु । **मु०–उछलना**–हर्ष, उद्वेग, आशंका आदिसे दिलका धड़कना । **–कटना**–विषादिसे आँतोंमें छेद होना; दिलको चोट पहुँचना; खूनी दस्त आना । **–काँपना**–दिल दहलना, डरसे काँप जाना । **–काढ़ना,–निकालना**–वेदना पहुँचना; प्रिय वस्तु या सर्वस्व ले लेना । **–खाना**–सताना, पीड़ा देना; किसी चीजको बार-बार माँगकर कष्ट पहुँचाना । **–खिलाना**–प्रिय वस्तु देना; आदर-सत्कारमें कोई बात उठा न रखना । **–छलनी होना**–ताने, व्यंग्य-बाणोंसे कलेजा छिद जाना । **–छिदना,–बिधना**–कड़ी बातसे जी दुखना । **–जलाना**–कष्ट पहुँचाना, सताना । **–टूटना**–जी टूटना, हौसला पस्त होना । **–ठंढा होना**–मनको शांति मिलना, जलन-बेकलीका दूर होना । **–थामकर रह जाना**–असह्य कष्ट-वेदनाको बिना आह किये, दिल पकड़कर सह लेना, वेदनाको बाहर न आने देना । **–थाम लेना या पकड़**

लेना–वेदनाको बाहर न आने देनेके लिए दिलको पकड़ लेना, दबा रखना। **–धक-धक करना,–धड़कना**–भय, आशंकासे असह्य कष्टके सहनके लिए मनमें बल-संचय करना; चित्तका विचलित, विकल हो जाना; दिल दहलना। **–धकसे हो जाना**–एकाएक डर जाना; स्तब्ध हो जाना, विस्मित होना। **–निकालकर धर या रख देना**–अति प्रिय वस्तु अर्पण कर देना; जान दे देना; सारी शक्ति लगा देना। **–पक जाना**–किसी कष्टसे ऊब जाना; उसका असह्य हो जाना। **–पकाना**–नाकमें दम करना, परेशान करना। **–पत्थरका करना**–असह्य दुःखके सहनके लिए जी कड़ा करना; निष्ठुर, निर्मम बन जाना। **–फट जाना**–किसीके दुःखसे हृदयका विदीर्ण, द्रवित होना। **–बल्लियों, बाँसों, उछलना**–हर्ष, भय, आशंका आदिसे हृदयका जोरसे स्पंदित होना। **–मुँहको आना**–किसी कष्ट, व्यथासे व्याकुल, बेचैन होना, अति क्लेश होना। **कलेजेका टुकड़ा**–संतान, बेटा। **–की कोर**–संतान, बेटी। **–पर छुरी चल जाना या फिरना**–हृदयपर गहरा आघात होना, कलेजा कटने, चिरनेका-सा कष्ट होना। **–पर साँप लोटना**–किसी बातको याद कर, किसी चीजको देखकर यकायक बहुत दुःखी हो जाना; व्यथासे बहुत बेचैन हो जाना; ईर्ष्यासे जल उठना। **–में आग लगना**–द्वेष होना; प्यास लगना; शोक होना। **–में डालना**–प्यारसे पास रखना। **–में तीर लगना**–दिलमें गहरी चोट लगना। **–में पैठना**–भेद लेने या मतलब निकालनेके लिए हेल-मेल बढ़ाना। **–से लगाना**–छातीसे चिपटा लेना, प्यार करना।

कलेजी–स्त्री॰ कलेजेका मांस।

कलेवर–पु॰ [सं॰] देह, चोला; डील, आकार। **मु॰–बदलना**–नया शरीर धारण करना, चोला बदलना; जगन्नाथजीकी पुरानी मूर्तिकी जगह नयीकी स्थापना होना।

कलेवा–पु॰ सबेरेका जलपान, नाश्ता; ब्याहकी एक रस्म; मार्गमें खानेके लिए साथ लिया गया भोजन, पाथेय। **मु॰–करना**–खा जाना।

कलेस*–पु॰ दे॰ 'क्लेश'।

कलैया†–पु॰ कलाबाजी (खाना, मारना)।

कलोर–स्त्री॰ जवान गाय जो ब्यायी या गाभिन न हो। * पु॰ बछड़ा–'मानो हरे तृन चारु चरैं बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे'–कविता॰।

कलोरी–स्त्री॰ जवान गाय, कलोर–'नवें नारि तो दसें कलोरी।'

कलोल–पु॰ क्रीड़ा, केलि।

कलोलना*–अ॰ क्रि॰ कलोल करना।

कलौँछ–स्त्री॰ दे॰ 'कलौँस'।

कलौंजी–स्त्री॰ मसाला भरकर घी-तेलमें तली हुई समूची भिंडी, बैगन आदि; मँगरैला।

कलौँस–स्त्री॰ कलंक; कालिमा; स्याही।

कल्क–पु॰ [सं॰] तेल आदिके नीचे जमनेवाला मैल, कीट; मैल; कानका मैल, खूँट; एक तरहका क़ाढ़ा; दंभ; पाप।

क़ल्कि–पु॰ [सं॰] विष्णुका दसवाँ और अंतिम अवतार जो पुराणोंके अनुसार कलियुगके अंतमें संभल(मुरादाबाद)-में होगा।

कल्प–पु॰ [सं॰] धार्मिक कर्तव्योंका विधि-विधान; विहित विकल्प; वेदके ६ अंगोंमेंसे वह जिसमें यज्ञों, संस्कारों आदिकी विधियाँ बतायी गयी हैं; ब्रह्माका एक दिन (एक हजार महायुग–४ अरब ३२ करोड़ मानववर्ष); प्रलय; चिकित्सा; शरीरको पुनः नया एवं नीरोग करनेका उपाय; आयुर्वेदका विष-चिकित्सा-अंग; विभाग (पुस्तकादिका); स्वर्गका एक वृक्ष। वि॰ लगभग बराबर, जरासा कम (केवल समासांतमें–देवकल्प, मृतकल्प इत्यादि); उचित, योग्य; सशक्त; संभव; व्यवहारमें लाने योग्य। **–कार**–पु॰ कल्पसूत्रोंका रचयिता (आश्वलायन, आपस्तंब, बोधायन, कात्यायन); नाई; शराब। वि॰ सजाने-सँवारनेवाला। **–तरु,–द्रुम,–पादप**–पु॰ दे॰ 'कल्पविटप'। **–पाल**–पु॰ शराब बेचनेवाला। **–लता**–स्त्री॰ कल्पवृक्ष; कल्पवृक्षकी शाखा। **–वास**–पु॰ माघके महीनेभर गंगातटपर ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर धर्मकृत्य करना। **–विटप, –वृक्ष,–शाखी (खिन्)**–पु॰ नंदनकाननका एक वृक्ष जो समुद्रमंथनसे निकले हुए १४ रत्नोंमें और जो कुछ भी माँगिये उसे देनेवाला माना जाता है।

कल्पक–वि॰ [सं॰] कल्पना करनेवाला; रचनेवाला; काटनेवाला। पु॰ नाई; कचूर; एक संस्कार।

कल्पन–पु॰ [सं॰] रचना; बनाना; सजाना, सँवारना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप करना; कल्पना करना; छाँटना, कतरना।

कल्पना–स्त्री॰ [सं॰] रचना; कोई नयी बात सोचना, उद्भावना; इसकी शक्ति; इस तरह सोची हुई बात, उपज; मनकी वह शक्ति जो परोक्ष विषयोंका रूप, चित्र उसके सामने ला देती है; सोचना; मान लेना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप; सँवारना; सवारीके लिए हाथीको सजाना। **–चित्र**–पु॰ कल्पनासे खींचा हुआ चित्र, नकशा। **–प्रसूत**–वि॰ कल्पनासे उपजाया हुआ, मनगढंत। **–शक्ति**–स्त्री॰ कोई नयी बात सोचनेकी शक्ति, उद्भावनाशक्ति। **–सृष्टि**–स्त्री॰ कल्पनाकी रचना, मनोराज्य।

कल्पनीय–वि॰ [सं॰] जिसकी कल्पना की जा सके।

कल्पांत–पु॰ [सं॰] प्रलय, सृष्टिका अंत। **–स्थायी(यिन्)**–वि॰ सृष्टिके अंततक बना रहनेवाला।

कल्पित–वि॰ [सं॰] सोचा, माना हुआ; मनसे गढ़ा हुआ, फर्जी; सजाया, सँवारा हुआ।

कल्मष–पु॰ [सं॰] मल; मैल; पाप; एक नरक।

कल्माष–वि॰ [सं॰] चितकबरा। पु॰ चितकबरा रंग; काला रंग; राक्षस; अग्निका एक रूप; एक खुशबूदार चावल; दाग, धब्बा।

कल्य–पु॰ [सं॰] भोर, तड़का; मद्य; मंगलकामना। **–पाल,–पालक**–पु॰ कलवार, मद्यव्यवसायी।

कल्या–स्त्री॰ [सं॰] शराब; कल्याणवचन; हरीतकी; कलोर गाय (?)। **–पाल,–पालक**–पु॰ कलवार।

कल्याण–पु॰ [सं॰] मंगल; सुख-सौभाग्य; भलाई; अभ्युदय; एक राग। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि॰ कल्याण,

मंगल करनेवाला । **–कृत्**–वि० शुभ कर्म करनेवाला; कल्याणकारी ।

कल्याणी–वि० स्त्री० [सं०] कल्याणकारिणी; कल्याणमयी; सुंदरी । स्त्री० गाय; कलोर गाय; जंगली उरद ।

कल्यान*–पु० दे० 'कल्याण' ।

कल्ल–वि० [सं०] बहरा ।

कल्लर–पु० नोनी मिट्टी, रेह ।

कल्लाँच–वि० गुंडा; कंगाल ।

कल्ला–पु० अँखुआ; गोंफा (फूटना); जबड़ा; जबड़ेके नीचे गलेतकका भाग; लंपका बर्नर । **–तोड़**–वि० मुँहतोड़; मुँह बंद कर देनेवाला (जवाब) । **–दराज़**–वि० मुँहजोर, जिसकी जबान बहुत तेजीसे चले; लड़ाका । **–दराज़ी**–स्त्री० मुँहजोरी, जबाँदराजी । **मु०–दबाना**–बोलनेसे रोकना । **–फुलाना**–मुँह फुलाना । **–मारना**–गाल बजाना ।

कल्लाना–अ० क्रि० जलनके साथ दर्द होना ।

कल्लू–वि० काला, कलूटा ।

कल्लोल–पु० [सं०] कुछ ऊँची और आवाज करनेवाली लहर, मौज; आनंद; क्रीड़ा ।

कल्लोलिनी–स्त्री० [सं०] लहरोंवाली नदी ।

कल्हण–पु० [सं०] इतिहासग्रंथ राजतरंगिणीके कर्ता ।

कल्हर*–पु० नोनी मिट्टी । वि० बंजर ।

कल्हरना*–अ० क्रि० कड़ाहीमें भूना या तला जाना ।

कल्हारना†–स० क्रि० (हरे या भिगोये चने, मटर आदिको) घी या तेल डालकर हलका तलना । अ० क्रि० कराहना ।

कवच–पु० [सं०] बक्तर, वर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-मंत्र; उस मंत्रसे बना यंत्र, तावीज; बड़ा नगाड़ा । **–धर, –हर**–वि० कवच धारण करनेवाला ।

कवचित यान–पु० [सं०] (आर्मर्ड कार) युद्धमें काम आनेवाली वह गाड़ी जिसपर तोपों आदिकी मारसे उसे सुरक्षित रखनेके लिए लोहेकी मोटी चद्दर चढ़ा दी गयी हो तथा जो स्वयं तोपों, तोपचियों आदिसे सुसज्जित हो ।

कवन*–सर्व० कौन ।

कवयित्री–स्त्री० [सं०] काव्यरचना करनेवाली स्त्री ।

कवर–पु० [सं०] जूड़ा, चोटी; दे० 'कवल' ।

कवरना*–स० क्रि० सेंकना, जरा-जरा भूनना ।

कवरी–स्त्री० [सं०] चोटी; वनतुलसी ।

कवर्ग–पु० [सं०] 'क'से 'ङ'तकके अक्षरोंका समूह ।

कवल–पु० [सं०] कौर, ग्रास; कुल्ली ।

कवलित–वि० [सं०] खाया, चबाया, निगला हुआ ।

क़वाम–पु० [अ०] शीरा, चाशनी; पानके साथ खानेके लिए सुरतीका पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस ।

क़वायद–पु० [अ०] नियमावली; कार्यविधि ('क़ायदा'का बहु०) । स्त्री० व्याकरण; सेना या पुलिसके सिपाहियोंका युद्धकलाका अभ्यास करना, परेड ।

कवि–पु० [सं०] कविता करनेवाला, शायर; ऋषि; ब्रह्मा; वाल्मीकि; सूर्य; उल्लू; शुक्राचार्य । **–कर्म (न्)**–पु० कविता; काव्यरचना । **–ज्येष्ठ**–पु० आदि-कवि वाल्मीकि । **–पुत्र**–पु० शुक्राचार्य । **–राज**–पु० कविश्रेष्ठ; भाट; बंगाली वैद्योंकी एक उपाधि । **–समय**–पु० वे मान्यताएँ जिनका कवि लोग प्राचीन कालसे वर्णन करते आ रहे हैं (जैसे स्त्रीके पदाघातसे अशोकका पुष्पित होना) ।

कविता–स्त्री० [सं०] रसात्मक छंदोबद्ध रचना ।

कविताई*–स्त्री० दे० 'कविता' ।

कवित्त–पु० कविता; एक वर्णवृत्त ।

कवित्व–पु० [सं०] काव्यरचनाकी शक्ति; काव्यका गुण, रस ।

कविनासा*–स्त्री० कर्मनाशा नदी ।

कविलास*–पु० कैलास; स्वर्ग ।

कवींद्र–पु० [सं०] श्रेष्ठ कवि ।

कवेला–पु० कौएका बच्चा ।

कवोष्ण–पु० [सं०] थोड़ा गरम, कुनकुना ।

कव्य–पु० [सं०] पितरोंको दिया जानेवाला अन्न ।

कश–पु० [सं०] चाबुक; [फा०] खींच; तंबाकू, सिगरेट आदिके धुएँका घूँट; फूँक । वि० खींचनेवाला; उठानेवाला (केवल समासमें–आराकश, मेहनतकश) । **–मकश**–स्त्री० खींचा-तानी; संघर्ष; भीड़-भाड़, धक्कमधक्का ।

कशा–स्त्री० [सं०] चाबुक; रस्सी ।

कशाघात–पु० [सं०] चाबुक या कोड़ा मारना ।

कशिश–स्त्री० [फा०] खिचाव, आकर्षण; खींचनेकी शक्ति; झुकाव, प्रवृत्ति ।

कशीद–स्त्री० [फा०] अर्क खींचना (करना, होना) । **–गी**–स्त्री० खिंचाव; मनमोटाव, नाराजगी ।

कशीदा–पु० [फा०] सूई-धागेसे कपड़ेपर बनाया हुआ बेल-बूटा, गुलकारी (काढ़ना) ।

कशेरु, कशेरुक–पु० [सं०] कसेरू ।

कश्चित्–वि० सर्व० [सं०] कोई; कोई एक ।

कश्ती–स्त्री० [फा०] दे० 'किश्ती' ।

कश्मल–पु० [सं०] मूर्छा; मोह; उत्साहहीनता; पाप ।

कश्मीर–पु० [सं०] भारतके पश्चिमोत्तर कोणमें स्थित एक सुंदर पहाड़ी प्रदेश । **–ज**–पु० केसर ।

कश्मीरी–वि० कश्मीरका; कश्मीरमें उपजा । स्त्री० कश्मीरकी भाषा । पु० कश्मीर-निवासी ।

कष–पु० [सं०] कसौटी; परीक्षा; सान; रगड़ना ।

कषण–पु०[सं०] रगड़ना; चिह्न करना; कसौटीपर कसना ।

कषा–स्त्री० [सं०] दे० 'कशा' ।

कषाय–वि० [सं०] कसैला; सुगंधयुक्त; गेरूके रंगका ।

कष्ट–पु० [सं०] पीड़ा, व्यथा; पाप; दुष्टता; कठिनाई; मुसीबत; श्रम । वि० बुरा; हानिकर; दुःखकर; कठिन; दुःखी । **–कर**–वि० तकलीफ देनेवाला । **–कल्पना**–स्त्री० वह बात जिसकी उपपत्तिमें बहुत खींच-तान करनी पड़े; जो मुश्किलसे दिमागमें आये । **–कारक**–वि० कष्ट देनेवाला । **–मोचन**–वि० कष्टसे छुड़ाने, उबारनेवाला । पु०कष्ट छुड़ाना । **–सहन-योजना**–स्त्री०(ऑस्टेरिटी स्कीम) दे० 'अल्पभोग योजना । **–साध्य**–वि० जो कठिनाईसे किया जा सके; जिसे करनेमें बहुत श्रम करना पड़े ।

कष्टार्तव–पु० [सं०] स्त्रीको रजोधर्ममें पीड़ा होना ।

कष्टार्थ–पु० [सं०] खींच-तानकर लाया हुआ अर्थ ।

कस–पु० [सं०] कसौटी; [हिं०] जोर, बल; दृढ़ता, मजबूती;

काबू, दाव; रोक; जाँच; तलवारकी लचक; अर्क, सार; कसाव। * अ० कैसे, क्योंकर। **—का**—काबूका, बसका। **मु०—में रखना**—रोक या दबावमें रखना।

कसक—स्त्री० रह-रहकर होनेवाली पीड़ा, टीस; खटक; अरमान, अभिलाषा; पुराना वैर; हमदर्दी।

कसकन—स्त्री० कसकनेकी क्रिया, कसक।

कसकना—अ० क्रि० पीड़ा होना, टीसना; सालना।

कसकुट—पु० ताँबे और जस्तेके मेलसे बनी एक धातु।

कसन—स्त्री० कसनेकी क्रिया, कसाव; कसनेकी रस्सी; क्लेश।

कसना—स० क्रि० बंधन या तनावको कड़ा करना; ढीली चीज, गाँठ, फंदे आदिको कड़ा करना; खींचकर बाँधना; मुश्कें बाँधना; जकड़ना; पेच, पुरजेको कड़ा बैठाना; (चुस्त बैठनेवाली चीजको) पहनना, बाँधना (वर्दी, चपरास आदि); कद्दू आदिको रेतना; दाम अधिक लेना; ठूँसकर भरना; घोड़े, हाथीको चारजामा, हौदा रखकर (सवारीके लिए) तैयार करना; सोनेको कसौटीपर घिसना; परखना; * क्लेश देना; तपाना; व्यंग्य, कटाक्षभरी उक्तिका लक्ष्य बनाना (फबती कसना)। अ०क्रि०तंग, चुस्त होना; बंधन, फंदा आदिका कड़ा होना; खिंचना; कसा, जकड़ा जाना। पु० कसने, बाँधनेका साधन; बेठन, खोल। **कसकर**—अ० मजबूतीसे, जकड़कर; पूरा-पूरा; जोरसे; बेरहमीसे।

कसनि*—स्त्री० दे० 'कसन'।

कसनी—स्त्री० वह रस्सी जिससे कोई वस्तु कसी जाय; बेठन; अँगिया; कसौटी; जाँच; कसावका पुट; :हथौड़ी।

कसब—पु० [अ०] अर्जन, कमाना; पेशा, धंधा; वेश्यावृत्ति।

क़सबा—पु० [अ०] छोटा शहर।

कसबाती—वि० नगरवासी, नागरिक।

कसबिन—स्त्री० दे० 'कसबी'।

कसबी—स्त्री० वेश्या, व्यभिचारसे जीविका कमानेवाली। **—ख़ाना**—पु० वेश्यालय।

क़सम—स्त्री० [अ०] शपथ, सौगंध; शपथपूर्वक की हुई प्रतिज्ञा। **मु०—उतारना**—शपथके बंधन या प्रभावसे अपने आपको मुक्त करना (लड़के); रस्म-अदाई; कहनेभरके लिए कुछ करना। **(किसी बातकी)—खाना**—किसी बातके करने या न करनेकी प्रतिज्ञा करना। **—खानेको**—नाममात्रको।

कसमस—पु०, स्त्री० कसमसाहट।

कसमसाना—अ० क्रि० भीड़के कारण आपसमें रगड़ खाते हुए हिलना, कुलबुलाना; ऊबकर हिलना-डोलना; घबड़ाना, बेचैन होना; हिचकना।

कसमसाहट—स्त्री० कुलबुलाहट; बेचैनी, घबराहट।

कसमा-कसमी—स्त्री० दोनों ओरसे कसम खाना।

कसर—स्त्री० [अ०] कमी, न्यूनता; घाटा; वैर; विकार। **मु०—करना, —रखना**—(किसी बातके करनेमें) कमी रखना, कोताही करना। **—खाना**—घाटा सहना। **—निकलना**—क्षतिपूर्ति होना; बदला मिलना। **—निकालना**—बदला लेना; घाटा या कमी पूरी करना।

कसरत—स्त्री० [अ०] शरीरको पुष्ट, बलवान् बनानेवाली क्रियाएँ, व्यायाम, वर्जिश; बहुलता, आधिक्य।

कसरती—वि० कसरत करनेवाला; कसरतसे बनाया हुआ।

कसरहट्टा—पु० कसेरोंकी हाट, वह बाजार जहाँ बरतन बनें और बिकें।

कसवाना—स० क्रि० कसनेका काम कराना।

कसहँड़—पु० काँसेके बरतनोंके टुकड़े।

कसहँड़ा—पु०, **कसहँड़ी**—स्त्री० देग या बटलोईके आकारका एक बरतन।

क़साई—पु० [अ०] मांस-विक्रेता; गोमांस बेचनेवाला, बूचड़। वि० बेरहम, बेदर्द। **—ख़ाना**—पु० वह स्थान जहाँ मांसके लिए पशुओंका वध किया जाय। **मु०—के खूँटे बँधना**—निर्दय व्यक्तिके पाले पड़ना; बेदर्दसे ब्याहा जाना।

कसाकसी—स्त्री० तनातनी, वैर-विरोध।

कसाना—अ० क्रि० कसैला स्वाद हो जाना; धातुका कसाव उतर आनेसे बिगड़ना। स० क्रि० कसवाना।

कसार—पु० चीनी मिला भूना हुआ आटा, पँजीरी; †ढूँढी।

कसाला—पु० कष्टकर श्रम; कष्ट।

कसाव—पु० कसैलापन; कसनेका भाव; तनाव; * कसाई।

कसावट—स्त्री० तनाव, खिंचाव।

कसीटना*—स० क्रि० कसना; रोकना।

कसीदा—पु० दे० 'कशीदा'।

क़सीदा—पु० [अ०] उर्दू-फारसीका वह पद्य जिसमें किसीकी प्रशंसा या (क्वचित्) निंदा की गयी हो।

कसीस—पु० एक लौहजन्य पदार्थ। *स्त्री निर्दयता; कोशिश।

कसूँभी*—वि० कुसुमके रंगका; इस रंगमें रँगा हुआ।

कसूमर—पु० दे० 'कुसुम'।

क़सूर—पु० दे० 'क़ुसूर'। **—मंद**—वि० दे० 'क़ुसूरमंद'।

कसेरा—पु० एक हिंदू जाति जो काँसे आदिके बरतन बनाने-बेचनेका धंधा करती है।

कसेरू—पु० एक प्रकारके मोथेकी जड़ जो छीलकर खायी जाती है।

कसैया*—पु० कसने या जकड़नेवाला; परखनेवाला।

कसैला—वि० जिसमें कसाब या कसैलापन हो।

कसैली†—स्त्री० सुपारी।

कसोरा—पु० मिट्टीका बना प्याला जो छिछला होता है; कटोरा।

कसौटी—स्त्री० एक काला पत्थर जिसपर सोना घिसकर परखा जाता है; परख; जाँच (ला०)।

कस्तूर—पु० कस्तूरी मृग; कस्तूरी-जैसा एक पदार्थ जो बीवर नामक जंतुकी नाभिसे निकलता है।

कस्तूरिका—स्त्री [सं०] कस्तूरी।

कस्तूरिया—वि० कस्तूरीका; कस्तूरीसे मिलकर बना; कस्तूरीके रंगका। पु० कस्तूरी-मृग।

कस्तूरी—स्त्री० [सं०] एक सुगंधित पदार्थ जो एक तरहके नर हिरनकी नाभिके पासकी गाँठमें पैदा होता और दवाके काम आता है। **—मृग**—पु० वह हिरन जिसकी नाभिके पासकी गाँठ (नाफ़ा) में कस्तूरी पैदा होती है।

क़स्साब—पु० [अ०] बूचड़। **—ख़ाना**—पु० बूचड़-खाना।

कहँ*—प्र० को, के लिए। अ० दे० 'कहाँ'।

क़हक़हा—पु० [अ०] खिलखिलाकर हँसना, जोरकी हँसी।

कहगिल—स्त्री० [फ़ा०] मिट्टीमें भूसा, पुआलकी कुट्टी आदि सानकर बनाया हुआ गारा।

क़हत–पु० [अ०] अवर्षण; अकाल; दुष्प्राप्यता (किसी चीजका क०)। **–ज़दा**–वि० अकालपीड़ित।

कहन–स्त्री० उक्ति, वचन; कहनावत।

कहना–स० क्रि० शब्द द्वारा भाव-प्रकाश करना; बोलना; बयान करना, बताना; प्रकट करना; सूचित करना; पुकारना; बहकाना; आज्ञा देना; अयुक्त बात कहना; कविता रचना। पु० उक्ति, कथन; आज्ञा, आदेश। **मु०–सुनना**–समझाना-बुझाना; अनुरोध, प्रार्थना करना। **–कहनेको**–नामको, बरायनाम। **(किसीके) कहनेमें आना**–किसीके चकमेमें आना। **(किसीके)–में होना**–किसीके हाथमें, वशमें होना।

कहनाउत*–स्त्री० दे० 'कहनावत'।

कहनावत–स्त्री० कथन; कहावत।

कहनि*–स्त्री० दे० 'कहन'।

क़हर–पु० [अ०] दे० 'क़ह्र'। वि० विकट; अपार।

कहरना*–अ० क्रि० कराहना।

कहरवा–पु० एक ताल; कहरवा तालपर गाया जानेवाला दादरा।

क़हरी–वि० कहर करनेवाला।

कहल*–पु० ऊमस, हवा बंद हो जानेसे होनेवाली गरमी; ताप; दुःख-दर्द।

कहलना*–अ० क्रि० व्याकुल, बेचैन होना।

कहलवाना–स० क्रि० दूसरेके जरिये किसीसे कुछ कहना; संदेशा भेजना; उच्चारण कराना। अ० क्रि० पुकारा जाना।

कहलाना–स० क्रि० दे० 'कहलवाना'। अ० क्रि० पुकारा जाना; * दे० 'कहलना'–'कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ'–वि०।

कहवाँ*–अ० कहाँ।

क़हवा–पु० [अ०] एक पेड़का बीज जिसे भूनकर पीसते और दूध, शकर मिलाकर चायकी तरह इस्तेमाल करते हैं।

कहवाना–स० क्रि० दे० 'कहलवाना'।

कहाँ–अ० किस जगह। पु० तुरंत पैदा हुए बच्चेके रोनेका शब्द। **–अमुक, कहाँ अमुक**–दोनोंमें बहुत अंतर है, दोनोंकी कोई तुलना नहीं। **–का**–कैसा; कैसा बड़ा विकट (मूर्ख इत्यादि); नाहकका, व्यर्थका। **–की बात**–कैसी अनहोनी बात।

कहा–पु० सलाह; आदेश; कहना। * स्त्री० कथा। अ० कैसे; कब। सर्व० क्या। वि० क्या। **–कही**–स्त्री० उत्तर-प्रत्युत्तर, तकरार। **–सुना**–पु० बोलनेमें हुई भूल-चूक; अनौचित्य। **–सुनी**–स्त्री० हुज्जत, तकरार।

कहाउति*–स्त्री० दे० 'कहावत'।

कहाना–स० क्रि०, अ० क्रि० कहलाना।

कहानी–स्त्री० कथा; वृत्तांत; आख्यायिका, उपन्यासके ढंगकी छोटी रचना जो प्रायः एक ही घटना या परिस्थितिको लेकर लिखी गयी हो; मनसे गढ़ी, उपजायी हुई बात।

कहार–पु० एक हिंदू जाति जो प्रायः डोली ढोने, पानी भरने आदिके काम करती है।

कहावत–स्त्री० मसल, लोकोक्ति; उक्ति, कथन।

कहियां†–अ० कब, किस दिन।

कहीँ–अ० किसी जगह; दूसरी जगह; (प्रश्नरूपमें, काकुसे) नहीं, कदापि नहीं; अगर; शायद। वि० बहुत; बहुत ज्यादा। **–कहीँ**–अ० कुछ स्थानोंमें, जहाँ-तहाँ। **–का**–किसी जगहका; न जाने कहाँका (उल्लू कहींका)।

कही–स्त्री० कही हुई बात, कथन।

कहुँ, कहूँ–अ० दे० 'कहीँ'।

क़ह्र–पु० [अ०] बला, आफत; जुल्म। वि० भीषण। **मु०–करना**–जुल्म करना। **–टूटना**–दैवी संकट पड़ना। **–ढाना**–किसीपर आफत लाना।

काँइयाँ–वि० चालाक, धूर्त।

काँइँ*–अ० क्यों।

काँकर*–पु० कंकड़।

काँकरी*–स्त्री० छोटा कंकड़।

काँ-काँ*–पु० दे० 'काँव-काँव'।

काँकुनी†–स्त्री० कँगनी।

कांक्षणीय–वि० [सं०] चाहने योग्य।

कांक्षा–स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह; झुकाव, प्रवृत्ति।

कांक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] चाहनेवाला।

काँख–स्त्री० बाहुमूलके नीचेका गढ़ा, बगल।

काँखना–अ० क्रि० मलत्यागमें जोर लगाने या भारी बोझ उठाने आदिसे गलेसे खाँसनेकीसी आवाज निकलना।

काँखासोती–स्त्री० दुपट्टा डालनेका एक ढंग जिसमें वह बाँयें कंधेके ऊपर और दाहिनी बगलके नीचेसे जनेऊकी तरह निकाला जाता है।

काँगही*–स्त्री० दे० 'कंघी'।

काँगुरा*–पु० दे० 'कंगूरा'।

कांग्रेस–स्त्री० [अं०] सम्मेलन; संघटन या समुदाय-विशेषके प्रतिनिधियोंकी वार्षिक बैठक; भारतकी राष्ट्रीय महासभा, इंडियन नेशनल कांग्रेस; संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी पार्लमेंट या राष्ट्रसभा। **–जन**–पु० [हिं०] कांग्रेसका अनुयायी।

कांग्रेसी–वि० कांग्रेससे संबद्ध। पु० कांग्रेसका अनुयायी।

काँच–पु० शीशा। स्त्री० गुदाका भीतरका भाग; काछ। **मु०–निकलना**–एक रोग जिसमें मलत्यागके समय काँच बाहर निकल आती है; श्रमादि सहनेमें असमर्थ होना।

कांचन–पु० [सं०] सोना; दीप्ति, चमक; धन; धतूरा; चंपा; पद्मकेसर। वि० सोनेका बना; सुनहरा। **–गिरि**–पु० सुमेरु। **–पुरुष**–पु० सोनेके पत्तरपर बनायी हुई पुरुषकी मूर्ति जो एकादशाह कर्ममें महाब्राह्मणको दान दी जाती है।

काँचरी(ली)–स्त्री० दे० 'केँचुली'।

काँचा*–वि० कच्चा; अस्थिर।

कांचि, कांची–स्त्री० [सं०] करधनी; मेखला; दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध नगर जो सप्तपुरियोंमेंसे है, कांजिवरम्।

काँचुरी(ली)*–स्त्री० दे० 'केँचुली'।

काँछना–स० क्रि० काछना; सँवारना; पहनना।

कांछा*–स्त्री० दे० 'कांक्षा'।

कांजिक–पु० [सं०] काँजी।

कांजी–स्त्री० [सं०] माँड़, राईके घोल, सिरके आदिमें जीरा, नमक आदि डालकर बनाया जानेवाला एक खट्टा पेय जो स्वादिष्ठ और पाचक होता है; दही या फटे हुए दूधका पानी।

काँजी–स्त्री० दे० 'कांजी'।

कांजी-हाउस–पु० [अं० काइन-हाउस] मवेशीखाना, वह बाड़ा जिसमें दूसरेका खेत आदि खानेवाले या लावारिस चौपाये बंद किये जाते हैं।

काँट*–पु० दे० 'काँटा'।

काँटा–पु० पेड़-पौधोंकी टहनियोंमें निकली हुई सूई जैसी पैनी नोकवाली चीज, कंटक; लोहेकी लंबी, पतली कील; मछली पकड़नेकी कँटिया; अँकुसोंका समूह जिससे कुएँमें गिरे हुए कलश, बाल्टी आदि निकालते हैं; मछलीकी बारीक हड्डियाँ जो खाते हुए गलेमें चुभती हैं; लोहे-पीतल आदिके तराजूकी डाँड़ीमें बीचो-बीच लगी सुई; सोना-चाँदी तौलनेका काँटेदार तराजू; घड़ीकी सूई; वह आला जिससे किसान भूसा उठाते हैं; वह क्रिया जिससे हिसाबके सही-गलत होनेकी जाँच की जाय (ग०); एक आला जिससे यूरोपीय खाना उठाकर खाते हैं; फल आदि तोड़नेकी अँकुसी; झाड़ टाँगनेका हुक; नाककी कील। **मु० –निकलना**–मनका क्लेश, कसक मिटना। **–होना**–सूखकर कड़ा हो जाना; सूखकर ठटरीभर रह जाना। **काँटेकी तौल**–बिलकुल ठीक, न कम न अधिक। **–पड़ना**–गले या जीभका प्याससे सूखना। **(राहमें)– –बिछाना**–बाधाएँ खड़ी करना, रोड़े अटकाना। **–बोना**–बुराई करना; भावी अनिष्टका कारण बनना। **काँटोंपर लोटना**–बेचैन होना, तड़पना; ईर्ष्यासे जलना।

काँटी–स्त्री० छोटा काँटा; कँटिया; अँकुड़ी।

काँठा*–पु० गला; किनारा; पार्श्व; तोतेके गलेकी मंडलाकार रेखा।

कांड–पु० [सं०] अंश, विभाग; ईख-नरकुल आदिकी पोर; पेड़का तना, वृक्ष-स्कंध; ग्रंथका विभाग, परिच्छेद; गुच्छा; समूह; शाखा; डंडा; बाण; सरकंडा; डंठल; नाल; हाथ-पाँवकी लंबी हड्डी; नली; अवसर; निर्जन स्थान; घटना (हत्याकांड)। वि० कुत्सित, खराब (केवल समासांतमें)।

काँड़ना*–स० क्रि० कुचलना–'भट भारी भारी रावरे कै चाउरसे काँडिगो'–कविता०; कूटना।

काँड़ी–स्त्री० (छाजनमें लगनेवाली) लकड़ीका बल्ला या बाँस; ओखलीका गड्ढा; हाथीका एक रोग जो तलवेमें होता है; भारी चीजें ढकेलनेका लकड़ीका डंडा; मछलियोंका झुंड।

कांत–वि० [सं०] प्रिय; मनोरम, शोभन। पु० प्यार करनेवाला, पति; प्रिय व्यक्ति; विष्णु; कृष्ण; चंद्रमा; वसंत; कार्त्तिकेय; कुंकुम; एक तरहका लोहा। **–पाषाण**–पु० चुंबक। **–लौह**–पु० कांतसार; इस्पात। **–सार**–पु० एक तरहका लोहा जो दवाके काम आता है।

कांता–स्त्री० [सं०] प्रिया; पत्नी; सुंदरी स्त्री; पृथ्वी।

कांतार–पु० [सं०] गहन वन; दुर्गम पथ; विवर, गड्ढा।

कांति–स्त्री० [सं०] सौंदर्य; चमक, दीप्ति; इच्छा; सुंदर स्त्री; चंद्रमाकी सोलह कलाओंमेंसे एक; दुर्गा। **–सार**–पु० एक बढ़िया लोहा।

काँती*–स्त्री० बिच्छूका डंक; तीव्र व्यथा; छुरी; कैंची।

काँथरि*–स्त्री० गुदड़ी।

काँदना†–अ० क्रि० रोना-चिल्लाना।

काँदा–पु० एक गुल्म जिसमें प्याज जैसी गाँठ पड़ती है; प्याज।

काँदो*–पु० पंक, कीचड़।

काँध*–पु० कंधा; कोल्हूके जाठका ऊपरका भाग।

काँधना*–स० क्रि० उठाना; सँभालना; मचाना; मान लेना।

काँधर*–पु० कृष्ण।

काँधा*–पु० कृष्ण; † कंधा।

काँधी–स्त्री० कंधा। **मु०–देना**–टालमटूल करना। **–मारना**–सवारको गिरानेकी गरजसे घोड़ेका झटकेसे गरदन फेरना।

काँप–स्त्री० कानमें पहननेका एक गहना, करनफूल; पतली, लचीली तीली; पतंगमें लगायी जानेवाली तीली; कलईका चूना; हाथीका दाँत; सूअरका खाँग।

काँपना–अ० क्रि० हिलना; लरजना; डरसे हिलना, थर्राना।

काँपा–पु० बाँसकी पतली तीली।

काँय-काँय–पु० दे० 'काँव-काँव'।

काँव-काँव–पु० कौवेका शब्द।

काँवर–स्त्री० बाँसका मोटा फट्टा जिसे कंधेपर रखकर और छोरोंपर बँधे छीकोंपर चीजें रखकर ढोते हैं, बहँगी।

काँवरि*–स्त्री० दे० 'काँवर'।

काँवरिया–पु० काँवर लेकर चलनेवाला व्यक्ति, काँवाँरथी।

काँवाँरथी–पु० काँवर लेकर तीर्थयात्रा करनेवाला।

काँस–पु० एक लंबी घास जो शरद् ऋतुमें फूलती है।

काँसा–पु० ताँबे और जस्तेके मेलसे बनी एक धातु; भीख माँगनेका खप्पर। **–गर**–पु० काँसेका काम करनेवाला।

काँसार–पु० कसेरा।

कांस्य–पु० [सं०] ताँबे और जस्तेके मेलसे बनी एक धातु। वि० काँसेका बना हुआ। **–कार**–पु० कसेरा; ठठेरा। **–युग**–पु० इतिहासका वह युग जिसमें हथियार, बरतन आदि काँसेके ही बनते थे।

का–प्र० संबंध कारककी विभक्ति। * सर्व० क्या।

काइयाँ–वि० धूर्त्त, चालाक।

काई–स्त्री० पानी या सीलमें रहनेवाले पत्थर आदिपर जमनेवाली बारीक, रेशे जैसी घास; बँधे पानीके ऊपर आनेवाली गोल पत्तियोंकी एक घास; मिट्टीकी तरह जमा हुआ मैल; ताँबे-पीतल आदिपर लगनेवाला मोरचा। **मु०–छुड़ाना**–जमा हुआ मैल छुड़ाना; दुःख-दैन्य दूर करना। **–सा फटना**–बिखर जाना।

काऊ*–अ० कभी। सर्व० कुछ; कोई।

काक–पु० [सं०] कौआ। **–चेष्टा**–स्त्री० कौएकी तरह चौकन्ना रहना। **–तालीय न्याय**–पु० किसी घटनाका केवल संयोगवश होना (जैसे ताड़के पेड़के नीचे कौएके बैठते ही उसके ऊपर ताड़के पके फलका चू पड़ना)। **–दंत**–पु० कौएका दाँत; कोई अनहोनी बात (ला०)। **–पक्ष**–पु० कनपटियोंपर लटकनेवाले बालोंके पट्टे, जुल्फ। **–पाद**–पु० छूटे हुए शब्दके लिए पंक्तिके नीचे बनाया जानेवाला चिह्न (∧)। **–पाली**–स्त्री० कोयल। **–बंध्या,–वंध्या**–स्त्री० एक बच्चा जनकर वंध्या हो जानेवाली स्त्री। **–माचिका,–माची,–माता**–स्त्री० मकोय।

काकड़ासींगी—स्त्री० दवाके काम आनेवाला एक द्रव्य, कर्कटशृंगी ।

काकणी—स्त्री० [सं०] घुँघची ।

काकरी*—स्त्री० ककड़ी ।

काकरेज़—पु० [फा०] एक तरहका ऊदा—काले और लाल रंगके मेलसे वना हुआ—रंग ।

काकरेज़ा—पु० [फा०] काकरेज रंगका कपड़ा ।

काकरेज़ी—वि०[फा०] काकरेज रंगका । पु० काकरेज रंग ।

काकलि, काकली—स्त्री० [सं०] मधुर, अस्फुट ध्वनि; पतली मीठी आवाज; चोरीमें सहायक एक औजार ।

काकलीक—पु० [सं०] मंद, मधुर स्वर ।

काका—पु० चचा । स्त्री० [सं०] काकजंघा; काकोली ।

काकाक्षिगोलक न्याय—पु० [सं०] एक शब्द या पदसे, कौएकी अ ँखके डेलेकी तरह, दो काम निकालना ।

काकातुआ—पु० बड़ा तोता जिसके सिरपर चोटी होती है ।

काकारि—पु० [सं०] उल्लू ।

काकिणी—स्त्री० [सं०] कौड़ी; पणका चौथाई, पाँच गंडे कौड़ी; माशेका चौथाई; घुँघची ।

काकी—स्त्री० काकाकी स्त्री; [सं०] कौएकी मादा ।

काकु—पु० [सं०] भाव या अर्थके भेदसे ध्वनिमें भेद होना; वक्रोक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें ध्वनिभेद, कहनेका ढंग बदलनेसे अर्थ बदल जाता है; * व्यंग्य, छिपी चोट करनेवाली उक्ति ।

काकुत्स्थ—पु० [सं०] काकुत्स्थके वंशमें उत्पन्न व्यक्ति—दशरथ, राम आदि ।

काकुन—स्त्री० एक मोटा अन्न, कँगनी ।

काकुल—स्त्री०[फा०] कनपटीपर लटकते हुए बाल, जुल्फ ।

काकोदर—पु० [सं०] साँप ।

काकोल—पु०[सं०] काला कौआ, डोमकौआ; सर्प; शूकर ।

काकोली—स्त्री० [सं०] एक वनौषधि, जीवंती ।

काकोलूकीय न्याय—पु० [सं०] कौए और उल्लूकासा सहज वैर ।

काक्ष—पु० [सं०] कटाक्ष; चढ़ी हुई त्यौरी ।

काक्षी—स्त्री० [सं०] एक गंधद्रव्य; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी ।

काग—पु० [अं० 'कार्क'] बोतल या शीशीकी डाट; [सं०] कौआ । **—भुसुंडि, —भुसुंडी***—पु० एक रामभक्त जो शापवश कौआ हो गया था ।

काग़ज़—पु० [अ०] सन, बाँस, चीथड़े आदिकी लुगदीसे बनायी हुई वस्तु जो लिखने-छापने आदिके काम आती है, कागद; लिखी हुई चीज, लेख; लिखित प्रमाण, दस्तावेज; रुक्का; ऋणपत्र; अखबार । **—पत्र**—पु० किसी मामलेसे संबद्ध लिखी हुई बातें; कागजात; सबूत । **—का रुपया**—नोट । **—की नाव**—कागज मोड़कर (खेलके लिए) बनायी हुई नाव; न टिकनेवाली, क्षणभंगुर वस्तु । **मु०—काला करना**—बेकार बातें लिखना । **—के घोड़े दौड़ाना**—लंबी लिखा-पढ़ी, पत्र-व्यवहार करना; (केवल) कागजी कारखाई करना ।

काग़ज़ात—पु० [अ०] कागजपत्र ।

काग़ज़ी—वि० [अ०] कागजका बना; लिखित (सबूत इ०); पतले छिलकेवाला (बादाम, नीबू इ०) । पु० कागज बनाने या बेचनेवाला; बिलकुल सफेद कबूतर । **—कारखाई**—स्त्री० लिखा-पढ़ी ।

कागद—पु० [सं०] कागज ।

कागर*—पु० कागज; केंचुली; मुलायम पर, पंख ।

कागरी*—वि० तुच्छ ।

कागा*—पु० कौआ । **—बासी**—स्त्री० तड़के छानी जानेवाली भाँग; एक तरहका मोती । **—रोल**—पु० कौओंका काँव-काँव करना; शोरगुल ।

कागौर—पु० काकबलि ।

काच—पु० [सं०] शीशा; खारी मिट्टी । **—मणि**—पु० स्फटिक । **—लवण**—पु० काला नमक ।

काचरी*—स्त्री० केंचुली ।

काचा, काचो*—वि० दे० 'कच्चा' ।

काची†—स्त्री० सिंहाड़े, कुम्हड़े आदिका हलुआ ।

काछ—पु० पेड़ और जाँघका जोड़; धोतीका छोर जिसे जाँघोंके बीचसे ले जाकर पीछे खोँसते हैं, लाँग; सिखोंका कच्छ; नटोंका वेश-विन्यास ।

काछना—स० क्रि० लाँगको पीछे ले जाकर खोंसना; सँवारना, पहनना; किसी पतली चीजको पोंछकर, उँगली आदिसे एक तरफ हटाकर इकट्ठा करना ।

काछनी—स्त्री० घुटनोंतक कसकर पहनी हुई धोती जिसमें दोनों लाँगें पीछे खुँसी हों; मूर्तियों आदिको पहनाया जानेवाला एक तरहका घाँघरा ।

काछा—पु० कुछ ऊपर चढ़ाकर और कसकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती है ।

काछी—पु० एक हिंदू जाति जो तरकारियाँ बोने-बेचनेका काम करती है, कोयरी, मरार (छत्तीसगढ़) ।

काछू†—पु० कछुआ ।

काछे*—अ० पास, निकट ।

काज—पु० काम, कार्य, धंधा; अर्थ, प्रयोजन; विवाहादि कृत्य; बटनका छेद । (**के काज**—के लिए, के वास्ते ।)

काजर—पु० दे० 'काजल' ।

काजरी*—स्त्री० वह गाय जिसकी आँखके चारों ओरका हिस्सा काला हो ।

काजल—पु० दियेके धुएँकी कालिख जो सुरमेकी तरह आँखमें लगायी जाती है । **—की कोठरी**—ऐसी जगह जहाँ जानेसे, ऐसा काम जिसे करनेसे, कलंक लगना अनिवार्य हो, बदनामीका घर । **मु०—पारना**—दियेकी लौपर कजरौटा आदि रखकर कालिख इकट्ठा करना ।

क़ाज़ी—पु० [अ०] मुसलमान न्यायाधीश जो शराके अनुसार मामलोंका निर्णय करे; निकाह पढ़ानेवाला मौलवी; विचारक ।

काजू—पु० एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेवेके तौरपर खायी जाती है ।

काट—स्त्री० काटनेका काम; काटनेका ढंग; तराश; चोट, घाव; चालबाजी; पेचका तोड़; तेल आदिकी तलछट; घावपर किसी चीजके लगनेसे होनेवाली छरछराहट । **—कपट**—स्त्री० छिपाकर या अनुचित रीतिसे काटना । **—कूट**—स्त्री० कलमसे लकीर खींचकर लिखी हुई चीजको

रद्द करना; मार-काट । **–छाँट**–स्त्री० कतर-ब्योंत; घटाव-बढ़ाव; शोधन ।

काटना–स० क्रि० छुरी-कैंची आदिसे किसी चीजके टुकड़े करना; अलग करना; तराशना; फाँक उतारना; कतरना; छरछराहट पैदा करना; घाव करना; कतल करना; रगड़ या रेतकर टुकड़े करना (पतंग इत्यादि); दाँत धँसाना, दाँतसे चोट करना; धक्के, दरेरसे तोड़ देना, बहा ले जाना (बाँध, जमीन); (कुछ अंश) निकाल लेना, कम कर देना; बट्टा, मिनहा करना; बारीक पीसना (भाँग, मसाला); दूर करना, हटाना; रद्द करना; खंडन करना; बिताना, गुजारना; खारिज करना; नहर, नाली, क्यारी आदि बनाना; एक रेखा, लाइन, सड़क आदिका दूसरीके ऊपरसे निकल जाना; एक संख्याका दूसरीसे ऐसा विभाजन कि कुछ बचे नहीं; डँसना; डंक मारना; कष्ट, पीड़ा पहुँचाना (ला०); उड़ाना; हथियाना । **मु० काट खाना**–दाँतोंसे घायल करना; डँसना; डंक मारना । **काटने दौड़ना**–बहुत गुस्सेमें बोलना, अति क्रोध प्रकाश करना; सूना और उदाससा लगना । **काटे खाना**–सूनेपन, किसीकी याद दिलाने आदिके कारण दुःखद होना; मनको क्लेश देना । **काटो तो खून नहीं**–अचानक उत्पन्न हुए भयादिके कारण स्तब्ध होना ।

काटर*–वि० कट्टर ।

काठ–पु० [सं०] चट्टान, पत्थर;[हिं०]लकड़ी; धन; काठकी बनी बेड़ी;*कठपुतली ।**–कबाड़**–पु० लकड़ीकी रद्दी,बेकार चीजें । **–का उल्लू**–वज्र मूर्ख । **–का घोड़ा**–बैसाखी । **–की हाँड़ी**–धोखेकी टट्टी, दिखाऊ चीज । **मु०–मारना**–काठकी बेड़ी पहनाना; चलने-फिरनेपर रोक लगाना । **–में पाँव देना**–काठकी बेड़ी पहनाना; स्वयं बंधनमें पड़ना । **–होना**–कड़ा या संज्ञाहीन होना ।

काठिन्य–पु० [सं०] कठिनाई; कड़ापन; निष्ठुरता ।

काठी–स्त्री० वह जीन जिसमें नीचे काठ होता है; अंग्रेजी ढंगकी जीन; देहकी गठन ।

काड़ी–स्त्री० अरहरका सूखा डंठल, रहठा ।

काढ़ना–स० क्रि० निकालना, बाहर लाना; उरेहना; (सुईसे) बेल-बूटे बनाना; लेना (कर्ज); घी-तेलमें छानना ।

काढ़ा–पु० दवाओंको पानीमें औटकर बनाया हुआ पेय, क्राथ ।

काण–वि० [सं०] काना; छेद किया हुआ । पु० कौआ ।

कातना–स० क्रि० चरखे या तकलीपर रुई या ऊनसे धागा निकालना; सनसे सुतली बनाना ।

कातर–वि० [सं०] अधीर; उद्विग्न, परेशान; कष्टसे आकुल; आर्त; विवश; भीत; भीरु । पु० घड़नई; एक बड़ी मछली ।

कातर्य–पु० [सं०] कातरता, भीरुता ।

काता–पु० काता हुआ सूत; बाँस छीलनेकी छुरी, बाँक ।

कातिक–पु० कार्त्तिक मास ।

कातिब–पु० [अ०] लिखनेवाला; लीथो प्रेसके लिए कापी लिखनेवाला ।

क़ातिल–पु०[अ०]कत्ल करनेवाला, हत्यारा । वि० घातक ।

काती–स्त्री० कैंची; कत्ती; छुरी ।

कात्यायन–पु० [सं०] कत गोत्रमें उत्पन्न पुरुष; पाणिनीय सूत्रोंपर वार्त्तिक लिखनेवाले वररुचि; विश्वामित्रके वंशज एक ऋषि जिन्होंने श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र आदिकी रचना की है; पालीका व्याकरण लिखनेवाले आचार्य कच्चायन ।

कात्यायनी–स्त्री० [सं०] कत गोत्रमें उत्पन्न स्त्री; याज्ञवल्क्यकी एक पत्नी; वृद्धि या अधेड़ विधवा; पार्वती ।**–पुत्र,–सुत**–पु० कार्त्तिकेय ।

काथ*–पु० कत्था–'जहँ बीरा तहँ चून है पान सोपारी काथ'–प०; गुदड़ी ।

काथरी*–स्त्री० गुदड़ी, कथरी ।

कादंबरी–स्त्री० [सं०] कदंबके फूलोंकी शराब; शराब; गजमद; कोकिला; मैना; बाणभट्ट-रचित प्रसिद्ध गद्यकाव्य और उसकी नायिका; सरस्वती ।

कादंबिनी–स्त्री० [सं०] बादलोंकी लंबी पंक्ति, मेघमाला ।

कादर–वि० दे० 'कातर' ।

कान–पु० शब्दबोधकी इंद्रिय, श्रुति, कर्ण; सुननेकी शक्ति; कानमें पहननेका एक गहना; बरतनका दस्ता; बंदूककी रंजकदानी; चारपाईका टेढ़ापन; सितार आदिकी खूँटी; नावकी पतवार । स्त्री० दे० 'कानि' । **मु०–उठाना**–(पशुका) चौकन्ना होना; आहट लेना । **–उमेंठना,–ऐंठना**–दंड या चेतावनी देनेके लिए कान मरोड़ना । **–करना**–सुनना, कान देना । **–का कच्चा**–जो कुछ सुने उसपर बिना विचार किये विश्वास कर लेनेवाला । **–खड़े करना,–होना**–सचेत, चौकन्ना होना **–खड़े रखना**–होशियार रहना । **–खोलना**–सावधान कर देना । **–गरम करना**–कान मलना, उमेठना । **–देना**–सुनना, ध्यान देना । **–धरना**–ध्यानसे सुनना; कान उमेठना । **–न दिया जाना**–शोरके मारे सुनाई न देना; शोर और ध्वनिकी कर्कशतासे असह्य कष्ट होना । **–न हिलाना**–चूँ न करना; विरोध, आपत्ति न करना । **–पकड़कर उठना-बैठना**–बच्चोंको दी जानेवाली एक सजा । **–पकड़कर निकाल देना**–अनादरपूर्वक निकाल बाहर करना । **–पकड़ना**–अपनी भूल स्वीकार कर भविष्यमें वैसी बात न करनेकी प्रतिज्ञा करना, तोबा करना; आगेके लिए सचेत हो जाना । **–पड़ी आवाज सुनाई न देना**–शोर-गुलके कारण कानमें पड़ी हुई बातका सुनाई न देना । **–पर जूँ न रेंगना**–तनिक भी परवाह न होना; बिलकुल ध्यान न देना । **–फूँकना**–दीक्षा देना; कान भरना, बहकाना । **–बंद या बहरे कर लेना**–जान-बूझकर किसीकी बात न सुनना, सुनकर भी उसपर ध्यान न देना । **–बहना**–कानसे लसदार और कुछ गाढ़े स्रवका बहना ।**–भर जाना**–सुनते-सुनते ऊब जाना । **–भरना**–किसीके विषयमें किसीकी धारणा बिगाड़ देना, बदगुमान कर देना । **–मलना**–कान उमेठना । **(कोई बात)–में डाल देना**–सुना देना ।**–में तेल डालना**–कान बहरे कर लेना । **–में पारा या सीसा भरना**–गरम पारा या पिघलाया हुआ सीसा कानमें भरकर बहरा कर देना (पुराने जमानेकी एक सजा) ।**–लगना**–कानसे सटकर धीरे-धीरे कुछ कहना । **कानोंपर हाथ धरना**–अनभिज्ञता प्रकट करना, अनजान बनना, साफ इनकार करना ।

कानन-पु० [सं०] वन, जंगल; बाग; घर।

काना-वि० जिसकी एक आँख फूट गयी हो, एकाक्ष; कीड़ा खाया हुआ, दागी (फल आदि); टेढ़ा, तिरछा। पु० चौसर के पासेकी बिंदी (तीन काने)।

कानाकानी-स्त्री० काना-फूसी।

कानागोसी*-स्त्री० काना-फूसी।

कानाफूसी-स्त्री० कानसे लगकर धीरे-धीरे बात करना।

कानाबाती-स्त्री० कानमें कही जानेवाली बात।

कानि*-स्त्री० लोकलज्जा; मर्यादा, लिहाज।

कानी-वि० स्त्री० एक आँखवाली (स्त्री); फूटी हुई (आंख)। **-उँगली**-स्त्री० छिगुनी। **-कौड़ी**-स्त्री० फूटी कौड़ी।

कानीन-पु० [सं०] बिनब्याही स्त्रीका बेटा, क्वारेपनमें पैदा पुत्र; व्यास; कर्ण। वि० अविवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न।

क़ानून-पु० [अ०] राजनियम; वह नियम जिसे मानना राज्यविशेषके प्रत्येक प्रजाजनका फर्ज हो; विधि, आईन; नियम। **-गो**-पु० माल महकमेका एक कर्मचारी जिसका काम पटवारियोंके कागजातकी जाँच करना है। **-दाँ**-वि० क़ानून जाननेवाला।

क़ानूनन्-अ० [अ०] क़ानूनके मुताबिक, नियमतः।

क़ानूनिया-वि० क़ानूनका ज्ञाता; हुज्जत करनेवाला।

क़ानूनी-वि० [अ०] क़ानूनसे संबद्ध; क़ानूनका; क़ानूनके अनुकूल; क़ानून बघारनेवाला, हुज्जती।

कानोंकान-अ० एकसे दूसरे कानतक; कर्णपरंपराके द्वारा। **मु०-खबर न होना**-तनिक भी खबर, पता न होना।

कान्यकुब्ज-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद या वहांका निवासी।

कान्ह*-पु० कृष्ण, कन्हैया।

कान्हड़ा(रा)-पु० एक राग। **-नट**-पु० एक संकर राग।

कापटिक-वि० [सं०] कपट करनेवाला, दुष्ट। पु० चाटुकार; विद्यार्थी।

कापट्य-पु० [सं०] दुष्टता, छलछद्म।

कापथ-पु० [सं०] कुमार्ग, बुरा रास्ता; खस।

कापर-*पु० कपड़ा।

कापालिक-पु० [सं०] एक वाममार्गी शैव संप्रदायका अनुयायी जो मनुष्यकी खोपड़ी लिये रहता और उसीमें खाता-पीता है। वि० कपाल-संबंधी।

कापाली (लिन्)-पु० [सं०] शिव।

कापी-स्त्री० [अं०] नकल, प्रतिलिपि; सादे कागजकी बही; छापाखानेमें छपनेके लिए दिया जानेवाला लेखादि। **-राइट**-पु० ग्रंथकार या प्रकाशकको रचना-विशेषपर प्राप्त स्वत्व, उसके छापने, बेचने आदिका अधिकार।

कापुरुष-पु० [सं०] कायर, नीच, कुत्सित पुरुष।

क़ाफ़िया-पु० [अ०] तुक, अंत्यानुप्रास।

क़ाफ़िर-पु० [अ०] मुसलिम धर्म न माननेवाला; नास्तिक; एक जाति। वि० दुष्ट, निर्दय।

क़ाफ़िला-पु० [अ०] यात्रियों, एकसे दूसरे देशको माल ले जानेवालोंका समूह।

काफ़ी-स्त्री० [अं०] कहवा। वि० [अ०] किफायत करने-पूरा पड़नेवाला; पर्याप्त; बहुत।

काफ़ूर-पु० [फ़ा०] कपूर। **मु०-होना**-उड़ जाना, अदृश्य हो जाना।

काफ़ूरी-वि० [फ़ा०] कपूरका बना हुआ; कपूरके रंगका।

काबर-वि० चितकबरा। पु० एक तरहकी जमीन।

क़ाबा-पु० [अ०] चौकोर इमारत; मक्केकी एक चौकोर इमारत जिसकी नीवँ इब्राहीमकी रखी हुई मानी जाती है।

क़ाबिज़-वि० [अ०] कब्जा करने, रखनेवाला, भोक्ता; कब्ज करनेवाला।

क़ाबिल-वि० [अ०) योग्य, लायक; विद्वान्। **-(ले) तारीफ़**-वि० सराहने योग्य। **-दीद**--वि० देखने योग्य, दर्शनीय।

क़ाबिलीयत-स्त्री० [अ०] योग्यता; विद्वत्ता।

काबुक-स्त्री० [फ़ा०] कबूतरोंका दरबा।

काबुल-पु० अफगानिस्तानकी राजधानी और एक प्रांत। **मु०-में क्या गधे नहीं होते?**-अच्छोंके बीच बुरे, पंडितोंके कुलमें मूर्ख भी हो सकते हैं।

काबुली-वि० काबुलका; काबुलमें उत्पन्न। पु० काबुलका रहनेवाला।

क़ाबू-पु० [तु०] वस, अधिकार, जोर, नियंत्रण।

काम-पु० [सं०] इच्छा, चाह, कामना; इंद्रिय या विषयसुखकी इच्छा; चतुर्वर्गमेंसे एक; संभोगकी इच्छा; कामदेव; परमेश्वर; कामनाका काम विषय; प्रेम; शुक्र; (काम =कार्य इ०, आगे देखो)। **-कला**-स्त्री० कामकी पत्नी रति; मैथुन; रतिसुख-वर्द्धन करनेवाली कला। **-केलि,-क्रीडा**-स्त्री० रतिक्रीड़ा। **-ग**-वि० जहाँ जी चाहे वहाँ जा सकनेवाला; लंपट। **-गति**-वि० जहाँ चाहे वहाँ जानेमें समर्थ। **-गिरि**-पु० चित्रकूट। **-चारी (रिन्)**-वि० यथेच्छाचारी; लंपट। पु० गरुड़। **-ज**-वि० वासनाजनित। **-जित्**-वि० कामको जीतनेवाला। पु० शिव; स्कंद; जिनदेव। **-ज्वर**-पु० आयुर्वेदके अनुसार एक प्रकारका ज्वर जो अखंड ब्रह्मचर्यके पालनसे उत्पन्न होता है। **-द**-वि० अभीष्ट-दायक, कामना पूरी करनेवाला। **-०मणि**-पु० चिंतामणि। **-दर्शन**-वि० देखनेमें सुंदर लगनेवाला। **-दहन**-पु० कामको भस्म .करनेवाले शिव। **-दा**-स्त्री० कामधेनु; एक देवी। **-दुघा**-स्त्री० कामधेनु। **-देव**-पु० कामका देवता; रतिपति, कंदर्प। **-धेनु**-स्त्री० स्वर्गकी गाय जो सब कामनाओंकी पूर्ति करनेवाली मानी जाती है। **-बाण**-पु० कामदेवके पाँच बाण-मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टीकरण। **-मूढ़,-मोहित**-वि० कामवश, कामातुर। **-रिपु**-पु० शिव। **-रुचि**-स्त्री० रामको विश्वामित्रसे प्राप्त एक अस्त्र। **-रूप**-पु० आसामका एक जिला जहाँ कामाख्या देवीका मंदिर है। वि० मनचाहा रूप धारण कर सकनेवाला (देवता); सुंदर। **-लता**-स्त्री० पुरुषेंद्रिय, लिंग। **-वल्लभा**-स्त्री० चाँदनी। **-शर**-पु० दे० 'कामबाण'; आम। **-शास्त्र**-पु० कामकला सिखानेवाला शास्त्र, रतिशास्त्र, कोकशास्त्र। **-सखा**-पु० वसंत। **-सूत्र**-पु० वात्स्यायनकृत कामशास्त्रका प्रसिद्ध ग्रंथ।

काम-पु० जो कुछ किया जाय, कर्म; अर्थ, प्रयोजन, मतलब, गरज; धंधा, रोजगार; नौकरी; उपयोग; दुस्साध्य

कार्य; बेल-बूटे, नक्काशी आदि; कारीगरी । **–का**–जिससे काम निकले, उपयोगी । **–काज**–पु॰ काम-धंधा, कारबार । **–काजी**–वि॰ कामकाजमें लगा रहनेवाला, उद्यमी । **–चलाऊ**–वि॰ जिससे काम निकल जाय, आवश्यकताकी पूर्ति हो जाय । **–चोर**–वि॰ कामसे जी चुरानेवाला, आलसी । **–दानी**–स्त्री॰ वह सूत या रेशमी कपड़ा जिसपर जरीकी बूटियाँ बनी हों । **–दार**–वि॰ जरदोजी या कलाबत्तूके कामवाला (टोपी, जूता) । **–धाम**–पु॰ कामकाज । **–न करो' हड़ताल**–स्त्री॰ (स्टे-इन स्ट्राइक) हड़तालका वह प्रकार जिसमें श्रमिक या कर्मी कारखाने आदिमें तो जाते हैं पर कोई काम नहीं करते–अपने स्थानपर चुपचाप बैठे रहते हैं । **मु॰–आना**–इस्तेमाल होना, काममें आना; युद्धमें मारा जाना; साथ देना; सहायक होना । **–करना**–असर करना; कारगर होना; कृतकार्य होना; अर्थ सिद्ध करना । **–चलना**–काम होना; कामका जारी रहना । **–चलाना**–प्रयोजन, आवश्यकतापूर्ति करना; ज्यों-त्यों काम निकाल लेना; काम जारी रखना । **–तमाम करना**–काम पूरा करना; मार डालना । **–तमाम होना**–काम पूरा होना; मारा जाना; मरना । **–निकलना**–प्रयोजन सिद्ध होना । **–बनना**–प्रयोजन निकलना । **–रखना**–वास्ता, सरोकार रखना; कठिन होना । **–लगना**–दरकार होना । **–से काम रखना**–अपने काम, प्रयोजन, अर्थका ही ध्यान रखना, और बातोंमें न पड़ना ।

काम–पु॰ [फा॰] इच्छा, कामना; इरादा, मतलब; तालु; मुँह । **–याब**–वि॰ सफलमनोरथ, कृतकार्य; परीक्षामें उत्तीर्ण । **–याबी**–स्त्री॰ सफलता, कृतकार्यता ।

कामठ–वि॰ [सं॰] कछुएसे संबंध रखनेवाला ।

कामना–स्त्री॰ [सं॰] इच्छा, चाह ।

कामरिया, कामरी*–स्त्री॰ कमली ।

कामरेड–पु॰ [अं॰] साथी, साथ काम करनेवाला (साम्यवादियोंका एक दूसरेको संबोधन) ।

कामलरी*–स्त्री॰ कमली ।

कामला–पु॰ एक प्रकारका रोग, पीलिया ।

कामली*–स्त्री कमली ।

कामांध–वि॰ [सं॰] जो कामसे अंधा हो गया हो, कामातुर ।

कामा–* स्त्री॰ कामिनी । पु॰ [अं॰] लघुविराम ।

कामाक्षी–स्त्री॰ [सं॰] दुर्गाका एक नाम ।

कामाख्या–स्त्री॰ [सं॰] दुर्गाका एक नाम; सतीका योनिपीठ, कामरूप ।

कामातुर–वि॰ [सं॰] कामपीड़ित, कामवेगसे बेहाल ।

कामायिनी–स्त्री॰ [सं॰] वैवस्वत मनुकी पत्नी श्रद्धाका एक नाम ।

कामारि–पु॰ [सं॰] शिव ।

कामार्त–वि॰ [सं॰] कामातुर, कामसे पीड़ित ।

कामित–वि॰ [सं॰] अभिलषित, इच्छित ।

कामिनी–स्त्री॰ [सं॰] कामवती नारी; सुंदर स्त्री । **–कांचन**–पु॰ सुंदरी स्त्री और धन ।

कामिल–वि॰ [अ॰] पूरा, संपूर्ण, तमाम; योग्य; पूर्ण ज्ञाता ।

कामी (मिन्)–वि॰ [सं॰] कामनायुक्त, चाह रखनेवाला; जिसमें कामवेगकी प्रबलता हो, विषयासक्त ।

कामुक–वि॰ [सं॰] चाहनेवाला; कामी, विषयासक्त ।

कामोद–पु॰ [सं॰] एक राग । **–कल्याण**–पु॰ एक संकर राग । **–तिलक**–पु॰ एक संकर राग ।

कामोद्दीपक–वि॰ [सं॰] काम, सहवासकी इच्छा बढ़ानेवाला ।

कामोन्माद–पु॰ [सं॰] कामवासना पूरी न होनेसे उत्पन्न उन्माद या व्याधि ।

काम्य–वि॰ [सं॰] चाहने योग्य; जिसकी चाह, कामना हो; सुंदर; उद्देश्यविशेषसे किया हुआ ।

काम्येष्टि–स्त्री॰ [सं॰] कामनाकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला यज्ञ ।

काय–पु॰ [सं॰] शरीर, देह; पेड़का तना; (तारोंके अतिरिक्त) वीणाका ढाँचा; संघ, समूह; मूल धन; निवासस्थान; स्वभाव; छिगुनी; प्राजापत्य विवाह; लक्ष्य । **–क्लेश**–पु॰ शारीरिक कष्ट-पीड़ा ।

क़ायदा–पु॰ [अ॰] नियम; ढंग; विधान; क्रम ।

कायफल–पु॰ एक पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है ।

क़ायम–वि॰ [अ॰] खड़ा हुआ; ठहरा हुआ; स्थापित; जारी; स्थायी; बराबरीमें रहनेवाला (बाजी इ॰) । **–मुकाम**–वि॰ दूसरेकी जगह अस्थायी रूपसे काम करनेवाला, एवज ।

कायर–वि॰ डरपोक, बुजदिल ।

क़ायल–वि॰ [अ॰] माननेवाला; अपनी गलती स्वीकार करनेवाला; निरुत्तर । **मु॰–करना**–किसीसे कोई बात मनवा लेना; निरुत्तर कर देना । **–होना**–मान लेना; विपक्षीकी बातका औचित्य स्वीकार करना; निरुत्तर हो जाना ।

कायली–स्त्री॰ लज्जा, ग्लानि; आलस्य ।

काया–स्त्री॰ देह, शरीर । **–कल्प**–पु॰ ओषधि-प्रयोगसे शरीरका नया या जवान हो जाना । **–पलट**–पु॰ चोला बदल जाना; भारी क्रांतिकारी परिवर्तन ।

कायिक–वि॰ [सं॰] देह-संबंधी; शरीरसे किया हुआ ।

कारंड, कारंडव–पु॰ [सं॰] एक तरहका हंस या बत्तख ।

कार–* वि॰ काला । पु॰ [सं॰] (समासके अंतमें) करनेवाला, कर्ता (ग्रंथकार, चित्रकार इ॰); क्रिया; काम (पुरुषकार, चमत्कार इ॰); [फा॰] काम, कार्य । **–कुन**–पु॰ काम करनेवाला, कारिंदा । **–ख़ाना**–पु॰ वह जगह जहाँ कोई बिक्रीकी चीज बनायी जाय; कार्यालय; कारबार; मामला; घटना । **–खानेदार**–पु॰ कारखानेका मालिक । **–गर**–वि॰ असर करनेवाला, प्रभावकर । **–गुज़ार**–वि॰ कार्यकुशल, काममें चतुर । **–गुज़ारी**–स्त्री॰ मुस्तैदी और होशियारीसे काम करना । **–चोब**–पु॰ लकड़ीका चौखूँटा ढाँचा जिसपर कपड़ा तानकर कशीदे या गुलकारीके काम करते हैं; जरदोजीका काम करनेवाला; गुलकारीका काम । **–चोबी**–स्त्री॰ गुलकारी, कशीदेका काम । वि॰ कशीदेका (काम) । **–नामा**–पु॰ प्रशंसनीय काम; कार्यावली; करतूत । **–परदाज़**–वि॰ काम करनेवाला, प्रबंधक । **–बार**–पु॰ काम-काज; रोजगार, व्यापार ।

-बारी-वि० काम-काजी; रोजगारी। **-रवाई**-स्त्री० किसी कामको करना, जारी रखना; काम; हरकत; उपाय, तदबीर; चाल। **-स्तानी**-स्त्री० साजिश, चालबाजी।

कारे खैर-पु० नेक काम, पुण्य कार्य, भलाईका काम।

कारक-पु० [सं०] संज्ञा या सर्वनामका वह रूप जिससे वाक्यमें दूसरे शब्दोंके साथ उसका संबंध प्रकट होता है। वि० करनेवाला (लाभकारक, हानिकारक इ०-प्रायः समासांतमें)। **-दीपक**-पु० एक अर्थालंकार जिसमें बहुतसी क्रियाओंके साथ कारक अर्थात् कर्ताका एक ही बार कथन हो। **-विभक्ति**-स्त्री० कारक सूचित करनेवाली विभक्तियाँ। **-हेतु**-पु० वह हेतु जो कार्यका उत्पादक हो।

कारज-* पु० दे० 'कार्य'।

कारटा*-पु० करट, कौआ।

कारण-पु० [सं०] किसी बातके होनेका हेतु, वह जिससे कार्यकी उत्पत्ति हो, निमित्त, सबब; साधन; कथावस्तुका आधार (ना०); मूल; प्रमाण। **-माला**-स्त्री० एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारणसे उत्पन्न होनेवाला कार्य स्वयं उत्तरोत्तर कारण बनते हुए अन्य कार्य उत्पन्न करता चले।

कारतूस-पु० पीतल, दफ्ती आदिकी बनी खोली जिसमें बंदूक, तमंचे आदिके एक फैरभरके लिए गोली, बारूद भरी रहती है।

कारन*-पु० दे० 'कारण'; करुणा -'नागमती कारनकै रोई'-प०।

कारनी*-वि० कर्मकी प्रेरणा करनेवाला; भेद बतानेवाला।

कारवाँ-पु० [फा०] देशांतर जानेवाले यात्रियों, व्यापारियोंका झुंड।

कारा-*वि०काला। पु० सर्प। स्त्री०[सं०] कैद; कैदखाना; पीड़ा;। **-गार, -गृह**-पु० कैदखाना। **-गारिक**-पु० (जेलर) बंदीगृह या वहाँके बंदियोंकी व्यवस्था, देखरेख आदि करनेवाला मुख्य अधिकारी, कारापाल। **-पाल**-पु० जेलका रक्षक, 'जेलर', कारागारिक। **-रोधन**-पु० (इनकारसरेशन) कारागृहमें बन्द कर देने, जेल भेज देनेकी क्रिया। **-वास**-पु० कैद।

कारिंदा-पु० काम करनेवाला, कर्मचारी, गुमाश्ता।

कारिका-स्त्री० [सं०] श्लोकबद्ध व्याख्या; नटी, नर्तकी।

कारिख-स्त्री० दे० 'कालिख'।

कारित-वि० [सं०] कराया हुआ।

कारीगर-पु० [फा०] दस्तकार, शिल्पी।

कारीगरी-स्त्री० [फा०] शिल्प, दस्तकारी; शिल्प-कौशल।

कारु-पु० [सं०] करने, बनानेवाला; कारीगर; विश्वकर्मा। **-कार्य**-पु० शिल्पकार्य, जाली, नक्काशी आदिका कार्य।

कारुणिक-वि० [सं०] दयाशील, करुणा करनेवाला।

कारुण्य-पु० [सं०] दया, करुणा।

कारूँ-पु० [अ०] मूसाका चचेरा भाई जो बहुत धनवान् पर बड़ा कंजूस था। **-का ख़ज़ाना**-बेहिसाब दौलत।

क़ारूरा-पु० [अ०] चिकित्सकको रोगीका पेशाब दिखानेकी शीशी; पेशाब। **मु०-मिलना**-बहुत मेल होना।

कारौंछ-स्त्री० दे० 'कालौंछ'।

कारो*-वि० काला। पु० काला आदमी; कृष्ण; सर्प।

कारोबार-पु० दे० 'कारबार'।

कार्कश्य-पु० [सं०] कठोरता; दृढ़ता; निर्दयता।

कार्ड-पु० [अं०] मोटे कागजका टुकड़ा; पोस्टकार्ड।

कार्त्तिक-पु० [सं०] आश्विनके बादका महीना।

कार्त्तिकेय-पु० [सं०] स्कंद।

कार्पण्य-पु० [सं०] कृपणता, कंजूसी; निर्धनता; दया।

कार्मण-पु० [सं०] मंत्र-तंत्रादिका प्रयोग।

कार्मना*-स्त्री० दे० 'कार्मण'।

कार्मुक-पु० [सं०] धनुष् ; धनुराशि; चाप। वि० कर्मशील।

कार्य-पु० [सं०] जो कुछ किया जाय या करना है, कर्त्तव्य; काम; धंधा, व्यवसाय; धार्मिक कृत्य; कारणका विकार, परिणाम; हेतु; नाटकका अंतिम फल। **-कर**-वि० काम करनेवाला; प्रभावकर। **-कर्ता(र्तृ)**-पु० काम करनेवाला, कर्मचारी। **-कारण-भाव**-पु० कार्य और कारणका संबंध। **-कारी(रिन्)**-वि० किसीके स्थानपर अस्थायी रूपसे काम करनेवाला, कार्यवाहक (ऐक्टिंग)। **-काल**-पु० कार्य करनेका समय; किसी पदपर रहनेका काल। **-कुशल**-वि० काममें होशियार, दक्ष। **-क्रम**-पु० होने या किये जानेवाले कार्योंका क्रम या उनकी सूची। **-ग्रहणकाल**-पु० (जाइनिंग टाइम) किसी संस्था आदिमें या किसी पदपर नियुक्त होनेके बाद काम शुरू करनेका समय। **-परिषद्**-स्त्री० (काउंसिल ऑव ऐक्शन) किसी कार्य, काररवाई, आंदोलन आदिका संचालन, नियंत्रण आदि करनेके लिए गठित परिषद्। **-पालिका-शक्ति**-स्त्री० (एग्ज़ीक्यूटिव पॉवर) विधि, आज्ञप्ति, न्यायिक अभिनिर्णय आदिको कार्यमें परिणत कराने, पालन करानेकी शक्ति। **-भार**-पु० किसी कार्य या पदका दायित्व। **-वाहक**-पु० (एजेंट) वह जो किसी देश, संस्था आदिकी ओरसे कार्य करनेके लिए अधिकृत किया गया हो, एजेंट। **-वाही**-पु० कार्यका भार उठानेवाला। स्त्री० सभा आदिमें हुआ काम, काररवाई। **-विवरण**-पु० सभा आदिमें हुए कार्योंका विवरण या हाल। **-समिति**-स्त्री० किसी संस्थाके संचालनादिका काम करनेवाली मुख्य समिति। **-सिद्धि**-स्त्री० कार्यकी सफ़लता, कामयाबी। **-स्थगन-प्रस्ताव**-पु० (ऐडजर्नमेंट मोशन) किसी अत्यंत आवश्यक एवं सार्वजनिक महत्त्वके प्रश्नपर विचार करनेके लिए विधान-सभा आदिमें रखा गया प्रस्ताव जिसमें प्रार्थना की जाती है कि अन्य कार्य छोड़कर पहले इसीपर विचार किया जाय।

कार्यतः-अ० [सं०] कार्यरूपमें; फलतः।

कार्याकार्य-पु० [सं०] कर्तव्य-अकर्तव्य। **-विचार**-पु० कर्तव्य-अकर्तव्यका विचार।

कार्यान्वित-वि० [सं०] कार्यरूप-प्राप्त, कार्यमें परिणत।

कार्यालय-पु० [सं०] काम करनेका स्थान, दफ्तर।

कार्श्य-पु० [सं०] दुबलापन; सालका पेड़।

कार्षापण-पु० [सं०] भारतका एक पुराना सिक्का।

काल-पु० [सं०] समय, अवसर; अवधि; समयका कोई विभाग (घड़ी, घंटा आदि); मौसम; अंत; मृत्यु; महाकाल; यम; अकाल, दुर्भिक्ष; शिव; शनि; प्रारब्ध; आँखका काला

भाग; कोयल; लोहा; एक गंधद्रव्य। वि० काला, गहरे नीले रंगका। **−कूट**−पु० एक भयानक विष; हलाहल विष। **−कोठरी**−स्त्री० [हिं०] भयंकर अपराधियोंको एकाकी रखनेके लिए जेलमें बनी हुई एक कोठरी जो बहुत तंग और अँधेरी होती है (सॉलिटरी सेल)। **−क्रम**−पु० समयकी गति। **−क्षेप**−पु० समय बिताना, दिन काटना। **−चक्र**−पु० समयका हेर-फेर, भाग्यपरिवर्तन। **−ज्ञ**−वि० (कार्यविशेषके) अवसरको पहचाननेवाला। पु० ज्योतिषी। **−त्रय**−पु० तीनों काल−भूत, भविष्य और वर्तमान। **−दंड**−पु० मृत्यु; यमराजका दंड। **−दोष**−पु० (एनाक्रॉनिज्म) किसी वस्तु, व्यक्ति या घटनाका अपने वास्तविक या ठीक समयसे बहुत पहले अथवा पीछे होना वर्णित किया जाना, बतलाया जाना। **−धर्म**−पु० ऋतुविशेषके उपयुक्त आचरण; मृत्यु। **−निशा**−स्त्री० दीपावलीकी रात; घोर अँधेरी रात। **−नेमि**−पु० रावणका मामा। **−पाश**−पु० यमका फंदा। **−पाशिक**−पु० जल्लाद। **−पुरुष**−पु० कालरूप ईश्वर। **−यापन**−पु० वक्त गुजारना, दिन काटना। **−रात,−राति***−स्त्री० दे० 'कालरात्रि'। **−रात्रि,−रात्री**−स्त्री० अँधेरी, डरावनी रात; प्रलयकी रात; मौतकी रात; दिवालीकी रात; हर आदमीके ७७वें वर्षके ७वें मासकी ७वीं रात; दुर्गाका एक नाम; यमराजकी बहिन। **−वाचक**−वि० जिससे समयका बोध हो। **−सर्प**−पु० काला साँप जो अति विषधर होता है (स्त्री० 'कालसर्पिणी')। **−सूर्य**−पु० प्रलयकालका सूर्य।

कालबूत−पु० मेहराब बनानेके लिए रखा गया कच्चा भराव।

कालर−पु० [अं०] कपड़ेकी इकहरी या दुहरी पट्टी जो कोट-कमीज आदिमें लगाकर या अलगसे गलेमें पहनी जाती है; कुत्तेके गलेमें बाँधनेका चमड़े या धातुका पट्टा; * कल्लर, रेह−'ते नर कधी न नीपजैं ज्यों कालरका खेत'−साखी।

कालांतर−पु० [सं०] दूसरा समय, अन्य काल। **−विष**−पु० वह जंतु जिसके काटनेका जहर कुछ अरसेके बाद चढ़ता है (चूहा, पागल कुत्ता आदि)।

काला−वि० कोयलेके रंगका, स्याह, कृष्णवर्ण; कलुषित; भारी; बहुत। पु० काला साँप; काले रंगका आदमी। **−कलूटा**−वि० बहुत काला। **−चोर**−पु० भारी चोर; कोई निकृष्ट व्यक्ति। **−जीरा**−पु० स्याह रंगका जीरा। **−दाना**−पु० एक लता जिसके बीज रेचक होते हैं। **−नमक**−पु० साँचर नमक। **−नाग**−पु० काला साँप; अति दुष्ट, कुटिल जन (ला०)। **−पान**−पु० ताशमें हुकुमका रंग। **−पानी**−पु० अंडमानका टापू जहाँ पहले आजीवन कैदका दंड पानेवाले अपराधी भेजे जाते थे; आजीवन कैदकी सजा। **−भुजंग**−वि० अति काला। **काली खाँसी**−स्त्री० बच्चोंको होनेवाली कष्टकर खाँसी। **−जीरी**−स्त्री० एक पौधेके बीज जो दवाके काम आते हैं। **−मिट्टी**−स्त्री० चिकनी करैली मिट्टी। **−मिर्च**−स्त्री० गोल स्याह रंगकी मिर्च। **काले कोस,−कोसों**−अ० बहुत दूर। **मु० (अपना) मुँह−करना**−व्यभिचार या कुकर्म करना। मुँह काला करो=हट जाओ।

कालाग्नि−स्त्री० [सं०] दे० 'कालानल'।

कालातिक्रमण−पु० [सं०] समय बीत जाना, देर होना।

कालातिपात−पु० [सं०] समयका नाश; विलंब।

कालातीत−वि० [सं०] जिसका समय बीत गया हो; निर्धारित समय बीत जानेसे जो बेकार हो गया हो (टाइमबार्ड, दस्तावेज आदि)।

कालानल−पु० [सं०] प्रलयकालकी अग्नि।

कालापास−पु० (कैलिपर्स) बेलनों, गोलों आदिका व्यास नापनेका एक आला जो दो चपटे, टेढ़े फौलादके टुकड़ोंका बना होता है−ये एक ओरसे नोकदार व दूसरी ओरसे चौड़े होते हैं।

कालावधि−स्त्री० [सं०] (पीरियड) निर्धारित समयकी सीमा।

कालास्त्र−पु० [सं०] वह बाण जिसके प्रहारसे प्राणांत निश्चित हो।

कालिंग−वि० [सं०] कलिंग देशका। पु० कलिंग देशका निवासी; वहाँका राजा; कलिंग देशका सर्प; हाथी।

कालिंदी−स्त्री० [सं०] (कलिंद पर्वतसे निकली हुई) यमुना नदी; सगरकी माता; कृष्णकी एक पत्नी। **−कर्षण,−भेदन**−पु० बलराम (कहा जाता है कि वे अपने हलसे यमुनाको वृंदावनमें खींच लाये)।

कालि*−अ० कल, बीता हुआ या आनेवाला दिन।

कालिका−स्त्री० [सं०] देवीकी एक मूर्ति, चंडिका; कालिमा; काला रंग; काले रंगकी स्त्री।

कालिख−स्त्री० कलौंछ; स्याही; कलंक (लगना)।

कालिदास−पु० [सं०] रघुवंश, कुमारसंभव आदि काव्योंके रचयिता जो महाराज विक्रमादित्यके सभा-पंडित, संस्कृतके सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

कालिमा(मन्)−स्त्री० [सं०] कालापन; कालिख; कलंक।

कालिय−पु० [सं०] यमुनामें रहनेवाला एक नाग जिसका कृष्णने दमन किया। **−जित्,−मर्दन**−पु० कृष्ण।

काली−स्त्री० [सं०] पार्वती; दुर्गा, कालिका; दश महाविद्याओंमेंसे पहली; अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक; काले रंगकी स्त्री।

क़ालीन−पु० [अ०] बड़ा गलीचा; गलीचा।

कालुष्य−पु० [सं०] मलिनता; अपवित्रता; अस्वच्छता।

कालौंछ−स्त्री० कालिमा; कालिख।

काल्पनिक−वि० [सं०] कल्पनामें स्थित; कल्पित; फर्जी।

काल्ह, काल्हि*−अ० दे० 'कल'।

कावा−पु० [फा०] घोड़ेको वृत्त या दायरेमें चक्कर देना; चक्कर। **−बाज़**−वि० चक्कर लगानेवाला; छापामार। **−बाज़ी**−स्त्री० कावा काटना; दुश्मनपर जब जहाँ मौका मिले, छापा मारते रहना।

कावेरी−स्त्री० [सं०] दक्षिण भारतकी एक नदी; वेश्या।

काव्य−पु० [सं०] वह वाक्यरचना जो रसात्मक हो; कविता। **−लिंग**−पु० एक अर्थालंकार जहाँ किसी कही हुई बातका समर्थन करनेके लिए प्रमाणस्वरूप कोई कारण भी बताया जाय।

काव्यार्थापत्ति−स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ इस प्रकार वर्णन किया जाय कि 'जब हमने वह कर लिया तो यह कौन बड़ी बात है'।

काश−पु० [सं०] काँस; खाँसी। अ० [फा०] ईश्वर करता!

काशिका−स्त्री० [सं०] काशीपुरी; पाणिनीय व्याकरणपर

लिखी एक वृत्ति ।

काशी–स्त्री० [सं०] उत्तर भारतकी एक प्रसिद्ध नगरी जो सप्त मोक्षदा पुरियोंमेंसे एक है, वाराणसी । **–करवट**–पु० [हिं०] काशीके अंतर्गत एक तीर्थस्थान जहाँ पुराने समयमें लोग सद्गतिकी आशासे आरेके नीचे कटकर जान देते थे । **–फल**–पु० कुम्हड़ा ।

काश्त–स्त्री० [फा०] खेती; जोत । **–कार**–पु० खेतिहर । **–कारी**–स्त्री० खेती, किसानी; वह जमीन जिसपर किसीको खेती करनेका अधिकार हो ।

काश्मीर–वि० [सं०] कश्मीरका; कश्मीरमें उत्पन्न । पु० कश्मीर देश; केशर । **–ज**–पु० केसर ।

काश्मीरा–पु० एक ऊनी कपड़ा ।

काश्मीरी–वि० कश्मीरका । पु० कश्मीर-निवासी ।

काष–पु० [सं०] कसौटी; सान ।

कापाय–वि० [सं०] हड़, बहेड़े आदिसे रँगा हुआ; गेरुआ ।

काष्ठ–पु० [सं०] काठ, लकड़ी; ईंधन । **–कीट**–पु०घुन । **–तक्ष,–तक्षक**–पु० बदई । **–भारिक**–पु० लकड़ी ढोनेवाला; लकड़हारा ।

काष्ठा–स्त्री० [सं०] दिशा; सीमा; चरम सीमा ।

काष्ठिक–पु० [सं०] लकड़हारा ।

कास–पु० [सं०] खाँसी; छींक; सहिजनका पेड़; एक घास ।

कासनी–स्त्री० एक पौधा; उसके बीज जो दवाके काम आते हैं; कासनीके फूलकासा हलका नीला रंग ।

कासा–पु० [फा०] प्याला; कटोरा; फकीरोंका भिक्षापात्र ।

कासार–पु० [सं०] तालाव; ताल; झील ।

काह*–सर्व० क्या, क्या बात ।

काहल*– वि० गंदा, पंकिल–'तोहि मथ करिहैं काहल' –दीनद० ।

काहि*–स० किसे; किससे ।

काहिल–वि० [अ०] सुस्त, आलसी, कामचोर ।

काहिली–स्त्री० [अ०] सुस्ती, आलस्य, ढिलाई ।

काहीँ–*अ० को; पास; द्वारा ।

काही–वि० स्याही लिये हुए हरे रंगका, घासके रंगका । पु० गहरा रंग, घासका रंग ।

काहु*–सर्व० किसी ।

काहू–*सर्व० किसी । पु० [फा०] एक पौधा जो दवाके काम आता है ।

काहे*–अ० क्यों, किसलिए ।

किंकर–पु० [सं०] सेवक; टहलू; राक्षसोंकी एक जाति ।

किंकर्तव्यविमूढ–वि० [सं०] जिसकी समझमें न आये कि अव क्या करना चाहिये, भौचक्का ।

किंकिणी–स्त्री० [सं०] करधनी; क्षुद्रघंटिका ।

किंकिनी*–स्त्री० करधनी ।

किंगरी, किंगिरी–स्त्री० छोटा चिकारा ।

किंचन–पु० [सं०] पलाश; असाकल्य, थोड़ी वस्तु ।

किंचित्–वि०, अ० [सं०] कुछ, थोड़ा ।

किंजल, किंजल्क–पु० [सं०] कमलका केसर, पद्मकेसर; नागकेशर ।

किंतु–अ० [सं०] लेकिन, परंतु; बल्कि ।

किंपुरुख*–पु० दे० 'किंपुरुष' ।

किंपुरुष–पु०[सं०]किन्नर;जंबूद्वीपका एक खंड;नीच व्यक्ति ।

किंवदंती–स्त्री० [सं०] जनरव, अफवाह ।

किंवा–अ० [सं०] या, या तो, अथवा ।

किंशुक–पु० [सं०] पलाश, टेसू ।

कि–अ० एक योजक शब्द, जो देखना, कहना आदि क्रियाओंके विभिन्न रूपोंके बाद, संज्ञा वाक्यांश आरंभ होनेके पहले आता है; अथवा; इतनेमें; *क्यों, क्योंकर; क्या ।

किकियाना–अ० क्रि० रोना, चिल्लाना ।

किचकिच–स्त्री० झगड़ा, विवाद; अशांति ।

किचकिचाना–अ० क्रि० दाँतपर दाँत रखकर दबाना, दाँत पीसना ।

किचकिचाहट–स्त्री० किचकिचानेका भाव ।

किचड़ा(रा)ना–अ० क्रि० (आँखमें) कीचड़ भरना ।

किचपिच–स्त्री० भीड़भाड़; फिसलन; गिचपिच । वि० अस्पष्ट; क्रमरहित ।

किचरपिचर–स्त्री०, वि० दे० 'किचपिच' ।

किटकिट–स्त्री० झगड़ा, किचकिच ।

किटकिटाना–अ० क्रि० गुस्सेसे दाँत पीसना; खाते समय दाँतके नीचे कंकड़ी पड़ना ।

किटकिना–पु० ठेकेदारसे लिया हुआ, ठेकेदारकी ओरसे दूसरोंको दिया जानेवाला ठेका; किफायतसारी; थोड़े पैसोंसे काम चलानेका ढंग; चालाकी; सोनारोंका ठप्पा । **–(ने)दार**–पु० ठेकेदारसे ठेका लेनेवाला । **–बाज़**– वि० किफायत, चतुराईसे काम करनेवाला ।

किट्ट, किट्टक–पु० [सं०] तलछटकी तरह बैठा हुआ, जमा हुआ मैल; कीट; धातुका मैल ।

कित*–अ०किधर, किस ओर; कहाँ; तरफ । वि० कितना ।

कितक*–वि० कितना; कहाँ, कितनी दूर '...कहै कितक तव धाम'–चाचा हित० ।

कितना–वि० किस मात्रा या गिनतीका; किस दरजेका; बहुत अधिक; बहुत बड़ा । अ० किस मात्रामें; कहाँतक; बहुत ज्यादा ।

कितने–वि० बहुतेरे, बहुतसे ।

कितव–पु० [सं०] जुआरी; धूर्त; ठग;दुष्ट;सनकी; धतूरा ।

क़िता–पु०–[अ०]टुकड़ा, खंड; एक उर्दू पद्य; दे०'क़ता' ।

किताब–स्त्री० [अ०] लिखी हुई चीज; पोथी; बही । **–ख़ाना**–पु० पुस्तकालय । **–फ़रोश**–पु० पुस्तक-विक्रेता ।

किताबी–वि० किताबसे संबद्ध, पुस्तकीय । **–इल्म**–पु० पुस्तकीय विद्या । **–कीड़ा**–पु० किताबमें लगनेवाला कीड़ा; वह आदमी जो बराबर पुस्तक पढ़ता रहता है ।

कितिक*–वि० कितना; बहुत ।

कितेक*–वि० कितना; बहुत ।

कितेब*–स्त्री० किताब ।

कितै*–अ० कहाँ, किस जगह ।

कितो*–वि०, अ० कितना ।

कित्ति*–स्त्री० दे० 'कीर्त्ति' ।

किधर–अ० किस ओर, कहाँ । **मु०–से चाँद निकला**– किधर भूल पड़े ?

किधौं–अ० या, अथवा; या तो ।

किन–सर्व० 'किस'का बहु० । अ० क्यों न । * पु० चिह्न; घट्ठा; गोखरू ।

किनका–पु० कण; टूटा हुआ दाना ।

किनहा†–वि० जिसमें कीड़े पड़ गये हों (फल) ।

किनारदार–वि० जिसमें किनारा हो ।

किनारा–पु० [फ़ा०] तट, तीर; हाशिया; गोट; छोर; बगल, पहलू । **–कशी**–स्त्री० किनारा खींचना; किनारे रहना । **मु०–करना,–खींचना**–अलग होना, दूर होना ।

किनारी–स्त्री० [फ़ा०] पतला गोटा जो दुपट्टों आदिके किनारे लगा होता या लगाया जाता है ।

किनारे–अं० किनारेपर; अलग । **मु०–लगना**–पार पहुँचना; काम समाप्त होना । **–होना**–दूर हटना; छुट्टी पाना ।

किनिका, किनुका*–पु० 'किनका' ।

किन्नर–पु० [सं०] देवताओंकी एक योनि जिनका मुँह घोड़ेके जैसा होना माना जाता है, किंपुरुष ।

किन्नरी–स्त्री० [सं०] किन्नर स्त्री; एक तरहका तंबूरा, किंगरी ।

किफ़ायत–स्त्री० [अ०] काफी, पूरा होना; कमखर्ची; बचत; थोड़ा मूल्य । **–शिआर**–वि० किफायतसे काम करनेवाला; थोड़े खर्चमें काम चलानेवाला । **मु०–का**–कम दामका, सस्ता ।

किफ़ायती–वि० [अ०] किफायत करनेवाला ।

किबला–पु० [अ०] काबा, वह स्थान जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं; पश्चिम दिशा; पूज्य पुरुष; बाप-दादा आदिका संबोधन । **–नुमा**–पु० एक यंत्र जिसकी सुई सदा पच्छिमकी ओर रहती है ।

किमरिक(ख)–पु० एक चिकना सफेद कपड़ा ।

किमाछ–पु० केवाँच ।

किमाम–पु० दे० 'क़वाम' ।

किमि*–अ० कैसे ।

किम्–सर्व० [सं०] कौन, क्या । अ० क्यों, कैसे; कहाँसे ।

किम्मत*–स्त्री० कौशल; बहादुरी; दे० 'क़ीमत' ।

कियत्–वि० [सं०] कितना ।

कियारी–स्त्री० दे० 'क्यारी' ।

किरका–पु० कंकड़, नन्हाँ टुकड़ा ।

किरकिटी–स्त्री० दे० किरकिरी' ।

किरकिरा–वि० कँकरीला । पु० लोहारोंका एक औजार । **मु०–होना**–आनंदमें विघ्न पड़ना ।

किरकिराना–अ० क्रि० दाँत या आँखमें किरकिरी पड़नेसे गड़ना, कष्ट होना ।

किरकिराहट–स्त्री० किरकिरी पड़नेका अनुभव या कष्ट ।

किरकिरी–स्त्री० रेत या किसी कड़ी चीजका छोटा कण; छोटी कँकड़ी; अपमान, हेठी ।

किरकिल–पु० गिरगिट । *स्त्री० वह शरीरस्थ वायु जिससे छींक आती है ।

किरकिला–पु० दे० 'किलकिला' ।

किरच–स्त्री० दे० 'किरिच'; नुकीला रवा ।

किरण–स्त्री० [सं०] ज्योतिसे प्रवाहरूपमें निकलनेवाली रेखा, अंशु, रश्मि । **–पति,–माली(लिन्)** पु० सूर्य ।

किरतम*–पु० मायिक प्रपंच–'पूरन ब्रह्म कहाँते प्रकटे किरतम किन उपराजा'–बीजक ।

किरन–स्त्री० दे० 'किरण' । **मु०–फूटना**–सूर्योदय होना ।

किरपा*–स्त्री० दे० 'कृपा' ।

किरपान*–पु० दे० 'कृपाण' ।

किरम–पु० कृमि, कीड़ा ।

किरमाल*–पु० तलवार ।

किरमिच–पु० एक तरहका चिकना मोटा कपड़ा जिसके परदे, जूते आदि बनते हैं ।

किरमिज–पु० एक तरहका लाल रंग; किरिमदानेका चूर्ण; किरमिजी रंगका घोड़ा ।

किरमिजी–वि० किरमिज या किरिमदानेके रंगका ।

किरराना–अ० क्रि० दाँत पीसना; किर्रकिर्रकी आवाज करना ।

किरवान, किरवार*–पु० कृपाण, तलवार ।

किरवारा*–पु० अमलतास ।

किरसुन*–पु० दे० 'कृष्ण' ।

किराँची–स्त्री० असबाब ढोनेवाली गाड़ी; भूसा आदि ढोनेवाली बैलगाड़ी ।

किरात–पु०[सं०] एक जंगली जाति; साईस; बौना; शिव ।

क़िरात–स्त्री० एक वजन जो जवाहरात तौलनेके काम आता है (लगभग ४ जौके बराबर) ।

किराती–स्त्री० [सं०] किरात जातिकी स्त्री; किराती-वेशधारिणी पार्वती; स्वर्गंगा ।

किराना–पु० पंसारीकी दुकानसे मिलनेवाली चीजें, मिर्च-मसाला आदि ।

किरानी–पु० अंग्रेजी दफ्तरका क्लर्क; यूरेशियन ।

किराया–पु० दूसरेकी चीज काममें लानेका बदला, भाड़ा । **–(ये) दार**–पु० कोई चीज, खासकर मकान किरायेपर लेनेवाला । **मु०–उतारना**–भाड़ा वसूल करना ।

किरावल–पु० सेनाका वह भाग जो लड़ाईका मैदान साफ करनेके लिए आगे जाता है; बंदूकसे शिकार करनेवाला ।

किरासन–पु० मिट्टीका तेल, 'केरोसिन' ।

किरिच–स्त्री० नुकीला टुकड़ा या रवा; नोंककी ओरसे भोंकी जानेवाली सीधी तलवार ।

किरिया*–स्त्री० शपथ; कर्तव्य; मृतककर्म ।

किरीट–पु० [सं०] एक शिरोभूषण जिसे राजा या राजकुमार धारण करते थे, मुकुट; एक वर्णवृत्त । **–धारी (रिन्)**–पु० राजा । **–माली (लिन्)**–पु० अर्जुन ।

किरीटी (टिन्)–वि० [सं०] किरीटधारण करनेवाला । इंद्र; अर्जुन ।

किरीरा*–स्त्री० दे० 'क्रीड़ा' ।

किरोध*–पु० दे० 'क्रोध' ।

किरोलना–स० क्रि० खुरचना ।

किरौना†–पु० कीड़ा ।

किर्च*–स्त्री० दे० 'किरिच' ।

कितंनिया*–पु० कीर्तन करनेवाला ।

किल–अ० [सं०] निश्चय ही, सचमुच । **–किंचित्**–पु० संयोग श्रृंगारका एक हाव जिसमें नायिका एक साथ कई

भाव प्रकट करती है ।

किलक-स्त्री० किलकारी; एक तरहका नरकट ।

किलकन-स्त्री० किलकनेकी क्रिया ।

किलकना-अ०क्रि० बच्चों-बंदरों आदिका किलकारी मारना।

किलकार(री)-स्त्री० बच्चों, बंदरों आदिके मुखसे अधिक हर्षकी अवस्थामें निकलनेवाली अस्पष्ट ध्वनि या चीख ।

किलकारना-अ० क्रि० जोरसे आवाज करना ।

किलकिल-स्त्री० झगड़ा, किचकिच । पु० [सं०] हर्षसूचक ध्वनि, किलकारी; शिव ।

किलकिला-स्त्री० [सं०] हर्षसूचक ध्वनि, किलकारी; [हिं०] मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया । पु० समुद्रका वह भाग जहाँ लहरें तेज आवाज करती हों; एक समुद्र ।

किलकिलाना-अ० क्रि० किलकारी मारना, हर्ष-ध्वनि करना ।

किलकिलाहट-स्त्री० किलकारी ।

किलना-अ० क्रि० कीला जाना; वशमें किया जाना ।

किलनी-स्त्री० एक कीड़ा जो कुत्तों, गाय-बैलों आदिकी देहसे चिमटा रहता है ।

किलबिलाना-अ० क्रि० चंचल होना; बहुतसे कीड़ों आदिका छोटीसी जगहमें एक साथ हिलना-डोलना ।

किलवाना-स०क्रि० कील ठुकवाना,कीलनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; मंत्रादि द्वारा प्रेतादिके विघ्नको बंद कराना ।

किलवारी-स्त्री० छोटी नावों, डोंगियों आदिमें पतवारका काम देनेवाला छोटा डाँड़ा ।

किलविष*-पु० दे० 'किल्विष' ।

किलविषी*-वि० रोगी; पापी; दोषी ।

किलहँटा-पु० सिरोही नामक पक्षी ।

क़िला-पु० [अ०] वह संगीन और लंबी-चौड़ी इमारत जिसके भीतरसे रक्षात्मक युद्ध किया जा सके, गढ़, दुर्ग; विशाल और मजबूत बनावटवाली इमारत; शतरंजमें बादशाहके लिए शहसे सुरक्षित स्थान । **-(ले) दार**-पु० किलेमें रहनेवाली सेनाका प्रधान नायक, दुर्गरक्षक । **-बंदी**-स्त्री० किसी स्थानको चहारदीवारी, खाई आदिसे सुरक्षित करना ।

किलावा-पु० हाथीके गलेमें लपेटी हुई रस्सी जिसपर महावत पैर रखता है; सोनारोंका एक औजार ।

किलिक-पु० दे० 'किल्क' ।

किलोल†-पु० दे० 'कल्लोल' ।

किल्क-पु० [फा०] एक नरकट जिसकी कलम बनती है ।

क़िल्लत-स्त्री० [अ०] कमी, तंगी; दुर्लभता ।

किल्ला-पु० बड़ी मेख, खूँटा; चक्की या जाँतेके बीचोबीच गड़ी मेख । **मु०-गाड़कर बैठना**-अटल होकर बैठना ।

किल्लाना*-अ० क्रि० कल्लोल करना; किलकिलाना ।

किल्ली-स्त्री० खूँटी; सिटकिनी; कलकी मुठिया; पेंच; चाभी । **मु०-ऐंठना,-घुमाना**-पेंच घुमाना; किसीका मत फेर देनेकी युक्ति करना; जोड़-तोड़ लगाना । **(किसीकी)-हाथमें होना**-किसीका किसीके वस, काबूमें होना; किसीसे मनचाहा काम करा लेनेकी युक्ति मालूम होना ।

किल्विष-पु० [सं०] पाप; दोष; रोग ।

किवाड़-पु० लकड़ी, शीशे आदिका पल्ला जिससे दरवाजा बंद किया जाता है, कपाट । **मु०-देना**-दरवाजा बंद करना ।

किशमिश-स्त्री० सुखाया हुआ छोटा अंगूर ।

किशमिशी-वि० किशमिशका; किशमिशके रंगका । पु० एक तरहका रंग । **-अंगूर**-पु० छोटा अंगूर ।

किशल, किशलय-पु० [सं०] कोंपल, नवपल्लव ।

किशोर-पु० [सं०] ११से १५तककी उम्रवाला लड़का; बेटा ।

किशोरक-पु० [सं०] बच्चा ।

किश्त-स्त्री० [फा०] खेती, कृषिकर्म; शतरंजमें बादशाहका विपक्षीके किसी मुहरेकी जदमें आना, शह (देना,लगना)।

किश्ती-स्त्री० [फा०] नाव, डोंगी; लकड़ी या धातुकी बनी लंबी तश्तरी । **-नुमा**-वि० नावकी शकलका ।

किष्किंध-पु० [सं०] मैसूरके आसपासका देश या पर्वत ।

किष्किंधा, किष्किंध्या-स्त्री० [सं०] किष्किंध देशकी-वालि-सुग्रीवकी राजधानी; किष्किंध पर्वतकी एक गुफा ।

किसनई†-स्त्री० किसानी, कृषिकर्म ।

किसब*-पु० दे० 'कसब' ।

किसबत-स्त्री० [फा०] नाईकी पेटी या थैला ।

किसमिस-स्त्री० दे० 'किशमिश' ।

किसमी*-पु० मजदूर ।

किसल, किसलय-पु० [सं०] दे० 'किशल', 'किशलय' ।

किसान-पु० खेतिहर, काश्तकार ।

किसानी-स्त्री० किसानका काम, खेती ।

किसिम-स्त्री० दे० 'किस्म' ।

किसी-सर्व० वि० 'कोई'का विभक्तिके पूर्वका रूप ।

किसू*-सर्व० दे० 'किसी' ।

क़िस्त-स्त्री०[अ०]अंश,भाग;देन या लगान, मालगुजारीका वह भाग जो नियत समयपर दिया जाय या देय हो;देन, मालगुजारी आदिके अंशविशेषके चुकानेका नियत समय । **-ख़िलाफ़ी**-स्त्री० किस्तका नियत समयपर अदा न होना । **-बंदी**-स्त्री० किस्त बाँधना, देनको कई हिस्सोंमें बाँटकर हर एकके चुकाये जानेका समय बाँध देना ।

किस्म-स्त्री० [अ०] प्रकार, भेद, तरह ।

क़िस्मत-स्त्री० [अ०] अंश, भाग; भाग्य, तकदीर; कमिश्नरी, विभाग । **-आजमाई**-स्त्री० भाग्यकी परीक्षा । **-वर**-वि० भाग्यवान्, खुशनसीब । **मु०-आजमाना**-भाग्यके भरोसे, सफलताका निश्चय न होते हुए भी काम करना । **-का धनी**-भाग्यवान्; बड़े भाग्यवाला । **-का फेर**-बदकिस्मती; जमानेका उलट-फेर ।**-का लिखा**-जो भाग्यमें बदा हो, नियति ।**-चमकना,-जागना**-भाग्य खुलना; बढ़तीके दिन आना । **-पलटना**-स्थिति बदल जाना, दुःखसे सुख या सुखसे दुःखके दिन आना । **-फूटना**-भाग्यका मंद पड़ना ।**-लड़ना**-भाग्यका अनुकूल होना ।

क़िस्सा-पु० [अ०] कहानी, वृत्तांत; जिक्र, चर्चा; झगड़ा, तकरार । **मु०-ख़त्म,-तमाम,-पाक होना**-झगड़ा खत्म होना; मिटना, मरना ।

की-*अ० या, अथवा; क्या ।

कीक-स्त्री० चीख, चीत्कार ।

कीकट—पु० [सं०] मगध देश; घोड़ा।

कीकना—अ० क्रि० 'की-की'की आवाजके साथ चीखना।

कीकर—पु० बबूलका पेड़।

कीच—स्त्री० पंक, कीचड़।

कीचक—पु० [सं०] पोला बाँस।

कीचड़—पु० पैरोंमें चिपकनेवाली गीली मिट्टी, पंक; आँखसे निकलनेवाला मैल।

कीट—पु० जमा हुआ मैल। [सं०] कीड़ा; **—नाशक**—पु० (इनसेक्टिसाइड) कीटाणुओंको नष्ट करनेवाली दवा। **—विज्ञान**—पु० (एंटोमॉलॉजी) कीड़े-मकोड़ोंकी उत्पत्ति, स्वरूप, विशेषताओं आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान।

कीटाणु—पु० [सं०] वे छोटे-छोटे कीड़े जो अनेक रोगोंके मूल कारण माने जाते हैं।

कीड़ा—पु० रेंगने या उड़नेवाले क्षुद्र जंतु, कीट (भिड़, गुबरैला, खटमल आदि); किसी चीजके सड़नेसे पैदा होनेवाले क्षुद्र कीट, कृमि; साँप; थोड़े दिनका बच्चा। **मु०—पड़ना**—(किसी चीजमें) सड़नेसे कीड़ा पैदा हो जाना। **—लगना**—कीड़ोंका किसी चीज (कपड़ा, किताब आदि)को खा जाना या उसमें घर करना।

कीड़ी—स्त्री० छोटा और बारीक कीड़ा; चींटी।

कीदउँ*—अ० दे० 'किधौं'।

कीनख़ाब—पु० दे० 'कमख़्वाब'।

कीनना†—स० क्रि० खरीदना, क्रय करना।

कीना—पु० [फा०] द्वेष, वैर,।

कीप—स्त्री० अर्क, तेल आदिको आसानीसे बोतलमें ढालनेके लिए काममें लायी जानेवाली धातु आदिकी चोंगी। **—स्तंभ**—पु० (फनेल स्टैंड) वह स्तंभ जैसा आला जिसमें कीप फँसायी जाती है।

क़ीमत—स्त्री० [अ०] मूल्य, दाम; गुण; योग्यता।

क़ीमती—वि० [अ०] बहुमूल्य, दामी।

क़ीमा—पु० [अ०] छोटे-छोटे टुकड़ोंमें कटा हुआ मांस।

कीमिया—स्त्री० [अ०] रसायन-विद्या; सोने-चाँदी बनानेकी विद्या; अकसीर रसायन; कार्य-साधक युक्ति। **—गर,—साज़**—पु० रसायनविद्, सोना-चाँदी बनानेवाला; कारंधमी। **—गरी**—स्त्री० सोना-चाँदी बनाना।

कीर—पु०[सं०] तोता; मांस; कश्मीर देश; * व्याधा; सर्प।

कीरति*—स्त्री० दे० 'कीर्ति'।

कीरी—स्त्री० दे० 'कीड़ी'।

कीर्ण—वि० [सं०] बिखरा हुआ; ढका हुआ; धृत।

कीर्तन—पु० [सं०] कीर्ति-वर्णन, यशोगान; राम, कृष्ण आदिकी कथा गाते-बजाते हुए कहना। **—कार**—पु० कीर्तन करनेवाला।

कीर्तनिया—पु० कीर्तन करनेवाला।

कीर्ति—स्त्री० [सं०] यश; ख्याति, नामवरी; दीप्ति। **—शाली (लिन्)**—वि० [सं०] यशस्वी, नामवर। **—शेष**—वि० जिसकी कीर्तिमात्र इस दुनियामें रह गयी हो, नामशेष, मृत। **—स्तंभ**—पु० (किसीके) स्मारकरूपमें बनाया गया स्तंभ।

कीर्तिमान् (मत्)—वि० [सं०] दे० 'कीर्तिशाली'।

कील—स्त्री० छायाघड़ीका काँटा; नाकमें पहननेका एक गहना, लौंग; मुँहासे, फुंसी आदिको दबानेसे निकलनेवाली कड़ी पीब; चक्कीके बीचोबीच गड़ी खूँटी; खूँटी; वह खूँटी जिसपर चाक घूमता है। **—काँटा**—पु० औजार, साज समान, हरबा-हथियार।

कीलक—पु० [सं०] खूँटी; यंत्रका मध्य भाग; अन्य मंत्रका प्रभाव नष्ट कर देनेवाला मंत्र।

कीलना—स० क्रि० कील ठोंकना, खूँटी.गाड़ना; तोपकी नलीमें सामनेकी ओरसे लकड़ी ठोंक देना; बाँधना; मंत्रको प्रभावहीन कर देना; साँपको मंत्र-प्रभावसे हिलने-डोलनेसे असमर्थ कर देना; वशमें करना।

कीला—पु० बड़ी खूँटी; जाँतेका खूँटा; चाककी खूँटी; मूढगर्भ।

कीलाल—पु० [सं०] देवताओंका अमृत जैसा एक पेय; मधु; पशु; जल; सीना; रुधिर।

कीलित—वि० [सं] कीला हुआ; बद्ध; निरुद्ध।

कीली—स्त्री० खूँटी; धुरा; कुश्तीका एक दाँव।

कीश—पु० [सं०] बंदर। **—केतु,—ध्वज**—पु० अर्जुन।

कीस*—पु० बंदर।

कीसा—पु० [फा०] जेब, खरीता, थैली।

कुँअर—पु० कुमार, लड़का; राजकुमार। **—विरास***—पु० दे० 'कुँअरविलास'। **—विलास**—पु० एक तरहका बढ़िया धान या चावल।

कुँअरि*—स्त्री० कुमारी; राजकुमारी।

कुँअरेटा*—पु० छोटा बालक।

कुँआ—पु० दे० 'कुआँ'।

कुँआरा—पु० अविवाहित व्यक्ति।

कुँआरी—स्त्री० कुमारी, अविवाहिता कन्या।

कुँइयाँ†—स्त्री० छोटा कुँआ।

कुँई—स्त्री० दे० 'कुई'।

कुंकुम—पु० [सं०] केसर; रोली; कुंकुमा।

कुंकुमा—पु० लाखका पोला गोला जिसमें गुलाल भरकर मारते हैं।

कुंचन—पु० [सं०] सिकुड़ना, सिमटना; टेढ़ा होना।

कुंचित—वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ; टेढ़ा, घुँघराले।

कुंची*—स्त्री० कुंजी।

कुंज—पु० [सं०] लता आदिसे घिरा या ढका हुआ स्थान; हाथीका दाँत; दाँत; नीचेका जबड़ा; गुफा। **—कुटीर**—पु० लतागृह। **—गली**—स्त्री० [हि०] लताओंसे ढका हुआ पथ; तंग गली।

कुंजक*—पु० अंतःपुरमें जा सकनेवाला डेवढ़ीदार,कंचुकी।

कुँजड़ा—पु० एक जाति जो तरकारी बेचनेका धंधा करती है।

कुंजर—पु० [सं०] हाथी; पीपल; बाल; आठकी संख्या। वि० श्रेष्ठ (कपिकुंजर)।

कुंजराराति, कुंजरारि—पु० [सं०] सिंह; शरभ।

कुंजरी—स्त्री० [सं०] हथिनी।

कुंजल—पु० [सं०] काँजी; * हाथी।

कुंजित*—वि० कूजित।

कुंजी—स्त्री० ताली; अर्थ खोलनेवाली पुस्तक।

कुंठ—वि० [सं०] भोथरा; मंदबुद्धि; सुस्त; कमजोर।

कुंठित—वि० [सं०] कुंद या भोथरा किया हुआ; मूर्ख।

कुंड—पु० [सं०] पानी रखनेका कुंडा; मटका; छोटा

तालाब; हौज; हवनकी अग्नि या जल-संचयके लिए खोदा हुआ गढ़ा; बटलोई; ऐसी स्त्रीका जारज पुत्र जिसका पति जीवित हो; * लोहेका टोप; हौदा।

कुँडरा–पु० गेंडुरी; कुंडा।

कुंडल–पु० [सं०] कानमें पहननेका बाला, बाली; कड़ा या चूड़ा; गोल बनावटका वह गहना जिसे कनफटे कानोंमें पहनते हैं; रस्सी, तार या साँपकी फेंटी; एक छंद।

कुंडलाकार–वि० [सं०] कुंडलके आकारका, गोल।

कुंडलिका–स्त्री० [सं०] मंडलाकार रेखा; कुंडलिया छंद; जलेबी।

कुंडलित–वि० [सं०] जो कुंडली मारे हुए हो, चक्करके रूपमें लपेटा हुआ।

कुंडलिनी–स्त्री० [सं०] दुर्गा या शक्तिका एक रूप; मूलाधार चक्रमें स्थित एक शक्ति जिसे तंत्र और हठयोगका साधक जगाकर ब्रह्मरंध्रमें लगानेका यत्न करता है; जलेबी।

कुंडलिया–स्त्री० एक मात्रिक छंद।

कुंडली–स्त्री० [सं०] जन्मकुंडली; कुंडलिनी; जलेबी, साँपकी फेंटी; इँडुरी।

कुंडली(लिन्)–वि० [सं०] कुंडलधारी; जो कुंडल या फेंटी मारे हुए हो; लपेटा हुआ। पु० साँप; मोर; वरुण।

कुंडा–पु० नाद; वड़ा मटका; कोंढ़ा।

कुंडी–स्त्री० पत्थरका वना गोला, गहरा पात्र जिसमें भांग घोंटी जाती है, पथरी; एक तरहका शिरस्त्राण; दरवाजेकी ज़ंजीर या सांकल। **मु०–खटखटाना**–दरवाजा खुलवानेके लिए सांकलको हिलाना।।

कुंत–पु० [सं०] कौडिल्ला; भाला; क्रोध; जूँ।

कुंतल–पु० [सं०] सिरके वाल; प्याला; हल; वहुरुपिया।

कुंता*–स्त्री० दे० 'कुंती'।

कुंती–स्त्री०बरछी; एक तरहकी मधुमक्खी; [सं०] युधिष्ठिर, भीम और अर्जुनकी माता, पृथा।

कुंद–पु० [सं०] सफेद फूलवाला एक पौधा; कनेरका पेड़; कमल; विष्णु; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; ९की संख्या; खराद। **–कर**–पु० खरादनेवाला।

कुंद–वि० [फा०] भोथरा, गुठला; मंद। **–जेहन**–वि० मंदबुद्धि, मोटी अकलका।

कुंदन–पु०खालिस और दमकता हुआ सोना; शुद्ध सोनेका पत्तर। वि० तपे हुए सोने जैसा शुद्ध और निर्मल; कांतियुक्त; स्वस्थ; सुंदर। **–साज़**–पु० कुंदनका पत्तर बनानेवाला, जड़िया।

कुँदरू–पु० एक बेल और उसका फल।

कुंदा–पु० [फा०] लकड़ीका बड़ा और मोटा टुकड़ा; वह मोटी और चपटी लकड़ी जिसपर रखकर कुंदीगर कपड़ेपर कुंदी करता और बकरकसाब मांस काटता है; बंदूकका काठका बना वह भाग जिसमें घोड़ा और नली जड़ी होती है, दस्ता; काठकी बेड़ी; काठ; चिड़ियाका डैना; कुश्तीका एक पेंच; खोया।

कुंदी–स्त्री० कपड़ेकी सिलवट दूर करने और चमक लानेके लिए उसे मुँगरीसे पीटना। **–गर**–पु० कुंदी करनेवाला। **मु०–करना**–खूब पीटना, पूरी मरम्मत कर देना।

कुँदेरना–स० क्रि० खरादना; छीलना।

कुँदेरा–पु० दे० 'कुनेरा'।

कुंभ–पु० [सं०] मिट्टीका घड़ा; कलस; हाथीके सिरका कुछ उभरा हुआ भाग जो उसके दोनों ओर होता है; एक राशि; अनाजका एक मान; एक पुण्यजनक पर्व जो हर बारहवें बरस पड़ता है। **–कर्ण**–पु० एक विशालकाय राक्षस जो रावणका छोटा भाई था। **–कार**–पु० कुम्हार; एक संकर जाति; सांप; उल्लू। **–ज,–जन्मा(न्मन्),–जात,–योनि**–पु० अगस्त्य मुनि; द्रोण।

कुंभी–स्त्री० [सं०] छोटा घड़ा; हंडी; जलकुंभी। **–पाक**–पु० एक नरक; हंडीमें पकायी हुई चीज।

कुंभी(भिन्)–पु० [सं०] हाथी; मगर; कुंभीपाक नरक।

कुंभीपुर*–पु० हस्तिनापुर।

कुंभीर–पु० [सं०] घड़ियाल; एक छोटा कीड़ा।

कुँवर–पु० लड़का; राजकुमार।

कुँवरि(री)–स्त्री० कुमारी; राजकन्या।

कुँवरेटा–पु० छोटा लड़का।

कुँवाँ–पु० दे० 'कुआँ'।

कुँवारा–पु० दे० 'कुँआरा'।

कुँहकुँह–पु० दे० 'कुमकुम'।

कु–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; त्रिभुजका आधार। **–ज**–पु० मंगल ग्रह; वृक्ष; नरकासुर। वि० लाल। **–देव**–पु० भूदेव, ब्राह्मण। **–धर,–भृत्**–पु० पहाड़; शेपनाग। **–सुत**–पु० मंगल ग्रह।

कु–अ० [सं०] हीनता, नीचता, दुष्टता, अल्पता, कुत्सा आदिके अर्थ देता है–जैसे कुकर्म, कुदृष्टि, कुपथ्य, कुमार्ग आदि। स्वरादि शब्दोंके पहले इसका रूप कत्, कव और का हो जाता है–जैसे कदाचार, कवोष्ण, कोष्ण, आदि। **–कर्म (र्मन्),–कृत्य**–पु० बुरा काम, पापकर्म। **–कर्मी (र्मिन्)**–वि० कुकर्म करनेवाला। **–खेत***–पु० बुरी जगह, कुठांव। **–ख्यात**–वि० बदनाम। **–गति**–स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा। **–गहनि***–स्त्री० हठ, दुराग्रह। **–घात**–पु० [हिं०] कपटभरी चाल, छल-छंद; कुठांव। **–चक्र**–पु० किसीको विपद्में फँसाने, नुकसान पहुँचानेकी चाल, साजिश, षड्यंत्र। **–चक्री (क्रिन्)**–वि० साजिश, षड्यंत्र करनेवाला **–चाल**–स्त्री० [हिं०] दुराचार, दुष्टता; खोटाई। **–चालक**–वि० (बैड कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका परिचालन सुगमतासे न हो सके, कुसंवाहक। **–चाली**–वि० [हिं०] दुराचारी, दुष्ट, खोटा। **–चिल*,–चील*,–चीला**–वि० दे० 'कुचैला'। **–चेल,–चैल**–वि० जिसके कपड़े बहुत मैले या फटे हों। पु० मलिन वस्त्र। **–चेष्टा**–स्त्री० कुत्सित चेष्टा। **–चैन***–स्त्री० बेचैनी। **–चैला**–वि० [हिं०] मैले कपड़ेवाला, मलिन। **–जंत्र***–पु० टोना-टोटका। **–जन्मा (न्मन्)**–पु० नीच कुल, जातिमें उत्पन्न। **–जस***–पु० अपयश; बदनामी। **–जाति**–स्त्री० नीच जाति। वि० हीन जातिवाला; जातिच्युत। **–जोग***–पु० कुसंग; प्रतिकूल अवसर। **–टेक**–स्त्री० [हिं०] अनुचित हठ। **–टेव**–स्त्री० [हिं०] बुरी बान, लत। **–ठाँउ*–ठाँय,–ठाँव**–पु०, स्त्री० [हिं०] बुरी जगह; बेमौका। **–ठाट**–पु० [हिं०] बुरे,

किसीकी बुराई करनेवाले कामका आयोजन, कुचक्र। **–ठाहर,–ठौर**–पु० [हिं०] दे० 'कुठाँव'। **–डौल**–वि० [हिं०] बेडौल, भद्दा, कुरूप। **–ढंग**–पु० [हिं०] बुरा ढंग, चाल। वि० बेढंगा। **–ढंगा**–वि० [हिं०] बेढंगा; बेशऊर। **–ढंगी**–वि० [हिं०] कुपथगामी। **–तर्क**–पु० दूषित, असंगत तर्क, वितंडा। **–तर्की(र्किन्)**–वि० कुतर्क करनेवाला। **–दर्शन**–वि० कुरूप, बदशक्ल। **–दाँव**–पु० [हिं०] कुघात; विश्वासघात; कुठौर। **–दाई***–वि० [हिं०] कुघात करनेवाला। **–दाउ,–दाय***–पु० दे० 'कुदाँव'। **–दिन**–पु० दुर्दिन; विपत्तिके दिन। **–दिष्ट***–स्त्री० दे० 'कुदृष्टि'। **–दृष्टि**–स्त्री० बुरी, खोटी निगाह; पाप-दृष्टि; अशुभ दृष्टि। **–देव**–पु० दैत्य; राक्षस। **–देश**–पु० बुरा देश, स्थान। **–धातु**–स्त्री० निकृष्ट धातु, लोहा। **–नाम***–पु० बदनामी। **–नामा (मन्)**–वि० जिसका नाम सबेरे लेनेसे अमंगलकी आशंका की जाय। पु० अति कृपण व्यक्ति। **–पंथ**–पु० [हिं०] दे० 'कुपथ'। **–पंथी**–वि० [हिं०] कुचाली, कुमार्गी। **–पढ़**–वि० [हिं०] अनपढ़, मूर्ख। **–पथ**–पु० अधर्म, अनीतिका रास्ता, कुमार्ग; *कुपथ्य। **–० गामी (मिन्)**–वि० बुरे आचरणवाला, कुचाली। **–पथ्य**–वि० अयुक्त, अस्वास्थ्यकर। पु० अयुक्त, अस्वास्थ्यकर आहार-विहार, बदपरहेजी। **–पाठ**–पु० बुरी सलाह, कुमंत्रणा। **–पात्र**–वि० (किसी वस्तुका) अनधिकारी, अयोग्य। **–पुत्र**–पु० नालायक बेटा, कपूत। **–पोषण**–पु० (मालन्यूट्रिशन) उत्तम पोषणका अभाव वा कमी, न्यूनपोषण। **–प्रबंध**–पु० बुरा, सदोष प्रबंध, बदइंतजामी। **–बत***–स्त्री० बुरी बात; बुराई; कुचाल। **–बाक***–पु० दे० 'कुवचन'। **–बानि***–स्त्री० बुरी आदत, टेव। **–बानी***–स्त्री० बुरा वाणिज्य। **–बुद्धि**–स्त्री० दुर्बुद्धि; नासमझी। वि० जिसकी अकल ठीक न हो, नासमझ। **–बेला**–स्त्री० [हिं०] अतिकाल; कुसमय। **–बोल**–[हिं०] पु० कटु, कठोर या अमंगल वचन। **–बोलनी***–वि० स्त्री० कुभाषिणी, बुरे बोल बोलनेवाली। **–भाव**–पु० बुरा भाव, द्वेषभाव। **–मंत्र**–पु० बुरी सलाह, कुपाठ। **–मति**–स्त्री० दुर्बुद्धि; अपनी बुराई करनेवाली बुद्धि। **–मारग***–पु० दे० 'कुमार्ग'। **–मार्ग**–पु० कुपथ, बुरा रास्ता। **–०गामी (मिन्),–मार्गी (र्गिन्)**–वि० अधर्म, अनीतिकी राहपर जानेवाला, कुचाली। **–योग**–पु० अशुभ योग; अनिष्ट संयोग। **–राय***–स्त्री० दे० 'कुराह'। **–राह**–स्त्री० [हिं०] कुमार्ग, ऊबड़-खाबड़ रास्ता। **–राही**–वि० [हिं०] कुपथगामी। **–रीति**–स्त्री० बुरा ढंग; निंदनीय प्रथा। **–रुख**–वि० [हिं०] जिसका रुख खराब हो, नाराज। **–रूप**–वि० भद्दी, बेढंगी शकलवाला। **–रोग**–पु० कठिन, दुस्साध्य रोग। **–लक्षण**–पु० बुरा लक्षण, अनिष्टसूचक चिह्न। वि० बुरे लक्षणवाला। **–लक्षणी**–वि० स्त्री० बुरे, अशुभसूचक लक्षणवाली। स्त्री० बुरे लक्षणवाली स्त्री। **–लच्छन***–वि०, पु० दे० 'कुलक्षण'। **–लच्छनी**–वि० स्त्री० [हिं०] दे० 'कुलक्षणी'। **–वचन**, **–वाक्य**–पु० दुर्वचन, गाली। **–वाच्य**–वि० न कहने योग्य। पु० गाली, दुर्वचन। **–वासना**–स्त्री० पापमय वासना। **–विचार**–पु० बुरा, दूषित विचार। **–विचारी (रिन्)**–वि० बुरे विचारवाला। **–वेश**–पु० अभद्र वेश। **–वैद्य**–पु० अशास्त्रीय ढंगसे चिकित्सा करनेवाला, अताई। **–शासन**–पु० बुरा राज्य-प्रबंध, कुराज्य। **–संग**–पु०, **–संगति**–स्त्री० बुरी सोहबत। **–संस्कार**–पु० चित्तपर पड़ा हुआ बुरा असर; चित्तमें जमी हुई कुधारणा। **–सगुन***–पु० अपशकुन। **–समय**–पु० बुरा समय। **–साइत**–स्त्री० [हिं०] कुसमय; बुरा मुहूर्त। **–साखी***–पु० बुरा पेड़, कुवृक्ष। **–सूत***–पु० बुरा सूत्र; बुरा प्रबंध।

कुआँ–पु० भूगर्भस्थ जल या तेल निकालनेके लिए खोदा गया गहरा और साधारणतः गोल (कच्चा या पक्का) गढ़ा, कूप। मु० **–खोदना**–किसीकी हानि, बुराई करनेका उपाय करना; रोजीके लिए मेहनत करना। **कुएँकी मिट्टी कुएँमें लगना**–जहाँकी कमाई वहीं खर्च हो जाना। **–झँकाना**–परेशान करना; तलाशमें दौड़ाना। **–झाँकना**–किसी चीजकी कोशिशमें बहुत जगह भटकना, बहुत हैरान होना। **–परसे प्यासे आना**–कार्यसिद्धिकी जगहसे निराश लौटना। **–में गिरना**–जान-बूझकर विपद्‌में फँसना। **–में डालना,–में ढकेलना**–लड़कीको बुरे घरमें डाल देना, उसकी जिंदगी बर्बाद कर देना।

कुआर–पु० आश्विन मास।

कुइयाँ–स्त्री० छोटा कुआँ।

कुईं–स्त्री० कमल जैसा एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते और रातमें खिलते हैं, कुमुद।

कुकटी–स्त्री० एक तरहकी कपास, कोकटी।

कुकड़ना–अ० क्रि० सिमटना।

कुकड़ी–स्त्री० कच्चे सूतका लच्छा; मदारका फल; खुखड़ी।

कुकनू–पु० [यू०] एक कल्पित पक्षी जिससे यूनानियोंके विश्वासानुसार संगीतकी उत्पत्ति हुई, आतशज़न।

कुकरी*–स्त्री० कुक्कुटी, मुर्गी।

कुकरौंदा(धा)–पु० एक पौधा।

कुकुर–पु० [सं०] कुत्ता। **–खाँसी,–ढाँसी**–स्त्री० [हिं०] एक तरहकी बहुत कष्ट देनेवाली और संक्रामक सूखी खाँसी। **–दंत**–पु० साधारण दाँतोंसे कुछ नीचे निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत। **–निँदिया**–स्त्री० [हिं०] कुत्तेकी नींद, जरासे खटकेसे खुल जानेवाली नींद। **–माछी**–स्त्री० [हिं०] एक तरहकी मक्खी जो घोड़े, कुत्ते आदिको लगा करती है। **–मुत्ता**–पु० [हिं०] एक तरहका पौधा जो बरसातके दिनोंमें पेड़ोंकी जड़ोंमें या सीलकी जगहोंमें उगा करता है, छत्रक।

कुकुही–स्त्री० बनमुर्गी।

कुक्कुट–पु० [सं०] मुर्गा; बनमुर्गा; लुक; चिनगारी।

कुक्कुटादि पालन–पु० [सं०] (पोल्ट्री कीपिंग) कुक्कुट, बत्तक आदि पालने, उनके अंडे बेचने आदिका व्यवसाय।

कुक्कुर–पु० [सं०] कुत्ता; ग्रंथिपर्णी।

कुक्षि–स्त्री० [सं०] पेट, कोख; गर्भाशय।

कुघा*–स्त्री० दिशा, ओर ।

कुच–पु० [सं०] स्तन, उरोज ।

कुचकुचा*–वि० खानेमें कच्चा लगनेवाला, पिचपिचा ।

कुचकुचाना–स० क्रि० बार-बार हलके हाथों कोंचना; थोड़ा कुचलना ।

कुचना*–अ० क्रि० सिकुड़ना, संकुचित होना ।

कुचलना–स० क्रि० किसी भारी चीजसे जोरसे दबाना, मसलना; रौंदना ।

कुचला–पु० एक पेड़ और उसका बीज जो विष है ।

कुचाग्र–पु० [सं०] स्तनका अग्रभाग ।

कुचाह*–स्त्री० अमंगल बात, संवाद ।

कुच्छित*–वि० दे० 'कुत्सित' ।

कुछ–वि० थोड़ासा, तनिक । सर्व० कोई चीज (कुछ देते-खिलाते हो ?); कोई बड़ी बात, काम (कुछ कर दिखाना); कोई अनुचित, अनिष्ट बात (कुछ कर बैठना, कह देना) । **–एक**–वि० थोड़ासा । **–कुछ**–अ० थोड़ा, किसी कदर । **मु०–कर देना**–जादू-टोना कर देना । **–कर बैठना**–कोई अनुचित, अनिष्ट बात कर डालना । **–कहना**–कोई कड़ी बात कहना । **–का कुछ**–उलटा, औरका और । **–खा लेना**–जहर खा लेना । **–गुड़ ढीला, कुछ बनिया,–सोना खोटा, कुछ सोनार**–दोष दोनों ओर है । **–न चलना**–वश न चलना । **–न पूछिये**–कहनेकी बात नहीं; क्या कहना, क्या बात है । **–लगाना,–समझना**–(अपने आपको) बड़ा समझना, अपने धन, बल आदिका गर्व करना । **–हो**–चाहे जो हो । **–हो जाना**–रोग, प्रेतबाधा आदि हो जाना ।

कुटंत*–स्त्री० मार पड़ना, पिटाई ।

कुट–पु० कूटा हुआ टुकड़ा; [सं०] गढ़, किला; घर; कलस; हथौड़ा; वृक्ष; पर्वत । **–ज**–पु० कुरैया, इंद्रजौ; अगस्त्य ।

कुटका–पु० छोटा टुकड़ा; कशीदेमें काढ़ा हुआ तिकोना बूटा ।

कुटकी–स्त्री० एक पौधा; एक छोटा कीड़ा जो मच्छरकी तरह काटता है ।

कुटनपन, कुटनपना, कुटनपेशा–पु० कुटनीका काम या पेशा; झगड़ा लगानेका काम ।

कुटनहारी–स्त्री० धान कूटनेवाली स्त्री ।

कुटना–पु० स्त्रियोंको फुसलाकर परपुरुषसे मिलनेवाला; चुगलखोर; कूटनेका औजार । अ० क्रि० कूटा जाना ।

कुटनाना–स० क्रि० किसी स्त्रीको बहकाकर व्यभिचारके मार्गपर ले जाना ।

कुटनापा–पु० कुटनीका काम, पेशा ।

कुटनी–स्त्री० किसी स्त्रीको बहका-फुसलाकर परपुरुषसे मिलानेवाली स्त्री, कुट्टनी; झगड़ा लगानेवाली, चुगली खानेवाली स्त्री ।

कुटवाना–स० क्रि० कूटनेकी क्रिया दूसरेसे कराना ।

कुटाई–स्त्री० कूटनेका काम; कूटनेकी उजरत; † पिटाई ।

कुटिया–स्त्री० घास-फूसका बना छोटा घर, कुटी ।

कुटिल–वि० [सं०] टेढ़ा; छली, चालबाज; दुष्ट, खोटा ।

कुटिलता–स्त्री० [सं०] टेढ़ापन; खुटाई ।

कुटिलाई*–स्त्री० कुटिलता ।

कुटी–स्त्री० [सं०] कुटिया, झोपड़ी; श्वेत कुटज । **–शिल्प**–पु० दे० 'कुटीरशिल्प' ।

कुटीर–पु० [सं०] कुटी, कुटिया । **–शिल्प**–पु० (कॉटेज इंडस्ट्री) वह छोटा उद्योग या धंधा जो अपने घरपर ही बैठकर किया जा सके और जिसके लिए बड़े-बड़े यंत्रों आदिकी आवश्यकता न हो ।

कुटुंब–पु० [सं०) बाल-बच्चे, संतान; कुनबा, परिवार ।

कुटुंबिक, कुटुंबी(बिन्)–पु० [सं०] कुनबे, बाल-बच्चे-वाला; कुटुंबका व्यक्ति; देख-भाल करनेवाला (ला०) ।

कुटुम*–पु० दे० 'कुटुंब' । **–कबीला**–पु० बाल-बच्चे ।

कुटौनी†–स्त्री० धान कूटनेका काम; कूटनेकी उजरत । **–पिसौनी**–स्त्री० कूटने-पीसनेका काम ।

कुट्ट(ट्टि)नी–स्त्री० [सं०] कुटनी ।

कुट्टनीयता, कुट्ट्यता–स्त्री० [सं०](मैलिऐबिलिटी) कूटकर फैलाये जाने योग्य होनेका गुण या विशेषता ।

कुट्टमित–पु० [सं०] नायिकाभेदमें माने हुए स्त्रियोंके ११ हावोंमेंसे एक–सुखानुभवके समय बनावटी दुःख-चेष्टा ।

कुट्टी–स्त्री० चारेको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काटनेकी क्रिया; बारीक काटा हुआ चारा; लड़कोंका खेलमें किसी साथीसे मैत्री-भंग; कूटा और सड़ाया हुआ कागज । **मु०–करना**–चारा काटना; मित्रता भंग करना ।

कुठला–पु० अनाज रखनेके लिए मिट्टीका बना बड़ा पात्र ।

कुठार–पु० [सं०] कुल्हाड़ी, फावड़ा; नाश करनेवाला ।– **–पाणि**–वि० जिसके हाथमें कुठार हो । पु० परशुराम ।

कुठाराघात–पु० [सं०] कुल्हाड़ीका घाव; घातक चोट ।

कुठारी–पु० भंडारी; स्त्री० नाश करनेवाली; [सं०] कुल्हाड़ी ।

कुठाली–स्त्री० सोना-चांदी गलानेकी घरिया ।

कुड़बुड़ाना–अ० क्रि० भीतर ही भीतर कुढ़ना, झुँझलाना ।

कुडमल–पु० दे० 'कुड्मल' ।

कुड़री–स्त्री० इँडुरी; नदीके घुमावसे घिरी हुई जमीन ।

कुडव–पु० [सं०] १२ मुट्ठीके बराबर अन्नकी माप ।

कुड़ा–पु० कुरैया ।

कुडुक–पु० एक प्राचीन बाजा । स्त्री० अंडा न देनेवाली मुर्गी । वि० व्यर्थ; खाली ।

कुड्मल–पु० [सं०] खिलती हुई कली; एक नरक ।

कुढ़न–स्त्री० कुढ़नेका भाव, खीझ; दूसरेके दुःख और उसके निवारणमें अपनी विवशताकी अनुभूतिसे होनेवाला मनस्ताप ।

कुढ़ना–अ० क्रि० भीतर ही भीतर जलना, खीझना, चिढ़ना; मन-ही-मन दुःखी होना, संतप्त होना ।

कुढ़ाना–स० क्रि० चिढ़ाना, खिझाना; जलाना ।

कुतका–पु० सोंटा; गतका; अँगूठा ।

कुतना–अ० क्रि० कूता जाना ।

कुतरन–स्त्री० कुतरा हुआ टुकड़ा ।

कुतरना–स० क्रि० दाँतोंसे किसी चीजका कुछ अंश काट लेना; किसीको मिलनेवाली रकममेंसे कुछ काट लेना ।

कुतवार–पु० कूत करनेवाला; * दे० 'कोतवाल' ।

कुतिया–स्त्री० कुत्तेकी मादा ।

कुतुब–पु० [अ०] किताबका बहुवचन । **–ख़ाना**–पु० पुस्तकालय । **फ़रोश**–पु० किताब बेचनेवाला ।

.कुतुब–पु० [अ०] ध्रुव तारा । **–नुमा**–पु० एक यंत्र

जिसकी सुईका एक सिरा सदा उत्तरी ध्रुवकी ओर रहता है।

कुतूहल–पु० [सं०] किसी वस्तु या व्यक्तिको देखनेकी उत्कट इच्छा, उत्सुकता; अचंभा; क्रीड़ा।

कुतूहली(लिन्)–वि० [सं०] कुतूहलयुक्त; उत्सुक।

कुत्ता–पु० भेड़िये, स्यार आदिकी जातिका एक मांसभक्षी जानवर जो अब अधिकांशमें पालतू पशु बन गया है, श्वान; बंदूकका घोड़ा; करगहनेमें लगा हुआ लकड़ीका टुकड़ा जिसे गिरा देनेसे दरवाजा बाहरसे नहीं खुल सकता, बिलैया; तुच्छ, क्षुद्रजन (ला०); पेटका गुलाम (ला०)। **मु० कुत्तेका काटना**–सनक जाना, पागल हो जाना (मुझे कुत्तेने नहीं काटा है जो अमुक बात करूँ)। **–की दुम कभी सीधी नहीं होती**–प्रकृतिगत खुटाईपर समझाने-बुझानेका कोई असर नहीं होता। **–की नींद**–ऐसी नींद जो जरासे खटकेसे खुल जाय। **–की मौत मरना**–बड़ी दुर्दशाके साथ मरना। **–के पाँव जाना**–बहुत तेज दौड़ते हुए जाना।

कुत्सा–स्त्री० [सं०] निंदा, गर्हणा।

कुत्सित–वि० [सं०] निंदित, नीच, गर्हित।

कुदकना–अ० क्रि० कूदना।

कुदक्कड़–वि० कूदनेवाला।

कुदरत–स्त्री० [अ०] ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति; शक्ति, सामर्थ्य।

कुदरती–वि० [अ०] प्राकृतिक, असली।

कुदरा*–पु० कुदाल।

कुदलाना*–अ० क्रि० कूदते हुए चलना।

कुदान–स्त्री० कूदनेकी क्रिया; छलांग; कूदनेका स्थान।

कुदारी–स्त्री० दे० 'कुदाली'।

कुदाल, कुदाली–स्त्री० मिट्टी खोदनेका एक औजार।

कुनकुना–वि० थोड़ा गरम।

कुनना–स० क्रि० खरादना।

कुनबा–पु० कुटुंब, परिवार।

कुनबी–पु० दे० 'कुर्मी।

कुनह–पु० संचित वैर, द्वेष, शत्रुता।

कुनही–वि० कुनह रखनेवाला।

कुनाई–स्त्री० लड़की चीरने, खरादने आदिसे निकलनेवाला चूर; कोयलेका चूर; (बरतन) खरादनेका काम या मजदूरी।

कुनित*–वि० बजता, झनकार करता हुआ, क्वणित।

कुनेरा–पु० खरादनेवाला, खरादी।

कुनैन–स्त्री० [अं० किनीन] एक कड़वा सत जो प्रायः मलेरिया ज्वरमें दिया जाता है।

कुपना*–अ० क्रि० दे० 'कोपना'।

कुपित–वि० [सं०] कोपयुक्त, क्रुद्ध; विकृत, बिगड़ा हुआ (दोष)।

कुप्पा–पु० चमड़ेका बना गोल आकारका पात्र जिसमें घी या तेल रखते हैं। **मु० –होना**–सूजना; मोटा होना; रूठना।

कुप्पी–स्त्री० छोटा कुप्पा।

कुफुर*–पु० दे० 'कुफ्र'।

कुफ़्र–पु० [अ०] न मानना; ईश्वरके अस्तित्वसे इनकार, नास्तिकता; हठ, दुराग्रह; कृतघ्नता।

क़ुफ़्ल–पु० [अ०] ताला।

कुबंड*–पु० कोदंड, धनुष्। वि० विकलांग।

कुब–पु० दे० 'कूबड़'।

कुबजा*–स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कुबड़ा–वि० जिसकी पीठ टेढ़ी हो गयी हो; टेढ़ा। पु० टेढ़ी पीठवाला आदमी।

कुबड़ी–स्त्री० टेढ़ी पीठवाली स्त्री; वह छड़ी जो सिरेपर या बीचसे टेढ़ी हो।

कुबत*–स्त्री० दे० 'कु' के साथ।

कुबरी–स्त्री० कंसकी दासी कुब्जा; कैकेयीकी दासी मंथरा; दे० 'कुबड़ी'।

कुबेर–पु० [सं०] एक देवता जो उत्तर दिशाके अधिष्ठाता और धन-समृद्धिके स्वामी माने जाते हैं, यक्षराज।

कुबेराचल, कुबेराद्रि–पु० [सं०] कैलास पर्वत।

कुब्जा–स्त्री० [सं०] कंसकी कुबड़ी दासी जिसकी पीठ कृष्णने सीधी कर दी थी।

कुब्बा†–पु० डिल्ला।

कुमंठी*–स्त्री० पतली, लचीली टहनी।

कुमइत*–पु०, वि० दे० 'कुम्मैत'।

कुमक–स्त्री० [फा०] सहायता; किसी सेनाके सहायतार्थ भेजी हुई सेना।

कुमकी–स्त्री० सिखायी हुई हथिनी जिससे हाथियोंके पकड़नेमें सहायता ली जाती है। वि० कुमकका।

कुमकुम–पु० केसर; कुमकुमा।

कुमकुमा–पु० लाखका बना पोला लड्डू जिसमें अबीर-गुलाल भरकर होलीमें एक दूसरेको मारते हैं; कांचका बना पोला गोला जिसकी माला बनती या सजावटके काम आता है।

कुमाच–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; केवांच।

कुमार–पु० [सं०] बेटा, लड़का; पांच वर्षसे कम उम्रका लड़का; युवावस्था या उससे पहलेकी अवस्थाका पुरुष; राजकुमार; युवराज; कार्त्तिकेय; तोता; सिंधु नद; वरुण वृक्ष; मंगल ग्रह; खरा सोना। वि० अविवाहित, कुँआरा। **–तंत्र**–पु० आयुर्वेदका वह भाग जिसमें बाल-रोगोंका निदान और चिकित्सा हो। **–भृत्या**–स्त्री० प्रसव करानेकी विद्या; गर्भिणी या नवजात शिशुकी परिचर्या। **–वाहन, –वाही(हिन्)**–पु० मयूर। **–व्रत**–पु० आजीवन ब्रह्मचर्य-पालनका व्रत।

कुमारिका–स्त्री० [सं०] कुमारी।

कुमारी–स्त्री० [सं०] १० से १२ बरसतककी कन्या; कुँआरी कन्या; लड़की; दुर्गा; पार्वती; सीता; भारतवर्षके दक्खिनी छोरपरका अंतरीप; घीकुआर; बड़ी इलायची। वि० अविवाहिता, कुँआरी (लड़की)। **–पुत्र**–पु० कर्ण। **–पूजन**–पु० एक रस्म जिसमें देवीका पूजन कर कुमारी लड़कियोंको भोजन कराया जाता है।

कुमुद–पु० [सं०] कुईं; रक्तकमल; चाँदी; विष्णु; कपूर; चन्द्र (?)। **–कला**–स्त्री० चंद्रकला। **–किरण**–स्त्री० चंद्रकिरण। **–नाथ, –पति, –बंधु, –बांधव, –सुहृद्**–पु० चंद्रमा।

कुमुदिनी–स्त्री० [सं०] कुईंका पौधा; कुमुदोंसे भरा हुआ तालाब आदि; कुमुद पुष्पोंका समूह। **–नाथ, –पति**–पु० चंद्रमा।

कुमेरु–पु० [सं०] दक्षिणी ध्रुव।

कुमोदनी, कुमोदिनी*–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुम्मैत–पु० [फ़ा०] स्याही मायल लाल रंगका घोड़ा। वि० कुम्मैत रंगका।

कुम्मैद*–पु०, वि० दे० 'कुम्मैत'।

कुम्हड़ा–पु० एक प्रसिद्ध बेल और उसका फल, काशीफल। **–(ड़)बतिया***–स्त्री० बहुत ही कमजोर; बेजान चीज।

कुम्हड़ौरी–स्त्री० रेते हुए सफेद कुम्हड़े (पेठे)को पीठीमें मिलाकर बनायी हुई बरी।

कुम्हलाना–अ० क्रि० मुरझाना, ताजगीका न रहना।

कुम्हार–पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाला, कुंभकार।

कुम्हीं*–स्त्री० दे० 'कुंभी'।

कुरंग–पु० बुरा हाल; बुरा लक्षण; [सं०] हिरन; तामड़े रंगका हिरन। वि० खराब रंगका। **–नयना,–नयनी,–लोचना**–वि० स्त्री० हिरनकीसी आँखोंवाली। **–नाभि,–सार**–पु० कस्तूरी। **–लांछन**–पु० चंद्रमा।

कुरंगक, कुरंगम–पु० [सं०] मृग।

कुरंगिन*–स्त्री० हिरनी।

कुरंट, कुरंटक–पु० [सं०] पीली कटसरैया।

कुरंडक–पु० [सं०] पीली कटसरैया।

कुरकी–स्त्री० दे० 'कुर्क़ी'।

कुरकुट–पु० छोटा टुकड़ा; * कुक्कुट, मुर्गा।

कुरकुर–पु० खरी चीजोंके दबकर टूटनेका शब्द।

कुरकुरा–वि० (खरी, सिंकी या तली हुई चीज) जिसे तोड़ने या चबानेसे चुरमुरकी आवाज निकले।

कुरकुराहट–स्त्री० कुरकुरी चीजके टूटनेकी आवाज।

कुरकुरी–स्त्री० घोड़ेकी एक बीमारी; कोमल अस्थि।

कुरता–पु० कमीजके ढंगका एक पहनावा।

कुरती–स्त्री० स्त्रियोंका एक पहनावा।

कुरना–स० क्रि० ढेर लगाना; एक बारगी उझल देना। * अ० क्रि० ढेर लगना; उझल दिया जाना; दे० 'कुरलना'।

कुरब, कुरबक–पु० [सं०] लाल कटसरैया; आक।

क़ुरबान–पु० [अ०] बलि, निछावर।

क़ुरबानी–स्त्री० [अ०] (मुसलमानोंका) बकरीदके दिन ईश्वर-प्रीत्यर्थ पशु-बलि करना; पशुबलि; आत्मत्याग।

कुरमा*–पु० कुटुंब, परिवार।

कुरर–पु० [सं०] क्रौंच, कराकुल; एक तरहका गिद्ध।

कुररा–पु० क्रौंच; टिटिहरी।

कुररी–स्त्री० [सं०] मादा कुरर; एक छंद।

कुरलना*–अ० क्रि० कलरव करना–'खूँदहिं कुरलहिं जनु सर हंसा'–प०।

कुरला–पु० कुल्ला; क्रीड़ा।

कुरव–पु० [सं०] लाल फूलवाली कटसरैया; आक; गीदड़। वि० कर्कश आवाजवाला।

कुरवना–स० क्रि० ढेर लगाना; एक साथ अधिक परिमाणमें गिराना।

कुरवारना*–स० क्रि० खोदना; खरोंचना।

कुरसी–स्त्री० ऊँचे पायेका एक आदमीके बैठनेका आसन जिसमें पीठके सहारेके लिए पटरीसी और अक्सर हाथोंके सहारेके लिए बाजू भी होते हैं; मकानकी सतह ऊँची करनेके लिए बनाया गया चबूतरा; पीढ़ी, पुश्त। **–नामा**–पु० वंशवृक्ष। **मु०–देना**–आदर करना, इज्जत देना।

कुरा–पु० पुराने फोड़ेमें पड़नेवाली गांठ; * कटसरैया।

क़ुरान–पु० [अ०] मुसलमानोंका धर्मग्रंथ।

कुराहर*–पु० कोलाहल।

कुरिया–स्त्री० दे० 'कुटिया'; छोटा गांव; ढेर, राशि।

कुरियाल–स्त्री० पक्षियोंका मौजमें पंख खुजलाना, फुरहरी लेना।

कुरिहार*–पु० कोलाहल।

कुरी–स्त्री० ढेर, राशि; खंड, टुकड़ा; टीला; *कुल, घराना।

कुरु–पु० [सं०] एक चंद्रवंशी राजा जिसके वंशज कौरव कहलाये; दिल्लीके आसपासका देश जिसपर कुरुवंशियोंका शासन था। **–क्षेत्र**–पु० दिल्लीके पच्छिम करनाल जिलेका एक मैदान जहां कौरवों-पांडवोंमें संग्राम हुआ था। **–खेत***–पु० दे० 'कुरुक्षेत्र'। **–राज**–पु० दुर्योधन।

कुरुम*–पु० दे० 'कूर्म'।

कुरेदना–स० क्रि० खुरचना, करोदना।

कुरेदनी–स्त्री० नोकदार छड़-जैसी चीज जिससे भट्ठेकी आग खुलेड़ते हैं।

कुरेर*–स्त्री० किलोल, क्रीड़ा।

कुरेलना–स० क्रि० दे० 'कुरेदना'।

कुरैना*–स० क्रि० ढालना, गिराना; ढेर लगाना। पु० राशि, ढेर।

कुरौना*–स० क्रि० ढेर लगाना, राशि करना।

क़ुर्क़–पु० [तु०] रोकना; माल-जायदादकी रोक, जब्ती। **–अमीन**–पु० माल कुर्क करनेवाला अहलकार।

क़ुर्क़ी–स्त्री० [तु०] देन, जुर्माने आदिकी वसूलीके लिए माल या जायदादका जब्त किया जाना, आसंजन।

क़ुर्बानी–स्त्री० [अ०] दे० 'क़ुरबानी'।

कुर्मी–पु० एक कृषिजीवी हिंदू जाति; कुनबी।

कुर्सी–स्त्री० दे० 'कुरसी'।

कुलंज, कुलंजन–पु० [सं०] एक पौधा।

कुल–वि० सब, सारा। पु० [सं०] वंश, घराना; गोत्र; उच्च कुल; एक जातिवालोंका समूह, समुदाय; जाति; शिल्पियों-व्यापारियोंका संघ, श्रेणी; कुलीनतंत्र राज्य; घर, आवास; जनपद। **–कंटक**–पु० अपने बुरे कार्योंसे कुलके लोगोंको दुःखी करनेवाला। **–कलंक**–पु० कुलमें दाग लगानेवाला, कुलकी मान-प्रतिष्ठाका नाश करनेवाला। **–कानि**–स्त्री० [हिं०] कुलकी मर्यादा। **–ज,–जात**–वि० ऊँचे कुलमें उत्पन्न, कुलीन। **–जा**–स्त्री० कुलवधू। **–तारन**–वि० [हिं०] कुलको तारनेवाला; बहुत बड़ा पुण्य करनेवाला। **–दीप,–दीपक**–वि० जिससे कुलका नाम उजागर हो, कुलभूषण। **–देव**–पु० वह देवता जिसकी पूजा कुलविशेषमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी होती आ रही हो। **–देवता**–पु० कुलदेव। **–द्रुम**–पु० बेल, बरगद, पीपल, गूलर, नीम, आमला, लसोड़ा, इमली, करंज और कदंब–ये दस प्रधान वृक्ष। **–धर्म**–पु० कुलका क्रमागत धर्म; कुलरीति। **–नायिका**–स्त्री० वह स्त्री जो वाममार्गियोंके चक्रमें पूजी जा सकती हो–नटी, कपालिनी, धोबिन, वेश्या, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, अहीरिन

और मालिनमेंसे कोई। **–पति–**पु० कुलका मुखिया; वह ब्रह्मर्षि जो १० हजार मुनियों या विद्यार्थियोंका भरण-पोषण करता हुआ उन्हें पढ़ाये; (वाइस-चांसलर) विद्यापीठ या विश्वविद्यालयका प्रधान अधिकारी, जिसका पद अधिपति (चांसलर)के बाद ही माना जाता है। **–परंपरा–**स्त्री० वंश-परंपरा। **–पर्वत–**पु० भारतवर्षके इन ७ प्रधान पर्वतोंमेंसे कोई–महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्ति, ऋक्ष, विंध्य और पारियात्र। **–पूज्य–**पु० कुल-परंपरासे पूजा-सम्मानका अधिकारी। **–बोरन**†**–**वि० कुलका नाम डुबानेवाला, नालायक। **–वधू–**स्त्री० भले घरकी स्त्री। **–वृद्ध–**पु० घरका बड़ा-बूढ़ा, बुजुर्ग। **–श्रेष्ठ–**वि० कुलमें योग्यतम। पु० कायस्थोंकी एक उपजाति। **–सचिव–**पु० (रजिस्ट्रार) दे० 'पीठस्थविर'। **–स्त्री–**स्त्री० दे० 'कुलवधू'।

कुलक–पु० [सं०] शिल्पियोंकी श्रेणीका मुखिया; बाँबी; परवलकी लता; कुचिला; पाँच पद्योंका समूह; सदृश एवं सम्बद्ध वस्तुओंका समूह (सेट)। वि० अच्छे कुलका।

कुलकना–अ० क्रि० प्रसन्न होना, किलकना।

कुलकुलाना–अ० क्रि० कुलकुलकी आवाज निकलना।

कुलट–पु० व्यभिचारी, लंपट; [सं०] अनौरस पुत्र–दत्तक, गोलक आदि।

कुलटा–स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी, अनेक पुरुषोंसे प्रेम करनेवाली स्त्री।

कुलत्थ–पु०, **कुलत्थिका–**स्त्री० [सं०] कुलथी।

कुलथी–स्त्री० उरदकी जातिका एक मोटा अन्न।

कुलना–अ० क्रि० दर्द करना, टीसना।

कुलफ***–**पु० दे० 'क़ुफ़्ल'।

कुलफ़त–स्त्री० [अ०] मनोव्यथा, रंज; विकलता।

कुलफा–पु० एक पौधा जिसका साग खाया जाता है; डोलके आकारका आला जिसमें मलाई, संतरे आदिकी बरफ जमाते हैं।

कुलफ़ी–स्त्री० वह नली जैसा साँचा जिसमें दूध, मलाई आदि भरकर बरफसे जमाते हैं; उक्त साँचेमें भरकर जमायी हुई चीज; पीतल या ताँबेकी नली जो नैचे और निगालीको जोड़ती है।

कुलबुलाना–अ०क्रि० कीड़ों, मछलियों आदिका एक साथ हिलना-डोलना; हाथ-पाँव हिलाना; सोतेमें हिलना; (हाथ-पाँवमें) खुजली-सी होना; बेचैनी प्रकट करना।

कुलबुलाहट–स्त्री० कुलबुलानेका भाव।

कुलवंत–वि० कुलीन।

कुलवंती–वि० स्त्री० कुलीन और सती (स्त्री)।

कुलवान्(वत्)–वि० [सं०] कुलीन। [स्त्री० 'कुलवती'।]

कुलह–स्त्री० टोपी; शिकारी चिड़ियोंकी आँखें ढक रखनेवाली टोपी, अँधियारी ('कुलाह'का लघु रूप)।

कुलहा***–**पु० दे० 'कुलह'।

कुलही***–**स्त्री० बच्चोंकी टोपी, कनटोप।

कुलांगना–स्त्री० [सं०] कुलवधू।

कुलांगार–पु०[सं०] कुलका नाश करनेवाला; कुल-कलंक।

कुलाँच–स्त्री० छलाँग, चौकड़ी (भरना, मारना)।

कुलाँचना–अ० क्रि० चौकड़ी भरना; दौड़-धूप करना।

कुलाँट–स्त्री० दे० 'कुलाँच'; † कलाबाजी।

कुलाचल, कुलाद्रि–पु० [सं०] दे० 'कुलपर्वत'।

कुलाचार–पु० [सं०] कुलकी रीति-नीति; कुलधर्म।

कुलाधि***–**स्त्री० पाप।

कुलाबा–पु० किवाड़को चौखटसे जकड़नेका काँटा; मछली फँसानेका काँटा; मोरी।

कुलाल–पु० [सं०] कुम्हार; बनमुर्गा; उल्लू।

कुलाह–पु० [सं०] काले घुटनोंवाला भूरे रंगका घोड़ा; [फा०] ऊँची नोककी टोपी जिसे ईरान-अफगानिस्तानके लोग पगड़ीके नीचे पहनते हैं; राजमुकुट, ताज; टोपी।

कुलाहल***–**पु० दे० 'कोलाहल'।

कुलिंग–पु० [सं०] चिड़िया; गौरा; एक तरहका चूहा।

कुलिक–वि० [सं०] कुलीन। पु० शिल्पि-श्रेणीका प्रधान; कुलका प्रधान।

कुलिश–पु० [सं०] इंद्रका वज्र; बिजली; हीरा; कुठार। **–धर,–पाणि–**पु० इंद्र।

क़ुली–पु० [तु०] गुलाम; बोझ ढोनेवाला, मजदूर। **–कबारी–**पु० निम्न श्रेणीके लोग।

कुलीन–वि० [सं०] ऊँचे कुलमें जनमा हुआ; शुद्ध; निर्मल। **–तंत्र–**पु० (आलिगेर्की) उच्च कुलके व्यक्तियों द्वारा शासन चलानेकी पद्धति।

कुलुफ–पु० ताला, क़ुफ़्ल।

कुलू, कुलूत–पु०[सं] पश्चिमोत्तर भारतका एक जन-पद।

कुलेल–स्त्री० दे० 'कलोल'।

कुलेलना***–**अ० क्रि० कलोल करना।

कुल्माष–पु० [सं०] कुलथी; चना आदि द्विदल।

कुल्या–स्त्री० [सं०] नहर; नाली; छोटी नदी; कुलीन स्त्री।

कुल्ला–पु० गरारा, कुल्ली; काकुल; घोड़ेका एक रंग या उस रंगका घोड़ा।

कुल्ली–स्त्री० मुँह साफ़ करनेके लिए मुँहमें पानी भरकर फेंकना; पानीका एक घूँट।

कुल्हड़–पु० पुरवा, मिट्टीका छोटा जलपात्र।

कुल्हाड़ा–पु० लकड़ी चीरने, काटनेका एक औजार।

कुल्हाड़ी–स्त्री० छोटा कुल्हाड़ा।

कुल्हिया–स्त्री० छोटा पुरवा; घरिया। **मु०–में गुड़ फोड़ना–**छिपाकर काम करना।

कुवलय–पु०[सं०] कुईँ; नीली कुईँ; नीलकमल; भूमंडल।

कुवलयापीड़–पु० [सं०] एक हस्ति-रूपधारी असुर जो कृष्णके हाथों मारा गया।

कुवलयिनी–स्त्री०[सं०] नीली कुईँका पौधा; नीली कुईँके फूलोंका समूह।

कुवाँ–पु० दे० 'कुआँ'।

कुश–पु० [सं०] कड़ी और नुकीली पत्तियोंवाली एक घास जो यज्ञ, पूजन आदि धर्मकृत्योंकी आवश्यक सामग्री है, दर्भ; रामके ज्येष्ठ पुत्र; कुशद्वीप; जल; हरिसको जुएमें जोड़नेवाली रस्सी, नाधा; फाल। वि० दुष्ट; विक्षिप्त। **–ध्वज–**पु० राजा जनकके छोटे भाई। **–मुद्रिका–**स्त्री० पवित्री, पैंती।

कुशल–वि० [सं०] चतुर, होशियार; कार्यविशेषमें निपुण (नीतिकुशल, कर्मकुशल); उचित; प्रसन्न। स्त्री० क्षेम,

मंगल, खैरियत, सलामती; भलाई; चातुर्य । **–क्षेम**–पु० आनंद-मंगल; सुख-स्वास्थ्य । **–प्रश्न**–पु० कुशल-मंगल, खैरियत पूछना । **–मंगल**–पु० कुशल-क्षेम, खैरियत ।

कुशलाई, कुशलात*–स्त्री० दे० 'कुसलाई' ।

कुशा–स्त्री० [सं०] रस्सी; लगाम; कुश; काठका तख्ता ।

कुशाग्र–वि० [सं०] कुशकी नोक जैसा तीक्ष्ण, तेज । **–बुद्धि**–वि० पैनी, तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

कुशादगी–स्त्री० [फा०] कुशादा होना; फैलाव, विस्तृति ।

कुशादा–वि०[फा०] फैला हुआ; लंबा-चौड़ा; खुला हुआ ।

कुशासन–पु० [सं०] कुशाका बना हुआ आसन; दे० 'कु'के साथ ।

कुशिक–पु० [सं०] एक राजा जो विश्वामित्रके दादा, गाधिके पिता थे; फाल; तेलकी तलछट ।

कुशीनगर–पु० [सं०] बुद्धका निर्वाणस्थल, कसया ।

कुशीलव–पु० [सं०] भाट, चारण; नट; गायक; वाल्मीकि ।

कुशेश*–पु० दे० 'कुशेशय' ।

कुशेशय–पु० [सं०] कमल; कुईं; सारस ।

कुशोदक–पु० [सं०] कुश सहित जल ।

कुश्तमकुश्ता–पु० गुत्थमगुत्था, कुश्ती ।

कुश्ता–पु० [फा०] धातु या औषधद्रव्यका भस्म; लाश ।

कुश्ती–स्त्री० [फा०] दो आदमियोंका एक दूसरेको पछाड़नेके लिए गुथकर लड़ना, मल्लयुद्ध । **–बाज़**–वि० कुश्ती लड़नेवाला । **मु०–खाना**–कुश्तीमें हार जाना । **–मारना**–कुश्ती जीतना, विपक्षीको पछाड़ देना ।

कुष्ठ–पु० [सं०] कोढ़; कूट; कुड़ा; एक विष ।

कुष्ठालय–पु०[सं०] (लेपर ऐसाइलम) कोढ़ियोंकी देखरेख और सहायताकी दृष्टिसे बनाया गया निवास-स्थान ।

कुष्ठी(ष्ठिन्)–वि० [सं०] कुष्ठ रोगसे पीड़ित, कोढ़ी ।

कुष्मांड, कुष्मांडक–पु० [सं०] कुम्हड़ा ।

कुसल*–वि०, स्त्री० दे० 'कुशल' ।

कुसलई*–स्त्री० कुशलता ।

कुसलाई*–स्त्री० कुशलता; कुशल-क्षेम ।

कुसलात*–स्त्री० कुशल-समाचार ।

कुसली*–स्त्री० आमकी गुठली; गोझा । वि० दे०'कुशली' ।

कुसवारी–पु० रेशमका जंगली कीड़ा; रेशमका कोया ।

कुसी–स्त्री० हलकी फाल ।

कुसीद–पु० [सं०] सूदपर रुपये देना, महाजनी; सूदपर लिया हुआ कर्ज; सूदखोर; सूद । **–जीवी(विन्)**–पु० महाजनी करनेवाला, सूदखोर ।

कुसुंभ–पु० [सं०] कुसुमका फूल; केसर; सोना ।

कुसुंभा–पु० कुसुमका रंग; एक मादक द्रव्य ।

कुसुंभी–वि० कुसुमके रंगका ।

कुसुम–पु० [सं०] फूल; स्त्रीका रज; आँखोंका एक रोग; एक पौधा जिसके फूल लाल, गुलाबी, पीले आदि रंगके होते हैं; अग्निका एक रूप । **–चाप,–धन्वा(न्वन्)**–पु० कामदेव ।**–पंचक**–पु० कामदेवके बाणरूप पाँच फूल । **–पुर**–पु०पाटलिपुत्र, पटना ।**–बाण,–शर,–सायक**–पु० कामदेव । **–रेणु**–पु० पराग । **–शयन**–पु०,**–शय्या**–स्त्री० फूलोंकी सेज । **–स्तबक**–पु० फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता ।

कुसुमांजलि–स्त्री० [सं०] फूलोंसे भरी अंजलि ।

कुसुमाकर–पु० [सं०] बाग; वसंत ।

कुसुमागम–पु० [सं०] वसंत ।

कुसुमाधिप, कुसुमाधिराज–पु० [सं०] चंपाका पेड़ ।

कुसुमायुध–पु० [सं०] कामदेव ।

कुसुमासव–पु० [सं०] शहद; फूलोंसे बनी शराब ।

कुसुमित–वि० [सं०] फूला हुआ, पुष्पित ।

क़ुसूर–पु०[अ०] जुर्म, अपराध; भूल-चूक; कोताही, दोष । **–मंद,–वार**–वि० अपराधी; दोषी ।

कुसेस, कुसेसय*–पु० दे० 'कुशेशय' ।

कुस्टी*–पु० कोढ़ी ।

कुहँकुहँ–पु० दे० 'कुमकुम' ।

कुहँचा*–पु० कलाई ।

कुहक–स्त्री०मोर या कोयलका बोल । पु० [सं०] इंद्रजाल; धोखेबाजी; ठग, वंचक ।

कुहकना–अ० क्रि० मोर, कोयल आदिका मीठी आवाजमें बोलना, कूजना ।

कुहकनी–स्त्री० कोयल ।

कुहकुह*–पु० कुंकुम; केसर ।

कुहना*–स० क्रि० कूटना, मारना 'कासी कामधेनु कलि कुहत कसाई हैं'–कविता० ।

कुहनी–स्त्री० बाहु और भुजाका जोड़ ।

कुहर–पु० [सं०] छेद; कान या गलेका छेद; * कुहरा ।

कुहरा–पु० हवामें मिले हुए जलकण जो ठंडसे जमकर नीचे गिरते हैं ।

कुहराम–पु० कई आदमियोंका एक साथ रोना-पीटना; बावेला; कोलाहल ।

कुहाड़ा(रा)–पु० कुल्हाड़ा ।

कुहाना*–अ० क्रि रूठना, नाराज होना ।

कुहासा*–पु० दे० 'कुहरा' ।

कुही–स्त्री० बहरी । पु० एक तरहका घोड़ा ।

कुहु, कुहू–स्त्री० [सं०] अमावास्या; कोयलकी कूक । **–कंठ,–मुख,–रव**–पु० कोयल ।

कुहुक–स्त्री० चिड़ियोंकी मधुर बोली, कूजन ।**–बान**–पु० एक बाण जिसे चलाते समय आवाज निकलती है ।

कूँख†–स्त्री० कोख; पेट; काँखनेका शब्द ।

कूँच–स्त्री० लोहारोंकी बड़ी सँड़सी; पैरकी मोटी नस ।

कूँचा–पु० बढ़नी; करछा ।

कूँची–स्त्री० छोटी बढ़नी; ब्रश; तूलिका; मिसरी जमानेकी कुल्हिया; * ताली ।

कूँज–पु० क्रौंच पक्षी ।

कूँजना*–अ० क्रि० दे० 'कूजना' ।

कूँड़–स्त्री० लोहेकी टोपी; पानी निकालनेका डोल जैसा एक बरतन; जोतनेसे बनी हुई गहरी लकीर; एक गहरा पात्र जो तबलेका बायाँ बनानेके काम आता है ।

कूँड़ा†–पु० पानी रखनेका चौड़ा बरतन, कुंडा; गमला; कठौता; रोशनी करनेकी शीशेकी हाँड़ी ।

कूँड़ी–स्त्री० पत्थरकी कटोरी, पथरी; छोटी नाँद ।

कूँथना–अ० क्रि० पीड़ासे 'उँह'की आवाज निकालना; दबी आवाजसे कराहना; कबूतरोंका गुटरगूँ करना ।

कूइँ—स्त्री० दे० 'कुइँ'।

कूक—स्त्री० कोयलकी बोली; घड़ी, बाजे आदिमें कुंजी देना।

कूकना—अ० क्रि० कोयलका बोलना, 'कुहू-कुहू' करना। स० क्रि० घड़ी या बाजेमें ताली भरना।

कूकरा—पु० कुत्ता। **—कौर**—पु० कुत्तेके आगे डाली जानेवाली जूठन, टुकड़ा; तुच्छ वस्तु।

कूका—पु० सिखोंका एक संप्रदाय; लंबी गहरी आवाज।

कूच—पु० [फा०] एकसे दूसरी जगह जाना, रवानगी; मृत्यु; परलोकयात्रा। **—ब-कूच**—अ० मंजिलपर मंजिल तै करते हुए। **मु० (किसीके) देवता—कर जाना**—भौंचक्का रह जाना। **—का डंका बजना**—(फौजका) रवाना होना। **—बोलना**—रवानगीका हुक्म देना; रवाना होना।

कूचा—*पु० क्रौंच पक्षी—'बायें कुररी दहिने कूचा'—प०; [फा०] गली, सँकरा रास्ता। **—गर्दी**—स्त्री० बेमतलब इधर-उधर घूमते रहना, आवारागर्दी। **—बंद**—पु० बंद गली, वह गली जिसमें एक ही ओर रास्ता हो।

कूचिका—स्त्री० [सं०] कूँची; कुंजी।

कूची—स्त्री० दे० 'कूँची'।

कूज, कूजन—पु० [सं०] पक्षीका कलरव।

कूजना—अ० क्रि० मधुर ध्वनि करना।

कूजा—पु० कुल्हड़; कुल्हड़में जमायी हुई मिस्री; बेलेका फूल।

कूजित—वि० [सं०] ध्वनित, गूँजा हुआ। पु० कूजन।

कूट—पु० [सं०] छल, कपट; म्यान आदिमें छिपाया हुआ हथियार; जटिल प्रश्न; पहाड़की चोटी; सींग; राशि, ढेर; असत्य; व्यंग्य; निहाई; कीना; नगर-द्वार; गृह। वि० अचल; बनावटी; मिथ्यावादी। **—कर्म (न्)**—पु० छल, धोखेबाजी। **—नीति**—स्त्री० छल-कपटकी नीति, चालबाजी। **—पणकारक**—वि० जाली सिक्का आदि बनानेवाला। **—प्रश्न**—पु० पहेली। **—मुद्रा**—स्त्री० जाली मुहर या आदेश (कौ०)। **—युद्ध**—पु० छल, धोखेकी लड़ाई, अधर्मयुद्ध। **—योजना**—स्त्री० कुचक्र, षड्यंत्र। **—लेख, —लेख्य**—पु० जाली दस्तावेज। **—साक्षी (क्षिन्)**—पु० झूठी गवाही देनेवाला। **—साक्ष्य**—पु० झूठी शहादत। **—स्थ**—वि० चोटीपर, सबसे ऊपर अवस्थित; जो सदा एक रूपमें स्थित रहे, अपरिणामी। पु० परमात्मा। **—स्वर्ण**—पु० खोटा, नकली सोना।

कूटना—स० क्रि० मूसल-मुँगरीसे किसी चीजको लगातार पीटना; सिल-चक्की आदिमें टाँकीसे दाँता निकालना, मारना-पीटना; बधिया करना। **मु० कूट-कूटकर भरा होना**—(किसी दोष या गुणकी) अतिशयता, अत्यधिकता होना।

कूटायुध—पु० [सं०] छड़ी आदिके भीतर छिपाया हुआ हथियार।

कूटार्थ—पु० [सं०] जल्दी समझमें न आनेवाला, गूढ़ अर्थ।

कूटू—पु० एक पौधेका बीज जो व्रतादिमें खाया जाता है।

कूड़ा—पु० धूल, राख आदि, बुहारन; रद्दी, निकम्मी चीजें। **—करकट**—पु० रद्दी, निकम्मी चीजें; कतवार। **—ख़ाना**—पु० कूड़ा फेंकनेकी जगह।

कूढ़—वि० मूर्ख, निर्बुद्धि। **—मग़ज़**—वि० मंदबुद्धि।

कूत—स्त्री० संख्या, माप, तौल आदिका अंदाजा, तखमीना।

कूतना—स० क्रि० अंदाजा, तखमीना करना।

कूद—स्त्री० कूदनेकी क्रिया, कुदान। **—फाँद**—स्त्री० उछल-कूद।

कूदना—अ० क्रि० उछलना; ऊँचाईसे उछलकर नीचे आना; इतराना। स० क्रि० फाँदना, लाँघना।

कूप—पु० [सं०] कुआँ; गड्ढा; छेद; चमड़ेका बना तेलका कुप्पा। **—कच्छप, —मंडूक**—पु० कुएँका कछुआ, ··· मेढक; वह जो अपने स्थानसे कहीं बाहर न गया हो और जिसके ज्ञानकी सीमा बहुत संकुचित हो। **—चक्र, —यंत्र**—पु० पानी निकालनेकी चरखी।

कूब—पु० दे० 'कूबड़'।

कूबड़—पु० पीठकी हड्डीका इस तरह निकल आना कि वह टेढ़ी हो जाय।

कूबरी—स्त्री० [सं०] दे० 'कुबरी'।

कूबा—पु० दे० 'कूबड़'।

कूर—वि० निर्दय; क्रूर; मनहूस; निकम्मा; नालायक; कायर; मूर्ख; * मिथ्या।

कूरम*—पु० दे० 'कूर्म'।

कूरा—पु० ढेर, राशि; भाग। वि० कुटिल; खराब।

कूरी—स्त्री० छोटी राशि; * टीला, धुस।

कूर्चिका—स्त्री० [सं०] कूँची; तसवीर बनानेकी कूँची; कुंजी।

कूर्म—पु० [सं०] कछुआ; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे दूसरा; वह प्राण या वायु जिससे पलकें खुलती-मुँदती हैं।

कूल—पु० [सं०] नदी आदिका किनारा, तट; सामीप्य; ह्रद; तालाब; सेनाका पृष्ठभाग। * अ० पास।

कूलवती—स्त्री० [सं०] नदी।

कूलिनी—स्त्री० [सं०] नदी।

कूल्हा—पु० कमरके दोनों ओरकी हड्डी।

.कूवत—स्त्री० [अ०] शक्ति, बल।

कूष्मांड—पु० [सं०] कुम्हड़ा; एक मंत्रकार ऋषि।

कूह*—स्त्री० हाथीकी चिग्घाड़; चीख।

कृच्छ्र—वि० [सं०] कष्टमय; कष्टसाध्य। पु० कष्ट; दुःख; कठिनाई; सांतपन प्रायश्चित्त, व्रत; पाप; मूत्रकृच्छ्र रोग।

कृत—वि० [सं०] किया हुआ; बनाया हुआ; पकाया हुआ। पु० काम; उपकार; कर्मफल। **—काम**—वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो। **—कारज***—वि० दे० 'कृतकार्य'। **—कार्य**—वि० जो अपना कार्य या अभीष्ट सिद्ध कर चुका हो, सफलमनोरथ। **—कृत्य**—वि० सफलमनोरथ, कृतार्थ। **—घ्न**—वि० नेकी, उपकार न माननेवाला। —[**कृतघ्नता**—स्त्री० एहसान न मानना]। **—घ्नताई***—स्त्री० कृतघ्नता। **—घ्नी***—वि० दे० 'कृतघ्न'। **—ज्ञ**—वि० नेकी, उपकार माननेवाला, एहसानमंद। **—दंड***—पु० यमराज। **—निश्चय**—वि० जिसने किसी बातका पक्का निश्चय कर लिया हो। **—युग**—पु० चारों युगोंमेंसे पहला, सतयुग। **—विद्य**—वि० विद्वान्। **—वीर्य**—वि० वीर्यशाली, बली। पु० सहस्रार्जुनका पिता। **—संकल्प**—वि० जिसने कोई संकल्प, निश्चय किया हो।

कृतक—वि० [सं०] बनाया हुआ, बनावटी; अनित्य (न्या०)। **—पुत्र**—पु० गोद लिया हुआ पुत्र, दत्तक।

कृतांत—वि० [सं०] अंत या निश्चय करनेवाला। पु०

यम; देवता; पूर्वजन्ममें किये हुए शुभाशुभ कर्म जिनका फल इस जन्ममें प्राप्त हों; शनि ।

कृताकृत–वि० [सं०] किया और न किया हुआ; अंशतः किया हुआ ।

कृतात्यय–पु० [सं०] भोग द्वारा कर्मनाश (सांख्य०) ।

कृतापराध–वि० [सं०] अपराधी ।

कृतार्थ–वि० [सं०] कृतकार्य, सफलमनोरथ, संतुष्ट ।

कृति–स्त्री० [सं०] क्रिया; काम; रचना; जादू; दो समान अंकोंका घात (ग०); २० की संख्या; वध । **–स्वाम्य**–पु० (कॉपीराइट) किसी लेख, पुस्तक, कविता, कहानी आदिको पुनः प्रकाशित करने, बेचने आदिका अधिकार ।

कृती (तिन्)–वि० [सं०] कृतकार्य; भाग्यवान्; जिसने अच्छे काम किये हों, पुण्यवान्; कुशल; आज्ञाकारी ।

कृत्–वि० [सं०] करने, बनानेवाला; कर्ता (केवल कर्तृवाचक संज्ञा बनानेमें व्यवहृत–जैसे 'ग्रंथकृत्', 'पुण्यकृत्') ।

कृत्ति–स्त्री० [सं०] खाल; मृगचर्म; भोजपत्र; कृत्तिका नक्षत्र । **–वास, –वासा (सस्)**–पु० शिव ।

कृत्तिका–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे तीसरा ।

कृत्य–वि० [सं०] करने योग्य, कर्तव्य । पु० कर्तव्य कर्म; शास्त्रविहित कर्म (पूजन, हवन आदि); काम ।

कृत्या–स्त्री० [सं०] काम; अभिचार; जादूगरनी; एक शक्ति या देवी जो अभिचार द्वारा किसीको मारनेके लिए अनुष्ठान विशेषसे उत्पन्न की जाती है; कर्कशा स्त्री ।

कृत्याकृत्य–पु० [सं०] कर्तव्याकर्तव्य ।

कृत्रिम–वि० [सं०] बनाया हुआ, बनावटी; (माँ-बापकी स्वीकृति बिना) गोद लिया हुआ । पु० पुत्रवत् पालित अनाथ बालक । **–गर्भरोपण**–पु० (आर्टिफिशल इनसेमिनेशन) पिचकारी आदिकी सहायतासे शुक्राणु भीतर प्रविष्ट कराकर गर्भस्थिति कराना, कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान कराना ।

कृदंत–पु० [सं०] धातुमें कृत् प्रत्यय लगानेसे बना शब्द ।

कृपण–वि० [सं०] सूम, कंजूस; नीच; क्षुद्र । पु० कंजूस आदमी । **–बुद्धि**–वि० छोटे दिलका, क्षुद्राशय ।

कृपणता–स्त्री० [सं०] कंजूसी; दैन्य ।

कृपन*–वि०, पु० दे० 'कृपण' ।

कृपनाई*–स्त्री० दे० 'कृपणता' ।

कृपया–अ० [सं०] कृपापूर्वक, कृपा करके ।

कृपा–स्त्री० [सं०] प्रत्युपकारकी अपेक्षा न रखते हुए पर-दुःख-निवारणकी इच्छा, अनुग्रह, दया । **–दृष्टि**–स्त्री० कृपाभाव । **–पात्र**–वि० जो कृपाके योग्य हो, अनुग्रह-भाजन । **–सिंधु**–वि० कृपाके समुद्र (भगवान्) ।

कृपाण–पु० [सं०] तलवार; छुरी; कटारी; एक दंडक वृत्त ।

कृपाणिका–स्त्री० [सं०] छोटी तलवार; कटारी ।

कृपाणी–स्त्री० [सं०] छोटी तलवार; कटार; कतरनी; छुरी ।

कृपाल*–वि० दे० 'कृपालु' ।

कृपालु–वि० [सं०] कृपायुक्त, दयालु ।

कृपिन*–वि०, पु० दे० 'कृपण' ।

कृपिनाई*–स्त्री० कृपणता ।

कृपी–स्त्री० [सं०] कृपाचार्यकी बहन और द्रोणाचार्यकी पत्नी । **–सुत**–पु० अश्वत्थामा ।

कृमि–पु० [सं०] कीड़ा; मकड़ा; चींटी; लाख । **–कोश, –कोष**–पु० रेशमके कीड़ेका कोया, ककूना । **–घ्न**–वि० कीड़ोंका नाश करनेवाला । **–ज**–वि० कीड़ोंसे उत्पन्न । पु० रेशम; अगर । **–जा**–स्त्री० लाख । **–फल**–पु० गूलर । **–रोग**–पु० आँतोंमें कीड़े या केंचुए पैदा हो जाना । **–शोधित दुग्ध**–(पैस्टराइज्ड मिल्क) वह दूध जिसके कीटाणु विशेष प्रक्रिया द्वारा नष्ट कर दिये गये हों ।

कृश–वि० [सं०] दुबला, कमजोर; थोड़ा; अकिंचन ।

कृशता–स्त्री० [सं०] दुबलापन ।

कृशताई*–स्त्री० दे० 'कृशता' ।

कृशरान्न–पु० [सं०] खिचड़ी ।

कृशांगी–स्त्री० [सं०] दुबली-पतली स्त्री; प्रियंगु लता ।

कृशानु–पु० [सं०] अग्नि; चित्रक ।

कृशित–वि० [सं०] क्षीणकाय, दुबला-पतला ।

कृशोदरी–वि० स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री) ।

कृषक–पु० [सं०] हल जोतनेवाला, किसान; बैल; फाल ।

कृषाण–पु० [सं०] किसान, खेतिहर ।

कृषि–स्त्री० [सं०] जोतना-बोना, खेती; जमीन जोतना । **–कर्म (न्)**–पु० खेतीका काम । **–कार**–पु० कृषक । **–यंत्र**–पु० (ट्रैक्टर) पहियोंवाला एक तरहका इंजन जिसका प्रयोग कृषि-संबंधी अनेक कार्योंमें किया जाता है । **–जीवी (विन्)** वि० खेतीसे निर्वाह करनेवाला (किसान) ।

कृषिक–पु० [सं०] कृषक । वि० कृषि-सम्बन्धी ।

कृषी–स्त्री० [सं०] खेत; * खेती, कृषि ।

कृषीवल–पु० [सं०] किसान, खेतिहर ।

कृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ; जोता हुआ ।

कृष्ण–वि० [सं०] काला, श्याम; नीला; कुत्सित या पापकर्म करनेवाला, दुष्ट । पु० काला या गहरा नीला रंग; यदुवंशी वसुदेव और देवकीके पुत्र जो विष्णुके आठवें अवतार माने जाते हैं; परब्रह्म; काला हिरन; कौआ; कोकिल; अशुभ या पापकर्म; अँधेरा पाख; कलियुग; वेदव्यास; अर्जुन; काला अगर; काली मिर्च; लोहा; सुरमा; करौंदा; एक मंत्रकार ऋषि । **–कर्म (न्)**–पु० काली करतूत, पापकर्म । **–गिरि**–पु० नीलगिरि । **–चंद्र**–पु० वासुदेव । **–जीरक**–पु० स्याह जीरा । **–द्वैपायन**–पु० महाभारत और पुराणोंके रचयिता वेदव्यास । **–धन**–पु० जुए आदिसे कमाया हुआ धन, पापकी कमाई । **–पक्ष**–पु० अँधेरा पाख; अर्जुन । **–फल**–पु० करौंदा । **–सार**–पु० कृष्ण मृग; थूहड़; शीशम; खैरका पेड़ ।

कृष्णा–स्त्री० [सं०] द्रौपदी; दक्षिण भारतकी एक नदी; काली दाख; काली पत्तियोंवाली तुलसी; पिप्पली; काला जीरा; अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक ।

कृष्णाजिन–पु० [सं०] काले मृगका चर्म ।

कृष्णाभिसारिका–स्त्री० [सं०] अँधेरी रातमें अभिसार करनेवाली नायिका ।

कृष्णाष्टमी–स्त्री० [सं०] भाद्र-कृष्णा अष्टमी ।

कृष्य–वि० [सं०] खेती करने योग्य (भूमि) (कल्टिवेबिल) ।

केँचुआ (वा)–पु० एक बरसाती कीड़ा जिसकी देह बिना हड्डीकी और लगभग एक बित्ता लंबी होती है; आँतोंमें पैदा हो जाने और मलके साथ बाहर आनेवाला कीड़ा ।

—छन्द—पु० वह छन्द जिसके चरणोंकी मात्राएँ बराबर न हों, रवर छंद ।

कँचुल—स्त्री० दे० 'केँचुली'।

कँचुली—स्त्री० साँपकी त्वचा जो जाड़ेमें सूखकर अपने आप खोलकी शकलमें गिर जाती है । **मु०—झाड़ना**—साँपका केंचुली छोड़ना । **—बदलना**—केंचुली झाड़ना; वेशभूषा बदलना ।

केंदु—पु० [सं०] तेंदूका पेड़ ।

कँदू—पु० दे० 'केंदु'।

केंद्र—पु० [सं०] वृत्तका मध्य विंदु जहाँसे परिधिके प्रत्येक विंदुकी दूरी एक ही हो (सेंटर); नाभि; मध्यवर्ती स्थान; मुख्य स्थान; किसी वस्तुके उत्पादन, वितरण, प्रसारका स्थान, 'सेंटर'; जन्मकुंडलीमें लग्नका तथा चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान । **—ग,—गामी(मिन्)**—वि० केंद्रकी ओर जानेवाला ।**—स्थ**—वि० केंद्रमें स्थित ।

केंद्रापसारी (रिन्)—वि० [सं०] केंद्रसे दूर जानेकी प्रवृत्तिवाला । **—शक्तियाँ**—स्त्री० (सेंट्रिफ्यूगल फोर्सेज) केंद्रसे दूर हटानेवाली शक्तियाँ ।

केंद्राभिमुख—वि०[सं०] केंद्रकी ओर जानेकी प्रवृत्तिवाला ।

केंद्राभिसारी (रिन्), केंद्रोन्मुख—वि० [सं०] केंद्रकी ओर जानेवाला । **—शक्तियाँ**—स्त्री० (सेंट्रिपेटल फोर्सेज) केंद्रकी ओर ले जानेवाली शक्तियाँ ।

केंद्रित—वि० [सं०] केंद्रमें स्थित; स्थानविशेषमें एकत्रीभूत ।

केंद्रीकरण—पु० [सं०] केंद्रित करना, एक जगह लाना; जमा करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना ।

केंद्रीभूत—वि० [सं०] 'केंद्रित'।

केंद्रीय—वि० [सं०] केंद्र-संबंधी; केंद्रमें स्थित; मुख्य । **—आवास-मंडल**—पु० (सेंट्रल हाउसिंग बोर्ड) नये-नये आवासों (घरों)का निर्माण करानेके लिए स्थापित केंद्रीय संस्था । **—करण**—पु० (सेंट्रलाइज़ेशन) एक स्थान या केंद्रपर लाना, केंद्रित करना, जमा करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना ।

के—प्र० 'का' विभक्तिका बहुवचन रूप । † सर्व० कौन ।

केउ†—सर्व० कोई ।

केउर*—पु० दे० 'केयूर'।

केकड़ा—पु० एक गोलाकार क्षुद्र जलजंतु जिसके आठ टाँगें होती हैं ।

केकय—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, आधुनिक कक्का (कश्मीर); उस देशका निवासी ।

केकयी—स्त्री० [सं०] भरतकी माता कैकेयी ।

केका—स्त्री० [सं०] मोरकी बोली ।

केकी (किन्)—पु० [सं०] मोर ।

केचित्—सर्व० [सं०] कोई; कोई-कोई ।

केड़ा—पु० कोंपल, कल्ला; नवयुवक (ला०) ।

केत—पु० [सं०] घर, स्थान; पताका; * केतकी ।

केतक—पु० [सं०] केवड़ा । *वि० कितना; बहुत ।

केतकी—स्त्री० [सं०] एक फूल, केवड़ा ।

केतन—पु० [सं०] घर; स्थान; निमंत्रण; पताका; चिह्न ।

केता, केतिक*—वि० कितना ।

केतु—पु० [सं०] पताका; चिह्न; सौर मंडलका नवाँ ग्रह जो पुराणोंके अनुसार सैंहिकेय राक्षसका कबंध है और जिसका सिर राहु हुआ; पुच्छल तारा; श्रेष्ठ ('रघुकुल-केतु'); चमक; किरण ।

केतुमान्(मत्)—वि०[सं०] ध्वजयुक्त; चिह्नयुक्त; तेजस्वी ।

केतो*—वि० 'कितना'।

केदार—पु० [सं०] धानका खेत; कियारी; थाला; हिमालयकी एक चोटी । **—नाथ**—पु० केदार पर्वतपर प्रतिष्ठित एक शिवलिंग ।

केदारा—पु० एक राग ।

केन—पु० [सं०] ११ प्रधान उपनिषदोंमेंसे एक ।

केना*—पु० अनाज देकर खरीदी जानेवाली चीज ।

केम, कैम*—पु० कदंब ।

केयूर—पु० [सं०] विजायठ, भुजबंद; एक रतिबंध ।

केर*—प्र० का; के । पु० केला ।

केरल—पु० [सं०] आधुनिक मलाबार ।

केरा*—पु० केला ।

केराना—पु० दे० 'किराना'।

केराव†—पु० मटरकी जातिका एक कदन्न ।

केरि*—प्र० की । स्त्री० केलि ।

केरी*—प्र० की ।

केला—पु० एक प्रसिद्ध फलवृक्ष, कदली; उसका फल ।

केलि—स्त्री० [सं०] क्रीड़ा; कामक्रीड़ा, रति; हँसी-मजाक; धरती । **—कला**—स्त्री० केलि-कुशलता; कामकला; सरस्वतीकी वीणा । **—गृह,—निकेतन,—मंदिर,—सदन**—पु० रतिगृह; क्रीड़ागृह ।

केवका—पु० प्रसूताको दिया जानेवाला मसाला ।

केवट—पु० कैवर्त, मल्लाह ।

केवटी—स्त्री० दो या अधिक प्रकारकी दालें मिलकर पकायी हुई दाल ।

केवड़ई—पु० एक तरहका रंग जो केवड़ेके रंगसे मिलता है । वि० केवड़ेके रंगका ।

केवड़ा—पु० एक पौधा जिसका फूल अपनी सुगंधके लिए प्रसिद्ध है, सफेद केतकी; उसका फूल या फूलका अर्क ।

केवरा†—पु० दे० 'केवड़ा'।

केवल—वि० [सं०] असंग, अकेला; संपूर्ण; शुद्ध; अमिश्र । अ० सिर्फ, मात्र ।

केवलात्मा(त्मन्)—पु० [सं०] ईश्वर; शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य ।

केवली(लिन्)—पु० [सं०] केवल ज्ञानवाला, मुक्तिका अधिकारी साधु ।

केवाँच—स्त्री० दे० कौंच'।

केवा*—पु० कमल—'भौंर खोज जस पावै केवा'—प०; केवड़ा; बहाना; संकोच ।

केवाड़—पु० दे० 'किवाड़'।

केश—पु० [सं०] सिरके बाल; बाल; घोड़े या सिंहकी गरदनपरके बाल; किरण; एक गंधद्रव्य; विष्णु; वरुण । **—कर्म(न्)**—पु० बाल सँवारना, कंघी-चोटी; मुंडन ।**—कलाप**—पु० केश-राशि । **—कीट**—पु० जूँ । **—पाश**—पु० केशसमूह; लटकती हुई लटें ।**—प्रसाधनी**—स्त्री०,**—मार्जक**—पु० कंघी । **—बंध**—पु० जूड़ा बाँधनेका फीता आदि ।

—मार्जन—पु० बालोंको मलना, साफ करना। **—रचना**—स्त्री०,**—विन्यास**—पु० बालोंको सँवारना; माँग-पट्टी।

केशर—पु० [सं०] दे० 'केसर'।

केशव—पु० [सं०] विष्णु; परमेश्वर।

केशांत—पु० [सं०] १६ संस्कारोंमेंसे एक जो उपनयन और समावर्तनके अवसरपर होता है; मुंडन; बालका सिरा।

केशिका—स्त्री० [सं०] (कैपिलरी ट्यूब) बहुत ही पतले (केशके सदृश) सूराखवाली नलिका।

केशिनी—स्त्री०[सं०] सुंदर बालोंवाली स्त्री; रावणकी माता कैकसी; एक अप्सरा।

केशी (शिन्)—पु० [सं०] सिंह; घोड़ा; एक असुर।

केसर—पु० [सं०] फूलके बीचका सींका या रेशा; बाल; एक विशेष फूलका सींका जो पीलापन लिये लाल रंगका और सुगंधयुक्त होता है, कुमकुम, जाफरान; सिंह या घोड़ेकी गरदनपरके बाल, अयाल; नागकेसर।

केसरिया—वि० केसरके रंगका; केसरमें रँगा हुआ; केसर मिला हुआ। पु० केसरका रंग; केसर जैसा रंग।

केसरी (रिन्)—पु० [सं०] सिंह; घोड़ा; पुन्नाग; बिजौरा नीबू; नागकेसर; हनूमान्‌के पिता। वि० सिंह जैसा पराक्रमी (महाराष्ट्र-केसरी, पंजाब-केसरी इत्यादि)। **—किशोर**—पु० सिंहशावक; हनूमान्। **—तनय,—नंदन,—सुत**—पु० हनूमान्।

केसारी—स्त्री० मटरकी जातिका एक मोटा अन्न।

केसू*—पु० टेसू, पलासका फूल।

केहरि*—पु० केसरी। **—नहा**—पु० बघनहा।

केहरी*—पु० दे० 'केसरी'।

केहा*—पु० मोर; तीतर जैसा एक पक्षी।

केहि*—वि० किस। सर्व० किसे।

केहुनी—स्त्री० दे० 'कुहनी'।

केहूँ, केहू*—अ० किसी तरह।

कैंकर्य—पु० [सं०] दासत्व, सेवा-टहल।

कैँचा—पु० बड़ी कैंची। वि० ऐंचा-ताना।

कैँची—स्त्री० [तु०] कतरनी; दो लकड़ियाँ जो कैंचीकी शकलमें बँधी या जड़ी हों; कुश्तीका एक पेंच; मालखंभकी एक कसरत।

कैँड़ा—पु० खाका उतारनेका आला; पैमाना; मोटा अंदाजा; ढंग; ढाँचा; चालाकी। **मु०—लेना**—खाका उतारना।

कै†—वि० कितने। अ० या, अथवा।

क़ै—स्त्री० [अ०] उलटी, वमन।

कैकस—पु० [सं०] राक्षस।

कैकसी—स्त्री० [सं०] रावणकी माता।

कैकेयी—स्त्री० [सं०] केकय-नरेशकी बेटी, भरतकी माता।

कैटभ—पु० [सं०] विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य, मधुका छोटा भाई। **—जित्,—रिपु**—पु० विष्णु।

कैटभारि—पु० [सं०] विष्णु।

कैतव—पु०[सं०] धोखा, छल; ठगी; जुआ; लहसुनिया।

कैतवापह्नुति—पु० [सं०] अपह्नुति अलंकारका एक भेद जिसमें यथार्थ बातका निषेध प्रत्यक्ष रूपसे न किया जाकर मिस, व्याज आदि शब्दों द्वारा किया जाय।

क़ैतून—पु० [तु०] जरी और रेशमकी बटी हुई डोरी जिसे कपड़ेके हाशियेपर लगाते हैं।

कैथ, कैथा—पु० एक फल-वृक्ष; उसका फल, कपित्थ।

कैथी—स्त्री० नागरी लिपिका एक भेद जिसमें कुछ अक्षर कम हैं और जिसमें शिरोरेखा नहीं होती।

क़ैद—स्त्री० [अ०] बंधन; कारावास; शर्त, प्रतिबंध। **—ख़ाना**—पु० बंदीगृह, जेलखाना। **—तनहाई**—स्त्री० कैदीको अकेला बंद रखने, कालकोठरीकी सज़ा। **—महज़**—स्त्री० सादी कैद। **—सख़्त**—स्त्री० कड़ी कैद।

क़ैदी—वि०,पु०[अ०] बँधुआ; बंदी, कैदकी सजा भोगनेवाला।

कैधौँ*—अ० या, वा, किधौं।

कैफ़—पु० [अ०] नशा, मस्ती; आनंद।

कैफ़ि(फ़ी)यत—स्त्री०[अ०] हाल, विवरण; लुत्फ, आनंद। **मु०—तलब करना**—जवाब माँगना; कारण पूछना।

कैबर*—स्त्री० तीरकी गाँसी।

कैबा*—अ० कितनी बार, कई बार।

कैबार*—पु० किवाड़।

कैरव—पु० [सं०] कुईं; श्वेत कमल; शत्रु। **—बंधु**—पु० चंद्रमा।

कैरा—पु० भूरा रंग; वह सफेदी जिसके भीतर सुर्खीकी झलक हो; ऐसे रंगका बैल। वि० भूरा, कंजा।

कैलास—पु० [सं०] हिमालयकी एक चोटी जो पुराणोंमें शिव और कुबेरका वासस्थान मानी गयी है; * स्वर्ग। **—नाथ,—पति**—पु० शिव; कुबेर। **—वास**—पु० मृत्यु।

कैवर्त—पु० [सं०] केवट, निषाद।

कैवल्य—पु० [सं०] आत्माका असंग, अलिप्त भाव; स्वरूपमें स्थिति; मोक्ष; एक उपनिषद्।

कैशिक—वि० [सं०] केश जैसा; केशोंसे युक्त।

कैशिकी—स्त्री० [सं०] नाटककी चार वृत्तियोंमेंसे एक; दुर्गा।

कैशोर—पु० [सं०] किशोरावस्था।

क़ैसर—पु० [अ०] सम्राट्, शाहंशाह; जर्मनी, आस्ट्रिया आदिके पूर्व सम्राटोंकी उपाधि।

कैसा—वि० किस तरहका।

कैसिक*—अ० किस प्रकार।

कैसे—अ० किस प्रकार।

कैसो*—वि० कैसा; जैसा।

कोँइछा†—पु० स्त्रीके अंचलका वह हिस्सा जिसमें कुछ बाँधकर छोर कमरमें खोंस लिये जाते हैं।

कोँईँ*—स्त्री० दे० 'कुईँ'।

कोंकण—पु० [सं०] सह्याद्रिके पश्चिमका प्रदेश। **—स्थ**—वि० कोंकणमें रहनेवाला। पु० महाराष्ट्र ब्राह्मणोंकी एक जाति।

कोँचना—स० क्रि० चुभो देना, गड़ाना।

कोँचा—पु० एक जलपक्षी; बालू निकालनेका भड़भूजेका कलछा; दे० 'खोँचा'।

कोँछ—पु० आँचलका कोना। **मु०—भरना**—सौभाग्यवती स्त्रीके आँचलमें (प्रस्थानके समय) चावल-हलदी आदि डालना।

कोँछना—स० क्रि० दे० 'कोँछियाना'।

कोँछियाना—स० क्रि० कोँछ भरकर आँचलके छोरोंको कमरमें पीछेकी ओर खोंस लेना; फुवती चुनना।

कौँड़ा–पु० लोहे, पीतल आदिका छल्ला जिसमें जंजीर या कोई चीज अटकायी जाय।

कौँथना–अ० क्रि० दे० 'कूँथना'।

कौँप*–स्त्री० दे० 'कौँपल'।

कौँपर†–पु० डालका पका आम।

कौँपल–स्त्री० नयी कोमल पत्ती, कल्ला।

कौँवर(रा)*–वि० कोमल, मुलायम।

कौँहड़ा†–पु० दे० 'कुम्हड़ा'।

कौँहड़ौरी†–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।

कौँहार†–पु० दे० 'कुम्हार'।

को–प्र० कर्म और संप्रदानकी विभक्ति; व्रजभाषामें संबंधकी भी। * सर्व० कौन।

कोइरी–पु० एक खेतिहर जाति, काछी।

कोइल†, **कोइलिया***–स्त्री० दे० 'कोयल'।

कोइला†–पु० दे० 'कोयला'।

कोइली–स्त्री० काले दागवाला कच्चा आम; आमकी गुठली।

कोई–सर्व० अज्ञात, अनिर्दिष्ट वस्तु या व्यक्ति; चाहे जो एक। अ० लगभग। **–न कोई**–सर्व० चाहे जो एक; हर एक।

कोउ*–सर्व० दे० 'कोई'।

कोउक*–सर्व० कुछ लोग; कोई एक।

कोऊ*–सर्व० दे० 'कोई'।

कोक–पु० [सं०] चकवा, चक्रवाक; कोयल; मेढक; विष्णु; कामशास्त्रके एक आचार्य; भेड़िया। **–बंधु**–पु० सूर्य। **–शास्त्र**–पु० कामशास्त्र।

कोकई–वि० गुलाबीकी झलक लिये हुए नीला। पु० ऐसा रंग। स्त्री० छोटी कँटिया।

कोकटी–स्त्री० एक तरहकी कपास, कुकटी।

कोकनद–पु० [सं०] लाल कमल; लाल कुईं।

कोका–पु० दक्षिणी अमेरिकामें होनेवाला एक झाड़ जिसकी पत्तियाँ उत्तेजनाके लिए चबायी जाती हैं; धायकी संतान, दूधमाई; हौआ। स्त्री० नीली कुईं। **–बेरी**, **–बेली**–स्त्री० नीली कुमुदनी।

कोकाह–पु० [सं०] सफेद घोड़ा।

कोकिल–पु० [सं०] कोयल; अंगारा; एक छंद। **–कंठी**–वि० स्त्री० कोयलकेसे गले, आवाजवाली।

कोकिला–स्त्री० [सं०] कोयल।

कोकी–स्त्री० [सं०] मादा चकवा।

कोकीन–पु० दे० 'कोकेन'।

कोकेन–पु० [अं०] कोकाकी पत्तियोंसे निर्मित द्रव्य जो लगानेसे कुछ देरके लिए अंगको सुन्न कर देता है और नशेके तौरपर पानमें खाया जाता है।

कोको–स्त्री० कौआ (बहकानेके लिए बच्चोंसे कहा जाता है 'कोको ले गयी')। पु० [अं०] एक तरहका ताड़ या उसके फलसे बनाया जानेवाला चाय जैसा पेय।

कोख–स्त्री० पेटका दोनों पसलियोंके नीचेका भाग, कुक्षि; पेट; गर्भाशय। **–जली**–वि० (स्त्री) जिसके बच्चे न जीते हों। मु० **–उजड़ना**–बच्चेका मर जाना। **–खुलना**–बच्चा होना, वंध्यात्व दूर होना। **–बंद होना**, **–मारी जाना**–गर्भ न रहना; संतान न होना।

कोगी–पु० लोमड़ीकी शकलका एक जंगली जानवर, सोनहा।

कोच–पु० [अं०] एक तरहकी बग्घी–घोड़ागाड़ी; गद्देदार पलंग, कुरसी या बेंच। **–बकस**, **–बक्स**–पु० घोड़ागाड़ीमें हाँकनेवालेके बैठनेकी जगह। **–वान**–पु० [हिं०] घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचना–स० क्रि० कोई नुकीली चीज चुभोना।

कोचा–पु० नोकदार हथियारका घाव जो पार न हुआ हो; चुटीली बात, व्यंग्य (मारना)।

कोचीन–पु० दक्षिण भारतका एक राज्य।

कोजागर–पु० [सं०] शरत्पूर्णिमाको होनेवाला एक त्योहार; शरत्पूर्णिमा।

कोट–पु० [सं०] गढ़, दुर्ग; परकोटा; राजप्रासाद। **–पाल**–पु० दुर्गरक्षक, किलेदार। **–वार***–पु० दुर्गरक्षक; शांतिरक्षक, चौकीदार।

कोट*–वि० दे० 'करोड़'। पु० समूह, यूथ; [अं०] अंग्रेजी ढंगका एक पहनावा। **–पतलून**–पु० युरोपीय पहनावा, साहबी पोशाक।

कोटर–पु० [सं०] पेड़के तनेका खोखला भाग; किलेके आसपासका जंगल जो उसके रक्षार्थ लगाया गया हो।

कोटा–पु० [अं०] किसीको देने या किसीसे लेनेके लिए निर्धारित अंश।

कोटि–स्त्री० [सं०] धनुष्की नोक, सिरा; किसी चीजका सिरा; किसी हथियारकी नोक; दर्जा, वर्ग; वादका पूर्वपक्ष; परमोत्कर्ष; आखिरी दर्जा; करोड़की संख्या; अर्द्ध चंद्रका सिरा; राशिचक्रका तीसरा अंश; ९० अंशके चापके दो समान भागोंमेंसे एक। वि० सौ लाख, करोड़। **–च्युत**–वि० (डिग्रेडेड) जो अपनी कोटि, श्रेणी या पदसे नीचेकी कोटि, श्रेणी या पदपर भेज दिया गया हो। **–बंध**–पु० (ग्रेडेशन) कोटि या दरजेके अनुसार रखना, कोटियोंमें विभक्त करना; दे० 'क्रमस्थापन'।

कोटिक–वि० [सं०] पराकाष्ठाको प्राप्त; करोड़; अगणित।

कोटिर–पु० [सं०] सींगके रूपमें बँधी हुई जटा; इंद्र; नेवला; बीरबहूटी।

कोटिशः–अ० [सं०] करोड़ों; अगणित बार या तरहसे।

कोटीश्वर, **कोट्यधीश**–पु० [सं०] करोड़पती।

कोट्ट–पु० [सं०] कोट, किला। **–पाल**–पु० दुर्गरक्षक।

कोठ–पु० [सं०] एक तरहका कोढ़। † वि० कुंठित (दाँत)।

कोठरी–स्त्री० छोटा कमरा।

कोठा–पु० बड़ा कमरा; अटारी; बालाखाना; भंडार, कोठार; पेट; मेदा; खाना, घर (चौसर, शतरंज आदिका); मस्तिष्कका वृत्ति-विशेषका अधिष्ठानरूप विभाग। **–दार**–पु० कोठारी, भंडारी। **–(ठे)वाली**–स्त्री० वेश्या। मु० **–बिगड़ना**–पाचन बिगड़ना। **–साफ होना**–पेटका साफ होना; खुलकर दस्त आना। **–(ठे)पर बैठना**–वेश्यावृत्ति करना।

कोठार–पु० भंडार, बखार।

कोठारी–पु० भंडारी।

कोठिला–पु० दे० 'कुठला'।

कोठी–स्त्री० पक्का और काफी ऊँचा–बड़ा मकान, हवेली, अमीर या रईसका आवास; वह मकान जहाँ लेन-देन

या बड़े पैमानेपर कोई कार-बार हो; थोक बिक्रीकी दुकान; कोठा; बखार; बंदूककी वह जगह जहाँ बारूद रहती है; एक जड़से निकले हुए बाँसोंका समूह; पुलके खंभे या कुएँकी दीवारकी पानीके अंदरकी जोड़ाई जो जमवटके ऊपर होती है; पत्थरके कोल्हूमें जाठके आसपासका स्थान जिसमें ईखकी गड़ेरियाँ भरी जाती हैं। **–वाल**–पु० देन-लेन करनेवाला महाजन। **–वाली**–स्त्री० मुड़िया अक्षर; देन-लेनका काम। **मु०–गलाना**–जमवटके ऊपर होनेवाली जोड़ाईको नीचे धँसाना। **–चलना**–देन-लेनका कारबार होना।

कोड़ना–स० क्रि० दे० 'गोड़ना'।

कोड़ा–पु० चाबुक; सोंटा; लगनेवाली बात।

कोड़ाई–स्त्री० कोड़नेका काम; कोड़नेकी मजदूरी।

कोड़ी–स्त्री० बीसका समूह, बीसी। वि० बीस।

कोढ़–पु० एक चर्म-रक्त-रोग जिसके एक उग्र भेदमें हाथ-पाँवकी उँगलियाँ गल-गलकर गिर जाती हैं; घृणित और विनाशकारी बुराई (ला०)। **मु०–की खाज,–में खाज**–कोढ़में खुजली होना; संकटपर संकट आना। **–चूना,–टपकना**–कोढ़के घावसे पीब बहना।

कोढ़ी–पु० कोढ़ रोगसे पीड़ित; काहिल, निकम्मा आदमी।

कोण–पु० [सं०] कोना; एक दूसरीसे मिलने, एक दूसरीको काटनेवाली दो रेखाओंके बीचका झुकाव (एंगिल); अंतर्दिशा; सारंगीकी कमानी; तलवार आदिकी धार; डंडा, सोंटा; ढोल, नगाड़ा बजानेका चोब; शनि ग्रह; मंगल ग्रह। **–कुण**–पु० खटमल।

कोत*–स्त्री० बल; दिशा।

कोतल–पु० [तु०] किसी राजा-रईसकी खास सवारीका घोड़ा; जुलूस आदिके साथ सजा-सजाया खाली चलनेवाला घोड़ा।

कोतवाल–पु० जिलेके मुख्य नगरका पुलिस अफसर जिसके मातहत वहाँके सब थानेदार और थाने होते हैं; वह व्यक्ति जो पंडितोंकी सभा आदिके लिए उनका परिचय देता और निमंत्रण-पत्र बाँटता है।

कोतवाली–स्त्री० कोतवालका पद; कोतवालका दफ्तर; नगरका केंद्रीय थाना।

कोता*–वि० दे० 'कोताह'।

कोताह–वि० [फा०] थोड़ा; छोटा; तंग। **–हिम्मत**–वि० छोटी हिम्मतवाला, पस्त-हिम्मत।

कोताही–स्त्री० [फा०] कमी, त्रुटि।

कोति*–स्त्री० दिशा, ओर, तरफ।

कोदंड–पु० [सं०] धनुष्; धनु राशि; भौंह।

कोदंडी(डिन्)–पु० [सं०] शिव।

कोद*–स्त्री० दिशा, ओर–'एक कोद रघुनाथ उदार'–राम०; कोना।

कोदों, कोदो–पु० साँवाँकी जातिका एक मोटा अन्न। **मु० –दलना**–अधिक श्रमवाला निकृष्ट काम करना। **–देकर पढ़ना**–सेंतमें पढ़ना, फलतः कुछ सीख न पाना, मूर्ख रह जाना।

कोद्रव*–पु० [सं०] कोदो।

कोध*–स्त्री० दे० 'कोद'।

कोन–पु० कोना; खेतका कोना जो जोताईमें छूट जाता है। **मु०–मारना**–जोतनेमें छूटे हुए कोनोंको गोड़ना।

कोना–पु० कोण, गोशा; खूँट; कमरे आदिका वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिलती हों; वह स्थान जहाँ जल्दी किसीकी निगाह न जाय। **मु०–झाँकना**–भय या लज्जासे जी चुराना।

कोनिया–स्त्री० छाजनका एक प्रकार; घरके कोनेमें दीवारसे लगाकर बाँस, काठकी पटरी आदिसे बनाया हुआ छोटा तिकोना मचान; पानीकी नलीमें मोड़पर लगाया जानेवाला कुहनीके ढंगका टुकड़ा (एलबो)।

कोप–पु० [सं०] क्रोध, रोष; दोष या मलका बिगड़ना, वेग। **–भवन**–पु० वह मकान या कमरा जिसमें कोई रूठी हुई स्त्री जाकर बैठ रहे।

कोपन–पु० [सं०] कोपना, कुपित होना। वि० कुपित; कुपित करनेवाला; शरीरमें विकार उत्पन्न करनेवाला।

कोपनक–पु० [सं०] चोवा। वि० क्रुद्ध।

कोपना–अ० क्रि० कोप करना, क्रुद्ध होना। स्त्री० [सं०] क्रुद्ध स्त्री। वि० स्त्री० कोप करनेवाली।

कोपरा†–पु० टपका आम; बड़ी थाली जैसा गहरा बरतन जिसमें उठानेके लिए दोनों ओर कुंडे लगे रहते हैं।

कोपित–वि० [सं०] कोपयुक्त, क्रुद्ध।

कोपी*–वि० कोई भी (कोऽपि)।

कोपी (पिन्)–वि० [सं०] कोप करनेवाला; कोपकारक।

कोपीन–पु० दे० 'कौपीन'।

कोफ़्ता–पु० [फा०] कटा हुआ मांस; कुटे हुए मांसका कबाब।

कोमल–वि० [सं०] नरम, मुलायम; सुकुमार; अपरिपक्व; मधुर; मनोहर; दयार्द्र।

कोमलता–स्त्री० [सं०] नरमी, सुकुमारता।

कोमला–स्त्री० [सं०] एक वृत्ति या वर्णयोजना जिसमें य, र, ल, व, स, ह आदि कोमल अक्षरों तथा छोटे समासोंका ही प्रयोग किया जाता है। (सा०); खिरनी।

कोय*–सर्व० कोई।

कोयरा†–पु० सब्जी; हरा चारा।

कोयल–स्त्री० काले रंगकी एक चिड़िया जो अपने बोलकी मिठासके लिए प्रसिद्ध है, कोकिल।

कोयला–पु० पूरी तरह न जली हुई लकड़ीका बुझा हुआ अवशेष; कोयलेकी शकलका एक खनिज पदार्थ जो जलानेके काम आता है।

कोया–पु० आँखका डेला; आँखका कोना; रेशमके कीड़ेका घर या घोंसला; पके कटहलका बीजकोष।

कोर–स्त्री० किनारा, हाशिया; कोना; वैर, दुश्मनी; हथियारकी धार; पंक्ति। **–कसर**–स्त्री० कमी, त्रुटि।

कोरक–पु० [सं०] कली; फूलकी कटोरी; मृणाल।

कोरना–स० क्रि० पत्थर या काठपर खुदाई करना, खोद-खुरचकर चित्रादि बनाना; कोर निकालना।

क़ोरमा–पु० मसाला देकर भुना हुआ गोश्त।

कोरा–वि० नया, न बरता हुआ; जो पछाड़ा न गया हो, माँड़ीदार (कपड़ा); जो धुला न हो; जिसपर पानी न पड़ा हो (मिट्टीका बरतन); सादा, अलिखित; रहित, वंचित; अपढ़, मूर्ख, अनभिज्ञ; खाली, केवल। † पु० गोद।

–जवाब–पु० साफ इनकार।

कोरि*–वि० करोड़।

कोरिया*–पु० एक नीच जाति।

कोरी–पु० हिंदू जुलाहा।

कोर्ट–पु० [अं०] दरबार, राजसभा; अदालत, न्यायालय। **–इंस्पेक्टर**–पु० फौजदारी अदालतोंमें पुलिसकी ओरसे मुकदमोंकी पैरवी करनेवाला अफसर।

कोल–पु० [सं०] सूअर; कूबड़; गोद; एक जंगली जाति; काली मिर्च; बेर।

कोलना–स० क्रि० लकड़ी या पत्थरको बीचसे काटकर पोला करना।

कोलाहल–पु० [सं०] बहुससे लोगोंके एक साथ बोलनेसे होनेवाला शोर, हंगामा, हल्ला; एक संकर राग।

कोलिया†–स्त्री० तंग रास्ता; कुलिया, गली।

कोलियाना†–अ०क्रि० तंग रास्तेसे जाना। पु० कोलियोंके रहनेका स्थान।

कोली–स्त्री० अँकवार; सँकरी गली। पु० कोरी।

कोल्हू–पु० ईख या तेल पेरनेका यंत्र। **मु०–काटकर मुँगरी बनाना**–छोटे लाभके लिए बड़ी हानि करना। **–का बैल**–कड़ी मेहनत करने, हर वक्त पिसनेवाला; एक ही जगह चक्कर खानेवाला।

कोविद–वि० [सं०] पंडित, विद्वान्; प्रवीण।

कोविदार–पु० [सं०] कचनारका पेड़ या फूल।

कोश–पु० [सं०] अंडा; गोलक (नेत्रकोष); पानपात्र; म्यान; धनागार, खजाना; सोना-चाँदी; संचित धन; शब्दकोश, लुगत; खोल, आवरण; रेशमका कोया; कटहल आदिका कोया; वेदांतमें माने हुए जीवात्माके पाँच (अन्नमय, प्राणमय आदि) आवरण; अंडकोष; कली; गुठली। **–कार**–पु० शब्दकोश बनानेवाला; म्यान बनानेवाला; रेशमका कीड़ा। **–कारक,–कीट**–पु० रेशमका कीड़ा। **–कीट-पालन**–पु० (सेरिकल्चर) रेशमके कीड़े पालनेका काम या उद्योग। **–पति**–पु० कोषाध्यक्ष। **–पान**–पु० अभियुक्तके अपराधी या निरपराध होनेकी जाँचकी एक प्राचीन विधि। **–पाल**–पु० कोषरक्षक। **–वृद्धि**–स्त्री० अंडवृद्धिका रोग; धनवृद्धि।

कोशल–पु० [सं०] एक राग; दे० 'कोसल'।

कोशला–स्त्री० [सं०] दे० 'कोसला'।

कोशा(षा)गार–पु० [सं०] खजाना, रुपया-पैसा रखनेका घर, तोशखाना।

कोशाणु–पु० [सं०] (सेल) वे सूक्ष्म सजीव कण जिनके योगसे पिंडका निर्माण होता है।

कोशा(षा)धिप, कोशा(षा)ध्यक्ष–पु० [सं०] खजांची।

कोशिश–स्त्री० [फा०] श्रम; यत्न, उद्योग।

कोष–पु० [सं०] दे० 'कोश'। **–विपत्र**–पु० (ट्रेजरी बिल्स) दे० 'खजानेकी हुंडियाँ'।

कोष्ठ–पु० [सं०] घरका भीतरी भाग; कोठा; शरीरके भीतरका आमाशय, मूत्राशय, पित्ताशय जैसा कोई अंग; पेट; बड़ी आँत, मलाशय; शरीरके अंदरका एक चक्र; भंडार, बखार; चहारदीवारी; कोष्ठक, (ब्रैकेट)। **–खंड**–पु० (पिजन होल) (किसी आलमारी आदिमें) कबूतरके दरबेकी तरह, बड़े खानेके भीतर बने हुए, छोटे-छोटे खाने जिनमें कागज-पत्र रखे जाते हैं। **–पाल**–पु० भंडारी; कोषाध्यक्ष। **–बद्धता**–स्त्री० कब्ज। **–शुद्धि**–स्त्री० पेटकी सफाई, आँतका मलरहित हो जाना।

कोष्ठक–पु० [सं०] लकीरोंसे बनाया हुआ खाना; कई खानोंवाला चक्र, सारणी; चहारदीवारी; अंकों, शब्दों आदिको घेरनेमें व्यवहृत चिह्नोंका जोड़ा (ब्रैकेट)।

कोष्ठागार–पु० [सं०] भंडार; कोषागार।

कोष्ठागारिक–पु० [सं०] कोशवासी प्राणी; भंडारी।

कोष्ठाग्नि–स्त्री० [सं०] पाचनशक्ति, आग्नेय रस।

कोष्ठी–स्त्री० [सं०] जन्मपत्री।

कोस–पु० दूरीकी एक नाप जो लगभग दो मीलके बराबर होती है। **कोसों, काले कोसों**–बहुत दूर।

कोसना–स० क्रि० निंदा करना; बुरा-भला कहना; गालियोंके रूपमें शाप देना। (**मु० पानी पी-पीकर कोसना**–बहुत अधिक कोसना।)

कोसल–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, अवध; कोसलवासी।

कोसला–स्त्री० [सं०] कोसल प्रदेशकी राजधानी, अयोध्या।

कोसा–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; मिट्टीका कसोरा; बददुआ। **–काटी**–स्त्री० शापके रूपमें गाली।

कोसिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा कसोरा।

कोसिला*–स्त्री० दे० 'कौशल्या'।

कोहँड़ा–पु० दे० 'कुम्हड़ा'।

कोहँड़ौरी–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।

कोह–पु० *क्रोध; [फा०] पहाड़, पर्वत। **–आतिश**–पु० ज्वालामुखी पहाड़। **–(हे) आदम**–पु० लंकाके एक पर्वतकी चोटी जिसपर बिहिश्तसे निकाले जानेके बाद आदमका उतरना माना जाता है। **–कन**–वि० पहाड़ खोदनेवाला। पु० फरहाद। **–क़ाफ़**–पु० काफ पर्वत, काकेशस पर्वतमाला जिसके आसपासके लोग बहुत सुंदर होते हैं। **–नूर**–पु० भारतका एक इतिहास-प्रसिद्ध हीरा। **–सार**–पु० पहाड़ी स्थान, प्रदेश; पहाड़।

कोहनी–स्त्री० दे० 'कुहनी'।

कोहबर–पु० वह घर या कमरा जिसमें विवाहके समय कुलदेवताकी स्थापना और कुछ रस्में अदा की जाती हैं।

कोहरा–पु० दे० 'कुहरा'।

कोहल–पु० [सं०] नाट्यशास्त्रके प्रणेता एक मुनि।

कोहाँर†–पु० दे० 'कुम्हार'।

कोहान–पु० [फा०] ऊँटकी पीठपरका कूबड़।

कोहाना*–अ० क्रि० रूठना, रुष्ट होना; क्रुद्ध होना।

कोहिस्तान–पु० [फा०] पहाड़ी प्रदेश; पर्वतमाला।

कोही–वि० *क्रोधी; [फा०] पहाड़ी। † स्त्री० बाज पक्षीकी मादा।

कौंकुम–वि० [सं०] केसर-संबंधी; केसरके रंगका; केसरमें रँगा हुआ। पु० एक केतुवर्ग।

कौंच–स्त्री० सेम जैसी एक फली जिसकी तरकारी बनती और दवाके काम भी आती है; इसकी बेल, केवाँच। पु० [सं०] हिमालयका एक पहाड़।

कौंछ–स्त्री० दे० 'कौंच'।

कौंतेय–पु० [सं०] कुंतीपुत्र–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन।

कौंध-स्त्री० विजलीकी चमक; चमक।

कौंधना-अ० क्रि० विजलीका चमकना।

कौंधनी†-स्त्री० करधनी।

कौंधा*-स्त्री० विजलीकी चमक; विजली-'जनु कौंधा लौकहि दुइ कोने'-प०; चमक।

कौंल*-पु० कमल।

कौंवरा-वि० कोमल।

कौ*-प्र० कर्म, संप्रदान और संबंध कारककी विभक्ति।

कौआ-पु० एक पक्षी जो अपने काले रंग, धूर्तता आदिके लिए प्रसिद्ध है; धूर्त मनुष्य; गलेके भीतरकी घाँटी; कनकुटकी; एक मछली। **-ठोँठी**-स्त्री० एक लता जिसके फूलकी शकल कौएकी चोंचकीसी होती है। **-परी**-स्त्री० काली, वदशकल स्त्री। **-रोर**-पु० हल्ला, कागारोल।

कौआल-पु० दे० 'क़ौवाल'।

कौआली-स्त्री० दे० 'क़ौवाली'।

कौक्कुटिक-पु०[सं०] मुर्गे पालनेवाला; ढोंग करनेवाला।

कौटिलीय-वि० [सं०] कौटिल्यकृत।

कौटिल्य-पु० [सं०] कुटिलता, टेढ़ापन; फरेब, बेईमानी; अर्थशास्त्रके कर्ता और कूटनीतिके आचार्य चाणक्य।

कौड़ा-पु० बड़ी कौड़ी; अलाव।

कौड़िया-वि० कौड़ीके रंग-रूपका। * पु० दे० 'कौड़िल्ला'।

कौड़ियाला-वि० कौड़ीके रंगका, कोकई। पु० कोकई रंग; एक जहरीला साँप; एक वनौषधि; कंजूस धनवान्।

कौड़ियाही-स्त्री० मिट्टी, ईंटों आदिकी ढुलाई जो खेप पीछे कुछ कौड़ियोंके हिसाबसे दी जाती है। वि० स्त्री० बहुत छोटी रकम लेकर काम करनेवाली।

कौड़िल्ला-पु० एक मत्स्यभक्षी जलपक्षी।

कौड़ी-स्त्री० घोंघे, शंख आदिके वर्गका एक कीड़ा; उस कीड़ेका अस्थिकोश जो विनिमयके साधनके रूपमें भी काममें लाया जाता है, वराटिका; पैसा, धन; कर, महसूल; जाँघ, काँख आदिमें निकलनेवाली छोटी गिल्टी; आँखका डेला; सीनेकी वह हड्डी जिसपर नीचेकी पसलियाँ मिलती हैं; कटारकी नोक। **-का**-मूल्यरहित; तुच्छ, हेय। **-भर**-कौड़ी बराबर; बहुत थोड़ा। **मु०-कफनको न होना**-बिलकुल मुफलिस, मुहताज होना। **-के तीन, -के तीन-तीन**-बहुत सस्ता, जिसे कोई न पूछे। **-के तीन होना**-तुच्छ, हेय होना। **-के मोल**-बहुत सस्ता या सस्तेमें। **-०न पूछना, -०न लेना**-मुफ्तमें भी न लेना, एकदम निकम्मा समझना। **-० बिकना**-बहुत सस्ता बिकना; तुच्छ, बेकदर होना। **-कौड़ीका हिसाब**-छोटीसे छोटी रकमका, पाई-पाईका हिसाब। **-कौड़ीको मुहताज**-बिलकुल मुफलिस, अति निर्धन। **-कौड़ी चुका देना**-पूरा पावना, पाई-पाई बेबाक कर देना। **-कौड़ी जोड़ना**-एक-एक पैसा-थोड़ा-थोड़ा करके धन बटोरना। **-फिरना**-जुएमें अपना दाँव पड़ने लगना।

कौणप-पु० [सं०] मुर्दाखोर; राक्षस। वि० पातकी, अधर्मी।

कौणिक-वि० [सं०] जिसमें कोण हो, नुकीला।

कौतिक, कौतिग*-पु० दे० 'कौतुक'।

कौतुक-पु० [सं०] कुतूहल, उत्सुकता; कुतूहल जगानेवाली वस्तु; अचंभा; तमाशा; उत्सव; आनंद; हास्य-विनोद, हँसी-मजाक; विवाहका कंगन; कंगनकी विधि। **-प्रिय**-वि० जिसे खेल-तमाशा या हँसी-मजाक पसंद हो।

कौतुकिया-वि० दे० 'कौतुकी'।

कौतुकी(किन्)-वि० [सं०] खेल-तमाशा करनेवाला, विनोदी; विवाह-संबंध करानेवाला।

कौतूह*-पु० लीला, कौतुक।

कौतूहल-पु० [सं०] कुतूहल; त्योहार, उत्सव।

कौन-सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम। वि० किस प्रकारका।

कौनप*-पु० दे० 'कौणप'।

कौपीन--पु० [सं०] गुह्य भागको ढकनेवाला वस्त्र-खंड, लँगोटी; चीथड़ा।

कौब्ज्य-पु० [सं०] कुबड़ापन।

क़ौम-स्त्री० [अ०] मनुष्य-समूह; जाति; वंश, नस्ल; राष्ट्र। **-परस्त**-वि० राष्ट्रवादी।

कौमार-पु० [सं०] कुमार-(जन्मसे पाँच बरसतककी) अवस्था; कुँवारापन। वि० कुमार-संबंधी; कोमल; युद्धदेव-संबंधी। **-भृत्य**-पु० बच्चोंका पालन-पोषण, दवा-इलाज; आयुर्वेदका शिशु-चिकित्सा-अंग। **-व्रत**-पु० अविवाहित रहनेका व्रत।

क़ौमि(मी)यत-स्त्री० [अ०] जाति, कौमका भाव, जातीयता; राष्ट्रीयता।

क़ौमी-वि० [अ०] कौमसे संबंध रखनेवाला, जातीय; राष्ट्रीय।

कौमुदी-स्त्री०[सं०] चाँदनी; कार्त्तिककी पूर्णिमा; आश्विनकी पूर्णिमा; उत्सव; दीपोत्सव; कुमुद; व्याख्या, टीका (ग्रंथके नामके साथ)। **-पति**-पु० चंद्रमा। **-महोत्सव**-पु० कार्त्तिकी पूर्णिमाको होनेवाला उत्सव।

कौमोदकी, कौमोदी-स्त्री० [सं०] विष्णुकी गदा।

कौर-पु० कवल, निवाला।

कौरना†-स० क्रि० हलका भूनना।

कौरव-पु० [सं०] कुरुका वंशज; कुरु-नरेश। वि० कुरुवंशियोंसे संबंध रखनेवाला (कौरव सेना)। **-पति**-पु० दुर्योधन।

कौरा†-पु० दरवाजेके अगल-बगलकी, चौखटेके पीछेकी दीवार; कुत्तेको दिया जानेवाला खाना; दे० 'कौड़ा'। **मु० कौरे लगना**-किसीकी बातें सुननेके लिए दरवाजेकी बगलमें छिपकर खड़ा रहना; मुँह फुलाना; घातमें बैठना।

कौरी*-स्त्री० अंक, गोद।

कौलंज-पु० पसलियोंके नीचे होनेवाला एक तरहका दर्द।

कौल-पु० कौर; * कमल; कोर।

क़ौल-पु० [अ०] वचन, उक्ति; प्रतिज्ञा, इकरार; वह सूफियाना गीत या शेर जो कौवाल गाते हैं। **-(व) क़रार**-पु० परस्पर प्रतिज्ञा। **-का पक्का**-बातका धनी।

कौलटेय-पु० [सं०] कुलटाका पुत्र; भिक्षुकीका पुत्र; जारज पुत्र।

कौलव-पु० [सं०] ज्योतिषके ११ करणोंमेंसे एक।

कौलीन्य-पु० [सं०] कुलीनता।

कौलौं*-अ० कबतक।

कौवा-पु० दे० 'कौआ'।

क़ौवाल-पु० [अ०] कौवाली गानेवाला; गवैया।

क़ौवाली–स्त्री० [अ०] सूफियाना गजल या गीत; संगीतमें एक ताल ।

कौशल–पु० [सं०] कुशलता, दक्षता; मंगल, कल्याण ।

कौशलेय–पु० [सं०] कौशल्याके पुत्र, राम ।

कौशल्य–पु० [सं०] दे० 'कौशल' ।

कौशल्या–स्त्री०[सं०]दशरथकी पट्टमहिषी,रामकी माता ।

कौशांबी–स्त्री० [सं०] वत्सदेशकी प्राचीन राजधानी जिसे कुशके पुत्र कौशांबने बसाया था, आधुनिक कोसम ।

कौशिक–पु० [सं०] कुशिकका वंशज; विश्वामित्र; इंद्र; कोशकार; कोपाध्यक्ष; उल्लू; नेवला; शृंगार रस; मज्जा; गुग्गुल । वि० म्यानमें रखा हुआ; उल्लू-संबंधी; कुशिक वंशका; रेशमी । **–प्रिय**–पु० राम ।

कौशिकी–स्त्री० [सं०] दुर्गा; कोसी नदी; दृश्य काव्यकी चार वृत्तियोंमेंसे एक; एक रागिनी । **–कान्हड़ा**–पु० [हिं०]कौशिकी और कान्हड़ाके योगसे बना एक संकर राग।

कौशी(षी)धान्य–पु० [सं०] कोशसे उत्पन्न होनेवाला धान्य, तिलादि ।

कौशीलव–पु० [सं०] नट, अभिनेताका पेशा ।

कौशे(षे)य–पु० [सं०] रेशम; रेशमी कपड़ा; रेशमी साड़ी । वि० रेशमी ।

कौसल्या–स्त्री० [सं०] दे० 'कौशल्या' । **–नंदन**–पु० रामचंद्र ।

कौसिक*–पु० दे० 'कौशिक' ।

कौसिला*–स्त्री० दे० 'कौशल्या' ।

कौस्तुभ–पु० [सं०] समुद्र-मंथनसे निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु छातीपर धारण किये रहते हैं ।

क्या–सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम । वि० कितना; बहुत; कैसा; बहुत बढ़िया । अ० किस लिए, किस कारण; प्रश्न-सूचक शब्द ।

क्यार–* प्र० दे० 'का' । † पु० पेड़का थाला ।

क्यारी–स्त्री० बाग या खेतकी मेंड बनाकर प्रायः चौकोर खानेकी शकलमें किया हुआ विभाग ।

क्याली*–स्त्री० दे० 'क्यारी' ।

क्यों–अ० किस लिए, किस कारण । **–कर**–अ० कैसे । **–कि**–अ० कारण यह कि, इसलिए कि । **–नहीं**–अ० अवश्य, बेशक । **–न हो**–अ० क्या कहना, शाबाश ।

क्रंदन–पु० [सं०] रोना, विलाप; युद्धके लिए आह्वान ।

क्रंदित–वि० [सं०] ललकारा हुआ, आहूत ।

क्रकच–पु० [सं०] आरा; एक बाजा; एक नरक; करीलका पेड़, ग्रंथिल वृक्ष; ज्योतिषमें एक योग ।

क्रतु–पु० [सं०] विष्णु; एक प्रजापति; संकल्प; प्रज्ञा, विवेक; इच्छा; देवताकी स्तुति आदि; यज्ञ; अश्वमेध यज्ञ । **–पति**–पु० यज्ञ करनेवाला । **–पशु,–हय**–पु० यज्ञका घोड़ा । **–पुरुष**–पु० विष्णु । **–भुक्(ज्)**–पु० हविष्य खानेवाला, देवता ।

क्रथन–पु० [सं०] काटना; वध; एक दानव ।

क्रम–पु० [सं०] आगे बढ़नेके लिए कदम उठाना, डग भरना; डग, कदम; आरंभ; घटनाओं, वस्तुओं, व्यक्तियों-की आगे-पीछे या ऊपर-नीचेके विचारसे यथास्थान अवस्थिति, तरतीब, सिलसिला; नियमित व्यवस्था; वेदपाठकी एक विशेष प्रणाली; शक्ति; आक्रमणकी मुद्रा; तैयारी; कल्प; विष्णु (वामनरूपमें); एक अर्थालंकार ('यथासंख्य'); * कर्म, कार्य, कृत्य । **–बद्ध**–वि० क्रमयुक्त, सिलेसिलेवार । **–भंग**–पु० क्रम–तरतीबका टूट जाना । **–संख्या**–स्त्री० किसी वस्तु, व्यक्तिकी क्रमप्राप्त संख्या, सिलसिलेका नंबर । **–संन्यास**–पु० ब्रह्मचर्यादि आश्रमोंमें रह चुकनेके बाद लिया हुआ संन्यास । **–स्थापन**–पु० (ग्रेडिंग) श्रेणी, कोटि या क्रमके अनुसार रखना ।

क्रमनासा*–स्त्री० कर्मनाशा नामकी नदी ।

क्रमशः–अ० [सं०] यथाक्रम, सिलसिलेसे; धीरे-धीरे ।

क्रमांक–पु० [सं०] क्रमसंख्या ।

क्रमागत–वि० [सं०] क्रमप्राप्त; कुलक्रमागत, बाप-दादासे चला आता हुआ ।

क्रमानुसार–अ० [सं०] यथाक्रम, सिलसिलेसे ।

क्रमि–पु० [सं०] दे० 'कृमि' ।

क्रमिक–वि० [सं०] क्रमागत; कुलक्रमागत ।

क्रमुक–पु० [सं०] सुपारीका पेड़; नागरमोथा; पठानी लोध; शहतूतका पेड़; कपासकी डोंड़ी ।

क्रमेल, क्रमेलक–पु० [सं०] ऊँट ।

क्रय–पु० [सं०] मोल लेना, खरीदना । **–पंजी**–स्त्री० (परचेज़ेज़ जर्नल) प्रतिदिन खरीद की गयी वस्तुओं आदिका विवरण लिखनेकी वही, खरीद-वही । **–प्रपंजी**–स्त्री० (परचेज़ेज़ लेजर) वह प्रपंजी या खातावही जिसमें समय-समयपर खरीदी हुई विभिन्न वस्तुओंका हिसाब, हर एकका अलग-अलग, क्रयपंजीसे उतारकर लिखा जाता है । **–लेख्य**–पु० बयनामा, कबाला । **–० पत्र**–पु० किसी वस्तुके क्रय-विक्रयसे संबंध रखनेवाला पत्र । **–विक्रय**–पु० खरीद-बिक्री, व्यापार । **–विक्रयिक**–पु० व्यापारी । **–शक्ति**–स्त्री० (पर्चेजिंग पॉवर) बाजारमें उपलब्ध वस्तुओंको खरीद सकनेकी जनताकी सामर्थ्य या क्षमता ।

क्रयण–पु० [सं०] खरीदना ।

क्रय्य–वि० [सं०] जो खरीदा जा सके; बिक्रीके लिए रखा हुआ (माल) ।

क्रवान*–पु० कृपाण, तलवार ।

क्रव्याद, क्रव्याद्–वि० [सं०] कच्चा मांस खानेवाला । पु० राक्षस; मांसभक्षी जंतु–बाघ, भेड़िया आदि ।

क्रशित–वि० [सं०] क्षीणकाय, दुबला-पतला ।

क्रांत–वि० [सं०] गया हुआ; बीता हुआ; लाँघा हुआ; दबा हुआ; चढ़ा हुआ । पु० पाँव; घोड़ा; गमन; डग; चंद्रमाके किसी ग्रहके साथ योगकी स्थिति ।

क्रांति–स्त्री० [सं०] क्रमण; जाना; लाँघना; सूर्यका भ्रमण-मार्ग; दिक्पात; स्थितिमें भारी उलट-फेर; पूर्ण परिवर्तन; राज्यव्यवस्थाका उलट दिया जाना, राजक्रांति । **–कक्ष, –मंडल,–वृत्त**–पु० सूर्यका भ्रमणमार्ग । **–कारी(रिन्)**–वि० स्थिति, व्यवस्थामें भारी उलट-फेर कर देनेवाला । पु० राजक्रांतिका प्रयासी ।

क्राय(यि)क–पु० [सं०] खरीदनेवाला; व्यापारी ।

क्रिकेट–पु० [अं०] गेंदका एक खेल जो बल्लेसे खेला जाता है।

क्रिमि–पु० [सं०] दे० 'कृमि'। **–ज**–पु० अगरु। **–जा**–स्त्री० लाख।

क्रियमाण–वि० [सं०] जो किया जा रहा हो, होता हुआ।

क्रिया–स्त्री० [सं०] कुछ किया जाना, कर्म, व्यापार, चेष्टा; काम करनेकी विधि; शिक्षण; ज्ञान; अभ्यास; रचना; धार्मिक संस्कार; प्रायश्चित्त; श्राद्ध; पूजन; उपचार; अध्ययन; साधन, उपकरण; अभियोगका विचार आदि। **–कर्म(न्)**–पु० मृतक-क्रिया, अंत्येष्टि। **–कलाप**–पु० संपूर्ण शास्त्रविहित कर्म। **–चतुर**–पु० शृंगार रसमें नायकका एक भेद। **–पंथ***–पु० कर्मकांड। **–पटु**–वि० कार्यकुशल। **–पद**–पु० क्रियावाचक शब्द। **–फल**–पु० कर्मका परिणाम। **–वाचक, –वाची(चिन्)**–वि० क्रियाका अर्थ देनेवाला। **–विदग्धा**–स्त्री० क्रियाके द्वारा अपना अभिप्राय बतानेवाली नायिका। **–विशेषण**–पु० वह शब्द जो क्रियाकी विशेषता, उसका काल, स्थान, रीति आदि बताये। **–शील**–वि० कर्मनिष्ठ। **–शून्य**–वि० कर्महीन।

क्रियात्मक–वि० [सं०] क्रियारूपमें किया हुआ, अमली।

क्रियावान्(वत्)–वि० [सं०] कर्मनिष्ठ।

क्रिस्तान–पु० ईसाई।

क्रिस्तानी–वि० ईसाइयोंका।

क्रीट*–पु० दे० 'किरीट'।

क्रीड–पु० [सं०] क्रीडा, खेल-कूद; हँसी-मजाक।

क्रीडक–पु० [सं०] क्रीडा करनेवाला; द्वारपाल।

क्रीड़ना*–अ० क्रि० क्रीडा करना, खेल करना।

क्रीडा–स्त्री० [सं०] खेल-कूद, किलोल; हास्य-विनोद; तालके मुख्य भेदोंमेंसे एक। **–कानन, –वन**–क्रीडाके लिए उपयुक्त उद्यान, प्रमोदवन। **–गृह, –मंदिर**–पु० केलिगृह। **–पर्वत, –शैल**–पु० उद्यान आदिमें बनाया जानेवाला कृत्रिम पर्वत। **–मृग**–पु० खेलने, जी बहलानेके लिए पाला हुआ हिरन। **–शील**–वि० खेलवाड़ी।

क्रीत–वि० [सं०] क्रय किया हुआ, खरीदा हुआ।

क्रुद्ध–वि० [सं०] क्रोधयुक्त, गुस्सेसे भरा; निर्दय।

क्रूर–वि० [सं०] निर्दय, संगदिल, परपीडक; डरावना; कठिन; तीक्ष्ण। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० क्रूर कर्म करनेवाला। **–कोष्ठ**–वि० कड़े कोठेवाला, जिसपर मृदु विरेचनका असर न हो। **–ग्रह**–पु० रवि, शनि, राहु, मंगल और केतुमेंसे कोई। **–दृक्(श्)**–वि० बुरी दृष्टिवाला; खल, दुष्ट। पु० शनि; मंगल।

क्रूराकृति–वि० [सं०] डरावनी शकलवाला। पु० रावण।

क्रूरात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] शनि। वि० निर्दय।

क्रूस–पु० [अं० 'क्रास'] सूली, सलीब; ईसाइयोंका धर्मचिह्न जो सूलीसे मिलते-जुलते आकारका होता है।

क्रेडिट–पु० [अं०] साख।

क्रेता(तृ)–पु० [सं०] खरीदनेवाला।

क्रेय–वि० [सं०] खरीदने योग्य।

क्रोड–पु० [सं०] छाती, वक्षःस्थल; गोद, अंक; पेड़का खोखला; सूअर; शनि ग्रह; किसी वस्तुके बीच या अंदरका हिस्सा। **–पत्र**–पु० पुस्तकादि लिखनेमें छूटे हुए अंशकी पूर्तिके लिए अलगसे लिखकर रखा हुआ चिह्न सहित पत्र; समाचारपत्रके साथ अलगसे छापकर वितरित लेख, विज्ञापन आदि। **–मुख**–पु० गैंड़ा।

क्रोध–पु० [सं०] किसी अनुचित कर्म, अपकार आदिसे उत्पन्न दूसरेका अपकार करनेका तीव्र मनोविकार, कोप, गुस्सा; रौद्र रसका स्थायी भाव (सा०)।

क्रोधन–वि० [सं०] क्रोधी स्वभाववाला, गुस्सेवर। पु० कौशिकका एक पुत्र; साठ संवत्सरोंमेंसे एक; क्रोध करना।

क्रोधना–वि० स्त्री० [सं०] क्रोधी स्वभाववाली।

क्रोधवंत*–वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधालु–वि० [सं०] क्रोधी।

क्रोधित*–वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधी(धिन्)–वि० [सं०] क्रोध करनेवाला, जिसे जल्द गुस्सा आ जाय। पु० भैंसा; कुत्ता; गैंड़ा; एक संवत्सर।

क्रोश–पु० [सं०] रोना; जोरसे चिल्लाना; पुकारना; कोस।

क्रोशाधिदेय–पु० (माइलेज) किसी कामसे यात्रा करनेपर सरकारी या गैरसरकारी कर्मचारीको मीलोंके हिसाबसे मिलनेवाला भत्ता।

क्रौंच–पु० [सं०] एक तरहका बगला, करांकुल; एक पर्वत जो पुराणोंमें हिमवान् (हिमालय)का पोता और मैनाकका बेटा बताया गया है; सात महाद्वीपोंमेंसे एक; मय दानवका पुत्र जो स्कंदके हाथों मारा गया। **–दारण, –रिपु, –शत्रु, –सूदन**–पु० कार्त्तिकेय; परशुराम।

क्रौर्य–पु० [सं०] क्रूरता।

क्लब–पु० [अं०] साहित्य-संगीत आदिकी चर्चा या मनबहलावके कामोंके आयोजनके लिए स्थापित समिति।

क्लम, क्लमथ, क्लमथु–पु० [सं०] थकावट, क्लांति।

क्लर्क–पु० [अं०] लिखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, मुंशी, किरानी, लिपिक।

क्लर्की–स्त्री० क्लर्कका धंधा, किरानीगिरी।

क्लांत–वि० [सं०] थका हुआ, श्रांत; मुरझाया हुआ; क्षीणकाय; हतोत्साह।

क्लांति–स्त्री० [सं०] थकावट।

क्लास–पु० [अं०] दरजा, श्रेणी; विद्यार्थियोंका वर्ग, कक्षा। **–टीचर**–पु० किसी खास क्लास, दरजेका मुख्य अध्यापक।

क्लिष्ट–वि० [सं०] क्लेशयुक्त, पीड़ित; पूर्वापर-विरुद्ध अर्थवाला (वाक्य); जिसका अर्थ बहुत सोचने या खींच-तानसे निकले; क्षतिग्रस्त; मुरझाया हुआ। **–कल्पना**–स्त्री० बहुत खींच-तान या घुमाव-फिराववाली कल्पना।

क्लिष्टि–स्त्री० [सं०] क्लेश, पीड़ा; नौकरी।

क्लीब, क्लीव–वि० [सं०] हिजड़ा, पंड, नपुंसक, नामर्द; कमीना; कायर, डरपोक। पु० नपुंसक पुरुष; नपुंसक लिंग।

क्लेद–पु० [सं०] गीलापन, आर्द्रता; दुःख; पसीना; सड़ना।

क्लेश–पु० [सं०] दुःख, पीड़ा; व्यथा; अविद्या। **–कर**–वि० क्लेश देनेवाला। **–मुक्ति**–स्त्री० (रीड्रेस) किसी क्लेश, कठिनाई, उत्पीड़न आदिसे छुटकारा पा जाना।

क्लेशक–वि० [सं०] क्लेश देनेवाला।

क्लेशित–वि० [सं०] पीड़ित, क्लेशयुक्त।

क्लेष्टा(ष्ट)–पु० [सं०] क्लेश देनेवाला।

क्लेस*–पु० दे० 'क्लेश'।

क्लैब्य–पु० [सं०] क्लीवता, नपुंसकता; कायरपन।

क्लोम–पु० [सं०] दाहना फेफड़ा।

क्लोरोफार्म–पु० [अं०] एक तरल औषध जिसे सुँघाकर चीर-फाड़के लिए रोगीको बेहोश करते हैं।

क्वचित्–अ० [सं०] कहीं; कहीं-कहीं; बहुत कम; कभी।

क्वचिद्भाषी सदस्य–पु० [सं०] (बैकबेंचर) विधान-सभा आदिका वह सदस्य जो अपनी कम उम्र या कम अनुभवके कारण अथवा दलमें अपेक्षाकृत कम महत्त्व रखनेके कारण प्रायः पीछेकी ही पंक्तियोंमें बैठता और विवादादिमें नाममात्रका ही हिस्सा ग्रहण करता है।

क्वणन–पु० [सं०] वीणा, घुँघरू आदिका बजना; मिट्टीका छोटा बरतन।

क्वणित–वि० [सं०] ध्वनित; गूँजता हुआ। पु० ध्वनि।

क्वथन–पु० [सं०] औटना; काढ़ा करना।

क्वथनांक–पु० [सं०] (बॉइलिंग पॉइंट) वह विशेष तापक्रम जिसपर कोई द्रव वस्तु उबलने लगे।

क्वथित–वि० [सं०] औटा हुआ; काढ़ा किया हुआ।

क्वाँरा–वि० दे० क्वारा'।

क्वाथ–पु० [सं०] काढ़ा, जोशाँदा; कष्ट, दुःख; व्यसन।

क्वान*–पु० झनकार; क्वण।

क्वार–पु० आश्विन मास।

क्वारपन–पु० अविवाहित अवस्था, क्वारापन।

क्वारा–वि० कुँआरा, अविवाहित।

क्वैला*–पु० कोयला।

क्षंतव्य–वि० [सं०] क्षमा करनेके योग्य, सहन करनेके योग्य।

क्ष–पु० [सं०] खेत; किसान; नाश; प्रलय; बिजली; एक राक्षस; विष्णुका चतुर्थ–नरसिंह–अवतार। **–किरण**–स्त्री० (एक्सरे) दे० क्रममें।

क्षकिरण–स्त्री० [सं०] (एक्सरे) विद्युत्-प्रवाहसे प्रभावित वे अदृश्य किरणें जो हाथ या शरीरके अन्य किसी भागके आर-पार पहुँचकर हड्डियोंके ढाँचेका छायाचित्र विशेष आग्राही काचपट्टपर अंकित कर देती हैं, पारदर्शी किरण।

क्षण–पु० [सं०] छन, लमहा; ४/५ सेकेंड, निमेषका चौथाई या ३० कलाके बराबर काल; अवसर; अवकाश; शुभ काल; उत्सव; आनंद। **–दा**–स्त्री० रात; हलदी। **–० कर**–पु० चंद्रमा। **–द्युति, –प्रभा**–स्त्री० बिजली। **–निःश्वास**–पु० सूँस। **–भंग**–पु० 'क्षणिकवाद' (बौद्ध)। **–भंगु***–वि० दे० 'क्षणभंगुर'। **–भंगुर**–वि० छनभरमें, थोड़ी ही देरमें मिट जानेवाला। **–मात्र**–अ० छनभर।

क्षणिक–वि० [सं०] क्षणस्थायी। **–वाद**–पु० बौद्ध दर्शनका यह मत कि प्रत्येक वस्तु उत्पत्तिसे दूसरे ही क्षणमें नष्ट हो जाती है अर्थात् प्रतिक्षण बदलती रहती है।

क्षणिका–स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणिनी–स्त्री० [सं०] रात।

क्षत–वि० [सं०] घायल; कटा-फटा हुआ; क्षतिग्रस्त; खंडित, भग्न। पु० घाव, जख्म; चोटसे होनेवाला फोड़ा; दुःख; भय, खतरा। **–चिह्न**–पु० (स्कार) चोट लगने, जल जाने या फोड़े आदिके कारण पड़ा हुआ निशान। **–ज**–पु० रक्त; पीव। वि० घावसे उत्पन्न। **–० कास**–पु० फेफड़ेमें जख्म होनेसे पैदा हुई खाँसी जिसमें कफके साथ खून मिला होता है। **–योनि**–वि० जिस(स्त्री)का पुरुषसे समागम हो चुका हो, कौमार्य नष्ट हो चुका हो। **–विक्षत**–वि० जिसकी देह घावोंसे भरी हो, बहुत जगह कट-फट गयी हो। **–वृत्ति**–स्त्री० जीविकाका साधन न होना। **–व्रण**–पु० चोट पक जानेसे होनेवाला फोड़ा। **–व्रत**–वि० जिस(ब्रह्मचारी)का व्रत खंडित हो गया हो। **–सर्पण**–पु० गमनशक्तिका नाश। **–हर**–पु० अगुरु।

क्षता–स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका कौमार्य ब्याहके पहले ही नष्ट हो चुका हो।

क्षति–स्त्री० [सं०] हानि, ह्रास; घाटा; चोट। **–ग्रस्त**–वि० जिसकी हानि हुई हो। **–पूर्ति**–स्त्री० (रिपरेशंस) क्षति या हानि पूरी करनेका कार्य या इसके बदले दी जानेवाली रकम, नुकसानका मुआवजा।

क्षतोदर–पु० [सं०] एक उदर-रोग जिसमें आँतें कोई कड़ी, नुकीली चीज निगल जाने आदिसे कट जाती हैं।

क्षत्र–पु० [सं०] क्षत्रिय; योद्धा; बल; राज्य; देह; धन। **–कर्म(न्)**–पु० क्षत्रियोचित कर्म। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० क्षात्र धर्मका पालन करनेवाला। पु० योद्धा, सिपाही। **–प**–पु० प्राचीन पारसीक साम्राज्यके मांडलिक राजाओंकी उपाधि; प्रांताधिपति, गवर्नर। **–पति**–पु० राजा। **–विद्या**–स्त्री० धनुर्विद्या; युद्धविद्या। **–वृक्ष**–पु० मुचकुंद। **–वेद**–पु० धनुर्वेद। **–सव**–पु० एक यज्ञ जिसे केवल क्षत्रिय कर सकता है।

क्षत्रांतक–पु० [सं०] परशुराम।

क्षत्राणी–स्त्री० वीर नारी; क्षत्रिया।

क्षत्रिय–पु० [सं०] हिंदुओंके चार वर्णोंमेंसे दूसरा, योद्धा जाति। **–हण**–पु० परशुराम।

क्षत्रिया–स्त्री० [सं०] क्षत्रिय स्त्री।

क्षत्रियाणी, क्षत्रियी–स्त्री० [सं०] क्षत्रियकी पत्नी।

क्षत्री (त्रिन्)–पु० [सं०] क्षत्रिय।

क्षप–पु० [सं०] जल।

क्षपणक–पु० [सं०] नग्न रहनेवाला बौद्ध या जैन संन्यासी; विक्रमादित्यकी राजसभाके नौ रत्नोंमेंसे एक।

क्षपांत–पु० [सं०] प्रभात।

क्षपांध्य–पु० [सं०] रतौंधी।

क्षपा–स्त्री० [सं०] रात; हलदी। **–कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–घन**–पु० काला बादल। **–चर**–पु० निशाचर। **–नाथ, –पति**–पु० चंद्रमा; कपूर।

क्षम–वि० [सं०] सहन करनेमें समर्थ; योग्य; उपयुक्त; (हिंदीमें यह शब्द केवल समासमें आता है–कार्यक्षम, अक्षम आदि)।

क्षमणीय–वि० [सं०] क्षमा करने योग्य, क्षम्य।

क्षमता–स्त्री० [सं०] शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता।

क्षमना*–स० क्रि० माफ करना।

क्षमनीय*–वि० दे० 'क्षमणीय'।

क्षमवाना*–स० क्रि० 'क्षमना'का प्रेरणार्थक रूप।

क्षमा–स्त्री० [सं०] परकृत अपकार, अपराधको बिना क्रोध किये या दंड-प्रतीकारकी बात सोचे सह लेनेवाली चित्तवृत्ति, दरगुजर, माफी, सहनशीलता; धरती; दुर्गा; बेतवा

नदी; दक्षकी एक कन्या; एककी संख्या; खदिर वृक्ष; एक वृत्त। **–भुक्(ज्)**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़। **–मंडल**–पु० भूमंडल। **–युक्त,–शील**–वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील।

क्षमाना*–स० क्रि० क्षमा कराना।

क्षमान्वित–वि० [सं०] दे० 'क्षमायुक्त'।

क्षमापन–पु० [सं०] क्षमा कराना, माफी माँगना।

क्षमावान्(वत्)–वि० [सं०] दे० 'क्षमायुक्त'।

क्षमित–वि० [सं०] क्षमा किया हुआ।

क्षमिता(तृ)–वि० [सं०] क्षमाशील, सहिष्णु।

क्षमी(मिन्)–वि० [सं०] क्षमाशील; समर्थ।

क्षम्य–वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।

क्षयंकर–वि० [सं०] नाश करनेवाला, क्षयकारक।

क्षय–पु० [सं०] वासस्थान; छीजन, ह्रास; नाश; अर्थहानि; मूल्यादिका गिरना; प्रलय; यक्ष्मा रोग; ६० संवत्सरोंमेंसे अंतिम। **–कर**–वि० क्षयकारक। **–कारी रोग**–पु० (वेस्टिंग डिज़ीज़) क्रमशः क्षीण या दुर्बल करते जानेवाला रोग। **–काल**–पु० प्रलयकाल। **–तिथि**–स्त्री० वह तिथि जो व्यवहारमें लुप्त मानी जाय। **–मास**–पु० दो संक्रांतियोंवाला चांद्र मास जो १४१वें वर्ष और कभी-कभी १९वें वर्ष भी आता है, हीन मास। **–रोग**–पु० एक दुस्साध्य रोग जिसमें रोगीको सदा मंदज्वर बना रहता है और उसके फेफड़ेमें ज़ख्म हो जाता है।

क्षयाह–पु० [सं०] वह चांद्र दिन जो चांद्र और सौर पंचांगमें मेल बैठानेके लिए छोड़ दिया जाता है।

क्षयिष्णु–वि० [सं०] क्षय होनेवाला, छीजनेवाला, नश्वर।

क्षयी(यिन्)–वि० [सं०] क्षय होनेवाला; क्षय रोगग्रस्त; नष्ट होनेवाला। पु० चंद्रमा।

क्षय्य–वि० [सं०] जिसका क्षय हो सके।

क्षर–वि० [सं०] चल; नाशमान। पु० जल; बादल; देह; अज्ञान।

क्षरण–पु० [सं०] चूना, रसना; छूटना; उँगलियोंका पसीजना।

क्षरित–वि० [सं०] स्रवित, चुआ हुआ।

क्षांत–वि० [सं०] क्षमाशील, सहनशील; क्षमा किया हुआ।

क्षांति–स्त्री० [सं०] क्षमा, सहिष्णुता।

क्षात्र–वि० [सं०] क्षत्रिय-संबंधी; क्षत्रियोचित। पु० क्षत्रियका कर्म; क्षत्रिय जाति; क्षत्रियत्व।

क्षाम–वि० [सं०] क्षीण, पतला, दुबला; कमजोर; अल्प।

क्षार–पु० [सं०] जड़ी-बूटियोंकी राख या खनिज द्रव्योंका रासायनिक विधिसे बनाया हुआ नमक, खार; नमक; शोरा; सुहागा; काला नमक; जवाखार; काँच; राख। वि० खारा; क्षरणशील। **–लवण**–पु० खारी नमक।

क्षारित––वि० [सं०] टपकाया हुआ।

क्षारोद, क्षारोदक, क्षारोदधि–पु० [सं०] लवणसमुद्र।

क्षालन–पु० [सं०] धोना, साफ करना।

क्षालित–वि० [सं०] धोया हुआ, साफ किया हुआ।

क्षिति–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; घर, वासस्थान; क्षय; प्रलयकाल; एककी संख्या। **–ज**–पु० वृक्ष; मंगल ग्रह; केंचुवा; वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं, दृष्टिसीमा; नरकासुर। **–जा**–स्त्री० सीता। **–तनय**–पु० मंगल ग्रह। **–तनया**–स्त्री० सीता। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–धर**–पु० पहाड़। **–नंदन,–सुत**–पु० मंगल ग्रह। **–नाग**–पु० केंचुवा। **–नाथ,–पति,–प्राण,––भुक्(ज्)**–पु० राजा। **–मंडल**–पु० भूमंडल। **–रुह**–पु० वृक्ष।

क्षितींद्र, क्षितीश, क्षितीश्वर–पु० [सं०] राजा।

क्षिप्त–वि० [सं०] फेंका हुआ; त्यागा हुआ; अवज्ञात, उपेक्षित; चंचल; बहिर्मुख (चित्त); वातरोगग्रस्त। पु० चित्तकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (योग०)।

क्षिप्र–वि० [सं०] तेज, शीघ्रगामी; लचीला। अ० जल्द, तत्काल। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ तेजीसे चले; तेज काम करनेवाला।

क्षीण–वि० [सं०] दुबला-पतला, कमजोर; घटा हुआ; क्षतिग्रस्त; क्षयप्राप्त; मृत; समाप्त; थोड़ा; निर्धन। **–काय**–वि० दे० 'क्षीणशरीर'। **–चंद्र**–पु० सात या इससे कम कलाओंवाला चंद्रमा। **–धन**–वि० जिसके पास पैसा न रह गया हो, निर्धन। **–पुण्य**–वि० जो अपने सब पुण्य-कर्मोंका फल भोग चुका हो। **–वित्त**–वि० दे० 'क्षीणधन'। **–शक्ति**–वि० जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो। **–शरीर**–वि० दुबला-पतला, कमजोर।

क्षीयमाण–वि० [सं०] जो बराबर घटता, छीजता जाय।

क्षीर–पु० [सं०] दूध; बरगद, गूलर आदि वृक्षोंसे निकलनेवाला दुग्धरूप रस; जल। **–कांडक**–पु० थूहड़; मदार। **–ज**–पु० चंद्रमा; दही; मक्खन; अमृत; कमल। वि० दूधसे उत्पन्न। **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी। **–धात्री**–स्त्री० दूध पिलानेवाली धाय। **–धि,–निधि**–पु० समुद्र; क्षीरसागर। **–प**–पु० दुधमुहाँ बच्चा। **–समुद्र,–सागर**–पु० पुराण-वर्णित सात समुद्रोंमेंसे एक।

क्षीराब्धि–पु० [सं०] क्षीरसागर।

क्षीरोद–पु० [सं०] क्षीरसमुद्र। **–तनया**–स्त्री० लक्ष्मी।

क्षीरोदधि–पु० [सं०] क्षीरसागर।

क्षीरोदन–पु० [सं०] दूधमें पका हुआ चावल, खीर।

क्षुण्ण–वि० [सं०] चूर किया हुआ; पिसा हुआ; खंडित; दलित; अनुगत; पराजित; अभ्यस्त।

क्षुत्–स्त्री० [सं०] भूख, क्षुधा; छींक। **–पिपासा**–स्त्री० भूख-प्यास।

क्षुद्र–वि० [सं०] छोटा, नन्हा; तुच्छ; नीच, खोटा, ओछा; कंजूस। पु० चावलका कण, खुद्दी; मधुमक्खी या बर्रे। **–कुलिश**–पु० एक बहुमूल्य पत्थर, वैक्रांत मणि। **–घंटिका**–स्त्री० एक तरहकी करधनी जिसमें घंटियाँ या घुँघरू लगे रहते हैं। **–प्रकृति**–वि० खोटे, ओछे स्वभाववाला। **–बुद्धि**–वि० ओछे विचारवाला, जो सदा छोटी, ओछी बातें सोचे, देखे।

क्षुद्रता–स्त्री० [सं०] छोटाई, नीचता, ओछापन।

क्षुद्रा–स्त्री० [सं०] मक्खी; मधुमक्खी; वेश्या; अमलोनी।

क्षुद्रात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] नीच, हीन विचारवाला।

क्षुद्रावली–स्त्री० [सं०] क्षुद्रघंटिका।

क्षुद्राशय–वि० [सं०] छोटी, ओछी तबीयतका।

क्षुधा–स्त्री० [सं०] भूख, भोजनेच्छा। **–निवृत्ति**–स्त्री० भूखकी शांति, पेट भरना।

क्षुधातुर, क्षुधार्त्त–वि० [सं०] भूखा, भूखसे पीड़ित।

क्षुधावंत*–वि० भूखा।

क्षुधित–वि० [सं०] भूखा।

क्षुप–पु० [सं०] छोटे तने, डालियोंवाला पेड़, झाड़।

क्षुपक–पु०, **क्षुपा**–स्त्री० [सं०] झाड़ी।

क्षुब्ध–वि० [सं०] क्षोभयुक्त, उत्तेजित, अशांत; भीत; खफा; जिसमें जोरकी लहरें उठ रही हों, तूफानी (समुद्र)।

क्षुभित–वि० [सं०] अशांत; भीत; क्रुद्ध।

क्षुर–पु० [सं०] छुरा, उस्तुरा; खुर; चारपाईका पावा। **–कर्म(न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० छुरेसे मूँड़ना, क्षौर।

क्षुरिका–स्त्री० [सं०] छुरी; पालक।

क्षुरी(रिन्)–पु० [सं०] नाई; खुरवाला पशु।

क्षुल्ल–वि० [सं०] छोटा; थोड़ा, अल्प। **–तात**–पु० बापका छोटा भाई, छोटा चचा।

क्षेत्र–पु० [सं०] खेत; जमीन; स्थान; उत्पत्तिस्थान; घर; नगर; सिद्ध स्थान; तीर्थस्थान; वह स्थान जहाँ भोजन वितरित होता है, सत्र; उर्वरा भूमि; पत्नी; कार्य-(विशेष)का स्थान; मैदान; कार्यके लिए अवकाश; देह; अंतःकरण; राशि (कर्क, मिथुन आदि); रेखाओंसे घिरा स्थान; ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों, शब्द, स्पर्श आदि तथा मन, इच्छा, द्वेप आदिका समाहार (गीता)। **–कर, –कर्षक**–पु० किसान। **–गणित**–पु० खेत, जमीनका रकवा निकालनेकी विद्या, भूमिति, रेखागणित। **–ज**–वि० खेतमें उपजा हुआ; शरीरसे उत्पन्न। पु० विधिवत् नियुक्त पुरुपसे उत्पन्न पुत्र (धर्मशास्त्रमें जायज माने हुए १२ प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक)। **–जात**–वि० परपुरुप द्वारा उत्पन्न (संतान)। **–दूरेक्षिका**–स्त्री० (फील्ड ग्लासेज) खेत या मैदान आदिमें प्रयुक्त होनेवाला दूरकी वस्तु देखनेका यंत्र। **–पति**–पु० खेत, जमीनका मालिक। **–पाल**–पु० खेतकी रखवाली करनेवाला; भैरवका एक भेद। **–फल**–पु० खेत, स्थान, रेखागणितकी शक्लका रकवा, उसकी लंबाई-चौड़ाईका गुणनफल (एरिया)। **–माप-पुस्तिका**–स्त्री० (फील्डबुक) खेतों, भूमि आदिकी माप या पैमाइश करते समय काममें आनेवाली पुस्तिका। **–मिति**–स्त्री० क्षेत्रगणित, भूमिति। **–रक्षक**–पु० (फील्डर) क्रिकेट, बेसबाल आदिके खेलमें क्षेत्ररक्षणका काम करनेवाला खेलाड़ी। **–रक्षण**–पु०, **–रक्षा**–स्त्री० (फील्डिंग) क्रिकेट, बेसबाल आदिके मैदानमें खड़े होकर बल्लेबाज द्वारा आहत गेंदको रोकने, लोकने तथा फेंकनेवालेके पास लौटा देने आदिका काम।

क्षेत्राधिकार–पु० [सं०] (जूरिस्डिक्शन) किसी विशेष क्षेत्रके या विशेष प्रकारके मुकदमे सुननेका अधिकार।

क्षेत्राधिप–पु० [सं०] खेतका मालिक; राशीश।

क्षेत्रापखंडन–पु० [सं०] (फ्रैगमेंटेशन आफ होल्डिंग्ज) बँटवारेके कारण खेतका या जोतका छोटे-छोटे टुकड़ोंमें विभक्त हो जाना।

क्षेत्राभिरक्षक–पु० [सं०] (वार्डन) नागरिक संघटनका वह अधिकारी जो हवाई हमलेके समय क्षेत्रविशेषके नागरिकोंकी रक्षाके काममें सहायता करे।

क्षेत्रिय–वि० [सं०] खेत-संबंधी; खेतमें उपजा हुआ।

क्षेत्री(त्रिन्)–वि० [सं०] क्षेत्रस्वामी। पु० किसान।

क्षेप–पु० [सं०] फेंकना; उछालना; भेजना; हिलाना; बिताना; आघात; विलंब; डाँड़ चलाना; निंदा; अपमान; आक्षेप; दर्प; लेपन; पुष्पगुच्छ।

क्षेपक–वि० [सं०] फेंकनेवाला; मिलाया हुआ; अपमानजनक। पु० (पुस्तकादिमें) पीछेसे मिलाया, बढ़ाया हुआ अंश; कर्णधार; डाँड़ खेनेवाला।

क्षेपण–पु० [सं०] फेंकना; हिलाना; झटकना; फेंककर मारना; निंदा, आक्षेप करना; बिताना; फेंकनेका साधन (ढिलवाँस आदि)।

क्षेपणि–पु०, **क्षेपणी**–स्त्री० [सं०] डाँड़; मछली पकड़नेका जाल; ढेलवाँस या गुलेल।

क्षेपणीय–वि० [सं०] फेंकने योग्य; जो फेंका जा सके।

क्षेप्ता(प्तृ)–वि० [सं०] फेंकनेवाला।

क्षेमंकरी–स्त्री० [सं०] देवी-विशेष।

क्षेमंकरी(रिन्)–पु०[सं०] एक तरहकी सफेद चील जो शुभ मानी जाती है। (हिं० में स्त्री०)

क्षेम–पु० [सं०] कुशल, मंगल; सुरक्षा; प्राप्त वस्तुकी रक्षा (योगक्षेम); मुक्ति; आधार; विश्रामस्थान; नक्षत्र; चोवा।

क्षैण्य–पु० [सं०] दुबलापन, क्षीणता; क्षय।

क्षैप्र–पु० [सं०] क्षिप्रता।

क्षोणि, क्षोणी–स्त्री०[सं०] धरती; एककी संख्या। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–पति, –पाल**–पु० राजा। **–रुह**–पु० वृक्ष।

क्षोद–पु० [सं०] चूर्ण; धूल; चूर करना; पीसना; सिल। **–क्षम**–वि० परीक्षामें टिकनेवाला।

क्षोभ–पु० [सं०] हलचल, खलबली; व्याकुलता; रोष।

क्षोभक–वि० [सं०] क्षुब्ध करनेवाला।

क्षोभण–वि० [सं०] क्षोभकारी। पु० क्षुब्ध करना; कामदेवका एक बाण।

क्षोभना*–अ० क्रि० व्याकुल होना; भीत या क्रुद्ध होना; चित्तका चलायमान होना।

क्षोभित*–वि० क्षोभयुक्त।

क्षोभी(भिन्)–वि० [सं०] क्षोभयुक्त, क्षुब्ध; व्याकुल।

क्षोम–पु० [सं०] दुमंजिलेपरका कमरा; अटारी; अलसी आदिके रेशोंसे बना हुआ कपड़ा।

क्षौणि, क्षौणी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; एककी संख्या।

क्षौद्र–पु० [सं०] क्षुद्रता; चंपाका पेड़; छोटी मक्खीका शहद; जल।

क्षौद्रेय–पु० [सं०] मोम।

क्षौम–वि० [सं०] अलसी आदिसे बना हुआ। पु० अलसी आदिके रेशोंसे बना हुआ कपड़ा; अलसी; रेशमी कपड़ा; छतके ऊपरका (हवादार) कमरा; अटारी।

क्षौर–पु० [सं०] सिर आदिके बाल मूँड़ना, कतरना, हजामत बनाना। **–कर्म(न्)**–पु० हजामत बनाना। **–मंदिर**–पु० दे० 'क्षौरालय'।

क्षौरालय–पु० [सं०] (बार्बर्स सैलून) बाल बनवानेकी दुकान।

क्षौरिक–पु० [सं०] नाई।

क्ष्मा–स्त्री० [सं०] धरती। **–धर**–पु० पहाड़।

ख

ख—पु० देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका दूसरा अक्षर। इसका उच्चारणस्थान कंठ है।

खंख—वि० छूँछा, खाली; उजाड़।

खंखर*—वि० वीरान, उजड़ा हुआ।

खँखारना—अ० क्रि० दे० 'खखारना'।

खंग—पु० दे० 'खड्ग';* गैंड़ा। स्त्री० घाव।

खँगना*—अ० क्रि० घटना, कमी होना।

खँगहा—वि० खाँगवाला, खँगैल। पु० गैंड़ा।

खँगारना—स० क्रि० दे० 'खँगालना'।

खँगालना—स० क्रि० मँजे-धुले बरतनको पूरी सफाईके लिए फिरसे धोना; सब कुछ उठा ले जाना; साफ करना; खाली करना; झाड़ू फेर देना।

खँगी*—स्त्री० कमी।

खँगुवा—पु० गैंड़ेका सींग।

खँगैल—वि० खाँगवाला, दँतैला; जिसके खुर पके हों।

खँचिया—स्त्री० छोटा खाँचा, टोकरी।

खँचैया†—पु० खींचनेवाला।

खंज—वि० [सं०] लँगड़ा। **—खेट, —खेल**—पु० खँड़रिच।

खँजड़ी—स्त्री० डफलीके ढंगका, आकारमें उससे छोटा, एक वाजा।

खंजन—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जो मैदानी प्रदेशोंमें केवल जाड़ेमें दिखाई देती है, खँडरिच; लँगड़ाते हुए चलना।

खंजर—पु० [अ०] कटार, एक तरहका वड़ा छुरा।

खँजरी—स्त्री० दे० 'खँजड़ी'।

खंजरीट, खंजरीटक—पु० [सं०] खंजन।

खंड—पु० [सं०] टुकड़ा; भाग; ग्रंथका विभाग; देश; समूह; समीकरणकी एक क्रिया (ग०); खाँड़, चीनी *दिशा; खाँड़ा। **—काव्य**—पु० छोटा काव्य, वह काव्य जिसमें महाकाव्यके पूरे लक्षण न हों। **—पति**—पु० राजा। **—परशु**—पु० शिव; परशुराम; विष्णु। **—पाल**—पु० हलवाई। **—प्रलय**—पु० ब्रह्माका एक दिन—एक हजार चतुर्युगी—बीतनेपर होनेवाला आंशिक प्रलय जिसमें पुराणानुसार स्वर्गसे नीचेके सब लोकोंका नाश हो जाता है। **—मेरु**—पु० पिंगलकी प्रस्तार-संवंधी एक रीति। **—वर्षा**—स्त्री० वह वर्षा जो नगरादिके कुछ भागोंमें हो, कुछमें न हो। **—शर्करा**—स्त्री० मिसरी।

खँड—पु० खाँड़ (केवल समासमें व्यवहृत रूप)। **—पूरी**—स्त्री० मेवा, शक्कर मिली सूजी, खोया आदि भरकर वनायी हुई मोयनदार पूरी। **—वरा**—पु० खँड़ौरा। **—वानी**—स्त्री० खाँड़का शरवत; वरातियोंके सत्कारके लिए शरवत भेजे जानेकी एक रस्म (ख़ंड—खाँड़+पानी)। **—सार, —साल**—स्त्री० देशी ढंगसे चीनी वनानेका कारखाना। **—सारी**—स्त्री० एक तरहकी देशी चीनी।

खंडक—वि० [सं०] खंडन करने या काटनेवाला; हटानेवाला।

खंडत*—वि० खंडित।

खंडन—पु० [सं०] काटना; तोड़ना; नाश करना; हानि करना; निराश करना (प्रणय); किसी बातको गलत बताना, रद्द करना; दूसरेके मतका युक्तिपूर्वक निराकरण। वि० तोड़ने, काटनेवाला। **—मंडन**—पु० खंडन और मंडन; वहस, विवाद।

खंडना*—स० क्रि० खंडित करना; निराकरण करना; टुकड़े-टुकड़े करना।

खंडनी—स्त्री० मालगुजारीकी किस्त।

खंडनीय—वि० [सं०] खंडन करने योग्य।

खँडरना*—स० क्रि० खंड-खंड करना, टुकड़े-टुकड़े करना।

खँडरा†—पु० वेसनका वना एक पकवान।

खँड़रिच—पु० खंजरीट।

खंडला—पु० टुकड़ा, कतला।

खंडशः—अ० [सं०] खंड-खंड करके, कई खंडोंमें बाँटकर।

खँडहर—पु० ढूह, गिरे हुए मकानका अवशेष; गिरा, ढहा हुआ मकान।

खंडित—वि० [सं०] तोड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ; टूटा हुआ, भग्न; गलत ठहराया हुआ, निराकृत।

खंडिता—स्त्री० [सं०] नायकमें अन्य स्त्रीसे संभोगके चिह्न देखकर कुपित हुई नायिका।

खँडिया—पु० ऊखकी गँडेरियाँ वनानेवाला। स्त्री० टुकड़ा।

खंडी—स्त्री० वीस मनकी एक तौल या माप।

खंडोष्ठ—पु० [सं०] ओठका एक रोग।

खँडौरा†—पु० मिसरीका लड्डू, 'ओला'।

खँतरा—पु० दरार, अँतरा, छोटा गड्ढा (प्रायः 'कोना'-के साथ अंतमें आता है)।

खंता†—पु० मिट्टी खोदनेका औजार; कुदाल; वह गड्ढा जिसमेंसे कुम्हार मिट्टी लाते हैं।

ख़ंदक—स्त्री० [अ०] खाई, गहरा गड्ढा।

खंदा*—पु० खोदनेवाला।

खँधवाना†—स० क्रि० खाली कराना (पात्र)।

खँधार*—पु० तंवू; छावनी; सरदार।

खंभ—पु० स्तंभ, खंभा; सहारा।

खंभा—पु० पत्थर, लकड़ी, लोहे या ईंटों आदिका बना लंवा आधार; सहारा।

खँ(खं)भार*—पु० चिंता; डर; घवड़ाहट; शोक।

खँभिया—स्त्री० छोटा खंभा।

खँसना—अ० क्रि० गिरना, खसकना।

ख—पु० [सं०] शून्य स्थान, आकाश; सूर्य; शून्य, विंदी; स्वर्ग; पुर, नगर; क्षेत्र; अभ्रक; ज्ञानेंद्रिय; ज्ञान; लग्नसे दसवाँ स्थान; ब्रह्म; सुख; कर्म; गड्ढा; छेद; निकास; श्वासनलिका; जख्म। **—कक्षा**—स्त्री० आकाशकी परिधि। **—कुंतल**—पु० व्योमकेश, शिव। **—गंगा**—स्त्री० आकाशगंगा। **—ग**—पु० पक्षी; सूर्य; ग्रह; वायु; वादल; चंद्रमा; वाण; देवता। **—०केतु, —०नाथ, —०पति**—पु० गरुड़। **—गोल, —गोलक**—पु० आकाशमंडल। **—ग्रास**—वि० सर्वग्रास (ग्रहण)। **—चित्र**—पु० असंभव वात। **—द्योत**—पु० सूर्य; जुगनू। **—द्योतन**—पु० सूर्य। **—पुष्प**—पु० असंभव कल्पना, आकाशकुसुम। **—मणि**—पु० सूर्य। **—विद्या**—स्त्री० ज्योतिष विद्या।

खई*–स्त्री० नाश, क्षय; युद्ध; झगड़ा–'सुत सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निसिदिन होत खई–सू० ।

खक्खा–पु० कहकहा, अट्टहास; अनुभवी व्यक्ति; बड़े डील-डौलका हाथी ।

खखरा–वि० झीना । पु० बाँसका बना टोकरा; देग ।

खखार–पु० गाढ़ा-लसदार बलगम ।

खखारना–अ० क्रि० खखार निकालना, थूकना, खरखराहटके साथ गलेमें चिपका हुआ कफ निकालना; संकेतरूपमें खाँसना ।

खखेटना*–स० क्रि० खदेड़ना; दबाना; छेदना; घायल करना; व्याकुल करना ।

खखेटा, खखेट्यो*–पु० छिद्र; शंका, खटका ।

खगन*–अ० क्रि० गड़ना, चुभना; चित्तमें बैठना; अनुरक्त होना; चिह्नित होना, उपट आना; असर होना ।

खगांतक–पु० [सं०] बाज ।

खगेंद्र, खगेश–पु० [सं०] गरुड़ ।

खग्गा*–पु० दे० 'खड्ग' ।

खचन–पु० जड़ने, उलझने या अंकित होनेकी क्रिया ।

खचना*–अ० क्रि० जड़ा जाना; अंकित होना; उलझ जाना; रम जाना । स० क्रि० जड़ना; अंकित करना ।

खचरा–वि० दोगला; नीच ।

खचाखच–अ० बिलकुल (भरा हुआ), ठसाठस ।

खचाना*–स० क्रि० चिह्न–लकीर–बनाना, खचित करना; तेजीसे लिखना ।

खचित–वि० [सं०] अंकित; चिह्नित; आबद्ध; जड़ा हुआ ।

खचिया†–स्त्री० दे० 'खँचिया' ।

खच्चर–पु० घोड़ेसे मिलता-जुलता एक जानवर जो घोड़े और गधेकी मिश्र संतति है ।

खज*–वि० खाद्य, खाने योग्य ।

खजला–पु० खाजेकी तरहकी एक मिठाई ।

खजहजा*–पु० खाने योग्य अच्छा फल; मेवा ।

ख़ज़ांची–पु० [फा०] खजानेका अधिकारी, कोषाध्यक्ष ।

ख़ज़ानची–पु० दे० 'ख़ज़ांची' ।

ख़ज़ाना–पु० [फा०] रुपया, सोना-चाँदी रखनेका स्थान, कोष, धनागार, भंडार; धन-माल; बंदूकमें बारूद रहनेका स्थान; राजस्व । **–(ने) की हुंडियाँ**–स्त्री० (ट्रेजरी बिल्स) वे अस्थायी हुंडियाँ जो तात्कालिक आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए धन प्राप्त करनेके निमित्त राज्यके खजानेसे जारी की जायँ, कोषविपत्र ।

ख़ज़ीना–पु० [फा०] खजाना, कोश ।

खजुआ(वा)–पु० खाजा; खजला; भटवाँस ।

खजुराही†–स्त्री० खजूरका बाग ।

खजुलाना–स० क्रि० दे० 'खुजलाना' ।

खजुली–स्त्री० दे० 'खुजली'; एक मिठाई ।

खजूर–पु० ताड़की जातिका एक पेड़ जिसका रस ताड़ीकी तरह पिया जाता है और उससे गुड़-शकर भी बनाते हैं; मैदेकी बनी एक मिठाई । **–छड़ी**–स्त्री० एक रेशमी कपड़ा जिसपर खजूरकी पत्तियोंकीसी धारियाँ होती हैं ।

खजूरी–वि० खजूरका; खजूरके (पत्तेके) आकारका (खजूरी चोटी) । * स्त्री० खजूर ।

खट–स्त्री० दो चीजोंके टकरानेकी ध्वनि । **–खट**–स्त्री० खटखटकी आवाज; झमेला, खटराग; झगड़ा; किचकिच । **–खटा**–पु० पक्षियोंको भगानेके लिए वृक्षोंमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा । **–पट**–स्त्री० खट-खटकी आवाज; अनबन, झगड़ा । **–पटिया**–वि० झगड़ालू; उपद्रवी । पु० काठकी बनी चप्पल, चट्टी । **–से**–तुरत ।

खट–स्त्री० खाटका लघु रूप (केवल समासमें व्यवहृत) । **–कीड़ा,–कीरा**–पु० खटमल । **–पाटी**–स्त्री० खाटकी पाटी । **–बुना**–पु० खाट बुननेवाला । **–मल**–पु० मैली खाट, बिस्तर आदिमें पैदा होनेवाला एक ऊष्मज कीड़ा जो आदमीका खून पीकर जीता है, मत्कुण । **–मली**–वि० खटमलके रंगका । **–मुत्ता**–वि० सोते समय खाटपर पेशाब करदेनेवाला (बच्चा) । **मु०–पाटी,–वाटी लेना**–(स्त्रीका) मान या क्रोधसे खाटपर, पाटीसे लगकर, पड़ रहना ।

खट–वि० खट्टाका समासमें व्यवहृत रूप । **–मिट्ठा,–मीठा**–वि० जिसमें खटास-मिठास दोनों हों; खट्टा-मीठा (फल) ।

खट*–वि० छः । **–करम**–टेढ़े विधि-विधानवाला पूजन, अनुष्ठान; झमेला, खटराग । **–करमी**–पु० खटकरम करने, खटराग फैलानेवाला । **–पद**–पु० दे० 'षट्पद' । **–पदी**–स्त्री० दे० 'षट्पदी' । **–मुख**–पु० दे० 'षण्मुख' । **–रस**–वि० दे० 'षड्रस' । **–राग**–पु० झंझट, झमेला; काठकबाड़ (फैलाना) ।

खटक–स्त्री० खटकनेका भाव; चुभन, टीस; दुःख; शिकायत; खटका, आशंका (बेखटक) ।

खटकना–अ० क्रि० चुभना; गड़ना; बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना; उचटना; बिगाड़ होना; खटपट शब्द होना ।

खटका–पु० खट-खटकी आवाज; आशंका; चिंता; पेच, पुरजा; सिटकिनी; पक्षियोंको उड़ानेके लिए वृक्षमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा, खटखटा ।

खटकाना–स० क्रि० खटखटाना; भड़काना; अनबन, बिगाड़ कराना ।

खटक्किका–स्त्री० [सं०] खिड़की ।

खटखटाना–स० क्रि० किसी चीजको पीट, हिलाकर खट-खटकी आवाज निकालना; याद दिलाना, टोकना ।

खटना–अ० क्रि० कठोर श्रम करना, पिसना; धनोपार्जन करना, कमाना ।

खटला–पु० बाल-बच्चे, परिवार; पत्नी; कानमें बाली पहननेका छेद ।

खटाई–स्त्री० खटास, तुर्शी; खट्टी चीज (आम, इमली आदि) । **मु०–में डालना**–गहना साफ करनेके लिए खटाई (इमली आदि) में डालना; (किसी कामको) टाल देना, लटकाये रखना, कुछ तै न करना । **–में पड़ना**–खटाईमें डाला जाना (सभी अर्थोंमें) ।

खटाका–पु० 'खट'की आवाज ।

खटाखट–पु० खटखटकी आवाज । अ० खटखटकी आवाज करते हुए; तुरत, तत्काल ।

खटाना–अ० क्रि० खटास आना, खट्टा हो जाना; निबाह होना; टिकना; परखमें ठीक उतरना । स० क्रि० कसके

काम लेना।

खटापटी–स्त्री० झगड़ा, विरोध, अनबन।

खटास–स्त्री० खट्टापन, तुर्शी। पु० गंधबिलाव, खट्टाश।

खटिक–पु० फल, तरकारी आदि बेचनेवाली एक हिंदू जाति।

खटिका–स्त्री० [सं०] खड़िया मिट्टी; कानका छेद।

खटिया–स्त्री० छोटी चारपाई।

खटीक–पु० तरकारी बेचनेका काम करनेवाली एक हिंदू जाति; * कसाई।

खटोलना*–पु० दे० 'खटोला'।

खटोला–पु० छोटी खाट; बुंदेलखंडके अंतर्गत एक प्रदेश।

खट्टा–वि० जिसमें खटास हो, तुर्श, अम्ल। **मु०–खाना**–नीचा देखना; विफल होना; दिल फिर जाना। **(जी)–होना**–अप्रसन्न होना।

खट्वांग–पु० [सं०] पाया जड़ी हुई पाटी जो शिवका अस्त्र बतायी जाती है; प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा मंगनेका पात्र। **–धर**–पु० शिव।

खट्वा–स्त्री० [सं०] खाट, चारपाई; झूला।

खड़ंजा–पु० ईंटोंकी खड़ी जोड़ाई।

खड़कना–अ० क्रि० 'खड़-खड़'की आवाज होना; सूखे पत्तोंके परस्पर टकराने या दबनेकी आवाज होना; खाँड़े-तलवारके बक्तर आदिपर गिरनेकी आवाज होना; खटकना।

खड़काना–स० क्रि० खटकाना।

खडक्किका, खडक्की–स्त्री० [सं०] खिड़की।

खड़खड़ाना–अ० क्रि० 'खड़-खड़' आवाज होना, निकलना। स० क्रि० किसी चीजको पीट, बजाकर खड़-खड़ आवाज पैदा करना, खटखटाना।

खड़खड़ाहट–स्त्री० खड़-खड़की आवाज; खड़-खड़ आवाज होना।

खड़खड़िया–स्त्री० एक तरहकी (घटिया) पालकी; घोड़ोंको शिक्षा देनेके काम आनेवाली एक प्रकारकी गाड़ी।

खड़ग*–पु० दे० 'खड्ग'।

खड़गी–वि० खड्गधारी। पु० गैंड़ा।

खड़जी–पु० गैंड़ा।

खड़बड़–स्त्री० पत्थर, धातु आदिकी चीजोंके टकराने, गिरने आदिकी आवाज; गड़बड़, गोलमाल; खलबली।

खड़बड़ाना–अ० क्रि० घबराना; क्रम बिगड़ जाना; अस्त-व्यस्त हो जाना। स० क्रि० खड़बड़ करना; क्रम उलट-पुलट देना।

खड़बड़ाहट–स्त्री० खड़बड़ी।

खड़बड़ी–स्त्री० बेतरतीबी; खलबली; घबराहट।

खड़मंडल–पु० गड़बड़, गोलमोल।

खड़ा–वि० सीधा ऊपरको उठा हुआ, लंबरूप; पाँवोंके सहारे स्थित, स्थिर, ठहरा हुआ; रुका हुआ; तैयार; उपस्थित; उद्यत; बाकी; मौजूद; कच्चा, अपक्व; जारी; जो काटा न गया हो, खेतमें मौजूद (खड़ी फसल); समूचा, साबित; प्रतीक्षामें ठहरा हुआ। **–खेत**–पु० वह खेत जिसमें फसल मौजूद हो। **मु०–करना**–तैयार करना; बनाना; ढाँचा बनाना; कच्ची सिलाई करना; गाड़ना (खंभा आदि); चुनावमें (मेंबरी आदिका) उम्मेदवार बनाना। **–होना**–तैयार होना; बनना; ढाँचा बनना; सहायक होना; चुनावमें उम्मेदवार होना।

खड़ाऊँ–स्त्री० काठकी बनी खूँटीदार, खुली पादुका।

खड़ाका*–पु० खड़कनेका शब्द।

खड़ानन*–पु० कार्त्तिकेय।

खड़िका–स्त्री० [सं०] खड़िया मिट्टी।

खड़िया–स्त्री० सफेद, मुलायम मिट्टी या एक तरहके चूनेका पत्थर जो लिखने और सफेदी आदिके काममें आता है।

खड़ी–स्त्री० खड़िया मिट्टी। वि० स्त्री० दे० 'खड़ा'। **–चढ़ाई**–स्त्री० सीधी, बहुत कम ढालवाली चढ़ाई। **–तैराकी**–स्त्री० खड़े रहकर, केवल पाँव चलाते हुए तैरना। **–पाई**–स्त्री० सीधी, छोटी रेखा; मात्राएँ लिखनेमें अक्षरके आगे या पीछे बनायी जानेवाली सीधी लकीर; पूर्ण विरामका चिह्न। **–बोली**–स्त्री० दिल्ली-मेरठ प्रदेशकी बोली जो आधुनिक हिंदीका मान्य रूप है। **–लकीर**–स्त्री० लंबके रूपमें सीधी लकीर। **–सवारी**–अ० तुरत, खड़े-खड़े (रुखसत करना)। **–हुंडी**–स्त्री० वह हुंडी जिसका रुपया चुकाया न गया हो। **मु०–पछाड़ें खाना**–खड़े हो-होकर गिर पड़ना, पछाड़ें खाना। **–सवारी आना**–तुरत लौट जानेको तैयार होना।

खड़े-खड़े–अ० खड़ा रहते हुए; (देरतक) खड़ा रहनेसे; जल्दी, तुरत; थोड़ी देर, कुछ क्षणके लिए।

खड़ेघाट–अ० तुरत। **मु०–धोना**–घाटपर ही कपड़ा लेकर बिना भट्ठी दिये धो देना; कुछ घंटोंमें ही कपड़ा धो देना।

खड्ग–पु० [सं०] तलवारकी शक्लका एक प्राचीन अस्त्र, खाँड़ा; तलवार; लोहा; गैंड़ेका सींग; गैंड़ा। **–कोश(ष)**–पु० खड्ग या तलवारका म्यान। **–धर**–वि०, पु० तलवार धारण करनेवाला। **–पुत्रिका**–स्त्री० कटार। **–फल**–पु० खड्गकी धार। **–हस्त**–वि० जिसके हाथमें खड्ग, तलवार हो; मारनेको उद्यत।

खड्गी (ड्गिन्)–वि० [सं०] खड्गधारी। पु० गैंड़ा; शिव।

खड्ड–पु० गड्ढा।

खड्डा–पु० दे० 'खड्ड'।

खत*–पु० क्षत, घाव। **–खोट**–स्त्री० खुरंड, सूखते हुए घावके ऊपर जमी पपड़ी।

ख़त(त्त)–पु० [अ०] लकीर, रेखा; चिह्न; लिखावट; पत्र, चिट्ठी; लेख, तहरीर; नयी उगती दाढ़ी-मूँछोंके रोयें जैसे बाल, रेख; सूरत-शकल, हुलिया। **–किताबत**–स्त्री० पत्र-व्यवहार, चिट्ठी-पत्री।

ख़तना–पु० [अ०] मुसलमान बच्चेके लिंगके अगले हिस्सेकी त्वचा काट देनेकी रस्म या संस्कार, सुन्नत।

ख़तम–वि० [अ०] दे० 'ख़त्म'।

खतमी–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ और बीज दवाके काम आते हैं।

ख़तर, खतरा–पु० [अ०] डर, भय; आशंका; जोखिम। **–(र)नाक**–वि० खतरेवाला, खतरेसे भरा हुआ; भयजनक।

खतरानी–स्त्री० खत्री स्त्री।

खतरेटा–पु० खत्रीका बेटा; खत्री।

खता*–पु० क्षत, घाव; † फोड़ा।

ख़ता–स्त्री० [अ०] चूक; दोष, अपराध; धोखा–'जाहु जनि

आगे, खता खाहु मत यारो–भू० । **–वार**–वि० दोषी, अपराधी ।

खति*–स्त्री० दे० 'क्षति' ।

खतियाना–स० क्रि० खातेमें चढ़ाना, लिखना ।

खतियौनी–स्त्री० दे० 'खतौनी' ।

खतौनी–स्त्री० वह कागज या वही जिसमें पटवारी हर काश्तकारकी जोतका रकबा, नवैयत (प्रकार), लगान आदि लिखता है; वही-खाता; खतियानेका काम । **मु०–करना**–खातेमें चढ़ाना ।

खत्ता–पु० गड्ढा; कोई चीज बनाने, रखने आदिके लिए बना गड्ढा; प्रांत, स्थान ।

खत्ती–स्त्री० छोटा खत्ता या खाता, बखार ।

ख़त्म–पु० [अ०] अंत, समाप्ति; पूरा होना ।

ख़दंग–पु० [फ़ा०] तीर, बाण; केकड़ा; चनारका पेड़ ।

खदंगी*–स्त्री० तीर, बाण ।

खदखदाना, खदबदाना–अ० क्रि० किसी चीजका उबलते समय 'खदबद' शब्द करना ।

खदरा†–वि० निकम्मा, रद्दी । पु० गड्ढा ।

खदान–स्त्री० खान ।

खदिर–पु० [सं०] खैरका पेड़; इंद्र; चंद्रमा ।

ख़दीव–पु० [तु०] मांडलिक नरेश; मिस्रके बादशाहोंकी उपाधि ।

खदेड़ना–स० क्रि० भगाना; हटाना; पीछा करते हुए भगाना ।

खदेरना–स० क्रि० दे० 'खदेड़ना' ।

खद्दर–पु० हाथका कता-बुना कपड़ा, खादी ।

खन–* पु० खंड, मंजिल; छन । अ० तुरत, तत्काल । स्त्री० रुपये-पैसे आदिके बजनेकी ध्वनि, खनक ।

खनक–स्त्री० खनकनेकी क्रिया, आवाज; रुपये, चूड़ियों आदिके बजनेकी आवाज । पु० [सं०] खोदनेवाला; खान खोदनेवाला; सेंध मारनेवाला; चूहा; खान ।

खनकना–अ० क्रि० खन-खन करके बजना, खनखनाना ।

खनकाना–स० क्रि० 'खन-खन' ध्वनि उत्पन्न करना; रुपये आदिको परखनेके लिए बजाना ।

खनकार–स्त्री० खनक, झंकार ।

खनखनाना–अ० क्रि० खनकना । स० क्रि० खनकाना, रुपया आदि बजाना ।

खनन–पु० [सं०] खोदना, गोड़ना ।

खनना–स० क्रि० खोदना ।

खनयित्री–स्त्री० [सं०] खोदनेका औजार, खंती ।

खनवाना, खनाना–स० क्रि० खोदनेका काम कराना ।

खनि–स्त्री० [सं०] खान; गड्ढा; गुफा । **–ज**–वि० खानसे निकला हुआ (सोना आदि) **–० विज्ञान**–पु० खानों तथा खनिज पदार्थोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान । **–वसति**–स्त्री० (माइनिंग सेटिलमेंट) लोहे, कोयले आदिकी खानके पास बसे हुए लोगोंकी बस्ती ।

खनित्र–पु० [सं०] खंता; फावड़ा ।

खनियाना*–स० क्रि० खाली करना ।

खनोना*–स० क्रि० दे० 'खनना' ।

खपच–स्त्री० बाँसका नोकदार टुकड़ा; लकड़ीकी कलछी ।

खपची, खपच्ची–स्त्री० बाँसकी फट्टी; तीली; कबाब भूननेकी सीख़ ।

खपड़ा–पु० मिट्टीका पकाया हुआ टुकड़ा जिससे मकान छाते हैं; मिट्टीका खप्पर; टूटे हुए मिट्टीके बरतनका टुकड़ा ।

खपड़ी–स्त्री० मिट्टीकी कूँड़ी जिसमें भड़भूँजे दाना भूनते हैं; ठीकरा, छोटा खपड़ा ।

खपड़ैल–स्त्री० दे० 'खपरैल' ।

खपत–स्त्री० खपनेका भाव; खर्च; मालकी बिक्री; निबाह ।

खपना–अ० क्रि० खर्च होना; लगना; बिकना; मरना; नाश होना; निबाह होना ।

खपरा–पु० दे० 'खपड़ा' ।

खपरैल–स्त्री० खपड़ेकी छाजन; खपड़ेसे छाया हुआ घर ।

खपाना–स० क्रि० खतम कर देना; तंग करना; मार डालना; काममें लाना; बेचना; निभाना ।

खपुआ–*वि० डरपोक । पु० दरवाजेके नीचे चूलको छेदमें ठीक तरहसे बैठानेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी ।

खप्पड़, खप्पर–पु० मिट्टीका तसले जैसा बरतन; कालीके हाथमें रहनेवाला रुधिरपात्र; भिक्षापात्र; कपाल ।

ख़फ़गी–स्त्री० [फ़ा०] रोष, नाराजगी, क्रोध ।

ख़फ़ा–वि० [फ़ा०] रुष्ट, नाराज, कुपित ।

ख़फ़ीफ़–वि० [अ०] हलका; थोड़ा; तुच्छ; लज्जित । **मु०–होना**–लज्जित होना ।

ख़फ़ीफ़ा–स्त्री० [फ़ा०] छोटी रकमोंके दावे सुननेवाली अदालत (स्माल काज कोर्ट); बदचलन औरत ।

ख़बर–स्त्री० [अ०] सूचना; जानकारी, पता; हाल, समाचार; सँदेसा; चेत, होश । **–गीर**–वि० खोज-खबर लेनेवाला; देखरेख रखनेवाला; सहायक । **–गीरी**–स्त्री० खोज-खबर लेना; देख-रेख; सहायता । **–दार**–वि० सावधान, चौकन्ना । **–दारी**–स्त्री० सावधानता, होशियारी । **–रसाँ**–पु० खबर पहुँचानेवाला, संदेशवाहक । **मु०–लेना**–खोज-खबर लेना, हाल पूछना; जवाब तलब करना; डाँटना, फटकारना; दंड देना ।

खबरि, खबरिया*–स्त्री० दे० 'खबर' ।

ख़बीस–वि० [अ०] नापाक; दुष्ट; क्रूर ।

ख़ब्त–पु० [अ०] झक, सनक, धुन ।

ख़ब्ती–वि० [अ०] जिसे खब्त हो, सनकी ।

खभर(ड़)ना†–स० क्रि० मिलाना; हलचल, खलबली मचाना ।

खभार*–पु० घबराहट, परेशानी; भय; दुःख ।

ख़म–वि० [फ़ा०] झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र । पु० घुमाव; टेढ़ापन; बाजू । **–दम**–पु० हिम्मत, जोश । **–दार**–वि० टेढ़ा; घुँघराले (बाल) । **मु०–खाना**–हारना, नीचा देखना–'मुरक्यो तुरक वहाँ खम खाई'–छत्र प्र० । **–ठोंकना**–लड़नेके लिए ताल ठोंकना, ललकारना ।

ख़मसा–वि० [अ०] पाँचसे संबंध रखनेवाला । पु० पाँचका समाहार, पंचक; वह पद्य जिसके हर बंदमें पाँच-पाँच मिसरे हों; पाँचों उँगलियाँ; संगीतमें एक ताल ।

ख़मीर–पु० [अ०] गुँधे आटे आदिमें (देरतक रखनेसे) पैदा होनेवाली खटास और उभार; वह चीज जिसमें यह गुण पैदा हो गया हो, पौस; प्रकृति; बनावट । **मु०–उठना**–

आटे आदिका खमीर पैदा हो जानेसे फूलकर उठना, फैलना।

ख़मीरा–वि॰ [अ॰] खमीरवाला। पु॰ मिसरी या चीनीकी चाशनीमें पकायी हुई दवा; कटहल आदिका खमीर मिलाकर बनाया हुआ सुगंधित तंबाकू।

ख़मीरी–वि॰ स्त्री॰ [अ॰] खमीरवाली (रोटी)।

खम्माच–स्त्री॰ रातमें गायी जानेवाली एक रागिनी।

खय*–पु॰ दे॰ 'क्षय'।

खया*–पु॰ भुजमूल।

ख़यानत–स्त्री॰ [फ़ा॰] अमानत रखी हुई चीज, रकमको चुरा लेना, दबा लेना, गबन; बददयानती; बेईमानी।

ख़याल–पु॰ [फ़ा॰] ध्यान, चिंता, सोच-विचार; कल्पना; मत, विचार; लिहाज; याद; दे॰ 'ख्याल'। **–(ले) ख़ाम**–पु॰ असंगत, नासमझीका विचार। **मु॰–में समाना**–ध्यानमें चढ़ जाना, हर वक्त याद रहना। **–से उतरना**–याद न रहना, भूल जाना।

ख़याली–वि॰ [फ़ा॰] कल्पित, सोचा-माना हुआ। **मु॰–पुलाव पकाना**–कल्पनाके महल खड़े करना, अनहोनी बातें सोचना।

खर–वि॰ [सं॰] कड़ा; तेज, तीक्ष्ण; घना; मोटा; अशुभ; हानिकर; तीक्ष्ण धारवाला; ज्यादा सिंका हुआ ('सेवर'का उलटा); गरम; निष्ठुर। पु॰ गधा; खच्चर; बगला; कौआ; रामके हाथों मारा गया एक राक्षस; ६० संवत्सरोंमेंसे पचीसवाँ; कुरर पक्षी। **–कर, –रश्मि**–पु॰ सूर्य। **–मास**–पु॰ दे॰ 'खरवाँस'। **–वाँस**–पु॰ [हिं॰] धन-मकरकी संक्रांति (पूस) या मेष-वृषकी संक्रांति (चैत) जिसमें शुभ कार्यका निषेध है। **–वार**–पु॰ अशुभ दिन–रवि, मंगल आदि।

खर–पु॰ तृण, घास। **–खौकी***–स्त्री॰ आग (तृण खानेवाली)। **–पात**–पु॰ घास-पात।

ख़र–पु॰ [फ़ा॰] गधा। वि॰ मूर्ख; बहुत बड़ा; भद्दा। **–गोश**–पु॰ खरहा। **–दिमाग़**–वि॰ नासमझ; हठी; घमंडी।

खरक–पु॰ बाँस, बल्लोंसे बनाया हुआ गाय रखनेका बाड़ा, गोठ; चरागाह। स्त्री॰ खड़क; खटक।

खरकना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'खड़कना'; 'खटकना'; चल देना।

खरका–पु॰ सूखा कड़ा तिनका; दाँत खोदनेका तिनका; खरक।

खरखरा–वि॰ खुरखुरा।

ख़रख़शा–पु॰ [फ़ा॰] झगड़ा, विवाद; बखेड़ा, झंझट।

खरग*–पु॰ दे॰ 'खड्ग'।

खरच–पु॰ दे॰ 'ख़र्च'।

खरचना–स॰ क्रि॰ खर्च करना; काममें लाना।

खरचा–पु॰ दे॰ 'ख़र्चा'; दे॰ 'खरका'।

खरजूर–पु॰ दे॰ 'खर्जूर'।

खरतुआ–पु॰ एक निकम्मी घास।

खरदुक*–पु॰ एक पुराना पहनावा।

खरब–वि॰ सौ अरब, खर्व। पु॰ सौ अरबकी संख्या।

ख़रबूज़ा–पु॰ गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक प्रसिद्ध फल। **मु॰–(ज़े)को देखकर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है**–आदमी जैसेका संग करे वैसा ही हो जाता है।

ख़रबूज़ी–वि॰ खरबूजेके रंगका।

खरभर*–पु॰ खलबली, हलचल; शोर, हल्ला।

खरभरना, खरभराना–अ॰ क्रि॰ खलबलाना; हलचल मचना।

खरभरी*–स्त्री॰ दे॰ 'खरभर'।

खरल–पु॰ पत्थर या लोहेकी कूँड़ी जिसमें दवाएँ कूटते, घोंटते हैं। **मु॰–करना**–खरलमें बारीक पीसना।

खरसा*–पु॰ एक पकवान।

खरहरा–पु॰ लोहेकी कई दंतपंक्तियोंवाली चौकोर कंघी जिससे घोड़ेके बदनकी गर्द साफ की जाती है; अरहरके डंठलोंकी झाड़ू।

खरहरी*–स्त्री॰ एक मेवा, छुहारा।

खरहा–पु॰ लोमड़ीकी जातिका, कदमें बिल्लीके बराबर, एक जंतु जिसके कान बहुत लंबे होते हैं, खरगोश।

खरांशु–पु॰ [सं॰] सूर्य।

खरा–वि॰ विशुद्ध, खालिस; सच्चा; छल-कपटसे रहित; स्पष्टभाषी; व्यवहारमें सच्चा; नकद; खूब पका या तपा हुआ; खूब सिंका हुआ; करारा। **–असामी**–पु॰ देन-लेनमें सच्चा, ईमानदार आदमी। **–खेल**–पु॰ सच्चा खेल, व्यवहार। **–खोटा**–वि॰ अच्छा-बुरा। **मु॰–खोटा परखना**–भले-बुरेकी पहचान करना।

खराई–स्त्री॰ खरापन, सचाई, ईमानदारी; † भोरके समय कुछ खानेको न मिलनेके कारण तबीयतका कुछ खराब होना।

ख़राज–पु॰ [अ॰] दे॰ 'ख़िराज'।

ख़राद–पु॰ [फ़ा॰] खरादनेका आला, चरख; खरादनेका काम; गढ़न। **मु॰–पर चढ़ाना**–खरादनेके लिए चरखपर चढ़ाना; सुधारना, दुरुस्त करना।

खरादना–स॰ क्रि॰ चरखपर चढ़ाकर लकड़ी या धातुको चिकना, सुडौल करना; छील-छालकर दुरुस्त, सुडौल करना।

ख़राब–वि॰ [अ॰] उजड़ा हुआ, वीरान; नष्ट, बर्बाद; बुरा, हीन; दुश्चरित्र।

ख़राबी–स्त्री॰ [अ॰] दोष, बुराई; तबाही, बरबादी।

खरारि–पु॰ [सं॰] विष्णु; राम; कृष्ण; बलराम।

खरारी*–पु॰ दे॰ 'खरारि'।

ख़राश–स्त्री॰ [फ़ा॰] त्वचाका छिलजाना, खरोंच; खुजली।

खरिक*–पु॰ गोठ; चरागाह।

खरिका*–पु॰ दे॰ 'खरिक'। † दे॰ 'खरका'।

खरिया–स्त्री॰ रस्सीकी बनी जाली जिसमें भूसा आदि बाँधकर ले जाते हैं; थैली; कंडेकी राख; दे॰ 'खड़िया'।

खरियाना†–स॰ क्रि॰ झोलीमें भर लेना; प्राप्त करना।

खरिहान†–पु॰ दे॰ 'खलियान'।

खरी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ खर। स्त्री॰ दे॰ 'खड़िया'; 'खली'। **–खोटी**–स्त्री॰ कड़वी-कसैली, कड़ी लगनेवाली बात। **मु॰–खरी, –खोटी सुनाना**–दो टूक, सच्ची बात कहना; भला-बुरा कहना।

खरीक*–पु॰ तिनका।

ख़रीता–पु॰ [अ॰] थैली; बड़ा लिफाफा जिसमें सरकारी

आदेश भेजे जाते हैं; इस प्रकार प्रेषित सरकारी आदेश; जेब; सुई-धागा रखनेकी थैली ।

ख़रीद–स्त्री० [फ़ा०] खरीदनेकी क्रिया या भाव, क्रय; खरीद की हुई वस्तु । **–फ़रोख्त**–स्त्री० खरीदना-बेचना, लेवा-वेची ।

खरीदना–स० क्रि० मोल लेना, दाम देकर लेना ।

ख़रीदार–पु० [फ़ा०] खरीदनेवाला, ग्राहक; इच्छुक ।

ख़रीफ़–स्त्री० [अ०] वह फसल जो असाढ़-सावनमें बोयी और कातिक-अगहनतक काट ली जाय (धान, मकई इ०) ।

खरेंई, खरोईं*–अ० सचमुच; अत्यंत ।

खरोंच–स्त्री० त्वचाका काँटे, नाखून आदिसे छिल जाना, खराश; छिल जानेका निशान ।

खरोंचना–स० क्रि० खुरचना; छीलना ।

खरों (रो)ट–स्त्री० दे० 'खरोंच' ।

खरोष्ठ्री, खरोष्ठी–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फारसीकी तरह दाहनेसे बायें लिखी जाती थी और मौर्य-कालमें पश्चिमोत्तर भारतमें चलती थी ।

खरोंट*–स्त्री० दे० 'खरोंच' ।

खरौहाँ*–वि० कुछ-कुछ खारा ।

खर्ग*–पु० तलवार ।

ख़र्च, ख़र्चा–पु०[फ़ा०] पैसे,चीजका किसी काममें लगना, सर्फ होना, व्यय; आवश्यक कार्योंमें लगनेवाला पैसा । **मु०–उठाना**–सर्फा बर्दाश्त करना, व्ययभार वहन करना। **–निकलना**–सर्फा, लागत निकल आना ।

खर्चना–स० क्रि० दे० 'खरचना'।

ख़र्चीला–वि०बहुत खर्च करनेवाला, खरांच; जिसमें ज्यादा खर्च पड़े ।

खर्जूर–पु० [सं०] खजूरका पेड़; उसका फल; चाँदी; हरताल; धतूरा; बिच्छू । **–रस**–पु० ताड़ी ।

खर्पर–पु० [सं०] खप्पर; कपाल, खोपड़ी; मिट्टीका फूटा हुआ बरतन; छाता; खपरिया ।

खर्रा–पु० लंबा लेख; विवरण; मसौदा; एक चर्मरोग ।

खर्राच–वि० बहुत खर्च करनेवाला ।

खर्राट–वि० होशियार; अनुभवी; वृद्ध ।

खर्राटा–पु० सोतेमें नाकसे निकलनेवाली खर्र-खर्रकी आवाज । **मु०–(टे)भरना,–मारना,–लेना**–गहरी नींद, बेखबर सोना ।

खर्व(र्ब)–वि० [सं०] विकलांग; बौना; छोटा; सौ अरब । पु० सौ अरबकी संख्या ।

खर्वित–वि० [सं०] खर्व, छोटा किया हुआ ।

खल–वि० [सं०] दुष्ट, दुर्जन; खोटा; बेहया; नीच; चुगलखोर । पु० खलियान; खरल ।

खलई*–स्त्री० खलता ।

ख़ल्क़–पु० [अ०] जीवसमष्टि, लोकसमूह; संसार ।

ख़लक़त*–स्त्री० दे० 'ख़िल्क़त' ।

खलड़ी–स्त्री० खाल ।

खलना–अ० क्रि० बुरा लगना, क्लेशकर होना, चुभना । स० क्रि० मोड़ना; झुकाना; घुँघरूमें गड्ढा बनाना; * स० क्रि० खरलमें घोंटना ।

खलबल–स्त्री० दे० 'खलबली'

खलबलाना–अ० क्रि० खौलना; क्षुब्ध, बेचैन होना ।

खलबलाहट–स्त्री० खलबलानेका भाव, बेचैनी; खलबली ।

खलबली–स्त्री० हलचल; बेचैनी, घबराहट; क्षोभ ।

खलभल–पु०, **खलभली**–स्त्री० दे० 'खलबली' ।

खलभलाना–अ० क्रि० दे० 'खलबलाना' ।

खलभलाहट–स्त्री० दे० 'खलबलाहट' ।

खलल*–पु० धूम ।

ख़लल–पु० [अ०] बाधा, अड़चन; बिगाड़; रोग । **–अंदाज़**–वि० बाधा डालनेवाला । **–दिमाग़**–स्त्री० दिमागका बिगड़ जाना; सनक, पागलपन । वि० जिसका दिमाग बिगड़ गया हो, सनकी ।

खलाई†–स्त्री० दुष्टता ।

खलाना*–स० क्रि० खाली करना; गड्ढा करना; धँसाना ।

ख़लास–पु० [अ०] छुटकारा, मुक्ति, निवृत्ति (पाना, होना)।

खलासी–स्त्री० दे० 'ख़लास' । पु० जहाज, तोपखाने आदिमें छोटे-मोटे काम करनेवाला मजदूर; खेमा आदि खड़ा करनेवाला नौकर ।

खलित*–वि० स्खलित; चलित; हिला हुआ; गिरा हुआ ।

खलियान–पु० वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और माँड़ी जाय; ढेर । **मु०–करना**–काटी हुई फसलका ढेर लगाना; नष्ट करना ।

खलियाना–स० क्रि० खाल उतारना (कटे बकरे आदिकी); † खाली करना ।

खली–स्त्री० [सं०] तेलहनकी सीठी ।

खलीता–पु० दे० 'ख़रीता' ।

ख़लीफ़ा–पु० [अ०] उत्तराधिकारी, जानशीन; पैगंबर-(मुहम्मद)का उत्तराधिकारी; नेता; गतके आदिके उस्तादका नायब; बूढ़ा दरजी; नाई; बावर्ची ।

खलु–अ० [सं०] निश्चय, निषेध, जिज्ञासा, अनुनय इ० अर्थोंमें प्रयुक्त ।

ख़ल्त-मल्त–वि० गड्ड-मड्ड, मिला-जुला ।

खल्लड़–पु० खलड़ी; मशक; अति वृद्ध व्यक्ति (जिसकी खाल लटक गयी हो) ।

खल्वाट–वि० [सं०] गंजा । पु० गंजापन ।

खवा–पु० कंधा, भुजमूल । **मु०–(वे) से खवा छिलना** –बहुत भीड़, धक्कम-धक्का होना ।

खवाई†–स्त्री० खानेकी क्रिया; 'खिलाई' ।

खवाना–स० क्रि० खिलाना ।

खवारा*–वि० खोटा, खराब ।

ख़वास–पु० [अ०] चुने हुए लोग, विशिष्ट जन (अवामका उल्टा); खास खिदमतगार; मुसाहब; सखा; गुण, तासीर; * नाई । स्त्री० लौंडी; सहेली ।

ख़वासी–स्त्री० [अ०] खवासका काम, पद; हौदे या गाड़ीमें खास टहलूके बैठनेकी जगह ।

खवैया–पु० खानेवाला; अधिक खानेवाला ।

खस–पु० [सं०] गढ़वालके उत्तरका प्रदेश; उस प्रदेशका निवासी; खासिया; खुजली; पोस्तेका पौधा ।

ख़स–पु० [फ़ा०] सूखी घास; गाडर नामकी घासकी जड़ जिसकी टट्टियाँ गरमीके दिनोंमें कमरेको ठंडा रखनेके लिए खिड़कियों, दरवाजोंपर लगायी जाती हैं । **–ख़ाना–**

पु० खसकी टट्टियोंसे घिरा हुआ स्थान, कमरा।

खसकना-अ० क्रि० दे० 'खिसकना'।

खसकाना-स० क्रि० दे० 'खिसकाना'।

खसखस-पु० पोस्तेका दाना।

खसखसा-वि० भुरभुरा; बहुत छोटा; पोस्तेके दानेसा।

खसना*-अ० क्रि० खिसकना; गिरना।

खसबो*-स्त्री० दे० '.खुशबू'।

ख़सम-पु० [अ०] दुश्मन, लड़नेवाला; मालिक, पति।

ख़सरा-पु० एक तरहकी खुजली; पटवारीकी वही जिसमें गाँवके हर खेतका नंबर, रकबा, काश्तकारका नाम इ० लिखे रहते हैं; हिसाबका कच्चा चिट्ठा, खर्रा।

ख़सलत-स्त्री० [अ०] आदत, स्वभाव; गुण।

खसाना-स० क्रि० गिराना; फेंकना।

ख़सासत-स्त्री० [अ०] ख़सीसपन, कंजूसी; क्षुद्रता, नीचता।

खसिया-पु० आसामकी एक पहाड़ी; उस पहाड़ीके आसपासका प्रदेश। * वि०, पु० दे० 'ख़सी'।

ख़सियाना-स० क्रि० खसी करना।

ख़सी-वि० [अ०] बधिया; हिजड़ा; नपुंसक। पु० बधिया बकरा। **मु०-करना**-बधिया करना।

ख़सीस-वि० [अ०] कंजूस; क्षुद्रहृदय।

खसोट-स्त्री० खसोटनेकी क्रिया या भाव।

खसोटना-स० क्रि० नोचना, उखाड़ना; छीन लेना।

खसोटी-स्त्री० दे० 'खसोट'।

ख़स्तगी-स्त्री० [फा०] खस्तापन।

ख़स्ता-वि० [फा०] घायल; खिन्न; क्लांत; दुर्दशाग्रस्त; जरासा दबानेसे चूर हो जानेवाला; बहुत नरम। **-हाल**-वि० खिन्न; विपन्न, दुर्दशाग्रस्त, फटेहाल।

ख़स्सी-वि०, पु० [अ०] दे० 'ख़सी'।

खाँखर†-वि० जिसमें बहुत सूराख हों; झीना।

खाँग-पु० काँटा; जंगली सूअरका वह दाँत जो बाहर निकला रहता और शस्त्रकासा काम देता है; गैंड़ेके मुँहपर रहनेवाला सींग; तीतर, मुर्ग आदिके पैरका काँटा; गाय-बैल आदिके खुर पक जानेका रोग। स्त्री० † कमी, त्रुटि-'बरिस बीस लगि खाँग न होई'-प०।

खाँगना-अ० क्रि० लँगड़ा हो जाना; घटना। स० क्रि० छेदना।

खाँगी†-स्त्री० कमी।

खाँचना*-स० क्रि० दे० 'खीँचना'।

खाँचा-पु० अरहरके डंठल आदिका बना टोकरा, झाबा।

खाँची-स्त्री० छोटा खाँचा, खँचिया।

खाँड़-स्त्री० गुड़का वह भेद जो गीला होता है और जिससे शक्कर बनाते हैं, राब; शकर, कच्ची चीनी; दे० 'खाड़'। **-सारी**-स्त्री० दे० 'खँड़सारी'।

खाँड़ना†-स० क्रि० कुचलना; टुकड़े-टुकड़े करना; चबाना।

खाँडर*-पु० खँडरा; कतला।

खांडविक-पु० [सं०] हलवाई।

खाँड़ा-पु० खड्ग; सीधी और कुछ चौड़ी तलवार; भाग, खंड। **मु०-बजना**-तलवार चलना, युद्ध होना।

खाँधना*-स० क्रि० खाना-'चोरि दधि कौने खाँधो'-सू०।

खाँभ*-पु० खंभा; दे० 'खाम'।

खाँवाँ-पु० खेत या बागके चारों ओर खोदा हुआ गड़ा या मेंड़; कम चौड़ी, गहरी खाई।

खाँसना-अ० क्रि० गलेसे बलगम आदि निकालने या संकेतके लिए फेफड़ेसे झटके और आवाजके साथ हवा बाहर निकालना।

खाँसी-स्त्री० खाँसनेकी क्रिया; गले या श्वासनलीमें सुरसुराहट होनेसे फेफड़ेसे झटके और आवाजके साथ हवाका बाहर निकलना।

खाइँ, खाईं-स्त्री० किले, परकोटे आदिके चारों ओर रक्षार्थ खोदी हुई नहर, खंदक।

खाऊ-वि० बहुत खानेवाला; घूस लेनेवाला। **-मीत**-पु० खानेके लिए दोस्ती करनेवाला, मतलबका यार।

ख़ाक-स्त्री० [फा०] धूल; मिट्टी; राख, भस्म; तुच्छ वस्तु; मृतत्व। वि० तुच्छ; छोटा। अ० कुछ नहीं; किस लिए। **-का पुतला**-मनुष्य। **-सार**-वि० तुच्छ, नाचीज; दीन; विनीत। **मु०-उड़ना**-तबाह, बरबाद हो जाना; बदनामी, बेइज्जती होना। **-उड़ाना**-भटकते फिरना, खाक छानना। **-करना**-जलाकर राख कर देना; तबाह कर देना। **-चाटकर**-अति नम्रतापूर्वक (कोई बात कहना)। **-छानना**-किसी चीजकी तलाशमें बहुत हैरान होना, मारा-मारा फिरना। **-डालना**-(ऐबपर) पर्दा डालना, छिपाना; भूल जाना। **-बरसना**-उजाड़ लगना, धूल उड़ना। **-में मिलना**-धूलमें मिलना; नष्ट, बरबाद होना।

ख़ाकसी-स्त्री० [फा०] एक वनस्पतिका दाना जो दवाके काम आता है।

खाकसीर-स्त्री० दे० 'खाकसी'।

ख़ाका-पु० [फा०] नकशे या चित्रपर पारदर्शी कागज रखकर बनाया हुआ नक्शा या चित्र; कच्चा नक्शा; रेखाचित्र; ढाँचा; स्थूल योजना; एक तरहका कशीदा (उतारना, खींचना)। **मु०-उड़ाना**-खिल्ली उड़ाना।

ख़ाकी-वि० [फा०] मिट्टीका बना; मिट्टीके रंगका, मटियाला। पु० मटियाला रंग; इस रंगका कपड़ा; पुलिस या फौजकी वर्दी; साधुओंका एक संप्रदाय।

खाख*-स्त्री० खाक, धूल; चूर्ण।

खाखरा*-पु० एक तरहका बाजा।

खागना*-अ० क्रि० चुभना।

खाज-स्त्री० त्वचामें खुजली होनेका रोग, खारिश।

खाजा-पु० खाद्य, खानेकी चीज; मैदेकी बनी एक मिठाई।

खाजी*-स्त्री० खाद्य पदार्थ।

खाट-स्त्री० चारपाई, खटिया। **-खटोला**-पु० गृहस्थीका सामान, बोरिया-बधना। **मु०-पर पड़ना**-बीमार होना। **-से उतारा जाना**-आसन्नमरण होना। **-से लगना**-रोगके कारण उठने-बैठनेमें अशक्त हो जाना।

खाटा, खाटो*-वि० खट्टा, अम्ल।

खाड़*-पु० गड्ढा।

खाड़व-पु० छः स्वरोंवाला राग, षाडव।

खाड़ी-स्त्री० समुद्रका वह भाग जो तीन ओर खुश्कीसे घिरा हो, खलीज।

खात–पु० [सं०] खोदना; तालाब; कुआँ; गड्ढा, खाई। वि० खोदा हुआ।

ख़ातमा–पु० [अ०] अंत; मृत्यु; पुस्तकका अंतिम अध्याय।

खाता–स्त्री० [सं०] तालाब। पु० [हिं०] वह वही जिसमें हर एक ग्राहक, असामी आदिका अलग-अलग हिसाब लिखा जाय; लेखा, हिसाब; मद्द; वखार। **मु०–खोलना, –डालना**–किसीसे लेन-देन आरंभ करना। **–(ते)में पड़ना**–किसीके नाम, किसीके हिसाबमें लिखा जाना; पक्की वहीमें लिखा जाना।

ख़ातिर–स्त्री० [अ०] मन, दिल; ध्यान, खयाल; आदर, लिहाज; सत्कार, आवभगत; इच्छा, मरजी। अ० वास्ते, लिए। **–ख़्वाह**–अ० इच्छानुसार, जैसा मन चाहे। **–जमा**–स्त्री० इतमीनान, दिलजमई। **–दारी**–स्त्री० आवभगत, सत्कार।

ख़ातिरन्–अ० [अ०] वास्ते; (किसीकी) प्रसन्नताके लिए।

खाती–स्त्री० गड्ढा; छोटा तालाव; खतिया जाति; बढ़ई।

ख़ातून–स्त्री० [तु०] भद्र, कुलीन महिला।

खाद–स्त्री० जमीनका उपजाऊपन बढ़ानेवाली, पेड़-पौधोंके लिए खाद्यरूप वस्तु। पु० [सं०] खाना, भक्षण।

खादक–वि०, पु० [सं०] खानेवाला; कर्जदार।

खादर–पु० नीची जमीन जहाँ वरसातका पानी इकट्ठा हो जाय, कछार।

खादित–वि० [सं०] खाया हुआ।

ख़ादिम–पु० [अ०] खिदमत करनेवाला, सेवक।

ख़ादिमा–स्त्री० [अ०] टहलुई, सेविका।

खादिर–वि० [सं०] खदिरसे उत्पन्न। पु० कत्था।

खादी–स्त्री० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गजी; हाथके कते सूतका हाथ-करघेपर बना हुआ कपड़ा। **–केंद्र**–पु० खादी बुने जानेका केंद्र, वह स्थान जहाँ खादीका उत्पादन बड़े पैमानेपर हो।

खाद्य–वि० [सं०] खाने योग्य। पु० खानेकी चीज, भोजन। **–समवितरण**–पु० (फूड राशनिंग) नागरिकोंको निर्धारित मात्रामें खाद्यान्नोंका समान रूपसे वितरण।

खाद्योज–पु० [सं०] (विटामिन) प्राकृतिक खाद्य पदार्थोंमें पाया जानेवाला सूक्ष्म तत्त्व जो प्राणियोंके स्वास्थ्य एवं अभिवृद्धिके लिए आवश्यक माना जाता है (इसके कई भेद माने जाते हैं); पोषक तत्त्व, जीवन-तत्त्व।

खाध*–पु० दे० 'खाद्य'।

खाधु, खाधुक*–पु० खानेवाला, भक्षक।

खान–स्त्री० वह जगह जहाँसे धातु, कोयला आदि खोदकर या पत्थरकी सिलें तोड़कर निकाली जायँ, खानि; स्रोत; आकर, भंडार, खजाना। पु० खानेकी क्रिया; भोजन। **–पान**–पु० खाना-पीना; खाने-पीनेका ढंग; खाने-पीनेका व्यवहार, संबंध।

ख़ान–पु० [तु०] स्वामी, मालिक, सरदार; रईस; पठान; कुछ पठान शासकोंकी उपाधि; तातार और खताके पुराने वादशाहोंकी उपाधि। **–बहादुर**–पु० ब्रिटिश सरकारकी एक उपाधि जो मुसलमानों और पारसियोंको दी जाती थी। **–सामाँ**–पु० शाही महलका भंडारी या पाकशालाका प्रबंधक; बावरची।

खानक–पु० [सं०] खोदनेवाला; खान खोदनेवाला।

ख़ानगाह–पु० [फ़ा०] मठ, दरगाह।

ख़ानगी–वि० [फ़ा०] घरका, घरेलू, निजी, जाती।

ख़ानदान–पु० [फ़ा०] घराना, कुल; कुटुंब।

ख़ानदानी–वि० [फ़ा०] कुलक्रमागत, पैतृक; ऊँचे कुलका, कुलीन।

खाना–स० क्रि० ठोस आहारको चबाकर निगलना, भक्षण करना; निगलना; मारकर भक्षण करना (हिंस्र जंतुओंका); चूसना, चबाना (पान, गँडेरियाँ); चाट जाना (कीड़ों आदिका); खर्च करना; नष्ट करना; कमजोर, खोखला करना; काटना; सहना, अँगेजना; लगने, पड़ने देना (धूप, हवा आदि); हड़पना, गबन करना; चोरी, बेईमानीसे हथियाना, पैदा करना। पु० भोजन। **मु० खा जाना खा डालना**–निगल जाना; मार डालना; खर्च कर देना; हजम, गबन कर लेना। **खाना-कमाना**–मेहनत-मजदूरीसे पैसा कमाकर गुजर-बसर करना। **–खिलाना**–अच्छी चीजें बनाकर खाने और दूसरोंको खिलानेका शौक रखना। **खाना पीना**–भोजन-पान, खाने-पीनेका सुख भोगना। **खा-पी जाना**–खा-पीकर खतम करना, उड़ा डालना।

ख़ाना–पु० [फ़ा०] घर, आलम; स्थान; डिबिया, केस; आलमारी, संदूकका विभाग; कागज या कपड़ेपर रेखाओंसे बना विभाग, कोष्ठक। **–आबाद**–घर बसा, धनधान्यसे भरा रहे (आशीर्वचन)। **–आबादी**–स्त्री० घर बसना; समृद्धि; ब्याह। **–ख़राब**–वि० आवारा; बेघरबारका; घरको बरबाद करनेवाला। **–जंगी**–स्त्री० आपसी लड़ाई, गृहयुद्ध। **–तलाशी**–स्त्री० घरकी तलाशी। **–दारी**–स्त्री० घर-गृहस्थीका काम, गार्हस्थ्य। **–पूरी**–स्त्री० किसी नकशे, सारणीके खानोंको भरना। **–बदोश**–वि० जिसका कोई घर, ठौर-ठिकाना न हो। पु० खेमों, सिरकियोंमें रहनेवाली, स्थायी आवास-रहित जाति, जन।

खानि–स्त्री० [सं०] खान; * खूँट; ओर; प्रकार, भेद।

खानिक–पु० [सं०] दीवारमें किया हुआ छेद। *स्त्री० खानि।

खाब*–पु० दे० 'ख़्वाब'।

खाम–पु० लिफाफा; जोड़; * खंभा। * वि० घटनेवाला।

ख़ाम–वि० [फ़ा०] कच्चा; जो पका-पकाया या पक्का न हो; अप्रौढ, अनुभवहीन; छोटा (बाट, तौल); अयुक्त, असंगत। **–ख़याली**–स्त्री० नासमझी; नासमझीका, बुद्धि-विरुद्ध विचार।

खामखाह–अ० दे० 'ख़्वाहमख़्वाह'।

खामना–स० क्रि० आटे आदिसे (घड़े आदिका) मुँह बंद करना; लिफाफेमें बंद करना।

ख़ामी–स्त्री० [फ़ा०] कचाई; कमी; दोष; अनुभवहीनता।

ख़ामोश–वि० [फ़ा०] चुप, मौन।

ख़ामोशी–स्त्री० [फ़ा०] चुप्पी।

खार–पु० क्षार; क्षार गुण, खारापन; रेह; लोना; सज्जी; राख; पोखरा, डबरा–'दई न जात खार उतराई, चाहत चढ़न जहाज'–सू०, दे० 'ख़ार'।

ख़ार–पु० [फ़ा०] काँटा, फाँस; द्वेष, जलन। **मु०–खाना**–जलना, द्वेष करना। **–निकालना**–बदला लेना; जलन मिटाना।

खारक*-पु० दे० 'ख़ारिक'।

खारा-वि० जिसमें खारापन हो, क्षार गुणवाला; नमकीन; बदमजा। पु० घास, पत्ते बाँधनेकी जाली; बड़ा टोकरा, झावा; एक धारीदार कपड़ा।

ख़ारिक-पु० [फा०] खजूर, छुहारा।

ख़ारिज-वि० [अ०] बाहर; बाहर किया हुआ, बहिष्कृत; अलग किया हुआ।

ख़ारिजी-वि० [अ०] बाहरी, बाह्य; परराष्ट्र-संबंधी।

खारिश, खारिश्त-स्त्री० [फा०] खुजली; खुजलीकी बीमारी।

खारी-वि० खारा। स्त्री० खारी नमक। **-नमक**-पु० लोना मिट्टीसे निकला हुआ नमक जो बैलों आदिको खिलाया जाता है।

खारुआँ, खारुआ-पु० एक तरहका गहरा लाल रंग; उक्त रंगमें रंगा हुआ कपड़ा।

खारो*-वि० दे० 'खारा'।

खाल-स्त्री० त्वचा, चमड़ा; छिलका; धौंकनी; आधा चरसा; * मृत देह; नीची जमीन; गहरी जगह; खाड़ी। **मु०-उधेड़ना**-इतना पीटना कि खाल उड़ जाय, बहुत मारना। **-खींचना**-जीवित शरीरपरसे चमड़ा अलग कर लेना।

ख़ालसा-पु० वह सरकारी जमीन या इलाका जिसका प्रबंध सरकार खुद करे और जो किसीकी जागीर, जमींदारी न हो; सिखोंका एक (प्रमुख) संप्रदाय। **-दीवान**-पु० सिखोंकी धर्मसभा। **मु०-करना**-सरकारका किसी जमीन, जायदादका प्रबंध अपने हाथमें ले लेना, जब्त कर लेना।

खाला-वि० नीचा (ऊँचा-खाला)।

ख़ाला-स्त्री० [फा०] माँकी बहन, मौसी। **-ज़ाद**-वि० मौसैरा (भाई-बहन)। **-का घर**-बहुत आसान काम।

ख़ालिक़-वि० [अ०] बनानेवाला, सृष्टिकर्ता। **-बारी**-स्त्री० अमीर खुसरो-रचित एक पद्य-पुस्तक जिसमें प्रचलित अरबी-फारसी शब्दोंके हिंदी पर्याय दिये गये हैं।

ख़ालिस-वि० [अ०] शुद्ध, बेमेल; खरा, सच्चा।

ख़ाली-वि० [अ०] जिसमें कुछ भरा-धरा न हो, रीता, रहित, शून्य; जिसमें कोई रहता न हो (मकान); जिससे काम न लिया जा रहा हो, अव्यवहृत; जिसके पास कोई काम न हो, सावकाश; व्यर्थ, बेकार। अ० केवल। पु० तबले आदि बजानेमें खाली छोड़ा हुआ ताल। **-महीना**-पु० मुसलमानोंका ग्यारहवाँ महीना ज़ीकाद जो मनहूस समझा जाता है (इससे पहले महीनेमें ईद और बादके महीनेमें बकरीद पड़ती है)। **-दिन**-पु० शुभकार्य या नये कामके लिए अनुपयुक्त दिन। **-पेट**-वि० जो कुछ खाये न हो, भूखा। अ० बिना कुछ खाये, बासी मुँह। **-हाथ**-वि० जिसके हाथमें, पास कुछ न हो, निर्धन; जिसके हाथमें कोई हथियार न हो। अ० हाथमें बिना कुछ लिये, बिना पैसे या हथियारके। **मु०-जाना**-निशानेपर न लगना, व्यर्थ होना। **-बैठना**-बेकार बैठना। **-हाथ लौटना**-बैरंग, विफल लौटना।

ख़ालू-पु० [अ०] मौसा; मामूँ।

खाले*-अ० नीचे।

ख़ाविंद-पु० [फा०] मालिक, स्वामी, पति।

ख़ास-वि० [अ०] आमका उलटा, विशेष; विशिष्ट; चुना हुआ; मुख्य; व्यक्तिविशेषसे संबंध रखनेवाला; निजका; बढ़िया; प्रिय, प्यारा; ठेठ; ठीक। पु० विशिष्ट जन; प्रिय जन। **-कर**-अ० विशेषतः, खास तौरसे। **-क़लम**-पु० निजका मुंशी। **-ख़ास**-वि० चुने हुए, प्रमुख (लोग)। **-गी**-स्त्री० खासीयत, विशेषता। **-तराश**-पु० राजा, बादशाहकी हजामत बनानेवाला नाई। **-नवीस**-पु० ख़ासक़लम। **-बरदार**-पु० वह सिपाही जो बंदूक लेकर राजा, बादशाहकी सवारीके आगे-आगे चले; वह नौकर जो (राजा, रईसका) पानदान लेकर साथ चले। **-बाज़ार**-पु० राजमहलके सामने या पासका, उसकी आवश्यकताओंके लिए बसाया गया बाजार। **-महल**-पु० अंतःपुर, जनानखाना; प्रधान बेगम, पट्टमहिषी। **-महाल**-पु० वह जायदाद जिसका प्रबंध राज्य या सरकार खुद करे।

ख़ासा-वि० [अ०] काफी अच्छा, बढ़िया; औसत दरजेका; सुंदर। पु० रईसका खाना; राजाकी सवारीका घोड़ा; हाथी; मलमलकी किसका एक सूती कपड़ा; एक तरहकी पूरी।

खासियत-स्त्री० दे० 'ख़ासीयत'।

ख़ासीयत-स्त्री० [अ०] गुण, प्रभाव; प्रकृति, स्वभाव।

ख़ाहमख़ाह-अ० दे० '.ख्वाहम.ख्वाह'।

ख़ाहिश-स्त्री० दे० '.ख्वाहिश'।

खिँचना-अ० क्रि० खींचा जाना, तनना; किसी दिशामें बढ़ना, आकर्षित होना; कसा जाना; (म्यान आदिसे) बाहर निकलना; विरक्त, अप्रसन्न होना; चित्रित होना, उतरना; दूर होना; सोखा जाना।

खिँचवाना-स० क्रि० 'खींचने'का काम दूसरेसे कराना।

खिँचाई-स्त्री० खींचनेकी क्रिया; खींचनेकी उजरत।

खिँचाना-स० क्रि० दे० 'खिचवाना'।

खिँचाव-पु० खींचे जानेका भाव, तनाव; विरक्ति; नाराजगी।

खिँचावट, खिंचाहट-स्त्री० दे० 'खिँचाव'।

खिखिंद*-पु० किष्किंध पर्वत; बीहड़ भूमि।

खिचड़वार-पु० मकर-संक्रांति।

खिचड़ा-पु० गेहूँ और कई तरहकी दालें मिलाकर पकायी गयी खिचड़ी जो प्रायः मुहर्रममें बाँटी जाती है।

खिचड़ी-स्त्री० मिला हुआ या मिलाकर पकाया हुआ दाल-चावल; दो या अधिक चीजोंकी मिलावट; दो रंगकी चीजों-(स्याह-सफेद बाल, रुपये और अशर्फियों)की मिलावट; ब्याहकी एक रस्म जिसमें वर और उसके छोटे भाइयोंको खिचड़ी खिलाते हैं; मकर-संक्रांति; नाचकी साई। वि० मिला-जुला, खल्त-मल्त। **-बोली, -भाषा**-स्त्री० वह बोली, भाषा जिसमें दो या अधिक भाषाओंके शब्दोंका मिश्रण हो। **मु०-पकना**-गुप्त मंत्रणा, साजिश होना।

खिचना-अ० क्रि० दे० 'खिँचना'।

खिजना-अ० क्रि० दे० 'खीजना'। वि० चिड़चिड़ा।

खिजमत*-स्त्री० दे० 'ख़िदमत'।

खिजमति*–स्त्री० दे० 'ख़िदमत' । **–गार**–पु० दे० 'ख़िदमतगार' ।

खिजलाना–अ० क्रि० चिढ़ना । स० क्रि० चिढ़ाना ।

ख़िज़ाँ–पु०, स्त्री० [फ़ा०] पतझड़की ऋतु; ह्रास; ह्रासकाल; बुढ़ापा ।

खिजाना–स० क्रि० दे० 'खिझाना' ।

ख़िज़ाब–पु० [अ०] सफेद बालोंको स्याह कर देनेवाली दवा, केशकल्प (करना, लगाना) ।

खिझ*–स्त्री० दे० 'खीज' ।

खिझना–अ० क्रि० दे० 'खीजना' ।

खिझाना, खिझावना*–स० क्रि० चिढ़ाना, छेड़ना; गुस्सा दिलानेवाली बात करना ।

खिड़कना*–अ० क्रि० दे० 'खिसकना' ।

खिड़की–स्त्री० मकान, रेल, जहाज आदिमें हवा और रोशनी आनेके लिए बनाया हुआ छोटा दरवाजा, झरोखा, वातायन; किले या परकोटेका चोर-दरवाजा । **–दार**–वि० जिसमें खिड़की या खिड़कियाँ हों । **–बंद**–वि० (मकान) जो पूरा किरायेपर ले लिया जाय, जिसमें अन्य किरायेदार न रहे ।

ख़िताब–पु० [अ०] किसीकी ओर मुँह करना, मुखातिब होना; बात-चीत; पदवी; राज्यकी ओरसे दी जानेवाली उपाधि । **–याफ़्ता**–वि० जिसे खिताब मिला हो ।

ख़ित्ता–पु० [अ०] भूखंड, प्रदेश ।

ख़िदमत–स्त्री० [फ़ा०] सेवा, टहल, चाकरी; काम; पद । **–गार**–पु० खिदमत करनेवाला, टहलू । **–में**–सामने, पास, सेवामें ।

ख़िदमती–वि० [फ़ा०] खिदमत करनेवाला; खिदमतके बदलेमें प्राप्त (खिदमती जागीर) ।

खिन*–पु० छन, क्षण ।

खिन्न–वि० [सं०] खेदयुक्त; दुःखी; उदास; चिंतित; क्लांत ।

खिपना*–अ० क्रि० खपना; मिल जाना, निमग्न होना ।

खियाना†–अ० क्रि० घिस जाना । स० क्रि० खिलाना ।

खियाल†–पु० खयाल, विचार; हँसी, मजाक ।

खिरका–पु० पशुओंका बाड़ा, खरक–'राँभति गौ खिरकनमें बछरा हित धाई'–सू० ।

खिरकी†–स्त्री० दे० 'खिड़की' ।

खिरनी–स्त्री० एक फलवृक्ष या उसका फल, क्षीरिणी ।

ख़िराज–पु० [अ०] कर, मालगुजारी; अधीन राज्यकी ओरसे प्रभु राज्यको दिया जानेवाला कर ।

खिरिरना*–स० क्रि० अनाजको साफ करनेके लिए सूराख़दार छाजमें रखकर छानना; खुरचना ।

खिरौरी*–स्त्री० केवड़ेमें सुवासित कत्थेकी टिकिया ।

ख़िलअ़त–पु० [अ०] जोड़ा, पोशाक; वह पहनावा जो राजा, बादशाह किसीको सम्मानार्थ प्रदान करे ।

ख़िलक़त–स्त्री० [अ०] सृष्टि, रचना; प्रकृति; जगत् ।

खिलखिलाना–अ० क्रि० आवाजके साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना ।

खिलखिलाहट–स्त्री० खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज ।

खिलत, खिलति, खिलवति*–स्त्री० दे० 'ख़िलअत' ।

खिलना–अ० क्रि० कलीका विकसित होना, फूल बनना; फबना; प्रसन्न, प्रफुल्ल होना; भला लगना; पक,भुनकर अलग-अलग हो जाना (चावल, खीलें), फट जाना ।

ख़िलवत–स्त्री० [अ०] एकांत; खाली, जनशून्य स्थान । **–ख़ाना**–पु० अकेलेमें मिलने, गुप्त मंत्रणाका स्थान ।

खिलवाड़–पु० दे० 'खेलवाड़' ।

खिलवाना–स० क्रि० दूसरेसे परसवाकर, दूसरेके द्वारा किसीको भोजन कराना; प्रफुल्ल कराना ।

खिलवार*–पु० दे० 'खिलवाड़'; खेलाड़ी ।

खिलाई–स्त्री० खिलानेका काम; खिलानेका नेग (खिचड़ी खिलाई); बच्चा खेलानेपर नियुक्त मजदूरनी ।

खिलाड़ी–वि० खेलनेवाला; किसी खास खेलमें कुशल; कुश्ती, गतका आदिमें कुशल । पु० खेलनेवाला; खेल-तमाशा, करतब दिखानेवाला, बाजीगर ।

खिलाना–स० क्रि० ('खाना'का प्रेर०) भोजन कराना; दावत देना; खिलनेका कारण होना; विकसित, प्रफुल्ल करना । **मु०–पिलाना**–भोजन-पानसे सत्कार करना ।

ख़िलाफ़–वि० [अ०] विरुद्ध; प्रतिकूल, उलटा । **–क़ानून**–वि० कानूनके विरुद्ध, गैरकानूनी ।

ख़िलाफ़त–स्त्री० [अ०] खलीफाका पद; पैगंबर या बादशाहका जानशीन या प्रतिनिधि होना । **–आंदोलन**–पु० [हिं०] प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) के बाद खिलाफतकी पुनः स्थापनाके लिए भारतमें ब्रिटिश सरकारके विरुद्ध चलाया गया आंदोलन ।

खिलौना–पु० खेलनेकी चीज, साधन; काठ, मिट्टी आदिका बना हुआ हाथी, घोड़ा, आदि; मनबहलावकी चीज ।

खिल्ली–स्त्री० हँसी, मजाक; कील; पानका बीड़ा । **–बाज़**–पु० खिल्ली उड़ानेवाला ।

खिसकना–अ० क्रि० हटना, सरकना; चुपकेसे चल देना ।

खिसकाना–स० क्रि० हटाना, सरकाना; चुपकेसे हथिया लेना, उड़ाना ।

खिसलना–अ० क्रि० दे० 'फिसलना' ।

खिसलाहट–स्त्री० फिसलनेका भाव ।

खिसाना*–अ० क्रि० दे० 'खिसियाना' ।

खिसारा–पु० खसारा, घाटा, हानि ।

खिसि(आ)याना–अ० क्रि० लज्जित होना; लज्जित होकर, बेवकूफ बनकर खीझना; कुढ़ जाना; खफा होना । वि० खिसियाया हुआ; लज्जित । **मु० (खिसियानी) बिल्ली खंभा नोचे**–खिसियाया हुआ आदमी अपनी खीस दूसरोंपर उतारता है ।

खिसियाहट–स्त्री० खिसियानेका भाव ।

खिसी*–स्त्री० लज्जा; खीस; धृष्टता ।

खिसौहाँ*–वि० लज्जितसा; क्रुद्धसा ।

खींच–स्त्री० खींचनेकी क्रिया या भाव; माँग, रफ्तनी । **–तान**–स्त्री० खींचा-खींची, नोंक-झोंक; खींच-खाँचकर अर्थ लगाना ।

खींचना–स० क्रि० अपनी ओर आकृष्ट करना, ऐंचना; घसीटना; चूसना; सारपदार्थ निकाल लेना; चित्रित करना; रोक रखना; व्यापारिक वस्तुएँ मँगाना ।

खींचा-खींची–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए दो व्यक्तियोंका परस्पर विरोधी उद्योग, नोक-झोंक ।

खींचा-तानी–स्त्री० दे० 'खींचतान'।

खीज–स्त्री० खीजनेका भाव; झुँझलाहट, कुढ़न, गुस्सा।

खीजना–अ० क्रि० झुँझलाना, क्रुद्ध होना।

खीझ*–स्त्री० दे० 'खीज'।

खीझना*–अ० क्रि० दे० 'खीजना'।

खीन*–वि० दे० 'क्षीण'। **–ता**–दे० 'खीनताई'।

खीनताई*–स्त्री० दुर्बलता, सूक्ष्मता; घटी।

खीर–स्त्री० दूधमें पकाया हुआ चावल (या सूजी, लौकी, मखाना आदि)। पु० दूध। **–चटाई**–स्त्री० अन्नप्राशन। **–मोहन**–पु० छेनेसे बननेवाली एक मिठाई।

खीरा–पु० ककड़ीकी जातिका एक फल। **मु०खीरे-ककड़ी-की तरह काटना**–धड़ाधड़, बिना प्रयास, काटना।

खीरी–स्त्री० गाय, भैंस आदिके थनके ऊपरका मांस; *खिरनी।

खील–स्त्री० भुना हुआ धान, लावा; † दे० 'कील'।

खीलना–स० क्रि० पानके बीड़े, दोने आदिमें तिनका गोदना।

खीला†–पु० कील, खूँटी।

खीली†–स्त्री० पानका बीड़ा।

खीवन, खीवनि*–स्त्री० मस्ती, मत्त होना।

खीस–स्त्री० खिसियानेका भाव; लज्जा; खीझ; ऐसी हँसी जिसमें दाँत खुल जायँ; बाहर निकले हुए दाँत; पेउस; † नुकसान, खराबी–'अब सलाह इनसों करे कछू न ह्वै है खीस'–छत्र०; नाश। * वि० नष्ट, विध्वस्त। **मु०–काढ़ना,–निकालना**–इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें; बेढंगी हँसी हँसना; गिड़गिड़ाकर माँगना।

खीसना*–अ० क्रि० नष्ट होना, खराब, बरबाद होना।

खीसा–पु० थैली, बटुआ, जेब।

खुँटकढ़वा–पु० कानका मैल निकालनेवाला।

खुँदवाना–स० क्रि० घोड़ेकी टापसे कुचलवाना, रौंदवाना।

खुँदाना–स० क्रि० घोड़ा कुदाना।

खुंबी, खुंभी*–स्त्री० दे० 'खुभी'।

खुआरी*–स्त्री० दे० 'ख्वारी'।

खुक्ख, खुक्खा–वि० खाली, छूँछा; नादार।

खुखड़ी–स्त्री० तकुएपर लपेटा हुआ सूत, ऊन; एक तरहका बड़ा छुरा, नेपाली कटार, करौली।

खुगीर–पु० दे० 'ख़ोगीर'।

खुचड़, खुचर, खुचुर–स्त्री० किसीके काममें खाहमखाह दोष निकालना, छिद्रान्वेषण (करना, लगाना)।

खुचड़िया, खुचरी, खुचुरी–वि० खुचड़ निकालनेवाला।

खुजलाना–अ० क्रि० खुजली मालूम होना, त्वचामें ऐसी चुलकन उठना जो सहलाने, रगड़नेसे मिटे; (अंगविशेषका) किसी कामके लिए बेचैन होना। स० क्रि० खुजली मिटानेके लिए त्वचाको मलना, नाखूनसे खरोचना।

खुजलाहट–स्त्री० खुजली।

खुजली–स्त्री० चुलकन या सुरसुरी जो खुजलानेसे मिटे, खाज; एक रोग जिसमें त्वचापर दाने निकलते और उनमें तीव्र खुजली होती है, ख़ारिश; (किसी बातकी) तीव्र इच्छा।

खुजाना–अ० क्रि०, स० क्रि० 'खुजलाना'।

खुज्झा, खुझड़ा*–पु० दे० 'खूझा'।

खुटक*–स्त्री० खटका, शंका।

खुटकना–स० क्रि० किसी पौधेकी फुनगी या ऊपरका भाग नोच लेना, खोंटना।

खुटका†–पु० दे० 'खुटक'।

खुटचाल*–स्त्री० खोटापन, दुष्टता।

खुटचाली*–वि० खोटा, दुष्ट।

खुटना*–अ० क्रि० दे० 'खुलना'–'खुटैं न कपट-कपाट'–वि०; समाप्त होना।

खुटपन(ना)–पु० खोटापन, दुष्टता, पाजीपन।

खुटाई–स्त्री० खोटापन, दोष।

खुटाना*–अ० क्रि० पूरा होना, समाप्त होना।

खुटिला–पु० करनफूल।

खुट्टी†–स्त्री० संबंध-विच्छेद सूचित करनेवाली बालकोंकी एक क्रिया जिसमें वे दूसरेकी कानी उँगलीसे अपनी कानी उँगली मिलाकर चूम लेते हैं।

खुट्ठी–स्त्री० खुरंड, घावके ऊपरकी पपड़ी।

खुड्डी, खुड्ढी–स्त्री० पाखानेमें बैठनेके पायदान, कदमचा; पाखाना फिरनेका गढ़ा।

.ख़ुतबा–पु० [अ०] वह धार्मिक व्याख्यान जो जुमे या ईदकी नमाजके बाद इमाम मेंबरपर खड़ा होकर करता है और जिसके अंतमें उस समय जो खलीफा होता है उसके लिए दुआ की जाती है; व्याख्यान, भाषण (पढ़ना); पुस्तककी भूमिका।

खुत्थ–पु० कटे हुए पेड़की जड़ और उसके ऊपरका भाग।

खुत्थी–स्त्री० छोटा खुत्थ, खूँटी; धरोहर, थाती; कमरमें रुपये बाँधकर रखनेकी पतली लंबी थैली, बसनी।

.ख़ुद–अ० [फ़ा०] स्वयं, आप। **–इख्तियार**–वि० स्वतंत्र, स्वयं अधिकार रखनेवाला। **–काश्त**–वि० अपनी जमीनमें खुद खेती करनेवाला। स्त्री० वह (सीरसे भिन्न) जमीन जिसे जमींदार खुद जोते। **–कुशी**–स्त्री० आत्महत्या; आत्मघातक कार्य। **–ग़रज़**–वि० अपनी गरज, मतलब देखनेवाला, स्वार्थी, मतलबी। **–परस्त**–वि० घमंडी; स्वार्थी। **–पसंद**–वि० हठी, खुदराय; घमंडी। **–ब-.ख़ुद**–अ० अपने आप, स्वतः। **–मतलब**–वि० खुदगरज। **–मुख़्तार**– वि० जिसपर किसीका दाब, नियंत्रण न हो, स्वतंत्र।

खुदना–अ० क्रि० खोदा जाना।

खुदरा–पु० दे० '.ख़ुर्दा'।

खुदवाई–स्त्री० खुदवानेकी क्रिया या मजदूरी।

खुदवाना–स० क्रि० खोदनेका काम दूसरेसे कराना।

.ख़ुदा–पु० [फ़ा०] स्वयंभू; ईश्वर, मालिक। **–ई**–स्त्री० ईश्वरता; ईश्वरकी महिमा, विभूति; सृष्टि, दुनिया। वि० खुदाका, ईश्वरीय। **–का कारखाना**–विश्व-प्रपंच, दुनिया। **–का घर**–अर्श, वैकुंठ; उपासनास्थल, मस्जिद। **–की राहपर**–खुदाके नामपर, ईश्वरके प्रीत्यर्थ। **–परस्त**–वि० ईश्वरको मानने, पूजनेवाला, भक्त। **–वंद**–पु० मालिक, स्वामी; (संबोधनमें) श्रीमन्। **–वंदी**–स्त्री० मालिकी, बादशाहत; अनुग्रह। **मु०–के घर जाना**–मरना। **–ख़ुदा करके**–बड़ी कठिनाईसे। **–गंजेको ना.ख़ुन न दे**–ईश्वर ओछे,

कमीनेको धन, अधिकार न दे। **–न ख़्वास्ता**–ईश्वर न करे (ऐसा हो)। **–हाफ़िज़**–ईश्वर रक्षक है।

खुदाई–स्त्री० खोदनेकी क्रिया या उजरत। दे०‘.खुदा’में।

खुदाव–पु० खुदाईका काम।

.खुदी–स्त्री० [फा०] आपा, अहंता; गर्व, अहंकार।

खुद्दी–स्त्री० चावल, दाल आदिके बहुत छोटे-छोटे टुकड़े।

खुनस–स्त्री० रोष, क्रोध।

खुनसाना–अ० क्रि० क्रोध करना।

.खुफ़िया–वि० [फा०] छिपा हुआ, गुप्त। **–ख़ाना**–पु० चकला। **–पुलिस**–स्त्री० गुप्त रूपसे काम करनेवाली पुलिस; जासूस।

खुभना–अ० क्रि० चुभना, धँसना, गड़ना।

खुभराना*–अ० क्रि० इठलाते फिरना; उत्पात करनेके लिए घूमना।

खुभी–स्त्री० कानमें पहननेकी कील या लौंग–‘मनमथ नेजा नोकसी खुभी खुभी जिय माँहिं’–वि०; हाथीके दाँतपर चढ़ाया जानेवाला धातुका पोला।

खुमख़ाना–पु० [फा०] शराबखाना, मदिरालय।

खुमान*–वि० आयुष्मान्, बड़ी आयुवाला। पु० शिवाजीकी उपाधि।

ख़ुमार–पु० [फा०] नशा, मद; आँखोंमें छाया हुआ मद; नशेका उतार; नशा उतरते समय मालूम होनेवाली थकावट, सिर-दर्द आदि; जागरण, कच्ची नींद टूटनेसे आँखोंका चढ़ जाना। **मु०–तोड़ना**–नशेके उतारका अवसाद दूर करनेके लिए थोड़ीसी शराब फिर पी लेना।

.खुमारी–स्त्री० दे० ‘.खुमार’।

खुमी–स्त्री० एक उद्भिद्वर्ग जिसके अन्दर भुइँ-फोड़, कुकुरमुत्ता आदि पौधे आते हैं; दाँतमें जड़ी हुई सोनेकी कील; हाथीके दाँतपर चढ़ाया हुआ धातुका पोला।

खुम्हारि*–स्त्री० दे० ‘.खुमार’।

खुरंट–पु० दे० ‘खुरंड’।

खुरंड–पु०सूखते हुए घावके ऊपर जमनेवाली पपड़ी,खुट्टी।

खुर–पु० [सं०] सुम, नख; छुरा; चारपाईके पायेका एक हिस्सा। **–तार***–पु० खुरका आघात। **–त्राण**–पु० नाल। **–न्यास**–पु० खुरका निशान, खुरवाले पशुका पदचिह्न। **–पका**–पु० [हिं०] गाय, बैल आदिका खुर और मुँह पक जानेका रोग। **–बंदी**–स्त्री० [हिं०] नालबंदी।

खुरखुर–स्त्री० साँस लेते समय, कफ आदि रहनेके कारण, होनेवाली आवाज।

खुरखुरा–वि० दे० ‘खुरदरा’।

खुरखुराना–अ० क्रि० साँससे घरघराहटकी आवाज निकलना; ‘खुर-खुर’ शब्द होना; खुरखुरा मालूम होना।

खुरखुराहट–स्त्री० घरघराहट; खुरदरापन।

खुरचन–स्त्री० खुरचकर निकाली हुई चीज; कड़ाही आदिमें नीचे जमा हुआ दूध जो खुरचकर निकाला जाय; एक तरहकी गाढ़ी रबड़ी।

खुरचना–स० क्रि० बरतनमें जमी, चिपकी हुई चीजको छीलकर अलग करना; कुरेदना।

खुरचनी–स्त्री० खुरचनेका आला।

खुरचाल–स्त्री* खुटचाल, शरारत, दुष्टता।

खुरजी–स्त्री० बीचमें खुला लंबा थैला या झोला जिसमें घोड़सवार जरूरी सामान रखकर घोड़ेकी पीठसे बाँध लेता है।

खुरदरा–वि० जिसकी सतह चिकनी, हमवार न हो, दानेदार, खुरखुरा।

खुरपा–पु० घास काटने, छीलनेका औजार।

खुरपी–स्त्री० छोटा खुरपा।

ख़ुरमा–पु० [फा०] खजूर; छुहारा; एक मिठाई।

खुरहा–पु० पशुओंका एक रोग, खुरपका।

खुरा–पु० खुरपका रोग।

.खुराक–स्त्री० [फा०] खाना, आहार; एक आदमीका एक समयका (नियत) भोजन; दवाकी एक मात्रा। **–बंदी**–स्त्री० (राशनिंग) गल्ले, कपड़े आदिका निर्धारित मात्रामें वितरण।

ख़ुराकी–वि० [फा०] अधिक खानेवाला। स्त्री० खुराकके बदले दिया जानेवाला पैसा; (दैनिक) भोजनव्यय।

खुराघात–पु० [सं०] खुरका आघात; टापसे मारना।

ख़ुराफ़ात–स्त्री० [अ०] बेहूदा बातें, बकवास; शरारत, झगड़ा खड़ा करनेवाली बात; बखेड़ा।

.खुराफ़ाती–वि० [अ०] खुराफात करनेवाला।

खुरी–स्त्री० टापका चिह्न।

खुरी(रिन्)–पु० [सं०] खुरवाला जानवर।

ख़ुर्द–वि० [फा०] छोटा; उम्रमें छोटा, अल्पवयस्क। **–बीन**–स्त्री० एक आला जिससे आँखोंसे न दिखाई देनेवाली चीजें देखी जा सकती हैं, अणुवीक्षण-यंत्र।

ख़ुर्दा–पु० [फा०] टुकड़ा, रेजा; रेजगारी; थोड़ी मात्रा (थोकका उलटा); बिसातबानेका सामान; छोटी-मोटी चीजें। अ० थोड़ी मात्रामें, फुटकल (बिक्री)। **–फ़रोश**–पु० फुटकल बेचनेवाला, बिसाती।

खुर्राँट, खुर्राट–वि० बूढ़ा; अनुभवी, चालाक, उस्ताद।

खुर्राँटा, खुर्राटा–पु० दे० ‘खर्राटा’।

खुलना–अ० क्रि० रोक हटना; आवरण हटना; बंधन छूटना, फंदेसे निकलना, बँधी हुई चीजका बंधन न रहना; फटना; छेद या दरार होना; प्रकट होना; बताया जाना; आरंभ होना, कायम होना; निकलना; बंद, रुके हुए कामका फिर जारी होना (स्कूल, दफ्तर); छूटना (रेल, नाव आदि); काममें आने लगना (लाइन, सड़क); उधड़ना (सिलाई); सजना; खिलना; मनकी बात कहना; निःसंकोच होकर बात करना; (रंग) साफ होना, साँवलापन घटना; जगना (भाग्य)। **–खुलकर**–अ० निःसंकोच; स्पष्टतः; प्रकट रूपमें। **मु० खुल खेलना**–छिप-छिपाकर किये जानेवाले कामको खुलकर करने लगना; लज्जा,संकोच त्याग देना। **खुलता रंग**–हलका साफ रंग।

खुलवाना–स० क्रि० खोलनेका काम दूसरे कराना।

खुला–वि० जो बँधा या बंद न हो; जिसमें रोक न हो; जो ढका-छिपा न हो, प्रकट, जाहिर; जो तंग, घिरा हुआ न हो; लंबा-चौड़ा (महल, मैदान); जहाँ काफी हवा-रोशनी आये। [स्त्री० खुली।] **मु० खुले आम,–ख़ज़ाने,–बाज़ार**–बेधड़क, सबके सामने, अलानिया। **–दिलसे**–

उदारतापूर्वक। –**मैदान**–खुले खजाने, डंकेकी चोट।

.खुलासा–पु० [अ०] निचोड़, सार, संक्षेप। वि० संक्षिप्त; छाँटा हुआ; [हिं०] स्पष्ट। अ० साफ़-साफ़ (बो०)।

खुल्ल–वि० [सं०] छोटा; कमीना। –**तात**–पु० पिताका छोटा भाई।

खुल्लमखुल्ला–अ० खुले आम, प्रकाश्य रूपसे।

.खुवारी*–स्त्री० दे० '.ख्वारी'।

ख़ुश–वि० [फ़ा०] मुदित, प्रसन्न; सुखी; प्रफुल्ल; अच्छा, भला। –**इंतिज़ामी**–स्त्री० सुप्रबंध। –**क़िस्मत**–वि० अच्छे भाग्यवाला, भाग्यवान्। –**ख़त**–वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, सुलेखक। –**ख़बरी**–स्त्री० खुश करनेवाली खबर, शुभ समाचार। –**दिल**–वि० प्रसन्नचित्त, आनंदी, हँसमुख। –**नवीस**–वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, खुशख़त। –**नसीब**–वि० भाग्यवान्, खुशक़िस्मत। –**नुमा**–वि० भला लगनेवाला, सुंदर। –**नुमाई**–स्त्री० सुंदरता। –**बू**–स्त्री० सुगंध। –**०दार**–वि० सुगंधयुक्त। –**मिज़ाज**–वि० प्रसन्नचित्त, हँमुसख। –**हाल**–वि० संपन्न, रुपये-पैसेसे सुखी।

.खुशामद–स्त्री० [फ़ा०] खुश करनेवाली बात, चापलूसी।

.खुशामदी–वि० [फ़ा] चापलूस, खुशामद करनेवाला। –**टट्टू**–वि० खुशामदकी कमाई खानेवाला, जीहुजूर।

.खुशी–स्त्री० [फ़ा०] खुश होना, प्रसन्नता, हर्ष; इच्छा, मरजी। –**.खुशी**–अ० प्रसन्नतापूर्वक, खुशीके साथ। –**का सौदा**–वह काम जिसे करना-न करना अपनी मरजीकी बात हो।

.खुश्क–वि० [फ़ा०] सूखा; रूखा; अरसिक; जिसके साथ और कुछ न हो, खाली (–तनख्वाह, रोटी)।

.खुश्की–स्त्री० [फ़ा०] सूखापन; रूखापन; रसहीनता; अवर्षण; स्थल भाग। –**की राह**–स्थलमार्गसे।

खुसामति*–स्त्री० दे० '.खुशामद'।

खुसाल, खुस्याल*–वि० खुश, मगन।

खुसुरफुसुर–स्त्री० कानाफूसी। अ० बहुत धीमी आवाजमें।

.खुसूसियत–स्त्री० [अ०] विशेषता; मेल, सौहार्द।

खुही–स्त्री० लबादेकी तरह ओढ़ा हुआ कंबल, घोघी।

खूँखार–वि० दे० '.खून'के साथ।

खूँट–पु० कोना; मकानके कोनेपर लगाया जानेवाला पत्थर; ओर, दिशा; भाग; कानका मैल; छोटी पूरी; कानका एक गहना, ढार; रोक।

खूँटना–अ० क्रि० घटना; चुकना;–'मसि खूँटी कागर जल भीजे'–सू०; टूटना। स० क्रि० रोकना; छेड़छाड़ करना; खोंटना।

खूँटा–पु० लकड़ी या बाँसकी मेख जिसे गाड़कर गाय, बैल आदिको बाँधते हैं; खड़ी गड़ी हुई लकड़ी।

खूँटी–स्त्री० छोटी मेख; लकड़ीकी मेख जो कपड़े आदि टाँगनेके लिए दीवारमें गाड़ी जाय; जाँते या चक्कीकी किल्ली; सितार, सारंगी, खड़ाऊँ आदिमें जड़ी छोटी मेख; अरहर, ज्वार आदिकी खुत्थी जो फसल काटनेके बाद खेतमें रह जाय; बालकी जड़ जो उस्तरेसे मूँड़नेके बाद रह जाय।

खूँद–स्त्री० खूँदनेकी क्रिया।

खूँदना–अ० क्रि० घोड़ेका बलात् रोके जानेपर उसी जगह हटना-बढ़ना, पाँव मारना, टापसे जमीन खोदना, रौंदना।

खूझा–पु० फल, तरकारीका रेशेदार भाग; अधिक उलझा हुआ लच्छा।

खूटना*–अ० क्रि० घटना; चुकना; रुकना, अवरुद्ध होना। स० क्रि० टोकना, पूछताछ करना; छेड़ना।

खूद–पु० किसी तरल चीजको छानने, निथारनेसे निकलनेवाला मैल, तलछट।

ख़ून–पु० [फ़ा०] रक्त, लहू; हत्या, कतल। –**ख़राबा**–पु० मार-काट, खून-कतल। –**(.खूँ)खार**–वि० दे० '.खूँख़्वार'। –**(.खूँ)ख़्वार**–वि० क्रूरकर्मा, जालिम; खूनी, हिंस्र; डरावना। –**(.खूँ)रेज़**–वि० खून बहानेवाला, खूनी; मारकाट मचानेवाला। –**(.खूँ)रेज़ी**–स्त्री० मारकाट, रक्तपात। **मु०**–**आँखोंमें उतरना**–क्रोधसे आँखें लाल हो जाना, अति क्रुद्ध होना। –**का जोश**–कुल, वंशके नाते उत्पन्न स्नेह, ममता, सगेपनकी मुहब्बत। –**का दौरा**–रक्त-संचार। –**का प्यासा**–जान लेनेपर तुला हुआ, जानी दुश्मन। –**के आँसू रोना**–अतिशय व्यथित होना। –**के घूँट पीना**–भारी गुस्सेको पी जाना, सह लेना। –**खौलना**–अति क्रुद्ध होना, गुस्सेसे लाल हो जाना। –**गरदनपर होना**–(किसीके) कतलका जिम्मेदार होना। –**पानी एक करना**–खून पानीकी तरह बहाना। –**पीना**–बहुत सताना; जान लेना, मार डालना। –**बहाना**–रक्तपात करना, खून-कतल करना। –**मुँह(को) लगना**–खूनका मजा मिलना, चाट लगना; काटनेकी आदत पड़ जाना। –**सिरपर चढ़कर बोलता है**–हत्याका पाप छिपा नहीं रहता। –**सिरपर चढ़ना**–खूनीके चेहरे, चेष्टा आदिसे भय, घबराहट प्रकट होने लगना; किसीका खून करनेपर आमादा हो जाना। –**सूखना**–घबरा जाना।

.खूनी–पु० [फ़ा०] खून करनेवाला, कातिल। वि० क्रूर, जालिम; हत्या-सूचक, हत्याके भावसे पूर्ण (…आँख); रक्तपातमय, मार-काटवाला। –**बवासीर**–स्त्री० वह बवासीर जिसमें मस्सेसे खून निकलता है।

.खूब–वि० [फ़ा०] अच्छा, बढ़िया; सुंदर। अ० अच्छी तरह, पूरी तरह; बहुत; साधु, वाह! –**सूरत**–वि० सुंदर, रूपवान्। –**सूरती**–स्त्री० सुंदरता।

.खूबकलाँ–पु० [फ़ा०] एक घास या उसके बीज।

.खूबी–स्त्री० [फ़ा०] भलाई, अच्छाई; गुण, विशेषता।

खूसट–वि० जराजीर्ण; अरसिक; मनहूस। पु० उल्लू।

खूसर*–वि०, पु० दे० 'खूसट'।

खेक(ख)सा–पु० एक बेल या उसका कँटीलासा परवल जैसा फल जो तरकारीके काम आता है।

खेचर–वि० [सं०] आकाशमें चलनेवाला। पु० ग्रह; पक्षी; वायु; बादल; विमान; देवता; राक्षस; सूर्य; भूत-प्रेत।

खेचरी–वि० स्त्री० [सं०] आकाशचारिणी। स्त्री० दुर्गा; परी। –**गुटिका**–स्त्री० एक तंत्र-वर्णित गोली जिसके संबंधमें कहा जाता है कि उसे मुँहमें रखनेवाला आकाशमें उड़ सकता है। –**मुद्रा**–स्त्री० योगकी अंगभूत एक मुद्रा जिसमें जीभ उलटकर तालूमें लगायी और दृष्टि त्रिकुटीपर स्थापित की जाती है।

खेटक–पु० [सं०] छोटा गाँव, खेड़ा; ढाल; बलरामकी गदा; * आखेट, शिकार।

खेटकी–पु० भड़ेरिया, ज्योतिषी; शिकारी।

खेड़ा–पु० छोटा गाँव। **–पति**–पु० गाँवका मुखिया।

खेड़ी–स्त्री० एक तरहका इसपात; आँवल।

खेत–पु० जमीनका टुकड़ा जो जोता-बोया जाय या जा सके, क्षेत्र; खेतमें खड़ी फसल (ला०); घोड़े-बैल आदिकी किसी जातिका उत्पत्तिस्थान, नस्ल; रणक्षेत्र; तल्वारका फल। **मु०–आना**–वीरगति प्राप्त करना। **–कमाना**–जुताई, खाद आदिसे खेतको उपजाऊ बनाना। **–करना**–चाँद उगते समय चाँदनीका फैलना; युद्ध करना; * समथल करना। **–छोड़ना**–पीठ दिखलाना। **–पर चढ़े किसानी**–योग्यताका पता काम पड़नेपर लगता है। **–रहना,–होना**–युद्धमें मारा जाना।

खेतिहर–पु० किसान, खेती करनेवाला।

खेती–स्त्री० खेत जोतने-बोनेका काम, किसानी; बोआई, काश्त; फसल। **–बारी**–स्त्री० किसानी, कृषिकर्म।

खेद–पु० [सं०] दुःख, रंज; उदासी, ग्लानि; थकावट; व्यथा। **–जनक**–वि० खेद देनेवाला; शोचनीय।

खेदना*–स० क्रि० शिकारका पीछा करना; दे० 'खदेड़ना'।

खेदा–पु० किसी जंगली जानवरको घेरकर शिकारकी जगह ले जाना, हँकवा; आखेट।

खेना–स० क्रि० नाव चलानेके लिए डाँड़ मारना; बिताना।

खेप–स्त्री० उतना माल, बोझ जितना एक बारमें ढोया जा सके; एक बारका बोझ; बोझ ढोनेवाले (आदमी, चौपाये, गाड़ी आदि) का एक बार आना-जाना, एक फेरा।

खेपना–स० क्रि० बिताना; बिदा करना।

खेम*–पु० दे० 'क्षेम'।

खेमटा–पु० एक ताल; उस तालपर गाया जानेवाला गीत।

खेमा–पु० डेरा, तंबू।

खेरा*–पु० दे० 'खेड़ा'।

खेरौरा*–पु० एक तरहका लड्डू, खँडौरा।

खेल–वि० [सं०] क्रीड़ाशील। पु० [हिं०] मनबहलाव या व्यायामके लिए या केवल चित्तके उल्लाससे किया जानेवाला काम, चेष्टा; क्रीड़ा; बाजी; करतब, तमाशा, अभिनय; लीला; चाल, कारसाजीका काम; बहुत आसान काम; कामकेलि। **–पंच**–पु० (अंपायर) खेलोंमें, विशेषकर क्रिकेट आदिमें, विवाद उत्पन्न होनेपर अभिनिर्णय करनेवाला व्यक्ति; (रेफरी) फुटबाल, हाकी आदिमें पंचका काम करनेवाला। **–मध्यस्थ**–पु० (रेफरी) गेंद-बल्ला आदिके खेलमें खेलाड़ियोंके दोनों दलोंके खेलका निरीक्षण करने तथा विवाद या मतभेद उत्पन्न होनेपर पंच या निर्णायकका काम करनेवाला, अभिनिर्णायक। **मु०–करना**–किसी कामको तुच्छ समझकर हँसीमें उड़ाना। **–के दिन**–खेलने-खानेके दिन, लड़कपन **–खेलना**–चाल चलना। **–खेलाना**–तंग, हैरान करना। **–समझना**–बहुत आसान समझना। **–बिगड़ना**–काम बिगड़ना।

खेलक*–पु० खेलनेवाला, खेलाड़ी।

खेलनप्रतियोगिता–पु० [सं०] (टूर्नामेंट) ऊँची कुदान, लंबी कुदान, शतरंज, टेनिस आदिमें भाग लेनेवाले कुशल खेलाड़ियों या व्यक्तियोंके बीच होनेवाली प्रतियोगिता।

खेलना–अ० क्रि० मनबहलावके लिए या चित्तके उल्लाससे दौड़ना, नाचना, उछलना-कूदना, क्रीड़ा करना; कामकेलि करना; अभुआना; * चला जाना; विचरना। स० क्रि० कोई खास खेल (ताश, शतरंज, जुआ आदि) खेलना, अभिनय करना।

खेलवाड़–पु० खेल, क्रीड़ा।

खेलवाड़ी–वि० खेल-कूदमें अधिक रुचि रखनेवाला (लड़का)।

खेलवार*–पु० खेल करनेवाला, खिलाड़ी; खेल।

खेला–स्त्री० [सं०] खेल, क्रीड़ा; मनबहलाव (साकेत २४३)।

खेलाड़ी–वि० दे० 'खिलाड़ी'।

खेलाधार–पु० (प्ले-ग्राउंड) विद्यालय आदिसे संबद्ध वह मैदान जहाँ हाकी, गेंद-बल्ला आदि खेलनेकी व्यवस्था हो।

खेलाना–स० क्रि० खेलमें प्रवृत्त या शामिल करना; खेलनेका अवसर देना; (बच्चेको) बहलाना; शिकारको थकाने या क्रीड़ाके लिए दौड़ाना, नचाना; उलझाये रखना।

खेलार*–पु० खिलाड़ी।

खेलौना–पु० दे० 'खिलौना'।

खेवक*–पु० खेनेवाला; केवट।

खेवट–पु० पटवारीका एक कागज या बही जिसमें गाँवके हर जमींदार या पट्टीदारके हिस्से, मालगुजारी आदिका ब्योरा रहता है; * खेनेवाला; केवट। **–दार**–पु० पट्टीदार।

खेवटिया*–पु० मल्लाह, केवट।

खेवनहार–पु० खेनेवाला; पार लगानेवाला।

खेवना–स० क्रि० दे० 'खेना'।

खेवरिया*–पु० खेनेवाला।

खेवा–पु० नाव खेनेकी उजरत, नावका भाड़ा, उतराई; नावकी खेप; बार; * बोझ-लदी नाव।

खेवाई–स्त्री० खेनेका काम; खेनेकी उजरत। **मु०–भी देना और बह भी जाना**–पैसे देकर बेवकूफ बनना।

खेवैया–पु० नाव खेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति।

खेस–पु० एक तरहकी मोटे सूतकी बुनी चादर।

खेसारी–स्त्री० केरावकी जातिका एक कदन्न।

खेह–स्त्री० धूल; राख। **मु०–खाना**–दुर्दशाग्रस्त होना।

खेहर*–स्त्री० दे० 'खेह'।

खैँचना–स० क्रि० दे० 'खीँचना'।

खैर–पु० बबूलकी जातिका एक पेड़ जिसकी लड़की उबालकर कत्था बनाते हैं, खदिर, कत्था। **–सार**–पु० कत्था।

ख़ैर–स्त्री० [अ०] भलाई; कुशल, सलामती। अ० अच्छा; अस्तु। **–ख़ाह**–वि० दे० 'ख़ैर.ख्वाह'। **–ख़्वाह**–वि० ख़ैर, भलाई, चाहनेवाला, हितचिंतक।

खैर(ल)भैर(ल)*–पु० खलबली, हलचल; शोरगुल।

खैरा–वि० कत्थई। पु० कत्थई रंगका कबूतर या घोड़ा।

ख़ैरात–स्त्री० [फा०] ('ख़ैर'का बहुवचन) पुण्यकर्म, दान-पुण्य। **–ख़ाना**–पु० लंगरखाना, अन्नसत्र।

ख़ैराती–वि० [फा०] खैरातका, धर्मार्थ संचालित; मुफ्तमें मिला हुआ। **–अस्पताल,–दवाख़ाना**–पु० वह दवा-

खाना जहाँ धर्मार्थ, मुफ्त दवा दी जाय, दातव्य औषधालय।

ख़ैरि(री)यत–स्त्री० [फा०] कुशल; भलाई; नेकी।

खैलर, खैला*–स्त्री० मथानी।

खोँइचा(छा)†–पु० मोड़ा हुआ आँचल।

खोँखी†–स्त्री० खाँसी।

खोँखोँ–पु० खाँसने या बंदरोंके घुड़कनेकी आवाज।

खोँच–स्त्री० खरोंच; कपड़ेकी चीर या छेद जो किसी नुकीली चीजसे उलझकर हो जाय। पु० मुट्ठीभर अन्न।

खोँचा–पु० लग्गी या बाँस जिसके सिरेपर लासा लगाकर बहेलिये चिड़िया फँसाते हैं।

खोँची–स्त्री० वह अन्न, तरकारी आदि जो दुकानदार राशिमेंसे उठाकर भिखमंगेको दे दे।

खोँटना–स० क्रि० किसी चीजका, खासकर साग-पातका, ऊपरका भाग, फुनगी नोच लेना।

खोँड़र, खौँडरा–पु० कोटर, गड्ढा।

खोँड़ा–वि० विकलांग; जिसका दाँत टूट गया हो; खंडित।

खोँता–पु० घोंसला।

खोँप–स्त्री० दूर-दूर लगा हुआ टाँका; खोँच।

खोँपा–पु० हलका वह भाग जिसमें फाल लगा रहता है; भूसा रखनेका छाजनदार घेरा; छाजनका कोना; चोटीका गुच्छा, चूड़ा–'खोंपा छोरि केस मुकलाई–प०।'

खोँसना–स० क्रि० अटकाना, फँसाना।

खोआ–पु० दे० 'खोया'।

खोई–स्त्री० ईखका डंठल जिसका रस निकाल लिया गया हो; लाई; खुही, कंबलकी घोघी।

खोखला–वि० भीतरसे खाली, पोला। पु० खोखली जगह; कोटर; बड़ा छेद।

ख़ोगीर–पु० [फा०] जीनकी भरती; नमदा। **–की भरती**–रद्दी, निकम्मी चीज।

खोज–स्त्री० खोजनेकी क्रिया, तलाश, अन्वेषण; निशान, चिह्न; पहियेकी लीक; पदचिह्न। **मु०–ख़बर लेना**–हाल पूछना, पता लेना। **–मारना**–लीक या पदचिह्न मिटा देना। **–मिटाना**–नाम-निशान, लीक, मिटा देना।

खोजक*–वि०, पु० खोज करनेवाला।

खोजना–स० क्रि० ढूँढ़ना, तलाश करना, पता लगाना।

खोजवाना–स० क्रि० खोजनेका काम दूसरेसे कराना।

खो(ख़ो)जा–पु० हिजड़ा; हरममें रहनेवाला हिजड़ा सेवक; एक तिजारत-पेशा मुसलमान जाति।

खोजी–वि०, पु० खोज करनेवाला, अन्वेषक।

खोट–स्त्री० दोष, बुराई; खता, कुसूर; पाप; दुष्टता, खुटाई; सोने-चाँदीमें किसी घटिया धातुकी मिलावट; इस तरह मिलायी हुई चीज; खुरंड। वि० दुष्ट; ऐबी।

खोटता*–स्त्री० खुटाई, बुराई।

खोटा–वि० जिसमें खोट हो; 'खरा'का उलटा; सदोष, बुरा, घटिया; मिलावटवाला; खल, दुरात्मा। **–खरा**–वि० भला-बुरा; सच्चा-झूठा; घटिया-बढ़िया। **–सिक्का**–पु० जाली, अप्रामाणिक, न चलनेवाला सिक्का। **मु०–खाना***–बेईमानीकी कमाई खाना। **खोटी-खरी सुनाना**–बुरा-भला कहना, गालियाँ देना।

खोड़रा–पु० कोटर; दाँत आदिके भीतरका गड्ढा।

खोद–पु० लोहेका बना टोप, शिरस्त्राण। स्त्री० खोदनेकी क्रिया; छानबीन। **–पूछ**–स्त्री० छानबीन, पूछताछ।

खोदना–स० क्रि० खुरचना, कुरेदना; गड्ढा करना; खोदकर उखाड़ना; ढहाना; लकड़ी आदिको कुरेदकर चित्र उरेहना, बनाना; नक्काशी करना; कोई नुकीली चीज धीरेसे चुभोना; उकसाना; उभारना। **मु० खोद-खोदकर पूछना**–पूरी बात जाननेके लिए जिरह करना, एक-एक बातपर शंका-प्रश्न करते हुए पूछना।

खोदनी–स्त्री० खोदनेका औजार।

खोदवाना–स० क्रि० 'खोदनेका काम दूसरेसे कराना।

खोदाई–स्त्री० दे० 'खुदाई'।

खोना–स० क्रि० गँवाना, अपनी चीज कहीं भूल, छोड़ आना; नष्ट, बरबाद करना। **मु० खो जाना**–गुम हो जाना; किसी चिंता-विचारमें डूब जाना; हक्का-बक्का हो जाना। **खोया-खोया रहना**–किसी चिंता-विचारमें निमग्न रहना; गुम-सुम रहना।

खोनचा–पु० बड़ा थाल जिसमें फेरीवाले मिठाइयाँ आदि रखकर बेचते हैं, 'ख़्वानचा'। **–फरोश**–पु० फेरीवाला।

खोपड़ा–पु० कपाल, सिर; गरीका गोला; नारियल।

खोपड़ी–स्त्री० कपाल, सिर। **मु०–खा जाना,–चाट जाना**–बहुत बकवास करके कष्ट पहुँचाना। **–खाली हो जाना**–(किसीकी बकवास या अधिक श्रमसे) दिमागका थक जाना। **–खुजलाना**–मार खानेका उपाय करना, पिटनेको जी चाहना। **–गंजी होना**–इतनी मार खाना कि सिरके बाल झड़ जायँ, सिरपर खूब जूते पड़ना।

खोंपरा†–पु० दे० 'खोपड़ा'।

खोंपा–पु० छाजनका कोना; जूड़ा बँधी हुई चोटी; केश-विन्यासका एक भेद; गरीका गोला।

खोभरा*–पु० गड़नेवाली चीज, खूँटी आदि।

खोभार–पु० तंग दरवाजेवाला झोपड़ा जिसमें सूअर रातको बंद किये जाते हैं; कूड़ा फेंकनेका अड्डा।

खोम*–पु० झुंड–'बसे खलनके खेरन खबीसनके खोम हैं'–भू०; जाति।

खोया–पु० औटाकर लुगदीसा बनाया हुआ दूध, मावा; ईंट पाथनेका गारा।

खोर–स्त्री० गली; गाय-बैलको चारा-पानी देनेकी नाँद; दे० 'खोरि'। वि० [सं०] लँगड़ा।

खोरना†–अ० क्रि० नहाना। स० क्रि० खोलना।

खोरा–† पु० कटोरा–'रतनजड़ाऊ खोरा-खोरी'–प०; आबखोरा। * वि० खोंड़ा, विकलांग।

खोराकी–स्त्री० दे० 'ख़ुराकी'; वि० पेटू।

खोरि(री)–स्त्री० गली; दोष, बुराई; कटोरी; दे० 'खौरि'।

खोरिया–स्त्री० कटोरी; बुंदेके रूपमें कटे हुए डाँकके टुकड़े।

खोल–पु० गिलाफ, आवरण; बेठन; मोटी चादर; कीड़ोंकी ऊपरी त्वचा जो केंचुलकी तरह झड़ा करती है।

खोलना–स० क्रि० आवरण, अवरोध, बंधन हटाना; दरार, छेद करना; चीरना, उधेड़ना; प्रकट, जाहिर करना; आरंभ करना; चलाना; स्थापित करना; कार्यारंभ करना। **खोलकर**–अ० साफ-साफ।

खोली–स्त्री० गिलाफ; थैली; दुलाई जैसा कपड़ा जिसमें

रुई न भरी हो; † कोठरी ।

खोवा-पु० दे० 'खोया' ।

खोसना*-स० क्रि० छीनना, लुचकना ।

खोह-स्त्री० गुफा, कंदरा; दो पहाड़ोंके बीचकी तंग जगह, दर्रा ।

खोही-स्त्री० पत्तोंकी छतरी; घोघी; पहाड़ोंके बीचका गहरा गड्ढा; * धूल ।

खौँ-स्त्री० खात, गड्ढा; अन्न एकत्र करनेका गहरा गड्ढा ।

खौँचा-पु० साढ़े छःका पहाड़ा ।

खौँट*-स्त्री० खौंटनेकी क्रिया, खरोंच; खुरंड ।

ख़ौफ़-पु० [अ०] डर, भय । **-नाक**-वि० डरावना ।

खौर-पु० चंदनका आड़ा तिलक, त्रिपुंड्र; एक गहना ।

खौरना-स० क्रि० खौर करना, तिलक लगाना ।

खौरहा-वि० खौरा रोगवाला; गंजा ।

खौरा-पु० कुत्तों आदिको होनेवाली एक तरहकी खुजली । वि० खौरा रोगवाला ।

खौरि*-स्त्री० तिलक; गली ।

खौलना-अ० क्रि० उबलना, जोश खाना ।

खौलाना-स० क्रि० उबालना, औटाना ।

ख्यात-वि० [सं०] प्रसिद्ध; कथित, वर्णित ।

ख्याति-स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि, शुहरत, नाम; प्रशंसा ।

ख्यापन-पु० [सं०] शुहरत करना; प्रकट, प्रकाशित करना ।

ख्याल-पु० दे० 'ख़याल'; एक विशेप गान-पद्धति; * खेल; मजाक ।

ख्याली-वि० दे० 'ख़याली'; खेल, क्रीड़ा-कौतुक करनेवाला; सनकी, वहमी ।

ख्रिष्टान-पु० ईसाई ।

ख्रीष्ट-पु० क्राइस्ट, ईसा ।

ख़्वाजा-पु० [फा०] मालिक, सरदार; कुछ मुसलमान जमातोंकी पदवी; हिजड़ा; खोजा जाति ।

ख़्वान-पु० [फा०] थाल, तश्त । **-चा**-पु० छोटा थाल ।

ख़्वाब-पु० [फा०] नींद; सपना । **-गाह**-पु० सोनेका कमरा ।

ख़्वारी-स्त्री० [फा०] जिल्लत, बेइज्जती; खराबी, बरबादी ।

ख़्वाह-अ० [फा०] चाहे, अथवा, या । **-मख़्वाह**-अ० चाहे या बिना चाहे, मजबूरन; अवश्य ।

ख़्वाहिश-स्त्री [फा०] इच्छा, चाह । **-मंद**-वि० इच्छुक ।

ग

ग-कवर्गका तीसरा अक्षर । उच्चारणस्थान कंठ ।

गंग-पु० भक्तिकालका एक प्रसिद्ध हिंदी कवि; एक मात्रिक छंद । स्त्री० गंगा । **-बरार**-स्त्री० गंगा या दूसरी नदीकी धाराके नीचेसे निकली हुई (नयी) जमीन ।

गंगा-स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्रधान और पवित्रतम नदी,जाह्नवी,भागीरथी । **-गति***-स्त्री० गंगालाभ, मुक्ति । **-जमुनी**-वि० [हिं०] दोरंगा; सोने-चाँदीका बना; सोने-चाँदीके कामवाला; काला-उजला । स्त्री० कानका एक गहना; घोड़ोंकी दोरंगी गरदनी; केवटी दाल; सुनहले-रुपहले कामकी जरतारी । **-जल**-पु० गंगाका पानी; पवित्र जल जिससे कसम खिलाते हैं; एक सफेद रेशमी कपड़ा-'गंगाजलकी पाग सिर सोहत श्री रघुनाथ-राम० । **-जली**-स्त्री० [हिं०] धातु या सीसेकी सुराही जिसमें यात्री हरद्वार आदिसे गंगा-जल लाते हैं; धातुकी सुराही; लोटे जैसा पात्र जिसमें कड़ीदार ढकन लगा होता है; एक तरहका गेहूँ । **-धर**-पु० शिव । **-पुत्र**-पु० भीष्म; कार्त्तिकेय; गंगा आदिके घाटोंपर बैठने और पंडोंका काम करनेवाला ब्राह्मण । **-पुजैया**-स्त्री० [हिं०] दे० 'गंगा-पूजा' । **-पूजा**-स्त्री० ब्याहके बाद वर-वधूको लेकर गाजे-बाजेके साथ होनेवाली गंगा, देवताओं आदिकी पूजा । **-यात्रा**-स्त्री० बीमारको गंगातटपर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो । **-राम**-पु० [हिं०] तोतेका प्यारका नाम जिससे पढ़ाते समय उसका संबोधन करते हैं । **-लाभ**-पु० गंगाकी प्राप्ति, गंगातटपर मृत्यु या दाहकर्म होना; मृत्यु । **-सागर**-पु० एक तीर्थस्थान जहाँ गंगा समुद्रसे मिलती है । **-सुत**-पु० भीष्म; कार्त्तिकेय । मु० **-उठाना, -जली उठाना**-गंगाजल लेकर कसम खाना ।

गंगाल-पु० कंडाल, बड़ा जलपात्र ।

गंगावतरण-पु० [सं०] गंगाका स्वर्गसे धरतीपर आना ।

गंगावतार-पु० [सं०] दे० 'गंगावतरण' ।

गंगेय*-पु० दे० 'गांगेय' ।

गंगोझ*-पु० दे० गंगोदक' ।

गंगोत्तरी-स्त्री० हिमालयकी एक चोटी जहाँसे गंगा निकली है ।

गंगोदक-पु० [सं०] गंगाजल; एक वर्णवृत्त ।

गंगौटी*-स्त्री० गंगाके किनारेकी रेत या मिट्टी ।

गंज-पु० सिरके बाल झड़ जानेका रोग, गंजापन, बालखोरा रोग; [सं०] खान, खजाना; ढेर, भंडार; मंडी, बाजार; [फा०] धनराशि; ढेर, भंडार; मंडी; वह चीज जिसमें कई उपयोगी चीजें एक साथ हों । **-गुबारा***-पु० बमगोला । **-गोला**-पु० तोपका वह गोला जिसमें बहुतसी चीजें भरी हों ।

गंजन-पु० [सं०] अवज्ञा करना; हरा देना; नाश; नीचा दिखाना; संगीतके आठ तालोंमेंसे एक; *दुःख । वि० अवज्ञा करनेवाला; *नाशक ।

गंजना*-स० क्रि० अवज्ञा करना; नाश करना ।

गंजा-वि० गंज रोगवाला, खल्वाट । पु० गंजापन; गंज रोग ।

गंजी-स्त्री० छोटा गंज, ढेर, राशि; एक बुना हुआ पहनावा, बनियायन ।

गंजीफ़ा-पु० ताश जैसा एक खेल जिसमें पत्ते गोल और संख्यामें ९६ होते हैं ।

गँजेड़ी-वि० गाँजा पीनेवाला ।

गँठ-स्त्री० समासमें व्यवहृत 'गाँठ'का संक्षिप्त रूप । **-कटा**-पु० गिरहकट, पाकेटमार । **-जोड़ा**-पु० गँठबंधन । **-बंधन**-पु० विवाहकी एक रीति जिसमें वर-वधूके कपड़े-

के छोर एकमें बाँध दिये जाते हैं; पक्का नाता, अटूट संबंध।

गंड–पु० [सं०] गाल; कनपटी; गालसे कनपटीतकका मुखभाग; हाथीकी कनपटी; फोड़ा, फुंसी; घेघा; योद्धा; गाँठ; गंडा; गैंड़ा; हलका; मंडलाकार रेखा; चिह्न, निशान; वीथि (नाटक)का अंगविशेष; एक अनिष्ट योग (ज्यो०)। **–देश,–स्थल**–पु० कनपटी। **–माला**–स्त्री० कंठमाला रोग। **–स्थली**–स्त्री० दे० 'गंडस्थल'।

गंडक–स्त्री० एक नदी। पु० [सं०] गंडा; गिरह।

गंडकी–स्त्री० [सं०] गंडक नदी; मादा गैंड़ा।

गँड़तरा†–पु० वह मोटा वस्त्र या कथरी जो छोटे बच्चोंके नीचे बिछा दी जाती है ताकि पेशाब-पाखानेसे बिस्तर न खराब हो।

गंडा–पु० गाँठ; मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा जो जंतर-तावीजकी तरह पहना जाय; तोते आदिके गलेका रंगीन हलका कंठा; घोड़ेके गलेमें पहनानेका पट्टा; आड़ी धारी; चारका समूह (कौड़ी, पैसा), आना।

गँड़ासा–पु० एक हथियार जिसमें डंडेके सिरेपर लोहेका खमदार फलक लगा होता है, परशु; एक औजार जिससे चारा काटते हैं।

गँड़ासी–स्त्री० एक औजार जिससे चारा काटते हैं।

गंडुक*–पु० दे० 'गंडूप'।

गंडू–वि० गाँड़ू।

गंडूप–पु० [सं०] चुल्लू (जल आदि); कुल्ली; हाथीकी सूँड़की नोक।

गँड़ेरी–स्त्री० ईख या गन्नेका कुछ लंबोतरा टुकड़ा जो चूसने या कोल्हूमें पेरनेके लिए काटा जाय; छोटा लंबोतरा टुकड़ा।

गंतव्य–वि० [सं०] जाने योग्य, गम्य; जहाँ जाना हो।

गंत्र–पु० [सं०] (एंजिन) यंत्रों, कल-पुरजों आदिको गति प्रदान करनेवाला एक तरहका यांत्रिक साधन।

गंदगी–स्त्री० [फा०] मलिनता; मल; नापाकी; बदबू।

गँदला–वि० गंदा, मैला-कुचैला।

गंदा–वि० [फा०] मैला; नापाक; बदबूदार; बिगड़ा हुआ।

गंदुम–पु० [फा०] गेहूँ।

गंदुमी–वि० [फा०] गेहुँए रंगका, दबती गोराईवाला।

गंध–स्त्री० [सं०] वास, बू; पृथ्वीतत्त्वका गुण (न्या०); सुगंध; सुगंधित द्रव्य; चंदन, केसर आदिका लेप; लेश, नाममात्र। **–द्रव्य**–पु० सुगंधित द्रव्य (चंदन, केसर आदि)। **–नाल***–पु० दे० 'गंधनाली'। **–नालिका,–नाली**–स्त्री० नाक। **–बिलाव**–पु० [हिं०] नेवलेसे मिलता-जुलता एक जंतु, मुश्कबिलाव। **–मादन**–पु० एक पुराणवर्णित पर्वत; उस पर्वतपर लगा हुआ सुगंधित वृक्षोंका जंगल; भौंरा। **–मार्जार**–पु० गंधबिलाव। **–मैथुन**–पु० साँड़। **–राज**–पु० मोगरा बेला; चंदन; जवादि नामक गंधद्रव्य। **–सार**–पु० चंदन; मोगरा बेला।

गंधक–पु०, स्त्री० [सं०] एक तीक्ष्ण गंधयुक्त पीतवर्ण खनिज पदार्थ जो दवा, बारूद आदि बनानेके काम आता है; शोभांजन; सुगंध। **–बटी**–स्त्री० एक प्रसिद्ध पाचक औषध।

गंधकाम्ल–पु० [सं०] गंधकका तेजाब।

गंधकी–वि० गंधकके रंगका।

गंधरब*–पु० दे० 'गंधर्व'।

गंधरबिन*–स्त्री० गंधर्व स्त्री या गंधर्वकी स्त्री।

गंधर्व–पु० [सं०] देवताओंका एक भेद जो देवलोकके गायक माने जाते हैं; गायक; एक हिंदू जाति जिसकी लड़कियाँ नाचने-गानेका पेशा करती हैं। **–नगर,–पुर** पु० दृष्टिदोषसे आकाशमें दिखाई देनेवाला मिथ्या आभासरूप नगर, कल्पित नगर; महाभारतमें वर्णित मानसरोवरके पासका एक नगर। **–लोक**–पु० गुह्यक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक लोक। **–विद्या**–स्त्री० गानविद्या। **–विवाह**–पु० वह विवाह जिसे वर-कन्या परस्पर-प्रीतिसे प्रेरित होकर माता-पिताकी अनुमति लिये बिना ही करें। **–वेद**–पु० चार उपवेदोंमेंसे एक, संगीत-शास्त्र।

गंधाना†–अ० क्रि० महँकना, दुर्गंध निकलना।

गंधाबिरोजा–पु० एक गोंद जिसका मरहम बनता है।

गंधार–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, कंधारके आसपासका देश; सप्तकका तीसरा स्वर; एक राग।

गंधी(धिन्)–पु० [सं०] इत्रफरोश; खटमल; एक घास।

गंधीला*–वि० गंदा, मैला।

गंधेंद्रिय–स्त्री० [सं०] घ्राणेंद्रिय, नाक।

गंधोपजीवी (विन्)–पु० [सं०] गंधी, इत्रफरोश।

गंभीर–वि० [सं०] गहरा; ऊँची और भारी (आवाज); मंद्र (ध्वनि); गहन; गूढ़, दुर्बोध; सोच-विचारकर बोलने, काम करनेवाला; कम बोलने और हँसी-मजाकसे दूर रहनेवाला, संजीदा।

गँव–स्त्री० दे० 'गौं'। **–हिँ***–अ० गौंसे, चुपकेसे।

गँवई–स्त्री० छोटा गाँव।

गँवरमसला–पु० गँवारोंकी उक्ति।

गँवाऊ–वि० गँवानेवाला, उड़ाऊ।

गँवाना–स० क्रि० खोना, नष्ट करना या हो जाने देना।

गँवार–वि०, पु० गाँवका रहनेवाला, देहाती; मूर्ख, अनाड़ी; उजड्ड। **–ता***–स्त्री० गँवारपन।

गँवारी–वि० स्त्री० गँवारकीसी, गँवारू। स्त्री० गँवार स्त्री।

गँवारू–वि० गँवारकासा, बेढंगा; भोंड़ा।

गँवेली*–स्त्री० गँवार स्त्री।

गंस*–पु०, स्त्री० दे० 'गाँस'।

गँसना*–स० क्रि० जकड़ना, कसना। अ० क्रि० कसा जाना।

गँसीला–वि० जिसमें गाँसी हो; चुभनेवाला; गँसा हुआ, गफ।

ग–पु० [सं०] गीत; गणेश। वि० गमन करनेवाला; गानेवाला (समासके अंतमें)।

गइंद*–पु० दे० 'गयंद'।

गइनाही*–स्त्री० ज्ञान, जानकारी।

गई-बहोर*–वि० गयी, गँवायी हुई चीजको पुनः प्राप्त कराने, बिगड़ीको बनानेवाला।

गऊ–स्त्री० गाय; सीधा आदमी।

गकरिया–स्त्री० लिट्टी, बाटी; मधुकरी।

गगन–पु० [सं०] आकाश, अंतरिक्ष; शून्य। **–कुसुम**–पु० आकाशकुसुम। **–गढ़***–पु० गगनस्पर्शी, बहुत ऊँचा महल। **–गिरा**–स्त्री० आकाशवाणी। **–चर**–वि० आकाशचारी। पु० पक्षी; शशिचन्द्र; नक्षत्र; देवता।

–चुंबी भवन–पु० (स्काई स्क्रेपर) बहुत ऊँचा मकान जो आकाशको छूता हुआ-सा जान पड़े, अभ्रंकष। **–पति**–पु० इंद्र। **–भेदी– (दिन्)**–वि० आकाशका भेदन करनेवाला, बहुत ऊँचा, प्रचंड। **–विहारी(रिन्)**–वि०आकाशमें विचरण करनेवाला। पु० प्रकाशपिंड; सूर्य; देवता।

गगनापगा–स्त्री० [सं] आकाशगंगा।

गगरा–पु० ताँबे, पीतल या लोहेका बना घड़ा, कलसा।

गगरिया*–स्त्री० दे० 'गगरी'।

गगरी–स्त्री० मिट्टीका घड़ा; छोटा गगरा।

गच–स्त्री० किसी नरम चीजमें कड़ी-पैनी चीजके धँसने, घुसनेकी आवाज; पक्का फर्श; पक्की छत; छत बनानेका मसाला। **–कारी**–स्त्री० पक्की छत या फर्श बनाना। **–गर**–पु० गच बनानेवाला। **–गीरी***–स्त्री० गचकारी।

गचना*–स० क्रि० गाँसना; ठूँसकर भरना।

गचाका–पु० गचसे गिरनेकी आवाज। स्त्री० जवान स्त्री।

गच्छना*–अ० क्रि० जाना।

गछना*–अ० क्रि० जाना। स० क्रि० निबाहना; अपने ऊपर लेना; गूँथना–'हरवा गछत भइल साँझ रे'–ग्रामगी०; बनाना।

गजंद(दा)*–पु० दे० 'गजेंद्र'।

गज–पु०[सं०]हाथी; आठकी संख्या; लंबाईकी एक माप, ३० अंगुल; गजासुर; ८ दिग्गजोंमेंसे एक; नींवँ, पुश्ता। **–असन***–पु० दे० 'गजाशन'। **–कंद**–पु० एक वनौषधि, हस्तिकंद। **–कर्ण**–पु० एक यक्ष; दद्रु रोग। **–कुंभ**–पु० हाथीके मस्तकका उभरा हुआ भाग। **–गति**–स्त्री० हाथीकीसी मंद, गौरवभरी चाल; एक वर्णवृत्त। **–गामिनी**–वि०,स्त्री० हाथीकीसी मंद, गौरवभरी चालवाली। **–गाह***–पु० हाथीपर डाली जानेवाली झूल, पाखर। **–गौन***–पु० गजगमन। **–गौनी***–वि० स्त्री० गजगामिनी। **–चर्म(र्मन्)**–पु० हाथीकी खाल; एक चर्मरोग। **–दंत**–पु० हाथीका दाँत; गणेश; कपड़े टाँगनेके लिए दीवारमें गाड़ी हुई खूँटी; एक तरहका घोड़ा; दाँतपर निकला हुआ दाँत; नृत्यका एक भाव। **–दंती**–वि० [हिं०] हाथीदाँतका बना हुआ। **–दान**–पु० हाथीका दान; हाथीके गंडस्थलसे बहनेवाला मद। **–नाल**–स्त्री० भारी तोप जिसे पहले हाथी खींचते थे। **–नासा**–स्त्री० हाथीकी सूँड़। **–पति**–पु० हाथी रखनेवाला; विशालकाय, गिरोहका सरदार हाथी; विजयनगरके राजाओंकी उपाधि। **–पाल**–पु० हाथीवान, महावत। **–पिप्पली**–स्त्री० गजपीपल। **–पीप(र)ल**–स्त्री० [हिं०] एक पौधा जिसकी मंजरी दवाके काम आती है। **–बदन***–पु० गणेश। **–मणि**–पु० गजमुक्ता। **–मद**–पु० गजदान। **–मुक्ता**–स्त्री० कविसमय-सिद्ध मोती जिसका हाथीके मस्तकसे निकलना माना जाता है। **–मुख,–वक्त्र,–वदन**–पु० गणेश। **–मौक्तिक**–पु० गजमुक्ता। **–यूथ**–पु० हाथियोंका झुंड। **–राज**–पु० बहुत बड़ा हाथी, गजेंद्र। **–वान**–पु० [हिं०] महावत। **–शाला**–स्त्री० फीलखाना। **–स्नान**–पु० हाथीका नहाना; निरर्थक कार्य (हाथी नहानेके बाद कीचड़, धूल देहपर डाल लेता है)।

गज़–पु० [फा०] लंबाईका एक मान, १६ गिरह, ३६ इंच; सारंगी आदि बजानेकी कमानी; लोहेका छड़ या छड़ जैसी लकड़ी जिससे बंदूक भरी जाती है; एक तरहका तीर। **–इलाही**–पु० अकबरी गज जो ४१ इंचका होता है।

गज़क–पु० [फा०] वह चटपटी चीज जो शराबके साथ या शराब पीनेके बाद तुरत खायी जाय, चाट; तिलशकरी; कलेवा।

गज़ट–पु० [अं०] सरकारी अखबार, वह सामयिक पत्र जिसमें सरकारी सूचनाएँ प्रकाशित हों; समाचारपत्र।

ग़ज़नवी–पु०[फा०] गजनीका रहनेवाला; एक तुर्क वंश।

गजना*–अ० क्रि० गर्जन करना।

ग़ज़ब–पु० [अ०] क्रोध; विपत्, आफत; अंधेर, जुल्म। **–का**–वि० अतिशय, बेहद; बहुत बड़ा; अद्भुत, विलक्षण। मु० **–टूटना,–पड़ना**–भारी विपत्तिमें आ पड़ना। **–ढाना**–आफत करना, जुल्म करना।

गजबीला*–वि० गजब करने, गजब ढानेवाला।

गजर–पु० पहर-पहर बजनेवाला घंटा; भोरका घंटा; जगानेकी घंटी। **–दम**–अ० तड़के, पौ फटते।

गजरभत्ता,–भात–पु० गाजरके साथ पकाया हुआ भात।

गजरा–पु० फूलोंकी घनी गुथी हुई माला, हार; कलाईपर पहननेका एक गहना; एक रेशमी कपड़ा।

ग़ज़ल–स्त्री०[अ०] फारसी-उर्दूमें मुक्तक काव्यका एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है; उर्दूका एक तरहका पद्य।

गजा*–पु० नगाड़ा बजानेका डंडा।

गजानन–पु० [सं०] गणेश।

गजायुर्वेद–पु० [सं०] हस्ति-चिकित्सा-शास्त्र।

गजारि–पु० [सं०] शिव; सिंह; एक विशेष वृक्ष।

गजाशन–पु० [सं०] पीपल; कमलकी जड़।

गजी–स्त्री० [सं०] हथिनी।

गज़ी–पु० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गाढ़ा।

गजेंद्र–पु० [सं०] बड़ा हाथी, गजराज; ऐरावत; इंद्रद्युम्न नामक राजा जो अगस्त्यके शापसे हाथी हो गया और ग्राहग्रस्त होनेपर भगवान्को याद कर शापमुक्त हुआ।

गज्जूह*–पु० हाथियोंका झुंड, गजयूथ।

गझिन†–वि० घना, गाढ़ा।

गटकना–स० क्रि० निगलना, उदरस्थ करना; हड़पना।

गटगट–अ० गटगटकी आवाजके साथ, जल्दी-जल्दी; लगातार (पीना, निगलना)। स्त्री० गटगटकी आवाज।

गटना*–अ० क्रि० बँधना, जकड़ जाना।

गटपट–स्त्री० दो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियोंका बिलकुल मिल-जुल जाना; सहवास।

गटरमाला–स्त्री० बड़े दानोंकी माला।

गटागट–अ० दे० 'गटगट'।

गटापारचा–पु० एक तरहका गोंद।

गटी–स्त्री० गाँठ; समूह।

गट्टा–पु० कलाई; घुट्टी, टखना; नैचेकी गाँठ जो फरशीके मुँहपर रहती है; गाँठ; बीज (कमलगट्टा); एक मिठाई।

गट्ठर–पु० बड़ी गठरी, गट्ठा ।

गट्ठा–पु० बड़ी गठरी, गट्ठर; घास, लकड़ी आदिका बोझा; प्याज इत्यादिकी गाँठ; कट्ठा ।

गट्ठी–स्त्री० गाँठ ।

गठन–स्त्री० बनावट, रचना; अंगोंका कसाव, दृढ़ता ।

गठना–अ० क्रि० जुड़ना; गाँठा जाना; सिला जाना, टाँका भरा जाना; ठीक तौरसे बनना; कसा हुआ, दृढ़ होना; अधिक हेल-मेल होना ।

गठरी–स्त्री० कपड़ेमें बँधा हुआ सामान, बुकचा; बोझ; संचित धन, जमा; बड़ी रकम; तैराकीमें घुटनोंको छातीसे लगाने और दोनों हाथोंसे बाँध देनेकी मुद्रा । **–मुटरी**–स्त्री० गठरीमें बँधा हुआ सामान, यात्रीका सामान । **मु०–कटना**–भारी रकम हाथसे निकल जाना ।

गठवाई–स्त्री० (जूता) गाँठनेकी उजरत ।

गठवाना, गठाना–स० क्रि० सिलवाना; जुड़वाना ।

गठा*–पु० दे० 'गट्ठा' ।

गठाव–पु० गठन ।

गठित–वि० ग्रथित, गठा हुआ, बना हुआ ।

गठिबंध*–पु० दे० 'गँठबंधन' ।

गठिया–पु० अनाज आदिका बोझ लादनेका दुहरा थैला या बोरा, खुरजी; छोटी गठरी; संधिवात ।

गठियाना†–स० क्रि० गाँठ देना; गाँठमें बाँधना ।

गठिवन–पु० एक पेड़ जिसकी कलियाँ दवाके काम आती हैं, ग्रंथिपर्णी ।

गठीला–वि० गठा हुआ, कसा हुआ, दृढ़ ।

गठौत, गठौती–स्त्री० मेलजोल, दोस्ती; अभिसंधि ।

गड़कना*–अ० क्रि० गड़गड़ शब्द करना; डूबना ।

गड़गड़ा–पु० एक तरहका हुक्का, बड़ी गुड़गुड़ी ।

गड़गड़ाना–अ० क्रि० गड़गड़ शब्द होना, गरजना (बादल) । स० क्रि० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना; हुक्का पीना ।

गड़गड़ाहट–स्त्री० गड़गड़ाने, बादल गरजने आदिकी आवाज; हुक्केकी आवाज ।

गड़दार–पु० मतवाले हाथीकेसाथ भाला लेकर चलनेवाला; महावत ।

गड़ना–अ० क्रि० चुभना, धँसना; चुभनेकी पीड़ा होना; घुसना, समाना; जमना, ठहरना, स्थिर होना; गाड़ा जाना, दफन होना; (झंडा आदि) खड़ा किया जाना । **मु० गड़ जाना**–लज्जासे सिर झुक जाना; **गड़ा मुर्दा या गड़े मुर्दे उखाड़ना**–पुरानी भूली हुई (अप्रिय) बातोंकी चर्चा करना, याद दिलाना ।

गड़प–स्त्री० पानी, दलदलमें किसी चीजके जल्दीसे धँसने, डूबनेका शब्द ।

गड़पना–स० क्रि० निगलना, गपकना ।

गड़प्पा–पु० भारी गड्ढा, दलदल, पाल जिसमें चीज या आदमी धँस जाय ।

गड़बड़–वि० गड्ड-बड्ड, अस्त-व्यस्त । पु०, स्त्री० अव्यवस्था, गोलमाल; बद-अमली, उपद्रव; खराबी; रोगादिका प्रकोप । **–झाला**–पु० गोलमाल, अव्यवस्था, झमेला ।

गड़बड़ाना–अ० क्रि० गड़बड़ होना । स० क्रि० गड़बड़ करना ।

गड़बड़िया–वि० गड़बड़ करनेवाला ।

गड़बड़ी–स्त्री० दे० 'गड़बड़' ।

गड़रिया–पु० एक हिंदू जाति जो भेड़ें पालती है ।

गड़वाँत–स्त्री० पहियेकी लीक ।

गड़वाना–स० क्रि० गाड़नेका काम कराना ।

गड़हा–पु० दे० 'गड्ढा' ।

गड़ही–स्त्री० छोटा गड्ढा ।

गड़ा–पु० ढेर, गाँज, राशि ।

गड़ाना–स० क्रि० चुभाना, धँसाना; दे० 'गड़वाना' ।

गड़ायत*–वि० गड़ने, चुभनेवाला ।

गड़ारी–स्त्री० वृत्त, घेरा; आड़ी लकीर; घिरनी, गोल चरखी; घिरनीके बीचका गड्ढा; एक घास । **–दार**–वि० आड़ी धारियोंवाला, घेरदार; जिसमें गड़ारी जैसा गड्ढा हो ।

गड़ुआ(वा)–पु० टोंटीदार लोटा, झारी; †फूलका लोटा ।

गड़ुई–स्त्री० छोटा गड़ुवा ।

गड़ु(ड़ो)लना–पु० बच्चोंको घुमानेकी छोटी गाड़ी ।

गड़ेरदार–वि० घेरदार ।

गड़ेरिया–पु० दे० 'गड़रिया' ।

गड़ोना–स० क्रि० चुभाना, धँसाना ।

गड़ौना–पु० एक तरहका पान; * काँटा ।

गड्ड–पु० एकपर एक रखी हुई चीजोंकी राशि; ताशके पत्तों, कागज आदिका ढेर; * गड्ढा । **–बड्ड, –मड्ड**–वि० बिना किसी क्रम-नियमके मिला हुआ, खल्त-मल्त ।

गड्डी–स्त्री० छोटा गड्ड, ढेर; ताशके पत्तों, कागजों, सोने-चाँदीके वरकों आदिका एकपर एक जमाकर रखा हुआ ढेर ।

गड्ढा–पु० गढ़ा, गर्त ।

गढंत–वि० गढ़ा हुआ, कल्पित । स्त्री० गढ़ी हुई बात ।

गढ़–पु० कोट, किला; अड्डा, केंद्र; खाई । **–कप्तान**–पु० किलेदार । **–पति**–पु० गढ़का प्रधान अधिकारी, किलेदार । **–पाल**–पु० गढ़पति । **–वार***–पु० गढ़वाल । **–वाल**–पु० गढ़पति; उत्तराखंडका एक प्रदेश ।

गढ़त, गढ़न–स्त्री० बनावट, आकृति; गठन ।

गढ़ना–स० क्रि० किसी चीज, उपादानभूत पदार्थसे औजारोंकी सहायतासे कुछ बनाना, रचना, निर्माण करना; काट-छाँट या ठोक-पीटकर सुडौल करना; कल्पना करना, मनसे उपजाना; पीटना, मरम्मत करना (ग्रा०) ।

गढ़वाना–स० क्रि० 'गढ़ना'का प्रेर०, गढ़ाना ।

गढ़ा–पु० जमीनमें खोदकर बनाया हुआ या प्रकृति-निर्मित छेद, गर्त, गार; दबी, धँसी हुई जगह; पेट (ला०) । **मु० (किसीके लिए)–खोदना**–किसीकी बुराईका, किसीको नुकसान पहुँचानेका उपाय करना । **–भरना**–घाटा पूरा होना; पेट भरना । **गढ़ेमें गिरना**–विपद्में फँसना; पतन होना ।

गढ़ाई–स्त्री० गढ़नेका काम; गढ़नेकी उजरत ।

गढ़ाना–स० क्रि० गढ़वाना, बनवाना । अ० क्रि० खलना ।

गढ़िया–पु० गढ़नेवाला ।

गढ़ी–स्त्री० छोटा गढ़, किला; मजबूत मकान ।

गढ़ीश(स)*–पु० गढ़पति, किलेदार ।

गढ़ैया–वि० गढ़नेवाला । स्त्री० गड़ही, छोटा तालाब ।

गढ़ोई*–पु० गढ़पति ।

गण–पु० [सं०] समूह, गरोह; वर्ग, श्रेणी; जाति; समान उद्देश्यवाले मनुष्योंका समूह, संघ; अनुचर या अनुयायि-वर्ग; अक्षौहिणीका एक विभाग–२७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पैदल; छंदःशास्त्रमें तीन वर्णोंका समूह (भगण, यगण आदि); समान लोप, आगम आदिवाले शब्दों, धातुओंका वर्ग (व्या०); शिवके सेवकोंका समुदाय, प्रमथ; सेवक, अनुचर। **–तंत्र**–पु० शासनका एक प्रकार जिसमें शासनका कार्य चुने हुए प्रतिनिधियोंके द्वारा होता है। **–तंत्रवादी(दिन्)**–पु० (रिपब्लिकन) गणतंत्रके सिद्धांतोंका प्रतिपादन, अनुसरण या समर्थन करनेवाला; संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाका एक राजनीतिक दल जो व्यापारिक संरक्षण एवं केंद्रीय शक्तिके विस्तारका समर्थक माना जाता है। **–दीक्षा**–स्त्री० बहुतोंकी एक साथ, सामूहिक दीक्षा। **–द्रव्य**–पु० पंचायती धन, माल। **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० गणस्वामी; गणेश; शिव। **–पूर्ति**–स्त्री० (कोरम) सदस्योंकी वह अल्पतम निर्धारित संख्या जो किसी सभाका कार्य संचालित करनेके लिए आवश्यक मानी गयी हो। **–राज्य**–पु० वह राज्य जिसमें शासन जन-प्रतिनिधियों द्वारा होता हो।

गणक–पु० [सं०] गणना करनेवाला, ज्योतिषी; दे० 'लेखापाल'।

गणन–पु० [सं०] गिनना; हिसाब करना; मानना।

गणनक–पु० (टैबुलेटर) चुनावमें प्राप्त मतों या परीक्षामें प्राप्त अंकोंको क्रमसे रखकर जोड़नेवाला व्यक्ति या यंत्र।

गणना–स्त्री० [सं०] गिनना; हिसाब; लिहाज; (अकाउंट) दे० 'लेखा'।

गणनाध्यक्ष–पु० [सं०] दे० 'लेखापाल'।

गणनीय–वि० [सं०] गिननेलायक; मान्य।

गणाधिप, गणाधिपति, गणाध्यक्ष–पु० [सं०] गणस्वामी; सेनानायक; गणेश; शिव।

गणिका–स्त्री० [सं०] वेश्या; धनके लोभसे नायकसे प्रेम करनेवाली नायिका।

गणित–पु० [सं०] संख्या, अवकाश, मात्रा आदिका विचार करनेवाला शास्त्र, अंकशास्त्र; हिसाब। वि० गिना हुआ; जोड़ा हुआ। **–ज्ञ**–वि० गणितशास्त्री, ज्योतिषी। **–विद्या**–स्त्री० अंकशास्त्र, इल्मे हिसाब।

गणेश–पु०[सं०] एक प्रसिद्ध हिंदू देवता जो शिव-पार्वतीके पुत्र माने जाते हैं।

गण्य–वि० [सं०] गणनीय। **–मान्य**–वि० सम्मानित।

गत–वि० [सं०] गया हुआ; बीता हुआ; मृत; पहुँचा हुआ प्राप्त; स्थित;...से संबद्ध; रहित; ज्ञात; पिछला (गत सप्ताह, मास)। **–चेतन**–वि० नष्टचेतन, बेहोश। **–प्राण**–वि० मृत, बेजान। **–प्राय**–वि० गया, बीता हुआसा। **–भर्तृका**–स्त्री० विधवा। **–वय(स्),–वयस्क**–वि० अधिक अवस्थाका।

गत–स्त्री० गति, हालत; बुरी गति; ढंग; रूप; सितार आदिपर बजाया जानेवाला रागका 'सरगम'; नृत्यमें विशेष अंगचेष्टा। **–का**–ठिकानेका, अच्छा। (**–बजाना**–सितार आदिपर रागका 'सरगम' बजाना।) मु०–**बनाना**–दुर्दशा करना; खूब मरम्मत करना।

गतका–पु० लकड़ीका डेढ़-दो हाथ लंबा, चमड़ा चढ़ा, मुठियादार डंडा जिससे एक खास खेल खेला जाता है, गतका-फरीका खेल जो लाठी लड़नेसे मिलता-जुलता है।

गतांक–पु० [सं०] पिछला अंक, संख्या (सामयिक पत्रादिकी)।

गतानुगतिक–वि० [सं०] आँख मूँदकर दूसरोंके पीछे चलनेवाला, अंधानुयायी।

गतार्तवा–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अब ऋतुमती न होती हो, बुढ़िया।

गतासु–वि० [सं०] मृत।

गति–स्त्री० [सं०] जाना, गमन; चाल, रफ्तार; हरकत; लीला; पहुँच, प्रवेश; जाने-पहुँचनेकी सामर्थ्यकी सीमा; दशा, हालत; स्थिति; रूप-रंग; मृत्युके बाद जीवात्माकी भली-बुरी दशा; सद्गति; मार्ग; ग्रहोंकी चाल; नासूर; ज्ञान; उपाय; अवलंब, सहारा; साधन; प्रवाह; नृत्य; पैंतरा; दे० 'गत'। **–भंग,–भेद**–पु० छंद, गान आदिमें पढ़ने, गानेकी लयका टूट जाना। **–रोध**–पु० (डेडलॉक) किसो वार्त्ता आदिमें ऐसी जटिल स्थिति या बाधाका उत्पन्न हो जाना जिससे आगे बढ़ने आदिकी संभावना ही न जान पड़े, जिच। **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० विज्ञानका वह विभाग जिसमें द्रव्यादिकी गति और शक्ति-संबंधी सिद्धांतोंका निर्धारण किया जाता है (डायनामिक्स)। **–विधि**–स्त्री० चेष्टा, हरकत; कार्य (असा०)। **–शील**–वि० गतिमान्। **–हीन**–वि० असहाय, परित्यक्त; गतिरहित।

गतिमान् (मत्)–वि० [सं०] गतियुक्त, हरकत करनेवाला।

गत्ता–पु० एक तरहकी घटिया दफ्ती।

गत्तालखाता–पु० बट्टाखाता।

गत्थ*–पु० दे० 'गथ'।

गत्यवरोध–पु० [सं०] दे० 'गतिरोध'।

गथ*–पु० पूँजी, जमा; माल, धन; झुंड।

गथना*–स० क्रि० जोड़ना, एक साथ बाँधना; गढ़कर बातें करना।

गद–पु० [सं०] रोग; विष। **–हा(हन्)**–पु० वैद्य; [हिं०] दे० 'गधा'।

गदका–पु० दे० 'गतका'।

गद्कारा–वि० गुलगुला, नरम।

गदगद्*–वि० दे० 'गद्गद'।

गदना*–स० क्रि० कहना, बोलना।

ग़दर–पु० [अ०] विप्लव, बगावत, विद्रोह।

गदरा–वि० गदराया हुआ, अधपका।

गदराना–अ० क्रि० पकनेपर होना; यौवनागममें अंगोंका भरना, खिलना; आँखमें कीचड़ आना, आँख दुखने आना। * वि० गदराया हुआ।

गदला–वि० मैला, मिट्टी या कीचड़ मिला हुआ (पानी)।

गदहपचीसी–स्त्री० १६ से २५ बरसतककी अवस्था, मस्ती और नासमझीके दिन।

गदहपूरना–स्त्री० एक पौधा, पुनर्नवा।

गदहरा*–पु० गधा; गद्दा ।

गदहिला–पु० वह गधा जिसपर ईंट आदि लादते हैं ।

गदा–स्त्री० [सं०] लोहेका बना एक पुराना हथियार जिसके एक सिरेपर नोकदार बड़ा लट्टू लगा होता था, गुर्ज; डंडेमें पहनाया हुआ पत्थरका गोला जिसे मुद्गरकी तरह भाँजते हैं । **–धर**–वि० गदा धारण करनेवाला । पु० विष्णु ।

गदाई–स्त्री० [फा०] भिक्षावृत्ति । † वि० तुच्छ, निकम्मा ।

गदेला–पु० गद्दा; * लड़का, बालक–'फिरे मुलकमें मुगल-गदेले'–छत्र० ।

गद्गद–वि० [सं०] हर्ष, प्रेम आदिके अतिरेकसे जिसका गला भर आया हो, जिसके मुँहसे स्पष्ट शब्द न निकलते हों, पुलकित; आनंदित ।

गद्दा–पु० भारी, मोटा तोशक; टाटकी बनी मोटी गद्दी ।

गद्दी–स्त्री० छोटा गद्दा जिसपर दुकानदार, साहूकार बैठता है; अधिक सम्मानित व्यक्तिके बैठनेके लिए लगाया हुआ आसन; राजा, मठाधीश आदिका पद; कई तह किया हुआ कपड़ा जो घाव आदिपर रखते हैं । **–नशीनी**–स्त्री० गद्दीपर बैठना । **मु०–चलना**–वंशपरंपरा या शिष्यपरंपराका जारी रहना । **–पर बैठना**–राजगद्दीपर बैठना ।

गद्य–पु० [सं०] वह रचना जो छंदोबद्ध न हो, वार्तिक, पद्यका उलटा । **–काव्य**–पु० गद्यमें की गयी काव्यके गुणोंसे युक्त रचना ।

गधा–पु० घोड़ेकी जातिका एक चौपाया जो अधिकतर बोझ लादनेके लिए पाला जाता है, खर, रासभ । वि० नासमझ, मूर्ख, अहमक (ला०) । **–पन**–पु० मूर्खता, नासमझी । **मु० गधेको बाप बनाना**–काम निकालनेके लिए मूर्खकी खुशामद करना । **–पर चढ़ाना**–जलील, बेइज्जत करना ।

गन*–पु० दे० 'गण' । **–नायक, –प, –पति**–पु० दे० 'गणनायक', 'गणपति' । **–राय**–पु० गणेश ।

गनक*–पु० दे० 'गणक' ।

गनगनाना–अ० क्रि० जाड़ेसे काँपना; रोमांच होना ।

गनगौर–स्त्री० चैत-शुक्ला तृतीया ।

गनती*–स्त्री० गिनती ।

गनना*–स० क्रि० गिनना । स्त्री० दे० 'गणना' ।

गनाना*–स० क्रि० दे० 'गिनाना' । अ० क्रि० गिना जाना ।

गनाल*–स्त्री० एक तरहकी तोप ।

गनिका*–स्त्री० दे० 'गणिका' ।

गनियारी–स्त्री० एक झाड़ जिसकी लकड़ी रगड़नेसे आग निकलती है, छोटी अरनी ।

ग़नीम–पु० [अ०] डाकू, लुटेरा; दुश्मन ।

ग़नीमत–स्त्री० [अ०] लूटका माल; मुफ्तका माल; बड़ी बात; संतोष करने योग्य बात ।

गन्ना–पु० ईख ।

गप–पु० निगलने, गपकनेकी क्रिया या उसका शब्द । स्त्री० इधर-उधरकी बातें, निष्प्रयोजन बातें; मनबहलावके लिए की जानेवाली बात-चीत; झूठी बात; झूठी खबर; डींग । **–शप**–स्त्री० इधर-उधरकी बातचीत, मनबहलावकी बातचीत । **मु०–उड़ना**–झूठी खबर फैलना । **–मारना, –हाँकना**–डींग मारना; लंबी-चौड़ी बातें करना, बकवास करना । **–लड़ाना**–गपशप करना ।

गपकना–स० क्रि० निगल लेना, झटसे खा लेना; * झूठ कहना ।

गपड़चौथ–पु० गड़बड़, गोलमाल; बेकारकी बकवास, गप । वि० ऊटपटाँग, अंडबंड ।

गपना*–स० क्रि० गप मारना ।

गपिया–वि० गप मारनेवाला ।

गपिहा*–वि० गप्पी ।

गपोड़, गपोड़िया–वि० गप मारनेवाला ।

गपोड़ेबाज़ी–स्त्री० झूठी बकवास ।

गप्प–स्त्री० दे० 'गप' ।

गप्पी–वि० गप हाँकनेवाला ।

गफ–वि० ठस, घना (बुना हुआ), 'झीना'का उलटा ।

ग़फ़लत–स्त्री० [अ०] भूल; असावधानता, बेखबरी ।

गफिलाई*–स्त्री० गफलत ।

ग़फ़ूर–वि० [अ०] क्षमा करनेवाला, दयालु ।

गबडी*, गबड्डी†–स्त्री० कबड्डी ।

ग़बन–पु० [अ०] अमानतकी रकम खा जाना, खयानत ।

गबरा*–वि० धनी; हठी–'धनी भये निधन, निधन भये गबरे'–ककौ०; दे० 'गब्बर' ।

गबरू–वि० नौजवान, जिसकी रेख भिन रही हो; भोला-भाला । † पु० दूल्हा ।

गब्बर–वि० घमंडी; मट्ठर, सुस्त; हठी; धनी ।

गभस्तिमान्(मत्)–वि० [सं०] चमकवाला । पु० सूर्य ।

गभीर–वि० [सं०] दे० 'गंभीर' ।

गभुआ(वा)र–वि० पेटका, पैदाइशी (केश); जिसका मुंडन न हुआ हो; छोटा (बालक) ।

गम–स्त्री० पहुँच, गुजर ।

ग़म–पु० [अ०] दुःख, शोक; चिंता, परवा । **–खोर, –ख़्वार**–वि० दुःख बटानेवाला, हमदर्द; सहनशील । **–ख़्वारी**–स्त्री० हमदर्दी; सहनशीलता । **–गीन**–वि० खिन्न, उदास । **–नाक**–वि० दुःखभरा; दुःखद । **मु०–खाना**–क्षमा करना, सह लेना; दूसरेके दुःखसे दुःखी होना ।

गमक–स्त्री० बास, महक; गूँजनेकीसी आवाज । वि० [सं०] बोधक, सूचक । पु० गानेमें एक श्रुतिसे दूसरी श्रुतिपर जानेकी एक रीति ।

गमकना†–अ० क्रि० महँकना; गूँजनेकीसी आवाज होना ।

गमन–पु० [सं०] जाना; पास जाना; चढ़ाई, विजययात्रा करना; संभोग करना ।

गमनना*–अ० क्रि० जाना ।

गमना*–अ० क्रि० जाना; चलना; दे० 'गमिना' ।

गमनागमन–पु० [सं०] आना-जाना, यातायात ।

गमला–पु० बाल्टी जैसा मिट्टीका बरतन जिसमें फूलोंके पौधे लगाये जाते हैं; कमोड ।

गमाना*–स० क्रि० दे० 'गँवाना' ।

गमार*–वि०, पु० दे० 'गँवार' ।

गमिना*–अ० क्रि० गम करना, ध्यान देना ।

ग़मी–स्त्री० [अ०] मृत्युशोक, मातम; मृत्यु ।

गम्य–वि० [सं०] जाने योग्य; जिसके पास जाया जा

सके; संभोग करने योग्य (स्त्री०गम्या); लभ्य; व्यंग्य(अर्थ)।

गयंद*–पु० गजेंद्र, बड़ा हाथी।

गय–पु०[सं०] घर; धन; प्राण; आकाश; पुत्र; एक राजर्षि जिनकी यज्ञभूमिका नाम गया पड़ा; एक असुर।

गय*–पु० गज; हाथी। **–नाल**–स्त्री० दे० 'गजनाल'।

गयल*–स्त्री० गली; रास्ता।

गया–स्त्री०[सं०] मगधकी एक पुरी और प्रसिद्ध तीर्थस्थान। **–वाल**–पु० [हिं०] गयाका पंडा। **मु०–करना**–गयामें जाकर पिंडदान आदि करना।

गयागुजरा, गयाबीता–वि० खराब; निकम्मा; हीन दशाको प्राप्त।

गर–पु० [सं०] विष; रोग। **–घ्न**–वि० विष-नाशक; स्वास्थ्यकर।

गर–प्र०[फ़ा०] बनानेवाला। * पु० गला, गरदन। **–नाल**–स्त्री० चौड़े मुँहकी तोप, घननाद; † मंडलाकार भारी लोहा या पत्थर जिसे गलेमें डालकर बैठक लगाते हैं।

ग़रक़–वि०[अ०] डूबा हुआ, निमग्न; नष्ट; लीन, तन्मय।

ग़रक़ाब–वि० [अ०] डूबा हुआ। पु० डूबनेभर पानी, डुबाव।

गरगज–पु० क़िलेकी चहारदीवारीपरका बुर्ज जिसपर तोप चढ़ी रहती है; युद्ध-सामग्री रखनेके लिए बना हुआ टीला; नावके ऊपरकी छत; टिकटी। वि० विशाल।

गरगाब*–वि० दे० 'ग़रक़ाब'।

गरज–स्त्री० ऊँची, गंभीर आवाज; कड़ककर बोलनेकी आवाज; मेघध्वनि; शेरकी दहाड़।

ग़रज़–स्त्री० [अ०] मतलब, प्रयोजन; चाह, जरूरत। **–मंद**–वि० गरज रखनेवाला, अर्थी। **–का बावला**–अपनी गरज निकालनेके लिए सब कुछ करनेको तैयार।

गरजन*–पु० दे० 'गर्जन'।

गरजना–अ० क्रि० जोरसे कड़ककर बोलना; बादलोंका गड़गड़ाना; दहाड़ना। † वि० गर्जन करनेवाला।

ग़रज़ी–वि० [अ०] गरजमंद।

गरजू–वि० दे० 'ग़रजी'।

गरट्ट*–पु० झुंड।

गरद–पु० एक रेशमी कपड़ा। स्त्री० दे० 'गर्द'।

गरदन–स्त्री० [फ़ा०] गला, ग्रीवा; घड़े, सुराही आदिका मुँहके नीचेका तंग, लंबोतरा भाग। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–० बुखार**–पु० एक संक्रामक, सांघातिक रोग। **मु०–उठाना**–विरोध करना। **–उड़ाना**–सिर धड़से अलग कर देना, कतल करना। **–ऐंठी रहना**–घमंडमें चूर या नाराज रहना। **–काटना**–गला काटना; भारी अहित करना। **–झुकना**–अधीन होना; लज्जित होना; बेहोश होना। **–न उठाना**–लज्जित होना; बीमारीसे पड़े रहना; सब कुछ सह लेना। **–नापना**–धक्के देकर निकाल बाहर करना; बेइज्जती करना। **–पर छुरी फेरना**–हलाल करना; भारी अन्याय करना। **–पर जुवा रखना**–भारी काम सुपुर्द करना। **–पर होना**–ऊपर होना, जिम्मेदार होना (हत्या, पाप)। **–फँसना**–वशमें होना। **–में हाथ देना**–गरदनियाँ देना; बेइज्जत करना।

गरदनियाँ–स्त्री० निकाल बाहर करनेके लिए किसीके गलेमें हाथ लगाना, अर्द्धचंद्र (देना)।

गरदनी–स्त्री० घोड़ेकी गरदन और पीठपर उढ़ाया जानेवाला एक कपड़ा; गलेमें पहननेका एक गहना; गरेबान; कारनिस; गरदनियाँ; गरदनपर लगाया जानेवाला घस्सा।

गरदा–पु० दे० 'गर्द'।

गरदान–वि० [फ़ा०] जो घूम-फिरकर अपनी जगहपर लौट आये। पु० वह कबूतर जो घूम-फिरकर अपने अड्डेपर लौट आये। स्त्री० शब्दोंका रूप साधन।

गरदानना–स०क्रि० गरदान करना, शब्दोंके रूप साधना; दुहराना; कबूल करना, मानना; समझना।

गरदिश–स्त्री० दे० 'गर्दिश'।

गरना–अ० क्रि० निचोड़ा जाना; निचुड़ना; * दे० 'गलना'; टपकना, गिरना–'रहत न नयन नीरको गरिबो'–सू०; दे० 'गड़ना'।

गरब*–पु० दे० 'गर्व'; हाथीका मद। **–गहेला**–वि० गरबीला, घमंडी।

गरबई*–स्त्री० गर्व, घमंड।

गरब(बा)ना*–अ० क्रि० गर्व करना।

गरबा–पु० एक तरहका गुजराती नाच।

गरबित*–वि० दे० 'गर्वित'।

गरबीला–वि० घमंडी, गर्वयुक्त।

गरभ–पु० * दे० 'गर्व'; [सं०] दे० 'गर्भ'।

गरभाना*–अ० क्रि० गर्भ धारण करना; पौधोंमें बाल लगना।

गरभी*–वि० घमंडी।

गरम–वि० जिसे छूनेमें उष्णता या तापका अनुभव हो, ऊँचे तापक्रमवाला; जलता हुआ; तेज, तीखा; क्रुद्ध; शीघ्र उत्तेजित हो जानेवाला (खून, मिजाज); जोशीला; गरमी करनेवाला। **–कपड़ा**–पु० जाड़ेमें पहननेका कपड़ा, ऊनी या रुईदार कपड़ा। **–ख़बर**–स्त्री० वह खबर जिसकी बहुत चर्चा हो। **–मसाला**–पु० धनियाँ, मिर्च लौंग, इलायची इत्यादि या इनका चूर्ण।

गरमागरम–वि० तुरतका पका हुआ, तत्ता, ताजा; जिसमें गरमी या उत्तेजना हो (गरमागरम बहस)।

गरमागरमी–स्त्री० जोश, सरगर्मी; गुस्सेमें आ जाना।

गरमाना–अ० क्रि० गरमाहट अनुभव करना; गरम होना; मस्तीपर आना; क्रुद्ध होना। †स० क्रि० गरम करना।

गरमाहट–स्त्री० गरमी, उष्णता।

गरमी–स्त्री० गरम होनेका भाव, उष्णता; हरारत; तेजी; क्रोध; आवेश; उमंग; ग्रीष्म ऋतु; घमंड; उपदंश रोग; हाथी-घोड़ोंका एक रोग। **–दाना**–पु० अम्हौरी। **मु०–निकलना, –पचना**–घमंड चूर हो जाना।

गररा*–पु० दे० 'गर्रा'।

गरराना*–अ० क्रि० गरजना, गंभीर ध्वनि करना।

गरल–पु० [सं०] जहर, विष; सर्पविष।

गरवा*–वि० दे० 'गरुआ'। पु० गला।

गरह†–पु० दे० 'ग्रह'। **मु०–कटना**–अरिष्ट दूर होना।

गरहन*–पु० दे० 'ग्रहण'।

गरांडील–वि० लंबा-तगड़ा, ऊँचे कदका।

गराँव†-पु० बैल आदिके गलेकी फंदेदार रस्सी ।

गराज*-स्त्री० गर्जन ।

गराड़ी-स्त्री० चरखी, घिरनी; रगड़से पड़ी हुई लकीर ।

गराना*-स० क्रि० गलाना; निचोड़ना ।

गरानी-स्त्री० ग्लानि; भारीपन; महँगी; पेटका भारी होना ।

गरारा-वि० घमंडी; उद्धत ।

ग़रारा-पु० [अ०] गलेमें पानी लेकर 'गरगर' आवाजके साथ कुल्ली करना; कुल्ली करनेकी दवा; पाजामेकी ढीली मोहड़ी; शामियानेके चोबका गिलाफ । **-(रे)दार**-वि० ढीली मोहड़ीका (पजामा) ।

गरास*-पु० दे० 'ग्रास' ।

गरासना*-स० क्रि० ग्रसना; निगलना; कष्ट देना ।

गरिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] गुरुता, भारीपन; गौरव, महत्त्व; गर्व; आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिससे अपना देह-भार चाहे जितना बढ़ाया जा सकता है ।

गरियाना†-स० क्रि० गाली देना ।

गरियार(ल)-वि० अड़ियल, मट्ठर (बैल); सुस्त ।

गरिष्ठ-वि० [सं०] सबसे भारी; सबसे सम्मानित; बहुत कड़ा; दुष्पाच्य (भोजन); सबसे खराब ।

गरी-स्त्री० नारियलका मग्ज, खोपरा; गिरी ।

ग़रीब-वि० [अ०] परदेसी; अनोखा; निर्धन, मुफलिस; दीन-हीन । **-ख़ाना**-पु० दीनकी कुटिया (नम्रतावश अपने घरको कहते हैं) । **-निवाज़**-वि० दीनपर दया, अनुग्रह करनेवाला, दीनदयालु । **-परवर**-वि० गरीबों का पालन करनेवाला ।

गरीबान-पु० [फा०] अँगरखे, कुरते आदिका वह भाग जो गलेके नीचे और छातीके ऊपर रहता है ।

ग़रीबाना-वि० [अ०] निर्धनोचित । अ० गरीबी ढंगसे ।

ग़रीबी-स्त्री० [अ०] निर्धनता, मुफलिसी; दीनता ।

गरु*-वि० भारी, वजनदार; गंभीर, शांत ।

गरुअ(आ)*-वि० वजनदार, भारी; गौरवयुक्त ।

गरुआई*-स्त्री० भारीपन, गुरुत्व ।

गरुआना*-अ० क्रि० भारी या वजनदार होना ।

गरुड-पु० [सं०] विनताके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र जो पक्षिराज और विष्णुके वाहन माने जाते हैं; उकाब; लंबी गरदनवाला एक पक्षी जो मछलियाँ पकड़कर खाता है । **-गामी(मिन्)**-पु० विष्णु । **-घंटा**-पु० वह घंटा जिसपर गरुड़की प्रतिमा बनी हो । **-ध्वज**-पु० विष्णु; वह खंभा जिसमें ऊपर गरुड़की मूर्ति बनी होती है; गुप्त सम्राटोंका राजचिह्न । **-पुराण**-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें नरकोंका वर्णन, प्रेतकर्मका विधान आदि है । **-मंत्र**-पु० एक विषहारक मंत्र ।

गरुता*-स्त्री० दे० 'गुरुता' ।

गरुत्मान्(मत्)-पु० [सं०] पक्षी; गरुड़; अग्नि ।

गरुवाई*-स्त्री० दे० 'गरुआई' ।

गरू*-वि० गुरु, भारी; बड़ा ।

ग़रूर-पु० [अ०] गर्व, घमंड ।

गरूरत, गरूरताई*-स्त्री० मस्ती; घमंड ।

गरूरा*-वि० मगरूर; मतवाला ।

गरूरी*-वि० घमंडी, मगरूर ।

गरेबान-पु० [फा०] दे० 'गरीबान' ।

गरेरना*-स० क्रि० घेरना, मुहासिरा करना; रोकना ।

गरेरा*-पु० घेरा । वि० घुमावदार ।

गरेरी-स्त्री० चरखी, घिरनी; गँड़ेरी । * वि० घुमावदार, चक्करदार ।

गरैयाँ†-पु० दे० 'गराँव' ।

गरोह-पु० [फा०] समूह, दल, झुंड । **-बंदी**-स्त्री० दलबंदी ।

गर्ग-पु० [सं०] एक मंत्रकार ऋषि; साँड़; केंचुआ ।

गर्गरी-स्त्री० [सं०] गगरी, घड़ा; कलसी; मथानी; दहेड़ी ।

गर्ज-पु० [सं०] हाथीका चिग्घाड़ना; बादलोंका गरजना; गर्जना; (चिग्घाड़ता हुआ) हाथी ।

ग़र्ज़-स्त्री० दे० 'गरज़' ।

गर्जन-पु० [सं०] गरजनेकी क्रिया, गरजना; गरजनेकी आवाज; बादलोंकी गड़गड़ाहट; गंभीर ध्वनि; गुस्सा; युद्ध; फटकार । **-तर्जन**-पु० गरज-तड़प; डाँटना-धमकाना ।

गर्जना-स्त्री० [सं०] गर्जन ।

गर्त-पु० [सं०] गढ़ा, खड्ड; बिल; नहर; कब्र ।

गर्ताश्रय-पु० [सं०] बिलमें रहनेवाला जंतु (चूहा, खरगोश) ।

गर्द-स्त्री० [फा०] धूल, राख । वि० घूमनेवाला (केवल समासमें-'आवारागर्द', 'जहाँगर्द') । **-ख़ार,-ख़ोर**-वि० धूलको जज्ब कर लेनेवाला, जल्दी मैला न होनेवाला । पु० दरवाजेके सामने पैर पोंछनेके लिए बिछायी हुई नारियल आदिकी चटाई, पाअंदाज, पापोश । **-(व)गुबार**-पु० खाक-धूल; धूलधक्कड़ ।

गर्दभ-पु० [सं०] गधा; सफेद कुईं; गंध ।

गर्दभी-स्त्री० [सं०] गधी; गर्दभिका नामक चर्म रोग; गुबरैला ।

गर्दिश-स्त्री० [फा०] घुमाव, फेरा; चक्कर; गति; परिवर्तन, फेर । **-(शे) ज़माना**-स्त्री० दिनका फेर, दुर्भाग्य ।

गर्नाल-स्त्री० दे० 'गरनाल' ।

गर्ब-पु० दे० 'गर्व' ।

गर्बीला-वि० घमंडी ।

गर्भ-पु० [सं०] शुक्र-शोणितके संयोगसे उत्पन्न मांस-पिंड, गर्भाशयमें स्थित बच्चा या भ्रूण, हमल; कोख, गर्भाशय; गर्भाधानकाल; किसी वस्तुका भीतरी, मध्यवर्ती भाग; बिल; नदीका पेटा; घर-मंदिरका भीतरी भाग; नाटककी ५ प्रकारकी संधियोंमेंसे एक । **-कर**-वि० गर्भ धारण करानेवाला । पु० पुत्रजीव वृक्ष । **-काल**-पु० ऋतुकाल, गर्भधारणका समय । **-केसर**-पु० फूलके सूत जैसे रेशे जो गर्भनालके अंदर होते हैं । **-कोश,-कोष**-पु० गर्भाशय, बच्चादानी । **-गुर्वी**-स्त्री० गर्भिणी । **-गृह**-पु० घरके बीचोबीचका कमरा, घरका मध्य भाग; मंदिरकी वह कोठरी जिसमें मुख्य देवताकी प्रतिमा हो । **-च्युति**-स्त्री० प्रसव; गर्भपात । **-ज,-जात**-वि० जन्मका, पैदाइशी । **-द**-वि० गर्भ देनेवाला । पु० पुत्रजीव वृक्ष । **-दा,-दात्री**-स्त्री० सफेद भटकटैया । **-धारण**-पु० गर्भवती होना, हमल रहना । **-नाल**-स्त्री० फूलके भीतरकी पतली नाली जिसके सिरेपर गर्भकेसर होता है । **-पत्र**-पु० कोंपल; फूलके अंदरके पत्ते । **-पात**-पु० गर्भका गिर जाना । **-भवन**-

पु० गर्भगृह; सौरी। **–मंडप**–पु० शयनागार; गर्भगृह। **–मास**–पु० वह महीना जिसमें गर्भ रहे। **–मोक्ष**–पु० बच्चेकी पैदाइश। **–लक्षण**–पु० गर्भके चिह्न। **–वध**–पु० भ्रूणहत्या। **–वास**–पु० (बच्चेका) गर्भके भीतर रहना; कोख, गर्भाशय। **–व्यूह**–पु० एक व्यूह या सैन्य-रचना जिसमें सेना कमलके आकारमें खड़ी की जाती हैं। **–शंकु**–पु० एक तरहकी सँड़सी जिससे मरा हुआ बच्चा पेटसे निकाला जाता है (फारसेप्स)। **–संधि**–स्त्री० नाट्यशास्त्रमें कथित एक प्रकारकी संधि। **–स्थ**–वि० गर्भमें स्थित। **–स्राव**–पु० गर्भपात, चार महीने-तकके गर्भका गिर जाना। **–हत्या**–स्त्री० भ्रूणहत्या।

गर्भवती–वि० स्त्री० [सं०] गर्भवाली, गर्भिणी, हामिला।

गर्भांक–पु० [सं०] रूपकमें अंकके अंतर्गत अंक या दृश्य-विशेष।

गर्भागार–पु० [सं०] गर्भाशय; गर्भगृह; शयनागार; प्रसूतिगृह।

गर्भाधान–पु० [सं०] गर्भ रहना, गर्भ-धारण; १६ संस्कारों मेंसे एक।

गर्भाशय–पु० [सं०] स्त्रीके पेटकी वह थैली जिसमें बच्चा रहता है, बच्चादानी।

गर्भिणी–वि० स्त्री० [सं०] जिसे गर्भ हो, गर्भवती। **–दौहद**–पु० गर्भवतीका कुछ चीजोंपर मन चलना।

गर्भित–वि० [सं०] गर्भयुक्त; भरा हुआ। पु० काव्यका एक दोष, किसी अतिरिक्त वाक्यका किसी वाक्यके बीचमें आ जाना।

गर्म–वि० [फा०] गरम।

गर्रा–वि० लाखके रंगका। पु० लाखी रंग; लाखी रंगका घोड़ा जिसके कुछ बाल सफेद हों; लाखी रंगका कबूतर; गराड़ी; चरखी; पानीका आघात।

गर्व–पु० [सं०] घमंड–धन, विद्या आदिमें अपनेको दूसरोंसे बढ़कर और दूसरोंको अपने सामने छोटा समझनेका भाव; एक संचारी भाव।

गर्ववंत*–वि० गर्वयुक्त।

गर्वाना*–अ० क्रि० गर्व करना।

गर्वित–वि० [सं०] गर्वयुक्त, घमंडी।

गर्विता–स्त्री० [सं०] अपने रूप-गुणपर गर्व करनेवाली नायिका।

गर्वी(र्विन्)–वि० [सं०] गर्व करनेवाला, घमंडी।

गर्वीला–वि० घमंडी।

गर्हणीय–वि० [सं०] निंदा करने योग्य, निंद्य।

गर्हित–वि० [सं०] निंदित, बुरा, दूषित।

गर्ह्य–वि० [सं०] गर्हणीय, निंद्य।

गलंतिका, गलंती–स्त्री० [सं०] छोटी कलसी; छेददार घड़ा जिससे शिवलिंग आदिपर पानी चूता रहता है।

गल–पु० [सं०] गला, कंठ; सालका गोंद। **–कंबल**–पु० गाय-बैलके गलेका नीचे लटकनेवाला भाग, झालर। **–गंड**–पु० गलेका एक रोग जिसमें एक गाँठसी निकल आती है और कभी-कभी वह बढ़कर लटकने लगती है, घेघा। **–ग्रह**–पु० गला पकड़ना, घोंटना; गलेका एक रोग; वह चीज जिससे जल्दी जान न छूटे। **–ज़ोड़,–जोत**–स्त्री० [हिं०] वह रस्सी जिससे दो बैल एक साथ बाँधे, जोते जायँ; गलेका हार। **–झंप**–पु० [हिं०] (युद्धमें) हाथीके गलेपर डाली जानेवाली लोहेकी झूल। **–तनी**–स्त्री० [हिं०] बैलोंके गराँवके साथ बाँधनेकी रस्सी। **–थन,–थना**–पु० [हिं०] गलस्तन। **–द्वार**–पु० मुख। **–फाँस**–स्त्री० [हिं०] मालखंभकी एक कसरत। **–फाँसी**–स्त्री० [हिं०] गलेकी फाँसी; फंदा; जंजाल, गलग्रह। **–बंदनी**–स्त्री० [हिं०] गलेका एक गहना, गुलूबंद। **–बहियाँ,–बाहीं**–स्त्री० [हिं०] गलेमें बाँह डालना, बगलसे आलिंगन। **–शुंडिका,–शुंडी**–स्त्री० छोटी जीभ, उपजिह्वा; एक रोग जिसमें तालूमें शोथ हो जाता है। **–सिरी**–स्त्री० [हिं०] गलेका एक गहना, कंठश्री। **–स्तन**–पु० बकरियोंके गलेसे लटकनेवाली थन जैसी थैली, गलथन। **–हस्त**–पु० अर्द्धचंद्र, गरदनियाँ।

गल–पु० गालका लघु रूप (केवल समासमें व्यवहृत)। **–गंज**–पु० शोर, हल्ला। **–चुमनी**–स्त्री० कानका एक गहना जो गालोंको छूता रहता है। **–तकिया**–पु० गालके नीचे रखनेका छोटा नरम तकिया। **–थैली**–स्त्री० बंदरके गालके अंदर रहनेवाली थैली। **–फड़ा**–पु० जलचरों आदिका वह अवयव जिससे वे साँस लेते हैं; गालका चमड़ा। **–फूला**–वि० जिसके गाल फूले हों। पु० गलसुआ। **–मंदरी**–स्त्री० दे० 'गलमुद्रा'। **–मुच्छा**–पु० गालोंपर दोनों ओर मूँछकी सीधमें रखे हुए बाल, गलगुच्छा। **–मुद्रा**–स्त्री० शिवकी पूजामें उन्हें प्रसन्न करनेके लिए गाल बजाना। **–सुआ**–पु० एक रोग जिसमें गालोंके नीचेके हिस्से सूज आते हैं और ज्वर रहता है। **–सुई***–स्त्री० गलतकिया।

गलका–पु० हाथ या पाँवकी उँगलियोंमें होनेवाला एक तरहका छाले जैसा फोड़ा।

गलगंजना†–अ० क्रि० दे० 'गलगाजना'।

गलगल–पु० चकोतरेके आकारका बहुत खट्टा नीबू; चूना और अलसीका तेल मिलाकर बनाया हुआ एक तरहका मसाला; एक चिड़िया।

गलगला*–वि० गीला, तर।

गलगाजना–अ० क्रि० खुशीसे फूलकर, इतराकर बड़ी-बड़ी बातें करना; जोर-जोरसे बोलना।

गलगुथना–वि० मोटा-ताजा।

गलतंस*–पु० ऐसे आदमीकी संपत्ति जो अपने पीछे किसीको छोड़ न गया हो; निःसंतान मृत व्यक्ति।

ग़लत–वि० [अ०] जो सही या ठीक न हो, मिथ्या; असत्य। **–नामा**–पु० शुद्धिपत्र। **–फ़हमी**–स्त्री० गलत समझना, कुछका कुछ समझना। **–बयानी**–स्त्री० अयथार्थ कथन।

ग़लता–पु० [फा०] रेशम और सूतकी मिलावटसे बना एक चमकदार कपड़ा।

ग़लती–स्त्री० [अ०] गलत होना, अशुद्धि; भूल-चूक।

गलन–पु० [सं०] चूना, क्षरण; झड़ना; गलना; सरकना।

गलनहाँ–पु० हाथियोंका नाखून गलनेका रोग।

गलना–अ० क्रि० ठोस वस्तुका तरल होना, पिघलना; कड़ी चीजका पककर नरम होना, सीझना; घुलना; दुबला

होना; सूखना; ठिठुरना; नष्ट होना; गलाया जाना ।

गलबल*-पु० खलभल, कोलाहल 'भई भीर गलबल मच्यो'-छत्र० ।

ग़लबा-पु० [अ०] प्रबलता; जीत, विजय (होना-पाना) ।

गलवाना-स० क्रि० गलानेका काम कराना ।

गलांकुर-पु० [सं०] गलेका एक रोग, 'टॉंसिल'का बढ़ना ।

गला-पु० सिरको धड़से जोड़नेवाला अंग, कंठ, हलक; सुर, आवाज; अँगरखे आदिका गरेबान; घड़े, लोटे आदिका मुँहके नीचेका तंग भाग । **गलेबाज़**-पु० अच्छे गलेवाला गवैया; बढ़कर बातें करनेवाला । **-बाज़ी**-स्त्री० ताल-सुरसे गाना; तान लेना । **मु०-उठाना,-करना**-घंटी बैठाना । **-कटना**-कतल किया जाना; (दूसरेके कामसे) भारी हानि होना, हकतलफी होना । **-कटवाना,-कटाना**-जान देना, कतल होना; अपनी भारी हानि करना । **-काटना**-गरदन मारना, बध करना; घोर अहित करना; गलेमें खुजली, चुनचुनाहट पैदा करना (जमीकंद आदिका) । **-खुलना**-दबी हुई आवाजका साफ हो जाना । **-घुँटना**-गला दबाये जानेसे साँस रुकना । **-घोंटना**-गलेको इस तरह दबाना कि साँस रुक जाय; गलेको इस तरह दबाकर जान लेना । **-छुड़ाना**-परेशान करनेवाले व्यक्ति या वस्तुसे पीछा छुड़ाना । **-दबाना**-गला घोंटना; दबाव डालना, जबर्दस्ती करना । **-बैठना**-(शोथ, बहुत बोलने, गाने आदिसे) साफ आवाज न निकलना, स्वर विकृत हो जाना । **-फाड़कर चिल्लाना,-फाड़ना**-चीखकर बोलना, इतने जोरसे बोलना कि गला बैठ जाय । **-रेतना**-गला काटना, हलाल करना; बहुत पीड़ा देना । **-(ले)का हार**-जो इतना प्यारा हो कि जुदा न किया जा सके, अति प्रिय; **-के नीचे उतारना**-घोंटा, निगला जाना; समझमें आना; ठीक लगना । **-पड़कर देना**-जबर्दस्ती देना; मत्थे मढ़ना । **-पड़ना**-अनचाही, अरुचिकर वस्तुकी प्राप्ति होना, उसके ग्रहणके लिए विवश होना, मत्थे मढ़ा जाना । **-पर छुरी फेरना**-भारी अहित, अन्याय करना, गला काटना । **-मढ़ना**-(किसीका) गले पड़कर कोई चीज देना; कोई काम सौंपना । **-मिलना,-लगना**-आलिंगन करना; भेंटना । **-में खटकना**-घोंटा, निगला न जा सकना; मनमें न बैठना, बुद्धिको स्वीकार न होना । **-लगाना**-आलिंगन करना; गले मढ़ना ।

गलाऊ-वि० गलनेवाला ।

गलाना-स० क्रि० किसी ठोस चीजको तरल, किसी कड़ी चीजको नरम बनाना, घुलाना, पिघलाना; गाँठ, गिल्टी आदिको धीरे-धीरे गायब कर देना; (कोठी) धँसाना; खर्च कराना ।

गलानि*-स्त्री० दे० 'ग्लानि' ।

गलित-वि० [सं०] गला हुआ, पिघला हुआ; चुआ, गिरा हुआ; जीर्ण; क्षयप्राप्त; सरका हुआ; निगला हुआ; * परिपक्व । **-कुष्ठ**-पु० वह कोढ़ जिसमें हाथ-पाँवकी उँगलियाँ आदि गलकर गिर जाती हैं । **-नखदंत**-वि० जिसके नख और दाँत गिर गये हों । **-यौवना**-वि० स्त्री० जिस(स्त्री)की जवानी ढल गयी हो, ढलती उम्रवाली ।

गलियारा-पु०, **गलियारी**-स्त्री० सँकरा, गली जैसा रास्ता ।

गली-स्त्री० सँकरा, सड़कसे कम चौड़ा रास्ता जिसके दोनों ओर मकानोंकी कतार हो, कूचा; (किसीके) घरके आस-पासका स्थान, टोला । **-कूचा**-पु० गली । **मु० गलियाँ झाँकना या छानना**-किसीकी खोजमें बहुत भटकना, हैरान होना ।

गलीचा-पु० सूत या ऊनके धागेसे बुना हुआ बिछौना, कालीन ।

ग़लीज़-वि० [अ०] गंदा, मैला । पु० मैला, विष्ठा ।

गलीत*-वि० गलित, जीर्ण; दुर्दशाप्राप्त; क्षयप्राप्त ।

गलेबाज़-पु० दे० 'गला'के साथ ।

गलौ*-पु० चंद्रमा ।

गलौआ-पु० बंदरोंके गालके अंदरकी थैली ।

गल्प-पु०, स्त्री० गप्प; डींग; कहानी ।

गल्ला-*पु० शोर, हल्ला; [फ़ा०] जानवरोंका झुंड, खेड़ । **-बान**-पु० भेड़, बकरी आदि चरानेवाला, गड़रिया ।

ग़ल्ला-पु० [अ०] अनाज; वह अनाज जिसका आटा पीसकर खाया जाय; रोजकी बिक्रीकी आमदनी, गोलक । **-फ़रोश**-पु० अनाज बेचनेवाला ।

गवँ*-स्त्री० दे० 'गौं' ।

गवन*-पु० गमन; गौना । **-चार**-पु० गौना ।

गवनना*-अ० क्रि० जाना ।

गवर्नमेंट-स्त्री० [अं०] शासन, हुकूमत; सरकार ।

गवर्नर-पु० [अं०] शासक; देश, प्रदेश या नगरका राजा या राज्यकी ओरसे नियुक्त शासक; सूबेदार; राज्यपाल । **-जेनरल**-पु० प्रधान शासक; ब्रिटिश साम्राज्यके देशोंमें ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त सम्राट्का प्रतिनिधिरूप प्रधान शासक ।

गवाँना-स० क्रि० खोना ।

गवाक्ष, गवाक्षक-पु० [सं०] छोटी खिड़की, झरोखा ।

गवाख, गवाछ*-पु० दे० 'गवाक्ष' ।

गवामयन-पु० [सं०] १०, १२ महीनेमें पूरा होनेवाला एक यज्ञ ।

गवार-वि० [फ़ा०] पचनेवाला; रुचनेवाला, अनुकूल (केवल समासमें-'खुशगवार', 'नागवार' इत्यादि) ।

गवारा-वि० [फ़ा०] पचनेवाला; रुचिकर, मनोनुकूल ।

गवाशन-वि० [सं०] गोभक्षी । पु० चमार; चांडाल ।

गवास-पु० *गोभक्षी, कसाई । † स्त्री० गानेकी इच्छा ।

गवाह-पु० [फ़ा०] जिसने किसी घटनाको अपनी आँखों देखा हो या उसको जानता हो, साक्षी; अदालतमें किसी घटना, दावे, बयानकी सचाईकी शहादत देनेवाला ।

गवाही-स्त्री० [फ़ा०] गवाहकी हैसियतसे दिया जानेवाला बयान, साक्ष्य ।

गवेजा*-स्त्री० बात-चीत, बहस ।

गवेल*-वि० गँवार ।

गवेष, गवेषण-पु० [सं०] ढूँढना, खोजना; चाहना ।

गवेषक छात्र-पु० [सं०] गवेषणाकार्यमें लगा हुआ छात्र (रिसर्च स्कालर) ।

गवेषणा-स्त्री० [सं०] खोज; किसी विषयका विशेष परिश्रम और सावधानीके साथ अध्ययन तथा छान-बीन;

अन्वेषण। **–शाला**–स्त्री० (रिसर्च इंस्टिट्यूट) अन्वेषण, छान-बीन आदि करनेका स्थान।

गवेषी(षिन्)–वि० [सं०] गवेषण करनेवाला, खोजी।

गवेसना*–स० क्रि० खोजना। स्त्री० दे० 'गवेषणा'।

गवेसी*–वि० दे० 'गवेषी'।

गवैँहाँ–वि० देहाती, ग्रामका।

गवैया–पु० गानेवाला।

गव्य–वि० [सं०] गायसे उत्पन्न, प्राप्त (दूध, दही, गोबर आदि); गोवंशके उपयुक्त। पु० गायोंका झुंड; दूध; चरागाह; ज्या; गोरोचन; * पंचगव्य।

गश–पु० [अ०] मूर्च्छा। **मु०–खाना**–मूर्च्छित होना।

गशी–स्त्री० [अ०] बेहोशी।

गश्त–स्त्री० [फा०] फिरना, भ्रमण, चक्कर; पुलिस कर्मचारीका पहरेके लिए रातमें घूमना, रौंद (करना, लगाना)

गश्ती–वि० [फा०] गश्त करनेवाला, फिरनेवाला; एकसे दूसरेके पास जानेवाला (हुक्म, परवाना इ०)। **–चिट्ठी**–स्त्री०, **–हुक्म**–पु० वह चिट्ठी या हुक्म जो सब मातहत कर्मचारियोंके पास क्रमशः भेजा जाय।

गसना†–स० क्रि० पकड़ना, ग्रसना; कसना।

गसीला–वि० गठा हुआ; ठस बुना हुआ।

गहकना*–अ० क्रि० ललकना, लालसायुक्त होना।

गहगह(हा)–वि० प्रफुल्ल, आनंद-उल्लाससे भरा हुआ। अ० धूमधामसे, हर्ष-उत्साहके साथ।

गहगहाना–अ० क्रि० खुशीसे भर उठना, बहुत आनंदित होना।

गहगहे–अ० धूमधामसे, हर्ष-उत्साहके साथ।

गहडोरना†–अ० क्रि० गंदा करना।

गहन–वि० [सं०] गहरा; घना, अभेद्य, निविड़; दुर्गम; कठिन। पु० गहराई; गुफा; जल; जंगल; दुर्गम स्थान; गहना; * ग्रहण; विपद्; बंधक। * स्त्री० पकड़; हठ।

गहनता–स्त्री० [सं०] गंभीरता, गहराई; दुर्गमता।

गहना–पु० बंधक; [सं०] जेवर, आभूषण (संस्कृतमें स्त्री०)। * स० क्रि० पकड़ना; दे० 'गाहना'।

गहनि*–स्त्री० पकड़; हठ, जिद।

गहने*–अ० बंधकके तौरपर।

गहवर*–वि० दुर्गम; गह्वर; शोकविह्वल; आत्मविस्मृत; व्याकुल; ध्यानमग्न।

गहबरना*–अ० क्रि० घबड़ाना, व्याकुल होना।

गहबराना*–स० क्रि० घबड़ा देना। अ० क्रि० घबड़ाना।

गहर*–स्त्री० देर। वि० गहन, दुर्गम।

गहरना*–अ० क्रि० देर लगाना; लड़ना; कुपित होना।

गहरा–वि० जिसकी सतह आसपासके स्थान या किनारेसे नीची हो, निम्नगामी, उथलाका उलटा; गंभीर; गाढ़ा; भारी; कठिन; बहुत ज्यादा; जिसके मनकी बात जल्दी जानी न जा सके, गंभीर स्वभावका; गूढ़, जो जल्दी समझमें न आ सके (चाल)। **–असामी**–पु० बड़ी पूँजी रखनेवाला आदमी, मालदार आदमी। **–पेट**–वि० भेद न खोलनेवाला। **मु०–हाथ मारना**–ऐसा वार करना कि गहरी चोट बैठे; भारी रकम, भारी मूल्यकी चीज हथियाना, उड़ाना। **–(री) घुँटना**–गाढ़ी भाँग पिसना; गाढ़ी मित्रता होना; खूब आमोद-प्रमोद होना। **–छनना**–गाढ़ी या अधिक भाँग पीना; दिली दोस्ती होना; घुल-घुलकर बात होना। **–साँस भरना**–ठंढी साँस लेना।

गहराई–स्त्री० गहरापन, गहरा होना; गहरेपनकी माप।

गहराना†–अ० क्रि० गहरा होना; नाराज होना। स० क्रि० गहरा करना।

गहराव†–पु० गहराई।

गहरु*–वि० दे० 'गहर'।

गहरेबाजी†–स्त्री० एक्केके घोड़ेको खूब तेज दौड़ाना; इसकी होड़ करना।

गहलौत–पु० राजपूतोंका एक वंश।

गहवारा–पु० [फा०] पालना, बच्चेको सुलानेका झूला।

गहाई*–स्त्री० गहन, पकड़।

गहागड्ड–वि० गहरा; खूब तेज।

गहागह–अ० दे० 'गहगह'।

गहाना–स० क्रि० पकड़ाना, 'गहना'का प्रेर०।

गहासना*–स० क्रि० निगलना; पकड़ना।

गहिरो*–वि० दे० 'गहरा'।

गहिला*–वि० पागल, बावला।

गहीर*–वि० दे० 'गहरा'।

गहीला–वि० गर्वीला, घमंडी।

गहेजुआ*–पु० छछूँदर।

गहेलरा*–वि० बावला; मूर्ख।

गहेला–वि० हठी; घमंडी; पागल, बौड़म।

गहैया†–पु० पकड़नेवाला, ग्रहण करनेवाला।

गह्वर–वि० [सं०] गहरा; घना; निविड़; दुर्गम; गुप्त। पु० गुफा, बिल; अँधेरी, छिपने लायक जगह; निकुंज; गड्ढा।

गांग–वि० [सं०] गंगा-संबंधी; गंगाका। पु० भीष्म; कार्त्तिकेय; सोना; धतूरा।

गांगेय–पु० [सं०] भीष्म; कार्त्तिकेय; सोना; कसेरू; हिलसा मछली। वि० गंगामें या गंगातटपर स्थित।

गाँछना–स० क्रि० गूँथना।

गाँज–पु० ढेर; पयाल-पत्तों आदिका ढेर।

गाँजना–स० क्रि० ढेर लगाना।

गाँजा–पु० भाँगकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशेके लिए तंबाकूकी तरह पीते हैं।

गाँठ–स्त्री० रस्सी, धागे आदिका फंदा कसने या जोड़नेसे पड़ी हुई गुत्थी, गिरह, ग्रंथि; कपड़ेके छोरमें कुछ रखकर लगायी हुई गिरह; जेब; टेंट; गठरी; उँगली, हाँथ-पाँव आदिके जोड़, ईख, बाँस आदिके पोरोंके जोड़, पर्व; गाँठकी शकलकी जड़; गट्ठा; गिल्टी; वैर, शत्रुता। **–कट**, **–कतरा**–पु० जेब काटनेवाला, पाकेटमार; उचक्का; ठग। **–का**–पासका, जो अपने पास हो। **–गोभी**–स्त्री० एक तरहकी गोभी जिसमें जड़से कुछ ऊपर गाँठ होती है। **–दार**–वि० गाँठवाला। **मु०–कटना**–जेब कटना; गाँठका पैसा निकल जाना; ठगा जाना। **–कतरना**, **–काटना**–जेब कतरना। **–करना**–संग्रह करना। **–का पूरा, आँखका अंधा**–पैसेवाला पर मूर्ख। **–खुलना**–उलझन दूर होना; दिलकी सफाई होना; मनकी बात खोलकर कह दिया जाना। **–छोड़ना**–कठिनाई दूर

करना। **–जोड़ना**–गँठबंधन करना। **(मनमें)–पड़ना**–बिगाड़ होना; (किसीके प्रति) मनमें वैर-बुराई पैदा होना। **–पर गाँठ पड़ना**–कठिनाई, पेचीदगी या बुराई, वैमनस्यका बढ़ते जाना। **–बाँधना**–(किसी बातको) अच्छी तरह याद कर लेना कि भूल जानेका डर न रहे।

गाँठना–स० क्रि० गिरह लगाना; जोड़ना; जूता सीना; मिलाना; हाथमें कर लेना, मनचाही बात करनेको तैयार कर लेना; कसना (पंजा, सवारी); निश्चय करना; बाँधना (मजमून, मंसूबा); दबाना; वार रोकना।

गाँठि*–स्त्री० दे० 'गाँठ'।

गाँड़–स्त्री० गुदा; तला, पेंदा।

गाँडर–स्त्री० एक घास जिसकी जड़को खस कहते हैं; एक दूब।

गाँडा–पु० ईखका बोने या पेरनेके लिए काटा हुआ टुकड़ा; ईख; मेंड़री।

गांडी(डि)व–पु० [सं०] अर्जुनका धनुष् जो उन्हें अग्निसे मिला था; धनुष्। **–धन्वा(न्वन्)**–पु० अर्जुन।

गांडीवी(विन्)–पु० [सं०] अर्जुन।

गाँडू–वि० जिसे गुदाभंजन करानेकी लत हो; कमजोर दिलका; निकम्मा; डरपोक।

गाँती–स्त्री० दे० 'गाती'।

गाँथना–स० क्रि० गूँथना; गाँठना, जोड़ना।

गांधर्व–वि० [सं०] गंधर्व-संबंधी; गंधर्व देशमें उत्पन्न। **–वेद**–पु० दे० 'गंधर्व-वेद', सामवेदका उपवेद।

गांधर्वि(र्वि)क–पु० [सं०] गवैया।

गांधार–पु० [सं०] भारतवर्षका एक प्राचीन जनपद, पेशावरसे कंधारतकका प्रदेश, कंधार; गांधार देशवासी; गांधारका राजा; सात स्वरोंमेंसे तीसरा; सिंदूर; एक राग।

गांधारी–स्त्री० [सं०] गांधारकी राजकुमारी, दुर्योधनकी माता; एक रागिनी।

गांधारेय–पु० [सं०] दुर्योधन।

गाँधी–पु० गुजराती वैश्योंका एक अल्ल; भारतके एक महान् नेता जिन्होंने सत्य और अहिंसाके आधारपर आन्दोलन चलाकर देशको स्वतंत्र कराया; हरे रंगका एक छोटा कीड़ा जिसमें तेज दुर्गंध होती है; एक घास; हींग। **–टोपी**–स्त्री० खादीकी किश्तीनुमा टोपी। **–वाद**–पु० सत्य और अहिंसाका सिद्धांत जिसका प्रतिपादन गांधीजीने किया।

गांभीर्य–पु० [सं०] गंभीरता, गहराई; चित्तकी स्थिरता, अचंचलता; जटिलता।

गाँव–पु० ग्राम, छोटी बस्ती।

गाँस–स्त्री० रुकावट; भेदकी बात; वैर; गाँठ, फंदा; तीरका फल; * निगरानी; शासन; अधिकार।

गाँसना–स० क्रि० गूँथना; कसना; छेदना; † रोकना; वशमें रखना।

गाँसी–स्त्री० तीर आदिका फल, हथियारकी नोक; गाँठ; कपट; चुभनेवाली बात।

गाइ*–स्त्री० दे० 'गाय'।

गागर*–स्त्री० घड़ा, कलसा। **मु०–में सागर भरना**–थोड़ेमें बहुत बातोंका समावेश करना।

गागरी*–स्त्री० दे० 'गगरी'।

गाच†–पु० एक तरहका जालीदार कपड़ा, फुलवर।

गाछ–पु० पेड़, पौधा।

गाज–स्त्री० गर्जन; बिजलीकी कड़क; बिजली। पु० फेन। **मु०–गिरना,–पड़ना**–बिजली गिरना; आफत आना।

गाजना–अ० क्रि० गरजना; खुशीके मारे जोर-जोरसे बोलना।

गाजर–स्त्री० [सं०] एक मीठा मूल जो कच्चा और अचार-मुरब्बे आदिके रूपमें भी खाया जाता है। **–मूली**–स्त्री० तुच्छ वस्तु।

ग़ाज़ा–पु० [अ०] सुगंधित पाउडर जिसे स्त्रियाँ सौंदर्य-वृद्धिके लिए गालोंपर मलती हैं।

ग़ाज़ी–पु० [अ०] काफिरोंसे लड़नेवाला मुसलमान योद्धा; विजेता; शूर-वीर।

गाड़–पु० गड्ढा; अनाज रखनेका गड्ढा, खत्ता, खत्ती।

गाड़ना–स० क्रि० गड्ढेमें रखकर मिट्टीसे ढँकना, दफन करना; धरतीमें धँसाना; छिपाकर रखना।

गाडर*–स्त्री० भेड़।

गाड़ा–पु० घातमें बैठनेका गड्ढा या जगह; * छकड़ा, बैलगाड़ी; कोल्हूके नीचेका गड्ढा।

गाड़ी–स्त्री० पहियेके सहारे चलनेवाली सवारी, शकट; रेलगाड़ी। **–खाना**–पु० गाड़ी या गाड़ियाँ रखनेका स्थान। **–वान**–पु० गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ–वि० [सं०] अवगाहन किया हुआ; गाढ़ा; गहरा; ठस; घना; खूब मजबूत; अत्यधिक; कठिन; तीव्र; दुर्गम।

गाढ़–पु० [हिं०] संकट, कठिनाई; करघा।

गाढ़ा–वि० जो अधिक पतला न हो, जिसकी तरलतामें ठोस पदार्थका अंश कुछ अधिक हो; घनिष्ठ; मोटा; ठस; गहरा; कठिन; विकट। * अ० दे० 'गाढ़े'। पु० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गजी; मतवाला हाथी। **मु० गाढ़ी छनना**–खूब भंग पिया जाना; गहरी मित्रता होना; गुप्त मंत्रणा होना; विरोध होना। **गाढ़ेका साथी**–विपत्-कालमें साथ देनेवाला। **–दिन**–गाढ़, मुसीबतके दिन। **–पसीनेकी कमाई**–कड़ी मेहनतसे कमाया हुआ पैसा। **–में**–विपतमें।

गाढ़े*–अ० कसकर; जोरसे; अच्छी तरह।

गात*–पु० शरीर, गात्र।

गाता(तृ)–पु० [सं०] गायक, गवैया; गंधर्व।

गाती–स्त्री० चादर आदि ओढ़नेका एक खास ढंग; उस ढंगसे ओढ़ा हुआ कपड़ा।

गात्र–पु० [सं०] देह; अंग। **–मार्जनी**–स्त्री० अँगोछा, तौलिया।

गाथ–पु० [सं०] स्तोत्र; गान। * स्त्री० गाथा, यश।

गाथा–स्त्री० [सं०] अवैदिक स्तोत्र; श्लोक; प्राकृतका एक भेद; कथा; छंदोबद्ध कथा; छंद; आर्या छंद। **–कार**–पु० महाकाव्यका रचयिता; गायक।

गाद†–स्त्री० तलछट।

गादड़–पु० गरियार बैल; भेड़ा; गीदड़। वि० डरपोक।

गादर†–वि० डरपोक; गदराया हुआ; मट्ठर, सुस्त। पु० गीदड़; मट्ठर बैल।

गादा†–पु० अधपका अनाज या फसल; महुएका फूल ।

गादी–स्त्री० गद्दी; एक पकवान ।

गादुर*–पु० चमगादड़ ।

गाध–वि० [सं०] जिसकी थाह मिल सके; हलकर पार करने लायक, उथला; स्वल्प । पु० वह जगह जहाँ नदी हलकर पार की जा सके, थाह; स्थान; प्राप्तिकी इच्छा ।

गाधि–पु० [सं०] विश्वामित्रके पिता जो इंद्रके अंशसे उत्पन्न माने जाते हैं । **–तनय,–सुत**–पु० विश्वामित्र ।

गान–पु० [सं०] गाना, गीत; बखान, स्तवन । **–वाद्य**–पु० गाना-बजाना । **–विद्या**–स्त्री० संगीत-विद्या ।

गाना–स० क्रि० लय-तालके साथ शब्दोंका उच्चारण करना; किसी गीतको ताल-सुरके साथ कहना; वर्णन करना, बखानना (गुण गाना); स्तुति करना; मीठे बोल बोलना (कोयल आदिका) । पु० गीत, गान ।

ग़ाफिल–वि० [अ०] गफलत करनेवाला, बेखबर, असावधान, लापरवा ।

गाभ–पु० दे० 'गाभा'; पशुका गर्भ ।

गाभा–पु० कल्ला, कोंपल; डाल; पेड़ आदिका हीर ।

गाभिन–वि० स्त्री० गर्भवती (गाय, भैंस आदि) ।

गाम–पु० * दे० 'ग्राम'; [फ़ा०] पावँ, पद; डग; लगाम ।

गामी(मिन्)–वि० [सं०] गमन करनेवाला, जाने, चलनेवाला; पहुँचनेवाला; संभोग करनेवाला (केवल समासांतमें)

गाय–स्त्री० [हिं०] गोजातीय मादा पशु जो दूध देनेवाले पशुओंमें सर्वप्रधान और हिंदूधर्ममें पूज्य मानी जाती है, धेनु; बहुत सीधा, दीन आदमी (ला०) । **–गोठ**–स्त्री० वह बाड़ा या छप्पर जिसमें गायें रखी, बाँधी जायँ, गोष्ठ ।

गायक–पु० [सं०] गानेवाला, गवैया; अभिनेता ।

गायकवाड़–पु० बड़ौदानरेशकी उपाधि ।

गायत्री–स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद या उसमें रचित एक वैदिक मंत्र, सावित्री; दुर्गा; गंगा ।

गायन–पु० [सं०] गवैया, गायक; गाना ।

ग़ायब–वि० [अ०] छिपा हुआ; अनुपस्थित; लुप्त; अदृश्य ।

गार–*स्त्री० गाली । प्र० [फ़ा०] करनेवाला (खिदमतगार, गुनहगार); साधन (यादगार); योग्य (रुस्तगार) ।

ग़ार–पु० [अ०] गड्ढा, गर्त; गुफा, खोह; माँद ।

ग़ारत–स्त्री० [अ०] लूट-मार; तबाही, बरबादी (करना, होना) । वि० नष्ट; तबाह । **–गर**–पु० लुटेरा ।

गारद–स्त्री० [अं० 'गार्ड'] सैनिकोंकी टुकड़ी जो किसी स्थान, व्यक्ति आदिकी रक्षापर नियुक्त की गयी हो; पहरा; रक्षक, प्रहरी ।

गारना†–स० क्रि० निचोड़ना; * घिसना, रगड़ना; गलाना; * त्यागना; नष्ट करना ।

गारा–पु० मिट्टी या चूने-सुर्खीका लेप जिससे ईंटें जोड़ी जाती हैं; पलस्तरके लिए बनाया हुआ मिट्टीका लेप ।

गारी†*–स्त्री० दे० 'गाली' ।

गारुड–वि० [सं०] गरुड़-संबंधी । पु० साँपका जहर दूर करनेवाला मंत्र; गरुड़ास्त्र; गरुड़-व्यूह; सोना ।

गारुडिक, गारुडी(डिन्)–पु० [सं०] साँपका जहर उतारनेवाला, विषवैद्य; सँपेरा ।

गारो*–पु० गर्व; गौरव; प्रतिष्ठा ।

गार्ड–पु० [अं०] रक्षक, प्रहरी; ट्रेनकी रक्षाके लिए जिम्मेदार अधिकारी जो सबसे पीछेके डब्बेमें बैठता है ।

गार्हपत्याग्नि–स्त्री० [सं०] एक तरहकी अग्नि जो परिवारमें वंशानुगत चलायी जाती है ।

गार्हमेध–पु० [सं०] गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ ।

गार्हस्थ्य–पु० [सं०] गृहस्थाश्रम; गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ; गिरस्ती; गृहकार्य । **–विज्ञान**–पु० (डोमेस्टिक साइंस) गृहस्थोंके कार्यों (रसोई बनाना, कपड़े सीना आदि)-का विवेचन करने तथा उनकी शिक्षा प्रदान करनेवाला शास्त्र ।

गाल–पु० चेहरेके दोनों ओरका ठुड्ढी और कनपटीके बीचका भाग, कपोल, रुखसार; मुँहजोरी, वाचालता; मध्य; मुँह (कालके गालमें); झोंक । **–गूल***–पु० व्यर्थ बात । **–मसूरी***–स्त्री० एक पकवान । **मु०–करना***–बढ़-बढ़कर बात करना; मुँहजोरी करना–'गाल करब केहिकर बल पाई'–रामा० । **–फुलाना**–गर्व जताना; मुँह फुलाना, रूठना । **–बजाना**–बढ़-बढ़कर बात करना; बकवास करना । **–मारना**–डींग हाँकना; मुँहमें ग्रास डालना । **–में जाना**–मुँहमें पड़ना ।

गालन–पु० [सं०] निचोड़ना; गलाना ।

गालना*–स० क्रि० बोलना, दे० 'गाल्हना' ।

गालव–पु० [सं०] एक ऋषि जो विश्वामित्रके शिष्य थे; पाणिनिके पूर्ववर्ती एक वैयाकरण; लोध; तेंदू; एक स्मृतिकार ।

गाला–पु० धुनी हुई नरम रुईका गोला, पूनी; *मुँहजोरी ।

गालि–स्त्री० [सं०] गाली ।

गालित–वि० [सं०] निचोड़ा हुआ; गलाया हुआ ।

ग़ालिब–वि० [अ०] जीतनेवाला, विजयी; प्रबल ।

ग़ालिबन्–अ० [अ०] संभवतः; अधिकतर संभव है ।

गालिम*–वि० दे० 'ग़ालिब' ।

गाली–स्त्री० गंदा या अश्लील शब्द, अपशब्द; चरित्रपर लांछन लगानेवाली बात; विवाहादिमें गाया जानेवाला अश्लील गीत । **–गलौज,–गुफ़्ता**–स्त्री० एक दूसरेको गालियाँ देना; अपशब्द, दुर्वचन ।

गाल्हू*–वि० गाल बजानेवाला; शेखी बघारनेवाला ।

गाल्हना*–स० क्रि० बोलना, कहना ।

गाव–पु० [फ़ा०] गाय, बैल; वृष राशि । **–कुशी**–स्त्री० गोवध । **–ख़ाना**–पु० मवेशीखाना; मुर्दा जानवरोंकी खाल उतारनेकी जगह । **–ज़बाँ,–ज़बान**–पु० एक प्रसिद्ध वनौषधि । **–तकिया**–पु० बड़ा तकिया, मसनद । **–दी**–वि० मूर्ख, बुद्धू, जड़बुद्धि । **–दुम,–दुमा**–वि० जो ऊपरसे नीचेको पतला होता जाय, ढालू ।

गावन*–स्त्री० गानेका ढंग ।

गास*–पु० दुःख, संकट ।

गासिया*–पु० जीनपोश ।

गाह–वि० [सं०] गाहन करनेवाला । पु० अवगाहन; गहराई; * ग्राहक; पकड़; मगर, ग्राह । स्त्री० [फ़ा०] स्थान, जगह; समय, काल; बारी ।

गाहक–पु० ग्राहक, खरीदार; कद्रदाँ; [सं०] अवगाहन करनेवाला ।

गाहकताई*—स्त्री॰ खरीदारी; कद्रदानी ।

गाहकी—स्त्री॰ खरीदारी; बिक्री । † पु॰ ग्राहक ।

गाहन—पु॰ [सं॰] पानीमें धँसना, पैठना, गोता लगाना, निमज्जन; थाह लेना; छानना; बिलोड़ना ।

गाहना—स॰ क्रि॰ थाह लेना; अवगाहन करना; बिलोड़ना; पार करना;—'फेरि भीमरा कृष्णा गाही'—छत्र॰; ग्रहण करना; अनाज माँड़नेमें दाना झाड़नेके लिए डाँठको डंडेसे उठाना ।

गाहा*—स्त्री॰ कथा, गाथा, वृत्तांत ।

गाहित—वि॰ [सं॰] गाहन किया हुआ ।

गाहिता(तृ)—वि॰ [सं॰] गाहन करनेवाला ।

गाही—स्त्री॰ पाँच चीजोंका समूह या गिननेका मान ।

गिँजना—अ॰ क्रि॰ गींजा जाना ।

गिँजाई—स्त्री॰ गींजनेकी क्रिया; बरसातमें पैदा होनेवाला एक कीड़ा ।

गिँडुरी—स्त्री॰ दे॰ 'इँडुरी' ।

गिंदुक—पु॰ [सं॰] गेंद, कंदुक ।

गिँदौड़ा(रा)—पु॰ मोटी रोटीकी शकलमें जमायी हुई चीनी ।

गिआन*—पु॰ दे॰ 'ज्ञान' ।

गिउ*—स्त्री॰ ग्रीवा, गला ।

गिचपिच—वि॰ पास-पास लिखा हुआ, अस्पष्ट ।

गिचर-पिचर—वि॰ दे॰ 'गिचपिच' ।

गिजगिजा—वि॰ गीला; पिलपिला ।

ग़िज़ा—स्त्री॰ [अ॰] आहार, खाद्य पदार्थ ।

ग़िज़ाई—वि॰ [अ॰] आहार-संबंधी; जो आहार-रूपमें हो ।

गिजाई—स्त्री॰ गिंजाई या ग्वालिन नामक कीड़ा ।

गिटकिरी—स्त्री॰ तान लेनेमें स्वरको कँपाना ।

गिटपिट—स्त्री॰ विकृत, अर्थहीन शब्दावली । **—भाषा**—स्त्री॰ अंग्रेजी । **मु॰—करना**—टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना ।

गिट्टक—पु॰ चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी; लकड़ी, लोहे आदिका छोटा और मोटा टुकड़ा ।

गिट्टा—पु॰ चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी ।

गिट्टी—स्त्री॰ पत्थरके छोटे तोड़े हुए टुकड़े जो छत बनाने आदिमें काम आते हैं; मिट्टीके बरतनका छोटा टुकड़ा; चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी; धागेकी गोली ।

गिड़गिड़ाना—अ॰ क्रि॰ दीन भावसे प्रार्थना करना, आजिजी करना, चिरौरी करना ।

गिड़गिड़ाहट—स्त्री॰ गिड़गिड़ानेका भाव ।

गिद्ध—पु॰ मरे जानवरोंका मांस खानेवाला एक बड़ा पक्षी जिसकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण होती है । **—राज**—पु॰ जटायु ।

गिनगिनाना†—अ॰ क्रि॰ देहका काँपना, गनगनाना; रोमांच होना । स॰ क्रि॰ झकझोरना ।

गिनती—स्त्री॰ गिननेकी क्रिया, गणना; संख्या; मूल्य; महत्त्व; हाजिरी (सेना) । **—के**—गिने हुए, थोड़ेसे । **मु॰—पर जाना**—हाजिरी देने जाना । **—में आना, —में होना**—कुछ मूल्य, महत्त्वका होना, कुछ समझा जाना !

गिनना—स॰ क्रि॰ संख्या, गिनती मालूम करना, गणन, गणना करना; हिसाब लगाना; समझना; कुछ मूल्य, महत्त्व रखनेवाला मानना । **मु॰ गिन-गिनकर कदम रखना**—बहुत धीरे-धीरे चलना, छोटे-छोटे कदम रखना । **गिन-गिनकर गालियाँ देना**—घरके हर आदमीका नाम ले-लेकर गालियाँ देना । **गिन देना**—तुरत चुकता कर देना । **गिने-गिनाये, गिने-चुने**—थोड़ेसे, गिनतीके ।

गिनवाना—स॰ दे॰ क्रि॰ 'गिनाना' ।

गिनाना—स॰ क्रि॰ गिननेका काम दूसरेसे कराना ।

गिन्नी—स्त्री॰ [अं॰] एक विलायती घास; सोनेका अंग्रेजी सिक्का जो २१ शिलिंगका होता है । **—गोल्ड**—पु॰ वह सोना जिसमें ताँबेका मेल हो ।

गिन्नी—स्त्री॰ चक्कर; † दे॰ 'गिन्नी' ।

गिय*—स्त्री॰ गला, गरदन ।

गिर*—पु॰ दे॰ 'गिरि' । **—धर, —धारन, —धारी***—पु॰ दे॰ 'गिरिधर' । **—वर***—पु॰ बड़ा, श्रेष्ठ पहाड़, गिरिवर ।

गिरगिट—पु॰ छिपकलीकी जातिका एक जंतु जो कई तरहके रंग बदल सकता है । **मु॰—की तरह रंग बदलना**—मत, वृत्ति बदलते रहना; कभी कुछ, कभी कुछ बनना ।

गिरगिटान†—पु॰ गिरगिट ।

गिरजा—पु॰ ईसाइयोंका उपासनागृह; एक पक्षी । * स्त्री॰ दे॰ 'गिरिजा' ।

गिरद*—अ॰ दे॰ 'गिर्द' ।

गिरदा†—पु॰ चक्कर; तकिया; फरशीके नीचे रखनेका गोला कपड़ा; ढाल; खँजरीका मेंडरा ।

गिरदान*—पु॰ गिरगिट ।

गिरदावर—वि॰ दे॰ 'गिर्दावर' ।

गिरना—अ॰ क्रि॰ ऊपरसे, अपनी जगहसे नीचे आना; ढहना (घर, दीवार); उखड़ना; झड़ना; (नदी आदिका) बड़ी नदी आदिमें मिलना; छीजना; अवनत होना; मंदा होना, घटना (भाव); बरसना; घायल होकर गिर जाना, हारना; मारा जाना या पतन होना; (शक्ति, प्रतिष्ठा आदिका) घटना, ह्रास होना; बीमार होना, खाट पड़ना; टूटना (बाजका शिकारपर); किसी चीजके लिए बहुत चाव दिखाना; सुस्त, उत्साहरहित होना; ऐसे रोगका होना जिसका सिर या दिमागसे नीचेकी ओर आना माना जाता हो (फालिज, नजला गिरना) । **गिरते-पड़ते**—अ॰ गिरते-उठते, बड़ी कठिनाईसे । **गिरा-पड़ा**—वि॰ ज़मीनपर पड़ा हुआ; छूटा-छटका हुआ; ढहा हुआ, जीर्ण-शीर्ण ।

गिरफ़्त—स्त्री॰ [फा॰] पकड़; भूल पकड़ना; एतराज; मूठ ।

गिरफ़्तार—वि॰ [फा॰] पकड़ा हुआ; फँसा हुआ; बंदी ।

गिरफ़्तारी—स्त्री॰ [फा॰] गिरफ्तार करना या होना; कैद ।

गिरमिट—पु॰ बड़ा बरमा; [अं॰ 'एग्रीमेंट'] एकरारनामा !

गिरमिटिया—पु॰ किसी उपनिवेशमें गया हुआ शर्तबंद हिंदुस्तानी मजदूर ।

गिरवान*—पु॰ दे॰ 'गीर्वाण'; दे॰ 'गरीबान' ।

गिरवाना—स॰ क्रि॰ 'गिराना'का प्रेरणार्थक ।

गिरवी—स्त्री॰ बंधक, रेहन; बंधक रखी हुई चीज । **—गाँठा**—पु॰ बंधक । **—दार**—पु॰ बंधक रखनेवाला, रेहनदार ।

गिरस्ती—स्त्री॰ दे॰ 'गृहस्थी' ।

गिरह—स्त्री॰ [फा॰] गाँठ, बंधन; गुत्थी, उलझन; जेब, टेंट; ईख आदिके पोरोंका जोड़; वैर, बुराई जो अधिक दिनसे मनमें हो; कलाबाजी; एक माप जो सवा दो इंचके बराबर

होती है। **–कट**–वि०, पु० जेब कतरनेवाला, पाकिट-मार। **–दार**–वि० जिसमें गाँठ हो। **–बाज़**–पु० वह कबूतर जो उड़ते हुए कलाबाजी करता है। **मु०–कटना, –खुलना**–दे० 'गाँठ कटना' इत्यादि।

गिरही*–वि०, पु० दे० 'गृही'।

गिराँ†–वि० भारी; महँगा; कठिन; अप्रिय।

गिरा–स्त्री० [सं०] वाणी, सरस्वती; वाक्य; बोली, जबान। **–पति**–पु० ब्रह्मा। **–पितु***–पु० ब्रह्मा।

गिराना–स० क्रि० नीचे डालना; फेंकना; ढहाना; पटक देना; लुढ़का देना; बहाना; (नाली आदिके) गिरनेका उपाय करना; शक्ति, प्रतिष्ठा आदि घटाना; बुरी दशाको ले जाना; सहसा उपस्थित करना; युद्धमें मार डालना।

गिरानी†–स्त्री० दे० 'गरानी' (भारीपन, महँगापन)।

गिराव–पु० दे० 'गिरावट'।

गिरावट–स्त्री० गिरनेका भाव, पतन, अधःपात।

गिरास*–पु० दे० 'ग्रास'।

गिरासना*–स० क्रि० दे० 'ग्रसना'।

गिराह*–पु० दे० 'ग्राह'।

गिरि–पु० [सं०] पहाड़, पर्वत; आठकी संख्या। **–कंटक**–पु० इंद्रका वज्र। **–कंदर**–पु० पहाड़की गुफा। **–कच्छप**–पु० पहाड़की गुफामें रहनेवाला कछवा। **–कानन**–पु० पहाड़के ऊपर लगाया हुआ बाग। **–कुहर**–पु० गिरि-कंदर। **–जा**–स्त्री० पार्वती; गंगा। **–०पति**–पु० शिव। **–धर, –धारी(रिन्)**–पु० कृष्ण। **–धरन, –धारन***–दे० 'गिरिधर'। **–धातु**–स्त्री० गेरू। **–नंदिनी**–स्त्री० पार्वती; गंगा। **–नाथ**–पु० शिव। **–निंब**–पु० बकायन। **–राज**–पु० बड़ा पहाड़, हिमालय। **–शिखर**–पु० पहाड़की चोटी। **–श्रृंग**–पु० पहाड़की चोटी; गणेश। **–सार**–पु० लोहा; राँगा; शिलाजतु; मलय पर्वत। **–सुत**–पु० मैनाक पर्वत। **–सुता**–स्त्री० पार्वती।

गिरींद्र–पु० [सं०] बड़ा पहाड़, हिमालय; शिव।

गिरी–स्त्री० बीजके भीतरका गूदा, मग़ज।

गिरीश–पु० [सं०] हिमालय; कैलास; सुमेरु; शिव।

गिरैयाँ*–स्त्री० गलेका छोटा रस्सा। वि० गिरनेवाला।

गिरो–वि० बंधक, गिरवी; बंधक रखा हुआ।

गिर्द–अ० [फ़ा०] आस-पास; पास। पु० गोलाई; घेरा।

गिर्दागिर्द–अ० [फ़ा०] चारों ओर, इर्द-गिर्द।

गिर्दावर–वि० [फ़ा०] घूमनेवाला, दौरा करनेवाला।

गिल–वि०[सं०] निगलनेवाला। पु० घड़ियाल। **–गिल, –ग्राह**–पु० घड़ियाल।

गिल–स्त्री० [फ़ा०] मिट्टी; गीली मिट्टी, गारा। **–कार**–पु० मिट्टीका पलस्तर करनेवाला। **–कारी**–स्त्री० पलस्तर करनेका काम।

गिलगिलिया–स्त्री० सिरोही पक्षी।

गिलट–स्त्री० मुलम्मा, सोनेका पानी चढ़ानेका काम; चाँदीके रंगकी एक घटिया धातु।

गिलटी–स्त्री० शरीरके संधिस्थानकी गाँठ या उसकी सूजन।

गिलन–पु० [सं०] निगलना।

गिलना*–स०क्रि० निगलना;–'कुंजरकूं कीरी गिल बैठी'–सुंद०; मनमें रखना।

गिलबिलाना–अ० क्रि० अस्पष्ट बोल बोलना।

गिलम–स्त्री० ऊनी कालीन; मोटा गद्दा। वि० मुलायम।

गिलमिल–पु० एक तरहका बढ़िया कपड़ा।

गिलहरा–पु० बाँसकी चपटी तीलियोंका बना पनडब्बा; एक धारीदार कपड़ा।

गिलहरी–स्त्री० पेड़ोंपर रहनेवाला चूहे जैसा एक छोटा जंतु, गिलाई, चिखुरी।

गिला–पु० [फ़ा०] शिकायत; उलाहना।

गिलाई–स्त्री० गिलहरी।

गिलान*–स्त्री० दे० 'ग्लानि'; घृणा।

गिलाफ़–पु० [फ़ा०] तकियेकी खोली; सितार आदिकी खोली; लिहाफ; म्यान।

गिलावा†–पु० गारा, गीली मिट्टी।

गिलास–पु० शीशे या धातुका बना पानी पीनेका गोल, लंबोतरा प्याला; कश्मीरमें होनेवाला एक स्वादिष्ठ फल।

गिलिम*–स्त्री० दे० 'गिलम'।

गिली–* स्त्री० दे० 'गुल्ली'। वि० [फ़ा०] मिट्टीका।

गिलोय–स्त्री० [फ़ा०] गुडुच।

गिलोला*–पु० गुलेलसे फेंकी जानेवाली मिट्टीकी गोली।

गिलौरी–स्त्री० पानका तिकोना या चौकोना बीड़ा। **–दान**–पु० पनडब्बा।

गिल्टी–स्त्री० दे० 'गिलटी'।

गिल्यान*–स्त्री० दे० 'गिलान'।

गिल्ला–पु० दे० 'गिला'।

गिल्ली–स्त्री० गुल्ली।

गीँजना†–स० क्रि० नरम, नाजुक चीजको मसलकर खराब कर देना; खानेकी चीजोंको भद्दे तरीकेसे एकमें मिलाना।

गीँव†–स्त्री० ग्रीवा, गरदन।

गीत–वि० [सं०] गाया हुआ; कथित, वर्णित; जिसका यश गाया गया हो। पु० गानेकी चीज; गान; बड़ाई। **–क्रम**–पु० किसी गीतका गानक्रम, स्वरोंका उतार-चढ़ाव। **–गोविंद**–पु० जयदेव-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध गीतिकाव्य। **–शास्त्र**–पु० संगीतविद्या। **मु० (किसीके) –गाना**–बड़ाई, बखान करना।

गीता–स्त्री० [सं०] गुरु-शिष्य-संवाद-रूपमें आध्यात्म-तत्त्वका उपदेश करनेवाला पद्यग्रंथ। * गाथा, कथा।

गीति–स्त्री० [सं०] गीत; एक मात्रावृत्त। **–काव्य**–पु० गीतके रूपमें बना हुआ काव्य जो प्रायः आत्मपरक होता है। **–नाट्य, –रूपक**–पु० वह नाटक जिसमें पद्य या गानेकी चीजोंकी प्रधानता हो।

गीतिका–स्त्री० [सं०] छोटा गीत; एक मात्रिक छंद।

गीदड़–पु० स्यार, श्रृगाल। वि० डरपोक। **–भबकी**–स्त्री० दिखाऊ धमकी।

गीदड़ी–स्त्री० श्रृगाली, मादा गीदड़।

गीध–पु० दे० 'गिद्ध'।

गीधना*–अ० क्रि० परचना।

गीर*–स्त्री० वाणी, बोली; सरस्वती। **–वाण, –वान***–पु० दे० 'गीर्वाण'।

गीर्वाण–पु० [सं०] देवता।

गीला–वि० भीगा हुआ, नम, आर्द्र । **–पन**–पु० नमी ।

गीवँ, गीव*–स्त्री० दे० 'ग्रीवा' ।

गुंगी–स्त्री० दोमुहाँ साँप ।

गुँगुआना*–अ० क्रि० गूँगेकी तरह बोलना; धुआँ देना, अच्छी तरह न जलना ।

गुंचा–पु० [फ़ा०] कली; झुरमुट; भेड़। वि० घना आबाद।

गुंज–स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना, गोफ; * दे० 'गुंजा' । पु० [सं०] भौंरेका गुंजार; गुच्छा ।

गुंजन–पु० [सं०] भौंरेका भनभनाना, गुंजार; कलरव ।

गुंजना–अ० क्रि० भौंरेका गुंजार करना; गुनगुनाना ।

गुंजरना*–अ० क्रि० गुंजार करना; गरजना ।

गुंजा–स्त्री० [सं०] घुँघची; भनभनाहट; कलध्वनि ।

गुंजाइश–स्त्री० [फ़ा०] स्थान; अवकाश; समाई ।

गुंजान–वि० [फ़ा०] घना, सटा हुआ ।

गुंजायमान–वि० [सं०] गूँजता हुआ ।

गुंजार–पु० भौंरेकी भनभनाहट ।

गुंजारना–अ० क्रि० गूँजना ।

गुंजित–वि० [सं०] गुंजनयुक्त ।

गुंठन–पु० [सं०] ढकना; छिपाना; लेपन ।

गुंठा–पु० एक तरहका घोड़ा । † वि० नाटा, छोटे कदका ।

गुंठित–वि० [सं०] ढका, छिपाया हुआ; लेप किया हुआ ।

गुंडई–स्त्री० गुंडापन, दुष्टता ।

गुँडली–स्त्री० गेंडुरी; कुंडली ।

गुंडा–वि०, पु० बदमाश, दुर्वृत्त, खोटे चाल-चलनवाला ।

गुँथना–अ० क्रि० गूँथा जाना; गुँधना ।

गुँदला–पु० नागरमोथा ।

गुँधना–अ० क्रि० गूँधा जाना; गुँथना ।

गुँधाई–स्त्री० गूँधनेकी क्रिया या भाव; गूँधनेकी उजरत ।

गुंफ–पु० [सं०] गूँथना; संयुक्त करना; फँसाव; सजावट; मूँछ, गलमुच्छा; बाजूबंद ।

गुंफन–पु० [सं०] गूँथना; सजाना, तरतीब देना ।

गुंफित–वि० [सं०] गूँथा हुआ; सजाया हुआ ।

गुंबज†–पु० दे० 'गुंबद' ।

गुंबद–पु० [फ़ा०] मस्जिद आदिकी गोल छत जिसमें आवाज गूँजे ।

गुंबा–पु० कड़ी गोल सूजन ।

गुंभी*–स्त्री० अंकुर; कोँपल ।

गुआ*–स्त्री० सुपारी, गुवाक ।

गुआर–स्त्री० कुलथी । * पु० ग्वाला ।

गुआरपाठा–स्त्री० दे० 'ग्वारपाठा' ।

गुआरि*–स्त्री० ग्वालिन ।

गुआलिन*–स्त्री० ग्वालिन ।

गुइयाँ–पु०, स्त्री० खेलका साथी; सखी ।

गुखरू–पु० दे० 'गोखरू' ।

गुग्गुल, गुग्गुलु–पु० [सं०] एक कँटीला पेड़; उस पेड़का गोंद जो गंधद्रव्य है और दवाके काममें भी आता है ।

गुच्ची–स्त्री० गुल्ली आदि खेलनेके लिए जमीनमें बना हुआ बहुत छोटा गढ़ा । वि० स्त्री० बहुत छोटी ।

गुच्छ–पु० [सं०] गुच्छा; गुलदस्ता; कलाप, मोरकी पूँछ ।

गुच्छक–[सं०] पु० दे० 'गुच्छ' ।

गुच्छा–पु० एक टहनीमें पास-पास लगे हुए फूल या फल; एकमें बँधे हुए फूल; एकमें लगी, बँधी छोटी चीजोंका समूह; झब्बा; फुँदना । **–(च्छे)दार**–वि० गुच्छेवाला ।

गुच्छी–स्त्री० करंज; रीठा; कश्मीरकी तरफ होनेवाला एक फूल जो सुखाये जानेपर सब्जी बनानेके काम आता है ।

गुज़र–पु० [अ०] रास्ता; घाट; पहुँच, प्रवेश; जाना, निकलना; निर्वाह, गुजारा । **–बसर**–पु० निर्वाह, गुजारा । **मु०–करना**–निर्वाह करना; दिन काटना । **–होना**–निर्वाह होना; (किसी और रास्तेसे) निकलना; जा निकलना ।

गुज़रना–अ० क्रि० बीतना, कटना; जाना, निकलना; गुजर होना; (नदी) पार होना; निभना; घटित होना; कष्ट, कठिनाइयाँ आना; भोगरूपमें प्राप्त होना; (दर्खास्त आदिका) पेश होना; (जीमें) आना (भाव, विचार) । **मु० गुज़र जाना**–अ० क्रि० मर जाना ।

गुजरात–पु० भारतके दक्षिण-पश्चिमका एक प्रदेश ।

गुजराती–वि० गुजरातका, गुजरातका बना । पु० गुजरातमें बसनेवाला । स्त्री० गुजरातकी भाषा ।

गुज़रान–पु० [अ०] गुजर, निर्वाह ।

गुजरिया†–स्त्री० दे० 'गूजरी' ।

गुजरी–स्त्री० शामको सड़कके किनारे लगनेवाला बाजार; गुदड़ी; एक तरहकी पहुँची; दे० 'गूजरी' ।

गुजरेटी–स्त्री० गूजर कन्या; गूजरी ।

गुज़श्ता–वि० [फ़ा०] बीता हुआ; पिछला (मास, वर्ष इ०) ।

गुज़ार–वि० [फ़ा०] (समासांतमें) अदा करनेवाला ('शुक्रगुज़ार', 'ख़िदमतगुज़ार') ।

गुज़ारना–स० क्रि० बिताना, काटना; अदा करना (नमाज); पेश करना (अरजी, नजर) ।

गुज़ारा–पु० [फ़ा०] घाट; पुल या नावसे नदी पार करना; निर्वाह; निर्वाहार्थ दी जानेवाली रकम । **–(रे)की नाव**–आर-पार जानेवाली नाव, घटहा ।

गुज़ारिश–स्त्री० [फ़ा०] निवेदन, अर्ज, प्रार्थना ।

गुज्जरी–स्त्री० [सं०] दे० 'गुर्जरी' ।

गुझरोट, गुझरौट*–पु० कपड़ेकी शिकन; स्त्रियोंकी नाभिके आस-पासका भाग ।

गुझिया–स्त्री० मैदेकी कुसलीमें मेवा, खोया आदि भरकर बनाया हुआ एक पकवान; खोयेकी बनी एक मिठाई ।

गुझौट*–पु० दे० 'गुझरोट' ।

गुट–पु० दे० 'गुट्ट' ।

गुटकना–अ० क्रि० कबूतरका गुटरगूँ करना; निगलना ।

गुटका–पु० गोली, गुटिया; छोटे आकार, पाकेट साइजकी पुस्तक; लट्टू; पानमें खानेका एक मसाला ।

गुटकाना–स० क्रि० (तबला) बजाना ।

गुटरगूँ–स्त्री० कबूतरकी बोली ।

गुटिका, गुटी–स्त्री० [सं०] बटी, गोली; रेशमका कोया; मोती; मंत्रसिद्ध गोली जिसे मुँहमें रखनेवालेका दूसरोंके लिए अदृश्य हो जाना माना जाता है; फुंसी, फुड़िया ।

गुट्ट–पु० दल, समूह; थोड़ेसे आदमियोंका दल । **–बंदी**–स्त्री० दल बनाना । **मु०–बाँधना**–दल बनाना ।

गुट्टा–पु० लड़कियोंके खेलनेकी लाखकी चौकोर गोटी ।

गुट्ठल–वि॰ गाँठ, गुठलीवाला; कठिन; जड़, मूर्ख। पु॰ रुई आदिके दबनेसे बनी हुई गाँठ; गिल्टी।

गुट्ठी–स्त्री॰ मोटी गाँठ; टखना।

गुठलाना–अ॰ क्रि॰ कुंद, भोथरा हो जाना; खटाईके असरसे दाँतोंका काटने, चबाने लायक न रहना।

गुठली–स्त्री॰ (आम, जामुन आदि) फलका कड़ा और कुछ बड़ा बीज, कुसली; गिल्टी; गुलथी।

गुड़ंबा–पु॰ गुड़की चाशनीमें पकाया हुआ कच्चा आम।

गुड–पु॰ [सं॰] पु॰ दे॰ 'गुड़'।

गुड़–पु॰ ईख या ताड़ खजूरके रसको गाढ़ा करके बनायी हुई बट्टी या भेली। **–धनिया,–धानी**–स्त्री॰ भुने हुए गेहूँको गुड़में पागकर बनाया हुआ लड्डू। **–पाक**–पु॰ गुड़की चाशनीमें डालकर औपध बनानेकी प्रक्रिया; उस प्रक्रियासे बनी औपध। **मु॰–खाना, गुलगुलेसे परहेज करना**–बड़ी बुराई करना, छोटीसे बचना। **–दिखाकर ढेला मारना**–लाभका लोभ दिखाकर कष्ट देनेवाला काम करना। **–भरा हँसिया**–टेढ़ा, साँप-छछूँदरकी गतिवाला काम। **–से मरे तो ज़हर क्यों दे**–नरमीसे काम चले तो कड़ाई क्यों करे?

गुड़गुड़–पु॰ हुक्का पीने या आँतोंमें वायुके संचारसे होनेवाला शब्द।

गुड़गुड़ाना–अ॰ क्रि॰ गुड़गुड़की आवाज होना, निकलना। स॰ क्रि॰ हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट–स्त्री॰ गुड़गुड़की आवाज; वैसी आवाज होना।

गुड़गुड़ी–स्त्री॰ काठकी निगालीवाला छोटा हुक्का।

गुड़हर (ल)–पु॰ अड़हुलका फूल, जपाकुसुम; एक छोटा पेड़।

गुडाकू(खू)–पु॰ वह तंबाकू जिसमें गुड़ मिला हो।

गुडाकेश–पु॰ [सं॰] अर्जुन; शिव।

गुड़िया–स्त्री॰ कपड़ेकी बनी हुई पुतली। **मु॰–सँवारना**–अपनी हैसियतके मुताबिक लड़कीकी शादी कर देना। **गुड़ियोंका खेल**–बहुत आसान काम।

गुड़ी*–स्त्री॰ गुड्डी; गाँठ, कीना।

गुड़ीला†–वि॰ गुड़ जैसा मीठा ('गुरीरा'–बुंदेल)।

गु.डुच–स्त्री॰ एक बेल जिसका डंठल दवाके काम आता है, गुडूची, गिलोय।

गु.डुवा–पु॰ गुड्डा।

गुडूची–स्त्री॰ [सं॰] गु.डुच, गुरुच, गिलोय।

गुड्डा–पु॰ बड़ी गुड़िया, नर गुड़िया; बड़ी पतंग। **मु॰–बाँधना**–भाटका किसी कंजूस जजमानको बदनाम करनेके लिए बाँसके सिरेपर उसका पुतला बाँधना और घूम-घूमकर उसकी निंदा करना।

गुड्डी–स्त्री॰ पतंग; एक छोटा हुक्का; घुटनेकी हड्डी।

गुढ़*–पु॰ छिपने, बचनेका स्थान।

गुढ़ना*–अ॰ क्रि॰ छिपना।

गुण–पु॰ [सं॰] जाति-स्वभाव, धर्म; सद्‌गुण; निपुणता, कमाल; प्रभाव, असर; लाभ; प्रशंसनीय बात; विशेषता; प्रकृतिका धर्म–सत्त्व, रज, तम; वीणा आदिका तार; धागा; डोरी, प्रत्यंचा; गौण वस्तु; नाव खींचनेकी डोरी; स्नायु; ज्ञानेंद्रियका विषय; बत्ती; गुणा, आवृत्ति; ए, ओ और अर् जो क्रमशः अ+इ, अ+उ तथा अ+ऋके स्थानपर होते हैं (व्या॰); तीनकी संख्या। **–कथन**–पु॰ गुणवर्णन, गुणगान; शृंगार-रसमें नायककी दस दशाओंमेंसे एक। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि॰ असर करनेवाला; लाभ करनेवाला। **–कीर्तन**–पु॰ गुणगान। **–गान**–पु॰ बखान, गुण-वर्णन। **–ग्राहक,–ग्राही (हिन्)**–वि॰, पु॰ गुण समझने, गुणका आदर करनेवाला, कद्रदान। **–ग्राम**–पु॰ गुणोंका समूह। वि॰ गुणनिधान। **–ज्ञ**–वि॰ गुण जानने, समझनेवाला, कद्रदान। **–त्रय,–त्रितय**–पु॰ प्रकृतिके तीन गुण–सत्त्व, रज, तम। **–दोष**–पु॰ गुण और दोप, भलाई-बुराई। **–निधि**–वि॰ गुणोंका खजाना। **–वाचक**–पु॰ गुणद्योतक शब्द, विशेषण। वि॰ गुणका बोध करानेवाला।

गुणक–पु॰ [सं॰] वह अंक जिससे गुणा करें।

गुणन–पु॰ [सं॰] गुणा करना। **–फल**–पु॰ एक अंकको दूसरेसे गुणन करनेसे उपलब्ध अंक।

गुणनीय–वि॰ [सं॰] गुणन करने योग्य।

गुणवान्(वत्)–वि॰ [सं॰] गुणशाली, गुणी।

गुणाकर–वि॰ [सं॰] गुणोंकी खान, गुणराशि।

गुणाढ्य–वि॰ [सं॰] बहुतसे अच्छे गुणोंवाला, गुणी।

गुणातीत–वि॰ [सं॰] प्रकृतिके तीनों गुणोंसे अलिप्त, परे। पु॰ परमेश्वर।

गुणानुवाद–पु॰ [सं॰] गुणगान, गुणकथन।

गुणालय–वि॰ [सं॰] बहुतसे गुणोंवाला।

गुणित–वि॰ [सं॰] जिसका गुणन किया गया हो; राशीकृत।

गुणी(णिन्)–वि॰ [सं॰] गुणयुक्त; कोई हुनर, कला जाननेवाला।

गुणीभूत–वि॰ [सं॰] मुख्य अर्थसे रहित; गौण बनाया हुआ। **–व्यंग्य**–पु॰ काव्यका वह भेद जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थसे अधिक चमत्कारवाला न हो।

गुण्य–पु॰ [सं॰] वह अंक जिसे गुणा करना हो।

गुत्थमगुत्था–पु॰ गुथ जानेका भाव, भिड़ंत।

गुत्थी–स्त्री॰ तागे आदिमें उलझनेसे पड़ी हुई गाँठ, उलझन।

गुथना–अ॰क्रि॰ उलझना; लिपटना; भिड़ना; गूँथा जाना।

गुथुवाँ–वि॰ गूथकर बनाया हुआ।

गुद–स्त्री॰ [सं॰], गुदा, मलद्वार। **–कील,–कीलक**–पु॰ बवासीर। **–पाक**–पु॰ मलद्वारका पक जाना। **–भ्रंश**–पु॰ काँच निकलना।

गुदकार(रा)–वि॰ गूदेदार; भरा, फूला हुआ; गुदगुदा।

गुदगुदा–वि॰ भरा हुआ; नरम, गुलगुला।

गुदगुदाना–स॰ क्रि॰ बगल, तलवे आदिको उँगलियोंसे इस तरह सहलाना कि सुरसुराहट या सुखद खुजली मालूम हो; छेड़ना; उभारना।

गुदगुदाहट–स्त्री॰ गुदगुदी।

गुदगुदी–स्त्री॰ गुदगुदानेसे पैदा होनेवाली सुखद सुरसुराहट या हँसानेवाली खुजली; चाव, चुल।

गुदड़िया–पु॰ जो गुदड़ी ओढ़े या चीथड़े लपेटे हो; खेमा आदि भाड़ेपर देनेवाला; गूदड़ बेचनेवाला। **–पीर**–पु॰ गाँवके पासका वह वृक्ष जिसमें चीथड़े लपेटकर गँवार

मनौती मानते हैं।

गुदड़ी–स्त्री० चीथड़ों, रंग-बिरंगे टुकड़ोंको सीकर बनाया हुआ ओढ़ना, बिछावन, कंथा; टूटी-फूटी चीजोंका ढेर; गुदड़ी बाजार। **–बाज़ार**–पु० फटी-पुरानी, टूटी-फूटी चीजोंका बाजार। **मु०–का लाल**–साधारण घरमें जनमा हुआ असाधारण गुणी।

गुदनहारी–स्त्री० गोदनेवाली।

गुदना–अ० क्रि० गड़ना, चुभना। पु० गोदना।

गुदर*–पु० राजदरबारमें हाजिरी।

गुदरना*–अ० क्रि० त्यागना, अलग होना; निवेदन करना, गुजारिश करना; व्यतीत होना, गुजरना।

गुदराना*–स० क्रि० पेश करना; निवेदन करना–'निकट बिभीषण आय तुलाने, कपिपतिसों तबही गुदराने'–राम०।

गुदरैन*–स्त्री० पाठ याद होनेकी परीक्षा देना; परीक्षा।

गुदवाना–स० क्रि० गुदाना।

गुदांकुर–पु० [सं०] बवासीर।

गुदा–स्त्री० [सं०] मलद्वार, गुद।

गुदाज़–वि [फा०] नरम, गुदगुदा; (समासमें) पिघलानेवाला (गुदगुदाज़)।

गुदाना–स० क्रि० ('गोदना'का प्रेर०), गुदवाना।

गुदार†–वि० गूदेदार, मांसल; गुदाज।

गुदारना*–स० क्रि० सुनाना; पढ़ना–'मुलना तहाँ निवाज गुदारें'–छत्र०।

गुदारा*–पु० नावपर नदी पार होना, गुजारा; दे० 'गुजारा'। वि० गूदेदार।

गुद्दी*–स्त्री० मग्ज, मींगी।

गुन*–पु० दे० 'गुण'। **–गाहक**–वि०, पु० दे० 'गुणग्राहक'। **–गौरि**–स्त्री० गौरी जैसी सौभाग्यवती, पतिव्रता स्त्री; स्त्रियोंका एक व्रत। **–वंत, –वान**–वि० गुणी, गुणवान्।

गुनगुना–वि० दे० 'कुनकुना'; नाकसे बोलनेवाला।

गुनगुनाना–अ० क्रि० नाकसे बोलना; बहुत धीमे स्वरमें, अस्पष्ट शब्दोच्चारण करते हुए गाना।

गुनना–स० क्रि० विचार करना; * वर्णन करना; गाना।

गुनहगार–वि० [फा०] गुनाहगार, दोषी, अपराधी।

गुनही*–वि० गुनहगार।

गुना–वि० गुणित (यह शब्द संख्यावाचक शब्दोंके अंतमें लगकर विशेष्य शब्दकी संख्या या मात्रामें उतनी बारका अर्थ उत्पन्न करता है, जैसे तिगुना, चौगुना इत्यादि)।

गुनावन*–पु० विचार।

गुनाह–पु० [फा०] पाप, दुष्कर्म; दोष, अपराध। **–गार**–वि० दोषी, अपराधी; जिसने पाप किया हो।

गुनाही*–वि० गुनाहगार।

गुनिया†–पु० दे० 'गोनिया', विचार करनेवाला। वि० गुणी।

गुनियाला*–वि० गुणोंवाला।

गुनी–वि० गुणोंवाला। पु० चतुर मनुष्य; झाड़-फूँक करनेवाला।

गुनीला*–वि० गुणोंवाला, गुणी।

गुपचुप–अ० छिपकर, गुप्त रीतिसे। पु० एक मिठाई, गुलाबजामुन; लड़कोंका एक खेल; एक खिलौना।

गुपाल*–पु० दे० 'गोपाल'।

गुपुत*–वि० दे० 'गुप्त'।

गुप्त–वि० [सं०] रक्षित; छिपा या छिपाया हुआ; अदृश्य; गूढ़; संपृक्त, संयुक्त। पु० वैश्योंका उपनाम या वर्णसूचक उपाधि; भारतका एक प्राचीन राजवंश। **–चर**–पु० जासूस, छिपकर टोह लेनेवाला। **–दान**–पु० छिपाकर दिया जानेवाला दान; वह दान जिसे दाताके सिवा दूसरा न जाने। **–मार**–स्त्री० [हिं०] ऐसी मार जिसमें मारनेका कोई चिह्न ऊपर न देख पड़े।

गुप्ता–स्त्री० [सं०] सुरति छिपानेवाली नायिका; रखेली।

गुप्ति–स्त्री० [सं०] ढकने, छिपानेकी क्रिया, गोपन; रक्षण; गड्ढा; गुफा; मलद्वार; कारागार।

गुप्ती–स्त्री० वह डंडा या छड़ी जिसके भीतर तलवार जैसा हथियार छिपा हो।

गुफा–स्त्री० पहाड़ या जमीनमें बना लंबा गढ़ा, खोह, गुहा।

गुफ़्तगू–स्त्री० [फा०] बातचीत, बोलचाल।

गुबरैला–पु० गोबर, मैला आदि खानेवाला एक कीड़ा।

गुबार–पु० [अ०] धूल, गर्द; मनमें संचित दुःख, शिकायत, मैल। **मु०–निकालना**–मनमें भरी हुई बातें कह डालना, भड़ास निकालना।

गुबिंद*–पु० दे० 'गोविंद'।

गुब्बारा–पु० कागजका बना हुआ गोल थैला जो नीचेसे खुला रहता है और तारमें चींथड़े लपेटकर जला देनेसे हवामें उड़ता है; रेशम आदिका बना और हवासे हलकी गैससे भरा हुआ थैला जो आकाशमें उड़ सकता है, बैलून; गोलेकी शक्लकी एक आतिशबाजी।

गुम–वि० [फा०] खोया हुआ, गायब, लुप्त, लापता। **–नाम**–वि० जिसका नाम प्रसिद्ध न हो; बिना नामका (पत्र, लेख)। **–राह**–वि० जो रास्ता भूल गया हो; पथभ्रष्ट। **–सुम**–वि० चुप और निश्चेष्ट, स्तब्ध (होना)।

गुमटा–पु० चोट आदिके कारण होनेवाली माथेपरकी गोल सूजन; कपासका एक कीड़ा।

गुमटी–स्त्री० मकानमें सबसे ऊपर उठी हुई कमरे या सीढ़ीकी छत; चौकीदारके लिए रेलवे लाइनके किनारे बनी हुई छोटी कोठरी।

गुमना†–अ० क्रि० गुम होना, खो जाना।

गुमर–पु० घमंड; द्वेष, गुबार; कानाफूसी।

गुमान–पु० [फा०] संदेह, शक; अनुमान; गर्व, घमंड; * बदगुमानी, कुधारणा।

गुमाना*–स० क्रि० खो देना, गँवाना।

गुमानी–वि० [फा०] गुमान करनेवाला, घमंडी।

गुमाश्ता–पु० [फा०] किसी व्यापारी या कोठीकी ओरसे माल खरीदने-बेचनेवाला व्यक्ति, एजेंट।

गुमिटना*–अ० क्रि० लिपटना, लपेटा जाना।

गुमेटना*–स० क्रि० लपेटना।

गुम्मट–पु० दे० 'गुंबद'।

गुरंब(बा)†–पु० दे० 'गुड़ंबा'।

गुरंभर*–पु० मीठे आमका पेड़।

गुर–पु० हिसाब निकालनेका संक्षिप्त और पक्का कायदा; कार्य साधनेकी युक्ति, उपाय; * दे० 'गुरु'; दे० 'गुल';

† दे० 'गुड़'।

गुरगा–पु० नौकर, टहलू; चेला; जासूस।

गुरगाबी–पु० मुंडा जूता।

गुरचीं†–स्त्री० बल, सिकुड़न।

गुरदा–पु०[फा०] शरीरके अंदर रीढ़के दोनों ओर अवस्थित अंग जिनका काम आहारसे पेशाबको अलग करना और खूनसे बेकार 'नत्रजनीय' द्रव्यको निकालकर उसे साफ करना है, वृक्क; हिम्मत, जीवट।

गुरविनी*–स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरवी*–वि० घमंडी।

गुरसी†–स्त्री० अँगीठी, गोरसी।

गुराई*–स्त्री० दे० 'गोराई'।

गुराब–पु० तोप लादनेकी गाड़ी।

गुरिद*–पु० गुर्ज, गदा।

गुरिया–स्त्री० छोटी गोली; मनका, मालाका दाना; (मांस आदिका) छोटा टुकड़ा, बोटी।

गुरिल्ला–पु० दे० 'गोरिल्ला'; छापामार दस्तेका सैनिक।

गुरीरा*–वि० सुंदर; माधुर्यमय, मीठा।

गुरु–वि० [सं०] भारी, वजनदार; बड़ा; देरमें पचनेवाला; पूज्य; महत्; कठिन; दीर्घ या दो मात्राओंवाला (वर्ण, ताल); प्रिय; दर्पपूर्ण (उक्ति); दुर्दम; शक्तिशाली। पु० पिता; पूज्य पुरुष; बुजुर्ग; शिक्षक, विद्या देनेवाला, कोई कला, विद्या सिखानेवाला, उस्ताद; गायत्री मंत्रका उपदेश करनेवाला; बृहस्पति ग्रह; देवताओंके गुरु बृहस्पति; पुष्य नक्षत्र; द्रोणाचार्य; परमेश्वर; दो मात्राओंवाला वर्ण, ताल। **–कुल**–पु० गुरु या आचार्यका वासस्थान जहाँ रहकर शिष्य विद्याध्ययन करते हों, गुरुगृह; प्राचीन पद्धतिपर स्थापित विद्यापीठ। **–जन**–पु० बड़ा, बुजुर्ग, पूज्य पुरुष, माता, पिता, आचार्य आदि। **–डम**–पु० [हिं०] गुरु बनकर सबसे अपनी पूजा कराना। **–द्वारा**–पु०[हिं०] गुरुके रहनेका स्थान; सिखोंका मठ या मंदिर। **–पाक**–वि० देरमें पचनेवाला, भारी। **–पूर्णिमा**–स्त्री० आषाढ़की पूर्णिमा जिस दिन गुरुकी पूजाका विशेष विधान है। **–भाई**–पु० [हिं०] एक ही गुरुसे शिक्षा या दीक्षा पानेवाला, एक गुरुका शिष्य होनेके नाते भाई। **–मंत्र**–पु० गुरुसे प्राप्त मंत्र। **–मुख**–वि० दीक्षाप्राप्त, दीक्षित। **–मुखी**–स्त्री० देवनागरी लिपिका एक रूप जिसमें पंजाबी भाषा लिखी जाती है। **–वार,–वासर**–पु० बृहस्पतिवार।

गुरुआइन†–स्त्री० दे० 'गुरुआनी'।

गुरुआई–स्त्री० गुरुका काम; मंत्रोपदेश देनेका काम।

गुरुआनी–स्त्री० गुरुपत्नी; शिक्षा देनेवाली स्त्री।

गुरुच†–स्त्री० दे० 'गुड़ुच'।

गुरुता–स्त्री० [सं०] भारीपन, बोझ; गौरव; गुरुका पद।

गुरुताई*–स्त्री० दे० 'गुरुता'।

गुरुत्व–पु० [सं०] गुरुता। **–केंद्र**–पु० पदार्थ या पिंडमें वह मध्य बिंदु जिसपर समस्त वस्तुका भार केंद्रित हो सके। **–केंद्र (त्रिभुजका)**–पु० (सेंट्रॉइड) त्रिभुजकी माध्यिकाओंका मिलन-बिंदु।

गुरुत्वाकर्षण–पु० [सं०] भारके कारण वस्तुका पृथ्वीके केंद्रकी ओर खींचा जाना।

गुरुविनी*–स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरू†–पु० गुरु। **–घंटाल**–वि० बहुत चालाक, धूर्त।

गुरेरना†–स० क्रि० घूरना।

गुरेरा–* पु० दे० 'गुलेला'; घूरनेकी क्रिया, देखादेखी–'अंत कंतसों भयो गुरेरा'–प०।

गुर्गा–पु० दे० 'गुरगा'।

गुर्ज़–पु० [फा०] गदा; बुर्ज। **–बरदार**–पु० गदाधारी सैनिक। **–मार**–पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो हाथमें लोहेका गुर्ज लिये रहते हैं और भिक्षा न पानेपर अपने सिरपर मार लेते हैं, मुँड़चिरा।

गुर्जर–पु० [सं०] गुजरात देश; गुजरातका रहनेवाला।

गुर्जरी–स्त्री० [सं०] गुजरात देशकी स्त्री; एक रागिनी।

गुर्दा–पु० दे० 'गुरदा'; * एक तरहकी छोटी तोप।

गुर्राना–अ० क्रि० (कुत्ते-बिल्लीका) क्रोधमें मुँह बंद करके भारी आवाज निकालना; (ला०) क्रोधसूचक आवाजमें बोलना।

गुर्विणी, गुर्वी–स्त्री०[सं०] गर्भवती स्त्री; गुरुपत्नी; श्रेष्ठ स्त्री।

गुल–पु० [फा०] गुलाबका फूल; फूल; कपड़े आदिपर बना हुआ पुष्पाकार बूटा; गोल निशान; जलने या दागनेका निशान; बत्तीका सिरा जो बिलकुल जल गया हो; फूलके आकारकी कारचोबीकी बनी हुई बड़ी टिकली; हँसते समय भरे हुए गालोंमें पड़नेवाला गड्ढा; पशुओंके शरीरपरका भिन्न रंगका दाग; छाप, दाग; कनपटीपर लगायी जानेवाली चूनेकी बिंदी; जलता हुआ कोयला, अंगारा; तंबाकूका जट्ठा; * कनपटी। **–अब्बास**–पु० एक फूल; उसका पौधा। **–कंद**–पु० गुलाबकी पँखड़ियोंमें शकर मिलाकर बनायी हुई एक सरस औषध। **–कार**–पु० गुलकारी करनेवाला; वह चीज जिसपर गुलकारी की गयी हो। **–कारी**–स्त्री० बेलबूटे काढ़नेका काम, कशीदाकारी। **–ज़ार**–पु० वाटिका, उद्यान। वि० खिला हुआ, प्रफुल्ल; चहल-पहलवाला। **–तराश**–पुं० गुल कतरनेकी कैंची; वह कैंची जिससे बगीचेके पौधोंकी काट-छाँटकी जाय; पत्थरपर बेल-बूटे बनानेका औजार। चिरागका गुल काटने या पौधोंकी काट-छाँट करनेवाला आदमी। **–दस्ता**–पु० फूलोंका गुच्छा; चुनी हुई चीजों(पद्य आदि)का संग्रह, चयनिका। **–दान**–पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र। **–दाउ(ऊ)दी**–स्त्री० शरद् ऋतुमें फूलनेवाला एक फूल; उसका पौधा। **–दार**–वि० दागदार; जिसपर फूल बने हों। **–दुपहरिया**–स्त्री० गहरे लाल रंगका एक फूल; उसका पौधा। **–नार**–पु० अनारका फूल; अनारके फूल जैसा गहरा लाल रंग। **–बकावली**–स्त्री० अमरकंटकके जंगलोंमें होनेवाला एक सफेद, सुगंधित फूल जो आँखोंके रोगोंकी अच्छी दवा बताया जाता है। **–बदन**–वि० फूलसी देहवाला, सुंदर। पु० एक तरहका धारीदार रेशमी कपड़ा। **–बाज़ी**–स्त्री० फूलोंसे खेलना, एक दूसरेपर फूल फेंकना। **–मेख**–स्त्री० वह कील जिसका सिरा फूल जैसा गोल होता है। **–मेहँदी**–स्त्री० एक निर्गंध फूल; उसका पौधा। **–लाला**–पु० एक फूल जो पोस्तेके फूलसे मिलता है; उसका पौधा। **–शन**–पु० बाग, वाटिका। **–शब्बो**–पु०एक फूल जिसकी सुगंध रातको अधिक होती

है। **मु०–कतरना**–कागज-कपड़े आदिके फूल कतरकर बनाना; बत्तीका गुल काटना; अचंभेकी बात करना। **–खिलना**–भेद खुलना; कोई अनोखी, मजेदार बात होना; बखेड़ा उठना। **–खिलाना**–कोई अद्‌भुत, अचंभेकी बात करना; बखेड़ा उठाना। **–होना**–(दीपक) बुझना।

गुल–पु० दे० '.गुल'। **–गपाड़ा**–पु० शोरगुल, हल्ला।

.गुल–पु० [फा०] शोर, हल्ला। **–.गुला**–पु० शोर, धूम।

गुलगुल–वि० दे० 'गुलगुला'।

गुलगुला–वि० नरम, मुलायम। पु० एक पकवान।

गुलगुलाना†–स० क्रि० किसी गूदेदार चीजको दबाकर पिलपिला करना; * गुदगुदाना।

गुलगुली*–स्त्री० गुदगुदी। वि० स्त्री० मुलायम।

गुलचना*–स० क्रि० गुलचेका आघात करना।

गुलचा–पु० मुट्ठी बाँधकर उँगलियोंकी पोरसे, प्रेममय विनोदमें गालोंपर आघात करना (मारना)।

गुलचाना, गुलचियाना†–स० क्रि० गुलचा मारना।

गुलछर्रा–पु० मौज, चैन, ऐश। **मु०–(र्रे)उड़ाना**–निर्द्वंद्व होकर सुख भोगना, मौज करना।

गुलझटी–स्त्री० धागे आदिमें उलझकर पड़ी हुई गाँठ, गुत्थी; शिकन। **मु०–निकालना**–मनोमालिन्य दूर करना।

गुलझड़ी–स्त्री० दे० 'गुलझटी'।

गुलथी–स्त्री० चोट लगनेसे शरीरमें होनेवाला गिलटी या गुठली जैसा शोथ; मैदा आदिको घोलनेसे बनी हुई गाँठ।

गुलमा–पु० सिरपर चोट लगनेसे होनेवाली गोल सूजन।

गुलाब–पु० [फा०] एक कँटीला पौधा या झाड़; उसका फूल जो बहुत सुंदर और मीठी सुगंधवाला होता है; गुलाबके फूलोंका अरक, गुलाबजल। **–जल**–पु० [हिं०] गुलाबका अरक। **–जामुन**–पु० [हिं०] एक प्रसिद्ध मिठाई, जामुनकी शकलके, घीमें छानकर शीरेमें डुबोये हुए, खोयेके लड्डू। **–पाश**–पु० गुलाबजल छिड़कनेका एक हजारादार यंत्र।

गुलाबाँस–पु० गुलअब्बास।

गुलाबा*–पु० एक बरतन।

गुलाबी–वि० [फा०] गुलाबके रंगका, हलका लाल; हलका (जाड़ा, नशा); गुलाबमें बसाया हुआ (रेवड़ी आदि); गुलाब-संबंधी। पु० गुलाबकी पँखड़ियोंकासा हलका लाल रंग।

.गुलाम–पु० [अ०] खरीदा हुआ और मालिककी संपत्ति समझा जानेवाला नौकर, दास; पराधीन व्यक्ति; ताशका एक पत्ता। **–चोर**–पु० [हिं०] ताशका एक खेल। **–ज़ादा**–पु० गुलामका बेटा (वक्ता नम्रतावश अपने बेटेके लिए कहता है)।

.गुलामी–स्त्री० [अ०] दासता; चाकरी; पराधीनता।

गुलाल–पु० अबीर।

गुलाला–पु० दे० 'गुललाला'।

गुलिका–स्त्री० [सं०] खेलनेका छोटा गेंद; गोली।

गुलियाना†–स० क्रि० दे० 'गोलियाना'; चोंगेमें औषध आदि भरकर पशुको पिलाना।

गुलिस्ताँ–पु० [फा०] पुष्पवाटिका, उद्यान; शेखसादी-रचित फारसीका एक प्रसिद्ध नीतिग्रंथ।

गुलूबंद–पु० [फा०] सरदीसे बचनेके लिए गलेमें लपेटी जानेवाली पट्टी; गलेमें पहननेका एक जेवर।

गुलेनार–पु० दे० 'गुलनार'।

.गुलेल–स्त्री० [अ०] दो ताँतोंकी कमान जिसपर मिट्टीकी गोली रखकर फेंकते हैं। **–ची**–पु० गुलेल चलानेवाला।

गुलेला–पु० गुलेलसे फेंकनेकी मिट्टीकी गोली; गुलेल।

गुल्फ–पु० [सं०] एड़ीके ऊपरकी गाँठ, टखना, घुट्टी।

गुल्म–पु० [सं०] बिना तनेका पौधा जिसमें जड़से ही कई शाखाएँ निकलती हैं (ईख, धान, सरकंडा इत्यादि); झाड़; सेनाका एक विभाग–९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल; नदीके घाटपर रक्षार्थ स्थापित चौकी; तिल्ली; एक उदररोग, पेटके भीतर गोलासा बँध जाना; दुर्ग।

गुल्लक–पु० [सं०] गोलक।

.गुल्ला–पु० [फा०] गुलेलपर फेंकी जानेवाली मिट्टीकी बनी गोली; * शोर, गुल (हल्ला-गुल्ला)।

गुल्लाला–पु० दे० 'गुललाला'।

गुल्ली–स्त्री० लंबोतरा टुकड़ा जिसके दोनों छोर नुकीले हों; काठका लंबोतरा टुकड़ा; सोने या चाँदीका डला; गुठली; महुएके फलकी गुठली; छत्तेमें मधु रहनेका स्थान। **–डंडा**–पु० लड़कोंका एक खेल जिसमें गुल्लीको डंडेसे मारते हैं।

गुवा*–पु० दे० 'गुवाक'।

गुवाक–पु० [सं०] सुपारी; चिकनी सुपारी।

गुवार*–पु० दे० 'ग्वाल'।

गुवारपाठा–पु० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुवालि*–स्त्री० 'ग्वालिन'।

गुविंद*–पु० दे० 'गोविंद'।

गुसल†–पु० दे० 'गुस्ल'। **–ख़ाना**–पु० दे० 'गुस्ल-ख़ाना'।

गुसाँई"–पु० दे० 'गोस्वामी'।

गुसा*–पु० दे० 'गुस्सा'।

गुसैयाँ*–पु० स्वामी; ईश्वर।

गुस्ताख़–वि० [फा०] ढीठ, अविनीत, बेअदब।

गुस्ताख़ी–स्त्री० [फा०] ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।

गुस्ल–पु० [अ०] सारे शरीरको धोना, स्नान; मुर्देको नहलाना। **–ख़ाना**–पु० नहानेकी कोठरी, स्नानागार।

गुस्सा–पु० [अ०] क्रोध, रोष, कोप। **–वर**–वि० जिसे जल्दी गुस्सा आये। **मु०–उतारना, –निकालना**–क्रोधकी शांतिके लिए (किसीपर) बिगड़ना, मारना इत्यादि।

गुस्सैल–वि० गुस्सावर, क्रोधी।

गुह–पु० [सं०] कार्त्तिकेय; घोड़ा; शृंगवेरपुरका निषादराज जिसने वनगमनके समय रामको गंगापार कराया; गुहा।

गुहना†–स० क्रि० गूँथना।

गुहराना†–स० क्रि० पुकारना।

गुहाँजनी–स्त्री० बिलनी।

गुहा–स्त्री० [सं०] गुफा, खोह; मांद; छिपनेकी जगह।

गुहाई†–स्त्री० गुहनेकी क्रिया; गुहनेकी मजदूरी।

गुहार–स्त्री० दोहाई, रक्षाके लिए पुकार।

गुहारि*–स्त्री० दे० 'गुहार'।

गुहेरा–पु० गोह।

गुहेरी†–स्त्री० बिलनी।

गुह्य–वि० [सं०] छिपाने लायक; गुप्त; गूढ़, कठिनतासे समझमें आनेवाला। पु० भेद, रहस्य; गुप्त अंग।

गूँगा–वि० जो बोल न सके, मूक; जो मौन साधे हो। **मु० (गूँगे)का गुड़,–का सपना**–वह बात जो अनुभव की जाय पर कही न जा सके, अकथनीय अनुभव।

गूँज–स्त्री० प्रतिध्वनि, टकराकर लौटनेवाली आवाज; देरतक बनी रहनेवाली ध्वनि; गुंजार; बाली या नथकी मुड़ी हुई नोक; लट्टूकी कील।

गूँजना–अ० क्रि० आवाजका टकराकर लौटना, प्रतिध्वनित हो जाना; किसी ध्वनिसे किसी स्थानका व्याप्त हो जाना; किसी ध्वनिका देरतक सुनाई देते रहना; भौंरे या मधुमक्खीका गुंजार करना; गरजना।

गूँथना–स० क्रि० दे० 'गूथना'; दे० 'गूँधना'।

गूँधना–स० क्रि० आटेमें पानी डालकर उसे हाथोंसे मसलना, माँड़ना; चोटी करना; पिरोना।

गू–पु० [सं०] मैला, पाखाना, विष्ठा।**–मूत**–पु० [हिं०] मलमूत्र। **मु०–उछालना**–कलंककी शुहरत करना।**–में ढेला फेंकना**–कमीनेको छेड़ना, नीचके मुँह लगना।

गूगल, गूगुल–पु० दे० 'गुग्गुल'।

गूजर–पु० अहीरोंका एक भेद; क्षत्रियोंका एक भेद।

गूजरी–स्त्री० गूजर स्त्री; एक रागिनी; पैरका एक गहना।

गूझा–पु० बड़ी गुझिया; † गूदा; फलोंके भीतरका रेशा। * वि० गुप्त।

गूढ–वि० [सं०] छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त; समझनेमें कठिन; गहन; जिसमें कोई छिपा अर्थ या व्यंग्य हो।**–पत्र**–पु० (बैलट) दे० 'शलाका', 'मतदान-पत्र'। **–पुरुष**–पु० जासूस, गुप्तचर। **–मैथुन**–पु० कौवा। **–लेख**–पु० (साइफर) लिखने या संवाद भेजनेकी गुप्त लिपिप्रणाली।**–०संहिता**–स्त्री०(साइफरकोड) गूढ़ लेख-संबंधी नियमों, संकेतों आदिका संग्रह।

गूढता–स्त्री०,**गूढत्व**–पु० [सं०] गूढ़ होना, गंभीर होना। **–की शपथ**–स्त्री०(ओथ ऑफ सीक्रेसी) दे०'गोपन-शपथ'।

गूढोक्ति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें कोई गुप्त बात, जिससे उसका संबंध हो उसको छोड़कर किसी अन्यके प्रति लक्ष्य कर कही जाय, जिससे समीपवाले अन्य लोग उसे समझ न सकें।

गूढोत्तर–पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रश्नका उत्तर कोई गूढ़ अर्थ लिये हुए दिया जाता है।

गूथना–स० क्रि० (मनका, फूल आदि) धागेमें पिरोना; लड़ी बनाना, गुंफन; टाँकना; मोटी सिलाई करना।

गूद†–पु० गूदा। स्त्री० गढ़ा; चिह्न।

गूदड़–पु०चीथड़ा।**–शाह,–साँईं**–पु०गुदड़ीपोश साधु।

गूदर*–पु० दे० 'गूदड़'।

गूदा–पु० फलका छिलकेके नीचेका खाद्य भाग; मग्ज, मींगी; मोटी रोटीका छिलकेके नीचेका नरम भाग; सारभाग। **(गुदे)दार**–वि० जिसमें गूदा हो।

गून–स्त्री० वह रस्सी जिससे नाव खींची जाती है, गुण।

गूनी*–स्त्री० दे० 'गोनी'।

गूमड़ा–पु० सिरपर चोट लगनेसे होनेवाली गोल सूजन।

गूलर–पु० बरगद-पीपलकी जातिका एक पेड़, उदुंबर; उसका फल। **मु०–का कीड़ा**–कूप-मंडूक। **–का फूल**–ऐसी चीज जो कभी देखनेमें न आये, अलभ्य वस्तु।

गूह–पु० दे० 'गू'।

गूहन–पु० [सं०] छिपाना।

गृध्र–पु० [सं०] गिद्ध। वि० लोभी।**–राज**–पु० जटायु।

गृह–पु० [सं०] घर, वासस्थान; पत्नी; गृहस्थाश्रम। **–उद्योग**–पु० घरमें किया जानेवाला धंधा।**–कर्म(र्मन्)**–पु०गृहकार्य; गृहस्थके लिए विहित कर्म।**–कलह**–पु०घरेलू झगड़ा, भाई-भाईकी लड़ाई। **–गोधा,–गोधिका**–स्त्री० छिपकली। **–जन**–पु० कुटुंबी। **–त्याग**–पु० घर छोड़ना; गृहस्थाश्रमका त्याग। **–त्यागी(गिन्)**–पु० संन्यासी। **–देवता**–पु० अग्निसे ब्रह्मातक ४५ देवता जिनकी गृहके विविध अंगोंमें स्थिति मानी जाती है। **–प**–पु० गृहपति; गृहपाल; कुत्ता। **–पति**–पु० घरका मालिक; गृहस्थ; यजमान; अग्नि; (वार्डन) दे० 'छात्राभिरक्षक'। **-परिभाग**–पु० (प्रेमिसेज) मकान और उसके चारों ओरकी सीमाके भीतरका क्षेत्र, गृहोपान्त, परिसर। **–पशु**–पु० कुत्ता। **–पाल**–पु० घरकी रखवाली करनेवाला; कुत्ता। **–प्रवेश**–पु० नये घरमें विधिपूर्वक प्रवेश करना। **–भेदी(दिन्)**–वि० घरमें झगड़ा लगानेवाला; सेंध मारनेवाला। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० (होम मिनिस्टर) राज्यके भीतरी मामलों (शांतिरक्षा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। **–मेध**–पु० पंचयज्ञ; पंचयज्ञ करनेवाला, गृहस्थ। **–युद्ध**–पु० घरका, भाई-भाईका झगड़ा; किसी देशके निवासियों या विभिन्न वर्गोंकी आपसकी लड़ाई, खानाजंगी। **–रक्षक**–पु० (होमगार्ड) युद्ध या व्यापक अशांतिके समय नगर, मुहल्ले आदिकी रक्षा करनेवाली नागरिक सेनाका सदस्य। **–लक्ष्मी**–स्त्री० घरकी लक्ष्मी, सुशीला गृहिणी। **–वाटिका**–स्त्री० घरसे सटा हुआ बाग, नजरबाग। **–शास्त्र**–पु० दे० 'गार्हस्थ्य-विज्ञान'। **–स्थ**–पु० ब्रह्मचर्य पालनके बाद विवाह करके दूसरे आश्रममें प्रवेश करने या रहनेवाला, गृही; घर-बारवाला; खेती-बारी करनेवाला, किसान। **–स्वामिनी**–स्त्री० घरकी मालकिन, पत्नी।

गृहस्थाश्रम–पु० [सं०] ब्रह्मचर्यके बादका आश्रम, गृहस्थका जीवन; विवाहित जीवन।

गृहस्थी–स्त्री० गृहस्थका जीवन; गार्हस्थ्य, घर-बार; घरका काम-काज; घरका माल-असबाब; बाल-बच्चे, कुटुंब; खेती।

गृहागत–वि० [सं०] घर आया हुआ (अतिथि)।

गृहिणी–स्त्री० [सं०] गृहस्वामिनी, पत्नी।

गृही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] गृहस्थ, घर-बारवाला।

गृहीत–वि० [सं०] ग्रहण किया हुआ; पकड़ा हुआ; स्वीकृत; प्राप्त; ज्ञात; संगृहीत; वादा किया हुआ।

गृहोद्यान–पु० [सं०] गृहवाटिका।

गृह्य–वि० [सं०] गृह-संबंधी; घरमें किया जानेवाला (कर्म)।

गेँउड़ा†–पु० दे० 'गौँइड़ा'।

गेँड़ा–पु० ईखके ऊपरके हरे पत्ते; गैंड़ा।

गेँडुआ(वा)*–पु० तकिया; बड़ा गेंद।

गेँडुरी(ली)–स्त्री० इँडुरी; कुंडली।

गेँद–पु० कपड़े, रबर, काठ, कार्क आदिका बना गोला जिससे लड़के खेलते हैं, कंदुक; टोपी बनाने या पगड़ी बाँधनेका कलबूत; तारकी जालियोंका बना गोला जिसमें दिया रखकर जलाते हैं। **–घर**–पु० क्रिकेट या टेनिस आदि खेलनेका स्थान (बिलियर्ड-रूम)। **–बल्ला**–पु० गेंद और बल्ला, क्रिकेट खेलनेकी सामग्री; क्रिकेटका खेल। **–बाज़**–पु० (बोलर) गेंदबल्ले (क्रिकेट)के खेलमें वह व्यक्ति जो बल्लेबाजके सामने गेंद फेंकनेका काम करे। **–बाज़ी**–स्त्री० (बोलिंग) क्रिकेटके खेलमें (बल्लेबाजकी तरफ) गेंद फेंकनेकी क्रिया, गोलंदाजी।

गैँदई–वि० गेंदेके फूल जैसे रंगका, जर्द।

गैँदवा*–पु० दे० 'गेँदुआ'।

गैँदा–पु० एक पौधा; उसका फूल जो पीले रंगका होता है; एक आतिशबाजी; एक गहना; † गेंद, कंदुक।

गैँडुआ(वा)–पु० गोल तकिया, उसीसा।

गेटिस–पु० मोजा बाँधनेका फीता।

गेड़ना–स० क्रि० लकीरसे घेरना। अ० क्रि० चारों ओर फिरना।

गेय–वि० [सं०] गाने लायक, जो गाया जा सके।

गेरना*–स० क्रि० गिराना; उँडेलना; डालना; आरोप करना। अ० क्रि० चारों ओर फिरना।

गेराँव†–पु० चौपायोंके बंधनका वह भाग जो गलेमें रहता है।

गेरुआ–वि० गेरूके रंगका; गेरूमें रँगा हुआ, जोगिया। पु० गेरूके रंगका एक कीड़ा; गेहूँके पौधोंका एक रोग। **–बाना**–पु० गेरुआ वस्त्र, संन्यासियोंका जोगिया पहनावा।

गेरुई†–स्त्री० गेहूँ, जौ आदिकी फसलका एक रोग जिसमें उनके पत्ते लालसे हो जाते हैं।

गेरू–स्त्री० खानोंसे निकलनेवाली एक तरहकी लाल मिट्टी।

गेली–स्त्री० [अं०] कालमकी नापकी लोहे या लकड़ीकी बनी छिछली किश्ती जिसपर कंपोज किया हुआ मैटर कालम-पेज आदि बनानेके लिए रखते हैं।

गेह–पु० [सं०] घर, मकान। **–पति**–पु० गृहपति।

गेहनी*–स्त्री० दे० 'गेहिनी'।

गेहिनी–स्त्री० [सं०] गृहिणी, गृहस्वामिनी।

गेही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] घरवाला, घर-बारवाला।

गेहुँअन–पु० गेहूँके रंगका एक जहरीला साँप।

गेहुआँ–वि० गेहूँके रंगका, गंदुमी।

गेहूँ–पु० एक अन्न जिसकी फसल चैतमें कटती है।

गैँड़ा–पु० भैंसेकी शकलका विशालकाय जंतु जिसकी नाकपर एक या दो सींग होते हैं।

गैँती–स्त्री० मिट्टी खोदनेका एक औजार।

गैन*–पु० रास्ता, गैल; गमन–'सुख पायो तो बिरमियो, नहिं करि जैयो गैन'–चाचा हित०; गगन; गयंद।

गैनी*–वि० स्त्री० गामिनी।

ग़ैब–पु० [अ०] छिपा होना, दृष्टिगोचर न होना; परोक्ष।

गैबर*–पु० श्रेष्ठ हाथी।

ग़ैबी–वि० [अ०] ईश्वरीय; गुप्त; अज्ञात; अज्ञेय।

गैयर*–पु० बड़ा हाथी, गजवर।

गैया*–स्त्री० गाय।

गैर–स्त्री० अंधेर; अन्यायपूर्ण बर्ताव; * गैल; निंदा।

ग़ैर–वि० [अ०] दूसरा, अन्य; भिन्न, बदला हुआ (हालत गैर होना); बेगाना, पराया। **–आबाद**–वि० जो आबाद न हो, उजाड़; परती (जमीन)। **–इनसाफ़ी**–स्त्री० नाइंसाफी, अन्याय। **–ज़रूरी**–वि० अनावश्यक। **–ज़िम्मेदार**–वि० (अपनी) जिम्मेदारी न समझनेवाला, दायित्वहीन; जिसका भरोसा न किया जा सके। **–मनकूला**–वि० अचल, स्थावर (संपत्ति)। **–मामूली**–वि० असाधारण। **–मिसिल***–वि० अनुचित, अयोग्य (स्थानमें)। **–मुकम्मल**–वि० अधूरा, अपूर्ण। **–मुनासिब**–वि० अनुचित, जो मुनासिब न हो। **–मुमकिन**–वि० असंभव; अशक्य। **–मुल्की**–वि० विदेशी। **–मुस्तक़िल**–वि० अस्थिर; अस्थायी। **–मुस्तरका**–वि० बिना साझेका, एकजाई; जो एककी ही संपत्ति हो। **–मौरूसी**–वि० जो बपौती न हो; जिसपर या जिसे मौरूसी हक हासिल न हो। **–वाजिब**–वि० जो वाजिब, मुनासिब न हो, अनुचित। **–सरकारी**–वि० जो सरकारी न हो। **–हाज़िर**–वि० अनुपस्थित, जो हाजिर, मौजूद न हो। **–हाज़िरी**–स्त्री० अनुपस्थिति, नागा।

ग़ैरत–स्त्री० [अ०] लज्जा, हया; आन।

गैरिक–पु० [सं०] गेरू; सोना। वि० पहाड़से उत्पन्न।

ग़ैरियत–स्त्री० [अ०] गैर होना, बेगानगी, परायापन।

गैरेय–वि० [सं०] गिरिसे या गिरिपर उत्पन्न, पहाड़ी। पु० गेरू; शिलाजतु।

गैल–स्त्री० रास्ता; गली।

गैस–स्त्री० [अं०] वायुरूप सूक्ष्म और चाहे जितना फैल सकनेवाला द्रव्य।

गौँइठा†–पु० उपला।

गौँइड़ा–पु० गाँवके पासका स्थान।

गौँठ–स्त्री० धोतीकी लपेट, मुर्री।

गौँठना–स० क्रि० रेखासे घेरना; गुझिया आदिकी कोर मोड़ना; नोक या कोर भोथरा कर देना।

गौँठनी–स्त्री० गुझियाकी कोर बनानेका औजार।

गौँड़–पु० एक असभ्य जाति; पानी भरने आदिका काम करनेवाली एक जाति।

गौँड़ा†–पु० चहारदीवारीसे घिरा हुआ स्थान, बाड़ा।

गौँड़ी–स्त्री० मध्यभारतकी एक बोली।

गौँद–पु० पेड़का लसदार पसेव जो सूख गया हो, निर्यास। * स्त्री० एक वृक्ष, गोंदी। **–दानी**–स्त्री० भिगोया हुआ गोंद रखनेका बरतन। **–पंजीरी**–स्त्री० प्रसूताको खिलायी जानेवाली वह पंजीरी जिसमें गोंद मिला रहता है।

गौँदरी–स्त्री० एक जलीय पौधा जिसकी चटाई बनती है; पयालकी चटाई।

गौँदला–पु० बड़ा नागरमोथा; एक तृण।

गो–स्त्री० [सं०] गाय, गऊ; ढोर, पशु; रश्मि, किरण;

इंद्रिय; वाणी, सरस्वती; आँख; वृष राशि; धरती; माता; दिशा; जीभ। पु० बैल; आकाश; सूर्य; चंद्रमा; बाण; जल; स्वर्ग; वज्र; हीरा; शब्द; ९का अंक; रोम; गायक; गोमेध-यज्ञ। **–कंटक**–पु० गायका खुर; गायके खुरका निशान; गोखरू। **–कन्या***–स्त्री० कामधेनु। **–कर्ण**–वि० गायके जैसे कानोंवाला। पु० खच्चर; मलाबारमें स्थित शैवोंका एक तीर्थ; वहाँ स्थापित शिवकी मूर्ति। **–कुल**–पु० गायोंका झुंड; गोशाला, गोठ; वृंदावनके पासका एक गाँव जो नंदका वासस्थान था और जहाँ कृष्ण तथा बलरामका पालन-पोषण हुआ। **–० नाथ,–० पति**–पु० कृष्ण। **–कृत**–पु०गोबर। **–कोस**–पु०[हिं०] उतनी दूरी जहाँ-तक गायकी आवाज सुनाई दे। **–क्षीर**–पु० गायका दूध। **–क्षुर,–क्षुरक**–पु० गायका खुर; गोखरू। **–खग***–पु० थलचर प्राणी, पशु। **–खुर**–पु० गायका खुर; गायके खुरका निशान। **–गृह**–पु० गोठ, गोशाला। **–ग्रास**–पु० भोजनका वह भाग जो गायके लिए अलग कर दिया जाता है; गायकी तरह मुँहसे उठाकर बिना चबाये भोजन करना। **–घातक,–घाती (तिन्)**–वि० गोवध करनेवाला। पु० कसाई। **–घ्न**–वि० गोवध करनेवाला; जिसके लिए गोवध किया जाय, अतिथि। **–चर**–वि० इंद्रिय द्वारा जानने योग्य, इंद्रियग्राह्य। पु० इंद्रियका विषय (रूप, रसादि); इंद्रियग्राह्य वस्तु; साक्षात्कार; चरागाह। **–चारक,–चारी(रिन्)**–पु० गायें चरानेवाला, ग्वाला। **–चारण**–पु० गायें चराना। **–जाति**–स्त्री० गोवंश; सारी दुनियाके गाय-बैल, गोसमष्टि। **–तीर्थ**–पु० गोशाला, गोठ। **–दान**–पु० गायका दान; विवाहके पहलेका एक संस्कार, केशांत। **–दारण**–पु० हल; कुदाल। **–दुट् (ह्),–दुह**–पु० गाय दुहनेवाला, ग्वाला। **–दोहन**–पु० गाय दुहना; गाय दुहनेका समय। **–दोहनी**–स्त्री० दूध दुहनेका बरतन। **–धन**–पु० गायों, गाय-बैलोंका समूह; गाय-बैल रूप धन; * गोवर्द्धन पर्वत। **–धूलि,–धूली**–स्त्री० गायोंके चरकर लौटनेका समय, संध्या वेला। **–प**–पु० गोपालक; ग्वाला, अहीर; गोष्ठका अध्यक्ष; रक्षक; राजा; प्राचीन हिंदू राजव्यवस्थामें गाँवकी सीमा, आबादी, खेती-बारी, क्रय-विक्रय, आदिका लेखा रखनेवाला कर्मचारी। **–प-कन्या**–स्त्री० गोपकुमारी; ग्वालिन, गोपी। **–प-वधू,**–स्त्री० गोप-पत्नी; गोपी। **–पति**–पु० गायोंका मालिक, गोस्वामी; साँड़; ग्वाला; राजा; कृष्ण; शिव; विष्णु; सूर्य। **–पद**–पु० गायके खुरका निशान या उससे बना गढ़ा; चरागाह। **–पदी***–वि० गोपदके जितना छोटा। **–पा**–स्त्री० गोप स्त्री, ग्वालिन; श्यामा लता; बुद्धकी पत्नी, यशोधरा। **–पाल**–वि० गोपालक; ग्वाला, अहीर; राजा; कृष्ण; शिव। **–पी**–स्त्री० गोपवधू, ग्वालिन। **–पीचंदन**–पु० एक तरहकी पीली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं। **–पीता***–स्त्री० गोपी। **–पुच्छ**–पु० गायकी पूँछ; एक तरहका बंदर; एक तरहका हार। **–पुर**–पु० नगरद्वार, शहरका फाटक; महल या मंदिरका मुख्य द्वार; तोरण। **–फन**–पु० [हिं०] ढेलवाँस। **–बर**–पु० [हिं०] दे० क्रममें। **–भुक(ज्)**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़। **–मर***–पु० गोघातक, कसाई। **–मल**–पु० गोबर। **–मांस**–पु० गाय-बैलका मांस। **–माता(तृ)**–स्त्री० मातृस्थानीय गोजाति, गायरूपी माता। **–मुख**–वि० गायकेसे मुखवाला। पु० एक तरहका शंख; नरसिंहा; नाक, घड़ियाल; गोमुखी। **–मुखी**–स्त्री० जपमाला रखनेकी गोमुखके आकारकी थैली। **–मूत्र**–पु० गायका मूत्र। **–मेद**–पु० एक रत्न। **–मेदक**–पु० गोमेद। **–मेध**–पु० कलियुगके लिए निषिद्ध एक वैदिक यज्ञ जिसमें गोबलिका विधान है। **–यान**–पु० बहली, बैलगाड़ी। **–रक्षिणी**–वि० स्त्री० गोरक्षा करनेवाली, गोरक्षाके लिए स्थापित(सभा)। **–रज(स्)**–पु० गायके खुरोंसे उड़ी हुई धूलि। **–रस**–पु० दूध; दही; मठा; इंद्रियसुख। **–रोचन**–पु० एक सुगंधित पदार्थ। **–रोचना**–स्त्री० गोरोचन। **–लोक**–पु० वैकुंठ। **–लोकवास**–पु०स्वर्गवास, मृत्यु। **–लोकेश**–पु०कृष्ण। **–लोचन**–पु० दे० ‘गोरोचन’। **–वत्स**–पु० बछड़ा। **–वध**–पु० गायकी हत्या करना, गावकुशी। **–वर्धन**–पु० वृंदावनका एक पहाड़ जिसे पुराणोंके अनुसार इंद्रके कोपसे व्रजभूमिकी रक्षा करनेके लिए भगवान्ने अपनी उँगलीपर उठा लिया था। **–वर्धनधर,–वर्धनधारी (रिन्)**–पु० कृष्ण। **–विंद**–पु० गोपालक; कृष्ण। **–शाला**–स्त्री० गायोंके रहनेका स्थान, बाड़ा, गोष्ठ। **–ष्ठ**–पु० गोशाला, गोठ, पशु-शाला; अहीरोंका गाँव; गोष्ठी। **–ष्ठ-पति**–पु०गोष्ठका अध्यक्ष; ग्वालोंका सरदार। **–ष्ठी**–स्त्री० सभा, मंडली, समाज; वार्तालाप; समूह; पारिवारिक संबंध; नाटकका एक भेद जिसमें एक ही अंक होता है। **–साँईं**–पु० [हिं०] गोस्वामी; ईश्वर; गृहस्थ शैव साधुओंका एक संप्रदाय। वि० मालिक; श्रेष्ठ। **–सुत**–पु० बछड़ा। **–सैयाँ**†–पु० मालिक, स्वामी। **–स्वामी(मिन्)**–पु०गायोंका मालिक; गायें रखनेवाला; जितेंद्रिय; वल्लभकुल, निंबार्क-संप्रदाय और मध्व-संप्रदायके आचार्योंकी पदवी। **–हत्या**–स्त्री० गोवध।

गो–अ० [फा०] यद्यपि, अगरचे। **–कि**–अ० यद्यपि।

गोइँठा–पु० उपला।

गोइँड़(ड़ा)†–पु० गाँवके पासकी जमीन जो अधिक उपजाऊ होती है।

गोइंदा–पु० दे० ‘गोयंदा’।

गोइ*–पु० गेंद।

गोइयाँ–पु०, स्त्री० दे० ‘गुइयाँ’।

गोई*–स्त्री० सखी, गोइयाँ।

गोऊ*–पु० चुरानेवाला, गोपन करनेवाला।

गोखरू–पु० एक क्षुप; उसका कँटीला फल जो दवाके काम आता है; गोखरूके आकारके लोहे आदिके बने कँटीले टुकड़े; गोटे; पाँवमें पहननेका एक गहना; तलवे या हथेलीमें पड़ा हुआ घट्टा।

गोखा†–पु० झरोखा, गवाक्ष; ताक।

गोचना–पु०, **गोचनी**–स्त्री० चना मिला हुआ गेहूँ।

गोज़–पु० [फा०] अपान वायु।

गोजई–स्त्री० जौ मिला हुआ गेहूँ।

गोजर*–पु० कनखजूरा।

गोजी†–स्त्री० लाठी, डंडा।

गोझा–पु० गुझिया; गुज्झा।

गोट–स्त्री० कपड़ेकी दुहरी पट्टी जो सुंदरताके लिए कपड़ोंके किनारे लगाते हैं, मगजी, संजाफ; किनारी; चौसर, पचीसी आदि खेलनेकी लकड़ी आदिकी बनी गोटी, नर्द; मंडली; नगरके बाहरकी वह सैर जिसमें खाना-पीना भी हो; गोष्ठी। पु० गाँव; तोपका गोला।

गोटा–पु० सुनहले या रुपहले और रेशमके तारोंको मिलाकर बुना फीता, पट्ठा; लचका; छोटे टुकड़ोंमें कतरी हुई गिरी, सुपारी, बादाम, इलायची आदि जो पानके बदले खायी जाती है; धनियाकी गिरी; सूखा हुआ मल, कंडी; गोला–'औ ज्यों छुटहिं बज्रकर गोटा'–प०।

गोटी–स्त्री० गोट, नर्द; कंकड़ या पत्थर, खपड़े आदिके छोटे टुकड़े जिनसे लड़के कई तरहके खेल खेलते हैं; गोटियोंकी सहायतासे पत्थर आदिपर कोष्ठक बनाकर खेला जानेवाला खेल; युक्ति, उपाय; प्राप्तिका डौल। **मु०–जमना,–बैठना**–युक्ति सफल होना; प्राप्तिका डौल बनना। **–मरना**–किसी गोटीका मृत मान लिया जाना, खेलमें काम न आ सकना। **–लाल होना**–चौसर या पचीसीकी गोटीका सब खानोंमें फिरकर उठ जाना; काम बनना; लाभ होना।

गोठ*–पु० गोष्ठ, गोशाला; गोष्ठी-श्राद्ध; गोष्ठी; सैर-सपाटा।

गोठा*–पु० सलाह।

गोड़†–पु० पावँ, पैर। **–गाव**–पु० वह रस्सी जो पिछाड़ीवाली रस्सीके साथ लगाकर घोड़ेके पिछले पैरोंमें फँसायी जाती है। **–बाँस**–स्त्री० पशुके पैरमें बाँधनेकी रस्सी। **मु०–भरना**–पावँमें महावर लगाना। **–लगना**–पावँ छूना।

गोड़इत†–पु० गाँवका चौकीदार।

गोड़ना–स० क्रि० मिट्टीको नरम और भुरभुरी करनेके लिए कुदाल आदिसे खोदना, कोड़ना; खोदना।

गोड़वाना–स० क्रि० 'गोड़ना'का प्रेरणार्थक।

गोड़ा†–पु० चारपाई आदिका पाया; घोड़िया; थाला।

गोड़ाई–स्त्री० गोड़नेकी क्रिया; गोड़नेकी मजदूरी।

गोड़ाना–स० क्रि० 'गोड़ना'का प्रेरणार्थक।

गोड़ापाई†–स्त्री० बार-बार आना-जाना।

गोड़िया–स्त्री० छोटा पैर या पाया। वि० युक्ति भिड़ानेवाला।

गोत–पु० वंश, गोत्र; समूह।

गोतम–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि, अहल्याके पति; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक गौतम मुनि। **–पुत्र**–पु० शतानंद।

गोतमी–स्त्री० [सं०] गोतम-पत्नी अहल्या।

ग़ोता–पु० [अ०] पानीमें डूबना, डुबकी। **–ख़ोर**–पु० डुबकी लगानेवाला; कुएँसे गिरी हुई चीजें निकालनेवाला। **–मार**–पु० समुद्रसे सीप, मोती आदि निकालनेवाला, पनडुब्बा; पनडुब्बी नौका; गोताखोर। **मु०–खाना**–डूबना; धोखा खाना। **–देना**–डुबकी देना, डुबोना; धोखा देना। **–मारना**–डुबकी लगाना; नागा करना।

गोतिया, गोती–वि० अपने गोत्रवाला, गोत्रज।

गोतीत*–वि० अगोचर, जो इंद्रियग्राह्य न हो।

गोत्र–पु० [सं०] कुल, वंश; गोत्रप्रवर्तक माने हुए ऋषियोंकी संतानपरंपरा; आदि-पुरुषके नामसे प्राप्त वंशसंज्ञा; समूह, संघ; पर्वत; क्षेत्र। **–कर्ता(र्तृ),–कार**–पु० गोत्रप्रवर्तक। **–ज**–वि० एक ही गोत्रका, गोती। **–प्रवर्तक**–पु० गोत्र चलानेवाला, गोत्रकार। **–भिद्**–पु० इंद्र। **–सुता**–स्त्री० पार्वती।

गोत्री(त्रिन्)–वि० [सं०] एक ही गोत्रमें उत्पन्न, गोती।

गोत्रीय–वि० [सं०] गोत्रवाला; (अमुक) गोत्रमें उत्पन्न।

गोद–स्त्री० क्रोड़, पहलू; आँचल। **–नशीँ**–वि० गोद लिया हुआ, दत्तक। **–नशीनी**–स्त्री० गोद लिया जाना। **मु०–का**–गोदमें खेलनेवाला; छोटा (बच्चा)। **–देना**–अपना लड़का दत्तक बनानेके लिए दूसरेको देना। **–बिठाना**–गोद लेना, दत्तक लेना। **–भरना**–शुभ अवसरोंपर सौभाग्यवती स्त्रीके आँचलमें नारियल आदि डालना; संतान होना। **–लेना**–किसी लड़केको दत्तक बनाना।

गोदनहारी–स्त्री० गोदना गोदनेवाली स्त्री।

गोदना–स० क्रि० चुभाना, गड़ाना; ताना मारना; अंकुश देना; बदनमें सुई चुभोकर और सूराखमें नीलका पानी आदि भरकर सुंदरताके लिए बिंदी, फूल आदि बनाना। पु० सुई चुभाकर बदनपर बनायी हुई बिंदी आदि; खेत गोड़नेका औजार।

गोदनी–स्त्री० गोदना गोदनेकी सुई; टीका लगानेकी सुई।

गोदा–पु० बड़, पीपल या पाकड़का पका फल; नयी डाल।

गोदाम–पु० (तिजारती) माल रखनेका स्थान।

गोदी†–स्त्री० दे० 'गोद'।

गोध–स्त्री० गोह।

गोधा–स्त्री० [सं०] गोह; धनुषके चिल्लेकी चोटसे बचनेके लिए बायीं कलाईपर बाँधनेका चमड़ा; घड़ियाल।

गोधिका–स्त्री० [सं०] छिपकली; घड़ियालकी मादा।

गोधूम–पु० [सं०] गेहूँ। **–चूर्ण**–पु० आटा।

गोन–स्त्री० बैलपर अनाज आदि लादनेका दोनों ओर लटकनेवाला थैला, गोनी, बोरा; अनाजकी एक तौल; नाव खींचनेक लिए नावके मस्तूलमें बँधी हुई रस्सी।

गोना*–स० क्रि० छिपाना, गोपन करना।

गोनिया–पु० बैल लादनेवाला; बोरे ढोनेवाला; रस्सी बाँधकर नाव खींचनेवाला। स्त्री० दीवार आदिकी सीध नापनेका एक औजार।

गोनी–स्त्री० टाटका थैला, बोरा; पाट, सन।

गोप*–पु० गोपन, छिपाना; दे० 'गो'के साथ। स्त्री० गलेका एक आभूषण।

गोपन–पु० [सं०] छिपाना, छिपाव; भर्त्सना, निंदा; संरक्षण। **–शपथ**–स्त्री० (ओथ ऑफ सीक्रेसी) मंत्रियों आदि द्वारा सरकारकी गोपनीय बातें प्रकट न करनेके संबंधमें पदग्रहणके समय ली जानेवाली शपथ।

गोपना–स्त्री० [सं०] रक्षण; दीप्ति। * स० क्रि० छिपाना।

गोपनीय–वि० [सं०] छिपाने लायक; रक्षणीय।

गोपांगना–स्त्री० [सं०] ग्वालिन; गोपवधू।

गोपाष्टमी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक-शुक्ला अष्टमी।

गोपिका–स्त्री० [सं०] ग्वालिन; गोपवधू।

गोपित–वि० [सं०] रक्षित; छिपाया हुआ।

गोपी–स्त्री०[सं०] शारिवा लता; छिपानेवाली; दे० 'गो'में।

गोप्ता(प्तृ)–वि० [सं०] गोपनकर्ता; रक्षक। पु० विष्णु।

गोप्य–वि० [सं०] गोपनीय।

गोफ–पु० एक तरहका कंठा।

गोफन–पु० दे० 'गो'के साथ।

गोफा–पु० कल्ला, गोभा। * स्त्री० गुफा,–'गोफन माँही पीढ़ते, परिमल अंग लगाय'–साखी; तहखाना।

गोबर–पु० गोमल। **–गणेश**–पु० मूर्ख, बुद्धू।

गोबरी–स्त्री० गोबरका लेप (करना); कंडा, उपला।

गोबरैला, गोबरौरा, गोबरौला–पु० दे० 'गुबरैला'।

गोभ, गोभा*–स्त्री० लहर, तरंग–'उठति सखि आनंद की गोभा'–गदाधर।

गोभी–स्त्री० एक प्रसिद्ध शाक जो फूलगोभी, पातगोभी या करमकल्ला और गाँठगोभीके भेदसे तीन तरहका होता है; बनगोभी; पौधोंका एक रोग।

गोम*–पु० स्थान। स्त्री० घोड़ोंकी एक भँवरी।

गोमती–स्त्री० [सं०] उत्तरप्रदेशकी एक नदी जो बनारस और गाजीपुर जिलेकी सीमापर गंगामें मिलती है; एक वृत्त।

गोमय–पु० [सं०] गोबर।

गोयँड़–पु० गाँवके पासकी जमीन।

गोयंदा–वि० [फा०] बोलनेवाला। पु० जासूस, भेदिया।

गोय–पु० [फा०] गेंद।

गोया–अ० [फा०] मानों, जैसे।

गोर–† वि० दे० 'गोरा'। स्त्री० [फा०] वह गढ़ा जिसमें मुर्देको दफन करें, कब्र।

गोरख–पु० गोरखनाथ। **–धंधा**–पु० तार, कड़ियाँ आदि जो एकमें जोड़कर फिर अलग की जा सकें; गोरखपंथी साधुओंके हाथमें रहनेवाला डंडा जिसमें बहुत-सी कड़ियाँ जड़ी होती हैं; जल्दी समझमें न आनेवाली चीज, पहेली; झमेला। **–नाथ**–पु० १५वीं शतीके एक प्रसिद्ध हठयोगी और पंथप्रवर्तक संत। **–पंथ**–पु० गोरखनाथका चलाया हुआ एक शैव पंथ या संप्रदाय, नाथसंप्रदाय। **–मुंडी**–स्त्री० एक घास जो दवाके काम आती है।

गोरखा–पु० नेपालका एक प्रदेश या वहाँका निवासी।

गोरटा*–वि० गोरा (स्त्री० गोरटी–गोरी, सुंदर स्त्री)।

गोरसी–स्त्री० अँगीठी।

गोरा–वि० गौर, श्वेत वर्णवाला। **–चिट्टा**–वि० खूब गोरा। **–पत्थर**–पु० एक सफेद मुलायम पत्थर।

गोराई–स्त्री० गोरापन; सुंदरता।

गोरिल्ला–पु०अफ्रीकामें पाया जानेवाला हिंस्र बनमानुस।

गोरी–वि० स्त्री० गौर वर्णवाली। स्त्री० सुंदरी स्त्री।

गोरू†–पु० चौपाया, ढोर (गाय, बैल, भैंस आदि)।

गोलंदाज–पु० गोला चलानेवाला, तोपची; गेंदबाज।

गोलंदाजी–स्त्री० गोलंदाजका काम।

ग़ोलंबर–पु० गुंबज; गुंबज जैसी गोल उठी हुई कोई चीज; कालिब; बागमें बना हुआ गोल चबूतरा।

गोल–पु० [सं०] मंडल; गोलाकार पिंड, वृत्त; धरतीका मंडल या गोला। **–यंत्र**–पु० वह यंत्र जिससे ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति आदि जानी जा सकती है। **–योग**–पु० ज्योतिषका एक योग, एक राशिमें ६ या ७ ग्रहोंका एकत्र हो जाना; गोलमाल। **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिर्विद्याका अंग-विशेष; धरतीका आकार, विस्तार, गति आदि जाननेकी विधि।

गोल–वि० गोला, वृत्ताकार; ठिगना और मोटा; अस्पष्ट। **–गप्पा**–पु० छोटी, खूब फूली हुई करारी पूरी जिसे चाटकी तरह खाते हैं। **–गोल**–वि० गोला; अस्पष्ट। **–मटोल**–वि०जिससे कोई साफ अर्थ न निकले, अस्पष्ट। **–माल**–पु० गड़बड़, घपला। **–मिर्च**–स्त्री० काली मिर्च। **–मेज सम्मेलन**–स्त्री० सर्वपक्ष-सम्मेलन, ऐसा सम्मेलन जिसमें सभी पक्षोंके लोग एक साथ बैठकर विचार करें।

गोल–पु० [अं०] फुटबाल आदिके खेलमें वह स्थान जहाँ गेंद पहुँचनेसे पक्ष-विशेषकी जीत होती है; इस तरह हुई जीत (करना, होना)। **–कीपर**–पु० गोलकी रक्षापर नियुक्त खिलाड़ी।

ग़ोल–पु० [फा०] मंडली, झुंड; भीड़।

गोलक–पु० वह संदूक या डिब्बा आदि जिसमें रोजकी आमदनी या कार्यविशेषके लिए धन एकत्र किया जाय; इस तरह इकट्ठा हुआ धन; गुंबद। [सं०] गोलपिंड; गोली; काठका गेंद; मटका; विधवाका जारज पुत्र; आँखका डेला; कई ग्रहोंका योग; गुड़; गोलोक।

गोला–वि० गोलाईवाला, वृत्ताकार। पु० गोल वृत्ताकार वस्तु या पिंड; लोहेकी बड़ी गोली जिसे तोपमें भरकर दागते हैं; नारियलका साबित मग्ज; रस्सी आदिकी पिंडी; गल्ले, किराने आदिका बाजार जो किसी इहातेके अंदर हो; गोल शहतीर, बल्ला; घासका गट्ठा; वायुगोला रोग; जंगली बाँस जो भीतरसे पोला नहीं होता; जंगली कबूतर; एक तरहका बेत। **–बारूद**–स्त्री० गोला और बारूद; युद्धसामग्री।

गोलाई–स्त्री० गोलापन।

गोलार्द्ध–पु० [सं०] पृथ्वीका आधा भाग जो एकसे दूसरे ध्रुवतक रेखा खींचनेसे बने।

गोलियाना†–स० क्रि० गोल आकारका बनाना; गोल बाँधना।

गोली–स्त्री० छोटा गोला; मिट्टी, काँच आदिका बना छोटा गोला जिससे लड़के खेलते हैं; गोलीका खेल; सीसे या लोहेका छोटा गोला जिसे बंदूक, तमंचेमें भरकर छोड़ते हैं; गोलीके रूपमें बनायी हुई दवा, बटी। **मु०–खाना**–बंदूककी गोलीसे घायल होना; गोलीकी चोट सहना। **–चलना**–बंदूकसे गोलीका चलाया जाना, फैर किया जाना। **–मारना**–गोलीसे घायल करना; उपेक्षापूर्वक त्याग देना, ठुकरा देना।

गोवना*–स० क्रि० छिपाना; ढकना।

गोश–पु० [फा०] कान। **–माल,–माली**–स्त्री० कान मलना, उमेठना, कनेठी; ताड़न। **–वारा**–पु० बाला, कुंडल; बड़ा मोती; पगड़ीका कलाबत्तूसे बुना हुआ अंचल; कलगी; जोड़, मीजान; हिसाबका खुलासा; रजिस्टर आदिके खानोंका शीर्षक।

गोशा–पु० [फा०] कोना, कोण; दिशा; एकांत स्थान।

–नशीनी–स्त्री० एकांतवास।

गोश्त–पु० [फ़ा०] मांस, सालन, लहम; गूदा।

गोष्ठागार–पु० [सं०] सभागृह।

गोष्ठी–स्त्री० [सं०]दे० 'गो'के साथ।

गोह–स्त्री० छिपकलीकी जातिका एक जहरीला जंतु जो आकारमें नेवलेके बराबर होता है।

गोहन–पु० [सं०] ढकना; छिपाना; † संग, साथ; संग लगा रहनेवाला, साथी।

गोहरा–पु० उपला।

गोहराना*–स० क्रि०, अ० क्रि० आवाज देना; पुकारना।

गोहार–स्त्री० पुकार; सहायताके लिए चिल्लाना; शोर-गुल।

गोही*–स्त्री० छिपाव, गोपन; गुप्त बात।

गोहुअ(व)न–पु० एक अति विषधर साँप।

गोहेरा–पु० गोह; विसखोपड़ा।

गौँ–पु० काम निकलनेका मौका, अवसर; घात; मतलब; युक्ति; * गति, पहुँच; ढंग, चाल। **मु०–का**–मतलबका, कामका। **–का यार**–मतलबका दोस्त। **–गाँठना**–काम निकालना, अपनी गरज देखना। **–निकलना**–काम निकलना। **–पड़ना**–काम पड़ना। **–से**–चुपकेसे।

गौ–स्त्री०[सं०] गाय। **–चरी**–स्त्री०[हिं०] गाय चरानेका कर। **–दुमा***–वि० गावदुम, गायकी पूँछ जैसा। **–मुखी**–स्त्री० दे० 'गोमुखी'। **–शाला**–स्त्री० दे० 'गोशाला'।

गौखा†–स्त्री० दे० 'गौखा'; चौपाल।

गौखा†–पु० झरोखा, गवाक्ष; गायका चमड़ा।

ग़ौग़ा–पु० [अ०] शोर-गुल, हल्ला; अफवाह।

गौड़–पु० [सं०] बंगालका पुराना नाम; गौड़ देशवासी; ब्राह्मणोंका एक वर्ग, पंच गौड़; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; कायस्थोंकी एक उपजाति; एक राग।

गौड़ी–स्त्री० [सं०] गुड़से बनायी हुई शराब; एक रागिनी; काव्य-नाटककी तीन रचना-रीतियोंमेंसे एक।

गौण–वि० [सं०] अप्रधान; महत्त्वमें दूसरे दरजेका।

गौणी–वि०स्त्री०[सं०] गुण-संबंधिनी; अप्रधान। **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद (सा०)।

गौतम–पु० [सं०] गोतमका वंशज; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक अक्षपाद ऋषि; एक ऋषि (अहल्याके पति); बुद्धदेव।

गौतमी–स्त्री० [सं०] अहल्या; द्रोणाचार्यकी पत्नी; गोदावरी नदी; दुर्गा।

गौन*–पु० गमन; गौना। वि० चंचल।

गौनहारिन–स्त्री० दे० 'गौनहारी'।

गौनहारी–स्त्री० गानेका पेशा करनेवाली स्त्री।

गौना–पु० विवाहके कुछ काल बाद दुलहिनका मैकेसे विदा होकर ससुराल जाना, द्विरागमन, मुकलावा।

गौर–वि० [सं०] गोरा, श्वेत; पीला; उज्ज्वल। पु० सफेद रंग; पीला रंग; लाल रंग; चंद्रमा; सोना; धवका पेड़। **–वर्ण**–वि० गोरे रंगवाला, गोरा। पु० गोरा रंग।

ग़ौर–पु०[अ०] सोच-विचार, चिंतन। **–से**–ध्यान देकर, ध्यानपूर्वक।

गौरव–पु० [सं०] गुरुता, भारीपन; महत्त्व, बड़प्पन; आदर, सम्मान; प्रतिष्ठा, मर्यादा; गहराई, गांभीर्य। **–शाली (लिन्)**–वि० गौरवयुक्त; सम्मानित।

गौरवान्वित–वि० [सं०] गौरवयुक्त।

गौरांग–पु० [सं०] चैतन्यदेव; कृष्ण; विष्णु। वि० गोरा; यूरोपीय। **–महाप्रभु**–पु० चैतन्यदेव।

गौरा–स्त्री० [सं०] गोरी स्त्री; पार्वती; हल्दी; एक रागिनी।

गौरी–स्त्री० [सं०] गोरी स्त्री; पार्वती; आठ वर्षकी अविवाहिता कन्या; धरती; वाणी; सफेद दूब; हल्दी; गोरोचन। **–कांत,–नाथ**–पु० शिव। **–गुरु**–पु० हिमालय। **–शंकर**–पु० हिमालयकी एक ऊँची चोटी। **–शिखर**–पु० हिमालयकी वह चोटी जिसपर पार्वतीने तपस्या की थी।

गौरीश–पु० [सं०] शिव।

गौरैया–स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

गौल्मिक–पु० [सं०] ३० सिपाहियोंका नायक, गुल्मनायक। वि० गुल्म, अर्बुद रोग-संबंधी।

गौहर–पु० [फ़ा०] मोती; जौहर।

ग्यान*–पु० दे० 'ज्ञान'।

ग्यारस–स्त्री० एकादशी।

ग्यारह–वि० दस और एक। पु० दस और एककी संख्या।

ग्रंथ–पु० [सं०] पुस्तक, किताब; धन। **–कर्ता(र्तृ),–कार**–पु० ग्रंथ लिखने, रचनेवाला। **–चुंबक**–वि०, पु० पुस्तकके कुछ पन्ने पढ़कर ही, विषयका स्वल्प ज्ञान प्राप्त करके ही रह जानेवाला, पल्लवग्राही। **–माला**–स्त्री० कार्यालयविशेषसे क्रमपूर्वक प्रकाशित पुस्तकें। **–रचना**–स्त्री० पुस्तक-रचना, किताब लिखना। **–साहब**–पु० [हिं०] सिखोंका धर्मग्रंथ, सिख गुरुओंके उपदेशोंका संग्रह।

ग्रंथन–पु० [सं०] गाँठ देकर बाँधना, गठियाना; गूँथना, गुंफन; रचना।

ग्रंथना*–स० क्रि० गूँथना।

ग्रंथागार–पु० [सं०] पुस्तकालय।

ग्रंथागारिक–पु० [सं०] (लाइब्रेरियन) ग्रंथागार (पुस्तकालय)में संगृहीत ग्रंथोंकी अभिरक्षा तथा उनके आदान-प्रदान, संग्रहादिकी व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति।

ग्रंथावलि, ग्रंथावली–स्त्री० [सं०] ग्रंथमाला।

ग्रंथावलोकन–पु० [सं०] पुस्तकाध्ययन।

ग्रंथि–स्त्री० [सं०] गाँठ, गिरह; गुठली; गुत्थी; अंगोंका जोड़; शरीरके अंदरकी गाँठें जिनसे रस निकलता है; (ला०) माया-पाश। **–च्छेदक**–पु० गिरहकट। **–दूर्वा**–स्त्री० गाडर दूब। **–पर्णी**–स्त्री० ग्रंथिदूर्वा। **–भेद,–मोचक**–पु० गिरहकट।

ग्रंथिल–वि० [सं०] गाँठदार। पु० पिपरामूल; अदरक; विकंकत वृक्ष; करीर; चोरक नामक गंधद्रव्य; चौराईका साग; विकंटक वृक्ष; पिंडालू।

ग्रंथी(थिन्)–वि० [सं०] जिसके पास बहुतसे ग्रंथ हों; जिसने बहुतसे ग्रंथ पढ़े हों, विद्वान्। पु० ग्रंथकर्ता; ग्रंथका पाठ करनेवाला।

ग्रंस*–पु० कुटिलता, छलछिद्र।

ग्रथित–वि० [सं०] गूँथा हुआ; इकट्ठा बाँधा हुआ; रचित।

ग्रसन–पु० [सं०] भक्षण, निगलना; पकड़ना; जकड़ना।

ग्रसना–स० क्रि० पकड़ना; ग्रास करना; सताना।

ग्रसित–वि० दे० 'ग्रस्त'।

ग्रस्त–वि० [सं०] ग्रसा हुआ, पकड़ा, निगला हुआ; पीड़ित।

ग्रस्तास्त–पु० [सं०] सूर्य या चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही अस्त हो जाना।

ग्रस्तोदय–पु० [सं०] सूर्य या चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही उदय होना।

ग्रह–पु० [सं०] सूर्यकी परिक्रमा करनेवाला तारा; सौरमंडलके ९ प्रधान तारों–सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु–मेंसे कोई एक; नौकी संख्या; ग्रहण; प्राप्ति; पकड़; चोरी। **–दशा**–स्त्री० जन्मराशिकी दृष्टिसे ग्रहोंकी स्थिति; उनका शुभ या अशुभ फलदायक होना; बुरे दिन, विपत्काल। **–दोष**–पु० ग्रह-विशेषकी अशुभ, अरिष्टकारक दृष्टि। **–नायक**–पु० सूर्य; शनि। **–पति**–पु० सूर्य; चंद्र; आक। **–पीडन**–पु०, **–पीडा**–स्त्री० ग्रहजनित पीडा, ग्रहबाधा। **–मैत्री**–स्त्री० वर-कन्याके ग्रहस्वामियोंका परस्पर मित्र या अनुकूल होना। **–योग**–पु० राशि-विशेषके एक ही अंशपर दो ग्रहोंका आ जाना। **–वेध**–पु० ग्रहोंकी स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना। **–शांति**–स्त्री० जप, पूजन आदिके द्वारा ग्रहदोषकी निवृत्तिका उपाय किया जाना।

ग्रहण–पु० [सं०] पकड़नेकी क्रिया, पकड़; लेना, स्वीकार; प्राप्ति; धारण; समझना, अर्थबोध; ग्रह-विशेषका दूसरे ग्रहकी छायासे कुछ कालके लिए छिप जाना; सूर्य और पृथ्वीके बीचमें चंद्रमाका या सूर्य और चंद्रमाके बीचमें पृथ्वीका आ जाना।

ग्रहणीय–वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य।

ग्रहीता(तृ)–वि०, पु० [सं०] ग्रहण करनेवाला; ग्राहक; कर्ज लेनेवाला; निरीक्षण करनेवाला।

ग्रांडील–वि० बड़े डील-डौलका।

ग्राम–पु० [सं०] बस्ती; गाँव; जाति; समूह; एक षड्जसे दूसरे षड्जतकका स्वर-समूह, स्वर-सप्तक। **–कंटक**–पु० वह जो ग्राममें झगड़े-बखेड़े उठाता है, ग्रामद्रोही। **–णी**–पु० गाँवका मुखिया; हज्जाम। **–देव**, **–देवता**–पु० गाँवका अधिष्ठाता, गाँवकी रक्षा करनेवाला, देवता। **–द्रोही(हिन्)**–पु० ग्रामके नियमका भंग, ग्राम-पंचायतके निर्णयका उल्लंघन करनेवाला। **–पंचायत**–स्त्री० [हिं०] गाँवके झगड़े सुनने और स्वास्थ्य, सफाई आदिका प्रबंध करनेवाला मंडल। **–मृग**–पु० कुत्ता। **–वासी(सिन्)**–पु० गाँवमें बसनेवाला, देहाती। **–सिंह**–पु० कुत्ता। **–सुधार**–पु० [हिं०] ग्रामके संपूर्ण जीवनको सुधारनेका काम।

ग्रामांत–पु० [सं०] गाँवकी सीमा, सिवाना।

ग्रामीण–वि० [सं०] ग्राम-संबंधी; गँवार, देहाती। पु० ग्रामवासी।

ग्राम्य–वि० [सं०] ग्राम-संबंधी; ग्रामीण; मूर्ख, अनाड़ी; असभ्य, अशिष्ट; अश्लील (शब्द); पालतू (पशु)। पु० काव्यका एक दोष, जहाँ ग्राम्य शब्दोंका प्राधान्य हो; अशिष्ट, अश्लील शब्द। **–दोष**–पु० काव्य या रचनामें गँवारू शब्द अधिक आना। **–धर्म**–पु० मैथुन।

ग्राव*–पु० दे० 'ग्रावा'; ओला।

ग्रावा(वन्)–पु० [सं०] पत्थर, पहाड़; बादल।

ग्रास–पु० [सं०] कौर, निवाला; आहार निगलना; ग्रसना; आहार; चंद्र या सूर्यका ग्रस्तांश; ग्रहण।

ग्रासना*–स० क्रि० दे० 'ग्रसना'।

ग्राह–पु० [सं०] ग्रहण; पकड़; आग्रह; मगर, घड़ियाल।

ग्राहक–वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; लेनेवाला; मलरोधक। पु० गाहक, खरीदार। **–यंत्र**–पु० (रिसीव्हर) टेलीफोन, रेडियो या तारकी वाणी अथवा ध्वनि ग्रहण करनेवाला यंत्र–वह यंत्र या यंत्रका भाग जिसकी सहायतासे दूरकी वाणी अथवा ध्वनि सुनाई दे सके।

ग्राहकांग–पु० [सं०] (रिसीव्हर) दे० 'ग्राहक-यंत्र'।

ग्राही(हिन्)–वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; पकड़नेवाला; कब्ज करनेवाला।

ग्राह्य–वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; पकड़ने, लेने, समझने योग्य; मान्य।

ग्रीखम*–पु० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीवा–स्त्री० [सं०] गरदन, गला।

ग्रीषम*–पु० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीष्म–पु० [सं०] गरमीका मौसम, गरमी, निदाघ। **–काल**–पु० गरमीके दिन। **–कालीन**–वि० ग्रीष्म ऋतु-संबंधी।

ग्रेह*–पु० गेह।

ग्रेही*–वि० संसारी।

ग्रैव, ग्रवेय, ग्रैवेयक–वि० [सं०] गला-संबंधी। पु० हार; हाथीके गलेमें पहनायी जानेवाली शृंखला।

ग्रैष्म, ग्रैष्मिक–वि० [सं०] ग्रीष्म-संबंधी।

ग्लपित–वि० [सं०] क्लांत; शिथिल।

ग्लानि–स्त्री० [सं०] थकावट, शिथिलता; अपने किसी कार्यपर उत्पन्न खेद, पश्चात्ताप; अनुत्साह; एक संचारी भाव।

ग्वार–स्त्री० कुलथी। * पु० ग्वाल।

ग्वारनट–पु० एक बढ़िया रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा–पु० घीकुआर।

ग्वारिन–स्त्री० दे० 'ग्वार'; दे० 'ग्वालिन'।

ग्वाल-बाल–पु० अहीरोंके लड़के, कृष्णके बालसखा।

ग्वाला–पु० गोप, अहीर; एक छंद।

ग्वालिन–स्त्री० अहीरिन; एक बरसाती कीड़ा; एक तरकारी।

ग्वैँठना–स० क्रि० ऐंठना, मरोड़ना, टेढ़ा करना।

ग्वैँठा–पु० उपला। * वि० ऐँठा हुआ, टेढ़ा।

ग्वैँड़*–स्त्री० सीमा–'सुंदरताकी ग्वैंड़ ऐंड़सों पैड़ चलैया'–(रत्नाकर)।

ग्वैँड़ा*–पु० दे० 'गोइँड़ा'।

ग्वैँड़े†–अ० निकट, पास।

घ

घ–कवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान जिह्वा-मूल या कंठ।

घँघरा–पु० दे० 'घघरा'।

घँघरी–स्त्री० दे० 'घघरी'।

घँघो(र)लना–स० क्रि० पानीको हिलाकर उसमें मिट्टी

आदि घोलना; पानीको गंदा करना।

घंट–पु० प्रेतक्रियामें पीपलसे लटकाया जानेवाला घड़ा; घंटा।

घंटा–पु० [सं०] काँसेका गोल पट्ट जिसे मुँगरीसे पीटकर पूजनमें या समयकी सूचनाके लिए बजाते हैं, घड़ियाल; मंदिरों आदिमें लगाया जानेवाला काँसेका लंगरदार बाजा जो लंगर हिलानेसे बजता है; घंटा बजनेका शब्द; [हिं०] ६० मिनट या २॥ घड़ीका काल-मान; ठेंगा; कुछ नहीं। **–घर**–पु० ऊँची मीनार जिसमें इतनी ऊँचाईपर धरम-घड़ी लगी हो कि बहुत दूरसे दिखाई दे। **–पथ**–पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क। **–रव,–स्वर**–पु० घंटेका शब्द। **–वादक**–पु० घंटा बजानेवाला।

घंटिका–स्त्री० [सं०] छोटी घंटी; घुँघरू; उपजिह्वा।

घंटी–स्त्री० बहुत छोटा घंटा; घुँघरू; घंटीकी आवाज; जीभकी जड़के ऊपर लटकनेवाला मांसखंड, कौआ; गलेकी वह छोटी हड्डी जो आगेकी ओर निकली रहती है; लुटिया।

घई*–स्त्री० भँवर; प्रवाह; थूनी। वि० बहुत गहरा।

घघरा–पु० स्त्रियोंका एक पहनावा, लहँगा।

घघरी–स्त्री० छोटा लहँगा।

घट–पु० [सं०] घड़ा, कलसा; पिंड, देह; कुंभ राशि; हृदय, अंतर; कुंभक; हाथीका कुंभ; २० द्रोणकी तौल; किनारा। **–कर्ण**–पु० कुंभकर्ण। **–कर्पर**–पु० एक कवि जो विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमें थे; ठीकरा। **–कार**–पु० कुम्हार। **–ज,–योनि,–संभव**–पु० अगस्त्य। **–स्थापन**–पु० पूजनमें किसी देवताके आवाहनार्थ घटकी स्थापना।

घटबढ़–स्त्री० कमी-बेशी। वि० कम-ज्यादा।

घटक–वि० [सं०] करानेवाला, साधक; मिलानेवाला, योजक। पु० ब्याह तै करानेवाला, बिचुआ, दलाल; अवयव-भूत वस्तु; वंशावली सुनानेवाला; घड़ा।

घटकना*–स० क्रि० पीना, गलेके नीचे उतारना।

घटका–पु० आसन्नमरण व्यक्तिकी साँसका रुक-रुककर चलना, कफसे गलेका रुद्ध हो जाना (लगना)।

घटती–स्त्री० कमी; अवनति; हेठी, अप्रतिष्ठा।

घटन–पु० [सं०] होना, बनना; मिलाना, जोड़ना; गढ़ना।

घटना–अ० क्रि० घटित होना; लगना–'सपने नृपकहँ घटै विप्रबध'–विनय०; उक्ति या वचनका यथार्थ सिद्ध होना; काम आना; कम होना, छीजना; तौलमें कम होना; (किसी चीजकी) कमी होना। स्त्री० [सं०] जो बात हो या घटित हो, व्यापार, वाकिया; रचना; योजना; अचानक होनेवाली बात, हादिसा; समूहीकरण; गज़दल। **–क्रम,–चक्र**–पु० घटनाओंका सिलसिला।

घटनावली–स्त्री० [सं०] घटनाओंका सिलसिला, समूह।

घटवाई*–वि० घाटवाला; रुकावट डालनेवाला–'आवन जान न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई'–सू०।

घटवाना–स० क्रि० 'घटना'का प्रेरणार्थक।

घटवार–पु० घाटका ठेकेदार; घाटकी नाव खेनेवाला; घाटिया।

घटवारि(लि)या–पु० घाटिया; केवट।

घटवाह–पु० घाटका ठेकेदार, घाटका महसूल लेनेवाला।

घटहा†–पु० घाटका ठेकेदार; आर-पार जाने-आनेवाली नाव।

घटा–स्त्री० जलभरे काले बादलोंका समूह, मेघमाला; [सं०] युद्ध आदिके लिए एकत्र हाथियोंका समूह।

घटाई*–स्त्री० अप्रतिष्ठा, मानहानि।

घटाटोप–पु० [सं०] गाड़ी, पालकी आदिका ओहार जो उसे पूरी तरह ढक ले; कोई ढक लेनेवाली वस्तु, सामान; घनघटा, आडंबर।

घटाना–स० क्रि० कम करना; बाकी निकालना; मान-प्रतिष्ठामें गिराना।

घटाव–पु० घटी, कमी; अवनति; बाढ़का घटना।

घटिका–स्त्री० [सं०] २४ मिनटका समय, घटी; छोटा घड़ा; एक छोटा घड़ा जिससे दिनकी घड़ियाँ मालूम की जाती थीं। **–यंत्र**–पु० दे० 'घटीयंत्र'।

घटित–वि० [सं०] जो हुआ हो; जोड़ा, मिलाया हुआ; जो ठीक उतरा हो; रचित।

घटिताई*–स्त्री० कमी, त्रुटि।

घटिया–वि० जो बढ़िया न हो, खराब, निकृष्ट।

घटिहा–वि० धोखा देनेवाला, विश्वासघाती; नीच; मक्कार।

घटी–स्त्री० [सं०] २४ मिनटका काल-मान, घड़ी; छोटा घड़ा, कलसी; रहँटकी घड़िया; समय जाननेके लिए काममें लाया जानेवाला जलपात्र। **–यंत्र**–पु० घड़ी, काल-ज्ञापक यंत्र; रहँट।

घटी–स्त्री० कमी; घाटा, नुकसान।

घटूका*–पु० घटोत्कच।

घटोत्कच–पु० [सं०] हिडिंबासे उत्पन्न भीमसेनका पुत्र।

घटोद्भव–पु० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घटोर*–पु० मेढ़ा।

घट्ट–पु० [सं०] घाट; चुंगी या महसूल लेनेकी जगह। **–कर**–पु० (फेरी टॉल) नाव द्वारा या पुलपरसे नदी पार करने या सामान ले जाने आदिके कारण घाटपर लगनेवाला कर। **–कुटी**–स्त्री० चुंगीकी चौकी। **–जीवी (विन्)**–पु० घाटके महसूल या घटहा नावके खेवेसे गुजर करनेवाला।

घट्ठा–पु० लगातार रगड़ लगनेसे शरीरपर पड़नेवाला चिह्न। **मु०–पड़ना**–आदत पड़ना, अभ्यास होना।

घड़घड़ाना–अ० क्रि० घड़-घड़ आवाज होना, निकलना।

घड़घड़ाहट–स्त्री० घड़-घड़ शब्द।

घड़नई–स्त्री० बाँसके ढाँचेमें घड़े बाँधकर बनायी हुई कामचलाऊ नाव।

घड़ना–स० क्रि० गढ़ना।

घड़नैल–स्त्री० दे० 'घड़नई'।

घड़ा–पु० मिट्टी या धातुका, पानी रखनेका बरतन, कलसा। **मु०–घड़ों पानी पड़ जाना**–बहुत लज्जित होना।

घड़ाना–स० क्रि० दे० 'गढ़ाना'।

घड़िया–स्त्री० मिट्टीका बना घड़ेके आकारका छोटा बरतन, कुल्हिया; सोना-चाँदी गलानेकी घरिया।

घड़ियाल–पु० घंटा, पहर आदि बतानेके लिए बजाया जानेवाला घंटा; एक हिंसक जलजंतु, ग्राह। **–का कटोरा**–एक तरहका कटोरा जिससे घड़ीका काम लेते थे।

घड़ियाली–पु० घड़ियाल बजानेवाला। स्त्री० पूजाके समय बजानेका एक तरहका घंटा, झालर।

घड़ी—स्त्री० ६० पल या २४ मिनटका कालमान, घटी, दंड; समय, वक्त; अवसर; घड़ी, घंटा बतानेवाला यंत्र। **—घड़ी**—अ० बार-बार; थोड़ी-थोड़ी देर बाद। **—भर**—अ० थोड़ी देर, क्षणभर। **—साज़**—पु० घड़ीकी सफाई, मरम्मत करनेवाला। **—साज़ी**—स्त्री० घड़ीसाजका काम, पेशा। **मु० (घड़ियाँ) गिनना**—बड़ी उत्कंठाके साथ प्रतीक्षा करना; आसन्नमरण होना। **घड़ी टलना**—किसी बातका नियत काल, मुहूर्त टलना। **—में घड़ियाल है**—जिंदगीका भरोसा नहीं, छनभरमें न जाने क्या हो जाय।

घड़ीदिआ—पु० मृत व्यक्तिके घर मृत्युके स्थानपर दस दिनोंतक रखा जानेवाला घड़ा और दिया।

घड़ौंची—स्त्री० घड़ा रखनेका चबूतरा या तिपाई।

घण*—पु० दे० 'घन'।

घतिया—पु० घाती, धोखा देनेवाला।

घतियाना—स० क्रि० घातमें लाना; छिपाना।

घन—वि० [सं०] घना, ठस; गझिन; ठोस; निबिड़; दृढ़; गंभीर; निरंतर; पूर्ण; विशाल। पु० मेघ; लुहारका बड़ा हथौड़ा; किसी अंकको उसी अंकसे दो बार गुणा करनेसे उपलब्ध गुणनफल (क्यूब); लंबाई-चौड़ाई-मोटाई, विस्तार; दृढ़ता; घनत्व; धातुका बना झाँझ-करताल जैसा एक बाजा; घंटा; शरीर; * कपूर। **—घटा**—स्त्री० [हिं०] बादलोंका जमाव, गहरी काली घटा। **—घोर**—वि० बहुत घना; जबर्दस्त; गहरा; डरावना। पु० डरावनी गड़गड़ाहट, आवाज। **—चक्कर**—वि० [हिं०] मूर्ख; अस्थिरमति, आवारागर्द। पु० एक आतिशबाजी, चरखी; मूर्ख व्यक्ति। **—नाद**—पु० मेघगर्जन; मेघनाद। **—प्रिय**—पु० मोर। **—फल**—पु० लंबाई-चौड़ाई-मोटाईका गुणनफल। **—बान**—पु० [हिं०] बादल फैला देनेवाला बाण। **—बेल***—वि० जिसपर घने बेल-बूटे बने हों। **—मूल**—पु० घन राशिका मूल अंक। **—रव**—पु० मेघगर्जन। **—वर्धनीय**—वि० (मैलियेबिल) (घनसे) पीटनेपर जो चपटा होकर बढ़ जाय। **—वर्धनीयता**—स्त्री० मैलियेबिलिटी) किसी ठोसका पीटनेपर चपटा होकर बढ़ जानेका गुण। **—श्याम**—वि० जलभरे बादल जैसा काला। पु० काला बादल; कृष्ण। **—सार**—पु० जल; कपूर।

घनक*—स्त्री० गर्जन, गड़गड़ाहट; चोट, प्रहार।

घनकना—अ० क्रि० गरजना, आवाज करना।

घनकारा*—वि० ऊँची आवाज करनेवाला, गरजनेवाला।

घनघनाना—अ० क्रि० 'घन-घन'की आवाज होना, निकलना।

घनघनाहट—स्त्री० 'घनघन'की आवाज।

घनता—स्त्री०, **घनत्व**—पु० [सं०] घनापन; ठोसपन; दृढ़ता; लंबाई, चौड़ाई और मोटाईका भाव।

घनांत—पु० [सं०] शरद् ऋतु।

घना—वि० गुंजान, जिसके अवयव पास-पास सटे हों (जंगल, बाल); ठस, गाढ़ा; * बहुत अधिक, अतिशय; दृढ़। * पु० जंगल, पेड़ोंका समूह।

घनाकर, घनागम—पु० [सं०] वर्षा ऋतु।

घनाक्षरी—स्त्री० दंडक छंद, कवित्त।

घनिष्ठ—वि० [सं०] बहुत घना; गाढ़ा; गहरा; अंतरंग।

घनिष्ठता—स्त्री० [सं०] घनिष्ठ होनेका भाव; गहरी दोस्ती।

घनीभूत—वि० [सं०] गाढ़ा; ठोस बना हुआ; केंद्रीभूत। **—खाद्य**—पु० (कंडेंस्ड फूड) दबाकर छोटा या गाढ़ा किया हुआ खाद्य-पदार्थ।

घनेरा*—वि० बहुत, अतिशय, बहुसंख्यक।

घपची—स्त्री० दोनों हाथोंसे कसकर पकड़ लेना।

घपला—पु० गड़बड़, गोलमाल।

घपुआ, घप्पू†—वि० मूर्ख, उल्लू।

घबड़ाना—अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'घबराना'।

घबड़ाहट—स्त्री० दे० 'घबराहट'।

घबराना—अ० क्रि० अधीर होना; भय, चिंतासे अस्थिर, उद्विग्न होना; बुद्धिसे काम न लेना; हक्काबक्का होना; उतावलीमें होना। स० क्रि० अस्थिर, अधीर करना; परेशान करना; उबाना; हड़बड़ीमें डालना।

घबराहट—स्त्री० अधीरता, उद्विग्नता; परेशानी; हड़बड़ी।

घमंका*—पु० घूँसा, मुक्का।

घमंड—पु० गर्व, दर्प; शेखी; भरोसा, सहारा।

घमंडी—वि० घमंड करनेवाला, मगरूर; शेखीबाज।

घमक—स्त्री० घूँसा इत्यादिके प्रहारका शब्द; चोट।

घमकना—स० क्रि० घूँसा मारना। * अ० क्रि० गरजना, घहराना।

घमका—पु० दे० 'घमाका'; ऊमस-'होत घमका विषम यों न पातु खरकतु है'-सेना०।

घमखोर†—वि० घाम सह सकनेवाला।

घमघमाना—स० क्रि० लगातार घूँसे मारना। अ० क्रि० 'घम-घम' शब्द होना।

घमर—पु० नगाड़े आदिकी आवाज, गंभीर ध्वनि।

घमरा—पु० भँगरा, भृंगराज।

घमस—स्त्री० दे० 'घमसा'।

घमसा—पु० ऊमस; घनापन, आधिक्य।

घमसान—पु० घोर युद्ध, भयानक मारकाट (होना, मचना)। वि० घोर। **—की लड़ाई**—घोर युद्ध, विकट संग्राम।

घमाका—पु० घूँसे या और किसी भारी आघातका शब्द।

घमाघम—स्त्री० 'घम-घम'की आवाज; घमाका। अ० 'घम-घम'के साथ।

घमाना†—अ० क्रि० धूप खाना; धूपकी गरमीसे पकना, पीला हो जाना।

घमायल—वि० घामसे पका हुआ; घाम खाया हुआ।

घमासान—पु० दे० 'घमसान'।

घमीला—वि० घाम खाया हुआ; घामसे मुरझाया हुआ।

घमोय—पु० भड़भाँड़, सत्यानासी।

घमौरी—स्त्री० अम्हौरी, पसीना मरनेसे उत्पन्न फुंसियाँ।

घर—पु० [सं०] आदमीके रहनेकी जगह, आवास; दीवारसे घिरा और छाया हुआ स्थान, मकान; [हिं०] कमरा; स्थान, ठिकाना; पैतृक वासस्थान; स्वदेश, वतन; कुल, घराना; कार्यालय (तारघर); उत्पत्तिस्थान; जहाँ किसी चीजकी बहुतायत हो; वह स्थान जहाँ घरका-सा आराम, सुपास मिले; कोठा, खाना (चौसर, संदूक, शतरंज आदिका); म्यान, कोश; जन्मकुंडलीमें ग्रहविशेषका स्थान; चौखटा, फ्रेम, किसी चीजके जड़ने, बैठानेका स्थान; छेद;

रागका स्थान; घरका माल-असबाब, घर-बार; घरका काम-काज, गृहस्थी; चोट मारनेका स्थान; आँखका गोलक; दाँव। **–का**–वि० अपने घरका, कुटुंबका (आदमी); अपना, निजका; आपसका। **–गिरस्ती,–गृहस्थी**–स्त्री० घरका काम-काज। **–घाल,–घालन**–वि० घर घालने, बिगाड़नेवाला। **–घुसड़ा,–घुसना**–वि० जो सदा घरमें घुसा, जनानखानेमें बैठा रहे। **–जँवाई**–पु० वह दामाद जिसे सास-ससुर अपने घर रख लें। **–जाया**–पु० गुलाम, गृहदास। **–जोत**–स्त्री० निजकी खेती, खुदकाश्त। **–दासी**–स्त्री० गृहिणी, पत्नी। **–द्वार**–पु० घर, वासस्थान; घरकी चीज-वस्तु, माल-असबाब; गृहस्थी। **–फोड़नी**–वि० स्त्री० घरमें झगड़ा लगानेवाली। **–फोरी***–वि० दे० 'घरफोड़नी'। **–बसा**–वि० दे० 'घर-घुसना'। पु० उपपति। **–बसी**–स्त्री० उपपत्नी। वि० स्त्री० सौभाग्यवती; घर बसानेवाली; घरका नाश करनेवाली (व्यंग्य)। **–बार**–पु० घर, वासस्थान; गृहस्थी; बाल-बच्चे; घरकी चीज-वस्तु, माल-असबाब। **–बारी**–पु० बाल-बच्चोंवाला, गृहस्थ। **–बैठे**–अ० बिना काम किये। **–बात***–स्त्री० घरका सामान, चीज-वस्तु। **–वाला**–पु० गृहस्वामी, पति। **–वाली**–स्त्री० गृहस्वामिनी, पत्नी। **–हाई***–वि० स्त्री० घरमें कलह कराने, घर बिगाड़नेवाली। **मु०–आबाद होना**–दे० 'घर बसना'। **–उजड़ना**–घरका तबाह होना, घरके धन-जनका नाश होना। **–करना**–अपने लिए जगह निकालना; बसना; घर बनाना। **–का अच्छा**–खुशहाल। **–का आँगन हो जाना**–खँडहर हो जाना; संतान उत्पन्न होना। **–का उजाला**–घरभरका प्यारा, बहुत सुंदर (बेटा); घरकी समृद्धिका कारण। **–का काटे खाना**–घरका भयानक लगना। **–का चिराग़**–दे० 'घरका उजाला'। **–का न घाटका**–जो कहींका न हो; निकम्मा। **–का बोझ उठाना,–सँभालना**–घरका काम-काज देखना, घर-बार सँभालना। **–का भेदिया,–का भेदी**–घरके सब भेद जाननेवाला। **–का मर्द,–का शेर**–जो घरमें ही बहादुरी दिखा सके, गेहेशूर। **–की खेती**–अपने यहाँ पैदा होनेवाली चीज; अपना माल। **–की बात**–घरका मामला; स्वजनोंसे संबंध रखनेवाली बात; घरका भेद। **–की मुर्गी दाल बराबर**–घरकी अच्छी चीजकी भी कद्र नहीं होती। **–के घर रहना**–किसी सौदे या रोजगारमें न घाटा होना, न नफा। **–के लोग**–कुटुंबी; स्त्री-बच्चे। **–घरका हो जाना**–तितर-बितर हो जाना, मारे-मारे फिरना। **–घालना**–घर बिगाड़ना; घरकी प्रतिष्ठा नष्ट करना। **–जमना**–गृहस्थी ठीक होना। **–डूबना**–घर तबाह होना। **–तक पहुँचना**–बाप-दादा बखानना; माँ-बहिनकी गाली देना। **–देख लेना**–बार-बार कुछ माँगने आना, परच जाना। **–फूँक तमाशा देखना**–घरको बरबाद कर, घरकी दौलत लुटाकर, मौज करना। **–फोड़ना**–घरमें फूट डालना, झगड़ा लगाना। **–बसना**–घरका आबाद होना; घरमें स्त्रीका आना, ब्याह होना। **–बसाना**–घरको आबाद कराना; शादी करा देना। **–बिगाड़ना**–घरको बिगाड़ना, बर्बादीकी ओर ले जाना; घरमें फूट डालना। **–बेचिराग़ हो जाना**–कोई नाम-लेवा न रह जाना। **–बैठना**–बाहर निकलना बंद कर देना; एकांतवासी होना; नौकरी छोड़ देना; (वर्षासे) मकानका ढह जाना। **(किसीके)–बैठना**–किसीकी पत्नी या रखेली बनना। **–बैठी रोटी**–घर बैठे मिलनेवाली रोजी, पेंशन। **–भरना**–घरका धन-जनसे भरा होना; घरको धन-धान्यसे भरना; धन जोड़ना; माल जमा करना। **–भाँय-भाँय करना**–सूनेपनके कारण घरका डरावना लगना। **–में**–पत्नी या पति (बो०)। **–में डालना**–रखेली बना लेना। **–सिरपर उठा लेना**–बहुत शोर, ऊधम मचाना। **–से**–पाससे, गाँठसे। **–सेना**–बेकार बैठे रहना। **–से पाँव निकालना**–कुल-मर्यादाका अतिक्रमण करना, स्वच्छंदाचारी हो जाना।

घरघराना–अ० क्रि० 'घर-घर'की आवाज निकलना।

घरघराहट–स्त्री० 'घर-घर'की आवाज; गलेमें कफ होनेपर साँस लेनेमें होनेवाली आवाज।

घरणी–स्त्री० [सं०] दे० 'घरनी'।

घरनाल–स्त्री० एक तरहकी पुरानी तोप।

घरनी–स्त्री० गृहिणी, पत्नी।

घरम*–पु० दे० 'घर्म'। **–कर**–पु० सूर्य।

घरयार*–पु० दे० 'घड़ियाल'।

घररना–अ० क्रि० रगड़ खाना, घिसना।

घरसा*–पु० दे० 'घिस्सा'।

घरा*–पु० दे० 'घड़ा'।

घंराऊ–वि० घरू, घरेलू।

घराती–पु० कन्यापक्षका आदमी, 'बराती'का उलटा।

घराना–पु० कुल, वंश।

घरिआ(या)र†–पु० दे० 'घड़ियाल'।

घरिया–स्त्री० दे० 'घड़िया'।

घरियाना†–स० क्रि० घरी लगाना, तह करना।

घरियारी*–पु० घंटा बजानेवाला।

घरी†–स्त्री० दे० 'घड़ी'; छोटा घड़ा; घड़िया; तह, लपेट।

घरीक*–अ० घड़ीभर, छनभर।

घरुआ(वा)†–पु० घरका अच्छा प्रबंध; चश्मा आदि रखनेका डिब्बा।

घरू–वि० घरका, खानगी।

घरेलू–वि० घरका; घरसे संबंध रखनेवाला; पालतू।

घरैया†–पु० स्वजन। वि० घरका; घनिष्ठ संबंधवाला।

घरौंदा(धा)–पु० खेलनेके लिए बच्चोंका बनाया हुआ मिट्टीका नन्हासा घर।

घरौना–पु० घर; घरौंदा।

घर्म–पु० [सं०] धूप, घाम; ग्रीष्मकाल; पसीना; पतीली। **–चर्चिका,–विचर्चिका**–स्त्री० घमौरी, अम्हौरी। **–जल,–वारि**–पु० पसीना। **–बिंदु**–पु० श्रमसीकर।

घर्मांत–पु० [सं०] वर्षा ऋतुका आरंभ; वर्षाकाल।

घर्मांबु–पु० [सं०] पसीना।

घर्मांशु–पु० [सं०] सूर्य।

घर्मोदक–पु० [सं०] पसीना।

घर्राटा–पु० खर्राटा (भरना)।

घर्षक–पु० [सं०] घिसनेवाला; पालिश करनेवाला ।

घर्षण–पु० [सं०] घिसना, रगड़ना; माँजना; पीसना ।

घलना–अ० क्रि० मारा, फेंका जाना (तीर आदिका); मार-पीट हो जाना ।

घलाघल(ली)*–स्त्री० परस्पर आघात, मारपीट ।

घलुआ†–पु० घाल, घाता ।

घवद*–स्त्री० दे० 'घौद' ।

घवरि*–स्त्री० दे० 'घौर' ।

घसकना†–अ० क्रि० खिसकना ।

घसखुदा–पु० घास छीलनेवाला ।

घसना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'घिसना' ।

घसिटना–अ० क्रि० घसीटा जाना ।

घसियारा–पु० घास खोदने, बेचनेवाला; तुच्छ आदमी ।

घसियारिन, घसियारी–स्त्री० घास खोदने, बेचनेवाली स्त्री ।

घसीट–स्त्री० घसीटनेका भाव; जल्दीमें लिखे हुए अक्षर जिनकी शुद्धि और सुंदरताका खयाल न रखा गया हो, शिकस्त लिखावट ।

घसीटना–स० क्रि० किसी चीजको इस तरह खींचना कि वह जमीनसे रगड़ खाती हुई खिंचे; किसीको किसी मामलेमें उसकी इच्छाके विरुद्ध शामिल करना; जल्दी-जल्दी, घसीट लिखावट लिखना ।

घहनाना–अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहरना–अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहराना–अ० क्रि० गरजना, गड़गड़ाना ।

घहरानि*–स्त्री० घहरानेका भाव; गर्जन; गंभीर ध्वनि ।

घहरारा*–पु० घहरानेकी ध्वनि, गर्जन । वि० गरजनेवाला ।

घहरारी*–स्त्री० दे० 'घहरानि' ।

घाँ*–स्त्री० ओर, तरफ, दिशा ।

घाँघरा–पु० लहँगा; बोड़ा, लोबिया ।

घाँघरी–स्त्री० दे० 'घाँघरा' ।

घाँटी†–स्त्री० गलेके अंदरकी घंटी, कौआ ।

घाँह, घाँही*–स्त्री० ओर, तरफ ।

घा*–स्त्री० ओर, तरफ ।

घाइ*–स्त्री० दे० 'घाव' ।

घाइल*–वि० दे० 'घायल' ।

घाई*–स्त्री० ओर, तरफ; दो वस्तुओंके बीचकी जगह, संधि; भँवर; बार, दफा ।

घाई–स्त्री० दो उँगलियोंके बीचकी जगह, अंटी; * धोखा; दे० 'घाव' ।

घाउ*–पु० दे० 'घाव' ।

घाऊघप–वि० दूसरेका माल-जमा चुपचाप डकार जानेवाला; जिसका भेद जल्दी न खुले, भारी चंट ।

घाघ–पु० भोजपुरी बोलीके एक कवि जिनकी कृषिकर्म, नीति आदि विषयकी कहावतें बहुत प्रसिद्ध हैं; बहुत चालाक आदमी, काइयाँ; जादूगर ।

घाघरा–पु० लहँगा । स्त्री० सरयू नदी ।

घाट–पु० [सं०] नाव आदिसे उतरनेका स्थान; [हिं०] नदी, झील आदिमें वह स्थान जहाँ लोग नहायें-धोयें, जानवर पानी पियें, धोबी कपड़ा धोयें; वह स्थान जहाँसे नदी हलकर पार की जाये; पहाड़पर चढ़ने या उसके पार जानेका रास्ता; पहाड़; नाव या पुलकी उतराई, महसूल; ओर, तरफ; तलवारका बाढ़से ऊपरका भाग; रंग-ढंग, चाल-ढाल । * वि० न्यून, कम, थोड़ा । † स्त्री० कपट; कुकर्म । **–कपतान**–पु० बंदरगाहका बड़ा अफसर । **–बंदी**–स्त्री० नाव खोलनेकी मनाही । **–वाल**–पु० घाटिया, गंगापुत्र । **मु०–घाटका पानी पीना**–जगह-जगह फिरना, भटकना; बहुतेरेकी बीवी बनना । **–धरना**–राह छेंकना । **–नहाना**–जिस घाट या तालाब आदिपर प्रेतकर्म किया जा रहा हो वहाँ नहाकर तिलांजलि देना । **–मारना**–घाटका महसूल, उतराई न देना ।

घाटा–पु० टोटा, घटी, नुकसान । **–(टे)का आयव्ययक**–पु० (डेफिसिट बजट) वह आयव्ययक जिसमें आयसे व्यय अधिक दिखाया गया हो ।

घाटारोह*–पु० घाटका अवरोध, घाटबंदी, घाटसे किसीको उतरने न देना ।

घाटि*–वि० कम, न्यून । स्त्री० नीच कर्म; बुराई; कपट ।

घाटिया–पु० घाटपर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण ।

घाटी–स्त्री० दो पहाड़ोंके बीचकी नीची जमीन, मैदान; दर्रा; पहाड़का ढाल । **–मार्ग**–पु० (गॉर्ज) पहाड़ियोंके बीचमें नदीकी धारा आदि द्वारा बनाया हुआ संकीर्ण पथ ।

घात–पु० [सं०] चोट, आघात, प्रहार; वध, हत्या; अहित; गुणनफल; * टक्कर ।

घात–स्त्री० कार्यसिद्धिका अच्छा अवसर, ताक; दाँव-पेंच; छल; चाल । **मु०–पर चढ़ना, –में आना**–वशमें आना, दाँवपर चढ़ना । **–में फिरना**–ताकमें घूमना । **–में बैठना**–आक्रमण आदि करनेके लिए छिपकर बैठना । **–में रहना**–किसीके खिलाफ कोई काम करनेका मौका ढूँढ़ते रहना । **–लगना**–अच्छा मौका मिलना । **–लगाना**–ताकमें बैठना; आक्रमण आदिके अवसरकी खोजमें रहना ।

घातक–वि० [सं०] घात करनेवाला; कतल करनेवाला, हत्यारा; हानिकर । पु० घात करनेवाला व्यक्ति ।

घातकी–वि० दे० 'घातक' ।

घाता–पु० घलुआ, घाल ।

घाती(तिन्)–वि० [सं०] घात करनेवाला; नाशक ।

घाती–वि० घातमें रहनेवाला; छली, विश्वासघाती ।

घान–पु० उतना अनाज जितना एक बार पीसनेके लिए चक्कीमें डाला जाय; उतना तेलहन जितना एक बार कोल्हूमें डाला जाय; उतनी चीज जितनी एक बार भाड़में भूनी या कड़ाहमें एक बार छानी जाय; आघात, चोट ।

घाना*–स० क्रि० मारना; नष्ट करना; पकड़ना । पु० प्रहार; युद्ध ।

घानी–स्त्री० घान; ढेर ।

घाम–पु० धूप; पसीना । **–निधि***–पु० सूर्य ।

घामड़–वि० मूर्ख; आलसी; धूपका सताया हुआ (पशु) ।

घाय*–पु० दे० 'घाव' ।

घायक*–वि० नाश करनेवाला ।

घायल–वि० जो चोट खाये हो, जख्मी, क्षतयुक्त, आहत ।

घाल–पु० ग्राहकको तौल या गिनतीके ऊपर दी जानेवाली चीज, घलुआ । **मु०–न गिनना**–कुछ न समझना ।

घालक*–वि० मारनेवाला; नाश करनेवाला।

घालकता*–स्त्री० विनाशका काम।

घालना*–स० क्रि० नाश करना; बिगाड़ना; फेंकना; प्रहार करना, मारना; (हथियार) डालना, रखना; करना।

घाल मेल–वि० गड्ड-मड्ड, खल्त-मल्त (करना, होना)।

घालिका, घालिनी*–स्त्री० नाश करनेवाली, घातिनी।

घाव–पु० चोट, आघात; व्रण, क्षत। **मु०–पर नमक छिड़कना**–दुःखकी हालतमें कष्ट देना।

घावरिया*–पु० जर्राह, घावका इलाज करनेवाला।

घास–स्त्री० [सं०] खाद्य पदार्थ; मैदानमें उगनेवाला दूबकी जातिका चौपायोंका एक चारा, तृण। **–स्थान**–पु० चरागाह। **–पात, –फूँस**–पु० [हिं०] खर-पतवार; कूड़ा-करकट। **मु०–काटना, –खोदना, –छीलना**–तुच्छ, निरर्थक काम करना। **–खाना**–पशुतुल्य होना; घोर मूर्खताका परिचय देना।

घासलेट–पु० मिट्टीका तेल; तुच्छ वस्तु।

घासलेटी–वि० निकृष्ट; निकम्मा; गंदा।

घासी*–स्त्री० घास।

घाह*–पु० दे० 'घाई'।

घिअ, घिउ†–पु० घी।

घिग्घी–स्त्री० अधिक भयके कारण मुँहसे बोल न निकलना; रोते-रोते साँस रुकने लगना, हिचकी (बँधना)।

घिघियाना–अ० क्रि० रोते हुए बिनती करना, गिड़गिड़ाना।

घिचपिच–स्त्री० थोड़ी जगहमें अधिक चीजों, आदमियोंका जमा हो जाना, भीड़; जगहकी कमी; आगा-पीछा। वि० मिला-जुला; अस्पष्ट, गिचपिच (लिखावट)।

घिचपिचाना–अ० क्रि० आगा-पीछा करना; सिटपिटाना।

घिन–स्त्री० घृणा, नफरत।

घिनाना–अ० क्रि० घृणा करना।

घिनौना–वि० घिन उपजानेवाला, घृणित।

घिन्नी–स्त्री० दे० 'गिन्नी'; दे० 'घिरनी'।

घिय†–पु० घी।

घियाँड़ा–पु० घी रखनेका मिट्टीका बरतन, घृतपात्र।

घिया–पु० कद्दू, लौकी; नेनुआँ। **–कश**–पु० कद्दूकश। **–तरोई, –तुरई, –तोरई, –तोरी**–स्त्री० एक बेल जिसके फल तरकारीके काम आते हैं; नेनुआँ; सतपुतिया।

घिरत, घिरित*–पु० दे० 'घृत'।

घिरना–अ० क्रि० घेरेमें आना, घेरा जाना; छाना, फैलना।

घिरनी–स्त्री० कुएँसे पानी खींचनेकी चरखी; रस्सी बटनेकी चरखी; एक जलपक्षी; लोटन कबूतर। **–दार विमान**–पु० (जाइरोप्लेन) ऊपरकी ओर लगी हुई घिरनियोंकी सहायतासे आकाशमें उठनेवाला विमान।

घिरवाना–स० क्रि० घेरनेका काम कराना; एकत्र कराना।

घिराई–स्त्री० घेरनेकी क्रिया; पशुओंको चरानेका काम या उसकी मजदूरी।

घिराव–पु० घेरनेकी क्रिया या भाव; घेरा।

घिरावना*–स० क्रि० दे० 'घिरवाना'।

घिरिनपरेवा–पु० गिरहबाज कबूतर।

घिरिया–स्त्री० शिकार घेरनेके लिए बनाया हुआ आदमियोंका घेरा।

घिर्री–स्त्री० (पुली) (लकड़ी या) लोहेका बना हुआ पहिया जिसका घेरा नालीदार होता है और जो सुगमतापूर्वक स्वतंत्रतासे घूम सकता है, घिरनी।

घिव†–पु० घी।

घिसघिस–स्त्री० देर, ढिलाई; अनिश्चय।

घिसना–स० क्रि० किसी चीजको किसी कड़ी चीजपर इस तरह रगड़ना कि उसका कुछ अंश कटता जाय (पत्थर, चंदन घिसना)। अ० क्रि० रगड़से कटना, छीजना।

घिसपिस†–स्त्री० घिसघिस; सट्टा-बट्टा।

घिसवाना–स० क्रि० 'घिसना'का प्रेरणार्थक।

घिसाई–स्त्री० घिसनेकी क्रिया या भाव; घिसनेकी उजरत; घिसनेसे नष्ट हुआ अंश।

घिसाना–स० क्रि० 'घिसना'का प्रेरणार्थक।

घिसाव–पु०, **घिसावट**–स्त्री० घिसनेका भाव, रगड़, छीज।

घिस्सा–पु० रगड़; एक पतंगकी डोरसे दूसरे पतंगकी डोरकी रगड़; धक्का; कुश्तीमें प्रतिस्पर्द्धीकी गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीकी रगड़, रंदा।

घींच*–स्त्री० गरदन।

घी–पु० दूधकी चिकनाई जो उससे अलग कर ली गयी हो; गलाया हुआ मक्खन। **मु०–के दिये (चिराग़) जलना**–मुराद पूरी होना, बहुत आनंद होना। **–के दिये (चिराग़) जलाना**–मनोकामना पूरी होनेपर खुशी मनाना, उत्सव मनाना।

घीकुआ(वा)र–पु० ग्वारपाठा, घृतकुमारी।

घीया–पु० दे० 'घिया'। **–पत्थर**–पु० गोरापत्थर।

घीसा*–पु० रगड़।

घुँइयाँ–स्त्री० अरुई नामक कन्द।

घुँघची–स्त्री० एक बेल; उसका लाल या सफेद बीज, गुंजा।

घुँघनी–स्त्री० उबाला या भिगोकर तला हुआ चना आदि।

घुँघरारा*–वि० दे० 'घुँघराला'।

घुँघराला–वि० बल खाया हुआ, छल्लेदार (केश), कुंचित।

घुँघरू–पु० चाँदी, पीतल आदिका गोल, पोला दाना जिसके भीतर प्रायः कंकड़ी भरी होती है और हिलनेसे बजता है, मंजीर; ऐसे दानोंका बना हुआ पाँवोंमें पहननेका गहना; घटका। **–दार**–वि० जिसमें घुँघरू लगे हों।

घुँघ(घु)वारा–वि० दे० 'घुँघराला'।

घुंडी–स्त्री० कपड़ेकी गोली जिससे बटनका काम लेते हैं; कड़े, जोशन आदिकी गुहनमें छोरपर बनी हुई गोल, नोकदार गाँठ; एक घास। **–दार**–वि० जिसमें घुंडी बनी हो।

घुआ–पु० दे० 'घूआ'।

घुइँयाँ–स्त्री० एक शाक, अरुई।

घुग्घी–स्त्री० घोघी; पंडुक।

घुग्घू–पु० उल्लू।

घुघरी, घुघुरी–स्त्री० घुँघनी।

घुघुआ–पु० दे० 'घुग्घू'।

घुघुआना–अ० क्रि० उल्लूका बोलना; उल्लूकी तरह बोलना; बिल्लीकी तरह गुर्राना।

घुटकना†–स० क्रि० घूँट-घूँट करके पीना; निगल जाना।

घुटकी–स्त्री० गलेकी वह नली जिससे होकर आहार पेटमें पहुँचता है। **मु०–लगना**–प्राणका कंठगत होना।

घुटना–अ० क्रि० घोंटा जाना; पीसा जाना; घुल-मिल जाना, एक हो जाना; रगड़से चिकना होना; (सिर) मूँड़ा जाना; साँस रुकना, अटकना। मु० **घुट-घुटकर मरना**–घुल-घुलकर, असह्य कष्ट सहते हुए मरना। **घुटा हुआ**–मुँड़ा हुआ; बहुत चालाक, काइयाँ।

घुटना–पु० जाँघ और टाँगके बीचका जोड़। मु०–**(ने) टेकना**–घुटने जमीनसे लगाना; अधीनता स्वीकार करना, पराजय स्वीकार कर लेना। **–(नों)के बल चलना**–बच्चेका बैयाँ-बैयाँ चलना। **–में सिर देना**–सोचमें बैठना, चिंतित, उदास होना; लज्जित होना। **–से लगकर बैठना**–हरदम पास रहना, सटे रहना।

घुटन्ना–पु० घुटनेतकका पाजामा, निकर।

घुट(टु)रू*–पु० घुटना।

घुटवाना–स० क्रि० पिसवाना; रगड़वाना; सिर मुँड़ाना।

घुटाई–स्त्री० घोंटनेकी क्रिया या भाव; घोंटनेकी उजरत।

घुटाना–स० क्रि० 'घोंटने'का प्रेरणार्थक।

घुटी*–स्त्री० दे० 'घुट्टी'; घूँट।

घुटुरुअ(व)न, घुटुरुन*–अ० घुटनोंके बल (चलना)।

घुट्टी–स्त्री० शिशुको पिलायी जानेवाली रेचक-पाचक दवा।

घुड़–पु० 'घोड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप। **–चढ़ा**–वि० घोड़सवार। पु० घोड़सवारीका एक स्वाँग। **–चढ़ी**–स्त्री० ब्याहकी एक रीति, वरका घोड़ेपर चढ़कर वधूके घर जाना; देहाती या छोटे-मोटे बाजारमें रहनेवाली वेश्या जो प्रायः जाड़ेके दिनोंमें घोड़ेपर चढ़कर गाँव-गाँव घूमकर नाचती-गाती है; घुड़नाल। **–दौड़**–स्त्री० घोड़ोंकी दौड़; घोड़ोंकी वह दौड़ जो शर्त या बाजी बदकर की जाय; उछल-कूद। **–नाल**–स्त्री० घोड़ेपर ढोयी जानेवाली हलकी तोप। **–सवार**–पु० अश्वारोही। **–सार,–साल**–स्त्री० अस्तबल, अश्वशाला।

घुड़कना–स० क्रि० धमकीके स्वरमें डाँटना, डपटना।

घुड़की–स्त्री० घुड़कनेकी क्रिया या भाव; धमकी भरी डाँट।

घुड़ला–पु० छोटा घोड़ा; घोड़ेकी शकलका खिलौना।

घुड़िया–स्त्री० दे० 'घोड़िया'।

घुणाक्षर–पु० [सं०] घुनोंके खानेसे लकड़ीमें या दीमकके चाटनेसे पुस्तकमें बनी हुई लकीर। **–न्याय**–पु० किसी बातका बिना प्रयत्नके, संयोगवशात् हो जाना।

घुन–पु० अनाज, लकड़ी आदिमें लगनेवाला छोटा कीड़ा। मु०–**झड़ना**–घुन लगी हुई लकड़ीके चूरका छन-छनकर गिरना। **–लगना**–अनाज आदिका घुन द्वारा खाया जाना; ऐसा रोग लगना जो भीतर-भीतर देहको खा जाय।

घुनघुना–पु० लकड़ी, टीन आदिका बजनेवाला खिलौना।

घुनना–अ० क्रि० लकड़ी, अनाज आदिको घुन लगना।

घुन्ना–वि० चुप्पा, अपने मनके भावोंको गुप्त रखनेवाला।

घुमक्कड़–वि० बहुत घूमनेवाला, सैरसपाटेका शौकीन।

घुमटा–पु० सिरका चक्कर।

घुमड़ना–अ० क्रि० बादलोंका इधर-उधरसे आकर जमा होना, छाना।

घुमड़ाना*–अ० क्रि० दे० 'घुमड़ना'।

घुमड़ी–स्त्री० सिरका चक्कर खाना; चक्कर; परिक्रमा।

घुमनी†–स्त्री० पशुओंका एक रोग; घुमड़ी।

घुमरना–अ० क्रि० दे० 'घुमड़ना'; गड़गड़ाना, बहुत जोरसे बजना।

घुमराना–अ० क्रि० दे० 'घुमरना'।

घुमरी†–स्त्री० दे० 'घुमड़ी'; पानीका भँवर; पशुओंका एक रोग, घुमनी।

घुमाना–स० क्रि० फिराना, चक्कर देना; मोड़ना; ऐंठना।

घुमाव–पु० घूमने, घुमानेका भाव; चक्कर, फेरा; रास्तेका मोड़। **–दार**–वि० पेचदार, चक्करदार।

घुम्मरना*–अ० क्रि० दे० 'घुमरना'।

घुरकना*–स० क्रि० दे० 'घुड़कना'।

घुर-घुर–पु० गलेमें कफसंचय होनेसे साँस लेनेमें निकलनेवाली आवाज; बिल्ली, सुअर आदिके गलेकी आवाज।

घुरघुराना–अ० क्रि० गलेसे 'घुर-घुर' आवाज निकालना।

घुरघुराहट–स्त्री० घुर-घुर आवाज निकालनेकी क्रिया या भाव।

घुरना*–अ० क्रि० बजना–'घुरत निसान मृदंग संख धुनि भेरि झाँझ सहनाई'–सू०; दे० 'घुलना'।

घुरबिनिया–स्त्री० घूरपर फेंके हुए दाने या सड़क-गलीमें टूटी-फूटी चीजें इकट्ठी करना; पु० यह काम करनेवाला।

घुर्मित*–वि० दे० 'घूर्णित'।

घुलनशीलता–स्त्री० (साल्यूबिलिटी) किसी द्रव पदार्थमें किसी स्थूल (या अन्य द्रव) पदार्थके घुलमिल जानेका गुण।

घुलना–अ० क्रि० किसी तरल वस्तुमें हल हो जाना, गलकर मिल जाना, गलना; पिघलना, पककर नरम होना; (रोगादिसे) सूखना, क्षीण होना; व्यतीत होना। मु० **घुलकर काँटा होना**–बहुत दुबला हो जाना। **घुल-घुलकर जान देना, मरना**–रोग-शोकसे क्रमशः छीजकर, सूखकर, बहुत दिनोंतक कष्ट उठाकर मरना। **घुल-मिलकर**–प्यार, मुहब्बतके साथ, हिल-मिलकर। **घुला हुआ**–खूब पका हुआ; पिलपिला; बूढ़ा।

घुलवाना–स० क्रि० 'घुलाना' या 'घोलना'का प्रेरणार्थक।

घुलाना–स० क्रि० गलाना, पिघलाना; पिलपिला करना; चुभलाना; (सुरमा, काजल) लगाना, रचाना; बिताना।

घुलावट–स्त्री० नरमी, पिलपिलापन; काजल, सुरमेकी शोभा।

घुल्य–पु० (साल्यूट) वह स्थूल (या द्रव) पदार्थ जो किसी द्रव पदार्थमें डालनेसे उसमें बिलकुल घुलमिल जाय, जैसे नमक जो पानीमें डालनेसे घुल जाता है।

घुवा–पु० दे० 'घूआ'।

घुसना–अ० क्रि० भीतर जाना, दाखिल होना; बलपूर्वक प्रवेश करना; धँसना; किसी काममें दखल देना; दूर हो जाना; ध्यान देना। [**घुस-पैठ**–स्त्री० पहुँच, रसाई।]

घुसवाना–स० क्रि० घुसानेका काम कराना।

घुसाना–सं०क्रि० भीतर पहुँचाना, दाखिल करना; धँसाना।

घुसेड़ना–स० क्रि० भीतर पहुँचाना; धँसाना; ठूँसना।

घूँघट–पु० साड़ी, दुपट्टे या चादरका किनारा जो स्त्री लज्जावश परदेके लिए मुँहपर खींच लेती है, अवगुंठन; बाहरी दरवाजेके पीछेकी दीवार जो आँगनके परदेके लिए बनायी जाती है, गुलाम-गर्दिश; घोड़ेकी आँखपर डालनेका परदा, अँधेरी। मु०–**उठाना,–उलटना**–मुँह खोलनेके लिए घूँघटको ऊपर उठाना, परदा हटाना। **–करना,–**

काढ़ना,-निकालना-साड़ी-दुपट्टे आदिसे मुँहको ढक लेना, परदा करना।

घूँघर-पु० बालोंमें पड़ा हुआ छल्ला। **-वाला**-वि० घुँघराला (बाल)।

घूँघरी*-स्त्री० घुँघरू, नूपुर।

घूँचा-पु० घूँसा।

घूँट-पु० जल या किसी पेय पदार्थकी वह मात्रा जो एक बारमें गलेके नीचे उतारी जा सके; किसी तरल पदार्थकी थोड़ी मात्रा।

घूँटना-स०क्रि० किसी तरल पदार्थको गलेके नीचे उतारना।

घूँटी-स्त्री० बच्चोंकी एक दवा।

घूँसा-पु० प्रहारके लिए बँधी हुई मुट्ठी, मुक्का; ऐसी मुट्ठीका प्रहार। **-(से)बाजी**-स्त्री० घूँसोंकी लड़ाई।

घूआ-पु० काँस, सरकंडे आदिका रुई जैसा फूल; कीचड़में रहनेवाला एक कीड़ा; चूल अटकानेका छेद।

घूघ-पु० युद्धमें सिरके रक्षार्थ पहनी जानेवाली लोहे या पीतलकी बनी टोपी, शिरस्त्राण; † घूँघट।

घूघू*-पु० दे० 'घुग्घू'।

घूटना*-स० क्रि० दे० 'घूँटना'।

घूम-स्त्री० घुमाव, मोड़; घेरा। **-घुमारा**-वि० घेरदार; मतवाला; उनींदा। **-घुमाव**-वि० चक्करदार।

घूमना-अ० क्रि० फिरना, चक्कर खाना; एक धुरीके चारों ओर चक्कर खाना; भ्रमण करना; मुड़ना; लौटना; * उन्मत्त होना।

घूमनि*-स्त्री० घेरा।

घूर-पु० दे० 'घूरा'।

घूरना-अ०क्रि०, स०क्रि० आँखें गड़ाकर, तीखी निगाहसे देखना; काम या क्रोधभरी दृष्टिसे देखना।

घूरा-पु० कूड़ा-करकट फेंकनेकी जगह; कूड़े-करकटका ढेर।

घूर्णन-पु०, **घूर्णना**-स्त्री० [सं०] घूमना, चक्कर खाना।

घूर्णित-वि० [सं०] घूमता हुआ, भ्रमित; घुमाया हुआ। **-जल**-पु० भँवर। **-वात**-पु० बवंडर।

घूस-स्त्री० वह धन या वस्तु जो अपने अनुकूल, पर अनुचित, अवैध कार्य करानेके लिए किसीको दी जाय, रिश्वत (खाना, देना, लेना)। पु० एक तरहका बड़ा चूहा। **-खोर**-वि० घूस खानेवाला।

घृणा-स्त्री० [सं०] घिन, नफरत; बीभत्स रसका स्थायी भाव; दया, करुणा।

घृणालु-वि० [सं०] दयालु।

घृणास्पद-वि० [सं०] घृणा करने योग्य।

घृणित-वि० [सं०] घृणा करने योग्य; निंदित, गर्हित।

घृणी(णिन्)-वि० [सं०] घृणा करनेवाला; दयालु; दीप्त।

घृण्य-वि० [सं०] घृणा करने योग्य, घृणापात्र।

घृत-पु० [सं०] घी।

घृताहुति-स्त्री० [सं०] घीकी आहुति।

घेघा-पु० गलेका एक रोग, गलगंड।

घेड़ौँची-स्त्री० दे० 'धड़ौंची'।

घेर-पु० घेरा, फैलाव; घेरने-फैलनेकी क्रिया। **-घार**-पु० घेरना, सब ओरसे जमना, इकट्ठा होना (बादलोंका घेरघार); कार्यविशेषके लिए अनुनय-विनय, अति आग्रह। **-दार**-वि० बड़े घेरेवाला; चौड़ा।

घेरना-स० क्रि० आवेष्टित करना; अवरोध करना; रोकना; छेंकना; रूँधना; किसी कामके लिए किसीके यहाँ बार-बार जाना; चराना (ढोर); ग्रस्त करना।

घेरा-पु० विस्तार, फैलाव; परिधिका मान; घेरनेवाली चीज, दीवार आदि; घिरा हुआ स्थान; अवरोध।

घेराई-स्त्री० दे० 'घिराई'।

घेराव-पु० दे० 'घिराव'।

घेवर-पु० मैदे, घी, चीनीके योगसे बनी हुई एक मिठाई।

घैया-स्त्री० थनसे निकलती हुई दूधकी धार; ताजा दूधके ऊपरका मक्खन; इस तरहका मक्खन एकत्र करनेका काम।

घैर, घैरु*-पु० बदनामी; चुगली।

घैला†-पु० घड़ा, कलसा।

घैहा*-पु०घायल व्यक्ति-'घूमन लगे समरमें घैहा'-छत्र०।

घोंघा-पु० शंखकी जातिका एक कीड़ा, शंबुक; गेहूँकी बालका कोश जिसमें दाना रहता है। वि० मूर्ख, बेवकूफ; खोखला, निःसार। **-बसंत**-वि० महामूर्ख।

घोंचवा-पु० वह बैल जिसके सींग नीचेकी तरफ मुड़े हों।

घोंचा-पु० घौद, गुच्छा।

घोंचुआ*-पु० दे० 'घोंसला'।

घोंटना-स० क्रि० घूँटना; गलेको इस तरह दबाना कि साँस रुक जाय; हजम करना; रगड़ना, पीसना; रटना।

घोंपना-स०क्रि० भोंकना, घुसेड़ना; चलती सिलाई करना।

घोंसला-पु० वृक्षादिपर तृणादिका बना हुआ पक्षीके रहनेका स्थान, नीड़, खोता।

घोंसुआ*-पु० दे० 'घोंसला'।

घोखना-स० क्रि० याद करनेके लिए बार-बार पढ़ना, रटना।

घोखवाना, घोखाना-स० क्रि० 'घोखना'का प्रे०, रटाना।

घोघी†-स्त्री० लबादेकी तरह ओढ़ा हुआ कंबल, बोरा आदि।

घोट, घोटक-पु० [सं०] घोड़ा।

घोटना-स० क्रि० रगड़कर बारीक करना (भाँग); रगड़कर चिकना करना (तख्ती, कागज इत्यादि); हल करना, मूँड़ना (बाल); अभ्यास करना; घोंटना। पु० घोटनेका औजार।

घोटवाना-स० क्रि० 'घोटना'का प्रेर०, घोटनेका काम कराना।

घोटा-पु० घोटनेका साधन; भाँग घोटनेका सोंटा; घुटा हुआ चमकीला कपड़ा; पशुओंको दवा आदि पिलानेका बाँसका चोंगा; डाक चमकीला करनेका एक औजार; घुटाई।

घोटाई-स्त्री० घोटनेकी क्रिया या भाव; घोटनेकी उजरत।

घोटाला-पु० घपला, गोलमाल, गड़बड़।

घोड़-पु० घोड़ा (केवल समासमें व्यवहृत)। **-चढ़ा; -दौड़; -मुँहा; -साल**-दे० 'घुड़चढ़ा'; 'घुड़दौड़'; 'घुड़मुँहा'; 'घुड़साल'।

घोड़ा-पु० एक चौपाया जो गधेसे बड़ा होता है और सवारी आदिके काम आता है, अश्व, तुरंग; बंदूक, तमंचेका खटका जिसे दबानेसे वह दगता है; शतरंजका एक मोहरा; खूँटी; छज्जेके नीचे दीवारमें लगाया जानेवाला

लकड़ी आदिका टोड़ा । **–गाड़ी**–स्त्री० वह गाड़ी जिसमें घोड़ा या घोड़े जोते जायँ । **–नस**–स्त्री० एड़ीसे ऊपरकी ओर जानेवाली मोटी नस । **–बाँस**–पु० एक तरहका बाँस । **मु०–उड़ाना**–घोड़ेको सरपट दौड़ाना । **–कसना**–घोड़ेपर जीन या चारजामा कसना । **–डालना,–फेंकना**–घोड़ेको किसी दिशामें तेजीसे दौड़ाना । **–फेरना**–घोड़ेको सधाना, सवारी या गाड़ीके लायक बनाना । **–बेचकर सोना**–बेफिक्र होकर सोना, खुर्राटे भरना । **–पर चढ़ आना**–लौटनेकी जल्दी मचाना ।

घोड़िया–स्त्री० छोटा घोड़ा; कपड़े टाँगनेकी खूँटी ।

घोड़ी–स्त्री० घोड़ेकी मादा; पाटा; ब्याहमें दुलहेका घोड़ीपर चढ़कर दुलहिनके घर जाना; ब्याहमें वरपक्षकी ओरसे गाये जानेवाले गीत; जुलाहोंका एक औजार; धोबियोंकी अलगनी; पानीके घड़े रखनेके लिए खंभोंके सहारे लगायी हुई पटरी ।

घोर–वि० [सं०] डरावना, भयानक; घन, निबिड़; गाढ़ा, गहरा; कठिन, कठोर; भारी; बुरा । *स्त्री० ध्वनि, शब्द; पु० मट्ठा; जोर ।

घोरना*–स० क्रि० घोलना । अ० क्रि० गर्जन करना ।

घोरा*–पु० घोड़ा; खूँटा; टोड़ा ।

घोरिया†–स्त्री० दे० 'घोड़िया' ।

घोरिला*–पु० बच्चोंके खेलनेका मिट्टीका बना घोड़ा; घोड़े जैसे मुँहवाला खूँटा ।

घोल–पु० [सं०] बिना पानी डाले मथा हुआ दही; लस्सी; मट्ठा; घोलकर बनायी हुई चीज, द्रावण (सोल्यूशन) ।

घोलक–पु० (सालवेंट) जो घुला दे, घुला देनेवाला; वह द्रव-पदार्थ (पानी, मद्यसार आदि) जिसमें डालनेसे कोई स्थूल (या द्रव) पदार्थ बिलकुल घुल-मिल जाय ।

घोलना–स० क्रि० किसी चीजको पानी आदिमें इस तरह मिलाना कि वह उसमें घुल जाय ।

घोष–पु० [सं०] ध्वनि; घोषणा; अफवाह; बादलकी गरज; अहीरोंका गाँव, बस्ती; चरवाहा, ग्वाला; मच्छड़; नारा; वर्णोंके उच्चारणके बाह्य प्रयत्नोंमेंसे एक; तट; तालका एक भेद; बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; शिव; * गोशाला ।

घोषक–पु० [सं०] घोषणा, मुनादी करनेवाला ।

घोषण–पु०, **घोषणा**–स्त्री० [सं०] जोरसे बोलकर जताना, मुनादी या एलान करना; ध्वनि ।

घोषवती–स्त्री० [सं०] वीणा ।

घोसना*–स्त्री० दे० 'घोषणा' । स० क्रि० घोषित करना ।

घोसी–पु० अहीर; मुसलमान अहीर ।

घौँर, घौँरा–पु० दे० 'घौद' ।

घौद–पु० फलोंका गुच्छा ।

घौर, घौरा–पु०, **घौरी**–स्त्री० दे० 'घौद'–'काहु गही केराकै घौरी'–प० ।

घ्राण–पु० [सं०] गंध; सूँघना; सूँघनेकी शक्ति; नाक ।

घ्राणेंद्रिय–स्त्री० [सं०] नाक ।

घ्रातव्य–वि० [सं०] सूँघने योग्य ।

ङ

ङ–व्यंजन वर्णका पाँचवाँ और कवर्गका अंतिम अक्षर ।

ङ–पु० [सं०] इंद्रिय-विषय; विषयेच्छा ।

च

च–देवनागरी वर्णमालाका छठा व्यंजन ।

चंक*–वि० समूचा । पु० उत्तर भारतका एक उत्सव ।

चंक्रम, चंक्रमण–पु० [सं०] घूमना; टहलना; कूदना ।

चंक्रमित–वि० [सं०] घूमा या चक्कर खाया हुआ ।

चंग–वि० [सं०] स्वस्थ; सुंदर; चतुर । पु० [फा०] डफकी शकलका एक बाजा । स्त्री० पतंग ।

चँगना*–स० क्रि० खींचना, कसना ।

चंगा–वि० स्वस्थ, नीरोग; निर्मल; भला ।

चंगु*–पु० दे० 'चंगुल' ।

चंगुल–पु० (चिड़ियोंका) पंजा; पकड़, काबू ।

चँगेर(री)–स्त्री० फूल रखनेकी डलिया; छिछली टोकरी; मशक; टोकरीका रस्सीसे बनाया हुआ झूला ।

चँगेरा–पु० दे० 'चँगेर' ।

चंगेरिक–पु०, **चंगेरिका**–स्त्री० [सं०] टोकरी, डलिया ।

चँगेली–स्त्री० दे० 'चँगेरी' ।

चंच–पु० [सं०] टोकरी, डलिया; * स्त्री० चोंच ।

चंचरी(रिन्), चंचरीक–पु० [सं०] भ्रमर ।

चंचरीकावली–स्त्री० [सं०] भ्रमरोंका समूह; एक वर्णवृत्त ।

चंचल–वि० [सं०] एक जगह, एक स्थितिमें न रहनेवाला, अस्थिर; डाँवाडोल; कंपित; चुलबुला, चपल; शोख; कामुक ।

चंचलता–स्त्री० [सं०] अस्थिरता; चपलता ।

चंचलताई*–स्त्री० दे० 'चंचलता' ।

चंचला–स्त्री० [सं०] बिजली; लक्ष्मी; पिप्पली ।

चंचलाई*–स्त्री० चंचलता ।

चंचु–पु० [सं०] एरंड; बरसातमें होनेवाला एक साग, चेंच । स्त्री० चोंच । **–प्रवेश**–पु० किसी विषयका अल्प ज्ञान । **–प्रहार**–पु० ठोरसे मारना ।

चंचुमान्(मत्)–पु० [सं०] पक्षी ।

चँचोरना–स० क्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना ।

चंट–वि० चतुर, चालाक, उस्ताद ।

चंड–वि० [सं०] तीक्ष्ण; उग्र; गरम; हानिकर । **–कर, –दीधित, –भानु**–पु० सूर्य । **–मुंड**–पु० शुंभ-निशुंभके दो सेनापति जो दुर्गाके हाथों मारे गये । **–रश्मि**–पु० सूर्य ।

चंडता–स्त्री० [सं०] उग्रता; तीक्ष्णता ।

चंडांशु–पु० [सं०] सूर्य ।

चंडा–वि० स्त्री० [सं०] उग्र स्वभाववाली, कोपनशीला (स्त्री) । स्त्री० दुर्गा; अष्टनायिकाओंमेंसे एक; एक गंधद्रव्य ।

चंडाई*–स्त्री० उतावली; जोर-जबर्दस्ती।

चंडाल–पु० [सं०] दे० 'चांडाल'।

चंडालिका–स्त्री० [सं०] दुर्गा; एक तरहकी वीणा।

चंडालिनी–स्त्री० चांडाल स्त्री; दुष्टा।

चंडावल–पु० सेनाका पृष्ठभाग; वीर सैनिक; पहरेदार।

चंडि, चंडिका–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

चंडी–स्त्री० [सं०] दुर्गा; उग्र स्वभावकी, कर्कशा स्त्री।

चंडीश–पु० [सं०] शिव।

चंडू–पु० अफीमका किवाम जिसे नशेके लिए तंबाकूकी तरह पीते हैं। **–ख़ाना**–पु० चंडू पीनेका स्थान। (**–ख़ानेकी गप**–झूठी, बेतुकी बात।) **–बाज़**–पु० चंडू पीनेवाला, जिसे चंडू पीनेकी लत हो।

चंडूल–पु० एक चिड़िया; भद्दी शकलका आदमी; भारी मूर्ख।

चंडोल–पु० एक तरहकी पालकी; मिट्टीका एक खिलौना।

चंद–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; पृथ्वीराजके दरबारी कवि चंदबरदाई जो पृथ्वीराजरासोके रचयिता माने जाते हैं। **–बान**–पु० [हिं०] दे० 'चंद्रबाण'।

चंद–वि० [फ़ा०] कुछ, थोड़ेसे, दो-चार। **–रोज़ा**–वि० कुछ ही दिन टिकने, रहनेवाला।

चंदक–पु०[सं०] चंद्रमा; चाँदनी; एक छोटी मछली; सिरपर पहननेका एक गहना।

चंदन–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है, संदल; उसकी लकड़ी; चंदनको घिसकर बनाया हुआ लेप। **–गिरि**–पु० मलयाचल। **–चूर**–पु० [हिं०] दे० 'चंद्रचूड'। **–हार**–पु० दे० 'चंद्रहार'।

चंदना–स्त्री० [सं०] चंदनशारिवा। पु० चंद्रमा।

चँदनौता*–पु० एक तरहका लहँगा।

चँदराना†–अ०क्रि० किसी बातको जानते हुए अनजानकी तरह पूछना।

चँदला–वि० गंजा, खल्वाट।

चँदवा–पु० गद्दी आदिके ऊपर खड़ा किया गया छोटा शामियाना, चँदोवा; गोल चकती; मोरपंखकी चंद्रिका।

चंदा–पु० बहुतोंसे उगहनी करके, थोड़ा-थोड़ा लेकर इकट्ठा किया हुआ धन, बेहरी; सदस्यताका शुल्क; सामयिक पत्र, पुस्तकका वार्षिक, छमाही आदि मूल्य; चाँद। **–मामा, –मामूँ**–पु० चाँद (बच्चोंको बहलानेके लिए कहा जाता है)।

चंदिका–स्त्री० दे० 'चंद्रिका'।

चंदिनि(नी)*–स्त्री० चाँदनी। वि० स्त्री० चाँदनीवाली।

चँदिया–स्त्री० सिरका मध्य भाग, खोपड़ी; † पीछेकी छोटी रोटी; चाँदीकी टिकिया।

चंदेरी–स्त्री० एक प्राचीन नगर। **–पति**–पु० शिशुपाल।

चँदोया†, चँदोवा–पु० दे० 'चँदवा'।

चंद्र–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; जल; सोना; हीरा; चंद्रमा जैसा चिह्न; मोरपंखका अर्द्धचंद्राकार चिह्न; चंद्रबिंदु; (ला०) एककी संख्या; सुंदर, आह्लादजनक वस्तु। **–कर**–पु० चंद्रकिरण, चाँदनी। **–कला**–स्त्री० चंद्रमंडलका १६वाँ भाग; चंद्रमाकी १६ कलाएँ; माथेपर पहननेका एक गहना। **–कांत**–पु० एक मणि जिसके विषयमें प्रसिद्धि है कि चंद्रकिरणके स्पर्शसे वह पसीज जाता है। **–कांता**–स्त्री० चंद्रमाकी पत्नी; रात; चाँदनी। **–कुमार**–पु० चंद्रमाका पुत्र बुध। **–ग्रह; –ग्रहण**–पृथिवीकी छायासे चंद्रमंडलका छिप जाना। **–चूड**–पु० शिव। **–जोत**–स्त्री० [हिं०] चाँदनी; एक आतशबाजी, महताबी। **–धर**–पु० (चंद्रमाको धारण करनेवाले) शिव। **–प्रभा**–स्त्री० चंद्रज्योति, चाँदनी; बकुची; कचूर। **–प्रासाद**–पु० छतपरका कमरा। **–बंधु**–पु० शंख; कुमुद। **–बधूटी***–स्त्री० बीरबहूटी। **–बाण**–पु० वह बाण जिसका फल चंद्राकार हो। **–बिं(बि)दु**–पु० सानुनासिक वर्णके ऊपर लगाया जानेवाला अर्द्धचंद्राकार चिह्न सहित बिंदु। **–बिंब**–पु० चंद्रमंडल। **–भागा**–स्त्री० चनाब नदी। **–भाल, –भूषण**–पु० शिव। **–मंडल**–पु० चंद्रबिंब; चंद्रमाके चारों ओर देख पड़नेवाला घेरा। **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि। **–मुखी**–वि०, स्त्री० चंद्रमा जैसे मुखवाली, विधुवदनी, सुंदरी। **–मौलि**–पु० शिव। **–रेखा, –लेखा**–स्त्री० चंद्रकला; चंद्रकिरण; एक अप्सरा; बाणासुरकी कन्या उषाकी सखी; एक वर्णवृत्त। **–लोक**–पु० चंद्रमाका लोक। **–वंशी, –वंशीय**–वि० चंद्रवंशमें उत्पन्न। **–वदन**–वि० चंद्रमा जैसे मुखवाला। **–वधू**–स्त्री० बीरबहूटी। **–वार**–पु० सोमवार। **–शाला, –शालिका**–स्त्री० चाँदनी; छतके ऊपरका कमरा या बँगला, जिससे चाँदनीका पूरा आनंद लिया जा सके। **–शेखर**–पु० (चंद्रमा है मस्तकमें जिसके) शिव। **–संभव**–पु० बुध। **–सुत**–पु० बुध। **–हार**–पु० एक तरहका कंठहार। **–हास**–पु० तलवार; खड्ग; रावणकी तलवार।

चंद्रक–पु० [सं०] चंद्रमा; चाँदनी; मोरपंखपरका चंद्राकार चिह्न; नाखून; सफेद मिर्च; जल।

चंद्रमा(मस्)–पु० [सं०] सौरमंडलका एक उपग्रह, चाँद, इंदु, सोम। **–ललाम**–पु० [हिं०] शिव।

चंद्रा–स्त्री० [सं०] चँदोवा; छोटी इलायची; गुडुच।

चंद्रातप–पु० [सं०] चाँदनी; चँदोवा, वितान; खुला दालान।

चंद्रात्मज–पु० [सं०] बुध।

चंद्रानना–वि० स्त्री० [सं०] चंद्रमुखी।

चंद्रायण*–पु० चांद्रायण।

चंद्रावली–स्त्री० [सं०] राधाकी एक सखी; एक योगिनी।

चंद्रिका–स्त्री० [सं०] चाँदनी; प्रकाश; मोरपंखकी आँख; बड़ी इलायची; जूही या चमेली; एक गहना, बेंदी।

चंद्रिकोत्सव–पु० [सं०] शरत्पूर्णिमाको मनाया जानेवाला उत्सव।

चंद्रोदय–पु० [सं०] चंद्रमाका उदय; चँदोवा; एक रसौषध।

चंपकली–स्त्री० 'दे० 'चंपाकली'।

चंपई–वि० चंपाके फूल जैसे रंगका। पु० उक्त रंग।

चंपक–पु० [सं०] चंपाका पेड़; उसका फूल; एक राग; चंपाकेला; एक गंधद्रव्य। **–माला**–स्त्री० चंपाके फूलोंकी माला; चंपाकली; एक वर्णवृत्त।

चंपत–वि० चलता, गायब (होना)।

चँपना–अ० क्रि० चाँपा जाना, दबना।

चंपा–पु० एक पुष्पवृक्ष; उसका हलके, पीले रंगका फूल जो अपनी तीव्र गंधके लिए प्रसिद्ध है; एक तरहका मीठा

केला; रेशमके कीड़ेका एक भेद। **–कली**–स्त्री० एक तरहका हार जिसके दाने चंपाकी कलीकेसे होते हैं। **–पुरी**–स्त्री० कर्णकी राजधानी चंपा।

चंपारण्य–पु० [सं०] एक प्राचीन स्थान, चंपारन।

चंपू–पु० [सं०] गद्य-पद्य-मय काव्य।

चंबल–पु० भीख माँगनेका प्याला; पानीकी बाढ़; नहरके किनारे लगी हुई सिंचाईकी लकड़ी।

चँवर–पु० सुरागायकी पूँछके बालोंका गुच्छा। **–ढार**–पु० चँवर डुलानेवाला।

चँवरी–स्त्री०चँवरकी शकलका घोड़ेकी पूँछके बालोंका गुच्छा।

च–पु० [सं०] शिव; चंद्रमा; कछुआ; चबाना; दुर्जन; चोर।

चउपाई*–स्त्री० दे० 'चौपाई'।

चउर*–पु० दे० 'चँवर'।

चउरा–पु० दे० 'चौरा'।

चक–पु० चकवा; चकई नामका खिलौना; पहिया; जमीनका बड़ा खंड; एक अस्त्र, चक्र; छोटा गाँव, पुरवा; एक गहना; आधिक्य; अधिकार। वि० भरपूर; भौचक्का, चकित। **–डोर**–स्त्री० चकईकी डोरी; करघेकी डोरी जिसमें बेसर बँधी होती है। **–फेरी**–स्त्री० परिक्रमा। **–बंदी**–स्त्री० जमीनका बड़े-बड़े टुकड़ोंमें बँटवारा। **–बस्त**–वि० चकोंमें बँटा हुआ। पु० कश्मीरी ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

चकई–स्त्री० मादा चकवा; घिरनीके आकारका एक खिलौना।

चकचकाना–अ० क्रि० रसना; गीला होना।

चकचाना*–अ० क्रि० चौंधियाना।

चकचाव*–पु० चकाचौंध।

चकचून, चकचूर*–वि० पिसा हुआ, चकनाचूर।

चकचूरना*–स० क्रि० चकनाचूर करना।

चकचोही*–वि० स्त्री० चिकनी-चुपड़ी।

चकचौंध–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौंधना–अ० क्रि० चौंधियाना। स० क्रि० आँखोंमें चकाचौंध पैदा करना।

चकचौंधी, चकचौंह–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौहना–स० क्रि० आशाभरी दृष्टिसे देखना।

चक़ता–पु० दे० 'चकत्ता'।

चकताई*–पु० दे० 'चगताई'।

चकती–स्त्री० कपड़े या चमड़े आदिका छोटा टुकड़ा जो दूसरे कपड़े या चमड़े आदिमें जोड़की तरह लगाया गया हो, पैवंद; धज्जी।

चकत्ता–पु० त्वचापर पड़ा हुआ बड़ा निशान; दाँत काटनेका निशान; ददोरा; दे० 'चगत्ता'।

चकना*–अ० क्रि० चकित होना, चौकना।

चकनाचूर–वि० जो टूटकर चूर-चूर हो गया हो, चूर्णित; बहुत थका हुआ।

चकपकाना–अ० क्रि० भौंचक होना,चौंकना,चकित होना।

चकमक–पु० एक तरहका पत्थर जिसपर आघात करनेसे आग निकलती है (दियासलाईके आविष्कारके पहले इसीसे आग झाड़कर दिया बालते, आग सुलगाते थे)।

चकमा–पु० धोखा, भुलावा, (खाना, देना); हानि।

चकर*–पु० चकवा; दे० 'चक्कर'।

चकरबा–पु० चक्कर, फेर; विकट परिस्थिति; झगड़ा, दंगा।

चकरा*–वि० चौड़ा।

चकराना–अ० क्रि० सिरका घूमना, चक्कर खाना; चकित, हैरान होना, चकपकाना।

चकरी–स्त्री० चक्की; चकई।

चकला–पु० रोटी बेलनेका पाटा, चौका; चक्की; इलाका; व्यभिचारसे जीविका चलानेवाली स्त्रियोंका अड्डा। वि० चौड़ा। **–(ले)दार**–पु० चकलेका हाकिम; मालगुजारी वसूल करनेवाला अफसर।

चकलाना–स० क्रि० चौड़ा करना; दूसरी जगह लगानेके लिए पींड़ीके साथ पौधा उखाड़ना।

चकल्लस–स्त्री० झगड़ा; बखेड़ा; मित्रोंका परिहास।

चकवँड़–पु० एक बरसाती पौधा।

चकवा–पु० एक पक्षी जिसके विषयमें यह प्रसिद्धि है कि रातमें अपने जोड़ेसे उसका वियोग हो जाता है, चक्रवाक, सुर्खाब।

चकवाना*–अ० क्रि० चकित होना।

चकवारि*–पु० कछुआ–'उर निरखि चकवारि बिथके'–सू०।

चकवाह*–पु० दे० 'चकवा'।

चकवी*–स्त्री० दे० 'चकई'।

चकहा*–पु० चक्का, पहिया।

चका*–पु० दे० 'चक्का'; चकवा। वि० चकित।

चकाचक–वि० तर-बतर। अ० तृप्त होकर, अघाकर।

चकाचौंध–स्त्री० प्रकाशकी प्रखरतासे दृष्टिका स्थिर न रह सकना, आँखका झपकना, तिलमिलाहट; हैरानी।

चकाचौंधी–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकाना*–अ० क्रि० चकित होना, हैरान होना।

चकाबू, चकाबूह–पु० दे० 'चक्रव्यूह'।

चकासना*–अ० क्रि० चमकना, प्रकाशित होना–'…आपने भावतें बीज चकासै'–सुंदर०।

चकित–वि० [सं०] विस्मित, हैरान, भौंचक; शंकित; भीत।

चकितवंत*–वि० चकित, विस्मित।

चकिताई*–स्त्री० अचंभा, विस्मय।

चकुला*–पु० चिड़ियाका बच्चा।

चकृत*–वि० दे० 'चकित'।

चकैया*–स्त्री० चकई। † वि० चिपटापन लिये हुए गोल।

चकोटना*–स० क्रि० चुटकी काटना, बकोटना।

चकोतरा–पु० एक तरहका बड़ा नीबू, महानीबू।

चकोर, चकोरक–पु० [सं०] तीतरकी जातिका एक पक्षी जो चंद्रमाका प्रेमी माना जाता है (स्त्री० चकोरी)।

चकौंध–स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चक्क–पु० [सं०] कष्ट, पीड़ा; * चकवा; चाक; दिशा, खूँट।

चक्कर–पु० पहिये जैसी वस्तु; चाक; चक्र; घेरा, मंडल; (घोड़दौड़ आदिका) वृत्ताकार मार्ग; फेरा, परिक्रमा; घुमाव; फेर, हैरानी; पेच-पाच; सिरका घूमना; भँवर; कुश्तीका एक पेंच; एक अस्त्र। **–दार**–वि० घुमाव, पेच, फेरवाला। मु० **–काटना**–गोलाईमें घूमना; फेरा करना; भटकना। **–खाना**–घूमना; पहिये या चाककी तरह घूमना। **–बाँधना**–इस तरह घूमना कि वृत्त बन जाय।

–मारना–चक्कर लगाना; भटकना । **–में आना,–में पड़ना**–हैरान होना, भौंचक होना; चालमें फँसना ।

चक्कवइ*–वि, पु० दे० 'चक्रवर्ती ।

चक्कवत*–पु० चक्रवर्ती राजा ।

चक्कवै*–वि०, पु० दे० 'चक्रवर्ती' ।

चक्का–पु० पहिया; थक्का; ढेला; बड़ा, जमा हुआ टुकड़ा; गिनतीके लिए क्रमसे लगाये हुए पत्थरों या ईंटोंका ढेर । **–व्यूह**–पु० चक्रव्यूह ।

चक्की–स्त्री० पत्थरका बना आटा पीसने या दाल दलनेका यंत्र, जाँता; घुटनेकी गोल हड्डी; ऊँटके बदनपरका गोल घट्टा । **मु०–पीसना**–चक्की चलाना; कड़ी मेहनत करना ।

चक्र–पु० [सं०] चाका, पहिया; तेल पेरनेका कोल्हू; चक्की; पहियेके आकारका एक अस्त्र; भँवर; बवंडर; समूह; सेना; राज्य; सेनाका मंडलाकार व्यूह; एक समुद्रसे दूसरे समुद्रतक फैला हुआ प्रदेश; रेखाओंसे घिरे हुए खाने; ग्रामसमूह; भूमंडल; योगवर्णित देहके भीतरके ६ पद्म (मूलाधार, मणिपूर आदि); वृत्त, घेरा; हथेली, तलवेकी मंडलाकार रेखा; पक्षियोंका मंडलाकार उड़ना; भ्रमण, चक्कर (कालचक्र); वर्षसमूह; तगरका फूल; चित्रकाव्यका एक भेद; षड्यंत्र; छल; चकवा; एक वर्णवृत्त; * दिशा । **–जीवक,–जीवी(विन्)**–पु० कुम्हार । **–धर**–वि० चक्रधारण करनेवाला । पु० विष्णु; कृष्ण; राजा । **–नाभि**–स्त्री० चक्रकी नाभि, मध्य बिंदु । **–नेमि**–स्त्री० चक्रकी परिधि । **–पाणि,–पानि***–पु० विष्णु । **–मर्द,–मर्दक**–पु० चकवँड़ । **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक पूजनमें प्रयुक्त एक मुद्रा; शंख, चक्र आदिके चिह्न जो वैष्णव अपने शरीरपर छपाते हैं । **–यान**–पु० पहियेसे चलनेवाला वाहन (वेहिकिल) । **–लेखित्र**–पु० (साइक्लोस्टाइल) लेखनीकी नोकपर लगे हुए छोटेसे चक्रसे लिखे गये विशेष प्रकारके कागजसे बहुत-सी प्रतियाँ छाप देनेवाली मशीन । **–वर्ती (र्तिन्)**–वि० सार्वभौम । पु० सम्राट्, समुद्रपर्यंत पृथ्वीका अधिपति । **–वाक**–पु० चकवा । **–वात**–पु० बवंडर, बगूला । **–वृद्धि**–स्त्री० वह ब्याज जिसमें संचित ब्याज भी मूलमें शामिल हो जाय, सूद-दर-सूद । **–व्यूह**–पु० चक्रके आकारमें सेनाकी स्थापना ।

चक्रांग–पु० [सं०] रथ, गाड़ी; चकवा; हंस; कुटकी ।

चक्रानुक्रमसे–अ० (इन रोटेशन) चक्रकी तरह बारी-बारीसे, एकके बाद दूसरेके समुचित अनुक्रमसे ।

चक्रायुध–पु० [सं०] विष्णु ।

चक्रित*–वि० दे० 'चकित' ।

चक्री (क्रिन्)–वि० [सं०] चक्रयुक्त; चक्रधारी; गोल । पु० चक्रवर्ती; कुम्हार; तेली; साँप; मुखबिर; षड्यंत्रकारी; विष्णु; शिव; मंडलाधीश, सम्राट्; बाजीगर; चकवा; चकवँड़ ।

चक्षु (स)–पु० [सं०] आँख; दृष्टि, देखनेकी शक्ति ।

चक्षुरिंद्रिय–स्त्री० [सं०] आँख ।

चक्षुष्मान् (मत्)–वि० [सं०] आँखवाला; सुलोचन ।

चख*–पु० आँख ।

चख़–स्त्री० [फा०] झगड़ा, तकरार; बैर । **–चख़**–स्त्री० झगड़ा, कहासुनी ।

चखचौंध*–स्त्री० चकाचौंध ।

चखना–स० क्रि० स्वाद लेना, रसास्वादन करना ।

चखाचखी–स्त्री० विरोध, तनातनी; लाग-डाट ।

चखाना–स० क्रि० 'चखना'का प्रेरणार्थक ।

चखु*–पु० दे० 'चक्षु' ।

चखोड़ा*–पु० दिठौना ।

चगड़†–वि० चंट, चालाक ।

चग़ताई–पु० [फा०] चंगेज खाँके बेटे चग़ताई खाँसे चला हुआ मंगोलवंश जिसमें बाबर, अकबर आदि हिंदुस्तानके मुगल बादशाह हुए ।

चग़त्ता–पु० [तु०] दे० 'चग़ताई' ।

चचा–पु० बापका भाई । **–ज़ाद**–वि० चचेरा ।

चचिया†–वि० चचेरा (ससुर, सास) ।

चचींड़ा–पु० दे० 'चिचिंडा' ।

चची–स्त्री० चचाकी स्त्री ।

चचैंड़ा†–पु० दे० 'चिचिंडा' ।

चचेरा–वि० चचासे उत्पन्न, चचाज़ाद ।

चचोड़ना–स० क्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना ।

चच्छु*–पु० दे० 'चक्षु' ।

चट–अ० झट, तुरत । **–पट**–अ० झटपट, शीघ्र ।

चट–स्त्री० किसी चीजके टूटनेकी आवाज; उगलियाँ फोड़नेका शब्द । **–चट**–स्त्री० 'चट-चट'की आवाज ।

चट–स्त्री० चाटनेका भाव । वि० चाट-पोंछकर खाया हुआ । **मु०–कर जाना**–चाट-पोंछकर खा जाना; निगल जाना ।

चट–*पु० दाग, धब्बा; लांछन, कलंक; † पटसनका टाट । **–कल**–स्त्री० पटसनकी वस्तुएँ बनानेका कारखाना या मशीन । **–शाला**–स्त्री० बच्चोंकी पाठशाला । **–सार*** **–साल**–स्त्री० दे० 'चटशाला'; रंगभूमि ।

चटक–पु०[सं०] गौरवा । * वि० चटकीला; फुर्तीला; चटपटा । * अ० झटपट । स्त्री० [हिं०] चमक; रंगकी शोखी; भड़क; तेजी, फुरती; कलियोंके चटकनेकी क्रिया । **–दार**–वि० चटकीला, शोख । **–मटक**–स्त्री० ठसक, नाज-नखरा; सजधज । **–वाह†**–वि० फुरतीला ।

चटकन–पु० तमाचा ।

चटकना–अ० क्रि० हलकी आवाजके साथ टूटना, फूटना, जलना; फटना; कलीका खिलना; कपास, सेमलकी बोड़ीका फटना; झुँझलाना; बिगाड़ होना । पु० तमाचा ।

चटकनी–स्त्री० किवाड़ बंद करनेकी कुंडी, सिटकिनी ।

चटकाना–स० क्रि० किसी चीजके चटकनेका कारण होना; 'चट'की आवाज पैदा करना; उँगलियाँ फोड़ना; तोड़ना; दूर करना; चिढ़ाना । **मु० जूतियाँ चटकाना**–मारा-मारा फिरना ।

चटकारा–वि० चटकीला; चपल । पु० दे० 'चटखारा' ।

चटकारी*–स्त्री० चुटकी ।

चटकाली–स्त्री० [सं०] गौरैयोंकी पंक्ति; चिड़ियोंका झुंड ।

चटकाहट–स्त्री० चटकनेका भाव; कलियोंके खिलनेकी आवाज ।

चटकीला–वि० चटकदार, चमकीला, शोख; चटपटा ।

चटकोरा*–पु० बच्चोंका एक खिलौना ।

चटखना–अ० क्रि०, पु० दे० 'चटकना' ।

चटखनी–स्त्री० सिटकिनी।

चटखारा–पु० स्वादिष्ट वस्तुको खाते समय जीभके तालूसे लगनेसे होनेवाली आवाज। **मु०–(रे) भरना**–स्वाद लेकर खाना, होँठ चाटना।

चटचटाना–अ० क्रि० 'चट-चट'की आवाजके साथ टूटना, फूटना, जलना; लस पैदा हो जाना, चिपकना।

चटचेटक*–पु० जादू, इंद्रजाल।

चटनी–स्त्री० चाटनेकी चीज; नमक, मिर्च, खटाईके योगसे बना हुआ अवलेह जो स्वादके लिए भोजनके साथ खाया जाता है; चटनीके रूपमें बनी हुई दवा, अवलेह; काठका बना एक खिलौना जिसे हाथमें लेकर छोटे बच्चे चाटा करते हैं। **मु०–करना**–बहुत बारीक पीसना।

चटपटा–वि० चरपरा, मिर्च-मसालेदार; मजेदार। पु० चटपटी चीज, चाट (चने-चटपटे)।

चटपटाना–* अ० क्रि० छटपटाना; † हड़बड़ी मचाना।

चटपटी–स्त्री० घबड़ाहट, उतावली, छटपटी।

चटवाना–स० क्रि० दे० 'चटाना'।

चटाई–स्त्री० घास, सींक, बेंतकी छाल आदिका बना बिछावन, साथरी; चाटनेकी क्रिया।

चटाकपटाक–अ० झटपट; तेजीसे।

चटाका(खा)–पु० लकड़ी, चिमनी आदिके टूटने, उँगलीके चटकने, तमाचा आदि पड़नेकी आवाज।

चटाचट–स्त्री० किसी वस्तुके टूटने, फूटनेकी 'चट-चट' आवाज। अ० 'चट-पट' आवाजके साथ।

चटान*–स्त्री० दे० 'चट्टान'।

चटाना–स० क्रि० चाटनेकी क्रिया कराना; थोड़ा-थोड़ा खिलाना; घूस देना; तलवार आदिपर शान धराना।

चटापटी–स्त्री० उतावली, जल्दी; संक्रामक रोगसे लोगोंका जल्दी-जल्दी मरना।

चटावन–पु० बच्चोंको पहली बार अन्न खिलाने या चटानेकी रस्म, अन्नप्राशन-संस्कार।

चटिक*–अ० चटपट; तत्काल।

चटियल–वि० पेड़-पौधोंसे रहित, सपाट (मैदान)।

चटी–स्त्री० चटशाला; एक तरहका जूता, चट्टी।

चटुल–वि० [सं०] चंचल; अस्थिर; सुंदर।

चटैल–वि० दे० 'चटियल'।

चटोर–वि० दे० 'चटोरा'। **–पन**–पु० स्वाद-लोलुपता।

चटोरा–वि० स्वादिष्ठ, चटपटी चीजोंका शौकीन, स्वाद-लोलुप; खाने-पीनेमें रुपये उड़ानेवाला; लोभी।

चट्ट–वि० चाट-पोंछकर खाया हुआ; समाप्त, गायब।

चट्टा–पु० चेला, शागिर्द; चकत्ता; बाँसकी चटाई; मैदान।

चट्टान–स्त्री० बृहत् शिला, बड़ा पत्थर।

चट्टा-बट्टा–पु० काठके खिलौनों–चट्टू, झुनझुने आदि–का समूह; (बहुवचन) बाजीगरकी थैलीसे निकलनेवाले गोले या गोलियाँ। **मु० एक ही थैलीके चट्टे-बट्टे**–एक जैसे, एक ही विचार-स्वभावके मनुष्य। **चट्टे-बट्टे लड़ाना**–इधरकी उधर लगाकर झगड़ा कराना।

चट्टी–स्त्री० पड़ाव, यात्रियोंके टिकनेकी जगह; स्लिपर, एड़ीकी तरफ खुला हुआ जूता; हानि, टोटा; दंड।

चट्टू–वि० चटोरा। पु० काठका एक छोटा खिलौना जिसे छोटे बच्चे मुँहमें डालकर चाटते रहते हैं।

चड्डी†–स्त्री० एक तरहका लँगोट।

चड्डी–स्त्री० पीठकी सवारी; एक बच्चेका दूसरे बच्चेकी पीठपर सवार होनेका खेल।

चढ़त–स्त्री० देवताको चढ़ायी हुई वस्तु, चढ़ावा।

चढ़न*–स्त्री० चढ़नेकी क्रिया।

चढ़ना–अ० क्रि० नीचेसे ऊपरको जाना, ऊँचा होना; तेज, तीखा होना (स्वर); सवार होना; दलबलके साथ जाना, चढ़ाई करना; उठना, उन्नति करना; बहावके विरुद्ध जाना; चढ़ाया जाना (कागज, खोल चढ़ना); तनना, कसा जाना; देवतादिको भेंट किया जाना; लगना, आरंभ होना (मास, नक्षत्र आदि); पावना होना, निकलना; लिखा जाना (नाम, रकम); असर होना; आवेश होना (भूत); पोता जाना; पकनेके लिए चूल्हेपर चढ़ाया जाना; तेज, महँगा होना (भाव); मामला अदालतमें ले जाना; (नदीका) बढ़ना, बाढ़पर होना। **चढ़-बढ़कर, चढ़ा-बढ़ा**–वि० अधिक अच्छा, श्रेष्ठ। **मु० चढ़ दौड़ना**–चढ़ाई करना।

चढ़वाना–स० क्रि० चढ़नेकी क्रिया कराना।

चढ़ाई–स्त्री० चढ़नेकी क्रिया, भाव; धावा; ऊँचाई या उत्तरोत्तर ऊँची होती जानेवाली भूमि; * चढ़ावा।

चढ़ा-उतरी–स्त्री० बार-बार चढ़ना-उतरना।

चढ़ा-उपरी–स्त्री० लाग-डाट, होड़, प्रतियोगिता।

चढ़ा-चढ़ी–स्त्री० चढ़ा-उपरी, लाग-डाट।

चढ़ाना–स० क्रि० ऊपर ले जाना; लटकती हुई चीजको सिकोड़-सरकाकर ऊपर ले जाना (आस्तीन च०); तेज, ऊँचा करना (भाव, स्वर); कसना; देवतादिको भेंट देना, अर्पण करना; लिखना, दर्ज करना; खींचना, तानना (भौं कमान); लादना (कर्ज); पोतना; मढ़ना; पी जाना, उदरस्थ करना; चढ़ने, चढ़ाई करनेको प्रेरित करना; खींचना (नाकसे पानी च०); प्रवेश कराना; ढीठ बना देना।

चढ़ाव–पु० चढ़नेका भाव, चढ़ाई; बढ़ाव; तेजी; ब्याहके समय वधूको वरपक्षकी ओरसे पहनाया जानेवाला गहना, चढ़ावा; धारा या बहावकी उलटी दिशा।

चढ़ावा–पु० पूजामें देवताको चढ़ायी जानेवाली सामग्री; चढ़ाव या डालका गहना; चौराहे आदिपर रखी जानेवाली टोटकेकी सामग्री।

चणक–पु० [सं०] चना; एक गोत्रकार ऋषि।

चतुरंग–वि० [सं०] चार अंगोंवाला। पु० चतुरंगिणी सेना; ऐसी सेनाका प्रधान अधिकारी; शतरंज; एक तरहका गाना जिसमें सरगम, तराना, तबले आदिके बोल बैठाये होते हैं।

चतुरंगिणी–वि० स्त्री० [सं०] चार अंगोंवाली (सेना)। स्त्री० हाथी, घोड़ा, रथ और पैदलसे युक्त सेना।

चतुर–वि० [सं०] होशियार, कार्यदक्ष; तेज, फुरतीला।

चतुरई*–स्त्री० दे० 'चतुराई'।

चतुरम्ल–पु० [सं०] अमलबेत, इमली, जंबीरी नीबू और कागजी नीबू–इन चार खट्टे फलोंका समाहार।

चतुरश्र(स्र)–वि० [सं०] चौकोर, चतुष्कोण; सुडौल।

चतुरसम*–पु० दे० 'चतुस्सम'।

चतुराई–स्त्री० होशियारी, चालाकी।

चतुरानन–पु० [सं०] ब्रह्मा।

चतुरापन†–पु० चतुराई।

चतुराश्रम–पु० [सं०] ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास–इन चार आश्रमोंका समाहार।

चतुर्–वि० [सं०] चार। पु० चारकी संख्या (इस रूपमें यह शब्द केवल समासमें व्यवहृत होता है)। **–गुण**–वि० चौगुना; जिसमें चार वंद या वंधन हों (वदनपर पहननेका कपड़ा)। **–दंत**–वि० चार दाँतोंवाला। पु० ऐरावत हाथी। **–दश(न्)**–वि० चौदह; चौदहवाँ। पु० १४की संख्या। **–दश भुवन**–पु० भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः,तपः, सत्यं–ये सात स्वर्ग और अतल, सुतल, वितल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल–ये सात अधोलोक। **–दश विद्या**–स्त्री० ४ वेद, ६ वेदांग और धर्मशास्त्र, पुराण, मीमांसा और तर्क (न्याय)–ये १४ विद्याएँ। **–दशी**–स्त्री० पक्षविशेषकी चौदहवीं तिथि। **–दिक्(श्)**–अ० चारों ओर, चौंखूँट। स्त्री० चारों दिशाएँ। **–धाम(न्)**–पु० हिंदुओंके चार मुख्य तीर्थ, चारों धाम। **–भुज**–त्रि० चार भुजाओंवाला। पु० वह समक्षेत्र जो चार सरल रेखाओंसे घिरा हो (क्वाड्रिलेटरल) चतुष्कोण क्षेत्र; बिष्णु। **–भुजी(जिन्)**–पु० वैष्णवों-का एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी। वि० चतुर्भुज। **–मास**–पु० बरसातका चौमासा; आषाढ़की पूर्णिमा या शुक्ला १२से कार्त्तिक-शुक्ला १२तकका काल। **–मुख**–वि० चार मुँहोंवाला। पु० ब्रह्मा। अ० चारों ओर। **–युग**–पु०,**–युगी**–स्त्री० चारों युगों–सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुगका समाहार,चौकड़ी। **–वक्त्र**–पु० ब्रह्मा। वि० चार मुँहोंवाला। **–वर्ग**–पु० चारों पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। **–वर्ण**–पु० चारों वर्ण–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। **–वेद**–पु० चारों वेद; परमेश्वर। वि० चारों वेदोंका ज्ञाता। **–वेदी(दिन्)**–वि० चारों वेदोंका ज्ञाता। पु०ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

चतुर्थ–वि० [सं०] चौथा।

चतुर्थांश–पु० [सं०] चौथा भाग, चौथाई।

चतुर्थाश्रम–पु० [सं०] संन्यास।

चतुर्थी–स्त्री० [सं०] पक्ष-विशेषकी चौथी तिथि; संप्रदान कारक (व्या०)।

चतुष्कल–वि० [सं०] चार कलाओं, मात्राओंवाला।

चतुष्कोण–वि० [सं०] चार कोनोंवाला, चौकोर।

चतुष्टय–पु० [सं०] चारकी संख्या; चार वस्तुओं, व्यक्तियों का समाहार।

चतुष्पथ–पु० [सं०] चौराहा; ब्राह्मण।

चतुष्पद–वि०[सं०] चार पैरोंवाला। पु० चौपाया जानवर।

चतुष्पदी–स्त्री० [सं०] चार चरणोंवाला पद्य; चौपाई छंद।

चतुस्सम–पु० [सं०] एक औषध जिसमें लौंग, जीरा, अजवायन और हड़के सम भाग होते हैं; एक गंधद्रव्य जो कस्तूरी, चंदन, कुंकुम और कपूरके योगसे बनता है।

चतुस्सीमा–स्त्री० [सं०] चौहद्दी।

चत्वर–पु० [सं०] चौकोर स्थान; चौराहा; चबूतरा; यज्ञके लिए साफ किया हुआ मैदान।

चदरा†–पु० दे० 'चादर'।

चदरिया*–स्त्री० दे० 'चादर'।

चद्दर–स्त्री० दे० 'चादर'।

चनक*–पु० चना।

चनकट*–स्त्री० चपत, तमाचा।

चनकना†–अ० क्रि० चिटकना, दरकना; नाराज होना।

चनखना†–अ० क्रि० चिढ़ना; चनकना।

चनन*–पु० दे० 'चंदन'।

चनवर*–पु० ग्रास, कौर–'आपने हाथ लै देत हैं चनवर दूध दही घृत सानि'–अष्ट०।

चना–पु० चैती फसलका एक प्रधान अन्न जो कई रूपोंमें खाया जाता है, रहिला। **–खार**–पु० चनेके डंठल, पत्तियों आदिको जलाकर निकाला हुआ खार। **मु०–नाकों चने चबवाना**–खूब हैरान करना। **लोहेका चना**–वहुत कठिन काम।

चनाब–स्त्री० पंजाबकी एक नदी, चंद्रभागा।

चनार–पु० एक ऊँचा सुंदर पेड़ जो कश्मीरमें वहुत होता है।

चपकन–स्त्री० एक तरहका अँगरखा; ताला लगानेका लोहे या पीतलका दोहरा साज।

चपकना–अ० क्रि० दे० 'चिपकना'।

चपकाना–स० क्रि० दे० 'चिपकाना'।

चपटना†–अ० क्रि० दे० 'चिपकना'।

चपटा†–वि० दे० 'चिपटा'।

चपटाना†–स० चिपकाना, चिमटाना।

चपटी*–स्त्री० ताली; चुटकी; एक कीड़ा, किलनी; योनि। † वि० स्त्री० चिपटी।

चपड़-चपड़–स्त्री० दे० 'चभड़-चभड़'।

चपड़ा–पु० साफ की हुई लाख; पत्तर; एक कीड़ा।

चपत–स्त्री० तमाचा; धौल; धक्का, नुकसान। **–बाज़ी**–स्त्री० मनोविनोदके लिए किसीको चपत लगाना। **मु०–बैठना,–लगना**–नुकसान होना।

चपना–अ० क्रि० दबना, कुचला जाना; दाबमें पड़ना; लज्जित होना।

चपनी–स्त्री० कटोरी; दरियाई नारियलका कमंडलु; घुटनेकी हड्डी; हंडीका ढक्कन।

चपरगट्टू–वि० अभागा, विपद्ग्रस्त; गुत्थमगुत्था।

चपरना–स० क्रि० दे० 'चुपड़ना'; सानना।

चपरा–पु० दे० 'चपड़ा'।

चपरास–स्त्री० सिपाही, अरदली आदिका धातुनिर्मित चिह्न जिसे पेटी या परतलेमें लगाकर पहनते हैं।

चपरासी–पु० चपरास धारण करनेवाला, अरदली।

चपरि*–अ० झपटकर, फुरतीसे।

चपल–वि० [सं०] चंचल, अस्थिर; तेज; जल्दबाज; अविचारी; क्षणिक।

चपलता–स्त्री० [सं०] चंचलता, अस्थिरता; तेजी; जल्दबाजी।

चपला–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; बिजली; पुंश्चली स्त्री; जीभ।

चपलाई*–स्त्री० चपलता।

चपलाना*–अ० क्रि० हिलना, चलना। स०क्रि० चलाना, हिलाना।

चपवाना–स० क्रि० दबवाना।

चपाकदै*–अ० अचानक; चटपट।

चपाती–स्त्री० पतली रोटी, फुलका।

चपाना–स० क्रि० दबवाना।

चपेट–स्त्री० धक्का; रगड़ा; दबाव।

चपेटना–स०क्रि० दाबना; पीछा करते हुए भगाना; डाँटना।

चपेटा–पु० धक्का; दबाव; रगड़ा; लकड़ी, लाख आदिका छःपहला टुकड़ा। स्त्री० [सं०] चपत, तमाचा।

चपेरना*–स० क्रि० दबाना, चापना।

चप्पड़–पु० दे० 'चिप्पड़'।

चप्पल–पु०, स्त्री० खुली एड़ीका जूता।

चप्पा–पु० चार अंगुल या चार बित्ता स्थान; थोड़ा-सा स्थान; चतुर्थांश। **–चप्पा**–अ० रत्ती-रत्ती; हर जगह।

चप्पी–स्त्री० चाँपनेकी क्रिया; धीरे-धीरे पाँव दबाना।

चप्पू–पु० पतवारका काम देनेवाला एक तरहका डाँड़।

चबवाना–स० क्रि० 'चबाना'का प्रेरणार्थक।

चबाई*–पु० दे० 'चवाई'।

चबाना–स० क्रि० दाँतोंसे कुचलना, चूर करना। **चबा-चबाकर**–रुक-रुककर, कुछ बातोंको छोड़ते, छिपाते हुए (बोलना)। **मु० चबा जाना**–खा जाना; काट खाना।

चबारा*–पु० चौबारा।

चबाव*–पु० दे० 'चवाव'।

चबावन*–पु० दे० 'चवाव'।

चबूतरा–पु०मिट्टी, ईंटों आदिसे बैठनेके लिए बनाया गया। थोड़ा ऊँचा स्थान।

चबे(बै)ना–पु० चबाकर खानेकी चीज, भुना हुआ चना, चावल आदि, भूँजा।

चबे(बै)नी–स्त्री० तली दाल, मिठाई आदि जलपानकी सामग्री; चबेना; जलपानका मूल्य।

चभक–पु० किसी चीजके पानीमें डूबनेकी आवाज।

चभड़-चभड़–स्त्री० कुत्ते-बिल्ली आदिके पानी पीते या तरल वस्तु खाते समय मुँहसे निकलनेवाली आवाज; खाते समय मुँहसे उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चभाना–स० क्रि० खिलाना; तर माल खिलाना।

चभोरना–स० क्रि० गोता देना, डुबाना; तर करना।

चमंकना*–अ० क्रि० दे० 'चमकना'।

चमक–स्त्री० ओप, कांति; झलक; भड़क; लचक; झटके आदिसे कमर आदिमें अचानक पैदा होनेवाला दर्द। **–ताई***–स्त्री० चमकीलापन। **–दमक**–स्त्री० दीप्ति; तड़क-भड़क। **–दार**–वि० चमकवाला, कांतियुक्त।

चमकना–अ० क्रि० झलकना, जगमगाना; प्रसिद्ध होना; समृद्धि प्राप्त होना; जोर पकड़ना; चौंकना; भड़कना; अचानक दर्द होना; झटपट चल देना।

चमकाना–स० क्रि० चमकदार बनाना, उज्ज्वल करना; चिढ़ाना; भड़काना; एड़ लगाकर घोड़ेको यकायक चंचल और तेज करना; धमकानेके लिए दिखाना, हिलाना (छुरी, तलवार); मटकाना (उँगलियाँ, आँखें)।

चमकारी*–स्त्री० चमक; चकाचौंध पैदा करनेवाली रोशनी। वि० स्त्री० चमकीली।

चमकी–स्त्री० कारचोबीमें जमीन भरनेके काम आनेवाला बूटा, सितारा; नकली रेशमका कपड़ा।

चमकीला–वि० चमकदार।

चमकौवल–स्त्री० चमकानेकी क्रिया।

चमगादड़–पु० चूहेकी शकलका स्तनपायी जीव जो चिड़ियोंकी तरह उड़ सकता है।

चमचम–स्त्री० एक बँगला मिठाई। अ० दे० 'चमाचम'।

चमचमाना–अ० क्रि० चमकना, इतना साफ-स्वच्छ होना कि चमक निकले। स० क्रि० चमकाना, चमाचम करना।

चमचा–पु० छिछली कलछी जैसा पात्र जिससे खाना परोसनेका काम लेते हैं; चिमटा; कोयला निकालनेका फावड़ा।

चमची–स्त्री० छोटा चमचा; चौड़ी-चपटी नोकवाली सलाई जिससे कत्था-चूना निकालते और पानपर फैलाते हैं।

चमजुई, चमजोई–स्त्री० एक तरहकी छोटी किलनी; चिमटनेवाली चीज।

चमड़ा–पु० प्राणिशरीरका नैसर्गिक आवरण, चर्म, त्वचा; शरीरसे अलग की हुई त्वचा, खाल; छिलका।

चमड़ी–स्त्री० चर्म, त्वचा।

चमत्कार–पु० [सं०] लोकोत्तर वस्तु देखकर मनमें उत्पन्न होनेवाला आनंदरूप विस्मय; अद्भुत बात, करामात; तमाशा; उत्सव; भीड़; काव्योत्कर्ष।

चमत्कारी(रिन्)–वि० [सं०] विस्मित करनेवाला; चमत्कारयुक्त।

चमत्कृत–वि० [सं०] अचंभेमें आया हुआ, विस्मित।

चमत्कृति–स्त्री० [सं०] चमत्कार।

चमन–पु० [फा०] क्यारी; फुलवारी; हरा-भरा स्थान।

चमर–पु० [सं०] सुरा गाय नामका एक पशु; चँवर।

चमरख–स्त्री० चमड़ेकी चकती जिसमेंसे होकर चरखेका तकला घूमता है। वि० स्त्री० दुबली-पतली (स्त्री)।

चमरस–पु० जूतेकी रगड़का घाव।

चमरी–स्त्री० [सं०] सुरा गाय; चँवरी; मंजरी।

चमरौटी–स्त्री० चमारोंकी बस्ती।

चमरौट–पु० चमारोंको उनके कामके बदले मिलनेवाला फसल आदिका भाग।

चमरौधा–पु०देशी ढंगका बना, भारी, भद्दा जूता, चमौआ।

चमाऊ*–पु० चँवर।

चमाक*–स्त्री० चमक, कांति।

चमाचम–अ० चमकके साथ।

चमार–पु० चमड़ा कमाने, जूते आदि बनानेका धंधा करनेवाली एक जाति। **–चौदस**–पु० चमारोंका जलसा; चार दिनकी धूमधाम। (स्त्री० चमारिन)।

चमारी–स्त्री० चमार स्त्री; चमारका धंधा।

चमू–स्त्री० [सं०] सेना; सेनाका एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे। **–नायक, –पति**–पु० सेनानायक।

चमेलिया–वि० चमेलीके रंगका।

चमेली–स्त्री० सुगंधित फूलोंवाली एक लता।

चमोटा–पु० चमड़ेका टुकड़ा जिसपर छुरेको धार तेज करनेके लिए रगड़ते हैं।

चमोटी–स्त्री० चमोटा; चाबुक; पतली छड़ी।

चमौवा–पु० चमरौधा जूता।

चम्मच–पु० दे० 'चमचा'।

चय–पु० [सं०] समूह, ढेर; नींव; ढूह, टीला; खाईकी मिट्टीसे बना हुआ बाँध या धुस्स, दुर्गप्राचीर; दुर्ग; तिपाई, चौकी; लकड़ीका ढेर ।

चयन–पु० [सं०] इकट्ठा करना, चुनना; फूल चुनना; क्रमसे लगाना; चुनी हुई वस्तुओंका संग्रह; यज्ञके लिए अग्निका एक संस्कार; लकड़ी जमा करना; * दे० 'चैन'। **–शील**–वि० संग्रह करनेवाला, संग्रही ।

चयनिका–स्त्री० [सं०] चुनी हुई कविताओं, कहानियों आदिका संग्रह ।

चयनीय–वि० [सं०] चयन करने योग्य ।

चर–पु० [सं०] स्वराष्ट्र या परराष्ट्रकी छिपी बातें मालूम करनेपर नियुक्त व्यक्ति, गुप्त दूत, भेदिया; दूत । वि०चल, अस्थिर; चलनेवाला ।

चरई–स्त्री० पशुओंको चारा या पानी देनेके लिए पत्थर आदिका बना हुआ हौज, चरनी; तारकी खूँटी ।

चरक–पु० एक प्रकारका कुष्ठ जिससे बदनपर सफेद दाग हो जाते हैं, फूल; [सं०] चर, दूत; आयुर्वेदके एक प्रधान आचार्य जिनका ग्रंथ 'चरकसंहिता' आयुर्वेदका प्रधान चिकित्सा ग्रंथ माना जाता है; चरकसंहिता । **–संहिता**–स्त्री० चरक मुनिका बनाया हुआ चिकित्साग्रंथ ।

चरकटा–पु० ऊँट, हाथी आदिके लिए चारा काटकर लानेवाला; तुच्छ जन ।

चरकना*–अ० क्रि० टूटना, फूटना, दरकना ।

चरका–पु० हलकासा जख्म, खरोंच; गरम लोहेसे दागनेका निशान; हानि, घाटा; चकमा, धोखा (खाना, देना) ।

चरख–पु० चाक; चरखी, घिरनी; खराद; चरखा; रेशम या कलाबत्तू लपेटनेकी चरखी; ढेलवाँस; तोप ढोनेवाली गाड़ी; लकड़बग्घा; एक शिकारी चिड़िया ।

चरखा–पु० हाथसे सूत कातनेका काष्ठनिर्मित यंत्र (कातना, चलाना); रहँट; सूत लपेटनेकी चरखी; घिरनी; खड़खड़िया; बेडौल पहिया; शिथिलांग वृद्ध व्यक्ति; झंझटवाला काम ।

चरखी–स्त्री० घूमनेवाला चक्कर; चाक; ओटनी; छोटा चरखा; सूत लपेटनेकी फिरकी; एक आतिशबाजी जो चक्कर खाती हुई छूटती है; जुलाहोंका एक औज़ार; कुएँसे पानी निकालनेकी गराड़ी; हिंडोला ।

चरग*–पु० चरख नामकी शिकारी चिड़िया; लकड़बग्घा ।

चरचना–स० क्रि० चंदन, केसर आदिका लेप करना; पहचानना; ताड़ना, भाँपना–'सैननि चरचि लई'–रसवि०; पूजा करना ।

चरचराना–अ० क्रि० 'चर-चर'की आवाजके साथ टूटना या जलना; चर्राना; तनावके कारण दर्द होना ।

चरचराहट–स्त्री० चरचरानेकी क्रिया या भाव; किसी चीजके चरचरानेका शब्द ।

चरचित*–वि० दे० 'चर्चित' ।

चरचा*–स्त्री० दे० 'चर्चा' ।

चरचारी*–पु० चर्चा करनेवाला; निंदक ।

चरज*–पु० चरख पक्षी ।

चरजना–स० क्रि० बहकाना । अ० क्रि० अंदाजा लगाना ।

चरण–पु० [सं०] पाँव, पग, कदम; श्लोक या छंदका एक पाद; चतुर्थांश; उपविभाग; सूर्य, चंद्र आदिकी किरण; चलना, भ्रमण; भक्षण; आचरण; (ला०) चरणोंकी समीपता, आश्रय । **–कमल,–पद्म**–पु० पादपद्म, सुंदर चरण ।**–चिह्न**–पु० पाँवका निशान, पदचिह्न ।**–दासी**–स्त्री० पत्नी; जूती । **–पादुका**–स्त्री० खड़ाऊँ; पत्थर आदिपर बना चरणचिह्न । **–पीठ**–पु० खड़ाऊँ; पाँवड़ी । **–रज (स्)**–स्त्री० चरणधूलि । **–सेवा**–स्त्री० पाँव दबाना; सेवा, खिदमत । **–सेवी (विन्)**–पु० टहलू, सेवक; चरणोंमें रहनेवाला । **मु०–छूना**–पाँव छूकर प्रणाम करना । **–पड़ना**–आगमन, प्रवेश होना ।

चरणामृत–पु० [सं०] वह जल जिसमें किसी देवमूर्ति या पूज्य पुरुषके पाँव पखारे गये हों; देवमूर्तिको स्नान कराया हुआ दूध, दही आदि, पंचामृत ।

चरणायुध–पु० [सं०] मुरगा ।

चरणारविंद–पु० [सं०] दे० 'चरणकमल' ।

चरणार्द्ध–पु० [सं०] चरणका आधा भाग ।

चरणोदक–पु० [सं०] चरणामृत ।

चरन*–पु० दे० 'चरण' । **–दासी**–स्त्री० जूती (साधु) । **–बरदारी**–पु० जूता पहनाने या जूता लेकर चलनेवाला नौकर, (कफश-बरदार) ।

चरना–स० क्रि० पशुओंका मैदान या खेतमें घास, शस्यादि खाना; * लाँघना, दबाना । *अ०क्रि० चलना; व्यवहार करना; फिरना, विचरना । पु० काछा ।

चरनायुध*–पु० दे० 'चरणायुध' ।

चरनि*–स्त्री० चलनेकी क्रिया या ढंग; चाल ।

चरनी–स्त्री० मेंड़दार लंबोतरा चबूतरा जिसपर गाय-बैलको चारा-पानी दिया जाता है; गाय-बैलको चारा-पानी देनेके लिए गड़ी हुई नाँद; * चारा; चरागाह; चरनेकी क्रिया ।

चरपट–पु० उचक्का; चपत, तमाचा; एक छंद ।

चरपर–वि० दे० 'चरपरा' ।

चरपरा–वि० तीखे स्वादवाला, झालदार; तेज, छरपट ।

चरपराना–अ० क्रि० चर्राना; घावमें खुश्कीके कारण तनावसे पीड़ा होना ।

चरपराहट–स्त्री० स्वादका तीखापन, झाल; घावकी जलन; डाह, द्वेष ।

चरफराना*–अ० क्रि० तड़फड़ाना; व्याकुल होना ।

चरब–वि० [फा०] चरबीदार, चिकना; मोटा; तेज ।

चरबन–पु०, स्त्री० चबैना ।

चरबाँ(बा)क–वि० चतुर; ढीठ, निडर; चंचल ।

चरबा–पु० [फा०] वह चिकना, बारीक कागज या कपड़ा जिसे ऊपर रखकर चित्र या नक्शेका अक्स उतारते हैं, खाका (उतारना); प्रतिलिपि ।

चरबी–स्त्री० मांसके ऊपर और त्वचाके नीचे रहनेवाला सफेद या हलके पीले रंगका चिकना पदार्थ, वसा, मेद; मोटाई । **मु०–चढ़ना**–मोटा होना; घमंड होना ।

चरम–वि [सं०] अंतिम; हद दरजेका; सबसे ऊपरका; सबसे पीछेका; जरठ (अवस्था) । **–काल**–पु० मृत्युकाल ।

चरमर–पु० चलनेमें जूतेसे, चारपाईपर बैठने आदिसे होनेवाली आवाज ।

चरमराना–अ० क्रि० 'चरमर' आवाज होना । स० क्रि० 'चरमर' शब्द उत्पन्न करना ।

चरमवती*–स्त्री० दे० 'चर्मण्वती' ।

चरमोत्पादन–पु० [सं०] (पीक प्रॉडक्शन) अधिकतम मात्रामें किया गया उत्पादन ।

चरवाई–स्त्री० चरानेका काम; चरानेकी उजरत ।

चरवाना–स० क्रि० चरानेका काम कराना ।

चरवाहा–पु० गाय-भैंस चरानेका काम करनेवाला ।

चरवाही–स्त्री० चरवाहेका काम; पशु चरानेकी उजरत ।

चरवैया†–पु० चरनेवाला; चरानेवाला ।

चरस–पु० गाँजेके पेड़से निकला हुआ गोंद जो गाँजेकी ही तरह पिया जाता है; दे० 'चरसा' ।

चरसा–पु० बैल, भैंस आदिका चमड़ा; चमड़ेका बना बड़ा थैला; मोट ।

चरसिया, चरसी–पु० चरस पीनेवाला, चरसका व्यसनी; चरसके जरिये पानी निकालने या खेत सींचनेवाला ।

चराई–स्त्री० चरने या चरानेका काम या उजरत ।

चरागाह–पु०, स्त्री० [फा०] पशुओंके चरने-चरानेकी जगह, घासका मैदान ।

चराचर–वि० [सं०] चलनेवाला और न चलनेवाला, स्थावर और जंगम । पु० संपूर्ण जगत्; आकाश ।

चराना–स० क्रि० गाय, बैल आदिको जंगल आदिमें ले जाकर घास, चारा खिलाना; बेवकूफ बनाना, धोखा देना ।

चरावर*–स्त्री० बकवास ।

चरिंदा–पु० [फा०] चरनेवाला प्राणी, जानवर, चौपाया ।

चरित–पु० [सं०] आचरण; कर्म; शील, स्वभाव; जीवन-चरित । वि० आचरित, किया हुआ; प्राप्त; गत; ज्ञात । **–कार,–लेखक**–पु० जीवनचरितका लेखक । **–नायक**–पु० किसी कथा-कहानीका प्रधान पात्र ।

चरितव्य–वि० [सं०] आचरण करने योग्य; जाने योग्य ।

चरितार्थ–वि० [सं०] जिसका अर्थ, प्रयोजन सिद्ध हो गया हो, कृतार्थ; संतुष्ट; जो ठीक उतरे, यथार्थ सिद्ध हो ।

चरितार्थता–स्त्री० [सं०] कृतार्थता; यथार्थ सिद्ध होना; घटित होना ।

चरितावली–स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें बहुतोंके जीवनचरित दिये गये हों; चरितमाला ।

चरित्तर†–पु० चरित्र; छल, फरेब; ढोंग ।

चरित्र–पु० [सं०] आचरण, व्यवहार; चाल-चलन; कर्तव्य, कर्म-कलाप; शील, स्वभाव; सदाचार; जीवनी, वृत्त; पैर; गमन । **–गठन**–पु० शील, सदाचार-वृत्तिका निर्माण । **–दोष**–पु० चाल-चलनकी खराबी, आचरणकी खुटाई । **–नायक**–दे० 'चरितनायक' । **–पंजी**–स्त्री० (कैरेक्टर बुक) दे० 'आचरण पंजी' । **–हीन**–वि० दुश्चरित्र, खराब चाल-चलनवाला ।

चरित्रवान्(वत्)–वि० [सं०] सदाचारी ।

चरी–स्त्री० पशुओंके चरनेके लिए जमींदारकी ओरसे बिला लगान मिली हुई जमीन, गोचारणभूमि; हरी ज्वार जो गाय-बैलोंको खिलानेके लिए बोयी गयी हो ।

चरु–पु० गोचर भूमि; गोचर भूमिका कर; [सं०] यज्ञमें आहुति देनेके लिए पकाया हुआ अन्न, हव्यान्न; वह बरतन जिसमें चरु पकाया जाय; यज्ञ ।

चरुआ†–पु० चौड़े मुँहका मिट्टीका पात्र; वह पात्र जिसमें जच्चाके लिए पानी गरम किया जाय ।

चरुखला*–पु० चरखा ।

चरू*–पु० दे० 'चरु' ।

चरेरा*–वि० खुरदरा; रूखा ।

चरेरू*–पु० पक्षी ।

चरैया†–पु० चरनेवाला; चरानेवाला ।

चरोखर†–पु० चरी, गोचर भूमि ।

चरोतर–पु० निर्वाहार्थ जिंदगीभरके लिए दी गयी जमीन ।

चर्खा–पु० दे० 'चरखा' ।

चर्चक–पु० [सं०] चर्चा करनेवाला; आवृत्ति करनेवाला ।

चर्चन–पु० [सं०] चर्चा; अध्ययन; चंदनादिका लेपन ।

चर्चरिका–स्त्री० [सं०] नाटकमें एक परदा गिरनेके बाद और दूसरा उठनेके पहले गाया जानेवाला गाना; तालीसे ताल देना; आमोद-प्रमोदकी धूम; उत्सव; चापलूसी ।

चर्चरी–स्त्री० [सं०] चर्चरिका; चाँचर, फाग; रंगरलियाँ मनाना, हर्षक्रीड़ा; करतलध्वनि; तालका एक भेद; एक वर्णवृत्त; एक तरहका ढोल; आमोद-प्रमोद; गाना-बजाना ।

चर्चा–स्त्री० [सं०] पाठ, आवृत्ति; वाद-विवाद; जिक्र, बयान; वार्तालाप; अफवाह; विचारणा; चंदनादिका लेपन ।

चर्चित–वि० [सं०] लेपित; विचारित; इच्छित; जिसकी चर्चा की गयी हो ।

चर्नार*–पु० चुनार (चरणाद्रि) नामक स्थान ।

चर्बण–पु० [सं०] दे० 'चर्वण' ।

चर्बी–स्त्री० दे० 'चरबी' ।

चर्म–पुं० [सं०] ढाल; दे० 'चर्म(न्)' ।

चर्म(न्)–पु० [सं०] चमड़ा, खाल; स्पर्शेंद्रिय; ढाल । **–कार,–कारक**–पु० चमार, चमड़ेका काम करनेवाला, मोची । **–कील**–पु० बवासीर; एक रोग जिसमें देहमें नुकीला मस्सा निकल आता है । **–चक्षु(स्)**–पु० स्थूल दृष्टि । **–दंड**–पु० चमड़ेका बना चाबुक । **–पादुका**–स्त्री० जूता । **–प्रसाधक**–वि० (टेक्सिडरमिस्ट) पशु-पक्षियोंके चमड़े या खालको पृथक् कर उसमें भूसा आदि भरकर सजाने या जीवित-सा रूप देनेका काम करनेवाला । **–वाद्य**–पु० ढोल; नगाड़ा । **–शोधन**–पु० (टैनिंग) विशेष प्रकारके घोलोंमें डालकर या अन्य प्रक्रिया द्वारा चमड़ेको सिझाना, मुलायम बनाना । **–शोधनालय**–पु० (टैनरी) वह स्थान या कारखाना जहाँ विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़ेको सिझाने, मुलायम बनानेका काम किया जाता है ।

चर्मण्वती–स्त्री० [सं०] चंबल नदी ।

चर्ममय–वि० [सं०] चमड़ेका बना हुआ ।

चर्मोदक–पु० [सं०] (लिम्फ) शरीरके चमड़े या जखम इत्यादिसे निकलनेवाला एक तरहका लसीला पदार्थ; लसीका ।

चर्या–स्त्री० [सं०] आचरण; पालन; जीविका; नियमपूर्वक अनुसरण; गति, गमन; भ्रमण; भोजन; चाल, प्रथा; दुर्गा ।

चर्राना–अ० क्रि० खालमें खुश्कीसे तनाव या हलका दर्द होना; 'चर-चर' करके टूटना; (ला०) प्रबल इच्छा होना (शौक चर्राना) ।

चर्री–स्त्री० लगनेवाली बात ।

चर्वण–पु० [सं०] चबाना; रसास्वादन; चबाकर खाया

जानेवाला भुना हुआ दाना, चबेना; ठोस खाद्य पदार्थ।

चर्वित–वि॰ [सं॰] चबाया हुआ। **–चर्वण**–पु॰ चबाये हुएको चबाना; कही हुई बातको फिर-फिर कहना।

चल–वि॰ [सं॰] गतिमान; हिलता-डोलता; अस्थिर; जंगम; क्षणस्थायी। **–चित्त**–वि॰ अस्थिरचित्त, चंचल चित्तवाला। **–चित्र**–पु॰ सिनेमा, बाइसकोप। **–चूक***–स्त्री॰ छल-कपट। **–दल,–पत्र**–पु॰ पीपल। **–निक्षेप**–पु॰ (करेंट डिपॉजिट) बैंकके चलते खातेमें जमा की हुई रकम। **–विचल**–वि॰ अस्थिर, डावाँडोल। **–संपत्ति**–स्त्री॰ ऐसी संपत्ति जो एक स्थानसे हटाकर अन्यत्र ले जायी जा सके।

चलचलाव–पु॰ कूच; मौत; चलनेकी तैयारी; प्रस्थानकाल; प्रस्थानकी हड़बड़ी, खरबरी।

चलता–स्त्री॰ [सं॰] चल या गतिशील होनेका भाव; अस्थिरता। वि॰ [हिं॰] चलता हुआ, गतिमान्; जिसका चलन हो, प्रचलित; जो सदा खुला, जारी रहे (खाता); चलनेवाला, काम देने लायक; बढ़ता, चमकता हुआ (चलती दुकान, वकालत); सरसरी, ऊपरी (चलती निगाह); चालाक (व्यवहारकुशल); कामचलाऊ (कार्य); हलका अशास्त्रीय (गाना, चीज)। **–खाता**–पु॰ बंकका वह खाता जिसमें चाहे जब रुपया जमा किया और निकाला जा सके। **–पुरज़ा**–वि॰ चालाक, धूर्त। मु॰ **–करना**–हटाना, विदा करना; निपटाना। **–फिरता नज़र आना**–चलता बनना। **–बनना,–होना**–चल देना, खिसक जाना।

चलत्ती–स्त्री॰ जोर, असर।

चलन–पु॰ [सं॰] हिलना-डोलना; गति, चाल; भ्रमण; चरण। **–कलन**–पु॰ ज्योतिषका एक गणित जिसके द्वारा दिनमानका घटना-बढ़ना जाना जाता है। **–समीकरण**–पु॰ गणितकी एक विशेष क्रिया जिसके द्वारा ज्ञात राशिकी सहायतासे अज्ञात राशि निकाली जाती है।

चलन–पु॰ चलनेका भाव; व्यवहार, रिवाज; रीति; चाल, ढंग; प्रचार। **–सार**–वि॰ जिसका चलन, व्यवहार हो, प्रचलित (सिक्का); टिकाऊ।

चलना–अ॰ क्रि॰ हिलना, हरकत करना; एकसे दूसरी जगह जाना, प्रस्थान करना; प्रचलित होना; आरंभ होना, छिड़ना (चर्चा, बात); विदा होना; मरना; जारी रहना (नाम, वंश); निभना; टिकना; बहना; काममें लाया जाना (तलवार, लाठी इ॰); छूटना, फेंका जाना (तीर, गोली); हो सकना; उठना; बढ़तीपर होना, चमकना; चलती होना; काम देना, कारगर होना (जादू-मंत्र); जोर, बस होना; आचरण करना; परसा जाना; पढ़ा जाना (पत्रादि); खाया जाना; गुजर होना; दायर होना (मुकदमा इ॰)। स॰ क्रि॰ (शतरंज, चौसर आदिमें) मोहरे या गोटको एकसे दूसरे घरमें रखना, हटाना, बढ़ाना; (ताश, गंजीफेमें) कोई पत्ता खेलनेवालोंके सामने फेंकना। मु॰ **चल निकलना**–ठीक तौरसे चलने लगना, जमना; सफलताकी ओर बढ़ना।

चलनि*–स्त्री॰ दे॰ 'चलन'।

चलनी–स्त्री॰ † दे॰ 'छलनी'।

चलवंत*–पु॰ पैदल सैनिक।

चलवाना–स॰ क्रि॰ चालने या चलानेका काम कराना।

चलवैया†–पु॰ चलनेवाला।

चलाऊ–वि॰ अधिक दिन चलनेवाला, टिकाऊ।

चलाक*–वि॰ चालाक, चतुर; चंचल।

चलाका*–स्त्री॰ बिजली।

चलाचल–वि॰ [सं॰] चल और अचल; अस्थिर; क्षणस्थायी; चंचल। पु॰ कौआ। * स्त्री॰ चलाचली; चाल।

चलाचली–स्त्री॰ चलचलाव; बहुतोंका एक साथ चलना।

चलान–स्त्री॰, पु॰ दे॰ 'चालान'।

चलाना–स॰ क्रि॰ चलनेको प्रेरित करना, चलनेकी क्रिया कराना; हाँकना; हिलाना, हरकत देना; आचरण कराना; चलन कराना (सिक्का); आरंभ करना; प्रवर्तन करना (चर्चा, धर्म, वंश); जारी रखना; काममें लाना; छोड़ना, फेंकना (तीर, गोली); निभाना, गुजर करना; बढ़ाना, चमकाना (रोजगार, वकालत); परसना; दायर करना (मुकदमा इ॰); बहाना।

चलायमान–वि॰ [सं॰] विचलित; डावाँडोल, चंचल।

चलार्थ–पु॰[सं॰](करेंसी) वह सिक्का या मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरंतर होता रहता हो, जो एक आदमीके हाथसे दूसरेके हाथमें जाता रहता हो। **–पत्र**–पु॰(करेंसी नोट) सिक्केकी तरह व्यवहृत होनेवाली कागजकी मुद्रा।

चलाव–पु॰ प्रस्थान, रवानगी; गौना; चलावा।

चलावा–पु॰ गौना, मुकलावा; चलन, रिवाज; बीमारीमें एक गाँवकी ओरसे दूसरे गाँवकी सीमामें किया जानेवाला उतारा।

चलित–वि॰ [सं॰] चलता हुआ; हिलता, काँपता हुआ; अस्थिर; गत; प्राप्त; ज्ञात; हटाया हुआ।

चलित्र–पु॰ [सं॰] (लोकोमोटिव) (रेलगाड़ी आदिको) चलानेवाला इंजन।

चलिष्णु–वि॰ [सं॰] गमनशील; जानेको तैयार।

चलौवा–पु॰ एक तरहका उतारा जो दूसरे गाँवकी सीमामें फेंक दिया जाता है।

चवना*–अ॰ क्रि॰ चूना, टपकना। स॰ क्रि॰ चुआना, स्रवित करना।

चवन्नी–स्त्री॰ चार आने मूल्यका चाँदी आदिका सिक्का।

चवा*–स्त्री॰ एक साथ चारों दिशाओंसे बहनेवाली हवा।

चवाई–पु॰ चुगलखोर, निंदक, चवाव करनेवाला।

चवाउ*–पु॰ दे॰ 'चवाव'।

चवाव–पु॰ अफवाह; बुराईकी चर्चा; चुगलखोरी।

चश्म–स्त्री॰ [फा॰] आँख, नेत्र; नेत्राकार वस्तु। **–दीद**–वि॰ आँखों देखा; जिसने आँखों देखा हो, प्रत्यक्षदर्शी (गवाह)। **–पोशी**–स्त्री॰ किसीके दोष-दुर्गुण देखकर टाल जाना, उपेक्षा करना। **–व चराग़**–पु॰ आँख और ज्योति; बहुत प्यारा; (ला॰) बेटा।

चश्मा–पु॰ [फा॰] सोता, स्रोत; ऐनक; सुईका छेद।

चष*–पु॰ दे॰ 'चक्षु'। **–चोल**–पु॰ आँखकी पलक।

चषक–पु॰ [सं॰] शराब पीनेका प्याला, पानपात्र; एक तरहकी शराब; शहद।

चसक–स्त्री॰ मगजीके आगे लगायी जानेवाली पतली

गोट; हलकी पीड़ा, टीस । * पु० दे० 'चपक' ।

चसकना–अ० क्रि० कसकना, हलका दर्द होना ।

चसका–पु० किसी चीजका मजा मिलनेसे उसे फिर करने, भोगनेकी इच्छा होना, चाट; इस तरह लगी हुई लत ।

चसना–अ० क्रि० मरना; चिपकना ।

चसम*–स्त्री० दे० 'चश्म' ।

चसमा†–पु० दे० 'चश्मा' ।

चह–पु० नदीमें बल्ले गाड़कर तथा तख्ते बिछाकर बनाया हुआ अस्थायी पुल; [फा०] ('चाह'का लघु रूप) कुआँ; गढ़ा । **–बच्चा**–पु० गंदा पानी जमा होनेके लिए खोदा हुआ गढ़ा; रुपया-पैसा गाड़नेके लिए बनाया हुआ गढ़ेकी शकलका तहखाना ।

चहक–स्त्री० चहकनेका भाव, चहचहा । † पु० पंक ।

चहकना–अ० क्रि० चिड़ियोंका चहचहाना, आनंदमें भरकर कलरव करना; खुशीसे खिलकर बोलना; जलना । स० क्रि० जलाना, संतप्त करना ।

चहकारना†–अ० क्रि० चहकना ।

चहकारा*–वि० चहकनेवाला, कलरव करनेवाला ।

चहचहा–पु० 'चहचहाना'का भाव; चिड़ियोंकी आनंदभरी बोली, कलरव; हँसी-खुशी; कई आदमियोंका एक साथ हँसना, मुदित होकर बोलना; हँसी-मजाक । वि० 'चहचह' शब्दसे भरा हुआ; आनंदपूर्ण; उल्लास-युक्त ।

चहचहाना–अ० क्रि० चिड़ियोंका आनंदमें भरकर लगातार बोलना, चहकना ।

चहना*–स० क्रि० देखना; चाहना ।

चहनि*–स्त्री० दे० 'चाह' ।

चहर*–स्त्री० चहल-पहल; आनंदका कोलाहल, शोर; उपद्रव । वि० बढ़िया; तेज । **–पहर**–स्त्री० दे० 'चहल-पहल' ।

चहरना*–अ० क्रि० मुदित होना ।

चहराना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; चर्राना; फटना ।

चहल*–स्त्री० दे० 'चहला'; आनंदोत्सव । **–पहल**–स्त्री० किसी स्थानमें अधिक आदमियोंके इकट्ठे होने, आने-जानेसे वायुमंडलमें पैदा हुई सजीवता, धूमधाम; प्रसन्नता; आबादी; रौनक ।

चहलक़दमी–स्त्री०[फा०] चेहलक़दमी, धीरे-धीरे टहलना ।

चहला*–पु० कीचड़ ।

चहार–वि० [फा०] चार । पु० चारकी संख्या । **–दीवारी**–स्त्री० किसी स्थानके चारों ओर, आड़-बचावके लिए खींची हुई दीवार, परकोटा ।

चहारुम–वि० [फा०] चौथा । पु० चतुर्थांश, चौथाई ।

चहुँ*–वि० चार, चारों । **–घा, –दिस**–अ० चारों ओर ।

चहुटना*–स० क्रि० चोट पहुँचाना ।

चहूँ*–वि० दे० 'चहुँ' ।

चहूँटना–अ० क्रि० सटना ।

चहेटना*–स० क्रि० दे० 'चपेटना'; निचोड़ना ।

चहेता–वि० प्यारा, प्रेमपात्र । [स्त्री० 'चहेती' ।]

चहोड़(र)ना†–स० क्रि० रोपना; सँभालना ।

चाँइयाँ–वि० धूर्त्त, ठग ।

चाइँ–वि० उचक्का, धूर्त, चालाक; गंजा । पु० ठग । स्त्री० सिरका एक रोग जिसमें फुंसियाँ होती और बाल गिरते हैं ।

चाँक–पु० काठकी थापी जिससे खलियानमें अन्नकी राशि गोंठते हैं; अन्नकी राशि गोंठनेका चिह्न ।

चाँकना–स० क्रि० गोंठना, रेखाओंसे घेरना ।

चाँगला–वि० धूर्त, चालाक; हृष्टपुष्ट ।

चाँचर, चाँचरि–स्त्री० होलीके अवसरपर गाया जानेवाला एक राग, फाग; परती जमीन ।

चांचल्य–पु० [सं०] चंचलता, चपलता ।

चाँचु*–स्त्री० चोंच ।

चाँटा–पु० चपत, तमाचा; * चींटा ।

चाँटी–स्त्री० कारीगरोंपर लगनेवाला एक पुराना कर; तबलेके ऊपर किनारेपर लगायी जानेवाली मगजी; इस मगजीपर आघात होनेसे निकलनेवाला शब्द; * चींटी ।

चाँड़–स्त्री०भारी आवश्यकता, गरज; बेकली, प्रबल इच्छा–'तोरे धनुष चाँड़ नहिं सरई'–रामा०; दबाव; लकड़ीकी पटरी या पाटन जिसपर सामान आदि रखा जाय; थूनी । वि० प्रबल; उग्र, प्रचंड; श्रेष्ठ; तृप्त, अघाया हुआ ।

चाँड़ना–स० क्रि० रौंदना; तोड़-फोड़कर नष्ट करना; खोद डालना ।

चांडाल–पु० [सं०] अंत्यज-वर्गमें सबसे नीची मानी गयी जाति, डोम; निषाद; क्रूर, नीच कर्म करनेवाला व्यक्ति ।

चाँडिला*–वि० चंड-प्रचंड; प्रबल; उद्धत; बहुत बढ़ा हुआ ।

चाँड़ी†–स्त्री० चोंगी, कीप ।

चाँद–पु० चंद्रमा; एक गहना जो दूजकी चाँदकी शकलका होता है; चाँदमारीका निशान; कलाईपर गोदा जानेवाला एक तरहका गोदना । स्त्री० चाँदिया, खोपड़ी । **–तारा**–पु० बारीक मलमल जिसपर चाँद और तारेकी शकलकी बूटियाँ बनी होती हैं; एक तरहकी पतंग । **–बीबी**–स्त्री० आदिलशाहकी विधवा पत्नी जिसने अकबरकी सेनाके अहमदनगर घेर लेनेपर असाधारण शौर्य और रणकौशलका परिचय दिया । **–मारी**–स्त्री० बंदूकसे निशाने लगानेका अभ्यास । **–सूरज**–पु० एक गहना जो चोटीमें गूँथकर पहना जाता है; बादलेके बने चाँद और सूरज जो कामदार टोपियोंमें लगाये जाते हैं । मु० **–का कुंडल, –का मंडल**–हलकी बदलीपर प्रकाश पड़नेसे चंद्रमाके चारों ओर बना हुआ घेरा । **–का टुकड़ा**–अति सुंदर । **–को गहन लगना**–अच्छी, सुंदर वस्तुमें दोष होना । **–गंजी हो जाना**–इतने जूते लगना कि चाँदपर बाल न रह जायँ । **–चढ़ना**–नया महीना चढ़ना; ऋतुका बीत जाना; गर्भ रहना (मुसल० स्त्रियाँ) । **–पर खाक या धूल उड़ाना**–निर्दोष व्यक्ति या वस्तुमें दोष निकालना; साधुचरित जनपर दोष लगाना । **–पर थूकना**–साधुचरित या महान् पुरुषपर लांछन लगाकर स्वयं लांछित होना ।

चाँदना–पु० उजाला, रौशनी; चाँदनी । मु० **–होना**–पौ फटना, सबेरा होना ।

चाँदनी–स्त्री० चाँदकी रोशनी, ज्योत्स्ना; फर्शपर बिछानेकी लंबी-चौड़ी सफेद चादर; छतगीर; गुलचाँदनी ।

चाँदा–पु० दूरबीनका लक्ष्य-स्थान; भूमिकी एक माप; कोण बनानेका चाँदकी शकलका आला ।

चाँदी–स्त्री० सफेद रंगकी एक नरम चमकीली धातु जो गहने, सिक्के आदि बनानेके काममें आती है; आर्थिक लाभ; एक छोटी मछली; * दे० 'चँदिया'। **मु०–कटना**–गहरी आय होना, खूब रुपये मिलना। **–का जूता,–की जूती**–घूस, उत्कोच। **–होना**–खूब लाभ होना, माल मिलना।

चांद्र–वि० [सं०] चंद्र-संबंधी। पु० चांद्र मास; चंद्रकांत मणि; चांद्रायण व्रत; अदरक। **–मास**–पु० चंद्रमाकी गतिके अनुसार होनेवाला महीना।

चांद्रायण–पु० [सं०] एक मास चलनेवाला एक व्रत।

चाँप–पु० दे० 'चाप'; बंदूकका एक पुरजा; * चंपाका फूल। स्त्री० दे० 'चाप'।

चाँपना–स० क्रि० दबाना।

चाँयँ-चाँयँ, चाँवँ-चाँवँ–स्त्री० बकबक।

चाँवर*–पु० चावल।

चाइ, चाउ*–पु० दे० 'चाव'।

चाउर†–पु० दे० 'चावल'।

चाक–पु० चक्राकार पत्थर जिसे फिराकर कुम्हार बरतन बनाता है; पहिया; चरखी; [फ़ा०] चीर; दरार। वि० फटा हुआ।

चाक़–वि० [तु०] चुस्त; स्वस्थ; हृष्टपुष्ट।

चाकचक्य–पु० [सं०] उज्ज्वलता; चमक-दमक; शोभा।

चाकचिक्य–पु० [सं०] चमक; चकाचौंध।

चाकना–स० क्रि० रेखाएँ खींचकर किसी चीजकी हद बनाना, रेखाओंसे घेरना; अनाजकी राशिपर मिट्टी या गोबरसे छापा लगाना; पहचानके लिए चिह्न बनाना।

चाकर–पु० [फ़ा०] नौकर, सेवक।

चाकर(रा)नी–स्त्री० नौकरानी।

चाकरी–स्त्री० [फ़ा०] नौकरी, सेवा।

चाका–पु० गाड़ी आदिका पहिया, चक्र।

चाकी–स्त्री० चक्की; बिजली; सिरपरकी जानेवाली पटेकी चोट।

चाक़ू–पु० [तु०] छोटी छुरी, कलम बनाने, फल-तरकारी काटनेका छोटा औजार, कलमतराश।

चाक्षुष–वि० [सं०] चक्षु-संबंधी; चक्षुसे प्राप्त (ज्ञान); चक्षु-ग्राह्य। पु० चक्षुसे प्राप्त ज्ञान; प्रत्यक्ष प्रमाणका एक भेद। **–गवाह**–पु० [हिं०] (आई-विटनेस) वह गवाह जिसने स्वयं किसी घटनाको घटित होते देखा हो।

चाखना–स० क्रि० चखना, स्वाद लेना।

चाचर, चाचरि–स्त्री० दे० 'चाँचर'; होलीका स्वांग, हुरदंग।

चाचरी–स्त्री० योगकी एक मुद्रा।

चाचा–पु० बापका भाई, चचा। (स्त्री० चाची)।

चाट–स्त्री० चसका, लत; मिर्च-मसाला देकर तैयार किया हुआ तीखे स्वादवाला खाद्य (दही-बड़ा, गोलगप्पा आदि); गजक (पड़ना, लगना)।

चाटना–स० क्रि० चटनी जैसी चीजको जीभसे उठाकर या पोंछकर खाना; किसी चीजपर जीभ फिराना; स्वाद लेना (होंठ, हाथ चाटना); (गाय, कुत्ते आदिका प्यारसे) जीभसे सहलाना, जीभ फेरना; कीड़ोंका किसी वस्तुको खाना। **मु० चाट जाना**–खा डालना, साफ कर देना।

चाटु–पु० [सं०] प्रियवचन, मीठी बात; झूठी प्रिय बात; झूठी प्रशंसा, चापलूसी। **–कार**–पु० चापलूसी करनेवाला। **–कारी**–स्त्री० चापलूसी।

चाटूक्ति–स्त्री० [सं०] चापलूसी।

चाड़*–स्त्री० दे० 'चाँड़'।

चाढ़ा*–पु० प्रेमपात्र, प्यारा; प्रेमी। वि० आसक्त, मुग्ध।

चाणक्य–पु० [सं०] (चणक मुनिके वंशमें उत्पन्न) चंद्रगुप्त मौर्यके प्रधान मंत्री, अर्थशास्त्रके रचयिता विष्णुगुप्त, कौटिल्य।

चाणाक्ष–वि० धूर्त्त, चालाक।

चातक–पु० [सं०] पपीहा, सारंग।

चातकनी*–स्त्री० मादा चातक, चातकी।

चातकानंदन–पु० [सं०] बादल, वर्षाकाल।

चातुर–वि० [सं०] चारसे संबद्ध; चतुर; चापलूस; चारसे खींचा जानेवाला (रथ); शासन करनेवाला। पु० चार पहियोंकी गाड़ी।

चातुरई†–स्त्री० दे० 'चातुरी'।

चातुरी–स्त्री० [सं०] चतुराई।

चातुर्थक, चातुर्थिक–वि० [सं०] चौथे दिन होनेवाला, चौथिया। पु० चौथिया ज्वर।

चातुर्मास–वि० [सं०] चार महीनेमें होनेवाला।

चातुर्मासिक–वि० [सं०] चार महीनेमें होनेवाला (यज्ञादि)।

चातुर्मास्य–पु० [सं०] चार मासमें होनेवाला एक वैदिक यज्ञ; चौमासा।

चातुर्य–पु० [सं०] चातुरी।

चातुर्वर्ण्य–पु० [सं०] चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; चारों वर्णोंके धर्म, कर्तव्य।

चात्रिक, चात्रिग*–पु० चातक।

चादर–स्त्री० साड़ीके ऊपर ओढ़ा जानेवाला अधिक लंबा-चौड़ा दुपट्टा; बिस्तरके ऊपर बिछाया जानेवाला दुपट्टा; लोहे-पीतल आदिका लंबा-चौड़ा, पतला खंड, पत्तर; ऊँचे स्थानसे गिरनेवाली पानीकी चौड़ी धार; चादरके रूपमें गुँथे हुए फूल जो क़ब्र या मजारपर चढ़ाये जाते हैं। **मु० –उतारना**–बेपर्द, बेइज्जत करना। **–ओढ़ाना,–डालना**–विधवाको घरमें डाल लेना, विधवासे ब्याह करना। **–देखकर पाँव फैलाना**–वित्त, बिसात देखकर खर्च करना। **–हिलाना**–युद्धमें आत्मसमर्पण या लड़ाई बंद करनेके लिए कपड़ा हिलाना।

चान*–पु० चंद्रमा।

चानक*–अ० दे० 'अचानक'।

चानन*–पु० चंदन।

चाप–स्त्री० दबाव; धक्का; पाँवोंकी आहट। पु० [सं०] धनुष; इंद्रधनुष; धनुराशि; वृत्तकी परिधिका कोई अंश (आर्क)। **–कर्ण**–पु० (कॉर्ड) दे० 'जीवा'।

चापड़–वि० जो दाब पड़नेसे चपटा हो गया हो; समतल; बरबाद, मटियामेट। स्त्री० चोकर।

चापना–स० क्रि० दबाना, दाब पहुँचाना।

चापल–पु० [सं०] चपलता, चंचलता; अस्थिरता; उतावली; शोखी; क्षोभ। * वि० चपल।

चापलता*–स्त्री० दे० 'चपलता'।

चापलूस–वि० [फ़ा०] खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी–स्त्री० [फा०] खुशामद, झूठी प्रशंसा ।

चापल्य–पु० [सं०] चंचलता, अस्थिरता ।

चाब–स्त्री० एक पौधा; डाढ़ ।

चाबना–स० क्रि० चबाना; खूब खाना ।

चाबी–स्त्री० कुंजी; पच्चड़ ।

चाबुक–वि० [फा०] फुरतीला, चुस्त, तेज । पु० कोड़ा । **–सवार**–पु० घोड़ेको सधाने, चाल सिखानेवाला ।

चाभना–स० क्रि० खाना; भकोसना; तर माल खाना ।

चाभी–स्त्री० दे० 'चाबी' ।

चाम–पु० चमड़ा, खाल । **–के दाम**–चमड़ेके सिक्के; निजाम भिस्तीका चलाया हुआ सिक्का जिसे हुमायूँको डूबनेसे बचानेके बदले आधे दिनकी बादशाही मिली थी; व्यभिचारकी कमाई ।

चामर–पु० [सं०] चँवर; मोरछल; एक वर्णवृत्त ।

चामरिक–पु० [सं०] चँवर डुलानेवाला ।

चामीकर–पु० [सं०] सोना; धतूरा ।

चामुंडा–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक रूप ।

चाय–* पु० दे० 'चाव' । स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियोंका काढ़ा दूध-शकर मिलाकर पिया जाता है; उक्त पौधेकी सुखायी हुई पत्तियाँ; चायकी पत्तियोंको उबालकर बनाया हुआ पेय । **–दान**–पु०, **–दानी**–स्त्री० वह बरतन जिसमें चाय बनायी या बनाकर रखी जाय । **–पानी**–पु० जलपान ।

चायक*–पु० चाहनेवाला ।

चार–वि० तीन और एक; कुछ; कई । पु० चारकी संख्या । **–काने**–पु० पासेका इस तरह पड़ना कि एकका दो बिंदियोंवाला और दोका एक-एक बिंदीवाला बल चित हो । **–ख़ाना**–पु० वह कपड़ा जिसमें रंगीन धारियोंके चौखूँटे खाने बने हों । **–जामा**–पु० दे० क्रममें । **–दिन**–पु० थोड़े दिन, अल्प काल । **–दीवारी**–स्त्री० दीवारोंका घेरा, प्राचीर, परकोटा । **–पाई**–स्त्री० खाट, छोटा पलंग । **–पाया**–पु० चौपाया, पशु । **–बाग़**–पु० चौकोर बाग; वह शाल या रूमाल जो रंगोंके जरिये चार हिस्सोंमें बँटा हो । **(चारों)धाम**–पु० चारों दिशाओंमें स्थित हिंदुओंके चार प्रधान तीर्थ–पुरी, बदरिकाश्रम, द्वारका और रामेश्वर । **–पदार्थ**–पु० मनुष्य जीवनके चार पुरुषार्थ–अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष । **मु० (चार) आँखें करना**–देखादेखी, साक्षात्कार करना; निगाह मिलाना । **–आँखें होना**–देखा-देखी होना । **–क़दम**–थोड़ा फासला । **–के कंधे,–के काँधे चढ़ना, चलना**–मर जाना, अरथी उठना । **–के कान पड़ना**–चर्चा होना, बातका फैलना । **–चाँद लगना**–शोभा, सुंदरता बढ़ना । **–दिनकी चाँदनी**–दो-चार ही दिन रहने, टिकनेवाली बात, चंदरोजा चीज । **–पाँच करना**–हीला-हवाला करना; हुज्जत करना । **–पाईपर पड़ना**–लेटना; बीमार होना । **–पाईसे पीठ लगना**–सख्त बीमार होना, उठने-बैठनेकी शक्ति न रह जाना । **(चारों)ख़ाने चित गिरना**–दे० 'चारों शाने चित गिरना' । **–फूटना**–दो स्थूल आँखें और दो हृदयकी, सबका फूट जाना, निपट अंधा होना । **–शाने चित गिरना, होना**–(कुश्तीमें) इस तरह चित होना कि पूरी पीठ और हाथ-पाँव जमीनसे लग जायँ; पूरी तरह परास्त हो जाना; (कोई शोक-संवाद सुनकर) स्तब्ध, बदहवास हो जाना; हिम्मत हार जाना ।

चार–पु० आचार, रीति, (द्वार-चार); * सेवक, टहलू; [सं०] गति; गुप्तचर, जासूस; कारागार; प्रियाल; कृत्रिम विष । **–कर्म(न्)**–पु०, **–व्यवस्था**–स्त्री० (एस्पिऑनेज) जासूसोंका काम; जासूस नियुक्त कर उनसे काम लेना ।

चारजामा–पु० [फा०] घोड़ेपर कसनेका कपड़ेका जीन जिसमें काठ नहीं लगा होता ।

चारण–पु० [सं०] तीर्थयात्री; भाट, बंदीजन; गुप्तचर; राजपूतानाकी एक जाति; चरानेका कार्य ।

चारन*–पु० दे० 'चारण' ।

चारना*–स० क्रि० दे० 'चराना' ।

चारा–पु० चौपायोंके खानेकी चीज–घास, चरी आदि; चिड़ियों, मछलियों आदिको खिलायी जानेवाली चीज–सत्तू, आटेकी गोली आदि; मछलियाँ फँसानेके लिए कँटियामें लगाया जानेवाला गीला आटा आदि; [फा०] उपाय, इलाज । **–जोई**–स्त्री० (अदालतसे) अन्यायके प्रतिकारकी प्रार्थना, नालिश, फरियाद ।

चारि*–वि० चलनेवाला, आचरण करनेवाला; चार । पु० संदेश । स्त्री० दौत्य; चुगली ।

चारित–वि० [सं०] जो चलाया गया हो; भबकेसे खींचा हुआ । पु० आरा; * पशुओंका चारा, चरी ।

चारित्र–पु० [सं०] चरित्र, चाल-चलन; स्वभाव, शील; कुलक्रमागत आचार, सदाचार; साधुता; सतीत्व (स्त्री) ।

चारित्र्य–पु० [सं०] दे० 'चारित्र' ।

चारी–स्त्री० [सं०] जाल; दौत्य; जासूसी; * चुगली ।

चारी(रिन्)–वि० [सं०] चलनेवाला, जानेवाला (व्योमचारी); आचरण करनेवाला । [स्त्री० 'चारिणी' ।] पु० पैदल सिपाही ।

चारु–वि० [सं०] प्रिय; सुंदर, मनोहर । **–नेत्रा,–लोचना**–वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली । **–हासिनी**–वि० स्त्री० मनोहर हँसी, मुसकानवाली (स्त्री) । स्त्री० एक वृत्त ।

चारेक्षण–पु० [सं०] राजा ।

चार्चिक्य–पु० [सं०] अंगरागका लेपन; अंगराग ।

चार्वाक–पु० [सं०] चार्वाक-दर्शनके रचयिता एक मुनि जो नास्तिक मतके आदि-प्रवर्तक, बृहस्पतिके शिष्य बताये जाते हैं; एक राक्षस जो दुर्योधनका मित्र था ।

चाल–स्त्री० चलनेकी क्रिया, गति; हिलना, घूमना, हरकत (घड़ीकी चाल); चलनेका ढंग; चलनेकी सायत; चलन, आचरण; रीतिरिवाज; ढब, बनावट; ढंग, प्रकार; छल, धोखा देनेवाली बात; कूटयुक्ति; ताश, शतरंज आदिमें पत्ते या मुहरेको चलना; आहट; इस ढंगसे बनाया हुआ भारी मकान जिसमें पचासों किरायेदार कुटुंब रह सकें (बंबई); * हलचल । **–चलन**–पु० आचरण, चरित्र, नीति-संबंधी आचरण । **–ढाल**–स्त्री० तौर-तरीका, रहन-सहनका ढंग । **–बाज़**–वि० चालें चलनेवाला, छलिया, धूर्त । **–बाज़ी**–स्त्री० छल, धूर्तता ।

चालक–वि० [सं०] चलानेवाला; * छली, चालबाज ।

चालन–पु० चालनेके बाद बचा हुआ अंश, भूसी, चोकर आदि; [सं०] चलाना; प्रचार करना; हिलाना; हिलना, गति; छानना ।

चालना–स० क्रि० छानना; * चलाना; हिलाना; * प्रसंग छेड़ना । अ० क्रि० दुलहिनका पहली बार सुसराल आना; *चलना । **–(न)हार**–पु० चलने, चलानेवाला ।

चाला–पु० रवानगी; प्रस्थानका मुहूर्त्त; दुलहिनका पहली बार सुसराल आना ।

चालाक–वि० [फा०] चुस्त, फुरतीला; चतुर; धूर्त ।

चालाकी–स्त्री० [फा०] चतुराई; धूर्त्तता ।

चालान–पु० भेजे हुए मालकी सूची, विवरण, बीजक; रवन्ना; मालका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; बाहर भेजा हुआ या वहाँसे आया हुआ माल; अभियुक्तका विचारके लिए मजिस्ट्रेटके पास भेजा जाना । **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें चालान किये जानेवाले मालका विवरण लिखा जाय ।

चालिया–वि० चालबाज ।

चाली–वि० चालबाज, छली; * नटखट । * स्त्री० चाल, चलनेका तरीका ।

चालीस–वि० तीस और दस । पु० चालीसकी संख्या, ४० । **–वाँ**–वि० जो क्रममें ३९के बाद आये । पु० मृत व्यक्तिके चालीसवें दिनका कर्म, चेहलुम; चेहलुमकी फातिहा ।

चालीसा–पु० चालीस वस्तुओं या पद्योंका समूह; चालीस दिनका काल, चिल्ला ।

चालुक्य–पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्रमुख राजवंश जिसने छठीसे तेरहवीं शती (वै०)तक राज्य किया ।

चाल्ह, चाल्हा*–स्त्री० चेल्हवा मछली ।

चाव–पु० तीव्र इच्छा, चाह; शौक; प्रेम, अनुराग; उमंग; उत्साह; * निंदा, बदनामी ।

चावड़ी–स्त्री० चट्टी, पड़ाव; कोतवाली (छत्तीस०) ।

चावना*–स० क्रि० चाहना ।

चावर†–पु० दे० 'चावल' ।

चावल–पु० धान, साँवाँ, कोदो आदिका सार भाग जो बीजसे भूसी अलग कर देनेपर बच रहता है, तंडुल; पकाया हुआ चावल, भात; रत्तीका आठवाँ भाग ।

चाशनी–स्त्री० [फा०] चखनेकी चीज; खाद्य वस्तुका नमूना जो चखनेके लिए दिया जाय; चीनी-गुड़ आदिका शीरा; स्वाद, मजा; नमूनेका सोना जो गाहक अपने पास रखता है ।

चाष–पु० [सं०] नीलकंठ पक्षी; चाहा; * चक्षु, आँख ।

चास–पु० [सं०] दे० 'चाष' । † स्त्री० जोत, खेती ।

चासा†–पु० किसान; हलवाहा ।

चाह–स्त्री० इच्छा, लालसा; प्रेम; जरूरत, गरज; पूछ, आदर; * खबर; भेद ।

चाहक*–पु० चाहनेवाला, प्रेमी ।

चाहत*–स्त्री० चाह, प्रेम ।

चाहना–स० क्रि० इच्छा करना, इरादा करना; माँगना; प्रेम करना; पसंद करना; यत्न करना; चाहभरी दृष्टिसे देखना, निहारना;–'सीय चकित चित रामहिं चाहा'–रामा०; ढूँढ़ना; समझना । * स्त्री० चाह ।

चाहा–पु० बगलेकी तरहका एक पक्षी ।

चाहि*–अ०···से बढ़कर, अधिक ।

चाहिये–अ० उचित है, वाजिब है; अपेक्षित है, दरकार है ।

चाही–वि० स्त्री० चहेती (क्व०); [फा०] कूप-संबंधी; कुएँसे सींची जानेवाली (जमीन) ।

चाहे–अ० जो चाहे, मरजीमें आये (तो), ख्वाह; या तो ।

चिँआँ–पु० इमलीका बीज ।

चिँउँटा–पु० दे० 'चींटा' ।

चिँउँटी–स्त्री० दे० 'चींटी' ।

चिँगना–पु० मुरगीका छोटा बच्चा, चूजा; छोटा बच्चा ।

चिंघाड़–स्त्री० हाथीके चिल्लानेका शब्द; चीत्कार, गर्जन ।

चिँघाड़ना–अ० क्रि० हाथीका जोरसे बोलना; चीखना, चीत्कार करना, गरजना ।

चिंचा–स्त्री० [सं०] इमली; इमलीका चिंआँ; गुंजा ।

चिंचिनी–स्त्री० [सं०] इमली ।

चिंची–स्त्री० [सं०] गुंजा ।

चिंजा*–पु० बेटा ।

चिंजी*–स्त्री० बेटी ।

चिंत*–स्त्री० चिंता; खयाल, याद ।

चिंतक–वि० [सं०] चिंतन करनेवाला; ध्यान करनेवाला ।

चिंतन–पु० [सं०] किसी. वस्तु, व्यक्तिको बार-बार याद करना; सोचना-विचारना, मनन ।

चिंतना–स्त्री०*स० क्रि० चिंतन करना; सोचना-समझना ।

चिंतनीय–वि० [सं०] चिंता करने योग्य, विचारणीय; शोचनीय ।

चिंतवन*–पु० दे० 'चिंतन' ।

चिंता–स्त्री० [सं०] चिंतन; फिक्र; ध्यान; परवाह; एक संचारी भाव । **–जनक**–वि० चिंताका कारणरूप, चिंतित कर देनेवाला । **–पर,–मग्न**–वि० चिंता, सोचमें डूबा हुआ । **–पल***–वि० दे० 'चिंतापर' । **–मणि**–पु० एक कल्पित रत्न जिसमें जो माँगो वह देनेकी सामर्थ्य मानी जाती है; सब कामनाएँ पूरी करनेमें समर्थ, परमेश्वर; यात्राका एक योग; सरस्वतीका बीजमंत्र जो नवजात शिशुकी जीभपर विद्याप्राप्तिके लिए लिखा जाता है । **–शील**–वि० जिसे सोच-विचारकी आदत हो, मननशील, मनीषी ।

चिंताकुल–वि० [सं०] चिंतासे आकुल, उद्विग्न ।

चिंतातुर–वि० [सं०] चिंतासे उद्विग्न ।

चिंतित–वि० [सं०] चिंतायुक्त, सोचमें पड़ा हुआ ।

चिंत्य–वि० [सं०] चिंता करने योग्य, चिंतनीय, विचारणीय ।

चिंदी–स्त्री० छोटा टुकड़ा, धज्जी ।

चिउँटा–पु० दे० 'चींटा ।

चिउँटी–स्त्री० दे० 'चींटी' । **–की चाल**–बहुत धीमी चाल । **मु०–के पर निकलना**–मरनेका समय आना; शामत आना । (चींटीके पर निकलनेपर वह उड़ती और गिरकर मर जाती या चिड़ियोंका भक्ष्य बनती है ।)

चिउड़ा–पु० दे० 'चिड़वा' ।

चिउरा*–पु० दे० 'चिड़वा' ।

चिक–स्त्री० बाँसकी तीलियोंका बना हुआ झीना पर्दा जिसे खिड़की-दरवाजोंपर डालते हैं । पु० बकरकसाब ।

चिकट–वि० दे० 'चीकट' । पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

चिकटना—अ० क्रि० मैलसे ढककर चिपचिपा हो जाना ।

चिकटा—वि० दे० 'चीकट' ।

चिकन—पु० सूती कपड़ेपर सुईसे बेल-बूटे बनानेका काम; ऐसे कामवाला कपड़ा ।

चिकना—वि० जिसकी सतह बराबर रगड़ी, रंदा की हुई हो, जो खुरदरा न हो; जिसपर हाथ-पाँव फिसले; साफ और चमकीला; तेल, घी लगा हुआ, स्निग्ध; *स्नेही । † पु० घी; तेल । **—घड़ा**—जिसपर कहने-सुननेका असर न हो, बेहया ।

चिकनाई—स्त्री० चिकनापन, स्निग्धता; घी, तेल आदि ।

चिकनाना—स० क्रि० चिकना करना, रूखापन, खुरदरापन मिटाना; तेल आदि लगाना । अ० क्रि० चिकना होना; मोटा होना, चरबी बढ़ना; चिकनी-चुपड़ी बातें करना; * स्नेहसे युक्त, अनुरक्त होना ।

चिकनावट, चिकनाहट—स्त्री० चिकनाई ।

चिकनिया—वि० जो बना-ठना रहे, छैला ।

चिकनी—वि० स्त्री० दे० 'चिकना' । **—चुपड़ी बातें**—स्त्री० किसीको ठगने-फुसलानेके लिए कही जानेवाली मीठी बातें, चापलूसीकी बातें । **—डली,—सुपारी**—स्त्री० उबाली हुई चिपटी सुपारी । **—मिट्टी**—स्त्री० काली, लसदार मिट्टी ।

चिकरना—अ० क्रि० चिंघाड़ना ।

चिकवा—पु० बूचड़, चिक; * एक रेशमी कपड़ा ।

चिकार*—पु० चीत्कार, चीख ।

चिकारना*—अ० क्रि० चीत्कार करना ।

चिकारा—पु० एक तरहकी सारंगी; एक तरहका हिरन ।

चिकित्सक—पु० [सं०] चिकित्सा करनेवाला, वैद्य ।

चिकित्सा—स्त्री० [सं०] रोगनिवारणका उपाय, इलाज; औपधोपचार ।

चिकित्सालय—पु० [सं०] अस्पताल, शफाखाना ।

चिकित्सित—वि० [सं०] जिसका इलाज किया गया हो ।

चिकीर्षक—वि० [सं०] करनेकी इच्छा रखनेवाला ।

चिकीर्षा—स्त्री० [सं०] करनेकी इच्छा ।

चिकीर्षु—वि० [सं०] करनेकी इच्छा रखनेवाला ।

चिकुटी*—स्त्री० चिकोटी, चुटकी ।

चिकुर—पु० [सं०] केश, शिरके बाल; रेंगनेवाला जीव; पहाड़; गिलहरी; छछूँदर । **—कलाप,—निकर,—पाश**—पु० केशकलाप, जुल्फ, लट ।

चिकोटी—स्त्री० दे० 'चुटकी' ।

चिक्कट—वि० बहुत मैला, गंदा । पु० जमा हुआ मैल ।

चिक्कण—वि० [सं०] चिकना ।

चिक्कणी—स्त्री० [सं०] सुपारी; चिकनी सुपारी ।

चिक्करना—अ० क्रि० चीत्कार करना, चिंघाड़ना ।

चिक्कार—पु० चिकार ।

चिखना†—पु० मद्यपानके समय खायी जानेवाली चटपटी वस्तु, चाट ।

चिखुरी†—स्त्री० मादा गिलहरी ।

चिग्घाड़—स्त्री० दे० 'चिंघाड़' ।

चिचड़ा—पु० लटजीरा नामक पौधा, अपामार्ग ।

चिचड़ी—स्त्री० किलनी ।

चिचान*—पु० बाज ।

चिचाना*—अ० क्रि० चिल्लाना ।

चिचावना*—अ० क्रि० दे० 'चिचियाना' ।

चिचिंड—पु० [सं०] चिचिंडा ।

चिचिंडा—पु० एक बेल जिसमें गोल लंबोतरे फल लगते और तरकारीके काम आते हैं; उसका फल ।

चिचियाना†—अ० क्रि० चीखना, चिल्लाना ।

चिचुकना—अ० क्रि० दे० 'चुचुकना' ।

चिचोड़ना†—स० क्रि० दे० 'चचोड़ना' ।

चिजारा*—पु० राज, मेमार ।

चिट—स्त्री० कागजका छोटा टुकड़ा, पुरजा; कपड़ेकी धज्जी । **—नवीस**—पु० लेखक, मुहर्रिर ।

चिटकना—अ० क्रि० सूखकर फटना, तड़कना; लकड़ीका जलते समय 'चिटचिट' आवाज करना; चिढ़ना, खीझना ।

चिटकाना—स० क्रि० तोड़ना; खिझाना, चिढ़ाना ।

चिट्टा—वि० गोरा, सफेद (गोरा-चिट्टा) । † पु० हानिकर कार्यके लिए दिया जानेवाला चकमा, बढ़ावा (देना, लड़ाना) ।

चिट्ठा—पु० खाता; आय-व्यय आदिका वार्षिक विवरण; दैनिक, साप्ताहिक या मासिक मजदूरी, वेतनका हिसाब; उसे चुकानेके लिए बाँटा जानेवाला रुपया; विवरण ।

चिट्ठी—स्त्री० पत्र, खत; पुरजा; आज्ञापत्र; निमंत्रणपत्र; पुरजे डालकर विशेष वस्तु या पुरस्कार पानेवालेका नाम निश्चित करना (लाटरी) । **—पत्री**—स्त्री० पत्र; पत्रव्यवहार । **—रसाँ**—पु० चिट्ठियाँ बाँटनेवाला, डाकिया ।

चिड़चिड़ा—वि० जो जरासी बातपर चिढ़ जाय, झुँझला उठे, तुनक-मिजाज । **—पन**—पु० तुनक-मिजाजी ।

चिड़चिड़ाना—अ० क्रि० चिटकना, जलनेमें 'चिड़चिड़' आवाज होना; चिढ़ना; झुँझलाना ।

चिड़वा—पु० हरे या भिगोये हुए धानको भून और कूटकर चिपटा किया हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

चिड़ा—पु० गौरवा, चटक ।

चिड़िया—स्त्री० उड़नेवाला, पंखयुक्त प्राणी, पक्षी, पखेरू; चौबगला; अँगियाकी कटोरियोंके बीचकी सिलाई; पायजामे या लहँगेका नेफा; ताशका एक रंग, चिड़ी; बैसाखी आदिके सिरपर लगायी जानेवाली चिड़ियाकी शकलकी लकड़ी; एक प्रकारकी सिलाई । **—ख़ाना,—घर**—पु० पशु-पक्षियोंको रखनेका स्थान, जंतुशाला । **मु०—फँसाना**—शिकार फँसाना; किसी सुंदरी युवती या मालदार असामीको फुसलाकर हाथमें कर लेना ।

चिड़िहार*—पु० दे० 'चिड़ीमार' ।

चिड़ीमार—पु० चिड़िया पकड़नेवाला, बहेलिया ।

चिढ़—स्त्री० चिढ़नेका भाव, खीझ, नाराजगी; नफरत ।

चिढ़ना—अ० क्रि० खफा, नाराज होना; किसी तात्कालिक बातपर क्रुद्ध हो जाना, बुरा मानना ।

चिढ़ाना—स० क्रि० नाराज करना; कुपित करनेवाली बात कहना, खिझाना, मुँह बनाना; छेड़ना; उपहास करना ।

चित—वि० [सं०] चुनकर इकट्ठा किया हुआ ।

चित*—पु० चितवन; दे० 'चित्त' । **—चीता***—वि० मनचाहा, चाहा हुआ । **—चोर**—वि० चित्त चुरानेवाला, मनोहर । **—भंग**—पु० उचाट, जी न लगना; बुद्धि

ठिकाने न रहना।

चित–वि० जिसका मुँह-पेट ऊपरकी ओर हो, उत्तान, पटका उलटा। अ० पीठके बल। मु०–**करना**–कुश्तीमें प्रतिपक्षीको पछाड़ना, उसकी पीठ लगा देना। –**होना**–कुश्तीमें हार खाना।

चितउर*–पु० चित्तौर।

चितकबरा–वि० जिसमें एक रंगकी जमीनपर दूसरे रंगके धब्बे हों, चितला; रंग-बिरंगा।

चितकूट*–पु० चित्रकूट।

चितगुपित*–पु० दे० 'चित्रगुप्त'।

चितरना*–स० क्रि० चित्र, बेल-बूटे बनाना, उरेहना।

चितला–वि० चितकबरा। पु० चित्तीदार खरबूजा।

चितवन–स्त्री० किसीकी ओर देखनेका ढंग, दृष्टि; कटाक्ष।

चितवना*–स० क्रि० देखना, निरखना।

चितवनि*–स्त्री० दे० 'चितवन'।

चिता–स्त्री० [सं०] मुरदेको जलानेके लिए चुनकर रखी हुई लकड़ियाँ; ढेर, समूह; * श्मशान।

चिताना–स० क्रि० चेत कराना, याद दिलाना; किसी खतरे-बुराईके बारेमें सावधान करना; ज्ञानोपदेश करना।

चितारी†–पु० दे० 'चितेरा'।

चितारोहण–पु० [सं०] (विधवाका) सती होनेके लिए चितापर जाना।

चितावनी–स्त्री० चितानेकी क्रिया; चितानेके लिए कही गयी बात, आगाही, तंबीह (देना)।

चिति–स्त्री० [सं०] चयन, चुनाई; ढेर; चिता; चेतना; ईंटोंकी जोड़ाई; समझ; दुर्गा; दे० 'चित्ती'।

चितेरा–पु० चित्रकार।

चितेरिन, चितेरी–स्त्री० स्त्री चित्रकार; चित्रकारकी पत्नी।

चितैना*–स० क्रि० दे० 'चितवना'।

चितौन, चितौनि*–स्त्री० दे० 'चितवन'।

चितौना*–स० क्रि० दे० 'चितवना'।

चितौनी–स्त्री० दे० 'चितावनी'।

चित्–स्त्री० [सं०] चेतना; ज्ञान; आत्मा; ब्रह्म; चित्त।

चित्त–पु०[सं०] अंतरिंद्रिय, अंतःकरण, मन; अंतःकरणकी चिंतना, अनुसंधानकारिणी वृत्ति (वे०)। –**ज,–जन्मा(न्मन्)**–पु० कामदेव। –**निवृत्ति**–स्त्री० संतोष, सुख। –**विकृति**–स्त्री० (अनसाउंडनेस ऑफ माइंड) चित्त या मनका विकार या त्रुटि; मानसिक सदोषता। –**विक्षेप**–पु० चित्तकी अस्थिरता, अनेक विषयोंमें भटकते रहना। –**विभ्रंश,–विभ्रम**–पु० भ्रांति; उन्माद। –**वृत्ति**–स्त्री० चित्तकी अवस्था; मनका भाव।–**वृत्ति-निरोध**–पु० चित्तको बाह्य विषयोंसे हटाकर अंतर्मुख करना।–**शुद्धि**–स्त्री० चित्तका निर्मल, कुवासनाओंसे रहित होना। मु०–**उचटना**–जी न लगना, मन उदास होना। –**चढ़ना**–दे० 'चित्तपर चढ़ना'। –**चिहुँटना***–चित्तमें पीड़ा उत्पन्न करना।–**चुराना**–मन मोह लेना।–**देना**–मन लगाना; ध्यान देना। –**पर चढ़ना**–बराबर याद रहना या बराबर याद आना। –**बँटना**–मनका किसी एक विषयमें न लग सकना, चित्तमें बहुत-सी चिताएँ होना।–**से उतरना**–अप्रिय हो जाना; याद न रहना।

चित्तरसारी*–स्त्री० चित्रशाला।

चित्ताकर्षक–वि० [सं०] मनको खींचने, लुभानेवाला।

चित्ती–स्त्री० छोटा धब्बा; रोटीमें जल जानेका दाग; चिपटी कौड़ी जिससे जुआ खेलते हैं; कुम्हारके चाकके किनारेका गढ़ा; इमलीका चिआँ जिसका एक ओरका छिलका रगड़कर दूर कर दिया गया हो; चीतल या चित्तीदार साँप; मुनिया चिड़िया।

चित्तौर–पु० मेवाड़के महाराणाओंकी पुरानी राजधानी।

चित्र–पु०[सं०] कागज, कपड़े आदिपर बनायी हुई वस्तुकी प्रतिमूर्ति, तसवीर; आलेख्य; तिलक; शब्दचित्र; चित्रकाव्य; चित्रगुप्त; चित्रक। वि० रंग-बिरंगा; चितकबरा; चमकीला; कई वर्णोंवाला; विचित्र; * ठीक, दुरुस्त। –**कंठ**–पु० कबूतर। –**कर्म(न्)**–पु० चित्र बनाना; आलेखन; बाजीगरी; विचित्र कार्य; अलंकरण। –**कर्मा(र्मन्)**–पु० विचित्र कार्य करनेवाला; बाजीगर; चित्रकार। –**कला**–स्त्री० चित्रविद्या, चित्र बनानेकी कला।–**काय**–पु० चीता। –**कार**–पु० चित्र बनानेवाला, चितेरा। –**कारी**–स्त्री०[हिं०] चित्रकारका काम, धंधा; चित्रकला। –**काव्य**–पु० चित्र (छत्र, चमर आदि)के आकरमें लिखित काव्य। –**कूट**–पु० बाँदा जिलेका एक पर्वत जिसपर वनवास-कालमें राम-सीता कई बरस रहे। –**केतु**–पु० लक्ष्मणका एक पुत्र। –**गुप्त**–पु० १८ यमोंमेंसे एक; यमके दरबारके लेखक जो सब मनुष्योंका पाप-पुण्य लिखा करते हैं और जो कायस्थ जातिके आदिपुरुष माने जाते हैं। –**पट**–पु० चित्र; वह कपड़ा, चमड़ा या कागज जिसपर चित्र बनाया जाय, चित्राधार; सिनेमाकी फिल्म।–**फलक**–पु० काठ, हाथीदाँत आदिकी पटिया जिसपर चित्र बनाया जाय। –**मृग**–पु० चीतल हिरन। –**युद्ध**–पु० नकली लड़ाई। –**योग**–पु० बूढ़ेको जवान, जवानको बूढ़ा बना देनेकी विद्या; ६४ कलाओंमेंसे एक। –**रथ**–पु० सूर्य; कुबेरका सखा एक गंधर्व।–**रेखा**–स्त्री० बाणासुरकी कन्या उषाकी एक सहेली।–**ल**–वि० चितकबरा।–**लिखित**–वि० चित्रित; गतिहीन; मूक। –**लिपि**–स्त्री० वह लिपि जिसमें अक्षरोंकी जगह सांकेतिक चित्र काममें लाये जायँ। –**लेखक**–पु० चित्रकार। –**लेखा**–स्त्री० चित्र; बाणासुरके मंत्रीकी कन्या जो उषाकी एक सखी थी; एक अप्सरा; तसवीर बनानेकी कूँची। –**विचित्र**–वि० रंगबिरंगा; बेल-बूटेदार।–**विद्या**–स्त्री० चित्र बनानेकी विद्या, चित्रकला। –**शार्दूल**–पु० चीता (जंतु)। –**शाला**–स्त्री० वह भवन, मंडप आदि जिसमें बहुतसे चित्र लगा रखे गये हों, जहाँ चित्रकलाका प्रदर्शन किया जाय (पिक्चर-गैलरी); वह स्थान जहाँ चित्र बनाये जायँ (स्टूडियो); दे० 'रंगशाला; भित्ति-चित्रोंसे भरा भवन, मंडप। –**सारी**–स्त्री० [हिं०] चित्रशाला।

चित्रक–पु० [सं०] चीता, बाघ; चीता नामका क्षुप; एरंड; तिलक; चित्रकार; युद्धका एक ढंग; एक विशेष वन।

चित्रना*–स० क्रि० चित्र बनाना, उरेहना; रंग भरना।

चित्रमय–वि० [सं०] चित्रोंसे भरा हुआ, सचित्र।

चित्रवत्–वि० [सं०] चित्र जैसा; (ला०) स्थिर, गतिरहित।

चित्रांगद–पु० [सं०] शांतनुका पुत्र, विचित्रवीर्यका भाई।

चित्रा–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे एक; चितकबरी गाय; ककड़ी; खीरा; मजीठ; वायविडंग; मूषिकपर्णी; एक अप्सरा; एक रागिनी; एक मूर्च्छना; एक सर्प; सुभद्रा।

चित्राधार–पु० [सं०] चित्रपट; (एलबम) चित्र, फोटो आदि सुरक्षित रूपसे रखनेकी किताब या मोटे पन्नोंकी खोली।

चित्रालय–पु० [सं०] चित्रसंग्रहालय, चित्रशाला।

चित्रिणी–स्त्री० [सं०] कामशास्त्रमें माने हुए स्त्रियोंके पद्मिनी आदि चार भेदोंमेंसे एक (यह कलानिपुण और बनाव-सिंगारकी शौक़ीन होती है)।

चित्रित–वि० [सं०] जिसका चित्र खींचा गया हो, उरेहा हुआ; चित्रयुक्त; चितकबरा।

चित्रोत्तर–पु० [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें प्रश्नके शब्दोंमें ही उसका उत्तर होता है।

चिथड़ा–पु० फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़; कपड़ेकी धज्जी।

चिथाड़ना–स० क्रि० फाड़ना, चिथड़ा कर देना; (किसीके पक्षका) हर पहलूसे खंडन करना; लथेड़ना, जलील करना।

चिदाकाश–पु० [सं०] शुद्ध ज्ञानस्वरूप ब्रह्म।

चिदाभास–पु० [सं०] चित्स्वरूप परब्रह्मका अंतःकरणमें प्रतिबिंबित आभास, जीव।

चिद्रूप–वि० [सं०] शुद्ध चैतन्यरूप; चिन्मय, ज्ञानी। पु० परब्रह्म।

चिद्विलास–पु० [सं०] चित्स्वरूप परमेश्वरकी माया; आत्मा या ब्रह्मस्वरूपमें रमण।

चिनक–स्त्री० जलनके साथ होनेवाली पीड़ा; सूज़ाकके रोगमें मूत्रनलीमें होनेवाली जलन और पीड़ा।

चिनगटा*–पु० चिथड़ा।

चिनगारी–स्त्री० जलते हुए कोयले आदिका बहुत छोटा टुकड़ा, अग्निकण, स्फुलिंग। **मु०–छोड़ना**–झगड़ा लगानेवाली बात कहना।

चिनगी*–स्त्री० दे० 'चिनगारी'।

चिनना*–स० क्रि० दीवार उठाना; चुनना।

चिनाना*–स० क्रि० चुनवाना; दीवार उठवाना।

चिनाब–स्त्री० पंजाबकी पाँच प्रधान नदियोंमेंसे एक, चंद्रभागा।

चिनिया–वि० चीनीके रंगका, सफेद; चीनी जैसे स्वादका मीठा; चीन देशका। **–केला**–पु० बंगालमें होनेवाला एक मीठा केला। **–बादाम**–पु० मूँगफली।

चिन्मय–वि० [सं०] शुद्ध ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप। पु० परब्रह्म।

चिन्मात्र–पु० [सं०] शुद्ध चैतन्य। वि० शुद्ध ज्ञानस्वरूप।

चिन्ह–पु० दे० 'चिह्न'।

चिन्हवाना, चिन्हाना†–स० क्रि० पहचान कराना।

चिन्हानी†–स्त्री० चिह्न, पहचान; यादगार।

चिन्हारि, चिन्हारी*–स्त्री० जान-पहचान।

चिपकना–अ० क्रि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजका दूसरीसे जुड़ना; लिपटना; किसी काममें लगना।

चिपकाना–स० क्रि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजको दूसरीसे जोड़ना, साटना; लिपटाना।

चिपचिपा–वि० लसदार, चिपकनेवाला।

चिपचिपाना–अ० क्रि० लसदार होना; लगना।

चिपचिपाहट–स्त्री० चिपचिपा होना, लस।

चिपटना–अ० क्रि० दे० 'चिमटना'।

चिपटा–वि० जो उभरा हुआ न हो, बैठा या धँसा हुआ।

चिपड़ा–वि० जिसकी आँखमें कीचड़ भरा हो।

चिपड़ी, चिपरी–स्त्री० उपली।

चिप्पड़–पु० लकड़ीको छाल आदिका टुकड़ा।

चिप्पी–स्त्री० लकड़ी आदिका छोटा चिपटा टुकड़ा; उपली; कागजका छोटा टुकड़ा जो कहीं चिपका दिया जाय।

चिबु, चिबुक–स्त्री० [सं०] ठुड्डी।

चिमटना–अ० क्रि० चिपकना; लिपटना; पिंड न छोड़ना।

चिमटा–पु० जलता कोयला आदि पकड़नेका आला।

चिमटाना–स० क्रि० चिपकाना; लिपटाना।

चिमटी–स्त्री० छोटा चिमटा; वह आला जिससे छोटी चीज पकड़ने, उठाने आदिका काम लेते हैं; चुटकी; चिकोटी।

चिमड़ा–वि० दे० 'चीमड़'। **–पन**–पु० (टेनेसिटी) ठोसके कणोंका परस्पर इस तरह चिपके रहना कि उन्हें पृथक् करनेके लिए बड़ी शक्तिकी आवश्यकता पड़े।

चिमनी–स्त्री० [अं०] इंजन आदिका धुआँ या भाप निकलनेके लिए बनी हुई नली जैसी वस्तु; धुआँ निकालनेके लिए घरकी छतमें छेद करके बनायी हुई लोहे, सीमेंट आदिकी नली; लंपके ऊपर लगी हुई शीशेकी नली जिससे लंपकी लौको हवा मिलती और उसका धुआँ बाहर निकलता है।

चिरंजीव–अ० [सं०] चिरजीवी हो, बहुत दिन जियो (आशीर्वाद); [हिं०] बेटा, पुत्र। वि० दे० 'चिरजीवी'।

चिरंजीवी (विन्)–वि० [सं०] चिरजीवी।

चिरंतन–वि० [सं०] बहुत दिनोंका, पुरातन।

चिर–वि० [सं०] जो बहुत दिनोंसे हो, दीर्घकालीन, पुराना; जो बहुत दिन बना रहे, दीर्घकालस्थायी। अ० बहुत दिन, बहुत दिनोंतक, सदा। **–कांक्षित**–वि० जिसकी चाह, कामना बहुत दिनोंसे रही हो। **–कालिक, –कालीन**–वि० बहुत दिनका, पुराना; जीर्ण (रोग)। **–जीवी (विन्)**–वि० बहुत दिन जीनेवाला, जिसकी आयु लंबी हो; अमर। पु० विष्णु, कौवा, हनूमान्, मार्कंडेय आदि। **–निद्रा**–स्त्री० महानिद्रा, मृत्यु। **–नूतन**–वि० जो सदा नया बना रहे, चिरनवीन। **–परिचित**–वि० जिसे बहुत दिनोंसे जानते-पहचानते हों। **–पाकी (किन्)**–वि० देरमें पकनेवाला। **–पोषित**–वि० जिसका बहुत दिनोंतक धारण, पोषण किया गया हो, चिरकांक्षित। **–प्रचलित**–वि० जो बहुत दिनोंसे चला आ रहा हो, पुराना। **–प्रसिद्ध**–वि० जो बहुत दिनोंसे प्रसिद्ध हो। **–मान्य, –सम्मानित**–वि० (टाइम आनर्ड) बहुत दिनोंसे जिसकी मान्यता रही हो, जिसका सम्मान होता आया हो। **–रोगी (गिन्)**–वि० जो बहुत दिनोंसे बीमार हो; जो सदा रोगी रहे। **–विस्मृत**–वि० जो बहुत दिनोंसे भूल गया हो या भुला दिया गया हो। **–शत्रु**–वि० पुराना दुश्मन, जिसके साथ बहुत दिनोंका बैर हो। **–शांति**–स्त्री० दीर्घकालव्यापी शांति; स्थायी शांति, मुक्ति। **–संगी (गिन्)**–वि० सदाका साथी, जन्मसंगी। **–स्थायी (यिन्)**–वि० बहुत दिनोंतक बना रहनेवाला, टिकाऊ। **–स्मरणीय**–

वि० बहुत दिनोंतक याद रखने लायक।

चिरकना–अ० क्रि० थोड़ासा पाखाना करना; कई बार थोड़ा-थोड़ा पाखाना करना।

चिरकुट–पु० बहुत फटा हुआ कपड़ा, चिथड़ा।

चिरचना*–अ० क्रि० क्रुद्ध होना, चिड़चिड़ाना।

चिरचिटा–पु० चिचड़ा।

चिरना–अ० क्रि० फटना; सीधा कट जाना।

चिरम, चिरमि*–स्त्री० घुँघची।

चिरमिटी*–स्त्री० घुँघची।

चिरवाई–स्त्री० चिरवानेका काम या उजरत।

चिरवाना–स० क्रि० चीरनेका काम दूसरेसे कराना।

चिरहँटा–पु० चिड़ीमार।

चिराई–स्त्री० चीरनेकी क्रिया; चीरनेकी मजदूरी।

चिराक*–पु० दे० 'चिराग़'।

चिराग़–पु० [फा०] पु० दिया, दीपक, लंप; (ला०) बेटा। **–गुल**–पु० (ब्लैक आउट) दे० 'अंधाकुप्प'। **–जले**–अ० दिया जलनेके समय, अँधेरा होनेपर। **–दान**–पु० दीवट, दीपाधार। **–बत्तीका वक़्त**–दिया जलानेका वक्त, झुटपुटा। **मु०–का हँसना**–चिरागसे फूल झड़ना। **–गुल करना, –ठंढा करना**–दिया बुझाना। **–गुल, पगड़ी गायब**–निगाह झपते ही मालका गायब कर दिया जाना। **–गुल होना**–दिया बुझना। **–तले अँधेरा**–रखवालेके सामने चोरी; ज्ञानी, पंडितके घरमें घोर मूर्खताका या अशास्त्रीय आचरण होना। **–बढ़ाना**–दिया बुझाना। **–बत्ती करना**–दिया जलाना। **–लेकर ढूँढ़ना**–बहुत कोशिशसे ढूँढ़ना, तलाश करना।

चिराग़ी–स्त्री० [फा०] दिया-बत्तीका खर्च; मजारपर दी जानेवाली भेंट जो प्रायः चिरागके नीचे रख दी जाती है; किसी मजारपर दिया-बत्ती करनेका खर्च।

चिरातन*–वि० पुराना; फटा-पुराना।

चिराना–स० क्रि० 'चिरवाना'। अ० क्रि० बीचसे चिर जाना–'मकु गोहूँ कर हिया चिराना'–प०। * वि० पुराना, बहुत दिनोंका।

चिरायँध–स्त्री० चमड़े, मांस आदिके जलनेकी दुर्गंध।

चिरायता–पु० कड़वे स्वादका एक छोटा पौधा जो दवाके काम आता है।

चिरायु(स्)–वि० [सं०] बहुत दिन जीनेवाला, चिरजीवी।

चिराव–पु० चीरनेका भाव; चीरनेका घाव, चीरा।

चिरिया*–स्त्री० दे० 'चिड़िया'।

चिरिहार*–पु० चिड़ीमार, बहेलिया।

चिरी*–स्त्री० 'चिड़िया'। **–खाना**–पु० चिड़ियाघर।

चिरौंजी–स्त्री० पियालके बीजकी गिरी।

चिरौरी–स्त्री० दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना।

चिलक–स्त्री० चमक, झलक; टीस; हिलने आदिसे एकबारगी होनेवाली तीव्र पीड़ा; रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा।

चिलकना–अ० क्रि० चमकना; चिलक मारना; टीसना।

चिलकाना†–स० क्रि० चमकाना; उज्ज्वल करना।

चिलगोजा–पु० [फा०] एक मेवा जिसकी गिरी खायी जाती है।

चिलचिलाना–अ० क्रि० चमकना।

चिलड़ा†–पु० एक पकवान, उलटा, चीला।

चिलता–पु० [फा०] एक तरहका कवच।

चिलबिला(ल्ला)–वि० चंचल, शरारती, नटखट।

चिलम–स्त्री० [फा०] मिट्टी या धातुका कटोरीनुमा पात्र जिसपर तंबाकू-गाँजा आदि रखकर पीते हैं। **–चट**–वि० बहुत तंबाकू पीनेवाला। **–बरदार**–पु० हुक्का पिलाने या लेकर साथ चलनेवाला नौकर।

चिलमची–स्त्री० एक बरतन जिसका किनारा थाल जैसा और बीचका भाग देगची जैसा होता है और जो हाथ-मुँह धोने, कुल्ली आदि करनेके काम आता है; हुक्केका वह भाग जिसपर चिलम रखी जाय।

चिलमन–पु० [फा०] बाँसकी तीलियोंका पर्दा, चिक।

चिलवाँस*–पु० चीलका मांस (जिसे खानेसे विक्षिप्त हो जानेकी बात कही जाती है); चिड़िया फँसानेका फंदा।

चिल्लड़–पु० जूँ जैसा कीड़ा जो पसीना मरनेवाले गंदे कपड़ोंमें पड़ा करता है।

चिल्ल-पों–स्त्री० चीख-पुकार, शोर-गुल।

चिल्लवाना–स० क्रि० चिल्लानेको प्रेरित, विवश करना।

चिल्ला–पु० धनुष्की डोरी, कमानकी ताँत; चीला; पगड़ीका छोर (जिसमें कलावत्तूका काम रहता है); [फा०] चालीस दिनोंका काल; चालीस दिनोंका व्रत, अनुष्ठान; प्रसूताका चालीसवें दिनका स्नान (मुसल०)। **मु० चिल्लेका जाड़ा**–कड़ी सरदी।

चिल्लाना–अ० क्रि० जोरसे बोलना, चीखना, शोर करना।

चिल्लाहट–स्त्री० चिल्लानेकी क्रिया, शोर, हल्ला; पुकार।

चिल्लिका–स्त्री० [सं०] भ्रुकुटी; झींगुर; * वज्र, बिजली।

चिल्ली–स्त्री० [सं०] झींगुर; * बिजली।

चिल्ही*–स्त्री० चील।

चिबुक–पु० [सं०] ठुड्डी।

चिहुँक*–स्त्री० दे० 'चहक'।

चिहकार*–स्त्री० चहचही।

चिहुँकना†–अ० क्रि० चौंकना।

चिहुँटना*–स० क्रि० चुटकी काटना। अ०क्रि० लिपटना।

चिहुँ(हु)टनी*–स्त्री० घुँघची।

चिहुँटी*–स्त्री० चुटकी।

चिहुर–पु० [सं०] दे० 'चिकुर'।

चिह्न–पु० [सं०] लक्षण, पहचान, निशान, छाप (पदचिह्न); लकीर; पद आदिकी सूचक वस्तु; ध्वजा; लक्ष्य; निशानी।

चिह्नांकन–पु० [सं०] [पंक्चुएशन) किसी रचना, वाक्य, प्रस्तार आदिमें विराम-चिह्न लगाना (जहाँ आवश्यक हो वहाँ उन्हें लिख देना)।

चिह्नांकित–वि० [सं०] (ग्रेजुएडेट) (वह गिलास, आदि) जिसपर नापके लिए चिह्न लगे हुए हों।

चिह्नित–वि० [सं०] जिसपर चिह्न हो, चिह्नयुक्त, अंकित।

चीं–स्त्री० छोटी चिड़ियों या चिड़ियोंके बच्चोंकी बारीक आवाज। **–चपड़**–स्त्री० कार्य या शब्द द्वारा विरोधका प्रदर्शन।

चींटा–पु० चींटीसे मिलता-जुलता, पर उससे बड़े आकारका कीड़ा, चिउँटा।

चींटी–स्त्री० एक छोटा कीड़ा जो मीठेकी गंधसे उसके पास

पहुँच जाता है, पिपीलिका।

चींतना*–स० क्रि० चित्रित करना; लिखना।

चींथना–स० क्रि० दे० 'चीथना'।

चीक–स्त्री० दे० 'चीख़'; कीचड़। † पु० कसाई।

चीकट–पु० तेलका मैल; चिकट; लसार मिट्टी; † एक तरहका रेशमी कपड़ा; भांजे या भांजीकी शादीमें बहनको दिये जानेवाले कपड़े-गहने आदि। वि० जिसपर चिकनाई-के साथ मैल जमा हो, बहुत मैला।

चीकना–अ० क्रि० चीखना। * वि० चिकना।

चीख़–स्त्री० चिल्लानेकी आवाज, चिल्लाहट। **–पुकार**–स्त्री० शोर-गुल; शोर मचाकर की जानेवाली फरियाद।

चीखना–स० क्रि० स्वाद जाननेके लिए किसी चीजको थोड़ी मात्रामें खाना।

चीख़ना–अ० क्रि० चिल्लाना, शोर मचाना।

चीखर, चीखल* पु० कीचड़।

चीखुर–पु० गिलहरी।

चीज़–स्त्री० [फा०] वस्तु, पदार्थ; बहुमूल्य, अनूठी वस्तु; बात, काम; साहित्य या कलाकी वस्तु (गीत, रचना इ०)। **–वस्तु**–स्त्री० सामान; गहना-कपड़ा।

चीठ*–स्त्री० मैल।

चीठा*–पु० दे० 'चिट्ठा'।

चीठी†–स्त्री० दे० 'चिट्ठी'।

चीड़–पु० एक सुंदर सदाबहार पेड़ जो बहुत ऊँचा होता है और जिसकी लकड़ी संदूक आदि बनानेके काम आती है।

चीढ़–पु० दे० 'चीड़'।

चीत*–पु० दे० 'चित्त'; चित्रा नक्षत्र।

चीतकार*–पु० दे० 'चीत्कार'।

चीतना*–स० क्रि० सोचना; चेत करना; चाहना; याद करना; चित्र बनाना।

चीतल–पु० हिरनका एक भेद जिसकी खालपर सफेद चित्तियाँ होती हैं, चित्रमृग; चित्तीदार अजगर; एक सिक्का।

चीता–पु० एक तरहका बाघ जिसकी खालपर लंबी काली, पीली धारियाँ होती हैं; एक क्षुप जिसकी छाल और जड़ दवाके काम आती है; * चित्त। * स्त्री० चिंता 'मंदोदरी हृदय करि चीता'–रामा०।

चीत्कार–पु० [सं०] चीख, चिल्लाहट; शोर; चिंघाड़।

चीथड़ा–पु० दे० 'चिथड़ा'।

चीथना–स० क्रि० फाड़ना, धज्जी-धज्जी करना; दाँतोंसे फाड़ना, क्षत-विक्षत कर देना (हिंस्र जंतुका)।

चीथरा*–पु० दे० 'चिथड़ा'।

चीदा–वि० [फा०] चुना हुआ; अच्छा, बढ़िया। **–चीदा**–वि० चुने हुए (व्यक्ति, वस्तु); अच्छे-अच्छे।

चीन–पु० [सं०] एशियाका एक प्रसिद्ध देश; एक तरहका हिरन; चीनका बना रेशमी कपड़ा; एक तरहका सावाँ, चेना; सीसा; पताका; सूत।

चीनना*–स० क्रि० चीन्हना, पहचानना।

चीनांशुक–पु० [सं०] चीनमें बनने या चीनसे आनेवाला रेशमी कपड़ा; रेशमी कपड़ा।

चीना–वि० चीन देशका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध। पु० चीन देशवासी, चीनी; चीनी कपूर–'कीन्हेसि भीमसेन औ चीना'–प०; चिह्न।

चीनिया–वि० चीनी, चीनका। **–बादाम**–पु० मूँगफली।

चीनी–स्त्री० ईख, खजूर आदिके रससे बना हुआ सफेद दानेदार चूर्ण जो गुड़-खाँड़की जगह काममें लाया जाता है, शकर। वि० चीन-संबंधी; चीनका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध। पु० चीन देशवासी। **–चंपा**–पु० एक तरहका बढ़िया केला। **–मिट्टी**–स्त्री० पकायी हुई सफेद मिट्टी जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीन्हना†–स० क्रि० पहचानना।

चीन्हा*–पु० चिह्न।

चीपड़–पु० आँखका कीचड़।

चीमड़–वि० जो जल्दी फटे, टूटे नहीं। पु० एक पौधा।

चीमर–वि०, पु० दे० 'चीमड़'।

चीयाँ–पु० दे० 'चिँआँ'।

चीर–पु० [सं०] वस्त्रखंड; कम लंबा वस्त्रखंड, पट्टी, धज्जी; कपड़ा, वस्त्र; बौद्ध भिक्षुओंका पहनावा; पेड़की छाल; रेखा, लकीर; गायका थन। **–चरम***–पु० बाघंबर; मृगछाला।

चीर–स्त्री० चीरने या फाड़नेकी क्रिया या भाव; कुश्तीका एक पेंच। पु० दे० 'चीड़'। **–घर**–पु० (मॉर्चुअरी) वह स्थान जहाँ दुर्घनाओं आदिसे मरनेवालोंके शव, चीरफाड़ या परीक्षण द्वारा मृत्युका कारण ज्ञात करनेके उद्देश्यसे, कुछ समयके लिए भेज दिये जाते हैं। **–फाड़**–स्त्री० चीरने-फाड़नेका काम; चीरा लगाना, शल्य-क्रिया।

चीरना–स० क्रि० फाड़ना, टुकड़े करना; विदीर्ण करना; राह निकालना (भीड़, पानी)।

चीरा–पु० चीरनेका घाव, फोड़ेका शिगाफ; पगड़ी बनानेके काम आनेवाला लहरियादार कपड़ा; गाँवकी सीमापर गाड़ा हुआ पत्थर।

चीरी*–स्त्री० चिड़िया।

चील–स्त्री० बाजकी जातिकी एक बड़ी चिड़िया। **–झपट्टा**–पु० किसी चीजको चीलकी तरह झपट्टा मारकर छीन लेना; बच्चोंका एक खेल।

चीलड़, चीलर–पु० दे० 'चिल्लड़'।

चीला–पु० उलटा नामका पकवान, चिल्ला।

चील्ह–स्त्री० चील।

चील्ही*–स्त्री० एक तंत्रोपचार, टोटका।

चीवर–पु० [सं०] वस्त्र, पहनावा; साधु-संन्यासियोंका पहनावा; बौद्ध भिक्षुओंका ऊपरी पहनावा; कंथा।

चीवरी(रिन्)–पु० [सं०] बौद्ध या जैन संन्यासी, भिक्षु।

चुंगल–पु० शिकारी चिड़ियों, जानवरोंका पंजा, चंगुल; बुकटा; पकड़। **–भर**–वि० चुटकीभर; थोड़ासा।

चुंगी–स्त्री० चुंगलभर चीज; अनाज आदि बेचनेवालोंसे इस रूपमें लिया जानेवाला महसूल; मालके म्युनिसिपल सीमामें आनेपर लिया जानेवाला महसूल। **–कचहरी**–स्त्री० म्युनिसिपलिटीका दफ्तर।

चुँघाना–स० क्रि० चुसाना।

चुंडित*–वि० जिसके सिरमें चुटिया हो।

चुंडी†–स्त्री० दे० 'चुंदी'।

चुँदरी†–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चुंदी–स्त्री० शिखा, चोटी, चुटिया।

चुँधा–वि० छोटी आँखोंवाला; जिसकी दृष्टि क्षीण हो।

चुँधियाना–अ० क्रि० चौंधना।

चुंबक–पु० [सं०] चुंबन करनेवाला; कामुक; वह जो बहुतसे ग्रंथोंको जहाँ-तहाँसे पढ़कर, उलट-पुलटकर छोड़ दे, किसीको पूरी तरह पढ़े-समझे नहीं; धूर्त्त; घड़ेके मुँहपर लगाया जानेवाला फंदा; वह धातु या पत्थर जो लोहेको अपनी ओर खींचता है। **–वृत्ति**–स्त्री० ग्रंथोंको इधर-उधर पढ़कर छोड़ देनेकी आदत।

चुंबकत्व–पु० [सं०] चुंबकका गुण, आकर्षण।

चुंबकीय–वि० [सं०] जिसमें चुंबक या उसका गुण हो।

चुंबन–पु० [सं०] चूमनेकी क्रिया, बोसा; (ला०) छूना।

चुंबना*–स० क्रि० चूमना।

चुंबित–वि० [सं०] चूमा हुआ; छुआ हुआ, स्पृष्ट।

चुंबी(बिन्)–वि० [सं०] चुंबन करनेवाला; छूनेवाला।

चुअना–*अ० क्रि० दे० 'चूना'। वि० चूने, रिसनेवाला।

चुआई–स्त्री० चुआनेका काम; चुआनेकी मजदूरी।

चुआना†–स्त्री० नहर; सोता; गड्ढा।

चुआना–स० क्रि० टपकाना; भबकेसे अर्क खींचना; * चुपड़ना।

चुआव–पु० चुआनेकी क्रिया या भाव।

चुकंदर–पु० [फ़ा०] गाजर या शलजमकी शकलका एक मूल जो साग-भाजीके रूपमें खाया जाता है और जिसके रससे चीनी भी बनती है।

चुक–पु० दे० 'चूक'।

चुकचुकाना–अ० क्रि० रिसकर बाहर आना, पसीजना।

चुकट*–पु० दे० 'चुकटा'।

चुकटा–पु० चुटकी; चुटकीभर वस्तु।

चुकता–वि० जो चुका दिया गया हो, अदा, बेबाक।

चुकना–अ० क्रि० समाप्त होना, बाकी न रहना; निबटना, तै होना; अदा, बेबाक होना; * चूकना, खाली जाना।

चुकवाना–स० क्रि० अदा कराना; दिलवाना।

चुकाई–स्त्री० चुकता होनेका भाव।

चुकाना–स० क्रि० अदा करना, चुकता करना; निबटाना, तै करना। * अ० क्रि० चूकना–'तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं'–रामा०।

चुक्कड़–पु० पुरवा, कुल्हड़।

चुक्रिका–स्त्री० [सं०] नोनिया; इमली।

चुखाना†–स० क्रि० चखाना; गायके पेन्हानेके लिए दुहते समय बछड़ेको दूध पिलाना।

चुग़द–पु० [फ़ा०] उल्लूकी एक छोटी किस्म; मूर्ख व्यक्ति।

चुगना–स० क्रि० चिड़ियोंका चोंचसे चुन-चुनकर दाना खाना।

चुगल–पु० दे० 'चुग़ुल'। **–खोर**–पु० दे० 'चुग़ुलख़ोर'।

चुगली–स्त्री० परोक्षमें की हुई निंदा, बुराई (खाना)।

चुगा–पु० चिड़ियोंके चुगनेके लिए डाली गयी चीज; दे० 'चोगा'।

चुगाई–स्त्री० चुगनेकी क्रिया या भाव; चुगानेकी क्रिया।

चुगाना–स० क्रि० चिड़ियोंको दाना खिलाना।

चुग़ुल–पु० [फ़ा०] पीठ पीछे निंदा-बुराई करनेवाला, चुगली खानेवाला। **–ख़ोर**–पु० चुगली खानेवाला, पीठ पीछे निंदा-बुराई करनेवाला। **–ख़ोरी**–स्त्री० चुगली खाना।

चुचकारना–स० क्रि० दे० 'चुमकारना'।

चुचकारी–स्त्री० दे० 'चुमकारी'।

चुचाना–अ० क्रि० चूना, टपकना, रिसना।

चुचुआना–अ० क्रि० चुचाना।

चुचुक–पु० [सं०] दे० 'चूचुक'।

चुचुकना†–अ० क्रि० सूखकर सिकुड़ना।

चुचुकारना*–स० क्रि० दे० 'चुमकारना'।

चुटकना–स० क्रि० चाबुक मारना; चुटकीसे तोड़ना।

चुटकला–पु० दे० 'चुटकुला'।

चुटका–पु० बड़ी चुटकी; चुटकीभर चीज।

चुटकी–स्त्री० किसी चीजको पकड़ने, उठाने आदिके लिए अँगूठे और तर्जनी या बीचकी उँगलीको परस्पर सटाना; बीचकी उँगलीपर अँगूठेको दबाने और छटकानेसे होनेवाली आवाज; भिक्षुकको दिया जानेवाला चुंगलभर आटा आदि, भीख; अँगूठे और तर्जनीसे चमड़ेको पकड़कर दबाना या नाखून गड़ाना (काटना); कपड़ेमें रंग न चढ़ने देनेके लिए दी गयी गाँठ; पेचकश; कागज आदिको पकड़ रखनेका आला, 'क्लिप'; पाँवकी उँगलियोंमें पहननेका एक गहना; दरीके तानेका सूत। **–बजाते**–अ० दमभरमें, बातकी बातमें। **–भर**–वि० चुंगलभर, थोड़ासा। **मु०–देना**–चुटकी बजाना; भीख देना। **–बजाना**–बीचकी उँगलीपर अँगूठेको दबा और छटकाकर आवाज निकालना। **–भरना**–चुटकी काटना; चुटकी लेना। **–माँगना**–भीख माँगना। **–लगाना**–चुटकीसे पकड़ना; मसलना; कपड़ेको दो उँगलियोंमें फँसाकर फाड़ना; (रुपया-पैसा चुरानेके लिए) उँगलियोंसे जेब फाड़ना। **–लेना**–हँसी उड़ाना, व्यंग्य, तानाजनी करना। **(चुटकियों)में**–चुटकी बजाते, दमभरमें। **–में उड़ाना**–बातकी बातमें कर डालना; खेल समझना।

चुटकुला–पु० छोटीसी, पर मनोरंजक उक्ति, लतीफा, अनूठी बात; छोटासा, सस्ता पर काम करनेवाला नुस्खा, दवा। **मु०–छोड़ना**–मनोरंजक, कुतूहलजनक बात कहना।

चुटिया–स्त्री० सिरके बीचोबीच छोड़ रखे हुए लंबे बाल, चोटी, शिखा।

चुटियाना†–स० क्रि० चुटीला करना।

चुटीला–वि० जो चोट खाये हो, घायल, जख्मी; चोट करनेवाला; चोटीका, सबसे बढ़िया। पु० छोटी चोटी।

चुटुकी*–स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चुटैल–वि० चोट खाया हुआ, जख्मी; चोट करनेवाला।

चुड़िहारा–पु० चूड़ियाँ बनाने, बेचने, पहनानेवाला।

चुड़ैल–स्त्री० भूतनी, डायन; काली, कुरूप स्त्री; क्रूर स्वभाववाली स्त्री।

चुन–पु० चूर, चूर्ण (लोहचुन); आटा; चुगनेकी चीज।

चुनचुना–वि० चुनचुनाहट पैदा करनेवाला, लगनेवाला; चिड़चिड़ा। पु० मलाशयमें पैदा होनेवाला सफेद, सूत जैसा कीड़ा जो मलके साथ निकलता है, चुन्ना।

चुनचुनाना–अ० क्रि० जलनके साथ खुजली पैदा होना या चुभना, लगना; (बच्चोंका) ठिनकना।

चुनचुनाहट–स्त्री० जलनके साथ होनेवाली खुजली।

चुनट(त)–स्त्री० कपड़े, कागज आदिमें दाबसे पड़नेवाली

या दवाकर डाली गयी शिकन, सिलवट।

चुनन–स्त्री० दे० 'चुनट'। **–दार**–वि० जिसमें चुनट डाली गयी हो।

चुनना–स० क्रि० छोटी चीजोंको एक-एक करके इकट्ठा करना, बीनना; चिड़ियोंका चोंचसे दाना आदि उठाना, चुगना; तोड़ना, लोढ़ना (फूल, कली); बहुतोंमेंसे किसी खास चीजको, कार्य-विशेषके लिए उपयुक्त या श्रेष्ठ मानकर अलग करना, छाँटना; पसंद करना; वोटके द्वारा दो या अधिक उम्मीदवारोंमेंसे पद या कार्यविशेषके लिए एकको पसंद करना; सजाना, तरतीवसे लगाना; जोड़ना (ईंट–); चुनट डालना।

चुनरी–स्त्री० वह रंगीन कपड़ा जिसपर सफेद या दूसरे रंगकी बूटियाँ बनी हों; चुन्नी, याकूत।

चुनवाना–स० क्रि० चुननेका काम दूसरेसे कराना।

चुनाँचे–अ० [फा०] इस प्रकार; अतः, निदान।

चुनाई–स्त्री० चुननेकी क्रिया या उजरत; दीवारकी जोड़ाई।

चुनाना–स० क्रि० दे० 'चुनवाना'।

चुनाव–पु० चुननेकी क्रिया या भाव; (वोटके द्वारा) किसीका पद या कार्यविशेषके लिए पसंद किया जाना।

चुनिंदा–वि० चुना हुआ, छाँटा हुआ; बढ़िया, श्रेष्ठ।

चुनियाँ*–स्त्री० दे० 'चुनी'।

चुनी–स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनौटिया–पु० एक तरहका कत्थई या काकरेजी रंग। वि० उक्त रंगका–'पहिरे चीर चुनौटिया चटक चौगुनी होत'–वि०।

चुनौटी–स्त्री० पान या तंबाकूके लिए चूना रखनेकी डिबिया।

चुनौती–स्त्री० बढ़ावा; युद्ध, शास्त्रार्थ आदिके लिए आह्वान, ललकार (देना); चुनौटी।

चुन्नट(त)–स्त्री० दे० 'चुनट'।

चुन्ना–पु० दे० 'चुनचुना'।

चुन्नी–स्त्री० माणिक या लालका छोटा टुकड़ा; छोटा नग; चमकी; अरहर या और किसी दालके टुकड़े।

चुप–वि० जो बोलता न हो, मौन, खामोश। स्त्री० चुप्पी, मौन। **–चाप**–अ० बिना बोले, चुपकेसे; बिना हिले-डुले।

चुपका–वि० चुप, मौन; घुन्ना। **–(के)से**–चुपचाप।

चुपकी–स्त्री० मौन, चुप्पी।

चुपड़ना–स० क्रि० तेल, घी या दूसरी तरल, चिकनी चीज लगाना, पोतना (रोटीमें घी चुपड़ना); चापलूसी करना।

चुपरना*–स० क्रि० दे० 'चुपड़ना'।

चुपाना*–अ० क्रि० चुप हो रहना; स० क्रि० चुप करना।

चुप्पा–वि० चुप रहनेवाला; जो कम बोलता हो; घुन्ना।

चुप्पी–स्त्री० मौन, खामोशी।

चुब(भ)लाना–स० क्रि० किसी चीजको मुँहमें रखकर जीभसे थोड़ा हिलाते-डुलाते हुए स्वाद लेना।

चुभकना–अ० क्रि० बार-बार गोता खाना, डूबना-उतराना।

चुभकाना–स० क्रि० बार-बार गोता देना।

चुभकी–स्त्री० गोता, डुबकी।

चुभन–स्त्री० चुभनेका भाव; दर्द, खटक।

चुभना–अ० क्रि० धँसना, नुकीली चीजका भीतर घुसना; मनमें धँसना; सालना; * तन्मय, लीन होना।

चुभवाना–स० क्रि० 'चुभाना'का प्रेरणार्थक।

चुभाना, चुभोना–स० क्रि० धँसाना, गड़ाना।

चुभीला*–वि० चुभनेवाला; मनमें घर कर लेनेवाला, मोहक।

चुमकार–स्त्री० चुमकारनेकी आवाज, पुचकार।

चुमकारना–स० क्रि० बच्चोंको प्यार करने, पशुओंको बुलानेके लिए मुँहसे चूमने जैसी आवाज निकालना, पुचकारना।

चुमकारी–स्त्री० दे० 'चुमकार'।

चुम्मा†–पु० चुंबन।

चुर–पु० हिंस्र जंतुकी माँद; बैठक; सूखे पत्ते आदिके टूटने-फटनेका शब्द। *वि० अधिक, बहुत। **–मुर**–पु० खरी, करारी चीजके टूटनेकी आवाज। *वि० कुरकुरा। **–मुरा**–वि० जो दबानेसे 'चुरमुर' करके टूट जाय, करारा।

चुरकुट, चुरकुस*–वि० चकनाचूर, चूर्णित।

चुरचुराना–अ० क्रि० 'चुरचुर' शब्द करते हुए टूटना।

चुरना†–अ० क्रि० पानीमें पकना, सीझना; गुप्त मंत्रणा होना।

चुरमुराना–स० क्रि० 'चुरमुर' शब्दके साथ तोड़ना। अ० क्रि० 'चुरमुर' शब्दके साथ टूटना।

चुराई–स्त्री० चुरने या पकानेकी क्रिया या उजरत।

चुराना–स० क्रि० दूसरेकी चीजको उसकी जानकारी या अनुमतिके बिना ले लेना; छिपाना, बचाना (आँख, मुँह); करने, देनेमें कसर रखना, उचितसे कम करना, देना (गायका दूध चुराना); पानीमें पकाना।

चुरिहारा–पु० दे० 'चुड़िहारा'।

चुरी*–स्त्री० चूड़ी।

चुरुट–पु० सिगरेट, सिगार।

चुरू*–पु० चल्लू।

चुल–स्त्री० खुजली; तीव्र इच्छा; कामोद्वेग (उठना, मिटना)।

चुलचुलाना–अ० क्रि० चुल, खुजली उठना; (बच्चोंका) नटखटी करना।

चुलचुलाहट, चुलचुली–स्त्री० चुल, खुजली।

चुलबुला–वि० चंचल, नटखट, जो स्थिर न रह सके। **–पन**–पु० चंचलपन, नटखटी; शोखी।

चुलबुलाना–अ० क्रि० बार-बार हिलना, डोलना; स्थिर न रह सकना, चंचलता दिखाना।

चुलबुलिया†–वि० दे० 'चुलबुला'।

चुलाना–स० क्रि० दे० 'चुआना'।

चुलुक–पु० [सं०] चुल्लू।

चुलूक*–पु० चुल्लू।

चुल्लू–पु० उँगलियोंको थोड़ा मोड़कर गहरी की हुई हथेली, आधी अंजली। मु०**–भर पानीमें डूब मरना**–लज्जासे मुँह न दिखा सकना। **(चुल्लुओं) रोना**–बहुत रोना। **–लहू पीना**–बहुत सताना।

चुल्हौना*–पु० चूल्हा।

चुवना*–अ० क्रि० चूना, टपकना। स० क्रि० चुगना; टपकाना। वि० चूनेवाला।

चुवा*–पु० चौपाया, पशु–'चारु चुवा चहुँ ओर चलै'–कविता०; † मज्जा।

चुवाना–स० क्रि० दे० 'चुआना'।

चुसकी–स्त्री० तरल पदार्थको होठोंसे हुक्केके कशकी तरह खींचकर पीना; हुक्केका कश; घूँट।

चुसना–अ० क्रि० होठोंसे पिया जाना; चूसा जाना; निचुड़ना; खोखला, सारहीन, धनहीन हो जाना।

चुसनी–स्त्री० एक खिलौना जिसे बच्चे मुँहमें डालकर चूसते हैं; बच्चोंको दूध पिलानेकी शीशी।

चुसवाना–स० क्रि० दे० 'चुसाना'।

चुसाई–स्त्री० चूसनेकी क्रिया या भाव।

चुसाना–स० क्रि० चूसनेका काम दूसरेसे कराना।

चुस्त–वि० [फा०] तेज, फुरतीला; तंग, कसा हुआ; दृढ़, मजबूत; ठीक, उपयुक्त; फबता हुआ। **–(व)चालाक**–वि० तेज, फुरतीला और चतुर।

चुस्ती–स्त्री० [फा०] तेजी, फुरती; तंग होना, कसाव; मजबूती।

चुहँटी, चुहटी*–स्त्री० चुटकी।

चुहचुहा–वि० दे० 'चुहचुहाता'।

चुहचुहाता–वि० रसीला, मजेदार; फड़कता हुआ।

चुहचुहाना–अ० क्रि० चिड़ियोंका बोलना, चहचहाना; रस टपकना; भड़कीला लगना।

चुहचुही–स्त्री० एक छोटी चंचल चिड़िया जिसकी बोली बड़ी प्यारी होती है।

चुहटना*–स० क्रि० रौंदना, कुचलना।

चुहल–स्त्री० हँसी, ठिठोली, मजाक, विनोद। **–बाज़**–वि० हँसी-ठिठोली करनेवाला, विनोदी। **–बाज़ी**–स्त्री० ठिठोली।

चुहिया–स्त्री० मादा चूहा; छोटा चूहा।

चुहुटना*–अ० क्रि० चिमटना। वि० चिमटनेवाला।

चुहुटनी–वि० स्त्री० चिमटनेवाली। स्त्री० घुँघची।

चूँ–पु० छोटी चिड़िया या चिड़ियाके बच्चेकी बोली; 'चूँ'की आवाज। **–चूँ**–पु० चिड़ियोंकी बोली। 'चीँ-चीँ', 'चूँ-चूँ'की आवाज; एक खिलौना जिसे दबानेसे 'चूँ-चूँ'की आवाज निकलती है। **मु०–चूँका मुरब्बा**–तरह-तरहकी बेमेल चीजोंका योग। **–न करना**–तनिक भी उज्र, एतराज न करना।

चूँकि–अ० इसलिए कि, यतः, क्योंकि।

चूच*–स्त्री० चोंच।

चूँदरी*–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चूक–स्त्री० भूल, गलती, खता; अपराध; छल, धोखा। पु० नीबूका सुखाया हुआ रस। वि० बहुत खट्टा।

चूकना–अ० क्रि० भूल, गलती करना; खोना, गँवाना (अवसर); लक्ष्यपर न लगना, खता होना (निशाना); कोई बात करने, कहनेका अवसर आनेपर उसे न करना, न कहना; करने कहनेसे बाज रहना (वह कब चूकनेवाला है)।

चूची–स्त्री० स्तनका अग्रभाग, चूचुक; स्तन।

चूचुक, चूचूक–पु० [सं०] स्तनका अग्रभाग।

चूज़ा–पु० [फा०] मुरगीका बच्चा।

चूडांत–पु० [सं०] चरम सीमा। अ० बहुत ज्यादा। वि० चरम सीमापर पहुँचा हुआ।

चूडा–स्त्री० [सं०] चोटी, शिखा; मोर या मुरगेके सिरपरकी चोटी; पहाड़की चोटी; मस्तक। पु० कलाईपर पहननेका एक गहना, कड़ा, कंकण; कुआँ; चूडाकरण संस्कार। **–करण,–कर्म(न्)**–पु० हिंदू बच्चेका पहली बार सिर मुँड़ानेका संस्कार, मुंडन। **–मणि**–पु० सीसफूल; घुँघची। वि० सर्वश्रेष्ठ, अग्रगण्य। **–रत्न**–पु० सीसफूल।

चूड़ा–पु० चिड़वा।

चूड़ी–स्त्री० काँच, लाख, सोने, हाथी दाँत आदिका बना वृत्ताकार आभूषण जिसे स्त्रियाँ कलाईपर पहनती हैं; चूड़ीकी शकलकी चीज; पुरज़ा; ग्रामोफोनका रेकर्ड; छड़ आदिके सिरेपर बनायी जानेवाली चूड़ीकी शकलकी गहरी रेखाएँ। **–दार**–वि० जिसमें चूड़ियाँ हों; जिसमें पास-पास कई लकीरें हों। पु० तंग और लंबी मोहरीका पाजामा जिसे पहननेपर चूड़ियों जैसी सिलवटें पड़ जाती हैं। **मु० (चूड़ियाँ) ठंढी करना, तोड़ना**–स्त्रीके विधवा होनेपर चूड़ियाँ तोड़ देना। **–पहनना**–जनाना भेस बनाना, स्त्री बनना (व्यं०); विधवाका फिरसे ब्याह करना या किसीके घर बैठ जाना। **–पहनाना**–विधवासे ब्याह करना।

चूत–स्त्री० भग, योनि। पु० [सं०] आमका पेड़।

चूतड़–पु० कमरके नीचे और जाँघोंके ऊपर पीठकी ओरका मांसल, गुलगुला भाग, नितंब। **मु०–दिखाना**–भाग जाना। **–पीटना,–बजाना**–बहुत खुश होना।

चूतिया–वि० मूर्ख, बुद्धू। **–पंथी**–स्त्री० बेसमझी, मूर्खता, बुद्धूपन।

चून–पु० आटा; चुगने या खानेकी वस्तु–'चोंच दई जिन चूनहि देहैं'–सुंद०; एक तरहका थूहड़; * दे० 'चूना'।

चूनर, चूनरी–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चूना–अ० क्रि० टपकना, बूँद-बूँद करके नीचे गिरना; पके फल आदिका झड़ पड़ना; * गर्भपात होना। † वि० चूनेवाला। पु० पत्थर, कंकड़, सीप आदिको फूँककर प्रस्तुत किया जानेवाला तीक्ष्ण क्षार जो पानमें खाने और पलस्तर, सफेदी करने आदिके काम आता है। **–दानी**–स्त्री० चुनौटी। **मु०–फेरना**–सफेदी करना। **–लगाना**–बेवकूफ बनाना; नीचा दिखाना; हानि पहुँचाना।

चूनी–स्त्री० अन्न, खासकर चने आदिकी दालके छोटे-छोटे टुकड़े, चुन्नी, अन्नकण। **–भूसी**–स्त्री० चुन्नी और भूसी या चोकर; मोटा-झोटा अन्न।

चूपरी*–स्त्री० घी लगी हुई रोटी।

चूमना–स० क्रि० स्नेह प्रकाशके लिए होंठोंसे किसी(प्रियजन)के होंठों, गालों आदिका स्पर्श करना, दबाना; सम्मानप्रकाशके लिए किसी(गुरुजन)के हाथ या पाँवको होंठोंसे छूना; चुंबन करना, बोसा लेना; विवाह या उपनयनमें कुटुंबकी स्त्रियों, लड़कियोंका वर या ब्रह्मचारीके कंधे, माथे आदिको दूब, चावलसे छूना।

चूमा–पु० चूमनेकी क्रिया, चुंबन। **–चाटी**–स्त्री० चूमना-चाटना; चुंबन-आलिंगन।

चूर–पु० किसी ठोस वस्तुका कूटने-पीसने या रेतनेसे बहुत बारीक टुकड़ोंमें हुआ रूपांतर, चूर्ण, धूल, चूरा। वि० डूबा हुआ, निमग्न; बेसुध, बदमस्त (नशेमें चूर); शिथिल, पस्त (थककर चूर होना)। **मु०–चूर करना**–तोड़-फोड़कर

टुकड़े-टुकड़े कर देना; नष्ट कर देना ।

चूरण–पु० दे० 'चूर्ण' ।

चूरन–पु० दे० 'चूर्ण'; घीमें भुना हुआ आटा जिसमें चीनी मिली हो; पाचक दवाओंका चूर्ण ।

चूरना*–स० क्रि० चूर करना, तोड़ना ।

चूरमा–पु० बाटी, बाजरेकी मोटी रोटी आदिको मसलकर और घी-शकर मिलाकर बनाया हुआ खाद्य ।

चूरा–पु० किसी वस्तुका चूर्ण रूप, बुरादा, धूल; चिड़वा; कड़ा, वेरवा । * स्त्री० चोटी; शिखा; मस्तक । **–मणि* –मनि***–पु०, स्त्री० दे० 'चूड़ामणि' ।

चूर्ण–पु०[सं०]चूर;चूरन;गंधद्रव्योंका चूर्ण; अबीर; चूना ।

चूर्णक–पु० [सं०] सत्तू; सुगंधित चूर्ण; वह गद्य जो सरल और कर्णकटु वर्णोंसे रहित तथा अल्पसमास हो ।

चूर्णन–पु० [सं०] चूर्ण करना ।

चूर्णित–वि० [सं०] चूर किया हुआ; नष्ट, ध्वस्त ।

चूल–स्त्री० लकड़ी, बांस आदिका पतला सिरा जो दूसरी लकड़ी, बाँस आदिके छेदमें ठोका जाय; पुराने ढंगके किवाड़का नीचे-ऊपरका गोल लंबोतरा भाग जिसपर वह घूमा करता है । पु० [सं०] बाल; चोटी ।

चूलिका–स्त्री० [सं०] नेपथ्यसे किसी घटनाके होनेकी सूचना (ना०) ।

चूल्हा–पु० मिट्टी, ईंटों आदिकी बनी हुई तीन बाजुओं-वाली अँगीठी जिसमें आग जलाकर खाना पकाते हैं । **मु०–न्यौतना**–सारे घरको भोजनका निमंत्रण देना । **–फूँकना**–खाना पकाना । **(चूल्हे)में जाय,–में पड़े**–नष्ट हो जाय, भाड़में जाय (शाप) । **–से निकलकर भट्ठीमें पड़ना**–छोटी मुसीबतसे निकलकर बड़ीमें फँसना ।

चूषण–पु० [सं०] चूसना ।

चूष्य–वि०[सं०] जो चूसा जा सके । पु० चूसनेकी चीज ।

चूसना–स० क्रि० होंठों और जीभके योगसे रसपान करना; रस, सार निचोड़ लेना, खोखला कर देना; धनका हरण करना, शोषण करना ।

चूहड़ा–पु० भंगी; डोम ।

चूहर, चूहरा–पु० दे० 'चूहड़ा' ।

चूहा–पु० घरों, खेतोंमें बिल बनाकर रहनेवाला एक चतुष्पद जंतु जिसके दाँत बहुत तेज होते हैं, मूषक ।**–दंती**–स्त्री० एक तरहकी पहुँची । **–दान**–पु० चूहे फँसानेका खटकेदार पिंजड़ा । **(चूहे)दानी**–स्त्री० दे० 'चूहादान' ।

चैं–स्त्री० चिड़ियोंकी बोली ।**–चैं**–स्त्री० चीं-चीं; बकबक । **–पैं**–स्त्री० चीं-चपड़; बकवाद ।

चैंच–पु० बरसातमें उगनेवाला एक साग ।

चैंटुआ*–पु० चिड़ियाका बच्चा ।

चेक–पु० [अं०] किसी बंकके नाम किसीको रुपये देनेका लिखित आदेश; चारखाना । **–बुक**–स्त्री० चेक-बही ।

चेचक–स्त्री० एक छुतहा रोग जिसमें ज्वरके साथ सारी देहमें दाने निकल आते हैं, शीतला ।

चेजा*–पु० छेद, सूराख ।

चेट–पु० [सं०] दास, सेवक; पति; नायक और नायिकाको मिलानेवाला; भाँड़; एक मछली ।

चेटक–पु०जादू; [सं०] दास; उपपति; नायकको नायिकासे मिलानेवाला चतुर सेवक; चसका; शीघ्रता ।

चेटकनी*–स्त्री० चेटिका ।

चेटका–स्त्री० श्मशान; चिता ।

चेटकी–पु० इंद्रजाल करनेवाला, बाजीगर ।

चेटिका–स्त्री० [सं०] दासी, लौंडी ।

चेटिकी*–स्त्री० चेटिका ।

चेटिया*–पु० छात्र ।

चेटी–स्त्री० [सं०] दासी ।

चेत(स्)–पु० [सं०] होश, संज्ञा; याद; ज्ञान; चित्त, मन ।

चेतक–वि०[सं०] चेत करानेवाला; चेतन । पु०(ह्विप) वह अधिकारी जो संसद या विधान सभामें अपने दलके सदस्यों द्वारा 'सभा'में अनुशासन पालन कराने, उनकी उपस्थिति ठीक रखने, उन्हें आवश्यक सूचना देने, उन्हें वोट देनेके लिए बुलाने आदिकी व्यवस्था करता है, सचेतक ।

चेतन–पु० [सं०] आत्मा, जीव; परमेश्वर; मनुष्य; प्राणी; मन । वि० प्राणयुक्त, चैतन्य-विशिष्ट ।

चेतना–अ०क्रि० होशमें आना; बुद्धि-विवेकसे काम लेना, सावधान होना । स०क्रि० सोचना, विचारना (भला चे०, आगम चे०) । स्त्री० [सं०] चैतन्य; ज्ञान; होश; याद; बुद्धि; चेत; जीवनी शक्ति, जीवन ।

चेतवनि*–स्त्री० चितवन; चितावनी ।

चेतावनी–स्त्री० सावधान करने, किसी हानिकर कार्यसे रोकनेके लिए कही गयी बात, तंबीह, खतरेकी पूर्वसूचना ।

चेतिका*–स्त्री० चिता ।

चेदि–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद; वहाँके निवासी; वहाँ-का राजा । **–पति,–राज**–पु० शिशुपाल ।

चेप–पु० गाढ़ा, लसदार रस; लासा; * उत्साह ।**–दार**–वि० चेपवाला, लसदार ।

चेर*–पु० दास, सेवक । [स्त्री० 'चेरि', 'चेरी' ।]

चेरा*–पु० दास, सेवक; चेला, शिष्य ।

चेराई–स्त्री० गुलामी, चाकरी; शागिर्दी ।

चेल–पु० [सं०] कपड़ा, वस्त्र ।

चेलकाई*–स्त्री० दे० 'चेलहाई' ।

चेलहाई†–स्त्री० चेलोंका समूह; चेला बनानेका व्यवसाय; चेलोंके यहाँ घूमकर भेंट, पूजा लेना ।

चेला–पु० शिष्य, शागिर्द; दीक्षा, गुरुमंत्र लेनेवाला । स्त्री० चेल्हवा मछली । **मु०–मूँड़ना**–चेला बनाना ।

चेलिन, चेली–स्त्री० गुरुदीक्षा प्राप्त करनेवाली स्त्री ।

चेल्हवा–स्त्री० एक छोटी मछली ।

चेष्टा–स्त्री० [सं०] गति, हरकत; क्रियासाधक कायिक व्यापार; मनका भाव बतानेवाली अंगोंकी गति, भावभंगी; प्रयत्न, कोशिश ।

चेहरा–पु० [फा०] सिरका सामनेका, माथेसे लगाकर ठुड्डी-तकका भाग, मुखमंडल; सामनेका रुख, आगा; किसी देवदानवकी धातु, मिट्टी आदिकी मुखाकृति; रजिस्टर आदिमें लिखी जानेवाली हुलिया । **–मुहरा**–पु० सूरत-शकल । **मु०–उतरना**–चेहरेसे सुस्ती, उदासी, गहरी चिंता आदि प्रकट होना, चेहरेपर तेज, प्रफुल्लता न रहना । **–पीला हो जाना**–रोग, भय आदिके कारण चेहरेपर पीलेपनकी झलक आ जाना । **–बिगाड़ना**–

इतना मारना कि चेहरेकी हुलिया बदल जाय। **–सफेद हो जाना**–रोग या भयके कारण चेहरेपर सफेदी आ जाना, उसकी चमक, सुर्खीका गायब हो जाना। **–(रे)पर हवाइयाँ उड़ना**–भय, घबराहटसे चेहरेका रंग उड़ जाना।

चेहलक़दमी–स्त्री० [फा०] धीरे-धीरे थोड़ासा टहलना; मुसलमानोंकी अंत्येष्टिकी एक रस्म।

चेहलुम–वि० [फा०] चालीसवाँ। पु० मुसलमानोंमें मृत्युके चालीसवें दिनका फातिहा और भोज; मुहर्रमके चालीसवें दिन होनेवाला करबलाके शहीदोंका फातिहा।

चै*–पु० दे० 'चय'।

चैत–पु० चैत्र मास, फाल्गुनके बादका महीना।

चैतन्य–पु० [सं०] चेतना, ज्ञान, आत्मा; चित्स्वरूप परमात्मा; प्रकृति; गौरांग महाप्रभु।

चैती–वि० चैतमें होनेवाला (चैती गुलाब)। स्त्री० चैतमें पकनेवाली फसल, रबी; एक तरहका चलता गाना।

चैत्त, चैत्तिक–वि० [सं०] चित्त-संबंधी, मानसिक।

चैत्य–वि० [सं०] चिता-संबंधी,। पु० घर; देवालय; समाधि-मंदिर; यज्ञशाला; गाँवकी सीमापरका वृक्षसमूह; बुद्धमूर्ति; बौद्ध भिक्षु; बौद्ध विहार; पीपल; बेलका पेड़। **–तरु,–वृक्ष**–पु० पीपल। **–विहार**–पु० बौद्ध या जैन मठ। **–स्थान**–पु० वह स्थान जहाँ बुद्धदेवकी मूर्ति हो; पवित्र स्थान।

चैत्र–पु०[सं०] वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा चित्रा नक्षत्रमें पड़ती है, चैत; देवालय, चैत्य; बौद्ध भिक्षु। **–रथ,–रथ्य**–पु० चित्ररथ गंधर्वका बनाया हुआ कुबेरका उद्यान।

चैन–पु० सुख, आराम; कल, शांति। मु० **–की वंशी बजाना**–बड़े आनंदसे दिन बिताना। **–से कटना,–से गुजरना**–आरामसे जिंदगी बसर होना।

चैयाँ*–पु० बाँह।

चैल–पु० [सं०] कपड़ा, वस्त्र; पहनावा।

चैला–पु० जलानेके लिए चिरी हुई लकड़ी, फट्ठा।

चोँक*–स्त्री० चुंबनका चिह्न।

चोँगा–पु० बाँसकी खोखली नली जिसका एक सिरा बंद और दूसरा खुला हो; कागज आदिकी बनी हुई वैसी नली।

चोँघना*–स० क्रि० चुगना।

चोँच–स्त्री० चिड़ियोंके मुँहका अगला, नोकदार भाग, टोंट; मुँह (व्यं०)। मु० **दो-दो चोँचेँ होना**–कहासुनी होना।

चोँचला–पु० दे० 'चोचला'।

चोँटना*–स० क्रि० खोंटना; चोंथना, नोचना।

चोँड़ा–पु० सिंचाईके लिए खोदा गया छोटा कच्चा कुआँ।

चोँथ–पु० गाय-बैल आदिका एक बारमें किया गया गोबर।

चोँथना†–स० क्रि० खोंटना; नोचना; चीथना।

चोआ–पु० कई गंधद्रव्योंको मिलाकर बनाया जानेवाला एक सुगंधित द्रव्य; किसी चीजकी कमी पूरी करनेके लिए उसके साथ रखी जानेवाली चीज; बाटकी कमी पूरी करनेके लिए पलड़ेपर रखा जानेवाला कंकड़ आदि; दे० 'चोटा'।

चोई–स्त्री० भिगोकर मलनेसे निकलनेवाला दालका छिलका।

चोकर–पु० गेहूँ, जौ आदिका छिलका जो आटेको छाननेसे छलनीमें रह जाता है।

चोख*–स्त्री० तेजी, फुरती। वि० दे० 'चोखा'।

चोखना†–स० क्रि० थनसे मुँह लगाकर दूध पीना, चूसना।

चोखनि*–स्त्री० चोखनेकी क्रिया।

चोखा–वि० खालिस, बेमेल; सच्चा, खरा; चतुर; तीखी धारवाला। पु० आलू, बैगन आदिका भरता।

चोगद–पु० दे० 'चुगद'।

चोग़ा–पु० [फा०] लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगा खुला होता है (गाउन)।

चोचला–पु० नखरा, हाव-भाव। **–(ले)बाज़**–वि० नखरेबाज।

चोज–पु० चमत्कारपूर्ण उक्ति; व्यंग्यभरी हँसी।

चोंट–स्त्री० आघात; वार, घात-प्रतिघात, घाव; हिंस्र पशुका आक्रमण; व्यथा; व्यंग्य; वार, दफा; हानि पहुँचानेके लिए चली हुई चाल। **–चपेट**–पु० घाव, ठेस। मु० **–उभरना**–चोट खाये हुए अंगका ठंढ लगने आदिसे फिर सूज आना, दर्द करना।

चोटना-पोटना*–स० क्रि० मनाना, फुसलाना।

चोटहा–वि० जिसपर चोटका चिह्न हो। †चोंट करनेवाला।

चोटा–पु० राबके ऊपर उठ आनेवाला शीरा, जूसी।

चोटार*–वि० चोट करनेवाला; चोट खाया हुआ।

चोटारना*–स० क्रि० चोट करना।

चोटिया†–स्त्री० चोटी, बालोंकी लट।

चोटियाना†–स० क्रि० चोट पहुँचाना; चोटी पकड़ना।

चोटी–स्त्री० (हिंदुओंके) सिरके बीचोबीच छोड़ रखे हुए लंबे बाल, शिखा; स्त्रीके सिरके गुँथे हुए और पीठकी ओर या अगल-बगल लटकनेवाले बाल; वह रंगीन डोरा जो चोटी बाँधनेके काम आता है; चिड़ियोंके सिरपरकी कलगी; एक गहना जो जूड़ेमें बाँधकर पहना जाता है; पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, शिखर; (ला०) उत्कर्षकी सीमा। **–का**–औवल दरजेका, सर्वोत्कृष्ट। **–दार**–वि० चोटीवाला। मु० **–कटाना**–बसमें होना, गुलाम बनना। **–कतरना**–बसमें करना, अधीन करना। **–करना**–सिरके बाल सँवारकर गूँथना। **–दबना,–हाथमें होना**–दबावमें होना, काबूमें होना।

चोटी-पोटी*–वि० चिकनी-चुपड़ी, बनावटी (बात)।

चोट्टा–पु० चोर।

चोढ़*–पु० चाव, उमंग।

चोदक–वि० [सं०] प्रेरक।

चोदना–स० क्रि० संभोग करना। स्त्री० [सं०] प्रेरणा; प्रवर्तन; विधि, शास्त्रादेश।

चोप–पु० आमकी ढेपनी तोड़नेसे निकलनेवाला तेजाबी रस; * चाह; चाव; उमंग; बढ़ावा। स्त्री० दे० 'चोब'। **–दार**–पु० दे० 'चोबदार'।

चोपना*–अ० क्रि० मोहित होना; आसक्त होना।

चोपी–*वि० चाव, चाह, उत्साह रखनेवाला। † स्त्री० आमके मुँहपरसे निकलनेवाला रस।

चोब–स्त्री० [फा०] लकड़ी; डंडा, सोंटा; खेमेका डंडा; ढोल, नगाड़ा आदि बजानेकी लकड़ी; सोना या चाँदी मढ़ा हुआ डंडा, असा। **–दार**–पु० असाबरदार।

चोर–पु० [सं०] चोरी करनेवाला, छिपकर दूसरेकी चीज हथिया लेनेवाला, तस्कर; उचितसे कम काम करने, कम

माल देनेवाला, बेईमान; छिपकर काम करनेवाला; जो मनका भाव प्रकट न होने दे; मनमें छिपी बुराई, दुर्भाव; घाव आदिके भीतर छिपी विकृति, खराबी; खेलमें हारनेवाला लड़का जिससे और लड़के दाँव लें; ताश, गंजीफेका पत्ता जिसे कोई खिलाड़ी दबाये बैठा हो; एक गंध-द्रव्य, चोरक। वि० [हिं०] छिपा हुआ, गुप्त; जिसका बाह्य रूप धोखा देनेवाला हो (चोर दरवाजा, चोर महल, इत्यादि)। **—कट**—पु० [हिं०] चोर, चोट्टा। **—ख़ाना**—पु० [हिं०] संदूक, आलमारीका छिपा खाना। **—खिड़की**—स्त्री० [हिं०] छोटा चोर दरवाजा। **—गढ़ा**—पु० [हिं०] छिपा हुआ गढ़ा। **—गली**—स्त्री० [हिं०] सँकरी गली जिसका पता कुछ ही लोगोंको हो; गलीके भीतरकी गली। **—ज़मीन**—स्त्री० [हिं०] वह दलदल जो ऊपरसे देखनेमें सूखा, कड़ी जमीनसा जान पड़े। **—ताला**—पु० [हिं०] किवाड़के अंदर लगा हुआ गुप्त ताला जिसका पता ऊपरसे न लगे; वह ताला जो अनोखे, रहस्यमय ढंगसे खोला जाय। **—थन**—वि० [हिं०] दुहते समय दूध चुरा रखनेवाली। **—दंत**—पु० दे० 'चोरदंता'। **—दंता,—दाँत**—पु० [हिं०] बत्तीस दाँतोंके अतिरिक्त दाँत जिसके निकलनेमें बहुत कष्ट होता है। **—दरवाजा**—पु० [हिं०] मकानके पिछवाड़ेका छोटा दरवाजा जिसका पता कुछ खास लोगोंको ही हो। **—द्वार**—पु० चोर दरवाजा। **—पेट**—पु० [हिं०] ऐसा पेट जिसमें गर्भका पता अरसेतक न लगे। **—बदन**—पु० [हिं०] वह मनुष्य जो ऊपरसे कमजोर मालूम हो, पर वस्तुतः बलवान् हो। **—बाज़ार**—पु० [हिं०] वह दुकान, स्थान जहाँ चोरीसे, नाजायज तरीकेसे माल बेचा, खरीदा जाय। **—बालू**—स्त्री० [हिं०] वह रेता जिसके नीचे दल-दल हो। **—महल**—पु० [हिं०] वह महल जिसमें किसी राजा, रईसकी रखेलियाँ रहें। **—मिहीचनी***—स्त्री० आँख-मिचौनी। **—मूँग**—पु० [हिं०] मूँगका वह कड़ा दाना जो न दलनेसे दला जाय और न पकानेसे गले।

चोरटा—पु० चोर। [स्त्री० 'चोरटी'।]

चोरना*—स० क्रि० चोरी करना।

चोरा-चोरी*—अ० दे० 'चोरी-चोरी'।

चोरित—वि० [सं०] चुराया हुआ।

चोरी—स्त्री० चोरका काम, चुरानेकी क्रिया; छिपाव, दुराव; ठगी, धोखेबाजी। **—चोरी**—अ० छिपे-छिपे; छिपाकर। **—छिनाला**—पु० चोरी और व्यभिचार; दूषित कर्म। **—का काम,—की बात**—छिपाकर करनेका काम, बात। **से**—छिपाकर।

चोल—पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्राचीन जनपद, आधुनिक तंजौर; उक्त जनपदका निवासी; चोला; मजीठ; वल्कल; कवच। स्त्री० चोली—'क्या करै बपुरी चोल'—साखी। **—खंड**—पु० एक चोलीके ब्योंतभरका जरदोजीके कामका कपड़ा। **—सुपारी**—स्त्री० [हिं०] चिकनी सुपारी।

चोलना*—पु० साधुओंका लंबा कुरता।

चोला—पु० मुल्लाओं, फकीरों आदिके पहननेका लंबा, ढीला-ढाला कुरता; शिशुको पहली बार पहनाया जानेवाला कपड़ा; अँगरखेका ऊपरका भाग; देह, शरीर। **मु०—बदलना**—एक शरीर त्यागकर दूसरा धारण करना; रूप बदलना।

चोली—स्त्री० [सं०] वह अँगिया जिसमें पीछेकी ओर बंद न हों; चोला। **मु०—दामनका साथ**—कभी न छूटनेवाला साथ।

चोल्ला*—पु० दे० 'चोला'।

चोवा—पु० दे० 'चोआ'।

चोषक—पु० [सं०] चूसनेवाला।

चोषण—पु० [सं०] चूसना।

चोषना*—स० क्रि० दे० 'चोखना'।

चोष्य—वि० [सं०] चूसने योग्य। पु० चूसकर खायी जानेवाली चीज।

चौंकना—अ० क्रि० भय, विस्मय या पीड़ाकी अचानक अनुभूतिसे चंचल हो जाना, हिल, काँप उठना; सोतेसे थकाथक जाग उठना; चौकन्ना या चकित होना; भड़कना।

चौंकाना—स० क्रि० दूसरेके चौंकनेका कारण होना।

चौंटना*—स० क्रि० चुटकीसे तोड़ना (फूल आदि)।

चौंतीस—वि० तीस और चार। पु० चौंतीसकी संख्या, ३४।

चौंध—स्त्री० चकाचौंध, तिलमिलाहट।

चौंधना*—अ० क्रि० (बिजलीका) चमकना, कौंधना।

चौंधियाना—अ० क्रि० चकाचौंध होना।

चौंधी*—स्त्री० चकाचौंध।

चौंप*—स्त्री० इच्छा—'कबीर सोया क्या करै, जागनकी करि चौंप'—साखी।

चौंर—पु० चँवर; झालर; फुँदना; भड़भाँड़की जड़। **—गाय**—स्त्री० सुरा गाय।

चौंराना*—स० क्रि० चँवर डुलाना; बुहारना।

चौंरी—स्त्री० घोड़ेकी पूँछके बालोंका गुच्छा जिससे घुड़सवार मक्खियाँ उड़ानेका काम लेते हैं; चोटी बाँधनेकी डोरी; सफेद पूँछवाली गाय।

चौंसठ—वि० साठ और चार। पु० चौंसठकी संख्या, ६४।

चौ—पु० मोती आदि तौलनेका बाट। वि० चार (केवल समासमें व्यवहृत)। **—आई,—बाई,—वाई**—स्त्री० चारों दिशाओंसे, कभी इस और कभी उस दिशासे बहनेवाली हवा; अफवाह। **—कठ**—स्त्री० दे० 'चौखट'। **—कठा**—पु० दे० 'चौखटा'। **—कड़ा**—पु० दो-दो मोतियोंवाली बाली। **—कड़ी**—स्त्री० चार चीजोंका समूह; चार आदमियोंकी मंडली; चार घोड़ोंकी गाड़ी; चौपायोंकी वह दौड़ या छलाँग जिसमें चारों पाँव एक साथ फेंके जायँ; हिरन आदिकी कुलाँच (भरना); चार युगोंका समूह; चारपाईकी वह बुनावट जिसमें सुतली या बानकी चार-चार लड़ियाँ एक साथ हों। (**मु० चौकड़ी भूल जाना**—अकलका काम न करना; राह न सूझना; घबरा जाना।) **—कन्ना**—वि० चारों ओर ध्यान रखनेवाला, सजग, सावधान, होशियार। **—करी***—स्त्री० दे० 'चौकड़ी'। **—कल**—पु० चार मात्राओंका समूह। **—कस**—वि० चौकन्ना, सावधान; ठीक, दुरुस्त। **—कसाई,—कसी**—स्त्री० सावधानी; निगरानी। **—कोन**—वि० दे० 'चौकोना'। **—कोना**—वि० चौकोर, चतुष्कोण। **—कोर**—वि० चौकोना, चौखूँटा। **—खंड**—वि० चार खंडोंवाला (मकान), चौमंजिला। **—खट**—स्त्री० लकड़ीका चौकोर ढाँचा जिसमें किवाड़के पल्ले जड़े जाते

हैं; देहली। (मु०**चौखटन झाँकना**–(किसीके घर) कभी न आना।)–**खटा**–पु० लकड़ीका ढाँचा जिसमें तसवीर या आईना जड़ा जाय; चौखट।–**खना**–वि० चार खंडोंवाला (मकान)। –**खानि***–स्त्री० चार प्रकारकी सृष्टि, अंडज, पिंडज आदि चार प्रकारके जीव। –**खूँट**–अ० चारों ओर। –**खूँटा**–वि० चौकोना, चौकोर। –**गड्डा**–पु० वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ या चार रास्ते मिलते हों। –**गिर्द**–अ० चारों ओर। –**गुन***–वि० दे० 'चौगुना'। –**गुना**–वि० किसी वस्तुका चार गुना, चार बार उसके बराबर, चतुर्गुण। –**गून***–वि० दे० 'चौगुना'। –**गोड़ा**–वि० चार पैरोंवाला। पु० पशु; खरहा। –**गोड़िया**–स्त्री० चार पायोंकी ऊँची डंडेदार तिपाई जिसपर चढ़कर ऊँचे स्थानोंकी सफाई, सफेदी आदि की जाती है। –**गोशा**–वि० चार कोनोंवाला, चतुष्कोण। –**गोशिया**–वि० चौगोशा। स्त्री० चार तिकोने टुकड़ोंकी बनी हुई टोपी। –**घड़ा**–पु० चार खानोंवाला डिब्बा जिसमें लौंग, इलायची आदि रखते हैं; मसाला रखनेका चार खानोंका बरतन; मिट्टीका बना खिलौना जिसमें एक दूसरीसे जुड़ी चार कुल्हियाँ होती हैं; चार बीड़े पानकी खोंगी। –**घड़िया**–वि० चार घड़ियोंका। स्त्री० चार पायोंकी ऊँची चौकी, चौगोड़िया। –**घड़िया मुहूर्त**–पु०जल्दीके कामोंके लिए शोधा जानेवाला दो-चार घड़ीका कामचलाऊ मुहूर्त।–**घर***–वि० सरपट (चाल)। –**घरा**–पु० पीतलकी दीयट; दे० 'चौधड़ा'।–**घोड़ी***–स्त्री० चार घोड़ोंकी गाड़ी, चौकड़ी। –**तनियाँ***–स्त्री० दे० 'चौतनी'; अँगिया, चोली। –**तनी**–स्त्री० बच्चोंकी चौगोशी टोपी। –**तरफा**–अ० चारों ओर, चौगिर्द। –**तरा***–पु० चार तारोंवाला एक बाजा; दे० 'चबूतरा'। –**तहा**–वि० चार तहोंवाला। –**ताल**–पु० मृदंगका एक ताल; होलीमें गाया जानेवाला एक गीत। –**तुका**–वि० चार तुकोंवाला। पु० वह छंद जिसके तुकांतमें समता हो। –**दंता**–वि० चार दाँतोंवाला; अल्हड़। –**दस**–स्त्री० किसी पक्षकी चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी। –**दह**–वि० दस और चार। पु० चौदहकी संख्या, १४। –**दाँत***–पु० दो हाथियोंकी लड़ाई। –**धारी***–स्त्री० चारखाना। –**पई**–स्त्री० एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें १५ मात्राएँ होती हैं।–**पट**–वि० चारों ओरसे खुला हुआ; नष्ट, तबाह, सत्यानास। –**पट चरण**–वि० जिसके कहीं पहुँचते ही तबाही, बरबादी आ जाय, सत्यानासी। –**पटहा**†–वि० दे० 'चौपटा'। –**पटा**–वि० चौपट करनेवाला, बिगाड़ू। –**पड़**–पु० चौसर। –**पत**–पु० वह पत्थर जिसमें लगी कीलपर कुम्हाका चाक टिका रहता है। –**पतिया**–स्त्री० एक साग; एक घास; चार पन्नोंकी पोथी; कशीदेकी चार पत्तियोंवाली बूटी।–**पथ**–पु०चौराहा, चतुष्पथ; दे०'चौपत'। –**पद***–पु० चौपाया, चतुष्पद। –**पदा**–पु० चार चरणोंवाला एक विशेष छंद। –**पल**–पु० दे० 'चौपत'। –**पहल**–वि० चार पहलों या पहलुओंवाला। –**पहला**–वि० दे० 'चौपहल'। पु० एक तरहकी हलकी, खुली पालकी, चौपाल। –**पहिया**–वि० चार पहियोंवाला। स्त्री० चार पहियोंवाली गाड़ी। –**पाई**–स्त्री० १६-१६ मात्राओंके चार चरणोंका एक प्रसिद्ध छंद। –**पाड़**–पु० दे० 'चौपाल'। –**पाया**–पु० चार पैरोंवाला पशु, जानवर, ढोर, गाय-भैंस आदि।–**पार***–पु० दे० 'चौपाल'। –**पाल**–पु० खुली या छायी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँवके लोग बैठकर पंचायत आदि करते हों; एक तरहकी पालकी। –**पुरा**–पु० वह कुआँ जिसपर चार पुर एक साथ चल सकें। –**पैया**–पु० एक मात्रिक छंद। –**फला**–वि० चार फलोंवाला (चाकू)। –**फेर**–अ० चारों ओर। –**बंदी**–स्त्री०चुस्त, कम लंबा अँगरखा जिसके नीचे-ऊपरके दोनों पल्लोंमें चार-चार बंद होते हैं। –**बगला**–पु० कुरते, अँगरखे आदिकी बगलके नीचे और कलीके ऊपरका भाग। अ० चौतरफा। –**बगली**–स्त्री० चौबंदी। –**बारा**–पु० बालाखानेका कमरा जिसमें चारों ओर खिड़कियाँ या दरवाजे हों; चौपाल। –**बीस**–वि० बीस और चार। पु० चौबीसकी संख्या, २४। –**बोला**–पु० एक मात्रिक छंद। –**मंजिला**–वि० चार मंजिलों या खंडोंवाला (मकान)। –**मसिया**–वि० चौमासेमें होनेवाला। पु० चौमासेभर काम करनेके लिए रखा गया हलवाहा। –**महला**–वि० चौमंजिला। –**मार्ग***–पु० चौराहा। –**मास**–पु० दे० 'चौमासा'। –**मासा**–पु० बरसातके चार महीने, असाढ़से कुआरतकका काल; वह खेत जो चौमासेमें केवल जोतकर छोड़ दिया जाय, बोया न जाय; वर्षाऋतु-संबंधी कविता। –**मासी**–स्त्री० चौमासेमें गाया जानेवाला एक गाना। –**मुख**–अ० चारों ओर। –**मुखा**–वि० चार मुँहोंवाला; जिसके मुँह चारों ओर हों।–**मुखा दि(दी)या**–पु० वह दिया जिसमें चारों ओर चार बत्तियाँ लगायी जायँ। –**मुहानी**–स्त्री० चौराहा, चतुष्पथ। –**मेंड़ा**–पु० वह जगह जहाँ चार डाँड़े या सरहदें मिलती हों।–**रंग**–वि०तलवारके आघातसे कई टुकड़ोंमें कटा हुआ। पु० तलवारका एक हाथ। –**रंगा**–वि० चार रंगोंवाला। –**रँगिया**–पु० मालखंभकी एक कसरत। –**रस**–वि० समतल, चौपहल। –**रस्ता**–पु० चौराहा। –**राहा**–पु० वह जगह जहाँ चार रास्ते मिलें या दो सड़कें एक दूसरीको काटें, चौमुहानी। –**लड़ा**–वि० चार लड़ियोंवाला (हार इ०)। –**सर**–पु० गोटों और पासोंके सहारे बिसातपर खेला जानेवाला एक खेल, चौपड़; इस खेलकी बिसात; * चार लड़ियोंका हार। * वि० चार लड़ियोंवाला, चौलड़ा। –**सिहा**–पु० वह जगह जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ मिलती हों।–**हट(ट्ट)***,–**हट्टा**–पु० चौक; चौमुहानी। –**हद्दा**–पु० वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ मिलती हों। –**हद्दी**–स्त्री० किसी स्थान या मकान आदिकी चारों सीमाएँ; पिप्पलादि चार दवाओंका योग।

चौआ–पु० चार अंगुलकी माप; चार उँगलियोंका समूह; ताशका चार बूटियोंवाला पत्ता, चौका; चौपाया।

चौआना–* अ० क्रि० चकित होना। † स० क्रि० तागेको हाथकी चार उँगलियोंपर लपेटना (जनेऊ चौआना)।

चौक–पु० चौखूँटा सहन, आँगन; चौमुहानी; नगरका मुख्य बाजार; चौखूँटा चबूतरा; पूजन आदिमें आटे आदिकी रेखाओंसे बनाया जानेवाला क्षेत्र; चारका समूह;

चौसरकी बिसात; चार दाँतोंकी पंक्ति; चार वस्तुएँ ।

चौका–पु० पत्थरकी चौकोर सिल; भूमिका चौखूँटा टुकड़ा; रोटी बेलनेका चकला; चार चीजोंका समूह; आगेके चार दाँतोंकी पंक्ति; हिंदूके खाना पकाने या खानेका स्थान; मिट्टी या गोबरका लेप; आटे आदिकी लकीरोंसे बना हुआ चौकोर चित्र; सीसफूल; ताशका वह पत्ता जिसपर चार बूटियाँ हों; फर्शपर बिछानेके काम आनेवाला एक तरहका कपड़ा । **–बरतन**–पु० रसोईमें चौका लगाने और बरतन माँजनेका काम (करना, होना) । **मु०–लगाना**–किसी स्थानको गोबर या मिट्टीसे लीपना; चौपट, सत्यानास करना ।

चौकिया सुहागा–पु० चौकोर टुकड़ोंमें कटा हुआ सुहागा जो खानेकी दवाके तौरपर काम आता है ।

चौकी–स्त्री० लकड़ी या पत्थरका चार पायोंवाला, चौकोर आसन, छोटा तख्त; वह स्थान जहाँ पुलिस या सेनाके थोड़ेसे सिपाही रक्षा, निगरानी आदिके लिए रखे जायँ; चुंगी वसूल करनेवालोंके रहनेका स्थान; पहरा (बिठाना, बैठना); रखवाली; पड़ाव, टिकान; गलेमें पहननेकी चौकोर पटरी; चकला; मंदिरमें मंडपके खंभोंके बीचका स्थान; किसी देवी-देवताको चढ़ायी जानेवाली भेंट; जादू; तेलके कोल्हूमें लगनेवाली एक लकड़ी । **–दार**–पु० पहरा देनेवाला; गाँवमें पहरा देनेके लिए नियुक्त पुलिस कर्मचारी, 'गोडइत' । **–दारी**–स्त्री० चौकीदारका काम, रखवाली; चौकीदार रखनेके लिए लिया जानेवाला कर । **मु०–भरना**–पहरेकी ड्यूटी पूरी करना; किसी देवी-देवता, पीर-पैगंबर आदिकी भेंट-पूजाकी मनौती पूरी करना ।

चौगान–पु० [फा०] गेंद-बल्लेका खेल जो पोलोसे मिलता-जुलता है; चौगान खेलनेका बल्ला जो आगेकी ओर कुछ झुका हुआ होता है; नगाड़ा बजानेकी लकड़ी; * चौगान खेलनेका मैदान । **–गाह**–पु० चौगान खेलनेका मैदान । **–बाज़**–पु० चौगान खेलनेवाला ।

चौगानी–स्त्री० हुक्केकी निगाली ।

चौघड़–पु० दे० 'चौभड़' ।

चौचँद–पु० बदनामी, अपवाद; झगड़ा । **–हाई**–वि० स्त्री० जो दूसरोंकी निंदा, बदनामी करती फिरे ।

चौड़ा–वि० लंबाईके दोनों छोरोंके बीच विस्तृत, चकला, फराख ।

चौड़ाई–स्त्री० चौड़ापन, लंबाईके दोनों छोरोंके बीचका विस्तार, पाट ।

चौड़ान–स्त्री० दे० 'चौड़ाई' ।

चौड़ाना†–स० क्रि० चौड़ा करना ।

चौतरा*–पु० चबूतरा ।

चौथ–स्त्री० प्रत्येक पक्षकी चौथी तिथि, चतुर्थी; चौथाई; राजस्वका चतुर्थांश जो मराठे दूसरे राज्योंसे करके रूपमें लिया करते थे । * वि० चौथा । **–का चाँद**–पु० भाद्र-शुक्ला चतुर्थीका चंद्रमा जिसके देखनेसे झूठा कलंक लगना माना जाता है । **–पन***–पु० दे० 'चौथापन' ।

चौथा–वि० जो क्रममें तीनके बाद, चारके स्थानपर हो । **–पन**–पु० बुढ़ापा, जीवनकी चौथी अवस्था ।

चौथाई–स्त्री० चौथा भाग, चतुर्थांश ।

चौथि*–स्त्री० दे० 'चौथ' ।

चौथिया–पु० चौथे दिन आनेवाला ज्वर; चौथाईका हकदार; अनाजकी एक नाप ।

चौथी–वि० 'चौथा'का स्त्रीलिंग रूप । स्त्री० विवाहके चौथे दिन दूल्हा-दुल्हिनके कंगन खोलनेकी रीति; विवाहके चौथे दिन (या कुछ अधिक दिन बाद भी) कन्याके घरसे मिठाइयाँ, कपड़े आदि भेजे जानेकी रस्म; बँटाईकी वह रीति जिसमें जमींदार चौथाई और असामी तीन-चौथाई फसल लेता है । **मु०–खेलना**–ब्याहके चौथे दिन दूल्हे-दुल्हिनका एक दूसरेपर या दूल्हे और उसके छोटे भाइयोंका ससुराल जाकर सालियों आदिपर मेवे आदि फेंकना ।

चौधराई–स्त्री० चौधरीका पद या काम ।

चौधराना–पु० चौधराई; चौधरीका पुरस्कार ।

चौधरानी–स्त्री० चौधरीकी पत्नी ।

चौधरी–पु० किसी जाति या समाजका मुखिया, सरदार; जाटों, कुर्मियों आदिकी पदवी ।

चौपतना, चौपरतना–स० क्रि० तह लगाना ।

चौबच्चा–पु० दे० 'चहबच्चा' ।

चौबाइन–स्त्री० चौबेकी स्त्री ।

चौबाछा–पु० मुगल शासनमें लिया जानेवाला एक कर ।

चौबे–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति, चतुर्वेदी ।

चौभड़–स्त्री० चौड़ा, चपटा दाँत जो आहारको कुचलनेका काम करता है ।

चौर–पु० [सं०] चोर । **–कर्म(न्)**–पु० चोरी ।

चौरठ, चौरठा–पु० दे० 'चौरेठा' ।

चौरसाई–स्त्री० चौरस करनेका काम या उजरत ।

चौरसाना†–स० क्रि० चौरस करना ।

चौरा–पु० चबूतरा; चौपाल; वह चबूतरा या वेदी जिसपर किसी देवी, सती या प्रेत आदिकी स्थापना हुई हो; लोबिया ।

चौराई†–स्त्री० दे० 'चौलाई'; एक चिड़िया ।

चौरानबे, चौरानवे–वि० नब्बे और चार । पु० चौरानबेकी संख्या, ९४ ।

चौरासी–वि० अस्सी और चार । पु० चौरासीकी संख्या, ८४; चौरासी लाख योनि; एक तरहकी टाँकी; घुँघरुओंका गुच्छा ।

चौरी–स्त्री० छोटा चौरा; एक पेड़ ।

चौरेठा–पु० चावलका आटा; पानीसे पीसा हुआ चावल ।

चौर्य–पु० [सं०] चोरी, चोरका काम; छलछद्म; छिपाव । **–वृत्ति**–स्त्री० चोरीकी आदत या पेशा ।

चौर्योन्माद–पु० [सं०] (क्लेप्टोमेनिया) चुरा लेने या छिपा रखनेकी दुष्प्रवृत्ति ।

चौल–वि० [सं०] चूल–चूड़ा-संबंधी । पु० मुंडन, चूडाकर्म ।

चौलाई–स्त्री० एक पत्रशाक ।

चौवन–वि० पचास और चार । पु० चौवनकी संख्या, ५४ ।

चौवा–पु० दे० 'चौआ' ।

चौवालीस–वि० चालीस और चार । पु० चौवालीसकी संख्या, ४४ ।

चौहरा–वि० जिसमें चार तहें हों; चौगुना ।

चौहत्तर-वि०सत्तर और चार । पु०चौहत्तरकी संख्या,७४ ।

चौहान-पु० अग्निकुलवाले क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चौहैं*-अ० चारों ओर ।

च्यवन-पु०[सं०] चूना, टपकना, क्षरण (लीकेज); च्युति; एक ऋषि जिनके विषयमें प्रसिद्ध है कि अश्विनीकुमारोंने उन्हें च्यवनप्राश खिलाकर बूढ़ेसे जवान बना दिया । **-छूट**-स्त्री०[हिं०] ,**-मोक**-पु० किसी द्रव पदार्थके चू जाने, बह जाने आदिके बदलेमें दी जानेवाली छूट । **-प्राश**-पु० आयुर्वेदका एक अवलेह जो श्वास-कास, क्षय आदि रोगोंकी प्रसिद्ध औषधि है ।

च्यावन-पु० [सं०] चुआना, टपकाना; निकाल देना ।

च्युत-वि० [सं०] चुआ, झड़ा हुआ, क्षरित; गिरा हुआ; अपनी जगहसे हटा या हटाया हुआ, स्थानभ्रष्ट; चूका हुआ (कर्तव्यच्युत) ।

च्युति-स्त्री० [सं०] च्युत होना, चूना, झड़ना; अपने स्थानसे भ्रष्ट होना, स्खलित होना; चूक; लोप (वर्णच्युति) ।

च्यूँटा-पु० दे० 'चींटा' ।

च्यौना*-पु० घरिया ।

छ

छ-देवनागरी वर्णमालाका सातवाँ व्यंजन ।

छंग*-पु० गोद, अंक ।

छंगा, छंगू-वि० जिसके किसी पंजेमें छ उँगलियाँ हों ।

छँगुनिया*-स्त्री० दे० 'छगुनी' ।

छँगुलिया, छँगुली-स्त्री० दे० 'छगुनी' ।

छँछौरी-स्त्री० एक पकवान जो छाँछमें बनाया जाता है ।

छँटना-अ० क्रि० छाँटा जाना; चुना जाना; कटना; दूर होना; अलग होना; बिखरना; क्षीण होना; साफ किया जाना । **छँटा हुआ**-चालाक, धूर्त । **मु० छँटे-छँटे फिरना**-दूर-दूर रहना ।

छँटनी-स्त्री० छाँटने, (कर्मचारी आदिको) हटानेकी क्रिया ।

छँटवाना-स० क्रि० छाँटनेका काम दूसरेसे कराना ।

छँटाई-स्त्री० छाँटनेका काम; छाँटनेकी उजरत; (कर्मचारी आदिको) अलग करनेका काम ।

छँटाना-स० क्रि० दे० 'छँटवाना' ।

छँटाव-पु० छँटाई ।

छँटैल-वि० छँटा हुआ, धूर्त; छाँटकर अलग किया हुआ ।

छँड़ना*-स० क्रि० छोड़ना, त्यागना; छाँटना । अ० क्रि० कै करना ।

छँड़ाना*-स० क्रि० छीनना, दूसरेके हाथसे झपट लेना ।

छंदःशास्त्र-पु० [सं०] छंद-रचना-संबंधी शास्त्र ।

छंद-पु० कलाईपर पहननेका एक गहना; दे० 'छंद(स्)'; [सं०] अभिलाष; नियंत्रण, वश्यता; रुचि ।

छंद(स्)-पु० [सं०] इच्छा; अभिप्राय; धोखा, छल; मात्रा, वर्ण, यति आदिके नियमोंसे युक्त वाक्य; छंदःशास्त्र ।

छंदोदोष-पु० [सं०] छंदमें वर्ण, मात्राके घट-बढ़ जाने आदिका दोष ।

छंदोबद्ध-वि० [सं०] पद्यरूपमें रचित, श्लोकबद्ध ।

छंदोभंग-पु० [सं०] छंदमें वर्ण, मात्रा आदिके नियमका पूर्ण पालन न होना ।

छः-वि० पाँच और एक । पु० छकी संख्या, ६ ।

छ-वि० पाँच और एक । पु० छकी संख्या, ६ । **-कड़िया**-स्त्री० वह पालकी जिसके ढोनेमें छ कहार लगें । **-कड़ी**-स्त्री० छका समूह; छकड़िया पालकी; चारपाईकी वह बुनावट जिसमें सुतलीके छ फेरे एक साथ बुने जायँ । **-पद**-पु० भ्रमर, षट्पद, भँवरा । **-बुंदा**-पु० एक जहरीला कीड़ा जिसकी पीठपर छ बुंदे होते हैं । **-मासी**-स्त्री० मृत्युके छ महीने बाद होनेवाला श्राद्ध । **-माही**-वि० छ महीनेपर होनेवाला (इम्तहान आदि) । **-मुख**-पु० कार्त्तिकेय ।

छई-स्त्री० क्षय रोग । वि० क्षय होनेवाला; क्षय रोगवाला ।

छक*-स्त्री० नशा; तृप्ति; लालसा ।

छकड़ा-पु० सग्गड़, बैलगाड़ी ।

छकना-अ० क्रि० अघाना, तृप्त होना; नशेमें चूर, बदमस्त होना; हैरान होना; चकराना; धोखा खाना ।

छकाछक-वि० तृप्त; परिपूर्ण; नशेमें चूर ।

छकाना-स० क्रि० भरपेट खिलाना, तृप्त करना; खूब नशा पिलाकर बदमस्त कर देना; हैरान करना; धोखेमें डालना ।

छकीला*-वि० छका हुआ, मस्त ।

छक्का-पु० छ अवयवोंवाली वस्तु; छका समूह; जुएके चार दाँवोंमेंसे एक; ताशका पत्ता जिसपर छ बूटियाँ हों; पासेका वह बल जिसमें छ बिंदियाँ हों; जुआ; होश । **-पंजा**-पु० दाँव-पेंच, छल-कपट । **मु०-पंजा भूल जाना**-उपाय न चलना, अकलका काम न करना । **(छक्के) छुड़ाना**-हौसला पस्त कर देना, परेशान कर देना । **-छूटना**-हिम्मत हारना, हैरान हो जाना ।

छगड़ा*-पु० बकरा ।

छगन-पु० छोटे बच्चोंके लिए प्यारका शब्द; नन्हा प्यारा बच्चा । **-मगन**-पु० हँसते-खेलते बच्चे, छोटे-छोटे बच्चे ।

छगुनी-स्त्री० कानी उँगली ।

छछिआ, छछिया-स्त्री० छाँछ नापनेका बरतन ।

छछूँदर-पु० चूहेकी जातिका एक जंतु जिसकी बोलीमें 'छू-छू'की ध्वनि रहती है और देहसे तीव्र गंध निकलती है; एक आतिशबाजी; निष्प्रयोजन इधर-उधर चलता-फिरता रहनेवाला व्यक्ति । **मु०-छोड़ना**-झगड़ा लगाना ।

छजना-अ० क्रि० शोभा देना, फबना; ठीक जान पड़ना ।

छज्जा-पु० छतका दीवारके बाहर निकला हुआ भाग; बारजा; दीवारके बाहर निकली हुई पत्थरकी पट्टी ।

छटंकी-स्त्री० छटाँकका बाट । वि० छोटा, छटपट (बालक) ।

छटकना-अ० क्रि० तेजीके साथ पकड़से निकल जाना, हाथसे सरक जाना; काबूसे निकल जाना; दूर-दूर रहना ।

छटकाना-स० क्रि० झटका देकर बंधन या पकड़से छुड़ा लेना, सरकाना ।

छटपटाना-अ०क्रि० व्याकुल होना, तड़पना; आतुर होना ।

छटपटी-स्त्री० आकुलता, बेचैनी; छटपटानेका भाव ।

छटाँक, छटाक-स्त्री० एक सेरका सोलहवाँ भाग ।

छटा–स्त्री० [सं०] शोभा, छवि; दीप्ति, झलक; बिजली; परंपरा, अविच्छिन्न शृंखला; समूह, ढेर; *लड़ी–'मोतिनकी बिथुरी शुभ छटैं'–राम०।

छटैल–वि० छँटा हुआ; चालाक।

छट्ठी–स्त्री० दे० 'छठी'।

छठ–स्त्री० पक्षकी छठी तिथि, षष्ठी।

छठवाँ–वि० दे० 'छठा'।

छठाँ, छठा–वि० जो क्रममें पाँचके बाद, छके स्थानपर हो। मु० **छठे-छमासे**–कभी-कभी, बहुत अरसेके बाद।

छठी–वि०स्त्री० 'छठा'का स्त्री० रूप (जैसे छठी चीज, छठी औरत इ०)। स्त्री० जन्मके छठे दिनका स्नान, पूजन, उत्सव। मु०**–का दूध याद आना**–कठिन मेहनत पड़ना। **–में न पड़ना**–प्रकृतिमें न होना; भाग्यमें न होना।

छड़–पु०, स्त्री० लोहे, पीतल, बाँस आदिका पतला डंडा जो खिड़की-जँगले आदिमें लगाया जाता है।

छड़ना–स० क्रि० (चावल आदि) छाँटना; * छोड़ना।

छड़ा–पु० चाँदीके तारका बना चूड़ी जैसा गहना जो पाँवमें पहना जाता है। वि० अकेला, तनहा।

छड़िया–पु० दरबान, छड़ीबरदार।

छड़ी–स्त्री० बाँस, बेंत, लकड़ी आदिका बना पतला, छोटा डंडा; पीरोंके मजारपर चढ़ानेकी झंडी। **–दार**–वि० जो छड़ी लिये हो; सीधी धारियोंवाला (कपड़ा)। पु० छड़ीबरदार। **–बरदार**–पु० चोबदार, असाबरदार।

छत–स्त्री० मकानकी पक्की पाटन या बालाखानेका पक्का, खुला फर्श; वह चादर जो छतके नीचे बाँधी जाय, छतगीर। * पु० क्षत, घाव। * अ० अछत, (किसीके) होते, रहते हुए। **–गीर**–पु० छतके नीचे बाँधनेकी चादर या चाँदनी। **–गीरी**–स्त्री० छतगीर। **–वंत***–वि० घायल, क्षतवाला।

छतना*–पु० पत्ते जोड़कर बनाया हुआ छाता; मधुमक्खीका छाता। अ० क्रि० रहना।

छतनार(रा)†–वि०(पेड़-पौधा) जिसकी डालियाँ, टहनियाँ दूरतक फैली हों; फैला हुआ।

छतरी–स्त्री० छाता; पत्तोंका छाता; चँदोवा; वह बड़ा छाता जिसके सहारे सैनिक विमानसे नीचे उतरते हैं; ईखके पत्तों, सरपत आदिकी बनी हुई छत्राकार मँड़ई; किसीकी समाधि या चिताके स्थानपर बना हुआ मंडप; कबूतरोंके बैठनेका ठट्टर; डोलीके ऊपरका ठट्टर; बहली आदिके कमानीदार ढाँचेके ऊपरका आच्छादन; कुकुरमुत्ता, छत्रक। **–दार**–वि० जिसपर छतरी हो।

छता*–पु० छाता।

छति*–स्त्री० दे० 'क्षति'।

छतिया*–स्त्री० दे० 'छाती'।

छतियाना–स० क्रि० छातीसे लगाना, सटाना (बोझ, बंदूकका कुंदा इ०)।

छतिवन–पु० एक पेड़, सप्तपर्णी।

छतीसा–वि० चालाक, मक्कार।

छतीसी–वि० स्त्री० ढोंग, नखरे करनेमें चतुर, छिनाल।

छतुरी*–स्त्री० दे० 'छतरी'।

छत्ता–पु० मधुमक्खियों, भिड़ों आदिका घर; चकत्ता; छतरी।

छत्तीस–वि० तीस और छ। पु० ३६ की संख्या।

छत्तीसा–पु० नाई। वि० दे० 'छतीसा'।

छत्तीसी–वि० स्त्री० दे० 'छतीसी'।

छत्र–पु० [सं०] छतरी; राजाओंके ऊपर लगायी जानेवाली राजचिह्नरूप छतरी; छत्रक, कुकुरमुत्ता; एक प्रकारका विष। **–च्छाया**–स्त्री० छत्रकी छाया, आश्रय। **–धर,–धार**–पु० छत्रधारी, राजा; राजाके ऊपर छत्र लगा रखनेवाला सेवक। **–धारी(रिन्)**–पु० दे० 'छत्रधर'। **–पति**–पु० राजा; महाराज शिवाजीकी पदवी। **–भंग**–पु० राज्यका नाश; स्वाधीनताका नाश; ज्योतिषका एक योग जिसका फल राजनाश माना जाता है।

छत्रक–पु० [सं०] छतरी; कुकुरमुत्ता; खुमी; शहदका छत्ता; शिवमंदिर।

छत्री*–स्त्री० महलकी बुर्जी।

छत्री(त्रिन्)–वि० [सं०] छत्रयुक्त, जो छाता लगाये हो। पु० नाई; दे० 'क्षत्रिय'।

छद, छदन–पु० [सं०] आवरण, ढकनेवाली चीज; खाल; गिलाफ, खोल; पत्ता; पंख।

छदाम–पु० दुकड़ा, पैसेका चौथा भाग।

छद्म(न्)–पु० [सं०] छल, कपट; अपना असली रूप छिपाना; बदला हुआ भेस। **–नाम**–पु० (स्यूडोनिम) कोई लेख या पुस्तकादि लिखते समय लेखक द्वारा गृहीत बनावटी नाम। **–युद्ध**–पु० (शैम फाइट) नकली लड़ाई, दिखाऊ युद्ध। **–वेश**–पु० बनावटी भेस। **–वेशी(शिन्)**–वि० जो भेस बदले हो।

छद्मावरण–पु० [सं०] (कैमूफ्लेज) शत्रुको धोखेमें डालनेके लिए विमानों, तोपों आदिको वृक्षोंकी पत्तियों, धूमपटल आदिसे ढक देना, छलावरण।

छद्मी(द्मिन्)–वि० [सं०] छद्मवेशधारी; कपटी।

छन–पु० क्षण, पल; पुण्यकाल। **–छबि**–स्त्री० बिजली, क्षणप्रभा। **–दा***–स्त्री० रात्रि; बिजली। **–भंगु***–वि० क्षणभंगुर। **–भर**–अ० एक क्षण, जरा देर।

छनक–* पु० एक क्षण। अ० क्षणभर। स्त्री० 'छन-छन'-की आवाज; झनकार; भड़क; फुर्ती। **–मनक**–स्त्री० गहनोंकी झनकार; सजधज; ठसक।

छनकना–अ० क्रि० 'छन-छन' करके उड़ जाना (जलते तवे आदिपर पानीकी बूँदका); झनकार होना; भड़कना।

छनकाना–स० क्रि० पानीको आँचपर रखकर उसका कुछ अंश जलाना; गरम किये हुए बरतनमें पानी डालना; भड़काना।

छनछनाना–अ० क्रि० 'छन-छन'की आवाज होना; झनकार होना। स० क्रि० 'छन-छन' शब्द उत्पन्न करना।

छनना–अ० क्रि० छाना जाना, कड़ाहीमें खौलते घीमें सिक्त होकर पूरी आदिका निकलना; छोटे-छोटे छिद्रोंसे होकर निकलना; छिद जाना; मादक पदार्थका सेवन किया जाना। पु० छाननेका साधन, महीन कपड़ेका टुकड़ा जिससे दूध, पानी आदि छाना जाय।

छनवाना–स० क्रि० छाननेका काम दूसरेसे कराना।

छनाना–स० क्रि० छनवाना; पिलाना (भाँग, शराब इ०)।

छनिक*–वि० दे० ‘क्षणिक’। अ० छनभर। पु० एक क्षण।

छन्न–वि० [सं०] छिपा हुआ; ढका हुआ; लुप्त।

छन्ना–पु० दे० ‘छनना’। **–पत्र**–पु० (फिल्टर पेपर) तेल आदि छाननेका मसिशोप जैसा कागज।

छन्य–पु० (फिल्ट्रेट) वह द्रव जो छन्नापत्र आदिकी सहायतासे छनकर नीचे आ जाता है।

छप–स्त्री० पानीमें किसी चीजके जोरसे गिरने या किसी गाढ़ी चीज(कीचड़, दही इ०)के किसी अन्य वस्तुपर गिरनेसे होनेवाली आवाज। **–छप**–स्त्री० ‘छप’की आवाज बार-बार होना।

छपक*–स्त्री० तलवार आदिसे कटनेकी आवाज।

छपका–पु० सिरमें पहननेका एक गहना; पानीका छींटा; पानीमें हाथ-पैर मारना; दे० ‘छपाका’।

छपछपाना–अ० क्रि० पानीपर हाथ-पैर मारना। स० क्रि० पानीपर छड़ी आदि मारकर ‘छप-छप’की आवाज निकालना।

छपन*–पु० नाश, संहार। **–हार**–वि० नाश करनेवाला।

छपना–अ० क्रि० छापा जाना, छपनेका काम होना; टीका लगना।

छपरखट, छपरखाट–स्त्री० वह पलंग जिसपर मसहरी लगानेके लिए डंडे लगे हों।

छपरंछपर*–वि० तराबोर।

छपरबंदी–स्त्री० छप्पर छानेका काम या उजरत।

छपरी*–स्त्री० झोपड़ी।

छपवाना–स० क्रि० दे० ‘छपाना’।

छपवैया†–वि०, पु० छापनेवाला; छपानेवाला।

छपा*–स्त्री० रात; हलदी। **–कर,–नाथ**–पु० चंद्रमा; कपूर।

छपाई–स्त्री० छापनेका काम या उसकी उजरत।

छपाका–पु० पानीपर किसी चीजके गिरनेकी आवाज; पानी, दही, कीचड़ आदिके किसी चीजपर पड़नेकी आवाज।

छपाना–स० क्रि० छापनेका काम दूसरेसे कराना; छापाखाने(प्रेस)में पुस्तक आदि मुद्रित कराना; टीका लगवाना; * छिपाना। * अ० क्रि० लगा रहना।

छपाव*–पु० छिपाव, दुराव।

छप्पन–वि० पचास और छ। पु० छप्पनकी संख्या, ५६।

छप्पय–स्त्री० छ चरणोंवाला एक मात्रिक छंद।

छप्पर–पु० फूस, पताई आदिकी छाजन; तलैया। **–बंद**–पु० छप्पर छानेवाला। वि० जो (गाँवमें) बस गया हो, आबाद (पाहीका उलटा–‘छप्परबंद असामी’)। **–बंदी**–स्त्री० छप्पर छानेका काम। **मु०–फाड़कर देना**–बिना कुछ श्रम किये, घर बैठे देना।

छब*–स्त्री० दे० ‘छवि’। **–तख़्ती**–स्त्री० देहकी सुंदर गठन, गात्र और वक्षस्थलकी सुंदरता।

छबि–स्त्री० शोभा, सुंदरता। **–धर,–मान**–वि० सुंदर।

छबीला–वि० छबिवाला, सुंदर, सजीला।

छब्बीस–वि० बीस और छ। पु० छब्बीसकी संख्या, २६।

छब्बीसी–स्त्री० छब्बीस गाहीका सैकड़ा (१३०)।

छम–स्त्री० घुँघरू बजने या मेह पड़नेकी आवाज। † वि० योग्य, समर्थ। † पु० सामर्थ्य, शक्ति। **–छम**–स्त्री० घुँघरू, पायल आदिकी बार-बार होनेवाली आवाज; जोरका मेह पड़नेकी आवाज; छमाछम। अ० ‘छमछम’ शब्दके साथ।

छमक–स्त्री० ठसक, चाल-ढालकी बनावट (स्त्रियोंकी)।

छमकना–अ० क्रि० गहने बजाना; घुँघरू आदि बजाकर आवाज करना; ठसक दिखाना।

छमछमाना–अ० क्रि० ‘छम-छम’ शब्द करना या ‘छम-छम’ करते हुए चलना।

छमना*–स० क्रि० क्षमा करना।

छमा*–स्त्री० दे० ‘क्षमा’। **–पन**–पु० क्षमा करनेकी क्रिया। **–वान**–वि० सहनशील, क्षमा करनेवाला।

छमाई*–स्त्री० क्षमा।

छमाछम–स्त्री० ‘छम-छम’की आवाज। अ० ‘छम-छम’ शब्दके साथ।

छय–पु० दे० ‘क्षय’।

छयना*–अ० क्रि० क्षय, नाश होना; छा जाना।

छर–स्त्री० छर्रों या कंकड़ियोंके गिरनेकी आवाज। * वि० नाशवान्। * पु० दे० ‘छल’। **–छंद***–पु० दे० ‘छल-छंद’। **–छंदी***–वि० धूर्त, कपटी।

छरकना–अ० क्रि० बिखरना, छिटकना; दे० ‘छलकना’।

छरकीला†–वि० लंबा और सुडौल, छहरीला।

छरछराना–अ० क्रि० घावपर नमक या खार लगनेसे पीड़ा होना।

छरछराहट–स्त्री० घावपर नमक या खार लगनेसे होनेवाली पीड़ा।

छरना–अ० क्रि० चूना; चुचुवाना; नष्ट होना; क्षीण होना; छँटना, अलग होना; * छला जाना; भूत-प्रेतको देखकर मोहित, पीड़ित होना। * स० क्रि० छलना, ठगना; मोहना; भूत-प्रेतका बनावटी रूप दिखाकर मोहना, आतंकित करना।

छरभार*–पु० प्रबंधभार, कामका बोझ; झंझट।

छरहरा–वि० इकहरे बदनका; चुस्त, फुरतीला।

छरा*–पु० छड़; लड़ी; रस्सी; नीवी, इजारबंद।

छरिया*–पु० दे० ‘छड़िया’।

छरी*–स्त्री० दे० ‘छड़ी’। वि० दे० ‘छली’। **–दार**–वि० पु० दे० ‘छड़ीदार’।

छरीदा–वि० अकेला, तनहा; जिसके पास कोई गठरी-मुटरी न हो।

छरीला–पु० एक परोपजीवी पौधा जो मसालेमें पड़ता और दवाके भी काम आता है, शैलेय, शिलापुष्प।

छर्दि(स्)–स्त्री० [सं०] कै, वमन; मतली; घेरा; मकान।

छर्रा–पु० कंकड़ी; घुँघरुओं, गहनोंमें भरी जानेवाली कंकड़ियाँ; सीसे, लोहेके छोटे टुकड़े जो बंदूकमें भरे जाते हैं।

छर्री–स्त्री० छोटा छर्रा।

छल–पु० [सं०] अपने असली रूपको छिपाना, यथार्थका गोपन; दूसरेको ठगने, धोखा देनेवाली बात; व्याज, बहाना; धूर्तता; दुश्मनपर युद्ध-नियमके विरुद्ध वार करना। **–कपट**–पु० मकरफरेब, धोखेबाजी। **–छंद**–पु० छल-कपट। **–छंदी(दिन्)**–वि० छल-कपट करनेवाला, धोखेबाज। **–छात**–पु० छल-छिद्र। **–छाया**–स्त्री०

कपटजाल, माया।–**छिद्र**–पु॰ दे॰ 'छलकपट'।–**छेव***–पु॰ दे॰ 'छल-छिद्र'। –**योजन**–पु॰ (मैनिपुलेशन) चतुराईसे अयथार्थ या बनावटी रूप दे देना; ऐसी चाल चलना जिससे कोई वस्तु मनोनुकूल रूप ग्रहण कर ले।

छलक, छलकन*–स्त्री॰ छलकनेका भाव।

छलकना–अ॰ क्रि॰ मुँहतक भरे हुए जल या दूसरे तरल पदार्थका हिलनेके कारण बरतनके बाहर गिरना; उछलना; उमड़ना।

छलकाना–स॰क्रि॰ बरतनमें भरे हुए जल आदिको हिलाकर गिराना।

छलछलाना–अ॰ क्रि॰ आँखोंका भर आना, आर्द्र हो जाना।

छलन–पु॰ [सं॰] छलना, ठगना, कपट।

छलना–स॰ क्रि॰ धोखा देना, ठगना। स्त्री॰ [सं॰] छल, धोखा, वंचना।

छलनी–स्त्री॰ छाननेका आला, झीना कपड़ा या चमड़े, लोहे, पीतल आदिकी जाली मढ़ी हुई खँजड़ीकी शकलकी चीज जिससे आटा चालते हैं। **मु॰–कर देना**–छेदोंसे भर देना, जर्जर कर देना। **–में डालकर छाजमें उड़ाना**–(किसीके) थोड़ेसे दोषको लेकर बहुत ज्यादा बदनाम करना, तिलका ताड़ बनाना।–**हो जाना**–फटचिथकर बेकार हो जाना, जर्जर हो जाना।

छलहाया*–वि॰ छली। [स्त्री॰ 'छलहाई'।]

छलाँग–स्त्री॰ चौकड़ी, कुदान, उछाल।

छला–*पु॰ दे॰ 'छल्ला'; † कांति, दीप्ति।

छलावरण–पु॰ [सं॰] दे॰ 'छद्मावरण'।

छलाई*–स्त्री॰ कपट-भाव, धूर्तता।

छलावा–पु॰ भूत-प्रेतकी छाया जो झट अदृश्य हो जाय; भूत-प्रेत; दलदल, श्मशान आदिमें रातको दिखाई देनेवाली रोशनी जो कुछ-कुछ क्षणपर दृश्य-अदृश्य होती रहती हैं, अगिया-बैताल; धोखा, जादू। **मु॰–खेलना**–छलावे या अगिया-बैतालका यहाँसे वहाँ दौड़ते दिखाई देना।

छलित–वि॰ [सं॰] छला, ठगा हुआ।

छलिया–वि॰ छली।

छली(लिन्)–वि॰ [सं॰] छल करनेवाला, धोखेबाज।

छलीक*–वि॰ छलिया, धोखा देनेवाला।

छल्ला–पु॰ बिना नग-नक्काशीकी, चाँदी-सोने आदिका तार मोड़कर बनायी हुई अँगूठी, कुंडली; कोई मंडलाकार वस्तु; कड़ी। **–(ल्ले)दार**–वि॰ जिसमें छल्ले हों, गिरहदार, घूँघरवाले (बाल)।

छल्ली–स्त्री॰कच्ची दीवारके रक्षार्थ खड़ी की हुई पक्की दीवार।

छवा* पु॰ छौना, शावक; एड़ी–'छूटे छवानि लौं केस बिराजत'–रसवि॰।

छवाई–स्त्री॰ छानेका काम; छानेकी उजरत।

छवाना–स॰ क्रि॰ छानेका काम दूसरेसे कराना।

छवि–स्त्री॰ [सं॰] शोभा, सुंदरता; चमक, कांति।

छवैया–पु॰ छानेका काम करनेवाला।

छहरना*–अ॰ क्रि॰ बिखरना, छिटकना।

छहराना*–अ॰ क्रि॰ छहरना। स॰ क्रि॰ बिखराना, छिटकाना; क्षार करना, भस्म करना।

छहरीला–वि॰ छितरानेवाला; दे॰ 'छरहरा', चुस्त।

छहियाँ*–स्त्री॰ छाया।

छाँगना–स॰ क्रि॰ काटना, छाँटना (डाल इ॰)।

छाँगुर†–पु॰ वह जिसके पंजेमें छ उँगलियाँ हों।

छाँछ*–स्त्री॰ मट्ठा, मही।

छाँट–स्त्री॰ छाँटनेकी क्रिया या ढंग; कतरनेकी क्रिया या ढंग; छाँटकर अलग की हुई बेकार चीज; भूसी; कै, वमन।

छाँटन–स्त्री॰ छाँटनेसे निकली हुई बेकार चीज; कतरन।

छाँटना–स॰ क्रि॰ काटना, कतरना; चुनना, बिलगाना; अनाजको साफ करनेके लिए कूटना, फटकना; कतरकर छोटा करना; निकालना, दूर करना (साबुनका मैल, दवाका कफ छाँटना); किसी चीजके ज्ञान, पांडित्यका प्रदर्शन करना (ज्ञान, कानून, पंडिताई छाँटना)।

छाँड़ना†–स॰ क्रि॰ दे॰ 'छोड़ना'।

छाँद–स्त्री॰ छाननेकी रस्सी; नोई।

छाँदना–स॰ क्रि॰ बाँधना, कसना; (चरनेके लिए) जानवरोंके अगले या पिछले पैर एक साथ बाँधना।

छांदस–वि॰ [सं॰] छंद-संबंधी; वेद-संबंधी, वैदिक; वेदज्ञ, वेदपाठी। पु॰ वेदपाठी, ब्राह्मण, श्रोत्रिय।

छाँदा†–पु॰ पकवान; परोसा; हिस्सा।

छांदोग्य–पु॰ [सं॰] सामवेदका एक ब्राह्मण; उक्त ब्राह्मणकी उपनिषद् जो मुख्य दस उपनिषदोंमेंसे है।

छाँवँ–स्त्री॰ दे॰ 'छाँह'।

छाँवड़ा*–पु॰ छौना, पशुशावक; छोटा बालक।

छाँह–स्त्री॰ छाया; आश्रय-स्थान–'छाँहो चाहत छाँह'–वि॰; छायी हुई जगह; प्रतिबिंब, परछाईं। **–गीर**–पु॰ छत्र; आईना। **मु॰–न छूने देना**–पास न आने देना। **–बचाना**–पास न जाना।

छाक–स्त्री॰ छकनेका भाव, तृप्ति; नशा, मस्ती; वह खाना जो हलवाहों, चरवाहों आदिके खानेके लिए दोपहरमें भेजा जाता है; माठ।

छाकना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'छकना'।

छाग–पु॰ [सं॰] बकरा।

छागल–स्त्री॰पाँवमें पहनेका एक गहना। पु॰[सं॰]बकरा।

छाछ–स्त्री॰ मट्ठा, मही।

छाज–पु॰ सींक या बाँसके छिलकोंका बना पात्र जिससे अनाज फटकते हैं, सूप; छाजन; स्वांग।

छाजन–स्त्री॰ आच्छादन, कपड़ा–'छाजन भोजन प्रीतिसों दीजे साधु बुलाय'–कबीर; छप्पर; अपरस।

छाजना–अ॰ क्रि॰ फबना, शोभा देना; सुशोभित होना।

छाजा*–पु॰ छज्जा; † छाजन।

छाजित*–वि॰ शोभित।

छात*–पु॰ छत्र, छतरी; आश्रय।

छाता–पु॰ छतरी; ताड़के पत्तों, बाँसके छिलकों या लोहेकी तीलियोंके ढाँचेपर बनी कपड़ेकी छतरी; छत्ता; चौड़ी छाती।

छाती–स्त्री॰ धड़का पेटके ऊपरका, पेट और गरदनके बीचका भाग, वक्षस्थल, सीना; स्तन; हिम्मत, हौसला। **मु॰–कूटना**–दे॰ 'छाती पीटना'। **–छलनी होना–**

क्लेश, आघात सहते-सहते ऊब जाना, कलेजा पक जाना। **–जलना**–दुःखसे मनका व्यथित, संतप्त होना; डाहसे मनमें जलन होना। **–जुड़ाना†**–दे॰ ‘छाती ठंडी करना, –होना’। **–ठंडी करना**–किसी बेचैन कर रखनेवाली कामना, बदलेकी भावना आदिको तृप्त कर शांतिलाभ करना, जीकी जलन मिटाना। **–ठंडी होना**–जीकी जलन मिटना। **–ठोंककर कहना**–कोई कठिन कार्य करनेकी प्रतिज्ञा करना, विश्वास दिलाना। **–देना**–बच्चेके मुँहमें स्तन देना। **–धड़कना**–किसी भय, आशंकासे हृदयका जोरसे उछलना। **–निकालकर चलना**–सीना तानकर, अकड़कर चलना। **–पकना**–आजिज आना; स्तनोंमें घाव हो जाना। **–पत्थरकी करना**–कोई भारी दुःख, आघात सहनेके लिए दिल कड़ा करना। **–परका जम**–हर घड़ी घेरे रहनेवाला आदमी। **–परका पत्थर**–वह चीज जिसकी चिंता सदा सिरपर सवार रहे। **–पर कोदो (मूँग) दलना**–किसीको दिखा-दिखाकर उसे जलाने-कुढ़ानेवाली बात करना; सौत लाना। **–पर बाल होना**–ऊँचे हौसलेवाला, भरोसा करनेलायक होना। **–पर साँप लोटना**–हृदयको गहरी वेदना होना; ईर्ष्यासें हृदय जल उठना। **–पीटना**–शोकसे व्याकुल होकर या ईर्ष्याके अतिरेकसे छातीपर बार-बार हाथ पटकना; मातम मनाना। **–फटना**–दुःखका असह्य हो जाना, हृदय विदीर्ण होना; डाहसे जलना। **–फुलाना**–गर्व करना, इतराना। **–से लगाना**–आलिंगन करना, गले लगाना।

छात्र–पु॰ [सं॰] शिष्य, विद्यार्थी। **–नायक**–पु॰ (मॉनिटर) कक्षाका प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्तव्य कक्षामें अनुशासनकी रक्षा आदि करना होता है। **–वृत्ति**–स्त्री॰ विद्यार्थीको विद्याभ्यासमें सहायतार्थ मिलनेवाला धन, वजीफा।

छात्राभिरक्षक–पु॰ [सं॰] (वार्डन) किसी विद्यालय, छात्रावासादिका अभिरक्षक; छात्रोंपर निगरानी रखनेवाला शिक्षाधिकारी, गृहपति।

छात्रालय, छात्रावास–पु॰ [सं॰] किसी स्कूल, कालेजके अंतर्गत वह इमारत जिसमें विद्यार्थी रखे जायँ (होस्टेल)।

छात्रावासीय विश्वविद्यालय–पु॰ [सं॰] (रेजिडेंशल यूनिवर्सिटी) वह विश्वविद्यालय जिसके विद्यार्थी प्रायः समीपस्थ छात्रावासोंमें विश्वविद्यालयके वातावरणमें ही रहते हों।

छादन–पु॰ [सं॰] छाना; आच्छादन करना; आच्छादन।

छादित–वि॰ [सं॰] छिपा, ढका हुआ; आच्छादित।

छान†–स्त्री॰ छप्पर।

छानना–स॰ क्रि॰ आटे आदिका मोटा अंश छलनीसे निकालना; दूध, पानी आदिको साफ करनेके लिए बारीक कपड़ेके पार निकालना; मिली-जुली चीजोंको अलग करना, बिलगाना; ढूँढ़ना, खोजना; जाँच-पड़ताल करना; नशा पीना; घीमें तलना; दे॰ ‘छाँदना’; * भेदना, पार करना।

छान-फटक, छान-बीन–स्त्री॰ खोज, जाँचपड़ताल; तहकीक।

छानबे–नब्बे और छ। पु॰ छानबेकी संख्या, ९६।

छाना–अ॰ क्रि॰ ऊपर फैलना, पसरना; बसना, टिकना। स॰ क्रि॰ ढकना, आच्छादित करना; मकानपर छप्पर या खपरैल डालना; आच्छादन करनेवाली चीजको फैलाना; * बिछाना; छावँ करना; आश्रय देना।

छानि* **छानी†**–स्त्री॰ छप्पर।

छाने-छाने*–अ॰ चुपकेसे, छिपे-छिपे।

छाप–स्त्री॰ किसी वस्तुका चिह्न, निशान; मुहरका निशान; मुहरवाली अँगूठी; शंख, चक्र आदिके चिह्न जो वैष्णव अपने अंगोंको दगवाकर लगवाते हैं; विभिन्न कारखानोंमें बनी वस्तुओंपर पहचानके लिए छपा हुआ शब्द या चित्र, मार्का; असर, प्रभाव (पड़ना, डालना)।

छापना–स॰क्रि॰ ठप्पा, मुहर, अक्षर आदिका चिह्न स्याही या रंगके योगसे कागज आदिपर उतारना; जोड़े हुए अक्षरों, ब्लाक आदिकी प्रतिकृति कागज आदिपर उतारना, पुस्तक आदि मुद्रित करना; छापकर प्रकाशित करना।

छापा–पु॰ साँचा, ठप्पा; मुहर; छपा हुआ चिह्न या अक्षर; शंख, चक्र आदिके दागे हुए चिह्न, मुद्रा; छाप, मार्का; हलदी या ऐपनसे दीवार आदिपर लगाया जानेवाला पंजेका चिह्न; छापेकी कल; वह हमला जो दुश्मनपर अचानक, बहुत तेजीसे किया जाय, यकायक टूट पड़ना; धावा (मारना)। **–खाना**–पु॰ वह जगह जहाँ छपाईका काम हो, प्रेस। **–मार**–वि॰ छापा मारनेवाला, छापा मारकर दुश्मनोंको परेशान करनेवाला (सैनिक, दस्ता)। **–(पे)की कल**–छपाईकी मशीन, प्रेस।

छाम*–वि॰ क्षाम, दुबला-पतला, क्षीण।

छामोदरी*–वि॰ स्त्री॰ छोटे पेटवाली, कृशोदरी।

छाया–स्त्री॰ [सं॰] प्रकाशके अवरोधसे उत्पन्न हलका अँधेरा, छावँ, साया; प्रकाशका अवरोध करनेवाली वस्तुकी परछाईं; वह स्थान जहाँ किसी चीजकी छाया पड़ती हो; वह स्थान जहाँ धूप न पहुँचती हो; प्रतिबिंब, अक्स; तद्रूप वस्तु, अनुकृति; सादृश्य; अँधेरा; कांति; चेहरेका रंग; सौंदर्य; रक्षा, आश्रय; चित्रका अपेक्षाकृत कम प्रकाशवाला भाग; भूत-प्रेतका प्रभाव, साया (परीकी छाया); एक रागिनी; दुर्गा; सूर्यकी पत्नी, संज्ञा। **–ग्राहिणी**–स्त्री॰ छायाके जरिये ग्रहण करनेवाली एक राक्षसी जिसने हनूमान्‌को पकड़ लिया था। **–चित्र**–पु॰ अक्सी तसवीर, फोटो। **–चित्रण**–पु॰ फोटो उतारना। **–दान**–पु॰ ग्रहजनित अरिष्टकी शांतिके लिए किया जानेवाला एक विशेष दान जिसमें काँसेकी कटोरीमें घी या तेल भरकर और उसमें अपनी छाया देखकर सदक्षिण दान करते हैं। **–पथ**–पु॰ आकाश-गंगा। **–पुरुष**–पु॰ हठयोग तंत्रके अनुसार आकाशमें (साधना-विशेषसे) दिखाई पड़नेवाली द्रष्टाकी छायारूप आकृति। **–मूर्ति**–स्त्री॰ (एप्पैरिशन) वह छाया जो भ्रांतिवश किसी पुरुष या व्यक्ति जैसी प्रतीत हो; अस्पष्ट, अशरीरी मूर्ति। **–लोक**–पु॰ अदृश्य जगत्, स्वप्नलोक। **–वाद**–पु॰ एक काव्यगत शैली जिसमें अज्ञेयके प्रति जिज्ञासा और प्राकृतिक विषयोंमें नराकार भावना व्यक्त की जाती है।

छार–पु॰ क्षार; क्षार पदार्थ; खारी नमक; राख; धूल।

छाल–स्त्री॰ [सं॰] पेड़के धड़, शाखा आदिपरका कड़ा छिलका, वल्कल; वल्कलवस्त्र; * एक मिठाई।

छालटी–स्त्री॰ सन या पटसनके रेशेसे बना कपड़ा।

छालना–स॰क्रि॰ छानना, साफ करना; छेद करना; धोना।

छाला–पु० फफोला; छाल, चर्म (मृगछाला); * पत्र।

छालित*–वि० धुला हुआ, प्रक्षालित।

छालिया–पु० छायादान करनेकी कटोरी। स्त्री० दे० 'छाली'।

छाली–स्त्री० सुपारी; कटी हुई सुपारी।

छावँ–स्त्री० छाया, परछाईं; शरण, आश्रय।

छावना*–स० क्रि० दे० 'छाना'।

छावनी–स्त्री० छप्पर; छप्परपोश मकान; वह स्थान जहाँ सेना रखी जाय, पड़ाव, शिविर।

छावरा*–पु० छौना, शावक।

छावा–पु० बच्चा; बेटा; हाथीका पट्ठा।

छासठ–वि० साठ और छ। पु० छासठकी संख्या, ६६।

छाह–स्त्री० दे० 'छाछ'।

छिँगुनिया, छिँगुनी–स्त्री० कानी उँगली।

छिँगुलिया, छिँगुली–स्त्री० दे० 'छिँगुनी'।

छिंछ, छिंछि*–स्त्री० छींटा; –'सोनित छिंछ उछरि आकासहिं, गज बाजिन सिर लागी'–सू०; फुहारा; धार।

छिँड़ाना†–स० क्रि० छीन लेना।

छिः, छि–अ० घृणा, तिरस्कार या धिक्कारसूचक शब्द, छी।

छिउँकी–स्त्री० एक तरहकी चींटी; एक उड़नेवाला कीड़ा।

छिकनी–स्त्री० एक बूटी जिसे सूँघनेसे बहुत छींकें आती हैं।

छिगुनी–स्त्री० कानी उँगली, कनिष्ठिका।

छिच्छ*–स्त्री० बूँद; छींटा।

छिछड़ा–पु० मांसका बेकार टुकड़ा जो कुत्तों-बिल्लियोंके खानेके लिए फेंक दिया जाता है; जानवरोंका मलाशय।

छिछला–वि० उथला।

छिछोरपन–पु० छिछोरेका काम, ओछापन, क्षुद्रता।

छिछोरा–वि० ओछा, क्षुद्र; कमीना।

छिटकना–अ० क्रि०. बिखरना, फैलना; किसी चीजकी ज्योति, खासकर चाँदनीका फैलाना।

छिटकाना–स० क्रि० बिखेरना, फैलना।

छिटकी†–स्त्री० छींटा।

छिटवा–पु० टोकरा, झाबा।

छिड़कना–स० क्रि० जल या दूसरे द्रव द्रव्यके छींटे फेंकना; भुरकना।

छिड़काई–स्त्री० छिड़काव; छिड़कनेकी उजरत।

छिड़काव–पु० छिड़कनेकी क्रिया; छींटोंसे तर करना।

छिड़ना–अ० क्रि० छेड़ा जाना, आरंभ होना, चल पड़ना; झगड़ा, लड़ाई शुरू होना।

छितनी–स्त्री० बाँसकी फट्ठियों आदिसे बनी छोटी टोकरी।

छितराना–अ० क्रि० बिखरना। स० क्रि० बिखराना, फैलाना; अलग-अलग करना।

छिति*–स्त्री० दे० 'क्षिति'। **–कंत, –नाथ, –पाल**–पु० राजा। **–रुह**–पु० वृक्ष।

छितीस*–पु० राजा।

छिदना–अ० क्रि० छेदा जाना, छेद होना; घायल होना; घावोंसे भर जाना; छलनी होना (कलेजा छिद गया)।

छिदवाना–स० क्रि० दे० 'छिदाना'।

छिदाना–स० क्रि० छेदनेका काम दूसरेसे कराना।

छिद्र–पु० [सं०] छेद, सूराख; अवकाश; गड्ढा; दोष, ऐब।

छिद्रान्वेषण–पु० [सं०] दूसरेके दोष ढूँढ़ना, खुचड़ निकालना।

छिद्रान्वेषी(षिन्)–वि० [सं०] छिद्रान्वेषण करनेवाला।

छिद्रित–वि० [सं०] जिसमें छेद हों, सूराखदार।

छिन*–पु० दे० 'छन'। **–छबि**–स्त्री० बिजली। **–दा**–स्त्री० क्षणदा, रात। **–भंग**–वि० क्षणभंगुर।

छिनक*–पु० एक क्षण। अ० क्षणभर।

छिनकना–स० क्रि० साँसके साथ नाकका मल बाहर निकालना, नाक साफ करना।

छिनना–अ० क्रि० छीना जाना; सिल आदिका कुटना।

छिनरा–वि०, पु० परस्त्रीगामी, लंपट।

छिनवाना–स० क्रि० छीननेका काम दूसरेसे कराना।

छिनाना–स० क्रि० दे० 'छिनवाना'; * छीनना।

छिनार, छिनाल–वि० स्त्री० पुँश्चली, बदकार, कुलटा (स्त्री)।

छिनाला–पु० छिनालपन, व्यभिचार, बदकारी।

छिनौछबि*–स्त्री० दे० 'छिनछबि'।

छिन्न–वि० [सं०] कटा हुआ; काटकर अलग किया हुआ, खंडित; नष्ट किया हुआ। **–नासिक**–वि० नकटा। **–भिन्न**–वि० नष्ट-भ्रष्ट; जो तितर-बितर हो गया हो। **–मस्त, –मस्तक**–वि० जिसका सिर कट गया हो। **–मस्तका, –मस्ता**–स्त्री० दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक देवी जो अपना सिर हथेलीपर धरे गलेसे निकलती रक्तधाराको पीती हुई मानी जाती है।

छिपकली–स्त्री० एक रेंगनेवाला जंतु जो अक्सर घरकी दीवारोंपर दिखाई देता और कीड़े-मकोड़े खाता है, बिस्तुइया, गृहगोधिका।

छिपना–अ० क्रि० आड़ या परदेमें होना, ऐसी जगह होना जहाँ कोई देख न सके; दृश्य न होना; डूबना, अस्त होना।

छिपारुस्तम–वि०, पु० असाधारण, किंतु अप्रसिद्ध गुणी।

छिपाना–स० क्रि० आड़में करना, ऐसी जगह या स्थितिमें रखना जहाँ कोई देख न सके; ढँकना; प्रकट न करना।

छिपाव–पु० छिपानेकी क्रिया या भाव, गोपन।

छिपी–पु० दे० 'छीपी'; दर्जी (बुंदेल०)।

छिप्र*–वि०, अ० दे० 'क्षिप्र'।

छिमा*–स्त्री० दे० 'क्षमा'।

छिया–*वि० मैला, गंदा; घृणित; तुच्छ। † पु० मैला, गू (बच्चोंकी बोली)। स्त्री० गंदी, घिनौनी चीज; लड़की। मु०–छरद करना–छी-छी करना।

छियानवे–वि०, पु० दे० 'छानवे'।

छियालीस–वि० चालीस और छ। पु० ४६ की संख्या।

छियासी–वि० अस्सी और छ। पु० ८६ की संख्या।

छिरकना*–स० क्रि० दे० 'छिड़कना'।

छिरना*–अ० क्रि० दे० 'छिलना'।

छिलकना*–स० क्रि० दे० 'छिड़कना'।

छिलका–पु० फल, मूल, अंडे आदिका ऊपरी आवरण।

छिलछिला*–वि० छिछला।

छिलना–अ० क्रि० चमड़े या छिलकेका कटकर अलग हो जाना या रगड़से उधड़ जाना।

छिलवाई–स्त्री० छिलवानेकी क्रिया या मजदूरी।

छिलवाना–स० क्रि० छीलनेका काम दूसरेसे कराना।

छिलाई–स्त्री० छीलनेका काम; छीलनेकी मजदूरी ।

छिलाना–स० क्रि० दे० 'छिलवाना' ।

छिहत्तर–वि० सत्तर और छ । पु० छिहत्तरकी संख्या, ७६ ।

छिहानी*–स्त्री० मरघट, मसान ।

छींक–स्त्री० छींकनेकी क्रिया या आवाज ।

छींकना–अ० क्रि० नथुनोंमें खुजली, चुनचुनाहट पैदा करनेवाली या श्वासक्रियामें बाधक वस्तुको निकालनेके लिए भीतरकी वायुका वेगके साथ बाहर आना ।

छींका–पु० दे० 'छीका' ।

छींट–स्त्री० वह कपड़ा जिसपर रंग-बिरंगी बूटियाँ छपी हों; दे० 'छींटा'–'आनन रहीं ललित पय छींटें'–सू० ।

छींटना–स० क्रि० छितराना, बिखेरना ।

छींटा–पु० पानी या दूसरे द्रव द्रव्यकी बूँदें जो फेंकने, उछालनेसे किसी चीजपर पड़ें; छींटेका दाग; नन्हासा दाग; हलकी वर्षा; बौछार; हलका आक्षेप, व्यंग्योक्ति; हाथसे बखेरकर बोये हुए बीज; इस तरहकी बोआई; दे० 'छीटा' । **मु०–छोड़ना,–फेंकना**–आक्षेप करना, व्यंग्य करना । **–देना**–भड़काना, उकसाना ।

छी–अ० घृणा, तिरस्कार या धिक्कारका सूचक शब्द, थू, धिक्कार ।

छीका–पु० रस्सी, तार आदिकी बनी, झोली जैसी चीज जिसे छत आदिसे लटकाकर उसपर खाने-पीनेकी चीजें रखते हैं, सीका, सिकहर; मोहरा; झूलेका पुल; छितनी । **मु०–टूटना**–संयोगसे बिना प्रयत्न किये कोई लाभ हो जाना।

छीछड़ा–पु० दे० 'छिछड़ा ।

छीछालेदर–स्त्री० दुर्दशा, फजीहत ।

छीज–स्त्री० छीजनेका भाव, क्षय, घटाव, ह्रास; * घाटा ।

छीजन–स्त्री० छीजने, खराब होने इत्यादिके कारण होनेवाली कमी, दे० 'छीज' ।

छीजना–अ० क्रि० क्षीण होना; घटना; नष्ट होना; खराब होना; हानि होना ।

छीटा–पु० बाँसकी तीलियोंका बना टोकरा, बड़ी छितनी ।

छीति*–स्त्री० हानि, घटी ।

छीदा–वि० बहुतसे छेदोंवाला; विरल ।

छीन*–वि० दे० 'क्षीण' ।

छीनना–स० क्रि० दूसरेसे जबरदस्ती ले लेना, उचक लेना, ऐंठ लेना; †छिन्न करना, काट देना; सिल आदि कूटना ।

छीना*–स० क्रि० छूना, स्पर्श करना ।

छीना-खसोटी, छीना-छीनी, छीना-झपटी–स्त्री० एक दूसरेके हाथसे छीन लेनेकी कोशिश ।

छीप–स्त्री० छाप, दाग; सेहुँआँ । * वि० तेज, वेगवाला ।

छीपी–पु० छींटें छापनेवाला ।

छीबर*–स्त्री० छींटकी साड़ी; बेल-बूटेदार कपड़ा ।

छीमी–स्त्री० फली; मटरकी फली ।

छीर*–पु० दे० 'क्षीर'; कपड़ेका छोर । **–ज**–पु० चंद्रमा; दही । **–धि**–पु० क्षीरसागर । **–प**–पु० दूध पीनेवाला बच्चा । **–समुद्र,–सागर,–सिंधु**–पु० दे० 'क्षीरसागर'।

छीलक*–पु० छिलका ।

छीलना–स० क्रि० छिलका उतारना; खरोंचना; खुरचकर अलग करना; गले आदिमें चुनचुनाहट पैदा करना ।

छीलर–पु० मोटका पानी उड़ेलनेके लिए कुएँके पास बना हुआ गड्ढा; छिछला गड्ढा, तलैया । वि० छिछला ।

छीव*–वि० उन्मत्त, मतवाला ।

छुँगनी, छुँगली*–स्त्री० घुँघरूदार अँगूठी ।

छुआछूत–स्त्री० छूतछातका खयाल; अस्पृश्यको छूना ।

छुआना†–स० क्रि० दे० 'छुलाना' ।

छुईमुई–स्त्री० लज्जावती, लजालू; बहुत ही नाजुक या नाजुकमिजाज या चिड़चिड़ा आदमी; बहुत कमजोर चीज।

छुगनू*–पु० घुँघरू ।

छुच्छा–वि० दे० 'छूँछा' ।

छुच्छी–वि० स्त्री० दे० 'छूछी' । स्त्री० पतली, छोटी नली; जुलाहोंकी नरी; नाकमें पहननेका एक गहना, कील; कीप।

छुट–*अ० छोड़कर, सिवाय । वि० 'छोटा'का समासमें व्यवहृत रूप । **–पन**–पु० छोटापन, छुटाई; बचपन । **–भैया**–पु० छोटे दरजे, हैसियतका आदमी ।

छुटकाना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना; अलग करना ।

छुटकारा–पु० बंधनसे छूटना, रिहाई, निस्तार; छुट्टी ।

छुटना*–अ० क्रि० दे० 'छूटना' ।

छुटाना†–स० क्रि० दे० 'छुड़ाना' । अ० क्रि० गाय-भैंसका दूध देना बंद करना ।

छुटौती†–स्त्री० सूद या लगान जो छोड़ दिया जाय ।

छुट्टा–वि० जो बँधा न हो; अकेला, बिना बाल-बच्चेका । **–पान**–पु० वह पान जिसका बीड़ा न लगा हो ।

छुट्टी–स्त्री० छुटकारा; अवकाशकाल, फुरसत; काम बंद रहनेका दिन, तातील; आये हुएको जानेकी अनुमति; मौकूफी । **मु०–मनाना**–अवकाशका आनंद लेना ।

छुड़वाना–स० क्रि० छोड़नेका काम दूसरेसे कराना ।

छुड़ाई–स्त्री० छोड़ने या छुड़ानेकी क्रिया; छोड़नेके बदलेमें दिया जानेवाला धन ।

छुड़ाना–स० क्रि० पकड़ रखी हुई वस्तु या व्यक्तिके छूटनेका उपाय करना, छुटकारा दिलाना; रिहा कराना; बंधनसे निकालना; दूसरेके कब्जेसे निकालना (रेहन, खेत इ०); महसूल आदि चुकाकर ले लेना; दूर करना (दाग, मैल इ०); नौकरीसे अलग करना; दे० 'छोड़वाना' ।

छुड़ैया–पु० छुड़ानेवाला; बचानेवाला । स्त्री० गुड्डीको ऊपर उठाकर झटकेसे छोड़ देना ।

छुड़ौती†–स्त्री० छोड़नेके लिए दिया जानेवाला धन; छुटौती ।

छुत(ति)हा†–वि० छूतवाला; जिसे छूत लगी हो । **–अस्पताल**–पु० वह अस्पताल जहाँ संक्रामक रोगोंसे पीड़ित रोगियोंका इलाज किया जाता है ।

छुत्*–स्त्री० दे० 'क्षुत्' ।

छुद्र–वि० दे० 'क्षुद्र' । **–घंट**–पु०,**–घंटिका**–स्त्री० दे० 'क्षुद्रघंटिका' ।

छुद्रावली*–स्त्री० दे० 'क्षुद्रघंटिका' ।

छुधा*–स्त्री० भूख, क्षुधा ।

छुधित–वि० भूखा, क्षुधित ।

छुपना–अ० क्रि० दे० 'छिपना' ।

छुपाना–स० क्रि० दे० 'छिपाना' ।

छुभित*–वि० दे० 'क्षुभित' ।

छुभिराना*–अ० क्रि० क्षुब्ध होना।

छुरधार*–स्त्री० छुरेकी धार।

छुरा–पु० बड़ा चाकू जो बंद नहीं किया जा सकता और मांस काटने, आक्रमण करने आदिके काम आता है; बाल मूँड़नेका औजार, उस्तरा। **–(रे)बाज़ी**–स्त्री० छुरेकी लड़ाई; छुरा भोंकनेकी घटनाएँ होना।

छुरिका–स्त्री० [सं०] छुरी।

छुरी–स्त्री० [सं०] छोटा छुरा, कमलतराश चाकू। **मु०–कटारी लिये रहना**–लड़नेको तैयार रहना। **–चलाना,–फेरना**–बहुत सताना, कष्ट देना; भारी हानि करना।

छुलाना–स० क्रि० दूसरी चीजसे सटाना, स्पर्श कराना।

छुवाना*–स० क्रि० दे० 'छुलाना'।

छुहना*–स० क्रि० चूनेसे पोतना, सफेदी करना; रँगना, पोतना। अ० क्रि० रँगा, पोता होना।

छुहाना†–अ० क्रि० छोह उत्पन्न होना, स्नेहयुक्त होना; दया, अनुग्रह करना; रँगा, पोता जाना, सफेदी होना। स० क्रि० रँगवाना, पोतवाना, सफेदी कराना।

छुहारा–पु० खजूरका एक भेद, पिंडखजूर।

छुही†–स्त्री० सफेद मिट्टी।

छूँछा–वि० खाली, रीता; साररहित, खोखला; निर्धन। **मु०–पड़ना***–व्यर्थ जाना, निष्फल होना।

छूँछी–वि० स्त्री० दे० 'छूँछा'। स्त्री० दे० 'छुच्छी'।

छू–पु० फूँकने, खासकर मंत्र पढ़कर फूँकनेकी आवाज। **मु०–मंतर होना**–तुरत दूर होना, उड़ जाना (पीड़ा आदिका)।

छूछा–वि० दे० 'छूँछा'।

छूट–स्त्री० छूटनेका भाव, छुटकारा; अवकाश; (कुछ करनेकी) आजादी, रोक न होना; लगान, मालगुजारी या ऋणकी (अंशतः) माफी (रेमिशन); बने, पटे आदिकी वह लड़ाई जिसमें चाहे जहाँ वार किया जा सके (लड़ना); अश्लील परिहास; कर्तव्यकर्मके करनेमें चूक, नागा; फक्कड़बाजी; तलाक।

छूटना–अ० क्रि० बंधन दूर होना, छुटकारा होना; बझी हुई चीजका खुल जाना; सटी, चिपकी हुई चीजका अलग होना, निकलना; खुलना, रवाना होना (रेल आदिका); चलना; वेगसे फेंका, मारा जाना (तीर, बंदूक आ०); बिछुड़ना, (से) जुदा, वियुक्त होना; दूर होना, जाता रहना (रोग, ज्वर, आदत); धारारूपमें वेगसे निकलना (पिचकारी, आतिशबाजी); रसना, निचुड़ना (पानी छू०); बचना, बाकी रहना; बँधे हुए पशुका निकल भागना; बंधकसे निकलना; किसी काम या चीजको भूल जाना, चूक, प्रमाद होना; नौकरी आदिसे अलग किया जाना; चलना रुकना, बंद होना (नाड़ी, साँस); मिटना, उड़ना (दाग, रंग)।

छूत–स्त्री० छूने, छू जानेका भाव, स्पर्श; स्पर्शजनित अशुचिता, स्पर्शदोष; स्पर्शसे एकका रोग दूसरेको होना, लगना; स्पर्शसे होनेवाले रोगका विष; बुरा प्रभाव; मनहूस आदमी या भूत-प्रेतकी छाया। **–का रोग,–की बीमारी**–वह रोग जो रोगी या उसके मल-मूत्र आदिके स्पर्शसे दूसरेको हो जाय।

छूना–स० क्रि० किसी चीजसे सट, लग जाना, किसी चीजका हाथ या शरीरके किसी अंगसे स्पर्श करना; किसीके पास पहुँचना; दौड़ आदिमें (किसीको) पकड़ लेना; दानके लिए स्पर्श करना (खिचड़ी, सीधा छूना); हाथ लगाकर छोड़ देना, थोड़ा ही काममें लाना; बहुत हलकी चपत लगाना; पोतना, रंग करना। अ० क्रि० दो वस्तुओंके बीच व्यवधानका अभाव होना, एकका दूसरीसे सट जाना।

छेँकना–स० क्रि० घेरना; रोकना; जगह लेना; अक्षर आदि काटना, मिटाना।

छेक–पु० [सं०] पालतू पशु; * छेद; कटाव।

छेकानुप्रास–पु० [सं०] अनुप्रास अलंकारका वह भेद जिसमें एक या अधिक वर्णोंकी आवृत्ति एक ही बार होती है।

छेकापह्नुति–स्त्री० [सं०] अपह्नुति अलंकारका एक भेद–दूसरेकी अनुमितिका अयथार्थ उक्ति द्वारा खंडन।

छेकोक्ति–स्त्री० [सं०] अर्थांतर-गर्भित लोकोक्ति।

छेटा*–स्त्री० रुकावट।

छेड़–स्त्री० छेड़नेकी क्रिया या भाव; उँगलीसे छू, कोंचकर या व्यंग्य, चुटकी द्वारा किसीको चिढ़ानेकी कोशिश; चिढ़ाने, खिजानेवाली बात; नोक-झोंक; एक दूसरेपर चोटें करना; सुर निकालनेके लिए बाजेको छूने दबानेकी क्रिया। **–खानी,–छाड़**–स्त्री० छेड़नेवाली बात, काम, हँसी-ठिठोली, नोक-झोंक।

छेड़ना–स० क्रि० हँसाने, चिढ़ानेके लिए उँगली आदिसे छूना, कोंचना, व्यंग्य करना, चुटकी लेना; किसीको उत्तेजित करनेके लिए कुछ करना, कहना, छेड़-छाड़ करना; आरंभ करना (काम, चर्चा); स्वर निकालनेके लिए बाजेको छूना, दबाना।

छेत्र*–पु० दे० 'क्षेत्र'।

छेद–पु० छोटे मुँहवाला गहरा गड्ढा, बिल, सूराख; वह छिद्र जो किसी चीजके आर-पार हो गया हो; दोष; [सं०] छेदन; खंडन; नाश; कटनेका घाव।

छेदक–पु० [सं०] छेदनकर्ता, काटनेवाला; भाजक; दे० 'छेदकरेखा'। **–रेखा**–स्त्री० (सीकैंट) वह सरल रेखा जो वृत्तको दो बिंदुओंपर काटती है।

छेदन–पु० [सं०] काटना, दो टुकड़े करना; दूर, निराकरण करना; नाश करना; काटने, छाँटनेका अस्त्र।

छेदनहार*–वि० काटनेवाला; नाश करनेवाला।

छेदना–स० क्रि० छेद, सूराख करना, बेधना; घाव करना।

छेदनीय–वि० [सं०] छेदन करने योग्य।

छेना–पु० फटे हुए दूधका पानी निचोड़ देनेपर बच रहनेवाला ठोस अंश। स० क्रि० ताड़, खजूरके तनेको रस निकालनेके लिए छीलना; काटना। * अ० क्रि० क्षीण होना।

छेनी–स्त्री० पत्थर या कोई धातु काटने या उसपर खुदाई करनेका औजार, टाँकी; अफीम पाछनेकी नहन्नी।

छेम*–पु० दे० 'क्षेम'। **–करी**–स्त्री० सफेद चील।

छेरी–स्त्री० बकरी।

छेव–पु० वार, चोट; घाव; छेद; अंत।

छेवना†–स० क्रि० काटना; चिह्नित करना; * फेंकना।

छेवा*–पु० दे० 'छेव'।

छेह*–पु० छेव; राख; धूल; नाश, अंत; नृत्यका एक भेद। वि० खंडित; न्यून।

छै–†वि०, पु० दे० 'छः'। * पु० क्षय, नाश।

छैना*–अ० क्रि० छीजना, क्षय होना।

छैया*–पु०क्षयकारी, नाश करनेवाला; छोटा बच्चा(प्यारमें)।

छैल*–पु० दे० 'छैला'। **–चिकनियाँ,–छबीला**–वि०, पु० बनाव-सिंगारका शौकीन।

छैला–पु० वह जो खूब बना-ठना रहे; बाँका, रँगीला पुरुष।

छौँड़ा–पु० मथानी; लड़का (छौंड़ी = लड़की)।

छोआ–पु० जूसी, चोटा।

छोई–स्त्री० ईखकी सूखी पत्ती, पताई, खोई; निस्सार वस्तु।

छोकड़ा–पु० दे० 'छोकरा'।

छोकरा–पु० कच्ची उम्र और अक्लका लड़का, लौंडा।

छोकरी–स्त्री० कच्ची उम्र और अक्लकी लड़की, लौंडिया।

छोटा–वि० ऊँचाई, लंबाई, चौड़ाई या उम्रमें कम, लघु; पद, प्रतिष्ठा, योग्यतामें कम; कमउम्र; महत्त्वरहित; तुच्छ; ओछा, कमीना, क्षुद्र। **–मोटा**–वि० छोटासा, साधारण। मु०–(**टे**)**मुँह बड़ी बात**–अपनी हैसियतसे बड़ी बात कहना; छोटे आदमीका बड़ेके दोष निकालना, निंदा करना।

छोटाई–स्त्री० छोटापन; क्षुद्रता।

छोटी–वि० स्त्री० 'छोटा'का स्त्री०। **–इलायची**–स्त्री० हरापन लिये सफेद और पतले छिलकेकी इलायची, गुजराती इलायची।**–जाति**–स्त्री० वह जाति जिसका दरजा समाजमें नीचा माना जाता हो, नीच जाति। **–बात**–स्त्री० ओछेपन, क्षुद्रताका काम। **–हाज़िरी**–स्त्री० हिंदुस्तानमें रहनेवाले यूरोपियनोंका सवेरेका नाश्ता (बेरा, खानसामाँ)।

छोड़ना–स० क्रि० पकड़से निकाल देना, बंधन खोलना, छुटकारा देना; न लेना; मुआफ करना; पावनेमें छूट देना; त्यागना, अलग होना; (घर, देशसे) प्रस्थान करना, विदा होना; पड़ा रहने देना; साथ न लाना, न लेना; (किसी कामके लिए) रवाना करना, भेजना, दौड़ाना, चलाना; (किसीके) पीछे लगाना; वेगसे छूटने, निकलनेवाली चीजको फेंकना, मारना, चलाना (पिचकारी, आतिशबाजी इ०); दूरगामी अस्त्रोंको चलाना; उपभोगसे बचा रहने देना, बाकी रखना (जूठन, काम, संपत्ति इ०); नीचे गिराना, डालना; न करना, करने, कहने, लिखनेमें भूलसे या जानकर छूट जाने देना; करनेसे विरत होना, न करना (नौकरी, आदत); फुलझड़ी, पटाखा छोड़ना; (किसीपर) छोड़ना–किसीके भरोसे छोड़ना, किसीको सौंपना। **छोड़-छाड़कर**–छोड़कर।

छोड़वाना–स० क्रि० छोड़नेका काम दूसरेसे कराना।

छोड़ाना–स० क्रि० दे० 'छुड़ाना'।

छोत*–स्त्री० दे० 'छूत'।

छोनिप*–पु० क्षोणिप, राजा।

छोनी*–स्त्री० क्षोणी, भूमि।

छोप–पु० छोपनेकी क्रिया; मोटा लेप; छोपनेके काम आनेवाली गीली मिट्टी आदि। **–छाप**–पु० दीवारकी मरम्मत।

छोपना–स० क्रि० किसी चीजकी लुगदीका लेप करना; दीवारपर पलस्तर करने, उसका गढ़ा आदि भरनेके लिए गिलावा लगाना; दबोचना, धर दबाना; ढकना, मढ़ना।

छोभ*–पु० दे० 'क्षोभ'; नदी आदिका उमड़ना।

छोभना*–अ० क्रि० क्षुब्ध होना; चंचल, उद्विग्न होना।

छोभित*–वि० दे० 'क्षोभित'।

छोम*–वि० चिकना; मुलायम।

छोर–पु० सिरा, नोक; कोना; सीमा।

छोरटी*–स्त्री० लड़की, छोकरी।

छोरना*–स० क्रि० अपहरण करना, छीनना; † दे० 'छोड़ना'।

छोरा*–पु० लड़का, छोकरा।

छोलदारी–स्त्री० छोटा तंबू।

छोलना–*स०क्रि० छीलना, खुरचना; फैलाना; दिखाना। पु० हथियारोंका मुरचा छुड़ानेका एक औजार।

छोलनी†–स्त्री० छीलनेका औजार, खुरचनी।

छोला–पु० चना; ऊख काटने और छीलनेवाला।

छोह–पु० स्नेह, ममता; कृपा, दया। **–गर**†–वि० प्रेमी, छोह करनेवाला।

छोहना*–अ० क्रि० दे० 'छोभना'; दया या प्रेम करना।

छोहरा*–पु० लड़का, छोकरा।

छोहरिया*, छोहरी*–स्त्री० लड़की, छोकरी।

छोहाना*–अ० क्रि० छोह करना; दया, कृपा करना।

छोहारा–पु० दे० 'छुहारा'।

छोहिनी*–स्त्री० अक्षौहिणी।

छोही–वि० छोह करनेवाला, स्नेही। स्त्री० गँड़ेरीकी सीठी।

छौंक–स्त्री० छौंकनेकी क्रिया, बघार।

छौंकना–स० क्रि० बघारना, तड़का देना।

छौंड़ा†–पु० लड़का, छोकरा; गाड़, खत्ता।

छौना–पु० जानवरका छोटा (प्यारा) बच्चा, शावक।

छौर–पु० दे० 'क्षौर'।

छ्वाना*–स० क्रि० छुलाना।

ज

ज–देवनागरी वर्णमालाका आठवाँ व्यंजन।

जंकशन–पु० [अं०] दो सड़कों, रास्तोंके मिलनेका स्थान; वह स्टेशन जहाँ दो या अधिक रेल-लाइनें मिलें।

जंग–स्त्री० [फ़ा०] लड़ाई, युद्ध, रण।

ज़ंग–पु०[फ़ा०] मोरचा, धातुका मैल; हबशियोंका देश।

जंगम–वि० [सं०] चलनेवाला, चल; जिसे एकसे दूसरी जगह ले जा सकें, स्थावरका उलटा (जंगम संपत्ति)। पु० लिंगायत संप्रदायके गुरुओंकी उपाधि।**–विष**–पु० चर प्राणियों (सर्पादि)के डँसने, काटनेसे पैदा होनेवाला जहर।

जँगरैत–वि० जाँगरवाला, परिश्रमी।

जंगल–पु०[सं०] वन; रेगिस्तान; एकांत या उजाड़ स्थान।

जँगला–पु० छत, बरामदे आदिके आगे लगी हुई बाड़

जिसमें लोहे या लकड़ीकी छड़ें या जाली जड़ी हो; छड़ या जाली लगी हुई खिड़की।

जंगली–वि० जंगलमें मिलने या पैदा होनेवाला, वन्य; बिना बोये उगनेवाला; जो पालतू न हो, बनैला; असभ्य, उजड्ड। पु० जंगलमें रहनेवाला, वनवासी।

ज़ंगार–पु० [फ़ा०] ताँबेका कसाव, तूतिया; एक रंग।

ज़ंगारी–वि० [फ़ा०] जंगारके रंगका, नीला।

जंगाल–पु० [सं०] बाँध; मेंड़; दे० 'ज़ंगार'।

जंगाली–वि० दे० 'ज़ंगारी'। पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।

जंगी–वि० [फ़ा०] युद्ध-संबंधी; सेना-संबंधी, फौजी; युद्धोचित (जंगी कारखाई); युद्धोपयोगी; विशालकाय, बड़े डील-डौलका; लड़ाका, झगड़ालू। **–जवान**–पु० लंबा-चौड़ा, बड़े डील-डौलका जवान। **–जहाज़**–पु० लड़ाईमें काम आनेवाला जहाज, युद्धपोत। **–बेड़ा**–पु० जंगी जहाजोंका बेड़ा।

जंघा–स्त्री० [सं०] जाँघ, रान; पिंडली; कैंचीका दस्ता।

जँचना–अ०क्रि० जाँचमें ठीक आना; अच्छा मालूम होना, ठीक लगना; पसंद आना; जाँचा जाना।

जंजर, जंजल*–वि० टूटा-फूटा, जीर्ण; निकम्मा।

जंजार*, जंजाल–पु० झंझट, बखेड़ा; फँसाव, झमेला; लंबी नलीकी भारी बंदूक (प्रा०); बड़े मुँहकी तोप (प्रा०)।

जंजालिया–वि० दे० 'जंजाली'।

जंजाली–वि० बखेड़िया, फसादी। स्त्री० वह रस्सी और घिरनी जिनसे पाल चढ़ाने-उतारनेका काम लेते हैं।

ज़ंजीर–स्त्री० [फ़ा०] साँकल, शृंखला, लड़ी; बेड़ी।

जंजीरा–पु० जंजीरकी शकलमें बटा हुआ डोरा; कशीदेकी सिलाई जिससे जंजीरसी बनती जाती है, लहरिया। **–(रे)दार**–वि० लहरियादार (सिलाई)।

जंतर–पु० यंत्र, तावीज; ताँबे-चाँदी आदिका तावीज जिसमें यंत्र भरकर पहनाया जाय; गलेमें पहननेका एक गहना। **–मंतर**–पु० यंत्र-मंत्र; जादू-टोना; वेधशाला।

जंतरी–स्त्री० पंचांग, पत्रा; छोटा जंतर। पु० जंतर-मंतर करनेवाला; दे० 'जंत्री'।

जँतसर–पु०, **जँतसारी**–स्त्री० वह गीत जो चक्की पीसते वक्त स्त्रियाँ गाती हैं।

जँतसार–स्त्री० वह घर या स्थान जहाँ जाँता गड़ा हो।

जंता–पु० यंत्र; तार खींचनेका औजार। वि० यंत्रणा देनेवाला; नियमन करनेवाला।

जंतु–पु०[सं०] प्राणी, जीव; पशु; कीड़ा-मकोड़ा; जीवात्मा। **–विज्ञान**–पु० (ज़ूलॉजी) जंतुओं–पशु-पक्षियों आदि–की उत्पत्ति, विकास, स्वभाव, वर्गीकरण इत्यादिका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ प्रदर्शन या अध्ययन करनेके लिए जीवित जंतु रखे जायँ, चिड़ियाघर।

जंत्र–पु० यंत्र, तावीज; ताला। **–मंत्र**–पु० दे० 'जंतर-मंतर'।

जंत्रना*–स० क्रि० ताला लगाना–'भरत भगति सबकै मति जंत्री'–रामा०। स्त्री० दे० 'यंत्रणा'।

जंत्रित*–वि० यंत्रित, जकड़ा हुआ; बंद।

जंत्री–पु० वीणा। वि० वीणावादक। स्त्री० तिथिपत्र।

ज़ंद–पु० आर्योंकी ईरानी शाखाकी प्राचीन भाषा; जरथुस्त्री पारसियोंका प्रथम धर्मग्रंथ, जंद अवेस्ता।

जंदरा–पु० जाँता; कल।

जंपना*–स० क्रि० कहना, बोलना।

जंबीर–पु० [सं०] जँबीरी नीबू; मरुवा; वनतुलसी।

जँबीरी नीबू–पु० एक तरहका अधिक खट्टा नीबू।

जंबु, जंबू–पु० [सं०] जामुनका पेड़ और फल। **–खंड**–पु० दे० 'जंबुद्वीप'। **–द्वीप**–पु० पुराणानुसार धरतीके सात महाद्वीपोंमेंसे एक जिसके नौ खंडोंमेंसे एक भारतवर्ष भी है।

जंबुक–पु० [सं०] जामुन; स्यार, शृगाल; केवड़ा।

जंबुमान्(मत्)–पु० [सं०] पहाड़।

जंबूर–पु० [अ० ज़न्बूर] भिड़; शहदकी मक्खी; पुराने समयकी एक छोटी तोप। **–ख़ाना**–पु० भिड़ या शहदकी मक्खियोंका छत्ता। **–ची**–पु० तोपची।

ज़ंबूरक–स्त्री० दे० 'जंबूर'; तोपकी चर्ख; भँवरकली।

जंबूरा–पु० दे० 'जंबूरक'; एक औजार, बाँक।

जंभ–पु० [सं०] दाढ़; ठुड्डी; चबाना, भक्षण; अंश; जम्हाई; वर्ष्मांश; महिषासुरका बाप जो इंद्रके हाथों मारा गया; जँबीरी नीबू। **–द्विट्(ष्)**, **–भेदी(दिन्)**, **–रिपु**–पु० इंद्र।

जंभक–वि० [सं०] जम्हाई लेनेवाला; भक्षण करनेवाला।

जंभा–स्त्री० [सं०] जम्हाई।

जँभाई–स्त्री० दे० 'जम्हाई'।

जँभाना–अ० क्रि० दे० 'जम्हाना'।

जंभारि–पु० [सं०] इंद्र; वज्र; अग्नि।

ज–पु० [सं०] मृत्युंजय; जन्म; पिता। वि० समासांतमें 'में या से उत्पन्न' (जैसे–जलज, वातज, अंडज इ०)।

जई–स्त्री० जौकी जातिका एक अनाज, ओट; जौका अँखुआ; खीरे, कुम्हड़े आदिकी बतिया।

ज़ईफ़–वि० [अ०] बूढ़ा; दुर्बल।

ज़ईफ़ी–स्त्री० [अ०] बुढ़ापा; दुर्बलता।

जऊ*–अ० यद्यपि।

जकंद–स्त्री० दे० 'ज़क़ंद'।

ज़क़ंद, ज़ग़ंद–स्त्री० [फ़ा०] छलाँग, चौकड़ी।

जकंदना*–अ० क्रि० छलाँग मारना; झपटना।

जकंदनि*–स्त्री० दौड़धूप; उलझन।

जक–स्त्री० हठ; धुन, रटना। (–बँधना–रट लगना)।

ज़क–स्त्री० [अ०] हार, पराजय; नीचा देखना; हानि।

जकड़–स्त्री० जकड़ने, कसकर बाँधनेकी क्रिया या भाव। **–बंद**–वि० कसकर बाँधा हुआ। पु० कड़ा बंधन, पकड़।

जकड़ना–स० क्रि० कसकर बाँधना। अ० क्रि० (किसी अंगका) अकड़ना।

जकना*–अ० क्रि० भौचक्का होना, स्तंभित होना।

जकरना*–स० क्रि० दे० 'जकड़ना'।

जकात–स्त्री० दे० 'ज़कात'; देसावरसे आनेवाले मालपर लगनेवाला कर, आयातकर।

ज़कात–स्त्री० [अ०] दान, खैरात।

जकाती–पु० जकात वसूल करनेवाला।

जकित*–वि० चकित, भौचक्का।

जक्त*–पु० जगत्, संसार।

जक्ष*–पु० यक्ष ।

जखनी–स्त्री० दे० 'यक्षिणी' ।

जखम–पु० दे० 'ज़.ख्म' ।

जखमी–वि० दे० 'ज़.ख्मी' ।

ज़ख़ीरा–पु० [अ०] खजाना; भंडार; ढेर; पेड़-पौधे या बीज मिलनेका स्थान ।

ज़ख़्म–पु० [फा०] घाव, चोट; हानि । **–(मे)जिगर**–पु० दिलपर लगी हुई चोट, दुःख, मनोवेदना । **मु०–हरा होना**–बीते हुए कष्टका फिर लौट आना ।

ज़ख़्मी–वि० [फा०] घायल, जिसे जख्म लगा हो ।

जग–पु० जगत्, दुनिया । **–कारन***–पु० जगत्के कारणरूप परमेश्वर । **–जननी***–स्त्री० दे० 'जगज्जननी' । **–जामिनि***–स्त्री० संसाररूपी रात्रि । **–जाहिर**–वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित । **–जीवन**–पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर । **–जोनि***–पु० दे० 'जगद्योनि' । **–तारन***–पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर । **–निवास**–पु० दे० 'जगन्निवास' । **–प्रान**–पु० दे० 'जगत्प्राण' । **–बंद***–वि० दे० 'जगद्वंद्य' । **–बंदन**–वि० जगद्वंद्य, सबके लिए पूज्य । **–बीती**–स्त्री० लोकवृत्त, किस्सा-कहानी । **–मोहनी**–वि० स्त्री० दुनियाको मोहनेवाली, सुंदरी । **–सूर***–पु० राजा । **–हँसाई**–स्त्री० लोकनिंदा ।

जगच्चक्षु (स्)–पु० [सं०] सूर्य ।

जगजगाना–अ० क्रि० जगमगाना, चमचमाना ।

जगज्जननी–स्त्री० [सं०] जगदंबा, परमेश्वरी ।

जगज्जयी (यिन्)–वि० [सं०] दुनियाको जीतनेवाला ।

जगण–पु० [सं०] पिंगलके आठ गणोंमेंसे एक जिसमें आदि-अंत वर्ण लघु और मध्य वर्ण गुरु होता है (उ० रमेश) ।

जगत–स्त्री० कुएँका चबूतरा । पु० जगत्, दुनिया । **–पति**–पु० दे० 'जगत्पति' । **–सेठ**–पु० राज्य-विशेषका सबसे बड़ा महाजन, वह महाजन जिसकी साख सर्वत्र मानी जाय ।

जगती–स्त्री० [सं०] धरती; दुनिया, जगत्; मानवजाति; **–तल**–पु० धरती; दुनिया ।

जगत्–पु० [सं०] दुनिया, संसार; वायु । वि० जंगम, चल । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० परमेश्वर; ब्रह्मा । **–कारण**–पु० सृष्टिके कारणरूप परमेश्वर । **–पति, –पिता(तृ)**–पु० परमेश्वर । **–प्राण**–पु० वायु ।

जगदंबा, जगदंबिका–स्त्री० [सं०] दुर्गा, जगज्जननी ।

जगदात्मा (त्मन्)–पु० [सं०] परमेश्वर; वायु ।

जगदाधार–पु० [सं०] परमेश्वर; वायु; काल ।

जगदीश–पु० [सं०] जगत्पति, परमेश्वर; विष्णु ।

जगदीश्वर–पु० [सं०] परमेश्वर; शिव; इंद्र; राजा ।

जगद्गुरु–पु० [सं०] परमेश्वर; त्रिदेव; नारद; शंकराचार्यकी गद्दीपर बैठनेवालोंकी पदवी ।

जगद्धाता(तृ)–वि० [सं०] जगत्को धारण करनेवाला । पु० परमेश्वर; ब्रह्मा ।

जगद्धात्री–स्त्री० [सं०] दुर्गा; सरस्वती ।

जगद्योनि–पु० [सं०] परमेश्वर; त्रिदेव ।

जगद्वंद्य–वि० [सं०] सबका पूज्य ।

जगद्विख्यात–वि० [सं०] विश्वविश्रुत ।

जगना–अ० क्रि० जागना, नींदसे उठना; सचेत होना; उभरना; बलना, प्रदीप्त होना; शक्ति, तेजका अधिक परिचय देना; तंबाकू, आदिका सुलगना ।

जगन्नाथ–पु० [सं०] परमेश्वर; विष्णु; पुरीमें स्थापित विष्णुमूर्ति । **–का भात**–जगन्नाथजीका महाप्रसाद; वह वस्तु जो किसीके छूनेसे अपवित्र न हो, जिसे सभी ग्रहण कर सकें ।

जगन्नियंता(तृ)–पु० [सं०] जगत्का नियमन करनेवाला, परमेश्वर ।

जगन्निवास–पु० [सं०] परमेश्वर; विष्णु ।

जगन्मयी–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

जगन्माता(तृ)–स्त्री० [सं०] दुर्गा; लक्ष्मी ।

जगन्मोहिनी–स्त्री० [सं०] महामाया; दुर्गा ।

जगमग–वि० चमकीला, जगमगाता हुआ, प्रकाशित । स्त्री० जगमगाहट ।

जगमगाना–अ० क्रि० अपनी या दूसरेकी रोशनीसे चमकना, प्रकाशके कंपनसे झलकना, दमकना, चमचमाना ।

जगमगाहट–स्त्री० जगमगानेका भाव, चमक, दमक ।

जगरन*–पु० दे० 'जागरण' ।

जगर-मगर–वि० दे० 'जगमग' ।

जगवाना–स० क्रि० जगानेका काम दूसरेसे कराना ।

जगह–स्त्री० अवकाशका अंश-विशेष; अवकाशका वह अंश जिसमें किसी वस्तु या व्यक्तिकी स्थिति हो, स्थान, वस्तु या व्यक्ति-विशेषका नियत स्थान; समाई, गुंजाइश; पद, उहदा; नौकरी; अवसर, मौका । **–जगह**–अ० हर जगह, सर्वत्र ।

जगाजोति*–स्त्री० जगमगाहट ।

जगात*–स्त्री० दे० 'जकात' ।

जगाती*–पु० जकात वसूल करनेवाला ।

जगाना–स०क्रि० सोतेसे उठाना, जागनेको प्रेरित करना; सजग, सावधान करना; सुलगाना, प्रदीप्त करना (ज्योति ज०); यंत्र-मंत्रको सिद्ध करना या उनका प्रभाव बनाये रखनेके लिए ग्रहण आदिपर उनका जप आदि करना ।

जगार*–स्त्री० जागरण, जागर्ति ।

जगीर*–स्त्री० दे० 'जागीर' ।

जगीला*–वि० उनींदा ।

जग्य*–पु० यज्ञ ।

जघन–पु० [सं०] स्त्रियोंका पेड़ू; नितंब; सेनाका पिछला भाग । **–चपला**–स्त्री० कामुका, व्यभिचारिणी स्त्री ।

जघन्य–वि०[सं०] अंतिम; नीच; निंदित, हेय । पु० शूद्र ।

ज़च्चा–स्त्री० [फा०] सद्यःप्रसूता; वह स्त्री जिसे प्रसव किये ४० दिन न हुए हों । **–ख़ाना**–पु० प्रसवगृह ।

जच्छ*–पु० दे० 'यक्ष' ।

जज–पु०[अं०] वह अधिकारी जिसे मुकदमे सुनकर उनका फैसला करनेका अधिकार हो, विचारक ।

जजना*–स० क्रि० आदर करना, पूजना; –'कलि पूजै पाखंडको जजै न स्रुति आचार'–दीनद० ।

जजमान–पु० दे० 'यजमान' ।

जजमानी–स्त्री० दे० 'यजमानी' ।

जज़िया-पु० दे० 'जिज़िया'।

जज़ीरा-पु० [अ०] टापू, द्वीप। **-नुमा**-पु० प्रायद्वीप।

जज्ञ*-पु० दे० 'यज्ञ'।

जज़्ब-पु० [अ०] सोखना; खिंचाव, आकर्षण।

जज़्बा-पु० [अ०] भाव, मनोविकार; जोश; रोष।

जटना-स० क्रि० ठगना; * जड़ना, जकड़ना।

ज़टल-स्त्री० बकवास, बेतुकी बात; गप। **-क़ाफ़िया**-पु० बेतुकी बात; गप। **-बाज़**-वि० बकवासी, गप हाँकनेवाला।

जटा-स्त्री० [सं०] उलझे और आपसमें चिपके हुए लंबे बाल; पेड़-पौधोंकी जड़; शाखा; उलझे हुए रेशे। **-जूट**-पु० जूड़ेके रूपमें बँधी हुई जटा; शिवकी जटा।

जटाना-अ० क्रि० जटा जाना, ठगाना।

जटायु-पु० [सं०] रामायणमें वर्णित एक गिद्ध जिसने सीताको छुड़ानेके लिए रावणसे युद्ध किया था।

जटित-वि० जड़ा हुआ।

जटिल-वि० [सं०] जटाधारी; उलझा हुआ, पेचीदा; कठिन।

जटिलता-स्त्री० [सं०] पेचीदगी, उलझन; कठिनाई।

जटी-स्त्री० [सं०] जटा; समूह।

जटी (टिन्)-वि० [सं०] जटाधारी। पु० शिव; बरगद।

जट्टू†-वि० जटनेवाला, उचितसे अधिक मूल्य लेनेवाला।

जठर-पु० [सं०] पेट; कुक्षि, जरायु; एक पुराणोक्त पर्वत। वि० कड़ा, कठिन; वृद्ध, बूढ़ा। **-ज्वाला**-स्त्री० उदर-ज्वाला, भूखका कष्ट।

जठरागि*-स्त्री० दे० 'जठराग्नि'।

जठराग्नि-स्त्री० [सं०] उदरस्थित अग्नि जो आयुर्वेदके मतसे आहारको पचानेका काम करती है; आमाशयकी गिल्टियोंसे निकलनेवाला पाचक रस, (गैस्ट्रिक जूस)।

जठरानल-पु० [सं०] दे० 'जठराग्नि'।

जठरामय-पु० [सं०] अतीसार; जलोदर रोग।

जठेरा*-वि० जेठा, बड़ा। पु० लड़का-'छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो'-सू०।

जड-वि० [सं०] अचेतन, चेतनरहित; निर्बुद्धि, मूर्ख; सर्दीसे ठिठुरा, अकड़ा हुआ; निश्चेष्ट। पु० जड़, अचेतन पदार्थ; जल; सीसा। **-जगत्**-पु० जडप्रकृति, पांचभौतिक पदार्थोंकी समष्टि। **-पदार्थ**-पु० अचेतन पदार्थ, भौतिक जगत्का उपादानरूप द्रव्य। **-प्रकृति**-स्त्री० जडजगत्, पंचभूत या पांचभौतिक पदार्थोंकी समष्टि।

जड़-स्त्री० पेड़-पौधोंका वह भाग जो जमीनके अंदर रहता है और जिसके द्वारा वे धरतीसे पोषण प्राप्त करते हैं, मूल; नीवँ, आधार, मूल कारण। **मु०-उखाड़ना**-समूल नाश करना। **-काटना,-खोदना**-तबाह करनेकी कोशिश करना, भारी हानि पहुँचाना।

जडता-स्त्री०, **जडत्व**-पु० [सं०] जड होनेका भाव; अचेतनता, अज्ञान, मूर्खता; एक संचारी भाव।

जड़ताई*-स्त्री० दे० 'जडता'।

जड़ना-स० क्रि० एक वस्तुको दूसरीमें बैठाना, जमाना, पच्ची करना; ठोंकना (कील, नाल); मारना, लगाना (धौल, चाँटा); किसीकी चुगली खाना या किसीके खिलाफ किसीके कान भरना, शिकायत करना।

जड़वाना-स० क्रि० दे० 'जड़ाना'।

जड़हन-पु० अगहनी धान।

जड़ाई-स्त्री० जड़नेका काम; जड़नेकी उजरत।

जड़ाऊ-वि० जिसपर नग या रत्न जड़ा हो, जड़ाववाला।

जड़ाना-स० क्रि० जड़नेका काम दूसरेसे कराना। †अ० क्रि० जाड़ा लगना, जाड़ा खाना।

जड़ाव-पु० जड़नेका काम, पच्चीकारी।

जड़ावर-पु० जाड़ेमें पहनने-ओढ़नेके गरम कपड़े।

जड़ित*-वि० जड़ा हुआ; जड़ाऊ।

जडिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] जडता, स्तब्धता; संज्ञाहीनता।

जड़िया-पु० नग जड़नेका काम करनेवाला।

जड़ी-स्त्री० वनौषधि, बूटी; वह वनौषधि जिसकी जड़ दवाके काममें लायी जाय। **-बूटी**-स्त्री० वनौषधि।

जडीकृत परिसंपत्-स्त्री० [सं०] (फ्रोज़न एसेट्स) वह परिसंपत् जिसके विक्रय, हस्तांतरण आदिकी मनाही कर दी गयी हो।

जडीभूत-वि० [सं०] जो हिलता-डुलता न हो, निःस्पंद।

जड़ैया†-स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी।

जत*-वि०, अ० जितना।

जतन-पु० दे० 'यत्न'।

जतनी-वि० यत्न करनेवाला; चालाक, चतुर।

जतलाना-स० क्रि० दे० 'जताना'।

जताना-स० क्रि० बताना, अवगत कराना; आगाह करना।

जति*-पु० दे० 'यति'।

जती†-पु० दे० 'यती'।

जतु-पु० [सं०] गोंद; लाख; शिलाजतु। **-गृह**-पु० लाखका बना घर (जैसा दुर्योधनने पांडवोंको जलानेके लिए बनवाया था)। **-रस**-पु० लाख; महावर।

जतुक-पु० [सं०] हींग; लाख; चमड़ेपरका दाग जो जन्मसे हो, लच्छन।

जतुका-स्त्री० [सं०] लाख; चमगादड़; पर्पटी लता।

जतेक*-वि०, अ० जितना।

जत्था-पु० कार्य-विशेषके लिए संघटित छोटा दल, यूथ। **-(त्थे)दार**-पु० जत्थेका नायक, दलनायक। **-बंदी**-स्त्री० जत्था बनाना, दलबंदी।

जथा*-अ० दे० 'यथा'। स्त्री० धन, पूँजी। पु० दे० 'जत्था'।

जथारथ*-वि० दे० 'यथार्थ'।

जद†-अ० जब; यदि।

जदपि*-अ० दे० 'यद्यपि'।

ज़दा-वि० [फ़ा०] भरा हुआ, पीड़ित (मुसीबतज़दा)।

जदु*-पु० दे० 'यदु'। **-कुल***-पु० दे० 'यदुकुल'। **-नाथ,-पति**-पु० दे० 'यदुनाथ'। **-पुर**-पु० मथुरा। **-बंसी**-वि० दे० 'यदुवंशी'। **-राइ,-राय**-पु० यदुराज, कृष्ण। **-बीर**-पु० कृष्ण।

जद्द-*वि० प्रबल; अधिक। स्त्री० [अ०] कोशिश। **-(द्दो)जेहद**-स्त्री० प्रयत्न, दौड़-धूप; आंदोलन।

जद्दपि*-अ० यद्यपि।

जन-पु० [सं०] मनुष्य; व्यक्ति; मनुष्य-समूह, लोक; जाति; सेवक, दास। **-आंदोलन**-पु० किसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिए जनता द्वारा चलाया गया आंदोलन। **-कल्याण**-

केंद्र–पु० (वेलफेयर सेंटर) जनताके स्वास्थ्य, उन्नति तथा भलाईके लिए किये जानेवाले कार्योंका केंद्र । **–गणना**–स्त्री० मर्दुमशुमारी, देशविशेषके सब मनुष्योंकी गणना । **–जागरण**–पु० समस्त जनतामें अपने अधिकार, हिताहितका ज्ञान होना । **–जाति**–स्त्री० (ट्राइब) जंगलों या पहाड़ी स्थानों आदिमें रहनेवाले ऐसे लोगोंका समूह जो शिक्षा, सभ्यता आदिमें समीपवर्ती स्थानोंके लोगोंसे कुछ पिछड़े हुए हों और जो अपने-अपने मुखियों या सरदारोंके आदेशोंके अनुसार चलनेके आदी हों । **–तंत्र**–पु० लोकतंत्र, प्रजातंत्र । **–धन**–पु० आदमी और पैसा (जन-धनसे सहायता) । **–निर्देश**–पु० (रिफरेंडम) संसदमें पुरःस्थापित किसी महत्त्वपूर्ण विवादग्रस्त विषयको समस्त जनताके सामने मतदान द्वारा अपना निर्णय देनेके लिए उपस्थित करना । **–पद**–पु० देश, राज्य; राज्यविशेषका ग्राम-भाग; लोक, प्रजा । **–प्रवाद**–पु० अफवाह, आम चर्चा । **–प्रिय**–वि० लोकप्रिय । **–मत**–पु० लोकमत, जनसाधारणकी राय । **–रंजन**–वि० लोकको सुख, आनंद देनेवाला । पु० लोकरंजन । **–रक्षा-अधिनियम**–पु० (पब्लिक सेफ्टी ऐक्ट) सर्वसाधारणकी रक्षाकी दृष्टिसे बनाया गया अधिनियम । **–रव**–पु० अफवाह, जनश्रुति; लोकापवाद । **–लोक**–पु० ऊपरके सात लोकोंमेंसे पाँचवाँ, महर्लोकके ऊपर स्थित लोक । **–वाद**–पु० दे० 'जनरव' । **–वास**–पु० सर्वसाधारणके ठहरनेका स्थान; बरातियोंके ठहरनेकी जगह; सभा, समाज । **–वासा**–पु० [हिं०] बरातियोंके ठहरनेकी जगह । **–शून्य**–वि० आदमियोंसे खाली, सुनसान । **–श्रुत**–वि० प्रसिद्ध, जिसे बहुत लोग जानते हों । **–श्रुति**–स्त्री० जनरव । **–संख्या**–स्त्री० स्थानविशेषमें बसनेवालोंकी संख्या, आबादी । **–संग्राम**–पु० वह युद्ध जिसमें सारी जनता शामिल हो । **–संपर्काधिकारी(रिन्)**–पु० (पब्लिक रिलेशन ऑफिसर) सरकारका जनतासे संपर्क बनाये रखनेवाला अधिकारी । **–समुदाय**–पु० भीड़, मजमा । **–समुद्र**–पु० समुद्रवत् विशाल जनसमूह, भारी भीड़ । **–समूह**–पु० भीड़, मजमा । **–साधारण**–पु० साधारण जन; जनसमाज; जनता । **–स्थान**–पु० दंडकारण्यका वह भाग जहाँ सीताका हरण हुआ था । **–हरण**–पु० एक दंडक वृत्त । **–हित**–पु० लोकहित, जनताके लाभका काम । **–हितैषी राज्य**–पु० (वेलफेयर स्टेट) वह राज्य जहाँ जनताके स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख-सुविधा आदिकी विशेष व्यवस्था हो तथा जीविका दिलाने एवं असमर्थता-वृत्ति आदिका आयोजन हो । **–हीन**–वि० जनशून्य, विजन ।

जनक–वि० [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पादक । पु० पिता; मिथिलाका रामायण-कालीन राजवंश जिसमें कई बड़े ब्रह्मज्ञानी हुए; उक्त वंशके राजा सीरध्वज जो सीताके पिता थे । **–तनया,–सुता**–स्त्री० सीता । **–दुलारी**–स्त्री० [हिं०] सीता ।

जनकात्मजा–स्त्री० [सं०] सीता ।

जनकौर*–पु० जनकपुर; जनकवंश ।

ज़नख़ा–पु० औरतोंकी तरह बोलने और चेष्टाएँ करनेवाला, हिजड़ा; स्त्रैण ।

जनता–स्त्री० [सं०] जनसमूह, लोक; जनन । **–जनार्दन**–पु० जनतारूप जनार्दन, भगवान् ।

जनन–पु० [सं०] उत्पत्ति; जन्म; आविर्भाव, प्रकट होना; जनना, उत्पादन; वंश; जीवन; परमेश्वर; पिता । **–गति**–स्त्री० (बर्थ रेट) आबादीके प्रतिसहस्र व्यक्तियोंके पीछे होनेवाले शिशु-जन्मकी गति ।

जनना–स० क्रि० बच्चेको जन्म देना, प्रसव करना । * जानना–'जो यह पीर जनै'–स्वामी हरिदास ।

जननाशौच–पु० [सं०] प्रसवका अशौच, सौरीका सूतक ।

जननी–स्त्री० [सं०] जन्म देनेवाली, माता; दया; चमगादड़; लाख; जूही; मजीठ; कुटकी; जटामासी; पर्पटी; जनी ।

जननेंद्रिय–स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे संतानकी उत्पत्ति होती है, उपस्थ ।

जनम–पु० जन्म; जीवन, जिंदगी । **–घूँटी**–स्त्री० नवजात बच्चेको पिलायी जानेवाली घूँटी । **–दिन**–पु० दे० 'जन्मदिन' । **–पत्री**–स्त्री० दे० 'जन्मपत्रिका' । **–संगी**–वि० जिसका साथ जन्मसे हो या जिंदगीभर रहे (पति या पत्नी) । **–संघाती***–वि० जनमसंगी ।

जनमना–अ० क्रि० जन्म लेना, पैदा होना । स० क्रि० जन्म देना–'सुंदर सुत जनमत भईं ओऊ'–रामा० ।

जनमाना–स० क्रि० जन्म देना, जनना ।

जनमारो*–पु० जन्म, जीवन ।

जनमेजय–पु० [सं०] परीक्षितका पुत्र जिसने उनके सर्पदंशसे मरनेके बाद सर्पोंके नाशके लिए सर्पसत्र किया ।

जनयिता(तृ)–वि० [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पादक । पु० पिता ।

जनयित्री–स्त्री० [सं०] जननी, माता ।

जनवरी–स्त्री० ईसवी सालका पहला महीना ।

जनवाई–स्त्री० जनवानेकी उजरत या नेग ।

जनवाना–स० क्रि० बच्चा जनाना, जननेमें मदद करना; † सूचित कराना ।

जनांतिक–पु० [सं०] अभिनयमें एक अभिनेताका दूसरेके कानसे सटकर कुछ कहना ।

जना–वि० उत्पन्न किया हुआ ।

जनाई–स्त्री० जनानेकी उजरत या नेग; जनानेवाली स्त्री ।

जनाउ*–पु० दे० 'जनाव' ।

जनाकीर्ण–वि० [सं०] आदमियोंसे भरा हुआ; बहुत घनी आबादीवाला ।

जनाज़ा–पु० [अ०] लाश; अरथी, ताबूत (उठना, निकलना) । **–(ज़े)की नमाज़**–स्त्री० मुसलमानकी अंत्येष्टिके अवसरपर रास्तेमें या कब्रिस्तानमें पढ़ी जानेवाली नमाज ।

ज़नानख़ाना–पु० [फ़ा०] घरका वह भाग या खंड जिसमें स्त्रियाँ रहें, अंतःपुर ।

जनाना–स० क्रि० जताना; दे० 'जनवाना' ।

ज़नाना–वि० [फ़ा०] स्त्री-संबंधी (स्कूल, अस्पताल आदि); स्त्रीकी तरह (चाल, सूरत) । पु० जनानखाना; हिजड़ा; डरपोक आदमी; पत्नी । **–पन**–पु० हिजड़ापन, नामर्दी; स्त्रीसुलभ हाव-भाव ।

जनाब–पु० [अ०] श्रीमान्, महोदय, महाशय ।

जनाभिवक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] (ट्रिब्यून) जनताके अधिकारोंके लिए लड़नेवाला तथा उनका समर्थक ।

जनार्दन–पु० [सं०] विष्णु; परमेश्वर । वि० जनपीडक ।

जनाव–पु० जनानेका काम; * जतानेका भाव, सूचना ।

जनावर*–पु० जानवर, पशु ।

जनि*–अ० नहीं, मत (निषेधार्थक) । स्त्री० [सं०] जन्म; स्त्री; माता; पत्नी; पुत्रवधू; दासी ।

जनित–वि० [सं०] उत्पन्न, पैदा हुआ ।

जनिता(तृ)–पु० [सं०] पिता ।

जनित्री–स्त्री० [सं०] माता, जननी ।

जनियाँ–स्त्री० दे० 'जानी' ।

जनी–वि० स्त्री० पैदा की हुई । स्त्री० [सं०] कन्या; माया; दे० 'जनि' ।

जनु*–अ० मानों, जैसे ।

जनून–पु० [अ०] पागलपन, उन्माद; (ला०) खब्त ।

जनूनी–वि० [अ०] पागल ।

जनूबी–वि० [अ०] दक्खिनी ।

जनेऊ–पु० यज्ञोपवीत; यज्ञोपवीत संस्कार । **मु०–का हाथ**–तलवारका ऐसा वार जिससे विपक्षीका जनेवा कट जाय ।

जनेत–स्त्री० बरात ।

जनेवां–पु० दे० 'जनेऊ'; 'जनेवा' ।

जनेवा–पु० धड़का वह भाग जिसपर जनेऊ रहता है ।

जनेश–पु० [सं०] राजा, नरेश ।

जनैया*–वि०, पु० जाननेवाला ।

जनोपयोगी(गिन्)–वि० [सं०] लोकोपयोगी । **–सेवा**–स्त्री० (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस) दे० 'लोकोपयोगी सेवा' ।

जनौ*–अ० मानों, जानो ।

जनौघ–पु० [सं०] मनुष्योंका मजमा, भीड़ ।

जन्नत–पु० [अ०] उद्यान, बाग; स्वर्ग, वैकुंठ, बिहिश्त ।

जन्म(न्)–पु० [सं०] गर्भसे बाहर आना; उत्पत्ति, पैदाइश; जीवन; जन्मलग्न । **–कुंडली**–स्त्री० वह चक्र जिसमें जन्मकालके ग्रहोंकी स्थिति बतायी गयी हो । **–गत**–वि० जन्मसे प्राप्त, पैदाइशी । **–ग्रहण**–पु० उत्पत्ति, जन्म लेना । **–तिथि**–स्त्री० जन्मकी तिथि, बरसगाँठ । **–द, –दाता(तृ)**–वि० जन्म देनेवाला । पु० पिता । **–दात्री**–स्त्री० माता । **–दिन, –दिवस**–पु० किसीके जन्म या पैदाइशका दिन, जन्मतिथि । **–नक्षत्र**–पु० वह नक्षत्र जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । **–नाम(न्)**–पु० वह नाम जो जन्मके समय या जन्मके बारहवें दिन रखा जाय । **–पत्र**–पु०, **–पत्रिका**–स्त्री० वह पत्र या कागज जिसमें किसीके जन्मकालके ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थिति, उनकी दशा, अंतर्दशा और उनके शुभाशुभ फल बताये गये हों, जायचा । **–प्रमाणक**–पु० (बर्थ-सर्टीफिकेट) वह प्रमाणपत्र जिसमें किसीकी जन्मतिथिका प्राधिकृत ब्योरा दिया गया हो । **–भूमि**–स्त्री० वह जगह—ग्राम, नगर, देश—जहाँ किसीका जन्म हुआ हो, जन्मस्थान । **–राशि**–स्त्री० वह राशि जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । **–सिद्ध**–वि० जन्मतः प्राप्त, पैदाइशी । **–स्थान**–पु० जन्मभूमि ।

जन्मना–अ० क्रि० दे० 'जनमना' । अ० [सं०] जन्मसे, जन्मतः (जन्मना ब्राह्मण) ।

जन्मांतर–पु० [सं०] दूसरा जन्म; पिछला जन्म; अगला जन्म; परलोक । **–वाद**–पु० पुनर्जन्मवाद ।

जन्मांध–वि० [सं०] जन्मका अंधा, पैदाइशी अंधा ।

जन्माष्टमी–स्त्री० [सं०] भाद्र-कृष्णाष्टमी, कृष्णकी जन्मतिथि ।

जन्मोत्सव–पु० [सं०] बच्चोंकी बरही-छट्ठीका उत्सव; जन्मदिनका उत्सव, बरस-गाँठ ।

जन्य–वि० [सं०] जात, उत्पन्न; (समासांतमें)...से उत्पन्न; जन-संबंधी; किसी जाति या वंशसे संबंध रखनेवाला; जनतामें प्रचलित । पु० जन्म; जनक, पिता; साधारण जन; पुत्र; युद्ध ।

जन्या–स्त्री० [सं०] माताकी सखी; वधूकी सहेली; प्रीति ।

जप–पु० [सं०] किसी मंत्र, स्तोत्र, ईश्वरके नाम आदिको धीमे स्वरसे बार-बार दुहराना; किसी शब्द, नाम आदिको बार-बार मुँहसे कहना । **–तप**–पु० पूजा-पाठ, व्रत-उपवास । **–माला**–स्त्री० जप करनेकी माला ।

जपना–सं० क्रि० जप करना; यज्ञ करना ।

जपनी–स्त्री० माला; गोमुखी ।

जपनीय–वि० [सं०] जप करने योग्य ।

जपा–* वि० जप करनेवाला । स्त्री० [सं०] अड़हुल । **–कुसुम**–पु० अड़हुलका फूल ।

जपिया*–वि०, पु० दे० 'जपी' ।

जपी(पिन्)–वि०, पु० [सं०] जप करनेवाला ।

ज़फ़ीर(ल)–स्त्री० [अ०] सीटी; मुँहसे निकाली जानेवाली सीटीकी आवाज ।

जब–अ० जिस समय, यदा । **–कभी**–अ० चाहे जब, किसी समय । **–तब**–अ० कभी-कभी, यदा-कदा ;

जबड़ा–पु० मुँहमें नीचे-ऊपरकी हड्डी जिसमें दाँत जड़े होते हैं, कल्ला । **–तोड़**–वि० जो मुँह तोड़ सके, बलवान्; (शब्द) जिसका उच्चारण कठिन हो ।

जबर–वि० मजबूत, बलवान् । **–दस्त**–वि० दे० 'जबरदस्त' ।

ज़बर–वि० [फ़ा०] ऊपरवाला; बलवान्; बलमें अधिक । पु० अरबी-फारसी लिखावटमें ह्रस्व अकारका चिह्न । अ० ऊपर । **–दस्त**–वि० बलवान्; प्रबल पड़नेवाला; विजयी; भारी । **–दस्ती**–स्त्री० जुल्म; ज्यादती; धींगा-धींगी ।

जबरन्–अ० [अ०] दे० 'जब्रन्' ।

जबरा–वि० जबरदस्त, बलवान् ।

ज़बर्दस्त–वि० दे० 'जबरदस्त' ।

ज़बर्दस्ती–वि० दे० 'जबरदस्ती' ।

जबह–पु० दे० 'ज़ब्ह' ।

जबहा–पु० हिम्मत, जीवट; [अ०] माथा, पेशानी ।

ज़(ज़ु)बान–स्त्री० [फ़ा०] जीभ, रसना; वाणी, बोली; भाषा; वचन, बात । **–गीर**–वि० जासूस, भेदिया । **–दराज़**–वि० बहुत बोलनेवाला; बोलनेमें धृष्ट, मुँहफट; बदजबान । **–दराज़ी**–स्त्री० वाचालता, धृष्टता; बदजबानी । **–दाँ**–वि० भाषा (विशेष)का पंडित । **–बंदी**–स्त्री० किसी मुकदमेके गवाहोंका बयान लिख लिया जाना; खामोशी । **मु०–खींचना**–बुरी बातें कहनेके कारण कड़ा दंड देना । **–खुलना**–बोलनेमें समर्थ होना, मुँहसे बात निकलना; बच्चेका बोलने

लगना। **-ख़ुश्क होना**-बहुत प्यासा होना; बहुत बातें करना। **-खोलना**-कुछ कहना, बोलना; उज्र या शिकायत करना। **-चलना**-मुँहसे शब्दोंका जल्दी-जल्दी निकलना, तेजीसे बोलना। **-चलाना**-तेजीसे बोलना; बदजबानी करना। **-चलायेकी रोटी खाना**-चापलूसीसे पेट पालना। **-थामना**-दे० 'जबान पकड़ना'। **-देना**-वचन देना, वादा करना। **-पकड़ना**-किसीको अपनी बात कहनेसे रोकना, बोलने न देना; वचनमें दोष, गलती निकालना; टोकना। **-पर आना**-किसी बातका मुँहसे निकालना, कहा जाना। **-पर मुहर होना**-जबान बंद होना, बोल न सकना। **-पर लाना**-कहना, बयान करना। **-पर होना**-हर वक्त याद रहना; कंठस्थ होना; चर्चाका विषय होना (यह बात आज बहुतोंकी जबानपर है)। **-पलटना**-बात कहकर मुकरना, वचन भंग करना। **-बंद होना**-बोल न सकना, चुप रहनेको विवश होना; बहसमें हार जाना। **-बदलना**-दे० 'जबान पलटना'। **-बिगड़ना**-अपशब्द कहने, गालियाँ बकनेकी आदत पड़ना; चटोरपनकी आदत लगाना। **-में काँटे पड़ना**-जबानका सूखकर खुरदरी हो जाना। **-में खुजली होना**-लड़ने, उलझनेको जी चाहना। **-में(पर)ताला लगना**-चुप रहना, मौनावलंबन करना। **-में लगाम न होना**-बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार न होना, मुँहफट हो जाना। **(मुँहमें)-रखना**-बोलनेमें, उत्तर देनेमें समर्थ होना। **-रुकना**-बोलनेमें अटकना, चुप होना। **-रोकना**-बोलना बंद करना, चुप हो रहना; जबान पकड़ना। **-सँभालना**-बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार रखना, अनुचित शब्द मुँहसे न निकालना। **-से निकलना**-उच्चारित होना, कहा जाना। **-हारना**-वचनबद्ध होना, प्रतिज्ञा करना। **-हिलाना**-बोलनेकी कोशिश करना; बोलना।

ज़बानी-वि० [फ़ा०] जो केवल जबानसे कहा गया हो, मौखिक; अलिखित (इजहार, सवाल, संदेशा इ०); ऊपरी, दिखाऊ। **-ज़माख़र्च**-पु० वह बात जो कही जाय, पर की न जाय, दिखाऊ, मौखिक काररवाई।

ज़बून-वि० [फ़ा०] खराब, निकृष्ट; निर्बल।

ज़ब्त-पु० [अ०] प्रबंध; निगरानी; सहन; धैर्य-धारण; राज्य द्वारा किसी वस्तु, संपत्तिका हरण (करना, होना)। **-शुदा**-वि० जब्त किया हुआ।

ज़ब्ती-स्त्री०[अ०] किसी चीजका जब्त किया जाना, कुर्की।

जब्र-पु० [अ०] दबाव, मजबूरी; जबरदस्ती; सख्ती; जुल्म।

जब्रन्-अ० [अ०] जबरदस्तीसे, दबाव देकर, बलात्।

ज़ब्ह-पु० [अ०] गला काटकर जान लेनेका कार्य।

जम-पु० दे० 'यम'। **-कात, -कातर***-स्त्री० एक तरहका खाँड़ा, यमका खाँड़ा। पु० भँवर। **-घंट**-पु० दे० 'यमघट'। **-ज**-वि० जुड़वाँ (बच्चे)। **-डाढ़**-स्त्री० एक झुकी नोकवाली कटार। **-दिसा***-स्त्री० दक्षिण दिशा। **-दूत**-पु० दे० 'यमदूत'। **-धर**-पु० दे० 'जमडाढ़'। **-बार***-पु० दे० 'यमद्वार'। **-राज**-पु० दे० 'यमराज'। मु० **-हो जाना**-न टलना, पीछा न छोड़ना।

जमक*-पु० दे० 'यमक'।

जमघट(ट्ट)-पु० आदमियोंकी भीड़, जमाव, मजमा।

जमघट्ट*-पु० दे० 'जमघट'।

ज़मज़म-पु० [अ०] काबाके पासका एक कुआँ।

जमदग्नि-पु०[सं०] एक वैदिक ऋषि जो परशुरामके पिता थे।

जमन*-पु० दे० 'यवन'।

जमना-स्त्री० दे० 'यमुना'। अ०क्रि० पतली चीजका गाढ़ी या ठोस होना (दही, पानी); किसी जगह देरतक बैठना; अपनी जगहपर डटा, बना रहना, टिकना, दृढ़तासे स्थित होना; जड़ मजबूत होना, ठीक तौरसे चलने लगना; नीचे बैठना (तल-छट); जमा, इकट्ठा होना; दिलमें बैठना; सुंदर, सफल, यथेष्ट रसोत्पादक होना (गाना, खेल, व्याख्यान); चल निकलना (दुकान इ०); ठीक आना, बैठना (टोपी, पगड़ी इ०); (घोड़ेका) ठुमुककर चलना; उगना (बीज, बाल)।

जमनिका-स्त्री० दे० 'जवनिका'; * काई।

जमवट-स्त्री० लकड़ीका गोला चक्कर जिसके ऊपर पक्के कुएँकी जोड़ाई होती है।

जमा-स्त्री० [अ०] समूह, जमात; जोड़ (ग०); बहुवचन (व्या०); पूँजी, धन; बही-खातेका वह भाग या मद जिसमें प्राप्ति या आमदनी लिखी जाय; लगान। **-ख़र्च**-स्त्री० आमदनी और खर्च; आमदनी-खर्चका हिसाब, ब्योरा। **-जथा**-स्त्री० पूँजी, धन-संपत्ति। **-दार**-पु० सिपाहियों आदिका मुखिया; पुलिसका हेडकांस्टेबल; भंगियोंकेकामकी निगरानी करनेवाला कर्मचारी। **-पूँजी**-स्त्री० दे० 'जमा-जथा'। **-बंदी**-स्त्री० लगानका हिसाब; पटवारीकी वह बही जिसमें गाँवके हर काश्तकारके लगानका हिसाब और ब्योरा लिखा होता है; गाँव, महाल या हिस्सेका कुल लगान। **-मार**-वि० दूसरेका पावना हजम कर जानेवाला, बेईमान। मु० **-ख़र्च करना**-हिसाब बराबर करनेके लिए किसी रकमको जमामें लिखकर फिर खर्चमें लिखना। **-मारना**-लगान, ऋण या अमानतके रूपमें दूसरेका पावना हजम कर जाना, दूसरेका पैसा मार लेना।

जमाअ़त-स्त्री० [अ०] समुदाय, जत्था; भीड़, मजमा; दल; कक्षा, श्रेणी; नमाजियोंकी पंक्ति।

जमाअ़ती-वि० [अ०] सामुदायिक।

जमाई-पु० दामाद। स्त्री० जमानेकी क्रिया या मजदूरी।

जमात-स्त्री० दे० 'जमाअ़त'।

ज़मानत-स्त्री०[अ०] जिम्मेदारी; किसीके कोई काम करने-(समयपर हाजिर होने, ऋण चुकाने, प्रतिज्ञाका पालन करने आदि)की जिम्मेदारी जो दूसरा आदमी अपने ऊपर ले; किसी बातके किये जानेके इतमीनानके लिए जमा की हुई रकम, जायदाद; इस तरहका इतमीनान दिलानेवाली चीज, गारंटी। **-दार**-पु० जमानत करनेवाला, जामिन। **-नामा**-पु० जामिन होनेकी लिखित स्वीकृति।

ज़मानती-वि० [अ०] जिसमें या जिसकी जमानत हो सके, जमानतके काबिल (-वारंट)।

जमाना-स० क्रि० पतली चीजको गाढ़ी या ठोस बनाना (दही, बरफ़ आदि); मजबूतीसे बैठाना; दिलमें बैठाना; सजाकर रखना, चुनाई करना; जमनेका कारण, हेतु

होना; जड़ मजबूत करना; ठीक तौरसे चलने लायक बनाना (कारबार, स्कूल आदि); बैठाना, स्थापित करना (असर, धाक, रोब आदि); इकट्ठा करना; खाना, उदरस्थ करना (भाँगका गोला); मारना, रसीद करना (थप्पड़, घूँसा, लाठी आदि); मश्क करना, बैठाना (हाथ); डालना, उगाना, उपजाना।

ज़माना–पु० [अ०] काल; युग; अरसा, अवधि; बहुत समय; राज्यकाल; कार्यकाल; दुनिया, संसार; क्रियाका काल; सौभाग्यकाल। **मु०–उलटना**–समयका यकबारगी बदल जाना, नया युग उपस्थित हो जाना। **–देखे होना**–अनुभवी होना। **–पलटना,–बदलना**–अच्छे दिनसे बुरे या बुरेसे अच्छे दिन आना। **–(ने)की गर्दिश**–समयका उलट-फेर, दिनका फेर।

जमाल–पु० [अ०] सुंदरता, शोभा; ईश्वरका माधुर्य, ऐश्वर्य।

जमालगोटा–पु० एक विरेचक बीज।

जमाव–पु० जमनेका भाव; भीड़, मजमा।

जमावट–स्त्री० जमनेका भाव।

जमावड़ा–पु० जमाव।

जमी*–वि० संयमी, इंद्रियोंका निग्रह करनेवाला।

ज़मीन–स्त्री० [फा०] पृथ्वी (ग्रह); धरती, भूमि; धरतीका स्थलभाग; जमीनका टुकड़ा, खेत; यह लोक; मिट्टी; कागज, कपड़े आदिकी सादी या अस्तर की हुई सतह जिसपर चित्रकारी, नक्काशी या छपाई की जाय; वह तेल जिसपर कोई इत्र तैयार किया जाय, इत्रका माद्दा; नदी, तालाब आदिका तलभाग। **(ज़मीं)कंद**–पु० सूरन। **–दार**–पु० जमीनका मालिक। **–दारी**–स्त्री० जमींदारका हक; वह जमीन जिसपर किसी खास आदमीको जमींदारका हक हासिल हो; जमींदारका काम, पेशा। **–दोज़**–वि० जमीनमें धँसा हुआ, इस तरह बना हुआ कि जमीनके ऊपर न उभरा हो (किला, मकान); जो जमीनके बराबर कर दिया गया हो, पटपर। **–बोसी**–स्त्री० जमीन चूमना। **मु०–आसमान एक करना**–अत्यधिक प्रयास या उद्योग करना; हलचल मचाना; दुनिया छान मारना। **–(व)आसमानका फ़र्क़**–बहुत अधिक अंतर, आकाश-पातालका अंतर। **–(व)आसमानके कुलाबे मिलाना**–बहुत डींग मारना, अत्युक्ति करना; किसी कामके लिए बहुत प्रयत्न करना। **–का पाँव तलेसे खिसक या निकल जाना**–भय या घबराहटसे खड़ा न रह सकना, बदहवास हो जाना। **–का पैबंद होना**–दफन होना, मरना। **–चूमना**–इस तरह गिरना कि मुँह-नाक जमीनसे लग जाय; जमीनसे माथा टेककर (राजा, बादशाह आदिको) प्रणाम करना, जमींबोसी। **–दिखाना**–पटकना, गिराना। **–नापना**–अधिक यात्रा करना; बेकार फिरते रहना। **–पकड़ना**–जमकर बैठ जाना; (कुश्तीमें) चित न होना। **–पर आना**–गिरना, (कुश्तीमें) नीचे आना। **–पर पाँव न पड़ना या न रखना**–बहुत गर्व होना, बहुत इतराना। **–में गड़ जाना**–अत्यंत लज्जित होना, लज्जासे सिर न उठा सकना।

जमुकना*–अ० क्रि० पास आना, होना।

जमुना–स्त्री० यमुना नदी।

जमुनियाँ†–वि० जामुनके रंगका। पु० जामुनका रंग।

जमुहाना*–अ० क्रि० जम्हाई लेना।

जमूरक*–पु० पुराने समयकी एक तोप जो घोड़े या ऊँटपर चलती थी।

जमूरा–पु० दे० 'जमूरक'।

जमैयत–स्त्री० [अ०] इकट्ठा होना; समुदाय; सभा।

जमोगना†–स० क्रि० हिसाबकी जाँच कराना; मूल धनमें सूद जोड़ना; अपनी कोई जिम्मेदारी दूसरेको सौंपना और उससे इसकी हामी भरा लेना; किसीकी बातकी पुष्टि या तसदीक करना।

जमोगवाना†–स० क्रि० जमोगनेका काम दूसरेसे कराना।

जम्हाई–स्त्री० ऊँघ, ऊब, आलस्य आदिसे होनेवाली शरीरकी एक सहज क्रिया जिसमें मुँह पूरा खुल जाता और साँस जोरसे अंदर खिंचकर फिर धीरे-धीरे बाहर निकलती है, उबासी।

जम्हाना–अ० क्रि० जम्हाई लेना।

जयंत–पु० [सं०] इंद्रका पुत्र; शिव; विष्णु; चंद्रमा; कार्त्तिकेय। वि० विजयी; बहुरुपिया।

जयंती–स्त्री० [सं०] पताका; इंद्रकी कन्या, जयंतकी बहन; दुर्गा; पार्वती; भाद्र-कृष्णा अष्टमीको आधी रातको रोहिणी नक्षत्र होनेसे पड़नेवाला एक योग (कृष्णका जन्म इसी योगमें हुआ था); किसी व्यक्ति या संस्थाकी जन्मतिथिका उत्सव।

जय–स्त्री० [सं०] शत्रु या विपक्षीको हराना, पछाड़ना, जीत; वशमें करना, निग्रह (इंद्रियजय); दूसरोंसे बढ़ जाना। पु० विष्णुके दो द्वारपालों (जय, विजय) मेंसे एक; युधिष्ठिरका अज्ञातवासके समयका नाम। **–कार**–पु० जयध्वनि। **–गोपाल**–पु० हिंदुओंमें प्रचलित एक प्रकारका अभिवादन। **–घोष**–पु० जयध्वनि। **–जयकार**–पु० जयघोष; जयप्राप्तिका आशीर्वाद। **–जीव***–पु० एक तरहका प्राचीन अभिवादन। **–देव**–पु० गीतगोविंदके रचयिता प्रसिद्ध बंगीय कवि। **–ध्वनि**–स्त्री० जयघोष। **–पत***–पु० दे० 'जयपत्र'। **–पत्र**–पु० पराजित राजा आदिका वह लेख जिसमें वह अपनी पराजय स्वीकार करे; मुकदमेमें जीतनेवाले पक्षको मिलनेवाला जयसूचक पत्र, डिगरी। **–पराजय**–स्त्री० जीत-हार। **–पाल**–पु० जमालगोटा; विष्णु। **–माल**–स्त्री० [हिं०] दे० 'जयमाला'। **–माला**–स्त्री० विजेताको पहनायी जानेवाली जयसूचक माला; वह माला जो स्वयंवरा कन्या मनोनीत वरके गलेमें डाले (हिं०)। **–लक्ष्मी**–स्त्री० जयश्री। **–श्री**–स्त्री० विजयकी अधिष्ठात्री देवी; विजय; एक रागिनी। **–स्तंभ**–पु० देशविजयके स्मारक रूपमें संस्थापित स्तंभ। **मु०–मनाना**–(किसीकी) विजय या कल्याणकी कामना करना।

जयद्रथ–पु० [सं०] सिंधु-सौवीरका राजा (दुर्योधनका बहनोई) जिसने चक्रव्यूहमें फँसे अभिमन्युका वध किया।

जयना*–स० क्रि० विजय प्राप्त करना।

जया–स्त्री० [सं०] दुर्गा; दुर्गाकी एक सहचरी; पताका; हरी दूब; शमी; जैंत; हड़; भाँग; अड़हुलका फूल। * वि०

स्त्री० जय दिलानेवाली ।

जयिष्णु–वि० [सं०] जयशील; सदा जीतनेवाला ।

जयी (यिन्)–वि० [सं०] जीतनेवाला, जयशील ।

जयोल्लास–पु० [सं०] विजयका उल्लास, जीतकी खुशी ।

जर–वि० [सं०] वृद्ध; क्षीण । पु० जरा; विनाश; * जल; ज्वर; दे० 'ज़र' । * स्त्री० जड़; हैसियत, औकात । **–वारा***–वि० पैसेवाला, धनी ।

ज़र–पु० [फा०] सोना; धन, दौलत । **–अस्ल**–पु० मूल धन । **–कश**–पु० कलावत्तूके तार खींचनेवाला । वि० (कपड़ा) जिसपर जरी या कलावत्तूका काम हो । **–कस,–कसी***–वि० दे० 'ज़रकश' । **–ख़रीद**–वि० रुपया देकर खरीदा हुआ, क्रीत (गुलाम, जमीन); जिसपर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त हो । **–ख़ेज़**–वि० उपजाऊ (–जमीन) । **–तार**–वि० जिसपर जरीका काम हो । पु० जरी । **–तारी**–वि० दे० 'जरतार' । स्त्री० जरीका काम । **–दार**–वि० धनी, मालदार । **–दोज़ी**–स्त्री० कलावत्तू या सलमे-सितारेका काम । **–बाफ़ी**–वि० कलावत्तूके कामका । स्त्री० जरदोजी ।

जरई–स्त्री० धान, जौ आदिका भिगोकर या मिट्टीमें गाड़कर उगाया हुआ अँखुआ; धानके अँखुआये हुए बीज ।

जरकटी–पु० एक शिकारी पक्षी ।

जरछार–वि० जो जलकर राख हो गया हो ।

जरजर–वि० दे० 'जर्जर' ।

जरठ–वि० [सं०] कठोर, कर्कश; बूढ़ा; जीर्ण; झुका हुआ ।

जरठाई*–स्त्री० बुढ़ापा ।

ज़रतुश्त–पु० प्राचीन पारसी धर्मके प्रवर्तक और जंद-अवेस्ताके रचयिता ।

जरत्–वि०[सं०] बूढ़ा; जीर्ण । पु० बूढ़ा आदमी । **–कारु**–पु० एक मुनि जिन्होंने वासुकि नागकी बहन मनसा देवीसे ब्याह किया था ।

जरद–वि० दे० 'ज़र्द' ।

ज़रदा–पु० [फा०] केसर देकर पकाये हुए मीठे चावल; पानके साथ खानेके लिए विशेप विधिसे बनायी हुई सुगंधित सुरती; पीले रंगका घोड़ा; पीली आँखोंवाला कबूतर । **–फ़रोश**–पु० जरदा बेचनेवाला ।

जरदी–स्त्री० दे० 'ज़र्दी' ।

जरन*–स्त्री० दे० 'जलन' ।

जरना*–अ० क्रि० दे० 'जलना' । स०क्रि० दे० 'जड़ना' ।

जरनि*–स्त्री० दे० 'जलन' ।

ज़रब–स्त्री० [अ०] चोट; मार, आघात; थाप; ठप्पा; गुणा (ग०); तोपका दगना, बाढ़ । **–ख़ाना**–पु० टकसाल ।

जरबीला*–वि० भड़कीला, चमक-दमकवाला ।

जरमन–वि० [अं०] जरमनीका । पु० जरमनीका निवासी । स्त्री० जरमनीकी भापा । **–सिलवर**–पु० जस्ते, ताँबे और निकलकी मिलावटसे बनी एक धातु ।

जरा–स्त्री० [सं०] बुढ़ापा; बुढ़ापेसे पैदा हुई कमजोरी । **–ग्रस्त**–वि० बूढ़ा । **–जीर्ण**–वि० बुढ़ापेसे जिसके अंग और इंद्रियाँ शिथिल हो गयी हों । **–संध,–सुत**–पु० मगधका राजा जो कंसका ससुर था और युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय भीमके हाथों मारा गया ।

ज़रा–वि० [अ०] थोड़ा, तनिक । अ० तनिक, थोड़ी देरके लिए ।

जराउ*–वि० दे० 'जड़ाऊ' ।

जरातुर–वि० [सं०] जराग्रस्त, बूढ़ा ।

जराना*–स० क्रि० जलाना; ईर्ष्या उत्पन्न करना । ।

ज़राफत–स्त्री० [अ०] हँसोड़पन; हँसी-मजाक । **–पसंद**–वि० परिहास-प्रिय, हँसोड़ ।

ज़राफ़ा–पु० [अ०] दे० 'ज़िराफा' ।

जराय, जराव*–वि० जड़ाऊ । पु० पच्चीकारी ।

जरायम-पेशा–वि० अपराध करनेवाला, जुर्म करनेवाला ।

जरायु–पु० [सं०] वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा माँके गर्भसे बाहर आता है, खेड़ी; गर्भाशय । **–ज**–पु० वह प्राणी जो खेड़ीमें लिपटा हुआ पैदा हो या जिसका जन्म गर्भाशयमें हो, पिंडज । **–मूल**–पु० (प्लेसेंटा) जरायुका वह ऊपरवाला हिस्सा जो गर्भाशयसे चिपटा रहता है और जा बच्चेका जन्म हो जानेके बाद बाहर निकलता है, पुरइन, अपरा ।

जरिया*–पु० दे० 'जड़िया' ।

ज़रिया–पु० दे० 'ज़रीया' ।

जरी*–स्त्री० दे० 'जड़ी' ।

ज़री–स्त्री० [फा०] चाँदीका तार जिसपर सोनेका पानी चढ़ाया गया हो; ताश नामका कपड़ा । **–का काम**–कलावत्तू या सलमे-सितारेका काम ।

जरीब–स्त्री० [अ०] लाठी, डंडा; जमीन नापनेकी जंजीर जो ५५ या ६० गजकी होती है ।

ज़रीया–पु० [अ०] लगाव, वसीला; साधन ।

ज़रूर–वि० [अ०] आवश्यक, अवश्य-करणीय, जरूरी । अ० अवश्य, बेशक । **–ज़रूर**–अ० अवश्यमेव ।

ज़रूरत–स्त्री० [अ०] आवश्यकता, हाजत ।

ज़रूरतन्–अ० [अ०] आवश्यकतावश ।

ज़रूरियात–स्त्री० [अ०] किसी वस्तु या कार्यके लिए आवश्यक वस्तुएँ, क्रियाएँ । **मु०–से फ़ारिग़ होना**–शौचादिसे निवृत्त होना ।

ज़रूरी–वि० [अ०] आवश्यक, जिसके बिना काम न चले ।

जरौट*–वि० जड़ाऊ ।

ज़र्क़-बर्क़–वि० [अ०] चमक-दमकवाला, भड़कदार । स्त्री० चमक-दमक, ठाट-बाट ।

जर्जर–वि० [सं०] जीर्ण; टूटा-फूटा; क्षत; पीड़ित ।

जर्जरित–वि० [सं०] जो जीर्ण, जर्जर हो गया हो; अभिभूत ।

ज़र्द–वि० [फा०] पीला ।

ज़र्दा–पु० दे० 'ज़रदा' ।

ज़र्दी–स्त्री० [फा०] पीलापन ।

ज़र्रा–पु० [अ०] अणु, वह कण जो सूर्य-प्रकाशमें उड़ता दिखाई देता है, त्रसरेणु । **–ज़र्रा**–अ० तिल-तिल; कण-कण । **–भर**–वि० तिलभर, तनिकसा ।

जर्राह–पु० [अ०] चीर-फाड़, शल्यक्रिया करनेवाला ।

जर्राही–स्त्री० [अ०] चीर-फाड़का काम ।

जलंधर–पु० [सं०] एक असुर; एक ऋपि; †दे० 'जलोदर' ।

जल–पु० [सं०] पानी; खस; पूर्वापाढा नक्षत्र । **–कंटक**–पु० सिंघाड़ा; घड़ियाल । **–कंडु**–पु० बराबर भीगा

रहनेके कारण पाँवोंमें होनेवाली खुजली। **-कपि-**पु० सूँस, शिशुमार। **-कपोत-**पु० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया, जलपारावत। **-करंक-**पु० नारियल; कमल; जललता; बादल; शंख। **-कर-**पु० पानीका कर; जलसे मिलनेवाले पदार्थों(मछली,सिंघाड़े आदि)पर लगनेवाला महसूल। **-कल-**स्त्री० [हिं०] पानीका नल, पाइप।**-कल विभाग-**पु०म्युनिसिपलिटीका वह विभाग जो नगरका जलप्रबंध करे (वाटरवर्क्स)। **-कष्ट-**पु० पानीकी कमी, जलाभाव। **-कांक्ष,-कांक्षी(क्षिन्)-**पु० हाथी। **-काक-**पु० जलकौआ। **-कुंतल-**पु० सिवार। **-कुंभी-**स्त्री० दे० 'कुंभी'। **-कुक्कुट-**पु० मुरगाबी। **-केलि-**स्त्री० जलक्रीडा। **-कौआ-**पु० [हिं०] एक जलपक्षी जिसकी सारी देह काली और गरदन सफेद होती है। **-क्रिया-**स्त्री० तर्पण! **-क्रीडा-**स्त्री० नदी, तालाब आदिमें स्त्रियोंका परस्पर या नायक-नायिकाका एक दूसरेपर पानीके छींटे फेंकना, जलकेलि; क्रीडाके लिए पानीमें तैरना आदि। **-खर†-**पु० गाँवकी जमीनका जलभाग, ताल-तालाब आदि। **-घड़ी-**स्त्री० [हिं०] कालज्ञानका एक साधन, पानीपर तैरता हुआ कटोरा जिसके पेंदेमें छेद होता है और जो ठीक एक घड़ीपर पानीके बोझसे डूब जाता है। **-चर-**पु० जलमें रहनेवाला प्राणी, जलजंतु। **-चरी-**स्त्री० मछली। **-चादर-**स्त्री० [हिं०] पानीकी चादर, ऊँचाईसे गिरनेवाली पानीकी काफी चौड़ी धार। **-चारी(रिन्)-**पु० जलचर; मछली। **-जंतु-**पु० जलमें रहनेवाला जीव, जलचर। **-जंतुका-**स्त्री० जोंक। **-ज-**पु० कमल; शंख; मछली; सिवार; जलबेंत; समुद्रलवण; चंद्रमा; कुचला। वि० जलमें उत्पन्न। **-जन-**पु० (हाइड्रोजन) एक गंधहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस (वायव्य) जिससे पानीका निर्माण होता है (पानीमें इसका दो तिहाई अंश विद्यमान रहता है), उदजन। **-जन्म(न्)-**पु० कमल। **-जात-**वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल। **-जीवी(विन्)-**पु० मछुआ। **-डमरूमध्य-**पु० दो समुद्रों, खाड़ियों आदिको जोड़नेवाली जल-प्रणाली। **-तरंग-**पु० एक बाजा जिसमें पानीसे भरी कटोरियोंपर छड़ीसे आघात कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है। स्त्री० पानीकी लहर। **-त्रास-**पु० जलातंक रोग। **-थंभ-**पु० [हिं०] जलस्तंभन। **-थल-**पु० [हिं०] जल और स्थल। **-द-**पु० बादल; कपूर; मोथा। वि० जल देनेवाला।**-द काल-**पु० वर्षाकाल। **-द क्षय-**पु० शरत्काल। **-दस्यु-**पु० समुद्री डाकू। **-दान-**पु० प्रेतकर्मके अंतर्गत मृत व्यक्तिको तिलांजलि देना, तर्पण। **-दुर्ग-**पु० नदी, झील आदिसे घिरा हुआ किला, जलवेष्टित दुर्ग। **-देव-**पु० पूर्वाषाढा नक्षत्र; वरुण। **-देवता-**पु० वरुण। **-धर-**पु० बादल; समुद्र; मोथा; तिनिशका वृक्ष।**-धर माला-**स्त्री० मेघपंक्ति; एक छंद। **-धरी-**स्त्री० जलहरी।**-धार*,-धारा-**स्त्री० जलका प्रवाह।**-धारी*-**पु० बादल।**-धि-**पु०समुद्र; चारकी संख्या। **-धिजा-**स्त्री० लक्ष्मी। **-धेनु-**स्त्री० दानके लिए पानीके घड़ेमें कल्पित गाय। **-निकास-योजना-**स्त्री० [हिं०] (ड्रेनेज स्कीम) दे० 'जलोत्सारणयोजना'। **-निधि-**पु० समुद्र; चारकी संख्या। **-निर्गम-**पु० पानीका निकास, जलपथ। **-पक्षी(क्षिन्)-**पु० पानीके किनारे रहनेवाला, मछलियाँ आदि खानेवाला पक्षी। **-पटल-**पु० बादल। **-पति-**पु० समुद्र; वरुण; पूर्वाषाढा नक्षत्र। **-पथ-**पु० जलमार्ग; नहर आदि; पानीका रास्ता। **-पद्धति-**स्त्री० नाला। **-पाटल*-**पु० काजल। **-पात्र-**पु० पानी पीने या रखनेका बरतन।**-पान-**पु० कलेवा, नाश्ता।**-पान गृह-**पु० वह स्थान जहाँ जलपानका सामान (चाय, मिठाई आदि) मिले; जहाँ जलपान किया जा सके (रेस्तराँ)। **-पारावत-**पु० जलकपोत। **-पुष्प-**पु० पानीमें होनेवाला फूल (कमल, कुईं इ०)। **-प्रणाली-**स्त्री० (वाटर चैनल) दो समुद्रोंके बीचमें पड़नेवाला लंबासा जलमार्ग जो जलडमरुमध्यसे अधिक चौड़ा हो। **-प्रदान-**पु० प्रेतादिके लिए जलदान, तर्पण। **-प्रपा-**स्त्री० पौसरा, प्याऊ। **-प्रपात-**पु० झरना; किसी नदी-नालेका पहाड़के ऊपरसे नीचे गिरना। **-प्रलय-**पु० संपूर्ण सृष्टिका जलमग्न हो जाना। **-प्रवाह-**पु० पानीका बहाव; पानीकी धारा; शवको नदी आदिमें बहा देना। **-प्रस्फोट-**पु० (डेप्थचार्ज) पानीमें फूटनेवाला प्रस्फोट (बम) जो किसी पनडुब्बीपर या उसके निकट गिराया जाता है।**-प्रांगण-**पु० (टेरिटोरियल वाटर्स) दे० 'जलीय क्षेत्र'। **-प्रांत-**पु० नदी, झील आदिके पासकी जमीन। **-प्राय-**पु० जलबहुल प्रदेश। वि० जहाँ जल अधिक हो। **-प्रिय-**पु० चातक; मछली।**-प्रेत-**पु० वह प्रेत जो (किसीके) जलमें डूबकर मरनेके कारण प्रेतयोनिको प्राप्त करे। **-प्लावन-**पु० जलप्रलय; बाढ़। **-फल-**पु० सिंघाड़ा।**-बिंब-**पु० बुलबुला। **-बिडाल-**पु० ऊदबिलाव। **-बुद्बुद-**पु० बुलबुला। **-भँवरा-**पु० [हिं०] पानीपर तैरनेवाला एक कीड़ा, भौंतुआ। **-भाजन-**पु० जलपात्र। **-भीति-**स्त्री० जलातंक रोग। **-भृत्-**पु० बादल; पानी रखनेका बरतन, घड़ा आदि। **-मग्न-**वि० पानीमें डूबा हुआ। **-मातंग-**पु० जलहस्ती।**-मानुष-**पु० एक कल्पित(?) प्राणी जिसकी नाभिसे नीचेकी देह मछलीकी और ऊपरकी मनुष्यकी मानी जाती है, 'परीरू'।**-मार्ग-**पु० जलपथ, जलप्रणाली।**-मार्जार-**पु० ऊदबिलाव।**-मुक्(च्)-**पु० बादल; एक प्रकारका कपूर। **-यंत्र-**पु० फुहारा; कुएँ आदिसे पानी निकालनेका यंत्र (रहट आदि); जलघड़ी। **-यंत्र गृह,-यंत्र मंदिर-**पु० वह मकान जिसमें या जिसके आस-पास फुहारे हों; वह मकान जिसके चारों ओर पानी हो। **-यात्रा-**स्त्री० जलमार्गसे नाव आदिके द्वारा यात्रा; तीर्थजल लानेके लिए यजमानकी सविधि यात्रा। **-यान-**पु० जहाज, नाव।**-युद्ध-**पु० पानीके ऊपर होनेवाला युद्ध, जहाजी लड़ाई।**-रंग-**पु० (वाटर-कलर) दे० 'जलीय रंग'।**-राक्षसी-**स्त्री० लवण-समुद्रमें रहनेवाली सिहिका नामकी राक्षसी। **-राशि-**स्त्री० पानीका बहुत बड़ा ढेर; स्थानविशेषपर संचित अत्यधिक जल। पु० समुद्र। **-रुह-**पु० कमल। **-वायस-**पु० कौड़िल्ला नामकी चिड़िया। **-वाह-**पु० बादल; जल-

वाहक । **–वाहक**–पु० पानी ढोनेवाला । **–वेत(स्)**–पु० जलबेंत । **–व्याल**–पु० पानीमें रहनेवाला साँप, डेंड़हा । **–शयन,–शायी (यिन्)**–पु० विष्णु; नारायण । वि० पानीपर सोनेवाला । **–शूकर**–पु० घड़ियाल । **–संस्कार**–पु० स्नान; शवका जलप्रवाह । **–समाधि**–स्त्री० जलमें डूबकर प्राणत्याग; नदी, समुद्र आदिमें किसी चीजका डूबना या डुबाया जाना । **–सर्पिणी**–स्त्री० जोंक । **–सिक्त**–वि० जलसे सींचा हुआ, तर । **–सुत**–पु० कमल; मोती । **–सेक,–सेचन**–पु० पानी छिड़कना; सींचना, तर करना । **–सेना**–स्त्री० जंगी जहाजोंका बेड़ा; जंगी जहाजोंपरसे जलमें लड़नेवाली सेना, नौसेना । **–सेनापति**–पु० जलसेनाका सबसे बड़ा अफसर, नौसेनाध्यक्ष (एडमिरल) । **–स्तंभ**–पु० जलस्तंभन; जलस्तंभन करनेवाला मंत्र; समुद्र, झील आदिमें बादलोंका खंभेके आकारमें झुक आना । **–स्तंभन**–पु० मंत्रबलसे पानीको बाँध देना, उसकी गति अवरुद्ध कर देना । **–स्थल**–पु० जल और स्थल, तरी और खुश्की । **–स्रोत**–पु० पानीका सोता; जलप्रवाह । **–हर***–वि० जलमय । पु० जलाशय –'वे जलहर, हम मीन बापुरी'–सू० । **–हरण**–पु० पानी ढोना; एक मात्रावृत्त । **–हरी**–स्त्री० [हिं०] शिवलिंग स्थापित करनेका अर्घा; गर्मीके दिनोंमें शिवलिंगके ऊपर लटकाया जानेवाला (जलपूर्ण) घड़ा जिसके पेंदेमें एक छेद होता है । **–हस्ती (स्तिन्)**–पु० सीलकी जातिका एक स्तनपायी जलजंतु जिसकी शकल हाथीसे थोड़ी-बहुत मिलती है; सिंधुघोटक । **मु०–थल एक होना**–चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देना, घोर वृष्टि होना ।

ज़लज़ला–पु० [अ०] भूकंप, भूडोल ।

जलदागम–पु० [सं०] वर्षाकाल ।

जलन–स्त्री० जलनेकी पीडा, दाह; द्वेष; मनस्ताप ।

जलना–अ० क्रि० किसी चीजका आग पकड़ना, अग्निसंयोगसे ज्योति या ज्वालाका रूप प्राप्त करना, बलना, धधकना; भस्म होना; दग्ध होना, झुलसना; सूखना; ईर्ष्या-द्वेप आदिसे कुढ़ना, संतप्त होना । **मु०–जलकर, जल-भुनकर कबाब, कोयला, खाक या राख होना**–बहुत क्रुद्ध होना, आग-बबूला होना । **जल भुनना**–जलना, कुढ़ना । **जल मरना**–डाहसे बुरी तरह कुढ़ना, जलना; जलकर मर जाना, आत्मघात करना । **जलती आगमें कूदना**–जान-बूझकर विपतमें फँसानेवाला काम करना । **जलती आगमें घी (तेल) डालना**–झगड़ा बढ़ाना, ऐसी बात करना जिससे क्रुद्धका क्रोध और बढ़ जाय । **जला-बला, –भुना**–क्रोधमें उबलता हुआ, बहुत क्रुद्ध । **जली-कटी**–गुस्से या जलनसे भरी हुई बातें, तीखे व्यंग्य (सुनाना) । **जलेपर नमक छिड़कना**–जलेको जलाना; दुखियाको और दुःख देना । **जले फफोले फोड़ना**–भड़ास निकालना ।

जलपना*–अ० क्रि० डींग मारना । स० क्रि० डींग मारते हुए कहना; पुनः-पुनः कहना । स्त्री० डींग; व्यर्थकी बात ।

जलमय–वि० [सं०] पानीसे भरा हुआ, जलप्लावित; जलनिर्मित । पु० चंद्रमा ।

जलसा–पु० [अ०] बैठक; अधिवेशन; सभा; महफिल ।

जलांजलि–स्त्री० [सं०] अंजलीभर पानी; प्रेत या पितरोंकी तृप्तिके लिए किया जानेवाला जलदान, तर्पण ।

जलाक*–स्त्री० लू; पेटकी ज्वाला ।

जलाका–स्त्री० [सं०] जोंक; * दे० 'जलाक' ।

जलाजल–पु० गोट आदिकी झालर । वि० जलमय ।

जलातंक–पु० [सं०] पागल कुत्ते, पागल स्यार आदिके काटे हुएको होनेवाला एक तरहका उन्माद रोग जिसमें वह पानी देखकर डरता है (हाइड्रोफोबिया) ।

जलाधिप–पु० [सं०] वरुण; वह ग्रह जो संवत्सरविशेषमें जलका स्वामी हो ।

जलाना–स० क्रि० जलनेका कारण होना, किसी चीजको आग पकड़ाना, बालना, आग लगाना; गरमी या आँच पहुँचाकर सुखाना; झुलसाना; सताना, व्यथित, संतप्त करना । **मु० जला-जलाकर मारना**–बहुत सताना, घुला-घुलाकर मारना ।

जलापा–पु० डाहकी जलन ।

जलाभ्यंतरवाहिनी नौका–स्त्री० [सं०] (सबमैरीन) एक तरहका रणपोत जो पानीकी सतहके नीचे डुबकी लगाकर भी अपना काम जारी रख सके और जो टारपीडो-गोलों, तोपों आदिसे सज्जित हो, पनडुब्बी, डुबकनी ।

जलायुका–स्त्री० [सं०] जोंक ।

जलार्क–पु० [सं०] जलमें प्रतिबिंबित सूर्य ।

जलार्णव–पु० [सं०] जलसमुद्र; वर्षाकाल)

जलार्द्र–वि० [सं०] पानीसे भींगा हुआ, गीला ।

जलाल–पु० [अ०] तेज; महत्ता, गौरव; रोब; ताकत ।

जलालुका, जलालोका–स्त्री० [सं०] जोंक ।

जलावतन–पु० [अ०] निर्वासन, देसनिकाला ।

जलावन–पु० जलानेके काममें आनेवाली चीजें, ईंधन ।

जलावर्त्त–पु० [सं०] भँवर ।

जलाशय–पु० [सं०] झील, तालाब, जलाधार; मछली; समुद्र; खस; सिंघाड़ा । वि० जलमें रहनेवाला; मूर्ख ।

जलाहल–वि० जलमय ।

जलीय क्षेत्र–पु० [सं०] (टेरिटोरियल वाटर्स) किसी देशके किनारेके आस-पासका समुद्र जिसपर उसकी सत्ता हो ।

जलीय रंग–पु० [सं०] (वाटर कलर) पानी मिलाकर तैयार किया गया रंग ।

ज़लील–वि० [अ०] अपमानित; शर्मिंदा ।

जलुका, जलूका–स्त्री० [सं०] दे० 'जलौका' ।

जलूस–पु० दे० 'जुलूस' ।

जलेंद्र–पु० [सं०] वरुण; शिव; समुद्र ।

जलेबा–पु० बड़ी जलेबी ।

जलेबी–स्त्री० कुंडली; कुंडलीके आकारकी एक मिठाई; एक पौधा; एक आतिशबाजी ।

जलेश, जलेश्वर–पु० [सं०] वरुण; समुद्र ।

जलेशय–पु० [सं०] जलशायी, विष्णु; मत्स्य ।

जलोढ भूमि–स्त्री० [सं०] (एल्यूवियल सॉइल) बाढ़ आदिके द्वारा वहन कर लायी गयी भूमि, पूर द्वारा आनीत भूमि, कछारी भूमि ।

जलोत्तोलनयंत्र, जलोद्वहनयंत्र–पु० [सं०] (वाटर पंप) पानी नीचेसे ऊपर खींचकर बाहर निकालनेवाला यंत्र ।

जलोत्सारणयोजना–स्त्री० [सं०] (ड्रेनेज स्कीम) नालियाँ

आदि बनाकर नगरका गंदा पानी बाहर निकालनेकी योजना, जलनिकासयोजना।

जलोदर–पु० [सं०] एक रोग जिसमें पेटकी त्वचाके नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है।

जलौका(कस्)–स्त्री० [सं०] जोंक।

जल्द–वि० [अ०] तेज, फुरतीला; चालाक। अ० झटपट, शीघ्र। **–बाज़**–वि० उतावला, जल्दी मचानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० उतावलापन।

जल्दी–स्त्री० तेजी, शीघ्रता, उतावलापन। † अ० जल्द।

जल्प–पु० [सं०] कथन; वकवाद; तर्क; वहस।

जल्पक, जल्पाक–वि० [सं०] वातूनी, वाचाल।

जल्पन–पु० [सं०] कथन; वकवास; वकवाद करना; डींग।

जल्पना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'जलपना'। स्त्री०[सं०] दे० 'जल्पन'।

जल्पित–वि० [सं०] कथित; डींगके रूपमें कहा हुआ।

जल्लाद–पु० [अ०] राजाज्ञासे दंडित जनकी गरदन मारनेवाला या उसे फाँसी चढ़ानेवाला, वधिक। वि० निर्दय, वेरहम।

जव–वि० [सं०] वेगवान्। पु० वेग; † जौ।

जवन–पु० दे० 'यवन'।

जवनिका–स्त्री० [सं०] पर्दा; कनात; पाल।

जवनी–स्त्री० दे० 'यवनी'; दे० 'जवनिका'।

जवाँमर्द–पु० [फ़ा०] वहादुर, वीर, मर्दाना।

जवाँमर्दी–स्त्री० [फ़ा०] वहादुरी, मर्दानगी।

जवा–पु० लहसुनका एक दाना; एक तरहकी सिलाई। स्त्री० [सं०] अड़हुल, जपा। **–कुसुम**–पु० अड़हुलका फूल।

जवाई†–स्त्री० जानेकी क्रिया या भाव, गमन।

जवाखार–पु० जौके पौधेको जलाकर निकाला जानेवाला खार।

जवान–वि० [फ़ा०] युवा, तरुण; वीर; वलवान्। पु० युवा पुरुष; सिपाही; योद्धा।

जवानी–स्त्री० [फ़ा०] युवावस्था, यौवन; जवानीका जोश, मस्ती; सुंदरता। **–की नींद**–गहरी, वेफिक्रीकी नींद। **मु०–चढ़ना**–जवानी आना, मस्तीपर होना। **–ढलना**–जवानीसे बुढ़ापेकी ओर बढ़ना, गतयौवन होना। **–फटी पड़ना**–जवानीका खिल उठना।

जवाब–पु० [फ़ा०] प्रश्नका उत्तर; सवालका हल; पत्र लिखनेवालेको लिखा गया पत्र; प्रत्यभिवादन; दावे या अभियोगके उत्तररूपमें कही गयी बात, प्रतिवाद; वचाव; वदलेमें किया हुआ काम; जोड़, बराबरी करनेवाली चीज; नौकरीसे अलग किये जानेकी सूचना; इनकार, नाहीं। **–तलब**–वि० पूछने, जवाब माँगने लायक। **–तलबी**–स्त्री० जवाब माँगा जाना। **–दावा**–पु० दावेका जवाब, प्रतिवादीका उत्तर। **–देह**–वि० (वह आदमी) जिससे किसी बातका जवाब माँगा जा सके, उत्तरदायी; जिम्मेदार। **–देही**–स्त्री० (दावेका) जवाब देना, लगाना; उत्तरदायित्व; जिम्मेदारी। **–सवाल**–पु० प्रश्नोत्तर; बहस। **मु०–तलब करना**–(किसी बातका) कारण पूछना, कैफियत तलब करना। **–देना**–नौकरीसे अलग करना; इनकार करना; छोड़ना, अलग होना; वेकार होना।

जवाबी–वि० [फ़ा०] उत्तररूपमें, बदलनेमें किया हुआ; जिसका जवाब तुरत माँगा गया हो। **–कार्ड**–पु० जुड़े हुए दो कार्ड जिनमेंसे एक जवाबके लिए भेजा जाता है। **–तार**–पु० वह तार जिसके जवाबका खर्च भेजनेवाला पहले ही जमा कर दे।

जवार–† स्त्री० दे० 'जुआर'। * पु० दे० 'जवाल'।

जवारा–पु० जौके अंकुर जिन्हें ब्राह्मण दसहरेके दिन यजमानोंके कानपर रखते हैं, जरई।

जवाल†–पु० झंझट, जंजाल।

ज़वाल–पु० [अ०] ह्रास, घटाव, अवनति।

जवास–पु० दे० 'जवासा'।

जवासा–पु० एक कँटीला क्षुप जो वरसातमें पत्रहीन हो जाता और शरद् ऋतुमें फिर पनपता है, यवासक।

जवाहर–पु० दे० 'जवाहिर'।

जवाहिर–पु० [अ०] रत्न, मणि ('जौहर'का बहु०, पर प्रायः एकवचनमें प्रयुक्त)। **–ख़ाना**–पु० रत्नाभूषण रखनेका स्थान, तोशाखाना।

जवाहिरात–पु० [अ०] कई प्रकारके रत्न-मणि।

जवी(विन्)–वि० [सं०] वेगवान्।

जवैया†–पु० जानेवाला।

जशन–पु० दे० 'जश्न'।

जश्न–पु० [फ़ा०] उत्सव, खुशीका जलसा; गाना-बजाना।

जस–†पु० दे० 'यश'। * अ० जैसा।

जसोदा*–स्त्री० दे० 'यशोदा'।

जसोमति, जसोवै*–स्त्री० दे० 'यशोदा'।

जस्त–पु० दे० 'जस्ता'। स्त्री० [फ़ा०] छलाँग, चौकड़ी।

जस्तई–वि० जस्तेके रंगका, खाकी। पु० जस्तेका रंग।

जस्ता–पु० खाकी रंगकी एक धातु जिसे ताँबेके साथ मिलानेसे पीतल बनता है; दे० 'दस्ता'।

जहँ*–अ० दे० 'जहाँ'।

जहँड़ना*–अ० क्रि० दे० 'जहँड़ाना'।

जहँड़ाना–अ० क्रि० ठगाना, गँवाना; हानि उठाना।

जहतिया*–पु० जकात-कर, लगान-वसूल करनेवाला।

जहत्स्वार्था–स्त्री० [सं०] लक्षणाका एक भेद जिसमें पद या वाक्य वाच्यार्थका त्याग कर उससे संबद्ध दूसरा अर्थ प्रकट करता है।

जहदना–अ० क्रि० कीचड़ होना; थक जाना।

जहदा*–पु० दलदल।

जहद्दम*–पु० दे० 'जहन्नुम'।

जहना*–स० क्रि० छोड़ना; नाश करना।

जहन्नुम–पु० [अ०] गहरा कुआँ; नरक। **मु०–में जाना**–नष्ट होना, बरबाद होना।

जहन्नुमी–वि० [अ०] नरकमें जानेवाला, नारकीय।

ज़हमत–स्त्री० [अ०] कष्ट, तकलीफ; झंझट।

ज़हर–पु० [फ़ा०] वह चीज जो देहमें पहुँचकर मृत्युका कारण हो या स्वास्थ्यकी हानि करे, विष; स्वादमें अति कटु वस्तु; अति अप्रिय, असह्य बात। वि० अति हानिकर, घातक; अति कटु; अप्रिय। **–दार**–वि० जहरीला, विषयुक्त। **–बाद**–पु० एक जहरीला और कष्टसाध्य फोड़ा। **–मोहरा**–पु० एक तरहका पत्थर जिसमें साँपके

और कुछ दूसरे विषोंको भी सोख लेनेका गुण होता है। **मु०–उगलना**–लगनेवाली बात कहना, जली-कटी कहना। **–कर देना**–(खानेकी चीजको) इतना कड़वा, तीता कर देना कि निगला न जा सके; ऐसी कटु, कठोर या दुःखद बात कह देना कि भोजनका स्वाद-सुख जाता रहे। **–का घूँट**–अति अप्रिय, असह्य बात। **–का घूँट पीना,–का घूँट पीकर रह जाना**–विवशताके कारण गुस्सेको अंदर ही दबा रखना, असह्यको सह लेना। **–की पुड़िया**–भारी उपद्रवी, फसादी। **(किसी बात-पर)–खाना**–किसी बातसे खिन्न, दुःखी होकर आत्म-हत्याका यत्न करना। **–मारना**–जहरका असर दूर करना। **–में बुझाना**–तीर-तलवार आदिको आगमें लाल करके विषमिश्रित जलमें बुझाना जिससे उनसे घायल होनेवालेके शरीरमें विष प्रवेश कर जाय; बातको मर्मभेदी, असह्य बना देना। **–होना**–किसी विशेष खाद्य पदार्थ या भोजनका अखाद्य हो जाना, धोंटा, निगला न जा सकना।

जहरी, जहरीला–वि० जिसमें जहर हो, विषयुक्त।

जहल*–स्त्री० गरमी, ताप।

जहल्लक्षणा–स्त्री० [सं०] दे० 'जहत्स्वार्था'।

जहाँ–अ० जिस जगह, जिस स्थानपर। **–तहाँ**–अ० इधर-उधर; अनेक स्थानोंपर। **–का तहाँ**–जहाँ था वहीं, अपनी जगहपर।

जहाँ–पु० [फ़ा०] दे० 'जहान' (केवल समासमें व्यवहृत।) **–गर्द**–वि० घुमक्कड़, विश्वपर्यटक। **–गर्दी**–स्त्री० विश्व-भ्रमण। **–गीर**–वि० दुनियापर राज्य करनेवाला, विश्व-विजयी। पु० भारतका चौथा मुगल सम्राट्, अकबरका पुत्र। **–गीरी**–वि० जहाँगीरका, जहाँगीरसे संबद्ध। स्त्री० विश्वविजय; भूमंडलका राजत्व; कलाईपर पहनने-का एक जड़ाऊ गहना। **–दीदा**–वि० जो दुनिया देखे हो, अनुभवी। **–पनाह**–वि० दुनियाकी रक्षा करनेवाला, जगत्का आश्रयरूप। पु० बादशाह, सम्राट्।

जहाज़–पु० [अ०] बड़ी और समुद्रमें चलने या चल सकनेवाली नाव, जलयान; पोत। **–घाट**–पु० (वार्फ़) माल उतारने, चढ़ानेके लिए समुद्रतटके पास बनाया गया लकड़ी, पत्थर आदिका घाट। **–रानी**–स्त्री० जहाज चलाना; जहाज चलानेका काम।

जहाज़ी–वि० [अ०] जहाजका; जहाजसे होनेवाला (कार-बार)। पु० जहाजसे यात्रा करनेवाला; जहाजका खलासी। **–डाकू**–पु० जहाजोंपर डाके डालनेवाला, जलदस्यु।

जहान–पु० [फ़ा०] दुनिया, जगत्, लोक। **–आरा (जहानारा)**–वि० दुनियाको सजानेवाला, सृष्टिकी शोभा, शृंगार। **–आरा बेगम**–स्त्री० शाहजहाँकी बड़ी बेटी जो उसकी मृत्युतक उसके साथ कैदखानेमें रही।

जहालत–स्त्री० [अ०] अज्ञान, मूर्खता, जाहिलपन।

जहिया*–अ० जब।

जहीं*–अ० ज्योंही; जिसी स्थानपर, जहाँ ही।

ज़हूर–पु० दे० 'ज़ुहूर'।

जहेज़–पु० [अ०] वह धन जो कन्या (या वर) को विवाह-के समय उसके माँ-बापसे मिले, दहेज।

जह्नु–पु० [सं०] विष्णु; एक राजर्षि जिन्होंने, पौराणिक कथाके अनुसार, भगीरथके गंगा लाते समय उसे पी लिया और उनकी विनतीपर फिर कानकी राह निकाल दिया था। **–कन्या,–तनया**–स्त्री० गंगा।

जाँ–स्त्री० [फ़ा०] दे० 'जान' (समास भी)।

जाँउनि*–स्त्री० जामुन।

जाँगर†–पु० मटर, उरद आदिका वह डंठल जिससे दाना निकाल लिया गया हो; श्रमशक्ति, श्रमशीलता; पौरुष। **–चोर**–वि०, पु० जाँगर चोरानेवाला। **मु०–थकना**–शरीरका थकना, शिथिल होना; पौरुषका जवाब देना।

जाँगरा–पु० भाट, बंदी।

जांगल–वि० [सं०] जंगलका, जंगली। पु० वह प्रदेश जहाँ पानी कम बरसे, धूप-गरमी अधिक पड़ती हो।

जाँगलू–वि० दे० 'जंगली'।

जाँघ–स्त्री० पाँवका कमर और घुटनेके बीचका भाग, ऊरु।

जाँघिया–पु० एक तरहका लँगोट; घुटनोंतकका पाजामा।

जाँच–स्त्री० जाँचनेकी क्रिया, परख, परीक्षा, छान-बीन, तहकीकात। **–पड़ताल**–स्त्री० छान-बीन, तहकीकात।

जाँचक*–पु० दे० 'याचक'।

जाँचकता*–स्त्री० माँगनेका काम।

जाँचना–स० क्रि० किसी बातके सही-गलत, खरी-खोटी होनेका पता लगाना, परख करना; * दे० 'जाचना'।

जाँजर*–वि० जीर्ण, जर्जर।

जाँझ, जाँझा†–पु० जोरकी हवाके साथ होनेवाली वर्षा, तूफानी वर्षा।

जाँत, जाँता–पु० आटा पीसनेकी चक्की।

जांतव–वि० [सं०] जंतु-संबंधी; जंतुओंसे प्राप्त, उत्पन्न।

जाँपना*–स० क्रि० दबाना, चाँपना।

जांब*–पु० जामुनका फल।

जांबवंत–पु० दे० 'जांबवान्'।

जांबवती–स्त्री० [सं०] जांबवान्की कन्या जिसका विवाह कृष्णसे हुआ था; नागदमनी लता।

जांबवान्(वत्)–पु० [सं०] सुग्रीवका मंत्री जिससे लंका-विजयमें रामचंद्रको बहुत सहायता मिली।

जांबील–पु० [सं०] घुटनेके जोड़परकी गोल चिपटी हड्डी; जँबीरी नीबू।

जांबुक–वि० [सं०] शृगाल-संबंधी।

जांबुमाली(लिन्)–पु० [सं०] लंकाका एक राक्षस जो अशोकवाटिका उजाड़ते समय हनुमान्के हाथों मारा गया।

जांबुवान्(वत्)–पु० [सं०] दे० 'जांबवान्'।

जांबू*–पु० दे० 'जंबू'।

जाँवर*–पु० गमन, जाना।

जा–* सर्व० जिस। स्त्री० [सं०] जाति; देवरानी; माता; [फ़ा०] जगह, स्थान; मौका। वि० उचित, मुनासिब। **–नमाज़**–स्त्री० वह कपड़ा जिसे बिछाकर नमाज पढ़ते हैं, मुसल्ला। **–नशीन**–पु० किसीके स्थान, पदका अधिकारी; उत्तराधिकारी। **–बेजा**–वि० उचित-अनुचित, बुरा भला। अ० मौके-बेमौके, ठिकाने-बेठिकाने। (**–मार बैठना**, हाथ छोड़ देना।)

जाइ*–वि० वृथा, बेकार।

जाई–स्त्री० कन्या; चमेली।

जाक*–पु० यक्ष।

जाकड़–पु० नापसंद होनेपर लौटा देनेकी शर्तपर खरीदा हुआ सौदा (देना, लेना)। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें जाकड़ बिक्रीका ब्योरा या याददाश्त लिखी जाय।

जाखिनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

जाग–स्त्री० जागनेका भाव, जागरण; * जगह, स्थान। * पु० यज्ञ।

जागता–वि० जागता हुआ; अपनी शक्तिका परिचय देनेवाला, तेजस्वी, प्रकट, प्रत्यक्ष।

जागतिक–वि० [सं०] जगत्संबंधी, सांसारिक।

जागना–अ० क्रि० नींदका त्याग करना; जगा हुआ होना; फलदायक होना (भाग्य, नसीब); सजग होना; चेतना; सक्रिय, प्रबुद्ध होना, उठना; बढ़ना; चमकना; प्रदीप्त होना; * उभरना, प्रसिद्ध होना।

जागबलिक*–पु० दे० 'याज्ञवल्क्य'।

जागरण–पु० [सं०] जगना; जाग; जगा हुआ होना; भजन-कीर्तन आदि करते हुए रात बिताना, रतजगा।

जागरन*–पु० दे० 'जागरण'।

जागरित–वि० [सं०] जागता हुआ, जाग्रत्।

जागरूक–वि० [सं०] जागता हुआ; जागरणशील; स्वकर्तव्यके विषयमें सावधान।

जागरूपा–वि० जागता हुआ(देवता, तेज); प्रत्यक्ष, स्पष्ट।

जागर्ति–स्त्री० [सं०] जागरण।

जागा*–स्त्री० दे० 'जगह'।

जागी*–पु० बंदी, भाट।

जागीर–स्त्री० [फा०] वह जमीन जो राज्यकी ओरसे किसीको किसी विशेष सेवाके पुरस्काररूपमें दी गयी हो; वह जमीन जो गाँवके नाई, कहार, कुम्हार आदिको उनकी सेवाके बदलेमें बिना लगान जोतनेको दी गयी हो। **–ख़िदमती**–स्त्री० सेवा-विशेषके लिए दी हुई जागीर। **–दार**–पु० जिसे जागीर मिली हो; सरदार; सामंत। **–दारी**–स्त्री० जागीरदारका पद या जागीरदार होनेका भाव; रईसी।

जागीरी*–स्त्री० दे० 'जागीरदारी'।

जागृति–स्त्री० दे० 'जाग्रति'।

जाग्रति–स्त्री० जागरण, जाग्रत् होनेका भाव।

जाग्रत्–वि० [सं०] जागता हुआ; सजग, सावधान; प्रकाशमान। पु० वह अवस्था जिसमें जीव शब्द, स्पर्श आदि विषयोंको ग्रहण करे। **–स्वप्न**–पु० जागतेका सपना, कल्पनासृष्टि।

जाचक*–पु० दे० 'याचक'।

जाचकता*–स्त्री० याचकवृत्ति, भिखमंगी।

जाचना*–स० क्रि० माँगना; भीख माँगना।

जाजम–स्त्री० दे० 'जाज़िम'।

जाजरा*–वि० जीर्ण, जर्जर।

जाज़िम–स्त्री० [तु०] दरीके ऊपर बिछानेकी छपी चादर।

जाज्वल्यमान–वि० [सं०] प्रज्वलित; तेजोमंडित।

जाट–पु० पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, पंजाब, राजपूताना आदिमें बसनेवाली एक हिंदू जाति; उस जातिका जन।

जाटू–स्त्री० जाटोंकी बोली, बाँगड़ू।

जाठ–पु० कोल्हूकी कूँड़ीमें रहनेवाला लकड़ीका गोल चिकना बल्ला जिसके घूमनेसे पेरनेकी क्रिया होती है; तालाबके बीचमें गाड़ा हुआ बल्ला।

जाठर–वि० [सं०] जठर–पेट-संबंधी; जठरसे उत्पन्न।

जाठराग्नि–स्त्री० [सं०] जठराग्नि।

जाड़*–पु० दे० 'जाड्य'।

जाड़ा–पु० शीतकाल–हेमंत और शिशिर ऋतुएँ, सरदी, ठंड (पड़ना, लगना)। **मु०–खाना**–जाड़ेका कष्ट सहन करना।

जाड्य–पु० [सं०] जडता; निश्चेष्टता; मूर्खता; ठंढ।

जात–वि० [सं०] जनमा हुआ, जना हुआ; उत्पन्न; प्रकट, व्यक्त। पु० जन्म; बेटा; वर्ग; समूह; प्राणी। **–कर्म(न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० पुत्रजन्मके अवसरपर किया जानेवाला एक संस्कार। **–रूप**–वि० सुंदर। पु० सोना; धतूरा। **–वेदा(दस्)**–पु० अग्नि; सूर्य; चित्रक; परमेश्वर।

जात–स्त्री० दे० 'जाति'। **–पाँत**–स्त्री० बिरादरी।

ज़ात–स्त्री० [अ०] वस्तुतत्त्व, स्वरूप; स्वभाव; देह; व्यक्ति; व्यक्तित्व; प्रकार।

जातक–पु० [सं०] नवजात शिशु, बच्चा; भिक्षु; फलित ज्योतिषका वह अंग जिससे नवजात शिशुका शुभाशुभ कहा जाता है; जातकर्म; एक जैसी वस्तुओंका संग्रह; वह बौद्ध ग्रंथ जिसमें बुद्धके पूर्व जन्मोंकी कथाएँ लिखी हैं।

जातना, जातनाई*–स्त्री० दे० 'यातना'।

जाता–स्त्री० [सं०] लड़की।

जाति–स्त्री० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; वंश, गोत्र; जीवश्रेणी; कुल, वर्ण या योनिका भेद सूचित करनेवाला वर्ग; वर्ण; वंश, बनावट, देश-भेद आदिकी दृष्टिसे किया गया मानव-समाजका विभाग (रेस); हिंदुओंके विभिन्न वर्णोंके अंतर्गत परस्पर रोटी-बेटीका संबंध रखनेवाला और सामान्यतः एक ही धंधा करनेवाला जन्मकृत जनसमुदाय; वर्गविशेषके विभिन्न व्यक्तियोंमें पाया जानेवाला समान धर्म (न्या०); छोटा आँवला; चमेली; जावित्री; जायफल; स्वर-सप्तक। **–कोश, –कोष**–पु० जायफल। **–च्युत**–वि० स्वजातिसे अलग किया हुआ। **–पत्र, –पर्ण**–पु०, **–पत्री**–स्त्री० जावित्री। **–पाँति**–स्त्री० [हिं०] जाति-उपजाति, जाति-वर्ण। **–फल**–पु० जायफल। **–भ्रंश**–पु० जातिभ्रष्टता, जातिच्युति। **–भ्रष्ट**–वि० जातिच्युत। **–वाचक**–वि० जाति बतानेवाला (संज्ञा)। **–संकर**–पु० दो जातियोंका मिश्रण, दोगलापन। **–स्मर**–वि० जिसे अपने पूर्व जन्मका वृत्तांत याद हो। **–हीन**–वि० नीच जातिका; जातिच्युत।

जाती–स्त्री० [सं०] चमेली; मालती; छोटा आँवला; जायफल। **–कोश, –कोष, –फल**–पु० जायफल। **–पत्री**–स्त्री० जावित्री।

ज़ाती–वि० [अ०] व्यक्तिगत, निजी, अपना; वस्तुगत।

जातीय–वि० [सं०] जाति-संबंधी; जातिका।

जातीयता–स्त्री० [सं०] जातिविशेषसे संबद्ध होनेका भाव, कौमीयत; अपनी जातिका अभिमान; राष्ट्रीयता।

जातुधान*–पु० यातुधान, राक्षस।

जात्रा–स्त्री० दे० 'यात्रा'।

जात्री–पु० दे० 'यात्री'।

जाथका*–स्त्री० ढेर, राशि।

जादव*–पु० दे० 'यादव'। **–पति**–पु० कृष्ण।

जादसपति, जादसपती*–पु० वरुण।

जादा*–वि० दे० 'ज्यादा'।

जादू–पु० [फा०] टोना, जंतर-मंतर; वशीकरण; मोहनी; इंद्रजाल, नजरबंदी; हाथकी सफाईका काम, बाजीगरी। **–गर**–पु० जादू करनेवाला। **–गरी**–स्त्री० जादूका काम; जादू करनेकी विद्या। मु० **–उतरना**–जादूका असर दूर होना। **–चलना**–जादूका असर होना; बातोंका असर होना। **–वह जो सिरपर चढ़कर बोले**–उपाय वही अच्छा है जो सफल हो और विरोधीको भी मानना पड़े।

जादौ*–पु० दे० 'यादव'। **–राय**–पु० कृष्ण।

जान–पु०, स्त्री० जाननेका भाव, ज्ञान, जानकारी; समझ, खयाल। (इस शब्दका प्रयोग '…की जानमें' जैसे अव्ययपदमें या समासोंमें ही होता है। प्राचीन कविता और बोलचालमें प्रायः पुंलिंगमें ही प्रयोग मिलता है।) वि० ज्ञानवान्, सुजान। **–कार**–वि० जाननेवाला, अभिज्ञ, विज्ञ। **–कारी**–स्त्री० परिचय; अभिज्ञता, विज्ञता। **–पना**–पु०, **–पनी***–स्त्री० जानकारी; चतुराई। **–पहचान**–स्त्री० परिचय, भेंट-मुलाक़ात। **–मनि, –राय***–वि० ज्ञानियोंमें मणिरूप, ज्ञानिश्रेष्ठ, ज्ञानिराज।

जान*–स्त्री० जादू-टोना–'मेरे जान जानकी तू जानति है जान कछू'–कविप्रि०। पु० यान, वाहन; दे० 'जानु'।

जान–स्त्री० [फा०] प्राण, जीव; जीवन; बल, दम; सार; सत्त्व; किसी चीजमें जान डालनेवाली चीज; रस, शोभा आदिका आधारभूत गुण, तत्त्व (यही वाक्य सारे निबंधकी जान है); अति प्यारी वस्तु; प्रियजनका संबोधन। **–जोखिम, –जोखौं**–स्त्री० जान जानेका डर, जिंदगीका खतरा। **–दार**–वि० जिसमें जान हो, सजीव; हिम्मतवाला; जिसमें बल या ओज हो। पु० प्राणी। **–निसार**–वि० जान देनेवाला; जो किसीके लिए मरनेको तैयार हो; स्वामिभक्त। **–निसारी**–स्त्री० वफादारी, स्वामिभक्ति। **–बख़्शी**–स्त्री० प्राणदान; प्राणदंडके अपराधीको क्षमादान। **–बाज़**–वि० जानपर खेलनेवाला, वीर, साहसी। **–बाज़ी**–स्त्री० साहस, वीरता, जानको खतरेमें डालनेका भाव। **–बीमा**–पु० जिंदगीका बीमा। **–लेवा**–वि० जान लेनेपर तुला हुआ, जानी दुश्मन। **–व माल**–पु० प्राण और धन, धन-जन। **–वर**–पु० प्राणी; पशु, हैवान। वि० मूर्ख; उजड्ड। मु० **–आँखोंमें आ जाना**–आसन्नमरण होना। **–का गाहक**–जो जान लेनेपर आमादा हो, जानका वैरी। **–का नुक़सान**–प्राणहानि, किसी दुर्घटनामें मनुष्योंका मरना या मारा जाना। **–का रोग**–कष्ट देनेवाली वस्तु या व्यक्ति जिससे जल्दी पीछा न छूटे, भारी जंजाल। **–की ख़ैर**–प्राण-रक्षा; कुशल। **–की तरह रखना**–तनिक भी कष्ट न पहुँचने देना, सुख-सुपासका विशेष ध्यान रखना, बहुत सँभालकर रखना। **–की पड़ना**–जान बचानेकी चिंता होना, प्राणभय होना। **–के लाले पड़ना**–जान बचाना कठिन हो जाना, उबरनेकी आशा न रहना। **(किसीकी)–को रोना**–किसीसे, किसीके कारण पहुँचे हुए कष्ट, हानिको याद कर-करके कुढ़ना। **–खपाना**–(किसी काममें) बहुत श्रम करना, कष्ट उठाना। **–खाना**–किसी बातके लिए बार-बार कहकर, किसी बातकी याचना या तकाजेसे परेशान कर देना। **–खोना**–जान देना; किसी दुःखमें घुलना। **–चुराना**–दे० 'जी चुराना'। **–छुड़ाना**–छुटकारेका उपाय करना-कराना, पीछा छुड़ाना। **–छूटना**–छुटकारा मिलना। **–देना**–मरना; मरनेको तैयार होना। **(किसी चीजके लिए)–देना**–दाँतसे पकड़े रहना, व्यय या हानि सह न सकना। **(किसीपर)–देना**–किसीके कार्यसे खिन्न, रुष्ट होकर प्राणत्याग, आत्महत्या करना; किसीपर बहुत अनुरक्त, आसक्त होना। **–निकलना**–अति कष्ट होना; जान सूखना। **–निसार करना**–दूसरेके लिए मरना, प्राणोत्सर्ग करना। **–पड़ना**–प्राणसंचार होना; शक्ति आना; हरा-भरा होना। **–पर आ बनना**–जान जानेका डर होना, भारी संकटमें पड़ना। **–पर खेलना**–जानजोखोंका काम करना; साहस, वीरताका काम करना जिसमें जान जानेका डर हो। **–पर नौबत आना**–दे० 'जानपर आ बनना'। **–बचाना**–किसी अप्रिय या कष्टसाध्य कामसे कतराना, भागना, पीछा छुड़ाना। **–बची लाखों पाये**–मरनेसे बचे यही परम लाभ है। **–भारी होना**–जीना दुःखद हो जाना, जिंदगीसे ऊब जाना। **–में जान आना**–ढाढ़स बँधना, इतमीनान होना। **–में जान होना**–जिंदा होना (जबतक जानमें जान है)। **–लड़ाना**–जी-जानसे, जीतोड़ कोशिश करना। **–लबोंपर आना**–दे० 'जान होंठोंपर आना'। **–लेना**–वध करना; बहुत कष्ट देना; बहुत कड़ी मेहनत लेना। **–सूखना**–डरसे होश गुम हो जाना, सुन्न हो जाना। **–से गुज़र जाना, –से जाना**–मर जाना। **–से तंग आना, –से बेज़ार होना**–जीना असह्य हो जाना, जीनेसे ऊब जाना। **–से मारना**–मार डालना, कतल कर देना। **–से हाथ धोना**–जान गँवाना, मरना। **–है तो जहान है**–दुनियाका सब सुख जिंदगीके साथ है। **–होंठोंपर आना**–आसन्न-मरण होना; प्राणांतक कष्ट होना।

जानकी–स्त्री० [सं०] जनककी पुत्री, सीता। **–जानि** (जानकी है जाया जिनकी), **–जीवन, –नाथ, –रमण, –रवन*, –वल्लभ**–पु० रामचंद्र।

जाननहार*–पु० जाननेवाला।

जानना–स० क्रि० किसी वस्तु, व्यक्ति, घटनाका अभिज्ञ, जानकार होना; ज्ञाता होना, पहचानना, नाम-धामसे परिचित होना, अवगत होना। **जानकर**–जानते हुए, जान-बूझकर। मु० **जान पड़ना**–मालूम होना, दिखाई देना। **जान-बूझकर**–जानते-समझते हुए, सोच-समझकर। **जाने-अनजाने**–जानकर या बिना जाने।

जानपद–पु० [सं०] जनपदवासी, ग्रामवासी; जन, लोक; देश; जनपदसे प्राप्त कर आदि। वि० जनपद-संबंधी। **–सैन्य**–पु० (मिलीशिया) (युद्धकालमें) अपने नगर या आस-पासके स्थानोंमें उपद्रवादिका शमन करनेके लिए बनायी गयी नागरिकोंकी सेना।

जानहार*–वि० जानेवाला; नष्ट होनेवाला ।

जानहुँ*–अ० मानों, जानों ।

जाना–अ० क्रि० एकसे दूसरे स्थानपर पहुँचनेके लिए हरकत करना, गमन करना, रवाना होना; दूर होना; विदा होना; नष्ट होना; बीतना, गुजरना; खोना, नुकसान होना; बिगड़ना (हमारा क्या जाता है ?), हाथसे निकल जाना; बहना, जारी होना; मरना; (किसी बात, शब्दों आदिपर) विश्वास करना, ठीक मान लेना; * पैदा होना । * स० क्रि० जनना । मु० **जा धमकना**–एकाएक पहुँच जाना । **जा निकलना**–अचानक पहुँच जाना । **जाने देना**–छोड़ देना; माफ कर देना । **जा पड़ना**–अचानक जा पहुँचना । **जा लेना**–आगे जानेवालेके बराबर हो जाना; भागनेवालेको पकड़ लेना ।

जानि–स्त्री० [सं०] पत्नी, भार्या (केवल समासमें व्यवहृत–'जानकीजानि') । * वि० ज्ञानी ।

जानिब–स्त्री०[अ०] तरफ, दिशा ।–**दार**–वि० पक्षपाती, तरफदार ।–**दारी**–स्त्री० पक्षपात, तरफदारी ।

जानी–वि० [फा०] जानका; जानसे संबंध रखनेवाला; गहरा । वि०स्त्री० प्राणप्रिया, प्यारी ।–**दुश्मन**–पु० कट्टर शत्रु, जान लेनेको तैयार रहनेवाला शत्रु ।

जानु–अ० दे० 'जानो' । पु०[सं०] घुटना ।–**पाणि**–अ० घुटनों और हाथके पंजोंके बल, घुटरुवन ।–**पानि***–अ० दे० 'जानुपाणि' ।

ज़ानू–पु० [फा०] घुटना; जाँघ ।

जानो–अ० मानों, जैसे ।

जाप–पु० [सं०] जप; * जपमाला ।

जापक–वि० [सं०] जप करनेवाला ।

जापा–पु० सौरी ।

जापानी–वि० जापानका । पु० जापानवासी । स्त्री० जापानकी भाषा ।

जापी (**-पिन्**)–वि० [सं०] जप करनेवाला ।

ज़ाफ़रान–पु० [अ०] केसर ।

ज़ाफ़रानी–वि० [अ०] केसरिया, केसरके रंगका ।

जाबा–पु० बैलके मुँहपर पहनानेकी रस्सीकी जाली ।

ज़ाबिता–पु० [अ०] नियम, कायदा; दस्तूर, व्यवहार, विधि, पद्धति ।–(**तए**)**दीवानी**–पु० दीवानी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड ऑव सिविल प्रोसिडयोर) ।–(**तए**)**फ़ौजदारी**–पु० फौजदारी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड ऑव क्रिमिनल प्रोसिडयोर) ।

ज़ाब्ता–पु० दे० 'जाबिता' ।

जाम–पु० पहर, याम; जामुन; [फा०] प्याला; शराबका प्याला; खरासानका एक नगर ।–(**मे**)**जम,**–**जमशेद**–पु० ईरानके बादशाह जमशेदके लिए वैज्ञानिकोंका बनाया हुआ प्याला । कहते हैं कि इसमें देखनेसे भविष्यमें होनेवाली बातों या सारी दुनियामें होनेवाली बातोंका ज्ञान हो जाता था । –**सिहत**–पु० किसीकी स्वास्थ्य-कामनासे पिया जानेवाला शराबका प्याला । मु०–**चलना**–शराबका दौर चलना, प्यालेपर प्याला पीते जाना ।

जामदग्न्य–पु० [सं०] जमदग्निके पुत्र, परशुराम ।

जामदानी–स्त्री० [फा०] कपड़ा रखनेका संदूक (जामादानी); चमड़ेका संदूक; शीशे या अबरककी बनी संदूकची; एक महीन कपड़ा, बूटीदार अद्धी ।

जामन–पु० दूधको जमानेके लिए डाला जानेवाला दही या और कोई खट्टी चीज; जामुन ।

जामना*–अ० क्रि० दे० 'जमना' ।

जामनी–स्त्री० दे० 'यावनी' ।

जामवंत–पु० दे० 'जांबवान्' ।

जामा–पु० [फा०] कपड़ा, पहनावा; दूल्हेको पहनाया जानेवाला अँगरखा जिसका नीचेका घेरा पेशवाज जैसा होता है । –**दार**–पु० वह कर्मचारी जिसका काम कपड़ोंकी सँभाल हो । मु०–(**मे**)**से बाहर होना**–आपेमें न रहना, अति क्रुद्ध या प्रसन्न होना ।

जामाता(**तृ**)–पु० [सं०] दामाद, कन्याका पति ।

जामातु*–पु० दे० 'जामाता' ।

जामिक–पु० दे० 'यामिक' ।

जामित्र–पु० [सं०] कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ स्थान ।

ज़ामिन–पु० [फा०] जमानत करनेवाला; जिम्मा लेनेवाला; नैचेकी दोनों नलियोंको अलग रखनेके लिए बाँधी जानेवाली एक लकड़ी; जामन; वह चीज जो दूसरी चीजको उड़नेसे बचानेके लिए साथ रखी जाय (जैसे कपूरके साथ मिर्च) । –**दार**–पु० जामिन (असाधु) ।

जामिनी–स्त्री० दे० 'यामिनी' ।

जामी*–स्त्री० जमीन ।

जामुन–पु० एक खटमिट्ठा फल और उसका पेड़, जंबू ।

जामुनी–वि० जामुनके रंगका, स्याह ।

जाय*–अ०, वि० व्यर्थ, बेकार । स्त्री० [फा०] जगह ।

ज़ायक़ा–पु० [अ०] स्वाद, मजा; रसग्रहणकी शक्ति; रसेंद्रिय । –(**के**)**दार**–वि० स्वादिष्ठ, मजेदार ।

ज़ायचा–पु० [फा०] जन्मपत्री ।

जायज़–वि० [अ०] उचित; विहित; मानने योग्य ।

जायज़ा–पु० [अ०] परख; जाँच-पड़ताल (देना, लेना) ।

जायदाद–स्त्री० [फा०] माल-असबाब, संपत्ति, जगह-जमीन ।

जायफल–पु० एक सुगंधित फल जो मसाले और दवाके रूपमें काममें लाया जाता है, जातीफल ।

जायसी–पु० जायस (रायबरेली)का रहनेवाला; अवधीके सुप्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी । वि० जायसका ।

जाया–वि० उत्पन्न किया हुआ । स्त्री० [सं०] विधिवत् ब्याही हुई स्त्री, पत्नी । –**जीव**–वि० पत्नीकी कमाई खानेवाला । पु० नट; नर्तक; वेश्याका पति । –**घ्न**–वि० पत्नीहंता । पु० जन्मकुंडलीमें सातवें स्थानपर मंगल या राहुके होनेसे पड़नेवाला एक योग जिसका फल पत्नीका घात माना गया है; ऐसे योगवाला पुरुष; शरीरका तिल ।

ज़ाया–वि० [अ०] नष्ट, बरबाद, व्यर्थ (करना, होना) ।

जार–पु० जाल; [सं०] परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला; उपपति, आशना । –**कर्म**(**न्**)–पु० व्यभिचार । –**ज,**–**जन्मा**(**न्मन्**),–**जात**–वि० जारसे उत्पन्न । पु० उपपतिसे उत्पन्न संतान । –**ज योग**–पु० फलित ज्योतिषका

एक योग जिसमें उत्पन्न संतानके जारज होनेका संदेह किया जाता है।

जारण–पु० [सं०] गलाना; पचाना; भस्म करना; किसी धातुका शोधन, मारण; पारेका एक संस्कार।

जारना†–स० क्रि० दे० 'जलाना'।

जारिणी–स्त्री० [सं०] जारसे प्रेम करनेवाली स्त्री, कुलटा।

जारी–स्त्री० जारकर्म। वि० [अ०] वहता हुआ; चलता हुआ, प्रचलित; बना हुआ।

जालंधरी विद्या–स्त्री० इंद्रजाल।

जाल–पु० [सं०] सूत, सन आदिकी जालीदार बुनी हुई चीज जिससे मछलियाँ, चिड़िया आदि फँसाते हैं; जाली; रेललाइनों, नहरों आदिका विस्तार; ठगने, फँसानेकी युक्ति; फंदा; मकड़ीका जाला; समूह; झरोखा; क्षार; इंद्रजाल। **–जीवी(विन्)**–पु० मछुआ। **–दार**–वि० [हिं०] जालीदार; फंदेदार। **मु०–फैलाना,–बिछना**–फँसानेकी युक्ति रचना। **–में फँसना**–धोखा खाना, किसीके फरेबमें आना।

जाल–पु० [अ०] किसी चीजकी नकल जो धोखा देनेके लिए की जाय; दूसरेकी लिखावट या दस्तखतकी नकल (करना, बनाना)। **–साज़**–पु० जाल करनेवाला। **–साज़ी**–स्त्री० जाल करना, नकली दस्तावेज, दस्तखत आदि बनाना।

जालना*–स० क्रि० जलाना।

जाला–पु० मकड़ीका बुना हुआ जाल; घास, भूसा आदि बाँधनेका जाल; आँखोंका एक रोग जिसमें पुतलीपर झिल्ली-सी चढ़ जाती है; एक तरहका सरपत।

जालिका–स्त्री० [सं०] जाल; स्त्रियोंका मुखावरण; जोंक; जालीका बना कवच; *समूह; जाल।

ज़ालिम–वि० [अ०] जुल्म करनेवाला, अत्याचारी; क्रूर।

ज़ालिमाना–वि० [अ०] अत्याचारपूर्ण।

जालिया–वि० [अ०] जालसाज।

जाली–स्त्री० वह चीज जिसमें जाल जैसे छोटे-छोटे छेद बने हों; ऐसी बनावटकी लकड़ी या पत्थर जो खिड़कियों आदिमें जड़ा जाता है; ऐसी बुनावटका कपड़ा जो मसहरी आदिके काम आता है; वह कसीदा जिसमें बेल-बूटेके बीचमें छोटे-छोटे छेद हों; आमकी गुठलीपरके रेशे। **–दार**–वि० जिसमें जाली हो।

जाली–वि० [अ०] नकली, झूठा (दस्तावेज, नोट आदि)।

जावक–पु० महावर, अलक्तक।

जावत–अ० दे० 'यावत्'।

जावन*–पु० दे० 'जामन'।

जावा–पु० पूर्वी एशियाका एक बड़ा द्वीप, यवद्वीप।

जावित्री–स्त्री० जायफलका छिलका जो मसाले और दवाके रूपमें काममें लाया जाता है।

जाषनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

जासु*–सर्व० जिसका।

जासूस–पु० छिपकर भेद लेनेवाला, अपराध आदिका पता लगानेवाला, मुखबिर।

जासूसी–स्त्री० जासूसका काम।

जाहर*–वि० दे० 'जाहिर'।

ज़ाहिर–वि० [अ०] प्रकट, खुला हुआ। पु० वाह्य रूप। **–दारी**–स्त्री० दिखावा, बनावट। **–परस्त**–वि० ऊपरी बातोंपर दृष्टि रखनेवाला, दुनियादार।

ज़ाहिरा–अ० [अ०] ऊपरसे, देखनेमें, प्रकटतः।

ज़ाहिरी–वि० ऊपरी, वाह्य, दिखाऊ।

जाहिल–वि० [अ०] अज्ञ; अपढ़; गँवार।

जाहिली–स्त्री० [अ०] अज्ञता, मूर्खता।

जाहिलीयत–स्त्री० [अ०] जाहिल होना, अज्ञता।

जाही–स्त्री० एक तरहकी चमेली; एक आतिशबाजी।

जाह्नवी–स्त्री० [सं०] गंगा (जह्नुसे जनमी हुई)।

जिंद–पु० दे० 'ज़ंद'; [अ०] भूत-प्रेत, जिन।

जिंदगानी–स्त्री० [फा०] जिंदगी।

ज़िंदगी–स्त्री० [फा०] जीवन, जीवित होना; आयु; सजीवता। **–बख़्श**–वि० जीवनप्रद; स्फूर्तिदायक। **–भर**–अ० आजीवन। **मु०–बसर करना**–जीवन बिताना, जीवनयापन करना। **–में मौतका मज़ा चखना**–बहुत कष्ट भोगना।

जिंदा–वि० [फा०] जीता हुआ, जीवित; सजीव; प्रफुल्ल, हरा-भरा; बलती, सुलगती हुई (आग)। **–दिल**–वि० हँसोड़; प्रसन्नचित्त; उत्साही। **–दिली**–स्त्री० जिंदादिल होना। **–बाद**–वा० जीता रहे!

जिँवाना–स० क्रि० दे० 'जिमाना'।

जिंस–स्त्री० [अ०] वस्तु; व्यापारकी चीजें; गल्ला; असबाब; आभरण; वर्ग, किस्म; लिंग; जाति; परिवार; व्यवहार-गणित (अंक-गणित)। **–ख़ाना**–पु० भंडारघर। **–वार**–वि० वर्गके अनुसार। पु० पटवारियोंका एक कागज जिसमें फसलका विवरण रहता है। **–वारी**–स्त्री० वर्गीकरण।

जिआना*–स० क्रि० जिलाना; पालना।

जिउ*–पु० दे० 'जीव'।

जिउकिया–पु० बीहड़ वन-पर्वतोंपर प्राप्त वस्तुएँ (कस्तूरी, शिलाजतु इ०) लाकर बेचनेवाला; रोजगारी।

जिउतिया–स्त्री० आश्विन-कृष्णा अष्टमीको होनेवाला व्रत जिसे केवल पुत्रवती स्त्रियाँ रखती हैं, जीवत्पुत्रिका व्रत।

ज़िक्र–पु० [अ०] चर्चा; वर्णन; स्मरण।

जिगर–पु० [फा०] यकृत, कलेजा; जीवट, हिम्मत; सार-भाग। **मु०–के टुकड़े होना**–दिलपर भारी सदमा होना, दुःख होना। **–थामकर बैठ जाना**–असह्य आघात, पीड़ासे व्याकुल होना।

जिगरा–पु० जीवट, साहस।

जिगरी–वि० [फा०] जिगरका, दिली, अंतरंग (–दोस्त)।

जिगीषा–स्त्री० [सं०] जीतनेकी इच्छा, जयकी अभिलाषा।

जिघांसा–स्त्री० [सं०] मार डालनेकी इच्छा; प्रतिहिंसा।

जिघांसु–वि० [सं०] मार डालनेकी इच्छा रखनेवाला।

ज़िच–स्त्री० मजबूरी, विवशता; शतरंजमें बादशाहको चलनेके लिए घर और इर्दब देनेके लिए कोई मुहरा न रह जाना या कोई मोहरा चलनेकी जगह न रह जाना; किसी मामलेमें आगे बढ़नेका रास्ता बंद हो जाना, गतिरोध।

जिजिया–स्त्री० बड़ी बहन।

जिज़िया–पु० [अ०] एक कर जो मुसलमान शासक गैर-मुसलमान प्रजापर लगाते थे।

जिज्ञासा–स्त्री० [सं०] जाननेकी इच्छा, ज्ञानकी चाह; ज्ञानप्राप्तिके लिए विचार, पूछ-ताछ, खोज ।

जिज्ञासु–वि० [सं०] जाननेका इच्छुक; खोजी; मुमुक्षु ।

जिज्ञास्य–वि० [सं०] जिज्ञासा करने योग्य ।

जिठानी–स्त्री० दे० 'जेठानी' ।

जित*–अ० जिधर, जिस ओर । वि० [सं०] जीता हुआ, पराजित, वशमें किया हुआ । **–क्रोध**–वि० जिसने क्रोधको जीत लिया हो, क्रोधरहित । **–मन्यु**–वि० दे० 'जित-क्रोध' । पु० विष्णु । **–लोक**– वि० जिसने दुनियाको जीत लिया हो; जो पुण्यबलसे स्वर्गादिका अधिकारी हो गया हो । **–शत्रु**–वि० जिसने शत्रुको जीत लिया हो, विजयी । **–श्रम**–वि० जो थके नहीं । **–स्वर्ग**–वि० पुण्यबलसे स्वर्ग प्राप्त करनेवाला ।

जितना–वि० जिस मात्राका, जिस कदर । अ० जिस मात्रामें ।

जितवना*–स० क्रि० जताना; जिताना ।

जितवाना–स० क्रि० दे० 'जिताना' ।

जितवार*–वि० जीतनेवाला ।

जितवैया–पु० जीतनेवाला ।

जितात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] जिसने अपने मन, अपनी इंद्रियोंको वशमें कर लिया हो ।

जिताना–स० क्रि० जीतनेका कारण होना, जीतनेमें समर्थ करना ।

जितारि–वि [सं०] जिसने अपने शत्रुओं या काम, क्रोध आदि–षड्रिपुओं–को जीत लिया हो । पु० बुद्ध ।

जितेंद्रिय–वि० [सं०] जिसने अपनी इंद्रियोंको वशमें कर लिया हो ।

जिते*–वि० जितने ।

जितै*–अ० जिस ओर ।

जितैया*–पु० जीतनेवाला ।

जित्तो*–वि० जितना ।

जित्–वि० [सं०]···को जीतनेवाला (जैसे इंद्रजित्) ।

जित्वर–वि० [सं०] जीतनेवाला, जयशील ।

ज़िद–वि० [अ०] उलटा । स्त्री० हठ, दुराग्रह ।

ज़िद्दन–अ० [अ०] हठवश ।

ज़िद्दी–वि० [अ०] हठी, जिद करनेवाला ।

जिधर–अ० जिस ओर; जहाँ । **–तिधर**–अ० जहाँ-तहाँ ।

जिन–पु० [सं०] बुद्ध; जैन तीर्थंकर; विष्णु ।

जिन, ज़िन्न–पु० [अ०] मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार एक तैजस योनि; भूत, प्रेत; आसुरी बल-पौरुषवाला आदमी; हठी आदमी । **मु०–चढ़ना,–सवार होना**–गुस्सेमें पागल हो जाना ।

ज़िना–पु० [अ०]परस्त्रीगमन या परपुरुषगमन, व्यभिचार ।

जिनि*–अ० दे० 'जनि' ।

जिनिस–स्त्री० दे० 'जिंस' ।

जिन्सवार–पु० दे० 'जिंस'के साथ ।

जिबह–पु० गला काटना, हलाल करना ।

जिब्हा*–स्त्री० दे० 'जिह्वा' ।

जिभ्या*–स्त्री० दे० 'जिह्वा' ।

जिमाना–स० क्रि० खाना खिलाना ।

जिमि*–अ० जैसे, जिस प्रकार ।

ज़िम्मा–पु० [अ०] प्रतिज्ञा, किसी बातके करने, किये जानेका भार; जमानत; सिपुर्दगी । **–(ज़िम्मे)दार**–वि० जवाबदेह । **–दारी**–स्त्री० जवाबदेही । **–वार**–वि० जिम्मेदार । **–वारी**–स्त्री० जिम्मेदारी । **मु०–लेना**–(किसी कामका) भार उठाना, हामी भरना । (**किसीके जिम्मे**–किसीके ऊपर या किसीके हवाले करना, लगाना, निकलना ।)

जिय*–पु० जी, जीव । **–बधा**–पु० जल्लाद ।

जियन*–पु० जीवन ।

जियरा*–पु० जीव; हृदय ।

ज़ियादती–स्त्री० [अ०] अधिकता; जुल्म, जबर्दस्ती ।

ज़ियादा–वि० [अ०] अधिक, बहुत, फाजिल ।

जियान–पु० [फ़ा०] हानि, नुकसान, टोटा ।

जियाना*–स० क्रि० दे० 'जिलाना' ।

ज़ियाफ़त–स्त्री० [अ०] दावत, भोजनसे सत्कार; आतिथ्य ।

ज़ियारत–स्त्री० [अ०] साधु-संत, देवमूर्ति आदिके दर्शन करना या दर्शनार्थ जाना; तीर्थयात्रा ।

जियारी*–स्त्री० जीवन; जीवट; जीविका ।

जिरगा–पु० [फ़ा०] जमात; झुंड; सरहदी पठानोंकी पंचायत ।

जिरह–स्त्री० [अ० 'जरह'] चीरा, घाव; वे प्रश्न जो प्रतिपक्षी या उसका वकील बयानकी सचाई जाँचनेके लिए करे ।

ज़िरह–स्त्री० [फ़ा०] फौलादकी कड़ियोंका बना हुआ कवच ।

ज़िराअत–स्त्री० [अ०] खेती, किसानी । **–पेशा**–वि० कृषिजीवी, खेतिहर ।

जिराफ़ा–पु० [अ० 'ज़राफ़ा'] अफ्रीकाके जंगलोंमें पाया जानेवाला एक जानवर जिसकी गरदन और अगली टाँगें ऊँटकीसी और खालपर बड़े-बड़े लाल-पीले या भूरे धब्बे होते हैं । चौपायोंमें यह सबसे ऊँचा होता है ।

जिला–स्त्री० [अ०] चमक, ओप, पालिश; रगड़-माँजकर चमकानेका काम । **–कार,–साज़**–पु० जिला करनेवाला, सिकलीगर ।

ज़िला–पु० [अ०] पहलू, पार्श्व; देशका विभाग, प्रदेश; प्रांत या सूबेका वह भाग जो डिपटी कमिश्नर या कलक्टरके मातहत हो (डिस्ट्रिक्ट) । **–अफसर**–पु० कलक्टर । **–जज**–पु० जिलेका प्रधान न्यायाधिकारी (डिस्ट्रिक्ट जज) । **–जेल**–स्त्री०, पु० जिलेका जेलखाना । **–पालिका**–स्त्री० (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) दे० 'जिलाबोर्ड' । **–बोर्ड**–पु० जिलेके प्रतिनिधियोंका मंडल जिसका काम जिलेकी सड़कों, शिक्षा, स्वास्थ्य आदिका प्रबंध करना होता है । **–मजिस्ट्रेट**–पु० जिलेका प्रधान प्रबंधाधिकारी । **–(ले)दार**–पु० जमींदारका कारिंदा जो गाँवका लगान वसूल करे; नहर-महकमेका एक कर्मचारी ।

जिलाना–स० क्रि० मरे हुएको जिंदा करना; पालना-पोसना; मरनसे बचाना, जीवन देना ।

जिलाह*–पु० जालिम, अत्याचारी ।

जिल्द–स्त्री० [अ०] खाल, त्वचा; पुस्तककी रक्षाके लिए लगायी, चिपकायी हुई दफ्ती आदि; पुस्तकका अलग सिला, बँधा हुआ खंड; पुस्तककी प्रति । **–गर**–पु० दे० 'जिल्दबंद' । **–दार**–वि० जिसकी जिल्द बँधी हो ।

–बंद–पु० जिल्द बाँधनेवाला। **–बंदी**–स्त्री० जिल्द बाँधने, बनानेका काम।**–साज़**–पु० दे० 'जिल्दबंद'।

ज़िल्लत–स्त्री० [अ०] बेइज्जती; हीनता; दुर्गति।

जिल्होरा†–पु० एक अच्छा अगहनी धान।

जिवा†–पु० दे० 'जीव'।

जिवाँना†–स० क्रि० दे० 'जिमाना'।

जिवाना*–स० क्रि० जिलाना।

जिष्णु–वि०[सं०] जीतनेवाला, जयशील। पु० विष्णु; सूर्य।

जिस्ता–पु० दे० 'दस्ता'।

जिस्म–पु० [अ०] शरीर, बदन; ठोस चीज।

जिस्मानी–वि०[अ०] शारीरिक, देहभव (तकलीफ, सजा)।

जिस्मी–वि० [अ०] शारीरिक।

ज़िहन–पु० दे० 'जेह्न'। **–दार**–वि० समझदार, जो बातको जल्दी समझ ले।

जिहाद–पु०[अ०] (मुसलमानका) काफिरोंसे लड़ना; वह युद्ध जो धर्मकी रक्षाके लिए किया जाय।

जिहादी–वि० [अ०] जिहाद करनेवाला।

जिह्म–वि० [सं०] टेढ़ा, कुटिल; दुष्ट; मंद।

जिह्माक्ष–वि० [सं०] ऐंचा।

जिह्वल–वि० [सं०] जिभला, चटोरा।

जिह्वा–स्त्री० [सं०] जीभ, रसना; आगकी लपट।**–जप**–पु० वह जप जिसमें केवल जीभ हिले। **–मूल**–पु० जीभकी जड़। **–मूलीय**–पु० जिह्वामूलसे उच्चारित वर्ण (व्या०)। **–लोलुप**–वि० चटोरा, जिभला।**–लौल्य**–पु० चटोरपन।

जींगन*–पु० जुगनू।

जी–अ० नाम, अल्ल या पदवीके साथ जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द (गुरुजी, ठाकुरजी)। पु० जान, जीव; मन, चित्त, तबीयत; जीवट। **मु० (किसीपर)–आना**–किसीपर अनुरक्त होना, आशिक होना। **–उचटना**–किसी काममें, किसी स्थानमें दिल न लगना। **–उड़ा जाना**–चित्तका अतिशय चंचल, उद्विग्न हो जाना, बहुत घबराहट होना। **–उलझना**–दिल घबराना। **–करना**–इच्छा होना, दिल चाहना; हिम्मत करना।**–का बुखार निकालना**–दिलका गुबार निकालना। **–का बोझ हलका हो जाना**–चिंता या आशंकाका दूर हो जाना। **–की जीमें रहना**–चाही, सोची हुई बातका न होना, हौसला या अरमानका न निकलना। **–की पड़ना**–दे० 'जानकी पड़ना'। **–की लगी**–मनमें बसी हुई बात, मनोव्यथा। **–को रोग लगना**–किसी बातकी फिक्र करना। **–खट्टा करना**–किसीके दिलमें घृणाका भाव भर देना। **–खोना**–जान देना; दिलका हाथमें न रहना। **–खोलकर**–जी भरकर, यथेष्ट। **–चाहना**–इच्छा होना। **–चुराना**–किसी कामसे भागना, जान चुराना।**–छूटना**–हिम्मत टूटना, हताश होना। **–छोटा करना**–उत्साह कम करना; दिल छोटा करना। **–छोड़कर भागना**–बदहवास होकर भागना, साँस लेनेको भी न रुकना। **–छोड़ना**–हिम्मत हारना। **–जलना**–हृदयमें भारी दुःख, संताप होना, कुढ़ना। **–जलाना**–सताना; कुढ़ाना। **–जान लड़ाना**–दत्तचित्त होकर प्रयत्न करना; खूब मेहनत करना। **–जानसे**–पूरे दिलसे; पूरी शक्तिसे। **–टँगा रहना या होना**–किसी बातकी चिंता लगी रहना, खटका बना रहना। **–टूट जाना**–हिम्मत या उत्साह न रह जाना। **–ठंढा होना**–दे० 'कलेजा ठंढा होना'। **–डूबना**–बेहोशीसी होना, दिल-दिमागका बहुत सुस्त हो जाना। **–तरसना**–किसी चीजको पाने, भोगनेके लिए दिलका बेचैन होना। **–दहलना**–दे० 'दिल दहलना'। **–दुखाना**–चित्तको क्लेश पहुँचाना, दिल दुखाना। **–देना**–नेवछावर होना; बहुत ज्यादा प्यार करना। **–धँसा जाना**–दे० 'जी बैठा जाना'। **–धक-धक करना**–भयसे घबराना, दिल धड़कना।**–निढाल होना**–चित्तका व्याकुल होना। **–पक जाना**–किसी कष्टकर बातसे जी ऊब जाना, किसी कष्टका असह्य हो जाना। **–पर आ बनना**–प्राण बचाना भी कठिन हो जाना। **–पर खेलना**–दे० 'जानपर खेलना'। **–फट जाना**–दे० 'दिल फट जाना'। **–बँटना**–दिलका (किसी चिंता, सोचको भूलकर) दूसरी बातमें लग जाना, ध्यानका दूसरी ओर चला जाना। **–बढ़ना,–बढ़ाना**–दे० 'दिल बढ़ना, बढ़ाना'। **–बहलना**–चित्तका किसी बातमें लगकर दुःख भूल जाना, प्रसन्नता अनुभव करना। **–बहलाना**–चित्तको किसी प्रिय, प्रसन्नताजनक कार्यमें लगाना। **–बिगड़ना**–जी मतलाना; घिन लगना। **–बैठ जाना**–दिल डूबना; चित्तका अति खिन्न होना। **–बैठा जाना**–दिल बेचैन होता जाना, मनका स्थैर्य नष्ट होता जाना। **–भर आना**–दे० 'दिल भर आना'। **–भरकर**–जितना जी चाहे, यथेच्छ। **–भरना**–तृप्ति होना, अघाना; घिन न लगना; दिलजमई करना। **–भारी होना**–अनमना होना; तबीयत सुस्त होना। **–मतलाना**–मतली होना, वमनका उसवास होना। **–में आना**–इच्छा होना; विचार उठना। **–में खुभना, –में गड़ना**–मनमें बस जाना। **–में जलना**–मनमें कुढ़ना, जलना। **–में धरना**–दे० 'जीमें रखना'। **–में बसना**–दिलमें घर कर लेना, सदा याद रहना। **–में बैठना**–हृदयपर अंकित हो जाना; ठीक लगना। **–में रखना**–याद रखना; खयाल करना; बुरा मानना। **–लगना**–दिल लगना। **–लगाना** –दिल लगाना। **–लगा होना**–ध्यान बना रहना, चिंता लगी रहना। **–लरजना**–कलेजा काँपना। **–ललचाना**–किसी चीजको पाने, भोगनेकी प्रबल इच्छा होना; मनमें लोभ या लालच पैदा करना। **–लेना**–मन टटोलना; प्राण लेना। **–लोट जाना,–लोटना**–किसी चीज के लिए दिलका बेचैन हो जाना। **–सन्न होना**–चित्त स्तब्ध हो जाना, होश उड़ जाना।**–से जाना**–मर जाना।

जीअ, जीउ*–पु० दे० 'जी', 'जीव'।

जीअन*–पु० दे० 'जीवन'।

जीगन*–पु० दे० 'जींगन'।

जीजा–पु० बड़ी बहनका पति।

जीजी–स्त्री० बड़ी बहन।

ज़ीट–स्त्री० डींग।

जीत–स्त्री० युद्ध, बाजीके खेल, मुकदमे, प्रतियोगिता आदि

में मिलनेवाली सफलता, जय, फतह; लाभ।

जीतना–सं० क्रि० युद्ध, मुकदमा, खेल, प्रतियोगिता आदिमें विपक्षीको हराना, जयलाभ करना; दमन करना, वशमें लाना (मन, इंद्रिय आदिको)।

जीता–वि० जीता हुआ; जिंदा; तौल या नापसे थोड़ा अधिक (तौलना)। **–जागता**–वि० भला-चंगा, सशक्त, सतेज। **–नाखुन**–पु० मांससे लगा हुआ नाखुन। **–लहू**–पु० ताजा लहू। **–लोहा**–पु० चुंबक। **मु० जीती मक्खी निगलना**–जान-बूझकर कोई दोष करना, न करने लायक बात करना। **जीते जी**–जिंदा रहते हुए, मौजूदगीमें; जिंदगीभर। **जीते जी मर जाना**–जीवन्मृत हो जाना, किसी भारी शोक, आघातसे मनका मर जाना, निरानंद, निरुत्साह हो जाना। **जीते-मरते**–किसी तरह, बड़ी कठिनाईसे।

जीति–स्त्री० [सं०] विजय; क्षति, क्षय।

जीन–वि० [सं०] जीर्ण, क्षीण; वृद्ध। पु० चमड़ेका थैला।

ज़ीन–पु० [फा०] चारजामा, काठी; पलान; एक मोटा, कड़ा सूती कपड़ा। **–पोश**–पु० जीनके ऊपर डालनेका झालरदार कपड़ा, झूल। **–सवारी**–स्त्री० घोड़ेको सवारीके काम लाना। **–साज़**–पु० जीन बनानेवाला।

ज़ीनत–स्त्री० [अ०] सजावट, शृंगार; शोभा। **–महल**–वि० महलकी शोभा, शृंगार-स्वरूप।

जीना–अ० क्रि० जीवनकी अवस्थामें होना, देहमें प्राण या जीवका बना रहना, जिंदा होना; जीवनयात्रा करना, (किसी चीजपर जीना–किसी चीजके सहारे जीना); प्रसन्न होना। **मु० जी उठना**–मरे हुएका जी जाना; सूखे हुएका हरा हो जाना। **जीना दूभर, भारी हो जाना**–जीवनका भाररूप या कठिन हो जाना। **जीनेका मज़ा**–जीवनका सुख।

ज़ीना–पु० [फा०] सीढ़ी, सोपान।

जीभ–स्त्री० मुँहके भीतर स्थित चपटा मांसल अंग जो रसज्ञान और मनुष्योंमें बोलनेकी क्रियाका साधन है, जिह्वा, रसना, जबान; कलमकी नोक जिससे लिखा जाता है। **मु०–हिलाना**–बोलना, मुँह खोलना।

जीभी–स्त्री० ताँबे, पीतल आदिके पत्तरकी बनी चीज जिससे जीभका मैल साफ करते हैं; छोटी जीभ; चौपायोंका एक रोग; निब; लगामका एक भाग।

जीमना–स० क्रि० भोजन करना।

जीमूत–पु० [सं०] बादल; पर्वत; इंद्र; सूर्य। **–वाहन**–पु० इंद्र (मेघ है वाहन जिसका)।

जीय*–पु० दे० 'जी', 'जीव'। **–दान**–पु० प्राणदान।

जीयति*–स्त्री० जीवन।

जीर*–वि० जीर्ण, जर्जर। पु० जिरह, कवच।

जीरक, जीरण–पु० [सं०] जीरा।

जीरण, जीरन*–वि० दे० 'जीर्ण'।

जीरना*–अ० क्रि जीर्ण होना; कुँभलाना; फटना।

जीरा–पु० एक सुगंधित बीज जो मसाले और दवाके काम आता है; जीरेकी शक्लका बीज; फूलका केसर।

जीर्ण–वि० [सं०] बूढ़ा, जरायुक्त; पुराना, दिनी; फटा-पुराना; ढहता हुआ, जर्जर, क्षयप्राप्त; पचा हुआ। पु० वृद्ध व्यक्ति; वृक्ष; जीरा; शिलाजतु; बुढ़ापा; क्षीणता। **–ज्वर**–पु० पुराना बुखार, अधिक दिनसे रहनेवाला मंदज्वर; बारह दिनसे अधिकका ज्वर (आ०)। **–वाटिका**–स्त्री० खँडहर।

जीर्णक–वि० [सं०] करीब-करीब सूखा या मुरझाया हुआ।

जीर्णोद्धार–पु० [सं०] पुरानी, टूटी-फूटी चीजकी मरम्मत; पुराने मंदिर, कुएँ, तालाब आदिकी मरम्मत।

जीर्णोद्यान–पु० [सं०] वह बगीचा जो पुराना हो जाने या सिंचाई आदि न होनेके कारण उजड़ रहा हो।

जीला*–वि० झीना, बारीक।

जीवंत–वि० [सं०] जीवित, जीता हुआ; दीर्घायु।

जीव–पु० [सं०] देहस्थित या देहावच्छिन्न चैतन्य, जीवात्मा; प्राण, जान; जीवन; प्राणी; लिंगदेह; जीविका; विष्णु; कर्ण; एक मरुत्; बृहस्पति। **–जंतु**–पु० प्राणी; छोटे प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा। **–जगत्**–पु० प्राणि-समष्टि। **–जीव**–पु० चकोर। **–दान**–पु० प्राणदान। **–धन**–पु० पशुधन, गाय-बैल, घोड़ा-हाथी आदि; प्रिय व्यक्ति। **–धारी(रिन्)** पु० प्राणी, जंतु। **–पुत्रा,–वत्सा**–स्त्री० वह स्त्री जिसका बेटा जीता हो। **–प्रिया**–स्त्री० हड़। **–बंद***–पु० दे० 'जीवबंधु'। **–बंधु**–पु० गुलदुपहरिया। **–बलि**–स्त्री० पशु आदिकी बलि। **–मंदिर**–पु० शरीर। **–मातृका**–स्त्री० सात देवियाँ जो माताके समान प्राणियोंका पालन-पोषण करनेवाली मानी जाती हैं (कुमारी, धनदा, नंदा, विमला, मंगला, बला और पद्मा)। **–योनि**–स्त्री० जीवधारियोंकी योनि, जंगम योनि (मनुष्य, पशु-पक्षी आदि)। **–लोक**–पु० संसार, मर्त्यलोक, प्राणिजगत्। **–विज्ञान**–पु० जीव-जंतुओंकी शरीररचना, वर्गीकरण, जीनेके ढंग आदिका विज्ञान (ज़ूलॉजी)। **–शेष**–वि० जिसकी जानभर बची हो; जो सब कुछ छोड़कर केवल जान लेकर भाग आया हो। **–संक्रमण**–पु० जीवका एक देह त्यागकर दूसरीमें जाना। **–हत्या**–स्त्री० जीववध, जीवहिंसा। **–हिंसा**–स्त्री० प्राणिवध।

जीवट–पु० हिम्मत, साहस; बहादुरी।

जीवति*–स्त्री० जीविका।

जीवत्पुत्रिका–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पुत्र जीता हो; आश्विन-कृष्णाष्टमीका व्रत।

जीवद्वत्सा–वि० स्त्री० [सं०] जीवित पुत्रवाली।

जीवन–पु० [सं०] जीता रहना, प्राणधारण; जीवित दशा, जिंदगी; जीवनका आधाररूप वस्तु; प्राणी; जीविका; जल; वायु; पुत्र; परमात्मा; ताजा दूध; मक्खन; मज्जा। वि० जीवनदाता, प्राणप्रद। **–क्रम**–पु० जीवनयात्रा, रहन-सहनका ढंग। **–चरित,–चरित्र**–पु० जीवनवृत्तांत; वह पुस्तक जिसमें किसीका जीवनवृत्त लिखा हो। **–चर्या**–स्त्री० रहन-सहनका तरीका। **–तत्त्व**–पु० (विटामिन) दे० 'खाद्योज'। **–द**–वि० जीवनदाता। **–दान**–पु० शत्रु या अपराधी आदिको प्राण न लेनेका वचन देना; देश या समाजकी सेवाके लिए जीवन अर्पित करना, लगाना। **–धन**–वि० जीवनका आधार, सर्वस्व, (पति)। **–धर**–वि० जीवन-रक्षक, जीवनदाता। **–निर्वाह**–पु०,**–यात्रा**–स्त्री०,**–यापन**–पु० जीवनकी

आवश्यकताएँ पूरी करना, रोजका खर्च चलाना। **–बूटी**–स्त्री० [हिं०] संजीवनी बूटी। **–मरण**–पु० जीना-मरना, जिंदगी-मौत। **–मूरि**–स्त्री० [हिं०] संजीवनी बूटी; अति प्रिय वस्तु या जन। **–यापनव्यय**–पु० (कॉस्ट ऑव लिविंग) जीवन-निर्वाहका व्यय–भोजन, वस्त्र, निवास आदि-संबंधी वह सामान्य व्यय जो जीवनयापनके लिए आवश्यक होता है। **–रक्षक नौका**–स्त्री० (लाइफ बोट) जहाज डूबते समय प्राण बचानेवाली विशेष प्रकारकी नौका। **–रक्षक पेटी**–स्त्री० (लाइफ बेल्ट) डूबनेसे बचनेके लिए बाँधी जानेवाली पेटी जिसमें हवा भरी रहती है या बड़ा-सा काग (कार्क) लटकता रहता है। **–वृत्त,–वृत्तांत**–पु० जीवनचरित। **–वृत्ति**–स्त्री० जीविका। **–संघर्ष**–पु० कठिन परिस्थितियोंमें अस्तित्व बनाये रखनेका भारी प्रयत्न। **–हर**–वि० जीवनका हरण करनेवाला।

जीवनांत–पु० [सं०] जीवनका अंत, मृत्यु।

जीवनावास–पु० [सं०] वरुण; शरीर।

जीवनि*–स्त्री० संजीवनी बूटी; जिलानेवाली चीज; अति प्रिय वस्तु।

जीवनी–स्त्री० जीवनचरित।

जीवनोपाय–पु० [सं०] जीविका।

जीवनौषध–स्त्री० [सं०] वह दवा जो मरतेको जिला दे।

जीवन्मुक्त–वि० [सं०] जो जीवित दशामें ही आत्मज्ञान प्राप्त कर संसार-बंधनसे छूट गया हो।

जीवन्मृत–वि० [सं०] जो जीता हुआ भी मुर्दे जैसा हो।

जीवरा*–पु० जीव; प्राण।

जीवरि*–स्त्री० जीवन धारण करनेकी शक्ति।

जीवांतक–पु० [सं०] बहेलिया। वि० जीवोंका वध करनेवाला।

जीवा–स्त्री० [सं०] धनुषकी डोरी; चापके दो सिरोंको मिलानेवाली रेखा; (कॉर्ड) वह रेखा जो परिधिके एक बिंदुसे दूसरेतक खींची जाय, किंतु जो केंद्रसे होकर न जाय, चापकर्ण; जल; पृथ्वी; जीविका; वचा; जीवंती।

जीवाजून*–पु० जीवजंतु।

जीवाणु–पु० [सं०] (बेसिलस) क्षुद्रतम जीव; (बैक्टीरिया) विकारसे उत्पन्न होनेवाले अति-सूक्ष्म एक-कोषीय शाकाणु जिनमेंसे कितने ही तो रोगोंकी उत्पत्तिके कारण माने जाते हैं और कुछ शरीरके लिए लाभदायक भी होते हैं। **–नाशक**–वि० (एंटी-बायोटिक) जो (रोगादि उत्पन्न करनेवाले) जीवाणुओंका नाश करनेमें समर्थ हो (दवा)। **–विज्ञान**–पु० (बैक्टीरियालॉजी) जीवाणुओंकी उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान। **–विद्**–पु० (बैक्टीरियालॉजिस्ट) जीवाणुओं-संबंधी जानकारी रखनेवाला, जीवाणु-विज्ञान जाननेवाला।

जीवात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] जीव, देहस्थ चैतन्य, व्यष्टि आत्मा।

जीवाधार–पु० [सं०] जीवका अधिष्ठान, हृदय।

जीवावशेष–पु० [सं०] (फॉसिल) धरतीके भीतरी स्तरोंसे निकले हुए प्राचीन कालके जीवों, वनस्पतियों आदिके अवशिष्टांश।

जीविका–स्त्री० [सं०] जीवनयात्राका साधन, रोजी, वृत्ति।

जीवित–वि० [सं०] जीता हुआ, जीवंत, जीवनयुक्त; जिसे पुनः जीवन मिला हो। पु० जीवन; जीवन-काल; जीविका; प्राणी। **–काल**–पु० आयु। **–नाथ**–पु० पति। **–संशय**–पु० जीवनका खतरा।

जीवितांतक–पु० [सं०] शिव।

जीवितेश–पु० [सं०] प्राणाधार; पति; ईश्वर; चंद्र; सूर्य।

जीवी(विन्)–वि० [सं०]...से जीनेवाला (जैसे श्रमजीवी, चिरंजीवी, दीर्घजीवी इ०)।

जीवेश–पु० [सं०] परमेश्वर।

जीह, जीहा*–स्त्री० दे० 'जीभ'।

जीहि, जीही*–स्त्री० दे० 'जीभ'।

जुँईं–स्त्री० दे० 'जुईं'।

जु*–अ०, सर्व० दे० 'जो'।

जुअती*–स्त्री० दे० 'युवती'।

जुआँ, जुआ–पु० दे० 'जूँ'।

जुआ–पु० हल, बैलगाड़ी आदिमें जोते जानेवाले बैल या बैलोंके कंधेपर रखी जानेवाली लकड़ी; जाँतेकी मूठ; बाजी लगाकर खेला जानेवाला (ताश आदिका) खेल, द्यूत; सोलह चित्ती कौड़ियोंसे खेला जानेवाला इस तरहका खेल। **–खाना**–पु० जुआ खेलनेका अड्डा। **–चोर**–पु० जीतकर भाग जानेवाला जुआड़ी; धोखेबाज। **–चोरी**–स्त्री० धोखेबाजी।

जुआड़ी–पु० जुआ खेलनेवाला।

जुआर–स्त्री० दे० 'ज्वार'; * पु० दे० 'जुआड़ी'। **–भाटा**–पु० दे० 'ज्वारभाटा'।

जुआरी–पु० जुआ खेलनेवाला।

जुईं–स्त्री० छोटी जूँ; मटर आदिमें लगनेवाला छोटा कीड़ा।

ज़ुकाम–पु० [अ०] एक रोग जिसमें नाक बहती, कुछ ज्वर हो आता और सिर भारी हो जाता है। **मु०–बिगड़ना**–ज़ुकामका सूख जाना। **(मेढ़कीको)–होना**–छोटे आदमीमें बड़ोंकी बराबरी करनेका हौसला होना।

जुग–पु० युग; पीढ़ी; जोड़ा, युग्म; गुट्ट; चौसरकी गोटियोंका जोड़ा, एक घरमें बैठी हुई दो गोटियाँ। **–जुग**–अ० सदा, युगोंतक। **–जुग जियो**–युगोंतक जीते रहो, लंबी आयु भोगो। **मु०–टूटना,–फूटना**–दो इकट्ठी गोटियोंका अलग-अलग हो जाना; एका न रह जाना, फूट पड़ना।

जुगजुगाना–अ० क्रि० झिलमिलाना, टिमटिमाना।

जुगजुगी–स्त्री० एक चिड़िया, शकरखोरा।

जुगत–स्त्री० युक्ति, उपाय; चतुराई; द्व्यर्थक बात, व्यंग्य-विनोदभरी उक्ति। * वि० युक्त, संभव। **मु०–लगाना**–जोड़-तोड़ भिड़ाना, युक्ति करना।

जुगती–वि० जोड़-तोड़ लगानेवाला, चतुर।

जुगनी–स्त्री० दे० 'जुगनू', *हार आदिमें लगा हुआ नग।

जुगनू–पु० एक कीड़ा, खद्योत (रातमें उड़नेपर इसकी दुमसे रोशनी निकलती है); गलेमें पहननेका एक गहना।

जुगम*–वि० दे० 'युग्म'।

जुगल–वि० दे० 'युगल'।

जुगवना–स० क्रि० जोड़ना, इकट्ठा करना; सँभालकर रखना।

जुगालना–अ० क्रि० जुगाली करना ।

जुगाली–स्त्री० गाय-बैल आदिका निगले हुए चारेको थोड़ा-थोड़ा पेटसें मुँहमें लाकर चबाना, रोमंथ; चर्वित-चर्वण ।

जुगुत, जुगुति*–स्त्री० दे० 'युक्ति' ।

जुगुप्सा–स्त्री० [सं०] निंदा; घृणा; बीभत्स रसका स्थायी भाव ।

जुगुप्सित–वि० [सं०] निंदित; घृणित ।

जुगुल*–वि० दे० 'युगल' ।

जुज़–अ० [फा०]…के सिवा, बगैर, बिना । पु० [अ०] अंश, टुकड़ा; बहुत छोटा खंड; पुस्तकके अलग भाँजे और सिले हुए पन्ने, फार्म । **–बंदी**–स्त्री० किताबके जुज़ोंको जिल्दबंदीके लिए सीना; किताबकी सिलाई जिसमें एक-एक जुज या फार्म अलग-अलग सिला जाय ।

जुज्झ*–पु० युद्ध ।

जुझाऊ–वि० युद्ध-संबंधी; जूझनेको उत्साहित करनेवाला, मारू (–बाजा) ।

जुझाना–स० क्रि० जूझनेको प्रेरित, उत्साहित करना ।

जुझार*–वि० रणप्रिय, वीर । पु० युद्ध ।

जुट–स्त्री० जोड़ा, युग्म; दो अभिन्न मित्र; गुट ।

जुटना–अ० क्रि० जुड़ना, संयुक्त होना; सटना, चिमटना, गुथना; जमा, इकट्ठा होना; पहुँचना; (किसी काममें) मुस्तैदीसे लगना; संभोग करना; अभिसंधि करना ।

जुटली*–वि० बालोंकी लंबी लटोंवाला ।

जुटाना–स० क्रि० जोड़ना; पास पहुँचाना; इकट्ठा करना ।

जुटाव–पु० जमाव ।

जुठारना, जुठालना–स० क्रि० जूठा कर देना ।

जुठिहारा–पु० जूठा खानेवाला ।

जुड़ना–अ० क्रि० जोड़ा जाना, संयुक्त होना; इकट्ठा होना; जुतना; उपलब्ध होना ।

जुड़पित्ती–स्त्री० एक रोग जिसमें बदनमें खुजली होती और बड़े-बड़े ददोरे निकल आते हैं, पित्ती ।

जुड़वाँ–वि० जुड़े हुए, यमल । पु० एक साथ पैदा हुए दो बच्चे ।

जुड़वाई–स्त्री० दे० 'जोड़वाई' ।

जुड़वाना†–स० क्रि० ठंडा करना; तृप्त करना; दे० 'जोड़वाना' ।

जुड़ाना†–अ० क्रि० ठंडा होना । स० क्रि० ठंडा करना ।

जुड़ावना*–स० क्रि० ठंडा करना ।

जुत*–वि० दे० 'युक्त' ।

जुतना–अ० क्रि० जोता जाना; लगना; जुटना ।

जुतवाना–स० क्रि० जोतनेका काम दूसरेसे कराना ।

जुताई–स्त्री० जोतनेकी क्रिया या भाव; जोतनेकी उजरत ।

जुताना–स० क्रि० दे० 'जोताना' ।

जुतिऔवल–स्त्री० आपसमें जूतोंसे मारपीट करना ।

जुतियाना–स० क्रि० जूते लगाना; बुरी तरह अपमानित करना, जलील करना ।

जुत्थ*–पु० दे० 'यूथ' ।

जुदा–वि० [फा०] अलग; भिन्न; निराला ।

जुदाई–स्त्री० [फा०] वियोग, बिलगाव ।

जुद्ध*–पु० दे० 'युद्ध' ।

जुन्हरी†–स्त्री० ज्वार ।

जुन्हाई, जुन्हैया*–स्त्री० चाँदनी, चंद्रिका; चंद्रमा ।

जुबराज*–पु० दे० 'युवराज' ।

जुबली–स्त्री० [अं० जुबिली] उत्सव; जयंती ।

जुबाद*–पु० एक तरहकी कस्तूरी ।

.ज़ुबान–स्त्री० [फा०] दे० 'ज़बान' (समास भी) ।

जुमला–वि०[अ०] कुल, तमाम, सब । पु० जोड़; वाक्य ।

जुमा–पु० [अ०] शुक्रवार । **–(मे)रात**–स्त्री० गुरुवार । मु०–जुमा आठ दिन–थोड़े दिन, चंद रोज ।

जुम्मा†–पु० दे० 'जुमा' ।

जुर*–पु० ज्वर ।

जुरअत–स्त्री० [अ०] बहादुरी, मर्दानगी; साहस ।

जुरना*–अ० क्रि० दे० 'जुड़ना'; भिड़ना ।

जुरमाना–पु० दे० 'जुर्माना' ।

जुरा*–स्त्री० बुढ़ापा; मृत्यु ।

जुराना*–अ० क्रि० ठंडा होना । स० क्रि० एकत्र करना ।

जुराफा–पु० दे० 'जिराफ़ा' ।

जुरावना*–स० क्रि० दे० 'जुराना' ।

जुर्म–पु० [अ०] अपराध, वह काम जो कानूनमें दंडनीय माना गया हो ।

जुर्माना–पु०[अ०] वह रकम जो किसी अपराधके दंडरूपमें देनी पड़े, अर्थदंड ।

जुर्रत–स्त्री० दे० 'जुरअत' ।

जुर्रा–पु० [फा०] नर बाज ।

जुर्राब–स्त्री० [तु०] मोजा ।

जुल–पु० झाँसा, चकमा । **–बाज**–वि० जुल देनेवाला ।

जुलकरन*–पु०[अ०जुलकरनैन] सिकंदर(रूमी)की उपाधि ।

जुलफ, जुलुफ*–स्त्री० दे० 'ज़ुल्फ़' ।

जुलाई–स्त्री० [अं०] ईसवी सन्का सातवाँ महीना ।

जुलाब–पु० दस्त लानेवाली दवा, विरेचन ।

जुलाहा–पु० कपड़ा बुननेवाला, तंतुवाय; पानीपर तैरनेवाला एक कीड़ा; एक बरसाती कीड़ा ।

जुलूस–पु० [अ०] तख्तनशीनी, राज्यारोहण; राजाकी सवारी; बहुतसे लोगोंका इकट्ठा होकर समारोहके साथ कहीं जाना या नगरभ्रमण (निकलना, निकालना) ।

जुलोक*–पु० द्युलोक, सुरलोक, वैकुंठ ।

.ज़ुल्फ़–स्त्री० [फा०] पट्टा, काकुल ।

.ज़ुल्म–पु० [अ०] अन्याय; जबरदस्ती; अत्याचार, अंधेर ।

.ज़ुल्मी–वि० [अ०] जालिम, अत्याचारी ।

जुल्लाब–पु० [अ०] जुलाब, विरेचन ।

जुवराज*–पु० दे० 'युवराज' ।

जुवा–पु० दे० 'जुआ' ।

जुवार–स्त्री० दे० 'ज्वार' ।

जुवारी–पु० दे० 'जुआरी' ।

जुष्ट–वि० [सं०] युक्त; जूठा । पु० जूठन, उच्छिष्ट ।

जुहाना, जुहावना*–स० क्रि० इकट्ठा करना । अ० क्रि० एकत्र होना–'…लाखन विप्र जुहाने'–रघु० ।

जुहार–स्त्री० अभिवादनका एक प्रकार, प्रणाम ।

जुहारना–स० क्रि० अभिवादन करना ।

जुही–स्त्री० दे० 'जूही' ।

.जुहूर–पु० [अ०] प्रकट होना; नुमाइश ।

जूँ–पु०, स्त्री० मैल और पसीना मरनेसे सिरके बालोंमें पैदा हो जानेवाला एक नन्हा कीड़ा, ढील । मु० **(कानोंपर)–न रेंगना**–स्थितिपर ध्यान न जाना, होश न होना ।

जूँठन–स्त्री० दे० 'जूठन' ।

जू*–अ० नामके साथ लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द 'जी'का व्रज, बुंदेलखंडी आदि भाषाओंमें प्रचलित रूप ।

जूआ–पु० दे० 'जुआ' ।

जूजू–पु० बच्चोंको डरानेके लिए कल्पित जीव, हौआ ।

जूझ*–पु० युद्ध ।

जूझना–अ० क्रि० लड़ना; लड़ते हुए मर जाना ।

जूट–पु० [सं०] जूड़ा; जटा; [अं०] पटसन ।

जूटना* स० क्रि० जोड़ना, मिलाना । अ० क्रि० एकत्र होना; प्रवृत्त होना, लगना ।

जूठन–स्त्री० खाकर छोड़ा हुआ भोजन, उच्छिष्ट; इस्तेमाल की हुई चीज ।

जूठा–वि० खाकर छोड़ा हुआ, जुठारा हुआ, उच्छिष्ट; जिसमें खाया-पिया गया हो (बरतन, चौका); जिसमें जूठा लगा हो (हाथ, मुँह); * झूठा । पु० जूठन ।

जूड़*–वि० शीतल; प्रसन्न । पु० दे० 'जूड़ा' ।

जूड़ा–पु० सिरके बाल जो लपेटकर बाँध दिये गये हों, जूट, चोटी; गेंडुरी ।

जूड़ी–स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जड़ैया बुखार ।

जूता–पु० चमड़े, किरमिच, रबर आदिका बना हुआ पादत्राण, उपानह, पापोश । **–खोर**–वि० पीटे जानेका आदी, लतखोर, बेहया । मु० **–उछलना**–मार-पीट होना, जूती-पैजार होना । **(जूते) गाँठना**–जूतोंकी मरम्मत करना; नीच काम करना । **–चलना**–दे० 'जूता उछलना' । **–चाटना**–चापलूसी करना । **–पड़ना, –बरसना**–जूतोंकी मार पड़ना । **–मारना**–जूते लगाना; जलील करना; मुँहतोड़ जवाब देना । **–लगना**–जूते पड़ना; नुकसान होना, घाटा पड़ना; अपमानित होना । **–लगाना**–जूते मारना; अपमानित करना, लथेड़ना । **(जूतों)से ख़बर लेना, –से बात करना**–जूते लगाना ।

जूती–स्त्री० जनाना जूता; जूता । **–कारी**–स्त्री० जूतोंकी मार । **–ख़ोर, –ख़ोरा**–वि० जूते खानेका आदी; निर्लज्ज । **–छि(छु)पाई**–स्त्री० जूते छिपाने और लौटानेका नेग । **–पैज़ार**–स्त्री० जूता चलना, मार-पीट; गंदी लड़ाई । मु० **–की नोकपर मारना**–कुछ न समझना । **–की नोकसे–(मेरी) बलासे**, कुछ परवाह नहीं । **–के बराबर न समझना**–तुच्छ, हेय समझना । **जूतियाँ चटखाते फिरना**–मारा-मारा फिरना ।

जूथ*–पु० दे० 'यूथ' ।

जूथका, जूथिका*–स्त्री० दे० 'यूथिका' ।

जून–* वि० जीर्ण, पुराना । पु० वेला, वक्त; दिनका अर्द्ध भाग; तृण; [अं०] ईसवी सन्‌का छठा महीना ।

जूप*–पु० जुआ, द्यूत; विवाहमें वर-वधूके जुआ खेलनेकी एक रीति; दे० 'यूप' ।

जूमना*–अ० क्रि० जुटना, इकट्ठा होना ।

जूर*–पु० जोड़; ढेर ।

जूरना*–स० क्रि० जोड़ना, इकट्ठा करना । अ० क्रि० इकट्ठा होना ।

जूरा*–पु० दे० 'जूड़ा' ।

जूरी–स्त्री० पूला, जुट्टी; एक तरहकी पकौड़ी; [अं०] पंचोंका मंडल जो फौजदारी मुकदमेमें अभियुक्तके अपराधी होने या न होनेके संबंधमें जजको अपनी राय देता है ।

जूस–पु० दालका पानी; रोगीको दिया जानेवाला पथ्य ।

जूसी–स्त्री० राबके ऊपर छूटने या शकर बनानेमें उसके मैल और नमीके रूपमें निकलनेवाला शीरा, चोटा ।

जूह*–पु० दे० 'यूथ' ।

जूहर–पु० दे० 'जौहर' ।

जूही–स्त्री० एक झाड़ जिसके फूल बहुत छोटे, सुकुमार और बड़ी मधुर गंधवाले होते हैं; एक आतिशबाजी ।

जृंभ–पु० [सं०] जम्हाई; फैलाव; खिलना ।

जृंभक–वि० [सं०] जंभाई लेनेवाला; सुस्त करनेवाला । पु० एक अस्त्र; एक रुद्रगण ।

जृंभण–पु० [सं०] जम्हाई लेना; फैलना; खिलना ।

जृंभा–स्त्री० [सं०] दे० 'जृंभ' ।

जृंभिका–स्त्री० [सं०] जम्हाई; आलस्य ।

जृंभित–वि० [सं०] जिसने जम्हाई ली हो; फैला हुआ; फैलाया हुआ; चेष्टित; खिला हुआ ।

जेंगना*–पु० जुगनू–जेंगनाकी जोति कहा रजनी बिलात है'–सुंद० ।

जेंना*–स० क्रि० दे० 'जीमना' ।

जेँवन–पु० खानेकी चीज या कार्य ।

जेँवना–स० क्रि० दे० 'जीमना' । † पु० भोजन ।

जेँवनार–स्त्री० दे० 'जेवनार' ।

जेँवाना–स० क्रि० भोजन कराना ।

जे*–सर्व० 'जो'का बहु० ।

जेइ, जेउ, जेऊ*–सर्व० दे० 'जो' ।

जेट–स्त्री० ढेर; गोद ।

जेटी–स्त्री० पानीके ऊपर बना हुआ लकड़ी आदिका चबूतरा जिसपरसे जहाजपर माल चढ़ाया-उतारा जाता है ।

जेठंस–पु०, **जेठंसी**–स्त्री० बड़े भाईका हिस्सा; ज्येष्ठांश ।

जेठ–वि० ज्येष्ठ, उम्रमें बड़ा । पु० पतिका बड़ा भाई; वैसाख और असाढ़के बीच पड़नेवाला चांद्रमास ।

जेठा–वि० बड़ा, ज्येष्ठ; श्रेष्ठ ।

जेठाई–स्त्री० जेठा होना, जेठापन ।

जेठानी–स्त्री० पतिके बड़े भाईकी स्त्री ।

जेठी–वि० जेठका; जेठमें होनेवाला । * स्त्री० जेठानी ।

जेठीमधु–पु० मुलेठी ।

जेठौत, जेठौता–पु० जेठका लड़का ।

जेतव्य–वि० [सं०] जीतने योग्य, जेय ।

जेता*–वि० जितना ।

जेता(तृ)–वि० [सं०] जीतनेवाला, विजयी । पु० विष्णु ।

जेतिक*–अ० जितना ।

जेते*–वि० जितने ।

जेना–स० क्रि० दे० 'जीमना' ।

जेब–पु० [अ०] गरेबान; कुरते, कमीज आदिमें रुपये-पैसे, घड़ी-रूमाल आदि रखनेके लिए लगी हुई थैली, खीसा,

पाकिट (हिंदीमें स्त्रीलिंग भी)। **–कट,–कतरा**–पु० जेब कतरनेवाला, पाकिटमार। **–ख़र्च**–पु० निजी खर्च; निजी खर्चके लिए मिलनेवाली रकम। **–खास**–पु० राजा, बादशाहके निजी खर्चके लिए राज्यकोशसे दिया जानेवाला धन। **–घड़ी**–स्त्री० जेबमें रखनेकी (छोटी) घड़ी।

जेबी–वि० [अ०] जेबमें रखने लायक; छोटा।

जेय–वि० [सं०] जीतने योग्य, जेतव्य।

जेर–स्त्री० आँवल।

ज़ेर–अ० [फा०] नीचे, तले। वि० कमजोर, दवा हुआ। स्त्री० अरबी-फारसी लिखावटमें इ, ई और एकी मात्रा। **–जामा**–पु० वह कपड़ा जिसे घोड़ेकी पीठपर डालकर ऊपर जीन कसते हैं। **–तजवीज़**–वि० विचाराधीन, जिसपर विचार हो रहा हो, अनिर्णीत (मुकदमा)। **–बार**–वि० बौझके नीचे दवा हुआ; ऋणग्रस्त; भारी खर्च, आर्थिक हानि उठानेवाला।

जेरना*–स० क्रि० उत्पीड़ित करना, परेशान करना।

जेरिया, जेरी–स्त्री० चरवाहेका डंडा; खेतीका एक औजार।

जेल–पु०, स्त्री० [अं०] कैदखाना, बंदीगृह; * जंजाल, बंधन। **–ख़ाना**–पु० कैदखाना, कारागार। **मु०–काटना**–कैदकी सजा भुगतना।

जेलर–पु० [अं०] जेलकी देखभाल करनेवाला अफसर।

जेवड़ी–स्त्री० दे० 'जेवरी'।

जेवना–स० क्रि० दे० 'जीमना'।

जेवनार–स्त्री० भोज, दावत।

जेवर–पु० एक चिड़िया; दे० 'ज़ेवर'। स्त्री० रस्सी।

ज़ेवर–पु० [फा०] गहना, आभूषण; शोभारूप वस्तु, शृंगार।

जेवरा*–पु० फंदा, रस्सी।

जेवरी*–स्त्री० रस्सी।

ज़ेह–स्त्री० [फा०] कमानका चिल्ला; लैस, फीता; दीवारमें नीचेकी ओर किया हुआ कुछ अधिक मोटा पलस्तर।

जेहन–पु० दे० 'ज़ेह्न'। **–दार**–वि० तीक्ष्णबुद्धि।

जेहर*–पु० पाजेब।

जेहरि, जेहरी*–स्त्री० दे० 'जेहर'।

जेहि*–सर्व० जिसे; जिससे।

ज़ेह्न–पु० [अ०] धारणाशक्ति; बुद्धि, समझ।

जै–†वि० जितने। * स्त्री० दे० 'जय'। **–कार**–पु० दे० 'जयकार'। **–माल,–माला**–स्त्री० दे० 'जयमाला'।

जैत–पु० एक पेड़। * स्त्री० जीत, जय। **–पत्र**–पु० जयपत्र। **–वार**–वि० जीतनेवाला, विजेता।

जैतून–पु० [अ०] एक सदाबहार पेड़ जिसका फल खाया और बीजोंका तेल खाने और दवाके काममें लाया जाता है।

जैन–पु० [सं०] जिनकी उपासना करनेवाला धर्म, अहिंसाको माननेवाला भारतका एक निरीश्वरवादी संप्रदाय।

जैनी–पु० जैन धर्मको माननेवाला।

जैनु*–पु० भोजन।

जैमिनि–पु० [सं०] पूर्वमीमांसा दर्शनके प्रवर्तक एक मुनि जो वेदव्यासके शिष्य थे। **–दर्शन**–पु० पूर्वमीमांसा।

ज़ैलदार–पु० [अ०] वह कर्मचारी जिसके जिम्मे कई गाँवोंकी तहसील आदि हो।

जैस*–वि० जैसा।

जैसा–वि० जिस तरहका, यादृश; जितना; सरीखा, सदृश। **–(से)को तैसा**–जो जैसा है उसके साथ वैसा (व्यवहार)।

जैसे–अ० जिस तरह, जिसरीतिसे। **–जैसे**–अ० ज्यों-ज्यों।

जैसो*–वि० दे० 'जैसा'।

जौं–अ० दे० 'ज्यों'। **–जौं**–अ० दे० 'ज्यों-ज्यों'।

जोंक–स्त्री० पानीका एक कीड़ा जो प्राणियोंकी देहमें चिपककर उनका रक्त पीता है, जलौका, जलसर्पिणी।

जोंकी–स्त्री० पानीके साथ जोंक पी जानेसे गाय-बैल आदिके पेटमें होनेवाली जलन; पानीका एक कीड़ा; जोंक।

जोंदरी†, जोंधरी–स्त्री० छोटे दानेकी ज्वार।

जोंधैया†–स्त्री० चाँदनी।

जो–सर्व० संबंधवाचक सर्वनाम। अ० यदि, अगर। **–पै***–अ० अगर, यद्यपि।

जोअना*–स० क्रि० दे० 'जोवना'।

जोइ*–स्त्री० दे० 'जोय'। सर्व० दे० 'जो'।

जोइसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोउ०–सर्व० दे० 'जो'।

जोख–स्त्री० जोखनेकी क्रिया या भाव; तौल।

जोखना–स० क्रि० तौलना; * सोचना, बिचारना।

जोखम–स्त्री० दे० 'जोखिम'।

जोखा–पु० हिसाब (प्रायः 'लेखा'के साथ प्रयुक्त)।

जोखिउँ*–स्त्री० दे० 'जोखिम'।

जोखिता*–स्त्री० दे० 'योषिता'।

जोखिम–स्त्री० हानि, अनिष्ट, घाटेकी संभावना; खतरा; ऐसी चीज जो विपत्तिका कारण हो। **–का काम**–खतरेका काम। **मु०–उठाना,–लेना**–जोखिमवाला काम करना, हानि या अनिष्टका खतरा लेनेको तैयार होना।

जोखिमी–वि० जिसमें जोखिम हो।

जोखौं–स्त्री० जोखिम, खतरा।

जोग–पु० दे० 'योग'। वि० दे० 'योग्य'। अ० ...को, के लिए (...जोग लिखी...से...)। **–माया**–स्त्री० दे० 'योगमाया'। **–साधन**–पु० तपश्चर्या।

जोगड़ा–पु० नकली योगी।

जोगन–स्त्री० दे० 'जोगिन'।

जोगवना*–स० क्रि० हिफाजतसे रखना; इकट्ठा करना; ध्यान न देना; पूरा करना; आदर करना।

जोगानल–पु० योगसे उत्पन्न अग्नि।

जोगिंद*–पु० दे० 'योगींद्र'।

जोगि*–स्त्री० दे० 'जोगिन'।

जोगिन–स्त्री० जोगी स्त्री या जोगीकी स्त्री; पिशाचिनी; एक रणदेवी।

जोगिनी–स्त्री० दे० 'योगिनी'; दे० 'जोगिन'।

जोगिया–वि० जोगका; जोगीका; गेरूके रंगका, भगवा। पु० जोगिया रंग; जोगीड़ा; जोगी।

जोगींद्र–पु० दे० 'योगींद्र'।

जोगी–पु० दे० 'योगी'; भिक्षाजीवी गृहस्थ साधु।

जोगीड़ा–पु० वसंतमें गाया जानेवाला एक तरहका चलता गाना; इस प्रकारका गाना गानेवालोंका समाज।

जोगीश्वर, जोगेश्वर–पु० दे० 'योगीश्वर'।

जोग्य–वि० दे० 'योग्य'।

जोजन*–पु० दे० 'योजन'।

जोट*–पु० जोड़ा; साथी; झुंड। वि० बराबरीका।

जोटा*–पु० जोड़ा; गोनी।

जोटिंग–पु०[सं०]महादेव; महाव्रती,कठिन तप करनेवाला।

जोटी*–स्त्री० जोड़ी; जोड़का साथी।

जोड़–पु० जोड़नेकी क्रिया; कई संख्याएँ जोड़नेसे आनेवाली संख्या, योगफल; वह जगह जहाँ दो चीजें या दो टुकड़े जुड़ें; संधिस्थान, गाँठ; जोड़ा जानेवाला टुकड़ा, पैवंद; एकसी या एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; जोड़ा; मेल; बराबरी करनेवाला, प्रतिभट; एक घरमें बैठी हुई दो गोटें; पूरा पहनावा, सिरसे पाँवतकके कपड़े; दो पहलवान जिनकी कुश्ती हो। **–का**–बराबरीका, प्रतिभट। **–जोड़**–पु० गाँठ-गाँठ, हर अंग। **–तोड़**–पु० दाव-पेच (भिड़ाना, लड़ाना)। **–दार**–वि० जोड़वाला। **मु०–का तोड़**–बराबरीका, जवाब।**–छूटना**–पहलवानोंके एक जोड़का कुश्तीके लिए अखाड़ेमें उतारा जाना।

जोड़ना–स० क्रि० दो चीजों, टुकड़ोंको एक दूसरेके साथ चिपकाना, सीना, मिलाना; टूटी हुई चीजके टुकड़ोंको मिलाना, बैठाना; तरतीबसे लगाना (ईंटे, अक्षर); संख्याओंको जमा करना; गिनतीमें शामिल करना; गढ़ना, मनसे उपजाना (बात); जलाना; पद्यरचना करना; स्थापित करना (मित्रता, नाता); जोतना।

जोड़वाँ–वि०, पु० दे० 'जुड़वाँ'।

जोड़वाई–स्त्री० जोड़वानेकी क्रिया या उजरत।

जोड़वाना–स० क्रि० जोड़नेका काम दूसरेसे कराना।

जोड़ा–पु० एकसी या एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; साथ पहने जानेवाले दो कपड़े (कुरता-पाजामा, लहँगा-दुपट्टा); पूरा पहनावा; दोनों पाँवोंके जूते; नर और मादा, स्त्री और पुरुष; वर-कन्या; ब्याहमें दुलहिनके लिए भेजा जानेवाला कपड़ा–लहँगा, साड़ी आदि; जोड़। **मु०–खाना**–(पशु-पक्षीका) मैथुन करना।

जोड़ाई–स्त्री० जोड़नेका काम या उजरत।

जोड़ी–स्त्री० जोड़ा; एक साथ जोते जानेवाले दो बैल या घोड़े; दो घोड़ोंकी गाड़ी, बग्घी; मुगदरका जोड़ा; मँजीरा; जोड़। **–दार**–वि० बराबरीका, जोड़का। **–वाल**–पु० गायकदलके साथ मँजीरा बजानेवाला।

जोड़ू–स्त्री० दे० 'जोरू'।

जोत–स्त्री० जोतनेका भाव; काश्त; उतनी जमीन जितनी एक काश्तकार जोतता हो; वह रस्सी या तस्मा जिससे बैल हलके और घोड़े गाड़ीके साथ जोते जायँ; तराजूके पलड़ोंको डाँड़ीसे बाँधनेवाली रस्सी। **–दार**–पु० काश्तकार।

जोतना–स०क्रि० घोड़ों, बैलों आदिको गाड़ी, हल आदिसे इस तरह बाँधना कि वे उसे खींच सकें, नाँधना; गाड़ी आदिको घोड़े आदि जोतकर चलनेके लिए तैयार करना; हलसे जमीनको चीरना, बोने लायक बनाना; किसीको उसकी इच्छाके विरुद्ध काममें लगाना।

जोता–पु० जुआठेमें बँधी हुई रस्सी जिसमें हल या गाड़ीमें जोते जानेवाले बैलकी गरदन फँसायी जाती है; हलवाहा।

जोताई–स्त्री० जोतनेकी क्रिया या भाव; जोतनेकी मजदूरी।

जोताना–स० क्रि० जोतनेका काम (दूसरेसे) कराना।

जोति*–स्त्री० जोतने लायक जमीन; दे० 'ज्योति'; देवताओंके प्रीत्यर्थ जलाया जानेवाला दीपक। **–वंत***–वि० ज्योतिर्मय।

जोतिक, जोतिखी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोतिसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोती†–स्त्री० दे० 'ज्योति'; दे० 'जोति'; चक्कीकी कीली और हत्थेमें बँधी रहनेवाली रस्सी; लगाम।

जोत्स्ना–स्त्री० दे० 'ज्योत्स्ना'।

जोध, जोधा*–पु० दे० 'योद्धा'।

जोन*–स्त्री० दे० 'योनि'।

जोना*–स० क्रि० देखना।

जोनि–स्त्री० दे० 'योनि'।

जोन्ह, जोन्हाई*–स्त्री० चाँदनी।

जोन्हरी†–स्त्री० छोटे दानेकी ज्वार।

जोन्हि–स्त्री० जुन्हाई, चाँदनी।

जोप*–पु० दे० 'यूप'।

ज़ोफ़–पु० [अ०] कमजोरी, निर्बलता।

जोबन–पु० जवानी, यौवन; यौवनजनित सुंदरता; बहार; स्तन, छाती। वि० युवा –'सूर स्याम लरिकाई भूली जोबन भये मुरारी'–सू०।

ज़ोम–पु० [अ०] गर्व, घमंड; धारणा, खयाल।

जोय*–स्त्री० पत्नी, जोरू। सर्व० जो।

जोयना*–स० क्रि० जलाना; दे० 'जोहना'।

जोयसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

ज़ोर–पु० [फा०] बल, शक्ति; प्रबलता; वेग, तेजी; वश, इख्तियार; सहारा, भरोसा; शतरंजके एक मुहरेको दूसरेसे मिलनेवाला बल, सहारा; बलप्रयोग, जबरदस्ती; मेहनत, श्रम। **–आज़माई**–स्त्री० बलपरीक्षा। **–का**–प्रबल, जोरदार। **–ज़ुल्म**–पु० अन्याय-अत्याचार। **–दार**–वि० जोरवाला, प्रबल; आग्रह-युक्त (सिफारिश)।**–शोर**–पु० तेजी; प्रबलता; जोश। **(ज़ोरे)क़लम**–पु० कलमका जोर, लेखनशक्ति। **–बाज़ू**–पु० बाहुबल, भुजबल। **मु०(ज़ोर)आज़माना**–बलपरीक्षा करना, भिड़ना, मुकाबला करना। **–करना**–बल लगाना; कोशिश करना; बढ़ना;†व्यायाम करना।**–चलना**–बस चलना। **–डालना**–दबाव डालना, आग्रह करना।**–दिखाना**–शक्ति, अधिकारका परिचय देना। **–देना**–शतरंजके मुहरेको दूसरे मुहरेका सहारा देना; आग्रह करना; बोझ डालना। **–पकड़ना**–बल प्राप्त करना; बढ़ना। **–पर होना**–बाढ़पर, बढ़ा हुआ, प्रबल होना।**–बाँधना**–प्रबल होना, बल प्राप्त करना। **–मारना**–बहुत जोर लगाना; बहुत कोशिश करना। **(ज़ोरों)से**–जोर देकर, बहुत आग्रहके साथ।

जोरना*–स० क्रि० दे० 'जोड़ना'।

जोराजोरी–अ० बलपूर्वक, जबरदस्ती। स्त्री० जबरदस्ती।

ज़ोरावर–वि० [फा०] बलवान्; जबरदस्त।

जोरी*–स्त्री० दे० 'जोड़ी'; जबरदस्ती।

जोरू–स्त्री० पत्नी, भार्या। **–जाँता**–पु० घर-बार।

जोल*–पु० समूह, झुंड–'थिथके पट्पद जोल'–सू०।

जोलहा†–पु० जुलाहा।

जोलाहल*–स्त्री० ज्वाला।

जोलाहा–पु० दे० 'जुलाहा'।

जोली*–स्त्री० बराबरी; जोड़ी, बराबरीका आदमी।

जोलो*–पु० अंतर।

जोवना*–स० क्रि० दे० 'जोहना'।

जोश–पु० [फा०] उफान, उबाल; गरमी, उत्तेजना; उत्साह; आवेश। **–व खरोश**–पु० धूम, शोरगुल; उत्साह। **मु० –देना**–उबालना। **–मारना**–उबलना; उमड़ना; मथना। **–में आना**–क्रुद्ध होना; उत्तेजित होना।

जोशन–पु० [फा०] बाँहपर पहननेका एक गहना; कवच।

जोशाँदा–पु० [फा०] काढ़ा, क्वाथ।

जोशी(षी)–पु० ज्योतिषी; गुजराती ब्राह्मणोंकी उपजाति।

जोशीला–वि० जोशसे भरा हुआ, ओजःपूर्ण।

जोष*–स्त्री० जोख, तौल; स्त्री।

जोषा–स्त्री० [सं०] स्त्री।

जोषिता, जोषित्–स्त्री० [सं०] स्त्री।

जोह*–स्त्री० खोज; प्रतीक्षा; दृष्टि।

जोहन*–स्त्री० देखनेकी क्रिया; खोज; प्रतीक्षा।

जोहना*–स० क्रि० देखना; राह देखना; खोजना।

जोहारना–स० क्रि० दे० 'जुहारना'।

जौं*–अ० जो, यदि; ज्यों।

जौंरा-भौंरा–पु० खजाना रखनेका तहखाना।

जौंरे*–अ० निकट, आस-पास।

जौ–पु० रबीकी फसलका एक अनाज, यव; इसका पौधा; एक पौधा जिसकी टहनियोंके टोकरे आदि बनते हैं; एक तौल। *अ० जो, यदि, अगर; जब। **–पै***–अ० अगर, यदि।

जौक, जौख*–पु० समूह, झुंड; सेना।

ज़ौजा–स्त्री० [फा०] पत्नी, भार्या।

जौतुक–पु० दे० 'यौतुक'।

जौन*–सर्व० दे० 'जो'। पु० दे० 'यवन'।

जौन्ह*–स्त्री० दे० 'जोन्ह'।

जौबति*–स्त्री० दे० 'युवती'।

जौबन, जौवन*–पु० दे० 'यौवन'।

जौहर–पु० युद्धमें शत्रुकी विजय निश्चित हो जानेपर राजपूत स्त्रियोंका दहकती हुई विशाल चितामें एक साथ प्रवेश कर जल मरना; इस कार्यके लिए बनायी गयी चिता; [अ०] रत्न; सार, सत्त्व; गुण, खूबी (खुलना, दिखाना); तलवारपरकी बारीक धारियाँ जिनसे लोहेकी अच्छाईका पता चलता है; आईनेकी चमक। **–दार**–वि० जिसमें जौहर हो।

जौहरी–पु० [अ०] जवाहरातका रोजगार करनेवाला, रत्न-व्यवसायी; पारखी, गुण-दोष पहचाननेवाला, क़द्रदाँ। **–बाज़ार**–पु० वह बाजार जहाँ जवाहरात बिकें, रत्नहाट।

ज्ञ–वि० [सं०] (संज्ञा, आदिके अंतमें लगनेसे) जाननेवाला, ज्ञाता (अज्ञ, बहुज्ञ इ०)।

ज्ञपित, ज्ञप्त–वि० [सं०] जताया हुआ, ज्ञापित।

ज्ञात–वि० [सं०] जाना हुआ, विदित। **–यौवना**–स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे यौवनागमका ज्ञान हो।

ज्ञातव्य–वि० [सं०] जानने योग्य, ज्ञेय।)

ज्ञाता(तृ)–वि० [सं०] जाननेवाला। पु० चतुर आदमी।

ज्ञाति–स्त्री० जाति। पु० [सं०] पिता; पितृवंशमें उत्पन्न व्यक्ति, गोतिया। **–कर्म(न्)**–पु० भाई-बंदका कर्तव्य।

ज्ञान–पु० [सं०] जानना, बोध, जानकारी; सम्यक् बोध; पदार्थका ग्रहण करनेवाली मनकी वृत्ति; शास्त्रानुशीलन आदिसे आत्मतत्त्वका अवगम, आत्मसाक्षात्कार। **–कोश**–पु० वह कोश जिसमें ज्ञातव्य विषयोंका विवरण दिया गया हो। **–गम्य**–वि० जो जाना, समझा जा सके; जो केवल ज्ञानका विषय हो सके (परमेश्वर)। **–गर्भ**–वि० ज्ञानसे भरा हुआ। **–गोचर**–वि० ज्ञान-गम्य। **–चक्षु(स्)**–पु० ज्ञानकी आँख, अंतर्दृष्टि। **–दा**–स्त्री० सरस्वती। **–दाता(तृ)**–वि० ज्ञान देनेवाला। पु० गुरु। **–पिपासा**–स्त्री० ज्ञानप्राप्तिकी तीव्र आकांक्षा। **–योग**–पु० शुद्ध ज्ञान द्वारा मोक्षका साधन। **–वृद्ध**–वि० ज्ञानमें बड़ा।

ज्ञानमय–वि० [सं०] ज्ञानसे भरा हुआ; ज्ञानरूप; चिन्मय।

ज्ञानी(निन्)–वि० [सं०] ज्ञानवान्, जिसने आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है। पु० दैवज्ञ; ऋषि।

ज्ञानेंद्रिय–स्त्री० [सं०] विषयबोधका साधन, इंद्रियाँ–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

ज्ञानोदय–पु० [सं०] ज्ञानका उदय, उत्पत्ति।

ज्ञाप–पु० (मेमो) दे० 'ज्ञापन', स्मार।

ज्ञापक–वि० [सं०] जतानेवाला, सूचक, बोधक। पु० गुरु।

ज्ञापन–पु० [सं०] जताना, बताना; प्रकट करना; (मेमोरेंडम) वह पत्र जिसमें याद दिलानेके लिए आवश्यक बातें संक्षेपमें लिख दी गयी हों; घटनाओंका वह संक्षिप्त अभिलेख जो बादमें प्रयोगके लिए हो; स्मारक।

ज्ञापयिता(तृ)–वि० [सं०] ज्ञापक।

ज्ञापित–वि० [सं०] जताया हुआ, सूचित; प्रकाशित।

ज्ञेय–वि० [सं०] जानने योग्य; जो जाना जा सके।

ज्या–स्त्री० [सं०] धनुष्की डोरी; चापके सिरोंको मिलानेवाली सीधी रेखा; पृथ्वी; माता। **–मिति**–स्त्री० रेखागणित।

ज़्यादती–स्त्री० अधिकता; जुल्म; जबरदस्ती।

ज़्यादा–वि० अधिक; फाजिल।

ज्यान*–पु० दे० 'जियान'।

ज्याना*–स० क्रि० दे० 'जिलाना'।

ज्यारना*–स० क्रि० जिलाना।

ज्यावना*–स० क्रि० जिलाना।

ज्यूँ–अ० दे० 'ज्यों'।

ज्येष्ठ–वि० [सं०] सबसे बड़ा; श्रेष्ठ। पु० बड़ा भाई; जेठका महीना; परमेश्वर। **–तात**–पु० बापका बड़ा भाई।

ज्येष्ठांश–पु० [सं०] बपौतीमें बड़ा भाग पानेका हक, जेठंसी।

ज्येष्ठा–स्त्री० [सं०] बड़ी बहिन; १८वाँ नक्षत्र; वह स्त्री जो पतिको औरोंसे अधिक प्यारी हो (सा०); लक्ष्मीकी बड़ी बहिन, अलक्ष्मी, दरिद्रा; गंगा; बिचली उँगली; छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम–पु० [सं०] गृहस्थाश्रम; गृहस्थ।

ज्यौं–अ० जैसे, जिस तरह; जिस क्षण। **–का त्यौं**–जैसा था वैसा हो। **–ज्यौं**–अ० जैसे-जैसे, जिस क्रमसे।

–त्यों–अ० जैसे-तैसे, किसी तरह; कठिनाईसे ।

ज्योतिःशास्त्र–पु० [सं०] ज्योतिर्विद्या ।

ज्योति(स्)–स्त्री० [सं०] प्रकाश, रोशनी; लौ; सूर्य; नक्षत्र; अग्नि; आँखकी पुतलीका मध्यविंदु;दृष्टि; आत्मा ।

ज्योतिक*–पु० ज्योतिषी ।

ज्योतित–वि० [सं०] द्युतिमान्, प्रकाशित ।

ज्योतिमान–वि० दे० 'ज्योतिष्मान्' ।

'ज्योतिर्'–स्त्री० [सं०] 'ज्योतिस्'का समासगत रूप । **–इंग,–इंगण**–पु० जुगनू ।**–मंडल**–पु० नक्षत्रमंडल । **–मय**–वि० ज्योतिसे भरा हुआ, द्युतिमय ।**–लिंग**–पु० शिव; शिवके मुख्य–सोमनाथ, महाकाल,विश्वेश्वर आदि–१२ लिंगोंमेंसे कोई । **–लोक**–पु० ध्रुवलोक; परमेश्वर । **–विद्**–पु० ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला । **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिषशास्त्र ।

ज्योतिश्चक्र–पु० [सं०] नक्षत्रोंसे युक्त राशिचक्र ।

ज्योतिष–पु० [सं०] ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति आदिका विचार करनेवाला शास्त्र (ग० ज्यो०); ग्रह-नक्षत्रोंआदिके शुभाशुभ फल बतानेवाला शास्त्र (फ० ज्यो०) ।

ज्योतिषी(षिन्)–पु० [सं०] ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला, दैवज्ञ ।

ज्योतिष्ना*–स्त्री० ज्योत्स्ना ।

ज्योतिष्पथ–पु० [सं०] आकाश, अंतरिक्ष ।

ज्योतिष्मती–स्त्री० [सं०] रात्रि ।

ज्योतिष्मान्(मत्)–वि० [सं०] ज्योतिर्मय, आलोकयुक्त । पु० सूर्य; प्लक्षद्वीपका एक पर्वत ।

ज्योत्स्ना–स्त्री [सं०] चाँदनी; चाँदनी रात; दुर्गा; सौंफ ।

ज्योनार–स्त्री० रसोई; भोज ।

ज्योहत*–पु० आत्महत्या ।

ज्यौं*–अ० यदि, अगर ।

ज्यौतिष–वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी ।

ज्यौतिषिक–पु० [सं०] ज्योतिषी ।

ज्वर–पु० [सं०] एक साधारण रोग जिसका मुख्य लक्षण शरीरकी गरमीका स्वाभाविकसे अधिक हो जाना है, ताप, बुखार; मानसिक कष्ट; उत्तेजना (कामज्वर) ।

ज्वरा–स्त्री० [सं०] ज्वर; * मृत्यु ।

ज्वरातिसार–पु० [सं०] ज्वरयुक्त अतिसार रोग ।

ज्वर्रा*–पु० दे० 'जुर्रा' ।

ज्वलंत–वि० जलता हुआ, प्रकाशमान; स्पष्ट ।

ज्वलन–पु०[सं०] जलन;जलना; अग्नि; लपट । **–शील**–वि०(कंबस्टिबिल, इनफ्लैमेबिल) जो बड़ी आसानीसे, थोड़ेमें ही, जल उठे, भड़क उठे; ज्वलनीय, ज्वल्य ।

ज्वलित–वि० [सं०] जलता-बलता हुआ, दीप्त ।

ज्वल्य–वि० [सं०] (कंबस्टिबिल) जल उठने या भभक उठने योग्य ।

ज्वान†–वि०, पु० दे० 'जवान' ।

ज्वानी†–स्त्री० दे० 'ज्वानी' ।

ज्वार–स्त्री० खरीफकी फसलमें होनेवाला एक मोटा अनाज; चंद्रमाके आकर्षणके कारण समुद्रके जलका ऊपर उठना, भाटाका उलटा । **–भाटा**–पु० समुद्रके जलका ऊपर उठना और फिर नीचे आना, चढ़ाव-उतार ।

ज्वाल–पु० [सं०] ज्वाला; मशाल ।

ज्वाला–स्त्री०[सं०] आगकी लपट, अग्निशिखा; ताप,दाह । **–मुखी**–स्त्री० एक पीठस्थान; अग्नि, लावा आदि; * सुरांगना । पु० [हिं०] वह पहाड़ जिसकी चोटीके पास स्थित गर्तसे कोयला, राख, जलता हुआ तरल पदार्थ, जलती हुई गैस आदि बाहर निकले ।

झ

झ–देवनागरी वर्णमालाका नवाँ व्यंजन वर्ण ।

झंकना–अ० क्रि० दे० 'झींखना' ।

झंकार–स्त्री० [सं०] झनझनाहट; झाँझ, पायल आदिके बजनेसे होनेवाली ध्वनि; वीणा, सितार आदिकी ध्वनि ।

झंकारना–स० क्रि० 'झन-झन' आवाज करना । अ०क्रि० 'झन-झन' आवाज होना ।

झंकारी(रिन्)–वि०[सं०] गुंजन करनेवाला; झंकारयुक्त ।

झंकृत–वि० [सं०] झंकारयुक्त, झंकार करता हुआ ।

झंकृति–स्त्री० [सं०] झंकार ।

झंखना–अ० क्रि० दे० 'झींखना' ।

झंखाड़–पु० काँटेदार झाड़ी या पौधा; ऐसी झाड़ियों या पौधोंका समूह; रद्दी चीजोंका ढेर ।

झँगा–पु० दे० 'झगा' ।

झँगुला, झँगूला*–पु० ढीला कुरता (बच्चोंका) ।

झँगुलिया, झँगुली, झँगूली*–स्त्री० दे० 'झगा' ।

झंझ*–पु० दे० 'झाँझ' ।

झंझट–पु०,स्त्री० झमेला; झगड़ा-बखेड़ा; कठिनाई; परेशानी ।

झंझटी–वि० झंझटवाला (काम); झगड़ालू, बखेड़िया ।

झंझनाना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'झंकारना' ।

झंझर–पु० दे० 'झज्झर' ।

झँझरा–वि० खखरा, झीना ।

झँझरी–स्त्री० जाली; जालीदार खिड़की; जालीदार चादर; चलनी । **–दार**–वि० जालीदार, सूराखदार ।

झंझा–* वि० तेज, प्रबल । स्त्री० [सं०] तेज हवा, अंधड़; आँधी-पानी; बड़ी-बड़ी बूँदोंकी वर्षा; अंधड़ या अंधड़के साथ होनेवाली वर्षाकी आवाज । **–वात**–पु० अंधड़; वर्षाके साथ बहनेवाली तेज हवा ।

झंझानिल–पु० [सं०] दे० 'झंझावात' ।

झंझार*–पु० आगकी लपट, ज्वाला ।

झँझोड़ना–स०क्रि० झकझोरना; बिल्ली आदिका शिकारको दाँतोंमें पकड़कर झटके देना, नोचना ।

झंड*–पु० (बच्चेके) मुंडनसे पहलेके, पैदाइशी बाल ।

झंडा–पु० बाँस या लकड़ीके डंडेके सिरेपर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा जो राष्ट्र आदिके प्रतीकके रूपमें या संकेत आदिके लिए काममें लाया जाता है, पताका, निशान । **–जहाज़**–पु० बेड़ेके नायकका जहाज । **–बरदार**–पु० झंडा ले चलनेवाला । मु० (किसी चीजका)**–खड़ा करना**–किसी चीजके नामपर, किसी

बातके लिए लोगोंको इकट्ठा करना, उनका आह्वान करना (बगावतका झंडा खड़ा करना)। **(किसी नगर, दुर्ग आदिपर)–गाड़ना–**…कब्जा करना; अपने अधिकारकी घोषणा करना। **–झुकाना–**किसीकी मृत्युपर राज्य या किसी दल, संस्थाकी ओरसे शोकप्रकाश किया जाना। **(किसीके)झंडे तले (–के नीचे)आना, जमा होना–**किसीकी ओरसे लड़नेके लिए तैयार होना, एकत्र होना।

झंडी–स्त्री॰छोटा झंडा। **–दार**–वि॰जिसमें झंडी लगी हो।

झँडूला–वि॰ जिसके सिरपर गर्भके बाल हों, जिसका मुंडन न हुआ हो; गर्भका; घनी पत्तियोंवाला।

झंप–पु॰ [सं॰] छलाँग, कुदान; घोड़ोंके गलेका एक गहना।

झँपना–अ॰ क्रि॰ छलाँग मारना, उछलना; झपटना; ढकना; झेँपना; (पलकोंका) गिरना; ऊँघना।

झँपरिया, झँपरी*–स्त्री॰ पालकीका ओहार।

झंपान–पु॰ पहाड़की चढ़ाईमें काम आनेवाली एक तरहकी खुली डोली।

झंपित*–वि॰ ढका हुआ।

झँपोला–पु॰ छोटा झाँपा, पिटारा।

झंब*–पु॰ गुच्छा, समूह।

झँवकार, झँवकारा*–वि॰ स्याह, श्यामवर्ण।

झँवराना–अ॰ क्रि॰ काला पड़ना; मुरझाना।

झँवा–पु॰ दे॰ 'झाँवाँ'।

झँवाना–अ॰ क्रि॰ कुछ स्याही आ जाना; मुरझाना; आगका जलकर बुझने लगना, कोयले, अंगारेपर राख चढ़ जाना; घटना; झाँवेसे रगड़ा जाना। स॰ क्रि॰ स्याही ला देना; आग ठंडी करना; झाँवेसे रगड़ना या रगड़वाना।

झँवावना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'झँवाना'।

झँसना–स॰ क्रि॰ ठगना, धोखा देकर, बेवकूफ बनाकर पैसे ले लेना; सिर आदिमें धीरे-धीरे तेल मलना।

झ–पु॰[सं॰] झंझावात; अंधड़; तेज हवाके साथ वृष्टि; बृहस्पति; दैत्यराज; 'झन-झन'की आवाज; ताल; नष्ट वस्तु।

झइँ, झईँ*–स्त्री॰ दे॰ 'झाँईं'।

झउआ–पु॰ मिट्टी ढोनेका छिछला टोकरा।

झक–स्त्री॰ सनक, खब्त, धुन; बड़बड़ाहट; आँच, ताप; दे॰ 'झख'। वि॰ चमकता हुआ, झकाझक।

झकझक–स्त्री॰ कहासुनी, हुज्जत, तकरार।

झकझकाहट–स्त्री॰ चमक।

झकझेलना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'झकझोरना'।

झकझोर–पु॰ झकझोरनेका भाव, झकझोरा; झोंका, झटका।

झकझोरना–स॰क्रि॰पकड़कर जोरसे हिलाना, झटका देना।

झकझोरा–पु॰ झकझोरनेका भाव, झोँका, झटका।

झकड़–पु॰ दे॰ 'झक्कड़'; लू (बुंदेल)।

झकना–अ॰ क्रि॰ बकवाद करना; बड़बड़ाना; झगड़ना।

झका*–वि॰ दे॰ 'झक'।

झकाझक–वि॰ खूब साफ और चमकता हुआ, चमाचम।

झकुराना*–अ॰क्रि॰झकोरा खाना। स॰क्रि॰झकोरा देना।

झकोर–पु॰ दे॰ 'झकोरा'।

झकोरना–अ॰ क्रि॰ हवाका झोंकेके साथ, पेड़ोंको झकझोरते हुए बहना, झकोरा मारना।

झकोरा–पु॰ हवाका तेज झोँका; झटका।

झकोल–पु॰ दे॰ 'झकोर'।

झक्क–स्त्री॰, वि॰ दे॰ 'झक'।

झक्कड़–पु॰ अंधड़, तेज हवा। वि॰ दे॰ 'झक्की'।

झक्की–वि॰ सनकी, खब्ती; बक्की, बकवादी।

झक्खना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'झीँखना'।

झख–पु॰ दे॰ 'झष'। स्त्री॰ झीँखनेकी क्रिया। **–केतु–**दे॰ 'झषकेतु'। **–निकेत–**पु॰ दे॰ 'झषनिकेत'। **–राज–**पु॰ दे॰ 'झषराज'। **मु॰–मारना–**बेकार काम करना, मजबूर होना।

झखना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'झीँखना'।

झखी*–स्त्री॰ झष, मछली।

झगड़ना–अ॰ क्रि॰ (दो आदमियोंका)झगड़ा करना, लड़ना।

झगड़ा–पु॰ दो आदमियोंका वाक्कलह, तकरार; बखेड़ा। **मु॰–मोल लेना–**जान-बूझकर झगड़ेमें पड़ना; झगड़ा खड़ा करनेवाली बात करना।

झगड़ालू–वि॰ झगड़ा करनेवाला, कलहप्रिय।

झगड़ी–वि॰ स्त्री॰ झगड़ा करनेवाली।

झगर–पु॰ एक चिड़िया; * दे॰ 'झगड़ा'।

झगरना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'झगड़ना'।

झगरा*–पु॰ दे॰ 'झगड़ा'।

झगराऊ*–वि॰ दे॰ 'झगड़ालू'।

झगरी–वि॰ स्त्री॰ 'झगड़ी'। स्त्री॰ झगड़ा, रार।

झगला*–पु॰ दे॰ 'झगा'।

झगा–पु॰ (बच्चोंका) ढीला कुरता, अँगरखा।

झगुलिया, झगुली–स्त्री॰ झगा।

झज्जर, झज्झर–पु॰ चौड़े मुँहका छोटा घड़ा, झंझर।

झझक–स्त्री॰ झझकनेकी क्रिया या भाव; दे॰ 'झिझक'।

झझकन*–स्त्री॰ दे॰ 'झझक'।

झझकना–अ॰ क्रि॰ यकायक क्रुद्ध होकर बड़बड़ाने, जोर-जोरसे बोलने लगना; भड़क उठना; दे॰ 'झिझकना'।

झझकारना–स॰ क्रि॰ दुतकारना; तुच्छ समझना।

झझिया–स्त्री॰ दे॰ 'झिँझिया'।

झट–अ॰ बहुत जल्द, तुरत। **–पट–**अ॰ बहुत जल्द।

झटकना–स॰ क्रि॰ झटका देना; झटकारना; छीन लेना; हथियाना, ऐँठना।

झटका–पु॰ झोंकेके साथ दिया हुआ धक्का; (हवाका)झोंका; पशुबलिका वह प्रकार जिसमें पशुकी गरदन तलवार आदिके एक ही हाथमें अलग हो जाय; आकस्मिक और चंदरोजा बीमारी; अचानक आयी हुई विपत्ति; हानि; कुश्तीका एक पेंच। **–(के)का माँस–**झटकेकी रीतिसे मारे हुए पशुका मांस।

झटकारना–स॰ क्रि॰ झटका देकर हिलाना जिससे धूल, आदि झर जाय, झटका देना।

झटाका–अ॰ जल्दीसे, चटपट।

झटिका–स्त्री॰ [सं॰] झाड़ी; भुईंआँवला।

झटिति–अ॰ [सं॰] झटपट, तुरत।

झड़–स्त्री॰ दे॰ 'झड़ी'।

झड़न–स्त्री॰ वह जो किसी चीजसे झड़कर गिरे; झड़नेकी क्रिया; खुरचन; ऊपरी आमदनी। **–झुड़न–**स्त्री॰ झड़न।

झड़ना–अ॰ क्रि॰ टूटकर गिरना (पेड़से पत्तों, सिरसे

बालोंका); बरसना; (शहनाईका) बजना (नौबत झड़ना); साफ किया जाना।

झड़प–स्त्री० दो पक्षियों आदिकी अल्पकालिक भिड़ंत; झड़पनेका भाव, वाग्युद्ध; आवेश; लपट; झटका।

झड़पना–अ० क्रि० हमला करना, टूट पड़ना; उलझना। स० क्रि० झटकना, झटकेसे छीन लेना।

झड़पा-झड़पी–स्त्री० गुत्थमगुत्था।

झड़पाना–स० क्रि० पक्षियोंको आपसमें लड़ाना।

झड़बेरी–स्त्री० जंगली बेर।

झड़वाना–स० क्रि० झाड़नेका काम दूसरेसे कराना।

झड़ाई–स्त्री० झाड़नेकी क्रिया या उजरत।

झड़ाका–पु० झड़प। अ० फौरन, तत्काल।

झड़ाझड़–अ० लगातार, झड़ीके रूपमें।

झड़ी–स्त्री० लगातार झड़ना; हलकी किंतु लगातार वर्षा; झड़ीके रूपमें चलनेवाली बातें, अविराम वाग्धारा (बँधना, लगना; बाँधना, लगाना); तालेके भीतरका खटका।

झणत्कार–पु० [सं०] झनकार।

झन–स्त्री० धातुखंडपर आघातसे उत्पन्न होनेवाली ध्वनि।

झनक–स्त्री० झनकार; झनझनाहट; पैरको झटकेके साथ उठाते हुए चलना। **–मनक**–स्त्री० पायल आदिकी मंद, मधुर ध्वनि।

झनकना–अ० क्रि० झनक होना; झुँझलाना, खीझना; पैरको झटका देते हुए चलना।

झनकार–स्त्री० 'झन-झन'की आवाज; झींगुरों आदिके बोलनेसे होनेवाली ध्वनि।

झनकारना–अ० क्रि० 'झन-झन'की आवाज निकलना। स० क्रि० 'झन-झन'की आवाज पैदा करना।

झनझना–वि० 'झन-झन' शब्द उत्पन्न करनेवाला।

झनझनाना–अ० क्रि० 'झन-झन'की ध्वनि होना। स० क्रि० 'झन-झन'की ध्वनि निकालना, उत्पन्न करना।

झनझनाहट–स्त्री० 'झन-झन'की आवाज; झुनझुनी।

झनिया*–वि० झीना।

झन्नाना–अ० क्रि० झनझनाना।

झन्नाहट–स्त्री० झनझनाहट।

झप–अ० झट, तुरत।

झपक–स्त्री० पलकोंका गिरना; पलक गिरनेमें लगनेवाला समय, निमेष; झपकी।

झपकना–अ० क्रि० पलक गिरना; झपकी लेना; झपटना; झेंपना।

झपकाना–स० क्रि० बार-बार पलक गिराना।

झपकी–स्त्री० हलकी, थोड़ी देरकी नींद, आँख लगना; * चकमा, धोखा।

झपकौहाँ*–वि० नींदसे झपकनेवाली (आँखें); नशेमें चूर।

झपट–स्त्री० झपटनेकी क्रिया या भाव, टूटना।

झपटना–अ० क्रि० किसी चीजको लेने, पकड़ने, किसी चीजपर हमला करनेके लिए तेजीसे उसकी ओर बढ़ना, टूटना, लपकना। स० क्रि० झपटकर छीन लेना, पकड़ लेना।

झपटान–स्त्री० झपट।

झपटाना–स० क्रि० झपटनेमें प्रवृत्त करना।

झपट्टा–पु० झपटनेका भाव। **–मार**–वि० झपटनेवाला, टूट पड़नेवाला (हवाई जहाज)।

झपताल–पु० पाँच मात्राओंका एक ताल।

झपना–अ० क्रि० दे० 'झपकना'।

झपलैया*–स्त्री० झँपोला।

झपाका–अ० झटपट। पु० शीघ्रता।

झपाटा–पु० झपट्टा; झपट।

झपाना–स० क्रि० मूँदना, (आँखें) बंद करना; झुकाना।

झपित*–वि० झपा हुआ, मुँदा हुआ; लज्जित।

झपेट–स्त्री० दे० 'झपट'।

झपेटना–स० क्रि० दबोचना।

झपेटा–पु० हमला; धक्का; प्रेतबाधा।

झपोला–पु० दे० 'झँपोला'।

झप्पड़, झप्पर*–पु० थप्पड़।

झप्पान–पु० दे० 'झंपान'।

झबरा–वि० लंबे और सब ओर बिखरे हुए बालोंवाला।

झबरीला–वि० चारों ओर बिखरा हुआ (केश-समूह)।

झबरैरा*–वि० दे० 'झबरीला'।

झबा–पु० दे० 'झब्बा'।

झबार, झबारि†–स्त्री० जंजाल, झंझट; झगड़ा।

झबिया–स्त्री० छोटा झब्बा; बाजूबंद आदिमें नीचे लटकनेवाली कटोरी।

झबूकना*–अ० क्रि० चौंकना।

झब्बा–पु० गुच्छा, फुँदना।

झमक–स्त्री० ठसककी चाल; 'झम-झम'की आवाज; चमक।

झमकना–अ० क्रि० पाँवोंके गहनोंकी झनकार करते चलना; नाचना; 'झम-झम' की आवाज होना; 'झम-झम' करते हुए तेजीसे आना-जाना; सहसा सामने आना–'पावक झरसी झमकिकै गई झरोखे झाँखि'–वि० चमकना; छाना; अकड़ दिखाना।

झमकाना–स० क्रि० चमकाना; मटकाना; 'झम-झम'की आवाज करना; युद्ध आदिमें हथियार खटखटाना।

झमकारा–वि० 'झम-झम' करके बरसनेवाला (बादल)।

झमकीला–वि० चंचल; चमकीला।

झम-झम–स्त्री० घुँघुरुओंके बजने या जोरसे वर्षा होनेकी आवाज, 'छम-छम'। अ० 'झम-झम' करते हुए।

झमझमाना–अ० क्रि० 'झम-झम' आवाज होना; चमकना। स० क्रि० 'झम-झम' ध्वनि उत्पन्न करना; चमकाना।

झमना*–अ० क्रि० झुकना, दबना।

झमाका–पु० 'झम-झम'की आवाज; ठसक।

झमाझम–अ० 'झम-झम' करते हुए; चमकके साथ।

झमाट–पु० झुरमुट।

झमाना–अ० क्रि० छाना, घेरना; दे० 'झँवाना' (अ० क्रि०, स० क्रि० दोनों)।

झमेला–पु० झगड़ा; बखेड़ा; झंझट; * भीड़।

झमेलिया–वि० झमेला करनेवाला, झगड़ालू।

झर–पु० [सं०] झरना; सोता। * स्त्री० झड़ी; झड़ी या जलप्रवाहकी ध्वनि; ज्वाला; आँच; तालेका कुत्ता; झुंड।

झरक*–स्त्री० दे० 'झलक'।

झरकना*–अ० क्रि० झलकना। स० क्रि० डपटकर बोलना।

झर-झर—स्त्री० वर्षाकी झड़ी लगने, हवा बहनेकी आवाज।

झरझराना—अ० क्रि० 'झर-झर' करते हुए बहना, गिरना, जलना। स० क्रि० 'झर-झर'की आवाजके साथ गिराना।

झरना—पु० पहाड़से नीचे गिरनेवाला सोता, निर्झर; छेददार पलटा जिससे पूरियाँ आदि छानी जायँ; अनाज छाननेकी बड़ी छलनी। † वि० झड़नेवाला। * अ० क्रि० जलधारका पर्वत आदिसे नीचे गिरना; दे० 'झड़ना'; बजना। स० क्रि० बजाना।

झरनि*—स्त्री० दे० 'झड़न'।

झरनी*—वि० स्त्री० जिससे कुछ झड़े।

झरप*—स्त्री० झोंका; वेग; चिक; सहारा; दे० 'झड़प'।

झरपना*—अ० क्रि० झोंका देना; दे० झड़पना'।

झरफ*—स्त्री० दे० 'झरिफ'।

झरबेर, झरबेरी†—स्त्री० दे० 'झड़बेरी'।

झरसना*—अ०क्रि०दे०'झुलसना'। स०क्रि०दे०'झुलसाना'।

झरहरना†—अ० क्रि० 'झर-झर' ध्वनि करना।

झरहरा*—वि० सूराखदार, जालीदार।

झरहराना—अ० क्रि० पत्तोंका आवाजके साथ नीचे आना, खड़खड़ाना। स०क्रि० डाल हिलाकर पत्तों आदिको गिराना।

झरापना*—स० क्रि० झड़पना, हमला करना।

झरि*—स्त्री० दे० 'झड़ी'।

झरिफ*—स्त्री० चिक, परदा।

झरी—स्त्री० [सं०] झरना, सोता; झड़ी; † वह कर जो बाजारमें अपना माल ले जाकर बेचनेवालोंसे बाजारके मालिकको या ठेकेदारको मिले; संधि, दरार।

झरोखा—पु० छोटी खिड़की, गवाक्ष।

झर्प* स्त्री० दे० 'झड़प'।

झल—पु० ज्वाला, जलन; क्रोध; उत्कट कामना; कामवासना।

झलक—स्त्री० चमक; आभास; क्षणिक, अधूरा दर्शन (दिखाना, मारना)। —**दार**—वि० चमकीला।

झलकना—अ० क्रि० चमकना; भीतरसे चमकना; दिखाई देना; आभास होना।

झलकनि*—स्त्री० दे० 'झलक'।

झलका—पु० छाला, फफोला।

झलकाना—स० क्रि० चमकाना; झलकदार बनाना; * दिखाना; आभास देना। * अ० क्रि० दे० 'झलकना'।

झल-झल—अ० साफ, पूरी झलकके साथ। स्त्री० चमक।

झलझलाना—अ० क्रि० चमकना, झलक मारना; भड़क उठना, झल्लाना। स० क्रि० चमकाना।

झलझलाहट—स्त्री० चमक।

झलना—स० क्रि० (पंखा आदि) हिलाकर हवा करना; हवा करनेके लिए हिलाना। अ० क्रि० हिलना।

झलमल—पु० झलमलानेका भाव (—करना)। वि० अस्थिर, झलमलाता हुआ (प्रकाश)।

झलमला—वि० झलकता हुआ, चमकीला।

झलमलाना—अ० क्रि० रह-रहकर, कभी तेज, कभी धुँधली रोशनी देना; रोशनीका इधर-उधर हिलना।

झलराना*—अ० क्रि० बढ़ना, फैलना।

झलवाना—स० क्रि० झलने या झालनेका काम कराना।

झला*—पु० हलकी, थोड़ी देरकी वर्षा; झालर; पंखा।

झलाझल—वि० चमकता हुआ, चमाचम। अ० चमकके साथ।

झलाझली*—वि० चमकदार।

झलाना—स० क्रि० दे० 'झलवाना'।

झलाबोर—पु० सुनहले-रुपहले तारोंसे बुना हुआ साड़ीका आँचल; कारचोबी। वि० चमकता हुआ, चमाचम।

झलामल†—स्त्री० चमक-दमक।

झल्लक—पु०, **झल्लकी**—स्त्री० [सं०] करताल; झाँझ।

झल्ला—पु० बड़ा टोकरा; बौछार। वि० जो गाढ़ा न हो।

झल्लाना—अ० क्रि० बहुत बिगड़ जाना, झुँझला उठना।

झवर*—स्त्री० झगड़ा।

झवारि—स्त्री० दे० 'झवर'।

झष—पु० [सं०] मछली; मगर; मीन राशि; मकर राशि; ताप; वन। —**केतन,**—**केतु,**—**ध्वज**—पु० कामदेव। —**निकेत**—पु० जलाशय। —**राज**—पु० मगर।

झपना*—अ० क्रि० झखना।

झहनना*—अ०क्रि० झन्नाना, सन्नाटेमें आना; रोमांच होना।

झहनाना—स० क्रि० झनकार करना; बजाना।

झहरना*—अ०क्रि० दे० 'झहराना'। स०क्रि० झिड़कना।

झहराना†—अ० क्रि० शिथिल होकर गिर पड़ना (पत्तों आदिका); झल्लाना; तिरस्कृत होना। स०क्रि० झकझोरना; लथेड़ना।

झाँईं—स्त्री० छाया, परछाईं; अँधेरा; प्रतिध्वनि; धोखा; रक्तविकारके कारण पड़ा हुआ काला धब्बा। —**माईं**—स्त्री० बच्चोंका एक खेल। **मु०**—**आना**—आँखोंके सामने अँधेरा छा जाना। —**बताना**—धोखा देना।

झाँकना—अ० क्रि० आड़से, झरोखे आदिसे बाहरकी वस्तुको देखना; इधर-उधर देखना।

झाँकनी*—स्त्री० झाँकी; कुआँ।

झाँका—पु० जालीदार खाँचा; झरोखा; अंतर—'परन न पायो झाँको'—सू०।

झाँकी—स्त्री० दर्शन; कुछ दूरसे होनेवाला अपूर्ण दर्शन; सजायी हुई देवमूर्तिका दर्शन; दृश्य; झरोखा।

झाँख*—पु० एक तरहका जंगली हिरन।

झाँखना*—अ० क्रि० दे० 'झींखना'; झाँकना।

झाँखर—पु० झंखाड़; काँटेदार झाड़ियोंका समूह।

झाँगा*—पु० दे० 'झगा'।

झाँझ—स्त्री० काँसेके दो तश्तरी जैसे टुकड़ोंसे बना मँजीरे जैसा बाजा, झाल; शरारत; अड़ियलपन; झाँझन।

झाँझड़ी*—स्त्री० दे० 'झाँझ'।

झाँझन—स्त्री० पाँवमें पहननेका पोला कड़ा जो चलनेसे 'झन-झन' बजे, झाँझदार कड़ा।

झाँझर*—स्त्री० दे० 'झाँझन'। वि० जर्जर; छिद्रोंवाला।

झाँझरि*—स्त्री० दे० 'झाँझर'।

झाँझरी*—स्त्री० झाँझ; झाँझन।

झाँझा—पु० फसलको लगनेवाला एक कीड़ा; झाँझ; झंझट।

झाँझिया—पु० झाँझ बजानेवाला।

झाँट, झाँटि*—स्त्री० उपस्थके ऊपरके बाल, पशम।

झाँप—पु० ढकनेके काम आनेवाली चीज; बाँसका टोकरा; बाँसका बड़ा खानपोश; खिड़की-दरवाजेके सामने, धूप-वर्षासे बचावके लिए लगाया जानेवाला टीन, लकड़ी आदि-

का; वना परदा; वग्घीका टप; बाँसकी तीलियोंका बना मुर्गियोंका दरबा; उछल-कूद। * स्त्री० पर्दा, चिक; झपकी।

झाँपना–स० क्रि० ढकना, छोप लेना। अ०क्रि० झेंपना।

झाँपी†–स्त्री० टोकरी; बाँसकी पिटारी; झपकी।

झाँवना*–स० क्रि० झाँवेसे रगड़ना (मैल छुड़ानेके लिए)।

झाँवर–स्त्री०नीची जमीन।†वि० मुरझाया हुआ; मलिन।

झाँवली–स्त्री० झलक; झाईं; आँखका संकेत।

झाँवाँ–पु० जली हुई ईंट जो मैल छुड़ानेके लिए देह रगड़नेके काम आती है।

झाँसना–स० क्रि० झाँसा देना, ठगना; बहकाना।

झाँसा–पु० धोखा, जुल, बुत्ता।–**पट्टी**–स्त्री० दमबाजी।

झाँसिया, झाँसू–वि० झाँसा देनेवाला।

झा–पु० मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

झाऊ–पु० रेतीले मैदानोंमें होनेवाला एक छोटा झाड़।

झाग–पु० फेन, गाज।

झागड़*–पु० दे० 'झगड़ा'।

झाड़–पु० छोटा पेड़ या पौधा जिसकी जड़से डालियों जैसे कई तने निकलकर झाड़ियोंकी शक्लमें फैल जायँ; छोटा, गुंजान, कँटीला पेड़; झाड़की शक्लका फानूस जो छत या शामियानेसे लटकाकर जलाया जाता है और जिसमें बहुतसी मोमबत्तियाँ या बल्ब एक साथ जलाये जा सकते हैं; एक आतिशबाजी; ताँता। –**खंड**–पु० जंगल; दे० 'झारखंड'। –**झंखाड़**–पु० कँटीले पेड़ों, झाड़ियोंका समूह; टूटी-फूटी, रद्दी चीजें।–**दार**–वि० कटीला; घना। पु० एक तरहका कशीदा। –**फ़ानूस**–पु० शीशेका बना रोशनी और सजावटका सामान।

झाड़–स्त्री० झाड़नेकी क्रिया (केवल समासमें व्यवहृत); फटकार, भर्त्सना; मंत्रोपचार। –**पोंछ**–स्त्री० सफाई। –**फूँक**–स्त्री० झाड़ना-फूँकना, मंतर-जंतर।

झाड़न–स्त्री० झाड़नेसे निकली हुई चीज; पु० झाड़नेके काम आनेवाला कपड़ा (डस्टर)।

झाड़ना–स० क्रि० झटकारना, धूल-गर्द साफ करना; बुहारना, झाड़ू देना; मंत्र पढ़कर फूँकना; फटकारना; कंघी करना; (पेड़से फल) नीचे गिराना; (चिड़ियोंका पंख) छोड़ना; दूर करना, भगाना (शेखी, बदमाशी, घमंड)। **मु० झाड़-पछोड़कर देखना**–जाँच-तौल करना; खूब आजमाना। **झाड़-पोंछकर**–कुल इकट्ठा करके, झाड़-बुहारकर।

झाड़ा–पु० जामा-तलाशी; झाड़-फूँक; विष्ठा; शौच जानेकी इच्छा या क्रिया; टट्टी।

झाड़ी–स्त्री० कँटीले पौधों या झाड़ोंका समूह; एकमें मिले हुए कँटीले पौधे।

झाड़ू–स्त्री० सींकों, तीलियों आदिका पूला जिससे धूल, आदिकी सफाई करते हैं, बुहारी, बढ़नी; पुच्छल तारा। –**कश**–पु० झाड़ू देनेका पेशा करनेवाला, भंगी।–**बरदार**–पु० दे० 'झाड़ूकश'। **मु०**–**फिरना**–कुछ बाकी न रहना, सब नष्ट हो जाना।–**मारना**–तिरस्कार करना, ठोकर मारना (स्त्रि०)।

झापड़–पु० थप्पड़, जोरका तमाचा।

झाबर–पु० दलदल; * खाँचा।

झाबा–पु० टोकरा; कुप्पा; चमड़ेका गोल थाल जो पंजाबमें आटा छाननेके काम आता है; झाड़; झब्बा।

झाम–पु० गहराईसे मिट्टी खोदकर निकालनेवाला एक यंत्र; एक बरतन जो भोज आदिमें दाल-तरकारी आदि परसनेके काम आता है; * गुच्छा; छल, धोखेबाजी; डाँट-डपट।

झामर–पु० पाँवोंमें पहननेका एक गहना। वि० झाँवरा, मलिन।

झामी*–वि० छलिया, धोखेबाज।

झायँ-झायँ–स्त्री० सुनसान जगहमें होनेवाली 'झन-झन' आवाज, हवाका शब्द। **मु०**–**करना**–सूना, डरावना लगना।

झार*–स्त्री० जलन, ज्वाला; झाल। पु० दे० 'झाड़'; समूह; पौना। वि० निरा, निपट; सब। –**खंड**–पु० एक पर्वतमाला जो वैद्यनाथसे पुरीतक गयी है; छत्तीसगढ़; छोटा नागपुर।

झारना†–स० क्रि० दे० 'झाड़ना'।

झारा–पु० झरना, सूप; पतली छनी हुई भंग; * तलाशी।

झारि–स्त्री०, वि० दे० 'झार'।

झारी–स्त्री० पानी परसने, हाथ-मुँह धुलाने आदिके लिए काममें लाया जानेवाला टोंटीदार बरतन, गड़ुआ; * झाड़ी।

झाल–पु० झाँझ; झालनेकी क्रिया। स्त्री० चरपराहट, तीखापन; लहर; ज्वाला; संभोगकी इच्छा; वर्षाकी झड़ी जो कई दिन लगी रहे। वि० दे० 'झार'।

झालना–स० क्रि० धातुकी बनी चीजको टाँकेसे जोड़ना; किसी चीजको ठंढा करनेके लिए बरफ या शोरेमें रखना।

झालर–स्त्री० लटकनेवाला हाशिया; किनारा; घड़ियाल; * एक पकवान। –**दार**–वि० जिसमें झालर लगी हो।

झालरना*–अ० क्रि० दे० 'झलराना'; पुष्पादियुक्त होना।

झालि*–स्त्री० झड़ी; झाल।

झावँ-झावँ–स्त्री० हुज्जत, तकरार।

झिँगवा–पु० दे० 'झीँगा'।

झिँगुली*–स्त्री० दे० 'झगा'।

झिँझिया–स्त्री० वह घड़ा जिसके पेंदेमें बहुतसे छेद होते हैं और जिसमें दिया बालकर घुमाया जाता है।

झिगड़ना, झिगरना*–अ० क्रि० दे० 'झगड़ना'।

झिझक–स्त्री० हिचक, भड़क; लज्जाजनित संकोच।

झिझकना–अ० क्रि० भय या लज्जाके कारण कोई बात कहने, करनेमें हिचकना, ठिठकना; भड़कना।

झिझकार–स्त्री० झिझकारनेकी क्रिया या भाव।

झिझकारना–स० क्रि० दुतकारना; झिड़कना।

झिड़कना–स० क्रि० डाँटना, फटकारना।

झिड़की–स्त्री० झिड़कनेका भाव, डाँट, फटकार।

झिपना–अ० क्रि० दे० 'झेँपना'; बंद होना।

झिपाना–स० क्रि० लजवाना, शर्मिंदा करना।

झिर–स्त्री० दे० 'झिरी'।

झिरकना–स० क्रि० दे० 'झिड़कना'।

झिरझिरा–वि० झीना।

झिरझिराना–अ० क्रि० 'झिर-झिर' करते हुए बहना।

झिरना–अ० क्रि० दे० 'झरना'। पु० छेद।

झिरहर*–वि० झीना, सूराखदार।

झिरी–स्त्री० संधि, झरी; वह गढ़ा जिसमें पानी रिसकर

इकट्ठा हो; पाला।

झिलँगा–पु० पुरानी खाट जिसकी बुनावट ढीली हो गयी या टूट गयी हो; ऐसी खाटका बाध।

झिलना–अ० क्रि० घुसना; तृप्त होना; मगन होना; झेला जाना (झेलनाका कर्म०)। स० क्रि० हमला करना।

झिलम–स्त्री० लोहेका बना टोप या शिरस्त्राण।

झिलमिल–स्त्री० हिलती, रह-रहकर चमकती हुई रोशनी; झिलमिलानेका भाव। पु० एक महीन वस्त्र। वि० झिलमिलाता हुआ।

झिलमिला–वि० झीना; जिससे झिलमिलाती हुई रोशनी निकले; चमकता हुआ।

झिलमिलाना–अ० क्रि० रोशनीका हिलना, कभी चमकना, कभी न चमकना; टिमटिमाना।

झिलमिलाहट–स्त्री० झिलमिलानेकी क्रिया या भाव।

झिलमिली–स्त्री० खिड़कियों आदिमें जड़ा जानेवाला आड़ी पटरियोंका ढाँचा जो पीछे लगी लकड़ीको खींचनेसे खुलता, बंद होता है; चिक, चिलमन; एक तरहकी जाली।

झिलवाना–स० क्रि० झेलनेका काम दूसरेसे कराना।

झिली*–स्त्री० झींगुर।

झिल्लड़–वि० जिसकी बुनावट दूर-दूर हो, झीना।

झिल्लिका–स्त्री० [सं०] झींगुर; झींगुरकी झनकार; सूर्यप्रकाश; दीप्ति।

झिल्ली–स्त्री० चमड़े आदिकी पतली तह; बारीक छिलका; [सं०] दे० 'झिल्लिका'।

झिल्लीक–पु० [सं०] झींगुर।

झीँकना–अ० क्रि० दे० 'झीँखना'।

झीँका–पु० अन्नकी वह मात्रा जो पीसनेके लिए चक्कीमें एक बार डाली जाय; छीका।

झीँखना–अ० क्रि० दुःखी होना, कुढ़ना; दुखड़ा रोना।

झीँगा–पु० एक छोटी मछली।

झीँगुर–पु० तेज आवाजवाला एक छोटा कीड़ा।

झीँवर*–पु० दे० 'झीवर'।

झीँसी–स्त्री० नन्हीं-नन्हीं बूँदोंमें होनेवाली वर्षा, फुहार।

झीका–पु० छीका।

झीखना–अ० क्रि० दे० 'झीँखना'।

झीठ*–वि० झूठ, मिथ्या।

झीड़ना*–अ० क्रि० घुसना; धँसना–'मानहुँ सुधासिंधुमें झीड़त मकर पानके हेत'–सू०।

झीना–वि० बहुत बारीक; दूर-दूर बुना हुआ, झाँझर।

झीनासारी*–पु० एक तरहका चावल।

झील–स्त्री० प्रकृति-निर्मित सरोवर; बहुत बड़ा ताल।

झीलर–पु० छोटी झील या तालाब।

झीवर–पु० माँझी, मछुआ, धीमर।

झुँगना*–पु० जुगनू।

झुँझना*–पु० झुनझुना, एक खिलौना।

झुँझलाना–अ० क्रि० खीझना, चिढ़ना, बिगड़ना।

झुँझलाहट–स्त्री० झुँझलानेका भाव, चिढ़, खफगी।

झुंड–पु० समूह, विशेषतः पशु-पक्षियोंका गिरोह, गिल्ला।

झुकना–अ० क्रि० टेढ़ा होना, लटकना; मुड़ना; नीचा होना (आँखोंका); दबना, नमित होना; हार या छुटाई स्वीकार करना; प्रवृत्त होना, लगना; किसी ओर पक्षपात करना; मानना; * झुँझलाना; क्रुद्ध होना–'भैयनसों प्रभु झुकत हैं···'–राम०; † मरना।

झुकमुख*–पु० झुटपुटा।

झुकराना*–अ० क्रि० झोंका खाना।

झुकवाना–स० क्रि० झुकानेका काम दूसरेसे कराना।

झुकाई–स्त्री० झुकानेकी क्रिया या भाव; झुकानेकी उजरत।

झुकाना–स० क्रि० टेढ़ा करना, लटकाना; मोड़ना; नीचा करना; प्रवृत्त करना, लगाना।

झुकामुखी*–स्त्री० दे० 'झुकमुख'।

झुकाव–पु० झुकनेकी क्रिया या भाव; ढाल; प्रवृत्ति; चाह।

झुकावट–स्त्री० दे० 'झुकाव'।

झुझकावना*–स० क्रि० रेलना, आक्रमणके लिए प्रेरित करना।

झुटपुटा–पु० सबेरे या शामका समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज साफ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो।

झुटुंग–वि० झोंटेवाला, जटाधारी।

झुठकाना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'।

झुठलाना–स० क्रि० झूठा साबित करना; झूठी बात कहकर धोखा देना।

झुठवना*–स० क्रि० झूठा बनाना।

झुठाई–स्त्री० झूठापन, असत्यता।

झुठाना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'।

झुठालना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'; दे० 'जुठारना'।

झुनकना–अ० क्रि० 'झुन-झुन' बजना।

झुनकारा*–वि० झीना।

झुन-झुन–पु० नूपुर, पैजनी आदिके बजनेकी आवाज।

झुनझुना–पु० काठ, टिन आदिका बना खिलौना जो हिलानेसे 'झुन-झुन' बजता है, घुनघुना।

झुनझुनाना–अ० क्रि० 'झुन-झुन' ध्वनि होना। स० क्रि० 'झुन-झुन' शब्द उत्पन्न करना।

झुनझुनियाँ–स्त्री० 'झुन-झुन' शब्द करनेवाला गहना; बेड़ी; सनईका पौधा।

झुनझुनी–स्त्री० हाथ-पाँवके एक हालतमें देरतक रहने या दबनेसे पैदा होनेवाली सनसनाहट।

झुपरी*–स्त्री० दे० 'झोँपड़ी'।

झुबझुबी†–स्त्री० कानका एक गहना।

झुमका–पु० कानमें पहननेका एक गहना जो करनफूलकी तरकीसे लटकता रहता है; एक पौधा; उसका फूल।

झुमिरना* अ० क्रि० दे० 'झूमना'।

झुरझुरी†–स्त्री० जूड़ी-बुखारकी कँपकँपी।

झुरना*–अ०क्रि० सूखना; दुःख या चिंतासे क्षीण होना।

झुरमुट–पु० पास-पास उगे हुए पेड़ या झाड़; समूह, मंडली; चादरको इस तरह ओढ़ना कि सारा शरीर ढक जाय (मारना)।

झुरसना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'झुलसना'।

झुरसाना*–स० क्रि० दे० 'झुलसाना'।

झुरहुरी–स्त्री० दे० 'झुरझुरी'।

झुराना*–अ० क्रि० सूखना। स० क्रि० सुखाना।

झुरावन†—स्त्री० सूखनेसे वस्तुकी तौलमें होनेवाली कमी।

झुर्री—स्त्री० सूखनेसे (चेहरे आदिपर) पड़नेवाली शिकन।

झुलना—पु० झूला; ढीला कुरता।

झुलनी—स्त्री० सोने, मोतियों आदिकी बनी लटकन जो नथमें लटकायी या बेसरकी तरह नाकमें पहन जाती है।

झुलमुला*—वि० दे० 'झिलमिला'।

झुलवाना—स० क्रि० झुलानेका काम दूसरेसे कराना।

झुलसना—अ० क्रि० इतना जलना कि सतह स्याह हो जाय, वस्तुके केवल ऊपरी भागका जलना, अधजला होना; धूप, लू या पालेसे पौधों आदिका सूखना, मुरझाना। स० क्रि० दे० 'झुलसाना'।

झुलसाना—स० क्रि० वस्तुका ऊपरी भाग, सतह जला देना, अधजला कर देना; झुलसनेका कारण होना।

झुलाना—स० क्रि० झूलेको हिलाना, धकेलना; लटकाकर हिलाना; अटकाये रखना, आज-कल करते रहना।

झुलावना*—स० क्रि० दे० 'झुलाना'।

झुलावनि*—स्त्री० झुलानेकी क्रिया या भाव।

झुलौआ, झुलौवा*—पु० दे० 'झूला'।

झूँक*—पु० दे० 'झोँका'। स्त्री० दे० 'झोँक'।

झूँका*—पु० दे० 'झोँका'।

झूँखना*—अ० क्रि० दे० 'झीँखना'।

झूँटा—वि० झूठा। पु० पेंग; बालोंका समूह, झोंटा।

झूझ*—पु० दे० 'युद्ध'।

झूझना*—अ० क्रि० जूझना, युद्ध करना।

झूठ—वि० जो सच न हो, अयथार्थ, अतथ्य, मिथ्या। पु० झूठी बात, असत्य। **—मूठ**—अ० यों ही, अकारण, बेकार। **—सच**—पु० कुछ झूठी और कुछ सच्ची बात, झूठ और सचकी खिचड़ी। **मु०—का दफ़्तर**—मनगढ़ंत बातें, ऐसा कथन जो आदिसे अंततक झूठ हो। **—का पुतला**—बहुत झूठ बोलनेवाला, भारी झूठा। **—का पुल बाँधना**—झूठकी झड़ी लगा देना, झूठपर झूठ बोलना। **—सच जोड़ना या लगाना**—सचमें झूठ मिलाकर कहना; झूठी शिकायतें करना।

झूठन—स्त्री० दे० 'जूठन'।

झूठा—वि० जो सच न हो, असत्य, मिथ्या; झूठ बोलनेवाला, मिथ्याभाषी; नकली, बनावटी; दिखाऊ (—फ़ैर); जूठा। **मु०—पड़ना**—(किसी कल-पुरजे या अंगका) काम देने लायक न रहना, बेकार हो जाना। **(झूठे)का मुँह काला**—झूठा हर जगह जलील होता है। **—की क़ब्र-(के घर)तक पहुँचना या हो आना**—झूठेका झूठ पकड़कर, साबित करके उसे लज्जित करना। **—पर ख़ुदाकी मार या लानत**—झूठ बोलनेवालेका सत्यानास हो।

झूठों—अ० झूठ-मूठ, योंही, दिखानेके लिए (—न पूछना)।

झूना*—वि० दे० 'झीना'।

झूम—स्त्री० झूमनेकी क्रिया या भाव; ऊँघ।

झूमक—पु० झूमर; झूमरके साथ होनेवाला नृत्य; गुच्छा; साड़ी-दुपट्टेके माथेपर रहनेवाले भागपर टँका मोतियों आदिका गुच्छा। **—साड़ी**—स्त्री० वह साड़ी जिसमें झूमक टँके हों।

झूमका—पु० दे० 'झुमका'; दे० 'झूमक'।

झूमड़—पु० दे० 'झूमर'। **—झामड़**—पु० अंडबंड, व्यर्थकी बात, ढकोसला।

झूमना—अ० क्रि० इधर-उधर हिलना, झोंके खाना; लहराना; (मस्ती, आनंदमें) सिर-धड़को आगे-पीछे हिलाना; नशेमें लड़खड़ाना।

झूमर—पु० होलीमें नाचके साथ गाया जानेवाला एक गीत; उस गीतके साथ होनेवाला नाच; सिरमें पहननेका एक गहना; मंडलाकारमें खड़े स्त्री-पुरुष, नावें आदि; हलका।

झूरना*—अ० क्रि० सूखना।

झूरा†—वि० सूखा, खुश्क; खाली। * पु० अवर्षण; कमी।

झूरै—अ० व्यर्थ ही, बेकार। * वि० व्यर्थ; सूखा; खाली।

झूल—स्त्री० हाथी-घोड़े आदिकी पीठपर सजावटके लिए डाला जानेवाला कपड़ा; ढीला-ढाला, भद्दा पहनावा; * दे० 'झूला'। **—दंड**—पु० दंडकी एक कसरत जो झूलते हुए की जाती है।

झूलना—अ० क्रि० लटककर आगे-पीछे होना; नाचना; झूलेपर बैठकर या लेटकर पेंग लेना; किसी आशामें लटके रहना। पु० हिंडोला; एक छंद। वि० झूलनेवाला।

झूलरि*—स्त्री० दे० 'झुमका'।

झूला—पु० झूलनेका साधन, पेड़की डाल, छतकी कड़ियों आदिमें बँधी हुई रस्सीके सहारे लटकता हुआ तख्ता आदि, हिंडोला; झटका; रस्सों, जंजीरों आदिका बना बिना खंभेका पुल; एक तरहकी बिना बाँहकी कुर्ती जिसे प्रायः देहातकी स्त्रियाँ पहनती हैं; झूल; एक गहना।

झेँपना—अ० क्रि० लजाना, शर्मिंदा होना।

झेँपू, झेपू—वि० झेंपनेवाला, लज्जाशील।

झेर—स्त्री० देर, विलंब; झंझट, बखेड़ा।

झेरना—स० क्रि० झेलना; छेड़ना।

झेरा*—पु० झगड़ा; झंझट; दे० 'झेर'।

झेल—स्त्री० झेलनेकी क्रिया या भाव; हिलोर; धक्का; * देर, विलंब।

झेलना—स० क्रि० सहना, बरदाश्त करना; ठेलना; हलकर पार करना। * अ० क्रि० मानना।

झेलनी—स्त्री० चाँदी या सोनेकी जंजीर जो कानके गहनोंका बोझ सँभालनेके लिए बालोंमें अटकायी जाती है।

झोँक—स्त्री० वेग, झोंका; बोझ; धुन, आवेश; * चोट, आघात; चाल, ढंग।

झोँकना—स० क्रि० आगेकी ओर फेंकना; धकेलना; भट्ठे, भाड़में ईंधन डालना, फेंकना; बुरी जगह डालना, ठेल देना; (…में झोंकना) उड़ाना, खर्च करना; (दोष) लगाना।

झोँकवाना—स० क्रि० झोंकनेका काम दूसरेसे कराना।

झोँका—पु० तेज हवाका धक्का; झकोरा; तेजीसे जानेवाली चीजका धक्का; पानीका हिलोरा; * ठाट, चाल; मुट्ठी।

झोँकाई—स्त्री० झोंकनेकी क्रिया या उजरत।

झोँकिया—पु० झोंकनेका काम करनेवाला।

झोँकी—स्त्री० बोझ, जवाबदिही; जोखिम।

झोँझा—पु० ढेंक, गिद्ध आदिके गलेसे थैलीकी शक्लमें लटकता हुआ मांस; घोंसला।

झोँझल—पु० झुँझलाहट।

झोँटा—पु० बिखरे हुए, रूखे, मैले, लंबे बाल, जटा; जुट्टा;

* पेंग । **–झोँटी**–स्त्री० दो स्त्रियोंका परस्पर बाल खसोटते हुए लड़ना ।

झोँपड़, झोपड़ा–पु० घास-फूससे छाया हुआ छोटा कच्चा घर, कुटिया, मँड़ई ।

झोँपड़ी, झोंपड़ी–स्त्री० छोटा झोंपड़ा ।

झोँपा–पु० झब्बा, गुच्छा ।

झोटिंग–पु० झोंटेवाला, जटाधारी ।

झोरना*–स० क्रि० जोरसे हिलाना, झकझोरना; डालको इस तरह हिलाना कि फल झड़ जायँ; बटोरना; † छककर भोजन करना ।

झोरि*–स्त्री० दे० 'झोली' ।

झोरी*–स्त्री० झोली; पेट; एक तरहकी रोटी ।

झोल–पु० रसा; कढ़ी; कपड़ेके किसी अंशका ढीला या नापसे बड़ा होनेके कारण झूलना, लटकना; इस. तरह लटकनेवाला अंश; मुलम्मा; * आँचल; ओट; वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है, जरायु; गर्भ; राख –'तेहिपर विरह जराइकै चहै उड़ावा झोल'–प०; जलन। वि० ढीला; निकम्मा । **–झाल**–वि० ढीलाढाला । †पु० ढीलाढवाली ।**–दार**–वि०जिसमें झोल हो,ढीला;रसेदार ।

झोलना*–स० क्रि० जलाना ।

झोला–पु० कपड़े, किरमिच आदिका थैला;खोली, गिलाफ; चोला; लकवा; * झोंका; इशारा ।

झोली–स्त्री० चारों कोने बाँधकर कंधे आदिसे लटकाया हुआ कपड़ा जो झोले या थैलेका काम दे; सफरी बिस्तर; चरसा; घास बाँधनेका जाल; एक तरहका फंदा; राख ।

झौँर–पु० झुंड, समूह; गुच्छा; कुंज, झुरमुट; एक गहना ।

झौँरना*–अ० क्रि० गूँजना । स० क्रि० झपटकर पकड़ना ।

झौँरा–पु० दे० झौँर ।

झौँराना*–अ० क्रि० झूमना, झोंके खाना; झाँवर होना; मुरझाना ।

झौँसना†–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'झुलसना' ।

झौर*–पु० झगड़ा, हुज्जत, तकरार; डाँट; भगदड़ ।

झौरना*–स० क्रि० झपटकर दबोच लेना ।

झौरे*–अ० पास, निकट; साथ ।

झौवा†–पु० खँचिया ।

झौहाना–अ० क्रि० गुस्सेमें आकर बोलना ।

ञ

ञ–देवनागरी वर्णमालाका दसवाँ व्यंजन वर्ण ।

। **ञ**–पु० [सं०] गायन; घर्घर ध्वनि ।

ट

ट–देवनागरी वर्णमालाका ग्यारहवाँ व्यंजन वर्ण ।

टंक–पु० [सं०] चार माशेकी एक तौल; पत्थर काटने या गढ़नेकी छेनी; कुल्हाड़ी; तलवार; म्यान; पहाड़ीका ढाल; सोहागा; एक राग; क्रोध; दर्प; पैर; नील कपित्थ; सिक्का; दरार । **–शाला**–स्त्री० दे० 'टंकक-शाला' ।

टंककशाला–स्त्री० [सं०] सिक्के ढालनेकी जगह (मिंट) ।

टंकण, टंकन–पु० [सं०] सोहागा; टाँकी देना; (काइनेज) ताँबे, चाँदी आदिके सिक्कोंकी ढलाई ।

टँकना–अ० क्रि० टाँका जाना; सिलना; सिलाई द्वारा अँटकाया जाना; लिखा जाना; सिल आदिका कुटना ।

टँकवाना–स० क्रि० 'टाँकना'का प्रेरणार्थक ।

टंका–पु० चाँदीकी एक पुरानी तौल; ताँबेका पुराना सिक्का ।

टँकाई–स्त्री० टाँकनेका काम; टाँकनेकी उजरत ।

टंकाना–स० क्रि० सिक्केकी जाँच कराना ।

टँकाना–स० क्रि० टाँके लगवाना; सिल आदि कुटवाना; याददाश्तके लिए लिखवा देना ।

टंकार–स्त्री० [सं०] धनुष्की चढ़ी हुई डोरीको खींचकर छोड़नेसे उत्पन्न ध्वनि; धातुखंड आदिपर आघात होनेसे उत्पन्न ध्वनि; चिल्लाहट; प्रसिद्धि ।

टंकारना–स०क्रि० धनुष्का रोदा तानकर आवाज करना ।

टंकिका–स्त्री० [सं०] पत्थर काटनेकी छेनी, टाँकी ।

टंकी–स्त्री० पानी, तेल आदि रखनेके लिए बनाया हुआ बक्सके आकारका बड़ा पात्र; एक रागिनी ।

टंकोर–स्त्री० दे० 'टंकार' ।

टंकोरना–स० क्रि० दे० 'टंकारना' ।

टँको(कौ)री–स्त्री० सोना-चाँदी तौलनेका छोटा तराजू ।

टँगड़ी–स्त्री० टाँग, पैर ।

टँगना–अ०क्रि० लटकना; लटकाया जाना; फाँसी चढ़ना । पु० अलगनी । **मु० टँग जाना**–फाँसीपर चढ़ना ।

टँगिया–स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी ।

टंच–वि० तैयार; हृष्ट-पुष्ट; * कंजूस; कठोरहृदय; दुष्ट ।

टंट-घंट–पु० पूजा-पाठका आडंबर, ढोंग ।

टंटा–पु० झगड़ा, फसाद, कलह ।

टँड़िया–स्त्री० बाँहपर पहननेका एक गहना, बहूँटा ।

टई*–स्त्री० काम; काम निकालनेकी युक्ति; ताक ।

टक–स्त्री० एक ही ओर देरतक लगी हुई दृष्टि (बँधना, लगाना) ।

टकटका*–पु०दे० 'टकटकी' । वि० एक जगह स्थित (दृष्टि) ।

टकटकाना†–स० क्रि० टकटकी लगाकर देखना । अ० क्रि० 'टक-टक' शब्द करना ।

टकटकी–स्त्री० निर्निमेष दृष्टि ।

टकटोना*–स० क्रि० उँगलियोंसे छूकर किसी वस्तुका पता लगाना, टटोलना; ढूँढ़ना, खोजना ।

टकटोरना*–स० क्रि० दे० 'टकटोलना' ।

टकटोलना–स० क्रि० स्पर्शसे पता लगाना या जाँचना ।

टकटोहन*–पु० टटोलकर देखनेका काम ।

टकटोहना*–स० क्रि० दे० 'टकटोलना' ।

टकराना–अ०क्रि० दो वस्तुओंका एक दूसरीसे भिड़ जाना; ठोकर लग जाना; कार्यकी सिद्धिके लिए बार-बार आना-जाना; * मारा फिरना; इधर-उधर घूमना । स० क्रि०

दो वस्तुओंको आपसमें लड़ा देना।

टकसार–स्त्री० दे० 'टकसाल'।

टकसाल–स्त्री० सिक्कोंकी ढलाईका स्थान (मिंट); * निर्दोष वस्तु। वि० चोखा, खरा। **–का खोटा**–नीच, कमीना।

टकसाली–वि० टकसालका; प्रामाणिक; खरा; शिष्टों द्वारा अनुमोदित। पु० टकसालका अध्यक्ष। **–बात**–स्त्री० ठीक बात, पक्की बात। **–बोली**–स्त्री० शिष्ट भाषा।

टकहाई–वि० स्त्री० दे० 'टकाही'।

टका–पु० चाँदीका पुराना सिक्का, रुपया; दो पैसोंके बराबर ताँबेका सिक्का, अधन्ना; आधी छटाँककी तौल; सवा सेरका गढ़वाली परिमाण। **–भर**–वि० जरासा। **मु०–पास न होना**–निर्धन होना। **–सा जवाब देना**–साफ इनकार कर देना। **–सा मुँह लेकर रह जाना**–लज्जा जाना।

टकासी–स्त्री० दो पैसे फी रुपयेका सूद।

टकाही–वि० स्त्री० एक-एक टकेपर अपना सतीत्व बेचनेवाली; निम्न श्रेणीकी (वेश्या)। स्त्री० दे० 'टकासी'।

टकुआ–पु० सूत कातने और लपेटनेके काम आनेवाला सूआ, तकला।

टकुली–स्त्री० पत्थर काटनेकी छेनी; नक्काशीके काम आनेवाला एक औजार।

टकैत–वि० टकेवाला, धनी, मालदार।

टकोर–स्त्री० टंकोर; डंकेकी चोट या शब्द; हलकी चोट।

टकोरना–स० क्रि० धीरेसे आघात करना; बजाना; डंके आदिपर चोट करना; पोटलीसे सेंकना।

टकोरा–पु० डंकेकी चोट।

टकोरी*–स्त्री० टक्कर; चोट, आघात।

टकौरी–स्त्री० छोटा तराजू; चाँदी-सोना तौलनेका काँटा।

टक्कर–स्त्री० ठोकर, दो वस्तुओंका वेगके साथ आपसमें भिड़ जाना; मुकाबला; हानि। **मु०–खाना**–मारा-मारा फिरना; मुकाबलेका होना।

टखना–पु० एड़ीके ऊपरकी हड्डीकी गाँठ।

टगण–पु० [सं०] छ मात्राओंका एक गण।

टगर–पु० [सं०] सोहागा; तगरका वृक्ष; क्रीड़ा; मेंड़; टीला।

टघरना†–अ० क्रि० टिघलना, द्रवीभूत होना।

टच-टच*–अ० 'धायँ-धायँ' करते हुए (आगका जलना)।

टटका*–वि० ताजा; हालका; कोरा।

टटकाई*–स्त्री० ताजगी।

टटल-बटल*–वि० बेसिर-पैरका, ऊटपटाँग।

टटिया–स्त्री० बाँस आदिकी टट्टी।

टटीबा*–पु० घिरनी, चक्कर।

टटुआ–पु० टट्टू।

टटोरना*–स० क्रि० दे० 'टटोलना'।

टटोलना–स० क्रि० उँगलियोंसे छूकर पता लगाना, दबाकर छूना; वार्तालाप द्वारा विचारका पता लगाना।

टट्टर–पु० रक्षा या परदेके लिए लगाया हुआ बाँस आदिकी फट्टियोंका पल्ला।

टट्टा–पु० बड़ी टट्टी।

टट्टी–स्त्री० छोटा टट्टर या पल्ला; पतला शीशा; ओट, परदा; पल्लेकी दीवार; अंगूर चढ़ानेके काम आनेवाली बाँसकी फट्टियोंकी दीवार; शिकार खेलनेकी आड़; पाखाना; बारातमें निकाली जानेवाली फुलवारीका तख्ता। **मु०–की आड़से शिकार खेलना**–छिपकर चाल चलना, गुप्त रीतिसे विरुद्ध कार्य करना। **–की ओट बैठना**–छिपे तौरपर कोई कार्य करना।

टट्टू–पु० छोटे कदका घोड़ा।

टड़िया–स्त्री० बाँहपर पहननेका एक गहना।

टन–स्त्री० घंटे, धातुके बरतन या टुकड़ेसे उत्पन्न शब्द। **–टन**–स्त्री० घंटा बजनेका शब्द।

टनकना–अ० क्रि० टन-टन बजना; धूप लगने आदिके कारण सिरमें दर्द होना; रह-रहकर पीड़ा होना।

टनटनाना–स० क्रि० घंटा, धातुके बरतन या टुकड़ेसे 'टन-टन'की ध्वनि निकालना। अ० क्रि० घंटे आदिका 'टन-टन' बजना।

टनमन–पु० जादू-टोना। वि० दे० 'टनमना'।

टनमना–वि० स्वस्थ; चंगा; प्रसन्नचित्त; सतेज।

टनाटन–पु० लगातार घंटा बजनेकी आवाज। वि० ठीक हालतमें, पुष्ट। अ० 'टन-टन' आवाजके साथ।

टप–स्त्री० बूँद इत्यादिके गिरनेका शब्द; टमटम आदिकी छतरी जो इच्छानुसार फैलायी या मोड़ी जा सकती है; किसी चीजके टपकनेका शब्द। **–से**–झटसे, बहुत जल्द।

टपक–स्त्री० टपकनेकी क्रिया या भाव; बूँदोंके गिरनेका शब्द; रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा।

टपकन–स्त्री० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, टीस।

टपकना–अ० क्रि० बूँद-बूँद गिरना; पके फलका आपसे आप गिरना; किसी भावका आभासित होना, झलकना; मुग्ध होना; घाव आदिमें रह-रहकर पीड़ा होना।

टपका–पु० बूँद-बूँद गिरना; टपका हुआ फल आदि; ठोकर; रह-रहकर होनेवाली पीड़ा; चौपायोंका एक रोग, खुरपका। **–(के) की विद्या**–छीन-झपटकर लानेकी विद्या।

टपका-टपकी–स्त्री० फलका एक-एक कर गिरना; बूँदा-बूँदी; कुछ लोगोंका महामारी आदिसे रोज मरना। वि० कोई-कोई, एक-आध।

टपकाना–स० क्रि० बूँद-बूँद गिराना, चुलाना।

टपना–अ० क्रि० विना खाये-पीये पड़ा रहना; व्यर्थ किसीके भरोसे बैठा रहना; †लाँघ जाना; कूदना। स० क्रि० ढकना।

टपाटप–अ० 'टप-टप'की आवाजके साथ; लगातार; शीघ्रतासे; एक-एक करके।

टपाना–स० क्रि० विना खिलाये-पिलाये रखना; झूठ-मूठ हैरान करना, व्यर्थ आसरेमें रखना; † कुदाना, लँघाना।

टप्पर†–पु० छप्पर; छज्जा।

टप्पा–पु० उछलती हुई वस्तुका बीच-बीचमें पृथ्वी छूना; वह फासला जहाँतक कोई चीज पहुँचे; फलाँग; एक तरहका गाना; † अंतर। **मु०–मारना**–दूर-दूर सिलाई करना।

टमटम–पु० [अं० 'टैंडेम'] दो पहियोंकी एक खुली गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है।

टमटी*–स्त्री० एक बरतन।

टमाटर–पु० [अं० 'टोमैटो'] विलायती बैगन।

टर–स्त्री० कटु शब्द; मेढककी बोली; अकड़, घमंड; हठ। **मु०–टर करना, –टर लगाना**–बक-बक करना, ढिठाईसे

बोलते ही जाना।

टरकना–अ० क्रि० खिसक जाना;*कर्कश स्वरसे बोलना।

टरकाना–स० क्रि० खिसका देना; टाल देना; चलता करना।

टरटराना–अ० क्रि० अंड-बंड बकना, टर्राना।

टरना*–अ० क्रि० दे० 'टलना'।

टराना*–अ० क्रि० हटना, टलना।

टर्र-टर्र–स्त्री० मेढककी आवाज।

टर्रा–वि० ऐंठकर बातें करनेवाला; अविनयपूर्वक कठोर उत्तर देनेवाला, कटुभाषी; उद्दंडतासे बोलनेवाला; उजड्ड।

टर्राना–अ० क्रि० गर्वके साथ बात करना; सीधे न बोलना।

टलना–अ० क्रि० विचलित होना; खिसकना; अलग होना; अपने स्थानसे हटना, सरकना; मिटना; अन्यथा होना; स्थगित होना; व्यतीत होना।

टलाटली*–स्त्री० टालमटोल, बहानेबाजी।

टवाई*–स्त्री० व्यर्थ घूमना।

टस–स्त्री० भारी वस्तुके हटनेकी आवाज। **मु०–से मस न होना**–थोड़ासा भी न हिलना, प्रभावित न होना।

टसक–स्त्री० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, टीस।

टसकना–अ० क्रि० किसी भारी चीजका अपनी जगहसे हटना; खिसकना; चले जाना; टीसना; प्रभावित होना।

टसकाना–स०क्रि० किसी चीजको उसकी जगहसे हटाना।

टसर–पु० एक तरहका कड़ा और मोटा रेशम।

टहनी–स्त्री० पतली और लचीली उपशाखा।

टहरना*–अ० क्रि० दे० 'टहलना'।

टहल–स्त्री० सेवा, शुश्रूषा; चाकरी। **–टई***–स्त्री० सेवा-शुश्रूषा। **मु०–बजाना**–सेवा करना।

टहलना–अ० क्रि० मनोविनोद या स्वास्थ्यकी दृष्टिसे धीरे-धीरे चलना, घूमना।

टहलनी–स्त्री० दासी, नौकरानी; चिरागकी बत्ती उसकानेकी लकड़ी।

टहलाना–स० क्रि० घुमाना-फिराना, सैर कराना, हवा खिलाना; धीरे-धीरे चलाना; हटा देना।

टहलुआ, टहलुवा–पु० दे० 'टहलू'।

टहलुई–स्त्री० दे० 'टहलनी'।

टहलू–पु० खिदमत करनेवाला, चाकर, सेवक।

टहोका–पु० हाथ या पैरसे दिया जानेवाला धक्का।

टाँक–स्त्री० चार माशेकी एक तौल; जाँच; हिस्सा; * लिखावट; लेखनीकी नोक; कटोरा।

टाँकना–स० क्रि० सिलाई द्वारा जोड़ना या अँटकाना; हलकी सिलाई करना; बहीपर चढ़ाना; सिल कूटना।

टाँका–पु० वह वस्तु जिसके द्वारा दो वस्तुएँ जोड़ी जायँ; धातुकी चद्दर जोड़नेके काम आनेवाला काँटा; सीवन; घावकी सिलाई; चिप्पी; डोभ; जोड़ (धातुका)।

टाँकी–स्त्री० पत्थर काटनेकी छेनी; खरबूजे आदिपरका चौकोर कटाव; काटकर बनाया हुआ छेद; हौज; कंडाल।

टाँग–स्त्री० जाँघसे लेकर एड़ीतकका भाग, वह अंग जिसके सहारे प्राणी चलते-फिरते हैं। **मु०–अड़ाना**–बिना अधिकारके किसी काममें हस्तक्षेप करना, बाधा डालना। **–तलेसे निकलना**–पराजय स्वीकार करना। **–पसारकर सोना**–बेखटके सोना; निर्द्वंद्व होकर चैनसे दिन बिताना।

टाँगन–पु० छोटे कदका घोड़ा।

टाँगना–स० क्रि० खूँटी या अलगनी जैसे ऊँचे आधारसे अँटकाना, लटकाना; फाँसी चढ़ाना, फाँसी देना।

टाँगा–पु० कुल्हाड़ा; पीछेकी ओर लटकी हुई एक गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है।

टाँगी–स्त्री० कुल्हाड़ी।

टाँघन*–पु० दे० 'टाँगन'।

टाँच–स्त्री० ऐसी बात जिससे बनता हुआ काम बिगड़ जाय, भाँजी; टाँका; सिलाई; पैबंद; * काट-छाँट।

टाँचना–स०क्रि० टाँकना; सिलाई करना; काट-छाँट करना।

टाँची–स्त्री० रुपये रखकर कमरमें बाँधनेकी थैली, बसनी।

टाँठ*–वि० कड़ा; दृढ़; बलवान्।

टाँड़–स्त्री० सामान रखनेके लिए बनी हुई लकड़ीकी पाटन; मचान; बाहुपर पहननेका एक गहना। पु० समूह, राशि; टाँड़ा; घरोंकी कतार।

टाँड़ा–पु० बैलोंपर लदी हुई व्यापारकी वस्तुएँ; ऐसी वस्तुओंसे लदे हुए बैलोंका झुंड; व्यापारियोंका समूह; परिवार; लकड़ीका एक कीड़ा; * लदकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जानेवाला माल।

टाँड़ी*–स्त्री० टिड्डी।

टाँय-टाँय–स्त्री० 'टें-टें'का कर्कश शब्द; बकवाद। **मु० –फिस**–लंबी बातें, पर परिणाम कुछ नहीं; धूम-धामसे काम शुरू करना, पर अंतमें कुछ न हो सकना।

टाइप–पु० [अं०] छपाईके काम आनेवाले सीसेके ढले अक्षर। **–राइटर**–पु० वह छोटी मशीन जिसके द्वारा कागजपर टाइपके अक्षर छापे जाते हैं, मुद्रलेखन यंत्र।

टाइम–पु० [अं०] समय, काल। **–टेबुल**–पु० वह कागज जिसपर भिन्न-भिन्न कार्योंके लिए नियत समय लिखा हो, समयसूची। **–पीस**–स्त्री० मेज आदिपर रखनेकी एक प्रकारकी घड़ी।

टाउन–पु० [अं०] कसबा। **–हाल**–पु० शहरकी वह इमारत जिसमें सरकार या जनतासे संबंध रखनेवाली सभाएँ या बैठकें हों, नगरभवन।

टाट–पु० बिछाने या परदेके काम आनेवाला सन या पटसनका मोटा कपड़ा; (ला०) मोटा कपड़ा; बिरादरी; महाजनकी गद्दी। **–बाफ**–पु० टाट बुननेवाला; कपड़ोंपर सोने-चाँदीके काम करनेवाला। **मु०–उलटना**–दिवाला निकलना। **–पर मूँजका बखिया**–जैसी भद्दी चीज वैसी ही सजावट। **–बाहर होना**–बिरादरीसे बहिष्कृत होना। **–में पाटका बखिया**–बेमेल सजावट।

टाटर–पु० दे० 'टट्टर'; * ठठरी; खोपड़ी।

टाटिका*–स्त्री० टट्टी।

टाटी*–स्त्री० छोटा टट्टर; टट्टी।

टाठी–स्त्री० थाली।

टाड़*–पु० भुजापर पहननेका एक आभूषण।

टान–स्त्री० खिंचाव, तनाव; खींचनेकी क्रिया; सितार बजानेका एक तरीका। पु० मचान।

टानना–स० क्रि० खींचना।

टाप–स्त्री० घोड़ेके पाँवका सबसे नीचेका भाग, सुम; घोड़ेके पाँवके पृथ्वीपर पड़नेसे उठी आवाज; चारपाईके पायेका

नीचेका उभरा हुआ भाग; मछली पकड़ने, मुर्गियोंको बंद करनेका टोकरा या खाँचा । **मु०–देना**–छलाँग मारना ।

टापना–अ० क्रि० दे० 'टपना'; टाप मारना; ताकते रह जाना । † स० क्रि० कूद जाना ।

टापा–पु० मैदान; उछाल; झाबा ।

टापू–पु० पृथ्वीका वह भाग जो चारों ओर जलसे घिरा हो, द्वीप ।

टामक*–पु० डुग्गी, डिमडिमी ।

टामन*–पु० टोना, टोटका ।

टारना†–स० क्रि० दे० 'टालना' ।

टारपीडो–पु० [अं०] एक स्वतः चलनेवाला विध्वंसक पनडुब्बी जहाज जो दूसरे जहाजसे टकराते ही फट जाता है और टकरानेवाले जहाजमें छेद कर देता है ।

टाल–स्त्री० पुआल आदिका पुंज, अटाला; लकड़ीकी दूकान; टालनेकी क्रिया । पु० कुटना । **–टूल**–स्त्री० बहाना; टरकानेकी क्रिया । **–मटाल,–मटूल,–मटोल**–स्त्री० दे० 'टाल-टूल' ।

टालना–स० क्रि० किसी वस्तुको उसके स्थानसे हटाना, खिसकाना; टरकाना; स्थगित कर देना; * हटाना; व्यतीत करना; उसकाना; उल्लंघन करना । **मु० टाल देना**–दूर कर देना; बहाना कर देना, टरकाना; (ला०) नाश करना; किसी कामको दूसरे समयके लिए रख छोड़ना; समय निर्धारित करना । **किसीपर टाल देना**–समय बिताना; अपनी जान बचाते हुए दूसरेका निर्देश कर देना ।

टाली–स्त्री० बैल आदिके गलेकी घंटी; तीन वर्षसे कम उम्रकी बछिया जो बहुत उछलती-कूदती हो ।

टाहली*–पु० सेवक, नौकर ।

टिंड, टिंडा–पु० एक फल जो तरकारीके काम आता है ।

टिकट–पु० महसूल या कर चुकानेपर प्राप्त कागजका वह टुकड़ा जिससे थियेटर, लाटरी, ट्रेन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्राप्त होता है, प्रवेशपत्र; विशेष प्रकारका कर या फीस; स्टांप ।

टिक-टिक–स्त्री० घड़ीकी आवाज; घोड़ा हाँकनेका संकेत ।

टिकटिकी–स्त्री० टकटकी; अपराधीको बाँधकर बेंत लगानेके लिए बना हुआ ढाँचा; फाँसी देनेका तख्ता, टिकठी ।

टिकठी–स्त्री० फाँसीका तख्ता; तिपाई; * अरथी ।

टिकड़ा–पु० चिपटा, गोल टुकड़ा; धातु, पत्थर या खपड़े आदिका छोटा टुकड़ा; आँचपर सेंकी हुई बाटी ।

टिकड़ी–स्त्री० छोटा टिकड़ा ।

टिकना–अ० क्रि० ठहरना; थोड़े समयके लिए वास करना; अड़ना; विशेष अवधितक काम देना; स्थित रहना; जमना ।

टिकरी–स्त्री० एक नमकीन पकवान; टिकिया ।

टिकली–स्त्री० छोटी बिंदी; टिकिया; तकली ।

टिकस–पु० कर ।

टिकाऊ–वि० टिकनेवाला, कुछ दिनोंतक बना रहनेवाला ।

टिकान–स्त्री० टिकनेकी क्रिया; पड़ाव ।

टिकाना–स० क्रि० ठहराना; वासके लए स्थान देना; अड़ाना ।

टिकिया–स्त्री० ठोस पदार्थका गोला, चिपटा टुकड़ा; एक मिठाई; तंबाकू पीनेके लिए कोयलेसे बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा; बिंदी ।

टिकुरी, स्त्री० तकली ।

टिकुली–स्त्री० तकली; चमकी, बिंदी ।

टिकैत–पु० युवराज, राजकुमार जो राजाके बाद तिलकका अधिकारी हो; सरदार ।

टिकोरा†–पु० आमका कच्चा छोटा फल, अँबिया ।

टिक्कड़–पु० बाटी, अंगाकड़ी; बड़ी टिकिया ।

टिक्की–स्त्री० टिकिया; बाटी; अँगूठे आदिका किसी रंगसे बना हुआ निशान; ताशकी बूटी ।

टिघलना–अ० क्रि० पिघलना, ठोससे द्रवरूपमें परिवर्तित होना ।

टिघलाना–स० क्रि० पिघलाना ।

टिट*–स्त्री० हठ, टेक ।

टिटकारना–स० क्रि० 'टिक-टिक' शब्द करके घोड़े आदिको चलनेके लिए प्रेरित करना ।

टिटिह–पु० दे० 'टिट्टिभ' ।

टिटिहरी–स्त्री० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया । (कहा जाता है कि यह आकाशके गिरनेके भयसे टाँगें ऊपर करके सोती है ।)

टिटिहा–पु० दे० 'टिट्टिभ' । **–रोर**–पु० शोर-गुल ।

टिट्टिभ–पु० [सं०] नर टिटिहरी ।

टिट्टिभा, टिट्टिभी–स्त्री० [सं०] टिट्टिभकी मादा ।

टिड्डा–पु० एक परदार कीड़ा ।

टिड्डी–स्त्री० एक परदार लाल रंगका कीड़ा जो फसलको हानि पहुँचाता है । **–दल**–पु० बड़ा झुंड ।

टिढ़बिंगा–वि० बेडौल, टेढ़ा-मेढ़ा ।

टिन–पु० दे० 'टीन' ।

टिपका*–पु० बूँद ।

टिपकारी–स्त्री० ईंटों आदिकी जोड़ाईके संधिस्थानपर लगाया गया सीमेंट या बारीक मसाला ।

टिप-टिप–स्त्री० बूँदोंके गिरनेका शब्द ।

टिपवाना–स० क्रि० दबवाना; प्रहार करना; लिखवाना ।

टिपारा*–पु० मुकुटके आकारकी एक टोपी ।

टिपुर–पु० ढोंग; घमंड ।

टिप्पणी, टिप्पनी–स्त्री [सं०] संक्षिप्त टीका ।

टिप्पन–पु० जन्मकुंडली; दे० 'टिप्पणी' ।

टिप्पस†–स्त्री० युक्ति, उपाय; प्रयोजन-सिद्धिका ढंग ।

टिप्पी–स्त्री० अँगूठे आदिका किसी रंगसे बना हुआ निशान ।

टिमटिमाना–अ० क्रि० क्षीण प्रकाशके साथ जलना; मरनेके करीब होना ।

टिरफिस–स्त्री० विरोध; ढिठाई ।

टिर्राना–अ० क्रि० दे० 'टर्राना' ।

टिल्ला–पु० धक्का, ठोकर । **–(ल्ले)नवीसी**–स्त्री० निठल्लापन; बहाना ।

टिहुकना†–अ० क्रि० चौंकना; रूठना । *वि० रूठनेवाला ।

टिहुनी†–स्त्री० कुहनी; घुटना ।

टीँड़सी–स्त्री० एक फल जिसकी तरकारी बनती है ।

टीँड़ी*–स्त्री० टिड्डी ।

टीक–स्त्री० गले या सिरका एक गहना ।

टीकना–स० क्रि० टीका या निशान लगाना ।

टीका–पु० तिलक, मस्तकपर चंदन या रोली आदिका उँगलीसे बनाया हुआ चिह्नविशेष; विवाहके पूर्वकी एक रस्म; भेंट; कलंक; युवराज; राजतिलक; संक्रामक रोगसे बचनेके लिए सूई द्वारा शरीरमें औषध प्रविष्ट करनेकी क्रिया; सिरका एक आभूषण; *किसी कुल या समुदायका सर्वश्रेष्ठ पुरुष; नजराना। स्त्री० [सं०] व्याख्या। **–कार**–पु० किसी ग्रंथकी व्याख्या करनेवाला।

टीन–पु० [अं०] कलई की हुई लोहेकी चद्दर; कनस्तर।

टीप–स्त्री० हाथसे दबानेका काम; हलका आघात; ईंटोंके जोड़ोंपर लगाये गये मसालेकी लकीर; ऊँचा स्वर; तार-सप्तकमेंसे किसी एकपर अल्पकालीन ठहराव; जन्मपत्री; हुंडी; गचकी पिटाई; टाँक लेनेकी क्रिया। **–टाप**–स्त्री० ठाट-बाट, सजावट।

टीपन† स्त्री० जन्मपत्री। स्त्री० घट्ठा, गाँठ।

टीपना–स० क्रि० हाथ या उँगलीसे दबाना; हलका आघात करना; टिपकारी करना; तारस्वरमें गाना; टाँक लेना। † स्त्री० जन्मपत्री।

टीबा–पु० टीला

टीम–स्त्री० [अं०] खेलाड़ियोंका दल।

टीम-टाम–स्त्री० तड़क-भड़क।

टीला–पु० ऊँची जमीन, दूह, मिट्टी या बालूका ऊँचा ढेर।

टीस–स्त्री० रह-रहकर उठनेवाली जोरकी पीड़ा, कसक।

टीसना–अ० क्रि० रह-रहकर पीड़ा होना।

टुंटा–वि० लूला, जिसके हाथ न हों; टूँठा।

टुक–वि० थोड़ा, तनिक, अल्प। अ० थोड़ा, जरा।

टुकड़ा–पु० किसी वस्तुका एक खंड; (ला०) जूठन; भाग (खेत०)। **–(टुकड़)खोर**–वि० टुकड़ा माँगकर जीनेवाला। **–गदा**–वि० घर-घर रोटीका टुकड़ा माँगनेवाला। पु० मँगता। **–गदाई**–स्त्री० टुकड़ा माँगनेका काम। **–तोड़**–वि० दूसरेके भरोसे जीनेवाला।

टुकड़ी–स्त्री० छोटा टुकड़ा; छोटा झुंड या समुदाय; सैनिकोंका छोटा दल, 'कंपनी'।

टुकुरटुकुर–अ० टकटकी लगाकर।

टुक्का†–पु० टुकड़ा; चतुर्थांश।

टुघलाना–स० क्रि० मुँहमें रखकर चुभलाना।

टुच्चा–वि० नीच, कमीना, दुष्ट।

टुटपुँजिया–वि० कम पूँजीवाला; थोड़ी विद्या, धन आदिवाला।

टुटरूँ-टूँ–स्त्री० पेंडुकीकी बोली। वि० अकेला; अशक्त।

टुड़ी–स्त्री० नाभि; ठोड़ी; टुकड़ी; डली।

टुनगी–स्त्री० फुनगी।

टुनहाया–वि०, पु० जादू-टोना करनेवाला।

टूँगना–स० क्रि० टहनीके पत्तों, छोटे पौधोंको ऊपरसे काटना; कुतरना, खाद्यवस्तुको थोड़ा-थोड़ा काटकर खाना।

टूँड़–पु० जौ, गेहूँ, धान आदिकी बालमें ऊपरकी ओर निकला हुआ नुकीला भाग; मच्छड़ आदि कीड़ोंके मुँहके आगे सूँड़की तरह निकली हुई पतली नली।

टूँड़ी–स्त्री० गाजर-मूली आदिकी नोक; लंबी नोक; नाभि।

टूअरा†–वि० (वह बच्चा) जिसकी माँ गुजर गयी हो।

टूक*–पु० टुकड़ा, खंड।

टूका†–पु० दे० 'टुकड़ा'।

टूट*–वि० टूटा हुआ, खंडित। स्त्री० भूल, चूक, त्रुटि– 'टूट सँवारहु मेरवहु सजा'–प०।

टूटना–अ० क्रि० भग्न होना, खंडित होना, दो टुकड़े हो जाना; हड्डियोंके जोड़का अलग हो जाना; गतिका रुक जाना; वेगसे किसी ओर झपटना, सहसा आक्रमण करना; च्युत होना; संबंध न रहना; कम हो जाना; अँगड़ाईके साथ पीड़ाका उठना; फलोंका तोड़ा जाना; अनायास कहींसे आ पड़ना; कृश होना; धनहीन होना। मु० **टूटकर बरसना**–मूसलधार वर्षा होना। **टूट जाना**–बंद हो जाना; चलना रुक जाना; गढ़का कब्जेमें आ जाना; दुर्बल या शक्तिहीन होना। **टूट पड़ना**–अचानक आ जाना; ऊपरसे नीचे गिरना।

टूटा–वि० खंडित। **–फूटा**–वि० जीर्ण-शीर्ण; (ला०) साधारण कोटिका; सजावटसे रहित।

टूठना*–अ० क्रि० संतुष्ट होना; प्रसन्न होना।

टूठनि*–स्त्री० संतोष; प्रसन्नता।

टँ-टँ–स्त्री० बकवाद, व्यर्थकी बात।

टेँट–स्त्री० धोतीकी मुर्री; कपासका फल या ढोंढा; करीलका फल; पशुओंका एक घाव।

टेँटर†–स्त्री० विकारके कारण आँखमें उभड़ा हुआ मांस।

टेँटी–स्त्री० करीलका फल। वि० झगड़ालू; चिड़चिड़ा।

टेउकन–पु०, **टेउकी**–स्त्री० वह वस्तु जो किसी वस्तुको लुढ़कनेसे रोकनेके लिए उसके नीचे लगायी जाती है।

टेक–स्त्री० थूनी, सहारा; चबूतरा; टीला; संकल्प; हठ; आदत; गीतका स्थायी पद; * आश्रय, अवलंब। मु०– **निबाहना**–संकल्प पूरा करना। **–पकड़ना**–आग्रह करना, हठ पकड़ना।

टेकना–स० क्रि० थाम लेना; सहारा लेना; सहारेके लिए कोई वस्तु पकड़ना; * सहन करना; हठ पकड़ना।

टेकनी–स्त्री० वह चीज जिसका सहारा दिया, लिया जाय।

टेकर, टेकरा–पु० ऊँची भूमि, दूह; छोटी पहाड़ी।

टेकला*–स्त्री० धुन, रटन।

टेकान–पु० टेक, थंभ, थूनी; वह ऊँचा चबूतरा जिसपर बोझा ढोनेवाले अपना बोझा रखकर सुसताते हैं।

टेकाना–स० क्रि० सहारा देना; थामना।

टेकानी–स्त्री० धुरीकी कील जो पहियेको गिरनेसे रोकती है।

टेकी–वि० दृढ़प्रतिज्ञ; हठी, आग्रही।

टेढ़*–वि० दे० 'टेढ़ा'। स्त्री० टेढ़ापन; उजड्डपन; दुष्टता। **–बिडंगा**–वि० टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ा–वि० वक्र, झुका हुआ, कुटिल, बाँका; कठिन, दुःसाध्य; पेचीदा; अनम्र, विनयरहित, उद्दंड, बुरे स्वभावका। **–पन**–पु० दे० 'टेढ़ाई'। **–मेढ़ा**–वि० जो सीधा न हो, जो वक्रता लिये हुए हो। **(टेढ़ी)खीर**–स्त्री० कठिन काम। मु० **(टेढ़ी)सीधी सुनाना**–बुराभला कहना।

टेढ़ाई–स्त्री० टेढ़ा होनेका भाव, टेढ़ापन।

टेढ़े–अ० तिरछे। मु०–**टेढ़े जाना**–घमंड करना, इतराना।

टेना–स० क्रि० पत्थर आदिपर धार तेज करना।

टेनी†–स्त्री० छोटी उँगली। मु०–**मारना**–(सौदा) कम चढ़नेके लिए तराजूकी डाँड़ीको उँगलीसे दबा देना।

टेम–स्त्री० दीयेकी लौ । पु० [अं० 'टाइम'] समय ।

टेर–स्त्री० पुकार, हाँक; ऊँचा गायन ।

टेरना–स०क्रि० तार स्वरमें गाना; पुकारना; दूरसे बुलाना; मददके लिए पुकारना; विताना, काटना; पूरा करना ।

टेलीप्रिंटर–पु० [अं०] वह यंत्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयं टाइप हो जाता है, दूरमुद्रक ।

टेलीफोन–पु० [अं०] वह यंत्र जिसमें तारके संबंधसे दूरके शब्द ज्योंके त्यों सुनाई देते हैं, दूरभाप ।

टेलीविज़न–पु० [अं०] व्यवधान रहते हुए भी दूरकी वस्तुको देखनेकी क्रिया ।

टेव–स्त्री० लत, आदत, स्वभाव (पड़ना) ।

टेवना†–स० क्रि० दे० 'टेना' ।

टेवैया*–पु० धार तेज करनेवाला ।

टेसुआ†–पु० दे० 'टेसू' ।

टेसू–पु० पलाशका फूल; * लड़कोंका एक खेल ।

टैंक–पु० [अं०] लड़ाईके काम आनेवाली मोटरकार जैसी गाड़ी जो तोप आदिसे लैस और लोहेकी मोटी चादरसे ढका रहती है ।

टैक्स–पु० [अं०] कर, महसूल, टिकस ।

टैक्सी–स्त्री० [अं०] किरायेपर चलनेवाली मोटर-कार ।

टोँचना–स० क्रि० गड़ाना; गोदना । पु० उलाहना; ताना ।

टोँट–स्त्री० चोंच ।

टोँटनी–स्त्री० जलपात्रमें लगी हुई टोंटी ।

टोँटी–स्त्री० बरतन आदिमें लगी हुई पानी गिरानेकी नली; थूथन ।

टोक–स्त्री० टोकनेकी क्रिया, रोक; पूछ-ताछ । **–टाक**–स्त्री० पूछ-ताछ ।

टोकना–स० क्रि० चलते समय यात्राके विषयमें पूछ-ताछ करना; किसी बातकी याद दिलाना; अशुद्धिपर बोल उठना; एतराज करना । पु० हंडा; टोकरा ।

टोकनी–स्त्री० टोकरी, देगची; छोटा हंडा ।

टोकरा–पु० बड़ी टोकरी; झावा, खाँचा ।

टोकरी–स्त्री० घास, फल, तरकारी आदि रखनेका बाँस या झाऊ आदिका बना गोला, गहरा पात्र, खँचिया ।

टोटक*–पु० दे० 'टोटका' ।

टोटका–पु० टोना ।–(के)हाई–स्त्री० टोना करनेवाली ।

टोटा–पु० कारतूस; बाँस आदिका टुकड़ा; घाटा, कमी ।

टोड़ा–पु० पुराने ढंगके मकानोंमें दीवारमें गाड़ा जानेवाला विशेष बनावटका पत्थर या लकड़ीका टुकड़ा जो आगे बढ़ी हुई छाजनको रोकके लिए लगाया जाता है ।

टोड़ी–स्त्री० एक रागिनी, भैरव रागकी स्त्री ।

टोनहा–पु० दे० 'टोनहाया' ।

टोनहाई–स्त्री० टोना, तंत्र-मंत्र करनेवाली स्त्री ।

टोनहाया–पु० टोना, जादू करनेवाला ।

टोना–पु० जादू, टोटका; * एक शिकारी पक्षी । स० क्रि० उँगलियोंसे दबाकर या छूकर मालूम करना, टटोलना ।

टोप–पु० बड़ी टोपी; शिरस्त्राण, लोहेकी टोपी; † बूँद ।

टोपा–पु० बड़ी टोपी; शिरस्त्राण; † टोकरा ।

टोपी–स्त्री० सिरका एक पहनावा; गोल और गहरा ढकन; शिकारी जानवरके मुँहपर चढ़ानेकी थैली । **–दार**–वि० टोपीवाली (बंदूक); जिसमें टोपी लगी हो ।

टोभ*–पु० टाँका ।

टोर*–स्त्री० कटारी, कटार ।

टोरना*–स० क्रि० तोड़ना ।

टोल–स्त्री० दल, समुदाय, झुंड; टुकड़ा, रोड़ा; पाठशाला । पु० एक राग; [अं०] यात्रियों आदिपर लगनेवाला कर ।

टोला–पु० छोटी बस्ती; महल्ला ।

टोली–स्त्री० छोटा महल्ला; मंडली; झुंड; सिल ।

टोह–स्त्री० खोज, अनुसंधान; पता; देख-भाल ।

टोहक विमान–पु० (रिकानेसेंस प्लेन) शत्रुकी स्थितिका पता लगाने, सैनिक आवश्यकता या पुल आदि बनानेकी दृष्टिसे आसपासके भूक्षेत्रका पर्यवेक्षण करनेवाला विमान ।

टोहना–स० क्रि० खोजना, सुराग लगाना; टटोलना ।

टोहाटाई–स्त्री० खोज, छान-बीन; देख-भाल ।

टोहिया–वि०, पु० टोह लगानेवाला; खुफिया ।

टौनहाल–पु० दे० 'टाउनहाल' ।

ट्रंक–पु०[अं०] लोहे या टीनका कपड़े आदि रखनेका संदूक ।

ट्रेन–स्त्री० [अं०] रेल गाड़ी ।

ठ

ठ–देवनागरी वर्णमालाका बारहवाँ व्यंजन वर्ण ।

ठंठ–वि० जिसकी डालियाँ और पत्तियाँ सूख या कटकर गिर गयी हों, ठूँठा ।

ठंठनाना–स० क्रि० 'ठं-ठं'की ध्वनि निकालना ।

ठंड–स्त्री० सरदी, जाड़ा ।

ठंडक–स्त्री० दे० 'ठंड' ।

ठंडा–वि० सर्द, शीतल; बुझा हुआ; बेरौनक, श्रीहत ।

ठंडाई–स्त्री० दे० 'ठंढाई' ।

ठंडी लड़ाई–स्त्री० (कोल्ड वार) दे० 'शीत युद्ध' ।

ठंढ–स्त्री० दे० 'ठंड' ।

ठंढई–स्त्री० दे० 'ठंढाई' ।

ठंढक–स्त्री० दे० 'ठंड'; (ला०) सुख; तृप्ति; संतोष; शांति ।

ठंढा–वि० दे० 'ठंडा' । **–मुलम्मा**–पु० सोने-चाँदीका मुलम्मा जो विना आँचके चढ़ाया जाय । **मु०–करना**–क्रोध शांत करना । **–पड़ना**–क्रोध शांत होना; आवेश-रहित होना । **–होना**–भर जाना ।

ठंढाई–स्त्री० तरी पहुँचानेवाली औषधियाँ; पेयविशेष ।

ठंढी–वि०स्त्री०दे० 'ठंडा' ।**–आग**–स्त्री०पाला ।**–साँस**–स्त्री० दुःखभरी साँस । **मु०–साँस लेना**–आह भरना ।

ठंढे-ठंढे–अ० आराममें, धूप कड़ी होनेसे पहले ।

ठ–पु० [सं०] शिव; भारी शब्द; चंद्रमंडल; शून्य स्थान ।

ठक–पु० काठपर काठ बजानेका शब्द । * स्त्री० हठ । वि० भौचक्का, स्तब्ध । **–ठक**–स्त्री० मनमुटाव, झगड़ा; 'ठक-ठक' शब्द । **मु०–हो जाना**–स्तंभित हो जाना, भौचक्का हो जाना ।

ठकुरई–स्त्री० दे० 'ठकुराई' ।

ठकुरसुहाती–स्त्री॰ व्यक्तिविशेष या स्वामीको प्रिय लगनेवाली बात, चापलूसी, चाटुकारिता।

ठकुराइत–स्त्री॰ दे॰ 'ठकुरायत'।

ठकुराइन†–स्त्री॰ स्वामिनी; ठाकुरकी, नाईकी स्त्री; *रानी।

ठकुराई–स्त्री॰ स्वामित्व, प्रभुता; शासनाधीन प्रदेश, राज्य; क्षत्रिय, स्वामी या जमींदार होनेका रोबदाब।

ठकुरानी–स्त्री॰ जमींदार, ठाकुर या सरदारकी स्त्री; रानी।

ठकुराय*–पु॰ क्षत्रियोंका एक भेद।

ठकुरायत–स्त्री॰ प्रभुता, स्वामित्व, अधीश्वरता; शासनाधीन प्रदेश।

ठग–पु॰ धोखा देकर लूटनेवाला; धोखेबाज आदमी; धूर्त, वंचना करनेवाला। **–पना**–पु॰ ठगहाई; ठगनेकी क्रिया; धूर्तता। **–मूरी**–स्त्री॰ ठगनेकी गरजसे बेहोश करनेके लिए सुँघायी जानेवाली एक जड़ी। **–मोदक**–पु॰ नशीली वस्तुओंसे युक्त मोदक जिसे खिलाकर ठग पथिकोंको बेहोश करते थे। **–लाडू**–पु॰ दे॰ 'ठगमोदक'। **–विद्या**–स्त्री॰ धोखा देनेका हुनर।

ठगना–स॰ क्रि॰ धोखा देकर लूटना; दगाबाजी करना, छलना; ग्राहकोंसे अधिक दाम लेना। * अ॰ क्रि॰ ठगा जाना; धोखा खाना; दंग रह जाना।

ठगनी–स्त्री॰ ठगनेवाली स्त्री; ठगकी स्त्री; कुटनी।

ठगवाना–स॰ क्रि॰ दूसरे द्वारा धोखा दिलवाना।

ठगहाई, ठगहारी†–स्त्री॰ दे॰ ठगपना।

ठगाई†–स्त्री॰ ठगपना।

ठगाना†–अ॰ क्रि॰ धोखा खा जाना; भुलानेमें आकर किसी वस्तुका अधिक मूल्य दे देना।

ठगाही*–स्त्री॰ ठगपना।

ठगिन–स्त्री॰ धोखा देनेवाली स्त्री, दगावाज स्त्री; ठग-पत्नी।

ठगिनी–स्त्री॰ दे॰ ठगिन।

ठगिया–पु॰ ठग।

ठगी–स्त्री॰ ठगनेकी क्रिया; ठगका पेशा; ठगपना।

ठगोरी–स्त्री॰ मोहित कर देनेवाली क्रिया, जादू, टोना।

ठट–पु॰ वस्तुओं अथवा लोगोंका जमाव; भीड़; ठाट, सजावट। **–कीला**–वि॰ भड़कदार।

ठटना–अ॰ क्रि॰ डटना; अड़ना; विरोधमें स्थित रहना; स॰ क्रि॰ सजाना; तैयार करना; छेड़ना।

ठटनि*–स्त्री॰ सजधज; तैयारी; बनाव।

ठटरी–स्त्री॰ ढाँचा; शरीरका ढाँचा; अरथी। **मु॰–हाँना**–अत्यंत कृश होना।

ठट्ट–पु॰ दे॰ 'ठट'।

ठट्ठई–स्त्री॰ हँसी, परिहास।

ठट्ठा–पु॰ परिहास। **(ठट्ठे)बाज़**–वि॰ दिल्लगीवाज।

ठठई*–स्त्री॰ दे॰ 'ठट्ठई'।

ठठरी–स्त्री॰ दे॰ 'ठटरी'।

ठठाना–स॰ क्रि॰ आघात करना; जोरसे पीटना। अ॰क्रि॰ अट्टहास करना, जोरसे हँसना।

ठठिरिन*–स्त्री॰ दे॰ 'ठठेरिन'।

ठठेरा–पु॰ धातुके बरतन बनानेवाला, कसेरा।

ठठेरिन–स्त्री॰ ठठेरेकी स्त्री।

ठठोल–वि॰ मसखरा, अधिक परिहास करनेवाला। पु॰ परिहास करनेवाला; परिहास।

ठठोली–स्त्री॰ हँसी, मजाक, परिहास।

ठड़ा, ठढ़ा†–वि॰ खड़ा, सीधा स्थित।

ठनक–स्त्री॰ तबला, मृदंग आदिकी ध्वनि; टीस।

ठनकना–अ॰ क्रि॰ 'ठन-ठन' करके बजना; शंका उत्पन्न होना; रुक-रुककर पीड़ा होना।

ठनका–पु॰ दे॰ 'ठनक'।

ठनकाना–स॰ क्रि॰ धातुखंड या तबला आदि बजाकर शब्द उत्पन्न करना। (रुपया ठनका लेना–रुपया वसूल कर लेना)।

ठनकार–स्त्री॰ धातुखंडसे उत्पन्न ध्वनि।

ठनगन–पु॰ नेग पानेके लिए हठ करना; हठ, जिद।

ठनगना–अ॰ क्रि॰ ठनगन करना।

ठन-ठन गोपाल–पु॰ वह जिससे जयगोपाल–कोरा शिष्टाचार–के अतिरिक्त कुछ न मिले; निःसार वस्तु।

ठनठनाना–स॰ क्रि॰ 'ठन-ठन'की ध्वनि उत्पन्न करना। अ॰ क्रि॰ 'ठन-ठन' करके बजना।

ठनना–अ॰ क्रि॰ निश्चित होना; दृढ़ताके साथ कार्यका आरंभ होना; छिड़ना; प्रयुक्त होना; लगना; तैयार होना।

ठनाका–पु॰ 'ठन-ठन'की ध्वनि।

ठनाठन–अ॰ 'ठन-ठन' आवाजके साथ।

ठप–वि॰ बंद।

ठपका*–पु॰ टक्कर, ठोकर, आघात।

ठप्पा–पु॰ साँचा जो छापा या चिह्नविशेष लगानेके काम आता है; साँचेसे उखड़ी हुई छाप।

ठमक–स्त्री॰ सहसा रुक जानेका भाव; इतराते हुए चलनेका भाव; नजाकतभरी चाल।

ठमकना–अ॰ क्रि॰ भय, आश्चर्य आदिसे चलते-चलते रुक जाना; सहम जाना; इतराते हुए हाव-भावके साथ चलना।

ठमकाना–स॰ क्रि॰ चलतेको सहसा रोक देना; * बजाना।

ठयना*–स॰ क्रि॰ ठानना; दृढ़ निश्चयके साथ आरंभ करना; तैयार करना; पूरा करना; स्थापित करना; लगाना। अ॰ क्रि॰ संकल्पपूर्वक आरंभ होना; ठनना; ठहरना, जमना; प्रयुक्त होना।

ठरना†–अ॰ क्रि॰ सरदीसे गलना, ठिठुरना; अत्यंत अधिक शीत पड़ना; * स्तब्ध हो जाना।

ठर्रा†–पु॰ कड़ा बटा हुआ मोटा सूत; एक देशी शराब।

ठलाना*–स॰ क्रि॰ गिराना; निकलवाना।

ठवन–स्त्री॰ अंग-संचालनका ढंग; खड़े होने, बैठने आदिका ढंग; स्थिति; मुद्रा।

ठवना–स॰ क्रि॰, अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ठयना'।

ठवनि*–स्त्री॰ दे॰ 'ठवन'।

ठस–वि॰ आलसी, कंजूस; जिससे कुछ निकलता न हो; घनी बुनावटका (कपड़ा), दबीज; (रुपया) जिसकी आवाज भारी हो; हठी; स्थिर; दृढ़।

ठसक–स्त्री॰ नखरा, गर्वीली चाल-ढाल; ऐंठ, शान। **–दार**–वि॰ ठसकवाला।

ठसका–पु॰ सूखी खाँसी; ठोकर, धक्का; फंदा।

ठसाठस–अ॰ खचाखच, ठूँस-ठूँसकर (भरा)।

ठहनाना*–अ॰ क्रि॰ बजना; (घोड़ेका) हिनहिनाना।

ठहर*–पु० स्थान, जगह; चौका, लीपी हुई जगह ।

ठहरना–अ० क्रि० रुकना; टिकना; बना रहना; अस्थायी रूपसे रहना; पक्का होना; तय होना; थमना; प्रतीक्षा करना ।

ठहराई–स्त्री० ठहरानेकी क्रिया या मजदूरी; कब्जा ।

ठहराऊ–वि० ठहरनेवाला, टिकाऊ ।

ठहराना–स० क्रि० रोकना; स्थिर करना; टिकाना; तय करना; पक्का करना ('ठहरना' का प्रे०) । * अ० क्रि० ठहरना, टिकना, रुकना ।

ठहराव–पु० ठहरनेका भाव; स्वर या तानका विराम (संगीत); रुकाव; निर्णय; ठहरौनी; समझौता ।

ठहरौनी–स्त्री० दहेज आदिके लेन-देनकी प्रतिज्ञा या निश्चय ।

ठहाका–पु० जोरकी हँसी । **मु०–लगाना**–अट्टहास करना ।

ठहियाँ–स्त्री० स्थान, जगह ।

ठाँ, ठाँइँ*–स्त्री० दे० 'ठाँव' । अ० तईं, प्रति; पास ।

ठाँउँ*–पु० दे० 'ठाँव' । अ० निकट, पास ।

ठाँठ–वि० रसहीन; (गाय आदि) जो दूध न देती हो ।

ठाँठर*–पु० ठठरी ।

ठाँय–पु० दे० 'ठाँव' । स्त्री० बंदूक छूटनेकी आवाज ।

ठाँव–पु० स्थान, जगह; अवसर, मौका ।

ठाँसना–स० क्रि० ठूँसना या कसकर भरना । अ० क्रि० ढाँसना ।

ठाकुर–पु० देवप्रतिमा (विशेषकर विष्णुकी); परमेश्वर; अधीश्वर, स्वामी; क्षत्रियोंकी उपाधि; जमींदार; नाई । **–द्वारा**–पु० ठाकुरजीका मंदिर; पुरीस्थित जगन्नाथजीका मंदिर । **–बाड़ी**–स्त्री० देवस्थान ।

ठाट–पु० रोक या रक्षाके काम आनेवाला बाँसका ढाँचा; सजधज; शान; सितारका तार; डिल्ला; * तैयारी; आयोजन; जनसमूह, भीड़; वेशरचना; झुंड; अधिकता । **–बाट**–पु० तड़क-भड़क । **मु०–बदलना**–भेष बदलना; बड़प्पन जताना ।

ठाटना*–स० क्रि० ठाट करना; सजाना; आयोजन करना ।

ठाटर–पु० टट्टर; ठठरी; बाँसकी बनी कबूतरोंकी छतरी; * सजधज, सजावट ।

ठाटी*–स्त्री० दे० 'ठट' ।

ठाठ–पु० दे० 'ठाट' ।

ठाठना*–स० क्रि० दे० 'ठाटना' ।

ठाठर–पु० दे० 'ठाटर' ।

ठाढ़, ठाढ़ा*–वि० खड़ा; उन्नत; बिना टुकड़ा किया हुआ; रचित । **मु० (ठाढ़ा)देना**–टिकाना; ठहराना ।

ठाढ़ेश्वरी–पु० दिन-रात खड़े रहनेवाले साधु ।

ठादर*–पु० राड़, झगड़ा–'देव आपनो नहीं संभारत करत इंद्रसों ठादर'–सू० ।

ठान–स्त्री० ठाननेका भाव, करनेका दृढ़ निश्चय; हाव-भावके साथ अंगसंचालन; कार्यविशेषकी तैयारी; कार्यारंभ ।

ठानना–स० क्रि० करनेका दृढ़ निश्चय करना; छेड़ना; कार्यविशेषको तत्परतासे प्रारंभ करना ।

ठाना*–स० क्रि० दे० 'ठानना'; दे० 'ठयना' ।

ठाम*–पु० दे० 'ठाँउँ'; शरीरकी मुद्रा, अंगविन्यास ।

ठायँ–स्त्री० दे० 'ठाँय' (स्त्री०) । पु० दे० 'ठाँव' ।

ठाला–पु० बेकारी; आयकी कमी; काम-धंधेका मंद पड़ जाना । वि० बेकार, निठल्ला ।

ठाली–वि० बेकार, निठल्ला । * स्त्री० धीरज, ढाढ़स ।

ठाहर*–पु० जगह; ठहरनेका स्थान; ठिकाना ।

ठिँगना–वि० कम ऊँचा, छोटे कदका, नाटा ।

ठिकठैन*–पु० व्यवस्था, प्रबंध ।

ठिकना*–अ० क्रि० दे० 'ठिठकना' ।

ठिकरा†–पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठिकाना–पु० स्थान; वासस्थान; रहने या ठहरनेकी जगह, मुकाम; अवलंब; गुजर करनेका स्थान; नियत या अनुकूल स्थान; उपाय, व्यवस्था; सीमा; भरोसा; विश्वास; जागीर । **मु०–लगना**–आश्रयस्थान या जीविकाका अवलंब प्राप्त होना । **–लगाना**–नौकरी या रहनेका स्थान ठीक करना । **–(ने)आना**–ठीक रास्तेपर आना, असलियत-पर पहुँचना । **–की बात**–युक्ति-संगत बात, कामकी बात । **–पहुँचाना**–अभीष्ट स्थानतक पहुँचा देना । **–लगना**–उचित स्थानपर पहुँच जाना; काममें आना; मर जाना । **–लगाना**–मार डालना; खत्म कर देना ।

ठिठकना–अ० क्रि० चलते-चलते सहसा रुक जाना; स्तब्ध होना; ठक रह जाना ।

ठिठुरना–अ० क्रि० सर्दीसे सिकुड़ जाना ।

ठिठोली–स्त्री० दे० 'ठठोली' ।

ठिनकना–अ० क्रि० (बच्चोंका) बनावटी तौरसे रोना ।

ठिरना–अ० क्रि० बहुत अधिक सर्दी पड़ना; ठिठुरना ।

ठिलना–अ० क्रि० बलपूर्वक ढकेला जाना; आगे खिसकाया या बढ़ाया जाना; तेजीसे घुसना; धँसना ।

ठिलाठिल*–अ० कसमसाते हुए; धक्कमधक्केके साथ ।

ठिलिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा घड़ा, गगरी ।

ठिलुआ–वि० निठल्ला, बेकार, जिसे कोई काम न हो ।

ठिल्ली–स्त्री० दे० 'ठिलिया' ।

ठिहारी*–वि० स्त्री० पक्की, स्थायी; न टूटनेवाली । स्त्री० निश्चय, ठहराव ।

ठीक–वि० उपयुक्त; युक्तिसंगत; यथार्थ; अच्छा; मनोनुकूल; उचित; अभ्रांत; शुद्ध, सही; दुरुस्त; जैसा चाहिये वैसा, न ढीला, न कसा; न कम, न ज्यादा; न इधर, न उधर; नियत, बँधा हुआ; पूरा-पूरा । अ० सीधे; मुनासिब ढंगसे, उचित रीतिसे; हूबहू । पु० निश्चय; व्यवस्था, प्रबंध; जोड़, योग । **–ठाक**–पु० व्यवस्था, प्रबंध, बंदोबस्त । वि० नियत; दुरुस्त ।

ठीकड़ा–पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठीकमठीक–अ० बिलकुल ठीक; पूर्णरूपसे, एकदम, बिलकुल ।

ठीकरा–पु० मिट्टीके बरतन या खपड़ेका टुकड़ा; भिक्षापात्र; (ला०) रुपया-पैसा; निकम्मी चीज ।

ठीकरी–स्त्री० छोटा ठीकरा; चिलमपर रखनेका मिट्टीका तवा ।

ठीका–पु० नियत समय अथवा दरपर कोई काम करने या करानेका इकरार; कर आदि वसूल करनेका जिम्मा ।

(ठीके)दार–पु० ठीका लेनेवाला।

ठीकुरी*–स्त्री० पत्थर, परदा।

ठी-ठी–स्त्री० हलकी आवाजवाली हँसी, बेहूदा हँसी।

ठीलना*–स० क्रि० दे० 'ठेलना'।

ठीवन*–पु० थूक, खखार, श्लेष्मा।

ठीहा–पु० (पृथ्वीमें गड़ा) लकड़ीका टुकड़ा जिसपर रखकर कोई चीज गढ़ी या काटी जाती है; ऊँची जगह; वेदी।

ठुंठ–पु० विना डाल-पातका सूखा पेड़ या उसका तना; लूला।

ठुकना–अ० क्रि० पीटा जाना; ठोका जाना; चोट खाकर भीतर धँसना; दायर होना (दावा); हानि होना।

ठुकराना–स० क्रि० ठोकर मारना; पैरसे मारकर हटाना; तिरस्कार करना।

ठुकवाना–स० क्रि० पिटवाना; दे० 'ठोकवाना'; हानि कराना।

ठुड्डी–स्त्री० ठोड़ी, होंठके नीचे निकली हुई हड्डी; भूना हुआ दाना जो खिला न हो, ठुर्री।

ठुनकाना–स० क्रि० उँगलीसे धीरेसे आघात करना।

ठुमक–वि० ठसक भरी हुई; (चाल) जिसमें चलते समय थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटका जाय। **–ठुमक**–अ० शीघ्रता और उमंगके साथ थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए (छोटे बच्चोंका चलना); उछल-कूदके साथ (चलना)।

ठुमकना–अ० क्रि० नाचते समय तालके अनुसार रह-रहकर पैर पटकना; थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए चलना।

ठुमका–वि० छोटे कदका, नाटा।

ठुमकारना†–स० क्रि० पतंगकी डोरीको झटका देना।

ठुमकी–वि०स्त्री० छोटे कदकी, नाटी। स्त्री० पतंगकी डोरीको उँगलीसे खींचकर दिया जानेवाला झटका।

ठुमरी–स्त्री० एक तरहका छोटा मधुर गाना जिसे गाते समय प्रायः कई रागोंका मिश्रण कर दिया जाता है।

ठुरियाना–अ० क्रि० सर्दीसे ठिठुर जाना।

ठुर्री–स्त्री० वह दाना जो भूननेपर खिला न हो।

ठुसना–अ० क्रि० तंग जगहमें भर जाना, दबाकर भरा जाना।

ठुसवाना, ठुसाना–स० क्रि० तंग जगहमें प्रविष्ट कराना, घुसवाना ('ठुसना'का प्रेर०)।

ठूँठ, ठूँठा–पु० दे० 'ठुंठ'।

ठूँठी–स्त्री० ज्वार, बाजरे, अरहर आदिके डंठलका नीचेका भाग जो खेत काटते समय पृथ्वीमें गड़ा छूट जाता है, खूँटी।

ठूँसना–स० क्रि० दे० 'ठूसना'।

ठूसना–स० क्रि० दबा-दबाकर भरना, कसकर रखना; जोरसे घुसाना; (ला०) बहुत अधिक खाना।

ठेँगना–वि० दे० 'ठिँगना'।

ठेँगा–पु० अँगूठा; डंडा, लट्ठ। मु०–**दिखाना**–साफ इनकार करना; निराश करना। **–बजना**–लाठी चलना। **ठेँगेसे**–बलासे।

ठेँगुरा†–पु० दौड़ने और उछल-कूद मचानेवाले चौपायोंके गलेमें बाँधी जानेवाली लकड़ी।

ठेँघा–पु० थूनी।

ठेँठा–पु० दे० 'ठेँठी'।

ठेँठी–स्त्री० कानका मैल; कानका छेद बंद करनेके लिए लगी रुई आदि; काग, डाट।

ठेँपी†–स्त्री० बोतल आदिका मुँह बंद करनेकी लकड़ी आदि, काग, डाट।

ठेका–पु० अड्डा; टेक; तबलेका बायाँ; तबला बजानेका एक प्रकार; दे० 'ठीका'। **(ठेके)दार**–पु० दे० 'ठीकेदार'।

ठेकाई†–स्त्री० कपड़ेके किनारेकी छपाई।

ठेकाना*–पु० स्थान; ठहरनेकी जगह; निवास-स्थान।

ठेगना*–स० क्रि० रोकना, मना करना; दे० 'टेकना'।

ठेघना*–स० क्रि० ठहराना; रोकना। अ० क्रि० ठहरना; रुकना।

ठेघा*–पु० थूनी, स्तंभ।

ठेठ–वि० एकदम, निरा; असाहित्यिक, साधारण बोलचालकी, जिसमें दूसरी (भाषा)का मेल न हो; शुद्ध।

ठेपी–स्त्री० दे० 'ठेँपी'।

ठेलना–स० क्रि० ढकेलकर आगे बढ़ाना; * उसकाना।

ठेलमठेल–अ० कसमसके साथ।

ठेला–पु० ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी; धक्का, भीड़। **–ठेल, –ठेली**–स्त्री० धक्कमधक्का।

ठेस–स्त्री० हलकी चोट; आघात, धक्का।

ठैन*–स्त्री० स्थान, जगह।

ठैयाँ*–स्त्री० दे० 'ठैन'।

ठैलपैल–स्त्री० धक्कमधक्का, रेलपेल।

ठोँकना–स० क्रि० भारी वस्तुसे आघात करना; प्रहार द्वारा भीतर घुसाना; मारना, पीटना; ताड़न करना; (मुकदमा) दायर करना; प्यार या तावसे थपथपाना; मजबूतीसे जड़ना; 'खट-खट' शब्द उत्पन्न करते हुए आघात करना; बेड़ी आदिमें जकड़ना।

ठोँग–स्त्री० चोंच; चोंचकी मार; मुड़ी हुई उँगलीकी ठोकर।

ठोँगना–स० क्रि० चोंच मारना; मुड़ी हुई उँगलीसे ठोकर मारना।

ठोँगा–पु० कागजका बना थैली जैसा पात्र।

ठो†–अ० पूरबी हिंदीमें संख्यावाचक शब्दोंके साथ लगनेवाला एक शब्द, अदद।

ठोकना–स० क्रि० दे० 'ठोँकना'।

ठोकर–स्त्री० चलते समय कंकड़-पत्थर आदिसे टकरानेसे पैरमें लगी चोट; ऐसी वस्तु जिससे चोट लगनेकी संभावना हो; पैरसे किया गया आघात; धक्का; जूतेका अगला हिस्सा। मु०–**उठाना**–घाटा सहना; तकलीफ उठाना। **–खाते फिरना**–उद्योगविशेषमें असफल होते रहना; मारा-मारा फिरना। **–खाना**–असावधानीका कुपरिणाम भोगना।

ठोकवा†–पु० मीठा डालकर बनायी हुई मोटी पूरी।

ठोकवाना–स० क्रि० ठोकनेमें प्रवृत्त करना।

ठोठरा*–वि० पोपला, खाली।

ठोड़ी, ठोढ़ी–स्त्री० दे० 'ठुड्डी'।

ठोर–पु० पूरी जैसा एक पगा हुआ पकवान; * चोंच।

ठोस–वि० जो पोला न हो, जो भीतर खाली न हो, ठस।

ठोहना*–स० क्रि० स्थान ढूँढ़ना, खोजना।

ठौनि*–स्त्री० दे० 'ठवनि'।

ठौर–पु० स्थान, जगह; अवसर, मौका; उपयुक्त स्थान।

ड

ड-नागरी वर्णमालाका तेरहवाँ व्यंजन वर्ण ।

डंक-पु० बिच्छू, मधुमक्खी, भिड़ आदिका जहरीला काँटा जिसे वे दूसरे प्राणियोंके शरीरमें चुभा देते हैं, दंश; डंक द्वारा किया गया भेदन; कलमकी जीभ; * डंका । **-दार**-वि० डंकवाला ।

डंकना*-अ० क्रि० भारी शब्द करना; तोपका गरजना ।

डंका-पु० नगाड़ा, धौंसा । **मु०-बजना**-अधिकार होना; चलती होना । **(लड़ाईका)-बजना**-युद्ध आरंभ होना **(डंके) की चोट कहना**-निडर होकर सबके मुँहपर कहना, घोषित करना ।

डंकिनी-स्त्री० दे० 'डाकिनी' ।

डंगर-पु० चौपाया, पशु । वि० दुबला-पतला; (ला०) जड ।

डँगरा-पु० बड़ी ककड़ी; खरबूजा (बुंदेल) ।

डँटैया*-पु० डाँटनेवाला; धमकी देनेवाला ।

डंटल-पु० गेहूँ, जौ, ज्वार अदिका तना जिसपर बाल लगती हैं ।

डंड-पु० बाजू, बाँह; एक कसरत जो हाथ-पैरके पंजोंके सहारे पेटके बल की जाती है; सजा, जुरमाना; घाटा; समयका एक परिमाण (२४ मिनट) । **-पेल**-पु० अधिक डंड करनेवाला, पहलवान ।

डंडक*-पु० दे० 'दंडक' ।

डंडवत-पु० दे० 'दंडवत्' ।

डँड़वारा-पु०,**-डँड़वारी**-स्त्री० रोक या घेरेके लिए बनी हुई कम ऊँची दीवार; चहारदीवारी ।

डँड़वी*-वि० कर देनेवाला ।

डंडा-पु० बाँस आदिका लंबा टुकड़ा, लाठी, सोंटा; चहारदीवारी । **-डोली**-स्त्री० लड़कोंका एक खेल । **-बेड़ी**-स्त्री० वह बेड़ी जिसमें छड़ लगे हों ।

डंडाकरन*-पु० दंडकारण्य ।

डँड़िया*-स्त्री० ऐसी साड़ी जिसपर पड़ी धारियोंके रूपमें गोटे टँके हों; गेहूँके पौधेकी वह सींक जिसमें बाल लगी हो । पु० महसूल उगाहनेवाला ।

डँड़ियाना-स० क्रि० दो कपड़ोंको लंबाईकी ओरसे मिलाकर सीना ।

डंडी-स्त्री० छोटी, सीधी और पतली लकड़ी; छाते आदिमें लगी हाथमें पकड़नेकी लकड़ी जिसपर कमानी चढ़ायी जाती है; तराजूकी लकड़ी जिसके दोनों ओर रस्सियोंसे पलड़े बाँधे जाते हैं; तनेका ऊपरी भाग जिसपर फूल या फल स्थित रहते हैं, नाल । **-मार**-वि० जो कम सौदा तौले । पु० बनिया । **मु०-मारना**-कम सौदा तौलना ।

डँड़ीर-स्त्री० सीधी रेखा ।

डँडोरना*-स० क्रि० उलट-पुलटकर ढूँढ़ना ।

डंडौत-पु० दे० 'दंडवत्' ।

डंफना-अ० क्रि० जोरसे चिल्लाना या रोना ।

डंबर-पु० [सं०] आडंबर; चहल-पहल; समूह, राशि; सादृश्य; गर्व; आयोजन; भारी शब्द; सौंदर्य; विस्तार; एक प्रकारका बड़ा चँदोवा । वि० प्रसिद्ध ।

डँवरुआ*-पु० गठिया, एक वातव्याधि जिसमें शरीरकी गाँठोंमें दर्द होता है ।

डँवाडोल-वि० अस्थिर, डगमगाता हुआ; बेचैन ।

डंस-पु० दे० 'डाँस' ।

डँसना-स० क्रि० दे० 'डसना' ।

ड-पु० [सं०] शब्द; एक तरहका नगाड़ा; बड़वाग्नि ।

डक-*पु० खेलनेका स्थान; [अं० डॉड]सूती या सन आदिका बना दबीज कपड़ा जिससे छोटे पाल या अन्य पहनावे (विशेषकर नाविकोंके) बनते हैं; एक कपड़ा; पक्का घाट जहाँ जहाजमें माल लादते और उतारते हैं ।

डकरना-अ० क्रि० डकार लेना; खाकर तृप्त होना-'डकरी चमुंडा गोलकुंडाकी लड़ाईमें'-कालिदास त्रिवेदी ।

डकराना-अ० क्रि० साँड़,बैल या भैंसेका जोरसे बोलना ।

डकार-स्त्री० आवाजके साथ मुँहसे निकली हुई हवा,ऊर्ध्व वायु, उद्गार; दहाड़ । **मु०-न लेना**-चुप्पी साध लेना ।

डकारना-अ० क्रि० डकार लेना; दहाड़ना । स० क्रि० किसीका माल पचा जाना ।

डकैत-पु० डाकू, लुटेरा ।

डकैती-स्त्री० डाका डालनेका काम, लूट, डाकाजनी ।

डग-पु० चलनेमें दोनों पाँवोंके बीचका अंतर, फाल, कदम । **मु०-भरना**-कदम बढ़ाना । **-मारना**-लंबे-लंबे डग डालना ।

डगडगाना-अ० क्रि० अस्थिर या डगमग होना; काँपना ।

डगडोलना*-अ० क्रि० दे० 'डगमगाना' ।

डगडौर-वि० डाँवाडोल, अस्थिर ।

डगना*-अ० क्रि० हिलना; विचलित होना; अपने स्थानसे हटना, खसकना; लड़खड़ाना; चूकना ।

डगमग-अ० हिलते-डुलते; लड़खड़ाहटके साथ ।

डगमगना*-अ० क्रि० दे० 'डगमगाना' ।

डगमगाना-अ० क्रि० इधर-उधर हिलना या झुकना; विचलित होना, डाँवाडोल होना; लड़खड़ाना । स० क्रि० हिलाना-डुलाना ।

डगर-स्त्री० मार्ग, राह, रास्ता ।

डगरना*-अ० क्रि० चलना, रास्ता पकड़ना; ढँगिलते हुए चलना ।

डगरा*-पु० मार्ग, रास्ता; † बाँस आदिका बना एक छिछला बरतन ।

डगा*-पु० डुग्गी आदि बजानेकी लकड़ी, चोब ।

डगाना-स० क्रि० विचलित करना; टसकाना; हिलाना ।

डटना-अ० क्रि० अड़ना, एक स्थानपर जमा रहना, स्थिर रहना; जगहसे न हटना; (कार्यमें) प्रवृत्त होना, लगाना; * फबना । * स० क्रि० देखना ।

डटाना-स० क्रि० सामने रखना; अड़ाना, जमाना; सटाना, भिड़ाना ।

डट्टा-पु० काग; नैचा; ठप्पा; (रिटॉर्ट स्टैंड) कोई चीज गरम करने, रखने आदिका पीछेकी ओर झुका या टेढ़ा-सा आला ।

डड्ढार*–वि० लंबी दाढ़ीवाला; हिम्मती; मजबूत दिलवाला।

डढ़न*–स्त्री० जलन, संताप; झुलसना।

डढ़ना*–अ० क्रि० जलना; झुलसना।

डढ़ार, डढ़ारा–वि० जिसके डाढ़ें हों; डाढ़ीवाला।

डढ़ियल–वि० लंबी डाढ़ीवाला।

डढ्योरा*–वि० दे० 'डड्ढार'।

डपट–स्त्री० झिड़क, फटकार, धौंस, डाँट; घोड़ेकी सरपट चाल।

डपटना–स० क्रि० झिड़कना; घुड़कना, डाँटना। अ० क्रि० सरपट दौड़ना।

डपोरशंख, डपोरसंख–पु० जो केवल बातें बनाता हो, विकत्थन; जड़ मनुष्य।

डफ–पु० कौवाली आदि गानेवालोंका एक बाजा; चमड़ा मढ़ा हुआ एक बाजा जो लकड़ीसे बजाया जाता है।

डफला–पु० दे० 'डफ'।

डफली–स्त्री० छोटा डफ, खँजरी।

डफार*–स्त्री० गला फाड़कर रोनेकी आवाज, चिग्घाड़।

डफारना*–अ० क्रि० चिग्घाड़ना; डाढ़ मारना।

डफालची–पु० दे० 'डफाली'।

डफाली–पु० डफ बजानेवाला; डफपर कौवाली, लावनी आदि, गानेवाला मुसलमानोंका एक वर्ग।

डफोरना*–अ० क्रि० हाँकके साथ कहना, गरजना –'तुलसी चित्रकूट चढ़ि कहत डफोरिकै'–कविता०।

डबकना–अ० क्रि० टीसना, दर्द करना; आँखोंका अश्रुपूर्ण होना।

डबकौंहाँ*–वि० अश्रुपूर्ण, डबडबाया हुआ।

डबडबाना–अ० क्रि० आँखोंमें आँसू आ जाना, अश्रुयुक्त होना।

डबरा–पु० छिछला गड्ढा या वह नीची जमीन जहाँ पानी लगता हो।

डबरी–स्त्री० छोटा गड्ढा।

डबल–पु० एक तरहका ताँबेका सिक्का, पैसा। **–रोटी**–स्त्री० पावरोटी।

डबला–पु० धातु या मिट्टीका चौड़े मुँहका छोटा बरतन।

डबिया–स्त्री० छोटा डिब्बा।

डबी*–स्त्री० दे० 'डिब्बी'।

डब्बा–पु० धातुका बना ढक्कनदार छोटा पात्रविशेष; रेलगाड़ीका वह कोठरीनुमा हिस्सा जो अलग किया जा सके।

डब्बू–पु० करछुल जैसा एक पात्र जो परसनेके काम आता है।

डभकना–अ० क्रि० (नेत्रोंमें) आँसू भर आना; डूबना-उतराना।

डभका–पु० आधा भूना हुआ चना या मटर। वि० कुएँसे ताजा निकाला हुआ (पानी)।

डभकाना–स० क्रि० 'डभ'की आवाजके साथ डुबोना।

डभकौंहाँ–वि० दे० 'डबकौंहाँ'।

डभकेरि*–क्रि० वि० अघाकर।

डभकौरी–स्त्री० उड़दकी पीठीकी बड़ी।

डमरु–पु० [सं०] चमड़ेसे मढ़ा जानेवाला एक छोटा बाजा जो बीचमें पतला होता है और हिलानेपर उसमें लगी घुंडियोंसे बजता है। **–मध्य**–पु० जल या स्थलके दो बड़े खंडोंको मिलानेवाला जल या स्थलका संकीर्ण भाग। **–यंत्र**–पु० अर्क खींचने तथा सिंगरफका पारा और कपूर उड़ानेका एक यंत्र।

डमरुआ–पु० दे० 'डँवरुआ'।

डमरू–पु० दे० 'डमरु'। **–मध्य**–पु० दे० 'डमरुमध्य'।

डयन–पु० [सं०] उड़नेकी क्रिया, उड़ान; पालकी; पंख।

डर–पु० भय, भीति, त्रास, खौफ; अंदेशा।

डरना–अ० क्रि० भय खाना, भीत होना; सशंक होना।

डरपना*–अ० क्रि० दे० 'डरना'।

डरपाना*–स० क्रि० डराना, त्रस्त करना।

डरपोक–वि० कायर, बुजदिल, भीरु।

डरवाना–स० क्रि० दे० 'डराना'।

डरा*–पु० डला, ढोका।

डराडरी*–स्त्री० भय, डर।

डराना–स० क्रि० भय दिखाना, सशंक करना।

डरापना*–वि० भयानक।

डरावना–वि० जिसे देखकर डर लगे, भयानक, भयोत्पादक।

डरावा–पु० फलवाले पेड़ोंमें बँधी लकड़ी जिससे डराकर चिड़ियोंको उड़ाते हैं; डरानेके लिए कही जानेवाली बात।

डरिया*–स्त्री० दे० 'डाल'।

डरी*–स्त्री० डली, छोटा टुकड़ा।

डरीला*–वि० शाखायुक्त।

डरेला, डरैला*–वि० डरावना।

डल–पु० खंड, टुकड़ा; झील; कश्मीरकी एक झील।

डलना–अ० क्रि० डाला जाना, छोड़ा जाना, पड़ना।

डलवाना–स० क्रि० डालनेका काम दूसरेसे कराना।

डला–पु० टुकड़ा, खंड, (नमक, मिसरी आदिका) ढेला; बाँस आदिका गोला, गहरा, बड़ा बरतन।

डलिया–स्त्री० बाँस आदिका बना एक छोटा पात्र।

डली–स्त्री० छोटा टुकड़ा; सुपारी; दे० 'डलिया'।

डसन–स्त्री० डसनेकी क्रिया; डसनेका ढंग।

डसना–स० क्रि० साँप आदि जहरीले जंतुओंका दाँतसे काटना; डंक मारना।

डसवाना–स० क्रि० दे० 'डसाना' ('डसना'का प्रेर०)।

डसाना–स० क्रि० सर्प आदि द्वारा दाँतसे कटवाना; *बिछाना।

डहकना*–स० क्रि० छलना; किसी वस्तुका लालच देकर उसे आत्मसात् करना। * अ० क्रि० धोखा खाना; फूट-फूटकर रोना; चिग्घाड़ना; फैलना, छाना (चाँदनी)।

डहकाना*–स० क्रि० खोना, गँवाना, बरबाद करना; सताना, रुलाना। अ० क्रि० ठगा जाना; धोखा खाना।

डहडहा*–वि० लहलहाता हुआ; हरा-भरा; प्रफुल्ल; ताजा।

डहडहाट*–स्त्री० ताजगी।

डहडहाना–अ० क्रि० हरा-भरा होना; प्रसन्न होना।

डहडहाव–पु० हरा-भरा होनेका भाव, प्रफुल्लता।

डहन*–पु० पर, पाँख। स्त्री० जलन, दाह, संताप।

डहना–पु० डैना। । अ० क्रि० जलना, दग्ध होना; ईर्ष्या करना; बुरा मानना। स० क्रि० जलाना; (ला०) कष्ट देना।

डहर*–स्त्री० दे० 'डगर'।

डहरना*–अ० क्रि० चलना, घूमना।

डहराना*–स० क्रि० चलाना, घुमाना।

डहरिया, डहरी†–स्त्री० अनाज रखनेका मिट्टीका बड़ा

बरतन, कुठिला।

डहार*–वि० कष्ट देनेवाला, तंग करनेवाला।

डाँक–स्त्री० चाँदी या ताँबेका अत्यंत पतला पत्तर जो नगीनोंके तले बैठाने और टिकली आदि बनानेके काम आता है; † उछाल, उलटी। * पु० डंक; डंका।

डाँकना†–स० क्रि० फाँदना, लाँघना। अ० क्रि० वमन करना।

डाँग–*पु० डंका; घना जंगल; † लाठी, डंडा; फलाँग।

डाँट–स्त्री० फटकार, झिड़क; दबाव, शासन। **मु०–में रखना**–शासन द्वारा वशमें रखना।

डाँटना–स० क्रि० झिड़कना, फटकारना, भय दिखानेके लिए जोरसे बोलना।

डाँड़–पु० डंडा; नाव खेनेका बाँस; बिना चमड़ेका गदका; खेतकी सीमा, मेंड़; ऊँची जमीन; कमर; जुरमाना; खोयी या नष्ट हो गयी वस्तुका बदला।

डाँड़ना–स० क्रि० जुरमाना करना; हरजाना लेना।

डाँड़ा–पु० डंडा; खड्ग; नाव खेनेका डंडा; मेंड़; सीमा। **–मेँड़ा**–पु०, **–मेँड़ी**–स्त्री० दो सीमाओंके बीचकी मेंड़; (ला०) घनिष्ठता, निकटता; एका; अनबन।

डाँड़ी–स्त्री० लंबी, पतली लकड़ी; सीधी रेखा; तराजूकी डंडी; झोली जैसी एक पहाड़ी सवारी जिसमें दो ओर दो डंडे लगे रहते हैं; तनेका वह भाग जिसपर फूल या फल स्थित रहता है, टहनी; रस्सियाँ या लकड़ियाँ जिनसे हिंडोलेकी पटरी लटकती रहती है; * रस्सी; पालकी। **मु०–मारना**–कम तौलना।

डाँवरा*–पु० दे० 'डावरा'।

डाँवरी*–स्त्री० दे० 'डावरी'।

डाँवाडोल–वि० चंचल, अस्थिर, हिलता हुआ।

डाँस–पु० एक तरहका बड़ा मच्छड़; कुकुरौंछी।

डाइन–स्त्री० चुड़ैल; जादू करनेवाली स्त्री; डरावनी स्त्री।

डाक–स्त्री० पत्रादि पहुँचाने या सवारीका ऐसा प्रबंध जिसमें स्थान-स्थानपर थके हुए मनुष्यों तथा घोड़ोंके बदलनेकी व्यवस्था हो; चिट्ठियों आदिके आने-जानेका सरकारी प्रबंध; कागज-पत्र जो डाकसे आये, डाक द्वारा आनेवाली वस्तु; नीलामकी बोली; † वमन। **–ख़ाना**–पु० पोस्ट-आफिस। **–गाड़ी**–स्त्री० डाक ढोनेवाली गाड़ी। **–घर**–पु० पोस्ट-आफिस। **–चौकी**–स्त्री० वह स्थान जहाँ सवारीके घोड़े आदि बदलें। **–बँगला**–पु० अफसरों या परदेशियोंके टिकनेका सरकारी मकान। **–महसूल, –व्यय**–पु० डाक द्वारा भेजी, मँगायी जानेवाली वस्तु-पर लगनेवाला खर्च। **मु०–बैठाना**–शीघ्र पहुँचनेके लिए स्थान-स्थानपर सवारी बदलनेकी व्यवस्था करना।

डाकना–स० क्रि० फाँदना, लाँघना। अ०क्रि० कै करना।

डाका–पु० माल लूटनेके लिए लुटेरों द्वारा किया गया धावा, छापा। **–ज़नी**–स्त्री० डाका मारनेकी क्रिया, लूट, डकैती।

डाकिनी–स्त्री० [सं०] कालीकी एक अनुचरी; चुड़ैल।

डाकिया–पु० डाक ढोनेवाला।

डाकीय आदेश–पु०(पोस्टल ऑर्डर)दे०'पत्रालयिक आदेश'।

डाकीय प्रमाणपत्र–पु० (पोस्टल सर्टीफिकेट) दे० 'पत्रालयीय प्रमाणपत्र'।

डाकू–पु० डाका डालनेवाला, लुटेरा।

डाक्टर–पु०[अं०] आचार्य, पारंगत विद्वान्, किसी विषयका सर्वोच्च उपाधिप्राप्त व्यक्ति; एलोपैथी आदिके अनुसार चिकित्सा करनेवाला।

डाक्टरी–स्त्री० एलोपैथी, होम्योपैथी आदि पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र। वि० डाक्टरका।

डाख*–पु० पलाश, ढाक।

डाट–स्त्री० टेक; अटकाव; काग; चाँड़; फटकार।

डाटना–स०क्रि० किसी वस्तुको दूसरी वस्तु भिड़ाकर आगे ढकेलना; जोरसे भिड़ाना; छेद आदि बंद करना; * ठूँस-ठूँसकर खाना; पहनना (व्यंग्य)।

डाढ़–स्त्री० चबानेके दाँत, चौभड़; सूअरका निकला हुआ दाँत; वट आदि वृक्षोंकी शाखासे निकलकर नीचे लटकनेवाली जटा, बरोह।

डाढ़ना*–स० क्रि० जलाना, दग्ध करना।

डाढ़ा*–पु० वनाग्नि, दावानल; ताप, जलन।

डाढ़ी–स्त्री० ठुड्डी; ठुड्डीपरके बाल।

डाबक, डाभक–वि० ताजा (पानी)।

डाबर–पु० गड्ढा; गड़ही; मैला पानी। वि० गंदा।

डाबा*–पु० डब्बा, ढक्कनदार गहरा बरतन।

डाभ–पु० एक कुश जैसी घास; कुश; (आमकी) बौर–'जउलहि अंबहि डाभ न होई'–प०; हरा नारियल।

डामर–† पु० सालका गोंद, राल; राल बनानेवाली एक मधुमक्खी; अलकतरा। [सं०] शिव द्वारा उपदिष्ट तंत्रविशेष; होहल्ला; दंगा; हलचल; अद्भुत दृश्य, चमत्कार; एक संकर जाति। वि० भयंकर; अनुरूप; दंगा करनेवाला।

डामल–पु० आजीवन कारावासका दंड; देशनिर्वासन।

डायन–स्त्री० दे० 'डाइन'।

डायरी–स्त्री० [अं०] वह पुस्तिका जिसमें दैनिक कार्योंका विवरण हो, रोजनामचा।

डार*–स्त्री० डाल; फूल आदि रखनेकी डलिया; समूह, झुंड।

डाल–स्त्री० शाखा। पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें वरकी ओरसे वधूको कपड़े और गहने दिये जाते हैं; बाँसकी बनी वस्तु जिसमें ये चीजें रखी जाती हैं; डलिया; थाल या डलियामें सजाकर भेजी जानेवाली खाने-पीनेकी चीजें।

डालना–स० क्रि० गिराना; ऊपरसे नीचे पहुँचाना; फेंकना; छोड़ना; मिलाना; घुसाना, प्रविष्ट कराना; अंकित करना; पहनाना; मत्थे मढ़ना; उपयोगमें लाना; रखना। **मु० डाल देना**–त्याग करना; छोड़ना; याद न रखना; दिलसे उतारना; फैलाना; पर्देके रूपमें कोई वस्तु लटकाना।

डालर–पु० एक-अमेरिकन सिक्का (लगभग चार रुपये)।

डाली–स्त्री० भेंटके रूपमें भेजे हुए फल, फूल, मिठाई आदि, नजर; पेड़की छोटी शाखा। (भेजना, लगाना।)

डावरा*–पु० पुत्र, बेटा।

डावरी*–स्त्री० पुत्री, बेटी।

डासन–पु० बिछावन, बिस्तर।

डासना–स० क्रि० बिछाना; (सर्पादिका) काटना।

डासनी–स्त्री० खाट; बिछावन।

डाह–स्त्री० ईर्ष्या, जलन।

डाहना–स० क्रि० जलाना; संतप्त करना; तंग करना ।

डिंगर–पु० रोक न माननेवाले पशुके गलेमें बाँधी जानेवाली लकड़ी ।

डिंगल–स्त्री० राजपूतानाके चारणों या भाटोंकी काव्य-भाषा । वि० नीच, कमीना ।

डिंड़सी–स्त्री० एक तरकारीवाला फल ।

डिंडिम–पु० [सं०] डुगडुगी, डुग्गी; कृष्णपाक फल ।

डिंब–पु० [सं०] भय; कोलाहल; दंगा; भयकी ध्वनि; प्लीहा; फुफ्फुस; विप्लव; आरंभिक अवस्थाका भ्रूण; (ओव्हम) स्त्रीका वह कोशाणु जिसमें शुक्राणुके प्रवेश करने और गर्भाशयमें पहुँचनेपर गर्भाधान होता है, गर्भाशय ।

डिंबाशय–पु० [सं०] (ओव्हरी) स्त्रीके गर्भाशयकी वे दो ग्रंथियाँ जिनमें डिंब रहते और परिपक्व होते हैं ।

डिंभ–पु० [सं०] छोटा बच्चा; शावक; मूर्ख; एक उदररोग ।

डिंभक–पु० [सं०] छोटा बच्चा ।

डिगना–अ० क्रि० हटना; हिलना; वचन भंग करना ।

डिगरी–स्त्री० [अं०] अंश, कला; विश्वविद्यालयसे मिलनेवाली उपाधि; † वादीको संपत्ति आदिपर अधिकार दिलानेवाला फैसला, डिक्री । **–दार**–वि० वह जिसके पक्षमें अदालतका हक दिलानेवाला फैसला हुआ हो ।

डिग(गु)लाना*–अ० क्रि० हिलना, डगमगाना ।

डिगाना–स० क्रि० हटाना; सरकाना; हिलाना ।

डिग्गी–स्त्री० तालाब; बावली ।

डिठौना–पु० नजर लगनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला काजलका टीका ।

डिडकारी*–स्त्री० ढाड़ मारकर रोना ।

डिढ़ाना*–स०क्रि० दृढ़ करना; मनमें पक्का निश्चय करना ।

डिबिया–स्त्री० छोटा डिब्बा ।

डिब्बा–पु० दे० 'डब्बा' ।

डिब्बी–स्त्री० छोटा डब्बा ।

डिभगना*–स० क्रि० छलना, प्रतारित करना ।

डिम–पु० [सं०] चार अंकोंका एक रौद्र रस-प्रधान रूपक जिसमें माया, इंद्रजाल, लड़ाई तथा पिशाचलीला आदिका चित्रण रहता है ।

डिमडिमी–स्त्री० दे० 'डिंडिम' ।

डिमाई–स्त्री० [अं०] १८×२२ इंचकी कागजकी नाप ।

डिल्ला–पु० एक छंद; बैलके कंधेपरका कूबड़ ।

डींग–स्त्री० लंबी-चौड़ी आत्मप्रशंसा; अभिमान-द्योतक कोरी गप; शेखी । **मु०–हाँकना**–लंबी-चौड़ी बातें कहना ।

डीठ–स्त्री० दृष्टि, नजर; सूझ । **–बंध**–पु० नजरबंदी । **मु०–चुराना,–छिपाना**–सामने न ताकना । **–बाँधना**–जादू द्वारा दृष्टिमें भ्रम उत्पन्न करना । **–मारना**–नजर डालना । **–रखना**–देखरेख करना । **–लगाना**–अच्छी वस्तुको इस प्रकार देखना कि उसपर बुरा प्रभाव पड़े, नजर लगाना ।

डीठना*–स० क्रि० देखना । अ० क्रि० देख पड़ना ।

डीठि*–स्त्री० दे० 'डीठ' । **–मूठि**–स्त्री० जादू, टोना ।

डीबुआ*–पु० पैसा ।

डीमडाम*–पु० आडंबर; आटोप; धूमधाम; गर्व, ठसक ।

डील–पु० कद, शरीरकी ऊँचाई-चौड़ाई आदि; देह, शरीर; व्यक्ति । **–डौल**–पु० लंबाई-चौड़ाई आदि, शरीरका विस्तार ।

डीह–पु० गाँव; गाँवका बड़ा ऊँचा टीला जो पहली बस्तीके उजड़ जानेसे बना होता है; ग्रामदेवता ।

डुँग*–पु० राशि, ढेर; डूह, टीला ।

डुँगवा*–पु० दे० 'डुँग' ।

डुंड*–पु० दे० 'ठूँठ' ।

डुक–पु० घूँसा ।

डुकियाना–स० क्रि० घूँसे जमाना ।

डुगडुगाना–स० क्रि० डुग्गी आदिको लकड़ीसे बजाना ।

डुगडुगी–स्त्री० दे० 'डुग्गी' । **मु०–पीटना**–मुनादी करना ।

डुग्गी–स्त्री० चमड़ेसे मढ़ा चौड़े मुँहका एक छोटा बाजा ।

डुपट्टा†–पु० दे० 'दुपट्टा' ।

डुबकनी–स्त्री० (सबमेरीन) पानीके भीतर चलनेवाली नाव, पनडुब्बी ।

डुबकी–स्त्री० पानीमें डूबनेकी क्रिया, गोता; एक तरहकी बिना तली हुई बड़ी ।

डुबवाना–स० क्रि० डुबानेका काम दूसरेसे कराना ।

डुबाना–स० क्रि० पानी या अन्य तरल पदार्थमें सतहसे नीचे पहुँचाना, गोता देना, बोरना; कलंकित करना, (कुल आदिपर) धब्बा लगाना; किसीकी प्रतिष्ठा नष्ट करना ।

डुबाव–पु० (किसीके) डूबनेभरकी गहराई ।

डुबोना–स० क्रि० दे० 'डुबाना' ।

डुब्बा–पु० पानीमें डुबकी लगानेवाला, पनडुब्बा ।

डुब्बी–स्त्री० गोता ।

डुभकौरी–स्त्री० दे० 'डभकौरी' ।

डुलना*–अ० क्रि० दे० 'डोलना' ।

डुलाना–स० क्रि० हिलाना, चालित करना; झलना; दूर भगाना, हटाना; इधर-उधर घुमाना-फिराना ।

डूँगर–पु० ऊँची जमीन, टीला, डूह; छोटा पर्वत ।

डूँडा–वि० एक सींगवाला (बैल) ।

डूबना–अ० क्रि० पानी या अन्य तरल पदार्थकी सतहके नीचे चला जाना, मग्न होना; गोता खाना; लीन होना; अस्त होना; कलंकित होना; किसी काम लायक न होना; बिगड़ना; बरबाद होना; मारा जाना । **मु० डूबतेको तिनकेका सहारा होना**–अवलंबहीनको थोड़ा सहारा मिलना । **डूबना-उतराना**–चिंतामें लीन होना, किसी उलझनमें पड़ा रहना । **डूब मरना**–लज्जाके मारे मर जाना; लज्जाके मारे मुँह न दिखाना ।

डेंड़सी–स्त्री० पपीते जैसी एक तरकारी ।

डेगची–स्त्री० दे० 'देगची' ।

डेढ़–वि० एक और आधा । डेढ़की संख्या, १॥ । **मु० –ईंटकी मस्जिद चुनना या बनाना,–चावलकी खिचड़ी अलग पकाना**–सबसे अलग राय कायम करना या काम करना ।

डेढ़ा–वि० डेढ़गुना । पु० डेढ़का पहाड़ा ।

डेबरी†–स्त्री० टीन या शीशे आदिका बना दीपक ।

डेरा–पु० टिकाव, पड़ाव; अल्पकालिक निवास; बिस्तर, बरतन आदि ठहरनेकी सामग्री; टिकनेकी जगह; खेमा, रावटी आदि जिसमें टिका जाय; रहनेकी जगह, घर, मकान । * वि० बायाँ । **–डंडा**–पु० डेरेका सामान ।

डेरी–स्त्री॰ [अं॰] वह स्थान जहाँ दूध देनेके लिए गायें-भैंसें रखी जाती हों और मक्खन आदि तैयार होता हो।

डेल*–पु॰ उल्लू; ढेला; निस्सार वस्तु; पिंजड़ा; डलिया।

डेलटा–पु॰ [अं॰] नदीके मुहानेपर बनी तिकोनी भूमि।

डेला–पु॰ रोड़ा, ढेला; आँखका गोलक; ठेंगुर।

डेली*–स्त्री॰ डलिया, झाँपा।

डेवढ़–पु॰ क्रम, सिलसिला। * वि॰ डेढ़ गुना।

डेवढ़ना–स॰ क्रि॰ (कपड़ा इ॰) मोड़ना, तह लगाना।

डेवढ़ा–वि॰ डेढ़गुना। पु॰ एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे प्रत्येक अंककी डेढ़गुनी संख्या पढ़ी जाती है। **–दरजा**–पु॰ इंटर क्लास।

डेवढ़ी–स्त्री॰ दे॰ 'ड्योढ़ी'।

डेस्क–पु॰ [अं॰] लिखने-पढ़नेके काम आनेवाली ढालुआँ मेज।

डेहरी†–स्त्री॰ अन्न रखनेका कच्ची मिट्टीका बना बड़ा बरतन।

डैन*–पु॰ दे॰ 'डैना'।

डैना–पु॰ पंख, पर।

डैश–पु॰ [अं॰] विरामसूचक आड़ी लकीर।

डोँगर–पु॰ डूह, टीला, भीटा; पहाड़ी।

डोँगा–पु॰ बड़ी नाव।

डोँगी–स्त्री॰ छोटी नाव।

डोँड़ा*–पु॰ कारतूस; फल; बड़ी इलायची।

डोँड़ी–स्त्री॰ पोस्तेका फल; टोंटी; डोंगी; डौंड़ी, डुगडुगी।

डोई–स्त्री॰ काठकी डाँड़ीवाली एक तरहकी कलछी जिससे दूध आदि चलाते हैं।

डोकरा–पु॰ बूढ़ा आदमी।

डोका–पु॰ तेल आदि रखनेका काठका बरतन।

डोकिया, डोकी–स्त्री॰ छोटा डोका।

डोब, डोबा–पु॰ गोता, डुबकी।

डोबना–स॰ क्रि॰ गोता देना, डुबाना।

डोम–पु॰ [सं॰] अंत्यजोंकी एक जाति जो दौरी, सूप आदि बेचती है; ढाढ़ी। **–कौआ**–[हिं॰] पु॰ बड़ा, काला कौआ।

डोमड़ा–पु॰ दे॰ 'डोम'।

डोमनी, डोमिनी–स्त्री॰ डोम जातिकी स्त्री; ढाढ़ीकी स्त्री।

डोर–स्त्री॰ [सं॰] धागा, तागा, सूत; (ला॰) बंधन, लगाव।

डोरा–पु॰ सूत, तागा; धारी; आँखकी पतली लाल नसें; वह वस्तु जिसके सहारे किसीका अनुसंधान किया जा सके।

डोरिया–पु॰ धारीदार कपड़ा।

डोरियाना*–स॰क्रि॰ घोड़ों आदिको रस्सी बाँधकर ले जाना।

डोरिहार†–पु॰ पटवा।

डोरी–स्त्री॰ रस्सी; (ला॰) सूत्र; बंधन; फाँस; लगन।

डोरे*–अ॰ साथ-साथ।

डोल–पु॰ पानी भरनेका लोहेका गोल बरतन; * झूला; पालकी; हलचल। वि॰ डोलनेवाला, हिलनेवाला; चंचल।

डोलची–स्त्री॰ छोटा डोल; फल-फूल ढोनेका हाथमें लटकाने योग्य डोलनुमा छोटा बरतन।

डोलना–अ॰ क्रि॰ हिलना; इधर-उधर घूमना, चलना-फिरना; अपनी जगहसे हटना; (मनका) विचलित होना।

डोला–पु॰ स्त्रियोंकी एक सवारी जिसे कहार ढोते हैं। **मु॰–देना**–लड़की वरके घर ले जाकर ब्याह देना।

डोलाना–स॰ क्रि॰ हिलाना; झलना; हटाना।

डोली–स्त्री॰ एक तरहकी स्त्रियोंकी पालकी, शिविका।

डोही*–स्त्री॰ दे॰ 'डोई'।

डौंड़ी–स्त्री॰ डुग्गी, मुनादी।

डौंरू–पु॰ दे॰ 'डमरु'।

डौआ*–पु॰ काठकी बनी बड़ी करछी।

डौल–पु॰ ढाँचा, बनावटका तर्ज, ढब; रूपरेखा, गठन; (ला॰) स्वरूप; कार्यसाधनका उपाय; प्रबंध, युक्ति। **–डाल**–पु॰ उपाय; कोशिश। **–दार**–वि॰ सुडौल, सुंदर। **मु॰–डालना**–रूपरेखा तैयार करना। **–पर लाना**–कतरब्योंत कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ी–स्त्री॰ दहलीज, पौरी। **–वान**–पु॰ द्वारपाल।

ढ

ढ–नागरी वर्णमालाका १४ वाँ व्यंजन वर्ण।

ढँकना–पु॰, स॰ क्रि॰, अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढकना'।

ढंख*–पु॰ पलाश, ढाक।

ढंग–पु॰ रीति, शैली, तरीका; तर्ज; चलन; प्रकार; रूप, बनावट; उपाय; कुशलता; आचरण; पाखंड; लक्षण।

ढंगी–वि॰ धूर्त; कुशल; जिसे काम निकालनेका ढंग हो।

ढँढोर*–पु॰ आगकी ऊँची लपट।

ढँढोरची–पु॰ मुनादी करनेवाला।

ढँढोरना*–स॰ क्रि॰ ढूँढ़ना, एक-एक वस्तुपर ध्यान देते हुए खोजना।

ढँढोरा–पु॰ डुग्गी, मुनादी। **मु॰–पीटना**–घोषित करना।

ढँढोरिया–पु॰ ढँढोरा पीटनेवाला।

ढँपना–पु॰, स॰ क्रि॰, अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढकना'।

ढ–पु॰ [सं॰] बड़ा ढोल; कुत्ता; कुत्तेकी पूँछ; सर्प।

ढकना–पु॰ ढक्कन। स॰ क्रि॰ छिपाना, आच्छादित करना। अ॰ क्रि॰ छिपना, आच्छादित होना।

ढकनियाँ*–स्त्री॰ ढाँकनेकी वस्तु, ढक्कन।

ढकनी†–स्त्री॰ ढाँकनेकी वस्तु; कसोरा।

ढका *–पु॰ धक्का, प्रहार; बड़ा ढोल।

ढकिल*–स्त्री॰ आक्रमण, चढ़ाई।

ढकेलना–स॰क्रि॰ ठेलकर गिराना; धक्का देकर आगे बढ़ाना।

ढकोसना–स॰ क्रि॰ अत्यधिक मात्रामें पीना; जल्दी-जल्दी पीना।

ढकोसला–पु॰ झूठा दिखावा; आडंबर, पाखंड।

ढक्कन–पु॰ ढकना, ढाँकनेकी वस्तु।

ढगण–पु॰ [सं॰] तीन मात्राओंका एक मात्रिक गण।

ढचर–पु॰ आयोजन; आडंबर; बखेड़ा, झंझट।

ढट्टी–स्त्री॰ दाढ़ी बाँधनेकी पट्टी; काग।

ढड्डा–वि॰ अनावश्यक विस्तारवाला; जिसमें दिखावा अधिक हो। पु॰ आडंबर, दिखावटी ठाटबाट।

ढनमना–अ० क्रि० लुढ़कना; चक्कर खाकर गिरना।

ढप, ढफ*–पु० दे० 'डफ'।

ढपना–पु० ढक्कन। अ० क्रि०, स० क्रि० ढँपना, छिपाना।

ढपला†–पु० दे० 'डफला'।

ढब–पु० ढंग, तरीका; तरह; बनावट; आदत; युक्ति।

ढमकाना–स० क्रि० बजाना।

ढयना–अ० क्रि० मकान आदिका गिरना।

ढरकना*–अ० क्रि० नीचेकी ओर जाना; ढालकी ओर बहना; जल आदिका पात्रमेंसे गिरना; ढलना।

ढरका†–पु० आँखसे बराबर पानी बहनेका रोग; बाँसका चोंगा जिससे चौपायोंको दवा आदि पिलाते हैं।

ढरकाना*–स० क्रि० जल आदिको पात्रसे गिराना।

ढरकी–स्त्री० जुलाहोंका एक औजार जिससे वे बानेका सूत फेंकते हैं, भरनी।

ढरकीला†–वि० ढरकने या लुढ़कनेवाला।

ढरना*–अ० क्रि० दे० 'ढलना'।

ढरनि*–स्त्री० गिरनेका भाव या क्रिया, झुकाव; किसी ओर ढलना; किसीकी ओर झुकना।

ढरहरना*–अ० क्रि० ढलना; सरकना, झुकना।

ढरहरा†–वि० ढालुवाँ।

ढराना†–स० क्रि० दे० 'ढलाना'। अ० क्रि० आँसू बहाना।

ढरारा–वि० ढलनेवाला; द्रवित होनेवाला; ढालू।

ढर्रा–पु० मार्ग, रास्ता; शैली; आदत; उपाय।

ढलकना–अ० क्रि० दे० 'ढलना'।

ढलका–पु० आँखोंसे पानी गिरनेका रोग।

ढलकाना–स० क्रि० (पानी आदि) लुढ़काना।

ढलनशीलता–स्त्री० (प्लैस्टिसिटी) ढलनशील होनेका गुण, गलाकर ढाले जानेकी शक्ति या गुण।

ढलना–अ० क्रि० ढरकना; लुढ़कना; बीतना; नीचेकी ओर जाना; अस्ताचलकी ओर जाना; साँचेमें ढाला जाना; समाप्ति या अंतकी ओर जाना; चँवर आदिका विशेष ढंगसे इधर-उधर हिलाया जाना; द्रवित होना; उड़ेला जाना।

ढलवाँ–वि० ढाला हुआ।

ढलवाना–स० क्रि० ढालनेका काम दूसरेसे कराना।

ढलाई–स्त्री० ढालनेकी क्रिया या उजरत।

ढलाना–स० क्रि० दे० 'ढलवाना'।

ढलुवाँ†–वि० दे० 'ढलवाँ'।

ढलैत–पु० ढालधारी, सैनिक।

ढवरी*–स्त्री० लगन, धुन।

ढहना–अ० क्रि० मकान आदिका गिरना, ध्वस्त होना।

ढहरना*–अ० क्रि० लुढ़कना, गिर पड़ना।

ढहराना†–स० क्रि० लुढ़काना; गिराकर अलग करना।

ढहरी*–स्त्री० देहली; मटकी।

ढहवाना–स० क्रि० ढहानेका काम दूसरेसे कराना।

ढहाना–स० क्रि० गिराना, ध्वस्त करना।

ढाँकना–स० क्रि० दे० 'ढकना'।

ढाँख*–पु० दे० 'ढाक'।

ढाँचा–पु० किसी वस्तुकी बनावटका आरंभिक या स्थूल रूप; पंजर; बनावट; तरह; तरीका।

ढाँपना–स० क्रि० दे० 'ढकना'।

ढाँस–स्त्री० सूखी खाँसी खाँसनेकी आवाज।

ढाँसना–अ० क्रि० सूखी खाँसी खाँसना।

ढाई–वि० दो और आधा। पु० ढाईकी संख्या, २॥। **मु०–दिनकी बादशाहत**–चंद दिनोंकी मौज; दूल्हा बनना।

ढाक–पु० पलाश; बड़ा ढोल।

ढाड़, ढाढ़–स्त्री० चीत्कार, चीख; चिग्घाड़। **मु०–मारना**–चीत्कार करते हुए रोना।

ढाढ़ना*–स० क्रि० दे० 'डाढ़ना'।

ढाढ़स, ढारस–पु० धीरज, दिलासा, सांत्वना।

ढाढ़ी–पु० घूम-घूमकर जन्मोत्सवके गीत गानेवाली एक जाति।

ढाना–स० क्रि० गिराना; ध्वस्त करना।

ढाबर*–वि० गदला, गंदा, मटमैला।

ढाबा–पु० मुर्गियों आदिको बंद करनेका टोकरा या खाँचा; जाल; ओलती; परछत्ती; रोटीकी दुकान।

ढामक–पु० नगाड़ा, ढोल; डंके, ढोल आदिका शब्द।

ढार*–पु० ढालुवाँ जमीन; उतार; ढाँचा; मार्ग। स्त्री० कानका एक गहना; फलक; ढाल।

ढारना*–स० क्रि० दे० 'ढालना'।

ढाल–स्त्री० आगेकी ओर क्रमशः नीची होती गयी जमीन; उतार; ढंग, प्रकार; [सं०] तलवार, भाले आदिके आघातको रोकनेका लोहे या गेंड़ेके चमड़ेका बना कछुएकी पीठ जैसा एक साधन।

ढालना–स० क्रि० पानी आदिको गिराना, उड़ेलना; शराब पीना; पिघली हुई धातुको साँचे द्वारा विशेष रूप देना।

ढालवाँ–वि० जो आगेकी ओर नीचा होता गया हो, ढालू।

ढालू–वि० दे० 'ढालवाँ'।

ढास*–पु० डाकू, लुटेरा।

ढासना–पु० टेक, आधारकी वस्तु, सहारा; तकिया।

ढाहना*–स० क्रि० दे० 'ढाना'।

ढिँढोरना*–स० क्रि० दे० 'ढँढोरना'।

ढिँढोरा–पु० मुनादी, डुग्गी; डुग्गी बजाकर की गयी घोषणा।

ढिग–अ० पास, समीप, नजदीक। * स्त्री० तट; किनारा।

ढिठाई–स्त्री० धृष्टता, बेअदबी; दुःसाहस।

ढिपुनी–स्त्री० चूचुक।

ढिबरी–स्त्री० दीपकके काम आनेवाली टीन, शीशे, मिट्टी आदिकी बनी डिबिया।

ढिमका†–सर्व० अमुक, फलाँ।

ढिमरिया–स्त्री० कहारिन, पानी लानेवाली।

ढिलाई–स्त्री० ढीलापन; सुस्ती, शिथिलता।

ढिलाना–स० क्रि० ढीला कराना; बंधनसे छुड़ाना; *ढीला करना; बंधनसे मुक्त करना।

ढिसरना*–अ० क्रि० फिसल पड़ना; प्रवृत्त होना; झुकना।

ढींगर*–पु० अधिक लंबा-चौड़ा व्यक्ति; जार।

ढींढ़, ढींढा–पु० गर्भ; बड़ा पेट।

ढीच*–स्त्री० कूबड़।

ढीट*–स्त्री० रेखा, लकीर।

ढीठ–वि० धृष्ट, बेअदब; संकोचरहित; चपल; निडर।

ढीठता*–स्त्री० ढिठाई।

ढीठो, ढीठ्यो*–पु० ढिठाई।

ढीम*–पु॰ दे॰ 'ढीमा'।

ढीमर†–पु॰ धीवर, पानी भरनेवाली एक जाति।

ढीमा†–पु॰ मिट्टीका ढोका; ईंट, पत्थर आदिका टुकड़ा।

ढील–स्त्री॰ ढिलाई, सुस्ती; शिथिलता; व्यर्थकी देर; फुरसत। † पु॰ बालोंमें पड़नेवाला एक छोटा कीड़ा, जूँ।

ढीलना–स॰ क्रि॰ ढीला करना; बंधन-मुक्त करना; सरकने देना; पानी आदि देकर पतला करना।

ढीला–वि॰ जिसमें तनाव, खिंचाव न हो; जो कसा न हो; जो कसकर बैठा या बँधा न हो; जो पहननेमें अधिक लंबा-चौड़ा हो; ज्यादा गीला; सुस्त; शांत, नरम। **(ढीली) आँख**–आधी खुली आँख; मदपूर्ण दृष्टि।

ढीह–पु॰ टीला, ढूह।

ढुंढ*–पु॰ उचक्का, ठग, लुटेरा।

ढुँढ़वाना–स॰ क्रि॰ खोजवाना, पता लगवाना।

ढुंढा–स्त्री॰ [सं॰] हिरण्यकशिपुकी बहिन जो प्रह्लादको गोदमें लेकर आगमें बैठनेपर जल मरी।

ढुंढी–स्त्री॰ बाँह; मुसुक; नाभि!

ढुकना–अ॰ क्रि॰ घुसना; ताकमें बैठना; आड़में बैठना।

ढुकास–स्त्री॰ तेज प्यास।

ढुटौना*–पु॰ ढोटा, लड़का।

ढुरकना*–अ॰ क्रि॰ लुढ़कना; सरकना; फिसलना; झुकना।

ढुरना*–अ॰ क्रि॰ ढरना; ढरकना; फिसलना; नीचेकी ओर बहना; डोलना; प्रसन्न होकर किसीकी ओर झुकना।

ढुरहुरी*–स्त्री॰ लुढकनेकी क्रिया; तंग रास्ता।

ढुराना, ढुरावना–स॰ क्रि॰ ढरकाना; ढुलकाना; गिराना।

ढुरुकना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढुलकना'।

ढुर्री–स्त्री॰ पगडंडी।

ढुलकना–अ॰ क्रि॰ उलटते-पुलटते गिरना।

ढुलकाना–स॰ क्रि॰ लुढ़काना।

ढुलना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढुरना'; ढोया जाना।

ढुलमुल–वि॰ शिथिल, अस्थिर।

ढुलवाना–स॰ क्रि॰ ढोनेका काम दूसरेसे कराना।

ढुलवाई, ढुलाई–स्त्री॰ ढोनेकी क्रिया या उजरत

ढुलाना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'ढुराना'; दे॰ 'ढुलवाना'; *पोतना।

ढूँकना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढुकना'।

ढूँढ़–स्त्री॰ खोज, तलाश।

ढूँढ़ना–स॰ क्रि॰ खोजना, तलाश करना।

ढूकना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ढुकना'।

ढूह–पु॰ ढेर, अटाला; टीला।

ढूहा†–पु॰ दे॰ 'ढूह'।

ढेंक–पु॰ [सं॰] एक जलीय पक्षी जिसकी चोंच और गरदन लंबी होती है।

ढेँकली–स्त्री॰ सिंचाईके लिए पानी निकालनेका एक यंत्र; धान कूटनेका एक यंत्र, ढेंकी; अर्क निकालनेका एक यंत्र।

ढेँका–पु॰ बड़ी ढेंकी; कोल्हूमें जाटके सिरेसे लगाया जानेवाला बाँस।

ढेँकिया–स्त्री॰ कपड़ेकी एक काट जिसमें लंबाई घट जाती और चौड़ाई बढ़ जाती है।

ढेँकी–स्त्री॰ धान कूटनेका एक यंत्र।

ढेँढ़*–पु॰ फली; एक जाति; मूर्ख; कपास आदिका डोंड़ा।

ढेँढ़र–पु॰ दे॰ टेँटर।

ढेँढ़ा–पु॰ दे॰ 'ढेँढ़'।

ढेँढ़ी–स्त्री॰ कपास, सेमर, पोस्ते इत्यादिका डोंड़ा; छीमी।

ढेँप–स्त्री॰ फल या पत्तेके मुँहपरका वह पतला भाग जिसके बल वह पेड़की टहनीसे लटकता रहता है।

ढेउआ†–पु॰ पैसा; (ला॰) धन।

ढेबरी–स्त्री॰ दे॰ 'ढिबरी'।

ढेबुआ†–पु॰ पैसा; धन।

ढेबुक*–पु॰ ताँबेका एक सिक्का, पैसा।

ढेर–पु॰ राशि, अटाला, टाल, पुंज।†वि॰ बहुत, अधिक। **मु॰–करना**–मार डालना। **–हो जाना**–मर जाना।

ढेरी–स्त्री॰ दे॰ 'ढेर'।

ढेल*–पु॰ दे॰ 'ढेला'।

ढेलवाँस–पु॰ ढेला फेंकनेकी रस्सी जिसमें उसे रखनेके लिए फंदा बना होता है, गोफना।

ढेला–पु॰ मिट्टी, पत्थर आदिका टुकड़ा। **–चौथ**–स्त्री॰ भादों सुदी चौथ जब चंद्रमाको देखनेपर लोग दूसरेके घरपर ढेला फेंकते हैं।

ढैया–पु॰ ढाई सेरका बटखरा; एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी ढाईगुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढोँका–पु॰ पत्थर आदिका बड़ा टुकड़ा जो गढ़ा न गया हो; बड़ा डला।

ढोँग–पु॰ पाखंड; छल। **–बाज़**–वि॰ दे॰ 'ढोँगी'।

ढोँगी–वि॰ ढोंग करनेवाला, पाखंडी।

ढोँढ़–पु॰ पोस्ते, कपास आदिका डोंड़ा, ढेंढ़ी।

ढोँढ़ी–स्त्री॰ नाभि।

ढोआई–स्त्री॰ दे॰ 'ढुलाई'।

ढोटा*–पु॰ पुत्र, बेटा; बालक।

ढोटी*–स्त्री॰ पुत्री, बेटी; बालिका।

ढोटौना*–पु॰ दे॰ 'ढोटा'।

ढोना–स॰ क्रि॰ बोझको एक स्थानसे दूसरेपर पहुँचाना; किसी वस्तुको ले चलना, उठाकर या लादकर ले जाना।

ढोर–पु॰ चौपाया, मवेशी; * छटा, अदा।

ढोरना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'ढरकाना'; हिलाना।

ढोल–पु॰ [सं॰] हाथसे बजानेका एक बाजा जो दोनों ओर चमड़ेसे मढ़ा होता है; कानका भीतरका परदा, कर्णपटह। **–ढमक्का**–पु॰ [हिं॰] चहल-पहल, धूम-धाम; बाजा-गाजा। **मु॰–पीटना**–चारों ओर कहते फिरना।

ढोलक–स्त्री॰ छोटा ढोल।

ढोलकिया–पु॰ ढोल बजानेवाला, स्त्री॰ † छोटा ढोल।

ढोलकी–स्त्री॰ छोटा ढोल।

ढोलना–पु॰ ढोलकके ढंगका गलेमें पहननेका जंतर; पालना; बड़ा बेलन। * स॰ क्रि॰ ढरकाना, गिराना।

ढोलनी–स्त्री॰ छोटा पालना।

ढोला–पु॰ फल आदिमें पड़नेवाला एक सफेद कीड़ा; मेहराबका लदाव; शरीर; पति; एक तरहका गीत; सीमा-चिह्न।

ढोलिनी*–स्त्री॰ ढोल बजानेवाली स्त्री।

ढोलिया–पु॰ दे॰ 'ढोलकिया'।

ढोली–स्त्री॰ दो सौ पानोंकी गड्डी; हँसी, परिहास।

ढोव*–पु० मांगलिक अवसरपर राजा आदिको नजर की जानेवाली वस्तु, डाली, भेंट–'लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले' गीता०।

ढोवा–पु० ढोये जानेकी क्रिया; लूट; दे० 'ढोव'।

ढोवाई–स्त्री० दे० 'ढुलाई'।

ढोहना*–स० क्रि० ढूँढ़ना–'सूर सुवेद बेगि ढोहौ किन, भये मरनके जोग'–सू०; ढोना।

ढौंचा–पु० एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी साढ़े चारगुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढौंसना*–अ० क्रि० धूमधाम मचाना; हर्षध्वनि करना।

ढौकन–पु० [सं०] डाली, भेंट, उपहार; रिश्वत।

ढौरी*–स्त्री० धुन, लगन।

ण

ण–देवनागरी वर्णमालाका १५वाँ व्यंजन वर्ण।

ण–पु० [सं०] भूषण; निर्णय; ज्ञान; शिव।

त

त–देवनागरी वर्णमालाका १६वाँ व्यंजन वर्ण।

तंग–पु० [फा०] जीन कसनेकी पेटी। वि० संकीर्ण, विस्तारमें कम; चुस्त; कसा हुआ; दिक, परेशान। **–दस्त**–वि० जिसके पास पैसेकी कमी हो, अर्थकष्टमें पड़ा हुआ। **–दस्ती**–स्त्री० पैसेकी कमी, अर्थकष्ट। **–हाल**–वि० तंगदस्त; विपद्ग्रस्त। मु० **–आना**–परेशान होना। **–करना**–दुःख पहुँचाना; हैरान करना।

तंगी–स्त्री० [फा०] तंग होना; चुस्ती; परेशानी; गरीबी।

तंज़ेब–पु० दे० 'तनजेब'।

तंड–पु० [सं०] एक ऋषि; * नाच।

तंडव*–पु० दे० 'तांडव'।

तंडुल–पु० [सं०] धान्य; चावल; एक सरसोंकी तौल।

तंत*–पु० ताँत; तत्त्व; इच्छा; तारवाला बाजा; उपाय; तंत्रशास्त्र; अभिलाषा; अधीनता। स्त्री० उतावली, जल्दबाजी। **–मंत**–पु० दे० 'तंत्र-मंत्र'।

तंतरी*–पु० तारवाला बाजा बजानेवाला; तारवाला बाजा। स्त्री० बाजेका तार।

तंतु–पु० [सं०] सूत, तागा; रेशा; ग्राह; संतान; परमेश्वर; मकड़ीका जाला। **–नाभ**–पु० मकड़ी। **–वाप,–वाय**–पु० जुलाहा, ताँती; मकड़ा।

तंत्र–पु० [सं०] तंतु; ताँत; ओषधि; जुलाहा; वस्त्र; राष्ट्र; राज्य; शासन-प्रबंध; शासन-प्रणाली; सेना; प्रबंध; परिवारका भरण-पोषण; करघा; अधीनता; विज्ञान-संबंधी सिद्धांत, रचना या नियम; ऐसी रचनाका एक अध्याय; शिव-शक्तिकी पूजा और अभिचार आदिका विधान करनेवाला शास्त्र; आगम; वीणा आदिका तार। **–मंत्र**–पु० जादू-टोना; उपाय-युक्ति। **–वाप,–वाय**–पु० दे० 'तंतुवाप'।

तंत्री–स्त्री० [सं०] वीणा आदिमें लगा तार; गुडुची; देहकी नस; रस्सी; नाड़ी; तारवाला बाजा; वीणा।

तंत्री(त्रिन्)–वि० [सं०] तारोंवाला; तंत्रका अनुसरण करनेवाला। पु० गवैया; सैनिक।

तंदरा*–स्त्री० दे० 'तंद्रा'

तंदुरुस्त–वि० [फा०] स्वस्थ, जिसका स्वास्थ्य ठीक हो।

तंदुरुस्ती–स्त्री० [फा०] स्वास्थ्य, आरोग्य।

तंदुल*–पु० दे० 'तंडुल'।

तंदूर–पु० एक तरहका चूल्हा जिसे गरम करके रोटियाँ पकाते हैं।

तंदेही–स्त्री० दे० 'तनदिही'; परिश्रम।

तंद्र–वि० [सं०] क्लांत, शिथिल; आलसी।

तंद्रा–स्त्री० [सं०] ऊँघ; क्लांति; वैद्यकमें शरीरके भारी और इंद्रियोंके शिथिल होनेकी दशा।

तंद्रालु–वि० [सं०] तंद्रायुक्त।

तंद्रि–स्त्री० [सं०] तंद्रा।

तंद्रिल–वि० [सं०] तंद्रावाला; तंद्रासे संबद्ध।

तंबाकू–पु० सुरती; सुरतीसे बनायी हुई एक नशीली चीज जिसे चिलम आदिपर रखकर पीते हैं; जर्दा।

तँबिया–पु० ताँबेका छोटा तसला।

तंबीह–स्त्री० [फा०] चेतावनी।

तंबू–पु० शामियाना, खेमा।

तंबूर–पु० [फा०] एक तरहका ढोल। **–ची**–पु० तंबूर बजानेवाला।

तंबूरा–पु० सितार जैसा एक बाजा जिसे सुर कायम रखनेके लिए बजाते हैं, तानपूरा।

तंबूल*–पु० पान, तांबूल।

तंबोल–पु० तांबूल, पान।

तंबोली–पु० पान बेचनेवाला, बरई।

तंभ*–पु० एक सात्त्विक अनुभाव; स्तंभ।

तंभन*–पु० दे० 'तंभ'; स्तंभन।

त–पु० [सं०] चोर; अमृत। * अ० तो।

तअज्जुब–पु० [अ०] आश्चर्य, अचंभा।

तअल्लुक़–पु० [अ०] संबंध, लगाव।

तअल्लुक़ा–पु० [अ०] बड़ा इलाका। **–(क़े)दार**–पु० तअल्लुकेका मालिक।

तअस्सुब–पु० [अ०] पक्षपात; धर्म-संबंधी पक्षपात; कट्टरपन।

तइसा*–वि० तैसा।

तइँ–प्र० को, प्रति, से। अ० वास्ते।

तई–स्त्री० जलेबी आदि बनानेकी छिछली कड़ाही।

तउ*–अ० तब; त्यों।

तऊ*–अ० तो भी, तथापि।

तक–अ० सीमा या अवधि सूचित करनेवाला अव्यय, पर्यंत। * स्त्री० टक, निर्निमेष दृष्टि; तराजू। * पु० तक्र, मही।

तक़दमा–पु० [अ०] अंदाजा, तखमीना; पेश करना फैसला।

तक़दीर–स्त्री० [अ०] भाग्य, किस्मत। –**वर**–वि० भाग्यवान्। **मु०**–**आज़माना**–भाग्यके भरोसे कोई काम करना। –**ऊँची जगह लड़ना**–अमीर घरमें शादी होना। –**का खेल**–भाग्यके करिश्मे। –**का धनी**–भाग्यवान्। –**जागना**–भाग्यका उदय होना। –**फूटना**–किस्मत खराब होना।

तक़दीरी–वि० [अ०] भाग्य-संबंधी।

तकना*–स० क्रि० देखना; ताकमें रहना; आश्रय लेना।

तकमा†–पु० तमगा; मुद्धी।

तकरार–स्त्री० [अ०] बार-बार कहना; हुज्जत, झगड़ा।

तकरारी–वि० [अ०] तकरार करनेवाला।

तक़रीबन्–अ० [अ०] लगभग।

तक़रीर–स्त्री० [अ०] बोलना; बातचीत, भाषण।

तकला–पु० सूत लपेटनेके काम आनेवाली चर्खेमें लगी लोहेकी सलाई, टेकुआ।

तकली–स्त्री० छोटा तकला; सूत कातने तथा लपेटनेका एक छोटा आला।

तकलीफ़–स्त्री० [अ०] दुःख, कष्ट, क्लेश।

तकल्लुफ़–पु० [अ०] तकलीफ उठाना; शिष्टाचार, बनावट।

तकवाना–स० क्रि० किसीको ताकनेमें प्रवृत्त करना।

तक़सीम–स्त्री० [अ०] बाँटना; बँटवारा; एक संख्यासे दूसरी संख्याको भाग देना (ग०)।

तक़सीर–स्त्री० [अ०] कुसूर, अपराध, गुनाह, दोष।

तकाई–स्त्री० ताकनेकी क्रिया।

तक़ाज़ा–पु० [अ०] तगादा, पावना माँगना; इच्छा; आवश्यकता; आदेश; अनुरोध; कोई काम करनेके लिए किसीसे बार-बार कहना।

तकाना–स० क्रि० देखनेमें प्रवृत्त करना; दिखाना।

तक़ावी–स्त्री० [अ०] बीज, बैल आदि खरीदनेके लिए किसानोंको सरकारकी ओरसे दिया जानेवाला ऋण।

तकिया–पु० [फा०] बालिश; भरोसा, सहारा; आश्रयस्थान; छज्जे आदिपर रोकके लिए लगायी जानेवाली पत्थरकी पटिया; फकीरोंके रहनेकी जगह। –**कलाम**–पु० सखुनतकिया।

तकुआ–पु० दे० 'तकला'; देखनेवाला।

तक्र–पु० [सं०] मट्ठा जिसमें एक चौथाई भाग जलका हो, छाछ। –**सार**–पु० मक्खन।

तक्ष–पु० [सं०] रामके भाई भरतका ज्येष्ठ पुत्र; एक नाग।

तक्षक–पु० [सं०] आठ नागोंमेंसे एक जिसने परीक्षित्को काटा था; विश्वकर्मा; सूत्रधार; बढ़ई।

तक्षण–पु० [सं०] लकड़ी आदि छीलना, काटना।

तक्षणी–स्त्री० [सं०] लकड़ी तराशनेका औजार, बसूला।

तख़मीनन्–अ० [अ०] अंदाजन्, अनुमानतः।

तख़मीना–पु० [अ०] अंदाजा; आमद या खर्चका अंदाजा।

तखल्लुस–पु० [अ०] कवि या लेखकका उपनाम।

तख़्त–पु० [फा०] सिंहासन; लकड़ीकी बड़ी चौकी। –**गाह**–स्त्री० राजधानी। –**नशीन**–वि० सिंहासनारूढ़। –**पोश**–पु० तख्तपर बिछानेकी चादर। –**ताऊस**–पु० शाहजहाँका प्रसिद्ध सिंहासन जो मोरके आकारका था। इसे १७३९ में नादिरशाह लूटकर ले गया।

तख़्ता–पु० [फा०] ऊँची चौकी; लकड़ीका लंबा और कम मोटा चौकोर टुकड़ा, पट्ठा। **मु०**–**उलट जाना**–बरबाद हो जाना, नष्ट-भ्रष्ट हो जाना, तबाह हो जाना।

तख़्ती–स्त्री० लकड़ी, धातु आदिका छोटा, चौकोर टुकड़ा; छोटा तख्त; पटिया।

तगड़ा–वि० हट्टा-कट्टा, मोटा-ताजा; मजबूत।

तगण–पु० [सं०] तीन वर्णोंका एक मात्रिक गण।

तगना–अ० क्रि० तागा जाना।

तगमा–पु० दे० 'तमग़ा'।

तगर–पु० [सं०] एक वृक्ष।

तगा*–पु० तागा।

तगाई–स्त्री० तागनेका काम या उजरत।

तगादा–पु० दे० 'तक़ाज़ा'।

तगाना–स० क्रि० तागनेका काम दूसरेसे कराना।

तग़ीर*–पु० स्थिति-परिवर्तन, तबदीली।

तचना*–अ० क्रि० अत्यंत तप्त होना, तपना; दुःखी होना।

तचा*–स्त्री० त्वचा, चमड़ा।

तचाना*–स० क्रि० संतप्त करना, तपाना।

तचित*–वि० तपा हुआ, संतप्त; दुःखी।

तच्छ*–पु० दे० 'तक्ष'।

तच्छक*–पु० दे० 'तक्षक'।

तच्छिन*–अ० तत्क्षण, उसी समय।

तज–पु० दारचीनीकी जातिका एक वृक्ष जिसकी छाल दवाके काम आती है। इसके पत्तेको 'तेजपत्ता' कहते हैं।

तज़किरा–पु० [अ०] जिक्र, चर्चा; जीवन-चरित।

तजन*–पु० त्याग; चाबुक।

तजना–स० क्रि० छोड़ना, त्यागना।

तजरबा–पु० [अ०] अनुभव; किसी वस्तुके बारेमें ज्ञान प्राप्त करनेके लिए की गयी परीक्षा; आजमाइश। –**कार**–वि० अनुभवी।

तजवीज़–स्त्री० [अ०] सलाह, राय; फैसला, निर्णय; निर्देश; विचार। –**सानी**–स्त्री० किसी फैसलेका उसी अदालतमें पुनर्विचार।

तज्जनित, तज्जन्य–वि० [सं०] उससे उत्पन्न।

तज्जातीय–वि० [सं०] उस जातिका।

तज्ञ–वि० जानकार; तत्त्वविद्।

तटंक–पु० कानका एक गहना, कर्णफूल।

तट–पु० [सं०] पहाड़की ढाल; क्षितिज; किनारा, कूल, तीर; नदीके किनारेकी भूमि; प्रदेश; क्षेत्र; शिव। अ० पास, समीप। –**स्थ**–वि० जो समीप रहता हो, निकटस्थ; जो मतलब न रखता हो, उदासीन; जो गुटबंदीसे पृथक् हो। पु० उदासीन व्यक्ति।

तटका*–वि० ताजा, तुरंतका।

तटनी*–स्त्री० दे० 'तटिनी'।

तटस्थीकरण–पु० [सं०] (न्यूट्रेलिजेशन) किसी देश या स्थानको तटस्थ बना देने, घोषित कर देनेकी क्रिया; प्रतिकूल गुण, शक्ति आदि द्वारा किसीके गुण या शक्तिका फल अथवा प्रभाव बेकार कर देनेकी क्रिया।

तटिनी–स्त्री० [सं०] नदी। –**पति**–पु० समुद्र।

तटी–स्त्री० [सं०] तीर, किनारा; * नदी; समाधि।

तड़–पु० जातिका उपविभाग, बिरादरी; थप्पड़ मारने या कड़ी चीज तोड़नेकी आवाज। **–बंदी**–स्त्री० जातीयताकी दृष्टिसे गुट बनानेकी क्रिया, दलबंदी।

तड़क–स्त्री० तड़कनेकी क्रिया या भाव; तड़कनेका चिह्न। **–भड़क**–पु० ठाट-बाट; चमक-दमक।

तड़कना–अ० क्रि० आँच पाकर 'तड़'की आवाजके साथ फटना या टूटना; कर्कश स्वरमें बोलना; झुँझलाना; उमंगके साथ जोरसे उछलना।

तड़का–पु० प्रभात, सवेरा; बघार।

तड़काना–स० क्रि० 'तड़' शब्दके साथ तोड़ना; खिजाना।

तड़कीला†–वि० भड़कीला, चमकीला; तड़कनेवाला।

तड़क्का*–अ० शीघ्र, झटपट।

तड़तड़ाना–अ० क्रि० 'तड़-तड़' शब्द होना। स० क्रि० 'तड़-तड़' शब्द उत्पन्न करना।

तड़प–स्त्री० तड़पनेकी क्रिया या भाव; बिजलीकी कड़क; बिजलीकी चमक। **–दार**–वि० भड़कीला, चमकीला।

तड़पना–अ० क्रि० अत्यंत दुःखी होना, कलपना, छटपटाना; गरजना; कूदना-फाँदना।

तड़पाना–स० क्रि० अत्यधिक कष्ट पहुँचाना, कलपाना।

तड़फड़ाना–अ० क्रि० बेचैन होना। स० क्रि० व्याकुल करना, कष्ट पहुँचाना।

तडाक–पु० [सं०] दे० 'तडाग'।

तड़ाक–स्त्री० तड़ाकेका शब्द; कड़ी चीजके जोरसे टूटनेका शब्द। † अ० झटपट। **–पड़ाक, –फड़ाक**–अ० चटपट, फौरन। **–से**–'तड़ाक' शब्दके साथ।

तड़ाका–पु० 'तड़'की आवाज। अ० चटपट।

तडाग–पु० [सं०] तालाब, सरोवर; हिरन फँसानेका फँदा।

तड़ागना*–अ० क्रि० डींग मारना; उछल-कूद मचाना; कोशिश करना।

तड़ातड़–अ० 'तड़-तड़'की ध्वनिके साथ।

तड़ावा–पु० दिखावटी तड़क-भड़क।

तड़ित, तड़िता*–स्त्री० दे० 'तडित्'।

तडित्–स्त्री० [सं०] बिजली, विद्युत्; हिंसा। **–पति**–पु० मेघ। **–प्रभा**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका; बिजलीकी चमक।

तडित्वान्(त्वत्)–पु० [सं०] मेघ। वि० बिजलीवाला।

तडिद्गर्भ–पु० [सं०] मेघ, बादल।

तड़िपाना*–अ० क्रि० दे० 'तड़पना'।

तडिल्लेखा–स्त्री० [सं०] बिजलीकी लीक।

तड़ी–स्त्री० चपत, थप्पड़।

तड़ीत*–स्त्री० दे० 'तडित्'।

तत*–वि० तप्त; उतना। पु० तत्त्व; सार वस्तु; तंतु। **–बाउ***–पु० दे० 'तंतुवाय'। **–सार**–स्त्री० लोहा आदि तपानेकी जगह।

ततकार, ततकाल*–अ० दे० 'तत्काल'।

ततखन*–अ० दे० 'तत्क्षण'।

ततछन*–अ० दे० 'तत्क्षण'।

ततपर*–वि० दे० 'तत्पर'।

ततबीर*–स्त्री० दे० 'तदबीर'।

तताई*–स्त्री० गरमी।

ततुबाउ*–पु० दे० 'तंतुवाय'।

ततैया–स्त्री० बर्रे, भिड़, हड्डा। वि० तेज; चालाक।

तत्–पु० [सं०] ब्रह्म; वायु। सर्व० वह। **–काल**–अ० तत्क्षण, तुरत, उसी समय। **–कालीन**–वि० उस या उसी समयका। **–क्षण**–अ० दे० 'तत्काल'। **–तद्देशीय**–वि० उस-उस या भिन्न-भिन्न देशका। **–पर**–वि० कार्य-विशेषमें लगा हुआ, तल्लीन; सन्नद्ध। **–परता**–स्त्री० तत्पर होनेकी क्रिया या भाव, मुस्तैदी; सन्नद्धता; तल्लीनता। **–पश्चात्**–अ० उसके बाद, पीछे। **–पुरुष**–पु० परम पुरुष; एक समास (व्या०)। **–सदृश, –सम**–वि० उसके समान, उसके जैसा। –पु० किसी अन्य भाषाका वह शब्द जो देशी भाषामें अविकृत रूपमें प्रयुक्त होता हो।

तत्त*–पु० दे० 'तत्त्व'।

तत्ता*–वि० गरम, उष्ण।

तत्ताथेई–स्त्री० नाचके शब्द या बोल।

तत्तोथंबो–पु० बीचबचाव; दिलासा।

तत्त्व–पु० [सं०] यथार्थता, वस्तुस्थिति, असलीयत; सार; स्वरूप; ब्रह्म; सांख्यशास्त्रोक्त प्रकृति आदि पचीस पदार्थ; पंचभूत; मूल पदार्थ। **–ज्ञ**–पु० ब्रह्मको जाननेवाला; वह जिसे सार वस्तुका ज्ञान हो; अध्यात्मवेत्ता; दार्शनिक। **–ज्ञान**–पु० ब्रह्म, आत्मा और जगद्विषयक यथार्थ ज्ञान, ब्रह्मज्ञान। **–ज्ञानी(निन्)**–पु० ब्रह्मज्ञानी। **–दृष्टि**–स्त्री० तत्त्वज्ञान प्राप्त करानेवाली दृष्टि। **–निष्ठ**–वि० सिद्धांतका पक्का। **–भाषी(षिन्)**–वि० यथार्थवक्ता। **–विद्**–पु० दे० 'तत्त्वज्ञ'; परमेश्वर। **–विद्या**–स्त्री० दर्शनशास्त्र, अध्यात्मविद्या। **–वेत्ता(त्तृ)**–पु० तत्त्वज्ञ; दार्शनिक।

तत्त्वतः–अ० [सं०] यथार्थ रूपमें, वास्तवमें।

तत्त्वावधान–पु० [सं०] देखरेख।

तत्र–अ० [सं०] वहाँ, उस जगह।

तत्रत्य–वि० [सं०] वहाँ रहनेवाला।

तथा–अ० [सं०] और, व; वैसा; वैसा ही। **–कथित**–वि० दे० 'तथोक्त'। **–गत**–पु० बुद्धका एक नाम। **–विध**–वि० उस प्रकारका।

तथापि–अ० [सं०] तो भी, तिसपर भी, वैसा होनेपर भी।

तथास्तु–अ० [सं०] ऐसा ही हो, एवमस्तु।

तथैव–अ० [सं०] उसी प्रकार।

तथोक्त–वि० [सं०] तथाकथित; नाम मात्रका।

तथ्य–पु० [सं०] सत्य, सच्ची बात, यथार्थता। **–भाषी(षिन्), –वादी(दिन्)**–वि० सच्ची, सारगर्भ बात कहनेवाला।

तदनंतर–अ० [सं०] उसके बाद।

तदनुरूप–वि० [सं०] उसीके रूपका, उसीके जैसा।

तदनुसार–अ० [सं०] उसके अनुसार।

तदपि–अ० [सं०] वह भी; * तो भी, तथापि।

तदबीर–स्त्री० [अ०] उद्योग, यत्न, प्रयास; उपाय; प्रबंध।

तदर्थ–अ० [सं०] उसके लिए। **–समिति**–स्त्री० (एडहॉक कमिटी) किसी विशेष कार्यके लिए बनी हुई समिति जो कार्य-संपादनके बाद स्वतः विघटित हो जाती है।

तदा-अ० [सं०] उस समय, तब ।

तदाकार-वि० [सं०] उसके आकारका, उसकी तरहका ।

तदीय-वि० [सं०] उसका ।

तदुपरांत-अ० [सं०] उसके बाद ।

तदुपरि-अ० [सं०] उसके ऊपर या बाद ।

तद्गत-वि० [सं०] उसमें स्थित; तल्लीन; उससे संबद्ध ।

तद्गुण-वि० [सं०] जिसमें वे गुण हों; उसके जैसे गुणोंवाला। पु० एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु द्वारा अपने गुणका परित्याग कर निकटकी दूसरी वस्तुका गुण ग्रहण कर लिया जाना दिखाया जाता है ।

तद्देशीय-वि० [सं०] उस देशका ।

तद्धित-पु० [सं०] संज्ञा-शब्दोंमें लगनेवाला एक प्रकारका प्रत्यय (व्या०)। वि० उसके लिए उपयुक्त ।

तद्भव-वि० [सं०] उससे उत्पन्न । पु० किसी भाषाका वह शब्द जो देशी भाषामें कुछ विकृत रूपमें प्रयोगमें आता है।

तद्यपि*-अ० तथापि; तिसपर भी ।

तद्रूप-वि० [सं०] उसी प्रकारका, वैसा ही ।**-रूपक**-पु० रूपकालंकारका एक भेद ।

तद्रूपता-स्त्री० [मं०] सादृश्य, समानता ।

तद्वत्-वि० [सं०] वैसा, उसके समान । अ० उसी प्रकार ।

तन-पु० शरीर, देह; योनि। *अ० ओर, तरफ ।**-त्राण, त्रान**-पु० कवच । **-पात**-पु० मृत्यु ।**-रुह***-पु० दे० 'तनूरुह'।**-सुख**-पुं० तनजेब जैसा एक फूलदार कपड़ा । **-मनसे**-जी-जान लगाकर।

तन-पु० [फा०] शरीर । **-ज़ेब**-पु० बढ़िया महीन मलमल । **-दिही**-स्त्री० मुस्तैदी, तत्परता; मिहनत ।

तनक-स्त्री० एक रागिनी ।*वि० थोड़ा; छोटा ।*अ०जरा।

तनकना*-अ० क्रि० दे० 'तिनकना'।

तनखाह-स्त्री० दे० 'तनख़्वाह' ।

तनख़्वाह-स्त्री० [फा०] वेतन, तलब ।

तनगना*-अ० क्रि० दे० 'तिनकना' ।

तनज-पु० [अ०] 'तंज' ताना; मजाक ।

तनज़्ज़ुल-पु० [अ०] नीचे उतरना, अवनति, ह्रास ।

तनज़्ज़ुली-स्त्री० दे० 'तनज़्ज़ुल' ।

तनतनाना-अ० क्रि० झुँझलाना ।

तनना-अ० क्रि० खिंचकर कड़ा होना; फैलना; खड़ा होना; खिंचना, रुष्ट होना ।

तनमय*-वि० दे० 'तन्मय' ।

तनय-पु० [सं०] पुत्र, बेटा; कुल ।

तनया-स्त्री० [सं०] पुत्री, लड़की ।

तनवाना-स० क्रि० तननेका काम दूसरेसे कराना ।

तनहा-वि० [फा०] अकेला । अ० अकेले ।

तनहाई-स्त्री० [फा०] अकेलापन; एकांत स्थान ।

तना-पु० [फा०] धड़ । * अ० ओर, तरफ ।

तनाउ*-पु० दे० 'तनाव' ।

तनाज़ा-पु० [अ०] झगड़ा, लड़ाई ।

तनाय*-पु० दे० 'तनाव' ।

तनाव-पु० तननेका भाव या क्रिया; रस्सी ।

तनि, तनिक*-वि० थोड़ा, अल्प; छोटा-'इहाँ हुती मेरी तनिक मड़ैया'-सू० । अ० जरा।

तनिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] दुबलापन, कृशता; सुकुमारता।

तनियाँ, तनिया*-स्त्री० कछनी; तनीदार कुरता ।

तनी-स्त्री० बंद, बंधन । * वि०, अ० दे० 'तनि' ।

तनु-पु० [सं०] शरीर, काय; स्वभाव, प्रकृति; चर्म; लग्न-स्थान । वि० विरल; अल्प; सुकुमार; कृश; तुच्छ; छिछला । **-कूप**-पु० रोमकूप । **-ज**-पु० पुत्र । **-जा**-स्त्री० पुत्री । **-त्याग**-वि० कंजूस । पु० शरीर-त्याग ।**-त्र,-त्राण**-पु० कवच, वर्म । **-धारी(रिन्)**-वि० देहधारी। **-पात**-पु० मृत्यु । **-भव**-पु० पुत्र, बेटा । **-भवा**-स्त्री० पुत्री, बेटी । **-भृत्**-वि० शरीरधारी। **-मध्यमा**-वि० स्त्री० पतली कमरवाली । **-मध्या**-स्त्री० एक वर्ण-वृत्त; पतली कमरकी स्त्री । **-राग**-पु० एक सुगंधित उबटन जिसमें केसर आदि छोड़ते हैं; इस उबटनके कामके गंधद्रव्य । **-रुह**-पु० रोम, रोआँ । **-लता**-स्त्री० लता जैसी लोचवाली सुकुमार देह ।

तनुक*-वि०, अ० दे० 'तनिक' ।

तनुता-स्त्री०, **तनुत्व**-पु० [सं०] पतलापन, कृशता ।

तनू-पु० [सं०] शरीर; पुत्र । **-ज**-पु० बेटा । **-जा**-स्त्री० बेटी । **-रुह**-पु० रोम, रोआँ; पंख; पुत्र ।

तनूर-पु० तंदूर ।

तनेना*-वि० तिरछा, वक्र; खिंचा हुआ; रुष्ट ।

तनेनी*-वि० स्त्री० दे० 'तनेना' ।

तनै*-पु० दे० 'तनय' ।

तनैया*-स्त्री० दे० 'तनया' ।

तनोज*-पु० रोम; पुत्र ।

तनोरुह*-पु० दे० 'तनूरुह' ।

तन्ना-पु० तानेका सूत ।

तन्नी-स्त्री० वह रस्सी जिससे तराजूका पलड़ा बँधा होता है ।

तन्मनस्क-वि० [सं०] तन्मय, तल्लीन ।

तन्मय-वि० [सं०] दत्तचित्त, तल्लीन ।

तन्यता-स्त्री० (डक्टिलिटी) तारके रूपमें खींचे जा सकनेका ठोसका गुण ।

तन्वंग-वि० [सं०] दुर्बल, सुकुमार शरीरवाला ।

तन्वंगी-वि० स्त्री० [सं०] दुबली, नाजुक, सुकुमार अंगोंवाली ।

तन्वी-वि० स्त्री० [सं०] कृशांगी, सूक्ष्मांगी । स्त्री० पतली, सुकुमार स्त्री ।

तपःकृश-वि० [सं०] तपसे क्षीण ।

तपःपूत-वि० [सं०] जो तपस्या करके पवित्र हो गया है ।

तपःसाध्य-वि० [सं०] तपसे सिद्ध होनेवाला ।

तप-पु० [सं०] तपस्या; ताप, दाह; सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; ज्वर । वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला; कष्टकर ।

तप(स्)-पु० [सं०] ताप; सूर्य; अग्नि; कष्ट; विषयत्याग-पूर्वक कष्टदायक व्रत, नियम, उपासना आदिका आचरण; भूख-प्यास, शीत-उष्ण आदि सहनेकी क्रिया; मौन आदि व्रत; चांद्रायण, प्राजापत्य आदि प्रायश्चित्त; मन, इंद्रियोंको एकाग्र रखनेकी क्रिया; एक लोक ।

तपकना-अ० क्रि० धड़कना; टपकना; चमकना ।

तपती-स्त्री० [सं०] सूर्यकी एक कन्या; ताप्ती नदी ।

तपन-पु० [सं०] तपनेकी क्रिया या भाव; ताप, गरमी;

कष्ट देना; सूर्य; भल्लातक वृक्ष; एक नरक; ग्रीष्म; सूर्यकांत मणि; विरहसे उत्पन्न संताप। वि० उष्ण। –कर, –दीधिति–पु० सूर्य। –च्छद्–पु० सूर्यमुखी फूल। –तनय–पु० यम; शनि; कर्ण; सुग्रीव; शमीवृक्ष। –तनया–स्त्री० यमुना। –मणि–पु० सूर्यकांत मणि।

तपनांशु–पु० [सं०] सूर्य; सूर्यरश्मि।

तपना–अ० क्रि० धूप, आँच आदिसे गरम होना; तापमें पड़ा रहना; किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए कष्ट सहना; सूर्यका प्रखर होना; किसीका प्रभुत्व छाना या आतंक फैलना; * तप करना। * स० क्रि० पकाना–'सूरज जेहि कै तपै रसोई'–प०।

तपनि*–स्त्री० ताप, जलन।

तपनी†–स्त्री० कौड़ा, अलाव।

तपवाना–स० क्रि० तप्त कराना।

तपश्चरण–पु०, **तपश्चर्या**–स्त्री० [सं०] तपस्या।

तपसा–स्त्री० ताप्ती नदीका दूसरा नाम।

तपसाली–वि० जिसने बहुत तपस्या की हो।

तपसी–* पु० दे० 'तपस्वी'। स्त्री० एक मछली।

तपस्या–स्त्री० [सं०] तप; (ला०) किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए उठाया जानेवाला कष्ट।

तपस्वी(स्विन्)–वि० [सं०] तपस्या करनेवाला; कष्ट उठानेवाला; दीन; दुखिया। पु० नारद; संन्यासी।

तपस्विनी–स्त्री० [सं०] तपस्या करनेवाली स्त्री; जटामासी।

तपा*–पु० तपस्वी। वि० तपश्चर्यामें संलग्न।

तपाक–पु० [फा०] प्रेम; उत्साह।

तपाना–स० क्रि० तप्त करना; कष्ट पहुँचाना।

तपावंत*–पु० तपस्वी।

तपाव–पु० तपनेकी क्रिया या भाव, गरम होना।

तपित–वि० [सं०] गरम किया हुआ; शुद्ध किया हुआ (सोना)।

तपिया*–पु० तप करनेवाला।

तपिश–स्त्री० [फा०] गरमी, तपन।

तपी–पु० तपस्वी, साधु।

तपेदिक–स्त्री० [फा०] जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा।

तपेला*–पु० भट्ठी।

तपोधन–वि० [सं०] तप ही जिसका धन हो, तपस्वी।

तपोनिधि–वि० [सं०] तपस्वी। पु० धर्मप्राण व्यक्ति।

तपोनिष्ठ–वि० [सं०] तपमें जिसकी निष्ठा हो।

तपोबल–पु० [सं०] तप द्वारा प्राप्त शक्ति।

तपोभंग–पु० [सं०] तपश्चर्याका भंग होना।

तपोभूमि–स्त्री० [सं०] तप करनेका स्थान।

तपोमय–वि० [सं०] तपवाला; तपस्या करनेवाला।

तपोमूर्ति–पु० [सं०] परमेश्वर; तपस्वी।

तपोलोक–पु० [सं०] ऊपरके सात लोकोंमें छठा लोक।

तपोवन–पु० [सं०] तपस्वी लोगोंके रहनेका वन; तपस्या करने योग्य वन।

तपोवृद्ध–वि० [सं०] जिसे तपस्याके कारण श्रेष्ठता प्राप्त हुई हो।

तपोव्रत–पु० [सं०] तपस्या-संबंधी व्रत।

तपौनी–स्त्री० मुसाफिरोंको लूट चुकनेपर ठगोंका देवीको प्रसाद चढ़ानेका रिवाज।

तप्त–वि० [सं०] तपाया हुआ; गरम; दुःखित; जिसने तपस्या की हैं; पिघला हुआ; क्रुद्ध।

तप्प*–पु० तप।

तफ़रीह–स्त्री० [अ०] मनबहलाव; दिल्लगी; ताजगी।

तफ़रीहन्–अ० [अ०] मनबहलावके रूपमें; हँसीसे।

तफ़सील–स्त्री० [अ०] अलग करना; ब्योरा।

तफ़ावत–पु० [अ०] अंतर, फर्क; फासला।

तब–अ० उस समय; बादमें; इस वजहसे। –भी–अ० फिर भी, तिसपर भी।

तबक़–पु० [अ०] तह; परत; सोने-चाँदी आदिका वरक; बड़ी रकाबी। –गर–पु० सोने-चाँदी आदिके पत्तर बनानेवाला।

तबक़ा–पु० [अ०] तख्ता; मंजिल; तह; खंड; लोक; आदमियोंका समूह; जमीनका छोटासा टुकड़ा; पद, दरजा।

तबकिया–पु० दे० 'तबक़गर'। वि० जिसमें परत हो।

तबदील–स्त्री० [अ०] बदलना, एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाना।

तबदीली–स्त्री० कर्मचारीका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; परिवर्तन।

तबर–पु० [फा०] कुल्हाड़ी; एक शस्त्र।

तबर्रा–पु० [अ०] किसीके प्रति घृणा प्रकट करना; धिक्कारना; शियोंका अलीसे पहलेके तीन खलीफाओंका कोसना।

तबल–पु० [अ०] बड़ा ढोल; नगाड़ा।

तबलची–पु० तबला बजानेवाला।

तबला–पु० ताल देनेका चमड़ेसे मढ़ा एक बाजा। मु०–खनकना,–ठनकना–तबला बजना; नाच-रंग, गाना-बजाना होना।

तबलिया–पु० तबला बजानेवाला, तबलची।

तबलीग़–स्त्री० [अ०] धर्मप्रचार।

तबाह–वि० [फा०] बरबाद, नष्ट।

तबाही–स्त्री० [फा०] नाश, बरबादी।

तबीअत, तबीयत–स्त्री० [अ०] जी, मन, दिल; समझ। –दार–वि० भावुक, सहृदय। मु०–आना–आसक्त होना। –फिरना–जी हटना।

तबीब–पु० [अ०] चिकित्सक, हकीम।

तबेला–पु० अस्तबल, घुड़साल–'रारि सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें–भूधर।

तब्बर*–पु० दे० 'तबर'।

तभी–अ० उसी समय; इसीलिए।

तमंचा–पु० [फा०] पिस्तौल।

तमःप्रवेश–पु० [सं०] अँधेरेमें टटोलना; किंकर्तव्यविमूढ़ता।

तम–पु० [सं०] अंधकार; पैरका अगला भाग; तमोगुण; राहु।

तम(स्)–पु० [सं०] अंधकार; भ्रम; सत्त्वादि तीनों गुणोंमेंसे एक; अविद्याके पाँच स्वरूपोंमेंसे एक (सांख्य०)।

तमक–पु० आवेश; उद्वेग; रोष; झुँझलाहट; जोश।

तमकना–अ० क्रि० आवेशमें आना; रुष्ट होना; क्रोधका आधिक्य दिखलाना।

तमग़ा–पु० [तु०] विद्यार्थी, सिपाही आदिको पुरस्कारके

रूपमें दिया जानेवाला सोने, चाँदी आदिका खंड जो प्रायः सिक्केकी शकलका होता है, पदक।

तमचर–पु० निशाचर; उल्लू।

तमचुर, तमचूर, तमचोर*–पु० कुक्कुट, मुरगा।

तमतमाना–अ० क्रि० क्रोध या धूपके कारण चेहरेका लाल हो जाना।

तमन्ना–स्त्री० [अ०] इच्छा, ख्वाहिश।

तमयी*–स्त्री० रात।

तमस–पु० [सं०] अंधकार; कुआँ। वि० काले रंगका। * स्त्री० तमसा नदी, टौंस।

तमसा–स्त्री० [सं०] एक नदी, टौंस।

तमस्सुक–पु० [अ०] ऋणपत्र।

तमा–स्त्री० [सं०] रात्रि; * इच्छा।

तमाकू–पु० दे० 'तंबाकू'।

तमाचा–पु० थप्पड़, झापड़।

तमादी–स्त्री० [अ०] लेन-देन या मुकदमेकी सुनवाई आदिकी अवधिका बीत जाना।

तमाम–वि० [अ०] कुल, सारा; समाप्त, खतम।

तमामी–स्त्री० समाप्ति; एक जरीदार कपड़ा।

तमारि–पु० [सं०] सूर्य। * स्त्री० तँवार, घुमटा, चक्कर।

तमाल–पु० [सं०] एक सदाबहार वृक्ष; एक प्रकारकी तलवार; वरुण वृक्ष; काला खैर; तेजपात।

तमाशबीन–पु० तमाशा देखनेवाला; ऐयाश।

तमाशा–पु० [अ०] मनोरंजक दृश्य; अद्भुत बात।

तमाशाई–पु० [अ०] दे० 'तमाशबीन'।

तमि, तमी–स्त्री० [सं०] रात्रि; मोह, मूर्च्छा; हल्दी। **(तमी)चर**–पु० राक्षस, निशाचर। **–नाथ**–पु० चंद्रमा। **–पति**–पु० चंद्रमा।

तमिस्त्र–पु० [सं०] अंधकार; अज्ञान; मोह; क्रोध।

तमिस्रा–स्त्री० [सं०] अँधेरी रात; निविड़ अंधकार।

तमीज़–स्त्री० [अ०] अच्छे-बुरेकी पहचान, विवेक; अदब।

तमूरा–पु० दे० 'तंबूरा'।

तमोगुण–पु० [सं०] प्रकृतिका एक गुण जो अज्ञान, आलस्य, क्रोध, भ्रम आदिका कारण है।

तमोगुणी(णिन्)–वि० [सं०] तामस वृत्तिवाला।

तमोघ्न–पु० [सं०] अंधकार या अज्ञानको हरनेवाला, सूर्य; अग्नि; चंद्रमा; विष्णु; शिव; वि० जिससे अँधेरा दूर हो।

तमोज्योति–पु० [सं०] जुगनू।

तमोभिद्–पु० [सं०] जुगनू।

तमोमणि–पु० [सं०] जुगनू; गोमेदक मणि।

तमोमय–वि० [सं०] तमोगुणसे भरा हुआ; ज्ञानहीन; अंधकारपूर्ण।

तमोर, तमोल*–पु० तांबूल, पान।

तमोलिन–स्त्री० बरइन।

तमोली–पु० बरई, पान बेचनेवाला।

तमोहर–वि० [सं०] अंधकार दूर करनेवाला। पु० सूर्य।

तय–वि० [अ०] पूरा किया हुआ, समाप्त; निश्चित, निर्णीत।

तयना*–अ० क्रि० तपना, गरम होना; दुःखी होना।

तयार*–वि० दे० 'तैयार'।

तरंग–स्त्री० [सं०] (पानीकी) लहर, मौज; उमंग; उछाल; वस्त्र; हिलना-डोलना; इधर-उधर घूमना; ग्रंथका खंड; स्वरोंका आरोह-अवरोह। **–दैर्घ्य**–पु० (वेव्ह लेंग्थ) आकाशमें प्रसारित भिन्न-भिन्न विद्युत्-चुंबकीय लहरोंकी लंबाई (रेडियोके विभिन्न केंद्रोंसे प्रायः अलग-अलग तरंग-दैर्घ्यपर वार्ता प्रसारित की जाती है, इसीसे उसके सुनने-समझनेमें बाधा नहीं पड़ने पाती)। **–माली(लिन्)**–पु० समुद्र।

तरंगवती–स्त्री० [सं०] नदी।

तरंगायित–स्त्री० [सं०] तरंगयुक्त।

तरंगिणी–स्त्री० [सं०] नदी। **–नाथ**–पु० समुद्र।

तरंगित–वि० [सं०] लहराता हुआ; ऊपरसे बहता हुआ; कंपायमान।

तरंगी(गिन्)–वि० [सं०] तरंगयुक्त; मौजी; अस्थिर।

तरंबुज–पु० [सं०] तरबूज।

तर–[सं०] एक प्रत्यय जो गुणाधिक्य प्रकट करनेके लिए लगाया जाता है (जैसे–स्थूलतर,–व्या०)।

तर*–अ० नीचे, तले। **–छट†**–स्त्री० तलछट।

तर–वि० [फा०] आर्द्र; अत्यन्त सिक्त; ठंडा; मालदार। **–बतर**–वि० सराबोर। **–व ताज़ा**–वि० तुरंतका।

तरई*–स्त्री० तारा, नक्षत्र।

तरक*–पु० सोच-विचार, ऊहापोह; चुटीली बात; चातुरीपूर्ण उक्ति। स्त्री० दे० 'तड़क'।

तरकना*–अ० क्रि० तर्क करना; अंदाजा लगाना; उछलना; झपटना; दे० 'तड़कना'।

तरकश–पु० [फा०] तीर रखनेका चोंगा, तूणीर, निषंग।

तरकस*–पु० दे० 'तरकश'।

तरकसी*–स्त्री० छोटा तरकश।

तरका–पु० उत्तराधिकारीको मिलनेवाली संपत्ति।

तरकारी–स्त्री० वह पौधा जिसके पत्ते, फूल, फल, कंद आदि पकाकर भोज्य वस्तुके साथ खानेके काम आते हैं, सब्जी, शाक।

तरकी–स्त्री० फूलकी तरहका कानका एक गहना।

तरकीब–स्त्री० [अ०] मिलावट; उपाय; ढंग, तरीका।

तरकुला–पु०, **तरकुली***–स्त्री० कानका एक गहना, तरकी।

तरक्की–स्त्री० [अ०] उन्नति, बढ़ती; पद-वृद्धि।

तरखा†–पु० पानीका तेज बहाव।

तरखान–पु० बढ़ई।

तरछाना–*अ० क्रि० आँखसे इशारा करना; † मैलका नीचे बैठ जाना।

तरज–पु० दे० 'तर्ज़'।

तरजना–अ० क्रि० डाँटकर बोलना; घुड़कना।

तरजनी–स्त्री० अँगूठेके पासकी उँगली, तर्जनी;*भय, डर।

तरजीला*–वि० क्रोधयुक्त; उग्र।

तरजीह–स्त्री० [अ०] प्रधानता; बढ़-चढ़कर होना, महत्त्वमें अधिक होना।

तरज़ुमा–पु० [अ०] अनुवाद, उल्था।

तरजौंहाँ*–वि० क्रुद्ध; उग्र।

तरण–पु० [सं०] नदी आदि पार करनेकी क्रिया, तरना।

तरणि–पु० [सं०] सूर्य; किरण। स्त्री० छोटी नौका।

-जा, -तनया, -तनूजा, -सुता-स्त्री० यमुना । **-तनय, -सुत**-पु० यम, शनि, कर्ण, सुग्रीव आदि ।

तरणी-स्त्री० [सं०] बेड़ा, नौका; घीकुआर ।

तरतराता-वि० (पकवान) जिससे घी चूता हो ।

तरतराना*-अ० क्रि० दे० 'तड़तड़ाना' ।

तरतीब-स्त्री० [अ०] क्रम, सिलसिला ।

तरदीद-स्त्री० [अ०] रद करना, खंडन ।

तरद्दुद--पु० [अ०] झंझट; परेशानी; चिंता, फिक्र, अंदेशा ।

तरन*-पु० दे० 'तरण'; तरौना । **-तारन**-पु० उद्धार करनेवाला; उद्धार ।

तरना-अ० क्रि० पार होना; तैरना; भवबंधनसे छुटकारा पाना । स० क्रि० पार करना; * दे० 'तलना' ।

तरनि*-पु० दे० 'तरणि' । स्त्री० दे० 'तरणी' । **-जा, -तनूजा**-स्त्री० दे० 'तरणिजा' ।

तरन्नि*-पु०, स्त्री० दे० 'तरणि' ।

तरप*-स्त्री० दे० 'तड़प' ।

तरपत*-पु० सुभीता ।

तरपन*-पु० दे० 'तर्पण' ।

तरपना*-अ० क्रि० दे० 'तड़पना' ।

तरपर-अ० नीचे-ऊपर ।

तरपरिया†-वि० नीचे-ऊपरका; क्रममें पहले और पीछेका ।

तरपीला*-वि० तड़पदार, चमकीला ।

तरफ़-स्त्री० [अ०] ओर; बगल । **-दार**-वि० पक्षपाती, सहायक । **-दारी**-स्त्री० पक्षपात ।

तरफराना*-अ० क्रि० दे० 'तड़फड़ाना' ।

तरबूज-पु० [फ़ा०] बलुई जमीनपर फैलनेवाली एक बेलका फल जो गोल आकारका होता है ।

तरबूजा*-पु० ताजा फल ।

तरबूजिया-वि० तरबूजेके रंगका, गहरा हरा ।

तरबोना*-स० क्रि० तराबोर करना, भिगोना । अ० क्रि० तराबोर होना ।

तरभर*-स्त्री० 'तड़ातड़'की आवाज; खलबली-'बजी बँदूखैं तरभर माची'-छत्र० ।

तरमीम-स्त्री० [अ०] दुरुस्ती, संशोधन, हेर-फेर ।

तरराना*-स० क्रि० ऐंठना ।

तरल-वि० [सं०] द्रव; हिलता-डुलता; चपल; तीव्रगामी; क्षणभंगुर; अस्थिर; चमकीला ।

तरलाई-स्त्री० तरलता, द्रवत्व ।

तरलायित-वि० [सं०] कँपाया या हिलाया हुआ ।

तरलित-वि० [सं०] हिलता हुआ, अस्थिर; प्रवाहशील ।

तरवन-पु० कानका एक आभूषण, तरकी ।

तरवर*-पु० उत्तम वृक्ष ।

तरवरिया*-पु० तलवार चलानेवाला ।

तरवरिहा†-पु० दे० 'तरवरिया' ।

तरवार*-स्त्री० दे० 'तलवार' ।

तरवारि-स्त्री० [सं०] तलवार ।

तरस-पु० दया, रहम ।

तरसना-अ० क्रि० किसी वस्तुको पानेके लिए बेचैन रहना । * स० क्रि० तराशना, काटना ।

तरसाना-स० क्रि० किसी वस्तुके लिए किसीको व्याकुल करना या ललचाना ।

तरसौंहाँ*-वि० तरसनेवाला ।

तरह-स्त्री० [अ०] प्रकार, भाँति, ढंग; बनावट; स्थिति । **-दार**-वि० अच्छे ढंग या तर्जका; सजीला । **मु०-देना**-बचा जाना; जान-बूझकर उपेक्षा करना ।

तरहटी-स्त्री० दे० 'तलहटी' ।

तरहर, तरहारि, तरहुँड़*-अ० नीचे, तले ।

तरहेल*-वि० पराजित, परास्त; वशीभूत ।

तराई-स्त्री० पहाड़के आस-पासकी निम्न भूमि जहाँ सदा तरी बनी रहती है; * तारा ।

तराजू-पु० तौलनेका एक यंत्र जिसमें डाँड़ीके दोनों सिरोंसे तन्नियों द्वारा दो पलड़े बँधे रहते हैं ।

तराटक*-पु० दे० 'त्राटक' ।

तराना-पु० [फ़ा०] एक प्रकारका गाना ।

तराप*-स्त्री० तोपकी आवाज ।

तरापा*-पु० हाहाकार ।

तराबोर-वि० सराबोर, तर-बतर ।

तराभर*-स्त्री० 'तड़ातड़'की आवाज; तेजीसे कोई काम करना ।

तरायला*-वि० चंचल; तेज ।

तरारा-पु० लगातार गिरनेवाली जलकी धारा; छलाँग ।

तरावट-स्त्री० तरी; शरीरमें ठंढक लानेवाली चीजें ।

तराश-स्त्री० [फ़ा०] तराशनेकी क्रिया; काट, बनावट; तर्ज । **-ख़राश**-स्त्री०-तर्ज-बनावट, काट-छाँट ।

तराशना-स० क्रि० काटना, फाँक-फाँक करना ।

तरास*-पु० दे० 'त्रास' ।

तरासना*-स० क्रि० त्रस्त करना ।

तराही*-अ० नीचे ।

तरिणी-स्त्री० [सं०] दे० तरणी' ।

तरिता*-स्त्री० दे० 'तडित्' ।

तरियाना†-स० क्रि० नीचे करना; ढाँकना । अ० क्रि० तले बैठना, नीचे जमना ।

तरिवन-पु० कर्णफूल, तरकी ।

तरिवर*-पु० दे० 'तरुवर' ।

तरिहँत*-अ० नीचे ।

तरी-स्त्री० तरावट; गीलापन; कछार; तराई; * तरकी; जूतेका तला; जूती; [सं०] नौका; गदा; धुआँ ।

तरीक़ा-पु० [अ०] रीति, ढंग; उपाय ।

तरु-पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ । **-कोटर**-पु० वृक्षका खोखला भाग । **-बाहीं***-स्त्री० शाखा, डाल । **-मृग**-पु० बंदर । **-वर**-पु० उत्तम वृक्ष ।

तरुण-वि० [सं०] सोलह वर्षसे ऊपरकी अवस्थावाला, युवा; चढ़ती जवानीवाला; जो पूर्ण विकासको न प्राप्त हुआ हो । पु० युवा पुरुष । **-ज्वर**-पु० वह ज्वर जो एक सप्ताहसे कमका हो ।

तरुणाई-स्त्री० युवावस्था ।

तरुणिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] तारुण्य, जवानी ।

तरुणी-स्त्री० [सं०] युवती; दंती वृक्ष; एक पुष्प ।

तरुन*-वि० दे० 'तरुण' ।

तरुन(ना)ई–स्त्री०, **तरुनापन, तरुनापा***–पु० तारुण्य।

तरँदा–पु० पानीमें उतरानेवाली वह वस्तु जिसके सहारे पार हुआ जा सके।

तरे†–अ० नीचे, तले।

तरेट–पु० पेड़।

तरेटी–स्त्री० तलहटी; पहाड़के नीचेकी भूमि।

तरेरना*–स० क्रि० तिरछे देखना; बरजने या डाँटबतानेके लिए (नेत्र) तिरछे कर देखना।

तरैया*–पु० तरनेवाला; तारनेवाला। स्त्री० तारा।

तरोई–स्त्री० दे० 'तुरई'।

तरोवर*–पु० दे० 'तरुवर'।

तरौंछ–स्त्री० तलछट।

तरौंटा–पु० चक्कीका नीचेवाला पत्थर।

तरौंस–पु० तट, किनारा।

तरौना–पु० कानका एक गहना, तरकी, ताटंक।

तर्क–पु० [सं०] ऊहा, जिसके द्वारा कारणका उपपादन करते हुए किसी वस्तुके अज्ञात तत्त्वको जाना जाय; न्यायशास्त्र; युक्ति, दलील; विवेचन; इच्छा। **–वितर्क**–पु० ऊहापोह। **–विद्या**–स्त्री० न्यायशास्त्र। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें तर्कके नियम, सिद्धांत आदि निरूपित हों। गौतम और कणाद इसके प्रधान आचार्य माने जाते हैं।

तर्कक–पु० [सं०] तर्क करनेवाला, तर्कशास्त्री; वादी; पूछताछ करनेवाला।

तर्कण–पु०, **तर्कणा**–स्त्री० [सं०] तर्क करनेकी क्रिया, विचार।

तर्कना–स्त्री० विचार; युक्ति। * अ० क्रि० तर्क करना।

तर्कश–पु० दे० 'तरकश'।

तर्कसी–स्त्री० दे० 'तरकसी'।

तर्काभास–पु० [सं०] गलत तर्क, गलत परिणाम निकालना; ऐसा तर्क जो ऊपरसे सही जान पड़े, पर दरअसल गलत हो, हेत्वाभास।

तर्की (र्किन्)–पु० [सं०] तर्क करनेवाला; मीमांसक।

तर्क्य–वि० [सं०] विचारणीय, चिंतनीय।

तर्ज़–पु० [अ०] रीति, शैली, ढंग; बनावट।

तर्जन–पु० [सं०] धमकाना; डाँटना; डराना; क्रोध।

तर्जना–स्त्री०[सं०] दे० तर्जन। * स० क्रि० डाँटना, डपटना। * अ० क्रि० क्रोधमें तड़पना।

तर्जनी–स्त्री०[सं०] अँगूठेके पासकी उँगली। **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक उपासनामें हाथकी एक मुद्रा।

तर्जित–वि० [सं०] अपमानित; जो फटकारा गया हो।

तर्ज़ुमा–पु० [अ०] दे० 'तरज़ुमा'।

तर्पण–पु० [सं०] तृप्त करनेकी क्रिया; देवताओं, ऋषियों और पितरोंको तिल या तंडुलमिश्रित जल देनेकी क्रिया।

तर्पित–वि० [सं०] तृप्त किया हुआ।

तर्योना*–पु० दे० 'तरौना'।

तल–पु० [सं०] निचला भाग; वह भाग जिसके बल कोई वस्तु स्थित हो; पेंदा, पेटा; सतह; (सरफेस) किसी वस्तुका ऊपरी पृष्ठ जिसमें लंबाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो; जंगल; घरकी छत; थप्पड़; हथेली; तलवा; तलवार आदिकी मूठ; गड्ढा, माँद; सात पातालोंमेंसे पहला; तालाब। **–कर**–पु० तालाब आदिपर लगनेवाला कर। **–घरा**–पु० [हिं०] तहखाना। **–छट**–स्त्री० [हिं०] पानी आदि द्रव पदार्थोंमें नीचे बैठनेवाला मैल। **–त्राण**–पु० युद्धमें हथेलीकी रक्षाके लिए पहना जानेवाला चमड़ेका दस्ता। **–मल**–पु० दे० 'तलछट'।

तलक*– अ० तक।

तलना–स० क्रि० घी या तेलमें पकाना।

तलप*–पु० दे० 'तल्प'।

तलपना*–अ० क्रि० दे० 'तलफना'।

तलफ़–वि० [अ०] नष्ट, बरबाद, तबाह। * स्त्री० कष्ट।

तलफना–अ० क्रि० पीड़ासे व्याकुल होना, छटपटाना।

तलब–स्त्री०[अ०] माँग; इच्छा; आवश्यकता; चाह; बुलावा; वेतन। **–गार**–वि० माँगने या चाहनेवाला। **–दार**–वि० दे० 'तलबगार'। **–नामा**–पु० समन, अदालतमें हाजिर होनेकी लिखित आज्ञा। **मु०–करना**–बुलाना।

तलबाना–पु० [फ़ा०] अदालतमें जमा किया जानेवाला गवाहोंको तलब करनेका खर्च; समयपर मालगुजारी जमा न करनेपर लगनेवाला दंड, तावान।

तलबी–स्त्री० [फ़ा०] बुलाहट; माँग।

तलबेली*–स्त्री० बेचैनी; तीव्र लालसा।

तलमलाना†–अ० क्रि० दे० 'तिलमिलाना'।

तलवा–पु० खड़े होने या चलनेमें पृथ्वीपर पड़नेवाला पैरका नीचेका भाग। **मु० तलवे चाटना**–बहुत अधिक खुशामद करना। **–सहलाना**–खुशामद करना। **तलवोंसे आग लगना**–बहुत अधिक क्रोध चढ़ना।

तलवार–स्त्री० एक प्रसिद्ध हथियार, खड्ग। **–का खेत**–लड़ाईका मैदान। **–की आँच**–तलवारके वारका मुकाबला। **मु०–के घाट उतारना**–तलवारसे मार डालना। **–खींच लेना**–लड़नेके लिए म्यानसे तलवार बाहर निकाल लेना।

तलहटी–स्त्री० पहाड़के नीचेकी भूमि।

तला–पु० पेंदा।

तलाई–स्त्री० छोटा ताल।

तलाक़–पु० [अ०] वैधानिक रीतिसे विवाह-संबंधका विच्छेद।

तलातल–पु० [सं०] सात अधोलोकोंमेंसे एक।

तलाबेली–स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलामली*–स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलाव*–पु० तालाब।

तलाश–स्त्री० [तु०] खोज; चाह।

तलाशना†–स० क्रि० खोजना, ढूँढ़ना।

तलाशी–स्त्री०[फ़ा०] छिपायी या गुम की हुई वस्तुको ऐसी जगह खोजनेकी क्रिया जहाँ उसके छिपाकर रखे होनेका संदेह हो। **मु०–देना**–तलाशी लेनेवालेको घर-बार आदि ढूँढ़ने देना। **–लेना**–जिसपर किसी वस्तुके गुम करने या छिपानेका संदेह हो उसके घर-बार आदिमें उसकी खोज करना।

तलित–वि० [सं०] तेल या घीमें भूना हुआ; पेंदेवाला

तली–स्त्री० पेंदी; तलछट; हथेली; तलवा।

तले–अ० नीचे। **–ऊपर**–एकके ऊपर दूसरा

तलेटी–स्त्री० पेंदी; तलहटी।

तलैया–स्त्री० छोटा ताल ।

तलौंछ–स्त्री० दे० 'तलछट' ।

तल्प–पु० [सं०] शय्या, सेज, पलंग; अटारी; (ला०) पत्नी । **–कीट**–पु० खटमल ।

तल्पक–पु० [सं०] पलंग बिछानेवाला नौकर ।

तल्ला–पु० जूतेका वह भाग जो पैरके नीचे रहता है; (मकानकी) मंजिल; * सामीप्य ।

तल्लीन–वि० [सं०] उसमें मग्न, लगा हुआ ।

तव–सर्व० [सं०] तुम्हारा ।

तवज्जुह–स्त्री० [अ०] किसीकी ओर रुख करना, ध्यान देना ।

तवना–अ० क्रि० दे० 'तयना' ।

तवनी–स्त्री० छोटा तवा ।

तवा–पु० रोटी सेंकनेका एक गोल छिछला पात्र; चिलमपर रखकर तंबाकू पीनेका गोल ठीकरा । **तवेकी बूँद**–आवश्यकतासे बहुत कम; क्षणस्थायी । **मु०–सिरसे बाँधना**–सिरपर चोट सहनेके लिए प्रस्तुत होना ।

तवाज़ा–स्त्री० [अ०] आदर, सम्मान; दावत ।

तवाना–स० क्रि० गरम कराना । वि० [फा०] मोटा-ताजा ।

तवायफ़–स्त्री० [अ०] रंडी, वेश्या ।

तवारा*–पु० जलन, ताप ।

तवारीख़–स्त्री० [अ०] इतिहास ।

तवालत–स्त्री० [अ०] लंबाई; विस्तार; अधिकता; झमेला ।

तवी†–स्त्री० छोटा तवा । दे० 'तई' ।

तशख़ीस–स्त्री० [अ०] निश्चय; रोगका निदान; लगान निर्धारित करनेकी क्रिया ।

तशरीफ़–स्त्री० [अ०] इज्जत करना; आदर, सम्मान; बुजुर्गी । **मु०–रखना**–विराजना, आसनस्थ होना । **–लाना**–पधारना । **–ले जाना**–चला जाना ।

तश्त–पु० [फा०] थाली, परात जैसा छिछला बरतन ।

तश्तरी–स्त्री० [फा०] छोटी रकाबी ।

तष्टा(ष्टृ)–पु० [सं०] बढ़ई, रथकार; विश्वकर्मा ।

तष्टी– स्त्री० एक तरहकी रकाबी ।

तस*–वि० वैसा । अ० वैसे ही ।

तसकीन–स्त्री० [अ०] सांत्वना, तसल्ली ।

तसदीक़–स्त्री० [अ०] प्रमाणित करना, पुष्टि, समर्थन ।

तसदीह*–स्त्री० पीड़ा, कष्ट ।

तसद्दुक़–पु० [अ०] कुर्बानी; भक्ति; दान, खैरात ।

तसबी–स्त्री० दे० 'तसबीह' ।

तसबीह–स्त्री० [अ०] माला, सुमिरनी ।

तसमा–पु० चमड़े या सूतकी चौड़ी पट्टी जो किसी वस्तुको कसनेके काम आती है ।

तसला–पु० कटोरेकी शकलका कुछ बड़ा और गहरा बरतन ।

तसली–स्त्री० छोटा तसला ।

तसलीम–स्त्री० [अ०] अभिवादन; अंगीकार करनेकी क्रिया ।

तसल्ली–स्त्री० [अ०] ढाढ़स, दिलासा, सांत्वना ।

तसवीर–स्त्री० [अ०] चित्र ।

तस्कर–पु० [सं०] चोर । **–वृत्ति**–पु० पाकेटमार; चोर ।

तहँ, तहँवा*–अ० वहाँ ।

तह–स्त्री० [फा०] परत; दे० 'तल' । **–ख़ाना**–पु० जमीनके नीचे बना हुआ कमरा या घर । **–ज़र्द, –दर्ज़**–वि० बिलकुल नया (कपड़ा आदि), जिसकी तह न खुली हो । **–पेच**–पु० पगड़ीके नीचेका कपड़ा । **–बंद**–पु० लुंगी जो प्रायः मुसलमान पहनते हैं । **–बाज़ारी**–स्त्री० वह बँधी हुई रकम जो जमींदार या ठेकेदार बाजारमें सौदा बेचनेवालोंसे वसूल करता है । **–मत**–पु० लुंगी । **तहेदिलसे**–सच्चे दिलसे ।

तहक़ीक़ात–स्त्री० [अ०] किसी मामले या घटनाके विषयमें सरकारकी ओरसे होनेवाली जाँच-पड़ताल ।

तहज़ीब–स्त्री० [अ०] सभ्यता, शिष्टता ।

तहना*–अ० क्रि० तपना; क्रुद्ध होना ।

तहरी–पु० [अ०] एक प्रकारकी खिचड़ी ।

तहरीक–स्त्री० [अ०] गति; उत्तेजन; उसकाना, बढ़ावा देना ।

तहरीर–स्त्री० [अ०] लिखावट, लिखाई, लिखनेका ढंग; लिखित प्रमाण; लिखनेकी उजरत ।

तहरीरी–वि० [अ०] लिपिबद्ध ।

तहलका–पु० [अ०] खलबली, हलचल ।

तहवील–स्त्री० [अ०] अमानत; किसी मदका रुपया जो किसीके पास जमा हो । **–दार**–पु० वह जिसके पास किसी मदका रुपया जमा रहता हो ।

तहसनहस–वि० बरबाद, सर्वथा नष्ट ।

तहसील–स्त्री० [अ०] वसूल करनेकी क्रिया; मालगुजारी वसूल करना; मालगुजारी जो किसी विशेष प्रदेशसे उगाही जाती है; जिलेका वह भाग जो तहसीलदारके अधीन रहता है; तहसीलदारकी कचहरी । **–दार**–पु० सरकारी मालगुजारी वसूल करनेवाला, मालके मुकदमेका एक अफसर; मालगुजारी वसूल करनेवाला । **–दारी**–स्त्री० तहसीलदारका पद; तहसीलदारका काम ।

तहसीलना–स० क्रि० मालगुजारी आदि वसूल करना ।

तहाँ–अ० वहाँ ।

तहाना–स० क्रि० तह लगाना, लपेटना ।

तहिया*–अ० उस दिन, उस समय ।

तहियाना†–स० क्रि० तह करना ।

ताँईं*–अ० तक; वास्ते, निमित्त; के प्रति; पास ।

तांगा–पु० पीछेकी ओर लटकी हुई एक गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है ।

तांडव–पु० [सं०] पुरुषोंका नृत्य; शिवका प्रसिद्ध नृत्य । **–प्रिय**–पु० शिव ।

तांत–स्त्री० भेड़-बकरी आदिके चमड़े या नसोंको बटकर बनायी हुई धागे जैसी वस्तु, तंत्री; धनुषकी डोरी ।

ताँता–पु० अटूट पाँत; कतार । **मु०–लगना**–तार न टूटना, एकके बाद एक इस तरह आना कि पंक्ति भंग न हो ।

ताँतिया–वि० ताँत जैसा दुबला-पतला ।

तांत्रिक–पु० [सं०] तंत्रशास्त्रका ज्ञाता, तंत्रका प्रयोग करनेवाला । वि० तंत्र-संबंधी ।

ताँबा–पु० लाल रंगकी एक प्रसिद्ध धातु ।

तांबूल–पु० [सं०] पान; पानका बीड़ा । **–वल्ली**–स्त्री० पानकी बेल, नागवल्ली । **–वाहक**–पु० पान खिलानेवाला और साथ-साथ पान लेकर चलनेवाला ।

तांबूलिक–पु० [सं०] पान बेचनेवाला, तमोली ।

तांबूली(लिन्)-पु० [सं०] पान बनाकर देनेवाला; पान बेचनेवाला।

ताँवरा-पु० दे० 'ताँवरी'।

ताँवरी*-स्त्री० झाँई, चक्कर, मूर्च्छा; जूड़ी; ज्वर।

ताँसना*-स० क्रि० धमकाना; डराना; डाँटना; तंग करना।

ता-प्र० [सं०] एक भाववाचक प्रत्यय। अ० [फा०] तक; * तो। * सर्व०, वि० उस।

ताइँ*-अ० तक, पर्यंत।

ताई-स्त्री० जेठी चाची; हलका ज्वर; जलेबी आदि बनाने की छिछली कड़ाही।

ताईद-स्त्री० [अ०] समर्थन, पुष्टि। पु० मुंशी, नायब।

ताउ*-पु० ताप, ताव; क्रोध; आवेश।

ताऊ-पु० पिताका बड़ा भाई(**बछियाके ताऊ**-महामूर्ख)।

ताऊन-पु० [अ०] प्लेग।

ताऊस-पु० [अ०] मोर; सितार जैसा एक बाजा जिसपर मोरकी शकल बनी होती है।

ताक-स्त्री० ताकनेकी क्रिया; अचल दृष्टि; घात; खोज, टोह। **-झाँक**-स्त्री० किसीकी प्रतीक्षा या खोजमें रह-रहकर ताकने या झाँकनेकी क्रिया। **मु०-में रहना**-मौका देखते रहना। **-लगाना**-घातमें रहना।

ताक़-पु० [अ०] ताखा, आला। **मु०-पर धरना,-पर रखना**-काममें न लाना।

ताक़त-स्त्री० [अ०] बल, शक्ति। **-वर**-वि० बलवान्।

ताकना-स० क्रि० देखना; स्थिर दृष्टिसे देखना; नजर रखना; चाहना; निश्चय करना; ताड़ लेना।

ताकि-अ० [फा०] इसलिए कि, जिसमें, जिससे।

ताकीद-स्त्री० [अ०] किसी कार्यके लिए बार-बार चेतानेकी क्रिया।

ताखा, ताखा-पु० आला, ताक़।

ताग-स्त्री० तागनेकी क्रिया। * पु० तागा। **-पाट**-पु० रेशमका एक विशेष धागा जिसे विवाहके समय वरका बड़ा भाई वधूको पहनाता है।

तागड़ी-स्त्री० करधनी, क्षुद्रघंटिका।

तागना-स० क्रि० रजाई आदिमें दूर-दूरपर सिलाई करना।

तागा-पु० सूत, डोरा।

ताज-पु० [फा०] राजाका मुकुट; कलगी; शिखा; चाबुक; ताजमहलका संक्षिप्त नाम। **-पोशी**-स्त्री० राज्याभिषेक; सिंहासनारूढ होने या ताज धारण करनेके समयका उत्सव।

ताज़गी-स्त्री० [फा०] ताजा होनेका भाव; नयापन; सूखापन या कुम्हलाहटका अभाव; श्रांति या शैथिल्यका उलटा।

ताजन, ताजना*-पु० दे० 'ताजियाना'; उत्तेजन देनेवाली वस्तु; दंड।

ताज़ा-वि० [फा०] हरा-भरा; जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो; पौधे या पेड़से तत्कालका तोड़ा हुआ (पुष्प, फलादि); तुरतका तैयार किया हुआ; तुरतका निकाला हुआ; जो अधिक दिनोंका या बासी न हो।

ताज़िया-पु० [अ०] बाँसकी तिल्लियों, रंगीन कागजों आदिका बना हुआ वह ढाँचा जो इमाम हसन और इमाम हुसेनके मकबरोंकी आकृतिका बनाया जाता और नियत स्थानपर दफनाया जाता है।

ताज़ियाना-पु० [फा०] चाबुक, कोड़ा।

ताज़ी-वि० [फा०] अरबी, अरबका। पु० अरबी घोड़ा; शिकारी कुत्ता। स्त्री० अरबी भाषा।

ताज़ीम-स्त्री० [अ०] दूसरेको बड़ा समझना; बड़ोंके प्रति आदर-भाव प्रदर्शित करना।

ताज़ीमी सरदार-पु० [फा०] वह सरदार जिसकी ताजीम बादशाह भी करे।

ताज़ीर-स्त्री० [अ०] दंड, सजा।

ताज़ीरात-स्त्री० [अ०] 'ताजीर'का बहु०। **-हिंद**-स्त्री० भारतमें प्रयोगमें आनेवाले फौजदारी कानूनोंका संग्रह, भारतीय दंडविधान।

ताज़ीरी-वि० [अ०] दंडात्मक; दंडरूपमें तैनात या लगाया हुआ (-पुलिस, कर आदि)।

ताज्जुब-पु० दे० 'तअज्जुब'।

ताटंक-पु० [सं०] कानका एक आभूषण; एक छंद।

ताटस्थ्य-पु० [सं०] तटस्थता, निरपेक्षता, उदासीनता।

ताड़-पु० एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं।

ताडका-स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे रामने मारा था।

ताडकेय-पु० [सं०] ताड़काका पुत्र, मारीच।

ताडन-पु० [सं०] आघात; मार; फटकार; अनुशासन।

ताडना-स्त्री० [सं०] मार; आघात; मारने-पीटनेकी क्रिया; डाँट-डपट।

ताड़ना-स० क्रि० भाँपना; जान लेना, समझ लेना; मारना; सजा देना; कष्ट देना; दुर्वचन कहना।

ताडनीय-वि० [सं०] दंडनीय।

ताडित-वि० [सं०] जिसपर मार पड़ी हो; जिसे दंड दिया गया हो।

ताड़ी-स्त्री० ताड़के वृक्षसे निकलनेवाला सफेद मादक रस; ध्यान, समाधि, तारी।

तात-पु० [सं०] पिता; आदरणीय व्यक्ति; एक संबोधन जो बराबरके लोगों या अपनेसे छोटोंके लिए प्रयुक्त होता है। * वि० तप्त, गरम।

ताता*-वि० तप्त, गरम।

ताताथेई-स्त्री० नृत्यका एक बोल।

तातार-पु० [फा०] मध्य एशियाका एक देश।

तातील-स्त्री० [अ०] अवकाश, छुट्टी।

तात्कालिक-वि० [सं०] तत्कालका, उसी या उस समयका।

तात्त्विक-वि० [सं०] तत्त्व-संबंधी; जिसमें तत्त्वपर विशेष ध्यान दिया गया हो; वास्तविक।

तात्पर्य-पु० [सं०] आशय, अभिप्राय, मंशा।

तात्पर्यार्थ-पु० [सं०] वाक्यार्थसे भिन्न अर्थ जो वाक्य-विशेषमें वक्ताका अभिप्राय समझा जाय।

ताथेई-स्त्री० दे० 'ताताथेई'।

तादर्थ्य-पु० [सं०] उद्देश्यकी एकरूपता; अर्थकी समानता; उद्देश्य।

तादात्म्य-पु० [सं०] अभिन्नता, दो वस्तुओंके परस्पर अभिन्न होनेका भाव **-संबंध**-पु० अभेद संबंध।

तादाद-स्त्री० [अ०] संख्या।

तादृश-वि० [सं०] वैसा, उसके समान।

तान–स्त्री० संगीतमें स्वरका विस्तार; ताननेकी क्रिया या भाव; खिंचाव। पु० [सं०] सूत्र; विस्तार; ज्ञानका विषय। **–तरंग**–स्त्री० [हिं०] तानकी लहर।

तानना–स० क्रि० खींचकर कड़ा करना; फैलाना; खड़ा करना; समेटी हुई चीजको फैलाकर व्यवहारयोग्य स्थितिमें लाना; खींचकर कुछ अंतरपर स्थित दो आधारोंमें फँसाना; किसीको लक्ष्य करके मारनेके लिए अस्त्र आदि उठाना।

तानपूरा–पु० सितारके आकारका एक बाजा।

तानबान*–पु० ताना-बाना।

ताना–पु० करघेमें लंबाईके बल फैलाया हुआ सूत; [अ०] व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात। * स० क्रि० तपाना; परीक्षाके लिए तपाना; ढाँकना। **–पाई**–स्त्री० व्यर्थ आते-जाते रहना। **–बाना**–पु० लंबाई और चौड़ाईके बलका सूत। **मु०–मारना**–चुटीली बात कहना।

तानारीरी–स्त्री० नौसिखियेका गाना।

तानाशाह–पु० अनियंत्रित शासक, निरंकुश अधिकारी।

तानाशाही–स्त्री० अधिनायकत्व; स्वेच्छाचारिता।

तानी†–स्त्री० बुनावटमें लंबाईके बल रखा हुआ सूत; *बंद।

ताप–पु० [सं०] (हीट) आग या बिजली आदिसे उत्पन्न वह शक्ति जिससे वस्तुएँ गरम हो जाती हैं और मात्रा अधिक होनेपर पिघलने या वाष्पके रूपमें परिणत होने लगती हैं, उष्णता, गरमी; ज्वर; दुःख; मानसिक व्यथा, :आधि। **–क्रम**–पु० (टेंपरेचर) शरीर या वायुमंडलकी उष्णताका उतार-चढ़ाव।**–तरंग**–स्त्री० (हीटवेव्ह) अत्यंत गरम हवाकी लहर जो कुछ स्थानोंसे अन्य स्थानोंकी ओर प्रवाहित होती जान पड़े। **–तिल्ली**–स्त्री० [हिं०] प्लीहा। **–त्रय**–पु० आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक दुःख। **–द**–वि० कष्टकारक। **–नियंत्रण**–पु० (एयर कंडीशनिंग) कमरे आदिके भीतरकी हवाको कृत्रिम रूपसे समशीतोष्ण बनाये रखनेकी क्रिया। **–नियंत्रित**–वि० (एयर कंडीशंड) जिसके भीतरका तापमान कृत्रिम उपायों द्वारा समस्थितिमें रखा गया हो।**–मान**–पु० थरमामीटर द्वारा मापी गयी शरीर या वायुमंडलके तापका मात्रा। **–मान-यंत्र**–पु० थरमामीटर। **–विकिरण**–पु० (रैडियेशन) तापलहरियोंका किसी एक केंद्रसे चारों दिशाओंमें प्रसारित या विकिरित किया जाना। **–हर**–वि० तापनाशक।

तापक–पु० [सं०] (हीटर) (कमरे आदिमें) गरमी पहुँचाने या उत्पन्न करनेका यंत्र।

तापती–स्त्री० [सं०] सूर्यकी कन्या; एक नदी।

तापन–पु० [सं०] सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; कामदेवका एक बाण; सूर्यकांत मणि; मदार। वि० तापकारक; कष्टदायक।

तापना–अ० क्रि० आँच या तापसे शरीर गरमाना। स० क्रि० नष्ट करना, उड़ाना; * तपाना।

तापस–पु० [सं०] तपस्वी; बगला; तेजपात। वि० तपस्या या तपस्वी-संबंधी; तपस्वी।

तापित–वि० [सं०] तपाया हुआ; पीडित!

तापी–स्त्री० [सं०] ताप्ती नदी; यमुना नदी। **–ज**–पु० माक्षिक धातु।

तापी (पिन्)–वि० [सं०] तप्त करनेवाला; गरम।

ताफ़्ता–पु० [फा०] धूपछाँह रेशमी कपड़ा।

ताब–स्त्री० [फा०] ताप; हिम्मत; सामर्थ्य; मजाल; धैर्य।

ताबड़तोड़–अ० लगातार।

ताबूत–पु० [अ०] मुरदा ले जानेका संदूक।

ताबे–वि० वशवर्ती, अधीन। **–दार**–वि० आज्ञाकारी। पु० नौकर। **–दारी**–स्त्री० सेवा, नौकरी।

ताम–*पु० अँधेरा; क्रोध–'कंसको निर्वंश हैहै करत इनपर ताम'–सू०। [सं०] भयका कारण, भीषण वस्तु; त्रुटि; चिंता; उद्वेग; ग्लानि; इच्छा; क्लांति। वि० भयानक; व्याकुल।

तामजान,–झाम,–दान–पु० एक तरहकी खुली पालकी।

तामड़ा–वि० ताँबेके रंगका।

तामरस–पु० [सं०] कमल; सुवर्ण; ताँबा; धतूरा; एक छंद।

तामलेट, तामलोट–पु० टीनका वह पात्र जिसपर चीनी मिट्टी आदिकी कलई हो।

तामस–पु० [सं०] खल; सर्प; क्रोध; अज्ञान; अंधकार। वि० जिसमें तमोगुणकी प्रधानता हो, तमोगुणसे युक्त; ज्ञानहीन; कुटिल।

तामसी–स्त्री० [सं०] महाकाली; अँधेरी रात; मायाविद्या जो मेघनादको शिवसे मिली थी। वि०स्त्री० तमोगुणवाली।

तामिस्र–पु० [सं०] एक नरक; घृणा; द्वेष; क्रोध।

तामीर–स्त्री० [अ०] मकान बनाना या मरम्मत करना; मकान, इमारत।

तामील–स्त्री० [अ०] अमल करना; (हुक्म) बजा लाना; तलब किये गये व्यक्तिका समनपर हस्ताक्षर करना या अँगूठेका निशान लगाना।

तामोल*–पु० दे० 'तांबूल'।

ताम्र–पु० [सं०] ताँबा; एक प्रकारका कोढ़। वि० ताँबेका बना हुआ; ताँबेकी तरह लाल रंगका। **–कार,–कुट्ट**–पु० तमेरा, ताँबेके बरतन आदि बनाकर जीविकोपार्जन करनेवाला।**–चूड**–पु० मुर्गा; कुंकरौंधा।**–पट्ट,–पत्र**–पु० दानपत्र आदि खुदवानेका ताँबेका पत्तर; ताँबेकी चद्दर। **–पर्णी**–स्त्री० दक्षिण भारतकी एक नदी। **–पल्लव**–पु० अशोक वृक्ष।**–पात्र**–पु० ताँबेका बरतन। **–पुष्प**–पु० कचनार। **–मुख**–वि० जिसका मुख ताँबेके रंगका हो। पु० यूरोपीय।**–मूला**–स्त्री० छुईमुई। **–मृग**–पु० एक तरहका लाल हिरन।**–युग**–पु० इतिहासका वह आरंभिक काल जब लोग ताँबेके औजार, पात्र आदि काममें लाते थे।**–योग**–पु० एक रासायनिक औषध। **–लिप्त**–पु० बंगालका तामलूक नामक भूखंड। **–लेख**–पु० दे० ताम्रपत्र। **–वर्ण**–वि० ताँबेके रंगका, रक्तवर्ण। पु० सिंहल। **–वल्ली**–स्त्री० मजीठ। **–वृक्ष**–पु० कुलथी; लाल चंदनका वृक्ष।

तायँ*–अ० से; तक।

ताय*–पु० ताप; जलन; धूप। सर्व० उसको।

तायदाद†–स्त्री० दे० 'तादाद'।

तायना*–स० क्रि० तपाना; संताप पहुँचाना।

तायनि*–स्त्री० तपन, जलन; पीड़ा।

तायफा–स्त्री० [अ०] वेश्या; वेश्या और उसके समाजियोंकी मंडली।

ताया–पु० बापका बड़ा भाई, ताऊ।

तार–पु० [सं०] महादेव; विष्णु; चाँदी; पार करना; तारा; आँखकी पुतली; उच्च स्वर; सबसे ऊँचे स्वरमें गाया जानेवाला सप्तक। वि० उच्च; स्वच्छ; निर्मल। **–स्वर**–पु० उच्च स्वर।

तार–पु० तागेकी तरह गोल या चौकोर, कम मोटी, लोचदार वस्तु जो तपायी धातुओंको पीटकर या खींचकर बनायी जाती है; वह तार जिसके द्वारा बिजलीकी शक्तिसे समाचार भेजे जाते हैं; तार द्वारा भेजी हुई खबर; ताता, अनवरत क्रम; नाप; युक्ति; सुभीता; सूत्र; * ताल; तल; कानकी तरकी। **–कमाँजी**–स्त्री० नगीना काटनेका धनुष् जैसा एक औजार जिसमें तारकी डोर लगी रहती है। **–कश**–पु० तार खींचनेवाला। **–कशी**–स्त्री० तार खींचनेका काम। **–घर**–पु० तार भेजनेका सरकारी दफ्तर। **–घाट**–पु० व्यवस्था, उपाय। **–बर्क़ी**–स्त्री० वह तार जिसके द्वारा बिजलीकी शक्तिसे समाचार भेजे जाते हैं। **मु०–तार करना**–धज्जियाँ उड़ाना।

तारक–पु० [सं०] तारनेवाला; नक्षत्र; आँखकी पुतली; इंद्रका शत्रु एक दैत्य जिसे नपुंसकका रूप धारण कर विष्णुने मारा था; एक असुर जिसे कार्तिकेयने मारा था; (स्टार, ऐस्टरिस्क) छपाईमें तारे जैसा चिह्न (*)। **–चिह्न**–पु० (ऐस्टरिस्क) पादटिप्पणी या अभिनिर्देशके लिए अथवा महत्त्व प्रदर्शित करनेके लिए छापे या लिपिमें प्रयुक्त तारा जैसा चिह्न (*)।

तारका–स्त्री० [सं०] नक्षत्र; आँखकी पुतली; बृहस्पतिकी स्त्री; सिनेमाकी अभिनेत्री; (स्टार, ऐस्टरिस्क) दे० 'तारक-चिह्न'।

तारकासुर–पु० [सं०] तारक नामक असुर।

तारकित–वि० [सं०] तारोंसे खचित।

तारकोल–पु० अलकतरा।

तारण–पु० [सं०] तारने या उद्धार करनेकी क्रिया; तारनेवाला; नौका; पार करना। वि० उद्धार करनेवाला।

तारतम्य–पु० [सं०] तर और तमका भाव, न्यूनाधिक्य; न्यूनाधिक्यके अनुसार क्रम।

तारन–स्त्री० छत या छज्जेकी ढाल; कड़ियोंके नीचे रहनेवाला बाँस। *पु० दे० 'तारण'।

तारना–स० क्रि० पार करना; उद्धार करना; तैराना; ताड़ना।

तारपीन–पु० वारनिश, चित्रकारी और औषध आदिके काम आनेवाला चीड़के गोंदसे तैयार किया हुआ तेल।

तारल्य–पु० [सं०] तरलता; चंचलता; कामुकता।

तारांकित–वि० [सं०] (स्टार्ड) (वह शब्द, वाक्य, प्रश्न आदि) जिसके साथ सितारे (*) का चिह्न दिया गया हो। **–प्रश्न**–पु० विधानसभा आदिके अधिवेशनमें प्रश्नोत्तरके समय मौखिक उत्तर पानेकी दृष्टिसे पूछा गया प्रश्न।

तारा–पु० [सं०] रातको आकाशमें चमकनेवाला ज्योतिष्पिंड, नक्षत्र, सितारा; भाग्य; आँखकी पुतली; मोती। स्त्री० तंत्रोक्त दस महाविद्याओंमेंसे एक; बृहस्पतीकी पत्नी जिसे चंद्रमाने भी कुछ दिनोंतक रख लिया था; बालिकी पत्नी जिसने पतिकी मृत्युके बाद सुग्रीवसे विवाह किया था। **–कुमार**–पु० अंगद। **–नाथ, –पति**–पु० चंद्रमा; बृहस्पति; बालि; सुग्रीव। **–पथ**–पु० आकाश। **–मंडल**–पु० तारोंका समूह; एक कपड़ा। **मु० (तारे) गिनना**–रातभर जागते रहना। **–तोड़ लाना**–कोई कठिन काम कर दिखाना। **(तारों)की छाँह**–तड़के।

ताराधिप–पु० [सं०] चंद्रमा; शिव; बृहस्पति; बालि; सुग्रीव।

तारावली–स्त्री० [सं०] तारोंकी पंक्ति, तारोंका समूह।

तारिका–स्त्री० [सं०] ताड़ी; * दे० 'तारका'।

तारिणी–वि० स्त्री० [सं०] तारनेवाली, सद्गति देनेवाली।

तारित–वि० [सं०] पार कराया हुआ; जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी*–स्त्री० करतलध्वनि, ताली; कुंजी; समाधि, ध्यान; टकटकी; † ताड़ी।

तारीख़–स्त्री० [अ०] तिथि; मिति; वह तिथि जिसमें कोई ऐतिहासिक या महत्त्वपूर्ण घटना घटी हो; कार्यविशेषके लिए नियत किया हुआ दिन; इतिहास। **मु०–टलना**–नियत दिनका और आगे बढ़ जाना। **–पड़ना**–तारीख निश्चित होना।

तारीफ़–स्त्री० [अ०] परिचय; लक्षण, परिभाषा; प्रशंसा, बड़ाई; विशेषता।

तारु, तारू*–पु० दे० 'तालु'।

तारुण्य–पु० [सं०] जवानी, यौवन।

तारुण्यागम–पु० [सं०] (प्यूबर्टी) तरुणावस्थाका आगमन, यौवनारंभ, उस स्थितिका आरंभ जब स्त्री या पुरुषमें संतानोत्पत्तिकी क्षमताका आगमन हो जाता है।

तारेय–पु० [सं०] ताराका पुत्र–अंगद; बुध।

तारेश–पु० [सं०] चंद्रमा।

तार्किक–पु० [सं०] तर्कशास्त्रका ज्ञाता, तर्कवेत्ता, नैयायिक।

ताल–पु० [सं०] हाथका तल, हथेली; हाथपर हाथ मारनेसे उत्पन्न शब्द; संगीतमें नियत मात्राओंपर ताली बजाना; मँजीरा; ताड़का पेड़ या फल; जंघे या बाजूपर हथेलीसे ठोककर उत्पन्न किया हुआ शब्द; ताला या सिटकिनी; तालाब। **–पत्र**–पु० ताड़का पत्ता। **–मखाना**–पु० [हिं०] एक पौधा; मखाना। **–मेल**–पु० (संगीतमें) तालोंका मिलान। **–रस**–पु० ताड़ी।

तालक–पु०* दे० 'तअल्लुक़'।

तालव्य–वि० [सं०] तालु-संबंधी; तालुसे उच्चारित होनेवाला (वर्ण)।

ताला–पु० किवाड़, संदूक आदिको मजबूतीसे बंद रखनेका लोहे-पीतल आदिका एक यंत्र जो खास कुंजीसे बंद होता और खुलता है। **–बंदी**–स्त्री० (लॉक आउट) कर्मचारियोंपर दबाव डालनेके लिए मालिकोंका कारखानेके फाटकपर ताला लगाकर उन्हें बाहर रखनेका कार्य।

तालाब–पु० पोखरा, सरोवर।

तालाबेलिया, तालबेली*–स्त्री० व्याकुलता।

तालिका–स्त्री० [सं०] सूची; कुंजी; तालमूली; मजीठ।

तालिब–पु० [अ०] चाहनेवाला। **–इल्म**–पु० विद्यार्थी।

ताली–स्त्री० छोटा ताल, तलैया। [सं०] ताला बंद करने और खोलनेका एक विशेष प्रकारका औजार; ताड़ी; छोटा ताड़; हथेलियोंका परस्पर आघात; इससे उत्पन्न शब्द,

करतलध्वनि। **मु॰–पीटना**–उपहास करना।

तालीम–स्त्री॰ [अ॰] शिक्षा।

तालीशपत्र–पु॰ [सं॰] एक पहाड़ी वृक्ष; भुईंआँवला।

तालु–पु॰[सं॰] ऊपरके दाँतों और कौवेके बीचका गड्ढा।

तालू–पु॰ दे॰ 'तालु'; दिमाग। **मु॰–चटकना**–प्याससे मुँह सूखना; तेलकी कमीसे बच्चेके तालुका धँस-सा जाना। **–से जीभ न लगना**–चुप न रहना, बोलते जाना।

ताल्लुक़–पु॰ दे॰ 'तअल्लुक़'।

ताव–पु॰ किसी वस्तुको तपाने या पकानेके लिए पहुँचायी जानेवाली गरमी, ताप, आँच; आँच द्वारा पहुँचायी हुई गरमीका मान; अहंकारयुक्त रोपका आवेश; अहंकारकी झोंक; कागजका बड़ा, चौकोर, बिना कटा-फटा टुकड़ा। **मु॰–आना**–यथेच्छ गरमी पहुँचना। **–दिखाना**–ऐंठ या क्रोध प्रकट करना। **–देना**–तपाना। **–पर**–मौकेपर। **–बिगड़ना**–कम या अधिक गरम होना।

तावत्–अ॰ [सं॰] तब; उस अवधि या मात्रातक, तबतक।

तावना*–स॰ क्रि॰ तपाना, जलाना; संतप्त करना।

तावर*–स्त्री॰ दे॰ 'तावरी'।

तावरा*–पु॰ ताप, गरमी; घाम।

तावरी–स्त्री॰ ताप; ज्वर; धूप; मूर्च्छा, सिर चकराना।

तावान–पु॰ [फा॰] हरजाना; जुरमाना, दंड।

तावीज़–पु॰ [अ॰] कागज या भोजपत्रपर अंकित मंत्र या चक्र आदि जिसे सोने-चाँदी आदिके संपुटमें बंद कर गले, बाँह, कमर आदिमें धारण करते हैं; सोने-चाँदी आदिका विशेष आकारका एक आभूषण।

ताश–पु॰ खेलनेके कामका मोटे कागजका चौकोर टुकड़ा जिसपर पान, ईंट आदि रंगोंके छापे हों; ताशका खेल; दफ्तीका टुकड़ा जिसपर तागा लपेटा हो।

ताशा–पु॰ चमड़ेसे मढ़ा चौड़े मुँहका एक बाजा जो गलेमें लटकाकर लकड़ीसे बजाया जाता है।

तास*–पु॰ एक तरहका कपड़ा।

तासन, तासों*–सर्व॰ उससे।

तासीर–स्त्री॰ [अ॰] असर करना; प्रभाव, गुण, असर।

तासु*–सर्व॰ उसका।

तास्कर्य–पु॰ [सं॰] चोरी।

ताहम–अ॰ [फा॰] तथापि।

ताहि, ताही*–सर्व॰ उसे, उसको।

तिंतिडिका, तिंतिडी–स्त्री॰ [सं॰] इमली।

तिंतिलि(ली)का, तिंतिली–स्त्री॰ [सं॰] इमली।

तिंदुक, तिंदुल–पु॰ [सं॰] तेंदूका पेड़।

ति*–स्त्री॰ तिया। सर्व॰ वे, वह। वि॰ तीन (समासमें व्यवहृत)। **–कोन†**–वि॰ तिकोना। **–कोना**–वि॰ जिसमें तीन कोने हों, त्रिभुजाकार। पु॰ समोसा। **–कोनिया**–वि॰ दे॰ 'तिकोना'। **–खटी***–स्त्री॰ तिपाई; तीन पैरोंवाला काठका आसन। **–खूँटा**–वि॰ जिसमें तीन खूँट हों, तिकोना। **–गुना**–वि॰ तीन गुना, जो आकार या परिमाणमें दो बार और अधिक हो। **–तारा**–पु॰ तीन तारोंवाला एक बाजा। **–दरी**–स्त्री॰ तीन दरवाजोंवाला कमरा। **–पाई**–स्त्री॰ चौकी जैसा लकड़ीका तीन पायोंका एक आधार। **–पाट***–वि॰ तीन पाटोंका। **–बारा**–वि॰ तीसरी बार। पु॰ तीन बार उतारी हुई शराब; तीन द्वारोंवाला कमरा। **–माशी**–स्त्री॰ तीन माशेकी एक तौल। **–मुहानी**–स्त्री॰ तीन नदियों, सड़कों या गलियोंके एकमें मिलनेकी जगह। **–रंगा**–वि॰ तीन रंगोंवाला। **–राहा**–पु॰ तीन रास्तोंके मिलनेकी जगह। **–लड़ा**–वि॰ तीन लड़ोंका। **–लड़ी**–स्त्री॰ गलेमें पहननेकी तीन लड़ियोंकी एक माला। **–लोक***–पु॰ दे॰ 'त्रिलोक'। **–लोकपति**–पु॰ विष्णु। **–लोचन†**–पु॰ दे॰ 'त्रिलोचन'। **–वास***–पु॰ तीन दिन। **–वासा, वासी**–वि॰ तीन दिनोंका।

तिआ*–स्त्री॰ तिया, स्त्री।

तिआह†–वि॰ जिसका तीसरा विवाह होनेको हो। पु॰ मृत्युके ४५ वें दिन होनेवाला एक श्राद्ध।

तिउहार†–पु॰ दे॰ 'त्योहार'।

तिकड़म–पु॰ चतुराई, युक्ति।

तिकड़मी–वि॰ तिकड़म करनेवाला।

तिक्की–स्त्री॰ तीन बूटियोंवाला ताश या गंजीफेका पत्ता।

तिक्ख*–वि॰ तीक्ष्ण, तीखा; तेज, चालाक।

तिक्त–वि॰ [सं॰] तीता, जो स्वादमें नीम या गुड़चके समान हो; सुगंधयुक्त।

तिक्ष*–वि॰ तीक्ष्ण, तेज, तीखा।

तिक्षता*–स्त्री॰ तेजी।

तिखाई–स्त्री॰ तीक्ष्णता, तेजी।

तिच्छ*–वि॰ तीक्ष्ण।

तिच्छन*–वि॰ तीक्ष्ण।

तिजरा–पु॰ एक दिन नागा देकर आनेवाला ज्वर।

तिजहरिया, तिजहरी†–स्त्री॰ अपराह्ण, दिनका तीसरा पहर।

तिजारत–स्त्री॰ [अ॰] व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय।

तिजारी–स्त्री॰ दे॰ 'तिजरा'।

तिजिल–पु॰ [सं॰] चंद्रमा; राक्षस।

तिजोरी–स्त्री॰ लोहेकी आलमारी जिसमें रुपये, गहने आदि रखे जाते हैं।

तिड़ी–स्त्री॰ दे॰ 'तिक्की'। **–बिड़ी**–वि॰ अस्त-व्यस्त, छितराया हुआ। **मु॰–करना**–गायब करना।

तित*–अ॰ वहाँ, तहाँ; उधर।

तितना*–वि॰ उतना।

तितर-बितर–वि॰ इधर-उधर फैला हुआ, बिखरा हुआ, विकीर्ण; विघटित।

तितली–स्त्री॰ सुंदर पंखोंवाला एक प्रसिद्ध फतिंगा; एक घास; (ला॰) बहुत तड़क-भड़कसे रहनेवाली स्त्री।

तितलौआ–पु॰ कड़ुए स्वादका कद्दू।

तितलौकी–स्त्री॰ दे॰ 'तितलौआ'।

तितिंबा–पु॰ ढोंग, ढकोसला; परिशिष्ट।

तितिक्ष–वि॰ [सं॰] जो गरमी-सरदी आदि द्वंद्वोंको सहे, सहिष्णु, सहनशील। पु॰ एक ऋषि।

तितिक्षा–स्त्री॰ [सं॰] सरदी-गरमी आदि द्वंद्वोंको सहनेकी क्रिया या शक्ति; बिना प्रतीकार या विकलताके सभी दुःखोंको सहना, सहनशीलता; क्षमा।

तितिक्षु–वि० [सं०] तितिक्षायुक्त, सहनशील, क्षमावान्।

तितिभ–पु० [सं०] बीरबहूटी; जुगनू।

तितिम्मा–पु० [अ०] पूरक अंश; पुस्तकका परिशिष्ट।

तितिर, तितिरि–पु० [सं०] तीतर पक्षी।

तितीर्षा–स्त्री० [सं०] तरने या पार करनेकी इच्छा।

तितीर्षु–वि० [सं०] तरने या पार होनेका इच्छुक।

तिते*–वि० उतने।

तितेक*–वि० उतना।

तितै*–अ० तहाँ; उधर।

तितो*–वि० उतना।

तिथि–स्त्री० [सं०] वह कालविशेष जिसमें चंद्रमा एक कला बढ़ता या घटता है, १-२ आदि संख्याओं द्वारा निर्दिष्ट चांद्र मासका प्रत्येक दिन; मिति, तारीख; मृत्युदिवस; पंद्रहकी संख्या। **–क्षय**–पु० तिथिकी हानि। **–पत्र**–पु० पंचांग। **–वृद्धि**–स्त्री० जो तिथि दो सूर्योदयोंतक चले। **–संक्रामी**–वि० (डिफाल्टर) (न्यायालयमें उपस्थित होने, ऋणकी किस्त आदि जमा करनेकी) निर्धारित तिथिका संक्रमण करनेवाला (उस तिथिको उपस्थित न होनेवाला, किस्त न चुकानेवाला आदि)। **–संधि**–स्त्री० दो तिथियोंकी संधि।

तिथित–वि० (डेटेड) (वह पत्रादि) जिसपर कोई तिथि या महीनेकी तारीख लिखी या डाली गयी हो, दिनांकित।

तिधर†–अ० उधर, उस ओर।

तिन*–सर्व० 'तिस'का बहुवचन। पु० तृण, तिनका।

तिनउर*–पु० तृणराशि।

तिनकना–अ० क्रि० झल्लाना, बिगड़ना, रूठना।

तिनका–पु० तृण, घास-फूस। **–तोर***–पु० नाता-तोड़। **मु०–तोड़ना**–बलैया लेना, अपनेको न्योछावर करना; हमेशाके लिए नाता तोड़ लेना। **–दाँतोंमें पकड़ना**–दयाकी भिक्षा माँगना। **(तिनके)का सहारा**–थोड़ीसी सहायता। **–की ओट पहाड़**–छोटीसी वस्तुमें बहुत बड़े रहस्यका छिपा होना।

तिनगना–अ० क्रि० दे० 'तिनकना'।

तिनगरी*–स्त्री० एक पकवान।

तिनपहला–वि० तीन पहलोंवाला।

तिनस, तिनसुना–पु० दे० 'तिनिश'।

तिनिश–पु० [सं०] शीशमकी जातिका एक वृक्ष।

तिनुका, तिनूका*–पु० दे० 'तिनका'।

तिन्ना–पु० तिन्नीके धानका पौधा।

तिन्नी–स्त्री० स्वयं उत्पन्न होनेवाला एक धान जिसका चावल फलाहारके काम आता है, नीवार।

तिपति*–स्त्री० तृप्ति।

तिपाई–स्त्री० दे० 'ति'के साथ।

तिबारा–वि०, पु० दे० 'ति'के साथ।

तिब्ब–स्त्री० [अ०] चिकित्साशास्त्र; यूनानी चिकित्साशास्त्र, हकीमी।

तिब्बिया–वि० [अ०] तिब्ब-संबंधी। **–कालेज**–पु० यूनानी चिकित्साशास्त्रकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय।

तिमिंगिल–पु० [सं०] एक समुद्री जंतु जो तिमिको निगल सकता है; बहुत भारी मछली, ह्वेल। **–गिल**–पु० तिमिंगिलको भी निगल जानेवाला समुद्री जंतु।

तिमि–अ० * उस प्रकार। पु० [सं०] समुद्र; बहुत बड़े आकारका एक समुद्री मत्स्य; मत्स्य। **–ध्वज**–पु० एक दैत्य जिसे इंद्रने दशरथकी सहायतासे मारा था।

तिमिर–पु० [सं०] अंधकार; आँखका एक रोग; लोहेका मोरचा; दे० 'तिरमिरा'। **–भिद्**–वि० अंधकारका भेदन करनेवाला। पु० सूर्य। **–रिपु**–पु० अंधकारका शत्रु, सूर्य। **–हर**–पु० सूर्य; दीपक।

तिमिरारि–पु० [सं०] अंधकारका शत्रु, सूर्य।

तिमिरारी*–स्त्री० तिमिराली, अंधकार-पुंज; अँधेरा। पु० सूर्य।

तिय*–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

तिया–स्त्री० दे० 'तिक्की'; * दे० 'तिय'।

तियाग*–पु० दे० 'त्याग'।

तिर–वि० 'त्रि'का बिगड़ा हुआ समासमें व्यवहृत रूप। **–कुटा**–पु० दे० 'त्रिकुट'। **–खूँटा**–वि० जिसमें तीन खूँट हों। **–पाई**–स्त्री० दे० 'तिपाई'। **–फला†**–पु० दे० 'त्रिफला'। **–बेनी***–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'। **–मुहानी**–स्त्री० दे० 'तिमुहानी'। **–लोक†**–पु० दे० 'त्रिलोक'। **–सठ**–वि० साठ और तीन। पु० तिरसठकी संख्या, ६३। **–सूल***–पु० दे० 'त्रिशूल'; तापत्रय।

तिरखा*–स्त्री० दे० 'तृषा'।

तिरखित*–वि० दे० 'तृषित'।

तिरछा–वि० जो एक ओर कुछ झुका हुआ हो, वक्र, कज, बाँका, कुटिल। **–पन**–पु० तिरछा होनेका भाव।

तिरछाई–स्त्री० तिरछापन।

तिरछाना–अ० क्रि० तिरछा होना।

तिरछे*–अ० तिरछेपनके साथ; तिरछी गतिसे।

तिरछौंहाँ–वि० कुछ-कुछ तिरछा।

तिरछौंहैं*–अ० दे० 'तिरछे'।

तिरना–अ० क्रि० दे० 'तरना'; पानीपर तैरना; उतराना।

तिरनी*–स्त्री० नीवी, फुफुँदी।

तिरप–स्त्री० नाचका एक ताल।

तिरपट†–वि० एक बगल कुछ झुका हुआ, तिरछा; कठिन।

तिरपन–वि० पचास और तीन। पु० तिरपनकी संख्या, ५३।

तिरपाल–पु० पानीसे बचावके कामका एक मोटा कपड़ा; छाजनके नीचे लगाया जानेवाला सरकंडेका मुट्ठा।

तिरपित*–वि० दे० 'तृप्त'।

तिरमिरा–पु० आँखका एक रोग जिसमें देखनेकी शक्ति क्षीण हो जाती है, सामने धुंध छाया रहता है, प्रकाश असह्य हो जाता है और कुछका कुछ दिखाई देता है; चकाचौंध।

तिरमिराना–अ० क्रि० दे० 'तिलमिलाना'।

तिरस्कार–पु० [सं०] अपमान, अनादर; अवज्ञा।

तिरस्कृत–वि० [सं०] अपमानित, अनादृत, जिसकी अवहेलना की गयी हो; आच्छादित।

तिरस्क्रिया–स्त्री० [सं०] आच्छादित करनेकी क्रिया; दे० 'तिरस्कार'।

तिरहुत–पु० मिथिला–मुजफ्फरपुर और दरभंगा।

तिरानबे–वि० नब्बे और तीन। पु० तिरानबेकी संख्या, ९३।

तिराना–स० क्रि० पानीपर तैराना या ठहराना; पार करना; उद्धार करना"।

तिरासी–वि० अस्सी और तीन। पु० तिरासीकी संख्या,८३।

तिरिन*–पु० दे० 'तृण'।

तिरिया*–स्त्री० स्त्री, औरत। **–चरित्तर**–पु० स्त्रीकी पुरुषको ठगने या बेवकूफ बनानेकी चतुराई।

तिरीछा*–वि० दे० 'तिरछा'।

तिरैंदा–पु० समुद्रमें तैरता हुआ पीपा जो खतरेकी सूचनाके लिए लगाया जाता है; बंसीकी डोरीमें लगी हुई छोटी लकड़ी जो उतराती रहती है; उतरानेवाला काठ या इस तरहकी कोई चीज जिसके सहारे नदी आदि पार की जाय।

तिरोधान, तिरोभाव–पु० [सं०] तिरोहित या दृष्टिसे ओझल होने या करनेकी क्रिया, अंतर्धान, लोप।

तिरोहित–वि० [सं०] अंतर्हित, लुप्त, ओझल; गुप्त, आच्छादित, ढका हुआ।

तिरौंछा*–वि० तिरछा।

तिरौंदा–पु० दे० 'तिरैंदा'।

तिर्यक्(र्यंच्)–वि० [सं०] तिरछा; आड़ा; वक्र। अ० वक्रतापूर्वक; तिरछे; आड़े। पु० पशु; पक्षी।

तिर्यग्गामी(मिन्)–पु० [सं०] केकड़ा।

तिर्यग्योनि–स्त्री० [सं०] पशु-पक्षी; उनकी योनि।

तिर्यग्रेखा–स्त्री० [सं०] (ट्रांसवर्सल) वह रेखा जो दो या अधिक दी हुई रेखाओंको काटती है।

तिलंगा–पु० अंगरेजी फौजका हिंदुस्तानी सिपाही।

तिलंगाना–पु० तेलंग देश।

तिलंगी–स्त्री० गुड्डी, पतंग। पु० तिलंगानाका निवासी।

तिल–पु० [सं०] काले या सफेद रंगका एक छोटे दानेका तेलहन, इसका पौधा; तिलके आकारका काला दाग जो शरीरपर होता है; तिलके बराबर एक गोदना; किसी पदार्थका बहुत छोटा टुकड़ा या कण। **–किट्ट**–पु० तिलकी खली। **–कुट**–पु० [हिं०] तिल और चीनी या गुड़के मेलसे बननेवाली एक मिठाई। **–चटा**–पु० [हिं०] एक प्रकारका झींगुर। **–चाँवरी***–स्त्री० तिल और चावलकी खिचड़ी। **–तंडुल**–पु० तिल और चावल; ऐसा संयोग जिसमें मिलनेवालोंका अस्तित्व स्पष्टतः दिखाई दे। **–धेनु**–स्त्री० तिलकी बनी गाय जो दानरूपमें दी जाय। **–पट्टी, –पपड़ी**–स्त्री० [हिं०] खाँड़ या गुड़की चाशनीमें पगे तिलकी बनी रोटी जैसी वस्तु। **–पीड**–पु० तिल पेरनेवाला, तेली। **–पुष्पक**–पु० तिलका फूल; बहेड़ेका पेड़; नासिका। **–भर**–अ० थोड़ासा भी, रंचमात्र। **मु०–का ताड़ करना**–छोटीसी बातको बड़ा रूप देना। **–की ओट पहाड़**–छोटी बातके अंदर बहुत बड़ी बात होना। **–तिल करके**–थोड़ा-थोड़ा करके। **–धरनेकी जगह न होना**–थोड़ासा भी स्थान रिक्त न होना, ठसाठस भरा होना। **(तिलों)में तेल न होना**–शील-संकोच न होना, मुरौवत न होना।

तिल–पु० पुतलीके बीचका बिंदु; * क्षण –'सेही पिरीत अनुराग बखानइत तिले-तिले नूतन होइ'–विद्यापति। **–भर**–अ० थोड़ी देर।

तिलक–पु० [सं०] धार्मिकता या शोभाकी दृष्टिसे घिसे हुए चंदन, केसर या रोली आदिसे ललाटपर बनाया हुआ विशेष प्रकारका चिह्न, टीका; सिंहासनारूढ़ होते समय युवराजके मस्तकपर लगाया जानेवाला टीका; वसंतमें फूलनेवाला एक वृक्ष; तिलका पौधा; किसी कुल या समुदायका सर्वश्रेष्ठ पुरुष (समासांतमें); विवाह-संबंधी एक रस्म जिसमें कन्यापक्षके लोग वरके मस्तकपर टीका लगाते और कुछ द्रव्य आदि चढ़ाते हैं; स्त्रियोंका एक शिरोभूषण; एक रोग; शरीरपरका तिल; भुवकका एक भेद जिसमें प्रत्येक चरणमें पचीस अक्षर होते हैं; सूथनके ऊपर पहननेका बिना आस्तीनका ढीला जनाना कुरता। **–हार**–पु० [हिं०] तिलक चढ़ानेके लिए भेजा जानेवाला व्यक्ति।

तिलकना–अ० क्रि० गीली मिट्टी या जमीनका सूखकर फटना; फिसलना।

तिलछना–अ० क्रि० व्याकुल होना, छटपटाना।

तिलदानी–स्त्री० सूई, अंगुश्ताना आदि रखनेकी दर्जियोंकी छोटी थैली।

तिलमिल–स्त्री० तिलमिलाहट, चकाचौंध।

तिलमिलाना–अ० क्रि० बेचैन होना; चौंधियाना।

तिलमिलाहट–स्त्री० तिलमिलानेकी क्रिया या भाव, बेचैनी।

तिलमिली–स्त्री० तिलमिलाहट।

तिलवट–पु० तिलपट्टी।

तिलवा–पु० तिलका लड्डू।

तिलस्म–पु० दे० 'तिलिस्म'।

तिलहन–पु० फसलके रूपमें बोये जानेवाले तेलके पौधे।

तिलांजलि–स्त्री० [सं०] और्ध्वदेहिक कृत्यका एक अंग जिसमें हिंदू मृतकके नाम तिलमिश्रित जलकी अंजलि देते हैं।

तिलांबु–पु० [सं०] दे० 'तिलांजलि'।

तिला–पु० नपुंसकता नष्ट करनेवाला एक तेल।

तिलाक़–पु० दे० 'तलाक़'।

तिलान्न–पु० [सं०] तिलकी खिचड़ी।

तिलिस्म–पु० [अ०] जादू; इंद्रजाल; ऐंद्रजालिक रचना; गाड़े हुए धन आदिपर बनायी हुई सर्प आदिकी भयावनी आकृति; जादूकी रेखा या चिह्न। **मु०–तोड़ना**–जादू या करामातका भेद खोल देना।

तिलिस्मी–वि० जिसमें तिलिस्मके चमत्कारका वर्णन हो; तिलिस्म-संबंधी।

तिलोत्तमा–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा जिसे पानेके लिए सुंद और उपसुंद आपसमें लड़ मरे थे।

तिलोदक–पु० [सं०] दे० 'तिलांजलि'।

तिलोरी*–स्त्री० एक प्रकारकी मैना; तिलौरी।

तिलौंछना–स० क्रि० तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा–वि० तेलकेसे स्वादवाला; चिकना।

तिलौरी–स्त्री० तिल मिलाकर बनायी हुई उर्द या मूँगकी बरी।

तिल्ला–पु० कलाबत्तू आदिका काम; दुपट्टा, पगड़ी आदिका वह भाग जिसपर कलाबत्तू आदिका काम हो।

तिल्ली–स्त्री० प्लीहा; तिल।

तिवा(ड़ी)री–पु० ब्राह्मणोंका एक भेद, त्रिपाठी।

तिशना–पु० ताना। * स्त्री० तृष्णा।

तिष्ट*–वि० बनाया हुआ, रचित।

तिष्ठना*–अ० क्रि० टिकना, ठहरना।

तिसपर–अ० उसके बाद; ऐसी स्थितिमें; तथापि, इतना होनेपर भी।

तिसना*–स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसरायत–स्त्री० तीसरा होनेका भाव।

तिसरैत–पु० वह व्यक्ति जो दो पक्षोंमेंसे किसी एकका भी न हो; तीसरा व्यक्ति; मध्यस्थ, पंच; तीसरे भागका अधिकारी।

तिसाना*–अ० क्रि० प्यासा होना, तृषित होना।

तिहत्तर–वि० सत्तर और तीन। पु० तिहत्तरकी संख्या, ७३।

तिहरा–वि० दे० 'तेहरा'।

तिहराना–स० क्रि० दे० 'तेहराना'।

तिहरी–स्त्री० तीन लड़ोंकी माला; दही जमानेका मिट्टीका छोटा बरतन।

तिहाई–स्त्री० तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा; फसल।

तिहाउ*–पु० दे० 'तिहाव'।

तिहार, तिहारा, तिहारो*–सर्व० तुम्हारा।

तिहाव–पु० क्रोध, रोष; बिगाड़।

तिहि–सर्व० दे० 'तेहि'।

तिहूँ*–वि० तीनों।

ती*–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

तीक्षण, तीक्षन*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण–वि० [सं०] तेज नोक या तेज धारवाला; तीव्र, कुशाग्र; प्रखर; तेज, चोखा, चुभता हुआ; मर्मभेदी; उग्र; तीखा; तीखे या चरपरे स्वादका; उत्कट गंधवाला; कठोर। **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि तीखी हो; सूक्ष्मदर्शी। **–धार**–पु० खड्ग, तलवार। वि० तेज धारवाला। **–बुद्धि**–वि० जिसकी बुद्धि प्रखर हो। **–रश्मि**–पु० सूर्य। वि० जिसकी किरणें प्रखर हों।

तीक्ष्णांशु–पु० [सं०] सूर्य।

तीख*–वि० तीखा।

तीखन*–वि० तीक्ष्ण।

तीखा–वि० तीक्ष्ण। **–पन**–पु० तीक्ष्णता।

तीखुर, तीखुल–पु० एक कंद जिसका सत्त मिठाई, खीर आदि बनानेके काम आता है।

तीछन*–वि० तीक्ष्ण।

तीछा*–वि० तीक्ष्ण।

तीज–स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि; भाद्र-शुक्ला तृतीयाको होनेवाला एक व्रत, हरतालिका व्रत।

तीजा–पु० मुसलमानोंमें मृत्युके बादका तीसरा दिन। इस दिन मृतककी यादगारमें उसके संबंधी एकत्र होते हैं और गरीबोंको खाद्य पदार्थ बाँटे जाते हैं। वि० तीसरा।

तीत*–वि० दे० 'तीता'।

तीतर–पु० एक प्रसिद्ध पक्षी जिसे लोग लड़ानेके लिए पालते हैं।

तीता–वि० तीखे, चरपरे स्वादका, तिक्त; गीला।

तीतुर, तीतुल*–पु० दे० 'तीतर'।

तीतुरी*–स्त्री० दे० 'तितली'।

तीन–वि० दो और एक। पु० तीनकी संख्या, ३। मु० **–तेरह करना**–अस्त-व्यस्त करना, तितर-बितर करना। **–तेरह होना**–तितर-बितर होना, छितरा जाना। **–पाँच करना**–टाल-मटोल करना। **(न)–में, न तेरहमें**–नगण्य, जिसकी कहीं पूछ न हो; तटस्थ।

तीनि*–वि० तीन।

तीमार–पु० [फ़ा०] सेवा-शुश्रूषा, हिफाजत। **–दार**–पु० रोगीकी सेवा करनेवाला। **–दारी**–स्त्री० रोगीकी सेवा।

तीय(या)*–स्त्री० स्त्री, औरत।

तीरंदाज़–पु० [फ़ा०] तीर चलानेवाला, धनुर्धर।

तीरंदाज़ी–स्त्री० [फ़ा०] तीर चलानेकी क्रिया या विद्या।

तीर–पु० [सं०] नदीका किनारा, तट, कूल; गंगा-तट; सीसा; राँगा; बाण। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० तीरपर स्थित, जो किनारेपर रहता हो।

तीरथ*–पु० दे० 'तीर्थ'।

तीर्ण–वि० [सं०] जो पार कर चुका हो; जो पार किया जा चुका हो।

तीर्थंकर–पु० [सं०] जिन; विष्णु; शास्त्रकार।

तीर्थ–पु० [सं०] वह पुण्यस्थान जहाँ विशेष धर्मके अनुयायी पूजा, स्नान आदिके लिए जाते हों–जैसे काशी, प्रयाग आदि; यज्ञ; क्षेत्र। **–कर**–पु० जिन; विष्णु। **–पति**–पु० दे० 'तीर्थराज'। **–पुरोहित**–पु० तीर्थका पंडा। **–यात्रा**–स्त्री० तीर्थ करनेके लिए की गयी यात्रा, तीर्थाटन। **–राज**–पु० प्रयाग।

तीर्थाटन–पु० [सं०] तीर्थभ्रमण, तीर्थयात्रा।

तीर्थोदक–पु० [सं०] तीर्थका जल।

तीर्न*–वि० दे० 'तीर्ण'।

तीली–स्त्री० सलाई, मोटी सींक या खपची।

तीवई*–स्त्री० स्त्री, औरत।

तीवर–पु० [सं०] समुद्र; मछुआ, बहेलिया; एक वर्णसंकर जाति।

तीव्र–वि० [सं०] अत्यंत, नितांत; तेज, तीक्ष्ण; अत्युष्ण; कटु; असह्य; जोरका; अत्यधिक; द्रुत; भयंकर; कुछ ऊँचा (स्वर)। पु० तीक्ष्णता; इस्पात; राँगा; लोहा; शिव; तीर, कूल। **–गति**–वि० जिसकी चाल तेज हो। पु० पवन, हवा। स्त्री० तेज चाल, द्रुत-गति। **–द्युति**–पु० सूर्य।

तीस–वि० बीस और दस। पु० तीसकी संख्या, ३०। **–मार खाँ**–वि० बाँका बीर। **(तीसों)दिन**–अ० सदा, सर्वदा।

तीसर*–वि० तीसरा।

तीसरा–वि० दूसरेके बादका, जो क्रममें दोके बाद पड़े, जो गिनतीमें तीनके स्थानपर हो; जो दोमेंसे किसी पक्षका न हो, गैर। पु० दे० 'तिसरैत'। **–पहर**–पु० अपराह्न।

तीसी–स्त्री० एक तेलहन, अलसी।

तुंग–वि० [सं०] ऊँचा, उन्नत; उग्र; प्रधान। पु० पुन्नागका पेड़; नारियल; पर्वत; बुध ग्रह।

तुंगारण्य–पु० [सं०] ओड़छाके समीप बेतवाके किनारेका एक तीर्थ। यहाँ अबतक जंगल है और मेला लगता है।

तुंड–पु० [सं०] मुख; मुखका आगेकी ओर निकला हुआ भाग, थूथन; चोंच; हथियारकी नोंक; तलवारका अग्र भाग; शिव; एक राक्षस; हाथीकी सूँड़।

तुंडि–पु० [सं०] मुँह; चोंच; बिंबाफल। स्त्री० नाभि।

तुंडिक–वि० [सं०] थूथनवाला।

तुंडिल–वि० [सं०] बहुत बोलनेवाला; जिसकी नाभि निकली

या उभरी हुई हो; तोंदवाला।

तुंडी–स्त्री० नाभि; [सं०] एक तरहका कुम्हड़ा।

तुंडी(डिन्)–वि० [सं०] मुँह, चोंच, थूथन या सूँड़से युक्त। पु० शिवका नंदी; * गणेश।

तुंद–पु० [सं०] नाभि; पेट, तोंद। **–कूपिका, –कूपी**–स्त्री० नाभिका गड्ढा।

तुंदिक–वि० [सं०] जिसका उदर बड़ा हो; जिसे तोंद हो।

तुंदिल–वि० [सं०] दे० 'तुंदिक'।

तुंदी–स्त्री० [सं०] नाभि।

तुँदैल, तुँदैला–वि० तुंदिल, तोंदवाला।

तुंब–पु० [सं०] लौकी, लौआ; तूँबा; आँवला।

तुंबर–पु० [सं०] तानपूरा; तुंबुरु नामक गंधर्व।

तुंबा–पु० कद्दूसे बना पात्र। स्त्री० [सं०] कद्दू।

तुंबिका–स्त्री० [सं०] कड़ुई लौकी; तूँबी।

तुंबी–स्त्री० [सं०] कड़ुई लौकी; इसका बना हुआ छोटा पात्र।

तुंबुरु–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध गंधर्व; जैनमतमें पंचम अर्हतका उपासक; धनिया।

तुअ*–सर्व० तुम्हारा।

तुअना*–अ० क्रि० चूना, टपकना, रुक न सकना; गर्भपात होना।

तुअर–स्त्री० अरहर।

तुक–स्त्री० किसी छंदके चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल, अंत्यानुप्रास; सामंजस्य। **–बंदी**–स्त्री० तुक मिलानेकी क्रिया; साधारण पद्यरचना; भद्दी कविता। **मु०–बैठाना**–छंदके चरणोंके अंतमें ऐसे शब्दोंकी योजना करना जिनकी तुक मिल जाय, तुकबंदी करना।

तुकमा–पु० [फ़ा०] फंदा जिसमें घुंडी फँसाते हैं।

तुकांत–वि० जिसमें अंत्यानुप्रास, चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल हो।

तुका*–पु० दे० 'तुक्का'।

तुकारना–स० क्रि० 'तू-तू' करके संबोधित करना।

तुक्कड़–पु० तुकबंदी करनेवाला, साधारण पद्य रचनेवाला।

तुक्का–पु० [फ़ा०] शल्यरहित बाण, बिना फलका बाण।

तुख*–पु० दे० 'तुष'।

तुखार–पु० [सं०] एक प्राचीन देश; वहाँका घोड़ा–'स्याम करन अरु बाँक तुखारा'–प०; वहाँका निवासी; * दे० 'तुषार'।

तुख़्म–पु० [अ०] बीज।

तुच, तुचा*–स्त्री० दे० 'त्वचा'।

तुचार*–वि० पैना–'परिगो दाग अधरवा चोंच तुचार' –गुलाब।

तुच्छ–वि० [सं०] हीन, क्षुद्र, ओछा; नगण्य; निकृष्ट; अल्प; निस्तत्त्व, असार; शून्य, रिक्त; मंद; दीन; परित्यक्त।

तुच्छातितुच्छ–वि० [सं०] एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट।

तुज़ुक–पु० [तु०] वैभव, शान-शौकत, ऐश्वर्य; विधान, व्यवस्था; आत्मचरित।

तुझे–सर्व० 'तू'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप, तुझको।

तुट*–वि० अत्यल्प, थोड़ासा।

तुट्ठना*–अ० क्रि० तुष्ट होना, प्रसन्न होना। स० क्रि० तुष्ट, प्रसन्न करना।

तुड़वाना–स० क्रि० दे० 'तोड़वाना'।

तुड़ाना–स० क्रि० तोड़वाना; बंधन तोड़ना; संबंध-विच्छेद करना; बड़ा सिक्का भुनाना; मूल्य घटवाना।

तुतरा*–वि० दे० 'तोतला'।

तुतराना*–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना'।

तुतरौंहाँ*–वि० दे० 'तोतला'।

तुतलाना–अ० क्रि० बच्चोंका शब्दों तथा वर्णोंका अस्फुट और कुछका कुछ उच्चारण करते हुए बोलना।

तुनक–वि० [फ़ा०] थोड़ा; छोटा; दुर्बल; नाज़ुक; सूक्ष्म। **–मिज़ाज**–वि० जो झटपट या छोटी-छोटी बातोंपर नाराज हो जाय, चिड़चिड़ा; नाज़ुकमिजाज। **–मिज़ाजी**–स्त्री० चिड़चिड़ापन।

तुनीर*–पु० दे० 'तूणीर'।

तुनुक–वि० दे० 'तुनक'।

तुपक–स्त्री० [तु०] छोटी तोप; बंदूक। **–ची**–पु० तुपक चलानेवाला, गोलंदाज।

तुफ़ंग–स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकारकी लंबी नली जिसके द्वारा फूँकके जोरसे कंकड़ी, तीर आदि छोड़े जाते हैं; हवाई बंदूक।

तुभना*–अ० क्रि० स्तब्ध हो जाना; थक जाना; मुग्ध होकर अचल हो जाना।

तुम–सर्व० वह सर्वनाम जिसका प्रयोग उस पुरुषके लिए होता है जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाता है।

तुमड़ी–स्त्री० सूखा कद्दू; सूखे कद्दूका गूदा आदि निकालकर बनाया हुआ पात्र; एक बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं।

तुमरी†–स्त्री० दे० 'तुमड़ी'।

तुमुर–वि०, पु० [सं०] दे० 'तुमुल'।

तुमुल–वि० [सं०] जिसमें शोरगुल हो; कई तरहकी ध्वनियोंके मेलसे उत्पन्न (ध्वनि); भयंकर; घबड़ाया हुआ। पु० घोर युद्ध, घमासान, गहरी लड़ाई।

तुरंग–पु० [सं०] घोड़ा; मन, चित्त; सातकी संख्या। **–मुख**–पु० किन्नर। **–शाला**–स्त्री०, **–स्थान**–पु० घुड़साल, अस्तबल।

तुरंगक–पु० [सं०] घोड़ा; बड़ी तोरई।

तुरंगम–पु० [सं०] घोड़ा; एक वृत्त।

तुरंगमी, तुरंगी–स्त्री० [सं०] घोड़ी; असगंध।

तुरंगमी(मिन्), तुरंगी(गिन्)–पु० [सं०] अश्वारोही, घुड़सवार।

तुरंज–पु० चकोतरा नीबू; दुशालेके किनारों तथा कुरते आदिके मोढ़ोंपर सूतसे काढ़कर बनाया हुआ बड़ा बूटा। **–बीन**–स्त्री० नीबूके रसका शर्बत।

तुरंत–अ० दे० 'तुरत'।

तुरई–स्त्री० एक बेल जिसके फलोंकी तरकारी बनती है।

तुरकाना–वि० [फ़ा०] तुर्क जैसा, तुर्ककी तरहका। पु० तुर्कोंका देश; तुर्कोंकी बस्ती।

तुरकानी–स्त्री० [फ़ा०] तुर्क औरतोंका एक ढीला-ढाला पहनावा; तुर्क जातिकी स्त्री। वि० स्त्री० तुर्कोंकीसी।

तुरकी–वि० [फ़ा०] तुर्क देशका; तुर्क देश-संबंधी। स्त्री० तुर्कोंके देशकी भाषा; खड़ी बोली। पु० तुर्क देश।

तुरग–पु० [सं०] दे० 'तुरंग' (समास भी)।

तुरत–अ० शीघ्र, तत्काल, चटपट।

तुरपन–स्त्री० तुरपनेकी क्रिया; एक तरहकी सिलाई।

तुरपना–स० क्रि० लंबाईके बल सीधे सीना।

तुरय*–पु० घोड़ा।

तुरसीला*–वि० घायल करनेवाला, पैना–'शब्द हैं तुरसीले'–नारायण स्वामी।

तुरही–स्त्री० फूँककर बजानेका एक पतले मुँहका बाजा जो दूसरे सिरेकी ओर बराबर चौड़ा होता जाता है।

तुरा*–स्त्री० दे० 'त्वरा'।

तुराइ, तुराय*–अ० आतुरताके साथ।

तुराई*–स्त्री० तोशक; उतावली, जल्दी। अ० तुरंत।

तुराना*–अ० क्रि० शीघ्रता या उतावली करना। स० क्रि० दे० 'तोड़ाना'।

तुरावती*–वि० स्त्री० वेगवती, तीव्र गतिसे चलने या बहनेवाली।

तुरावान*–वि० वेगयुक्त, त्वरायुक्त।

तुरास*–अ० वेगसे। पु० वेग।

तुरिया–स्त्री० जुलाहोंका एक औजार; वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो; * तुरीयावस्था।

तुरी–स्त्री० घोड़ी; लगाम; फूलोंका गुच्छा; मोतीकी लड़ियोंका झब्बा; तुरही; * तुरीयावस्था। * पु० घोड़ा; सवार।

तुरीय–वि० [सं०] गतियुक्त; चतुर्थ; चार खंडोंवाला; श्रेष्ठ; शक्तिशाली। पु० वेदांतके अनुसार एक अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्ममें लीन हो जाती है।

तुरुक–पु० दे० 'तुर्क'।

तुरुप–पु० ताशके खेलमें प्रधान माने हुए रंगका पत्ता जो अन्य रंगके पत्तोंको काट सके (ट्रंप)।

तुरुपना–स० क्रि० दे० 'तुरपना'।

तुरुष्क–पु० [सं०] तुर्क जाति; तुर्क जातिका मनुष्य; तुर्किस्तानका निवासी; तुर्किस्तान; एक गंधद्रव्य, लोबान।

तुर्क–पु० [फा०] तुर्कीका रहनेवाला।

तुर्की–पु० तुर्कोंका देश, तुरकाना। वि०, स्त्री० दे० 'तुरकी'। **–टोपी**–स्त्री० एक झब्बे दार, गोल, ऊँची टोपी।

तुर्रा–पु० [अ०] जुल्फ; पगड़ी या टोपी आदिमें लगा हुआ फुँदना या पर, कलगी; पक्षियोंकी शिखा; चाबुक। वि० [फा०] अनोखा। मु०–**यह कि**–ऊपरसे इतनी बात और कि।

तुर्श–वि० [फा०] खट्टा; रूखा; क्रुद्ध।

तुर्शाना–अ० क्रि० खट्टा हो जाना।

तुर्शी–स्त्री० [फा०] खटाई, खट्टापन; रुष्टता।

तुलन–पु० [सं०] तौलना; तौल; तुलना, बराबरी करना।

तुलना–अ० क्रि० तौला जाना, मापित होना; तौल या मापमें समान होना; किसी आधारपर इस प्रकार स्थित या आसीन होना कि किसी ओर थोड़ासा भी झुकाव न हो, सधकर स्थित होना (जैसे–तुलकर बैठना); सधना, ठीक अंदाजके अनुसार अभ्यस्त होना; सन्नद्ध, उतारू होना; धुरीका औंगा जाना; * पहुँचना। स्त्री० [सं०] न्यूनाधिक्यका विचार, समता, बराबरी, मिलान; अंदाजा लगाना; जाँच करना।

तुलनात्मक–वि० [सं०] तुलनायुक्त; जिसमें किसीसे तुलना की जाय।

तुलवाई–स्त्री० तौलनेकी क्रिया या मजदूरी।

तुलसी–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौधा। **–दल**–पु० तुलसीकी पत्ती। **–दास**–पु० उत्तरी भारतके एक सुप्रसिद्ध भक्त कवि।

तुला–स्त्री० [सं०] तराजू, काँटा; समानता; नाप, तौलमें बराबरी, तुलना; सातवीं राशि। **–दंड**–पु० तराजूकी डंडी। **–दान**–पु० एक दान जिसमें दाता द्वारा अपनी या किसी अन्यकी तौलके बराबर अन्न-द्रव्यादिका दान किया जाता है। **–मान**–पु० तराजूकी डंडी, तुलादंड; बाट, बटखरा। **–यष्टि**–स्त्री० तुलादंड। **–सूत्र**–पु० तराजूकी डंडीमें बीचोबीच छेद करके लगाया हुआ मोटे सूत या रस्सीका टुकड़ा।

तुलाई–स्त्री० दे० 'तौलाई'; गाड़ीकी धुरीमें तेल देनेकी क्रिया; दुलाई–'…तूल तुलाई माह'–वि०।

तुलाना*–अ० क्रि० आ पहुँचना; बराबर होना। स० क्रि० धुरीमें तेल दिलाना।

तुल्य–वि० [सं०] समान, सदृश, बराबर; अभिन्न। **–योगिता**–स्त्री० एक अर्थालंकार, जहाँ कई उपमेयों या उपमानोंका एक ही समान धर्म कहा जाय अथवा जहाँ हित तथा अहितमें एक ही वृत्ति दिखायी जाय।

तुवर–वि० [सं०] कसैला; बिना दाढ़ी या बिना मूँछका। पु० कषाय रस; अरहर।

तुष–पु० [सं०] अन्नके ऊपरका छिलका, भूसी; अंडेके ऊपरका छिलका; बहेड़ेका पेड़।

तुषानल–पु० [सं०] भूसीकी आग; एक तरहका प्राण-दंड जिसमें बदनपर तिनके लपेटकर आग लगा दी जाती थी।

तुषार–पु० [सं०] हवामें मिली भाप जो जमकर श्वेतकणोंके रूपमें पृथ्वीपर गिरती है, हिम, बरफ; चीनिया कपूर; घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध हिमालयके उत्तरका एक प्राचीन देश। वि० जो छूनेमें बरफकी तरह ठंडा हो। **–कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–गिरि, –पर्वत**–पु० हिमालय पहाड़। **–गौर**–पु० कपूर। वि० तुषारकी तरह सफेद रंगका। **–द्युति**–पु० चंद्रमा। **–पाषाण**–पु० ओला; बरफ। **–शिखरी(रिन्), –शैल**–पु० हिमालय।

तुषाराद्रि–पु० [सं०] हिमालय पर्वत।

तुष्ट–वि० [सं०] तोषयुक्त, प्रसन्न, तृप्त, खुश। पु० विष्णु।

तुष्टना*–अ० क्रि० तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

तुष्टि–स्त्री० [सं०] संतोष, प्रसन्नता; भोग्य वस्तुओंके प्रति ऐसी वृत्ति जिसमें और अधिककी लालसा न हो; जितना प्राप्त हो उससे अधिककी इच्छा न होना।

तुष्टीकरण–पु० [सं०] (अपीज़मेंट) किसी क्रुद्ध या झगड़ेपर उतारू व्यक्तिको रियायत देकर, अनुनय-विनय द्वारा संतुष्ट करना, मनुहार।

तुस–पु० [सं०] दे० 'तुष'।

तुसार–पु० [सं०] दे० 'तुषार'।

तुसी*–स्त्री० दे० 'तुष'।

तुहमत–स्त्री० [फा०] बुरी राय; इलजाम; झूठी बदनामी।

तुहिन–पु० [सं०] तुषार, हिम; बरफ; चंद्रमाकी ज्योति,

चंद्रिका; कपूर। **–कर,–किरण,–गु,–द्युति,–रश्मि**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–गिरि,–शैल**–पु० हिमालय पर्वत।

तुहिनांशु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

तुहिनाचल, तुहिनाद्रि–पु० [सं०] हिमालय पर्वत।

तूँबड़ा–पु० तूँबा।

तूँबा–पु० कड़ुतुंबी; कड़वे कद्दूको खोखला कर बनाया हुआ पात्र।

तूँबी–स्त्री० छोटा तूँबा; रक्त या वायु खींचनेका एक औजार।

तू–सर्व० एक सर्वनाम जो उस व्यक्तिके लिए आता है जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाता है; 'तुम'का एकवचन रूप(इसका प्रयोग छोटों या नीचोंके लिए होता है)। स्त्री० कुत्तोंको बुलानेका शब्द। **–तू, मैं-मैं**–स्त्री० वाक्कलह, बोल-ठोल, गाली-गलौज। **मु०–तू, मैं-मैं करना**–कहा-सुनी करना, गाली-गलौज करना।

तूख*–पु० खरका, सींक।

तूटना*–अ० क्रि० दे० 'टूटना'।

तूठना*–अ० क्रि० दे० 'तुष्टना'।

तूण–पु० [सं०] दे० 'तूणीर'।

तूणी–स्त्री० [सं०] तरकश। **–धर,–धार**–पु० कमनैत।

तूणीर–पु० [सं०] बाण रखनेका चोंगा, तरकश, निषंग।

तूतिया–पु० नीला थोथा।

तूती–स्त्री० एक छोटी चिड़िया जिसकी बोली बहुत मीठी होती है। **मु० (नक्कारखानेमें)–की आवाज़**–शोरगुल होते समयकी धीमी आवाज जो सुनाई नहीं पड़ती; बड़ोंके सामने छोटोंकी बात (जिसकी कदर नहीं होती)। **(किसीकी)–बोलना**–(किसीकी) धाक जमना, खूब चलती होना।

तूदा–पु० [फा०] ढेर; पुश्ता, टीला; हदबंदीका निशान; चाँदमारीका अभ्यास करनेका मिट्टीका टीला।

तून–पु० एक पेड़, तुन; लाल वस्त्र-विशेष; *तूण, तूणीर।

तूनीर*–पु० तूणीर।

तूफ़ान–पु० [अ०] जोरकी बाढ़, सैलाब; आँधी, अंधड़ जिसमें हवा-पानी आदिका भीषण उत्पात हो; भारी आपत्ति, कहर; हंगामा; उपद्रव, दंगा-फसाद। **मु०–उठाना या खड़ा करना**–बखेड़ा मचाना।

तूफ़ानी–वि० [अ०] प्रचंड; फसादी; ऊधमी, उपद्रवी।

तूमड़ी–स्त्री० दे० 'तुमड़ी'।

तूमना–स० क्रि० उँगलियोंसे नोच-नोचकर रुईके रेशोंको अलग करना; ऐब निकालना; भद्दी गालियाँ देना; पीटना; नाकमें दम करना; चुनना।

तूमरी*–स्त्री० दे० 'तुमड़ी'।

तूमा–पु० तूँबा। **–पलटी,–फेरी**–स्त्री० इसकी चीज उसको देना; फेर-बदल।

तूमार–पु० [अ०] छोटा बातको बेकार बहुत बढ़ा देना।

तूर–स्त्री० अरहर। पु० [सं०] हरकारा; एक तरहका बाजा; * तुरही; ताना लपेटनेकी जुलाहोंकी एक लकड़ी।

तूरज*–पु० दे० 'तूर्य'।

तूरण, तूरन*–अ० दे० 'तूर्ण'।

तूरना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ना'। पु० तुरही।

तूरा–स्त्री० [सं०] वेग। * पु० तुरही।

तूरान–पु० [फा०] तातार देश।

तूरानी–वि० [फा०] तूरानका; तूरान-संबंधी। पु० तूरानका निवासी।

तूर्ण–वि० [सं०] तेज। अ० तेजीसे, शीघ्र।

तूर्य–पु० [सं०] तुरही; मुरज, मृदंग।

तूल–पु० लाल रंगका कपड़ा; गाढ़ा लाल रंग; [सं०] आकाश; रुई; तूतका पेड़; [अ०] लंबाई, विस्तार; ढेर। * वि० समान, सदृश। **मु०–पकड़ना**–किसी बातका बहुत अधिक बढ़ जाना या उग्र रूप धारण करना।

तूलता*–स्त्री० समता, सादृश्य।

तूलना*–अ० क्रि० समान होना, समता करना। स० क्रि० धुरीमें तेल देना या इस कार्यके लिए पहियेको लकड़ीके सहारे टिकाना।

तूलमतूल*–अ० आमने-सामने, समक्ष।

तूला–स्त्री० [सं०] कपास; दीपककी बत्ती।

तूलिका–स्त्री० [सं०] चित्रकारोंकी रंग भरनेकी कूची; लेखनी; रुई-भरा गद्दा, तोशक।

तूष्णीक–वि० [सं०] मौन रहनेवाला।

तूष्णीम्–अ० [सं०] चुप-चाप, बिना बोले। **(तूष्णीं)युद्ध**–पु० वह युद्ध जिसमें शत्रुपक्षके प्रमुख व्यक्ति फोड़ लिये जायँ (कौ०)।

तूस–पु० तुष, भूसी; भूसा; एक प्रकारका उम्दा ऊन, पश्मीना; गहरे लाल रंगका कपड़ा।

तूसना*–स० क्रि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना। अ० क्रि० प्रसन्न या संतुष्ट होना।

तृखा*–स्त्री० दे० 'तृषा'।

तृजग*–वि०, पु० दे० 'तिर्यक्'।

तृण–पु० [सं०] तिनका; घास। **–कुटी,**–स्त्री०, **–कुटीर, –कुटीरक**–पु० घास-फूसकी बनी कुटिया। **–धान्य**–पु० तिन्नी नामक धान, नीवार; सावाँ। **मु०–गहना या पकड़ना**–शरणमें जाना; दैन्य प्रकट करना। **–(किसी वस्तुपर)–टूटना**–किसी वस्तुका इतना सुंदर होना कि देखनेवाले उसपर अपनेको न्योछावर कर दें। **(किसीसे)–तोड़ना**–संबंधविच्छेद करना, नाता तोड़ना। **–तोड़ना**–बलैया लेना; अपनेको न्योछावर करना।

तृणाग्नि–स्त्री०, **तृणानल**–पु० [सं०] तिनकेकी आग।

तृणावर्त–पु० [सं०] वात्याचक्र, बवंडर; एक दैत्य जो बवंडरका रूप धारण कर कृष्णको मारने गया था।

तृतीय–वि० [सं०] तीसरा।

तृतीयांश–पु० [सं०] तीसरा भाग।

तृतीया–वि० स्त्री० [सं०] तीसरी। स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि, तीज; करण कारककी विभक्ति।

तृतीयाश्रम–पु० [सं०] तीसरा आश्रम, वानप्रस्थ।

तृन*–पु० दे० 'तृण'।

तृपति*–स्त्री० दे० 'तृप्ति'।

तृपित*–वि० दे० 'तृप्त'।

तृपिता*–स्त्री० 'तृप्ति'।

तृप्त–वि० [सं०] अघाया हुआ, संतुष्ट।

तृप्ताना*–अ० क्रि० तृप्त होना।

तृप्ति–स्त्री०[सं०] तृप्त होनेका भाव, भोजन आदिकी प्राप्तिसे

उत्पन्न संतोष; इच्छित वस्तुकी प्राप्तिसे जीका भरना।

तृषा-स्त्री० [सं०] प्यास; तीव्र इच्छा, अभिलाष; लोभ।

तृषालु-वि० [सं०] प्यासा, पिपासित, पिपासार्त।

तृषावंत†-वि० तृषावान्।

तृषावान्(वत्)-वि० [सं०] तृपालु, प्यासा।

तृपित-वि० [सं०] प्यासा।

तृष्णा-स्त्री० [सं०] प्यास; अप्राप्त वस्तुको पानेकी तीव्र इच्छा; लोभ। **-क्षय**-पु० संतोप, इच्छाका अंत; शांति।

तृष्णालु-वि० [सं०] तृष्णावान्; प्यासा; लोभी।

तेँ*-प्र० से; द्वारा।

तँतालीस-वि० चालीस और तीन। पु० ४३ की संख्या।

तँतीस-वि० तीस और तीन। पु० तैंतीसकी संख्या, ३३।

तँदुआ-पु० चीतेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः पीलापन लिये भूरा-सा होता है और इसकी देहपर काले-काले गोल धब्बे या चित्तियाँ-सी होती हैं।

तँदू-पु० एक पेड़ जिसका हीर आवनूसके नामसे बिकता है।

ते-*अ० से। सर्व० [सं०] वे, वे लोग।

तेइ*-सर्व० वे ही।

तेईस-वि० बीस और तीन। पु० तेईसकी संख्या, २३।

तेऊ*-सर्व० वे भी।

तेखना*-अ० क्रि० रुष्ट, नाराज होना।

तेग़-स्त्री० [फा०] बड़ी तलवार।

तेगा-पु० दे० 'तेग़'; कुश्तीका एक दाँव।

तेज-पु० [सं०] तीखापन; शस्त्रकी तीक्ष्णता; चमक; उत्साह। **-पत्ता, -पात**-पु० [हिं०] मसालेके काम आनेवाला एक प्रकारका पत्ता। **-पत्र**-पु० तेजपात।

तेज(स्)-पु० [सं०] तीक्ष्णता; तीक्ष्ण धार; दिव्य ज्योति; दीप्ति, प्रभा, चमक; बल, पराक्रम; वीर्य; उग्रता; अधीरता; प्रभाव; अपमान या अधिक्षेपको न सहनेका गुण; ताप; नवनीत, मक्खन; सोना; अग्नि; पंचमहाभूतोंमें तीसरा; ओज; दूसरोंको अभिभूत करनेकी सामर्थ्य।

तेज़-वि० [फा०] जिसकी धार तीक्ष्ण हो, पैनी धारका; द्रुतगामी, वेगवान्; फुर्तीला; तीक्ष्ण बुद्धिवाला; तीखे स्वादका; जल्द असर करनेवाला; महँगा, जिसका मूल्य चढ़ गया हो; प्रखर, प्रचंड; उग्र; चपल, चंचल।

तेजन-पु० [सं०] दीप्ति या तेज उत्पन्न करनेकी क्रिया या भाव; चाकू आदि तेज करना; बाणकी नोक; शस्त्रकी धार।

तेजना*-स० क्रि० तजना, छोड़ना।

तेजवंत*-वि० तेजवान्।

तेजवान्-वि० तेजसे युक्त; पराक्रमी; बलिष्ठ; ओजस्वी।

तेजसी*-वि० तेजस्वी।

तेजस्काम-वि० [सं०] शक्ति, प्रताप आदिकी इच्छा करनेवाला।

तेजस्वान्(स्वत्)-वि० [सं०] तेजसे युक्त, तेजवाला।

तेजस्विता-स्त्री० [सं०] तेजस्वी होनेका भाव।

तेजस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] तेजवाला; प्रतापी; शक्तिशाली; प्रभावशाली।

तेज़ाब-पु० [फा०] किसी क्षार पदार्थका अम्ल जिसमें दूसरी वस्तुओंको गलानेकी शक्ति रहती है (एसिड)।

तेज़ाबी-वि० [फा०] तेजाब-संबंधी। **-सोना**-पु० तेजाबसे साफ किया हुआ सोना।

तेज़ी-स्त्री० [फा०] तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी, सस्तीका उलटा।

तेजोमय-वि० [सं०] तेजसे परिपूर्ण; जिसके शरीरसे तेज निकलता हो, ज्योतिर्मय।

तेजोमूर्ति-पु० [सं०] सूर्य। वि० जिसमें तेजकी प्रचुरता हो।

तेजोवान्(वत्)-वि० [सं०] तेजसे युक्त; तीखा; तेज।

तेजोहत-वि० [सं०] जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

तेता*-वि० उतना, जो परिमाणमें उसीके बराबर हो।

तेतालीस-वि०, पु० दे० 'तेँतालीस'।

तेतिक*-वि० उतना।

तेतो*-वि० उतना।

तेरस-स्त्री० दे० 'त्रयोदशी'।

तेरह-वि० दस और तीन। पु० तेरहकी संख्या, १३। **(तीन-तेरह**-दे० 'तीन'में **)**।

तेरहीँ-स्त्री० मरनेकी तिथिसे तेरहवीं तिथि जिस दिन ब्राह्मणभोजनके बाद मरणाशौचका अंत होता है।

तेरुस*-पु० पिछला या आगेका तीसरा साल। स्त्री० तेरस।

तेरे*-प्र० से।

तेरो*-सर्व० तेरा।

तेल-पु० बीजों, वनस्पतियों आदिसे निकलने या विशेष उपाय द्वारा निकाला जानेवाला स्निग्ध तरल पदार्थ; वर-वधूको विवाहके पूर्व हल्दी मिला हुआ तेल लगानेकी एक रीति। **मु०-चढ़ना**-विवाह-संबंधी तेलकी रस्म पूरी होना।

तेलगू-स्त्री० तैलंग या आंध्र देशकी भाषा।

तेलहन-पु० वे बीज जिनसे तेल निकाला जाता है।

तेलहा†-वि० तेलसे संबद्ध; तेलका, तेलमें बना हुआ; जिसमें तेल हो।

तेलिया-वि० जो तेलकी भाँति चिकना हो; जिसका रंग तेलके रंग जैसा हो। पु० एक रंग; इस रंगका घोड़ा; एक विष। स्त्री० एक मछली। **-पखान**-पु० एक तरहका काला, चिकना पत्थर। **-मसान**-पु० कंजूस आदमी। **-सुहागा**-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

तेली-पु० हिंदुओंकी एक जाति जो तेल पेरने और बेचनेका पेशा करती है। **मु०-का बैल**-रात-दिन पिसनेवाला व्यक्ति।

तेवर-पु० क्रोधसूचक भ्रूभंग, क्रोधभरी दृष्टि, कोप प्रकट करनेवाली तिरछी नजर; भौंह। **मु०-चढ़ना**-क्रोधके मारे भौंहोंका तन जाना। **-बदलना**-क्रुद्ध होना।

तेवरी-स्त्री० दे० 'त्योरी'।

तेवहार-पु० दे० 'त्योहार'।

तेवान*-पु० सोच, चिंता।

तेवाना*-अ० क्रि० सोचमें पड़ना, चिंता-मग्न होना।

तेह*-पु० क्रोध; स्वाभिमान, ऐंठ; ताव; प्रखरता, तेजी।

तेहरा-वि० तीन परत किया हुआ, तीन तहोंका; जिसकी तीन प्रतियाँ एक साथ हों; तीसरी बार किया हुआ।

तेहराना-स० क्रि० तीन परतों या तहोंका बनाना; तीसरी बार करना; तीसरी बार पढ़ना।

तेहा*-पु० दे० 'तेह'।

तेहि*-सर्व० उसको, उसे।

तेही*–वि० क्रोधी, गुस्सैल; अभिमानी ।

तैँ*–सर्व० तू । प्र० से ।

तैँतालीस–वि०, पु० दे० 'तेँतालीस' ।

तैँतीस–वि०, पु० दे० 'तेँतीस' ।

तै–वि० दे० 'तय' । † अ० उतने ।

तैक्ष्ण्य–पु० [सं०] तीक्ष्ण होनेका भाव, तीक्ष्णता ।

तैजस–वि०[सं०] चमकीला; तेजसे उत्पन्न; जिसमें तेज हो ।

तैना*–स० क्रि० तपाना, जलाना ।

तैनात–वि० किसी कामके लिए नियत या नियुक्त।

तैनाती–स्त्री० नियुक्ति, मुकर्ररी।

तैयार–वि० जो बनकर बिलकुल ठीक हो गया हो; जो पककर खाने योग्य हो गया हो; पूर्णतः व्यवहारके योग्य; उद्यत, कटिबद्ध; मुस्तैद; प्रस्तुत, मौजूद; हृष्ट-पुष्ट; शिक्षा आदिके द्वारा कामके योग्य बनाया हुआ ।

तैयारी–स्त्री० तैयार होनेकी क्रिया या भाव; तत्परता, मुस्तैदी; सजधज; शरीरकी पुष्टता; अभ्याससे प्राप्त कुशलता ।

तैयों*–अ० तो भी, फिर भी ।

तैरना–अ० क्रि० किसी जीवका हाथ-पाँव आदि चलाते हुए पानीपर चलना; पानीके ऊपर-ऊपर फिरना; उतराना ।

तैराई–स्त्री० तैरनेकी क्रिया या भाव; तैरने-तैरानेके बदले प्राप्त द्रव्य ।

तैराक–वि० तैरनेमें कुशल । पु० वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तैरना जानता हो ।

तैराना–स० क्रि० तैरनेका काम दूसरेसे कराना; दूसरेको तैरनेमें लगाना, संतरणमें प्रवृत्त करना ।

तैलंग–पु० आंध्र देश; तैलंग देशका रहनेवाला ।

तैलंगी–वि० तैलंग देशका; तैलंग देश-संबंधी । पु० तैलंग देशका निवासी । स्त्री० तैलंग देशकी भाषा ।

तैल–पु०[सं०] तिलको पेरकर निकाला हुआ द्रव्य, तेल । **–कार**–पु० तेली । **–किट्ट**–पु० तेलके नीचे बैठा हुआ मैल; खली । **–चित्र**–पु० (आइल पेंटिंग) तेल मिले हुए रंगोंसे बनाया गया चित्र । **–पोत**–पु० (आइल टैंकर) खनिज तेल ढोनेवाला जहाज । **–वाहक पोत**–पु० (टैंकर) बड़ी मात्रामें खनिज तेल अपनी टंकीमें भरकर ले जानेवाला जहाज, तैलपोत ।

तैलाक्त–वि० [सं०] जिसमें तेल लगा हो; जिसने तेल सोखा हो ।

तैलाभ्यंग–पु० [सं०] शरीरमें तेल मलनेकी क्रिया ।

तैलिकयंत्र–पु० [सं०] कोल्हू ।

तैश–पु० [अ०] आवेगपूर्ण क्रोध, क्रोधकी झझक । **मु०–में आना**–बहुत क्रुद्ध होना ।

तैसा–वि० दे० 'वैसा' ।

तैसे–अ० दे० 'वैसे' ।

तौं*–अ० त्यों, उस प्रकार; उस समय ।

तोँअर*–पु० भाले जैसा एक अस्त्र, तोमर ।

तोँद–स्त्री० पेटका आगेकी ओर बढ़ा हुआ भाग । **मु०–पचकना**–मोटाई दूर होना ।

तोँदल–वि० तोंदवाला, जिसका पेट निकला हुआ हो ।

तोँदी–स्त्री० नाभि ।

तोँदीला–वि० तोंदवाला ।

तो–अ० तब, उस स्थितिमें; एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्दपर जोर देनेके लिए अथवा यों ही किया जाता है; * था । * सर्व० तुझ, 'तू'का वह रूप जो उसे विभक्ति लगनेके पहले प्राप्त होता है ।

तोइ*–पु० तोय, जल ।

तोई–स्त्री० मगजी, गोट ।

तोख*–पु० दे० 'तोष' ।

तोखना*–स० क्रि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना ।

तोखार*–पु० दे० 'तुखार' ।

तोटक–पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें चार सगण होते हैं ।

तोटना*–अ० क्रि० टूटना ।

तोड़–पु० तोड़नेकी क्रिया या भाव; नदी आदिके जलका जोरदार बहाव; कुश्तीमें एक दाँवके जवाबमें किया गया दूसरा दाँव; झोंक; दहीका पानी । **–जोड़**–पु० दाँव-पेंच; उपाय, युक्ति ।

तोड़क–पु० तोड़नेवाला ।

तोड़ना–स०क्रि० आघात, झटके या दबावसे किसी वस्तुके दो या अधिक टुकड़े करना; किसी वस्तुके अंगको या उसमें लगी हुई दूसरी वस्तुको नोचकर या और तरहसे आधारसे पृथक् करना; किसी वस्तुका कोई अंग खंडित या बेकाम करना; बल, प्रभाव आदिको निःशेष या नष्ट करना; किसी संस्था या कार-बार आदिको सदाके लिए बंद कर देना; किसी नियमको रद करना या कायम न रखना; किसी आज्ञाका उल्लंघन करना; संबंध या नातेको आगेके लिए न निभाना; बातपर कायम न रहना; दूर करना; फुसला लेना, फोड़ना ।

तोड़र*–पु० तोड़ा; पैरका एक गहना ।

तोड़वाना–स० [क्रि० तोड़नेका कार्य दूसरेसे कराना; तोड़नेमें प्रवृत्त करना; तोड़ने देना ('तोड़ना'का प्रेर०) ।

तोड़ा–पु० रुपये रखनेकी टाट आदिकी थैली जिसमें एक हजार रुपये अँट सकें; कलाईमें पहननेका एक गहना; टोटा; नाचका एक हिस्सा; हरिस; पलीता । **(तोड़े)दार बंदूक**–स्त्री० पलीता दागकर छोड़ी जानेवाली बंदूक । **मु० (तोड़े) उलटना या गिनना**–किसीको बहुत अधिक द्रव्य देना ।

तोड़ाई–स्त्री० तोड़ाने या तोड़नेकी क्रिया या भाव; तोड़नेकी उजरत ।

तोड़ाना–स० क्रि० तोड़नेका काम दूसरेसे कराना; रस्सीके बंधनसे अपनेको मुक्त करना; किसी सिक्केको भुनाना ।

तोण*–पु० तरकश, तूणीर ।

तोत*–पु० राशि, समूह ।

तोतई–वि० तोतेके रंगका । पु० तोतेकासा रंग ।

तोतक*–पु० पपीहा ।

तोतर†–वि० दे० 'तोतला' ।

तोतरा–वि० दे० 'तोतला' ।

तोतराना–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना' ।

तोतला–वि० जो तुतलाकर बोलता हो; तुतलानेकासा ।

तोतलाना–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना' ।

तोता–पु० हरे या अन्य रंगका प्रसिद्ध पक्षी जिसकी चोंच

लाल होती है सुग्गा; बंदूकका घोड़ा। **–चश्म**–वि० जो तोतेकी भाँति आँखें फेर ले, बे-वफा; जिसमें थोड़ीसी भी मुरौवत न हो। **–चश्मी**–स्त्री० बेमुरौवती; बेवफाई। **–परी**–पु० एक तरहका आम। **मु०–पालना**–किसी दुर्व्यसनका आदी होना; किसी बीमारी या बुराईको बढ़ने देना। **(तोते)की तरह आँखें फेरना**–एकदम बेमुरौवत होना, पुराना संबंध भुला देना। **–की तरह रटना**–बिना अर्थ समझे कंठ करना।

तोद–पु० [सं०] व्यथा, पीड़ा, कष्ट; शूल; हाँकना।

तोदन–पु० [सं०] व्यथा, पीडन; कोड़ा, अंकुश।

तोप–स्त्री० [तु०] युद्धमें गोलाबारी करनेका एक प्रसिद्ध अस्त्र। **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ तोपें और उनके आवश्यक उपकरण हों; युद्धके लिए सुसज्जित तोपोंका समूह। **–ची**–पु० तोप चलानेवाला, गोलंदाज। **–विद्या**–स्त्री० (गनेरी) बड़ी तोपोंके निर्माण तथा प्रबंधादिका काम।

तोपना*–स० क्रि० ढाँकना, छिपाना।

तोफा†–वि० तोहफा, बढ़िया।

तोबड़ा–पु० घोड़ेको दाना खिलानेका चमड़े या टाटका थैला। **मु०–चढ़ाना**–बोलने न देना, मुँह बंद करना।

तोबा–पु० [अ० तौबः] घृणित या निंद्य कर्म पुनः न करनेकी पश्चात्ताप या शपथपूर्वक की गयी दृढ़ प्रतिज्ञा (कभी-कभी किसी व्यक्ति या पदार्थके प्रति घृणा प्रकट करनेके लिए इसका प्रयोग होता है); अफसोस, पछतावा, पश्चात्ताप। **मु०–तिल्ला मचाना**–चीखना, चिल्लाना; किसी नुकसानपर हाय-हाय करना। **–तोड़ना**–कौलसे फिर जाना; तोबा किये हुए कामको पुनः करना।

तोम–पु० समूह, राशि।

तोमड़ी–स्त्री० तूँबड़ी।

तोमर–पु० [सं०] भालेकी तरहका एक प्रसिद्ध अस्त्र; एक छंद; राजपूतोंका एक प्राचीन राजवंश।

तोमरी*–स्त्री० तुमड़ी; कड़ुआ कद्दू।

तोय–पु० [सं०] जल, पानी; पूर्वाषाढा नक्षत्र। **–क्रीडा**–स्त्री० जल-क्रीड़ा। **–गर्भ**–पु० नारियल। **–द**–पु० मेघ, बादल। **–धर, –धार**–पु० मेघ, बादल; मोथा। **–धि, –निधि**–पु० सागर, समुद्र; चारकी संख्या। **–यंत्र**–पु० जलघड़ी; फौवारा।

तोर–पु० अरहर; * दे० 'तोड़'। * सर्व० तेरा।

तोरई–स्त्री० तुरई।

तोरण–पु० [सं०] किसी घर या नगरका बाहरी दरवाजा, बहिर्द्वार; दीवारों, खंभों आदिकी सजावटके लिए लगायी जानेवाली मालाएँ आदि, वंदनवार।

तोरन*–पु० दे० 'तोरण'।

तोरना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ना'; दूर करना।

तोरा*–सर्व० तेरा, तुम्हारा। पु० तुर्रा, कलगी।

तोराई*–अ० वेगपूर्वक; शीघ्रतापूर्वक, तेजीसे।

तोराना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ाना'।

तोरावान्*–वि० वेगवान्, तेज।

तोरी–स्त्री० काले रंगकी सरसों; तुरई।

तोलन–पु० [सं०] तौलनेकी क्रिया; उठाना।

तोलना*–स० क्रि० तौलना; पहियेकी धुरीमें तेल देना; धनुष् आदि सँभालना; उठाना।

तोला–पु० बारह माशेकी एक तौल; इस तौलका बाट।

तोशदान–पु० पाथेय रखनेकी थैली; कारतूस रखनेकी थैली।

तोशक–स्त्री० [तु०] रुई भरा बिछावन, छोटा गद्दा। **–ख़ाना**–पु० अमीरोंके वस्त्रादि रखनेका स्थान।

तोशा–पु० [फा०] संबल, पाथेय। **–ख़ाना**–पु० दे० 'तोशकख़ाना'।

तोष–पु० [सं०] मनकी वह वृत्ति जिसमें प्राप्त वस्तु, सुख आदिसे अधिककी लालसा न हो, तुष्टि; प्रसन्नता, प्रसाद।

तोषक–वि० [सं०] संतुष्ट या तृप्त करनेवाला।

तोषण–पु० [सं०] संतुष्ट करनेकी क्रिया या भाव; तोष।

तोषना*–स० क्रि० संतुष्ट करना, तृप्त करना; प्रसन्न करना। अ० क्रि० संतुष्ट होना, तृप्त होना।

तोस*–पु० दे० 'तोष'।

तोसा*–पु० दे० 'तोशा'। **–खाना**–पु० दे० 'तोशाख़ाना'।

तोसागार*–पु० दे० 'तोशाख़ाना'।

तोहफ़ा–वि० [अ०] नायाब; बढ़िया, अच्छा। पु० सौगात, नजर, भेंट; सुंदर या बढ़िया चीज।

तोहमत–स्त्री० [अ०] मिथ्या आरोप, लांछन।

तोहमती–वि० [अ०] मिथ्या आरोप करनेवाला।

तोहार†–सर्व० तुम्हारा।

तोहि*–सर्व० तुझे, तुम्हें।

तौंकना*–अ० क्रि० आँचसे तपना।

तौंस–स्त्री० धूप खानेसे लगी तेज प्यास; ताप, ऊमस।

तौंसना*–अ० क्रि० तप जाना, गरमीसे झुलस जाना।

तौंसा–पु० कड़ी गरमी, भीषण ताप।

तौ*–अ० तो। * अ० क्रि० था।

तौक़–पु० [अ०] हँसुली; मन्नत पूरी करनेके लिए बच्चोंको पहनायी हुई हँसुली; कबूतर आदि पक्षियोंके गलेका हँसुली जैसा चिह्न। **(तौक़े) ग़ुलामी**–पु० हँसुली जो गुलामोंके गलेमें पहनाते थे।

तौकी*–स्त्री० गलेका एक गहना।

तौन†–सर्व० वह, सो।

तौनी–स्त्री० छोटा तवा।

तौफ़ीक़–पु० [अ०] शक्ति, सामर्थ्य; हिम्मत, हौसला।

तौर–पु० [अ०] चाल, ढंग; तरह, भाँति। **–तरीक़ा**–पु० चाल-चलन, चाल-ढाल, बात-व्यवहार।

तौरि*–स्त्री० घुमटा, चक्कर।

तौरेत–पु० [इब०] यहूदियोंका प्रधान धर्मग्रंथ।

तौल–स्त्री० तौलनेकी क्रिया; माप, जोख, वजन; परख।

तौलना–स० क्रि० किसी पदार्थका परिमाण या भारीपन जाननेके लिए उसे तराजू या काँटेपर रखना, जोखना; साधना; गाड़ीकी धुरीमें तेल लगाना।

तौलवाई–स्त्री० दे० 'तौलाई'।

तौलवाना–स० क्रि० तौलनेका काम दूसरेसे कराना।

तौलाई–स्त्री० तौलनेकी क्रिया या भाव; तौलनेकी उजरत।

तौलाना–स० क्रि० तौलनेका काम कराना।

तौलिया–पु०, स्त्री० शरीर पोंछनेका विशेष प्रकारका अँगोछा।

तौसना*–अ० क्रि० दे० 'तौँसना'। स० क्रि० ताप या गरमी पहुँचाकर बेचैन करना।

तौहीन–स्त्री० [अ०] अनादर, अपमान, बेइज्जती।

तौहीनी†–स्त्री० दे० 'तौहीन'।

त्यक्त–वि० [सं०] त्यागा, छोड़ा हुआ, जिसका त्याग कर दिया गया हो। **–जीवित, –प्राण**–वि० जिसने जीवनकी आशा छोड़ दी है; मरनेको प्रस्तुत। **–लज्ज**–वि० निर्लज्ज; जो संकोचमें न पड़ा रहे।

त्यक्तव्य–वि० [सं०] छोड़ने, त्यागने योग्य।

त्यक्ता(क्तृ)–वि०, पु० [सं०] छोड़नेवाला, त्यागनेवाला।

त्यजन–पु० [सं०] छोड़ने, त्यागनेकी क्रिया।

त्याग–पु० [सं०] किसी वस्तुपरसे अपना स्वत्व हटा लेने अथवा अपनेपनका भाव मिटाकर उसे छोड़ देनेकी क्रिया, उत्सर्ग; किसीसे नाता तोड़ देनेकी क्रिया; सांसारिक विषयों तथा भोगोंमें लिप्त न रहनेकी क्रिया या भाव; ममत्वका उच्छेद; परहितसाधन अथवा उच्च लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए की गयी स्वार्थकी उपेक्षा, कुरबानी; किसी पद या स्थानसे संबंध न रखना। **–पत्र**–पु० इस्तीफा। **–शील**–वि० उदार, त्यागी।

त्यागना–स० क्रि० छोड़ना, त्याग करना।

त्यागी(गिन्)–वि० [सं०] जो सांसारिक सुखोंमें लिप्त न हो; जिसने स्वार्थ, भोगकी इच्छा आदिका त्याग कर दिया हो, विरक्त।

त्याज्य–वि० [सं०] छोड़ने, त्यागने योग्य।

त्यार*–वि० दे० 'तैयार'।

त्यों–अ० उस प्रकार, उस तरह, वैसे; उसी वक्त, उसी समय, तत्क्षण; * (किसीकी) ओर, तरफ।

त्योनार*–पु० दे० 'त्यौनार।

त्योर*–पु० दे० त्योरी'।

त्योर(रु)स†–पु० बीता हुआ या आगेका तीसरा वर्ष।

त्योरी–स्त्री० माथेका बल, माथेकी सलोट; निगाह, दृष्टि। मु०**–चढ़ना या बदलना**–क्रोधसे माथेमें बल पड़ना, कोपसे भ्रुकुटीका ऊपरकी ओर खिंच जाना। **–चढ़ाना या बदलना**–क्रोध व्यक्त करनेके लिए पेशानीपर बल डालना। **–में बल पड़ना**–त्योरी चढ़ना।

त्योहार–पु० प्रतिवर्ष निश्चित तिथिको मनाया जानेवाला कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव, पर्व।

त्योहारी–स्त्री० वह वस्तु जो त्योहारके उपलक्ष्यमें छोटों या नौकरोंको दी जाय।

त्यौं–अ० दे० 'त्यों'।

त्यौनार*–पु० ढंग, तरीका।

त्यौर*–पु० दे० 'त्योरी'।

त्यौराना–अ० क्रि० सिर घूमना, सिरमें चक्कर आना।

त्यौरी–स्त्री० दे० 'त्योरी'।

त्यौरुस†–पु० 'त्योरुस'।

त्यौहार–पु० दे० 'त्योहार'।

त्र–वि० [सं०] (समासांतमें) रक्षा करनेवाला; तीन। प्र० सप्तमी विभक्तिके रूपमें प्रयुक्त होनेवाला एक प्रत्यय।

त्रपा–स्त्री० [सं०] लज्जा, लाज, शर्म; कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; यश; कुल, वंश, जाति। * वि० लज्जित।

त्रय–वि० [सं०] तीन।

त्रयी–स्त्री० [सं०] तीनका समाहार–जैसे वेदत्रयी।

त्रयोदशी–स्त्री० [सं०] किसी पक्षकी तेरहवीं तिथि, तेरस।

त्रष्टा*–पु० एक प्रकारकी थाली जो प्रायः ठाकुर-पूजनके काम आती है।

त्रसरेणु–स्त्री० [सं०] धूलका वह सूक्ष्म कण जो छिद्रसे आनेवाले प्रकाशमें दिखाई देता है; सूक्ष्म कण; सूर्यकी एक पत्नी।

त्रसन–पु० [सं०] भय; चिंता; व्याकुलता।

त्रसना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना।

त्रसाना*–स० क्रि० डराना, भय दिखाना।

त्रसित–वि० डरा हुआ, भीत, त्रस्त; ग्रस्त, आक्रांत।

त्रस्त–वि० [सं०] भीत, डरा हुआ; चकित।

त्राटक–पु० [सं०] हठयोगमें किसी बिंदुपर दृष्टि जमानेकी क्रिया।

त्राण–पु० [सं०] भयके हेतुका निवारण, रक्षा, बचाव।

त्राता(तृ)–पु० [सं०] रक्षक, बचानेवाला।

त्रातार*–पु० रक्षक।

त्रास–पु० [सं०] भय, डर; कष्ट। **–कर**–पु० दे० 'त्रासक'। **–दायी (यिन्)**–वि०, पु० भयदायक।

त्रासक–पु० [सं०] डरानेवाला; नाशक; दूर करनेवाला।

त्रासन–पु० [सं०] डराने या त्रस्त करनेकी क्रिया; त्रासक।

त्रासना*–स० क्रि० डराना, भय दिखाना।

त्रासित–वि० [सं०] त्रस्त किया हुआ, डराया हुआ।

त्राहि–अ० [सं०] बचाओ, रक्षा करो, पाहि। मु०**–त्राहि करना**–दैन्यपूर्वक रक्षाके लिए प्रार्थना करना, बेबस होकर बचानेके लिए किसीको पुकारना। **–त्राहि मचना**–विपद्ग्रस्तोंके मुँहसे 'त्राहि-त्राहि'की पुकार निकलना।

त्रि–वि० [सं०] तीन। यह यौगिक शब्दोंके आरंभमें जोड़ा जाता है, जैसे–त्रिकाल, त्रिदेव, त्रिलोक इ०। **–कंट, –कंटक**–पु० गोखरू; सेहुँड़; टेँगरा मछली। वि० जिसमें तीन काँटे या नोकें हों। **–कटु, –कटुक**–पु० तीन कड़ुए पदार्थोंका समाहार–सोंठ, पीपर और मिर्च। **–काल**–पु० तीनों काल–भूत, वर्तमान और भविष्य; तीनों समय–प्रातः, मध्याह्न और सायं। अ० प्रातः, मध्याह्न और सायं–तीनों समय। **–कालज्ञ**–वि०, पु० तीनों कालोंकी बातें जाननेवाला। **–काल दर्शक**–पु० ऋषि। वि० जिसे तीनों कालोंकी बातें ज्ञात हों। **–कालदर्शिता**–स्त्री० त्रिकालदर्शी होनेकी शक्ति या भाव। **–कालदर्शी(र्शिन्)**–वि०, पु० दे० 'त्रिकालज्ञ'। **–कुटी**–स्त्री० भौंहोंके मध्यके कुछ ऊपरका स्थान जहाँ त्रिकूट-चक्रकी स्थिति मानी जाती है। **–कूट**–पु० वह पर्वत जिसपर लंका बसी थी; तीन शृंगोंवाला पर्वत; एक पर्वत जो सुमेरुका पुत्र माना जाता है (वामन पु०); योगमें एक चक्र जिसकी स्थिति त्रिकुटीमें मानी जाती है; समुद्री लवण। **–कोण**–पु० (ट्राइएंगिल) तीन कोनोंका क्षेत्र, त्रिभुज △; कामरूपका एक सिद्ध पीठ; जन्मकुंडलीमें लग्नस्थानसे पाँचवाँ और नवाँ स्थान। वि० जिसमें तीन कोने हों, तिकोना। **–कोण फल**–पु० सिंघाड़ा। **–कोण भवन**–पु० जन्मकुंडलीमें लग्नस्थानसे पाँचवाँ और नवाँ घर। **–कोणमिति**–स्त्री०

ज्यामितिका एक विभाग।**–कोणक**–पु०त्रिभुज ।**–क्षार**–पु० तीन क्षारोंका समाहार–जवाखार, सज्जी तथा सुहागा । **–गर्त**–पु० उत्तरभारतका वह प्राचीन प्रदेश जिसमें वर्तमान पंजाबके जालंधर और काँगड़ा आदि जिले सम्मिलित हैं; इस प्रदेशका निवासी । **–गुण**–पु० सत्त्व, रज, तम–इन तीन गुणोंका समाहार । वि० तीन गुना, तिगुना; जिसमें सत्त्वादि तीनों गुण हों; तीन धागोंवाला । **–गुणा**–स्त्री० माया; दुर्गा । **–गुणातीत**–वि० जो सत्त्वादि तीनों गुणोंसे परे हो । पु० परमात्मा । **–गुणात्मक**–वि० जिसमें सत्त्वादि तीनों गुण हों । **–गुणित**–वि० तिगुना किया हुआ । **–चक्रयान**–पु० (ट्राइसिकिल) एक तरहकी तीन पहियोंवाली गाड़ी जो प्रायः बाइसिकिलकी तरह पैडल मारनेसे चलती है । **–चक्षु (स्)**–पु० शिव । **–जग***–पु० तीनों लोक–स्वर्ग, पृथिवी और पाताल; दे० क्रममें । **–जगती**–स्त्री० **–जगत्**–पु० तीनों लोक । **–जटा**–स्त्री० अशोकवाटिका-में जानकीके साथ रहनेवाली एक राक्षसी । **–जात,–जातक**–पु० इलायची, दारचीनी और तेजपत्ता–इन तीनोंका समाहार । नागकेसर मिलाकर इसे चतुर्जातक कहते हैं । **–जामा***–स्त्री० दे० 'त्रियामा' ।**–जीवा,–ज्या**–स्त्री० (रेडिअस) वृत्तके केंद्रसे परिधितक खिंची हुई सीधी रेखा (यह लंबाईमें व्यासकी आधी होती है) । **–ताप**–पु० दे० 'तापत्रय' । **–दंडी(डिन्)**–पु० वह जिसने वाणी, मन और शरीर–इन तीनोंको वशमें कर लिया हो, संन्यासी, परिव्राजक । **–दल**–पु० बेलका पेड़ ।**–दश**–पु० देवता; जीव । **–दश गुरु**–पु० देवगुरु, बृहस्पति । **–दशपति**–पु० इंद्र । **–दशवधू**–स्त्री० अप्सरा । **–देव**–पु० ब्रह्मा, विष्णु और महेश–ये तीनों देव । **–दोष**–पु० तीनों दोष–वात पित्त और कफ; इन तीनोंके प्रकोपसे उत्पन्न रोग, सन्निपात ।**–दोषज**–पु० सन्निपात । वि०तीनों दोषोंसे उत्पन्न । **–नयन**–पु० शिव । **–नयना**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती । **–पथ**–पु० ज्ञान, कर्म और उपासना–ये तीनों मार्ग; आकाश, पृथ्वी और पाताल; वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिले हों ।**–पथगा,–पथगामिनी**–स्त्री० (स्वर्ग,मर्त्य और पाताल तीनों लोकोंमें बहनेवाली) गंगा । **–पदस्तंभ**–पु० (ट्राइपॉड) एक तरहकी तिपाई या तीन पाँवोंवाला आला जिसपर रखकर कोई वस्तु गरम की जाय । **–पदी**–स्त्री० गायत्री छंद; तिपाई; हाथीका पैर बाँधनेका रस्सा। **–पाठी(ठिन्)**–वि० तीनों वेदोंका ज्ञाता । पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि–तिवारी, त्रिवेदी । **–पिटक**–पु० बौद्धोंका मूल ग्रंथ जो विनय, सुत्त और अभिधम्म–तीन पिटकों(भागों)में विभक्त है ।**–पुंड** पु०[हिं०],**–पुंड्र**–पु०एक तिलक जिसमें ललाट आदिपर भस्म अथवा चंदनकी तीन आड़ी या अर्ध चंद्राकार रेखाएँ बनाते हैं । **–पुटी**–स्त्री० छोटी. इलायची; ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान; ध्याता; ध्येय और ध्यान; द्रष्टा, दृश्य और दर्शन आदि तीन-तीन का समाहार; * दे० 'त्रिकुटी' । **–पुरारि**–पु० महादेव । **–फला**–पु० आँवला, हड़ और बहेड़ा । **–बली**–स्त्री० पेटपर पड़नेवाले तीन बल । **–बेनी***–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी' ।**–भंग**–वि० तीन जगहोंसे झुका हुआ; जिसमें तीन जगह टेढ़ापन हो । पु० खड़े होनेकी एक मुद्रा जिसमें गरदन, कमर और दाहिने पाँवमें बल पड़ता है (कृष्णके वंशी बजानेका वर्णन इसी रूपमें मिलता है) । **–भुज**–पु० (ट्राइएंगिल) वह समक्षेत्र जो तीन भुजाओंसे घिरा हो तथा जिसमें तीन कोण हों, त्रिकोण । **–भुजलंब**–पु० (आल्टीट्यूड) त्रिभुजके शीर्षसे आधारतक खींची जानेवाली वह सरल रेखा जो आधारपर लंब (परपेंडिक्यूलर) हो (इसे त्रिभुजकी ऊँचाई भी कहते हैं) । **–भुवन**–पु० स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल–इन तीन भुवनोंका समाहार । **–भुवन सुंदरी**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती । **–मात***–वि० दे० 'त्रिमात्र' । **–मात्र,–मात्रिक**–वि० जिसमें तीन मात्राएँ हों, प्लुत । **–मुनि**–पु० पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि–ये तीनों मुनि, मुनित्रय । **–मुहानी**†–स्त्री० दे० 'तिमुहानी' । **–मूर्ति**–पु० वह जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और शिव–ये तीन मूर्तियाँ हैं, परमेश्वर; सूर्य । **–यान**–पु० बौद्धधर्मके अंतर्गत महायान, हीनयान तथा मध्यमयान–ये तीन यान ।**–यामा**–स्त्री० रात्रि; हल्दी; यमुना; नील; काला निसोथ । **–युग**–पु० तीन पीढ़ियाँ; तीनों ऋतुएँ–वसंत, वर्षा तथा शरद्; तीनों युग–सत्य, द्वापर और त्रेता; विष्णु । **–रेख**–पु० शंख । वि० जिसमें तीन रेखाएँ हों, तीन रेखाओंसे युक्त । **–लघु**–पु० (वह जिसमें तीनों वर्ण लघु हों) नगण । **–लवण**–पु० सेंधा, साँभर और सोंचर नमक ।**–लोक**–पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल–ये तीनों लोक । **–लोकनाथ,–लोकपति**–पु० तीनों लोकोंका स्वामी,ईश्वर;राम, कृष्ण आदि विष्णुका कोई अवतार; सूर्य ।**–लोकी**–स्त्री०दे०'त्रिलोक'।**–लोकीनाथ**–पु० दे० 'त्रिलोकनाथ' ।**–लोचन**–पु० शिव ।**–लोचना**–स्त्री० दुर्गा; असती, व्यभिचारिणी स्त्री ।**–लोचनी**–स्त्री० दुर्गा । **–वर्ग**–पु० धर्म, अर्थ और काम; त्रिफला; त्रिकटु; सत्त्व, रज और तम (सांख्य०); ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; क्षय, स्थिति और वृद्धि(राजनीति) ।**–विक्रम**–पु० तीन डग (विष्णुके); विष्णु; वामन ।**–विध**–वि०तीन प्रकारका ।**–विध बहिष्कार**–पु० (ट्रिपिल बॉयकॉट) तीन तरफका या तीन चीजोंका बहिष्कार (भारतके असहयोग आंदोलनके समय इसका अर्थ विदेशी अदालतों, विदेशी शिक्षालयों तथा विदेशी वस्त्रोंका बहिष्कार लिया जाता था) । **–वेणी**–स्त्री० वह स्थान जहाँसे तीन नदियाँ तीन ओर बही हों; तीन नदियोंके मिलनेका स्थान; प्रयागमें गंगा, यमुना और सरस्वतीके मिलनेका स्थान । **–वेद**–पु० तीनों वेद–ऋक्, यजुः और साम; इन तीनों वेदोंका ज्ञाता ।**–वेदी(दिन्)**–पु० तीनों वेदोंका ज्ञाता; ब्राह्मणोंका एक उपभेद, त्रिपाठी । **–वेनी***–स्त्री० दे० त्रिवेणी' । **–शंकु**–पु० एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो हरिश्चंद्रके पिता थे । (इनके बारेमें कहा जाता है कि स्वर्ग और पृथ्वीके बीच उलटे लटके हुए हैं ।)**–शत**–वि० तीन सौ । **–शाल**–पु० तीन कमरोंवाला मकान ।**–शिरा(रस्)**–पु० एक राक्षस जिसे रामने दंडकारण्यमें मारा था; कुबेर । **–शूल**–पु० तीन फलोंका एक प्रसिद्ध अस्त्र जो शिवका प्रधान अस्त्र है ।**–शूलधारी(रिन्)**–पु० शिव ।

-शूली(लिन्)-पु० शिव। -शृंग-पु० त्रिकूट पर्वत; त्रिकोण। -संध्य-पु० दिनके तीन भाग-प्रातः, मध्याह्न और सूर्यास्त।-संध्याव्यापिनी-वि० स्त्री० प्रातःकालसे संध्याकालतक रहनेवाली (तिथि)। -संध्या-स्त्री० तीनों संध्याएँ। -सम-पु० सोंठ, गुड़ और हड़का समाहार। वि० जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों (ज्या०)।-सर-पु० तीन लड़ियोंका मुक्ताहार; खिचड़ी। -स्रोता(तस्)-स्त्री० गंगा।

त्रिक-पु० [सं०] तीनका समाहार; रीढ़का अधोभाग जहाँ कूल्हेकी हड्डियाँ मिलती हैं, कटिदेश; कंधेकी हड्डियोंके बीचका भाग; त्रिफला, त्रिकटु; त्रिमद; तीन मार्गोंके मिलनेका स्थान। वि० तेहरा; तीन प्रतिशत; तीसरी बार होनेवाला। -वेदना-स्त्री०,-शूल-पु० वातके प्रकोपसे कूल्हों और रीढ़की हड्डीके संधिस्थानमें होनेवाली पीड़ा।

त्रिखा*-स्त्री० 'तृषा'।

त्रिजग*-पु०दे०'तिर्यक्'।-जोनि-स्त्री०दे०'तिर्यग्योनि'।

त्रिदशाचार्य-पु० [सं०] बृहस्पति।

त्रिदशाधिप-पु० [सं०] इंद्र।

त्रिदोषना*-अ० क्रि० तीनों दोषोंसे ग्रस्त होना; काम, क्रोध और लोभके वशमें होना।

त्रिधा-अ० [सं०] तीन तरहसे; तीन भागोंमें। वि० तीन प्रकारका। -मूर्ति-पु० परमेश्वर जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और महेश-तीन मूर्तियाँ हैं।

त्रिपिताना*-अ० क्रि० तृप्त होना। स० क्रि० तृप्त या संतुष्ट करना।

त्रिय, त्रिया*-स्त्री० स्त्री, नारी। (त्रिया)चरित्र-पु० दे० 'तिरिया-चरित्तर'।

त्रिषा*-स्त्री० दे० 'तृषा'।

त्रिषित*, त्रिसित*-वि० दे० 'तृषित'।

त्रुटि-स्त्री० [सं०] कमी, कसर; भूल, चूक; अंगहीनता।

त्रुटित-वि० [सं०] टूटा हुआ; खंडित।

त्रेता-पु० [सं०] चार युगोंमें दूसरा युग-(इसकी अवधि १२९६००० वर्ष मानी गयी है)।

त्रै*-वि० तीन।

त्रैकालिक-वि० [सं०] त्रिकाल-संबंधी; तीनों कालोंमें होनेवाला; त्रिकालवर्ती।

त्रैकोणिक-वि० [सं०] तीन कोणोंवाला; तिपहला।

त्रैगुण्य-पु० [सं०] तीनों गुणोंका समाहार; तीनों गुणोंका धर्म या भाव।

त्रैदशिक-वि० [सं०] दैविक, ईश्वरीय।

त्रैध-वि० [सं०] तेहरा। अ० तीन प्रकारसे।

त्रैमातुर-पु० [सं०] लक्ष्मण।

त्रैमासिक-वि० [सं०] तीन महीनोंका; तीन महीनोंमें होनेवाला; हर तीसरे महीने निकलनेवाला।

त्रैमास्य-पु० [सं०] तीन मासका समय।

त्रैराशिक-पु० [सं०] तीन ज्ञात राशियोंके सहारे चौथी अज्ञात राशि निकाल लेनेकी रीति (ग०)।

त्रैलोक्य-पु० [सं०] दे० 'त्रिलोक'। -नाथ-पु० राम। -बंधु-पु० सूर्य।

त्रैवर्णिक-पु० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य-इन तीनों वर्णोंका धर्म; ये तीनों वर्ण। वि० त्रिवर्ण-संबंधी।

त्रैवार्षिक-वि० [सं०] तीन वर्षोंका; तीन वर्षोंमें होनेवाला।

त्रोटक-पु० [सं०] एक शृंगारप्रधान नाटक; एक विषैला कीड़ा; एक राग; एक छंद।

त्रोण-पु० [सं०] तरकश।

त्रोन*-पु० दे० 'त्रोण'।

त्र्यंगुल-वि० [सं०] तीन अंगुलका।

त्र्यंजन-पु० [सं०] कालांजन, रसांजन और पुष्पांजन।

त्र्यंबक-पु० [सं०] शिव। -सख-पु० कुबेर।

त्र्यंबका-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

त्वक्(च्)-पु० [सं०] छिलका; वल्कल; चर्म; दारचीनी; चर्ममें व्याप्त रहनेवाली एक बाह्य ज्ञानेंद्रिय जो स्पर्श द्वारा अपने विषयका ज्ञान कराती है। -छेदन-पु० चर्मकर्तन; सुन्नत। -तरंगक-पु० झुर्री। -पंचक-पु० बरगद, गूलर, पीपल, सिरीस और पाकड़की छाल।

त्वगिंद्रिय-स्त्री० [सं०] स्पर्शेंद्रिय।

त्वग्जल-पु० [सं०] पसीना।

त्वचकना*-अ० क्रि० पचकना, भीतरकी ओर धँसना; पुराना पड़ना।

त्वचा-स्त्री० [सं०] चर्म, चमड़ा। -पत्र-पु० दारचीनी।

त्वदीय-वि० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा-स्त्री० [सं०] शीघ्रता, जल्दी।-लिपि-स्त्री० (शार्टहैंड) दे० 'शीघ्रलिपि'।

त्वरावान्(वत्)-वि०[सं०] शीघ्रता करनेवाला; द्रुतगामी, तेज; प्रखर।

त्वरित-वि० [सं०] तीव्र गतिवाला, तेज। अ० तेजीसे।

त्वष्टा(ष्टृ)-पु० [सं०] विश्वकर्मा।

थ

थ-देवनागरी वर्णमालाका सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण।

थंडिल*-पु० यज्ञवेदी।

थंब-पु० दे० 'थंभ'।

थंबी-स्त्री० चाँड़, थूनी।

थंभ*-पु० स्तंभ, खंभा-'अति अद्भुत थंभनकी दुगई'-राम०।

थंभन-पु० रुकावट; एक तांत्रिक प्रयोग; स्तंभन करनेवाली औषध।

थँभना*-अ० क्रि० सँभलना; ठहरना, रुकना।

थंभित*-वि० रुका हुआ, टिका हुआ; स्तब्ध।

थ-पु० [सं०] पहाड़; रक्षक; खतरेका चिह्न; एक रोग।

थकन-स्त्री० दे० 'थकान'।

थकना-अ० क्रि० श्रमके कारण शिथिल होना, श्रांत होना; तंग आना; सुध-बुध भूल जाना; लुभा जाना; छकना; धीमा पड़ना। थका-माँदा-वि० थका, हारा हुआ, श्रमसे शिथिल। मु० थक जाना-तंग आ जाना, परेशान हो

जाना; अशक्त हो जाना।

थकान–स्त्री० थकावट, श्रांति, शैथिल्य।

थकाना–स० क्रि० श्रांत करना, शिथिल बना देना।

थकावट, थकाहट–स्त्री० दे० 'थकान'।

थकित–वि० श्रांत, शिथिल, थका हुआ; मुग्ध।

थकौंहाँ*–वि० कुछ थका हुआ, थोड़ा शिथिल।

थक्का–पु० किसी चीजका जमा हुआ टुकड़ा, लोंदा।

थगित–वि० रुका हुआ; शिथिल।

थणुसुत*–पु० शिवपुत्र–गणेश तथा कार्त्तिकेय।

थति*–स्त्री० थाती; पूँजी।

थत्ती–स्त्री० राशि, ढेर।

थन–पु० गाय-भैंस आदिका स्तन, गाय-भैंस आदिका थैली जैसा अंग जिसमें दूध रहता है।

थनेला–पु०,**थनेली**–स्त्री० स्त्रियोंके स्तनपर होनेवाला फोड़ा।

थनैत–पु० गाँवका मुखिया; जमींदारका कारिंदा।

थपकना–स० क्रि० प्यार या लाड़-चावसे किसीकी पीठ आदिपर हथेलीसे हलका आघात करना, थपकी देना।

थपका†–पु० थक्का; थपकी।

थपकी–स्त्री० हथेलीका हलका आघात।

थपड़ी–स्त्री० ताली, करतलध्वनि। **मु०**–**पीटना**,–**बजाना**–हथेलियोंके परस्पर आघात द्वारा शब्द उत्पन्न करना; उपहास करना।

थपथपी–स्त्री० दे० 'थपकी'।

थपन*–पु० स्थापन, स्थापित करनेकी क्रिया। –**हार**–पु० पुनः स्थापित करनेवाला, प्रतिष्ठापक।

थपना*–अ० क्रि० स्थापित होना, स्थापित किया जाना। स० क्रि० स्थापित करना, स्थिर करना, दृढ़ करना; जमाना; ठोकना। पु० थापी; ठोकनेका साधन।

थपाना*–स० क्रि० स्थापित कराना।

थपुआ–पु० चौड़ा-चिपटा खपड़ा जिसके ऊपर नरिया रखी जाती है।

थपेड़ना–स० क्रि० चपत जमाना; आघात करना, ठोकर देना।

थपेड़ा–पु० चपत, चपेटा; घात-प्रतिघात, दरेरा, धक्का।

थपोड़ी–स्त्री० दे० 'थपड़ी'।

थपोरी*–स्त्री० दे० 'थपड़ी'।

थप्पड़–पु० तमाचा, झापड़, चपेटा। **मु०**–**कसना**,–**लगाना**–तमाचा मारना।

थम*–पु० स्तंभ; केलेकी पेड़ी।

थमकारी*–वि० रोकनेवाला, थामनेवाला।

थमना–स० क्रि० रुकना, ठहरना, चालू न रहना, बंद होना, होता न रहना, रुक जाना; प्रतीक्षा करना; ठहरा रहना; धैर्य रखना।

थर–पु० राजपूतानेके उत्तरमें एक रेगिस्तान; स्थल, जमीन; जगह। स्त्री० तह; शेरकी माँद।

थरकना*–अ० क्रि० भयसे कंपित होना, थर्राना।

थरकाना†–स० क्रि० भयसे कँपाना।

थरकौंहाँ–वि० काँपता हुआ; चंचल; स्थिर।

थरथर–अ० इस प्रकार कि सभी अंगोंमें कंपन हो जाय।

थरथराना–अ० क्रि० भयके मारे काँपना; काँपना।

थरथराहट–स्त्री० कँपकँपी।

थरथरी–स्त्री० भय आदिके कारण होनेवाली कँपकँपी।

थरसल*–वि० थहराया हुआ, स्तब्ध, हक्काबक्का।

थरहर*–स्त्री० दे० 'थरथरी'।

थरहराना–अ० क्रि० दे० 'थरथराना'।

थरहरी–स्त्री० दे० 'थरथरी'।

थरहाई*–स्त्री० निहोरा, थराई।

थरि, थरी*–स्त्री० सिंह, बाघ आदिकी माँद।

थरिया†–स्त्री० दे० 'थाली'।

थरु*–पु० दे० 'स्थल'।

थर्राना–अ० क्रि० काँप उठना, दहलना।

थल–पु० स्थल, स्थान, जगह, ठौर; खुश्की; फोड़ेका घेरा। –**चर**–पु० पृथ्वीपर रहनेवाले जीव। –**चारी**–वि० पृथ्वीपर विचरण करनेवाला। –**ज**–पु० गुलाब। –**पति**–पु० राजा, भूपति। –**बेड़ा**–पु० नाव या जहाजके किनारे लगनेकी जगह; (ला०) ठिकाना। –**रुह**–पु० पृथ्वीपर उगनेवाले वृक्ष आदि।

थलकना–अ० क्रि० मोटाई या झोलके कारण चलने आदिमें हिलना; काँपना।

थलथल–वि० मोटाई या ढीलेपनके कारण हिलता हुआ।

थलथलाना–अ० क्रि० शरीरकी स्थूलताके कारण मांसका ऊपर-नीचे हिलना।

थली–स्त्री० स्थान; प्रदेश; भूमि; जलके नीचेका तल; बैठक; रेतीली जमीन; वह भूखंड जो अपने प्रकृत रूपमें हो।

थवई–पु० राजगीर, मकान बनानेवाला कारीगर।

थहना*–स० क्रि० थाह लेना; आंतरिक अभिप्रायका पता लगाना।

थहरना–अ० क्रि० हिलना, काँपना।

थहराना–अ० क्रि० भयसे काँपना; हिलना।

थहाना–स० क्रि० थाह लेना, गहराईका पता लगाना।

थाँग–पु० चोरोंका गुप्त अड्डा; खोज, सुराग; भेद।

थाँगी–पु० चोरोंका मुखिया; चोरीका माल लेनेवाला; चोरोंका पता देनेवाला; चोरीका पता लगानेवाला, जासूस; चोरोंको आश्रय देनेवाला।

थाँभ*–पु० खंभा।

थाँभना*–स० क्रि० दे० 'थामना'।

थाँवला–पु० थाला।

था–अ० क्रि० 'होना'का भूतकालिक रूप, रहा।

थाई*–वि० जो बहुत कालतक बना रहे, स्थायी।

थाकना*–अ० क्रि० दे० 'थकना'।

थात*–वि० बैठा या ठहरा हुआ, स्थित।

थाति*–स्त्री० स्थिरता, स्थायित्व; ठहरने या रहनेकी क्रिया; थाती।

थाती–स्त्री० धरोहर, अमानत, किसीके पास जमा की हुई वस्तु; संचित धन, पूँजी।

थान–पु० स्थान; रहनेकी जगह; देवता, ब्रह्म आदिका स्थान; पशुओंके बाँधे जानेकी जगह; बँधी हुई लंबाईका कपड़ेका बड़ा टुकड़ा; अदद।

थाना–पु० पुलिसकी चौकी; केंद्र; निवासस्थान; बाँसकी कोठी। –**पति**–पु० ग्रामदेवता, स्थानका रक्षक देवता।

(थाने)दार–पु० थानेका प्रधान अफसर, दारोगा। **–दारी**–स्त्री० थानेदारका पद या पेशा।

थानु*–पु० स्थाणु, शिव। **–सुत**–पु० गणेश।

थानैत–पु० किसी स्थानका स्वामी, अधिपति या देवता।

थाप–स्त्री० 'थप'की ध्वनिके साथ तबले आदिपर किया गया हथेलीका आघात; खुले हुए हाथका पूरा आघात, थप्पड़; आदर, सम्मान; मर्यादा, गौरव; धाक; हाथ आदिका पूरा-पूरा पड़ा हुआ चिह्न; विश्वास, ठिकाना; शपथ।

थापन–पु० पुनः स्थापित करने या स्थायी बनानेकी क्रिया, स्थापन; उखड़ी हुई जड़को जमानेवाला।

थापना–स० क्रि० स्थापित करना; उखड़ी हुई जड़को मजबूत करना; गोबर, गीली मिट्टी आदिको हाथसे पीटकर या साँचे आदिमें भरकर कोई वस्तु तैयार करना। स्त्री० स्थापना, प्रतिष्ठा।

थापर*–स्त्री०, पु० दे० 'थप्पड़'।

थापा–पु० गीली हल्दी, मेहँदी आदिसे बनाया हुआ हाथका छापा; पूजाका चंदा; चिह्न डालनेका छापा; साँचा; राशि, ढेर; नेपालियोंकी एक जाति।

थापी–स्त्री० गच पीटनेकी चिपटी मुँगरी; कच्चा घड़ा पीटनेका कुम्हारोंका चौड़े सिरेका लकड़ी या मिट्टीका एक औजार।

थाम–स्त्री० थामनेकी क्रिया; पकड़; अवरोध। *पु० खंभा।

थामना–स० क्रि० अवरुद्ध करना, किसी वस्तुको गतिसे निवृत्त करना; गिरने, लुढ़कने आदिसे बचाना, रोके रहना; पकड़ना, हाथमें लेना; सँभालना; किसी कार्यको अपने जिम्मे लेना।

थायी*–वि० स्थायी। **–भाव**–पु० दे० 'स्थायी भाव'।

थारी†–स्त्री० 'थाली'।

थाल–पु० काँसे या पीतलका थालीकी शकलका बड़ा बरतन।

थाला–पु० पौधे या वृक्षकी जड़के चारों ओर बनाया गया क्यारीकी तरहका घेरा, आलवाल; फोड़ेकी सूजन।

थालिका–स्त्री० थाला, आलवाल।

थाली–स्त्री० काँसे, पीतल आदिका गोलाकार छिछला पात्र जिसमें भोजन करते हैं, बड़ी तश्तरी। **मु०–का बैंगन**–वह जो किसी एक मतका न हो।

थावर*–वि० अचल; जंगमका उलटा, स्थावर।

थाह–स्त्री० नदी, ताल, समुद्र आदिका तल या नीचेकी धरती; नदी आदिमें वह स्थान जहाँ बिना डूबे पाँव टिक जाय या तल छूआ जा सके; गहराईकी सीमा, गाध; पार; सीमा; इंतिहा; किसी वस्तुकी इयत्ताका अनुमान; छिपे तौरसे लगाया गया पता। वि० कम गहरा, उथला। **मु०–लगना**–गहराईका पार मिलना। **–लेना**–गहराईका अंदाज लगाना; किसी वस्तुकी परिमिति या रहस्यकी जाँच करना।

थाहना–स० क्रि० थाह लेना; पार पानेका यत्न करना; गहराईका पता लगाना; अंदाज लेना।

थाहरा*–वि० उथला, कम गहरा।

थिगली–स्त्री० पैबंद, चकती।

थित*–वि० बैठा या ठहरा हुआ, स्थित।

थिति*–स्त्री० स्थिति, ठहराव; बने रहनेकी क्रिया या भाव; पालन; दशा, परिस्थिति; स्थिरता, शांति। **–भाव***–पु० स्थायी भाव।

थिर–वि० स्थिर, गतिहीन, एक ही जगह अड़ा या रुका हुआ; अचल; अचंचल; एक ही स्थितिमें रहनेवाला। **–जीह***–पु० मछली। **–थानी***–वि० एक स्थानमें स्थिर रहनेवाला।

थिरक–स्त्री० नृत्यमें चंचलताके साथ पैरोंका उठना, गिरना तथा हिलना।

थिरकना–अ० क्रि० चंचलताके साथ पैरोंको उठाते, गिराते या हिलाते हुए नाचना; नाचनेमें अंगोंको हाव-भावके साथ संचालित करना; आगे-पीछे डोलना।

थिरकौंहाँ*–वि० थिरकनेवाला; स्थिर।

थिरता, थिरताई*–स्त्री० स्थिरता, ठहराव; अचंचलता; स्थायित्व; शांति।

थिरना–अ० क्रि० पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना रुक जाना, क्षुब्ध या आलोडित जलका स्थिर होना; पानीमें मिली मिट्टी आदिका नीचे बैठना; मैल आदिके नीचे जमनेसे पानीका निर्मल होना; ठहरना।

थिरा*–स्त्री० पृथ्वी।

थिराना–स० क्रि० पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना बंद करना, आलोडित या क्षुब्ध जलको स्थिर होने देना; गंदे पानीको मैल छँटकर निर्मल होने देना। अ० क्रि० दे० 'थिरना'।

थीता*–पु० स्थिरता, शांति, चैन।

थीती*–स्त्री० दे० 'थीता'।

थीर*–वि० स्थिर।

थुकहाई–वि० स्त्री० (ऐसी स्त्री) जिसे सभी धिक्कारें।

थुकाई–स्त्री० थूकनेका काम।

थुकाना–स० क्रि० थूकनेमें प्रवृत्त करना; थूकनेका काम दूसरेसे कराना; किसी वस्तुको उगलवाना; निंदा कराना।

थुक्काफजीहत–स्त्री० धिक्कार और तिरस्कार।

थुड़ी–स्त्री० धिक्कारसूचक शब्द, लानत। **मु०–थुड़ी करना**–धिक्कारना, थू-थू करना। **–थुड़ी होना**–सबकी दृष्टिसे गिर जाना।

थुतकारना–स० क्रि० 'थू-थू' करना; किसी चीजपर बार-बार थूकना; घोर घृणा प्रकट करना।

थुत्कार–पु० [सं०] थूकनेकी आवाज; थूकनेकी क्रिया।

थुथना–पु० दे० 'थूथन'।

थुनी*–स्त्री० दे० 'थुन्नी'।

थुन्नी–स्त्री० खंभा, थूनी।

थुपथुपी–स्त्री० थपकी; झोंका।

थुरना–स० क्रि० कूटना; (ला०) पीटना।

थुरहथा*–वि० छोटे हाथका; जिसकी हथेलीमें थोड़ी वस्तु अँट सके–'कन दैबो सौंप्यो ससुर बहू थुरहथी जानि'–वि०; कमखर्च।

थुलमा–पु० एक तरहका पहाड़ी कंबल जिसमें ऊपरसे बाल जमाये गये होते हैं।

थुली–स्त्री० दलिया।

थू–पु० थूकनेका शब्द, थूकनेमें मुँहसे निकलनेवाला शब्द। अ० घृणा और धिक्कार-सूचक शब्द, छिः, थुड़ी, लानत। **मु०–थू करना**–थुड़ी-थुड़ी करना, घृणा और तिरस्कार

सूचित करना। **-थू होना**-चारों ओर निंदा होना।

थूक-पु० लारकी तरहका रस जो मुँहसे अपने आप छूटा करता है, खखार। **मु०-लगाना**-नीचा दिखाना। **थूकों सत्तू सानना**-अत्यंत कृपणतासे काम चलाना; थोड़ी सामग्रीसे बड़ा काम करने लगना।

थूकना-अ० क्रि० मुँहसे थूक बाहर निकालना या फेंकना; धिक्कारना, छिः-छिः करना। स० क्रि० उगलना; निंदा करना। **मु० थूककर चाटना**-त्यक्त वस्तुको ग्रहण करना।

थूथन†-पु० लंबे मुँहका आगेकी ओर निकला हुआ भाग।

थूनी-स्त्री० बोझको रोकनेके लिए लगाया जानेवाला छोटा खंभा, स्तंभ, टेक।

थूरना*-स० क्रि० कूटना; पीटना; (ला०) तोड़ देना; चूर करना; ठूँस-ठूँसकर खाना।

थूल*-वि० स्थूल।

थूला*-वि० मोटा, हृष्ट-पुष्ट।

थूवा-पु० ढूह, टीला।

थूहड़-पु० दे० 'थूहर'।

थूहर-पु० सेहुँड़।

थेई-थेई-स्त्री० नाचका एक ढंग और ताल।

थैला-पु० कपड़े, टाट आदिका बना बटुएके आकारका बड़ा पात्र जिसमें चीजें रखी और बंद की जा सकें; रुपयोंका थैला, तोड़ा।

थैली-स्त्री० छोटा थैला; रुपयोंकी थैली। **-दार**-पु० रोकड़ रखनेवाला; खजानेमें रुपये उठानेवाला। **-बरदार**-पु० थैली ढोनेवाला। **मु०-खोलना**-तोड़े गिनना; थैलीके सब रुपये दे देना।

थोक-पु० राशि, ढेर; फुटकर या खुदराका उलटा; एकत्र किया हुआ माल; मालकी बड़ी राशि। **-दार**-पु० थोक माल बेचनेवाला व्यापारी। **-फरोश**-पु० थोक माल बेचनेवाला व्यापारी। **मु०-करना***-जमा करना, एकत्र करना।

थोड़ा-वि० न्यून मात्राका, जो परिमाणमें कम हो, जरासा, अल्प, कुछ, किंचित्। अ० जरासा। **-बहुत**-जरामना, कुछ-कुछ। **-सा**-तनिक, जरासा। **थोड़े ही**-एकदम नहीं (काकु)।

थोथरा-वि० निःसार; बेकाम।

थोथा-वि० निःसार; खोखला; निकम्मा; भोथरा।

थोपड़ी, थोपी†-स्त्री० चपत।

थोपना-स० क्रि० मिट्टी आदिके लोंदेको किसी वस्तुपर इस प्रकार रखना कि वह उसपर चिपक जाय; आरोपित करना; रोटी बनानेके लिए गीले आटेको तवेपर यों ही फैला देना; आक्रमण आदिसे रक्षा करना।

थोबड़ा-पु० थूथन; तोबड़ा।

थोर, थोरा†-वि० दे० 'थोड़ा'।

थोरिक*-वि० थोड़ासा।

थौंद*-स्त्री० दे० 'तोंद'।

थ्यावस†*-पु० स्थिरता, चैन, कल, धीरज।

द

द-देवनागरी वर्णमालाका १८वाँ व्यंजन वर्ण।

दंग-वि० [फा०] चकित, हक्का-बक्का। *पु० खौफ, डर।

दंगई-वि०, पु० दंगा करनेवाला, फसादी, लड़ाका।

दंगल-पु० [फा०] कुश्ती आदिकी प्रतिद्वंद्विता; अखाड़ा; मजमा, समूह; गद्दा। **मु०-बाँधना**-हलका बाँधना। **-मारना**-कुश्ती जीतना। **-लड़ना**-कुश्ती लड़ना।

दंगली-वि० [फा०] दंगल संबंधी; दंगल मारनेवाला; दंगलमें जाने या भेजनेके योग्य; लड़ने, युद्ध करनेवाला।

दंगा-पु० झगड़ा-फसाद, बलवा, विप्लव, उत्पात;. हल्ला, कोलाहल। **दंगेबाज़**-वि०, पु० दे० 'दंगई'।

दंगाई-पु० दंगा करनेवाला, बलवाई।

दंगैत-वि०, पु० दे० 'दंगई'।

दंड-पु० [सं०] डंडा, लगुड; ब्रह्मचारियों, संन्यासियोंके धारण करनेका बाँस, पलाश आदिका डंडा; राजाके हाथमें रहनेवाला खड्ग या डंडा जो अधिकार और सजाका सूचक होता है; डंडेकी तरह कड़ी और सीधी वस्तु; बाजा बजानेकी कमानी या डंडा; आक्रमण; दमन; भूमिकी एक माप, लट्ठा; व्यूहका एक भेद; शरणागत-रक्षण आदि तीन कर्म; शासन; जुरमाना, डाँड़; साठ पल(२४मिनट)का कालका एक सूक्ष्म विभाग, घड़ी; राजाओंकी चार नीतियोंमेंसे एक; यम; अभिमान; अश्व; कोण; मथानीका डंडा; तराजूकी डंडी; वह बाँस या डंडा जिसमें पताका लगी रहती है; हलमें लगी लंबी लकड़ी, हरिस; दंडवत्; एक कसरत; पेड़का धड़; कमल आदिकी नाल; हाथीकी सूँड़; जहाज या नावका मस्तूल। **-कर**-पु० (प्यूनिटिव टैक्स) दे० 'दंडात्मक कर'। **-कर्म(न्)**-पु० सजा देनेका काम; सजा। **-चारी(रिन्)**-पु० सेनापति। **-ताडन**-पु० अभियोगीको डंडेसे पीटनेकी सजा, बेंतकी सजा। **-धर**-पु० वह व्यक्ति जो डंडा लिये हो, डंडा धारण करनेवाला; यम; राजा; शासक; संन्यासी। **-धारक**-पु० न्याय करनेवाला। **-धारणा**-स्त्री० वह स्थान जहाँ शासनकी सुव्यवस्थाके लिए सेना रखनी पड़े। **-नायक**-पु० सेनापति, सेनानी; न्यायाधीश, दंडविधायक; राजा। **-नीति**-स्त्री० शत्रुओं या अपराधियोंको दंड देकर वशमें रखनेकी नीति। **-नेता(तृ)**-पु० राजा; यम; विचारपति। **-न्यायालय**-पु० (क्रिमिनल कोर्ट) (विधि-विधानोंको भंग करनेवाले) अपराधोंका विचार, निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-व्यवस्था करनेवाला न्यायालय; दे० 'फौजदारी अदालत'। **-प**-पु० राजा। **-पाणि**-पु० यम; काशीस्थ एक भैरवमूर्ति; वह व्यक्ति जिसके हाथमें दंड हो। **-पाल,-पालक**-पु० दंडनायक; द्वारपाल; एक मछली। **-प्रणाम**-पु० साष्टांग प्रणाम, वह प्रणाम जो पृथ्वीपर डंडेकी भाँति पड़कर किया जाय। **-यात्रा**-स्त्री० दिग्विजयके लिए प्रयाण; शत्रुपर की नयी चढ़ाई; वरयात्रा, बरात। **-वध**-पु० फाँसी, प्राणदंड। **-विज्ञान**-पु० (पीनॉलॉजी) अपराधके अनुरूप

दंड देने तथा कारागृहकी व्यवस्था आदि-संबंधी विद्या। **-विधान**-पु० दंडकी व्यवस्था, जुर्म और सजाका कानून। **-विधि**-स्त्री० दे० 'दंडविधान'। **-व्यूह**-पु० एक प्रकारकी व्यूहरचना जिसमें सेनाके विविध अंग पास-पास कतारोंमें स्थित किये जाते थे। **-शास्त्र**-पु० जुर्म और सजाका कानून।

दंडक-पु० [सं०] डंडा, सोंटा; हरिस; झंडेका डंडा; दंड देनेवाला, शासित करनेवाला; वह छंद जिसके प्रत्येक चरणमें २६ से अधिक अक्षर हों; दंडकारण्य।

दंडकारण्य-पु० [सं०] विंध्यके दक्षिण एक प्राचीन वन जहाँ वनवासकालमें रामने निवास किया था।

दंडन-पु० [सं०] दंड देनेकी क्रिया, सजा देना, निग्रह।

दंडना*-स० क्रि० दंडित करना, दंड देना।

दंडनीय-वि० [सं०] दंड देने योग्य।

दंडमान-वि० [सं०] दंडनीय।

दंडवत्-पु०, स्त्री० [सं०] डंडेकी तरह पृथ्वीपर पड़कर किया जानेवाला प्रणाम, साष्टांग प्रणाम।

दंडात्मक-वि० [सं०] (प्यूनिटिव) (सार्वजनिक उपद्रव आदिके कारण) क्षेत्र-विशेषके लोगोंको दंड देना ही जिसका उद्देश्य हो; दंड देनेकी गरजसे लगाया गया या बैठाया गया। **-कर**-पु० (प्यूनिटिव टैक्स) दंड या सजाके रूपमें लगाया गया कर, दंडकर, ताजीरी कर।

दंडादंडि-स्त्री० [सं०] लाठियोंकी मार-पीट, वह मार-पीट जिसमें दोनों ओरसे लाठी चलती हो।

दंडादेश-पु० [सं०] (सेंटेंस) किसी अपराधीको दंड देनेका न्यायाधीश द्वारा सुनाया जानेवाला आदेश या निर्णय।

दंडादेशित-वि० [सं०] (सेंटेंस्ड) जिसे किसी अपराधके कारण न्यायालयने दंडका आदेश दिया हो।

दंडाधिकारी-पु० [सं०] (मजिस्ट्रेट) फौजदारी मुकदमे सुनने और शासन-प्रबंधका काम करनेवाला अफसर।

दंडाधिप-पु० [सं०] स्थानविशेषका प्रधान शासक।

दंडापूप-पु० [सं०] डंडा और पूआ। **-न्याय**-पु० एक तर्क-प्रणाली जिसके अनुसार आधेयरूप बात उसी प्रकार स्वतः सिद्ध मानी जा सकती है जिस प्रकार किसी डंडेके गायब हो जानेपर उसमें बँधे हुए पूएका गायब होना।

दंडायमान-वि० [सं०] जो डंडेकी भाँति सीधा स्थित हो; खड़ा।

दंडार्ह-वि० [सं०] दंड पाने योग्य।

दंडालय-पु० [सं०] अदालत, न्यायाधिकरण।

दंडित-वि०[सं०] जिसे दंड दिया गया हो, सजायाफ्ता।

दंडी(डिन्)-पु० [सं०] यम; राजा; द्वारपाल; पुलिस-कर्मचारी; दंडधारी संन्यासी।

दंडोपबंध-पु० [सं०] (सैंक्शन) किसी अधिनियम या अंतरराष्ट्रीय संधिके साथ लगा हुआ यह उपबंध कि उसका पालन न करनेपर उल्लंघनकारीको क्या दंड मिलेगा।

दंड्य-वि० [सं०] दे० 'दंडनीय'। **-षड्यंत्र**-पु० (क्रिमिनल कांस्पिरेसी) ऐसा षड्यंत्र जो देशकी विधि-व्यवस्थाके अनुसार दंडनीय हो, अपराद्ध षड्यंत्र।

दंत-पु० [सं०] दाँत; पठार; कुंज; ३२ की संख्या। **-कथा**-स्त्री० किंवदंती, जनश्रुति। **-क्षत**-पु० कविप्रसिद्धिके अनुसार कामकेलिमें कपोलों, अधरोंपर दाँत काटनेसे पड़नेवाला चिह्न। **-च्छद**-पु० ओष्ठ, होंठ। **-छत, छद***-पु० दे० 'दंतक्षत'। **-जात**-पु० वह बच्चा जिसके दाँत निकल आये हों; दाँत निकलनेका समय। **-धावन**-पु० दाँत साफ करनेका काम, दंतमार्जन; दातौन; करंजका पेड़; मौलसिरीका पेड़। **-पंक्ति**-स्त्री० दे० 'दंतालि'। **-पात**-पु० दाँत गिरना। **-प्रक्षालन**-पु० दाँत साफ करना। **-बीज, -बीजक, -वीज**-पु० अनार। **-मूल**-पु० दाँतकी जड़; एक औषध; दाँतका एक रोग। **-लेखक**-पु० दाँतकी रँगाईसे जीविका चलानेवाला। **-वेष्ट**-पु० दाँतका एक रोग; मसूड़ा; हाथीदाँतपर चढ़ाया जानेवाला छल्ला। **-शर्करा**-स्त्री० दाँतपर जमनेवाली पपड़ी। **-शोफ**-पु० मसूड़ोंकी सूजन। **-श्लिष्ट**-वि० दाँतोंमें अँटका हुआ।

दंतादंति-स्त्री० [सं०] लड़ाई-झगड़ेमें एक दूसरेको दाँतसे काटना।

दंतायुध-पु० [सं०] सूअर (जिसका आयुध उसका दाँत है)।

दँतार-वि० बड़े दाँतोंवाला। पु० हाथी।

दंतार्बुद-पु० [सं०] मसूड़ेमें होनेवाला फोड़ा।

दंतालि-स्त्री० [सं०] दाँतोंकी कतार।

दंति*-पु० हाथी।

दँतिया-स्त्री० छोटे-छोटे दाँत।

दंती(तिन्)-पु० [सं०] हाथी; गणेश; पहाड़। वि० दाँतोंवाला। **-चक्र**-पु० (गिअर) साइकिल या किसी यंत्रादिका दाँतोंसे युक्त पहिया अथवा पहियोंका समूह जो गति प्रदान करनेमें सहायक होता है। **-मद**-पु० हाथीके मस्तकसे चूनेवाला मद।

दंतुर-वि० [सं०] जिसके दाँत आगेकी ओर निकले हों।

दँतुरिया*-स्त्री० बच्चोंके नये-नये दाँत।

दँतुला-वि० जिसके दाँत बड़े या आगेकी ओर निकले हों।

दंतोद्भेद-पु० [सं०] दाँतोंका निकलना। **-काल**-पु० (टीथिंग पीरियड) वह समय जब बच्चेके दाँत निकल रहे हों।

दंतोष्ठ्य-वि० [सं०] दाँत और ओठसे उच्चरित होनेवाला।

दंत्य-वि० [सं०] जिसका उच्चारणस्थान दंत हो।

दंद*-पु० द्वंद्व, झगड़ा, उपद्रव। स्त्री० गरमी।

दंदन*-वि० दमन करनेवाला।

दंदान-पु०[फा०] दाँत। **-साज**-पु० दाँत बनानेवाला।

दंदाना-अ० क्रि० गरमाना, गरम हो लेना। पु० [फा०] आरा, कंघी आदिका दाँत। **-(ने) दार**-वि० जिसमें दंदाने हों।

दंदी*-वि० झगड़ालू, उपद्रवी।

दंपति*-पु० दे० 'दंपती'।

दंपती-पु० [सं०] पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष।

दंपा*-स्त्री० विद्युत्, बिजली।

दंभ-पु० [सं०] पाखंड, आडंबर, ढकोसला; अभिमान; कपट; शाठ्य; इंद्रका वज्र; शिव।

दंभक-वि०, पु० [सं०] पाखंडी; वंचक, कपटी।

दंभन-पु० [सं०] ढोंग करना, पाखंड करना।

दंभान*-पु० पाखंड; घमंड-'हौं जु कहत लै चलो जानकी छाड़ि सबै दंभान'-सू०।

दंभी(भिन्)–वि० [सं०] दंभ करनेवाला, पाखंडी।

दँवरी–स्त्री० अनाज निकालनेके लिए सूखे डंठलोंको बैलोंसे रौंदवाना।

दँवारि*–स्त्री० दवाग्नि।

दंश–पु० [सं०] दाँत काटने या डंक मारनेकी क्रिया; दाँत काटनेका घाव; विषैले जंतुके काटने या डंक मारनेका घाव; चुभनेवाली बात; एक प्रकारकी बड़ी मक्खी जो बहुत तेज काटती है, डाँस, वनमक्षिका; दाँत।

दंशक–वि० [सं०] काटनेवाला; डंक मारनेवाला।

दंशन–पु० [सं०] काटने या डंक मारनेकी क्रिया; कवच।

दंशना*–स० क्रि० दाँतसे काटना या डंक मारना।

दंशित–वि० [सं०] जो डँसा गया हो, जिसे किसीने दाँतसे काट लिया हो; जिसने कवच धारण किया हो, सन्नद्ध।

दंष्ट्रा–स्त्री० [सं०] दाढ़, चौभर। **–कराल**–वि० भयंकर दाँतोंवाला।

दंष्ट्रायुध–पु० [सं०] शूकर, वराह।

दंस*–पु० दे० 'दंश'।

द–वि० [सं०] (समासांतमें) देनेवाला; उत्पन्न करनेवाला।

दइत*–पु० दे० 'दैत्य'।

दइमारा*–वि० दे० 'दई-मारा'।

दई–पु० दैव, भाग्य, विधि, विधाता। **–दई**–अ० हा दैव! हा दैव!, ईश्वरकी दुहाई। **–मारा**–वि० दैवका मारा हुआ, हतभाग्य।

दक़ियानूस–पु० एक रोमन सम्राट् जो २४९ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ था।

दक़ियानूसी–वि० पुराना, कदीमी; पुराने खयालका, पुराणपंथी।

दक़ीक़ा–पु० [अ०] सूक्ष्म वस्तु; युक्ति, उपाय। मु०–**उठा न रखना,–बाकी न छोड़ना**–कोई कसर न छोड़ना।

दक्खिन–पु० प्रातःकाल सूर्यकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाली दिशा; भारतवर्षका दक्षिणी भाग, दक्षिण देश। अ० दक्षिण दिशामें।

दक्खिनी–वि० दक्खिनकी ओर पड़नेवाला; दक्षिण दिशामें स्थित; दक्षिण देशका; जिसकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें हुई हो; दक्षिण देश-संबंधी। पु० दक्षिण देशका निवासी, दाक्षिणात्य।

दक्ष–वि० [सं०] जिसमें किसी विषयको तत्काल समझने तथा कोई कार्य तत्काल करनेकी शक्ति हो, कुशल, निपुण, सिद्धहस्त, माहिर, चतुर; ईमानदार; दाहिना, दक्षिण। पु० एक प्रजापति; नंदी; अग्नि; शिव; वह नायक जिसके कई नायिकाएँ हों। **–कन्या**–स्त्री० दक्षप्रजापतिकी कन्या, सती; दुर्गा। **–जा,–तनया**–स्त्री० दे० 'दक्ष-कन्या'।

दक्षता-अर्गल–पु० [सं०] (एफिशिएंसी बार) दे० 'प्रगुणता-अर्गल'।

दक्षिण–पु० [सं०] उत्तरके सामनेकी दिशा, दक्खिन; विष्णु; शिव; एक तंत्रोक्त आचार; नायकका एक भेद; दाहिना हाथ; दाहिना पार्श्व। वि० दाहिना; दक्षिण दिशामें स्थित; दूसरेकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेवाला, अनुकूल; ईमानदार, सच्चा; अपनी सभी नायिकाओंमें तुल्य अनुराग रखनेवाला (नायक); पद्ध। अ० दक्खिनकी ओर, दक्षिण दिशामें। **–पवन**–पु० दक्षिण या मलयागिरिकी ओरसे आनेवाली हवा। **–मार्ग**–पु० एक तंत्रोक्त आचार; पितृयान।

दक्षिणा–स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा; यज्ञ, दानकर्म आदिके अंतमें ब्राह्मणों और पुरोहितोंको दिया जानेवाला द्रव्य। वि० स्त्री० (वह नायिका) जो दूसरे नायकमें अनुरक्त रहती हुई भी पूर्व नायकके प्रति प्रेम और सद्भाव रखती है। **–पथ**–पु० भारतका दक्षिण भाग।

दक्षिणाचल–पु० [सं०] मलय गिरि।

दक्षिणाचारी(रिन्)–वि०, पु० [सं०] शुद्ध आचरणवाला; शक्तिपूजक।

दक्षिणाभिमुख–वि० [सं०] जिसका मुँह दक्षिणकी ओर हो; दक्षिण दिशाकी ओर बहनेवाला।

दक्षिणायन–पु० [सं०] सूर्यका विषुवत् रेखाकी ओरसे मकर रेखाकी ओर गमन; ६ महीनोंका समय जिसमें सूर्य विषुवत् रेखासे दक्षिणकी ओर रहता है। वि० दक्षिणकी ओर गया हुआ।

दक्षिणावर्त–पु० [सं०] वह शंख जिसमें हवा निकलनेका मार्ग दाहिनी ओर हो। वि० दक्षिण दिशामें स्थित; जिसका घुमाव दाहिनी ओर हो।

दक्षिणाशा–स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा। **–पति**–पु० यम।

दक्षिणी–पु० दक्षिण देशका निवासी। वि० दक्षिण देशका।

दक्षिणीय–वि० [सं०] जो दक्षिणा पाने योग्य हो।

दक्षिन*–पु० दे० 'दक्षिण'।

दक्षिनी*–वि० दे० 'दक्षिणी'।

दखमा–पु० वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुर्दे पक्षियोंके खा जानेके लिए रख आते हैं।

दख़ल–पु० [अ०] प्रवेश, घुसना; कब्जा, अधिकार, अख्तियार। **–दिहानी**–स्त्री० कानूनी ढंगसे दखल दिलाना। **–नामा**–पु० वह सरकारी आज्ञापत्र जिसमें किसीको किसी वस्तुको स्वायत्त करनेकी आज्ञा दी गयी हो, दखल पानेका परवाना। मु०–**देना**–हस्तक्षेप करना।

दख़ील–वि० [अ०] दखल देनेवाला; काबिज, जिसके अधिकारमें हो। **–कार**–पु० जमीनपर स्थायी कब्जेका अधिकारी काश्तकार; कारबारमें दखल देनेवाला; सलाहकार।

दग़दग़ा–वि० चमकता हुआ। पु० एक तरहकी छोटी कंडील; [अ०] डर, भय; अंदेशा, संदेह।

दग़दग़ाना–अ० क्रि० चमकना; रौशन होना। स० क्रि० चमकाना।

दग़दग़ाहट–स्त्री० चमक-दमक; तमतमाहट।

दगधना*–अ० क्रि० जलना; पीड़ित होना। स० क्रि० जलाना; कष्ट देना; ठगना।

दगना–अ० क्रि० (बंदूक, तोप आदिका) छूटना या चलाया जाना, दागा जाना; जलना; चिह्नयुक्त होना; प्रसिद्ध होना। स० क्रि० दे० 'दागना'।

दगरा*–पु० देर, विलंब; मार्ग, डगर।

दगल*–पु० दे० 'दगला'।

दगला–पु० एक लंबा-ढीला पहनावा, लबादा।

दगली–स्त्री० दे० 'दगला'।

दगवाना–स० क्रि० दागनेका काम दूसरेसे कराना ।

दगहा–वि० दागा हुआ, दागदार । पु० मृतक संस्कार करनेवाला ।

दग़ा–स्त्री० [फ़ा०] धोखा, फरेब, छल । **–दार**–वि० फरेब करनेवाला, धोखेबाज, छलिया । **–बाज़**–वि० धोखा देनेवाला, कपटी । **–बाज़ी**–स्त्री० धोखेबाजी, फरेब, छल ।

दग़ैल–वि० जिसे दाग लगा हो; खोटा; दगाबाज, छली ।

दग्ध–वि० [सं०] जला या जलाया हुआ, भस्मीकृत; पीडित, संतप्त; धूर्त; अशुभ; नीरस; तुच्छ, निकृष्ट । पु० एक घास । **–काक**–पु० डोमकौआ ।

दग्धा–स्त्री० [सं०] वह दिशा जिसमें सूर्य बराबर सिरपर रहता है; कुछ विशेष तिथियाँ जो अशुभ मानी जाती हैं ।

दग्धा(ग्धृ)–वि०, पु० [सं०] जलानेवाला ।

दग्धाक्षर–पु० [सं०] कुछ अक्षर–झ, ह, र, भ और ष–जिनका छंदके आरंभमें प्रयोग करना निषिद्ध है ।

दग्धित*–वि० दे० 'दग्ध' ।

दचक–स्त्री० दचकनेकी क्रिया; दचका; धक्का; दबाव ।

दचकना–अ० क्रि० दबना; नीचे-ऊपर होना; झटका खाना । स० क्रि० धक्का लगाना; दबाना ।

दचका–पु० सवारीके नीचे-ऊपर होनेसे लगनेवाला धक्का; ठोकर ।

दचना*–अ० क्रि० पड़ना, गिरना ।

दच्छ*–पु० दे० 'दक्ष' । **–कुमारी,–सुता**–स्त्री० दे० 'दक्षकन्या' ।

दच्छना, दच्छिना†–स्त्री० दक्षिणा, ब्राह्मणोंको दिया जानेवाला दान; भेंट ।

दच्छिन*–वि०, पु०, अ० दे० 'दक्षिण' ।

दढ़ना*–अ० क्रि० जलना ।

दढ़ियल–वि० दाढ़ीवाला ।

दतवन–स्त्री० दातौन ।

दतारा–वि० बड़े दाँतोंवाला (हाथी) ।

दतिया–स्त्री० दाँतका अल्पार्थक, छोटा दाँत ।

दतुअ(व)न, दतू(तौ)न–स्त्री० दे० 'दातन' ।

दत्त–पु० [सं०] दत्तात्रेय; दत्तक (पुत्र); दान । वि० दिया हुआ; दान किया हुआ; सुरक्षित । **–चित्त**–वि० जिसका मन किसी कार्यमें अच्छी तरह लगा हो, एकाग्र । **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि किसी एक वस्तुपर लगी हो, कृतेक्षण ।

दत्तक–पु० [सं०] जो औरस पुत्र न होनेपर शास्त्र-विधिसे पुत्र बना लिया गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र, मुतबन्ना । **–ग्रहण**–पु० (एडॉप्शन) किसीको दत्तक (गोद लिया हुआ पुत्र) बनानेका कार्य, दत्तक ग्रहण करने या स्वीकार करनेके कार्य ।

दत्तात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] वह जो माता-पिताके निधनके कारण अथवा उनके द्वारा त्यागे जानेपर स्वयं किसीके यहाँ जाकर उसका दत्तक पुत्र बने ।

दत्तात्रेय–पु० [सं०] अत्रि ऋषिके पुत्र जो विष्णुके चौबीस अवतारोंमेंसे एक अवतार माने जाते हैं ।

दत्त्रिम–वि० [सं०] दानसे प्राप्त । पु० बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक, दत्तक पुत्र ।

ददा*–पु० दे० 'दादा' ।

ददिऔरा†–पु० दे० 'ददिहाल' ।

ददियाल–पु० दे० 'ददिहाल' ।

ददिया ससुर–पु० ससुरका पिता ।

ददिया सास–स्त्री० ससुरकी माता, सासकी सास ।

ददिहाल–पु० दादाका कुल या घर ।

ददोड़ा–पु० दे० 'ददोरा' ।

ददोरा–पु० चकत्ता जो मच्छर आदिके काटने या खुजलानेसे शरीरपर पड़ जाता है ।

दद्रु–पु० [सं०] एक प्रकारका कुष्ठ, दाद नामका रोग । **–घ्न**–पु० चक्रमर्द, चकवँड़ ।

दध*–पु० दे० 'दधि' । **–सार**–दे० 'दधिसार' ।

दधना*–अ० क्रि० दे० 'दहना' ।

दधि–पु० [सं०] दही; वस्त्र । **–काँदो**–पु० [हिं०] कृष्ण जन्माष्टमीके बाद पड़नेवाला एक उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला हुआ दही एक-दूसरेपर फेंकते हैं । कृष्णजन्मके उपलक्ष्यमें गोकुलमें यह उत्सव मनाया गया था और तभीसे चला आ रहा है । **–ज,–जात**–पु० मक्खन । **–मंथन**–पु० दही मथना । **–मुख,–वक्त्र**–पु० रामकी वानरी सेनाका एक सेनापति; एक तरहका साँप । **–सार**–पु० दहीसे निकाला हुआ मक्खन ।

दधि*–पु० उदधि; समुद्र । **–ज,–जात**–पु० चंद्रमा । **–सुत**–पु० कमल; चंद्रमा; मोती; विष, हलाहल; जलंधर नामक दैत्य । **–सुत-सुत**–पु० पंडित, विज्ञ । **–सुता**–स्त्री० सीप, शुक्ति ।

दधीच, दधीचि–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि जिनकी हड्डीसे इंद्रका वज्र बना था ।

दनदनाना–स० क्रि० 'दन-दन' शब्द करना; खुशी मनाना ।

दनादन–अ० 'दन-दन' की आवाजके साथ ।

दनु–स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषिकी एक पत्नी जिसके पुत्र दानव कहलाये । **–ज**–पु० दानव, असुर । **–ज दलनी**–स्त्री० दुर्गा । **–ज द्विट्(ष्)**–पु० देवता । **–ज राय***–पु० हिरण्यकशिपु । **–ज पति**–पु० रावण । **–पुत्र,–संभव,–सूनु**–पु० दे० 'दनुज' ।

दनुजारि–पु० [सं०] देवता, सुर ।

दनुजेंद्र, दनुजेश–पु० [सं०] रावण; हिरण्यकशिपु ।

दनू*–स्त्री० दे० 'दनु' ।

दपट–स्त्री० डाँटने-डपटनेकी क्रिया; घुड़की ।

दपटना–स० क्रि० घुड़कना, डाँटना ।

दपु*–पु० दर्प, अहंकार ।

दफ़न–पु० [अ०] गाड़ना; किसी वस्तु या मुरदेको जमीनमें गाड़नेका काम ।

दफ़नाना–स० क्रि (मुरदेको) जमीनमें गाड़ना ।

दफ़ा–स्त्री० बार, मर्तबा; किसी कानूनकी किताबका वह अंश जिसमें एक नियमका उल्लेख हो, कानूनका एक नियम, धारा । **–दार**–पु० चौकीदारोंका मुखिया ।

दफ़ा–पु० [अ०] दूर करना, हटाना, ढकेलना ।

दफ़ीना–पु० [अ०] पृथ्वीमें गाड़ा हुआ धन, दफन किया हुआ खजाना ।

दफ़्तर–पु० [अ०] हिसाब-किताबके कागज, बही, रजिस्टर;

वह स्थान जहाँ किसी संस्था या कंपनी आदिके कर्मचारी लिखा-पढ़ी, लेन-देन आदिका कार्य करते हों; किसी अधिकारीका निजी कमरा जहाँ वह अपने कार्यकी देख-रेख करता हो, कार्यालय; बड़ा चिट्ठा, लंबी कहानी।

दफ़्तरी–पु० [अ०] वह जो दफ्तरमें जिल्दबंदी, रूल खींचने आदिका काम करता हो; जिल्दबंदी करनेवाला। **–ख़ाना**–पु० दफ्तरीके काम करनेका स्थान।

दफ़्ती; दफ़्तीन–स्त्री० [फा०] कई कागजोंको आपसमें चिपकाकर बनाया हुआ मोटा कागज जो जिल्द बाँधनेके काम आता है, कुट।

दबंग–वि० जो किसीसे दबता न हो; जिसका दूसरोंपर प्रभाव हो, प्रभावशाली; रोबीला।

दबक–स्त्री० दबकनेकी क्रिया, सिमटना; धातुको पीटकर लंबा करनेकी क्रिया। **–गर**–पु० धातुको पीटकर लंबा करनेवाला।

दबकना–अ० क्रि० भयके मारे सिमटकर तंग जगह या आड़में छिपना; दबका रह जाना। स० क्रि० पीटकर लंबा करना; * डाँटना, डपटना।

दबकवाना–स० क्रि० दबकानेका काम दूसरेसे कराना।

दबका–पु० धातुका पीटकर लंबा किया हुआ तार।

दबकाना–स० क्रि० छिपाना; ओटमें करना; डाँटना।

दबदबा–पु० आतंक; रोब-दाब।

दबना–अ० क्रि० भार या दाबके नीचे पड़ना; ऐसी स्थितिमें होना जिसमें किसी ओर विशेष भार पड़े; प्रबल शत्रु द्वारा आक्रांत होकर पीछे हटना; किसीसे त्रस्त या अधिक प्रभावित होकर उसके अनुकूल आचरण करना, किसीसे डरकर उसका विरोध न करनेके लिए बाध्य होना; फीका पड़ना; किसी बात या मामलेका गुप्त रह जाना अथवा आगे न बढ़ना; जोर न पकड़ना, शांत रहना; ठंडा पड़ना; किसी वस्तुका दूसरेके हाथमें इस प्रकार पड़ जाना कि वह फिर मिल न सके; (किसी अभावके कारण) अधिक लाचार हो जाना; झेंप खाना, संकुचित होना।

दबवाना–स० क्रि० दबानेकी क्रियामें दूसरेको लगाना।

दबा–वि० भारसे आक्रांत; किसी ओरको झुका हुआ। **(दबी) आवाज़**–स्त्री० धीमा स्वर। **(दबे) पाँव**–अ० इस प्रकार कि किसीको पैरकी आहट मालूम न हो, आहिस्ते, चुपके। **मु० (दबी) ज़बानसे कहना**–डरते-डरते अस्पष्ट शब्दोंमें कहना। **(दबे)-दबाये रहना**–चुपचाप पड़ा रहना।

दबाना–स० क्रि० भार या दबावके नीचे लाना; भार या जोर पहुँचाना; थकान या पीड़ा दूर करनेके लिए किसी अंगपर जोर पहुँचाना; दमन करना; सामने टिकने न देना, बलपूर्वक पीछे हटाना; किसीको इतना त्रस्त या प्रभावित करना कि वह विरुद्ध आचरण न कर सके, किसीपर रोब जमाकर उसे स्वच्छंद आचरण न करने देना; निजी गुणोंके द्वारा किसीको मात करना; किसी बात या मामलेको आगे न बढ़ने देना, ज्योंका त्यों रहने देना; भड़कने न देना, शांत करना, जोर न पकड़ने देना; किसीकी कोई वस्तु हड़पना; लाचार बना देना, विवश करना; दफ़न करना; छिपाना।

दबाव–पु० दबानेकी क्रिया या भाव, चाँप, दाब। **मु०–डालना**–प्रभावित करना।

दबीज–वि० [फा०] मोटा, गफ़; ठस, मजबूत।

दबैल–वि० जिसपर दबाव पड़ा हो; दब्बू, दबनेवाला।

दबोचना–स० क्रि० झपटकर दबा बैठना, धर दबाना; छिपाना।

दबोरना*–स० क्रि० बलपूर्वक पीछे हटा देना; दबाना।

दमंकना*–अ० क्रि० चमकना।

दम–पु० [सं०] दंड, दमन; बाह्येंद्रियोंको उनके विषयोंसे निवृत्त करना, बाह्य वृत्तियोंका निग्रह; कुकर्मोंसे मनको हटाना; कर्दम, कीचड़; [फा०] श्वास, साँस; पल, लहजा, क्षण; जान, जिंदगी; ताकत, जोर; हुक्के आदिका कश; धोखा, फरेब; पानीका घूँट; तलवारकी धार; नेजेकी नोक; समय, वक्त; कुछ कच्ची खाद्य वस्तुको पकनेके लिए पात्रका मुँह बंद करके धीमी आँचपर रखनेकी क्रिया। **–आलू**–पु० आलूकी मसालेदार तरकारी जिसमें आलू खड़े रहते हैं। **–कल**–पु० एक या अधिक नलोंवाला यंत्र-विशेष जिसमें भरा हुआ तरल पदार्थ, विशेषतः पानी हवाके बलसे उक्त नलों द्वारा किसी ओर झोंकेसे फेंका जा सके; उक्त ढंगका आग बुझानेका प्रसिद्ध यंत्र। **–कला**–पु० दमकलके नमूनेपर बना हुआ महफिल आदिमें गुलाबजल छिड़कनेका एक यंत्र; दमचूल्हा। **–चूल्हा**–पु० लोहेका एक प्रकारका चूल्हा जिसमें कोयला जलता है। **–झाँसा**–पु० मिथ्या आश्वासन, झूठी सांत्वना। **–दार**–वि० दृढ़; जिसमें जीवनी शक्ति अधिक हो; तेज। **–दिलासा**–पु० कोरी आशा; फुसलावा। **–पट्टी**–स्त्री०, **–बुत्ता**–पु० झाँसापट्टी। **–पर दम, –ब-दम**–अ० प्रतिक्षण; बार-बार। **–बाज़**–वि० दम देनेवाला, झूठा आश्वासन देनेवाला; फरेबी। **–बाज़ी**–स्त्री० दम या झूठा आश्वासन देनेका काम; धोखा; फरेब। **–साज़**–पु० गाते समय गवैयेके साथ सुर भरनेवाला। **मु०–अटकना**–श्वासका अवरुद्ध होना। **–खींचना**–चुप्पी साधना, कोई हरकत न करना; श्वासको ऊपर चढ़ाना। **–घुटना**–हवाकी कमीसे श्वास न लिया जाना; श्वास-प्रश्वास-क्रियाका बंद होना। **–घोंटना**–किसीकी श्वासक्रिया रोक देना, साँस न लेने देना; गला दबाकर या अन्य प्रकारसे किसीका साँस लेना बंद करना। **–चुराना**–साँस रोककर अपनेको मरा हुआसा जाहिर करना। **–टूटना**–साँस रुक जाना; दौड़ने आदिमें अधिक श्रांत होकर हाँफने लगना। **–तोड़ना**–आसक्तिवश किसीसे वियुक्त होनेपर जान जानेकासा अत्यधिक कष्ट होना; मर जाना। **–नाकमें (या नाकमें दम) आना**–बहुत परेशान होना। **–निकलना**–प्राण निकलना, मृत होना। **–पचना**–किसी श्रमके कार्यमें इतना अभ्यस्त होना कि साँस न फूले। **–पर आ बनना**–दे० 'जानपर आ बनना'। **–फ़ना होना**–मर जाना; जी सूख जाना। **–फूलना**–अधिक श्रांत होने या दमेके कारण साँसका भारीपन और वेगके साथ चलना। **–भरना**–साँस चढ़ना; हर वक्त किसीकी तारीफ करना; मुहब्बतका दावा करना; भरोसा करना; यकीन करना। **–मारना**–थकावट दूर करनेके

लिए थोड़ी देर रुक जाना, सुस्ताना। **-में दम रहना या होना**-जान रहना, प्राण रहना। **-लगाना**-गाँजा, चरस आदिका कश लेना या धुआँ खींचना। **-लेना**-दे० 'दम मारना'। **-साधना**-श्वास रोकनेका अभ्यास करना; मौन ग्रहण करना, चुप लगाना; साँस रोकना। **-होंठोंपर आना**-मरनेकी स्थितिमें होना; मरणासन्न होना।

दमक-स्त्री० चमक, चाकचिक्य, प्रभा। पु० [सं०] दमन करनेवाला, दबानेवाला।

दमकना-अ० क्रि० चमकना, द्योतित होना; सुलग उठना।

दमड़ी-स्त्री० पैसेका आठवाँ हिस्सा; एक पक्षी। **-के तीन**- बहुत सस्ता।

दमदमा-पु० थैलोंमें बालू आदि भरकर की गयी मोरचेबंदी; नक्कारेकी आवाज; तोपोंकी आवाज; शोहरत।

दमन-पु० [सं०] दबाने या बलपूर्वक शांत करनेका काम; आत्मनियंत्रण; दंड देना; वध; इंद्रियोंकी बाह्य वृत्तियोंका निरोध; सारथि; सैनिक, योद्धा; दौना; एक ऋषि जिनके आशीर्वादसे दमयंतीकी उत्पत्ति हुई थी। वि० अनुशासित करनेवाला; पराजित करनेवाला; शांत। **-शील**-वि० जिसका स्वभाव दमन करनेका हो, जो बराबर दमन किया करता हो।

दमनक-पु० [सं०] एक छंद; दौना।

दमना*-स० क्रि० दमन करना, दबाना; दूर करना। पु० द्रोणलता, दौना।

दमनी*-स्त्री० संकोच; लज्जा।

दमनीय-वि० [सं०] दमन करने योग्य।

दमयंती-स्त्री० [सं०] विदर्भ-नरेश भीमसेनकी कन्या और राजा नलकी पत्नी।

दमरी*-स्त्री० दे० 'दमड़ी'।

दमा-पु० एक प्रसिद्ध श्वासरोग जिसमें साँस लेनेमें बहुत कष्ट होता है और कफ रुक-रुककर बहुत जोर लगानेपर निकलता है।

दमाद-पु० पुत्रीका पति, जामाता।

दमानक*-स्त्री० तोपोंकी बाढ़।

दमामा-पु० डंका, नगाड़ा।

दमारि*-स्त्री० वनकी आग, दावानल।

दमावती*-स्त्री० दमयंती।

दमित-वि० [सं०] जिसका दमन किया गया हो; विजित।

दमी-वि० दमवाला; दम लगानेवाला; गाँजा, चरस आदिका दम खींचनेवाला।

दमी(मिन्)-वि० [सं०] दमनशील; जितेंद्रिय।

दमैया*-पु० दमन करनेवाला; मिटानेवाला; हरनेवाला।

दमोदर*-पु० दे० 'दामोदर'।

दयनीय-वि० [सं०] दया करने योग्य।

दया-स्त्री० [सं०] किसी विपन्नके प्रति हृदयमें उत्पन्न होनेवाला सहानुभूतिका भाव जो उसका दुःख दूर करनेके लिए प्रेरित करे, करुणा, अनुकंपा, रहम; दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या जिसका विवाह धर्मसे हुआ था। **-कर**-वि० दयालु। पु० शिव। **-कूट, -कूर्च**-पु० बुद्धदेव। **-दृष्टि**-स्त्री० दयापूर्ण दृष्टि, करुणाभरी दृष्टि। **-निधान**-पु० दयाका भांडार, वह व्यक्ति जिसमें कूट-कूटकर दया भरी हो। **-निधि**-पु० परमेश्वर; दे० 'दयानिधान'। **-पात्र**-वि० जो कृपा करनेके योग्य हो; जिसपर किसीकी दया हो। **-वीर**-पु० वह नायक जिसके हृदयमें दया करनेका अधिक उत्साह हो। **-शील**-वि० जिसका स्वभाव दया करनेका हो, दयालु। **-सागर**-पु० दयावान् व्यक्ति।

दयानत-स्त्री० [अ०] ईमानदारी, सचाई। **-दार**-वि० ईमानदार।

दयाना*-अ० क्रि० दयार्द्र होना, कृपायुक्त होना।

दयामय-पु० [सं०] परमेश्वर। वि० अत्यंत कृपालु।

दयार-पु० देवदार। * वि० दयालु।

दयार्द्र-वि० [सं०] जिसका हृदय दयासे द्रवित हो, दयालु।

दयाल*-वि० दे० 'दयालु'।

दयालु-वि० [सं०] कृपायुक्त।

दयावंत*-वि० दयावान्।

दयावना*-वि० दयनीय, दयाके योग्य।

दयावान्(वत्)-वि० [सं०] दयालु, कृपायुक्त।

दयित-वि० [सं०] प्रिय, मनचाहा। पु० प्रिय व्यक्ति; पति।

दयिता-स्त्री० [सं०] पत्नी; प्रेयसी।

दर-स्त्री० भाव; गौरव, महत्ता। वि० अल्प, थोड़ा। पु० [सं०] भय; विदारण; गड्ढा; कंदरा, गुहा; शंख; स्रोत; दल, सैनिकों या पार्श्वचरोंका समूह; ईख; [फा०] द्वार, दरवाजा, फाटक, दहलीज। अ० में, अंदर। **-असल**-अ० असलमें, वास्तवमें। **-कार**-वि० आवश्यक, जरूरी। **-किनार**-वि० अलग, जुदा; बगलमें; अलहदा; एक तरफ। **-कूच**-अ० पड़ाव बदलते हुए, बराबर आगे बढ़ते हुए। **-ख़्वास्त**-स्त्री० प्रार्थना; प्रार्थनापत्र, अर्जी। **-गह**-पु०, **-गाह**-स्त्री० चौखट; शाही दरबार-'धणी सहैगा सासना जमकी दरगह माँह'-कबीर; मकबरा, मजार; मस्जिद। **-गुज़र**-वि० अलग। **-दर**-अ० दरवाजे-दरवाजे, प्रतिगृह। **-पेश**-अ० सामने, आगे। **-बान**-पु० ड्योढ़ीदार, फाटकपर रहनेवाला, चौकीदार। **-बानी**-स्त्री० दरबानका काम या पद। **-बार**-पु० वह स्थान जहाँ बादशाह या सरदारकी कचहरी लगती हो, राजसभा; *द्वार, दरवाजा, ड्योढ़ी। **-बारदारी**-स्त्री० किसीके पास जा-जाकर देरतक बैठने और खुशामद करनेका काम। **-बारी**-वि० दरबार-संबंधी; दरबारका। पु० दरबारमें सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति, राजसभाका सदस्य। **-बारे आम**-पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण सम्मिलित हो सकें। **-बारे ख़ास**-पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें गिने-चुने लोग ही सम्मिलित हों। **-माहा**-पु० मासिक वेतन, तनख्वाह। **-मियान**-पु० बीच, मध्य। अ० बीचमें, भीतर। **-मियानी**-वि० भीतरी, आंतरिक। **-हक़ीक़त**-अ० दे० 'दर-असल'। **-हाल**-अ० आजकल, वर्तमान समयमें। **मु०-गुज़रना**-छोड़ देना; बाज आना; माफ कर देना।

दरकना-अ० क्रि० खिंचाव या दबावसे फटना, विदीर्ण

होना, मसकना।

दरका*–पु० चीर, दरार।

दरकाना–स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना। * अ० क्रि० विदीर्ण होना, फटना।

दरखत*–पु० दे० 'दरख़्त'।

दरख़्त–पु० [फा०] पेड़, वृक्ष।

दरज–स्त्री० दरार, चीर।

दरजन–वि०, पु० दे० 'दर्जन'।

दरजा–पु० दे० 'दर्जा'।

दरजी–पु० दे० 'दर्ज़ी'।

दरद–पु० दर्द, पीडा; करुणा, तरस। **–मंद**–वि० दे० 'दर्दमंद'। **–वंत***–वि० करुणायुक्त, दयालु; दुःखित, पीड़ित। **–वंद***–वि० दे० 'दरदवंत'।

दरदरा–वि० जिसके कण वारीक न हों; जो मोटा पीसा गया हो।

दरदराना–स० क्रि० मोटा पीसना।

दरद्*–पु० दे० 'दर्द'।

दरन*–पु० दे० 'दलन'।

दरना*–स० क्रि० दलना; नष्ट करना; पीसना; मलना।

दरप*–पु० दे० 'दर्प'।

दरपक*–पु० दे० 'दर्पक'।

दरपन–पु० दे० 'दर्पण'।

दरपना–अ० क्रि० दृप्त होना, अभिमान करना, गर्वित होना।

दरपनी–स्त्री० छोटा दर्पण।

दरब–पु० द्रव्य, धन; खरी धातु।

दरबा–पु० कबूतरोंके रहनेके कामका लकड़ीका खानेदार संदूक; पेड़ आदिका खोखला भाग जिसमें कोई पक्षी या अन्य जीव रहे।

दरबी*–स्त्री० दर्वी, करछुल।

दरभ–पु० बंदर; दे० 'दर्भ'।

दररना–स० क्रि० रगड़ना; धक्का देना; दलना; पीसना।

दरराना*–अ० क्रि० वेगपूर्वक आना।

दरवाज़ा–पु० [फा०] द्वार; कपाट, किवाड़।

दरवी–स्त्री० दे० 'दर्वी'।

दरवेश–पु० [फा०] फकीर; भिखारी, मंगन।

दरशाना–स० क्रि० दिखलाना; बतलाना; समझाना। अ० क्रि० देख पड़ना।

दरस–पु० दर्शन, साक्षात्कार; रूप, सौंदर्य।

दरसन–पु० दे० 'दर्शन'।

दरसना*–अ० क्रि० दिखाई देना, देख पड़ना, दृष्टिगत होना। स० क्रि० देखना।

दरसनिया†–पु० मरीकी शांतिके लिए पूजा करनेवाला।

दरसनी*–स्त्री० दर्पण, आईना।

दरसनीय*–वि० दे० 'दर्शनीय'।

दरसनी हुंडी–स्त्री० दे० 'दर्शनी हुंडी'।

दरसाना–स० क्रि० दिखाना, दृष्टिगत करना; (ला०) बतलाना। अ० क्रि० दिखाई पड़ना, दृष्टिगत होना।

दराई†–स्त्री० दलनेकी क्रिया या उजरत।

दराज–स्त्री० दरार; मेज आदिमें बना हुआ कागज आदि रखनेका खाना जो वाहर-भीतर किया जा सकता है। वि० दे० 'दराज़'।

दराज़–वि० [फा०] लंबा, दीर्घ; विशाल। अ० बहुत, अधिक।

दरार–स्त्री० रेखाकी तरहका लंबा छिद्र जो सूखी धरती, दीवार या लकड़ी आदिमें फटनेके कारण पड़ जाता है।

दरारना*–अ० क्रि० फटना, विदीर्ण होना।

दरारा–पु० दरेरा, घात-प्रतिघात, धक्का। वि० दरारवाला, फटा हुआ।

दरिंद, दरिंदा–पु० [फा०] फाड़ खानेवाला, हिंस्र जंतु।

दरित–वि० [सं०] भीत; डरपोक; विदीर्ण।

दरिद्र–वि० [सं०] निर्धन, कंगाल, गरीब। पु० निर्धन मनुष्य; * दरिद्रता, निर्धनता। **–नारायण**–पु० कँगला।

दरिद्रावसति–स्त्री० [सं०] (स्लम) गरीबोंकी बस्ती, मलिनावास।

दरिया–पु० नदी; समुद्र; † दे० 'दलिया'। **–दिल**–वि० उदार। **–दिली** –स्त्री० उदारता। **–बरामद, –बरार**–पु० नदी द्वारा छोड़ी हुई जमीन। **मु०–को कूजेमें बंद करना**–थोड़ेमें बहुत कह जाना।

दरियाई–स्त्री० एक तरहका रेशमी कपड़ा। वि० नदी-संबंधी; जो नदीमें रहता हो; नदीके किनारेका; समुद्रसंबंधी। **–घोड़ा**–पु० अफ्रीकाका एक मोटे चमड़ेवाला, गैंडे जैसा, जानवर जो नदियोंके किनारे रहता है। **–नारियल**–पु० अफ्रीका, अमेरिका आदिमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक प्रकारका नारियल।

दरियाउ*–पु० दे० 'दरिया'।

दरियाफ़्त–स्त्री० [फा०] ज्ञात करना, पता लगाना, जाँच, पड़ताल। वि० जिसकी जाँच की गयी हो, ज्ञात।

दरियाव–पु० दे० 'दरिया'।

दरी–स्त्री० मोटे सूतोंका एक बिछावन, शतरंजी; [सं०] कंदरा, गुफा, खोह।

दरीख़ाना–पु० वह घर जिसमें अनेक द्वार हों।

दरीचा–पु० [फा०] छोटा दरवाजा; खिड़की; मोखा।

दरीबा–पु० पानका बाजार।

दरेँती–स्त्री० अनाज दलनेकी चक्की।

दरेरना–स० क्रि० रगड़के साथ धक्का देना, तीव्र आघात करना।

दरेरा–पु० रगड़, जोरका धक्का; धावा; बहावका तोड़।

दरेसी–स्त्री० काट-छाँटकर दुरुस्त करना; समतल करना; सजाना (ड्रेसिंग)।

दरैया*–पु० दरनेवाला; दलन करनेवाला; नाशक।

दरोग़–पु० [अ०] असत्य, मिथ्या, झूठ। **–हलफ़ी**–स्त्री० झूठा हलफ।

दरोगा†–पु० दे० 'दारोगा'।

दर्ज–स्त्री० दे० 'दरज'। वि० [अ०] लिखा हुआ, अंकित, उल्लिखित।

दर्जन–वि० बारह। पु० बारह(वस्तुओं)का समाहार।

दर्जा–पु० [अ०] तारतम्यकी दृष्टिसे निर्धारित स्थान, श्रेणी, कोटि; योग्यताके अनुसार पढ़ाईके लिए निर्धारित किया गया विद्यार्थियोंका वर्ग, कक्षा; पद, ओहदा; खाना।

दर्जिन–स्त्री० दर्जी जातिकी स्त्री; दर्जीकी स्त्री।

दर्ज़ी–पु० [फा०] कपड़ा सीनेवाला, वह व्यक्ति जिसका व्यवसाय कपड़ा सीना हो।

दर्द–पु० [फा०] पीड़ा, व्यथा; कष्ट, दुःख, तकलीफ; तरस, रहम; सहानुभूति; शोक। **–अंगेज़**–वि० दर्द उठानेवाला, मनको व्यथित करनेवाला। **–नाक**–वि० दर्दसे भरा हुआ। **–मंद**–वि० पीडित; दूसरेकी व्यथाको समझनेवाला, करुणाशील। **(दर्दे)दिल**–पु० मनोव्यथा।

दर्दुर–पु० [सं०] मेढक।

दद्रु–पु० [सं०] दद्रू, दाद। **–घ्न**–पु० चकवँड़।

दद्रुण, दद्रूण–पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे दादका रोग हुआ हो।

दर्प–पु० [सं०] चित्तका वह भाव जिसके कारण मनुष्य दूसरोंकी अवज्ञा करे और गुरु, स्वामी, राजा आदिको भी कुछ न समझे,अहंकार; हर्षसे उत्पन्न गर्व; मृगमद, कस्तूरी; उच्छृंखलता; उत्साह। **–हर**–वि० दर्प हरण करनेवाला।

दर्पक–पु० [सं०] दर्प करनेवाला मनुष्य; कामदेव।

दर्पण–पु० [सं०] आकृति देखनेका शीशा,आईना, मुकुर, आरसी; नेत्र; एक पर्वत जो कुबेरका निवासस्थान था।

दर्पित, दर्पी(पिन्)–वि० [सं०] दर्पयुक्त, अहंकारी।

दर्ब*–पु० द्रव्य, धन-दौलत; खरी धातु (सोना, चाँदी आदि)।

दर्बान–पु० दे० 'दरबान'।

दर्बार–पु० दे० 'दरबार'।

दर्भ–पु० [सं०] कुश, डाभ; कुशासन।

दर्भासन–पु० [सं०] कुशका बना हुआ आसन, कुशासन।

दर्मियान–पु०, अ० दे० 'दरमियान'।

दर्याव*–पु० दे० 'दरिया'।

दर्रा–पु० मोटा आटा; [फा०] दो पहाड़ोंके बीचसे होकर जानेवाला तंग रास्ता, घाटी; दरार, दरज।

दर्वी–स्त्री० [सं०] बड़ी करछुल; साँपका फन।

दर्शक–पु० [सं०] देखनेवाला, द्रष्टा; दिखानेवाला।

दर्शन–पु० [सं०] चाक्षुष प्रत्यक्ष; साक्षात्कार, जानना;वह शास्त्र जिसमें आत्मा, अनात्मा, जीव, ब्रह्म, प्रकृति, पुरुष, जगत्, धर्म, मोक्ष, मानव जीवनके उद्देश्य आदिका निरूपण हो, तत्त्वज्ञान करानेवाला शास्त्र [छः आस्तिक–सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा (पूर्व मीमांसा) और वेदांत (उत्तर मीमांसा) तथा छः नास्तिक–चार्वाक, जैन, माध्यमिक, योगाचर, सौत्रांतिक और वैभाषिक–प्रधान माने जाते हैं]; नेत्रदृष्टि; बुद्धि; स्वप्न; प्रदर्शन; परीक्षण; शास्त्र; दर्पण; धर्म; रूपरंग; राय; नीयत; यज्ञ; उपस्थिति (न्यायालयमें)। **–प्रतिभू**–पु० वह प्रतिभू जो महाजनकी इच्छाके अनुसार ऋणीको किसी भी समय या किसी भी स्थानपर उपस्थित करनेका भार स्वीकार करे; जमानतदार। **–प्रातिभाव्य**–पु० दे० 'दर्शन-प्रतिभू'।

दर्शनीय–वि० [सं०] देखने, दर्शन करने योग्य; मनोहर।

दर्शनी हुंडी–स्त्री० ऐसी हुंडी जिसका भुगतान तत्काल करना पड़े; (ला०) ऐसी वस्तु जिसके द्वारा कोई वस्तु तत्काल प्राप्त की जा सके।

दर्शनेदेय–वि० [सं०] (पेयेबिल ऐट साइट) जिसका भुगतान देखते ही, तुरंत करना पड़े।

दर्शयिता(तृ)–पु० [सं०] दिखलानेवाला; मार्गप्रदर्शन करनेवाला; द्वारपाल।

दर्शाना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'दरसाना'।

दर्शित–वि० [सं०] दिखाया हुआ; प्रकटित, प्रकाशित; प्रमाणित; प्रकट।

दर्शी(र्शिन्)–वि० [सं०] (समासांतमें) साक्षात्कार करनेवाला; विवेचन करनेवाला; प्रदर्शित करनेवाला।

दल–पु० [सं०] उन दो बराबर भागोंमेंसे एक जिनमें अन्नके दाने या फल आदिके बीज दबाव पड़नेपर अपने आप विभक्त हो जायँ; कटा हुआ टुकड़ा; अंश; म्यान; पत्ता, पत्र; तमालपत्र; फूलकी पँखड़ी; एक विचारके या एक साथ कार्य करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, गुट, झुंड, गिरोह, टोली; हमराही; सैनिकोंका समूह, फौजका दस्ता; मिश्रण; आधारभूत परत। **–गंजन**–वि० भारी वीर। **–नेता**–पु० (कैप्टन) खेलमें सम्मिलित होनेवाले दो पक्षों या दलोंमेंसे किसी एकका नेता, कप्तान; सेनाकी टुकड़ी (कंपनी या ट्रूप) का नायक। **–पति**–पु० दलका मुखिया या सरदार। **–बाल***–पु० सेनानी। **–बीटक**–पु० कानका एक गहना।

दलक–स्त्री० गुदड़ी; टीस, चमक; आघातसे उत्पन्न कंप।

दलकन–स्त्री० दलकनेकी क्रिया या भाव; दलक; आघात।

दलकना–अ० क्रि० इस तरह फटना कि दरार पड़ जाय, चिर जाना; कंपित होना, काँपना; डगमगाना। स० क्रि० त्रस्त कर देना; कँपा देना। **मु० दलक उठना**–कंपित हो उठना, क्षुब्ध हो जाना।

दलदल–पु०, स्त्री० [अ०] कीचड़, पंक; दूरतक गीली जमीन जिसमें पाँव धँसता चला जाय। **मु०–में फँसना**–ऐसी मुसीबतमें फँसना जिससे उबरना बहुत मुश्किल हो।

दलन–पु० [सं०] चूर्ण करना, पीसना, कुचलना; नाश संहार, उच्छेद; विदारण; नाशकारक।

दलना–स० क्रि० चक्कीमें डालकर दो या अधिक टुकड़े करना; कुचलना; नष्ट करना; तोड़ना; चूर करना।

दलमलना–स० क्रि० रौंद डालना, कुचलना; मसल डालना।

दलवाना–स० क्रि० दलनेका काम दूसरेसे कराना।

दलवैया–पु० दलनेवाला; जीतनेवाला।

दलहन–पु० वह अन्न जिससे दाल तैयार की जाय।

दलहरा–पु० दाल बेचनेवाला।

दलादली–स्त्री० दलोंकी होड़। अ० होड़ करके।

दलान†–पु० दे० 'दालान'।

दलाल–पु० सौदे आदिको पटानेमें मध्यस्थता करनेवाला, बिचवई; कुटना।

दलाली–स्त्री० दलालका काम; दलालका काम करनेके बदलेमें मिलनेवाली रकम।

दलित–वि० [सं०] रौंदा, कुचला, दबाया हुआ, पदाक्रांत। **–वर्ग**–पु० हिंदुओंमें वे शूद्र जिन्हें अन्य जातियोंके समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

दलिया–पु० दला हुआ अनाज जो दरदरा हो।

दलील–स्त्री० [अ०] युक्ति, तर्क; बहस।

दलेल–पु० सिपाहियोंसे सजाके तौरपर करायी जानेवाली कड़ी कवायद । **मु०–बोलना**–सजाके लिए कड़ी कवायदकी आज्ञा देना ।

दलैया†–पु० नाशक, निहंता ।

दव–पु० [सं०] वन, जंगल; दावानल ।

दवन*–पु० दमन; दौना; दमन या नाश करनेवाला ।

दवना*–पु० दे० 'दौना' । स० क्रि० जलाना, झुलसना ।

दवनी–स्त्री० दे० 'दँवरी' ।

दवरिया*–स्त्री० दे० 'दवारि' ।

दवा–*स्त्री० दावानल; [फा०] औषध, इलाज, उपचार, चिकित्सा; शमनका उपाय; रास्तेपर लानेका उपाय । **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ बेचनेके लिए दवा रखी हो, औषधालय । **–दरपन**–पु०,**–दारू**–स्त्री० इलाज, उपचार ।

दवाई†–स्त्री० दे० 'दवा' ।**–खाना**–पु० दे० 'दवाख़ाना' ।

दवागि, दवागिन*–स्त्री० दे० 'दावानल' ।

दवाग्नि–स्त्री० [सं०] वनमें स्वतः लगनेवाली आग, वनाग्नि, दावानल ।

दवात–स्त्री० [अ०] स्याही रखनेका बरतन, मसिपात्र ।

दवान*–पु० एक हथियार ।

दवानल–पु० [सं०] दे० 'दवाग्नि' ।

दवामी–वि० [अ०] स्थायी, कायमी । **–बंदोबस्त**–पु० जमीनका वह प्रबंध जिसमें मालगुजारी हमेशाके लिए निश्चित कर दी जाती है, उसमें कभी वृद्धि नहीं होती ।

दवार, दवारि*–स्त्री० दे० 'दवाग्नि'; संताप ।

दश(न्)–वि० [सं०] नौ और एक । पु० दसकी संख्या, १० । **–कंठ**–पु० दशानन, रावण । **–कंठ जहा***, **–कंठ जित्**–पु० राम । **–कंठारि**–पु० राम । **–कंधर**–पु० दे० 'दश-कंठ' । **–कर्म(न्)**–पु० गर्भाधानसे लेकर अंत्येष्टिक्रिया या विवाहतकके दस कर्म । **–गात***–पु० दे० 'दशगात्र' । **–गात्र**–पु० शरीरके मुख्य दस अंग; मृत्युके दसवें दिन पूरा होनेवाला एक और्ध्वदेहिक कृत्य । **–ग्रामपति**–पु० वह जिसे राजाकी ओरसे दस गाँवोंके शासनका भार सौंपा गया हो । **–ग्रामिक**–दे० 'दशग्रामपति' ।**–ग्रीव**–पु० रावण ।**–द्वार**–पु० मनुष्य-शरीरके दस छिद्र । **–नामी**–पु० [हिं०] शंकराचार्यके दस प्रशिष्योंसे चला संन्यासियोंका एक संप्रदाय । **–पंचतपा(पस्)**–पु० दसों इंद्रियोंको वशमें रखते हुए पंचाग्नि तप करनेवाला तपस्वी । **–बाहु**–पु० शिव । –**–भुज**–पु० (डेकेगॉन) वह आकृति जिसमें दस भुजाएँ हों । **–भुजा,–महाविद्या**–स्त्री० दुर्गा । **–मास्य**–वि० जो दस महीनोंतक गर्भमें स्थित रहा हो । **–मुख**–पु० रावण । **–मुखांतक**–पु० राम । **–मूल**–पु० दस पेड़ों–सरिवन, पिठवन, गोखरू आदिकी जड़ या छाल । **–मौलि**–पु० रावण । **–रथ**–पु० अयोध्याके एक प्राचीन सूर्यवंशी सम्राट् जो रामके पिता थे । **–वक्त्र,–वदन**–पु०रावण ।**–शिर,–शीर्ष**–पु० रावण ।**–शीश,–सीस***–पु० रावण । **–हरा**–पु० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी जिस दिन गंगाका जन्म हुआ था और सेतुबंधमें रामने रामेश्वरकी स्थापना की थी; विजया दशमी । स्त्री०गंगा ।

दशक–पु० [सं०] दसका समाहार; (डिकेड) दस वर्षोंका समाहार, दशाब्द ।

दशन–पु० [सं०] दाँत; दाँतसे काटनेकी क्रिया; कवच; शृंग, चोटी । **–बीज**–पु० अनार ।

दशनामी–पु० दे० 'दश'के साथ ।

दशम–वि० [सं०] दसवाँ । पु० दसवाँ भाग । **–दशा**–स्त्री० कामकी अंतिम दशा जिसमें वियोगी प्राण त्याग देता है । **–भाव**–पु० फलित ज्योतिषके अनुसार जन्म-लग्नसे दसवाँ घर । **–लव**–पु० भिन्नका एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है (ग०) ।

दशमांश–पु० [सं०] दसवाँ भाग ।

दशमी–स्त्री०[सं०]चांद्र मासके प्रत्येक पक्षकी दसवीं तिथि ।

दशांग–पु० [सं०] गुग्गुल, चंदन, जटामासी आदि गंधद्रव्योंके योगसे संपन्न एक हवनीय धूप । **–क्वाथ**–पु० दस ओषधियों–अड़ूसा, गुड़ुच आदिका काढ़ा ।

दशांत–पु० [सं०] वृद्धावस्था, बुढ़ापा; दीयेकी बत्तीका छोर ।

दशांतर–पु० [सं०] जीवनकी विभिन्न अवस्थाएँ ।

दशा–स्त्री० [सं०] अवस्था, स्थिति; जीवनकी कालकृत विशेष अवस्था–जैसे गर्भवास, जन्म, बाल्य आदि; कामकी दस अवस्थाओंमेंसे एक; ग्रह-विशेषका भोग्य काल; दीयेकी बत्ती; किसी वस्त्र या अँगरखेका छोर ।

दशाधिपति–पु०[सं०] विशिष्ट दशाका स्वामी ग्रह (ज्यो०); दस पैदल सिपाहियोंका नायक ।

दशानन–पु० [सं०] रावण ।

दशाब्द–पु०, **दशी**–स्त्री० [सं०] (दिकेड) दश वर्षोंका समय, दशक ।

दशार्द्ध–वि० [सं०] दसका आधा, पाँच ।

दशावतार–पु० [सं०] विष्णुके दस अवतार ।

दशास्य–पु० [सं०] रावण ।

दशाह–पु० [सं०] दस दिनोंका समाहार; और्ध्वदेहिक कृत्यका दसवाँ दिन ।

दस–वि०, पु० दे० 'दश' ।**–माथ,–मौलि***–पु०रावण ।

दसन–पु० * दे० 'दशन' ।

दसना–अ० क्रि० बिछना, बिस्तर आदिका फैलाया जाना । पु० दे० 'डासन' ।

दसमी–स्त्री० दे० 'दशमी' ।

दसवाँ–वि० जो क्रममें नौके बाद या दसके स्थानपर हो । पु० मृत्युतिथिसे दसवाँ दिन; उस दिन होनेवाला प्रेतकृत्य ।

दसा*–स्त्री० दे० 'दशा' ।

दसाना*–स० क्रि० बिछाना ।

दसोतरा–वि० जिसमें दस और जुड़ा हो, दस अधिक । पु० सौ पीछे दसकी रकम ।

दसौंधी–पु० चारणोंकी एक जाति, भाट ।

दस्तंदाज़–वि० [फा०] दखल देनेवाला, हस्तक्षेप करनेवाला ।

दस्तंदाज़ी–स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप, छेड़छाड़ ।

दस्त–पु० [फा०] हाथ; पंजा; पतला पाख़ाना; प्रिय मेहमानोंको बैठानेकी जगह ।**–कार**–पु० हाथसे कारीगरीका काम करनेवाला व्यक्ति ।**–कारी**–स्त्री० दस्तकारका काम; हाथकी कलापूर्ण कृति । **–ख़त**–पु० हस्ताक्षर ।**–ख़ती**–

वि० हस्ताक्षरयुक्त। **—गीर**—वि० हाथ पकड़नेवाला, सहारा देनेवाला, सहायक। **—दराज़**—वि० हथछुट; परायी चीजपर हाथ मारनेवाला; परायी बहू-बेटीपर हाथ डालनेवाला। **—दराज़ी**—स्त्री० हथछुटपन; परायी बहू-बेटीपर हाथ डालना। **—बंद**—पु० स्त्रियोंका हाथमें पहननेका मोतियों और जवाहरातका लच्छा। **—बदस्त**—अ० हाथोंहाथ। **—बरदार**—वि० हाथ हटा लेनेवाला, बाज आनेवाला।

दस्तक—स्त्री० [फ़ा०] ताली; माल आदिके आने-जानेकी लिखित आज्ञा या स्वीकृति; राहदारीका परवाना; मालगुजारी वसूल करनेके लिए निकाला गया आज्ञापत्र; राजस्व; महसूल; समन तामील करनेका शुल्क।

दस्तरख़्वान—पु० [फ़ा०] खाना रखनेका फर्श या चौकी आदिपर फैलाया जानेवाला कपड़ा।

दस्ता—पु० [फ़ा०] औजार आदिकी मूँठ या बेंट; खरलका मुसल; सैनिकोंकी टोली; जत्था; कागजके चौबीस तख्तोंकी गड्डी; फूलोंका गुच्छा।

दस्ताना—पु० [फ़ा०] हाथमें पहननेका सूत आदिका बना हुआ गिलाफ; हाथपर पहननेकी लोहेकी जिरह; तलवारका कब्जा।

दस्तावर—वि० [फ़ा०] जिसके खानेसे दस्त आये, रेचक।

दस्तावेज़—स्त्री० वह पत्र जो दो या अधिक आदमियोंके बीच होनेवाले व्यवहारके संबंधमें लिखा गया हो; तमस्सुक।

दस्ती—वि० हाथका; जो हाथसे ले जाया जाय। स्त्री० छोटा बेंट; छोटा रूमाल; कुश्तीका एक दाँव; मशाल।

दस्तूर—पु० [फ़ा०] रीति, तरीका, प्रणाली, चाल; नेग।

दस्तूरी—स्त्री० वह बँधी हुई रकम जो अमीरोंके नौकर सौदा खरीदनेपर दूकानदारोंसे लेते हैं।

दस्यु—पु० [सं०] डाकू, लुटेरा; खल; चारों वर्णोंके अतिरिक्त एक प्राचीन छोटी जाति (मनु); अनार्य जो प्राचीन कालमें यज्ञविध्वंस आदि किया करते थे। **—वृत्ति**—स्त्री० डाकूका पेशा, लुटेरापन।

दह—पु० नदीका वह भाग जहाँ पानी बहुत गहरा हो; हौज। स्त्री० अग्निशिखा, ज्वाला। * वि० दस।

दहक—स्त्री० आगका दहकना, लपट, ज्वाला।

दहकना—अ० क्रि० लपट फेंकते हुए जलना, इस प्रकार जलना कि आँच या लपट बाहर निकले; तप्त होना।

दहक़ान—पु० [फ़ा०] देहात या गाँवका रहनेवाला, किसान, काश्तकार। वि० गँवार, उजड्ड, जाहिल।

दहकाना—स० क्रि० इस रूपमें जलाना कि आँच या लपट बाहर निकले; भड़काना, उत्तेजित करना।

दहक़ानि(नी)यत—स्त्री० [फ़ा०] गँवारपन, देहातीपन।

दहन—पु० [सं०] जलना, दाह; आग, अग्नि; जलानेवाला; तप्त लोहेसे जलाना; कृत्तिका नक्षत्र; दुष्ट व्यक्ति; चित्रक, चीता; भिलावाँ; एक तरहकी काँजी; कबूतर; तीनकी संख्या (ज्यो०); एक रुद्र; ज्योतिषके अनुसार एक योग। वि० जलानेवाला, विनाशक। **—केतन**—पु० धुआँ। **—प्रिया**—स्त्री० अग्निकी पत्नी, स्वाहा। **—शील**—वि० जलानेवाला, दाहक।

दहना*—अ० क्रि० जलना, दग्ध होना, भस्म होना; धँसना। स० क्रि० जलाना, भस्म करना; कष्ट देना, संतप्त या पीड़ित करना। वि० दाहिना।

दहनाराति—पु० [सं०] पानी।

दहनि*—स्त्री० जलनेकी क्रिया, दग्ध होना।

दहनीय—वि० [सं०] जलने योग्य; जलाये जाने योग्य।

दहपट—वि० ढहाकर धूलमें मिलाया हुआ, ध्वस्त; कुचला हुआ; पादाक्रांत।

दहपटना—स० क्रि० ढहाना, ध्वस्त करना; कुचल डालना।

दहर*—पु० दे० 'दह'।

दहरना*—अ० क्रि० दे० 'दहलना'। स० क्रि० दे० 'दहलाना'।

दहरौरी—स्त्री० एक तरहका गुलगुला।

दहल—स्त्री० थरथराहट, डरसे काँप उठना।

दहलना—अ० क्रि० डरके मारे काँपना, थर्राना।

दहला—पु० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगके दस चिह्न बने हों; * थाला, आलबाल।

दहलाना—स० क्रि० डराकर कँपा देना, अत्यंत भीत करना।

दहली*—स्त्री० दे० 'देहरी'।

दहलीज़—स्त्री० [फ़ा०] चौखटकी नीचेवाली लकड़ी जो जमीनसे सटी रहती है, देहली। मु० **—का कुत्ता**—पालतू कुत्ता; मुफ्तखोर। **—की मिट्टी ले डालना**—बहुतसे फेरे करना, बार-बार जाना। **—झाँकना**—किसीके पास किसी कामके लिए जाना। **—न झाँकना**—बहुत अधिक परदेमें रहना।

दहशत—स्त्री० [फ़ा०] भय, डर, आतंक।

दहा—पु० ताजिया; मुहर्रमका समय; दहला।

दहाई—स्त्री० अंकोंकी गिनती करते समय दाहिनी ओरसे दूसरा स्थान।

दहाड़—स्त्री० शेर या बाघका घोर गर्जन; जोरकी चिल्लाहट; रोते समय जोरसे चिल्लानेकी आवाज।

दहाड़ना—अ० क्रि० शेर या बाघका गरजना; चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

दहाना—पु० [फ़ा०] मुँह; मशकका मुँह; नदीके दूसरी नदी या समुद्रमें गिरनेकी जगह; लगामका मुँहमें रहनेवाला हिस्सा। † स० क्रि० स्थानीय मानके अनुसार अंकोंको पढ़ना।

दहिऔरी†—स्त्री० दही डालकर बनाया हुआ गुलगुला।

दहिना†—वि० दे० 'दाहिना'।

दहिने†—अ० दे० 'दाहिने'।

दही—पु० खटाई या जामन डालकर जमाया हुआ दूध।

दहुँ*—अ० कदाचित्, शायद; अथवा, या।

दहेँडी—स्त्री० दही रखनेका मिट्टीका पात्र।

दहेज—पु० विवाहके अवसरपर कन्यापक्षकी ओरसे वरपक्षको दिया जानेवाला धन और सामान, दायजा।

दहेला*—वि० दग्ध, जला हुआ; परितप्त, पीडित; दुःखी।

दहोतरसो—वि० एकसौ दस। एकसौ दशकी संख्या, ११०।

दह्यो*—पु० दही।

दाँ—पु० बार, दफा। वि० [फ़ा०] जानकार, विज्ञ (समासमें)।

दाँकना*—अ० क्रि० गरजना, दहाड़ना।

दाँग*—पु० टीला; छोटी पहाड़ी; डंका।

दाँज*—स्त्री० समानता, तुलना, बराबरी।

दाँड़ना†—स० क्रि० दंड देना।

दांडिक—वि०, पु० [सं०] दंड देनेवाला।

दांत–वि० [सं०] दंत-संबंधी; जिसने बाह्येंद्रियोंका दमन किया हो; दमित; शांत । पु० दाता ।

दाँत–पु० दे० 'दंत'; दे० 'दाँता'। **मु०–काटी रोटी**–गहरी मित्रता । **–काढ़ना**–गिड़गिड़ाना । **–किरकिरे होना**–हार मानना । **–कुरेदनेको तिनका न रहना**–पासमें कुछ न होना । **–खट्टे करना**–परास्त करना; नाकमें दम करना । **–गड़ना**–किसी वस्तुके लिए बहुत अधिक लालायित होना । **–चबाना**–दे० 'दाँत पीसना'। **–तले उँगली दबाना**–दे० 'दाँतों उँगली काटना'। **–तोड़ना**–परास्त करना । **–दिखाना**–घुड़कना; अपना बड़प्पन दिखलाना । **–निकालना,–निपोरना**–गिड़गिड़ाना; टें बोल देना; व्यर्थ हँसना । **–पीसना**–बहुत अधिक क्रुद्ध होना । **–बजना**–ठंडके मारे दाँतोंका किटकिटाना । **–बैठना**–बेहोशीके कारण ऊपर-नीचेके दाँतोंका इस प्रकार सट जाना कि मुँह न खुल सके ।**–लगना**–दे० 'दाँत गड़ना'; दे० 'दाँत बैठना'। **–लगाना**–(किसी वस्तुको) हड़प जानेकी ताकमें रहना, आत्मसात् करनेकी प्रबल इच्छा रखना । **(दाँतों)उँगली काटना**–आश्चर्यमें पड़ जाना, दंग हो जाना । **–धरती पकड़कर**–बड़ी कठिनाईसे, बड़ी दिक्कतसे । **–पसीना आना**–बहुत अधिक श्रम पड़ना ।**–में जीभ-सा होना**–प्रतिक्षण शत्रुओंके बीचमें रहना । **–से उठाना**–बड़ी कंजूसीसे (द्रव्य आदि) संचित करना ।

दाँता–पु० दे० 'दंदाना'।

दाँता किटकिट,–किलकिल–स्त्री० तकरार, तूतू-मैंमैं ।

दांति–स्त्री० [सं०] आत्मनिग्रह; तप; क्लेश-सहिष्णुता ।

दाँती–स्त्री० घास आदि काटनेका हँसिया; नाव बाँधनेका खूँटा; दंतपंक्ति; दर्रा ।

दाँना–स० क्रि० डंठलसे दाना अलग करनेके लिए फसलको बैलोंसे रौंदवाना ।

दांपत्य–पु० [सं०] पति-पत्नीका संबंध । वि० दंपतीका; पतिपत्नी-संबंधी ।

दांभिक–वि० [सं०] कपटी, दंभी । पु० ढोंग करनेवाला व्यक्ति ।

दाँयँ*–स्त्री० दे० 'दँवरी'।

दाँयाँ–वि० दे० 'दाहिना'।

दाँवना–स० क्रि० दे० 'दाँना'।

दाँवनी–स्त्री० एक गहना ।

दाँवरी–स्त्री० रस्सी, डोरी ।

दाइ*–पु० दे० 'दाय'।

दाइज, दाइजा*–पु० दे० 'दायज'।

दाइँ–वि० स्त्री० दाहिनी । स्त्री० बार, दफा ।

दाई–स्त्री० वह स्त्री जो अपना दूध पिलाकर दूसरेके बच्चेको पाले, उपमाता, धाय; बच्चा जनानेवाली स्त्री; बच्चोंकी देखरेख करनेवाली दासी । * वि० दे० 'दायी'। **मु०–से पेट छिपाना**–ऐसे व्यक्तिसे कोई बात छिपाना जिसे सारा भेद मालूम हो ।

दाउँ*–पु० दे० 'दावँ'।

दाउ*–स्त्री० दावानल ।

दाऊ–पु० बड़ा भाई; कृष्णके ज्येष्ठ भ्राता बलराम ।

दाऊदख़ानी–पु० [फा०] एक तरहका गेहूँ या चावल ।

दाक्षिणात्य–पु० [सं०] दक्षिण देशका निवासी; नारियल । वि० दक्षिण देशका, दक्षिणी ।

दाक्षिण्य–पु० [सं०] अनुकूलता; निपुणता, पटुता; उदारता; सरलता; नायक द्वारा नायिकाका अनुवर्तन (सा०) ।

दाक्षी–स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री; पाणिनिकी माता ।

दाक्षेय–पु० [सं०] पाणिनि मुनि ।

दाक्ष्य–पु० [सं०] दक्षता, निपुणता, कार्यपटुता ।

दाख–स्त्री० अंगूर; मुनक्का ।

दाखि*–स्त्री० दे० 'दाख'।

दाख़िल–वि० [फा०] भीतर घुसा हुआ, प्रविष्ट; शामिल । **–ख़ारिज**–पु० किसी सरकारी कागजपरसे एक व्यक्तिका नाम हटाकर उसके नाम लिखी जायदादपर दूसरेका नाम चढ़ानेकी कानूनी काररवाई । **–दफ़्तर**–वि० दफ्तरमें बिना किसी निर्णयके अलग रख दिया हुआ (कागज) । **मु०– करना**–अदा या जमा करना ।

दाख़िला–पु० [फा०] प्रवेश; जमा करनेका कार्य, अदायगी; वह रजिस्टर जिसमें किसी दाखिल या जमा की जानेवाली वस्तुका लेखा हो; महसूल या चुंगीकी रसीद ।

दाग–पु० दग्ध करनेकी क्रिया; दाह; दे० 'दाग़'; *जलन ।

दाग़–पु० [फा०] किसी प्राणीके शरीरपरका जन्म-जात अथवा घाव या जलने आदिका चिह्न; रंग आदिके लग जानेसे कपड़े आदिपर पड़ जानेवाला चिह्न, धब्बा; कलंक । **–दार**–वि० जिसपर दाग हो, धब्बेदार । **–बेल**–स्त्री० [हिं०] सड़क, नहर, नींवँ आदि खुदवानेके स्थानपर फावड़ेसे खोदकर लगाया हुआ निशान ।

दागना–स० क्रि० जलाना; संतप्त करना; तपाये हुए लोहे या अन्य धातुकी मुद्रासे किसीके शरीरपर विशेष प्रकारका चिह्न अंकित करना; अधिक तेज दवा लगाकर फोड़े आदिको जला या सुखा देना; बंदूक आदि छोड़ना; धब्बा लगाना ।

दाग़ी–वि० [फा०] जिसपर दाग लगा हो, दागदार; कलंकित; कलुषित; चरित्रहीन; सजा भुगता हुआ ।

दाघ–पु० [सं०] ताप, दाह ।

दाजन, दाझन*–स्त्री० जलन; पीड़ा ।

दाजना, दाझना*–अ० क्रि० दग्ध होना, जलना; संतप्त होना; ईर्ष्या करना । स० क्रि० जलाना; संतप्त करना ।

दाडिम–पु० [सं०] अनार । **–प्रिय,–भक्षण**–पु० शुक, तोता ।

दाढ़–पु० जबड़ेके भीतरके दाँत जिनसे खाते समय अन्न आदि चबाते हैं, चौभड़ । स्त्री० गरज, दहाड़ ।

दाढ़ना*–अ० क्रि० जलना; संतप्त होना; गरजना । स० क्रि० जलाना; संतप्त करना, कष्ट पहुँचाना ।

दाढा–स्त्री० [सं०] दंष्ट्रा, बड़ा दाँत; समूह; इच्छा ।

दाढ़ा†–पु० वनाग्नि, दावाग्नि; अग्नि; जलन; लंबी दाढ़ी । वि० जलाया हुआ; संतप्त ।

दाढिका–स्त्री० [सं०] दाढ़ी; दाँत ।

दाढ़ी–स्त्री० ठुड्डी; ठुड्डीपरके बाल, डाढ़ी । **–जार**–पु० एक गाली जो स्त्रियाँ पुरुषोंको देती हैं (जिसकी दाढ़ी जल गयी हो)।

दात–*पु० दान; दाता । वि० [सं०] विभक्त, छिन्न; धुला

हुआ, मार्जित ।

दातव्य–वि० [सं०] देने योग्य; दानसे चलनेवाला; लौटाया न जानेवाला; जहाँ दानके रूपमें कोई चीज दी जाती हो । * पु० दानशीलता ।

दाता(तृ)–पु० [सं०] देनेवाला, दान देनेवाला; महाजन।

दातार–पु० देनेवाला; प्रदान करनेवाला ।

दाती*–स्त्री० देनेवाली, दात्री ।

दातुन, दातून–स्त्री० दे० 'दातौन' ।

दातृता–स्त्री०, **दातृत्व**–पु० [सं०] दान-शीलता ।

दातौन–स्त्री० नीम, बबूल आदिकी गीली टहनीका वह टुकड़ा जो दाँत सफा करनेके काममें लाया जाता है ।

दात्योनि*–स्त्री० दे० 'दातौन' ।

दात्री–वि० स्त्री० [सं०] देनेवाली; दान करनेवाली । स्त्री० हँसिया ।

दाद–स्त्री० एक प्रसिद्ध चर्मरोग । **–मर्दन**–पु० चकवँड़ ।

दाद–स्त्री० [फा०] इंसाफ, न्याय । **मु०–देना**–न्याय करना; न्यायोचित प्रशंसा करना ।

दादरा–पु० एक चलता गाना; एक ताल ।

दादा–पु० पिताके पिता, पितामहके लिए प्रयुक्त आदर-सूचक शब्द; बड़ा भाई; गुरुजन ।

दादि*–स्त्री० दे० 'दाद'; फरियाद ।

दादी–स्त्री० पिताकी माता, पितामही । पु० फरियाद करनेवाला ।

दादुर*–पु० मेढ़क, दर्दुर ।

दादू–पु० 'दादा' शब्दका संबोधन कारकका एक रूप; एक पंथप्रवर्तक साधु । **–पंथी**–पु० दादूके मतको माननेवाला ।

दाध*–स्त्री० जलन; ताप ।

दाधना*–स० क्रि० जलाना; तपाना; पीडा देना ।

दान–पु० [सं०] देनेकी क्रिया; धर्मकी दृष्टिसे या दयावश किसीको कोई वस्तु देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु; शिक्षण; शत्रुपर विजय पानेके साम आदि चार उपायोंमेंसे एक, कुछ देकर शत्रुको वशमें करनेकी नीति; उदारता; हाथीके गंडस्थलसे निकलनेवाला मदजल । **–तोय**–पु० दे० 'दान-वारि' । **–पत्र**–पु० वह लेख या पत्र जिसमें किसी वस्तुके दानरूपमें दिये जानेका उल्लेख हो । **–पात्र**–पु० दान देने योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसे दान दिया जा सके । **–वारि**–पु० हाथीका मदजल । **–वीर**–पु० बहुत दानी व्यक्ति । **–शील,–शूर**–वि० जिसका स्वभाव दान देनेका हो, जो बराबर दान दिया करता हो ।

दानव–पु० [सं०] कश्यपके पुत्र जो दनुके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । **–गुरु**–पु० शुक्राचार्य ।

दानवारि–पु० [सं०] विष्णु; इंद्र; देवता (दे० 'दान-वारि') ।

दानवी–वि० दानव-संबंधी; दानवोचित । स्त्री० [सं०] दानवकी स्त्री ।

दानवेंद्र–पु० [सं०] बलि ।

दाना–वि० [फा०] बुद्धिमान्, समझदार । पु० अनाजका एक कण; अन्न; भोजन; चबेना; अनार, पिस्ता आदिका एक-एक बीज; मनका, गुरिया; एकमें पिरोकर या एक साथ जोड़कर काममें लायी जानेवाली गोल या पहलदार वस्तुओंमेंसे एक-एक; अदद, रवा; फुंसी । **–पानी**–पु० अन्न-जल; खाना-पीना । **(दाने)दार**–वि० जिसमें दाने या रवे हों, रवादार । **मु०–पानी उठना**–जीविका न रहना; अन्यत्र जानेका संयोग होना । **(दाने)दानेको तरसना**–भूखों मरना । **–दानेको मुहताज**–जिसे एक दाना भी मयस्सर न हो, अति निर्धन ।

दानाई–स्त्री० [फा०] बुद्धिमत्ता, समझदारी ।

दानाध्यक्ष–पु० [सं०] वह राजकर्मचारी जिसके हाथमें दानका प्रबंध हो ।

दानि*–वि०, पु० दे० 'दानी' ।

दानिनी–स्त्री० [सं०] दान करनेवाली स्त्री ।

दानिया†–वि० दे० 'दानी' ।

दानिश–स्त्री० [फा०] अक्ल, बुद्धि । **–मंद**–वि० बुद्धिमान् ।

दानी(निन्)–वि० [सं०] दान करनेवाला; दानशील, उदार । पु० दाता; कर उगाहनेवाला ।

दानो*–पु० दे० 'दानव' ।

दाप–पु० दर्प, घमंड; प्रताप; शक्ति; दबदबा; उत्साह; क्रोध, रोष; जलन, दुःख ।

दापक–पु० दबानेवाला; दलन करनेवाला; दूर करनेवाला; मिटानेवाला, नाशक ।

दापना*–स० क्रि० दबाना; वर्जित करना ।

दाब–स्त्री० दबने या दबानेका भाव, दबाव, चाँप, भार; शासन; नियंत्रण; रोब, अधिकार, प्रभुत्व । **–दार**–वि० प्रभावशाली; मस्त । **मु०–दिखाना**–रोब जमाना, प्रभुताका भय दिखाना । **–मानना**–प्रभुता स्वीकार करना, किसीकी प्रबलतासे भय खाना; वशवर्ती होकर रहना ।

दाबना–स० क्रि० दे० 'दबाना' ।

दाबा–पु० कलम लगानेके लिए वृक्षकी टहनीको मिट्टीमें गाड़ना या दबाना ।

दाभ–पु० दे० 'दर्भ' ।

दाम–पु० दमड़ीका तृतीयांश; समूह; माला; मूल्य, कीमत; द्रव्य, रुपया-पैसा; सिक्का; शत्रुपर विजय पानेके चार उपायोंमेंसे एक, दाननीति ।

दाम(न्)–पु० [सं०] रज्जु, रस्सी; लड़ी; माला; रेखा ।

दामन–पु० [फा०] अँगरखे आदिका नीचे लटका हुआ भाग, पल्ला; पहाड़के नीचेकी जमीन; पाल । **–गीर**–वि० पल्ला पकड़नेवाला; दावेदार; मदद चाहनेवाला ।

दामरि, दामरी*–स्त्री० रस्सी ।

दामा–स्त्री० [सं०] रस्सी; * दावाग्नि ।

दामाद–पु० जामाता ।

दामिनी–स्त्री० [सं०] विद्युत्, बिजली; सिरका एक गहना।

दामी–वि० कीमती । स्त्री० कर ।

दामोदर–पु० [सं०] कृष्ण; नारायण ।

दायँ*–पु० दे० 'दावँ' । स्त्री० दे० 'दाँयँ' ।

दाय–पु० [सं०] देने योग्य धन; वह धन जिसे किसीको देना हो; विवाहके समय कन्या और जामाताको दिया जानेवाला द्रव्य आदि, दायजा; वह पैतृक या संबंधीकी संपत्ति जो पानेवालोंमें बाँटी जा सके; दान; खंडन; विभाग; क्षति; स्थान; * दे० 'दाव' । **–कर**–पु०(इनहेरिटेंस टैक्स) उत्तराधिकारमें प्राप्त धन या संपत्तिपर लगाया जानेवाला कर, रिक्थकर । **–भाग**–पु० पैतृक या संबंधीकी संपत्ति-

का उत्तराधिकारियोंमें विभाजन; इसकी व्यवस्था या कानून; दायाधिकार।

दायक-पु॰ [सं॰] देनेवाला, दाता; दायाद।

दायज, दायजा-पु॰ विवाहके समय वरपक्षको दिया जानेवाला धन आदि, यौतुक, दहेज।

दायमी-वि॰[अ॰] सदा रहनेवाला, सार्वकालिक; स्थायी।

दायर-वि॰ [अ॰] चलनेवाला, फिरनेवाला; जो निर्णयके लिए हाकिमके सामने पेश किया गया हो। **मु॰-करना**-निर्णयके लिए मुकदमा अदालतमें पेश करना।

दायरा-पु॰ [अ॰] गोल घेरा; कार्य या अधिकारका क्षेत्र।

दायाँ-वि॰ दाहिना।

दाया-* स्त्री॰ दे॰ 'दया'। स्त्री॰ [फा॰] दे॰ 'दाई'। **-गरी**-स्त्री॰ दाईका काम।

दायागत-वि॰ [सं॰] जो मौरूसी हिस्सेमें पड़ा हो। पु॰ दायके रूपमें प्राप्त दास।

दायाद-पु॰ [सं॰] दायका अधिकारी, ज्ञाति; सपिंड संबंधी; पुत्र।

दायादा, दायादी-स्त्री॰[सं॰] कन्या; दायकी अधिकारिणी।

दायाधिकारी होना-अ॰ क्रि॰ (सक्सीड) किसीकी मृत्युके बाद उसकी संपत्ति पानेका अधिकारी होना, उत्तराधिकारी बनना।

दायापवर्तन-पु॰ [सं॰] उत्तराधिकारमें मिली हुई जायदादकी जब्ती।

दायित्व-पु॰ [सं॰] दायी होनेका भाव, जिम्मेदारी।

दायी(यिन्)-वि॰ [सं॰] देनेवाला; पहुँचानेवाला (समासांतमें); उत्तरदायी।

दायें-अ॰ दाहिनी तरफ।

दार-* पु॰ दारु, काष्ठ; [सं॰] चीरना; दरार, छिद्र। स्त्री॰ स्त्री, पत्नी; † स्त्री॰ दाल। **-कर्म (न्)**-पु॰, **-क्रिया**-स्त्री॰ विवाह। **-ग्रहण,-परिग्रह**-पु॰ विवाह।

दारक-पु॰ [सं॰] बालक; पुत्र; शावक; ग्राम-शूकर।

दारचीनी-स्त्री॰ एक प्रकारका तज जिसका छिलका दवा और मसालेके काम आता है।

दारण-पु॰ [सं॰] निर्मली; वह अस्त्र आदि जिससे कुछ चीरा जाय; चीरनेकी क्रिया, भेदन; औषधका एक भेद। वि॰ चीरने या विदीर्ण करनेवाला।

दारन*-वि॰ दे॰ 'दारुन'; 'दारण'। पु॰ दे॰ 'दारण'।

दारना*-स॰ क्रि॰ चीरना, फाड़ना; नष्ट कर देना।

दारमदार-पु॰ [फा॰] किसी कार्यके होने या न होने अथवा बनने-बिगड़नेकी पूरी जिम्मेदारी; कार्यभार।

दारा-स्त्री॰ स्त्री, पत्नी, भार्या। पु॰[फा॰] मालिक; शाह।

दाराई-स्त्री॰ [फा॰] एक तरहका लाल रेशमी कपड़ा।

दारि-स्त्री॰ [सं॰] विदारण, छेदन; * दे॰ 'दाल'।

दारिउँ*-पु॰ दे॰ 'दाडिम'।

दारिका-स्त्री॰ [सं॰] कन्या, पुत्री।

दारिद*-पु॰ दे॰ 'दारिद्र्य'।

दारिद्र*-पु॰ दे॰ 'दारिद्र्य'।

दारिद्र्य-पु॰[सं॰]दरिद्रता, धनहीनता, निर्धनता, गरीबी।

दारिम*-पु॰ दे॰ 'दाडिम'।

दारी-स्त्री॰ [सं॰] दरार; एक क्षुद्र रोग जिसमें वायुके प्रकोपसे तलवेका चमड़ा फट जाता और दर्द करने लगता है, बेवाई; * कुलटा नारी-'अपनो पति छाँड़ि औरनिसों रति, ज्यों दारनिमें दारी'-स्वामी हरिदास।

दारु-पु॰ [सं॰] काष्ठ, काठ; पीतल; देवदारु; शिल्पी, कारीगर; उदार व्यक्ति। वि॰ दानशील; चटपट टूट या फूट जानेवाला; विदारण करनेवाला। **-कृत्य**-पु॰ लकड़ीका काम। **-जोषित***-स्त्री॰ दे॰ 'दारु-योषित्'। **-नटी,-नारी**-स्त्री॰ कठपुतली। **-पुत्रिका,-पुत्री**-स्त्री॰ कठपुतली। **-यंत्र**-पु॰ काठका बना हुआ यंत्र; कठपुतली। **-योषा,-योषित्,-योषिता**-स्त्री॰ कठपुतली। **-वधू**-स्त्री॰ काठकी गुड़िया। **-सार**-पु॰ चंदन। **-हस्त,-हस्तक**-पु॰ काठकी करछी।

दारुका-स्त्री॰ [सं॰] काठकी पुतली; काठकी मूर्ति।

दारुण-वि॰ [सं॰] कठोर; निर्दय; भयंकर; उग्र; घोर; कँपा देनेवाला। पु॰ भयानक रस; एक नरक।

दारुन*-वि॰ दे॰ 'दारुण'!

दारुमय-वि॰ [सं॰] काठका; काठका बना हुआ।

दारू-स्त्री॰ [फा॰] दवा; बारूद; शराब।

दारो*-पु॰ अनारका दाना या बीज।

दारोग़ा-पु॰ [फा॰] हिफाजत करनेवाला; निगरानी करनेवाला; थानेदार। **-गरी**-स्त्री॰ दारोगाका काम या ओहदा।

दारोग़ाई-स्त्री॰ दारोगाका काम या ओहदा।

दारयौं*-पु॰ अनार; अनारका दाना।

दार्शनिक-पु॰ [सं॰] दर्शनशास्त्रका जानकार, तत्त्ववेत्ता। वि॰ दर्शनशास्त्र संबंधी।

दाल-स्त्री॰ दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सिझाकर भात, रोटी आदिके साथ खाते हैं; पकायी हुई दाल; सालन; खुरंड। **-मोठ**-स्त्री॰ घी या तेलमें तली हुई दाल जिसमें नमक, मिर्च आदि मिलाते हैं। **मु॰-गलना**-युक्तिका सफल होना। **-में काला होना**-कोई दोष छिपा होना। **-रोटी चलना**-निर्वाह होना।

दालचीनी-स्त्री॰ दे॰ 'दारचीनी'।

दालना*-स॰ क्रि॰ दे॰ 'दलना'।

दालान-पु॰ बरामदा, ओसारा।

दावँ-पु॰ बार, मर्तबा; कार्यसिद्धिका उपयुक्त अवसर, सुयोग; इष्टसाधनका उपाय, युक्ति; कुश्तीका पेच; छलनेकी चाल; जूए आदिके खेलमें जितानेवाली चाल; खेलनेकी बारी; † जगह, रिक्त स्थान।

दाव-पु॰ [सं॰] वन, जंगल; वनमें लगनेवाली अग्नि; दाह; पीड़ा, क्लेश; † पु॰ एक हथियार; जगह, रिक्त स्थान।

दावत-स्त्री॰ भोजका निमंत्रण; कोई काम करनेका बुलावा।

दावन*-पु॰ दमन; संहार; हँसिया; दामन। वि॰ नाश करनेवाला।

दावना-स॰ क्रि॰ दमन करना; नष्ट करना; दाँना।

दावनी-स्त्री॰ स्त्रियोंका एक शिरोभूषण। वि॰ स्त्री॰ नष्ट करनेवाली।

दावरी*-स्त्री॰ दे॰ 'दाँवरी'।

दावा-*स्त्री॰ दे॰ 'दावाग्नि'। पु॰ [अ॰] स्वत्वकी रक्षा या अन्यायके प्रतिकारके लिए न्यायालयमें दिया हुआ प्रार्थना-

पत्र; किसी वस्तुको अपना बताकर उसकी जोरदार माँग करना; अधिकार, हक; हाँक; जोर; किसी बातकी यथार्थताके विषयमें दृढ़ आत्मविश्वास; गर्वोक्ति। **–गीर**–पु० दावा करनेवाला, अधिकारकी माँग करनेवाला। **–दार**–पु० दे० 'दावागीर'।

दावाग्नि–स्त्री० [सं०] वनकी आग जो बाँस आदिके रगड़ खानेसे स्वतः लग जाती है।

दावात–स्त्री० दे० 'दवात'।

दावानल–पु० [सं०] दे० 'दावाग्नि'।

दाशरथ–वि० [सं०] दशरथका; दशरथ-संबंधी। पु० दशरथपुत्र राम आदि।

दाशरथि–पु० [सं०] दशरथके पुत्र, राम, भरत आदि।

दास–पु० [सं०] वह जो दूसरेकी सेवाके लिए अपनेको समर्पित कर दे; भृत्य, किंकर, नौकर; खरीदा हुआ नौकर, गुलाम; शूद्रोंकी एक उपाधि; दस्यु; *बिछावन।

दासता–स्त्री० [सं०] दास होनेका भाव, गुलामी, परतंत्रता।

दासन*–पु० दे० 'डासन'।

दासा–पु० दीवारसे सटाकर उठाया हुआ पुश्ता; दरवाजे या दीवारकी कुरसीके ऊपर लगायी हुई लकड़ी या पत्थर।

दासानुदास–पु० [सं०] दासोंका दास; विनम्र सेवक।

दासिका–स्त्री० [सं०] दे० 'दासी'।

दासी–स्त्री० [सं०] सेवा-टहल करनेवाली स्त्री, सेविका।

दासेय–पु० [सं०] दासीका पुत्र; दास।

दास्तान–स्त्री० [फा०] वृत्तांत; कहानी; विवरण, बयान।

दास्य–पु० [सं०] भक्तिका एक भेद; दे० 'दासता'।

दाह–पु० [सं०] जलाना; जलन, ताप; रोग जिसमें शरीरमें विशेष जलन होती है; संताप; मुर्दा जलाना। **–कर्म(न्)**–पु० शवसंस्कार, शव जलानेका कृत्य। **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'दाहकर्म'। **–ज्वर**–पु० एक ज्वर जिसमें शरीरमें बहुत जलन होती है।

दाहक–पु० [सं०] अग्नि; चित्रक वृक्ष। वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला। **–प्रस्फोट (बम)**–पु० (इनसेंडिअरी बम) आग लगा देनेवाला प्रस्फोट या बम।

दाहन–पु० [सं०] जलाने या जलवानेका काम।

दाहना–स० क्रि० जलाना, भस्मसात् करना; नष्ट करना; कष्ट पहुँचाना, संतप्त करना। वि० दाहिना।

दाहिन*–वि० दाहिना; अनुकूल।

दाहिना–वि० शरीरके उस पार्श्वका नाम जो पूर्वकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर दक्षिण दिशाकी ओर पड़े; बायाँका उलटा, दक्षिण; दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाला; अनुकूल। **मु०–हाथ होना**–मुख्य सहायक होना। **(दाहिनी) देना, –लाना**–प्रदक्षिणा, परिक्रमा करना।

दाहिने–अ० दाहिने हाथकी ओर। **मु०–होना**–अनुकूल होना।

दाही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] जलानेवाला; कष्ट देनेवाला।

दिअना†–पु० दे० 'दीया'।

दिअरी, दिअली–स्त्री० छोटा दीया।

दिआ–पु० दे० 'दीया'। **–बत्ती**–दे० 'दीया-बत्ती'। **–सलाई**–स्त्री० दे० 'दियासलाई'।

दिउला–पु०, **दिउली†**–स्त्री० सूखे हुए चेचकके दानोंके ऊपरकी पपड़ी, खुरंड; छोटा दीया।

दिक़–पु० [अ०] एक प्रकारका ज्वर जो यक्ष्माके रोगीको होता है, तपेदिक़। वि० तंग आया हुआ, परेशान, आजिज।

दिकदाह*–पु० दे० 'दिग्दाह'।

दिक्(श्)–स्त्री० [सं०] दिशा। **–कन्या**–स्त्री० दिशारूपिणी कन्या। **–करी(रिन्)**–पु० दिग्गज। **–कांता, –कामिनी**–स्त्री० दे० 'दिक्कन्या'। **–कुंजर**–पु० दिग्गज। **–पति**–पु० आठ ग्रह जो आठ दिशाओंके स्वामी माने जाते हैं (ज्यो०); दस दिक्पाल। **–पाल**–पु० दस दिशाओंके रक्षक–इंद्र, अग्नि, यम, आदि दस देवता; एक छंद। **–शूल**–पु० वह समय जब किसी विशेष दिशामें जाना वर्जित हो। **–सिंधुर**–पु० दिग्गज। **–सुंदरी**–स्त्री० दिशारूपी सुंदरी (स्त्री)। **–स्वामी(मिन्)**–पु० दे० 'दिक्पति'।

दिक़्क़त–स्त्री० [अ०] मुश्किल, तंगी, परेशानी, कठिनाई।

दिखना–अ० क्रि० दिखाई देना।

दिखराना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

दिखरावना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

दिखरावनी†*–स्त्री० दिखानेका काम या भाव; (नववधू आदिका) मुँह देखनेका नेग।

दिखलाई–स्त्री० दिखलानेका काम या उजरत।

दिखलाना–स० क्रि० देखनेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेको देखनेमें लगाना, किसी वस्तुका चाक्षुष प्रत्यक्ष कराना; प्रदर्शित करना, प्रकट करना, जाहिर करना।

दिखलावा–पु० दे० 'दिखावा'।

दिखवैया†–पु० दिखलानेवाला; देखनेवाला।

दिखहार*–पु० देखनेवाला।

दिखाई–स्त्री० दिखानेकी क्रिया या भाव; दिखानेकी उजरत; देखनेकी क्रिया या भाव; देखनेके बदलेमें दिया जानेवाला धन।

दिखाऊ–वि० देखने योग्य; दिखाने योग्य; जो केवल देखनेभरको हो, दिखौआ।

दिखाना–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

दिखावट–स्त्री० दिखानेका भाव या तर्ज़; बाह्य आडंबर।

दिखावटी–वि० जो देखनेभरको अच्छा लगे, दिखौआ, ऊपरी।

दिखावा–पु० आडंबर, ढोंग।

दिखैया†*–पु० देखनेवाला; दिखानेवाला।

दिखौआ, दिखौवा–वि० दिखावटी।

दिगंगना–स्त्री० [सं०] दे० 'दिक्कन्या'।

दिगंत–पु० [सं०] दिशाका अंत, छोर।

दिगंतर–पु० [सं०] दो दिशाओंके बीचकी जगह।

दिगंबर–पु० [सं०] शिव, शंकर; जैनियोंका एक संप्रदाय। वि० जिसके लिए दिशाएँ ही वस्त्र-रूप हों, नग्न, नंगा।

दिगंबरी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

दिगदंति*–पु० दे० 'दिग्गज'।

दिगीश, दिगीश्वर–पु० [सं०] दे० 'दिक्पति'।

दिग्गज–पु० [सं०] वह हाथी जो पृथ्वीको सँभालनेके

प्रत्येक दिशामें स्थित माना जाता है।

दिग्गयंद*-पु० दिग्गज।

दिग्घ*-वि० दे० 'दीर्घ'।

दिग्जय-स्त्री० [सं०] दे० 'दिग्विजय'।

दिग्दंती(तिन्)-पु० [सं०] दिग्गज।

दिग्दर्शक यंत्र, दिग्द्योतक यंत्र-पु० [सं०] दिशाका ज्ञान करानेवाला एक यंत्र जिसकी सुईको नोक सदा उत्तरकी ओर रहती है, कुतुबनुमा, कंपास।

दिग्दर्शन-पु० [सं०] सामान्य परिचय, सामान्य ज्ञान; दिशाका ज्ञान कराना; कुतुबनुमा।

दिग्दाह-पु०[सं०] एक उत्पात जिसमें असमयमें दिशाओंमें ललाई छा जाती है और ऐसा ज्ञात होता है जैसे आग लगी हो।

दिग्देवता, दिग्दैवत-पु० [सं०] दे० 'दिक्पति'।

दिग्बल-पु० [सं०] वह बल जो ग्रहोंके विशिष्ट दिशामें स्थित होनेसे मिलता है।

दिग्बली(लिन्)-पु० [सं०] दिग्बलसे युक्त ग्रह।

दिग्भ्रम-पु० [सं०] दिशासंबंधी भ्रम, दिशाओंका न पहचाना जाना, दिशा भूल जाना।

दिग्वसन, दिग्वस्त्र, दिग्वासा (सस्)-पु०, वि० [सं०] दे० 'दिगंबर'।

दिग्विजय-स्त्री० [सं०] किसी राजाका दलबलके साथ भूमंडलके अन्य समस्त राजाओंको घूम-घूमकर परास्त करना; किसी विशिष्ट विद्वान्, मतप्रचारक या गुणीका सभी प्रतिद्वंद्वियोंको हराकर संसारमें अपनी धाक जमाना।

दिग्विजयी(यिन्)-वि० [सं०] दिग्विजय करनेवाला, जिसने दिग्विजय की हो।

दिग्विभावित-वि० [सं०] जिसकी ख्याति सभी दिशाओंमें फैली हो।

दिग्व्याप्त-वि० [सं०] सभी दिशाओंमें व्याप्त।

दिङ्नाग-पु० [सं०] दिग्गज।

दिङ्नाथ-पु० [सं०] दे० 'दिक्पति'।

दिङ्मंडल-पु० [सं०] दिशाओंका समूह; क्षितिज।

दिच्छा-स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

दिच्छित, दिछित*-वि० दे० 'दीक्षित'।

दिजराज*-पु० दे० 'द्विजराज'।

दिजोत्तम*-पु० दे० 'द्विजोत्तम'।

दिठवन-स्त्री० दे० 'देवोत्थान' (एकादशी)।

दिठादिठी*-स्त्री० देखादेखी, साक्षात्कार।

दिठौना-पु० वह चिह्न जो बच्चोंको कुदृष्टिसे बचानेके लिए काजलसे उनके गाल या मस्तकपर बना दिया जाता है।

दिढ़*-वि० दे० 'दृढ़'।

दिढ़ता*-स्त्री० दे० 'दृढता'।

दिढ़ाई*-स्त्री० दे० 'दृढता'।

दिढ़ाना*-स० क्रि० दृढ़ करना, पक्का करना।

दिढ़ाव*-पु० दृढ़ बनाना; समर्थन करना; दृढता।

दित-वि० [सं०] कटा हुआ, खंडित; विभक्त।

दिति-स्त्री० [सं०] दैत्योंकी माता जो दक्ष प्रजापतिकी कन्या और कश्यपकी पत्नी थी। **-ज,-तनय,-पुत्र,-सुत-**पु० असुर, दैत्य।

दित्सा-स्त्री० [सं०] देने या दान करनेकी इच्छा। **-प्रस्ताव-**पु० (ऑफर) किसीको कोई सहायता, धन या अन्य वस्तु देनेको तैयार हो जाना, जिसे स्वीकार करना, न करना उसकी इच्छापर निर्भर हो।

दित्सु-वि० [सं०] जिसे देने या दान करनेकी इच्छा हो।

दिदृक्षा-स्त्री० [सं०] देखनेकी इच्छा।

दिदृक्षु-वि० [सं०] देखनेका इच्छुक।

दिन-पु० [सं०] सवेरेसे शामतकका समय; सूर्योदयसे सूर्योदयतकका चौबीस घंटेका समय; समय, काल; मिति, तिथि; तारीख; नियत समय; कालविशेष। * अ० सदा। **-अर*-**पु० सूर्य; आक, मदार। **-कंत*-**पु० सूर्य। **-कर,-कर्ता(र्तृ),-कृत्-**पु० सूर्य; आक, मदार। **-कर-कन्या-**स्त्री० यमुना; तापती। **-कर-तनय-**पु० शनि; यम; कर्ण; सुग्रीव। **-कर-तनया-**स्त्री० यमुना; तापती। **-कर-सुत-**पु० दे० 'दिनकरतनय'। **-क्षय,-पात-**पु० तिथिक्षय; सायंकाल। **-चर्या-**स्त्री० दिनभरका कार्य। **-चारी(रिन्)-**पु० सूर्य। **-दानी*-**पु० वह जो प्रतिदिन दान करता हो। **-दिन-**अ० प्रतिदिन; कालक्रमसे। **-दीप-**पु० सूर्य। **-नाथ,-नायक-**पु० सूर्य। **-नाह*-**पु० सूर्य। **-पंजी-**स्त्री० (डायरी) वह रजिस्टर (पंजी), कापी इत्यादि जिसमें प्रतिदिन किये गये कार्यादिका विवरण लिखा जाय, दैनंदिनी। **-पति-**पु० सूर्य। **-पाल,-बंधु-**पु० सूर्य। **-मणि-**पु० सूर्य। **-मान-**पु० सूर्योदयसे सूर्यास्ततकके समयका मान। **-मुख-**पु० प्रातःकाल, सवेरा। **-राइ,-राउ*-**पु० सूर्य। **-राज-**पु० सूर्य। **-रात-**[हिं०], **-रैन*-**अ० सदैव, सर्वदा। **-विकृति-विवरण-**पु० (वेदर रिपोर्ट) दिन-रातमें होनेवाले ताप, शीत, वर्षादि-संबंधी विकारोंका विवरण, मौसिमका हाल। **-शेष-**पु० संध्या, सायंकाल, शाम। **मु०-काटना-**किसी तरह निर्वाह करना। **-को तारे दिखाई देना-**दुःखकी प्रबलताके कारण होश ठिकाने न रहना। **-को दिन, रातको रात न समझना-**काम करनेकी धुनमें अपने स्वास्थ्य आदिका खयाल न करना। **-को रात कहना-**उलटी बात कहना। **-गिनना-**प्रतीक्षा करना। **-चढ़ना-**मासिकधर्मका टल जाना, गर्भवती होनेकी संभावना होना; उदयके पश्चात् सूर्यका आकाशमें कुछ और ऊपर आना। **-चढ़े-**सवेरा होनेके काफी देर बाद। **-डूबना-**संध्या होना, सूर्यास्त होना। **-ढलना-**सूर्यका अस्ताचलगामी होना। **-दहाड़े-**दिनमें खुले तौरपर, खुले खजाने। **-दूना, रात चौगुना होना या बढ़ना-**शीघ्रतासे और बहुत अधिक उन्नति करना। **-धरना-**दिन नियत करना, तारीख मुकर्रर करना। **-धराना-**दिन नियत कराना। **-निकलना या होना-**सूर्योदय होना, सवेरा होना। **-फिरना-**भले दिन आना, सुखके दिन आना।

दिनांक-पु० [सं०] (डेट) गणनाके अनुसार किसी वर्षके किसी महीनेका वह दिन जब कोई घटना हुई हो या पत्र, लेखादि लिखा गया हो, तिथि।

दिनांकित-वि० [सं०] (डेटेड) दे० 'तिथित'।

दिनांत-पु० [सं०] संध्या, शाम।

दिनांध–वि० [सं०] जिसे दिनको दिखाई न देता हो, दिवांध । पु० उल्लू पक्षी ।.

दिनाई*–स्त्री० प्राणांत करनेवाली विपैली चीज–'ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई'–सू० ।

दिनागम–पु० [सं०] प्रातःकाल, सवेरा ।

दिनाय–स्त्री० एक चर्मरोग, दाद ।

दिनार*–पु० दे० 'दीनार' ।

दिनार्द्ध–पु० [सं०] मध्याह्न ।

दिनिका–स्त्री० [सं०] एक दिनकी मजदूरी ।

दिनियर*--पु० सूर्य ।

दिनी–वि० बहुत दिनोंका, पुराना, प्राचीन ।

दिनेर*–पु० सूर्य ।

दिनेश–पु० [सं०] सूर्य; मदार; दिनके स्वामी ग्रह ।

दिनेस*–पु० दे० 'दिनेश' ।

दिनौंधी–स्त्री० एक रोग जिसमें सूर्यके प्रकाशमें बहुत कम दिखाई देता है ।

दिपति*–स्त्री० दे० 'दीप्ति' ।

दिपना*–अ० क्रि० देदीप्यमान होना, चमकना ।

दिपाना*–अ० क्रि० चमकना । स० क्रि० चमकाना ।

दिब*–पु० दिव्य परीक्षा ।

दिमाक*–पु०दे० 'दिमाग़' ।–**दार**–वि०दे० 'दिमाग़दार' ।

दिमाग़–पु० [अ०] सिरके भीतरका गूदा या मग्ज, भेजा, मस्तिष्क; बुद्धि, समझ; अभिमान । –**चट**–पु० बकवादी; खोपड़ी चाट जानेवाला ।–**दार**–वि० अच्छी समझवाला, बुद्धिमान्; अभिमानी, मगरूर । –**रौशन**–पु० सुँघनी । **मु०–आसमानपर होना**–अत्यधिक अभिमान होना । –**खाना**–बहुत बकवाद करना ।–**ख़ाली करना**–किसीको समझाते-समझाते थक जाना; दे० 'दिमाग़ खाना' । –**चढ़ना**–अत्यधिक अभिमान होना । –**चाटना**–दे० 'दिमाग़ खाना' । –**सातवें आसमानपर होना**–बहुत अधिक घमंड होना ।

दिमाग़ी–वि० [अ०] दिमागदार; दिमाग-संबंधी ।

दिमात*–वि०, पु० दो माताओंवाला; दो मात्राओंवाला ।

दिमाना*–वि० दे० 'दीवाना' ।

दियट–स्त्री० दे० 'दीअट' ।

दियरा*–पु० दीया; एक पकवान ।

दिया–पु० दे० 'दीया' । –**बत्ती**–स्त्री० दीया जलानेका कार्य । –**सलाई**–स्त्री० एक सिरेपर गंधक आदि मसाले लगाकर बनायी हुई छोटी, पतली सलाई जो रगड़नेसे जल उठती है; लकड़ीका छोटा बक्स जिसमें ऐसी तीलियाँ रखी रहती हैं । **मु०–सलाई लगाना**–आग लगाना ।

दियानत–स्त्री० दे० 'दयानत' ।

दियारा–पु० कछार; प्रदेश; लुक ।

दियासा*–पु० मृगतृष्णा ।

दिरद*–पु० दे० 'द्विरद' ।

दिरमान†–स्त्री० चिकित्सा ।

दिरमानी*–पु० चिकित्सक, वैद्य । स्त्री० चिकित्साशास्त्र–'जस आमय भेपज न कीन्ह तस दोष कछू दिरमानी'–विनयप० ।

दिरानी*–स्त्री० देवरानी ।

दिरिस*–पु० दे० 'दृश्य' ।

दिल–पु० [फ़ा०] एक अवयव जिसके द्वारा मनुष्यके शरीरमें रुधिरका संचार होता रहता है; हृदय, मन, जी; हिम्मत; हौसला; इच्छा । –**आरा**–वि० माशूक़, प्रियतम । –**कश**–वि० मनको खींचनेवाला, चित्ताकर्षक । –**कुशा**–वि० चित्तको प्रसन्न करनेवाला । –**कुशाई**–स्त्री० चित्तको प्रसन्न करना । –**कुशी**–स्त्री० जीको लुभाना, चित्तको अपनी ओर खींचना । –**ख़ुश**–वि० मनको प्रसन्न करनेवाला ।–**ख़्वाह**–वि० मनचाहा । –**गीर**–वि० शोकग्रस्त, उदास, रंजीदा ।–**गीरी**–स्त्री० उदासी, रंज । –**चला**–वि० साहसी, उत्साही, बहादुर । –**चस्प**–वि० जिसमें मन रमे, रुचिकर ।–**चस्पी**–स्त्री० चाव, रुचि, शौक । –**चोर**–वि० भीरु, कायर; कामचोर ।–**जमई**–स्त्री० चित्तका समाधान, इतमीनान, तसल्ली । –**जला**–वि० दुःखी । –**जोई**–स्त्री० ढाढ़स, दिलासा, सांत्वना । –**दरिया**–वि० दे० 'दरियादिल' । –**दार**–वि० जिससे प्रेम किया जाय, प्रेमपात्र; रसिक; उदार । –**दारी**–स्त्री० प्रेमपात्रता; रसिकता; उदारता । –**पसंद**–वि० जो जीको अच्छा लगे, जिसे मन चाहे । –**फेंक**–वि० रूपलोभी । –**बर**–वि० दे० 'दिलदार' । –**बस्त**–वि० जिसका दिल कहीं लगा हुआ हो ।–**बस्तगी**–स्त्री० मनबहलाव । –**रुबा**–वि० मनको लुभानेवाला; प्यारा, प्रेमपात्र । पु० एक बाजा । –**शिकन**–वि० दिल तोड़नेवाला, हिम्मत पस्त करनेवाला । –**शिकस्त**–वि० उदास, चिंतित । –**शुदा**–वि० आशिक, दीवाना । –**सोज़**–वि० परदुःखकातर, हमदर्द । **मु०–अटकना**–किसीसे प्रेम हो जाना । –**कड़ा करना**–मनमें दृढ़ता लाना । –**कबाब होना**–मनका जल-भुन जाना । –**का खोटा**–कपटी, दगाबाज । –**का गवाही देना**–अंतरात्माका कोई काम करना स्वीकार करना । –**का गुबार निकलना**–मनका मलाल दूर करना । –**का बादशाह**–अति उदार; मनमौजी ।–**की आग बुझना**–जी ठंडा होना; इच्छा पूरी होना ।–**की कली खिलना**–जी खुश होना । –**की दिलमें रहना**–मनोरथका पूर्ण न होना । –**की फाँस**–आंतरिक वेदना । –**के फफोले फूटना**–मनका उद्वेग शांत होना । –**के फफोले फोड़ना**–किसीको खरी-खोटी सुनाकर मनका उद्वेग शांत करना । –**को क़रार होना**–मनका आश्वस्त होना । –**खट्टा होना**–मन फिर जाना ।–**चुराना**–काममें मन न लगाना । –**जमना**–दिल लगना । –**जलना**–रंज होना, गम होना । –**जलाना**–सताना; गम खाना । –**डूबना**–बेहोश या बेचैन होना । –**तोड़ना**–हिम्मत तोड़ना । –**दहलना**–कलेजा काँपना । –**दुखाना**–कष्ट पहुँचाना, सताना ।–**देना**–प्रेमासक्त होना ।–**दौड़ना**–प्रबल इच्छा होना । –**दौड़ाना**–मन चलाना; सोचना, बिचारना । –**धड़कना**–दे० 'कलेजा धड़कना' । –**पक जाना**–दिलमें सख्त रंज होना; ताने सुन-सुनकर दिलको कष्ट होना । –**पर साँप लोटना**–दे० 'कलेजेपर साँप लोटना' । –**फट जाना या फटना**–दिल खट्टा होना । –**फटा जाना**–बेचैन होना, व्याकुल होना ।–**बढ़ना**–

उत्साहित होना, जोश आना। **-बढ़ाना**-उत्साहित करना, जोश दिलाना। **-बैठा जाना**-व्याकुल होना; बेहोश होना। **-भर आना**-करुणा आदिसे विचलित होना। **-मिलना**-दे० 'मन मिलना'। **-में आना**-इच्छा होना, विचारमें आना। **-में गाँठ या गिरह पड़ना**-द्वेष होना; फूट पैदा होना। **-में घर करना, -में जगह करना**-किसी बातका हृदयमें अच्छी तरह जम जाना। **-में फफोले पड़ना**-बहुत अधिक मानसिक कष्ट होना। **-में फ़र्क़ आना**-मनमोटाव होना। **-मैला करना**-दे० 'मन मैला करना'। **-लगना**-दे० 'जी लगना'। **-लगाना**-दे० 'जी लगाना'। **-से उतरना**-स्नेह या श्रद्धाका पात्र न रह जाना। **-से दूर करना**-भुला देना। **-हट जाना**-मन फिर जाना।

दिलवाना-स० क्रि० दे० 'दिलाना'।

दिलवैया-पु० दिलानेवाला।

दिलाना-स० क्रि० देनेका काम दूसरेसे कराना।

दिलावर-वि० [फ़ा०] साहसी, हिम्मती, बहादुर, दिलेर।

दिलावरी-स्त्री० [फ़ा०] दिलावर होनेका गुण, बहादुरी।

दिलासा-पु० आश्वासन, सांत्वना, धीरज।

दिली-वि० [फ़ा०] जिससे किसी प्रकारका भेदभाव न हो, अभिन्न; हार्दिक।

दिलेर-वि० [फ़ा०] साहसी, जीवटवाला, जवाँमर्द।

दिलेरी-स्त्री० [फ़ा०] हिम्मत; बहादुरी।

दिल्लगी-स्त्री० हँसी, परिहास, मजाक। **-बाज़**-वि०, पु० हँसी-परिहास करनेवाला, मसखरा।

दिल्ला-पु० किनारोंकी ओर कुछ ढालुआँ गढ़ा हुआ लकड़ीका चौकोर टुकड़ा जिसे शीशेके किवाड़ या खिड़कीके पल्लेमें शोभाके लिए जड़ देते हैं।

दिल्लीवाल-वि० दिल्लीका; दिल्लीका बना हुआ। पु० दिल्लीका निवासी; एक विशेष प्रकारका जूता।

दिवंगत-वि० [सं०] स्वर्गगत।

दिव-पु० [सं०] स्वर्ग; आकाश; दिन; वन। **-राज**-पु० इंद्र।

दिवस-पु० [सं०] दिन, वार, रोज। **-अंध***-पु० दे० 'दिवांध'। **-कर,-नाथ**-पु० सूर्य; मदार। **-मणि**-पु० सूर्य। **-मुख**-पु० प्रभात, सुबह। **-मुद्रा**-स्त्री० दिनभरकी मजदूरी, एक दिनका पारिश्रमिक।

दिवसेश, दिवसेश्वर-पु० [सं०] सूर्य।

दिवस्पति-पु० [सं०] इंद्र।

दिवांध-पु० [सं०] उल्लू। वि० जिसे दिनमें दिखाई न दे।

दिवा-† पु० दीया, चिराग; [सं०] दिन, वार; एक वर्णवृत्त। **-कर**-पु० सूर्य; मदार; कौआ; सूर्यमुखी नामका फूल। **-चर**-पु० चांडाल; एक पक्षी, श्यामा। **-चारी(रिन्)**-पु० दिनमें संचरण करनेवाला प्राणी। **-भीत,-भीति**-पु० उल्लू; रातमें खिलनेवाला एक प्रकारका कमल; चोर। **-मणि**-पु० सूर्य। **-मध्य**-पु० मध्याह्न, दोपहर। **-रात्र**-अ० दिन-रात। **-स्वप्न**-पु० दिनको सोना, दिवसनिद्रा; मनोराज्य, हवाई किला। **मु०-स्वप्न देखना**-हवाई किले बनाना।

दिवान-पु० दे० 'दीवान'; राजाका छोटा भाई; समूह। * स्त्री० मर्यादा-'दिल्ली दल दाबिकै दिवान राखी दुनीमें'-भू०।

दिवाना*-वि० दे० 'दीवाना'। *स० क्रि० दे० 'दिलाना'।

दिवाभिसारिका-स्त्री० [सं०] दिनमें अभिसार करनेवाली नायिका।

दिवार†-स्त्री० दे० 'दीवार'।

दिवारी*-स्त्री० दे० 'दीवाली'।

दिवाल†-स्त्री० दे० 'दीवार'।

दिवाला-पु० अर्थहीनताकी वह दशा जिसमें कोई व्यक्ति अथवा संस्था अपना ऋण न चुका सके; सर्वथा अभाव हो जाना।

दिवालिया-वि० जिसके पास अपना ऋण चुकानेके लिए कुछ न रह गया हो, जिसका दिवाला निकला हो।

दिवाली-स्त्री० दे० 'दीवाली'।

दिवैया-पु० देनेवाला।

दिवौका(कस्)-पु० [सं०] स्वर्गमें निवास करनेवाला; देवता; चातक पक्षी।

दिव्-पु० [सं०] स्वर्ग; आकाश; दिन; प्रकाश; चमक।

दिव्य-वि० [सं०] स्वर्ग-संबंधी; स्वर्गीय; आकाशीय; अलौकिक; देवोचित; चमकीला, दीप्तियुक्त; अतिसुंदर, भव्य, बढ़िया। पु० आकाशमें होनेवाला उत्पात-विशेष; एक परीक्षा जिससे प्राचीन कालमें अपराधीकी सदोषता या निर्दोषताका निर्णय करते थे। **-क्रिया**-स्त्री० दिव्य परीक्षा लेनेका कार्य। **-चक्षु(स्)**-वि० दिव्य नेत्रोंवाला; सुंदर आँखोंवाला; अंधा। पु० दिव्य दृष्टि; बंदर। **-दर्शी(र्शिन्)**-वि० अलौकिक पदार्थोंका द्रष्टा। **-दृष्टि**-स्त्री० दे० 'दिव्यचक्षु'। **-नदी**-स्त्री० मंदाकिनी। **-नारी**-स्त्री० अप्सरा; देववधू। **-सरित्**-स्त्री० मंदाकिनी।

दिव्यांगना-स्त्री० [सं०] अप्सरा; देववधू।

दिव्या-स्त्री० [सं०] लोकोत्तर गुणोंसे युक्त नायिका; हरीतकी; वंध्या कर्कोटकी; शतावरी; महामेदा; ब्राह्मी।

दिव्यादिव्य-पु० [सं०] तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक, वह नायक जिसमें लोकोत्तर गुण भी हों, जैसे-नल आदि।

दिव्यादिव्या-स्त्री० [सं०] नायिकाओंका एक भेद, वह नायिका जिसमें लोकोत्तर गुण भी हों, जैसे-दमयंती आदि।

दिव्यास्त्र-पु० [सं०] मंत्र-शक्तिसे चलाये जानेवाले अस्त्र।

दिव्योदक-पु० [सं०] वर्षाका जल।

दिशा-स्त्री० [सं०] ओर, तरफ; क्षितिज-मंडलके चार कल्पित भागों-पूर्व, पश्चिम आदि-मेंसे कोई एक; दसकी संख्या। **-गज**-पु० दिग्गज। **-पाल**-पु० दिक्पाल। **-भ्रम**-पु० दिशा भूल जाना, दिग्भ्रम। **-शूल**-पु० दे० 'दिक्-शूल'। **-सूल***-पु० दे० 'दिक्-शूल'।

दिश्य-वि० [सं०] दिशासंबंधी; दिशाविशेषमें होनेवाला।

दिष्टि-स्त्री० [सं०] भाग्य; सौभाग्य; हर्ष; * दे० 'दृष्टि'।

दिसंतर*-पु० देशांतर, विदेश। अ० बहुत दूरतक।

दिस*-स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसना*-अ० क्रि० दे० 'दिखना'।

दिसा†-स्त्री० दे० 'दिशा'; मलत्याग। **-दाह***-पु० दे० 'दिग्दाह'। **-सूल***-पु० दे० 'दिक्-शूल'।

दिसावर–पु० परदेश, अन्य देश ।

दिसावरी–वि० वाहरसे लाया या आया हुआ, बाहरी ।

दिसि*–स्त्री० दे० 'दिशा'। **–दुरद***–पु० दिग्गज । **–नायक***–पु० दिक्पाल । **–प,–राज**–पु० दिक्पाल ।

दिसिटि*–स्त्री० दे० 'दृष्टि' ।

दिसैया*–पु० देखनेवाला; दिखानेवाला ।

दिस्टि*–स्त्री० दे० 'दृष्टि' । **–बंध**–पु० दे० 'दृष्टिबंध' ।

दिस्ता–पु० कागजके २४ तख्तोंकी गड्डी ।

दिहकानियत–स्त्री० देहातीपन ।

दिहरा†–पु० देवस्थान, देवायतन ।

दिहली–स्त्री० दे० 'दहलीज़' ।

दिहाती–वि०दे० 'देहाती' ।**–पन**–पु०दे० 'देहातीपन' ।

दीअट–स्त्री० दे० 'दीयट' ।

दीआ–पु० दे० 'दीया' ।

दीक्षक–पु० [सं०] दीक्षा देनेवाला, गुरु, मंत्रोपदेष्टा ।

दीक्षण–पु०[सं०] दीक्षा देनेकी क्रिया; यज्ञ समाप्त होनेपर उसकी त्रुटियोंकी शांतिके लिए क्रिया जानेवाला यजन ।

दीक्षांत–पु० [सं०] पहले यज्ञमें हुए दोषोंके मार्जनके लिए क्रिया जानेवाला यज्ञ; दीक्षाका अंत; किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालयके अध्ययनकी सफल समाप्ति ।**–भाषण**–पु० उपाधि या प्रमाण पत्रादि देनेके समय समुत्तीर्ण स्नातकोंको संबोधन कर किया गया किसी विद्वान् या सम्मान्य नेताका भाषण ।

दीक्षा–स्त्री०[सं०] याग; उपनयन संस्कार; तंत्रके अनुसार किसी देवताके मंत्रका उपदेश; तंत्रोक्त रीतिसे किसी देवताका मंत्र ग्रहण करनेकी क्रिया; (कोई धार्मिक) कृत्य; नियम । **–गुरु**–पु० मंत्र देनेवाला गुरु ।

दीक्षित–वि० [सं०] जिसे दीक्षा दी गयी हो या जिसने गुरुसे दीक्षा ली हो; जिसने सोम आदि याग किये हों ।

दीखना–अ० क्रि० दिखाई देना, दृष्टिगत होना ।

दीघी–स्त्री० दे० 'दीर्घिका' ।

दीच्छा*–स्त्री० दे० 'दीक्षा' ।

दीठ–स्त्री० दे० 'दृष्टि'; बुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली निगाह–'दूनी ह्वै लागन लगी दिये दिठौना दीठ'–वि० । **–बंद**–पु० नजर बाँधनेकी क्रिया । **–बंदी**–स्त्री० नजर बाँधनेकी क्रिया । **–वंत***–वि० दृष्टियुक्त; समझदार । **मु०–खा जाना**–ऐसे व्यक्ति द्वारा देखा जाना जिसकी दृष्टि अच्छी न हो । **–जलाना**–बुरी दृष्टिका प्रभाव दूर करना ।**–पर चढ़ना**–दे० 'नजरपर चढ़ना' ।**–फिरना**–दृष्टिका दूसरी ओर प्रवृत्त होना; कृपा न बनी रहना । **–फेरना**–दूसरी ओर नजर कर लेना; किसीपर कृपादृष्टि न रहने देना । **–बाँधना**–दे० 'नजर बाँधना' । **–बिछाना**–आशापूर्ण दृष्टिसे किसीके आनेकी प्रतीक्षा करना; बड़ी श्रद्धासे आवभगत करना ।**–मारना**–आँखसे संकेत करना ।**–मारी जाना**–देखनेकी शक्ति नष्ट होना । **–में समाना**–नेत्रोंको सुखद होनेके कारण सदा ध्यानमें बना रहना । **–लगना**–कुदृष्टि पड़ जाना । **–लगाना**–टकटकी लगाकर देखना ।

दीठना*–स० क्रि० देखना ।

दीठि*–स्त्री० दे० 'दीठ' ।

दीद–वि० [फ़ा०] देखा हुआ ।

दीदा–पु० आँख, दृष्टि, निगाह; धृष्टता (स्त्रि०) । **मु०–लगना**–काममें तबीयत लगना ।

दीदार–पु० [फ़ा०] चेहरा; दर्शन, साक्षात्कार ।

दीदी–स्त्री० बड़ी बहनको संबोधित करनेका शब्द ।

दीधिति–स्त्री० [सं०] किरण; उँगली ।

दीन–वि० [सं०] अर्थहीन, दरिद्र; विपन्न, दयनीय दशामें पड़ा हुआ; दुःखपूर्ण, करुण । **–दयाल**–वि०, पु०[हिं०] दे० 'दीनदयालु' ।**–दयालु**–वि० दीनोंपर दया करनेवाला । पु० परमेश्वर । **–बंधु**–वि० दीनोंकी सहायता, रक्षा करनेवाला । पु० परमेश्वर ।

दीन–पु० [अ०] धर्म, मजहब, पंथ । **–इलाही**–पु० अकबरका चलाया हुआ एक धर्म जो कुछ ही समयतक चलकर रह गया । **–दार**–वि० धर्मनिष्ठ । **–दुनिया**–स्त्री० इहलोक तथा परलोक ।

दीनता–स्त्री० [सं०] दरिद्रता; विपन्नता; विवशता ।

दीनताई*–स्त्री० दीनता ।

दीनानाथ–पु० दीनोंके नाथ–स्वामी, रक्षक, परमेश्वर ।

दीनार–पु० [सं०] सोनेका भूषण; सोनेका एक सिक्का ।

दीप*–पु० द्वीप; [सं०] दीया, चिराग । **–कलिका**–स्त्री० दीपककी लौ । **–कली**–स्त्री० दीपककी लौ । **–किट्ट**–पु० कज्जल, काजल । **–दान**–पु० आराध्य देवताके सामने दीप जलाना । **–ध्वज**–पु० कज्जल; दीवट । **–पादप**–पु० दीपाधार, दीवट; देवदारु । **–माला,–मालिका**–स्त्री० जलते हुए दीपकोंकी पंक्ति, दीवाली । **–शत्रु**–पु० पतंग, फतिंगा । **–शलभ**–पु० जुगनू । **–शिखा**–स्त्री० दे० 'दीपकलिका' । **–स्तंभ**–पु० दीपाधार, दीवट; (लाइट-हाउस) दे० 'प्रकाश-स्तंभ' ।

दीपक–पु० [सं०] दीया; एक मात्रिक छंद; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ वर्ण्य-अवर्ण्य या उपमेय-उपमानका एक ही धर्म कहा जाय अथवा जहाँ क्रियापदोंकी आवृत्ति हो या जहाँ एक ही कर्ताके साथ बहुतसे क्रियापदोंकी आवृत्ति हो (दे० 'कारक-दीपक'); एक राग; एक ताल । वि० दीप्त करनेवाला; आलोकित करनेवाला; अग्निवर्धक ।**–माला**–स्त्री० दीपकालंकारका एक भेद जिसमें एकावली तथा दीपकका मेल होता है; एक वर्णवृत्त ।

दीपकावृत्ति–स्त्री० [सं०] दीपक अलंकारका एक भेद जिसमें एक ही क्रियापद विभिन्न अर्थोंमें कई बार आये या एक ही अर्थके विभिन्न क्रियापदोंका प्रयोग हो ।

दीपत, दीपति*–स्त्री० चमक; शोभा; प्रताप ।

दीपन–पु० [सं०] दीप्त करना, प्रज्वलित करना; आलोकित करना; अग्निवर्द्धन; उत्तेजित करना; तगरकी जड़ । वि० उत्तेजित करनेवाला; अग्निवर्द्धक ।

दीपना*–अ० क्रि० दीप्त होना; चमकना । स० क्रि० चमकाना; प्रदीप्त करना ।

दीपाधार–पु० [सं०] दीयट ।

दीपाराधन–पु० [सं०] आरती उतारना ।

दीपालि, दीपाली–स्त्री० [सं०] दीपमाला, दीवाली ।

दीपावलि, दीपावली–स्त्री० [सं०] 'दीवाली' ।

दीपिका–स्त्री० [सं०] छोटा दीपक; एक रागिनी; अर्थ

स्पष्ट करनेवाली पुस्तक ।

दीपित–वि० [सं०] दीप्त, प्रज्वालित, प्रभासित; उत्तेजित ।

दीपोत्सव–पु० [सं०] दीवाली ।

दीप्त–वि० [सं०] दे० 'दीपित' ।

दीप्ति–स्त्री० [सं०] प्रभा, द्युति, चमक; कांति, छटा । **–प्रसारण,–विकिरण**–पु० (रेडियेशन) प्रकाशकी किरणें चारों ओर प्रसारित करना, फैलाना ।

दीप्तिमान्(मत्)–वि० [सं०] प्रभायुक्त, कांतिमान्, शोभन ।

दीप्यमान–वि० [सं०] प्रकाशमान, चमकता हुआ ।

दीमक–स्त्री० एक तरहकी सफेद चींटी जो कागज, लकड़ी अदिके लिए बहुत हानिकर है ।

दीयट–स्त्री० दे० 'दीवट' ।

दीया–पु० तेल या घीके योगसे जलनेवाली बत्तीका आधार; मिट्टीका छोटा छिछला पात्र जिसमें बत्ती जलाते हैं । **–बत्ती**–स्त्री० दीया जलानेका कार्य । **–सलाई**–स्त्री० दे० 'दिया-सलाई' । **मु० –जलनेके समय**–संध्या समय । **–ठंडा करना**–दीपकको बुझा देना । **–ठंडा होना**–दीपक बुझना । **–दिखाना**–(किसीके) सामने आलोक करना । **–बत्तीका समय**–दीया जलानेका समय, सायंकाल । **–लेकर ढूँढ़ना**–बड़े परिश्रमसे खोजना ।

दीरघ*–वि० दे० 'दीर्घ' ।

दीर्घ–वि० [सं०] (देश और काल दोनोंकी दृष्टिसे) बड़ा; ऊँचा; आयत; गहरा (जैसे श्वास); विस्तृत; लंबा; गुरु (मात्रा) । पु० ऊँट; गुरु मात्रा (आ, ई आदि) । **–काय**–वि० लंबा । **–गति**–पु० ऊँट (जिसके डग बहुत बड़े होते हैं) । **–ग्रीव**–पु० ऊँट; सारस । वि० लंबी गरदनवाला । **–जिह्व**–पु० सर्प । **–जीवी(विन्)**–वि० जो बहुत दिनों तक जीये, चिरजीवी । **–दर्शी(शिन्)**–पु० भालू; गीध । वि० जो बहुत दूरतककी बात सोचे या सोच सके, दूरदर्शी । **–दृष्टि**–पु० गीध । वि० दूरदर्शी । **–निद्रा**–स्त्री० बहुकालव्यापी निद्रा; मृत्यु । **–निःश्वास**–पु० शोक या दुःखके कारण ली जानेवाली लंबी साँस । **–बाहु**–वि० जिसकी भुजा लंबी हो । **–रद**–पु० शूकर । वि० जिसके दाँत बड़े हों । **–वक्त्र**–पु० हाथी । वि० जिसका मुँह लंबा हो । **–सत्र**–पु० बहुत दिनोंतक चलनेवाला यज्ञ; ऐसा यज्ञ करनेवाला व्यक्ति । **–सूत्रता**–स्त्री० प्रत्येक कार्यको देरमें करनेकी आदत; (रेड टेपिज्म) सार्वजनिक कार्योंके संबंधमें सरकारी कर्मचारियों द्वारा अत्यधिक औपचारिकताके कारण की जानेवाली देर । **–सूत्री(त्रिन्)**–वि० जो प्रत्येक कार्यको देरमें करे, जो आरंभ किये हुए कार्यमें उचितसे अधिक समय लगाये ।

दीर्घा–स्त्री० [सं०] लंबा तालाब; भवनके भीतर दर्शकोंके बैठनेके लिए बना हुआ लम्बा-सा ऊँचा स्थान (गैलरी)

दीर्घाकार–वि० [सं०] बड़े आकारका ।

दीर्घाध्वग–पु० [सं०] दूत, हरकारा ।

दीर्घायु–पु० [सं०] कौआ; सेमरका पेड़; मार्कण्डेय ऋषि । वि० दीर्घजीवी, लंबी आयुवाला ।

दीर्घायुध–पु० [सं०] भाला; सूअर; साही । वि० जिसके पास बड़ा अस्त्र हो ।

दीर्घावकाश–पु० [सं०] (वैकेशन) न्यायालयों या विद्यालयोंके दो सत्रोंके बीचकी लंबी छुट्टी ।

दीर्घास्य–पु० [सं०] हाथी । वि० जिसका मुँह बड़ा हो ।

दीर्घिका–स्त्री० [सं०] जलाशयका एक भेद, वापी ।

दीर्ण–वि० [सं०] विदारित, फाड़ा हुआ; फटा हुआ ।

दीवट–स्त्री० दीपक रखनेका लकड़ी आदिका आधार ।

दीवा*–पु० दे० 'दीया' ।

दीवान–पु० [फा०] शाही दरबार या अदालत, आस्थान-मंडप; राजा या बादशाहकी बैठक; प्रधान मंत्री; वह पुस्तक जिसमें गजलें संगृहीत हों । **–आम,–आलम**–पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण प्रवेश पा सकें । **–ख़ाना**–पु० बैठक; बाहरी लोगोंसे मुलाकात करनेकी जगह । **–ख़ास**–पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें गिने-चुने लोग सम्मिलित हों ।

दीवानगी–स्त्री० [फा०] दे० 'दीवानापन' ।

दीवाना–वि० [फा०] पागल, विक्षिप्त, सनकी । **–पन**–पु० दीवाना होनेका भाव, पागलपन, सनक ।

दीवानी–स्त्री० [फा०] वह अदालत जिसमें रुपये और जायदादके मुकदमोंकी सुनवाई होती है; दीवानका पद ।

दीवार–स्त्री० [फा०] मिट्टी; ईंट आदिका बनाया हुआ परदा या घेरा, भीत । **–गीर**–स्त्री० दीवारमें लगाया हुआ दीया रखनेका आधार; दीवारमें लगानेका लैंप ।

दीवाल–स्त्री० [फा०] दे० 'दीवार' ।

दीवाली–स्त्री० कार्तिककी अमावास्याको पड़नेवाला हिंदुओंका एक त्योहार जिसमें दीपक जलाये जाते हैं ।

दीसना*–अ० क्रि० दिखाई देना, दृष्टिगत होना ।

दीह*–वि० दीर्घ; लंबा; बड़ा ।

दुंद*–पु० दो व्यक्तियोंका युद्ध या कलह; ऊधम, उत्पात; युगल, जोड़ा; नगाड़ा, डंका । अ० ठक-ठक ।

दुंदभ*–पु० जन्म-मरणादिका क्लेश ।

दुंदम–पु० [सं०] एक तरहका नगाड़ा ।

दुंदु–पु० [सं०] एक तरहका नगाड़ा; कृष्णके पिता वसुदेव; * जन्म-मरण आदि कष्ट ।

दुंदुभ–पु० [सं०] डंका, दुंदुभि; पानीमें रहनेवाला साँप; * जन्म-मरणादिका कष्ट ।

दुंदुभि–स्त्री० [सं०] डंका, नगाड़ा । पु० वरुण; एक दैत्य ।

दुंदुभी–स्त्री० नगाड़ा ।

दुंदुर–पु० चूहा ।

दुंदुह*–पु० दे० 'डिंडिम' ।

दुंबक–पु० [सं०] एक प्रकारका भेड़ा, दुंबा ।

दुंबा–पु० एक प्रकारका मेढ़ा जिसकी पूँछ सिरेपर गोल, मोटी और चौड़ी होती है ।

दुःकुंत*–पु० दे० 'दुष्यंत' ।

दुःख–पु० [सं०] कष्ट, क्लेश, तकलीफ । **–कर**–वि० दुःख पहुँचानेवाला, कष्टप्रद । **–ग्राम**–पु० संसार; दुःखोंका समूह । **–त्रय**–पु० आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक—ये तीन प्रकारके दुःख । **–द**–वि० दुःख पहुँचानेवाला, क्लेशकर । **–दग्ध**–वि० जो बहुत दुःखमें हो, भीषण कष्टमें पड़ा हुआ । **–दाता(तृ)**–पु० वह व्यक्ति जो कष्ट पहुँचाये । **–दायक,–दायी(यिन्)**–

वि० दुःख देनेवाला; जिससे कष्ट पहुँचे। **–प्रद**–वि० दे० 'दुःखद'। **–प्राय,–बहुल**–वि० जिसमें दुःखका आधिक्य हो, दुःखपूर्ण, कष्टसंकुल। **–लभ्य**–वि० दुर्लभ, दुष्प्राप्य। **–साध्य**–वि० दे० 'दुःसाध्य'। **मु०–उठाना**–तकलीफ सहना। **–देना**–कष्ट पहुँचाना। **–पहुँचना**–कष्ट होना। **–पाना**–तकलीफ सहना, झेलना। **–बँटाना**–विपत्तिमें साथ देना, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार द्वारा दुःख हलका करना। **–मानना**–खिन्न होना, दुःखी होना।

दुःखमय–वि० [सं०] दुःखोंसे भरा हुआ, दुःखपूर्ण।

दुःखांत–वि० [सं०] जिसका अंत दुःखमय हो; जिसका पर्यवसान दुःखमें हो। पु० वह नाटक जिसकी समाप्ति दुःखमयी घटनासे हो; दुःखका अंत या नाश।

दुःखार्त–वि० [सं०] दुःखी, कष्टमें पड़ा हुआ।

दुःखित–वि० [सं०] जिसे कष्ट हो, पीड़ित; खिन्न।

दुःखिनी–वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जिसपर विपत्ति पड़ी हो, दुःखमें पड़ी हुई।

दुःखी(खिन्)–वि० [सं०] जिसे दुःख हो, जो कष्टमें हो, दुःखान्वित।

दुःशकुन–पु० [सं०] बुरा शकुन; अनिष्ट-सूचक लक्षण।

दुःशासन–पु० [सं०] दुर्योधनका छोटा भाई जिसने भरी सभामें द्रौपदीका केशाकर्षण किया था। वि० जिसपर शासन करना कठिन हो।

दुःशील–वि० [सं०] जो सुशील न हो, बुरे स्वभावका; दुर्विनीत, उद्धत।

दुःश्रव–पु० [सं०] काव्यमें एक दोष, श्रुति-कटु दोष। वि० श्रुतिकटु, कर्णकटु, सुननेमें अप्रिय।

दुःसह–वि० [सं०] जिसे सहना कठिन हो, असह्य।

दुःसाध्य–वि० [सं०] जो कठिनतासे सिद्ध किया जा सके; जिसका करना कठिन हो, दुष्कर; असाध्य।

दुःसाहस–पु० [सं०] असंभव या दुष्कर कार्यकी सिद्धिके लिए किया गया साहस; अनुचित साहस; धृष्टता।

दुःसाहसिक–वि० [सं०] जिसके लिए साहस करना ठीक न हो।

दुःसाहसी(सिन्)–वि० [सं०] व्यर्थका साहस करनेवाला, अनुचित साहस करनेवाला।

दुःस्वप्न–पु० [सं०] डरावना स्वप्न; बुरे फलवाला स्वप्न।

दुःस्वभाव–वि० [सं०] खोटे स्वभावका, दुष्ट, नीच, कुटिल। पु० बुरा स्वभाव।

दु–वि० दोका संक्षिप्त रूप जो समस्त पदोंमें पूर्वपदके रूपमें प्रयुक्त होता है। **–अन्नी**–स्त्री० दो आनेका सिक्का। **–आब,–आबा**–पु० दो नदियोंके मध्यका भूखंड। **–कूलिनी***–स्त्री० जिसके दो किनारे हों, नदी। **–खंडा**–वि० दे० दो खंडोंवाला (मकान)। **–गना**–वि० दे० 'द्विगुण'। **–गाड़ा**–पु० दोनाली बंदूक। **–गुण,–गुन*,–गुना**–वि० दे० 'द्विगुण'। **–घड़िया**–वि० दो घड़ीका; दो घड़ीके हिसाबसे निकाला हुआ। **–घड़िया मुहूर्त**–पु० दो-दो घड़ीके हिसाबसे निकाला हुआ मुहूर्त। **–घरी**–स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त। **–चंद**–वि० दुगना। **–चित***–वि० जिसका मन किसी एक बातपर जमता न हो, अस्थिरचित्त; अनमना, चिंताग्रस्त। **–चितई,–चिताई***–स्त्री० एक बातपर मन न जमना, द्विविधा; संदेह; चिंता। **–चित्ता**–वि० दे० 'दुचित'। **–ज***–पु० दे० 'द्विज'। **–ज-पति***–पु० दे० 'द्विजपति'। **–ज-राज***–पु० दे० 'द्विजराज'। **–जन्मा***–पु० दे० 'द्विजन्मा'। **–जाति***–पु०, स्त्री० दे० 'द्विजाति'। **–जानू***–अ० दो घुटनोंके बल। **–जीह***–पु० दे० 'द्विजिह्व'। **–टूक***–वि० जिसके दो टुकड़े कर दिये गये हों। **–तरफा,–तर्फा**–वि० दोनों ओरका; दुरंगा। **–तारा**–पु० सितारकी तरहका एक बाजा जिसमें दो तार लगे रहते हैं। **–दल**–पु० दे० 'द्विदल'। **–दिला***–वि० दे० 'दुचित'। **–धारा**–पु० एक प्रकारकी तलवार जिसमें दोनों ओर धार रहती है। **–नाली**–वि० स्त्री० जिसमें दो नल हों, दो नलोंवाली। **–पटा**–पु० दे० 'दुपट्टा'। **–पटी***–स्त्री० छोटा दुपट्टा। **–पट्टा**–पु० ओढ़नेकी चादर, उत्तरीय। **–पट्टी***–स्त्री० छोटा दुपट्टा। **–पद**–पु० दे० 'द्विपद'। **–पर्दी**–स्त्री० एक तरहकी मिर्जई जिसमें दोनों ओर पर्दे लगे रहते हैं, बगलबंदी। **–पलिया**–वि० स्त्री० दो पल्लोंवाली। स्त्री० एक तरहकी टोपी। **–पहर**–स्त्री० दे० 'दोपहर'। **–पहरिया**–स्त्री० एक छोटा पौधा जिसमें लाल-लाल फूल लगते हैं; † दोपहर, मध्याह्न। **–पहरी**–स्त्री० दोपहर, मध्याह्न। **–फसली**–वि० रबी और खरीफ दोनोंमें पैदा होनेवाला; संदिग्ध। **–बगली**–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत। **–बधा**–स्त्री० दे० 'दुबिधा'। **–बारा**–दे० 'दोबारा'। **–बिधा**–स्त्री० चित्तकी किसी एक बातपर न जमनेकी क्रिया या भाव, निश्चयका अभाव; संशय, संदेह, अंदेशा; संकल्प-विकल्प, असमंजस। **–भाखी,–भाषिया,–भाषी**–पु० वह दो भाषाएँ जाननेवाला मध्यस्थ जो उन भाषाओंके बोलनेवाले दो व्यक्तियोंकी वार्ताके अवसरपर एकको दूसरेका अभिप्राय समझाये। **–मंजिला**–वि० जिसमें दो मंजिलें हों। **–माही**–वि० दो महीनोंपर होनेवाला। **–मुँहा**–वि० जिसके दो मुँह हों, दो मुखोंसे युक्त। **–रंग(गा)**–वि० दो रंगोंवाला, जिसमें दो रंग हों; दो प्रकारका, जिसमें एकरूपता न हो। **–रंधा***–वि० जिसमें दो रंध्र हों; जिसमें आरपार छेद हो। **–रद*,–रदाल***–पु० दे० 'द्विरद'। **–रस**–पु० सहोदर भाई; † दे० 'दोमट'। वि० दे० 'दोरसा', दे० क्रममें। **–राज**–पु० एक ही देशमें दो राजाओंका शासन, दो अमली शासन; दोषपूर्ण शासन। **–राजी***–वि० जिसमें दो राजा राज्य करते हों, जिसपर दो राजाओंका शासन या अधिकार हो। **–रुखा**–वि० दो रुखोंवाला; जिसके दोनों ओर दो रंग हों। **–रेफ**–पु० दे० 'द्विरेफ'। **–लड़ी**–स्त्री० दो लड़ोंकी माला। **–लत्ती**–स्त्री० घोड़े आदि चौपायोंका पीछेके दोनों पैरोंसे मारना। **–शाला**–पु० एक तरहकी पशमीनेकी चादर जो दोहरी होती है और किनारेपर बेल-बूटे होते हैं। **–शाला-पोश**–वि० जो दुशाला ओढ़े हो। **–शाला-फ़रोश**–पु० दुशाला बेचनेवाला। **–साखा**–पु० दो शाखाओंवाला समादान। **–सार***–पु० एक ओरसे दूसरी ओरतक जानेवाला छेद। **–साला**–पु० दे० 'दुशाला'। **–सूती**–वि० जिसमें ताने और बाने दोनोंमें दोहरा सूत लगा रहे। स्त्री० इस प्रकारका मोटा

कपड़ा। –सेजा*–पु० पलंग। –हत्था–वि० जिसमें दोनों हाथ काममें लाये गये हों; दो मूठोंवाला। –हत्थी–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत।

दुअन–पु० दे० 'दुवन'।

दुअरवा*–पु० दे० 'द्वार'।

दुअरिया*–स्त्री० छोटा दरवाजा।

दुआ–स्त्री० [अ०] ईश्वरसे माँगना; प्रार्थना, याचना; आशीर्वाद (करना, माँगना)।

दुआदस*–वि० दे० 'द्वादश'।

दुआर, दुआरा†–पु० दे० 'द्वार'।

दुआरी†–स्त्री० छोटा द्वार।

दुइ†–वि० दे० 'दो'।

दुइज*–स्त्री० दे० 'दूज'। पु० द्वितीयाका चंद्रमा।

दुई–स्त्री० दो होना, दोकी भावना, द्वैत; गैर समझना।

दुऔ†–वि० दोनों।

दुकड़हा–वि० जिसकी कीमत एक दुकड़ा हो; एक-एक टुकड़ेके लिए लालायित रहनेवाला; अधम कोटिका।

दुकड़ा–पु० युग्म; जोड़ा; एक पैसेका चौथा हिस्सा।

दुकड़ी–स्त्री० ताशकी वह पत्ती जिसपर किसी रंगकी दो बूटियाँ छपी हों; वह बग्घी जिसमें दो घोड़े जुते हों।

दुकना*–अ० क्रि० छिपना, लुकना।

दुकान–स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ बेचनेकी चीजें सजाकर रखी हों, सौदा बेचने और खरीदनेकी जगह। **–दार**–पु० दुकानका स्वामी, दुकानवाला; वह व्यक्ति जिसने अर्थोपार्जनके लिए ढकोसला रच रखा हो, पाखंडी, ठग। **–दारी**–स्त्री० दुकानदारका धंधा; दुकानदारका पद; धन कमानेके लिए रचा गया ढकोसला।

दुकाल–पु० दे० 'अकाल' (हिं०)।

दुकूल–पु० [सं०] रेशमी वस्त्र; चिकना और बारीक कपड़ा, क्षौम वस्त्र, पट्ट वस्त्र। **–पट्ट**–पु० अच्छे कपड़ेका साफा।

दुकेला–वि० जिसके साथ कोई और भी हो।

दुकेले–अ० किसी औरके साथ।

दुक्कड़–पु० शहनाईके साथ बजाया जानेवाला एक बाजा।

दुक्का–वि० जो एक जोड़ेके रूपमें हो; दे० 'दुकेला'।

दुक्की–स्त्री० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगकी दो बूटियाँ छपी हों।

दुखंत*–पु० दे० 'दुष्यंत'।

दुख–पु० दे० 'दुःख'। **–द**–वि० दे० 'दुःखद'। **–दाई***–वि० दे० 'दुःखदायी'। **–द्वंद***–पु० दुःख तथा द्वंद्व–सुख-दुःख, राग-द्वेष, शीत-उष्ण आदि परस्पर विरोधी भाव और अनुभूतियाँ।

दुखड़ा–पु० दुःख; दुःखगाथा। **मु०–रोना**–दूसरेको अपनी विपन्नावस्थाका वृत्तांत सुनाना।

दुखना–अ० क्रि० दर्द करना, पीड़ा होना।

दुखरा*–पु० दे० 'दुखड़ा'।

दुखवना*–स० क्रि० दे० 'दुखाना'।

दुखाना–स० क्रि० पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना; स्पर्श आदिके द्वारा फुंसी, घाव आदिमें व्यथा उत्पन्न करना।

दुखारा, दुखारी*–वि० दुःखी, व्यथित।

दुखित*–वि० दे० 'दुःखित'।

दुखिया–वि० दुःखमें पड़ा हुआ, विपद्ग्रस्त।

दुखियारा–वि० दुखिया, संकटापन्न।

दुखी–वि० जिसे मानसिक व्यथा हो; खिन्न; रुग्ण।

दुखीला†–वि० दुःखयुक्त; जिसे दुःखका अनुभव हो रहा हो।

दुखौहाँ*–वि० दुःखकर, कष्टप्रद।

दुगई*–स्त्री० बरामदा–'अति अद्भुत खंभनकी दुगई'–राम०।

दुगदुगी–स्त्री० छातीके नीचेका गड्ढा, धुकधुकी।

दुगना*–अ० क्रि० दे० 'दुकना'। वि० दे० 'दु'के साथ।

दुगासरा*–पु० दुर्गके पासका गाँव; छिपनेका स्थान।

दुगूल–पु० [सं०] दे० 'दुकूल'।

दुग्ग*–पु० दे० 'दुर्ग'।

दुग्ध–पु० [सं०] दूध; पौधोंका दूध जैसा रस; दुहना। वि० दूहा हुआ। **–फेन**–पु० दूधका फेन, मलाई; एक पौधा, क्षीरडिंडीर। **–समुद्र**–पु० पुराणोक्त सात समुद्रोंमेंसे एक, क्षीरसागर।

दुग्धोद्योग–पु० [सं०] (डेअरी इंडस्ट्री) दूध तथा उससे बननेवाले विभिन्न पदार्थ–मक्खन, घी आदि–तैयार करानेका उद्योग।

दुग्धाब्धि–पु० [सं०] क्षीरसागर। **–तनया**–स्त्री० लक्ष्मी।

दुग्धिका–स्त्री० [सं०] दुद्धी नामकी घास, दुधिया।

दुज*–पु० दे० 'दु'के साथ।

दुजेश*–पु० दे० 'द्विजेश'।

दुड़ी–स्त्री० दे० 'दुक्की'।

दुतकारना–स० क्रि० 'दुत-दुत' कहकर तिरस्कार करना, धिक्कारना।

दुति*–स्त्री० दे० 'द्युति'। **–मान**–वि० दे० 'द्युतिमान्'। **–वंत**–वि० प्रभायुक्त, कांतिमान्।

दुतिय*–वि० दे० 'द्वितीय'।

दुतिया*–स्त्री० 'द्वितीया'।

दुतीय*–वि० दे० 'द्वितीय'।

दुतीया*–स्त्री० दे० 'द्वितीया'।

दुदलाना*–स० क्रि० दे० 'दुतकारना'।

दुद्धी–स्त्री० एक प्रकारकी घास जिसमें दूध होता है; खड़िया मिट्टी; क्षीरावली लता।

दुध–पु० 'दूध' शब्दका एक रूपांतर। **–मुँहा,*–मुख**–वि० दे० 'दूधमुँहा'। **–हँड़ी**–स्त्री० दूध गरम करनेका मिट्टीका पात्र।

दुधार–वि० जिसमें दूध हो; जो अधिक दूध देती हो।

दुधारू*–वि० दे० 'दुधार'।

दुधिया–स्त्री० दुद्धी नामकी घास; ज्वारकी एक किस्म; खड़िया मिट्टी; एक चिड़िया; एक प्रकारका विष। वि० दूध मिला हुआ; जिसका रंग दूधकी तरह सफेद हो। **–पत्थर**–पु० एक तरहका सफेद पत्थर।

दुधैल–वि० स्त्री० जो बहुत दूध देती हो।

दुनवना*–अ० क्रि० किसी लोचदार चीजका इतना झुक जाना कि उसके दोनों सिरे मिल जायँ। स० क्रि० किसी लोचदार चीजको इतना झुका देना कि उसके दोनों सिरे आपसमें मिल जायँ।

दुनियवी-वि० [अ०] दुनियावी, दुनियाका, संसार-संबंधी।

दुनिया-स्त्री० [अ०] संसार, जगत्; संसारमें रहनेवाले लोग, लोक; संसारका प्रपंच, संसारका झंझट। **-दार**-वि० संसारके धंधोंमें फँसा हुआ, संसारी; जो लोकव्यवहारमें कुशल हो, लोकचतुर। पु० गृहस्थ। **-दारी**-स्त्री० सांसारिक प्रपंच, संसारका जंजाल; व्यवहार-कुशलता; बनावटी व्यवहार। **-साज़**-वि० दिखावटी व्यवहार करनेवाला, मक्कार, धूर्त। **मु०-की हवा लगना**-सांसारिक बातोंकी जानकारी होना, संसारका अनुभव होना; संसारके दूसरे लोगोंकी तरह आचरण करने लगना। **-भरका**-बहुत अधिक। **-से उठ जाना**-मर जाना।

दुनियाई-वि० सांसारिक। स्त्री० संसार।

दुनियावी-वि० [अ०] दुनियाका, संसार-संबंधी।

दुनी*-स्त्री० दुनिया, संसार।

दुनोना, दुनौना-अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'दुनवना'।

दुबकना†-अ० क्रि० दे० 'दबकना'।

दुबरा†-वि० दुर्बल, कृश, क्षीण शरीरवाला, दुबला-पतला।

दुबराई†-स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता, कृशता; शक्तिहीनता।

दुबराना*-अ० क्रि० दुर्बल होना, कृश होना।

दुबला-वि० जिसका शरीर क्षीण हो, कृश।

दुबाइन-स्त्री० दुबेकी पत्नी।

दुबिद*-पु० दे० 'द्विविद'।

दुबे-पु० ब्राह्मणोंका एक भेद, द्विवेदी।

दुम-स्त्री० [फा०] पूँछ, पुच्छ; दुमकी तरह पीछेकी ओर जुड़ी हुई वस्तु, पिछला हिस्सा; वह जो बराबर पीछे लगा रहे, पिछलग्गू; डिग्री, उपाधि (हास्य)। **-ची**-स्त्री० घोड़ोंके साजमें दुमके नीचे रहनेवाला चमड़ा; पुट्ठोंके बीचकी हड्डी। **-दार**-वि० जिसके पूँछ हो; जिसके पीछे पूँछकी तरह कोई वस्तु लगी या जुड़ी हो। **मु०-के पीछे फिरना**-पीछे-पीछे घूमा करना, साथ लगा रहना। **-दबाकर भागना**-मारे डरके इस तरह भागना जैसे कोई कुत्ता अपनेसे मजबूत कुत्ता देखकर भाग खड़ा होता है। **-दबा जाना**-डरकर भाग जाना; मारे डरके किसी कामसे पृथक् हो जाना। **-में घुसना**-लुप्त हो जाना। **-में घुसा रहना**-खुशामदमें सदा पीछे लगा रहना।

दुमन-वि० अनमना, उदास, विषण्ण।

दुमात†, दुमाता-स्त्री० खराब माता; विमाता।

दुरंत-वि० [सं०] जिसका परिणाम बुरा हो, जो उत्तरकालमें दुःख पहुँचाये; जिसका पार पाना कठिन हो, दुरतिक्रम; प्रबल, प्रचंड; अति गंभीर, दुर्ज्ञेय।

दुरजन*-पु० दे० 'दुर्जन'।

दुरजोधन*-पु० दे० 'दुर्योधन'।

दुरतिक्रम-वि० [सं०] जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन बड़ी कठिनाईसे हो सके; दुर्लंघ्य।

दुरथल*-पु० बुरा स्थान, कुठाँव।

दुरदाम*-वि० प्रबल; कठिन; निकट।

दुरदुराना-स० क्रि० तिरस्कार करना; अनादरपूर्वक दूर भगाना या हटाना।

दुरधिगम-वि० [सं०] जिसे प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य; दुर्बोध।

दुरना*-अ० क्रि० दूर होना; आँखोंसे ओझल होना, छिपना।

दुरपदी*-स्त्री० दे० 'द्रौपदी'।

दुरपवाद-पु० [सं०] निंदा, कुत्सा।

दुरबल*-वि० दे० 'दुर्बल'।

दुरबार*-वि० दुर्निवार्य, अटल।

दुरबास*-स्त्री० बुरी गंध, दुर्गंध।

दुरबेस*-पु० दरवेश, फकीर।

दुरभियोजन-पु० [सं०] (प्लॉट) किसीको हानि पहुँचाने आदिकी दृष्टिसे की जानेवाली गुप्त काररवाई।

दुरभिसंधि-स्त्री० [सं०] बुरे उद्देश्यसे की गयी गुप्त मंत्रणा, कुचक्र।

दुरभेवा†-पु० दुर्भाव; खटका, आशंका।

दुरमुस-पु० सड़क आदिपर बिछाया गया कंकड़ पीटकर बराबर करनेका एक औजार।

दुरलभ†-वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुरवस्थ-वि० [सं०] जो बुरी दशामें हो।

दुरवस्था-स्त्री० [सं०] बुरी हालत, कष्टपूर्ण दशा; दुर्गति।

दुरवाप-वि० [सं०] दे० 'दुष्प्राप्य'।

दुरस*-वि० दुरुस्त, सही, ठीक। पु० दे० 'दु-रस'।

दुराउ*-पु० दे० 'दुराव'।

दुराकृति-वि० [सं०] बदशकल।

दुरागमन-पु० दे० 'द्विरागमन'।

दुरागौन*-पु० दे० 'द्विरागमन'।

दुराग्रह-पु० [सं०] अनुचित रीतिसे किसी बातपर अड़ जाना, हठ, जिद।

दुराग्रही(हिन्)-वि० [सं०] जो दुराग्रह करे, हठी, जिद्दी।

दुराचरण-पु० [सं०] दे० 'दुराचार'।

दुराचार-पु० [सं०] निंद्य आचरण, कदाचार, कुकृत्य। वि० कुत्सित आचरणवाला।

दुराचारी (रिन्)-वि० [सं०] निंद्य कर्म करनेवाला, कुत्सित आचरणवाला, कुकर्मी।

दुरात्मा (त्मन्)-वि० [सं०] जिसका अंतःकरण शुद्ध न हो, हृदयका खोटा, नीच प्रकृतिका।

दुरादुरी-स्त्री० छिपाव, दुराव।

दुराधर्ष-वि० [सं०] जिसका लेशमात्र भी पराभव न हो सके; विकट, प्रचंड; उग्र।

दुराना-स० क्रि० दूर करना; आँखोंसे ओझल करना, छिपाना। * अ० क्रि० दे० 'दुरना'-'नाम लेत नियरात सुख दुख दुरात दरसात'-रसिकवि०।

दुराराध्य-वि० [सं०] जिसे संतुष्ट या प्रसन्न करना बहुत कठिन हो; जिसका आराधन कष्टसाध्य हो।

दुरारोह-पु० [सं०] ताड़का पेड़। वि० जिसपर चढ़ना कठिन हो।

दुरालाप-पु० [सं०] बुरी बातचीत, कुवार्ता; दुर्वचन।

दुराव-पु० दुरानेकी क्रिया, छिपाव; छल; भेदभाव।

दुराशय-पु० [सं०] कुत्सित विचारोंवाला व्यक्ति, दुष्टात्मा वि० जिसकी नीयत खराब हो, निंद्य विचारका, खोटा।

दुराशा-स्त्री० [सं०] ऐसी आशा जिसका पूरा होना कठिन हो, झूठी आशा।

दुरासद-वि० [सं०] जिसके पास पहुँचना कठिन हो,

दुर्गम; दुष्प्राप्य, दुर्लभ; दुर्जय; अद्वितीय ।

दुरासा*–स्त्री० दे० 'दुराशा' ।

दुरित–पु० [सं०] पाप, दुष्कृत, किल्विष; खतरा; संकट ।

दुरियाना†–स० क्रि० दुरदुराना; दूर करना, हटाना ।

दुरुक्त–पु०, **दुरुक्ति**–स्त्री० [सं०] दुर्वचन ।

दुरुत्साहन–पु० [सं०] (एवेटमेंट) अपराधीको अपराध करनेमें सहायता या प्रोत्साहन देना ।

दुरुपयोग–पु० [सं०] अनुचित उपयोग, बुरा इस्तेमाल ।

दुरुपयोजन–पु० [सं०] (मिसऐप्रोप्रियेशन) (किसी सौंपी हुई वस्तु, धन आदिका) दुरुपयोग करना, अनुचित काममें लगा देना ।

दुरुस्त–वि० [फा०] जो अच्छी स्थितिमें हो, ठीक; जिसमें कोई खामी न हो, दोषरहित; उचित; यथार्थ, युक्तियुक्त ।
मु०–करना–दंड देकर ठीक रास्तेपर लाना, सुधारना ।

दुरुस्ती–स्त्री० [फा०] दुरुस्त करनेकी क्रिया, सुधारना ।

दुरूह–वि० [सं०] बहुत माथापच्ची करनेपर भी जल्दी समझमें न आनेवाला, कठिन ।

दुर्–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञापदों और क्रियापदोंके पहले इन अर्थोंमें जोड़ा जाता है–(१) सदोषता, (२) निंदा, (३) निषेध, (४) दुःख या संकट ।

दुर्गंध–स्त्री० [सं०] बुरी गंध, बदबू । पु० काला नमक; प्याज; आम । वि० बुरी गंधवाला ।

दुर्ग–पु० [सं०] गढ़, किला, कोट । **–पति**–पु० दुर्गका स्वामी, दुर्गाध्यक्ष । **–पाल**–पु० दुर्गरक्षक ।

दुर्गति–स्त्री० [सं०] दुर्दशा; दरिद्रता; नरक ।

दुर्गम–वि० [सं०] जहाँ पहुँचना कठिन हो, बीहड़; जो शीघ्र समझमें न आये, दुर्बोध ।

दुर्गाध, दुर्गाह्य–वि० [सं०] जिसकी थाह जल्दी न मिल सके, जिसे थहाना कठिन हो, दुरवगाह्य ।

दुर्गाधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गाध्यक्ष–पु० [सं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गुण–पु० [सं०] बुरा गुण, दोष ।

दुर्गेश–पु० [सं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गोत्सव–पु० [सं०] दुर्गापूजा जो नवरात्रमें होती है ।

दुर्ग्रह–वि० [सं०] जिसे पकड़ना कठिन हो; दुष्प्राप्य; दुर्बोध, दुर्ज्ञेय; जिसे वशवर्ती बनाना कठिन हो ।

दुर्घट–वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो, दुःसाध्य ।

दुर्घटना–स्त्री० [सं०] अशुभ घटना; क्लेशकर घटना ।

दुर्जन–पु० [सं०] दुष्ट मनुष्य, खल ।

दुर्जय–पु० [सं०] परमेश्वर । वि० जो कठिनाईसे जीता जा सके, जिसपर विजय पाना कठिन हो ।

दुर्जर–वि० [सं०] जो देरमें या कठिनतासे पचे ।

दुर्जीव–पु० [सं०] निंद्य जीवन, घृणित जीवन । वि० परान्न खाकर निर्वाह करनेवाला, परान्नभोजी ।

दुर्जेय–वि० [सं०] दे० 'दुर्जय' ।

दुर्ज्ञेय–वि० [सं०] जो कठिनाईसे जाना जा सके, दुर्बोध ।

दुर्दम, दुर्दमनीय, दुर्दम्य–वि० [सं०] जिसे दबाना या वशमें करना कठिन हो, प्रबल ।

दुर्दर*–वि० दे० 'दुर्धर' ।

दुर्दर्श–वि० [सं०] जिसे देखना कठिन हो; चकाचौंध पैदा करनेवाला ।

दुर्दर्शन–वि० [सं०] जो देखनेमें भद्दा हो, बदसूरत ।

दुर्दशा–स्त्री० [सं०] बुरी हालत, दुरवस्था, दुर्गति ।

दुर्दांत–वि० [सं०] दे० 'दुर्दम' ।

दुर्दिन, दुर्दिवस–पु० [सं०] बुरा दिन; मेघाच्छन्न दिन; घना अंधकार; वर्षण, वृष्टि; विपत्काल ।

दुर्दैव–पु० [सं०] फूटा हुआ भाग्य, दुर्भाग्य, बदकिस्मती ।

दुर्धर–पु० [सं०] पारा; भिलावाँ । वि० दे० 'दुर्ग्रह' ।

दुर्धर्ष–वि० [सं०] जिसका पराभव न किया जा सके, जिसे वशवर्ती बनाना कठिन हो; उग्र, प्रबल ।

दुर्नय–पु० [सं०] बुरी नीति, कुनीति; अविनय, औद्धत्य ।

दुर्नाम(न्)–पु० [सं०] बुरा नाम; दुर्वचन; घोंघा ।

दुर्निरीक्ष्य–वि० [सं०] जो कठिनाईसे देखा जा सके ।

दुर्निवार, दुर्निवार्य–वि० [सं०] जिसका निवारण करना कठिन हो; जो सहसा रोका न जा सके ।

दुर्नीति–स्त्री० [सं०] नीतिविरुद्ध आचरण, कुनीति ।

दुर्बल–वि० [सं०] शक्तिहीन, कमजोर; क्षीणकाय, कृश ।

दुर्बुद्धि–वि० [सं०]दुष्ट बुद्धिवाला, कुबुद्धि; हतबुद्धि; मूर्ख ।

दुर्बोध–वि० [सं०] जो शीघ्र समझमें न आये, गूढ़, क्लिष्ट ।

दुर्भक्ष–वि० [सं०] जिसे खाना कठिन हो; जिसका स्वाद अच्छा न हो । पु० अकाल, दुर्भिक्ष ।

दुर्भर–वि० [सं०] जिसे धारण करना, ढोना या निभाना कठिन हो; भारी ।

दुर्भाग्य–पु० [सं०] प्रतिकूल दैव, फूटी किस्मत, बदकिस्मती । वि० भाग्यहीन, अभागा ।

दुर्भाव–पु० [सं०] बुरा भाव, कुभाव; तुच्छ विचार ।

दुर्भावना–स्त्री० [सं०] बुरी भावना, कुविचार ।

दुर्भिक्ष–पु० [सं०] अकाल, क़हत ।

दुर्भिच्छ*–पु० दे० 'दुर्भिक्ष' ।

दुर्भेद, दुर्भेद्य–वि० [सं०] जो कठिनाईसे भेदा या छेदा जा सके, अति दृढ़ ।

दुर्मति–पु० [सं०] एक संवत्सरका नाम । स्त्री० दे० 'कुमति' । वि० दुष्ट; मंदबुद्धि, मूर्ख ।

दुर्मद–वि० [सं०] प्रमत्त; मदांध, मदोद्धत ।

दुर्मना(नस्)–वि० [सं०] दुष्ट हृदयवाला; उद्विग्न चित्तवाला; उदास ।

दुर्मित्र–पु० [सं०] बुरा मित्र, कुमित्र ।

दुर्मिल–वि० [सं०] अनमेल; कठिनतासे मिलनेवाला । पु० एक मात्रिक छंद; एक प्रकारका सवैया ।

दुर्मुख–पु० [सं०] घोड़ा; महिषासुरकी सेनाका एक सेनापति; रावणकी सेनाका एक भट; एक नाग; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक संवत्सर; एक राक्षस; एक यक्ष ; रामका एक गुप्तचर । वि० कटुभाषी, कड़ुआ बोलनेवाला ।

दुर्मूल्य–वि० [सं०] अधिक दामका, बहुमूल्य; महँगा ।

दुर्मेधा(धस्)–वि० [सं०] मंदबुद्धि, मूर्ख ।

दुर्योग–पु०[सं०] दुर्भाग्यसूचक ग्रहयोग, ग्रहोंका बुरा फेर ।

दुर्योध–वि० [सं०] जो भीषण युद्धमें भी डटकर लड़ता रहे; अजेय ।

दुर्योधन–पु० [सं०] धृतराष्ट्रका ज्येष्ठ पुत्र । वि० दे० 'दुर्योध' ।

दुर्लंघ्य–वि० [सं०] जिसे लाँघना या पार करना कठिन हो,जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण दुष्कर हो ।

दुर्लक्ष्य–पु० [सं०] बुरा उद्देश्य, बुरा ध्येय । वि० जो कठिनाईसे देखा जा सके ।

दुर्लभ–वि० [सं०] जिसका मिलना कठिन हो, दुष्प्राप्य; प्रिय । –**मुद्रा**–स्त्री० (हार्ड करेंसी) उस देशकी मुद्रा जिसका माल अन्य देश खरीदना तो चाहते हों, पर व्यापार-तुला उनके विपक्षमें होनेके कारण उक्त मुद्रा यथेष्ट संख्यामें प्राप्त करनेमें कठिनाईका अनुभव करें ।–**मुद्रा-क्षेत्र**–पु० (हार्ड करेंसी एरिया) दुर्लभ मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र ।

दुर्लेख्य–वि० [सं०] जिसकी लिखावट इतनी बुरी हो कि पढ़ी न जा सके । पु० जाली कागज ।

दुर्वच–पु० [सं०] कटूक्ति, कटु वचन; गाली । वि० जो कठिनाईसे कहा जा सके ।

दुर्वचन–पु० [सं] कटु वचन; गाली ।

दुर्वह–वि० [सं०] जिसे ढोना कठिन हो; असह्य, दुःसह ।

दुर्वाक्(च्)–पु० [सं०] दे० 'दुर्वचन' ।

दुर्वाद–पु० [सं०] अपयश, कुख्याति; स्तुतिके रूपमें कहा गया दुर्वचन, निंदित वाक्य ।

दुर्वार, दुर्वार्य–वि० [सं०] दे० 'दुर्निवार' ।

दुर्वासना–स्त्री० [सं०] बुरी वासना, चित्तकी कुप्रवृत्ति; ओछी कामना; विषयोंका चित्तपर पड़ा हुआ कुसंस्कार ।

दुर्विनय–स्त्री० [सं०] अविनय, औद्धत्य, उद्दंडता ।

दुर्विनीत–वि० [सं०] अविनीत, उद्दंड ।

दुर्विपाक–पु० [सं०] कुपरिणाम, दुष्परिणाम, कुफल ।

दुर्वृत्त–पु० [सं०] निंदित आचरण । वि० जिसका आचरण बुरा हो, दुराचारी । –**फलक**–पु० (हिस्ट्रीशीट) दे० 'वृत्तपत्रक' । –**सूची**–स्त्री० (ब्लैक लिस्ट) ऐसे व्यक्तियोंकी सूची जो किसी अपराध या निंदनीय कार्य करनेके कारण कुप्रसिद्ध हो चुके हों और जो शांतिरक्षा आदिकी दृष्टिसे संदेहास्पद माने जाते हों ।

दुर्वृत्ति–स्त्री० [सं०] बुरी वृत्ति, खराब पेशा; बुरा काम ।

दुर्वृष्टि–स्त्री० [सं०] अपर्याप्त वृष्टि; अनावृष्टि, सूखा ।

दुर्व्यवस्था–स्त्री० [सं०] कुप्रबंध, बदइंतजामी ।

दुर्व्यवहार–पु० [सं०] बुरा व्यवहार, बुरा बर्ताव; वह मुकदमा जिसका राग-द्वेषादिके कारण उचित निर्णय न हुआ हो ।

दुर्व्यसन–पु० [सं०] किसी हानिकर वस्तुके सेवनका अभ्यास; बुरी लत, खराब आदत ।

दुर्हृदय–वि० [सं०] दुरात्मा, कुटिल, दिलका खोटा ।

दुलक(ख)ना–अ० क्रि० इनकार करना, मुकर जाना ।

दुलकी–स्त्री० घोड़ेकी कुछ-कुछ उछलते हुए मध्य गतिसे दौड़नेकी एक चाल ।

दुलदुल–पु० [अ०] वह खच्चर जिसे इस्कंदरिया(मिस्र)के हाकिमने मुहम्मदको भेंटमें दिया था; मुहर्रमके अवसरपर निकाला जानेवाला घोड़ेके आकारका ताजिया; बिना सवारका घोड़ा जो मुहर्रमके आठवें और नवें दिन अब्बास और हुसेनके नामसे निकाला जाता है ।

दुलना*–अ० क्रि० दे० 'डोलना' ।

दुलभ*–वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुलरा*–वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुलराना*–अ० क्रि० लाड़ले बच्चोंके समान रूठना, मचलना आदि । स० क्रि० लाड़-चाव करना, प्यारकी चेष्टाओं द्वारा बच्चोंको बहलाना या प्रसन्न करना ।

दुलरुवा†–वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुलहन, दुलहिन–स्त्री० नवोढा स्त्री, नयी बहू; भ्रातृवधू, पुत्रवधू आदिका संबोधन; (किसीकी) पत्नी ।

दुलहा–पु० दे० दूल्हा' ।

दुलहाई*–स्त्री० विवाहका गीत ।

दुलहिया*–स्त्री० दे० 'दुलहन' ।

दुलही†–स्त्री० दे० 'दुलहन' ।

दुलाई–स्त्री० रुई भरा हुआ हलका ओढ़ना, हलकी रजाई ।

दुलाना*–स० क्रि० दे० 'डुलाना' ।

दुलार–पु० दुलारनेकी क्रिया या भाव, लाड़-चाव, प्यार ।

दुलारना–स० क्रि० अनेक प्रकारकी स्नेहसूचक चेष्टाएँ करते हुए (बच्चों आदिको) प्यार करना, लाड़-चाव करना ।

दुलारा–वि० जिसका बहुत दुलार होता हो, लाड़ला । पु० लाड़ला पुत्र ।

दुलारी–स्त्री० लाड़ली बेटी । वि० लाड़ली ।

दुलीचा*–पु० कालीन, गलीचा ।

दुल्लभ*–वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुव*–वि० दो ।

दुवन–पु० दुर्जन, दुष्ट, खल; शत्रु; राक्षस ।

दुवादस*–वि० दे० 'द्वादश' । –**बानी**–वि० खरा, खालिस; कांतियुक्त (सोना) ।

दुवादसी*–स्त्री० दे० 'द्वादशी' ।

दुवाल–पु० [फा०] चमड़ेका तसमा; रिकाबका तसमा; चपरास । –**बंद**–पु० तसमा बाँधनेवाला सिपाही ।

दुविद*–पु० दे० 'द्विविद' ।

दुवो*–वि० दोनों ।

दुशवार–वि० [फा०] कठिन, मुश्किल ।

दुशवारी–स्त्री० [फा०] कठिनता, मुश्किल ।

दुशाला–स्त्री० दे० 'दु'के साथ ।

दुशासन*–पु० दे० 'दुःशासन' ।

दुश्चर–वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो, जो कठिनाईसे किया जा सके, कठिन, कष्टसाध्य ।

दुश्चरित–पु० [सं०] बुरा आचरण, कदाचार; दुष्कृत, पाप । वि० बुरे आचरणका, दुर्वृत्त ।

दुश्चरित्र–पु० [सं०] बुरा चाल-चलन । वि० जिसका चरित्र बुरा हो, चरित्रहीन, बदचलन ।

दुश्चिकित्स्य–वि० [सं०] जिसकी चिकित्सा करना बहुत कठिन हो; असाध्य ।

दुश्चेष्टा–स्त्री० [सं०] बुरी चेष्टा ।

दुश्चेष्टित–पु० [सं०] कुकृत्य, निंद्य कर्म, नीच काम ।

दुश्मन–पु० [फा०]शत्रु,बैरी,अहित चाहनेवाला,अपकारी ।

दुश्मनी–स्त्री० [फा०] शत्रुता, बैर ।

दुष्कर–वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो, कष्टसाध्य ।

दुष्कर्म(न्)–पु० [सं०] बुरा काम; पाप ।

दुष्कर्मा(र्मन्)–वि० [सं०] कुकर्मी, पापी ।

दुष्कर्मी–वि० कुकर्मी, बुरा कार्य करनेवाला ।

दुष्काल–पु० [सं०] बुरा समय, ऐसा समय जिसमें लोगोंको तरह-तरहके कष्ट हों; प्रलय; दुर्भिक्ष; शिव।

दुष्कीर्ति–स्त्री० [सं०] अपयश, बदनामी।

दुष्कुल–पु० [सं०] नीच कुल, तुच्छ घराना। वि० नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका।

दुष्कुलीन–वि० [सं०] नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका।

दुष्कृत–पु० [सं०] नीच कर्म; पाप।

दुष्कृति–स्त्री० [सं०] पाप। वि० नीचकर्म करनेवाला;पापी।

दुष्ट–वि० [सं०] क्षतिग्रस्त; निकम्मा; दोषयुक्त, दूषित, सदोष; तर्कशास्त्रमें व्यभिचार आदि दोषोंसे युक्त (हेतु); पित्त आदिके प्रकोपसे विकारग्रस्त (नेत्र आदि); खल, पिशुन, खोटा, नीच, बदमाश। **–चेता (तस्),–धी,–बुद्धि**–वि० खोटे हृदयका, दुष्ट स्वभावका। **–व्रण**–पु० वह घाव जो जल्दी अच्छा न हो; नासूर।

दुष्टा–स्त्री० [सं०] बुरी, असती स्त्री; वेश्या।

दुष्टाचार–पु० [सं०] दे० 'दुराचार'।

दुष्टाचारी (रिन्)–वि० [सं०] दे० 'दुराचारी'।

दुष्टात्मा (त्मन्), दुष्टाशय–वि० [सं०] दे० 'दुरात्मा'।

दुष्पच–वि० [सं०] जो शीघ्र न पचे; जो देरमें पके।

दुष्पार–वि० [सं०] जिसे पार करना कठिन हो; दुष्कर।

दुष्प्रकृति–स्त्री० [सं०] बुरा स्वभाव, खोटी आदत। वि० बुरे स्वभावका, नीच प्रकृतिका।

दुष्प्रवृत्ति–स्त्री० [सं०] बुरी प्रवृत्ति।

दुष्प्राप, दुष्प्राप्य–वि० [सं०] जिसका मिलना कठिन हो, जो कठिनतासे प्राप्त हो सके, दुर्लभ।

दुष्प्रेक्ष्य–वि० [सं०] जिसे देखना कठिन हो, जिसकी ओर ताका न जा सके; जिसकी ओर देखनेका साहस न हो।

दुष्यंत–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध पुरुवंशी राजा जिनके पुत्र भरतके नामपर इस देशका नाम भारत पड़ा।

दुसराना*–स० क्रि० दुहराना।

दुसरिहा*–वि० साथ रहनेवाला, सहाय; बराबरीका दावा करनेवाला, प्रतिद्वंद्वी।

दुसह*–वि० दे० 'दुःसह'।

दुसही*–वि० कठिनाईसे सहनेवाला; विद्वेषी, डाह करनेवाला।

दुसासन*–पु० दे० 'दुःशासन'।

दुस्तर–वि० [सं०] जिसे पार करना कठिन हो, जो सरलतासे पार न किया जा सके।

दुस्त्यज–वि० [सं०] जिसे छोड़ा न जा सके; जिसे छोड़ना कठिन हो।

दुस्सह–वि० [सं०] दे० 'दुःसह'।

दुहना–स० क्रि० स्तनको उँगलियोंसे दबाकर दूध निकालना; निचोड़ना, सार भाग निकालना; (किसीका) धन अपहरण करना; (किसीको) चूसना। **मु० दुह लेना**–सर्वस्व अपहरण कर लेना; किसीसे अधिकसे अधिक लाभ उठाना।

दुहनी–स्त्री० दूध दुहनेका पात्र, दोहनी।

दुहरा–वि० दे० 'दोहरा'।

दुहाई–स्त्री० घोषणा, मुनादी; रक्षाके लिए की गयी पुकार; आपत्तिके समय रक्षाके लिए किसी समर्थ व्यक्ति या देवताको पुकारना; शपथ, कसम; दुहनेका काम; दुहनेकी उजरत।

दुहाग–पु० दुर्भाग्य; वैधव्य।

दुहागिन*–वि० स्त्री० दुर्भाग्यवती, अभागिन, विधवा (स्त्री)।

दुहागिल†–वि० अभागा, भाग्यहीन; शून्य, खाली।

दुहागी*–वि० भाग्यहीन, अभागा।

दुहाना–स० क्रि० दुहनेमें दूसरेको प्रवृत्त करना।

दुहावनी–स्त्री० दूध दुहनेकी उजरत।

दुहिता(तृ)–स्त्री० [सं०] पुत्री, कन्या। **–(तृ)पति**–पु० जामाता।

दुहिन*–पु० दे० 'द्रुहिण'।

दुहेल*–पु० क्लेश, संकट।

दुहेला–पु० विकट खेल; कठिन कार्य; क्लेशकर कर्म। वि० दुःखमें पड़ा हुआ, दुःखी; कठिन, कष्टसाध्य।

दुहोतरा–पु० बेटीका बेटा। वि० दो और, दो अधिक।

दूँद*–पु० दे० 'द्वंद्व'।

दूँदना–अ० क्रि० द्वंद्व मचाना, झगड़ा करना।

दूँदि*–स्त्री० दे० 'द्वंद्व'।

दूइज†–स्त्री० दे० 'दूज'।

दूक*–वि० दो-एक, कुछ।

दूकान–स्त्री० दे० 'दुकान'। **–दार**–पु० दे० 'दुकानदार'। **–दारी**–स्त्री० दे० 'दुकानदारी'।

दूखन–पु० दे० 'दूषण'।

दूखना*–अ० क्रि० दे० 'दुखना'। स० क्रि० दोषारोपण करना, दोष लगाना।

दूज–स्त्री० प्रत्येक पक्षकी दूसरी तिथि, द्वितीया। **मु०–का चाँद होना**–बहुत कम दिखाई पड़ना।

दूजा*–वि० दूसरा।

दूत–पु० [सं०] एक जगहसे दूसरी जगह चिट्ठी-पत्री, संदेश आदि पहुँचानेके लिए नियुक्त व्यक्ति, हरकारा; किसी राजा या राष्ट्रका वह प्रतिनिधि जो राजनीतिक कार्यसे अन्य राष्ट्रमें भेजा गया हो या स्थायी रूपसे रहता हो, राजदूत; प्रेमी-प्रेमिकाका संदेश एक दूसरेके पास पहुँचानेवाला व्यक्ति। **–कर्म(न्)**–पु० दूतका काम।

दूतर*–वि० दुस्तर, कठिन।

दूतावास–पु० [सं०] राजदूतके रहनेका स्थान और उसका कार्यालय।

दूतिका, दूती–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिकाको मिलाये या एकका संदेश दूसरेके पास पहुँचाये।

दूदुह*–पु० दे० 'दुंदुभ'।

दूध–पु० स्त्री० गाय, भैंस आदिके स्तनसे निकलनेवाला सफेद रंगका प्रसिद्ध तरल पदार्थ जिसपर उनके बच्चे अधिक दिनोंतक रहते हैं; अन्नके कच्चे दानों तथा कुछ पौधोंके अंगोंमेंसे निकलनेवाला दूधके रंगका रस। **–चढ़ी***–वि० स्त्री० जिसका दूध बढ़ गया हो, जिसके स्तनमें और अधिक दूध भर आया हो। **–पिलाई**–स्त्री० विवाह-संबंधी एक रस्म जिसमें बरातके रवाना होनेके पहले वरके पालकी आदिपर चढ़ते समय उसकी माता उसे दूध पिलानेकीसी मुद्रा करती है; इस कार्यके उपलक्ष्यमें माताको दिया जानेवाला नेग। **–पूत**–पु० जन-

धन। **–फेनी**–स्त्री० दूधके साथ खाया जानेवाला एक पकवान। **–बहन**–स्त्री० एक ही स्त्रीका दूध पीनेके नाते मानी जानेवाली बहन। **–भाई**–पु० ऐसे दो बालकों या व्यक्तियोंमेंसे एक जो सहोदर न हों पर एक ही स्त्रीका दूध पीकर पले हों। **–मुँहा**–वि० जो अभी माताके दूधपर रहता हो; जिसके दूधके दाँत अभी न टूटे हों, अल्पवयस्क। **–मुख**–वि० दे० 'दूधमुँहा'। **मु०–उतरना**–स्तनोंमें दूध आना। **–का दूध और पानीका पानी**–ठीक-ठीक, सच्चा-सच्चा न्याय करना। **–का बच्चा**–केवल दूधके आधारपर रहनेवाला बच्चा, अति शिशु। **–की मक्खी**–अत्यंत तुच्छ या घृणित वस्तु। **–की मक्खीकी तरह निकालना या निकाल फेंकना**–अत्यंत तुच्छ वस्तुकी तरह एकदम अलग कर देना। **–के दाँत**–शैशवावस्थामें निकले दाँत। **–चढ़ना**–स्तनोंमें कम दूध उतरना। **–चढ़ाना**–दुहनेके समय गाय आदिका अपने स्तनोंमें कुछ दूध चुरा रखना। **–छुड़ाना**–बच्चेको केवल दूधपर न रहने देना। **–पड़ना**–कच्चे दानोंमें रस भर आना। **–पीता बच्चा**–एक दम नन्हा बच्चा। **दूधों नहाना, पूतों फलना**–धन-जनसे खूब संपन्न होना।

दूधा-भाती†–स्त्री० एक वैवाहिक प्रथा जिसमें वर-कन्या एक दूसरेको अपने हाथों दूध-भात खिलाते हैं।

दूधिया–स्त्री० एक तरहका सफेद पत्थर; खरिया मिट्टी; एक सफेद घास। वि० दूध-संबंधी; दूध मिला हुआ; दूधके रंगका, सफेद; कच्चा होनेके कारण जिसमें अभी दूध हो, बहुत कच्चा।

दून–स्त्री० दूनेका भाव। वि० दुगुना, दोहरा; [सं०] क्लांत; पीडित; क्षुब्ध; उपतप्त। **मु०–की लेना या हाँकना**–डींग मारना। **–की सूझना**–शक्तिसे बाहरकी बातका मनमें आना।

दूनर*–वि० जो झुककर दोहरा हो गया हो।

दूना–वि० दुगुना, दोगुना।

दूनौ*–वि० दोनों।

दूब–स्त्री० एक प्रसिद्ध घास, दूर्वा।

दूबरा*–वि० दुर्बल, कृश; दीनहीन; अशक्त।

दूबा†–स्त्री० दूब।

दूभर–वि० भारी, बोझिल; कठिन; असह्य; दुष्कर।

दूमना*–अ० क्रि० हिलना, डोलना।

दूरंदेश–वि० [फा०] दे० 'दूरदर्शी'।

दूरंदेशी–स्त्री० [फा०] दे० 'दूरदर्शिता'।

दूर–अ० [सं०] देश-काल आदिकी दृष्टिसे अधिक अंतरपर; विशिष्ट स्थान-समय आदिसे बहुत हटकर, फासलेपर। वि० जो दूर हो, असमीपस्थ। **–गामी (मिन्)**–वि० दूरतक जानेवाला। **–दर्शक**–पु० पंडित, प्राज्ञ। वि० दूरतक देखनेवाला; जिसके द्वारा दूरतककी चीज देखी जाय; दूरतक सोचनेवाला, बुद्धिमान्। **–दर्शक यंत्र**–पु० दे० 'दूरबीन'। **–दर्शन**–पु० गीध; पंडित; दूरबीन। **–दर्शन यंत्र**–पु० (टेलीविजन) वह यंत्र जिससे व्यवधान रहते हुए भी दूरकी वस्तुएँ, घटनाएँ आदि स्पष्ट देखी जा सकें। **–दर्शिता**–स्त्री० दूरकी बात सोचनेका गुण या शक्ति; दूरदर्शी होनेका भाव, दूरंदेशी। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दूरकी बात सोचनेवाला, दूरंदेश, परिणामदर्शी। पु० गीध; पंडित। **–दृष्टि**–स्त्री० दूरदर्शिता, दूरंदेशी। **–प्रभावी,–व्यापी**–वि० (फार-रीचिंग) जिसका प्रभाव बहुत दूरतक पड़े। **–प्रहारी तोप,–मार-तोप**–स्त्री० [हिं०] (लांगरेंज गन) दूरतक गोला फेंकनेवाली, लंबा निशाना मारनेवाली तोप। **–भाष**–पु०,**–वाणी**–स्त्री० (टेलीफोन) वह यंत्र जिसमें, प्रायः बिजलीकी सहायतासे, दूरके शब्द या दूरकी वाणी ज्योंकी त्यों सुनाई दे, टेलीफोन। **–भाष, वाणी-मिलनकेंद्र**–पु० (टेलीफोन एक्सचेंज) किसी नगर या जिलेका प्रधान दूरवाणी-कार्यालय जहाँ स्थानीय व्यक्तियोंसे या बाहरके लोगोंसे दूरवाणी-यंत्रों द्वारा बातचीत करानेके लिए दोनों ओरके यंत्रोंमें संबंध स्थापित करनेकी व्यवस्था की जाती है। **–मुद्र**–पु०(टेलीप्रिंटर) वह यंत्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयं टाइप हो जाता है। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० दूरीपर रहनेवाला, जो दूर हो। **–विक्षेपक**–पु० (ट्रांसमिटर) एक स्थानपर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदिको विद्युत्तरंगों, प्रकाश-लहरी आदिकी सहायतासे दूर-दूरतक फैलानेवाला यंत्र। **–विक्षेपण**–पु०(ट्रांसमिशन) एक स्थानपर उत्पन्न ध्वनि आदिको दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी क्रिया। **–विक्षेपण-केंद्र**–पु० (ट्रांसमिटिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँसे दूरविक्षेपण-यंत्र द्वारा कोई ध्वनि (भाषण, नाटक, संगीत आदि) दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी व्यवस्था हो। **–विक्षेपण-यंत्र**–पु०(ट्रांसमिटिंग एपँरेटस) दे० 'दूरविक्षेपक'। **–वीक्षण**–पु० दे० 'दूरबीन'। **–वीक्षण-यंत्र**–पु० (टेलिस्कोप) वह यंत्र जिससे देखनेपर दूरकी वस्तुएँ निकटस्थ जैसी तथा आकारमें अपेक्षाकृत बड़ी एवं स्पष्टतर दिखाई पड़ें। **–स्थ,–स्थित**–वि० जो निकट न हो, असमीपस्थ। **मु०–करना**–हटाना; अलग करना; नष्ट करना। **–की कहना**–बड़े मार्केकी बात कहना, बड़ी सूझकी बात कहना। **–की बात**–असंभव बात; मार्केकी या सूक्ष्म बात। **–की सोचना**–दूरंदेशीकी बात सोचना। **–भागना**–बहुत बचना, अपनेको किसीसे बहुत अलग रखना। **–होना**–मिट जाना, बना न रहना; छूट जाना।

दूर–अ०,वि० [फा०] दे० 'दूर' (सं०)। **–बीन**–पु० एक यंत्र जिसके द्वारा दूरकी वस्तुएँ बड़ी और समीपस्थ दिखाई देती हैं।

दूरबा–स्त्री० दूब।

दूरागत–वि० [सं०] दूरसे आया हुआ।

दूरान्वय–पु० [सं०] कर्ता-क्रिया, विशेष्य-विशेषण आदिका एक दूसरेसे दूर होना; रचनाका एक दोष (सा०)।

दूरि*–अ०, वि० दूर।

दूरी–स्त्री० अंतर, फासला।

दूरीकरण–पु० [सं०] दूर करना।

दूर्वा–स्त्री० [सं०] दूब। **–क्षेत्र**–पु० (लॉन) किसी गृह, प्रासाद आदिके सामने, पीछे या बगलका वह खुला मैदान जो दूर्वासे आच्छादित हो।

दूलन*–पु० दे० 'दोलन'।

दूलह–पु० दे० 'दूल्हा'।

दूलित-वि० दे० 'दोलित'।

दूल्हा-पु० वह व्यक्ति जिसका ब्याह होने जा रहा हो या कुछ ही दिनों पहले हुआ हो, वर, नौशा; पति; नायक।

दूषक-पु०[सं०] दोषारोपण करनेवाला व्यक्ति, दोष लगाने या आक्षेप करनेवाला मनुष्य; दुष्ट व्यक्ति।

दूषण-पु०[सं०] दोष, ऐब, खराबी, दुर्गुण; दोष लगानेका कार्य या भाव, दोषारोपण; अपराध; रावणका एक भाई। * वि० विनाशकारी, संहारक।

दूषणारि-पु० [सं०] राम जिन्होंने दूषणको मारा था।

दूषणीय-वि० [सं०] जिसपर दोष लगाया जा सके, दोषारोपणके योग्य।

दूषन*-पु० दे० 'दूषण'।

दूषना*-स०क्रि० दोष लगाना; दूषित बनाना।

दूषित-वि० [सं०] दोषयुक्त, बुरा, गंदा; कलंकित।

दूसना*-स० क्रि० दोष लगाना।

दूसर*-वि० दे० 'दूसरा'।

दूसरा-वि० जो गिनतीमें दोके स्थानपर हो, पहलेके बादका; भिन्न, दीगर।

दूहना-स० क्रि० दे० 'दुहना'।

दूहनी-स्त्री० दे० 'दोहनी'।

दूहा*-पु० दे० 'दोहा'।

दृक् (श्)-पु० [सं०] आँख, दृष्टि; दोकी संख्या; देखना; द्रष्टा; ज्ञान। **-क्षेप**-पु० किसी ओर दृष्टि डालना, दृष्टिपात। **-पात**-पु० दे० 'दृक्क्षेप'।

दृगंचल-पु० [सं०] पलक।

दृग*-पु० आँख, दृष्टि; देखनेकी शक्ति। **-मिचाव**-पु० आँखमिचौनी।

दृग्गोचर-वि० [सं०] दे० 'दृष्टिगोचर'।

दृढ-वि० [सं०] जो विचलित न हो, जो डिग न सके, धीर, कड़े दिलका; कसकर बँधा हुआ; अशिथिल; गाढ; मजबूत, सबल, बलिष्ठ; पुष्ट; जिसमें कोई फेरफार न हो सके; पक्का, अटल; कठिन; स्थूल; स्थायी, टिकाऊ। **-कर्मा-(र्मन्)**-वि० दृढतापूर्वक अपने काममें लगा रहनेवाला। **-चेता(तस्)**-वि० कड़े दिल, पक्के इरादेवाला। **-प्रतिज्ञ**-वि० जो प्रतिज्ञासे न डिगे, सत्यसंध, सत्यप्रतिज्ञ। **-फल**-पु० नारियल। **-मुष्टि**-वि० जिसकी मुट्ठी जल्दी न खुल सके; कृपण, कंजूस। **-व्रत**-वि० संकल्पका पक्का, दृढ़प्रतिज्ञ। **-संध**-वि० दृढव्रत, दृढप्रतिज्ञ।

दृढता-स्त्री०, **दृढत्व**-पु० [सं०] दृढ होनेका भाव, मजबूती।

दृढ़ाई*-स्त्री० दृढता, मजबूती।

दृढ़ाना-अ० क्रि० दृढ होना, पुष्ट होना; स्थिर होना। स० क्रि० दृढ़ बनाना, मजबूत करना, पक्का करना।

दृप्त-वि० [सं०] गर्वित; उन्मत्त; हर्षयुक्त; तेजोयुक्त; दीप्त।

दृश्य-पु० [सं०] जो कुछ देखा जाय, वह सब कुछ जो दर्शकको दृष्टि-गोचर हो, नज्जारा; तमाशा। वि० देखने योग्य, दर्शनीय; मनोरम, शोभन; जानने योग्य, ज्ञातव्य; जो दर्शकोंको अभिनय द्वारा दिखाया जाय (काव्य)।

दृश्यमान-वि० [सं०] जो देखा जा रहा हो।

दृश्याभास-पु० [सं०] (स्पेक्ट्रम) देखी हुई किसी वस्तु किंवा दृश्यका वह चित्र, प्रतिबिंब या आभास जो आँखें बंदकर लेनेके बाद भी सामने विद्यमान-सा प्रतीत हो।

दृष्ट-वि०[सं०] देखा हुआ; जाना हुआ। **-कूट**-पु० पहेली; एक प्रकारकी पहेली जैसी दुरूह कविता जिसका अर्थ बहुत सोच-सोचकर निकाला जाता है।

दृष्टमान*-वि० दे० 'दृश्यमान'।

दृष्टांत-पु० [सं०] प्रस्तुत विषयको समझानेके लिए समान धर्मवाली किसी दूसरी वस्तुका कथन, उदाहरण, मिसाल; अर्थालंकारका एक भेद, जहाँ उपमेय वाक्य और उपमान वाक्यमें तथा उन दोनोंके धर्मोंमें 'बिंब-प्रतिबिंब-भाव दिखाया जाय।

दृष्टार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ या विषय स्पष्ट हो।

दृष्टि-स्त्री० [सं०] देखना, अवलोकन; देखनेकी शक्ति; दीठ, नजर; प्रकाश; ज्ञान; मत, विचार; उद्देश्य, अभिप्राय; सोचने-बिचारनेका पहलू। **-कूट**-पु० दे० 'दृष्टकूट'। **-कोण**-पु० देखने-सोचने-बिचारनेका पहलू। **-क्रम**-पु० चित्रित वस्तुओंमें वही सापेक्ष्य छोटाई-बड़ाई, ऊँचाई-निचाई आदि दिखाई देना जो स्थानविशेपसे प्रत्यक्ष दर्शनमें दिखाई देती है। **-क्षेप**-पु० दृष्टि डालनेकी क्रिया, अवलोकन। **-गत**-वि० जो देखनेमें आया हो, जो देख पड़ा हो। **-गोचर**-वि० जिसका चाक्षुप प्रत्यक्ष हो सके, जो देखा जाय, दिखाई पड़नेवाला। **-दोष**-पु० नजरका बुरा असर; देखनेमें त्रुटि होना। **-पथ**-पु० नेत्रव्यापारका क्षेत्र। **-पात**-पु० दे० 'दृष्टिक्षेप'। **-बंध**-पु० नजरबंदी। **-भ्रम**-पु० (हेलूसिनेशन) ऐसी किसी वस्तुका आभास होना जिसका वस्तुतः कोई बाह्य अस्तित्व न हो, आधारहीन या अस्तित्वहीन वस्तु देखने-समझनेका धोखा, भ्रांति। **-मांद्य**-पु० आँखोंसे कम दिखाई देना। **-रोध**-पु० देखनेकी क्रियाका रुकना या रोका जाना; देखनेके काममें होनेवाली रुकावट। **-विक्षेप**-पु० तिरछी चितवन, कटाक्ष; दृष्टिपात। **-विभ्रम**-पु० प्रेमभरी चितवन, नेत्रविलास। **मु०-फिरना**-दे० 'आँखें फिर जाना'। **-फेरना**-दे० 'आँख फेरना'। **-बचाना**-दे० 'आँख बचाना'। **-बिछाना**-दे० 'आँख बिछाना'। **-भर देखना**-तृप्तिपर्यंत देखना, जी भरकर देखना। **-मारी जाना**-अंधा होना, नेत्रहीन होना। **-मिलाना**-देखा-देखी करना। **-में समाना**-दे० 'आँखोंमें समाना'। **(किसीपर)-रखना**-निगरानी करना, देखरेखमें रखना, देख-भाल करना। **-लगाना**-एकटक देखना; नेह जोड़ना, प्रीति लगाना।

दृष्टिवंत-वि० ज्ञानवान्, बुद्धिमान्; दीठवाला।

दे*-स्त्री० देवीका लघुरूप।

देई*-स्त्री० दे० 'देवी'।

देउरा†-पु० दे० 'देवर'।

देउरानी†-स्त्री० दे० 'देवरानी'।

देख-भाल, देख-रेख-स्त्री० निगरानी, निरीक्षण; संरक्षण।

देखनहारा-पु० देखनेवाला, दर्शक।

देखना-स० क्रि० नेत्रों द्वारा किसीका ज्ञान प्राप्त करना; तलाश करना, खोजना; परीक्षा करना, परखना; निगरानी करना या रखना; सम्हालना; प्रबंध करना; सोचना-समझना; निरीक्षण करना; अनुभव करना, भोगना; पढ़ना,

बाँचना; संशोधन करना; प्रतीकार करना; निवटना; किसी ओर दृष्टि फेरना, ध्यान देना।

देखनि*–स्त्री० देखनेकी क्रिया या भाव।

देखराना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

देखरावना*–स० क्रि० दे० दिखलाना'।

देखाऊ–वि० जो केवल देखनेभरको हो, नकली, बनावटी।

देखादेखी–स्त्री० एक दूसरेको देखनेकी क्रिया, साक्षात्कार। अ० (किसीको) करते देखकर, अनुकरणके रूपमें।

देखाना*–स० क्रि० दे० 'दिखाना'।

देखाव–पु० दिखलानेका भाव या ढंग; सज-धज, तड़क-भड़क, बनाव-सिंगार।

देखावट–स्त्री० दे० 'देखाव'।

देखावना–स० क्रि० दे० 'दिखाना'।

देखौआ–वि० दे० 'देखाऊ'।

देग़–पु० [फा०] खाना पकानेका ताँबेका बड़ा बरतन। **–चा**–पु० छोटा देग। **–ची**–स्त्री० छोटा देगचा।

देदीप्यमान–वि० [सं०] चमकता हुआ, जाज्वल्यमान।

देन–स्त्री० देनेकी क्रिया या भाव; दी हुई वस्तु। पु० [अ०] कर्ज़। **–दार**–वि० कर्जदार, ऋणी; आभारी। **–लेन**–पु० सूदपर रुपया देनेका व्यवहार, महाजनीका व्यवसाय। **–हार,–हारा***–वि० देनेवाला।

देना–स० क्रि० किसी वस्तुपरसे अपना स्वामित्व हटाकर दूसरेको उसका स्वामी बनाना, प्रदान करना; समर्पित करना; सौंपना; मिलाना, डालना; खींचना; लगाना; रखना; मारना, रसीद करना; पैदा करना, जनना; हवाले करना, थमाना; अनुभव कराना; पहुँचाना। (यह क्रिया अन्य क्रियाओंके साथ प्रायः संयोजिका क्रियाके रूपमें प्रयुक्त होती है।) पु० कर्ज, ऋण।

देमान*–पु० दे० 'दीवान'।

देय–वि० [सं०] देने योग्य, दातव्य। पु० देना, ऋण।

देयादेय-फलक–पु० [सं०] (बैलेंस-शीट) किसी व्यापारिक संस्था आदिका, समय-समयपर तैयार किया जानेवाला, समस्त देयों और आदेयों (पावनों तथा संपत्ति) का संक्षिप्त लेखा जिससे उसकी आर्थिक स्थितिका पता चले, चिट्ठा।

देयासिनि*–स्त्री० झाड़-फूक करनेवाली (विद्यापति)।

देर–स्त्री० [फा०] उचितसे अधिक समय, विलंब, कालातिपात; समय, वक्त।

देरानी*–स्त्री० देवरानी।

देरी†–स्त्री० दे० 'देर'।

देव–पु० [फा०] दैत्य, दानव; भीमकाय मनुष्य; [सं०] स्वर्गमें विचरण करनेवाला दिव्य शक्ति-संपन्न अमर प्राणी, देवता; परमात्मा; इंद्र; मेघ; राजा; भव्य शरीरवाला व्यक्ति; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; पूज्य व्यक्तियों तथा राजाओंके लिए आदरसूचक संबोधन; * देवर–'देव जेठ सब संगिहु मानौ'–राम०। **–ऋण**–पु० एक प्रकारका शास्त्रोक्त ऋण जिससे मुक्त होनेके लिए देवताओंके निमित्त यज्ञ, उपवास, व्रत आदि करना विहित है। **–ऋषि**–पु० नारद आदि देवकल्प ऋषि। **–कन्यका, –कन्या**–स्त्री० देवताकी पुत्री; (ला०) अत्यंत रूपवती तरुणी। **–कर्म(न्),–कार्य**–पु० देवताओंकी तुष्टिके लिए किये जानेवाले हवन-पूजनादि कृत्य; देवाभिलषित कार्य। **–काष्ठ**–पु० देवदारु। **–गणिका**–स्त्री० अप्सरा। **–गति**–स्त्री० ऐसी सद्गति जिसे प्राप्त कर मृत व्यक्ति देवरूप हो जाता है। **–गन***–पु० देवताओंका समूह। **–गिरा**–स्त्री० देववाणी, संस्कृत। **–गिरि**–पु० एक पर्वत; दक्षिण भारतका एक प्राचीन नगर (दौलताबाद)। **–गुरु**–पु० कश्यप; बृहस्पति। **–चर्या**–स्त्री० देवताका पूजन-अर्चन। **–चिकित्सक**–पु० अश्विनीकुमार; दोकी संख्या। **–ठान***–पु० दे० 'देवोत्थान'। **–तरु**–पु० देववृक्ष–इनके नाम हैं–मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन; पीपल। **–तर्पण**–पु० देवताओंको जल देनेकी क्रिया। **–त्रयी**–स्त्री० तीन देवताओंका–ब्रह्मा, विष्णु और महेशका–समूह। **–दत्त**–पु० अर्जुनके शंखका नाम; गौतम बुद्धका चचेरा भाई (यह उनका द्रोही था)। वि० देवताको समर्पित; देवताका दिया हुआ। **–दर्शन**–पु० देवताका दर्शन; एक ऋषि, नारद। **–दार***–पु० देवदारु। **–दारु**–पु० एक प्रसिद्ध पहाड़ी पेड़ जिसकी लकड़ी कड़ी, हल्की और पीले रंगकी होती है। **–दास**–पु० देवालयमें काम करनेवाला नौकर। **–दासी**–स्त्री० नाच-गाकर देवता या देवालयकी सेवा करनेवाली स्त्री, देवमंदिरकी नर्तकी; वेश्या। **–दीप**–पु० देवताके निमित्त जलाया जानेवाला दीप; नेत्र, लोचन। **–दूत**–पु० देवता या ईश्वरका दूत, पैगंबर; फरिश्ता। **–द्रुम**–पु० दे० 'देवतरु'। **–धानी**–स्त्री० इंद्रपुरी। **–धाम**–पु० तीर्थस्थान। **–धुनी**–स्त्री० गंगा; कोई पवित्र नदी। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–नदी**–स्त्री० गंगा; पुण्यतोया नदी। **–नागरी**–स्त्री० एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं। **–नायक**–पु० इंद्र। **–पति**–पु० इंद्र। **–पथ**–पु० छायापथ, आकाश। **–पालित**–वि० देवता द्वारा रक्षित। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० इंद्रकी नगरी, अमरावती। **–बधू**–स्त्री० देवांगना; अप्सरा। **–भाग**–पु० यज्ञादिमें देवविशेषको दिया जानेवाला भाग; संपत्तिका वह भाग जो देवकार्यके लिए अलग कर दिया गया हो। **–भाषा**–स्त्री० संस्कृत। **–भिषक्(ज्)**–पु० अश्विनीकुमार। **–भू,–भूमि**–स्त्री० स्वर्ग। **–भोज्य**–पु० अमृत। **–मणि**–पु० कौस्तुभ मणि; सूर्य। **–माता**–स्त्री० देवताओंकी माता, अदिति। **–मान**–पु० काल गणनाका वह मान जो देवताओंके संबंधमें काममें लाया जाता है–जैसे मनुष्यका एक सौर वर्ष देवताओंके एक दिनके बराबर होता है। **–मास**–पु० गर्भका आठवाँ महीना; देवताओंका महीना जो तीस सौर वर्षके बराबर होता है। **–यज्ञ**–पु० वह हवन जो गृहस्थोंके पाँच नैत्यिक यज्ञोंमेंसे एक है। **–यानी**–स्त्री० शुक्राचार्यकी कन्या जो कचके शापवश ययातिको ब्याही गयी थी। **–युग**–पु० सत्ययुग। **–योनि**–स्त्री० देवता-जाति; देवताओंकी कोटिमें गिने जानेवाले विद्याधर, अप्सरा आदि दस उपदेव। **–राज**–पु० इंद्र; राजा; बुद्ध। **–रानी***–स्त्री० इंद्राणी; दे० क्रममें। **–राय***–पु० इंद्र। **–रिपु**–पु० असुर। **–लोक**–पु० देवताओंका लोक, स्वर्ग; भूः; भुवः आदि:

सात लोक। **-वक्त्र**-पु० अग्नि (जो देवताओंके लिए मुँहके तुल्य है)। **-वधू**-स्त्री० देवताकी स्त्री, देवी; अप्सरा। **-वर्त्म(र्त्मन्)**-पु० आकाश। **-वाणी**-स्त्री० संस्कृत भाषा; (ओरेकिल) किसी देवी, देवताके मुँहसे निकली समझी जानेवाली बात, आकाशवाणी। **-वाहन**-पु० अग्नि (जो देवताओंके पास हव्य पहुँचाती है)। **-वृक्ष**-पु० दे० 'देवतरु'। **-व्रत**-पु०भीष्मपितामह। **-शत्रु**-पु०दैत्य। **-शिल्पी(ल्पिन्)**-पु० विश्वकर्मा। **-शुनी**-स्त्री० देवताके समान प्रभाववाली सरमा नामकी कुतिया। **-सदन**-पु० स्वर्ग; पीपलका पेड़; मंदिर। **-सरि,-सरित्**-स्त्री० दे० 'देवनदी'। **-सेना**-स्त्री० देवताओंकी सेना; देवसेनापति स्कंदकी पत्नी। **-सेनापति,-सेनाप्रिय**-पु० स्कंद; पीला भँगरा। **-स्थान**-पु० स्वर्ग; मंदिर। **-स्व**-पु० देवार्पित संपत्ति।

देवकी-स्त्री० [सं०] वसुदेवकी पत्नी और कृष्णकी माता। **-नंदन,-पुत्र,-सूनु**-पु० कृष्ण।

देवता-पु० [सं०] स्वर्गमें वास करनेवाला दिव्य शक्तिसंपन्न अमर प्राणी; देवप्रतिमा। **-गृह**-पु० देवालय।

देवढ़ी†-स्त्री० ड्योढ़ी; चौखट।

देवर-पु० [सं०] पतिका अनुज; पतिका भाई (जेठा या छोटा)।

देवरा*-पु० साधारण देवता।

देवरानी-स्त्री० देवरकी पत्नी।

देवर्षि-पु० [सं०] दे० 'देवऋषि'।

देवल-पु० देवालय, मंदिर; [सं०] देवपूजाकी आयसे जीविका चलानेवाला ब्राह्मण; देवर; धार्मिक व्यक्ति।

देवांगना-स्त्री० [सं०] अप्सरा; देवताकी स्त्री।

देवांश-पु०[सं०] देवताका भाग; परमेश्वरका अंशावतार।

देवागार-पु० [सं०] मंदिर, देवस्थान; स्वर्ग।

देवाजीव, देवाजीवी (विन्)-पु० [सं०] पुजारी।

देवाधिदेव-पु० [सं०] विष्णु; शिव।

देवाधिप-पु० [सं०] परमेश्वर; इंद्र।

देवान-पु० दीवान, मंत्री; राज-दरबार।

देवानांप्रिय-पु० [सं०] अशोककी उपाधि; बकरा। वि० देवप्रिय; मूर्ख।

देवाना*-वि० पागल।

देवानीक-पु० [सं०] देवसेना।

देवानुग-पु० [सं०] देवताओंके पीछे-पीछे चलनेवाले विद्याधर, यक्ष आदि दस उपदेव; देवताका सेवक।

देवानुचर-पु० [सं०] दे० 'देवानुग'।

देवान्न-पु० [सं०] अमृत; चरु।

देवायतन-पु० [सं०] दे० 'देवागार'।

देवारण्य-पु० [सं०] देवताओंका उपवन, नंदनवन।

देवाराधन-पु० [सं०] देवताको प्रसन्न करनेके लिए किया जानेवाला पूजा-पाठ आदि।

देवारि-पु० [सं०] असुर, दैत्य।

देवारी, देवाली†-स्त्री० दीपावली।

देवार्चन-पु०, **देवार्चना**-स्त्री० [सं०] देवताका पूजन।

देवार्पण-पु०[सं०] देवताके निमित्त किसी वस्तुका उत्सर्ग।

देवाल-पु० देनेवाला; (ला०) बेचनेवाला। † स्त्री० दीवार।

देवालय-पु० [सं०] देवागार, देवस्थान, मंदिर।

देवाला-पु० दे० 'दिवाला'।

देवा-लेई†-स्त्री० लेन-देन।

देवी-स्त्री० [सं०] देवताकी पत्नी; आद्या शक्ति, दुर्गा; सरस्वती; सावित्री; द्विजोंकी विवाहिता स्त्रियोंकी एक उपाधि; राजमहिषी, पटरानी; (ला०) सुशीलता, सदाचार आदिसे युक्त स्त्री।

देवेंद्र-पु० [सं०] देवताओंके अधिपति इंद्र।

देवै*-स्त्री० देवकी।

देवैया†-वि० देनेवाला।

देवोत्तर-पु०[सं०] देवताके लिए अलग की हुई जायदाद।

देवोत्थान-पु०[सं०] विष्णुका कार्त्तिक-शुक्ला एकादशीको शेषकी शय्यासे सोकर उठना।

देवोद्यान-पु० [सं०] देवताओंके उद्यान-नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र।

देश-पु० [सं०] स्थान; मुल्क; क्षेत्र; विभाग। **-ज**-वि० देशमें उत्पन्न; जो बोल-चालकी भाषासे स्वतः उत्पन्न हो गया हो (वह शब्द)। **-धर्म**-पु० देशके अनुरूप धर्म, देशविशेषके लिए उचित धर्म; देशविशेषमें प्रचलित आचार-विचार। **-निकाला**-पु० [हिं०] निर्वासनका दंड। **-भक्त**-पु० देशका हित एवं उन्नति चाहनेवाला, देशानुरागी व्यक्ति। **-भक्ति**-स्त्री० देशहितकी कामना, देशप्रेम। **-रक्षक सेना**-स्त्री० (मिलीशिया) दे० 'जानपद सैन्य'।

देशांतर-पु० [सं०] दूसरा देश, विदेश; उत्तर और दक्षिण ध्रुवको मिलानेवाली रेखासे पूर्व या पश्चिमकी दूरी। **-गमन**-पु० (ट्रांसमाइग्रेशन) बीचके देश या समुद्रादि लाँघकर अन्य देशमें चले जाना।

देशाचार-पु० [सं०] देशविदेशमें प्रचलित रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार।

देशाटन-पु० [सं०] भिन्न-भिन्न देशोंमें भ्रमण, पर्यटन।

देशी-वि० स्वदेशमें उत्पन्न या बना हुआ; अपने देशका; स्वदेश-संबंधी; देशका।

देशीय-वि० [सं०] 'देशी'।

देस-पु० 'देश'। **-निकाला**-पु० दे० 'देशनिकाला'। **-वाल**-वि० अपने देशका, स्वदेशी।

देसावर-पु० विदेश, परदेश।

देसावरी-वि० देसावरका, विदेशी।

देसी-वि० दे० 'देशी'।

देहंभर-वि०,पु०[सं०] शरीरमात्रका पोषण करनेवाला; पेटू।

देह-स्त्री० [सं०] शरीर, तन; जीवन, जिंदगी। **-ज**-पु० पुत्र। **-जा**-स्त्री० पुत्री। **-त्याग**-पु० मृत्यु। **-धारक**-पु० अस्थि, हड्डी; शरीर। **-धारण**-पु० शरीर धारण करना, जन्म लेना; प्राणरक्षा। **-धारी(रिन्)**-पु० वह जिसने शरीर धारण किया हो, शरीरी, प्राणी। **-पात**-पु० देहांत, मृत्यु। **-भृत्**-पु० दे० 'देहधारी'। **-यात्रा**-स्त्री० जीवका शरीर छोड़कर दूसरे लोकमें जाना; शरीरत्याग; जीवन-यापन; भोजन। **-लक्षण**-पु० शरीरपरका काला दाग, तिल। **-सार**-पु० मज्जा। मु० **-छूटना**-मृत्यु होना। **-छोड़ना**-मरना। **-धरना**-

शरीर धारण करना। **–बिसरना**–सुध-बुध खो देना, अपनेको भूल जाना।

देह–पु० [अ०] गाँव। **–क़ान**–पु० ग्रामवासी; किसान; गँवार। **–क़ानियत**–स्त्री० गँवारपन; देहातीपन।

देहरा–पु० देवालय, मंदिर; * मनुष्यशरीर।

देहरि, देहरी*–स्त्री० दे० देहली'।

देहलि,देहली–स्त्री०[सं०] दरवाजेकी चौखटमेंकी नीचेवाली लकड़ी जिसे लाँघकर घरमें घुसते-निकलते हैं। **–दीप,–दीपक**–पु० देहलीपर रखा हुआ दीया (जो बाहर-भीतर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है); अर्थालंकारका एक भेद। **दीपक न्याय**–पु० एक तर्कप्रणाली जिसके अनुसार किसी वस्तुसे दो कार्य एक साथ उसी प्रकार सिद्ध हो सकते हैं जिस प्रकार देहलीपर रखे दीपकसे बाहर-भीतर दोनों ओर उजाला हो जाता है।

देहवंत*–वि० शरीरवाला। पु० देहधारी।

देहांत–पु० [सं०] मृत्यु, मरण।

देहांतर–पु० [सं०] दूसरा शरीर। **–प्रवेश**–पु०,**–प्राप्ति**–स्त्री० (ट्रांसमाइग्रेशन) (आत्माका) एक देह या योनि त्यागकर दूसरी देह या योनि धारण कर लेना।

देहात–पु० गाँव, गँवई।

देहाती–पु० ग्रामवासी, ग्रामीण। वि० गाँवका; गाँवसंबंधी; गाँवमें होनेवाला; गँवार।**–पन**–पु० देहाती होनेका भाव।

देहात्मवाद–पु० [सं०] एक दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार देह ही आत्मा है, देहसे भिन्न आत्मा नामका कोई पदार्थ नहीं।

देहात्मवादी(दिन्)–पु० [सं०] देहात्मवादको माननेवाला, चार्वाक मतका पोषक।

देहाध्यास–पु० [सं०] देहको आत्मा या देहधर्मको आत्माका धर्म समझनेका भ्रम।

देहावरण–पु० [सं०] जिरह; वस्त्र।

देहावसान–पु० [सं०] देहांत, मृत्यु।

देहियाँ, देही*–स्त्री० शरीर।

देही(हिन्)–पु० [सं०] देहधारी जीव, शरीरी।

दैउ*–पु०–आकाश; दैव।

दैत्य–पु० [सं०] कश्यपके वे क्रूरकर्मा पुत्र जो उनकी पत्नी दितिके गर्भसे उत्पन्न हुए; भीमकाय और अत्यंत बलशाली मनुष्य। **–गुरु**–पु० शुक्राचार्य। **–पुरोधा(धस्),–पूज्य**–पु० शुक्राचार्य। **–माता(तृ)**–स्त्री० दिति।

दैत्यारि–पु० [सं०] विष्णु; देवता।

दैत्येंद्र–पु० [सं०] दैत्योंका राजा।

दैनंदिन–अ० [सं०] दिनोंदिन; प्रतिदिन। वि० प्रतिदिन होनेवाला, नित्यका।

दैनंदिनी–वि० स्त्री० [सं०] दे० 'दैनंदिन'। स्त्री० रोजनामचा, डायरी।

दैन–पु० [सं०] दीनता; शोक; निर्बलता। वि० दिन्-संबंधी; *देनेवाला। *स्त्री० देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु।

दैनिक–वि० [सं०] प्रतिदिनका; प्रतिदिन होने या निकलनेवाला; दिन-संबंधी। **–पंजी**–स्त्री० (जर्नल) दैनिक घटनाओं (या लेन-धन, क्रय-विक्रय) आदिका विवरण लिखनेकी बही, दैनंदिनी, डायरी।

दैनिकी–स्त्री० [सं०] (डेली रिपोर्ट) दिन-प्रतिदिन होनेवाली या प्रत्येक दिनकी घटनाओंका विवरण; (डायरी) 'दैनंदिनी'।

दैन्य–पु० [सं०] दीनता, दरिद्रता; कातरता; एक संचारी भाव।

दैयत*–पु० दे० 'दैत्य'।

दैया†–पु० दैव, दई। स्त्री० दाई; मा। अ० एक आश्चर्य या शोकसूचक शब्द।

दैर्घ, दैर्घ्य–पु० [सं०] दीर्घता, लंबाई, विस्तार।

दैव–पु० [सं०] पूर्व जन्ममें उपार्जित कर्म जिसका शुभाशुभ फल वर्तमान जन्ममें भोगते हैं, भाग्य, नियति, अदृष्ट; देवता; ईश्वर; विधाता; आकाश; आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक। वि० देवता-संबंधी; देवताका; देवता द्वारा प्रेरित। **–गति**–स्त्री० ईश्वरीय प्रेरणा; भाग्यका फेर। **–ज्ञ**–पु० ज्योतिषी। **–दुर्विपाक**–पु० विधिकी प्रतिकूलता, भाग्यका बुरा फेर, दुर्भाग्य। **–पर**–वि० जो भाग्यकी दुहाई दे; जो भाग्यके भरोसे बैठा रहे, नियतिवादी। **–योग**–पु० संयोग, इत्तिफ़ाक। **–वर्ष**–पु० देवताओंका वर्ष जो १३१५२१ सौर दिनोंका होता है। **–वश,–वशात्**–अ० संयोगसे, अकस्मात्। **–वाणी**–स्त्री० आकाशवाणी; संस्कृत भाषा। **–वादी (दिन्)**–वि० दे० 'दैवपर'। **–विद्**–पु० ज्योतिषी। **–विवाह**–पु० वह विवाह जिसमें कन्या यज्ञ करानेवाले ऋत्विकको ब्याह दी जाय।

दैवागत–वि० [सं०] आकस्मिक, जो दैवयोगसे हुआ हो।

दैवात्–अ० [सं०] संयोगवश, दैवयोगसे।

दैविक–वि० [सं०] देवता-संबंधी; देवताके निमित्त किया हुआ; देवकृत।

दैवी(विन्)–पु० [सं०] ज्योतिषी।

दैवी–वि० दैवीय, देवता-संबंधी; ईश्वरदत्त; संयोगसे होनेवाला।

दैवोपहत–वि० [सं०] अभागा, मंदभाग्य।

दैशिक–वि० [सं०] देश-संबंधी; देश-जनित।

दैहिक–वि० [सं०] देह-संबंधी, शारीरिक; देह-जनित।

दौंचना*–स० क्रि० दबाना; दबावमें डालना।

दो–वि० एक और एक, एकसे एक अधिक; कुछ। पु० दोकी संख्या, २। **–अमली**–स्त्री० एक स्थानपर दो राजाओंका शासन, द्वैध शासन। **–आब,–आबा**–पु० दो नदियोंके बीचका भूखंड। **–एक**–वि० कुछ, थोड़े, संख्यामें कम। **–ग़ला**–वि० वर्णसंकर।**–गाना**–पु० (डूएट) वह गाना जिसका कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा और कुछ अन्य व्यक्ति द्वारा क्रम-क्रमसे गाया या बजाया जाय। **–गुना**–वि० दे० 'दुगना'।**–चंद**–वि० दुगना। **–चार**–अ० दे० 'दो-एक'। **–चित्ता**–वि० जिसका ध्यान इधर-उधर बँटा हो। **–जीवा**–स्त्री० गर्भिणी। **–टूक**–वि० खरा, साफ़-साफ़। **–तरफ़ा**–वि० दोनों ओरका; दोनों पक्षोंके अनुकूल। **–तला,–तल्ला**–वि० दो तल्लोंवाला, दो मंजिला। **–तारा**–पु० एक तरहका दुशाला; दो तारोंवाला एक बाजा। **–दस्ती**–स्त्री० तलवारका दोहत्था वार; कुश्तीका एक पेंच। वि० दोनों

हाथोंका; दोनों हाथोंसे किया हुआ (वार)। **–धारा**–वि० जिसमें दोनों ओर धार हो। **–नली**–वि० स्त्री० जिसमें दो नालें हों। **–पलिया,–पल्ली**†–वि० स्त्री, जिसमें दो पल्ले हों। **–पहर**–पु०, स्त्री०**–पहरी**†–स्त्री० दिनका वह समय जब सूर्य सिरपर आ जाता है, मध्याह्न। **–पीठा**–पु० कागज आदिका एक ओर छपनेके बाद दूसरी ओर छपना; वि० दूसरी ओर भी छपा हुआ। **–फसली**–वि० जिसमें दो फसलें उपजायी जायँ। **–बारा**–अ० एक बार और। **–मंजिला**–वि० दो तल्लोंवाला। **–मट**–स्त्री० बालू मिली हुई मिट्टी। **–मुँहा**–वि० जिसके दो मुँह हों। **–मुँहा साँप**–पु० एक साँप जिसकी दुम मोटी होनेके कारण दूसरे मुँहकीसी जान पड़ती है; वह मनुष्य जो दो तरहकी बातें करे, कपटी मनुष्य। **–रंगा**–वि० दे० 'दुरंगा'। **–रसा**–वि० जिसमें दो प्रकारके रस हों। **–रुखा**–वि० कभी एक तरहका, कभी दूसरी तरहका (व्यवहारादि); दोनों तरफ समान रंग या बेलबूटेवाला। **–हत्थड़**–पु० दोनों हाथोंसे मारा हुआ थप्पड़। मु०–**आँखों देखना**–समान दृष्टिसे न देखना। **–दिनका**–हालका; बहुत कम उम्रका। **–नावोंपर चढ़ना या पैर रखना**–दो पक्षोंका अवलंबन करना; दो वस्तुओंका सहारा लेना। **–सिर होना**–मरनेको तैयार होना, मौतको न्यौता देना।

दोउ, दोऊ–वि० दोनों।

दोख*–पु० दे० 'दोष'।

दोखना*–स० क्रि० दोषारोपण करना, दोषी ठहराना।

दोखी*–पु० दे० 'दोषी'।

दोगा–पु० एक तरहका छपा हुआ लिहाफ; पानीमें घोला हुआ चूना।

दोग्धा(ग्धृ)–पु०[सं०] दुहनेवाला, ग्वाला; बछड़ा; चारण।

दोच*–स्त्री० संकट, क्लेश; असमंजस, पसोपेश; दबाव।

दोचन*–स्त्री० दोच; दबाव डालना; दबावमें पड़ना।

दोचना–स० क्रि दबाव डालना।

दोज*–स्त्री० दूज, द्वितीया तिथि।

दोज़ख़–पु० [फा०] इस्लाम धर्मके अनुसार वह स्थान जहाँ कयामतके बाद पापी जायेंगे, जहन्नुम, नरक।

दोज़खी–वि० [फा०] दोजख-संबंधी; दोजखका, नारकीय; दोजखमें भेजने योग्य (पापी); बहुत बड़ा (पापी)।

दोजग*–पु० दे० 'दोज़ख़'।

दोदना†–स० क्रि० किसीके सामने कही हुई बातसे मुकरना।

दोन–पु० दोआबा; दो पहाड़ोंके बीचका भूभाग; दो नदियोंका संगम; दो वस्तुओंका मेल।

दोना–पु० पत्तोंका बना हुआ कटोरेकी शकलका पात्र; दौना।

दोनिया, दोनी–स्त्री० छोटा दोना।

दोनों–वि० पूर्वकथित या ऐसे दो जिनमेंसे एक भी छोड़ा न जाय, उभय।

दोबल*–पु० दोष, लांछन–'दोबल देत सबै मोहीको उन पठयो मैं आयो'–सू०।

दोबा*–पु० दुबिधा, दो स्थितियोंके बीचकी अवस्था।

दोया†*–वि० दोनों।

दोयम–वि० [फा०] दूसरे दर्जेका, दूसरे नंबरका।

दोल–पु० [सं०] झूला, झूलना; दोलोत्सव; चंडोल, डोली।

दोलन–पु० [सं०] झूलना।

दोला–स्त्री०[सं०] झूला, हिंडोला; अनिश्चय; बड़ी डोली। **–यंत्र**–पु० झूला; अर्क उतारनेका भभका।

दोलायमान–वि० [सं०] झूलता हुआ; अस्थिर, ढुलमुल।

दोलायित, दोलित–वि० [सं०] झूलता हुआ; अस्थिर।

दोलोत्सव–पु० [सं०] फाल्गुनकी पूर्णिमाको पड़नेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें हिंडोलेपर कृष्णकी प्रतिमाको झुलाते हैं।

दोष–पु० [सं०] अपराध, कसूर; अवगुण, ऐब; विकार, खराबी; लांछन; पाप, कलुष; त्रुटि; अशुद्धि; बछड़ा; गोधूलि; किसी बातका खंडन; रसको अपकृष्ट बनानेवाली एक काव्यगत त्रुटि; शरीरमें रहनेवाले वात, पित्त और कफ जिनके कोपसे शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है; इन दोषोंसे उत्पन्न विकार; राग-द्वेषादि जो मनुष्यको सुकर्म या दुष्कर्ममें प्रवृत्त करते हैं। **–कर,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि० बुराई करनेवाला, अनिष्टकर। **–घ्न**–पु० वात, पित्त और कफके दोषोंको शांत करनेवाली दवा। **–ज्ञ**–वि० विद्वान्, मनीषी। **–त्रय**–पु० वात, पित्त और कफ–ये तीन दोष। **–पत्र**–पु० वह कागज जिसपर अपराधीके अपराधोंका ब्यौरा लिखा हो। **–प्रमाणित**–वि० (कॉनविक्टेड) जिसका अपराध न्यायालयमें प्रमाणित हो गया हो, दे० 'अभिशंसित'। **–वेचक**–पु० (सेंसर) वह सरकारी कर्मचारी जो पत्र, पुस्तक, फिल्म आदिका तथा सेना-संबंधी सूचनाओंका परीक्षण कर आपत्तिजनक अंश निकाल देता है। **–वेचन**–पु० (सेंसरशिप) पत्र पुस्तकादिसे उत्तेजक या आपत्तिजनक अंशोंका, निरीक्षणके बाद, हटा दिया जाना। **–सिद्ध**–वि० (कॉनविक्टेड) जिसका दोष या अपराध प्रमाणित हो गया हो, दोषप्रमाणित, अभिशंसित। **–सिद्धि**–स्त्री० (कॉनविक्शन) दोष या अपराधका प्रमाणित हो जाना।

दोषन*–पु० दोष, अपराध, दूषण।

दोषना*–स० क्रि० दोष लगाना, ऐब लगाना।

दोषा–स्त्री० [सं०] रात्रि; भुजा। **–कर**–पु० चंद्रमा।

दोषाकर–पु० [सं०] दोषोंका समूह। वि० जो दोषोंसे युक्त हो।

दोषारोपण–पु० [सं०] दोष लगाना।

दोषावह–वि० [सं०] दोषपूर्ण, दोषोंसे भरा हुआ।

दोषित*–वि० दोषयुक्त।

दोषी (षिन्)–पु०[सं०] अपराधी, अभियुक्त; ऐबी; पापी।

दोस–* पु० दोष; † मित्र।

दोसा*–स्त्री० दे० 'दोषा'।

दोस्त–पु० [फा०] मित्र, सुहृद्। **–नवाज़**–पु० मित्रोंके प्रति सहानुभूति रखनेवाला।

दोस्ताना–वि० [फा०] दोस्तीका; मित्रोचित। पु० मित्रता; मित्रताका व्यवहार।

दोस्ती–स्त्री० [फा०] मित्रता, सौहार्द; † दो लोइयाँ एक साथ बेलकर तवापर सेंकी हुई रोटी।

दोह–*पु० दे० 'द्रोह'; [सं०] दुहनेकी क्रिया, दोहन।

दोहगा†–स्त्री० दुर्भगा; वह विधवा जिसे किसी दूसरेने रख

लिया हो, उपपत्नी।

दोहता†—पु० लड़कीका लड़का, नाती।

दोहद—पु० [सं०] गर्भ; लालसा; गर्भिणीकी इच्छा; कवि-समयके अनुसार रमणियोंके स्पर्श, पदाघात, दृष्टिपात आदि जिनसे प्रियंगु, अशोक, तिलक आदि वृक्षोंमें फूल लगते हैं।

दोहदवती—स्त्री० [सं०] वह गर्भिणी जिसे किसी वस्तुकी इच्छा हो।

दोहन—पु० [सं०] दुहनेका काम; दुग्धपात्र; (ला०) चूसना।

दोहनी—स्त्री० [सं०] दूध दुहनेका पात्र; दुहनेकी क्रिया।

दोहर†—स्त्री० एक तरहकी दोहरी चादर जिसमें मगजी लगायी जाती है।

दोहरना—अ० क्रि० दो परत होना, दोहरा होना; दुबारा होना। स० क्रि० दोहरा करना।

दोहरा—वि० दो परतोंका; दुगना। पु० दोहा।

दोहराना—स० क्रि० किसी बातको बार-बार कहना; पुनरावृत्ति करना; अशुद्धि दूर करनेके लिए एक बार और देख जाना; * दोहरा करना।

दोहरी—वि० स्त्री० दो तह की हुई; दो परतोंकी; दुगनी। **—बात**—स्त्री० दो तरहकी बात।

दोहल—पु० [सं०] इच्छा; गर्भिणीकी इच्छा, दोहद।

दोहा—पु० एक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरणमें १३-१३ तथा द्वितीय, चतुर्थ चरणमें ११-११ मात्राएँ होती हैं।

दोहाई—स्त्री० गुहार, पुकार; * कविता।

दोहाग*—पु० दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

दोहित—*पु० दौहित्र, लड़कीका लड़का। वि० [सं०] जिसे दुहा गया हो।

दौं*—अ० दे० 'धौं'। स्त्री० दे० 'दौ'।

दौंकना—अ० क्रि० दे० 'दमकना'।

दौंचना*—स० क्रि० दबाव डालकर लेना; हठ पकड़कर लेना।

दौंरी—स्त्री० दँवरी, दाँय।

दौःशील्य—पु० [सं०] बुरा स्वभाव; दुष्टता।

दौ*—स्त्री० दव, वनाग्नि; आग; संताप।

दौड़—स्त्री० दौड़नेकी क्रिया या भाव; द्रुत गमन; उड़ान; गति, पहुँच; बुद्धिकी पहुँच; सवेग आक्रमण, जोरदार हमला; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए बहुत अधिक चक्कर लगानेकी क्रिया; दौड़नेकी क्रिया; दौड़नेकी प्रतियोगिता। **—धूप**—स्त्री० बार-बार इधरसे उधर आना-जाना, जोरदार कोशिश। **मु०—मारना, लगाना**—दूर-तक जाना या पहुँचना; दूरतककी यात्रा करना।

दौड़ना—अ० क्रि० अति वेगसे चलना, ऐसी द्रुत गतिसे गमन करना कि कभी-कभी कोई भी पाँव पृथ्वीपर न जमे; बहुत तेजीसे चलना; किसी कामके लिए बार-बार इधर-उधर आना-जाना, हैरान होना; फैलना; जाना।

दौड़ा-दौड़ी—स्त्री० त्वरा, जल्दीबाजी; दौड़धूप।

दौड़ान—स्त्री० दौड़नेकी क्रिया, दौड़; दौड़नेका क्रम।

दौड़ाना—स० क्रि० दौड़नेके काममें दूसरेको लगाना।

दौत्य—पु० [सं०] दूतत्व, दूतका कार्य; संदेश।

दौन*—पु० दमन। वि० दमन करनेवाला।

दौना—पु० एक पौधा जिसकी पत्तियोंमें विशेष प्रकारकी तीव्र सुगंध होती है; * दोना; द्रोणगिरि। * स० क्रि० दमन करना, दबाना; तपाना।

दौनाचल—पु० दे० 'द्रोणगिरि'।

दौर—पु० [अ०] फेरा, चक्कर, घुमाव; समयका फेर; चढ़ाई, आक्रमण; समय, युग; उन्नतिकाल; प्रभाव; पारी। स्त्री० छापामार पुलिस; * दौड़; आक्रमण। **—दौरा**—पु० बोलबाला, चलती। **मु०—चलना**—शराबके प्यालेका बारी-बारीसे पीनेवालोंके पास पहुँचाया जाना।

दौरना*—अ० क्रि० दे० 'दौड़ना'।

दौरा—† पु० बाँस, बेत आदिका टोकरा; [अ० दौरः] चारों ओर घूमना, चक्कर; इधर-उधर आना-जाना; गश्त, जाँच-पड़ताल या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना; समय-समयपर होने या उभरनेवाली बीमारीका आक्रमण; जब-तब आना-जाना; हमला। **—जज**—पु० सत्र न्यायालयका मुख्य विचारपति। **मु०—करना**—जाँच-पड़ताल या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना। **—सिपुर्द करना**—विचार या निर्णयके लिए अभियुक्त या मुकमेको सेशन जजके यहाँ भेजना। **—सिपुर्द होना**—विचार या निर्णयके लिए अभियुक्तका सेशन जजके यहाँ भेजा जाना। **(दौरे)पर रहना या होना**—अपने हलकेके निरीक्षण आदिके लिए अफ़सरका सदरसे बाहर रहना या होना।

दौरात्म्य—पु० [सं०] दुरात्मा होनेका भाव, दुर्जनता।

दौरादौरी*—स्त्री० दे० 'दौड़ादौड़ी'।

दौरान—पु० [अ०] चक्कर, दौर; जमाना; हेरफेर; भाग्य।

दौराना*—स० क्रि० दे० 'दौड़ाना'।

दौरी†—स्त्री० छोटा दौरा, छोटी टोकरी, चँगेरी।

दौर्गंध्य—पु० [सं०] बुरी गंध, बदबू)

दौर्जन्य—पु० [सं०] दुर्जनता, दुष्टता।

दौर्बल्य—पु० [सं०] दुर्बलता।

दौर्भाग्य—पु० [सं०] भाग्यकी खोटाई, दुर्भाग्य।

दौर्मनस्य—पु० [सं०] दुर्मना होनेका भाव; बुरा स्वभाव; मानसिक कष्ट।

दौर्हार्द—पु० [सं०] दुर्हृद् होनेका भाव, शत्रुता।

दौलत—स्त्री० [अ०] धन, संपत्ति। **—खाना**—पु० वासस्थान, घर। इसका प्रयोग वार्तालापमें किसीका घर पूछते समय करते हैं। उत्तरदाता 'गरीबखाना' शब्दका प्रयोग करता है। **—मंद**—वि० धनाढ्य, मालदार।

दौलति*—स्त्री० दौलत।

दौवारिक—पु० [सं०] प्रतिहार, द्वारपाल।

दौवारिकी—स्त्री० [सं०] प्रतिहारिणी, द्वारपालिका।

दौहित्र—पु० [सं०] बेटीका बेटा, नाती; कपिला गौका घृत।

दौहित्री—स्त्री० [सं०] बेटीकी बेटी, नतिनी।

द्याना, द्यावना*—स० क्रि० दे० 'दिलाना'।

द्यु—पु० [सं०] दिन; स्वर्ग; आकाश। **—ग**—पु० पक्षी। वि० आकाशमें गमन करनेवाला। **—चर**—पु० ग्रह; पक्षी। **—निवासी(सिन्)**—पु० देवता। **—पथ**—पु० आकाश-मार्ग। **—मणि**—पु० सूर्य। **—योषित्**—स्त्री० अप्सरा। **—लोक**—पु० स्वर्ग लोक। **—सरित्**—स्त्री० स्वर्गंगा, मंदाकिनी।

द्युति—स्त्री० [सं०] शरीरकी सहज कांति, छवि; चमक।

द्युतिमान(मत्)-वि० [सं०] द्युतिवाला; प्रभायुक्त।

द्युमान्(मत्)-वि० [सं०] कांतियुक्त।

द्यूत-पु० [सं०] जुआ। **-कर**-पु० जुआ खेलनेवाला, जुआरी। **-कार,-कारक**-पु० जुएका खेल करानेवाला, सभिक; जुआरी। **-क्रीड़ा**-स्त्री० जुएका खेल। **-दास**-पु० जुएमें जीता हुआ दास। **-फलक**-पु० पासा बिछाने या खेलनेका तख्ता। **-भूमि**-स्त्री० जुआ खेलनेकी जगह। **-मंडल,-समाज**-पु० द्यूतकरोंकी मंडली। **-वृत्ति**-पु० वह जिसका जुआ खेलना पेशा हो गया हो; जुआ खेलानेवाला; स्त्री० जुएकी लत।

द्योतक-पु० [सं०] प्रकाश करनेवाला, प्रकाशक; सूचक।

द्योतन-पु० [सं०] प्रकाश; प्रकाश करना, प्रकाशन; प्रकाशक; सूचित करना; दीपक; प्रभात। वि० प्रकाशशील, चमकनेवाला।

द्योतित-वि० [सं०] प्रकाशित।

द्योतिरिंगण-पु० [सं०] खद्योत, जुगनू।

द्योस, द्यौस*-पु० दिन, दिवस।

द्योहरा*-पु० देवालय।

द्यौ-स्त्री० [सं०] स्वर्ग; आकाश।

द्रग*-पु० दृग, नेत्र।

द्रढिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] दृढता।

द्रव-पु० [सं०] तरल होना, पिघलना; तरल पदार्थ; तरल होकर बहनेकी क्रिया; क्षरण; किसी पदार्थका तरल रूपांतर; रस; आसव; पलायन; द्रवत्व नामक गुण। वि० तरल, पिघला हुआ; दौड़ता हुआ; चूता हुआ; बहता हुआ। **-रसा**-स्त्री० लाख; गोंद। **-शील**-वि० पिघलनेवाला।

द्रवण-पु० [सं०] पिघलनेकी क्रिया, तरल होना; बहना; क्षरण; रिसना; भागना; दयार्द्र होना।

द्रवणांक-पु० [सं०] (मेल्टिंग पॉइंट) तापकी वह मात्रा जिसपर कोई वस्तु पिघलने-ठोससे द्रव-रूपमें परिणत होने लगे।

द्रवना*-अ० क्रि० तरल होना; दयार्द्र होना; पिघलना; पसीजना।

द्रवीभूत-वि० [सं०] पिघला हुआ; जो द्रव हो गया हो; दयार्द्र।

द्रव्य-पु० [सं०] पदार्थ, वस्तु; वह वस्तु जो गुण और क्रिया या केवल गुणका आश्रय हो; वह मूल वस्तु जिससे दूसरी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं, उपादान, सामान, उपकरण; धन-दौलत; मद्य; लेप; विनम्रता; पण। **-वाचक**-वि० जिससे किसी द्रव्यका बोध हो।

द्रव्यमय-वि० [सं०] किसी द्रव्यका बना हुआ; धन-संपत्तिसे परिपूर्ण।

द्रव्यवान्(वत्)-वि० [सं०] द्रव्यवाला, धनी।

द्रव्यार्जन-पु० [सं०] धन कमाना, धनोपार्जन।

द्रष्टव्य-वि० [सं०] देखने या दिखाने योग्य, दर्शनीय; साक्षात्कार करने योग्य; विचारणीय; नयनाभिराम।

द्रष्टा(ष्टृ)-पु० [सं०] देखनेवाला, दर्शक; साक्षात्कार करनेवाला।

द्राक्षा-स्त्री० [सं०] दाख, अंगूर; मुनक्का। **-शर्करा**-(ग्लूकोज) अंगूरके रससे बनी हुई चीनी।

द्राघिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] दीर्घता, लंबाई।

द्राव-पु० [सं०] तरल होनेकी क्रिया, पिघलने, पसीजनेकी क्रिया; गल या पिघलकर बहनेकी क्रिया; क्षरण; दया या करुणासे आर्द्र होनेकी क्रिया; अनुताप।

द्रावक-वि० [सं०] तरल बनानेवाला, द्रवीभूत करनेवाला; गलाने, पिघलानेवाला; दया, करुणाका भाव उत्पन्न करनेवाला।

द्रावण-पु० [सं०] द्रव बनानेकी क्रिया या भाव, गलाना, पिघलाना; (सॉल्यूशन) पानी, मद्यसार आदिमें किसी स्थूल (या अन्य द्रव) पदार्थके घुल-मिल जानेसे बना हुआ पारदर्शी और समरूप (होमोजीनस) मिश्रण, घोल।

द्राविड़ी-वि० [सं०] द्रविडका; द्रविड-संबंधी। **-प्राणायाम**-पु० आसानी और सीधे तरीकेसे किये जानेवाले कामको टेढ़ा बनाकर करना।

द्रावित-वि० [सं०] द्रव किया हुआ; गलाया, पिघलाया हुआ; भगाया हुआ।

द्रुत-वि० [सं०] जो द्रव हो गया हो, द्रवीभूत, गला या पिघला हुआ; शीघ्रतायुक्त; भागा हुआ; तीव्र गतिवाला, तेज। **-गति**-वि० तीव्र गतिवाला। स्त्री० तेज चाल। **-गामी(मिन्)**-वि० तीव्र गतिसे चलनेवाला। **-विलंबित**-पु० एक वर्णवृत्त।

द्रुति-स्त्री० [सं०] द्रव होना; भागना; जाना।

द्रुतै*-अ० शीघ्रतासे।

द्रुम-पु० [सं०] वृक्ष, पेड़; पारिजात।

द्रुमारि-पु० [सं०] हाथी।

द्रुहिण-पु० [सं०] ब्रह्मा।

द्रोण-पु० [सं०] दे० 'द्रोणाचार्य'; बत्तीस सेरकी एक प्राचीन माप; लकड़ीका एक पात्र; डोमकौआ; लकड़ीका रथ; नाव; दोना। **-गिरि**-पु० एक वर्ष पर्वत। रामायणके अनुसार हनूमान् इसी पर्वतपर संजीवनी बूटी लानेके लिए भेजे गये थे।

द्रोणाचार्य-पु० [सं०] महाभारतके अनुसार प्रसिद्ध ब्राह्मण योद्धा जिन्होंने कौरवों और पांडवोंको धनुर्विद्याकी शिक्षा दी थी।

द्रोणि, द्रोणी-स्त्री० [सं०] डोंगी; पानी रखनेका केलेकी छाल आदिका बना एक प्रकारका पात्र; कठवत; टब; छोटा दोना; पर्वतोंके बीचकी भूमि; द्रोणाचार्यकी पत्नी।

द्रोन*-पु० द्रोण।

द्रोह-पु० [सं०] दूसरेका अनिष्ट चाहना; हिंसा; अपराध; वैर; विद्रोह। **-चिंतन**-पु० अनिष्ट करनेका विचार या प्रयत्न करना। **-बुद्धि**-वि० बुराई करनेपर तुला हुआ। स्त्री० बुराई करनेकी नीयत।

द्रोही(हिन्)-वि० [सं०] द्रोह करनेवाला, अहितचिंतन करनेवाला; विद्रोह करनेवाला। पु० वह व्यक्ति जो द्रोह करे।

द्रौपदी-स्त्री० [सं०] पांडवोंकी पत्नी, पांचाली।

द्रौपदेय-पु० [सं०] द्रौपदीका पुत्र।

द्वंद-पु० [सं०] घंटा बजानेका घड़ियाल; युग्म, जोड़ा; दे० 'द्वंद्व'। * स्त्री० दुंदुभी।

द्वंदर*–वि० झगड़ा करनेवाला; उलझनेवाला। पु० संसार।

द्वंद्व–पु० [सं०] युगल, युग्म, जोड़ा; दो व्यक्तियोंका परस्पर युद्ध; कलह, संघर्ष, झगड़ा; स्त्री-पुरुषका, नर-मादाका जोड़ा, मिथुन; समासका एक भेद (व्या०)। **–चर**–पु० चकवा। वि० युग्मरूपमें चलनेवाला; जो सदा अपनी मादाके साथ रहे। **–चारी (रिन्)**–पु० चकवा। **–युद्ध**–पु० दो व्यक्तियोंका पारस्परिक युद्ध।

द्वय–वि० [सं०] दो। पुं० युग्म, जोड़ा (समासांतमें)।

द्वा–वि० [सं०] 'द्वि'का समासगत रूप। **–दश**–वि० बारह; बारहवाँ। **–दशी**–स्त्री० पक्षकी बारहवीं तिथि। **–दस**–वि० [हिं०] दे० 'द्वादश'। **–दस-बानी**–स्त्री० दे० 'बारहबानी'।

द्वादशांग–पु० [सं०] गुग्गुल, चंदन, तेजपात आदि बारह वस्तुओंके योगसे बना हुआ एक हवनीय द्रव्य।

द्वादशाक्षर–पु० [सं०] विष्णुका बारह अक्षरोंका मंत्र–ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

द्वादशाह–पु० [सं०] बारह दिनोंका समुदाय; बारह दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ; मरण-तिथिसे बारहवें दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

द्वार–पु० [सं०] मकान, कमरे आदिकी दीवारमें बनाया हुआ भीतर-बाहर आने-जानेका विशेष प्रकारका छिद्र; वह मार्ग जिसके द्वारा इंद्रियाँ अपने विषयोंका ग्रहण करती हैं; माध्यम, साधन। **–कंटक**–पु० दरवाजेकी किल्ली, सिटकिनी। **–कपाट**–पु० दरवाजेका पल्ला। **–चार**–पु० [हिं०] विवाहके अवसरपर लड़कीवालेके दरवाजेपर होनेवाली एक रस्म। **–छँकाई**–स्त्री० [हिं०] एक वैवाहिक रीति जिसमें बहन कोहबरके द्वारपर विवाहोपरांत वधू सहित घर लौटे हुए भाईका मार्ग रोकती है; इस रीतिके उपलक्ष्यमें बहनको मिलनेवाला नेग। **–ताल**–पु० (लॉकआउट) दे० 'तालाबंदी। **–नायक,–प**–पु० द्वारपाल। **–पटी**–स्त्री० दरवाजेपर लगा हुआ परदा; चिक। **–पाल,–पालक**–पु० ड्योढ़ीपर नियुक्त सिपाही या पहरेदार, द्वाररक्षक, ड्योढ़ीदार। **–पूजा**–स्त्री० विवाहके पहले दिनकी एक रीति जिसमें कन्यादान करनेवाला व्यक्ति बरातके साथ द्वारपर आये हुए वरकी पूजा करता है। **–स्थ**–पु० द्वारपाल। मु०–**खुलना**–किसी बातके जारी रहनेका रास्ता निकल आना। **–खुला होना**–प्रवेश आदिमें कोई हिचक या बाधा न होना।

द्वारका, द्वारिका–स्त्री० [सं०] काठियावाड़की एक प्राचीन नगरी जिसे कृष्णने बसाया था। इसकी गणना चारों धामोंमें है। **–नाथ,–पति**–पु० कृष्ण; द्वारिकामें स्थित उनकी मूर्ति।

द्वारकाधीश–पु० [सं०] दे० 'द्वारकानाथ'।

द्वारवती, द्वारावती–स्त्री० [सं०] दे० 'द्वारका'।

द्वारा–अ० साधक होनेसे या साधक बनानेसे, कर्तृत्वसे, जरिये, मारफत। * पु० दे० 'द्वार'।

द्वाराधिप–पु० [सं०] द्वारपाल।

द्वारिक–पु० [सं०] द्वारपाल।

द्वारी*–स्त्री० छोटा द्वार।

द्वि–वि० [सं०] दो। **–ककार**–पु० काक (कौआ); कोक (चकवा)। **–ककुद्**–पु० ऊँट। **–कर्मक**–वि० दो कर्मोंवाली (क्रिया)। **–गु**–पु० समासका एक उपभेद (व्या०)। वि० दो गायोंवाला। **–गुण**–वि० दुगना, दूना। **–गुणित**–वि० दुगना किया हुआ। **–चक्रयान**–पु० (बाइसिकिल) रबड़के टायरोंवाली दो पहियोंकी गाड़ी जो पैडल घुमानेसे चलती है, साइकिल, पैरगाड़ी। **–ज**–पु० दे० 'क्रममें'। **–जन्मा (न्मन्)**–पु० दे० 'द्विज'। **–जाति**–स्त्री० दे० 'द्विज'। **–जिह्व**–पु० सर्प; सूचक, चुगलखोर; खल, दुष्ट। **–दल**–वि० दो दलोंवाला; दो पत्तोंवाला। पु० दो दलोंवाला अनाज–जैसे अरहर, मटर, चना आदि; दाल। **–धातुता**–स्त्री०, **–धातुत्व**–पु० (बाइमेटलिज्म) सोने तथा चाँदी दोनों ही धातुओंकी मुद्राका समान विधिग्राह्य मुद्राके रूपमें प्रचलन। **–धात्वीय प्रणाली**–स्त्री० (बाइमेटलिक सिस्टम) सोना, चाँदी दोनों धातुओंके सिक्कोंको निश्चित अनुपातके साथ, विधिग्राह्य मुद्रा माननेकी प्रणाली। **–पक्षीय प्रसंविदा**–स्त्री० (बाइलेटरल कांट्रैक्ट) दो पक्षोंके बीच होनेवाला इकरार या समझौता। **–पद**–वि० दो पैरोंवाला; जिसमें दो चरण या पद हों। पु० दो पैरोंवाला जीव, मनुष्य आदि। **–भाषी (षिन्)**–पु० दुभाषिया; दो भाषाएँ बोलनेवाला। **–मातृ,–मातृज**–पु० गणेश; जरासंध। **–रद**–वि० जिसके दो दाँत हों। पु० हाथी। **–रसन**–पु० सर्प। वि० दो जीभोंवाला। **–रेफ**–पु० भ्रमर, भौंरा ('भ्रमर' शब्दमें रकार दो बार आया है)। **–वचन**–पु० व्याकरणमें दोका बोध करानेवाला वचन। **–विध**–वि० दो प्रकारका। **–सदनात्मक**–वि० (बाइकेमरल) विधानमंडलके दो सदनों (सभाओं) वाला। **–सदस्यनिर्वाची क्षेत्र**–पु० (डबल मेंबर कांस्टिट्यूएंसी) वह निर्वाचन-क्षेत्र जहाँसे दो सदस्य चुने जानेको हों।

द्विज–पु० [सं०] संस्कृत ब्राह्मण; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार दूसरे जन्मके समान माना जाता है; पक्षी आदि अंडज जीव; दाँत; चंद्रमा। वि० जिसने दो बार जन्म लिया हो। **–पति**–पु० ब्राह्मण; गरुड; चंद्रमा। **–राज**–पु० ब्राह्मण; श्रेष्ठ ब्राह्मण; चंद्रमा; गरुड; कपूर।

द्विजेंद्र, द्विजेश–पु० [सं०] दे० 'द्विजराज'।

द्विजोत्तम–पु० [सं०] द्विजोंमें श्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विट् (ष)–वि० [सं०] शत्रु-भाव रखनेवाला। पु० शत्रु।

द्वितीय–वि० [सं०] दूसरा। पु० पुत्र (जिसके रूपमें आत्मा ही दूसरी बार जन्म लेती है); मित्र।

द्वितीया–स्त्री० [सं०] पक्षकी दूसरी तिथि; पत्नी।

द्वितीयाश्रम–पु० [सं०] गृहस्थाश्रम।

द्वित्व–पु० [सं०] दो अथवा दोहरा होनेका भाव।

द्विधा–अ० [सं०] दो प्रकारसे; दो भागोंमें।

द्विरागमन–पु० [सं०] पुनरागमन; विवाहके बाद वधूका पतिके घर आना, गौना।

द्विरुक्त–वि० [सं०] जो दो बार कहा या लिखा गया हो, दो बार कथित; जो दो प्रकारसे कहा गया हो; अनावश्यक।

द्विरुक्ति–स्त्री० [सं०] दो बार कहने या उल्लेख करनेकी क्रिया, दो बार कहना।

द्विरूढा-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने पूर्व पतिके मरने आदिपर दूसरेको अपना पति स्वीकार कर लिया हो।

द्विविद्-तु० [सं०] सुग्रीवका एक मंत्री।

द्वीप-पु० [सं०] स्थलका वह भाग जिसके चारों ओर पानी हो; पुराणोंके अनुसार जंबू आदि बड़े भूभागोंमेंसे हर एक।

द्वीपांतरण-पु० [सं०] (ट्रांसपोर्टेशन) भारी अपराध करनेवाले किसी बंदीको समुद्रके उस पार किसी अन्य स्थान या द्वीपमें रखनेके लिए भेज देना। (भारतमें ऐसे बंदी अब बाहर नहीं भेजे जाते।)

द्वेष-पु० [सं०] चित्तका वह भाव जो अप्रिय वस्तु या व्यक्तिका नाश करनेकी प्रेरणा करता है, रागका विरोधी भाव; शत्रुता, वैर।

द्वेषी(षिन्)-वि० [सं०] द्वेष-भाव रखनेवाला। पु० शत्रु।

द्वेष्य-वि० [सं०] द्वेष करने योग्य। पु० द्वेषका पात्र; शत्रु।

द्वै*-वि० दो; दोनों।

द्वैक*-वि० दो-एक।

द्वैगुणिक-वि० [सं०] जो दूना ब्याज ले। पु० शत-प्रतिशत सूद लेनेवाला महाजन।

द्वैज*-स्त्री० द्वितीया, दूज।

द्वैत-पु० [सं०] दो होनेका भाव; जोड़ा, युगल; भेद-भावना; द्वैतवाद; अज्ञान, मोह। **-वाद**-पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जो जीव और ब्रह्म तथा भूत और चिच्छक्तिमें भेद मानता है। वेदांतको छोड़कर शेष पाँचों आस्तिक दर्शन इसी सिद्धांतके पोषक हैं। **-वादी(दिन्)**-पु० द्वैतवादको माननेवाला।

द्वैत्रिज्य-पु० [सं०] (सेक्टर ऑफ ए सरकिल) वह आकृति जो दो त्रिज्याओं और उनके बीच पड़नेवाले चापसे घिरी रहती है।

द्वैध-पु० [सं०] दो प्रकारका होनेका भाव; भिन्नता; परस्पर विरुद्ध होनेका भाव; राजनीतिमें दुरंगी नीति बरतनेका गुण; संदेह। **-शासनप्रणाली**-स्त्री० वह शासन-पद्धति जिसमें सत्ता दो वर्गोंमें विभक्त हो।

द्वैधीकरण-पु० [सं०] दो भागोंमें बाँटना।

द्वैधीभाव-पु० [सं०] दे० 'द्वैध'; निश्चयका अभाव।

द्वैपायन-पु० [सं०] महाभारत, पुराणों आदिके रचयिता वेदव्यास। इनका जन्म एक द्वीपमें हुआ था इसीसे इनका यह नाम पड़ा।

द्वैमातुर-पु० [सं०] गणेश; जरासंध। वि० जिसके दो माताएँ हों।

द्वैराज्य-पु० [सं०] (कंडोमीनियम) दुराज, दो-अमली; दो राजाओंमें विभक्त देश।

द्वौ*-दोनों।

ध

ध-देवनागरी वर्णमालाका १९वाँ व्यंजन वर्ण।

धंका*-पु० धक्का; आघात, चोट।

धंध*-पु० बखेड़ा, झंझट, झमेला।

धंधक-पु० जंजाल, झंझट।

धंधरक*-पु० दे० 'धंधक'। **-धोरी**-पु० दुनियाके जंजालमें लगा रहनेवाला।

धँधला-पु० छल-कपट; ढोंग।

धँधलाना-अ० क्रि० ढोंग करना; छल करना।

धंधा-पु० काम-काज; पेशा, रोजगार, व्यवसाय।

धंधार*-स्त्री० ज्वाला।

धंधारि*-स्त्री० दे० 'धंधारी'।

धंधारी-स्त्री० गोरखधंधा

धँधोर-स्त्री० ज्वाला, आगकी लपट; होली।

धँवना*-स० क्रि० धौंकना।

धँसन-स्त्री० धँसनेकी क्रिया या ढंग।

धँसना-अ० क्रि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुका दबाव पाकर भीतर घुसना, गड़ना; पैठना, प्रवेश करना, भीतर घुसना; नीचेकी ओर दब जाना या बैठ जाना; उतरना; नीचे खसकना; * नष्ट होना; तबाह होना।

धँसनि*-स्त्री० दे० 'धँसन'।

धँसान-स्त्री० धँसनेकी क्रिया या ढंग; ऐसी धरती जिसमें पाँव धँसें, दलदल; ढालू जमीन।

धँसाना-स० क्रि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुको जोर देकर भीतर घुसाना, गाड़ना; प्रविष्ट कराना, पैठाना; नीचेकी ओर उतारना।

धँसाव-पु० दे० 'धँसान'।

धउरहर†-पु० दे० 'धौरहर'।

धक-स्त्री० हृदयका सवेग स्पंदन, दिलकी जोरकी धड़कन; * उमंग, उल्लास। * अ० एक-ब-एक, सहसा। **-पक**-स्त्री० दे० 'धकधकी'; भय। अ० डरते हुए।

धकधकना-अ० क्रि० दे० 'धकधकाना'।

धकधकाना-अ० क्रि० भय, घबड़ाहट आदिके कारण कलेजेका तेजीसे धड़कना; * धधकना; चमकना।

धकधकाहट-स्त्री० धकधकानेकी क्रिया, धड़कन।

धकधकी-स्त्री० धड़कन; धुकधुकी; खटका, अंदेशा। मु०-धरकना*-दिल धड़कना, सहसा आशंका उत्पन्न होना।

धकपक-स्त्री० धड़कन, भय।

धकपकाना-अ० क्रि० भय खाना; आतंकित होना।

धकपेल-स्त्री० धक्कमधक्का, रेलपेल।

धका*-पु० धक्का, झोंका; आघात। **-धूम**-स्त्री० रेलपेल; चढ़ाऊपरी। **-पेल**-स्त्री० दे० 'धकपेल'।

धकाना*-स० क्रि० जलाना, दहकाना।

धकारा*-पु० धकधकी; खटका, अंदेशा।

धकियाना†-स० क्रि० धक्का देना, ढकेलना।

धकेलना-स० क्रि० ढकेलना, धक्का देना।

धकैत-वि० धक्का देनेवाला।

धक्कमधक्का-पु० भारी भीड़में मनुष्योंका परस्पर बहुत अधिक धक्का देना; ठेलाठेल, रेलपेल।

धक्का-पु० वह दबाव जो किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानसे दूसरी ओर हटानेके लिए उसपर डाला जाय; दो वस्तुओं या व्यक्तियोंमें एकके दूसरेसे या दोनोंके परस्पर वेगपूर्वक गमनक्रियासे छू जाने या टकरा जानेसे एक या

दोनोंके प्रति होनेवाला आघात, टक्कर; हानि, घाटा; विपत्ति; कष्टका आघात, मार्मिक पीड़ा। **-मुक्की-**स्त्री० वह लड़ाई जिसमें दो व्यक्ति एक दूसरेको धक्का दें और घूँसोंसे मारें। **मु०-खाना-**धक्का सहना, अपमानित होना; भटकते रहना।

धक्काड़-वि० जिसकी धाक खूब जमी हो।

धगड़-पु० उपपति, जार। **-बाज़-**वि० स्त्री० कुलटा।

धगड़ा-पु० उपपति, जार।

धगड़ी-स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

धगधागना*-अ० क्रि० (दिल) धड़कना।

धगरिन-स्त्री० बच्चोंका नाल काटनेवाली स्त्री, चमाइन जो बच्चोंका नाल काटती है।

धगरी*-स्त्री० व्यभिचारिणी या पतिकी मुँहलगी स्त्री।

धगा*-पु० धागा, डोरा, सूत।

धचका-पु० धक्का, झोंका।

धज-स्त्री० बनाव-सिंगार; तड़क-भड़क; बैठने-उठने आदिका ढंग; मोहक चाल; शकल-सूरत। [इसका प्रयोग प्रायः 'सज' शब्दके साथ होता है-(सजधज)]।

धजा-स्त्री० दे० 'ध्वजा'; कपड़ेकी धज्जी; धज।

धजीला-वि० धजवाला, सजीला।

धज्जी-स्त्री० कपड़े, कागज आदिका लंबा, पतला टुकड़ा। **मु० धज्जियाँ उड़ना-**कट या फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाना। **-उड़ाना-**चीर या फाड़के टुकड़े-टुकड़े कर देना; पूर्णतः खंडन करना।

धड़ंग-वि० नंगा (प्रायः 'नंग'के साथ प्रयुक्त)।

धड़-पु० शरीरका कमरसे गलेतकका भुजा-रहित भाग; सिर, हाथ, पैर, पूँछ और पंखको छोड़कर पशु-पक्षियोंके शरीरका शेष भाग; वृक्षका जमीनके ऊपरसे वहाँतकका भाग जहाँसे शाखाएँ फूटती हैं, तना; 'धड़'की आवाज (इसका प्रयोग प्रायः 'से'के साथ होता है)। **-से-**'धड़' शब्दके साथ; बेखटके; बिना रुके, जल्दीसे।

धड़क-स्त्री० हृदयका स्पंदन; खटका, हिचक, रुकावट।

धड़कन-स्त्री० हृदयका स्पंदन, कलेजेकी धकधक।

धड़कना-अ० क्रि० हृदयका स्पंदन करना; जीका 'धकधक' करना; 'धड़-धड़' शब्द उत्पन्न करना।

धड़का-पु० हृदयकी धड़कन; खटका, आशंका; गिरने आदिका शब्द; चिड़ियोंको डराकर भगानेका पुतला।

धड़काना-स० क्रि० धड़क पैदा करना; मनमें खटका या आशंका उत्पन्न करना; किसी भारी वस्तुको फेंक या गिराकर अथवा छोड़कर शब्द उत्पन्न करना।

धड़धड़ाना-अ०क्रि०'धड़-धड़'शब्द उत्पन्न करना या होना।

धड़ल्ला-पु० धड़ाका, वेगसे गिरने आदिकी आवाज। **-(ल्ले)से-**बेखटके, बेधड़क।

धड़वाई-पु० धड़ा करनेवाला, तौलनेवाला।

धड़ा-पु० बाट; वजन; चार या पाँच सेरकी एक तौल; तराजू; पसँगा; दल। **-बंदी-**स्त्री० धड़ा करना या बाँधना; दलबंदी; युद्धके लिए प्रस्तुत दो दलोंका अपना सैन्यबल बराबर करना। **मु०-उठाना-**तौलना। **-करना-**किसी वस्तुको बरतन सहित तौलनेके पूर्व तराजूके एक पलड़ेपर बरतन और दूसरेपर बाट आदि रखकर पलड़ोंको बराबर करना।

धड़ाका-पु० किसी चीजके जोरसे गिरने आदिसे उत्पन्न होनेवाला घोर शब्द। **-(के)से** फुर्तीसे, चटपट।

धड़ाधड़-अ० लगातार 'धड़-धड़' शब्द करते हुए; जल्दी-जल्दी, बिना रुके।

धड़ाम-पु० जमीन, पानी आदिपर जोरसे गिरने, कूदने आदिकी आवाज। **-से-**एकबारगी।

धड़ी-स्त्री० एक वजन जो पाँच सेर और कहीं-कहीं दस सेरका होता है; पाँच सौ रुपयेकी रकम; लकीर; होंठोंपर पड़नेवाली मिस्सी या पानकी लकीर; कपड़ेका किनारा या झालर। **मु०-जमाना,-लगना-**होंठोंपर मिस्सीकी तह जमना। **-धड़ी(करके)लूटना-**सब कुछ लूट लेना। (धड़ियों-बहुतायतसे)।

धत-स्त्री० बुरी आदत, लत।

धतकारना-स० क्रि० दुतकारना; धिक्कारना।

धता-वि० गया हुआ, हटा हुआ। **मु०-करना-**हटाना, भगाना। **-बताना-**चलता करना; टाल देना।

धतूर*-पु० तुरहीकी तरहका एक बाजा, सिंगा; † दे० 'धतूरा'।

धतूरा-पु० एक प्रसिद्ध विषैला पौधा या उसका फल। **मु०-खाये फिरना-**पागल बना घूमना।

धतूरिया-पु० पथिकोंपर धतूरेका प्रयोग करनेवाला ठगोंका दल।

धत्-अ० दुतकारने, धिक्कारनेका शब्द।

धत्तूर, धत्तरक-पु०, **धत्तूरका-**स्त्री० [सं०] धतूरा।

धधक-स्त्री० धधकनेकी क्रिया या भाव; लपट, लौ।

धधकना-अ० क्रि० आगका इस प्रकार जलना कि उसमेंसे ऊँची लपटें उठें, धायँ-धायँ जलना।

धधकाना-स० क्रि० आगमें लपट पैदा करना; दहकाना।

धधाना†-अ० क्रि० दे० 'धधकना'।

धनंजय-पु० [सं०] अर्जुन; शरीरमें रहनेवाली पाँच वायुओंमेंसे एक; अग्नि; अंर्जुन नामक वृक्ष; विष्णु।

धन*-वि० जिसमें (कुछ) जोड़ा जाय, (अमुक संख्यासे) युक्त; दे० 'धन्य'। स्त्री० युवती; स्त्री; नायिका। पु० [सं०] ऐहिक सुखके साधनभूत द्रव्य, भूमि आदि, वित्त, संपत्ति; पूँजी; गोधन; लूटका माल; पुरस्कार; प्रिय व्यक्ति, स्नेहभाजन; गणितमें योगका चिह्न; कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान। **-कुबेर-**पु० वह व्यक्ति जो कुबेरके समान धनी हो, जिस व्यक्तिके पास प्रचुर धन हो। **-तेरस-**स्त्री० [हिं०] कार्त्तिक-कृष्णा त्रयोदशी। **-द-**वि० धन देनेवाला; उदार। पु०उदार व्यक्ति;कुबेर। **-द-दिशा-**स्त्री० उत्तर दिशा। **-धान्य-**पु० रुपया-पैसा, अन्न आदि। **-धाम-**पु० रुपया-पैसा और घर-बार। **-धारी(रिन्)-**पु०कुबेर; बहुत बड़ा धनी। **-नाथ-**पु० कुबेर। **-पक्ष-**पु० (क्रेडिट साइड) हिसाब या खातेका वह पक्ष (पार्श्व) जिसमें बाहरसे आनेवाले या बिक्री आदिके कारण अन्य लोगोंसे मिलनेवाले रुपयोंका ब्यौरा लिखा जाता है; रोकड़बही आदिके पृष्ठका जमावाला (बायीं तरफका) हिस्सा। **-पति-**पु० कुबेर; खजांची। **-पिशाच** पु० दे० 'अर्थ-पिशाच'। **-प्रयोग-**पु० लाभकी इच्छासे

किसी व्यापारमें धन लगाना; सूदपर रुपया देना। **–प्रेषणादेश**–पु० (मनीआर्डर) डाकखानेका एक तरहका चेक या धनादेश जिसके जरिये अन्यत्र स्थित व्यक्तिके पास रुपया भेजा जाता है, मनीआर्डर। **–मद**–पु० धनका गर्व। **–विद्युदणु**–पु० (प्रोटॉन) धन-विद्युत्शक्तिकी वह इकाई जो परमाणुका मध्य बिंदु मानी जाती है और जिसके चारों ओर ऋण-विद्युदणु चक्कर लगाते हैं। **–विधेयक**–पु० (मनी बिल) संसद या विधानसभा आदिमें पुरःस्थापित किया जानेवाला वह विधेयक जिसका उद्देश्य राज्यकी आय बढ़ाना अथवा धन-संबंधी अन्य माँग स्वीकृत कराना हो; दे० 'वित्तविधेयक'। **–शाली (लिन्)**–वि० धनवाला, जिसके पास धन हो, धनी। **–स्थान**–पु० कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान। **–स्वामी (मिन्)**–पु० कुबेर। **–हर**–वि० धन हरण करनेवाला। पु० चोर; उत्तराधिकारी। **–हीन**–वि० निर्धन, दरिद्र।

धनकुट्टी–स्त्री० धान कूटनेकी क्रिया; धान कूटनेका औजार।

धनवंत*–वि० धनवान्।

धनवान् (वत्)–वि० [सं०] धनवाला, धनी।

धना–*स्त्री० युवती; वधू। † पु० धनिया।

धनाढ्य–वि० [सं०] धनवान्, दौलतमंद।

धनादेश–पु० [सं०] (चेक) किसी बैंक (अधिकोष) को, जिसमें किसी व्यक्तिका हिसाब हो, दिया गया इस आशयका लिखित आदेश कि वाहकको या नाम-निर्देशित व्यक्तिको आदेशमें उल्लिखित रकम, उसके हिसाबमेंसे, दे दी जाय; (मनीऑर्डर) दे० 'धनप्रेषणादेश'।

धनाधिप–पु० [सं०] कुबेर।

धनाध्यक्ष–पु० [सं०] कुबेर; खजांची।

धनार्थी (र्थिन्)–पु० [सं०] धन चाहनेवाला।

धनि*–स्त्री० युवती; वधू। वि० धन्य। **–धनि***–अ० धन्य-धन्य।

धनिक–वि० [सं०] धनवान्, धनी। पु० धनाढ्य मनुष्य; ऋणदाता, उत्तमर्ण; स्वामी, पति। **–तंत्र**–पु० (प्लूटार्की) वह शासन-व्यवस्था जिसमें धनिक-वर्गका प्राधान्य हो। **–लोकतंत्र**–पु० (प्लुटोक्रैटिक डिमोक्रेसी) वह 'लोकतंत्र' जिसमें शासनसत्ता प्रायः धनिकोंके ही प्रतिनिधियोंके हाथमें हो।

धनिया–स्त्री० एक प्रसिद्ध मसाला। * युवती; वधू, स्त्री।

धनी, धनीका–स्त्री० [सं०] युवती स्त्री।

धनी (निन्)–वि० [सं०] धनवाला, दौलतमंद; कुशल, सिद्धहस्त–जैसे 'कलमका धनी'। पु० धनवान् मनुष्य; उत्तमर्ण; किसी वस्तुका स्वामी। (**बातका धनी**–दे० 'बात'में।) **–मानी (निन्)**–वि० धनवान् और प्रतिष्ठित।

धनु–पु० [सं०] धनुष्; धनुर्धर; मेष आदि बारह राशियोंमेंसे एक; एक लग्न। **–कार***–पु० धनुर्धर।

धनुआ–पु० रुई धुननेका औजार; धनुष्।

धनुई†–स्त्री० दे० 'धनुही'।

धनुक*–पु० धनुष्; इंद्रधनुष्।

धनुर्–पु० [सं०] 'धनुस्'का समासमें प्रयुक्त रूप। **–गुण**–पु० प्रत्यंचा, धनुष्की डोरी। **–धर**–पु० धनुष् धारण करनेवाला; वह व्यक्ति जो धनुर्विद्या जानता हो, तीरंदाज। **–धारी (रिन्)**–वि० जो धनुष् धारण करे। पु० दे० 'धनुर्धर'। **–यज्ञ**–पु० एक यज्ञ जिसे सीताके लिए वर चुननेके निमित्त जनकने किया था; एक यज्ञ जिसे कृष्णको धोखा देनेके लिए कंसने किया था। **–विद्या**–स्त्री० तीर चलानेकी विद्या, बाणविद्या, तीरंदाजी। **–वेद**–पु० यजुर्वेदका उपवेद जिसमें मुख्यतः धनुर्विद्याका और अंशतः अन्य शास्त्रोंका वर्णन है।

धनुष्(स्)–पु० [सं०] तीर चलानेका एक प्रसिद्ध साधन। **–आकार**–वि० धनुष्के आकारका, आकारमें धनुष् जैसा। **–कार**–पु० धनुष् बनानेवाला। **–कोटि**–पु० धनुष्का छोर; एक तीर्थ। **–पाणि**–वि० जिसके हाथमें धनुष् हो।

धनुहाई*–स्त्री० धनुष्की लड़ाई, बाणयुद्ध।

धनुहिया–स्त्री० दे० 'धनुही'।

धनुही*–स्त्री० छोटा धनुष् जिससे लड़के खेलते हैं।

धनेश, धनेश्वर–पु० [सं०] कुबेर; खजांची; विष्णु।

धनैषणा–स्त्री० [सं०] धनकी इच्छा।

धनैषी (षिन्)–वि० [सं०] धन चाहनेवाला।

धनोष्मा (मन्)–स्त्री० [सं०] धनकी गरमी।

धन्ना–पु० धरना, किसी बातके लिए अड़कर बैठना।

धन्नासेठ–पु० बहुत धनी मनुष्य।

धन्यंमन्य–वि० [सं०] अपनेको धन्य, भाग्यशाली माननेवाला।

धन्य–वि० [सं०] कृतार्थ; प्रशंसनीय; पुण्यात्मा, सुकृती; भाग्यशाली। अ० साधुवाद देनेके लिए बोला जानेवाला एक शब्द। **–वाद**–पु० 'धन्य-धन्य' कहना, साधुवाद; वाहवाही; कृतज्ञताप्रकाश। अ० कृतज्ञता प्रकट करनेका एक शब्द।

धन्या–स्त्री० [सं०] धात्री; पत्नी। वि० स्त्री० प्रशंसनीया, भाग्यशालिनी; पुण्यवती (स्त्री)।

धन्वंतरि–पु० [सं०] देववैद्य जो चौदह रत्नोंमेंसे हैं।

धन्वा (न्वन्)–पु० [सं०] चाप, धनुष्।

धन्वाकार–वि० [सं०] धनुष्के आकारका।

धन्वी (न्विन्)–वि० [सं०] जिसने धनुष् धारण किया हो; धूर्त; विदग्ध। पु० धनुर्धर; अर्जुन; विष्णु; शिव।

धपना–अ० क्रि० वेगसे आगे बढ़ना, झपटना।

धप्पा–पु० थप्पड़, तमाचा; टोटा, नुकसान।

धब्बा–पु० किसी वस्तुपर पड़ा हुआ भद्दा और बेमेल चिह्न, दाग; कलंक; ऐब, दोष। **मु० –लगाना**–कलंकित करना।

धम–स्त्री० किसी भारी वस्तुके गिरने या पृथिवी, छत आदिपर दबाव डालते हुए चलनेसे होनेवाला शब्द। **–से**–दे० 'धड़ाम'से।

धमक–स्त्री० दे० 'धम'; भारी वस्तुके आघात या चलने, दौड़नेसे उत्पन्न कंप।

धमकना–अ० क्रि० 'धम' शब्द उत्पन्न करते हुए गिरना; रुक-रुककर पीड़ा देना; प्रहार करना; झपटना। स० क्रि० हथिया लेना। **मु० धमक पड़ना (या आ धमकना)**–वेगसे आ पहुँचना, चटपट आ जाना।

धमकाना–स० क्रि० धमकी देना, डराना, घुड़कना।

धमकी–स्त्री० धमकानेकी क्रिया, घुड़की।

धमधमाना–अ० क्रि०, स० क्रि० 'धम-धम' शब्द होना

या करना।

धमधूसर–वि० मोटा और बेडौल (आदमी)।

धमना–स० क्रि० धौंकना; हवा भरना।

धमनि, धमनी–स्त्री०[सं०]नाडी, सिरा; गरदन; फुँकनी।

धमसा†–पु० दे० 'धौँसा'।

धमाका–पु० भारी वस्तुके गिरनेका गंभीर शब्द।

धमाचौकड़ी–स्त्री० उछल-कूद, कूद-फाँद।

धमाधम–अ० लगातार 'धम-धम' शब्दके साथ।

धमार, धमाल–पु० फागका एक भेद (संगीत)। स्त्री० उपद्रव; उछल-कूद; कलाबाजी।

धमारिया–वि० उपद्रव, उछल-कूद मचानेवाला; कलाबाज। पु० धमार गानेवाला।

धमारी–वि० धमाचौकड़ी मचानेवाला। * स्त्री० होलीकी क्रीड़ा।

धयना*–अ० क्रि० दौड़ना, धावा मारना–'ये सुजानके संग धये धरि धीर हैं'–सुजानच०।

धरंता*–वि०, पु० धारण करनेवाला।

धर–वि० [सं०] धारण करनेवाला, ग्रहण करनेवाला (समासमें)। पु० पर्वत; कूर्मराज; धड़, शरीर। स्त्री० [हिं०] धरने, पकड़नेकी क्रिया; * पृथिवी। **धर***–पु० दे० 'धराधर'। स्त्री० दे० 'धड़धड़'। **–पकड़**–स्त्री० गिरफ्तारी।

धरक*–स्त्री० दे० 'धड़क'।

धरकना*–अ० क्रि० दे० 'धड़कना'।

धरका*–पु० दे० 'धड़का'।

धरकार–पु० बाँसकी डलिया आदि बनानेवाली एक जाति।

धरणि, धरणी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; शहतीर; नस, नाड़ी। **–ज,–पुत्र,–सुत**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–जा,–पुत्री,–सुता**–स्त्री० जनककी पुत्री सीता। **–धर**–पु० महाकच्छप; शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा; एक हस्ती जो पृथ्वीका धारण करनेवाला माना जाता है। **–पति**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा।

धरता–पु० धारण करनेवाला; ऋणी, कर्जदार।

धरती–स्त्री० पृथ्वी; भूमंडल, संसार।

धरधरा*–पु० धकधकी, धड़कन।

धरधराना–अ० क्रि०; दे० 'धड़धड़ाना'।

धरन–स्त्री० धरनेकी क्रिया या ढंग; गर्भाशय या उसका आधार; हठ; शहतीर। पु० दे० 'धरना'।

धरना–स० क्रि० पकड़ना, थामना; रखना, स्थापन करना; धारण करना, पहनना; पास रखना, (किसीकी) देखरेखमें रखना; ग्रहण करना; सहायक बनाना, (किसीका) पल्ला पकड़ना; रखेलीकी भाँति रख लेना; गिरवी या बंधक रखना; पक्का करना, ठहराना। पु० प्रार्थना या माँग पूरी न होनेतक किसीके यहाँ अड़कर बैठना।

धरनि–स्त्री० दे० 'धरणी'; † शहतीर।

धरनी–स्त्री०दे० 'धरणी'; शहतीर; * टेक–'हिये धर चातककी धरनी'–कविता०।

धरनेत–पु० धरना देनेवाला।

धरम*–पु० दे० 'धर्म'। **–सार**–पु०, स्त्री० धर्मशाला; सदावर्त।

धरवाना–स० क्रि० 'धरना'का प्रेरणार्थक रूप।

धरपना*–स० क्रि० दबाना, दमन करना, पराभव करना; डराना; चूर्ण करना; फाड़ना। अ० क्रि० दब जाना।

धरसना–अ० क्रि० दब जाना, आक्रांत हो जाना; डरना, सहम जाना। स० क्रि० दबाना; डाँटना।

धरसनी*–स्त्री० दे० 'धर्षणी'।

धरहर*–स्त्री० बीचमें पड़कर लड़ने-झगड़नेवालोंको लड़ाईसे विरत करना; बचाव, रक्षा; धैर्य, धीरज।

धरहरना*–अ०क्रि० 'धड़-धड़' शब्द करना, धड़धड़ाना।

धरहरा–पु० मीनार, धौरहर।

धरहरिया–पु० वह जो बीचमें पड़कर लड़ने-झगड़नेवालोंको लड़ाईसे विरत करे; बीच-बचाव करनेवाला; रक्षक; † बीच-बचाव; * दृढ विश्वास, निश्चित मति।

धरा–स्त्री० धड़ा, चार सेरकी एक तौल; तौलकी बराबरी, बाट; [सं०] पृथ्वी, धरती, जमीन; गर्भाशय; मज्जा। **–तल**–पु० पृथ्वीकी सतह; पृथ्वी; क्षेत्रफल। **–धर**–पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा। **–धरन***–पु० दे० 'धराधर'। **–धार**–पु० शेषनाग। **–पति**–पु० राजा; विष्णु। **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–शायी (यिन्)**–वि० धरतीपर सोया, गिरा हुआ; युद्धमें निहत। **–सुर**–पु० ब्राह्मण।

धराऊ–वि० जो सुरक्षित रखा रहे और विशेष अवसरोंपर ही काममें लाया जाय।

धराक, धराका*––पु० धड़ाकेकी आवाज।

धरात्मज–पु० [सं०] मंगल ग्रह; नरकासुर।

धरात्मजा–स्त्री० [सं०] सीता।

धराधिप, धराधिपति–पु० [सं०] राजा, भूपति।

धराधीश–पु० [सं०] राजा, भूपति।

धराना–स० क्रि० पकड़ाना, थमाना; निश्चित कराना।

धराहर–पु० दे० 'धरहरा'।

धरित्री–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

धरी–स्त्री० चार सेरकी एक तौल; उपपत्नी।

धरुण–पु० [सं०] ब्रह्मा; स्वर्ग; पानी; मत, राय; वह स्थान जहाँ कोई वस्तु सुरक्षित रखी जाय; अग्नि; दूध पीनेवाला बछड़ा; टेक, सहारा; हौज; दृढ़ धरती।

धरेचा, धरेला–पु० उपपति, बिना ब्याह किये पतिरूपमें स्वीकार किया हुआ पुरुष।

धरेजा–पु० किसी स्त्रीको रखेली बनाकर रखना। स्त्री० रखेली।

धरेला†, धरेली–स्त्री० रखेली, उपपत्नी।

धरेश–पु० [सं०] राजा, भूपति।

धरेस*–पु० दे० 'धरेश'।

धरैया†–पु० धरनेवाला, पकड़नेवाला; शेषनाग।

धरोहर–स्त्री० वह वस्तु या द्रव्य जो कुछ समयके लिए किसी दूसरेके पास इस विश्वाससे रखा गया हो कि माँगनेपर पुनः उसी रूपमें मिल जायगा, थाती, अमानत।

धरौवा–पु० उपपत्नी रखनेकी चाल।

धर्ता(र्तृ)–पु० [सं०] धारण करनेवाला, टेकनेवाला।

धत्तूर–पु० [सं०] धतूर।

धर्म–पु० [सं०] अभ्युदय और निःश्रेयसका साधनभूत वेद-

विहित कर्म (जैसे यज्ञ); एक प्रकारका अदृष्ट जिससे स्वर्गकी प्राप्ति होती है (मीमांसा); लौकिक, सामाजिक कर्तव्य; वह कर्म जिसे वर्ण, आश्रम, जाति आदिकी दृष्टिसे करना आवश्यक हो (इसके पाँच भेद हैं-(१) वर्णधर्म, (२) आश्रमधर्म, (३) वर्णाश्रम धर्म,(४) गौण धर्म तथा (५) नैमित्तिक धर्म);उपमेय और उपमान दोनोंमें रहनेवाला साधारण गुण; ऋषि, मुनि या आचार्य द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जिससे पारलौकिक सुख प्राप्त हो; किसी वस्तु या व्यक्तिमें सदा बनी रहनेवाली सहज वृत्ति, स्वभाव, प्रकृति; ईश्वर या सद्गतिकी प्राप्तिके लिए किसी महात्मा या पैगंबर द्वारा प्रवर्तित मतविशेष; आप्त, आचार्य, राजा या सरकार द्वारा निर्दिष्ट लोकव्यवहार-संबंधी नियम; पुण्य; निष्पक्षता; औचित्य; सत्संग; तरीका, ढंग; यमराज; आचार; याग; अहिंसा; उपनिषद्; न्याय; धनुष्; सोमपायी; आत्मा; कुंडलीमें लग्नसे नवाँ स्थान; [हिं०] ईमान। **-क्षेत्र**-पु० भारतवर्ष जो धर्मोपार्जनकी कर्मभूमि माना गया है; कुरुक्षेत्र। **-ग्रंथ**-पु० धर्मविशेषका आधारभूत ग्रंथ, वह ग्रंथ जिसमें किसी धर्मसे संबद्ध शिक्षाएँ दी गयी हों। **-घड़ी**-स्त्री० [हिं०] ऐसी जगह टँगी घड़ी जिसे सभी लोग देख सकें। **-चक्र**-पु० धर्मसंघ; बुद्धदेव; बुद्धकी शिक्षा; एक अस्त्र जो प्राचीन कालमें प्रयुक्त होता था। **-चरण**-पु०,**-चर्या**-स्त्री० धर्मका पालन या आचरण। **-चिंतन**-पु०,**-चिंता**-स्त्री० धार्मिक विषयोंका मनन। **-ज**-पु० प्रथम औरस पुत्र; युधिष्ठिर; एक बुद्ध। वि० धर्मसे उत्पन्न। **-जन्मा(न्मन्)**-पु० युधिष्ठिर। **-ज्ञ**-पु० बुद्धदेव। वि० जिसे धर्मके स्वरूपका ज्ञान हो। **-तंत्र**-पु० (थियोक्रैसी) वह शासन-व्यवस्था जिसमें राज्यका कार्य ईश्वर या धर्मके नामपर पुरोहितों, धर्माध्यक्षों आदि द्वारा ही संचालित हो। **-ध्वज,-ध्वजी(जिन्)**-पु० वह जिसने धार्मिकताका ढोंग रचा हो, पाखंडी। **-नंदन**-पु० युधिष्ठिर। **-निरपेक्ष राज्य**-पु० (सेक्यूलर स्टेट) वह राज्य जिसकी सरकारी नीति धर्मके मामलेमें निरपेक्ष या तटस्थ रहनेकी हो, असांप्रदायिक राज्य, लौकिक राज्य। **-निष्ठ**-वि० जो धर्ममें आस्था रखता हो, धर्मपरायण। **-निष्ठा**-स्त्री० धर्ममें आस्था, विश्वास। **-पत्नी**-स्त्री० धर्मशास्त्रके नियमोंके अनुसार ब्याही हुई स्त्री। **-पर**-वि० धर्मपरायण। **-परायण**-वि० धर्ममें निष्ठा रखनेवाला। **-पिता**-पु० (गॉड फादर) वह व्यक्ति जो बपतिस्मा लेनेपर किसी बच्चेको धर्मकी शिक्षा देनेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले (ईसाई); पितृ-कर्तव्यका पालन करनेवाला या पितृतुल्य व्यक्ति। **-पीठ**-पु० धर्मका मुख्य स्थान; वह स्थान जहाँ धर्मकी व्यवस्था दी जाय; काशी। **-पुत्र**-पु० युधिष्ठिर; धार्मिक भावनासे उत्पन्न किया हुआ पुत्र। **-पुस्तक**-स्त्री० 'धर्मग्रंथ'। **-बुद्धि**-स्त्री० धर्मकी ओर प्रवृत्त बुद्धि; धर्म-अधर्मका विवेक करनेवाली बुद्धि। वि० जिसकी बुद्धि धर्मकी ओर प्रवृत्त हो। **-भगिनी**-वि० वह स्त्री जो धर्मके नाते बहिन लगे; गुरुकन्या। **-भीरु**-वि० जिसे धर्म छूटनेका भय बना हो; जो अधर्मसे डरता हो। **-युग**-पु० सत्ययुग। **-युद्ध**-पु० वह युद्ध जिसमें किसी प्रकारका अन्याय या छल-कपट न हो, न्यायपूर्ण युद्ध। **-राइ, -राय***-पु० दे० 'धर्मराज'। **-राज**-पु० युधिष्ठिर; यमराज; बुद्धदेव; राजा। **-लुप्तोपमा**-स्त्री० उपमालंकारका एक भेद। **-वत्सल**-वि० जिसे धर्म प्यारा हो। **-वाहन**-पु० शिव; धर्मराजका वाहन-भैंसा। **-विद्**-वि० धर्मज्ञ। **-वीर**-पु० वह जिसे धर्मपालनके प्रति इतना अदम्य उत्साह हो कि किसी भी स्थितिमें अपने धर्म- से न डिगे। **-शाला**-स्त्री० वह स्थान जहाँ धर्मार्थ अन्नादि बँटता हो,धर्मसत्र; न्यायालय; यात्रियोंके निःशुल्क ठहरनेके लिए बनवाया हुआ स्थान। **-शास्त्र**-पु० वह आप्त ग्रंथ जिसमें मनुष्यके कर्तव्याकर्तव्य, दायविधान आदिकी व्यवस्था हो (मनु, याज्ञवल्क्य आदिकी स्मृतियाँ)। **-शास्त्री(स्त्रिन्)**-पु० धर्मशास्त्रका पंडित। **-शील**-वि० जो धर्मके अनुसार आचरण करे; जो धर्मानुष्ठानमें बराबर लगा रहे। **-संगीति**-स्त्री० धर्म-संबंधी वाद-विवाद; बौद्धोंका धर्मसम्मेलन जो बुद्धकी मृत्युके बाद धार्मिक विषयोंपर विचारके लिए तीन बार हुआ था। **-संहिता**-स्त्री० वह ग्रंथ जिसमें धार्मिक विषयोंका प्रतिपादन हो। **-सभा**-स्त्री० न्यायालय, कचहरी। **-सार**-पु० उत्तम, पुण्य कर्म। **-सारी***-स्त्री० धर्मशाला। **-स्व**-पु० (एंडाउमेंट्स) किसी मंदिरादिका खर्च चलाने या किसी धार्मिक कृत्यादिके निर्वाहार्थ स्थायी व्यवस्था करनेके उद्देश्यसे दी गयी संपत्ति, धर्मोत्तरसंपत्ति। **मु०-बिगाड़ना**-किसीका धर्म नष्ट करना, किसीको धर्मच्युत करना; स्त्रीका सतीत्व नष्ट करना। **-रखना**-धर्मच्युत होनेसे बचना या बचा लेना।

धर्मतः-अ० [सं०] धर्मके अनुसार; धर्मको साक्षी देकर।

धर्मांतर-पु० [सं०] अन्य धर्म।

धर्मांध-वि० [सं०] स्वधर्ममें अंधश्रद्धा और दूसरे धर्मोंके प्रति द्वेषका भाव रखनेवाला; धर्मके नामपर लड़नेवाला।

धर्माचरण-पु० [सं०] धार्मिक या पुण्य कार्य करना; धर्मके अनुसार आचरण करना।

धर्माचार्य-पु० [सं०] धर्मकी शिक्षा देनेवाला गुरु।

धर्मात्मज-पु० [सं०] युधिष्ठिर।

धर्मात्मा(त्मन्)-वि० [सं०] धर्मनिष्ठ, धर्मशील, धार्मिक।

धर्मादा-पु० धर्मार्थ निकाला हुआ धन।

धर्माधर्म-पु० [सं०] धर्म और अधर्म।

धर्माधिकरण-पु० [सं०] न्यायालय; न्यायाधीश।

धर्माधिकरणिक-पु० [सं०] धर्म-अधर्मका निर्णय करनेवाला राजकर्मचारी, न्यायाधीश, विचारक।

धर्माधिकार-पु० [सं०] धार्मिक कृत्योंका निरीक्षण; न्याय-व्यवस्था; न्यायाधीशका पद।

धर्माधिकारी(रिन्)-पु० [सं०] दे० 'धर्माधिकरणिक'।

धर्माधिकृत-पु० [सं०] दे० 'धर्माध्यक्ष'।

धर्माधिष्ठान-पु० [सं०] न्यायालय।

धर्माध्यक्ष-पु० [सं०] न्यायाधीश; विष्णु।

धर्मानुष्ठान-पु० [सं०] दे० 'धर्माचरण'।

धर्माभास-पु० [सं०] श्रुति-स्मृतिसे भिन्न शास्त्रों द्वारा उक्त असद्धर्म।

धर्मार्थ–अ०[सं०]धर्मके लिए, धर्म या परोपकारके निमित्त।

धर्मावतार–पु० [सं०] एक आदरसूचक संबोधन; परम धर्मात्मा व्यक्ति; युधिष्ठिर।

धर्मासन–पु० [सं०] वह आसन जिसपर बैठकर धर्म-अधर्मका निर्णय किया जाय, न्यायाधीशका आसन।

धर्मिणी–स्त्री० [सं०] पत्नी, जाया।

धर्मिष्ठ–वि० [सं०] अत्यंत धार्मिक, अत्यंत पुण्यात्मा।

धर्मी(र्मिन्)–वि० [सं०] धर्म करनेवाला, पुण्यात्मा; जिसमें कोई विशिष्ट धर्म या वृत्ति हो, धर्मविशेषसे युक्त; (किसी) मत या धर्मका अनुयायी। पु० वह जिसमें कोई धर्म या वृत्ति रहे; धार्मिक मनुष्य।

धर्मोपदेश–पु० [सं०] धर्मका उपदेश, वह प्रवचन जिसमें धर्मकी शिक्षा दी गयी हो, धर्मकी शिक्षा; धर्मशास्त्र।

धर्मोपदेशक–पु०[सं०]धर्मकी शिक्षा देनेवाला, धर्मशिक्षक।

धर्म्य–वि० [सं०] धर्मसंगत; पुण्यकर; न्याय्य।

धर्षक–पु० [सं०] ढिठाई करनेवाला; अपमान करनेवाला; व्यभिचारी; नट, अभिनेता।

धर्षकारी (रिन्)–पु० [सं०] ढिठाई करनेवाला; अपमान करनेवाला।

धर्षण–पु०[सं०] पराभव; अनादर; असहिष्णुता; औद्धत्य, धृष्टता; सतीत्वहरण; रति; हिंसा; शिव।

धर्षणि, धर्षणी–स्त्री० [सं०] असती, कुलटा स्त्री।

धव–पु० [सं०] एक वन्य वृक्ष जिसकी जड़, पत्ती, फूल आदि दवाके काम आते हैं; पति, स्वामी; पुरुष।

धवनी–स्त्री० भाथी, धौंकनी।

धवर–पु० एक पक्षी। * वि० दे० 'धवल'।

धवरहर, धवराहर–पु० दे० 'धरहरा'।

धवरा†–वि० दे० 'धवल'।

धवरी–स्त्री० सफेद रंगकी गाय; धवर पक्षीकी मादा। वि० स्त्री० सफेद रंगकी।

धवल–वि० [सं०] श्वेत, सफेद; स्वच्छ, निर्मल; सुंदर। पु० सफेद रंग; धवका पेड़; बड़ा बैल; चीनिया कपूर। **–गिरि**–पु० हिमालयकी एक चोटी। **–गृह**–पु० चूना पुता हुआ मकान; प्रासाद। **–पक्ष**–पु० शुक्ल पक्ष; हंस।

धवलना*–स० क्रि० उज्ज्वल करना; विशद बनाना।

धवला–वि० सफेद, उजला। स्त्री० [सं०] उजली गाय; गौर वर्णकी स्त्री। वि० स्त्री० सफेद रंगकी, उजली।

धवलाई*–स्त्री० सफेदी।

धवलित–वि० [सं०] सफेद किया या बनाया हुआ।

धवलिमा (मन्)–स्त्री० [सं०] श्वेतता, सफेदी।

धवली–स्त्री० [सं०] सफेद गाय; बालोंका एक रोग।

धवा–पु० दे० 'धव'।

धवाना*–स० क्रि० दौड़ाना–'यहि विधि देखत कहत चार ते जात तुरंग धवाये'–रघुराज०।

धस*–पु० जल आदिमें पैठना; गोता, डुबकी।

धसक–स्त्री० सूखी खाँसी; दहलनेकी क्रिया; डर; ईर्ष्या।

धसकन–स्त्री० दहलने, डरनेकी क्रिया; दबना; जलन।

धसकना–अ० क्रि० नीचेकी ओर बैठना, दब जाना; डाह करना, ईर्ष्या करना।

धसना*–अ० क्रि० ध्वस्त होना, नष्ट होना; † नीचेको खसना; घुसना, प्रवेश करना, गड़ना।

धसमसाना*–अ० क्रि० धँसना, नीचेकी ओर बैठना; धरतीमें समाना।

धसान–स्त्री० दे० 'धँसान'।

धसाना–स० क्रि० दे० 'धँसाना'।

धसाव–पु० दे० 'धँसाव'।

धाँगड़, धाँगर–पु० एक अनार्य जाति; इस जातिका आदमी; कुआँ आदि खोदनेका काम करनेवाली एक जाति।

धाँधना–स० क्रि० बंद करना; ठूँस-ठूँसकर खा लेना।

धाँधल–स्त्री० शैतानी; धूर्तता, दगा, छल; जल्दबाजी।

धाँधली–स्त्री०मनमाना व्यवहार;अनीति,अत्याचार;धोखा।

धाँस–स्त्री० तंबाकू आदिकी गंधसे उठनेवाली खाँसी; खाँसी लानेवाली तेज गंध।

धाँसना–अ० क्रि० घोड़े आदिका खाँसना।

धा–पु० [सं०] ब्रह्मा; बृहस्पति; धारण करनेवाला। अ० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक विशेषणोंके पीछे 'प्रकार' या 'बार'के अर्थमें जोड़ा जाता है–जैसे शतधा, बहुधा आदि।

धाई–स्त्री० दे० 'धाय'।

धाऊ†–पु० धव वृक्ष; * हरकारा।

धाक–स्त्री० दबदबा, आतंक; ख्याति, शोहरत। पु० ढाक, पलाश।

धाकना*–अ० क्रि० धाक जमाना।

धाकर–पु० अकुलीन ब्राह्मण; राजपूतोंकी एक जाति।

धागा–पु० डोरा, तागा।

धाड़–स्त्री० चिल्लाकर रोनेका शब्द, विलाप; दहाड़; दाढ़; डाकुओंका धावा। **मु०–मारना**–चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

धाड़ना–अ० क्रि० दहाड़ना।

धाड़स–पु० ढाढ़स, तसल्ली।

धाड़ी–पु० दे० 'ढाढ़ी'।

धात–स्त्री० दे० 'धातु'।

धातविक–वि० धातुसे बना; धातु-संबंधी।

धाता(तृ)–पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; शिव; सप्तर्षि; आत्मा; रक्षक; उपपति।

धातु–स्त्री० [सं०] सोना, चाँदी आदि खनिज पदार्थ; रस, रक्त, मांस आदि सात शरीरस्थ पदार्थ; वात, पित्त और कफ; वीर्य; शब्द आदि जो आकाशके गुण हैं; पंचमहाभूत; पदोंकी प्रकृति, शब्दोंका मूल रूप। **–क्षय**–पु० शरीरके तत्त्वोंका क्षय; क्षयरोग। **–पुष्टि**–स्त्री० धातुओंका पोषण। **–भृत्**–पु० पर्वत। **–विज्ञान**–पु० (मेटलर्जी) धातु तैयार करने, उन्हें परिष्कृत या शुद्ध करने आदिका वर्णन करनेवाला शास्त्र। **–हा(हन्)**–पु० गंधक।

धातुमय–वि० [सं०] जिसमें खनिज पदार्थोंका प्राचुर्य हो; खनिज पदार्थोंसे भरा हुआ।

धात्री–स्त्री० [सं०] धाय, उपमाता; पृथ्वी; माता; आँवला। **–कर्म(न्)**–पु० धायका काम। **–पुत्र**–पु० धायका बेटा; नट। **–फल**–पु० आँवला। **–विद्या**–स्त्री० प्रसव करानेकी विद्या।

धात्वर्थ–पु० [सं०] धातु (पद या शब्दकी प्रकृति) से निकलनेवाला अर्थ।

धात्विक मूल्य–पु० [सं०] (इंट्रिंजिक वैल्यू) किसी सिक्के आदिका वास्तविक मूल्य–वह मूल्य जो बाजारभावके अनुसार उसमें मिली हुई धातुका मूल्य हो और जो उसपर अंकित मूल्यसे कम या अधिक हो सकता है ।

धात्वीय–वि० [सं०] धातु-संबंधी; धातुसे बना हुआ ।

धान–पु० एक प्रसिद्ध अन्न जिसका चावल प्रधान खाद्योंमें गिना जाता है, तुपयुक्त चावल, शालि; इसका पौधा ।

धाना*–अ० क्रि० दौड़ना; (ला०) वेगसे चलना; दौड़धूप करना ।

धानी–वि० धानकी हरी पत्तीके रंगका, जो रंगमें धानकी हरी पत्ती जैसा हो, हलके हरे रंगका । स्त्री० धानकी हरी पत्तीके रंगका एक रंग, तोतई; एक रागिनी; * धान्य; भूना हुआ जौ; [सं०] आधार, पात्र; अधिष्ठान, स्थान (जैसे राजधानी, यमधानी) ।

धानुक–पु० धनुर्धर, कमनैत; धुनिया ।

धानुष्क–पु० [सं०] धनुर्धर, धन्वी, तीरंदाज ।

धान्य–पु० [सं०] अन्न; सतुप अन्न; धान; धनिया; चार तिलका एक प्राचीन परिमाण । **–मुख**–पु० चीर-फाड़के कामका एक पुराना औजार (सुश्रुत) । **–संग्रह**–पु० अन्नका भंडार ।

धान्योत्तम–पु० [सं०] शालि, धान ।

धाप–पु० कोसका आधा, एक मील; वह फासला जो एक साँसमें दौड़कर पार किया जा सके । स्त्री० तृप्ति, संतोष ।

धापना*–अ० क्रि० तेज चलना; दौड़ना; तृप्त होना, अघाना–'बातोंके पकवानसे धापा नाहीं कोय'–साखी । स० क्रि० तृप्त करना, संतुष्ट करना ।

धाबा–पु० मकानकी हमवार छत; ऐसी छतवाला मकान; बासा, होटल ।

धाम(न्)–पु० [सं०] गृह, घर; वासस्थान, अधिष्ठान; किरण, तेज, प्रभा; प्रताप, प्रभाव; वह स्थान या लोक जहाँ किसी देवताका निवास हो; देवस्थान; पारिवारिक सदस्य; सेना, समूह; अवस्था; वर्ग; शरीर, तन; जन्म; परमेश्वर ।

धामक-धूमक–स्त्री० धूम-धाम, ठाट-बाट ।

धामनिका, धामनी–स्त्री० [सं०] दे० 'धमनी' ।

धामस-धूमस–स्त्री० धूम-धाम; जंजाल ।

धामिन–पु० एक तरहका साँप जिसकी पूँछमें विष रहता है ।

धायँ–स्त्री० गोला-गोली दगनेका शब्द । **–धायँ**–अ० लगातार 'धायँ'की आवाजके साथ; इस प्रकार (जलना) कि लपटें ऊपर उठें (जैसे–चिता 'धायँ-धायँ' जल रही है) ।

धाय–स्त्री० बच्चेको दूध पिलाने और उसकी देख-भाल करनेके लिए नियुक्त स्त्री, उपमाता, धात्री । पु० धव वृक्ष ।

धायना*–अ० क्रि० दौड़ना ।

धार–पु० [सं०] जमा किया हुआ वर्षाका जल जो बड़ा गुणकारी होता है; धाराके रूपमें जलका बरसना, जोरकी वर्षा; ऋण । स्त्री० [हिं०] तलवार आदिका वह तेज किनारा जिससे कुछ काटते हैं, बाढ़; किसी द्रव पदार्थके गिरने या बहनेकी परंपरा, प्रवाह, स्रोत; छापा, डाका; सेना, फौज; देवी या पवित्र नदी आदिको दिया जानेवाला अर्घ्य । *अ० ओर, तरफ–'महरि पैठत सदन भीतर छींक बाई धार'–सू० । **–दार**–वि० धारवाला, जिसमें धार हो । मु० **–बँधना**–इस प्रकार गिरना कि धार बन जाय । **–बाँधना**–इस प्रकार गिराना कि धार बँध जाय; मंत्र आदिकी शक्तिसे किसी हथियारकी काटनेकी शक्तिको कुंठित कर देना ।

धारक–वि० [सं०] धारण करनेवाला । पु० वह जो धारण करे; ऋण लेनेवाला, कर्जदार; वह वस्तु जिसमें कोई वस्तु रखी जाय, पात्र; कलश, घड़ा; संदूक आदि ।

धारण–पु० [सं०] किसी वस्तुको ग्रहण करना या उसका आधार बनना, पकड़ना, थामना या लेना, आधान; पहनना; ऋण या उधार लेना; अवलंबन, ग्रहण या स्वीकार करना; खाना या पीना; सुरक्षित रखना, बनाये रखना, रक्षण, पालन; स्मरण रखना ।

धारणा–स्त्री० [सं०] ग्रहण, रक्षण, पालन आदि करनेकी क्रिया; मस्तिष्कमें कोई वस्तु धारण करनेकी शक्ति; विचार, निश्चित मति । **–शक्ति**–स्त्री० मस्तिष्कमें ग्रहण करनेकी शक्ति ।

धारणावधि–स्त्री० [सं०] (टेन्यूर) वह समय या अवधि जबतक कोई पद, संपत्ति आदि धारण की जाय या उसका उपभोग किया जाय ।

धारणीय–वि० [सं०] धारण करने योग्य । पु० धरणीकंद ।

धारन*–पु० धारण करनेवाला, धारक ।

धारना*–स० क्रि० धारण करना; ऋण लेना ।

धारयिता(तृ)–पु० [सं०] धारणकर्ता, धारण करनेवाला ।

धारा–स्त्री० [सं०] किसी द्रव पदार्थके बहने या गिरनेकी परंपरा, प्रवाह, धार; क्रम, सिलसिला । **–धर**–पु० बादल; तलवार । **–निपात,–पात**–पु० जलधाराका गिरना; भारी वृष्टि । **–प्रवाह**–वि० धारारूपमें अविराम गतिसे बहने या चलनेवाला (भाषण इ०) । अ० अविराम गतिसे; अविच्छिन्न रूपमें । **–यंत्र**–पु० फौवारा । **–वाहिक,–वाही(हिन्)**–वि० अविच्छिन्न गतिवाला; लगातार होने या जारी रहनेवाला ।

धारा–स्त्री० (सेक्शन) किसी अधिनियम आदिका वह स्वतंत्र अंग या भाग जिसमें किसी एक विषयकी सब बातें या आदेश एक साथ सन्निविष्ट हों, दफा; क़ानून, विधान । **–सभा**–स्त्री० (लेजिस्लेटिव कौंसिल) व्यवस्थापिका सभा ।

धारि*–स्त्री० धार; समुदाय, झुंड; सेना ।

धारिणी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी । वि० स्त्री० धारण करनेवाली; जिसपर किसीका ऋण हो, कर्जदार (स्त्री) ।

धारी–पु० एक वर्णवृत्त । स्त्री० कपड़े आदिपरकी लकीर; * समूह; सेना । **–दार**–वि० जिसमें धारियाँ हों ।

धारी(रिन्)–वि० [सं०] धारण करनेवाला ।

धारोष्ण–वि० [सं०] तुरंतका दुहा हुआ (दूध), ताजा और गरम ।

धार्तराष्ट्र–पु० [सं०] धृतराष्ट्रका वंशज; काली चोंच और काले पैरोंवाला हंस ।

धार्मिक–वि० [सं०] धर्म-संबंधी; धर्म करनेवाला; क्षमा, दया आदिसे युक्त, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, धर्मशील ।

धार्य–वि० [सं०] धारण करने योग्य; सह्य ।

धार्ष्ट्य–पु० [सं०] धृष्टता, ढिठाई, उद्दंडता, अविनय ।

धावक–पु० [सं०] धोवी; दूत, हरकारा।

धावन–पु० [सं०] दौड़ना; हमला करना; धोना; शुद्ध करना; वह वस्तु जिससे कोई चीज साफ की जाय; दूत, हरकारा; (रन) (क्रिकेटमें) गेंदपर प्रहार करनेके बाद बल्लेवाज तथा उसके साथीका एक ओरके यष्टित्रयसे दूसरी ओरके यष्टित्रयतक, बिना बहिर्गत (आउट) हुए दौड़ लगानेकी क्रिया; इस प्रकार लगायी गयी दौड़की क्रमसंख्या। **–मार्ग**–पु० (रनवे) दे० 'अवतरणपथ'। **–स्थली**–स्त्री० (पिच) क्रिकेटमें दोनों ओरके यष्टित्रयोंके बीचकी भूमि जिसपर, गेंदपर प्रहार करनेके बाद, बल्लेवाज तथा उसका सहयोगी धावन करनेका उपक्रम करते हैं।

धावना*–अ० क्रि० तेजीसे चलना, दौड़ना।

धावनि*–स्त्री० तेजीसे चलने या दौड़नेकी क्रिया, धावा।

धावर–वि० धवल, सफेद।

धावरी*–स्त्री० धौरी, श्वेत वर्णकी गाय। वि० स्त्री० धौरी।

धावल्य–पु० [सं०] श्वेतता, सफेदी।

धावा–पु० किसीको जीतने, लूटने आदिके लिए बहुतसे लोगोंका एक साथ दौड़ पड़ना, चढ़ाई, हमला; दौड़कर जाना। **मु०–करना**–आक्रमण करना, चढ़ाई करना। **–बोलना**–अफसरका फौजको हमला करनेका हुक्म देना; हमला करना। **–मारना**–दूरतक चढ़ाई करना।

धावित–वि० [सं०] दौड़ा हुआ; दौड़ता हुआ; मार्जित।

धाह–* स्त्री० धाड़, चिल्लाकर रोना, विलाप, † आगकी गर्मी।

धाही–* स्त्री० धाय; † आगकी गरमी; छाया।

धिंग*–स्त्री० धींगाधींगी, उपद्रव, शरारत।

धिँगाई*–स्त्री० ऊधम, उपद्रव, शैतानी; कुटिलता, खोटाई।

धिंगाधिंगी–स्त्री० दे० 'धाँगाधीँगी'।

धिआ†–स्त्री० बेटी, पुत्री; बालिका।

धिआन*–पु० दे० 'ध्यान'।

धिआना*–स० क्रि० दे० 'ध्याना'।

धिक–अ० दे० 'धिक्'।

धिकना*–अ० क्रि० तपना, गरम होना।

धिकाना†–स० क्रि० गरम करना, तपाना।

धिक्–अ० [सं०] भर्त्सना, निंदा और घृणाके अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द। **–कार**–पु० 'धिक्' कहकर की गयी भर्त्सना, निंदा या घृणा। **–कृत**–वि० जिसकी भर्त्सना, लानत-मलामत की गयी हो।

धिक्कारना–स० क्रि० अनुचित बातके लिए किसीके प्रति निंदा और घृणासूचक शब्दोंका प्रयोग करना, लानत-मलामत करना।

धिग*–अ० दे० 'धिक्'।

धिय*–स्त्री० बेटी, पुत्री; बालिका।

धिया–स्त्री० पुत्री, कन्या।

धिरयना*–स० क्रि० दे० 'धिरवना'–'सूर नंद बलरामहिं धिरयो, सुनि मन हरप कन्हैया'–सू०।

धिरवना*–स० क्रि० धमकी देना, धमकाना; डाँटना।

धिराना*–स० क्रि० धमकाना, डराना। अ० क्रि० धीमा होना; कम होना, घटना; धैर्य धारण करना।

धींग–पु० दे० 'धीँगरा'।

धीँगड़ा–पु० दे० 'धीँगरा'।

धीँगरा–पु० हृष्ट-पुष्ट मनुष्य; गुंडा, बदमाश। वि० दुष्ट, खल, पाजी।

धीँगा–वि० दुष्ट, पाजी। **–धीँगी,–मुश्ती**–स्त्री० शरारत, दुष्टता।

धी–स्त्री० बेटी, लड़की; [सं०] बुद्धि, प्रज्ञा; समझ; ज्ञान।

धीआ–स्त्री० बेटी, लड़की।

धीजना*–स० क्रि० विश्वास करना–'उज्जल देखि न धीजिये, बग ज्यों माँडे ध्यान'–साखी; स्वीकार करना। अ० क्रि० धैर्य धरना; संतुष्ट होना।

धीम*–वि० दे० 'धीमा'।

धीमर–पु० दे० 'धीवर'।

धीमा–वि० कम वेगवाला, कम गतिवाला, मंद, मंथर; प्रखरता या तीव्रतासे रहित, प्रचंडका उलटा; (स्वर) जो उच्च या तीव्र न हो, दबा हुआ; जो दढ़तीपर न हो।

धीमान्(मत्)–वि० [सं०] बुद्धिमान्, प्रज्ञावान्।

धीय, धीया–स्त्री० बेटी, लड़की।

धीर–वि० [सं०] जो जल्दी विचलित न हो, धैर्ययुक्त, स्थिरचित्त; दृढ़; गंभीर; उत्साही; नम्र, विनीत। पु० * धैर्य, धीरज, चित्तकी दृढ़ता; संतोष। **–चेता(तस्)**–वि० दृढ़, स्थिरचित्त। **–प्रशांत,–शांत**–पु० वह नायक जो वीर और शांत हो। **–ललित**–पु० वह नायक जो धीर और वीर होनेके साथ ही क्रीड़ाप्रिय और चिंतारहित हो।

धीरक*–पु० धीरज, धैर्य।

धीरज*–पु० दे० 'धैर्य'। **–मान**–वि० धैर्यवान्।

धीरता–स्त्री०, **धीरत्व**–पु० [सं०] धीर होनेका भाव या गुण; चित्तकी अविचलता; धैर्य; गंभीरता; संतोप, सब्र।

धीरा–स्त्री० [सं०] व्यंग्य द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०); काकोली; मालकँगनी।

धीराधीरा–स्त्री० [सं०] रुदन और मुखकी मुद्रा द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०)।

धीरे–अ० मंद गतिसे; मंद स्वरसे; चुपके।

धीरोदात्त–पु० [सं०] आत्मश्लाघासे रहित, क्षमाशील, धीर, विनम्र और दृढ़व्रत नायक–जैसे रामचंद्र, युधिष्ठिर।

धीरोद्धत–पु० [सं०] क्रोधी, चपल, अहंकारी और विकत्थन नायक (सा०)।

धीवर–पु० [सं०] मछुआ, मल्लाह; लोहा।

धुँआँ–पु० दे० 'धुआँ'।

धुँआरा–वि० धूमिल, जो धुएँसे मैला हो गया हो।

धुँगार–स्त्री० बघार, छौंक।

धुँगारना–स० क्रि० बघारना, छौंकना।

धुंज*–वि० अस्पष्ट, धुँधला; मंद ज्योतिवाला।

धुँद–स्त्री० दे० 'धुंध'।

धुंध–स्त्री० आकाशमें बहुत अधिक गर्द छा जानेसे होनेवाला अँधेरा; आँखका एक रोग जिसमें ज्योति मंद पड़ जानेसे चारों ओर धुंध जैसा दिखाई देता है।

धुंधकार–पु० अंधकार; गर्जन।

धुंधर, धुंधरि*–स्त्री० गर्द; धुएँ, धूल आदिके कारण होनेवाला अंधकार।

धुँधराना, धुँधलाना*–अ० क्रि० धुँधला पड़ना; काला या अंधकारयुक्त होना।

धुँधला–वि० धुएँके रंगका, हलका स्याह; अस्पष्ट, अँधेरा। **–पन–**पु० धुँधला होनेका भाव।

धुँधलाई–स्त्री० धुँधलापन।

धुँधली–स्त्री० अँधेरा; नजरकी कमजोरी।

धुँधाना*–अ० क्रि० धुआँ देना।

धुंधार*–वि० धूमिल; धुआँधार।

धुंधि*–स्त्री० दे० 'धुंध'।

धुँधियारा*–वि० दे० 'धुँधला'।

धुंधुकार–पु० धुंकार; अँधेरा, धुँधलापन।

धुंधुरि*–स्त्री० धुएँ, धूल आदिके कारण छाया हुआ अंधकार।

धुंधुरित–वि० धुँधला बनाया हुआ; जिसकी नेत्रज्योति कम हो गयी हो, मंददृष्टि।

धुँधुरी–स्त्री० धुंध; धुँधलापन; आँखका एक रोग।

धुँधुवाना*–अ० क्रि० धुआँ देना; थोड़ा-थोड़ा करके जलना।

धुँधेरी–स्त्री० दे० 'धुंधुरि'।

धुँवाँ–पु० दे० 'धुआँ'। **–कश–**पु० दे० 'धुआँकश'। **–दान–**पु० धुआँ निकलनेका छिद्र। **–धार–** वि०, अ० दे० 'धुआँधार'।

धुअ*–पु० दे० 'ध्रुव'।

धुआँ–पु० सुलगती या जलती हुई लकड़ी आदिसे निकलनेवाला भाप जैसा हलका काला पदार्थ, धूम। **–कश–**पु० दे० 'स्टीमर'; धुआँ निकलनेके लिए छतमें बनाया गया छेद, चिमनी। **–धार–**वि० जोरदार, घोर, भीषण; धुएँसे भरा हुआ; काला। अ० लगातार और बड़े वेगसे, बड़े जोरसे। **मु०–देना–**धुआँ छोड़ना या निकालना; धुआँ पहुँचाना। **–निकालना(या काढ़ना)–**लंबी चौड़ी बातें करना। **–सा मुँह होना–**चेहरेका रंग उतर जाना; अत्यंत लज्जित होना। **–होना (किसी वस्तुका)–**एकदम काला हो जाना। **(धुएँ)का धौरहर–**क्षणस्थायी वस्तु। **–के बादल उड़ाना–**लंबी-चौड़ी बातें करना।

धुआँना–अ० क्रि० धुएँसे बस जाना, अधिक धुएँवाली आँचसे पकनेके कारण धुएँकी गंधसे व्याप्त हो जाना।

धुआँयँध–स्त्री० धुएँ जैसी गंध।

धुआँरा–पु० दे० 'धुआँकश'।

धुआँसा–पु० धुएँकी कालिख, धुआँ लगनेसे पड़नेवाली कालिख। वि० धुआँया हुआ।

धुकड़-पुकड़–पु० भय, शंका आदिसे मनका डाँवाडोल होना, धकधकी।

धुकधुकी–स्त्री० छाती और पेटके बीचका कुछ गहरा स्थान जहाँ धड़कन होती रहती है, कलेजा; धड़कन; गलेका एक गहना, पदिक।

धुकना*–अ० क्रि० झुकना, नत होना; काँपना; टूट पड़ना, झपटना।

धुकान*–स्त्री० दे० 'धुकार'।

धुकाना*–स० क्रि० गिराना; नवाना, झुकाना; धुआँ देकर गरमी पहुँचाना। अ० क्रि० काँपना, डरना।

धुकार–स्त्री० नगाड़ेकी आवाज; गड़गड़ाहट।

धुकारी*–स्त्री० दे० 'धुकार'।

धुक्कना*–अ० क्रि० दे० 'धुकना'।

धुक्कारना*–स० क्रि० दे० 'धुकाना'।

धुगधुगी–स्त्री० दे० 'धुकधुकी'।

धुज*–पु० दे० 'ध्वज'।

धुजा*–स्त्री० दे० 'ध्वजा'।

धुजिनी*–स्त्री० ध्वजिनी, सेना, फौज।

धुड़ंगा*–वि० नंगा (व्यक्ति); जिसके शरीरमें धूल पुती हो; धूलिधूसर और नंगा (व्यक्ति)।

धुतकारना–स० क्रि० दे० 'दुतकारना'।

धुताई*–स्त्री० धूर्तता।

धुतारा*–वि० दे० 'धूर्त'।

धुधुकार–स्त्री० 'धू-धू'की आवाज; घोर शब्द।

धुधुकारी–स्त्री० दे० 'धुधुकार'।

धुधुकी–स्त्री० दे० 'धुधुकार'।

धुन–स्त्री० किसी कार्यमें बराबर लगे रहनेका व्यसन, लगन; मनकी लहर, मौज; विचार, चिंतन; स्वरके आरोह-अवरोहकी दृष्टि से गानेका विशेष ढंग, स्वरभंगी; एक राग; दे० 'ध्वनि'। **मु०–का पक्का–**आरंभ किये हुए कामको पूरा करके छोड़नेवाला; फलोदयतक कर्म करनेवाला।

धुनकना–स० क्रि० दे० 'धुनना'।

धुनकी–स्त्री० धुनियोंका रुई धुननेका धनुष् जैसा औजार, फटका; लड़कोंके खेलनेका छोटा धनुष्।

धुनना–स० क्रि० रुईको धुनकीसे इस प्रकार साफ करना कि बिनौले तथा गंदगी निकल जाय और वह फुलफुली हो जाय; बेतरह पीटना; निराशामें अपना सिर पीट लेना; बिना रुके कहना; बिना रुके कोई काम करते जाना।

धुनवाना–स० क्रि० 'धुनना'का प्रेरणार्थक।

धुनि–* स्त्री० दे० 'ध्वनि'; [सं०] नदी।

धुनियाँ–पु० रुई धुननेका काम करनेवाला। † स्त्री० धुनकी–'सोनेकी धुनियाँ रेसमकी ताँत'–गीत।

धुनी–वि० जिसे किसी बातकी धुन हो, जो किसी धुनमें हो। * स्त्री० दे० 'ध्वनि'; दे० 'धूनी'; [सं०] नदी।

धुपना*–अ० क्रि० धुलना।

धुपाना†–स० क्रि० धूप दिखाना, सूखने आदिके लिए धूपमें रखना; धूपके धुएँसे सुवासित करना।

धुपेली–स्त्री० पसीनेसे होनेवाली फुंसी।

धुप्पस–स्त्री० डराने या धोखेमें डालनेके लिए किया गया काम, झाँसापट्टी।

धुमिलना*–स० क्रि० धूमिल बनाना।

धुमिला–वि० धुएँके रंगका, धुँधला।

धुमैला–वि० धूमिल, धुएँके रंगका।

धुरंधर–वि० [सं०] भार वहन करनेवाला; जोते जाने योग्य; जिसके ऊपर किसी कार्यका भार हो; किसी कामके होनेमें जिसका सबसे अधिक हाथ हो; उत्तम गुणोंसे युक्त; श्रेष्ठ; अग्रगण्य; प्रधान।

धुर–पु० [सं०] धुरा; गाड़ीका जूआ; भार, बोझ; धुरेके छोर पर लगनेवाली कील; जमीनकी एक नाप, बिस्वांसी; * ऊँचा स्थान; किला–'धीर धरती न फौज कुतुबके धुरकी' –भू०; मूल, आरंभ। वि० पक्का। अ० एकदम, (किसीकी) चरम सीमापर। **–ऊपर–**अ० [हिं०] एकदम ऊपर।

धुरजटी*–पु० दे० 'धूर्जटि'।

धुरड्डी†–स्त्री० दे० 'धुरेँडी'।

धुरना*–स० क्रि० पीटना; बजाना; भूसा बनानेके लिए पयालको फिरसे दाँना।

धुरपद–पु० दे० 'ध्रुपद'।

धुरवा*–पु० बादल।

धुरा–पु० [सं०] लकड़ी या लोहेका वह डंडा जिसके सहारे पहिया घूमा करता है, अक्ष; भार, बोझ।

धुरियाना†–स० क्रि० धूलसे ढकना।

धुरी–स्त्री० छोटा धुरा। **–देश,–राष्ट्र**–पु० (एक्सिस-कंट्रीज) द्वितीय महायुद्धके पूर्व बनाया गया नात्सी जर्मनी तथा फासिस्ट इटलीका गुट, जिसमें बादमें जापान भी शामिल हो गया था।

धुरीण–वि० [सं०] अग्रगण्य, श्रेष्ठ, प्रमुख; धुरा धारण करनेवाला; जिसपर किसी कार्यका भार हो।

धुरीन*–वि० दे० 'धुरीण'।

धुरेँडी, धुलँडी†–स्त्री० होलिका जलनेके बाद होनेवाला वसंतोत्सवका एक अंग, धूलिवंदन; मदनोत्सव।

धुरेटना*–स० क्रि० लगाना, पोतना; धूलसे ढकना।

धुर्–स्त्री० [सं०] बैलों आदिके कंधेपर रखा जानेवाला जूआ; भार, बोझ; रथ आदिका अग्रभाग; चोटी।

धुर्रा–पु० किसी वस्तुका चूर; कण। **मु० (धुर्रे) उड़ा देना**–धज्जी उड़ाना, सर्वथा नष्ट कर देना।

धुलना–अ० क्रि० पानी आदिके योगसे स्वच्छ किया जाना, धोया जाना; पानी पड़नेसे कटकर बह जाना।

धुलवाना–स० क्रि० दे० 'धुलाना'।

धुलाई–स्त्री० धोनेकी क्रिया; धोनेकी उजरत।

धुलाना–स० क्रि० धोनेका काम दूसरेसे कराना।

धुव*–वि०, पु० दे० 'ध्रुव'।

धुवका–स्त्री० [सं०] गीतका पहला पद, टेक, स्थायी।

धुवाँ–पु० दे० 'धुआँ'। **–कश**–पु० दे० 'धुआँकश।' **–धार**–वि०, अ० दे० 'धुआँधार'।

धुवाँरा–पु० छतमें बना हुआ धुआँ निकलनेका छेद।

धुवाँस–स्त्री० उरदका पिसान।

धुस्स–पु० ढहे हुए मकानकी मिट्टी, ईंट आदिका ढेर; टीला; नदी आदिके किनारेका बाँध।

धुस्सा–पु० ऊनका भारी कंबल।

धूँध*–स्त्री० दे० 'धुंध'।

धूँधर, धूँधुर*–वि० धुँधला। पु० अँधेरा; उड़ती हुई धूलि-राशि।

धू*–वि० स्थिर। पु० ध्रुव; ध्रुवतारा।

धूआँ–पु० दे० 'धुआँ'।

धूईँ–स्त्री० दे० 'धूनी'।

धूकना†–अ० क्रि० वेगसे आगे बढ़ना। स० क्रि० धुआँ पहुँचाकर केले आदिको पकाना।

धूजट*–पु० दे० 'धूर्जटि'।

धूजना*–अ० क्रि० हिलना, काँपना।

धूत–*वि० धूर्त, छली, पाखंडी, वंचक; [सं०] हिलाया हुआ; कंपित; छोड़ा हुआ, दूर किया हुआ, त्यक्त; डाँटा हुआ, झिड़का हुआ, धमकाया हुआ, भर्त्सित; विचरित। **–कल्मष,–पाप**–वि० पापरहित, निष्पाप।

धूतना*–स० क्रि० धूर्तता करना, दगा करना, छलना, वंचना करना।

धूति–स्त्री० [सं०] हिलना; कंपन; हठयोगकी एक क्रिया।

धूतुक, धूतू–पु० तुरही, नरसिंहा।

धूधू–पु० आगके जोरसे जलनेका शब्द।

धूनना–स० क्रि० रुई साफ करना, धुनना; * देवता आदिके निमित्त धूप आदिको आगमें जलाना, धूनी देना।

धूना–पु० एक पेड़ या उसका गोंद जो धूनी देने तथा वारनिश तैयार करनेके काम आता है।

धूनी–स्त्री० किसी देवताके आघ्रापणके निमित्त आगमें डाले गये गुग्गुल आदिका धुआँ; ठंडसे बचने या शरीरको तपानेके लिए साधुओं द्वारा अपने पास जलायी जानेवाली आग। **मु०–जगाना,–रमाना**–साधुओंका तपके लिए आगको अपने पास जलाये रखना; योगी होना, विरक्त होना।

धूप–पु० [सं०] देवताके आघ्रापणके लिए या सुगंधके निमित्त जलाये गये गुग्गुल आदिका धुआँ; गुग्गुल आदि गंधद्रव्य। (इसके पाँच भेद हैं–(१) निर्यास, (२) चूर्ण, (३) गंध, (४) काष्ठ और (५) कृत्रिम)। **–दान**–पु० [हिं०] धूप रखने या देनेका बरतन। **–दानी**–स्त्री० [हिं०] दे० 'धूपदान'। **–पात्र**–पु० दे० 'धूपदान'। **–बत्ती**–स्त्री० [हिं०] सुगंधके लिए जलायी जानेवाली एक प्रकारकी मसाला लगी हुई सींक।

धूप–स्त्री० आतप, घाम, सूर्यका प्रकाश। **–घड़ी**–स्त्री० एक यंत्र जिससे धूपके सहारे समयका ज्ञान होता है। **–छाँह**–स्त्री० एक तरहका कपड़ा जिसमें कई रंग दिखाई देते हैं। **मु०–खाना**–धूपमें सूखना अथवा सुखाया या फैलाया जाना; धूपका सेवन करना। **–खिलाना,–दिखाना**–धूप लगनेके लिए बाहर रखना। **–निकलना**–सूर्यका प्रकाश फैलना।

धूपना–अ० क्रि० दौड़ना (समासमें प्रयुक्त)। * स० क्रि० धूप देना, गंधद्रव्य जलाना; धूपसे बासना।

धूपायित–वि० [सं०] दे० 'धूपित'।

धूपित–वि० [सं०] धूपसे बासा हुआ; तप्त; थका हुआ।

धूम–पु० [सं०] धुआँ; कुहरा; धूमकेतु; अपचके कारण आनेवाली डकार। **–केतन**–पु० अग्नि (जिसके अस्तित्वके अनुमानका चिह्न धुआँ है); धूमकेतु। **–केतु**–पु० अग्नि; पुच्छल तारा; केतु ग्रह। **–ध्वज**–पु० अग्नि। **–पट**–पु० (स्मोक स्क्रीन) दे० 'धूमावरण'। **–पान**–पु० दंतरोग, नेत्ररोग, व्रण आदिमें विशिष्ट वस्तुओं, ओषधियोंको चिलमपर चढ़ाकर गाँजे आदिकी तरह पीना; तमाकू, गाँजा आदि पीना। **–पोत**–पु० जहाज, अग्निबोट। **–यान**–पु० रेलगाड़ी। **–योनि**–पु० बादल। **–ल**–वि० धुएँके रंगका, मटमैला।

धूम–स्त्री० तैयारीके साथ किये जानेवाले किसी बड़े काम या उत्सवका शोर; हल्लागुल्ला, उपद्रव; शुहरत, प्रसिद्धि; चर्चा; ठाट; तैयारी, समारोह। **–धड़क्का**–पु०, **–धाम**–स्त्री० ठाट-बाट, चहल-पहल, समारोह।

धूसर*–वि० दे० 'धूमल'।

धूमवान्(वत्)–वि० [सं०] जिससे धुआँ उठता या निकलता हो।

धूमाभ–वि० [सं०] धुएँके रंगका।

धूमायमान–वि० [सं०] धूमसे पूर्ण।

धूमावरण–पु० [सं०] (स्मोक स्क्रीन) तोपें, टैंक तथा सेनाकी गति-विधि आदि छिपानेके लिए फैलाये गये धुएँके बादल।

धूमित–वि० [सं०] जिसमें धुआँ लगा हो; जो धुआँ लगनेसे धुँधला हो गया हो।

धूमिल–वि० दे० 'धूमल'।

धूम्र–पु० [सं०] ललाई लिये काला रंग; पाप; दुष्टता। वि० ललाई लिये काले रंगका; धुँधला। **–पान**–पु० (असाधु) दे० 'धूमपान'।

धूम्रीकरण–पु० [सं०] (फ्यूमिगेशन) (रोगके कीटाणुओंसे मुक्त करनेके लिए या हवाकी गंदगी दूर करनेके लिए) किसी कमरे आदिमें सुगंधित धूम, संक्रमणनाशक गैस आदि प्रसारित करना।

धूर*–स्त्री० दे० 'धूल'। अ० दे० 'धुर'। **–धान**–पु०, **–धानी**–स्त्री० धूलका ढेर।

धूरजटी*–पु० दे० 'धूर्जटि'।

धूरत*–वि० दे० 'धूर्त'।

धूरा–पु० धूल; चूर्ण।

धूरि*–स्त्री० दे० 'धूल'।

धूरे*–अ० निकट, पास।

धूर्जटि–पु० [सं०] शिव।

धूर्त–वि० [सं०] वंचक, दगाबाज, छल करनेवाला।

धूर्तता–स्त्री० [सं०] धूर्तका गुण, वंचना, प्रतारणा, छल।

धूल–स्त्री० मिट्टी आदिका चूर, रज, रेणु; (ला०) अति तुच्छ वस्तु। **–धानी**–स्त्री० धूलका ढेर। **मु० (कहीं)–उड़ना**–तबाह या बरबाद होना, उजड़ जाना। **–उड़ाते फिरना**–मारा-मारा फिरना; जीविकाकी तलाशमें घूमना। **–की रस्सी बटना**–असंभव बातके लिए श्रम करना। **–चाटना**–बहुत दीनता प्रकट करना। **–झाड़ना**–हारकी लाज छोड़ देना। **–फाँकना**–जीविकाके अभावमें दीनावस्थामें इधर-उधर घूमते फिरना। **–में मिलना**–सर्वथा नष्ट होना, बरबाद होना। **–में मिलाना**–नष्ट करना, मटियामेट करना, बरबाद करना।

धूलि–स्त्री० [सं०] धूल, गर्द, रज। **–धूसर, –धूसरित**–वि० जो धूल लगनेसे भूरे रंगका हो गया हो।

धूसर–वि० [सं०] भूरे रंगका, मौलसिरीके रंगका, मटमैला; धूलमें सना हुआ।

धूसरा–वि० दे० 'धूसर'।

धूसरित–वि० [सं०] धूलमें लिपटा हुआ; भूरे रंगका।

धूसरी–स्त्री० [सं०] किन्नरीका एक भेद।

धूसला*–वि० दे० 'धूसरा'।

धूहा–पु० दे० 'ढूह'; वह पुतला जो चिड़ियों आदिको डरानेके लिए बनाया जाता है।

धृक, धृग*–अ० दे० 'धिक्'।

धृत–वि० [सं०] धारण या ग्रहण किया हुआ; पकड़ा हुआ; रखा हुआ। **–राष्ट्र**–पु० दुर्योधनके पिता; काले पैर और चोंचवाला हंस। **–वर्मा(र्मन्)**–वि० जिसने कवच धारण किया हो। **–व्रत**–वि० जिसने कोई व्रत धारण किया हो। पु० इंद्र; वरुण; अग्नि।

धृति–स्त्री० [सं०] धारण; ग्रहण; पकड़ना; ठहराव, स्थैर्य; धैर्य; तुष्टि; प्रीति; एक योग (ज्यो०); गौरी आदि सोलह मातृकाओंमेंसे एक; मनकी धारणा (इसके तीन भेद हैं–(१) सात्त्विकी, (२) राजसी, (३) तामसी); एक व्यभिचारी भाव (सा०); दक्षकी एक कन्या जो धर्मकी पत्नी है; चंद्रमाकी एक कला।

धृतिमान्(मत्)–वि० [सं०] धैर्यवाला, धीर; संतुष्ट।

धृष्ट–वि० [सं०] साहसी; लज्जारहित; ढीठ, उद्दंड; निर्दय। पु० अपराध करके निःशंक बना रहनेवाला नायक।

धृष्टता–स्त्री० [सं०] ढिठाई, उद्दंडता; निर्लज्जता; निर्दयता।

धेनु–स्त्री० [सं०] सद्यःप्रसूता गौ; दूध देनेवाली गाय; पृथ्वी। **–मुख**–पु० गोमुख नामक बाजा।

धेयना*–स० क्रि० ध्यान करना।

धेरिया†–स्त्री० लड़की, बेटी।

धेला†–पु० दे० 'अधेला'।

धेली†–स्त्री० अठन्नी।

धैना*–स्त्री० धंधा; आदत, टेव।

धैर्य–पु० [सं०] धीर होनेका भाव, धीरता; विकारोंके कारणोंके रहते हुए भी चित्तके विकृत न होनेका भाव, चित्तकी दृढ़ता, स्थिरता।

धोँकना*–अ० क्रि० काँपना–'सिद्धि कँपी, ब्रह्मनायक धोंको'–सुदामा०। स० क्रि० दे० 'धौँकना'।

धोँधा–पु० मिट्टीका लौंदा; बेडौल शरीर।

धोई–स्त्री० उड़द या मूँगकी दाल जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो। * पु० राजगीर।

धोका–पु० दे० 'धोखा'।

धोखा–पु० वस्तुस्थितिको छिपाकर दूसरोंको भ्रममें डालनेका व्यापार, वंचना; विश्वासघात, दगा; झूठी बात या नकली चीजमें विश्वास करनेसे होनेवाला भ्रम, भुलावा; कुछको कुछ समझ लेनेका भाव, मिथ्या प्रतीति; भ्रममें डालनेवाली वस्तु; भूल; खतरा, जोखिम; खटका, अंदेशा, संशय; कसर, त्रुटि; चिड़ियोंको डरानेके लिए खेतोंमें खड़ा किया जानेवाला मनुष्यके आकारका लकड़ी, पयाल आदिका पुतला, धूहा। **(धोखे)बाज़**–वि० धोखा देनेवाला, दगा करनेवाला, वंचक। **–बाज़ी**–स्त्री० धोखा देनेका काम, छल, प्रतारणा। **मु०–खाना**–छला जाना, भुलावेमें पड़ना; कुछको कुछ समझ लेना; हानि सहना। **–देना**–छलना, भुलावेमें डालना; विश्वासघात करना; (ला०) असमय मरकर या नष्ट होकर आशाओंपर पानी फेर देना या बनती बात बिगाड़ देना। **(धोखे)की टट्टी**–वह परदा जिसकी आड़में शिकारी किसी जानवरको मारता है; झूठ-मूठमें फँसा रखनेवाली चीज, मायाजाल। **–में आना**–दे० 'धोखा खाना'।

धोटा–पु० दे० 'ढोटा'।

धोती–स्त्री० एक प्रसिद्ध अधोवस्त्र; दे० 'धौति'। **मु०–ढीली होना**–हिम्मत छूटना; भयभीत होना, डर जाना।

धोना–स० क्रि० पानीके योगसे किसी वस्तुपरका मैल दूर

करना, जलसे स्वच्छ करना; दूर हटाना, छोड़ देना ।

धोप*–स्त्री० तलवार ।

धोब–पु० धोये जानेकी क्रिया, धुलाई ।

धोबन, धोबिन–स्त्री० धोबीकी स्त्री; धोबी जातिकी स्त्री; एक चिड़िया ।

धोबी–पु० कपड़ा धोनेका पेशा करनेवाला, रजक । **–पछाड़,–पाट**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **मु०–का कुत्ता**–उठल्लू आदमी । **–का छैला**–परायी वस्तुपर गर्व करनेवाला आदमी ।

धोम*–पु० धूम, धुआँ ।

धोरी–पु० धुरा धारण करनेवाला, धुरंधर; गाड़ी आदिमें जोते जानेवाले बैल आदि, धुर्य; अग्रणी, धुरीण ।

धोरे*–अ० समीप, निकट, किनारे ।

धोवत*–पु० धोती ।

धोवती*–स्त्री० धोती ।

धोवन–पु० धोनेकी क्रिया या भाव; वह पानी जिसमें या जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो ।

धोवा*–पु० धोवन; जल ।

धोवाना*–स० क्रि० धुलाना । अ० क्रि० धुलना ।

धौं*–अ० एक शब्द जो संशय, विकल्प, आदेश आदिमें प्रयुक्त होता है, न मालूम, न जाने, पता नहीं, कुछ ठीक नहीं, क्या मालूम; या, अथवा, कि; भला, तो ।

धौंकना–स० क्रि० आगको तेज करनेके लिए उसपर भाथी, पंखा आदिके द्वारा हवाका झोंका पहुँचाना; भार डालना ।

धौंकनी–स्त्री० सोनारोंकी आग दहकानेकी लोहे या बाँसकी नली; भाथी ।

धौंकी–स्त्री० दे० 'धौंकनी' ।

धौंज–स्त्री० दौड़धूप; बेकली, परेशानी, उद्विग्नता ।

धौंजना–स० क्रि० रौंदना, पाँवसे कुचलना । अ० क्रि० दौड़-धूप करना ।

धौंस–स्त्री० डाँट-डपट, घुड़की, धमकी; झाँसा-पट्टी; धाक । **–पट्टी**–स्त्री० भुलावा, झाँसा-पट्टी ।

धौंसना–स० क्रि० डाँटना-डपटना, धमकाना, घुड़कना; दंड देना; दबाना; पीटना ।

धौंसा–पु० बड़ा नगाड़ा; बूता, सामर्थ्य ।

धौंसिया–पु० धौंसा बजानेवाला; धोखेबाज; धौंस जमानेवाला ।

धौत–वि० [सं०] धोया हुआ, प्रक्षालित; धवल । पु० चाँदी ।

धौति, धौती–स्त्री० [सं०] हठयोगकी एक क्रिया जिसमें कपड़ेकी चार अंगुल चौड़ी और पंद्रह हाथ लंबी गीली पट्टीको निगलते और फिर बाहर निकालते हैं; इस क्रियामें काम आनेवाली कपड़ेकी पट्टी ।

धौर*–वि० धवल, सफेद । पु० एक पक्षी; सफेद कबूतर ।

धौरहर*–पु० दे० 'धौराहर' ।

धौरा–वि० धवल, श्वेत, सफेद । पु० सफेद बैल; धव वृक्ष; एक पक्षी ।

धौराहर–पु० दे० 'धरहरा' ।

धौरिय*–पु० गाड़ीमें जोता जानेवाला बैल, धुर्य ।

धौरी–स्त्री० उजली गाय; धौरा पक्षीकी मादा ।

धौरे*–अ० 'धोरे' ।

धौरेय–वि० [सं०] जो धुरा धारण करने योग्य हो, बोझ ढोने योग्य । पु० गाड़ी खीचनेवाला बैल; घोड़ा ।

धौर्त्य–पु० [सं०] दे० 'धूर्तता' ।

धौल–स्त्री० सिर, कंधे या पीठपर किया जानेवाला घूँसेकी तरहका भारी आघात; चपत; हानि । * पु० धौराहर । **–धक्कड़**–पु० उपद्रव, दंगा । **–धक्का***–पु० आघात, दबाव, चपेट । **–धप्पड़,–धप्पा**–पु० मारपीट; उपद्रव । **–धूत***–वि० धवल धूर्त, पक्का धूर्त ।

धौलहर, धौलहरा*–पु० धरहरा ।

धौला–वि० 'धवल' । पु० धव वृक्ष; सफेद बैल । **–गिरि**–पु० दे० 'धवलगिरि' ।

ध्यातव्य–वि० [सं०] दे० 'ध्येय' ।

ध्याता(तृ)–पु० [सं०] ध्यान करनेवाला ।

ध्यान–पु० [सं०] किसीके स्वरूपका चिंतन; विषय-विशेषमें चित्तकी एकाग्रता, गौर; सोच, विचार, चिंतन; बुद्धि, समझ; स्मृति, याद, खयाल; किसी एक विषयपर मनको स्थिर करनेकी क्रिया; चिंतन या धारण करनेकी वृत्ति; ध्येय विषयके साथ चित्तके प्रत्ययकी एकतानता (योग) । **–गम्य**–वि० केवल ध्यानसे प्राप्त होनेवाला । **–तत्पर,–निष्ठ,–पर**–वि० ध्यानमें मग्न । **–मग्न**–वि० ध्यानमें लीन, ध्यानमें लगा हुआ, ध्यानरत । **–योग**–पु० ध्यानरूपी योग; वह योग जिसमें ध्यानकी प्रधानता हो । **–स्थ**–वि० ध्यानमग्न, ध्यान करता हुआ । **मु०–आना**–स्मरण होना । **–छूटना**–चित्तकी एकाग्रता नष्ट होना । **–देना**–चित्तको किसी ओर प्रवृत्त करना; खयाल करना । **–धरना**–किसीके स्वरूपका चिंतन करना; एकाग्रभावसे ईश्वर आदिका चिंतन करना । **–पर चढ़ना**–स्मरण होना, याद होना । **–बँधना**–किसी ओर चित्तका लगा रहना, किसीके चिंतनमें चित्तका एकाग्र होना । **–में न लाना**–चिंता न करना; न विचारना । **–लगाना**–दे० 'ध्यान धरना' । **–से उतरना**–भूलना, विस्मृत होना ।

ध्याना*–स० क्रि० ध्यान करना, बराबर स्मरण करना ।

ध्यानावस्थित–वि०[सं०] ध्यानमें लगा हुआ, ध्यानमग्न ।

ध्यानी(निन्)–वि० [सं०] ध्यान करनेवाला; जो बराबर परमात्म-चिंतन किया करता हो, ध्यानशील ।

ध्येय–वि० [सं०] ध्यान करने योग्य; (वह विषय) जिसका ध्यान किया जाय । पु० ध्यानका विषय; उद्देश्य, लक्ष्य ।

ध्रुपद–पु० दे० 'ध्रुव-पद' ।

ध्रुव–वि० [सं०] स्थिर, अचल; निश्चित; अटल, पक्का; सदा एकरूप रहनेवाला, नित्य, शाश्वत । पु० एक प्रसिद्ध बालतपस्वी जो विष्णुके वरसे उत्तर दिशामें अचल ताराके रूपमें मेरुके ऊपर प्रतिष्ठित हैं, ध्रुवतारा; पृथ्वीके उत्तरी और दक्षिणी सिरे; आकाश । **–तारक,–तारा**–पु० उत्तर दिशामें मेरुके ऊपर सदा एक स्थानपर स्थित रहनेवाला एक तारा । **–दर्शक**–पु० एक दिशासूचक यंत्र जिसकी सुई बराबर उत्तर दिशाकी ओर रहती है, कुतुबनुमा । **–दर्शन**–पु० ध्रुवकी ओर संकेत करनेकी एक प्राचीन वैवाहिक प्रथा । **–पद**–पु० एक तरहका गीत ।

ध्रुवक–पु० [सं०] गीतका वह आरंभिक अंश जो बराबर दुहराया जाता है, टेक।

ध्रुवता–स्त्री०, **ध्रुवत्व**–पु० [सं०] ध्रुव होनेका भाव, अचलता, स्थिरता; निश्चतता, नैश्चित्य।

ध्वंस–पु० [सं०] नाश; मकान या इमारतका ढहना।

ध्वंसक–वि० [सं०] नाश करनेवाला; ढाहनेवाला।

ध्वंसावशेष–पु० [सं०] खँडहर; (रेकेज) विमान, पोतादिके टूटे-फूटे टुकड़े।

ध्वंसी (सिन्)–वि० [सं०] नाश करनेवाला, ध्वंसक।

ध्वज–पु० [सं०] सेना, रथ, देवता आदिका चिह्नभूत पताकायुक्त या पताका-रहित बाँस, पलाश आदिका लंबा डंडा; झंडा, पताका; निशान, चिह्न; ढोंग; दर्प, घमंड; पुरुषेंद्रिय। –**पात**–पु० नपुंसकता, क्लीवता। –**पोत**–पु० (फ्लैगशिप) बेड़ेका वह जहाज जिससे नौबलाध्यक्ष (नौसेनापति) यात्रा कर रहा हो और जिसपर उसका झंडा फहरा रहा हो। –**भंग**–पु० दे० 'ध्वजपात'। –**यष्टि**–स्त्री० वह डंडा जिसमें पताका लगी रहती है। –**विस्फारण**–पु० झंडेको सिकुड़ी हुई स्थितिसे निकालकर खोलना, फैलाना (अनफर्लिंग, ब्रेकिंग ऑफ दि फ्लैग)। –**स्तंभ**–पु० (फ्लैग स्टाफ) वह खंभा या बाँस जिसपर झंडा फहराया जाता है।

ध्वजवान् (वत्)–वि० [सं०] चिह्नविशेषसे युक्त, जिसका कोई विशेष चिह्न हो; जिसके पास या हाथमें ध्वज हो, ध्वजवाला। पु० ध्वजवाहक; वह ब्राह्मण जो ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्तके रूपमें मारे गये व्यक्तिकी खोपड़ी लेकर तीर्थोंमें भिक्षाटन करता फिरे।

ध्वजा–स्त्री० पताका, झंडा।

ध्वजारोपण–पु० [सं०] झंडा लगाना या गाड़ना।

ध्वजी (जिन्)–वि० [सं०] ध्वजवाला, जिसके पास या हाथमें ध्वज हो; जिसका कोई विशेष चिह्न हो।

ध्वजोत्तोलन–पु० [सं०] झंडेको खंभे आदिकी ऊँचाईतक उठाकर-चढ़ाकर, झटकेके साथ फहराना (हॉइस्टिंग ऑफ दि फ्लैग)।

ध्वनि–स्त्री० [सं०] शब्द, आवाज; ऐसा शब्द जिसका वर्णात्मक रूपमें ग्रहण न हो, मृदंग आदिसे उत्पन्न शब्द (न्या०); शब्दका स्फोट (न्या०); गीतका लय; वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थसे अधिक चमत्कारवाला हो (सा०); वह अर्थ जो सीधे शब्दोंसे न निकलता हो, व्यंग्यार्थ; गूढ़ आशय; स्वर। –**काव्य**–पु० व्यंग्य-प्रधान काव्य, वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ प्रधान हो। –**क्षेपक यंत्र**–पु० (माइक्रोफोन) एक यंत्र जिसके द्वारा विद्युत्की सहायतासे एक स्थानपर उच्चरित शब्द, वाक्य या ध्वनि दूर-दूरतक फैलायी जा सके। –**तरंग**–स्त्री० (साउंडवेव) कोई शब्द बोलने या कोई ध्वनि होनेपर उठनेवाली वह तरंग जो हवामें चारों ओर फैलकर सुननेवालेके कानोंतक पहुँचती है जिससे उसे उस शब्द या ध्वनिका ज्ञान होता है। –**वर्द्धक**,–**विस्तारक**–पु० (लाउडस्पीकर) ध्वनि या आवाजकी तीव्रता बढ़ानेवाला यंत्र। –**विक्षेपक**–पु० (ट्रांसमिटर) दे० 'दूरविक्षेपक'। –**विक्षेपण**–पु० (ट्रांसमिशन) दे० 'दूरविक्षेपण'। –**संग्राहक**–पु० (साउंड रिकार्डर) दे० 'ध्वन्यभिलेखक'।

ध्वनित–वि० [सं०] जो ध्वनिके रूपमें व्यक्त हुआ हो, जिसकी ध्वनि हुई हो, व्यंजित; शब्दित।

ध्वन्यभिलेखक–पु० [सं०] (साउंड रिकार्डर) ध्वनिका संग्रहण या अभिलेखन करनेवाला यंत्र अथवा साधन।

ध्वन्यात्मक–वि० [सं०] ध्वनिरूप, ध्वनिमय; (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ–पु० [सं०] वह अर्थ जिसका बोध व्यंजनावृत्तिसे होता हो।

ध्वस्त–वि० [सं०] ढहा हुआ, नष्ट; पतित; गलित।

ध्वांत–पु० [सं०] अंधकार; एक नरक जहाँ सदा अँधेरा छाया रहता है।

न

न–देवनागरी वर्णमालाका २०वाँ, व्यंजन वर्ण।

नंग–पु० नंगापन, नग्नता। वि० नंगा; पाजी। –**धड़ंग**–वि० जो सिरसे पैरतक वस्त्ररहित हो, एकदम नंगा।

नंगा–वि० जिसकी देहपर कोई कपड़ा न हो, जो कोई वस्त्र न धारण किये हो, विवस्त्र; निर्लज्ज, बेहया; निरावरण। –**झोरी, झोली**–स्त्री० छिपायी हुई चीजका पता लगानेके लिए किसीके कपड़ों आदिको टटोलकर या और तरहसे भली भाँति देखना, कपड़ोंकी तलाशी। –**बुच्चा,**–**बूचा**–वि० अकिंचन। –**लुच्चा**–वि० नंगा और लुच्चा, पाजी, बदमाश।

नँगियाना–स० क्रि० नंगा करना; सब कुछ ले लेना।

नँग्याना, नँग्यावना*–स० क्रि० दे० 'नँगियाना'।

नंद–†स्त्री० पतिकी बहिन, ननद। पु० [सं०] हर्ष; परमेश्वर, विष्णु; गोकुलके प्रमुख गोप जिनके यहाँ कृष्णका पालन हुआ था; मगधके एक प्राचीन राजा जिनसे नंदवंश चला; मेढक; नौकी संख्या। –**किशोर**–पु० कृष्ण। –**कुँवर**–[हिं०] कृष्ण। –**कुमार**–पु० कृष्ण। –**नंद,**–**नंदन**–पु० कृष्ण। –**नंदिनी**–स्त्री० योगमाया, दुर्गा। –**पुत्री**–स्त्री० योगमाया, दुर्गा। –**रानी**–[हिं०] स्त्री० नंदकी पत्नी, यशोदा। –**लाल**–[हिं०] पु० कृष्ण। –**वंश**–पु० मगधका एक प्रसिद्ध राजकुल जिसका विनाश चाणक्यने किया।

नंदन–वि० [सं०] आनंद देनेवाला, हर्षप्रद। पु० इंद्रका उद्यान; आनंदित होना; आनंद, हर्ष; पुत्र; २६ वाँ संवत्सर; मेघ। –**कानन**–पु० नंदन नामका इंद्रका उद्यान। –**माला**–स्त्री० एक प्रकारकी माला जिसे कृष्ण पहना करते थे। –**वन**–पु० दे० 'नंदनकानन'।

नंदना–स्त्री० [सं०] पुत्री। * अ० क्रि० आनंदित होना।

नंदा–स्त्री० [सं०] आनंद; दुर्गाका एक विग्रह; ननद। –**देवी**–स्त्री० हिमालयकी एक चोटी।

नंदात्मज–पु० [सं०] कृष्ण।

नंदात्मजा–स्त्री० [सं०] योगमाया।

नंदि–पु० [सं०] आनंद; परमानंद-स्वरूप विष्णु; नंदिकेश्वर; नाटकमें नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति; द्यूत। **–ग्राम**–पु० वह गाँव जहाँ भरतने रामके वनसे लौटनेतक निवास किया था। **–घोष**–पु० अर्जुनका रथ; हर्षध्वनि; मंगलघोषणा; वंदिजनका घोष।

नंदिकेश, नंदिकेश्वर–पु० [सं०] शिवका वाहन नंदी।

नंदित–वि० [सं०] आनंदयुक्त, हृष्ट, प्रसन्न; * बजता हुआ।

नंदिन*–स्त्री० पुत्री।

नंदिनी–स्त्री० [सं०] दुर्गा; पुत्री; गंगा; कामधेनुकी पुत्री जिसके प्रसादसे दिलीपके यहाँ रघुका जन्म हुआ; ननद।

नंदी(दिन्)–पु० [सं०] पुत्र; नाटकमें नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति; शिवका वाहन; शिवका गणविशेष; विष्णु; दागकर छोड़ा हुआ साँड़। **–गण**–पु० शिवके द्वारपाल, बैल; साँड़। **–पति**–पु० शिव, शंकर।

नंदीमुख*–पु० दे० 'नांदीमुख'।

नंदीश, नंदीश्वर–पु० [सं०] शिव; शिवके पार्श्वचरोंका अधिपति।

नंदेऊ*–पु० दे० 'नंदोई'।

नंदोई, नंदोसी–पु० ननदका पति, पतिका बहनोई।

नंबर–पु० [अं०] संख्या, गिनती; अंक; ३६ इंचकी एक माप। **–दार**–पु० [हिं०] एक तरहका जमींदार। **–वार**–अ० [हिं०] क्रमानुसार, सिलसिलेवार।

नंबरी–वि० नंबरवाला; मशहूर, कुख्यात। **–गज**–पु० कपड़ा नापनेकी एक माप जो ३६ इंचकी होती है। **–सेर**–पु० तौलका एक मान जो ८० रुपयेभर होता है।

नंस*–वि० नष्ट।

न–अ० [सं०] एक निषेध, वितर्क आदिका सूचक शब्द, नहीं, मत; कि नहीं, या नहीं।

नइहर†–पु० स्त्रियोंका पितृगृह, मायका।

नई–वि० स्त्री० नयाका स्त्री०। * वि० नीतिज्ञ; नीतिपालक; नीतिमान्। * स्त्री० नदी।

नउँजी*–स्त्री० लीची।

नउ*–वि० नया; नौ।

नउआ*–पु० नाऊ।

नउका*–स्त्री० दे० 'नौका'।

नउत*–वि० झुका हुआ, नत।

नउलि*–वि० नया, ताजा।

नओढ़*–स्त्री० दे० 'नवोढा'।

नक–स्त्री० नाकका संक्षिप्त रूप (प्रायः समासमें व्यवहृत)। **–कटा**–वि० जिसकी नाक कट गयी हो; (ला०) जिसका बहुत अपमान हुआ हो; निर्लज्ज। **–घिसनी**–स्त्री० जमीनपर नाक रगड़ना; बहुत अधिक दीनता प्रकट करना। **–चढ़ा**–वि० चिड़चिड़ा, तुनुकमिजाज। **–छिकनी**–स्त्री० एक घास जिसके फूलोंको सूँघनेसे छींकें आने लगती हैं। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेच। **–फूल**–पु० नाकमें पहनेका फूलके आकारका गहना। **–बेसर**–स्त्री० दे० 'बेसर'। **–मोती**–पु० नाकमें पहननेका मोती। **–बानी***–स्त्री० नाकमें दम–'…हों आयो नकबानी'–विनय०। **–सीर**–स्त्री० नाकसे खून निकलनेका रोग।

नकटा–वि० दे० 'नककटा'। पु० एक प्रकारका गीत।

नकटी–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी नाक कटी हो या जो बेहया हो। † स्त्री० नाकका मैल।

नक़द–वि०, पु० दे० 'नक़द'।

नकना*–अ० क्रि० दे० 'नकाना'; लाँघा जाना। स० क्रि० लाँघना, फाँदना; छोड़ना; नाकमें दम करना।

नक़ब–स्त्री० [अ०] सेंध। **–ज़नी**–स्त्री० सेंध लगाना।

नक़ल–स्त्री० [अ०] वह जो किसीसे रूप, बनावट आदिमें हूबहू मिलता-जुलता हो, प्रतिरूप, अनुकृति; लेख आदिकी प्रतिलिपि, कापी; किसीके वेश, वाणी आदिका यथावत् अनुकरण, स्वाँग। **–ची**–पु० नकल करनेवाला। **–नवीस**–पु० कागजातकी नकल करनेवाला कर्मचारी। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसपर हुंडियों आदिकी नकल की जाय।

नक़ली–वि० [अ०] जो किसीका अनुकरणमात्र हो, अवास्तव, असलीका उलटा; खोटा, जाली; झूठा, बना हुआ।

नकशा–पु० दे० 'नक़्शा'। **–नवीस**–पु० दे० 'नक्शानवीस'।

नकस–पु० दे० 'नक़्श'। **–मार**–पु० दे० 'नक़्शमार'।

नकाना*–अ० क्रि० आजिज आना। स० क्रि० परेशान करना, नाकमें दम करना; लाँघनेमें प्रवृत्त करना।

नक़ाब–स्त्री०, पु० [अ०] मुँह ढकनेका सिरसे गलेतकका रंगीन या जालीदार कपड़ा; घूँघट। **–पोश**–वि० जिसने नकाब धारण किया हो, जिसका चेहरा नकाबसे ढका हो।

नकार–पु० [सं०] 'न' अक्षर; निषेध या अस्वीकृति-सूचक शब्द; अस्वीकृति, इनकार।

नकारना–अ० क्रि० अस्वीकृत करना, इनकार करना।

नकारा†–पु० नगाड़ा। वि० निकम्मा।

नकाशना†–स० क्रि० नक्काशी करना।

नकाशी–स्त्री० दे० 'नक़्क़ाशी'।

नकास†–पु० दे० 'नक़्क़ाश'।

नकासी–स्त्री० दे० 'नक़्क़ाशी'।

नकियाना†–अ० क्रि० नाकसे बोलना; नाकोंदम होना। स० क्रि० आजिज कर देना, बहुत तंग करना।

नक़ीब–पु० [अ०] वह व्यक्ति जो राजाओं आदिकी सवारीके आगे-आगे उनके वंशका यश गाता चलता है, बंदी, चारण।

नकुड़ा, नकुरा†–पु० नाक; नथना।

नकुल–पु० [सं०] नेवला; युधिष्ठिरके एक छोटे भाई।

नकेल–स्त्री० ऊँट, भालू आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी जिसके सहारे उन्हें इधरसे उधर ले जाते हैं। **मु०–हाथमें होना**–किसीका पूर्णतया वशमें होना।

नक्का–पु० सुईका छेद; ताशका एक्का; कौड़ी।

नक़्क़ारख़ाना–पु० [फ़ा०] नगाड़ा रखने और बजानेकी जगह, नौबतखाना। **मु०–(ने)में तूतीकी आवाज**–दे० 'तूती'के साथ।

नक़्क़ारची–पु० [फ़ा०] नगाड़ा बजानेवाला।

नक़्क़ारा–पु० [अ०] नगाड़ा; डुगडुगी। **मु०–बजाके**–खुल्लमखुल्ला। **–(रे)की चोट**–खुल्लमखुल्ला।

नक़्क़ाल–पु० [अ०] नकल करनेवाला; स्वाँग बनानेवाला।

नक़्क़ाश–पु० [अ०] लकड़ी आदिपर बेल-बूटे बनानेवाला;

चित्रकार; रंगसाज ।

नक़्क़ाशी–स्त्री० [अ०] बेल-बूटे खोदने, चित्र बनाने आदिका काम; चित्रकारी; रंगसाजी । –**दार**–वि० जिसपर बेल-बूटे खुदे या चित्र बने हों ।

नक्की–स्त्री० एकका चिह्न; एकके चिह्नसे जीता जानेवाला दावँ । –**पूर**–पु०,–**मूठ**–स्त्री० कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक जुआ ।

नक्कू–वि० जिसकी नाक बड़ी हो, बड़ी नाकवाला; जिसकी ओर सभी उँगली उठायें, दोषभाजन, दोषी ठहराया जानेवाला, बदनाम; सबके विपरीत आचरण करनेवाला ।

नक्तंचर–वि० [सं०] रातको विचरनेवाला, रातको निकलनेवाला । पु० राक्षस; चोर; उल्लू; गुग्गुल ।

नक्त–पु० [सं०] वह समय जब संध्या होनेमें केवल एक क्षणकी देर हो; रात । –**चारी (रिन्)**–वि० रातमें विचरण करनेवाला; रातको निकलनेवाला । पु० चोर; बिल्ली; उल्लू; राक्षस; शिव ।

नक्तांध–वि० [सं०] जिसे रातको दिखाई न दे ।

नक़्द–पु० [अ०] वह धन जो सिक्कोंके रूपमें हो; वह रकम जो फौरन अदा की जाय । वि० प्रस्तुत; अच्छा । अ० तुरंत रुपये देकर ।

नक़्दी–स्त्री० [अ०] रोकड़ । –**चिट्ठा**–पु० रोकड़बही ।

नक्र–पु० [सं०] नाक नामक जलजंतु; घड़ियाल, मगर ।

नक़्श–पु० [अ०] तसवीर बनाना; तसवीर, चित्र; फूल-पत्ती या बेल-बूटे आदिका काम; मुहर या ठप्पेका निशान; सिक्का; जुएका एक खेल जो ताशसे खेला जाता है; तावीज । वि० अंकित; चित्रित; लिखा हुआ । –**दार**–वि० जिसपर नक्श हो । –**बंद**–पु० नक्शा, चित्र बनानेवाला । –**बंदी**–स्त्री० नक्शा या चित्र बनानेका काम । –**मार**–पु० ताशके पत्तोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ । **मु०**–**होना**–अंकित हो जाना ।

नक़्शा–पु० [अ०] तसवीर, चित्र; प्राकृतिक या किसी और तरहकी स्थिति सूचित करनेवाला पृथ्वीके किसी भाग या खगोलका चित्र; चेहरा-मोहरा, आकृति; मकान, सड़क आदिका चित्र; ढंग, तर्ज; स्थिति, दशा, अवस्था; रूप-रंग, बनावट, शक्ल । –**नवीस**–पु० दे० 'नक़्शबंद' । –**नवीसी**–स्त्री० दे० 'नक़्शबंदी' । –**बंद**–पु० साड़ियों आदिके बेल-बूटेके नक्शे बनानेवाला ।

नक़्शी–वि० [अ०] जिसपर बेल-बूटे बने हों ।

नक्षत्र–पु० [सं०] तारा; तारोंके अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस समूह । –**दान**–पु० एक प्रकारका दान जिसमें भिन्न-भिन्न नक्षत्रोंमें भिन्न-भिन्न पदार्थोंके दानका विधान है । –**नाथ**,–**पति**–पु० चंद्रमा । –**पथ**–पु० नक्षत्रोंके भ्रमणका मार्ग । –**राज**–पु० चंद्रमा । –**लोक**–पु० वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित हैं, नक्षत्रोंका लोक; आकाश । –**विद्या**–स्त्री० ज्योतिषविद्या ।

नक्षत्री–वि० जो किसी अच्छे नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ हो, भाग्यशाली ।

नक्षत्रेश–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।

नख–पु०[सं०] नाखून; एक गंधद्रव्य; २०की संख्या; खंड, टुकड़ा । –**कुट्ट**–पु० नापित, नाई । –**क्षत**–पु० नाखूनके गड़नेसे पड़नेवाला चिह्न; पुरुष द्वारा किये मर्दन, स्पर्श आदिसे स्त्रीके स्तन आदिपर पड़नेवाला नखका चिह्न (सा०) । –**चारी (रिन्)**–पु० पंजेके बल चलनेवाला प्राणी । –**च्छत**,–**छोलिया***–पु० दे० 'नखक्षत' । –**दारण**–पु० नहरनी; बाज पक्षी । –**निकृंतन**–पु०,–**रंजनी**–स्त्री० नहरनी । –**रेख***–स्त्री० दे० 'नखक्षत' । –**लेखक**–पु० नख रँगनेवाला । –**विष**–पु० वह जीव जिसके नाखूनोंमें विष हो–जैसे मनुष्य, कुत्ता, बंदर, बिल्ली आदि । –**व्रण**–पु० नाखून गड़नेका चिह्न । –**शंख**–पु० छोटा शंख । –**शस्त्र**–पु० नहरनी । –**शिख**–पु० पैरके नाखूनसे लेकर सिरतकके अंग; इन अंगोंका वर्णन (सा०) ।

नख़–स्त्री०[फ़ा०] रेशमका बटा हुआ तागा; पतंगकी डोर ।

नखत*–पु० दे० 'नक्षत्र' । –**राज**,–**राय**–पु० चंद्रमा ।

नखतर*–पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नखतेस*–पु० चंद्रमा ।

नखत्र*–पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नखना–स० क्रि० नष्ट करना; पार करना । अ० क्रि० डाँका जाना, पार किया जाना ।

नखवान*–पु० नाखून ।

नखर–पु० [सं०] नख, पंजा; एक प्राचीन अस्त्र ।

नख़रा–पु० [फ़ा०] विलासचेष्टा, हाव-भाव; नाज-अदा; दिखावटी इनकार; बनना । –**(रे)बाज़**–वि० नखरा करनेवाला । –**बाज़ी**–स्त्री० नखरा करनेकी क्रिया ।

नखरायुध–पु० [सं०] दे० 'नखायुध' ।

नखरौट*–स्त्री० नखक्षत ।

नखांक–पु० [सं०] नाखून गड़नेका चिह्न; व्याघ्रनखी ।

नखाघात–पु० [सं०] दे० 'नखक्षत'; युद्ध या लड़ाईमें नख द्वारा किया गया आघात ।

नखानखि–स्त्री० [सं०] वह लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरेपर नखसे आघात करें ।

नखायुध–पु० [सं०] सिंह; बाघ; मुर्गा ।

नख़ास–पु० पशुओंका बाजार; घोड़ोंका बाजार; बाजार ।

नखियाना*–स० क्रि० नाखूनसे खरोंचना; (किसीमें) नाखून धँसाना ।

नखी (खिन्)–वि० [सं०] जिसके नाखून बड़े-बड़े हों; कँटीला । पु० सिंह; बाघ ।

नखेद*–पु० दे० 'निषेध' ।

नखोटना*–स० क्रि० नाखूनसे खरोचना या नोचना ।

नग–पु० अँगूठी आदिमें जड़ा जानेवाला बहुमूल्य पत्थर, नगीना; काँचका टुकड़ा; संख्या, थान; [सं०] वि० पर्वत; वृक्ष; सूर्य; सर्प; सातकी संख्या । जो गमन न करता हो, न चलने-फिरनेवाला, अचल, स्थिर । –**ज**–वि० पर्वतसे उत्पन्न । पु० हाथी । –**जा**–स्त्री० पार्वती; क्षुद्र पाषाणभेदा नामक लता । –**दंती**–स्त्री० विभीषणकी पत्नी । –**धर**–पु० कृष्ण जिन्होंने गोवर्धन पर्वतको धारण किया था । –**धरन***–पु० कृष्ण । –**नंदिनी**–स्त्री० पार्वती । –**पति**–पु० हिमालय; चंद्रमा (जो पौधों और ओषधियोंका अधिपति है); शिव; सुमेरु । –**भिद्**–पु० पत्थर तोड़नेका एक प्राचीन अस्त्र; कुठार; इंद्र;

कौआ। **–भू**–वि० पहाड़पर या पहाड़से उत्पन्न। पु० पाषाणभेदा लता। **–मूर्धा(र्धन्)**–पु० पहाड़की चोटी।

नगण–पु० [सं०] एक गण जिसमें तीनों अक्षर लघु हों।

नगण्य–वि० [सं०] जो गणनामें न आ सके, तुच्छ, निकृष्ट।

नगद–वि०, पु० दे० 'नक़द'; नागदमनी।

नगदी–स्त्री० दे० 'नक़दी'।

नगन*–वि० नग्न, निरावरण।

नगनी–स्त्री० वह कन्या जो रजोधर्मकी अवस्थाको न पहुँची हो; वह कम अवस्थाकी कन्या जो बिना ऊपरका शरीर ढके भी रह सकती हो; वस्त्रहीन स्त्री।

नगफनी*–स्त्री० दे० 'नागफनी'।

नग़मा–पु० [अ०] सुरीली आवाज; गान; राग।

नगर–पु० [सं०] कस्बेसे बड़ी और समृद्ध बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशोंके लोग बसते हों, पुर, शहर। **–आयोजन**–पु० (टाउन प्लैनिंग) सोच-विचारकर तैयार की गयी योजनाके अनुसार चौड़ी सड़कों, उद्यानों, उपवनों (पार्क्स), विद्यालयों, खेलके मैदानों आदिसे युक्त नगर बसानेका आयोजन करना, नगर-निर्माण-योजना। **–काक**–पु० तुच्छ व्यक्ति। **–कीर्तन**–पु० नगरमें घूम-घूमकर किया जानेवाला कीर्तन; गाजे-बाजेके साथ किया जानेवाला धर्मप्रचार। **–जन**–पु० नगरमें रहनेवाले लोग, नागरिक। **–नायिका, –नारी, –मंडना**–स्त्री० वारांगना, वेश्या। **–निगम**–पु० (म्यूनिसिपल कारपोरेशन) राज्यके किसी बड़े नगरकी नगरपालिका जिसे ऋणादि लेनेका तथा कुछ अन्य अधिकार भी प्राप्त होते हैं। **–निगमाध्यक्ष**–पु० (मेयर) किसी नगरनिगमका अध्यक्ष। **–पाल**–पु० वह जिसका काम सभी बाधाओंसे नगरकी रक्षा करना हो। **–पालिका**–स्त्री० (म्यूनिसिपलटी) नगरकी सफाई, रोशनी, सड़कों, पानी आदिकी व्यवस्था करनेवाली संस्था जिसके सभी या अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। **–पिता**–पु० (सिटीफादर) नगरपालिकाका सदस्य, नगर-शासक। **–प्रांत**–पु० उपनगर। **–भवन**–पु० (टाउनहाल) नगरका वह सार्वजनिक भवन जहाँ समवेत होकर किसी विषयपर विचार किया जाय या जहाँ सभाओं, भाषणों आदिका आयोजन किया जा सके। **–भाग**–पु० (वार्ड) स्थानीय प्रशासनकी सुविधाकी दृष्टिसे किये गये नगरके भागोंमेंसे कोई भाग, हलका। **–मार्ग**–पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क। **–रक्षा**–स्त्री० नगरकी देखभाल या शासन-प्रबंध। **–वासी(सिन्)**–पु० नगरमें रहनेवाला, नागर, पुरवासी। **–वृद्ध**–पु० (एल्डरमैन) नगर-निगमका मेयरसे छोटा पदाधिकारी।

नगराई*–स्त्री० नागरिकता; चतुरता, चालाकी।

नगराधिप–पु० [सं०] वह कर्मचारी जिसके ऊपर नगरकी रक्षा आदिका दायित्व हो।

नगराधिपति–पु० [सं०] दे० 'नगराधिप'।

नगराध्यक्ष–पु० [सं०] दे० 'नगराधिप'।

नगरी–स्त्री० [सं०] नगर।

नगरीय–वि० [सं०] नगर-संबंधी, नागरिक।

नगरेतर क्षेत्र–पु० [सं०] (मोफसिल) केंद्रस्थ नगरके आसपासके स्थान।

नगरोपांत–पु० [सं०] उपनगर।

नगवास*–पु० नागपाश।

नगवासी*–स्त्री० नागपाश।

नगाड़ा–पु० डुगडुगीकी शकलका एक बड़ा बाजा।

नगाधिप, नगाधिपति–पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु।

नगाधिराज–पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु।

नगारा–पु० दे० 'नगाड़ा'।

नगारि–पु० [सं०] इंद्र।

नगिचाना*–अ० क्रि० पास आना।

नगी–स्त्री० रत्न; छोटा रत्न; पार्वती; पहाड़ी स्त्री।

नगीच*–अ० दे० 'नज़दीक'।

नगीना–पु० [फ़ा०] शोभावृद्धिके लिए अँगूठी आदिमें जड़ा जानेवाला पत्थर या शीशेका रंगीन टुकड़ा। **–गर, –साज़**–पु० नगीना बनाने या जड़नेवाला।

नगेंद्र–पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु।

नगेश–पु० [सं०] दे० 'नगेंद्र'।

नगेसरि*–पु० नागकेसर।

नग्न–वि० [सं०] जिसके शरीरपर एक भी वस्त्र न हो, विवस्त्र, नंगा, दिगंबर; जिसपर कोई आवरण न हो, निरावरण।

नग्नतावाद–पु० [सं०] (न्यूडिज्म) पश्चिममें प्रचलित सिद्धान्त जिसके अनुयायी धूप और खुली हवाके समुचित सेवनकी दृष्टिसे विवस्त्र रहते हैं।

नग्ना–स्त्री० [सं०] वह कन्या जो रजोधर्मको प्राप्त न हुई हो; दस या बारह वर्षसे कम अवस्थाकी कन्या जो बिना ऊपरके शरीरको ढके भी घूम-फिर सकती हो; वेश्या स्त्री।

नग्मा–पु० दे० 'नग़मा'।

नग्र*–पु० दे० 'नगर'।

नघना–स० क्रि० लाँघना, पार करना।

नघाना–स० क्रि० पार कराना, लाँघनेका काम कराना।

नचना*–अ० क्रि० नाचना, नृत्य करना; इधर-उधर भटकना। वि० नाचनेवाला, जो नाचे; जो बराबर इधर-उधर घूमा करे।

नचनि*–स्त्री० नाचनेकी क्रिया या ढंग; नाच।

नचनिया*–पु० नाचनेका पेशा करनेवाला; नाचनेवाला।

नचवैया–पु० नाचनेवाला या नचानेवाला।

नचाना–स० क्रि० नाचनेमें प्रवृत्त करना; हैरान करना; किसीसे तरह-तरहके काम कराना; गोलाईमें घुमाना; इधरसे उधर घुमाना या फेरना।

नचीला*–वि० नाचता हुआ, चंचल।

नचौंहा*–वि० जो इधरसे उधर घूमा करे, चंचल, विलोल।

नछत्र*–पु० दे० 'नक्षत्र'।

नछत्री*–वि० जिसने किसी अच्छे नक्षत्रमें जन्म लिया हो, भाग्यशाली।

नज़दीक–अ० [फ़ा०] समीप, पास।

नज़दीकी–वि० [फ़ा०] निकटका। पु० निकटका संबंधी।

नज़र–स्त्री० [अ०] दृष्टि, निगाह; कृपा, दया; निगरानी, देखभाल; कुदृष्टि, टोना; परख; ध्यान; उपहार, उपायन, भेंट; वह रुपया, अशरफी आदि जिसे अधीनस्थ राजा या

प्रजावर्गके लोग राजाओं या बड़े जमीदारोंको दरबार, त्योहार या किसी अन्य विशिष्ट अवसरपर भेंट करते हैं; चढ़ावा। **–अंदाजी**–स्त्री॰ जाँच, परख। **–बंद**–वि॰ जो किसी स्थानमें कड़ी निगरानीमें रखा गया हो और जिसे निश्चित सीमाके बाहर जानेकी आज्ञा न हो, जिसे नजरबंदीकी सजा दी गयी हो। पु॰ नजरबंदीका खेल दिखानेवाला जादूगर। **–बंदी**–स्त्री॰ वह सजा जिसके अनुसार किसीको किसी स्थानमें कड़ी निगरानीमें रखते हैं और निश्चित सीमाके बाहर जानेकी अनुमति नहीं दी जाती; नजरबंद होनेकी स्थिति; जादूका खेल जिसे जादूगर दर्शकोंकी नजर बाँधकर किया करता हैं।**–बाग़**–पु॰ घरसे मिला हुआ बाग। **–व नियाज**–पु॰ भेंट-उपहार। **–सानी**–स्त्री॰ सुधार या संशोधनके लिए किसी कार्य या लेखको देखना। **मु॰–अंदाज करना**–दृष्टि न डालना; नापसंद करना।**–आना**–दिखाई देना। **–पर चढ़ना**–(किसीका) कोपभाजन होना; पसंद आ जाना। **–बदलना**–रुष्ट होना; इरादा बदलना। **–बाँधना**–मंत्र-प्रयोग आदिके द्वारा किसीको दृष्टि भ्रम उत्पन्न कर देना। **–लगना**–बुरी दृष्टिका असर होना। **–लगाना**–टोना करना।

नजरना*–अ॰क्रि॰ देखना। स॰क्रि॰ नजर लगाना।

नजरानना*–स॰ क्रि॰ नजर करना, भेंटमें देना, उपायनके रूपमें देना; नजर लगाना।

नज़राना–पु॰ भेंटमें दी जानेवाली वस्तु; उपायन, उपहार। अ॰ क्रि॰ नजर लग जाना। स॰ क्रि॰ नजर लगाना।

नजरि*–स्त्री॰ दे॰ 'नजर'।

नज़ला–पु॰ [अ॰] जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी।

नज़ाक़त–स्त्री॰ [फा॰] सुकुमारता।

नजात–स्त्री॰ [अ॰] मुक्ति, छुटकारा।

नज़ामत–स्त्री॰ [सं॰] नाजिमका पद; नाजिमका महकमा या दफ्तर; प्रबंध, इंतजाम।

नज़ारत–स्त्री॰ [अ॰] नाजिरका पद; नाजिरका महकमा या दफ्तर।

नज़ारा, नज्ज़ारा–पु॰ [अ॰] दृश्य; नजर; देखना।

नजिकाना*–अ॰ क्रि॰ पास पहुँचना, निकट पहुँचना।

नजीक*–अ॰ समीप, पास।

नज़ीर–स्त्री॰ [अ॰] उदाहरण, दृष्टांत, मिसाल; किसी मुकदमेका वह फैसला जो उसी ढंगके दूसरे मुकदमेमें मिसालके तौरपर पेश किया जाय।

नजूम–पु॰ [अ॰] ज्योतिष।

नजूल–पु॰ [अ॰] सरकारी जमीन।

नट–पु॰ [सं॰] नाट्य करनेवाला, अभिनेता; गा-बजाकर या तरह-तरहकी कसरतें या खेल-तमाशे आदि दिखाकर जीवनयापन करनेवाली एक जाति। **–राज**–पु॰ कृष्ण; शिव; कुशल नट। **–वर**–पु॰ प्रधान नट, सूत्रधार; अति कुशल नट; कृष्ण जो नाट्यके आचार्य माने जाते हैं। वि॰ चतुर, चालाक। **–सार,–सारा***–स्त्री॰ दे॰ 'नाट्यशाला'। **–सारी***–स्त्री॰ बाजीगरी।

नटई†–स्त्री॰ गला; गलेकी घंटी।

नटखट–वि॰ उपद्रवी, चंचल, शरीर, पाजी।

नटखटी–स्त्री॰ पाजीपन, शरारत।

नटता–स्त्री॰ [सं॰] नटका भाव या कार्य।

नटन–पु॰ [सं॰] नाचना; अभिनय करना।

नटना*–अ॰ क्रि॰ अभिनय करना; नाचना; एक बार कहकर फिर इनकार करना, मुकरना; नष्ट होना। स॰ क्रि॰ बिगाड़ना, नष्ट करना।

नटनि*–स्त्री॰ नर्तन, नृत्य; इनकार, मुकरना।

नटनी–स्त्री॰ दे॰ 'नटिन'।

नटसाल*–पु॰ नष्टशल्य, बाणकी गाँसी जो शरीरमें ही रह गयी हो; काँटेका वह हिस्सा जो निकल न सका हो; पुनः-पुनः उठनेवाली पीड़ा, टीस–'उठै सदा नटसाल लौं सौतिनके उर सालि'–बि॰।

नटिन, नटिनी–स्त्री॰ नटकी स्त्री; नट जातिकी स्त्री।

नटी–स्त्री॰ [सं॰] नाट्य करनेवाली स्त्री, अभिनेत्री; प्रधान अभिनेत्री, सूत्रधारकी स्त्री; नट, अभिनेताकी स्त्री; वेश्या; नट जातिकी स्त्री; एक रागिनीः नखो नामक गंधद्रव्य।

नटेश, नटेश्वर–पु॰ [सं॰] शिव।

नटैया*–स्त्री॰ गला; गरदन।

नठना*–अ॰ क्रि॰ नष्ट होना।

नढ़ना*–स॰ क्रि॰ गूँथना, पिरोना; कसना।

नत–वि॰ [सं॰] नम्रीभूत, झुका हुआ; टेढ़ा। पु॰मध्यंदिन-रेखासे किसी ग्रहकी दूरी; तगरमूल। **–द्रुम**–पु॰ लताशाल नामक वृक्ष। **–पाल**–पु॰ शरणागतका पालन करनेवाला, प्रणतपाल। **–मस्तक**–वि॰ जिसका सिर झुका हुआ हो।

नत*–अ॰ दे॰ 'नतु'।

नतइत†–पु॰ दे॰ 'नतैत'।

नतर, नतरक*–अ॰ दे॰ 'नतरु'।

नतरु*–अ॰ नहीं तो, अन्यथा।

नतांग–वि॰ [सं॰] जिसका बदन झुका हो।

नतांगी–स्त्री॰ [सं॰] स्त्री, नारी।

नति–स्त्री॰ [सं॰] नम्र होना, झुकना; नमन, नमस्कार; विनय; टेढ़ापन; झुकाव।

नतिनी†–स्त्री॰ बेटीकी बेटी।

नतीजा–पु॰ [फा॰] फल, परिणाम; परीक्षाफल।

नतु*–अ॰ नहीं तो, अन्यथा।

नतैत†–पु॰ रिश्तेदार, नातेदार।

नतैनी*–स्त्री॰ नाता, संबंध, रिश्ता।

नतोदर–वि॰ [सं॰] (कॉन्केव) जिसका ऊपरी हिस्सा चारों ओरसे भीतरकी ओर झुका हुआ हो।

नत्थी–स्त्री॰ कागज या कपड़ेके बहुतसे टुकड़ोंको एकमें गूँथना; एकमें गुँथे हुए कागज या कपड़ेके टुकड़े; मिसिल।

नथ–स्त्री॰ नाकमें पहननेका बालीकी शकलका एक गहना।

नथना–अ॰ क्रि॰ नत्थी होना, नाथा जाना; छेदा जाना। पु॰ नाकके छेदोंका आगेकी ओरका ऊपरी पर्दा जो साँस खींचने और छोड़नेमें पचकता और फूलता रहता है; बैल आदिकी नाक।

नथनी–स्त्री॰ छोटी नथ; बैल, भैंसकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; तलवारकी मूँठपरका छल्ला; नथके

आकारकी वस्तु ।

नथिया†–स्त्री० दे० 'नथ' ।

नथुना†–पु० दे० 'नथना' ।

नथुनी†–स्त्री० छोटी नथ ।

नद–पु० [सं०] बड़ी नदी–जैसे सोन, ब्रह्मपुत्र, सिंधु; समुद्र; एक ऋषि। **–पति,–राज**–पु० समुद्र ।

नदना*–अ० क्रि० पशुओंका बोलना; आवाज करना ।

नदर–वि० [सं०] (देश) जो नदीके पास हो; निर्भय, निडर ।

नदान*–वि० नादान, बेसमझ, अबोध ।

नदारद–वि० [फा०] खाली; गैरमौजूद; गायब, लुप्त ।

नदिया*–स्त्री० नदी ।

नदी–स्त्री० [सं०] जलकी वह बड़ी प्राकृतिक धारा जो किसी पहाड़, झील आदिसे निकलकर विशिष्ट मार्गसे बहती हुई दूसरी नदी, झील या समुद्रमें जा मिली हो; किसी तरल पदार्थकी बड़ी धारा । **–कूल**–पु० नदीका किनारा, तट । **–घाटी-योजना**–स्त्री० (रिव्हर व्हैली स्कीम) वह योजना जिसके अनुसार उपयुक्त स्थानोंपर नदीका बाँध आदि बनाकर नहरों द्वारा सिंचाईकी व्यवस्था की जाय । **–प्रवाह-विज्ञान**–पु० (हाइड्रो-डाइनेमिक्स) नदी-प्रवाहके या जलादिके प्रवाहके नियंत्रण या उससे उत्पन्न शक्ति-संबंधी विज्ञान । **मु०–नाव संयोग**–संयोगसे थोड़ी देरके लिए होनेवाली भेंट ।

नदीश–पु० [सं०] समुद्र; वरुण । **–नंदिनी**–स्त्री० लक्ष्मी ।

नद्ध–वि० [सं०] बँधा हुआ; ढका हुआ; मिलाया हुआ ।

नद्युत्सृष्ट–पु० [सं०] नदी द्वारा छोड़ी हुई भूमि, दरिया-बरार, गंगबरार ।

नधना–अ० क्रि० नाधा जाना; जोता जाना; किसी कार्यका आरंभ होना; किसी काममें लगना या जुटना ।

ननंद–स्त्री० [सं०] ननद, पतिकी बहन ।

ननकारना*–अ० क्रि० अस्वीकार करना, इनकार करना ।

ननद–स्त्री० दे० 'ननंद' ।

ननदी†–स्त्री० ननद ।

ननदोई–पु० ननदका पति ।

ननसार*–स्त्री० दे० 'ननिहाल' ।

ननिअउरा, ननियाउर*–पु० दे० 'ननिहाल' ।

ननिया ससुर–पु० पति या पत्नीका नाना ।

ननिया सास–स्त्री० पति या पत्नीकी नानी ।

ननिहाल–पु० नानाका घर ।

नन्हा–वि० छोटा ।

नन्हाई*–स्त्री० छोटापन ।

नन्हैया*–वि० दे० 'नन्हा' ।

नपाई–स्त्री० नापनेकी क्रिया या भाव; नापनेकी उजरत ।

नपाक*–वि० दे० 'नापाक' ।

नपुंस–पु० [सं०] क्लीव, हिजड़ा ।

नपुंसक–पु० [सं०] वह पुरुष जिसमें कामशक्ति न हो, हिजड़ा । वि० नामर्द; कायर; (शब्द) जो न स्त्रीलिंग हो, न पुंलिंग ।

नपुंसकता–स्त्री०, **नपुंसकत्व**–पु० [सं०] नपुंसक होनेका भाव; नपुंसक होनेका रोग, नामर्दी ।

नपुआ†–पु० नापनेके काम आनेवाला बरतन, मापदंड ।

नपुत्री*–वि० दे० 'निपुत्री' ।

नप्ता(प्तृ)–पु० [सं०] नाती; पोता ।

नप्त्री–स्त्री० [सं०] पुत्र या पुत्रीकी लड़की ।

नफ़र–पु० [अ०] मजदूर; नौकर; सेवक (साखी) ।

नफ़रत–स्त्री० [अ०] किसी चीजसे भागना; घृणा । **–अंगेज़**–वि० घृणा करने योग्य; घृणोत्पादक ।

नफ़री–स्त्री० [अ०] मजदूरकी दिनभरकी मजदूरी या काम ।

नफ़ा–पु० [अ०] फायदा, लाभ, हासिल ।

नफ़ासत–स्त्री० [अ०] नफीस–उम्दा होनेका भाव, बढ़ियापन, सुंदरता ।

नफ़ीरी–स्त्री० [फा०] शहनाई, तुरही ।

नफ़ीस–वि० [अ०] उम्दा, बढ़िया, सुंदर ।

नफ़्स–पु० [अ०] जान; आत्मा; व्यक्ति; वासना; भोगेच्छा; स्वार्थ । **–कुशी**–स्त्री० वासनाओंका दमन । **–परस्ती**–स्त्री० विलासिता, ऐयाशी; स्वार्थपरता ।

नबी–पु० [अ०] ईश्वरका दूत, पैगंबर ।

नबेड़ना, नबेरना†–स० क्रि० दे० 'निबेड़ना' ।

नबेला–वि० दे० 'नवेला' ।

नब्ज़–स्त्री० [अ०] नाड़ी; हाथकी वह रग जिसपर उँगली रखकर वैद्य रोगकी हालत समझते हैं । **मु०–छूटना,–न रहना**–नाड़ीकी गति रुक जाना ।

नब्बे–वि० अस्सी और दस । पु० नब्बेकी संख्या, ९० ।

नभ–पु० [सं०] सावनका महीना; आकाश । **–ग**–पक्षी, देवता इ० । वि० गगनगामी । **–ग-नाथ**–पु० गरुड़ ।

नभ (स्)–पु० [सं०] आकाश; सावनका महीना; मेघ; जल; वर्षा; विषसूत्र; आश्रय; पास (नंददास) ।

नभगामी–वि०, पु० दे० 'नभोगामी' ।

नभगेश–पु० [सं०] गरुड़ ।

नभचर–वि०, पु० दे० 'नभश्चर' ।

नभधुज*–पु० दे० 'नभोध्वज' ।

नभध्वज–पु० दे० 'नभोध्वज' ।

नभश्चक्षु(स्)–पु० [सं०] सूर्य ।

नभश्चर–वि० [सं०] आकाशमें विचरनेवाला । पु० पक्षी, देवता, गंधर्व आदि जो आकाशमें विचरते हैं; बादल; वायु ।

नभस्वान् (स्वत्)–वि० [सं०] बादलों या कुहरेसे भरा हुआ । पु० वायु ।

नभोगामी(मिन्)–वि०, पु० [सं०] दे० 'नभश्चर' ।

नभोध्वज–पु० [सं०] बादल ।

नभोनदी–स्त्री० [सं०] आकाशगंगा ।

नभोमंडल–पु० [सं०] मंडलाकार आकाश ।

नभोमणि–पु० [सं०] सूर्य ।

नभोवीथी–स्त्री० [सं०] दे० 'छायापथ' ।

नम–पु० [फा०] तर, सीला, आर्द्र ।

नमक–पु० [फा०] विशेष प्रकारके स्वादके लिए भोज्य वस्तुओंमें छोड़ा जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण; लावण्य, सलोनापन । **–ख्वार**–वि० नमक खानेवाला । **–दान**–पु० नमक रखनेका पात्र । **–हराम**–वि० स्वामी या पालकसे छल या द्रोह करनेवाला, कृतघ्न । **–हरामी**–स्त्री० स्वामी या पालकसे छल या द्रोह करनेकी क्रिया या दुर्गुण, कृतघ्नता । **–हलाल**–वि० स्वामी या पालककी

यथोचित सेवा करनेवाला ।**-हलाली**-स्त्री० नमकहलाल होनेका भाव या गुण। मु०-**अदा करना**-स्वामी या पालककी यथोचित सेवा करना, उसके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना । **(किसीका)-खाना**-(किसीकी) कृपासे निर्वाह करना, (किसीकी) सेवा करके जीविका चलाना । **(कटेपर)-छिड़कना**-दुःखीको और दुःख देना । **-फूटकर निकलना**-नमकहरामीका कुफल मिलना । **-मिर्च मिलाना**-किसी बातको आकर्षक या प्रभावोत्पादक बनानेके लिए उसमें अपनी ओरसे कुछ और जोड़ देना।

नमकीन-वि० [फा०] जिसमें नमक छोड़ा गया हो; जिसमें नमकका स्वाद हो; लावण्ययुक्त, सलोना, सुंदर । पु० नमक डालकर तैयार किया गया व्यंजन या पकवान।

नमदा-पु० [फा०] जमाया हुआ ऊनी कपड़ा ।

नमन-पु० [सं०] प्रणाम करना; नमस्कार, प्रणाम; झुकनेकी क्रिया।

नमना*-अ० क्रि० नत होना; प्रणाम करना ।

नमनि*-स्त्री० दे० 'नमन' ।

नमनीय-वि० [सं०] नमस्कार या प्रणाम करने योग्य, पूज्य ।

नमश-स्त्री० [फा०] दूधका थोड़ा जमा हुआ फेन जो जाड़ेके दिनोंमें बिकता है ।

नमसकारना*-स० क्रि० नमस्कार करना ।

नमस्करण-पु० [सं०] नमस्क्रिया ।

नमस्कार-पु० [सं०] किसीके प्रति विनय सूचित करनेके लिए सिर नवाना, हाथ जोड़ना आदि ।

नमस्क्रिया-स्त्री० [सं०] दे० 'नमस्कार' ।

नमस्ते-अ० [सं०] एक वाक्य जिसका अर्थ है-'आपको नमस्कार है' ।

नमाज़-स्त्री० [फा०] मुसलमानोंकी ईश्वरोपासना ।**-गाह**-पु०, स्त्री० मस्जिदमें नमाज पढ़नेकी जगह ।

नमाना*-स० क्रि० झुकाना; वशमें लाना ।

नमित-वि० [सं०] झुका हुआ; झुकाया हुआ ।

नमी-स्त्री० [फा०] तरी, सीलन ।

नमूना-पु० [फा०] किसी वस्तुका वह छोटा या थोड़ा अंश जिससे अंशीका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय, बानगी; वह वस्तु जिससे उस ढंग या जातिकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; वह जिसका अनुकरण किया जायं, आदर्श; खाका ।

नम्य-वि० [सं०] जो झुक सके ।

नम्यता-स्त्री० [सं०] (प्लायेबिलिटी) मोड़े जाने या झुका दिये जानेपर वैसा ही रह जानेका गुण ।

नम्र-वि० [सं०] झुका हुआ, नत; विनीत; वक्र ।

नय-पु० [सं०] ले जाने या नेतृत्व करनेकी क्रिया; नीति; राजनीति; नम्रता; व्यवहार, वर्ताव; सिद्धांत, मत; दूरदर्शिता; नैतिकता; योजना । वि० नेतृत्व करनेवाला; उपयुक्त, उचित । * स्त्री० नदी ।**-कोविद,-ज्ञ**-वि० नीति जाननेवाला, नीतिनिपुण । **-चक्षु(स्)**-वि० दूरदर्शी, नीतिज्ञ । **-नागर**-वि० नीतिनिपुण । **-नेता(तृ)**-पु० बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ ।**-पीठी**-स्त्री० शतरंजकी बिसात। **-विद्,-विशारद**-पु० राजनीतिका ज्ञाता । **-शील** वि० विनयी; नीतिज्ञ ।

नयकारी*-पु० नर्तकोंका मुखिया ।

नयन-पु० [सं०] ले जाना या नेतृत्व करना;शासन करना; बिताना, यापन; आँख, दृष्टि । **-गोचर**-वि० दे० 'दृष्टिगोचर' । **-च्छद**-पु० पलक । **-जल**-पु० आँसू। **-पट**-पु०पलक।**-वारि,-सलिल**-पु०आँसू ।**-विषय**-पु० दृश्य वस्तु; क्षितिज; दृष्टिपथ ।

नयना*-अ० क्रि० झुकना, नम्र होना; नमस्कार करना । पु० दे० 'नयन' ।

नयनाभिराम-वि० [सं०] जो देखनेमें सुंदर हो, नेत्रप्रिय।

नयनू-पु० नवनीत, मक्खन; एक तरहकी बूटीदार मलमल।

नयनोत्सव-पु० [सं०] दीपक; प्रियदर्शन वस्तु ।

नयनोपांत-पु० [सं०] आँखकी कोर, अपांग ।

नयर*-पु० नगर ।

नया-वि० जिसका उत्पादन, निर्माण, प्रकाशन, वयन, प्रवर्तन, ज्ञान या आविष्कार कुछ ही समय पूर्व हुआ हो, नवीन, नूतन, ताजा, पुरानाका उलटा; कम उम्रका; जिससे पहले-पहल साक्षात्कार या परिचय हुआ हो; जो कुछ ही समय पहले प्रकट हुआ, देखा गया, मिला या पाया गया हो; हालका बना या बसा हुआ; पहलेवालेका स्थानापन्न; जिसका उपयोग पहले-पहल किया जा रहा हो, जिससे किसी दूसरेने कभी काम न लिया हो; जिसका आरंभ या पुनरारंभ अभी हालमें हुआ हो । [स्त्री० 'नयी'] **-पन**-पु० नया होनेका भाव, नवीनता ।

नर-पु० [सं०] पुरुष, मर्द; नरसिंहके शरीरके नरभागसे उत्पन्न एक दिव्य महर्षि; अर्जुन; विष्णु; घोड़ा; शतरंजका मोहरा; सेवक; *पानी बहनेका नल । वि० पुरुष जातिका (मर्द) । **-कंत***-पु० राजा, नृप । **-कपाल**-पु० मनुष्यकी खोपड़ी । **-केशरी(रिन्),-केसरी-(रिन्)**-पु० विष्णुके अवतार नृसिंह; सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य। **-केहरी***-पु० दे० 'नरकेशरी' । **-तात**-पु० राजा । **-दारा**-पु० जनखा, नपुंसक । **-देव**-पु० राजा; ब्राह्मण ।**-द्विट्(ष्)**-पु० राक्षस ।**-नाथ,-नायक**-पु० राजा । **-नारायण**-पु० नर और नारायण-अर्जुन और कृष्ण जिन्हें एक ही सत्त्वके दो रूप मानते हैं । **-नारी**-स्त्री० अर्जुनकी स्त्री द्रौपदी; पुरुष-स्त्री ।**-नाह***-पु० राजा । **-नाहर**-पु० [हिं०] दे० 'नरकेशरी' । **-पति**-पु० राजा । **-पद**-पु० दे० 'जनपद' ।**-पशु**-पु० पशुतुल्य मनुष्य । **-पाल**-पु० राजा ।**-पिशाच**-पु० पिशाचकी तरह क्रूर स्वभाववाला मनुष्य, बहुत बड़ा नीच मनुष्य । **-पुंगव**-पु० श्रेष्ठ मनुष्य । **-बलि**-स्त्री० मनुष्योंकी बलि । **-भक्षी(क्षिन्),-भुक्(ज्)**-पु० मनुष्योंको खानेवाला, राक्षस । **-मेध**-पु० मनुष्योंकी बलि ।**-यंत्र**-पु० समय जाननेका एक प्रकारका प्राचीन यंत्र, धूपघड़ी ।**-यान,-रथ**-पु० मनुष्य द्वारा खींची या ढोयी जानेवाली सवारी (डोली, पालकी, रिक्शा इ०) । **-लोक**-पु० मर्त्यलोक; मनुष्यजाति । **-वध**-पु० नरहत्या । **-वर**-पु० श्रेष्ठ मनुष्य । **-वाहन**-पु० कुबेर; दे० 'नरयान' । **-व्याघ्र**-पु० श्रेष्ठ पुरुष; एक जलजंतु जिसका ऊर्द्ध्वभाग बाघ

जैसा और अधोभाग मनुष्य जैसा होता है। **–शार्दूल–** पु० दे० 'नरव्याघ्र'। **–श्रृंग–**पु० एक अलीक कथन (मनुष्यका सींग जिसका होना असंभव है)। **–सिंघ*–** पु० दे० 'नरसिंह'। **–सिंह–**पु० विष्णुका वह विग्रह जिसे उन्होंने चौथे अवतारमें धारण किया था। इसमें विष्णुके शरीरका आधा भाग सिंह जैसा था और आधा मनुष्य जैसा। **–हत्या–**स्त्री० मनुष्यको मार डालना, नरवध। **–हरि–**पु० दे० 'नरसिंह'।

नरई–स्त्री० भैंस, घोड़े आदिको खिलानेके कामकी तालमें होनेवाली एक घास; घास आदिका पोला डंठल।

नरक–पु० [सं०] धर्मशास्त्रके अनुसार वह स्थान जहाँ पापियोंकी आत्माओंको अपने कुकृत्योंका फल भोगनेके लिए जाना पड़ता है; बहुत गंदी जगह; वह स्थान जहाँ बहुत कष्ट हो। **–गामी(मिन्)–**वि० नरकमें जानेवाला। **–चतुर्दशी–**स्त्री० दिवालीके ठीक पहले पड़नेवाली चतुर्दशी।

नरकट–पु० पतली-लंबी पत्तियों तथा पतले-गाँठदार डंठलवाला पौधा जिससे कलम, चटाई आदि बनाते हैं।

नरकल, नरकुल–पु० नरकट।

नरकस–पु० नरकट।

नरकांतक–पु० [सं०] (नरकासुर-नाशक) कृष्ण।

नरकारि–पु० [सं०] कृष्ण।

नरकासुर–पु० [सं०] पृथ्वीके गर्भसे उत्पन्न एक असुर जिसका वध कृष्णने किया था।

नरगिस–पु० [फा०] हलके पीले रंगका एक प्रसिद्ध फूल जो उर्दू-फारसी साहित्यमें आँखका उपमान है।

नरतक*–पु० दे० 'नर्तक'।

नरद–स्त्री० दे० 'नर्द'।

नरदन–पु० दे० 'नर्दन'।

नरदवाँ–पु० नाबदान।

नरदा†–पु० नाबदान।

नरम–वि० दे० 'नर्म'।

नरमट–स्त्री० मुलायम मिट्टीवाली जमीन।

नरमा–स्त्री० एक प्रकारकी कपास; सेमरकी रुई; एक तरहका मुलायम कपड़ा।

नरमाई*–स्त्री० दे० 'नर्मी'।

नरमाना–अ० क्रि० नरम होना, मुलायम होना; कम होना; शांत होना। स० क्रि० नरम करना; कम करना।

नरमी–स्त्री० दे० 'नर्मी'।

नरर्षभ–पु० [सं०] राजा।

नरसिंगा, नरसिंघा–पु० टेढ़े आकारका एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।

नरसों–अ० बीते हुए परसोंके पहले या आनेवालेके पीछे। पु० बीते हुए परसोंके पहले या आनेवालेके पीछेका दिन।

नरहड़, नरहर–स्त्री० पिंडलीके ऊपरकी हड्डी।

नरांतक–पु० [सं०] रावणका एक पुत्र।

नराच–पु० बाण, तीर; [सं०] एक वर्णवृत्त।

नराज–वि० दे० 'नाराज़'।

नराजना*–स० क्रि० नाराज करना, क्रुद्ध करना, अप्रसन्न करना। अ० क्रि० नाराज होना, अप्रसन्न होना।

नराट*–पु० राजा।

नराधम–पु० [सं०] नीच मनुष्य।

नराधिप, नराधिपति–पु० [सं०] राजा।

नरायण–पु० [सं०] विष्णु।

नरायन†–पु० दे० 'नारायण'।

नरिंद*–पु० नरेंद्र, राजा।

नरिअर, नरियर†–पु० दे० 'नारियल'।

नरिअरी†–स्त्री० दे० 'नरेली'।

नरिया†–स्त्री० एक तरहका अर्द्धवृत्ताकार लंबा खपड़ा।

नरियाना†–अ० क्रि० चिल्लाना।

नरी–स्त्री० [सं०] स्त्री; [फा०] बकरी या बकरेका रँगा हुआ चमड़ा; नरई घास; † नली, छुच्छी; सुनारोंकी बाँसकी बनी फुँकनी।

नरुवा†–पु० अनाजवाले पौधोंका (पोला) डंठल।

नरेंद्र–पु० [सं०] राजा; विषवैद्य। **–मंडल–**पु० (प्रिंसेज चेंबर्स) अंग्रेजी राज्यके समय बनी देशी नरेशोंकी संस्था।

नरेली–स्त्री० छोटा नारियल; नारियलकी खोपड़ी या उसका बना हुक्का।

नरेश, नरेश्वर–पु० [सं०] राजा।

नरेस*–पु० राजा।

नरौं†–अ०, पु० दे० 'नरसों'।

नरोत्तम–पु० [सं०] श्रेष्ठ मनुष्य; विष्णु।

नर्क–पु० [सं०] नाक; * दे० 'नरक'।

नर्कट–पु० दे० 'नरकट'।

नर्गिस–पु० दे० 'नरगिस'।

नर्त–वि० [सं०] नाचनेवाला। पु० नाच, नर्तन।

नर्तक–पु० [सं०] नाचने या नृत्य करनेका पेशा करनेवाला; अभिनेता; शिव।

नर्तकी–स्त्री० [सं०] नाचने या नृत्य करनेका पेशा करनेवाली स्त्री; अभिनेत्री; हथिनी; मोरनी।

नर्तन–पु० [सं०] नाच, नृत्य; नाचना या नृत्य करना। **–गृह–**पु०, **–शाला–**स्त्री० नाचनेके लिए बनाया गया या केवल नाचके काममें आनेवाला घर, नाचघर। **–प्रिय–**वि० जिसे नाच अच्छा लगे। पु० शिव; मोर।

नर्तना*–अ० क्रि० नाचना, नृत्त करना।

नर्तयिता(तृ)–पु० [सं०] नाचनेवाला; नाचना सिखलानेवाला।

नर्द–वि० [सं०] डँकरने या गरजनेवाला। स्त्री० [फा०] चौसरकी गोटी।

नर्दन–पु० [सं०] गर्जन; ऊँचे स्वरमें गुण-गान करना।

नर्दा†–पु० दे० 'नरदा'

नर्दी (र्दिन्)–वि० [सं०] गरजनेवाला।

नर्म(न्)–पु० [सं०] हँसी, परिहास, विनोद। **–द–** वि० हँसानेवाला, परिहासजनक, विनोदकर। पु० नर्मसचिव, विदूषक। **–सचिव, –सुहृद्–**पु० राजाको हँसाने, प्रसन्न रखनेके लिए उसके साथ रहनेवाला व्यक्ति, राजाका हँसी-परिहासका सखा, विदूषक।

नर्म–वि० [फा०] गुदगुदा, मुलायम, कोमल; आसान, सहल; सस्ता; जो तेज न हो, धीमा; विनम्र, विनययुक्त; खोटा, नीच; मंदा। **–गर्म–**वि० सस्ता-महँगा; बुरा-

भला। -**दिल**-वि० कोमल हृदयवाला।

नर्मठ-पु० [सं०] परिहास-कुशल मनुष्य, मसखरा; जार।

नर्मदेश्वर-पु० [सं०] नर्मदामें पाया जानेवाला एक शिवलिंग।

नर्मी-स्त्री० [फा०] नर्म होनेका भाव।

नल-पु० पानी, हवा आदिको एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेके लिए धातु, काठ आदिका बना डंडेके आकारका पोला लंबोतरा टुकड़ा; एकमें जोड़े हुए ऐसे बहुतसे टुकड़े; वह नल जिसके द्वारा घरोंमें पानी पहुँचाया जाता है; पेशाबकी नली; * आदमी; [सं०] निषध देशके एक प्राचीन और प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा जिनका विवाह विदर्भनरेश भीमकी कन्या दमयंतीसे हुआ था; रामकी सेनाका एक भट जिसने नीलके सहयोगसे समुद्रपर पत्थरका पुल बाँधा था। -**कूप**-पु० [हिं०] (ट्यूबवेल) खेतों आदिमें जमीनके भीतर बैठाया गया नल, जिसका एक सिरा उस गहराईतक पहुँचता है जहाँ पानी रहता है।

नलनी*-स्त्री० दे० 'नलिनी'।

नलिका-स्त्री० छोटा और पतला नल, नली; [सं०] नली नामका गंधद्रव्य; जुलाहोंका कपड़ा बुननेका एक औजार; एक प्राचीन अस्त्र।

नलिन-पु० [सं०] कमल; कुमुद; सारस; नील; जल।

नलिनी-स्त्री० [सं०] कमलिनी; वह जलाशय जिसमें कमलकी प्रचुरता हो; कमलोंका समूह; नली नामका गंधद्रव्य; नदी।

नली-स्त्री० छोटा और पतला नल; बंदूकमें वह लंबा छेद जिसमेंसे होकर गोली बाहर आती है; नलके आकारकी पतली हड्डी; [सं०] मैनसिल; नलिका नामक गंधद्रव्य।

नलुआ-पु० पशुओंका एक रोग; छोटा नल; बाँसकी पोर।

नलोपाख्यान-पु० [सं०] राजा नलकी कथा।

नल्लिका-स्त्री० (पिपेट) किसी द्रव पदार्थका थोड़ा-सा अंश एक पात्रसे निकालकर दूसरे पात्रमें डालने, गिरानेके लिए प्रयुक्त पतली छोटी नली (रसा० वि०)।

नव-वि० [सं०] नया, नूतन। -**जात**-वि० तुरंतका पैदा हुआ, नया। -**ज्वर**-पु० वह ज्वर जो अभी हालमें आरंभ हुआ हो, तरुण ज्वर। -**तन***-वि० नूतन, नया। -**नी**-स्त्री० ताजा मक्खन। -**नीत**-पु० दे० 'नवनी'। -**प्रसूता**-स्त्री० वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो। -**मल्लिका**-स्त्री० चमेली; नेवारी नामका फूल; इसका झाड़। -**यौवन**-पु० नयी जवानी, चढ़ती जवानी। -**यौवना**-स्त्री० वह स्त्री जिसकी चढ़ती जवानी हो, तरुणी। -**रंग**-वि० [हिं०] खिलते हुए सौंदर्यवाला, अभिनव छविसे युक्त; नवीन रूप या शोभासे युक्त। -**रंगी**-वि० [हिं०] नित्य नये रंगमें रँगा रहनेवाला, रँगीला। -**वधू**-स्त्री० नवविवाहिता स्त्री, नयी दुलहिन। -**शिक्षित**-वि० जिसने अभी हालमें कोई कला या विद्या सीखी हो; जिसने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की हो। -**संगम**-पु० पति और पत्नीका प्रथम मिलन, प्रथम समागम। -**सर***-वि० नयी उम्रका। दे० 'नव(न्)'के साथ। -**ससि***-पु० द्वितीयाका चंद्रमा। -**सिखा**-वि० [हिं०] दे० 'नौसिखुआ'।

नव(न्)-वि० [सं०] नौ। पु० नौकी संख्या, ९। -**कुमारी**-स्त्री० नवरात्रमें पूजी जानेवाली नौ कुमारियाँ। -**खंड**-पु० पृथ्वीके नौ विभाग-भारत, इलावृत्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश। -**ग्रह**-पु० नौ ग्रह-सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु। -**दुर्गा**-स्त्री० दुर्गाके नौ विग्रह-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। -**द्वार**-पु० शरीरके नौ छिद्र जो प्राणके निकलनेके नौ मार्ग हैं-दो नेत्र, नाकके दोनों छिद्र, मुख, दो कान और दो गुप्तेंद्रियाँ। -**द्वीप**-पु० बंगालका एक प्राचीन विद्याकेंद्र, नदिया। -**धातु**-स्त्री० नौ प्रकारकी धातुएँ। -**निधि**-स्त्री० कुबेरकी नौ निधियाँ-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व। -**रत्न**-पु० नौ प्रकारके रत्न-मोती, मानिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, मूँगा, पद्मराग, पन्ना और नीलम; राजा विक्रमादित्यकी सभाके प्रख्यात नौ विद्वान्-धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि; नौ प्रकारके रत्नोंवाला हार। -**रस**-पु० साहित्यमें प्रसिद्ध नौ प्रकारके रस-शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत। -**रात्र**-पु० नौ दिनोंमें समाप्त होनेवाला यज्ञ, व्रत, अनुष्ठान आदि; चैत्र और आश्विनमें शुक्ला प्रतिपदासे नवमीतकके नौ दिन जिनमें दुर्गाकी विशिष्ट पूजा की जाती है। -**सत***-वि०, पु० दे० 'नवसप्त'। -**सप्त**-वि० सोलह। पु० सोलह शृंगार। -**सर**-पु० [हिं०] नौ लड़ोंका हार। **मु०-सत सजना या साजना**-सोलहों शृंगार करना।

नवक-पु० [सं०] नौ सजातीय वस्तुओंका समाहार।

नवका*-स्त्री० नौका।

नवता-स्त्री०, **नवत्व**-पु० [सं०] नया होनेका भाव, नयापन।

नवति-वि०[सं०] अस्सी और दस। स्त्री० नब्बेकी संख्या।

नवधा-अ० [सं०] नौ प्रकारसे; नौ भागोंमें, नौ टुकड़ों या खंडोंमें। -**भक्ति**-स्त्री० नौ प्रकारकी या नौ प्रकारसे की जानेवाली भक्ति-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

नवन*-पु० झुकना, नमन।

नवना*-अ० क्रि० झुकना; नम्र होना।

नवनि*-स्त्री० झुकनेकी क्रिया या भाव; नमन; नम्रता।

नवम-वि० [सं०] नवाँ।

नवमी-स्त्री० [सं०] पक्षकी नवीं तिथि।

नवल-वि० नवीन, नया; रँगीला, सुंदर; नयी उम्रका, युवा। -**किशोर**-पु० कृष्ण।

नववर, नवघरि*-स्त्री० दे० 'न्योछावर'।

नवाँ-वि० नवम, आठवेंके ठीक बादका।

नवा-वि० नया।

नवाई*-वि० नया। स्त्री० नम्रता।

नवागत-वि० [सं०] नया-नया या हालका आया हुआ।

नवाज़-वि० [फा०] कृपा करनेवाला, कृपालु, दयावान्।

नवाजना*–अ० क्रि० कृपा दिखलाना, रहम करना।

नवाज़िश–स्त्री० [फा०] कृपा, मेहरबानी।

नवाना–स०क्रि० झुकाना; नम्र होनेके लिए प्रेरित करना।

नवान्न–पु० [सं०] घरमें आया हुआ नया अन्न।

नवाब–पु० [अ० नव्वाब] मुसलमानोंके राजत्व-कालमें किसी बड़े प्रदेश या सूबेके शासनके लिए नियुक्त किया जानेवाला राजकर्मचारी; मध्यम श्रेणीके वर्तमान मुसलमान अधीश्वरोंकी एक उपाधि; मुसलमान रईसोंको अंग्रेजी सरकार द्वारा दी जानेवाली एक उपाधि। वि० बड़े ठाटबाटसे रहनेवाला; फजूल खर्च, अपव्ययी। **–ज़ादा**–पु० नवाबका पुत्र; बेहद शौकीन आदमी।

नवाबी–स्त्री० [फा०] नवाबका पद; नवाबका काम; नवाब होनेकी स्थिति; नवाबोंका शासनकाल; नवाबोंकासा शासन या ठाट-बाट; नवाबोंकासा रहन-सहन, बहुत अधिक अमीरी। **मु०–करना**–नवाबोंकी तरह शान-शौकतसे रहना।

नवासी–वि० अस्सी और नौ। पु० नवासीकी संख्या, ८९।

नवाह–पु० [सं०] नौ दिन; नवाँ दिन; नौ दिनोंमें समाप्त किया जानेवाला (रामायण आदिका) अनुष्ठानरूप पाठ या यज्ञ; किसी सप्ताह, पक्ष आदिका प्रथम दिन।

नवीकरण–पु० [सं०] (रिनोवेशन) फिरसे नया कर देना, पुनः भली और चंगी स्थितिमें ला देना।

नवीन–वि० [सं०] अपूर्व; नया; मौलिक।

नवीस–पु० [फा०] लिखनेवाला, लेखक (समासमें)।

नवेद–पु० निमंत्रण; निमंत्रण-पत्र।

नवेला–वि० नवीन, नया; नयी उम्रका, युवा।

नवोढा–स्त्री० [सं०] नवविवाहिता स्त्री; लज्जा और भयके मारे नायकके पास जानेमें सकुचानेवाली नायिका।

नवोत्थान–पु० [सं०] (रिनेसाँ) दे० 'पुनरुत्थान'।

नवोदक–पु० [सं०] पहली वर्षाका पानी; खोदते समय धरतीके भीतरसे पहले-पहल निकलनेवाला पानी।

नवोद्भाव, नवोद्भावन–पु० [सं०] (इनवेंशन) दे० 'उद्भावन'।

नव्य–वि० [सं०] नया, नवीन; स्तुत्य।

नव्वाब–पु० [अ०] दे० 'नवाब'।

नशना*–अ० क्रि० नष्ट होना, बरबाद होना।

नशा–पु० [अ०] भाँग, अफीम, शराब आदि मादक द्रव्योंके सेवनसे उत्पन्न दशा जिसमें कभी-कभी इंद्रियाँ और बुद्धि काबूके बाहर हो जाती हैं; मादक द्रव्य, नशीली चीज; मद, गर्व। **–ख़ोर**–पु० किसी मादक द्रव्यका बराबर सेवन करनेवाला व्यक्ति। **–पानी**–पु० नशीली चीजें खाना या पीना। **(नशे)बाज़**–वि० नशाखोर। **मु०–उतरना**–नशा दूर होना; गर्व नष्ट होना। **–किरकिरा होना**–किसी कारणवश नशेका मजा जाता रहना। **–चढ़ना**–नशीली चीजका असर होना। **–टूटना**–दे० 'नशा उतरना'।

नशाना*–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'नसाना'।

नशावन*–पु० नष्ट करना, नाशन। वि० नष्ट करनेवाला, नाशक (केवल समासमें प्रयुक्त)।

नशीं, नशीन–वि० [फा०] बैठनेवाला (केवल समासमें)

नशीला–वि० नशा लानेवाला, जिसके सेवनसे नशा छा जाय, मादक; जिसमें नशा छाया हो, मदभरा।

नशेड़ी–वि० नशेबाज।

नशोहर*–वि० नाशक।

नश्तर–पु० [फा०] छुरे जैसा चीर-फाड़ करनेका आला। **मु०–देना**–नश्तरसे फोड़ा या घाव चीरना। **–लगना**–नश्तरसे फोड़े या घावका चीरा जाना।

नश्वर–वि० [सं०] नष्ट हो जानेवाला, नाशशील।

नष*–पु० नाखून, नख। **–सिष***–पु० दे० 'नख-शिख'।

नषत*–पु० दे० 'नक्षत्र'।

नष्ट–वि० [सं०] जिसका अदर्शन या तिरोभाव हो गया हो, तिरोहित; जिसकी सत्ता समाप्त हो चुकी हो, जिसकी स्थिति अब न हो, नाशप्राप्त; नीच, अधम; बरबाद; खराब, चौपट; * व्यर्थ। **–चंद्र**–पु० भाद्रपदके दोनों पक्षोंकी (अब केवल शुक्ल पक्षकी) चौथका चाँद जिसका दर्शन निषिद्ध है। **–चेतन, –चेष्ट**–वि० मूर्च्छित, बेहोश। **–निधि**–पु० (बैंक्रप्ट) दिवालिया। **–प्रभ**–वि० आभारहित, तेजोरहित, कांतिहीन। **–बुद्धि**–वि० बुद्धिहीन, प्रज्ञारहित। **–भ्रष्ट**–वि० बरबाद, चौपट। **–शल्य**–पु० दे० 'नटसाल'। **–संज्ञ**–वि० दे० 'नष्टचेतन'। **–स्मृति**–वि० जिसकी स्मरणशक्ति नष्ट या क्षीण हो गयी हो।

नष्टा–स्त्री० [सं०] वेश्या; व्यभिचारिणी।

नसंक*–वि० निःशंक, निर्भय, निडर।

नस–स्त्री० रग, पेशियोंको बाँधनेवाला तंतु; रुधिरवाहिनी नलिका। **–कट**–वि० (खटिया) जिसकी अदवान नस काटनेवाली हो। **–कटा**–पु० हिजड़ा, नामर्द। **–तरंग**–पु० शहनाईके ढंगका एक बाजा। **मु०–चढ़ना**–अपने स्थानसे हटनेके कारण नसका तन जाना। **–नस फड़क उठना**–सारी देहमें प्रसन्नताका संचार होना, बहुत अधिक हर्ष होना। **–भड़कना**–दे० 'नस चढ़ना'। **–(नसें) ढीली करना**–हौसला पस्त करना, बल तोड़ देना। **–ढीली होना**–हौसला पस्त होना, बल टूट जाना।

नसना*–अ० क्रि० नष्ट होना; खराब होना; भागना।

नसल–स्त्री० दे० 'नस्ल'।

नसवार–स्त्री० नास, सुँघनी।

नसा–स्त्री० [सं०] नासिका, नाक। † पु० दे० 'नशा'।

नसाना*–स० क्रि० नष्ट करना। अ० क्रि० दे० 'नसना'।

नसीत*–स्त्री० दे० 'नसीहत'।

नसीनी†–स्त्री० सीढ़ी, जीना।

नसीब–पु० [अ०] किस्मत, भाग्य, अदृष्ट। **–जला**–वि० जिसका भाग्य फूट गया हो, अभागा। **–वर**–वि० भाग्यशाली, भाग्यवान्। **मु०–आजमाना**–भाग्यके भरोसे कोई काम करना। **–खुल जाना, –चमकना, –जागना, –सीधा होना**–भाग्यका उदय होना। **–टेढ़ा होना**–बुरे दिन आना। **–पलटना**–अच्छेसे बुरा या बुरेसे अच्छा दिन आना। **–फूट जाना, –सो जाना**–किस्मत बिगड़ना। **–में लिखा होना**–किस्मतमें बदा होना। **–लड़ना**–भाग्यका साथ देना। **–होना**–मिलना, प्राप्त होना।

नसीबा†–पु० दे० 'नसीब'।

नसीला†-वि० नसोंवाला; नशीला।

नसीहत-स्त्री० [अ०] शिक्षा, उपदेश; अच्छी राय।

नसूड़िया†-वि० मनहूस।

नसूर-पु० दे० 'नासूर'।

नसैनी-स्त्री० सीढ़ी, जीना।

नस्तित-वि० [सं०] (वह बैल) जिसकी नाकमें नाथ पहनायी गयी हो; (ला०) नत्थी किया हुआ। **-पत्रसमूह**-पु० (फाइल) तार आदिमें नत्थी कर एक जगह रखे गये कागज-पत्रोंका समूह।

नस्तिपंजी-स्त्री० (फाइल रजिस्टर) तार, टीनकी पत्ती, क्लिप आदिमें फँसाकर कागज-पत्र एक जगह रखनेकी पंजी।

नस्तिपत्री-स्त्री० (फाइल) वह पोथी या कापी जैसा ढाँचा जिसके भीतर महत्वके कागज-पत्र नत्थी करके रखे जायँ।

नस्य-पु० [सं०] नास, सुँघनी; बैलोंकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी।

नस्याधार-पु० [सं०] नासदानी।

नस्ल-स्त्री० [अ०] वंश, कुल; जाति।

नस्वर*-वि० दे० 'नश्वर'।

नहँ, नह†-पु० नख, नाखून। **-छू**-पु० तेल-हलदीके बादकी विवाहकी एक रस्म जिसमें वरकी हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और महावर आदि लगाते हैं।

नहन, नहनि*-स्त्री० मोट खींचनेकी मोटी रस्सी।

नहना*-स० क्रि० नाधना, काममें लगाना।

नहन्नी†-स्त्री० दे० 'नहरनी'।

नहर-स्त्री० यातायात या सिंचाईके लिए किसी नदी या जलाशयमेंसे निकाला गया जलमार्ग।

नहरनी-स्त्री० हज्जामोंका नाखून काटनेका प्रसिद्ध आला।

नहरी-स्त्री० नहरके पानीसे सींची जानेवाली जमीन।

नहरुआ, नहरुवा-पु० दे० 'नारू'।

नहला-पु० नौ बूटियोंवाला ताशका पत्ता; नक्काशी आदि बनानेकी राजगीरोंकी छोटी करनी।

नहलाई-स्त्री० नहलानेकी क्रिया, नेग या मजदूरी।

नहलाना, नहवाना-स० क्रि० स्नान कराना।

नहान-पु० नहानेकी क्रिया, स्नान; स्नानका पर्व।

नहाना-अ० क्रि० सिरसे पानी उँडेलकर, नदी आदिमें गोता लगाकर या ऊपरसे गिरती हुई धारके नीचे बैठकर मैल या थकान दूर करनेके लिए शरीरको मलकर धोना; सिरसे पैरतक किसी तरल पदार्थसे सराबोर हो जाना।

नहार-वि० जो बासी मुँह हो, जो सवेरेसे बिना कुछ खाये ही हो। **-मुँह**-अ० बासी मुँह। मु० **-तोड़ना**-जलपान करना। **-रहना**-बिना कुछ खाये, निराहार रहना।

नहारी-स्त्री० सवेरेका हलका भोजन, जलपान, नाश्ता।

नहिँ, नहिँन*-अ० दे० 'नहीँ'।

नहीँ-अ० निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला एक शब्द। **-तो**-अ० यदि ऐसा न हुआ तो, ऐसा न होनेकी स्थितिमें, अन्यथा।

नहूसत-स्त्री० [अ०] मनहूसी।

नाँउँ*-पु० नाम। **-गाँउँ**-पु० नाम और पता।

नाँगा-वि० दे० 'नंगा'। पु० नागा साधु।

नाँघना*-स० क्रि० लाँघना।

नाँठना-अ० क्रि० नष्ट होना, खराब होना, बरबाद होना।

नाँद-स्त्री० पशुओंको चारा-पानी देनेका मिट्टीका (या पीतल आदिका) गोल, गहरा और चौड़े मुँहका बरतन।

नाँदना*-अ० क्रि० शब्द करना; गंभीर शब्द करना; छींकना; प्रसन्न होना।

नांदी-स्त्री० [सं०] समृद्धि, धन-संपत्ति; अभ्युदय; वह मंगलात्मक श्लोक जिसका पाठ सूत्रधार नाटकके आरंभमें करता है। **-घोष**-पु० भेरी आदिका शब्द। **-मुख**-पु० जन्म, उपनयन, विवाह आदि मांगलिक अवसरोंपर किया जानेवाला एक आभ्युदयिक श्राद्ध; कुएँका ढक्कन। **-श्राद्ध**-पु० दे० 'नांदीमुख'।

नाँयँ*-पु० नाम। अ० नहीं।

नाँवँ†-पु० नाम।

नाँह*-पु० दे० 'नाह'।

ना-अ० [सं०] एक निषेधसूचक शब्द। **-कारी**-पु० (नोज़) किसी प्रस्तावके विरोधमें 'ना' कहनेवाले सदस्य।

ना-अ० [फा०] एक निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला शब्द, न, नहीं। **-इत्तिफ़ाक़ी**-स्त्री० मनमुटाव, विरोध, विगाड़। **-इन्साफ़**-वि० जो न्याय न करे, अन्यायी। **-इन्साफ़ी**-स्त्री० अन्याय, अत्याचार। **-उम्मेद**-वि० निराश। **-उम्मेदी**-स्त्री० निराश होनेका भाव, निराशा। **-क़दर, -कदरा**-वि० कदर या गुण न समझनेवाला, नालायक। **-काबिल**-वि० अयोग्य। **-काम**-वि० जो काम लायक न हो, खराब। **-ख़ुश**-वि० अप्रसन्न, रुष्ट। **-गवार**-वि० जो गवारा न किया जा सके, असह्य; अप्रिय। **-चार**-वि० विवश, बेबस; गरीब; निराश; अपाहिज। अ० लाचार होकर। **-चीज़**-वि० नगण्य, तुच्छ। **-जायज़**-वि० अनुचित, जिसे करना, लेना, कहना आदि उचित न हो। **-तजर्बाकार**-वि० अनुभवहीन, अनाड़ी। **-तमाम**-वि० अधूरा। **-ताक़त**-वि० शक्तिहीन, अशक्त। **-ताक़ती**-स्त्री० शक्तिहीनता, कमजोरी। **-दान**-वि० नासमझ, अबोध, मूर्ख। **-दानी**-स्त्री० नासमझी, मूर्खता। **-दार**-वि० जिसके पास कुछ न हो, अकिंचन। **-दिहंद**-वि० लेकर अदा न करनेवाला, जो ली हुई रकम न दे। **-देहंद**-वि० दे० 'नादिहंद'। **-पसंद**-वि० जो पसंद न हो, जिसे जी न चाहे, अप्रिय। **-पाक**-वि० अपवित्र, अशुचि; मैला, गंदा। **-पायदार**-वि० जो टिकाऊ न हो, अस्थिर,;क्षणस्थायी, कमजोर। **-बालिग़**-वि० जिसने होश न सँभाला हो, अवयस्क (प्रायः १८ वर्षकी अवस्थामें आदमी बालिग होता है), बालिगका उलटा। **-बालिग़ी**-स्त्री० नाबालिग होनेकी अवस्था या स्थिति। **-बूद**-वि० जिसकी सत्ता न हो, नष्ट। **-मंजूर**-वि० जो मंजूर न हो, मंजूरका उलटा, अस्वीकृत। **-मर्द**-वि० नपुंसक; डरपोक, कायर। **-मर्दी**-स्त्री० नपुंसकता; कायरता, भीरुता। **-माकूल**-वि० अनुपयुक्त; अनुचित; अयोग्य। **-मालूम**-वि० जो मालूम न हो, अज्ञात। **-मुआफ़िक़**-वि० प्रतिकूल, खिलाफ, विरुद्ध, मुआफिकका उलटा। **-मुनासिब**-वि० अनुचित, अयुक्त। **-मुमकिन**-वि० असंभव। **-मुराद**-वि० जिसकी कामना पूर्ण न हुई हो।

—मौज़ूँ—वि० बेमेल। **—याब**—वि० जो मिलता न हो, दुर्लभ। **—राज़**—वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न, रुष्ट। **—राज़गी**—स्त्री० दे० 'नाराज़ी'। **—राज़ी**—स्त्री० नाराज होनेका भाव, अप्रसन्नता। **—लायक़**—वि० अयोग्य; नीच, अधम(हिं०)। **—वाक़फ़ियत**—स्त्री० अनभिज्ञता। **—वाक़िफ़**—वि० अनभिज्ञ, वाक़िफ़का उलटा। **—वाजिब**—वि० अनुचित, गैरवाजिब। **—शाइस्ता**—वि० नालायक; नामौज़ूँ; अशिष्ट। **—समझ**—वि० जिसे समझ न हो, बुद्धिहीन, मूर्ख। **—हक़**—अ० अकारण, बेसबब; व्यर्थ, बेमतलब।

नाइक*—पु० दे० 'नायक'।

नाइन—स्त्री० नाईकी स्त्री; नाई जातिकी स्त्री।

नाइब*—वि०, पु० दे० 'नायब'।

नाईं—अ० की भाँति, की तरह।

नाई—पु० एक जाति जिसका व्यवसाय हजामत बनाना है; हज्जाम। * स्त्री० नाव।

नाउँ*—पु० नाम।

नाउ*—स्त्री० नाव।

नाउन†—स्त्री० दे० 'नाइन'।

नाऊ†—पु० दे० 'नाई'।

नाक—पु० [सं०] स्वर्ग; अंतरिक्ष। **—चर**—पु० देवता। **—नाथ,—नायक,—पति**—पु० इंद्र। **—वास**—पु० स्वर्गमें निवास।

नाक—पु० मगर जैसा एक जलजंतु। स्त्री० वह दो छेदोंवाला प्रसिद्ध अवयव जिससे साँस लेते और बाहर निकालते हैं; चरखेमेंकी वह लकड़ी जिसे पकड़कर उसे चलाते हैं; वह जिससे किसीकी प्रतिष्ठा बनी रहे, इज्जत रखनेवाला; वह जो किसी समुदायमें प्रधान या सबसे बढ़कर हो; मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत। **—बुद्धि**—वि० जो पशुओंकी तरह सूँघकर ही भक्ष्याभक्ष्य पहचान सके; महामूर्ख, तुच्छबुद्धि। **मु०—इधर कि नाक उधर**—हर तरहसे एक ही बात। **—ऊँची होना**—इज्जत बढ़ना। **—कटना**—लाज या प्रतिष्ठा जाती रहना, बेइज्जती होना, मान-मर्यादा नष्ट होना। **—काटना**—इज्जत उतार लेना, प्रतिष्ठा नष्ट करना, बेइज्जती करना। **—का बाल**—अत्यंत अंतरंग या प्रिय। **—की सीधमें**—ठीक सामने। **—घिसना**—दे० 'नाक रगड़ना'। **—चढ़ना**—क्रोधवश नथनोंका ऊपरकी ओर खिंच जाना। **—चढ़ाना**—क्रोधमें नथनोंका ऊपरकी ओर खींचना; घृणा प्रकट करना। **—छेदना**—हैरान करना, चें बुलवाना। **—तक खाना**—ठूँस-ठूँसकर खाना। **—तक भरना**—(बरतन आदिको) ऊपरतक भरना; ठूँस-ठूँसकर खाना। **—न दी जाना**—असह्य दुर्गंध मालूम होना, तीव्र दुर्गंध आना। **—पकड़ते दम निकलना**—अति शक्तिहीन होना। **(चाहे इधरसे)—पकड़ो चाहे उधरसे**—हर पहलूसे, हर तरहसे। **—पर गुस्सा होना**—बहुत जल्द क्रोध आना। **—पर दीया बालकर आना**—जीतकर या सफल होकर आना। **—पर मक्खी न बैठने देना**—बहुत सतर्क रहना; किसीका थोड़ा भी कृतज्ञ न होना; बहुत पाकसाफ रहना। **—पर रख देना**—माँगनेके साथ ही दे देना या अदा कर देना। **(किसीकी)—पर सुपारी तोड़ना**—बहुत परेशान करना। **—फटने लगना**—दे० 'नाक न दी जाना'। **—बहना**—नाकमेंसे श्लेष्मा निकलना। **—बैठना**—नाक चिपटी होना। **—भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**—क्रोध प्रकट करना, नाराज होना; घृणा प्रकट करना। **—में तीर करना या डालना**—बहुत हैरान करना। **—में दम करना**—खूब परेशान करना। **—में बोलना**—नकियाना। **—रख लेना**—इज्जत बचाना। **—रगड़ना**—दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना, आरजू-मिन्नत करना। **—लगाकर बैठना**—बहुत इज्जतदार बनकर बैठना। **—सिकोड़ना**—घृणा प्रकट करना। **(नाकों) आना**—आजिज आना, परेशान हो जाना। **—चने चबवाना**—खूब परेशान करना, तंग कर मारना।

नाकड़ा—पु० नाकका एक रोग।

नाकना*—स० क्रि० लाँघना, डाँकना; प्रतियोगितामें बढ़ जाना, बढ़कर होना।

नाका—पु० किसी नगर, बस्ती आदिमें पैठनेका प्रमुख स्थान, प्रवेशद्वार; रास्ते आदिका वह मोड़ जहाँसे दूसरी ओर मुड़ें, निकलें या घुसें; दुर्ग आदिमें घुसने और बाहर निकलनेका मार्ग या द्वार; वह प्रमुख स्थान जहाँ पहरा देने या किसी तरहका महसूल वसूल करनेके लिए सिपाही नियुक्त हों; (सुईका) छेद; नाक नामका जलजंतु। **—बंदी, (नाके) बंदी**—स्त्री० नाकेपर सिपाहियोंकी तैनाती, नाकेपर पहरा बैठाना; अवरोध। पु० नाकेपर तैनात किया जानेवाला सिपाही। **—दार**—पु० नाकेपर तैनात किया जानेवाला सिपाही। वि० छेदवाला।

नाकेश—पु० [सं०] इंद्र।

नाक्षत्र—वि० [सं०] नक्षत्र-संबंधी; जिसका काल नक्षत्र-चक्रके परिवर्तनके अनुसार निर्धारित हो।

नाक्षत्रिक—वि० [सं०] दे० 'नाक्षत्र'।

नाखना*—स० क्रि० नष्ट करना; फेंकना; गिराना; लाँघना।

ना.खुन, ना.खून—पु० [फ़ा०] उँगलियोंके सिरेपरका कठिन और चिपटा आवरण; चौपायोंकी टाप या खुरकी बढ़ी हुई कोर। **—तराश**—पु० नाखून काटनेका आला, नहरनी।

ना.खूना—पु० [फ़ा०] एक नेत्ररोग जिसमें आँखोंमें सफेद झिल्ली पड़ जाती है और धीरे-धीरे पुतलियोंतकको ढाँक लेती है; लाल डोरे जो घोड़ोंकी आँखोंमें पड़ जाते हैं।

नाग—पु० [सं०] मनुष्यके आकारके पातालवासी सर्प जिनकी गणना देवयोनिमें है (इनमें मुख्य ये हैं—अनंत, वासुकि, पद्म, महापद्म, तक्षक, कुलीर, कर्कोटक और शंख); साँप; एक प्रकारका काला साँप जिसके सिरपर दो चरण-चिह्न होते हैं; पर्वत; हाथी; बादल; नागकेशर; पुन्नाग; शरीरमेंका एक प्रकारका पवन; एक देश; उस देशमें बसनेवाली एक जाति; राँगा; सीसा; नागरमोथा; नागवल्ली; (ला०) क्रूर मनुष्य; अश्लेषा नक्षत्र; खूँटी; आठकी संख्या। **—कन्यका,—कन्या**—स्त्री० नाग जातिकी कन्या (पुराणोंमें नागकन्याओंके सौंदर्यकी बड़ी प्रशंसा की गयी है)। **—कर्ण**—पु० हाथीका कान; रेंड (जिसका पत्ता हाथीके कानकी तरह होता है)। **—कुमारिका**—स्त्री० गुड़ुच; मजीठ। **—केशर**—स्त्री० सफेद, महँकदार फूलोंवाला एक सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी

होती है। **–झाग***–पु० अहिफेन, अफीम। **–दंत,–दंतक**–पु० हाथीदाँत; दीवारकी खूँटी। **–दमन**–पु० नागदौनेका पौधा। **–दौन**–पु० [हिं०] एक छोटा पहाड़ी पेड़। **–दौना**–पु० [हिं०] एक पौधा जिसमें टहनियोंकी जगह जड़के ऊपरसे केवल बड़ी-बड़ी पत्तियाँ लगती हैं; एक तरहका कड़ुवा और काँटेदार दौना। **–द्रुम**–पु० सेहुँड़; नागफनी। **–धर**–पु० शिव। **–नग***–पु० गजमुक्ता। **–पंचमी**–स्त्री० श्रावण-शुक्ला पंचमी जिस दिन सनातनी हिंदू नाग देवताकी पूजा करते हैं। **–पति**–पु० सर्पराज वासुकि; हस्तिराज ऐरावत। **–पाश**–पु० वरुणका अस्त्रभूत पाश; ढाई फेरेका फंदा; साँपोंका फंदा। **–पुर**–पु० पाताल। **–पुष्प**–पु० चंपक; नागकेशर; पुन्नाग वृक्ष। **–पुष्पिका**–स्त्री० पीली जूही; नागदौना। **–पुष्पी**–स्त्री० नागदमनी; मेढासींगी। **–फनी**–स्त्री० [हिं०] थूहरकी जातिका एक पौधा। **–फाँस**–स्त्री० [हिं०] दे० 'नागपाश'। **–फेन**–पु० अफीम। **–बंधक**–पु० हाथी फँसानेवाला। **–बल**–पु० भीम (जिन्हें दस हजार हाथियोंका बल था)। वि० जो हाथीकी तरह बलवान् हो। **–भगिनी**–स्त्री० वासुकि नागकी बहन जरत्कारु। **–भूषण**–पु० शिव। **–यज्ञ**–पु० एक यज्ञ जिसमें जनमेजयने नागोंका विनाश किया था। **–लोक**–पु० पाताल। **–वंश**–पु० नागोंका वंश; शक जातिकी एक शाखा। वि० नागवंशका; नागवंशमें उत्पन्न। **–वल्लरी,–वल्ली**–स्त्री० पानकी बेल।

नागमती–स्त्री० [सं०] एक लता।

नागर–वि० [सं०] नगर-संबंधी; नगरमें रहनेवाला; चतुर, चालाक; नगर-निवासियों-संबंधी। पु० नगरवासी, पौर; चतुर, सभ्य पुरुष।

नागरता–स्त्री० [सं०] नागरिकता, शहरातीपन; शिष्टता, सभ्यता; चालाकी, चतुरता।

नागरिक–वि० [सं०] नगर-संबंधी; नगरका; जो नगरमें रहे, शहराती। पु० नगरवासी, पौर। **–उड्डयनविभाग**–पु० (सिविल ऐवियेशन डिपार्टमेंट) नागरिकोंकी हवाई यात्रा आदिकी देखभाल करनेवाला विभाग। **–शास्त्र**–पु० (सिविक्स) वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति और देशके हितकी दृष्टिसे उत्तम नागरिक जीवन व्यतीत करने आदिका विवेचन किया जाता हैं।

नागरिकता–स्त्री० [सं०] नागरिक होनेका भाव; नागरोचित स्वत्व, आचार या शिष्टता; नागरिक जीवन।

नागरी–स्त्री० [सं०] नगरमें रहनेवाली स्त्री, शहरकी औरत, नगरवासिनी; चतुर स्त्री; सेहुँड़; संस्कृत और हिंदी भाषाकी लिपि।

नागा–पु० एक शैव संप्रदाय जिसमें साधु लोग नंगे रहते हैं; इस संप्रदायका साधु; आसाममें बसनेवाली एक जंगली जाति; आसामका एक पहाड़; बराबर चलनेवाले काममें पड़नेवाला अंतर, बीच। * वि० खाली; नंगा।

नागिन–स्त्री० सर्पिणी; नाग नामक साँपकी मादा जो बहुत विषैली होती है; क्रूर या दुष्ट स्वभाववाली स्त्री; पीठ या गरदनपरकी लंबी रोमावली; बैलोंकी पीठपर होनेवाली साँपके आकारकी लंबी रोमराजि जिसकी गणना ऐबोंमें है।

नागिनी–स्त्री० दे० 'नागिन'।

नागेंद्र–पु० [सं०] बड़ा साँप; शेष आदि: प्रमुख नाग; महाकाय हाथी, गजराज; ऐरावत।

नागेश–पु० [सं०] शेष नाग; एक प्रसिद्ध वैयाकरण।

नागेश्वर–पु० [सं०] शेष नाग; ऐरावत; नागकेशर।

नागेसर*–पु० दे० 'नागेश्वर'।

नागौरी–वि० नागौरका (बैल, गाय इ०)।

नाच–पु० ताल और लयपर आश्रित अंगविक्षेप; आनंदातिरेकमें मचायी जानेवाली उछल-कूद; खेल, क्रीडा; काम-धंधा। **–कूद**–स्त्री० उछल-कूद; नाच-तमाशा। **–घर,–महल**–पु० दे० 'नर्तनशाला'। **–रंग**–पु० आमोद-प्रमोद। **मु०–काछना**–नाचनेको उद्यत होना। **–दिखाना**–किसीके सामने उछल-कूद मचाना। **–नचाना**–परेशान करना; इच्छानुसार काम कराना।

नाचना–अ० क्रि० ताल और लयके अनुसार गात्रविक्षेप करना, नृत्य करना; आनंदातिरेकमें उछलना-कूदना; प्रत्यक्षसा प्रतीत होना, झूलना; इधरसे उधर आना-जाना, दौड़-धूप मचाना; काँपना; क्रोधावेशमें उछलना-कूदना।

नाज*–पु० अनाज, अन्न; खाद्य वस्तु, खाद्य पदार्थ।

नाज़–पु० [फा०] हाव-भाव, विलास-चेष्टा; गर्व, घमंड। **–नख़रा**–पु० हाव-भाव, मोहक चेष्टा। **–नीं**–स्त्री० रूपवती स्त्री; नाजुकबदन औरत, कोमलांगी। **–बरदार**–वि० नाज बरदाश्त करनेवाला, आशिक। **–बरदारी**–स्त्री० नाज बरदाश्त करना। **–व(ज़ो)अदा,–नख़रा**–पु० दे० 'नाज़-नखरा'।

नाज़िम–वि० [अ०] प्रबंध करनेवाला, प्रबंधकर्ता।

नाज़िर–वि० [अ०] देखनेवाला, दर्शक। पु० वह जो देख-भाल करे, निरीक्षक। * स्त्री० अंतःपुरकी मुख्य परिचारिका।

नाज़ुक–वि० [फा०] कोमल, सुकुमार; महीन, बारीक; जो जल्दी टूट जाय, फूट जाय या नष्ट हो जाय; सूक्ष्म; गंभीर; संकटपूर्ण, मार्मिक। **–ख़याल**–वि० अच्छे विचारोंवाला। **–दिमाग़**–वि० दे० 'नाजुक मिजाज'। **–बदन**–वि० कोमल शरीरवाला, कोमलांग, सुकुमार। **–मिजाज़**–वि० जिसे कोई बात बहुत जल्दी लग जाय; चिड़चिड़ा, तुनुकमिजाज; घमंडी।

नाजों, नाजौं*–स्त्री० नाजनीं; प्रियतमा।

नाटक–पु० [सं०] दृश्य काव्य या रूपकके दस भेदोंमेंसे एक जो प्रथम और सर्वप्रधान है; रूपक; अभिनय; दृश्य काव्य। **–कार**–पु० नाटक बनाने, लिखनेवाला। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान या गृह जहाँ नाटक खेला जाता हो।

नाटकिया–पु० अभिनेता; बहुरुपिया।

नाटकी–स्त्री० इंद्रकी सभा। पु० नाटक खेलनेवाला, अभिनेता।

नाटकीय–वि० [सं०] नाटक-संबंधी; नाटक जैसा। **–ढंगसे**–आश्चर्यमय या अकल्पित रूपसे।

नाटना–अ० क्रि० दे० 'नटना'। स० क्रि० अस्वीकार करना, इनकार करना।

नाटा–वि० छोटे कदका। पु० छोटे कदका बैल (या आदमी)।

नाटिका–स्त्री० [सं०] उपरूपकका एक भेद।

नाट्य–पु० [सं०] नृत्य; नाटकादिका अभिनय; नृत्यकला; अभिनयकला; अभिनेताकी वेशभूषा। **–कार**–पु० नाटक करनेवाला, नट; नाटक लिखनेवाला। **–मंदिर**–पु० दे० 'नाट्यशाला'। **–शाला**–स्त्री० नाटक खेलनेका घर या स्थान। **–शास्त्र**–पु० अभिनय आदि-संबंधी शास्त्र।

नाट्यागार–पु० [सं०] नाट्यशाला।

नाट्याचार्य–पु० [सं०] अभिनय, नृत्यादिकी शिक्षा देनेवाला।

नाट्योंचित–वि० [सं०] अभिनय करने योग्य।

नाठ*–पु० नाश; सत्ताका अभाव; लावारिस जायदाद।

नाठना*–स० क्रि० नष्ट, ध्वस्त करना। अ० क्रि० नष्ट, ध्वस्त होना; हटना; भाग जाना।

नाठा*–पु० वह जिसके आगे-पीछे कोई न हो।

नाड़–स्त्री० गर्दन।

नाड़ा–पु० स्त्रियोंका घाँघरा या धोती बाँधनेकी सूतकी मोटी डोरी, नीवी; देवताओंको चढ़ाया जानेवाला लाल या पीले रंगका गंडेदार सूत।

नाडि–स्त्री० [सं०] नाड़ी; नली।

नाडी–स्त्री० [सं०] नली; शरीरकी रक्तवाहिनी शिराएँ; वे नलियाँ जिनके द्वारा हृदयका शुद्ध रक्त शरीरके सब अंगोंमें पहुँचता है, धमनी; शरीरकी ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वासवाहिनी नलियाँ (हठयोग); फोड़ेका छेद; किसी तृण या पौधेका पोला डंठल; पद्मदंड; ६ क्षणोंका एक कालमान, घड़ी; फूँककर बजाया जानेवाला वाद्य (बाँसुरी आदि); हाथ या पैरकी नब्ज; गंडदूर्वा; छल, छद्म; कल्पित चक्रोंमें पड़नेवाले नक्षत्र जिनके अनुसार वर-वधूकी गणना बैठाते हैं (ज्यो०)। **–चक्र**–पु० नाभिप्रदेशमें स्थित मुर्गीके अंडेके आकारका चक्रविशेष। **–परीक्षा**–स्त्री० (वैद्यका) नब्ज देखना। **–यंत्र**–पु० शरीरमें चुभी या धँसी हुई वस्तुको निकालनेका एक प्राचीन यंत्र (सुश्रुत)। **–व्रण**–पु० वह पुराना घाव जिसमें भीतर ही भीतर छेद हो जाता और मवाद निकला करता है, नासूर। **–संस्थान**–पु० नाडियोंका जाल।

नाडीकेल–पु० [सं०] नारियल।

नात–स्त्री० (नअत), प्रशंसा; स्तुति-गीत।* पु० संबंधी, रिश्तेदार; संबंध, नाता।

नातर, नातरु*–अ० 'नतरु'।

नाता–पु० संबंध, रिश्ता। **(नाते)दार**–पु० रिश्तेदार। वि० सगा, संबंधी।

नातिन–स्त्री० लड़कीकी लड़की; लड़केकी लड़की।

नाती–पु० लड़कीका लड़का; लड़केका लड़का।

नाते–अ० संबंधसे, रिश्ता होनेसे; लिए, वास्ते।

नात्सी–पु० [ज०] जर्मनीका एक राजनीतिक दल जो द्वितीय विश्वयुद्धके पहले बहुत प्रबल हो गया था।

नाथ–स्त्री० बैल आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; * दे० 'नथ'। पु० गोरखपंथी साधुओंकी एक उपाधि; सँपेरा; [सं०] प्रभु, अधीश्वर, स्वामी; पति।

नाथता–स्त्री० [सं०] नाथ या स्वामी होनेका भाव, प्रभुता।

नाथना–स० क्रि० बैल आदिकी नाकको छेदकर उसमें नाथ पहनाना; कई वस्तुओंको एक साथ छेदकर उनमें रस्सी या तागा पहनाना, नत्थी करना; एक सूत्रमें बद्ध करना।

नाद–पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; अव्यक्त शब्द; वर्णोंके उच्चारणमें एक प्रकारका बाह्य प्रयत्न; संगीत; भारी शब्द, गर्जन; स्तुति करनेवाला।

नादना*–स० क्रि० बजाना। अ० क्रि० बजना; गरजना।

नादिम–वि० [अ०] लज्जित, शर्मिंदा।

नादिया–पु० नंदी; वह बैल जिसे साथमें लिये योगी भीख माँगते हैं। (इसके एकाध अंग अधिक होता है)।

नादिर–वि० [अ०] अद्भुत, असाधारण। **–शाह**–पु० फारसका एक नृशंस शासक जिसने सन १७३८ में दिल्लीके तत्कालीन बादशाह मुहम्मद शाहको हराकर नगरमें कतलेआम कराया था। **–शाही**–वि० नादिरशाह-संबंधी; नादिरशाहके अत्याचार जैसा। स्त्री० निरंकुश शासन; पाशविक अत्याचार।

नादी(दिन्)–वि० [सं०] बजनेवाला; गरजनेवाला।

नादेय–वि० [सं०] नदी-संबंधी; नदीका; नदीमें उत्पन्न; ग्रहण न करने योग्य, अग्राह्य; जो अदेय न हो, देय।

नाधना–स० क्रि० बैल, घोड़े आदिको रस्सी या तस्मेके द्वारा सवारी, हल आदिसे जोड़ना या बाँधना, जोतना; जोड़ना; आरंभ करना; ठानना; गूँथना, पिरोना; नाथना।

नान–स्त्री० [फा०] रोटी, चपाती; तंदूरमें पकायी जानेवाली एक प्रकारकी मोटी खमीरी रोटी। **–ख़ताई**–स्त्री० एक प्रकारकी टिकियाकी शकलकी मिठाई। **–बाई**–पु० रोटी और शोरबा बेचनेका पेशा करनेवाला।

नानक–पु० सिक्खोंके आदि गुरु जिनका जन्म संवत् १५२६ में हुआ। **–पंथी**–पु० नानक मतका अनुयायी।

नाना–पु० माताका पिता, पितामह; [अ०] पुदीना। * स० क्रि० डालना; घुसाना; झुकाना। वि० [सं०] अनेक प्रकारके, कई तरहके, विविध।

नानिहाल–पु० नानीका घर।

नानी–स्त्री० नानाकी पत्नी, माताकी माता, मातामही। **मु०–मर जाना**–होश उड़ जाना, हौसला पस्त हो जाना।

नान्ह*–वि० नन्हा, छोटा; नीच, अधम; बारीक, महीन।

नान्हरिया*–वि० छोटा, नन्हा।

नान्हा*–वि० दे० 'नान्ह'। पु० नन्हा बच्चा।

नाप–स्त्री० किसी मानदंडके अनुसार स्थिर की गयी किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई, गहराई, ऊँचाई, मात्रा आदि, परिमाण, माप; किसी मानदंडके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई आदिका निर्धारण करनेकी क्रिया; लंबाईका मानदंड, वह स्थिर किया हुआ पैमाना जिसके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई निर्धारित की जाय; निश्चित लंबाईवाली वह वस्तु जिसके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई-चौड़ाई आदि जानी जाय, मानदंड। **–जोख, –तौल**–स्त्री० नापने और तौलनेकी क्रिया; नापकर या तौलकर निर्धारित की गयी मात्रा या परिमाण।

नापना–स० क्रि० किसी मानदंडके अनुसार किसी वस्तुके विस्तार, परिमाण, मात्रा आदिका निर्धारण करना।

नापसंद–वि० दे० 'ना'के साथ।

नापित–पु० [सं०] नाई, हज्जाम। **–शाला, –शालिका**–स्त्री० हज्जामकी दुकान, क्षौरालय (सैलून)।

नाफ़ा–पु०[फ़ा०] कस्तूरी मृगकी नाभिके भीतरकी कस्तूरी-की थैली ।

नाबदान–पु० घरके गलीज, गंदे पानी आदिके बहनेकी नाली । **मु०–में मुँह मारना**–घृणित कार्य करना ।

नाभि–स्त्री० [सं०] पहियेके बीचोबीच बेलनके आकारका वह अंग जिसमें धुरी पहनायी जाती है, चक्रमध्य, पिंडिका; जरायुज जंतुओंके पेटके बीचोबीच भँवरीकी तरहका गड्ढा, ढोढ़ी, तुंदकूपी; कस्तूरी ।**–ज,–जन्मा(न्मन्)** पु० ब्रह्मा (जिनकी उत्पत्ति विष्णुकी नाभिसे है) । **–पाक**–पु० एक रोग जिसमें बच्चोंकी नाभि पक जाती है ।**–भू**–पु०ब्रह्मा ।

नाम–पु० [फ़ा०] दे० 'नाम' (सं०); प्रसिद्धि; धाक; इज्जत; नस्ल; कुल; लांछन; यादगार । **–ज़द**–वि० जिसका नाम किसी बातके लिए निश्चित या अंकित किया गया हो । **–ज़दगी**–स्त्री० किसी कामके लिए चुनने या निश्चित करनेकी क्रिया । **–दार**–वि० नामवर, प्रसिद्ध । **–निशान,–व निशान**–पु० चिह्न, पता । **–वर**–वि० नामी, प्रसिद्ध, विख्यात । **–वरी**–स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि । **मु०–आसमानपर होना**–प्रसिद्धि होना । **–उछलना**–अपयश फैलना, बदनामी होना । **–उछालना**–अपयश फैलाना, बदनाम करना । **–उठ जाना**–अस्तित्व न रह जाना, स्मृतितक बनी न रहना । **–कमाना**–दे० 'नाम करना' । **–करना**–प्रसिद्धि पाना, ख्याति प्राप्त करना । **(किसीका)–करना**–किसीको दोषी ठहराना; किसीके मत्थे दोष मढ़ना । **(किसी बात का)–करना**–नाम मात्रके लिए करना, कहने भरके लिए करना, जितना या जिस तरह चाहिये उतना या उस तरह न करना । **–का**–नामवाला; नाममात्रके लिए, कहने-भरको । **(किसीके)–का कुत्ता पालना**–किसीका अत्यधिक अपमान करना, किसीको अत्यंत नीच समझना । **(किसीके)**–किसीके पक्षमें; किसीके पास, किसीके प्रति; सरकारी या अन्य प्रामाणिक कागजमें किसीके नामके सामने (दर्ज); कानूनी, प्रामाणिक लेख द्वारा किसीके पक्षमें । **–के लिए**–केवल देखने या कहने-सुननेके लिए, कहने भरको; जरासा; किसी काम या उपयोगके लिए नहीं । **–को**–कहने भरको; केवल काम चलाने भरको, अपर्याप्त, अत्यल्प; ख्यातिके लिए । **–को नहीं**–कहने भरको भी नहीं, थोड़ासा भी नहीं, एक भी नहीं । **–चलना**–लोकमें स्मृति बनी रहना ।**–चार को**–कहने भरको, नाममात्रको । **(किसीके)–डालना**–(किसीके) नामके सामने दर्ज करना । **–डुबाना**–मान-मर्यादा मिटाना, कलंक लगाना । **–डूबना**–मान-मर्यादा नष्ट होना, कलंक लगना । **(किसीका)–धरना**–नामकरण करना; दोषारोपण करना, दोषी ठहराना; बदनामी करना । **–धराना**–'नाम धरना'का प्रेर० ।**–न लेना**–स्मरणतक न करना, भय, घृणा, खिन्नता आदिके कारण प्रसंगतक न छेड़ना; दूर भागना, बहुत अधिक बचना । **(...तो मेरा)–नहीं**–तो मुझे गया-गुजरा समझना । **–निकलना**–किसी बातके लिए नाम प्रसिद्ध होना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट होना । **–निकलवाना**–अपकीर्ति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट कराना ।**–निकालना**–सुख्याति या कुख्याति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट करना । **(किसीके)–पड़ना**–किसीके नामके सामने लिखा जाना या लिखा रहना । **(किसीके)–पर**–किसीके निमित्त, किसीकी स्मृतिमें; किसीके भरोसे । **–पैदा करना**–ख्याति प्राप्त करना । **–बिकना**–प्रसिद्धिके कारण लोकमें बहुत अधिक सम्मान होना, इतनी ख्याति होना कि नाम सुनने भरसे लोगोंके हृदयमें आदरका भाव जाग उठे । **–बेचना**–किसीका नाम लेकर दूसरोंकी सहानुभूति, आदर या कृपाका पात्र बनना । **–मिट जाना**–दे० 'नाम उठ जाना' । **–मिटना**–अस्तित्वका एक भी चिह्न न रहना, नामतक न बच रहना । **–रखना**–प्रतिष्ठाकी रक्षा करना । **–लगना**–दोषी ठहराया जाना । **–लगाना**–दोषी ठहराना । **–लिखना**–भरती करना । **–लिखाना**–भरती होना । **(किसीका)–लेकर**–(किसीके) नामके प्रभावसे; (किसीका) कहलाकर; (किसीका) स्मरण करके । **–लेना**–नाम पुकारना; याद करना; आदर, कृतज्ञताके भावसे स्मरण करना, तारीफ़ करना; चर्चा चलाना, विचार करना । **(किसीके)–से**–किसीका नाम लेकर; नाम कहने भरसे, नाम सुनते ही । **–होना**–ख्याति या यश फैलना; नाम लिया जाना । **(नामो)निशान बाकी न रहना या मिट जाना**–एकदम बरबाद हो जाना, इस प्रकार नष्ट होना कि अस्तित्वका कोई चिह्न ही न रह जाय ।

नाम(न्)–पु० [सं०] वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति वस्तु या समूहका बोध हो, वाचक शब्द, संज्ञा शब्द, आख्या, अभिधान ।**–करण**–पु० नाम रखनेका संस्कार ।**–कीर्तन**–पु० गाने-बजानेके साथ या यों ही ईश्वरका नाम जपना । **–धराई**–स्त्री० [हिं०] अपयश, कुख्याति ।**–धातु**–स्त्री० संज्ञापदसे बनायी हुई धातु ।**–धारक**–वि० कहने भरको कोई नाम धारण करनेवाला, जिसका कोई विशिष्ट नाम लेने भरके लिए हो, जो अपने नामके अनुरूप कार्य न करता हो; विहित कर्म न करनेवाला (ब्राह्मण) ।**–निर्देशन-पत्र**–पु० (नामिनेशन पेपर) दे० नामांकनपत्र ।**–पटल,–पट्ट**–पु० (साइनबोर्ड) लकड़ी, लोहे आदिका वह पट्ट या तख्ती जिसपर किसी व्यक्ति, संस्था, दूकान आदिका नाम लिखा रहता है और जिसे प्रायः दूकान, मकान आदिके सामने टाँग देते हैं ।**–पत्र**–पु० (लेबल) किसी शीशी-बोतल, डब्बे आदिपर लगा हुआ कागजका वह टुकड़ा जिसपर उसके भीतरकी दवा आदिका नाम लिखा या छपा हो । **–पत्रित**–वि० (लेबल्ड) जिसपर नामपत्र (लेबल) लगा हुआ हो । **–लेखनशुल्क**–पु० (एनरोलमेंट फी) नाम लिखने, भरती करने, सदस्य बनाने आदिका शुल्क । **–लेवा**–पु० [हिं०] नाम लेनेवाला; उत्तराधिकारी । **–वाचक**–वि० नाम बतलानेवाला । पु० व्यक्तिवाचक संज्ञा । **–शेष**–वि० जिसका केवल नाम रह गया हो; गत, मृत । **–सत्य**–पु० गुण न होते हुए भी गुणद्योतक नामका कथन ।

नामक–वि० [सं०] नामका, नामवाला (समासांतमें) ।

नामांकनपत्र–पु० [सं०] (नॉमिनेशन पेपर) वह आवेदन-पत्र जो विधान-सभा, नगरपालिका आदिके चुनावमें उम्मेदवारकी हैसियतसे खड़े होनेवाले व्यक्ति द्वारा अपनी अर्हता, नाम, प्रामाणिकता आदिका स्पष्टीकरण करते हुए चुनावके उपयुक्त अधिकारीके सामने उपस्थित किया जाय।

नामांकित–वि० [सं०] जिसपर नाम लिखा या खुदा हो।

नामांतर–पु० [सं०] दूसरा नाम, उपनाम।

नामावली–स्त्री० [सं०] नामोंकी सूची; † कपड़ा जिसपर किसी देवताका नाम सर्वत्र अंकित हो, रामनामी।

नामी–वि० नामवाला, नामक; प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर। **–गिरामी**–वि० प्रसिद्ध, मशहूर।

नामोल्लेख–पु० [सं०] (नेमिंग) किसी कदाचरण या असंसदीय कार्यके लिए अध्यक्ष द्वारा सदनमें सदस्यके नामका उल्लेख किया जाना।

नाम्य–वि० [सं०] झुकाने योग्य; लचीला।

नायँ*–पु० दे० 'नाम'। अ० नहीं।

नायक–पु० [सं०] ले जाने या पहुँचानेवाला, राह दिखानेवाला; किसी समुदाय या जनताको विशिष्ट उद्देश्यकी कार्य-सिद्धिका मार्ग-निर्देश करनेवाला प्रभावशाली व्यक्ति या अधिकारी, अग्रेसर; बीस हाथियों और घोड़ोंके दलका अध्यक्ष; प्रभु, अधीश्वर; हारका प्रधान मणि; श्रेष्ठ पुरुष, किसी समुदायका अग्रगण्य व्यक्ति; शृंगारका आलंबन रूप-यौवन आदिसे संपन्न पुरुष; वह पुरुष जिसके चरितको लेकर किसी काव्य या नाटक आदिकी रचना की गयी हो।

नायका–स्त्री० नायिका; वेश्याकी माता, कुटनी।

नायन–स्त्री० दे० 'नाइन'।

नायब–वि० [अ०] प्रतिनिधित्व करनेवाला, स्थानापन्न, सहायक। पु० सहायक, मुनीम।

नायबी–स्त्री० [अ०] नायबका काम; नायबका पद।

नायिका–स्त्री० [सं०] यौवन तथा रूप-गुणसे संपन्न स्त्री; वह स्त्री जिसका चरित किसी काव्यमें मुख्य रूपसे वर्णित हो।

नायिकाधिप–पु० [सं०] राजा।

नारंगी–स्त्री० एक तरहका मीठा नीबू, संतरा। वि० नारंगीके रंगका।

नार–वि० [सं०] नर-संबंधी, मनुष्य-संबंधी; आध्यात्मिक। पु० नरसमुदाय; जल; हालका पैदा हुआ बछड़ा; सोंठ।

नार–स्त्री० गर्दन; स्त्री; जुलाहोंकी ढरकी। † पु० नाला; घाँघरा आदि बाँधनेकी सूतकी डोरी; मोटा रस्सा; आँवल। **मु०–नवाना,–नीची करना**–लज्जा, संकोच आदिके कारण सिर नीचा कर लेना।

नारकी(किन्)–वि० [सं०] नरकभोगी; नरकमें जाने योग्य।

नारकीय–वि० [सं०] नरक-संबंधी; नरक-भोगीकी तरहका, अति निकृष्ट, अति अधम।

नारना*–स० क्रि० ताड़ना, समझना, भाँपना।

नारा–पु० पूजा या कथा आदिमें प्रयुक्त लाल रंगका डोरा, रक्षासूत्र; चोटीबंधन, इजारबंद; नवजात शिशुका नाल; पेटकी अँतड़ी; बरसाती पानीकी मोटी धारा या उससे बना हुआ गड्ढा, नाला–'चहुँदिस फिरेउ धनुष जिमि नारा'–रामा०; किसी माँग या शिकायतकी ओर ध्यान दिलानेके लिए बार-बार बुलंद की जानेवाली आवाज। स्त्री० [सं०] जल (मनु०)।

नाराइन*–पु० नारायण, विष्णु।

नाराच–पु० [सं०] लोहेका बाण; बाण; एक वर्णवृत्त।

नारायण–पु० [सं०] विष्णु, भगवान्, परमात्मा।

नारायणी–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; दुर्गा; कृष्णकी सेना जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्रमें दुर्योधनकी सहायताके लिए दिया था।

नारि*–स्त्री० दे० 'नारी'; गरदन।

नारिकेर, नारिकेल–पु० [सं०] नारियल।

नारिदान*–पु० पनाला।

नारियल–पु० लंबोतरे और तिपहले फलोंवाला एक ताड़की तरहका पेड़ जो गरम देशोंमें समुद्रका किनारा लिये हुए होता है; इस पेड़में लगनेवाला फल।

नारी–स्त्री० हरिसमें जूआ बाँधनेकी रस्सी या तस्मा; * दे० 'नाडी'; दे० 'नाली'; [सं०] स्त्री, औरत।

नारू–पु० जूँ; अधिकतर गरम देशके लोगोंको होनेवाला एक रोग जिसमें विशेषकर शरीरके निचले भागमें फुंसियाँ-सी हो जाती हैं जिनमेंसे डोरकी तरहकी पतल-पतली सफेद चीज निकलती है, नहरुवा।

नाल–वि० [सं०] नरकुल-संबंधी या उससे बना हुआ। स्त्री० कमल आदिकी डंडी; पौधेका पोला तना, कांड; नली; नाड़ी; बंदूककी नली। पु० आँवल; हरताल; मूठ; नाला; [हिं०] कसरत करनेके लिए बना हुआ भारी गोल पत्थर। **–कटाई**–स्त्री० [हिं०] नाल काटनेका काम; नाल काटनेकी उजरत। **मु० (कहींपर)–गड़ा होना**–किसी स्थानसे बहुत अधिक प्रेम होना; किसी स्थानपर स्वत्व होना।

नाल–पु० [अ०] रगड़से बचानेके लिए घोड़ेकी टाप और जूतेकी एड़ीके नीचे लगाया जानेवाला लोहेका अर्द्धचंद्राकार टुकड़ा। **–बंद**–पु० वह जो घोड़ेकी टाप या जूतेकी एड़ीमें नाल जड़नेका काम करे।

नालकी–स्त्री० एक तरहकी खुली पालकी।

नाला–पु० दूरतक गया हुआ लंबा-चौड़ा गड्ढा या प्रणाली जिसमें होकर बरसातका पानी किसी नदी आदिमें पहुँचता है; उससे होकर बहनेवाली जलकी धार।

नालिकेर–पु०, **नालिकेली**–स्त्री० [सं०] दे० 'नारिकेर'।

नालिश–स्त्री० [फा०] किसी प्रकारकी क्षति या कष्ट पहुँचानेवालेके विरुद्ध ऐसे व्यक्ति या अधिकारीके निकट किया गया आवेदन जो दोषीको उचित दंड दे सके, फरियाद, अभियोग। **मु०–दागना**–नालिश करना।

नाली–स्त्री० जल बहनेका मार्ग, मोरी।

नावँ*–पु० नाम।

नाव–स्त्री० जलके ऊपर तैरनेवाला काठ या टिनका लंबोतरा खुला यान जो नदी, नाला आदि पार करने, मछली मारने तथा जलयात्रा करने आदिके काम आता है, तरणि, वहित्र, नौका। **–घाट**–पु० वह घाट जहाँ नावें लगें या ठहरें। **मु० (सूखेमें)–चलाना**–असंभव कार्य करने चलना। **–में धूल उड़ाना**–एकदम झूठी बातें कहना, सफेद झूठ बोलना।

नावक–* पु० मल्लाह, केवट; [फ़ा०] एक प्रकारका छोटा तीर; मधुमक्खीका डंक।

नावधिकरण–पु० [सं०] (एडमिरल्टी) राज्यके जहाजी बेड़े, नौसेना आदिका संचालन करनेवाला अधिकारिवर्ग या उनका विभाग अथवा प्रधान कार्यालय।

नावना*–स० क्रि० झुकाना, नवाना; डालना; घुसाना।

नावर, नावरि*–स्त्री० नाव, नौका; नावकी क्रीड़ा–'जनु नावरि खेलहिं सर माहीं'–रामा०।

नाविक–पु० [सं०] कर्णधार, माझी, मल्लाह; पोतारोही।

नाव्य–वि० [सं०] (नेविगेबिल) नावसे पार करने योग्य; प्रशंसनीय। पु० नावसे पार करने योग्य जल; नयापन, नवीनता। **–जलमार्ग**–पु० (नेविगेबिल वाटरवेज़) वे नदियाँ, नहरें आदि जिनमें नावों या जहाजों द्वारा यात्रा की जा सके।

नाश–पु० [सं०] अस्तित्व न रहना; प्रध्वंस, लय, संहार, बरबादी; त्याग; अदर्शन, लोप। **–कारी(रिन्)**–वि० नाश करनेवाला।

नाशक–वि० [सं०] नष्ट करनेवाला, मिटा देनेवाला; मारनेवाला, संहार करनेवाला; दूर करनेवाला।

नाशन–पु० [सं०] नष्ट करना; हटाना; मृत्यु। वि० नष्ट करने या करानेवाला।

नाशना*–स० क्रि० दे० 'नासना'।

नाशपाती–स्त्री० एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़।

नाशवान्(वत्)–वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय, भंगुर, नश्वर, अशाश्वत।

नाशी(शिन्)–वि० [सं०] नाशशील, नश्वर; नाशक।

नाश्ता–पु० [फ़ा०] जलपान, कलेवा।

नास–* पु० दे० 'नाश'। स्त्री० नाकसे सुरकी या सूँघी जानेवाली औषध; सुँघनी। **–दान**–पु० सुँघनी रखनेका पात्र।

नासना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना, मिटा देना; मार डालना। अ० क्रि० नष्ट होना, दूर होना।

नासा–स्त्री० [सं०] नाक; घ्राणेंद्रिय; दरवाजेके ऊपर लगायी जानेवाली आड़ी लकड़ी, भरेटा। **–छिद्र**–पु० नाकका छेद। **–परिस्राव**–पु० सर्दीसे नाकका बहना। **–पाक**–पु० नाक पक जानेका रोग। **–पुट**–पु० नथना। **–बेध**–पु० नाकका वह छेद जिसमें कील या नथ पहनी जाती है। **–रंध्र**–पु० नाकका छेद। **–वंश**–पु० नाककी हड्डी। **–विवर**–पु० नाकका छेद। **–शोष**–पु० नाकका कफ सूखनेका एक रोग। **–स्राव**–पु० सर्दीसे नाकका बहना।

नासाग्र–पु० [सं०] नाकका अग्र भाग, नाककी नोक।

नासिक*–स्त्री० दे० 'नासिका'।

नासिका–स्त्री० [सं०] नाक; घ्राणेंद्रिय; नाककी शकलकी कोई चीज। **–मल**–पु० नाकसे निकलनेवाला श्लेष्मा।

नासी*–वि० दे० 'नाशी'।

नासीर–वि० [सं०] आगे जानेवाला, अग्रेसर। पु० सेनाका अग्र भाग, हरावल।

नासूर–पु० [अ०] पुराना घाव जिसमें लंबा छेद हो गया हो और जिसमेंसे प्रायः मवाद बहा करता हो, नाडीव्रण।

नास्तिक–पु० [सं०] वह जिसे ईश्वर, परलोक आदिमें विश्वास न हो, वेद-निंदक, आस्तिकका उलटा।

नास्तिकता–स्त्री०, **नास्तिकत्व**–पु० [सं०] नास्तिक होनेका भाव, ईश्वर, परलोक आदिमें अविश्वासबुद्धि।

नास्तिक्य–पु० [सं०] दे० 'नास्तिकता'।

नास्तिमंत–वि० (हैव-नॉट) जिसके पास रुपया-पैसा कुछ भी न हो, अकिंचन, गरीब, निःस्व।

नास्य–वि० [सं०] नाकका; नासिकासे संबद्ध; नासिकासे उत्पन्न। पु० (बैल आदिकी) नाथ, नकेल।

नाह–पु० पहियेकी नाभि; * नाथ, अधीश्वर; पति; [सं०] बंधन; फंदा, पाश।

नाहक–अ० [फ़ा०] दे० 'ना'के साथ।

नाहर–पु० शेर, सिंह।

नाहरू–पु० नहरुवा, नारू रोग; * नाहर, सिंह–'मारसि गाय नाहरू लागी'–रामा०।

नाहिन*–अ० नहीं।

नाहिनै*–[वाक्य] नहीं है।

नाहीं–अ० दे० 'नहीं'।

नित*–अ० नित्य, हमेशा।

निंद*–वि० दे० 'निंद्य'।

निंदक–पु० [सं०] निंदा या बदगोई करनेवाला।

निंदना*–स० क्रि० निंदा करना, शिकायत करना।

निंदनीय–वि० [सं०] निंदा करने योग्य, गर्हणीय।

निँदरना*–स० क्रि० निंदा करना; निरादर करना।

निँदरिया*–स्त्री० निद्रा, नींद।

निंदा–स्त्री० [सं०] किसीके दोषका वर्णन; झूठमूठ किसीमें दोष निकालना; अपवाद, शिकायत, बदनामी। **–प्रस्ताव**–पु० (वोट ऑफ सेंशर) शासन-संबंधी किसी नीति या कार्यके प्रति असंतोष प्रकट करने, उसकी निंदा करनेके उद्देश्यसे राज्यके प्रधान मंत्री या किसी संस्थाके सभापति, अध्यक्ष आदिके विरुद्ध लाया जानेवाला प्रस्ताव। **–स्तुति**–स्त्री० निंदा और प्रशंसा; व्याजस्तुति, निंदाके व्याजसे की गयी प्रशंसा।

निँदाई–स्त्री० निरानेकी काम; निरानेकी उजरत।

निँदाना–स० क्रि० दे० 'निराना'।

निँदासा–वि० जिसे नींद लग रही हो; अलसाया हुआ।

निंदित–वि० [सं०] जिसकी निंदा की गयी हो या की जाती हो, गर्हित, दूषित।

निँदिया–स्त्री० नींद, निद्रा।

निंद्य–वि० [सं०] निंदा करने योग्य, निंदनीय।

निंब–पु० [सं०] नीमका पेड़।

निँबकौड़ी, निँबकौरी–स्त्री० नीमका फल।

निंबू, निंबूक–पु० [सं०] कागजी नीबू।

निःशंक–वि० [सं०] जिसे किसी प्रकारका खटका न हो, निडर। अ० बिना किसी खटके या डरके।

निःशत्रु–वि० [सं०] शत्रुरहित।

निःशब्द–वि० [सं०] शब्दरहित, जहाँ किसी प्रकारका शब्द न होता हो; जो किसी प्रकारका शब्द न करे।

निःशरण–वि० [सं०] अरक्षित।

निःश्शील–वि० [सं०] दे० 'निश्शील'।

निःशेष–वि० [सं०] जिसमें कुछ बच न जाय, सारा, समूचा; जिसमें कुछ करनेको न रह गया हो, पूर्ण, समाप्त।

निःश्रेयस–पु० [सं०] मोक्ष; कल्याण; मंगल; विद्या, विज्ञान; भक्ति; प्रभाव; विशेष असर; शिव। वि० सर्वोत्तम।

निःश्वसन–पु० [सं०] साँस बाहर फेंकना।

निःश्वास–पु० [सं०] प्राणवायुके नासिका द्वारा बाहर निकलनेका व्यापार, साँसका बाहर निकलना; लंबी साँस।

निःसंकोच–अ०, वि० [सं०] दे० 'निस्संकोच'।

निःसंख्य–वि० [सं०] अनगिनत, बेशुमार।

निःसंग–वि० [सं०] दे० 'निस्संग'।

निःसंज्ञ–वि० [सं०] संज्ञाहीन, बेहोश।

निःसंतान–वि० [सं०] दे० 'निस्संतान'।

निःसंदेह–वि० [सं०] दे० 'निस्संदेह'।

निःसंधि–वि० [सं०] संधिरहित, जिसमें छेद आदि न हो; घना, कसा हुआ; मजबूत, दृढ़।

निःसरण–पु० [सं०] बाहर आना, निकलना; घर आदिका निकास (द्वार); मरण; बचनेका रास्ता, उपाय; निर्वाण।

निःसार–वि० [सं०] 'निस्सार'।

निःसारण–पु० [सं०] बाहर करना, निकालना, बहिष्करण; घर आदिका निकास।

निःसारित–वि० [सं०] निकाला हुआ, बाहर किया हुआ।

निःसीम–वि० [सं०] दे० 'निस्सीम'।

निःसृत–वि० [सं०] बाहर आया हुआ; निकला हुआ।

निःस्नेह–वि० [सं०] दे० 'निस्स्नेह'।

निःस्पंद–वि० [सं०] दे० 'निस्स्पंद'।

निःस्पृह–वि० [सं०] जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो, निरीह, आशारहित।

निःस्व–वि० [सं०] दे० 'निस्स्व'।

निःस्वादु–वि० [सं०] दे० 'निस्स्वादु'।

निःस्वामिक भूमि–स्त्री० [सं०] (नोमैंस लैंड) वह परती भूमि जो किसीके अधिकारमें न हो।

निःस्वार्थ–वि० [सं०] दे० 'निस्स्वार्थ'।

नि–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो अधोभाव (निपात), समूह (निकर), घनता (निकाम), आदेश (निदेश), नित्यता (निवेश), कौशल (निपुण), बंधन (निबंध), सामीप्य (निकट), अपमान (निकृति), दर्शन (निदर्शक), आश्रय (निलय), अंतर्भाव (निपीत) आदिकी विशेषताका द्योतन करनेके लिए संज्ञा, क्रिया आदिके पूर्व जोड़ा जाता है।

निअर–* अ० समीप, निकट, पास। † वि० समान।

निअराना*–अ० क्रि० निकट, नजदीक आना, पास आना; निकट होना। स० क्रि० पास पहुँचना।

निआउ*–पु० दे० 'न्याय'।

निआन*–अ० अंतमें, अंततोगत्वा। पु० निदान, परिणाम।

निआमत–स्त्री० [अ०] दे० 'नेमत'।

निआरा†–वि० दे० 'न्यारा'।

निआर्थी*–स्त्री० अर्थहीनता, दरिद्रता, गरीबी।

निकंदन–पु० [सं०] नाश, संहार। वि० नाशकर्ता।

निकंदना*–स० क्रि० नाश करना।

निकट–अ० [सं०] पास, नजदीक। वि० पासका, समीपवर्ती, नजदीकी, जो दूर या दूरका न हो। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० पासका, समीप रहनेवाला, जो दूर न हो; जिससे नजदीकका नाता हो। **–स्थ**–वि० समीपस्थ, पासका, नजदीकी।

निकटता–स्त्री० [सं०] समीप होनेका भाव, समीपता।

निकटपना–पु० दे० 'निकटता।

निकम्मा–वि० जिसका किया कुछ न हो, जिससे एक भी काम न सरे; जो एकदम बेकार हो, व्यर्थका।

निकर–पु० [सं०] समूह, झुंड; राशि; निधि; सार; [अं०] घुटन्ना, जाँघिया।

निकरना*–अ० क्रि० दे० 'निकलना'।

निकर्मा–वि० अकर्मण्य, जो कुछ न करे।

निकलंक–वि० कलंकरहित, बेदाग, निर्दोष, लांछनहीन।

निकलंकी–पु० कल्कि अवतार। वि० कलंकहीन।

निकल–स्त्री० [अं०] एक धातु जो चाँदी जैसी सफेद होती है।

निकलना–अ० क्रि० बाहर होना या आना, प्रकट होना; प्रवाहित होना, गिरना, बहना; उदय होना; व्याप्त या अन्य वस्तुओंके साथ मिली हुई वस्तुका पृथक् होना; जमना, उगना; जड़ी या सटी हुई वस्तुका आधारसे पृथक् होना; दल-बल या बाजे-गाजेके साथ एक स्थानसे चलकर दूसरे स्थानतक जाना; किसी ओरको बढ़ा होना; उत्पन्न होना; बीचसे होकर बाहर आ जाना या पहुँच जाना; पार होना; शरीरपर उत्पन्न होना, उभर आना; पास होना, शिक्षा समाप्त करके पृथक् होना; स्थिर किया जाना, सोचा जाना, ठहराया जाना; दूर होना, जाता रहना, नष्ट होना; प्राप्त होना, मिलना; व्यक्त होना, खुलना; सिद्ध होना, पूर्ण होना; चलना, आरंभ होना, छिड़ना; अलग होना, पृथक् किया जाना; हल होना; निर्मित होना, तैयार किया जाना; (नदी आदिका) उद्गत होना, बहना आरंभ करना; खोजा जाना, आविष्कृत या ईजाद होना; फँसा, बँधा या जुड़ा न रहना; प्रचलित होना, जारी होना; प्रवर्तित होना; अपनेको दायित्वसे मुक्त करना, पृथक् होना, गला छोड़ाना; प्रकाशित होना; बिकना, खपत होना; सिद्ध होना, साबित होना; बिना दंड पाये बच जाना, अपनेको मुक्त करना; पकड़, बंधन आदिसे मुक्त होना; हिसाब होनेपर रकम जिम्मे आना, पावना होना; फटकर अलग होना; पकड़ा जाना, बरामद होना, पाया जाना; समाप्त होना, बीतना, गुजरना; सवारी ढोने या जोताईके लिए शिक्षित होना। **मु० निकल जाना**–चला जाना, पहुँच जाना; कम हो जाना, घट जाना; जाता रहना, खो जाना; उपयोगमें न लाया जाना; छिन जाना; भाग जाना, पकड़में न आना; (स्त्रीका) अपना घर छोड़कर किसी प्रेमीके साथ चला जाना।

निकलवाना–स० क्रि० निकालनेका काम कराना।

निकष–पु० [सं०] कसौटी; कसौटीपर कसनेकी क्रिया; सान जिसपर चढ़ाकर हथियार तेज करते हैं; (ला०) कसौटीका काम करनेवाला; कसौटीपर सोना रगड़नेसे बनी हुई रेखा।

निकषण–पु० [सं०] कसौटी, सानपर चढ़ानेकी क्रिया; घिसना, रगड़ना।

निकषा–स्त्री० [सं०] (रावण आदि) राक्षसोंकी माता। अ० निकट।

निकषोपल–पु० [सं०] सोना कसने या सान चढ़ानेका पत्थर।

निकस–पु० [सं०] दे० 'निकष'।

निकसना*–अ० क्रि० दे० 'निकलना'।

निकाई*–पु० दे० 'निकाय'। स्त्री० भलाई; अच्छापन, बढ़ियापन; सुंदरता।

निकाज–वि० निकम्मा, बेकार।

निकाना–स० क्रि० दे० 'निराना'।

निकाम–वि० बेकाम, निकम्मा; खराब; [सं०] पर्याप्त, काफी; अभीष्ट; इच्छुक। अ० अत्यंत, भूरि, बहुत, खूब। पु० अभिलाषा; आधिक्य।

निकाय–पु० [सं०] समूह, समुदाय; सजातीय प्राणियोंका समूह; वासस्थान; परमात्मा; शरीर; लक्ष्य; राशि; (बॉडी) समान उद्देश्यसे काम करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, संस्था; जनप्रतिनिधियोंकी वह स्थानीय संस्था जो नगर, जिले या तहसील आदिकी स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि-संबंधी बातोंकी देखभाल करती है। **–समाजवाद–**पु० (गिल्ड सोशलिज्म) एक तरहका संघ-समाजवाद जो ब्रिटेनमें प्रचलित था (इसका सिद्धांत था कि श्रमिक संघोंके निकाय बनाये जायँ और उन्हींके हाथमें कारखानों आदिका नियंत्रण सौंप दिया जाय, पर सरकारके अन्य विभागोंका नियंत्रण राज्यकी संसदके ही अधीन रहे)।

निकार–पु० निकालनेका काम, बहिष्कार, निष्कासन; निकलनेका द्वार या मार्ग, निकास; [सं०] अनादर, अवज्ञा; पराभव; अनाज ओसाना या फटकना; उठाना; मारण, वध; दुष्टता; द्वेष; विरोध।

निकारण–पु० [सं०] मारण, वध।

निकारना*–स० क्रि० दे० 'निकालना'।

निकाल–पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; कुश्तीका एक पेंच; पेंचका काट।

निकालना–स० क्रि० बाहर करना या लाना; प्रकट करना; प्रवाहित करना, गिराना, बहाना; व्याप्त या अन्य वस्तुओंके साथ मिली हुई वस्तुको पृथक् करना; जमाना, उगाना; गड़ी या सटी हुई वस्तुको आधारसे पृथक् करना; दल-बल या बाजे-गाजेके साथ एक स्थानसे चलाकर दूसरे स्थानतक ले जाना; किसी ओरको बढ़ा हुआ करना; उत्पन्न करना, पैदा करना; बीचसे ले जाकर बाहर ले जाना या पहुँचाना, पार करना; शरीरपर उत्पन्न करना, उभारना; पास करना, शिक्षा समाप्त करके पृथक् करना; स्थिर करना, सोचना, ठहराना; दूर करना; नष्ट करना; प्राप्त करना; व्यक्त करना, खोलना; सिद्ध करना, पूर्ण करना; चलाना, आरंभ करना, छेड़ना; अलग करना, पृथक् करना; हल करना; निर्माण करना, तैयार करना; (नदी आदिको) उद्धृत करना, बहाना आरंभ करना; खोजना, आविष्कार करना, ईजाद करना; फँसा, बँधा या जुड़ा न रहने देना; प्रचलित करना, जारी करना, प्रवर्तित करना; प्रकाशित करना; बेचना, खपत करना; सिद्ध करना, साबित करना; दंड पानेसे बचाना, मुक्त करना; पकड़, बंधन आदिसे मुक्त करना; रकम जिम्मे ठहराना; फाड़कर अलग करना; बरामद करना; बिताना, गुजारना; सवारी ढोने या जोताईकी शिक्षा देना।

निकाला–पु० निकालनेकी क्रिया; बहिष्कार; निर्वासन।

निकाश–पु० [सं०] क्षितिज; सामीप्य; सादृश्य (समासांतमें); दृश्य।

निकाष–पु० [सं०] खुरचना; रगड़ना।

निकास–पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; द्वार, दरवाजा; निकलनेका मार्ग या स्थान; बाहर या सामनेकी खुली जगह, इर्दगिर्दका मैदान, सहन; उद्गम, मूलस्थान; गुजारेका रास्ता, निर्वाहका उपाय, सिलसिला; वंशका मूल स्रोत; त्राणका उपाय, बचावका रास्ता, रक्षाकी युक्ति; आयका रास्ता; आय, आमदनी। [सं०] दे० 'निकाश'। **–पत्र–**पु० जमा-खर्च और बचतके हिसाबकी बही।

निकासना†–स० क्रि० दे० 'निकालना'।

निकासी–स्त्री० निकलने या निकालनेकी क्रिया या भाव; प्रस्थान; आय, प्राप्ति; वह रकम जो मालगुजारी आदि बेबाक करनेके बाद जमींदारके पास बचे, मुनाफा; मालकी रवानगी या लदाई; रवन्ना; चुंगी; खपत।

निकाह–पु० [अ०] मुसलमानोंकी विवाहपद्धति; उस पद्धतिके अनुसार किया गया विवाह। **–नामा–**पु० वह कागज जिसमें निकाहकी शर्तें लिखी जाती हैं।

निकाही–वि० स्त्री० निकाह करके लायी हुई; (वह स्त्री) जिसने स्वेच्छासे विवाह कर लिया हो।

निकिष्ट*–वि० दे० 'निकृष्ट'।

निकुंज–पु० [सं०] सघन वृक्षों और लताओंसे आवृत स्थान, लतामंडप।

निकृष्ट–वि० [सं०] हीन, नीच, अधम; तुच्छ।

निकेत, निकेतक–पु० [सं०] घर, वासस्थान, निवास; चिह्न।

निकेतन–पु० [सं०] घर, वासस्थान; प्याज।

निक्षिप्त–वि० [सं०] फेंका हुआ; रखा हुआ; डाला हुआ; धरोहर रखा हुआ; भेजा हुआ; परित्यक्त।

निक्षेप–पु० [सं०] फेंकने, डालने, रखने, भेजने, चलाने, त्यागने या अर्पण करनेकी क्रिया या भाव; धरोहर, अमानत; धरोहर रखना। **–निधि–**स्त्री० (सिंकिंग फंड) दे० 'ऋणपरिशोधकोष'। **–निर्णय–**पु० (टॉस) सिक्का आदि हवामें फेंककर उसके नीचे गिरनेकी स्थितिसे कोई निश्चय करना, जैसे कौन पक्ष पहली पालीका खेल आरंभ करेगा।

निक्षेपक–पु० [सं०] निक्षेपकर्ता; धरोहर रखनेवाला; (डिपाज़िटर) बैंक आदिमें रुपया जमा करनेवाला।

निक्षेपण–पु० [सं०] फेंकना; डालना; रखना; त्यागना; चलाना; अर्पण करना; धरोहर रखना।

निक्षेपी (पिन्)–वि० [सं०] निक्षेप करनेवाला; धरोहर रखनेवाला।

निक्षेप्ता (प्तृ)–पु० [सं०] दे० 'निक्षेपक'।

निखंग*–पु० दे० 'निषंग'।

निखंगी*–वि० दे० 'निषंगी'।

निखट्टू–वि० जो कहीं न टिके, जो इधर-उधर मारा फिरे; सब जगह झगड़ा-फसाद करनेवाला; जिससे कुछ करते-धरते न बने, निकम्मा।

निखनन–पु० [सं०] खोदना; गाड़ना।

निखरना–अ० क्रि० निर्मल होना, साफ होना; (किसी वस्तुपर) और अधिक रंग चढ़ना; परिमार्जित होना।

निखरवाना–स० क्रि० स्वच्छ कराना, साफ कराना।

निखरी–स्त्री० पक्की रसोई, 'सखरी'का उलटा।

निखर्व–वि० [सं०] दस हजार करोड़; ठिंगना, छोटे कदका। पु० दस हजार करोड़की संख्या।

निखवख*–अ० बिलकुल; केवल।

निखात–वि० [सं०] खोदा हुआ; जमाया हुआ; गाड़ा हुआ। **–निधि**–स्त्री० (ट्रेजर ट्रोव) भूमिके भीतर गड़ी हुई संपत्ति जो बादमें खोदकर निकाली गयी हो।

निखाद*–पु० दे० 'निषाद'।

निखार–पु० सफाई; सजावट।

निखारना–स० क्रि० स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल बनाना; पवित्र करना, शुद्ध करना, पापसे रहित करना।

निखालिस†–वि० बिना मिलावटका, विशुद्ध, पवित्र।

निखिल–वि० [सं०] सारा, संपूर्ण, सब।

निखुटना, निखूटना*–अ० क्रि० घट जाना; समाप्त हो जाना–'बाती सूखी तेल निखूटा'–कबीर।

निखेध*–पु० दे० 'निषेध'।

निखेधना*–स० क्रि० निषेध करना, मना करना।

निखोट–वि० जिसमें किसी प्रकारका खोटापन न हो, दोषरहित, निष्कलंक, विशुद्ध; स्पष्ट, साफ। अ० निःशंक होकर, बेखटके; खुल्लमखुल्ला।

निखोड़ना†–स० क्रि० नाखूनसे नोचना।

निगंध*–वि० जिसमें गंध न हो, गंध-रहित।

निगड–स्त्री०[सं०] बेड़ी, शृंखला; हाथी बाँधनेकी जंजीर।

निगडन–पु० [सं०] बेड़ी डालना; जंजीरसे बाँधना।

निगडित–वि० [सं०] बेड़ी या जंजीरसे जकड़ा हुआ।

निगद–पु० [सं०] भाषण, कथन; बोल-बोलकर किया हुआ जप; उल्लेख करना; बिना अर्थ समझे याद करना।

निगदन–पु० [सं०] याद की हुई चीजका पाठ करना; कथन।

निगदित–वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त।

निगम–पु० [सं०] वेद; वेदका कोई अंश; पथ, मार्ग; वणिक्पथ, हाट, बाजार; मेला; कारवाँ; अनुमानके पाँच अवयवोंमेंसे एक, निगमन (न्या०); बनजारा; निश्चय; (कॉरपोरेशन) वह निकाय या संस्था जो विधि (कानून)के अनुसार एक व्यक्तिकी तरह काम करनेके लिए प्राधिकृत हो। **–कर**–पु०(कॉरपोरेशन टैक्स) व्यापारिक या औद्योगिक निगमों(संस्थाओं)पर लगनेवाला कर। **–निवासी (सिन्)**–पु० विष्णु, नारायण।

निगमन–पु० [सं०] हेतु, उदाहरण और उपनयनके उपरांत सिद्ध की गयी प्रतिज्ञाका पुनः कथन (न्या०); वेदके शब्दोंका उद्धरण; अंदर जाना।

निगमागम–पु० [सं०] वेद और शास्त्र।

निगमित–वि० (इनकॉरपोरेटेड) निगमरूपमें परिणत या संघटित।

निगर–* वि० सब, समस्त। पु० समूह; [सं०] निगलना, भक्षण, भोजन; होमका धुआँ।

निगरानी–स्त्री० [फा०] देख-भाल, निरीक्षण।

निगरु*–वि० जो गुरु अर्थात् भारी न हो, हलका।

निगलन–पु० [सं०] निगलना, भक्षण।

निगलना–स० क्रि० गलेसे नीचे उतार देना, घोंट जाना; खा जाना; रुपया या धन हड़प लेना या दबा बैठना।

निगह–स्त्री० [फा०] निगाह, दृष्टि। **–बान**–वि० देख-रेख करनेवाला, रखवाला; रक्षक।

निगाली–स्त्री० नैचेका वह भाग जो मुँहमें रहता है।

निगाह–स्त्री० [फा०] दृष्टि, नजर; दयादृष्टि, कृपा, मेहरबानी; विचार, समझ; चितवन, अवलोकन; ध्यान; परख; निरीक्षण। **–बान**–वि० दे० 'निगहबान'।

निगिभ*–वि० बहुत प्यारा, परम प्रिय; अत्यंत गोप्य।

निगीर्ण–वि० [सं०] निगला हुआ; जिसका अंतर्भाव हो गया हो या किया गया हो।

निगुण, निगुन, निगुना*–वि० दे० 'निर्गुण'।

निगुनी*–वि० जो गुणी न हो, गुणीका उलटा, गुणहीन।

निगुरा–वि० जिसने गुरुसे दीक्षा न ली हो, अदीक्षित।

निगूढ–वि० [सं०] अति गुप्त; रहस्यपूर्ण।

निगृहीत–वि० [सं०] पकड़ा हुआ; वशमें लाया गया; दबाया हुआ; विवादमें पराजित; आक्रांत; पीडित।

निगोड़ा–वि० अभागा; निराश्रय; जिसके कोई न हो, जो एकदम अकेला हो; निकम्मा; * दुष्ट, नीच।

निगोरा*–वि० दे० 'निगोड़ा'।

निग्रह–पु० [सं०] रोकना, अवरोध; वशमें लाना; दंड देना, दबाना, दमन; बंधन; अभ्यास और वैराग्य द्वारा चित्तवृत्तिका निरोध।

निग्रहना*–स० क्रि० पकड़ना; रोकना; दंड देना।

निग्रही(हिन्)–वि० [सं०] निग्रह करनेवाला, दमन करनेवाला, दंड देनेवाला।

निघंटु–पु० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें शब्दोंके पर्यायोंका संग्रह हो (जैसे अमरकोश, हलायुध, वैजयंती इ०); वैदिक शब्दकोश जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्त-में की है।

निघटना*–अ० क्रि० घटना, कम होना–'निघटत नीर मीनगन जैसे'–रामा०; बीतना। स० क्रि० मिटाना, नष्ट करना।

निघरघट–वि० बिना घर-घाटका, बिना घर-बारका; जो घूम-फिरकर एक ही जगहपर रहे और हटानेसे भी न हटे; बेशर्म, निर्लज्ज।

निघरा–वि० बिना घर-बारका; निगोड़ा, कमीना, नीच।

निघर्ष, निघर्षण–पु० [सं०] रगड़, घिसावट; पीसना।

निचय–पु० [सं०] समूह; संचय; निश्चय।

निचल*–वि० अचल, अटल।

निचला–वि० नीचेका, नीचेवाला; अचल, स्थिर, शांत।

निचाई–स्त्री० नीचा होनेका भाव, नीचापन, ऊँचाईका उलटा; नीचेकी ओरका विस्तार; नीचता, खोटाई।

निचान–स्त्री० नीचापन; ढालुआँपन।

निचिंत–वि० दे० 'निश्चिंत'।

निचुड़ना–अ० क्रि० निचोड़ा जाना, गरना; सारहीन होना, बल या शक्ति निकल जानेसे क्षीण होना।

निचुल–पु० [सं०] बेंत; ऊपरका वस्त्र, निचोल ।

निचै*–पु० दे० 'निचय' ।

निचोड़–पु० निचोड़नेपर निकली हुई वस्तु, निचोड़ा हुआ जल, रस आदि; सारांश, निष्कर्ष; तत्त्व, सार ।

निचोड़ना–स० क्रि० दबाकर या ऐंठकर किसी गीली या रसवाली वस्तुमेंसे पानी या रस निकालना, गारना; किसी वस्तुमेंका तत्व निकाल लेना; किसीकी सारी पूँजी हर लेना, किसीका सब कुछ ले लेना ।

निचोना*–स० क्रि० निचोड़ना ।

निचोर*–पु० दे० 'निचोड़' ।

निचोरना*–स० क्रि० दे० 'निचोड़ना' ।

निचोल–पु० [सं०] वह कपड़ा जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, आच्छादन-वस्त्र, ढकनेका कपड़ा; चद्दरा; बिछावन-की चादर; ओहार; उत्तरीय; स्त्रियोंकी ओढ़नी ।

निचोलक–पु० [सं०] सदरी; चोली; कवच, उरस्त्राण ।

निचोवना*–स० क्रि० दे० 'निचोड़ना' ।

निचौहाँ–वि० नीचेकी ओर किया हुआ, नीचेकी ओर झुका या झुकाया हुआ; नीचा ।

निचौहैं–अ० नीचेकी ओर ।

निछक्का–पु० निर्जन स्थान, एकांत स्थान ।

निछत्र–वि० जिसके सिरपर छत्र न हो, बिना छत्रका; राजचिह्नरहित; जिसमें क्षत्रिय न हों, क्षत्रियहीन ।

निछनियाँ*–अ० दे० 'निछान' ।

निछल*–वि० निश्छल, कपटरहित ।

निछान†–वि० जिसमें मिलावट न हो, विशुद्ध, खालिस, केवल, एकमात्र । अ० एकदम, बिलकुल, पूर्णतः ।

निछावर–स्त्री० किसी वस्तुको किसीके सिर या शरीरके ऊपरसे घुमाकर दान कर देने या कहीं रखने, आदिका एक टोटका; निछावर की जानेवाली वस्तु; नेग; बलि; उत्सर्ग; इनाम । **मु०–करना**–समर्पण करना; त्यागना । **–होना**–समर्पित किया जाना; त्याग दिया जाना । **(किसीका किसीपर)–होना**–किसीके निमित्त प्राण छोड़ देना, किसीके लिए जान देना, बलि जाना ।

निछावरि†–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

निछोह–वि० जिसमें प्रेम, दया न हो, निर्मम, निठुर ।

निछोही–वि० दे० 'निछोह' ।

निज–वि० [सं०] अपना, स्वकीय, जो पराया न हो; खास, प्रधान; पक्का; सच्चा । अ० बिलकुल; प्रधानतः, अधिकतर; यथार्थमें, निश्चयपूर्वक । **–सचिव**–पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) किसी राज्यपाल, मुख्य मंत्री या अन्य बड़े आदमीके साथ रहकर उसके निजी कामोंकी देखभाल तथा पत्र-व्यवहारादि करनेवाला सचिव । **–स्व**–पु० अपना भाग । **–करके**–निश्चित रूपसे, अवश्य । **–का**–खास अपना, व्यक्तिगत ।

निजकाना*–अ० क्रि० पास पहुँचना, नजदीक आना या जाना ।

निजन*–वि० जनरहित, निर्जन, सुनसान ।

निज़ाम–पु० [अ०] तरतीब; बंदोबस्त; हैदराबादके नवाबकी उपाधि; प्रबंधक; काव्यरचना ।

निजी–वि० निजका; व्यक्तिगत । **–उपचारगृह**–पु० (क्लिनिक) किसी डाक्टर आदिका वह निजी चिकित्सा-गृह जहाँ रोगियोंका निदान तथा उपचार किया जाता है; निदानगृह ।

निजु–वि०, अ० दे० 'निज' ।

निजोर*–वि० बलहीन, कमजोर ।

निझरना*–अ० क्रि० एकदम झड़ जाना; खाली हो जाना –'भुवपर एक बुंद नहिं पहुँची, निझरि गये सब मेह'–सू०; सारहीन हो जाना; अपनेको निर्दोष बताना ।

निठि*–अ० दे० 'नीठि' ।

निठल्ला, निठल्लू–वि० बिना काम-धंधेका, खाली बैठा हुआ, बेकार; अकर्मण्य ।

निठाला–पु० बेकारीका समय; आय या जीविकाका अभाव ।

निठुर–वि० दे० 'निष्ठुर' ।

निठुरई*–स्त्री० निष्ठुरता ।

निठुरता*–स्त्री० निष्ठुरता, निर्दयता ।

निठुराई–स्त्री० क्रूरता, दयाहीनता, निष्ठुरता ।

निठौर–पु० बुरा स्थान; कुदाँव, दुर्दशा–'जिनको पिय परदेस सिधारो सो तिय परी निठौर'–सू० ।

निडर–वि० निर्भय, निर्भीक; साहसी; ढीठ ।

निड़ै*–अ० निकट, पास–'कबिरा चंदनके निड़ै नींब भी चंदन होइ'–कबीर ।

निढाल–वि० थककर चूर, शिथिल, श्रांत; पस्त ।

निढिल*–वि० जो ढीला न हो, कसा हुआ, तना हुआ; सख्त, कड़ा ।

नितंत–अ० दे० 'नितांत' ।

नितंत्र-अनुज्ञा–स्त्री० (वायरलेस लाइसेंस) बेतारका यंत्र (रेडियो) रखनेकी अनुमति ।

नितंब–पु० [सं०] स्त्रियोंके शरीरका कमरसे नीचेका भाग, कटिका अधोभाग, चूतड़; कमर; पहाड़की ढाल; कंधा । **–बिंब**–पु० मंडलाकार नितंब ।

नितंबिनी–वि०, स्त्री० [सं०] सुंदर और भारी नितंबवाली । स्त्री० सुंदर और भारी नितंबवाली स्त्री ।

नित–अ० नित्य, प्रतिदिन, सदा । **–नित**–अ० हर रोज, अनुदिन ।

नितराम्–अ० [सं०] बहुत अधिक, अत्यंत; एकदम; पूर्णतः; निरंतर; हर हालतमें; निश्चयपूर्वक ।

नितल–पु० [सं०] पातालके सात भागोंमेंसे एक ।

नितांत–अ० [सं०] अत्यंत; एकदम, बिलकुल ।

निति*–अ० दे० 'नित' ।

नित्य–वि० [सं०] सदा बना रहनेवाला, अक्षर, अनश्वर, शाश्वत; प्रतिदिनका; जो नित्य किया जाय । अ० प्रतिदिन; सदा । **–कर्म(न्)**, **–कृत्य**–पु० प्रतिदिन किया जानेवाला विहित कर्म जिसके न करनेसे पाप होता है (जैसे–संध्या, पंचयज्ञ, स्नान आदि) । **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'नित्यकर्म' । **–नियम**–पु० कभी भंग न होनेवाला नियम । **–प्रति**–अ० प्रतिदिन, हर रोज ।

नित्यता–स्त्री०, **नित्यत्व**–पु० [सं०] नित्य होनेका भाव, अविनाशिता, अक्षरता ।

नित्यशः–अ० [सं०] हर रोज, प्रतिदिन; सदा, हमेशा ।

नित्यानंद–पु० [सं०] वह आनंद जो सदा बना रहे ।

वि० वह जो सदा आनन्दसे रहे ।

निथंभ*–पु० स्तंभ, खंभा ।

निथरना–अ० क्रि० घुले हुए मैल आदिके नीचे बैठ जानेसे जल आदिका स्वच्छ हो जाना ।

निथारना, निथालना*–स० क्रि० पानी या किसी अन्य तरल पदार्थको इस रूपमें लाना कि उसमें घुला हुआ मैल आदि नीचे बैठ जाय ।

निदई*–वि० दे० 'निर्दय' ।

निदरना*–स० क्रि० अपमान करना, अनादर करना; तिरस्कार करना, त्यागना; मात करना, नीचा दिखाना ।

निदर्शक–वि० [सं०] दिखलाने-बतलानेवाला ।

निदर्शन–पु० [सं०] प्रदर्शन; उदाहरण, दृष्टांत ।

निदर्शना–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ दो पदार्थोंमें भिन्नता होते हुए भी उपमा द्वारा उनके संबंधकी कल्पना की जाय ।

निदलन*–पु० दे० 'निर्दलन' ।

निदहना*–स० क्रि० जलाना ।

निदाघ–पु० [सं०] गरमी; घाम; ग्रीष्म ऋतु; पसीना । **–कर**–पु० सूर्य । **–काल**–पु० ग्रीष्म ऋतु ।

निदान–पु० [सं०] आदि कारण; कारण; रोगका कारण; रोगकी पहचान, लक्षणों द्वारा यह निर्णय करना कि कौन रोग हुआ है । अ० अंतमें, आखिर । वि० निकृष्ट, तुच्छ, गया-गुजरा । **–गृह**–पु० (क्लिनिक) वह स्थान जहाँ रोगियोंका परीक्षण इत्यादि कर उन्हें चिकित्सा-संबंधी उचित सलाह दी जाती है । **–शास्त्री (स्त्रिन्)**–पु० (पैथेलाजिष्ट) रोगोंका निदान करनेवाला विशेषज्ञ ।

निदारुण–वि० [सं०] कठिन; निर्दय; असह्य ।

निदाह*–पु० दे० 'निदाघ' ।

निदिध्यास, निदिध्यासन–पु० [सं०] अनवरत चिंतन, बार-बार स्मरण करना ।

निदेश–पु० [सं०] आज्ञा; शासन; कथन; समीपता, निकटता; पात्र, बरतन; (डाइरेक्शन) रास्ता या ढंग बतानेका काम; करने या किये जानेका आदेश देना, हिदायत ।

निदेशक–पु० [सं०] (डाइरेक्टर) निदेश करनेवाला; चलचित्रोंमें पात्रोंकी वेशभूषा, कथोपकथन आदि निर्धारित करनेवाला (निर्देशक) ।

निदेशिका–स्त्री० [सं०] (डाइरेक्टरी) किसी नगर, प्रदेश आदिके प्रमुख नागरिकों, व्यापारियों आदिका नाम, पता आदि बातोंका ब्यौरा देनेवाली पुस्तक ।

निदेशी (शिन्)–वि० [सं०] आज्ञा देनेवाला ।

निदेस*–पु० दे० 'निदेश' ।

निदोष*–वि० दे० 'निर्दोष' ।

निद्धि*–स्त्री० दे० 'निधि' ।

निद्रा–स्त्री० [सं०] प्राणियोंकी वह अवस्था जिसमें संज्ञावहा नाड़ियोंका काम रुक जाता है, आँखें बंद हो जातीं, शरीर शिथिल पड़ जाता और चेतना जाती सी रहती है; आलस्य; मीलन । **–चार, –भ्रमण**–पु० (सोमनैंबुलिज्म) निद्रा-ग्रस्त रहते हुए भी चलना-फिरना या अन्य कार्य करना । **–भंग**–पु० जागरण ।

निद्रायमाण–वि० [सं०] जो सो रहा हो, जिसे नींद आ रही हो ।

निद्रालु–वि० [सं०] सोनेवाला, निद्राशील ।

निद्रित–वि० [सं०] सोया हुआ, सुप्त ।

निधड़क–अ० बेखटके, बेरोक; बिना हिचकके ।

निधन–पु० [सं०] नाश, मरण; अंत; कुंडलीमें आठवाँ स्थान । वि० वित्तहीन, गरीब, दरिद्र । **–कारी (रिन्)**–वि० घातक, नाशक । **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टिक्रिया ।

निधनी–वि० धनहीन, दरिद्र ।

निधान–पु० [सं०] रखना; आधार, आश्रय; आकर, खजाना; संपत्ति; घर ।

निधि–स्त्री० [सं०] किसी वस्तुका आधार; खजाना; वह गड़ा हुआ धन जिसके स्वामीका पता न हो; कुबेरके नौ रत्न (पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व); समुद्र; नौकी संख्या; वह धन जो किसी उद्देश्यसे अलग रखा या जमा कर दिया जाय; बहुगुण-संपन्न व्यक्ति; (लोकस) किसी चलायमान बिंदुकी वह रेखा जिसपर उस बिंदुकी वे सब स्थितियाँ हों जो किसी दिये हुए नियमका पालन करती हों । **–नाथ, –प, –पति, –पाल**–पु० कुबेर ।

निधीश, निधीश्वर–पु० [सं०] कुबेर ।

निधेय–वि० [सं०] रखने योग्य, स्थापन करने योग्य ।

निनरा–वि० न्यारा, जुदा ।

निनाद–पु० [सं०] शब्द, गुंजार; रथके पहियेकी आवाज ।

निनादना*–स० क्रि० निनाद करना ।

निनान*–पु० अंत; लक्षण । अ० अंतमें, आखिर । वि० आखिरी दर्जेका, घोर; बुरा, तुच्छ ।

निनार, निनारा–वि० न्यारा, जुदा–'वे हरि जल हम मीन बापुरी कैसे जियहिं निनारे'–सू०; दूर ।

निनावाँ–पु० फुंसीकी तरहके लाल दाने जो जीभ, मसूड़े तथा मुँहके भीतरी भागोंमें निकल आते हैं ।

निनौना*–स० क्रि० नवाना, झुकाना ।

निनौरा–पु० ननिहाल ।

निन्नानबे–वि०, पु० दे० 'निन्यानबे' ।

निन्यानबे–वि० नब्बे और नौ । पु० निन्यानबेकी संख्या, ९९ । मु० **–का चक्कर, –का फेर**–धन बढ़ानेकी धुन ।

निन्यारा*–वि० दे० 'निनारा' ।

निपंग*–वि० पंगु, अपाहिज ।

निपजना*–अ० क्रि० उपजना, उत्पन्न होना, जमना; पुष्ट होना, परिपक्व होना; निकलना; बनना ।

निपजी*–स्त्री० उपज; फायदा, मुनाफा ।

निपट–अ० एकदम, बिलकुल, नितांत, निरा ।

निपटना–अ० क्रि० दे० 'निबटना' ।

निपटारा–पु० दे० 'निबटारा' ।

निपटेरा–पु० दे० 'निबटेरा' ।

निपतन–पु० [सं०] नीचे आना, उतरना; गिरना, पतन ।

निपतित–वि० [सं०] नीचे उतरा हुआ; गिरा हुआ ।

निपत्र–वि० जिसमें या जिसपर पत्ते न हों, पत्रहीन ।

निपाँगुर–वि० पंगु, जिसके हाथ-पाँव बेकाम हो गये हों ।

निपात–पु० [सं०] गिरना, पतन, चलाना, फेंकना; विनाश; वह शब्द जो वर्णागम आदिके द्वारा किसी प्रकार

वन जाता हो और व्याकरणके नियम(सूत्र)से निष्पन्न न होता हो (व्या०)। * वि० दे० 'निपत्र'।

निपातन–पु० [सं०] गिरानेका काम; मारना, पीटना; नाश करना।

निपातना*–स० क्रि० गिराना; नाश करना; वध करना, मार डालना; काटकर गिराना; काट डालना।

निपातित–वि० [सं०] गिराया हुआ; हत या नष्ट किया हुआ; अनियमित रूपसे वना हुआ।

निपाती*–वि० बिना पत्तोंका। (वृक्ष)

निपाती(तिन्)–वि० [सं०] गिरानेवाला; फेंकनेवाला; मारनेवाला, नाशक।

निपीडक–वि० [सं०] वहुत अधिक पीडा पहुँचानेवाला; निचोड़ने, पेरनेवाला; मलने या दवानेवाला।

निपीडन–पु० [सं०] वहुत अधिक पीडा पहुँचाना; निचोड़ना, गारना; पेरना; दवाना या मलना।

निपीडना–स्त्री० [सं०] दे० 'निपीडन'। *स० क्रि० पीडा पहुँचाना; दवाना, मलना; गारना; पेरना।

निपीडित–वि० [सं०] वहुत अधिक पीडित; दवाया हुआ।

निपीत–वि० [सं०] पान किया हुआ; शोपित।

निपुण–वि० [सं०] चतुर, प्रवीण, कुशल; ठीक; पूर्ण।

निपुणाई*–स्त्री० चतुरता, प्रवीणता, कुशलता।

निपुत्री–वि० जिसे पुत्र न हो; संतानरहित।

निपुन*–वि० दे० 'निपुण'।

निपुनई*–स्त्री० निपुणता, दक्षता।

निपुनता*–स्त्री० निपुणता, कुशलता, प्रवीणता।

निपुनाई*–स्त्री० दे० 'निपुणाई'।

निपूत–वि० जिसे पुत्र न हो, पुत्रहीन। [स्त्री०'निपूती'।]

निपूता–वि० दे० 'निपूत'।

निपोड़ना–स० क्रि० (दाँत) उघारना या दिखाना।

निफन*–वि० संपूर्ण, पूरा। अ० पूर्ण रूपसे, पूरे तौरसे।

निफरना*–अ० क्रि० धँसकर आर-पार होना; स्पष्ट होना, साफ होना।

निफल*–वि० दे० 'निष्फल'।

निबंध–पु० [सं०] वंधन; संलग्नता; संग्रह-ग्रंथ; लेख; गीत; पेशाव रुकनेकी वीमारी; प्रतिवंध; हथकड़ी; कारण; नीम; वह वस्तु जिसे देनेकी प्रतिज्ञा की गयी हो; वाँधने या जोड़नेकी क्रिया।

निबंधक–पु० [सं०] (रजिस्ट्रार) दे० 'पंजीयक'।

निबंधन–पु० [सं०] वाँधनेकी क्रिया; वंधन; रोकना; बंधन या लगावका आश्रय, आधार; संवंध; शासनपट्ट आदि; (रजिस्ट्रेशन) दे० 'पंजीयन'।

निब–स्त्री० [अं०] अंग्रेजी कलमोंके होल्डरोंमें खोंसी जानेवाली लोहे आदिकी नुकीली वस्तु जिससे लिखा जाता है।

निबकौड़ी, निबकौरी†–स्त्री० नीमका फल या वीज।

निबटना–अ० क्रि० निवृत्त होना, छुटकारा पाना, फुरसत पाना, फरागत होना; करनेको वाकी न रह जाना, समाप्त होना, खत्म होना, निःशेष होना; निवटाया जाना, फैसल होना, तय होना; शौचक्रियासे निवृत्त होना।

निबटाना–स० क्रि० समाप्त करना, खत्म करना; पूरा अदा कर देना, चुका देना; तय करना, फैसला करना, निर्णय करना।

निबटारा, निबटाव–पु० दे० 'निबटेरा'।

निबटेरा–पु० निवटनेका भाव या कार्य, फुरसत, अवकाश, छुट्टी; समाप्ति, खातमा; निर्णय, फैसला।

निबड़*–वि० दे० 'निविड'।

निबड़ना*–अ० क्रि० दे० 'निवटना'।

निबद्ध–वि० [सं०] वँधा हुआ; गुँथा हुआ, ग्रथित; लिखा हुआ, लिखित, प्रणीत, रचित; जुड़ा हुआ, संवद्ध; जड़ा हुआ, खचित, जटित; रोका हुआ, अवरुद्ध; आवृत्त; (रजिस्टर्ड) (वह लेख, समझौता आदि) जो सरकारी पंजीमें विधिवत् चढ़ा दिये जानेके कारण पक्का और प्रामाणिक हो गया हो, पंजीवद्ध।

निबर*–वि० दे० 'निर्वल'।

निबरना–अ० क्रि० वँधा, फँसा या लगा न रहना; छुटकारा पाना, मुक्त होना; बचा रह सकना; फरागत होना, फुरसत पाना; निभना; निवटना, तय होना; पृथक होना, उलझा न रहना, सुलझना; खत्म होना, मिट जाना– 'जूझि कुँवर सब निवरे, गोरा रहा अकेल'–प०।

निबर्हण–पु० [सं०] मारने या नाश करनेकी क्रिया या भाव, मारण। वि० नाश करनेवाला।

निबल*–वि० दे० 'निर्वल'।

निबलाई*–स्त्री० निर्वलता, क्षीणता।

निबह–पु० दे० 'निवह'।

निबहना–अ० क्रि० वच निकलना, त्राण पाना, पार पाना; छुट्टी पाना; निर्वाह होना; ज्योंका त्यों वना रहना, कभी भंग न होना; चालू रह सकना, निभाना; पूरा होना, पालन होना।

निबहुर*–वि० जहाँ पहुँचकर कोई लौट न सके (यमद्वार)।

निबहुरा†–वि० जो सदाके लिए चला जाय (गाली)।

निबाह–पु० निवाहनेका काम या भाव; निर्वाह, खपत, गुजारा; किसी स्थिति, संवंध आदिको वनाये या जारी रखनेका काम, रक्षा, पालन; पूर्ति; त्राणका मार्ग, वचनेका रास्ता, वचाव।

निबाहक*–वि० निर्वाह करनेवाला।

निबाहना–स० क्रि० निर्वाह करना, ज्योंका त्यों वनाये रखना, कभी भंग न होने देना, किसी स्थिति, संवंध आदिकी रक्षा किये जाना; चालू रखना, निभाना; पूरा करना, पालन करना।

निबिड–वि० [सं०] घना, गहरा; कठिन।

निबुआ*–पु० दे० 'नीवू'।

निबुकना†*–अ० क्रि० वच निकलना, मुक्त होना, छुटकारा पाना, वंधनसे मुक्त होना; वंधनका ढीला होना, खिसकना; संपन्न होना।

निबेड़ना–स० क्रि० वंधनरहित करना, मुक्त करना, छुड़ाना; एकमें मिली हुई वस्तुओंको पृथक्-पृथक् करना, छाँटना; सुलझाना; निवटाना, फैसला करना; दूर करना, पृथक् करना; पूरा करना, समाप्त करना।

निबेड़ा–पु० छुटकारा; त्राण, बचाव; एकमें मिली वस्तुओंके पृथक् होने या किये जानेका काम या भाव; सुलझाव; निवटारा, निर्णय; दूरीकरण, हटाव; पूर्ति, पूरा करना।

निबेरना–स० क्रि० दे० 'निबेड़ना'; छोड़ना; वसूल करना –'ब्याज निबेरत ऊधो'–सू० ।

निबेरा–पु० दे० 'निबेड़ा' ।

निबेहना*–स० क्रि० दे० 'निबेरना' ।

निबोधन–पु० [सं०] समझने या समझानेकी क्रिया ।

निबौरी*–स्त्री० दे० 'निमकौड़ी' ।

निभ–वि० [सं०] प्रखर प्रकाशवाला; समान, सदृश (समासांतमें) । पु० प्रकाश; व्याज; छल-कपट; प्रकट होना ।

निभना–अ० क्रि० दे० 'निबहना' ।

निभरम*–वि० जिसे या जिसमें किसी प्रकारका खटका न हो, भ्रमरहित । अ० बेखटके, निःशंक ।

निभरमा–वि० जिसका भरम या विश्वास उठ गया हो; जिसकी पोल खुल गयी हो ।

निभरोसी*–वि० जिसे कोई सहारा न रह गया हो, असहाय; आश्रयहीन ।

निभाउ, निभाव–पु० दे० 'निबाह' । वि० भावरहित ।

निभालन–पु० [सं०] देखना, दर्शन; मालूम करना ।

निभृत–वि० [सं०] रखा या धरा हुआ; गुप्त, अंतर्हित; जो अस्त होने जा रहा हो; नम्र, विनीत; अचल, स्थिर; भरा हुआ; निर्जन, सूना; शांत; जो जोरदार न हो, धीमा, मंद; बंद किया हुआ, आवृत; धीर, धैर्यवान् ।

निभ्रांत*–वि० दे० निर्भ्रांत' ।

निमंत्रण–पु० [सं०] किसी कार्य, उत्सव आदिमें या श्राद्ध, भोज आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन, बुलावा, न्योता । **–पत्र**–पु० वह पत्र जिसमें किसी कार्य, उत्सव आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन किया गया हो, निमंत्रणका पत्र ।

निमंत्रना*–स० क्रि० निमंत्रण देना, न्योता देना ।

निमंत्रित–वि० [सं०] जो आमंत्रित किया गया हो, आहूत ।

निमक–पु० दे० 'नमक' ।

निमकी–स्त्री० नीबूका अचार; नमकीन टिकिया ।

निमकौड़ी–स्त्री० नीमका फल या उसका बीज ।

निमज्जन–पु० [सं०] डुबकी लगाना; डुबकी लगाकर स्नान करना, अवगाहन ।

निमज्जना*–अ० क्रि० डुबकी लगाना, अवगाहन करना ।

निमज्जित–वि० [सं०] डूबा हुआ ।

निमता*–वि० जो माता हुआ या मत्त न हो; शांत ।

निमाज–स्त्री० दे० 'नमाज़' ।

निमान*–पु० नीची जगह, ढाल, खाल; जलाशय ।

निमि–पु० [सं०] एक ऋषि जो दत्तात्रेयके पुत्र थे; इक्ष्वाकुवंशके एक राजा जो मिथिलाके विदेहवंशके प्रवर्तक थे; पलकोंका गिरना, निमेष । **–राज***–पु० राजा जनक ।

निमिख*–पु० दे० 'निमिष' ।

निमित्त–पु० [सं०] कारण; साधनभूत कारण; चिह्न, लक्षण; लक्ष्य, उद्देश्य, फल; शकुन; दिखावटी कारण, बहाना । **–कारण, –हेतु**–पु० समवायी और असमवायी कारणसे भिन्न कारण–जैसे घटनिर्माणमें कुम्हार, चाक, दंड आदि (न्या०) ।

निमिष–पु० [सं०] आँख बंद करना, पलक मारना; उतना समय जितना एक बार पलक गिरनेमें लगे, क्षण ।

निमिषांतर–पु० [सं०] पलभरका अंतर ।

निमीलन–पु० [सं०] आँखें मूँदना या झपकाना ।

निमीलित–वि० [सं०] मुँदा हुआ, बंद (नेत्र); जो जड़ या सुन्न हो गया हो, अंधकाराच्छन्न; लुप्त ।

निमुँहा–वि० जिसे बोलनेका साहस न हो, जो दृढ़तापूर्वक कुछ बोल न सके, चुप रहनेवाला ।

निमूँद–वि० बंद ।

निमेख*–पु० दे० 'निमेष' ।

निमेट*–वि० जो मिट न सके, अमिट, जो बना रहे ।

निमेष–पु० [सं०] दे० 'निमिष'; आँखोंके फड़कनेका रोग । * स्त्री० पलक–'निमेषैं बिथकित भईं'–कविता० ।

निमोना–पु० चने या मटरके पिसे हुए कच्चे दानोंसे तैयार की हुई मसालेदार दाल ।

निम्न–वि० [सं०] गहरा; नीचा । **–गा**–स्त्री० नदी; पहाड़ी झरना । वि०स्त्री० नीचे जानेवाली । **–लिखित**–वि० नीचे लिखा हुआ । **–सदन**–पु० (लोअर हाउस) दे० 'अवरागार' ।

निम्नांकित–वि० [सं०] नीचे लिखा हुआ ।

निम्नोन्नत–वि० [सं०] विषम, नीचा-ऊँचा, ऊबड़-खाबड़ ।

नियंता(तृ)–पु० [सं०] नियमन करनेवाला, नियंत्रणमें रखनेवाला; शासनकर्ता; दंड देनेवाला; विशिष्ट नियमके अनुसार संचालन करनेवाला, संचालक; चलानेवाला ।

नियंत्रण–पु० [सं०] नियमोंमें बाँधकर रखना, वशमें रखना, स्वच्छंद न रहने देना, प्रतिबंधन; अपने अधिकार या देखरेखमें रखकर व्यापारादि चलाना ।

नियंत्रित–वि० [सं०] नियंत्रणमें रखा हुआ, प्रतिबद्ध; प्रतिबंध द्वारा जिसका व्यापार या कार्य सीमित कर दिया गया हो ।

निय*–वि० निज ।

नियत–स्त्री० दे० 'नीयत' । वि० [सं०] नियमबद्ध, बँधा हुआ; नियुक्त; स्थिर किया हुआ, पक्का किया हुआ, निश्चित, मुकर्रर । **–कालिक पलीता**–पु० (टाइम फ्यूज़) वह पलीता जिसमें ज्वलनशील वस्तुएँ भरी हों या जो उनमें डुबाकर, संलिप्त कर बनाया गया हो, अतः जो निर्धारित समयके बाद जल उठे । **–कालिक प्रस्फोट**–पु० (टाइम-बम) दे० 'सावधिक प्रस्फोट' । **–भागी(गिन्)**–पु० (एलॉटी) वह व्यक्ति जिसे कोई वस्तु या कोई हिस्सा निर्दिष्ट किया गया हो, दे० 'आवंट्य' ।

नियतांश–पु० [सं०] (कोटा) समूची राशिका वह अंश जो किसी व्यक्तिसे लेने या उसे देनेके लिए निर्धारित किया जाय ।

नियतात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] अपने ऊपर नियंत्रण रखनेवाला, संयमी, वशी ।

नियताप्ति–स्त्री० [सं०] नाटककी पाँच अवस्थाओंमेंसे एक जिसमें फलप्राप्तिका निश्चय होता है ।

नियति–स्त्री० [सं०] नियत होनेकी क्रिया या भाव; नियमन; अदृष्ट, भाग्य, भवितव्यता; आत्मसंयम । **–वाद**–पु० दे० 'भाग्यवाद' ।

नियम–पु० [सं०] विधान या निश्चयके अनुकूल नियंत्रण; स्थायी कार्यक्रम, दस्तूर; निश्चित व्यवस्था; रीति, पद्धति, कायदा; अनुशासन, नियंत्रण; वह संकल्प जिसका सदा

निर्वाह किया जाय, प्रतिज्ञा; कार्यविशेषके संपादन या संचालनके लिए निश्चित सिद्धांत या आधार, विधि, विधान; योगके आठ अंगोंमेंसे एक जिसके अंतर्गत शौच, संतोष, तप आदि हैं; कवियोंकी एक वर्णन-पद्धति; अर्थालंकारका एक भेद; वह विधि जो अप्राप्त अंशका पूरण करे (मीमांसा); शर्त; परमेश्वर; परिभाषा, लक्षण। **–निष्ठा**–स्त्री० नियमोंका कड़ाईके साथ पालन। **–पत्र**–पु० प्रतिज्ञापत्र, शर्तनामा। **–बद्ध**–वि० नियमोंसे जकड़ा हुआ; नियमोंके अनुसार चलने या होनेवाला; नियमोंके अनुकूल।

नियमन–पु० [सं०] नियममें बाँधनेका कार्य, अनुशासन या वशमें रखना, नियंत्रण, शासन; निग्रह, दमन।

नियमवती–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका मासिक स्राव नियमित रूपसे होता हो।

नियमापत्ति–स्त्री० [सं०] (पॉइंट ऑव ऑर्डर) किसी सभा-समितिमें कार्यप्रणालीकी मानी हुई परंपरा या स्वीकृत नियमोंके विरुद्ध कोई बात होनेपर उठायी गयी या की गयी आपत्ति।

नियमावली–स्त्री० [सं०] किसी संस्थाके संचालन, प्रवेश आदि-संबंधी नियमोंका संग्रह, सदस्यों या कार्यकर्ताओंके अनुशासन, पथ-प्रदर्शन आदि-संबंधी नियम।

नियमित–वि० [सं०] बँधा हुआ, निश्चित; नियमोंसे जकड़ा हुआ, नियमबद्ध; नियमके अनुसार, बाकायदा।

नियम्य–वि० [सं०] नियमन करने योग्य, शासन या निग्रह करने योग्य; नियमबद्ध होने योग्य।

नियर†–अ० निकट, पास।

नियराई*–स्त्री० समीपता, निकटता।

नियराना*–अ० क्रि० पास आना। स० क्रि० पास पहुँचना।

नियरे*–अ० दे० 'नियर'।

नियाज़–पु० [फा०] इच्छा; आवश्यकता; प्रार्थना; भेंट, दर्शन। स्त्री० चढ़ावा; फातिहा; प्रसाद। **–मंद**–वि० कुछ चाहनेवाला; प्रार्थी; विनीत (वक्ता विनय-प्रकाशनार्थ, विनयवश अपनेको कहता है)। **मु०–हासिल करना**–(बड़ेसे) मिलना, दर्शन या परिचय होना।

नियान*–पु० परिणाम। अ० दे० 'निदान'।

नियामक–पु० [सं०] व्यवस्था करनेवाला, विधायक; नियमन करनेवाला, नियंता, अनुशासक; दूर करनेवाला, नाशक; सारथि; माँझी, मल्लाह। वि० नियंत्रण करनेवाला; दमन करनेवाला; शासन करनेवाला।

नियामत–स्त्री० दे० 'नेमत'।

नियार–पु० जौहरी या सुनारकी दुकानका कूड़ा-कतवार।

नियारना*–स० क्रि० अलग करना, दूर करना।

नियारा*–वि० पृथक्, जुदा।

नियारिया–पु० एकमें मिली हुई वस्तुओंको छाँटनेवाला; नियारमेंसे माल निकालनेवाला; चतुर व्यक्ति।

नियारे*–अ० दे० 'न्यारे'।

नियाव*–पु० दे० 'न्याय'।

नियुक्त–वि० [सं०] लगाया हुआ; नियोजित; जिसे प्रेरणा दी गयी हो, प्रेरित; जो नियोग करे या जिससे नियोग कराया जाय; तैनात किया हुआ, जो किसी पदपर रखा गया हो, अधिष्ठापित, अधिकृत।

नियुक्ति–स्त्री० [सं०] नियुक्त होने या करनेकी क्रिया, तैनाती, मुकर्ररी।

नियोक्तव्य–वि० [सं०] नियोजित करने योग्य।

नियोक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] लगाने या जोतनेवाला, नियोजित करनेवाला, नियुक्त करनेवाला; नियोग करनेवाला; (एम्प्लॉयर) वेतन, मजदूरी आदि देकर अपने कारखाने, मिल आदिमें किसीको काम करनेके लिए नियुक्त करनेवाला।

नियोग–पु० [सं०] लगाना या जोतना; नियुक्त करनेकी क्रिया; प्रेरण; प्रवृत्त करना, प्रवर्त्तन; एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार निःसंतान स्त्री पतिके रोगी, नपुंसक या मृत होनेकी दशामें देवर या किसी अन्य गोत्रजके द्वारा संतान उत्पन्न करा सकती थी।

नियोगी(गिन्)–वि० [सं०] जो नियुक्त किया गया हो; जिसे कोई पद दिया गया हो; नियोग करनेवाला।

नियोजक–पु० [सं०] नियोजित करनेवाला, प्रवृत्त करनेवाला; तैनात करनेवाला; (एम्प्लॉयर) दे० 'नियोक्ता'।

नियोजन–पु० [सं०] नियुक्त करनेकी क्रिया, किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरणा; तैनात या मुकर्रर करना; (एम्प्लॉयमेंट) वेतन, मजदूरी देकर किसीको किसी कामपर नियुक्त करने या करानेका कार्य, सेवायोजना। **–केंद्र**–पु० (एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज) बेकार व्यक्तियोंके नाम पता आदिका ब्योरा पंजीबद्ध कर उन्हें उपयुक्त नौकरी, काम-धंधा आदि प्राप्त करानेमें सहायता करनेवाला कार्यालय।

नियोजनालय–पु० [सं०] (एम्प्लॉयमेंट ब्यूरो) लोगोंको काम या नौकरी दिलानेमें सहायता करनेवाला दफ्तर, सेवा-योजनालय, कामदिलाऊ दफ्तर।

नियोजित–वि० [सं०] नियुक्त किया हुआ; लगाया हुआ; प्रवृत्त किया हुआ, व्यापृत; तैनात; (एम्प्लॉयड) वेतन, मजदूरी आदिपर किसी काममें नियुक्त। पु० (एम्प्लॉई) वह व्यक्ति जो वेतन या मजदूरीपर कारखाने आदिमें कामपर नियुक्त हो।

निरंक धनादेश–पु० [सं०] (ब्लैंक चेक) वह धनादेश जिसपर रुपयेकी संख्या पहलेसे न लिखी गयी हो, वरन् पानेवाले द्वारा भरी जानेके लिए छोड़ दी गयी हो।

निरंकार*–वि०, पु० दे० 'निराकार'।

निरंकुश–वि० [सं०] जिसपर किसी तरहका दबाव न हो, मनमाना करनेवाला, स्वेच्छाचारी।

निरंग–वि० बदरंग, फीका; [सं०] बिना अंगका, अंगहीन; निरा, विशुद्ध। **–रूपक**–पु० रूपक अलंकारका एक भेद जहाँ उपमेयमें उपमानका इस तरह आरोप हो कि उपमानके और सब अंगोंकी चर्चा न आये।

निरंजन–वि० [सं०] जिसमें आँजन न हो, अंजनरहित; निर्दोष, मायासे रहित।

निरंजनी(निन्)–वि० [सं०] निरंजनी संप्रदायका (साधु)। पु० साधुओंका एक संप्रदाय।

निरंतर–वि० [सं०] जिसके बीचमें कोई व्यवधान न हो, बिना अंतर या फासलेका; देश-कालकी दृष्टिसे अविच्छिन्न,

अखंड, लगातार होनेवाला। अ०लगातार, बराबर, सर्वदा।

निरंतराभ्यास–पु० [सं०] सदा की जानेवाली (पाठकी) आवृत्ति, बराबर किया जानेवाला अभ्यास; स्वाध्याय।

निरंबर–वि० [सं०] नंगा, दिगंबर।

निरंश–वि० [सं०] जिसे अपना अंश प्राप्त न हुआ हो, जो अपने भागसे वंचित रह गया हो।

निरकार*–वि०, पु० दे० 'निराकार'।

निरक्ष–वि० [सं०] बिना पासेका; जो पृथ्वीके मध्य भागमें हो। –देश–पु० विषुवत् रेखापरके देश।

निरक्षन*–पु० दे० 'निरीक्षण'।

निरक्षर–वि० [सं०] अपढ़; गँवार, मूर्ख।

निरखना*–स० क्रि० देखना; निरीक्षण करना।

निरग*–पु० दे० 'नृग'।

निरगुन*–वि० दे० 'निर्गुण'। पु० एक पंथ।

निरगुनिया–वि०, पु० 'निरगुन' पंथको माननेवाला।

निरगुनी*–वि० दे० 'निर्गुण'।

निरग्नि–वि० [सं०] जिसने अग्निहोत्र त्याग दिया हो; जो अग्निहोत्र न करता हो।

निरच्छ*–वि० नेत्रहीन, अंधा।

निरजर*–पु० देवता। वि० जो कभी जीर्ण न हो।

निरजोस–पु० निष्कर्ष, सारांश; निर्णय।

निरझर*–पु० दे० 'निर्झर'।

निरझरनी*–स्त्री० दे० 'निर्झरिणी'।

निरझरी*–स्त्री० दे० 'निर्झरी'।

निरत–वि० [सं०] लगा हुआ, तत्पर, लीन। * पु० नृत्य। * अ० निरंतर, लगातार।

निरतना*–अ० क्रि० नृत्य करना, नाचना।

निरति–स्त्री० [सं०] विशेष रति या अनुराग; आसक्ति।

निरतिशय–वि० [सं०] जिससे बड़ा या बढ़कर दूसरा न हो, अद्वितीय। पु० परमेश्वर।

निरत्यय–वि० [सं०] बाधारहित, निरापद; निर्दोष। पु० बाधाका अभाव।

निरदई, निरदय*–वि० दे० 'निर्दय'।

निरदोषी*–वि० दे० 'निर्दोष'।

निरधातु–वि० दे० 'निर्धातु'।

निरधार*–पु० निश्चय करने या ठहरानेकी क्रिया, निर्धारण। वि० आधाररहित। अ० निश्चयपूर्वक–'ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार'–छत्र०।

निरधारना*–स० क्रि० निश्चय करना, तय करना; सोचना, समझना।

निरध्व(न्)–वि० [सं०] जो रास्ता भूल गया हो।

निरनउ, निरनय–पु० दे० 'निर्णय'।

निरनुनासिक–वि० [सं०] अनुनासिकसे भिन्न, जिसके उच्चारणमें नाकका योग न हो (व्या०)।

निरनुमोदन करना–स०क्रि० (टु डिसऐप्रूव) किसीके किये हुए प्रस्ताव, कार्य या नीति आदिका समर्थन न करना, उसके संबंधमें अपनी सहमति या स्वीकृति न देना।

निरनै*–पु० दे० 'निर्णय'।

निरन्न–वि० [सं०] बिना अन्नका; जिसमें अन्नका सेवन न हो; जिसने अन्न न खाया हो, निराहार।

निरपना*–वि० जो अपना न हो, परकीय, गैर।

निरपराध–वि० [सं०] जिसने अपराध न किया हो, बेकसूर। अ० बिना अपराध किये, बिना किसी कसूरके।

निरपराधी*–वि० दे० 'निरपराध'।

निरपवाद–वि० [सं०] निर्दोष, अपकीर्तिसे रहित; कभी अन्यथा न होनेवाला, जो ऐसा न हो कि कहीं लगे और कहीं न लगे, सर्वत्र एकसा लगनेवाला–जैसे निरपवाद नियम।

निरपेक्ष–वि० [सं०] किसी औरकी अपेक्षा न रखनेवाला; जिसे अपने अर्थका बोध करानेके लिए किसी दूसरे पद, वाक्य आदिकी आवश्यकता न हो, जो स्वतः अपने अर्थका सम्यक् बोध करा ले; जो अपने ही ऊपर अवलंबित हो, केवल अपना भरोसा करनेवाला; आशा, तृष्णासे मुक्त, विरक्त; जो किसी बातकी परवा न करे, उदासीन।

निरपेक्षा–स्त्री० [सं०] उपेक्षा; उदासीनता।

निरपेक्षित–वि० [सं०] जिसकी अपेक्षा न की गयी हो।

निरपेक्षी(क्षिन्)–वि०[सं०] अपेक्षा करनेवाला; उदासीन।

निरफल*–वि० दे० 'निष्फल'।

निरबंध*–वि० बंधनरहित। पु० परमात्मा–'कर सेवा निरबंधकी पलमें लेत छुड़ाय'–साखी।

निरबंसी–वि० जिसे कोई संतान न हो, लावल्द।

निरबर्त्ती*–वि०, पु० विरागी, त्यागी।

निरबल*–वि० दे० 'निर्बल'।

निरबहना–अ० क्रि० निर्वाह होना, निबहना।

निरबान*–पु० दे० 'निर्वाण'।

निरबाहना, निरवाहना–स० क्रि० 'निबाहना'।

निरबिसी*–स्त्री० दे० 'निर्विषी'।

निरबेरा–पु० दे० 'निबेरा'।

निरभय*–वि० दे० 'निर्भय'।

निरभर*–वि० दे० निर्भर'।

निरभिमान–वि०[सं०] जिसमें अहंभाव न हो, गर्वरहित।

निरभिलाष–वि० [सं०] जिसे किसी वस्तुकी चाह न हो, निरीह।

निरभ्र–वि० [सं०] जिसमें बादल न हों, मेघरहित।

निरमना*–स०क्रि० निर्माण करना, बनाना, रचना करना।

निरमर, निरमल–वि० दे० 'निर्मल'।

निरमली–स्त्री० दे० 'निर्मली'।

निरमान*–पु० दे० 'निर्माण'।

निरमाना*–स० क्रि० निर्माण करना, बनाना।

निरमायल*–पु० दे० 'निर्माल्य'।

निरमित्र–वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो।

निरमूल*–वि० दे० 'निर्मूल'।

निरमूलना*–स० क्रि० जड़से उखाड़ना, उन्मूलन करना; समूल नष्ट करना।

निरमोल–वि० दे० 'अनमोल'।

निरमोलिक, निरमोलिका*–वि० अनमोल, बहुमूल्य।

निरमोही*–वि० दे० 'निर्मोही'।

निरय–पु० [सं०] नरक।

निरयण–पु० [सं०] ज्योतिषमें एक तरहकी गणना।

निरर्गल–वि० [सं०] अर्गलारहित; जिसपर कोई रोक न

हो, प्रतिबंधरहित; जिसकी गति, प्रवाह अवरुद्ध न हो, स्वच्छंद, अबाध; निर्विघ्न।

निरर्थ–वि० [सं०] दे० 'निरर्थक'।

निरर्थक–वि [सं०] जिसका कुछ अर्थ न हो, बेमतलब; निष्प्रयोजन, निष्फल, व्यर्थ, बेकाम।

निरवकाश–वि० [सं०] जिसे या जिसमें अवकाश न हो।

निरवच्छिन्न–वि० [सं०] जिसका सिलसिला न टूटे, निरंतर।

निरवद्य–वि० [सं०] दोपरहित, विशुद्ध; उत्कृष्ट; अनिंद्य।

निरवधि–वि० [सं०] जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, निःसीम।

निरवयव–वि० [सं०] अंगरहित, पूर्ण; निराकार।

निरवलंब–वि० [सं०] जिसे कोई सहारा न हो, असहाय।

निरवशेप–वि० [सं०] संपूर्ण, समग्र।

निरवसाद–वि० [सं०] प्रसन्न, हृष्ट।

निरवाना–स० क्रि० निरानेका काम दूसरेसे कराना।

निरवारना*–स० क्रि० निवारण करना, हटाना; प्रतिबंधभूत वस्तुको दूर करना; मुक्त करना, छुड़ाना; खोलना, उलझी हुई वस्तुको सुलझाना; छितराना; अलग करना, तजना, त्यागना; तय करना, फैसला करना।

निरवाह*–पु० दे० 'निर्वाह'।

निरवाहना–स० क्रि० दे० 'निबाहना'।

निरवेद*–पु० दे० 'निर्वेद'।

निरशन–वि० [सं०] जिसने कुछ खाया-पिया न हो। पु० भोजनका अभाव, उपवास।

निरसंक*–वि० दे० 'निःशंक'।

निरस–वि० [सं०] जिसमें रस न हो, स्वादहीन, फीका, बेमजा; जो आनंद न दे; रूखा-सूखा।

निरसन–पु० [सं०] फेंकना, दूर हटाना, अपसारण; निवारण; खंडन, (पहलेका आदेश) रद्द करना, प्रत्याख्यान; वमन करना; दूर करना, निराकरण; नाश; वध; (रिपील) किसी विधि आदिको अधिकार-पूर्वक या वैध रीतिसे रद्द कर देना।

निरसित–वि० (रिपील्ड) (विधि, अधिनियम आदि) जिसका निरसन कर दिया गया हो।

निरस्त–वि० [सं०] दूर हटाया हुआ, निवारित; वमन किया हुआ; थूका हुआ; फेंका हुआ; अलग किया हुआ, त्यक्त; खंडित; जिसका नाश किया गया हो; जिसका उच्चारण शीघ्रताके साथ किया गया हो।

निरस्त्र–वि० [सं०] जिसके पास हथियार न हो, बिना हथियारका, निहत्था।

निरस्त्रीकरण–पु०[सं०] (डिस-आर्मेमेंट) अस्त्रविहीन करना; शस्त्रास्त्रोंकी संख्या घटाना।

निरस्त्रीकृत–वि० [सं०] (डिस-आर्म्ड) जिसके हथियार छीन लिये गये हों, जो अस्त्रहीन कर दिया गया हो।

निरस्थि–वि० [सं०] जिसमेंसे हड्डी निकाल दी गयी हो; बिना हड्डीका।

निरहंकार, निरहंकृत, निरहंकृति–वि० [सं०] जिसमें अभिमान न हो; जिसमें शरीर, इंद्रिय आदिके प्रति 'यह मेरा है' यह भावना न हो।

निरहेतु*–वि० दे० 'निर्हेतु'।

निरहेल*–वि० जिसकी अवहेलना हो, जिसका आदर न हो, तुच्छ, निकृष्ट।

निरा–वि० बिना मिलावटका, विशुद्ध; एकमात्र; एकदम, कोरा, निपट।

निराई–स्त्री० निरानेकी क्रिया; निरानेकी उजरत।

निराकरण–पु० [सं०] दूर हटाना, निवारण; दूर करना, परिहार; खंडन, निरसन; (एब्रोगेशन) राजा, प्रधान शासक या अधिकारी द्वारा किसी विधि, अध्यादेश, संधि आदिका रद्द कर दिया जाना।

निराकांक्ष–वि० [सं०] जिसे किसीकी अपेक्षा, इच्छा न हो; इच्छारहित, निरपेक्ष।

निराकार–वि० [सं०] जिसका कोई आकार या रूप न हो, भद्दा, कुरूप; विनम्र। पु० परमात्मा।

निराकुल–वि० [सं०] व्याप्त; भरा हुआ; जो घबराया न हो, धीर, शांत; * बहुत घबराया हुआ–'व्याकुल बाहु, निराकुल बुद्धि…'–राम०।

निराकृत–वि० [सं०] जिसका निराकरण किया गया हो।

निराखर*–वि० दे० 'निरक्षर'।

निराग(स्)–वि० [सं०] निष्पाप; निरपराध।

निराचार–वि० [सं०] आचारहीन।

निराजी–स्त्री० जुलाहोंके करघेकी एक लकड़ी।

निराट*–वि० निरा, कोरा; एकमात्र। अ० बिलकुल–'कोउक होत निराट दिगम्बर'–सुंदर०।

निराडंबर–वि० [सं०] जिसमें ढोंग न हो; बिना नगाड़ेका।

निरादर–वि० [सं०] अपमानजनक; आदररहित। पु० आदरका अभाव; अपमान।

निराधार–वि० [सं०] बिना आश्रयका, असहाय; बेबुनियाद, अयथार्थ, अमूल।

निरानंद–वि० [सं०] आनंदरहित। पु० आनंदका अभाव; दुःख।

निराना–स० क्रि० पौधोंकी बढ़तीको रोकनेवाली अनावश्यक घास, तृण आदिको खुरपीसे खोदकर दूर करना।

निरापद्–वि० [सं०] आपत्तिसे रहित, निर्विघ्न, सुरक्षित।

निराप, निरापुन*–वि० जो अपना न हो, परकीय।

निरामय–वि० [सं०] नीरोग; स्वस्थ; निर्दोष।

निरामिष–वि० [सं०] मांसरहित; * मांस न खानेवाला। **–भोजी(जिन्)**–वि० मांस न खानेवाला।

निरायुध–वि० [सं०] जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र।

निरार, निरारा*–वि० अलग, जुदा।

निरालंब–वि० [सं०] दे० 'निरवलंब'। पु० ब्रह्म।

निराला–पु० निर्जन स्थान, एकांत स्थान। वि० जहाँ कोई बस्ती या मनुष्य न हो, विजन, एकांत; जो अपने ढंगका अकेला हो, विलक्षण; बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय।

निरावना*–स० क्रि० 'निराना'।

निरावरण–वि० [सं०] आवरणरहित, खुला हुआ।

निरावृत्त–वि० [सं०] जो ढँका न हो।

निराश–वि० [सं०] जिसे आशा न हो, हताश।

निराशा–स्त्री० [सं०] आशाका अभाव, नाउम्मेदी। **–वाद**–पु० संसारको दुःखमय मानने तथा प्रत्येक वस्तु-

को निराशामय दृष्टिकोणसे देखनेका सिद्धांत। –**वादी (दिन्)**–वि० जीवनके दुःखमय पहलूपर जोर देनेवाला, संसारको निराशाकी दृष्टिसे देखनेवाला।

निराश्रय–वि० [सं०] दे० 'निरवलंब'।

निरास–पु० [सं०] दूर करना; प्रत्याख्यान, खंडन; वमन; विरोध। * वि० दे० 'निराश'।

निरासा*–स्त्री० दे०'निराशा'।

निरासी*–वि० हताश, नाउम्मेद; विरक्त; उदास, कांतिहीन; जहाँ या जिसमें उदासी छायी हो।

निराहार–वि० [सं०] जिसने कुछ खाया-पिया न हो; जिसे करनेमें कुछ खाया न जाय (व्रत)।

निरिंद्रिय–वि० [सं०] जो किसी इंद्रियसे रहित हो, जिसकी कोई इंद्रिय बेकाम हो; कमजोर।

निरिच्छ–वि० [सं०] जिसे कोई चाह न हो, निरीह।

निरिच्छन*–पु० दे० 'निरीक्षण'।

निरिच्छना*–स० क्रि० निरीक्षण करना, ध्यानपूर्वक देखना।

निरीक्षक–पु० [सं०] निरीक्षण करनेवाला; देखरेख करनेवाला (इंस्पेक्टर); परीक्षा-भवनमें परीक्षार्थियोंकी निगरानी करनेवाला (इन्विजिलेटर)।

निरीक्षण–पु० [सं०] गौरसे देखना; देखरेख करना; मुआइना करना, जाँच करना; चितवन।

निरीक्षित–वि० [सं०] गौरसे देखा हुआ; देखाभाला हुआ; जिसकी जाँच की गयी हो, मुआइना किया हुआ।

निरीक्ष्यमाण–वि० [सं०] जिसका निरीक्षण किया जा रहा हो, जिसकी निगरानी की जा रही हो।

निरीश्वरवाद–पु० [सं०] ईश्वरके अस्तित्वका खंडन करनेवाला सिद्धांत।

निरीश्वरवादी (दिन्)–पु० [सं०] निरीश्वरवादको माननेवाला।

निरीह–वि० [सं०] जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो, इच्छा, तृष्णासे रहित, उदासीन, विरक्त; जो क्रियाशील न हो।

निरीहता–स्त्री०, **निरीहत्व**–पु० [सं०] निरीह होनेका भाव, चेष्टाहीनता।

निरुआरा†–पु० टालने या दूर करनेकी क्रिया; निस्तार; त्राण, बचाव; निवटारा; सुलझाव।

निरुआरना†–स० क्रि० दे० 'निरवारना'।

निरुक्त–वि० [सं०] जिसका निर्वचन किया गया हो; नियोग करानेवाला; नियोगमें प्रवृत्त किया हुआ। पु० वेदके छ अंगोंमेंसे एक; यास्क मुनि-रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें वैदिक शब्दोंके निघंटुकी विशद व्याख्या की गयी है। –**कार**–पु० निरुक्तके रचयिता यास्क मुनि।

निरुक्ति–स्त्री० [सं०] ऐसी व्याख्या जिसमें प्रकृति-प्रत्यय आदि अवयवोंका अर्थ समझाते हुए शब्दोंका अर्थ स्पष्ट किया गया हो; एक काव्यालंकार जहाँ किसीके नामका प्रसिद्ध अर्थ छोड़कर युक्तिपूर्वक कोई मनमाना अर्थ किया जाय।

निरुज*–वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर–वि० [सं०] जो कोई उत्तर न दे सके, जिसके पास कोई उत्तर न हो; जिसकी जबान बंद हो गयी हो।

निरुत्सव–वि० [सं०] बिना उत्सवका।

निरुत्साह–वि० [सं०] जिसमें उत्साह न हो, उत्साहरहित। पु० उत्साहका अभाव।

निरुत्सुक–वि० [सं०] जो उत्सुक न हो; उत्सुकतारहित।

निरुदक–वि० [सं०] जिसमें या जहाँ जल न हो।

निरुद्देश्य–वि० [सं०] उद्देश्यरहित। अ० बिना किसी उद्देश्यके।

निरुद्ध–वि० [सं०] जिसका निरोध किया गया हो, विशेष रूपसे रोका हुआ; विशेष रूपसे रुका हुआ, प्रतिबद्ध, रुँधा हुआ। पु० चित्तकी पाँच भूमियोंमेंसे एक (योग)। –**कंठ**–वि० जिसका गला रुँध गया हो।

निरुद्यम–वि० [सं०] जो उद्यम न करे, चुपचाप बैठा रहनेवाला, आलसी, बेकार, निकम्मा।

निरुद्योग–वि० [सं०] दे० 'निरुद्यम'।

निरुद्वेग–वि० [सं०] उद्वेगरहित, शांत।

निरुपजीव्याभूमि–स्त्री० [सं०] वह भूमि जिसकी उपजसे गुजर न हो सके, अलाभकर जोत।

निरुपद्रव–वि० [सं०] जिसमें या जहाँ कोई उत्पात न हो, शांतिमय, विघ्नरहित, सुरक्षित; जो किसी प्रकारकी बाधा या कष्ट न पहुँचाये; शुभ, मंगलकारी।

निरुपधि–वि० [सं०] विशुद्ध, पवित्र; सच्चा, निश्छल।

निरुपम–वि० [सं०] बेजोड़, अतुलनीय।

निरुपयोग–वि० [सं०] जिसका कोई उपयोग न हो, जो किसी काम न आये।

निरुपयोगी (गिन्)–वि० [सं०] बेकार, निरर्थक।

निरुपाधि–वि० दे० 'निरुपधि'।

निरुपाय–वि० [सं०] जो कोई उपाय करनेमें असमर्थ हो; जिसका कोई उपाय न हो, जिसका कोई प्रतिकार न किया जा सके।

निरुवरना*–अ० क्रि० कठिनाई दूर होना, सुलझना।

निरुवारना*–स० क्रि० दे० 'निरवारना'।

निरूढ–वि० [सं०] अत्यंत रूढ, अधिक प्रसिद्ध; जिसका अधिक व्यवहार होता हो; अविवाहित। –**लक्षणा**–स्त्री० वह लक्षणा जिसमें शब्दका प्रसिद्ध अर्थ रूढ हो गया हो।

निरूप–वि० बिना रूपका, रूपरहित; बुरी शक्लका, कुरूप।

निरूपण–पु० [सं०] ढूँढ़ना, जाँचना, अन्वेषण; मौखिक रूपसे या लेख द्वारा किसी विषयको ठीक-ठीक समझा देना।

निरूपना*–स० क्रि० निरूपण करना, स्पष्ट शब्दोंमें समझा देना; प्रतिपादन करना, वर्णन करना।

निरूपित–वि० [सं०] जिसका निरूपण किया गया हो।

निरेखना*–स० क्रि० देखना, निरखना।

निरै*–पु० निरय, नरक।

निरोग, निरोगी†–वि० जिसे कोई रोग न हो, स्वस्थ।

निरोध–पु० [सं०] रोक, रुकावट, प्रतिबंध; वशमें लाना, निग्रह; छेंकना, घेरना, अवरोध; नाश; चित्तकी वह अवस्था जिसमें सभी वृत्तियों और संस्कारोंका लय हो जाता है; (डिटेंशन) दे० 'निरोधन'।

निरोधक–वि० [सं०] निरोध करनेवाला, रोकनेवाला।

निरोधन–पु० [सं०] दे० 'निरोध'; पारेका छठा संस्कार (आ० वे०); (डिटेंशन) किसी संदिग्ध या उपद्रवी व्यक्तिको

अभिरक्षा आदिमें रोक रखना जिससे वह बाहर निकलकर किसी तरहका उपद्रव या अनिष्ट न कर सके। –**शिविर**–पु० (कांसेंट्रेशन कैंप) विरोधियों या शंकास्पद समझे जानेवाले व्यक्तियोंको सैकड़ों, हजारोंकी संख्यामें एक ही स्थानपर नजरबंद रखनेका शिविर (हिटलरने नात्सी-विरोधियोंके लिए जर्मनीमें और भारतमें अंग्रेजी सरकारने १९४१ में देवलीमें ऐसा शिविर साम्यवादियोंके लिए खोला था), नजरबंदी-शिविर।

निरोधा–स्त्री० [सं०] (क्वारैनटीन) किसी ऐसे स्थानसे, जहाँ संक्रामक रोग फैला हो, आनेवाले व्यक्तियों (या जहाजों) आदिके कुछ समयतकके लिए बिलकुल पृथक् स्थान, घर आदिमें आबद्ध किये जानेका कार्य; वह स्थान जहाँ उन्हें इस प्रकार आबद्ध होकर रहना पड़े।

निरोधाज्ञा–स्त्री० [सं०] (इनजंकशन) वह आज्ञा जो कोई होता हुआ अन्यायपूर्ण कार्य रोकनेके लिए किसी न्यायालय द्वारा दी जाती है।

निर्ख–पु० [फा०] दर, भाव। –**दारोगा**–पु० मुसलमानोंके शासनकालमें चीजोंके भावकी देखरेख करते रहनेके लिए नियुक्त किया जानेवाला एक प्रकारका दारोगा। –**नामा**–पु० मुसलिम शासनकालमें वह सूची जिसमें प्रत्येक विक्रेय वस्तुका भाव लिखा रहता था। –**बंदी**–स्त्री० किसी चीजकी दर ठहरानेका कार्य।

निर्गंध–वि० [सं०] जिसमें गंध न हो, गंधरहित।

निर्गत–वि० [सं०] जो बाहर आया हो, निकला हुआ, निःसृत, निष्क्रांत।

निर्गम–पु० [सं०] बाहर जाना, निकलना; निकास, निकलनेका मार्ग, द्वार। –**द्वार**–पु० बाहर जानेका रास्ता। –**मूल्य**–पु० (इशू प्राइस) कोई सार्वजनिक ऋण लेते समय सरकार जिस मूल्यपर उसके हिस्से जारी करे वह मूल्य अथवा किसी बैंक, व्यापारिक संस्थाओं आदिके हिस्सोंका उनके जारी किये जानेके समयका मूल्य।

निर्गमन–पु० [सं०] बाहर जाना, निकलना, निःसरण; दरवाजा।

निर्गमना*–अ० क्रि० निकलना, बाहर आना।

निर्गमित पूँजी–स्त्री० (इशुड कैपिटल) वह पूँजी जो कारखाने आदिकी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए बाहर निकाली गयी हो।

निर्गुण–वि० [सं०] जो सत्त्व, रज, तम–इन तीनों गुणोंसे परे हो, त्रिगुणातीत; जो गुणवान् न हो, गुणरहित; जिसमें डोरी न हो (धनुष)। पु० त्रिगुणातीत परमात्मा।

निर्गुणिया, निर्गुनिया*–वि० निर्गुण ब्रह्मकी उपासना करनेवाला।

निर्ग्रंथ–वि० [सं०] मूर्ख; असहाय; विरक्त; वस्त्रहीन।

निर्घात–पु० [सं०] ध्वंस, नाश; तूफान; हवाके झोंकोंके टकरानेसे उत्पन्न शब्द; वज्राघात; प्रहार; भूकंप।

निर्घृण–वि० [सं०] घृणारहित; निर्दय, निष्ठुर; निर्लज्ज।

निर्छल*–वि० छल या कपटसे रहित।

निर्जन–वि० [सं०] जहाँ कोई न हो, एकांत, सुनसान। पु० मरुभूमि; उजड़ी हुई या गैर-आबाद जमीन।

निर्जनीकरण–पु० [सं०] (डीपॉपुलेशन) किसी स्थानका आबादीसे रहित कर दिया जाना, किसी क्षेत्रमें बसे हुए लोगोंको युद्धादिकी आवश्यकताके कारण वहाँसे हटा देना।

निर्जर–वि० [सं०] जो कभी बुड्ढा न हो, सदा युवा बना रहनेवाला। पु० देवता; अमृत।

निर्जल–वि० [सं०] जलरहित, जहाँ पानी न हो; जिसमें जलतक न ग्रहण किया जाय।

निर्जलीकरण–पु० [सं०] (डीहाइड्रेशन) रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वनस्पतियों आदिमेंसे जलका अंश निकाल लेना या उन्हें सुखा देना।

निर्जित–वि० [सं०] जो अच्छी तरह जीत लिया गया हो।

निर्जीव–वि० [सं०] जिसमें जान न हो, गतप्राण; शक्ति या उत्साहसे रहित, मुर्दादिल।

निर्झर–पु० [सं०] झरना, प्रपात; सूर्यका एक घोड़ा।

निर्झरिणी, निर्झरी–स्त्री० [सं०] झरनेसे निकलनेवाली नदी।

निर्झरी(रिन्)–पु० [सं०] पहाड़। वि० जिससे झरने झरते हों।

निर्णय–पु० [सं०] किसी विषयपर अच्छी तरह विचार करके उसके दो पक्षोंमेंसे किसी एकको उचित ठहराना; किसी विषयके पूर्वपक्ष और उत्तरपक्षका विमर्श करके ठीक मत स्थिर करना; विचारपतिका किसी विवादके विषयमें अपना मत स्थिर करना; विचारपति द्वारा किसी विवादके विषयमें स्थिर किया गया मत, फैसला, निबटारा।

निर्णयन–पु० [सं०] निश्चय या निपटारा करना।

निर्णायक–पु० [सं०] निर्णय करनेवाला। –**मत**–पु० (कास्टिंग वोट) किसी सभा आदिके सभापतिका वह मत जो किसी प्रश्नके संबंधमें मतदानके समय पक्ष-विपक्षमें समान मत आनेपर वह देता है और जिससे ही उसके स्वीकृत-अस्वीकृत होनेका निर्णय होता है।

निर्णीत–वि० [सं०] जिसका निर्णय किया गया हो, फैसल।

निर्णेता(तृ)–पु० [सं०] निर्णायक; विचारपति; साक्षी।

निर्त*–पु० नृत्य, नाच।

निर्तक*–पु० नर्तक, नट; भाँड़।

निर्तना*–अ० क्रि० नाचना।

निर्दंत–वि० [सं०] जिसे दाँत न हों, बिना दाँतका।

निर्दंभ–वि० [सं०] दंभरहित।

निर्दई, निर्दयी*–वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दय–वि० [सं०] दयारहित, कठोर हृदयवाला, निष्ठुर।

निर्दयता–स्त्री० [सं०] कठोरहृदयता, निष्ठुरता।

निर्दल–वि० [सं०] पत्रहीन; दलहीन; दलबंदीसे अलग।

निर्दलन–पु० [सं०] नाश करना; भंग करना। वि० दलन करनेवाला।

निर्दहना*–स० क्रि० जला देना, दग्ध करना।

निर्दिष्ट–वि० [सं०] जिसका निर्देश किया गया हो, बतलाया हुआ; वर्णित; निर्णीत।

निर्दिष्टि–स्त्री० [सं०] (एलोकेशन, एलाटमेंट) किसीके लिए कोई वस्तु या कोई हिस्सा निर्धारित (निर्दिष्ट) करनेकी क्रिया, निर्धारण; आवंटन, वह वस्तु या हिस्सा जो इस तरह निर्दिष्ट किया गया हो।

निर्दूषण–वि॰ [सं॰] दे॰ 'निर्दोष'।

निर्देश–पु॰ [सं॰] बतलाना, दिखाना, संकेत करना, जताना; नियत करना; आज्ञा, हुक्म, आदेश, हिदायत; कथन; उल्लेख; सामीप्य। **–ग्रंथ**–पु॰,**–पुस्तक**–स्त्री॰ (रेफरेंस बुक) वह पुस्तक जो साधारणतः अध्ययनके लिए न लिखी गयी हो, वरन् जिसका उपयोग विशेष अवसरोंपर कुछ बातोंकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए किया जाय।

निर्देशक–वि॰ [सं॰] जो निर्देश करे। पु॰ (डाइरेक्टर) दे॰ 'निदेशक'।

निर्देशन–पु॰ [सं॰] (रेफरेंस) किसी अन्य स्थानपर आयी या कही हुई बातका उल्लेख या उसकी ओर संकेत करनेकी क्रिया।

निर्देशिका–स्त्री॰ [सं॰] (डाइरेक्टरी) दे॰ 'निदेशिका'।

निर्देष्टा (ष्टृ)–पु॰ [सं॰] निर्देश करनेवाला।

निर्दैन्य–वि॰ [सं॰] सुखी।

निर्दोष–वि॰ [सं॰] जिसमें कोई दोष न हो, निष्कलंक, दोषरहित; निरपराध।

निर्दोषता–स्त्री॰ [सं॰] दोषराहित्य, निष्कलंकता।

निर्दोषी–वि॰ दे॰ 'निर्दोष'।

निर्द्वंद–वि॰ [सं॰] दे॰ 'निर्द्वंद्व'।

निर्द्वंद्व–वि॰ [सं॰] हर्ष-विषाद आदि द्वंद्वोंसे रहित; जिसका कोई विरोधी न हो; स्वच्छंद।

निर्धन–वि॰ [सं॰] धनहीन, दरिद्र।

निर्धातु–वि॰ [सं॰] जिसकी धातु क्षीण हो गयी हो; वीर्यहीन।

निर्धार, निर्धारण–पु॰ [सं॰] समान जाति, गुण, क्रिया आदिवाले बहुतोंमेंसे एकको छाँटना, चुनना या अलग करना; नियत करना; निर्णय करना; निर्णय, निश्चय।

निर्धारना*–स॰ क्रि॰ निर्धारण करना।

निर्धारित–वि॰ [सं॰] जिसका निर्धारण किया गया हो।

निर्धूत–वि॰ [सं॰] हिलाया हुआ; फेंका हुआ, दूर किया हुआ; त्यागा हुआ, परित्यक्त; नष्ट किया हुआ, नाशित। पु॰ संबंधियों आदि द्वारा परित्यक्त व्यक्ति।

निर्धूम–वि॰ [सं॰] धुएँसे रहित।

निर्धौत–वि॰ [सं॰] जो धुल गया हो; चमकाया हुआ।

निर्निमेष–वि॰ [सं॰] जिसमें पलक न मारी जाय। अ॰ बिना पलक गिराये, टकटकी लगाकर।

निर्पक्ष*–वि॰ दे॰ 'निष्पक्ष'।

निर्फल*–वि॰ दे॰ 'निष्फल'।

निर्बंध–पु॰ [सं॰] आग्रह, हठ; (रेस्ट्रिक्शन) रोक, रुकावट, बाधा। वि॰ बंधनरहित।

निर्बंधन–पु॰ [सं॰] (रेस्ट्रिक्शन) शर्तें लगाकर किसी बात, विषय, व्यक्ति आदिको नियंत्रित या क्षेत्रविशेषतक सीमित करना।

निर्बंधित, निर्बद्ध–वि॰[सं॰] (रेस्ट्रिक्टेड) जो रोका गया हो या जिसमें बाधा डाली गयी हो।

निर्बर्हण, निर्वर्हण–पु॰ [सं॰] दे॰ 'निर्वहण'।

निर्बल–वि॰ [सं॰] शक्तिहीन, कमजोर।

निर्बहना*–अ॰ क्रि॰ पार पाना, त्राण पाना; निभना।

निर्बाध–वि॰[सं॰] बिना बाधा या रोकका, प्रतिबंधरहित; जहाँ या जिसमें कोई उपद्रव न हो, निरुपद्रव; निर्जन।

निर्बाधित–वि॰ बाधारहित।

निर्बुद्धि–वि॰ [सं॰] बुद्धिहीन, मूर्ख, बेवकूफ।

निर्बोध–वि॰ [सं॰] अज्ञान, नासमझ।

निर्भय–वि॰ [सं॰] जो किसीसे भय न खाय, निडर; निरापद्।

निर्भर–वि॰ [सं॰] अत्यंत, बहुत अधिक; तीव्र, गाढ़; भरा हुआ; अवलंबित।

निर्भीक–वि॰ [सं॰] दे॰ 'निर्भय'।

निर्भ्रम–वि॰ [सं॰] भ्रमरहित, जिसमें या जिसे कोई भ्रम न हो। * अ॰ बेखटके, स्वच्छंद होकर।

निर्भ्रांत–वि॰ [सं॰] दे॰ 'निर्भ्रम'।

निर्मक्षिक–वि॰ [सं॰] जहाँ कोई (एक मक्खीतक) न हो, निर्जन, एकांत।

निर्मद–वि॰ [सं॰] अभिमानरहित; हर्षरहित; (वह हाथी) जिसके गंडस्थलसे मद न बहता हो, मदजलसे रहित।

निर्मना*–स॰ क्रि॰ बनाना, उत्पन्न करना।

निर्मम–वि॰ [सं॰] ममतारहित; निष्ठुर।

निर्मल–वि॰ [सं॰] जिसमें मल न हो, स्वच्छ; शुद्ध, पवित्र; रागादि दोषोंसे रहित; अकलुष। पु॰ अभ्रक।

निर्मली–स्त्री॰ एक वृक्ष या उसका फल जो पानी साफ करने और दवाके काम आता है।

निर्माण–पु॰ [सं॰] बनाने या रचनेकी क्रिया, रचना; मापन; रूप; भवन; अंश; सार, मज्जा। **–विद्या**––स्त्री॰ मकान आदि बनानेकी विद्या, वास्तुविद्या।

निर्माणी–स्त्री॰ (मिल) वह निर्माणशाला जिसमें यंत्रोंकी सहायतासे सूत, वस्त्र, रेशम आदि तैयार किया जाता है, कारखाना। **–अधिनियम**–पु॰ (फैक्टरी-ऐक्ट) कारखानों-संबंधी कानून।

निर्माता(तृ)–पु॰ [सं॰] बनानेवाला, रचना करनेवाला, स्रष्टा।

निर्मात्रिक–वि॰ [सं॰] मात्रारहित।

निर्मान–वि॰ [सं॰] अपार, असीम; अभिमानरहित।

निर्माना*–स॰ क्रि॰ बनाना, रचना करना; पैदा करना।

निर्मायल*–पु॰ दे॰ 'निर्माल्य'।

निर्मार्जन–पु॰ [सं॰] धोना, साफ करना।

निर्माल्य–पु॰ [सं॰] किसी देवताको समर्पित किया हुआ पदार्थ। (विसर्जनके बाद देवार्पित वस्तुको 'निर्माल्य' कहते हैं।)

निर्मित–वि॰ [सं॰] बनाया हुआ, रचा हुआ, रचित।

निर्मिति–स्त्री॰ [सं॰] दे॰ 'निर्माण'।

निर्मुक्त–वि॰ [सं॰] विशेष रूपसे मुक्त, जो पूरी तौरसे छुटकारा पा चुका हो; बंधनोंसे रहित।

निर्मुक्ति–स्त्री॰ [सं॰] मुक्ति; छुटकारा।

निर्मूल–वि॰ [सं॰] मूलरहित, बिना जड़का; जो मूल सहित उखाड़ दिया गया हो; जो मूल सहित नष्ट कर दिया गया हो, सर्वथा नष्ट।

निर्मूलन–पु॰ [सं॰] मूलरहित होना या करना; विनाश।

निर्मेघ–वि॰ [सं॰] बादलोंसे रहित, निरभ्र।

निर्मेध–पु॰ [सं॰] मूर्ख, बुद्धिहीन।

निर्मोक-पु० [सं०] साँपकी केंचुल; छोड़ना, त्यागना, मोचन; शरीरके ऊपरका चमड़ा, खाल; कवच; आकाश; सावर्णि मनुके एक पुत्र।

निर्मोक्ष-पु० [सं०] पूर्ण मोक्ष।

निर्मोचन-पु० [सं०] मुक्ति, छुटकारा।

निर्मोल*-वि० अनमोल, बहुमूल्य।

निर्मोह-वि० [सं०] मोह या अज्ञानसे रहित; ममता, दयासे शून्य, निष्ठुर, बेदर्द। पु० रैवत मनुके एक पुत्र।

निर्मोहिया†-वि० दे० 'निर्मोह'।

निर्मोही-वि० दे० 'निर्मोह'।

निर्याण-पु० [सं०] निकलना, बाहर जाना, कूच, प्रस्थान (विशेषतः सेनाका); प्राणका निकलना; पशुओंको बाँधने या छाननेकी रस्सी; हाथीकी आँखका कोना; मोक्ष; लोहा।

निर्यात-वि० [सं०] जो बाहर गया हो, जिसने प्रस्थान किया हो। पु० बेचनेके लिए बाहर भेजा जानेवाला माल; बाहर जाना या भेजना। **-कर**-पु० निर्यातपर लगाया जानेवाला कर।

निर्यातक-पु० [सं०] (एक्सपोर्टर) व्यापारिक वस्तुएँ विदेशोंको भेजनेवाला व्यापारी।

निर्यातन-पु० [सं०] बदला लेना, प्रतिशोध; प्रतीकार; विनिमय; किसीकी धरोहर उसे लौटा देना, प्रतिदान; ऋण आदि चुकाना; मारण।

निर्याति-स्त्री० [सं०] प्रस्थान, गमन; मृत्यु; मोक्ष।

निर्यास-पु० [सं०] स्वतः या काटनेपर वृक्षों आदिमेंसे निकलनेवाला रस; गोंद; किसी वस्तुमेंसे निकलनेवाला पानी, रस आदि; काढ़ा, क्वाथ; अर्क।

निर्लज्ज-वि० [सं०] लज्जारहित, बेशर्म, बेहया।

निर्लिंग-वि० [सं०] जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो।

निर्लिप्त-वि० [सं०] जो किसी विषयमें लिप्त न हो।

निर्लेप-वि० [सं०] जिसपर कलई न की गयी हो; जो किसी वस्तु या विषयमें आसक्त न रहे, आसक्तिरहित; जो किसीसे कुछ संबंध न रखे, उदासीन। पु० संत, ऋषि।

निर्लोभ-वि० [सं०] लोभरहित, संतोषी।

निर्वंश-वि० [सं०] जिसकी वंशपरंपरा उसीके शरीरसे समाप्त हो जाय, जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो।

निर्वक्तव्य-वि० [सं०] दे० 'निर्वचनीय'।

निर्वचन-वि० [सं०] मौन, चुप; आपत्तिरहित; निर्दोष। पु० निरुक्ति; उच्चारण; उक्ति, कहावत; शब्द-सूची; (इंटरप्रेटेशन) किसी शब्द, पदसमूह या वाक्यादिका अपनी समझके अनुसार अर्थ लगाना, व्याख्या करना।

निर्वचनीय-वि० [सं०] जिसका निर्वचन किया जा सके, जो लक्षण आदिके द्वारा समझाया जा सके।

निर्वसन-वि० [सं०] वस्त्रहीन।

निर्वसु-वि० [सं०] दरिद्र।

निर्वहण-पु० [सं०] समाप्ति; निबाहना, निर्वाह; नाटककी प्रस्तुत कथाकी समाप्ति। **-संधि**-स्त्री० नाटकमें प्रयुक्त होनेवाली पाँच संधियोंमेंसे एक।

निर्वाक्(च)-वि० [सं०] मौन, चुप।

निर्घाचक-पु० [सं०] निर्वाचन करनेवाला, वह जो निर्वाचन करे, वह जिसे मताधिकार प्राप्त हो। **-गण,-वर्ग,-संघ,-समूह**-पु० (एलेक्टरेट) निर्वाचकोंका समूह या वर्ग। **-मण्डल**-पु० (एलेक्टोरल कॉलेज) जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंका वह दल या समूह जो बादमें लोक-सभा आदिके निर्दिष्टसंख्यक सदस्योंका अप्रत्यक्ष निर्वाचन करे। **-सूची**-स्त्री० (एलेक्टोरल रोल) निर्वाचनमें भाग लेनेकी अर्हता रखनेवाले मतदाताओंके नाम, पेशे, उम्र आदिका ब्योरा बतानेवाली सूची।

निर्वाचन-पु० [सं०] 'वोट' द्वारा चुनना, चुनाव। **-केंद्राध्यक्ष**-पु० (प्रिज़ाइडिंग ऑफिसर) किसी एक निर्वाचन-केंद्रमें मतदान आदिकी देखभाल तथा व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। **-क्षेत्र**-पु० चुनावका हलका। **-पदाधिकारी**-पु० (रिटर्निंग ऑफिसर) किसी निर्वाचन-क्षेत्रके निर्वाचनकी निगरानी, व्यवस्था आदि करनेवाला तथा मतोंकी गणना कराकर उसका परिणाम प्रकट करनेवाला अधिकारी, चुनाव-अधिकारी।

निर्वाचित-वि० [सं०] जिसका निर्वाचन किया गया हो, 'वोट' द्वारा चुना हुआ।

निर्वाच्य-वि० [सं०] न कहने योग्य; निर्दोष; जिसपर आपत्ति न की जा सके।

निर्वाण-वि० [सं०] बुझा हुआ (दीपक आदि); मृत; जो अस्त हो गया हो, अस्तंगत; मुक्त; शांत; अचल, स्थिर। पु० बुझना; अस्त होना, अस्तमन; (हाथीको) नहलाना, धोना; गजमज्जन; मोक्ष, परम गति; शांति; विनाश; संगम; सुख, निर्वृति; एक मात्रागण (छंद); परम आनंद।

निर्वात-वि० [सं०] जहाँ हवा न चलती हो, वायुसे रक्षित; शांत।

निर्वार्य-वि० [सं०] जो निःशंक होकर परिश्रमपूर्वक कर्म करे; जिसका निवारण न हो सके।

निर्वास, निर्वासन-पु० [सं०] देश-निकाला; मारण, हिंसन; विसर्जन; प्रवास।

निर्वासित-वि० [सं०] नगर, देशसे निकाला हुआ।

निर्वाह-पु० [सं०] किसी चली आती हुई वस्तुका बना रहना; किसी कार्यको पूरा करना, निष्पादन; पूरा किया जाना, समाप्ति; (प्रतिज्ञा आदिको) पूरा करना, पालन, निबाहना; गुजारा। **-भृति**-स्त्री० (लिविंग वेज) वह भृति या वेतन जिसपर कर्मचारी और उसका परिवार सुखसे जीवन-निर्वाह कर सके। **-व्यय**-पु० (कॉस्ट ऑफ मेनटेनेंस) जीवन-निर्वाहका-भोजन-वस्त्रादिका-व्यय।

निर्वाहक-वि० [सं०] निर्वाह करनेवाला।

निर्वाहण-पु० [सं०] पूरा करना, निभाना; ऐसी वस्तुओंको नगरमें ले जाना जिनके आयातपर प्रतिबंध लगा हो।

निर्वाहना*-स० क्रि० दे० 'निबाहना'।

निर्विकल्प-वि० [सं०] विकल्पसे रहित। पु० ज्ञाता-ज्ञेय आदिके विभाग तथा विशेष्य-विशेषणके संबंधसे रहित वह ज्ञान जिसमें केवल ब्रह्म और आत्माकी एकरूपताका अखंड बोध होता हो (वे०); एक प्रकारका प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषयका केवल इसी रूपमें ज्ञान होता है कि यह कुछ है, नाम, जाति आदिसे संसृष्ट रूपमें नहीं

(न्या०)। **–समाधि**–स्त्री० एक प्रकारकी समाधि जिसमें एक ही अभिन्न तत्त्व ब्रह्म दिखाई देता है और ज्ञाता, ज्ञेय तथा ज्ञानके विभेदका बोध नहीं रह जाता।

निर्विकल्पक–वि० [सं०] दे० 'निर्विकल्प'।

निर्विकार–वि० [सं०] विकाररहित, अपरिवर्तित; उदासीन। पु० परब्रह्म।

निर्विकास–वि० [सं०] जो खिला न हो, अविकसित।

निर्विघ्न–वि० [सं०] विघ्नरहित, जिसमें कोई बाधा न हो। अ० बिना विघ्न-बाधाके।

निर्विचार–वि० [सं०] विचारशून्य। पु० समाधिका एक प्रकार (योग)।

निर्विण्ण–वि० [सं०] निर्वेदयुक्त; खिन्न; जिसे वैराग्य हो हो गया हो, विरक्त; नम्र; ज्ञात; निश्चित।

निर्विद्य–वि० [सं०] विद्याविहीन, मूर्ख, अपढ़।

निर्विरोध–वि० [सं०] विरोधरहित। अ० बिना विरोधके।

निर्विवाद–वि० [सं०] विवादरहित, जिसके विषयमें कोई विवाद न हो, बिना झगड़े-बखेड़ेका।

निर्विवेक–वि० [सं०] विवेकशून्य।

निर्विशेष–वि० [सं०] समान, तुल्य; सदा एक रूप रहनेवाला (परब्रह्म)। पु० अंतरका अभाव।

निर्विषी–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी घास जिसके सेवनसे साँप, बिच्छू आदिका विष दूर होता है।

निर्बीज–वि० [सं०] बीजरहित; कारणरहित; नपुंसक। **–समाधि**–स्त्री० समाधिकी एक अवस्था जिसमें बीज या आलंबन विलीन हो जाता है (योग)।

निर्वीरा–स्त्री० [सं०] पति और पुत्रसे रहित स्त्री।

निर्वीर्य–वि० [सं०] वीर्यरहित, शक्तिहीन, निर्बल; नपुंसक।

निर्वृति–स्त्री० [सं०] सुख; मोक्ष।

निर्वृत्त–वि० [सं०] जो पूरा किया जा चुका हो, निष्पन्न।

निर्वृत्ति–स्त्री० [सं०] निष्पत्ति।

निर्वेग–वि० [सं०] वेगरहित, शांत।

निर्वेतन–वि० [सं०] जिसे वेतन न मिलता हो, अवैतनिक, बिना वेतनका। अ० बिना वेतन लिये।

निर्वेद–वि० [सं०] नास्तिक। पु० अपने प्रति अवज्ञा; वैराग्य; शांत रसका स्थायी भाव; खेद।

निर्वेष्टन–पु० [सं०] सूत लपेटनेकी जुलाहोंकी नरी; ढरकी।

निर्वैर–वि० [सं०] वैरभावसे रहित, जो वैरभाव न रखे। पु० वैर या शत्रुताका अभाव।

निर्व्याज–वि० [सं०] छल-कपटसे रहित, सच्चा; विशुद्ध।

निर्व्याधि–वि० [सं०] व्याधिसे रहित, नीरोग।

निर्हरण–पु० [सं०] मुर्देको घरसे बाहर निकालना या उसे श्मशान ले जाना; निकालना; नष्ट करना, नाशन।

निर्हारक–पु० [सं०] वह जो मुर्देको घरसे बाहर निकाले या श्मशान ले जाय।

निर्हेतु–वि० [सं०] अकारण, बिना कारणका।

निलंब खाता–पु० (सस्पेंस अकाउंट) दे० 'अनुलंब खाता'।

निलंबन–पु० [सं०] (सस्पेंशन) किसी कर्मचारीके अपराधी या दोषी होनेका संदेह उत्पन्न होनेपर उसे तबतकके लिए अपने पदसे हटा देना जबतक उस संबंधमें यथोचित छानबीन या जाँच न हो ले; कोई नियम, अधिवेशन, कार्य आदि कुछ समयके लिए उठा रखना, टाल देना या अप्रभावी कर देना, अनुलंबन।

निलंबित–वि० [सं०] (सस्पेंडेड)(वह कर्मचारी) जो अपने किसी तथाकथित अपराध या दोषके कारण, अंतिम निर्णय होनेतक, अस्थायी रूपसे पदच्युत कर दिया गया हो; कुछ समयके लिए रोका हुआ, अनुलंबित, मुअत्तल।

निलज†–वि० दे० 'निर्लज्ज'।

निलजई, निलजता*–स्त्री० निर्लज्जता, बेशर्मी।

निलजी*–वि० स्त्री० दे० 'निर्लज्ज'।

निलज्ज*–वि० दे० 'निर्लज्ज'।

निलय–पु० [सं०] वासस्थान, रहनेकी जगह; घर; माँद; घोंसला; सर्वथा नष्ट या लुप्त हो जाना, लोप, अदर्शन।

निलयन–पु० [सं०] वास करना, बसेरा लेना; वासस्थान; आश्रयस्थान, घर; बाहर जाना; उतरना।

निलहा–वि० जिसका संबंध नीलसे हो, नीलवाला; नीलका कारोबार करनेवाला (जैसे–निलहा साहब)।

निलाम–पु० दे० 'नीलाम'।

निलीन–वि०[सं०] पिघला हुआ; छिपा हुआ; विशेष रूपसे या बहुत अधिक लीन; नष्ट; परिवर्तित।

निवना*–अ० क्रि० नवना, झुकना।

निवर्तक–वि० [सं०] लौटनेवाला; रुकनेवाला; दूर करनेवाला; लौटानेवाला।

निवर्तन–पु० [सं०] रोकना, निवारण; पीछे हटना या हटाना; लौटना।

निवर्ती(र्तिन्)–वि० [सं०] लौटनेवाला; भाग जानेवाला।

निवर्हण–पु०, वि० [सं०] दे० 'निर्वहण'।

निवसना*–अ० क्रि० वास करना, रहना।

निवह–पु० [सं०] समूह, समुदाय; सात वायुओंमेंसे एक।

निवाई*–वि० नवीन; अद्भुत।

निवाज–वि० दया करनेवाला, रहम करनेवाला (यह सदा समासमें उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त होता है)।

निवाजना*–स० क्रि० कृपा करना; कृपापात्र बनाना।

निवाजिश–स्त्री० दे० 'नवाजिश'।

निवाड़–स्त्री०, पु० दे० 'निवार'।

निवाड़ा†–पु० एक प्रकारकी छोटी नाव; नावमें बैठकर की जानेवाली एक प्रकारकी जलक्रीडा।

निवाड़ी–स्त्री० जूहीकी जातिका एक पौधा या उसका फूल।

निवान*–पु० पानी या कीचड़से भरी रहनेवाली नीची जमीन; जलाशय।

निवाना*–स० क्रि० दे० 'नवाना'।

निवाप–पु० [सं०] दान; पितरोंके उद्देश्यसे किया जानेवाला दान।

निवार–स्त्री० कुएँकी नीवँमें दिया जानेवाला लकड़ी आदिका चक्का जिसके ऊपरसे कोठीकी जोड़ाई की जाती है, जमवट। पु०[सं०] एक प्रकारका धान जिसका चावल व्रत आदिमें खाया जाता है, तिन्नी, पसही; निवारण; † एक तरहकी मोटी मूली।

निवारक–वि० [सं०] निवारण करनेवाला, रोकनेवाला। **–निरोध-अधिनियम**–पु० (प्रिवेंटिव डिटेंशन ऐक्ट) वह अधिनियम जिसके अनुसार किसी तरहका समाजविरोधी

कार्य या उपद्रवादि करनेवाले व्यक्तियोंका या जिनके संबंधमें ऐसी आशंका हो उनका निरोध–उन्हें ऐसा करनेसे रोकनेके लिए–किया जा सके।

निवारण–पु० [सं०] रोकना; हटाना; दूर करना, मिटाना।

निवारन*–पु० दे० 'निवारण'।

निवारना*–स० क्रि० रोकना; हटाना; बरजना; बचाना; दूर करना; चुकाना–'पिछलो देहु निवारि आज सब, पुनि दीजो जब जानो कालि'–सू०।

निवाला–पु० [फा०] कवल, ग्रास, लुकमा।

निवास–पु० [सं०] रहनेका भाव या कार्य, रहना; रहनेका स्थान; घर; आश्रय; रात्रि व्यतीत करना; पोशाक।

निवासन–पु० [सं०] घर, गृह; कुछ कालके लिए ठहराना; काल-यापन।

निवासी(सिन्)–वि० [सं०] निवास करनेवाला, रहनेवाला; वस्त्र धारण करनेवाला। पु० रहने, बसनेवाला।

निविड–वि० [सं०] घना; कसा हुआ; घोर; बड़े आकारका; स्थूल; भद्दा; चपटी या टेढ़ी नाकवाला।

निविष्ट–वि० [सं०] स्थित; एकाग्र; घुसा हुआ; व्यवस्थित।

निवृत–वि० [सं०] घिरा हुआ; वेष्टित।

निवृत्त–वि० [सं०] लौटा हुआ; जो भाग आया हो; पूरा या समाप्त किया हुआ; हटाया हुआ; विरत; जो अवकाश या छुटकारा पा चुका हो, मुक्त।

निवृत्तात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] विषयोंसे विरत।

निवृत्ति–स्त्री० [सं०] निवृत्त होनेकी क्रिया; प्रवृत्तिका अभाव; छुटकारा, मुक्ति; लौटना; समाप्ति; विरत होना; हटना; विश्राम; (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाश-ग्रहण'। **–पूर्व छुट्टी**–स्त्री० [हिं०] (लीव बिफोर रिटायरमेंट) सेवासे अवकाश-ग्रहण करनेके ठीक पूर्व ली गयी छुट्टी। **–वेतन**–पु० (पेंशन) वह वेतन या वृत्ति जो किसी कर्मचारीको कामसे अवकाश-ग्रहणके बाद उसकी पूर्वसेवाके विचारसे जीवन-निर्वाहके लिए मिले।

निवेद*–पु० दे० 'नैवेद्य'।

निवेदक–वि०, पु० [सं०] निवेदन करनेवाला।

निवेदन–पु० [सं०] किसीसे कुछ कहना; प्रार्थना; समर्पित करना, समर्पण।

निवेदना*–स० क्रि० निवेदन करना; प्रार्थना करना; समर्पित करना।

निवेदित–वि० [सं०] निवेदन किया हुआ; प्रार्थनारूपमें कहा हुआ; अर्पण किया हुआ, समर्पित।

निवेरना†*–स० क्रि० दे० 'निबेरना'।

निवेरा*–वि० चुना हुआ; नूतन; अद्भुत।

निवेश–पु० [सं०] प्रवेश; आसन; स्थापना; पड़ाव डालना, सैन्य-विन्यास; पड़ाव डालनेकी जगह; शिविर, खेमा; (ऑविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिमें कोई वाक्यखंड या उपधारा आदि रख देना, जोड़ देना, जो किसी विशेष स्थिति आदिमें काम दे सके–(विधि-निवेश = प्रावीजन ऑफ लॉ)।

निवेशन–पु० [सं०] निविष्ट करनेकी क्रिया; स्थापन; गृह; नगर; पड़ाव, खेमा; घोंसला।

निवेष्टन–पु० [सं०] ढकना।

निश*–स्त्री० रात। **–चर***–पु० दे० 'निशाचर'।

निशांत–पु० [सं०] प्रातःकाल, तड़का।

निशांध–वि० [सं०] जिसे रातको दिखाई न दे, रतौंधी रोगवाला।

निशा–स्त्री० [सं०] रात, रात्रि; हल्दी। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–गृह**–पु० शयनागार। **–चर**–वि० रातमें निकलने या घूमने-फिरनेवाला। पु० राक्षस; गीदड़; उल्लू; साँप; चोर; भूत; पिशाच; शिव; चक्रवाक; एक गंधद्रव्य। **–चर-पति**–पु० रावण; शिव। **–चरी**–स्त्री० राक्षसी; कुलटा, पुंश्चली; अभिसारिका। **–चारी†**–पु० दे० 'निशाचर'। **–नाथ,–पति**–पु० चंद्रमा। **–मणि**–पु० दे० 'निशानाथ'। **–मुख**–पु० संध्याकाल।

निशाखातिर†–स्त्री० दिलजमई, तसल्ली।

निशाट, निशाटन–पु० [सं०] उल्लू; राक्षस।

निशात–वि० [सं०] सानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; चमकाया हुआ।

निशाद–पु० [सं०] रातको खानेवाला; नीच जातिका व्यक्ति, निषाद।

निशाधीश–पु० [सं०] दे० 'निशानाथ'।

निशान–पु० [सं०] सानपर चढ़ाना, तेज करना; [फा०] वह लक्षण जिससे किसीकी पहचान की जा सके, परिचायक लक्षण, चिह्न; किसी पदार्थको सूचित करनेवाला उसका स्थानापन्न चिह्नविशेष; हस्ताक्षरके स्थानपर कागज आदिपर बनाया जानेवाला चिह्न; किसी प्राचीन या पूर्ववर्ती पदार्थ या घटनाका परिचायक चिह्न; किसी विशेष कार्य या पहचानके लिए नियत किया जानेवाला चिह्न; यादगार; लक्ष्य; झंडा; पता, ठिकाना। **–बरदार**–पु० किसी राजा, सेना या दलके आगे उसका झंडा लेकर चलनेवाला व्यक्ति। **मु० (किसी बातका)–उठाना या खड़ा करना**–किसी आंदोलनका नेतृत्व करना। **–देना**–पता बताना; सम्मन तामील कराने आदिके लिए पहचान कराना।

निशाना–पु० [फा०] वह जिसको दृष्टिमें रखकर कोई अस्त्र चलाया जाय, लक्ष्य; निशाना साधनेके कामका मिट्टीका ढेर या कोई अन्य वस्तु; वह जिसके प्रति कोई चुटकुली बात कही जाय। **मु०–बाँधना**–अस्त्र आदिको इस तरह साधना कि वह चलानेपर ठीक लक्ष्यपर वार करे। **–मारना या लगाना**–लक्ष्यको दृष्टिमें रखकर अस्त्र आदिका वार करना। **–साधना**–दे० 'निशाना बाँधना'; निशाना मारनेका अभ्यास करना।

निशानी–स्त्री० किसीकी याद करनेवाला चिह्न, यादगार; वह चिह्न जिससे किसी वस्तुकी पहचान हो सके।

निशावसान–पु० [सं०] प्रातःकाल, निशांत।

निशास्ता–वि० [फा०] जमाया हुआ; बैठा हुआ। पु० गेहूँका गूदा; माँड़ी।

निशि–अ० [सं०] रातमें। स्त्री० रात। **–कर**–पु० दे० 'निशाकर'। **–चर**–पु० दे० 'निशाचर'। **–चर-राज**–पु० विभीषण। **–दिन**–अ० रात-दिन, सदैव। **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० दे० 'निशानाथ'। **–पाल,–पालक**–पु० एक छंद; प्रहरी (जो रातमें पहरा देता है)। **–वासर**–

अ० रात-दिन, सदैव ।

निशित—वि० [सं०] सानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; तेज, तीक्ष्ण । पु० लोह ।

निशीथ—पु० [सं०] शयन-काल; आधी रात ।

निशीथिनी—स्त्री० [सं०] रात्रि, रात ।

निशीथिनीश—पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।

निशुंभ—पु० [सं०] वध; हिंसा करना, हिंसन; तोड़ना; झुकाना; एक असुर जो शुंभका भाई था और जिसका वध दुर्गाने किया था । **—मथनी, —मर्दिनी**—स्त्री० भगवती, दुर्गा ।

निशेश—पु० [सं०] दे० 'निशानाथ' ।

निशोत्सर्ग—पु० [सं०] प्रभात, सवेरा ।

निश्चंद्र—वि० [सं०] चंद्रमासे रहित ।

निश्चक्षु(स्)—वि० [सं०] नेत्रहीन ।

निश्चय—पु० [सं०] संदेहरहित ज्ञान; दृढ़ विचार; विश्वास; निबटारा, निर्णय, फैसला; जाँच; एक अर्थालंकार जिसमें अन्य विषयका निषेध होकर यथार्थ विषयका स्थापन हो ।

निश्चयात्मक—वि० [सं०] संदेहरहित, जिसमें किसी प्रकारका संशय न हो ।

निश्चल—वि० [सं०] जो चल न हो, थोड़ासा भी न हिलने-डुलनेवाला, अचल, स्थिर ।

निश्चला—स्त्री० [सं०] शालपर्णी; पृथ्वी ।

निश्चायक—पु० [सं०] निश्चय करनेवाला, निर्णायक ।

निश्चिंत—वि० [सं०] जिसे किसी प्रकारकी चिंता न हो, चिंतारहित, बेफिक्र ।

निश्चिंतई*—स्त्री० निश्चिंत होनेका भाव, बेफिक्री ।

निश्चित—वि० [सं०] जिसके बारेमें निश्चय किया जा चुका हो, निश्चय किया हुआ; जो इधर-उधर न हो सके, जिसमें किसी प्रकारका हेर-फेर न हो सके, पक्का ।

निश्चेतन—वि० [सं०] संज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित ।

निश्चेष्ट—वि० [सं०] चेष्टारहित; अचेत, मूर्च्छित; अचल ।

निश्चै*—पु० दे० 'निश्चय' ।

निश्छल—वि० [सं०] छलरहित, शुद्ध हृदयवाला, सच्चा ।

निश्वास—पु० [सं०] बहिर्मुख श्वास, प्राणवायुके नाकसे बाहर आनेकी क्रिया; लंबी साँस ।

निश्शंक—वि० [सं०] दे० 'निःशंक' ।

निश्शील—वि० [सं०] शीलरहित, दुष्ट स्वभावका ।

निश्शेष—वि० [सं०] दे० 'निःशेष' ।

निषंग—पु० [सं०] तरकश, तूणीर; तलवार ।

निषंगी(गिन्)—वि० [सं०] जिसके पास तरकश हो; जिसने धनुष् धारण किया हो; खड्ग धारण करनेवाला ।

निषण्ण—वि० [सं०] बैठा हुआ, स्थित, उपविष्ट ।

निषदन—पु० [सं०] बैठना; निवास करना; आसन; घर ।

निषध—पु०[सं०] एक पर्वत; लवके भाई कुशका एक पौत्र; जनमेजयका एक पुत्र; एक प्राचीन देश जहाँके राजा नल थे; कुरुका एक पुत्र; निषाद स्वर ।

निषाद—पु० [सं०] एक पुरानी अनार्य जाति (मनुके अनुसार इसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और शूद्रा मातासे है); एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख रामायण आदिमें मिलता है; संगीतके सप्तकका अंतिम स्वर जिसका संक्षिप्त रूप 'नि' है ।

निषादी(दिन्)—पु० [सं०] पीलवान, महावत ।

निषिक्त—वि० [सं०] अतिसिक्त; भीतर पहुँचाया हुआ । पु० वीर्यसे जनित गर्भ ।

निषिद्ध—वि० [सं०] निषेध किया हुआ, जिसपर रोक लगायी गयी हो, जिसे करना आदि मना हो ।

निषिद्धि—स्त्री० [सं०] मनाही, रोक; बचाव ।

निषूदन—वि० [सं०] मारनेवाला, वध करनेवाला; नाशक (प्रायः समासमें व्यवहृत) । पु० मारण, वध; मारनेवाला ।

निषेक—पु० [सं०] विशेष रूपसे सींचना; गर्भ रहना, गर्भाधान; चूना, टपकना ।

निषेचन—पु० [सं०] छिड़कना; सींचना ।

निषेध—पु० [सं०] निषिद्ध करनेका कार्य, मनाही, रोक लगाना, बरजना; रोक, बाधा, प्रतिबंध; विधिका विलोम; इनकार; वह आज्ञा या नियम जिसके द्वारा किसी बातकी मनाही की गयी हो । **—पत्र**—पु० वह लिखित आदेश जिसमें किसी बातकी मनाही हो ।

निषेधक—वि० [सं०] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला ।

निषेधन—पु०[सं०] निषेध करनेकी क्रिया, मनाही, वर्जन ।

निषेधाज्ञा—स्त्री० [सं०] दे० 'निरोधाज्ञा' ।

निषेधाधिकार—पु० [सं०] (वीटो) दे० 'प्रतिषेधाधिकार' ।

निषेवण—पु० [सं०] विशेष रूपसे किया गया सेवन; विशेष प्रकारकी सेवा ; पूजा; अनुष्ठान; लगाव; लगन; रहना ।

निषेवित—वि० [सं०] पूजित; सेवित; अनुष्ठित ।

निषेवी(विन्)—पु० [सं०] विशेष रूपसे सेवन करनेवाला ।

निषेव्य—वि० [सं०] विशेष रूपसे सेवन करने योग्य ।

निष्कंटक—वि० [सं०] बाधा, आपत्ति आदिसे रहित, जिसमें किसी प्रकारका खटका या बखेड़ा न हो, निर्द्वंद्व ।

निष्कंप—वि०[सं०] जिसमें कंपन न हो, जो हिलता-डुलता न हो, जो चंचल न हो, अचल, स्थिर ।

निष्क—पु० [सं०] सोनेका एक प्राचीन सिक्का जो प्रायः सोलह माशेका होता था; गलेका एक प्रकारका सोनेका आभूषण; ४ माशेके बराबर एक तौल ।

निष्कपट—वि० [सं०] छल-छद्मसे रहित, सच्चा, शुद्ध हृदयवाला ।

निष्करुण—वि० [सं०] निर्दय, कठोर हृदयवाला, निष्ठुर ।

निष्कर्म(न्)—वि० [सं०] दे० 'निष्कर्मा' ।

निष्कर्मा(र्मन्)—वि० [सं०] जो लिप्त होकर कर्म न करे, आसक्तिरहित होकर कर्म करनेवाला ।

निष्कर्ष—पु० [सं०] तत्त्व, सारभूत अर्थ, निचोड़; निश्चय; किसी वस्तुके विषयमें यह कैसा है और कितना है, इस प्रकारका विचार; नतीजा; बाहर करना, निःसारण ।

निष्कलंक—वि० [सं०] जिसमें कोई कलंक न हो, दोष, पाप आदिसे रहित; बेदाग, विमल, विशुद्ध, बिना ऐबका ।

निष्काम—वि० [सं०] सब प्रकारकी कामना या आसक्तिसे रहित, जिसे किसी प्रकारकी कामना न हो, निरीह । **—कर्म(न्)**—पु० फलप्राप्तिकी इच्छा त्यागकर किया जानेवाला कर्म ।

निष्कामी*—वि० दे० 'निष्काम' ।

निष्कारण—वि० [सं०] कारणरहित, बिना किसी कारणका;

बिना किसी कारणके होनेवाला, अहेतुक। अ० बिना किसी कारणके, अकारण। **-बंधु**-पु० वह जो बिना किसी प्रकारके स्वार्थके बंधुता रखे, स्वार्थरहित बंधु। **-वैरी (रिन्)**-पु० वह जो अकारण वैरभाव रखे।

निष्काश, निष्कास-पु० [सं०] बाहर करना, निकालना।

निष्कासन-पु० [सं०] बाहर करना, निकालना, निःसारण।

निष्कासित-वि० [सं०] बाहर किया हुआ, निकाला हुआ, निःसारित; रखा हुआ; नियुक्त; विकसित।

निष्किंचन-वि० [सं०] दे० 'अकिंचन'।

निष्किल्बिष-वि० [सं०] पापरहित, निर्दोष।

निष्कीटन-पु० [सं०] (स्टेरिलाइजेशन) रासायनिक प्रक्रिया आदिकी सहायतासे किसी वस्तुको जीवाणुओं या कीटाणुओंसे रहित कर देना; दे० 'वंध्यीकरण'।

निष्कीटित-वि० [सं०] (स्टेरेलाइज्ड) किसी प्रक्रिया द्वारा जिसके कीटाणु नष्ट कर दिये गये हों; वंध्यीकृत।

निष्कुल-वि० [सं०] जिसके कुलमें कोई न रह गया हो।

निष्कुलीन-वि० [सं०] नीच कुलका।

निष्कृत-वि० [सं०] निकाला हुआ; मुक्त; हटाया हुआ; उपेक्षित; क्षमित। पु० प्रायश्चित्त; मिलनस्थान।

निष्कृति-स्त्री० [सं०] निस्तार, पाप आदिसे मुक्ति, छुटकारा; उद्धार; प्रायश्चित्त; उपेक्षा; दुराचरण। **-धन**-पु० (रैनजम) किसीको छुटकारा या मुक्ति देनेके बदले दबाव डालकर वसूल किया जानेवाला धन।

निष्कृप-वि० [सं०] जिसमें दया न हो, निर्दय, निष्ठुर।

निष्क्रम-वि० [सं०] बिना क्रमका, अक्रम। पु० बाहर निकलना; जातिच्युति। **-पत्र**-पु० (पासपोर्ट) दे० 'पारपत्र'। **-मार्ग**-पु० बाहर निकलने या जानेका रास्ता।

निष्क्रमण-पु० [सं०] दे० 'निष्क्रम'।

निष्क्रय-पु० [सं०] खरीद; वेतन, भृति; भाड़ा; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली रकम या वस्तु, बदला; छुटकारेके लिए दिया जानेवाला द्रव्य (कौ०)।

निष्क्रयण-पु० [सं०] छुटकारेके लिए दी जानेवाली रकम।

निष्क्रांत-वि० [सं०] जिसका निष्क्रमण हो चुका हो; निर्गत।

निष्क्रांतोंकी संपत्ति-स्त्री० (इवैकुई प्रापर्टी) (जानमालके संकटसे बचनेके लिए) जो लोग अपना पूर्व-स्थान छोड़कर अन्यत्र चले गये हों उनके द्वारा अपने पीछे छोड़ी हुई संपत्ति।

निष्क्रिय-वि० [सं०] जो कुछ भी न करे-धरे; विहित कर्मोंको न करनेवाला; जिसमें या जिससे कार्य या व्यापार न हो, क्रियारहित। **-प्रतिरोध**-पु० शासककी ओरसे होनेवाले दमनका प्रतिकार न कर उसकी अनुचित आज्ञा या कानूनका उल्लंघन (पैसिव रेसिस्टेंस)।

निष्क्रियता-स्त्री० [सं०] निष्क्रिय होनेकी दशा या भाव।

निष्ठ-वि० [सं०] (समासांतमें) स्थित, निर्भर; संलग्न; तत्पर; ...में विश्वास करनेवाला।

निष्ठा-स्त्री० [सं०] स्थिति; आधार; एकाग्रता, तत्परता; दृढ़ता; अनुराग; श्रद्धा; विश्वास; पूरा होना, निष्पत्ति; नाश; क्लेश; निर्वाह; याचना; व्रत; निश्चय।

निष्ठावान्(वत्)-वि० [सं०] निष्ठावाला।

निष्ठीव, निष्ठीवन-पु० [सं०] खखार आदिको मुँहसे बाहर निकालना, थूकना; थूक।

निष्ठुर-वि० [सं०] कड़ा, कठोर; परुष; कड़े दिलका; निर्दय, बेरहम।

निष्ठ्यूत-वि० [सं०] उगला हुआ; बाहर निकाला हुआ; उक्त।

निष्ण, निष्णात-वि० [सं०] कुशल, प्रवीण, निपुण।

निष्पंक-वि० [सं०] जिसमें पंक न हो, पंकरहित।

निष्पंद-वि० [सं०] गतिहीन, स्थिर।

निष्पक्ष-वि० [सं०] जो किसी पक्षका न हो, जिसमें पक्षपात न हो।

निष्पत्ति-स्त्री० [सं०] उत्पत्ति; पूरा किया जाना, समाप्ति; सिद्धि; परिपाक; नादकी अंतिम अवस्था (हठयोग); निर्वाह।

निष्पत्र-वि० [सं०] पत्तोंसे रहित; बिना पंखका।

निष्पन्न-वि० [सं०] जो पूरा किया जा चुका हो, समाप्त।

निष्पादक-पु० [सं०] निष्पादन करनेवाला।

निष्पादन-पु० [सं०] निष्पन्न करनेकी क्रिया, तामील।

निष्पाप-वि० [सं०] पापरहित।

निष्पुत्र-वि० [सं०] पुत्रहीन, जिसके पुत्र न हो।

निष्प्रभाव-वि० [सं०] जिसका कोई प्रभाव न रह गया हो, जिसका प्रभाव नष्ट या रुद्ध कर दिया गया हो, अप्रभावी।

निष्प्रभ-वि० [सं०] जिसमें चमक न हो, द्युतिहीन; जिसमें तेज न हो, विवर्ण।

निष्प्रयोजन-वि० [सं०] जिससे कोई प्रयोजन न सिद्ध हो, व्यर्थ; बिना किसी मतलबका। अ० वृथा, बिना किसी मतलबके।

निष्प्रेही*-वि० दे० 'निस्पृह'।

निष्फल-वि० [सं०] जिसका कुछ फल न हो; जिससे कुछ अर्थ न सिद्ध हो; बेकार, बिना फलका।

निष्फला-स्त्री० [सं०] वह अधिक अवस्थावाली स्त्री जिसे रजोधर्म न होता हो, विगतार्तवा स्त्री।

निसंक*-वि० दे० 'निःशंक'।

निसंग*-वि० दे० 'निस्संग'।

निसँठ*-वि० धनहीन, दरिद्र।

निसंस*-वि० दे० 'नृशंस'।

निसँस*-वि० दे० 'निसाँसा'।

निसँसना*-अ० क्रि० हाँफना।

निस*-स्त्री० निशा, रात। **-कर**-पु० चंद्रमा। **-द्योस**-अ० दे० 'निसवासर'। **-वासर**-अ० रात-दिन, सर्वदा। पु० रात और दिन।

निसक-वि० शक्तिहीन, कमजोर।

निसचय, निसचै*-पु० दे० 'निश्चय'।

निसत*-वि० असत्य, मिथ्या, झूठा।

निसतरना*-अ० क्रि० निस्तार पाना, मुक्ति पाना, छुटकारा पाना, बचना।

निसतार*-पु० दे० 'निस्तार'।

निसतारना*-स० क्रि० उद्धार करना, मुक्त करना।

निसबत-स्त्री० [अ०] लगाव, संबंध, वास्ता; तुलना। अ० संबंधमें।

निसयाना*–वि० जो आपेमें न हो, बेहोश ।

निसरना*–अ० क्रि० बाहर आना, निकलना ।

निसराना*–स० क्रि० निकालना; निकलवाना ।

निसर्ग–पु० [सं०] प्रकृति, स्वभाव; सृष्टि; स्वरूप; देना, दान; मल-त्याग; परित्याग; विनिमय । **–ज**–वि० प्राकृतिक, सहज । **–भिन्न**–वि० स्वभावसे ही भिन्न । **–सिद्ध**–वि० स्वभावसिद्ध, स्वाभाविक, सहज ।

निसवादिल*–वि० बिना स्वादका, निःस्वाद ।

निसस*–वि० जिसकी श्वासक्रिया बंद हो गयी हो; मूर्छित ।

निसहाय–वि० दे० 'निस्सहाय' ।

निसाँक*–वि० दे० 'निशंक' । अ० बेखटके–'मनो अली चंपक कली, बसि रस लेत निसाँक'–वि० ।

निसाँस*–स्त्री० लंबी साँस, निःश्वास । वि० बेहोश, मृतप्राय ।

निसाँसा*–वि० जिसकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया बंद हो गयी हो, बेदम, मृतप्राय ।

निसा–† पु० दे० 'नशा' । *स्त्री० तृप्ति, संतोष; इच्छा–'निसा ज्यों होइ त्यों ही तोष कीजे'–सुजान; दे० 'निशा' । **–कर**–पु० दे० 'निशाकर' । **–चर**–पु० दे० 'निशाचर' । **–नाथ, –पति**–पु० दे० 'निशानाथ' ।

निसाद*–पु० दे० 'निषाद'; भंगी ।

निसान*–पु० दे० 'निशान'; डंका, नगाड़ा ।

निसानन*–पु० रजनीमुख, प्रदोष ।

निसाना*–पु० दे० 'निशाना' ।

निसानी*–स्त्री० दे० 'निशानी' ।

निसाफ*–पु० इंसाफ, न्याय ।

निसार–पु० [सं०] समुदाय, समूह; [अ०] निछावर; मुगलकालका एक सिक्का जो चार आनेके बराबर होता था । * वि० सारहीन, निःसार ।

निसारना*–स० क्रि० बाहर करना, निकालना ।

निसास*–पु० दे० 'निःश्वास' ।

निसासी–वि० दे० 'निसाँसा' ।

निसि–स्त्री० * रात । **–कर**–पु० दे० 'निशाकर' । **–चर**–पु० दे० 'निशाचर' । **–चारी**–वि० रातमें निकलने या घूमने-फिरनेवाला । पु० राक्षस । **–दिन**–अ० रात-दिन, सर्वदा, हमेशा । **–नाथ, –नाह***–पु० चंद्रमा । **–पति, –पाल, –मनि**–पु० चंद्रमा । **–मुख**–पु० दे० 'निशामुख' । **–वर**–पु० चंद्रमा । **–वासर**–अ० रात-दिन, सदा, हर समय ।

निसीठी–वि० सारहीन, निस्तत्त्व ।

निसीथ*–पु० दे० 'निशीथ' ।

निसुंभ*–पु० दे० 'निशुंभ' ।

निसु*–स्त्री० रात ।

निसुका*–वि० धनहीन, दरिद्र, निःस्वक, बेचारा ।

निसूदक–वि० [सं०] हिंसा करनेवाला, वध करनेवाला ।

निसूदन–पु० [सं०] मारना, वध करना । वि० मारनेवाला, वध करनेवाला ।

निसृष्ट–वि० [सं०] त्यागा हुआ; भेजा हुआ, न्यस्त; दिया हुआ, प्रदत्त; बीचमें पड़ा हुआ, मध्यस्थ ।

निसृष्टार्थ–पु० [सं०] तीन प्रकारके दूतोंमेंसे वह दूत जो उभय पक्षकी बातोंको समझकर स्वयं उत्तर दे ले और कार्य निष्पन्न कर ले; धनके आय-व्यय तथा कृषि और वाणिज्यकी निगरानीके लिए नियुक्त किया जानेवाला कर्मचारी; स्वामीके कार्यको लगनसे करने तथा अपने पौरुषको प्रकट करनेवाला धीर और दृढमति पुरुष । **–दूतिका, –दूती**–स्त्री० वह दूती जो नायक और नायिकाके मनोरथको समझकर अपनी बुद्धिसे कार्य सिद्ध करे ।

निसेनी, निसैनी–स्त्री० सीढ़ी, सोपान ।

निसेष*–वि० दे० 'निःशेष' ।

निसेस*–पु० निशेश, चंद्रमा ।

निसोग*–वि० निःशोक; निश्चित, बेफिक्र ।

निसोच*–वि० निश्चिंत, बेफिक्र ।

निसोत*–वि० शुद्ध, खालिस–'रीझत राम सनेह निसोते' –रामा० ।

निसोधु*–स्त्री० सुध, खबर; संवाद, संदेश ।

निस्–उप० [सं०] इसका प्रयोग वियोग (निःसंग), अत्यय (निर्मेध), आदेश (निर्देश), अतिक्रम (निष्क्रांत), भोग (निर्वेश), निश्चय (निश्चित), निषेध (निर्मक्षिका) और साकल्य (निर्गत) का द्योतन करनेके लिए होता है ।

निस्केवल*–वि० बिना मिलावटका, निरा, विशुद्ध ।

निस्तंद्र, निस्तंद्रि–वि० [सं०] तंद्रारहित, जागरूक; आलस्यरहित ।

निस्तत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कुछ तत्त्व न हो, सारहीन ।

निस्तब्ध–वि० [सं०] विशेषरूपसे स्तब्ध ।

निस्तर*–पु० दे० 'निस्तार' ।

निस्तरण–पु० [सं०] पार जाना; निस्तार, उद्धार; उपाय ।

निस्तरना*–अ० क्रि० निस्तार पाना, छुटकारा पाना, पार पाना, उबरना ।

निस्तल–वि० [सं०] तलरहित, अतल; चंचल, चल ।

निस्तार–पु० [सं०] पार जाना; पार पाना; मुक्ति; उद्धार; अभीष्टकी प्राप्ति; † (शौच, पेशाबके लिए) बाहर जाना; * सुविधा, निर्वाह, काम–'यज्ञशालाएँ कुटीरें साधुजन निस्तारकी'–पूर्ण० ।

निस्तारक–पु० [सं०] निस्तार करनेवाला; मुक्त करनेवाला ।

निस्तारण–पु० [सं०] पार करना; मुक्त करना; उद्धार करना; विजय पाना, जीतना; (डिसपोजल) काम पूरा करने या निपटानेकी क्रिया ।

निस्तारन*–वि० जो निस्तार करे; जो उद्धार करे । पु० दे० 'निस्तारण' ।

निस्तारना*–स० क्रि० पार करना; मुक्त करना; बचाना, उद्धार करना ।

निस्तारा*–पु० दे० 'निस्तार' ।

निस्तीर्ण–वि० [सं०] जो पार जा चुका हो; जिसका उद्धार हो गया हो, जिसे छुटकारा मिल गया हो ।

निस्तुष–वि० [सं०] तुषरहित, जिसकी भूसी अलग कर दी गयी हो; विशुद्ध, निर्मल ।

निस्तेज(स्)–वि० [सं०] तेजोहीन, जिसमें तेजका अभाव हो; कांतिहीन, निष्प्रभ ।

निस्तैल–वि० [सं०] बिना तेलका, जिसमें तेल न हो ।

निस्पंद–वि० [सं०] स्पंदरहित, जिसमें कोई हरकत न हो ।

निस्पृह–वि० [सं०] निर्लोभ, वासनारहित ।

निस्प्रेही*–वि० दे० 'निस्पृह' ।

निस्फ़–वि० [फ़ा०] आधा ।

निस्बत–स्त्री०, अ० दे० 'निसबत' ।

निस्यंद–पु० [सं०] क्षरण, चूना, रिसना; परिणाम ।

निस्यंदी(दिन्)–वि० [सं०] बहनेवाला, रिसनेवाला ।

निस्र(स्रा)व–पु० [सं०] भातका माँड़; चूना, बहना ।

निस्व(स्वा)न–पु० [सं०] आवाज; बाणकी सरसराहट ।

निस्संकोच–वि० [सं०] संकोचरहित । अ० बिना संकोचके।

निस्संग–वि० [सं०] संगरहित, विषया-नुराग शून्य; एकाकी; निर्लिप्त; निष्काम ।

निस्संतान–वि० [सं०] जिसे कोई संतान न हो, संतानहीन।

निस्संदेह–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकारका संदेह न हो, संदेहरहित, असंदिग्ध । अ० बिना किसी संदेहके, बेशक ।

निस्सत्त्व–वि० [सं०] सत्त्वरहित, असार; शक्तिहीन, कमजोर; तुच्छ; प्राणियोंसे रहित ।

निस्सरण–पु० [सं०] निकलनेकी क्रिया या मार्ग ।

निस्सहाय–वि० [सं०] सहायरहित ।

निस्सार–वि० [सं०] असार, जिसमें कोई तत्त्व न हो ।

निस्सीम–वि० [सं०] जिसकी सीमा न हो, अपार ।

निस्स्नेह–वि० [सं०] स्नेहरहित । पु० एक प्रकारका मंत्र (तंत्र) । **–फला**–स्त्री० सफेद भटकटैया ।

निस्स्पंद–वि० [सं०] दे० 'निस्पंद' ।

निस्स्पृह–वि० [सं०] दे० 'निस्पृह' ।

निस्स्व, निस्स्वक–वि० [सं०] दरिद्र, धनहीन ।

निस्स्वादु–वि० [सं०] स्वादरहित, बिना स्वादका, अस्वादिष्ठ, बदमजा ।

निस्स्वार्थ–वि० [सं०] बिना स्वार्थका, स्वार्थरहित, जिसमें स्वार्थकी भावना न हो ।

निहंग–वि० निःसंग, एकाकी; (वह साधु) जो स्त्री आदिसे संबंध न रखे; नंगा; निर्लज्ज । पु० वह साधु जो किसीसे कुछ मतलब न रखे और एकदम अकेले रहे । **–लाड़ला**–वि० जो अधिक लाड़-प्यारके कारण बिगड़ गया हो ।

निहंगम–वि० दे० 'निहंग' ।

निहंता(तृ)–वि० [सं०] हनन करनेवाला, मारनेवाला; नाशक; प्राण हर लेनेवाला ।

निहकर्मा, निहकर्मी*–वि० दे० 'निष्कर्मा' ।

निहकलंक*–वि० दे० 'निष्कलंक' ।

निहकाम, निहकामी*–वि० दे० 'निष्काम' ।

निहचय, निहचै*–पु० दे० 'निश्चय' ।

निहचल*–वि० दे० 'निश्चल' ।

निहचिंत*–वि० दे० 'निश्चिंत' ।

निहत–वि० [सं०] मारा हुआ; नष्ट किया हुआ ।

निहतार्थ–पु० [सं०] किसी द्व्यर्थक शब्दको उसके अप्रसिद्ध अर्थमें प्रयुक्त करना ।

निहत्था–वि० जिसके हाथमें कोई हथियार न हो, निरस्त्र।

निहनना*–स० क्रि० मारना, वध करना ।

निहपाप*–वि० दे० 'निष्पाप' ।

निहफल*–वि० दे० 'निष्फल' ।

निहाई–स्त्री० एक विशेष आकारका लोहेका ठोस टुकड़ा जिसपर लोहा आदि धातुओंको रखकर पीटते हैं ।

निहाउ*–पु० दे० 'निहाई' ।

निहानी–स्त्री० खुदाईका महीन काम करनेकी रुखानी ।

निहाय, निहाव*–पु० दे० 'निहाई' ।

निहायत–अ० [अ०] अत्यधिक, बहुत ज्यादा ।

निहार*–वि० निहाल, लट्टू–'पीत कमल इंदीवरपर मनु भौरहिं भये निहार'–सू० । पु० [सं०] कुहरा; पाला; ओस । **–जल**–पु० ओस ।

निहारना*–स० क्रि० गौरसे देखना, निरखना ।

निहारिका–स्त्री० [सं०] दे० 'नीहारिका' ।

निहाल–वि० हर तरहसे तृप्त, जिसके सभी मनोरथ सिद्ध हो चुके हों ।

निहाली–स्त्री० [फ़ा०] तोशक, गद्दा; * रजाई–'जैसे नर शीतकाल सोचत निहाली ओट'–सुंदर० ।

निहिचय*–पु० दे० 'निश्चय' ।

निहिचिंत*–वि० दे० 'निश्चिंत' ।

निहित–वि० [सं०] रखा हुआ, धरा हुआ, स्थापित । **–स्वार्थ**–पु० (वेस्टेड इंटरेस्ट) व्यापार-व्यवसाय, भूमि आदिमें रुपया लगाकर प्राप्त किया गया स्थिर स्वार्थ ।

निहुँकना†–अ० क्रि० झुकना ।

निहुड़ना†–अ० क्रि० दे० 'निहुरना' ।

निहुरना*–अ० क्रि० झुकना, नत होना ।

निहुराई*–स्त्री० दे० 'निठुराई' ।

निहुराना†–स० क्रि० झुकाना, नत करना ।

निहोर*–पु० दे० 'निहोरा' ।

निहोरना*–स० क्रि० निहोरा करना, प्रार्थना करना; आराधन करना, मनाना; आभार स्वीकार करना ।

निहोरा*–पु० प्रार्थना, निवेदन; कृपा, उपकार, एहसान; अवलंब, आसरा ।

निहोरे*–अ० कारणसे, वजहसे; वास्ते ।

नींद–स्त्री० निद्रा ।

नींदड़ी*–स्त्री० निद्रा।

नींदना*–स० क्रि० निंदा करना; निराना ।

नींदर*, नींदरी*–स्त्री० निद्रा, नींद ।

नींबा†–स्त्री० नीम।

नींव–स्त्री० दे० 'नीवँ' ।

नीअरा†–अ० निकट ।

नीक*–वि० उत्तम, अच्छा, भला । पु० भलाई, अच्छापन ।

नीका*–वि० दे० 'नीक' ।

नीके*–अ० अच्छी तरह, भली भाँति, सकुशल ।

नीगने*–वि० अगणित, बेशुमार–'मृगराज ज्यों वनराजमें गजराज मारत नीगने'–राम० ।

नीच–वि० [सं०] जो जाति, गुण, कर्म आदिमें घटकर हो, अधम, निकृष्ट; खल, दुष्ट, खोटा; बौना (उच्चका उलटा) । पु० नीच मनुष्य । **–ऊँच**–वि० [हिं०] छोटा-बड़ा; छोटे या बड़े कुलका; भला-बुरा, उचित-अनुचित । पु० सुफल-कुफल, भला या बुरा परिणाम, लाभालाभ; सुख-दुःख । **–ग**–वि० नीचेकी ओर जानेवाला, निम्नगामी; खोटा, ओछा । **–गा**–स्त्री० नदी; नीच कुलवालेके साथ चली

जानेवाली स्त्री ।**–गामी(मिन्)**–वि० दे० 'नीचग' ।

नीचट†–वि० पक्का, दृढ़, मजबूत ।

नीचता–स्त्री०, **नीचत्व**–पु० [सं०] नीच होनेका भाव, ओछापन, खोटाई ।

नीचा–वि० जिसकी सतह ऊँचाईमें आसपासकी सतहसे घटकर हो, जो ऊँचा न हो, निम्न, कम ऊँचाईवाला; नीचेकी ओर लटका हुआ, जो जमीनके अधिक समीप आ गया हो; जो ऊँचाईपर न हो, झुका हुआ; जिसमें तीव्रता न हो, मंद, धीमा; जो ऊँचे दर्जेका न हो, जो जाति, गुण, कर्म आदिकी दृष्टिसे न्यून हो (ऊँचाका उलटा) । **–ऊँचा**–वि० दे० 'नीच-ऊँच' । **(नीची) दृष्टि,–निगाह**–स्त्री० लज्जासे झुकी हुई दृष्टि । **मु०–खाना**–अपमानित होना; पराजित होना ।**–दिखाना**–अपमानित करना; पराजित करना; घमंड दूर करना । **–देखना**–दे० 'नीचा खाना'। **(नीची) दृष्टि या निगाहसे देखना**–घृणित या तुच्छ समझना ।

नीचाशय–वि० [सं०] तुच्छ विचारवाला ।

नीचे–अ० नीचेकी तरफ, अधोभागमें, तलमें; घटकर; अधीनतामें ।**–ऊपर**–अ० ऐसे क्रमसे जिसमें एक दूसरेके ऊपर हो; ऐसी दशामें जिसमें नीचेका ऊपर और ऊपरका नीचे हो, व्यतिक्रांत रूपमें । **मु०–गिरना**–पतन होना, अधोगतिको प्राप्त होना; पछाड़ा जाना । **–गिराना**–पतित बनाना, अधोगतिको प्राप्त कराना; कुश्तीमें पछाड़ना, पटकना । **–लाना**–कुश्तीमें पटकना ।**–से ऊपर-तक**–सिरसे पाँवतक; सभी अंगों या भागोंमें; एक सिरेसे दूसरे सिरेतक ।

नीजन*–वि० दे० 'निर्जन' । पु० एकांत स्थान ।

नीझर*–पु० दे० 'निर्झर' ।

नीठ*–अ० दे० 'नीठि' । वि० दे० 'नीठा' ।

नीठा*–वि० जो अच्छा न लगे, अप्रिय, अरुचिकर ।

नीठि–स्त्री० अरुचि । अ० किसी तरह, कठिनाईसे । **–नीठि करके**–किसी-किसी तरह, कठिनाईसे ।

नीड–पु० [सं०] रहने या ठहरनेकी जगह, आश्रय; घोंसला; माँद; रथका एक अंग । **–ज**–पु० पक्षी ।

नीडोद्भव–पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया ।

नीत–वि० [सं०] ले जाया, पहुँचाया हुआ; बिताया हुआ ।

नीति–स्त्री० [सं०] ले जानेकी क्रिया; व्यवहारका ढंग, बर्तावका तरीका; वह आधारभूत सिद्धांत जिसके अनुसार कोई कार्य संचालित किया जाय; लोकव्यवहारके निर्वाहके लिए नियत किया गया आचार; लोकाचारकी वह पद्धति जिससे अपना कल्याण हो और दूसरेको हानि न पहुँचे; किसी राज्य, राष्ट्र, संस्था या सरकार द्वारा अपने कार्यके संचालनके लिए नियत की गयी कार्य-पद्धति; कार्य-विशेषकी सिद्धिके लिए काममें लायी-जानेवाली युक्ति; चतुराईभरी चाल; राजनीति; औचित्य; योजना; प्राप्ति; भेंट देना; संबंध; सहारा । **–कुशल**–वि० दे० 'नीतिज्ञ' । **–घोषणा**–स्त्री० (मैनिफेस्टो) किसी दलके नेता या राज्यके प्रधान शासक आदि द्वारा अपनी नीति या लक्ष्य आदिके संबंधमें लिखित रूपमें की गयी सार्वजनिक घोषणा, लोक-घोषणा । **–ज्ञ,–निपुण,–निष्ण**–वि० नीति जाननेवाला । **–विज्ञान**–पु० दे० 'नीतिशास्त्र' । **–विद्**–वि० दे० 'नीतिज्ञ' । **–विद्या**–स्त्री० राजनीति-शास्त्र; कर्तव्यशास्त्र । **–शास्त्र**–पु० राजनीति-संबंधी शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें आचार-संबंधी नियमोंका विधान हो ।

नीतिमान्(मत्)–वि० [सं०] नीतिके अनुसार आचरण करनेवाला; राजनीतिमें दक्ष; चतुर, बुद्धिमान; सदाचारी ।

नीदना*–स० क्रि० निंदा करना ।

नीधना*–वि० निर्धन, दरिद्र ।

नीध्र–पु० [सं०] ओलती; वन; चंद्रमा; पहियेका घेरा; रेवती नक्षत्र ।

नीप–पु० [सं०] कदमका पेड़ या फूल; बंधूक वृक्ष ।

नीपजना*–अ० क्रि० उत्पन्न होना; बढ़ना, उन्नति करना ।

नीपना*–स० क्रि० लीपना ।

नीबर†–वि० दे० 'निर्बल' ।

नीबी–स्त्री० दे० 'नीवी' ।

नीबू–पु० खट्टे रसवाला एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़ । **–निचोड़**–वि० थोड़ा देकर बहुत लेनेवाला । पु०नीबूको दबाकर रस निकालनेका यंत्र ।

नीम–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सब अंग कड़वे होते हैं । **मु०–की टहनी हिलाना**–उपदंशसे पीड़ित होकर बैठना ।

नीम–वि० [फा०] आधा । **–आस्तीन**–स्त्री० आधी बाँहकी कुर्ती । **–चा**–पु० छोटी तलवार, खाँड़ा । **–पुख़्त,–पुख़्ता**–वि० आधा पका हुआ, अर्धपक्व । **–रज़ा,–राज़ी**–वि० आधा रजामंद । **–हकीम**–पु० अधकचरा हकीम, आयुर्विज्ञानकी बहुत कम जानकारी रखनेवाला चिकित्सक । **मु०–हकीम खतरे जान**–अधकचरे वैद्यकी दवा करनेमें जान जानेका डर रहता है ।

नीमन†–वि० उम्दा, बढ़िया; स्वस्थ; जो खराब न हुआ हो ।

नीमस्तीन, नीमास्तीन–स्त्री० दे० 'नीम'के साथ ।

नीयत–स्त्री०[अ०] इरादा, इच्छा, मंशा । **मु०–डिगना,–बद होना,–बिगड़ना,–बुरी होना**–विचार दूषित होना, मनमें बुरी बात पैदा होना, मनमें बेईमानीकी बात आना ।

नीर–पु० [सं०] जल, पानी; फफोले आदिके अंदरका पानी; रस; नीमके पेड़से निकलनेवाला रस । **–ज**–वि० जलीय, जलसे उत्पन्न होनेवाला । पु० ऊदबिलाव; उशीर; कमल; मोती । **–द,–धर**–पु० बादल ।**–धि,–निधि**–पु० समुद्र । **–पति**–पु० वरुण । **–रुह**–पु० कमल ।

नीरद–वि० [सं०] बिना दाँतका । पु० दे० 'नीर'में ।

नीरना*–स० क्रि० बिखेरना ।

नीरव–वि० [सं०] शब्दरहित, जिसमें ध्वनि न हो ।

नीरस–वि० [सं०] रसहीन; सूखा; बेस्वादका ।

नीराजन–पु० [सं०] देवताको दीप आदि दिखानेकी पूजन-विधि, आरती; विजययात्राके पहले हथियारोंकी सफाई करनेका राजाओंका एक कृत्य जो आश्विन मासमें हुआ करता था ।

नीराजना–स्त्री०[सं०] दे० 'नीराजन' । * स०क्रि० आरती करना; हथियारोंकी सफाई करना ।

नीराज्यिक भूमि–स्त्री० [सं०] (नोमैन्स लैंड) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाली वह भूमि जो दोमेंसे किसीके भी अधिकारमें न हो; दे० 'निःस्वामिक भूमि'।

नीरुक् (ज्), नीरोग–वि० [सं०] रोगरहित, स्वस्थ।

नीरुज–पु० [सं०] कुष्ठौषधि, कुट। वि० रोगरहित।

नीरे*–अ० दे० 'नियरे'।

नील–वि० [सं०] नीले रंगका, आसमानके रंगका। पु० नीला रंग; एक पौधा जिससे नीला रंग तैयार किया जाता है; एक पर्वत; रामकी सेनाका एक वानर जिसने नलके साथ समुद्रमें पुल बाँधा था; कुबेरकी एक निधि; कलंक; बड़का पेड़; इंद्रनील मणि; यमराजका एक विग्रह; एक तरहका पक्षी, मैना; काले-नीले रंगका बैल; काच-लवण; तूतिया; सौ अरबकी संख्या। **–कंठ**–वि० नीले कंठवाला। पु० मोर; शिव; नीले कंठ और डैनोंवाला एक पक्षी जिसका विजयादशमीके दिन दर्शन करते हैं; खंजन। **–कमल**–पु० नीले रंगका कमल। **–कांत**–पु० एक पहाड़ी पक्षी; नीलम मणि। **–गाय**–स्त्री० [हिं०] एक बनैला जानवर जिसकी शकल गाय जैसी होती है। **–गिरि**–पु० दक्षिणका एक पर्वत। **–ग्रीव**–पु० शिव। **–पद्म**–पु० दे० 'नीलकमल'। **–मणि**–पु० नीलम। **–रत्न**–पु० नीलम। **–वसन**–वि० जो नीले रंगका वस्त्र पहने या पहने हो। पु० नीले रंगका वस्त्र; बलराम; शनैश्चर। **–वासा (सस्)**–वि० दे० 'नीलवसन'। पु० शनि ग्रह।

नीलम–पु०[फा०] नीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, इंद्रनील।

नीलांजन–पु० [सं०] तूतिया; नीला सुरमा।

नीलांबर–वि० [सं०] जिसका वस्त्र नीला हो, जो नीले रंगका वस्त्र पहने हो। पु० नीला कपड़ा; बलराम।

नीलांबुज–पु० [सं०] नील कमल।

नीला–वि० नीलकेसे रंगका, आसमानी रंगका। **–थोथा**–पु० तूतिया। **–पन**–पु०, **–हट**–स्त्री० नीला होनेका भाव, नीलवर्णता। **(नीली) घोड़ी**–स्त्री० जामेके साथ सिली हुई कागजकी घोड़ी जिसके कारण उक्त जामा पहननेवाला घोड़ीपर चढ़ा हुआ-सा जान पड़ता है। **मु०–पड़ना**–मारके दाग पड़ना। **–पीला होना**–क्रोध करना।

नीलाचल–पु० [सं०] नील गिरि।

नीलाम–पु० [पुर्त० लीलाम] बिक्रीकी एक रीति जिसमें सबसे अधिक दाम बोलनेवालेके हाथ माल बेचा जाता है; बोली बोलकर बेचना। **–घर**–पु० वह घर या जगह जहाँ वस्तुएँ नीलाम की जायँ। **मु०–पर चढ़ना**–नीलाम किया जाना। **–पर चढ़ाना**–नीलाम करना।

नीलामी–वि० नीलाममें खरीदा हुआ; जो नीलाम किया जाय।

नीलाश्म(न्)–पु० [सं०] नीलम।

नीलिका–स्त्री० [सं०] नीलका पौधा; नीला सिंदुवार; एक नेत्ररोग; (चोटका) नीला दाग।

नीलिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] नीलापन।

नीलोत्पल–पु० [सं०] नील कमल।

नीलोपल–पु० [सं०] नीला पत्थर; नीलम।

नीलोफ़र–पु० [फा०] नील कमल; कुईं।

नीवँ, नीव–स्त्री० नाली जैसा गहरा गड्ढा जिसमेंसे दीवार उठायी जाती है; इसमें की जानेवाली ईंट-पत्थरकी चुनाई या जमावट जिसके ऊपरसे दीवारकी जोड़ाई होती है, मूल भित्ति, मूल आधार। **मु०–जमाना**–जड़ मजबूत करना, आधार दृढ़ करना। **–डालना, –देना**–दीवार उठानेके लिए नीवँ तैयार करना; कोई कार्य आरंभ करना। **–पड़ना**–आरंभ होना, शुरू होना।

नीवार–पु० [सं०] तिन्नी धान।

नीवि–स्त्री० [सं०] दे० 'नीवी'।

नीवीँ*–स्त्री० नीवँ।

नीवी–स्त्री० [सं०] धोतीकी वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ नाभिके नीचे या बगलमें इजारबंदसे या यों ही बाँधती हैं; इसे बाँधनेकी सूतकी डोरी, इजारबंद, नारा; पूँजी, मूल धन।

नीसक*–वि० अशक्त, असमर्थ।

नीसान*–पु० दे० 'निशान'।

नीहार–पु० [सं०] कुहरा; हिम। **–जल**–पु० ओस।

नीहारिका–स्त्री० [सं०] कुहरे या धुएँकी तरह आकाशमें छाया रहनेवाला प्रकाशपुंज जो ग्रह-नक्षत्रोंका उपादान माना जाता है।

नुकता–पु० [अ०] पतेकी बात, बारीक बात, दूरकी बात; ऐब, नुक्स, दोष, छिद्र; घोड़ेके मुँहपर लगाया जानेवाला चमड़ा, सरबंद। **–चीँ**–वि० नुक्स या ऐब निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी। **–चीनी**–स्त्री० दोष या ऐब निकालनेका काम, छिद्रान्वेषण।

नुक़ता–पु० [अ०] धब्बा, दाग; बिंदु; लिखावटमें अक्षरोंपर लगायी जानेवाली बिंदी; सिफर, सुन्ना।

नुकती–स्त्री० एक तरहकी मिठाई।

नुकना*–अ० क्रि० छिपना।

नुक़रा–पु० [अ०] चाँदी; घोड़ेका सफेद रंग। वि० सफेद रंगका (घोड़ा)।

नुकसान–पु० [अ०] कमी, न्यूनता; हानि, क्षति; ऐब, दोष। **मु०–उठाना**–क्षतिग्रस्त होना। **–पहुँचना**–हानि होना। **–पहुँचाना**–हानि करना।

नुकाना*–स० क्रि० छिपाना।

नुकीला–वि० नोकवाला, नोकदार; बाँका, तिरछा; सुंदर।

नुक्कड़–पु० नोक; मोड़, छोर; निकला हुआ कोना।

नुक़्स–पु० [अ०] ऐब, दोष; खामी, त्रुटि।

नुचना–अ० क्रि० नोचा जाना।

नुचवाना–स० क्रि० नोचनेका काम दूसरेसे कराना।

नुत–वि० [सं०] जिसे प्रणाम किया गया हो, वंदित।

नुत्फ़ा–पु० [अ०] वीर्य, शुक्र; संतान।

नुनख(खा)रा–वि० नमककेसे स्वादवाला, नमकीन।

नुनना–स० क्रि० तैयार फसलको काटना।

नुनाई*–स्त्री० लावण्य, शोभा, सौंदर्य।

नुनेरा–पु० नोना मिट्टी आदिसे नमक तैयार करनेका पेशा करनेवाला; नोनिया।

नुमा–वि० [फा०] जाहिर करनेवाला; दिखानेवाला; बतानेवाला; सदृश, मानिंद (केवल समासमें व्यवहृत)।

नुमाइंदगी–स्त्री० [फा०] प्रतिनिधित्व।

नुमाइंदा–पु० [फा०] प्रकट करनेवाला; प्रतिनिधि।

नुमाइश–स्त्री० [फा०] दिखावा, प्रदर्शन; सूरत, शक्ल; अनेक प्रकारकी अद्भुत वस्तुओंका प्रदर्शन; वह मेला जहाँ भिन्न-भिन्न स्थानोंकी अनेक प्रकारकी कुतूहलवर्द्धक, अद्भुत तथा सुंदर वस्तुओंका प्रदर्शन किया जाता है, प्रदर्शनी। **–गाह**–पु०, स्त्री० वह स्थान जहाँ नुमाइश हो।

नुमाइशी–वि० [फा०] दिखावटी; तड़क-भड़कवाला; सुंदर।

नुसखा–पु० [अ०] लिखा हुआ कागज; नकल, कापी; वह कागज जिसपर हकीम, डाक्टर या वैद्य दवा, उसके प्रयोगकी विधि आदि लिखते हैं; किसी हकीम, डाक्टर या वैद्यके द्वारा रोगविशेषके लिए निकाली गयी औषध, योग। **मु०–बाँधना**–नुसखेमें लिखी हुई दवाएँ देना।

नुहरना*–अ० क्रि० दे० 'निहुरना'।

नूत*–वि० नया, नवीन।

नूतन–वि० [सं०] नया, नवीन, अभिनव; अपूर्व, अद्भुत।

नूतनता–स्त्री०, **नूतनत्व**–पु० [सं०] नूतन होनेका भाव, नयापन, नवीनता।

नूतनीकरण–पु० [सं०] (रिनोवेशन) दे० 'नवीकरण'।

नून–†पु० नमक; एक लता। *वि० दे० 'न्यून'। **–ताई***–स्त्री० न्यूनता, कमी। **–तेल**–पु० गृहस्थीकी सामग्री।

नूपुर–पु० [सं०] पैरका एक गहना, घुँघरू।

नूर–पु० [अ०] ज्योति, प्रकाश; द्युति, कांति, छवि; ईश्वरका एक नाम (सूफ़ी)। **–चश्म**–पु० प्यारा पुत्र। **–बाफ़**–पु० जुलाहा।

नूह–पु० [अ०] शामी या इबरानी मतोंके अनुसार बाबा आदमसे दसवीं पीढ़ीमें उत्पन्न एक पैगंबर।

नृ–पु० [सं०] नर, मनुष्य; शतरंजका मोहरा। **–कपाल**–पु० मनुष्यकी खोपड़ी। **–केशरी(रिन्‌)**–पु० नरसिंह अवतार; सिंहकेसे पराक्रमवाला मनुष्य। **–घ्न**–वि० मनुष्यको मारनेवाला, मनुष्यघातक। **–देव**–पु० ब्राह्मण; राजा। **–प**–पु० दे० क्रममें। **–पति, –पाल**–पु० राजा। **–लोक**–पु० मर्त्यलोक। **–वंश-विज्ञान**–पु० (एनथ्रोपॉलॉजी) मानववंशकी उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मानवविज्ञान। **–शंस**–वि० मनुष्योंको सतानेवाला, क्रूर, अत्याचारी। **–श्रृंग**–पु० मनुष्योंके सींग जैसी असंभव वस्तु या बात। **–सिंह**–पु० सिंहरूपधारी विष्णु, विष्णुका चतुर्थ अवतार (इसी अवतारमें विष्णुने हिरण्यकशिपुका नाश किया था); सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य। **–हरि**–पु० नृसिंह।

नृग–पु० [सं०] एक महादानी पौराणिक राजा जो एक ब्राह्मणके शापसे गिरगिट हो गये थे।

नृतक*–पु० दे० 'नर्तक'।

नृतना, नृत्तना*–अ० क्रि० नाचना।

नृत्त–पु० [सं०] वह नाच जिसमें केवल अंगोंका विक्षेप किया जाय।

नृत्य–पु० [सं०] ताल, लय और रसके अनुसार विलासपूर्वक अंगोंका विक्षेप करनेका एक व्यापार, ताल, लय तथा रसके अनुसार किया जानेवाला नाच (इसके दो प्रधान भेद हैं–(१) तांडव और (२) लास्य)। **–प्रिय**–पु० शिव; मोर। **–शाला**–स्त्री० नाचघर। **–स्थान**–पु० रंगशाला।

नृप–पु० [सं०] (मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला) राजा। **–गृह**–पु० राजभवन, राजमहल। **–द्रुम**–पु० खिरनीका पेड़; अमलतास। **–नीति**–स्त्री० राजनीति। **–वल्लभा**–स्त्री० रानी; केतकी। **–सभा**–स्त्री० राजाकी सभा। **–सुत**–पु० राजकुमार। **–सुता**–स्त्री० राजकुमारी।

नृपांश–पु० [सं०] राज-कर, उपजका छठा या आठवाँ भाग।

नृपात्मज–पु० [सं०] राजकुमार (स्त्री० नृपात्मजा)।

नृपोचित–वि० [सं०] जो राजाके योग्य या अनुरूप हो।

नेअमत–स्त्री० [अ०] दे० 'नेमत'।

नेइँ, नेई*–स्त्री० दे० 'नीवँ'।

नेउछावरि†–स्त्री० दे० 'न्योछावर'।

नेउतना†–स० क्रि० दे० 'नेवतना'।

नेउतहरि, नेउतहरी*–पु० निमंत्रित व्यक्ति।

नेउता†–पु० दे० 'नेवता'।

नेउला†–पु० दे० 'नेवला'।

नेक*–अ० जरा, थोड़ा। वि० जरा, थोड़ा-सा; [फा०] अच्छा, भला, उम्दा। **–अंजाम**–वि० जिसका परिणाम भला हो। **–अंदेश**–वि० भलाई चाहनेवाला, हितैषी। **–ख़्वाह**–वि० स्वामिभक्त, वफादार। **–चलन**–वि० अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी। **–चलनी**–स्त्री० अच्छा चाल-चलन, सदाचारिता। **–दिल**–वि० अच्छी नीयतवाला। **–नाम**–वि० जो अच्छे कामके लिए प्रसिद्ध हो, जिसकी अच्छी ख्याति हो, सुख्यात, यशस्वी। **–नामी**–स्त्री० नेकनाम होनेका भाव या सद्‌गुण, सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति। **–नीयत**–वि० अच्छी नीयतवाला, किसीकी बुराई न चाहनेवाला। **–नीयती**–स्त्री० नेकनीयत होनेका भाव, भलमनसाहत; ईमानदारी।

नेकी–स्त्री० [फा०] भलाई, उपकार, अच्छा काम, हित। **–बदी**–स्त्री० भलाई-बुराई। **मु०–और पूछ-पूछ?**–कहीं नेकी भी पूछ-पूछकर की जाती है? जिसकी भलाई करनी हो उससे पूछनेकी जरूरत नहीं।

नेकु*–वि० थोड़ा, जरासा। अ० जरा, थोड़ा।

नेग–पु० विवाहादि मांगलिक अवसरोंपर सगे-संबंधियों तथा पौनियोंको खुश करनेके लिए द्रव्य-वस्त्र आदि देनेकी रस्म; इस रस्मके निमित्त दिया जानेवाला द्रव्य-वस्त्र आदि।

नेगटी*–पु० नेग या रीतिका अनुसरण करनेवाला, प्रथाका पालन करनेवाला।

नेगी–पु० नेग पानेवाला, वह जिसे नेग पानेका हक हो; * संपत्ति आदिका प्रबंधक।

नेछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नेजा–पु० [फा०] भाला; राजाओंका निशान; चिलगोजा। **–बरदार**–पु० नेजा लेकर चलनेवाला।

नेजाल*–पु० भाला।

नेटा†–पु० नाकके रास्ते निकलनेवाला कफ या मल।

नेठना*–अ० क्रि० दे० 'नाठना'।

नेड़े†–अ० निकट, समीप।

नेत*–पु० किसी बातका निश्चित होना, निर्धारण; पक्का

इरादा, निश्चय; आयोजन, प्रबंध; मथानीमें लगायी जानेवाली रस्सी; एक गहना । स्त्री० दे० 'नेती', * दे० 'नीयत'; * एक प्रकारकी रेशमी चादर ।

नेता–पु० मथानीकी रस्सी ।

नेता(तृ)–पु० [सं०] दलविशेष या जनताको किसी ओर ले चलनेवाला, नायक, अगुआ, सरदार; पहुँचानेवाला ।

नेति–[सं०] ब्रह्म या ईश्वरकी अनंतता सूचित करनेवाला एक औपनिषद वाक्य जिसका अर्थ है 'अंत नहीं है' अर्थात् ब्रह्म या ईश्वरकी महिमा अपार है । * स्त्री० नीयत ।

नेती–स्त्री० मथानीकी रस्सी जिसे खींचनेसे वह घूमती है ।

नेतीधौती–स्त्री० पेटमें कपड़ेका लंबी पतली पट्टी डालकर आँतें साफ करनेकी एक क्रिया ।

नेत्र–पु० [सं०] आँख; मथानीमें लगायी जानेवाली रस्सी; दोकी संख्या (ज्यो०) । **–कनीनिका**–स्त्री० आँखकी पुतली । **–च्छद**–पु० पलक । **–ज,–जल**–पु० आँसू । **–पिंड**–पु० आँखका गोलक; बिलाव । **–मल**–पु० आँखका कीचड़ । **–रोग**–पु० आँखका रोग । **–वारि**–पु० आँसू । **–विज्ञान**–पु० (आप्टिक्स) दृष्टि और प्रकाशके स्वरूप तथा नियमों-सिद्धांतों आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान, दृष्टिविज्ञान ।

नेत्रांत–पु० [सं०] आँखका बाहरी कोना ।

नेत्रांबु, नेत्रांभ(स्)–पु० [सं०] आँसू ।

नेत्रामय–पु० [सं०] आँखका रोग ।

नेत्री–स्त्री० [सं०] दलविशेष या जनताको किसी ओर ले चलनेवाली, रहनुमाई करनेवाली; नाड़ी; नदी; लक्ष्मी ।

नेत्र्य–वि० [सं०] नेत्र-संबंधी; आँखोंके लिए हितकर ।

नेनुआ, नेनुवा–पु० एक तरकारी, घिवरा ।

नेपथ्य–पु० [सं०] वेश-भूषा; नटोंकी वेश-भूषा; रंगमंचके परदेके पीछेकी जगह जहाँ नटोंकी वेशरचना की जाती है ।

नेपुर*–पु० दे० 'नूपुर' ।

नेफ़ा–पु० [फ़ा०] पायजामे, लहँगे आदिका वह ऊपरी भाग जिसमें इजारबंद पिरोया जाता है ।

नेब*–पु० सहयोग करनेवाला, सहकारी; मंत्री ।

नेबुआ†–पु० दे० 'नीबू' ।

नेबू†–पु० दे० 'नीबू' ।

नेम†–पु० बँधा हुआ क्रम, नियम, पाबंदी; धर्मकी भावना-से किये जानेवाले व्रत, उपवास आदि; आचारका नियम; * प्रतिज्ञा; [सं०] छल, कैतव; अर्द्ध भाग; ऊपरका हिस्सा; सायंकाल; नृत्य; अन्न । वि० आधा । **–धरम**–[हिं०] पु० संध्यावंदन, पूजन आदि ।

नेमत–स्त्री० [अ०] ईश्वरकी देन; धन; स्वादिष्ट भोजन ।

नेमि–स्त्री० [सं०] पहियेका ढाँचा या घेरा; घेरा; कुएँकी जगत; जमवट; चरखी; कोर, किनारा । **–घोष**–पु०, **–ध्वनि**–स्त्री० पहियेकी 'घर-घर' आवाज ।

नेमी–वि० नेमसे रहनेवाला, नेमका पालन करनेवाला । स्त्री० [सं०] दे० 'नेमि' । **–धरमी**–वि० नेम-धरमसे रहनेवाला ।

नेयार्थता–स्त्री० [सं०] एक काव्यदोष ।

नेरा*–अ० पास, नजदीक ।

नेरे, नेरैं*–अ० समीप, नजदीक ।

नेव*–पु० दे० 'नेब' । स्त्री० दे० 'नीवँ' ।

नेवग*–पु० नेग, दस्तूर ।

नेवगी*–पु० दे० 'नेगी' ।

नेवछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

नेवज*–पु० देवताको अर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु, नैवेद्य ।

नेवज़ा–पु० [फ़ा०] चिलगोज़ा ।

नेवत†–पु० दे० 'न्योता' ।

नेवतना*–स० क्रि० निमंत्रित करना ।

नेवतहरी–पु० दे० 'न्योतहरी' ।

नेवता†–पु० दे० 'न्योता' ।

नेवना*–अ० क्रि० झुकना ।

नेवर–पु० नूपुर, घुँघरू । स्त्री० दो पैरोंके आपसमें ठोकर या रगड़ खानेसे घोड़ेके पैरमें होनेवाला घाव; घोड़ेके दो पैरोंकी आपसकी रगड़ । † वि० बुरा; न्यून ।

नेवरना*–अ० क्रि० निवारित होना, दूर होना ।

नेवला–पु० लंबा भूरे रंगका जंतु जो साँपको मार डालता है ।

नेवाज–वि० दे० 'निवाज' ।

नेवाजना*–स० क्रि० दे० 'निवाजना' ।

नेवाड़ा–पु० दे० 'निवाड़ा' ।

नेवाड़ी–स्त्री० नेवारी ।

नेवाना*–स० क्रि० झुकाना ।

नेवार–पु०, स्त्री० दे० 'निवार' ।

नेवारना*–स० क्रि० निवारण करना, दूर करना, हटाना ।

नेवारी–स्त्री० जूही या चमेलीकी जातिका एक पौधा जिसमें छोटे और सफेद फूल लगते हैं ।

नेसुक*–वि० थोड़ा, अल्प, रंचमात्र । अ० जरा, थोड़ासा ।

नेस्त–वि० [फ़ा०] जिसका अस्तित्व न हो, जो न हो । **–नाबूद**–वि० जड़-मूलसे नष्ट ।

नेह*–पु० स्नेह, प्रेम, प्यार; तेल या घी ।

नेही*–वि० स्नेही; प्रीति रखनेवाला, प्रेमी ।

नैःश्रेयस–वि० [सं०] कल्याणकारक; मोक्षदायक ।

नैःस्व–पु० [सं०] अकिंचनता, निर्धनता ।

नै–पु० दे० 'नय' । * स्त्री० नदी; [फ़ा०] बाँसकी नली; निगाली; बाँसुरी ।

नैऋत, नैऋत्य*–वि० निर्ऋति-संबंधी, नैर्ऋत्य । पु० मूलनक्षत्र; निशाचर; पश्चिम-दक्षिणका कोण ।

नैक, नैकु–वि०, अ० थोड़ा, अल्प, जरासा ।

नैकट्य–पु० [सं०] निकट होनेका भाव, निकटता, सामीप्य ।

नैगमिक–वि० [सं०] वेद-संबंधी; वेदोंसे निकला हुआ ।

नैचा–पु० [फ़ा०] एकमें बाँधी हुई हुक्केकी दोनों नलियाँ; बहुत दुबला-पतला आदमी (हास्य) । **–बंद**–पु० नैचा बनाने या बाँधनेवाला ।

नैची–स्त्री० मोट खींचते समय बैलोंके बार-बार आने और लौटनेके लिए कुएँके पास बनी हुई ढाल ।

नैतिक–वि० [सं०] नीति-संबंधी; नीतिका ।

नैत्यक नैत्यिक–वि०[सं०] नियमित रूपसे होने या किया जानेवाला; अनिवार्य ।

नैत्रिक–वि० [सं०] नेत्र-संबंधी, आँखोंका ।

नैदाघ–वि० [सं०] निदाघ-संबंधी; निदाघका, ग्रीष्मका ।

नैदाघिक, नैदाघीय–वि० [सं०] दे० 'नैदाघ' ।

नैदानिक–वि० [सं०] जो रोगोंका निदान जानता हो । पु० रोगका निदान करनेवाला ।

नैन*–पु० दे० 'नयन' । –**सुख**–पु० एक तरहका चिकना सूती कपड़ा ।

नैना*–पु० नेत्र । अ० क्रि० नयना, झुकना ।

नैनू–पु० एक तरहका बूटेदार सूती कपड़ा; * मक्खन ।

नैपुण, नैपुण्य–पु० [सं०] निपुण होनेका भाव, निपुणता, पटुता, चातुरी, कौशल; वह वस्तु जिसके लिए कौशल आवश्यक हो; समग्रता, पूर्णता ।

नैमित्तिक–वि० [सं०] निमित्त या शकुनको जाननेवाला; निमित्त या शकुन-संबंधी शास्त्रको पढ़नेवाला; किसी निमित्तसे किया जानेवाला, जो किसी निमित्तसे या विशेष प्रयोजनको दृष्टिमें रखकर किया जाय (जैसे–प्रायश्चित्तके रूपमें किया जानेवाला कर्म या पुत्रेष्टि यज्ञ); आकस्मिक; विशेष कारणसे उत्पन्न ।

नैयमिक–वि० [सं०] नियमके अनुसार होने या किया जानेवाला ।

नैया*–स्त्री० नाव ।

नैयायिक–पु० [सं०] न्यायशास्त्रका विद्वान् ।

नैरंतर्य–पु० [सं०] निरंतरत्व, अविच्छिन्नता ।

नैर*–पु० नगर, देश ।

नैरपेक्ष्य–पु० [सं०] निरपेक्ष होनेका भाव, उपेक्षा, तटस्थता ।

नैरर्थ्य–पु० [सं०] निरर्थक होनेका भाव, निरर्थकता ।

नैराश्य–पु० [सं०] निराश होनेका भाव, नाउम्मेदी; आशा या इच्छाका अभाव । –**वाद**–पु० (पैसिमिज्म) संसारको दुःखमय मानने, प्रत्येक वस्तु या घटनाको नैराश्यपूर्ण दृष्टिसे ही देखनेका सिद्धांत ।

नैरुक्त, नैरुक्तिक–पु० [सं०] निरुक्ति जाननेवाला ।

नैरुज्य–पु० [सं०] आरोग्य, स्वस्थता ।

नैर्गुण्य–पु० [सं०] निर्गुण होनेका भाव, सत्त्व आदि गुणोंसे रहित होनेका भाव, निर्गुणत्व; गुणराहित्य ।

नैर्घृण्य–पु० [सं०] निर्दयता, निष्ठुरता ।

नैर्मल्य–पु० [सं०] निर्मलता, स्वच्छता ।

नैर्लज्ज्य–पु० [सं०] लज्जाहीनता, बेहयाई ।

नैवेद्य–पु० [सं०] देवताको समर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु ।

नैश, नैशिक–वि० [सं०] निशा-संबंधी; निशाका ।

नैश्चल्य–पु० [सं०] निश्चल होनेका भाव, स्थिरता ।

नैश्चित्य–पु० [सं०] निश्चित होनेका भाव; निश्चित संस्कार ।

नैश्श्रेयस, नैश्श्रेयसिक–वि० [सं०] दे० 'नैःश्रेयस' ।

नैष्ठिक–वि० [सं०] निष्ठावाला; उपनयनसे लेकर मृत्युतक ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए गुरुकुलमें निवास करनेवाला (ब्रह्मचारी); किसी व्रतके अनुष्ठानमें लगा हुआ; निश्चयात्मक; स्थिर; पारंगत ।

नैष्ठुर्य–पु० [सं०] निठुराई, निर्दयता ।

नैष्ठ्य–पु० [सं०] नियम-निष्ठा; दृढ़ता ।

नैसर्गिक–वि० [सं०] निसर्ग-संबंधी; स्वाभाविक, सहज ।

नैसा*–वि० अनिष्ट, बुरा ।

नैसिक, नैसुक*–वि०, अ० दे० 'नेसुक' ।

नैहर–पु० स्त्रीके पिताका घर, मायका ।

नोइनी, नोई–स्त्री० वह रस्सी जिससे दूध दुहनेके समय गायकी पिछली टाँगें बाँधी जाती हैं ।

नोक–स्त्री० [फा०] किसी वस्तुका उस ओरका अग्रभाग जिस ओर वह पतली होती चली गयी हो; किसी चीजका निकला हुआ बारीक सिरा; किसी ओर निकला हुआ कोना । –**झोंक**–स्त्री० सजधज, सजावट, अलंकरण; ताव, अभिमान; ताना, छींटाकशी, चुटीली बात; छेड़खानी; संघर्ष; विवाद । –**दार**–वि० नोकवाला, नुकीला; चुटाला, चुभनेवाला; सजधजका, ठाटका ।

नोकना*–अ० क्रि० ललचना; आकृष्ट होना ।

नोकाझोंकी–स्त्री० छींटाकशी, ताानाजनी, एक दूसरेको चुटीली बातें कहना; झगड़ा, विवाद ।

नोकीला†–वि० दे० 'नुकीला' ।

नोखा*–वि० अनोखा, अद्भुत, अपूर्व ।

नोच–स्त्री० नोचनेका काम या भाव; छीनने या बलपूर्वक लेनेका कार्य; किसीको परेशान या बेबस करके उससे बार-बार कुछ लेना; बहुतसे व्यक्तियोंका कई ओरसे एक साथ माँगना । –**खसोट**–स्त्री० लूटपाट, छीनाझपटी ।

नोचना–स० क्रि० लगी या जमी हुई वस्तुको झटकेके साथ इस प्रकार खींचना कि वह अपने स्थानसे अलग हो जाय, झटकेसे उखाड़ना या तोड़ना; नख, दाँत आदिसे किसी वस्तुके कुछ अंशको खींचकर अलग करना; शरीरपर नख या पंजेसे इस प्रकार आघात करना कि खरोंच पड़ जाय; किसीको बेबस करके बार-बार उससे कुछ लेना, किसीको फेरमें डालकर बार-बार उससे कुछ न कुछ वसूल करना; इतना माँगना कि जी ऊब जाय ।

नोचानाची–स्त्री० दे० 'नोचखसोट' ।

नोचू–वि० नोचनेवाला; नोचखसोट करनेवाला ।

नोट–पु० [अं०] स्मरणके लिए लिख लेना, टाँकना; संक्षेप; छोटा पत्र या लिखा हुआ परचा; किसी घटना आदिके संबंधमें लिखित टिप्पणी; सरकार द्वारा रुपयेकी जगह चलाया गया वह कागज जिसपर उतने रुपयोंकी संख्या लिखी रहती है जितनेका वह होता है । –**पेपर**–पु० पत्र लिखनेका कागज । –**बुक**–स्त्री० वह पुस्तिका जिसमें आवश्यक बातें स्मरणार्थ लिख ली जाती हैं ।

नोटिस–स्त्री० [अं०] सूचना; इश्तहार, विज्ञापन ।

नोन†–पु० नमक । –**चा**–पु० नमकीन अचार; आमका एक प्रकारका अचार जो उसकी फाँकोंमें केवल नमक लगाकर तैयार किया जाता है; लोनी जमीन । –**छी**–स्त्री० लोनी मिट्टी । –**हरामी***–वि० नमकहराम ।

नोना†–पु० सीड़के कारण दीवार या जमीनमें लगनेवाला नमकका अंश; लोनी मिट्टी । वि० जिसमें नमकका अंश हो, खारा; अच्छा; सुंदर ।

नोनाचमारी–स्त्री० एक मशहूर जादूगरनी ।

नोनिया†–पु० एक जाति जो लोनी मिट्टीसे नमक तैयार करती है । स्त्री० एक भाजी जो स्वादमें नमकीन होती है ।

नोनी–स्त्री० लोनी मिट्टी; नोनिया नामकी भाजी ।

वि० स्त्री० अच्छी; सुंदर।

नोर*–वि० नया, नूतन। पु० आँसू।

नोल*–वि० दे० 'नवल'। † स्त्री० चिड़ियाकी चोंच।

नोवना*–स० क्रि० दुहनेके समय गायकी पिछली टाँगोंको एकमें बाँधना।

नोहर*–वि० जिसका मिलना कठिन हो, जो बड़ी कठिनाईसे मिले, दुष्प्राप्य; अपूर्व, अद्भुत।

नौ–स्त्री० [सं०] नाव; जहाज। **–कर्ण**–पु० जहाजकी पतवार। **–कर्णधार**–पु० पोतचालक। **–कर्म(न्)**–पु० मल्लाहकी वृत्ति, माझीका पेशा। **–जीविक**–पु० माझी। **–तरण**–पु० (नैविगेशन) दे० 'नौपरिवहन'। **–तरणीय**–वि०(नैविगेबिल) जिसमें नौका, जहाज आदि चल सकते हों (वह नदी, तालाव आदि); नौतार्य। **–तार्य**–वि० जो नावसे पार किया जाय। **–दंड**–पु० डाँड़ा। **–नेता(तृ)**–पु० वह जो जहाजकी पतवार पकड़े रहे, कर्णधार, नाविक। **–परिवहन**–पु० (नैविगेशन) जहाज आदिमें बैठकर जल-मार्गसे यात्रा करना। **–परिवहनविषयक**–वि० (नॉटिकल) समुद्र-यात्रा, जहाज द्वारा ले जाने या जहाजों, नाविकों आदिसे जिसका संबंध हो। **–प्रभार**–पु० (टनेज) पोत या जहाजपर लादे जा सकनेवाले मालका कुल भार; जहाजका खुद अपना भार या उस जलराशिका भार जो समुद्रादिमें संतरण किये जानेपर उसके द्वारा हटायी जाय। **–बल**–पु० (नेवी) जलसेना, जहाजी बेड़ा। **–बलाध्यक्ष**–पु० (एडमिरल) नौबल या नौसेनाका प्रधान सेनापति, नौसेनाका सबसे बड़ा अधिकारी। **–विज्ञान**–पु० (नॉटिकल साइंस) जहाजों, नाविकों या नौका-नयन-संबंधी विज्ञान। **–साधन**–पु० बेड़ा। **–सेना**–स्त्री० समुद्री लड़ाई लड़नेवाली सेना, जंगी जहाजोंपरसे लड़नेवाली सेना, जलसेना। **–सेनापति**–पु० नौसेनाका अध्यक्ष।

नौ–वि० आठ और एक, आठसे एक अधिक। पु० नौकी संख्या, ९। **–कड़ा**–पु० प्रतिव्यक्ति तीन-तीन कौड़ियाँ लेकर तीन व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ। **–गरँ, –गिरिही***–स्त्री० दे० 'नौगही'। **–गही, –ग्रही**–स्त्री० हाथका एक गहना। **–दसी**–स्त्री० किसानोंकी जमींदारोंसे रुपया लेनेकी एक रीति जिसके अनुसार वे सालभरमें ९) के बदले १०) देते हैं। स्त्री० नौ प्रकारकी भक्ति। **–नगा**–पु० नौ नगोंवाला हाथमें पहननेका एक गहना। **–मासा**–पु० गर्भाधानसे नवाँ मास; इस मासमें की जानेवाली रस्म जिसमें मिठाई आदि बँटती है। **–रतन**–पु० दे० 'नवरत्न'; नौनगा। स्त्री० खटाई, गुड़, मिर्च, केसर आदि नौ चीजोंसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी चटनी। **–रातर†**–पु०दे० 'नवरात्र'। **–लखा**–वि० जिसकी कीमत नौ लाख हो, नौ लाखका। **–सत***–पु० सोलहों श्रृंगार–'नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजा हेतु'–सू०। **–सरा**–पु० नौ लड़ियोंवाली माला। **–सरिया**–वि० चालबाज, फरेबी, जालिया। मु० **–दो ग्यारह होना**–चंपत होना, भाग जाना।

नौ*–वि० नव, नया। **–बद***–वि० जो हालमें बुरी दशासे अच्छी दशाको प्राप्त हुआ हो। **–रंग**–पु० एक पक्षी; * औरंग–औरंगजेब–शब्दका एक विकृत रूप। **–रस**–वि० ताजा पका हुआ (फल); नौजवान। **–रूप**–पु० नीलकी पहली कटाई। **–सिख, –सिखिया, –सिखुवा†**–वि० जिसने अभी सीखना आरंभ किया हो, जिसने अभी हालमें ही सीखा हो।

नौ–वि० [फा०] नया, हालका, ताजा। **–आबाद**–वि० हालका बसा हुआ, जहाँ लोग हालमें बसे हों। **–आबादी**–स्त्री० नया बसा हुआ स्थान या देश, उपनिवेश। **–जवान**–वि० चढ़ती जवानीवाला, नवयुवक। **–जवानी**–स्त्री० उठती जवानी, चढ़ती युवावस्था। **–निहाल**–पु० नवयुवक। **–बरार**–पु० वह जमीन जिसपर पहली बार मालगुजारी लगी हो। **–बाला**–स्त्री० वह लड़की जो हालमें बालिग हुई हो। **–मुसलिम**–वि० जो हालमें ही मुसलमान हुआ हो। **–रोज़**–पु० (पारसियोंका) वर्षका पहला दिन; त्योहार या खुशीका दिन। **–शहाना**–वि० दूल्हा जैसा, दूल्हेके समान। **–शा, –शाह**–पु० नौजवान शाह; दूल्हा, वर। **–शी**–स्त्री० दुलहिन, नववधू।

नौकर–पु० [फा०] वह कर्मचारी जो वेतन लेकर किसीका काम करे; छोटे-मोटे कामोंको करनेके लिए नियुक्त किया गया वैतनिक सेवक, भृत्य, खिदमतगार। **–शाही**–स्त्री० कर्मचारियों द्वारा संचालित शासन-प्रबंध, दफ्तरी हुकूमत।

नौकराना–पु० दस्तूरी; वेतन या इनामके रूपमें नौकरको दी जानेवाली रकम; नौकर-खर्च।

नौकरानी–स्त्री० टहल करनेवाली स्त्री, दासी, भृत्या।

नौकरी–स्त्री० नौकरका काम या पेशा, सेवा, मुलाजमत। **–पेशा**–पु० नौकरी करके जीवन-निर्वाह करनेवाला मनुष्य।

नौका–स्त्री० [सं०] नाव; पोत। **–दंड**–पु० डाँड़ा।

नौकाधिकरण–पु०[सं०] (एडमिरलटी)दे० 'नावधिकरण'।

नौछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नौज–अ० ऐसी नौबत न आये, भगवान् न करे; कुछ परवाह नहीं, बलासे (स्त्रि०) [अ० नऊज–हम पनाह माँगते हैं] * पु० दे० 'नौजा'।

नौजा*–पु० बादाम; चिलगोजा।

नौजी–स्त्री० लीची।

नौतन*–वि० दे० 'नूतन'।

नौतम*–वि० बिलकुल नया; ताजा–'तुम सतगुरु मैं नौतम चेला'–कबीर। पु० नम्रता।

नौता*–वि० नया। पु० दे० 'न्योता'।

नौधा*–वि० नौ प्रकारकी (भक्ति)।

नौन*–पु० नमक।

नौना–अ० क्रि० नत होना, झुकना; नम्र होना। * वि० सुंदर।

नौबत–स्त्री० [फा०] बारी; गत, दुर्दशा; स्थिति, योग; हालत, दशा; उत्सव, मंगल आदि सूचित करनेवाला बाजा; समय-समयपर बजनेवाला बाजा; धौंसा, नगाड़ा। **–ख़ाना**–पु० नौबत बजानेका फाटकके ऊपरका कमरा या स्थान। **–नवाज़**–पु० नक्कारची। मु० **–की टकोर**–धौंसेकी

आवाज । **–गुजरना**–मौका जाता रहना । **–झड़ना**–नौबत बजना । **–बजना**–आमोद-प्रमोद होना, खुशी मनायी जाना । **–बजाकर**–सरेआम, गा-बजाकर । **–बजाना**–आमोद-प्रमोद करना, खुशी मनाना ।

नौबती–पु० [फा०] नौबत बजानेवाला; चौकीदार, पहरेदार; सजा हुआ, पर बिना सवारका घोड़ा, कोतल घोड़ा; भारी खेमा या तंबू । वि० बारीका (जैसे–नौबती बुखार)। **–दार**–पु० खेमेका चौकीदार; प्रहरी, द्वारपाल ।

नौमि–[सं०] प्रणाम करता हूँ ।

नौमी–स्त्री० दे० 'नवमी' ।

नौल*–वि० दे० 'नवल' ।

नौशेरवाँ–पु० [फा०] ईसाकी छठी सदीका फारसका एक अति न्यायप्रिय प्रतापी बादशाह ।

नौसादर–पु० एक प्रकारका क्षार जो प्रायः जानवरोंके मलमूत्रसे तैयार किया जाता है ।

न्यग्रोध–पु० [सं०] वड़, बरगद; शमीका पेड़; बाहु ।

न्यसन–पु० [सं०] किसीके पास जमा करना; रखना; देना; छोड़ देना ।

न्यस्त–वि० [सं०] रखा या डाला हुआ; छोड़ा हुआ, त्यक्त; भरा हुआ, निहित ।**–शस्त्र**–वि० जिसने हथियार डाल दिये हों; निहत्था, अरक्षित ।

न्याइ, न्याउ†–पु० दे० 'न्याय' ।

न्याति*–स्त्री० जाति ।

न्याय–पु० [सं०] उचित-अनुचितका विवेक, नीतिसंगत बात, इंसाफ; विवाद या मामलेमें दोनों पक्षोंकी सचाई-झुठाई आदिके अनुसार किया गया निबटारा, फैसला; विष्णु; सादृश्य; ६ आस्तिक दर्शनोंमेंसे एक जिसके प्रवर्तक गौतम ऋषि माने जाते हैं; प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण आदि ६ अंगोंवाला वाक्य जिससे पदार्थानुमान संपन्न होता है (न्या०); लोक-शास्त्रमें विशिष्ट प्रसंगमें प्रयुक्त होनेवाला कहावतकी तरहका दृष्टांत-वाक्य (जैसे–देहलीदीपन्याय)। * वि० ठीक, उचित; जैसा, समान । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० न्याय करनेवाला, फैसला करनेवाला, विचारपति, निर्णायक ।**–ज्ञ**–पु० (जूरिस्ट) न्यायशास्त्रका ज्ञाता । **–पथ**–पु० न्यायका मार्ग, न्यायोचित मार्ग; मीमांसा-दर्शन ।**–पर**–वि० न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायी । **–परता**–स्त्री० न्यायपर होनेका भाव ।**–परायण**–वि० दे० 'न्यायपर' । **–परायणता**–स्त्री० दे० 'न्यायपरता' । **–पालिका**–स्त्री० (जूडिशियरी) देशके न्यायाधीशोंका समूह; देशका न्याय-विभाग या न्याय-व्यवस्था । **–पीठ**–पु० (बेंच) न्यायाधीशका आसन, धर्मासन । **–प्रिय**–वि० जिसे न्याय प्रिय हो, न्यायशील । **–मूर्ति**–पु०: (जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति' । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० न्यायानुसार आचरण करनेवाला । **–वादी(दिन्)**–वि० उचित बात कहनेवाला ।**–विभ्रंश**–पु० (मिसकैरिज ऑफ जस्टिस) न्यायका उचित मार्गसे भ्रष्ट हो जाना, न्यायके लक्ष्यकी सिद्धिसे बहक जाना, न्यायवैफल्य । **–शास्त्र**–पु० (जूरिसप्रूडेंस) न्याय या विधि-संबंधी शास्त्र । **–शील**–वि० दे० 'न्यायपर' । **–शुल्क**–पु० न्यायालयमें आवेदनपत्र देते समय लगनेवाली फीस, कोर्टफी । **–संगत**–वि० न्यायोचित । **–सभा**–स्त्री० अदालत, कचहरी, न्यायालय ।**–सभ्य**–पु० (जूरी) फौजदारीके कुछ खास-खास मुकदमोंका विचार करते समय दौरा जजकी सहायता करनेके लिए नियुक्त सभ्यगण, जिनकी संख्या प्रायः ३ से ५ तक होती है (इनसे न्यायाधीशका मतभेद होनेपर मामला उच्च न्यायालयमें भेज दिया जाता है)।

न्यायतः–अ० [सं०] न्यायके अनुसार, न्यायसे ।

न्यायाधिकरण–पु० [सं०] (ट्राइब्यूनल) किसी विवादग्रस्त विषय या विषयोंपर विचार कर न्यायिक निर्णय करनेवाला अधिकारी या इसी उद्देश्यसे स्थापित विशेष न्यायालय ।

न्यायाधिपति–पु० [सं०] (जस्टिस) राज्यके मुख्य न्यायालय या देशके सर्वोच्च न्यायालयका न्यायाधीश, न्यायमूर्ति (इन न्यायाधीशोंमें जो प्रधान होता है उसे मुख्य न्यायाधिपति (चीफ जस्टिस) कहते हैं)।

न्यायाधीश–पु० [सं०] (जज) विवाद या मामलेका निबटारा करनेवाला अधिकारी, न्यायकर्ता, विचारपति, ।

न्यायालय–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ न्यायाधीश विवाद या मामलेका निर्णय करता है, अदालत, कचहरी ।

न्यायिक निर्णय–पु० (एडजुडिकेशन) न्यायासनपर बैठकर किसी मामलेके संबंधमें निर्णय देना या इस तरह दिया गया निर्णय ।

न्यायिक प्राधिकारी–पु० (जुडीशल अथॉरिटी) न्याय-विभागका प्राधिकारी ।

न्यायिक मुद्रांक–पु० (जुडीशल स्टांप) न्यायालयके कागज-पत्रोंपर लगायी जानेवाली मुहर या मुद्राकी छाप।

न्यायी(यिन्)–वि० [सं०] न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायके पथपर चलनेवाला ।

न्यायोचित–वि० [सं०] जो न्यायतः ठीक या उचित हो, जो न्यायके विरुद्ध न हो ।

न्याय्य–वि० [सं०] न्यायसंगत, न्यायोचित ।

न्यार*–वि० दे० 'न्यारा' । पु० तिन्नी धान, निवार ।

न्यारा–वि० जो दूर हो, दूरस्थ, दूरका; जो अलग हो; दूसरे प्रकारका, भिन्न, दीगर; अद्भुत, विचित्र, अपूर्व ।

न्यारिया–पु० वह जो सुनारोंकी दूकानकी राख आदिमेंसे सोना-चाँदी निकाले ।

न्यारे–अ० दूर; अलग ।

न्याव–पु० उचित-अनुचितका विवेक, इंसाफ; विवाद या मामलेका निर्णय, फैसला; आचारकी रीति ।

न्यास–पु० [सं०] रखना, स्थापना; उचित स्थानपर रखना; धरोहर, निक्षेप, अमानत; अर्पण; छोड़ना, तजना, त्याग; चिह्न, निशान; अंकन; स्वर मंद करना; (ट्रस्ट) किसी विशेष कार्यमें लगानेके लिए विश्वासपूर्वक सौंपी हुई संपत्ति या इस प्रकार सौंपनेका कार्य। **–धारी(रिन्)**–पु० (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे ऐसी संपत्ति सौंपी जाय; धरोहर रखनेवाला ।

न्यासी(सिन्)–पु० [सं०] (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे किसी धन या संपत्तिका न्यास (विशेष उद्देश्यसे विश्वासपूर्वक समर्पण) कर दिया गया हो; दे० 'न्यासधारी' ।

न्यून–वि० [सं०] जो घटकर हो; कम, थोड़ा; विकारयुक्त,

विकृत; हीन; नीच; निकृष्ट । **–कोण**–पु० (ऐक्यूट-एंगिल) वह कोण जो एक समकोणसे छोटा हो । **–कोणत्रिभुज**–पु० (ऐक्यूट-एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसके तीनों कोण न्यूनकोण हों । **–धी**–वि० कमअक्ल, मूर्ख । **–पोषण**–पु० (मैलन्यूट्रीशन) खाद्य-वस्तुओंकी खराबी, कमी आदि के कारण पर्याप्त पोषणका न मिलना, कुपोषण; (अंडर-नरिशमेंट) पोषणकी या पोषक तत्त्वोंकी कमी ।

न्यूनता–स्त्री० [सं०] न्यून होनेका भाव; कमी; हीनता । **–बोधक**–वि० (डिम्यूनिटिव) यह उससे न्यून या छोटा है, यह बोध करानेवाला (शब्द), ऊनवाचक, अल्पार्थक ।

न्यूनन–पु० (एब्रिजमेंट) घटा देना, कम कर देना, छोटा कर देना, संक्षेपण ।

न्यूनांग–वि० [सं०] जिसका कोई अंग विकृत हो ।

न्यूनाधिक–वि० [सं०] कम-बेश; असम ।

न्यूनीकरण–पु० [सं०] (अबेटमेंट) कम कर देना, घटा देना ।

न्यूनोन्नत क्षेत्र–पु० [सं०] (अंडर-डेवेलप्ड एरिया) वह भूभाग जो उद्योगों, खनिज द्रव्यों आदिकी दृष्टिसे बहुत पिछड़ा हुआ हो, जिसकी बहुत कम उन्नति हुई हो ।

न्योछावर–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

न्योजी*–स्त्री० लीची; चिलगोजा ।

न्योतना–स० क्रि० भोज आदिके लिए निमंत्रित करना ।

न्योतनी–स्त्री० विवाहादि अवसरोंपर होनेवाला भोज ।

न्योतहरी–पु० निमंत्रित व्यक्ति ।

न्योता–पु० निमंत्रण; भोज आदिका निमंत्रण, दावत; वह रकम या वस्तु जो न्योतहरी न्योता देनेवालेको देता या उसके यहाँ भेजता है ।

न्योरा*–पु० दे० 'नेवला'; बड़े दानोंका घुँघरू ।

न्वैनी*–स्त्री० दे० 'नोई' ।

न्हवाना*–स० क्रि० नहलाना, स्नान कराना ।

न्हान*–पु० स्नान ।

न्हाना*–अ० क्रि० नहाना ।

प

प–देवनागरी वर्णमालाका २१वाँ व्यंजन वर्ण ।

पंक–पु० [सं०] कीचड़; दलदल; पाप; लेप । **–क्रीड, –क्रीडन**–पु० सूअर । **–ज**–वि० जो कीचड़में उत्पन्न हो । पु० कमल; सारस पक्षी । **–ज-जन्मा(न्मन्)**–पु० ब्रह्मा । **–ज-नाभ**–पु० विष्णु । **–ज-राग**–पु० पद्मराग मणि । **–जात**–पु० कमल । **–रुह**–पु० कमल ।

पंकजासन–पु० [सं०] ब्रह्मा ।

पंकजिनी–स्त्री० [सं०] कमलका पौधा; पद्म-राशि; कमल-पूर्ण स्थान; कुमुद-दंड ।

पंकिल–वि० [सं०] पंकयुक्त, जिसमें कीचड़ मिला हो ।

पंकिलता–स्त्री० [सं०] कलुष; कालिमा; गंदगी ।

पंकेरुह–पु० [सं०] कमल; सारस ।

पंक्ति–स्त्री० [सं०] वह समूह जिसमें प्रायः सजातीय पदार्थ या व्यक्ति एक दूसरेके पीछे या बगलमें क्रमके अनुसार स्थित हों, श्रेणी, कतार; पाँचका समाहार; दसकी संख्या; भोजमें एक साथ खानेवालोंकी पाँत, पंगत । **–च्युत**–वि० (डिग्रेडेड) दे० 'कोटिच्युत', जो अपनी पंक्ति या कोटि(दरजे)से नीचे हटा दिया गया हो । **–पावन**–पु० विद्या, तप आदिसे विशिष्ट ब्राह्मण जिससे श्राद्धमें निमंत्रित ब्राह्मणोंकी पंक्ति पवित्र हो जाती है; वह ब्राह्मण जो पंक्तिदूषक द्वारा अपवित्र की गयी पंक्तिको पवित्र बना देता है (मनु०), पंक्तिदूषकका उलटा । **–बद्ध**–वि० श्रेणीबद्ध ।

पंख–पु० पर, डैना । मु० **–जमना**–भागने, खिसकने, कुमार्गपर चलने या प्राण गँवानेका लक्षण प्रकट होना । **–लगाना**–पक्षीकीसी गतिसे युक्त होना; उड़ान भरना ।

पँखड़ी–स्त्री० फूलका वह पत्ता जैसा अवयव जिसके संकोचसे वह मुकुलित रहता है और फैलावसें खिलता हैं, फूलकी पत्ती, पुष्पदल ।

पंखा–पु० वह वस्तु जिससे हवा की जाती है । **–कुली**–पु० पंखा खीचनेवाला नौकर । **–पोश**–पु० पंखेका खोल । मु० **–करना**–पंखा डुलाकर किसी ओर हवाका झोंका देना; पंखा डुलाकर वायुका संचार करना ।

पँखिया*–स्त्री० भूसीके महीन टुकड़े; पँखड़ी ।

पंखी–पु० पक्षी; पाँखी । स्त्री० छोटा पंखा ।

पँखुड़ा, पँखुरा†–पु० दे० 'पखुरा' ।

पँखुड़ी, पँखुरी*–स्त्री० दे० 'पँखुड़ी' ।

पँखेरू†–पु० दे० 'पखेरू' ।

पंग*–वि० लँगड़ा; कुंठित; बेकाम; अवरुद्ध; स्तब्ध ।

पंगत, पंगति–स्त्री० पंक्ति, कतार; भोजमें एक साथ खानेवालोंकी पाँत; समाज; भोज ।

पंगा–वि० दे० 'पंगु' ।

पंगु–वि० [सं०] जो पाँवके बेकाम होनेसे चल-फिर न सकता हो; जो चल न सके, गतिहीन ।

पंगुता–स्त्री०, **पंगुत्व**–पु० [सं०] लँगड़ापन ।

पंगुल–वि० [सं०] पंगु ।

पंच(न्)–वि० [सं०] पाँच । **–कन्या**–स्त्री० अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी–ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या रहीं । **–कल्याण, –कल्याणक**–पु० वह घोड़ा जिसके पैरों और मुँहका रंग सफेद हो (ऐसा घोड़ा बहुत मांगलिक माना जाता है) । **–कवल**–पु० भोजनके पहले पक्षियों आदिके लिए निकाला जानेवाला पाँच ग्रास अन्न । **–काम**–पु० पाँच प्रकारके कामदेव जिनके नाम ये हैं–काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु । **–कोण**–पु० पाँच भुजाओंवाला क्षेत्र (ज्या०) । वि० पाँच कोनोंवाला । **–कोसी**–स्त्री० [हिं०] काशीकी परिक्रमा । **–क्रोशी**–स्त्री० पाँच कोसका फासला; काशीपुरी जो पाँच कोसोंमें बसी हुई है । **–गंग**–पु० गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा–इन पाँच नदियोंका समाहार । **–गंगा(घाट)**–पु० [हिं०] काशीका एक प्रसिद्ध स्थान जो कई नदियोंका संगमस्थान माना जाता है । **–गव्य**–पु० गायके दूध, दही, घी, गोबर और

मूत्रको एकमें मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक पदार्थ जो बहुत पवित्र माना जाता है। **-गुण**-पु० शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध-ये पांच गुण। वि० पँचगुना। **-गौड़**-पु० उत्तरी भारतके पाँच प्रकारके ब्राह्मण-सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और औत्कल (उत्कल)। **-तत्त्व**-पु० पृथ्वी, जल आदि पंचभूत; पंचमकार। **-तपा(पस्)**-पु० पंचाग्निका ताप लेनेवाला। **-तरु**-पु० मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन-का समाहार। **-तिक्त**-पु० पाँच कड़वी ओषधियों-गुरुच, भटकटैया, सोंठ, कुट और चिरायता-का समाहार। **-दशी**-स्त्री० पूर्णिमा; अमावस्या। **-देव**-पु० विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा-ये देवता जिनकी उपासना स्मार्त हिंदू करते हैं। **-द्राविड़**- पु० दक्षिण भारतके पाँच प्रकारके ब्राह्मण-महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाकट, गुर्जर और द्राविड़। **-नद**-पु० पाँच नदियोंवाला देश, पंजाब; दे० 'पंचगंग'। **-नाथ**-पु० बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ। **-पात्र**-पु० पाँच पात्रोंका समाहार; पूजनके कामका गिलासके आकारका एक पात्र। **-पिता**-पु० [हिं०] दे० 'पंचपितृ'। **-पितृ**-पु० पाँच प्रकारके पिता-पिता, उपनेता, श्वशुर, अन्नदाता और भयत्राता। **-प्राण**-पु० शरीरमें संचरण करनेवाली वायुके पाँच भेदोंका समाहार-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। **-बाण, -शर**-पु० कामदेव; कामदेवके पाँच प्रकारके बाण-सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण और तापन। **-बाहु**-पु० शिव। **-भद्र**-पु० एक प्रकारका सुलक्षण घोड़ा जिसके मुँह, पीठ, छाती, दोनों बगलोंपर एक धब्बा होता है। वि० पाँच गुणोंवाला (व्यंजन आदि); दुष्ट। **-भर्तारी**-स्त्री० [हिं०] द्रौपदी। **-भूत**-पु० पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश-ये पाँच तत्त्व। **-मकार**-पु० वामाचारके अंतर्गत वे पाँच वस्तुएँ जिनके नामका प्रथम अक्षर 'म' है-मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन। **-महापातक**-पु० पाँच प्रकारके महापातक-ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुतल्प-गमन और उक्त चार महापातकोंको करनेवालेका संसर्ग (मनु०)। **-महायज्ञ**-पु० गृहस्थोंके लिए विहित वे पाँच कृत्य जिन्हें करनेसे पंचसूना संबंधी हिंसाके दोषसे छुटकारा मिलता है-ये कृत्य निम्नलिखित हैं-(१) स्वाध्याय-ब्रह्मयज्ञ, (२) होम-देवयज्ञ, (३) बलिवैश्वदेव-भूतयज्ञ, (४) पिंड-क्रिया-पितृयज्ञ, (५) अतिथिपूजन-नृयज्ञ। **-महाव्याधि**-स्त्री० अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद-ये पाँच दुःसाध्य व्याधियाँ। **-मुख**-पु० शिव; सिंह; पाँच नोकोंवाला बाण। वि० जिसके पाँच मुख हों। **-रत्न**-पु० पाँच रत्न; पाँच प्रकारके रत्न-नीलम, हीरा, पद्मराग मणि, मोती और मूँगा; महाभारतके पाँच प्रसिद्ध आख्यान। **-राशिक**-पु० गणितकी एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियोंके द्वारा पंचम राशि निकाली जाती है। **-लवण**-पु० दे० 'पंच क्षारगण' पाँच प्रकारके लवण-काल, सैंधव, सामुद्र, विट् और सौवर्चल। **-लौह**-पु० सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा और सीसा-ये पाँच धातुएँ; इन पाँचोंके योगसे बनी धातु। **-वक्त्र**-पु० दे० 'पंचमुख'। **-वक्त्रा**-स्त्री० दुर्गा। **-वटी**-स्त्री० पीपल, बेल, बड़, हड़ और अशोक-इन पाँच वृक्षोंका समाहार। **-वाण**-पु० दे० 'पंचवाण'। **-वृक्ष**-पु० पाँच देववृक्ष-मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन। **-सरा***-पु० कामदेव। **-सुगंधक**-पु० कपूर, शीतलचीनी, लौंग, सुपारी और जायफल-ये पाँच सुगंध पदार्थ। **-सूना**-स्त्री० गृहस्थके घरमें निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे-छोटे कीड़ोंकी हिंसा हो जाया करती है-चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानीका घड़ा। **-स्नेह**-पु० घी, तेल, चरबी, मज्जा और मोम-ये पाँच चिकने पदार्थ।

पंच-पु० पाँच या अधिक मनुष्योंका समूह; सर्वसाधारण; न्याय करनेवाली सभा; पंचायतका सदस्य; (आर्बिट्रेटर) दो पक्षोंके बीचका झगड़ा निपटानेके लिए, दोनोंकी स्वीकृतिसे नियुक्त कोई तटस्थ व्यक्ति, जिसका अभिनिर्णय माननेके लिए दोनों बाध्य हों; जूरीका सदस्य। **-नामा**-पु० वह कागज जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूहको अपने मामलेका फैसला करनेका अधिकार देते हैं; वह कागज जिसपर पंचोंने अपनी तजवीज लिखी हो। **-निर्णय**-पु० (आर्बिट्रेशन) पंच द्वारा किया गया निर्णय। **-न्यायाधिकरण**-पु० (आर्बिट्रल ट्रिब्यूनल) वह अदालत जिसमें मामलेका निपटारा पंचों द्वारा किया जाय। **मु०-की दुहाई**-सहायताकी पुकार। **-परमेश्वर**-पंचोंका कहना ईश्वरीय वाक्यके समान है। **-बदना, -मानना**-झगड़ेका फैसला करनेके लिए मध्यस्थ बनाना।

पँच-वि० पाँचका समासमें व्यवहृत रूप। **-तोरिया***-पु० एक तरहका बढ़िया कपड़ा। **-तोलिया**-पु० पाँच तोलेका बाट; एक तरहका बढ़िया कपड़ा। **-मेल**-वि० जिसमें पाँच प्रकारकी वस्तुओंका मेल हो; जिसमें कई तरहकी चीजें मिली हों। **-रंग, -रंगा**-वि० पाँच रंगोंवाला; कई रंगोंवाला; रंग-रबिंगा। **-लड़ा**-वि० पाँच लड़ोंका (हार)। **-लड़ी**-स्त्री० पाँच लड़ोंवाली माला। **-लरी**-स्त्री० दे० 'पँचलड़ी'। **-वाँसा**-पु० गर्भरक्षाके निमित्त प्रथम गर्भधानके पाँचवें महीने किया जानेवाला एक कृत्य।

पंचक-पु० [सं०] पाँचका समूह (समासमें); धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र; इन नक्षत्रोंका योगफल जिसमें प्रेतदाह, दक्षिणकी यात्रा आदि निषिद्ध हैं, पचखा; युद्धक्षेत्र।

पंचता-स्त्री०, **-पंचत्व**-पु० [सं०] शरीरके उपादानरूप पाँच महाभूतोंका अपने-अपने रूपको प्राप्त हो जाना; मृत्यु।

पंचम-वि० [सं०] पाँचवाँ; दक्ष, चतुर; सुंदर। पु० संगीतके सप्तकका पाँचवाँ स्वर जो कोयलकी कूकके सदृश माना जाता है; एक राग।

पंचमांगी-पु० (फिफ्थ कालमिस्ट) दूसरे देशसे गुप्त संबंध रखकर स्वदेशको हानि पहुँचानेवाला, देशद्रोही, भेदिया, जयचंद (स्पेनकी राजधानी मैड्रिडपर अधिकार करनेके लिए चार फौजोंको साथ लेकर बढ़नेवाले जनरल

फ्रंकोने पाँचवीं सेनाके रूपमें इन देशद्रोहियों या भेदियोंसे ही सहायता प्राप्त की थी, इसीसे इस तरहके लोग पाँचवीं सेनाके अंग या 'पंचमांगी' कहे जाने लगे)।

पंचमी–स्त्री० [सं०] चंद्रमाकी पाँचवीं कला; पक्षकी पाँचवीं तिथि; द्रौपदी; अपादान कारक।

पंचांग–वि० [सं०] पाँच अंगोंवाला। पु० पाँचका समाहार; पाँच अंग; किसी वृक्ष या पौधेके ये पाँच अंग–जड़, छाल, पत्ता, फूल और फल; घुटना, सिर, हाथ तथा छातीको पृथ्वीसे सटाकर और आँखको देवताके चरणोंकी ओर करके किया जानेवाला एक प्रकारका प्रणाम (तंत्र); तिथि, वार, योग, नक्षत्र और करण–इन पाँच अंगोंसे युक्त तिथिपत्र, पत्रा (ज्यो०); राजनीतिके ये पाँच अंग–सहाय, साधन, उपाय, देशकाल-भेद और विपत्-प्रतिकार; पंचभद्र घोड़ा; कछुवा।–**शुद्धि**–स्त्री० तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन पाँचकी निर्दोषता।

पंचाक्षर–वि० [सं०] पाँच अक्षरोंवाला। पु० एक छंद; शिवका पाँच अक्षरोंवाला मंत्र–'ॐ नमः शिवाय'।

पंचाग्नि–स्त्री० [सं०] पाँच प्रकारकी अग्नियाँ–अन्वाहार्य, पचन, गार्हपत्य, आहवनीय और आवसथ्य; चारों ओर जलती हुई चार अग्नियाँ तथा ऊपरसे सूर्यके तापका सेवन करनेका ग्रीष्म ऋतुमें किया जानेवाला एक तप; चीता, चिचड़ी, भिलावाँ, गंधक और मदार–ये पाँच बहुत गरम तासीरवाली ओषधियाँ (आ० वे०)।

पंचाट–पु० (अवार्ड) दे० 'परिनिर्णय'।

पंचात्मक–वि० [सं०] पाँच तत्त्वोंवाला (शरीर)।

पंचानन–वि० [सं०] पाँच मुँहोंवाला। पु० शिव; सिंह।

पंचानबे–वि० नब्बेसे पाँच अधिक, जो सौसे पाँच कम हो। पु० नब्बेसे पाँच अधिककी संख्या, ९५।

पंचामृत–पु० [सं०] पाँच द्रव्योंका समाहार; देवताओंके स्नान कराने और चढ़ानेके कामका एक पेय पदार्थ जो गायके दूध, दही, घी, मधु और चीनीके योगसे बनाया जाता है।

पंचाम्ल–पु० [सं०] बेर, अनार, अमलबेत, चूक और बिजौरा नीबू–ये पाँच खट्टे पदार्थ (आ० वे०)।

पंचायत–स्त्री० पंचोंकी मंडली या सभा; किसी मामले या झगड़ेके संबंधमें पंचों द्वारा किया जानेवाला विचार या निबटारा; कई आदमियोंका एकत्र होकर इधर-उधरकी बातें करना, गपशप करना (व्यंग्य); जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियोंका मंडल।

पंचायतन–पु० [सं०] पाँच देवताओंकी प्रतिमाओंका समुदाय।

पंचायती–वि० पंचायतका; जिसपर बहुतोंका अधिकार हो अनेक मनुष्योंका; जनताका; जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित, जिसका संचालन जनता द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधिमंडल करे। –**राज्य**–पु० जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य, गणतंत्र।

पंचाल–पु० [सं०] हिमालय तथा चंबलसे सीमित एक प्राचीन देश जो गंगाके दोनों ओर स्थित था (द्रुपद यहींके राजा थे–म० भा०); इस देशका निवासी; यहाँका राजा।

पंचालिका–स्त्री० [सं०] कपड़े आदिकी पुतली; नटी।

पंचाली–स्त्री० पांचाली, द्रौपदी; [सं०] कपड़े आदिकी पुतली; एक प्रकारका गीत; शतरंज आदिकी बिसात।

पंचाशत–वि० [सं०] चालीस और दस। पु० ५०की संख्या।

पंचाशिका–स्त्री० [सं०] पचास वस्तुओं, व्यक्तियों या पद्योंका समूह।

पंचास्य–वि०, पु० [सं०] दे० 'पंचानन'।

पंचाह–पु० [सं०] पाँच दिनोंका समूह।

पंचेषु–पु० [सं०] कामदेव।

पंचोपचार–पु० [सं०] पूजनके साधनभूत पाँच द्रव्य–गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य; इन पाँच द्रव्योंसे किया गया पूजन।

पंछा–पु० प्राणियोंके शरीर या पेड़-पौधोंमें कटने, छिलने आदिकी जगहसे निकलनेवाला एक प्रकारका पसेव; घावका पसेव; फफोले, चेचकके दाने आदिमें भरा हुआ पानी।

पंछाला–पु० फफोला; फफोलेके भीतरका पानी।

पंछी–पु० पक्षी, चिड़िया।

पंज–वि० [फा०] पाँच। –**रोज़ा**–वि० पाँच दिनोंका; कुछ ही दिनोंतक रहनेवाला; अस्थायी, जो टिकाऊ न हो। –**हज़ारी**–पु० पाँच हजार सैनिकोंका नायक।

पंजर–पु० [सं०] हड्डियोंका ढाँचा, कंकाल; पसली; पिंजड़ा; शरीर। –**शुक**–पु० पिंजड़ेमें बंद तोता।

पँजरना*–अ० क्रि० दे० 'पजरना'।

पंजा–पु० [फा०] पाँच सजातीय वस्तुओंका समाहार; गाही; पाँचों उँगलियोंके सहित हथेली; पैरका अगला भाग; अधखुली मुट्ठी जिसमें अँगूठा और उँगलियाँ इस स्थितिमें हों कि किसी वस्तुको पकड़ा या बकोटा जा सके; उँगलियोंके सहित हथेलीका अर्धसंपुट; जूतेका वह भाग जिसे पहननेपर वह पंजेको ढके रहता है; पीठ खुजलानेका पंजेकी आकृतिका बना एक आला; पंजा लड़ानेकी क्रिया या प्रतियोगिता; पाँच बूटियोंवाला ताशका पत्ता; आदमीके पंजेके आकारका टिन आदिका वह टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदिमें लगाकर झंडेके रूपमें ताजियेके साथ ले चलते हैं। –**तोड़ बैठक**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच। **मु०**–**फेरना,–मोड़ना**–पंजेकी लड़ाईमें प्रतिद्वंद्वीको हराना।–**फैलाना,–बढ़ाना**–लेने या अधिकारमें करनेकी चेष्टा करना। –**मारना**–झपट्टा मारना।–**लड़ाना,–लेना**–कसरत या बलपरीक्षाके लिए उँगलियोंको फँसाकर जोर लगाना। (**पंजे**)**में**–काबूमें।

पंजाबी–वि० [फा०] पंजाबका; पंजाब-संबंधी। पु० पंजाब प्रांतका निवासी। स्त्री० पंजाबकी भाषा।

पंजि, पंजी–स्त्री० [सं०] पूनी; बही; (रजिस्टर) वह पुस्तक या बही जिसमें हिसाब, कार्य-विवरण, जन्म-मृत्युका लेखा, गृह, भूमि आदिकी अधिकृत बिक्री या हस्तांतरण आदिका ब्यौरा लिखा या दर्ज किया जाय; पंचांग। –**कार,–कारक**–वि० लेखक; बही लिखनेवाला, क्लर्क। –**बद्ध**–वि० (रजिस्टर्ड) जो पंजी या रजिस्टरमें चढ़ा दिया गया हो।

पंजिका–स्त्री० [सं०] ऐसी टीका जिसमें प्रत्येक शब्दका अर्थ समझाया गया हो, विशद टीका; पंचांग, तिथिपत्र; आय-व्यय लिखनेकी बही; रजिस्टर; यमकी बही जिसमें जीवोंके कर्म लिखे जाते हैं।

पंजीयक–पु० (रजिस्ट्रार) किसी लेख, इच्छापत्र आदिकी

प्रामाणिक प्रतिलिपि राजकीय पंजीमें सुरक्षित रखनेका प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी; किसी विश्वविद्यालय, उच्च न्यायालय, सहयोगसमितियों आदिका वह अधिकारी जो अपनी संस्था या विभागके सब प्रकारके महत्त्वपूर्ण लेख, कागज-पत्रादि सुरक्षित रूपसे रखनेकी व्यवस्था करता है।

पंजीयन–पु० (रजिस्ट्रेशन) मकान, जमीन आदिकी बिक्री या हस्तांतरण आदिका ब्यौरा या किसी पारसल, चिट्ठी आदिके सुरक्षित रूपसे भेजे जानेके लिए पानेवालेका नाम, पता आदि पंजीमें चढ़ाकर अभिलेखके रूपमें रखा जाना; अभ्यर्थियों आदिकी नाम-सूचीमें नामका दर्ज कर लिया जाना।

पंजीरी–स्त्री० धनियाँ, चीनी, सोंठ आदि मिलाकर घीमें भूना हुआ चूरन।

पंडल*–वि० पीला। पु० पिंड; शरीर।

पँड़वा–पु० भैंसका बच्चा।

पंडा–पु० तीर्थ, मंदिर या घाटपर पुजनेवाला ब्राह्मण, घाटिया; गंगापुत्र; रसोई बनानेका काम करनेवाला ब्राह्मण। स्त्री० [सं०] सत्-असत्का विवेक करनेवाली बुद्धि; निश्चयात्मिका बुद्धि; ज्ञान; विद्या।

पँड़ाइन–स्त्री० पाँड़ेकी स्त्री; पाँड़े जातिकी स्त्री।

पंडाल–पु० किसी संस्थाके अधिवेशन आदिके लिए बना हुआ बड़ा मंडप।

पंडित–पु० [सं०] शास्त्रके तात्पर्यको जाननेवाला विद्वान्; वह जिसमें सत्-असत्का विवेक करनेकी शक्ति हो; ब्राह्मण (लोक); संस्कृतका विद्वान्। वि० विद्वान्; कुशल। –**मंडल**–पु०,–**सभा**–स्त्री० विद्वानोंकी मंडली।

पंडितम्मन्य–वि० [सं०] जो अपनेको बहुत बड़ा विद्वान् समझे।

पंडिताइन†–स्त्री० दे० 'पंडितानी'।

पंडिताई–स्त्री० पंडित होनेका भाव या गुण, विद्वत्ता।

पंडिताऊ–वि० पंडितोंके ढंगका, पंडित जैसा।

पंडितानी–स्त्री० पंडितकी स्त्री; ब्राह्मणी।

पंडुक–पु० कबूतरकी जातिका एक हलके कत्थई रंगका पक्षी।

पंडुर*–पु० जलसर्प।

पँतीजना–स० क्रि० रुई ओटना।

पँतीजी–स्त्री० रुई धुननेका औजार, धुनकी।

पंत्यारी*–स्त्री० पंक्ति, कतार।

पंथ–पु० मार्ग, रास्ता; रीति; धर्म, संप्रदाय। मु०–**गहना***–रास्ता पकड़ना। –**देखना**,–**निहारना**,–**सेना**–बाट जोहना, प्रतीक्षा करना। –**पर लाना**,–**पर लगाना**–सुमार्गपर चलाना। –(**किसीके**)–**लगना**–अनुकरण करना; परेशान करना।

पंथकी*–पु० यात्री, मुसाफिर।

पंथान*–पु० रास्ता, मार्ग।

पंथिक*–पु० पथिक।

पंथी–पु० बटोही, यात्री; किसी मतका माननेवाला।

पंदर(द्र)ह–वि० दस और पाँच। पु० १५ की संख्या।

पंप–पु० [अं०] पानी आदि तरल पदार्थोंको ऊपर खींचने या पहुँचाने तथा इधर-उधर ले जानेकी एक कल; ट्यूब आदिमें हवा भरनेकी एक कल; पिचकारी।

पंपा–स्त्री० [सं०] दक्षिणकी एक नदी या इसके पासका एक पुराना नगर या झील (रामा०)।

पंपाल*–वि० पापी।

पँवर*–स्त्री० ड्योढ़ी; सामान।

पँवरना*–अ० क्रि० तैरना; थाह लेना, पता लगाना।

पँवरि*–स्त्री० ड्योढ़ी; द्वार।

पँवरिआ(या)–पु० पौरिया, द्वारपाल; पुत्रजन्मके अवसरपर मंगलगीत गानेका पेशा करनेवाला एक विशेष वर्ग, ढाढी।

पँवरी–स्त्री० ड्योढ़ी; * खड़ाऊँ।

पँवाड़ा(रा)–पु० विस्तृत कथा; वीरगाथा; कीर्तिकथा।

पँवार–पु० परमार, राजपूतोंका एक भेद; * प्रवाल।

पँवारना*–स० क्रि० फेंकना; दूर करना, हटाना।

पंसरहट्टा–पु० वह बाजार जिसमें पंसारियोंकी दुकानें हों।

पंसारी–पु० हलदी, नमक, मसाले आदि तथा ओषधियाँ बेचनेवाला बनिया।

पंसासार*–पु० पासेका खेल।

पँसुरी, पँसुली–स्त्री० दे० 'पसली'।

पंसेरी–स्त्री० पाँच सेरकी तौलका बाट।

प–वि० [सं०] पीनेवाला; रक्षक (समासांतमें)। पु० हवा।

पइग†–पु० दे० 'पैग'।

पइठना†–अ० क्रि० दे० 'पैठना'।

पइसार*–पु० प्रवेश।

पउँरि*–स्त्री० ड्योढ़ी।

पउनार†–पु० पद्मनाल, कमलदंड।

पउनी*–स्त्री० दे० 'पौनी'।

पउला†–पु० वह खड़ाऊँ जिसमें खूँटीकी जगह रस्सी लगी रहती है।

पकड़–स्त्री० पकड़नेका काम या भाव, ग्रहण; पकड़नेका तर्ज; कुश्तीमें एक बारकी भिड़ंत; भूल, अशुद्धि आदि खोज निकालनेकी क्रिया या भाव; समझ। –**धकड़**–स्त्री० धर-पकड़। मु०–**जाना**–बंदी बनाया जाना, दोषी ठहराया जाना। –**में आना**–पकड़ा जाना; काबूमें किया जाना।

पकड़ना–स० क्रि० किसी वस्तुको इस ढंगसे हाथमें लेना या दबाना कि वह इधर-उधर हट न सके; ग्रहण करना; धरना; गति या व्यापारसे निवृत्त करना; पता लगाना, गलती करने या बहकनेसे रोकना; किसी काममें आगे बढ़े हुएकी बराबरीमें आ जाना; किसी वस्तुको अपनेमें व्याप्त होने देना; किसी वस्तुमें व्याप्त होना; अपनाना; आक्रांत या वशीभूत करना; ग्रसना; गिरफ्तार करना; किसी वस्तुसे चिपकना; समझना।

पकड़वाना–स० क्रि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना, सहायता देना।

पकड़ाना–स० क्रि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना।

पकना–अ० क्रि० अनाज, फल आदिका उस अवस्थाको पहुँचना जिसके बाद वे झड़ने लगते हैं, परिणतावस्थाको प्राप्त होना; कच्चा न रहना; आँच खाकर कड़ा और लाल होना; आँच या गरमी खाकर गलना या नरम होना, सीझना, चुरना; सफेद होना; पका होना; फोड़ा-फुंसी, घावका मवाद भर आनेकी अवस्थाको पहुँचना; गोटियोंका सब खानोंको पार करके अपने खानेमें पहुँचना (चौसर)।

पकरना*–स० क्रि० दे० 'पकड़ना'।

पकवान–पु० घी या तेलमें तली हुई भोज्य वस्तु।

पकवाना–स० क्रि० पकानेमें प्रवृत्त करना।

पकाई–स्त्री० पकने, पकानेकी क्रिया, भाव या उजरत।

पकाना–स० क्रि० अनाज, फल आदिको पकनेकी अवस्थाको पहुँचाना; आँच पहुँचाकर कड़ा और लाल करना; आँच या गरमी पहुँचाकर गलाना या नरम करना, सिझाना, चुराना; उबालना; सफेद करना या बनाना; फोड़ा, फुंसी या घावको मवाद भर आनेकी अवस्थाको पहुँचाना।

पकाव–पु० पकनेका भाव; मवाद।

पकावन*–पु० पकवान।

पकोड़ा–पु० बड़ी पकौड़ी।

पकौड़ी–स्त्री० घी, तेलमें तली हुई बेसन या पीठीकी बरी।

पक्का–वि० पका हुआ, कच्चाका उलटा; जिसमें कोई कमी न रह गयी हो, पूर्णताको प्राप्त, पूरा; जिसमें हीर पड़ गया हो, परिपुष्ट; जो आँच पाकर कड़ा और लाल हो गया हो; मँजा हुआ, सिद्ध; सुडौल और एक जैसा जिसमें कहीं विषमता न हो; निपुण, निष्णात; आँचपर गलाया या नरम किया हुआ, जो सीझ चुका हो, राँधा हुआ; पूर्ण रूपसे पकाया और साफ किया हुआ; ठहराऊ, अचल, सुदृढ़; ईंट या पत्थरका बना हुआ; जिसमें सुरखी-चूना आदिका उपयोग हो; जिसपर कंकड़-पत्थर बिछाया गया हो; घीमें पका हुआ, घृतपक्व (पक्की रसोई); उबाला हुआ, औटा हुआ; स्वास्थ्यवर्द्धक (पक्का पानी); जिसमें खालिस सोने-चाँदीके तार लगे हों, जो नकली न हो (पक्का काम); निश्चित; जो प्रमाणरूप माना जाय, टकसाली; जिसमें हेर-फेर न किया जा सके; जो हर तरहसे ठीक हो; जिसपर लिखी हुई बात कानूनके विरुद्ध न हो; जो कभी छूट न सके (पक्का रंग); अच्छी तरह जाँचा हुआ; जिसमें अच्छी तरह जाँचा हुआ हिसाब दर्ज किया गया हो (पक्की बही)। **–गाना**–पु० शास्त्रीय संगीत।

पक्खर*–स्त्री० दे० 'पाखर'। वि० पक्का, दृढ़; प्रखर, तीक्ष्ण; प्रचंड; तेज।

पक्व–वि० [सं०) पका हुआ; पकाया हुआ; अनुभवी; दृढ़, पुष्ट; सफेद (बाल); पूर्णतः विकसित। पु० पकाया हुआ भोजन। **–कृत**–पु० नीम; पकानेवाला, पाककर्ता। **–केश**–वि० जिसके बाल पक गये हों।

पक्वता–स्त्री०, **पक्वत्व**–पु० [सं०] पक्व होनेका भाव।

पक्वातिसार–पु० [सं०] अतिसारके पाँच भेदोंमेंसे एक।

पक्वाधान–पु० [सं०] पाचन-संस्थानका वह भाग जहाँ आहार पचता है, आमाशय, जठर।

पक्वान्न–पु० [सं०] पकाया हुआ अन्न; पकवान।

पक्वाशय–पु० [सं०] दे० 'पक्वाधान'।

पक्ष–पु०[सं०] किसी वस्तुका दायाँ या बायाँ भाग; सेना, मकान आदिका आगेकी ओर बढ़ा हुआ दायाँ या बायाँ भाग; पार्श्व, बगल; हाथी या घोड़ेका दाहिना या बायाँ पार्श्व; ओर, तरफ; किसी विषयका कोई अंग; किसी विषयके दो पहलुओंमेंसे कोई एक जिसका खंडन या मंडन किया जाय, विचारणीय विषयकी कोई कोटि; किसी वस्तुके प्रति किसीकी अनुकूलता या समर्थनकी स्थिति; वादी या प्रतिवादीके संबंधमें अनुकूलताकी स्थिति; चांद्र मासके दो भागोंमेंसे एक; वह वस्तु जिसमें साध्यकी स्थिति संदिग्ध हो (न्या०); समूह (केवल समासमें–केशपक्ष); वर्गविशेष, दलविशेष; अनुयायी; सहायक; अनुयायियों या सहायकोंका दल; किसी विषयके संबंधमें विभिन्न मत रखनेवालोंका विशिष्ट वर्ग या दल; वादियों या प्रतिवादियोंका दल; पंख, पर; बाणमें लगा हुआ पर; शरीरका अर्द्धभाग; दोकी संख्या; सेना; सखा; चूल्हेका मुँह; शरीर; संबंध; हक; पक्षी; हाथका कड़ा। **–ग्रहण**–पु० दो पक्षोंमेंसे किसी एकको अंगीकार करना। **–द्वार**–पु० चोर दरवाजा। **–पात**–पु० न्याय-अन्यायका विचार त्यागकर किसीका पक्ष ग्रहण करना, तरफदारी, अधिक चाह; पंख या परका संचालन। **–पातिता**–स्त्री०,**–पातित्व**–पु० पक्षपाती होनेका भाव, तरफदारी, पक्षग्रहण। **–पाती(तिन्)**–वि० पक्षपात करनेवाला, तरफदार।

पक्ष(स्)–पु० [सं०] पंख; रथादिका पार्श्व; दरवाजेका पल्ला; सेनाका पार्श्व; अर्द्धभाग; मासार्द्ध; नदीका किनारा।

पक्षांत–पु० [सं०] अमावस्या; पूर्णिमा।

पक्षांतर–पु० [सं०] दूसरा पक्ष।

पक्षाघात–पु० [सं०] एक वातरोग जिसमें शरीरका बायाँ या दाहना भाग बेकाम हो जाता है, लकवा।

पक्षिणी–स्त्री० [सं०] मादा पक्षी; पूर्णिमा।

पक्षी(क्षिन्)–पु० [सं०] चिड़िया; बाण; शिव। वि० पंखवाला; पक्ष ग्रहण करनेवाला, तरफदार। **–पति**–पु० संपाति, जटायुका भाई। **–राज,–सिंह,–स्वामी (मिन्)**–पु० गरुड़। **–बालक,–शावक**–पु० चिड़िया का बच्चा। **–शाला**–स्त्री० चिड़ियाखाना; घोंसला; पिंजड़ा।

पक्षीय–वि० [सं०] पक्ष-संबंधी; पक्षका (समासांतमें)।

पक्ष्म(न्)–पु० [सं०] बरौनी; (फूलका) केसर; पर, पंख। **–कोप,– प्रकोप**–पु० आँख गड़नेका एक रोग जो बरौनीके बालोंके आँखमें घुसे रहनेसे होता है।

पक्ष्मल–वि० [सं०] लंबी, सुंदर बरौनीवाला; बालदार।

पखंड†–पु० दे० 'पाखंड'।

पखंडी–†वि० दे० पाखंडी'। * पु० कठपुतली नचानेवाला।

पख–स्त्री० दे० 'पख़'। पु० पाख।

पख़–स्त्री० [फा०] प्रतिबंध; शर्त; झगड़ा; ऐब; नुक्स; फसाद; रोक; अड़ंगा; बकवास। मु० **–लगाना**–शर्त या कैद लगाना; प्रतिबंध या रोक लगाना; रोड़ा अटकाना; अड़ंगा लगाना। **–निकालना**–दोष दिखाना, नुक्स निकालना।

पखड़ी–स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पखपान–पु० पाँवका एक गहना।

पखरना*–स० क्रि० पखारना, धोना।

पखरवाना–स० क्रि० पखारनेमें प्रवृत्त करना।

पखराना*–स० क्रि० पखरवाना, धुलवाना।

पखरैत–पु० वह घोड़ा, हाथी या बैल जिसपर पाखर डाली गयी हो।

पखवाड़ा†–पु० दे० 'पखवारा'।

पखवारा–पु० महीनेका आधा भाग, पंद्रह दिनोंका समय।

पखा*–पु० दाढ़ी।

पखाउज†–पु० दे० 'पखावज'।

पखान–पु० दे० 'पाषाण'।

पखाना–* पु० कथा, उपाख्यान; † दे० 'पाखाना'।

पखारना–स० क्रि० पानीसे धोना; धोकर साफ करना।

पखाल–पु० मशक; धौंकनी; मुँह धोनेका पात्र।

पखाली–पु० भिश्ती।

पखावज–पु० मृदंग।

पखावजी–पु० पखावज बजानेवाला।

पखिया–पु० झगड़ा खड़ा करनेवाला। वि० व्यर्थका।

पखी*–पु० दे० 'पक्षी'।

पखीरी*–पु० दे० 'पक्षी'।

पखुड़ी, पखुरी†–स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पखुरा, पखुवा–पु० मनुष्यके शरीरमें कंधे और बाँहके जोड़के पासका भाग, भुजमूलके पासका भाग।

पखेरू–पु० पक्षी, चिड़िया।

पखौआ*–पु० पंख।

पखौटा–पु० पर, पंख; मछलीका पर।

पखौरा, पखौड़ा–पु० दे० 'पखुरा'।

पग–पु० पैर; डग। **–डंडी**–स्त्री० मनुष्योंके चलनेसे जंगल, खेत या मैदानमें बना हुआ पतला रास्ता। **–तरी†**–स्त्री० जूता। **–दासी**–स्त्री० जूता; खड़ाऊँ।

पगड़ी–स्त्री० सिरपर लपेटी जानेवाली कपड़ेकी लंबी पट्टी, पाग, उष्णीष। **मु० (किसीसे)–अटकना**–किसीसे झगड़ा लगना। **–उछलना**–बेइज्जती होना; दुर्दशा होना। **–उछालना**–बेइज्जती करना; दुर्गत करना। **–उतरना**–प्रतिष्ठा नष्ट होना, अपमान होना। **–उतारना**–अपमानित करना, बेइज्जत करना; लूटना। **(किसीको) –बँधना**–मालिकाना मिलना; उत्तराधिकार प्राप्त होना; उच्च अधिकार मिलना। **(किसीको)–बाँधना**–मालिक या सरदार बनाना; उत्तराधिकारी बनाना; उच्च अधिकार देना। **–बदलना**–मित्रता करना। **–रखना**–मान-मर्यादाकी रक्षा करना। **(किसीके आगे या पैरोंपर) –रखना**–सहायताकी गुहार करना; दयाकी भीख माँगना।

पगना–अ० क्रि० किसी वस्तुका शीरे आदिमें इस प्रकार डूबा रहना कि वह उसमें अच्छी तरह भिन जाय; किसी तरल पदार्थके साथ इस प्रकार मिलना कि वह जज्ब हो जाय; रस आदिमें सन जाना, शराबोर होना; ओतप्रोत होना; निमग्न होना; लिप्त होना।

पगनियाँ*–स्त्री० जूती।

पगरा†–पु० डग; सफर शुरू करनेका समय; प्रभात।

पगरी†–स्त्री० दे० 'पगड़ी'।

पगला–वि० पागल; नासमझ।

पगहा†–पु० दे० 'पघा'।

पगा*–पु० पगड़ी; दुपट्टा; पघा; दे० 'पगरा'।

पगाना–स०क्रि० पागनेका काम दूसरेसे कराना; शराबोर कराना; निमग्न कराना; अनुरक्त करना।

पगार–पु० गारा, गिलावा; हलकर पार करने योग्य नदी आदि; † वेतन; * दे० 'प्राकार'।

पगारना†–स० क्रि० फैलाना।

पगिआना, पगियाना*–स० क्रि० दे० 'पगाना'।

पगिया*–स्त्री० दे० 'पगड़ी'।

पगुराना†–अ० क्रि० जुगाली करना, पागुर करना।

पघा–पु० ढोर बाँधनेकी रस्सी, गिरावँ।

पच–वि० पाँचका एक रूपांतर जिसका प्रयोग प्रायः समासमें होता है। **–कल्यान**–पु० दे० 'पंचकल्याण'। **–खना**–वि० पाँच खंडोंवाला। **–गुना**–वि० जिसमें कोई राशि या माप पाँच बार शामिल हो, पाँच गुना। **–ग्रह**–पु० मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि–ये पाँच ग्रह। **–तूरा**–पु० एक बाजा। **–तोरिया**–पु० एक तरहका कपड़ा। **–मेल**–वि० जिसमें कई या पाँच प्रकारकी वस्तुएँ मिली हों। **–रंग**–पु० चौक पूरनेके कामकी अबीर-बुक्का आदि पाँच वस्तुओंका समूह। वि० दे० 'पचरंगा'। **–रंगा**–वि० पाँच रंगोंवाला; पाँच रंगोंमें रँगा हुआ या पाँच रंगोंके सूतोंसे बुना हुआ (कपड़ा); जो कई रंगोंका हो। **–लड़ी**–स्त्री० पाँच लड़ियोंवाला, माला जैसा एक गहना। **–लोना**–वि० जिसमें पाँच प्रकारके नमक मिले हों। पु० ऐसा मिश्रण; पंचलवण।

पचकना–अ० क्रि० दे० 'पिचकना'।

पचकाना–स० क्रि० दे० 'पिचकाना'।

पचखा†–पु० दे० 'पंचक'।

पचड़ा–पु० बखेड़ा, झंझट; एक तरहका गीत जिसे प्रायः ओझा देवी आदिकी स्तुतिमें गाता है; लावनीकी तरहका गीत जिसमें पाँच-पाँच चरणोंके खंड होते हैं।

पचन–पु० [सं०] पकने या पकानेका कार्य; अग्नि।

पचना–स्त्री० [सं०] पकनेकी क्रिया। अ० क्रि० पचाया जाना; हजम होना; खपना, अन्य वस्तुमें मिल जाना; अधिक परिश्रमसे क्षीण होना। **मु० पच मरना**–जी-तोड़ मेहनत करना।

पचपचा–वि० अधूरा पका हुआ (भोजन); जिसका पानी जज्ब न हुआ हो।

पचपचाना–अ० क्रि० किसी वस्तुका अधिक गीला होना।

पचपन–वि० पचास और पाँच। पु० पचपनकी संख्या, ५५।

पचवना*–स० क्रि० दे० 'पचाना'।

पचहत्तर–वि० सत्तर और पाँच। पु० पचहत्तरकी संख्या, ७५।

पचहरा–वि० पाँच स्तरों–परतोंवाला; पाँच गुना।

पचाना–स० क्रि० जठराग्निकी क्रिया द्वारा खाये हुए पदार्थको रस आदिका रूप ग्रहण करनेकी स्थितिको पहुँचाना, हजम करना; पक्व बनाना; नष्ट कर देना; बना न रहने देना; पराये मालको अनुचित रीतिसे आत्मसात् कर लेना, हड़प लेना; किसी बात या मामलेको इस प्रकार दबा देना कि उसका भेद खुल न सके; बहुत अधिक काम लेकर या कष्ट पहुँचाकर शरीर आदिको क्षीण बनाना; किसी वस्तुको पूर्णतया लीन कर लेना; किसी वस्तुको अपनेमें एकदम छिपा लेना।

पचारना†–स० क्रि० ललकारना।

पचाव†–पु० पचनेका कार्य या भाव।

पचास–वि० दसका पाँच गुना। पु० पचासकी संख्या, ५०।

पचासा-पु० पचास सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसीके जीवनके प्रथम पचास वर्षोंका समाहार; संकटके समय सब सिपाहियोंको थानेमें बुलानेके लिए बजनेवाला घंटा।

पचासी-वि० अस्सीसे पाँच अधिक। पु० ८५ की संख्या।

पचित-वि० पचा हुआ; * जड़ा हुआ, खचित।

पचीस-वि० बीससे पाँच अधिक। पु० पचीसकी संख्या, २५।

पचीसी-स्त्री० पचीस सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसीके जीवनके प्रारंभिक पचीस वर्ष; पचीस वर्षोंका समाहार; एक तरहकी द्यूतक्रीड़ा; इसकी बिसात।

पचोतर-वि० जिसमें ऊपरसे पाँच और मिलाया गया हो, पाँच अधिक। **-सौ**-वि० एक सौ पाँच।

पचौनी-स्त्री० आमाशय, मेदा।

पचौर*-पु० दे० 'पचौली' (पु०)।

पचौली†-पु० गाँवका मुखिया। स्त्री० एक पौधा।

पचौवर-वि० पचहरा।

पच्चड़, पच्चर-पु० बाँस आदिकी वह फट्टी या गुल्ली जिसे लकड़ीकी बनी चीजोंमें संधिकी दरार भरनेके लिए ठोंकते या बैठाते हैं। मु०-**अड़ाना**-बाधा डालना, रोड़ा अटकाना। **-ठोंकना**-ऐसा कार्य करना जिससे किसीको भारी कष्ट पहुँचे या उसे बहुत हैरान होना पड़े। **-मारना**-होते हुए काममें बाधा डालना; बने हुए खेलको बिगाड़ देना।

पच्ची-स्त्री० एक वस्तुको दूसरी वस्तुमें इस प्रकार खोदकर जोड़ना कि दोनोंकी सतहें एक मेलमें आ जायँ और वे परस्पर अंग और अंगी जान पड़ें; एक रंगके पत्थरपर दूसरे रंगके पत्थरका जड़ाव। **-कार**-पु० पच्ची करनेवाला। **-कारी**-स्त्री० पच्ची करनेका काम या भाव।

पच्छ*-पु० दे० 'पक्ष'। **-ताई***-स्त्री० दे० 'पक्षपात'।

पच्छाघात-पु० दे० 'पक्षाघात'।

पच्छि†-पु० दे० 'पक्षी'। **-राज***-पु० गरुड़।

पच्छिउँ, पच्छिवँ*-पु० दे० 'पश्चिम'।

पच्छिनी*-स्त्री० चिड़िया।

पच्छिम-पु० दे० 'पश्चिम'।

पच्छी*-पु० चिड़िया; पक्ष ग्रहण करनेवाला।

पछड़ना-अ० क्रि० पछाड़ा जाना; दे० 'पिछड़ना'।

पछताना-अ० क्रि० कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि*-स्त्री० पछतावा।

पछतावा-पु० दे० 'पछतावा'।

पछतावना*-अ० क्रि० पछताना।

पछतावा-पु० वह दुःख जो किसीके मनमें कोई अनुचित कार्य कर चुकनेपर होता है, किसी कार्यके अनौचित्यके बोधसे होनेवाली आत्मग्लानि, पश्चात्ताप।

पछना-अ० क्रि० पाछा जाना। पु० पाछनेका औजार।

पछमन*-अ० पीछे।

पछरना*-अ० क्रि० पछड़ना; लौटना।

पछरा*-पु० दे० 'पछाड़'।

पछलगा, पछिलगा*-पु० दे० 'पिछलगा'।

पछलत्त*-पु० पिछली टाँगों द्वारा प्रहार।

पछलागा*-पु० दे० 'पिछलगा'।

पछवाँ-वि० पश्चिमीय, पश्चिमका। स्त्री० पश्चिमकी ओरसे चलनेवाली हवा, पच्छिमी हवा।

पछाँह-पु० पश्चिमीय प्रदेश; पश्चिम दिशा।

पछाँहिया, पछाँही-वि० पछाँहका।

पछाड़-स्त्री० शोकसे मूर्छित होकर पीठके बल गिर पड़ना; विह्वल होकर खड़े-खड़े गिर पड़ना। पु० कुश्तीका एक दाँव।

पछाड़ना-स० क्रि० कुश्ती या लड़ाईमें पटकना या परास्त करना; धोते समय कपड़ेको पटकना।

पछाड़ी-स्त्री० दे० 'पिछाड़ी'।

पछानना*-स० क्रि० दे० 'पहचानना'।

पछारना*-स० क्रि० दे० 'पछाड़ना'।

पछावर(रि)*-स्त्री० छाल आदिका बना हुआ एक पेय।

पछाहँ-पु० दे० 'पछाँह'।

पछाहियाँ, पछाहीँ-वि० दे० 'पछाँही'।

पछिआ(या)ना*-स० क्रि० अनुगमन करना; पीछे लगना।

पछिउँ-पु० दे० 'पश्चिम'।

पछिताना*-अ० क्रि० दे० 'पछताना'।

पछितानि-स्त्री०, **पछिताव**-पु० दे० 'पछतावा'।

पछियाउर, पछियावर-स्त्री० दे० 'पछावर'।

पछिलगा*-पु० दे० 'पिछलगा'।

पछिलना†-अ० क्रि० दे० 'पिछड़ना'; दे० 'पिछलना'।

पछिला†-वि० दे० 'पिछला'।

पछि(छु)वाँ-वि० स्त्री० पश्चिमी। स्त्री० पश्चिमी हवा।

पछीत-स्त्री० मकानका पिछवाड़ा; मकानके पीछेकी दीवार।

पछेलना†-स० क्रि० पीछे छोड़ना या हटाना।

पछेला†-पु० हाथमें पीछे पहननेका एक गहना।

पछेली†-स्त्री० छोटा पछेला।

पछेवड़ा*-पु० पिछौरा, चद्दर।

पछोड़ना†-स० क्रि० सूपसे फटकना।

पछोरना*-स० क्रि० दे० 'पछोड़ना'।

पछ्यावर-स्त्री० दे० 'पछावर'।

पजरना*-अ० क्रि० जलना; सुलगना।

पजारना*-स० क्रि० जलाना।

पजावा-पु० [फा०] ईंटका भट्ठा।

पजोखा-पु० मातमपुरसी।

पज्झटिका-स्त्री० [सं०] एक मात्रिक छंद; छोटी घंटी।

पटंबर*-पु० दे० 'पाटंबर'।

पट-पु० [सं०] वस्त्र, कपड़ा; चित्र खींचनेका कागज या कपड़ेका टुकड़ा; पर्दा; रंगमंचका पर्दा; छाजन। **-कार**-पु० जुलाहा; चित्रकार। **-धारी(रिन्)**-वि० जो वस्त्र पहने हो। * पु० तोशाखानेका प्रधान अधिकारी। **-मंडप, -वेश्म(न्)**-पु० खेमा, तंबू। **-वास**-पु० रावटी, खेमा; धोती या साड़ीके नीचे पहननेका स्त्रियोंका एक तरहका घाँघरा, साया।

पट-पु० जगन्नाथ, बदरीनाथ आदिका चित्र जिसे यात्री अपने साथ लाते हैं; किवाड़; पालकीका दरवाजा, सिंहासन; कुश्तीका एक पेंच; तख्ता; किसी वस्तुकी चिपटी और चौरस सतह; किसी छोटी वस्तुके गिरने, फटने आदिसे होनेवाला शब्द; दे० 'पट्ट' (हिंदीमें समासमें आनेवाला विकृत रूप)। अ० अति शीघ्र, तत्काल। वि० जो

पेटके बल स्थित हो, औंधा, चितका उलटा । **–रानी**–स्त्री० वह रानी जिसके साथ राजा सिंहासनारूढ हुआ हो या हो, राजाकी सबसे बड़ी रानी, पट्टमहिषी । **मु०–उघड़ना**–दे० 'पट खुलना' । **–खुलना**–मंदिरका द्वार खुलना । **–पड़ना**–औंधे पड़ना; मंद होना । **–बंद होना**–मंदिरका द्वार बंद होना ।

पटइन†–स्त्री० पटवा जातिकी स्त्री ।

पटकन*–स्त्री० पटकनेकी क्रिया या भाव; तमाचा; छड़ी ।

पटकना–स० क्रि० किसी वस्तु या व्यक्तिको उठाकर झोंकेके साथ पृथ्वी आदिपर गिराना; उठायी या हाथमें ली हुई वस्तुको पृथ्वी आदिपर जोरसे गिराना; कुश्तीमें पछाड़ना या दे मारना । † अ० क्रि० 'पट' की आवाज करते हुए दरकना या फटना; पचकना; सीलसे या भींगनेसे फूले हुए गेहूँ, चने आदिका सूखकर पचकना । (**मु० किसीके ऊपर, किसीपर या किसीके सिर पटकना**–किसीकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम उसे सौंपना ।)

पटकनिया†–स्त्री० पटकने या पटके जानेकी क्रिया या भाव; पछाड़ ।

पटकनी†–स्त्री० दे० 'पटकनिया' ।

पटका–पु० कमरमें लपेटनेका कपड़ा; कमरबंद । **मु०–पकड़ना**–किसीको किसी बातका उत्तरदायी ठहराते हुए रोक रखना । **–बाँधना**–उद्यत होना, सन्नद्ध होना ।

पटकान–स्त्री० पटकने या पटके जानेकी क्रिया या भाव ।

पटतर*–पु० बराबरी, तुलना, उपमा । † वि० चौरस ।

पटतरना*–स० क्रि० तुलना करना, समान ठहराना ।

पटतारना–स० क्रि० ऊँची-नीची जमीनको समतल बनाना, चौरस करना; * तलवार आदिको प्रहार करनेकी मुद्रामें हाथमें लेना, शस्त्र सँभालना ।

पटन*–पु० दे० 'पट्टन' (शहर) ।

पटना–अ० क्रि० पाटा जाना, भर जाना; मेल खाना; बनना; तै होना; (ऋण) पूरा-पूरा अदा किया जाना; † सींचा जाना । पु० बिहारका एक नगर; † धन ।

पटनिया, पटनिहा–वि० पटनाका; पटना-संबंधी ।

पटनी–स्त्री० कोठेवाले घरमें नीचेका कमरा; वह जमीन जिसका किसीके साथ स्थायी बंदोबस्त कर दिया गया हो ।

पटपटाना–अ० क्रि० भूख या गरमीसे तड़पना; 'पट-पट' शब्द निकलना । स० क्रि० 'पट-पट' शब्द उत्पन्न करते हुए किसी चीजको बजाना या पीटना ।

पटपर–वि० चौरस, समतल । पु० समतल मैदान; उजाड़ जगह; बरसातमें नदीके पानीसे डूबी रहनेवाली जमीन ।

पटबंधक–पु० एक तरहका रेहन जिसमें रेहन रखी हुई वस्तुके लाभसे सूदके सहित मूल धन अदा हो जानेपर रेहनदार उस वस्तुको लौटा देता है ।

पटबीजना*–पु० जुगनू ।

पटरा–पु० लंबा, चौकोर और कम मोटा चीरा हुआ लकड़ीका समतल टुकड़ा; हेंगा; धोबीका पाट । **मु०–कर देना**–मारकर या काटकर गिरा देना; बरबाद कर देना । **–फेरना**–पटेलेसे जमीन बराबर करना; ध्वस्त करना । **–होना**–मरकर या कटकर गिर जाना ।

पटरी–स्त्री० काठका लंबा, चौकोर और बहुत कम मोटा तख्ता, छोटा पटरा; वह तख्ती जिसपर बच्चे लिखना सीखते हैं, पटिया; थपुआ; मेल; सड़कके किनारेकी पैदल चलनेकी थोड़ी ऊँची और पतली जगह; नहरके किनारेका रास्ता; रविश; साड़ी-लहँगे आदिकी कोरपर टाँकनेका सोने या चाँदीके तारोंका फीता; एक प्रकारकी नक्काशी की हुई चौड़ी चूड़ी; जंतर, चौकी; लोहेके लंबे डंडे जिनसे बनी लाइनपर रेलगाड़ी चलती है । **मु०–बैठना**–मन मिलना; मेल खाना ।

पटल–पु० [सं०] छत, छाजन; आवरणरूप वस्तु; तह, परत; आँखका एक रोग; समूह, राशि; शरीरके किसी अंगपरका चिह्न (जैसे–तिल); दलबल, लवाजमा; टोकरी; (टेबिल) मेज, टेबुल; तख्ता; पृष्ठभाग; अध्याय । **–प्रांत**–पु० ओलती ।

पटली–स्त्री० [सं०] छाजन, छप्पर; * चौकी; पंक्ति ।

पटवा–पु० गहना गूँथनेका पेशा करनेवाला ।

पटवाना–स० क्रि० पाटनेका काम कराना; भरवाकर बराबर कराना; छत तैयार कराना; † सिंचवाना; अदा करवाना ।

पटवारगिरी–स्त्री० पटवारीका काम या पद ।

पटवारी–पु० गाँवकी जमीन और उसकी मालगुजारीका लेखा रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी, लेखपाल । * स्त्री० वस्त्र पहनानेवाली दासी ।

पटसन–पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छालके रेशे रस्सी, बोरा आदि बनानेके काम आते हैं; इसकी छालके रेशे ।

पटह–पु० [सं०] नगाड़ा, डंका; ढोल; डुग्गी । **–घोषक**–पु० डुग्गी पीटनेवाला ।

पटहार–पु० पटवा ।

पटहारिन–पु० पटहारकी या पटहार जातिकी स्त्री ।

पटा–पु० तलवारके आकारका एक लोहेका हथियार जिसे खेल वगैरहमें भाँजते हैं; * पीढ़ा; अधिकारपत्र, पट्टा, सनद; खरीद-बिक्री, सौदा; चौड़ी धारी; लगामकी मुहरी । **(पटे)बाज़**–पु० पटा भाँजनेवाला, पटैत । **मु०–बाँधना**–उच्च पदपर अधिष्ठित करना ।

पटाई–स्त्री० पाटनेका कार्य या भाव; पाटनेकी मजदूरी; * पटानेका कार्य या भाव; पटानेकी उजरत ।

पटाका–पु० 'पट'की आवाज; पटाकेकी आवाज; दे० पटाखा; तमाचा; थप्पड़ ।

पटाक्षेप–पु० [सं०] पर्दा गिरना या गिराना ।

पटाखा–पु० पटाका, एक तरहकी आतिशबाजी ।

पटाना–स० क्रि० पाटनेका काम कराना; कोठेकी छत तैयार कराना; ऋण चुकाना; मोल-भाव करके सौदेका दाम तै करना; † सींचना । अ० क्रि० चुप मारना, शांत हो जाना ।

पटापट–स्त्री० 'पट-पट'की आवाज । अ० 'पटा-पट' आवाजके साथ; तेजीसे ।

पटापटी–स्त्री० वह चीज जिसमें रंग-बिरंगे फूल-पत्ते कढ़े हों; रंग-बिरंगी वस्तु ।

पटार–स्त्री० पेटी, पिटारी; पिंजड़ा; रेशमकी डोरी; † गोजर ।

पटाव–पु० पाटनेका कार्य या भाव; पाटी हुई जगह; पाटकर बनायी हुई छत; भरेठा ।

पटिया–स्त्री० चौकोर और समतल कटा हुआ पत्थरका लंबोतरा टुकड़ा; काठकी तख्ती; खाटकी पाटी; छोटा हेंगा; लंबा और कम चौड़ा खेत; * सिरके सँवारे हुए बाल।

पटी–स्त्री० [सं०] यवनिका; * कपड़ेकी पट्टी; कमरबंद।

पटीर–पु० [सं०] खेलनेका गेंद; चंदन; कत्था; * बड़का पेड़।

पटीलना–स० क्रि० समझा-बुझाकर किसीको अपनी रायमें करना; पीटना; कमाना; काम पूरा करना।

पटु–वि० [सं०] कुशल, प्रवीण, चतुर, चालाक; नीरोग।

पटुता–स्त्री०, **पटुत्व**–पु० [सं०] दक्षता, कुशलता।

पटुली–स्त्री० झूलेकी तख्ती; चौकी।

पटुवा–पु० पटसन; करेमू।

पटूका*–पु० दे० 'पटका'।

पटेरा–पु० दे० 'पटेला'; दे० 'पटैला'।

पटेल–पु० गाँवका मुखिया; गाँवका नंबरदार।

पटेलना–स० क्रि० दे० 'पटीलना'।

पटेला–पु० वह नाव जिसका बीचका भाग पटा हो; एक प्रकारकी घास; पटेरा; हेंगा; जमीन चौरस करनेका गोला, भारी पत्थर; कुश्तीका एक पेंच।

पटेली–स्त्री० छोटा पटेला।

पटैत–पु० पटेबाज।

पटैला–पु० पटेला; अर्गला, व्योंड़ा।

पटोर–पु० एक प्रकारका कपड़ा; रेशमी कपड़ा।

पटोरी–स्त्री० रेशमी चादर या साड़ी।

पटोल–पु० [सं०] एक प्रकारका कपड़ा; परवल।

पट्ट–पु० 'पट'की आवाज; [सं०] पटिया, तख्ती, प्लेट; पीठ, पीढ़ा; शासन, दानपत्र आदि खुदवानेकी ताँबे आदिकी पट्टी; मालिककी ओरसे असामी आदिको दिया जानेवाला भूमि आदिके उपयोगका अधिकारपत्र; घावपर बाँधनेकी पट्टी, कपड़े आदिका लंबा-पतला टुकड़ा; पगड़ी; चक्की; चौराहा; नगर; किसी चौरस चीजकी सतह; रेशम; दुपट्टा; राजसिंहासन; सिल; एक पहनावा; बारीक या रंगीन कपड़ा; ढाल; पटसन। वि० मुख्य; औंधा। **–कीट-पालन**–पु० (सेरिकल्चर) दे० 'कोशकीटपालन'। **–देवी, महिषी,–राज्ञी**–स्त्री० पटरानी। **–विलेख**–पु० (लीज-डीड) वह विलेख जिसमें किसी भूमि या संपत्तिके उपभोग-संबंधी अधिकार किसीको दिये जानेकी शर्तें, पट्टेकी शर्तें, विवरण आदि रहता है। **–शाक**–पु० पटुवा।

पट्टक–पु० [सं०] तख्ती; राजाज्ञा खुदवानेका ताम्रादिका पट्ट; घावपर बाँधनेकी पट्टी; दस्तावेज।

पट्टन–पु० [सं०] शहर।

पट्टांशुक–पु० [सं०] रेशमी वस्त्र।

पट्टा–पु० किसी स्थावर संपत्तिके उपयोगका अधिकारपत्र, सनद; पालतू कुत्ते, बिल्ली आदिके गलेमें लगायी जानेवाली पट्टी; पीढ़ा; चपरास; पुरुषोंके सिरके पीछेकी ओरके बराबर कटे बाल; चमड़ेका कमरबंद; वंक्षण। **(पट्टे)-पछाड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच।

पट्टिका–स्त्री० [सं०] पटिया, तख्ती, प्लेट; कपड़ेका टुकड़ा या चीरा; रेशमी कपड़ेका टुकड़ा या चीरा; घावपर बाँधनेकी पट्टी। **–लोध्र**–पठानी लोध।

पट्टी–स्त्री० पठानी लोध; ललाटका एक गहना; घोड़ेकी पेटी; लिखना सीखनेकी लकड़ीकी लंबोतरी और चौरस पटरी, पटिया, तख्ती; सबक, सीख, शिक्षा; हानिकर शिक्षा (ला०); बहकानेवाली सीख; खाटकी पाटी; कपड़ा, कागज या धातुका पतला और लंबा टुकड़ा; घाव आदिपर बाँधनेका कपड़ेका लंबा और पतला टुकड़ा; पत्थरका लंबा, पतला और कम मोटा टुकड़ा; छाजनके ठाटमें लगायी जानेवाली लकड़ीकी लंबी बल्ली; कपड़ेकी किनारी; उन कई धज्जियोंमेंसे एक जिन्हें एकमें मिलानेसे टाट या कोई (ऊनी) कपड़ा (पट्टू आदि) बनता है; नावके बीचो-बीचका तख्ता; चने, तिल आदिको चाशनीमें मिलाकर बनायी जानेवाली एक प्रकारकी पपड़ी; घुटनेके नीचेसे लेकर टखनेतक पाँवमें लपेटी जानेवाली सूती या ऊनी कपड़ेकी धज्जी; माँगके दोनों ओर कंघीसे जमायी जानेवाली बालोंकी तह; पाँत; छाजनकी कड़ियोंकी पाँत; संपत्ति या मिलकियतका एक भाग, पत्ती; ऐसी जमींदारीका एक भाग जो कई हिस्सेदारोंकी संयुक्त संपत्ति हो; किसी एक पट्टीदारके हिस्सेकी जमींदारी; वह कर जिसे जमींदार किसी कार्यके लिए द्रव्य एकत्र करनेके निमित्त असामियोंपर लगाता है। **–दार**–पु० वह जो किसी संयुक्त संपत्तिके किसी भागका स्वामी हो; किसी संपत्तिमें अपना हिस्सा रखनेवाला; किसी बातमें किसीके बराबर अधिकार रखनेवाला व्यक्ति, बराबरका अधिकारी या हकदार। **–दारी**–स्त्री० पट्टियाँ होनेका भाव; किसी वस्तुका कई पट्टीदारोंकी संपत्ति होना; पट्टीदार होनेका भाव; समान अधिकार रखनेका भाव; संपत्ति या अधिकारमें बराबरका अधिकारी होनेका दावा; किसी विषयमें दूसरेके बराबर अधिकार रखनेका दावा; कई पट्टीदारोंकी संयुक्त संपत्ति। **मु०–जमाना**–माँगके दोनों ओरके बालोंको इस प्रकार सँवारना कि उनकी तह बैठ जाय। **–दारी करना**–समान अधिकार रखनेका दावा करना; पट्टीदारीका प्रश्न खड़ा करके किसीके काममें बाधा पहुँचाना; बराबरी करना। **–पढ़ाना**–बहकानेवाली शिक्षा देना। **–में आना**–किसीकी धूर्ततापूर्ण बातोंमें फँस जाना।

पट्टू–पु० एक प्रकारका ऊनी कपड़ा।

पट्टैत–पु० पटैत; मूर्ख मनुष्य।

पठमान*–वि० पढ़ने योग्य।

पट्ठा–पु० युवा, तरुण, चढ़ती जवानीवाला मनुष्य, पशु आदि; कुश्तीबाज जवान; लंबा और मोटे दलका पत्ता; मांसपेशियोंको एक दूसरीसे और हड्डियोंसे जुड़ी रखनेवाली मोटी नस; एक तरहका मोटा गोटा जो कुछ सुनहला और कुछ रुपहला होता है। **–पछाड़**–वि० (वह स्त्री) जो पट्ठेको भी पछाड़ दे, बहुत बलवती (स्त्री)।

पट्ठी–स्त्री० दे० 'पठिया'।

पठन–पु० [सं०] पढ़नेकी क्रिया, पढ़ना; (रीडिंग) दे० 'वाचन'; वर्णन करना। **–शील**–वि० जो बहुत पढ़े।

पठनीय–वि० [सं०] पढ़ने योग्य।

पठनेटा–पु० पठानका बेटा।

पठवाना*–स० क्रि० भेजवाना।

पठान–पु० मुसलमानोंकी एक प्रसिद्ध उपजाति।

पठाना*–स० क्रि० भेजना।

पठानिन–स्त्री० पठानकी या पठान जातिकी स्त्री ।

पठानी–स्त्री० पठानकी या पठान जातिकी स्त्री; पठानका स्वभाव; पठानपन । वि० पठानका; पठान-संबंधी ।

पठार–पु० दूरतक फैली हुई चौरस और ऊँची जमीन ।

पठावनि*–स्त्री० दे० 'पठावनी' ।

पठावनी–स्त्री० किसी कार्यके लिए किसीको कहीं भेजना; किसीको कहीं भेजने या पहुँचानेकी उजरत ।

पठित–वि० [सं०] पढ़ा हुआ ।

पठिया–स्त्री० जवान और हृष्ट-पुष्ट औरत ।

पठौना*–स० क्रि० पठाना, भेजना ।

पठौनी†–स्त्री० दे० 'पठावनी' ।

पठ्यमान*–वि० पढ़ने योग्य ।

पड़छती, पड़छत्ती–स्त्री० पानीकी बौछारसे बचानेके लिए कच्ची दीवारपर रखी या लगायी जानेवाली छाजन या टट्टी ।

पड़ता–पु० किसी मालकी खरीद या तैयारीका खर्चा; बिक्रीके दाममेंसे लागत छाँटकर होनेवाली बचत; औसत; दर; लगानकी दर । **मु०–निकालना,–फैलाना,–बैठाना**–लागतका विचार कर भाव निश्चित करना ।

पड़ताल–स्त्री० पड़तालनेका काम या भाव; निरीक्षण, जाँच (यह शब्द प्रायः 'जाँच' शब्दके साथ ही प्रयुक्त होता है); पटवारी या कानूनगो द्वारा की जानेवाली खेतोंकी एक विशेष प्रकारकी जाँच जिसमें बोयी हुई फसल, उसे बोनेवालेका नाम, सिंचाई आदिका ब्योरा लिखा जाता है ।

पड़तालना–स० क्रि० जाँच करना; छानबीन करना ।

पड़ती–स्त्री० दे० 'परती' ।

पड़ना–अ० क्रि० गिरना; कहीं यकायक जा पहुँचना; असर होना; खाली न जाना; आना; डाला या पहुँचाया जाना; बिछाया, रखा जाना; घटनाका रूप प्राप्त करना; घटित होना; ब्याहा जाना; स्थित होना; दखल देना; शरीक होना; टिकना, ठहरना, मुकाम करना; लेटना; बीमार होना; मिलना; पड़ता खाना; आमदनी, लाभ आदिका पड़ता होना; प्रसंग प्राप्त होना; उपस्थित होना; राहमें मिलना; निकल आना, पैदा होना; होना; हो जाना; तीव्र इच्छा होना; धुन सवार होना; नियत किया जाना, मुकर्रर होना; बन जाना । (**किसीपर पड़ना**–आफत आना, विपत्ति आना । **क्या पड़ी है**–क्या मतलब है ?)

पड़पड़ाना–अ० क्रि० 'पड़-पड़' शब्द होना; मिर्च आदि तीखी वस्तुओंके स्पर्शसे जीभका जलनेसा लगना ।

पड़पड़ाहट–स्त्री० पड़पड़ानेकी क्रिया या भाव ।

पड़वा†–स्त्री० दे० 'परिवा' । पु० दे० 'पँड़वा' ।

पड़वी†–स्त्री० वैशाख या ज्येष्ठमें बोयी जानेवाली एक प्रकारकी ईख ।

पड़ा–पु० भैंसका बच्चा, पँड़वा ।

पड़ापड़–स्त्री० 'पड़-पड़' की आवाज । अ० 'पड़-पड़' की आवाजके साथ ।

पड़ाव–पु० सेना, काफिला या पथिकोंका रातभर या कुछ समयके लिए मार्गमें कहीं ठहरना; सेना या पथिकोंका यात्राके बीचका अस्थायी ठहराव; यात्रियोंके ठहरनेकी जगह, टिकान । **मु०–मारना**–पड़ाव डाले हुए काफिले या यात्री-दलको लूटना; कोई भारी साहसका काम करना ।

पड़िया–स्त्री० भैंसका मादा बच्चा ।

पड़ोरा†–पु० परवल; † खेखसा ।

पड़ोस–पु० किसीके घरके पासके घर, प्रतिवेश; किसीके घरके आसपासकी जगह ।

पड़ोसी, पड़ौसी–पु० पड़ोसमें रहनेवाला ।

पढ़ंत–स्त्री० निरंतर पढ़ना; जादू ।

पढ़ंता–वि०, पु० पढ़नेवाला ।

पढ़त–स्त्री० (रीडिंग) दे० 'वाचन' ।

पढ़ना–स० क्रि० लिखे हुए अक्षरों या शब्दोंका क्रमसे उच्चारण करना; पुस्तक या लेख आदिको इस प्रकार देखना कि उसमें लिखे हुए शब्द-समूहका अर्थ या भाव समझमें आ जाय; मन ही मन जपना; बोल-बोलकर याद करना, घोखना; जादू करना; तोता-मैना आदिका सिखाये हुए शब्दोंका उच्चारण करना; नया सबक सीखना; सीखना । **मु०–लिखना**–शिक्षा प्राप्त करना ।

पढ़वाना–स० क्रि० किसीको पढ़नेमें प्रवृत्त करना ।

पढ़वैया†–पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पढ़ाई–स्त्री० पढ़नेका काम, पठन; पढ़नेका भाव; विद्योपार्जन, शिक्षा; पढ़ानेका काम, पाठन; पढ़ानेका भाव; पढ़ानेका तर्ज; अध्ययनका ढंग; पढ़ानेके बदले दिया जानेवाला धन, पढ़ानेकी उजरत ।

पढ़ाना–स० क्रि० शिक्षा देना, शिक्षित बनाना, कोई विषय या बात सिखाना; तोता-मैना आदिको किसी शब्द या शब्द-समूहका उच्चारण करना सिखाना ।

पढ़ैया†–पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पण–पु० [सं०] ११ या २० माशेके बराबर एक पुराना सिक्का; ताँबेका एक पुराना सिक्का जो अस्सी कौड़ियोंके बराबर होता था; जुआ; बाजी; बाजी लगायी हुई चीज; प्रतिज्ञा; इकरार; मजदूरी, पारिश्रमिक; वेतन; मूल्य; धन; बेचनेकी चीज, विक्रेय वस्तु; व्यवहार । **–क्रिया**–स्त्री० (बेटिंग) बाजी लगानेका कार्य, पणन ।

पणन–पु० [सं०] खरीदने-बेचनेकी क्रिया; बाजी लगाना, शर्त लगाना; प्रतिज्ञा करना; इकरार करना, कौल करना ।

पणव–पु०, **पणवा**–स्त्री० [सं०] छोटा ढोल; एक वर्णवृत्त ।

पणवानक–पु० [सं०] नगाड़ा ।

पणांगना–स्त्री० [सं०] वेश्या ।

पणासी*–वि० विनाशक–'हौं जब ही जब पूजन जात पिता पद पावन पाप-पणासी'–राम० ।

पणित–वि० [सं०] खरीदा या बेचा हुआ; जिसकी बाजी लगायी गयी हो; स्तुत । पु० बाजी ।

पण्य–वि० [सं०] क्रय-विक्रयके योग्य; व्यवहार या व्यापारके योग्य । पु० विक्रेय वस्तु, सौदा; रोजगार, व्यापार; मूल्य, दाम; दुकान । **–क्षेत्र**–पु०,**–भूमि**–स्त्री० (मारकेट) वस्तुएँ बेचने-खरीदनेका स्थान, बाजार । **–पति**–पु० बहुत बड़ा व्यापारी । **–पत्तन**–पु० मंडी । **–योषित,–विलासिनी**–स्त्री० वेश्या । **–वाहक नौका**–स्त्री० (कारगो बोट) माल ढोनेवाली नाव । **–वीथि,–वीथिका,–वीथी,–शाला**–स्त्री० बाजार; दुकान ।

पण्यांगना–स्त्री० [सं०] वेश्या ।

पण्याजीवक–पु० [सं०] व्यापारी ।

पतंग–पु० [सं०] सूर्य; पक्षी, चिड़िया; शलभ; टिड्डी; खेलनेका गेंद। स्त्री० [हिं०] बाँसकी कमानियोंके ढाँचेपर कागज मढ़कर बनाया जानेवाला खिलौना जिसे तागेसे बाँधकर हवा चलते समय आसमानमें उड़ाते हैं, गुड्डी, कनकौवा। **–बाज़**–पु० पतंग उड़ाने, लड़ानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० पतंगबाज होनेका भाव; पतंग उड़ानेका हुनर।

पतंगम–पु० [सं०] पक्षी; शलभ, पतंगा।

पतंगा–पु० उड़नेवाला कीड़ा; फतिंगा; चिरागका गुल; चिनगारी।

पतंचिका–स्त्री० [सं०] धनुष्की डोरी।

पत*–पु० पति; मालिक; अधीश्वर, प्रभु। स्त्री० लाज; प्रतिष्ठा; इज्जत। **–पानी**–पु० प्रतिष्ठा, इज्जत; लाज। **मु०–उतारना**–किसीकी प्रतिष्ठा भंग करना; अपमान करना। **–रखना**–प्रतिष्ठाकी रक्षा करना, इज्जत बचाना।

पतझड़–स्त्री० शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ोंकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं।

पतत्प्रकर्ष–पु० [सं०] एक काव्यदोष जहाँ किसी अलंकार या किसी रचनाकी उत्कृष्टताका निर्वाह न हो सके।

पतन–पु० [सं०] ऊपरसे नीचे आना; गिरना; च्युत होना; अधोगति; संहार; नाश; मरण; नीचे जानेकी क्रिया या भाव; बैठना; डूबना (जैसे सूर्यका); जातिसे च्युत होना; गर्भपात; पतित होना;। **–शील**–वि० पतन जिसका स्वभाव हो; जो सदा पतनोन्मुख रहे।

पतनीय–वि० [सं०] पतनके योग्य; पतित होनेके योग्य।

पतनोन्मुख–वि० [सं०] पतनकी ओर जानेवाला, पतनकी ओर प्रवृत्त, जो पतनकी राहपर हो; जो पतनके निकट हो।

पतर*–वि० पतला। पु० पत्ता; पनवारा।

पतरा†–वि० पतला; झीना; निर्बल।

पतराई†–स्त्री० पतलापन।

पतरी†–स्त्री० पत्तल।

पतरौल–पु० गश्त लगानेवाला व्यक्ति (अं० पैट्रोल)।

पतला–वि० जिसका फैलाव या घेरा कम हो; जो मोटा न हो; जिसका शरीर मोटा न हो, कृश; सँकरा; बारीक; जो गाढ़ा न हो; जिसमें जलांशकी अधिकता हो; शक्तिहीन; अबल। **–पन**–पु० पतला होनेका भाव। **मु०–पड़ना**–दीन-हीन हो जाना; आपद्ग्रस्त होना।

पतलून–पु० [अं० 'पैंटलून'] अंग्रेजी ढंगका पायजामा।

पतवार–स्त्री० नावमें पीछेकी ओर लगी हुई वह तिकोनी लकड़ी जिसके द्वारा नावको इधर-उधर घुमाते हैं, कर्ण।

पतवारी–स्त्री० ईखका खेत; पतवार।

पता–पु० किसी वस्तु, स्थान या व्यक्तिका ऐसा परिचय जो उसे पाने, ढूँढ़ने या उसके पासतक समाचार पहुँचानेमें सहायक हो; चिट्ठी आदिकी पीठपर लिखा जानेवाला पानेवालेका नाम आदि जिसके सहारे वह उसके पास पहुँच जाती है; जानकारी; स्थितिसूचक चिह्न या लक्षण; खोज, खबर; ठिकाना; भेद, तत्त्व, रहस्य। **(पते)की,–की बात**–भेदभरी बात, तत्त्वकी बात।

पताई–स्त्री० सूखी हुई पत्तियाँ या उनका पुंज। **मु०–झोंकना,–लगाना**–आगको तेज करनेके लिए उसमें पताई झोंकना या डालना।

पताका–स्त्री० [सं०] ध्वजके ऊपरी सिरेपर पहनाया जानेवाला वह तिकोना या चौकोना कपड़ा जिसपर प्रायः किसी राजा, राष्ट्र या संघ आदिका निजी चिह्न बना रहता है; झंडा, पताका पहनानेका डंडा, ध्वज; चिह्न, निशान; प्रतीक; सौभाग्य; नाटकमें एक विशिष्ट स्थल, दे० 'पताका-स्थानक'; तीर चलानेमें उँगलियोंकी एक विशेष प्रकारकी मुद्रा; प्रासंगिक कथावस्तुका एक भेद (ना०)। **–दंड**–पु० पताका लगानेका डंडा। **–शीर्षक**–पु० (बैनर हेडलाइन) समाचार-पत्रके मुखपृष्ठपर एक सिरेसे दूसरे सिरेतक, पताका रूपमें, दिया गया सर्वप्रधान शीर्षक, पृष्ठ(व्यापी)शीर्षक। **–स्थानक**–पु० नाटकमें वह स्थल जहाँ किसी सोचे हुए विषय या प्रस्तुत प्रसंगसे मेल खानेवाला दूसरा विषय या प्रसंग उपस्थित हो जाय। **मु० (किसीकी)–उड़ना या फहरना**–एकाधिकार होना; सबसे बढ़कर होना; मूर्द्धन्य होना; बेजोड़ होना। **(किसीकी) गुण, विद्या आदिकी पताका उड़ना या फहरना**–ख्याति होना। **–उड़ाना या फहराना**–आधिपत्य स्थापित करना, विजय प्राप्त करना। **–गिरना**–पराजय होना, हार होना।

पताकिक–पु० [सं०] पताका धारण करनेवाला, झंडाबरदार।

पताकित–वि० [सं०] (फ्लैग्ड) पताकाओंसे सज्जित; जिसपर पताका लगायी गयी हो।

पताकिनी–स्त्री० [सं०] सेना।

पताकी (किन्)–वि० [सं०] पताकावाला; पताका ले चलनेवाला। पु० झंडा ले चलनेवाला, झंडाबरदार; झंडा।

पतार*–पु० दे० 'पाताल'; जंगल।

पताल–पु० 'पाताल'का एक विकृत रूप। **–दंती**–पु० वह हाथी जिसका दाँत सीधे नीचेकी ओर बढ़ा हो।

पतावर–पु० सूखे पत्ते।

पतिंग–पु० फतिंगा।

पतिंवरा–स्त्री० [सं०] स्वेच्छासे वर चुननेवाली कन्या; वह कन्या जो अपना वर चुननेके लिए स्वयंवर-भूमिमें उतरी हो।

पति–स्त्री० दे० 'पत'; साख। पु० [सं०] किसी वस्तुका स्वामी, अधीश, वह जिसका किसी वस्तुपर अधिकार हो; किसी ब्याही हुई औरतका भर्ता, शौहर, कांत; शासक। **–कामा**–वि०, स्त्री० पति चाहनेवाली (स्त्री); पतिसे मिलनेकी इच्छा रखनेवाली (स्त्री)। **–घातिनी,–घ्नी**–स्त्री० पतिको मार डालनेवाली स्त्री; वैधव्य योगवाली स्त्री; एक हस्तरेखा जो यह सूचित करती है कि अमुक स्त्री पतिघातिनी होगी। **–देवता,–देवा**–स्त्री० वह स्त्री जो अपने पतिको देवताकी तरह माने, पतिव्रता स्त्री। **–धर्म**–पु० पतिके प्रति स्त्रीका कर्तव्य। **–प्राणा**–स्त्री० पतिव्रता स्त्री। **–लोक**–पु० वह उत्तम परलोक जिसमें पतिकी आत्माका निवास हो। **–बर्त***–पु० दे० 'पतिव्रत'। **–बर्ता***–वि०, स्त्री० दे० 'पतिव्रता'। **–व्रत**–पु० पतिके प्रति एकांत प्रेम या भक्ति। **–व्रता**–वि०, स्त्री० पतिमें अनन्य श्रद्धा, अनुराग रखनेवाली (स्त्री), साध्वी (नारी)।

–सेवा–स्त्री० पतिभक्ति।

पतिआना†–स० क्रि० दे० 'पतियाना'।

पतिआर, पतिआरा*–पु० विश्वास, प्रतीति।

पतित–वि० [सं०] गिरा हुआ; जाति, धर्म आदिसे च्युत; आचारभ्रष्ट; महापातकी, बहुत नीच; पराजित; अत्यंत अपावन। **–उधारन***–वि० पतितोंको तारनेवाला; जो पतित जनोंको सुगति दे। पु० ईश्वर; सगुण ब्रह्म जो पतित जनोंको तारनेके लिए अवतीर्ण होता है। **–पावन**–वि० पतितको पवित्र करनेवाला; जो पतितका उद्धार करे। पु० ईश्वर।

पतिनी*–स्त्री० दे० 'पत्नी'।

पतिया–स्त्री० पत्री, चिट्ठी।

पतियाना*–स० क्रि० विश्वास करना; विश्वसनीय समझना, सच्चा या ठीक मानना।

पतियार†–पु० विश्वास, एतबार। वि० विश्वसनीय।

पतियारा*–पु० विश्वास, एतवार।

पतिवंती*–वि० स्त्री० सधवा; जिसका पति जीवित हो।

पतीजना*–स० क्रि० विश्वास करना, पतियाना।

पतीर*–स्त्री० पंक्ति, पाँत।

पतील†–वि० पतला।

पतीली–स्त्री० एक प्रकारकी पीतल आदिकी चौड़े मुँह और पेंदेकी चिपटी बटलोई।

पतुकी*–स्त्री० पतीली; हंडी।

पतुरिया†–स्त्री० वेश्या, रंडी; कुलटा।

पतूख, पतूखी*–स्त्री० दे० 'पतोखी'।

पतोखद, पतोखदी–स्त्री० किसी वृक्ष, पौधे या घास आदिके फूल, पत्ते आदिसे बनी दवा, खरबिरई।

पतोखा–पु० पत्तेका बना दोना; पत्तोंसे बनी छतरी।

पतोखी–स्त्री० छोटा पतोखा।

पतोह†, पतोहू–स्त्री० पुत्रवधू, पुत्रकी स्त्री।

पतौआ, पतौवा*–पु० पत्ता।

पत्तन–पु० [सं०] नगर, शहर; मृदंग।

पत्तर–पु० पीटकर पतला बनाया हुआ धातुका टुकड़ा जो कागजकी तरह किसी चीजपर चढ़ाया जाय; पत्तल।

पत्तल–स्त्री० थालीकी ज़गह उपयोगमें लानेके लिए बनाया गया पत्तोंका पात्र; पत्तलभर खाद्य सामग्री, परोसा; पत्तलमें रखी हुई खाद्य सामग्री। **मु० (एक)–के खानेवाले**–बहुत नजदीकी। **–पड़ना**–खानेवालोंकेसामने पत्तलोंका रखा जाना। **–परसना**–पत्तलपर खाद्य सामग्री रखकर खानेवालेके सामने रखना। **–बाँधना**–कोई पहेली पूछकर उसे हल करनेके पहले भोजन न करनेकी कसम देना। **(किसीकी)–में खाना**–किसीके साथ खान-पानका नाता जोड़ना या रखना। **(जिस)–में खाना उसीमें छेद करना**–उपकार करनेवालेका अपकार करना, कृतघ्न होना।

पत्ता–पु० कांड अथवा टहनीसे निकलनेवाला पेड़-पौधोंका वह हरा अवयव जिससे छाया होती है और जो सूख जानेपर झड़ जाता है,पत्र; कानमें पहननेका एक गहना; मोटे कागजका गोल या चौकोर टुकड़ा; पत्तर। वि० बहुत हलका (ला०)। **मु०–खड़कना**–किसीकी आहट मिलना, कोई खटका होना। **–तोड़कर भागना**–बेतहाशा भागना। **– न हिलना**–जरा भी हवा न चलना। **–हो जाना**–चटपट गायब हो जाना।

पत्ति–पु० [सं०] पैदल चलनेवाला यात्री; पैदल सिपाही, पदाति; योद्धा, वीर। स्त्री०सेनाका सबसे छोटा विभाग। **–पाल**–पु० पाँच या छः सिपाहियोंका सरगना या नायक। **–व्यूह**–पु० वह व्यूह जिसमें आगे कवचधारी सैनिक हों और पीछे धनुर्धर। **–संहति**–स्त्री०, **सैन्य**–पु० पैदल सेना।

पत्तिक–वि० [सं०] पैदल चलनेवाला।

पत्ती–स्त्री० छोटा पत्ता; साझेका हिस्सा, भाग; साझा; पँखड़ी; भाँग; पत्तीके आकारका कटा हुआ लकड़ी, धातु आदिका टुकड़ा जो कहीं जड़ा, लगाया या लटकाया जाय। **–दार**–पु० वह व्यक्ति जिसका किसी संयुक्त संपत्ति या व्यवसायमें साझा हो, हिस्सेदार।

पत्ती(त्तिन्)–पु० [सं०] पैदल सिपाही, प्यादा; पैदल चलने या यात्रा करनेवाला।

पत्थ*–पु० दे० 'पथ्य'।

पत्थर–पु० पृथ्वीका कड़ा स्तर; वह द्रव्य जिससे पृथ्वीका कड़ा स्तर बना होता है; इसका कोई टुकड़ा; मीलकी संख्या सूचित करनेके लिए सड़कके किनारे गाड़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा; सीमा या हद निर्धारित करनेके लिए गाड़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा; ओला; हीरा-जवाहर आदि; पत्थरकेसे स्वभाव या गुणसे युक्त वस्तु; वह वस्तु जो कठोरता, भारीपन आदिमें पत्थरके समान हो; कुछ नहीं, खाक (ला०)। **–कला**–स्त्री० एक प्रकारकी पुराने ढंगकी बंदूक, तोड़ेदार बंदूक। **–चटा**–पु० एक प्रकारकी घास; पत्थर चाटनेवाला एक प्रकारका साँप; एक तरहकी मछली; कंजूस आदमी। **–पानी**–पु० आँधी-पानी। **–फोड़**–पु० हुदहुद चिड़िया; एक तरहका छोटा पौधा जो अधिकतर बरसातमें दीवारोंको फोड़कर निकलता है। **–फोड़ा**–पु० पत्थरका काम करनेवाला, संगतराश। **–बाज़**–पु० पत्थर चलाकर मारनेवाला; वह जिसे पत्थर या ढेला चलानेका अभ्यास हो। **–बाज़ी**–स्त्री० पत्थर चलाकर मारनेकी क्रिया, ढेलवाही। **मु०–का कलेजा या दिल**–अति कठोर हृदय, ऐसा हृदय जिसमें करुणा, दया आदि कोमल भावोंका उदय न हो। **–का छापा**–लीथोकी छपाई। **–की छाती**–घोर कष्ट या विषम परिस्थिमें भी न डिगनेवाला चित्त, मजबूत दिल। **–की लकीर**–न मिटनेवाली वस्तु, सदा बनी रहनेवाली वस्तु। **–को जोंक लगाना**–असंभव या दुःसाध्य कार्य करना। **–चटाना**–पत्थरपर रगड़कर धार तेज करना। **–तलेसे हाथ निकलना**–भारी कष्टसे छुटकारा मिलना। **–तले हाथ आना या दबना**–भारी विपत्तिमें पड़ जाना। **–निचोड़ना**–किसी ऐसे व्यक्तिसे कुछ प्राप्त करना या वसूल करना जिससे उसका मिलना असंभव हो; किसीसे ऐसा कोई काम निकालना जो उसके स्वभावके विरुद्ध हो; असंभव कार्य करना। **–पड़े**–मिट जाय, जाता रहे (गाली)। **–पर दूब जमना**–अनहोनी बात होना। **–पसीजना**–निष्ठुर हृदयमें दयाका

संचार होना । **-पिघलना**-दे० 'पत्थर पसीजना'। **-मारे भी न मरना**-मृत्युका कारण रहते हुए भी न मरना; जल्दी न मरना। **-सा खींच मारना या फेंक मारना**-बहुत कड़ी बात कहना, दोटूक जवाब देना।

पत्थल†-पु० दे० 'पत्थर'।

पत्नी-स्त्री० [सं०] किसी पुरुषसे संबद्ध वह स्त्री जिसके साथ उसका ब्याह हुआ हो, परिणीता स्त्री, भार्या, जोरू। **-व्रत**-पु० विवाहिता स्त्रीके अलावा और किसी स्त्रीसे संबंध न रखनेका व्रत।

पत्याना*-स० क्रि० दे० 'पतियाना'।

पत्यारा*-पु० दे० 'पतियारा'।

पत्यारी*-स्त्री० पाँत, कतार।

पत्र-पु० [सं०] पत्ता; चिट्ठी; कागज; लिखा या छपा हुआ कागज; वह कागज जिसपर कोई बात लिखी या छपी हो; किसी व्यवहार या घटनाके विषयका प्रमाणरूप लेख (पट्टा, दस्तावेज); समाचारपत्र, अखबार; पुस्तक, कापी आदिका कोई पन्ना, वर्क; किसी धातुकी पट्टी या पत्तर; पंख; तेजपत्ता; बाणका परकी तरह निकला हुआ हिस्सा; यान, रथ; चंदन, कस्तूरी आदि गंधद्रव्योंसे कपोल, कुच आदिपर बनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न या बूटे आदि; कटार, तलवार आदिका फल; छुरा, कटार। **-कार**-पु० समाचारपत्रका संपादक या लेखक। **-कारी**-स्त्री० [हिं०] पत्रकारका पेशा। **-चलार्थ**-पु० (पेपर-करेंसी) छपे हुए कागज, या नोटके रूपमें चलनेवाली मुद्रा, कागजी मुद्रा। **-पाल**-पु० (पोस्टमास्टर) डाकखानेका प्रधान अधिकारी, डाकपति। **-पुट**-पु० पत्तेका पात्र, दोना। **-पुष्प**-पु० रक्त तुलसी; मामूली भेंट, सत्कारकी मामूली चीजें। **-पेटिका**-स्त्री० (लेटरबाक्स) भेजी जानेवाली चिट्ठी या पैकेट छोड़नेका डब्बा; मकानके द्वारादिपर लगाया हुआ संदूक जिसमें बाहरसे आयी हुई चिट्ठियाँ आदि पत्र-वितरक (डाकिया) द्वारा डाल दी जाती हैं। **-भंग**-पु० चंदन, कस्तूरी, केसर आदिसे कपोल, स्तन आदिपर बनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न, बूटे आदि। **-रचना, -रेखा, -लेखा**-स्त्री० पत्रभंग। **-वल्लरी, -वल्ली**-स्त्री० पत्रभंग। **-वाह, -वाहक**-पु० पक्षी; चिट्ठी ले जानेवाला; बाण। **-वाहपंजिका**-स्त्री० (प्यूनबुक) वह छोटी पंजी या बही जिसपर पत्रादिका ब्यौरा चढ़ा दिया जाता है और जिसे पत्र-वाहक पानेवालेसे हस्ताक्षर करानेके लिए अपने साथ ले जाता है। **-वितरक**-पु० (पोस्टमैन) बाहरसे आये हुए पत्रों आदिको पानेवालोंमें बाँट आने, उनके पासतक पहुँचा देनेवाला पत्रालयका आदमी, डाकिया। **-वियोजक**-पु० (सॉर्टर) भेजे जानेवाले स्थानोंके अनुसार पत्रों आदिको पृथक्-पृथक् करनेवाला पत्रालयका कर्मचारी। **-व्यवहार**-पु० खत-कितावत, लिखा-पढ़ी। **-श्रेणी**-स्त्री० मूसाकानी; पत्तोंकी पंक्ति। **-श्रेष्ठ**-पु० बेलका पेड़। **-सूचना-विभाग**-पु० (प्रेस इनफरमेशन ब्यूरो) समाचार-पत्रोंके लिए सूचनाएँ और समाचार देनेवाला सरकारका, सेना, पुलिस या किसी संस्थाका कार्यालय अथवा विभाग।

पत्रक-पु० [सं०] पत्ता; तेजपत्ता; पत्रभंग।

पत्रा-पु० पंचांग; पन्ना।

पत्राचार-पु० [सं०] (कारेस्पांडेंस) पत्रव्यवहार, खत-कितावत।

पत्रालय-पु० [सं०] (पोस्ट आफिस) वह स्थान या कार्यालय जहाँसे चिट्ठी, पारसल, मनीआर्डर आदि बाहर भेजने तथा बाहरसे आनेवाले पत्रों, पारसलों आदिको उपयुक्त व्यक्तियोंतक पहुँचानेका प्रबंध हो, डाकखाना, डाकघर।

पत्रालयिक आदेश-पु० [सं०] (पोस्टल आर्डर) पत्रालय (डाकखाने) द्वारा रुपया लेकर जारी किया गया एक तरहका धनादेश (चेक) जो बैंकके चेककी ही तरह रेखांकित किया जा सकता है, पर जो पृष्ठांकित कर अन्य किसीके नाम हस्तांतरित नहीं किया जा सकता, डाकीयादेश।

पत्रालयित-वि० (पोस्टेड) अन्यत्र भेजे जानेके लिए पत्रालय या पत्रपेटिका(डाकघर या लेटर बाक्स)में छोड़ा हुआ।

पत्रालयीय प्रमाणपत्र-पु० [सं०] (पोस्टल सर्टीफिकेट) कोई पत्र, पैकेट आदि अन्यत्र भेजनेके लिए पत्रालयको अर्पित किया गया इसका प्रमाण-पत्र जो पत्रालयके संबद्ध कर्मचारी द्वारा दिया जाय, डाकीय प्रमाणपत्र।

पत्रालाप-पु० [सं०] (नेगोशियेशन) चिट्ठी-पत्री आदिकी सहायतासे समझौतेका रूप निश्चित करने या कोई बात तय करनेका कार्य।

पत्रावलि, पत्रावली-स्त्री० [सं०] गेरू; पत्तोंकी पंक्ति या श्रेणी; पत्रभंग।

पत्राहार-पु० [सं०] सिर्फ पत्तियाँ खाकर रहना।

पत्रिका-स्त्री० [सं०] चिट्ठी; कागजका कोई टुकड़ा या पन्ना; पत्ती; पाक्षिक, मासिक आदि पत्र (हिं०)।

पत्री(त्रिन्)-वि० [सं०] पंखदार; पत्तियों या पत्रोंवाला; रथवाला। पु० बाण; पक्षी; बाज; वृक्ष; पर्वत; रथ; ताड़।

पथ-पु० [सं०] मार्ग, रास्ता; कार्य या व्यवहारकी पद्धति; †दे० 'पथ्य'। **-कर**-पु० (टॉल) किसी सड़क या पुलपरसे जाने, माल ले जाने आदिके लिए लगनेवाला कर। **-गामी(मिन्), -चारी(रिन्)**-पु० पथिक, राही। **-दर्शक, -प्रदर्शक**-पु० राह दिखानेवाला, रहनुमा। **-सुंदर**-पु० एक पौधा। **-स्थ**-वि० जो मार्गमें हो, मार्गस्थ।

पथराना-अ० क्रि० सूखकर पत्थर जैसा कड़ा हो जाना; रसहीन और कठोर हो जाना; शुष्क हो जाना; चेतनाशून्य हो जाना, जड़ हो जाना, निर्जीव हो जाना।

पथरी-स्त्री० पत्थरकी कुंडी, पत्थरकी मलिया; उस्तरे आदिकी धार तेज करनेका पत्थरका टुकड़ा, सिल्ली; चकमक पत्थर; पक्षियोंके पेटका वह भाग जहाँ पहुँचकर उनकी खायी हुई कड़ी चीजें पचती हैं; एक रोग जिसमें वृक्कों आदिमें पत्थरके छोटे टुकड़े जैसे पिंड बन जाते हैं, अश्मरी।

पथरीला-वि० जिसमें पत्थरके टुकड़े मिले हों।

पथरौटा-पु० पत्थरका कटोरा जैसा पात्र।

पथरौटी-स्त्री० पत्थरकी कूँड़ी, पथरी।

पथिक–पु० [सं०] रास्ता चलनेवाला, राही, बटोही ।

पथिकाश्रय–पु० [सं०] पथिकोंके ठहरनेकी जगह, धर्मशाला, सराय ।

पथेय*–पु० दे० 'पाथेय' ।

पथी(थिन्)–पु० [सं०] पथिक ।

पथीय–वि० [सं०] पथ-संबंधी; पथका ।

पथौरा–पु० गोबर पाथनेकी जगह ।

पथ्य–वि०[सं०] लाभकर, हितकर (आहार, औषध आदि); उचित; अनुकूल । पु० रोगीको दिया जानेवाला, रोगकी स्थितिके अनुकूल और हितकर आहार; रोगीके लिए हितकर वस्तु; कल्याण; हड़का पेड़; सेंधा नमक । **मु०–से रहना**–कुपथ्य न करना, वर्जित वस्तुओंसे परहेज करना, परहेजसे रहना ।

पथ्यापथ्य–वि० [सं०] रोगकी अवस्थामें हितकर और अहितकर ।

पद–पु० ईश-प्रार्थना-संबंधी गीत; भक्तिपरक गीत, भजन; [सं०] पैर; डग, कदम; चरणचिह्न; चिह्न, निशान; स्थान; आधार; योग्यता या कार्यके अनुसार नियत स्थान, ओहदा, दर्जा; विषय; पात्र; किसी छंद या पद्यका चरण या चौथा भाग; विभक्ति, प्रत्ययसे युक्त शब्द; वाक्य आदिका कोई अंश । **–कंज, –कमल**–पु० कमलवत् चरण । **–कारणात्** –अ० (एक्स ऑफिशियो) दे० 'पदेन' । **–क्रम**–पु० चलना, डग भरना; वेदमंत्रोंके पदोंको एक दूसरेसे अलग करनेका क्रम । **–ग, –चर**–पु० पैदल सिपाही । **–चारी(रिन्)**–वि० पैदल चलनेवाला । **–चिह्न**–पु० पैरका निशान । **–च्छेद**–पु० किसी वाक्य या वाक्यांशके पदोंको एक दूसरेसे अलग करना । **–च्युत**–वि० जो अपने पद या दर्जेसे हटा दिया गया हो, जिसका पद छीन लिया गया हो । **–च्युति**–स्त्री० पदच्युत होनेकी क्रिया या दशा । **–ज**–वि० पैरसे उत्पन्न । पु० पैरकी उँगलियाँ; शूद्र । **–तल**–पु० तलवा । **–त्याग**–पु० अपना पद या ओहदा छोड़ देना, अपने पद, ओहदेसे अलग हो जाना । **–त्राण**–पु० जूता, खड़ाऊँ आदि । **–त्रान***–पु० दे० 'पदत्राण' । **–दलित**–वि० पैरों तले कुचला हुआ । **–दारिका**–स्त्री० बिवाई । **–धारण-सुरक्षा**–स्त्री० (सीक्यूरिटी ऑफ टैन्यूर) किसी पदपर, नौकरी आदिपर काम करते रहने या सुरक्षित रूपसे बने रहनेकी पक्की आशा । **–न्यास**–पु० पैर रखना, डग भरना । **–पंकज, –पद्म**–पु० दे० 'पदकमल' । **–पद्धति**–स्त्री० पदचिह्नोंकी कतार । **–पाठ**–पु० वेदमंत्रोंका वह क्रम जिसमें उनमें प्रयुक्त सभी पद विभक्त करके अपने मूल रूपमें अलग-अलग रखे गये हों; वह ग्रंथ जिसमें वेदमंत्रोंका ऐसा संपादन किया गया हो (संहिता-पाठका उलटा) । **–पूरण**–पु० किसी छंदकी पूर्ति करना । **–बाधा**–स्त्री०, **–रोध (पदरोक)**–पु०(लेग बिफोर विकेट) (किसी बल्लेबाज द्वारा) टाँग अड़ाकर अर्थात् अनियमित रूपसे गेंदको यष्टियोंकी ओर बढ़नेसे रोक देना । **–भ्रंश**–पु० पदच्युति । **–मुक्त**–वि० (आउट गोइंग) अपना पद या स्थान छोड़कर अन्यत्र जानेवाला । **–मूल**–पु० तलवा; शरण, आश्रय (ला०) । **–मैत्री**–स्त्री० किसी छंद या पद्यमें एक ही शब्द या वर्णकी चमत्कारपूर्ण आवृत्ति; दोसे अधिक पदोंकी एक दूसरेके अनुरूप स्थिति, अनुप्रास । **–मोचन**–पु०(रिलीफ) किसी पद या कर्तव्यसे मुक्त हो जाना, छुट्टी पा जाना, पृथक् हो जाना या कर दिया जाना । **–योजना**–स्त्री० पदों या शब्दोंको जोड़ना, पदों या शब्दोंको चुन-चुनकर रखना । **–रिपु**–पु० काँटा । **–विग्रह, –विच्छेद**–पु० दे० 'पदच्छेद' । **–व्याख्या**–स्त्री० (पार्सिंग) वाक्यमें आये हुए पदका शब्दभेद, लिंग, वचन आदि बतलाना । **–शिक्षार्थी**–वि०, पु० (ऐप्रेंटिस) नौकरी पानेकी आशासे बिना वेतन लिये काम सीखनेवाला, उम्मेदवार; किसी अनुभवप्राप्त व्यवसायी, कलाकार आदिकी देखरेखमें व्यवसाय, कला आदिकी शिक्षा प्राप्त करनेवाला, शिक्ष्यमाण । **–सूचक चिह्न**–पु० (इनसिग्निया) राजा या किसी बड़े अधिकारी आदिके पदकी पहिचान करानेवाला विशेष चिह्न (मुकुट, दंड, पट्टा इ०) ।

पदक–पु० पूजनके लिए बनायी हुई किसी देवताके चरणकी प्रतिमूर्त्ति; बालकोंको पहनाया जानेवाला एक प्रकारका गहना जिसपर किसी देवताका चरण बना रहता है; कोई बहुत अच्छा या कमालका काम करनेपर किसीको उपहाररूपमें दिया जानेवाला सोने-चाँदी आदिका सिक्के जैसा गोल या अन्य आकारका टुकड़ा जिसपर प्रायः देनेवालेका नाम अंकित रहता है; [सं०] स्थान; ओहदा; गलेका एक गहना ।

पदम–पु० एक पेड़; * दे० 'पद्म' । **–काठ**–पु० पद्मकाष्ठ ।

पदमाकर*–पु० दे० 'पद्माकर' ।

पदवाना–स० क्रि० पदानेमें प्रवृत्त करना ।

पदवि, पदवी–स्त्री० [सं०] मार्ग, रास्ता; चलन, प्रणाली, पद्धति; स्थान; राज, संस्था आदिकी ओरसे किसीको दी जानेवाली आदर या योग्यतासूचक उपाधि, खिताब ।

पदांत–पु० [सं०] पदका अंतिम भाग; किसी श्लोक या पद्यके चरणका अंतिम भाग ।

पदांतर–पु० [सं०] दूसरा पद या डग; एक डगकी दूरी ।

पदांभोज–पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदाक्रांत–वि० [सं०] पाँवोंसे कुचला हुआ, पामाल ।

पदाघात–पु० [सं०] पैरका प्रहार ।

पदाति, पदातिक–पु० [सं०] पैदल चलनेवाला; प्यादा, पैदल सिपाही ।

पदातिका*–स्त्री० पैदल सेना ।

पदाती(तिन्)–पु० [सं०] पैदल सिपाही ।

पदाधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] वह जो किसी पदपर नियुक्त हो, ओहदेदार ।

पदाना–स० क्रि० पादनेमें प्रवृत्त करना; हैरान करना, परेशान करना; (खेलमें) दौड़ाना ।

पदाब्ज–पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदारथ*–पु० दे० 'पदार्थ' ।

पदारविंद–पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदार्घ्य–पु० [सं०] अतिथिको पैर धोनेके लिए दिया जानेवाला जल ।

पदार्थ–पु० [सं०] पद या शब्दका अर्थ; वह वस्तु जिसका किसी शब्दसे बोध हो; उन विषयोंमें कोई एक जिनके

नाम, रूप आदिका कथन न्याय, वैशेषिक आदि दर्शनोंमें किया गया है, कोई अभिधेय वस्तु (न्यायमें १६, वैशेषिकमें ६ या ७, सांख्यमें २५, योगमें २६ और वेदांतमें २ पदार्थ माने गये हैं); (मैटर) ऐसी वस्तु जिसका ज्ञान हम अपनी ज्ञानेंद्रियोंसे प्राप्त कर सकते हैं तथा जो स्थान घेरती, भार रखती और रुकावट पैदा करती है। **-विज्ञान**-पु० (फिजिक्स) दे० भौतिक शास्त्र'। **-विद्या**-स्त्री० वह विद्या जिसमें पदार्थोंका निरूपण किया गया हो।

पदार्पण-पु० [सं०] पैर रखना; आगमन (आदरसूचक)।

पदावधि-स्त्री० [सं०] (टेन्यूर) किसी पदपर काम करते रहनेकी अवधि।

पदावनत-वि० [सं०] पैरोंपर झुका हुआ, विनीत।

पदावली-स्त्री० भजनों आदिका संग्रह; [सं०] पदों या शब्दोंकी परंपरा; किसी रचनामें निवद्ध अनेक पद या शब्द; शब्दोंकी लड़ी; किसी कवि या लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्द-समूह।

पदावास-पु० [सं०] (आफिसल रेजीडेंस) किसी पदाधिकारीका सरकारी निवास-स्थान।

पदास-स्त्री० पादनेका भाव; पादनेका शारीरिक वेग।

पदासन-पु० [सं०] पादपीठ, पैर रखनेकी छोटी चौकी।

पदासा-वि० जिसे पदास लगी हो।

पदासीन-वि० सं०] (किसी विशेष) पदपर आरूढ।

पदाहत-वि० [सं०] पैरसे ठुकराया हुआ।

पदिक-वि० [सं०] पैदल। पु० प्यादा; पैरका अग्रभाग; * गलेका एक आभूषण जिसपर किसी देवताका चरण बना रहता है; गलेका एक गहना, जुगनू; रत्न; तमगा। **-हार**-पु० रत्नोंकी माला।

पदी*-पु० प्यादा, पदाति।

पदु*-पु० दे० 'पद'; बदला।

पदुम-पु० घोड़ेके शरीरपरका एक चिह्न; * दे० 'पद्म'।

पदुमिनी*-स्त्री० दे० 'पद्मिनी'।

पदेन-अ० [सं०] (एक्स ऑफिशियो) (व्यक्तिगत रूपसे नहीं, वरन्) किसी पदपर आरूढ़ रहने या काम करते रहनेके कारण, पदकी हैसियतसे।

पदोंड़ा-वि० जो बहुत पादे; कायर।

पदोदक-पु० [सं०] वह जल जिससे पैर धोया गया हो, चरणामृत।

पदोन्नति-स्त्री० [सं०] (प्रमोशन) किसी कर्मचारीके पदमें होनेवाली वृद्धि या उन्नति, पहलेसे अधिक ऊँचे पदपर नियुक्त होना या भेजा जाना, पदवृद्धि, तरक्की।

पद्धटिका-स्त्री० [सं०] एक मात्रिक छंद।

पद्धति, पद्धती-स्त्री० [सं०] पथ, मार्ग, रास्ता; प्रथा, रीति, परिपाटी, प्रणाली; पंक्ति, पाँत।

पद्म-पु० [सं०] कमल; वे बिंदियाँ जो हाथीकी सूँड़ आदिपर होती हैं; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; १०० नीलकी संख्या; पदमकाठ; पैरमें होनेवाला एक भाग्यसूचक चिह्न (सामुद्रिक); एक आसन। **-कंद**-पु० कमलकी जड़। **-काष्ठ**-पु० एक ओषधि, पदमकाठ। **-कोश**-पु० कमलका संपुट; कमलके भीतरका छत्ता जिसमें उसके बीज लगते हैं। **-ज,-जात**-पु० ब्रह्मा। **-नाभ,-नाभि**-पु० विष्णु। **-नाल**-स्त्री० कमलकी डंडी। **-निधि**-स्त्री० कुबेरकी एक निधि। **-निमीलन**-पु० कमलका संपुटित होना। **-नेत्र**-वि० जिसके नेत्र कमलके समान हों। पु० एक बुद्ध। **-पत्र,-पर्ण**-पु० पुष्करमूल; पुरइन; कमलकी पँखड़ी। **-पाणि**-वि० जिसके हाथमें कमलका फूल हो। पु० ब्रह्मा; विष्णु। **-बंध**-पु० एक प्रकारका चित्रकाव्य या चित्रालंकार जिसमें अक्षर इस ढंगसे लिखे जाते हैं कि उनसे कमलका फूल बन जाता है। **-बंधु**-पु० सूर्य; भ्रमर। **-बीज,-वीज**-पु० कमलगट्टा। **-भव,-भू,-योनि**-पु० ब्रह्मा। **-राग**-पु० एक प्रसिद्ध रत्न, लाल, मानिक। **-रेखा**-स्त्री० कमलके आकारकी हस्तरेखा जो अति धनवान् होनेका लक्षण मानी जाती है। **-लांछना**-स्त्री० लक्ष्मी; सरस्वती; तारा देवी। **-लोचन**-वि० कमल जैसे नेत्रोंवाला। **-वासा**-स्त्री० लक्ष्मी। **-व्यूह**-पु० प्राचीन कालकी एक प्रकारकी मोर्चाबंदी जिसमें सैनिकोंको इस ढंगसे खड़ा करते थे कि कमलपुष्पका आकार बन जाता था। **-संभव**-पु० ब्रह्मा।

पद्मक-पु० [सं०] पद्मव्यूह; हाथीकी सूँड़परके दाग; पद्म वृक्षकी लकड़ी; कुट नामक ओषधि; पद्मासन।

पद्मा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; लौंग; मनसा देवी।

पद्माकर-पु० [सं०] कमलोंसे युक्त जलाशय; कमल-राशि; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि।

पद्माक्ष-पु० [सं०] कमलगट्टा; सूर्य; विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमलके समान हों।

पद्माख-पु० दे० 'पद्मकाष्ठ'।

पद्मालया-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; लौंग।

पद्मावती-स्त्री० [सं०] मनसा देवी; एक प्राचीन नदी; एक सुरांगना; पटनाका एक पुराना नाम; उज्जयिनीका एक पुराना नाम।

प्रद्मासन-पु० [सं०] एक प्रकारका आसन जिसमें पालथी मारकर तनकर बैठते हैं; ब्रह्मा; शिव; सूर्य।

पद्मिनी-स्त्री० [सं०] कमलका पौधा; कमलकी नाल; कमलोंका समूह; कमलसे युक्त जलाशय; हथिनी; चार प्रकारकी स्त्रियोंमेंसे प्रथम श्रेणीकी स्त्री (कोकशास्त्र); चित्तौरकी एक प्रसिद्ध रानी। **-कांत,-वल्लभ**-पु० सूर्य।

पद्मेशय-पु० [सं०] विष्णु।

पद्मोद्भव-पु० [सं०] ब्रह्मा।

पद्मोद्भवा-स्त्री० [सं०] मनसा देवी।

पद्य-वि० [सं०] पद-संबंधी; पदोंवाला; शब्द-संबंधी। पु० चार चरणोंवाला छंद, छंदोवद्ध रचना, गद्यका उलटा।

पद्यमय-वि० [सं०] पद्यरूप।

पद्या-स्त्री० [सं०] पगडंडी; सड़कके किनारेकी पैदल चलनेकी पटरी।

पद्यात्मक-वि० [सं०] दे० 'पद्यमय'।

पधरना*-अ० क्रि० पधारना, आना।

पधराना-स० क्रि० आदरके साथ लिवा जाना; आदरपूर्वक बैठाना; स्थापित करना।

पधारना-अ० क्रि० पदार्पण करना; चला जाना। स० क्रि० पधराना।

पन-प्र० एक प्रत्यय जो भाववाचक संज्ञा बनानेके लिए जातिवाचक तथा गुणवाचक संज्ञाओंमें जोड़ा जाता है (जैसे-गँवारपन आदि)। पु० पण, प्रतिज्ञा; आयुके चार भागोंमेंसे कोई एक; 'पानी', 'पान' और 'पाँच' शब्दोंका समासगत रूप) **-कटा**-पु० खेतोंमें इधरसे उधर पानी ले जानेवाला आदमी। **-कपड़ा**-पु० शरीरमें कटने, छिलने आदिकी जगहपर बाँधा जानेवाला गीला कपड़ा। **-घट**-पु० पानी भरनेका घाट। **-चक्की**-स्त्री० पानीकी शक्तिसे चलनेवाली चक्की। **-चोरा**-पु० छोटे मुँह और चौड़े पेटका बरतन। **-डब्बा**-पु० दे० 'पानदान'। **-डुब्बा**-पु० गोताखोर; एक जलपक्षी जो पानीमें डूब-डूबकर मछलियाँ पकड़ता है। **-डुब्बी**-स्त्री० एक जलपक्षी जो पानीमें डूब-डूबकर मछलियाँ पकड़ता है; पानीके भीतर-भीतर चलनेवाला एक प्रकारका जहाज (सबमेरीन)। **-बट्टा**-पु०पानके बीड़े रखनेका एक प्रकारका डिब्बा। **-बिछिया,-बिच्छी**-स्त्री० पानीमें रहनेवाला एक प्रकारका डंक मारनेवाला कीड़ा। **-बिजली-शक्ति**-स्त्री० (हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर) जलशक्तिके संप्रयोगसे उत्पन्न होनेवाली बिजलीकी शक्ति, जलविद्युत्-शक्ति। **-भता**-पु० केवल पानीमें पकाया हुआ भात। **-भरा**-पु० पानी भरनेवाला नौकर। **-लगा**-पु० दे० 'पनकटा'। **-वाड़ी**-स्त्री० पानका खेत, बरेजा। पु० तमोली। **-वार***-पु०पत्तल। **-वारा**-पु० पत्तल; पत्तलभर भोजन; एक प्रकारका साँप। **-वारी**-स्त्री०, पु० दे० 'पनवाड़ी'। **-सल्ला†**-पु० प्याऊ, पौसरा। **-साखा**-पु० पाँच बत्तियोंवाली मशाल। **-साल,-साला**-स्त्री० पौसरा। **-सुइया**-स्त्री० छोटी डोंगी जिसमें खेनेवाला दोनों ओरके डाँड़े चला सकता है। **-सेरी**-स्त्री० दे० 'पंसेरी'। **-हड़ा**-पु० पान या हाथ धोनेकी पानी रखनेकी तमोलियोंकी हाँड़ी। **-हरा,-हारा**-पु० पानी भरनेवाला नौकर, पनभरा।

पनग*-पु० दे० 'पन्नग'।

पनगनि*-स्त्री० पन्नगी, सर्पिणी।

पनच-स्त्री० धनुष्की डोरी।

पनपना-अ० क्रि० पल्लवित होना; हराभरा होना; फूलना-फलना; फिरसे स्वस्थ होना।

पनपाना-स० क्रि० 'पनपना'का सकर्मक रूप, किसीके पनपनेका कारण होना।

पनव*-पु० दे० 'प्रणव'; एक बाजा।

पनस-पु० [सं०] कटहल; काँटा।

पनह*-स्त्री० पनाह।

पनहा-पु० कपड़े आदिकी चौड़ाई; भेद; चोरी गये मालका पता लगानेवाला या इसके लिए दिया जानेवाला पुरस्कार।

पनहिया†-स्त्री० दे० 'पनही'।

पनही*-स्त्री० जूता।

पना-पु० अपनेसे पके या आगमें पकाये हुए आम, इमली आदिके रस या गूदेसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका पेय पदार्थ, पानक, पन्ना।

पनाती-पु० नातीका बेटा।

पनार*-पु० दे० 'पनारा'।

पनारा, पनाला-पु० नाबदान; नाला; प्रवाह।

पनारी-स्त्री० नाली, मोरी;* धारा,बहाव;एक भोज्य वस्तु।

पनाली-स्त्री० मोरी, नाली।

पनासना†-स० क्रि० पालना-पोसना।

पनाह-स्त्री० [फा०] शत्रु आदिसे बचाव, परित्राण; शरण; आड़; शरण लेनेकी जगह, शरण्य। **मु० (किसीसे)-**
-माँगना-किसी कष्टप्रद वस्तु या हानि पहुँचानेवाले व्यक्तिके संसर्गसे बचना। **-लेना**-शरणके लिए कहीं जाना।

पनि-पु० समासमें प्रयुक्त पानीका बिगड़ा हुआ रूप। **-गर**-वि० पानीदार। **-घट**-पु० दे० 'पनघट'। **-हार**-पु० दे० 'पनहरा'। **-हारी**-स्त्री० पनहारिन।

पनिच*-स्त्री० दे० 'पनच'।

पनियाँ†-वि० पानीका; पानीमें उत्पन्न। पु० पानी। **-सोत**-वि० बहुत गहरा।

पनियाना†-स० क्रि० पानीसे सराबोर करना। अ० क्रि० पानीसे चपचपाना।

पनिहा-वि० जो पानीमें रहे; पानीका; जिसमें पानीका मेल हो, जलयुक्त। पु० दे० 'पनहा'।

पनी-पु० प्रण करनेवाला, कौल करनेवाला। † स्त्री० पन्नी, सुनहला-रुपहला कागज।

पनीर-पु० [फा०] फाड़े हुए दूधका थक्का, छेना; इससे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी टिकिया जो खानेके काममें आती है; पानी निचोड़े हुए दहीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका खाद्य पदार्थ। **मु०-चटाना**-कोई काम निकालनेके लिए किसीकी चापलूसी करना। **-जमाना**-कोई ऐसा काम करना जिससे और भी कार्य सिद्ध हो सकें।

पनीला-वि० जिसमें पानी मिला हो, जलसे युक्त।

पनुआँ-पु० गुड़के कड़ाहेका धोवन जिसे शरबतकी तरह पीते हैं। वि० जिसमें आवश्यकतासे अधिक पानी पड़ गया हो, फीका।

पनौटी-स्त्री० पान रखनेकी पिटारी, बाँसका पानदान।

पन्न-वि० [सं०] गिरा हुआ, नीचे खसका हुआ; गया हुआ, गत। पु० नीचेकी ओर जाना, अधोगमन; रेंगना। **-ग**-पु० दे० क्रममें।

पन्नई-वि० पन्नेके रंगका।

पन्नग-पु० [सं०] साँप (जो रेंगकर चलता है); सीसा; पदमकाठ; * पन्ना। **-केसर**-पु० नागकेसर। **-नाशन**-पु० गरुड़। **-पति**-पु० शेषनाग।

पन्नगारि, पन्नगाशन-पु० [सं०] गरुड़।

पन्नगिनि*-स्त्री० दे० 'पन्नगी'।

पन्नगी-स्त्री० [सं०] सर्पिणी, साँपिन; एक बूटी।

पन्ना-पु० हरे रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, जमुर्रद; पुस्तक आदिके दो पृष्ठ, वर्क; जूतेका पान; भेड़ोंके कानका वह चौड़ा हिस्सा जहाँसे ऊन काटते हैं; आम आदिका पना।

पन्नी-स्त्री० राँगे आदिका हलका पत्तर जिसके टुकड़ोंको दूसरी चीजोंपर सुंदरताके लिए चिपकाते हैं; वह कागज या चमड़ा जिसपर सोने-चाँदीका पानी चढ़ाया गया हो; एक भोज्य वस्तु; * बारूदकी एक आध सेरकी तौल। **-साज**-पु० पन्नी बनानेका पेशा करनेवाला। **-साजी-**

स्त्री॰ पन्नीसाजका काम, पन्नीसाजका पेशा।

पपड़ा–पु॰ लकड़ी आदिका सूखा छिलका; रोटीका छिलका।

पपड़िया, पपरिया–वि॰ जिसमें पपड़ी हो, पपड़ीदार। **–कत्था**–पु॰ सफेद कत्था।

पपड़ियाना–अ॰ क्रि॰ किसी चीजपर पपड़ी पड़ना; इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी पड़ जाय, बहुत अधिक सूख जाना।

पपड़ी–स्त्री॰ छोटा पपड़ा; किसी वस्तुकी वह ऊपरी परत जो उसके बहुत अधिक सूख जानेसे चिटककर अलगसी हो गयी हो, सूखकर ऐंठी हुई ऊपरी परत; घावका खुरंड; पत्तरके रूपमें जमायी हुई मिठाई; वृक्षकी सूखकर चिटकी हुई छाल।

पपड़ीला–वि॰ पपड़ीवाला, पपड़ीसे युक्त।

पपनी†–स्त्री॰ बरौनी।

पपिहा†–पु॰ दे॰ 'पपीहा'।

पपीता–पु॰ एक फलदार वृक्ष, एरंड मेवा।

पपीलि*–स्त्री॰ दे॰ 'पिपीलिका'।

पपीहरा†–पु॰ दे॰ 'पपीहा'।

पपीहा–पु॰ हलके काले रंगका एक प्रसिद्ध पक्षी जो वसंत और पावसमें मीठे बोल बोला करता है, चातक। (कहा जाता है कि यह 'पी कहाँ'-'पी कहाँ' की रट लगाया करता है और केवल स्वातीकी बूँदसे प्यास बुझाता है); सितारका पक्का तार; पपैया।

पपैया†–पु॰ सीटी; अमोलेका बना बाजा।

पपोरना*–स॰ क्रि॰ बाहोंको ऐंठकर उनकी पुष्टता देखना (बलाभिमानका सूचन)–'कंस लाज भय गर्व युत चल्यो पपोरत बाँह'–सू॰।

पबना*–स॰ क्रि॰ पाना।

पबारना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'पँवारना'।

पबि, पब्बि*–पु॰ दे॰ 'पवि'।

पब्बय*–पु॰ पर्वत, पहाड़; पत्थर।

पमाना*–अ॰ क्रि॰ डींग मारना।

पमार–पु॰ राजपूतोंका एक भेद; चकवँड़।

पयःपान–पु॰ [सं॰] दूध पीना।

पय(स्)–पु॰ [सं॰] दूध; जल; शुक्र, वीर्य; अन्न, आहार; ओज, शक्ति। **–द***–पु॰ दे॰ 'पयोद'। **–धि*, –निधि***–पु॰ पयोधि, पयोनिधि। **–हारी**–पु॰ [हिं॰] केवल दूध पीकर रहनेवाला साधु।

पयस्विनी–स्त्री॰ [सं॰] नदी; दूध देनेवाली गाय, धेनु।

पयादा–वि॰ पैदल। पु॰ दे॰ 'प्यादा'।

पयान–पु॰ प्रस्थान, गमन, रवानगी।

पयाम–पु॰ [फा॰] पैगाम, संदेश।

पयार*–पु॰ दे॰ 'पयाल'।

पयाल–पु॰ पके हुए धान, कोदो आदिके वे डंठल जिनसे दाने अलग कर लिये गये हों। **मु॰–झाड़ना**–व्यर्थ श्रम करना; ऐसे व्यक्तिकी सेवा करना जिससे कुछ प्राप्त न हो।

पयोद–पु॰ [सं॰] बादल।

पयोधर–पु॰ [सं॰] बादल; स्तन; मोथा; नारियल; रीढ़।

पयोधि, पयोनिधि–पु॰ [सं॰] समुद्र।

पयोमुक्(च्)–पु॰ [सं॰] बादल; मोथा।

परंच–अ॰ [सं॰] और भी; पर, लेकिन, तो भी।

परंजय–पु॰ [सं॰] शत्रुको जीतनेवाला; वरुण।

परंतप–वि॰ [सं॰] शत्रुको संतप्त करनेवाला, शत्रुतापक।

परंतु–अ॰ [सं॰] पूर्वकथित स्थितिसे वैपरीत्य या अंतर दिखलानेके लिए प्रयुक्त किया जानेवाला एक शब्द–मगर, लेकिन, किंतु।

परंतुक–पु॰ (प्रॉविजो) किसी अधिनियम, प्रलेख आदिकी धाराके साथ लगी हुई कोई शर्त या उसके पूर्ण रूपसे पालन या कार्यान्वित किये जानेमें पड़नेवाली किसी कठिनाईसे बचनेके लिए निकाला हुआ रास्ता।

परंद, परंदा–पु॰ दे॰ 'परिंदा'।

परंपद–पु॰ [सं॰] वैकुंठ; मोक्ष; उच्च पद।

परंपरया–अ॰ [सं॰] परंपराके अनुसार; परंपरासे।

परंपरा–स्त्री॰ [सं॰] अविच्छिन्न क्रम, चला आता हुआ अटूट सिलसिला; क्रमबद्ध समूह या पंक्ति; प्रथा, प्रणाली; पुत्र-पौत्र आदि, वंश, संतति; अनुक्रम; वध।

परंपरागत–वि॰ [सं॰] सदासे चला आता हुआ; क्रमागत।

परंपरित–वि॰ [सं॰] परंपरायुक्त; परंपरापर अवलंबित। **–रूपक**–पु॰ वह रूपक जिसमें एकका आरोप किसी दूसरेके आरोपका हेतु होता है।

पर–अ॰ किंतु, तो भी, लेकिन; पीछे; * पास। वि॰ [सं॰] अपनेसे भिन्न, अन्य, दूसरा, गैर; दूसरेका, पराया; आगेका, बादका; जो जुदा या अलग हो; अतिरिक्त; जो दूर या परे हो; जो किसी हदके बाहर हो; जो सबसे आगे या ऊपर स्थित हो; सबसे बड़ा, श्रेष्ठ; सर्वातीत; शत्रुतापूर्ण, विरोधी; लगा हुआ; लीन; निरत। सर्व॰ दूसरा व्यक्ति। पु॰ अजनबी; चरम बिंदु; गौण अर्थ; शत्रु; केवल ब्रह्म; शिव; ब्रह्मा; मोक्ष। **–काज**–पु॰ [हिं॰] दूसरेका काम। **–काजी**–वि॰ [हिं॰] दूसरेका काम करनेवाला, परोपकारी। **–क्रामण**–पु॰ (नेगोशियेशन) पूरे अधिकारों समेत (बंधपत्रादि) दूसरेको हस्तांतरित करनेकी क्रिया। **–क्राम्य**–वि॰ (नेगोशियेबिल) (वह बंध-पत्रादि) जो दूसरेको, समस्त अधिकारों समेत हस्तांतरित किया जा सके। **–क्षेत्र**–पु॰ दूसरेका शरीर; दूसरेका खेत; दूसरेकी स्त्री। **–गाछा**–पु॰ [हिं॰] दूसरे पेड़ोंपर लगनेवाला पौधा, बंदाक। **–गाछी**–स्त्री॰ [हिं॰] अमरबेल। **–च्छंदानुवर्ती-(र्तिन्)**–वि॰ जो दूसरेकी इच्छाके अनुसार काम करे, पराधीन। **–च्छिद्र(छिद्र)**–पु॰ दूसरेका दोष। **–ज**–वि॰ जिसका पालन-पोषण किसी दूसरेने किया हो। पु॰ [हिं॰] एक राग। **–जन**–पु॰ पराया, स्वजनका उलटा; * दे॰ 'परिजन'। **–जात**–वि॰ अन्य द्वारा पालित; परावलंबी। पु॰ नौकर; [हिं॰] दूसरी जातिका मनुष्य। स्त्री॰ दूसरी जाति। **–जाति**–स्त्री॰ दूसरी जाति। **–जित**–वि॰ दूसरेके द्वारा पाला पोसा हुआ; जिसे किसीने जीत लिया हो, विजित। पु॰ कोयल। **–तंत्र**–वि॰ जो दूसरेके वशमें हो, पराधीन। **–दार**–स्त्री॰ दूसरेकी स्त्री, परायी स्त्री; * लक्ष्मी; पृथ्वी। **–दारिक, –दारी(रिन्)**–पु॰ व्यभिचारी। **–देश**–

पु० अपने देशसे भिन्न देश, दूसरा देश। **–देशी**–वि० [हिं०] दूसरे देशका। पु० दूसरे देशमें रहनेवाला; प्रवासी। **–द्रोही (हिन्‌)**, **–द्वेषी (षिन्‌)**–वि० दूसरेसे द्वेष या शत्रुता करनेवाला। **–धन**–पु० दूसरेका धन, परायी संपत्ति। **–धर्म**–पु० दूसरेका या दूसरा धर्म, अपने धर्मसे भिन्न धर्म। **–पक्ष**–पु० शत्रुका पक्ष; विरोधीका मत; विरोधीकी दलील। **–पक्षग्राही**–वि० (टर्नकोट) अपना दल या पक्ष छोड़कर दूसरा दल या पक्ष ग्रहण कर लेनेवाला; अपने विश्वासों या सिद्धांतोंका परित्याग कर दूसरे विचारों-सिद्धांतोंका अनुयायी वन जानेवाला। **–पद**–पु० दे० 'परमपद'। **–पार**–पु० दूसरा किनारा, दूसरा छोर। **–पीड़क**–वि० दूसरोंको पीड़ा पहुँचानेवाला, दूसरोंको सतानेवाला; * दूसरोंके दुःखसे दुःखी होनेवाला। **–पुरुष**–पु० पतिसे भिन्न पुरुष; अजनबी; पुरुषोत्तम; विष्णु। **–पुष्ट**–वि० जिसका पालन-पोषण दूसरेने किया हो। पु० कोयल। **–पुष्टा**–स्त्री० वेश्या, रंडी; वंदाक। **–वस**–वि० [हिं०] दे० 'परवश'। **–वसताई***–स्त्री० परवशता। **–ब्रह्म (न्‌)**–पु० निर्गुण और उपाधिरहित ब्रह्म। **–भाग्योपजीवी(विन्‌)**–वि० दूसरेकी कमाई या दूसरेका अन्न खाकर निर्वाह करनेवाला। **–भाषा**–स्त्री० संस्कृतसे भिन्न भाषा; दूसरी भाषा। **–भुक्ता**–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसका किसी दूसरेके साथ समागम हो चुका हो। **–भृत**–वि० जिसका पालन दूसरेने किया हो। पु० कोकिल; * षडानन। **–भृत्‌**–पु० कौआ। **–मर्मज्ञ**–वि० दूसरेका भेद जाननेवाला। **–राष्ट्र**–पु० अपने देशको छोड़कर अन्य राष्ट्र। **–राष्ट्र-मंत्री**–पु० विदेशी मामलोंकी देखरेख करनेवाला मंत्री, विदेशमंत्री। **–लोक**–पु० स्वर्ग आदि लोक जहाँ मृत्युके पश्चात्‌ प्राणीकी आत्मा जाती है। **–लोकगमन**, **–लोकवास**–पु० मृत्यु (आदरार्थक)। (**मु०परलोक बनना**–मृत्युके पश्चात्‌ सद्गति प्राप्त होना। **–बिगड़ना**–मृत्युके पश्चात्‌ अच्छी गतिको प्राप्त न होना। **–सिधारना**–मरना।)**–वश**, **–वश्य**–वि० जो दूसरेके वशमें हो, पराधीन। **–वशता**, **–वश्यता**–स्त्री० परवश होनेका भाव, पराधीनता। **–वाद**–पु० अफवाह; दूसरेकी निंदा; प्रत्युत्तर, विरोधरूप उत्तर। **–वादी (दिन्‌)**–पु० वह जो किसीके विरोधमें कुछ कहे, प्रत्युत्तर देनेवाला, प्रतिवादी। **–साल**–अ० [हिं०] पिछले या अगले साल। **–स्त्री**–स्त्री० परायी स्त्री। **–स्व**–पु० दूसरेका धन, दूसरेकी संपत्ति। **–स्व-हरण**–पु० दूसरेका धन हर लेना। **–हित**–पु० दूसरेका कल्याण। वि० दूसरेका कल्याण करनेवाला।

पर–पु० [फा०] पंख, डैना। **–कट**, **–कटा**–वि० जिसके पर या पंख कटे हों। **मु०–कट जाना**–अशक्त हो जाना। **–काट देना**–अशक्त बना देना। **–कैंच करना**–कबूतर आदिके पंख काट देना। **–जमना**–पंख जमना; शरारत सूझना। (**जाते हुए**)**–जलना**, **–टूटना**–गति या जानेका साहस न होना। **–न मारना**–जा न सकना। **–निकलना**, **–व बाल निकलना**–नया पर निकलना; होशियार होना। **–बाँध देना**–बेबस करना।

परई†–स्त्री० मिट्टीका बड़ा कसोरा।

परकना*–अ० क्रि० परचना; किसी विषयमें ढीठ बनना।

परक(ग)सना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना; प्रकट होना।

परकार–पु० [फा०] (डिवाइडर्स) वृत्तकी परिधि बनाने, नापने आदिका दो भुजाओंवाला एक आला; * दे० प्रकार।

परकाल–पु० दे० 'परकार'।

परकाला–पु० सीढ़ी; देहली; [फा०] टुकड़ा; शीशेका टुकड़ा; चिनगारी। [आफतका परकाला–गजब ढानेवाला।]

परकास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

परकासना*–स० क्रि० प्रकाशित करना; प्रकट करना। अ० क्रि० प्रकाशित होना।

परकिति, परकीति, परकीती*–स्त्री० दे० 'प्रकृति'।

परकीय–वि० [सं०] दूसरेका।

परकीया–स्त्री० [सं०] वह नायिका जो गुप्त रूपसे परपुरुषसे प्रेम करे।

परकीरति*–स्त्री० दे० 'प्रकृति'।

परकोटा–पु० गढ़ आदिकी रक्षाके लिए चारों ओर उठायी गयी दीवार; पानी आदि रोकनेका बाँध।

परख–स्त्री० गुण, दोष आदिके निर्णयकी दृष्टिसे किसी वस्तुको देखनेकी क्रिया, परीक्षा; किसीके गुण-दोषका पता लगानेकी शक्ति। **–नली**–स्त्री (टेस्टट्यूब) दे० 'परीक्षण-नलिका'।

परखचा–पु० टुकड़ा, खंड। **मु०–(चे)उड़ाना**–खंड-खंड कर देना, धज्जियाँ उड़ाना।

परखना–स० क्रि० गुण-दोषके निर्द्धारणके लिए किसी व्यक्ति या वस्तुको भली भाँति देखना; भली भाँति देखकर गुण-दोष जान लेना; किसीकी राह देखना।

परखवाना–स० क्रि० दे० 'परखाना'।

परखवैया, परखैया–पु० परखनेवाला, परखानेवाला।

परखाई–स्त्री० परखनेका काम; परखनेकी उजरत।

परखाना–स० क्रि० किसीसे परखनेका काम कराना; सहेजवाना।

परखी–स्त्री० लोहेका पतला, लंबा आला जिसे गेहूँ, चावल आदिके बोरेमें घुसाकर परखनेके लिए नमूना निकाला जाता है।

परग*–पु० डग, कदम।

परगट*–वि० प्रकट, स्पष्ट।

परगटना*–अ० क्रि० प्रकट होना। स० क्रि० प्रकट करना।

परगन*–पु० दे० 'परगना'।

परगना–पु० [फा०] एक भूभाग जिसके अंतर्गत बहुतसे गाँव होते हैं। **–दार**–पु० परगनेका अफसर।

परगसना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना; प्रकट होना।

परगाढ़*–वि० दे० 'प्रगाढ'।

परगार–पु० [फा०] वृत्तकी परिधि बनानेका एक आला।

परगास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

परगासना–स० क्रि० प्रकाशित करना। अ० क्रि० प्रकाशित होना।

परघट*–वि० दे० 'प्रकट'।

परचंड*–वि० दे० 'प्रचंड'।

परचइ*–पु० दे० 'परिचय'।

परचत*–स्त्री० जान-पहचान ।

परचना–अ० क्रि० किसीसे इतनी जान-पहचान हो जाना कि उससे कोई खटका न रह जाय, हिल-मिल जाना; चसका लगना; * पहचाना जाना; सुलगना । **मु०–परच पड़ना***–पहचानमें आना ।

परचा–पु० [फा०] कागजका टुकड़ा; कागजका वह टुकड़ा जिसपर परीक्षार्थियोंके हल करनेके प्रश्न लिखे रहते हैं, प्रश्नपत्र; पुरजा, रुक्का; * परिचय–'कह कबीर परचा भया गुरू दिखाई बाट'–कबीर; परख; जाँच; सबूत । **मु० –देना**–किसीको पूर्ण परिचय देना । **–माँगना**–सबूत देनेको कहना; किसी देवी-देवतासे अपनी शक्ति दिखानेकी प्रार्थना करना (ओझा) ।

परचाना–स० क्रि० परचने देना; हिलाना-मिलाना; चसका लगाना; सुलगाना–'बिरही दमन काम क्वैला परचाये हैं'–सेना० ।

परचारना*–स० क्रि० दे० 'प्रचारना' ।

परचून–पु० आटा-चावल आदि भोजनकी सामग्री ।

परचूनी–पु० परचून बेचनेवाला; परचूनकी दूकान करनेवाला । स्त्री० परचूनीका काम ।

परचे, परचौ†–पु० दे० 'परिचय' ।

परछत्ती–स्त्री० घर या कोठरीके भीतर सामान रखनेकी पाटन; हलकी छाजन, टाँड़; हलका छप्पर ।

परछन–पु० स्त्रियोंका एक वैवाहिक लोकाचार जिसमें वे वरको दही-अक्षतका टीका लगाती और मूसल तथा बट्टा उसपरसे घुमाती हैं; वरकी आरती उतारना ।

परछा–पु० कोल्हूके बैलकी आँखोंपर अँधोटी बाँधनेका कपड़ा; जुलाहोंकी एक सूत लपेटनेकी नली; बड़ी बटलोई ।

परछाइँ–स्त्री० किसीकी वह छाया जो उतनी दूर और उस दिशामें पड़ती है जितनी दूर और दिशामें उसके बीचमें आ जानेसे प्रकाश फैल नहीं पाता, प्रतिच्छाया; जल, दर्पण आदिमें पड़नेवाली किसीकी छायाकृति । **मु० –से डरना**–मामूली बातसे भी डरना ।

परछालना*–स० क्रि० प्रक्षालन करना, धोना ।

परजंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

परजन्य*–पु० दे० 'पर्जन्य' ।

परजरना*–अ० क्रि० जलना, क्रुद्ध होना; खीज उठना; ईर्ष्या करना, द्वेष करना ।

परजवट–पु० दे० 'परजौट' ।

परजा–स्त्री० प्रजा, रैयत; नाई-बारी आदि आश्रित जन; असामी, जमींदारीमें बसनेवाला ।

परजाता–पु० एक प्रसिद्ध फूल, हरसिंगार; इसका पौधा ।

परजाय*–पु० दे० 'पर्याय' ।

परजौट–पु० सालाना किरायेपर मकान उठानेकी, जमीन लेने-देनेकी रीति; मकान बनानेकी जमीनका सालाना किराया ।

परज्वलना*–स० क्रि० प्रज्वलित करना । अ० क्रि० प्रज्वलित होना ।

परणना*–स० क्रि० ब्याहना ।

परतंचा, परतिंचा–स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा' ।

परतः(तस्)–अ० [सं०] दूसरेसे; शत्रुसे; बादमें, पीछे; परे, आगे ।

परत–स्त्री० तह, स्तर, पुट ।

परतच्छ, परतछ*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

परतल–पु० लदुवा घोड़ेकी पीठपर रखनेका बोरा या गोनी । **–का टट्टू**–लदुवा घोड़ा ।

परतला–पु०, **परतली**–स्त्री० तलवार आदि रखनेकी चमड़ेकी वह पट्टी जो कंधेसे लटकायी जाती है ।

परता–पु० दे० 'पड़ता' ।

परताप*–पु० दे० 'प्रताप' ।

परताल–स्त्री० दे० 'पड़ताल' ।

परतिग्या, परतिज्ञा*–स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा' ।

परती–स्त्री० वह जमीन जो जोती-बोयी न जाती हो; वह चद्दर जिससे हवा करके अनाज ओसाते हैं । **मु०–लेना**–ओसाना ।

परतीत, परतीति*–स्त्री० दे० 'प्रतीति' ।

परतेजना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना ।

परत्र–अ० [सं०] दूसरे स्थानमें; परलोकमें; उत्तरकालमें । पु० परलोक । **–भीरु**–वि० जिसे परलोकके बिगड़नेका भय हो, धार्मिक ।

परथन†–पु० दे० 'पलेथन' ।

परद*–पु० दे० 'परदा' ।

परदच्छिना, परदछिना*–स्त्री० दे० 'प्रदक्षिणा' ।

परदनिया*–स्त्री० धोती ।

परदनी*–स्त्री० धोती; दक्षिणा; बख्शिश ।

परदा–पु० [फा०] किसी वस्तु, व्यक्ति आदिको दृष्टिसे ओझल करनेके कामका कपड़ा, टाट आदि; ओट करनेवाली वस्तु; घूँघट; भेद; आड़, ओट; लोगोंकी दृष्टिसे अपनेको बचानेकी स्थिति; विभाग या आड़ करनेके लिए बनायी जानेवाली दीवार; प्रतिष्ठा; सतह, मंडल (दुनियाका परदा); रंगमंचपर लगाया जानेवाला वह आड़ करनेका कपड़ा जो समय-समयपर उठाया और गिराया जाता है; चमड़ेकी वह झिल्ली जो कान आदिमें आवरणका काम देती है; अँगरखेका वह हिस्सा जो छातीके ऊपर पड़ता है; सितार, हारमोनियम आदिमें स्वर निकलनेका स्थान; बारह रागों (स्वरों)मेंसे हर एक; नावकी पतवार । **–दार**–वि० परदा करनेवाला, छिपानेवाला । **–दारी**–स्त्री० ऐब छिपाना; भेद छिपाना । **–नशीन**–वि० जो परदेमें रहे । **–पोश**–वि० ऐब छिपानेवाला । **–पोशी**–स्त्री० ऐब छिपाना । **मु०–उठाना या खोलना**–रहस्यकी बात प्रकट करना;, भेदकी बात जाहिर करना । **–डालना**–छिपाना; प्रकट होनेसे रोकना । **(आँखपर)–पड़ना**–दिखाई न देना । **(बुद्धिपर)–पड़ना**–समझ जाती रहना, अक्ल खब्त होना । **–फटना***–इज्जत-आबरू न बचना–'सेवकको परदा फटै तू समरथ सीलै'–विनय० । **–फाश करना**–दोष प्रकट करना; भेद खोलना । **–फाश होना**–दोष प्रकट होना; भेद खुलना । **(किसीका)–रखना** किसीकी बुराईको जाहिर न होने देना, प्रतिष्ठाकी रक्षा करना । **–रखना**–अपनेको किसीकी दृष्टिसे बचाना; सामने न होना; दुराव-छिपाव रखना । **(किसीको)–लगना**–परदेमें रहनेका नियम होना । **–होना**–परदा रखने

या परदेमें रहनेका नियम होना; दुराव-छिपाव होना। **(परदे)के पीछे**—छिपे-छिपे। **—परदे**—गुप्त रीतिसे, छिपे-छिपे। **—में छेद होना**—परदेके पीछे व्यभिचार होना। **—में रखना**—स्त्रियोंको सबके सामने न होने देना; गुप्त रखना। **—में रहना**—स्त्रियोंका घरसे बाहर न निकलना; स्त्रियोंका सबके सामने न होना; छिपा रहना; बाहर न निकलना (व्यंग्य)।

परदादा—पु० दादाका बाप, प्रपितामह।

परदोस*—पु० दे० 'प्रदोष'; भारी दोष।

परधान*—वि० दे० 'प्रधान'। पु० दे० 'परिधान'; मंत्री, नायक; माया; बुद्धि।

परन—पु० मृदंग आदिके प्रधान बोलोंके बीचमें बजाये जानेवाले बोलोंके टुकड़े; * प्रण; टेक; पत्ता। * स्त्री० टेव, आदत। **—कुटी**—स्त्री०, **—गृह**—पु० झोपड़ी।

परना*—अ० क्रि० दे० 'पड़ना'।

परनाना—पु० नानाका पिता (स्त्री० परनानी)।

परनाम†—पु० दे० 'प्रणाम'।

परनाला—पु० घरके गंदे पानी और गलीजके बहनेका मार्ग, नाबदान, मोरी।

परनाली—स्त्री० छोटा परनाला; घोड़ोंकी पीठका कंधों और पुट्ठोंकी अपेक्षा नीचा होना जो उनके तेज होनेका लक्षण माना जाता है।

परनि*—स्त्री० आदत, टेव।

परनौत—स्त्री० प्रणति, प्रणाम।

परपंच*—पु० दे० 'प्रपंच'।

परपंचक*—वि० प्रपंच करनेवाला; फसादी; धूर्त।

परपंची*—वि० दे० 'परपंचक'।

परपट—पु० चौरस मैदान।

परपटी—स्त्री० दे० 'पर्पटी'।

परपरा*—वि० चरपरा; 'पर-पर' आवाजके साथ टूटनेवाला।

परपराना†—अ० क्रि० मिर्च आदि तीखी वस्तुओंके स्पर्शसे जीभ आदिका जलनेसा लगना, चुनचुनाना।

परपराहट—स्त्री० परपरानेकी क्रिया या भाव।

परपूठा—वि० पक्का, दृढ़।

परपोता—पु० पोतेका पुत्र, प्रपौत्र।

परफुल्ल, परफुल्लित*—वि० दे० 'प्रफुल्ल'।

परबंध*—पु० दे० 'प्रबंध'।

परब—पु० दे० 'पर्व'। स्त्री० किसी रत्नका छोटा टुकड़ा।

परबत—पु० दे० 'पर्वत'।

परबत्ता—पु० पहाड़ी तोता।

परबल*—वि० दे० 'प्रबल'। † पु० एक तरकारी।

परबाल—पु० पलकपर निकला हुआ वह अनावश्यक बाल जो बहुत पीड़ा पहुँचाता है। * दे० 'प्रवाल'।

परबी—स्त्री० पर्वका दिन; त्योहारी।

परबीन*—वि० दे० 'प्रवीण'।

परबेस*—पु० दे० 'प्रवेश'।

परबोध*—पु० दे० 'प्रबोध'।

परबोधना*—स० क्रि० प्रबुद्ध करना, जगाना; ज्ञानका उपदेश देना, समझाना-बुझाना, सांत्वना देना।

परभा*—स्त्री० दे० 'प्रभा'।

परभाइ*—पु० दे० 'प्रभाव'।

परभात*—पु० दे० 'प्रभात'।

परभाती—स्त्री० दे० 'प्रभाती'।

परभाव*—पु० दे० 'प्रभाव'।

परम—वि० [सं०] सर्वोत्कृष्ट; सर्वोच्च; मुख्य; सबसे पहलेका, आद्य; अत्यधिक; अतिगूढ़; सबसे खराब; हद दर्जेका। पु० ओंकार; शिव; विष्णु; वह जो मुख्य या सर्वोच्च हो। **—गति**—स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति। **—तत्त्व**—पु० मूलतत्त्व, ब्रह्म। **—धाम (न्)**—पु० वैकुंठ। **—पद**—पु० सबसे उच्च पद या स्थान; मुक्ति। **—पिता (तृ)**—पु० परमेश्वर। **—पुरुष, —पूरुष**—पु० परमात्मा; विष्णु। **—ब्रह्म (न्)**—पु० दे० 'परब्रह्म'। **—भट्टारक**—पु० चक्रवर्ती राजाओंकी एक प्राचीन उपाधि। **—भट्टारिका**—स्त्री० पटरानियोंकी एक प्राचीन उपाधि। **—रस**—पु० तक्र, मट्ठा। **—वीरचक्र**—पु० भारतीय गणतंत्रमें शत्रुके सम्मुख असाधारण वीरता प्रदर्शित करनेपर भारत-सेनाके किसी वीरको दिया जानेवाला 'विक्टोरिया क्रास'के ढंगका प्रथम श्रेणीका उपहार। **—श्रेष्ठ**—वि० (हिज एक्सलेंसी) दे० 'महामहिम', तत्रभवान्। **—सत्ता**—स्त्री० (ऐबसाल्यूट पावर) अनियंत्रित शक्ति या अधिकार, पूर्ण तथा अबाध सत्ता। **—हंस**—पु० एक प्रकारका संन्यासी।

परमांगना—स्त्री० [सं०] अच्छी स्त्री।

परमा*—स्त्री० शोभा; सौंदर्य। † पु० प्रमेह रोग।

परमाक्षर—पु० [सं०] ॐकार।

परमाणु—पु० [सं०] (ऐटम) पृथ्वी, जल, तेज और वायुका वह सबसे छोटा भाग जिसके और टुकड़े न हो सकें; किसी पदार्थका वह सबसे छोटा टुकड़ा जिसके और टुकड़े न हो सकें। **—बम**—पु० [हिं०] यूरेनियमसे तैयार किया जानेवाला एक महाविध्वंसक बम जिसका आविष्कार द्वितीय महायुद्धके समाप्तिकालमें हुआ (इसी बमके प्रहारसे जापानने मित्र-सेनाओंके सामने घुटने टेक दिये)। **—वाद**—पु० न्याय और वैशेषिक दर्शनका यह मत कि संसारकी सृष्टि परमाणुओंसे हुई है; (ऐटमिज्म) परमाणुओंसे वस्तुओंके निर्माण तथा परमाणुओंके कार्यों, प्रभावादिका विवेचन करनेवाला सिद्धांत। **—वादी (दिन्)**—पु० परमाणुवादको माननेवाला।

परमात्मा (त्मन्)—पु० [सं०] परमेश्वर।

परमाद्वैत—पु० [सं०] सभी भेदोंसे रहित परमात्मा; विष्णु।

परमाधिकार—पु० [सं०] (प्रेरोगेटिव) दे० 'विशिष्टाधिकार'।

परमानंद—पु० [सं०] उत्तम आनंद; उत्तम आनंदरूप परमात्मा।

परमान*—पु० प्रमाण; विश्वास; परिमाण; सत्य बात; अवधि।

परमानना*—स० क्रि० प्रमाणरूपमें ग्रहण करना, प्रमाण मानना; अंगीकार करना; मानना, विश्वास करना।

परमायु (स्)—स्त्री० [सं०] सर्वाधिक आयु।

परमार—पु० राजपूतोंका एक वंश।

परमारथ*—पु० दे० 'परमार्थ'।

परमार्थ—पु० [सं०] उत्कृष्ट वस्तु; नित्य और अबाधित पदार्थ; यथार्थ तत्त्व; सत्य; मोक्ष; ब्रह्म। **—वादी (दिन्)**—पु० वेदांती, तत्त्वज्ञ। **—विद्**—पु० ब्रह्मज्ञानी, दार्शनिक।

परमार्थी (र्थिन्)–वि० [सं०] परमार्थको जानने या प्राप्त करनेका इच्छुक ।

परमावश्यक सेवाएँ–स्त्री० (इसेंशल सर्विसेज) सर्वसाधारणको पानी, बिजली आदि देने तथा सार्वजनिक सफाई आदि-संबंधी कार्य ।

परमिति*–स्त्री० परम सीमा; मर्यादा ।

परमुख*–वि० जिसने किसी ओरसे मुँह मोड़ लिया हो, पराङ्मुख ।

परमेश–पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश–इन तीन रूपोंवाला, सगुण ब्रह्म; शिव; विष्णु; चक्रवर्ती राजा ।

परमेश्वर–पु० [सं०] दे० 'परमेश'; इंद्र ।

परमेश्वरी–स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

परमेष्ठी (ष्ठिन्)–पु० [सं०] ब्रह्मा; शालग्रामका एक विग्रह; शिव; गुरु; गरुड़; अर्हंत, जिन; अग्नि ।

परमेसर, परमेसुर–पु० दे० 'परमेश्वर' ।

परमेसरी*–स्त्री० दे० 'परमेश्वरी' ।

परमोद*–पु० दे० 'प्रमोद' ।

परमोधना*–स० क्रि० दे० 'परबोधना'–'बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं'–साखी ।

परयंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

परलउ*–पु० दे० 'प्रलय' ।

परलय*–पु० स्त्री० दे० 'प्रलय' ।

परला–वि० उस ओरका, दूसरी ओरका, उरलाका उलटा । **(परले)दरजे,–सिरेका**–परम कोटिका, हद दरजेका, अत्यधिक । मु० **(परले)पार होना**–हदतक पहुँचना, अंतिम सीमातक पहुँचना; बहुत दूरतक पहुँचना; समाप्त होना, पूरा होना ।

परवर–† पु० दे० 'परवल'; आँखका एक रोग । वि०, पु० दे० 'प्रवर' । वि० [फा०] पालन-पोषण करनेवाला (समासमें प्रयुक्त होता है) । **–दिगार**–पु० पालन-पोषण करनेवाला, पालक; ईश्वर, अल्ला ।

परवरिश–स्त्री० [फा०] पालन-पोषण; मेहरबानी ।

परवल–पु० एक प्रसिद्ध लता; इस लताका फल जो तरकारीके काम आता है; चिचड़ा ।

परवस्ती†–स्त्री० परवरिश, पालन-पोषण ।

परवा–पु० मिट्टीका बना एक तरहका कटोरा जैसा बरतन, कोसा । स्त्री० पक्षकी पहली तिथि, परिवा; † एक घास; [फा०] चाह, ख्वाहिश; फिक्र, चिंता, किसी बातकी ओर मन लगाना, ध्यान, अवधान; अवलंब, सहारा, भरोसा; खटका; गरज ।

परवाई*–स्त्री० दे० 'परवा' ।

परवान*–पु० प्रमाण; अवधि, सीमा; जहाजका मस्तूल ।

परवानना*–स० क्रि० प्रमाणरूप मानना, ठीक समझना ।

परवानगी–स्त्री० [फा०] इजाजत, आज्ञा, फरमान ।

परवाना–पु० [फा०] लिखित आज्ञा, आज्ञापत्र, अनुमतिपत्र, हुक्मनामा, फरमान; वरी, चूना आदि नापनेका एक बड़ा पैमाना; जागीरका हुक्म; लाइसेंस; नौकरीका आज्ञापत्र, नियुक्तिपत्र; नायबके नाम भेजा जानेवाला आज्ञापत्र; शेरके आगे चलनेवाला जानवर; फतिंगा, पंखी । **–गिरफ्तारी**–पु० बंदी बनानेका आज्ञापत्र । **–तलाशी**–पु० खाना तलाशीका आज्ञापत्र । **–नवीस**–पु० परवाना लिखनेवाला कर्मचारी, वह क्लर्क जो परवाना लिखे । **–राहदारी**–पु० दूसरे देशमें जानेका सरकारकी ओरसे मिलनेवाला स्वीकृतिपत्र (पासपोर्ट) ।

परवाया–पु० चारपाईके पायोंके नीचे रखी जानेवाली वस्तु ।

परवाल*–पु० दे० 'प्रवाल' ।

परवास*–पु० आच्छादन; प्रवास ।

परवाह–स्त्री० दे० 'परवा' ।

परवीन*–वि० दे० 'प्रवीण' ।

परवेख*–पु० यदा-कदा चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला बादलके टुकड़ेकी तरहका घेरा; दे० 'परिवेष' ।

परवेश*–पु० दे० 'प्रवेश' ।

परश–पु० [सं०] पारस पत्थर ।

परशु–पु० [सं०] कुल्हाड़ीकी तरहका एक प्रसिद्ध अस्त्र, फरसा (यही परशुरामका प्रधान अस्त्र था); अस्त्र । **–धर**–पु० परशु धारण करनेवाला; परशुराम; गणेश । **–पलाश**–पु० फरसेका फल । **–मुद्रा**–स्त्री० उँगलियोंकी एक प्रकारकी मुद्रा । **–राम**–पु० जमदग्नि ऋषिके एक पुत्र जो विष्णुके छठे अवतार माने जाते हैं (इन्होंने २१ बार पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित कर दिया था) । **–वन**–पु० एक नरक ।

परसंग*–पु० दे० 'प्रसंग' ।

परसंसा*–स्त्री० दे० 'प्रशंसा' ।

परस*–पु० स्पर्श, छूना । **–पखान**–पु० पारस पत्थर ।

परसन†–पु० स्पर्श । * वि० प्रसन्न, खुश ।

परसना–स० क्रि० खानेवालोंके सामने भोज्य वस्तुएँ रखना; * छूना, स्पर्श करना ।

परसन्न*–वि० दे० 'प्रसन्न' ।

परसर्ग–पु० [सं०] शब्दके आगे जोड़ा जानेवाला प्रत्यय ।

परसा–पु० फरसा, कुठार; पत्तल आदिमें रखा हुआ एक व्यक्तिके खानेभरका भोजन ।

परसाद*–पु० दे० 'प्रसाद' ।

परसादी†–स्त्री० दे० 'प्रसाद' ।

परसाना–स० क्रि० भोज्य वस्तु सामने रखवाना; *स्पर्श कराना, छुलाना; फैलाना–'दलपर फन परसावति'–सू० ।

परसिद्ध*–वि० दे० 'प्रसिद्ध' ।

परसु*–पु० दे० 'परशु' ।

परसूत*–वि० दे० 'प्रसूत' ।

परसेद*–पु० दे० 'प्रस्वेद' ।

परसों–अ० पिछले दिनसे एक दिन पहले; अगले दिनसे एक दिन आगे ।

परसोत्तम*–पु० दे० 'पुरुषोत्तम' ।

परसौहाँ*–वि० स्पर्श करनेवाला, छूनेवाला ।

परस्पर–अ० [सं०] एक दूसरेके साथ, आपसमें ।

परस्परोपमा–स्त्री० [सं०] उपमालंकारका एक भेद, उपमेयोपमा ।

परहरना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, तजना ।

परहेज़–पु० [फा०] निषिद्ध वस्तुओंसे बचना; बीमारका हानिकर वस्तु न खाना, कुपथ्यसे बचना; खाने-पीने आदिका संयम; दोष-पापसे बचना । **–गार**–पु० परहेज

करनेवाला; पापसे बचनेवाला, भगत। **-गारी**-स्त्री० परहेज करनेका कार्य, संयम; पापसे बचनेका कार्य।

परहेलना*-स० क्रि० अवहेलना करना, अनादर करना, तुच्छ समझना।

परांग-पु०[सं०] दूसरेका अंग; श्रेष्ठ अंग।**-भक्षी(क्षिन्)**-वि० (पैरासाइट) दे० 'परोपजीवी'।

पराँठा-पु० घी लगाकर तवेपर सेंकी जानेवाली चपाती।

परांत-पु० [सं०] मृत्यु। **-काल**-पु० मृत्युकाल।

परा-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो अर्थमें प्रातिलोम्य (पराहत), प्राधान्य (परागत), आभिमुख्य (पराक्रांत), विक्रम (पराजित) आदिके द्योतनके लिए प्रयुक्त होता है। स्त्री० मूलाधारमें स्थित रहनेवाली नाद रूपिणी वाणी; ब्रह्मविद्या; गंगा;* पंक्ति। वि० स्त्री० श्रेष्ठ। **-गति**-स्त्री० गायत्री।

पराइ*-वि० स्त्री० दूसरेकी।

पराकाष्ठा-स्त्री० [सं०] अंतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा, हद; ब्रह्माकी आधी आयु।

पराकोटि-स्त्री० [सं०] दे० 'पराकाष्ठा'।

पराक्रम-पु० [सं०] सामर्थ्य, बल; शौर्य; विक्रम, उद्योग; पुरुषार्थ; अभियान, आक्रमण; विष्णु। **मु०-चलना**-उद्योग किया जा सकना; शक्तिका साथ देना।

पराक्रमी(मिन्)-वि०[सं०] पराक्रमवाला; शूर; पुरुषार्थी।

पराग-पु० [सं०] फूलके भीतरकी धूल, पुष्परज; धूल; केसरका चूर्ण आदि जिसे नहानेके बाद लगाते हैं; उपराग; चंदन; कपूरका चूरा; चंद्र या सूर्यका ग्रहण; ख्याति; एक पर्वत; स्वच्छंद गति। **-केसर**-पु० फूलोंके भीतरके वे पतले लंबे डोरे जिनपर केसर लगा रहता है।

परागना*-अ० क्रि० प्रेमासक्त होना, प्रेममें पड़ना।

पराङ्मुख-वि० [सं०] जिसने किसी ओरसे मुँह मोड़ लिया हो, विमुख; प्रतिकूल।

पराजय-स्त्री० [सं०] हार, विजयका उलटा।

पराजित-वि० [सं०] जिसने हार खायी हो, हारा हुआ, हराया हुआ।

परात-स्त्री०थालीकी शकलका पीतल आदिका बड़ा बरतन, थाल।

पराधीन-वि० [सं०] जो दूसरेके अधीन हो, परवश।

पराधीनता-स्त्री० [सं०] पराधीन होनेका भाव, परवशता।

परान*-पु० दे० 'प्राण'।

पराना*-अ० क्रि० पलायन करना, भागना।

परान्न-पु० [सं०] दूसरेका अन्न; दूसरेका दिया हुआ भोजन। **-भोजी(जिन्)**-वि० दूसरेका दिया खाकर निर्वाह करनेवाला।

परापर-वि० [सं०] पर और अपर; परत्व और अपरत्व दोनों गुणोंसे युक्त (वैशेषिक)।

पराभव-पु० [सं०] तिरस्कार, अनादर; हार, पराजय।

पराभूत-वि० [सं०] जिसका पराभव हुआ हो; तिरस्कृत।

पराभूति-स्त्री० [सं०] दे० 'पराभव'।

परामर्श-पु० [सं०] पकड़ना; खींचना; आक्रमण; बाधा; स्पर्श करना; रोगाक्रांत होना; विवेचन; युक्ति; सलाह। **-कक्ष**-पु० (कन्सल्टिंग रूम) दे० 'परामर्शालय'। **-दात्री समिति**-स्त्री० (एडवाइजरी कमिटी) किसी कार्य या विषयादिके संबंधमें सलाह देनेवाली समिति।

परामर्शालय-पु० [सं०] (कन्सल्टिंग रूम) किसी चिकित्सक या वकील आदिसे परामर्श करनेका स्थान, कमरा या गृह।

परामृष्ट-वि० [सं०] पकड़कर खींचा हुआ; स्पृष्ट; विचारा हुआ; संबद्ध; जिसके विषयमें सलाह की या दी गयी हो।

परायण-वि० [सं०] अति आसक्त, निरत; अवलंबित।

परायत्त-वि० [सं०] पराधीन।

पराया-वि० दूसरेका, बिराना; अपनेसे भिन्न।

परार*-वि० दूसरेका, पराया। पु० पयाल।

परारब्ध, परालब्ध-पु० दे० 'प्रारब्ध'।

परार्थ-पु० [सं०] दूसरेका प्रयोजन, दूसरेका कार्य; सबसे बड़ा लाभ। वि० जो दूसरेके निमित्त हो। **-वाद**-पु० (ऐल्ट्रूइज्म) दूसरोंकी सेवा या भलाईके लिए ही जीवित रहने या कार्य करनेका सिद्धांत।

पराव, परावा*-वि० पराया, दूसरेका।

परावत-पु० [सं०] फासला।

परावन-पु० बहुतोंका एक साथ भागना, सामूहिक पलायन, भगदड़;* पर्वकाल-'पूरे पूरब पुन्यतें परयो परावन आज'-मति०।

परावर-वि० [सं०] पहलेका और पीछेका; निकटका और दूरका; सर्वश्रेष्ठ; परंपरागत। पु० कारण और कार्य; विश्व; अखिलता।

परावर्त्त, परावर्त्तन-पु० [सं०] अदला-बदला, विनिमय; लौटना, प्रत्यावृत्ति; फैसला उलटना; ग्रंथोंको दोहराना, उद्धरणी (जैन)। **-व्यवहार**-पु० फैसला किये हुए मुकदमेपर फिर विचार करना, फैसलेका पुनर्विचार।

परावर्त्तित-वि० [सं०] लौटाया हुआ।

परावृत्त-वि० [सं०] लौटा हुआ; लौटाया हुआ।

परावृत्ति-स्त्री० [सं० लौटना, पलटना; लौटाया जाना, पलटा जाना; फैसला किये हुए मुकदमेपर फिरसे विचार करना।

पराश्रय-पु० [सं०] दूसरेका सहारा या अवलंब। वि० दूसरेपर आश्रित।

परासु-वि० [सं०] मरा हुआ, मृत।

परास्त-वि० [सं०] हराया हुआ; जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो; दबा हुआ; फेंका हुआ; अस्वीकृत।

पराह-पु० [सं०] दूसरा दिन।

पराहत-वि० [सं०] आक्रांत; खदेड़ा हुआ, हटाया हुआ; जोता हुआ; खंडित। पु० आघात।

पराह्न-पु० [सं०] दोपहरके बादका समय, दिनका तीसरा पहर।

परिंदा-पु० [फा०] पक्षी, चिड़िया।

परि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो समंततोभाव (परिक्रमण), व्याप्ति (परिणत), दोषकथन (परिवाद), भूषण (परिष्कार), आश्लेष (परिष्वंग), पूजन (परिचर्या), आच्छादन (परिच्छद) आदि अर्थोंके द्योतनके लिए शब्दोंके पूर्व आता है।

परिकंप-पु० [सं०] कँपकँपी; अत्यधिक भय।

परिकथा-स्त्री० [सं०] अनुकथा, वह छोटी कथा जो बड़ी

कथाके अंदर आयी हो ।

परिकर–पु० [सं०] परिवार; अनुचरवर्ग; कमरबंद; समारंभ, तैयारी; पलंग; समूह; विवेक; सहायक; सहकर्मी; एक अर्थालंकार जहाँ विशेष अभिप्रायसे युक्त विशेषणका प्रयोग हो; बीज, भावी घटनाओंका संकेतरूपमें सूचन (ना०); निर्णय, फैसला ।

परिकरमा*–स्त्री० दे० परिक्रमा' ।

परिकरांकुर–पु० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ विशिष्ट अभिप्रायसे युक्त विशेष्यका प्रयोग हो ।

परिकर्तन–पु० [सं०] काटना; गोलाकार काटना; शूल ।

परिकर्म(न्)–पु० [सं०] शरीरमें केसर आदि लगाना; पैरको रँगना या उसमें महावर आदि लगाना; पूजन; समारंभ; परिष्कार ।

परिकर्मा(र्मन्)–पु० [सं०] सेवक, अनुचर, परिचारक ।

परिकर्मी(र्मिन्)–पु० [सं०] सहायक; सेवक, दास ।

परिकल्पन–पु०, **परिकल्पना**–स्त्री० [सं०] मनमें गढ़ना; रचना, बनाना; आविष्कार करना; निर्णय, निश्चय करना; बाँटना; प्रस्तुत करना ।

परिकल्पित–वि० [सं०] मनमें गढ़ा हुआ; रचा हुआ; आविष्कृत; निर्णीत; विभक्त; मुहय्या किया हुआ ।

परिकीर्ण–वि० [सं०] चारों ओर फैला हुआ, व्याप्त ।

परिक्रम–पु० [सं०] (टूर) दौरा; चारों ओर घूमना, यात्रा करना; प्रदक्षिणा करना; टहलना; क्रम; प्रवेश ।

परिक्रमण–पु० [सं०] दे० 'परिक्रम' ।

परिक्रमा–स्त्री० फेरी, प्रदक्षिणा; किसी मंदिरादिमें प्रदक्षिणा करनेके लिए बनायी हुई जगह, फेरी देनेका मार्ग ।

परिक्रिया–स्त्री० [सं०] घेरना; खाई आदिसे घेरना ।

परिक्लांत–वि० [सं०] बहुत अधिक थका हुआ ।

परिक्लिष्ट–वि० [सं०] जिसे बहुत अधिक क्लेश पहुँचा हो; थका हुआ ।

परिक्लेद–पु० [सं०] आर्द्रता, नमी, गीलापन ।

परिक्षय–पु० [सं०] बर्बादी, नाश, लोप ।

परिक्षा†–स्त्री० दे० 'परीक्षा' ।

परिखन*–पु० देखभाल करनेवाला ।

परिखना*–स० क्रि० प्रतीक्षा करना; जाँच करना; गणना करना ।

परिखा–स्त्री० [सं०] नगर या दुर्गको दुर्गम बनानेके लिए उसके चारों ओर खोदी जानेवाली खाई ।

परिखात–पु० [सं०] परिखा; चारों ओर खाई खोदनेकी क्रिया; हराई, बाह ।

परिखिन्न–वि० [सं०] कष्टग्रस्त, पीडित, परेशान ।

परिख्यात–वि० [सं०] बहुत अधिक प्रसिद्ध ।

परिगणन–पु०, **परिगणना**–स्त्री० [सं०] पूरी गणना करना; (शेड्यूल) दे० 'अनुसूची'; विधि तथा निषेधशास्त्रका विशेष रूपसे कथन ।

परिगणित–वि० [सं०] जिसका परिगणन किया गया हो । **–जाति**–स्त्री० (शेड्यूल्ड कास्ट) दे० 'अनुसूचित जाति' ।

परिगत–वि० [सं०] घिरा हुआ, आवेष्टित; पूर्णतः व्याप्त; जाना हुआ, ज्ञाता; स्मृत; प्राप्त किया हुआ; मरा हुआ, मृत; विस्मृत; अभिभूत;···से पीड़ित; बाधित । **–वृत्त**–पु० (सरकम्स्क्राइब्ड सरकिल) वह वृत्त जो त्रिभुजके तीनों शीर्षोंसे होकर गया हो ।

परिगम, परिगमन–पु० [सं०] घेरना, आवेष्टित करना; व्याप्त करना या होना; प्राप्त करना; जानना ।

परिगह*–पु० आश्रित जन; संबंधी ।

परिगहन–वि० [सं०] अति गहन ।

परिगहना*–स० क्रि० ग्रहण करना, अंगीकार करना ।

परिगीत–वि० [सं०] जिसका बहुत अधिक वर्णन या कीर्तन किया गया हो ।

परिगृहीत–वि० [सं०] स्वीकृत; चारों ओरसे पकड़ा या घेरा हुआ; पकड़ा हुआ; धारण किया हुआ; ग्रहण किया हुआ; संरक्षित; प्राप्त किया हुआ; अनुसृत; विवाहित ।

परिगृहीता (तृ)–पु० [सं०] पति; सहायक; गोद लेनेवाला व्यक्ति ।

परिग्रह–पु० [सं०] लेना, स्वीकार करना; ग्रहण करना; चारों ओरसे घेरना, आवेष्टित करना; धारण करना; धन आदिका संचय; किसी दी हुई वस्तुको ग्रहण करना; किसी स्त्रीको भार्यारूपमें ग्रहण करना, किसी स्त्रीसे ब्याह करना; पत्नी, स्त्री; पति; घर; परिवार; अनुचर; सेनाका पिछला भाग; राहु द्वारा सूर्य या चंद्रमाका ग्रसा जाना; शपथ, कसम; मूल; विष्णु; जायदाद; स्वीकृति, मंजूरी; दावा; स्वागत-सत्कार; आतिथ्य-सत्कार करनेवाला; आदर; सहायता; दमन; दंड; राज्य; संबंध; योग, संकलन; शाप ।

परिग्रहण–पु० [सं०] अच्छी तरह ग्रहण करना; पहनना, धारण करना ।

परिघ–पु० [सं०] अर्गला; छड़; डंडा; रोक; बर्छा, भाला; लौहगदा; घड़ा; मकान; वध, नाश ।

परिचना*–अ०क्रि०दे०'परचना' । स०क्रि० परीक्षा लेना ।

परिचय–पु० [सं०] एकत्र करना; चारों ओर जमा करना; पूरी जानकारी, जान-पहचान; अभ्यास । **–पत्र**–पु० (लेटर ऑफ इंट्रॉडक्शन) किसी व्यक्ति या अधिकारीका दिया हुआ वह पत्र जिसे कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या अधिकारीको अपना परिचय देनेके लिए दिखलाता है ।

परिचर–पु० [सं०] भृत्य, सेवक, खिदमतगार; रथकी रक्षाके लिए नियुक्त सैनिक, रथरक्षक; अंगरक्षक; दंडनायक; आदर-सत्कार । वि० भ्रमणशील; चल; वहनशील ।

परिचरजा*–स्त्री० दे० 'परिचर्या' ।

परिचरी–स्त्री० [सं०] सेविका, दासी ।

परिचर्या–स्त्री० [सं०] सेवा, खिदमत; रोगीकी सेवा ।

परिचायक–पु० [सं०] परिचय करानेवाला; जतानेवाला ।

परिचार–पु० [सं०] सेवा, खिदमत, टहलने, घूमनेकी जगह; सेवक । **–गाड़ी**–स्त्री० (एम्ब्यूलेंस कार) घायल हुए या बीमार व्यक्तियोंको लाने-ले जानेवाली गाड़ी ।

परिचारक, परिचारिक, परिचारी(रिन्)–पु० [सं०] सेवक, खिदमतगार; रोगीकी सेवा करनेवाला, तीमारदार ।

परिचारण–पु० [सं०] सेवा; (सरक्यूलेशन) सूचनाओं, विधेयकों आदिका सदस्यों या अन्य लोगोंमें परिचारित किया जाना । **–दल**–पु० (एम्ब्यूलेंस कोर) दे० 'आहतोपचारी दल' ।

परिचारना*–स० क्रि० सेवा करना।

परिचारिका–स्त्री० [सं०] सेविका, टहल करनेवाली।

परिचारित करना–स० क्रि० (टु सरक्यूलेट) कोई पत्र, विधेयक आदि विशिष्ट लोगोंकी राय जाननेके लिए चारों तरफ वितरित करना या घुमाना, परिपत्रित करना।

परिचालक–पु० [सं०] चारों ओर घुमानेवाला; चलानेवाला; हिलानेवाला; (कंडक्टर) परिचालन, नियंत्रण आदिका काम करनेवाला; ट्राम (रथ्यायान), बस, ट्रेन आदिमें यात्रियोंकी देखरेखका भार सँभालनेवाला कर्मचारी। वि० (कंडक्टर) ताप या विद्युत्‌को कणोंकी सहायतासे एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुँचानेवाला; वह वस्तु जो विद्युत्‌को अपनेमेंसे होकर चला जाने दे। (बुरा परिचालक–दे० 'कुचालक;' अच्छा परिचालक–दे० 'सुचालक')।

परिचालन–पु० [सं०] चारों ओरसे चलाना; हिलाना-डुलाना; चारों ओर घुमाना; (कंडक्शन) गर्मी या बिजलीके फैलनेकी वह रीति जिसमें गर्मी या बिजली एक कणसे दूसरे कणको मिलती है और कण स्वयं नहीं चलते।

परिचालित–वि०[सं०] जिसका परिचालन किया गया हो।

परिचित–वि० [सं०] जिससे जान-पहिचान हो, जिसका परिचय प्राप्त हो; एकत्र किया हुआ; ढेर लगाया हुआ।

परिचिति–स्त्री० [सं०] परिचय, जान-पहचान।

परिचेय–वि० [सं०] जान-पहचानके योग्य; एकत्र करने योग्य; जानने योग्य; खोज करने योग्य।

परिचो*–पु० परिचय, जानकारी।

परिच्छद–पु० [सं०] ढाँकनेकी वस्तु; ढाँकनेका कपड़ा आदि; आच्छादन; वस्त्र, पहनावा; राजाके साथ चलनेवाले अनुचर, सैनिक आदि; राजाके बाह्य उपकरण (छत्र, चमर आदि); यात्राके लिए आवश्यक सामान; माल, असबाब।

परिच्छन्न–वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; परिच्छद अर्थात् अनुचर आदिसे युक्त; छिपाया हुआ।

परिच्छा*–स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परिच्छिन्न–वि० [सं०] जिसकी सीमा या व्याप्ति निर्धारित की गयी हो; जिसका चारों ओरका कुछ अंश छाँट दिया गया हो; अलग किया हुआ, विभक्त; परिमित; उपचारित।

परिच्छेद–पु० [सं०] काट-छाँटकर अलग करना; अवधि, सीमा; अवधारण; निर्णय, निश्चय (जैसे सत्य और असत्यका); विभाजन; परिभाषा; सटीक परिभाषा; उन कई विभागोंमेंसे कोई एक जिनमें कोई ग्रंथ विषयके अनुसार विभक्त रहता है; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयकी चर्चा हो।

परिजंक*–पु० दे० 'पर्यंक'।

परिजटन*–पु० दे० 'पर्यटन'।

परिजन–पु० [सं०] भरण-पोषणके लिए आश्रित लोग, स्त्री, पुत्र, दास आदि; वे लोग जिनका कोई प्रतिपालन करे; राजा आदिके साथ-साथ चलनेवाले लोग, अनुचरगण।

परिजल्पित–पु० [सं०] सेवकका अपने स्वामीकी निर्दयता, शठता आदिके वर्णनके द्वारा अव्यक्त रूपसे अपना कौशल, उत्कर्ष आदि जताना; उपेक्षित या अवमानित नायिकाका व्यंग्यपूर्ण शब्दोंमें नायककी निर्दयता, शठता आदिका वर्णन करना।

परिज्ञप्ति–स्त्री० [सं०] अच्छी तरह जानना; पहचानना; बातचीत, कथोपकथन।

परिज्ञात–वि० [सं०] भली भाँति जाना हुआ; पहचाना हुआ।

परिज्ञान–पु० [सं०] पूरी जानकारी, पूरा ज्ञान; सूक्ष्म ज्ञान; पहचान।

परिणत–वि० [सं०] चारों ओरसे झुका हुआ; बहुत झुका हुआ, अत्यंत नत; परिणाम या रूपांतरको प्राप्त; पका हुआ, पक्का; जिसकी पूरी वृद्धि हो चुकी हो; प्रौढ़; पुष्ट, परिपक्व; पचा हुआ; ढलता हुआ (वय); समाप्त।

परिणति–स्त्री० [सं०] चारों ओरसे झुका होना; पूरा झुकाव; रूपांतरको प्राप्त होना; पकना; पूर्ण वृद्धि; प्रौढ़ होना; परिणाम; परिपाक, पचना; अंत, अवसान।

परिणय–पु० [सं०] चारों ओर (विशेषकर विवाहमंडपमें स्थापित अग्निके चारों ओर) ले जाना; विवाह।

परिणयन–पु० [सं०] ब्याहना, विवाह करना।

परिणाम–पु० [सं०] एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होना, रूपांतर होना, बदलकर दूसरे रूप, आकार, गुण आदिको प्राप्त होना; प्रकृतिका अन्यथा भाव (सांख्य०); चित्त, इंद्रिय आदिका एक धर्म या संस्कारको प्राप्त होना (योग); पचना, परिपाक; पूर्ण वृद्धि, पूरा विकास; पकाव, पक्का होना; आयुका ढलना, वृद्ध होना; समय या अवधिका समाप्त होना; फल, नतीजा; एक अर्थालंकार जहाँ उपमान उपमेयके साथ मिलकर कोई क्रिया करे। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० किसी कार्यके भले या बुरे फलको जाननेवाला, दूरदर्शी। **–वाद**–पु० यह सिद्धांत कि कार्य कारणमें अव्यक्त रूपसे विद्यमान रहता है और इस प्रकार अव्यक्त कार्य ही कारण है तथा व्यक्त कारण ही कार्य। **–वादी(दिन्)**–पु० परिणामवादको माननेवाला। **–शूल**–पु० भोजनके पचते समय पेटमें उठनेवाला शूल।

परिणामी(मिन्)–वि० [सं०] जो परिणामको प्राप्त होता रहे, परिणामको प्राप्त होता रहना जिसका स्वभाव हो; (रिजल्टेंट) जो दो या दोसे अधिक कारणोंका संयुक्त परिणाम हो, जो किसीके परिणामस्वरूप उत्पन्न हो या सामने आये।

परिणीता–स्त्री० [सं०] विवाहिता स्त्री।

परिणेतव्या,परिणेया–वि० स्त्री० [सं०] ब्याहने योग्य।

परिणेता(तृ)–पु० [सं०] पति, स्वामी।

परितः(तस्)–अ० [सं०] चारों ओर; चारों ओरसे।

परितच्छ*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष'। अ० देखते-देखते; आँखोंके समाने।

परितप्त–वि० [सं०] बहुत तपा हुआ, बहुत गरम; संतप्त।

परिताप–पु० [सं०] अत्यधिक ताप, बहुत गरमी; अत्यधिक दुःख, संताप; अति शोक, भय, कंप।

परितापी(पिन्)–वि [सं०] अति उष्ण, जलता हुआसा; जिसे परिताप हो; संतापयुक्त; बहुत अधिक क्लेश पहुचानेवाला। पु० सतानेवाला, अति दुःख देनेवाला।

परितुष्ट-वि० [सं०] जिसे पूरा संतोष हो, पूर्ण संतुष्ट।

परितुष्टि-स्त्री० [सं०] परितोष, प्रसन्नता।

परितृप्त-वि० [सं०] पूरी तरह अघाया हुआ, संतुष्ट।

परितृप्ति-स्त्री० [सं०] परितृप्त होनेका भाव, पूर्ण तुष्टि।

परितोष-पु० [सं०] संतोष; तृप्ति; किसी इच्छाकी पूर्त्तिसे होनेवाली प्रसन्नता; दे० 'अनुतोषण'।

परितोषक-पु० [सं०] परितुष्ट करनेवाला।

परितोषण-पु० [सं०] परितुष्ट करनेका कार्य।

परितोस*-पु० दे० 'परितोष'।

परित्यक्त-वि० [सं०] पूरी तौरसे त्यागा हुआ, एकदम छोड़ा हुआ; छोड़ा या चलाया हुआ (जैसे बाण)।

परित्यक्ता(क्तृ)-पु० [सं०] परित्याग करनेवाला।

परित्यजन-पु० [सं०] परित्याग करनेकी क्रिया, त्यागना; (एबेंडनमेंट) पूर्णतः छोड़ देना, परित्याग।

परित्याग-पु० [सं०] पूरी तरह त्याग देना, एकदम छोड़ देना, पूर्ण त्याग; यज्ञ; जुदाई; उदारता।

परित्यागना*-स० क्रि० परित्याग करना।

परित्यागी(गिन्)-वि० [सं०] जो परित्याग करे, पूरी तरह छोड़ देनेवाला।

परित्याज्य-वि० [सं०] पूरी तरह छोड़ने योग्य।

परित्रस्त-वि० [सं०] अति त्रस्त, बहुत डरा हुआ।

परित्राण-पु० [सं०] पूर्ण रक्षा, पूरा बचाव; अनिष्टमें प्रवृत्त व्यक्तिका निवारण; आत्मरक्षा; आश्रय, पनाह।

परित्राता(तृ)-पु० [सं०] परित्राण करनेवाला।

परिदत्त पूँजी-स्त्री० (पेड अप कैपिटल) प्रार्थित पूँजीका वह भाग जो संचालकों द्वारा माँगे जानेपर हिस्सेदारों द्वारा जमा कर दिया गया हो।

परिदर्शन-पु० [सं०] सब ओरसे, अच्छी तरह देखना।

परिदेव, परिदेवन-पु० [सं०] बहुत अधिक रोना-धोना, बिलखना, विलाप करना।

परिदेवना-स्त्री० [सं०] (कंप्लेंट) वेदना या हानि पहुँचाये जानेके विरोधमें किया गया अभ्यावेदन, शिकायतनामा, फरियाद।

परिधन*-पु० दे० 'परिधान'।

परिधान-पु० [सं०] चारों ओरसे घेरना या आवृत करना; नाभिसे नीचेका पहनावा; वस्त्र; पहननेका कपड़ा; वस्त्र आदि धारण करना। **-गृह**-पु० (रोबिंग रूम) कपड़े या पोशाक पहनने, बाल सँवारने आदिका कमरा जिसमें प्रायः बड़ा शीशा भी लगा रहता है।

परिधानीय-वि० पहनने योग्य।

परिधावन-पु० [सं०] दौड़ना, भागना; किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़ना।

परिधावी(विन्)-वि० [सं०] किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़नेवाला; चारों ओर बहनेवाला। पु० एक संवत्सर।

परिधि-स्त्री० [सं०] लकड़ी आदिका घेरा या बाड़ा; हलकी बदलीके कारण सूर्य या चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला मंडल, परिवेष; प्रकाशमंडल; (सरकंफरेंस) वृत्त बनानेवाली गोल रेखा; पहिये या गोल वस्तुका घेरा; क्षितिज; आवरण; पहनावा; परिक्रमा करनेका नियत मार्ग।

परिधेय-वि० [सं०] पहनने योग्य। पु० नीचे या भीतर पहननेका एक कपड़ा।

परिनय*-पु० दे० 'परिणय'।

परिनाम*-पु० दे० 'परिणाम'।

परिनिर्णय-पु० [सं०] (अवार्ड) अंतिम निर्णय, विशेषतः पंच या पंचों द्वारा किया गया, पंचाट।

परिपंच*-पु० दे० 'प्रपंच'।

परिपक्व-वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ; अच्छी तरह पचा हुआ; जिसका पूरा विकास हो चुका हो, प्रौढ़; पूर्णतया कुशल; परिपाकको प्राप्त (रस)।

परिपत्र-पु० [सं०] (सरक्युलर) कुछ निश्चित बातों, सुझाव आदिकी सूचना देनेके लिए चारों तरफ, विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों आदिके पास, भेजा जानेवाला पत्र, गश्ती चिट्ठी।

परिपाक-पु० [सं०] सम्यक् पाक; अच्छी तरह पकना या पकाया जाना; अच्छी तरह पचना; पूर्ण विकास; परिणति; परिणाम; पक्का होना (बुद्धि, अनुभव, ज्ञान आदि); कुशलता, निपुणता। **-तिथि**-स्त्री० (डेट ऑफ मैच्यूरिटी) किसी हुंडी या बीमाकी पॉलिसीमें निर्धारित अवधि (मीआद) समाप्त होनेकी तिथि।

परिपाटी-स्त्री० [सं०] चला आता हुआ क्रम, अनुक्रम, सिलसिला; रीति, ढंग; प्रथा, चाल (हिं०)।

परिपालन-पु० [सं०] रक्षा करना, रक्षण; पालन-पोषण।

परिपालनीय-वि० [सं०] परिपालन करने योग्य।

परिपीड़ित-वि० [सं०] अति पीड़ित।

परिपुष्ट-वि० [सं०] जिसका पोषण अच्छी तरह किया गया हो, सम्यक् पोषित; अति पुष्ट, पूर्ण रूपसे पुष्ट।

परिपूजित-वि० [सं०] अच्छी तरह पूजित।

परिपूत-वि० [सं०] पूर्णतया शुद्ध किया हुआ; अति पवित्र; सूप आदिसे अच्छी तरह साफ किया हुआ (परिपूत धान्य)।

परिपूरक-पु० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला; समृद्ध या पूर्णतया संपन्न बनानेवाला।

परिपूर्ण-वि० [सं०] अच्छी तरह भरा हुआ; पूरा किया हुआ; संतुष्ट।

परिपृच्छक-पु० [सं०] प्रश्न करनेवाला, पूछनेवाला।

परिपृच्छा-स्त्री० [सं०] प्रश्न; जिज्ञासा; पूछना; (इनक्वाइरी) कोई बात जानने या किसी घटना आदिका पता लगानेके लिए की जानेवाली पूछताछ, परिप्रश्न। **-गृह**-पु० (इनक्वाइरी ऑफिस) पूछताछ करने, पता लगानेका दफ्तर।

परिपोषण-पु० [सं०] परिपुष्ट करना; वृद्धि करना।

परिप्रश्न-पु० [सं०] प्रश्न; जिज्ञासा; (इनक्वाइरी) दे० 'परिपृच्छा'; युक्तायुक्तताका प्रश्न।

परिप्लव-पु० [सं०] तैरना; नौका, पोत; बाढ़; पीड़न।

परिप्लावित-वि० [सं०] दे० 'परिप्लुत'।

परिप्लुत-वि० [सं०] जल आदिसे आर्द्र या सिक्त, सराबोर; जलसे आप्लावित, बाढ़के पानीसे व्याप्त; अभिभूत।

परिबृंहण-पु० [सं०] अभ्युदय; वर्धन, बढ़ाना; पूरक ग्रंथ।

परिभव-पु० [सं०] अनादर, तिरस्कार; पराजय।

परिभावना-स्त्री० [सं०] विचार करना, विचारना।

परिभाव्य धन-पु० [सं०] (कोशन मनी) सद्व्यवहार

आदिका निश्चय करानेके लिए जमानतके रूपमें पहलेसे जमा किया गया धन ।

परिभाषा–स्त्री० [सं०] किसीका ऐसा नपा-तुला परिचय जिससे उसके स्वरूप, गुण, वैशिष्ट्य आदिका यथार्थ ज्ञान हो जाय, लक्षण; ऐसी संज्ञा जिसका प्रयोग किसी शास्त्र, कला या विद्याके क्षेत्रमें विशिष्ट अर्थमें होता हो, किसी शास्त्र, कला या विद्याके क्षेत्रमें विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला शब्द; अपने प्रयोगके लिए शास्त्रकारों द्वारा रची हुई विशिष्ट संज्ञा; परिभाषाका शाब्दिक रूप, परिभाषाकी इबारत, परिभाषाकी शब्दावली; आलाप; व्याख्या ।

परिभाषित–वि० [सं०] स्पष्ट रूपसे कथित, समझाकर कहा हुआ, व्याख्यात; (डिफाइंड) जिसकी परिभाषा की गयी हो ।

परिभोग–पु० [सं०] सेवन, उपभोग; स्त्री-प्रसंग; परायी वस्तुओंको बिना अधिकारके काममें लाना ।

परिभ्रमण–पु० [सं०] चारों ओर घूमना; इधर-उधर घूमना, पर्यटन; पहिये आदिका चक्कर खाना; परिधि ।

परिभ्रष्ट–वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित; खोया हुआ, जो लापता हो गया हो; भागा हुआ; बहका हुआ, जिसका साथ छूट गया हो; (किसी वस्तुसे) रहित किया हुआ ।

परिभ्रामण–पु० [सं०] इधर-उधर घुमाना; चक्कर देना ।

परिमल–पु० [सं०] चंदन आदिको रगड़ना; कुमकुम, चंदन आदिके मर्दनसे उत्पन्न सुगंधि; सुवास ।

परिमाण–पु० [सं०] माप; तौल; मात्रा; आकार ।

परिमान*–पु० दे० 'परिमाण' ।

परिमार्जन–पु० [सं०] धोना; साफ करना, स्वच्छ करना; त्रुटियाँ या दोष दूर करना ।

परिमार्जित–वि० [सं०] धोया हुआ; साफ किया हुआ ।

परिमित–वि० [सं०] मापा हुआ; तौला हुआ; जो परिमाणमें आवश्यकतासे न अधिक हो, न कम, जिसकी मात्रा कम-बेश न हो; थोड़ा; मामूली, सामान्य; सीमित । * अ० पर्यंत ।

परिमिताहार–वि० [सं०] अल्पाहारी ।

परिमिति–स्त्री० [सं०] परिमाण; अवधि; सीमा; (पेरिमीटर) ऋजुभुज; (रेक्टीलीनियल) क्षेत्रकी भुजाओंकी लंबाइयोंका योग; * मर्यादा, कान ।

परिमेय–वि० [सं०] मापने योग्य; तौलने योग्य; कुछ ।

परिमोहन–पु० [सं०] पूरी तरह मुग्ध कर देना; किसीकी मति हर लेना; (एंटिसमेंट) दे० 'परिलोभन' ।

परियंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

परियंत*–अ० दे० 'पर्यंत' ।

परिया–पु० दक्षिण भारतकी एक अस्पृश्य जाति ।

परियोजना–स्त्री० [सं०] (प्रोजेक्ट) मनमें सोचकर, आगे आनेवाली स्थितिका अनुमान लगाकर, तैयार की गयी योजना या परिकल्पना ।

परिरंभ, परिरंभण–पु० [सं०] आलिंगन करना ।

परिरंभना*–स० क्रि० आलिंगन करना ।

परिरक्षक–पु० [सं०] रक्षण करनेवाला, अभिभावक; (क्यूरेटर) किसी संग्रहालयकी देख-रेख या व्यवस्था करनेवाला अधिकारी; (पेट्रोल) दे० 'परिरक्षी' ।

परिरक्षण–पु० [सं०] हर तरहसे रक्षा करना, पूरी तरह रक्षण करना; देख-भाल; बचाव; पालन, निभाना ।

परिरक्षित–वि० [सं०] जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गयी हो; भली भाँति निभाया हुआ ।

परिरक्षी (क्षिन्)–पु० [सं०] (पेट्रोल) चारों तरफ घूम-घूमकर, इधर-उधर गश्त लगाते हुए, रक्षाका कार्य करनेवाला ।

परिरूप–पु०[सं०] (डिजाइन) किसी भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तुकी पहलेसे सोची हुई रूपरेखा; कपड़े इत्यादिपर धारी, फूल, बूटी या ऐसी चीजें बनानेका विशेष ढंग; किसी कलात्मक कृति या सजावट आदिके संबंधमें मनमें पहलेसे सोची-विचारी हुई परिकल्पना ।

परिरूपक–पु० [सं०] (डिजाइनर) परिरूप बनानेवाला, रूपांकन करनेवाला ।

परिलब्धि–स्त्री०[सं०] (परक्विजिट) निर्धारित वेतन या भृतिके ऊपर अलगसे दिया गया भत्ता या शुल्क, अनुलाभ ।

परिलाभ–पु० [सं०] (इमॉल्यूमेंट) किसी पदपर काम करके या सेवा आदिके कारण वेतन, पुरस्कार इत्यादिके रूपमें होनेवाला लाभ ।

परिलेख–पु० [सं०] रेखा-चित्र, खाका; रेखाएँ या चित्र खींचनेका आला, कूँची, कलम आदि; [हिं०] वर्णन ।

परिलेखना*–स० क्रि० जानना, समझना ।

परिलोभन–पु० [सं०] (एंटिसमेंट) किसी तरहका प्रलोभन या आश्वासन देकर या झूठी आशा उत्पन्न कर बहकाना, ललचाना ।

परिवर्जन–पु० [सं०] त्यागना, त्याग; रोकना ।

परिवर्जित–वि० [सं०] त्यागा हुआ, त्यक्त ।

परिवर्तक–वि० [सं०] घुमानेवाला, चक्कर देनेवाला; चक्कर खानेवाला; परिवर्तन करनेवाला ।

परिवर्तन–पु० [सं०] फेरा, चक्कर; चक्कर देना, परिभ्रमण; उलटना-पलटना; करवट लेना; अदल-बदल, हेर-फेर होना, बदलना, एक स्थिति, रूप आदिसे दूसरी स्थिति, रूप आदिको प्राप्त होना ।

परिवर्तनीय–वि० [सं०] परिवर्तनके योग्य ।

परिवर्तित–वि० [सं०] जिसने चक्कर दिया हो; उलटा-पलटा हुआ; जिसका विनिमय किया गया हो; जिसमें हेर-फेर हुआ हो या किया गया हो; बदला हुआ ।

परिवर्ती (र्तिन्)–वि० [सं०] जो बदलता रहे, जिसमें परिवर्तन होता रहे; जो घूमता रहे ।

परिवर्त्य–वि०[सं०] (कॉनवर्टिबिल) जो अन्य रूपमें बदला जा सके (ऋणपत्र, कंपनीके हिस्से आदि) ।

परिवर्धन–पु० [सं०] अच्छी तरह बढ़ना या बढ़ाया जाना, सम्यक् वृद्धि ।

परिवर्धित–वि० [सं०] जो अच्छी तरह बढ़ा हो या बढ़ाया गया हो; जिसमें पूर्ण वृद्धि की गयी हो; जिसमें ऊपरसे कुछ और जोड़ दिया गया हो ।

परिवहन–पु० [सं०] (ट्रांसपोर्ट) कोई वस्तु एक स्थानसे दूसरे स्थानतक उठाकर या ढोकर ले जाना, पहुँचाना । **–बाधा**–स्त्री० (बाटिलनेक) माल इत्यादिके एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुँचाये जानेमें रेलके डब्बों इत्यादिकी

कमीके कारण पड़नेवाली बाधा। **–व्यवस्थापक**–पु० (ट्रैफिक मैनेजर) रेल-पथ द्वारा यात्रियों तथा माल-असबाबके परिवहनकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

परिवा–स्त्री० पक्षकी पहली तिथि।

परिवाद–पु०[सं०] निंदा, शिकायत; (कांप्लेंट) दोषकथन, बुराई बताना; दुखड़ा; किसीमें ऐसे दोष दिखाना जिनका अस्तित्व न हो, झूठी निंदा; कुख्याति, अपवाद; आरोपित दोष, जुर्म।

परिवादक–पु० [सं०] वादी, मुद्दई; निंदा करनेवाला; वीणा बजानेवाला।

परिवादिनी–स्त्री० [सं०] सात तारोंवाली वीणा; निंदा करनेवाली स्त्री।

परिवादी (दिन्)–वि०[सं०] निंदा करनेवाला, अपवाद करनेवाला; आरोप करनेवाला; शोर मचानेवाला।

परिवार–पु० [सं०] कुटुंब आदि; आश्रित जन, परिजन; अनुचरोंका समूह, दल-बल; *वस्तुओंका समुदाय, समूह।

परिवारी–पु० परिवारमें रहनेवाला कुटुंबी।

परिवाह–पु० [सं०] पानीका उमड़कर चारों ओर बहना; बढ़े हुए पानीके बहनेका मार्ग; फालतू पानीका निकास।

परिवृत्त–वि० [सं०] घुमाया हुआ; बदला हुआ; समाप्त; घेरा हुआ, आवेष्टित। पु० (सरकम्स्क्राइब्ड सरकिल) दे० 'परिगतवृत्त'।

परिवृत्ति–स्त्री० [सं०] घुमाव; घेरना, आवेष्टित करना; समाप्ति; विनिमय, अदला-बदला; एक शब्दके स्थानपर दूसरे शब्दको इस प्रकार रखना कि अर्थमें अंतर न पड़े, अर्थकी रक्षा करते हुए किसी शब्दके स्थानपर उसका पर्यायवाची शब्द रखना (जैसे–'चरण-कमल'के स्थानपर 'पाद-पद्म' रखना); एक अर्थालंकार जहाँ कुछ देकर कुछ लेनेका वर्णन हो (सा०); (कनवर्शन) एक तरहके ऋणपत्र, प्रमंडलके हिस्सों आदिको दूसरी तरहके ऋणपत्रों या हिस्सोंमें बदलना; धर्म, विश्वास, मत आदिका बदलना।

परिवृद्धि–स्त्री० [सं०] पूर्ण वृद्धि, सम्यक् वृद्धि।

परिवेदन–पु० [सं०] भारी दुःख; छोटे भाईका बड़े भाईसे पहले ही विवाह करना या अग्निहोत्र ले लेना; विवाह; व्यापक ज्ञान, पूरी जानकारी; सर्वत्र स्थिति; तर्क।

परिवेश, परिवेष–पु० [सं०] घेरना, वेष्टन; हलकी बदलीके कारण सूर्य या चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला एक प्रकारका मंडल, किरणोंका वह मंडल जो कभी-कभी सूर्य या चंद्रमाके चारों ओर बन जाता है, परिधि; आवेष्टित करनेवाली वस्तु; भोजन परसना।

परिवेष्टन–पु० [सं०] चारों ओरसे घेरना;आवृत करनेवाली वस्तु, आवरण, आच्छादन; घेरा, परिधि; पट्टी।

परिवेष्टित–वि० [सं०] चारों ओरसे घिरा हुआ; आवृत।

परिव्यक्त–वि० [सं०] अति स्पष्ट।

परिव्यय–पु० [सं०] (कॉस्ट) किसी वस्तुके उत्पादन, निर्माणादिमें लगनेवाला रुपया या खर्च, लागत; मसाले।

परिव्रज्या–स्त्री०[सं०] चारों ओर घूमना(विशेषतः भिक्षुका); तपस्या; संन्यास।

परिव्राज, परिव्राजक–पु० [सं०] वह जो घर-बार छोड़कर चतुर्थ आश्रममें प्रविष्ट हो गया हो, संन्यासी।

परिशिष्ट–वि०[सं०] जो छूट गया हो, बचा हुआ; समाप्त। पु० किसी पुस्तक या लेखका पूरक अंश।

परिशीलन–पु० [सं०] स्पर्श; लगाव; किसी विषयपर पूरी तरह विचार करते हुए उसे पढ़ना, सम्यक् अध्ययन।

परिशुद्ध–वि० [सं०] पूर्णतया शुद्ध; बिलकुल ठीक (एक्यूरेट); चुकाया हुआ; जो बरी कर दिया गया हो।

परिशुद्धता–स्त्री० [सं०] (एक्कुरेसी) बिलकुल ठीक, यथार्थ या सटीक होनेका भाव।

परिशुद्धि–स्त्री० [सं०] पूर्ण शुद्धि; रिहाई।

परिशुष्क–वि० [सं०] अति शुष्क, एकदम सूखा हुआ; मुरझाया हुआ; पिचका हुआ (कपोल आदि); नीरस।

परिशोध–पु० [सं०] सम्यक् शुद्धि, पूरी सफाई; ऋण आदिका भुगतान, चुकता।

परिशोधन–पु० [सं०] पूर्णतया शुद्ध करनेकी क्रिया; भुगतान, चुकता करना; संशोधन।

परिशोष–पु० [सं०] बिलकुल शुष्क हो जाना।

परिश्रम–पु० [सं०] क्लांति; क्लेशकर आयास, मेहनत।

परिश्रमी (मिन्)–वि० [सं०] परिश्रम करनेवाला, जो परिश्रम करे।

परिश्रांत–वि० [सं०] विशेष रूपसे थका हुआ।

परिश्रुत–वि० [सं०] विख्यात, प्रसिद्ध।

परिषद्–स्त्री० [सं०] सभा; वेद-वेदांग, धर्मशास्त्र आदिमें पारंगत ब्राह्मणोंकी वह सभा जिसे प्राचीन कालके राजा धर्म आदिके मामलोंका निर्णय करनेके लिए यदा-कदा बुलाया करते थे; (काउंसिल) सलाह देनेवाले या विवादादिमें हिस्सा लेनेवाले सदस्योंकी सभा; नगर या जिलेकी स्थानीय प्रबंधसभा; चुने हुए या मनोनीत किये हुए सदस्योंकी विशेष सभा; समूह, मंडली।

परिषेक–पु० [सं०] सींचना, छिड़काव; स्नान।

परिष्करण–पु० [सं०] बुराइयाँ या दोष दूर कर ठीक करना, संशोधन।

परिष्कार–पु० [सं०] सजावट, सिंगार; पाक द्वारा सुस्वादु बनाना; संस्कार; भूषण, गहना; मार्जन आदि संस्कार, सफाई; घरका उपयोगी सामान।

परिष्कृत–वि० [सं०] जिसका परिष्कार किया गया हो; सजाया, सँवारा हुआ; पाक द्वारा सुस्वादु बनाया हुआ; साफ किया हुआ; शुद्ध किया हुआ।

परिष्क्रिया–स्त्री० [सं०] सजाना, अलंकृत करना; शोधन।

परिष्यंद–पु० [सं०] प्रवाह, बहाव; नदी; द्वीप; आर्द्रता।

परिसंख्या–स्त्री० [सं०] गिनती, गणना; एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तुका एक स्थानसे निषेध करके उसका दूसरे स्थानमें स्थापन हो; ऐसा विधान जिससे विहित वस्तुसे भिन्न सभी वस्तुओंका निषेध हो जाय (मीमांसा)।

परिसंख्यात–वि० [सं०] जिसकी परिसंख्या हुई हो, परिगणित; जिसका खास तौरसे उल्लेख किया गया हो।

परिसंख्यान–पु० [सं०] गणना; सही अनुमान; अनुसूची।

परिसंघ–पु० [सं०](कानफेडरेशन) स्वतंत्र राजाओं, राज्यों या राष्ट्रोंका ऐसा संघटन जो एक दूसरेकी सहायता करने और सामान्य रूपसे संबंध रखनेवाले वैदेशिक प्रश्नों आदिके संबंधमें समान नीति निर्धारित करनेके उद्देश्यसे

बनाया जाता है।

परिसंपद्–स्त्री० [सं०] (असेट्स) (किसी महाजन या व्यापारिक संस्था आदिकी) वह संपत्ति तथा पावना आदि जिससे (उसका) देय या ऋण चुकाया जा सके।

परिसमापक–पु० [सं०] (लिक्विडेटर) किसी प्रमंडल, व्यापारिक संस्था आदिका देना-पावना ले-देकर उसका कारबार समाप्त करनेवाला अधिकारी।

परिसमापन–पु० [सं०] (लिक्विडेशन) किसी व्यापारिक संस्था, प्रमंडल आदिके देने-पावनेका हिसाब चुकाकर उसका कारबार समाप्त करना; ऋण आदि पूरी तरह चुका देना।

परिसमाप्ति–स्त्री० [सं०] पूर्ण समाप्ति; (टरमिनेशन) किसी चलते हुए काम, छुट्टी, रेलपथ आदिकी समाप्ति या अंत हो जाना।

परिसर–पु० [सं०] (नदी, नगर, पर्वत आदिके) आसपासकी भूमि; विधान, नियम; स्थिति, मौका; मृत्यु; एक देवता; इधरसे उधर जाना, हिलना-डोलना।

परिसरण–पु० [सं०] चारों ओर घूमना, पर्यटन।

परिसीमन–पु० [सं०] (डीलिमिटेशन) किसी स्थान, क्षेत्र, प्रदेश आदिकी सीमा स्थिर करना।

परिसीमा–स्त्री० [सं०] चौहद्दी; अवधि, हद, अंतिम सीमा।

परिस्तरण–पु० [सं०] छितराना, फैलाना; आवरण।

परिस्तान–पु० [फ़ा०] परियोंका देश, परियोंका लोक।

परिस्थिति–स्त्री० [सं०] आसपास, चारों ओरकी स्थिति, अवस्था।

परिस्पर्द्धा–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिस्पर्द्धा'।

परिस्पर्द्धी(र्द्धिन्)–वि० [सं०] दे० 'प्रतिस्पर्द्धी'।

परिस्फुट–वि० [सं०] सुस्पष्ट; अच्छी तरह विकसित।

परिस्फुरण–पु० [सं०] कंपन; कलीयुक्त होना, कलीका निकलना।

परिस्यंद–पु० [सं०] चूना, रिसना; दे० 'परिष्यंद'।

परिस्राव–पु० [सं०] चारों ओरसे चूना, टपकना या रिसना; एक रोग जिसमें मलके साथ-साथ पित्त और कफ गिरता है (आ० वे०)।

परिस्रावण–पु० [सं०] वह बरतन जिसमेंसे साफ किया जानेवाला पानी टपकाते हैं।

परिस्रावी(विन्)–वि० [सं०] चूने, टपकने या रिसनेवाला; बहनेवाला। पु० एक प्रकारका भगंदर।

परिस्रुत–वि० [सं०] टपका हुआ, रसा हुआ।

परिहँस–पु० ईर्ष्या, डाह।

परिहरण–पु० [सं०] त्यागना, तजना; दूर करना, निवारण; छीन लेना, अपहरण करना।

परिहरणीय–वि० [सं०] परिहरणके योग्य।

परिहरना*–स० क्रि० छोड़ना, त्यागना।

परिहस*–पु० दे० 'परिहास'; दुःख।

परिहस्त–पु० [सं०] हाथका छल्ला।

परिहार–पु० [सं०] (एवॉइड) त्याग करने, छोड़ देनेकी क्रिया; बचा जाने या प्रयोग न करनेकी क्रिया; (रेमीशन) अनावृष्टि आदि संकटके कारण दी जानेवाली कर या लगानकी माफी, छूट; ऋण या दंड आदिमें की गयी कमी; दोष आदिको दूर करना, दोषका निराकरण; गाँवके चारों ओर जनताकी ओरसे परती छोड़ी हुई जमीन (स्मृति); पराजित शत्रुसे छीनी हुई वस्तुएँ; अनादर, अवज्ञा; खंडन; किसी कुकृत्यका प्रायश्चित्त करना; राजपूतोंका एक वंश जो अग्निवंशके अंतर्गत माना जाता है।

परिहारना*–स० क्रि० दूर करना; प्रहार करना, मारना।

परिहार्य–वि० [सं०] परिहार करने योग्य, त्यागने या निवारण करने योग्य।

परिहास–पु० [सं०] हँसी, मजाक।

परी–स्त्री० घी, तेल निकालनेकी कलछी, पली; [फ़ा०] पुरानी कथाओंके अनुसार अदृश्य होने तथा जहाँ चाहे वहाँ जा सकने आदिकी शक्तिसे युक्त उड़नेवाली परम सुंदर स्त्रियाँ जिनका निवासस्थान कोहकाफ पहाड़ माना जाता है (फारसी-उर्दूकी कवितामें इन्हें सुंदर स्त्रियोंका उपमान बनाया गया है); अति रूपवती स्त्री (ला०)। **–ख़ाना**–पु० परियों या हसीनोंके रहनेका स्थान। **–ज़ाद**–पु० परीका बच्चा। वि० हसीन, सुंदर, खूबसूरत।

परीक्षक–पु० [सं०] परीक्षा करने या लेनेवाला, परखनेवाला, जाँचनेवाला।

परीक्षण–पु० [सं०] परीक्षा करने या लेनेकी क्रिया, जाँच, परख; राजाके मंत्री, चर आदिके दोषादोषकी जाँच करना। **–काल**–पु० (प्रोबेशन) कोई कर्मचारी कामके योग्य है या नहीं, इसकी जाँच या परख करनेका समय। **–नलिका**–स्त्री० (टेस्ट ट्यूब) परीक्षणके काम आनेवाली शीशे(काँच)की नलिका, परखनली।

परीक्षना*–स० क्रि० परीक्षा लेना।

परीक्षा–स्त्री० [सं०] किसीके गुण, दोष, योग्यता, शक्ति आदिकी सच्ची जानकारीके लिए उसे अच्छी तरह देखना-भालना–परख या किसीके गुण, दोष, योग्यता आदिका पता लगानेके लिए किया जानेवाला काम, इम्तहान; तर्क, प्रमाण आदिके द्वारा किसी वस्तुके तत्त्वका निश्चय करना; किसी वस्तुका ऐसा प्रयोग जो उसके बारेमें कोई विशेष बात निश्चित करनेके लिए किया जाय; विद्यार्थियों या उम्मीदवारोंकी योग्यताकी वह विशेष प्रकारकी जाँच जिसमें उनसे मौखिक या लिखित रूपमें प्रश्न पूछे जाते हैं; अभियुक्तकी सदोषता या निर्दोषता अथवा साक्षीकी सचाई या झुठाईका निर्णय करनेकी एक प्राचीन रीति। **–काल**–पु० परीक्षाका समय। **–भवन**–पु० (इग्ज़ामिनेशन हॉल) वह कमरा या घर जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा देते समय बैठते हैं, परीक्षा देनेका स्थान। **–शुल्क**–पु० परीक्षाके निमित्त लिया जानेवाला द्रव्य।

परीक्षार्थी(र्थिन्)–पु० [सं०] (इग्ज़ामिनी) परीक्षा देनेवाला।

परीक्षालय–पु० [सं०] (इग्ज़ामिनेशन हॉल) वह भवन या स्थान जहाँ बैठकर परीक्षार्थियोंको परीक्षा देनी पड़े।

परीक्षित–वि० [सं०] जिसकी परीक्षा ली गयी हो, जाँचा हुआ, आजमाया हुआ। पु० (इग्ज़ामिनी) वह व्यक्ति जिसकी परीक्षा ली जाय या जो परीक्षामें बैठा हो।

परीक्षित्–पु० [सं०] पांडुकुलके एक प्रसिद्ध राजा जो अभिमन्युके पुत्र और अर्जुनके पौत्र थे।

परीक्ष्यमाण–वि० [सं०] (प्रोबेशनर) (वह कर्मचारी) जिसकी

नियुक्ति अभी पक्की न हुई हो, वरन् जो अभी परीक्षण-कालमें हो।

परीखना*–स० क्रि० परखना, जाँचना।

परीच्छित*–वि० दे० 'परीक्षित'। पु० दे० 'परीक्षित्'। अ० अवश्य ही।

परीछत*–पु० दे० 'परीक्षित्'।

परीछना*–स० क्रि० परीक्षा लेना (मुद्रा०)।

परीछा*–स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परीछित*–वि० दे० 'परीक्षित'। पु० राजा परीक्षित्।

परीत*–पु० दे० 'प्रेत'।

परीरंभ–पु० [सं०] आलिंगन।

परीशान–वि० दे० 'परेशान'।

परीसना*–स० क्रि० स्पर्श करना।

परीहार–पु० [सं०] दे० 'परिहार'।

परीहास–पु० [सं०] दे० 'परिहास'।

परु†–अ० पिछला या अगला साल।

परुई†–स्त्री० भड़भूजेकी अनाज भूननेकी नाँद।

परुख*–वि० दे० 'परुष'।

परुखाई*–स्त्री० परुषता, कठोरता।

परुत्–अ० [सं०] गत वर्ष।

परुष–वि० [सं०] कठोर, कड़ा; रूखा; कर्कश; बुरा लगनेवाला; तीव्र, उग्र (वायु आदि); कठोर हृदयवाला, दयाहीन; नीरस, रसहीन; गंदा; चितकबरा। पु० कड़ी बात, दुर्वचन। **–वचन**–पु० कठोर वचन, कड़ी बात, अप्रिय बात।

परुषाक्षर–वि० [सं०] जिसमें रूखे शब्दोंका प्रयोग हो, कड़े शब्दोंमें कहा हुआ; कड़े शब्द प्रयोगमें लानेवाला।

परुषावृत्ति–स्त्री० [सं०] काव्यकी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें ट, ठ, ड, ढ वर्णों, लंबे समासों और ऐसे संयुक्त वर्णोंकी योजना होती है जो कठोर होते हैं।

परुषोक्ति–स्त्री० [सं०] निष्ठुर वचन, कड़ी या लगनेवाली बात।

परुसना*–स० क्रि० दे० 'परसना'।

परे–अ० उस ओर; और आगे; बहुत दूर; ऊर्ध्व, ऊपर; बाद; बाहर। मु०–बिठाना–परास्त करना, मात करना।

परेई–स्त्री० परेवाकी मादा; पंडुकी।

परेखना–स० क्रि० अच्छी तरह देखना-भालना, परीक्षा करना, जाँचना; * प्रतीक्षा करना।

परेखा*–पु० परीक्षा, जाँच; पश्चात्ताप; विश्वास।

परेत–वि० [सं०] मरा हुआ, मृत। पु० दे० 'प्रेत'। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० यमराज। **–भूमि**–स्त्री० श्मशान।

परेता–पु० सूत लपेटनेके कामका जुलाहोंका एक आला; बाँसकी पतली, चपटी तीलियोंसे तैयार किया जानेवाला वह बेलन जिसपर पतंगकी डोर लपेटी जाती है।

परेर*–पु० आकाश।

परेवा–पु० कबूतर; पंडुक; कोई तेज उड़नेवाला पक्षी; शीघ्रगामी पत्रवाहक, तेज चलनेवाला हरकारा। [स्त्री० 'परेई'।]

परेश–पु० [सं०] परमात्मा, परमेश्वर।

परेशान–वि० [फा०] उद्विग्न, व्याकुल; हैरान।

परेशानी–स्त्री० [फा०] उद्विग्नता, व्याकुलता।

परेषक–पु० [सं०] (कॉनसाइनर) वह व्यक्ति जो रेलगाड़ी आदिसे पारसलके रूपमें अपना माल किसी अन्य स्थानमें रहनेवाले व्यक्तिके पास भेजे।

परेषणी–पु० (कॉनसाइनी) वह व्यक्ति जिसके पास कोई माल रेलपार्सल द्वारा भेजा जाय।

परेषित–वि० [सं०] (कॉनसाइंड) (वह माल) जो रेलगाड़ी इत्यादिसे पारसलके रूपमें अन्य किसीके पास भेजा गया हो।

परेस*–पु० दे० 'परेश'।

परोँ*–अ० दे० 'परसों'।

परोक्तदोष–पु० [सं०] न्यायालयमें ऊटपटाँग बयान देनेका अपराध।

परोक्ष–वि० [सं०] जो आँखोंके सामने न हो; जो नेत्रका विषय न हो, अप्रत्यक्ष; अनुपस्थित; छिपा हुआ, अलक्षित, गुप्त; अज्ञात। पु० वर्तमान न होनेकी स्थिति, अनुपस्थिति; पूर्ण भूतकाल (संस्कृत व्या०)। **–निर्वाचन**–पु० (इनडाइरेक्ट इलेक्शन) सीधे जनताके मतदान द्वारा नहीं, वरन् निर्वाचन-मंडलों, नगर-पालिकाओं आदि द्वारा किया जानेवाला चुनाव। **–भोग**–पु० किसी वस्तुका ऐसा भोग जो उसके स्वामीकी अनुपस्थितिमें किया जाय। **–वृत्ति**–स्त्री० अज्ञात जीवन। वि० अज्ञात रूपसे रहनेवाला।

परोना*–स० क्रि० दे० 'पिरोना'।

परोपकार–पु० [सं०] दूसरेकी भलाई।

परोपकारी (रिन्)–वि० [सं०] दूसरेकी भलाई करनेवाला।

परोपजीवी (विन्)–वि० [सं०] (पैरासाइट) दूसरोंपर आश्रित रहकर जीवित रहनेवाला। पु० वह वनस्पति या जंतु जो किसी अन्य विटप या जंतुके शरीरसे लिपटकर उसका रस या रक्त चूसकर परिपुष्ट हो।

परोपदेश–पु० [सं०] दूसरेको उपदेश देना।

परोरा†–पु० परवल।

परोस*–पु० दे० 'पड़ोस'।

परोसना†–स० क्रि० खानेवालोंके सामने भोज्य वस्तुएँ रखना।

परोसा†–पु० पत्तल या थालीमें रखा हुआ एक व्यक्तिके खानेभरका भोजन जो भोजमें सम्मिलित न होनेवालेके यहाँ भेजा जाता है।

परोसी†–पु० दे० 'पड़ोसी'।

परोहन–पु० सवारी या बोझ लादनेके काम आनेवाला पशु।

परौं†–अ० दे० 'परसों'।

परौठा–पु० दे० 'पराँठा'।

पर्चा–पु० दे० 'परचा'।

पर्चाना–स० क्रि० दे० 'परचाना'।

पर्जंक*–पु० दे० 'पर्यंक'।

पर्जन्य–पु० [सं०] मेघ, बादल; वर्षा; इंद्र।

पर्ण–पु० [सं०] पत्ता; पर; बाणका पंख; पान; पलाशका पेड़। **–कार**–पु० बरई, तंबोली। **–कुटिका, –कुटी**–स्त्री० पत्तोंकी बनी कुटिया। **–भोजनी**–स्त्री० बकरी। **–शय्या**–स्त्री० पत्तोंका बिस्तर, पत्तोंका बिछावन। **–शाला**–स्त्री० पर्णकुटी।

पर्णक–पु० [सं०] (लीफ्लेट) कागजका छपा हुआ टुकड़ा जो लोगोंमें प्रायः बिना मूल्य वितरणके लिए हो।

पर्णिका–स्त्री० [सं०] (कूपन) वस्तुओंके सीमित वितरणकी व्यवस्थामें वह पुरजी, कागजका टुकड़ा या टिकट जिसपर लिखा रहता है कि अमुक व्यक्तिको इतना कपड़ा, पेट्रोल या अन्य वस्तु दी जाय; पैसा जमा करनेपर मिलनेवाला वह प्रमाणक जिसे अर्पित करनेपर कोई वस्तु (जैसे दुग्धशालाका दूध) या कोई सेवा प्राप्त की जा सके; मनीआर्डर फार्म (धनप्रेपादेश-प्रपत्र) का वह निचला भाग जिसमें रुपया भेजनेवाला पानेवालेके नाम कोई संदेश आदि लिख सकता है।

पर्दनी*–स्त्री० धोती।

पर्दा–पु० दे० 'परदा'।

पर्पटी–स्त्री० [सं०] गोपीचंदन; पापड़; एक रसौषधि।

पर्ब–पु० दे० 'पर्व'।

पर्बत–पु० दे० 'पर्वत'।

पर्यंक–पु०[सं०] पलंग; एक आसन, वीरासन (योग); पीठ और घुटनोंको कपड़ेसे बाँधकर बैठनेकी एक मुद्रा; पालकी।

पर्यंत–अ० [सं०] तक। वि० सीमित। पु० अंतिम सीमा, किनारा; अंत, समाप्तिस्थान। **–भू**, **–भूमि**–स्त्री० नदी, नगर आदिके पासका भूभाग।

पर्यटक–पु० [सं०] भ्रमण करनेवाला।

पर्यटन–पु० [सं०] इधर-उधर घूमना, भ्रमण।

पर्यवलोकन–पु० [सं०] (सर्वे) किसी कामको या किसी क्षेत्रादिको आदिसे अंततक–एक छोरसे दूसरे छोरतक–स्थूल रूपसे देखना, जाँचना-समझना।

पर्यवसान–पु० [सं०] अंत, समाप्ति; अवधारण, निश्चय।

पर्यवेक्षक–पु० [सं०] (सूपरवाइज़र) किसी काम आदिकी निगरानी करनेवाला, चारों तरफ नजर रखनेवाला, देखभाल करनेवाला।

पर्यवेक्षण–पु० [सं०] (सूपरविजन) चारों तरफ नजर रखने, निगरानी करने आदिका काम, देखभाल।

पर्यसन–पु० [सं०] फेंकना; दूर करना; बाहर करना।

पर्यस्तापह्नुति–स्त्री० [सं०] अपह्नुति अर्थालंकारका एक भेद जहाँ किसी (उपमान) वस्तुका गुण छिपाकर किसी दूसरी वस्तु (उपमेय) में उसकी स्थापना की जाय।

पर्याप्त–वि० [सं०] जितना चाहिये उतना, पूरा, काफी।

पर्याय–पु० [सं०] अनुक्रम, सिलसिला; व्यतीत होना (समय); समानार्थक शब्द; प्रकार, ढंग; एक अर्थालंकार जहाँ एक वस्तुका क्रमसे अनेक आश्रय लेना दिखाया जाय या अनेक वस्तुओंका एकके ही आश्रित होना दिखाया जाय। **–वाची(चिन्)**–वि० समानार्थक। **–सेवा**–स्त्री० बारी-बारीसे सेवा करना।

पर्यायोक्त–पु०, **पर्यायोक्ति**–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ कोई बात घुमा-फिराकर कही जाय या किसी रमणीय व्याजसे कार्यसाधन किये जानेका वर्णन हो।

पर्यालोचन–पु०, **पर्यालोचना**–स्त्री० [सं०] सम्यक् विवेचन, समीक्षण।

पर्युपासक–पु० [सं०] उपासना करनेवाला, सेवक।

पर्युपासन–पु० [सं०] उपासना, सेवा, पूजा।

पर्व(न्)–पु० [सं०] उत्सव, त्योहार; कोई उत्सव या त्योहार मनाने या कोई विशिष्ट धार्मिक कृत्य (स्नान आदि) करनेका समय या दिन; सूर्यग्रहण; चंद्रग्रहण; अवसर, मौका; संधिस्थान, गाँठ, जोड़; पोर; शरीरके अवयवोंका कोई जोड़; पुस्तकका कोई भाग (जैसे महाभारतका); निश्चित काल; चातुर्मास्यके अंतर्गत वैश्व, वरुण, प्रधास आदि चार भाग।

पर्वक–पु० [सं०] घुटनेका जोड़।

पर्वणी–स्त्री० [सं०] पूर्णिमा; प्रतिपदा; उत्सव, त्योहार।

पर्वत–पु० [सं०] पहाड़; चट्टान; किसी वस्तुका पहाड़ जैसा ऊँचा ढेर; सातकी संख्या; दशनामी संन्यासियोंका एक भेद। **–जा**–स्त्री० नदी; पार्वती। **–नंदिनी**–स्त्री० पार्वती। **–पति**–पु० हिमालय। **–माला**–स्त्री० पहाड़ोंकी श्रेणी। **–राज**–पु० बड़ा पहाड़; हिमालय। **–स्थ**–वि० पर्वतपर स्थित।

पर्वतात्मज–पु० [सं०] मैनाक।

पर्वतात्मजा–स्त्री० [सं०] पार्वती।

पर्वतारि–पु० [सं०] इंद्र।

पर्वतीय–वि० [सं०] पर्वत-संबंधी; पर्वतका; पहाड़पर रहने या पैदा होनेवाला, पहाड़ी। पु० पहाड़ी ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

पर्वतेश्वर–पु० [सं०] हिमालय।

पर्वतोद्भव–पु० [सं०] पारा; शिंगरफ। वि० पर्वतपर उत्पन्न।

पर्वरिश–स्त्री० दे० 'परवरिश'।

पर्शु–पु० [सं०] आयुध; अस्त्र; परशु, फरसा। **–पाणि**–पु० गणेश; परशुराम।

पर्शुका–स्त्री० [सं०] बगलकी हड्डी, पसली।

पर्षद्–स्त्री० [सं०] सभा; धर्मोपदेशक पंडितोंका समाज।

पलंका*–स्त्री० दूरवर्ती स्थान। पु० पलंग।

पलंग–पु० बड़ी और बढ़िया चारपाई, अधिक लंबी-चौड़ी और सुन्दर चारपाई। **–तोड़**–वि० जो बिना कुछ काम किये यों ही पड़ा रहे, निकम्मा, आलसी। **–पोश**–पु० पलंगकी चादर। मु० **–को लात मारकर खड़ा होना**–भली-चंगी होकर सौरीसे बाहर आना; किसी भारी बीमारीसे छुटकारा पाकर स्वस्थ होना। **–तोड़ना**–कोई काम न करते हुए सोये या पड़े रहना, बेकार रहकर दिन बिताना। **–लगाना**–पलँगपर ठीक तरहसे बिछावन बिछाना।

पलँगड़ी–स्त्री० छोटा पलंग, चारपाई।

पल–पु० [सं०] मांस; समयका एक लघु विभाग जो ६० विपल अर्थात् २४ सेकेंडके बराबर होता है; ४ कर्षकी एक प्राचीन तौल; पयाल; * पलक। **–गंड**–पु० दीवारपर पलस्तर करनेवाला मिस्त्री, राज। **–प्रिय**–पु० राक्षस; कौआ। वि० जिसे मांस प्यारा हो, मांसप्रिय।

पलक–स्त्री० आँखको ढँकनेवाला चमड़ेका वह परदा जिसके गिरने और उठनेसे आँख क्रमसे बंद होती और खुलती है; * क्षण, निमिष। * अ० क्षणभर। मु० **–झपकते या गिरते**–देखते-देखते, क्षणभरमें। **–पसीजना**–आँखोंमें आँसू आना; दयार्द्र होना। **–बिछाना**–किसीका बड़ी श्रद्धासे स्वागत करना। **–भँजना**–आँखका इशारा होना। **–भाँजना**–आँखसे इशारा करना। **–मारना**–आँखसे

इशारा करना; पलक गिराना । **–लगना**–आँख बंद होना, नींद आना । **–लगाना**–आँख बंद करना; सोनेके लिए आँख बंद करना । **–से पलक न लगना**–टकटकी लगी रहना, नींद न आना । **(पलकों)से ज़मीन झाड़ना या तिनके चुनना**–बड़ी श्रद्धासे किसीकी सेवा करना ।

पलका*–पु० पलंग, शय्या ।

पलटन–स्त्री० [अं० प्लैटून] पैदल सैनिकोंका वह विभाग जिसमें २०० सैनिक हों; सैनिकों या लोगोंका दल जो समान उद्देश्यसे कहीं एकत्र हुए हों, फौज ।

पलटना–अ० क्रि० उलट जाना; एकदम बदल जाना, पूर्णतया परिवर्तित हो जाना ('जाना' क्रियाके साथ); अच्छी दशाको प्राप्त होना; पीछेकी ओर रुख करना, मुड़ना; वापस आना, लौटना । स० क्रि० उलटना, ऐसी स्थितिको पहुँचाना कि नीचेका भाग ऊपर हो जाय और ऊपरका नीचे; एकदम बदल देना, पूर्णतया परिवर्तित कर देना ('देना' या 'डालना' के साथ); बार-बार उलटना; एक वस्तुके स्थानपर दूसरी वस्तु ग्रहण करना; बदलना; किसी वस्तुके बदले दूसरी वस्तु लेना या बदलना; बात उलट देना, मुकरना; * वापस करना, लौटाना ।

पलटनिया–वि० पलटनका । पु० पलटनमें काम करनेवाला सैनिक ।

पलटा–पु० पलटनेका कार्य या भाव; प्रतिफल; नावमें लगी हुई वह पटरी जिसपर खेवैया बैठता है; गवैयेका ऊँचे स्वरोंतक पहुँचकर बारीकीके साथ पुनः नीचेके स्वरोंकी ओर लौटना, अवरोह (संगीत); लोहे, पीतल या काठकी चपटी कलछी; कुश्तीका एक पेंच । मु० **–खाना**–स्थितिका पूर्णतः परिवर्तित हो जाना ।

पलटाना–स० क्रि० वापस करना, लौटाना; बदलना ।

पलटाव–पु० पलटे जानेकी क्रिया ।

पलटावना–स० क्रि० दे० 'पलटाना'; * दबवाना ।

पलटे–अ० बदलेमें, प्रतिफलके रूपमें ।

पलड़ा, पलरा–पु० तराजूका पल्ला ।

पलथी–स्त्री० दाहिने और बायें पैरोंके पंजोंको क्रमसे बायीं और दाहिनी जाँघोंके नीचे दबाकर बैठनेका ढंग ।

पलना–अ० क्रि० पालित होना, पाला-पोसा जाना; हृष्ट-पुष्ट होना, तैयार होना । पु० दे० 'पालना' ।

पलनाना*–स० क्रि० जोत या कसकर तैयार करना (रथ, घोड़ा) ।

पलल–पु० [सं०] मांस; कीचड़; तिलकुट; राक्षस । **–ज्वर**–पु० पित्त नामक धातु । **–प्रिय**–पु० राक्षस; डोम-कौआ ।

पलवा†–पु० ऊखका ऊपरी भाग; एक घास; * अंजलि ।

पलवाना–स० क्रि० किसीसे पालन कराना ।

पलवैया†–पु० पालन-पोषण करनेवाला ।

पलस्तर–पु० [अं० 'प्लास्टर'] चूना, कंकड़, सुर्खी आदि मसालेसे तैयार किया हुआ दीवार आदिपर चढ़ाया जानेवाला एक तरहका लेप । मु० **(किसीका)–ढीला करना**–पस्त करना । **–ढीला होना**–शिथिल होना; पस्त होना । **(किसीका)–बिगड़ना या बिगड़ जाना**–दे० 'पलस्तर ढीला होना' । **(किसीका)–बिगाड़ना या बिगाड़ देना**–दे० 'पलस्तर ढीला करना' ।

पलहना*–अ० क्रि० दे० 'पलुहना' ।

पलहा–पु० जन्म-मृत्युकी सूचना; * पल्लव ।

पलांडु–पु० [सं०] प्याज ।

पला–पु० ६० विपल, पल; बड़ी परी; * तराजूका पल्ला; आँचल, पल्ला, किनारा; डिब्बीके दो भागोंमेंसे कोई एक ।

पलाद, पलादन, पलाशन–पु० [सं०] राक्षस । वि० मांस खानेवाला, मांसाहारी ।

पलान–पु० घोड़े आदिकी पीठपर कसा जानेवाला जीन या चारजामा ।

पलानना*–स० क्रि० (घोड़े आदिपर) पलान कसना; आक्रमण करनेकी तैयारी करना ।

पलाना*–अ० क्रि० भागना; तेजीसे जाना; गाथ इत्यादिका पिन्हाना । स० क्रि० भगाना ।

पलानि*–स्त्री० जीन ।

पलानी–स्त्री० छप्पर; पंजेके ऊपर पहननेका स्त्रियोंका एक गहना; जीन ।

पलायक, पलायी(यिन्)–पु० [सं०] भागनेवाला, भगोड़ा; (ऐब्सकांडर) दंडित होने या पकड़े जाने आदिके भयसे भाग जाने, छिप जानेवाला व्यक्ति ।

पलायन–पु० [सं०] (डरकर) दूसरी जगह चले जाना, भागना ।

पलायमान–वि० [सं०] भागता हुआ ।

पलायित–वि० [सं०] भागा हुआ ।

पलाश–पु० [सं०] पत्ता; पलास, टेसू; पलासका फूल; राक्षस; मगध देश; हरा रंग; किसी तेज हथियारका फल । वि० हरा; निष्ठुर, कठोरहृदय; मांसाहारी ।

पलास–पु० मझोले आकारका एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फूल बहुत लाल होता है, किंशुक; एक मांसाहारी पक्षी; जंबूरे जैसा एक औजार ।

पलिका*–पु० दे० 'पलका' ।

पलित–वि० [सं०] वृद्ध, बुड्ढा; पका हुआ या सफेद (बाल) । पु० वृद्धावस्थाके कारण बालोंका पकना या सफेद होना; ताप, गरमी; कीचड़ ।

पली–स्त्री बड़े बरतनोंमेंसे घी, तेल आदि तरल पदार्थ निकालनेका लोहेका एक आला जो एक डंडीके सिरेपर छोटीसी कटोरी जोड़कर बनाया जाता है, परी । मु० **–पली जोड़ना**–थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना; कौड़ी-कौड़ी जोड़कर धन बटोरना ।

पलीता–पु० यंत्र लिखा हुआ कागज जिसे बत्तीकी तरह बनाकर जलाते हैं; तोपके रंजकमें आग लगानेकी बरोह आदिकी मोटी बत्ती; पनसाखेपर रखकर जलानेकी कपड़ेकी विशेष प्रकारकी बत्ती ।

पलीद–वि० [फा०] अशुद्ध, अपवित्र; दुष्ट; खोटा, खराब ।

पलुहना*–अ० क्रि० हरा-भरा होना, पल्लवित होना ।

पलुहाना*–स० क्रि० हरा-भरा करना, पल्लवित करना– 'जरी जो बेल सींचि पलुहाई'–प० ।

पलेट–स्त्री० [अं० 'प्लेट'] पट्टी; कमीज, कुरते आदिमें भीतरकी ओर लगायी जानेवाली पट्टी ।

पलेड़ना*–स० क्रि० धक्का देना ।

पलेथन–पु० वह सूखा आटा जिसे लोईपर लगाकर रोटी

बेलते हैं । मु०-निकलना-खूब पीटा जाना, गहरी मार पड़ना । -निकालना-खूब पीटना; परेशान करना ।

पलोटना*-स० क्रि० (पैर) दबाना । अ० क्रि० लोट-पोट करना; भारी शारीरिक कष्टसे तड़फड़ाना-छटपटाना ।

पलोथन-पु० दे० 'पलेथन' ।

पलोवना*-स० क्रि० (पैर) दबाना; सेवा-शुश्रूषा करना ।

पलोसना*-स० क्रि० साफ करना, धोना; फुसलाना ।

पल्लव-पु० [सं०] नया और कोमल पत्ता; घासकी पत्ती; कली; कंकण, वलय । :-ग्राही(हिन्)-वि० जिसमें पल्लव लगे हों या लग रहे हों; अपूर्ण,अधूरा (ज्ञान); अधूरी जानकारीवाला ।

पल्लवना*-अ० क्रि० पल्लवित होना ।

पल्लवाद-पु० [सं०] हिरन ।

पल्लवित-वि० [सं०] जिसमें पल्लव लगे हों; विस्तृत; बढ़ाया हुआ; लाखमें रँगा हुआ; रोमांचयुक्त ।

पल्लवी(विन्)-वि० [सं०] जिसमें नये पत्ते निकले हों । पु० वृक्ष ।

पल्ला-पु० कपड़ेका छोर, दामन; दूरी; दुपलिया टोपीका आधा हिस्सा; अन्न बाँधकर ले जानेका टाट या गोनी; किवाड़; तराजूकी एक ओरकी डलिया, पलड़ा; कैंचीके दो हिस्सोंमें कोई एक; तीन मनका बोझ । † वि० दे० 'परला। (पल्ले)दार-पु० गल्ला ढोने या तौलनेवाला । -दारी-स्त्री० पल्लेदारका काम । मु०-छूटना-छुटकारा मिलना, पिंड छूटना ।-छुड़ाना-छुट्टी पा लेना, पिंड छुड़ाना ।-झुकना-किसी पक्षका अधिक बलवान् होना । -पकड़ना-सहारा लेना ।-पसारना-किसीके सामने दामन फैलाना, किसीसे कुछ भीख माँगना । -भारी होना-दे० 'पल्ला झुकना' । (पल्ले)पड़ना-हाथ लगना, मिलना । (किसीके)-बँधना-विवाहित होना, ब्याही जाना; सौंपा जाना (किसीके)-बाँधना-ब्याहना; जिम्मे करना या लेना । -से बाँधना-जिम्मे करना; ब्याह देना ।

पल्लि, पल्ली-स्त्री० [सं०] छोटा गाँव, पुरा, टोला; कुटी; छिपकली ।

पल्लिका-स्त्री० [सं०] छोटा गाँव, टोला; छिपकली ।

पल्लौ*-पु० 'पल्लव'; अनाज बाँधनेका टाट आदि ।

पल्वल-पु० [सं०] छोटा जलाशय, छोटा तालाब ।

पवँरि*-स्त्री० ड्योढ़ी ।

पवरिया*-पु० दे० 'पँवरिया' ।

पव-स्त्री० दे० 'पौ' । पु० [सं०] वायु, हवा; सूप आदिसे अनाजकी भूसी आदि निकालना; शुद्धीकरण ।

पवन-पु० [सं०] हवा; वायुके अधिष्ठातृदेव; अनाज आदि साफ करना; छलनी; कुम्हारका आवाँ; पानी; विष्णु; गृह्याग्नि; पाँचकी संख्या । वि० शुद्ध, निर्मल , -कुमार-पु० हनूमान्; भीमसेन ।-चक्र-पु० बवंडर । -चक्की-स्त्री० [हिं०] हवाकी शक्तिसे चलनेवाली चक्की । -ज,-तनय,-नंद,-नंदन,-पुत्र-पु० दे० 'पवनकुमार' । -पति-पु० वायुके अधिष्ठातृदेव ।-पूत-वि० वायुसे पवित्र किया हुआ । * पु०दे० 'पवनपुत्र' ।-बाण -पु० दे० 'पवनास्त्र' । -सुत-पु० दे० 'पवनकुमार' ।

पवनात्मज-पु० [सं०] हनूमान; भीमसेन ।

पवनाश, पवनाशन-पु० [सं०] साँप । वि० हवा पीकर रहनेवाला ।

पवनाशी(शिन्)-वि० [सं०] हवा पीकर रहनेवाला । पु० साँप ।

पवनास्त्र-पु० [सं०] एक प्रकारका अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर बहुत तेज हवा या आँधी चलने लगती थी, पवनबाण (पु०) ।

पवनी-स्त्री० [सं०] झाड़ू; † दे० पौनी ।

पवमान-पु० [सं०] वायु, हवा; गार्हपत्य अग्नि ।

पवर*-वि० प्रवर । स्त्री० ड्योढ़ी ।

पवरिया*-पु० ड्योढ़ीदार, पौरिया ।

पवरी†-स्त्री० दे० 'पौरी' ।

पवर्ग-पु० [सं०] नागरीमें 'प'से 'म'तक पाँच अक्षरोंका समूह ।

पवाँड़ा-पु० जी उबा देनेवाला लंबा आख्यान; बहुत बढ़ाकर कही हुई बात; एक तरहका गीत ।

पवाँरना, पवारना*-स०क्रि० फेंकना; छींटना, छितराना ।

पवाँरी†-स्त्री० लोहा छेदनेका लोहारोंका एक आला ।

पवाना*-स० क्रि० खिलाना, भोजन कराना ।

पवि-पु० [सं०] वज्र; वाणी; बाण । -धर-पु० इंद्र ।

पविताई*-स्त्री० पवित्रता, शुद्धता ।

पवित्र-वि० [सं०] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, पुनीत; व्रत, शौच आदिसे शुद्ध । पु० शुद्ध करनेवाली वस्तु, शुद्धताकी साधनरूप वस्तु (छलनी आदि); कुश; कुशकी बनी हुई पवित्री जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं । -धान्य-पु० जौ । -पाणि-वि० जिसके हाथमें कुश हो ।

पवित्रात्मा (त्मन्)-वि० [सं०] जिसकी आत्मा पवित्र हो, जिसका अंतःकरण शुद्ध हो ।

पवित्रारोप(ह)ण-पु०[सं०] यज्ञोपवीत धारण करना; भक्तों द्वारा विष्णु आदि देवताओंको यज्ञोपवीत पहनानेका कृत्य ।

पवित्रित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ ।

पवित्री-स्त्री०[सं०] कुशकी बनी हुई अँगूठी जैसी वस्तु जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं, पैंती ।

पवित्रीकरण-पु० [सं०] पवित्र या शुद्ध करना ।

पशम-पु० [फा० 'पश्म'] नरम बाल; बहुत उम्दा और नरम ऊन जो अधिकतर पंजाब, कश्मीर और तिब्बतकी भेड़ोंसे प्राप्त होता है; पुरुष या स्त्रीकी जननेंद्रियपरके बाल; बहुत तुच्छ वस्तु । मु०-उखाड़ना-व्यर्थ समय बिताना; थोड़ा भी नुकसान न पहुँचा सकना । -न उखड़ना-कुछ भी करते-धरते न बनना । -न समझना-कुछ भी न गुनना ।

पशमीना-पु० कश्मीरमें बननेवाला एक तरहका बहुत मुलायम ऊनका कपड़ा ।

पशु-पु० [सं०] चार पैरों और पूँछसे युक्त जानवर, चौपाया (जैसे-सिंह, बाघ, बैल, ऊँट, बकरा आदि); जंतु, प्राणी; वह जंतु जिसकी यज्ञमें बलि दी जाय, बलिपशु; मूर्ख, विवेकहीन मनुष्य । -कर्म (न्)-पु०,-क्रिया-स्त्री० पशुका बलिदान; मैथुन । -चर्या-स्त्री० पशु जैसा

लज्जारहित आचार; मैथुन। **–चिकित्सालय**–पु० (वेटेरिनरी हॉस्पिटल) वह स्थान जहाँ घोड़े, गाय, बैल आदि घरेलू पशुओंकी चिकित्साका प्रबंध हो। **–जीवी(विन्)**–वि० पशुका मांस खाकर जीनेवाला। **–धन**–पु० (लिवस्टॉक) मनुष्य-परिवारके साथ रहने और उसके काम आनेवाले पशु–गाय, बैल, घोड़े, भेड़ आदि। **–नाथ**–पु० शिव। **–निरोधगृह**–पु०, **–निरोधिका**–स्त्री० (कैटिल पाउंड) इधर-उधर विचरते हुए किसी तरहकी क्षति करनेवाले पशुओंको रोक रखनेकी जगह, आवारा पशुओंको निर्धारित शुल्क देकर छुड़ा ले जानेतक रोक रखनेका बाड़ा या घर। **–प**, **–पाल**, **–पालक**–पु० पशु पालनेवाला, वह जो जीविकाके लिए भेड़-बकरी आदि पाले। **–पक्षिकानन**–पु० (ज़ू) वह वन या कानन जहाँ विभिन्न प्रकारके पशु तथा पक्षी प्रदर्शन आदिके लिए रखे जाते हैं, चिड़ियाघर, जंतुशाला। **–पति**–पु० पशु पालनेका व्यवसाय करनेवाला; शिव। **–पल्वल**–पु० केवटी मोथा। **–पालन**–पु० जीविकाके निमित्त भेड़-बकरी आदि पालनेका काम। **–पाश**–पु० बलि-पशुको बाँधनेकी रस्सी; पशुरूपी जीवोंका बंधन (पाशुपत दर्शन)। **–प्रक्षेत्र**–पु० (लिवस्टॉक फार्म) गाय, भेड़, सूअर आदि पशुओंको रखने, पालनेका स्थान। **–मैथुन**–पु० पशुओंका संभोग; मनुष्यका बकरी आदि पशुके साथ संभोग। **–यज्ञ**, **–याग**–पु० वह यज्ञ जिसमें किसी पशुकी बलि दी जाय। **–राज**–पु० सिंह।

पशुता–स्त्री०, **पशुत्व**–पु० [सं०] पशुका भाव, जानवरपन।

पश्चात्–अ० [सं०] पीछेसे, बादमें, पीछे, अनंतर; अंतमें; पश्चिम दिशासे; पश्चिम दिशाकी ओर। **–कृत**–वि० जो पीछे छोड़ दिया गया हो, मात किया हुआ। **–ताप**–पु० कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पछतावा, अनुशय।

पश्चादुक्त–वि० [सं०] (लैटर) जो बादमें कहा गया हो, वाक्यादिमें जिसका प्रयोग किसी अन्य (तद्वत्) शब्दके बादमें किया गया हो।

पश्चाद्बाहुबद्ध–वि० [सं०] जिसकी भुजकें पीछेकी ओर बाँध दी गयी हों।

पश्चाद्भाग–पु० [सं०] पीछेका हिस्सा; पश्चिमी भाग।

पश्चाद्वर्ती(र्तिन्)–वि० [सं०] पीछे रहनेवाला; अनुसरण करनेवाला।

पश्चार्द्ध, **पश्चार्ध**–पु० [सं०] पीछेवाला आधा भाग; अपरार्द्ध, शेषार्द्ध; पश्चिमी भाग।

पश्चिम–वि० [सं०] सबसे पीछेका; अंतिम; पच्छिमका। पु० उदय होते हुए सूर्यकी ओर मुँह करके खड़े होनेसे पीठके पीछे पड़नेवाली दिशा। **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टि क्रिया। **–वाहिनी**–वि० स्त्री० पच्छिम दिशाकी ओर बहनेवाली।

पश्चिमाचल–पु० [सं०] वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य छिपता है, अस्ताचल।

पश्चिमार्द्ध, **पश्चिमार्ध**–पु० [सं०] पीछेवाला आधा भाग; अपरार्ध।

पश्चिमी–वि० पश्चिम दिशाका, पछाँही। **–घाट**–पु० बंबईके पासकी एक पर्वतमाला।

पश्चिमोत्तर–वि० [सं०] जो पश्चिम और उत्तरमें स्थित हो, उत्तरी-पश्चिमी। पु० वायुकोण।

पश्तो–स्त्री० एक प्राचीन आर्यभाषा जो भारतकी पश्चिमोत्तर सीमासे लेकर अफगानिस्तानतक बोली जाती है।

पश्म–पु० [फा०] दे० 'पशम'।

पश्मीना–पु० [फा०] दे० 'पशमीना'।

पश्यंती–स्त्री० [सं०] वेश्या; वह शब्द जो मूलाधारमें उत्पन्न होनेवाले सूक्ष्म शब्दकी उत्पत्तिके अनंतर वायुके संयोगसे नाभिदेशमें उत्पन्न होता है, परा वाक्को उत्पन्न करनेवाली वायुके मूलाधारसे हटकर नाभिदेशमें पहुँचनेपर उत्पन्न होनेवाला शब्द-विशेष।

पश्यतोहर–पु० [सं०] वह जो देखते-देखते कोई चीज चुरा ले (जैसे–सुनार)।

पषाण, **पषान***–पु० पाषाण, पत्थर।

पषारना, **पषालना**–स० क्रि० पखारना, धोना।

पसंग*–पु० दे० 'पासँग'।

पसँगा†–पु० दे० 'पासँग'। वि० बहुत थोड़ा। **मु०–भी न होना**–अति तुच्छ होना।

पसंघा†–पु० दे० 'पासँग'।

पसंती*–स्त्री० दे० 'पश्यंती'।

पसंद–स्त्री० [फा०] रुचि; स्वीकृति, कबूलियत; तरजीह। वि० रुचिके अनुकूल; जो मनको जँचे, मनोनीत।

पसंदीदा–वि० [फा०] पसंद किया हुआ; जो पसंद हो।

पस–अ० [फा०] बाद; बादमें, पीछे; आखिरकार, अंतमें; इसलिए, अतः; निःसंदेह, बेशक। **–(सो)पेश**–पु० आगा-पीछा; बहाना, टालमटूल।

पसनी*–स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन।

पसम*–पु० दे० 'पशम'।

पसमीना*–पु० दे० 'पशमीना'।

पसर–पु० आधी अंजलि। * स्त्री० प्रसार, फैलाव; आक्रमण–'पहली पसर रनेही टूट्यो'–छत्र०।

पसरना–अ० क्रि० और अधिक दूरीमें व्याप्त होना, फैलना; आगे बढ़ना; बढ़ना; हाथ-पाँव फैलाकर सोना।

पसरहट्टा–पु० दे० 'पँसरहट्टा'।

पसराना–स० क्रि० फैलवाना, किसीको पसारनेके काममें प्रवृत्त करना।

पसरौहाँ*–वि० फैलनेवाला, जो फैले।

पसली–स्त्री० पाँजरकी हड्डियोंमेंसे कोई एक, पार्श्वास्थि। **मु०–फड़कना या फड़क उठना**–मनमें उत्साह पैदा होना, जीमें उमंग होना। **(पसलियाँ) ढीली करना या तोड़ना**–बेतरह पीटना।

पसा†–पु० अंजली।

पसाउ*–पु० प्रसाद, कृपा।

पसाना–स० क्रि० पके हुए चावलमेंसे माँड़ निकालना, भातको माँड़से रहित करना; जलयुक्त पदार्थमेंसे जलके अंशको बहा देना। * अ० क्रि० प्रसन्न होना।

पसार–पु० पसरनेकी क्रिया या भाव, फैलाव, विस्तार; * मायाजाल, प्रपंच।

पसारना–स० क्रि० फैलाना, छितराना; आगेकी ओर

करना या बढ़ाना ।

पसारा-पु० दे० 'पसार' ।

पसाव-पु० वह वस्तु जो पसानेसे निकले, पसाकर निकाली जानेवाली वस्तु; * प्रसाद, अनुग्रह ।

पसावन-पु० पसानेपर निकलनेवाला पदार्थ, माँड़ आदि ।

पसाहनि*-स्त्री० 'अंगरांग' (विद्यापति) ।

पसित*-वि० बँधा हुआ, पाशबद्ध ।

पसीजना-अ० क्रि० ताप या गरमीके कारण किसी ठोस चीजका ऐसी स्थितिको प्राप्त होना कि उसका जलांश रस-रसकर बाहर निकले या उसमेंसे पानी छूटे; खिन्न होना; दयासे आर्द्र होना ।

पसीना-पु० वह पानी जो श्रम करने या गरमी लगनेसे शरीरमेंसे निकलता है, स्वेद, श्रमजल । **(गाढ़े)(पसीने)-की कमाई**-बड़ी मेहनत और सचाईसे कमाया हुआ धन। **मु०-पसीने होना**-पसीनेसे तर-बतर होना ।

पसु*-पु० दे० 'पशु' ।

पसुरी, पसुली*-स्त्री० दे० 'पसली' ।

पसेउ*-पु० प्रस्वेद, पसीना ।

पसेरी-स्त्री० पाँच सेरकी एक तौल ।

पसेव-पु० वह पानी जो किसी वस्तुके पसीजनेसे उसमेंसे निकलता है; किसी वस्तुमेंसे रस-रसकर निकलनेवाला तरल पदार्थ या जलांश; सुखाते समय कच्ची अफीममेंसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ; पसीना ।

पस्त-वि० [फा०] नीच, कमीना; छोटा, तुच्छ; हारा हुआ; शिथिल (बोलचाल)। **-क़द**-पु० छोटा कद । वि० छोटे कदका, नाटा, बौना । **-क़िस्मत**-वि० भाग्यहीन । **-ख़याल**-पु० छोटा खयाल, तुच्छ विचार । वि० छोटे खयालवाला । **-हिम्मत**-वि० जिसकी हिम्मत टूट गयी हो, हतोत्साह । **मु०-करना**-दबा देना, हरा देना; (हिम्मत) तोड़ देना । **-होना**-हार जाना; पराजित होना; (हिम्मत) टूट जाना ।

पहँ*-अ० पास; से ।

पह*-स्त्री० दे० 'पौ' । **मु०-फटना**-दे० 'पौ फटना' ।

पहचनवाना-स० क्रि० किसीसे पहचाननेका काम कराना ।

पहचान-स्त्री० पहचाननेकी क्रिया या भाव, कभीके देखे या जाने हुए व्यक्ति या पदार्थको दुबारा देखनेपर उसे उसी रूपमें जान लेनेकी क्रिया या भाव, पूर्व-परिचित व्यक्ति या वस्तुको देखनेसे होनेवाला यह ज्ञान कि यह अमुक है; किसी पदार्थकी वस्तुस्थिति जाननेकी क्रिया या भाव, परख; वह वस्तु या बात जिससे यह जाना जाय कि यही अमुक पदार्थ है, निशान, चिह्न; परखनेकी शक्ति; परिचय (क्व०); विवेक ।

पहचानना-स० क्रि० किसी पूर्वपरिचित व्यक्ति या वस्तुको देखकर यह जान लेना कि वह अमुक है; किसी व्यक्ति या पदार्थको इस प्रकार जानना कि जब कभी देखे तब यह ज्ञान हो जाय कि यह अमुक है अथवा नहीं; विवेक करना; किसीका गुण-दोष जानना, किसीके गुण-दोषसे अच्छी तरह परिचित होना ।

पहटना†-स० क्रि० भगाने या पकड़नेके लिए दौड़ना; पत्थर आदिपर रगड़कर धार तेज करना ।

पहन*-पु० पत्थर, पाषाण ।

पहनना-स० क्रि० (कपड़े, गहने आदि) शरीर या अंगविशेषपर धारण करना ।

पहनवाना-स० क्रि० किसीके द्वारा किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना; किसीको पहनने या पहनानेमें प्रवृत्त करना ।

पहनाई-स्त्री० पहननेकी क्रिया; पहनानेकी उजरत ।

पहनाना-स० क्रि० किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना ।

पहनावा-पु० पहननेके कपड़े, पोशाक, नीचेसे ऊपरतक पहने जानेवाले कपड़े; वेश; विशेष प्रकारका वेश; किसी तरहका खास पहननेका वस्त्र; कपड़े पहननेका ढंग ।

पहपट-पु० एक प्रकारका स्त्रियोंका गीत; हल्ला, शोर; बदनामीका हल्ला; छिपे तौरसे की जानेवाली बदनामी; धोखा, दगाबाजी । **-बाज़**-वि० हल्ला मचानेवाला; ऊधमी, फसादी; धोखा देनेवाला, दगाबाज ।

पहर-पु० तीन घंटेका समय; समय, काल, जमाना ।

पहरना†-स० क्रि० पहनना ।

पहरा-पु० किसी व्यक्ति या वस्तुको उसी रूप या स्थितिमें बनाये रखनेके लिए एक या अनेक व्यक्तियोंका नियुक्त होना, चौकी, निगरानी, देखरेख; रक्षकदलके तैनात रहनेका समय; रक्षकदल; रक्षकदलका फेरा; गश्तके समयकी बोली; हिरासत; * युग, जमाना । **(पहरे)दार**-पु० पहरा देनेवाला, रक्षक । **मु०-देना**-रखवाली करना, निगरानी करना, किसीकी रक्षाके लिए तैनात रहना । **-पड़ना**-पहरा दिया जाना, रक्षाके लिए चौकीदार तैनात रहना । **-बदलना**-एक रक्षक या रक्षकदलके स्थानपर दूसरेका नियुक्त होना । **-बैठाना**-किसीकी निगहबानीके लिए उसके आस-पास पहरेदार नियुक्त करना । **(पहरे)में देना**-निगहबानीके लिए पहरेदारों या सिपाहियोंके सिपुर्द करना, हिरासतमें करना । **-में रखना**-हिरासतमें रखना । **-में होना**-हिरासतमें रखा जाना ।

पहराइत*-पु० पहरा देनेवाला-'पहराइत घर मुसो सावको रच्छा करने लागो चोर'-सुन्द० ।

पहराना†-स० क्रि० पहनाना ।

पहरावनी-स्त्री० दान या खिलअतके रूपमें दी जानेवाली पोशाक ।

पहरावा†-पु० दे० 'पहनावा' ।

पहरी-पु० पहरेदार ।

पहरु, पहरू*-पु० पहरेदार ।

पहरुआ†-पु० पहरेदार ।

पहल-पु० किसी ठोस या पोली चीजके तीन या अधिक कोरों या कोनोंके बीचकी चौरस सतह; धुनी हुई रुईकी या ऊनकी मोटी और जमी हुई तह या परत; रजाई, तोशक आदिके भीतरकी रुईकी परत; पुरानी रुईकी वह जमी हुई तह जो रजाई, तोशक आदिमेंसे निकाली गयी हो; किसी ऐसे कार्यका आरंभ जिसमें प्रतिकारस्वरूप दूसरे भी कुछ करें, छेड़; बगल; * पटल, परत । **-दार**-वि० जिसमें पहल हों, पहलवाला । **मु०-निकालना**-

किसी चीजमें पहल बनाना ।

पहलवान–पु० [फ़ा०] कुश्ती लड़नेवाला मजबूत और कसरती आदमी, मल्ल, कुश्तीबाज; हृष्ट-पुष्ट और बलवान् आदमी ।

पहलवानी–स्त्री० [फ़ा०] कुश्ती लड़नेका काम या पेशा, मल्लवृत्ति; पहलवान होनेका भाव ।

पहलवी–स्त्री० [फ़ा०] ईरानकी एक पुरानी भाषा ।

पहला–वि० जो गणना या क्रमके अनुसार एकके स्थानपर पड़े, आदिमें पड़नेवाला, आद्य, प्रथम । † पु० पुरानी रुईकी जमी हुई तह ।

पहलू–पु० [फ़ा०] बगल, पाँजर; किसी पदार्थका दाहिना या बायाँ भाग, बाजू, पार्श्व; सेना या मकानका दाहिना या बायाँ भाग; किनारा; कल, करवट; दिशा; किसी ठोस चीज या नगीने आदिके कोरों या कोनोंके बीचकी चौरस सतह, पहल; किसी विषयका कोई अंग जिसपर विचार किया जाय, पक्ष; पड़ोस; गूढ़ अर्थ, व्यंग्यार्थ; रुख; तरकीब, बहाना । **–दार**–वि० जिसके कई पहलू हों; † बगलमें रहनेवाला । **मु०–आबाद होना**–प्रेयसीका प्रेमीके पास बैठना, माशूकका आशिकके पास बैठना । **(किसीका)–गरम करना**–किसीका, विशेषकर प्रेयसीका प्रेमीसे सटकर बैठना, बहुत नजदीक बैठना । **(किसीसे) –गरम कराना**–प्रेयसीको अपने शरीरसे सटाकर बैठाना । **–दबाना**–शत्रुकी सेना या नगरके दायें या बायें भागको आक्रांत कर देना; अपनी सेनाके दोनों पक्षोंमेंसे किसी एकको दूसरेसे पीछे रखते हुए आक्रमणमें आगे बढ़ना । **–बचाना**–मुठभेड़का अवसर न आने देते हुए आगे बढ़ जाना, भिड़ंत बचाते हुए बगलसे निकल जाना । **–बसाना**–पड़ोसमें जा बसना । **–मेँ बैठना**–किसीसे सटकर या लगकर बैठना । **–मेँ रहना**–किसीसे सटकर, किसीके बहुत समीप बैठ रहना ।

पहले–अ० आदिमें, शुरूमें; देश, स्थिति या कालके अनुसार प्रथम, पूर्वमें, पेश्तर, आगे; पुराने जमानेमें, प्राचीन कालमें, अतीत कालमें । **–पहल**–अ० सर्वप्रथम, सबसे पहले; पहली बार ।

पहलौँठा, पहलौठा–वि० सभी लड़कोंसे पहले पैदा हुआ; प्रथम-जात ।

पहलौँठी, पहलौठी–स्त्री० बच्चा जननेकी पहली क्रिया, प्रथम प्रसव, आद्य गर्भमोचन ।

पहाड़–पु० पत्थर, कंकड़, चूना, मिट्टी आदिकी चट्टानोंका वह प्राकृतिक पुंज जो जमीनकी सतहसे बहुत ऊँचा होता है और बहुधा बरफसे ढका रहता है; किसी पदार्थका बहुत ऊँचा ढेर; कोई बहुत भारी वस्तु; वह जिससे जल्दी छुटकारा न मिल सके; बहुत कठिन कार्य, दुष्कर कार्य । **मु०–उठाना**–भारी काम हाथमें लेना । **–कटना**–भारी कामका पूरा हो जाना । **–टूटना,–टूट पड़ना**–भारी संकट आ पड़ना । **–से टक्कर लेना**–बहुत बड़े बलवान्से भिड़ना ।

पहाड़ा–पु० किसी अंककी गुणन-सूची जिसे बच्चे याद करते हैं ।

पहाड़िया†–वि० दे० 'पहाड़ी' ।

पहाड़ी–वि० पहाड़-संबंधी; पहाड़का; पहाड़पर या उसके आसपास रहनेवाला; पहाड़पर होनेवाला; जो पहाड़से निकले । स्त्री० छोटा पहाड़; पहाड़ी लोगोंके गानेकी एक तरहकी धुन; एक रागिनी; एक ओषधि ।

पहार†–पु० दे० 'पहाड़' ।

पहारू*–पु० पहरेदार ।

पहिचान†–स्त्री० दे० 'पहचान' ।

पहित, पहिती*–स्त्री० पकायी हुई दाल ।

पहिनना†–स० क्रि० दे० 'पहनना' ।

पहिनाना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना' ।

पहिनावा†–पु० दे० 'पहनावा' ।

पहियाँ*–अ० पास ।

पहिया–पु० गाड़ी, कल आदिका वह गोलाकार अवयव जिसके धुरीपर घूमनेसे वह कल या गाड़ी चलती है, चक्र, चक्का ।

पहिरना†–स० क्रि० दे० 'पहनना' ।

पहिराना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना' ।

पहिरावना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना' ।

पहिरावनि, पहिरावनी*–स्त्री० दे० 'पहनावा' ।

पहिल*–वि० दे० 'पहला'। अ० पहले ।

पहिला–† वि० दे० 'पहला'। * वि० स्त्री० जो पहले पहल ब्यायी हो ।

पहिले†–अ० दे० 'पहले' ।

पहिलौँठा, पहिलौठा–वि० दे० 'पहलौठा' ।

पहिलौँठी–स्त्री० दे० 'पहलौँठी' ।

पहीति*–स्त्री० दाल ।

पहुँच–स्त्री० पहुँचनेकी क्रिया या भाव; पहुँचनेकी शक्ति; पासतक गमन; गति, पैठ, प्रवेश (शास्त्र, विद्या आदिमें); पहुँच जानेकी खबर या सूचना (जैसे पत्रकी पहुँच); समझनेकी सामर्थ्य; ग्रहण या धारणाकी शक्ति; जानकारी ।

पहुँचना–अ० क्रि० एक स्थानसे चलकर दूसरे स्थानको प्राप्त होना; आगे बढ़कर या फैलकर विशिष्ट स्थानको प्राप्त होना; किसी स्थान या पद आदिको प्राप्त होना; व्याप्त होना; समाना; किसी गूढ़ या मार्मिक बातको जान लेना, समझना; किसी विषयकी दूरकी बातें समझनेकी शक्ति रखना; गति या जानकारी रखना; फलके रूपमें मिलना या प्राप्त होना; प्राप्त या अनुभूत होना; बराबरीमें आना; समान होना, समता करना । **पहुँचा हुआ**–सिद्ध ।

पहुँचा–पु० कुहनीसे नीचेका भाग ।

पहुँचाना–स० क्रि० किसी व्यक्ति या पदार्थको एक स्थानसे चलाकर या हटाकर दूसरे स्थानको प्राप्त कराना, ले जाना; आगे बढ़ाकर या फैलाकर किसी विशिष्ट स्थानको प्राप्त कराना; किसी स्थान या पद आदिको प्राप्त कराना; फैलाना; समवाना; फलके रूपमें प्राप्त कराना; अनुभव कराना; समकक्ष बनाना, बराबरीमें लाना; तुल्य बनाना ।

पहुँची–स्त्री० हाथमें पहनेका स्त्रियोंका एक प्रसिद्ध गहना; कलाईकी रक्षाके लिए पहना जानेवाला आवरण ।

पहुँनई†–स्त्री० दे० 'पहुनाई' ।

पहुना†–पु० दे० 'पाहुना' ।

पहुनाई–स्त्री॰ पाहुना होनेका भाव; पाहुना बनकर कहीं जाना या आना; † अतिथि-सत्कार

पहुप*–पु॰ फूल, पुष्प।

पहुम, पहुमी–स्त्री॰ पृथ्वी।

पहुला*–स्त्री॰ कुईँ।

पहेरी†, पहेली–स्त्री॰ किसीकी बुद्धिकी परीक्षा लेनेके कामका एक प्रकारका प्रश्न, वाक्य या वर्णन जिसमें किसी वस्तुका भ्रामक या टेढ़ा-मेढ़ा लक्षण देकर उसे बूझने या अभीष्ट वस्तुका नाम बतानेको कहते हैं, बुझौवल; कोई ऐसी बात या ऐसा विषय जो जल्दी समझमें न आये; ऐसी समस्या जो जल्दी हल न की जा सके। **मु॰–बुझाना**–अपनी बातको ऐसे शब्दोंमें कहना कि वह जल्दी सुननेवालेकी समझमें न आये।

पाँ, पाँइ*–पु॰ पैर, पाँव।

पाँइता*–पु॰ चारपाईका पैर रखनेकी ओरका हिस्सा, पायताना।

पाँउ*–पु॰ पैर, पाँव।

पाँक*–पु॰ पंक, कीचड़।

पांक्त–वि॰ [सं॰] पंक्ति-संबंधी; पंक्तिका।

पाँख–पु॰ पंख, पर, डैना।

पाँखड़ा†–पु॰ पंख, पर।

पाँखड़ी–स्त्री॰ दे॰ 'पँखड़ी'।

पाँखी*–स्त्री॰ दीपकपर जल मरनेवाली पाँखवाली कीड़ी, फतिंगा; पक्षी, चिड़िया।

पाँखुरी†–स्त्री॰ दे॰ 'पँखड़ी'।

पाँग–पु॰ गंगबरार, कछार।

पाँगानोन–पु॰ समुद्रके पानीसे तैयार किया जानेवाला नमक, समुद्री नोन।

पाँगुर*–वि॰ पंगु, लँगड़ा। पु॰ लँगड़ा मनुष्य।

पांगुल्य–पु॰ [सं॰] पंगुल होनेका भाव, लंगड़ापन।

पाँच–वि॰ चारसे एक अधिक, दसका आधा। पु॰ पाँचकी संख्या, ५; * पाँच व्यक्ति; बहुतसे लोग, जनता; जाति-बिरादरीके नेता या सरदार। **मु॰–पाँचों या पाँचों उँगलियाँ घीमें होना**–खूब फायदा उठाना। **–सवारोंमें नाम लिखाना**–पात्रता न होते हुए भी अपनेको बड़ोंमें सम्मिलित करना।

पांचजन्य–पु॰ [सं॰] कृष्णका शंख; अग्नि।

पांचनद–वि॰ [सं॰] पंचनद-संबंधी; पंजाबका, पंजाबी। पु॰ पंचनद अथवा पंजाबका राजा या वहाँका निवासी।

पांचभौतिक–वि॰ [सं॰] पृथ्वी, जल, तेज आदि पाँच भूतों या तत्त्वोंका बना हुआ।

पांचयज्ञिक–वि॰ [सं॰] पंचयज्ञ-संबंधी। पु॰ पाँच महायज्ञोंमेंसे कोई।

पाँचर–पु॰ कोल्हूके मुँहपर, जहाँ जाठ लगता है, जड़ा जानेवाला लकड़ीका टुकड़ा।

पांचवर्षिक–वि॰ [सं॰] पाँच वर्षका। [स्त्री॰पांचवर्षिकी'।]

पाँचवाँ–वि॰ गिनती या क्रममें पाँचके स्थानपर पड़नेवाला।

पाँचा†–पु॰ भूसा बटोरनेके कामका किसानोंका एक बेंटदार आला जिसमें पाँच दाँते होते हैं।

पांचाल–वि॰ [सं॰] पंचाल देश-संबंधी; पंचाल देशका; पंचाल देशपर शासन करनेवाला। पु॰ पंचाल नामक देश; पंचाल देशका राजा; पंचाल देशके निवासी; बढ़ई, जुलाहा, नाई, धोबी और मोची–इन पाँचोंका समाहार।

पांचालिका–स्त्री॰ [सं॰] कपड़े आदिकी बनी हुई गुड़िया, पुतली।

पांचाली–स्त्री॰ [सं॰] पंचाल देशकी स्त्री या रानी; पांडवोंकी पत्नी द्रौपदी जो पंचाल देशकी राजकुमारी थी; पुतली, गुड़िया; काव्यकी एक प्रसिद्ध रचनाशैली।

पाँचैँ*–स्त्री॰ किसी पक्षकी पाँचवीं तिथि, पंचमी।

पाँजना–स॰ क्रि॰ लोहे, पीतल आदिकी वस्तुओंको टाँका देकर जोड़ना, झालना।

पाँजर–पु॰ शरीरका काँख और कमरके बीचका पसलियोंवाला भाग, पंजर, पार्श्व।

पाँजी*–स्त्री॰ नदीमें पानीकी इतनी कमी होना कि लोग उसे हलकर पार कर सकें।

पाँझ–वि॰ हलकर पार करने योग्य (नदी)।

पांडर–पु॰ [सं॰] सफेद रंग; दोना; कुंदका फूल; गेरू। वि॰ सफेद रंगका।

पांडव–पु॰ [सं॰] पांडुके पुत्र–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि; पंजाबका एक प्राचीन प्रदेश। **–श्रेष्ठ**–पु॰ युधिष्ठिर।

पांडित्य–पु॰ [सं॰] पंडिताई, विद्वत्ता।

पांडु–पु॰ [सं॰] सफेद-पीला रंग; सफेद रंग; पीलिया रोग; सफेद हाथी; पांडवोंके पिता; पांडुफल, परवल; वि॰ पीलापन लिये हुए सफेद रंगका, सफेद-पीले रंगका; सफेद रंगका। **–फल**–पु॰ परवल। **–मृत्(द्), –मृत्तिका**–स्त्री॰ सफेद या पीले रंगकी मिट्टी; खड़िया। **–रोग**–पु॰ पीलिया। **–लिपि**–स्त्री॰ दे॰ 'पांडु-लेख'; पुस्तककी हस्तलिखित प्रति। **–लेख, –लेख्य**–पु॰ पट्टी, कागज आदिपर अंकित वह लेख या रेखाचित्र जिसे पुनः काट-छाँटकर ठीक किया जाय, मसविदा। **–लेखक**–पु॰ (लेख आदिकी) पाण्डुलिपि तैयार करनेवाला।

पांडुर–पु॰ [सं॰] पीलापन लिये हुए सफेद रंग, सफेद-पीला रंग; सफेद रंग; पांडु रोग; सफेद कोढ़। वि॰ पीलापन लिये हुए सफेद रंगका; सफेद रंगका।

पाँड़े–पु॰ ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; * अध्यापक; रसोइया।

पांड्य–पु॰ [सं॰] पांडु देशका निवासी; पांडु देशका राजा; दक्षिणका एक प्राचीन प्रदेश; इस प्रदेशका निवासी या राजा।

पाँत–स्त्री॰ पंक्ति, कतार; पंगत; समूह।

पाँति–स्त्री॰ कतार; एक साथ खानेवालोंका समूह, तड़; स्वजनवर्ग।

पांथ–पु॰ [सं॰] पथिक, राही; प्रवासी। **–निवास**–पु॰, **–शाला**–स्त्री॰ धर्मशाला, सराय, चट्टी।

पायँ*–पु॰ पैर, चरण। **–चा**–पु॰ दे॰ 'पायँचा'। **–ता**–पु॰ दे॰ 'पायँता'।

पाँव–पु॰ वह अंग जिसके बल प्राणी चलते हैं, पैर। **–चप्पी**–स्त्री॰ पैर दबानेकी क्रिया। **–पाँव**–अ॰ पैदल। **मु॰–अड़ाना**–किसी बातमें बेकार दखल देना। **–उखड़ या उठ जाना**–लड़ाईमें ठहर न सकना। **–उठाकर चलना**–तेज चलना। **–कट जाना**–आने-जानेकी शक्ति

नष्ट हो जाना; चल बसना। **–का खटका**–पैरकी आहट। **–की जूती**–तुच्छ सेवक। **–की बेड़ी**–जंजाल, झंझट। **–गाड़ना**–जमकर खड़ा रहना; लड़ाईमें डटा रहना। **–घिसना**–चलते-चलते थक जाना। **–जमना**–दृढ़तापूर्वक स्थित होना; स्थिति दृढ़ होना, ऐसी स्थितिमें होना कि हटने या विचलित होनेकी नौबत न आये। **–जमाना**–दृढ़तापूर्वक स्थित होना, अपनी स्थिति दृढ़ करना। **–डिगना**–स्थिर न रहना। **–तलेकी धरती खसकना**–बहुत अधिक घबरा जाना, होश उड़ जाना। **–तलेकी धरती सरक जाना या मिट्टी निकल जाना**–स्तब्ध रह जाना। **–तोड़कर बैठना**–कहीं आना-जाना बंद कर देना। **–तोड़ना**–बहुत अधिक चलकर पैरोंको थका देना। **धरतीपर न पड़ना या न रखना**–घमंडमें चूर रहना। **–धरना**–पधारना। **–धारना***–दे० 'पाँव धरना'। **–धोकर पीना**–बहुत आवभगत करना; चरणामृत लेना। **–पकड़ना**–पैर छूना, बहुत अधिक दीनता और विनय प्रकट करना। **–पड़ना**–चरणोंपर गिरना; दैन्य-भावसे विनय करना। **–पर पाँव रखकर बैठना**–बेखबर होना; कुछ काम न करना। **(किसीके)–पर पाँव रखना**–किसीका पूरी तरह अनुगमन करना। **–पलोटना***–पाँव-चप्पी करना, पैर दबाना। **–पसारना**–कब्जा करना; ठाट-बाट करना। **–पाँव चलना**–पैदल चलना। **–पीटना**–छटपटाना; परेशान होना। **–पूजना**–बहुत अधिक आवभगत करना; विवाहमें कन्या-दान करनेवालेका वरका पूजन करके उसे कन्या समर्पित करना। **–फूलना**–भय आदिके कारण ठिठक जाना। **–फेरने जाना**–दुलहिनका पहले पहल ससुराल जाना; दुलहिनका ससुरालसे पहले पहल अपने मायके या किसी और रिश्तेदारके यहाँ जाना; प्रसूताका कुछ समयके लिए अपने मायके या किसी और रिश्तेदारके यहाँ जाना। **–फैलाना**–अधिक पानेके लिए प्रयत्न करना; अधिक पानेका लोभ करना। **–बढ़ाना**–और अधिक वेगसे चलना; कब्जा करना। **–भारी होना**–गर्भवती होना। **(किसीसे)–भी न धुलवाना**–अति तुच्छ समझना। **–में बेड़ी पड़ना**–जंजालमें फँसना। **–में मँहदी लगाना**–कोई काम करनेके लिए बाहर न जाना। **–रोपना***–प्रण करना; बाजी लगाना। **–लगना**–चरण छूकर प्रणाम करना। **–समेटना**–पैर सिकोड़ना; पृथक् रहना। **–से पाँव बाँधकर रखना**–सदा अपने पास या देखरेखमें रखना, कभी पाससे या आँखोंके सामनेसे हटने न देना।

पाँवड़ा–पु० वह कपड़ा जो किसी आदरणीय व्यक्तिके पाँव रखकर चलनेके लिए उसके मार्गमें बिछाया जाता है।

पाँवड़ी–स्त्री० खड़ाऊँ; * जूता; गोटा-पट्ठा बिननेका एक काठका आला।

पाँवर*–वि० नीच; तुच्छ, क्षुद्र; मूर्ख। पु० दे० 'पाँवड़ा'।

पाँवरी*–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी'; सीढ़ी; ड्योढ़ी; बैठक।

पांशु, पांसु–स्त्री० [सं०] धूल, धूलिकण; गोबरकी खाद; पाँगा नमक।

पांशुला, पांसुला–स्त्री० [सं०] पुंश्चली, व्यभिचारिणी; रजस्वला; पृथ्वी।

पाँस–स्त्री० राख, गोबर आदिकी खाद; खमीर।

पाँसा–पु० दे० 'पासा'।

पाँसी–स्त्री० रस्सीकी बनी हुई घास-भूसा रखनेकी जाली।

पाँसु, पाँसुरी*–स्त्री० पसली–'मसककी पाँसुरी पयोधि पाटियतु है'–कवित०।

पाँहीं*–अ० पास, निकट।

पा–पु० [फा०] पैर, पाँव; कदम; वृक्षकी जड़। **–अंदाज़**–पु० नारियलके छिलके, मूँज, ऊन आदिसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी चटाई जो पैर पोंछनेके काममें आती है। **–ख़ाना**–पु० मल, गू; मलत्यागके निमित्त बनाया हुआ विशेष प्रकारका स्थान या कमरा। **–जामा**–पु० कमरसे लेकर टखनेतकका दो पायँचोंवाला एक प्रसिद्ध पहनावा। (**मु०–जामेसे बाहर होना या निकल पड़ना**–बहुत अधिक क्रुद्ध होना, क्रोधमें आपेसे बाहर होना।) **–ज़ेब**–पु० पाँवमें पहननेका एक घुँघरूदार गहना। **–ताबा**–पु० मोजा; तलेके आकारका चमड़ेका वह लंबा टुकड़ा जिसे जूतेको चुस्त करनेके लिए उसमें डालते हैं। **–पोश**–पु० जूता; मोजा। (**मु०–पोशपर मारना**–कुछ भी परवा न करना; अति तुच्छ समझना।) **–बंद**–वि० बँधा हुआ; गिरफ्तार, कैद; जो किसी नियम, वचन आदिका पूरी तरह पालन करे; जो किसी नियम, वचन आदिसे पूर्णरूपसे बद्ध हो, जो किसी नियम, वचन आदिका पालन करनेके लिए विवश हो; मजबूर, लाचार; कायम रहनेवाला (रहना, होनाके साथ)। पु० बेड़ी; घोड़ेके पिछले पैरोंको बाँधनेके कामकी रस्सी, पिछाड़ी। **–बंदी**–स्त्री० पाबंद होनेकी क्रिया या भाव; नियम, वचन आदिका अनिवार्य पालन; मुमानियत; मजबूरी। **–बोस**–वि० पाँव चूमनेवाला, प्रणाम करनेवाला, आदाब बजानेवाला। पु० दे० 'पाबोसी'। **–बोसी**–स्त्री० पाँव चूमना या छूना, प्रणमन; खातिर, ताजीम। **–माल**–वि० पैरों तले रौंदा हुआ, पददलित; तबाह, बरबाद (करना, होनाके साथ)। **–माली**–स्त्री० पैरोंके नीचे रौंदना या रौंदवाना; तबाही, बरबादी। **–याब**–वि० जो हलकर पार किया जा सके, कम गहरा। **–याबी**–स्त्री० पायाब होना, उथलापन।

पाइ*–पु० पैर, पाँव।

पाइक*–पु० दे० 'पायक'।

पाइका–पु० [अं०] एक प्रकारका छापेका टाइप जो १/६ इंच चौड़ा होता है।

पाइट–पु० बाँस आदिका बना हुआ वह ढाँचा जिसपर चढ़कर दीवार चुनी जाती है।

पाइतरी*–स्त्री० पलंगका पैरकी ओरका भाग, पैताना।

पाइप–पु० [अं०] नल; नली; पानीकी कल; एक बाँसुरी जैसा बाजा; हुक्केकी निगाली।

पाइमाल*–वि० दे० 'पामाल'।

पाइल*–पु० पायल, पाजेब।

पाई–स्त्री० घेरा बनाते हुए नाचने या घूमनेकी क्रिया; बाँसकी तीलियों या बेंतका एक प्रकारका ढाँचा जिसपर तानेका सूत फैलाकर जुलाहे उसे माँजते हैं; टिकठी;

घोड़ेकी पैर सूजनेकी एक बीमारी; इकाईका चतुर्थांश सूचित करनेवाली छोटी खड़ी रेखा, इकाईके चौथे भागके रूपमें किसी संख्याके आगे लगायी जानेवाली छोटी खड़ी लकीर; आकारकी मात्रा; पूर्ण विराम सूचित करनेके लिए वाक्यके अंतमें लगायी जानेवाली खड़ी लकीर; गहने आदि रखनेकी स्त्रियोंकी पिटारी; घिसा हुआ रद्दी टाइप; एक कीड़ा; एक छोटा सिक्का जो एक पैसेके १/३ के बराबर होता है।

पाउँ*–पु० पाँव, पैर।

पाउंड–पु० [अं०] सोनेका एक अंग्रेजी सिक्का जो २० शिलिंगके बराबर होता है; एक अंग्रेजी वजन जो आठ छटाँकसे कुछ कम होता है।

पाउ*–पु० पाँव; चतुर्थांश।

पाउडर–पु०[अं०] चूरा, बुकनी; सुंदरता बढ़ाने या अच्छी रंगत लानेके लिए चेहरे आदिपर लगाया जानेवाला एक प्रकारका चूरा; चूर्ण की हुई दवा (जैसे–टूथपाउडर)।

पाक–पु०[सं०] पकने या पकानेकी क्रिया या भाव; पकाया हुआ अन्न, रसोई; पिंडदानके निमित्त दूधमें पकाया हुआ चावल; पकवान; भोजनका पचना; फोड़े, फल आदिका पकना; व्रण, फोड़ा; वृद्धताके कारण बालोंका सफेद होना; बुद्धिका परिपक्व होना; परिणाम; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था। वि० पका हुआ; अल्प; प्रशस्य; परिपक्व बुद्धिवाला। **–कर्म (न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० पकानेकी क्रिया; पकाना। **–द्विट् (ष्)**–पु० इंद्र। **–पंडित**–पु० वह जो रसोई बनानेमें सिद्धहस्त हो। **–यज्ञ**–पु० वृषोत्सर्ग आदिके अवसरपर किया जानेवाला होम जिसमें चरुका हवन होता है। **–रिपु**–पु० इंद्र। **–शाला**–स्त्री० रसोईघर। **–शासन**–पु० इंद्र। **–शासनि**–पु० इंद्रका पुत्र जयंत; वालि; अर्जुन। **–शुक्ला**–स्त्री० खड़िया मिट्टी। **–स्थली**–स्त्री० पकाशय। **–स्थान**–पु० रसोईघर; आवाँ। **–हंता (तृ)**–पु० दे० 'पाकशासन'।

पाक–वि० [फ़ा०] शुद्ध, पवित्र; निर्दोष, निष्कलंक; साफ़-सुथरा; बिना मिलावटका, खालिस; बरी; बेबाक; पाप या बुराईसे बचनेवाला, परहेजगार। **–दामन, –दामाँ**–वि० शुद्ध; पवित्र आचरणवाला, निष्पाप। वि० स्त्री० सती (स्त्री)। **–दिल**–वि० शुद्ध अंतःकरणवाला, पवित्र विचारवाला। **–नीयत**–स्त्री० अच्छी नीयत, सद्विचार, शुद्ध विचार। **–परवरदिगार**–पु० परमेश्वर। **–बाज़**–वि० शुद्ध हृदयवाला, निष्पाप, सच्चा, नेकनीयत। पु० भाँग छाननेकी साफ़ी। **–बाज़ी**–स्त्री० पाकबाज होनेका भाव। **–साफ़**–वि० साफ़-सुथरा, निर्मल; निर्दोष, निष्कलंक, निष्पाप; विशुद्ध।

पाकड़, पाकर–पु० बरगदकी जातिका एक प्रसिद्ध पेड़।

पाकना*–अ० क्रि० पकना।

पाकरी*–स्त्री० दे० 'पाकड़'।

पाकल†–वि० पका हुआ।

पाका†–पु० फोड़ा। वि० पका हुआ।

पाकागार–पु० [सं०] रसोईघर।

पाकातिसार–पु० [सं०] पुराना आमातिसार।

पाकाभिमुख–वि० [सं०] जो पकनेपर हो; विकासोन्मुख।

पाकारि–पु० [सं०] इंद्र।

पाकिस्तानी–वि० [फ़ा०] पाकिस्तानका। पु० पाकिस्तानका रहनेवाला।

पाकेट–पु० [अं०] थैली, जेब। **–मार**–पु० वह जो चोरीसे जेबमेंसे रुपया-पैसा आदि निकालने या जेब काटनेका काम करे, जेबमें रखी हुई चीजें चुरा लेनेका काम करनेवाला व्यक्ति। **–मारी**–स्त्री० पाकेटमारका पेशा। **मु०–गरम करना**–घूस देना, घूस लेना।

पाक्षपातिक–वि० [सं०] पक्षपात करनेवाला, फूट डालनेवाला।

पाक्षिक–वि० [सं०] पक्ष-संबंधी; पक्षका; पाख भरमें होनेवाला; प्रत्येक पक्षमें होनेवाला; चिड़ियोंसे संबंध रखनेवाला। पु० बहेलिया।

पाखंड–पु० [सं०] वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला; दिखावटी उपासना या भक्ति, पूजा-पाठ आदिका आडंबर; ढकोसला, ढोंग; वंचना, छल। वि० जो वेदके विरुद्ध आचरण करे। **–फंडी**–वि० [हिं०] वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला; भक्ति या उपासनाका ढोंग रचनेवाला; जो केवल दूसरोंको ठगने या धोखा देनेके लिए पूजा-पाठ आदि करे; ठग; धूर्त। **मु०–फैलाना**–दूसरोंको ठगनेके लिए विशेष प्रकारका स्वाँग बनाना।

पाखंडी(डिन्)–वि० [सं०] दे० 'पाखंड'।

पाख–पु० आधा महीना, पंद्रह दिनका समय, पखवाड़ा; छाजनको ढालुवाँ बनानेके लिए कमरेकी चौड़ाईकी दीवारका वह तिकोना ऊपरी भाग जिसपर 'बँड़ेर' रखते हैं; पाखवाली दीवार।

पाखर–स्त्री० लड़ाईके हाथी या घोड़ेको रक्षाके लिए पहनायी जानेवाली लोहेकी झूल।

पाखरी–स्त्री० अनाज लादनेके लिए गाड़ीपर बिछाया जानेवाला टाट।

पाखा–पु० पख; पंख, * कोना।

पाखान*–पु० पाषाण, पत्थर।

पाग–स्त्री० पगड़ी। पु० वह शीरा या किवाम जिसमें मिठाई आदिको डुबाते हैं, चाशनी; चाशनीमें डुबायी हुई पेठे आदिकी मिठाई; मधु, चीनी या मिसरीके शीरेमें सनी हुई विशेष प्रकारकी औषध, अवलेह।

पागना–स० क्रि० पाग या शीरेमें डुबाना, चाशनीमें डुबाना। * अ० क्रि० मग्न होना, शराबोर होना।

पागल–वि० [सं०] जिसका दिमाग खराब हो गया हो, विक्षिप्त, सनकी; जो प्रेम, क्रोध आदिमें आपेसे बाहर हो गया हो; नासमझ, अबूझ। **–खाना**–पु० [हिं०] वह जगह जहाँ पागलोंकी देख-रेख और उपचार किया जाता है।

पागलपन–स्त्री० पागल होनेका भाव; एक प्रकारकी मानसिक व्याधि जिसमें विवेक नष्ट हो जाता है और रोगी नासमझीके काम करता है, उन्माद; नासमझी।

पागलिनी–स्त्री० पगली, विक्षिप्त स्त्री।

पागुर–पु० जुगाली।

पाचक–वि० [सं०] पकानेवाला; पचानेवाला। पु० रसोई बनानेका पेशा करनेवाला, रसोइया, सूपकार; अग्नि;

पित्तके पाँच भेदोंमेंसे एक; भोजनको पचानेवाली औषध।

पाचन–पु० [सं०] पकाने या पचानेकी क्रिया; अग्नि; अम्लरस; भोजन पचानेवाली विशेष प्रकारकी औषध; जठराग्नि द्वारा भोजनका पचाया जाना; घावको भरनेकी क्रिया; घावमेंसे मवाद आदि निकालनेकी क्रिया। वि० पकाने या पचानेवाला। **–शक्ति**–स्त्री० भोजनको पचानेकी शक्ति।

पाचना*–स० क्रि० पकाना। अ० क्रि० मरना, गलना।

पाच्य–वि० [सं०] जो अवश्य पक या पच जाय; पचाने या पकाने योग्य।

पाछ–स्त्री० पाछनेकी क्रिया या भाव; पाछनेसे पड़ने या लगनेवाला चीरा; वह चीरा जो अफीम निकालनेके लिए पोस्तेके डोंड़ेपर नहरनीसे लगाया जाता है; वह चीरा जो किसी वृक्षका रस या दूध निकालनेके लिए उसपर लगाया जाता है। † पु० पिछला भाग, पीछा–'आशा लुवधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि'–विद्या०। * अ० पीछे।

पाछना–स० क्रि० खून, पंछा या रस अथवा दूध निकालनेके लिए छुरे आदिके हलके आघातसे प्राणीके शरीरपर या पेड़-पौधेपर चीरा लगाना।

पाछल, पाछिल, पाछिला*–वि० पिछला।

पाछा*–पु० पीछा।

पाछी, पाछू, पाछैं, पाछे*–अ० पीछेकी ओर, पीछे।

पाज*–पु० पाँजर, पार्श्व।

पाजी–वि० दुष्ट, बदमाश। * पु० पैदल सिपाही, प्यादा; पहरेदार, रक्षक–'सहस सहस तहँ बइठे पाजी'–प०। **–पन**–पु० दुष्टता, बदमाशी।

पाटंबर–पु० रेशमी कपड़ा।

पाट–पु० [सं०] विस्तार, फैलाव; चौड़ाई; [हिं०] रेशम; वस्त्र; बटा हुआ रेशम; एक तरहका रेशमका कीड़ा; पटसन; सिंहासन, राजगद्दी; पीढ़ा; पत्थरकी पटिया; धोबीका कपड़े धोनेके कामका पत्थर या काठका बड़ा टुकड़ा; चक्कीके दो भागोंमेंसे कोई एक; हाँकनेवालेके बैठनेके लिए कोल्हूमें लगाया जानेवाला तख्ता; कुएँपर रखी जानेवाली वह चपटी लकड़ी जिसपर एक पाँव रखकर पानी खींचते हैं; बैलोंका एक रोग; * बालोंकी पटिया। **–महादेई***,**–महिषी,–रानी**–स्त्री० पटरानी।

पाटन–स्त्री० पाटनेकी क्रिया या भाव; पटाव; छत; मकानकी पहली मंजिलसे ऊपरकी मंजिलें; नगर, पत्तन।

पाटना–स० क्रि० किसी गड्ढेको या नीची भूमिको भरकर आस-पासकी जमीनके बराबर कर देना; भर देना; पूर्ण कर देना; ढकना; भरमार कर देना, ढेर लगा देना।

पाटल–पु० [सं०] ललाई मिला हुआ उजला रंग; गुलाबी रंग; पाढरका पेड़; इसका फूल। वि० ललाई लिये हुए उजले रंगका।

पाटलक–वि० [सं०] लाल-पीले रंगका।

पाटला–पु० एक तरहका सोना; पाढर; * पटल, पल्ला।

पाटलिपुत्र, पाटलिपुत्रक–पु० [सं०] अजातशत्रु द्वारा बसाया हुआ मगधका एक प्राचीन नगर जो अब पटना कहलाता है।

पाटव–पु० [सं०] चातुरी; कौशल; आरोग्य; उत्साह।

पाटविक–वि० [सं०] दक्ष, कुशल, पटु; धूर्त।

पाटवी*–वि० पटरानीसे जनमा हुआ (राजकुमार); रेशमका बना हुआ, रेशमी।

पाटहिक–पु० [सं०] नगाड़ा बजानेवाला।

पाटा–पु० पीढ़ा; पत्थर या काठका वह बड़ा टुकड़ा जिसपर धोबी कपड़े धोता है; आड़के लिए चौकेके पास उठायी जानेवाली दीवार; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बाँस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; * पट्टा। स्त्री० [सं०] परंपरा, सिलसिला।

पाटी–स्त्री० [सं०] परिपाटी; प्रणाली; रीति; अंकगणित; बला नामक पौधा। **–गणित**–पु० गणितशास्त्र; गणित।

पाटी–स्त्री० विशेष प्रकारका लकड़ीका वह लंबोतरा टुकड़ा जिसपर बच्चोंको अक्षर लिखना सिखाया जाता है, तख्ती; पाठ, सबक; तेल, गोंद आदिकी सहायतासे माँगके दोनों ओर सजाकर बैठाये जानेवाले बाल; खाटके ढाँचेके दाहिने-बायें लगायी जानेवाली वे लकड़ियाँ जिनके मेलसे रस्सीकी बुनाई होती है; चटाई; पत्थरकी पटिया। मु०–**पढ़ना**–पाठ पढ़ना; सबक सीखना; शिक्षा प्राप्त करना। **–पढ़ाना**–पाठ पढ़ाना; शिक्षा देना।

पाटीर–पु० [सं०] चंदन; खेत, मैदान; बादल; छलनी।

पाठ–पु० [सं०] पढ़नेकी क्रिया या भाव; किसी धार्मिक या देवपरक पुस्तकको नियमित रूपसे पढ़ना; वेदपाठ, ब्रह्मयज्ञ; पढ़ी या पढ़ायी जानेवाली वस्तु; किसी पाठ्य-पुस्तकका वह अंश जो किसी एक विषयसे संबद्ध हो, परिच्छेद; किसी विषयका उतना अंश जितना एक बारमें पढ़ाया जाय, सबक; वाक्य, पद्य आदिका लिखित रूप। **–च्छेद**–पु० पाठ्य वस्तुके बीचमें होनेवाला विराम, यति। **–दोष**–पु० पाठ-संबंधी दोष (अठारह प्रकारके पाठ-दोष गिनाये गये हैं, जैसे–विस्वर, विरस, विश्लिष्ट, काकस्वर आदि)। **–निश्चय**–पु० शुद्ध पाठका निश्चय करना। **–भू**–स्त्री० वह स्थान जहाँ वेदोंका अध्ययन किया जाय। **–भेद**–पु० दे० 'पाठांतर'। **–मंजरी,–शालिनी**–स्त्री० मैना, सारिका। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान या संस्था जहाँ विद्यार्थियोंको, विशेषकर छोटी कक्षाओंके विद्यार्थियोंको एक या अधिक विषयोंकी शिक्षा दी जाय, विद्यालय, स्कूल; वह विद्यालय जिसमें संस्कृत पढ़ायी जाय, संस्कृत पढ़ानेका विद्यालय।

पाठक–पु० [सं०] अध्यापक; कथावाचक; गुरु; छात्र।

पाठन–पु० [सं०] पढ़ानेकी क्रिया, अध्यापन। **–शैली**–स्त्री० पढ़ानेका ढंग।

पाठांतर–पु० [सं०] दूसरा पाठ, भिन्न प्रकारका पाठ; किसी पुस्तक या ग्रंथके किसी अंशका उसकी दूसरी प्रति या प्रतियोंमें दूसरा रूप होना, पाठमें भिन्नता होना।

पाठा–पु० जवान और मोटा-ताजा आदमी; जवान बैल, हाथी, भैंसा, बकरा आदि।

पाठावली–स्त्री० [सं०] पाठोंका संग्रह; वह पुस्तक जिसमें किसी विषयके पाठोंका संग्रह हो।

पाठिका–स्त्री० [सं०] पढ़नेवाली; पढ़ानेवाली; पाढ़ा।

पाठित–वि० [सं०] पढ़ाया हुआ।

पाठी(ठिन्)–पु० [सं०] वह जो अध्ययन समाप्त कर

चुका हो; पाठ करनेवाला; पढ़नेवाला; चीतेका पेड़ ।

पाठीन–पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली; गूगलका पेड़ ।

पाठ्य–वि० [सं०] पढ़ने योग्य; पढ़ाने योग्य । **–क्रम**–पु० परीक्षाके लिए निर्धारित पुस्तकोंकी नामावली । **–पुस्तक**–स्त्री० किसी संस्था या परीक्षा-समितिकी ओरसे किसी कक्षाके विद्यार्थियोंके पढ़नेके लिए निर्धारित पुस्तक, कोर्सकी किताब ।

पाड़–पु० धोती या साड़ीका किनारा, कोर; मचान; कुएँको ढकनेके लिए लकड़ी अथवा फट्टियोंका बना विशेष प्रकारका ढाँचा; बाँध; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बाँस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; वह तख्ता जिसपर मृत्युदंड पानेवाले अपराधीको फाँसी देनेके लिए खड़ा करते हैं ।

पाड़इ*–स्त्री० पाटल नामका वृक्ष ।

पाड़ा–पु० टोला; महल्ला; † भैंसका नर बच्चा ।

पाढ़–पु० पीढ़ा; वह पीढ़ा जिसपर सुनार, लोहार आदि काम करते समय बैठते हैं; रखवालेके बैठने-सोनेके लिए खेतमें बनाया जानेवाला मचान; कुएँपर रखा जानेवाला ढक्कनकी तरहका लकड़ीका ढाँचा; सुनारोंका नक्काशी करनेके कामका एक आला । * स्त्री० किनारा ।

पाढ़त*–स्त्री० पढ़ी जानेवाली वस्तु; मंतर, जादू ।

पाढर, पाढ़र–पु० एक पेड़ जिसके पत्ते बेलके पत्तोंके समान होते हैं और जिसमें लाल या सफेद फूल लगते हैं, पाटल । * वि० किनारदार ।

पाढ़ा–स्त्री० पाठा नामकी लता । * पु० हिरनका एक भेद ।

पाणि–पु० [सं०] हाथ । **–गृहीती**–स्त्री० पत्नी । **–ग्रह, –ग्रहण**–पु० विवाह । **–ग्रहीता(तृ)**, **–ग्राहक**–पु० पति । **–घ**–पु० मृदंग, ढोल आदि (हाथसे बजाये जानेवाले बाजे) बजानेवाला; दस्तकार । **–घात**–पु० घूँसा; घूँसेबाजी । **–घ्न**–पु० दस्तकार; ताली बजानेवाला (वेद); उँगलियोंको झटकारना । **–ज**–पु० नख । **–तल**–पु० हथेली । **–पल्लव**–पु० पल्लवरूपी कर; अँगुलियाँ । **–पात्र**–वि० हाथमें लेकर पीनेवाला; जो हाथ या अंजलिसे पात्र या बरतनका काम ले । **–पीडन**–पु० पाणिग्रहण, विवाह; हाथ मलना । **–पुट, –पुटक**–पु० चुल्लू । **–बंध**–पु० पाणिग्रहण, विवाह । **–भुक्(ज्)**–पु० गूलरका पेड़ । **–मुक्त**–वि० हाथसे फेंका जानेवाला (अस्त्र) । पु० भाला । **–मुख**–वि० हाथसे खानेवाला । पु० पितर (इसका प्रयोग बहुवचनमें ही होता है ।) **–मूल**–पु० कलाई । **–रुट्(ह), –रुह**–पु० नख, नाखून ।

पाणिनि–पु० [सं०] एक विख्यात मुनि जिन्होंने अष्टाध्यायी नामका प्रसिद्ध सूत्रबद्ध व्याकरण-ग्रंथ बनाया ।

पात–पु० कानका एक गहना; * पत्ता; [सं०] गिरनेकी क्रिया या भाव; पतन; गिरानेकी क्रिया या भाव; उड़ना; उड़ान; उतरना; उतार; नाश, ध्वंस (शरीरपात); प्रहार (खड्गपात); डालना, ले जाना (दृष्टिपात); टूटकर गिरने या च्युत होनेका क्रिया या भाव (उल्कापात); राहु; चालन (पक्षपात–पंख चलाना); अशुभ स्थिति; अभिभावक । वि० रक्षित ।

पातक–पु० [सं०] पाप, अघ ।

पातकी(किन्)–वि० [सं०] पापी, अघी; अपराधी ।

पातन–पु० [सं०] गिरानेकी क्रिया; झुकाना ।

पातनीय–वि० [सं०] गिराने योग्य; प्रहार करने योग्य ।

पातर†–स्त्री० पत्तल; वेश्या । वि० पतला, बारीक; दुर्बल, क्षीणकाय, क्षुद्र; नीच–'जतिया क पातर'–ग्राम० ।

पातरि, पातरी–स्त्री० पत्तल ।

पातल*–स्त्री० दे० 'पातर' ।

पातव्य–वि० [सं०] रक्षा करने योग्य; पीने योग्य ।

पातशाह–पु० दे० 'पादशाह' ।

पाता*–पु० पत्ता ।

पाता(तृ)–पु० [सं०] रक्षक; पीनेवाला ।

पाताखत*–पु० पत्र और अक्षत; पूजनकी साधारण सामग्री; मामूली भेंट ।

पाताबा–पु० [फा०] दे० 'पा'के साथ ।

पातार†–पु० दे० 'पाताल' ।

पाताल–पु० [सं०] भुवनका अधोभाग; पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे सबसे नीचेका लोक (पुराणोंमें सात प्रकारके पातालोंका उल्लेख मिलता है–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल); गुफा; पारा आदि शोधनेका एक यंत्र; गड्ढा; बड़वानल; कुंडलीमें उस घरसे चौथा स्थान जिसमें सूर्य हो; छंदकी संख्या, मात्रा आदि निकालनेकी एक रीति (पिंगल) । **–गंगा**–स्त्री० पाताल लोकमें बहनेवाली गंगा । **–वासी(सिन्)**–पु० दैत्य, दानव; नाग । **–यंत्र**–पु० धातु गलाने, अर्क, तेल आदि तैयार करनेका एक यंत्र ।

पातिग*–पु० पातक ।

पातित–वि० [सं०] गिराया हुआ; फेंका हुआ ।

पातिव्रत–पु० दे० 'पातिव्रत्य' ।

पातिव्रत्य–पु० [सं०] पतिव्रता होनेका भाव; पतिव्रताका धर्म ।

पाती*–स्त्री० चिट्ठी, पत्र; वृक्षके पत्ते; लज्जा; मर्यादा ।

पातुर, पातुरनी, पातुरि†–स्त्री० वेश्या, रंडी ।

पात्र–पु० [सं०] जल आदि पीनेका बरतन; बरतन, कुछ रखने या खाने-पीने आदिके कामका आधाररूप पदार्थ; स्रुवा आदि यज्ञके कामका कोई पदार्थ; कोई वस्तु पानेका अधिकारी व्यक्ति; अभिनेता; उपन्यासमें वर्णित वह व्यक्ति जिसका कथावस्तुमें कोई स्थान हो (स्त्री० पात्रा); नदीका पेटा या पाट; राजाका मंत्री, अमात्य ।

पात्रता–स्त्री०, **पात्रत्व**–पु० [सं०] पात्र होनेका भाव या धर्म, योग्यता ।

पाथ–पु० [सं०] अग्नि; सूर्य; जल; * रास्ता, मार्ग । **–नाथ, –निधि**–पु० समुद्र ।

पाथना–स० क्रि० साँचेकी सहायतासे या यों ही हाथोंसे थोप-पीटकर किसी गीले उपादानसे बड़ी टिकिया या पटरी आदिकी तरहकी विशेष आकारकी कोई वस्तु तैयार करना; * गढ़ना, बनाना; मारना, पीटना ।

पाथर*–पु० दे० 'पत्थर' ।

पाथेय–पु० [सं०] वह भोज्य वस्तु जिसे पथिक राहमें खानेके लिए अपने साथ ले जाता है, संबल; राहखर्च ।

पाथोज-पु० [सं०] कमल; शंख।

पाथोद, पाथोधर-पु० [सं०] बादल।

पाथोधि, पाथोनिधि-पु० [सं०] समुद्र।

पाद-पु० अपान वायु; [सं०] चरण, पैर; श्लोक, पद्य या मंत्रका चौथा भाग; किसी 'वस्तुका चौथा भाग, चतुर्थांश; किसी पुस्तक या अध्यायका चौथा भाग; वृक्ष या पौधेकी जड़; किसी वस्तुका निचला भाग; एक पैर या बारह अंगुलकी माप। **-क्षेप**-पु० पैर रखना, चरणन्यास। **-ग्रंथि**-स्त्री० टखना। **-ग्रहण**-पु० ऐसा प्रणाम जिसमें चरणका स्पर्श किया जाय, पैर छूकर प्रणाम करना। **-चारी(रिन्)**-पु० पैदल चलनेवाला; पैदल सिपाही। **-ज**-पु० शूद्र। **-जल**-पु० वह जल जिसमें किसीका पैर पखारा गया हो; वह मट्ठा जिसमें चतुर्थांश जल मिलाया गया हो। **-टीका**-स्त्री० पादटिप्पणी (फुटनोट)। **-तल**-पु० तलवा। **-त्र,-त्राण**-पु० खड़ाऊँ, जूता, चट्टी आदि। वि० जिससे पैरकी रक्षा हो। **-दलित**-वि० पैरोंके नीचे कुचला हुआ, रौंदा हुआ; बुरी तरहसे दबाया हुआ (ला०)। **-दारिका,-दारी**-स्त्री० बिवाई नामका रोग। **-धावन**-पु० पैर धोनेकी क्रिया। **-निकेत**-पु० पैर रखनेकी छोटी चौकी, पादपीठ। **-न्यास**-पु० पैर रखना, कदम रखना। **-पंकज,-पद्म**-पु० दे० 'चरणकमल'। **-प**-पु० वृक्ष, पेड़; पादपीठ। **-प-शास्त्र**-पु० (पैलियो-बोटैनी) लाखों वर्ष पुराने उन पेड़-पौधोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र जो अब पत्थर इत्यादिके रूपमें परिणत हो गये हैं। **-पथ**-पु० पगडंडी। **-पद्धति**-स्त्री० पगडंडी। **-पीठ**-पु० ऊँचे आसनके पास रखी जानेवाली छोटी चौकी या आधार जिसपर पैर रखते हैं, पैर रखनेके कामकी चौकी। **-पूरण**-पु० किसी श्लोक या पद्यके किसी चरणको पूरा करना; वह अक्षर जिसके द्वारा कोई चरण पूरा किया जाय। **-प्रक्षालन**-पु० पैर धोनेकी क्रिया। **-प्रहार**-पु० पैरसे किया गया आघात, चरणका आघात। **-बंधन**-पु० जानवरोंके पैर छाननेकी रस्सी; जानवरोंको छाननेकी क्रिया; पशुधन। **-मूल**-पु० टखना; तलवा; एड़ी; वह स्थान जहाँसे पहाड़का आरंभ होता है; चरणका सान्निध्य (नम्रता सूचित करनेके लिए प्रयुक्त)। **-रज(स्)**-स्त्री० पैरकी धूल। **-रज्जु**-स्त्री० हाथीके पाँव बाँधनेकी रस्सी या जंजीर। **-रोह,-रोहण**-पु० बड़का पेड़। **-वंदन**-पु० चरण छूकर प्रणाम करना। **-शोथ**-पु० पैरका फूल जाना। **-शौच**-पु० पैर धोना। **-सेवन**-पु०,**-सेवा**-स्त्री० पैर छूना; सेवा-शुश्रूषा। **-स्वेदन**-पु० पैरमें पसीना होना। **-हत**-वि० जिसपर पादप्रहार किया गया हो। **-हीन**-वि० जो अपने चतुर्थ भाग या चरणसे रहित हो; जिसके पैर न हों।

पादना-अ० क्रि० अपान वायुको गुदामार्गसे बाहर निकालना, गोज करना।

पादरी-पु० ईसाई धर्मका पुरोहित या आचार्य।

पादशाह-पु० [फा०] बादशाह, सम्राट्।

पादशाही-स्त्री० [फा०] बादशाही।

पादांक-पु० [सं०] पैरका निशान।

पादांगद-पु० [सं०] नूपुर।

पदांगुलि, पादांगुली-स्त्री० [सं०] पैरकी उँगली।

पादांगुष्ठ-पु० [सं०] पैरका अँगूठा।

पादांत-पु० [सं०] पैरका अग्रभाग; श्लोक या पद्यके किसी पदका अंतिम भाग या अवसान।

पादांबु-पु० [सं०] पैर धोनेका पानी; चतुर्थांश जलवाला मट्ठा।

पादाक्रांत-वि० [सं०] पैरों तले दबाया हुआ; रौंदा हुआ।

पादाघात-पु० [सं०] पैरका प्रहार, लात मारना।

पादाति, पादातिक-पु० [सं०] पैदल सिपाही।

पादारघ*-पु० दे० 'पाद्यार्घ'।

पादारविंद-पु० [सं०] चरण-कमल।

पादावर्त-पु० [सं०] रहट।

पादाहत-वि० [सं०] जिसपर पैरसे प्रहार किया गया हो।

पादुका-स्त्री० [सं०] जूता; खड़ाऊँ। **-कार**-पु० मोची; बढ़ई।

पादोदक-पु० [सं०] पैर धोनेका जल; वह जल जिससे किसीका पाँव पखारा गया हो, चरणामृत।

पाद्य-वि० [सं०] पाद-संबंधी; चरणका, पैरका। पु० पैर धोनेका पानी।

पाद्यार्घ, पाद्यार्घ्य-पु० [सं०] पाद्य और अर्घ, पैर धोनेका पानी और दूब, अक्षत, जल आदि पूजाके उपकरण (अर्घमें जल, दूध, दही, घी आदि आठ वस्तुएँ दी जाती हैं); भेंट, नजर (केशव)।

पाधा-पु० आचार्य; पंडित।

पान-पु० [सं०] जल आदि पीनेकी क्रिया; पीनेका पात्र; शराब पीना; पेय द्रव्य (शरबत, शराब); शराब बेचनेवाला, शौंडिक, कलवार; रक्षा करनेकी क्रिया, रक्षण; निःश्वास; उस्तरे, तलवार आदिपर सान चढ़ाना, हथियारोंकी धार तेज करना; नहर; चुंबन ('अधरपान')। **-गोष्ठिका,-गोष्ठी**-स्त्री० मद्य आदि पीनेके लिए एकत्र हुए लोगोंकी मंडली, शराबियोंकी मंडली; शराबकी दुकान। **-दोष**-पु० शराब पीनेकी कुटेव। **-प**-वि० शराब पीनेवाला, मद्यप। **-पात्र,-भांड,-भाजन**-पु० शराब आदि पीनेका बरतन। **-भू,-भूमि**-स्त्री० शराब पीनेकी जगह, वह स्थान जहाँ शराबी इकट्ठे होकर शराब पीयें। **-मंडल**-पु० मद्यपोंकी मंडली। **-मत्त**-वि० नशेमें चूर। **-मद**-पु० शराबका नशा। **-विभ्रम**-पु० अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक प्रकारका विकार जिसमें वमन, मूर्च्छा, सिरमें पीड़ा आदि क्लेश होते हैं।

पान-पु० एक लता जिसके पत्ते सुपारी, कत्था आदिके साथ मुखशुद्धिके लिए खाये जाते हैं; इस लताका पत्ता; * पत्ता; * पानी; वह चमक जो अस्त्रोंपर उन्हें आगमें तपाकर पानी आदिमें बुझानेसे आती है; * प्राणवायु; पौसरा; हारमें गूथा जानेवाला पानके आकारका तावीज; एक प्रकारका ताशका पत्ता जिसपर पानकी लाल-लाल आकृतियाँ बनी रहती हैं; * पाणि, हाथ। **-दान**-पु० पानके पत्ते और उसके मसाले रखनेके कामका डिब्बा; पानके बीड़े रखनेका डिब्बा, पनडिब्बा। **-पत्ता**-पु० लगा हुआ पान; साधारण उपहार, तुच्छ भेंट। **-फूल**-

पु० तुच्छ भेंट; बहुत कोमल वस्तु । –**बीड़ा**–पु० विवाहकी बात पक्की करते समय भावी वरको पानका बीड़ा देनेकी रस्म । –**सुपारी**–स्त्री० किसी शुभ अवसरपर किया जानेवाला वह समारोह जिसमें पान-सुपारीसे आगत व्यक्तियोंका सम्मान किया जाता है । **मु०–खिलाना**–विवाहके विषयमें वर-कन्या-पक्षका परस्पर वचनबद्ध होना, सगाई करना । –**चीरना**–बिना कामका काम करना । –**देना**–किसीसे कोई काम कर डालनेकी प्रतिज्ञा कराना; किसीको कोई काम अपने जिम्मे लेनेके लिए प्रेरित करना । –**बनाना या लगाना**–पानका बीड़ा तैयार करना ।

पानक–पु० [सं०] एक प्रकारका पेय जो पकाये हुए आम, इमली आदिके रसमें पानी, नमक, मिर्च आदि मिलाकर तैयार करते हैं, पना ।

पानरा*–पु० पनारा ।

पानस–वि० [सं०] कटहलसे संबंध रखनेवाला । पु० कटहलसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी शराब ।

पानही*–स्त्री० जूता ।

पाना–स० क्रि० प्राप्त करना; फल या परिणामके रूपमें कुछ प्राप्त करना; दूसरेके हाथमें गयी हुई या खोयी हुई वस्तुको पुनः प्राप्त करना; समझ जाना, जान लेना; देखना; अनुभव करना; भोगना; वेतन या मजदूरीके रूपमें कुछ प्राप्त करना; किसीके पासतक पहुँचना; पकड़ना; बराबरी करना; भोजन करना, ग्रहण करना । अ० क्रि० सकना (इस अर्थमें 'पाना'का प्रयोग संयोज्य क्रियाके रूपमें होता है) । पु० दे० 'पावना' ।

पानागार–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुतसे लोग एकत्र होकर मद्यपान करें, शराबखाना ।

पानि*–पु० हाथ; पानी; आब, चमक । –**ग्रहन**–पु० दे० 'पाणिग्रहण' ।

पानिक–पु० [सं०] शराब बेचनेवाला, मद्यव्यवसायी ।

पानिप*–पु० कांति, आब, लावण्य; पानी ।

पानिय*–पु० पानी । वि० रक्षा करने योग्य, रक्षणीय ।

पानी–पु० नदी, कूप आदि जलाशयों और बादलसे मिलनेवाला एक शीत स्पर्शवाला प्रसिद्ध तरल द्रव्य जो चराचर सृष्टिके लिए अनिवार्य होता है (आधुनिक विज्ञानके अनुसार यह अम्लजन और उद्रजन नामकी दो गैसोंसे बनता है); जीभ, आँख, घाव आदिसे निकलनेवाला जलीय पदार्थ; वह पानी जिसमें उसमें उबाली या भिगोयी हुई वस्तुका सारभाग मिला हो (नीमका पानी); किसी हरी या सरस वस्तुके भीतरसे निकलनेवाला रस या पानी जैसा तरल पदार्थ, नारियल, तरबूज आदि फलोंका रस; आब, कांति; प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, इज्जत; तलवार आदि अस्त्रोंकी धारका वह काला हलका रंग जिससे उनकी अच्छाई जानी जाती है; साल, वर्ष; कलई, मुलम्मा; आत्माभिमान; दंभ; जीवट; पानी जैसी ठंढी वस्तु; पानीकी तरह निःस्वाद पदार्थ; जल-वायु । –**दार**–वि० जिसमें पानी, आब हो, आबदार, कांतिमान्; प्रतिष्ठावाला; स्वाभिमानी । –**देवा**–पु० तर्पण करनेवाला, जलदाता, पुत्रादि । –**फल**–पु० सिंघाड़ा । **मु०–आना**–वर्षा होना । –**उठाना**–पानी खींचना; सोखना । –**उतरना**–बेइज्जती होना; अंडवृद्धि होना । –**उतारना**–बेइज्जती करना । –**करना**–सरल बना देना; क्रुद्ध व्यक्तिको शांत करना । –**काटना**–पानीको रोकनेवाले बाँध या मेंड़को काट देना, पानीको एक नालीसे दूसरी नालीमें ले जाना । –**का बतासा**–क्षणस्थायी वस्तु । –**का बुलबुला**–क्षणभंगुर वस्तु । –**के मोल**–बहुत सस्ता । –**चलाना**–* चौपट करना; † ढेंकली आदिसे पानी खींचकर खेतोंमें फैलाना । –**छानना**–चेचककी बीमारीमें रोगीके कुछ स्वस्थ होनेपर उसके सिरसे कपड़ा छुलाकर उससे पानी छाननेका एक कृत्य । –**छूना**–आबदस्त लेना । –**जाना**–बेइज्जत होना; (प्रदरादिमें) पानी जैसा स्राव होना । –**टूटना**–कुएँ, ताल आदिके पानीका बहुत कम हो जाना; बारिश बंद हो जाना । –**तोड़ना या काटना**–तैरते या नाव खेते समय पानीको हाथ या डाँड़ेसे चीरना । –**दिखाना**–पशुओंके सामने पीनेके लिए पानी रखना, चौपायोंको पानी पिलाना । –**देना**–तर्पण करना; सींचना । –**न माँगना**–तत्काल मर जाना । –**न रह जाना**–इज्जत मिट्टीमें मिलना । –**निकलना**–वर्षा बंद होना । –**पड़ना**–वर्षा होना । –**पढ़ना,–परोरना या फूँकना**–जलको अभिमंत्रित करना । –**पर नीवँ डालना**–ऐसी वस्तुको आधार बनाना जो टिकाऊ न हो; किसी कामको इस प्रकार आरंभ करना कि वह बहुत जल्द बिगड़ जाय । –**पर नीवँ होना**–किसी काम या आयोजनका टिकाऊ न होना । –**पानी करना**–बहुत अधिक लजवाना; किसीका क्रोध शांत करना । –**पानी होना**–बहुत अधिक लज्जित होना, झेंपना; क्रोध शांत होना, ठंढा पड़ जाना । –**पीकर जाति पूछना**–कोई काम कर चुकनेपर उसके औचित्यका निर्णय करना । –**पी-पीकर कोसना**–इतनी देरतक कोसना कि गला सूख जानेके कारण बीच-बीचमें पानी पीना पड़े, बहुत अधिक और देरतक कोसना । (**किसी वस्तु या कृत्य पर**)–**फिरना**–बरबाद होना, चौपट होना । –**फेर देना**–चौपट कर देना । –**बचाना,–रखना**–मर्यादाकी रक्षा करना । –**बराना**–सिंचाईमें एक क्यारी भर जानेपर उस पानीको दूसरी क्यारीमें ले जाना । –**बाँधना**–बाँध या मेंड़ बनाकर पानीको रोक रखना; जादूके द्वारा पानीका बरसना रोक देना । –**बुझाना**–तपे हुए लोहे आदिको पानीमें बुझाना । (**किसीके सामने या आगे**)–**भरना**–अति तुच्छ सिद्ध होना; फीका पड़ना । –**भरी खाल**–क्षणभंगुर शरीर । –**मरना**–बेइज्जती होना; पानी जज्ब होना । (**किसीके सिर**)–**मारना**–किसीको दोषी ठहराना । –**में आग लगाना**–असंभव कार्य कर डालना; जहाँ झगड़ा होना संभव न हो, वहाँ भी झगड़ा लगा देना । –**में फेंकना या बहाना**–बरबाद करना, नष्ट करना । –**लगना**–पानी जमा होना । (**कहींका**)–**लगना**–जल-वायुका अनुकूल न होना, स्थानविशेषके बुरे वातावरणका असर होना । –**लेना**–बेइज्जत करना । –**से पतला**–बहुत तुच्छ; बदनाम; आसान । –**से पहले पुल, पाड़ या**

बाँध बाँधना–किसी अनागत विपत्तिका पहलेसे ही प्रतीकार करने लगना, किसी संकटके आनेके पहले ही उसके निवारणका उपाय करने लगना। **–होना**–धातु आदिका तरल अवस्थामें परिणत होना। **(किसीका)–होना**–क्रोध शांत होना।

पानीय–वि० [सं०] पीने योग्य; रक्षा करने योग्य। पु० जल; पेय, शराब (तंत्र)। **–शाला**–स्त्री० पौसरा, प्याऊ।

पानूस–पु० दे० 'फानूस'।

पानौरा*–पु० पानके पत्तेकी पकौड़ी।

पान्यो*–पु० पानी–'ज्यों झख पायो पान्यो'–सू०।

पाप–वि० [सं०] निकृष्ट; खोटा, बुरा; अशुभ; नीच; दुष्ट; (प्रायः समासमें प्रयुक्त–'पापकर्म', 'पापग्रह' आदि)। पु० बुरे कामोंसे उत्पन्न होनेवाला वह अदृष्ट जिससे मनुष्य बुरी गतिको प्राप्त होता है; ऐसा अदृष्ट उत्पन्न करनेवाला कृत्य, कुकृत्य, अधार्मिक कृत्य (जैसे–हिंसा, चोरी आदि); अनिष्ट; अपराध, जुर्म; पापी, पातकी व्यक्ति; * संकट, कठिनाई। **–कर**–वि० दे० 'पापकारक'। **–कर्म(न्)**–पु० ऐसा कर्म जिसे करनेसे पाप लगे, धर्म-विरुद्ध कर्म, खोटा काम। **–कर्मा(मन्)**–वि० पापी। **–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि० पाप कमानेवाला, पापी। **–क्षय**–पु० पापका नाश। **–ग्रह**–पु० अशुभ ग्रह (जैसे मंगल, शनि)। **–घ्न**–वि० पापको नष्ट करनेवाला। पु० तिल (जिसके दानसे पापका नाश होता है)। **–घ्नी**–स्त्री० तुलसी। **–चर,–चारी(रिन्)**–वि० पापाचरण करनेवाला। **–चेता(तस्)**–वि० जिसके मनमें सदा पाप बसे, नीच, दुष्ट, दुरात्मा। **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि पवित्र न हो; जिसके देखनेसे किसीका अमंगल हो। **–धी**–वि० दुर्बुद्धि, दुरात्मा। **–नाशक**–वि० पापोंका नाश करनेवाला। **–नाशन**–वि० पापको दूर करनेवाला। पु० विष्णु; शिव। **–फल**–वि० बुरे परिणामवाला, अशुभ। **–बुद्धि**–वि० जिसका मन सदा पापकी ओर प्रवृत्त रहे, दुरात्मा। **–मोचन**–पु० पापको दूर करने या नष्ट करनेकी क्रिया, पापका निराकरण। **–शील**–वि० पाप करना जिसका स्वभाव हो, जो सदा पाप किया करे, पापमें निरत रहनेवाला। **–हर**–वि० पापोंको हरनेवाला, पापनाशक। **–हा(हन्)**–वि० पापोंका नाश करनेवाला, पापनाशक। मु० **–उदय होना**–पूर्वकृत पापका फल मिलने लगना। **–कटना**–प्रायश्चित्त आदिसे पापका अंत होना; बाधा आदिका दूर होना। **–कमाना,–बटोरना**–पापमय कार्य करना, ऐसे दुष्कार्य करना जिनका परिणाम बुरा हो। **–पड़ना**–दे० 'पाप लगना'; * कठिन होना। **–मोल लेना**–जान-बूझकर बखेड़ेमें पड़ना। **–लगना**–पापका भागी होना।

पापड़–पु० उड़द या मूँगकी पीठीसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी बारीक मसालेदार चपाती जिसे तेल या घीमें तलकर अथवा आगपर सेंककर व्यंजनके रूपमें खाते हैं। वि० कागजसा पतला; सूखा। मु० **–बेलना**–घोर परिश्रम करना; बहुत कष्ट झेलना।

पापड़ाखार–पु० केलेके पेड़से तैयार किया जानेवाला क्षार।

पापाचार–पु० [सं०] पापमय आचरण, पापसे भरा हुआ कृत्य, दुराचार। वि० जिसका आचरण पापमय हो।

पापात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] जिसकी आत्मा सदा पापमें प्रवृत्त रहे, जो सदा पापमें प्रवृत्त रहे, पापी।

पापिष्ठ–वि० [सं०] सबसे बड़ा पापी; अति पापी।

पापी(पिन्)–वि० [सं०] पाप करनेवाला, अघी; निष्ठुर, निर्दय। पु० वह जो पाप करे, पाप करनेवाला मनुष्य।

पाबंद–वि० [फा०] दे० 'पा'के साथ।

पाम(न्)–पु० [सं०] एक चर्मरोग, विचर्चिका; खुरंड। **–घ्न**–पु० गंधक। **–घ्नी**–स्त्री० कुटकी।

पामड़ा, पामरा*–पु० दे० 'पावँड़ा'।

पामर–वि० [सं०] नीच, दुष्ट; मूर्ख; निर्धन; असहाय।

पामरी*–स्त्री० दुपट्टा, उपरना; पाँवड़ी।

पामारि–पु० [सं०] गंधक।

पायँ*–पु० पैर, पाँव। **–चा**–पु० पाजामेके उन दो भागोंमेंसे कोई एक जो उसके पहने जानेपर टाँगोंको ढके रहते हैं। **–जेहरि***–स्त्री० पायजेब। **–ता**–पु०,**–ती**–स्त्री० चारपाई या पलँगका उधरका भाग जिधर सोनेवालेका पैर रहता है, पैताना; सोनेवालेके पैरकी ओरकी दिशा।

पायंदाज–पु० दे० 'पा-अंदाज'।

पाय–पु० [फा०] 'पा'का समासमें, इजाफत लगनेसे मिलनेवाला रूप। **–कार**–पु० बनानेवालेसे माल खरीदकर दुकानदारोंके हाथ बेचनेवाला, एजेंट, खुर्दाफरोश, बिसाती। **–ख़ाना**–पु० दे० 'पाख़ाना'। **–जामा**–पु० दे० 'पाजामा'। **–ज़ेब**–पु० दे० 'पाज़ेब'। **–जेहरि***–स्त्री० पाजेब'। **–तख़्त**–पु० राजधानी। **–तन***–पु० दे० 'पायँता'। **–दान**–पु० सवारी गाड़ीमें बाहरकी ओर लगाया हुआ तख़्ता या लोहेका चौकोर टुकड़ा जिसपर पैर रखकर गाड़ीपर चढ़ते हैं। **–दार**–वि० मजबूत, टिकाऊ। **–दारी**–स्त्री० मजबूती, टिकाऊपन। **–पोश**–पु० दे० 'पापोश'। **–बंद**–वि० दे० 'पाबंद'। **–बंदी**–स्त्री० दे० पाबंदी'। **–माल**–वि० 'दे० 'पामाल'।

पायक–पु० दूत; सेवक; पैदल सिपाही; * मल्ल; पटेबाज; पताका।

पायड़ा*–पु० दे० 'पायरा'–'हर घोड़ा, ब्रह्मा कड़ी, बिस्नू पीठ पलान। चंद सूर दोइ पायड़ा, चढ़सी संत सुजान'–साखी।

पायरा–* पु० रकाब; † एक तरहका कबूतर।

पायल–स्त्री० पैरमें पहननेका एक घुँघरूदार गहना, पाजेब।

पायस–वि० [सं०] दूध या जलसे संबद्ध; दूध या जलका बना हुआ। पु० दूधमें पकाया हुआ चावल, खीर। (स्त्री० भी)–'परम दिव्य पायस सो पूरित रजत पात्र तें ढाँपी'–रघु०।

पायसा†–पु० पड़ौस।

पाया–पु० [फा०] चारपाई, कुरसी, तख़्ते आदिके उन डंडोंके आकारके निचले अंगोंमेंसे कोई एक जिनके बल वे स्थित रहते हैं, पावा, गोड़ा; खंभा, टेक; बुनियाद, नींवँ; सीढ़ी; दर्जा, पद; घोड़ोंके पैरका एक रोग। मु० **–बुलंद**

होना–दर्जा बढ़ना।

पायिक–पु० [पं०] पैदल सिपाही; दूत।

पायी(यिन्)–पु० [सं०] पीनेवाला (समासमें)।

पारंगत–वि० [सं०] दे० 'पारगत'।

पारंपरीण–वि० [सं०] परंपरागत, क्रमागत।

पारंपरीय–वि० [सं०] परंपरागत।

पार–पु०[सं०] नदी-समुद्र आदिका दूसरी ओरका किनारा; किसी वस्तुका दूसरा किनारा; किसी दूरतक फैली हुई वस्तुका अंतिम भाग, प्रांतभाग; किसी दूर तक फैली हुई वस्तुके दो किनारोंमेंसे कोई एक; अंत, हद; पारा। अ० परे, दूर।–**ग**–वि० पार जानेवाला; पार पहुँचानेवाला; जिसने किसी वस्तुका पार पा लिया हो; जिसने किसी विद्या या शास्त्रका पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो (वेदांत-पारग)। –**गत**–वि० पारतक पहुँचा हुआ; जिसने पार पा लिया हो; जिसने किसी विद्या या शास्त्रका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; पवित्र।–**गामी(मिन्)**–वि० पार जानेवाला। –**दर्शक**–वि० पारको या दूसरे किनारेको दिखानेवाला; जिसके आर-पार देखा जा सके।–**दर्शिता**–स्त्री० (ट्रांसपेरेंसी) पदार्थोंके आर-पार देखे जा सकनेकी क्षमता या गुण, पारदर्शी होनेका गुण।–**दर्शी(र्शिन्)**–वि०दूरदर्शी,परिणामदर्शी; बहुज्ञ,पंडित।–**दर्शि-किरण**–स्त्री० (एक्सरे) दे० 'क्ष किरण'।–**नेता(तृ)**–वि० पार ले जानेवाला; किसी विषयका पूरा ज्ञान करानेवाला।–**पत्र**–पु० (पासपोर्ट) समुद्र-पार जानेका वह अनुज्ञापत्र जिसमें यात्रार्थीकी संरक्षाका भी अभिवचन सन्निविष्ट रहता है। **मु०–उतर जाना**–दे० 'पार उतरना'; कोई प्रयोजन सिद्ध करके अलग हो जाना। –**उतरना**–तैरकर या नाव आदिके द्वारा नदी आदिके उस पार जाना; किसी कार्यको समाप्त करके उससे छुट्टी पाना; किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना; भवबंधनसे मुक्त होना, संसारसे छुटकारा पाना। –**उतारना या करना**–नदी, समुद्र आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना।–**पाना**–किसी वस्तुके अंततक पहुँचना। **(किसीसे)–पाना**–परास्त करना। –**बसाना***–वश चलना। –**लगना**–किनारे पहुँचना। **(किसीका बेड़ा)–लगना**–गुजारा होना, निर्वाह होना। **(किसीसे बेड़ा)–लगना**–किया जा सकना; हो सकना। –**लगाना**–नदी आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना। **(किसीका बेड़ा)–लगाना**–निर्वाह करना। –**होना**–दूसरे किनारे या उस पार पहुँचना; काम पूरा कर लेना।

पारई*–स्त्री० बड़ा कसोरा।

पारख*–स्त्री० दे० 'परख'। पु० दे० 'पारखी'।

पारखद*–पु० दे० 'पार्षद'।

पारखी–पु० परखनेवाला, वह जिसमें परखनेकी शक्ति है।

पारजात*–पु० दे० 'पारिजात'।

पारण–पु० [सं०] किसी व्रत या उपवासके बादका पहला भोजन (पारण उपवासका अंग माना जाता है); बादल; तृप्ति, संतोष; पूरा करना; व्रत या उपवासके बादका भोजन करनेकी क्रिया; पढ़ना, अध्ययन; पुस्तकका सारा विषय। वि० पार करनेवाला; उद्धार करनेवाला।

पारणक–पु० (पास) किसी स्थान, सिनेमा-भवन, सभा-गृह आदिके भीतर या बाहर जानेका लिखित अनुमति-पत्र; रेल आदि द्वारा बिना किराया दिये यात्रा करनेका अनुमतिपत्र।

पारणा–स्त्री० [सं०] व्रतके बादका भोजन; भोजन।

पारतंत्र्य–पु० [सं०] पराधीनता।

पारत्रिक–वि० [सं०] परलोक-संबंधी; परलोकका; परलोक बनानेवाला, जिससे परलोक बने।

पारथ*–पु० दे० 'पार्थ'; पारथी।

पारथिव*–पु० राजा; मिट्टीका शिवलिंग। वि० मिट्टी-संबंधी; मिट्टीका बना हुआ।

पारद–पु० [सं०] पारा; एक प्राचीन असभ्य जाति।

पारदारिक–पु० [सं०] परस्त्रीगामी, लंपट।

पारदेशिक–वि० [सं०] दूसरे देशका, विदेशी। पु० दूसरे देशका निवासी; यात्री।

पारधि*–पु० दे० 'पारधी'।–**पति**–पु० धनुर्धरोंमें श्रेष्ठ, कामदेव।

पारधी–पु० बहेलिया, चिड़ीमार; शिकारी; हत्यारा।

पारन–* पु० दे० 'पारण'।

पारना–स० क्रि० जमीनपर डाल देना; गिराना; साँचेमें या और किसी चीजमें जमाकर कुछ तैयार करना; * सुलाना; पछाड़ना; रखना; सम्मिलित करना; पहनना; ढाना; डालना; पालन करना। अ० क्रि० सकना, करनेमें समर्थ होना।

पारबती–स्त्री० दे० 'पार्वती'।

पारमार्थिक–वि० [सं०] परमार्थ-संबंधी; अविकारी और सत्य; स्वाभाविक (जैसे–पारमार्थिक सत्ता); परमार्थका प्रेमी; परमार्थकी ओर दृष्टि रखनेवाला; अति उत्तम।

पारमार्थ्य–पु० [सं०] परम सत्य।

पारमिता–स्त्री० [सं०] पूर्णता, उत्कृष्टता (यह छः प्रकारकी मानी गयी है, दान, शील, शांति आदि)।

पारलौकिक–वि० [सं०] परलोक-संबंधी; परलोकका।

पारवश्य–पु० [सं०] पराधीनता, परवशता।

पारशव–वि० [सं०] परशु-संबंधी; लोहेका बना हुआ। पु० लोहा; परस्त्रीसे उत्पन्न पुत्र; ब्राह्मण और शूद्रासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

पारषद–पु०[सं०] दे०'पारिषद' या 'पार्षद'।

पारस–पु० एक प्रकारका पत्थर जिसके स्पर्शसे लोहा सोना हो जाता है, स्पर्शमणि; बहुत लाभ पहुँचानेवाला पदार्थ, पारस जैसा उत्तम पदार्थ; परसा हुआ भोजन; वह पत्तल जिसमें एक आदमीके खाने भरका भोजन रखा गया हो; ईरान देश।

पारसव*–वि०, पु० दे० 'पारशव'।

पारसी–पु० एक अग्नि पूजक जाति। स्त्री० [सं०] फारस देशकी भाषा।

पारसीक–पु० [सं०] फारस देश; फारस देशका घोड़ा; फारस देशका निवासी।

पारस्परिक–वि० [सं०] आपसका, आपसी।

पारस्पर्य–पु० [सं०] (रेसीप्रॉसिटी) व्यवहारमें एक दूसरेका खयाल रखना; परस्पर रिआयत करने या सुविधा देनेका

सिद्धांत।

पारस्य–पु० [सं०] पारस या फारस देश।

पारा–पु० एक प्रसिद्ध धातु; बड़ी परई; टुकड़ा। **मु०–पिलाना**–किसी क्रिया द्वारा भारी बनाना।

पारापत–पु० [सं०] कबूतर।

पारापार–पु० [सं०] दोनों किनारे, उभय तट; समुद्र।

पारायण–पु० [सं०] किसी ग्रंथका आद्यंत पाठ; संपूर्णता; पार जाना।

पारायणिक–पु० [सं०] पारायण करनेवाला, पुराणादिका पाठ करनेवाला; छात्र।

पारायणी–स्त्री० [सं०] सरस्वती; मनन, चिंतन।

पारावत–पु० [सं०] कबूतर; पंडुक; बंदर; पर्वत।

पारावार–पु० [सं०] दे० 'पारापार'।

पाराशर–पु० [सं०] पराशरके पुत्र वेदव्यास।

पारि*–स्त्री० दिशा, ओर; नदी, समुद्र आदिका किनारा; मेंड़; सीमा।

पारिख*–पु० पारखी, परखनेवाला। स्त्री० दे० 'परख'।

पारिजात–पु० [सं०] पाँच देववृक्षोंमेंसे एक; हरसिंगार।

पारिजातक–पु० [सं०] एक देववृक्ष; हरसिंगार; फरहद।

पारिणामिक–वि० [सं०] पचनेवाला, किसीके परिणाम-स्वरूप होनेवाला।

पारित–वि० (पास्ड) (प्रस्ताव, विधेयक आदि) जो किसी सभा, विधानसभा आदिमें विधिपूर्वक स्वीकृत हो चुका हो।

पारितोषिक–वि० [सं०] संतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला। पु० पुरस्कार, इनाम।

पारिपंथिक–पु० [सं०] लुटेरा; चोर।

पारिपार्श्वक, पारिपार्श्विक–पु० [सं०] अनुचर, सेवक; नाटकके स्थापकका एक सहायक नट।

पारिभाव्य–पु० [सं०] प्रतिभू या जामिन होनेका भाव। **–धन**–पु० (कॉशन मनी) जमानत या प्रतिभूतिके रूपमें अथवा सद्व्यवहार या सदुपयोगका निश्चय करानेके लिए पहलेसे जमा की या करायी गयी रकम।

पारिभाषिक–वि० [सं०] परिभाषा-संबंधी; जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थमें किया जाय, जो कोई विशिष्ट अर्थ सूचित करे, लाक्षणिक। **–शब्दावली**–स्त्री० (ग्लॉसरी ऑफ टैक्निकल वर्ड्ज) विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाले शब्दोंकी सूची।

पारिश्रमिक–पु० [सं०] परिश्रमके बदले दिया जानेवाला धन या पारितोषिक (रिम्यूनरेशन)।

पारिषद–वि० [सं०] परिषद्-संबंधी; परिषद्का। पु० परिषद् या सभामें बैठनेवाला, सभासद्; (काउंसिलर) परिषद्का सदस्य; अनुचर वर्ग।

पारी–स्त्री० बारी, ओसरी; † गुड़ आदिका जमाया हुआ बड़ा ढोंका।

पारीक्षित–पु० [सं०] राजा परीक्षित्; उनका वंशधर, जनमेजय।

पारीछत*–पु० दे० 'पारीक्षित'।

पारुष्य–पु० [सं०] परुष होनेका भाव (बात या व्यवहारमें); कठोरता; रुखाई; दुर्वचन।

पार्क–पु० [अं०] नगरके अंदरका वह सार्वजनिक उपवन जहाँ लोग हवाखोरीके लिए जाया करते हैं।

पार्टी–स्त्री० [अं०] दल, मंडली; फरीक, वादी या प्रतिवादी पक्ष; प्रीतिभोज, दावत।

पार्थ–पु० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम (विशेषतः अर्जुन)। **–सारथि**–पु० कृष्ण।

पार्थक्य–पु० [सं०] पृथक् होनेका भाव, भेद; जुदाई।

पार्थव–पु० [सं०] पृथु होनेका भाव, विशालता, स्थूलता। वि० पृथु-संबंधी; पृथुका।

पार्थिव–वि० [सं०] पृथ्वी-संबंधी; पृथ्वीका; पृथ्वीसे उत्पन्न; मिट्टीका बना हुआ; राजोचित, राजसी। पु० पृथ्वीपर रहनेवाला प्राणी; राजा; मृत्तिका-निर्मित शिवलिंग। **–कन्या, –सुता**–स्त्री० राजकुमारी। **–दूरबीन**–स्त्री० [हिं०] (टेरेस्ट्रियल टेलिस्कोप) पृथ्वीपर रखी हुई दूरकी वस्तुओंको देखनेके काम आनेवाली दूरबीन।

पार्थिवी–स्त्री० [सं०] सीता; लक्ष्मी।

पार्थी–पु० मिट्टीका बनाया हुआ शिवलिंग।

पार्लमेंट, पार्लिमेंट–स्त्री० [अं०] राष्ट्रकी, विशेषतः ब्रिटेनकी, निर्वाचित विधान-सभा।

पार्वण–वि० [सं०] जो किसी पर्वपर या अमावस्याके दिन किया जाय (श्राद्ध)।

पार्वत–वि० [सं०] पर्वतपर होनेवाला; पर्वतपर रहनेवाला।

पार्वती–स्त्री० [सं०] शिवकी अर्द्धांगिनी गौरी जो हिमालयकी पुत्री हैं, उमा, भवानी। **–कुमार, –नंदन**–पु० कार्त्तिकेय; गणेश।

पार्वतीय–वि० [सं०] पर्वतपर रहनेवाला; पहाड़ी। पु० वह जो पर्वतपर रहे, पहाड़ी।

पार्शुका–स्त्री० [सं०] पसली।

पार्श्व–वि० [सं०] निकट, पासका। पु० कक्षके नीचेका या छातीके दायें-बायेंका भाग, पाँजर; अगल-बगलकी जगह; सामीप्य; गाड़ीके धुरेके छोर। **–ग, –गम**–वि० साथ रहनेवाला। पु० परिचारक, सेवक, नौकर। **–टिप्पण**–पु० (मार्जिनल नोट) पुस्तक, कापी आदिके पृष्ठपर किनारेकी तरफ लिखे गये विचार, ज्ञातव्य बातें आदि। **–नाथ**–पु० जैनोंके तेईसवें तीर्थंकर। **–नायक**–पु० (विंग कमांडर) वायु-सेनाके दो-तीन दस्तोंकी बनी टुकड़ीका नायक (ग्रूप-कप्तान तथा स्क्वाड्रन लीडरके बीचका अधिकारी)। **–परिवर्तन**–पु० करवट बदलना। **–प्रसारण**–पु० (इनडेंट) टाइपके अक्षर बैठाते समय नये अनुच्छेदकी पहली पंक्तिके पूर्वका हाशिया (पार्श्व) बढ़ा देना या किसी उद्धरण आदिकी पंक्तियोंके एक ओर अथवा दोनों ओरका हाशिया अधिक चौड़ा कर देना। **–रक्षक सेना**–स्त्री० (फ्लैंकगार्ड) पार्श्वकी रक्षा करनेवाली सेना। **–वर्ती (र्तिन्)**–वि० साथ रहनेवाला; बगलमें या आसपास रहनेवाला। पु० परिचारक, सेवक; सहचर। **–शीर्षक**–पु० (मार्जिनल हेडिंग) किसी छपे हुए या छपनेवाले लेख, पुस्तकके अध्याय आदिमें विषय आदिकी ओर संकेत करनेवाला वह शीर्षक जो बीचमें न दिया जाकर पार्श्वमें, किनारेकी तरफ दिया जाय। **–शूल**–पु० (प्लूरिसी) ठंढ आदि लग जानेसे पार्श्वदेशमें होनेवाली सूजन जिससे छाती या पसलीमें पीड़ा

होती है और ज्वरादिके लक्षण भी देख पड़ते हैं ।–स्थ–वि० जो बगलमें हो, समीपस्थ । पु० सहचर, साथी ।

पार्श्विक–वि० [सं०] पार्श्व-संबंधी; किसी एक पार्श्वमें होने या रहनेवाला । पु० पक्षपाती, तरफदार; सहचर, साथी ।

पार्षद–पु० [सं०] सभासद; पारिचारक, सेवक; किसी देवताका अनुचर ।

पार्ष्णि–स्त्री० [सं०] एड़ी; पृष्ठ, पिछला भाग; सेनाका पृष्ठ भाग; जीतनेकी इच्छा, जिगीषा; पदाघात, ठोकर । –घात–पु० पादप्रहार, ठोकर ।

पार्सल–पु० [अं०] डाक या रेल द्वारा भेजे जानेवाले मालका पुलिंदा या पैकेट ।

पालंग*–पु० पलंग ।

पाल–पु० [सं०] रक्षा करना; रक्षा करनेवाला, रक्षक; प्रधान अधिकारी (जैसे राज्यपाल); [हिं०] आम, केला आदि पकानेकी एक विधि जिसमें उन्हें पत्तोंपर रखकर पुनः पत्तोंसे ही ढक देते हैं; नावके मस्तूलके सहारे ताना जानेवाला वह कपड़ा जिसमें हवाके भरनेसे नाव चलती है; बंगालियोंकी एक उपाधि; बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश; गाड़ी या पालकी आदिका ओहार; धूप आदिसे बचावके लिए चँदोवेकी तरह टाँगा जानेवाला टाट, कपड़ा आदि; * बाँध, मेंड़–'टूट पाल सरवर बह लागे'–प०; ऊँचा किनारा, कगार ।–वंश–पु० बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश ।

पालउ*–पु० पल्लव, पत्ता ।

पालक–पु० एक प्रसिद्ध साग; [सं०] रक्षक, पालन करनेवाला; राजा;* पलंग–'ता दिन पालकते न उठावै'–राम०।

पालकी–स्त्री० एक तरहकी सवारी जिसे आदमी कंधेपर ढोते हैं, खड़खड़िया, शिविका ।

पालट–वि० गोद लिया हुआ लड़का । † स्त्री० पटेबाजीका एक वार ।

पालड़ा–पु० दे० 'पलड़ा' ।

पालतू–वि० पाला हुआ; जो पाला जा सके ।

पालथी–स्त्री० बैठनेका एक आसन जिसमें दाहने और बायें पैरोंके पंजे क्रमसे बायीं और दायीं जाँघके नीचे दबे रहते हैं।

पालन–पु० [सं०] रक्षा करना; रक्षण; निर्वाह करना, परवरिश; निभाना (जैसे प्रतिज्ञापालन) ।

पालना–स० क्रि० भोजन-वस्त्र आदि देकर बड़ा करना, भरण-पोषण करना, परवरिश करना; जीविका या मनोरंजनके निमित्त पशु-पक्षी आदिको आहार आदि देकर अपने यहाँ रखना; उल्लंघन न करना, न टालना, निबाहना (आज्ञा, वचन) । पु० बच्चोंका एक प्रकारका छोटा झूला या हिंडोला ।

पालनीय–वि० [सं०] पालन करने योग्य ।

पालयिता(तृ)–पु० [सं०] पालन करनेवाला ।

पालव*–पु० पल्लव, पत्ता; नया और कोमल पत्ता ।

पाला–पु० हवामें मिले हुए भापके सूक्ष्म कण जो अधिक ठंढक पड़नेपर सफेद तहके रूपमें जमीनपर जम जाते हैं, हिम, तुषार, बर्फ; ठंढक, सरदी; किसी प्रकारके व्यवहारका अवसर, साबिका ('पड़ना'के साथ);सदर मुकाम; सीमा-निर्देशके लिए बनाया जानेवाला मिट्टीकी मेंड़ या धुस; वह धुस जो कबड्डीके खेलमें हदके निशानका काम देता है; अनाज रखनेके कामका एक प्रकारका मिट्टीका गोला, कच्चा और बड़ा बरतन, डेहरी; अखाड़ा; वह स्थान जहाँ दस-पाँच आदमी उठे-बैठें । मु० (किसीसे)–पड़ना–साबिका होना, काम पड़ना ।

पालागन, पालागी–स्त्री० प्रणाम, नमस्कार ।

पालि–स्त्री० [सं०] कानकी लौ; किनारा; पंक्ति; सीमा ।

पालिका–स्त्री० [सं०] कानकी लौ; तलवार आदिकी धार; पालन करनेवाली ।

पालित–वि० [सं०] पाला हुआ; रक्षित ।

पालिनी–स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली; रक्षा करनेवाली ।

पालिश–स्त्री० [अं०] चिकनाई और रौनक जो एक वस्तुपर दूसरी वस्तुके रगड़नेसे पैदा होती है; वह मसाला जिसके लगानेसे किसी वस्तुपर चिकनाई और रौनक पैदा होती है । मु०–करना–विशेष प्रकारका मसाला लगाकर चिकना और रौनकदार बनाना ।

पाली–स्त्री० तीतर, बटेर आदि लड़ानेकी जगह; परई; (शिफ्ट; इनिंग्ज) कारखानों आदिमें श्रमिकोंके एक दलके लिए बँधा हुआ काम करनेका समय जिसकी समाप्तिपर दूसरा दल काम शुरू करता है; हाकी, क्रिकेट आदि खेलोंमें खेलाड़ियोंके किसी दलका पहिली या दूसरी बार खेलना, पारी, बारी; वह प्रसिद्ध प्राचीन भाषा जिसमें बुद्धने अपने धर्मका उपदेश दिया था और जिसमें बौद्धोंके धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं; [सं०] दे० 'पालि'; बटलोई ।

पालू–वि० पालतू ।

पाले–अ० वशमें, चंगुलमें । मु० (किसीके)–पड़ना–चंगुलमें फँसना, काबूमें आना ।

पावँ–पु० दे० 'पाँव' ।

पावँड़ा–पु० दे० 'पाँवड़ा' ।

पावँड़ी–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी' ।

पावँर*–वि० दे० 'पाँवर' ।

पावँरी–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी' ।

पाव–पु० चौथा भाग, एक चौथाई; चार छटाँककी एक तौल; † पैर । –दान†–पु० 'पायदान' ।

पावक–पु० [सं०] अग्नि, आग; अग्निदेव; सूर्य; वरुण; सदाचार । वि० शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला ।

पावती–स्त्री० रसीद; दे० 'पावती-पत्र' । –पत्र–पु० (एकनॉलेजमेंट) रुपया या अन्य वस्तु मिल जानेका प्रमाण-पत्र, प्राप्ति-स्वीकार-पत्र, रसीद ।

पावन–वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला; शुद्ध, पवित्र । पु० अग्नि; वेदव्यास; विष्णु; शुद्धि; जल; गोबर; रुद्राक्ष ।

पावना*–स० क्रि० प्राप्त करना, पाना; महसूस करना; समझना; जीमना, खाना । पु० दूसरेसे रुपया आदि पानेका अधिकार; वह रुपया या द्रव्य जो दूसरेसे पाना हो ।

पावर–पु० [अं०] वह शक्ति जिसके बलसे मशीनें चलायी जाती हैं, यंत्रशक्ति (जैसे विद्युत्); अधिकार; शक्ति । –लूम–पु० यंत्रशक्तिसे चलनेवाला करघा । –स्टेशन,

–हाउस–पु० वह स्थान जहाँ वितरणके लिए बिजली तैयार की जाती है, बिजलीघर ।

पावस–पु० वर्षा ऋतु ।

पावा†–पु० दे० 'पाया'; गोरखपुरसे उत्तर-पश्चिममें स्थित एक प्राचीन गाँव जहाँ बुद्ध कुछ समयतक ठहरे थे ।

पाश–पु० [सं०] सरकनेवाली गाँठोंका, रस्सी, तार आदिका विशेष प्रकारका घेरा जिसमें फँसनेसे प्राणी बँध जाता है, फाँस (प्राचीन कालमें युद्धमें भी आयुधके रूपमें पाशका प्रयोग किया जाता था); पशु-पक्षियोंको फँसानेका जाल; पासा; किसी बुनी हुई चीजका छोर; फँसानेवाला पदार्थ, बंधन (समासमें पाश शब्द समूह, शोभा और अपकर्ष आदि सूचित करता है, जैसे–केशपाश, कर्णपाश, वैद्यपाश) । **–जाल**–पु० संसाररूपी जाल ।

पाशव–वि० [सं०] पशु-संबंधी; पशुका ।

पाशविक–वि० दे० 'पाशव' ।

पाशुपत–वि०[सं०] पशुपति-संबंधी; शिव-संबंधी या शिवका; शिवका दिया हुआ । पु० पशुपति या शिवका उपासक; एक प्रसिद्ध दार्शनिक मत; इस मतको माननेवाला ।

पाशुपतास्त्र–पु० [सं०] एक भीषण अस्त्र जिसे अर्जुनने शिवसे प्राप्त किया था ।

पाश्चात्य–वि० [सं०] पश्चिमका, पच्छिमी; पच्छिमका रहनेवाला; बादका, पिछला ।

पाषंड–पु०, वि० [सं०] दे० 'पाखंड' ।

पाषंडक, पाषंडिक, पाषंडी (डिन्)–पु०[सं०] धार्मिकताका आडंबर फैलानेवाला व्यक्ति ।

पाषर*–स्त्री० दे० 'पाखर' ।

पाषाण–पु० [सं०] पत्थर, शिला । **–भेदक,–भेदन**–पु० एक पौधा, पखानभेद । **–युग**–पु० (स्टोन एज) दे० 'प्रस्तरयुग' । **–हृदय**–वि० जिसका दिल पत्थरकी तरह कड़ा हो, निष्ठुर, निर्दय ।

पाषाणी–स्त्री० [सं०] पत्थरका बटखरा; भाला । वि० स्त्री० कठोर, पत्थरका दिल रखनेवाली ।

पाषान*–पु० दे० 'पाषाण' ।

पासँग, पासंग–पु०[फा०] तराजूकी डाँड़ी बराबर करनेके लिए हलके पलड़ेकी ओर रखी जानेवाली वस्तु; डाँड़ीका ऊपर-नीचे होना । **मु० (किसीका)–भी न होना**–किसीके मुकाबलेमें कुछ भी न होना ।

पास–अ० समीप, नजदीक, दूरका उलटा; अधिकारमें; पल्ले; * (किसीके) प्रति, निकट जाकर, से । * पु० ओर, तरफ; पासा; फाँस; भेड़के बाल कतरनेवाली कैंचीका दस्ता । **–पास**–अ० एक दूसरेके करीब, एक दूसरेके निकट । **–मान,–वान***–पु० पास रहनेवाला, सेवक–'जिनके धनद समान पेखियत पासवान'–भू० । **–वर्ती***–दे० 'पार्श्ववर्ती' । **–सार***–पु० दे० 'पासासार' । **मु० (किसीके)–जाना**–समागम करना । **–तक न फटकना**–दूर ही रहना । **–फटकना**–समीप जाना । **–बैठनेवाला**–साथी, हेली-मेली; सहवासी ।

पास–पु०[अं०] कहीं जानेकी लिखित आज्ञा या अनुमति; वह टिकट या आज्ञापत्र जिसे दिखाकर रेल आदि द्वारा बेरोक-टोक भ्रमण कर सकें । वि० जिसने पार किया हो; जो किसी परीक्षामें सफल हो चुका हो, उत्तीर्ण; स्वीकृत, मंजूर । **–पोर्ट**–पु० विदेश जानेके लिए सरकारी अनुमतिपत्र, राहदारीका परवाना । **–बुक**–स्त्री० बंकसे मिलनेवाली वह किताब जिसमें रुपया जमा करने आदिका हिसाब रहता है ।

पासनी*–स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन ।

पासा–पु० चौसरके खेलमें फेंका जानेवाला वह चौपहला लंबोतरा हड्डीका या लकड़ीका बना टुकड़ा जिसपर बिंदियाँ बनी होती हैं; पासोंसे खेला जानेवाला खेल, चौसर; गुल्ली; सुनारोंके कामका पीतल या काँसेका चौकोर लंबा ठप्पा जिसपर गोल गड्ढे बने होते हैं । **–सार**–पु० पासेकी गोटी; पासेका खेल । **मु० (किसीका)–पड़ना**–पासेका इस रूपमें गिरना जिससे किसीकी जीत हो; विरोधीको हरानेवाला दाँव पड़ना; भाग्य खुलना । **–पलटना**–चौसरमें जीत या हारका दाँव पड़ना; अच्छे या बुरे दिन आना, भाग्यका अनुकूल या प्रतिकूल होना । **–फेंकना**–भाग्यकी परीक्षा करना, किस्मतकी आजमाइश करना ।

पासि*–पु० फंदा, बंधन ।

पासिक*–पु० फंदा; जाल ।

पासिका*–स्त्री० फंदा, बंधन; जाल ।

पासी–पु० बहेलिया; एक अस्पृश्य जाति जिसका पेशा सूअर पालना या ताड़ी उतारना है ।

पासुरी*–स्त्री० पसली ।

पाहँ*–अ० पास, समीप; प्रति, से ।

पाहत, पाहात–पु० [सं०] ब्रह्मदारु, शहतूतका पेड़ ।

पाहन*–पु० पत्थर ।

पाहरू*–पु० पहरू, पहरेदार ।

पाहिँ*–अ० पास, समीप; प्रति, से ।

पाहि–(क्रियापद) [सं०] रक्षा करो; बचाओ । **–पाहि**–रक्षा करो-रक्षा करो; बचाओ-बचाओ ।

पाहीं*–अ० दे० 'पाहिँ' ।

पाही–स्त्री० बस्तीसे दूरका या दूसरे गाँवका स्थान । **–काश्त**–पु० दूसरे गाँवमें खेती करनेवाला असामी । **–खेती**–स्त्री० वह खेती जो दूरवर्ती स्थान या अन्य गाँवमें हो ।

पाहुँच*–स्त्री० दे० 'पहुँच' ।

पाहुन†, पाहुना–पु० अतिथि, मेहमान; दामाद । कुछ ही समय बाद चला जाने, चल बसनेवाला ।

पाहुनी–स्त्री० स्त्री अतिथि; उपपत्नी; अतिथि-सत्कार ।

पिंग–वि० [सं०] ललाई लिये भूरा, दीपशिखाके रंगका । पु० ललाई लिये भूरा रंग, पिंग वर्ण; हरताल । **–स्फटिक**–पु० गोमेद ।

पिंगल–वि० [सं०] पिंग वर्णका, ललाई लिये भूरे रंगका । पु० पिंग वर्ण, ललाई लिये भूरा रंग; *एक पक्षी, पपीहा,–'पिंगल ह्वै पिउ पिउ करै ताको काल न खाय'–साखी ।

पिंगला–स्त्री० [सं०] शरीरके दक्षिण भागकी एक प्रसिद्ध नाड़ी; एक पक्षी; लक्ष्मी; एक वेश्या जो अपनी धर्मनिष्ठाके लिए प्रसिद्ध थी ।

पिंगलाक्ष–पु० [सं०] शिव ।

पिँजड़ा–पु० दे० 'पिँजरा' ।

पिंजन–पु० [सं०] रुई धुननेकी क्रिया; धुनकी ।

पिंजर–वि० [सं०] ललाई लिए पीले रंगका; पीला । पु० ललाई लिये पीला रंग; सोना; पिंजरा; ठठरी, कंकाल ।

पिँजरा–पु० लोहे, बाँस आदिकी तीलियोंका बना हुआ एक प्रकारका झावा जिसमें पालतू पक्षी या पशु रखे जाते हैं; बहुत सँकरी जगह; सँकरा घर या कमरा (ला०) । **–पोल**–पु० गोशाला ।

पिंजरिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] ललाई लिये भूरा या पीला रंग ।

पिंजल–वि० [सं०] व्याकुल, बहुत घबराया हुआ; आतंकित । पु० हरताल; कुशका पत्ता, कुशपत्र ।

पिंड–पु० [सं०] गोलक; गोला; किसी द्रव्यका ठोस गोला (जैसे मृत्पिंड, अयःपिंड); ढेला; ग्रास; पके हुए चावल, पायस आदिका गोला जिसे श्राद्धमें पितरोंको अर्पित करते हैं; देह; भिक्षा; राशि, समूह; कोई गोली और ठोस वस्तु; राशि, धन (अंकगणित) । **–खर्जूर**–पु०, **–खर्जूरिका, –खर्जूरी**–स्त्री० छोहाड़ा; छोहाड़ेका पेड़ । **–ज**–पु० पिंडके रूपमें पैदा होनेवाला जीव, जरायुज । **–दान**–पु० पितरोंके निमित्त पिंडा पारनेका काम, पिंड देनेका काम । **–राशि**–स्त्री० (लंप सम) किस्तके रूपमें नहीं, वरन् एक ही बारमें पूरीकी पूरी दी जानेवाली रकम । **–लेप**–पु० पिंडेका वह अंश जो पिंडदान करते समय हाथमें सटा रह जाता है । मु० **–छूटना**–छुटकारा मिलना ।

पिँडरी*–स्त्री० दे० पिँडली' ।

पिँडली–स्त्री० टाँगका पीछेकी ओरका मांसल भाग ।

पिँडवाही*–स्त्री० एक तरहका कपड़ा ।

पिंडा–पु० गोला; ठोस या गीले पदार्थका गोला; पके हुए चावल या पायसका वह हाथसे गढ़ा हुआ गोला जिसे पितरोंको श्राद्धमें अर्पित करते हैं; शरीर । **–पानी**–पु० श्राद्ध और तर्पण । मु० **–पानी देना**–श्राद्ध और तर्पण करना ।

पिंडाकार–वि० [सं०] गोल ।

पिंडारी–पु० दक्षिणमें रहनेवाली एक मुसलमान जाति ।

पिंडाश, पिंडाशी(शिन्)–पु० [सं०] भिक्षुक ।

पिंडि, पिंडी–स्त्री० [सं०] गोलक; गोला; पहियेके बीचोबीच वह बेलनके आकारका पोला अवयव जिसमें धुरी पहनायी जाती है, चक्रनाभि, चक्रमध्य; पिंडली; कद्दू; छोहारा; घर, मकान; पीठ, पीढ़ा; वह पीठिका जिसपर देव-मूर्तिकी स्थापना की जाती है ।

पिंडिका–स्त्री० [सं०] दे० 'पिंडि'; गोलाकार शोथ, गिल्टी ।

पिंडित–वि० [सं०] जिसे पिंडका रूप दिया गया हो, पिंडाकार बनाया हुआ; जो लपेटकर पिंडाकार बनाया गया हो; गिना हुआ, गणित; मिश्रित ।

पिंडितार्थ–पु० [सं०] सारांश, मथितार्थ ।

पिंडी(डिन्)–वि० [सं०] पिंडेका भागी, पिंडा प्राप्त करनेवाला (पितर); शरीरधारी । पु० भिक्षुक; पिंडदान करनेवाला ।

पिंडीकरण–पु० [सं०] पिंडाकार बनाना ।

पिंडुरी, पिंडुली*–स्त्री० दे० 'पिँडली' ।

पिंडूक–पु० पंडुक; उल्लू ।

पिअ*–पु० दे० 'प्रिय' । वि० प्यारा; सुंदर ।

पिअर†–वि० पीला ।

पिअरवा†–पु० पति, स्वामी । वि० प्यारा ।

पिअराई*–स्त्री० पीलापन ।

पिअरी†–स्त्री० हल्दी या पीले रंगमें रँगी हुई धोती; पीलिया रोग । * वि० स्त्री० पीली ।

पिउ*–पु० प्रियतम, कांत ।

पिउनी†–स्त्री० पूनी ।

पिक–पु० [सं०] कोकिल, कोयल । **–बंधु**–पु० आमका पेड़ । **–बांधव**–पु० वसंत ऋतु ।

पिकांग–पु० [सं०] चातक ।

पिघरना†–अ० क्रि० 'पिघलना' ।

पिघलना–अ० क्रि० तापसे द्रवीभूत होना; दयासे आर्द्र होना, पसीजना ।

पिघलाना–स० क्रि० गरमी पहुँचाकर किसी ठोस पदार्थको तरल बनाना; दयासे आर्द्र करना ।

पिचकना–अ० क्रि० फूले या उभरे हुए तलका भीतरकी ओर दबना; फुलाव या उभारसे रहित होना, बैठ जाना ।

पिचकाना–स० क्रि० फूले या उभरे हुए तलको नीचा करना ।

पिचकारी–स्त्री० एक प्रसिद्ध पोला यंत्र जिसके निचले सिरेपर एक या अनेक छोटे छेद होते हैं और जिसके द्वारा पानी या अन्य किसी तरल पदार्थको खींचकर बाहर फेंकते हैं । मु० **–छूटना**–किसी तरल पदार्थका किसी स्थानसे पिचकारी द्वारा फेंके जानेवाले जलकी तरह बाहर निकलना । **–छोड़ना**–किसी द्रव पदार्थको पिचकारीमें भरे पानीकी तरह बाहर निकालना ।

पिचकी*–स्त्री० पिचकारी ।

पिचपिचा–वि० चिपचिपा; गुलगुल ।

पिचपिचाना–अ० क्रि० घाव आदिमेंसे पंछा निकलना, घाव आदिका आर्द्र होना ।

पिचपिचाहट–स्त्री० पिचपिचानेका भाव ।

पिचलना†–स०क्रि० 'कुचलना' । अ०क्रि० कुचल जाना ।

पिचास*–पु० दे० 'पिशाच'–'हरि बिच डारै अंतरा माया बड़ी पिचास'–साखी ।

पिचुक्का, पिचूका†–पु० पिचकारी; गोलगप्पा ।

पिचोतरसौ–वि० सौसे पाँच अधिक, १०५ ।

पिच्छल–वि०[सं०] फिसलानेवाला, चिकना; † पिछला ।

पिच्छिल–वि० [सं०] फिसलनवाला, चिकना; पूँछवाला ।

पिछ–पु० 'पीछा'का लघुरूप (समासमें) । **–लगा**–पु० पीछे-पीछे चलनेवाला; अनुगमन करनेवाला, अनुयायी; आश्रयमें रहनेवाला; सेवक । **–लगी**–स्त्री० पिछलगा होनेका भाव; अनुगमन । **–लगू, –लग्गू**†–पु० दे० 'पिछलगा' । **–लत्ती**–स्त्री० घोड़े, गधे आदिका पीछेकी ओर लात मारना । **–वाई**–स्त्री० पीछेकी ओर लगाया जानेवाला परदा । **–वाड़ा, –वारा**–पु० मकानका पिछला भाग, घरके पीछेकी जमीन ।

पिछड़ना–अ० क्रि० पीछे रह जाना, बराबरीमें या आगे न रहना ।

पिछलना†–अ० क्रि० पीछे हटना या मुड़ना (क्व०) ।

पिछला–वि॰ पीछेकी ओर पड़नेवाला, जो पीछेकी ओर हो, 'अगला'का उलटा; जो क्रममें किसीके पीछे पड़े या हो; जिसके आगे और कोई हो; जो अंतमें हो या पड़े; बादका, परवर्ती; बीता हुआ, व्यतीत; पुराना; जो किसी वस्तुके अंतिम भागसे संबद्ध हो; अंतिम भागका; ठीक पीछेका।

पिछाड़ी–स्त्री॰ पृष्ठभाग, पीछेका भाग; घोड़ेके पिछले पैरोंको खूँटेसे बाँधनेकी रस्सी।

पिछान†–स्त्री॰ दे॰ 'पहचान'।

पिछानना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'पहचानना'।

पिछारी†–स्त्री॰ दे॰ 'पिछाड़ी'।

पिछेलना–स॰ क्रि॰ (धक्का देकर) पीछे कर देना।

पिछौँहैँ*–अ॰ पीछेकी ओर; पीछेकी ओरसे।

पिछौरा*–पु॰ दुपट्टा, उत्तरीय।

पिछौरी*–स्त्री॰ स्त्रियोंकी ओढ़नी; ऊपरसे ओढ़ा जानेवाला कोई वस्त्र, ओढ़नी।

पिटंत–स्त्री॰ पीटनेकी क्रिया, मार, पिटाई।

पिटक–पु॰ [सं॰] पिटारा; फुड़िया; वस्त्र, आभूषण आदि रखनेकी पिटारी, झाँपी; विशेष प्रकारकी रचनाओंका संग्रह (सुत्तपिटक, विनयपिटक)।

पिटका–स्त्री॰ [सं॰] फुड़िया; पिटारी।

पिटना–अ॰ क्रि॰ पीटा जाना; मार खाना; बजाया जाना; बजना। † पु॰ पीटनेका औजार, थापी।

पिटवाना–स॰ क्रि॰ किसीके पीटे जानेका कारण होना; किसीको पीटनेमें प्रवृत्त करना।

पिटाई–स्त्री॰ पीटनेकी क्रिया; पीटनेकी उजरत।

पिटारा–पु॰ बाँस, बेंत आदिकी तीलियोंसे बना हुआ डिब्बेकी शकलका पात्र।

पिटारी–स्त्री॰ छोटा पिटारा; पानदान। **–का ख़र्च**–स्त्रियोंका पानदानका खर्च, जेबखर्च; किसी स्त्रीकी व्यभिचारकी कमाई।

पिट्टस–स्त्री॰ शोक-विह्वल होकर छाती पीटना।

पिट्टू–वि॰ जिसपर प्रायः मार पड़े।

पिट्ठू–पु॰ पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुगामी (निंदा); सहायक, समर्थक; खुशामदी; साथ-साथ खेलनेवाला, खेलका साथी; किसी खिलाड़ीका वह कल्पित साथी जिसके स्थानपर वह अपनी बारी समाप्त कर फिर खुद ही खेलता है।

पिठौरी–स्त्री॰ पीठीसे तैयार की हुई पकौड़ी आदि।

पिडक–पु॰, **पिडका**–स्त्री॰ [सं॰] फुड़िया, फुंसी।

पिड़किया–स्त्री॰ गुझिया नामक पकवान।

पितंबर†–पु॰ दे॰ 'पीतांबर'।

पितपापड़ा–पु॰ एक क्षुप जो दवाके काम आता है।

पितर–पु॰ मृत पूर्वज; प्रेतत्वसे छूटे हुए पूर्वज जिन्हें पिंडापानी दिया जाता है। **–पति**–पु॰ यमराज।

पितराइँध, पितराई†–स्त्री॰ वह कसाव जो पीतलके बरतनमें खटाई रख देनेसे या अधिक देरतक भोज्यवस्तु रख देनेसे उसमें उत्पन्न हो जाता है।

पिता(तृ)–पु॰ [सं॰] किसीके संबंधमें वह व्यक्ति जिसके वीर्यसे उसकी उत्पत्ति हुई हो, जनक, बाप; दे॰ 'पितृ'। **–पुत्र**–पु॰ पिता और पुत्र, बाप और बेटा।

पितामह–पु॰ [सं॰] दादा; ब्रह्मा; पितर।

पितामही–स्त्री॰ [सं॰] दादी।

पितिया†–पु॰ चाचा। **–ससुर**†–पु॰ चचिया ससुर। **–सास**†–स्त्री॰ चचिया सास।

पितियानी†–स्त्री॰ चाची।

पितु*–पु॰ पिता। **–मातु***–पु॰ पिता और माता।

पितृ–पु॰ [सं॰] दे॰ 'पिता'; मरे हुए पुरखे; प्रेतत्वसे मुक्त पूर्वज। **–ऋण**–पु॰ एक प्रकारका शास्त्रोक्त ऋण जिससे मनुष्य पुत्र उत्पन्न करनेपर मुक्त होता है। **–कर्म(न्), –कार्य, –कृत्य**–पु॰ श्राद्ध, तर्पण आदि जो पितरोंके निमित्त किये जाते हैं। **–कल्प**–पु॰ श्राद्धादिक कृत्य। वि॰ जो पिताके समान हो, पितृतुल्य। **–कुल**–पु॰ पिताके वंशके लोग। **–क्रिया**–स्त्री॰ दे॰ 'पितृकर्म'। **–गृह**–पु॰ मायका, नैहर; श्मशान। **–घात**–पु॰ पिताकी हत्या करना। **–घातिक, –घाती (तिन्)**–पु॰ पिताका वध करनेवाला। **–तंत्र**–पु॰ (पैट्रिआर्की) समाजकी वह प्राचीन व्यवस्था जिसमें घरका कोई बड़ा-बूढ़ा आदमी या गृह-स्वामी ही समस्त परिवारका प्रबंधक होता था और उसीके अनुशासनमें वंश या परिवारकी विभिन्न शाखाओं, उपशाखाओंके सदस्योंको रहना पड़ता था। **–तर्पण**–पु॰ पितरोंके निमित्त किया जानेवाला तर्पण; अँगूठे और तर्जनीके बीचका स्थान जिसके द्वारा तर्पण समर्पित करनेका विधान है; तिल; श्राद्धके समय दान की जानेवाली वस्तुएँ। **–तिथि**–स्त्री॰ अमावस्या। **–दाय, –द्रव्य**–पु॰ पितासे प्राप्त संपत्ति, मौरूसी जायदाद। **–नाथ, –पति**–पु॰ यमराज। **–पक्ष**–पु॰ आश्विनका कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है; पिताका कुल, पितृकुल; पितृकुलका मनुष्य; पिता, पितामह और प्रपितामह। **–प्राप्त**–वि॰ पितासे मिला हुआ। **–बंधु**–पु॰ वह जिससे पिताके संबंधसे रिश्ता हो (जैसे पिताके मामाका पुत्र)। **–भक्त**–पु॰ पिताका भक्त, पिताकी यथोचित सेवा करनेवाला। **–भक्ति**–स्त्री॰ पिताके प्रति आदर और यथोचित सेवाका भाव। **–भोजन**–पु॰ पितरोंका भोजन; पितरोंका भोज्य पदार्थ, उड़द। **–लोक**–पु॰ वह लोक जिसमें पितर निवास करते हैं, पितरोंका लोक। **–वंश**–पु॰ पिताका कुल। **–वन, –सद्म(न्)**–पु॰ श्मशान। **–विसर्जन**–पु॰ आश्विन कृष्ण अमावास्याके दिन पितरोंकी 'बिदाई'का कृत्य। **–वेश्म(न्)**–पु॰ पिताका घर, मायका। **–श्राद्ध**–पु॰ पितरोंके निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध। **–सत्तात्मक**–वि॰ (पैट्रिआर्कल) (वह प्रथा या पद्धति) जिसमें पिता या गृह-स्वामीकी ही सत्ता सर्वोपरि मानी जाती रही हो। **–स्थान, –स्थानीय**–पु॰ वह जो पिताके स्थानपर हो, अभिभावक, संरक्षक। **–हा (हन्)**–पु॰ पिताकी हत्या करनेवाला।

पितृव्य–पु॰ [सं॰] चाचा।

पित्त–पु॰ [सं॰] शरीरके तीन प्रसिद्ध दोषोंमेंसे एक (यह नीलापन लिये पीले रंगका और कड़वा होता है)। **–कर**–वि॰ जो पित्त उत्पन्न करे, बढ़ाये। **–कोष**–पु॰ पित्तकी थैली, पित्ताशय। **–क्षोभ**–पु॰ पित्तका प्रकोप। **–ज–**

वि० पित्तके प्रकोपसे होनेवाला। **–ज्वर,–दाह**–पु० पित्तके प्रकोपसे होनेवाला ज्वर। **–द्रावी (विन्)**–वि० पित्तको पिघलानेवाला। पु० मीठा नीबू। **–नाडी**–स्त्री० एक तरहका नाड़ी-व्रण। **–नाशक**–वि० पित्तका नाश या शमन करनेवाला। **–पांडु**–पु० पित्तविकारसे उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें नेत्र आदि पीले हो जाते हैं। **–पापड़ा**–पु० [हिं०] पितपापड़ा। **–प्रकोप**–पु० पित्तका बढ़ जाना या कुपित हो जाना। **–भेषज**–पु० मसूरकी दाल। **–रक्त**–पु० 'रक्तपित्त' नामक रोग। **–विसर्प**–पु० विसर्प रोगका एक भेद। **–व्याधि**–स्त्री० पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न रोग। **–शमन,–हर**–वि० पित्तके प्रकोपको दूर करनेवाला। **–शूल**–पु० पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न होनेवाला शूल रोग। **–शोथ**–पु० पित्तज शोथ। **–संशयन**–पु० चंदन, लालचंदन, नेत्रबला आदि पित्त-नाशक औषधियोंका समूह। **–स्थान**–पु० दे० 'पित्त-कोप'। **–हा (हन्)**–वि० पित्तको मारनेवाला। मु० **–उबलना या खौलना**–बहुत अधिक क्रोध आना। **(किसीका)–गरम होना**–क्रोधी स्वभाव होना।

पित्तल–वि० [सं०] जिसमें पित्तकी अधिकता हो, पित्त-बहुल। पु० पीतल; भोजपत्र; हरताल।

पित्ता–पु० पित्ताशय; साहस; स्तवा। **–मार**–वि० नीरस और दुष्कर (काम)। मु०–**उबलना या खौलना**–बहुत क्रोध आना। **–पानी करना**–घोर परिश्रम करना। **–मरना**–क्रोधशीलता दूर होना; क्रोध जाता रहना। **–मारना**–क्रोधका शमन करना, क्रोधके वेगको रोकना; जीको ऊबने न देना।

पित्तातिसार–पु० [सं०] पित्तके प्रकोपसे होनेवाला अतिसार।

पित्तारि–पु० [सं०] पितपापड़ा।

पित्ताशय–पु० [सं०] पित्तकी थैली, पित्तकोष।

पित्ती–स्त्री० पित्तकी अधिकता या रक्तके अधिक उष्ण होनेसे उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें शरीरपर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं। † पु० चाचा, काका।

पिथौरा–पु० दिल्लीके अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज।

पिदारा*–पु० पिद्दीका नर।

पिद्दा–पु० पिद्दीका नर; गुलेलेकी डोरीमें निवाड़ आदिकी वह गद्दी जिसपर रखकर गोली चलायी जाती है।

पिद्दी–स्त्री० बयाकी जातिकी एक छोटी चिड़िया; अति तुच्छ प्राणी।

पिधान–पु० किवाड़; [सं०] ढकने या आच्छादित करनेकी क्रिया; अपवारण; आवरण; ढकना, ढक्कन; म्यान।

पिधानक–पु० [सं०] कोष, म्यान; ढक्कन।

पिधायक, पिधायी (यिन्)–वि० [सं०] ढकने, छिपानेवाला।

पिनकना–अ० क्रि० अफीमके नशेमें आगेकी ओर झुक-झुक पड़ना, पीनक लेना; नीदके मारे आगेकी ओर झुक-झुक जाना, ऊँघना।

पिनकी–पु० पीनक लेनेवाला, अफीमची।

पिनपिनहाँ†–वि० 'पिन-पिन' करनेवाला, जो सदा पिनपिनाया करे।

पिनपिनाना†–अ० क्रि० 'पिन-पिन' शब्द करना; बच्चेका नकियाकर और अस्पष्ट स्वरमें रुक-रुककर रोना।

पिनाक–पु० [सं०] शिवका धनुष्, अजगव; धनुष्; त्रिशूल। **–गोप्ता (प्तृ),–धृत्,–पाणि**–पु० शिव।

पिनाकी (किन्)–पु० [सं०] शिव।

पिन्ना†–वि० जो बराबर रोया करे, रोनेवाला। पु० धुनकी।

पिन्हाना†–स० क्रि० 'पहनाना'। अ० क्रि० दे० 'पेन्हाना'।

पिपरमिंट–पु० [अं०] पुदीनेकी जातिका एक विदेशी पौधा जो प्रायः दवाके काम आता है; इसका सत।

पिपरामूल–पु० पीपलकी जड़; पिप्पलीमूल।

पिपास*–स्त्री० पिपासा, प्यास।

पिपासा–स्त्री० [सं०] पीनेकी इच्छा; प्यास, तृषा; लालच।

पिपासित–वि० [सं०] जिसे प्यास लगी हो, प्यासा।

पिपासु–वि० [सं०] पीनेकी इच्छा रखनेवाला, प्यासा।

पिपीलिका–स्त्री० [सं०] चींटी।

पिप्पल–पु० [सं०] पीपलका पेड़; बंधन-रहित रखा हुआ पक्षी; पक्षी; आस्तीन; चूचुक, चूची; पीपलका गोदा।

पिप्पली–स्त्री० [सं०] पीपल नामकी ओषधि। **–मूल**–पु० पीपरकी जड़, पिपरामूल।

पिय*–पु० प्रियतम, कांत, पति।

पियर*–वि० पीला।

पियरई, पियराई*–स्त्री० पीलापन।

पियरवा†–पु० प्रियतम, कांत।

पियराना*–अ० क्रि० पीला होना, पीला पड़ना।

पियरी*–वि० स्त्री० पीली। स्त्री० पीली धोती; पीलापन।

पियल्ला*–पु० दुधमुँहाँ बच्चा।

पिया*–पु० दे० 'पिय'।

पियारा*–वि० प्यारा।

पियास*–स्त्री० प्यास।

पियासी*–स्त्री० एक मछली।

पियूख, पियूष–पु० दे० 'पीयूष'।

पिरकी†–स्त्री० फुड़िया, फुंसी।

पिरथी†–स्त्री० दे० 'पृथ्वी'। **–नाथ†**–पु० दे० 'पृथ्वीनाथ'।

पिराई*–स्त्री० पीलापन, जर्दी।

पिराक–स्त्री० गोझिया जैसा एक पकवान।

पिराना*–अ० क्रि० दर्द करना; दर्दका अनुभव करना; किसीके दुःखसे दुःखी होना।

पिरारा*–पु० डाकू, लुटेरा।

पिरीतम*–पु० प्रियतम।

पिरीता*–वि० प्यारा।

पिरीति*–स्त्री० प्रीति।

पिरोज़ा–पु० हरापन लिये नीले रंगका एक बहुमूल्य पत्थर, फीरोजा।

पिरोना–स० क्रि० सुईके छेदमें धागा डालना; किसी बारीक छेदमें कोई चीज डालना; डोरेमें मनका आदि पहनाना।

पिरोहना*–स० क्रि० दे० 'पिरोना'।

पिलकना–स० क्रि० गिराना; ढकेलना। अ० क्रि० चिढ़ना; चिढ़कर भागना।

पिलकिया*−स्त्री० एक पीलीसी छोटी चिड़िया।

पिलना−अ० क्रि० किसी ओर वेगसे प्रवृत्त होना; घुस पड़ना; झुक पड़ना; तत्पर होना; जी-जानसे लग जाना (किसी काममें); * किसी ओर वेगसे झपटना; पेरा जाना।

पिलपिल†−वि० दे० 'पिलपिला'।

पिलपिला−वि० बहुत नरम, पिचपिचा।

पिलपिलाना−स० क्रि० चारों ओरसे इस प्रकार दबाना कि पिलपिला हो जाय और भीतरका रस या गूदा बाहर निकल पड़े।

पिलपिलाहट−स्त्री० पिलपिला होनेका भाव।

पिलवाना−स० क्रि० किसीको पिलानेमें प्रवृत्त करना, पिलानेका काम कराना; पेलने या पेरनेका कार्य कराना।

पिलाना−स० क्रि० पीनेमें प्रवृत्त करना; पान कराना; पीनेको देना; किसी तरल पदार्थको किसी छेदमें डालना; भीतर भरना। (**कोई बात पिलाना−**दिलमें बैठाना।)

पिल्ला−पु० कुत्तेका नर बच्चा; † कुत्ता।

पिल्लू−पु० एक प्रकारका सफेद लंबा कीड़ा, ढोला।

पिव*−पु० प्रियतम, कांत।

पिवाना†−स० क्रि० दे० 'पिलाना'।

पिशाच−पु० [सं०] एक निम्न देवयोनि; प्रेत; दुष्ट मनुष्य (ला०)। **−घ्न−**वि० पिशाचोंका नाश करनेवाला। पु० पीली सरसों (इसका उपयोग प्रायः ओझा करते हैं)। **−पति−**पु० शिव। **−बाधा−**स्त्री० पिशाच द्वारा आविष्ट होना। **−भाषा−**स्त्री० पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग संस्कृतके नाटकोंमें मिलता है।

पिशित−पु० [सं०] कच्चा मांस; छोटा टुकड़ा।

पिशिताश, पिशिताशन−पु० [सं०] राक्षस; नरभक्षक; भेड़िया।

पिशुन−पु० [सं०] चुगली खानेवाला, चुगलखोर। वि० नीच; चुगलखोर; छली; मूर्ख।

पिष्ट−वि० [सं०] पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ; निचोड़ा हुआ; गुँथा हुआ। **−पेषण−**पु० पिसे हुएको पीसना; निरर्थक कार्य करना; एक ही बातको बार-बार कहना; निरर्थक श्रम।

पिसनहारी−स्त्री० आटा पीसनेवाली।

पिसना−अ० क्रि० पीसा जाना, चूर्ण किया जाना; दबकर चिपटा हो जाना; बहुत अधिक कष्ट पाना; घोर परिश्रम करना; घोर परिश्रमसे थककर चूर होना ('जाना' के साथ)।

पिसवाज−स्त्री० दे० 'पेशवाज'।

पिसवाना−स० क्रि० पीसनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे पीसनेका काम कराना।

पिसाई−स्त्री० पीसनेकी क्रिया या भाव; आटा पीसनेका पेशा; पीसनेकी उजरत; घोर परिश्रम।

पिसाच*−पु० दे० 'पिशाच'।

पिसान†−पु० आटा।

पिसाना−स० क्रि० पीसनेका काम दूसरेसे कराना। † अ० क्रि० पिसना।

पिसी, पिस्सी†−स्त्री० सफेद गेहूँ।

पिसुन*−पु० पिशुन, चुगलखोर।

पिसौनी−स्त्री० पीसनेका काम; आटा पीसनेका पेशा; पीसनेकी उजरत; घोर परिश्रम।

पिस्तई−वि० पिस्तेके रंगका।

पिस्ता−पु० एक प्रसिद्ध मेवा; इसका पेड़।

पिस्तौल−स्त्री० बंदूककी तरह गोली दागनेका एक छोटा हथियार।

पिस्सू−पु० मच्छड़ जैसा उड़ने और काटनेवाला एक छोटा कीड़ा।

पिहकना−अ० क्रि० कोयल, पपीहे आदि मीठे गलेवाले पक्षियोंका बोलना।

पिहान†−पु० पिधान, ढकना, ढक्कन।

पिहानी*−स्त्री० ढक्कन; छिपानेवाली बात।

पिहित−वि० [सं०] ढका हुआ, आच्छादित, आवृत। पु० एक अर्थालंकार जहाँ किसीके मनका भाव जानकर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रदर्शित किये जानेका वर्णन हो।

पींजना−स० क्रि० (रुई) धुनना।

पींजर*−पु० पिँजरा; अस्थिपंजर।

पींजरा*−पु० दे० 'पिँजरा'।

पींड*−पु० शरीर; पेड़का तना; पिंडखजूर।

पींडी−स्त्री० दे० 'पिंडी'।

पींडुरी*−स्त्री० दे० 'पिंडुली'।

पी−पु०* प्रियतम; कांत। स्त्री० पपीहेकी बोली। **−कहाँ−**पु० पपीहेकी बोली। **−खग−**पु० पी-पी करनेवाला पक्षी, पपीहा।

पीक−स्त्री० पानका थूक। **−दान−**पु० पानकी पीक थूकनेका विशेष पात्र, उगालदान।

पीकना−*अ० क्रि० पपीहे या कोयलका बोलना, पिहकना; † अंकुर निकलना।

पीका*−पु० नया, कोमल पत्ता। **मु०−फूटना−**पल्लव निकलना, पल्लवित होना।

पीच−स्त्री० माँड़; † दे० 'पीक'।

पीछा−पु० किसी वस्तु या व्यक्तिका पिछला भाग, आगाका उलटा; किसी घटनाके बादका समय; पीछे लगा रहना, पिछलगी। **मु०−करना−**किसीको पकड़ने, भगाने या मारनेके लिए उसके पीछे-पीछे जाना, खदेड़ना। **−छुड़ाना−**किसी अप्रिय व्यक्ति या वस्तुसे पिंड छुड़ाना। **−छूटना−**किसी अप्रिय व्यक्ति या वस्तुसे छुटकारा मिलना। **−छोड़ना−**पीछा करनेके कार्यसे विरत होना, किसीके पीछे लगे रहनेका कार्य बंद करना; किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना बंद करना। **−दिखाना−**भाग खड़ा होना। **−देना−**साथ छोड़ देना। **−पकड़ना−**किसी आशासे किसीका साथ करना।

पीछू*−अ० दे० 'पीछे'।

पीछे−अ० पीठकी ओर, पृष्ठ देशमें, आगेका उलटा; देश-कालके अनुसार किसीके पश्चात्, अनंतर, बाद; अंतमें, बादमें; इस लोकसे विदा होनेपर, मर जानेपर; लिए, वास्ते, खातिर; वजहसे, बदौलत। **मु० (किसीके)−चलना−**किसी बातमें किसीका अनुगमन करना या अनुयायी होना। **(किसीके)−छूटना−**किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीके लिए

नियुक्त किया जाना; किसीको पकड़नेके लिए तैनात किया जाना। **–छूटना**–पिछड़ जाना (जानेके साथ)। (**किसीके**)**–छोड़ना**–किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीपर नियुक्त करना; किसीको पकड़नेके लिए नियुक्त करना। (**किसीके**)**–पड़ना**–किसी वस्तुको मिटा देनेके लिए तुल जाना; किसी व्यक्तिको हैरान करने या उसे हानि पहुँचानेके लिए निरंतर यत्न करना। **–लगना**–किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीका आश्रय लेना; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना; किसी अप्रिय या हानिकर वस्तुका पीछा न छोड़ना।

पीटना–स० क्रि० किसी वस्तुपर आघात करना, चोट पहुँचाना; किसी प्राणीपर हाथ, डंडे आदिसे आघात करना, मारना; किसी वस्तुपर डंडे आदिसे लगातार आघात करना; सोने-चाँदी आदिके टुकड़ेको बढ़ाने या फैलानेके लिए उसपर हथौड़े आदिसे आघात करना; किसी तरह समाप्त करना, जैसे-तैसे पूरा करना; जैसे-तैसे कमा लेना, किसी भी तरह उपार्जित करना। पु० रोना, धोना, पिट्टस; विपत्ति, भारी संकट।

पीठ–पु० [सं०] लकड़ी, पत्थर या धातुका आसन–पीढ़ा, चौकी आदि; व्रतियोंके बैठनेका आसन (जैसे–कुशासन); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाकी स्थापना हो, सिंहासन; मूर्त्ति आदिका आधार; उन प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे कोई एक जो विष्णुके चक्रसे कटे हुए सतीके शवके अंगोंके गिरनेके कारण सिद्धिदायक माने जाते हैं; बैठनेका एक ढंग; एक प्रकारका आसन; (चेयर) सभापति आदिका आसन; (सीट) न्यायाधीशका आसन (न्यायपीठ); (बेंच) विधानसभा आदिमें विभिन्न दलोंके बैठनेके लिए निर्धारित आसन या पंक्तियाँ (सरकारी पीठ, विरोधी पीठ–बहु०); (सेंटर) स्थान, केंद्रादि (विद्यापीठ); शांकरमठ (जैसे–शारदापीठ); **–गर्भ**, **–विवर**–पु० मूर्तिके आधारमेंका वह गड्ढा जिसमें वह जमायी जाती है। **–मर्दिका**–स्त्री० वह स्त्री जो नायकको रिझानेमें नायिकाकी सहायता करती है (सा०)। **–स्थविर**–पु० (रजिस्ट्रार) विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, गुरुकुल आदिका वह (वृद्ध) पदाधिकारी जो संस्थाके कागज-पत्र, छात्रों-संबंधी विवरण इत्यादि रखता और उनकी शिक्षा-दीक्षाका प्रबंध करता है; कुलसचिव।

पीठ–स्त्री० किसी प्राणीके शरीरका कमरसे लेकर गरदनतकका पीछेका भाग जिसके बीचोंबीच रीढ़ रहती है, पृष्ठ; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, पृष्ठ-भाग। **–पीछे**–अ० अनुपस्थितिमें, मौजूद न रहनेपर। **–का**, **–परका**–किसी सहोदरके पीछे जनमा हुआ। **–का कच्चा**–(वह घोड़ा) जो एक आसनसे सवारको देरतक न ले जा सके; (वह घोड़ा) जिसपर सवारी या लदाई करनेसे उसकी पीठ छिल जाय। **–का मोजा**–कुश्तीका एक दाँव। **–का सच्चा**–(वह घोड़ा) जो सवारी करनेपर अच्छी चाल चले और किसी तरहकी बदमाशी न करे। मु० **–चारपाईसे लगना**–बीमारका अशक्तताके कारण उठने-बैठनेमें असमर्थ हो जाना। **–ठोंकना**–कोई अच्छा काम करनेपर शाबाशी देना; प्रशंसा करके कोई कार्य करनेके लिए उत्तेजित करना, बढ़ावा देना। **–दिखाना**–भाग खड़ा होना। **–देना**–भाग खड़ा होना; साथ छोड़ देना; लेटना। **–पर हाथ फेरना**–बढ़ावा देना, शाबाशी देना। **–पर होना**–मददगार होना। **–फेरना**–दे० 'पीठ दिखाना'। (**किसीकी**)**–लगना**–कुश्तीमें चित किया जाना, पछाड़ा जाना। (**घोड़े, बैल आदिकी**)**–लगना**–पीठपर जख्म होना, पीठका क्षत होना। (**किसीकी**)**–लगाना**–कुश्तीमें चित कर देना, पछाड़ देना।

पीठा–पु० आटेकी लोईमें उर्द या चनेकी पीठी भरकर बनायी जानेवाली विशेष प्रकारकी भोज्य वस्तु; *पीढ़ा।

पीठासीन–वि० [सं०] (प्रिजाइडिंग) जो अध्यक्षके स्थानपर आसीन हो। मु० **–होना**–अध्यक्षता करना, अध्यक्षका स्थान ग्रहण करना।

पीठि*–स्त्री० पीठ।

पीठिका–स्त्री० [सं०] धातु, पत्थर या काठका विशेष प्रकारका आसन (जैसे पीढ़ा, चौकी); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाकी स्थापना की गयी हो, देवमूर्तिका आधार; मूर्ति, खंभे आदिका आधार; पुस्तिकाका विशिष्ट अंश या विभाग; पृष्ठभूमि; ('चेयर) किसी अध्यापकका पद या कार्य (वृत्ति)।

पीठी–स्त्री० पानीमें भिगोकर पिसी हुई उड़द या मूँगकी दाल जिससे पकौड़ी आदि बनाते हैं।

पीड़*–स्त्री० एक प्रकारका शिरोभूषण; पीड़ा।

पीडक–पु० [सं०] पीड़ा देनेवाला, पीड़ित करनेवाला; दबानेवाला, चाँपनेवाला; पेरनेवाला।

पीडन–पु० [सं०] दबाना, चाँपना; मलना; पीड़ा पहुँचाना, दुःख देना, सताना; पेरना; निचोड़ने या पेरनेका औजार; अनाजके डंठलसे अन्नको अलग करनेके लिए रौंदना या रौंदवाना; मीजना, मसलना; ग्रहण करना, हाथमें लेना, पकड़ना (जैसे–करपीड़न); पीप निकालनेके लिए फोड़ेको दबाना।

पीडनीय–वि० [सं०] पीड़नके योग्य; दबानेके काम आनेवाला। पु० बिना मंत्री और सेनाका राजा; शत्रुका एक भेद या प्रकार।

पीडा–स्त्री० [सं०] शारीरिक या मानसिक कष्ट, व्यथा; दर्द; बाधा; रोग। **–कर**–वि० दुःख देनेवाला, कष्ट पहुँचानेवाला।

पीडिका–स्त्री० [सं०] फुड़िया, फुंसी।

पीडित–वि० [सं०] जिसे पीड़ा पहुँचायी गयी हो, सताया हुआ; दबाया हुआ, चाँपा हुआ; ग्रसा हुआ, ग्रस्त; ध्वस्त; बँधा हुआ; मला हुआ, मसला हुआ; पेरा हुआ।

पीडुरी*–स्त्री० दे० 'पिँडली'।

पीढ़ा–पु० काठ, पत्थर या धातुका चौकी जैसा आसन।

पीढ़ी–स्त्री० किसी कुल, जाति या व्यक्तिके किसी वंशधरकी गणना और पदके अनुसार विशिष्ट स्थान; किसी पीढ़ीके अंतर्गत आनेवाले व्यक्तियोंका समुदाय।

पीत–वि० [सं०] पीला; पिया हुआ; जिसने पिया हो। पु० पीला रंग; पुखराज; हरताल; गंधक; चंपक। **–धातु***–स्त्री० गोपीचंदन। **–वासा**(**सस्**)–वि० पीले वस्त्रवाला। पु० कृष्ण।

पीतम*–पु० प्रियतम, कांत।

पीतल–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध उपधातु जो मुख्यतः ताँबे और जस्तेके योगसे तैयार की जाती है।

पीतांबर–पु० [सं०] पीला वस्त्र; विशेष प्रकारकी रेशमी धोती जिसे हिंदू पूजा-पाठ तथा संस्कार आदिके समय धारण करते हैं; कृष्ण; विष्णु। वि० पीले वस्त्रवाला।

पीतातंक–पु० [सं०] (येलो पेरिल) यह भय कि चीन, जापान आदि देशोंकी पीली जातियाँ अपनी शक्ति बढ़ाकर कहीं सारे संसारपर छा न जायँ।

पीताब्धि–पु० [सं०] अगस्त्य मुनि (जिन्होंने समुद्र-सोख लिया था)।

पीताभ–वि० [सं०] पीले रंगका।

पीतिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] पीलापन।

पीती*–स्त्री० दे० 'प्रीति'।

पीन–वि० [सं०] स्थूल, मोटा; परिपुष्ट; भारी; भरापूरा।

पीनक–स्त्री० पिनकनेकी क्रिया; अफीमके नशेसे ऊँघना।

पीनता–स्त्री०[सं०] स्थूलता, मोटाई; परिपुष्टता; भारीपन।

पीनस–स्त्री० फ़ीनस, पालकी। पु० [सं०] नाकका जुकाम जिसमें गंधग्रहणकी शक्ति नष्ट हो जाती है।

पीना–स० क्रि० किसी द्रव पदार्थको घूँट-घूँट करके पेटमें पहुँचाना, पान करना; किसी बातको सह लेना; (क्रोधको) भीतर ही भीतर दबा देना, प्रकट न होने देना; शराब पीना; गौरसे सुनना, ध्यानसे सुनना; हुक्के, सिगरेट आदिका धुआँ खींचना; सोखना, जज्ब करना।

पीप–स्त्री० घाव या फोड़ेका मवाद।

पीपर†–पु० दे० 'पीपल'। **–पर्न***–पु० पीपलका पत्ता; एक गहना।

पीपरामूल,पीपलामूल–पु०एक प्रसिद्ध ओषधि,पिप्पलीमूल।

पीपल–पु० बरगदकी जातिका एक पेड़ जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं, अश्वत्थ। स्त्री० एक प्रसिद्ध लता।

पीपा–पु० काठ या लोहेका ढोलके आकारका बना एक बड़ा पात्र जिसमें तेल आदि द्रव पदार्थ रखे या बंद करके बाहर भेजे जाते हैं।

पीब–स्त्री० दे० 'पीप'।

पीय*–पु० स्वामी, पति।

पीयर†–वि० पीला।

पीया*–पु० पति, स्वामी।

पीयूख–पु० दे० 'पीयूष'।

पीयूष–पु० [सं०] अमृत; दूध; गायका ब्यानेके बाद पहला या सात दिनतकका दूध। **–भानु**–पु० चंद्रमा।

पीर–स्त्री० पीड़ा, व्यथा, दुःख, दर्द; प्रसवपीड़ा (ठेठ); [फ़ा०] बूढ़ा आदमी, बुजुर्ग; महात्मा, सिद्ध; धर्मगुरु। वि० वृद्ध, बूढ़ा; चालाक, धूर्त्त। **–ज़ादा**–पु० पीर या धर्मगुरुका पुत्र।

पीरना*–स० क्रि० पेरना–'तेली ह्वै तन कोल्हू करिहौं पाप-पुन्नि दोउ पीरौं'–कबीर।

पीरा†–स्त्री० दे० 'पीड़ा'। वि० दे० 'पीला'।

पीरानी–स्त्री० [फ़ा०] पीरकी पत्नी।

पीरी–स्त्री० [फ़ा०] बुढ़ापा; चेला मूँड़नेका व्यवसाय; चालाकी, धूर्तता; इजारा, अधिकार; हुकूमत।

पीरोजा–पु० दे० 'फ़ीरोजा'।

पील–पु० कीड़ा; पीलूका पेड़; [फ़ा०] हाथी; शतरंजका एक मोहरा जो तिरछे चलता और तिरछे ही मारता है (ऊँट)। **–ख़ाना**–पु० हस्तिशाला। **–पाँव**–पु० [हिं०] एक प्रसिद्ध रोग जिससे प्रायः पाँवका घुटनेसे नीचेकी ओरका भाग सूज जाता है (अधिक सूजनेपर पाँव हाथीके पाँवकी तरह मोटा हो जाता है)। **–पा**–पु० दे० 'पीलपाँव'। **–पाया**–पु० थूनी, टेक। **–पाल***–पु० महावत, हाथीवान। **–बान**–पु० हाथी हाँकनेवाला, महावत, हाथीवान।**–वान**–पु० [हिं०] दे० 'पीलवान'।

पीलसोज*–पु० दीवट।

पीला–वि० हल्दीके रंगका, जर्द; तेज या आभासे रहित, निष्प्रभ, फीका। मु०**–पड़ना**–तेज या आभासे रहित होना। **(पीली) फटना**–पौ फटना।

पीलिमा*–स्त्री० पीलापन।

पीलिया–पु० पांडु रोग।

पीलु–पु० [सं०] एक वृक्ष, पीलू; हाथी; ताड़के वृक्षोंका समूह; फूल; बाण।

पीलू–पु० एक वृक्ष या उसका फल; एक राग; दे० 'पिल्लू'।

पीव–* पु० प्रियतम। † स्त्री० दे० 'पीब'।

पीवना*–स० क्रि० दे० 'पीना'।

पीवर–वि० [सं०] स्थूल, मोटा; भरा-पूरा।

पीसना–स० क्रि० रगड़कर या दबाव पहुँचाकर किसी कड़ी वस्तुको चूरेके रूपमें बदलना, चूर्ण करना; किसी वस्तुको जल या किसी अन्य तरल द्रव्यके योगसे रगड़कर बारीक बनाना; किसी सरस वस्तुको रगड़कर या दबाव पहुँचाकर बारीक बनाना; कुचल देना; तंग करना; दबाकर चिपटा कर देना; घोर परिश्रम करना; (दाँत) कटकटाना। पु० वह वस्तु जो किसीको पीसनेके लिए दी जाय।

पीहर–पु० मायका।

पुंख–पु० [सं०] बाणका पिछला भाग जिसपर कभी-कभी पर लगाये जाते थे; बाज पक्षी।

पुंखित–वि० [सं०] पंखयुक्त (बाण)।

पुंगफल–पु० सुपारी।

पुंगव–पु० [सं०] साँड़; बैल; (समासांतमें) किसी वर्ग या समुदायका श्रेष्ठ व्यक्ति (नरपुंगव)।

पुंगीफल–पु० सुपारी।

पुँछल्ला†–पु० दे० 'पुँछाला'।

पुँछार*–पु० मोर।

पुँछाला–पु० पुछल्ला, पूँछकी तरह लगी रहनेवाली वस्तु; पिछलगा।

पुंज–पु० [सं०] समूह; राशि, ढेर, अटाला।

पुंजि–स्त्री० [सं०] राशि, ढेर।

पुंजित–वि० [सं०] राशीकृत, ढेर लगाया हुआ।

पुंजी*–स्त्री० दे० 'पूँजी'।

पुंजोत्पादन–पु० [सं०] (मास प्रॉडक्शन) कारखाने आदिमें किसी वस्तुका बड़ी संख्यामें या बड़े पैमानेपर किया गया उत्पादन, समूहोत्पादन।

पुंडरीक–पु०[सं०] श्वेत कमल; कमल; श्वेत छत्र; अग्निकोणका दिग्गज; बाघ; अग्नि; तिलक; एक कोपकार।

–नयन,–लोचन–वि० कमल-नयन ।

पुंडरीकाक्ष–वि० [सं०] जिसकी आँखें कमलके समान हों । पु० विष्णु ।

पुंड्र–पु० [सं०] एक तरहकी ईख, पौंड़ा; कमल; श्वेत-कमल; एक दैत्य; एक प्राचीन देश ।

पुंलिंग–वि० [सं०] पुरुषवाचक (शब्द–व्या०) ।

पुंवत्, पुंसवत्–अ०, वि० [सं०] पुरुष जैसा ।

पुंश्चली, पुंश्चलू–स्त्री० [सं०] कुलटा, वेश्या ।

पुंश्चलीय–पु० [सं०] वेश्याका पुत्र ।

पुंश्चिह्न–पु० [सं०] शिश्न ।

पुंस*–पु० पुरुष ।

पुंसवन–पु० [सं०] द्विजातियोंका दूसरा संस्कार जो गर्भाधानके तीसरे मास होता है; दूध ।

पुंस्त्व–पु० [सं०] पुरुषभाव, पुरुषत्व; पुरुषकी कामशक्ति; पुंलिंगत्व (व्या०); शुक्र, वीर्य । **–दोष**–पु० नामर्दी ।

पुआ–पु० मैदे या आटेके मीठे घोलसे तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध पकवान ।

पुआल–पु० दे० 'पयाल' ।

पुकार–स्त्री० किसीका नाम लेकर बुलानेकी क्रिया या भाव; रक्षा या बचावके लिए किसीको आर्त्त स्वरसे बुलाना, टेर, दुहाई; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीके प्रति की गयी प्रार्थना, फरियाद; चिल्लाहट; आवाज; कचहरीके चपरासीका मुकदमा पेश होनेपर वादी और प्रतिवादीका नाम लेकर इजलासपर बुलाना ।

पुकारना–स० क्रि० किसीको नाम लेकर बुलाना; नामका बार-बार उच्चारण करना; जोर-जोरसे कहना, चिल्लाना; रक्षा या बचावके लिए किसीको आर्त स्वरसे बुलाना, दुहाई देना; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीसे प्रार्थना करना, फरियाद करना; अभिहित करना; निर्देश करना ।

पुख*–पु० दे० 'पुष्य' ।

पुखर, पुखरा†–पु० पोखरा, तालाब ।

पुखराज–पु० पीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न ।

पुख़्ता–वि० [फ़ा०] मजबूत; पक्का; सख्त; टिकाऊ ।

पुगाना–स० क्रि० पूरा करना ।

पुचकार–स्त्री० वह चूमनेकासा शब्द जिसे किसीके प्रति लाड़ प्रकट करनेके लिए ओठोंसे उत्पन्न करते हैं, चुमकार ।

पुचकारना–स० क्रि० ओठोंसे चूमनेकासा शब्द उत्पन्न करते हुए किसीके प्रति लाड़-चाव प्रकट करना ।

पुचकारी–स्त्री० दे० 'पुचकार' ।

पुचारना–स० क्रि० पोतना, पुचारा देना ।

पुचारा–पु० किसी वस्तुपर गीला कपड़ा फेरनेकी क्रिया; चूने आदिका हलका लेप; पुचारा देनेका कपड़ा; वह वस्तु जो किसी वस्तुपर पुचारा देनेके लिए पानीमें घोली गयी हो; वे प्रिय वचन जो किसीको मनानेके लिए उसके प्रति कहे जायँ; खुशामद; उत्साहवर्धक वचन ।

पुच्छ–पु० [सं०] पूँछ; अंतिम या पिछला भाग ।

पुच्छल–वि० पूँछवाला, दुमदार । **–तारा**–पु० यदाकदा उगनेवाला एक विशेष प्रकारका तारा जिसके पीछे झाड़के आकारका भापकासा पदार्थ जुड़ा दिखाई देता है ।

पुछल्ला–पु० लंबी पूँछ; पूँछकी भाँति साथमें या पीछे जुड़ी वस्तु; वह जो सदा किसीके पीछे लगा रहे, पिछलगा ।

पुछवैया†–पु० दे० 'पुछैया' ।

पुछार*–पु० पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला; मोर –'जान पुछार जो भा बनवासी'–प० ।

पुछैया†–पु० पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला ।

पुजना–अ० क्रि० † पूजित होना, पूजा जाना; अत्यधिक सम्मानित होना; * पूरा होना ।

पुजवना*–स० क्रि० पूरा करना; सफल करना ।

पुजवाना–स० क्रि० किसीसे पूजनेका काम करवाना, पूजा कराना; शिष्यों या भक्तोंसे अपनी सेवा-शुश्रूषा कराना और भेंट चढ़वाना ।

पुजाई–स्त्री० पूजनेकी क्रिया या भाव; पूजनेकी उजरत; पूरा करनेकी क्रिया या भाव; पूरा करनेकी उजरत ।

पुजाना–स० क्रि० दे० 'पुजवाना'; पूरा करना; कमीकी पूर्ति करना ।

पुजापा–पु० देवपूजनके उपकरण, पूजनकी सामग्री; वह झोली या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखी जाती है ।

पुजारी–पु० पूजा करनेवाला; किसी देवताकी नियमित रूपसे पूजा करनेवाला ।

पुजाही–स्त्री० वह झोली या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखते हैं ।

पुजेरी*–पु० दे० 'पुजारी' ।

पुजेला*–पु० पुजेरी ।

पुजैया†–पु० पूजा करनेवाला; भरने या पूरा करनेवाला । स्त्री० दे० 'पुजाई'; दे० 'गंगापुजैया' ।

पुजौरा–पु० पूजन, पूजा; पूजनमें देवताको अर्पित की जानेवाली सामग्री ।

पुट–पु० किसी तरल पदार्थका वह छींटा जो किसी वस्तुपर उसे आर्द्र करने या हलका मेल देनेके लिए डाला जाय; किसी वस्तुको हलके मेलके लिए रंग या किसी तरल पदार्थमें डुबाना, बोर; हलका मेल, साधारण मिश्रण, थोड़ीसी मिलावट; [सं०] रिक्त स्थान; विवर (जैसे–कर्णपुट); ढकनेवाली वस्तु, आच्छादन; कोष; मंजूषा; दोना; दोने या कटोरेकी तरहका कोई पात्र; एक दूसरेपर ढक्कनकी तरह रखकर एकमें जोड़े हुए दोनेके आकारके दो पात्र या मिट्टी आदिके दो कपाल; इस प्रकारका औषध पकानेके कामका पात्र-विशेष । **–पाक**–पु० ओषधियोंको पकानेकी एक क्रिया जिसमें उन्हें जामुन, बरगद आदिके पत्तोंसे लपेट और ऊपरसे गीली मिट्टी लगाकर आगमें पकाते हैं; कटोरेके आकारके दो बरतनोंसे पुटित की हुई दवाको विशेष आकारके गड्ढेमें उपलेकी आँचमें पकानेकी एक क्रिया ।

पुटकी–स्त्री० पोटली; आकस्मिक मृत्यु; भारी आफत, वज्रपात; वह आटा या बेसन जो तरकारीके रसेमें उसे गाढ़ा करनेके लिए मिलाया जाता है ।

पुटरिया, पुटरी†–स्त्री० पोटली ।

पुटिका–स्त्री० [सं०] पुड़िया; इलायची ।

पुटित–वि० [सं०] रगड़ा या पीसा हुआ; फाड़ा हुआ; बंद किया हुआ; (कैपसूल्ड) जो पुटीके रूपमें बना हो, जो पुटीके रूपमें किसी आवरणके भीतर हो ।

पुटियाना*−स० क्रि० फुसलाना, समझा-बुझाकर राजी करना या अपने पक्षमें लाना।

पुटी−स्त्री० [सं०] छोटा दोना; कौपीन; गड्ढा; पुड़िया।

पुटीन−पु० किवाड़ों, खिड़कियों आदिमें शीशे जड़ने और लकड़ीकी चीजोंके छेद आदि भरनेके कामका तीसीके तेल और खरिया मिट्टीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका मसाला।

पुट्ठा−पु० चूतड़का ऊपरी मांसल भाग; चौपायोंका, विशेषकर घोड़ोंका चूतड़; किताबकी जिल्दका उस ओरका भाग जिधर सिलाई की गयी रहती है।

पुठवार*−अ० पृष्ठभागमें, पीछे।

पुठवाल−पु० भले-बुरे काममें साथ देनेवाला, पृष्ठपाल।

पुड़ा−पु० बड़ी पुड़िया; ढोल मढ़नेका चमड़ा।

पुड़िया−स्त्री० वह कागज या पत्ता जिसमें कोई दवा या अन्य वस्तु लपेटकर रखी गयी हो; पुड़ियेमें लपेटी हुई एक खुराक दवा; खान, घर (जैसे−आफतकी पुड़िया)।

पुड़ी−स्त्री० ढोल मढ़नेका चमड़ा; पूरी, सुहारी; * पुड़िया।

पुण्य−वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध; शुभ, भला; प्रिय; सुंदर। पु० शुभ अदृष्टवाला कृत्य, शुभ फल देनेवाला कार्य; सुकृत। **−कर्ता(र्तृ)**−पु० पुण्य करनेवाला। **−काल**−पु० ऐसा समय जिसमें स्नान, दान आदि करनेसे पुण्य हो। **−कृत्**−वि० पुण्य करनेवाला। **−कृत्य**−पु० ऐसा कार्य जिसे करनेसे पुण्य हो। **−क्षेत्र**−पु० तीर्थ; आर्यावर्त। **−दर्शन**−वि० जिसका दर्शन शुभ फल देनेवाला हो; सुंदर। पु० पवित्र स्थानोंका दर्शन। **−पुरुष**−पु० धर्मात्मा मनुष्य। **−भूमि**−स्त्री० आर्यावर्त। **−शील**−वि० पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, धर्मपरायण। **−श्लोक**−वि० उत्तम यशवाला, जिसका चरित्र पावन हो। पु० विष्णु; युधिष्ठिर; नल। **−स्थान**−पु० तीर्थस्थान।

पुण्याई−स्त्री० पुण्यका प्रताप।

पुण्यात्मा (त्मन्)−वि० [सं०] पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, पुण्यशील, धर्मात्मा।

पुण्योदय−पु० [सं०] शुभ अदृष्टका उदय होना, सौभाग्यका उदय।

पुतना−अ० क्रि० पोता जाना, चुपड़ा जाना।

पुतरा*−पु० दे० 'पुतला'।

पुतरि, पुतरिका*−स्त्री० दे० 'पुत्तलिका'।

पुतरिया*−स्त्री० दे० 'पुतली'।

पुतरी*−स्त्री० दे० 'पुतली'।

पुतला−पु० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई पुरुषकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है; किसी व्यक्तिकी सरपत, आटे आदिकी बनायी हुई वह प्रतिमा जो उसके शवके अभावमें अंत्येष्टि करनेके लिए या उसका मरण मनानेके लिए जलायी जाय। मु० (किसीका) **−बाँधना**−किसीका अपयश फैलाना, किसीकी बदनामी करना।

पुतली−स्त्री० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई स्त्रीकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है, गुड़िया; आँखके बीचका वह काला भाग जिसके मध्यमें रूप ग्रहण करनेवाली इंद्रिय होती है; कपड़ा बुननेका यंत्र। **−घर**−पु० कपड़ेकी मिल। मु०−**फिर जाना**−आँखें पथरा जाना; घमंड होना।

पुताई−स्त्री० पोतनेकी क्रिया या भाव, लेप; दीवार आदिपर मिट्टी, गोबर, चूने आदिका लेप करना; इस कामकी उजरत।

पुतारा−पु० किसी वस्तुपर पानी, रंग आदिसे तर कपड़ा फेरनेका काम; पानी, रंग आदिसे तर कपड़ा जो किसी वस्तुपर फेरा जाय।

पुत्त*−पु० दे० 'पुत्र'।

पुत्तरी*−स्त्री० दे० 'पुत्री'; दे० 'पुत्तली'।

पुत्तलिका, पुत्तली−स्त्री० [सं०] पुतली।

पुत्र−पु० [सं०] बेटा; प्यारा बच्चा। **−लाभ**−पु० पुत्रकी प्राप्ति, पुत्र उत्पन्न होना। **−वधू**−स्त्री० पुत्रकी पत्नी, पतोहू।

पुत्रवती−वि० स्त्री० [सं०] पुत्रवाली (स्त्री)।

पुत्रार्थी(र्थिन्)−वि० [सं०] पुत्र चाहनेवाला, पुत्रप्राप्तिकी इच्छा रखनेवाला।

पुत्रिका−स्त्री० [सं०] बेटी; पुतली, गुड़िया; पुत्रहीन व्यक्तिकी वह कन्या जिसे उसने पुत्ररूप मान लिया हो; आँखकी पुतली।

पुत्रिणी−वि० स्त्री० [सं०] पुत्रवाली।

पुत्री−स्त्री० [सं०] कन्या, बेटी; दुर्गा।

पुत्रेष्टि, पुत्रेष्टिका−स्त्री० [सं०] पुत्रलाभकी इच्छासे किया जानेवाला यज्ञविशेष।

पुत्रैषणा−स्त्री० [सं०] पुत्रप्राप्तिकी कामना।

पुदीना−पु० एक प्रसिद्ध छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ अच्छी गंधवाली होती हैं और चटनी आदिमें पीसकर खायी जाती हैं।

पुनः(नर्)−अ० [सं०] फिर, दुबारा। **−पुनः**−अ० बारबार। **−प्राप्ति**−स्त्री० कोई वस्तु फिरसे प्राप्त होना। **−संस्कार**−पु० द्विजातिका वह उपनयन संस्कार जो गोमांसभक्षण, सुरापन आदिके प्रायश्चित्तके रूपमें दुबारा हो। **−स्थापन**−पु० फिरसे स्थापित करना।

पुनरबस, पुनरबसु*−पु० दे० 'पुनर्वसु'।

पुनर्−अ० [सं०] एक बार और, फिर, दुबारा। **−अपि**−अ० फिर भी; बार-बार। **−अधिनियमन**−पु० दे० 'पुनर्विधायन'(री-इनैक्टमेंट)। **−अस्त्रीकरण**−पु०(री-आर्मेमेंट) पुनः अस्त्र-संभार बढ़ाना, सेनाको नये-नये आधुनिक शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित करना; किसी देशकी अस्त्रविहीन की गयी सेनाओंको पुनः अस्त्रादिसे युक्त करना। **−आगत**−वि० फिरसे आया हुआ, लौटा हुआ। **−आगम, −आगमन**−पु० फिरसे आना, लौटना। **−आनयन**−पु० लौटा लाना, पुनः ले आना। **−आवर्त**−पु० लौटना; फिरसे जन्म ग्रहण करना। **−आवर्तक**−वि० पुनः-पुनः आनेवाला (ज्वर)। **−आवर्ती(र्तिन्)**−वि० फिरसे या बार-बार जन्म ग्रहण करनेवाला। **−आवृत्त**−वि० दोहराया हुआ; संसारमें फिरसे आया हुआ; लौटा हुआ। **−आवृत्ति**−स्त्री० दोहराना; फिरसे आना या कोई बात फिरसे करना। **−आवेदन**−पु० (अपील) दे०

'पुनर्न्याय-प्रार्थना'।**—आहार**—पु० दुबारा भोजन करना; दुबारा किया हुआ भोजन। **—ईक्षण**—पु० (रिवीजन) संशोधन या भूलसुधार आदिकी दृष्टिसे मुकदमेकी फाइल, लेख, पुस्तक आदिकी सामग्री, आय-व्ययके आँकड़े आदि फिरसे देखना या पढ़ना। **—ईक्षित**—वि० (रिवाइज्ड) संशोधन या सुधारकी दृष्टिसे जो फिरसे देख लिया गया हो। **—ईक्षित-पाठ**—पु० (रिवाइज्ड वर्शन) वह विवरण, वक्तव्य आदि जो फिरसे भली भाँति देख लिया, जाँच लिया गया हो। **—उक्त**—वि० दुबारा या बार-बार कहा हुआ। **—उक्तवदाभास**—पु० एक शब्दालंकार, जिसमें शब्द सुननेसे पुनरुक्तिसी जान पड़े, पर वास्तवमें पुनरुक्ति न हो। **—उक्ति**—स्त्री० किसी बातको दुहराना या एक ही बातको बार-बार कहना (साहित्यमें यह एक दोष माना जाता है)। **—उज्जीवन**—पु० (रिवाइवल) पुनः जीवन-दान देना; फिरसे उन्नतिकी ओर ले जाना। **—उत्थान**—पु० पुनः उठना; पुनः उन्नति; (रिनेसाँ) कला और साहित्यका पुनर्जन्म या नये रूपसे होनेवाली उन्नति, नवोत्थान। **—उत्पत्ति**—स्त्री० फिर उत्पन्न होना। **—उत्पादन**—पु० पुनः उत्पादन करना; पुनः निर्माण करना। **—उद्धार**—पु० फिरसे ठीक करना, बचाना, मरम्मत आदि करना। **—गमन**—पु० दुबारा जाना। **—जन्म(न्)**—पु० मरनेके बाद फिरसे उत्पन्न होना, दुबारा शरीर धारण करना। **—जन्मा(न्मन्)**—पु० ब्राह्मण। **—जात**—वि० फिर जनमा हुआ। **—नवा**—स्त्री० शाककी जातिका एक बरसाती पौधा, गदहपूरना। **—नियुक्ति**—स्त्री० (री-इंस्टेटमेंट) किसी पद या कामपर फिरसे नियुक्त कर दिया जाना। **—न्यायप्रार्थना**—स्त्री० (अपील) पुनर्विचारके लिए कोई मामला उच्चतर न्यायालयमें रखना, अपील। **—न्यायप्रार्थी**—पु० (एपेलेंट) वह जो अपना व्यवहार (मामला) पुनर्विचारके लिए किसी ऊँचे न्यायालयमें रखे। **—भव**—पु० फिरसे शरीर धारण करना, दुबारा उत्पन्न होना; नाखून; एक तरहकी पुनर्नवा। वि० जो फिरसे उत्पन्न हुआ हो। **—भाव**—पु० दूसरा जन्म। **—भू**—स्त्री० वह स्त्री जो पहले पतिके मरनेपर किसी दूसरे पुरुषसे ब्याही गयी हो। **—भोग**—पु० पूर्वकर्मके फलके रूपमें सुख या दुःखका पुनः भोग। **—मुद्रित**—वि० (री-प्रिंटेड) जो फिरसे छापा गया हो। **—मूल्यन**—पु० (री-वैल्यूएशन) फिरसे मूल्य आँकना या लगाना; मुद्रा आदिका फिरसे मूल्य निश्चित करना, ठहराना।**—युक्त कोण**—पु० (रीफ्लेक्स एंगिल) वह कोण जो दो समकोणोंसे बड़ा, किंतु चार समकोणोंसे छोटा हो। **—वसु**—पु० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे सातवाँ नक्षत्र; विष्णु। **—वार**—अ० दुबारा। **—वास**—पु० (रीहैबिलिटेशन) जिनका घर-बार नष्ट हो गया हो या जो उद्वासित हो गये हों उन्हें फिरसे बसाना। **—विचारन्यायाधिकरण**—पु० (अपेलैंट ट्रिब्यूनल) मामलों, मुकदमोंपर पुनः विचार करनेवाली अदालत। **—विचारन्यायालय**—पु० (कोर्ट ऑफ अपील) छोटी या मातहत अदालतोंमें निर्णीत मामलोंपर पुनः विचार करनेवाला न्यायालय।**—विचारप्रार्थी**—पु० (एपेलेंट) दे० 'पुनर्न्यायप्रार्थी'।**—विधायन**—पु० (री-इनैक्टमेंट) फिरसे कोई विधान, अधिनियम आदि बनाना, पुनरधिनियमन। **—विभाजन**—पु० जिसका एक बार विभाजन हो चुका हो, उसका फिरसे विभाजन करना। **—विलोकन**—पु० (रिव्यू) दंडादेश आदिपर फिरसे विचार करना; बीती हुई घटनाओंकी संक्षिप्त आलोचना।**—विवाह**—पु० दूसरा ब्याह।

पुनश्चर्वण—पु० [सं०] पागुर करना।

पुनि*—अ० पुनः, फिरसे। **—पुनि**—अ० बार-बार।

पुनिम*—स्त्री० पूर्णिमा।

पुनी*—वि० पुण्य करनेवाला, पुण्यात्मा। स्त्री० पूर्णिमा। अ० पुनः, फिर।

पुनीत—वि० [सं०] पवित्र किया हुआ; शुद्ध, पाक।

पुन्न*—पु० दे० 'पुण्य'।

पुन्नाग—पु० [सं०] एक बड़ा सदाबहार पेड़; श्रेष्ठ पुरुष।

पुन्य*—पु० दे० 'पुण्य'। **—ताई***—स्त्री० दे० 'पुण्य'।

पुरंदर—पु० [सं०] इंद्र; शिव; विष्णु; अग्नि।

पुरंध्रि, पुरंध्री—स्त्री० [सं०] पतिपुत्रवती स्त्री; (सम्मानित) स्त्री।

पुरःस्थापन—पु०, **पुरःस्थापना**—स्त्री० [सं०] (इंट्रॉडक्शन) पुरःस्थापित करनेकी क्रिया।

पुरःस्थापित करना—स० क्रि० (टू इंट्रोड्यूस) (सभा आदिमें) औपचारिक रूपसे रखना या सामने लाना।

पुर—पु० [सं०] बाजार; खाई; नगर; कोट, किला; गृह; शरीर अंतःपुर; भंडारघर; राशि, ढेर; त्रिपुरासुर। वि० भरा हुआ, पूर्ण। **—जन**—पु० पुरवासी लोग। **—त्राण**—पु० प्राचीर, शहरपनाह। **—द्वार**—पु० नगरका प्रवेशद्वार। **—नारी**—स्त्री० वेश्या। **—पाल, —पालक**—पु० नगरपाल; आत्मा। **—भिद्**—पु० शिव। **—मथन, —मथिता(तृ)**—पु० शिव। **—रोध**—पु० नगरका घेरा डालना। **—लोक**—पु० पुरजन। **—वधू**—स्त्री० दे० 'पुरनारी'। **—वासी(सिन्)**—पु० नगरमें रहनेवाला, पौर, नागरिक। **—शासन**—पु० शिव; विष्णु। **—हा(हन्)**—पु० विष्णु; शिव।

पुर†—पु० मोट, चरसा। **—वट**—पु० मोट, चरसा। **—हा**—पु० वह व्यक्ति जो मोट चलते समय उसका पानी ढालने या छीननेके लिए कुएँपर नियुक्त रहता है।

पुर—वि० [फा०] भरा हुआ, पूर्ण। **—अमन**—वि० शांतिमय। **—ख़ुमार**—वि० नशेसे भरा हुआ। **—ज़ोर**—वि० जोरदार; ओजःपूर्ण। **—जोश**—वि० जोशसे भरा हुआ।

पुरइन*—स्त्री० कमलका पत्ता; कमल; जरायु, अपरा।

पुरइया*—पु० तकुआ; ताना।

पुरखा—पु० बापसे ऊपरकी किसी पीढ़ीमें उत्पन्न कोई पुरुष, पूर्वपुरुष (जैसे—दादा, परदादा); बड़ा-बूढ़ा (व्यंग्य)।

पुरचक—स्त्री० पुचकार; बढ़ावा, उभाड़नेकी क्रिया।

पुरज़ा—पु० [फा०] कागजका टुकड़ा; खंड, टुकड़ा; अवयव, अंग; चिड़ियाका बारीक पर; रुक्का। मु० **(पुरज़े) पुरज़े उड़ना या होना**—टुकड़े-टुकड़े होना। **—पुरज़े उड़ाना या करना**—टुकड़े-टुकड़े करना।

पुरट—पु० [सं०] स्वर्ण, सोना।

पुरतः—अ० [सं०] समक्ष, आगे।

पुरबला, पुरबिला, पुरबुला*—वि० पहलेका; पूर्वजन्मका।

पुरबिया—वि० पूरबका। पु० पूरबी देशका निवासी।

पुरबी†–वि० दे० ‘पूरबी’।

पुरवइया†–स्त्री० पूरबकी ओरसे बहनेवाली हवा, पुरवा।

पुरवना*–स० क्रि० भरना, पुजाना; पूर्ण करना, पूरा करना। अ० क्रि० पूरा होना; पर्याप्त होना।

पुरवा–स्त्री० पूरबकी ओरसे बहनेवाली हवा। पु० बैलोंका एक रोग जो पुरवा हवा लगनेसे होता है; मिट्टीका गिलास जैसा बरतन, कुल्हड़; * छोटा गाँव, टोला, खेड़ा।

पुरवाई–स्त्री० पुरवा हवा।

पुरवैया†–स्त्री० दे० ‘पुरवइया’।

पुरश्चरण–पु० [सं०] आरंभिक कृत्य; हवन करते हुए किसी देवताका नाम या मंत्र जपना; गुरुसे प्राप्त किये हुए मंत्रका वह सविधि जप जो उसे सिद्ध करनेके लिए किया जाय।

पुरश्चर्या–स्त्री० [सं०] दे० ‘पुरश्चरण’।

पुरषा*–पु० दे० ‘पुरखा’।

पुरसाँ, पुर्साँ–वि० [फा०] पूछने या खोज-खबर लेनेवाला।

पुरसा–पु० ऊँचाई, गहराईकी एक माप जो मानमें हाथ उठाकर खड़े हुए मनुष्यके बराबर होती है।

पुरस्–अ० [सं०] सामने, समक्ष; आगे, पहले। **–करण**–पु० पुरस्कृत करनेकी क्रिया, आगे करना या रखना; पूरा करना; दे० ‘पुरस्कार’। **–कार**–पु० आगे करना या रखना; आदर, सम्मान; पूजन; स्वीकार; उपहार, भेंट; पारितोषिक, इनाम (बँ०, हिं०); पारिश्रमिक (हिं०)। **–कृत**–वि० आगे किया हुआ या रखा हुआ; आदृत, सम्मानित; पूजित; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; जिसे पुरस्कार दिया गया हो या मिला हो (बँ०, हिं०)। **–क्रिया**–स्त्री० आरंभिक कृत्य; आदर करना, सम्मान करना। **–सर**–वि० आगे चलनेवाला, अग्रगामी; सहित, उपेत (समासमें)। पु० नेता, अग्रणी, अगुआ; अनुचर।

पुरस्तात्–अ० [सं०] आगे, सामने; पहले, आरंभमें।

पुरहूत*–पु० पुरुहूत, इंद्र।

पुरा–पु० बस्ती, गाँव। अ० [सं०] प्राचीन कालमें, पहले; अबतक। **–कथा**–स्त्री० प्राचीन कथा, इतिहास। **–कृत**–वि० पहलेका किया हुआ; पूर्वजन्ममें किया हुआ। पु० पूर्वजन्मका कर्म। **–तत्त्व**–पु० पुरानी बातोंके अनुसंधान तथा अध्ययनसे संबंध रखनेवाली विशेष प्रकारकी विद्या। **–लिपि**–स्त्री० पुरातन कालमें प्रचलित लिपि। **–लेख**–पु० (आरकाइव्ज) पुराने सरकारी अभिलेख। **–लेख-पाल**–पु० (आर्काइविस्ट) राज्यके पुराने अभिलेखों आदिको सुरक्षित रूपसे रखनेवाला अधिकारी। **–वसु**–पु० भीष्म। **–विद्**–वि० पुरानी बातोंको जाननेवाला; प्राचीन इतिहास जाननेवाला। **–वृत्त**–पु० प्राचीन वार्ता; इतिहास। वि० प्राचीन, पुराना।

पुराण–वि० [सं०] प्राचीन, पुराना; जीर्ण-शीर्ण। पु० प्राचीन वृत्तांत; हिंदुओंके विशिष्ट धर्मग्रंथ जिनमें संसारका सृष्टिसे लेकर प्रलयतकका इतिहास वर्णित है, सृष्टि, लय, मन्वंतरों तथा प्राचीन ऋषियों, मुनियों और राजाओंके वंशों तथा चरितोंके वर्णनसे युक्त प्रसिद्ध हिंदू धर्मग्रंथ (जो अठारह हैं); कार्षापण; अठारहकी संख्या; शिव। **–पुरुष**–पु० वृद्ध मनुष्य; विष्णु।

पुरातन–वि० [सं०] प्राचीन, पुराना; जो सबसे पहिले हुआ हो, आद्य (जैसे–पुरातन पुरुष)। **–पुरुष**–पु० विष्णु।

पुराधिप, पुराध्यक्ष–पु० [सं०] नगरके शासन, रक्षण आदिका प्रबंध करनेवाला प्रधान अधिकारी।

पुरान†–वि० दे० ‘पुराना’। पु० दे० ‘पुराण’।

पुराना–वि० जिसकी सत्ता बहुत पहलेसे हो, बहुत दिनोंका, नयाका उलटा; बीता हुआ; जो बहुत पहले बीत चुका हो; प्राचीन, विगत कालका; बहुत पहले बीते हुए समयका; जो दिनी होनेके कारण अच्छी दशामें न हो, जीर्ण; जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, पूर्ण अनुभवी; परिणत-बुद्धि, पक्का; सधा हुआ, मँजा हुआ; सिद्ध (पुराना हाथ); जिसका रिवाज उठ गया हो; जिसका समय अब न हो; समयका। स० क्रि० किसीसे पूरनेका काम कराना; पूरा कराना; भरवाना; * पालन कराना; पूरा करना, भरना; * सिद्ध कराना, पूर्ण कराना; * आटे, अबीर आदिसे (चौक) बनवाना; इस प्रकार बाँटना कि कोई बिना पाये न रहे, अँटाना।

पुराराति, पुरारि–पु० [सं०] शिव।

पुराल*–पु० दे० ‘पयाल’।

पुरिखा, पुरिषा*–पु० पूर्वपुरुष, पुरखा।

पुरिया–स्त्री० बाना फैलानेकी नरी; ताना; † पुड़िया।

पुरिष*–पु० दे० ‘पुरीष’।

पुरी–स्त्री० [सं०] नगरी, शहर; नदी; शरीर; किला।

पुरीष–पु० [सं०] विष्ठा, गू; कूड़ा; जल (निघंटु)।

पुरीषण–पु० [सं०] विष्ठा; मलत्याग करना।

पुरीषोत्सर्ग–पु० [सं०] मलत्याग।

पुरु–पु० [सं०] देवलोक, स्वर्ग; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था; राजा ययातिका कनिष्ठ पुत्र जिसने अपने पिताको अपना यौवन समर्पित कर दिया था। वि० प्रचुर। **–हूत**–पु० इंद्र।

पुरुख*–पु० पुरुष।

पुरुखा–पु० दे० ‘पुरखा’।

पुरुष–पु० [सं०] मर्द, नर, स्त्रीका उलटा; मानव जाति; सूर्य; आत्मा; सांख्यके अनुसार वह मुख्य तत्त्व जिसके संयोगसे प्रकृति विश्वकी सृष्टि करती है; परमात्मा; विष्णु; संसारका आदि कारणभूत परम पुरुष (पुरुषसूक्त); शिव; जीव; कर्मचारी (राजपुरुष); ऊँचाई या गहराईकी एक प्राचीन माप जो पुरुष या १२० अंगुलके बराबर होती थी; * पूर्वपुरुष, पुरखा। **–कार**–पु० पुरुषार्थ, पौरुष, उद्योग। **–केशरी(रिन्)**, **–केसरी(रिन्)**–पु० वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष; विष्णुका नृसिंहावतार। **–घ्नी**–वि० स्त्री० पतिकी हत्या करनेवाली। **–द्वेषिणी**–स्त्री० अपने पतिसे वैर रखनेवाली स्त्री। **–द्वेषी(षिन्)**–वि० मनुष्यसे द्वेष करनेवाला। **–पुर**–पु० गांधारकी प्राचीन राजधानी, वर्तमान पेशावर। **–व्याघ्र**, **–शार्दूल**–पु० वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष।

पुरुषत्व–पु० [सं०] पुरुषका भाव।

पुरुषांग–पु० [सं०] पुरुषकी लिंगेंद्रिय।

पुरुषाद, पुरुषादक–पु० [सं०] नरभक्षक, राक्षस।

पुरुषाधम–पु० [सं०] नीच मनुष्य।

पुरुषायुष—पु० [सं०] मनुष्यकी आयु। **—पुरुषायुषजीवी(विन्)**—वि० जो मनुष्यकी पूरी आयुभर जीये।

पुरुषारथ*—पु० दे० 'पुरुषार्थ'।

पुरुषार्थ—पु० [सं०] मनुष्यके जीवनका प्रधान उद्देश्य, वह वस्तु या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति या सिद्धिके लिए मनुष्यको उद्योग करना चाहिये (पुरुषार्थ चार माने गये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष); उद्योग, उद्यम।

पुरुषेंद्र—पु० [सं०] राजा; श्रेष्ठ पुरुष।

पुरुषोत्तम—पु० [सं०] श्रेष्ठ पुरुष; विष्णु; कृष्ण; नारायण; जगन्नाथ। **—क्षेत्र**—पु० जगन्नाथपुरी। **—मास**—पु० अधिक मास, मलमास।

पुरूरवा(वस्)—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध सोमवंशी राजा जिसका विवाह उर्वशीसे हुआ था (पर अंतमें दोनों बिछुड़ गये); एक विश्वेदेव।

पुरैन, पुरैनि—स्त्री० दे० 'पुरइन'।

पुरोगंता(तृ), पुरोगामी(मिन्)—वि०[सं०]दे०'पुरोग'।

पुरोग—वि०[सं०] आगे-आगे चलनेवाला, अगुआ; प्रधान।

पुरोगत—वि० [सं०] जो सामने हो; जो पहले गया हो।

पुरोजन्मा(न्मन्)—वि० [सं०] जिसका जन्म पहले हुआ हो।

पुरोडाश(श्)—पु० [सं०] जौ, चावल आदिके आटेकी टिकिया जिसे कपालमें रखकर अग्निमें हवन करते हैं; हवि; हुतशेष; पुरोडाश या हवि देते समय पढ़ा जानेवाला मंत्र; सोमरस।

पुरोद्यान—पु० [सं०] नगरके अंदरका उद्यान, (पार्क)।

पुरोधा(धस्), पुरोधानीय—पु० [सं०] पुरोहित।

पुरोहित—पु०[सं०] धार्मिक कृत्य करानेवाला। **—तंत्र**—पु० (हायरेरकी) (रोमन कैथालिकोंमें) पुरोहितोंकी शासन-व्यवस्था; कैथालिक पादरियोंके क्रमानुगत अधिकारियोंका वर्ग।

पुरोहिताई—स्त्री० पुरोहितका भाव; पुरोहितका पेशा।

पुरोहितानी—स्त्री० पुरोहितकी पत्नी।

पुरोहिती—स्त्री० पुरोहिताई।

पुरौ*—पु० पुरवट।

पुर्तगाल—पु०यूरोपकेदक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटा देश।

पुर्तगाली—वि०पुर्तगाल-संबंधी; पुर्तगालका। पु० पुर्तगालमें रहनेवाला, पुर्तगाल-निवासी। स्त्री० पुर्तगालकी भाषा।

पुर्तगीज़—पु० [अं०] पुर्तगाल-निवासी। स्त्री० पुर्तगालकी भाषा।

पुर्बला—वि० दे० 'पुरबला'।

पुल—पु० [फा०] नदी, सोता, खाई आदि पार करनेका वह साधन जो नाव पाटकर अथवा खंभोंपर पटरियाँ आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बनाया जाता है, सेतु। **मु० (किसी बातका)—बाँधना**—भरमार करना, झड़ी लगाना।

पुलक—पु० [सं०] हर्ष-भय आदिके कारण रोंगटे खड़े होना, लोमहर्षण, रोमांच, त्वक्-स्फुरण।

पुलकना*—अ० क्रि० पुलकित होना; हर्षविह्वल होना।

पुलकाई*—स्त्री० पुलकित होनेका भाव, पुलक।

पुलकालि*—स्त्री० दे० 'पुलकावलि'।

पुलकावलि—स्त्री० [सं०] प्रेम या हर्षजन्य रोमांच।

पुलकित—वि० [सं०] जिसे रोमांच हुआ हो; हृष्ट, प्रसन्न।

पुलटिस—स्त्री० हलवेकी तरह पकायी हुई अलसी आदि जो घावपर उसे पकाने, फोड़नेके लिए बाँधते हैं।

पुलपुला—वि० पिलपिला, जो भीतरसे नरम और ढीला हो।

पुलपुलाना—स० क्रि० किसी पुलपुली चीजको दबाना; दबाकर चूसना।

पुलस्त*—पु० दे० 'पुलस्ति'।

पुलस्ति, पुलस्त्य—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्माके मानस पुत्रोंमेंसे थे और सप्तर्षियों तथा प्रजापतियोंमें गिने जाते हैं (ये रावणके पितामह थे); शिव।

पुलहना*—अ० क्रि० दे० 'पलुहना'।

पुलाक—पु० [सं०] कदन्न; पैया; भात; भातका माँड़।

पुलाव—पु० मांस और चावल एकमें पकाकर तैयार किया जानेवाला विशेष प्रकारका व्यंजन।

पुलिंदा—पु० लपेटे हुए कागजका बंडल।

पुलिन—पु० [सं०] नदीका किनारा; रेतीला किनारा।

पुलिनवती—स्त्री० [सं०] नदी।

पुलिस, पुलीस—स्त्री० [अं०] जनताके जान-माल और शांतिकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला सरकारी महकमा; इस महकमेके कर्मचारी। **—मैन**—पु० पुलिस विभागका कर्मचारी।

पुलिहोरा*—पु० एक पकवान।

पुलोमा(मन्)—पु० [सं०] एक दैत्य जो इंद्रकी पत्नी शचीका पिता था; एक राक्षस। **(पुलोम)जा**—स्त्री० शची। **—जित्,—द्विट्(ष्),—भिद्**—पु० इंद्र। **—पुत्री**—स्त्री० शची।

पुश्त—स्त्री० [फा०] पीठ; पीढ़ी; सहारा; मददगार; रक्षक। **—दर-पुश्त,—ब-पुश्त**—अ० कई पीढ़ियोंसे; पीढ़ी दर पीढ़ी। **—नामा**—पु० वह कागज जिसपर किसी वंश या कुलके लोगोंके नाम यथाक्रम लिखे हों, कुरसीनामा। **—वानी**—स्त्री० [हिं०] वह लकड़ी जो किवाड़ या तख्तेके पीछे उसकी मजबूतीके लिए लगायी जाती है।

पुश्ता—पु० [फा०] किसी दीवारकी मजबूतीके लिए उससे सटाकर बनवाया जानेवाला मिट्टी, ईंट, पत्थर आदिका धुस्स; बाँध; पानीकी रोकके लिए बँधवाया जानेवाला बाँध; किताबकी जिल्दका पीछेकी ओरका चमड़ा या कपड़ा, पुट्ठा; एक ताल। **—बंदी**—स्त्री० पुश्ता बाँधनेका काम।

पुश्तापुश्त—अ० [फा०] कई पीढ़ियोंसे।

पुश्तैनी—वि० [फा०] जो कई पीढ़ियोंसे चला आता हो; जो कई पीढ़ियोंतक चला जाय।

पुष्कर—पु० [सं०] जलाशय, सरोवर; जल; आकाश; हाथीकी सूँड़का अग्रभाग; कमल; तलवारकी धार; बाण; एक तीर्थ जो अजमेरके पास है; जंबू आदि द्वीपोंमेंसे एक (पु०); नलके छोटे भाई जिन्होंने नलको जुएमें हराकर उनका राज-पाट ले लिया था; पिंजड़ा; सूर्य। **—तीर्थ**—पु० पुष्कर नामक तीर्थ। **—बीज**—पु० कमलका बीज। **—मुख**—पु० सूँड़के मुँहपरका छेद। वि० सूँड़के मुख जैसे मुखवाला (पात्र)। **—मूल**—पु० कमलकी जड़।

पुष्कराक्ष—वि० [सं०] कमलके समान नेत्रोंवाला। पु०

विष्णु ।

पुष्करिणी–स्त्री० [सं०] हथिनी; एक प्रकारका जलाशय; कमलोंका समूह; कमलका पौधा; कमलयुक्त जलाशय ।

पुष्कल–वि० [सं०] श्रेष्ठ; अति शोभन; पूर्ण, भरपूर; प्रचुर, बहुत; पर्याप्त ।

पुष्ट–वि० [सं०] जिसका पोषण किया गया हो, पोषित; मोटा-ताजा, तगड़ा; पोढ़ा, पक्का; पूर्ण ।

पुष्टई–स्त्री० बलवर्द्धक औषध, ताकत बढ़ानेवाली दवा ।

पुष्टता–स्त्री० [सं०] पुष्ट होनेका भाव; बलिष्ठता, तगड़ापन ।

पुष्टि–स्त्री० [सं०] पोषण; वृद्धि; तगड़ापन; अभ्युदय; सहारा; समर्थन; दृढ़ीकरण । **–कर,–कारक**–वि० पोषण करनेवाला, पुष्ट बनानेवाला, बलवर्द्धक । **–मार्ग**–पु० वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय, वल्लभसंप्रदाय ।

पुष्टीकरण–पु० [सं०] किसी कथन या कृत्यको ठीक मानकर उसका समर्थन करना; (रैटिफिकेशन); दे० 'अनुसमर्थन' ।

पुष्प–पु० [सं०] फूल, कुसुम; स्त्रीका रज; कुबेरका पुष्पक विमान; आँखका एक रोग; विकसित होना, खिलना । **–काल**–पु० वसंत ऋतु; स्त्रियोंका ऋतुकाल । **–कीट**–पु० फूलका कीड़ा; भ्रमर, भौंरा । **–केतन**–पु० कामदेव । **–केतु**–पु० कामदेव; पुष्पांजन । **–चय,–चयन**–पु० फूल लोढ़ना । **–चाप,–धनु,–धन्वा(न्वन्)**–पु० कामदेव । **–जीवी(विन्)**–पु० माली । **–दंत**–पु० शिवका एक अनुचर; विष्णुका एक अनुचर; एक गंधर्व जिसने महिम्नस्तोत्र रचा है; एक विद्याधर; एक नाग । **–दाम(न्)**–पु० फूलोंकी माला; एक छंद । **–द्रुम**–पु० पुष्पप्रधान पौधा, वह पौधा जो केवल फूलके लिए हो । **–ध्वज**–पु० कामदेव । **–निर्यास**–पु० फूलका रस, मकरंद । **–पुर**–पु० पटनेका एक प्राचीन नाम । **–बलि**–स्त्री० फूलोंकी भेंट या चढ़ावा । **–बाण,–बाण,–विशिख**–पु० कामदेव । **–रज (स्)**–स्त्री० पराग । **–रथ**–पु० यात्रा, हवाखोरीके काम आनेवाला रथ । **–रस**–पु० फूलका रस, मकरंद । **–राग,–राज**–पु० पुखराज । **–रेणु**–स्त्री० पराग । **–वर्ग**–पु० कचनार, सेमल, अगस्त्य आदिके फूलोंका एक विशिष्ट समाहार (आ०वे०) । **–वर्षण**–पु० पुष्पवृष्टि । **–वाटिका,–वाटी**–स्त्री० फुलवारी । **–वृष्टि**–स्त्री० फूलोंकी वर्षा । **–शय्या**–स्त्री० फूलोंका बिछौना । **–शर,–शरासन**–पु० कामदेव । **–समय**–पु० वसंत ऋतु । **–सायक**–पु० कामदेव । **–सार,–स्नेह,–स्वेद**–पु० मकरंद या मधु । **–हास**–पु० फूलोंका खिलना; विष्णु । **–हीन**–वि० फूलोंसे रहित, (वह पौधा या पेड़) जिसमें फूल न लगें । पु० गूलरका पेड़ । **–हीना**–स्त्री० गतार्तवा स्त्री ।

पुष्पक–पु० [सं०] फूल; पीपल; कुबेरका विमान; मिट्टीका चूल्हा या अँगीठी; लोहेका कटोरा; रसौत; दाँतका मैल; एक तरहका साँप; एक पर्वत ।

पुष्पवती–स्त्री० [सं०] रजस्वला स्त्री; मस्त (उठी हुई) गाय ।

पुष्पांजलि–स्त्री० [सं०] अंजलीभर फूल; अंजलीमें रखे हुए फूल ।

पुष्पाकर, पुष्पागम–पु० [सं०] वसंत ऋतु ।

पुष्पाजीव, पुष्पाजीवी(विन्)–पु० [सं०] माली ।

पुष्पापीड–पु० [सं०] सिरपर धारण की जानेवाली फूलकी माला आदि ।

पुष्पायुध–पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पाराम–पु० [सं०] फुलवारी ।

पुष्पासव–पु० [सं०] मधु; फूलोंसे बनी हुई शराब ।

पुष्पित–वि० [सं०] खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल लगे हों ।

पुष्पोद्यान–पु० [सं०] फुलवारी ।

पुष्पोपजीवी(विन्)–पु० [सं०] माली ।

पुष्य–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध नक्षत्र; पूसका महीना; कलिकाल; फूल (वेद) । **–मित्र**–पु० शुंगवंशका पहला राजा जो अंतिम मौर्य सम्राट् बृहद्रथको मारकर ई० पू० १८५ में मगधके सिंहासनपर आरूढ हुआ था ।

पुष्यार्क–पु० [सं०] एक योग जो सूर्यके पुष्य नक्षत्रमें होनेपर होता है (ज्यो०) ।

पुसाना*–अ० क्रि० पूरा पड़ना; उचित जान पड़ना ।

पुस्तक–स्त्री०[सं०] हाथकी लिखी या छपी हुई पोथी, ग्रंथ, किताब । **–मुद्रा**–स्त्री० हाथकी एक मुद्रा (तंत्र) ।

पुस्तकाकार–वि० [सं०] जो आकारमें पुस्तकके समान या पुस्तकके रूपमें हो, पुस्तकके आकारका ।

पुस्तकागार, पुस्तकालय–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विभिन्न विषयोंकी पुस्तकें संगृहीत हों, (लाइब्रेरी) ।

पुस्तकाध्यक्ष–पु०[सं०] (लाइब्रेरियन) दे०'ग्रंथागारिक' ।

पुस्तकास्तरण–पु० [सं०] किताब या पोथीका बेठन ।

पुस्तकी–स्त्री० [सं०] छोटा ग्रंथ ।

पुस्त-डाक–पु० (बुकपोस्ट) छपी हुई पुस्तकें, संवादपत्र या उसमें छपनेके लिए भेजे जानेवाले लेख, समाचार आदि डाक-विभाग द्वारा निर्धारित विशेष रियायती दरसे भेजनेकी रीति ।

पुस्तिका–स्त्री० [सं०] छोटी पुस्तक ।

पुहकर, पुहुकर*–पु० दे० 'पुष्कर' ।

पुहना*–अ० क्रि० पोहा जाना, गूँथा जाना ।

पुहमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

पुहाना–स० क्रि० गुथवाना, पिरोनेका काम कराना ।

पुहुप*–पु० फूल, पुष्प । **–राग**–पु० पुष्पराग, पुखराज । **–रेनु**–स्त्री० पुष्परेणु, पराग ।

पुहुमी*–स्त्री० भूमि, पृथ्वी । **–पति**–पु० राजा ।

पुहुवी*–स्त्री० भूमि, पृथ्वी ।

पूँगी†–स्त्री० एक तरहकी बाँसुरी ।

पूँछ–स्त्री० पशु-पक्षी आदिके शरीरका वह रीढ़से लगा अंग जो प्रायः गुदाके ऊपर-ऊपर दूरतक लंबा चला जाता है; किसी पदार्थका पिछला भाग, सदा पीछे लगा रहनेवाला, पुछल्ला; पूँछकी तरह जुड़ी हुई वस्तु । मु० **(किसीकी)–पकड़कर चलना**–आँख मूँदकर किसीका अनुगमन करना; किसीकी सहायतासे कोई काम करना ।

पूँछा–स्त्री० दे० 'पूछ' । **–ताछ,–पाछ**–स्त्री० दे० 'पूछताछ' ।

पूँछना–स० क्रि० दे० 'पूछना' ।

पूँछलतारा–पु० दे० 'पुच्छलतारा'।

पूँजी–स्त्री० किसी व्यवसायमें लगाया हुआ धन, वह धन जिससे कोई व्यवसाय आरंभ किया गया हो; मूल धन; जोड़ा, बटोरा हुआ धन, संचित धन; रुपया-पैसा, द्रव्य; किसी विषयका ज्ञान, विद्या-बुद्धि; * समूह, ढेर। **–गतव्यय**–पु० (कैपिटल एक्सपेंडिचर) उत्पादक कार्योंके लिए–जैसे रेलों, नहरों इत्यादिके निर्माणार्थ–किया जानेवाला व्यय। **–दार**–पु० दे० 'पूँजीपति'। **–पति**–पु० वह धनी व्यक्ति जो उद्योग और व्यवसायमें पूँजी लगाकर अपनी जीविका चलाता हो, कारखानेदार; धनी व्यक्ति। **–वाद**–पु० वह व्यवस्था जिसमें धनियोंका वर्ग उत्पादनके साधनोंपर अधिकार कर श्रमिकोंका शोषण करता है (कैपिटलिज्म)। **–वादी**–वि० पूँजीवादके सिद्धांतोंका प्रयोग करनेवाला।

पूआ–पु० दे० 'पुआ'।

पूग–पु० [सं०] सुपारीका पेड़ या उसका फल; कटहलका पेड़ या फल; संघ; समूह; राशि; स्वभाव, प्रकृति। **–पात्र**–पु० पीकदान; पानदान। **–पुष्पिका**–स्त्री० विवाह-संबंध पक्का होनेपर दिया जानेवाला पान-फूल। **–पोट**–पु० सुपारीका नया पेड़। **–फल**–पु० सुपारी। **–रोट**–पु० हिंतालका पेड़। **–वैर**–पु० वह विरोध, शत्रुता जो बहुतसे लोगोंसे हो।

पूगना*–अ० क्रि० पूरा होना–'साईं संग साध नहिं पूगी'–कबीर।

पूगी–स्त्री० [सं०] सुपारीका पेड़; सुपारी। **–फल**–पु० सुपारी। **–लता**–स्त्री० सुपारीका पेड़।

पूछ–स्त्री० पूछने, पूछे जानेका भाव या क्रिया; खोज; कद्र, आदर; माँग (वस्तुके लिए)। **–गछ**–स्त्री० दे० 'पूछताछ'। **–ताछ,–पाछ**–स्त्री० किसी बातकी पक्की जानकारीके लिए उसके विषयमें अनेक व्यक्तियोंसे कई प्रकारके प्रश्न पूछना।

पूछना–स० क्रि० किसी वस्तुके संबंधमें किसीसे कोई प्रश्न करना, किसी बातकी जिज्ञासासे कोई प्रश्न करना; किसीकी कुशल आदिके विषयमें प्रश्न करना; खोज-खबर लेना; कद्र करना; टोकना; जवाब तलब करना।

पूछरी*–स्त्री० पूँछ; पिछला भाग; गोवर्धन पहाड़का अंतिम भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी–स्त्री० पूछताछ करनेकी क्रिया।

पूजक–पु० [सं०] पूजा करनेवाला, उपासक।

पूजन–पु० [सं०] पूजनेकी क्रिया, अर्चन; सत्कार।

पूजना–स० क्रि० पत्र, पुष्प, गंध, फल, जल आदि समर्पित करके ईश्वर या किसी विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण, स्तवन आदि करना, ईश्वर या किसी देवताका अर्चन, आराधन करना; सत्कार करना, आवभगत करना; घूस देना, जेब गरम करना (ला०)। अ० क्रि० पूरा होना; घाव, गड्ढेका भरकर बराबर होना; बराबरीका या समतुल्य होना–'सेरसाहि सरि पूज न कोऊ'–प० बेबाक किया जाना, चुकता होना।

पूजनीय–वि० [सं०] पूजा करने योग्य; आदरके योग्य।

पूजमान–वि० पूजित होनेवाला, जिसकी पूजा की जाती हो, पूज्य।

पूजयितव्य–वि० [सं०] पूजा करने योग्य।

पूजयिता(तृ)–वि०, पु० [सं०] पूजा करनेवाला।

पूजा–स्त्री० [सं०] पत्र, पुष्प, गंध आदिके समर्पणके साथ ईश्वर या विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण आदि करनेका कृत्य, अर्चन; सत्कार, आवभगत, संभावना; घूस देना, जेब गरम करना (ला०); ताड़न, पिटाई (व्यंग्य)। **–कर**–वि, पु० पूजा करनेवाला। **–गृह**–पु० मंदिर, देवालय; उपासना-मंदिर।

पूजार्ह–वि० [सं०] पूजाके योग्य, पूजनीय; सत्कारके योग्य, मान्य।

पूजित–वि० [सं०] जिसकी पूजा की गयी हो, अर्चित; जिसका सत्कार किया गया हो, सत्कृत; माना हुआ, स्वीकृत।

पूजितव्य–वि० [सं०] पूजाके योग्य, पूजनीय।

पूजोपकरण–पु० [सं०] देवताकी पूजाके लिए आवश्यक वस्तुएँ।

पूज्य–वि० [सं०] पूजा करने योग्य; सत्कारके योग्य; मान्य, आदरणीय। **–पाद**–वि० जिसके चरण पूजनीय हों, अति पूज्य।

पूज्यमान–वि० [सं०] जो पूजित हो रहा हो, पूजा जाता हुआ।

पूठि*–स्त्री० पीठ।

पूड़ी–स्त्री० तबले या मृदंगके मुँहपर मढ़ा हुआ चमड़ा; दे० 'पूरी'।

पूत–पु० पुत्र, बेटा; [सं०] सत्य; शंख; श्वेत कुश; कठेर नामका पेड़। वि० पवित्र किया हुआ, शुद्ध; साफ किया हुआ (अन्न); बदबूदार; आविष्कृत।

पूतड़ा–पु० छोटे बच्चेका छोटा बिस्तर।

पूतन–पु० [सं०] भूतयोनिकी एक जाति या भेद, बेताल।

पूतना–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसे कंसने कृष्णको मारनेके लिए नंदके घर भेजा था; बालकोंका एक क्षुद्र रोग।

पूतनारि–पु० [सं०] कृष्ण।

पूतरा*–पु० दे० 'पुतला'; पुत्र, बेटा।

पूता–स्त्री० [सं०] दुर्गा। † पु० बेटा, पुत्र।

पूतात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] शुद्ध अंतःकरणवाला। पु० विष्णु; संत।

पूति–स्त्री० [सं०] पवित्रता, शुद्धता; दुर्गंध, बदबू; रोहिष तृण; गंधमार्जार; गंदा पानी; पूय।

पूती–स्त्री० गाँठदार जड़; लहसुनकी गाँठ।

पून–वि० [सं०] नष्ट; * पूर्ण।

पूनव–स्त्री० दे० 'पूनो'।

पूनिउँ*–स्त्री० दे० 'पूनो'।

पूनी–स्त्री० धुनी हुई रुईकी मोटी बत्ती जो सूत कातनेके काम आती है।

पूनो*–स्त्री० पूर्णिमा।

पून्यो*–स्त्री० दे० 'पूनो'।

पूप–पु० [सं०] पूआ। **–शाला**–स्त्री० नानबाईकी दूकान।

पूपला, पूपलिका, पूपली, पूपाली, पूपिका–स्त्री० [सं०]

एक तरहकी मीठी पूरी।

पूय–पु० [सं०] पीप या पीव, मवाद।

पूयारि–पु० [सं०] नीमका पेड़।

पूर–पु० किसी पकवानके भीतर भरा जानेवाला मसाला; [सं०] जलराशि; प्रवाह; बाढ़; जलाशय; घावको साफ करना या भरना; व्रणशुद्धि; । * वि० पूर्ण, पूरा।

पूरक–वि० [सं०] पूरा करनेवाला, पूर्ति करनेवाला; तुष्ट करनेवाला। पु० एक प्रकारका प्राणायाम जिसमें नाकके बायें छेदसे प्राणवायुको धीरे-धीरे भीतर पहुँचाते हैं; किसी चीजकी कमी पूरी करनेके लिए ऊपरसे मिलाया जानेवाला अंश।

पूरण–पु० [सं०] पूर्ण या पूरा करनेकी क्रिया; भरने या भरे जानेकी क्रिया; एक प्रकारकी रोटी; भरना; गुणन (गणित)।

पूरन–पु० उबाले जानेके बाद सिलपर पिसी हुई मटर या चनेकी दाल। * वि० दे० 'पूर्ण'। **–काम***–वि० दे० 'पूर्णकाम'। **–परब***–पु० पूर्णिमा, पूनो। **–पूरी**–स्त्री० वह पूरी जिसमें पूरन भरा गया हो, पूरन भरी हुई पूरी। **–मासी†**–स्त्री० दे० 'पूर्णमासी'।

पूरना–†स० क्रि० पूरा करना, पूर्ति करना; सिद्ध करना, पूर्ण करना (मनोरथके साथ); * आच्छादित करना, ढक देना, व्याप्त कर देना; त्योहारों, मांगलिक अवसरोंपर अबीर, चौरेठे आदिसे पृथ्वीपर विशेष आकारके क्षेत्र बनाना (चौक पूरना); बटना; * बजाना। अ० क्रि० व्याप्त होना, ओत-प्रोत होना; रमना; छाना।

पूरनिमा*–स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूरब–पु० सूरजके निकलनेकी दिशा; पश्चिमके सामनेकी दिशा। * वि० दे० 'पूर्व'। * अ० पहले, पूर्व।

पूरबल*–पु० प्राचीन काल, पुराना जमाना; पूर्वजन्म।

पूरबला*–वि० प्राचीन समयका, पुराना; पूर्वजन्मका।

पूरबली*–स्त्री० पूर्व जन्मका कर्म।

पूरबिया†–पु० पूरबी देशका निवासी। वि० दे० 'पूरबी'।

पूरबी–वि० पूरब-संबंधी; पूरबका। स्त्री० एक राग।

पूरयिता(तृ)–पु० [सं०] पूर्ण करनेवाला; विष्णु। वि० पूरा करनेवाला; संतुष्ट करनेवाला।

पूरा–वि० भरा हुआ, परिपूर्ण, खालीका उलटा; जो अपने सभी अंशों, अंगोंसे युक्त हो, समूचा, अन्यून, सकल; जिसमें कोई कोर-कसर न हो; जिसमें किसी प्रकारकी न्यूनता न हो; यथेष्ट, पर्याप्त, जितना चाहिये उतना; जो अधूरा न हो, समाप्त, पूर्ण; सिद्ध, सफल; पक्का; ठीक, सही। मु० **(कोई काम)–उतरना**–भली भाँति संपन्न होना। **(किसीका)–पड़ना**–अँट जाना; कमी न होना। **(दिन) (पूरे) करना**–किसी तरह समय बिताना। **(दिन)–होना**–अंतिम समय निकट आना।

पूरानीत भूमि–स्त्री० [सं०] (एल्यूविअल सॉइल) दे० 'जलोढ भूमि'।

पूरित–वि० [सं०] पूरा किया हुआ; भरा हुआ; गुणा किया हुआ, गुणित; तृप्त।

पूरी–स्त्री० घी या तेलमें छानी हुई रोटी; तबले आदिके मुँहपरका चमड़ा; * घास आदिका पूला।

पूरुख*–पु० दे० 'पूरुष'।

पूरुष–पु० [सं०] पुरुष; आत्मा।

पूर्ण–वि० [सं०] भरा हुआ; समूचा, अखंड, समग्र; पूरा किया हुआ, सिद्ध; समाप्त, संपन्न; जिसे किसी बातकी अपेक्षा न हो, आप्तकाम; यथेष्ट, पर्याप्त; बीता हुआ, अतीत; तृप्त; शब्दकारी; सशक्त; स्वार्थी; झुकाया हुआ (धनुष्)। **–काम**–वि० जिसकी सभी इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों, जिसकी कोई इच्छा पूरी होनेको बाकी न हो, परितुष्ट। **–कुंभ**–पु० जल आदिसे भरा हुआ कलसा; एक प्रकारका युद्ध। **–गर्भा**–वि० स्त्री० जिसका गर्भ पूरी तरह वृद्धिको प्राप्त हो चुका हो, जो शीघ्र बच्चा जननेवाली हो। **–चंद्र**–पु० पूर्णिमाका चंद्रमा। **–प्रज्ञ, –बोध**–वि० परम ज्ञानी। **–मासी**–स्त्री० शुक्ल पक्षकी अंतिम तिथि जिसमें चंद्रमा अपनी सोलहों कलाओंसे युक्त हो जाता है, पूनो। **–विराम**–पु० वाक्यकी समाप्तिका सूचक चिह्न।

पूर्णतः, पूर्णतया–अ० [सं०] अच्छी तरह, पूर्ण रूपसे।

पूर्णांक–पु० [सं०] पूरी संख्या; अविभक्त संख्या (गणित); किसी प्रश्नपत्रके लिए निर्धारित अंक।

पूर्णाधिकारप्राप्त दूत–पु० [सं०] (मिनिस्टर प्लेनीपोटेंशिअरी) वह दूत जिसे स्वविवेकसे काम लेते हुए यथावश्यक निर्णय करनेका पूरा अधिकार दिया गया हो।

पूर्णाधिवेशन–पु० [सं०] (प्लीनरी सेशन) किसी सभा, संस्था आदिका पूरा अधिवेशन—वह अधिवेशन जिसमें उसके सभी सदस्य सम्मिलित हो सकें।

पूर्णायु(स्)–स्त्री० [सं०] सौ वर्षकी आयु (मनुष्यकी पूरी आयु सौ वर्षकी मानी गयी है)। वि० सौ वर्षकी आयुवाला। पु० एक गंधर्व।

पूर्णावतार–पु० [सं०] वह अवतार जिसमें ईश्वर अपनी सभी कलाओंसे युक्त होकर अवतीर्ण हुआ हो, विष्णुका चौथा, सातवाँ और आठवाँ अवतार।

पूर्णाश–वि० [सं०] जिसकी आशा पूरी हो चुकी हो।

पूर्णाहुति–स्त्री० [सं०] वह आहुति जिससे होमकर्म समाप्त किया जाता है, होमकर्मकी अंतिम आहुति; किसी कार्यका वह अंग जिससे वह पूर्णताको प्राप्त हो।

पूर्णिमा–स्त्री० [सं०] शुक्ल पक्षकी अंतिम तिथि, पूनो।

पूर्णेंदु–पु० [सं०] सोलहों कलाओंसे युक्त चंद्रमा।

पूर्णोपमा–स्त्री० [सं०] उपमालंकारका वह भेद जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म, ये चारों अंग उक्त हों।

पूर्त–वि० [सं०] पूरा किया हुआ, पूरित; ढका हुआ, छन्न, व्याप्त; पालित; रक्षित। पु० पूरा करना; पालन; कुआँ, तालाब खोदवाने, मंदिर बनवाने आदिका धार्मिक कृत्य; पुरस्कार। **–विभाग**–पु० वह सरकारी विभाग जिसके जिम्मे सड़क, नहर, पुल आदि बनवानेका काम रहता है, तामीरातका मुहकमा (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट)। **–संस्था**–स्त्री० (चैरिटेबिल इंस्टिट्यूशन) कुआँ, तालाब आदि धर्मार्थ बनवानेवाली संस्था।

पूर्ति–स्त्री० [सं०] पूरा करनेकी क्रिया, पूरण; संतुष्टि, तृप्ति; गुणा करना, गुणन; उपभोक्ताओंकी आवश्यकता पूरी करनेके लिए उन्हें चीजें देना, जुटाना, समायोग (सप्लाई)।

पूर्त्यधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] (सप्लाई ऑफिसर) जनताकी आवश्यकताकी कतिपय वस्तुओं–लोहा, सीमेंट, कपड़ा आदि–के समुचित वितरणकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

पूर्व–वि० [सं०] पूरबी; पहला, प्रथम, आद्य; पहलेका, आगेका; प्राचीन, पुराना; पिछला; पूरबमें स्थित; पहले कहा हुआ; बहुत दिनोंसे चला आता हुआ(रिवाज आदि)। पु० सूरजके निकलनेकी दिशा, पूरब; अग्रभाग। अ० पहले, पेश्तर। **–कर्म(न्)**–पु० प्रथम कार्य; पूर्व जन्मका कर्म; तैयारी। **–काल**–पु० प्राचीन काल; पहलेका समय, बीता हुआ समय। **–कालिक,–कालीन**–वि० पूर्वकाल-संबंधी, पुराना, प्राचीन; पहलेका। **–कालिक क्रिया**–स्त्री० वह क्रिया जिसे पूरा कर कर्ता दूसरा कार्य करे (जैसे वह 'खाकर' पढ़ने लगा)। **–कृत**–वि० जो पहले किया गया हो। पु० पहलेका कर्म; पूर्वजन्मका कर्म। **–क्रयका अधिकार**–पु० (राइट ऑफ प्री-एंपशन) कोई संपत्ति आदि औरोंसे पहले खरीद सकनेका विधिक अधिकार, हकशुफा। **–गंगा**–स्त्री० नर्मदा नदी। **–ग**–वि० पहले जानेवाला; पहलेका, आगेका, पूर्ववर्ती। **–गामी**–वि० दे० 'पूर्वग'। **–ज**–वि० जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जनमा हुआ। पु० बापसे पहलेकी पीढ़ीमें उत्पन्न पुरुष, पुरखा; बड़ा भाई, अग्रज; मनुष्योंके पूर्व पुरुष; सबसे बड़ा लड़का। **–जन्म(न्)**–पु० वर्तमान जन्मसे पहलेका जन्म, पिछला जन्म। **–जन्मा(न्मन्)**–पु० जेठा भाई। **–जा**–स्त्री० बड़ी बहन। **–ज्ञान**–पु० पूर्व जन्ममें उपार्जित ज्ञान। **–तिथित**–वि० (एंटीडेटेड) (वह प्रलेखादि) जिसमें वास्तविक तिथिसे पहलेकी तिथि दी गयी हो। **–दिन**–पु० दिनका मध्याह्नसे पहलेका भाग। **–देहिक,–दैहिक**–वि० पूर्व जन्ममें किया हुआ। **–धारणा**–स्त्री० (प्रेजूडिस) किसीके पक्ष या विपक्षमें पहलेसे स्थिर की गयी धारणा, कायम कर ली गयी राय। **–धारणान्वित,–धारणायुक्त**–वि० (प्रेजूडिस्ड) जिसने पहले ही किसीके पक्ष या विपक्षमें मत स्थिर कर लिया हो; (वह कथन) जो पूर्वधारणाके आधारपर किया गया हो। **–निश्चित**–वि० जिसका निश्चय पहलेसे हो चुका हो। **–पक्ष**–पु० अगला हिस्सा; शास्त्र-विचारमें किसी संशयवाले स्थलके संबंधमें उठाया गया प्रश्न; किसी विषयके विमर्शकी वह कोटि जिसमें सिद्धांतके विरुद्ध तर्क उपस्थित किये जाते हैं; विवाद या अभियोगमें वादीकी प्रतिज्ञा या नालिश, मुद्दईकी फरियाद; कृष्ण पक्ष। **–पद**–पु० समासमें पहला पद; पहला स्थान। **–पीठिका**–स्त्री० पहली पीठिका, भूमिका। **–पुरुष**–पु० पुरखा, दादा-परदादा आदि। **–प्रज्ञा**–स्त्री० अतीतका ज्ञान, स्मृति। **–प्लावनिक**–वि० (एंटी डाइलूवियल) प्रलयके समयकी बाढ़के पहलेका। **–फाल्गुनी**–स्त्री० एक नक्षत्र। **–भाग**–पु० अगला या ऊपरका भाग। **–भाद्रपदा**–स्त्री० एक नक्षत्र। **–मीमांसा**–स्त्री० मीमांसा दर्शनका वह भाग जिसमें कर्मकांडका तात्त्विक विवेचन किया गया है। **–रंग**–पु० विघ्नशांतिके लिए अभिनयके आरंभमें किये जानेवाले कृत्य–नांदी-पाठ आदि। **–राग**–पु० नायक और नायिकामें श्रवण, दर्शन आदिके कारण मिलनसे पहले उत्पन्न होनेवाला अनुराग। **–रूप**–पु० पहलेवाला रूप, वह रूप जो पहले रहा हो; ऐसा लक्षण जिससे किसी भावी वस्तुके आगमकी सूचना मिले; रोगका आरंभिक लक्षण; आसार; एक अर्थालंकार जहाँ किसीके विनष्ट गुण, रूप आदिके फिरसे आ जाने या उस वस्तु अथवा व्यक्तिके पुनः अपने पूर्व रूपमें आ जानेका वर्णन होता है। **–वर्तिता, –स्थानीयता**–स्त्री० (प्रेसीडेंस) समय या स्थान आदिकी दृष्टिसे पहले रखे जाने, विचार किये जाने आदिका भाव। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० पहले होनेवाला, पहलेका। **–वाद**–पु० वादीका अभियोग या दावा, मुद्दईकी नालिश। **–वादी (दिन्)**–पु० मुद्दई, वादी। **–विद्**–वि० जिसे पुरानी बातें मालूम हों, पुराविद्। **–वृत्त**–पु० पुराना वृत्तांत; इतिहास; पहलेका चरित्र या आचरण। **–संचित**–वि० पहले एकत्र किया हुआ। **–सम्मोदन**–पु० (प्रीवियस सैंकशन) किसी आदेश, नियमादिके संबंधमें उच्चाधिकारियोंसे पहलेसे ही प्राप्त कर ली गयी स्वीकृति या पुष्टि। **–स्थिति**–स्त्री० पहलेकी दशा। **–स्थिति-स्थापन**–पु० (रेस्टिट्यूशन) (लचीलेपन आदिके कारण) पुनः पूर्वस्थितिको प्राप्त हो जाना, प्रत्यास्थापन।

पूर्वक–अ०[सं०] साथ, सहित (संज्ञाके साथ प्रयुक्त, जैसे–कृपापूर्वक)। वि० पहलेका; पहला।

पूर्वतः (तस्)–अ० [सं०] पहले, प्रथमतः, सामने।

पूर्वतन–वि० [सं०] पहला, पुराना।

पूर्वता–स्त्री० [सं०] दे० 'पूर्ववर्तिता'।

पूर्ववत्–अ० [सं०] पहलेकी तरह। **–करण**–पु० (रेस्टोरेशन) पहलेकी स्थितिमें ला देना, पहुँचा देना; फिर चालू कर देना, प्रभावी बना देना।

पूर्वा–स्त्री० [सं०] प्राची, पूरब। **–फाल्गुनी**–स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे ग्यारहवाँ नक्षत्र। **–भाद्रपदा**–स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वाचल, पूर्वाद्रि–पु० [सं०] उदयाचल।

पूर्वाधिकारी (रिन्)–पु० [सं०] पहलेका अधिकारी।

पूर्वानिल–पु० [सं०] पूरबी हवा, पुरवा।

पूर्वानुमान–पु० [सं०] (फोरकास्ट) निकट भविष्यमें होनेवाली वर्षा, ठंड, पैदावार या किसी संभावित घटना आदिके संबंधमें पहलेसे किया गया अनुमान।

पूर्वानुमति निष्कर्ष–पु० [सं०] (फोरगौन् कॉनक्लूजन) वह निष्कर्ष या नतीजा जिसका अनुमान पहलेसे ही कर लिया गया हो।

पूर्वानुराग–पु० [सं०] दे० 'पूर्वराग'।

पूर्वापर–वि० [सं०] अगला और पिछला; पूरब और पच्छिमका। पु० आगा-पीछा; प्रमाण और प्रमेय।

पूर्वापराधी(धिन्)–पु०[सं०] (हिस्ट्रीशीटर) वह मुलजिम या कैदी जो पहले कई बार अपराध (जुर्म) कर चुका हो।

पूर्वापर्य–पु० [सं०] पूर्वापरका भाव।

पूर्वाभिनय–पु०[सं०] (रिहर्सल) शीघ्र खेले जानेवाले किसी नाटकका या निर्धारित समयपर किये जानेवाले हमले आदिका पहलेसे किया गया पूरा अभिनय या अभ्यास।

पूर्वाभिमुख–वि० [सं०] जिसका रुख पूरबकी ओर हो।

अ० पूरबकी ओर।

पूर्वाभिषेक–पु० [सं०] पहलेका स्नान; एक मंत्र।

पूर्वाभ्यास–पु०[सं०] पहले किया हुआ अभ्यास; पहलेका अभ्यास।

पूर्वार्जित–वि० [सं०] पहलेका उपार्जन किया हुआ।

पूर्वार्द्ध, पूर्वार्ध–पु० [सं०] दो बराबर भागोंमेंसे पहला भाग, उत्तरार्द्धका उलटा।

पूर्वावधानता–स्त्री० [सं०] (प्रीकाशन) अनिष्ट या हानिकर परिणामकी संभावनाका खयाल कर पहलेसे सावधान हो जानेकी क्रिया।

पूर्वाषाढ़ा–स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे बीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वाह्ण–पु० [सं०] दिनके पहले दो प्रहर।

पूर्वाह्णिक–वि० [सं०] पूर्वाह्ण-संबंधी। पु० दिनके पहले भागमें किया जानेवाला कृत्य।

पूर्वी–वि० पूरबका, पूरबी।

पूर्वेतर–वि० [सं०] पश्चिमी।

पूर्वोक्त–वि० [सं०] जिसका कथन पहले हो चुका हो, पहले कहा हुआ।

पूर्वोत्तर–वि० [सं०] उत्तरी-पूरबी।

पूर्वोदाहरण–पु० [सं०] (प्रेजीडेंट) पहलेकी कोई घटना या मामला जो वादकी वैसी ही घटनाओंके लिए उदाहरण या नजीरका काम दे; किसी न्यायालयका वह अभिनिर्णय या कार्यविधि जो आदर्श या नजीरका काम दे; नजीर।

पूर्वोपाय–पु० [सं०] (प्रीकाशन) अनिष्ट या हानिकी संभावना रोकनेके लिए पहलेसे किया गया उपाय।

पूल, पूलक–पु० [सं०] तृण आदिका ढेर, पूला।

पूला–पु० तृण आदिका बँधा हुआ मुट्ठा।

पूलिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी मीठी पूरी।

पूली–स्त्री० छोटा पूला।

पूषण, पूषन*–पु० सूर्य।

पूस–पु० पौष मास।

पृच्छक–पु० [सं०] पूछनेवाला, जिज्ञासु।

पृथक्–अ० [सं०] अलग, जुदा, बिना, भिन्न। **–करण**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० अलग करनेका काम; विश्लेषण। **–शय्या**–स्त्री० अलग सोना। **–शायी(यिन्)**–वि० अकेले या अलग सोनेवाला।

पृथक्ता–स्त्री०, **पृथक्त्व**–पु० [सं०] पृथक् होनेका भाव, भिन्नता, अलहदगी; चौबीस गुणोंमेंसे एक (वैशेषिक)। **–कृतावादी नीति**–स्त्री (आइसॉलेशनिज्म) (द्वितीय महायुद्धके पूर्व) अमेरिकाके कतिपय राजनीतिज्ञों तथा राजनेताओंका यह मत कि अमेरिकाको यूरोपीय झगड़ोंसे पृथक् रहना चाहिये।

पृथग्रूप–वि० [सं०] अनेक रूपोंवाला, नाना प्रकारका।

पृथग्वासन-नीति–स्त्री०[सं०] (एपारथाइड पालिसी) कुछ लोगोंको अन्य लोगोंसे–दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंको यूरोपियनोंसे–पृथक् बसानेकी नीति।

पृथवी–स्त्री० [सं०] दे० 'पृथ्वी'।

पृथा–स्त्री० [सं०] पांडुपत्नी कुंती। **–तनय,–सुत**–पु० युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम (विशेषतः अर्जुन)।

पृथिका–स्त्री० [सं०] गोजर।

पृथिवी–स्त्री० [सं०] दे० 'पृथ्वी'। **–कंप**–पु० भूडोल। **–तल**–पु० पृथ्वीकी सतह, धरातल। **–नाथ,–पति**–पु० राजा।

पृथी*–स्त्री० दे० 'पृथ्वी'। **–नाथ**–पु० राजा।

पृथु–वि० [सं०] चौड़ा; मोटा; महान्, विशाल; प्रभूत, बहुसंख्यक; चतुर; विशिष्ट। पु० अग्नि; शिव; विष्णु; वेणुके पुत्र जो प्रथम राजा माने जाते हैं (इन्होंने ही गोरूपधारिणी पृथ्वीसे ओषधियोंका दोहन किया था)। **–ग्रीव**–वि० मोटे गलेवाला।

पृथुल–वि० [सं०] स्थूल, मोटा; विस्तीर्ण, विशाल। **–लोचन**–वि० बड़ी आँखोंवाला। **–वक्षा(क्षस्)**–वि० जिसका सीना चौड़ा हो। **–विक्रम**–वि० बहुत वीर, पराक्रमी।

पृथुलाक्ष–वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला।

पृथूदर–वि० [सं०] बड़े पेटवाला। पु० मेढ़ा।

पृथ्वींद्र–पु० [सं०] राजा।

पृथ्वी–स्त्री० [सं०] सौरमंडलका वह प्रसिद्ध ग्रह जिसपर मर्त्यलोककी स्थिति है, पाँच महाभूतोंमेंसे एक; पृथ्वीका तल, भूमि, धरती। **–तनया**–स्त्री० सीता। **–धर**–पु० पर्वत। **–नाथ,–पति,–पाल**–पु० राजा। **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह। **–भुक्(ज्),–भृत्**–पु० राजा।

पृथ्वीश–पु० [सं०] राजा।

पृष्ट–वि [सं०] पूछा हुआ; जिससे पूछा गया हो; सिक्त।

पृष्ठ–पु० [सं०] पीठ; किसी वस्तुका पिछला भाग; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, तल; पुस्तकके पन्नेका एक ओरका भाग, सफा। **–देश**–पु० पीछेका भाग। **–पोषक**–पु० सहायक। **–पोषण**–पु० सहायता करना। **–भाग**–पु० पिछला भाग। **–भूमि**–स्त्री० मकानकी ऊपरकी मंजिल या छत; पीछेकी भूमि या पीछेका दृश्य, पृष्ठिका; पहलेकी बातें। **–मांसाद**–पु० पीठका मांस खानेवाला; चुगुली करनेवाला, चुगुलखोर। **–मांसादन**–पु० पीठका मांस खानेकी क्रिया; चुगली खाना। **–यान**–पु० सवारी करना (घोड़े आदिकी)। **–रक्षक युद्ध**–पु० (रेयरगार्ड ऐक्शन) पीछे हटती हुई सेनाके पृष्ठभाग, पिछले हिस्सेकी रक्षा करनेवाली टुकड़ियों द्वारा शत्रुसे किया गया युद्ध, अनुबलका संघर्ष। **–रक्षण**–पु० पृष्ठ भागकी रक्षा। **–लग्न**–वि०पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुयायी। **–वंश**–पु० रीढ़। **–शीर्षक**–पु० (बैनर हेडलाइन) दे० 'पताकाशीर्षक'।

पृष्ठतः(तस्)–अ० [सं०] पीछे; पीछेसे, पीठकी ओरसे।

पृष्ठांकन–पु० [सं०] (एंडार्समेंट) किसी लेख, पत्र, धनादेश आदिकी पीठपर हस्ताक्षर करना, समर्थन आदिके रूपमें कुछ लिख देना या किसीको कुछ दिये जाने आदिका लिखित आदेश देना।

पृष्ठांकित–वि०[सं०] (एंडार्स्ड) जिसपर या जिसकी पीठपर हस्ताक्षर कर दिया गया या कुछ लिख दिया गया हो।

पृष्ठास्थि–स्त्री० [सं०] रीढ़।

पृष्ठिका–स्त्री० [सं०] पीछेकी भूमि तथा दृश्यादि; घटनाके पहलेकी बातें या परिस्थियाँ (बैकग्राउंड)।

पेँग–स्त्री० झूलनेके समय झूले या हिंडोलेका आगे-पीछे जाना। † पु० एक पक्षी। **मु०–मारना**–झूलेको वेगसे

और दूरतक झुलानेके लिए उसपर जोर पहुँचाना; जोरसे झुलाना या झूलना ।

पँच–पु० दे० 'पेच' ।

पँठ–स्त्री० दे० 'पैँठ' ।

पेँडुकी†–स्त्री० पंडुक, फाखता; सोनारोंकी फुँकनी; गुझिया नामक पकवान ।

पेँदा–पु० किसी गहरी वस्तुका निचला भाग जिसके बल-पर वह स्थित होती है; किसी गहरी वस्तुका तला ।

पेँदी–स्त्री०'पेंदा'का अल्पा०'; किसी गहरी वस्तुका तला । मु० **(विना)–का लोटा**–वह मनुष्य जो किसी निश्चित सिद्धांतका न हो; वह मनुष्य जो कभी इस पक्षमें मिल जाय, कभी उस पक्षमें ।

पेंशन–स्त्री० [अं०] वह मासिक या वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति या उसके उत्तराधिकारियोंको उसकी पूर्व-सेवाओंके पुरस्कारके रूपमें नियोक्ता या स्वामीकी ओरसे मिलती है । **–याफ्ता**–वि० जिसे पेंशन मिलती हो ।

पेंसिल–स्त्री० [अं०] एक प्रकारकी लेखनी जो लकड़ी या किसी धातुके पोले लंबोतरे टुकड़ेमें विशेप प्रकारके मसाले-की सलाई बैठाकर तैयार की जाती है ।

पेउश, पेउस†–पु० दे० 'पेउसी' ।

पेउसी†–स्त्री० गाय या भैंसका व्यानेके दिनसे सात दिनोंतकका दूध; इस दूधमें पकाया हुआ सोंठ, शक्कर आदिका पाक, इन्नर ।

पेखक*–पु० प्रेक्षक, देखनेवाला, दर्शक ।

पेखन*–पु० प्रेक्षण; तमाशा, दृश्य ।

पेखना*–स० क्रि० देखना ।

पेच–पु० [फा०] लपेट, चक्कर; झंझट, झमेला; मरोड़; कुश्तीका दाँव; पेटका दर्द; एक प्रकारकी कील जिसमें चूड़ियाँ बनी रहती हैं, स्क्रू; मुश्किल, कठिनाई; धोखा; फरेब; चाल; पगड़ीकी लपेट–'रहे पेच करमें पड़े परे पेचमें स्याम'–वि०; एक आभूपण जो पगड़ीपर आगेकी ओर बाँधा जाता है, सिरपेच; एक प्रकारका आभूपण जो कानों-पर धारण किया जाता है; कल, मशीन; मशीनका कोई पुरजा; किसी यंत्रका वह अंग या पुरजा जिसे घुमाने, दवाने आदिसे उसमें हरकत पैदा होती है; लड़ाई जाने-वाली पतंगोंकी डोरोंका एक दूसरेसे उलझना; युक्ति, उपाय । **–कश**–पु० बढ़इयों, लोहारोंका वह आला जिससे वे पेचोंको घुमा-घुमाकर जड़ते या निकालते हैं; वह चक्करदार आला जिससे बोतलका काग निकाला जाता है । **–दार**–वि० लपेटवाला; चक्करदार; जिसमें कोई यंत्र लगा हो; जिसमें कोई उलझन या झमेला हो, उलझनवाला । **–व ताब, (पेचो)ताब**–पु० बेचैनी; कुढ़न; फिक्र; अंदेशा; गुस्सा; गम; कहर और गजब । **–वान**–पु० फरशीमें लगायी जानेवाली बड़ी सटक; बड़ा हुक्का ।

पेचक–स्त्री० [फा०] बटे हुए तागेकी गोली, रील ।

पेचिश–स्त्री० [फा०] आमाशयमें मरोड़की बीमारी जिसमें आँव गिरता है ।

पेचीदगी–स्त्री० [फा०] पेचीदा होनेका भाव ।

पेचीदा–वि० [फा०] पेच या लपेटवाला; चक्करदार; उलझनवाला, जो जल्दी हल न हो सके, कठिन, टेढ़ा ।

पेचीला–वि० दे० 'पेचीदा' ।

पेट–पु० शरीरका वह प्रसिद्ध खोखला अंग जिसमें भोजन-का पाक होता है, उदर; पेटके भीतरकी वह थैली जिसमें खायी हुई वस्तु जमा होती है, आमाशय; छातीके नीचेसे लेकर कमरतक फैला हुआ अंग; गर्भ, हमल; मन, दिल; किसी खोखली वस्तुका भीतरका भाग; बंदूक या तोपमें गोली या गोला भरनेकी जगह; जीवनयात्रा, जीविका; एकमें जुड़े हुए चक्कीके पाटोंका भीतरी भाग; सिलका ऊपरी भाग जिसपर रखकर कोई वस्तु पीसी जाती है; रोटीका वह भाग जिधरसे वह पहले सेंकी जाती है । **–चोट्टी**–स्त्री० वह स्त्री जो गर्भिणी होते हुए भी बाहरी लक्षणोंसे वैसी न जान पड़े । **–पोँछना**–पु० अंतिम संतान । मु० **–काटना**–पैसा बचानेके लिए कम खाना, द्रव्य-संचय करनेके लिए खानेमें कंजूसी करना । **–का गहरा**–भेद प्रकट न करनेवाला । **–का धंधा**–वह पेशा जिससे गुजारा हो, जीविका । **–का पानी न पचना**–कोई बात कहे, पूछे बिना न रहा जाना । **–का पानी न हिलना**–थोड़ासा भी श्रम न पड़ना । **–का हलका**–जो गंभीर न हो, गंभीरतासे रहित । **–का हाल**–मनकी बात, तहेदिलकी बात । **–की आग**–भूख । **–की आग बुझाना**–कुछ खाकर या खिलाकर भूख शांत करना, भूख मिटाना । **–की बात**–मनकी बात; भेदकी बात, रहस्यभरी बात । **--की मार मारना**–आहार न देना, भूखा रखना । **–खलाना**–पेट पचकाकर भूखा होनेका संकेत करना; अत्यधिक दीनता प्रकट करना । **–गदराना**–गर्भका लक्षण प्रकट होना । **–गिरना**–गर्भपात होना । **–गिराना**–गर्भपात कराना । **–चलना**–दस्त जारी होना । **–छँटना**–पेटका मल-रहित होना । **–छूटना**–दस्त होना । **–जलना†**–भरपेट भोजन न मिलना । **–दिखाना**–पेट दिखाकर भूखे होनेका संकेत करना । **–देना**–किसीको अपनी गुप्त बात बताना, किसीसे भेदकी बात कहना । **–पानी होना**–पतले दस्त आना । **–पालना**–किसी प्रकार निर्वाह करना, उदर-पूर्तिमात्र करते हुए निर्वाह करना । **–पीठ एक हो जाना**–बहुत दुर्बल हो जाना । **–पीठसे लगना**–दे० 'पेट पीठ एक हो जाना' । **–फूलना**–किसी बातको कहने, जानने आदिके लिए बेचैन हो उठना; गर्भ रहना । **–मारकर मरना**–आत्महत्या करना । **–में घुसना**–भेद जानने-के लिए घनिष्ठ मित्र बनना । **–मे चूहे कूदना या दौड़ना**–जोरकी भूख लगना, भूखसे व्याकुल होना । **–में डालना**–खा जाना, हड़प जाना । **–में दाढ़ी होना**–छोटी उम्रमें ही बहुत अधिक बुद्धिमान् होना । **–रहना**–गर्भ रहना ।

पेटल–वि० बड़े पेटवाला, तोंदल ।

पेटा–पु० किसी गहरी वस्तुका तलभाग; किसी वस्तुका भीतरी भाग, गर्भ; घेरा, चक्कर; नदीके भीतरकी जमीन जिसपरसे पानी बहता है; उतनी धरती जितनीसे होकर नदी बहती है; बहीका ब्योरे या तफसीलका खाना; उड़ते हुए कनकौएकी डोरका वह भाग जो ढीला पड़कर नीचेकी

ओर लटका रहता है, ढील; पशुओंकी अँतड़ी।

पेटागि*–स्त्री० पेटकी आग, भूख।

पेटार*–पु० दे० 'पिटारा'।

पेटारा*–पु० दे० 'पिटारा'।

पेटारी*–स्त्री० दे० 'पिटारी'।

पेटार्थी, पेटार्थू–वि० जो सदा खानेकी फिक्रमें रहे।

पेटिका–स्त्री० [सं०] छोटा पिटारा, पिटारी।

पेटी–स्त्री० तोंदकी झोल; वह तसमा जिससे पतलून, पैंट आदि पहननेपर कमरको कसते हैं, बेल्ट; चपरास; नाइयोंका लोहखर; वह तागा जो बुलबुलको उँगलीपर बैठानेके लिए उसकी कमरसे बाँधते हैं; [सं०] छोटा पिटारा, पिटारी; लघु मंजूषा, छोटा संदूक।

पेटीकोट–पु० [अं०] घाँघरेकी तरहका एक हलका पहनावा जिसे स्त्रियाँ साड़ीके नीचे और लड़कियाँ कुर्ती, फ्राकके साथ पहनती हैं, साया।

पेटू–वि० जिसे सदा खानेकी चिंता लगी रहे; बहुत अधिक खानेवाला, दीर्घाहारी।

पेट्रोल–पु० [अं०] एक प्रकारका खनिज तेल जिससे उत्पन्न शक्तिसे मोटर गाड़ियाँ, बसें आदि चलती हैं।

पेठा–पु० सफेद कुम्हड़ा या उससे बनी मिठाई।

पेड़–पु० वृक्ष, दरख्त।

पेड़ा–पु० चकईके आकारकी एक मिठाई जो खाँड़ मिले हुए खोयेसे तैयार की जाती है; गुँधे हुए आटेकी लोई।

पेड़ी–स्त्री० ऊपर-ऊपर काट लिये गये वृक्ष या पौधेके तनेका जड़ सहित बचा हुआ भाग; पेड़ या पौधेका तना– 'बिरिछ उचारि पेड़िसों लेहीं'–रामा०; ऊखका वह खेत जो ऊखके कट जानेके बाद रबीकी फसलके लिए जोता जाय; पानकी पुरानी बेल; पुरानी बेलसे उतारा हुआ पान; फलवाले वृक्षोंपर लगाया जानेवाला कर।

पेड़ू–पु० शरीरका नाभि और उपस्थके बीचका भाग।

पेन्हाना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना'। अ० क्रि० गाय-भैंस आदिके थनमें दूध उतर आना।

पेम*–पु० दे० 'प्रेम'।

पेमचा*–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।

पेय–वि० [सं०] पीने योग्य; जो पिया जाय। पु० पीने योग्य या पिया जानेवाला पदार्थ; जल; दूध; शरबत।

पेयूष–पु० [सं०] अमृत; ताजा घी; गायका ब्यानेके दिनसे सात दिनोंतकका दूध।

पेरना–स० क्रि० किसी घूमनेवाले पदार्थ या यंत्रके द्वारा किसी वस्तुपर ऐसा दबाव पहुँचाना कि उसका रस या स्नेह निचुड़ जाय; बहुत अधिक क्लेश पहुँचाना, सताना; किसी कामको बहुत दिनोंतक लगाये रहना, किसी कामके करनेमें बहुत ढिलाई करना; * प्रेरित करना।

पेरोल–पु० दे० 'पैरौल'।

पेलना–स० क्रि० दबाकर भीतर पहुँचाना, जोरसे भीतर घुसेड़ना; प्रेरित करना; फेंकना; उल्लंघन करना, टालना –'आयउ तात वचन मम पेली'–रामा०; ढकेलना, ठेलना; बलप्रयोग करना; आक्रमण करनेके लिए प्रेरित करना; आगे बढ़ाना।

पेलव–वि० [सं०] कोमल; कृश, क्षीण; विरल।

पेलवाना–स० क्रि० किसीको पेलनेमें प्रवृत्त करना।

पेला–पु० पेलनेकी क्रिया या भाव; * बहाना बताना, दुराव-छिपाव; नकल; चढ़ाई; झगड़ा; अपराध, कसूर।

पेलू–पु० पेलनेवाला।

पेवँ*–पु० प्रेम।

पेवस, पेवसी†–स्त्री० दे० 'पेउसी'।

पेश–अ० [फा०] सामने, आगे, समक्ष; पहले, कब्ल। **–कश**–स्त्री० नज़र, भेंट। **–कार**–पु० पेश करनेवाला; आगे रखनेवाला; अदालतका वह कर्मचारी जो हाकिमके सामने मुकदमेकी मिसिल पेश करता है, मिसिलख्वाह; किसी दफ्तर या दरबारका वह कर्मचारी जो हाकिम या मालिकके सामने कागजात पेश करके उनपर उसका आदेश लिखवाता है। **–कारी**–स्त्री० पेशकारका काम या पद। **–ख़ेमा**–पु० वह खेमा जो अगली मंजिलपर पहले ही भेज दिया जाता है; सेनाका वह भाग जो आगे-आगे चलता है, सेनाका अगला भाग, हरावल। **–गाह**–पु०, स्त्री० इजलास; दरबार, सदरमजलिस। **–गी**–स्त्री० किसी वस्तुके मूल्य या किसी कार्यके पारिश्रमिकका वह अंश जो करनेवालेको उसके पूरा होनेके पहले ही दे दिया जाता है; किसीके वेतन या पुरस्कारका वह भाग जो उसे नियत तिथिके पहले ही दे दिया जाता है, अगौड़ी, अग्रिम। **–गोई**–स्त्री० दे० 'पेशीनगोई'। **–तर**–अ० पहले, पूर्व। **–दस्ती**–स्त्री० वह काररवाई जिससे कोई झगड़ा शुरू हो, पहल। **–दामन**–पु० खिदमतगार, नौकर। **–बंदी**–स्त्री० बचावकी युक्ति जो पहलेसे की जाय; दूरदर्शिता, दूरंदेशी। **–राज**–पु० [हिं०] वह मजदूर जो पत्थर ढो-ढोकर मेमारके पास लाता है; दीवार आदिकी चुनाई करनेवाला कारीगर, राज। **–व पस, (पेशो) पस**–पु० आगा-पीछा। **मु०–आना**–सलूक करना, बर्ताव करना। **–करना**–आगे रखना, सामने रखना; हाजिर करना। **–चलना या जाना**–दे० 'वश चलना'। **(किसीसे)–पाना**–मात करना, जीतना, विजय पाना।

पेशल–वि० [सं०] कोमल, ऋजु; क्षीण; सुंदर; दक्ष।

पेशवा–पु० [फा०] नेता, सरदार, मुखिया; मराठोंके प्रधान मंत्रियोंकी उपाधि।

पेशवाई–स्त्री० पेशवाका काम या पद; [फा०] अगवानी।

पेशवाज़–स्त्री० [फा०] वेश्याओं, नर्तकियोंका घाघरा जिसपर प्रायः जरीका काम रहता है।

पेशा–पु० [फा०] वह व्यवसाय या धंधा जिससे किसीकी जीविका चलती हो, पेटका धंधा। **–वर**–पु० कोई पेशा करनेवाला। **मु०–कमाना या करना**–वेश्याका काम करना, वेश्या बनकर जीविका चलाना।

पेशानी–स्त्री० [फा०] ललाट, माथा; किस्मत, भाग्य; कागजके ऊपरका खाली हिस्सा। **–का ख़त**–भाग्यरेखा। **मु०–पर बल आना या पड़ना**–क्रोधसे ललाटपरके चमड़ेका ऊपरकी ओर खिंच जाना, त्योरी चढ़ना।

पेशाब–पु० [फा०] मूत्र, मूत। **–ख़ाना**–पु० पेशाब करनेके लिए बनायी हुई जगह। **मु०–करना**–कुछ भी न गुनना, अत्यंत हेय समझना; लानत भेजना। **(किसीके)–का चिराग़ जलना**–बहुत प्रतापी होना।

पेशि–स्त्री० [सं०] मांसपिंड; पुट्ठा ।

पेशी–स्त्री० [सं०] दे० 'पेशि'; [फा०] पेश होने या किये जानेकी क्रिया या भाव; न्यायाधीशके सामने मुकदमेका पेश होना; मुकदमेकी सुनवाई ।**–का मुहर्रिर**–पेशकार ।

पेशीनगोई–स्त्री० [फा०] होनेवाली बातको पहले ही बता देना, भविष्यवाणी ।

पेश्तर–अ० [फा०] दे० 'पेशतर'।

पेषण–पु० [सं०] पीसनेकी क्रिया, पिसाई (पिष्ट-पेषण); खरल ।

पेषणि, पेषणी–स्त्री० [सं०] सिल; चक्की; खरल ।

पेषना*–स० क्रि० देखना; पीसना ।

पेष्टा(ष्टृ)–पु० [सं०] पीसनेवाला ।

पेस*–अ० दे० 'पेश' । **–कस**–स्त्री० दे० 'पेशकश' ।

पैंजना–पु० एक तरहका पैरका कड़ा ।

पैंजनिया†–स्त्री० दे० 'पैजनिया' ।

पैंजनी–स्त्री० दे० 'पैजनी' ।

पैंट–पु० [अं०] पायजामे जैसा अंग्रेजी पहनावा, पतलून ।

पैंठ–स्त्री० खोयी हुई हुंडीके स्थानपर लिखी गयी दूसरी हुंडी; * बाजार, हाट; दुकान; बाजारका दिन ।

पैंठौर*–पु० दुकान, हाट ।

पैंड़–पु० डग; राह, रास्ता ।

पैंड़ा–पु० राह, रास्ता, पथ; रीति, चलन; घुड़सार । **मु० (पैंड़े)पड़ना***–पीछे पड़ना ।

पैंत*–स्त्री० पासा; दाव, घात ।

पैंतरा–पु० कुश्ती लड़ने, हथियार चलाने आदिमें पैर रखनेका ढंग ।

पैंतरी*–स्त्री० जूती ।

पैंतालीस–वि० चालीससे पाँच अधिक । पु० चालीससे पाँच अधिककी संख्या, ४५ ।

पैंती–स्त्री० दे० 'पवित्री'; ताँबे आदिकी बनी मुँदरी जिसे पवित्रताकी दृष्टिसे अनामिकामें पहनते हैं ।

पैंतीस–वि० तीससे पाँच अधिक । पु० तीससे पाँच अधिककी संख्या, ३५।

पैंयाँ*–स्त्री० पैर, पाँव ।

पैंसठ–वि० साठसे पाँच अधिक । पु० साठसे पाँच अधिककी संख्या, ६५ ।

पै*–अ० परंतु, लेकिन; अवश्य; पश्चात्, बाद; पास; ओर, तरफ । प्र० ऊपर, पर; से । स्त्री० ऐब, दोष । पु०दे०'पय'। **–हारी**–पु० केवल दूधपर रहनेवाला साधु ।

पैकरमा*–स्त्री० दे० 'परिक्रमा' ।

पैका–पु० [अं० 'पाइका'] एक विशेष आकारका छापेका टाइप; * पैसा 'पैका-पैका जोड़ता जुड़सी लाष करोड़ि'–कबीर ।

पैकार–पु० [फा०] फुटकर माल बेचनेवाला व्यापारी ।

पैकारी–पु० दे० 'पैकार' ।

पैखाना–पु० दे० 'पायखाना' ।

पैग़ंबर–पु० [फा०] ('पैगामवर'का अल्पार्थक) मनुष्योंके पास ईश्वरका सँदेसा पहुँचानेवाला, ईश्वरका दूत, नबी ।

पैग़ंबरी–वि० [फा०] पैगंबरका । स्त्री० पैगंबरका काम या पद ।

पैग*–पु० पग, डग–'तीन पैग बसुधा करी तऊ बावनै नाम'–रहीम ।

पैग़ाम–पु० [फा०] सँदेसा, संवाद । **–बर**–पु० सँदेसा पहुँचानेवाला, एलची, दूत ।

पैग़ामी–पु० [फा०] दूत, संदेशवाहक ।

पैज*–स्त्री० टेक, पण, प्रतिज्ञा; होड़ ।

पैजनिया†–स्त्री० दे० 'पैजनी' ।

पैजनी–स्त्री० पैरका पोला कड़ा जिसमें बजनेके लिए कुछ कंकड़ियाँ डाल दी जाती हैं ।

पैजामा–पु० दे० 'पाजामा' ।

पैज़ार–पु० [फा०] जूता ।

पैठ–स्त्री० पैठनेकी क्रिया या भाव, प्रवेश; पहुँच, गति ।

पैठना–अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना; चुभना ।

पैठाना–स० क्रि० प्रवेश कराना, भीतर पहुँचाना, घुसाना।

पैठार*–पु० प्रवेश; प्रवेश करनेका मार्ग, द्वार ।

पैठारी†–स्त्री० प्रवेश, पैठ; पहुँच ।

पैड–पु० [अं०] सोख्ते, पत्र लिखने आदिके काम आनेवाले कागजकी गड्डी ।

पैड़ी–स्त्री० सीढ़ी; मोट खींचते समय बैलोंके बार-बार कुएँके पासतक आने और लौटनेके लिए बना हुआ ढालवाँ रास्ता; वह जगह जहाँ कुएँ आदिसे निकाला हुआ सिंचाईका पानी ढाला जाता है ।

पैतरा–पु० कुश्ती, पटेबाजी आदिमें प्रतिद्वंद्वियोंका भिड़ने या वार करनेके पहले एक दूसरेसे बचते हुए कलापूर्ण ढंगसे घूम-फिरकर विभिन्न मुद्राओंमें स्थित होना; चरण-चिह्न । **(पैतरे)बाज़**–वि० चालबाज ।**–बाज़ी**–स्त्री० चालबाजी । **मु०–बदलना**–कुश्ती, पटेबाजी आदिमें घूम-फिरकर विविध मुद्राओंमें स्थित होना; नयी चाल चलना; नया हाथ दिखाना ।

पैताना–पु० दे० 'पायँता' ।

पैतामह, पैतामहिक–वि० [सं०] पितामह-संबंधी; पितामहसे प्राप्त ।

पैतृक–वि० [सं०] पिताका; पितासे प्राप्त; पूर्वजोंका; पूर्वजोंसे प्राप्त, मौरूसी ।

पैत्त, पैत्तिक–वि० [सं०] जो पित्तके प्रकोपसे हुआ हो, पित्तजनित ।

पैदल–वि० पाँव-पाँव चलनेवाला, बिना सवारीके चलनेवाला । अ० पा-प्यादे, पाँव-पाँव । पु० पा-प्यादे चलना; पा-प्यादे चलनेवाला सिपाही; शतरंजका एक मुहरा जो सीधे चलता है और आड़े मारता है ।

पैदा–वि० [फा०] उत्पन्न; जो खड़ा हुआ हो; घटित, प्रादुर्भूत; कमाया हुआ, उपार्जित । † स्त्री० आमद, आय । **–वार**–स्त्री० खेतीकी उपज ।

पैदाइश–स्त्री० [फा०] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ।

पैदाइशी–वि० [फा०] जन्मजात, सहज, कुदरती ।

पैना–वि० जिसकी धार बहुत तेज हो, तीक्ष्ण; (ला०) भीतरतक जानेवाला; जो भीतरतककी वस्तुको देख सके । पु० बैल हाँकनेकी छड़ी; अंकुश ।

पैनाना–स० क्रि० छुरी आदिकी धार तेज करना, टेना ।

पैमाइश–स्त्री० [फा०] मापनेकी क्रिया; जमीन मापनेकी

क्रिया।

पैमाना–पु० [फा०] वह साधन जिससे कोई वस्तु मापी जाय, मानदंड।

पैमाल*–वि० दे० 'पामाल'।

पैयाँ*–स्त्री० पैर, पाँव।

पैया–पु० सारहीन अन्न, अनाजका वह दाना जिसमें बीज-भाग न हो; अकिंचन मनुष्य; * पहिया।

पैर–पु० शरीरका वह प्रसिद्ध अंग जिसके बलपर जंगम प्राणी स्थित होते और चलते हैं, चरण; पैरका निशान। **–गाड़ी**–स्त्री० पैरसे चलायी जानेवाली गाड़ी (साइकिल आदि)। **मु०–उखड़ जाना**–टिक न सकना, पराजित होना। **–उठाना**–रवाना होना; तेजीसे चलना। **–का नाख़ून न देखना**–सूरत न देखना। **–छूना**–पाँव पड़ना; दीनता प्रकट करना। **–जमना**–स्थिर होना, दृढ़ होना। **–डालना**–दखल देना। **–तोड़कर बैठना**–कहीं जाना-आना बंद करना। **–तोड़ना**–चलते-चलते थक जाना; दौड़-धूप करना। **–धरना,–रखना**–कदम रखना, चलना। **(धरतीपर)–न रखना**–इतराना। **–निकालना**–पीछा छुड़ाना। **–पकड़ना**–पैर छूना; कहीं जानेसे रोकना। **–पसारना,–फैलाना**–आरामसे लेटना; आडंबर फैलाना। **–फँसाना**–अपने आपको संकटमें डालना। **–बढ़ाना**–चलना; सीमोल्लंघन करना। **–भर जाना**–थक जाना। **–भारी होना**–गर्भ रहना। **–से पैर बाँधकर रखना**–साथ रखना, कहीं जाने न देना। **पैरों चलना**–पैदल चलना।

पैरना–अ० क्रि० तैरना।

पैरवी–स्त्री० [फा०] पीछे-पीछे जाना, अनुगमन; मुकदमेकी देखरेख; कोशिश; खुशामद (हिं०)। **–कार**–पु० पैरवी करनेवाला।

पैरा–पु० रखे हुए चरण, कदम; आगमन; पैरमें पहननेका एक प्रकारका कड़ा; लकड़ी आदिका बना हुआ आरोहण-मार्ग।

पैराई–स्त्री० पैरनेकी क्रिया या भाव; तैरनेका हुनर; तैरनेकी उजरत।

पैराउ*–पु० दे० 'पैराव'।

पैराक–पु० तैरनेवाला, तैराक।

पैराना–स० क्रि० किसीको तैरनेमें प्रवृत्त करना, तैराना।

पैराव–पु० नदी आदिमें वह स्थान जो केवल तैरकर पार किया जा सके।

पैरी–स्त्री० काँसे आदिका पैरका एक चौड़ा गहना जिसे निम्न जातिकी स्त्रियाँ पहनती हैं; दाँनेके लिए फैलाये हुए अनाजके पौधे; दाँनेकी क्रिया; * सीढ़ी; पीढ़ी, पुश्त।

पैरेखना*–स० क्रि० दे० 'परेखना'।

पैरोकार–पु० दे० 'पैरवीकार'।

पैरोल–पु० [अं०] वर्जित कार्य न करने, नियत समयपर फिर हाजिर होने आदिकी प्रतिज्ञा जिसके आधारपर राजबंदी दंडकी अवधि पूरी होनेके पहिले भी विशेष कारणवश कुछ समयके लिए मुक्त कर दिया जाता है।

पैलगी†–स्त्री० पालागन, चरणस्पर्शके साथ किया हुआ प्रणाम; प्रणाम।

पैला*–वि० परला (पहला); दूसरा।

पैवंद–पु० [फा०] कपड़े आदिका वह टुकड़ा जिसे टाँककर अँगरखे आदिका छेद बंद किया जाता है, चकती; किसी पेड़के फलके आकारको बढ़ाने या उसके स्वादमें विशेषता लानेके लिए उसकी टहनीमें दूसरे सजातीय पेड़की टहनी काटकर बाँध देनेकी क्रिया; सगा-संबंधी, स्वजन। **–कार**–पु० पैवंद लगानेवाला। **–कारी**–स्त्री० पैवंद लगानेकी क्रिया।

पैवंदी–वि० [फा०] पैवंद लगाकर तैयार किया हुआ, कलमी; दोगला। पु० शफतालू।

पैवस्त–वि० [फा०] पूरी तरह व्याप्त, भिदा हुआ या जज्ब।

पैशाच–वि० [सं०] पिशाच-संबंधी; पिशाचका; पिशाचकृत; पिशाचोचित। पु० एक प्रकारका हीन विवाह जिसमें किसी सोयी हुई या प्रमत्त कन्याका कौमार हरण करनेवाला उसके पतित्वका अधिकारी हो जाता है (स्मृति)।

पैशाचिक–वि० [सं०] पिशाच-संबंधी; पिशाचका; क्रूरतापूर्ण, घोर (ला०)।

पैशाची–स्त्री० [सं०] प्राकृत भाषाका एक भेद।

पैशुन, पैशुन्य–पु० [सं०] पिशुनता, चुगलखोरी; दुष्टता।

पैष्ट–वि० [सं०] आटेका बनाया हुआ, आटेसे तैयार किया हुआ।

पैष्टिक–वि० [सं०] आटेका बना हुआ। पु० एक प्रकारकी सुरा।

पैसना*–अ० क्रि० घुसना, प्रविष्ट होना।

पैसरा*–पु० झमेला, झंझट।

पैसा–पु० ताँबेका वह सिक्का जो आनेके चौथे और रुपयेके चौसठवें भागके बराबर होता है; द्रव्य, धन। **(पैसे) वाला**–वि० धनी, मालदार, सर्राफ।

पैसार†–पु० प्रवेश, पैठ; घुसने-पैठनेका मार्ग।

पैसेंजर–पु० [अं०] यात्री। **–गाड़ी**–स्त्री० [हिं०] सवारी ढोनेवाली रेलगाड़ी।

पैहम–स्त्री० [फा०] निरंतर, लगातार।

पौँ–स्त्री० भोंपा; भोंपेकी आवाज; अपानवायु निकलनेका शब्द।

पौँकना†–अ० क्रि० पतला पाखाना फिरना; बहुत अधिक डरना। पु० चौपायोंकी दस्तोंकी बीमारी।

पौँगरा*–पु० बालक, बच्चा (कबीर)।

पौँगली–स्त्री० बाँस, नरकट आदिकी चोंगी।

पौँगा–पु० बाँसकी नली; टिन आदिका चोंगा। वि० खोखला; अज्ञ, मूर्ख। **–पंथी**–स्त्री० मूर्खतापूर्ण कार्य, ढोंग। वि० मूर्खतापूर्ण, ढोंगी।

पौँगी–स्त्री० छोटी नली; जुलाहोंका एक नरसलका आला जिसपर सूत लपेटकर वे ताना, भरना करते हैं; बाँसकी छोटी नली जो बेनेकी डाँड़ीमें उस ओर पहनायी रहती है जिधरसे पकड़कर उसे डुलाते हैं; बाँस आदि पोली और गाँठदार वस्तुओंका दो गाँठोंके बीचका भाग; * तुमड़ी।

पौँछ*–स्त्री० दे० 'पूँछ'।

पौँछन–स्त्री० किसी लगी, सटी हुई वस्तुका पोंछनेसे निकला हुआ भाग।

पौँछना–स०क्रि० किसी वस्तुपर हाथ, कपड़ा आदि फेरकर

उसपर लगा हुआ तरल पदार्थ उठा लेना या धूल आदि साफ कर देना । पु० पोंछनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोआ–पु० साँपका छोटा वच्चा, सँपोला ।

पोआना–स० क्रि० किसीसे पोनेका काम कराना; रोटी गढ़-गढ़कर पकानेवालेको देना ।

पोइया–स्त्री० घोड़ेकी सरपट चाल ।

पोइस*–स्त्री० सरपट ।

पोई–स्त्री० एक लता जिसमें पानके आकारकी मोटे दलवाली पत्तियाँ लगती हैं; अँखुआ; ईखका कल्ला; गेहूँ, ज्वार आदिका नरम पौधा ।

पोख*–पु० पालन-पोषण करनेका संबंध ।

पोखना*–स० क्रि० पालन-पोषण करना, पोसना । अ० क्रि० गाय-भैंस आदिका व्यानेका समय समीप आनेपर वदन ढीला पड़ना ।

पोखरा–पु० तालाव; † पैखाना ।

पोखरी–स्त्री० छोटा तालाव ।

पोगंड–पु० [सं०] पाँचसे दस (किसी-किसीके मतसे १६) वरसतककी उम्रका लड़का; वह जिसका कोई अंग छोटा-वड़ा या न्यूनाधिक हो । वि०अल्पवयस्क,जो अभी जवान न हो ।

पोच–वि० नीच, अधम; तुच्छ । स्त्री० खोटाई, नीचता ।

पोची*–स्त्री० खोटाई; नीचता ।

पोट–स्त्री० गठरी, मोटरी; राशि, ढेर, पुंज ।

पोटना*–स० क्रि० समेटना; अपने हाथमें करना ।

पोटरी*–स्त्री० दे० 'पोटली' ।

पोटल, पोटलक–पु०, **पोटलिका**–स्त्री० [सं०] पोटली ।

पोटला–पु० वड़ी गठरी ।

पोटली–स्त्री० छोटी गठरी; छोटेसे वस्त्रमें कसकर वाँधी हुई थोड़ीसी वस्तु ।

पोटा–पु० पेटकी थैली; आँखकी पलक; उँगलीका सिरा; हिम्मत, मजाल, कूवत; चिड़ियाका वह वच्चा जिसे अभी पर न निकले हों; नाकका मल । स्त्री० [सं०] पुरुषके लक्षणोंसे युक्त स्त्री; दासी; वह मनुष्य या जानवर जिसमें नर और मादा दोनोंके लक्षण हों ।

पोटाश–पु० [अं०] एक क्षार जो खानसे निकलता है और लकड़ीकी राखसे भी तैयार किया जाता है ।

पोटी–स्त्री० पेटकी थैली; कलेजा ।

पोट्टलिका, पोट्टली–स्त्री० [सं०] पोटली ।

पोढ़*–वि० दे० 'पोढ़ा' ।

पोढ़ा–वि० दृढ़, मजवूत; कड़ा, कठिन ।

पोढ़ाना†–अ० क्रि० दृढ़ होना, मजवूत होना, पुष्ट होना । स० क्रि० दृढ़ वनाना, पुष्ट वनाना ।

पोत–पु० [सं०] जानवरका वच्चा, पशुशावक; दस वर्षकी उम्रका हाथी; नाव, जहाज; वस्त्र, कपड़ा; घर या मकानकी नीवँ; कोंपल; वह भ्रूण जिसपर अभी झिल्ली न पड़ी हो । **–घाट**–पु० [हिं०] (पीर) पत्थर, लोहे या लकड़ीका वना वह चवूतरा जैसा ढाँचा जो समुद्रकी तरफ फैला हो और जिसपर जहाजसे उतरनेमें आसानी हो । **–धारी(रिन्)**–पु० जहाजका मालिक । **–ध्वज**–पु० (एनसाइन) जहाजपर फहरानेवाला राष्ट्रविशेष या नौदलविशेषका परिचायक ध्वज । **–निर्माणउद्योग**–पु० (शिप-बिल्डिंग इंडस्ट्री) जहाज वनाने, तैयार करनेका उद्योग या व्यवसाय । **–भंग**–पु० जहाजका चट्टानसे टकराकर ध्वस्त हो जाना । **–संतरण**–पु० (लॉंचिंग ए शिप) किसी नये बने हुए जहाजको पानीमें उतारना या तैराना ।

पोत–पु० कपड़ेकी वुनावट; ढंग, तरीका; लगान; वारी, अवसर । स्त्री० काँचका छोटा दाना । **–दार**–पु० वह जिसके पास लगानका रुपया रखा जाता है, खजानची; खजानेमें रुपये परखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, पारखी । **मु०–पूरा करना**–जैसे-तैसे कोई काम पूरा करना ।

पोतड़ा–पु० छोटे वच्चोंके चूतड़के नीचे विछाया जानेवाला कपड़ा, गँड़तरा । **(पोतड़ों)के अमीर (रईस)**–खानदानी अमीर, रईस, ऐसा अमीर जिसका वाप भी अमीर रहा हो ।

पोतन–वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध; पवित्र करनेवाला ।

पोतनहर†–स्त्री० चौका लगानेकी घोली हुई मिट्टी और पोतना रखनेके काम आनेवाला वरतन ।

पोतना–स० क्रि० किसी तरल वस्तुको अन्य वस्तुपर फैलाकर लगाना, चुपड़ना; किसी वस्तुपर किसी गीले या सूखे पदार्थको इस प्रकार लगाना कि उसपर उसकी तह जम जाय, लेप करना; मिट्टी, गोवर आदिसे लीपना । पु० पोतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोतला–पु० पराठा ।

पोता–पु० वेटेका वेटा, पौत्र; अंडकोष; लगान; पोतनेका कपड़ा; पोतनेके लिए तैयार की गयी मिट्टी; चूना फेरनेके काम आनेवाली कूँची; * कलेजा, वूता, सामर्थ्य । **मु०–फेरना**–दीवारपर चूने आदिकी पोताई करना; वरवाद कर देना, चौपट करना ।

पोता(तृ)–पु० [सं०] सोलह प्रकारके ऋत्विजोंमेंसे एक ।

पोताई–स्त्री० पोतनेका काम; पोतनेकी उजरत ।

पोताच्छादन–पु० [सं०] वस्त्रकुटीर, खेमा, रावटी ।

पोताधिरोध–पु० [सं०] (एंवार्गो) किसी देशके नौ-सेना-विभाग द्वारा वंदरगाहोंपर अन्य देशके जहाजोंके आने या वहाँसे जानेपर कुछ समयके लिए लगाया गया प्रतिवंध ।

पोतारा–पु० दे० 'पुतारा' ।

पोतारी–स्त्री० पोतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोतिका–स्त्री० [सं०] पोई नामकी लता; वस्त्र ।

पोतिया–पु० तंवाकू, चूना आदि रखनेकी थैली जिसे इन वस्तुओंका सेवन करनेवाले साथमें लिये रहते हैं; एक तरहका खिलौना; पहनकर नहानेका कपड़ेका टुकड़ा ।

पोती–स्त्री० वेटेकी वेटी, पौत्री; हँड़ियाको कड़ी आँचसे बचानेके लिए उसकी पेंदीपर किया जानेवाला मिट्टीका लेप; अर्क, मद्य चुआते समय भवकेपर फेरा जानेवाला पानीका पुतारा; पुतारा फेरनेकी क्रिया; * गुरिया ।

पोथा–पु० कागजकी वड़ी गड्डी; वड़ी पोथी ।

पोथी–स्त्री० पुस्तक, ग्रंथ; लहसुनकी गाँठ ।

पोदना–पु० एक छोटी चिड़िया; नाटा आदमी ।

पोदीना–पु० दे० 'पुदीना' ।

पोद्दार–पु० मारवाड़ी वैश्योंकी एक उपाधि; पोतदार ।

पोना–स० क्रि० लोईसे रोटी गढ़ना; (रोटी) पकाना; गूँथना, पिरोना ।

पोप–पु० [अं०] ईसाइयोंके रोमन कैथोलिक संप्रदायका प्रधान धर्माचार्य ।**–लीला**–स्त्री० [हिं०] धर्मका आडंबर फैलाना ।

पोपला–वि० जिसमें पोल हो, जो भीतरसे खाली हो; बिना दाँतका (मुँह); जिसके मुँहमें दाँत न हों ।

पोपलाना–अ० क्रि० पोपला होना ।

पोपली–स्त्री० अमोलेकी जड़में लगी हुई आमकी गुठलीको घिसकर बनाया जानेवाला बाजा जिसे लड़के बजाते हैं ।

पोया–पु० कोंपल; सँपोला; नन्हा बच्चा ।

पोयाबोई–स्त्री० छलकपटकी बातें ।

पोर–स्त्री० उँगलीकी गाँठ; उँगलीका दो गाँठोंके बीचका भाग; ईख, बाँस आदिमें दो गाँठोंके बीचका भाग; * पीठ ।

पोल–स्त्री० किसी वस्तुके भीतरकी खाली जगह, अवकाश; निःसारता, खोखलापन (ला०); प्रवेशद्वार । **–दार**–वि० पोला, खोखला । **मु० (किसीकी)–खुलना**–किसीका छिपा हुआ दोष प्रकट होना । **(किसीकी)–खोलना**–किसीके छिपे हुए दोषको प्रकट करना ।

पोला–वि० जो भीतरसे खाली हो, खोखला; निःसार, निस्तत्त्व; जिसका भीतरी भाग कड़ा या ठोस न हो, जो दबाव पड़नेसे दब या पचक जाय, पुलपुला । पु० परेतीपर सूत लपेटनेसे तैयार होनेवाला लच्छा; † एक पेड़ ।

पोलिका, पोली–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी पूरी, पूआ ।

पोलिया–स्त्री० औरतोंका पैरमें पहननेका एक पोला गहना । पु० पौरिया ।

पोलो–पु० [अं०] गेंदका एक खेल जो घोड़ेपर चढ़कर खेला जाता है, चौगान ।

पोवना*–स० क्रि० दे० 'पोना' ।

पोश–पु० [फा०] पहननेकी चीज, कपड़ा; पहननेवाला, ढकनेवाला (नकाबपोश, पलँगपोश) (समासांतमें) ।

पोशाक–स्त्री० [फा०] पहनावा, लिबास । **मु०–बढ़ाना**–कपड़े उतारना ।

पोशीदगी–स्त्री० [फा०] गुप्त होनेका भाव, छिपाव ।

पोशीदा–वि० [फा०] गुप्त, छिपा हुआ ।

पोष–पु० [सं०] पोसनेकी क्रिया, पालन; पुष्टि; वृद्धि; * संतोष ।

पोषक–पु० [सं०] पोषण करनेवाला; बढ़ानेवाला, वर्द्धक, सहायक । **–तत्त्व**–पु० (विटामिन) दे० 'खाद्योज' ।

पोषण–पु० [सं०] पोसनेकी क्रिया, पालन; वर्द्धन ।

पोषना*–स० क्रि० पोषण करना, पालना ।

पोषयिता(तृ)–वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला ।

पोषिका–स्त्री० [सं०] (एलिमेंटरी कैनाल) गलेके नीचेसे शुरू होनेवाली नली जिससे भोजन पेटमें पहुँचता है और जो आगे छोटी तथा बड़ी अँतड़ियोंसे मिल जाती है ।

पोषित–वि० [सं०] जिसका पोषण किया गया हो, पाला हुआ ।

पोषिता(तृ)–वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोषी(षिन्)–वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोष्टा(ष्टृ)–वि० [सं०] पोषण करनेवाला ।

पोष्य–वि० [सं०] पोषणके योग्य, पालने योग्य; अभ्युदय करनेवाला; प्रभूत । **–पुत्र,–सुत**–पु० वह जो पुत्रकी तरह पाला गया हो, दत्तक ।

पोस–पु० पोसनेकी क्रिया या भाव; पालनेका नाता; पालनेका उपकार ।

पोसती*–पु० अफीमची ।

पोसन*–पु० दे० 'पोषण' ।

पोसना–स० क्रि० आहार आदि देकर बड़ा करना, पालन करना; ढाँकना, छिपाना–'मोरि मुखै करसों कुच पोसै' –सुधानिधि; पोंछना ।

पोस्ट–स्त्री०[अं०] स्थान, जगह; पद; नौकरी; खंभा; डाक; पत्रवाहक । **–आफिस**–पु० डाकघर, डाकखाना, पत्रालय । **–कार्ड**–पु० डाकखानेसे खरीदा जानेवाला वह मोटे कागजका टुकड़ा जो पत्र-व्यवहारके काम आता है । **–बाक्स**–पु० किसीकी डाक या चिट्ठियाँ सुरक्षित रखनेके लिए विशेष रूपसे रखी गयी पेटी । **–मास्टर**–पु० डाकघरका प्रधान कर्मचारी, पत्रपाल । **–मास्टर जेनरल**–पु० किसी प्रांतके डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी । **–मैन**–पु० डाकखानेका वह कर्मचारी जो लोगोंके यहाँ उनकी चिट्ठियाँ पहुँचाता है, डाकिया, पत्र-वितरक ।

पोस्टर–पु० [अं०] किसी कागजपर बड़े अक्षरोंमें छपी हुई वह नोटिस जो जनताकी जानकारीके लिए जगह-जगह दीवार आदिपर चपका दी जाती है ।

पोस्त–पु० [फा०] खाल, चमड़ा; छिलका; छाल; तह, परत; अफीमका पौधा; इस पौधेका डोंड़ा ।

पोस्ता–पु० एक पौधा जिसके डोंड़ेसे अफीम निकलती है, अफीमका पौधा ।

पोस्तीन–पु० [फा०] पामीर, तुर्किस्तान और मध्य एशियाके लोगोंका एक प्रकारका पहनावा जो समूर आदि जानवरोंके बालदार चमड़ेसे बनाया जाता है; बालदार चमड़ेका कोट ।

पोहना*–स० क्रि० गूँथना, पिरोना; भेदना, छेदना; चढ़ाना, लगाना; जमाना, बैठाना ।

पोहमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

पौंड–पु० दे० 'पाउंड' । **–पावना**–पु० (स्टर्लिंग बैलेंसेज) (अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यादिके परिणामस्वरूप) ब्रिटेनसे किसी देशके पावनेकी वह रकम जो बैंक आफ इंग्लैंडमें जमा रहती है और जो उसके साथ हुए समझौतेकी शर्तोंके अनुसार क्रमशः चुकायी जाती है ।

पौंडरीक–वि० [सं०] कमल-संबंधी; कमलका; कमलका बना हुआ । पु० स्थलपद्म; एक प्रकार कुष्ठ ।

पौँड़ा, पौँढ़ा–पु० मोटे छिलके और अधिक रसवाली एक प्रकारकी लंबी और मोटी ईख ।

पौंड्र–पु० [सं०] एक प्राचीन देश; इस देशका निवासी या राजा; एक प्रकारकी ईख, पौंड़ा; भीमसेनका शंख; सांप्रदायिक चिह्न; एक संकीर्ण जाति (मनु०) ।

पौंड्रक–पु० [सं०] पौंड़ा, ईख; एक संकर जाति ।

पौँढ़ना–अ० क्रि० दे० 'पौढ़ना' ।

पौँनार–स्त्री० दे० 'पौनार' ।

पौँरना†–अ० क्रि० तैरना ।

पौँरि, पौँरी*–स्त्री० पौरी ।

पौँरिया*–पु० दे० 'पौरिया' ।

पौंश्चलीय–वि० [सं०] कुलटा-संबंधी; कुलटाका ।

पौँसरा–पु० दे० 'पौसला' ।

पौ–स्त्री० प्रातःकालका प्रकाश; पौसला, प्याऊ; पासेका एक दाँव । * पु० जड़; पाँव । **मु०–फटना**– तड़का होना । **–बारह पड़ना**–पासेमें जीतका दाँव पड़ना; लाभका मौका मिलना । **–बारह होना**–पासेमें जीतका दाँव पड़ना; विजय होना; लाभ ही लाभ होना; खूब बन आना ।

पौआ–पु० सेरका चौथा हिस्सा; मिट्टी या धातुका वह बरतन जिसमें पावभर दूध, पानी आदि अँटे ।

पौगंड–पु० [सं०] पाँचसे दस (किसी-किसीके मतसे सोलह) वर्षतककी अवस्था, पोगंडावस्था । वि० बालोचित; बालकों जैसा ।

पौंठ–स्त्री० जमीनका एक तरहका बंदोबस्त जिसमें खेत हर साल नये काश्तकारको जोतनेके लिए दिया जाता है ।

पौड़ना*–अ० क्रि० दे० 'पौढ़ना' ।

पौड़ना–अ० क्रि० लेटना; झूलना ।

पौढ़ाना–स० क्रि० सुलाना, लेटाना; झुलाना ।

पौतवाध्यक्ष–पु० [सं०] मालकी तौलकी देखरेख करनेवाला अधिकारी (कौ०) ।

पौतवापचार–पु० [सं०] कम तौलना, डाँड़ी मारना (कौ०) ।

पौतिक–वि० [सं०] दुर्गंधवाले द्रव्यका बना हुआ; (सेप्टिक) (वह व्रण) जिसमें दुर्गंध या सड़न पैदा हो गयी हो ।

पौत्र–वि० [सं०] पुत्रसंबंधी; पुत्रका । पु० बेटेका बेटा, पोता ।

पौत्रिक–वि० [सं०] पुत्र-संबंधी; पौत्र-संबंधी ।

पौत्रिकेय–पु० [सं०] पुत्रके स्थानपर माना हुआ कन्याका पुत्र ।

पौत्री–स्त्री० [सं०] पोती; दुर्गा ।

पौद–स्त्री० छोटा पौधा; एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थानपर लगाने लायक छोटा पौधा; संतान; उपज; * पाँवड़ा । [नयी पौद–नयी पीढ़ी ।]

पौदर–स्त्री० पैरका निशान, चरणचिह्न; लोगोंके पैदल चलनेसे बनी हुई राह, पगडंडी; कोल्हूके चारों ओरका वह मार्ग जिससे होकर उसे खींचनेवाला बैल घूमा करता है; मोट खींचनेवाले बैलोंके कुएँके पासतक बार-बार आने-जानेका ढालवाँ रास्ता ।

पौदा–पु० दे० 'पौधा'; बुलबुलकी कमरमें बाँधा जानेवाला फुँदना । **–गाह**–पु०, स्त्री० वह जगह जहाँ छोटे पौधे लगे हों ।

पौध–स्त्री० उपज, पैदाइश ।

पौधा–पु० छोटा पेड़; नया पेड़ ।

पौधि*–स्त्री० दे० 'पौद' ।

पौनःपुनिक–वि० [सं०] बार-बार होनेवाला ।

पौनःपुन्य–पु० [सं०] अनेकशः आवृत्ति, बार-बार होना ।

पौन–पु०, स्त्री० हवा, वायु; जीव, प्राण; भूत, प्रेत । वि० तीन-चौथाई, पूर्णसे चतुर्थांश कम ।

पौनरुक्त, पौनरुक्त्य–पु० [सं०] दुबारा उक्त होनेका भाव, आवृत्ति ।

पौना–पु० पौनका पहाड़ा; गोल और चिपटे सिरेकी छेददार या बिना छेदवाली लोहे आदिकी कलछी ।

पौनार–स्त्री० कमलकी नाल ।

पौनारि†–स्त्री० दे० 'पौनार' ।

पौनी–स्त्री० नाई, बारी आदि जिन्हें विवाह आदि मांगलिक अवसरोंपर इनाम दिया जाता है; छोटा पौना ।

पौने–वि० जो किसी संख्याका तीन चौथाई हो (संख्यावाचक शब्दोंके साथ–जैसे पौने तीन–२$\frac{3}{4}$) ।

पौमान*–पु० दे० 'पवमान'; जलाशय ।

पौरंध्र–वि० [सं०] स्त्री-संबंधी ।

पौर–*स्त्री० ड्योढ़ी । वि० [सं०] पुर-संबंधी; नगरका; जो नगरमें पैदा हुआ हो । पु० पुरवासी, नागरिक । **–कार्य**–पु० नगर-संबंधी कार्य; जनताका कार्य । **–जन**–पु० नागरिक । **–जनपद**–वि० नगर और जनपदका । **–मुख्य**–पु० नगरका प्रमुख व्यक्ति । **–वृद्ध**–पु० प्रमुख नागरिक । **–सख्य**–पु० एक नगरका नागरिक होना, सहनागरिकता ।

पौँरना†–अ० क्रि० तैरना ।

पौरव–वि० [सं०] पुरु-संबंधी; पुरुका; पुरुके गोत्रमें उत्पन्न ।

पौरांगना–स्त्री० [सं०] नगरकी स्त्री, नागरी ।

पौरा†–पु० रखे हुए चरण, कदम; आगमन ।

पौराण–वि० [सं०] प्राचीन कालका; पुराण-संबंधी; पुराणका; जिसका कथन या उल्लेख पुराणमें हो ।

पौराणिक–वि० [सं०] दे० 'पौराण'; पुराणोंका जानकार । पु० पुराणका जानकार व्यक्ति; पुराणवाचक ।

पौरिक–पु० [सं०] नागरिक; नगरका शासक ।

पौरिया–पु० ड्योढ़ीदार, द्वारपाल ।

पौरी–स्त्री० मकानका वह कोठरी या गलीकी तरहका भीतरी भाग जो प्रवेश करते ही पड़ता है, ड्योढ़ी; खड़ाऊँ ।

पौरुष–वि० [सं०] पुरुष-संबंधी; पुरुषका । पु० पुरुषका भाव, पुरुषत्व; पुरुषार्थ; शुक्र; उद्यम; पराक्रम; ऊँचाई या गहराईकी एक नाप, पुरसा; एक आदमीके ले जानेभरका बोझ ।

पौरुषेय–वि० [सं०] पुरुष-संबंधी; पुरुषका; मानवीय, मनुष्यका बनाया हुआ, मनुष्यकृत ।

पौरुष्य–पु० [सं०] साहस, मरदानगी ।

पौरोहित्य–पु० [सं०] पुरोहितका पद या कर्म ।

पौर्णमासिक–वि० [सं०] पूर्णिमा-संबंधी; पूर्णिमाके दिन होनेवाला ।

पौर्णमासी–स्त्री० [सं०] पूर्णिमा, पूनो ।

पौर्णमी, पौर्णिमा–स्त्री० [सं०] पूर्णिमा, पूनो ।

पौर्व–वि० [सं०] पहलेका; पूरबी ।

पौर्वापर्य–पु० [सं०] पूर्वापरका भाव, पूर्वापरत्व; अनुक्रम ।

पौर्वाह्णिक–वि० [सं०] पूर्वाह्ण-संबंधी; पूर्वाह्णमें किया जानेवाला ।

पौल–स्त्री० रास्ता; सिंहद्वार ।

पौलना*–स० क्रि० काटना ।

पौलस्त्य–वि० [सं०] पुलस्त्य-संबंधी; पुलस्त्यके गोत्रमें उत्पन्न । पु० रावण; कुबेर; विभीषण; चंद्रमा ।

पौला†–पु० एक प्रकारकी खड़ाऊँ जिसमें खूँटीकी जगह रस्सी लगी रहती है ।

पौलिया–पु० दे० 'पौरिया'।

पौली–स्त्री० पौरी, ड्योढ़ी; पैरका एड़ीसे पंजेतकका भाग।

पौलोमी–स्त्री० [सं०] इंद्रकी पत्नी शची, इंद्राणी।

पौवा–पु० सेरका चौथा भाग; पावभरका बाट; एक पाव दूध, तेल आदि अँटने भरका बरतन।

पौष–पु० [सं०] पूसका महीना; एक त्यौहार; युद्ध।

पौष्कल्य–पु० [सं०] प्रचुरता; परिपूर्णता; पूर्ण वृद्धि।

पौष्टिक–वि० [सं०] पुष्टिकर, शक्तिवर्धक।

पौष्प–वि० [सं०] पुष्प-संबंधी; फूलोंका बना हुआ, फूलोंसे तैयार किया हुआ।

पौंसरा, पौंसला–पु० वह स्थान जहाँ प्यासोंको धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है, सबील।

पौहारी–वि० दे० 'पैहारी'।

प्याऊ–पु० दे० 'पौंसला'।

प्याज़–पु० [फा०] उत्कट गंधवाला एक प्रसिद्ध मूल जो तरकारी, मसाले और दवाके काम आता है।

प्याज़ी–वि० [फा०] प्याजके रंगका, हलका गुलाबी।

प्यादा–पु० [फा०] पैदल चलनेवाला सिपाही, पैदल सिपाही; दूत; शतरंजका एक मोहरा जो सीधे चलता है और आड़े मारता है, पैदल।

प्यार–पु० प्रेम, प्रीति, मुहब्बत; प्रेमसूचक स्पर्श, चुंबन आदि; लालन, लाड़-चाव।

प्यारा–वि० जिसे प्यार किया जाय, जो प्रेमका पात्र हो, प्रिय; अच्छा लगनेवाला; जिसे त्यागनेका जी न चाहे, जिसके प्रति बहुत अधिक ममता हो; * महँगा।

प्याला–पु० [फा०] पीनेका बरतन, पान-पात्र; जल, दूध, मद्य आदि पीनेका एक बिना गलेका छोटा चिपटा बरतन जिसका ऊपरी भाग पेंदेसे अधिक चौड़ा होता है, छोटा कटोरा, जाम; जुलाहोंका नरी भिगोनेका मिट्टीका बरतन; तोप या बंदूकमें रंजक रखनेकी जगह; खप्पर जिसमें भिक्षुक भीख माँगते हैं। **मु०–देना**–शराब पिलाना। **–पीना या लेना**–शराब पीना। **–बहना**–गर्भपात होना। **–भरना**–आयु पूरी होना; पराकाष्ठा हो जाना।

प्यावना*–स० क्रि० दे० 'पिलाना'।

प्यास–स्त्री० शरीरकी वह आवश्यकता जो पानी पीनेसे शांत होती है, पानी पीनेकी इच्छा, तृषा; किसी वस्तुकी प्रबल चाह, उत्कट इच्छा। **मु०–बुझाना**–पानी पीकर प्यास दूर करना; किसी उत्कट इच्छाकी पूर्ति करना।

प्यासा–वि० जिसे प्यास लगी हो, पिपासार्त।

प्यूनी–स्त्री० दे० 'पूनी'।

प्यौ*–पु० पति, स्वामी।

प्योसर*–पु० हालकी ब्यायी हुई गायका दूध।

प्यौसार*–पु० स्त्रीका पितृगृह, मायका।

प्यौंदा†–पु० पैबंद; थिगली; वृक्षोंकी लगायी जानेवाली कलम।

प्यौर*–पु० प्रियतम, पति, कांत।

प्र–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर आरंभ (प्रयाण), शक्ति (प्रभु), आधिक्य (प्रवाद, प्रच्छाय), उत्पत्ति (प्रपौत्र), वियोग (प्रोषित), उत्कर्ष (प्राचार्य), शुद्धि (प्रसन्न-जल), इच्छा (प्रार्थना), शांति (प्रशम), पूजा (प्रांजलि) आदिका द्योतन करता है।

प्रकंप–पु० [सं०] कँपकँपी, थरथराहट।

प्रकंपन–वि० [सं०] कँपानेवाला; हिलानेवाला। पु० प्रचंड वायु, तेज हवा; एक नरक; कँपकँपी; जोरसे हिलनेकी क्रिया।

प्रकंपित–वि० [सं०] काँपता हुआ; हिलता हुआ; कँपाया या हिलाया हुआ।

प्रकच–वि० [सं०] जिसके बाल खड़े हों।

प्रकट–वि० [सं०] जो सामने हो, प्रत्यक्ष; जाहिर, स्पष्ट; जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, प्रादुर्भूत; जो गुप्त न हो, व्यक्त। * अ० प्रकाश्य रूपमें, सबके सामने।

प्रकटना*–अ० क्रि० प्रकट होना। स० क्रि० प्रकट करना।

प्रकटित–वि० [सं०] प्रकाशित, प्रकट किया हुआ।

प्रकटीकरण–पु० [सं०] प्रकट करनेकी क्रिया, प्रकट करना।

प्रकटीभवन–पु० [सं०] प्रकट होनेकी क्रिया, प्रकट होना।

प्रकरण–पु० [सं०] निर्माण, रचना; वर्णन, प्रतिपादन; प्रसंग, संदर्भ; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयका प्रतिपादन हो, परिच्छेद; वह ग्रंथ जिसमें किसी शास्त्रके सिद्धांतका प्रतिपादन हो; एक प्रकारका शृंगारप्रधान नाटक।

प्रकरिका–स्त्री० [सं०] आगेकी घटनाएँ स्पष्ट करनेके लिए बीचमें रखी जानेवाली घटना, प्रासंगिक कथावस्तु।

प्रकरी–स्त्री० [सं०] एक तरहका गान; आँगन; चौराहा; एक तरहकी प्रासंगिक कथावस्तु (ना०)।

प्रकर्ष–पु० [सं०] उत्कर्ष; उत्तमता; अतिरेक, अधिकता; खींचनेकी क्रिया; शक्ति; विस्तार; विशेषता।

प्रकर्षण–पु० [सं०] अशांत करना; खींचना; हल चलाना।

प्रकला–स्त्री० [सं०] कला(समय)का साठवाँ भाग।

प्रकांड–पु० [सं०] वृक्ष; वृक्षका तना, शाखा। वि० उत्तम, प्रशस्त; सर्वश्रेष्ठ; बहुत बड़ा।

प्रकाम–वि० [सं०] यथेष्ट, काफी; जिसमें कामवासनाकी अधिकता हो।

प्रकार–पु० [सं०] भेद, किस्म; रीति, ढंग; सादृश्य-विशेषता; * प्राकार, परकोटा।

प्रकाश–पु० [सं०] ज्योतिष्मान् पदार्थोंसे उत्पन्न होनेवाली वह शक्ति जो ईथर या आकाशद्रव्यके द्वारा चारों ओर फैलती है, (लाइट) वह भौतिक शक्ति जिसके द्वारा हमें वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं, तेज, आलोक, द्योत, उजेला, अंधकारका उलटा; आतप, धूप; विकास, अभिव्यक्ति; स्पष्ट होना; प्रकट होना, आविर्भाव; किसी ग्रंथ या पुस्तकका कोई विभाग; प्रसिद्धि, ख्याति; अट्टहास; पीतल। वि० प्रकाशयुक्त; स्फुट; स्पष्ट; प्रकट; वृक्षादिसे रहित; अति प्रसिद्ध। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सूर्य। **–काम**–वि० ख्यातिका इच्छुक। **–क्रय**–पु० खुलेआम होनेवाली खरीद। **–नारी**–स्त्री० वेश्या। **–परावर्तक**–पु० (रीफ्लेक्टर) शीशे आदिका वह टुकड़ा या आला जो कहींसे प्रकाश ग्रहण कर उसे अन्य दिशामें प्रक्षेपित करे, वह यंत्र जो किसीकी छाया या प्रतिबिंब ग्रहण कर दूसरी ओर प्रतिफलित करे, प्रकाश-प्रतिफलक, प्रतिक्षेपक। **–प्रक्षेपक**–पु० (सर्चलाइट) दे० 'अन्वेषक प्रकाश'।

–वियोग–पु० ऐसा वियोग जो सबपर प्रकट हो। **–स्तंभ**–पु० (लाइट हाउस) समुद्रमें बनाया गया वह स्तंभ या मीनार जिसपर रातमें जहाजोंको चट्टानों या अन्य खतरोंसे बचानेके लिए तेज रोशनी की जाती है; रातमें विमानोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिए हवाई अड्डेपर दायें-बायें घूमनेवाला आकाश-दीप; (ला०) मार्ग-प्रदर्शक।

प्रकाशक–वि० [सं०] चमकीला; प्रकाश करनेवाला; अभिव्यक्त करनेवाला; प्रकट करनेवाला; प्रसिद्ध। पु० पुस्तक आदिको छपवाकर प्रकट करनेवाला (पब्लिशर); सूर्य।

प्रकाशन–पु० [सं०] आलोकित करना; प्रकट करना; छपवाकर प्रकट करना या जनताके सामने रखना (पब्लिशिंग); वह पुस्तकादि जो छपवाकर प्रकाशित की गयी हो (पब्लिकेशन); सबको सूचित करना, विज्ञापन; विष्णु। वि० प्रकाशित करनेवाला।

प्रकाशमान–वि० [सं०] चमकता हुआ, द्योतमान; प्रसिद्ध।

प्रकाशवान्(वत्)–वि० [सं०] प्रकाशयुक्त।

प्रकाशित–वि० [सं०] प्रकाशयुक्त; प्रकट किया हुआ; आलोकित किया हुआ; छपवाकर प्रकट किया हुआ; विज्ञापित।

प्रकाश्य–वि० [सं०] प्रकाशित करने योग्य; प्रकाशनके योग्य; प्रकट। पु० प्रकाश।

प्रकास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

प्रकासना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना।

प्रकीर्ण–वि० [सं०] फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ; मिश्रित; अस्त-व्यस्त किया हुआ; फुटकल। पु० किसी पुस्तक या ग्रंथका कोई परिच्छेद, प्रकरण; अनेक प्रकारकी वस्तुओंका मिश्रण; बिखेरना; विस्तार; फुटकल वस्तुओंका संग्रह। **–लेखा**–पु० (मिसेलेनियस अकाउंट) फुटकर आय या व्ययका हिसाब।

प्रकीर्णक–पु० [सं०] चँवर; घोड़ेके सिरपर लगायी जानेवाली कलगी; घोड़ा; फुटकल वस्तुओंका संग्रह; वह परिच्छेद या प्रकरण जिसमें फुटकल बातें दी गयी हों; प्रकरण, अध्याय। वि० छितराया, फैलाया हुआ; फुटकल।

प्रकीर्तन–पु० [सं०] प्रशंसा, यशका गान; घोषणा।

प्रकीर्ति–स्त्री० [सं०] ख्याति, यश; घोषणा।

प्रकुपित–वि० [सं०] विशेष रूपसे कुपित, अति क्रुद्ध।

प्रकृत–वि० [सं०] जिसका प्रसंग छिड़ा हो, प्रकरणप्राप्त; पूरा किया हुआ; नियुक्त; इच्छित; शुद्ध; असल; वास्तविक, सच्चा; अविकृत; महत्त्वका।

प्रकृतार्थ–पु० [सं०] यथार्थ अभिप्राय। वि० असल।

प्रकृति–स्त्री०[सं०] स्वभाव, मिजाज; वह मूल तत्त्व जिसका परिणाम जगत् है, जगत्का उपादान कारणरूप मूल तत्त्व (सांख्य); माया; परमात्मा; पंच महाभूत; स्वामी, अमात्य, सुहृद आदि राज्यांग; प्रजा; सदा बना रहनेवाला मूल गुण या धर्म; योनि; लिंग; स्त्री; माता; एक छंद; वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं; आकार-प्रकार; गुणक (गणित); चराचर संसार। **–ज**–वि० सहज, स्वाभाविक। **–मंडल**–पु० स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और दल–ये सात राज्यांग; प्रजावर्ग। **–शास्त्र**–पु० प्रकृति-संबंधी शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें चराचर जगत्की उत्पत्ति; विकास आदिकी मीमांसा की जाय। **–सिद्ध**–वि० सहज, स्वाभाविक। **–सुभग**–वि० स्वभावसे ही सुंदर, जिसमें सहज सौंदर्य हो। **–स्थ**–वि० जो अपने स्वभाव या स्वरूपमें स्थित हो, क्षोभ, विकारसे रहित, स्वस्थ।

प्रकृत्या–अ० [सं०] स्वभावसे, स्वभावतः।

प्रकृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ; बढ़ाया हुआ; प्रकर्षयुक्त, उत्कृष्ट, उत्तम; प्रधान, मुख्य।

प्रकोप–पु० [सं०] अत्यधिक कोप; उत्तेजना; विद्रोह; आक्रमण; किसी बीमारीका जोर; शरीरकी धातुओंका बिगड़ जाना।

प्रकोपन–पु० [सं०] प्रकोपित करना। वि० प्रकुपित करनेवाला।

प्रकोष्ठ–पु० [सं०] बाँहका कलाईसे लेकर कुहनीतकका भाग, पहुँचा; महल या भवनके सदर फाटकके पासका कमरा; इमारतके भीतरका आँगन; इमारतोंसे घिरा हुआ सहन; (लॉबी) विधानसभा आदिके बाहरका कमरा, बरामदा, प्रांगण या अन्य स्थान जहाँ बैठकर सदस्यगण निजी तौरपर बातचीत करते और पत्रकारों आदिसे मिलते हैं, सभाकक्ष। **–वार्ता**–स्त्री० (लॉबी टॉक) संसद् या विधानसभाके बाहर किसी स्थानपर की जानेवाली बातचीत।

प्रकोष्ठक–पु० [सं०] प्रासादके मुख्य द्वारके पासका कमरा।

प्रक्खर–वि० [सं०] अति तीक्ष्ण। पु० घोड़े या हाथीका कवच; पाखर; कुत्ता; खच्चर।

प्रक्रम–पु० [सं०] कदम; क्रम, तरतीब, सिलसिला; (स्टेज) प्रगति या विकासके सिलसिलेमें (बीचमें) पड़नेवाला कोई स्थान या कालभाग; यात्रा आदिके क्रमकी विशेष स्थिति या कुछ समयतक ठहरनेका स्थान, मंजिल; आरंभ; उपक्रम; अवसर, मौका। **–भंग**–पु० एक काव्यदोष, दे० 'भग्नप्रक्रम'। **–विरुद्ध**–वि० जो आरंभ करते ही रोका गया हो।

प्रक्रमण–पु० [सं०] आरंभ करना; कदम बढ़ाना; अधिक भ्रमण।

प्रक्रांत–वि० [सं०] आरंभ किया हुआ, आरब्ध; जिसका प्रसंग छिड़ा हो या चल रहा हो, प्रकरणप्राप्त।

प्रक्रिया–स्त्री० [सं०] प्रकरण; क्रिया, अमल; किसी चीजके बनने, निकलने आदिकी रीति या विधि (प्रोसेस); संस्कार; उच्च पद; ग्रंथका अध्याय; पुस्तकका आरंभिक अध्याय; विशेषाधिकार; तरकीब, विधि; शब्द या प्रयोगका साधन; राजाओंका छत्र आदि धारण करना।

प्रक्षालन–पु० [सं०] पानीसे साफ करना, धोना; साफ करना; वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी जाय। **–गृह**–पु० (लैवेटरी) हाथ-मुँह आदि धोनेका प्रकोष्ठ; दे० 'शौचालय' भी।

प्रक्षालित–वि० [सं०] धोया हुआ; साफ किया हुआ; जिसका प्रायश्चित्त किया गया हो।

प्रक्षिप्त–वि० [सं०] फेंका हुआ, डाला हुआ; क्षेपकके रूपमें निविष्ट किया हुआ, पीछेसे जोड़ा या मिलाया हुआ।

प्रक्षेप–पु० [सं०] फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना; ऊपरसे मिलायी जानेवाली वस्तु; पुस्तक या ग्रंथमें वह मूलसे भिन्न अंश जो बादमें जोड़ा या मिलाया गया हो,

क्षेपक।

प्रक्षेपण–पु० [सं०] फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना।

प्रखर–वि० [सं०] तीक्ष्ण, तेज; प्रचंड, उग्र। पु० प्रक्खर।

प्रखरता–स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, तेजी; प्रचंडता; उग्रता।

प्रख्यात–वि० [सं०] विशेष रूपसे ख्यात, बहुत प्रसिद्ध; प्रसन्न, सुखी।

प्रख्याति–स्त्री० [सं०] विशिष्ट ख्याति, अधिक प्रसिद्धि; प्रशंसा; इंद्रिय-ग्राह्यता।

प्रख्यापन–पु० [सं०] प्रसिद्ध करना, प्रचार करना; सूचित करना।

प्रख्यापित–वि० [सं०] (प्रोमलगेटेड) (वह अध्यादेश, आज्ञप्ति, राज्यादेश आदि) जो सर्वसाधारणको विज्ञापित कर दिया गया हो, जिसकी विघोषणा कर दी गयी हो।

प्रगंड–पु० [सं०] बाँह या कुहनीसे कंधेतकका भाग।

प्रगट–वि० दे० 'प्रकट'। अ० प्रकट रूपसे।

प्रगटन–पु० प्रकट करने या होनेकी क्रिया।

प्रगटना*–अ० क्रि० प्रकट होना; जन्म लेना। स० क्रि० प्रकट करना।

प्रगटाना*–स० क्रि० प्रकट करना।

प्रगति–स्त्री० [सं०] आगे बढ़ना, उन्नति। **–रोध**–पु० (सेट बैक) प्रगति या उन्नतिमें बाधा पड़ना, प्रगतिका रुक जाना। **–वाद**–पु० समाज, साहित्य आदिकी निरंतर उन्नतिपर जोर देनेका सिद्धांत। **–शील**–वि० जो प्रगति करता रहे, आगेकी ओर बढ़ता रहे।

प्रगर्भ*–वि० दे० 'प्रगल्भ'।

प्रगल्भ–वि० [सं०] प्रतिभावान्; जिसकी बुद्धि अवसरके अनुसार काम कर जाय, प्रत्युत्पन्नमति; साहसी, हिम्मतवर; धृष्ट, ढीठ; बोलनेमें संकोच न करनेवाला; प्रौढ़; कुशल, दक्ष; उद्दंड, उद्धत; निर्लज्ज; अभिमानी; ख्यात।

प्रगल्भता–स्त्री० [सं०] प्रगल्भ होनेका भाव; प्रतिभाशालिता; उत्साह; औद्धत्य; धृष्टता; कुशलता, दक्षता; प्रौढ़ता; निःशंकता; प्रसिद्धि; अध्यवसाय।

प्रगल्भा–स्त्री० [सं०] नायिकाका एक भेद, प्रौढा नायिका।

प्रगसना*–अ० क्रि० प्रकट होना, व्यक्त होना।

प्रगाढ–वि० [सं०] डुबाया हुआ, तर किया हुआ; अत्यधिक; दृढ; गहरा, घना; कठिन। पु० कष्ट; तपश्चर्या।

प्रगासना*–स० क्रि० प्रकाशित करना; प्रज्वलित करना।

प्रगुणता-अर्गल–पु० [सं०] (एफिशेंसी बार) (सरकारी या अर्द्धसरकारी) नौकरीमें वेतनवृद्धिके मार्गमें आनेवाली वह बाधा जो आवश्यक योग्यता या दक्षताके अभावसे उत्पन्न हो, दक्षता-अर्गल।

प्रगृहीत–वि० [सं०] अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ।

प्रग्रह–पु० [सं०] ग्रहण करना, पकड़ना; नियमन; सूर्यग्रहण अथवा चंद्रग्रहणका आरंभ; बागडोर; तराजूमें लगी हुई रस्सी; कोड़ा; किरण; भुजा; कैद, बंधन; बंदी, कैदी; नेता।

प्रघट*–वि० दे० 'प्रकट'।

प्रघटना*–अ० क्रि० प्रकट होना।

प्रघट्टक*–वि० प्रकट करनेवाला।

प्रघण, प्रघन, प्रघाण, प्रघान–पु० [सं०] मकानके बाहरी दरवाजेके सामनेका स्थान या छज्जा; ताम्रपात्र; लोहेकी गदा या मुद्गर।

प्रघोर–वि० [सं०] अति घोर।

प्रघोष–पु० [सं०] ऊँची ध्वनि, प्रचंड शब्द।

प्रचंड–वि० [सं०] अति तीव्र, प्रखर; बहुत क्रोधी; प्रबल; घोर, भीषण; अति तेजस्वी; प्रतापी; असह्य; बड़ा।

प्रचय, प्रचाय–पु० [सं०] फूल या फल तोड़ना; समूह, पुंज।

प्रचरण–पु० [सं०] घूमना-फिरना, विचरण; प्रचारित होना।

प्रचरना*–अ० क्रि० प्रचारित होना, फैलना; चलना।

प्रचरित–वि० [सं०] जिसका प्रचार हो, प्रचलित; अभ्यस्त।

प्रचलन–पु० [सं०] हिलना; चलना-फिरना; चलन, प्रचार।

प्रचलित–वि० [सं०] हिला हुआ; गतिशील; जिसका चलन हो; चलता हुआ, जारी; जो चल चुका हो।

प्रचार–पु० [सं०] घूमना-फिरना; प्रयोग; चलाना; प्रकट होना; किसी वस्तुका व्यापक व्यवहार; आचरण; चलन, रवाज; खेल-कूदका मैदान; चरागाह; गति; मार्ग; किसी वस्तुको प्रसिद्ध करने या फैलानेका कार्य (हिं०)। **–कार्य**–पु० प्रचारका काम (प्रोपेगैंडा)।

प्रचारक–वि०, पु० [सं०] प्रचार करनेवाला; फैलानेवाला।

प्रचारना*–स० क्रि० प्रचार करना, फैलाना; ललकारना।

प्रचारित–वि० [सं०] चलाया हुआ; जिसका प्रचार किया गया हो; फैलाया हुआ।

प्रचारी(रिन्)–वि० [सं०] घूमने-फिरनेवाला; प्रकट होनेवाला; बर्ताव करनेवाला।

प्रचालन–पु० [सं०] चलानेकी क्रिया।

प्रचालित–वि० [सं०] जो चलाया गया हो, प्रचलित किया हुआ।

प्रचित–वि० [सं०] (पुष्प आदि) जिसका चयन हुआ हो, चुना हुआ; एकत्र किया हुआ; भरा हुआ; अनुदात्त।

प्रचुर–वि० [सं०] बहुत अधिक, प्रभूत; बहुत बड़ा; पूर्ण। **–पुरुष**–वि० घना बसा हुआ, जनाकीर्ण।

प्रचुरता–स्त्री०, **प्रचुरत्व**–पु० [सं०] प्रचुर होनेका भाव, आधिक्य।

प्रच्छन्न–वि० [सं०] ढका हुआ, आच्छन्न; छिपा हुआ, गुप्त। पु० चोर दरवाजा; खिड़की। **–चारी(रिन्)**–वि० गुप्त रूपसे कार्य करनेवाला।

प्रच्छादन–पु० [सं०] ढकने, आवृत करनेकी क्रिया या भाव; छिपानेकी क्रिया या भाव; उत्तरीय, ओढ़नी।

प्रच्छादित–वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ।

प्रच्छाय–पु० [सं०] घनी छाया; छायादार जगह।

प्रच्छालना*–स० क्रि० धोना।

प्रछालना*–स० क्रि० धोना।

प्रजंक*–पु० पलंग।

प्रजंत*–अ० दे० 'पर्यंत'।

प्रजनन–पु० [सं०] संतान उत्पन्न करना; जन्म; संतान।

प्रजनयिता(तृ)–पु० [सं०] उत्पन्न करनेवाला।

प्रजरना*–अ० क्रि० बहुत जलना।

प्रजल्प–पु० [सं०] इधर-उधरकी बात, गप।

प्रजल्पन–पु० [सं०] इधर-उधरकी बात करना; गप करना।

प्रजल्पित–वि॰ [सं॰] कहा हुआ। पु॰ जो बात कही गयी हो; वार्तालाप।

प्रजवन–वि॰ [सं॰] वेगवान्, तीव्र गतिवाला, तेज।

प्रजवी(विन्)–वि॰ [सं॰] अधिक वेगवाला, वेगवान्; तेज। पु॰ दूत, हरकारा।

प्रजांतक–पु॰ [सं॰] यम।

प्रजा–स्त्री॰ [सं॰] प्रजनन; संतति, औलाद; शुक्र, वीर्य; प्राणी; किसी राजा द्वारा शासित जनता, किसी राज्य या राष्ट्रकी जनता। **–काम**–वि॰ संतान चाहनेवाला, संतानेच्छु। पु॰ संतानकी कामना। **–कार**–पु॰ प्रजा उत्पन्न करनेवाला, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा। **–क्षोभ**–पु॰ (इनसरजेंसी) राजसत्ताके विरुद्ध प्रजामें व्याप्त क्षोभ या विद्रोहकी भावना। **–गुप्ति**–स्त्री॰ प्रजाकी रक्षा। **–तंतु**–पु॰ वंशपरंपरा; वंश, संतान। **–तंत्र**–पु॰ प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था। वि॰ प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित (शासन-व्यवस्था)। **–तीर्थ**–पु॰ जन्मका शुभ काल। **–दान**–पु॰ संतानोत्पत्ति; चाँदी। **–नाथ**–पु॰ ब्रह्मा; मनु; दक्ष; राजा। **–पति**–पु॰ सृष्टिका रचयिता, सृष्टिका अधिष्ठाता देवता, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; दक्ष आदि दस लोककर्ता जिन्हें ब्रह्माने सृष्टिके आदिमें उत्पन्न किया था; विश्वकर्मा; सूर्य; अग्नि; विष्णु; यज्ञ; राजा; जामाता; पिता, जनक; लिंगेंद्रिय। **–पाल,–पालक**–पु॰ राजा। **–पालन**–पु॰ प्रजाका पालन। **–वृद्धि**–स्त्री॰ संतानकी बढ़ती, संतानकी बहुलता। **–व्यापार**–पु॰ प्रजाकी देखभाल, प्रजाका हितचिंतन। **–सत्ता**–स्त्री॰ दे॰ 'प्रजातंत्र'। **–सत्ताक,–सत्तात्मक**–वि॰ (शासन-व्यवस्था) जिसमें शासन-सूत्र प्रजा या उसके प्रतिनिधियोंके हाथमें हो।

प्रजाता–स्त्री॰ [सं॰] प्रसूता स्त्री।

प्रजाति–स्त्री॰ [सं॰] प्रजा, संतान; संतान उत्पन्न करना, प्रजनन; प्रजनन-शक्ति; पौत्रकी उत्पत्ति। **–गत भेदभाव** पु॰ (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन) एक प्रजातिको अन्य प्रजातियोंसे श्रेष्ठ मानकर उनमें भेदभाव करना, भिन्न-भिन्न प्रजातियोंके प्रति समानताकी नीति न बरतकर उनमें अंतर करना। **–संहार**–पु॰ (जेनोसाइड) किसी देशकी सरकार द्वारा एक सुनियोजित नीतिके अनुसार राज्य-सीमाके भीतर रहनेवाली किसी अल्पसंख्यक जाति या वर्गके विनाशका कार्य।

प्रजारना*–स॰ क्रि॰ भली भाँति या पूरी तरह जलाना; उद्दीप्त करना।

प्रजावती–स्त्री॰ [सं॰] भाईकी स्त्री; बड़े भाईकी स्त्री। वि॰ स्त्री॰ गर्भवती; संतानवाली।

प्रजुरना*–अ॰ क्रि॰ प्रज्वलित होना; प्रकाशित होना।

प्रजुरित, प्रजुलित*–वि॰ दे॰ 'प्रज्वलित'।

प्रजेश, प्रजेश्वर–पु॰ [सं॰] प्रजापति; राजा।

प्रजोग*–पु॰ दे॰ 'प्रयोग'।

प्रज्ञ–वि॰ [सं॰] प्रकृष्ट बुद्धिवाला, बुद्धिमान्, विद्वान्। पु॰ बुद्धिमान् मनुष्य; पंडित, विद्वान्।

प्रज्ञता–स्त्री॰ [सं॰] बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता।

प्रज्ञप्ति–स्त्री॰ [सं॰] जनाने या ज्ञात करानेकी क्रिया या भाव, सूचना; बुद्धि; संकेत, इशारा; प्रतिज्ञा, कौल।

प्रज्ञा–स्त्री॰ [सं॰] बुद्धि, विवेक; समझ; मति; सरस्वती। **–चक्षु(स्)**–पु॰ बुद्धिरूपी नेत्र; धृतराष्ट्र। वि॰ अंधा (जिसके लिए उसकी बुद्धि ही आँखका काम देती है); बुद्धिमान्। **–वृद्ध**–वि॰ जो बुद्धिमें बढ़ा-चढ़ा हो, अधिक बुद्धिमान्, ज्ञान-वृद्ध। **–हीन**–वि॰ निर्बुद्धि, मूर्ख।

प्रज्ञात–वि॰ [सं॰] अच्छी तरह जाना हुआ; स्पष्ट; विवेचित; प्रसिद्ध, ख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञापन–पु॰ [सं॰] जताना, सूचित करना।

प्रज्ञावान्(वत्)–वि॰ [सं॰] चतुर, बुद्धिमान्।

प्रज्वलन–पु॰ [सं॰] दहकना, जोरसे जलना।

प्रज्वलित–वि॰ [सं॰] जलता हुआ, बलता हुआ; जला हुआ, दहका हुआ; चमकीला।

प्रण–पु॰ दृढ़ निश्चय, पण, प्रतिज्ञा।

प्रणत–वि॰ [सं॰] विशेष रूपसे झुका हुआ; जो प्रणाम कर रहा हो; विनीत, नम्र; शरणागत। **–काय**–वि॰ जिसका शरीर झुका हो। **–पाल,–पालक**–पु॰ शरणागतकी रक्षा करनेवाला।

प्रणति–स्त्री॰ [सं॰] झुकनेकी क्रिया या भाव; प्रणाम; विनय, नम्रता; शरणमें जाना, शरणागति।

प्रणदन–पु॰ [सं॰] जोरकी आवाज, गर्जन।

प्रणमन–पु॰ [सं॰] झुकना; प्रणाम करना।

प्रणमना*–स॰ क्रि॰ प्रणाम करना।

प्रणम्य–वि॰ [सं॰] प्रणाम करने योग्य, वंद्य।

प्रणय–पु॰ [सं॰] प्रेम, प्रीति; प्रीतियुक्त प्रार्थना; विश्वास। **–कलह**–पु॰ नायक और नायिकाका आपसी झगड़ा या प्रीतिभंग; नायक-नायिकाका एक दूसरेसे रूठ जाना। **–कुपित**–वि॰ जो प्रणय-कलहके कारण रूठ गया हो, प्रणय-कलहसे रूठा हुआ। **–कोप**–पु॰ नायिकाका नायकसे रूठ जाना, मान। **–भंग**–पु॰ मैत्री न रहना; विश्वासघात। **–वचन**–पु॰ प्रेमपूर्ण वचन। **–विमुख**–वि॰ प्रेम या मैत्रीकी ओर जिसकी प्रवृत्ति न हो।

प्रणयन–पु॰ [सं॰] लाना; ले जाना; निबद्ध करना, लिखना; रचना; निर्माण; वितरण; (दंड) देना, लगाना।

प्रणयिनी–स्त्री॰ [सं॰] प्रेम करनेवाली, प्रेमिका; कांता।

प्रणयी(यिन्)–वि॰ [सं॰] प्रेम करनेवाला, अनुरागी, प्रणययुक्त; चाहनेवाला, इच्छुक; घनिष्ठ (संबंध)। पु॰ मित्र; प्रेमी; पति; प्रार्थी; सेवक; उपासक।

प्रणव–पु॰ [सं॰] ओंकार; परमेश्वर; ढोल।

प्रणवना*–स॰ क्रि॰ प्रणाम करना।

प्रणष्ट–वि॰ [सं॰] जो लुप्त हो गया हो; विनष्ट; मृत।

प्रणाम–पु॰ [सं॰] झुकना, नत होना; अपनी लघुता या विनय सूचित करनेके लिए किसीके सामने झुकने, हाथ जोड़ने आदिका कार्य, नमस्कार, अभिवादन।

प्रणामांजलि–स्त्री॰ [सं॰] हाथ जोड़कर किया जानेवाला प्रणाम, करबद्ध प्रणाम।

प्रणाली–स्त्री॰ [सं॰] पानी बहनेका कृत्रिम नाला, परनाला; परंपरा, प्रथा; दो बड़े जलमार्गोंको मिलानेवाला छोटा जलमार्ग; रीति, ढंग (हिं॰)।

प्रणाशी(शिन्)–वि॰ [सं॰] नाश करनेवाला।

प्रणिधान–पु० [सं०] रखना, रखा जाना; व्यवहार, उपयोग; अभिनिवेश, आग्रह; एक प्रकारकी समाधि (योग); भक्तिविशेष; अर्पण; चित्तकी एकाग्रता।

प्रणिधि–पु० [सं०] भेद लेना; विशेष कार्यसे भेजा जानेवाला दूत; गुप्त रूपसे काम करनेवाला दूत या एजेंट (सीक्रेट एजेंट)।

प्रणिपतन, प्रणिपात्त–पु० [सं०] प्रणाम करना; चरणोंपर गिरना।

प्रणीत–वि० [सं०] बनाया हुआ, निर्मित, रचा हुआ; निबद्ध; फेंका हुआ; अलग किया हुआ; प्रिय; लाया हुआ; प्रवेशित; विहित।

प्रणेता(तृ)–पु० [सं०] पथप्रदर्शन करनेवाला, नेता; बनानेवाला, निर्माता; ग्रंथका रचयिता।

प्रणोदित–वि० [सं०] जिसे प्रेरणा की गयी हो, प्रेरित।

प्रतंचा*–स्त्री० रोदा, धनुष्की डोरी।

प्रतक्ष*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतच्छ*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतति–स्त्री० [सं०] विस्तार; लता, वल्ली।

प्रतनु–वि० [सं०] अति क्षीण; अति सूक्ष्म; बहुत पतला; अत्यल्प; तुच्छ।

प्रतप्त–वि० [सं०] विशेष रूपसे तपाया हुआ; पीड़ित।

प्रतान–पु० [सं०] फैलाव, विस्तार; लता; लतातंतु।

प्रताप–पु० [सं०] राजाका कोप, दंड-जनित तेज; वीरता; प्रभुत्व, पराक्रम आदिका आतंक फैलानेवाला प्रभाव।

प्रतापवान्(वत्)–वि० [सं०] प्रतापी; तेजस्वी।

प्रतापी(पिन्)–वि० [सं०] प्रतापवाला; दुःख देनेवाला।

प्रतारक–पु० [सं०] वंचक, ठग; धूर्त।

प्रतारण–पु० [सं०] वंचना, ठगी।

प्रतारणा–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतारण'।

प्रतारित–वि० [सं०] जो ठगा गया हो, वंचित।

प्रतिंचा–स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा'।

प्रति–स्त्री० नकल; बहुतसी पुस्तकों आदिमेंसे एक, अदद (जैसे–इस पुस्तकी सभी प्रतियाँ बिक गयीं)। उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले आकर विरोध, विपरीतता (प्रतिकार, प्रतिबल), बदला (प्रतिदान, प्रतिफल), वीप्सा (प्रतिदिन, प्रतिगृह), सादृश्य (प्रतिदेवता, प्रतिमूर्त्ति), सामना, साम्मुख्य (प्रत्यक्ष), खंडन (प्रतिवाद), मुकाबला, जोड़ (प्रतिभट) आदिका द्योतन करता है। अ० ओर, तरफ; संबंधमें, विषयमें; मुकाबलेमें।

प्रतिकर–पु० [सं०] विस्तीर्ण होनेका भाव, विस्तीर्णता; प्रतिशोध; (कंपेनसेशन) जिस भूमि, संपत्ति आदिपर अधिकार कर लिया गया हो उसके बदलेमें, मुआवजेकी तरह, दी जानेवाली रकम, क्षतिपूर्ति, हरजाना।

प्रतिकर्ता(र्तृ)–वि०, पु० [सं०] अपकारका बदला लेनेवाला, प्रत्यपकारक; प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकार–पु० [सं०] वैर निकालना, बदला चुकाना; वह अपकार जो किसी अपकारके बदले किया जाय; चिकित्सा, इलाज; किसी बातके जवाबमें किया जानेवाला कार्य।

प्रतिकारक–वि०, पु० [सं०] प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकारी(रिन्)–वि०,पु० [सं०] प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकूल–वि० [सं०] विरुद्ध पक्षका अवलंबन करनेवाला; जो अनुकूल न हो, विपरीत, विरुद्ध। **–कारी(रिन्), –कृत, –चारी(रिन्)**–वि० विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरोधी।

प्रतिकूलिक–वि० [सं०] विरोधी, शत्रुता रखनेवाला।

प्रतिकृत–वि० [सं०] जिसका प्रतिकार या प्रतिशोध किया गया हो। पु० प्रतिकार, विरोध।

प्रतिकृति–स्त्री० [सं०] प्रतिरूप, प्रतिमा; बदला, प्रतिकार; सादृश्य, प्रतिबिंब; प्रतिनिधि।

प्रतिक्रम–पु० [सं०] उलटा क्रम।

प्रतिक्रिया–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिकार'; किसी कार्यके परिणामके रूपमें या विरोधमें होनेवाला कार्य; (रिऐक्शन) सुधार, उन्नति या क्रांतिके विरुद्ध होनेवाली क्रिया या गति। **–वादी(दिन्)**–पु० (रिऐक्शनरी) वह जो उन्नति या क्रांतिका विरोधी हो।

प्रतिक्रियात्मक सहयोग–पु० [सं०] (रेस्पांसिव कोऑपरेशन) सहयोगके जवाबमें या उसके प्रतिक्रियास्वरूप किया जानेवाला सहयोग।

प्रतिक्षण–अ० [सं०] प्रत्येक क्षणमें, हरदम, निरंतर।

प्रतिक्षेपक–पु० [सं०] दे०'प्रकाश परावर्त्तक'(रीफ्लेक्टर)।

प्रतिगमन–पु० [सं०] लौटना।

प्रतिगृहीत–वि० [सं०] ग्रहण किया हुआ; अंगीकार किया हुआ; ब्याहा हुआ।

प्रतिग्या*–स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा'।

प्रतिग्रह–पु० [सं०] ग्रहण करना, स्वीकार करना; विधिपूर्वक दान की जानेवाली वस्तुको स्वीकार करना; दान लेना जो ब्राह्मणोंके ६ कर्मोंके अंतर्गत है; लेनेवाला; उपहार, भेंट; पत्नीके रूपमें ग्रहण करना, ब्याहना; सेनाका पिछला भाग।

प्रतिग्रहण–पु० [सं०] स्वीकार करना; दान लेना; पत्नीके रूपमें ग्रहण करना, ब्याहना; (एटैचमेंट) जुरमाने, ऋणकी रकम आदिके बदलेमें न्यायालयके आदेशसे किसीकी संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना।

प्रतिग्रही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] दान लेनेवाला।

प्रतिग्रहीता(तृ)–पु० [सं०] दान लेनेवाला; पति।

प्रतिग्राहक, प्रतिग्राही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] दान लेनेवाला; (रिसीवर) झगड़ेमें पड़ी हुई संपत्तिसे या जो व्यक्ति दिवालिया हो गया हो उसकी संपत्तिसे होनेवाली आमदनी लेने और उसकी निगरानी करनेवाला अधिकारी।

प्रतिग्राह्य–वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य।

प्रतिघात–पु० [सं०] निवारण; आघातके बदले किया गया आघात; मारण, वध; रुकावट, बाधा।

प्रतिघातक–वि०, पु० [सं०] प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिच्छा*–स्त्री० दे० 'प्रतीक्षा'।

प्रतिच्छाया–स्त्री०[सं०] प्रतिरूप; प्रतिमा; प्रतिबिंब, परछाईं।

प्रतिच्छेद–पु० [सं०] बाधा, विरोध; प्रतिरोध।

प्रतिछाँई, प्रतिछाँह, प्रतिछाँही–स्त्री० परछाईं, प्रतिबिंब।

प्रतिजिह्वा, प्रतिजिह्विका–स्त्री०[सं०] गलेके भीतरकी घंटी।

प्रतिज्ञा–स्त्री० [सं०] किसी कार्यको करने-न करने आदिका

दृढ़ संकल्प; वादा; शपथ; अभियोग, दावा। **–पत्र,–पत्रक**–पु० वह पत्र या कागज जिसमें लेखरूपमें कोई प्रतिज्ञा की गयी हो, इकरारनामा, शर्तनामा; (कॉवेनेंट) दे० 'प्रतिश्रुतिपत्र'। **–पत्र-मुद्रा**–स्त्री० (प्रोमिसरी नोट) वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं अमुक तिथिको या जब कभी भी माँगनेपर अमुक व्यक्तिको या इसके वाहकको इतना रुपया दूँगा, वचनपत्र। **–पालन**–पु० प्रतिज्ञा पूरी करना, प्रतिज्ञाका निर्वाह। **–भंग**–पु० प्रतिज्ञा तोड़ देना, प्रतिज्ञा न निभाना।

प्रतिज्ञात–वि० [सं०] जिसकी या जिसके विषयमें प्रतिज्ञा की गयी हो, स्वीकार किया हुआ।

प्रतिदान–पु० [सं०] किसी ली हुई वस्तुके बदलेमें दूसरी वस्तु देना, बदला, विनिमय; निक्षेप या धरोहरको वापस करना।

प्रतिदिन–अ० [सं०] प्रत्येक दिन, हर रोज, नित्य।

प्रतिदेय–वि० [सं०] जो बदला या लौटाया जाय, बदलने या लौटाने योग्य। पु० खरीदकर लौटायी हुई चीज।

प्रतिद्वंद्विता–स्त्री० [सं०] प्रतिद्वंद्वीका भाव; बराबरवालोंकी लड़ाई।

प्रतिद्वंद्वी(द्विन्)–पु० [सं०] विपक्षी, विरोधी, शत्रु। वि० मुकाबला करनेवाला, प्रतिपक्षी।

प्रतिध्वनन–पु० [सं०] (इकोइंग) ध्वनिलहरीके सामनेकी किसी वस्तुसे टकराकर वापस आनेकी क्रिया, ध्वनिके प्रत्यावर्तित होकर सुनाई देनेकी क्रिया।

प्रतिध्वनि–स्त्री० [सं०] किसी शब्दका वह प्रतिरूप जो उसके किसी बाधक पदार्थसे टकरानेपर उत्पन्न होता है और मूल शब्दके उपरांत सुनाई पड़ता है, किसी शब्दके उपरांत सुनाई पड़नेवाला उसीसे उत्पन्न तदनुरूप शब्द, गूँज।

प्रतिध्वनित–वि० [सं०] गूँजा हुआ।

प्रतिनंदन–पु० [सं०] आशीर्वादके साथ अभिनंदन करना; धन्यवाद देना; बधाई देना; प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करना।

प्रतिनायक–पु० [सं०] नायकका प्रतिद्वंद्वी (सा०)।

प्रतिनाह–पु० [सं०] झंडा, निशान।

प्रतिनिधि–पु० [सं०] प्रतिरूप, प्रतिमा; वह व्यक्ति जो किसीके स्थानपर उसका कार्य करे, किसीका स्थानापन्न व्यक्ति; किसी वैदिक कृत्य या औषधके काम आनेवाले द्रव्यके अभावमें उसके स्थानपर प्रयुक्त होनेवाला द्रव्य; प्रतिभू, जामिन। **–पत्र**–पु० (पावर ऑफ ऐटर्नी) प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारपत्र, 'मुखतारनामा'।

प्रतिनिधित्व–पु० [सं०] प्रतिनिधिका भाव; प्रतिनिधिका कार्य।

प्रतिनिनाद–पु०[सं०] (रीवरबरेशन) निनाद या शब्दका टकराकर वापस आना, प्रतिध्वनि।

प्रतिनियुक्त–वि० [सं०] (डेप्यूटेड) अधिकार या कार्य सौंपकर जो किसी दूसरेके स्थानपर काम करनेके लिए नियुक्त किया गया या भेजा गया हो।

प्रतिनियुक्ति–स्त्री० [सं०] (डेप्यूटेशन) किसीके स्थानपर किसी अन्य व्यक्तिको नियुक्त करना; दूसरेके स्थानपर कुछ समयतक काम करना; किसीको किसी विशेष कार्यके लिए नियुक्त करके भेजना।

प्रतिपक्ष–पु० [सं०] विरोधीका पक्ष, विपक्ष; शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी, मुद्दालेह। **–नेता**–पु० (लीडर ऑफ दि अपोजिशन) संसद या विधानसभामें सरकारी पक्षका विरोध करनेवाले मुख्य दलका नेता।

प्रतिपक्षी(क्षिन्)–पु० [सं०] शत्रु, विरोधी।

प्रतिपच्छ*–पु० दे० 'प्रतिपक्ष'।

प्रतिपच्छी*–पु० दे० 'प्रतिपक्षी'।

प्रतिपत्ति–स्त्री० [सं०] पाना, प्राप्ति; ज्ञान, बोध; बुद्धि, प्रज्ञा; स्वीकृति; कर्तव्यका ज्ञान; आदर, सम्मान; गौरव; उन्नति; दृढ़ निश्चय, संकल्प; प्रसिद्धि; कार्यारंभ; संवाद; तरीका, ढंग; प्रयोग; प्रतिपादन; प्रमाण।

प्रतिपत्रक–पु० [सं०] (काउंटर फॉइल) चेककी किताब, चालानबही, रसीद-बही आदिमें लगा रहनेवाला वह टुकड़ा जो देनेवाले या भेजनेवालेके पास ही रह जाता है और जिसपर किसीको दिये हुए दूसरे टुकड़ेकी प्रतिलिपि या संक्षिप्त विवरण लिखा रहता है।

प्रतिपत्री–पु० [सं०] (प्रॉक्सी) दे० 'प्रतिपुरुष'।

प्रतिपद–अ० [सं०] पग-पगपर।

प्रतिपदा, प्रतिपदी–स्त्री० [सं०] पक्षकी पहली तिथि, परिवा।

प्रतिपरिषद्‌विपत्र–पु० [सं०] (रिवर्स काउंसिल बिल) (ब्रिटिश शासनकालमें) लंदनस्थित भारतमंत्रीके नाम जारी की गयी हुंडियाँ जिनका भुगतान इंग्लैंडमें (विदेशोंमें) होता था। (व्यापारसंतुलन भारतके प्रतिकूल होनेपर इनकी आवश्यकता पड़ती थी। इन्हें 'उलटी हुंडियाँ' भी कहते थे।)

प्रतिपरीक्षण–पु० [सं०] (क्रास-एग्जामिनेशन) गवाह आदिका बयान हो चुकनेपर सत्यासत्यका या छिपायी गयी बातोंका पता लगानेके लिए उलटे-सीधे प्रश्न करना, साक्षिपरीक्षा।

प्रतिपर्ण–पु० [सं०] (काउंटर फॉइल) दे० 'प्रतिपत्रक'।

प्रतिपादक–वि०, पु० [सं०] देनेवाला; निरूपण करनेवाला; उत्पादक; व्याख्या करनेवाला; उन्नायक; पूरा करनेवाला।

प्रतिपादन–पु० [सं०] ज्ञान कराना, बोधन; किसी विषयका सप्रमाण कथन, निरूपण; दान; किसी विषयका स्थापन; लौटाना, प्रत्यर्पण; आरंभ करना, उपक्रम करना।

प्रतिपादित–वि० [सं०] प्रदत्त; निरूपित, प्रमाणित; उत्पादित; घोषित, कथित।

प्रतिपाद्य–वि० [सं०] जिसे प्रमाणित किया जाय; जिसका स्पष्टीकरण किया जाय; देय।

प्रतिपान–पु० [सं०] पीना; पीनेका पानी।

प्रतिपाप–वि० [सं०] अपकारके बदले अपकार करनेवाला, जो बुराईका बदला बुराईसे ले। पु० बुराईके बदले बुराई करना।

प्रतिपापी(पिन्)–वि० [सं०] दे० 'प्रतिपाप'।

प्रतिपार*–पु० पालन करनेवाला; रक्षण, पालन।

प्रतिपारना*–स० क्रि० पालन करना, रक्षा करना।

प्रतिपाल–पु० दे० 'प्रतिपालक'; 'प्रतिपालन'।

प्रतिपालक–पु० [सं०] पालन करनेवाला, पालक; रक्षक।

–अधिकरण–पु० (कोर्ट ऑफ वार्ड्स) अल्पवयस्कों या अयोग्य व्यक्तियोंकी संपत्तिका प्रबंध तथा रक्षण करनेवाला सरकारी विभाग।

प्रतिपालन–पु० [सं०] पालन करना; रक्षा करना।

प्रतिपालना*–स० क्रि० पालन करना, पालना; रक्षा करना।

प्रतिपालनीय–वि० [सं०] दे० 'प्रतिपाल्य'।

प्रतिपालित–वि० [सं०] जिसका पालन किया गया हो, पालित; जिसकी रक्षा की गयी हो, रक्षित।

प्रतिपाल्य–वि० [सं०] पालन करने योग्य; रक्षा करने योग्य।

प्रतिपीडन–पु० [सं०] कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना; (रिप्राइजल) (शत्रु द्वारा की गयी) हानिके बदले हानि पहुँचाना, संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना या छीन लेना।

प्रतिपुरुष, प्रतिपूरुष–पु० [सं०] वह मनुष्य जो किसीका स्थानापन्न होकर काम करे (डेपुटी); (प्रॉक्सी) वह व्यक्ति जिसे किसी सभा आदिमें किसीके प्रतिनिधिरूपमें काम करने, वोट देने आदिका अधिकार दिया जाय; प्रतिनिधि; साथी; पुतला; आदमीका पुतला जिसे चोर घरमें स्वयं घुसनेके पहले यह जाननेके लिए फेंका करते थे कि कोई जगा तो नहीं है। **–पत्र**–पु० (प्रॉक्सी) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्तिको किसीके बदले कुछ काम करने, वोट डालने आदिका अधिकार दिया जाय।

प्रतिपोषक–पु० [सं०] सहायक; समर्थक।

प्रतिप्रत्त–वि० सं० बदलेमें दिया हुआ, प्रत्यर्पित।

प्रतिप्रहार–पु० [सं०] प्रहारके जवाबमें किया जानेवाला प्रहार।

प्रतिप्रेषण करना–स० क्रि० (रेफर) कोई आवेदन-पत्रादि स्वीकृति या आवश्यक कारवाईके लिए किसी ऊँचे प्राधिकारीके पास भेजना; कोई विवादास्पद या संदेहयुक्त विषय उलझन दूर करने, संशय मिटानेके लिए किसी विशेषज्ञ या जानकारके पास भेजना।

प्रतिफल–पु० [सं०] प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया; किसीके किये हुएका अनुरूप प्रतीकार; परिणाम, नतीजा; पुरस्कार, वह जो बदलेमें दिया जाय।

प्रतिफलक–पु० [सं०] अक्स डालने, वस्तुको प्रतिफलित करनेका यंत्र; (रीफ्लेक्टर) दे० 'प्रकाशपरावर्तक'।

प्रतिफलन–पु० [सं०] दे० 'प्रतिफल'।

प्रतिफलित–वि० [सं०] प्रतिबिंबित; जिसका बदला लिया गया हो, प्रतिकृत।

प्रतिबंध–पु० [सं०] बाँधनेकी क्रिया या भाव, बंधन; रुकावट, बाधा, अवरोध; (एंबार्गो) विदेशोंको कोई विशेष माल भेजने, ऋण देने आदिपर लगायी गयी रोक; कोई समाचार आदि निर्धारित समयसे पूर्व प्रकाशित करनेकी मनाही; (प्राविजो) किसी अधिनियम आदिकी धारामें या किसी प्रलेख आदिमें पड़नेवाली कठिनाईसे बचनेके लिए लगायी गयी शर्त या बतलाया गया उपाय, परंतुक; प्रतिरोध; सदा बना रहनेवाला संबंध; नैराश्य।

प्रतिबंधक–पु० [सं०] बाँधनेवाला; रोकने या बाधा डालनेवाला; प्रतिरोधक; शाखा, टहनी।

प्रतिबंधु–पु० [सं०] वह जो बंधुके समान हो; वह जो पद आदिमें समान हो।

प्रतिबद्ध–वि० [सं०] बँधा हुआ; जमाया हुआ; जड़ा हुआ; जिसपर प्रतिबंध हो, जिसमें रुकावट डाली गयी हो, अटका हुआ; जो किसीसे इस प्रकार संबद्ध हो कि अलग न किया जा सके।

प्रतिबाधित–वि० [सं०] (प्रीक्लूडेड) जिसमें पहलेसे ही बाधा डाल दी गयी हो, जो पहलेसे रोक दिया या रोक रखा गया हो।

प्रतिबाहु–पु० [सं०] बाहुका अग्रभाग; अक्रूरका एक भाई।

प्रतिबिंब, प्रतिबिंब–पु० [सं०] परछाईं, प्रतिच्छाया; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र, तसवीर। **–वाद**–पु० जीवको ईश्वरका प्रतिबिंब माननेका सिद्धांत (वेदांत)।

प्रतिबिंबक, प्रतिबिंबक–पु० [सं०] छायाकी तरह अनुगमन करनेवाला।

प्रतिबिंबन, प्रतिबिंबन–पु० [सं०] प्रतिबिंबित होना; अनुकरण; तुलना।

प्रतिबिंबना*–अ० क्रि० प्रतिबिंबित होना।

प्रतिबिंबित, प्रतिबिंबित–वि० [सं०] जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो, दर्पण आदिमें प्रतिफलित।

प्रतिबोध–पु० [सं०] जागरण, ज्ञान; स्मृति; होशमें आना।

प्रतिबोधक–वि० [सं०] जगानेवाला; ज्ञान करानेवाला।

प्रतिबोधन–पु० [सं०] जगानेकी क्रिया; ज्ञान कराना।

प्रतिभट–पु० [सं०] विरोधी, शत्रु; शत्रुपक्षका योद्धा; प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिभा–स्त्री० [सं०] दीप्ति, प्रभा, चमक; बुद्धि, समझ; विलक्षण बौद्धिक शक्ति; उपयुक्तता। **–क्षय**–पु०, **–हानि**–स्त्री० शक्तिका ह्रास; प्रकाशका नाश। **–मुख**–वि० कुशाग्रबुद्धि; प्रगल्भ। **–शाली(लिन्)**वि० जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त। **–संपन्न**–वि० दे० 'प्रतिभाशाली'।

प्रतिभात–वि० [सं०] प्रभायुक्त, चमकदार; ज्ञात, अवगत।

प्रतिभावान्(वत्)–वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त; प्रगल्भ; दीप्तियुक्त। पु० सूर्य; अग्नि; चंद्रमा।

प्रतिभाव्य–वि० [सं०] (बेलेबिल) दे० 'प्रतिभूमोच्य'।

प्रतिभास–स्त्री० [सं०] प्रकाश; आभास; भ्रम; मिथ्याज्ञान।

प्रतिभासन–पु० [सं०] चमकना; दीख पड़ना, दिखाई देना।

प्रतिभू–पु० [सं०] (श्यूरटी) किसीकी जमानत करनेवाला, उसकी ओरसे–अदालतमें हाजिर होने, रकम चुकाने या कोई प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिए–अपने आपको वचनबद्ध करनेवाला, जामिन। **–पत्र**–पु० (बांड ऑफ श्यूटी) दे० 'जमानतनामा'। **–मोच्य**–वि० (बेलेबिल) (वह अपराध) जिसमें किसीके जामिन बन जाने या जमानत देनेपर अभियुक्त मामलेका निपटारा होनेतक रिहा कर दिया जाता है, प्रतिभाव्य।

प्रतिभूति–स्त्री० [सं०] (बेल, सिक्यूरिटी) प्रतिभू द्वारा की गयी जमानत; कोई काम या वचन पूरा करने आदिके लिए दिया गया निश्चित आश्वासन या उसके बदले जमा की गयी वस्तु या धन; ऋण आदिके प्रमाण-स्वरूप जारी

किया गया सरकारी कागज, साखपत्र ।

प्रतिभेद–पु० [सं०] विभाग करना, विभाजन; रहस्य प्रकट करना, भेद खोलना ।

प्रतिभेदन–पु० [सं०] विदीर्ण करना, चीरना-फाड़ना; (आँख आदि) निकाल लेना; विभाग करना ।

प्रतिमंडल–पु० [सं०] सूर्य आदिके चारों ओरका घेरा, परिवेष ।

प्रतिमंत्रित–वि० [सं०] अभिमंत्रित, मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।

प्रतिमल्ल–पु० [सं०] कुश्तीका जोड़; वह जो मुकाबलेमें लड़े, प्रतियोद्धा ।

प्रतिमा–स्त्री० [सं०] मिट्टी आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; पत्थर आदिकी बनी हुई देवताकी मूर्ति जिसकी पूजा की जाती है, अनुकृति; चित्र, तसवीर; प्रतिबिंब, परछाईं; सादृश्य (समासांतमें प्रतिम–सादृश्यके अर्थमें); परिमाण, माप; चिह्न; हाथीके सिरका, दाँतोंके बीचका एक भाग । **–गत**–वि० जो प्रतिमा या चित्रमें स्थित हो । **–पूजा**–स्त्री० मूर्तिपूजा ।

प्रतिमान–पु० [सं०] परछाईं; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र; नमूना; हाथीके कुंभस्थलका निचला भाग; हाथीके दोनों दाँतोंके बीचका स्थान; बाट, मापने या योग्यतादिका निर्धारण करनेके लिए स्थिर किया हुआ मानदंड (स्टैंडर्ड); बटखरा; विरोधी, प्रतिद्वंद्वी (वै०); सादृश्य, समता ।

प्रतिमूर्ति–स्त्री० [सं०] पत्थर, धातु आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; अनुकृति, चित्र, प्रतिमा ।

प्रतियोगिता–स्त्री० प्रतियोगी होनेका भाव, विरोध, प्रतिद्वंद्विता, होड़; शत्रुता । **–परीक्षा**–स्त्री० किसी काम या पदके उम्मेदवारोंकी वह परीक्षा जो उनकी योग्यताकी जाँचके लिए ली जाती है और जिसमें उत्तीर्ण होनेवाले उसके लिए चुने जाते हैं ।

प्रतियोगी(गिन्)–पु० [सं०] विरोधी, शत्रु; प्रतिद्वंद्वी, जोड़; बाधक; वह जिसका अभाव हो; वह जिसका किसीसे प्रतिकूल संबंध हो (जैसे–घट घटाभावका प्रतियोगी है–न्या०); हिस्सेदार; वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तुपर आश्रित हो । वि० विरोधी; बराबरीका ।

प्रतियोध, प्रतियोधी(धिन्), प्रतियोद्धा(द्धृ)–पु० [सं०] मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिरक्षण–पु० [सं०] रक्षा, हिफाजत ।

प्रतिरक्षा–स्त्री० [सं०] (डिफेंस) किसीके आक्रमणसे अपनी रक्षा करनेका कार्य या व्यवस्था; लगाये गये अभियोगसे अपना बचाव करने या अपनी निर्दोषिता दिखानेका प्रयत्न, सफाई । **–व्यय**–पु० (डिफेंस एक्सपेंडिचर) किसी देशकी प्रतिरक्षा आदिके लिए किया जानेवाला व्यय ।

प्रतिरथ–पु० [सं०] मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतियोद्धा (रथी) ।

प्रतिरव–पु० विवाद, झगड़ा; प्रतिध्वनि ।

प्रतिरुद्ध–वि० [सं०] रोका हुआ, अवरुद्ध; जिसे या जिसमें बाधा पहुँचायी गयी हो; (नगर, दुर्ग आदि) जो घेर लिया गया हो ।

प्रतिरूप–पु० [सं०] वह जो रूप या आकृतिमें किसीके समान हो; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; (स्पेसिमेन) किसी जाति, प्रवर्ग आदिकी वह इकाई जो गुण, स्वरूप आदिमें समस्त जाति या प्रवर्गका प्रतिनिधित्व कर सके या जिससे उस जाति या ढंगकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; किसी वस्तुका वह थोड़ा अंश जिससे अंशीके गुण, स्वरूप आदिका यथेष्ट परिचय मिल जाय, नमूना, बानगी; चित्र, अनुकृति; प्रतिनिधि; एक दानव । वि० एक ही जैसे रूपवाला; सुंदर; उपयुक्त ।

प्रतिरोध–पु० [सं०] रोक, रुकावट, बाधा; प्रतिबंध; तिरस्कार; डाका; चोरी; घेरा डालना; विरोधी ।

प्रतिरोधक, प्रतिरोधी(धिन्)–वि०, पु० [सं०] प्रतिरोध करनेवाला; रोकनेवाला; डाकू; चोर; घेरा डालनेवाला; विरोधी; बाधा पहुँचानेवाला ।

प्रतिरोधन–पु० [सं०] प्रतिरोध करनेकी क्रिया ।

प्रतिरोधित–वि० [सं०] जिसका प्रतिरोध किया गया हो ।

प्रतिरोपित–वि० [सं०] जो (पौधा) पुनः रोपा गया हो ।

प्रतिलब्धि–स्त्री० [सं०] (रिकव्हरी) किसीको पहले दी हुई (या खोयी हुई) वस्तु पुनः प्राप्त करना ।

प्रतिलिपि–स्त्री० [सं०] किसी लिखी हुई चीजकी नकल ।

प्रतिलिपिक–पु० [सं०] (कॉपीइस्ट) किसी लेख, पत्रादिकी प्रतिलिपि या नकल करनेवाला ।

प्रतिलिपित–वि० (कॉपीड) जिसकी प्रतिलिपि कर ली गयी हो ।

प्रतिलेखक–पु० [सं०] (कॉपीइस्ट) दे० 'प्रतिलिपिक' ।

प्रतिलेखन–पु० [सं०] (ट्रांसक्रिप्शन) किसी पत्र, पुस्तक आदिसे कोई चीज ज्योंकी त्यों उतारना या फिर उसी तरह लिखना ।

प्रतिलोम–वि० [सं०] विपरीत, उलटा; अनुलोमका उलटा; नीच, अधम; अप्रिय; प्रतिकूल; बायाँ । पु० अप्रिय या हानिकर कार्य । **–विवाह**–पु० ऐसा विवाह जिसमें वर नीच वर्णका हो और कन्या उच्च वर्णकी ।

प्रतिवक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] उत्तर देनेवाला; (कानूनकी) व्याख्या करनेवाला ।

प्रतिवचन–पु० [सं०] उत्तर, जवाब; प्रतिध्वनि ।

प्रतिवनिता–स्त्री० [सं०] सौत, सपत्नी ।

प्रतिवर्ती(र्तिन्)–वि० [सं०] (रिवर्शनरी) (लाभादिकी रकम) जो मृत्युके बाद प्राप्य हो; जो उत्तराधिकारके रूपमें भोग्य हो । **–अधिलाभांश**–पु० (रिवर्शनरी बोनस) बीमा-पत्रक आदिपर मिलनेवाला वह अधिलाभांश (बोनस) जो मृत्युके बाद ही उसके उत्तराधिकारियोंको प्राप्त हो सके ।

प्रतिवस्तु–स्त्री० [सं०] वह वस्तु जो रूप आदिमें किसी वस्तुके समान हो, सदृश वस्तु; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली वस्तु; उपमान ।

प्रतिवस्तूपमा–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ उपमेय और उपमान वाक्यमें एक ही साधारण धर्म, शब्दभेदसे, कहा जाय ।

प्रतिवाक्य–पु० [सं०] उत्तर, जवाब । वि० उत्तर देने योग्य ।

प्रतिवाद–पु० [सं०] वादीकी बातके विरोधमें कही जानेवाली बात, वादीकी बातका उत्तर; विरोध, खंडन ।

प्रतिवादिता–स्त्री० [सं०] प्रतिवादीका भाव या कार्य ।

प्रतिवादी(दिन्)–पु० [सं०] प्रतिवाद करनेवाला; वादीकी बातका उत्तर देनेवाला; खंडन करनेवाला, विरोध करनेवाला; वह जिसपर दावा किया गया हो, मुद्दालेह; विरोधी, शत्रु ।

प्रतिवासी (सिन्)–पु० [सं०] पड़ोसमें रहनेवाला, पड़ोसी । [स्त्री० 'प्रतिवासिनी' ।]

प्रतिविधि–स्त्री० [सं०] प्रतिकार ।

प्रतिवेदन–पु०[सं०] (रिपोर्ट) किसी घटना, कार्य, योजना आदिके संबंधमें छानबीन, पूछताछ आदि करनेके बाद तैयार किया गया विवरण जो किसी अधिकारी या सभा आदिके सामने प्रस्तुत करनेको हो, आख्या ।

प्रतिवेदी(दिन्)–वि०[सं०] अनुभव करनेवाला, जानने-समझनेवाला ।

प्रतिवेश–पु० [सं०] पड़ोस; पड़ोसी ।

प्रतिवेशी(शिन्)–पु० [सं०] पड़ोसी ।

प्रतिव्यक्ति-कर–पु० [सं०] (कैपिटेशन टैक्स) प्रतिव्यक्तिके हिसाबसे लगाया गया कर ।

प्रतिशयन–पु० [सं०] किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए दाना-पानी छोड़कर किसी देवताके सामने पड़े रहना ।

प्रतिशयित–वि० [सं०] प्रतिशयन करनेवाला, जो प्रतिशयन करे ।

प्रतिशाप–पु० [सं०] शापके बदलेमें दिया जानेवाला शाप ।

प्रतिशासन–पु० [सं०] नौकर या किसी छोटेको बुलाकर कहीं भेजना या किसी काममें नियुक्त करना; विरोधी या किसी औरका शासन ।

प्रतिशिष्ट–वि० [सं०] जो कहीं भेजा या किसी काममें नियुक्त किया गया हो (नौकर आदिके लिए); जिसका निराकरण किया गया हो, निराकृत; अस्वीकृत; प्रसिद्ध ।

प्रतिशुल्क–पु०[सं०] (काउंटरवेलिंग ड्यूटी) आयात मालपर इस उद्देश्यसे लगाया गया कर जिसमें वह स्वदेशमें प्रस्तुत की गयी वस्तुओंसे अधिक सस्ता न बिक सके; विदेश द्वारा पहलेसे लगाये गये किसी शुल्कका अनिष्टकारी प्रभाव व्यर्थ करनेके लिए लगाया जानेवाला आयात-कर ।

प्रतिशोध–पु० सं०] प्रतिकार, बदला ।

प्रतिश्यान, प्रतिश्याय–पु० [सं०] जुकाम, सरदी ।

प्रतिश्रुत–वि० [सं०] जिसकी प्रतिज्ञा की गयी हो; प्रतिज्ञात; सुना हुआ ।

प्रतिश्रुति–स्त्री० [सं०] प्रतिज्ञा; प्रतिध्वनि, गूँज ।**–पत्र**–पु० (कॉवेनैंट) वह पत्र या प्रलेख जिसमें किसी बातकी प्रतिज्ञा की गयी हो; कोई बात करने या न करनेके संबंधमें आपसमें किया गया लिखित समझौता ।

प्रतिषिद्ध–वि० [सं०] जिसका प्रतिषेध किया गया हो, निषिद्ध; जिसका खंडन किया गया हो ।

प्रतिषेध–पु० [सं०] निवारण; निषेध, मनाही; खंडन; एक अर्थालंकार जहाँ किसी प्रसिद्ध निषेध या अंतरका इस प्रकार वर्णन किया जाय जिससे उसका कोई विशेष अभिप्राय सूचित हो । **–लेख**–पु० (रिट ऑफ प्रोहिबिशन) किसी मामलेकी सुनवाई बंद कर देनेका उच्च न्यायालय द्वारा छोटी मातहत अदालतको दिया गया लिखित आदेश ।

प्रतिषेधक–पु० [सं०] प्रतिषेध करनेवाला ।

प्रतिषेधाधिकार–पु० [सं०] (पावर ऑफ वीटो) किसी देशके राष्ट्रपति या प्रधान शासकका विधानसभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावको अमान्य ठहरानेका अधिकार; सुरक्षा-परिषद् द्वारा स्वीकृत किसी प्रस्तावको न मानने या कार्यान्वित होनेसे रोक देनेका पाँच महान् राष्ट्रोंमेंसे प्रत्येकको प्राप्त विशेषाधिकार ।

प्रतिष्ठा–स्त्री० [सं०] स्थिति, ठहराव; स्थापन; देवप्रतिमाकी स्थापना; किसी पदपर प्रतिष्ठित किया जाना; घर; आधार; सम्मान, गौरव, मान-मर्यादा; सीमा; पैर; स्थिरता; ख्याति, प्रसिद्धि; अभीष्टकी सिद्धि । **–पत्र**–पु० दे० 'मानपत्र' ।

प्रतिष्ठान–पु० [सं०] आधार; स्थान; नगर-स्थापन; स्थापित की गयी वस्तु, संस्था या समिति; विश्रामालय; पैर ।**–पत्र**–पु० (मेमोरैंडम ऑफ असोसियेशन) किसी व्यापारिक संस्था या प्रमंडलका नाम, उद्देश्य आदिका ब्यौरा देनेवाला वह प्रलेख जो उसकी संस्थापनाके पूर्व सार्वजनिक रूपमें प्रकाशित किया जाय और विधिवत् जिसका पंजीयन किया जाय ।

प्रतिष्ठापन–पु० [सं०] स्थापित करनेका काम; देवप्रतिमाकी स्थापना; पदासीन करना ।

प्रतिष्ठापयिता(तृ)–पु० [सं०] प्रतिष्ठापन करनेवाला ।

प्रतिष्ठापित–वि० [सं०] जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो ।

प्रतिष्ठित–वि० [सं०] जिसकी प्रतिष्ठा की गयी हो, स्थापित; पदाभिषिक्त; पूरा किया हुआ; निश्चित, निर्धारित; विवाहित; प्रयुक्त; जानकार; प्राप्त; विख्यात, प्रसिद्ध; सम्मानित, इज्जतदार । पु० विष्णु ।

प्रतिसंहरण–पु० (रिवोकेशन) किसी आज्ञप्ति, आदेश, अनुज्ञा, वचन आदिको वापस लेना, रद्द कर देना ।

प्रतिसंहार–पु० [सं०] समेट लेना; त्यागना ।

प्रतिसचिव–पु० [सं०] (डिप्टी सेक्रेटरी) सचिवकी अनुपस्थितिमें उसके स्थानपर काम करनेवाला ।

प्रतिसर–पु० [सं०] सेनाका पिछला भाग; वह कंकण जो ब्याहके पहले दूल्हा तथा दुलहिनकी कलाईपर बाँधा जाता है; कंकण नामका आभूषण; एक प्रकारका मंत्र; राखी; माला; घावका भरना, व्रणशुद्धि; सेवक, टहलू; रक्षक, रखवाला; प्रभात । वि० अधीन, परतंत्र ।

प्रति-सरकार–स्त्री० (पैरेलल गवर्नमेंट) किसी देशमें प्रतिष्ठित सरकारकी प्रतिस्पर्द्धा या विरोधमें स्थापित अन्य सरकार जो उक्त सरकारके साथ-साथ ही कुछ भागोंपर शासन करने आदिका प्रयत्न करे, समकक्ष सरकार ।

प्रतिसरण–पु० [सं०] किसीके सहारे उठँघनेकी क्रिया ।

प्रतिसव्य–वि० [सं०] प्रतिकूल, विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरुद्धाचारी ।

प्रतिसाम्य–पु० [सं०] (सिमेट्री) शरीरके या किसी रचना अथवा किसी वस्तुके विभिन्न अंगोंमें आकार-प्रकार, बनावट आदि संबंधी वह उचित अनुपात जो उसे सुंदर और मनोरम बनानेमें सहायक हो ।

प्रतिसारण–पु० [सं०] दूर हटाना, दूरीकरण, अपसारण; (ड्रेसिंग), घावकी मरहम-पट्टी करना (सुश्रुत); मरहम

लगानेका एक औजार; चूर्ण, कल्क आदिकी सहायतासे दाँत, जीभ आदिको उँगलीसे रगड़ना (सुश्रुत)।

प्रतिसारित–वि० [सं०] (ड्रेस्ड) जिसकी मरहम-पट्टीकी गयी हो।

प्रतिसेना–स्त्री० [सं०] शत्रुकी सेना।

प्रतिस्नेह–पु० [सं०] प्रेमके बदले किया जानेवाला प्रेम, प्रेमका प्रतिदान।

प्रतिस्पर्द्धा, प्रतिस्पर्धा–स्त्री० [सं०] होड़।

प्रतिस्पर्द्धी(र्द्धिन्), प्रतिस्पर्धी(र्धिन्)–पु० [सं०] प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला, होड़ लगानेवाला; प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिस्राव–पु० [सं०] नाकसे पीला और गाढ़ा कफ निकलनेका एक रोग।

प्रतिहंता(तृ)–पु०[सं०] रोकनेवाला; निवारण करनेवाला।

प्रतिहत–वि० [सं०] रोका हुआ, अवरुद्ध; दूर किया हुआ, निरस्त; निराश किया हुआ; पराभूत किया हुआ।

प्रतिहनन–पु० [सं०] आघातके जवाबमें आघात करना।

प्रतिहरण–पु० [सं०] निवारण; परित्याग; हटाना।

प्रतिहर्ता(र्तृ)–पु० [सं०] सोलह प्रकारके ऋत्विजोंमेंसे एक; हटानेवाला; नाश करनेवाला।

प्रतिहस्त, प्रतिहस्तक–पु० [सं०] प्रतिनिधि; सहायक।

प्रतिहस्ताक्षरित–वि० [सं०] (काउंटरसाइंड) (वह प्रलेख आदि) जिसपर पहलेसे किये गये हस्ताक्षरके सामने किसी अन्य अधिकारी आदिके हस्ताक्षर किये गये हों; जिसपर किसीके हस्ताक्षरोंको साक्षीकृत करनेके लिए हस्ताक्षर किये गये हों।

प्रतिहस्तापन–पु० [सं०] (सब्स्टि-ट्यूशन) कोई काम करने या चलानेके लिए एक आदमी या एक वस्तुके बदलेमें, स्थानमें, दूसरा आदमी या दूसरी वस्तु रखना।

प्रतिहार–पु० [सं०] निवारण; द्वारपाल, ड्योढ़ीदार; द्वार, दरवाजा; ऐंद्रजालिक, बाजीगर; बाजीगरी; उद्गाता द्वारा गाये जानेवाले सामका एक अवयव। **–भूमि**–स्त्री० ड्योढ़ी। **–रक्षी**–स्त्री० द्वारपालिका।

प्रतिहारी–स्त्री० [सं०] द्वारपालका काम करनेवाली स्त्री, द्वारपालिका।

प्रतिहारी(रिन्)–पु० [सं०] द्वारपाल।

प्रतिहास–पु० [सं०] हँसनेके जवाबमें हँसना; कनेर।

प्रतिहिंसा–स्त्री० [सं०] हिंसाके बदलेमें की जानेवाली हिंसा।

प्रतिहित–वि० [सं०] रखा हुआ, जमाया हुआ।

प्रतीक–वि० [सं०] प्रतिकूल, विरुद्ध; विलोम, उलटा। पु० अंग, अवयव; अंश, भाग; वह पदार्थ जिसपर किसीका आरोप किया गया हो, प्रतिरूप; प्रतिमा; किसी वाक्य, पद, मंत्र आदिके कुछ अक्षर जिनसे पूरेका बोध हो; मुँह, चेहरा; किसी चीजका आगेका हिस्सा। **–न्यूनन**–पु० (टोकन कट) (अपना विरोध या असंतोष प्रकट करनेके लिए) आय-व्ययकी किसी मदमें केवल प्रतीकके रूपमें नाममात्रकी कमी करानेका प्रस्ताव, लाक्षणिक न्यूनन। **–वाद**–पु० (सिंबालिज्म) किसी वस्तु या विषयको किसीके प्रतीकके रूपमें वर्णन करने या माननेका सिद्धांत।

प्रतीकार–पु० [सं०] दे० 'प्रतिकार'।

प्रतीक्ष, प्रतीक्षक–वि० पु० [सं०] प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्षण–पु० [सं०] प्रतीक्षा करना; प्रतीक्षा।

प्रतीक्षा–स्त्री० [सं०] आसरा देखना, इंतजार करना। **–गृह**–पु० (वेटिंग रूम) रेलगाड़ी, बस, विमानादिके आगमनतक प्रतीक्षा करनेवाले यात्रियोंके बैठनेका कमरा या छायादार स्थान; किसी अधिकारी, बड़े आदमी आदिसे मिलनेवालोंके लिए बैठकर प्रतीक्षा करनेका कमरा या घर।

प्रतीक्षालय–पु० [सं०] दे० 'प्रतीक्षागृह'।

प्रतीघात–पु० [सं०] दे० 'प्रतिघात'।

प्रतीची–स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा। **–पति**–पु० वरुण।

प्रतीचीन–वि० [सं०] पश्चिम दिशाका, पश्चिमी, पछाहीं; पिछला।

प्रतीच्य–वि० [सं०] पश्चिमका, पश्चिमी, पछाहीं।

प्रतीत–वि० [सं०] जाना हुआ, ज्ञात, मालूम; प्रसिद्ध, मशहूर; हृष्ट, प्रसन्न; (**–होना** = जान पड़ना)।

प्रतीति–स्त्री० [सं०] ज्ञान, बोध; प्रसिद्धि; हर्ष; विश्वास।

प्रतीप–वि० [सं०] प्रतिकूल, उलटा, विलोम; अप्रिय; हठी; बाधक; विरोधी। पु० एक अर्थालंकार जहाँ प्रसिद्ध उपमानको उपमेय बना दिया जाय या उपमेयसे उपमान का निरादर आदि कराया जाय। **–ग**–वि० विरुद्ध जानेवाला; प्रतिकूल। **–गति**–स्त्री०, **–गमन**–पु० पीछेकी ओर जाना। **–गामी(मिन्)**–वि० विरुद्धाचरण करनेवाला।

प्रतीपोक्ति–स्त्री० [सं०] खंडन, प्रतिकूल वचन।

प्रतीयमान–वि० [सं०] जिसकी प्रतीति हो रही हो, जान पड़ता हुआ; (वह अर्थ) जो व्यंजना द्वारा प्रकट हो रहा हो।

प्रतीवेशी(शिन्)–पु० [सं०] दे० 'प्रतिवेशी'।

प्रतीहार–पु० [सं०] दे० 'प्रतिहार'।

प्रतीहारी–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिहारी'।

प्रतोद–पु० [सं०] कोई काम करनेको विवश करना; अंकुश; चाबुक; पैना; कोंचनेका एक आला।

प्रतोषना*–स० क्रि० संतुष्ट करना; समझाना-बुझाना–'राम प्रतोषी मातु सब कहि विनीत बरबैन'–रामा०।

प्रत्न–वि० [सं०] पुराना, पुरातन; परंपरागत। **–तत्त्व**–पु० दे० 'पुरातत्त्व'। **–तत्त्वविद्**–पु० पुरातत्ववेत्ता।

प्रत्यंकन–पु०[सं०] (ट्रेसिंग) अंकित की हुई किसी आकृति आदिकी ज्योंकी त्यों प्रतिकृति तैयार करना, विशेषकर उसके ऊपर पारदर्शी पतला कागज या मसिपत्र रखकर।

प्रत्यंग–पु० [सं०] शरीरका कोई गौण अंग (जैसे नाक)।

प्रत्यंचा–स्त्री० धनुष्की डोरी।

प्रत्यंत–वि० [सं०] जो सन्निकट हो, प्रत्यासन्न।

प्रत्यक्ष–वि० [सं०] जो आँखोंके सामने हो, जो आँखोंसे दिखाई दे, परोक्षका उलटा; जिसका ग्रहण किसी ज्ञानेंद्रियसे हो सके; स्पष्ट, साफ। पु० एक प्रकारका ज्ञान जो इंद्रिय और अर्थके सन्निकर्षसे उत्पन्न होता है और चार प्रकारके प्रमाणोंके अंतर्गत माना जाता है; किसी ज्ञानेंद्रिय द्वारा वस्तु विशेषका ग्रहण। अ० स्पष्टतः, साफ-साफ। **–ज्ञान**–पु० इंद्रिय और विषयके सन्निकर्षसे उत्पन्न ज्ञान। **–दर्शन, –दर्शी(र्शिन्)**–पु० वह जिसने कोई

घटना साक्षात् देखी हो, साक्षी, गवाह । **–वादी(दिन्)** –पु० चार्वाक जो प्रत्यक्षके अतिरिक्त और किसी प्रमाणको नहीं मानता; वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने । **–सिद्ध**–वि० जो प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध हो, जिसकी सिद्धिके लिए प्रत्यक्षके अतिरिक्त किसी और प्रमाणकी आवश्यकता न हो ।

प्रत्यक्षता–स्त्री० [सं०] प्रत्यक्ष होनेका भाव ।

प्रत्यक्षीकरण–पु० [सं०] स्वयं अपनी आँखोंसे देखनेकी क्रिया; किसी इंद्रिय द्वारा ग्रहण करनेकी क्रिया ।

प्रत्यक्षीभूत–वि० [सं०] जो प्रत्यक्ष हो चुका हो ।

प्रत्यनीक–पु० [सं०] शत्रु; शत्रुसेना; विघ्न; प्रतिवादी; एक अर्थालंकार जहाँ शत्रुको न जीत सकनेके कारण उसके पक्षके किसी व्यक्तिसे वैर निकालनेका वर्णन किया जाय या किसी मित्रकी भलाईके बदले उसके किसी संबंधी आदिके प्रति कोई अच्छा काम करना दिखलाया जाय । वि० विरोधी, विपक्षी ।

प्रत्यपकार–पु० [सं०] अपकारके बदले किया जानेवाला अपकार ।

प्रत्यभिज्ञा–स्त्री०[सं०] कभीके देखे हुए व्यक्ति या पदार्थको फिर देखनेपर होनेवाला यह ज्ञान कि यह अमुक व्यक्ति या पदार्थ है, पहचान; यह ज्ञान कि परमेश्वर और जीवात्मा एक हैं ।

प्रत्यभिज्ञात–वि० [सं०] पहचाना हुआ ।

प्रत्यभिज्ञान–पु० [सं०] पहचान; वह वस्तु या चिह्न जिससे कोई पहचान जाय ।

प्रत्यभियोग–पु० [सं०] अभियुक्त या प्रतिवादीकी ओरसे वादीपर लगाया जानेवाला अभियोग ।

प्रत्यभिवाद, प्रत्यभिवादन–पु० [सं०] प्रणाम करनेवालेको दिया जानेवाला आशीर्वाद; प्रणामके बदले प्रणाम करना ।

प्रत्यय–पु० [सं०] (ऋण चुकानेकी क्षमतामें) विश्वास; साख (क्रेडिट); ज्ञान; शपथ; आचार; छिद्र; निश्चय; प्रसिद्धि, ख्याति; सहकारी कारण (बौद्ध); कारण; बुद्धि; स्वाद; अभ्यास; प्रयोग; साधन; ध्यान; छंदोंकी संख्या जाननेकी एक रीति; आश्रित जन; सहायक; विष्णु; वह उपसर्ग जैसा शब्द जो किसी धातु या मूल शब्दके अंतमें कोई संज्ञापद, क्रियापद, अव्यय या विशेषण बनानेके लिए लगाया जाता है (व्या०) । **–पत्र**–पु० (लेटर ऑफ क्रेडिट) किसी व्यापारी, महाजन आदि द्वारा किसी व्यक्तिको दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि आवश्यकता पड़नेपर इसे इतना धन हमारे (व्यापारी या महाजनके) खातेमेंसे या ऋणस्वरूप दिया जाय । **–प्रतिभू**–पु० वह प्रतिभू या जमानतदार जो ऋण लेनेवालेके प्रति महाजनको यह विश्वास दिलाता है कि 'मैं इसे जानता हूँ, यह भला आदमी है ।'

प्रत्यर्पण–पु० [सं०] ली हुई वस्तुको उसके अधिकारी या किसी दूसरेको देना, गृहीत वस्तुका पुनर्दान; (एक्सट्रैडिशन) किसी देशसे भागकर आये हुए अपराधीको पुनः उस देशके उपयुक्त अधिकारीके हाथ सौंप देना; (रिफ़ंड) पहले ली हुई या वसूल की हुई रकम लौटाना ।

प्रत्यर्पित–वि० [सं०] लौटाया हुआ ।

प्रत्यवाय–पु० [सं०] ह्रास; बाधा; संध्योपासन आदि विहित नित्यकर्म न करनेसे होनेवाला पाप; दुष्कृत, पाप; विरुद्ध आचरण (मनु०); नैराश्य; परिवर्तन; सत्तावाली वस्तुका लोप; जो नहीं है उसका आविर्भाव न होना ।

प्रत्यवेक्षण–पु०, **प्रत्यवेक्षाय**–स्त्री० [सं०] किसी बातके पूर्वापरका विचार करना, देखभाल, निगरानी ।

प्रत्याख्यात–वि० [सं०] अस्वीकृत, इनकार किया हुआ; खंडित; मना किया हुआ; सूचित किया हुआ; निवारित; प्रसिद्ध, मशहूर; अतिक्रांत ।

प्रत्याख्यान–पु० [सं०] इनकार; खंडन, निराकरण; उपेक्षा ।

प्रत्यागत–वि० [सं०] वापस आया हुआ, लौट आया हुआ ।

प्रत्यागतासु–वि० [सं०] जिसके प्राण लौट आये हों, जो फिरसे जी गया हो ।

प्रत्यागति–स्त्री० [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्यागम, प्रत्यागमन–पु० [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्याघात–पु० [सं०] आघातके उत्तरमें किया जानेवाला आघात ।

प्रत्यादान–पु० [सं०] फिरसे लेना या प्राप्त करना ।

प्रत्यादिष्ट–वि० [सं०] निराकृत; लांछित; घोषित; निर्देश किया हुआ; अस्वीकृत; पृथक् किया हुआ; चिताया हुआ ।

प्रत्यादेश–पु० [सं०] निराकरण, खंडन; वह जो किसीको लज्जित करे या नीचा दिखाये; चेतावनी, हिदायत; आज्ञा; अस्वीकृति, इनकार ।

प्रत्यानयन–पु० [सं०] लौटा लाना, वापस लाना; (रेस्टिट्यूशन) पुनः लौटा दिया जाना, हृतप्रतिदान ।

प्रत्याभूति–स्त्री० [सं०] (गारंटी) किसी संविदा आदिकी शर्तोंके पालनके लिए जमानतके रूपमें दी गयी वस्तु; इस बातकी लिखित या अलिखित जिम्मेदारी कि कोई बात, घटना आदि सच्ची, साधार और विश्वसनीय है ।

प्रत्याय–पु० [सं०] राजस्व, कर, टैक्स । स्त्री० (रिटर्न) बदलेमें मिलनेवाली आमदनी या लाभ, प्रतिफल ।

प्रत्यायक–पु० [सं०] विश्वास दिलानेवाला; व्याख्याता; प्रमाणित करनेवाला ।

प्रत्यायुक्त–वि० [सं०] (डेलीगेटेड) जो प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया हो या जिसे विशेष कामके लिए कुछ अधिकार प्रदान किया गया हो ।

प्रत्यायोजन–पु० [सं०] (ऐक्ट ऑफ डेलीगेटिंग) अपने कर्तव्य, शक्तियाँ आदि किसी दूसरे व्यक्तिको सौंपना या दे देना ।

प्रत्यारंभ–पु० [सं०] पुनरारंभ; निषेध ।

प्रत्यारोप–पु० [सं०] (काउंटर चार्ज) वह आरोप जो किसी आरोपके जवाबमें किया जाय ।

प्रत्यावर्त्तन–पु० [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्यावेदन–पु० [सं०] (काउंटर स्टेटमेंट) किसी वक्तव्य, कथन आदिके जवाब या विरोधमें कही गयी बात ।

प्रत्याशा–स्त्री० [सं०] आशा । **–में**–अ० (इन एंटिसिपेशन) किसी बातका होना पहलेसे ही पूर्ण निश्चित मान लेनेकी स्थिति या प्रतीक्षामें ।

प्रत्याशित–वि० [सं०] (एंटिसिपेटेड) जिसकी आशा या अपेक्षा पहलेसे की गयी हो, जिसका पहलेसे अनुमान किया गया हो (आय, घटी, वृद्धि आदि)। **–उत्तराधिकारी-(रिन्)**–पु० (एयर एक्सपेक्टैंस) वह जिसके उत्तराधिकारी बननेकी आशा हो।

प्रत्याहार–पु० [सं०] पीछे खींचना, हटाना; (विथड्राल) आदेश, प्रस्ताव, वचन, शब्दादिका वापस ले लिया जाना; इंद्रियोंको विषयोंसे हटाना; अष्टांग योगके अंतर्गत एक बहिरंग साधन जिसमें इंद्रियोंको उनके विषयोंसे हटाकर चित्तके समान निरुद्ध करते हैं; प्रलय।

प्रत्याहूत–वि० [सं०] वापस बुलाया हुआ।

प्रत्याहृत–वि० [सं०] पीछे खींचा हुआ, हटाया हुआ; जिसका निग्रह किया गया हो।

प्रत्याह्वयन–पु० [सं०] (रिकॉल) किसी स्थान या पदसे किसी अधिकारी या विदेश गये हुए प्रतिनिधिको वापस बुला लेना।

प्रत्युक्ति–स्त्री० [सं०] उत्तर, जवाब।

प्रत्युत–अ० [सं०] इसके विपरीत, बल्कि, वरन्।

प्रत्युत्तर–पु० [सं०] उत्तर पानेपर दिया गया उत्तर, (रिजॉइंडर) वह जवाब जो किसी उत्तरके उत्तरमें दिया जाय।

प्रत्युत्थान–पु० [सं०] किसी बड़ेके आनेपर उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए अपने आसनसे उठ जाना, अभ्युत्थान; विरोधीका सामना करनेके लिए उठ खड़ा होना; युद्ध या किसी कार्यके लिए तैयारी करना।

प्रत्युत्पन्न–वि० [सं०] जो फिरसे उत्पन्न हुआ हो; जो तत्काल उत्पन्न हुआ हो; उपस्थित। **–मति**–वि० जिसे उचित उत्तर या उपाय तत्काल सूझ जाय, प्रतिभाशाली; साहसी।

प्रत्युदाहरण–पु० [सं०] प्रतिकूल उदाहरण, किसी उदाहरणके विरोधमें दिया गया उदाहरण।

प्रत्युपकार–पु० [सं०] किसी उपकारके बदलेमें किया हुआ उपकार, भलाईके बदलेमें की हुई भलाई।

प्रत्युपकारी (रिन्)–पु० [सं०] प्रत्युपकार करनेवाला।

प्रत्युपदेश–पु० [सं०] उपदेशके बदलेमें दिया हुआ उपदेश; रायके बदलेमें दी हुई राय।

प्रत्यूप–पु०[सं०] प्रातःकाल; आठ वसुओंमेंसे एक; सूर्य।

प्रत्येक–वि० [सं०] दो या दोसे अधिकमेंसे एक-एक, अलग-अलग, हर एक।

प्रथम–वि० [सं०] गणना या क्रममें जिसका स्थान पहला हो, पहला, अव्वल; जो सबसे बढ़कर हो, श्रेष्ठ; प्रधान, मुख्य; पहलेका। अ० पहले, आगे। **–कारक**–पु० कर्ता कारक (व्या०)। **–दर्शन**–पु० पहलेपहल देखना। **–दृष्टितः (तस्)**–अ० (प्राइमाफेसी) प्रथम बार देखनेपर। **–दृष्टिसिद्ध**–वि० (प्राइमाफेसी) पहली बार देखनेसे उत्पन्न या सिद्ध जान पड़नेवाला। **–पुरुष**–पु० वह व्यक्ति जिसके विषयमें कुछ कहा जाय (व्या०)। **–यौवन**–पु० चढ़ती जवानी।

प्रथमतः–अ० [सं०] पहले, सबसे पहले।

प्रथमा–स्त्री० [सं०] कर्ता कारक (सं० व्या०)।

प्रथमाक्रमण–पु० [सं०] (ऐग्रेशन) आक्रमणका आरंभ या पहला कार्य, लड़ाईकी पहल। **–कर्ता (र्तृ)**, **–कारी-(रिन्)**–पु० (ऐग्रेसर) आक्रमणमें पहल लेनेवाला, आक्रमणात्मक कार्य आरंभ करनेवाला।

प्रथमार्द्ध, प्रथमार्ध–पु० [सं०] दो समान भागोंमेंसे पहला, पूर्वार्द्ध।

प्रथमाश्रम–पु० [सं०] ब्रह्मचर्याश्रम।

प्रथमी*–स्त्री० पृथ्वी।

प्रथमेतर–वि० [सं०] पहलेके बादका, दूसरा।

प्रथमोपचार–पु० [सं०] (फर्स्ट एड) किसी घायल या आहत व्यक्तिका उपयुक्त चिकित्सककी सहायता प्राप्त होनेके पूर्व किया गया उपचार, प्राथमिक उपचार। **–केंद्र**–पु० (फर्स्ट-एड पोस्ट) वह स्थान जहाँ प्राथमिक उपचार किया जाय।

प्रथा–स्त्री०[सं०] प्रसिद्धि, ख्याति; रीति, परिपाटी (हिं०)।

प्रथित–वि०[सं०] प्रसिद्ध, विख्यात; लंबा-चौड़ा, फैला हुआ।

प्रद–वि० [सं०] देनेवाला (जैसे–हर्षप्रद)।

प्रदक्षिणा–स्त्री० [सं०] श्रद्धा-भक्तिके भावसे देवता आदिके चारों ओर इस प्रकार घूमना कि दाहिना अंग बराबर उसीकी ओर पड़े, परिक्रमा, फेरी।

प्रदग्ध–वि० [सं०] बहुत जला हुआ।

प्रदच्छिन*–पु० दे० 'प्रदक्षिणा'।

प्रदत्त–वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर–पु० [सं०] विदीर्ण होने या फटनेका भाव; दरार; छिद्र; बाण; सेनाका तितर-बितर होना; स्त्रियोंका एक रोग जिसमें उनके गर्भाशयसे सफेद या लाल रंगका लसदार पदार्थ बहता है।

प्रदर्शक–पु० [सं०] दिखानेवाला; गुरु, पैगंबर।

प्रदर्शन–पु०[सं०] दिखानेकी क्रिया, दिखाना; सिखलाना; जुलूस तथा नारों आदि द्वारा किसी मामलेमें अपना असंतोष प्रकट करना (डिमांस्ट्रेशन); खेल, प्रयोग आदि करके दिखलाना।

प्रदर्शनी–स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह-तरहकी वस्तुएँ प्रदर्शित की जायँ, नुमाइश।

प्रदर्शित–वि० [सं०] जो दिखाया गया हो; प्रदर्शनीमें रखा हुआ।

प्रदाता(तृ)–पु०[सं०] देनेवाला, दाता; कन्यादान करनेवाला; इंद्र।

प्रदान–पु० [सं०] देना, दान; दिया जानेवाला धन।

प्रदायक, प्रदायी(यिन्)–पु० [सं०] देनेवाला, प्रदान करनेवाला।

प्रदाह–पु० [सं०] दाह, जलन; भस्मसात् होना, ध्वंस।

प्रदिशा–स्त्री० [सं०] दो मुख्य दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिशा, कोण।

प्रदिष्ट–वि० [सं०] दिखाया हुआ, बताया हुआ; नियत किया हुआ, ठहराया हुआ; आदिष्ट।

प्रदीप–पु० [सं०] दीपक, चिराग; वह जो प्रकाश करे अथवा किसी विषयको स्पष्ट करे (जैसे–काव्यप्रदीप)।

प्रदीपक–वि० [सं०] प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला। पु० छोटा दीपक; प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला।

प्रदीपति*–स्त्री० दे० 'प्रदीप्ति'।

प्रदीपन–पु० [सं०] प्रकाश करना; जलाना; चमकाना; उत्तेजित करना, जगाना।

प्रदीपिका–स्त्री० [सं०] छोटा दीपक; अर्थ या विषय स्पष्ट करनेवाली छोटी पुस्तक।

प्रदीप्त–वि० [सं०] जलाया हुआ (आग आदिके लिए); प्रकाशित; जलता हुआ, जगमगाता हुआ; उत्तेजित, जगाया हुआ (भूख आदिके लिए); दीप्तियुक्त, चमकीला।

प्रदीप्ति–स्त्री० [सं०] प्रकाश; प्रभा, चमक।

प्रदुमन*–पु० दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदेय–वि० [सं०] देने योग्य, दान करने योग्य।

प्रदेश–पु० [सं०] किसी देशका वह बड़ा भाग जो भाषा, रीति, आबहवा आदिकी दृष्टिसे उसी देशके अन्य भागोंसे भिन्न हो, प्रांत; स्थान, जगह; अँगूठेके सिरेसे लेकर तर्जनी के सिरेतककी दूरी।

प्रदेशनी, प्रदेशिनी–स्त्री० [सं०] अँगूठेके बादकी उँगली, तर्जनी।

प्रदेशीय–वि० [सं०] प्रदेश-संबंधी; प्रदेशका।

प्रदोष–पु० [सं०] भारी दोष; अव्यवस्था; सायंकाल; रात-का पहला पहर; त्रयोदशी व्रत जिसमें दिनभर उपवास करते और सायंकाल शिवकी पूजा करके भोजन करते हैं।

प्रद्युम्न–पु० [सं०] कामदेव, कृष्णके बड़े पुत्र।

प्रद्योत–पु० [सं०] प्रकाश; किरण; दीप्ति, प्रभा।

प्रद्योतन–पु० [सं०] चमकना; दीप्ति, प्रभा; सूर्य।

प्रधान–वि० [सं०] सबसे बड़ा; मुख्य। पु० प्रकृति (सांख्य०); बुद्धितत्त्व (सांख्य०); परमात्मा; सचिव, मंत्री; किसी दल, समाज आदिका प्रमुख व्यक्ति, मुखिया, सेनापति; महावत। **–कार्यालय**–पु० किसी व्यापारिक या अन्य संस्थाका केंद्रीय या मुख्य कार्यालय जहाँसे शाखा-कार्यालयोंका नियंत्रण किया जाता है। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० किसी देश या राज्यका सबसे बड़ा मंत्री। **–सैन्यावास-व्यवस्थापक**–पु० (कारटर मास्टर जनरल) सेनाके किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जो सैनिकोंके आवास, साजसज्जा, रसद आदिका प्रबंध करता है, प्रधान रसद-व्यवस्थापक।

प्रधानतः(तस्)–अ० [सं०] मुख्य रूपसे।

प्रधानता–स्त्री० [सं०] प्रधान होनेका भाव, मुख्यता।

प्रधानाध्यापक–पु० [सं०] किसी विद्यालयका मुख्य अध्यापक।

प्रधानामात्य–पु० [सं०] प्रधान मंत्री, महामात्य।

प्रधानी*–स्त्री० प्रधानका पद या कार्य।

प्रध्वंस–पु० [सं०] विनाश; किसी पदार्थकी अतीतावस्था।

प्रन*–पु० दे० 'प्रण'।

प्रनत*–वि० दे० 'प्रणत'।

प्रनति*–स्त्री० दे० 'प्रणति'।

प्रनप्तृ(प्तृ)–पु० [सं०] पनाती, नातीका लड़का।

प्रनमन*–पु० दे० 'प्रणमन'।

प्रनमना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रनय*–पु० दे० 'प्रणय'।

प्रनव*–पु० दे० 'प्रणव'।

प्रनवना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रनष्ट–वि० [सं०] लुप्त; बुरी तरह नष्ट; भगा हुआ, पलायित।

प्रनाम*–पु० दे० 'प्रणाम'।

प्रनामी*–स्त्री० गुरु, ब्राह्मण आदिको प्रणाम करते समय दी जानेवाली दक्षिणा या भेंट। पु० प्रणाम करनेवाला।

प्रनिपात*–पु० दे० 'प्रणिपात'।

प्रपंच–पु० [सं०] विस्तार, फैलाव; संसार, भवचक्र; जगत्-का जंजाल, भवजाल (हिं०); छल, धोखा; भिन्नता; राशि; प्रतिकूलता; विश्लेषण; झमेला, बखेड़ा (हिं०)। **–बुद्धि**–वि० चालबाज, धोखेबाज।

प्रपंचक–वि० [सं०] विस्तार करनेवाला; व्याख्या करनेवाला।

प्रपंचित–वि० [सं०] जिसका विस्तार किया गया हो, विस्तारित; जो ठगा गया हो, प्रतारित; जिससे भूल हुई हो।

प्रपंची(चिन्)–वि० [सं०] प्रपंच रचनेवाला; छलिया, धोखेबाज; बखेड़ा खड़ा करनेवाला।

प्रपंजी–स्त्री० [सं०] (लेजर) किसी बैंक, व्यापारिक संस्था आदिकी वह मुख्य पंजी (रजिस्टर) जिसमें व्यापारिक लेन-देन, आय-व्यय आदिका ब्यौरा लिखा रहता है। **–पृष्ठ**–पु० (लेजर फोलियो) प्रपंजीका वह पृष्ठ (वस्तुतः आमने-सामनेके पृष्ठद्वय) जिसपर किसीके रुपया या माल इत्यादि जमा करने या निकालनेका ब्यौरा दिया रहता है।

प्रपतित–वि० [सं०] जो उड़ गया हो; नीचे गिरा हुआ; जिसका क्षय हो गया हो; मृत।

प्रपत्र–पु० [सं०] (फार्म) किसी परीक्षा या स्थान आदिके लिए आवेदनपत्र देने, कोई विवरण प्रस्तुत करने या शपथ ग्रहण करने आदि-संबंधी पत्रोंका वह बँधा हुआ रूप जिसमें आवश्यक जानकारी देनेके लिए रिक्त स्थान, कोष्ठक आदिकी व्यवस्था रहती है।

प्रपथ–पु० [सं०] चौड़ी सड़क। वि० विश्रांत।

प्रपात–पु० [सं०] पहाड़ या चट्टानका ऊँचा खड़ा किनारा; बहुत ऊँचे स्थानसे गिरनेवाली जलकी धारा; झरना, निर्झर; किनारा, तट; गिरना; धड़ामसे नीचे गिरना।

प्रपितामह–पु० [सं०] परदादा; परब्रह्म।

प्रपितामही–स्त्री० [सं०] परदादी।

प्रपितृव्य–पु० [सं०] दादाका चाचा, चचेरा परदादा।

प्रपीड़क–पु० [सं०] दबानेवाला; सतानेवाला।

प्रपुत्र–पु० [सं०] पौत्र, पोता।

प्रपूरक–वि० [सं०] पूरा करनेवाला; भरनेवाला; तृप्त करनेवाला।

प्रपूरित–वि० [सं०] विशेष रूपसे पूरा किया हुआ; अच्छी तरह भरा हुआ।

प्रपौत्र–पु० [सं०] पोतेका बेटा, परपोता।

प्रपौत्री–स्त्री० [सं०] पोतेकी बेटी।

प्रफुलना*–अ० क्रि० खिलना, फूलना।

प्रफुला*–स्त्री० कुमुदिनी, कुईं, कमलिनी।

प्रफुलित*–वि० खिला हुआ; अति प्रसन्न, प्रमुदित।

प्रफुल्ल–वि० [सं०] खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल लगे हों, फूला हुआ; प्रसन्न। **–नयन, –नेत्र**–वि० जिसकी आँखें प्रसन्नतासे फैली हुई हों। **–वदन**–वि० जिसका

मुख प्रसन्न दीखता हो।

प्रबंध-पु० [सं०] प्रकृष्ट बंधन; (अविच्छिन्न) क्रम; ग्रंथ, कथा आदिकी रचना; निबंध; आयोजन; व्यवस्था। **-अभिकर्ता**-पु० (मैनेजिंग एजेंट्स) वह कंपनी या व्यावसायिक संस्था जो निर्धारित वेतन या पारिश्रमिक लेकर किसी अन्य संस्था, कारखाने आदिके प्रबंधका काम, उसके संचालकोंके विधिविहित निश्चयके अनुसार, ग्रहण करे। **-कर्ता(र्तृ)**-पु० प्रबंध करनेवाला। **-कारिणी**-वि० स्त्री० किसी सभा, संघ इत्यादिके निश्चयोंको कार्यरूप देनेवाली या उसकी ओरसे प्रबंधकार्य करनेवाली (समिति)। **-काव्य**-पु० (मुक्तकका उलटा) वह काव्य जिसमें किसीके जीवनकी विशेष घटनाओंका क्रमबद्ध चित्रण किया गया हो। **-संपादक**-पु० (मैनेजिंग एडिटर) संपादकीय विभागकी व्यवस्था आदिकी देखभाल करनेवाला संपादक। **-समिति**-स्त्री० किसी सभा या संस्थाका प्रबंध करनेवाली समिति।

प्रबंधक-पु० [सं०] दे० 'प्रबंधकर्ता'।

प्रबल-वि० [सं०] प्रकृष्ट बलवाला, बहुत बली; प्रचंड, उग्र, जोरका; भारी, महान्।

प्रबल्हिका, प्रवल्हिका-स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रबाल-पु० [सं०] नया कोमल पत्ता, नव-पल्लव; मूँगा; वीणाकी लकड़ी, वीणादंड। **-पद्म**-पु० लाल कमल। **-भस्म(न्)**-पु० मूँगेका भस्म।

प्रबास*-पु० दे० 'प्रवास'।

प्रबाह*-पु० दे० 'प्रवाह'।

प्रबाहु-पु० [सं०] हाथका अगला भाग।

प्रबिसना*-अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना।

प्रबीन*-वि० दे० 'प्रवीण'। स्त्री० अच्छी वीणा।

प्रबीर*-वि० दे० 'प्रवीर'।

प्रबुद्ध-वि० [सं०] जागा हुआ, जाग्रत्; प्रबोधयुक्त; पंडित, ज्ञानी; खिला हुआ, विकसित; (जादू आदि) जिसका असर पड़ने लगा हो; सजीव।

प्रबोध-पु० [सं०] जागना, जागरण; सचेत होना (ला०); यथार्थ ज्ञान, तत्त्वज्ञान; सांत्वना, ढाढ़स; सतर्कता।

प्रबोधक-पु०[सं०] जगानेवाला; सचेत करनेवाला (ला०); ज्ञानदाता; ढाढ़स बँधानेवाला; राजाको प्रातःकाल जगानेवाला, स्तुतिपाठक।

प्रबोधन-पु० [सं०] जगना; जगाना; सचेत होना; तत्त्वज्ञान; बोध कराना, समझाना; गंधको फिर तेज करना।

प्रबोधना*-स० क्रि० जगाना; सचेत करना; समझाना-बुझाना; कोई बात सिखाना; ढाढ़स बँधाना, तसल्ली देना।

प्रबोधनी-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रबोधिनी'।

प्रबोधिनी-स्त्री० [सं०] देवोत्थान एकादशी; दुरालभा।

प्रभंजन-पु० [सं०] तोड़-फोड़; वायु, हवा; प्रचंड वायु; वि० तोड़-फोड़ करनेवाला। **-सुत**-पु० हनूमान्।

प्रभव-पु० [सं०] उत्पत्ति, जन्म; उत्पत्तिका कारण; उत्पत्तिका स्थान; मूल, जड़; साठ संवत्सरोंमेंसे एक।

प्रभविष्णु-वि० [सं०] प्रभावशाली; शक्तिशाली।

प्रभविष्णुता-स्त्री० [सं०] प्रभावोत्पादकता।

प्रभा-स्त्री० [सं०] तेज, चमक, दीप्ति; प्रकाश; किरण; सूर्य-बिंब; दुर्गा; कुबेरकी पुरी; सूर्यकी एक पत्नी; एक अप्सरा; नहुषकी माता; एक वृत्त। **-कर**-पु० सूर्य; शिव; अग्नि; चंद्रमा; समुद्र; मदारका पौधा; मीमांसाके एक प्रसिद्ध आचार्य जो 'गुरु' नामसे विख्यात हैं। **-कीट**-पु० जुगनू। **-मंडल**-पु० देवताओं, महात्माओं आदिके मुखके चारों तरफका वह दीप्तिमंडल जो चित्रों या मूर्त्तियोंमें देख पड़ता है।

प्रभाउ*-पु० दे० 'प्रभाव'।

प्रभाग-पु० [सं०] भागका भाग, टुकड़ेका टुकड़ा; भिन्नका भिन्न (जैसे—१/३ का १/५)।

प्रभात-पु० [सं०] सबेरा, प्रातःकाल; प्रभासे उत्पन्न सूर्यका पुत्र। **-फेरी**-स्त्री० [हिं०] कोई उत्सव मनाने या किसी बातका प्रचार करनेके उद्देश्यसे जुलूस बनाकर विशेष प्रकारके नारे लगाते हुए भोरमें बस्तीमें घूमना।

प्रभाती-स्त्री० सबेरे गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत।

प्रभार-पु० [सं०] (चार्ज) किसी विभागादिके कार्यका भार या जिम्मेदारी।

प्रभारी(रिन्)-वि० [सं०] (इनचार्ज) जिसके ऊपर किसी विभागादिके कार्यका भार या उत्तरदायित्व हो। **-राजदूत**-पु० (शार्ज़ें डफेयर:) अस्थायी रूपसे राजदूतका काम सँभालनेवाला व्यक्ति; उप-राजदूत, छोटे देशोंमें नियुक्त राजदूत। **-सदस्य**-पु० (मेंबर इनचार्ज) वह सदस्य जिसपर किसी कार्य या पदका भार (उत्तरदायित्व) डाला गया, सौंपा गया हो।

प्रभाव-पु० [सं०] उद्भव, उत्पत्ति; सामर्थ्य, शक्ति, विक्रम; सूर्यका एक पुत्र; सुग्रीवका एक मंत्री; राजकीय शक्ति, राजाका कोश और दंडसे उत्पन्न तेज, प्रताप; फल, परिणाम; असर; दबाव; विस्तार। **-कर**-वि० असर डालनेवाला। **-शाली(लिन्)**-वि० अधिक प्रभाववाला।

प्रभाववान्(वत्), प्रभावी(विन्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; प्रतापी, (प्रभावी होना = लागू होना।)

प्रभावान्(वत्)-वि० [सं०] दीप्तियुक्त।

प्रभावान्वित-वि० [सं०] प्रभावसे युक्त; प्रभावित।

प्रभावित-वि० [सं०] जिसपर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभास-पु० [सं०] दीप्ति, प्रकाश; एक प्राचीन तीर्थ, सोमतीर्थ; एक वसु।

प्रभासना*-अ० क्रि० भासित होना, प्रतीत होना, दिखाई पड़ना।

प्रभिन्न-वि० [सं०] भिन्न; जो अलग हो; विभक्त; जो टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; बहुत अधिक भेदवाला; परिवर्तित; विकृत; ढीला किया हुआ; भिदा हुआ; खिला हुआ; मतवाला (हाथी)। पु० वह हाथी जिसके गंडस्थलसे मद चू रहा हो, मतवाला हाथी। **-करट**-वि० (वह हाथी) जिसके फटे हुए कुंभस्थलसे दान बह रहा हो।

प्रभीत-वि० [सं०] बहुत डरा हुआ।

प्रभु-पु० [सं०] अधीश्वर, स्वामी; अन्नदाता; शासक; सर्वशक्तिमान्, ईश्वर; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; इंद्र; राजा, स्वामी या श्रेष्ठ पुरुषका संबोधन। वि० शक्तिशाली; योग्य, दक्ष; प्रचुर; स्थायी; मुकाबलेका। **-भक्त**-वि० जो अपने स्वामीका सच्चा सेवक हो, जो अपने स्वामीमें अनुरक्त हो,

वफादार। –**शक्ति**–स्त्री० कोश और सेनाका बल, पूर्ण-प्रभुत्व, परम सत्ता। –**सत्ता**–स्त्री० (साव्हरेनटी) देश या राज्यपर ऐसी अखंड सत्ता जिसके ऊपर और किसीकी सत्ता या अधिकार न हो, पूर्ण सत्ता।

प्रभुता–स्त्री०, **प्रभुत्व**–पु० [सं०] प्रभुका भाव; गौरव, महत्त्व; अधिकार, स्वामित्व; वैभव, ऐश्वर्य।

प्रभुताई*–स्त्री० दे० 'प्रभुता'।

प्रभू*–पु० दे० 'प्रभु'।

प्रभूत–वि० [सं०] जो हुआ हो, भूत; उत्पन्न, उद्गत; बहुत अधिक, प्रचुर; उन्नत; पूर्ण; पक्व।

प्रभूति–स्त्री० [सं०] उत्पत्ति-स्थान; आधिक्य, प्रचुरता।

प्रभृति–अ० [सं०] इत्यादि, वगैरह।

प्रभेद–पु० [सं०] भेद, प्रकार; अंतर; स्फोटन; विभाग।

प्रभेदक–वि० [सं०] फाड़ने, चीरनेवाला; अंतर करनेवाला।

प्रभेव*–पु० दे० 'प्रभेद'।

प्रमंडल–पु० [सं०] पहियेके बाहरी हिस्सेका खंड, चक्केका खंड; (कंपनी) मिल-जुलकर कोई काम करने, विशेषकर व्यापारादिके लिए बनाया गया व्यक्तियोंका संघ या समूह।

प्रमत्त–वि० [सं०] नशेमें चूर, मतवाला; पागल, विक्षिप्त; असावधान, प्रमादयुक्त; संध्या-पूजा न करनेवाला; भूल-चूक करनेवाला। –**चित्त**–वि० लापरवाह, प्रमादी।

प्रमत्तता–स्त्री० [सं०] प्रमत्त होनेका भाव, मतवालापन; पागलपन; लापरवाही।

प्रमथ–पु० [सं०] शिवके एक प्रकारके अनुचर; घोड़ा। –**नाथ**,–**पति**–पु० शिव।

प्रमथन–पु० [सं०] मथना; मार डालना, वध; नष्ट करना; कष्ट देना, उत्पीडन; क्षति पहुँचाना।

प्रमथित–वि० [सं०] अच्छी तरह मथा हुआ; जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो, उत्पीडित; रौंदा हुआ।

प्रमद–वि० [सं०] प्रमत्त; जिसमें बहुत मद हो; उग्र; लापरवाह; विवेकहीन। पु० धतूरेका फल; हर्ष, मोद; एक दैत्य। –**कानन**,–**वन**–पु० वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियोंके साथ विहार करता है, क्रीडोद्यान, प्रमोदवन।

प्रमदा–स्त्री० [सं०] रूपवती युवती; सुंदर स्त्री। –**कानन**, –**वन**–पु० दे० 'प्रमदकानन'।

प्रमर्दित–वि० [सं०] नष्ट-ध्वस्त; रौंदा हुआ।

प्रमा–स्त्री० [सं०] चेतना, बोध; किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान (न्याय०); माप।

प्रमाण–पु० [सं०] वह साधन जिसके द्वारा किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान हो, प्रमाका साधन (न्या०); वह साधन जिसके सहारे कोई बात सिद्ध की जाय, सबूत; वह जिसका वचन या निर्णय यथार्थ या आप्त माना जाय; माप; परिमाण, मात्रा; इयत्ता, सीमा; एक अर्थालंकार; धर्मशास्त्र; मूलधन; मर्यादा; हेतु, कारण; नियम; [हिं०] यथार्थता, सत्यता; निश्चय, पक्का इरादा; ठिकाना, भरोसा; मानने या आदर करने योग्य वस्तु; आज्ञापत्र, आदेश। अ० तक, पर्यंत। –**कोटि**–स्त्री० प्रामाणिक वस्तुओं या आधारोंकी श्रेणी या वर्ग; वाद-विवादमें वह युक्ति जो प्रमाण मानी जाती है। –**ज्ञ**–वि० प्रमाण-अप्रमाणको जाननेवाला पंडित। –**पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जो किसी बातका प्रमाण माना जाय। –**भूत**–वि० जो किसी बातका प्रमाण हो या माना जाय, प्रमाणरूप। –**वचन**,–**वाक्य**–पु० न्यायसंगत वाक्य। –**शास्त्र**–पु० न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र। –**सूत्र**–पु० वह सूत जिससे कोई वस्तु नापी जाय।

प्रमाणक–वि० [सं०] (समासांतमें)......परिमाण या विस्तारका। पु० (वाउचर) किसी रकमके आय-व्ययके खातेमें चढ़ाये जानेकी संपुष्टि या प्रमाणके रूपमें साथमें नत्थी किया गया हिसाबके ब्यौरेका पुरजा; प्रमाणपत्र।

प्रमाणतः(तस्)–अ० [सं०] प्रमाणके अनुसार।

प्रमाणन–पु० [सं०] (सर्टिफिकेशन) किसी लेख, कथन या बातका ठीक और प्रामाणिक होना लिखकर स्वीकार करना।

प्रमाणना*–स० क्रि० दे० 'प्रमानना'।

प्रमाणिक–वि० [सं०] जिसके लिए कोई प्रमाण हो, प्रमाणसिद्ध; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाणरूप (हिं०)।

प्रमाणित–वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणसिद्ध।

प्रमाणीकरण–पु०[सं०](आथेंटिकेशन)किसी बातकी सत्यता प्रमाणित करना, किसीकी विश्वसनीयताकी पुष्टि करना।

प्रमाणीकृत–वि० [सं०] जो प्रमाण ठहराया गया हो।

प्रमाता(तृ)–पु० [सं०] प्रमारूप ज्ञानको प्राप्त करनेवाला, वह जो प्रमाण द्वारा किसी वस्तुका ज्ञान प्राप्त करे; द्रष्टा।

प्रमातामह–पु० [सं०] परनाना।

प्रमातामही–स्त्री० [सं०] परनानी।

प्रमात्रा–स्त्री० [सं०] (क्वानटम) यथेष्ट मात्रा, उतनी मात्रा जितनी आवश्यक हो; हिस्सा, भाग, राशि जो आवश्यक, वांछित या स्वीकृत हो।

प्रमाथ–पु० [सं०] मथना, मथन; बलपूर्वक हरण करना; बलात्कार; बहुत अधिक दुःख देना, उत्पीडन।

प्रमाथी(थिन्)–वि० [सं०] मथनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला; पीडा पहुँचानेवाला; मारने, नष्ट करनेवाला; क्षुब्ध करनेवाला। पु० एक राक्षस; एक संवत्सर।

प्रमाद–पु० [सं०] कर्तव्यको अकर्तव्य समझकर उससे निवृत्त होना और अकर्तव्यको कर्तव्य समझकर उसमें प्रवृत्त होना, अनवधानता; भूल-चूक, गफलत; नशा; उन्माद।

प्रमादवान्(वत्)–वि० [सं०] प्रमाद करनेवाला, प्रमादयुक्त; बिना विचारे काम करनेवाला; मतवाला; पागल।

प्रमादिका–स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका कौमार्य किसीने नष्ट कर दिया हो; लापरवाह स्त्री।

प्रमादी(दिन्)–वि० [सं०] जो बराबर प्रमाद करे, प्रमादशील; मत्त; विक्षिप्त।

प्रमान*–पु० दे० 'प्रमाण'।

प्रमानना*–स० क्रि० प्रमाण मानना, ठीक मानना; प्रमाणित करना, सिद्ध करना।

प्रमानी*–वि० प्रामाणिक, मान्य।

प्रमाप–स्त्री० (स्टैंडर्ड) वह स्थिर की हुई एवं बहुमान्य माप या मान जिसके आधारपर अन्य मापों या मानोंका

निश्चय किया जाय; योग्यता, श्रेष्ठता आदि परखने, नापनेका सुनिर्धारित स्तर या क्रम।

प्रमापक–वि० [सं०] प्रमाणित करनेवाला। पु० प्रमाण।

प्रमार्जक–वि० [सं०] धोने, साफ करनेवाला; पोंछनेवाला।

प्रमार्जन–पु० [सं०] साफ करना; पोंछना; दूर करना।

प्रमित–वि० [सं०] जिसका यथार्थ ज्ञान हुआ हो; ज्ञात, अवगत; परिमित, अल्प; मापा हुआ।

प्रमीलन–पु० [सं०] आँखें बंद करना।

प्रमीला–स्त्री० [सं०] तंद्रा; शिथिलता, क्लांति; अर्जुनकी एक भार्या।

प्रमीलित–वि० [सं०] जिसकी आँखें मुँदी हों।

प्रमुक्त–वि० [सं०] जिसका बंधन खोल दिया गया हो; परित्यक्त; प्रक्षिप्त।

प्रमुख–अ० इत्यादि, वगैरह। वि० [सं०] प्रथम; मुख्य, प्रधान; श्रेष्ठ; सम्मान्य, प्रतिष्ठित। पु० (स्पीकर) दे० 'अध्यक्ष'। **–सभा**–स्त्री० (सिनेट) प्रमुख या प्रख्यात व्यक्तियोंकी सभा।

प्रमुग्ध–वि० [सं०] मूर्च्छित, अचेत; हतबुद्धि; बहुत सुंदर।

प्रमुदित–वि० [सं०] अति प्रसन्न, हर्षित।

प्रमूढ–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ, चकराया हुआ; मूर्ख।

प्रमेय–वि० [सं०] प्रमा या यथार्थ ज्ञानके योग्य, जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय। पु० वह जो प्रमा या यथार्थ ज्ञानका विषय हो सके या जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय।

प्रमेह–पु० [सं०] एक रोग जिसमें शरीरकी धातुएँ अनेक रूपोंमें पेशाबके रास्ते गिरा करती हैं।

प्रमेही(हिन्)–वि० पु० [सं०] प्रमेहका रोगी।

प्रमोद–पु० [सं०] प्रकृष्ट हर्ष, आनंद; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक नाग; एक संवत्सर। **–कर**–पु० (एंटरटेनमेंट टैक्स) नाटक, चलचित्रोंके प्रदर्शन तथा मनोरंजनके ऐसे ही अन्य प्रकारोंपर लगनेवाला कर, मनोरंजन-कर। **–गोष्ठी**–स्त्री० (पिकनिक पार्टी) मित्रमंडलीका नगरादिके बाहर जाकर किसी खुले स्थान, उद्यान आदिमें खान-पान, मनोरंजन आदिका आयोजन करना।

प्रमोदित–वि० [सं०] प्रमोदयुक्त, प्रसन्न। पु० कुबेर।

प्रमोदी(दिन्)–वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला, प्रमोदजनक; प्रसन्न।

प्रमोह–पु० [सं०] मोह; जड़ता; संज्ञाहीनता, मूर्च्छा।

प्रमोहन–पु० [सं०] मोहित करना; वह अस्त्र जिसके प्रयोगसे शत्रुदल संज्ञाहीन हो जाय।

प्रमोहित–वि० [सं०] स्तब्ध, चकराया हुआ।

प्रयंक*–पु० दे० 'पर्यंक'।

प्रयंत*–अ० दे० 'पर्यंत'।

प्रयत्न–पु० [सं०] किसी कार्य या उद्देश्यकी पूर्तिके लिए किया जानेवाला व्यापार, प्रयास, कोशिश; अध्यवसाय; जिह्वा, कंठ आदिका वह व्यापार जिसके सहारे वर्णोंका उच्चारण होता है (व्या०)। **–शील**–वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, जो प्रयत्न कर रहा हो।

प्रयत्नवान्(वत्)–वि० [सं०] प्रयत्नमें लगा हुआ, सचेष्ट।

प्रयाग–पु० [सं०] हिंदुओंका एक प्रसिद्ध तीर्थ; इंद्र। **–वाल**–पु० [हिं०] प्रयागका पंडा।

प्रयाण–पु० [सं०] गमन, प्रस्थान; यात्रा; युद्धके लिए किया गया प्रस्थान, चढ़ाई; आरंभ; संसारसे बिदा होना, मरना। **–काल,–समय**–पु० प्रस्थान करनेका समय। **–पटह**–पु० कूचका डंका, युद्धके लिए प्रस्थान करते समय बजाया जानेवाला नगाड़ा।

प्रयान*–पु० दे० 'प्रयाण'।

प्रयास–पु० [सं०] प्रयत्न, कोशिश; श्रम, आयास।

प्रयुक्त–वि० [सं०] जोता हुआ; जिसका प्रयोग किया गया हो, लगाया हुआ; किसी काममें लगाया हुआ; जोड़ा हुआ, एकमें मिलाया हुआ; समाधिस्थ; सूदपर दिया हुआ (धन); प्रेरित; (अस्त्र, मंत्र आदि) जिसका किसीपर प्रयोग किया गया हो; गतिमान् किया हुआ। **–संस्कार**–वि० साफ कर चमकाया हुआ (रत्नादि)।

प्रयुत–वि० [सं०] युक्त, सहित; अस्पष्ट; ध्वस्त; दस लाख। पु० दस लाखकी संख्या, १०,००,०००।

प्रयोक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; किसी काममें लगानेवाला, प्रेरक; ऋण देनेवाला, उत्तमर्ण, महाजन; नाटकका सूत्रधार; कमनैत; पाठ करनेवाला, वाचक।

प्रयोग–पु० [सं०] किसी काममें लाना या लाया जाना, व्यवहार, इस्तेमाल; अनुष्ठान, साधन; (अस्त्र-शस्त्र) चलाना या छोड़ना, शस्त्रपात; ज्ञानको अमलमें लाना या बरतना, अमल, प्रक्रिया-शास्त्रका उलटा; नाटकका खेला जाना, अभिनय; मारण-मोहन आदि तांत्रिक अभिचार; वह ग्रंथ जिसमें यज्ञ-संबंधी क्रियाओंकी विधि बतायी गयी हो, पद्धति; योजना; साधन; पाठ; आरंभ; परिणाम; संबंध; भूत-प्रेत आदिके उच्चाटनके लिए किया जानेवाला मंत्रोच्चारण; सूदपर रुपया देना; उदाहरण, दृष्टांत; साम, दाम आदिका अवलंबन। पु० (एक्सपेरिमेंट) किसी सिद्धांतकी सत्यता प्रमाणित करने या किसी अज्ञात बातका पता लगाने, जाँच करने आदिकी दृष्टिसे की गयी प्रक्रिया या कार्य। **–ज्ञ,–निपुण**–वि० जिसे अभ्यासजन्य अनुभव प्राप्त हो। **–पत्र**–पु० (टिकट) यात्राके लिए रेलगाड़ीके डब्बे, मोटर-बस आदिका कुछ समयतक प्रयोग करनेका अधिकार प्रदान करनेवाला पत्र जिसपर प्रायः गंतव्य स्थानका नाम, तारीख, किराया आदि लिखा रहता है। **–पत्र-कार्यालय**–पु० (बुकिंग ऑफिस) रेलगाड़ीके डब्बे, मोटर-बस आदिमें यात्रा करनेके लिए प्रयोगपत्र जारी करने, बेचनेका कार्यालय, टिकटघर। **–विधि**–स्त्री० प्रयोगज्ञापक विधि (मीमांसा)। **–शाला**–स्त्री० (लेबोरेटरी) वह स्थान जहाँ पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र आदि-विषयक तथ्योंको समझाने, जानने या नयी बातोंका पता लगानेकी दृष्टिसे विविध प्रयोग किये जाते हों।

प्रयोगतः(तस्)–अ० [सं०] प्रयोग द्वारा; परिणामरूपमें; अनुसार; कार्यतः।

प्रयोगातिशय–पु० [सं०] वह प्रस्तावना जिसमें प्रस्तुत प्रयोगके अंतर्गत दूसरा प्रयोग उपस्थित हो जाता है और उसीपर पात्र प्रवेश करते हैं (ना०)।

प्रयोगार्थ–पु० [सं०] मुख्य कार्यकी सिद्धिके लिए किया

जानेवाला गौण कार्य ।

प्रयोगार्ह–वि० [सं०] प्रयोगके योग्य, जिसका प्रयोग किया जा सके ।

प्रयोगी (गिन्)–पु० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; प्रेरक; जिसके सामने कोई उद्देश्य हो ।

प्रयोजक–पु० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; जोड़नेवाला, एकमें मिलानेवाला; प्रेरणा करनेवाला [व्या०]; सूदपर रुपया देनेवाला, महाजन; ग्रंथ-लेखक; संस्थापक; धर्मशास्त्री । वि० प्रेरक; नियुक्त करनेवाला; जो कारण बने ।

प्रयोजन–पु० [सं०] प्रवृत्तिका कारणभूत उद्देश्य, वह उद्देश्य जिसकी पूर्तिके लिए कोई किसी काममें प्रवृत्त हो, अर्थ, अभिप्राय, गरज; उपयोग, इस्तेमाल, काम; हेतु; साधन, उपाय; लाभ ।

प्रयोजनवतीलक्षणा–स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसके द्वारा किसी विशिष्ट प्रयोजनकी सिद्धिके लिए वाच्यार्थसे भिन्न अर्थ निकाला जाय ।

प्ररोचना–स्त्री० [सं०] स्तुति; नाटककारकी प्रशंसा द्वारा नाटकके प्रति दर्शकोंमें रुचि उत्पन्न करना; आगे आनेवाली बातका इस प्रकार कथन करना कि दर्शकोंकी रुचि या औत्सुक्य बढ़ जाय (ना०) ।

प्ररोह–पु० [सं०] अंकुरित होना; उत्पत्ति; आरोह, चढ़ाव; अंकुर; संतान; प्रकाश-किरण; नया पत्ता या टहनी ।

प्ररोहण–पु० [सं०] उगना, जमना; उत्पत्ति; अंकुर; टहनी ।

प्रलंब–वि० [सं०] लटकता हुआ, लटका हुआ; अधिक लंबा; सुस्त । पु० लटकनेकी क्रिया; लटकनेवाली चीज ।–**बाहु**–वि० जिसकी बाहें अधिक लंबी हों, आजानुबाहु ।

प्रलंबित–वि० [सं०] लटका हुआ ।

प्रलंबी (बिन्)–वि० [सं०] लटकनेवाला; सहारा लेनेवाला ।

प्रलपन–पु० [सं०] वार्तालाप; अनर्थक वचन, प्रलाप, बकवास; दुखड़ा रोना ।

प्रलयंकर–वि० [सं०] प्रलय करनेवाला ।

प्रलय–पु० [सं०] लयको प्राप्त होना, नष्ट होना, न रह जाना; विनाश, संहार; संसारका अपने मूल कारण प्रकृतिमें सर्वथा लीन हो जाना, सृष्टिका सर्वनाश; मृत्यु; मूर्च्छा, बेहोशी; एक सात्त्विक भाव जिसमें सुख या दुःखके कारण मनुष्य जड़ हो जाता है (सा०); भारी या व्यापक संहार ।–**कर**, –**कारी (रिन्)**–वि० दे० 'प्रलयंकर' ।–**काल**–पु० प्रलयका समय ।–**जलधर**–पु० प्रलयके समयका बादल ।

प्रलाप–पु० [सं०] बातचीत; अंड-बंड बकना, निरर्थक बात, बकवास; दुखड़ा रोना; ज्वराधिक्यसे बेहोश होकर अंड-बंड बकना ।

प्रलापक–पु० [सं०] बकवास करनेवाला; एक तरहका सन्निपात रोग जिसमें रोगी प्रलाप करता है ।

प्रलापी (पिन्)–वि० [सं०] प्रलाप करनेवाला, अनापशनाप बकनेवाला ।

प्रलाभी–वि० (लुक्रेटिव) लाभ देनेवाला, जिसके करनेमें विशेष लाभ हो (पद या काम) ।

प्रलिप्त–वि० [सं०] चिपका हुआ, लिपटा हुआ, लिप्त ।

प्रलीन–वि० [सं०] विलीन; लुप्त; प्रलयको प्राप्त, विनष्ट ।

प्रलीनता–स्त्री० [सं०] प्रलीन होनेका भाव; चेष्टानाश, जड़ता ।

प्रलुब्ध–वि० [सं०] जो लालचमें पड़ गया हो ।

प्रलुब्धा–वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जिसे किसीसे अनुचित प्रेम हो गया हो ।

प्रलून–वि० [सं०] काटा हुआ । पु० एक तरहका कीड़ा ।

प्रलेख–पु० [सं०] (डाक्यूमेंट) वह कागज या लिखित पत्र जिसमें किसी बातका प्रमाण या कोई प्रामाणिक बात दर्ज हो और जो विधिक दृष्टिसे किसी पक्ष या व्यवहार-(मामले)के समर्थनमें उपस्थित किया जा सके ।

प्रलेखीय चलचित्र–पु० [सं०] (डाक्यूमेंटरी फिल्म) वह चलचित्र जिसमें किसी महत्त्वपूर्ण घटना, पुरातत्त्व, औद्योगिक प्रगति आदिका चित्रण किया गया हो, समाचार-फिल्म ।

प्रलेप–पु० [सं०] लेप, घाव या फोड़ेपर कोई मलहम जैसी गीली दवा चढ़ाना; घाव या फोड़ेपर चढ़ानेका मलहम ।

प्रलेपक–पु० [सं०] प्रलेप करनेवाला; एक प्रकारका मंद ज्वर ।

प्रलेपन–पु० [सं०] लेप करनेकी क्रिया ।

प्रलोठन–पु० [सं०] उछलना; लुढ़कना ।

प्रलोप–पु० [सं०] नाश, विलय ।

प्रलोभ–पु० [सं०] अधिक लोभ, लालच; प्रलोभन ।

प्रलोभक–पु० [सं०] प्रलोभन देनेवाला, लालच उत्पन्न करनेवाला ।

प्रलोभन–पु० [सं०] ललचानेवाली वस्तु; लालच देना; लालच देकर बहकाना, फुसलाना, अपनी ओर कर लेना या किसी कार्यसे विरत करना (ऐल्यूरमेंट) ।

प्रलोभित–वि० [सं०] प्रलोभनमें पड़ा हुआ, प्रलुब्ध ।

प्रलोभी (भिन्)–वि० [सं०] ललचनेवाला, लालची, प्रलोभनमें पड़नेवाला ।

प्रवंचक–वि०, पु० [सं०] ठग, धूर्त ।

प्रवंचन–पु० [सं०] ठगना, धोखा देना ।

प्रवंचना–स्त्री० [सं०] ठगी, धोखेबाजी, धूर्तता ।

प्रवंचित–वि० [सं०] जो ठगा गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो ।

प्रवक्ता (क्तृ)–पु० [सं०] अच्छा वक्ता; वेद आदिका अच्छी तरह प्रवचन करनेवाला; सरकार या किसी संस्था आदिकी ओरसे आधिकारिक रूपसे बोलनेवाला प्रतिनिधि (स्पोक्समैन) ।

प्रवचन–पु० [सं०] विशेष रूपसे कहना, अर्थ समझाते हुए कहना; वेद, पुराण आदिका उपदेश करना ।–**पटु**–वि० बोलनेमें कुशल, वाग्मी ।

प्रवण–वि० [सं०] ढालुवाँ; टेढ़ा; किसी वस्तुकी ओर झुका हुआ, प्रवृत्त; नम्र; आसक्त; क्षीण; दीर्घ ।

प्रवणता–वि० [सं०] प्रवृत्ति, झुकाव ।

प्रवत्स्यत्पतिका, प्रवत्स्यत्प्रेयसी–स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका नायक परदेश जानेवाला हो ।

प्रवत्स्यद्भर्तृका–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रवत्स्यत्पतिका' ।

प्रवर–वि० [सं०] प्रधान, श्रेष्ठ; योग्यता, अधिकार आदिमें बड़ा । पु० आह्वान; संतति; गोत्र; किसी गोत्रके प्रवर्तक मुनियोंमेंसे कोई एक; विशेषज्ञ ।–**समिति**–स्त्री०

(सिलेक्ट कमिटी) किसी विषयकी छान-बीन करने और विचार-विमर्शके बाद निश्चित मत प्रकट करनेके लिए बनायी गयी चुने हुए विशेषज्ञ सदस्योंकी समिति।

प्रवर्ग–पु० [सं०] (कैटेगरी) कई भागों, वर्गों या श्रेणियोंमेंसे एक।

प्रवर्तक–पु० [सं०] प्रवृत्त करनेवाला, किसी काममें लगाने वाला; चलानेवाला, आरंभ करनेवाला, जारी करनेवाला; आविष्कार करनेवाला; उसकानेवाला, उभारनेवाला; किसी पात्रका प्रवेश (ना०); मध्यस्थ, पंच।

प्रवर्तन–पु० [सं०] प्रवृत्त करना, किसीको किसी बातमें लगाना; आरंभ करना, चलाना, जारी करना; उसकाना, उभारना; आविष्कार करना (हिं०)।

प्रवर्तित–वि०[सं०] आरब्ध, चालित; स्थापित; उत्तेजित।

प्रवर्द्धन, प्रवर्धन–पु० [सं०] बढ़ती, वृद्धि।

प्रवर्षण–पु० [सं०] वर्षा, बारिश; किष्किंधाके पासका एक पर्वत।

प्रवह–पु० [सं०] बहाव; वायु; सात प्रकारकी वायुओंमेंसे एक जिसके सहारे नक्षत्र परिभ्रमण करते हैं।

प्रवहमान–वि० [सं०] प्रवाहशील, बहनेवाला।

प्रवात–पु० [सं०] स्वच्छ वायु, ताजी हवा; जोरकी हवा, हवादार जगह। वि० जिसमें तेज हवा लगती हो।

प्रवाद–पु० [सं०] बोलना; व्यक्त करना; लोगोंमें प्रचलित बात, जनश्रुति, किंवदंती; बातचीत, वार्तालाप; चुनौती।

प्रवादक–वि० [सं०] वाद्य बजानेवाला (संगीत)।

प्रवादी(दिन्)–पु० [सं०] प्रवाद करनेवाला।

प्रवान*–पु० दे० 'प्रमाण'।

प्रवारण–पु० [सं०] निषेध, मनाही; प्रतिरोध; स्वेच्छासे किया जानेवाला दान, काम्यदान; उत्तम वस्तु(जैसे हाथी, घोड़ा आदि)का दान; महादान; इच्छा पूर्ण करना।

प्रवाल–पु० [सं०] दे० 'प्रबाल'।

प्रवास–पु० [सं०] परदेशमें रहना, विदेशवास; परदेश जाना। **–गत,–स्थ,–स्थित**–वि० परदेश गया हुआ।

प्रवासन–पु० [सं०] बाहर रहना; देशनिष्कासन; वध।

प्रवासी(सिन्)–वि० [सं०] परदेशमें रहनेवाला।

प्रवाह–पु० [सं०] बहनेकी क्रिया या भाव, बहाव; जल आदिकी धारा; किसी वस्तुका अटूट क्रम, बँधा हुआ तार, अखंड परंपरा; घटनाक्रम।

प्रवाहक–वि० [सं०] अच्छी तरह वहन करनेवाला। पु० राक्षस।

प्रवाहिका–स्त्री० [सं०] ग्रहणी रोग; * बहनेवाली धारा, नदी–'मधुर लालसाकी लहरोंसे यह प्रवाहिका स्पंदित होती'–कामायनी।

प्रवाहित–वि० [सं०] बहाया हुआ; ढोया हुआ।

प्रवाहिनी–स्त्री० [सं०] नदी।

प्रवाही(हिन्)–वि० [सं०] बहनेवाला, प्रवाहयुक्त; ले जानेवाला; चलानेवाला।

प्रविधि–स्त्री० [सं०] (टेकनीक) कोई (कलात्मक) कार्य करनेका विशेष ढंग, विशेष विधि या विशेष कौशल।

प्रविध्वस्त–वि० [सं०] फेंका हुआ; क्षुब्ध।

प्रविलंब करना–स० क्रि० (रीप्रीव्ह) सजाकी कारवाई स्थगित कर देना या उसमें विलंब करना।

प्रविष्ट–वि० [सं०] घुसा हुआ, अंदर गया हुआ। **–रोगी**–पु० (इनडोर पेशेंट) वह रोगी जो चिकित्सालयमें ही रखकर चिकित्सा करनेके उद्देश्यसे भरती कर लिया गया हो, अंतर्वासी रोगी।

प्रविष्टि–स्त्री० [सं०] (एंट्री) खाते, पुस्तक आदिमें लिखने, चढ़ाने, दर्ज करनेकी क्रिया; वह चीज जो इस प्रकार लिखी या दर्ज की गयी हो।

प्रविसना*–अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना।

प्रवीण–वि० [सं०] निपुण, कुशल।

प्रवीणता–स्त्री० [सं०] निपुणता, कौशल।

प्रवीन*–वि० दे० 'प्रवीण'। स्त्री० अच्छी वीणा।

प्रवीर–पु० [सं०] अच्छा वीर, सुभट। वि० उत्तम बली।

प्रवृत्त–वि० [सं०] प्रवृत्तियुक्त, लगा हुआ, रत; जिसका आरंभ हुआ हो, आरब्ध; निश्चित; निर्दिष्ट; निर्बाध।

प्रवृत्ति–स्त्री० [सं०] प्रवाह, बहाव; मनका किसी विषयकी ओर झुकाव; वार्ता, वृत्तांत; आरंभ; उत्पत्ति; आचार-व्यवहार; अध्यवसाय; भाग्य; शब्दोंके अर्थका बोध करानेकी एक शक्ति; इंद्रिय आदिका अपने-अपने विषयमें निरत होना, सांसारिक विषयोंके प्रति आसक्ति, निवृत्तिका उलटा। **–मार्ग**–पु० संसारके धंधोंमें संलग्न रहना।

प्रवृद्ध–वि० [सं०] बहुत अधिक बढ़ा हुआ; प्रौढ; घमंडी; उग्र; विशाल।

प्रवेग–पु० [सं०] अधिक वेग; (टेंपो) हिलने, चलने, काम करने आदिकी तीव्र गति; घटनाओं आदिका जल्दी-जल्दी और तेजीसे होना; (वेलॉसिटी) किसी वस्तुके तेजीसे आगे बढ़ने, नीचे गिरने आदिकी रफ्तार।

प्रवेणि, प्रवेणी–स्त्री० [सं०] वेणी, चोटी; जल आदिका प्रवाह; हाथीकी झूल; एक नदी।

प्रवेश–पु० [सं०] भीतर जाना, घुसना; पैठ, पहुँच, रसाई; किसी पात्रका रंगमंचपर आना (ना०); किसी विषय, शास्त्रकी जानकारी, अभिज्ञता; द्वार; किसी कार्यमें संलग्न रहना। **–द्वार**–पु० भीतर जानेका द्वार या रास्ता। **–पत्र**–पु० (टिकट) किसी सिनेमा, नाट्यशाला, संगीत-सम्मेलन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्रदान करनेवाला पत्र। **–रोधन**–पु०(पिकेटिंग) अधिकारियों आदिसे अपनी माँगें पूरी करानेके लिए या लोगोंको कोई अनुचित काम करनेसे रोकनेके लिए कार्यालय, दुकान आदिके सामने अड़कर बैठ जाना जिससे उनके प्रवेशमें बाधा पड़े, धरना। **–शुल्क**–पु० प्रवेश पानेका अधिकार प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला धन।

प्रवेशक–पु० [सं०] प्रवेश करनेवाला; नाटकमें दो अंकोंके बीचका एक प्रकारका अंक जिसमें नीच पात्र न दिखायी हुई तथा भावी घटनाओंकी सूचना देते हैं।

प्रवेशन–पु० [सं०] प्रवेश कराना; प्रवेश; सदर दरवाजा।

प्रवेशना*–अ० क्रि० प्रवेश करना। स० क्रि० प्रवेश कराना।

प्रवेशिका–स्त्री० [सं०] प्रवेश-पत्र या प्रवेश-शुल्क; (प्राइमर) किसी विषयमें प्रवेश करानेवाली प्रारंभिक पुस्तक। **–परीक्षा**–स्त्री० (एंट्रेंस इग्जामिनेशन) उच्च शिक्षाका

प्रारंभ होनेके पहलेकी एक छोटी परीक्षा ।

प्रवेशित–वि० [सं०] घुसाया हुआ; पहुँचाया हुआ ।

प्रवेष्टा(ष्टृ)–वि०, पु० [सं०] प्रवेश करने या करानेवाला ।

प्रव्रजन–पु० [सं०] संन्यास लेना; (माइग्रेशन) किसी एक देश या प्रदेशादिसे अन्य देश या प्रदेशादिमें, वहाँ बस जानेकी गरजसे, चले जाना ।

प्रव्रज्या–स्त्री० [सं०] संन्यास; संन्यासाश्रम । **–ग्रहण**–पु० संन्यास लेना ।

प्रशंस*–स्त्री० प्रशंसा, स्तुति । वि० प्रशंसाके योग्य ।

प्रशंसक–वि०, पु० [सं०] प्रशंसा करनेवाला ।

प्रशंसन–पु० [सं०] प्रशंसा करना, गुणोंका बखान ।

प्रशंसना–स्त्री० [सं०] दे० 'प्रशंसन'। * स० क्रि० प्रशंसा करना, तारीफ करना, सराहना ।

प्रशंसनीय–वि० [सं०] प्रशंसा करने योग्य, स्तुत्य ।

प्रशंसा–स्त्री० [सं०] गुणोंका बखान करना, गुणकीर्तन, तारीफ, बड़ाई; ख्याति । **–घोष**–पु० (एप्लॉज) किसी वक्ताके भाषण करते समय उसके किसी कथन या प्रस्तावादिके अनुमोदनमें श्रोताओं द्वारा की गयी प्रशंसासूचक ध्वनि ।

प्रशंसित–वि० [सं०] जिसकी प्रशंसा की गयी हो ।

प्रशंसोपमा–स्त्री० [सं०] उपमाका एक भेद जिसमें उपमेयकी प्रशंसाके द्वारा उपमानका उत्कर्ष दिखाया जाता है।

प्रशंस्य–वि० [सं०] प्रशंसाके योग्य; अपेक्षाकृत अच्छा ।

प्रशम–पु० [सं०] शांत करना, शमन; निवृत्ति; शांति ।

प्रशमन–पु० [सं०] शांत करना, दबाना, शमन; नीरोग करना; रक्षण; विनाश ।

प्रशस्त–वि० [सं०] जिसकी प्रशंसा की गयी हो; प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य; श्रेष्ठ, उत्तम; शुभ; विस्तृत, लंबा-चौड़ा; साफ-सुथरा (हिं०) ।

प्रशस्ति–स्त्री० [सं०] प्रशंसा, तारीफ, बड़ाई; वर्णन; किसीकी प्रशंसामें लिखी गयी कविता आदि; राजाका वह आज्ञापत्र जो पत्थर आदिपर खोदा जाता था और जिसमें राजवंश तथा उसकी कीर्ति आदिका वर्णन रहता था; वह प्रशंसासूचक वाक्य जो पत्रके आदिमें लिखा जाता है, सरनामा; प्राचीन ग्रंथ या पुस्तकका वह आदि और अंतवाला अंश जिससे उसके रचयिता, काल, विषय आदिका ज्ञान होता है । **–गाथा**–स्त्री० प्रशंसात्मक गीत। **–पट्ट**–पु० आज्ञापत्र, लेखपत्र ।

प्रशस्य–वि० [सं०] प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य, प्रशंसनीय (इसका अतिशयार्थक रूप श्रेष्ठ है) ।

प्रशांत–वि० [सं०] शांत किया हुआ; शांत; सधाया हुआ, वशमें किया हुआ, मृत । पु० एशिया और अमेरिकाके बीचका एक महासागर (पैसिफिक) । **–काम**–वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों, संतुष्ट ।**–चित्त**, **–धी**–वि० जिसका मन शांत हो ।

प्रशांतात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] दे० 'प्रशांतचित्त' ।

प्रशांति–स्त्री० [सं०] शांति; विश्राम; शमन ।

प्रशाखा–स्त्री० [सं०] शाखासे निकली हुई शाखा; टहनी ।

प्रशासक–पु० [सं०] शासन करनेवाला; (एडमिनिस्ट्रेटर) राज्यका प्रशासन या प्रबंध करनेवाला अधिकारी या भूसंपत्तिका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी; आचार्य, उपदेष्टा ।

प्रशासन–पु० [सं०] शिष्य आदिको दी जानेवाली कर्तव्यकी शिक्षा; (ऐडमिनिस्ट्रेशन) राज्यके शासन या परिचालनका प्रबंध । **–पत्र**–पु० (लेटर ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन) न्यायालय द्वारा जारी किया गया वह आदेश-पत्र जिसके अनुसार इच्छा-पत्रहीन संपत्तिका प्रबंध करनेके लिए प्रशासककी नियुक्ति हो । **–भंग**–पु० (ब्रेकडाउन ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन) आंतरिक उपद्रव, आर्थिक संकट आदिके कारण शासन-व्यवस्थाका ठप हो जाना ।

प्रशासनीय कृत्य–पु० [सं०] (ऐडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शंस) राज्यके प्रशासनसे संबंध रखनेवाले काम ।

प्रशिक्षण–पु० (ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय, कला, शिल्पादिकी या कुश्ती, दौड़ आदिकी व्यावहारिक रूपमें लगातार कुछ समयतक दी जानेवाली शिक्षा । **–महाविद्यालय**–पु० (ट्रेनिंग कालेज) वह महाविद्यालय जिसमें अध्यापकों आदिके प्रशिक्षणकी व्यवस्था हो।**–विद्यालय**–पु०(नार्मल स्कूल) अध्यापनकलाकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय ।

प्रशिक्षणार्थी(र्थिन्)–पु०[सं०] (ट्रेनी) वह जो प्रशिक्षण पा रहा हो ।

प्रशिक्षित–वि० (ट्रेंड) जिसने किसी व्यवसाय, कला आदिकी क्रियात्मक शिक्षा पायी हो ।

प्रशुल्क–वि० [सं०] (टैरिफ) आयात-निर्यात-वस्तुओंपर लगनेवाला कर ।**–मंडल**–पु० (टैरिफबोर्ड) किन वस्तुओंके आयात या निर्यातपर कितना कर लगाया जाय, इस संबंधमें समुचित विचार कर सरकारको सलाह देनेवाली विशेषज्ञोंकी समिति ।

प्रशोष–पु० [सं०] सूखना, खुश्क होना ।

प्रश्न–पु० [सं०] सवाल; पूछ-ताछ; पूछी जानेवाली बात; भविष्य-संबंधी जिज्ञासा; विचारणीय विषय, समस्या । **–पत्र**–पु० वह परचा जिसपर उत्तर देनेके लिए प्रश्न अंकित हों । **–वादी(दिन्)**–पु० ज्योतिषी, दैवज्ञ ।

प्रश्नावली–स्त्री० [सं०] (इग्जांपिल्स, एक्सरसाइज) पाठ्य-पुस्तकोंमें छात्रोंके अभ्यासके लिए एकत्र दिये हुए प्रश्न; लोगोंका मत जाननेके लिए अधिकृत रूपसे भेजी गयी प्रश्न-सूची; प्रश्नावली-पत्रक । **–पत्रक**–पु० (क्वेश्चनेयर) किसी व्यवसायादिकी स्थिति या अन्य विषयकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए उससे संबंध रखनेवाले विभिन्न व्यक्तियोंके पास लिखित रूपमें भेजा जानेवाला संबद्ध प्रश्नोंका समूह जिनका उत्तर देनेका उनसे अनुरोध किया जाता है ।

प्रश्नोत्तर–पु० [सं०] सवाल-जवाब; एक अलंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों रहते हैं ।

प्रश्नोत्तरी–स्त्री० [सं०] (कैटेकिज्म) वह पुस्तक जिसमें कोई विषय प्रश्नों तथा उनके उत्तरोंके रूपमें समझाया गया हो ।

प्रश्रय, प्रश्रयण–पु० [सं०] आश्रय, टेक, सहारा ।

प्रश्लिष्ट–वि० [सं०] सुसंबद्ध, युक्तियुक्त; (स्वर-वर्ण) जिनमें संधि हुई हो ।

प्रश्वास–पु० [सं०] साँस बाहर निकालना; बाहर निकली हुई साँस ।

प्रष्टव्य–वि० [सं०] पूछने योग्य, जो पूछा जाय ।

प्रष्टा(ष्टृ)–पु० [सं०] पूछनेवाला, प्रश्नकर्ता ।

प्रसंग–पु० [सं०] प्रकृष्ट संग; संबंध, लगाव; व्याप्तिरूप संबंध; विषयका तारतम्य, प्रकरण; अवैध संबंध; स्त्री-पुरुषका संयोग, समागम; अनुरक्ति, आसक्ति; प्राप्ति; सिलसिला; अवसर, मौका; * बात, विषय।

प्रसंसना*–स० क्रि० प्रशंसा करना।

प्रसक्त–वि० [सं०] जो प्रसंगका विषय हो, प्रसंगप्राप्त; संबद्ध, लगा हुआ; आसक्त, निरत; बराबर बना रहनेवाला, नित्य, स्थायी; प्राप्त; निकट, लगा हुआ; स्फुटित।

प्रसज्य–वि० [सं०] जो संबद्ध किया जाय; जो प्रयोगमें लाया जाय; संभव। **–प्रतिषेध–पु०** वह निषेध जिसमें प्रतिषेधकी प्रधानता रहती है और विधिकी अप्रधानता।

प्रसन्न–वि० [सं०] निर्मल; प्रसादयुक्त; स्वच्छ; शांत; संतुष्ट; हर्षयुक्त, खुश; उचित, युक्त; कृपालु। **–जल,–सलिल–वि०** जिसका पानी साफ हो। **–मुख,–वदन–वि०** जिसके चेहरेसे प्रसन्नता प्रकट होती हो।

प्रसन्नता–स्त्री० [सं०] प्रसन्न होनेका भाव; स्वच्छता।

प्रसन्नित*–वि० प्रसन्न, खुश।

प्रसर–पु० [सं०] आगे बढ़ना, बढ़ाव; फैलाव, विस्तार; वेग; प्रवाह; प्रलय; समूह; बढ़ावा; साहस; युद्ध।

प्रसरण–पु० [सं०] आगे बढ़ना, सरकना; पलायन; फैलना, प्रसार; सेनाका चारों ओर फैलकर शत्रुको घेरना।

प्रसरित–वि० फैला हुआ; आगे बढ़ा हुआ।

प्रसर्पी(र्पिन्)–वि० [सं०] सरकनेवाला, आगे जानेवाला; रेंगनेवाला।

प्रसव–पु० [सं०] बच्चा जनना, गर्भमोचन; उत्पत्ति; उत्पत्ति-स्थान; फल; फूल; अपत्य, संतति। **–गृह–पु०** बच्चा जननेका घर, सौरी। **–वेदना,–व्यथा–स्त्री०** प्रसवकी पीड़ा, बच्चा जनते समय होनेवाली पीड़ा।

प्रसवना*–स० क्रि० जन्म देना। अ० क्रि० उत्पन्न होना।

प्रसवावकाश–पु० [सं०] (मैटरनिटी लीव) किसी स्त्रीको प्रसवकालके समय दी जानेवाली छुट्टी, प्रसूत्यवकाश।

प्रसवित्ता(तृ)–पु० [सं०] उत्पन्न करनेवाला, पिता, जनक।

प्रसवित्री–स्त्री० [सं०] माता।

प्रसविनी–वि० स्त्री० [सं०] जन्म देनेवाली, उत्पन्न करनेवाली।

प्रसवी(विन्)–वि० [सं०] जन्म देनेवाला।

प्रसवोत्तरकाल–पु० [सं०] (पोस्टनेटल पीरियड) शिशुको जन्म दे चुकनेके बादकी जननीकी स्थिति या समय।

प्रसाद–पु० [सं०] निर्मलता, स्वच्छता; अनुग्रह, कृपा; देवताको चढ़ायी गयी वस्तु; हर्ष, प्रसन्नता; मानसिक शांति; स्वभावकी सरलता; महात्मा या गुरुकी जूठन या उनके खा चुकनेपर बची हुई भोज्य वस्तु; काव्यके तीन गुणोंमेंसे एक, किसी काव्य या रचनाका विशेष रूपसे सरल और सुबोध होना; भोजन (भक्त, साधु); * दे० 'प्रासाद'। **–पट्ट–पु०** राजाकी ओरसे सम्मानार्थ दिया जानेवाला शिरोवस्त्र। **–पराङ्मुख–वि०** प्रतिकूल, अप्रसन्न; किसीकी कृपाकी परवा न करनेवाला। **–पर्यंत–अ०** (ड्यूरिंग दि प्लेज़र ऑफ) (राष्ट्रपति आदि) जबतक चाहें तबतक, जबतक इच्छा या खुशी हो तबतक।

प्रसादन–पु० [सं०] निर्मल बनानेवाला; (प्रॉपिशियेशन) प्रसन्न या संतुष्ट कर अपने अनुकूल बनाना।

प्रसादना–स्त्री० [सं०] सेवा, पूजा; स्वच्छ करना। * स० क्रि० प्रसन्न करना।

प्रसादनीय–वि० [सं०] प्रसन्न करने योग्य।

प्रसादित–वि० [सं०] शांत, प्रसन्न किया हुआ; आराधित; स्वच्छ किया हुआ।

प्रसादी–स्त्री० किसी देवताको चढ़ायी हुई वस्तु; महात्मा, गुरु या किसी मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी वस्तु।

प्रसादी(दिन्)–वि० [सं०] निर्मल बनानेवाला; प्रसन्न करनेवाला; प्रसादयुक्त, प्रसन्न।

प्रसाधक–पु० [सं०] शृंगार करनेवाला, भूषक; राजाका वह सेवक जो उसे वस्त्र, भूषण आदि पहनाता है; सिद्ध या निष्पन्न करनेवाला, साधनकर्ता, निष्पादक।

प्रसाधन–पु० [सं०] (टाइलेट) बालोंको सजाने, साबुन लगाने, ओठ या गोड़ रँगने आदिकी क्रिया, शृंगार, बनाव; शृंगारकी सामग्री, भूषण, कंघी आदि जिससे शृंगार किया जाता है; निष्पादन, सिद्धि। **–द्रव्य–पु०,–सामग्री–स्त्री०** (टाइलेट) शृंगार या प्रसाधनमें काम आनेवाली वस्तुएँ।

प्रसाधनी–स्त्री० [सं०] कंघी।

प्रसाधिका–स्त्री० [सं०] शृंगार करनेवाली, प्रसाधनकर्त्री; तिन्नी धान।

प्रसाधित–वि० [सं०] जिसका प्रसाधन या बनाव-शृंगार किया गया हो, अलंकृत; निष्पादित, संपादित; प्रमाणित।

प्रसार–पु० [सं०] फैलानेकी क्रिया, फैलाव, पसार; फैलने या व्याप्त होनेकी क्रिया, संचार; इधर-उधर जाना, फिरना।

प्रसारक–वि० [सं०] फैलानेवाला।

प्रसारण–पु० [सं०] फैलानेकी क्रिया, फैलाना, पसारना; आगे करना; बढ़ाना; फैलकर शत्रुको घेर लेना; (विक्रयके लिए) खोलकर दिखलाना; (ब्रॉडकास्टिंग) कोई समाचार, भाषण, गायन आदि दूर-दूरके लोगोंको सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाना।

प्रसारना*–स० क्रि० पसारना, फैलाना।

प्रसारिणी–वि०, स्त्री० [सं०] फैलनेवाली।

प्रसारित–वि० [सं०] फैलाया हुआ; (विक्रयके लिए) प्रदर्शित; (ब्राडकास्ट) दूर-दूरके लोगोंको सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाया हुआ।

प्रसाविका–स्त्री० [सं०] (मिडवाइफ) प्रसव कराने, बच्चा जनानेवाली स्त्री।

प्रसिद्ध–वि० [सं०] जिसकी प्रसिद्धि हो, ख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धि–स्त्री० [सं०] ख्याति, शोहरत; सफलता, सिद्धि।

प्रसुप्ति–स्त्री० [सं०] गहरी नींद; संज्ञाहीनता; निश्चेष्टता।

प्रसू–स्त्री० [सं०] उत्पन्न करनेवाली (वीर-प्रसू); लता; अँखुआ; कोमल तृण।

प्रसूत–वि० [सं०] प्रसव किया हुआ, उत्पन्न, संजात।

प्रसूता–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे कुछ ही काल पूर्व बच्चा पैदा हुआ हो, जच्चा।

प्रसूति–स्त्री० [सं०] प्रसव; उत्पत्ति; संतान। **–कल्याण-कार्य–पु०** (मैटरनिटी वेलफेयर वर्क) शिशु-जननकी

सुविधा तथा जच्चा-बच्चाकी भलाई संबंधी कार्य, मातृ-कल्याणकार्य। **-गृह,-भवन**-पु० बच्चा जननेका घर, सौरी। **-ज्वर**-पु० प्रसवके कुछ काल बाद होनेवाला ज्वर।

प्रसूतिका-स्त्री० [सं०] प्रसूता, जच्चा।

प्रसूत्यवकाश-पु० [सं०] (मैटरनिटी लीव) दे० 'प्रसवावकाश'।

प्रसून-वि० [सं०] उत्पन्न, संजात। पु० फूल; फल। **-बाण,-शर**-पु० कामदेव।

प्रसृति-स्त्री० [सं०] आगे बढ़ना; फैलाव; अर्द्धांजलि, पसर; दो पलका एक मान।

प्रसृष्ट-वि० [सं०] त्यागा हुआ, परित्यक्त।

प्रसृष्टा-स्त्री० [सं०] फैलायी हुई उँगली; युद्धका एक दाँव।

प्रसेक-पु० [सं०] सींचना, आसिंचन; चूना, क्षरण; मुँहसे पानी छूटना या नाकसे पानी गिरना; वमन।

प्रसेद*-पु० प्रस्वेद, पसीना।

प्रस्तर-पु० [सं०] पत्थर; पत्तों आदिका बिछावन; बिस्तरा, बिछावन; चौरस मैदान; ग्रंथका अध्याय; अनुच्छेद। **-भेद**-पु० पखानभेद, हड़जोड़ नामक वृक्ष। **-मुद्रण**-पु० (लिथोग्राफ) विशेष प्रकारके पत्थरपर लिखकर या खोदकर छापनेका कार्य। **-युग**-पु० वह ऐतिहासिक काल जब लोग पत्थरके हथियारोंसे काम लेते थे, पाषाण-युग (स्टोन एज)।

प्रस्तार-पु० [सं०] फैलाना; ढकना; घासका जंगल; पत्तों आदिका बिछावन; बिछावन, बिस्तरा; चौरस मैदान; (परम्यूटेशन) वस्तुओं, अक्षरों, अंकों आदिको भिन्न-भिन्न प्रकारसे पंक्तियों या कतारोंमें रखना; छंदोंके भेद जाननेकी एक विधि।

प्रस्ताव-पु० [सं०] प्रकृष्ट स्तुति; अवसर, मौका; प्रसंग, प्रकरण; आरंभ; नाटककी प्रस्तावना; सभाके सामने विचारके लिए रखी हुई बात (आधु०)। **-विवाद-नियंत्रण**-पु० (गिलोटिन ए मोशन) किसी विधेयक आदिके संबंधमें विरोधियों द्वारा अनावश्यक बाधा डाली जानेपर अध्यक्षका समय निर्धारित कर उसे इस प्रकार नियंत्रित करना जिसमें समय बीतनेके पहले ही उसके स्वीकृत या अस्वीकृत होनेका निश्चय हो जाय।

प्रस्तावक-पु० [सं०] प्रस्ताव करनेवाला।

प्रस्तावना-स्त्री० [सं०] आरंभ; (प्रीएंबिल) किसी विधान, प्रलेख आदिका प्रारंभिक भाग; किसी भाषण, लेख आदिके आरंभका अंश, प्राक्कथन; नाटकके आरंभमें सूत्रधारका नटी, विदूषक या पारिपार्श्विकके साथ होनेवाला संलाप जिसमें प्रस्तुतका परिचय आदि रहता है।

प्रस्तावित-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ, आरब्ध; वर्णित, कथित; जिसका प्रस्ताव किया गया हो, जो प्रस्ताव रूपमें रखा गया हो (आधु०)।

प्रस्तुत-वि० [सं०] जिसकी चर्चा चल रही हो, प्रकरण-प्राप्त, प्रासंगिक; उपस्थित; प्रयत्नसे किया हुआ; घटित; उद्यत, तैयार; आरब्ध। पु० छिड़ा हुआ विषय, प्रकरण-प्राप्त विषय; उपमेय; एक काव्यालंकार।

प्रस्तुतांकुर-पु० [सं०] एक काव्यालंकार जहाँ प्रस्तुतके कथनमें दूसरे वांछित प्रस्तुतका द्योतन किया जाय।

प्रस्तुतांगगृह-निर्माणशाला-स्त्री० [सं०] (प्रीफैब्रिकेटेड हाउस फैक्टरी) वह कारखाना जहाँ मकानके अलग-अलग हिस्से पहलेसे तैयार किये जायँ ताकि बादमें उन्हें किसी भी स्थानपर एकत्र कर पूरी इमारत आसानीसे खड़ी की जा सके।

प्रस्थान-पु० [सं०] गमन, रवानगी; जिगीषुकी युद्ध-यात्रा, कूच; प्रेषण; मार्ग; एक प्रकारका नाटक (सा०); विधि, पद्धति; मृत्यु, मरण; उपदेशका साधन (जैसे-उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र); वस्त्र आदि जो यात्राके पहले गंतव्य स्थानकी दिशामें कहीं रख दिया जाता है (हिं०)। **-त्रयी**-स्त्री० उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र।

प्रस्थानी*-वि० जानेवाला, प्रस्थान करनेवाला।

प्रस्थापक-पु०[सं०] (प्रपोजर) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखने या सामने लानेवाला।

प्रस्थापन-पु० [सं०] प्रकृष्ट स्थापन; प्रस्थान करना; भेजना; दौत्यमें लगाना; प्रमाणित करना; प्रयोगमें लाना।

प्रस्थापना-स्त्री० [सं० (प्रपोजल) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव लाना; वह प्रस्ताव जो प्रस्थापक द्वारा सभा आदिमें रखा जाय।

प्रस्थापित-वि० [सं०] विशेष रूपसे स्थापित; भेजा हुआ, प्रेषित; आगे बढ़ाया हुआ। **-करना**-स०क्रि० (टु प्रपोज) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखना।

प्रस्थित-वि० [सं०] जिसने प्रस्थान किया हो; विशेष रूपसे स्थित, दृढ़।

प्रस्नुत-वि० [सं०] टपकाने, बहानेवाला। **-स्तनी**-स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तनोंसे वात्सल्य प्रेमके कारण दूध टपक रहा हो।

प्रस्फुटित-वि० [सं०] फूटा या खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुरण-पु० [सं०] निकलना; चमकना; स्पष्ट होना; कंपन।

प्रस्फुरित-वि० [सं०] काँपता हुआ, हिलता हुआ।

प्रस्फोट-पु० [सं०] (बम) विस्फोटक पदार्थोंसे भरा हुआ लोहेका गोला जो हवाई जहाजसे गिराया जाता और हाथसे तथा तोपमें भरकर भी फेंका जाता है।

प्रस्फोटन-पु०[सं०] विशेष रूपसे फूटना या विदीर्ण होना; फूट निकलना; विकसित होना या करना; ताड़न; सूप; (अन्न आदि) फटकना।

प्रस्रवण-पु० [सं०] जल आदिका लगातार चूना या बहना; पसीना; स्तनसे निकलता हुआ दूध; पेशाब करना; वह स्थान जहाँसे पानी गिरता या बहता है; झरना।

प्रस्राव-पु० [सं०] चूनेकी क्रिया, क्षरण, बहाव; मूत्र; उबलते हुए चावलका ऊपरसे बहता हुआ माँड़।

प्रस्रुत-वि० [सं०] क्षरित; झड़ा हुआ।

प्रस्वापन-पु० [सं०] सुलाना; एक अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर, कहा जाता है, विपक्षीको नींद आ जाती है।

प्रस्वीकृत-वि०[सं०] (रिकॉगनाइज्ड) जिसे अधिकृत रूपसे मान लिया हो; जिसे औपचारिक रूपसे मान्यता (संबद्ध होने आदिकी स्वीकृति) दे दी गयी हो।

प्रस्वीकृति-स्त्री० [सं०] (रिकॉगनिशन) प्रधान या केंद्रीय संस्था द्वारा अन्य छोटी संस्था या संस्थाओंका अस्तित्व,

प्रामाणिकता आदि मान लिया जाना, मान्यता; किसी वस्तुकी यथार्थता, विशेषता, दावे आदि मान लेना।

प्रस्वेद–पु० [सं०] पसीना।

प्रस्वेदन–पु०[सं०] (फोमेंटेशन) पसीना लाने, गरम जलसे सेंकने आदिकी क्रिया, सेंक, वाष्प-तापन।

प्रस्वेदित–वि० [सं०] जिसे पसीना आ गया हो।

प्रहर–पु० [सं०] एक दिनका आठवाँ भाग, याम, पहर।

प्रहरखना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना।

प्रहरण–पु० [सं०] छीनना; हटाना; आघात; आक्रमण; युद्ध; दम, दमन; अस्त्र; (अग्निमें तृणादि) फेंकना।

प्रहरी(रिन्)–पु० [सं०] पहरेदार, घड़ियाली।

प्रहर्ष–पु० [सं०] अत्यधिक प्रसन्नता।

प्रहर्षण–पु० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता; हर्षजन्य रोमांच;अभीष्टकी प्राप्ति; बुध ग्रह; एक काव्यालंकार जहाँ विना परिश्रमके ही कार्य सिद्ध होने या अभीष्टसे भी अधिक सफलता मिलनेका वर्णन किया जाय अथवा जहाँ यह दिखलाया जाय कि जिस बातके लिए यत्न आरंभ किया गया था, वह बीचमें ही प्राप्त हो गयी। वि० पुलकित करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।

प्रहसन–पु० [सं०] जोरकी हँसी; परिहास, दिल्लगी; भाणकी तरहका हास्यरस प्रधान रूपक (सा०)।

प्रहसित–पु० [सं०] एक बुद्ध; जोरसे हँसना। वि० हँसता हुआ, प्रसन्न।

प्रहाण–पु० [सं०] परित्याग; ध्यान; चेष्टा, उद्योग।

प्रहाणि–स्त्री० [सं०] परित्याग; कमी, अभाव; हानि।

प्रहान*–पु० दे० 'प्रहाण'।

प्रहानि*–स्त्री० दे० 'प्रहाणि'।

प्रहार–पु० [सं०] आघात, वार; मारण; कंठहार।

प्रहारक–वि० [सं०] प्रहार करनेवाला।

प्रहारना*–स० क्रि० प्रहार करना, वार करना, मारना; (अस्त्र) फेंकना या चलाना।

प्रहारित*–वि० जिसपर प्रहार किया गया हो।

प्रहारी(रिन्)–वि० [सं०] प्रहार करनेवाला; आक्रमण करनेवाला; नष्ट करनेवाला।

प्रहास–पु०[सं०] अट्टहास, ठहाका; तिरस्कार; व्यंग्योक्ति।

प्रहासक–पु० [सं०] हँसानेवाला, मसखरा।

प्रहासी(सिन्)–पु० [सं०] ठहाका लगानेवाला, जोरसे हँसनेवाला; भाँड़; विदूषक; चमकनेवाला।

प्रहृष्ट–वि० [सं०] अति प्रसन्न, प्रमुदित; खड़ा (रोम)। **–चित्त, –मना(नस्)**–वि० बहुत प्रसन्न। **–मुख, –वदन**–वि० जिसका चेहरा प्रसन्न हो। **–रोमा(मन्)**–वि० जिसके बाल खड़े हों।

प्रहेलि, प्रहेलिका–स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रह्ला(ह्ला)द, प्रह्लाद–पु०[सं०] अतिशय आनंद, अत्यधिक प्रसन्नता; विष्णुका एक प्रसिद्ध भक्त जो हिरण्यकशिपुका पुत्र था।

प्रांगण–पु० [सं०] आंगन; छोटा ढोल, पणव।

प्रांजल–वि०[सं०] सरल, सुबोध; खरा, ईमानदार; स्वच्छ; समतल, बराबर।

प्रांजलता–स्त्री० [सं०] अर्थकी सरलता।

प्रांजलि–वि० [सं०] जो हाथ जोड़े हो, बद्धांजलि।

प्रांत–पु० [सं०] अंत, शेष भाग; सिरा, छोर; किनारा; कोण; सीमा, हद; पृष्ठ-भाग; किसी देशका कोई बड़ा भाग, प्रदेश (जैसे–उत्तरप्रदेश, आधु०)। **–पति**–पु० प्रांतका सर्वोच्च अधिकारी, गवर्नर (राज्यपाल)।

प्रांतर–पु० [सं०] लंबा रास्ता; छाया आदिसे रहित मार्ग; वन; पेड़का खोखला भाग, कोटर।

प्रांतिक–वि० [सं०] दे० 'प्रांतीय'।

प्रांतीय–वि० [सं०] प्रांत-संबंधी; प्रांतका। **–सरकार**–स्त्री० [हिं०] प्रांतका शासन चलानेवाली सरकार। **–स्वराज्य**–पु० (प्राविंशल ऑटोनॉमी) प्रांतों या किसी संघराज्यमें सम्मिलित राज्योंको प्राप्त स्वराज्य जिसके अनुसार उन्हें आंतरिक विषयों-संबंधी निर्णय करने या नीति निर्धारित करनेकी स्वतंत्रता होती है।

प्रांतीयता–स्त्री०[सं०]अपने प्रांतके प्रति मोह या पक्षपात।

प्रांशु–वि० [सं०] ऊँचा; लंबा। पु० लंबा आदमी। **–प्राकार**–वि० जिसका परकोटा बहुत ऊँचा हो। **–लभ्य**–वि० लंबे मनुष्यको प्राप्य।

प्राइवेट–वि० [अं०] व्यक्तिविशेषसे संबद्ध; व्यक्तिविशेषका निजी; जो औरोंसे छिपाया जाय, गुप्त, आपसी; गैर-सरकारी (जैसे–प्राइवेट सर्विस)। **–सेक्रेटरी**–पु० किसी बड़े आदमीका वह निजी सहायक जो पत्र-व्यवहार तथा अन्य व्यक्तिगत कार्योंमें उसकी सहायता करता है, खास-नवीस।

प्राकट्य–पु० [सं०] प्रकट होनेका भाव, प्रकटता।

प्राकाम्य–पु० [सं०] आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिसके प्राप्त हो जानेपर मनुष्य जो चाहता है वह हो जाता है।

प्राकार–पु० [सं०] नगर या किलेके चारों ओर रक्षाके लिए बनायी जानेवाली दीवार, परकोटा; ईंट, लकड़ी आदिका बनाया हुआ घेरा।

प्राकारीय–वि० [सं०] प्राकारके योग्य; परकोटेसे घिरा हुआ।

प्राकाश्य–पु० [सं०] प्रकाशका भाव, प्रकटता; प्रसिद्धि।

प्राकृत–वि० [सं०] प्रकृति-संबंधी; प्रकृतिका; असंस्कृत, उजड्ड; नीच; स्वभाव-सिद्ध, स्वाभाविक; साधारण, सामान्य। स्त्री० प्रांतकी बोली; एक प्राचीन भाषा जिसका प्रयोग संस्कृतके नाटकों आदिमें तथा अन्य ग्रंथोंमें मिलता है। **–मित्र**–पु० प्राकृत शत्रुके देशके ठीक बादवाले देशका राजा। **–शत्रु**–पु० वह राजा जिसका देश किसी अन्य राजाके देशसे लगा हुआ हो।

प्राकृतिक–वि० [सं०] प्रकृतिसे उत्पन्न; प्रकृति-संबंधी; प्रकृतिका, कुदरती; लौकिक; असार। **–चिकित्सा**–स्त्री० मुख्य रूपसे प्राकृतिक उपायोंपर आधारित चिकित्सा-पद्धति। **–भूगोल**–पु० भूगोल-विद्याका वह भाग जिसमें समुद्र, पर्वत, नदी आदिकी प्राकृतिक विशेषताओंका अध्ययन किया जाता है।

प्राक्(च्)–वि० [सं०] सामनेका, अगला; पूरबका, पूरबी; पहलेका। अ० पहले; आगे। **–कथन**–पु० भूमिका, प्रस्तावना। **–कलन**–पु० (एस्टिमेट) संभावित व्यय या लागतका पहलेसे अनुमान लगाना या लगाया

गया अनुमान। **-काल**-पु० पहलेका समय, बीता हुआ समय; प्राचीन काल। **-कालिक,-कालीन**-वि० पहलेका, पुराना, प्राचीन।

प्राक्तन-वि० [सं०] पहलेका, प्राचीन; पूर्व जन्मका।

प्राखर्य-पु० [सं०] प्रचंडता, प्रखरता, तीक्ष्णता।

प्रागनुराग-पु० [सं०] पूर्वानुराग।

प्रागल्भ्य-पु० [सं०] प्रगल्भ होनेका भाव, प्रगल्भता; साहस; घमंड; दक्षता; विकास; वाग्मिता; ठाट-बाट; दृढ़ता; प्रबलता; स्त्रीका भयसे रहित होना (सात्त्विक भाव)।

प्रागुक्ति-स्त्री० [सं०] पूर्वकथन।

प्रागैतिहासिक-वि० [सं०] इतिहासमें वर्णित कालके पूर्वका।

प्राग्ज्योतिप-पु० [सं०] कामरूप देश। **-पुर**-पु० प्राग्ज्योतिप देशकी राजधानी जिसका आधुनिक नाम गोहाटी है।

प्राग्देश-पु० [सं०] पूरबी देश।

प्राग्द्वार-पु० [सं०] पूरबका द्वार।

प्राग्विभाजन-भुगतान-पु० (प्री-पार्टीशन पेमेंट्स) भारतका विभाजन होनेके पहले किया गया ऋण आदिका भुगतान।

प्राची-स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा, पूरब। **-पति**-पु० इंद्र।

प्राचीन-वि० [सं०] पूरबका, पूरबी; पहलेका, पुराना।

प्राचीनता-स्त्री० [सं०] प्राचीन होनेका भाव, पुरानापन।

प्राचीर-पु० [सं०] नगर, किले आदिके चारों ओर रक्षाके लिए बनायी गयी दीवार, परकोटा, चहारदीवारी।

प्राचुर्य-पु० [सं०] प्रचुर होनेका भाव, आधिक्य, बहुतायत।

प्राचेतस-पु० [सं०] वाल्मीकि मुनि; प्रचेताका पुत्र; मनु।

प्राच्छित*-पु० दे० 'प्रायश्चित्त'।

प्राच्य-वि० [सं०] पूरबका, पूरबी; पहलेका, पुराना; सामनेका, अगला। **-भापा**-स्त्री० पूरबी भापा।

प्राजापत्य-वि०[सं०] प्रजापतिसे उत्पन्न; प्रजापति संबंधी। पु० आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्याका पिता वर और कन्यासे गार्हस्थ्य धर्मका पालन करनेकी प्रतिज्ञा करानेके अनंतर दोनोंकी पूजा करके कन्यादान करता है।

प्राज्ञ-वि० [सं०] बुद्धिमान्; चतुर, दक्ष। पु० चतुर मनुष्य; एक तरहका तोता; कल्किदेवके बड़े भाई (पु०); जीवात्मा (वे०)। **-मन्य,-मानी(निन्)**-वि० अपनेको बहुत बुद्धिमान् माननेवाला ('प्राज्ञम्मन्य'भी)।

प्राज्ञा-स्त्री० [सं०] बुद्धि; बुद्धिमती स्त्री।

प्राज्ञी-स्त्री० [सं०] विदुपी; विद्वान्की स्त्री; सूर्यकी एक पत्नी।

प्राज्य-वि० [सं०] जिसमें खूब घी पड़ा हो; प्रचुर, प्रभूत; विशाल; ऊँचा; दीर्घ।

प्राड्विवाक, प्राड्विवेक-पु० [सं०] न्याय करनेके लिए राजाकी ओरसे नियुक्त विचारक, न्यायाधीश।

प्राण-पु० [सं०] वायु; शरीरके भीतरकी जीवनाधाररूपी वायु (इसके पाँच भेद माने गये हैं-प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान); श्वास, साँस; बल; जीव; जीवन, जान; घ्राण; घ्राणेंद्रिय; पाचन; कालका मानरूप श्वास; मूलाधारमें रहनेवाली वायु; वह जो प्राणोंके समान प्रिय हो; वैवस्वत मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक; काव्यका आत्मारूप रस; एक गंधद्रव्य, गंधरस। **-अधार***-पु० वह जिसपर जीवन अवलंबित हो, जीवनका सहारा; पति, खाविंद; प्रेमी, प्रियतम। **-कष्ट**-पु० मरनेके समय होनेवाला कष्ट। **-कृच्छ्र**-पु० प्राणका संकट, जान-जोखिम। **-घात**-पु० मार डालना, मारण। **-घातक**-पु० मार डालनेवाला, प्राण हर लेनेवाला। **-घ्न**-वि० जो प्राण हर ले, घातक। **-च्छेद**-पु० बध, हत्या। **-जीवन**-पु० विष्णु जो प्राणोंका स्थापन और पोपण करते हैं; प्राणाधार। **-त्याग**-पु० मृत्यु; आत्महत्या। **-दंड**-पु० मौतकी सजा। **-द**-वि० जान डालनेवाला। **-दयित**-पु० पति। वि० प्राणप्यारा। **-दा**-स्त्री० हड़, हरीतकी; एक प्रकारकी गुटिका (आ०वे०)। **-दाता(तृ)**-पु० किसीकी जान बचानेवाला। **-दान**-पु० प्राण देना; किसीकी प्राण-रक्षा करना। **-धन**-पु० वह जो प्राणके समान प्यारा हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति। **-धार**-वि० जिसमें प्राण हों, जीवित। पु० प्राणी। **-धारण**-जीवन पु० धारण करनेकी क्रिया, जीवन-शक्ति; जीवनका सहारा। **-धारी(रिन्)**-पु० प्राणी, जीव। **-नाथ**-पु० पति, स्वामी; प्रेमपात्र, प्रियतम; यम; एक महात्मा जिन्होंने 'परिणामी' संप्रदाय चलाया। **-नाथी**-पु० [हिं०] महात्मा प्राणनाथके संप्रदायका अनुयायी; प्राणनाथका चलाया हुआ संप्रदाय। **-नाश**-पु० मृत्यु; वध। **-नाशक**-वि० जान लेनेवाला; प्राणहारक। **-निग्रह**-पु० प्राणायाम। **-पण**-पु० जानकी बाजी। **-पति**-पु० पति; प्रेमपात्र, प्रियतम; वैद्य; आत्मा। **-प्यारा**-पु० [हिं०] वह जो प्राणोंके समान प्रिय हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति; पति; प्रियतम। **-प्रतिष्ठा**-स्त्री० देवप्रतिमाका एक प्रकारका संस्कार जिसमें मंत्रों द्वारा देवताका प्रतिमामें आवाहन करते हैं, मंत्रों द्वारा किसी देवताका उसकी प्रतिमामें निवास कराना। **-प्रद**-वि० प्राण देनेवाला, प्राणदायक; प्राणोंकी रक्षा करनेवाला; बलकारक। **-प्रिय**-पु० प्रियतम, पति। वि० जो प्राणोंके समान प्रिय हो। **-बाधा**-स्त्री० [हिं०] दे० 'प्राणकृच्छ्र'। **-भक्ष**-वि० जो केवल हवा पीकर रहता हो। **-भय**-पु० जान जानेका खतरा। **-भृत्**-वि० प्राणवान्, जीवित। पु० प्राणी; विष्णु। **-यम**-पु० प्राणायाम। **-यात्रा**-स्त्री० प्राणकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया; भोजन आदि जिनसे उक्त क्रियाका निर्वाह होता है; जीवन-निर्वाह। **-रंध्र**-पु० मुँह; नाक। **-रोध**-पु० प्राणायाम; जानका खतरा; एक नरक। **-वल्लभ**-वि० 'प्राणप्रिय'। [स्त्री०-'वल्लभा'।] **-वायु**-स्त्री० प्राणरूपी वायु, प्राण। **-विनाश,-विप्लव**-पु० मृत्यु, मौत। **-वियोग**-पु० मृत्यु। **-वृत्ति**-स्त्री० प्राणका श्वास-प्रश्वास आदि व्यापार। **-व्यय**-पु० प्राणत्याग, जीवनोत्सर्ग। **-शरीर**-पु० परमेश्वर (जिसका प्राणात्मक रूपमें ध्यान किया जाता है)। **-शोषण**-पु० बाण। **-संकट,-संदेह,-संशय**-पु० ऐसा संकट जो जानपर आ जाय, जान जानेका भय, जानजोखों। **-सद्म(न्)**-पु० शरीर। **-सम**-पु० पति; प्रियतम।

वि० प्राणप्रिय । **–समा**–स्त्री० पत्नी । **–हर,–हारी(रिन्)** –वि० प्राण हरनेवाला, जान लेनेवाला; बलनाशक । **–हारक**–वि० जान लेनेवाला, घातक । पु० वत्सनाभ नामक विष । **–हानि**–स्त्री० प्राणनाश । **–हीन**–वि० निर्जीव । **मु०–आना**–भय कम होना । **–उड़ जाना या सूख जाना**–बदहवास हो जाना; बहुत अधिक घबरा जाना; बहुत डर जाना । **–गलेतक आना**–मरणासन्न होना । **–छोड़ना,–त्यागना**–मरना । **–जाना,–छूटना या निकलना**–मरना, देहावसान होना । **–डालना**–जीवनका संचार करना, सजीव बनाना । **–देना**–मरना; अधिक कष्ट पाना; किसीको बहुत चाहना । **–पयान होना*** –मरना । **–बचाना**–जान बचाना, पिंड छुड़ाना । **–मुँहको आना**–बहुत अधिक दुःख होना, दुःखसे व्याकुल होना । **–मुट्ठीमें या हथेलीपर लिये रहना**–मरनेको तैयार रहना । **–रखना**–जिलाना । **–लेना**–मार डालना । **–से हाथ धोना**–मर जाना । **–हरना**–मार डालना; बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना । **–हारना***–मर जाना; हतोत्साह होना । **(प्राणों)पर आ पड़ना**–प्राण संकटमें पड़ना, जानजोखों होना । **–पर खेलना**–जानकी बाजी लगा देना, जान जोखोंमें डालना । **–पर बीतना**–प्राण संकटमें पड़ना ।

प्राणमय–वि० [सं०] जिसमें प्राण हों, प्राणयुक्त । **–कोश** –पु० वेदांतके अनुसार शरीरके पाँच कोशोंमेंसे दूसरा; पाँच कर्मेंद्रियोंके सहित प्राण, अपान आदि पाँच प्राण ।

प्राणवत्ता–स्त्री० [सं०] प्राणवान् या जीवित होनेका भाव।

प्राणांत–वि० [सं०] मृत्यु, मौत ।

प्राणांतक–पु० [सं०] प्राण लेनेवाला ।

प्राणाचार्य–पु० [सं०] राज्यवैद्य ।

प्राणाधार–पु० [सं०] जीवनका अवलंब या सहारा; पति; प्रियतम ।

प्राणाधिनाथ–पु० [सं०] पति ।

प्राणायाम–पु० [सं०] श्वास-प्रश्वासकी गतिका विच्छेद, श्वास-प्रश्वासकी वायुओंका नियमन ।

प्राणायामी(मिन्)–वि० [सं०] प्राणायाम करनेवाला ।

प्राणावरोध–पु० [सं०] श्वासका अवरोध ।

प्राणाहुति–स्त्री० [सं०] भोजनके आरंभमें पाँच ग्रास 'प्राणाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा' आदि मंत्र पढ़कर पाँचों प्राणोंके निमित्त खाना ।

प्राणित–वि० [सं०] जिसमें जीवनका संचार किया गया हो।

प्राणी(णिन्)–वि० [सं०] जिसमें प्राण हों, प्राणवान् । पु० जीव-जंतु, मनुष्य; व्यक्ति (हिं०) । **–घाती(तिन्)**–वि० जीवोंकी हत्या करनेवाला । **–वध**–पु० जीवहत्या । **–हिंसा**–स्त्री० जीवोंको कष्ट देना या मारना ।

प्राणेश, प्राणेश्वर–पु० [सं०] पति, स्वामी; प्रियतम ।

प्राणेशा, प्राणेश्वरी–स्त्री० [सं०] पत्नी; प्रियतमा ।

प्राणोत्क्रमण, प्राणोत्सर्ग–पु० [सं०] मृत्यु ।

प्रातः(तर्)–पु० [सं०] सवेरा, तड़का । अ० सवेरे, तड़के । **–कर्म(न्),–कार्य,–कृत्य**–पु० प्रातःकाल किया जानेवाला कर्म (ईशप्रार्थना आदि) । **–काल,–क्षण,–समय**–पु० सवेरेका समय, प्रभात; रातके अंत और सूर्योदयके पहलेका तीन मुहूर्तका समय । अ० सवेरे, तड़के । **–कालिक,–कालीन**–वि० प्रातःकालका, प्रातःकाल-संबंधी । **–संध्या**–स्त्री० प्रातःकालकी संध्या, रातका अंतिम एक दंड और दिनका पहला एक दंड; प्रातःकाल किया जानेवाला संध्याकर्म । **–स्नान**–पु० सवेरेका स्नान । **–स्नायी(यिन्)**–वि० सवेरे स्नान करनेवाला । **–स्मरण**–पु० प्रातःकाल देवताका स्मरण । **–स्मरणीय**–वि० जो प्रातःकाल स्मरण करने योग्य हो, पुण्यचरित ।

प्रात*–पु० सवेरा, प्रातःकाल । *अ० सवेरे, तड़के । **–नाथ***–पु० सूर्य ।

प्रातर्–अ० [सं०] सवेरे, तड़के । **–अशन**–पु० कलेवा । **–अह्न**–पु० सवेरेसे दोपहरतकका समय, पूर्वाह्न । **–आशी(शिन्)**–वि० सुबह कलेवा करनेवाला । **–आहुति**–स्त्री० प्रातःकाल दी जानेवाली आहुति; अग्निहोत्रका द्वितीयांश । **–गेय**–पु० स्तुतिपाठक, बंदी । वि० जो सवेरे गाया जाय । **–भोजन**–पु० सवेरेका हलका भोजन, कलेवा ।

प्रातिकूल्य–पु० [सं०] प्रतिकूल होनेका भाव, प्रतिकूलता ।

प्रातिनिधिक–पु० [सं०] प्रतिनिधि । वि० प्रतिनिधिमूलक ।

प्रातिपक्ष्य–पु० [सं०] विरोध, प्रतिकूलता; शत्रुता ।

प्रातिपथिक–वि० [सं०] यात्रा करनेवाला; रास्तेसे जानेवाला । पु० यात्री ।

प्रातिपद–वि० [सं०] जो प्रतिपदाको उत्पन्न हुआ हो; प्रतिपदा-संबंधी; प्रतिपदाका; आरंभका ।

प्रातिपदिक–पु० [सं०] अग्नि; धातु, प्रत्यय और प्रत्ययांतसे भिन्न अर्थवान् शब्द, वह अर्थवान् शब्द जो धातु और प्रत्ययसे भिन्न हो और जिसमें प्रत्यय न लगा हो, जैसे 'राम' (सं० व्या०) ।

प्रातिभ–वि० [सं०] प्रतिभा-संबंधी; प्रतिभाका; प्रतिभायुक्त ।

प्रातिभाव्य–पु० [सं०] प्रतिभूका भाव, प्रतिभूत्व, जामिनदारी; वह धन जो प्रतिभू या जामिनको देना पड़े । **–ऋण**–पु० किसीकी जमानतपर लिया गया ऋण ।

प्रातिभासिक–वि० [सं०] जो वास्तव न हो, पर भ्रमवश विशेष प्रकारका भासित होता हो, अवास्तव (जैसे–मोतीमें चाँदीका भान) ।

प्रातिरूपिक–वि० [सं०] उसी रूपका नकली ।

प्रातिलोमिक–वि० [सं०] विरुद्ध, विपरीत, अप्रिय ।

प्रातिलोम्य–पु० [सं०] क्रमविरुद्धता; विरुद्धता; वैपरीत्य ।

प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्मक, प्रातिवेश्यक–पु० [सं०] पड़ोसी ।

प्रातिवेश्य–पु० [सं०] पड़ोस; पड़ोसी, वह जिसका घर अपने घरके सामने या बाद हो ।

प्रातिहारिक–पु० [सं०] बाजीगर; द्वारपाल ।

प्रात्यहिक–वि० [सं०] प्रति दिनका, दैनिक ।

प्राथमिक–वि० [सं०] पहला, आदिम; पहलेका; प्रारंभिक, पहली बार घटित होनेवाला ।

प्राथमिकता–स्त्री० [सं०] (प्रायारिटी) प्राथमिक होनेका भाव; किसीको औरोंसे पहले स्थान या अवसर मिलना । **–सूची**–स्त्री० (प्रायॉरिटी लिस्ट) विषयों आदिकी सूची

जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तथा आवश्यक प्रश्नोंको प्रथम स्थान, प्राथमिकता, देनेका विशेष ध्यान रखा गया हो।

प्रादुर्भाव-पु०[सं०] प्रकट होना, प्रकाश; उत्पत्ति; अस्तित्व-ग्रहण; देवताका पृथ्वीपर प्रकट होना।

प्रादुर्भूत-वि० [सं०] जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, जो प्रकट हुआ हो; उत्पन्न। **-मनोभवा**-स्त्री० एक प्रकारकी मध्या नायिका जिसके मनमें कामका पूरा प्रादुर्भाव होता है।

प्रादेश-पु० [सं०] अँगूठेके सिरेसे तर्जनीके सिरेतककी दूरी; प्रदेश, प्रांत; स्थान।

प्रादेशन-पु० [सं०] दान।

प्रादेशिक-वि० [सं०] प्रदेश-संबंधी, प्रदेशका; अर्थद्योतक; प्रसंगगत। पु० किसी प्रदेशका शासक, सूबेदार। **-सेना**-स्त्री० (टेरिटोरियल आर्मी) किसी विशेष प्रदेश या क्षेत्रमें स्थानीय सुरक्षाकी दृष्टिसे तैयार की जानेवाली (नागरिकोंकी) सेना।

प्रादेशिनी-स्त्री० [सं०] तर्जनी।

प्राधान्य-पु० [सं०] प्रधानका भाव, प्रधानता; श्रेष्ठता; मूल कारण।

प्राधिकरण-पु० [सं०] (अथॉरिजेशन) किसीको कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार प्रदान करना।

प्राधिकार-पु० [सं०] (अथॉरिटी) कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार; इस तरहका वह अधिकार जो किसी पदाधिकारीको अपने पदके कारण प्राप्त हो।

प्राधिकारी(रिन्)-पु० [सं०] (अथॉरिटी) वह जिसे प्राधिकार प्राप्त हो। (प्राधिकारिवर्ग=अथारिटीज।)

प्राधिकृत-वि० [सं०] जिसे विधिविहित अधिकार प्राप्त हो; जो विधिविहित अधिकारी द्वारा स्वीकृत हो। **-अभिकर्ता-(र्तृ)**पु० (अथॉराइज्ड एजेंट) वह अभिकर्ता जिसे प्रतिनिधिरूपमें कोई काम करनेका विधिविहित अधिकार प्राप्त हो। **-पूँजी**-स्त्री० [हिं०] (अथॉराइज्ड कैपिटल) कारखाने आदिमें लगानेके लिए हिस्सेदारोंसे ली जानेवाली वह पूँजी जिसकी स्वीकृति विशेष प्राधिकारीसे ली गयी हो।

प्राध्यापक-पु० [सं०] (लेक्चरर, प्रोफेसर) वह अध्यापक जो अपने विषयका अच्छा विद्वान् हो; किसी महाविद्यालय आदिका उच्च श्रेणीका अध्यापक।

प्रान*-पु० दे० 'प्राण'।

प्रानी†-पु० दे० 'प्राणी'।

प्रानुमतिपत्र-पु०[सं०](परमिट) वह पत्र जिसमें कोई ऐसा माल, जिसपर किसी तरहका नियंत्रण हो, सीमित मात्रामें खरीदनेकी विशेष अनुमति दी गयी हो; माल उतारने या हटाने-बढ़ानेकी विशेष अनुमति प्रदान करनेवाला पत्र।

प्रानेस*-पु० दे० 'प्राणेश'।

प्रापक-पु० [सं०] प्राप्त करने या करानेवाला; पहुँचानेवाला; (पेयी) जिसे रुपया-पैसा आदि दिया जाय, चुकाया जाय, पानेवाला।

प्रापण-पु० [सं०] प्राप्त करना या कराना; पहुँचाना, ले जाना; हवाला।

प्रापणिक-पु० [सं०] व्यापारी, सौदागर।

प्रापति*-स्त्री० प्राप्ति; एक सिद्धि।

प्रापना*-स० क्रि० प्राप्त करना, पाना।

प्रापयिता(तृ)-वि०, पु० [सं०] प्राप्त करानेवाला।

प्रापित-वि० [सं०] प्राप्त कराया हुआ; पहुँचाया हुआ।

प्रापी(पिन्)-वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला; पहुँचनेवाला (समासांतमें)।

प्राप्त-वि० [सं०] पाया हुआ, जो मिला हो, लब्ध; जो आ पड़ा हो, उपस्थित; स्थापित; पूरा किया हुआ; उचित; जहाँ कोई पहुँचा हो, आसादित। **-काल**-वि० जिसे करनेका समय उपस्थित हो, समयोचित। पु० उचित समय, किसी बातका उपयुक्त अवसर; मृत्युका समय। **-जीवन**-वि० जिसकी जान लौट आयी हो, जो मरते-मरते बच गया हो। **-मनोरथ**-वि० जिसका मनोरथ पूर्ण हो गया हो। **-यौवन**-वि० जिसकी जवानी आ गयी हो। **-व्यवहार**-वि० बालिग।

प्राप्तर्तु-स्त्री० [सं०] वह लड़की जो रजस्वला हो गयी हो।

प्राप्तव्य-वि० [सं०] पाने, मिलने योग्य।

प्राप्ताधिकार-पु० (प्रिविलेज) वह विशेष अधिकार जो कुछ ही लोगोंको प्राप्त हो; किसी व्यक्ति, वर्ग, संस्था आदिको उसकी विशेष स्थितिके कारण प्राप्त विशेष अधिकार या सहूलियत।

प्राप्तानुज्ञ-वि० [सं०] (लाइसेंस्ड) जिसे किसी वस्तुके बेचने या कोई काम करनेका अनुज्ञापत्र दिया गया हो। पु० (लाइसेंसी) वह व्यक्ति जिसे इस तरहका अनुज्ञापत्र दिया गया हो।

प्राप्तावसर-वि० [सं०] दे० 'प्राप्तकाल'।

प्राप्ति-स्त्री० [सं०] पाया जाना, मिलना, लाभ; पहुँच; उपार्जन; उदय; अनुमिति; हिस्सा; भाग्य; संहति; पूर्वकर्मोंका फल; फलागम (ना०), आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिसके द्वारा प्रत्येक अभीष्ट पदार्थ मिलता है; आय, धनागम; फायदा, लाभ; जरासंधकी एक पुत्री जो कंससे ब्याही थी; कामदेवकी एक पत्नी; चंद्रमाका ग्यारहवाँ स्थान (फ० ज्यो०)। **-कर्ता(र्तृ)**-पु०(रीसिपियेंट) वह जिसे कोई वस्तु प्राप्त हो।

प्राप्त्याशा-स्त्री० [सं०] प्राप्तिकी आशा, मिलनेकी आशा।

प्राप्य-वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; जहाँतक पहुँच हो सके; जो मिल सके, मिलने योग्य।

प्राप्यक-पु० (बिल) किसीके हाथ बेचे हुए माल या किसीके लिए किये हुए काम आदिका ब्यौरा और प्राप्य मूल्य दिखानेवाला पत्र।

प्राबल्य-पु० [सं०] प्रबलता; प्रधानता; शक्ति।

प्राभिकर्ता(र्तृ)-पु० [सं०] (एटर्नी) वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति या संस्थाकी ओरसे प्रतिनिधि-रूपमें कार्य करनेका विधिविहित अधिकार प्राप्त हो; वह जिसे मुकदमे-मामलेमें किसीकी ओरसे देख-रेख करने आदिका विधिविहित अधिकार दिया गया हो।

प्राभियोक्ता(क्तृ)-पु० [सं०](प्रॉसीक्यूटर) किसीके विरुद्ध कोई मामला चलानेवाला। **-पक्ष**-पु० (प्रॉसीक्यूशन) वह पक्ष जिसकी ओरसे किसीके विरुद्ध कोई मामला न्यायालयमें चलाया गया हो। (**राजकीय प्राभियोक्ता**-पु० (गवर्नमेंट प्रॉसीक्यूटर) राज्यका वह विधिक अधिकारी

जो सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे किसीपर कोई अभियोग चलाये ।)

प्राभियोजन–पु० (प्रॉसीक्यूशन) किसीके विरुद्ध कोई अभियोग या मामला चलाना ।

प्रामंडलिक–वि० [सं०] (डिवीजनल) प्रमंडलका या प्रमंडल-संबंधी ।

प्रामाणिक–वि० [सं०] जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणोंसे सिद्ध हो, शास्त्र-सिद्ध; मानने योग्य; प्रमाण-संबंधी; जो मान, परिमाणका काम दे; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाण-रूप; शास्त्रज्ञ । पु० प्रमाणोंको माननेवाला; वह जो प्रमाणोंको जानता हो, प्रमाणवेत्ता, न्यायशास्त्री ।

प्रामाण्य–पु० [सं०] प्रमाणत्व, शास्त्रसिद्ध होना; विश्वसनीयता; प्रमाण ।

प्रामिसरी–वि० [अं०] जिसमें किसी बातकी प्रतिज्ञा की गयी हो । –**नोट**–पु० वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं अमुक मितिको या जब कभी भी माँगनेपर अमुक व्यक्तिको या इस पत्रके वाहकको इतना रुपया दूँगा; वह कागज या ऋणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ ऋण लेकर यह प्रतिज्ञा करती है कि अमुक व्यक्तिसे इतना ऋण लिया गया और इसका सूद इस हिसाबसे ऋणदाताको दिया जायगा ।

प्रायः(यस्)–वि० [सं०] लगभग, करीब-करीब । अ० अधिकतर, अकसर ।

प्राय–पु० [सं०] मृत्यु; अनशन द्वारा होनेवाली मृत्यु, अनशनमृत्यु; बाहुल्य, आधिक्य । वि० तुल्य, समान; पूर्ण (जैसे–'कष्टप्राय') ।

प्रायद्वीप–पु० दे० 'प्रायोद्वीप' ।

प्रायशः(शस्)–अ० [सं०] अधिकतर, बहुधा, अकसर ।

प्रायश्चित्त–पु० [सं०] वह शास्त्र-विहित कर्म जो पापका मार्जन करनेके लिए किया जाय; शोधन ।

प्रायिक–वि० [सं०] जो अधिकतर होता हो, प्रायः होनेवाला, सामान्य ।

प्रायोगिक–वि० [सं०] जिसका नित्य प्रयोग होता हो, जिसका नित्य प्रयोग किया जाय ।

प्रायोज्य–वि० [सं०] प्रयोजनके योग्य, (वह वस्तु) जो किसीके विशेष प्रयोजनकी हो (जैसे–पंडितके लिए पुस्तक आदि । शास्त्रके अनुसार ऐसी वस्तुओंका बँटवारा और वस्तुओंकी भाँति नहीं हो सकता) ।

प्रायोद्वीप–पु० [सं०] स्थलका वह भाग जो तीन ओरसे पानीसे घिरा हो और एक ओर स्थलसे लगा हो ।

प्रायोपवेश, प्रायोपवेशन–पु० [सं०] जान देनेके लिए दाना-पानी छोड़कर पड़ रहना, मृत्युके लिए किया जानेवाला अनशनव्रत ।

प्रायोवाद–पु० [सं०] लोकोक्ति, कहावत ।

प्रारंभ–पु० [सं०] आरंभ; कार्य, प्रयत्न ।

प्रारंभण–पु० [सं०] आरंभ करना, शुरू करना ।

प्रारंभिक–वि० [सं०] आरंभका, आरंभमें होनेवाला ।

प्रारब्ध–वि०[सं०] आरंभ किया हुआ । पु० तीन प्रकारके कर्मोंमेंसे वह कर्म जिसका फल भोगा जा रहा हो; भाग्य, किस्मत; वह जो शुरू किया गया हो ।

प्रारूप–पु० [सं०] (ड्रॉफ्ट) किसी प्रस्ताव, योजना, विधेयक आदिका वह प्राथमिक रूप जो शीघ्रतामें तैयार कर लिया जाता है, किंतु जिसमें बादमें कुछ काटछाँट या संशोधनकी आवश्यकता पड़ती है, मसौदा, खर्रा, प्रालेख । –**कार**–पु० (ड्राफ्ट्समैन) प्रारूप या मसौदा तैयार करनेवाला ।

प्रार्थन–पु० [सं०] माँगना, याचना करना, याचन ।

प्रार्थना–स० क्रि० प्रार्थना करना । स्त्री० [सं०] किसीसे कुछ माँगना; किसी बातके लिए किसीसे विनयपूर्वक कहना, नम्र निवेदन, यांचा; इच्छा, चाह । –**पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जिसमें किसीसे किसी बातके लिए प्रार्थना की गयी हो, अरजी । –**भंग**–पु० प्रार्थनाकी अस्वीकृति । –**समाज**–पु० ब्रह्मसमाज जैसा एक नवीन संप्रदाय । –**सिद्धि**–पु० इच्छाकी पूर्ति ।

प्रार्थनीय–वि० [सं०] जिसके लिए प्रार्थना की जाय, प्रार्थना करने योग्य ।

प्रार्थयिता(तृ)–पु० [सं०] प्रार्थना करनेवाला, याचक; प्रणयाकांक्षी ।

प्रार्थित–वि० [सं०] जिसकी या जिसके लिए प्रार्थना की गयी हो, याचित; आक्रांत; अवरुद्ध; आहत; हत; जिसकी चाह, तलाश हो । पु० इच्छा । –**पूँजी**–स्त्री० [हिं०] (सब्स्क्राइब्ड कैपिटल) किसी कारखाने आदिके लिए प्राधिकृत पूँजीका वह अंश जिसके लिए संभाव्य हिस्सेदारोंके प्रार्थनापत्र प्राप्त और स्वीकृत हो चुके हों ।

प्रार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] प्रार्थना करनेवाला; चाहनेवाला, इच्छुक; आक्रमण करनेवाला ।

प्रार्थ्य–वि० [सं०] प्रार्थना करने योग्य, जिसके लिए प्रार्थना की जाय।

प्रालंब–वि० [सं०] विशेष रूपसे लटकनेवाला । पु० सीनेतक लटकनेवाली माला; एक तरहकी मोतियोंकी माला ।

प्रालंबक–पु० [सं०] सीनेतक लटकनेवाली माला ।

प्रालंबिका–स्त्री० [सं०] एक तरहका सोनेका हार ।

प्रालेख–पु० [सं०] (ड्राफ्ट) दे० 'प्रारूप' ।

प्रालेय–पु० [सं०] हिम, बर्फ । वि० प्रलय-संबंधी । –**भूधर**, –**शैल**–पु० हिमालय । –**रश्मि**–पु० चंद्रमा; कपूर ।

प्रालेयांशु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।

प्रालेयाद्रि–पु० [सं०] हिमालय ।

प्रावरण–पु० [सं०] ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय, चादर ।

प्राविधिक–वि० [सं०] (टेकनिकल) किसी कला, शिल्प आदिकी विशेष कार्यविधि, प्रक्रिया आदि-संबंधी। –**आपत्ति**–स्त्री० (टेकनिकल आब्जेक्शन) नियम, प्रविधि आदिके अननुपालनके आधारपर की गयी आपत्ति ।

प्राविधिज्ञ–पु० (टेकनीशियन) किसी कला, शिल्प आदिकी विशेष कार्यविधि, प्रक्रियाओं आदिका जानकार ।

प्रावीण्य–पु० [सं०] कुशलता, निपुणता ।

प्रावृट्(ष्)–पु० [सं०] वर्षाऋतु, पावस । –(**ट्**)**काल**–पु० वर्षाका मौसम ।

प्रावृत–वि० [सं०] विशेष रूपसे आवृत, घिरा हुआ; ढका हुआ । पु० ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय (रैपर) ।

प्रावृष–पु०, **प्रावृषा**–स्त्री० [सं०] वर्षाकाल, पावस ।

प्रावृषेय–वि० [सं०] वर्षाऋतुमें होनेवाला ।

प्राब्रज्य–पु० [सं०] दे० 'प्राब्राज्य'।

प्राशन–पु० [सं०] खाना; खिलाना; भोजन; चखना (अन्नप्राशन)।

प्राश्निक–पु० [सं०] प्रश्न करनेवाला, प्रश्नकर्ता; (पेपर सेटर) छात्रोंकी किसी परीक्षाके लिए किसी विषयके प्रश्न छाँटने या चुननेवाला, प्रश्नपत्र तैयार करनेवाला; पंच, मध्यस्थ।

प्रासंगिक–वि० [सं०] जिसका प्रसंग हो, प्रसंगप्राप्त; प्रसंगोचित; संयोगसे होने या आ जानेवाला।

प्रासविक विज्ञान–पु० [सं०] गर्भवती नारियोंको प्रसव करानेकी कलाका विवेचन करनेवाला विज्ञान।

प्रासाद–पु० [सं०] राजभवन, महल; देवालय; विशाल भवन, आलीशान इमारत।

प्रासादिक–वि० [सं०] कृपायुक्त, अनुकूल; सुंदर; जो प्रसादके रूपमें दिया जाय।

प्रासादीय–वि० [सं०] प्रासाद-संबंधी; प्रासादका।

प्रासूतिक–वि० [सं०] प्रसूति-संबंधी।

प्रास्ताविक–वि० [सं०] प्रस्तावके रूपमें काम आनेवाला; प्रसंगोचित; समयोचित।

प्रास्थानिक–वि० [सं०] जो प्रस्थानके समय आवश्यक या उचित हो।

प्रिंसिपल–पु० [अं०] किसी कालेज या बड़े विद्यालयका सर्वोच्च अध्यापक या अधिकारी; वह धन जो सूदपर दिया गया हो, मूल धन।

प्रिथिमी*–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

प्रियंकर–वि० [सं०] प्रसन्नकारक।

प्रियंवद–वि० [सं०] प्रिय बोलनेवाला।

प्रिय–वि० [सं०] जिसके प्रति प्रेम हो, प्यारा; अच्छा लगनेवाला; जो छोड़ा न जा सके; मनोहर। पु० पति; प्रेमी; अच्छी लगनेवाली बात; हित। **–कांक्षी(क्षिन्)**–वि० भला चाहनेवाला। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० हित करनेवाला। पु० मित्र। **–जन**–पु० स्नेहपात्र व्यक्ति; सगा-संबंधी। **–दर्शन**–वि० जो देखनेमें भला लगे, सुदर्शन, सुंदर। पु० तोता। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सबको स्नेहकी दृष्टिसे देखनेवाला। पु० सम्राट् अशोकका एक नाम। **–पात्र**–पु० प्रेमका अधिकारी। **–भाव**–पु० प्रेम। **–भाषी(षिन्)**–वि० प्रिय बोलनेवाला, मीठी बात कहनेवाला। **–वचन**–पु० अच्छी लगनेवाली बात, मधुर वचन। वि० मधुसी मीठी बात कहनेवाला, मधुरभाषी। **–वादी(दिन्)**–पु० प्रिय बोलनेवाला, मधुर-भाषी; चापलूस।

प्रियतम–वि० [सं०] सबसे अधिक प्यारा। पु० पति, स्वामी; प्रेमी, आशिक।

प्रियतमा–वि० स्त्री० [सं०] सबसे अधिक प्यारी। स्त्री० पत्नी; प्रेमिका, माशूका।

प्रियता–स्त्री०, **प्रियत्व**–पु० [सं०] प्रिय होनेका भाव; प्रेम।

प्रिया–स्त्री० [सं०] पत्नी, भार्या; प्रेमिका; स्त्री, नारी।

प्रियाल–पु० [सं०] चिरौंजीका पेड़ या फल, पियाल।

प्रियाला–स्त्री० [सं०] दाख।

प्रियोक्ति–स्त्री० [सं०] चापलूसीकी बात, चाटु-वाक्य।

प्रीणन–पु० [सं०] प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेवाला।

प्रीणित–वि० [सं०] प्रसन्न; संतुष्ट।

प्रीत–वि० [सं०] प्रीतियुक्त; प्रसन्न, हृष्ट। * स्त्री० प्रेम, प्रीति।

प्रीतम–पु० प्रियतम, पति, स्वामी; किसी नायिकाका प्रेमिक, आशिक।

प्रीति–स्त्री० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता, आमोद; तृप्ति; प्रेम, प्यार; कृपा; कामदेवकी एक पत्नी; विष्कुंभ आदि २७ योगोंमेंसे दूसरा योग (फ० ज्यो०)। **–कर**–वि० हर्ष या प्रेम उत्पन्न करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० प्रेमपूर्ण कार्य, मैत्रीपूर्ण कार्य। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'प्रीतिकर'। **–दत्त**–वि० प्रीतिपूर्वक दिया हुआ। पु० वह धन जो कन्याको विवाहमें माता, पिता आदिसे मिले। **–दान,–दाय**–पु० प्रेमवश दिया हुआ पदार्थ या द्रव्य, प्रेमोपहार। **–धन**–पु० प्रेमवश दिया हुआ धन। **–पात्र**–पु० वह जिसके प्रति प्रेम हो, प्रेमभाजन। **–भोज**–पु० वह भोज जिसमें मित्र तथा सगे-संबंधी सद्भावसे सम्मिलित हों (आधु०)। **–वर्द्धन, वर्धन**–पु० विष्णु। वि० प्रीति बढ़ानेवाला। **–वाद**–पु० मैत्रीपूर्ण वाद। **–विवाह**–पु० प्रेम-संबंधके कारण होनेवाला विवाह। **–सम्मेलन**–पु० (सोशल गैदरिंग) विद्यालय आदिके वार्षिकोत्सवके समय नये-पुराने छात्रोंका एकत्र होकर एक दूसरेसे मिलना, साथ खेलना, जलपान, नाटकादिमें सम्मिलित होना, स्नेह-सम्मेलन। **–स्निग्ध**–वि० प्रेमके कारण आर्द्र (आँखें)।

प्रीत्यर्थ–अ० [सं०] प्रसन्नताके लिए, प्रसन्न करनेके लिए।

प्रूफ–पु० [अं०] प्रमाण, सबूत; किसी छपनेवाली वस्तुका वह नमूना जो उसकी छपाईके पहले अशुद्धियाँ ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है; वस्तुविशेषके प्रभावसे बचनेका साधन, वस्तुविशेषका प्रतिरोधक (जैसे–'वाटर-प्रूफ')। **–रीडर**–पु० प्रूफकी अशुद्धियाँ ठीक करनेवाला।

प्रेंखण–पु० [सं०] झूलनेकी क्रिया, झूलना; झूला।

प्रेंखित–वि० [सं०] कंपित; झूला हुआ।

प्रेक्षक–पु० [सं०] देखनेवाला, दर्शक।

प्रेक्षण–पु० [सं०] देखनेकी क्रिया, देखना; आँख।

प्रेक्षणक–पु० [सं०] तमाशा देखनेवाला।

प्रेक्षणीय–वि० [सं०] देखने योग्य; सुंदर; दृष्टिगोचर।

प्रेक्षा–स्त्री० [सं०] देखना; दृश्य; किसी बातकी अच्छाई और बुराईका विवेक; किसी प्रकारका अभिनय, तमाशा आदि। **–कारी(रिन्)**–वि० सोच-समझकर काम करनेवाला। **–गृह,–स्थान**–पु० राजाओंका मंत्रणागृह; रंगशाला।

प्रेक्षागार–पु० [सं०] दे० 'प्रेक्षागृह'।

प्रेक्षावान्(वत्)–वि० [सं०] सोच-समझकर काम करनेवाला, चतुर।

प्रेक्षित–वि० [सं०] देखा हुआ।

प्रेक्षिता(तृ)–पु० [सं०] देखनेवाला, दर्शक।

प्रेक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] देखनेवाला; गौरसे देखनेवाला।

प्रेक्ष्य–वि० [सं०] दे० 'प्रेक्षणीय'।

प्रेत–वि० [सं०] मरा हुआ, मृत। पु० मृतात्मा; वह योनि

जिसमें मनुष्य मरनेके उपरांत सपिंड होनेतक रहता है; इस योनिमें पड़ी हुई मृतककी आत्मा; एक प्रकारकी देवयोनि; भयंकर आकारवाला आदमी; नरकमें रहनेवाला प्राणी; अथक परिश्रम करनेवाला आदमी ।**–कर्म (न्),–कार्य,–कृत्य**–पु० मृतकके निमित्त किया जानेवाला दाह आदिसे लेकर सपिंडीकरणतकका कृत्य । **–गृह,–गेह**–पु० श्मशान । **–तर्पण**–पु० प्रेतके निमित्त किया जानेवाला तर्पण । **–दाह**–पु० शवको जलानेकी क्रिया । **–देह**–स्त्री०,**–शरीर**–पु० वह शरीर जो मृतककी आत्माको मरनेके बादसे लेकर सपिंडीकरणतक प्राप्त रहता है ।**–नदी**–स्त्री० वैतरणी नदी ।**–नाथ**–पु० यमराज । **–नाह**–पु० [हिं०] दे० 'प्रेतनाथ' । **–पक्ष**–स्त्री० पितृपक्ष । **–पटह**–पु० प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जो शवदाहके समय बजाया जाता था । **–पति**–पु० यमराज । **–पावक**–पु० रातके समय श्मशान, कब्रिस्तान, जंगल आदि सूनी जगहोंमें दिखाई देनेवाला चलता हुआ प्रकाश जिसे लोग प्रेतलीला समझते हैं । **–पिंड**–पु० वह पिंडा जो दाहसे लेकर सपिंडीकरणके दिनतक प्रेतके निमित्त पारा जाता है । **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० यमपुरी । **–बाधा**–स्त्री० प्रेत द्वारा पहुँचायी गयी बाधा या पीड़ा ।**–भाव**–पु० मृत्यु । **–भूमि**–स्त्री० श्मशान । **–मेध**–पु० मृतकके निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध । **–राज**–पु० यमराज ।**–लोक**–पु० यमलोक ।**–वाहित**–वि० जिसपर भूत सवार हो, भूताविष्ट । **–शिला**–स्त्री० गयातीर्थ-स्थित वह शिला जिसपर श्राद्ध करनेसे मृतक प्रेतयोनिसे छुटकारा पाता है (गरुडपुराण) । **–शुद्धि**–स्त्री० मरणाशौचके दोषसे रहित होना ।**–शौच**–पु० दे० 'प्रेतशुद्धि'; मृतकका एक प्रकारका संस्कार । **–श्राद्ध**–पु० दाहकी तिथिसे लेकर एक बरसतक मृतकके निमित्त किये जानेवाले श्राद्धोंमेंसे कोई एक ।

प्रेतता–स्त्री०, **प्रेतत्व**–पु० [सं०] मरण; प्रेतकी अवस्था या धर्म ।

प्रेतनी–स्त्री० प्रेतकी स्त्री ।

प्रेताधिप–पु० [सं०] यमराज ।

प्रेतान्न–पु० [सं०] प्रेतोंके निमित्त पारा जानेवाला पिंडा; घृतहीन भोजन ।

प्रेतावास–पु० [सं०] श्मशान ।

प्रेताशौच–पु० [सं०] मृत्युके कारण होनेवाला अशौच ।

प्रेतेश, प्रेतेश्वर–पु० [सं०] यमराज ।

प्रेतोन्माद–पु०[सं०] प्रेतबाधाके कारण होनेवाला उन्माद ।

प्रेप्सा–स्त्री० [सं०] प्राप्त करनेकी इच्छा, पानेकी इच्छा ।

प्रेम(न्)–पु० [सं०] प्यार, मुहब्बत, अनुराग; कृपा; क्रीड़ा, केलि । **–कलह**–पु० प्रेमवश या प्रेममें किया जानेवाला कलह । **–गर्विता**–स्त्री० वह नायिका जिसे अपने पतिप्रेमका गर्व हो । **–जल,–नीर**–पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू, प्रेमाश्रु । **–पात्र**–पु० वह जिसके प्रति प्रेम हो । **–पाश**–पु० प्रेमका फंदा या बंधन । **–पुलक**–पु० प्रेमके कारण होनेवाला रोमांच । **–बंध,–बंधन**–पु० प्रेमका बंधन । **–भक्ति**–स्त्री० प्रेमभावसे की जानेवाली विष्णुभक्ति (वैष्णव) ।**–भगति***–स्त्री० दे० 'प्रेम-भक्ति' । **–भाव**–पु० प्रेमका भाव । **–वारि**–पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू ।

प्रेमाक्षेप–पु० [सं०] एक प्रकारका आक्षेप अलंकार जिसमें प्रेमका वर्णन करते समय उसमें व्याघात भी दिखलाया जाता है (केशव) ।

प्रेमालाप–पु० [सं०] प्रेमपूर्वक की जानेवाली बातचीत; एक दूसरेसे प्रेम करनेवाले दो या अधिक व्यक्तियोंकी आपसी बातचीत ।

प्रेमालिंगन–पु० [सं०] प्रेमके साथ या प्रेमके आवेशमें गले लगाना; नायक-नायिकाका परस्पर आलिंगन ।

प्रेमाश्रु–पु० [सं०] प्रेमके कारण आँखोंसे झड़नेवाले आँसू, प्रेमके आँसू ।

प्रेमी(मिन्)–पु० [सं०] प्रेम करनेवाला । वि० प्रेमयुक्त ।

प्रेय(स्)–वि० [सं०] अधिकतर प्यारा, प्रियतर । पु० सांसारिक सुख; एक प्रकारका अलंकार * प्रेमी;–'तहँ प्रतीप उपमा कहत भूषण कवित प्रेय'–भू० ।

प्रेयसी–स्त्री० [सं०] पत्नी; प्रियतमा ।

प्रेयान् (यस्)–पु० [सं०] पति; प्रियतम ।

प्रेरक–पु० [सं०] प्रेरणा करनेवाला, प्रयोजक; भेजनेवाला ।

प्रेरण–पु० [सं०] किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरणा करना; फेंकना; भेजना; आदेश; चेष्टा ।

प्रेरणा–स्त्री० [सं०] किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करनेकी क्रिया, किसीको किसी काममें लगाना; उसकानेकी क्रिया; फेंकना; भेजना ।

प्रेरणार्थक क्रिया–स्त्री० [सं०] क्रियाका वह रूप जिससे यह बोध हो कि उसका व्यापार किसी अन्यकी प्रेरणासे कर्ता द्वारा संपन्न हुआ है ।

प्रेरणीय–वि० [सं०] प्रेरणा करने योग्य, जिसे किसी कार्यमें प्रवृत्त किया जाय; फेंकने योग्य; भेजने योग्य ।

प्रेरना*–स० क्रि० प्रेरणा करना; फेंकना, चलाना; भेजना ।

प्रेरित–वि० [सं०] किसी कार्यमें प्रवृत्त किया हुआ; फेंका हुआ, चलाया हुआ; भेजा हुआ; आदिष्ट ।

प्रेषक–पु० [सं०] भेजनेवाला ।

प्रेषण–पु० [सं०] प्रेरणा करना, भेजना; वह वस्तु जो कहींसे भेजी जाय । **–कर्मी(र्मिन्)**–पु० (डिस्पैचर) चिट्ठी, पैकेट आदि पंजीमें चढ़ाकर बाहर भेजनेका काम करनेवाला कर्मचारी, डाक-प्रेषक । **–पुस्तक**–स्त्री० (डिस्पैचबुक) वह पुस्तक या बही जिसमें भेजी गयी चिट्ठियों, पारसलों आदिका ब्योरा लिखा जाता है ।

प्रेषणादेशपत्र–पु० (आर्डर फार्म) वह पत्र जिसमें कोई वस्तु या माल किसी स्थानसे भेजनेका आदेश लिखा हो ।

प्रेषणीय–वि० [सं०] भेजने योग्य ।

प्रेषना*–स० क्रि० भेजना ।

प्रेषित–वि० [सं०[प्रेरणा किया हुआ, नियोजित; भेजा हुआ; निर्वासित । पु० स्वर साधनेकी एक रीति ।

प्रेषितव्य–वि० [सं०] प्रेरणा करने योग्य, नियोज्य; भेजने योग्य, जिसे भेजा जाय ।

प्रेषिती–पु० वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की जाय, पानेवाला (ऐड्रेसी) ।

प्रेष्य–वि० [सं०] दे० 'प्रेषितव्य'। पु० नौकर, चाकर, टहलू; दूत; सेवा। **–वस्तु-आलेखन**–पु० (बुकिंग) (रेलके मालगोदाम आदिसे) भेजे जानेवाले मालका विवरण आदि रजिस्टरमें चढ़ाना और उसकी रसीद काटना।

प्रेस–पु० [अं०] वह कल जिससे कोई चीज दबायी या पेरी जाय; छापनेकी कल; वह स्थान या कार्यालय जहाँ छपाई-का काम होता हो, छापाखाना। **–ऐक्ट**–पु० प्रेससंबंधी कानून, वह कानून जिसके द्वारा छापेखानेवालोंके अधिकारों आदिका नियंत्रण किया जाता है। **–गैलरी**–स्त्री० असेंबली आदिमें अखबारोंके रिपोर्टरोंके बैठनेकी जगह। **–रिपोर्टर**–पु० वह व्यक्ति जो पत्रके लिए समाचार एकत्र करता है। **मु० (किसी चीजका)–में होना**–छपनेकी स्थितिमें होना।

प्रोक्त–वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त, कथित।

प्रोक्ति–स्त्री० [सं०] दूसरेकी उक्ति जो कहीं उद्धृत की जाय (कोटेशन)।

प्रोग्राम–पु० [अं०] किसी व्यक्ति या आयोजनका कार्यक्रम; वह पत्र या कागज जिसपर कोई कार्यक्रम लिखा हो।

प्रोत–वि० [सं०] सिला हुआ, गूँथा हुआ; पिरोया हुआ।

प्रोत्फुल्ल–वि० [सं०] अच्छी तरह खिला हुआ, पूर्ण रूपसे विकसित।

प्रोत्साहक–पु० [सं०] उत्साह बढ़ानेवाला, पीठ ठोंकनेवाला।

प्रोत्साहन–पु० [सं०] उत्साह या हिम्मत बढ़ाना।

प्रोत्साहित–वि० [सं०] जिसका उत्साह बढ़ाया गया हो, जिसको बढ़ावा दिया गया हो।

प्रोद्धरण–पु० [सं०] (साइटेशन) किसी लेख, पुस्तक आदिसे कोई अंश पढ़कर सुनाना या उद्धृत करना; इस तरह लिया हुआ अंश।

प्रोद्भूत होना–अ० क्रि० (टु एक्रू) (पूँजीपर ब्याज आदि) निकलना, किसीके स्वाभाविक परिणाम या परिलाभ आदिके रूपमें सामने आना, दिखाई देना।

प्रोनोट–पु० [अं०] वह रुक्का जो कर्ज लेनेवाला शर्तोंके साथ रसीदके तौरपर लिखता है, हैंडनोट।

प्रोफ़ेसर–पु० [अं०] किसी विश्वविद्यालय या बड़े विद्यालयका अध्यापक; वह जो सिखलाने या द्रव्योपार्जनके लिए कला-संबंधी विशिष्ट कार्य करे।

प्रोषित–वि० [सं०] जो परदेश गया हो, प्रवासी। **–पतिका,–प्रेयसी,–भर्तृका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो।

प्रोहित*–पु० दे० 'पुरोहित'।

प्रौढ–वि० [सं०] जिसकी पूरी वृद्धि हो चुकी हो, जो पूरा बढ़ चुका हो, प्रवृद्ध; जिसकी उम्र अधिक हो चली हो, तीस और पचासके बीचकी अवस्थावाला; पुष्ट, परिपक्व; जिसमें पूर्णता आ गयी हो (जैसे प्रौढ़ विद्वान्); निपुण, दक्ष; जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, अनुभवी, परिणतबुद्धि; गाढ़ा, घना; प्रगल्भ; उग्र।

प्रौढता–स्त्री०,**–प्रौढत्व**–पु० [सं०] प्रौढ़ होनेका भाव।

प्रौढा–वि० स्त्री० [सं०] 'प्रौढ'का स्त्रीलिंग। स्त्री० वह स्त्री जिसकी उम्र अधिक हो चली हो, तीससे लेकर पचास या पचपनके बीचकी अवस्थावाली स्त्री; सब प्रकारकी रतिमें निपुण तथा कम लज्जा और प्रचुर कामवासनावाली अधिक अवस्थाकी नायिका (सा०)। **–अधीरा**–स्त्री० वह प्रौढा नायिका जो अपने नायकमें परस्त्री-संभोगके चिह्न देखकर अधीर हो उठे। **–धीरा**–स्त्री० नायिकाका एक भेद। **–धीराधीरा**–स्त्री० नायिकाका एक भेद।

प्रौढोक्ति–स्त्री० [सं०] प्रबल उक्ति; एक काव्यालंकार।

प्रौद्योगिक शिक्षा–स्त्री० [सं०] (टेक्नीकल एजुकेशन) किसी विशेष कला या व्यवसाय-संबंधी शिक्षा।

प्लवंग–पु० [सं०] वानर; हिरन; पाकड़का पेड़।

प्लवंगम–पु० [सं०] मेढक; वानर।

प्लवगेंद्र–पु० [सं०] हनूमान्।

प्लवन–पु० [सं०] तैरनेकी क्रिया, तैरना; उछलना, कूदना; उड़ना; महाप्लावन; ढाल, उतार।

प्लावन–पु० [सं०] जल आदिका उमड़कर बहना; गोता लगाना; प्रलयकालीन भारी बाढ़; बाढ़, सैलाब।

प्लावनिक–वि० [सं०] (डाइलूवियल) महाप्लावन या प्रलयसे संबंध रखनेवाला।

प्लावित–वि० [सं०] जिसपर पानी चढ़ आया हो, जो जलमें डूब गया हो; जल आदिसे व्याप्त। पु० बाढ़।

प्लीहा–स्त्री० [सं०] तिल्ली, बरवट।

प्लीहोदर–वि० [सं०] तिल्ली रोग।

प्लुत–वि० [सं०] जल आदिसे व्याप्त, तराबोर। पु० तीन मात्राओंवाला स्वर या वर्ण।

प्लेग–पु० [अं०] कोई भयानक संक्रामक रोग; एक भयानक संक्रामक रोग जिसमें गिलटी निकलती है और बहुत तेज बुखार आता है, ताऊन।

प्लैटफार्म–पु० [अं०] कोई चौकोर और चौरस चबूतरा, विशेषतः वह जिसपरसे भाषण या उपदेश किया जाय, मंच; रेलवे स्टेशनोंपरका वह लंबा-ऊँचा चबूतरा जिसके सामने ट्रेन लगती है और जिसपरसे होकर लोग उसपर सवार होते या उससे उतरते हैं।

फ

फ–देवनागरी वर्णमालाका बाईसवाँ व्यंजन वर्ण।

फंक*–स्त्री० फाँक, चीरा हुआ टुकड़ा।

फँकनी†–स्त्री० दे० 'फंकी'।

फंका–पु० उतना दाना या चूर्ण जितना एक बार फाँका या खाया जाय; * फाँक, टुकड़ा। **मु०–करना**–नष्ट करना। **–मारना**–फाँकना।

फंकी–स्त्री० फाँकी जानेवाली दवा; रेचन चूर्ण; † छोटी फाँक।

फंग*–पु० फंदा, बंधन–'मति कोई प्रीतिके फंग परै'–सू०; अधीनता; प्रेम, अनुराग।

फंद*–पु० फंदा, फाँस, बंधन; मायाजाल; छल, कपट; दुःख। **–वार**–वि० फंदा लगानेवाला, फँसानेवाला।

फँदना, फंदना*–अ० क्रि० फंदेमें पड़ना, फँसना; मुग्ध होना। स० क्रि० लाँघना, फांदना।

फंदा–पु० सरकीली गाँठोंवाला रस्सी, तार आदिका विशेष प्रकारका घेरा जिसमें फँसनेसे प्राणी बँध जाता है, रस्सी तागे आदिका घेरा जिसमें किसीको फँसाया जाय, फाँस; पशु-पक्षियोंको फँसानेका जाल; फँसानेवाली वस्तु, बंधन, जाल; छल, प्रपंच, धोखा; दुःख, कष्ट। **मु०–छुड़ाना**–कैदसे रिहा करना। **–देना**–गिरह देना; फंदा लगाना। **(किसीपर)–पड़ना**–रचा हुआ प्रपंच सफल होना। **–मारना**–जालमें फँसाना। **(फंदे)में आना या पड़ना**–जालमें फँसना। **–में पड़ना**–वशमें होना। **–में लाना**–जालमें लाना, फरेबमें लाना।

फँदाना–स०क्रि० किसीसे फाँदनेका काम कराना, किसीको फाँदनेमें प्रवृत्त करना; * फंदेमें लाना, फँसाना।

फँदावना–स० क्रि० दे० 'फँदाना'।

फँफाना–अ० क्रि० हलकाना; खौलते हुए दूध आदिका ऊपर उठना।

फँसना–अ०क्रि० फंदेमें पड़ना, पकड़में आना; उलझना; अवैध संबंध होना।

फँसाना–स०क्रि० फंदेमें लाना; उलझाना; काबूमें करना।

फँसाव, फँसावा–पु० फँसनेका भाव; वह चीज या बात जिसमें आदमी फँस जाय, अटकाव।

फँसिहारा*–पु० फँसानेवाला, ठग।

फँसौरि*–स्त्री० जाल, फंदा।

फ–पु०[सं०] कटु वचन; फुत्कार; निष्फल वचन; झंझावात।

फक–वि० स्वच्छ, शुभ्र; फीका, बदरंग। **मु० (रंग)–पड़ जाना या हो जाना**–डरके मारे स्तब्ध हो जाना, बहुत अधिक घबरा जाना; विवर्ण हो जाना।

फ़क़त–वि० [अ०] अकेला, केवल। अ० एकमात्र, सिर्फ़।

फका*–पु० फाँक, टुकड़ा।

फ़कीर–पु० [अ०] भीख माँगनेवाला, भिखारी; वह जो शरीररक्षा भरके लिए माँग-खाकर ईश्वरका भजन करता हो, साधु; मुसलमान साधु; अकिंचन मनुष्य।

फकीरनी–स्त्री० भीख माँगनेवाली औरत।

फ़कीराना–वि० [अ०] फकीरोंकासा, फकीरों जैसा। पु० वह भूमि जो फकीरोंके निर्वाहके लिए दान की गयी हो।

फ़कीरी–स्त्री० फकीरका भाव, भिखारीपन; साधुता, अकिंचनता। वि० फकीर-संबंधी, फकीरका। **–लटका**–पु० साधु-फकीरकी बतायी हुई दवा, जड़ी-बूटी।

फक्कड़–पु० गाली-गुफ्ता, दुर्वचन; वह व्यक्ति जो अकिंचन होते हुए भी मस्त बना रहे; उच्छृंखल व्यक्ति। **–बाज़**–वि० गाली-गुफ्ता बकनेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० गालीगुफ्ता बकनेकी क्रिया।

फख़र–पु० दे० 'फ़ख़'।

फ़ख़्–पु० [फ़ा०] गर्व, घमंड; नाज।

फ़ख़िया–अ० [फ़ा०] गर्वसे, घमंडके साथ।

फग*–पु० जाल, फंदा।

फगुआ–पु० दे० 'फाग'; * फागके उपलक्ष्यमें दिया जानेवाला उपहार।

फगुनहट–स्त्री० फागुनके महीनेमें चलनेवाली धूल, पत्तों आदिसे युक्त जोरकी हवा; फागुनमें होनेवाली बारिश।

फगुहरा, फगुहारा†–पु०फाग खेलनेवाला;फाग गानेवाला।

फ़जर–स्त्री० [अ०] प्रभात, तड़का।

फ़ज़्ल–पु० [अ०] दे० 'फ़ज़्ल'।

फ़जिर–स्त्री० दे० 'फ़जर'।

फजिहतिताई*–स्त्री० फजीहत करानेवाली बात।

फ़ज़ीता–पु० दे० 'फ़ज़ीहत'।

फ़ज़ीती–स्त्री० दे० 'फ़ज़ीहत'।

फ़ज़ीलत–स्त्री० [अ०] गौरव, महत्ता। **–का वक्त**–वह वक्त जिसमें प्रार्थना करनेका महत्त्व हो। **–की पगड़ी**–विद्वत्ताका प्रमाणरूप चिह्न, सबसे बड़ी सनद।

फ़ज़ीहत–स्त्री०[अ०] अपमान, बेइज्जती; दुर्दशा;बदनामी।

फ़ज़ीहती–स्त्री० दे० 'फ़ज़ीहत'।

फजूल–वि० दे० 'फ़ुज़ूल'। **–खर्च**–वि० दे० फ़ुज़ूलख़र्च'। **–खर्ची**–स्त्री० दे० 'फ़ुज़ूल-ख़र्ची'।

फ़ज़्ल–पु० [अ०] अनुग्रह, दया; विद्या; महत्ता।

फट–स्त्री० किसी चौड़ी, कड़ी, हलकी तथा पतली चीजपर आघात करने अथवा उसके किसी दूसरी कड़ी वस्तुपर गिरने या जोरसे हिलनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द; लकड़ी, बाँस आदिके फटनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द। **–फट**–स्त्री० 'फट' ध्वनिकी आवृत्ति। **–से**–अति शीघ्र, तत्काल।

फटक*–पु० स्फटिक, बिल्लौर। अ० तत्काल, तुरंत।

फटकन–स्त्री० अन्न आदिको फटकनेसे निकलनेवाला सारहीन पदार्थ।

फटकना–पु० गुलेलका फीता जिसपर रखकर गुलता फेंका जाता है। स० क्रि० सूप आदिके द्वारा अन्न आदिको साफ करना, झाड़ना;* इस प्रकार हिलाना कि 'फट-फट' शब्द उत्पन्न हो; फेंकना, चलाना। अ० क्रि० आना; चल जाना; पहुँचना; पृथक् होना; तड़फड़ाना; श्रम करना। **मु०–पछोरना**–अन्न आदिको सूप या छाज द्वारा साफ करना; अच्छी तरह देखना-भालना, परखना (ला०)। **फटकने देना**–आने देना।

फटकरना*–स० क्रि० फटकना, साफ करना; फेंकना।

फटकरी†–स्त्री० दे० 'फिटकरी'।

फटकवाना–स० क्रि० किसीको फटकनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे फटकनेका काम कराना।

फटका‡–पु० धुनियोंकी धुनकी; काव्यके गुणसे रहित कविता, निरी तुकबंदी; तड़फड़ाहट; फाटक; चिड़ियोंको उड़ानेके लिए फले हुए पेड़में रस्सीके सहारे बाँधी जानेवाली लकड़ी जिसे हिलाकर 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करते हैं।

फटकाना*–स० क्रि० फेंकना; फटकवाना; फटफटाना।

फटकार–स्त्री० फटकारनेकी क्रिया या भाव; किसीको लज्जित करने या उसका तिरस्कार करनेके लिए क्रोधके आवेशमें कही जानेवाली कड़ी बात, लानत-मलामत।

फटकारना–स० क्रि० किसीको लज्जित करने या उसका तिरस्कार करनेके लिए क्रोधपूर्वक कड़ी बातें कहना, लानत-मलामत करना; झटका देकर छितराना या खुला रखना (चुटिया फटकारना); उपार्जन करना, पैदा करना (रुपया फटकारना); कपड़ेको साफ करते समय पत्थर आदिपर पटकना, पछारना, * फेंकना;* चलाना, प्रहार

करना ।

फटना–अ० क्रि० किसी प्रकारके दबाव या आघातसे किसी वस्तुका दो या अधिक खंडोंमें विभक्त हो जाना या उसमें दरार पड़ जाना, विदीर्ण होना; किसी पैनी या नुकीली चीजके संयोगसे किसी वस्तुमें दरार पड़ जाना या उसका कोई भाग अलग हो जाना; आवरणके रूपमें फैले हुए पदार्थका छिन्न-भिन्न हो जाना (जैसे–बादल फटना, अंधकार फटना); पृथक् हो जाना; दूध आदिका इस प्रकार विकृत होना कि उसका जलभाग सारभागसे अलग हो जाय; किसी वस्तुकी अधिकता होना (पड़नाके साथ); घोड़ेका सवारके आदेशके विरुद्ध चलना ।

फटफटाना–स० क्रि० किसी वस्तुसे 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करना; बकवास करना; दौड़-धूप करना । अ० क्रि० 'फट-फट' शब्द होना ।

फटहा†–वि० फटा हुआ; अंड-बंड बकनेवाला ।

फटा–स्त्री० [सं०] साँपका फन । वि० [हिं०] जो फट गया हो, जिसमें फटाव या दरार हो; गया-गुजरा । पु० छेद । **(फटी)आवाज़**–स्त्री०भर्रायी हुई आवाज ।**(फटे)-हाल**–वि० जिसके पास कुछ न हो ।**–हालोँ**–अ० अकिंचनताकी स्थितिमें, मुफलिसीकी हालतमें । **मु०–(किसीके) (फटे) में पाँव अड़ाना या देना**–जान-बूझकर किसीके झगड़ेमें पड़ना,किसीकी बला अपने सिर लेना ।

फटाका–पु० 'फट'की बुलंद आवाज; † पटाखा ।

फटाटोप–पु० [सं०] साँपका फन फैलाना, फनका फैलाव ।

फटाटोपी(पिन्)–पु० [सं०] साँप ।

फटाव–पु० फटनेकी क्रिया; फटनेसे पड़ी दरार; फटने जैसी पीड़ा ।

फटिक–पु० दे० 'स्फटिक' ।

फट्टा–पु० चीरे हुए बाँसका लंबा टुकड़ा ।

फट्टी–स्त्री० पतला फट्टा ।

फड़–स्त्री० जुएका दाँव; जुआड़ियोंके जुआ खेलनेका स्थान, जुएका अड्डा; दुकानमें वह स्थान जहाँ बैठकर दुकानदार माल बेचता है; पंख आदिके हिलनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द; * दल, पंक्ति । पु० गाड़ीका हरसा; वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है, चरख । **–फड़**–स्त्री० दो या अधिक बार उत्पन्न 'फड़' शब्द, 'फड़' शब्दकी अनेक बार आवृत्ति । **–बाज़**–पु० जुआ खेलनेवाला, जुआड़ी । **–बाज़ी**–स्त्री० फड़बाजका काम, जुआ खेलना । **मु०–रखना,–लगाना**–दाँव लगाना ।

फड़क–स्त्री० फड़कनेकी क्रिया या भाव, स्पंदन, स्फुरण ।

फड़कन–स्त्री० दे० 'फड़क' ।

फड़कना–अ० क्रि० रुक-रुककर या अचानक चलायमान होना, थोड़ा-थोड़ा कंपित होना; शरीरके किसी अंग या भागका रुक-रुककर गतियुक्त होना या सिकुड़ना और फैलना, स्फुरित होना;हिलना-डुलना या गतियुक्त होना । **मु० फड़क उठना**–प्रसन्न होना ।

फड़काना–स० क्रि० किसीको फड़कनेमें प्रवृत्त करना; उत्सुकता उत्पन्न करना (ला०) ।

फड़नवीस–पु० मराठोंके शासन-प्रबंधमें एक उच्च पद ।

फड़फड़ाना–स०क्रि० किसी वस्तुसे 'फड़-फड़'शब्द उत्पन्न करना; पंख आदिको इस प्रकार हिलाना कि उससे 'फड़-फड़' शब्द उत्पन्न हो, फटफटाना । अ० क्रि० 'फड़-फड़' शब्द होना; छटपटाना; उत्सुक होना ।

फड़वाना–स० क्रि० किसीको फाड़नेमें प्रवृत्त करना, किसीसे फाड़नेका काम कराना ।

फड़िया–पु० फुटकर माल बेचनेवाला बनिया; जुएके अड्डेका मालिक, सभिक ।

फड़ी–स्त्री० ईंट, पत्थर आदिका एक गज चौड़ा, एक गज ऊँचा और तीस गज लंबा ढेर ।

फ.डुई, फ.डुही†–स्त्री० फरवाँ, लाई, छोटा फावड़ा ।

फण–पु० [सं०] साँपका फन; नासापुट, नथना । **–कर**–पु० साँप । **–धर**–पु० साँप; शिव ।**–धरधर**–पु०शिव । **–भृत्**–पु० साँप; नौकी संख्या । **–मंडल**–पु० साँपका फन जो फेंटी मारनेसे गोलाकार हो गया हो, कुंडलीकृत फण । **–मणि**–पु० सर्पके फनपर स्थित मणि ।

फणवान्(वत्)–पु० [सं०] सर्प ।

फणा–स्त्री० [सं०] दे० 'फण' । **–कर**–पु० सर्प ।**–धर**–पु० साँप; शिव ।

फणावान्(वत्)–पु० [सं०] सर्प ।

फणींद्र–पु० [सं०] शेषनाग; वासुकि; पतंजलि मुनि ।

फणी(णिन्)–पु० [सं०] सर्प; राहु; पतंजलि; राँगा या टीन । **–पति**–पु० बड़ा सर्प; शेष या वासुकि; पतंजलि ।

फणीश–पु० [सं०] दे० 'फणींद्र' ।

फ़तवा–पु० [अ०] किसी कर्मके उचित या अनुचित होनेके संबंधमें मुफ्ती या मुल्ला (धर्माचार्य) द्वारा शास्त्रके अनुसार दी गयी व्यवस्था ।

फ़तह–स्त्री० [अ०] विजय, जीत; सफलता, कामयाबी । **–नसीब,–मंद,–याब**–वि० जिसे विजय प्राप्त हुई हो, विजयी; सफल, कामयाब । **–नामा**–पु० जीतकी खुशीमें की जानेवाली रचना ।

फतिंगा–पु० कोई परदार कीड़ा, विशेषकर वह जो दीपक या प्रकाशपर झुकता है, पतंग, परवाना ।

फ़तीला–पु० [अ०] दीपकी बत्ती; रुईकी मोटी बत्ती; बंदूक या तोपमें दी जानेवाली बत्ती, पलीता ।

फतुही–स्त्री० दे० 'फ़तूही' ।

फतूर–पु० दे० 'फ़ुतूर' ।

फतूरिया–वि०, पु० दे० 'फ़ुतूरिया' ।

फतूह*–स्त्री० [अ० 'फ़ुतूह'–फ़तहका बहु०] विजय, जीत; लूटका माल ।

फ़तूही–स्त्री० [अ०]कमरतककी एक प्रकारकी बिना आस्तीनकी कुरती जिसमें सामनेकी ओर बटन या घुंडी लगायी जाती है ।

फते*–स्त्री० फतह, विजय ।

फतेह*–स्त्री० विजय, जीत ।

फदकना–अ० क्रि० 'फद-फद' शब्द करना; भात, रस आदिका पकते समय 'फद-फद' शब्द करना; * दे० 'फुदकना' ।

फदफदाना–अ० क्रि० शरीरमें अधिक फुंसियाँ या गरमीके दाने निकल आना; वृक्ष या पौधेमें बहुतसी शाखाएँ

या टहनियाँ निकल आना; † उबलते समय 'फद-फद' शब्द करना ।

फन–पु० साँपका सिर उस स्थितिमें जब वह फैलकर छत्रके आकारका हो गया हो; दे० 'फ़न' ।

फ़न, फ़न्न–पु० [अ०] गुण, हुनर; खूबी, विशेषता; विद्या, इल्म; जौहर, कौशल; कारीगरी; धोखा, फरेब, छल, चालाकी, मक्कारी । [**हर-फ़न-मौला**–हर काममें होशियार, प्रत्येक कार्यमें निपुण ।]

फनकना–अ० क्रि० 'फन-फन' शब्द करना; सनसनाहटके साथ चलना ।

फनगना†–अ० क्रि० कल्ला फूटना, पनपना ।

फनगा†–पु० फतिंगा; अंकुर, कल्ला ।

फनना†–अ० क्रि० कामका आरंभ होना, ठाना जाना ।

फनफनाना–अ० क्रि० 'फन-फन' शब्द करना; तेजीसे हिलना ।

फनस–पु० पनस, कटहल ।

फ़ना–स्त्री० [अ०] विनाश, अस्तित्व नष्ट होना, मिटना; मृत्यु, मौत; परमात्मा और जीवात्मा या उपास्य और उपासकका अभेद होना (सूफ़ी मत) । वि० नष्ट; मृत ।

फनाना–स० क्रि० आरंभ कराना; तैयार कराना ।

फ़निंग*–पु० सर्प, नाग ।

फनिंद–पु० दे० 'फणींद्र' ।

फनि*–पु० दे० 'फणी'; दे० 'फण' । **–धर**–पु० साँप । **–पति, –राज**–पु० दे० 'फणिपति' ।

फनिक, फनिग–पु० साँप; फतिंगा ।

फनी*–पु० दे० 'फणी' । स्त्री० दे० 'फण' ।

फनूस*–पु० दे० 'फ़ानूस' ।

फन्नी–स्त्री० पच्चर; कपड़ा बुननेका एक औजार, राछ ।

फपक–स्त्री० वृद्धि, बाढ़ ।

फफकना–अ० क्रि० रुक-रुककर रोना ।

फफदना†–अ० क्रि० गोबर आदिका विकारविशेषके कारण बढकर फैलना; दाद आदिका वृद्धिको प्राप्त होना या फैलना ।

फफसा†–पु० फेफड़ा । वि० जो भीतरसे खाली हो, पोला; स्वादरहित, फीका ।

फफूँद–स्त्री० भुकड़ी । **–विज्ञान**–पु० (माइकोलाजी) भुकड़ी लगनेके कारणों, निरोधक उपायों आदिपर सम्यक् रूपसे विचार करनेकी विद्या ।

फफूँदी*–स्त्री० सूतकी डोरी जिससे स्त्रियाँ साड़ी या धोतीकी गाँठ बाँधती हैं, नीवि, नारा; फल, लकड़ी आदिपर बरसातमें या सीलके कारण जमनेवाली काईकी तरहकी सफेद वस्तु, भुकड़ी ।

फफोला–पु० जलने, रगड़ खाने आदिसे शरीरपर होनेवाला उभार जिसके भीतर चेप या पानी भरा रहता है, छाला, झलका, आबला । **मु०–(दिलके) (फफोले) फोड़ना**–जली-कटी सुनाना ।

फबती–स्त्री० प्रसंगानुकूल उक्ति; ऐसी बात जो किसीपर ठीक-ठीक घटे, चुटीली बात । **मु०–उड़ाना या कसना**–चुटीली बात कहना, चुटकी लेना ।

फबन–स्त्री० फबनेका भाव; शोभा, सौंदर्य ।

फबना–अ० क्रि० शोभा देना, सजना, भला मालूम होना ।

फबाना–स० क्रि० ऐसे स्थानपर लगाना जहाँ सजे या सुंदर जान पड़े ।

फबि*–स्त्री० शोभा, सुंदरता, छवि ।

फबीला–वि० शोभा देनेवाला, सजनेवाला, सुंदर ।

फ़रंग, फ़रंज–पु० [फा०] दे० 'फ़िरंग' ।

फर–*पु० दे० 'फल'; दे० 'फड़'; बिछावन; युद्ध, रण,–'फरमें फते बुंदेलन पाई'–छत्र०; [सं०] फलक, ढाल ।

फरक–पु० दे० 'फ़र्क़ । * स्त्री० दे० 'फड़क' ।

फ़रक़–पु० [अ०] दे० 'फ़र्क़' ।

फरकन*–स्त्री० फड़कनेकी क्रिया या भाव, फड़कना ।

फरकना*–अ० क्रि० दे० 'फड़कना' ।

फरका*–पु० बँड़ेरपर रखा जानेवाला छप्पर; दरवाजेपर लगाया जानेवाला टट्टर–'चोरी करत उघारत फरको'–सू० ।

फरकाना*–स० क्रि० दे० 'फड़काना'; अलग करना ।

फरचा–वि० जो जूठा न हो, साफ, शुद्ध ।

फ़रजंद–पु० [फा०] बेटा ।

फ़रजंदी–स्त्री० [फा०] पुत्रभाव, बाप-बेटेका नाता ।

फ़रज–स्त्री० [अ०] दरार, शिगाफ; फैलाव । पु० दे० 'फ़र्ज़' ।

फ़रज़ानगी–स्त्री० [फा०] बुद्धिमानी ।

फ़रज़ाना–वि० [फा०] बुद्धिमान् ।

फ़रज़ीँ–पु० [फा०] शतरंजका वजीर जो सबसे महत्त्वका मोहरा होता है । **–बंद**–पु० पैदलके जोरपर पड़नेवाली वजीरकी शह; वजीरके जोरपर बैठा हुआ मोहरा । **मु०–बनाना**–पैदलका वजीरके खानेमें पहुँचकर वजीर बन जाना ।

फ़रज़ी–पु० दे० 'फ़रज़ीँ' । वि० 'फ़र्ज़ी' ।

फ़रद–स्त्री० दे० 'फ़र्द' ।

फ़रना*–अ० क्रि० दे० 'फलना' ।

फरफंद–पु० छल-कपट; फरेब, दाव-पेंच; नखरा ।

फरफंदी–वि० फरेबी, चालबाज ।

फ़र-फ़र–स्त्री० [फा०] जल्दी, तेजी । अ० जल्दी-जल्दी, धड़ाधड़ । **मु०–उड़ाना**–जल्दी-जल्दी पढ़ना ।

फरफराना–अ० क्रि० दे० 'फड़फड़ाना' ।

फरफुंदा*–पु० फतिंगा ।

फरमा–पु० [अं० 'फ्रेम'] ढाँचा; वह ढाँचा जिसपर मोची जूता बनाता है; [अं० 'फ़ार्म', फ़ार्मे'] कंपोज किया और चेसमें कसा हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आदिका एक बारमें छपा हुआ अंश, जुज । **मु०–देना**–चेसमें कसकर मैटरको छापनेके लिए तैयार कर देना ।

फ़रमाइश–स्त्री० [फा०] आज्ञा, आज्ञारूपमें कुछ माँगना; कोई चीज भेजनेकी आज्ञा (आर्डर) ।

फ़रमाइशी–वि० [फा०] जिसकी फरमाइश की गयी हो, फरमाइश करके बनवाया, मँगवाया हुआ; बढ़िया ।

फ़रमान–पु० [फा०] आज्ञा; राजकीय आज्ञा या आज्ञापत्र; अस्थायी कानूनके रूपमें निकली हुई राजकीय आज्ञा (आर्डिनेंस) । **(फ़रमाँ)गुज़ार**–पु० हाकिम, बादशाह । वि० आज्ञा करनेवाला । **–बरदार**–वि० अधीन, आज्ञाकारी, सेवक । **–बरदारी**–स्त्री० फरमाँबरदार होनेका

भाव।

फ़रमाना–स० क्रि० कहना, आज्ञा करना (आदरार्थक प्रयोग)।

फ़रयाद–स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फरलांग–पु० [अं०] दूरीकी एक माप, २२० गज।

फरवी–स्त्री० भूना हुआ चावल, लाई।

फ़रश–पु० दे० 'फ़र्श'। **–बंद**–पु० फर्शके रूपमें बना हुआ (समतल) ऊँचा स्थान।

फ़रशी–स्त्री० [फा०] तंग मुँह और चौड़े पेंदेका बरतन जिसके मुँहपर हुक्केका नैचा बैठाया जाता है, गुड़गुड़ी; बंदूकका एक पुरजा जिसमें गज रखते हैं। वि० फर्शका; फर्श-संबंधी। **–जूता**–पु० फर्शपर या घरमें पहननेका जूता। **–पंखा**–पु० छतमें लटकानेका पंखा। **–सलाम**–पु० वह सलाम जिसमें सिर फर्शके साथ लग जाय, बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम।

फरस–पु० दे० 'फ़र्श'; * दे० 'फरसा'।

फरसा–पु० फावड़ा; परशु।

फरसी–स्त्री०, वि० दे० 'फ़रशी'।

फ़रहंग–पु० [फा०] कोश; टीका, व्याख्या, कुंजी।

फ़रहत–स्त्री० [अ०] प्रसन्नता, प्रफुल्लता। **–बख़्श**–वि० फरहत देनेवाला।

फरहद–पु० एक वृक्ष जिसकी गणना पंच देवतरुओंमें है, पारिभद्र।

फरहरना*–अ० क्रि० फड़कना; फहराना।

फरहरा–पु० पताका। वि० अलग-अलग; शुद्ध; प्रसन्न।

फरहराना–अ० क्रि० दे० 'फरहरना'।

फरहरी*–स्त्री० फल; जंगली फल।

फ़रहाद–पु० [फा०] 'शीरीँ-फ़रहाद' कहानीका नायक जिसने शीरीँसे मिलनेके लिए कोहे बेसितूनसे शीरीँके महलतक नहर खोदकर लानेकी शर्त पूरी की।

फरा†–पु० भापसे पकाया हुआ पीठा।

फराक*–वि० दे० 'फ़राख़'। पु० लंबी-चौड़ी खुली जगह, मैदान; दे० 'फ़ाक'।

फराकत*–वि० दे० 'फ़राख़'। स्त्री० दे० 'फ़राग़त'।

फ़राख़–वि० [फा०] चौड़ा, विस्तृत, कुशादा। **–दस्त, –दामन**–वि० धनी; उदार। **–हौसला**–वि० ऊँची हिम्मतवाला; धैर्यवान्।

फ़राख़ी–स्त्री० [फा०] फराख होना, फैलाव; खुशहाली।

फ़राग़त–स्त्री० [अ०] छुटकारा; बेफिक्री; मलत्याग। **–ख़ाना**–पु० शौचालय, पाखाना। **मु०–जाना**–शौच जाना। **–पाना**–छुटकारा पाना, फुरसत पाना।

फ़रामोश–वि० [फा०] भूला हुआ, विस्मृत।

फ़रामोशी–स्त्री० [फा०] विस्मृति, भूल-चूक।

फरार*–पु० फलाहार; फैलाव।

फ़रार–वि० भागा हुआ। पु० [अ०] भागना, गायब होना।

फ़रारी–वि० [अ०] भागा हुआ। पु० अपराधी जो भाग गया हो या भागता फिरे।

फरासीसी–पु० फ्रांसका रहनेवाला। वि० फ्रांसका। स्त्री० फ्रांसकी भाषा, फ्रेंच।

फरिया–स्त्री० एक तरहका लहँगा; ओढ़नी। पु० मिट्टीकी नाँद।

फ़रियाद–स्त्री० [फा०] जुल्मकी शिकायत, अन्याय-अत्याचारसे बचानेकी प्रार्थना, दुहाई; नालिश।

फ़रियादी–वि० [फा०] फरियाद, नालिश करनेवाला। पु० अभियोक्ता, मुस्तगीस। **मु०–होना**–नालिश-फरियाद करना।

फरियाना†–स० क्रि० चावल आदिका कचरा धोकर साफ करना; निर्णय करना। अ० क्रि० साफ होना; निर्णीत होना।

फ़रिश्ता–पु० [फा०] दे० 'फ़िरिश्ता'।

फरी–स्त्री० चमड़ेकी ढाल जिसपर गतकेकी मार रोकी जाती है–'लैके खड्ग फरी गहि हाथा'–सबलसिंह; फड़।

फ़रीक़–पु० [अ०] जुदा करनेवाला; जमात, पक्ष; मुकदमेमें वादी, प्रतिवादी या वादी-प्रतिवादी पक्षका कोई व्यक्ति। **–औवल**–पु० मुद्दई। **–बंदी**–स्त्री० गुटबंदी, तरफदारी। **–सानी**–पु० मुद्दालेह।

फ़रीक़ैन–पु० [अ०] वादी-प्रतिवादी दोनों, उभयपक्ष (द्विवचन)।

फरुई–स्त्री० दे० 'फरवी'।

फरुहरी–स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्पंदन।

फरुही†–स्त्री० छोटा फावड़ा; खेतीके काम आनेवाला एक औजार; दे० 'फरवी'।

फरेँदा†–पु० दे० 'फलेंदा'।

फ़रेब–पु० [फा०] छल, धोखा। वि० (समासके अंतमें) ठगने, लुभानेवाला (दिलफ़रेब, नज़रफ़रेब)।

फरेबिया†–वि० दे० 'फ़रेबी'।

फ़रेबी–वि० [फा०] फरेब करने, धोखा देनेवाला।

फरेरा*–पु० झंडा, पताका।

फरेरी†–स्त्री० दे० 'फरहरी'।

फ़रोख़्त–स्त्री० [फा०] बिक्री, बेची।

फ़रोख़्ता–वि० [फा०] बेचा हुआ, बिका हुआ।

फ़रोश–वि० [फा०] (समासमें) बेचनेवाला (मेवाफ़रोश)।

फ़र्क़–पु० [अ०] अंतर, दूरी; बिलगाव, भेद, भिन्नता।

फ़र्ज़–पु० [अ०] ईश्वरादिष्ट अवश्य कर्तव्य कर्म, (मुसल०) शास्त्रविहित कर्म; कर्तव्य; जिम्मेदारी; कल्पना। **मु०–अदा करना**–कर्तव्यका पालन करना। **–करना**–मानना, कल्पना करना।

फ़र्ज़ी–वि० [अ०] फर्ज किया हुआ, खयाली, काल्पनिक।

फ़र्द–वि० [अ०] एक, अकेला; बेजोड़। स्त्री० सूची, फिहरिस्त; निमंत्रितोंकी सूची, बंद; चिट्ठा; चादर, शाल; रजाईका ऊपरका पल्ला। पु० व्यक्ति, अकेला आदमी; गंजीफेका वरक। **–जुर्म**–स्त्री० वह कागज जिसपर अभियुक्तका अपराध और दफा लिखी जाती है, अभियोगसूची।

फ़र्दन्-फ़र्दन्–अ० अलग-अलग, हर आदमीसे।

फ़र्दी–वि० जिसमें एक हो। स्त्री० फर्द, सूची।

फ़र्राटा–पु० तेजी। **मु०–भरना, –मारना**–तेजीसे दौड़ना।

फ़र्राश–पु० [अ०] फर्श बिछानेवाला; खेमा लगानेवाला; झाड़ू देनेवाला।

फ़र्राशी–स्त्री० फ़र्राशका काम। **–पंखा**–पु० छतका पंखा।

फ़र्श–पु० [अ०] वह चीज जो जमीनपर बिछायी जाय

(दरी, कालीन, जाजिम इ०); बिछावन; धरातल; कंकर आदि कूटकर पक्की की हुई जमीन, गच।

फर्शी–वि० फर्शका। स्त्री० दे० 'फ़रशी'। **–जूता**–पु० फर्श पर या घरमें पहननेका जूता; स्लीपर, चप्पल। **–सलाम**–पु० वह सलाम जिसमें सिर फर्शके साथ लग जाय, बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम। **–हुक़्क़ा**–पु० चौड़े पेंदेका हुक्का।

फलंक*–पु० फलाँग; आकाश।

फल–पु० [सं०] पेड़-पौधोंका गूदेदार बीजकोश; शस्य; संतान; कर्मपरिणाम, नतीजा; बदला; कर्मसे प्राप्त होनेवाला सुख-दुःख-रूप भोग; ब्याज, नफा; गणितक्रियासे प्राप्त अंक; उद्देश्य, प्रयोजन; तीर-बरछी आदिका अग्रभाग; तलवार आदिकी धार; ढाल; फाल; आर्तव; जायफल; गिरी। **–कंटक**–पु० कटहल। **–काम**–वि० फलकी कामना करनेवाला। **–ग्रह,–ग्राही(हिन्)**–वि० फल ग्रहण करने, लाभ उठानेवाला। **–दाता(तृ),–प्रद**–वि० फल देनेवाला; लाभदायक। **–दान**–पु० ब्याह पक्का करनेके लिए फल, रुपये आदि देनेकी रस्म। **–दार**–वि० [हिं०] फलनेवाला; फलयुक्त। **–परिणति**–स्त्री०, **–परिणाम,–पाक**–पु० फलका अच्छी तरह पक जाना। **–परिरक्षण**–पु० (प्रिजर्वेशन ऑफ फ्रूट्स) रासायनिक साधनों या अन्य उपायों द्वारा फलोंको क्षतिग्रस्त होने, सड़ने आदिसे बचाना। **–पुच्छ**–पु० गाजर-शलजम आदिके वर्गकी वनस्पति। **–प्राप्ति**–स्त्री० अभीष्ट-सिद्धि, सफलता। **–फलहरी,–फलारी**–स्त्री० [हिं०] कई तरहके फल, मेवे। **–फूल**–पु० [हिं०] फल और फूल। **–भाक्(ज्),–भागी(गिन्)**–वि० फल भोगने या पानेवाला। **–भुक्(ज्)**–वि० फलभोजी। पु० बंदर। **–भूमि**–स्त्री० कर्मफल भोगनेका स्थान (स्वर्ग या नरक)। **–भोग**–पु० कर्मफल (सुख-दुःख)का भोग; लाभादिका अधिकार। **–भृत्**–वि० जिसमें फल लग रहे हों, फलोंसे भरा हुआ। **–योग**–पु० फलप्राप्ति; वेतन; पुरस्कार; नाटकमें नायककी उद्देश्यसिद्धिका स्थान। **–राज**–पु० तरबूज। **–लक्षणा**–स्त्री० प्रयोजनवती लक्षणा (सा०)। **–वंध्य**–वि० (वृक्ष) जिसमें फल न लगे। **–वर्ति**–स्त्री० घावमें भरनेकी मोटी बत्ती। **–वृक्ष**–पु० फलनेवाला वृक्ष। **–वृक्षक**–पु० कटहल। **–शाक**–पु० तरकारीके काम आनेवाला फल, शाकके ६ भेदोंमेंसे एक। **–श्रेष्ठ**–पु० आम। **–सिद्धि**–स्त्री० फल-प्राप्ति। **–हारी**–वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो। **–हीन**–वि० फलरहित, निष्फल। **मु०–आना**–(पेड़में) फल लगना, फलना। **–खाना**–श्रम, सत्कर्मका फल भोगना। **–पाना**–नतीजा मिलना, कियेकी सजा मिलना। **–लाना**–फल लगना, फलना; (कर्मका) फलजनक होना।

फलक–पु० [सं०] लकड़ीका तख्ता, पट्टी; ताँबे, हाथीदाँत, दफ्ती आदिका पट्ट जो लेख या चित्रके आधारका काम दे; चौकी; नितंब; हथेली; फल; परिणाम; लाभ; आर्तव; कमलका बीजकोष; ललाटकी अस्थि; धोबीका पाट; ढाल; फल, तीरकी गाँसी।

फ़लक–पु० [अ०] आकाश; * स्वर्ग

फलकना*–अ० क्रि० छलकना; फरकना।

फलका–पु० फफोला, झलका।

फलतः(तस्)–अ० [सं०] फलस्वरूप, इसलिए।

फलना–अ० क्रि० (पेड़में) फल आना, फलयुक्त होना; फल देना, फलजनक होना; संतानवती होना; बहुतसे दानों या फुंसियोंका निकल आना। **मु०–फूलना**–फल युक्त होना; बालबच्चोंवाला होना, सुख-सौभाग्ययुक्त होना।

फलफंद*–पु० दे० 'फरफंद'।

फलवान्(वत्)–वि० [सं०] फलयुक्त; फल देने या उत्पन्न करनेवाला; जिसमें नाटकका फल हो। पु० फलदार वृक्ष।

फलश, फलस–पु० [सं०] कटहल।

फलसफा–पु० [अ०] तर्कविद्या, दर्शनशास्त्र; ज्ञान, विद्या।

फलाँ–वि० [अ०] कोई आदिष्ट (व्यक्ति या वस्तु), अमुक। पु० लिंग। **–फलाँ**–वि० अमुक-अमुक।

फलाँग*–स्त्री० छलाँग; छलाँगमें तै की जानेवाली दूरी।

फलाँगना*–अ० क्रि० कूदना, छलाँग मारना।

फलाकना–स० क्रि० छलाँग मारकर पार करना।

फलाकांक्षा–स्त्री० [सं०] फलकी कामना।

फलागम–पु० [सं०] फल आना; फल आनेका काल; कथावस्तुकी वह अवस्था जिसमें फलकी प्राप्ति होती है (ना०); शरद् ऋतु।

फलाढ्य–वि० [सं०] फलोंसे भरा हुआ।

फलाढ्या–स्त्री० [सं०] जंगली केला।

फलादन–वि० [सं०[फल-भक्षक। पु० तोता।

फलादेश–पु० [सं०] फल कहना, विशेषतः ग्रहादिका।

फलाना–वि० दे० 'फलाँ'। स० क्रि० फलनेका कारण या प्रेरक होना।

फलानुमेय–वि० [सं०] जो फलसे जाना जा सके।

फलान्वेषी(षिन्)–वि० [सं०] फलका आकांक्षी।

फलापेक्षा–स्त्री० [सं०] फलकी अपेक्षा, फलाशा।

फलाफल–पु० [सं०] कर्म-विशेषका शुभ-अशुभ फल।

फलाम्ल–पु० [सं०] खट्टे फलवाला पेड़; अम्लवेत; इमली। **–पंचक**–पु० बेर, अनार, इमली, अम्लवेत और बिजौराका समाहार।

फलारी–पु० फलाहार।

फलाराम–पु० [सं०] फलोंका बाग।

फलार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] फलकी कामना करनेवाला।

फ़लालैन–पु० [अं० 'फ्लैनेल'] एक तरहका मुलायम ऊनी कपड़ा।

फलाशी(शिन्)–वि०, पु० [सं०] फल खाकर रहनेवाला, फलाहारी।

फलासव–पु० [सं०] दाख, खजूर आदिसे बनाया हुआ आसव।

फलाहार–पु० [सं०] फल-मूलका आहार।

फलाहारी(रिन्)–वि० [सं०] फलाहार करनेवाला।

फलाहारी–वि० दूध आदिसे निर्मित, अन्न-रहित (मिठाई आदि)।

फलित–वि० [सं०] फला हुआ, सफल; फलीभूत। **–ज्योतिष**–पु० ज्योतिषका वह अंग जो ग्रह-नक्षत्रोंकी गतिसे शुभाशुभ अदृष्ट बताता है।

फली–स्त्री० लंबोतरे पतले फल जिनमें एक साथ कई दाने या बीज होते हैं, मटर, सेम, केवाँच आदि ।

फलीकृत–वि० [सं०] माँड़ा या कूटा हुआ; फटककर साफ किया हुआ ।

फलीता–पु० [अ० 'फ़तीला'] बत्ती; तावीजकी बत्ती जिसकी धूनी प्रेतबाधावाले रोगीको देते हैं; वह बत्ती जिससे बंदूक या तोपकी बारूदको आग देते हैं । **मु०–दिखाना**–आग लगाना; बंदूक या तोपको दागना । **–सुँघाना**–तावीज या यंत्रकी धूनी देना ।

फलीभूत–वि० [सं०] फलरूपमें परिणत, फलित, सफल ।

फलैंदा–पु० जामुनका एक भेद जिसके फल अधिक गूदेदार और मीठे होते हैं ।

फलेंद्र–पु० [सं०] बड़ा जामुन, फलैंदा ।

फलोत्पत्ति–स्त्री० [सं०] फलकी उत्पत्ति; लाभ ।

फलोदय–पु० [सं०] फलोत्पत्ति; लाभ; हर्ष; दंड; स्वर्ग ।

फलोद्भव–वि० [सं०] जो फलसे उत्पन्न हुआ हो ।

फलोपजीवी(विन्)–वि०, पु० [सं०] फलका व्यवसाय करनेवाला ।

फल्गु–वि० [सं०] साररहित; निरर्थक; क्षुद्र; शक्तिहीन । स्त्री० वह नदी जिसके किनारे गया आबाद है ।

फसकड़ा†–पु० चूतड़ टेककर और टाँगें फैलाकर बैठनेका ढंग । **मु०–मारना**–उक्त प्रकारसे बैठना ।

फसड्डी*–वि० दे० 'फिसड्डी' ।

फसल–स्त्री० खेतीकी पैदावार, उपज; किसी चीजके उपजने, फलनेका काल, मौसम । **–की चीज़**–ऋतुविशेषमें पैदा होनेवाले फल, शाक आदि ।

फसली–वि० फसलका, मौसमी । पु० हैजा । **–कौआ**–पु० पहाड़ी कौआ । वि० मतलबका यार । **–बुख़ार**–पु० मौसमी बुखार, जूड़ी, मलेरिया । **–सन्,–साल**–पु० अकबर द्वारा हिजरी सन्‌में कुछ परिवर्तन कर चलाया हुआ सन् जिसका उपयोग जमीन, लगान, मालगुजारी आदिका हिसाब रखनेमें किया जाता है ।

फ़साद–पु० [अ०] बिगाड़, खराबी; बखेड़ा; झगड़ा, लड़ाई ।

फ़सादी–वि० [अ०] फसाद करनेवाला, उपद्रवी ।

फ़साना–पु० [फ़ा०] कहानी, आख्यायिका । **–नवीस,–निगार**–पु० कहानीकार ।

फ़स्द–स्त्री० [अ०] रगको काट या छेदकर रक्त निकालना । **मु०–खोलना,–लेना**–रगपर नश्तर देना ।

फ़स्ल–स्त्री० [अ०] खेतीकी पैदावार; किसी चीजके उपजनेका काल; अंतर, बिलगाव; परदा; पुस्तकका परिच्छेद ।

फ़स्ली–वि०, पु० [अ०] दे० 'फसली' ।

फ़स्साद–पु० [अ०] फस्द खोलनेवाला, नश्तर लगानेवाला ।

फहरना–अ० क्रि० फहराना, हवामें उड़ना ।

फहरान–स्त्री० फहरानेका भाव ।

फहराना–अ० क्रि० हवामें हिलना, झोंके खाना, लहराना (पताका फहराना) । स० क्रि० किसी चीजको इस तरह खड़ा करना कि हवामें हिले–लहराये, उड़ाना ।

फहरानि*–स्त्री० दे० 'फहरान' ।

फाँक–स्त्री० फल आदिका चाकू आदिसे लंबाईमें तराशा हुआ टुकड़ा, खंड; नारंगी, चकोतरे आदिका प्राकृतिक रूपमें विभाजित अंश जो छिलकेके अंदर होता है ।

फाँकना–स० क्रि० चूर या दानेकी शकलवाली चीजको हाथको होंठसे सटाये बिना मुँहमें डाल लेना, फंका मारना ।

फाँका–पु० फाँकनेकी क्रिया, फंका; उतनी चीज जितनी एक बारमें फाँकी जाय; * फाँक ।

फाँकी†–स्त्री० दे० 'फाँक'; फाँकनेकी चीज ।

फाँग, फाँगी*–स्त्री० एक तरहका साग ।

फाँड़–स्त्री० दे० 'फाँड़ा'; * कमर–'फाँड़े सोहै गुजराती फेंटा'–ग्राम० ।

फाँड़ा†–पु० धोतीका कमरमें बाँधा हुआ भाग, फेंटा । **मु०–पकड़ना**–फेंटा पकड़कर भागनेसे रोकना; किसी स्त्रीका किसी पुरुषको भरण-पोषणके लिए जिम्मेदार ठहराना । **–बाँधना**–कमर कसना, तैयार होना ।

फाँद–स्त्री० उछाल, छलाँग; फंदा, जाल ।

फाँदना–अ० क्रि० उछलना, छलाँग भरना । स० क्रि० कूदकर लाँघना; * फंदेमें फाँसना ।

फाँदा†–पु० फंदा ।

फाँस–स्त्री० पाश, फंदा; बाँस आदिका कड़ा रेशा जो काँटेकी तरह चुभ जाय, किरिच; मनमें चुभने-खटकनेवाली बात (चुभना, निकलना, निकालना); बाँस आदिकी पतली तीली । **मु०–निकलना**–काँटा निकलना; चित्तमें चुभनेवाली वस्तुका दूर होना ।

फाँसना–स० क्रि० फंदेमें कसना (रस्सीमें डोल); फंदेमें फँसाना; दाँव-पेंचमें बाँधना; बसमें, हाथमें करना ।

फाँसी–स्त्री० रस्सीका फंदा जिससे गला घुटकर जान निकल जाय; वह टिकटिकी या फंदा जिसपर प्राणदंड पाये हुए अपराधीको लटकाते हैं; इस रीतिसे दिया जानेवाला प्राणदंड । **मु०–चढ़ना**–फाँसी चढ़ाया जाना । **–चढ़ाना,–देना**–फंदेसे गला घोंटकर मौतकी सजा देना । **–पड़ना**–फाँसीकी सज़ा पाना । **–लगाना**–फंदेसे गला कसना ।

फ़ाइल–स्त्री० [अं०] नुकीला तार जिसपर जरूरी कागज नत्थी किये जाते हैं; सिलसिलेवार रखे हुए कागज, मिसिल; अखबार आदिके सिलसिलेसे नत्थी किये हुए अंक । **मु०–करना**–नत्थी करना; मिसिलमें शामिल करना ।

फ़ाक़ा–पु० [अ०] भूखा रहना, उपवास, अनाहार । **–कश**–वि० फाका करनेवाला, क्षुधापीड़ित । **–कशी**–स्त्री० भूखों मरना, लगातार कई दिनोंतक अन्न न मिलना । **(फ़ाक़े)मस्त**–वि० मुफलिसीमें भी मस्त रहने, चिंता-परवाह न करनेवाला । **–मस्ती**–स्त्री० तंगदस्तीकी हालतमें भी मस्त रहना । **मु० (फ़ाक़ों)का मारा**–जो फाके करते-करते दुबला, कमजोर हो गया हो । **–मरना**–भूखों मरना ।

फ़ाख़ताई–वि० फाखता(पेंडुकी)के रंगका, सुर्खीमायल, खाकी रंगका । पु० सुर्खीमायल, खाकी रंग ।

फ़ाख़ता–स्त्री० [अ०] पेंडकी, पंडुक; कुमरी ।

फाग–पु० फागुनमें होनेवाला रागरंग, होली; फागुनमें गाया जानेवाला गीत ।

फागुन–पु० माघके बाद आनेवाला महीना जिसमें होली होती है, फाल्गुन ।

फागुनी–वि० फागुनका ।

फ़ाज़िल-वि० [अ०] बढ़ा हुआ, आवश्यकतासे अधिक; हिसाबसे बढ़ा या खर्चसे बचा हुआ; विद्वान्, गुणी। **-बाक़ी**-स्त्री० देने-पावने या आमद-खर्चके हिसाबके बाद निकलने या फाजिल रहनेवाली रकम।

फाटक-पु० बड़ा दरवाजा, सिंहद्वार; तोरण; †मवेशीखाना, काँजीहौस;* फटकन-'फाटक देकर हाटक माँगत'-सू०। **-दार**-पु० काँजी हाउसका प्रबंधक।

फाटका-पु० सट्टा, सट्टेका जुआ। **(फाटके)बाज**-पु० सट्टेबाज।

फाटना*-अ० क्रि० दे० 'फटना'।

फाड़न-पु० फाड़नेसे निकला हुआ टुकड़ा; छेनेका पानी।

फाड़ना-स० क्रि० चीरना, विदीर्ण करना; टुकड़े करना; फैलाना, बाना, (आँख, मुँह); खटाई आदिके योगसे दूधके जलीय और ठोस भागको अलग-अलग कर देना। **फाड़खाऊ**-वि० फाड़खानेवाला, बिगड़ैल। **मु० फाड़ खाना**-भेड़िये आदिका किसीको चीरकर खा जाना; झल्लाना, काटने दौड़ना।

फ़ातिमा-स्त्री० [अ०] मुहम्मदकी बेटी जो अलीको ब्याही गयी, हसन-हुसैनकी माता।

फ़ातिहा-स्त्री०, पु० [अ०] आरंभ; कुरानकी पहली सूरत; परलोकगत आत्माकी सद्गतिके लिए सूरए फातिहा, दरूद आदि पढ़े जानेकी रस्म। **-ख़्वानी**-स्त्री० फातिहा पढ़नेकी रस्म। **मु०-पढ़ना**-निराश होना।

फ़ादर-पु० [अं०] पिता; पादरियोंकी उपाधि।

फानना-स० क्रि० (रुई) धुनना; † किसी कामको शुरू करना।

फ़ानी-वि० [अ०] फना होनेवाला, मरने-मिटनेवाला, नाशवान्।

फ़ानूस-पु० [फ़ा०] एक तरहका शमादान जिसपर बारीक कपड़े या कागजका ग्लोबसा बना होता है, एक तरहका बड़ा कंदील; शीशेका गिलास जिसमें मोमबत्ती जलायी जाती है।

फाफुंदा*-पु० फतिंगा।

फाब*-स्त्री० फबन, शोभा।

फाबना*-अ० क्रि० दे० 'फबना'।

फायदा-पु० [अ०] लाभ, नफा; प्राप्ति; प्रयोजनकी सिद्धि; नतीजा; गुण। **-(दे)मंद**-वि० लाभजनक; गुणकारी।

फाया-पु० दे० 'फाहा'।

फार*-पु० दे० 'फाल'।

फारना*-स० क्रि० दे० 'फाड़ना'।

फ़ारम-पु० दे० 'फ़ार्म'।

फारस-पु० [अ०] ईरान, पारस।

फ़ारसी-स्त्री० फारसकी भाषा। वि० फारसका। पु० फारसका रहनेवाला, ईरानी। **-दाँ**-वि० फारसी पढ़ा हुआ।

फ़ारिग़-वि० [अ०] जो फरागत हो चुका हो, कार्यसे निवृत्त, निश्चिंत। **मु०-होना**-निवृत्त होना; शौच जाना।

फ़ार्म-पु० [अं०] आकृति; नकशा, नमूना; साँचा; दर्खास्त आदिका छपा हुआ नमूना; कंपोज किया और चेसमें कसा हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आदिका एक बारमें छपा हुआ अंश, जुज; बड़े रकबेका खेत, खासकर जिसमें वैज्ञानिक ढंगसे खेती की जाय।

फाल-स्त्री० कटी हुई सुपारी। पु० डग; एक डगका फासला; [सं०] हलकी अँकड़ीमें लगाया जानेवाला नुकीला लोहा जिससे जमीन खुदती है, कुसी; एक दिव्य या दैवी परीक्षा; माँगकी पट्टी, सीमंत भाग; गुलदस्ता; एक तरहका फावड़ा; ललाट; सूती वस्त्र; जोती हुई जमीन। वि० सूती। **-कृष्ट**-वि० जुता हुआ।

फ़ालतू-वि० आवश्यकतासे अधिक, फाजिल; बेकार, निकम्मा।

फालसई-वि० फालसेके रंगका। पु० फालसेके रंगसे मिलता हुआ रंग।

फालसा-पु० [फ़ा०] गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक छोटा फल जिसके खट्टा (शर्बती) और मीठा (शकरी) दो भेद होते हैं।

फ़ालिज-पु० [अ०] पक्षाघात रोग, आधे अंगका सुन्न हो जाना, लकवा।

फ़ालूदा-पु० [फ़ा०] एक तरहकी सेवई जो मैदेके बारीक टुकड़े दूध, शकरमें डालकर तैयार की जाती है।

फाल्गुन-पु० [सं०] फागुनका महीना; अर्जुन; अर्जुन वृक्ष।

फाल्गुनी-स्त्री० [सं०] फाल्गुनकी पूर्णिमा; पूर्वा फाल्गुनी या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा-पु० चौड़े फलकी कुदाल, बेलचा। **-(ड़े)से दाँत**-चौड़े, बदशकल दाँत। **मु०-बजाना**-खोदकर गिराना, ढाना।

फावड़ी-स्त्री० छोटा फावड़ा; काठकी कुदाल जिससे घोड़ेकी लीद आदि हटाते हैं।

फ़ाश-वि० [फ़ा०] खुला हुआ, प्रकट, सरीह। **मु० (परदा)-करना**-गुप्त बात प्रकट कर देना।

फासफरस-पु० [अं०] एक ज्वलनशील मौलिक पदार्थ जो साधारण तापमानमें खुला रखनेसे धीरे-धीरे जलता और अँधेरेमें दीप्तिमान् दिखाई देता है।

फासला-पु० दे० 'फ़ासिला'।

फ़ासिद-वि० [अ०] फसाद करनेवाला, खराबी, बिगाड़ पैदा करनेवाला, बुरा, खोटा।

फ़ासिला-पु० [अ०] दूरी, अंतर।

फाहा-पु० घी-तेल आदिमें तर की हुई रुई या कपड़ा; मरहम चुपड़ी हुई पट्टी।

फ़ाहिशा-स्त्री० [अ०] दुश्चरित्र स्त्री, पुंश्चली।

फिँकरना†-अ० क्रि० गीदड़का बोलना।

फिँकवाना-स० क्रि० फेंकनेका काम दूसरेसे कराना।

फ़िकर-स्त्री० दे० 'फ़िक्र'।

फ़िक़रा-पु० [अ०] उद्देश्य-विधेययुक्त पदसमूह, वाक्य, जुमला; रीढ़की हड्डी; फरेबकी बात, चकमा, झाँसा। **-बंदी**-स्त्री० तुकबंदी। **(फ़िक़रे)बाज़**-वि० चकमा देनेवाला, धोखेबाज। **-बाज़ी**-स्त्री० चकमा देना, धोखेबाजी। **मु० (फ़िक़रे)जड़ना**-फबती, आवाजा कसना। **-जोड़ना**-झूठी बात बनाकर कहना।

फिकवाना-स० क्रि० दे० 'फिँकवाना'।

फिकैत-पु० गतका-फरी, पटा-बनेठीका खिलाड़ी, पटेबाज।

फिकैती-स्त्री० गतके-पटे आदिकी कुशलता, पटेबाजी।

फ़िक्र-स्त्री० [अ०] सोच, चिंता; अंदेशा; काव्य-रचनाके लिए किया जानेवाला चिंतन; परवाह; यत्न। **-मंद**-वि० जिसे किसी बातकी चिंता लगी हो, चिंतित।

फिटकरी-स्त्री० एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिककी तरह सफेद होता और दवा, रँगाई आदिके काम आता है, स्फटिक।

फिटकार-स्त्री० लानत, धिक्कार; शाप। मु०(मुँह या चेहरेपर)**-बरसना**-चेहरेका मलिन, उतरा हुआ होना।

फिटकारना-स० क्रि० धिक्कार-फटकार बताना।

फिटकिरी-स्त्री० दे० 'फिटकरी'।

फिटकी-स्त्री० छींटा; कपड़ेकी बुनावटमें निकले हुए फुचरे; * फिटकरी।

फिटाना*-स० फि० हटा देना, भगा देना।

फिट्टा-वि० (फटकार, अपमानसे) उतरा, खिसियाया हुआ (चेहरा)।

फ़ितरत-स्त्री०[अ०]स्वभाव;पैदाइश; सृष्टि; चाल; चालाकी।

फ़ितरतन्-अ० [अ०] प्रकृतिसे, स्वभावतः।

फ़ितरती-वि० [अ०] प्रकृतिगत, पैदाइशी (इस अर्थमें अब फ़ितरी चलता है); शरारती, चालबाज़।

फ़ितरी-वि० [अ०] पैदाइशी, प्रकृतिगत; प्राकृतिक।

फ़ितूर-पु० दे० 'फ़ुतूर'।

फितूरी-वि० दे० 'फ़ुतूरी'।

फिद्वी-वि० दे० 'फ़िद्वी'।

फ़िदा-वि० [अ०] मुग्ध, आसक्त; किसीपर जान देनेवाला। मु०**-होना**-आशिक होना; किसीके लिए जान देना।

फ़िदाई-वि० [अ०] प्राण निछावर करनेवाला।

फ़िद्वी-वि० [अ०] फिदा होनेवाला; किसीके लिए जान देनेवाला। पु० सेवक, दास (प्रार्थना-पत्रमें)।

फिनिया*-स्त्री० कानमें पहननेका एक गहना।

फिफरी*-स्त्री० पपड़ी-'उड़िगे बदनकी लालिमा फिफरी परी अधरान'-रघु०।

फ़िरंग-पु० यूरोप; यूरोपीय; गरमीकी बीमारी। * स्त्री० विलायती तलवार-'चमकती चपला न फेरत फिरंगें भट' भू०।**-रोग**-पु० (वेनेरियल डिज़ीज) दे०'रतिज रोग'।

फ़िरंगिस्तान-पु० यूरोप।

फ़िरंगी-पु० यूरोपियन। वि० यूरोपीय, विलायती। स्त्री० विलायती तलवार।

फिरंट-वि० फिरा हुआ, विरुद्ध; नाराज।

फिर-अ० पीछे, अनंतर; दूसरे समय; तब; पुनः, दोबारा; इसके अलावा। **-फिर**-अ० बार-बार। **-भी**-अ० तब भी।

फिरकना-अ० क्रि० थिरकना, नाचना।

फ़िरक़ा-पु० [अ०] जमात, समुदाय; जाति, संप्रदाय। **-बंदी**-स्त्री० जमात बनाना, गरोहबंदी। **-वार**-अ० फिरके, संप्रदायके अनुसार। **-वाराना**-वि० सांप्रदायिक।

फिरकी-स्त्री० चकई; फिरहरी; तकलेमें लगा हुआ चमड़ेका टुकड़ा; मालखंभकी एक कसरत; कुश्तीका एक पेंच; धागा लपेटनेकी रील।

फिरकैयाँ*-स्त्री० चक्कर।

फिरगाना*-पु० यूरोप-निवासी; अंग्रेज।

फिरता-वि० वापस। पु० वापसी; अस्वीकार।

फिरना-अ० क्रि० कभी इधर, कभी उधर जाना, घूमना, भ्रमण करना; चक्कर खाना; मंडलाकार घूमना; लौटना, पलटना, मुड़ना; बदलना; मुकरना; लौटाया जाना, फिराया जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; फेरा या चलाया जाना (छुरी फिरना): पोता जाना। **फिरकर**-मुड़कर पलटकर।

फ़िरनी-स्त्री० [फा०] पिसे हुए चावलकी खीर।

फिरवाना-स० क्रि० फिराने या फेरनेका काम दूसरेसे कराना।

फिराऊ-वि० जो फिरता हो सके, जाकड़ (माल)।

फिराक†-पु० फेर, चिंता; टोह।

फ़िराक़-पु० [अ०] वियोग, जुदाई। (**फ़िराक़े**)**यार**-पु० प्रियतम, प्रेमपात्रसे बिछोह।

फ़िराक़िया-वि० [अ०] वियोगात्मक, जिसका विषय वियोग हो।**-नज़्म**-स्त्री० वह काव्य जिसमें विरहका वर्णन हो।

फिराद, फिरादि*-स्त्री० फरियाद।

फिराना-स० क्रि० इधर-उधर चलाना, घुमाना, भ्रमण या सैर कराना; चक्कर खिलाना; साथ लिये फिरना; मोड़ना, लौटाना; औरका और करना।

फ़िरार-पु० [अ०] भाग जाना, पलायन करना।

फिरारी-वि० [अ०] भागा हुआ, पलायित (अभियुक्त इ०)।

फिरि*-अ० दे० 'फिर'।

फिरिकी*-स्त्री० दे० 'फिरकी'।

फिरियाद, फिरियादि*-स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फिरियादी-वि०, पु० दे० 'फ़रियादी'।

फ़िरिश्ता-पु० [फा०] देवता; मुसलमानोंके विश्वासानुसार ज्योतिसे निर्मित एक दिव्य योनि, देवदूत।

फिरिहरी†-स्त्री० दे० 'फिरकी'।

फ़िर्क़ा-पु० [अ०] दे० 'फ़िरक़ा'।

फ़िलहक़ीक़त-अ० हकीकतमें, सचमुच।

फ़िलहाल-अ० तत्काल, अभी, इस समय।

फिस-वि० सारहीन; कुछ नहीं। मु०**-हो जाना**-बेकार सिद्ध होना; कुछ न रह जाना।

फिसड्डी-वि० पीछे रह जाने, काममें पिछड़ा रहनेवाला; निकम्मा।

फिसफिसाना-अ० क्रि० फिस होना; ढीला, कमजोर हो जाना।

फिसलन-स्त्री० फिसलनेकी क्रिया; फिसलाहट, रपटन; फिसलनेको जगह।

फिसलना-अ० क्रि० चिकनाईकी अधिकतासे पाँवका न टिकना, सरकना; (ला०) लुभाना, मनका झुकाव होना; चूकना, धर्म या नीतिसे डिगना। वि० फिसलनवाला।

फिसलाहट-स्त्री० फिसलनेका भाव, फिसलन; पिच्छलता।

फ़िहरिस्त-स्त्री० [अ०] सूची, फर्द।

फींचना†-स० क्रि० कचारना।

फ़ी-स्त्री० दोष, त्रुटि, खोट। अ० [अ०] में, बीच; से; प्रति, हर, पीछे।**-कस**-अ०प्रति व्यक्ति, आदमी पीछे।

–साल–अ० प्रति वर्ष । **–सैकड़े**–अ० सैकड़े पीछे, प्रति शत ।

फीका–वि० सीठा, बेमज़ा; जो शोख या चटकीला न हो, हलका (रंग); कांतिहीन; * बेअसर, व्यर्थ ।

फ़ीता–पु० [पुर्त०] सूत या रेशमकी पतली पट्टी जो गोटे-किनारोंकी तरह कपड़ोंके हाशियेपर लगायी जाती हैं; निवाड़की पतली धज्जी जिससे कागज आदि बाँधते, अंग्रेजी ढंगके जूतोंको कसते हैं ।

फीरनी–स्त्री० दे० 'फ़िरनी' ।

फ़ीरोज़–वि० [फ़ा०] विजयी; सफल; सौभाग्यशाली । **–मंद**–वि० सफल, सौभाग्यशाली ।

फ़ीरोज़ा–पु० [फ़ा०] नगके काम आनेवाला एक कीमती पत्थर जिसका रंग नीला या हरा होता है ।

फ़ीरोज़ी–स्त्री० [फ़ा०] विजय; सफलता; भाग्योदय । वि० फीरोजेके रंगका ।

फ़ील–पु० [अ०] हाथी । **–ख़ाना**–पु० हाथियोंका अस्तबल, हस्तिशाला । **–पा**–पु० एक रोग जिसमें एक या दोनों टाँगें और पाँव सूज जाते हैं, श्लीपद । **–पाया**–पु० जोड़ाई करके बनाया हुआ मोटा खंभा । **–बान**–पु० हाथीवान, महावत ।

फीली–स्त्री० पिंडली–'रोवाँ बहुत जाँध अरु फीली'–प० ।

फ़ीस–स्त्री० [अं०] शिक्षा-शुल्क; प्रवेश-शुल्क; डाक्टर, वकील आदिका मेहनताना ।

फुँकना–अ० क्रि० फूँका जाना, भस्म होना, जलना; नष्ट होना; व्यर्थ खर्च होना । पु० दे० 'फुकना' ।

फुँकनी–स्त्री० दे० 'फुकनी' ।

फुँकरना–अ० क्रि० फुफकारना, फूत्कार करना ।

फुँकवाना, फुँकाना–स० क्रि० फूँकने या जलानेका काम दूसरेसे कराना ।

फुंकार–पु० फुफकार ।

फुँकारना–अ० क्रि० फुफकारना, साँपका गुस्सेमें मुँहसे हवा छोड़ना ।

फुँकैया–पु० फूँकनेवाला ।

फुँदकी–स्त्री० गाँठ; बिंदी ।

फुँदना–पु० सूत, ऊन आदिका फूल या गुच्छा, झब्बा ।

फुँदिया–स्त्री० झब्बा, फुँदना ।

फुँदी*–स्त्री० बिंदी–'सारी लटकति पाटकी बिलसति फुँदी लिलार'–मति०; गाँठ ।

फुंसी–स्त्री० छोटी फुड़िया ।

फुआ–स्त्री० पिताकी बहन, बूआ ।

फुआरा†–पु० फुहारा ।

फुकना–पु० मसाना, मूत्राशय; बड़ी फुकनी । अ० क्रि० दे० 'फुँकना' ।

फुकनी–स्त्री० बाँस आदिकी नली जिसके छेदमें फूँक मारकर आगको हवा देते हैं ।

फुचड़ा–पु० (दरी आदिमें) बुनावटसे बाहर निकला हुआ सूत या रेशा ।

फुज़ला–पु० [अ०] बचा हुआ अंश; सीठी; मैल ।

फ़ुज़ूल–वि० [फ़ा०] ज्यादा; बेकार, अनावश्यक । **–ख़र्च**–वि० अनावश्यक व्यय करनेवाला, अपव्ययी ।

–ख़र्ची–स्त्री० अनावश्यक व्यय करना, अपव्यय ।

फुट–पु० [अं०] लंबाईकी एक माप जो १२ इंचकी होती है; [सं०] साँपका फन । वि० फटा हुआ; स्फुटित; [हिं०] बिना जोड़का, अकेला; जो किसीके साथ या किसी श्रेणी-सिलसिलेमें न हो । **–मत**–पु० मतभेद ।

फुटकर, फुटकल–वि० फुट, अकेला, अलग, भिन्न; जो किसी श्रेणी, सिलसिलेमें न हो; जिसमें कई तरहकी चीजें हों, विविध; थोड़ी मात्रामें तोड़कर होनेवाली (बिक्री), खुर्दा । पु० रेजगारी ।

फुटका–पु० छाला, फफोला; धान आदिका लावा ।

फुटकी–स्त्री० छोटी अंठी, दूध आदिके जमे हुए कण; गाढ़ी चीजका छींटा ।

फुटबाल–पु० [अं०] चमड़ेका बड़ा गेंद जिसके भीतर रबड़की थैलीमें हवा भरी रहती है; उस गेंदसे खेला जानेवाला खेल ।

फुटेहरा–पु० मटर आदिका भूना हुआ दाना जिसका छिलका फट गया हो ।

फुटैल–वि० दे० 'फुट्टैल' ।

फुट्टैल–वि० जिसका जोड़ा न हो; झुंडसे अलग रहनेवाला (जानवर); हतभाग्य ।

फुतकार–पु० फुफकार ।

फ़ुतूर–पु० [अ०] फसाद, झगड़ा; शरारत; घटना; कमजोरी; खराबी ।

फ़ुतूरिया, फ़ुतूरी–वि०[अ०] फुतूर करनेवाला ।

फुत्कार–पु० [सं०] दे० 'फूत्कार' ।

फुत्कृत–वि०[सं०] फूँका हुआ; चिल्लाया हुआ । पु० फूँकसे बजनेवाले वाद्यकी ध्वनि; चीत्कार ।

फुदकना–अ० क्रि० (मेढक, छोटी चिड़ियों, चिड़ियोंके बच्चोंका) उछलते हुए चलना, कूदना; हर्षके अतिरेकसे उछलना ।

फुदकी–स्त्री० एक छोटी चिड़िया जो फुदकती हुई चलती है ।

फुनकार–पु० दे० 'फुंकार' ।

फुनगी–स्त्री० वृक्ष या शाखाका सिरा; शाखाके अंतकी कोमल पत्तियाँ और टूसा ।

फुनफुनी*–अ० पुनः-पुनः, बार बार–'हरि भगति बिना दुख फुनफुनी'–कबीर ।

फुप्फुस–पु० [सं०] फेफड़ा । **–प्रदाह**–पु० (न्यूमोनिया) एक या दोनों फेफड़ोंमें श्लेष्माके जमा हो जानेसे होनेवाला शोथ या प्रदाह ।

फुफँदी–स्त्री० साड़ी कसनेकी डोरी या साड़ीके दो छोरोंकी गाँठ जो स्त्रियाँ सामनेकी ओर लगाती हैं, नीवी ।

फुफकाना*–अ० क्रि० फुफकारना ।

फुफकार–स्त्री० क्रुद्ध साँपके मुँहसे हवा निकालनेपर होनेवाली आवाज, फूत्कार ।

फुफकारना–अ० क्रि० साँपका गुस्सेमें मुँहसे जोरके साथ हवा निकालना, फुंकार करना ।

फुफी*–स्त्री० दे० 'फूफी' ।

फुफू*–स्त्री० दे० 'फूफी' ।

फुफेरा–वि० फूफा या फूफीके नातेका (भाई, बहिन इ०) ।

फुर–स्त्री० छोटी चिड़ियोंके उड़नेमें होनेवाली परोंकी आवाज (फुरसे उड़ जाना) । * वि० सत्य । **–फुर**–स्त्री० बार-बार

होनेवाली 'फुर'की आवाज।

फुरकना†–स० क्रि० मुँहसे सुरकना (कढ़ी आदि)।

फुरती–स्त्री० तेजी; चुस्ती; जल्दी।

फुरतीला–वि० तेज; चुस्त; फुरतीसे काम करनेवाला।

फुरना*–अ० क्रि० स्फुटित होना; उद्भूत होना, निकलना (शब्द); चमक पड़ना; सत्य होना; फलदायक होना; असर करना; पकड़ना।

फुरनी दाना–पु० तला हुआ मसालेदार चूड़ा।

फुरफुराना–अ० क्रि० इस तरह उड़ना कि परों या डैनोंसे 'फुर-फुर'की आवाज हो। स० क्रि० फुरेरी फिराना; पंख आदि फड़फड़ाना।

फुरफुरी–स्त्री० उड़नेके लिए पंख फड़फड़ाना।

फुरमान*–पु० दे० 'फ़रमान'।

फुरमाना*–स० क्रि० दे० 'फ़रमाना'।

.फुरसत–स्त्री० [अ०] अवकाश, खाली वक्त; छुट्टी; इतमीनान; रोगसे मुक्ति।

फुरहरना*–अ० क्रि० स्फुरित होना; प्रकट होना; फरहरना; हिलना; फड़क उठना।

फुरहरी–स्त्री० परों आदिकी फड़फड़ाहट;कंप; दे० 'फुरेरी'। **मु०–लेना**–काँपना।

फुराना–अ० क्रि० सत्य होना, फुरना। स० क्रि० सत्य करना, सत्य सिद्ध करना।

फुरेरी–स्त्री० सींक या तिनकेके सिरेपर लपेटी हुई रुई जिसपर इत्र, तेल आदि चुपड़ा जाय; कँपकँपी, कंपयुक्त रोमांच; फड़कनेका भाव। **मु०–लेना**–कंपके साथ रोमांच होना; हिलना; सतर्क हो जाना।

फुर्ती–स्त्री० दे० 'फुरती'।

फुर्सत–स्त्री० दे० '.फुरसत'।

फुल–पु० 'फूल'का केवल समासमें व्यवहृत रूप। **–कारी**–स्त्री० गुल-बूटेका काम, गुलकारी; एक कपड़ा जिसपर रंगीन रेशमसे फूल कढ़े होते हैं। **–चुही**–स्त्री० एक छोटी चिड़िया जो फूलोंपर उड़ा और उनका रस चूसा करती है। **–झड़ी**–स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी जिसे जलानेपर चिनगारियाँ झड़ती हैं; झगड़ा लगानेवाली बात (फुलझड़ी छोड़ना); झगड़ा कराने-लगानेवाली स्त्री। **–वर**–पु० एक कपड़ा जिसपर रेशमसे फूल बने होते हैं। **–वाई,–वाड़ी***–स्त्री० दे० 'फुलवारी'। **–वार***–वि० प्रफुल्ल, प्रमुदित। पु० रंगीन कागजके बने हुए फूल-पौधे जिन्हें सजावटके लिए बरातके साथ ले जाते हैं। **–वाड़ी, –वारी**–स्त्री० फूलोंका (छोटा) बाग, पुष्पवाटिका। **–सुँघी**–स्त्री० फुलचुही चिड़िया।

फुलका–पु० हलकी-पतली रोटी, चपाती; * फफोला।

फुलफुला–वि० फूला-फूलासा।

फुलाई–स्त्री० सूखेकी बीमारी; बबूलका एक भेद। फुलानेकी क्रिया या उजरत।

फुलाना–स० क्रि० किसी चीजको हवा भरकर फैलाना; मोटा करना; चापलूसी करके किसीका दिमाग चढ़ाना, गर्व बढ़ाना; फूलनेका कारण होना, पुष्पित करना। अ० क्रि० फूलना।

फुलायल*–पु० दे० 'फुलेल'।

फुलाव–पु० दे० 'फुलावट', स्फीति।

फुलावट–स्त्री० फूलनेका भाव; फैलाव, उभार, स्फीति।

फुलावा–पु० चोटी या जूड़ा बाँधनेकी फुँदनेदार डोरी।

फुलिंग–पु० दे० 'स्फुलिंग'।

फुलिया–स्त्री० छत्राकार सिरेवाला काँटा; कानमें पहननेकी लौंग।

फुलेरा–पु० फूलोंसे बनायी हुई छतरी।

फुलेल–पु० खुशबूदार तेल।

फुलेली–स्त्री० फुलेल रखनेका बरतन।

फुलेहरा*–पु० सूत या रेशमका बना बंदनवार; फुलेरा।

फुलौरा–पु० बेसनकी बड़ी पकौड़ी।

फुलौरी–स्त्री० बेसनकी पकौड़ी।

फुल्ल–वि० [सं०] खिला हुआ, विकसित; प्रसन्न। पु० फूल। **–नेत्र,–लोचन**–वि० जिसकी आँखें हर्षसे खिल रही हों।

फुस–स्त्री० बहुत धीमी, अस्फुट आवाज। **–फुस**–स्त्री० बहुत धीमी, साफ सुनाई न देनेवाली आवाज; ऐसे स्वरमें कही जानेवाली बात, कानाफूसी। पु० फुप्फुस। **मु०–फुस करना**–सुनाई न देनेवाले स्वरमें बोलना। **–से**–बहुत धीमी आवाजसे, चुपकेसे।

फुसकारना*–अ० क्रि० फुफकारना; फूँक मारना।

फुसकी–स्त्री० बिना आवाजके निकलनेवाली अपान वायु।

फुसफुसा–वि० जल्दी टूट जानेवाला, कमजोर।

फुसफुसाना–अ० क्रि० धीमी, अस्फुट आवाजमें बोलना, फुसफुस करना।

फुसलाना–स० क्रि० मीठी बातोंसे बहलाना, भुलावा देना।

फुहर*–वि० दे० 'फूहड़'।

फुहार–स्त्री० नन्हीं-नन्हीं बूँदोंकी झड़ी; झींसी, जलकण।

फुहारा–पु० बारीक धार या फुहारके रूपमें पानी ऊपरको फेंकनेवाला यंत्र; इससे निकलनेवाली बारीक धार।

फुही–स्त्री० फुहार।

फूँक–स्त्री० होंठोंको मिलाकर मुखके मध्य भागसे जोरके साथ निकाली हुई हवा, दम, साँस; किसीपर मंत्रका प्रभाव डालनेके लिए मुँहसे छोड़ी हुई हवा; गाँजे आदिका कश। **–सा**–वि० बहुत कमजोर, दुबला-पतला (आदमी)। **मु०–निकल जाना**–दम निकल जाना, मर जाना। **–मारना**–किसीपर फूँककी हवा छोड़ना, फूँकना।

फूँकना–स० क्रि० होंठोंको मिलाकर मुखके मध्य भागसे हवा छोड़ना, फूँक मारना; मंत्र पढ़कर मुखसे हवा छोड़ना; फूँककर बजाना; फूँककी हवासे प्रज्वलित करना, जलाना; भस्म करना; कुश्ता करना (धातु); बरबाद करना; फैलाना। **मु० फूँक-ताप डालना**–उड़ा देना, बरबाद कर देना। **फूँक-फूँककर कदम या पाँव रखना**–बहुत सावधानतासे, हर तरहके खतरेसे बचते हुए काम करना।

फूँका–पु० फूँक मारनेकी क्रिया; गायके थनपर लगनेवाली दवाएँ लगाकर नलीसे फूँक मारना; फूँका मारनेकी नली; फोड़ा।

फूँद–स्त्री०, **फूँदा***–पु० दे० 'फुँदना'। **(फूँद) फुँदारा**–वि० जिसमें फुँदना लगा हो।

फू—स्त्री० फूँकनेकी आवाज।

फूई—स्त्री० फुहार; फफूँदी।

फूट—स्त्री० फूटनेकी क्रिया; एकाका उलटा, बिगाड़, विरोध; एक तरहकी ककड़ी जो पकनेपर फट जाती है।

फूटन—स्त्री० फूटकर अलग हुआ टुकड़ा; शरीरकी संधियोंमें होनेवाली पीड़ा।

फूटना—अ० क्रि० चोट या धक्का खाकर टूटना, भग्न होना; फटना, त्वचा या सतहको भेदकर बाहर आना, तोड़ या फोड़कर निकलना; (शब्दका मुँहसे) निकलना; खराब, निकम्मा हो जाना (आँख, तकदीर); उगना, अंकुरित होना; शाखारूपमें निकलना; खिलनां; अलग, वियुक्त होना; बिखरना; विपक्षसे जा मिलना; फुंसियों, दानों आदिके रूपमें होनेवाले रोगका प्रकट होना (गरमी, कोढ़); स्याहीका रसकर कागजकी दूसरी ओर निकलना; जोड़ोंमें दर्द होना; फोड़ा जाना (उँगलियाँ)। मु० **फूट-फूटकर रोना**—बिलख-बिलखकर रोना।

फूटा—वि० फूटा हुआ; खराब, बिगड़ा हुआ। पु० खेतमें टूटकर गिरी हुई बालें; संधियोंमें होनेवाली पीड़ा। **(फूटी)-कौड़ी**—स्त्री० निकम्मी कौड़ी। मु० **(फूटी) आँखका तारा**—कई बेटोंमेंसे बचा हुआ अकेला बेटा, बहुत प्यारा बेटा। **—आँखों न देख सकना**—देखकर जलना, देखना भी सह्य न होना। **—आँखों न भाना**—अति अप्रिय होना, तनिक भी अच्छा न लगना। **—कौड़ी (पासमें) न होना**—कुछ न होना, बिलकुल नादार होना। **(फूटे) मुँहसे न बोलना, बात न करना**—बिलकुल ही उपेक्षा करना, एक बात भी न करना।

फूत्कार—पु० [सं०] फूँक, फुफकार; साँपकी फुफकार; सिसकना; चीत्कार।

फूत्कृति—स्त्री० [सं०] दे० 'फूत्कार'।

फूफा—पु० फूफी या बुआका पति।

फूफी—स्त्री० बापकी बहिन।

फूफू—स्त्री० दे० 'फूफी'।

फूर*—पु० फूल।

फूरना*—अ० क्रि० पुष्पित होना।

फूल—पु० पौधोंका जननेंद्रिय रूप या फलोत्पादक अंग जो सुंदरता और सुकुमारताका प्रतीक बन गया है, खिली हुई कली, पुष्प; फूलकी शकलका बेल-बूटा, आभूषण इत्यादि; बत्तीका जला हुआ अंश; श्वेत कुष्ठका दाग; सत्त; स्त्रियोंका मासिक स्राव, रज; गर्भाशय; शवदाहके बाद रहनेवाला अस्थि-अवशेप; मुसलमानोंमें तीसरे या पाँचवें दिनका फातिहा; सार; पहली बार खींची हुई शराब; ताँबे और राँगेके मेलसे प्रस्तुत एक मिश्र धातु; घुटनेकी गोल हड्डी। * स्त्री० फूलनेका भाव, उमंग, आनंद। **—कारी**—स्त्री० बेल-बूटे बनाना, गुलकारी। **—गोभी**—स्त्री० गोभीका एक भेद जिसका फूल तरकारीके रूपमें खाया जाता है। **—झरी***—स्त्री० दे० 'फुलझड़ी'। **—दान**—पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र। **—दार**—वि० फूलोंवाला; जिसपर फूल-पत्ते या बेल-बूटे बने हों। **—सा**—वि० बहुत सुकुमार। **(फूलों)की सेज**—पुष्पशय्या, सुख और चैनभरी स्थिति। मु० **—आना**—फूल लगना। **—उतारना,—लोढ़ना**—फूल चुनना। **—चुनना**—फूल तोड़कर एकत्र करना। **—झड़ना**—मुँहसे मीठे शब्द निकलना। **—पड़ना**—बत्तीके मुँहपर गुल बनना। **—सूँघकर जीना या रहना**—बहुत थोड़ा खाना, अल्पाहारी होना। **(फूलों)की सेजपर सोना**—सुखचैनकी जिंदगी बसर करना। **—के काँटेमें तुलना**—बहुत सुकुमार होना; राजसिक सुख भोगना।

फूलना—अ० क्रि० (पेड़-पौधेमें) फूल आना, कुसुमित होना; कलीका खिलना; गर्वसे इतराना; अति प्रसन्न होना; हवा भरनेसे तन जाना, फैलना; मोटा होना, सूजना; ढीला, शिथिल होना (हाथ-पाँव फूलना); रूठना, नाराज होना; सुनहले प्रकाशसे युक्त होना। मु० **फूलकर कुप्पा हो जाना**—अत्यधिक हर्ष या गर्व होना; बहुत मोटा होना जाना। **फूलना-फलना**—धन-धान्य और बाल-बच्चोंसे सुखी होना। **—फालना***—प्रसन्न होना। **फूला-फूला फिरना**—आनंदमें मग्न होकर या गर्वसे इतराते हुए विचरना। **फूले न समाना**—खुशीमें आपेसे बाहर हो जाना।

फूला—पु० खील; आँखकी फूली।

फूली—स्त्री० आँखकी पुतलीपर पड़ा हुआ सफेद दाग जिससे दृष्टि मंद हो जाती और मारी भी जाती है।

फूस—पु० सूखी घास जो छप्पर बाँधने, ईंधन आदिके काम आये; जीर्ण-शीर्ण वस्तु।

फूहड़—वि० भद्दे ढंगसे काम करनेवाला, बेशऊर, भद्दा, गंदा (—गाली)। स्त्री० बेशऊर स्त्री। **—पन**—पु० बेढंगापन, भद्दापन।

फूहरा—स्त्री० दे० 'फूहड़'।

फूही—स्त्री० फुहार, झींसी।

फेँकना—स० क्रि० किसी चीजको हाथसे ऐसी हरकत देना कि कुछ दूर जा गिरे, जमीनपर गिराना; पटकना; उछालना; ले जाकर दूसरी जगह डालना (कूड़ा); डालना (कौड़ी, पासा); इधर-उधर बखेर देना; चलाना (तीर); सरपट दौड़ाना (घोड़ा); छोड़ना, गँवाना; परित्याग करना; अपव्यय करना; घुमाना, भाँजना (पटा)।

फेँकरना*—अ० क्रि० दे० 'फेकरना'।

फेँकाना—स० क्रि० फेंकनेका काम दूसरेसे कराना।

फेँट—स्त्री० दे० 'फेँटा'; लपेट; फेंटनेकी क्रिया। मु० **—कसना,—बाँधना**—कटिबद्ध होना। **—धरना,—पकड़ना**—जानेसे रोकना।

फेँटना—स० क्रि० हाथ या उँगलियोंकी हरकतसे गिलाना (पीठी, इ०); अच्छी तरह मिलाना, गड्डमड्ड करना (ताश)।

फेँटा—पु० कमरका घेरा; कमरपर लपेटा हुआ कपड़ा, कमरबंद; धोतीका वह भाग जो कमरपर लपेटा गया हो; सिरपर लपेटा हुआ कपड़ा, छोटी पगड़ी; सूतकी बड़ी अंटी।

फेकरना*—अ० क्रि० (सिरका) अनावृत होना; गीदड़ या स्यारका चिल्लाना; फूट-फूटकर रोना, फेंकरना।

फेकारना*—स० क्रि० (सिरको) खोलना, अनावृत करना।

फेकैत—पु० फेंकनेवाला; पहलवान।

फ़ेज़—पु० ऊँची दीवारकी तुर्की टोपी।

फेण, फेन—पु० [सं०] झाग, बुलबुलोंका समूह।

फेणक, फेनक—पु० [सं०] फेन, एक मिठाई, बतासफेनी।

फेद*—पु० फेंटा।

फेनिल—वि० [सं०] फेनयुक्त, झागदार।

फेनी—स्त्री० [सं०] घीमें छाना हुआ मैदेका लच्छा जिसे दूधमें भिगोकर और शक्कर मिलाकर खाते हैं, सुधाफेनी।

फेफड़ा—पु० छातीके नीचे स्थित थैलीके आकारका अवयव जिससे रीढ़वाले अधिकांश प्राणी साँस लेते हैं, फुप्फुस।

फेफड़ी—स्त्री० खुश्कीसे होंठोंपर पड़नेवाली पपड़ी।

फेफरी*—स्त्री० दे० 'फेफड़ी'।

फेरंड—पु० [सं०] सियार, गीदड़।

फेर—पु० घुमाव; रास्तेका घुमाव, चक्कर; परिवर्तन, बदलना; भ्रम; विपरीतता (समझका फेर); फर्क, अंतर; उलझन; बहकावा; उपाय; नुकसान; प्रेतबाधा; अदला-बदला। * अ० ओर, तरफ (चहुँफेर); दे० 'फिर'। **—पलटा**—पु० गौना। **—फार**—पु० उलट-फेर, चक्कर। **—बदल**—पु० तबदीली। **मु०—खाना**—चक्कर काटना, घुमावके रास्ते जाना। **—बँधना**—सिलसिला लगना। **—में पड़ना**—नुकसान उठाना; उलझन, कठिनाईमें पड़ना। **—लगाना**—युक्ति लगाना।

फेरना—स० क्रि० घुमाना, दिशा बदलना; लौटाना; वापस लेना; बदलना; पलटना; घुमाना, भाँजना (मुग्दर, पटा); क्रम बदलना; अभ्यास करना; चाल सिखानेके लिए चक्कर देना, निकालना (घोड़ा); इस बलसे उस बल करना; उलटना-पलटना (पात्र); जपना (माला); पोतना, लेप करना; फिराना, धीरे-धीरे इधर-उधर ले जाना; प्रचारित करना (डौंडी)। (**मु० हाथ फेरना**—सहलाना; उड़ा लेना)।

फेरवट—स्त्री० घुमाव, पेच; अंतर; धूर्तता।

फेरा—पु० लपेट; चौगिर्दा घुमाव; परिक्रमा, चक्कर, भाँवर; बार-बार आना-जाना, गश्त; पुनरागमन; (भिक्षुकको) लौटा देना। **—फेरी**—स्त्री० उलट पुलट; क्रम बदलना। **मु०—देना**—भिक्षुकको बिना कुछ दिये लौटा देना।

फेरि*—अ० फिर, पुनः।

फेरी—स्त्री० फेरा, चक्कर, भाँवर; गश्त; खुर्दाफरोशोंका सौदा बेचनेके लिए गली-कूचोंमें घूमना; रस्सीपर ऐंठन देनेकी चरखी। **—वाला**—पु० फेरी करके, घूम-फिरकर चीजें बेचनेवाला। **मु०—पड़ना**—भाँवर होना।

फेरु—पु० [सं०] सियार।

फेरौरी†—स्त्री० टूटे खपरैलोंको निकालकर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया।

फेल—वि० [अं०] विफल; (परीक्षामें) अनुत्तीर्ण।

फ़ेहरिस्त—स्त्री० दे० 'फ़िहरिस्त'।

फ़ैंसी—वि० [अं०] सुंदर; भड़कदार, जिसपर काम किया हुआ हो।

फ़ैर—पु० बंदूक, तमंचे या तोपका दागा जाना; इनका एक बार दगना (लगातार चार फैर किये)।

फैल*—पु० फेल, काम; खेल; नखरा, बनावट; राशि; फैलाव, विस्तार।

फैलना—अ० क्रि० अधिक स्थान घेरना, आकारका बढ़ना, पसरना; डीलका बढ़ना, मोटा होना; अधिक दूरतक जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; वृद्धि होना; बिखरना; पूरा तनना (हाथ फै०); मचलना; हठ करना।

फैलाना—स० क्रि० पसारना, विस्तार करना, बिछाना; आयोजन करना; बिखेरना; बढ़ाना; खोलना, तानना; प्रचार करना; प्रसिद्ध करना; हिसाबकी पूरी प्रक्रिया दिखाना, प्रस्तार करना (ब्याज फै०); गुणा-भागकी जाँच-पड़ताल करना।

फैलाव—पु० लंबाई-चौड़ाई; विस्तार, प्रसार; प्रचार।

फैलावट—स्त्री० फैलाव।

फ़ैशन—पु० [अं०] ढंग, तर्ज; कपड़े आदिका प्रचलित ढंग; प्रथा।

फ़ैसला—पु० [अ०] निर्णय, निबटारा; निश्चय।

फौंक—पु० तीरका पीछेकी ओरका सिरा।

फौंदा*—पु० दे० 'फुँदना'।

फौंफर†—वि० पोला; निस्सार।

फौंफी†—स्त्री० चोंगी; फुकनी; छूँछी।

फोक—पु० फुजला; सीठी; भूसी; नीरस पदार्थ।

फोकट—वि० मूल्यरहित; निरर्थक; निःसार—'अलि चलि औरै ठौर दिखावहु अपनो फोकट ज्ञान'—सू०। **—का**—मुफ्त। **—में**—मुफ्तमें।

फोकला*—पु० छिलका।

फोकली†—स्त्री० दे० 'फोकला'।

फोका*—पु० बुद्बुद (विद्या०)।

फोट*—पु० दे० 'स्फोट'।

फोटक*—वि० दे० 'फोकट'।

फोटा†—पु० बूँद; बिंदी, टीका—'ललाट पावक नहिं सिंदुरक फोटा'—विद्या०।

फ़ोटो—पु० [अं०] छायाचित्र, अक्स। **—ग्राफर**—पु० फोटो, छायाचित्र उतारनेवाला, अक्कास।

फोड़ना—स० क्रि० तोड़ना, टुकड़े करना; विदीर्ण करना; कड़े छिलके, त्वचा आदिको तोड़ना (फोड़ा, नारियल); शरीरमें जगह-जगह फोड़े या घाव पैदा कर देना; शाखा निकालना; छेद करना, सेंध लगाना (दीवार); खराब, अंधा करना (आँखें); बहका, फुसलाकर अपनी ओर कर लेना (गवाह); प्रकट करना, खोल देना (भंडा)।

फोड़ा—पु० शरीरमें स्थानविशेषपर होनेवाला पीड़ाकारक शोथ, जिसके पक जानेपर भीतरसे पूय निकलता है, व्रण, बड़ी फुंसी।

फोड़िया—स्त्री० छोटा फोड़ा।

फ़ोता—पु० [अ०] थैली, कोष; अंडकोष; लगान, पोत। **(फ़ोते)दार**—पु० खजांची, तहवीलदार।

फोनोग्राफ़—पु० [अं०] एक यंत्र जो ध्वनिको अंकित करता या लाखकी चूड़ियोंमें भरता और कुंजी देकर चूड़ियोंको घुमानेपर पुनः उसे उसी रूपमें प्रकट कर देता है, ग्रामोफोन।

फोया—पु० दे० 'फोहा'।

फोरना*—स० क्रि० दे० 'फोड़ना'।

फ़ोरमैन—पु० [अं०] छापेखाने, कारखाने आदिमें काम करनेवालोंका मुखिया या उनपर निगरानी रखनेवाला कर्मचारी।

फोहा–पु० रुईका गाला जो किसी चीजसे तर किया गया हो; फाहा।

फ़ौआरा–पु० [अ०] फुहारा।

फ़ौज–स्त्री० [अ०] सेना; जनसमूह, मजमा। **–दार**–पु० सेनानायक; बादशाह आदिकी सवारीमें हाथीपर आगे बैठनेवाला, कोतवाल। **–दारी**–स्त्री० फौजदारका पद; मारपीट, लड़ाई। **–दारी-अदालत**–स्त्री० अपराधोंका विचार, निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-व्यवस्था करनेवाला न्यायालय।

फ़ौजी–वि० फौजसे संबंध रखनेवाला। पु० सैनिक। **–कानून**–पु० सैनिक शासन-संबंधी वे कड़े कानून जो असाधारण स्थिति उत्पन्न हो जानेपर सामान्य नागरिकोंके लिए लागू कर दिये जाते हैं।

फ़ौत–स्त्री० [अ०] मरना, गुजर जाना; खो जाना (होना)। **–शुदा**–वि० मृत, मरा हुआ।

फ़ौती–वि० मृत्यु-संबंधी। स्त्री० मृत्युकी सूचना। **–नाम**, **–रजिस्टर**–पु० वह सूची या रजिस्टर जिसमें मृतजनोंकी मृत्युतिथि और उनका नाम-पता लिखा जाता है।

फ़ौरन्–अ० [अ०] अभी, तुरत, झटपट।

फ़ौलाद–पु० कड़ा और बढ़िया लोहा जिसके हथियार और तेज धारवाले औजार बनाये जाते हैं।

फ़ौलादी–वि० फौलादका बना हुआ, बहुत कड़ा, सुदृढ़।

फौवारा–पु० दे० 'फ़ौआरा'।

फ़्राक–पु० [अं०] ढीली, छोटी आस्तीनका लंबा कुरता जो बच्चे और स्त्रियाँ भी पहनती हैं।

ब

ब–देवनागरी वर्णमालाका तेईसवाँ व्यंजन वर्ण।

बंक–वि० * टेढ़ा, वक्र; † तिरछा; वीर; * विकट, दुर्गम। * अ० तिरछी निगाहसे। **–नाल**–स्त्री० वह नली, जिससे सुनार जुड़ाई करते समय चिरागकी लौ फूँकते हैं।

बंक–पु० [अं० 'बैंक'] वह कार्यालय जो लोगोंका रुपया जमानतके रूपमें जमा करता और माँगनेपर सूदके साथ उन्हें वापस देता है, अधिकोष।

बंकट*–वि० टेढ़ा, वक्र।

बंका*–वि० दे० 'बंक'; बढ़िया।

बंकाई–स्त्री० बंक होनेका भाव, बाँकपन।

बंकिम–वि० टेढ़ा।

बंकुर*–वि० दे० 'बंक'।

बंकुरता*–स्त्री० टेढ़ापन।

बँकैअन*–अ० घुटनोंके बल।

बंग––पु० बंगाल, वंग; * एक दवा जो ताकत बढ़ाती है; * बाँग।

बँगला–वि० बंगालका। स्त्री० बंगालकी भाषा, बंगभाषा। पु० खुली जगहमें बना सुंदर छोटा हवादार मकान; सबसे ऊपरकी छतका हवादार कमरा; बंगालका पान।

बँगली†––स्त्री० एक गहना जो चूड़ियोंके साथ पहना जाता है, बँगुरी।

बंगसार–पु० जहाजपर चढ़नेके लिए पुल जैसा बना हुआ चबूतरा।

बंगा†–वि० टेढ़ा; नटखट, उपद्रवी; अज्ञान।

बंगाल–पु० भारतका एक पूरबी प्रांत, वंग देश; एक राग।

बंगाली–पु० बंगालका रहनेवाला, बंगदेशीय। स्त्री० बँगला भाषा।

बँगुरी†–स्त्री० दे० 'बँगली'।

बंचक–पु० दे० 'वंचक'।

बंचकता, बंचकताई*–स्त्री० दे० 'वंचकता'।

बंचन–पु० दे० 'वंचन'।

बंचना*–स० क्रि० ठगना। स्त्री० दे० 'वंचना'।

बँचवाना–स० क्रि० पढ़वाना।

बंछना*–स० क्रि० वांछा करना, चाहना।

बंछनीय*–वि० दे० 'वांछनीय'।

बंछित*–वि० दे० 'वांछित'।

बंजर–पु० खेतीके अयोग्य जमीन, वह जमीन जिसे खेत न बना सकें, ऊसर।

बंजारा–पु० दे० 'बनजारा'।

बंजुल, बंजुलक–पु० दे० 'वंजुल'।

बंझा†–वि० न फलनेवाला (पेड़, पौधा), वंध्य। वि० स्त्री० वंध्या। स्त्री० वंध्या स्त्री।

बँटना–अ० क्रि० बाँटा जाना; भाग किया जाना।

बँटवाई–स्त्री० बाँटनेकी क्रिया या उजरत।

बँटवाना–स० क्रि० बाँटनेका काम दूसरेसे कराना।

बँटवारा–पु० बाँटनेका काम; विभाजन, अलगोझा।

बंटा–पु० पान आदि रखनेका डल्ला। वि० छोटे कदका।

बँटाई–स्त्री० बाँटनेका काम; बाँटनेकी उजरत; जमीन बंदोबस्तकी वह रीति जिसमें मालिकको लगानके रूपमें उपजका नियत भाग मिले, बटाई।

बंटाधार–वि० चौपट, सत्यानास (कर देना)।

बँटाना–स० क्रि० बटवारा कराना; अपना हिस्सा अलग करा लेना; शामिल, शरीक होना।

बँटावन*–वि० बँटानेवाला।

बँटैया†–पु० बँटानेवाला।

बंडल–पु० [अं०] छोटी गठरी, पुलिंदा; गट्ठा, पूला।

बंडा–पु० अरुईकी जातिका एक कंद जो तरकारीके काम आता है; बड़ी बखारी। वि० पुच्छहीन।

बंडी–स्त्री० फतुही; बगलबंदी।

बँडेर†–पु० छाजनके बीचोबीच लगाया जानेवाला बल्ला जिसपर ठाटका बोझ रहता है।

बँडेरी†–स्त्री० दे० 'बँडेर'।

बंद–पु० [फ़ा०] बाँध, मेंड; कैद, बंधन; गिरह, गाँठ; अंगोंका जोड़; जंजीर; सिला हुआ फीता जिससे अँगरखा, अँगिया आदिके पल्ले बाँधते हैं, तनी; कुश्तीका पेंच; युक्ति, उपाय; पाँच या छ मिसरोंके उर्दू-फारसी पद्यका टुकड़ा; सूची; कागजका लंबा टुकड़ा; लाखकी चपटी चूड़ी। वि० रुका हुआ, बँधा हुआ; कसा, जकड़ा हुआ; धरा या पकड़ा

हुआ, कैद; कुंडी, ताला लगा हुआ, भिड़ा हुआ; जो खुला न हो; जो चलता न हो; जिसकी गति, क्रिया रुद्ध हो; (समासके अंतमें) बाँधनेवाला (नालबंद)। **–गोभी**–स्त्री० करमकल्ला। **–बंद**–पु० जोड़-जोड़, गाँठ-गाँठ (टूटना)। **–वान***–पु० कारागारका रक्षक, जेलर। **–साल**–स्त्री० बंदीगृह, कैदखाना। **मु०–बंद ढीले कर देना**–थका देना, पस्त कर देना।

बंदगी–स्त्री० [फ़ा०] सेवा; वंदना, अराधना; नमस्कार।

बंदन–पु० दे० 'वंदन'; * सिंदूर; रोली; बंदनवार।

बंदनवार–पु० सुंदर पत्तों, फूलों आदिकी झालर जो मंगल-अवसरोंपर दरवाजे, मंडप आदिपर बाँधी जाती है।

बंदना–स्त्री० दे० 'वंदना'। स० क्रि० * वंदना करना, प्रणाम करना।

बंदनी–स्त्री० सिरपर पहननेका एक गहना, सिरबंदी। * वि० स्त्री० वंदनीया (समासमें)।

बंदनीमाल–स्त्री० पैरोंतक लटकनेवाली माला।

बंदर–पु० एक स्तनपायी पशु जिसकी कुछ बातें मनुष्यसे मिलती हैं और जिसमें बुद्धि कुछ विकसित होती है, मर्कट, कपि। **–घुड़की**–स्त्री० महज डरानेके लिए दी जानेवाली धमकी। **मु०–का घाव**–वह घाव जो कभी सूखे नही (बंदरका घाव जब सूखने लगता है तो वह खुजलाकर उसे छील देता है)।

बंदर–पु० [फ़ा०] जहाजके रुकने-ठहरनेकी जगह, बंदरगाह। **–गाह**–पु० समुद्र-किनारे बसा हुआ नगर जहाँ जहाज ठहरते हों, पोर्ट।

बँदरिया, बँदरी–स्त्री० मर्कटी, वानरी।

बंदा–पु० [फ़ा०] सेवक, दास; वशवर्ती (वक्ता विनय दिखानेके लिए अपने आपको कहता है)।

बंदारु–वि० दे० 'वंदारु'; पूजनीय, वंदनीय।

बंदि–स्त्री० [सं०] बंधन, कैद। पु० कैदी; चारण। **–छोर***–पु० दे० 'बंदीछोर'।

बंदिश–स्त्री० [फ़ा०] बाँधनेका भाव; रोक, प्रतिबंध; गाँठ; शब्दयोजना, रचना; उपाय, पेशबंदी; साजिश।

बंदी–स्त्री० [सं०] कैद; [हिं०] सिरका एक गहना, बंदनी; दूकानों, कामकाज आदिका बंद रहना; [फ़ा०] बाँधना, बंद करना; कैद करना; बाँदी; लागत। **–ख़ाना, –घर**–पु० कैदखाना। **–छोर***–पु० बंधनसे छुड़ानेवाला। **–वान***–पु० कैदी।

बंदी (दिन्)–पु० [सं०] चारण; कैदी। **–कोष्ठ, –ख़ाना**–पु० (लॉक अप) न्यायालयमें मामलेपर विचार होनेतक बंदियोंको तालेमें बंद कर या पहरेमें रखनेकी जगह, हवालात। **–प्रत्यक्षीकरण**–पु० (हैबियस कॉर्पस) बंदीको न्यायाधीशके सामने उपस्थित करनेका लिखित आदेश।

बंदूक–स्त्री० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र, लकड़ीके कुंदेमें लगी लोहेकी लंबी नली जिसमें गोली भरकर बारूदकी सहायतासे दागी जाती है। **–ची**–पु० बंदूक चलानेवाला सिपाही। **मु०–छतियाना**–भरी हुई बंदूकको छातीसे लगाकर निशाना बाँधना। **–दागना**–बंदूक चलाना।

बंदूखा–स्त्री० दे० 'बंदूक'।

बँदेरी–स्त्री० दासी, बाँदी।

बंदोबस्त–पु० [फ़ा०] प्रबंध, इंतजाम; जमीनका प्रबंध, खेतका लगान ठहराकर किसीको जोतने-बोनेके लिए देना; जमीनकी नाप और लगान–मालगुजारी तै करनेका काम (सेटिलमेंट)। **–अफ़सर**–पु० बंदोबस्तका काम करनेवाले महकमेका प्रधान अधिकारी। **–इस्तमरारी**–पु० स्थायी बंदोबस्त।

बंध–पु० [सं०] बंधन; बाँधनेका साधन; बाल बाँधनेकी चोटी; जंजीर, बेड़ी; बाँध; कैद; गाँठ; पकड़ना, बाँधना; निर्माण; व्यवस्था; संयोग; पट्टी; सामंजस्य; प्रदर्शन; जीवका बंधन (मुक्तिका उलटा); परिणाम; बंधक रखी हुई वस्तु। **–करण**–पु० कैद करना। **–तंत्र**–पु० पूरी सेना (जिसमें उसके सारे अंग हों)। **–पत्र**–पु० (बॉंड) सरकार द्वारा या किसी सार्वजनिक संस्था (नगर-निगम आदि) द्वारा जारी किया गया वह ऋणपत्र जिसमें इस बातकी लिखित प्रतिज्ञा की जाती हैं कि निर्धारित अवधि समाप्त होनेपर ऋण ली गयी सारी रकम अदा कर दी जायगी; कही हुई बात पूरी न होनेपर किसीको कुछ रुपया या हरजाना आदि देनेका प्रतिज्ञापत्र; किसी पदपर नियुक्ति होनेके पूर्व नियुक्त व्यक्ति या नियोजक द्वारा लिखा गया वह प्रतिज्ञापत्र जिसमें इस बातका निश्चय दिलाया गया हो कि निर्दिष्ट अवधिके पूर्व नियुक्त व्यक्ति अपने पदसे न हटेगा अथवा न हटाया जायगा। **–मोचनिका, –मोचनी**–स्त्री० एक योगिनी। **–स्तंभ**–पु० हाथी आदि बाँधनेका खूँटा।

बंधक–पु० [सं०] बाँधने, पकड़नेवाला; रस्सी; बाँध; गिरवी; अंगन्यास; वादा; भंग करनेवाला; बंधन; कैद; विनिमय। **–कर्ता (र्तृ)**–पु० (मार्टगेजर) अपना घर, खेत आदि किसीके पास रेहन रखनेवाला। **–गृहीता (तृ)**–पु० (मार्टगेजी:) वह महाजन आदि जिसके पास कोई चीज रेहन रखी गयी हो, रेहनदार।

बंधन–पु० [सं०] बाँधना; जंजीर, बेड़ी; रस्सी; पकड़ना; कैद; कैदखाना; निर्माण; संयोग; रोक; क्षति पहुँचाना; डंठल; पेशी; स्नायु; पट्टी; बाँध; पुल; धातुओंका मिश्रण; दमन। **–कारी (रिन्)**–पु० बाँधनेवाला; आलिंगन करनेवाला। **–स्तंभ**–पु० हाथी आदि बाँधनेका खूँटा। **–स्थान**–पु० तबेला, अस्तबल।

बँधना–अ० क्रि० बाँधा जाना, कसा-जकड़ा, लपेटा जाना; कैद होना; मुग्ध होना; फँसना; गँठना; पाबंद होना; निश्चित होना; मोरचा नियत होना। पु० बंधन; बाँधनेका साधन (रस्सी, डोर आदि); * दे० 'बधना'।

बंधनागार–पु० [सं०] कारागार।

बंधनालय–पु० [सं०] कारागार।

बंधनि*–स्त्री० बंधन; बाँधने, फँसानेवाली चीज।

बंधनीय–पु० [सं०] बाँध। वि० बाँधने योग्य; रोकने योग्य।

बंधव–पु० दे० 'बांधव'।

बँधवाना–स० क्रि० बाँधनेका काम दूसरेसे कराना।

बंधान–पु० बँधा हुआ क्रम, परिपाटी; दस्तूरी; बाँध; तालका सम।

बँधाना–स० क्रि० बाँधनेका काम दूसरेसे कराना; धारण कराना; कैद कराना।

बंधित–वि० [सं०] बँधा हुआ, बद्ध; जो कैद किया गया हो।

बंधी†–स्त्री० बँधेज; बँधी व्यवस्था, निश्चित प्रबंध।

बंधु–पु० [सं०] स्वजन, आत्मीय, ज्ञाति, सगोत्र; भाई; मित्र; पति; पिता; बंधुजीव नामक फूल; संबंध। **–काम**–वि० भाई-बंद, स्वजनों, संबंधियोंसे स्नेह रखनेवाला। **–जन**–पु० आत्मीय, निकट संबंधियोंकी समष्टि, भाई-बंद। **–जीव, –जीवक**–पु० गुलदुपहरिया। **–दग्ध**–वि० संबंधियों द्वारा परित्यक्त। **–बांधव**–पु० स्वजन-संबंधी, भाई-बंद। **–भाव**–पु० बंधुता, भाईचारा। **–हीन**–वि० जिसका कोई अपना न हो, असहाय।

बँधुआ, बँधुवा–पु० कैदी।

बंधुक–पु० [सं०] दे० 'बंधु-जीव'; जारज संतान।

बंधुता–स्त्री० [सं०] रिश्ता, संबंध; भाईचारा; बंधुवर्ग।

बंधुत्व–पु० [सं०] भाईचारा; संबंध; स्नेह।

बंधुमान्(मत्)–वि० [सं०] जिसके मित्र और संबंधी हों।

बंधुर–पु० [सं०] मुकुट; गुलदुपहरिया; भग; हंस; बगला।

बंधुरा–स्त्री० [सं०] कुलटा; वेश्या।

बंधुल–पु० [सं०] कुलटाका पुत्र; वेश्या-पुत्र।

बंधूक–पु० [सं०] गुलदुपहरिया।

बंधूप*–पु० दे० 'बंधूक'।

बंधूलि–पु० [सं०] दे० 'बंधूक'।

बंधेज–पु० बंधान; प्रतिबंध; स्तंभन।

बंध्या–स्त्री० [सं०] बाँझ स्त्री या गाय; योनिका एक रोग; एक गंधद्रव्य। **–कर्कटी**–स्त्री० कड़वी ककड़ी। **–तनय, –पुत्र, –सुत**–पु० बाँझका बेटा, अलीक, अनहोनी बात।

बंपुलिस–स्त्री० म्युनिसिपलिटीकी ओरसे बना हुआ वह पाखाना जो सर्वसाधारणके काम आता हो।

बंब–पु० डंका; 'बम-बम' शब्द।

बंबा–पु० पानीकी कल; पानी बहानेका नल; सोता।

बँबाना–अ० क्रि० गाय-बैलका रँभाना।

बंबू–पु० चंडू पीनेकी बाँसकी नली।

बंस–पु० वंश, कुल; बाँस; * बाँसुरी। **–कार***–पु० बाँसुरी। **–लोचन**–पु० दे० 'वंशलोचन'।

बँसरी†–स्त्री० दे० 'बंसी'।

बँसवाड़ी–स्त्री० वह स्थान जहाँ बाँसकी बहुत-सी कोठियाँ हों।

बंसी–स्त्री० बाँसुरी; मछली फँसानेका काँटा; विष्णु, कृष्णादिके चरणचिह्न। **–धर**–पु० कृष्ण।

बँसोड़, बँसोर–पु० बाँसके टोकरे आदि बनानेवाली जाति, धरकार।

बँहगी–स्त्री० दे० 'बहँगी'।

बँहुटा–पु० दे० 'बहूँटा'।

बँहोल*, **बँहोली**†–स्त्री० आस्तीन।

ब–पु० [सं०] वरुण; जल; घट; समुद्र; बुनना; ताना। अ० [फा०] साथ, से; लिए, वास्ते; पर (दिन-दिन)। **–क़ौल**–अ०...के कथनानुसार। **–खुद**–अ० अपनेसे (–आपको)। **–ख़ूबी**–अ० अच्छी तरह, भली भाँति, सम्यक् रीतिसे। **–ख़ैर**–अ० कुशलपूर्वक, अच्छी तरह, भलाईसे। **–ख़ैरियत**–अ० खैरियतके साथ, कुशलपूर्वक। **–ग़ैर**–अ० बिना, सिवा। **–ज़रिया, –ज़रीया**–अ० (–के) जरीये, (–के) द्वारा। **–जा**–वि० जो अपनी जगहपर हो, ठीक, उचित। **–जाय**–अ० (–के) स्थानपर, बदले। **–जिंस**–अ० दे० 'बजिंसहू'। **–जिंसहू**–अ० हूबहू, ठीक-ठीक; कुल; ज्योंका त्यों। **–तौर**–अ० (–के) तरीकेपर; द्वारा, मारफत। **–दस्त**–अ० (–के) हाथसे, द्वारा, मारफत। **–दस्तूर**–अ० साधारण अभ्यासके अनुसार, यथानियम; यथापूर्व, पहलेकी तरह। **–दौलत**–अ० (–के) सहारे, द्वारा; (–की) कृपासे; (–के) कारण। **–नाम**–अ० (–के) नामसे, नामपर; (–के) प्रति, विरुद्ध (मुकदमेमें–रघुवीर सिंह बनाम रामधनी)। **–निस्बत**–अ० अपेक्षा, मुकाबलेमें। **–मुकाबला**–अ० (–के) मुकाबलेमें, तुलनामें। **–मुश्किल**–अ० कठिनाईसे, मुश्किलसे। **–मूजिब**–अ० (–के) अनुसार, मुताबिक। **–राह**–अ० (–की राहसे; (–के) तौरपर। **–शर्ते कि**–अ० इस शर्तसे कि, अगर। **–सबब**–अ० (–के) कारण। **–सूरत**–अ० सूरतमें, स्थितिमें, बहालत। **–हुक्म**–अ० आज्ञासे, आदेशानुसार। **–हैसियत**–अ० (–के) रूपमें, नाते; (–की) स्थितिमें।

बइर*–पु० वैर, शत्रुता। वि० बहरा।

बउर*–पु० दे० 'बौर'।

बउरा*–वि० दे० 'बावला'

बउराना–अ० क्रि० पागल होना, उन्मत्त होना।

बक–पु० [सं०] बगला; वंचक, ठग; ढोंगी; कुवेर; भीमके हाथों मारा गया एक राक्षस; कृष्णके हाथों मारा गया एक राक्षस। * वि० बगले जैसा सफेद। **–जित्**–पु० भीम; कृष्ण। **–ध्यान**–पु० बगले जैसी ध्यानमग्न होनेकी दिखाऊ मुद्रा, साधुताका ढोंग। **–ध्यानी(निन्)**–वि० बगलाभगत, बकध्यान लगानेवाला। **–निषूदन**–पु० कृष्ण; भीम। **–मौन**–पु० बकध्यान। वि० बकध्यानी। **–यंत्र**–पु० एक आयुर्वेदोक्त यंत्र जो अर्क आदि खींचनेके काम आता है। **–रिपु**–पु० भीम। **–वृत्ति**–वि० बगलाभगत, ज्ञान-ध्यानका ढोंग कर लोगोंको ठगनेवाला। स्त्री० बगलाभगत होनेका भाव, पाखंड। **–व्रती(तिन्)**–वि० 'बक-वृत्ति'।

बक–स्त्री० बकनेकी क्रिया, बकवास। **–झक, –बक**–स्त्री० बकवास, बेकार बात। **–वाद**–स्त्री० निरर्थक वार्ता, बकवास। **–वादी**–वि० बकवाद करनेवाला, बक्की। **–वास**–स्त्री० बेकार बात जो लगातार कुछ देरतक कही जाय, बकबक; बकनेकी क्रिया। **–वासी**–वि० बकवास करनेवाला।

बक़चा–पु० दे० 'बकुचा'।

बकतर–पु० [फा०] जिरह, लोहेके जालका बना हुआ कवच। **–पोश**–वि० जो बकतर पहने हो, कवचधारी।

बकता, बकतार*–पु० दे० 'वक्ता'।

बकना–स० क्रि० बोलना, मुँहसे निकालना (गालियाँ)। अ० क्रि० बड़बड़ाना, बकवास करना। मु०–**झकना**–बड़बड़ाना, गुस्सेमें बोलना, बिगड़ना।

बक़र–पु० [अ०] गाय, बैल; कुरानकी एक सूरत। **–ईद (रीद)**–स्त्री० मुसलमानोंका एक त्योहार जिस दिन ईश्वरके प्रीत्यर्थ पशुबलि करना फर्ज माना जाता है।

–**कसाब**–पु० चिक, कसाई।

बकरना–अ० क्रि० अपना दोष, अपराध स्वीकार करना; बड़बड़ाना।

बकरम–पु० [अ० 'बक्र्म'] गोंद आदिसे कड़ा किया हुआ कपड़ा जो कपड़ोंके कालर, आस्तीन आदिमें दिया जाता है।

बकरवाना–स० क्रि० किसीसे दोष-अपराध स्वीकार कराना।

बकरा–पु० एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया, छाग, अज। [स्त्री० 'बकरी'।] **मु०(बकरे)की माँ कबतक ख़ैर मनायेगी**–दोषी, अपराधी कबतक बच सकता है?

बक़रीद–स्त्री० [अ०] दे० 'बक़र-ईद'।

बकलस–पु० [अं० 'बकल्स'] लोहे, पीतल आदिका चौकोर छल्ला जिसमें तसमें आदिको फँसाते हैं, बकसुआ।

बकला–पु० छिलका, छाल।

बकवाना–स० क्रि० किसीको बकनेमें प्रवृत्त करना।

बकस–पु० [अं० 'बॉक्स'] कपड़े आदि रखनेका छोटा संदूक; गहने आदि रखनेका डब्बा।

बकसना†–स० क्रि० दे० 'बख़्शना'।

बकसवाना† **बकसाना***–स० क्रि० दे० 'बख़्शवाना'।

बकसीस*–स्त्री० दे० 'बख़्शिश'।

बकसुआ, बकसुवा–पु० दे० 'बकलस'।

बकाइन–पु० दे० 'बकायन'।

बकाउ*–स्त्री० दे० 'बकावली'।

बकाउर–स्त्री० दे० 'बकावली'।

बकाना*–स० क्रि० कहलाना; बकवाना।

बकायन–पु० नीमकी जातिका एक पेड़ जिसके फल, फूल, पत्तियाँ आदि दवाके काममें लाते हैं, महानिंब।

बक़ाया–वि० [अ०] बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट ('बक़ीया'-का बहु०)। पु० बाकी बची हुई चीज; बचत; बाकी पड़ी हुई रकम। –**लगान**–पु० बाकी पड़ा हुआ लगान।

बकारि–पु० [सं०] भीम; कृष्ण।

बकारी–स्त्री० मुँहसे निकलनेवाला शब्द। **मु०–फूटना**–मुँहसे शब्द, बात निकलना।

बकावर*–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकावरी*–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकावली–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकासुर–पु० [सं०] बक नामका दैत्य जो कृष्णके हाथों मारा गया।

बकिनव*–पु० दे० 'बकायन'।

बकी–स्त्री० [सं०] मादा बगला; बकासुरकी बहन, पूतना।

बक़ीया–वि० [अ०] बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट।

बकुचन*–स्त्री० हाथ जोड़ना; मुट्ठी या पंजेमें पकड़ना।

बकुचना*–अ० क्रि० सिमटना, सिकुड़ना।

बकुचा–पु० गठरी; * ढेर, गुच्छा; जुड़ा हुआ हाथ।

बकुची–स्त्री० छोटी गठरी; एक छोटा पौधा जो चर्मरोगमें लाभदायक होता है। **मु०–बाँधना,–मारना**–हाथ-पैर समेटकर गठरी जैसा बन जाना।

बकुचौंहाँ*–वि० बकुचे जैसा।

बकुर–वि० [सं०] भयंकर। पु० बिजली, वज्र।

बकुरना*–अ० क्रि० दे० 'बकरना'।

बकुराना*–स० क्रि० कबूल कराना।

बकुल–पु० [सं०] मौलसिरी; शिव।

बकुला†–पु० दे० 'बगला'।

बकूल–पु० [सं०] दे० 'बकुल'।

बकैयाँ–पु० घुटनोंके बल चलना; ऐसी चाल।

बकोट–स्त्री० बकोटनेकी क्रिया; बकोटनेकी मुद्रामें हाथकी उँगलियाँ; वस्तुकी वह मात्रा जो बकोटनेसे चंगुलमें आये।

बकोटना–स० क्रि० पंजे या नाख़ूनोंसे नोचना।

बकोटा–पु० बकोटनेकी क्रिया; बकोटनेकी मुद्रा; वस्तुकी वह मात्रा जो चंगुल या मुट्ठीमें आ जाय, बुकटा।

बकोरी, बकौरी*–स्त्री० बकावली, गुलबकावली।

बक्कल–पु० छिलका, छाल।

बक़्क़ाल–पु० [अ०] आटा, दाल आदि बेचनेवाला, बनिया।

बक्की–वि० बकबक करनेवाला, बकवादी।

बक्कुर†–पु० मुँहसे निकला हुआ शब्द, बोल।

बक्खर–पु० गाय-बैल बाँधनेका बाड़ा; दे० 'बाखर'।

बक्षोज*–पु० उरोज।

बक्स–पु० बकस, संदूक।

बखत*–पु० दे० 'वक़्त'; 'बख़्त'–'बंस सम बख़त, बखत सम ऊँचौ मन'–ललित०।

बखतर–पु० दे० 'बकतर'।

बखरा–पु० दे० 'बाखर'; दे० 'बख़रा'।

बख़रा–पु० [फ़ा०] हिस्सा, भाग, टुकड़ा।

बखरी†–स्त्री० (गाँवके साधारण घरोंकी दृष्टिसे) बड़ा, अच्छा मकान; जमींदारका मकान।

बखरैत–पु० हिस्सेदार।

बखसीस†–स्त्री० दे० 'बख़्शिश'।

बखसीसना*–स० क्रि० दे० 'बख़्शना'।

बखान–पु० वर्णन; बड़ाई, गुण-कथन।

बखानना–स० क्रि० वर्णन करना, सराहना, बड़ाई करना; गालियाँ देना, कोसना (सात पुरखा बखानना)।

बखार–पु० अनाज रखनेके लिए बनाया हुआ बड़े कोठले जैसा घेरा।

बख़िया–पु० [फ़ा०] दुहरे टाँकोंकी सिलाई, महीन और मजबूत सिलाईका एक प्रकार। –**गर**–पु० बखिया करनेवाला। **मु०–उधेड़ना**–सीवन खोलना; भंडा-फोड़ करना।

बखियाना–स० क्रि० बखिया करना।

बखीर†–स्त्री० ईखका रस या गुड़-चीनी देकर पानीमें पकाया हुआ चावल।

बख़ील–वि० [अ०] कंजूस, कृपण।

बख़ीली–स्त्री० [अ०] कंजूसी।

बखेड़ा–पु० झगड़ा; झंझट, झमेला; कठिनाई, परेशानी।

बखेड़िया–वि० बखेड़ा उठानेवाला, झगड़ालू।

बखेरना–स० क्रि० चीजोंको छितराना, फैलाना।

बखोरना*–स० क्रि० छेड़ना, टोकना।

बख़्त–पु० [फ़ा०] भाग; भाग्य; सौभाग्य।

बख़्तर–पु० दे० 'बकतर'।

बख़्तावर–वि० [फ़ा०] भाग्यशाली, ऊँचे नसीबवाला।

बख़्तियार–वि० [फ़ा०] भाग्यवान्, सौभाग्यशाली।

बख़्श–वि० [फ़ा०] (संज्ञापदसे समस्त होकर) बख़्शनेवाला,

देनेवाला; (नामोंके अंतमें) बख़्शिश, देन, प्रसाद (गुरुबख़्श, करीमबख़्श)। **-नामा**-पु० दे० 'बख़्शिशनामा'।

बख़्शना-स० क्रि० देना, दान करना; क्षमा करना।

बख़्शवाना, बख़्शाना-स० क्रि० दिलाना; माफ कराना।

बख़्शिश-स्त्री० [फा०] दान; देन; इनाम; क्षमा। **-नामा**-पु० हिब्बानामा, दानपत्र।

बख़्शी-पु० [फा०] तनख़ाह बाँटनेवाला कर्मचारी, खजांची।

बख्शीश†-स्त्री० दे० 'बख़्शिश'।

बग*-पु० बगला; 'बाग'का लघु और समासमें व्यवहृत रूप। **-छुट, -छुट**-अ० सरपट, बेतहाशा। **-मेल**-अ० बाग मिलाये हुए। पु० पंक्तिबद्ध होकर धावा बोलना; बराबरी।

बगई†-स्त्री० एक घास जिसकी पत्तियाँ पुड़िया आदि बाँधने और बान बनानेके काम आती हैं; कुकुरमाछी।

बगदना†-अ० क्रि० बिगड़ना; गुस्सेमें अंड-बंड बकना; गिर पड़ना, लुढ़क जाना; भूलना, बहकना।

बगदहा†-वि० बिगड़नेवाला; लड़नेवाला।

बगना*-अ० क्रि० घूमना-फिरना; दौड़ना, भागना।

बगर*-पु० महल; मकान; सहन; गाय बाँधनेका बाड़ा। * स्त्री० दे० 'बग़ल'।

बगरना*-अ० क्रि० फैलना, बिखरना।

बगराना*-स० क्रि० बखेरना, फैलाना। अ० क्रि० फैलना, बिखरना।

बगरी*-स्त्री० बखरी, मकान।

बगरूरा*-पु० बगूला, बवंडर।

बग़ल-स्त्री० [फा०] मोढ़ेके नीचेका गढ़ा, काँख; पहलू, पार्श्व; समीपवर्ती स्थान; कपड़ेका टुकड़ा जो अँगरखे-कुरते आदिमें कंधेके नीचे लगाया जाता है, बगली। **-बंदी**-स्त्री० एक मिरजई जिसमें बगलमें बंद बाँधे जाते हैं। **-का फोड़ा**-काँखमें होनेवाला फोड़ा, कँखौरी। **-का घूँसा**-दे० 'बग़ली घूँसा'। **-में**-पासमें, एक ओर। मु० **-गरम करना**-(स्त्रीका) साथ सोना, बगलमें सोना। **-में ईमान दबाना**-बेईमानी करना, ईमान छोड़कर बोलना। **-में दबाना, में दाबना**-काँखमें छिपा लेना; कब्जेमें कर लेना। **(बग़लें) झाँकना**-निरुत्तर होना; बचावका रास्ता ढूँढ़ना। **-बजाना**-बगलमें हथेली दबाकर आवाज निकालना; अति प्रसन्नता प्रकट करना।

बगला-पु० एक पक्षी जो मछलियों आदिका शिकार करता और जो अपनी कपटवृत्तिके लिए प्रसिद्ध है, बक। **-भगत**-वि० साधुका ढोंग कर दुनियाको ठगनेवाला, पाखंडी।

बगला, बगलामुखी-स्त्री० दे० 'वगला'।

बगलियाना-अ० क्रि० बगलसे होकर जाना, अलग हटकर जाना। स० क्रि० अलग करना, बगलमें करना।

बग़ली-वि० [फा०] बगलका, एक ओरका। स्त्री० अँगरखे आदिमें कंधेके नीचे लगाया जानेवाला टुकड़ा; वह थैली जिसमें दर्जी सुई, तागा रखते हैं; बगलमें रखनेका तकिया; दरवाजेकी बगलमें मारी जानेवाली सेंध; मुगदरकी एक कसरत। **-घूँसा**-पु० बगलसे मारा जानेवाला घूँसा; छिपकर किया जानेवाला वार; दोस्त बनकर दुश्मनी करनेवाला।

बगलौंहा*-वि० तिरछा।

बगसना*-स० क्रि० दे० 'बख़्शना'।

बगा*-पु० जामा; बागा; बगला।

बगाना*-स० क्रि० घुमाना-फिराना; सैर कराना। अ० क्रि० भागना, दौड़ना; घूमना-फिरना।

बगार†-पु० गायोंको बाँधनेकी जगह।

बगारना*-स० क्रि० दे० 'बगराना'।

बग़ावत-स्त्री० [अ०] बागी होना; राज-विद्रोह, विप्लव; अराजकता, बदअमली। मु० **-का झंडा उठाना या बुलंद करना**-विद्रोह करना, विद्रोहकी घोषणा करना।

बगिया-स्त्री० छोटा बाग, वाटिका।

बगीचा-पु० बाग; छोटा बाग।

बगीची-स्त्री० छोटा बाग।

बगुला-पु० दे० 'बगला'। **-भगत**-वि० दे० 'बगला-भगत'।

बगूरा*-पु० दे० 'बगूला'।

बगूला-पु० [फा०] भँवरकी तरह घूमती हुई हवा, बवंडर।

बगेदना*-स० क्रि० धक्का देकर गिरा देना, हटा देना।

बगेरी-स्त्री० गौरैयासे मिलती-जुलती एक छोटी चिड़िया, भरद्वाज।

बग्गी, बग्घी-स्त्री० चार पहियेकी घोड़ा-गाड़ी, जोड़ी।

बघंबर-पु० दे० 'बाघंबर'।

बघ-पु० 'बाघ'का समासमें आनेवाला लघु रूप। **-छाला**-पु० दे० 'बाघंबर'। **-नखा**-पु० उँगलीमें पहननेका एक हथियार जिसमें बाघके नखकी शकलके काँटे निकले होते हैं, शेरपंजा; बच्चोंको पहनानेका एक गहना। **-नहाँ***-पु० दे० 'बघनखा'। **-नहियाँ***-स्त्री० दे० 'बघनखा'। **-बार**-पु० बाघकी मूँछका बाल।

बघना*-पु० एक गहना जिसमें बाघके नख लगे होते हैं।

बघरूरा*-पु० दे० 'बगूला'।

बघार-पु० बघारनेकी क्रिया; वह चीज या मसाला जो बघारनेके काममें लाया जाय, छौंक; बघारकी गंध।

बघारना-स० क्रि० हींग, जीरा, प्याज आदि घीमें कड़कड़ाकर दाल, तरकारी आदिमें डालना, छौंकना, तड़का देना; पांडित्य दिखानेके लिए किसी विषयकी चर्चा करना, छाँटना (वेदांत बघारना)।

बघूरा*-पु० दे० 'बगूला'।

बघेलखंड-पु० मध्यभारतका एक प्रदेश जिसमें रींवा, मैहर आदि शामिल हैं।

बच-स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है। * पु० दे० 'वचन'।

बचका*-पु० आलू, लौकी आदिका पतला, चिपटा, लंबा टुकड़ा जिसपर बेसन लपेटकर घी या तेलमें तलते हैं।

बचकाना-वि० बच्चोंके लायक; बच्चोंकी नापका, छोटा।

बचत-स्त्री० बचनेका भाव, बचाव; जो खर्चसे बच जाय, बची हुई चीज, रकम; लाभ, नफा।

बचन-पु० दे० 'वचन'।

बचना-अ० क्रि० बाकी रहना, खर्चसे उबरना; रक्षा, बचाव होना (खतरे, विपत, सांघातिक रोग आदिसे);

प्राण-रक्षा होना; अलग रहना, परहेज करना। * स० क्रि० बोलना, कहना।

बचपन-पु० लड़कपन, बालावस्था।

बचवैया*-पु० बचानेवाला, रक्षक।

बचा*-पु० दे० 'बच्चा'।

बचाना-स० क्रि० रक्षा करना; बाकी रखना, खर्च न होने देना; अलग रखना; छिपाना।

बचाव-पु० बचने या बचानेका भाव, रक्षा; आत्मरक्षा; सफाई (अभियोगसे)।

बच्चा-पु० नवजात शिशु; शिशु; वत्स, लड़का। वि० कमउम्र, नादान; अनुभवहीन। **-कश**-वि० स्त्री० बहुत बच्चे जननेवाली, बहुप्रसवा (स्त्री)। **-कशी**-स्त्री० बार-बार बच्चे देना। **-दानी**-स्त्री० गर्भाशय। **(बच्चे)-कच्चे**-पु० बाल-बच्चे; छोटे बच्चे। **-वाली**-स्त्री० वह स्त्री जिसकी गोदमें बच्चा हो, जच्चा। **मु०-देना**-गाय-भैंस आदिका बच्चा जनना। **(बच्चों)का खेल**-बहुत आसान काम।

बच्ची-स्त्री० पायजेबका घुँघरू; बच्चाका स्त्री०।

बच्छ*-पु० दे० 'वत्स'; ढाल; वक्ष, सीना।

बच्छल*-वि० दे० 'वत्सल'।

बच्छस-पु० दे० 'वक्ष'।

बच्छा†-पु० दे० 'बाछा'; 'बछड़ा'।

बछ*-पु० बछड़ा। स्त्री० बच। **-नाग**-पु० एक स्थावर विष।

बछड़ा, बछरा*-पु० गायका बच्चा, वत्स।

बछरू*-पु० दे० 'बछड़ा'।

बछल*-वि० दे० 'वत्सल'।

बछवा, बछा*-पु० दे० 'बछड़ा'।

बछिया-स्त्री० गायका मादा बच्चा। **मु०-का ताऊ**-भोंदू; मूर्ख, अज्ञान।

बछेड़ा-पु० घोड़ेका बच्चा।

बछेरू*-पु० बछड़ा; बच्चा-'केसोदास मृगज बछेरू चोषैं बाघिनीन…'-राम०।

बजंत्री-पु० बाजा बजानेवाला, बजनियाँ; बाजा बजानेवालोंका गिरोह; मुसलमानोंके राज्यकालमें पेशेवर गाने-बजानेवालोंसे लिया जानेवाला कर।

बजट-पु० [अं०] आय-व्ययका तख्मीना, आय-व्ययक।

बजड़ा-पु० दे० 'बजरा'।

बजना-अ० क्रि० ध्वनि उत्पन्न होना; ध्वनि उत्पन्न करनेवाला आघात होना; बाजेसे आवाज निकलना; बजाया जाना; चलना (लाठी, तलवार आदिका); प्रसिद्ध होना; * हठ करना।

बजनियाँ, बजनिहाँ†-पु० बाजा बजानेवाला।

बजबजाना†-अ० क्रि० सड़े हुए गंदे पानी आदिमें बुलबुले उठना।

बजमारा*-वि० वज्रका मारा हुआ, जिसपर बिजली गिरी हो (स्त्रियों द्वारा शापरूपमें प्रयुक्त)।

बजरंग-वि० जिसका शरीर वज्र जैसा दृढ़ हो। पु० हनुमान्। **-बली**-पु० हनूमान्।

बजर*-पु० दे० 'वज्र'। **-बट्टू**-पु० एक पेड़के फलका काला गोला बीज जिसकी माला छोटे बच्चोंको नजर लगनेसे बचानेके लिए पहनायी जाती है।

बजरा-पु० बड़ी और पटी हुई नाव; † दे० 'बाजरा'।

बजरागि*-स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बजरी-स्त्री० कंकड़ी; ओला; छोटा कंगूरा; बाजरा।

बजवाई-स्त्री० बाजा बजानेकी उजरत।

बजवाना-स० क्रि० बजानेका काम दूसरेसे कराना।

बजवैया-पु० बाजा बजानेवाला।

बजागि*-स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बजागिन*-स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बज़ाज़-पु० [अ०] कपड़ा बेचनेवाला, वस्त्र-वणिक्।

बज़ाज़ा-पु० कपड़ोंका बाजार, वह स्थान जहाँ बजाजोंकी दुकानें हों।

बज़ाज़ी-स्त्री० बजाजका व्यवसाय।

बजाना-स० क्रि० आघातसे आवाज पैदा करना; बाजेसे आवाज निकालना; आवाज निकालकर जाँचना, परखना (रुपया आदि); मारना, चलाना (लाठी, तलवार); पूरा करना। **बजाकर**-अ० डंका पीटकर, खुले खजाने।

बजार*-पु० दे० 'बाज़ार'।

बजारी*-वि० दे० 'बाज़ारी'।

बजारू†-वि० दे० 'बाज़ारू'।

बजूखा-पु० दे० 'बिजूखा'।

बज्जना*-अ० क्रि० दे० 'बजना'।

बज्जात*-वि० दे० 'बदज़ात'।

बज्र-पु० दे० 'वज्र'।

बज्री-पु० दे० 'वज्री'।

बझना*-अ० क्रि० फँसना, उलझना; बँधना; हठ करना।

बझाउ*-पु० दे० 'बझाव'।

बझान-स्त्री० बझने, फँसनेकी क्रिया।

बझाना†-स० क्रि० फँसाना, उलझाना।

बझाव-पु० उलझाव, फँसाव।

बझावना*-स० क्रि० दे० 'बझाना'।

बट-पु० दे० 'वट'; बाट, वजन; रास्ता (बाटका लघु रूप); बट्टा; बड़ा; किसी चीजका गोला; * हिस्सा। स्त्री० रस्सीकी ऐंठन, बटन। **-परा***-पु० दे० 'बटमार'। **-पार**-पु० दे० 'बटमार'। **-पारी**-स्त्री० दे० 'बटमारी'। **-मार**-पु० राहमें लूट लेनेवाला, राहज़न। **-मारी**-स्त्री० बटमारका काम, पेशा। **-वार**-पु० रास्तेपर पहरा देनेवाला; रास्तेका कर वसूल करनेवाला।

बटखरा-पु० बाट, तौलनेका लोहे आदिका टुकड़ा।

बटन-स्त्री० बटनेकी क्रिया या भाव; रस्सी आदिकी ऐंठन; बादलेका एक तरहका तार। पु० [अं०] सीप-सींग आदिकी छेददार या बिना छेदकी घुंडी जिसे काजमें अटकाकर कपड़ेके दो भाग या पल्ले परस्पर मिलाये जाते हैं, बुताम; बिजली आदिका स्विच या घुंडी जिससे रोशनीका बल्ब जलाया-बुझाया, पंखा आदि खोला-बंद किया जाता है।

बटना-स० क्रि० सूत, धागेके रेशों आदिको तागा, डोरी, रस्सी आदि बनानेके लिए मिलाकर ऐंठना। अ० क्रि० पिसना, पिसा जाना। पु० रस्सी बटनेका आला; उबटन। **मु०-खेलना**-ब्याहके अवसरपर परिहासार्थ एक दूसरेको

उवटन मलना ।

बटला—पु० बड़ी बटलोई ।

बटली—स्त्री० बटलोई ।

बटलोई—स्त्री० चावल, दाल आदि पकानेके काम आनेवाला, हाँड़ीकी शकलका बरतन, पतीला, स्थाली ।

बटवाना—स० क्रि० बाँटनेका या बटनेका काम दूसरेसे कराना ।

बटा*—पु० गोल वस्तु; गेंद; रोड़ा; बटोही ।

बटाई—स्त्री० बटनेकी क्रिया, बटन; बटनेकी उजरत; बाँटनेकी क्रिया, बाँट, विभाजन; जमीनके बंदोबस्तकी वह व्यवस्था जिसमें मालिकको लगानके रूपमें पैदावारका नियत भाग मिले ।

बटाऊ*—पु० बटोही, पथिक ।

बटाक*—वि० बड़ा, ऊँचा ।

बटालियन—पु० [अं०] पैदल सेनाका एक विभाग जिसमें कई कंपनियाँ होती हैं ।

बटिका—स्त्री० दे० 'वटिका' ।

बटिया—स्त्री० छोटा, गोल, चिकना, अकसर लंबोतरा पत्थर (शालग्रामकी बटिया); छोटा बट्टा, लोढ़िया; * मार्ग, रास्ता ।

बटी—स्त्री० गोली, वटी; एक पकवान, बड़ी; * वाटिका ।

बटु—पु० दे० 'वटु' ।

बटुआ—पु० छोटा खानेदार थैला जो मुँहपर लगी डोर खींचनेसे खुलता-बंद होता है; † बड़ी बटलोई ।

बटुई—स्त्री० छोटी बटलोई ।

बटुरना†—अ० क्रि० इकट्ठा होना; सिमटना ।

बटुला—पु० चावल आदि पकानेका बड़े मुँहका पात्र ।

बटुवा—पु० दे० 'बटुला', 'बटुआ'; * एक तरहका मांस ।

बटेर—स्त्री० तीतरसे मिलती-जुलती एक चिड़िया जो अकसर लड़ानेके शौकके लिए पाली जाती है । **—बाज़ी**—स्त्री० बटेर पालना, लड़ाना; इसका व्यसन ।

बटोरन—स्त्री० झाड़ने-बुहारनेसे इकट्ठा होनेवाला कूड़ा; झाड़-बटोरकर लगाया हुआ वस्तुओंका ढेर; बटोरकर एकत्र किये जानेवाले खेतमें पड़े दाने ।

बटोरना—स० क्रि० समेटना; इकट्ठा करना, जमा करना; बिखरी हुई चीजोंका इकट्ठा करना, चुनना ।

बटोही—पु० पथिक, राही ।

बट्ट*—पु० गोला, बटा; गेंद; शिकन; ऐंठन; बाट ।

बट्टा—पु० वह रकम जो रुपये, नोट, हुंडी आदि भुनाने, बदलने या बेचनेपर उसके मूल्यमेंसे काट ली जाय, दस्तूरी, दलाली; कमी; घाटा, नुकसान । **—खाता**—पु० हानि या घाटेका खाता; वह खाता जिसमें डूबी हुई रकमें लिखी जायँ । **मु०—लगना**—बट्टेसे चलना, पूरा मूल्य न मिलना; (इज्जत, नाम आदिमें बट्टा लगना) कमी होना, दाग लगना । **—सहना**—घाटा, नुकसान उठाना ।

बट्टा—पु० गोल, लंबोतरा पत्थर जिससे पीसने-कूटनेका काम लिया जाय, लोढ़ा; पत्थरका चिकना, छोटा गोला; बाजीगरका प्याला; वह गोला जिसे बाजीगर कमानपर चलाते हैं; पान, रत्न आदि रखनेका डिब्बा । **—ढाल**—वि० खूब चौरस और चिकना । **(बट्टे)बाज़**—पु० बाजीगर, नजरबंदीके खेल करनेवाला । वि० धूर्त, चालाक ।

बट्टी—स्त्री० छोटा बट्टा; (साबुन आदिकी) टिकिया; गुड़की छोटी भेली ।

बटटू—पु० बजरबट्टू; धारीदार चारखाना; * बटा, गोला ।

बड़ंगा—पु० बँडेर ।

बड़—वि० 'बड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप । **—दंता**—वि० बड़े दाँतोंवाला । **—दुमा**—पु० लंबी पूँछवाला हाथी । **—पेटा**—वि० बड़े पेटवाला । **—बेरी**—स्त्री० झड़बेरी (?) । **—बोल,—बोला**—वि० डींग मारनेवाला, बड़े बोल बोलनेवाला । **—भाग**—वि० दे० 'बड़भागी' । **—भागी**—वि० बड़े भाग्यवाला, खुशनसीब । **—मुँहा**—वि० बड़े, अधिक लंबे मुँहवाला ।

बड़—पु० वट वृक्ष । स्त्री० बकवाद, डींग । **—बड़**—स्त्री० व्यर्थ बकनेकी क्रिया ।

बड़प्पन—पु० बड़ाई, महत्ता, गौरव ।

बड़बड़ाना—अ० क्रि० बकबक करना; डींग मारना ।

बड़बड़िया—वि० बड़बड़ानेवाला ।

बड़रा*—वि० बड़ा । [स्त्री० 'बड़री' ।]

बड़राना—अ० क्रि० दे० 'बर्राना' ।

बडवा—स्त्री० [सं०] घोड़ी; अश्विनी ।

बडवागि—स्त्री० दे० 'बडवाग्नि' ।

बड़वाग्नि—स्त्री० [सं०] समुद्रस्थित कालानल ।

बड़वानल—पु० [सं०] बड़वाग्नि ।

बड़वार*—वि० बड़ा ।

बड़वारी*—स्त्री० प्रशंसा; बड़प्पन ।

बड़हन†—पु० एक तरहका धान । वि० बड़ा ।

बड़हर(ल)—पु० एक खट-मिट्ठा फल; उसका पेड़ ।

बड़हार—पु० ब्याहके बाद कन्यापक्षकी ओरसे होनेवाली बरातियोंकी ज्योनार ।

बड़ा—वि० जिसका डील, फैलाव अधिक हो, लंबा-चौड़ा, छोटेका उलटा; उम्रमें अधिक; पद, प्रतिष्ठा, अधिकार आदिमें अधिक; भारी महत्त्ववाला; कठिन; विस्तार, परिमाणवाला (इतना, कितना बड़ा); ऊँचा, विशाल, (बड़े हौसिलेका); अधिक, बहुत (बड़ा भारी) । [स्त्री० 'बड़ी'] । पु० उरदकी पीठीकी घी या तेलमें तली हुई टिकिया; बुजुर्ग, गुरुजन; बड़ा आदमी, अधिक शक्ति, प्रभाववाला पुरुष । **—आदमी**—पु० धनी, बड़े पद, प्रतिष्ठावाला । **—काम**—पु० भारी काम, कठिन काम । **—कुलंजन**—पु० मोथा । **—घर**—पु० अमीरका घर; जेलखाना । **—घराना**—पु० ऊँचा घराना । **—दिन**—पु० लंबा दिन; २५ दिसंबरका दिन (क्रिसमस डे) । **—बाबू**—पु० हेड क्लर्क । **—बूढ़ा**—पु० बुजुर्ग, गुरुजन । **—साहब**—पु० प्रधान अधिकारी (यूरोपीय); कलेक्टर; रेजीडेंट । **(बड़ी)इलायची**—स्त्री० बड़े दानेकी इलायची जिसका छिलका हलके कत्थई रंगका होता है । **—बी**—स्त्री० वृद्धाका सम्मानसूचक संबोधन । **—माता**—स्त्री० चेचक, शीतला । **(बड़े)बड़े**—वि० बड़े नाम, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकारवाले (लोग) । **—लाट**—पु० (ब्रिटिश भारतका) गवर्नर जेनरल । **मु०—(बड़ी) बड़ी बातें करना**—दूनकी लेना, डींग मारना । **—(बड़े) बरतनकी खुरचन**—धनी, बड़े आदमीकी जूठन । **—बापका बेटा**—

बड़े नाम, प्रतिष्ठावालेका बेटा, बड़े घरानेका आदमी। **–बोलका सिर नीचा**–घमंडीको नीचा देखना पड़ता है।

बड़ाई–स्त्री॰ बड़ा होना; विस्तार, डील; बड़प्पन, महत्ता; प्रशंसा।

बड़ी–स्त्री॰ उरदकी पीठीमें पेठा, मसाला आदि मिलाकर बनायी और सुखायी हुई टिकिया, कुम्हड़ौरी; पकौड़ी।

बडूजा*–पु॰ दे॰ 'बिडौजा'।

बड़ेरर*–पु॰ बगूला, बवंडर।

बड़ेरा–* वि॰ दे॰ 'बड़ा'। † पु॰ दे॰ 'बँड़ेर'।

बड़ेरी–स्त्री॰ दे॰ 'बड़ेरा'।

बड़ौना*–पु॰ बड़ाई, प्रशंसा।

बढ़ंती–स्त्री॰ दे॰ 'बढ़ती'।

बढ़ई–पु॰ एक हिंदू जाति जो लकड़ीका काम करती है। **–गिरी**–स्त्री॰ बढ़ईका धंधा।

बढ़ती–स्त्री॰ बढ़नेका भाव, वृद्धि, अधिकता।

बढ़ना–अ॰ क्रि॰ डील, आकार, फैलाव, संख्या, मात्रा आदिका अधिक होना, लंबा ऊँचा होना, वृद्धि होना; धन-धान्यकी वृद्धि होना; आगे जाना; दूसरेसे आगे निकल जाना; लाभ होना; महँगा होना; चिरागका बुझाया जाना; दुकानका बंद किया जाना। **बढ़कर**–अधिक अच्छा, श्रेष्ठ। **मु॰ बढ़कर बोलना**–दूसरोंसे अधिक दाम लगाना, बड़ी बोली बोलना। **बढ़-बढ़कर बोलना**–डींग मारना; ढिठाई, गुस्ताखी करना।

बढ़नी–स्त्री॰ झाड़ू, बुहारी; पेशगीके रूपमें लिया जानेवाला अन्न या रुपया।

बढ़वारि†–स्त्री॰ बढ़नी।

बढ़ाना–स॰ क्रि॰ आकार, विस्तार, संख्या, परिमाण आदिमें वृद्धि करना; पहलेसे अधिक लंबा-चौड़ा, ऊँचा करना, ऊपर उठाना; धन, मान आदिकी वृद्धि करना; तरक्की देना, उन्नति करना; ऊँचा, महँगा करना (भाव); आगे करना; आगे निकालना, ले जाना (घोड़ा); सराहना, बढ़ावा देना; समेटना, उठाना (दुकान, दस्तरख्वान); बुझाना (दिया); उतारना (चूड़ियाँ, गहने)। * अ॰क्रि॰ चुकना, समाप्त होना।

बढ़ाव–पु॰ बढ़नेकी क्रिया या भाव; बढ़ना; आगे जाना (सेनाका), फैलाव।

बढ़ावा–पु॰ हिम्मत बढ़ानेवाली बात; प्रोत्साहन, उत्तेजन।

बढ़िया–वि॰ अच्छा, उमदा, अच्छी किस्मका। स्त्री॰ एक तरहकी दाल; * बाढ़–'जिन्हहिं छाँड़ि बढ़िया महँ आये, ते विकल भये जदुराय'–सू॰।

बढ़ैया–† पु॰ बढ़ानेवाला; * बढ़ई।

बढ़ोतरी–स्त्री॰ बढ़ती; बढ़ाया हुआ अंश, क्षेपक।

बणिक(ज्)–पु॰ [सं॰] बनिया, बनिज-व्यापार करनेवाला; विक्रेता (शाकवणिक्)।

बणिग्वृत्ति–स्त्री॰ [सं॰] व्यापार, कारबार।

बत–स्त्री॰ 'बात'का समासमें व्यवहृत लघु रूप। **–कहाव**–पु॰ बातचीत; विवाद। **–कही***–स्त्री॰ बातचीत। **–चल***–वि॰ बकवादी। **–बढ़ाव**–पु॰ बातका बढ़ जाना, झगड़ा, विवाद। **–रस**–पु॰ बातचीतका सुख, मजा।

बतख़–स्त्री॰ हंसकी जातिका एक जलपक्षी।

बतर*–वि॰ बदतर।

बतरान*–स्त्री॰ बातचीत।

बतराना*–अ॰ क्रि॰ बातचीत करना। स॰ क्रि॰ बतलाना।

बतरौहाँ*–वि॰ बातचीत करनेका इच्छुक।

बतलाना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बताना'।

बताना–स॰ क्रि॰ कहना, बयान करना; जताना, समझाना; सूचित करना, प्रकट करना; गाने-नाचनेमें उँगलियोंसे गान या नृत्यके भावोंको प्रकट करना; (ला॰) खबर लेना, मरम्मत करना (आने दो तो बताता हूँ)।

बताशा–पु॰ दे॰ 'बतासा'।

बतास*–स्त्री॰ वायु; वातरोग।

बतासा–पु॰ खालिस शकरकी बनी हुई एक मिठाई, शर्करापुष्प; एक आतिशबाजी; बुलबुला।

बतिया–पु॰ कुछ ही दिनोंका लगा हुआ छोटा फल।

बतियाना†–अ॰ क्रि॰ बात करना।

बतियार*–स्त्री॰ बातचीत।

बतीसा–पु॰ बत्तीस दवाओं और मेवोंके योगसे बनाया हुआ लड्डू या हलवा जो प्रसूताको पुष्टिके लिए खिलाया जाता है; † दाँत काटनेका घाव, चिह्न।

बतीसी–स्त्री॰ नीचे-ऊपरकी दंतपंक्ति, बत्तीसों दाँत; बत्तीस चीजोंका समूह। **मु॰–खिलना**–खुलकर हँसना। **–झड़ना**–दाँतोंका गिर जाना। **–दिखाना**–दाँत दिखाना; हँसना। **–बजना**–अधिक जाड़ा लगना।

बतू*–पु॰ कलाबत्तू।

बतोला–पु॰ धोखा देनेकी बात, भुलावा, झाँसा।

बतौर–अ॰ [फा॰] दे॰ 'ब'के साथ।

बतौरी–स्त्री॰ उठा हुआ मांस, सूजन, ददोरा।

बत्तक–स्त्री॰ दे॰ 'बतख़'।

बत्तिस–वि॰, पु॰ दे॰ 'बत्तीस'।

बत्ती–स्त्री॰ रुई, पुराने कपड़े आदिकी ऐंठ या बटकर बनायी हुई पतली पूनी जिसे तेलमें डालकर दिया जलाते हैं; बुना हुआ, निवाड़ जैसा, फीता जिसे लंपोंमें डालकर जलाते हैं; कपड़ेकी कड़ी ऐंठी हुई धज्जी जो घावके भीतर भरी जाती है; मोमबत्ती; फलीता; सींक आदिपर गंधद्रव्य लपेटकर बनायी हुई बत्ती जो पूजन आदिमें जलायी जाती है; चीरेका ऐंठा हुआ कपड़ा; चिराग; छाजनमें लगानेका कास आदिका पूला। **मु॰–दिखाना**–रोशनी दिखाना। **–देना**–दागना (तोप आदि)। **–लगाना**–जलाना, आग लगाना।

बत्तीस–वि॰ तीस और दो। पु॰ बत्तीसकी संख्या, ३२।

बत्तीसा–पु॰ दे॰ 'बतीसा'।

बत्तीसी–स्त्री॰ दे॰ 'बतीसी'।

बथुआ–पु॰ एक तरहका साग।

बद–स्त्री॰ गिल्टी; चौपायोंका एक रोग; बदला, एवज। वि॰ [फा॰] बुरा; दुष्ट, खोटा; अशुभ। **–अंदेश**–वि॰ बुरा चाहनेवाला, बदख्वाह। **–अंदेशी**–स्त्री॰ बदख्वाही। **–अमनी**–स्त्री॰ अशांति, उपद्रव। **–अमली**–स्त्री॰ अव्यवस्था, कुशासन। **–इंतज़ामी**–स्त्री॰ कुप्रबंध।

–कार–वि० कुकर्मी; व्यभिचारी, दुश्चरित्र। **–कारी**–स्त्री० कुकर्म, दुराचार; व्यभिचार, परस्त्री-गमन। **–क़िस्मत**–वि० अभागा। **–ख़त**–वि० जिसके अक्षर खराब हों। **–ख़ती**–स्त्री० बुरी लिखावट। **–ख़्वाह**–वि० बुरा चाहनेवाला, दुश्मन। **–ख़्वाही**–स्त्री० द्वेप, शत्रुता। **–गुमान**–वि० दूसरेके विषयमें बुरी धारणा रखनेवाला; संदेह करनेवाला; शक्की। **–गुमानी**–स्त्री० कुधारणा; शक। **–गोई**–स्त्री० बुराई, निंदा। **–चलन**–वि० दुश्चरित्र, व्यभिचारी। **–ज़बान**–वि० अपशब्द, गाली-गलौज करनेवाला; मुँहफट। **–ज़ात**–वि० खोटा, नीच, कमीना। **–ज़ायक़ा**–वि० जिसका स्वाद खराब हो, कुस्वाद। **–तमीज़**–वि० जिसे तमीज, सलीका न हो, गँवार; अशिष्ट, गुस्ताख। **–तमीज़ी**–स्त्री० अशिष्टता, गुस्ताखी। **–तर**–वि० अधिक बुरा, ज्यादा खराब। **–तरीन**–वि० बुरेसे बुरा, निहायत खराब। **–तहज़ीब**–वि० असभ्य, अशिष्ट; उजड्ड। **–तहज़ीबी**–स्त्री० असभ्यता, अशिष्टता, उजड्डपन। **–दयानत**–वि० जिसकी नीयत दूसरेकी जमा मार लेनेकी हो, बेईमान, बदनीयत। **–दयानती**–स्त्री० खयानत, बेईमानी। **–दु(दुदु)आ**–स्त्री० शाप, अहित कामनाका उद्‌गार। **–नज़र**–वि० बुरी नजरवाला। स्त्री० बुरी निगाह, कुदृष्टि। **–नसीब**–वि० अभागा, बदकिस्मत। **–नसीबी**–स्त्री० दुर्भाग्य। **–नस्ल**–वि० बुरी नस्लका, नीच, कमीना। **–नाम**–वि० लोग जिसकी निंदा करते हों, जिसकी बुराईकी प्रसिद्धि हो। **–नामी**–स्त्री० लोकनिंदा, अपकीर्ति। **–निगाह**–वि०, स्त्री० दे० 'बदनजर'। **–नीयत**–वि० बुरी नीयतवाला, बेईमान। **–नीयती**–स्त्री० इरादेका खोटा होना, बेईमानी। **–नुमा**–वि० जो देखनेमें बुरा लगे, भद्दा, कुरूप। **–परहेज़**–वि० कुपथ्य करनेवाला। **–परहेज़ी**–स्त्री० कुपथ्य, अयुक्तआहार-विहार। **–फ़ेल**–वि० कुकर्मी, व्यभिचारी। **–बख़्त**–वि० अभागा, बदनसीब। **–बू**–स्त्री० दुर्गंध, कुवास। **–मज़गी**–स्त्री० बदमजा होना, कटुता, बिगाड़। **–मज़ा**–वि० जिसका स्वाद अच्छा न हो, कुस्वाद, फीका। **–मस्त**–वि० शराबके नशेमें चूर, मतवाला, मदहोश; कामुक। **–मस्ती**–स्त्री० मतवालापन; कामुकता। **–मा(मआ)श**–वि० दुष्कर्मसे जीविका करनेवाला; बुरे चाल-चलनका, दुर्वृत्त, दुष्ट, लुच्चा। पु० गुंडा, दुर्वृत्तजन। **–मा(मआ)शी**–स्त्री० बदचलनी, खुटाई, दुष्टता। **–मिज़ाज**–वि० बुरे, तीखे स्वभाववाला, चिड़चिड़ा, बिगडैल। **–मिज़ाजी**–स्त्री० स्वभावका तीखा होना, चिड़चिड़ापन। **–रंग**–वि० बुरे रंगका, जिसका रंग उड़, बिगड़ गया हो, फीका। पु० जिस रंगकी चाल हो उससे भिन्न रंग (ताश); भिन्न रंगकी गोट (चौसर)। **–राह**–वि० बुरे चलनवाला, कुचाली, दुष्ट, खोटा। **–रिकाब**–वि० (घोड़ा) जो सवार होते समय शरारत करे। **–रोबी**–स्त्री० रोब बिगड़ना; अप्रतिष्ठा। **–रौंह***–वि० दे० 'बदराह'। **–लगाम**–वि० मुहँजोर, सरकश (घोड़ा); मुहँफट। **–शकल,–शक्ल**–वि० कुरूप, भोंड़ा। **–शगून**–वि० अशुभ, मनहूस। **–सलीकगी**–स्त्री० बेशऊरी, फूहड़पन; बदतमीज़ी। **–सलीक़ा**–वि० बेशऊर, बदतमीज। **–सलूकी**–स्त्री० दुर्व्यवहार। **–सूरत**–वि० कुरूप, भोंड़ा, बुरी शकलका। **–हज़मी**–स्त्री० अपच, अजीर्ण। **–हवास**–वि० जिसका होश-हवास ठिकाने न हो, घबराया हुआ, उद्विग्न। **–हवासी**–स्त्री० होश-हवासका ठिकाने न होना, घबराहट। **–हाल**–वि० जिसका हाल बुरा हो, दुर्दशाग्रस्त।

बदन–पु० दे० 'वदन'; [फा०] शरीर, देह। मु० **–जलना**–बुखारकी तेजी होना। **–टूटना**–जोड़ोंमें हलका दर्द, तनाव होना। **–तख़्ता होना**–बदन अकड़ जाना। **–दुहरा होना**–बदन झुक जाना। **–फलना**–बदनपर फोड़े-फुंसियाँ निकलना। **–में आग लगना**–बहुत क्रोध होना। **–साँचेमें ढला होना**–हर एक अंगका सुंदर और मुनासिब होना। **–सूखकर काँटा हो जाना**–बहुत दुबला हो जाना। **–हरा होना**–बदनका तर और ताजा होना।

बदना–स० क्रि० ठहराना; नियत, पक्का करना (कुश्ती, उसका दिन, स्थान आदि); शर्त लगाना; गिनना, समझना (वह किसीको कुछ बदता नहीं); मानना (गवाह बदना)। **बदकर**–अ० शर्त लगाकर, पूरे जोरके साथ।

बदना*–स० क्रि० कहना, वर्णन करना–'विप्र बदत बहु बढ़ि बढ़ि बाता'–रघु०।

बदमाश–वि० [फा०] दे० 'बद'के साथ।

बदर–पु० [सं०] बेरका पेड़ या उसका फल; कपास।

बदरा–स्त्री० [सं०] कपासका पौधा। * पु० बादल।

बदराई*–स्त्री० बदली।

बदरिका–स्त्री० [सं०] बेरका पेड़ या फल; गंगाका एक उद्गम-स्थान तथा उसका निकटवर्ती आश्रम-स्थान।

बदरी–* स्त्री० बादल; [सं०] कपासका पौधा; दे० 'बदरिका'। **–नाथ**–पु० बदरिकाका मंदिर। **–नारायण**–पु० बदरिकाश्रम-प्रतिष्ठित नारायण-प्रतिमा; बदरिका नामक स्थान। **–फल**–पु० बेरका फल।

बदल–पु० [अ०] फेरफार, परिवर्तन; एवज, बदला।

बदलना–अ० क्रि० एकसे दूसरी स्थितिमें जाना, भिन्न होना, रंग-रूप दूसरा हो जाना; एककी जगह दूसरा हो जाना, दूसरी जगह भेजा जाना, नियुक्त होना, तबादला होना; (मत, विचार, स्वभावका) दूसरा हो जाना (अब वे बिलकुल बदल गये हैं); बातसे हटना, मुकरना। स० क्रि० दूसरा रंग-रूप देना, फेर-फार करना; एकको छोड़कर या एकके बदलेमें दूसरी चीज लेना, काममें लाना (कपड़ा, मकान); एक चीज देकर दूसरी चीज लेना, बदला करना।

बदलवाना–स० क्रि० बदलनेका काम दूसरेसे कराना।

बदला–पु० बदलनेकी क्रिया, अदल-बदल; एकके बदले दूसरी चीज देना, लेना; वह चीज जो किसी चीजके बदलेमें दी-ली जाय, मुआवजा; वह काम जो किसी कामके बदलेमें, जवाबमें किया जाय, पलटा, प्रतिकार (चुकाना, लेना)।

बदलाई–स्त्री० बदलनेकी क्रिया; बदलेमें ली या दी जानेवाली चीज; बदलनेमें ऊपरसे लगनेवाली रकम।

बदलाना–स० क्रि० दे० 'बदलवाना'।

बदली–स्त्री० छाये हुए बादल, घटा।

बदली–स्त्री० ('बदलना'से) एकके स्थानपर दूसरेका रखा, भेजा या लगाया जाना, तबादला।

बदलौवल†–स्त्री० बदलनेकी क्रिया।

बदा–वि० नियत, भाग्यमें लिखा हुआ।

बदाबदी–स्त्री० होड़, प्रतियोगिता। अ० बढ़कर, प्रतियोगिता-पूर्वक।

बदाम–पु० दे० 'बादाम'।

बदामी–वि० दे० 'बादामी'।

बदि*–स्त्री० बदला, एवज। अ० बदले, एवजमें।

बदी–स्त्री० कृष्ण पक्ष, अँधेरा पाख;[फा०] बुराई, अपकार।

बदूख*–स्त्री० दे० 'बंदूक'।

बदूर, बदूल*–पु० दे० 'बादल'।

बदौलत–अ० [फा०] दे० 'ब'के साथ।

बद्ध–वि० [सं०] बँधा हुआ; बाँधा हुआ; भव-बंधनमें फँसा हुआ, अमुक्त (जीव); जुड़ा हुआ (बद्धांजलि); जमा हुआ; रचित; बंद किया हुआ; प्रदर्शित, प्रकटित। **–कोष्ठ**–वि० जिसे कोष्ठबद्धताका रोग हो, कब्जसे पीड़ित। **–दृष्टि,–नेत्र,–लक्ष्य**–वि० जो किसी चीजपर आँखें गड़ाये, जमाये हो। **–परिकर**–वि० जिसने कमर बाँध ली हो, तैयार। **–प्रतिज्ञ**–वि० वचनबद्ध। **–मुष्टि**–वि० जिसकी मुट्ठी दानके लिए न खुले, कंजूस; जिसकी मुट्ठी बँधी हो। **–मूल**–वि० जिसने जड़ पकड़ ली हो, दृढ़मूल।

बद्धांजलि–वि० [सं०] सम्मान-प्रदर्शनके लिए जिसके हाथ जुड़े हों।

बद्धी–स्त्री० बाँधनेका साधन, डोर, रस्सी; गलेमें पहननेका एक गहना।

बध–पु० [सं०] दे० 'वध'।

बधना–स० क्रि० वध करना, मार डालना। पु० टोंटीदार पात्र जिससे मुसलमान प्रायः लोटेका काम लेते हैं।

बधाई–स्त्री० बधावा, उत्सव; मंगलाचार; खुशीके मौकेपरका गाना-बजाना; इष्ट-मित्रके हर्ष, सफलतापर किया जानेवाला हर्ष-प्रकाश, मुबारकबाद; मुबारकबादका गीत; शुभ अवसरपर दिया जानेवाला उपहार। मु०**–बजना**–पुत्र-जन्म आदिपर बाजा, खासकर शहनाई, बजना।

बधाना*–स० क्रि० वध कराना।

बधाया*–पु० बधाई।

बधावना, बधावरा*–पु० दे० 'बधावा'।

बधावा–पु० बधाई; मंगलाचार; पुत्रजन्म आदिके अवसरपर भेजा जानेवाला उपहार।

बधिक–पु० बध करनेवाला, जल्लाद; व्याध, बहेलिया।

बधिया–पु० बैल, घोड़ा, बकरा आदि जिसका अंडकोश कुचल या निकाल दिया गया हो, आखता; बैल(?)। मु०**–बैठना**–चलते हुए बैलका बैठ जाना; घाटा होना।

बधियाना†–स० क्रि० बधिया करना।

बधिर–पु० [सं०] बहरा।

बधिरता–स्त्री० [सं०] बहरापन।

बधू–स्त्री० दे० 'वधू'।

बधूक–पु० दे० 'बंधूक'।

बधूटी–स्त्री० दे० 'वधूटी'।

बधूरा*–पु० बगूला, बवंडर।

बधैया*–स्त्री० दे० 'बधाई'।

बध्य–वि० दे० 'वध्य'।

बन–पु० जंगल; बगीचा; कपास; दे० 'वन'; * बर। **–आलू**–पु० जमींकंदकी जातिका एक पौधा जिसकी जड़को बनवासी अकसर खोदकर खाते हैं। **–कंडा**–पु० अपने आप सूखा हुआ गोबर जो ईंधनका काम दे। **–कटा**–वि० जंगली (लकड़ी)। **–कपासी**–स्त्री० एक पौधा जिसके रेशेसे रस्सी बटते हैं। **–कर**–पु० जंगलकी पैदावारपर लिया जानेवाला कर। **–खंड**– पु० वनका कोई भाग, वनस्थली। **–खंडी**–स्त्री० बनखंड। पु० बनवासी। **–खरा**–स्त्री० वह जमीन जिसमें कपासकी फसल बोयी गयी रही हो। **–गरी***–स्त्री० एक मछली। **–चर**–पु० दे० 'वनचर'। **–चरी**–स्त्री० एक जंगली घास। **–चारी**–वि०, पु० दे० 'वनचारी'। **–चौंर,–चौंरी**–स्त्री० सुरागाय। **–ज,–जात**–वि०, पु० दे० 'वनज', 'वनजात'। **–तुलसी**–स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ और मंजरी तुलसीसे मिलती है, बर्बरी। **–द***–पु० बादल, वनद। **–दाम**–पु० वनमाला। **–देव,–देवता**–पु० दे० 'वनदेवता'। **–देवी**–स्त्री० दे० 'वनदेवी'। **–धातु**–स्त्री० गेरू, रंगीन मिट्टी। **–निधि**–पु० समुद्र। **–नीबू**–पु० एक सदाबहार क्षुप। **–पट***–पु० पेड़ोंकी छालका बना कपड़ा। **–पति**–पु० सिंह। **–पथ**–पु० जंगलसे होकर गया हुआ रास्ता। **–पाती**–स्त्री० वनस्पति। **–पाल**–पु० बगीचेका रक्षक माली। **–बसन**–पु० छालका बना हुआ कपड़ा। **–बारी**–स्त्री वनकन्या; * पुष्पोद्यान। **–बास**–पु० वनमें बसना; घर छोड़कर अधिक कष्टके स्थानमें रहनेको विवश किया जाना। **–बासी**–पु० बनमें रहनेवाला, जंगली। **–बाहन**–पु० नौका, जलयान। **–बिलाव**–पु० बिल्लीकी जातिका एक वन्य जंतु। **–मानुस**–पु० बिना पूँछका बंदर जिसकी शकल आदमीसे कुछ अधिक मिलती है; निरा जंगली, असभ्य मनुष्य। **–माल,–माला**–स्त्री० दे० 'वनमाला'। **–माली**–पु० दे० 'वनमाली'। **–मुरगा**–पु० जंगली मुरगा। **–मूँग**–पु० मोठ। **–रखा**–पु० वनकी रखवाली करनेवाला; बहेलियोंकी एक जाति। **–राज**–पु० जंगलका राजा, सिंह; बहुत बड़ा वृक्ष। **–राय**–पु० दे० 'वनराज'।

बनउरा†–पु० बिनौला; ओला।

बनक*–स्त्री० बाना, भेष; बनावट; बनकी उपज।

बनज–पु० दे० 'बनिज'; दे० 'बन'में।

बनजना*–स० क्रि० व्यापार करना।

बनजारन, बनजारी–स्त्री० बनजारेकी स्त्री।

बनजारा–पु० जो बैलोंपर अनाज लादकर बेचनेको ले जाय, टाँडा लादनेवाला; बनिज, व्यापार करनेवाला।

बनजी*–पु० व्यापारी। स्त्री० व्यापार–'कोइ खेती कोइ बनजी लागे'–सुंदर०।

बनत–स्त्री० बनावट; मेल; सलमे-सितारेकी बेल जिसके दोनों ओर हाशिया हो।

बनताई*–स्त्री० बनकी भयंकरता।

बनना–अ० क्रि० बनाया जाना, निर्मित, रचित, तैयार

होना; नया रूप मिलना; दूसरी स्थितिमें जाना, आसीन, नियुक्त होना; सुधरना: दुरुस्त होना; सिद्ध, सफल होना (काम, बात); सजना, सँवारना; बनावट करना, जो बात अपनेमें न हो उसका प्रदर्शन करना; फटका जाना, साफ होना (अनाज); बेवकूफ बनाया जाना; मालदार होना; पटना, मेल होना; हो सकना, शक्य होना। **मु० बन आना**–संयोग मिलना, अभीष्ट-सिद्धिका अवसर मिलना। **बनना-ठनना**–बनाव-सिंगार करना, सजना-सँवारना। **बन पड़ना**–हो सकना, शक्य होना। **बन-बनाकर**–बनकर, पूरी तरह बनकर। **बना रहना**–कायम रहना, मौजूद रहना।

बननि*–स्त्री० बनाव, सिंगार; बनावट।

बनफ़शई–वि० [फ़ा०] बनफशेके रंगका।

बनरा–पु० दूल्हा; (लड़केके) ब्याहमें गाया जानेवाला एक गीत; * बंदर।

बनरी–स्त्री० दुलहिन, नववधू; मर्कटी।

बनवना*–स० क्रि० बनाना।

बनवाना–स० क्रि० बनानेका काम दूसरेसे कराना।

बनवारी–पु० वनमाली, कृष्ण।

बनवैया†–पु० बनानेवाला; बनवानेवाला।

बनसपती†–स्त्री० दे० 'वनस्पति'।

बनाइ*–अ० दे० 'बनाय'।

बनाउ*–पु० दे० 'बनाव'।

बनाउरि*–स्त्री० बाणावली।

बनागि*–स्त्री० दावानल।

बनाग्नि–स्त्री० दावानल।

बनात–स्त्री० एक रंगीन ऊनी कपड़ा।

बनाना–स० क्रि० रचना, निर्माण करना, तैयार करना; वस्तुको काममें लाने लायक रूप देना; नया रूप देना, दूसरी वस्तुमें बदल देना (राबसे शकर, दोस्तसे दुश्मन इ०); गढ़ना, रचना (बात, बहाना); साफ करना, बिनना-फटकना (अनाज); काट-छीलकर दुरुस्त करना; सँवारना; किसी पदपर नियुक्त, आसीन करना; सुधारना, मरम्मत करना; कमाना, पैदा करना (रुपया बनाना); व्यंग्य द्वारा उपहास करना, व्याज-निंदाके द्वारा लजवाना। **बनाकर**–अ० अच्छी तरह। **मु०–पछोड़ना**–फटकना, साफ करना। **–बिगाड़ना**–अच्छी या बुरी हालतमें पहुँचाना। **बनाये रखना**–जिंदा रखना, कायम रखना।

बनाबंत, बनाबनत*–पु० वर-कन्याकी जन्मपत्रियोंका मिलान।

बनाय*–अ० अच्छी तरह; बहुत ज्यादा; बिलकुल।

बनाव–पु० बनावट; बनना-सँवरना; युक्ति, उपाय; मेल। **–सिंगार**–पु० बनना-सँवरना।

बनावट–स्त्री० बनानेका भाव, रचना, गठन; रूप; बननेका भाव, आडंबर, दिखावा, नुमाइश।

बनावटी–वि० दिखाऊ; कृत्रिम, नकली।

बनावन†–पु० अनाज बनानेपर निकलनेवाली मिट्टी, कंकड़ी, कचरा आदि।

बनावनहार, बनावनहारा*–पु० बनानेवाला, रचयिता; सुधारनेवाला।

बनावना*–स० क्रि० दे० 'बनाना'।

बनावरि*–स्त्री० बाणोंकी अवलि, पंक्ति।

बनासपाती*–स्त्री० दे० 'वनस्पति'–'नासपाती खातीं वे बनासपाती खाती हैं'–भू०।

बनि*–स्त्री० अन्नके रूपमें दी जानेवाली दैनिक मजदूरी। **–हार**–पु० बनीपर काम करनेवाला; खेतीके काममें किसानकी सहायता करनेवाला स्वतंत्र मजदूर।

बनिक–पु० दे० 'वणिक्'।

बनिज–पु० दे० 'वाणिज्य'। **–ब्योपार**–पु० वाणिज्य-व्यापार।

बनिजना*–स० क्रि० व्यापार करना; क्रय करना।

बनिजारा–पु० दे० 'बनजारा'।

बनिजारिन, बनिजारी–स्त्री० बनजारेकी स्त्री।

बनित*–पु० बाना; सजावट।

बनिता–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

बनिया–पु० व्यापार करनेवाली एक हिंदू जाति, वैश्य; आटा-दाल आदि बेचनेवाला।

बनियाइन–स्त्री० गंजी जैसी कुरती जो बुनी होती है; बनियेकी स्त्री।

बनी–स्त्री० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मजदूरी; वनस्थली; वाटिका; दुलहिन; वधू, नायिका। * पु० वणिक्, बनिया।

बनीर*–पु० बेत, वानीर।

बनेठी–स्त्री० पटेबाजीके अभ्यासमें काममें लायी जानेवाली वह लाठी जिसके दोनों सिरोंपर लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला–वि० जंगली, वन्य।

बनोबास*–पु० दे० 'वनवास'।

बनौआ, बनौवा†–वि० बनावटी।

बनौटी–वि० कपासके फूलके रंगका, कपासी।

बनौरी†–स्त्री० ओला, उपल।

बन्नी–स्त्री० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मजदूरी; बनरी, दुलहिन।

बन्हि–पु० दे० 'वह्नि'।

बप–पु० बाप, पिता। **–मार**–पु० बापकी हत्या करनेवाला।

बपतिस्मा–पु० [अं० 'बैप्टिज़्म'] ईसाई धर्मकी दीक्षाके समय किया जानेवाला एक संस्कार।

बपना*–स० क्रि० बीज बोना, वपन।

बपु, बपुख*–पु० शरीर; रूप; अवतार।

बपुरा*–वि० बेचारा, दीन, अशक्त।

बपौती–स्त्री० बापकी छोड़ी हुई जायदाद, पैतृक संपत्ति।

बप्पा†–पु० बाप (प्रायः संबोधनरूपमें प्रयुक्त)।

बफारा–पु० भाप; दवा मिले हुए पानीकी भापसे शरीर या अंगविशेषको सेंकना (देना, लेना)।

बफौरी–स्त्री० भापसे पकायी हुई बरी।

बबकना–अ० क्रि० उत्तेजित होकर बोलना, बमकना; * उछलना।

बबर–पु० [फ़ा०] अफ्रीकामें पाया जानेवाला शेर, सिंह।

बबा*–पु० दे० 'बाबा'।

बबुआ†–पु० बड़ा जमींदार, बाबू; पुत्र, दामाद, देवर

आदिका स्नेहसूचक संबोधन।

बबुई†–स्त्री० बड़े जमींदार, बाबूकी बेटी; बेटी; छोटी ननद।

बबुर†–पु० दे० 'बबूल'।

बबूल–पु० एक प्रसिद्ध कँटीला पेड़, कीकर।

बबूला–पु० दे० 'बगूला'; दे० 'बुलबुला'।

बभनी–स्त्री० जोंकके आकारका छिपकली जैसा एक जंतु।

बम–पु० शिवकी प्रसन्नताके लिए कहा जानेवाला एक शब्द; एक्के, बैलगाड़ी आदिमें आगेकी ओर निकला हुआ बाँस या लकड़ी जिसमें घोड़े जोते जाते हैं; शहनाईके साथका छोटा नगाड़ा। **–भोला**–पु० शिव। **मु०–बोलना**–समाप्त हो जाना (शक्ति, पूँजी, सामग्री आदिका), दिवाला हो जाना।

बम–पु० [अं० 'बॉम'] लोहेका लंबोतरा गोला जिसमें बारूद और छिटकनेवाली चीजें भरी होती हैं और जो हवाई जहाजसे गिराया जाता या हाथसे तथा तोपमें भरकर भी फेंका जाता है। **–कांड**–पु० बमका प्रहार, विस्फोट। **–गोला**–पु० बमका गोला। **–बाज़**–पु० दुश्मनपर बम बरसानेवाला (हवाई जहाज)। **–बाज़ी, –बारी**–स्त्री० बम-वर्षा। **–वर्षक, –वर्षी**–पु० (बमर) प्रस्फोटों(बमों) की वर्षा करनेवाला हवाई जहाज।

बमकना–अ० क्रि० आवेशमें अपने बल-पौरुषकी डींग मारना; उछलना; फूटना।

बमचख–स्त्री० शोरगुल (मचाना)।

बमना*–स० क्रि० वमन करना।

बमीठा–पु० बाँबी, वल्मीक।

बम्हनी–स्त्री० दे० 'बभनी'; आँखका एक रोग, बिलनी; हाथीकी पूँछ सड़नेका एक रोग; लाल रंगकी जमीन।

बयँहत्था–वि० (लैफ्ट हैंडर) कामकाजमें बायें हाथका ही विशेष रूपसे प्रयोग करनेवाला; बायें हाथसे गेंद फेंकनेवाला, वामहस्तिक।

बय–पु०, स्त्री० दे० 'वय'। स्त्री० जुलाहोंका एक औजार, कंघी।

बयन*–पु० दे० 'बैन'।

बयना*–स० क्रि० बीज बोना; वर्णन करना। अ० क्रि० बहना; लगना, आरोपित होना। पु० मित्रों तथा संबंधियोंके यहाँ भेजा जानेवाला पकवान।

बयर*–पु० दे० 'बैर'।

बयस–स्त्री० दे० 'वय(स्)'। **–वाला***–वि० वयस्क, युवा। **–सिरोमनि***–स्त्री० जवानी, यौवन।

बया–पु० गौरैयासे मिलती-जुलती एक चिड़िया जो अपना घोंसला बड़े कौशलसे बनाती है; आढ़तों आदिमें माल तौलनेका काम करनेवाला।

बयाई–स्त्री० बयाका धंधा; तौलनेकी उजरत, तौलाई।

बयान–पु० [अ०] कथन, वचन, उक्ति; वर्णन; वक्तव्य; तथ्योंका विवरण जो अदालतमें वादी या प्रतिवादी द्वारा लिखकर या जबानी प्रस्तुत किया जाय। **–तहरीरी**–पु० लिखा हुआ बयान जो प्रतिवादी अरजी दावेके जवाबमें दाखिल करता है।

बयाना–पु० वह रकम जो सौदा पका करनेके लिए खरीदार बेचनेवालेको पेशगी देता और पीछे वस्तुके मूल्यमेंसे काट लेता है; साई। * अ० क्रि० बड़बड़ाना।

बयाबान–पु० [फ़ा०] जंगल, उजाड़खंड।

बयार, बयारि*–स्त्री० हवा, वायु; शीतल-मंद वायु। **मु०–करना**–पंखा झलना, पंखेसे हवा करना।

बयारी–स्त्री० ब्यालू; दे० 'बयार'।

बयाला*–पु० वह छेद जो बाहरका दृश्य देखने या गोली चलानेके लिए दीवारमें बना हो; ताखा, आला।

बयालीस–वि० चालीस और दो। पु० '४२'की संख्या।

बयासी–वि० अस्सी और दो। पु० '८२'की संख्या।

बर–पु० दूल्हा। **–काज***–पु० ब्याह। **–का पानी**–नहछूके समय बरका नहाया हुआ पानी जो कन्याको नहलानेके लिए उसके यहाँ भेजा जाता है। **–नेत**–स्त्री० ब्याहकी एक रस्म।

बर*–पु० दे० 'बल'–'देख्यो मैं राजकुमारनको बर'–राम०। **–जोर**–वि० जोरदार, जबर्दस्त। **–जोरी**–स्त्री० जबर्दस्ती। अ० बलात्।

बर*–पु० बरगद; वरदान, आशीर्वाद। अ० बल्कि। वि० श्रेष्ठ। **–गंध**–पु० सुगंधित मसाला।

बर–अ० [फ़ा०] अपर, पर; बाहर। पु० फल; क्रोड, बगल; देह। प्र० ले जानेवाला, ढोनेवाला (दिलबर इत्यादि)। **–क़रार**–वि० स्थिर, कायम, बहाल; दृढ़; जीवित; बना हुआ। **–ख़ास, *–ख़ा(ख्वा)स्त**–वि० उठा हुआ, विसर्जित (जलसा आदि); समाप्त; नौकरीसे अलग किया हुआ, बरतरफ। **–ख़ास्तगी**–स्त्री० समाप्ति; बरतरफी। **–ख़िलाफ़**–वि० विरुद्ध, प्रतिकूल। अ० (…के) विरुद्ध। **–तरफ़**–वि० नौकरी आदिसे अलग किया हुआ, मौकूफ। **–दाश्त**–स्त्री० सहना, उठाना; जानवरोंकी देखभाल, रखरखाव। **–पा**–वि० खड़ा, उपस्थित। [**मु०–पा होना**–खड़ा होना, मचना (फसाद बरपा होना)।] **–बाद**–वि० फेंका हुआ, नष्ट; तबाह (जाना, होना)। **–बादी**–स्त्री० नाश; तबाही, खराबी। **–वक़्त**–अ० समयपर, मौकेपर।

बरई–पु० तमोली।

बरक़ंदाज़–पु० लंबी लाठी या बंदूक लेकर चलनेवाला सिपाही; चौकीदार।

बरकत–स्त्री० [अ०] वृद्धि, बढ़ती; सौभाग्य; लाभ; बहुतायत; बढ़ती करनेका गुण, प्रभाव, प्रसाद।

बरकना†–अ० क्रि० घटित न होना; टलना; बचना; अलग रहना। स० क्रि० रोकना, मना करना।

बरकाना*–स० क्रि० निवारण करना; हटाना; बचाना; पीछा छुड़ाना।

बरख*–पु० दे० 'वर्ष'।

बरखना*–अ० क्रि० बरसना। स० क्रि० बरसाना।

बरखा*–स्त्री० वर्षा; वर्षा ऋतु।

बरखाना*–स० क्रि० दे० 'बरसाना'।

बरग–पु० दे० 'वर्ग'; दे० 'बर्ग'।

बरगद–पु० बड़का पेड़, वटवृक्ष।

बरच्छा†–स्त्री० दे० 'बरेच्छा'।

बरछा–पु० भाला।

बरछी–स्त्री० छोटा बरछा।

बरछैत*–पु० बरछा रखने, चलानेवाला।

बरजना*–स० क्रि० मना करना, रोकना।

बरजनि*–स्त्री० मनाही, रोक।

बरत–पु० दे० 'व्रत'। स्त्री० रस्सी; वह रस्सी जिसपर चढ़कर नट खेल करता है।

बरतन–पु० मिट्टी, धातु आदिका पात्र जो खासकर खाने-पीनेकी चीजें रखने या पकानेके काममें लाया जाय, भाँड़ा।

बरतना–स० क्रि० काममें लाना, इस्तेमाल करना; बर्ताव करना।

बरतनी–स्त्री० शब्दका वर्णक्रम, वर्त्तनी, हिज्जे।

बरताना–स० क्रि० बाँटना, वितरण करना। पु० पुराने कपड़े, उतारा।

बरताव–पु० बरतनेका ढंग, व्यवहार।

बरती–वि० दे० 'व्रती'। स्त्री० बत्ती।

बरतोर†–पु० दे० 'बलतोड़'।

बरद, बरदा*–पु० दे० 'बरधा'।

बरदाना–अ० क्रि० गाय, भैंस आदिका जोड़ा खाना, गाभिन होना। † स० क्रि० गाभिन कराना।

बरदिया, बरधिया*–पु० चरवाहा।

बरध, बरधा†–पु० दे० 'बैल'।

बरधाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'बरदाना'।

बरन*–पु० रंग। अ० बल्कि।

बरनन*–पु० दे० 'वर्णन'।

बरनना*–स० क्रि० वर्णन करना।

बरना*–स० क्रि० वरण करना, चुनना; ब्याहना; वारण करना; मना करना; नियुक्त करना; निमंत्रित करना। अ० क्रि० जलना।

बरफ–स्त्री० दे० 'बर्फ़'।

बरफ़ानी–वि० दे० 'बर्फ़ानी'।

बरफ़ी–स्त्री० एक मिठाई जो चीनीकी चाशनीमें खोया, पेठा, बेसन आदि मिलाकर बनायी जाती है।

बरफ़ीला–वि० दे० 'बर्फ़ीला'।

बरबंड*–वि० दे० 'बरिबंड'।

बरबट*–अ० बरबस, हठात्।

बरबर–पु० उत्तरी अफ्रीकाका सहाराके उत्तर और मिस्र तथा भूमध्यसागरके बीचका भूखंड, बर्बर, हब्श। वि० असभ्य, जंगली, बर्बर। * स्त्री० दे० 'बड़बड़'।

बरबरियत–स्त्री० बर्बरता, जंगलीपन।

बरबस–अ० जबर्दस्ती, बलपूर्वक; अकारण, व्यर्थ।

बरम*–पु० दे० 'वर्म'।

बरमा–पु० लकड़ीमें छेद करनेका औजार; ब्रह्मदेश।

बरमी–पु० बरमावासी। स्त्री० बरमाकी भाषा; छोटा बरमा।

बरम्हा*–पु० ब्रह्मा; बरमा।

बरम्हाउ*–पु० दे० 'बरम्हाव'।

बरम्हाना, बरम्हावना*–स० क्रि० आशीर्वाद देना।

बरम्हाव*–पु० ब्राह्मणत्व; आशीर्वाद।

बरराना–अ० क्रि० दे० 'बर्राना'।

बररे–पु० बर्रे, भिड़।

बरवट–स्त्री० तिल्ली।

बरवा–पु० दे० 'बरवै'।

बरवै–पु० एक मात्रिक छंद।

बरषना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'बरसना'।

बरषा*–स्त्री० दे० 'वर्षा'।

बरषाना*–स० क्रि० दे० 'बरसाना'।

बरषासन–पु० दे० 'वर्षाशन'।

बरस–पु० कालका वह मान जिसमें पृथ्वी सूर्यकी एक बार परिक्रमा करती है, ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४६ सेकेंडका समय, वर्ष। **–गाँठ**–स्त्री० जन्मदिवस, सालगिरह; जन्मदिवसका उत्सव। **–दिनका दिन, –बरसका दिन**–खुशीका दिन, त्योहार जो सालभरके बाद आये।

बरसना–अ० क्रि० वायुमंडलके जलांशका घनीभूत होकर बूँदोंकी शकलमें नीचे आना, वर्षा होना; बूँदोंकी तरह गिरना, झड़ना (फूल, रुपये); इफरातसे मिलना; साफ झलकना, टपकना। स० क्रि० बरसाना। **मु० बरस पड़ना**–बहुत क्रुद्ध होकर अनाप-शनाप बकना, फटकारना।

बरसाइत–स्त्री० जेठ बदी अमावस्या, वट-सावित्री व्रत; * वर्षाऋतु।

बरसाऊ–वि० बरसनेवाला (बादल)।

बरसात–स्त्री० वर्षाके दिन, वर्षाऋतु, मोटे हिसाब आषाढ़से आश्विनतकका समय।

बरसाती–वि० बरसातका; बरसातमें होनेवाला। पु० मोमजामे या दूसरे वाटरप्रूफ कपड़ेका बना हुआ ओवरकोट; वाटरप्रूफ; बरसातमें सोने लायक सबसे ऊपरकी मंजिलपर बना हुआ हवादार कमरा या बरामदा; मकानके आगे बना हुआ छतदार फाटक जिसमें घोड़ा-गाड़ी आदि जाकर रुकती हैं; घोड़ोंका एक रोग; बरसातमें पैर आदिमें होनेवाले फोड़े।

बरसाना–स० क्रि० वर्षा करना; वर्षाकी बूँदोंकी तरह गिराना; बड़ी संख्या, मात्रामें फेंकना, बखेरना (फूल)। पु० गोकुलके समीपका प्रसिद्ध गाँव जो वृषभानुकुमारी राधाका जन्मस्थान माना जाता है।

बरसायत–स्त्री० शुभ-मुहूर्त्त; दे० 'बरसाइत'।

बरसी–स्त्री० मृत्युके एक बरस बादका श्राद्ध।

बरसीला*–वि० बरसानेवाला।

बरसौंहा*–वि० बरसनेवाला।

बरहमंड–पु० दे० 'ब्रह्मांड'।

बरहा–पु० मोटा रस्सा; खेतोंकी सिंचाईके लिए बनी हुई नाली।

बरही–स्त्री० प्रसूताका शिशु-जन्मके १२वें दिनका स्नान; उस दिनका उत्सव; * जलानेकी लकड़ीका गट्ठा; मोटी रस्सी। पु० मोर; बर्हि, आग। **–पीड़**–पु० मोरके पंखोंका मुकुट। **–मुख***–पु० अग्निमुख, देवता।

बरहौं*–पु० जन्मके बादका बारहवाँ दिन।

बरांडा–पु० दे० 'बरामदा'।

बरांडी–स्त्री० 'ब्रांडी' नामक शराब।

बरा–पु० दे० 'बड़ा'; * वटवृक्ष; बाहुपर पहननेका एक गहना।

बराई*–स्त्री० दे० 'बड़ाई'।

बराक–पु० दे० 'वराक'। वि० शोचनीय; बेचारा; तुच्छ।

बराटिका–स्त्री० दे० 'वराटिका'।

बरात–स्त्री० वरके साथ कन्यापक्षके यहाँ जानेवाले लोग, जनेत; दूल्हाकी सवारीका जुलूस; भीड़, मजमा । मु०–करना–बरातमें शामिल होना ।

बराती–वि० बरातसे संबंध रखनेवाला, वरपक्षकी ओरसे कन्यापक्षके यहाँ जानेवाला । पु० बरातमें आये हुए लोग ।

बराना–स० क्रि० परहेज करना, बचाना, अलग रखना; टालना; रक्षा करना; चुनना, छाँटना; * जलाना । अ० क्रि० जलना–'नैन दीठ नहिं दिया बराही'–प० ।

बराबर–वि० [फा०] समान, तुल्य; सदृश; समतल, हमवार; बल, दरजे आदिमें समान, समकक्ष । अ० लगातार; एक पंक्तिमें; साथ; सदा; तक । –का–वि० बल, वय आदिमें समान, जोड़का; सामनेका (बराबरके मकानमें) । –बराबर–अ० साथ-साथ, एक पाँतमें; समान भागमें, आधेआध । मु०–करना–समतल करना; परिमाण, ऊँचाई आदिमें समान करना; खतम कर देना, बाकी न छोड़ना (सारी कमाई खा-पीकर बराबर कर दी) ।–(पर) छूटना–कुश्ती, बटेरों आदिकी लड़ाईमें लड़नेवालोंका बिना हारे-जीते अलग हो जाना, किसीकी जीत-हार न होना । –से निकलना–पाससे निकलना ।

बराबरी–स्त्री० समानता, प्रतिस्पर्द्धा; गुस्ताखी ।

बरामद–पु० [फा०] बाहर आना, निकलना, प्रकट होना; निकास; मालकी रवानगी; नदीके हटनेसे निकलनेवाली जमीन, गंगबरार (बर+आमद=ऊपर, बाहर आना) । मु०–करना–छिपी-छिपायी हुई चीजको बाहर लाना, प्रकट करना (चोरीका माल, खजानेसे रुपया) ।–होना–बाहर आना, प्रकट होना ।

बरामदगी–स्त्री० [फा०] बरामद होना ।

बरामदा–पु० [फा०] मकान या बालाखानेकी दीवारसे लगाकर बनाया हुआ सायबान जिसकी छत या छाजन खंभोंपर टिकी हो ।

बराय–अ० [फा०] वास्ते, लिए । –खुदा–अ० खुदाके वास्ते, ईश्वरके नामपर । –नाम–अ० नामके लिए, दिखानेको ।

बरायन*–पु० विवाहके समय दूल्हेको पहनाया जानेवाला लोहेका छल्ला; विवाहके समयका कलश ।

बरार–पु० एक जंगली जानवर; मध्यप्रदेशका एक भाग ।

बराव–पु० बरानेका भाव, बचाव, परहेज ।

बराह–पु० दे० 'वराह' । अ० दे० 'ब'में ।

बरिआई*–स्त्री० जबर्दस्ती । अ० बलपूर्वक ।

बरिआत*–स्त्री० दे० 'बरात' ।

बरिआर*–वि० बलवान्–'तपबल बिप्र सदा बरिआरा' –रामा० ।

बरिच्छा–स्त्री० वरेच्छा, फलदान ।

बरिबंड*–वि० बलवान्; प्रचंड, दुर्धर्ष ।

बरिया†–स्त्री० बटिका, गोली । वि० दे० 'बरियार' ।

बरियाई*–स्त्री०, अ० दे० 'बरिआई' ।

बरियात–स्त्री० दे० 'बरात' ।

बरियार†–वि० बलवान्, शक्तिशाली । पु० दे० 'बरियारा' ।

बरियारा–पु० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है ।

बरिषना*–अ० क्रि० 'बरसना' ।

बरिषा*–स्त्री० दे० 'वर्षा' ।

बरिस†–पु० दे० 'बरस' ।

बरी–* वि० बली; [अ०] आजाद, रिहा; फारिग; निर्दोष । स्त्री० [हिं०] फूँका हुआ कंकड़, कंकड़का चूना; दे० 'बड़ी' । –का चूना–कंकड़का चूना जो पलस्तर आदिके काम आता है ।

बरीस*–पु० दे० 'बरस' ।

बरीसना*–अ० क्रि० दे० 'बरसना' ।

बरु*–अ० बल्कि; भले ही ।

बरुआ, बरुवा†–पु० ब्राह्मणकुमार जिसका उपनयन हो रहा हो; उपनयन; वह गीत जिसे गाकर भिक्षुक वृत्तिवाले ब्राह्मण उपनयनके निमित्त भीख माँगते हैं ।

बरुक*–अ० द० 'बरु' ।

बरुणालय–पु० समुद्र ।

बरुन*–पु० दे० 'वरुण' ।

बरुनी–स्त्री० पलकके किनारेके बाल, बरौनी ।

बरूथ–पु० दे० 'वरूथ' ।

बरेँड़ा†–पु० ठाठके नीचे लंबाईमें दिया जानेवाला गोला बल्ला ।

बरेँड़ी–स्त्री० छोटा बरेँडा ।

बरे*–अ० ऊँची आवाजसे; बलपूर्वक; बदलेमें ।

बरेखी, बरेषी–स्त्री० ब्याहकी ठहरौनी, मँगनी; बाँहपर पहननेका एक गहना ।

बरेच्छा–स्त्री० ब्याहकी ठहरौनी ।

बरेज, बरेजा–पु० पानकी बाड़ी ।

बरेठ, बरेठा–पु० धोबी ।

बरेत*–स्त्री० मथानीकी रस्सी ।

बरेदी†–पु० चरवाहा ।

बरैँड़ा–पु० दे० 'बरेँड़ा' ।

बरोक–पु० वह धन जो कन्यापक्षकी ओरसे वरपक्षको इसलिए दिया जाता है कि ब्याहकी बातचीत पक्की समझी जाय, फलदान [बर–रोक] । अ० बलपूर्वक–'होइ सो बेलि जेहि बारी आनहिं सबै बरोक'–प० ।

बरोठा, बरौठा–पु० डेवढ़ी; बैठक । (बरोठे)का चार–द्वारपूजा ।

बरोरु*–वि० दे० 'वरोरु' ।

बरोह–पु० बरगदकी डालियोंसे निकलनेवाली प्रशाखा जो धीरे-धीरे जमीनतक पहुँचकर जड़ पकड़ लेती है, बरगदकी जटा ।

बरौँछी–स्त्री० सूअरके बालोंकी कूँची जिससे सुनार गहना साफ करनेका काम लेते हैं ।

बरौनी–स्त्री० पलकके किनारेके बाल; †पानी भरने आदिका काम करनेवाली टहलनी, कहारिन ।

बरौरी*–स्त्री० बड़ी ।

बर्क़ी–वि० बिजलीका; बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाला ।

बर्खास्त–वि० दे० 'बरख़ास्त' ।

बर्ग–पु० [फा०] पत्ता; लड़ाईका हथियार ।

बर्छा–पु० दे० 'बरछा' ।

बर्ज*–वि० दे० 'वर्ज्य' ।

बर्जना–स० क्रि० दे० 'बरजना' ।

बर्णन–पु० दे० 'वर्णन'।

बर्णना*–स० क्रि० वर्णन करना। स्त्री० दे० 'वर्णना'।

बर्तना, बर्त्तना–स० क्रि० दे० 'बरतना'।

बर्ताव–पु० दे० 'बरताव'।

बर्तुल–वि० दे० 'वर्तुल'।

बर्द–पु० बैल।

बर्न*–पु० दे० 'वर्ण'।

बर्नना*–स० क्रि० वर्णन करना। स्त्री० दे० 'वर्णना'।

बर्फ़–स्त्री० [फ़ा०] जमा हुआ पानी; वायुमंडलकी भाप जो सरदीसे घनीभूत होकर रुईके गालेकी शकलमें जमीनपर गिरती और फिर जमकर कड़ी हो जाती है; बर्फमें रखकर जमाया हुआ दूध, फलोंका रस आदि। वि० बर्फ जैसा ठंढा; बर्फसा सफेद (होना, हो जाना)। **–की नदी**–हिमानी, ग्लेशियर।

बर्फ़ानी–वि० [फ़ा०] बर्फका; बर्फसे ढका हुआ (–पहाड़)।

बर्फ़ी–स्त्री० दे० 'बरफ़ी'।

बर्फ़ीला–वि० बर्फसे युक्त; बर्फसे ढका हुआ।

बर्बटी–स्त्री० [सं०] राजमाष; वेश्या।

बर्बर–वि० [सं०] असभ्य, जंगली, उजड्ड; अनार्य; घुँघराले। पु० घुँघराले बाल; जंगली, असभ्य आदमी; एक कीड़ा; एक मछली; एक सुगंधित तृण; हथियारोंकी आवाज; एक तरहका नृत्य।

बर्बरी(रिन्)–वि० [सं०] घुँघराले बालोंवाला।

बर्र†–पु० भिड़।

बर्राना–अ० क्रि० सपना देखते हुए आदमीका बोलना; बड़बड़ाना, प्रलाप करना।

बर्रे†–पु० भिड़, ततैया; एक पौधा जिसका बीज तेलहनके काम आता है।

बर्हण–वि० [सं०] शक्तिशाली; फाड़ने या खींच लेनेवाला; चकाचौंध पैदा करनेवाला। पु० पत्ता खींचने, फाड़नेकी क्रिया।

बर्ही(र्हिन्)–पु० [सं०] दे० 'बर्ही'।

बलंद–वि० दे० 'बुलंद'।

बलंदी–स्त्री० दे० 'बुलंदी'।

बल–पु० [सं०] शरीरकी शक्ति, ताकत; (फ़ोर्स) वह शक्ति जो स्थिरता अथवा चालकी दशाओंको बदल दे या बदलनेकी प्रवृत्ति पैदा कर दे; स्थूलता; सेना; शुक्र; बलराम; इंद्रके हाथों मारा गया एक राक्षस; भरोसा, सहारा (हिं०); बलका गर्व; अधपका जौ; कौआ; वरुण वृक्ष। **–कर, –कारक**–वि० बल देनेवाला। **–द**–पु० बैल; जीवक; गृह्याग्निका एक भेद। वि० बल देनेवाला। **–दर्प**–पु० बलका घमंड। **–दाऊ***–पु० दे० 'बलदेव'। **–देव**–पु० बलराम; वायु। **–द्विट्(ष)**–पु० इंद्र। **–नाशन**–पु० इंद्र। **–पति**–पु० सेनापति; इंद्र। **–परीक्षण**–पु० (शो-डाउन) परस्पर-द्वेषी दलों द्वारा (अंततो गत्वा) एक दूसरेकी शक्ति या बलकी परीक्षा लेनेके लिए किया जानेवाला प्रयत्न, अंतिम परीक्षा। **–बीर, –वीर***–पु० कृष्ण (बलरामके भाई)। **–बूता**–पु० [हिं०] ताकत, जोर। **–भद्र**–पु० बलवान् पुरुष; बलराम; नीलगाय; अनंत; लोध्र। **–मद**–पु० बलका घमंड। **–राम**–पु० कृष्णके बड़े भाई जो रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, बलदेव, हलधर। **–वर्धी(र्धिन्)**–वि० बल बढ़ानेवाला। **–शाली(लिन्)**–वि० बलयुक्त, बली। **–शील***–वि० बलशाली। **–सूदन**–पु० इंद्र। **मु० (किसीके)–पर कूदना**–किसीके भरोसे इतराना।

बल–पु० पहलू, बगल, करवट; ऐंठन; शिकन; फेरा; टेढ़ापन; लचक; फर्क; घाटा। **मु०–आना**–शिकन पड़ना; फर्क आना। **–उतरना**–शिकन दूर होना। **–खाना**–नाराज होना; टेढ़ा होना; लचकना; घाटा सहना। **–देना**–ऐंठना, मरोड़ना। **–पड़ना**–घाटा होना; फर्क होना; शिकन आना।

बलकना, बलगना–अ० क्रि० उमगना, जोशमें आना; इतराकर बोलना, बलबलाना।

बलकल*–पु० दे० 'वल्कल'।

बलकाना–स० क्रि० उबालना; उमगाना, उसकाना।

बलग़म–पु० [अ०] कफ, श्लेष्मा।

बलतुट, बलतोड़–पु० बाल टूटनेसे होनेवाला फोड़ा।

बलना–अ० क्रि० जलना, दहकना।

बलबलाना–अ० क्रि० ऊँटका बोलना; बड़बड़ाना; उफनना।

बलबलाहट–स्त्री० बलबलानेका भाव; ऊँटकी बोली।

बलभी–स्त्री० सबसे ऊपरकी छतपरकी कोठरी।

बलम*–पु० प्रियतम।

बलमीक–पु० बाँबी।

बलय*–पु० दे० 'वलय'।

बलया*–स्त्री० दे० 'वलय'।

बलवंड*–वि० दे० 'बलवंत'।

बलवंत*–वि० बलवान्।

बलवत्ता–स्त्री० [सं०] बलवान् होनेका भाव, शक्तिमत्ता।

बलवा–पु० दंगा, फसाद, उपद्रव; विप्लव, बगावत; पाँचसे अधिक आदमियोंका मिलकर एक या अधिक आदमियोंको मारना (का०)।

बलवाई–पु० बलवा करनेवाला, विद्रोही, बागी।

बलवान्(वत्)–वि० [सं०] शक्तिशाली, बली, ताकतवर।

बलवार*–वि० बलवान्।

बला–स्त्री० [सं०] बरियारा; एक मंत्र जिसके प्रयोगसे योद्धाको भूख-प्यास नहीं लगती; पृथ्वी; दक्षकी एक कन्या; [अ०] कष्ट, आपत्ति, आफ़त; प्रेतबाधा; रोगव्याधि; बहुत कष्ट देनेवाली वस्तु, व्यक्ति। **–कश**–वि० मुसीबतें उठानेवाला। **(बलाये) आसमानी**–स्त्री० अचानक आनेवाली बिपत, दैवकोप। **–जान**–स्त्री० जीका जंजाल, झंझट। **मु०–उतरना**–बिपत आना, दैवकोप होना। **(किसीकी)–(कुछ)करे, या करने जाय**–नहीं करना। **–का**–गजबका, हद दरजेका। **(मेरी)–जाने**–मैं न जानता हूँ, न जाननेकी गरज है। **–टलना**–कष्टसे, परीशानीसे या तंग करनेवाले आदमीसे छुटकारा मिलना। **–पीछे लगना**–बखेड़ा साथ होना। **–मोल लेना**–जान-बूझकर झंझट-झमेलेमें पड़ना। **(मेरी)–से**–कुछ परवा नहीं, (मेरी) जूतीकी नोकसे। **बलायें लेना**–किसीकी बला, रोग-व्याधि अपने ऊपर लेना।

बलाइ्*-स्त्री० दे० 'बला' [अ०] ।

बलाक-पु० [सं०] बगला; एक पुराण-वर्णित राजा ।

बलाका-स्त्री० [सं०] प्रिया; कामुकी स्त्री; बगली; बकपंक्ति ।

बलाढ्य-वि० [सं०] बलवान् । पु० उरद ।

बलात्-अ० [सं०] बलपूर्वक, जबर्दस्ती । **-कार**-पु० स्त्रीकी इच्छाके विरुद्ध बलपूर्वक किया जानेवाला संभोग; बलपूर्वक, जबर्दस्ती कुछ करना; बलप्रयोग; अन्याय । **-सत्तापहरण**-पु० (कूडेटा) दे० 'शासनिक विपर्यय' ।

बलादवतरण-पु० [सं०] (फोर्स्ड लैंडिंग) इंजनकी खराबी आदिके कारण हवाई जहाजका हठात् भूमिपर उतर पड़ना ।

बलादवतरित-वि० [सं०] (फोर्स्ड लंडेड) जो इंजनकी खराबी आदिके कारण भूमिपर उतर पड़नेको बाध्य हो गया हो (विमान) ।

बलाद्ग्रहण-पु० [सं०] (एग्जैक्शन) रुपया-पैसा आदि किसीसे बलपूर्वक ले लेना; धन-संबंधी अनुचित माँग ।

बलाधिकृत-पु० [सं०] (मार्शल) सेनाका सर्वोच्च पदाधिकारी ।

बलाधिक्य-पु० [सं०] बलकी अधिकता ।

बलाध्यक्ष-पु० [सं०] सेनापति ।

बलाबल-पु० [सं०] बल और बलाभाव; (दो पक्षों आदिका) तुलनात्मक बल और निर्बलता, महत्त्व और महत्त्वहीनता ।

बलाय-स्त्री० दे० 'बला' [अ०] । मु०-लेना-दे० 'बलायें लेना' ।

बलाराति-पु० [सं०] इंद्र ।

बलाहक-पु० [सं०] बादल; मोथा ।

बलिंदम-पु० [सं०] विष्णु ।

बलि-स्त्री० [सं०] देवताको चढ़ायी जानेवाली चीज, चढ़ावा, नैवेद्य; पूजा; बलिपशु; जमीनकी उपजका भाग जो राजाको मिले, राजकर; पंच महायज्ञोंके अंतर्गत चौथा, भूतयज्ञ; बल, सिकुड़न, पेटमें नाभिके ऊपर पड़नेवाली रेखा; बवासीरका मस्सा; गुदावर्तके पास होनेवाला एक फोड़ा । * सखी । पु० विरोचनका पुत्र दैत्यराज जिसे पुराणोंके अनुसार विष्णुने वामनरूप धरकर छला; चँवरका दंड । **-कर्म(न्)**-पु० भूतयज्ञ; पूजा; राजकर देना । **-दान**-पु० देवताको पूजन-सामग्रीका अर्पण; देवताके उद्देश्यसे पशुवध करना, कुरबानी । **-द्विट्(ष्)**-पु० विष्णु । **-ध्वंसी(सिन्)**-पु० विष्णु । **-नंदन,-पुत्र,-सुत**-पु० बाणासुर । **-पशु**-पु० वह पशु जिसका किसी देवताके प्रीत्यर्थ वध किया जाय । **-पुष्ट,-भुक्(ज्)**-पु० कौआ । **-भोज,-भोजन**-पु० कौआ । **मु०-चढ़ना**-बलिदान होना, मारा जाना । **-चढ़ाना**-बलि देना । **-जाना**-निछावर होना ।

बलित*-वि० बलि चढ़ाया हुआ, मारा हुआ; दे० 'वलित' ।

बलिवर्द-पु० [सं०] दे० 'बलीवर्द' ।

बलिष्ठ-वि० [सं०] सबसे अधिक बली, अतिशय बलवान् ।

बलिष्ठातिजीवन-पु० [सं०] (सर्वाइवल ऑफ दि फिटेस्ट) सामाजिक और प्राकृतिक जीवन-संघर्षमें सबसे योग्यों या बलिष्ठोंका जीवित बचे रहना ।

बलिहारना*-स० क्रि० निछावर करना ।

बलिहारी-स्त्री० निछावर होना, कुर्बान जाना । **मु०-जाना**-निछावर होना ।

बली-स्त्री० त्वचापर शिकनसे पड़ी हुई रेखा, वलि; *लता ।

बली(लिन्)-वि० [सं०] बलवान्, ताकतवर ।

बलीमुख*-पु० बंदर ।

बलीवर्द-पु० [सं०] साँड़; बैल ।

बलुआ-वि० जिसमें बालू अधिक मिला हो, रेतीला । पु० बलुई जमीन ।

बलूची-पु० बलूचिस्तानका निवासी । स्त्री० बलूचिस्तानकी भाषा ।

बलूला-पु० पानीका बुलबुला ।

बलैया*-स्त्री० दे० 'बला' । **मु०-लेना**-दे० 'बलायें लेना' ।

बल्कल-पु० दे० 'वल्कल' ।

बल्कि-अ० [फा०] किंतु, प्रत्युत; अच्छा हो कि ।

बल्ब-पु० [अं०] शीशेकी नलीका अधिक चौड़ा भाग; पतले शीशेका खोखला लट्टू जिसके भीतर बिजलीकी बत्ती होती है ।

बल्लभ-वि०, पु० दे० 'वल्लभ' ।

बल्लभी-स्त्री० प्रिया; दे० 'वल्लभी' (गोपिका) ।

बल्लम-पु० डंडा; भाला; चाँदी या सोनेका पत्तर चढ़ा हुआ सोंटा जिसे राजाओं, दूल्हों आदिकी सवारीके अगल-बगल चार आदमी लेकर चलते हैं, सोंटा । **-बरदार**-पु० बल्लम लेकर चलनेवाला, अनुचर ।

बल्लमटेर-पु० स्वयंसेवक (वालंटियर) ।

बल्लरी-स्त्री० दे० 'वल्लरी' ।

बल्लव-पु० [सं०] चरवाहा, ग्वाला; रसोइया, पाचक; विराट्के यहाँ पाचकका काम करते समय भीमका नाम ।

बल्लवी-स्त्री० [सं०] ग्वालिन, गोपी ।

बल्ला-पु० लकड़ीका लंबा, सीधा लट्ठा; नाव खेनेका डाँड़ा; गेंद मारनेका चपटा डंडा, बैट ।

बल्लेबाज-पु० (बैट्समैन) क्रिकेट या गेंद-बल्लेके खेलमें वह खिलाड़ी जो अपनी ओर आते हुए गेंदपर प्रहार करता है और अवसर देखकर 'रन' बनानेके लिए एक विकेटसे दूसरे विकेटकी ओर दौड़ता है ।

बल्लेबाजी-स्त्री० (बैट्समैनशिप) (गेंद-बल्लेके खेलमें) बल्लेसे गेंदपर प्रहार करनेकी क्रिया या कला ।

बवंडर-पु० बगूला, अंधड़ ।

बवंडा*-पु० बवंडर ।

बव-पु० [सं०] ज्योतिषके करणोंमेंसे पहला ।

बवघूरा*-पु० बगूला ।

बवन*-पु० दे० 'वमन' ।

बवना*-स० क्रि० बोना; बिखेरना । अ० क्रि० बिखरना । पु० बौना ।

बवरना-अ० क्रि० दे० 'बौरना' ।

बवासीर-स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदामें मस्से पैदा हो जाते हैं, अर्श ।

बशिष्ठ-पु० [सं०] दे० 'वसिष्ठ' ।

बशीरी-पु० एक तरहका बारीक रेशमी कपड़ा ।

बसंत-पु० दे० 'वसंत'; एक पौधा ।

बसंती-वि० बसंतका; बसंती रंगका । पु० हलका पीला

रंग; पीला कपड़ा ।

बसंदर-पु० दे० 'वैश्वानर' ।

बस-पु० वश, शक्ति, काबू । अ० [फा०] काफी, अलम्; बहुत; इतना ही; (आज्ञा अर्थमें) ठहरो, रुको । **-करो**-ठहरो, रुक जाओ, खतम करो ।

बसति*-स्त्री० दे० 'बस्ती' ।

बसन-पु० दे० 'वसन' ।

बसना-अ० क्रि० स्थायी रूपसे रहना; टिकना, ठहरना; आबाद होना; मनुष्योंका रहने लगना; * बैठना-'प्यार पगी पगरी पियकी बसि भीतर आपने सीस सँवारी'-देव; बसाया जाना, सुगंधसे बासा जाना । पु० बेठन, थैली; रुपये रखनेकी जालीदार थैली; † बरतन ।

बसनि*-स्त्री० वास, रहाइश ।

बसनी†-स्त्री०रुपये रखकर कमरमें बाँधनेकी लंबीसी थैली ।

बसर-स्त्री० [फा०] गुजर, निर्वाह (करना, होना)। **-औकात**-पु० निर्वाह, जीवन-यापन ।

बसवार*-पु० तड़का, छौंक । वि० सोंधा ।

बसवास*-पु० वास, रहना; रहनेका ठिकाना; रहनेका ढंग ।

बसह*-पु० बैल ।

बसाँधा*-वि० बासा हुआ, सुवासित ।

बसा-स्त्री० दे० 'वसा'; * बर्रें, भिड़ ।

बसात-स्त्री० दे० 'बिसात' ।

बसाना-स० क्रि० बसनेको प्रेरित करना; बसनेका प्रबंध करना; आबाद करना; टिकाना; बासना, सुवासित करना; * बिठाना । अ० क्रि० बस चलना-'तनमनं हारे हू हसैं, तिनसौं कहा बसाय'-वि०; बसना; गंध देना ।

बसिआना, बसियाना-अ० क्रि० बासी हो जाना ।

बसिऔरा, बसियौरा-पु० रातमें होनेवाले कुछ पूजनोंका अगला दिन जब घरके सब लोग रातका पका हुआ बासी ही खाना खाते हैं; बासी भोजन ।

बसिया†-वि० बासी । पु० बासी भोजन ।

बसिष्ठ-पु० दे० 'वसिष्ठ' ।

बसीकत*-स्त्री० बस्ती; बसनेकी क्रिया, निवास ।

बसीकर*-वि० दे० 'वशीकर' ।

बसीकरन*-पु० दे० 'वशीकरण' ।

बसीठ-पु० दूत, संदेशवाहक ।

बसीठी-स्त्री० दूतका काम, दौत्य ।

बसीत्यो*-पु० बस्ती, निवासस्थान ।

बसीना*-पु० निवास, रहाइश ।

बसीला-वि० बासवाला, गंधयुक्त; दुर्गंधयुक्त ।

बसु-पु० दे० 'वसु' । **-देव**-पु० दे० 'वसु'में ।

बसुधा-स्त्री० दे० 'वसुधा' ।

बसुमती-स्त्री० दे० 'वसुमती' ।

बसुरी†-स्त्री० बाँसुरी ।

बसूला-पु० एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी काटता-छीलता है, तक्षणी ।

बसूली-स्त्री० छोटा बसूला; वह औजार जिससे राज ईंटें गढ़ता-छीलता है ।

बसेरा-पु० रात बितानेका स्थान, टिकनेका ठिकाना; वह जगह जहाँ चिड़ियाँ रात बितायें, घोंसला; रहना, टिकना; रहनेवाला । **मु०-करना,-लेना**-रातमें टिकना, बसना ।

बसेरी*-पु० बसने-टिकनेवाला ।

बसैया*-पु० बसनेवाला ।

बसोवास*-पु० वासस्थान ।

बसौंधी-स्त्री० सुवासित और लच्छेदार रबड़ी ।

बस्तर-पु० दे० 'वस्त्र' । **-मोचन**-पु० किसीके बदनपर लँगोटीतक न रहने देना, सब कुछ छीन लेना ।

बस्ता-वि० [फा०] बँधा हुआ (दस्त-बस्ता, कमर-बस्ता); तह किया हुआ । पु० वह कपड़ा जिसमें किताबें या कागज-पत्र बाँधें जायँ, बेठन; बेठनमें बँधी हुई पुस्तकें, कागजपत्र । **मु०-बाँधना**-कागजपत्र समेटना, (दफ्तर, मदरसेसे) घर जानेकी तैयारी करना ।

बस्ती-स्त्री० बसनेका भाव; आबादी, आबाद घरोंका समूह, गाँव, कसबा इ०; स्थानविशेषमें बसनेवाले लोग, आबादी (छोटी, बड़ी बस्ती, दस हजारकी बस्ती) ।

बस्त्र-पु० दे० 'वस्त्र' ।

बस्य-वि० अधीन, वशमें आनेवाला । पु० अधीनस्थ व्यक्ति; सेवक ।

बहँगा-पु० बड़ी बहँगी ।

बहँगी-स्त्री० बाँसके फट्टेके दोनों छोरोंपर छीका लटकाकर बनाया हुआ, बोझ ढोनेका साधन, काँवर ।

बहक-स्त्री० बहकनेका भाव, पथभ्रष्टता; बढ़-बढ़कर या अंडबंड बोलना, बड़ ।

बहकना-अ० क्रि० ठीक रास्तेसे हटकर गलत रास्तेपर जाना, पथ-भ्रष्ट होना; चूकना; भुलावेमें आना, धोखा खाना; नशेमें अंड-बंड या घमंडमें बढ़-बढ़कर बोलना; *उछलना । **मु० बहकी-बहकी बातें करना**-मदोन्मत्तकी तरह अंड-बंड बकना; बढ़-बढ़कर बोलना ।

बहकाना-स० क्रि० ठीकसे गलत रास्तेपर ले जाना, पथ-भ्रष्ट करना; बुरे, हानिकर कामके लिए प्रेरित करना; भुलावा देना, भरमाना; बहलाना (बच्चोंको) ।

बहकावट-स्त्री० बहकानेकी क्रिया ।

बहकावा-पु० बहकानेवाली बात, भुलावा ।

बहतोल*-स्त्री० पानी बहनेकी नाली ।

बहत्तर-वि० सत्तर और दो । पु० ७२ की संख्या ।

बहन-स्त्री० दे० 'बहिन' । * पु० (वायुका) बहना, झोंका ।

बहना-अ० क्रि० तरल पदार्थका नीचेकी ओर जाना, धाराके रूपमें प्रवाहित होना; धारा या बहावके साथ आगे जाना; हवाका चलना; चूना, स्रवित होना; फूटना, मवाद निकलना; अपनी जगहसे हट जाना; चरित्रभ्रष्ट होना; नष्ट होना; डूब जाना; बहुत सस्ता बिकना; * उठना; चलना । स० क्रि० वहन करना, ढोना; धारण करना, निभाना । **मु० बहती गंगामें हाथ धोना**-ऐसी चीजसे फायदा उठाना जिससे सब उठा रहे हों ।

बहनापा-पु० बहिनका नाता ।

बहनी*-स्त्री० दे० 'वह्नि' ।

बहनु*-पु० वाहन, सवारी ।

बहनेली-स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ बहनका नाता जोड़ा गया हो, मुँहबोली बहन ।

बहनोई–पु० बहिनका पति, भगिनीपति ।

बहनौता–पु० बहिनका बेटा, भांजा ।

बहनौरा–पु० बहिनकी ससुराल ।

बहम–पु० दे० ‘वहम’ ।

बहर*–अ० बाहर–‘गावत बधाई सूर भीतर बहरके’–सू०। स्त्री०, पु० दे० ‘बह’ ।

बहरा–वि० जिसे सुनाई न दे, श्रवणशक्तिहीन; ऊँचा सुननेवाला; अनसुनी करनेवाला, ध्यान न देनेवाला (–बन जाना) । **मु०–पत्थर**–बहुत ज्यादा बहरा ।

बहराना–स० क्रि० दे० ‘बहलाना’; * बाहर करना । * अ० क्रि० बाहर होना; बह जाना; उड़ जाना ।

बहरिया†–वि० दे० ‘बाहरी’ । पु० मंदिरका सेवक जो बाहर रहे (वल्लभसंप्रदाय) ।

बहरियाना†–स० क्रि० बाहर करना; अलग करना । अ० क्रि० बाहर या बाहरकी ओर जाना; अलग हो जाना ।

बहरी–स्त्री० बाजसे मिलती-जुलती एक शिकारी चिड़िया । वि० बही, दरियाई, समुद्री ।

बहल–स्त्री० छतरीदार बैलगाड़ी, बहली ।

बहलना–अ० क्रि० मनका दुःख, क्लेश देनेवाली बातसे हटकर प्रसन्नताजनक व्यापारमें लगना, मनोरंजन होना ।

बहलाना–स० क्रि० मनको दुःख, क्लेश देनेवाली बातसे हटाकर प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लगाना, दिल खुश करना, मनोरंजन करना; भुलावा देना, बहकाना ।

बहलाव–पु० मनका बहलना, किसी प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लग जाना ।

बहली–स्त्री० दे० ‘बहल’ ।

बहल्ला*–पु० आनंद ।

बहल्ली–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच ।

बहस–स्त्री० [अ०] सवाल-जवाब; वाद-विवाद, खंडन-मंडन; हुज्जत, झगड़ा; मुकदमेमें पक्षविशेषके वकीलका अपने पक्षको युक्ति-प्रमाणके साथ प्रस्तुत करना; मतलब, लगाव (मुझे दूसरेसे कोई बहस नहीं); * होड़ । **–मुबाहिसा**–पु० वाद-विवाद, शास्त्रार्थ ।

बहसना*–अ० क्रि० बहस करना; होड़ लगाना ।

बहादर*–वि० दे०‘बहादुर’ । पु० सैनिक, सिपाही–‘आये वीर बादर बहादर मदनके’–भू० ।

बहादुर–वि० [फ़ा०] शूर-वीर; साहसी, निडर ।

बहादुराना–अ० [फ़ा०] वीरतापूर्वक, वीरोचित प्रकारसे । वि० वीरोचित, वीरतासूचक ।

बहादुरी–स्त्री० [फ़ा०] वीरता, मरदानगी ।

बहाना–स० क्रि० बहनेका कारण, कर्ता होना, जल या दूसरे प्रकारके द्रव पदार्थको किसी दिशामें प्रवाहित करना; बहनेके लिए धारामें डालना; बूँदों या धाराके रूपमें गिराना, ढालना (आँसू बहाना); सस्ता बेचना; उड़ाना; बरबाद करना । पु० [फ़ा०] किसी कामके करने या न करनेका झूठा, बनावटी हेतु, मिस, हीला; निमित्त, व्याज । **(बहाने)बाज़ी**–स्त्री० बहाने बनाना ।

बहाने–अ०…के बहानेसे;…के हेतु, निमित्त बनाकर ।

बहार–स्त्री० [फ़ा०] वसंत ऋतु; खिलती हुई जवानी; विकास; शोभा; आनंद, लुत्फ, मजा; तमाशा; नारंगीका फूल; एक रागिनी । **–गुर्जरी**–स्त्री० एक रागिनी । **–नशाख**–पु० एक राग । **(बहारे)दानिश**–स्त्री० फारसीका एक प्रसिद्ध कहानी-संग्रह । **–हुस्न**–स्त्री० रूपकी छटा, यौवनश्री । **मु०–पर आना,–पर होना**–जवानीपर आना, खिलना, पूर्ण विकास होना ।

बहारना†–स० क्रि० झाड़ना, झाड़ू लगाना ।

बहारी, बहारू–स्त्री० बढ़नी, झाड़ू ।

बहाल–अ० [फ़ा०] असली हालतपर, पूर्ववत् । वि० ज्यों-का त्यों; प्रसन्न, खुश; तंदुरुस्त; कायम ।

बहाली–स्त्री० पुनर्नियुक्ति; † भुलावा देनेवाली बात, झाँसा ।

बहाव–पु० बहनेका भाव या क्रिया, प्रवाह, धारा ।

बहिः(हिस्)–अ० [सं०] बाहर, भीतरका उलटा; बाहरसे, अलग । **–शाला**–स्त्री० बाहरका कमरा । **–शीत**–वि० जो बाहर ठंढा हो । **–सद्**–वि० बाहर बैठनेवाला । **–स्थ**–वि० बाहरका । **–स्पर्शी**–वि० (सुपरफीशियल) भीतरतक न जानेवाला, ऊपरी, दिखाऊ ।

बहिक्रम*–पु० उम्र, अवस्था ।

बहित्र–पु० दे० ‘वहित्र’ ।

बहिन–स्त्री० पिताकी पुत्री, भगिनी ।

बहिनापा–पु० दे० ‘बहनापा’ ।

बहियाँ*–स्त्री० बाँह ।

बहिया–स्त्री० बाढ़, प्लावन ।

बहिरंग–वि०[सं०] बाहरी, अंतरंगका उलटा, बाहरवाला । पु० बाहरी भाग, अंग ।

बहिर, बहिरा*–वि० बहरा, बधिर ।

बहिरत*–वि० बाहर ।

बहिरर्थ–पु० [सं०] बाह्य उद्देश्य ।

बहिराना†–स० क्रि० बाहर निकालना । अ० क्रि० बाहर होना; बहरा होना ।

बहिर्गत–वि० [सं०] बाहर गया हुआ; जो बाहर हो; अलग; (आउट) (गेंद-बल्ला आदिके खेलमें वह खेलाड़ी) जो गेंदके आघातसे यष्टियोंके ऊपरकी गुल्लीके गिर जाने, पदबाधा या गेंदके लोक लिये जाने आदिके कारण बल्लेबाजी करते रहनेके अधिकारसे वंचित हो गया हो; जो घरमें या कार्यालय आदिमें न हो, बाहर गया हो; जो पदासीन या अधिकारारूढ़ न रह गया हो; जो प्रकट या प्रकाशित हो गया हो ।

बहिर्गमन–पु० [सं०] बाहर जाना । **–द्वार**–पु० (एग्ज़िट) (किसी सिनेमा, नाट्यशाला आदिके) प्रकोष्ठ या भवनसे बाहर निकलनेका रास्ता ।

बहिर्गामी(मिन्)–वि० [सं०] बाहर जानेवाला ।

बहिर्द्वार–पु० [सं०] बाहरी दरवाजा, तोरण ।

बहिर्निःसारण–पु० [सं०] बाहर निकालना ।

बहिर्भूत–वि० [सं०] जो बाहर हो या हो गया हो, बहिर्गत ।

बहिर्मनस्क–वि० [सं०] जिसका मन किसी और जगह हो ।

बहिर्मुख–वि० [सं०] जिसका मन बाहरी विषयोंमें उलझा, आसक्त हो, विमुख । पु० देवता ।

बहिर्यात्रा–स्त्री०, **बहिर्यान**–पु० [सं०] बाहर जाना,

विदेश-यात्रा ।

बहिर्लापिका-स्त्री० [सं०] एक तरहकी पहेली जिसमें उसका उत्तर पहेलीके शब्दोंके बाहर रहता है, भीतर नहीं ।

बहिर्लोम, बहिर्लोमा(मन्)-वि० [सं०] जिसके बाल बाहरकी ओर निकले हों ।

बहिर्वास(स्)-पु० [सं०] कौपीनके ऊपर पहननेका कपड़ा ।

बहिर्वासी रोगी-पु० [स०] (आउटडोर पेशेंट) वह रोगी जो चिकित्सागृहके बाहर रहते हुए इलाज कराता हो (अंतर्वासी या प्रविष्ट रोगीका उलटा), बाह्य रोगी ।

बहिर्विकार-पु० [सं०] गरमीकी बीमारी, आतशक ।

बहिर्व्यसनी(निन्)-वि० [सं०] लंपट, व्यभिचारी ।

बहिष्करण-पु० [सं०] बाहर करना, अलग करना; बहिष्कार, प्रयोग करना; बहिरिंद्रिय, अंतःकरणका उलटा ।

बहिष्कार-पु० [सं०] बाहर करने, अलग करनेका भाव; संबंध-त्याग, बिरादरीसे बाहर करना; वस्तु-विशेष(वर्ग या देश-विशेषके माल, संस्था आदि)का सामूहिक व्यवहार-त्याग (बायकाट) ।

बहिष्कृत-वि० [सं०] जिसका बहिष्कार किया गया हो, निकाला हुआ; परित्यक्त ।

बहिष्क्रिया-स्त्री० [सं०] बाहरी क्रिया; बाह्य संस्कार ।

बही-स्त्री० हिसाब-किताब लिखनेकी पुस्तक, महाजनों, व्यापारियों आदिके हिसाबका रजिस्टर; सिली हुई मोटी कापी जो हिंदुस्तानी ढंगसे हिसाब लिखनेके काम आती है । **-खाता**-पु० किसी महाजन, व्यापारी आदिकी बहियाँ, हिसाबकी किताबें । **मु० -पर चढ़ना या टँकना**-बहीपर लिख लिया जाना ।

बहीर*-स्त्री० भीड़-'जेहि मारग गये पंडिता तेई गई बहीर'-बीजक; सेनाके साथ चलनेवाला सेवक समुदाय; फौजी सामान-'अब बहीर चलती करौ कालिह पहुँचनो कोल'-सुजान० । * अ० बाहर ।

बहुँटा-पु० बाँहका एक गहना ।

बहु-वि० [सं०] दोसे अधिक, अनेक, बहुत, ज्यादा । **-कंटक**-वि० बहुत काँटोंवाला । पु० क्षुद्र गोक्षुर; जवासा; हिंताल । **-कालीन**-वि० बहुत दिनका, पुराना ।**-गंध**-वि० तीव्र गंधवाला ।**-गंध-दा**-स्त्री० कस्तूरी ।**-गुण**-वि० कई तारों या सूतोंवाला; जिसमें बहुतसे गुण हों । **-गुना**-[हिं०] पु० खुले मुँहके डब्बेके आकारका पीतलका बरतन जो बटलोई, कड़ाही आदिका काम देता है । **-जल्प**-वि० बहुत बोलनेवाला, वाचाल । **-ज्ञ**-वि० बहुत जाननेवाला, बहुत विषयोंका जानकार ।**-तंत्रीक**-वि० जिसमें बहुतसे तार हों (वाद्य) । **-दर्शी(र्शिन्)**-वि० जिसने बहुत देखा-सुना हो, बहुज्ञ; दूरदर्शी ।**-धंधी**-वि० [हिं०] जो एक साथ बहुतसे कामोंमें अपनेको फँसाये रखता हो ।**-धन**-वि० जिसके पास बहुत धन हो । **-नामा(मन्)**-वि० जिसके बहुतसे नाम हों । **-पद, -पाद**-वि० बहुतसे पैरोंवाला । पु० बरगद ।**-प्रकार**-अ० अनेक प्रकारसे । वि० बहुविध ।**-प्रज**-वि० जिसके अधिक बाल-बच्चे हों। पु० सूअर; चूहा; मूँज ।**-प्रतिज्ञ**-वि० जिसमें बहुतसी प्रतिज्ञाएँ या दावे हों; (मुकदमा) जिसमें अनेक अभियोग या दावे हों । **-प्रद**-वि० बहुत देनेवाला, महादानी ।**-प्रसू**-स्त्री० बहुतसे बच्चोंकी माँ । **-बाहु**-पु० रावण । **-भक्ष**-वि० बहुत खानेवाला । **-भाग्य**-वि० बड़े भाग्यवाला, बड़भागी ।**-बहुभाषाज्ञ**-पु० (पॉलीग्लॉट) बहुत-सी भाषाएँ जानने या बोलनेवाला ।**-भाषी(षिन्)**-वि० बहुत बोलनेवाला ।**-भुज**-वि० अनेक भुजाओंवाला । पु० (पॉलीगॉन) वह समक्षेत्र जो चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हो । **-भुज-क्षेत्र**-पु० चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हुआ क्षेत्र (ज्यामिति) । **-भुजा**-स्त्री० दुर्गा ।**-भोक्ता(क्तृ)**-वि० बहुत खानेवाला ।**-भोग्या**-स्त्री० वेश्या । **-भोजी(जिन्)**-वि० पेटू । **-मत**-वि० अति सम्मानित, बहुमानयुक्त; कई रायें रखनेवाला । पु० अधिकतर, बहुसंख्यक लोगोंका मत, कसरतराय (हिं०); अनेक मत, कई तरहकी रायें । **-मानी(निन्)**-वि० बहुत आदरणीय । **-मान्य**-वि० आदरणीय, सम्मानित । **-मार्गी**-स्त्री० वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलें । **-मुख**-वि० कई तरहकी बातें कहनेवाला; (वर्सेटाइल) जो अनेक विषयोंका जानकार हो; अनेक दिशाओंमें जानेवाला । (बहुमुखी प्रतिभा=वर्सेटाइल जीनियस ।) **-मूत्र**-वि० मधुमेह रोगसे पीड़ित । पु० मधुमेह । **-मूल्य**-वि० अधिक मूल्यका, बेशकीमत । **-याजी(जिन्)**-वि० जिसने बहुत यज्ञ किये हों । **-रंग**-वि० अनेक रंगोंवाला, रंग-बिरंगा । **-रंगी**-वि० [हिं०] जो बहुतसे रंग बदले; बहुरुपिया । **-रस**-वि० जिसमें बहुत रस हो; तरह-तरहके स्वादवाला । **-रिपु**-वि० जिसके बहुतसे शत्रु हों ।**-रुपिया**-वि०, पु० [हिं०] अनेक रूप धरनेवाला । **-रूप**-वि० अनेक रूपोंवाला, बहुरुपिया । पु० शिव; विष्णु; ब्रह्मा; सूर्य; कामदेव; गिरगिट; केश; तांडव नृत्यका एक भेद । **-रूपक**-वि० अनेक रूपोंवाला । पु० एक जीव । **-रूपदर्शक**-पु० (कैलीडोस्कोप) एक लंबी नली जिसमें रंगीन काँचके टुकड़े इस तरह डाल दिये जाते हैं कि उसे इधर-उधर हिलानेसे कई तरहकी सुंदर और कलापूर्ण शकलें दिखाई देती हैं । **-वचन**-पु० संज्ञा, क्रिया आदिका वह विकार जिससे बहुत या एकसे अधिकका बोध हो । **-विद्**-वि० बहुत बड़ा विद्वान् । **-विद्य**-वि० (वर्सेटाइल) जो अनेक विद्याएँ जानता हो, जो विभिन्न विषयोंपर लेखादि लिख सकता हो या भाषण कर सकता हो, बहुमुख ।**-विध**-वि० अनेक प्रकारका । अ० अनेक प्रकारसे, बहुत तरहसे । **-विवाह**-पु० एक पत्नीके रहते अनेक स्त्रियोंसे विवाह करना (पॉलिगैमी) । **-विस्तार**-पु० बहुत अधिक फैलाव । वि० विस्तृत । **-व्ययी(यिन्)**-वि० फुजूलखर्च, उड़ाऊ । **-व्रीहि**-वि० जिसके पास बहुत धान हो । पु० व्याकरणके चार मुख्य समासोंमेंसे एक । **-श्रुत**-वि० जिसने बहुतसे शास्त्र गुरुसे पढ़े हों; विद्वान्; जिसने अनेक शास्त्रोंकी बातें सुनी हों, बहुज्ञ । **-संख्य,-संख्यक**-वि० बड़ी संख्यावाला, जो गिनतीमें बहुत हो ।

बहुत-वि० अधिक, ज्यादा (मात्रा या संख्यामें); काफी,

पूरा। अ० अधिक मात्रामें, ज्यादा। **–अच्छा**–(स्वीकृति सूचक) बेहतर है, ऐसा ही होगा। **–करके**–अधिकतर, प्रायः, बहुत संभव है। **–कुछ**–काफी, थोड़ा नहीं। **–खूब**–बहुत अच्छा।

बहुतक*–वि० बहुतसे।

बहुता–स्त्री०, **बहुत्व**–पु० [सं०] बहुतायत, आधिक्य।

बहुताइत–स्त्री० दे० 'बहुतात'।

बहुतात, बहुतायत–स्त्री० अधिकता, ज्यादती, इफरात।

बहुतेरा–वि० बहुतसा। अ० बहुत-बहुत तरहसे।

बहुतेरे–वि० बहुतसे, अनेक।

बहुधा–अ० [सं०] अनेक प्रकारसे; बहुत करके, अक्सर।

बहुरना*–अ० क्रि० लौटना, वापस आना, फिर मिलना।

बहुरि*–अ० फिर; पीछे, अनंतर।

बहुरिया–स्त्री० दुलहिन, नयी बहू।

बहुरी*–अ० दे० 'बहुरि'।

बहुल–वि० [सं०] बहुत, अनेक; बहुतसा, प्रचुर; काला।

बहुलता–स्त्री० [सं०] बहुतात, प्रचुरता।

बहुला–स्त्री० [सं०] इलायची; गाय; नीलका पौधा; एक देवी; चंद्रमाकी बारहवीं कला। **–चौथ**–स्त्री० [हिं०] भाद्र-कृष्णा चतुर्थी। **–वन**–पु० वृंदावनके ४४ वनोंमेंसे एक।

बहुलालाप–वि० [सं०] बकवादी।

बहुली*–स्त्री० इलायची।

बहुलीकृत–वि० [सं०] बढ़ाया हुआ, वर्धित; प्रकट किया हुआ।

बहुशः(शस्)–अ० [सं०] बहुत बार, बहुत तरहसे।

बहूँटा–पु० बाँहपर पहननेका एक गहना।

बहू–स्त्री० पुत्रवधू; दुलहिन; पत्नी।

बहूपमा–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार–उपमेयके एक ही धर्मके लिए अनेक उपमानोंका कथन।

बहेड़ा–पु० एक जंगली पेड़।

बहेतू–वि० जो इधर-उधर मारा-मारा फिरे, आवारा।

बहेरा–पु० दे० 'बहेड़ा'।

बहेलिया–पु० चिड़ियाँ फँसानेवाला, चिड़ीमार।

बहोर*–पु० बहोरनेका भाव, लौटाना; वापसी। अ० दे० 'बहुरि'।

बहोरना*–स० क्रि० लौटाना, वापस करना।

बहोरि*–अ० दे० 'बहुरि'।

बह्र–स्त्री० [अ०] छंद, शेरका वजन। पु० महासमुद्र; समुद्र; बड़ा दरिया, नद; उदार व्यक्ति; तेज घोड़ा; जहाजोंका बेड़ा।

बाँक–पु० टेढ़ापन, वक्रता; गन्ना छीलनेका सरौतेकी शकलका औजार; एक तरहकी टेढ़ी छुरी; एक तरहका शिकंजा जिसमें किसी चीजको दबाकर रेतते हैं; दे० 'बाँका'; बाजूपर पहननेका एक गहना; पैरका एक गहना; एक तरहकी चौड़ी चूड़ी; बाँक लड़नेकी कला; नदीका घुमाव; धनुष्। वि० दे० 'बाँका'। **–पन, –पना**–पु० टेढ़ापन, वक्रता; सुंदरता, छवि; छबीलापन, शौकीनी; शोखी, अदा।

बाँकड़ा†–वि० वीर, साहसी।

बाँकड़ी, बाँकुड़ी–स्त्री० साड़ी आदिपर टाँकनेका सुनहला या रुपहला फीता।

बाँकना*–स० क्रि० टेढ़ा करना। अ० क्रि० टेढ़ा होना।

बाँका–वि० टेढ़ा, तिरछा, वक्र; सज-धजका, शौकीन, छैल-छबीला; शोख; वीर, साहसी; गुंडा। पु० एक अर्धचंद्राकार औजार जिससे बाँसका काम करनेवाले बाँस छीलते-काटते हैं।

बाँकिया–पु० नरसिंहा नामका बाजा।

बाँकुरा*–वि० टेढ़ा, बाँका; चतुर; वीर, साहसी; पैना।

बाँग–स्त्री० [फा०] आवाज,बोली; मुर्गेकी आवाज; अजान।

बाँगड़–पु० हिसार, रोहतक और करनाल जिले।

बाँगड़ू–स्त्री० बाँगड़ देशकी बोली। वि० मूर्ख, उजड्ड।

बाँगर–पु० ऊँची जमीन, वह जमीन जो बाढ़में न डूबे; एक तरहका बैल।

बाँगुर–पु० चिड़ियाँ फँसानेका जाल, फंदा–'तुलसिदास यह बिपति बाँगुरो तुमहिंसों बने निबेरे'–विनय०।

बाँचना–स० क्रि० पढ़ना; * बचाना; चुनना, चयन करना। अ० क्रि० बचना, बाकी रहना; रक्षा पाना।

बाँछना*–स्त्री० दे० 'वांछा'। * स० क्रि० चाहना; दे० 'बाछना'।

बांछा*–स्त्री० दे० 'वांछा'।

बांछित*–वि० दे० 'वांछित'।

बांछी*–वि० वांछा करनेवाला।

बाँझ–वि० जिससे संतान या फल उत्पन्न न हो। स्त्री० वंध्या स्त्री, गाय आदि। **–पन, –पना**–पु० बाँझ होना, वंध्यत्व।

बाँट–स्त्री० बाँटनेकी क्रिया, बटवारा; ताश आदिके पत्तोंका बाँटा जाना; हिस्सा, बाँटा–'याहूमें कछु बाँट तुम्हारो'–सू०; दे० 'बाट'। **–बूँट**–स्त्री० बटवारा, हिस्सा-बखरा। **मु०–पड़ना**–दे० 'बाँटेमें आना'।

बाँटना–स० क्रि० हिस्से करना, कई भाग कर देना; बहुतोंको थोड़ा-थोड़ा देना, वितरण करना; * पीसना, घोंटना।

बाँटा–पु० बाँटनेकी क्रिया; हिस्सा, बखरा; बाँटेमें मिलनेवाली वस्तु। **मु० (बाँटे)में आना या पड़ना**–हिस्सेमें आना।

बाँड़–पु० दो नदियोंके संगमके बीचकी जमीन। † वि० बाँड़ा।

बाँड़ा–वि० (पशु) जिसकी पूँछ कट गयी हो; (पुरुष) जिसके आगे-पीछे कोई न हो, असहाय।

बाँद*–पु० दास, टहलू; बंधन, फंदा।

बाँदर*–पु० बंदर।

बाँदा–पु० एक तरहका पौधा जो आम आदिके वृक्षोंमें लगकर उनके रससे पुष्ट होता है।

बाँदी–स्त्री० दासी, लौंडी।

बाँदू*–पु० बंदी, बँधुआ।

बाँध–पु० पानी रोकनेके लिए बनायी हुई कच्ची या पक्की मेंड़, बंद।

बाँधना–स० क्रि० रस्सी, जंजीर आदिसे लपेटकर कसना, गाँठ देना, बंधनमें लाना; रस्सी आदिमें फँसाकर खूँटे

आदिसे अँटकाना; लपेटना (पगड़ी, पट्टी); लपेटकर कसना, समेटना (गठरी, बिस्तर); बाँधकर धारण करना (घड़ी, तलवार); जोड़ना (हाथ); कैद करना; नियम, वचन आदिसे बंधनमें डालना, पाबंद करना; मेंड़ या बाँध बनाकर रोकना; गतिहीन करना; कीलना, शक्ति, प्रभाव नष्ट कर देना; जमाना (निशाना); नियत करना (हद, गुज़ारा, बारी आदि); चूर्ण, चाशनी आदिको गोली, लड्डू आदिका रूप देना; ठीक करना (घड़ा); व्यवस्थित, क्रमयुक्त करना; जोड़ना, बटोरना (दल, गोल); बनाना (मोरचा); लगातार करना, लगाना (झड़ी, ताँता); सोचना (खयाल, मंसूबा); भावको गद्य या पद्य-रचनाका रूप देना, निबंधन।

बाँधनीपौरि*–स्त्री॰ पशुशाला।

बाँधनू–पु॰ मंसूबा, बंदिश; मनमें बनायी हुई योजना; खयाली पुलाव; झूठी तोहमत; लहरियादार रँगाईमें कपड़ेको जगह-जगह बाँध देना; इस तरह बाँधकर रँगा हुआ कपड़ा। **मु॰–बाँधना**–मंसूबा बाँधना।

बांधव–पु॰ [सं॰] भाई-बंधु; स्वजन, निकट-संबंधी, मित्र।

बाँबी, बाँमी–स्त्री॰ दीमकोंका भीटा,बमीटा; साँपका बिल।

बाँभन*–पु॰ ब्राह्मण।

बाँस–पु॰ तिनकेकी जातिका एक लंबा, सीधा, गिरहदार पौधा जो बहुतसे कामोंमें आता है, वंश; भूमिकी एक माप; नावकी लग्गी। **–पूर**–पु॰ एक बारीक कपड़ा। **मु॰–पर चढ़ना**–बदनाम होना। **–पर चढ़ाना**–बदनाम करना। **–बजना**–लाठी चलना, मारपीट होना। **–बजाना**–लाठी चलाना, मार-पीट करना। **–बराबर**–बहुत लंबा। **(बाँसों)उछलना**–बेहद खुश होना; बहुत उछल-कूद करना।

बाँसली–स्त्री॰ दे॰ 'बाँसुरी'।

बाँसा–पु॰ नाकके बीचकी उभरी हुई हड्डी; रीढ़; पियाबासा; बीज गिरानेके लिए हलके साथ लगा हुआ बाँसका नल। **–गड़ा**–पु॰ कुश्तीका एक पेंच। **मु॰–फिर जाना**–नाककी हड्डीका टेढ़ा होना (मृत्यु-निकटताका सूचक)।

बाँसी*–स्त्री॰ बाँसुरी।

बाँसुरी–स्त्री॰ पतले पोले बाँसका बना एक बाजा जो मुँहसे फूँककर बजाया जाता है, वंशी।

बाँह–स्त्री॰ हाथका कंधेसे हथेलीतकका भाग, बाहु, भुजा; (ला॰) बल; भरोसा; शरण; आस्तीन; एक कसरत। **–तोड़**–पु॰ कुश्तीका एक पेंच। **–बोल**–पु॰ रक्षा या सहायता करनेका वचन। **–मरोड़**–पु॰ कुश्तीका एक पेंच। **मु॰–की छाँह लेना**–शरणमें आना। **–गहना,–पकड़ना**–भरण-रक्षणका भार उठाना; अपनाना; विवाह करना। **–चढ़ाना**–लड़नेको तैयार होना, आस्तीन चढ़ाना; कोई काम करनेके लिए तैयार होना। **–टूटना**–सबसे बड़े सहायकका उठ जाना; भाईका मरना। **–देना**–सहारा, सहायता देना।

बा–* पु॰ पानी; बार, दफा। स्त्री॰ [गुजराती] माता। अ॰ [फ़ा॰] पास, साथ (संज्ञापदसे मिलकर युक्तताका अर्थ देता है।) **–अदब**–वि॰ अदबवाला, विनीत। अ॰ अदबके साथ, विनयपूर्वक। **–असर**–वि॰ असर रखनेवाला, प्रभावशाली। **–आबरू**–वि॰ आबरूदार, प्रतिष्ठित। अ॰ इज्जतके साथ। **–इख़्तियार**–वि॰ अधिकार रखनेवाला। **–ईमान**–वि॰ ईमानदार। अ॰ ईमानके साथ। **–कार**–वि॰ जो कुछ करता हो, बैठा-ठाला, बेकार न हो। **–क़ायदा**–वि॰ नियमित। अ॰ कायदेके साथ, नियमानुसार। **–ग़रज़**–वि॰ गरजमंद। **–ज़ाब्ता**–अ॰ जाबतेसे, नियमानुसार। वि॰ नियमयुक्त, बाक़ायदा। **–मज़ा**–वि॰ मजेदार, स्वादिष्ठ। **–मुरौवत**–वि॰ मुरौवतवाला। **–वजूद**–अ॰ होते हुए, यद्यपि, अगरचे। **–वफ़ा**–वि॰ वफादार; प्रीति निभानेवाला;वचनपालक। **–शऊर**–वि॰शऊरदार, सलीकादार, चतुर। **–सलीक़ा**–वि॰ जिसे काम करनेका सलीका, ढंग आता हो।

बाइ*–स्त्री॰ दे॰ 'बाई'।

बाइनि*–स्त्री॰ बयना।

बाइबिल–स्त्री॰ ईसाइयोंकी इलहामी धर्मपुस्तक, इंजील।

बाइस–वि॰, पु॰दे॰'बाईस'। पु॰[अ॰]कारण,सबब,हेतु।

बाइसिकिल–स्त्री॰ [अं॰] दो पहियोंकी गाड़ी जो सवारके पाँवोंकी हरकतके ही सहारे चलती है,साइकिल,पैरगाड़ी।

बाई–स्त्री॰ वायु; वातव्याधि। **मु॰–चढ़ना**–सन्निपात होना; मिजाज बिगड़ना। **–पचना**–वातकोपका शांत होना; घमंड टूटना।

बाई–स्त्री॰ स्त्रियोंके लिए आदरसूचक शब्द; प्रतिष्ठित महिला; वेश्या। **–जी**–स्त्री॰ वेश्या; नायिका।

बाईस–वि॰ बीस और दो। पु॰ बाईसकी संख्या, २२।

बाउ*–पु॰ वायु; अपान वायु।

बाउर–* वि॰ बावला; मूर्ख; गूँगा; † खराब, बुरा।

बाउरी†–स्त्री॰ दे॰ 'बावली'।

बाऊ*–स्त्री॰ दे॰ 'वायु'।

बाक–*पु॰ वाक्य, वचन, शब्द; [सं॰] बगलोंका समूह। **–चाल***–वि॰ वाचाल, बातूनी।

बाकना*–अ॰ क्रि॰ 'बकना'।

बाकल*–पु॰ बकला, छाल।

बाकला–पु॰ एक छोटा फसली पौधा जिसकी फलियाँ तरकारीकी तरह खायी जाती हैं।

बाका*–स्त्री॰ वाणी, वाक्‌शक्ति।

बाकी*–अ॰ लेकिन, मगर। स्त्री॰ एक धान।

बाक़ी–वि॰ [अ॰] बचा हुआ, अवशिष्ट; जो सदा बना रहे; मौजूद, विद्यमान; देय, न चुकाया हुआ (पावना)। स्त्री॰ एक संख्याको दूसरीमेंसे घटानेका गणित,व्यपकलन (निकालना); घटानेसे निकलनेवाली संख्या। **–दार**–वि॰ जिसके यहाँ लगान या पावना बाकी हो।

बाकुल*–पु॰ वल्कल, छाल, बाकल।

बाखर†–पु॰ एक तृण।

बाखरि*–स्त्री॰ दे॰ 'बखरी'।

बाग–स्त्री॰ लगाम, रास। **–डोर**–स्त्री॰ लगाममें बाँधी जानेवाली रस्सी। **मु॰–उठाना**–चल पड़ना। **(किसी ओर)–मोड़ना**–घुमाना, ले जाना। **–हाथसे छूटना**–बेकाबू होना; मौका हाथसे जाता रहना।

बाग़–पु॰ [फ़ा॰] जमीनका टुकड़ा जिसमें फल-फूलके

पेड़-पौधे करीनेसे लगाये गये हों, वाटिका, उपवन; लगाये हुए पेड़ोंका झुंड, वाड़ी। **–बाग़–**वि० अति प्रसन्न, प्रमुदित (होना)। **–बान–**पु० बागकी देखरेख करनेवाला, माली। **–बानी–**स्त्री० बागवानका काम या पद।

बागना*–अ० क्रि० बोलना; चलना, घूमना।

बागर–पु० नदी किनारेकी ऊँची जमीन जहाँतक उसका पानी बाढ़में भी न पहुँचता हो, (बाँगर); * जाल, फंदा; रस्सी; सूखी मरुमय भूमि–'बागर देश लुअनका घर है'–कबीर।

बागल*–पु० बगला।

बागा–पु० एक पुराना लंबा पहनावा।

बाग़ी–पु० [अ०] बगावत करनेवाला, विद्रोही; न दबनेवाला, सरकश।

बाग़ीचा–पु० [फा०] छोटा बाग।

बागुर*–पु० जाल, फंदा।

बाघंबर–पु० बाघकी खाल; एक तरहका रोयेंदार कंबल।

बाघ–पु० सिंहके समान बल-विक्रम रखनेवाला लंबाईमें उससे कुछ छोटा एक हिंस्र जंतु, व्याघ्र। **–नख–**पु० बघनखा।

बाघी–स्त्री० जाँघके जोड़में होनेवाली एक तरहकी गिलटी।

बाच*–वि० वाच्य, वर्णनीय।

बाचना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'बाँचना'।

बाचा*–स्त्री० वचन; वाक्य; बोलनेकी शक्ति; प्रतिज्ञा। **–बंध–**वि० प्रतिज्ञाबद्ध।

बाछ–पु० बाछनेकी क्रिया, छँटाई; चंदे, मालगुजारी आदिका आनुपातिक (रसदी) पड़ता; बाछा। स्त्री० मुखका प्रांतभाग जहाँ दोनों होठ जुड़ते हैं। **मु० (बाछें) खिलना–**अति प्रसन्न होना, खुशीसे खिल जाना।

बाछा†–पु० बछड़ा; * बच्चा, वत्स।

बाछी–स्त्री० बछिया।

बाज–*पु० घोड़ा, बाजि; दे० 'बाजा'। अ० बिना, छोड़कर–'को उठाइ बैठारै बाज पियारे जीउ'–प०।

बाज़–पु० [फा०] एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया। अ० फिर, दोबारा। वि० वंचित; कोई-कोई, कुछ विशिष्ट। प्र० संज्ञापदसे संयुक्त होकर खेलनेवाला, करनेवालाका अर्थ देता है (कबूतरबाज़, पतंगबाज़)। **–दावा–**पु० दावा उठाना, छोड़ना; स्वत्वका त्याग, दस्त-बरदारी। **मु०–आना–**लौटना; छोड़ना, त्यागना; बचना, दूर रहना। **–रखना–**रोकना, मना करना।

बाजड़ा–पु० दे० 'बाजरा'।

बाजन*–पु० बाजा।

बाजना*–अ० क्रि० लड़ना; लगना, बैठना (चोट आदिका); पहुँचना–'साह आइ चितउरगढ़ बाजा'–प०; दे० 'बजना'।

बाजरा–पु० एक मोटा अनाज; उसका पौधा।

बाजा–पु० बजानेका यंत्र, वाद्य। **–गाजा–**पु० अनेक प्रकारके एक साथ बजनेवाले बाजे; धूमधाम।

बाज़ार–पु० [फा०] वह स्थान जहाँ साधारण आवश्यकताकी वस्तुएँ या कोई खास चीज बेची-खरीदी जाय, हाट, मंडी; खरीद-बेचीके लिए जमा हुए लोग; भाव; बाजार लगनेका दिन, समय। **–भाव–**पु० किसी चीजके बाजारमें बेचे-खरीदे जानेका भाव, प्रचलित दर। **मु०–करना–**चीजें खरीदने या बेचनेके लिए बाजार जाना। **–का गज–**वह आदमी जो इधर-उधर मारा-मारा फिरे। **–की मिठाई–**आसानीसे मिलनेवाली चीज; वेश्या। **–गरम(गर्म)होना–**बाजारमें खूब खरीद-बिक्री, चहल-पहल होना। **(किसी चीजका)–गरम(गर्म)होना–**जोर, अधिकता, प्रबलता होना (रिश्वत, गिरफ्तारियोंका बाजार०)। **–गिरना–**भाव घटना, मंदी होना। **–तेज़ होना–**भाव चढ़ना, बहुत माँग होना। **–भाव देना या पीटना–**खूब पीटना, पूरी मरम्मत करना। **–मंदा होना–**किसी वस्तुका दाम घटना; कम बिक्री होना। **–में आग लगना–**चीजोंके दाम चढ़ जाना। **–लगना–**बाजारमें चीजोंका बिक्रीके लिए रखा, लगाया जाना; दुकानें खुलना; चीजोंका ढेर, अंबार लगना; भीड़ होना। **–लगाना–**चीजोंको इधर-उधर फैला देना; भीड़ लगाना।

बाज़ारी–वि० बाजारका; मामूली, साधारण लोगोंमें प्रचलित; अशिष्ट (प्रयोग, मुहाविरा)। **–औरत–**स्त्री० वेश्या। **–गप–**स्त्री० अविश्वसनीय बात।

बाज़ारू–वि० दे० 'बाज़ारी'।

बाजि*–पु० दे० 'बाजी'। वि० चलनेवाला।

बाजी–स्त्री० बड़ी बहन। पु० घोड़ा; * बजनिया।

बाज़ी–स्त्री० [फा०] खेल; करतब, तमाशा; दावँ, शर्त; ताश-शतरंज आदिका एक पूरा खेल; एक खिलाड़ीके खेलनेका समय, बारी; धोखा, चालाकी। **–गर–**पु० जादूके खेल करनेवाला, नट। [स्त्री० 'बाजीगरनी'।] **–गरी–**स्त्री० बाजीगरका काम; धोखा, चालाकी। **–चा–**पु० खेल, खिलवाड़। **मु०–आना–**ताश-गंजीफेकी बाँटमें अच्छे पत्ते मिलना। **–बदना–**शर्त बदना (लगाना)। **–मारना–**जीतना। **–ले जाना–**आगे बढ़ जाना, जीतना।

बाजु*–अ० बिना; (–के) सिवा।

बाज़ू–पु० [फा०] बाहँ, भुजा; सेनाका दाहिना या बायाँ भाग, पक्ष; चिड़ियाका डैना; चौखटेके दाहिने-बायेंकी खड़ी लकड़ी; बाजूबंद। **–बंद–**पु० बाहँपर पहननेका एक गहना, भुजबंद। **मु०–टूटना–**बाहँ टूटना, गतबल हो जाना।

बाझ*–अ० बगैर, बिना।

बाझन*–पु० फँसाव, बझाव; उलझन; लड़ाई।

बाझना*–अ० क्रि० दे० 'बझना'–'तैं सुअटा पंडित होइ कैसे बाझा आइ'–प०।

बाट–पु० पत्थर, लोहे आदिका टुकड़ा जो चीजें तौलनेके काम आये, वजन, बटखरा। स्त्री० ऐंठन, बल; राह, मार्ग। **मु०–करना*–**रास्ता करना। **–का रोड़ा–**बाधक। **–जोहना, –देखना–**इंतजार करना। **–परना–**डाका पड़ना। **–पारना–**रास्तेमें लूट लेना, डाका डालना।

बाटकी*–स्त्री० बटुली।

बाटना–स० क्रि० पीसना, घोंटना; * बटना, ऐंठना।

बाटिका–स्त्री० दे० 'वाटिका'।

बाटी–स्त्री० उपलोंकी आग या अंगारोंपर सेंकी हुई छोटी, मोटी रोटी, अंगाकड़ी; गोती; तसला; छिछला कटोरा;

* वाटिका ।

बाड़–स्त्री० फसलकी रक्षाके लिए बनाया हुआ काँटे-बाँस आदिका घेरा, झाड़बंदी, टट्टी; दे० 'बाढ़' ।

बाडव–पु० [सं०] बडवाग्नि; ब्राह्मण; घोड़ियोंका झुंड ।

बाड़ा–पु० इहाता, घेरा; पशुशाला ।

बाड़ि*–स्त्री० टट्टर; मेंड़; बाड़ी ।

बाड़ी–स्त्री० फलोंका बाग; वाटिका; घिरी जगह; घर ।

बाड़ौ*–पु० दे० 'बाडव' ।

बाढ़–स्त्री०बढ़नेकी क्रिया या भाव, वृद्धि,विकास; बहुतायत, अधिकता; नफा; नदी आदिके जलका बढ़ना, फैलना; अतिवृष्टिसे धरतीका जलमग्न होना; बहुतसी तोपों,बंदूकोंका एक साथ दगना; तलवार आदिकी धार; कोर; सान; किनारा । **मु०–का डोरा**–तलवारकी धारकी रेखा ।**–पर चढ़ाना**–सान देना; उकसाना, भड़काना ।**–मरना**–(रोगादिसे) बाढ़का रुक जाना ।

बाढ़ना*–अ० क्रि० दे० 'बढ़ना' ।

बाढ़ि*–स्त्री० बाढ़, वृद्धि ।

बाढ़ी–स्त्री० बाढ़; उधार दिये हुए अन्नके ब्याजरूपमें मिलनेवाला अन्न; नफा ।

बाढ़ीवान†–पु० धार तेज करनेवाला, सान चढ़ानेवाला ।

बाण–पु० [सं०] लोहेका फल लगा हुआ नरसल या पतली सीधी लकड़ीका टुकड़ा जिसे धनुष्पर चढ़ाकर मारते हैं, तीर, शर; बाणका फल, गाँसी; निशाना; सरपत; गायका थन; ५ की संख्या; बाणासुर; बाणभट्ट;अग्नि । **–गंगा**–स्त्री० गंगाकी एक सहायक नदी जो कहा जाता है कि एक पहाड़में रावणके बाण मारनेसे निकली है । **–मुक्ति**–स्त्री०,**–मोक्षण**–पु० तीर छोड़ना । **–वर्षण**–पु० दे० 'बाणवृष्टि' । **–वर्षी(र्षिन्)**–वि० बाणोंकी वर्षा करनेवाला । **–विद्या**–स्त्री० बाण चलानेकी विद्या, तीरंदाजी । **–वृष्टि**–स्त्री० बाणोंकी वर्षा । **–संधान**–पु० बाणको धनुष्पर चढ़ाना । **–सुता**–स्त्री० उषा, अनिरुद्धकी पत्नी । **–हा(हन्)**–पु० विष्णु ।

बाणाभ्यास–पु०[सं०] बाण चलानेका अभ्यास, तीरंदाजी ।

बाणावलि–स्त्री० [सं०] बाणोंकी पंक्ति ।

बाणाश्रय–पु० [सं०] तरकश ।

बाणासन–पु० [सं०] धनुष् ।

बाणासुर–पु० [सं०] राजा बलिके सौ बेटोंमें सबसे बड़ा जिसके, पुराणोंके अनुसार, हजार हाथ थे और जिसकी बेटी उषासे कृष्णके पोते अनिरुद्धका ब्याह हुआ ।

बाणि, बाणी–स्त्री० [सं०] दे० 'वाणि', 'वाणी' ।

बाणिज्य–पु० [सं०] दे० 'वाणिज्य' ।

बात–पु०दे०'वात' । स्त्री० कथन, वचन; वार्ता, बातचीत; वक्तव्य (मेरी बात तो सुन लो); चर्चा,प्रसंग; कौल, वचन; विषय, मामला; घटना; संयोग, प्रसंग; बहाना, बनावट; गूढ़ अर्थ, भेद, मर्म; कथनमात्र; कड़ी बात, डाँट, भर्त्सना (–सहना, सुनना); बातका विश्वास, साख (बात जाना); तात्पर्य, मतलब; खूबी, प्रशंसाकी बात; काम; लगाव; चीज, वस्तु; आदत, गुण (अच्छी, बुरी बातें); स्थिति, हालत; मोल, दाम (एक बात); रास्ता, उपाय (मेरे लिए एक ही बात रह गयी है); आदेश (बड़ोंकी बात मानो); सँदेसा; इच्छा, कामना । **–चीत**–स्त्री० दो या अधिक आदमियोंका आपसमें बातें करना, वार्तालाप, गुफ्तगु । **–फ़रोश**–वि०, पु० बातें बनानेवाला, झूठी बातें आदि करनेवाला; चापलूस । **मु०–आँचलमें बाँधना**–दे० 'बात गाँठ बाँधना' । **–आना**–चर्चा छिड़ना । **(किसीपर)–आना**–दोषारोप होना । **–आ पड़ना**–प्रसंग आना; संयोग उपस्थित होना । **–उठना**–चर्चा चलना, जिक्र होना ।**–उठाना**–चर्चा चलाना; बात न मानना । **–उड़ना**–चर्चा फैलना । **–उड़ाना**–बात टालना । **–उलटना**–बात पलटना; विरुद्ध बात कहना ।**–कहते**–तुरत, झट । **–का ओर-छोर**–बातका मतलब, बातका सिर-पैर । **–काटना**–बीचमें बोलना, टोकना, बातका खंडन करना । **–का धनी,–का पूरा**–जो कहे वह करनेवाला । **–का बतंगड़ करना या बनाना**–छोटीसी बातको बहुत बड़ी बना देना, तिलका ताड़ बनाना । **–की तह**–असल मतलब, तात्पर्य । **–की पुड़िया**–बहुत बातूनी । **–की बातमें**–छन भरमें, तुरत । **–खुलना**–छिपी बातका प्रकट हो जाना । **–गढ़ना**–झूठी बात कहना । **–गाँठ बाँधना**–बात दिलमें बैठा लेना, अच्छी तरह याद कर लेना । **–घूँट जाना**–दे० 'बात पी जाना' । **–चबा जाना**–बातको कहते-कहते बीचमें उड़ा देना; बातका रुख दूसरी ओर कर देना । **–जाना**–साख जाना, एतबार उठना । **–टलना**–बातका अन्यथा होना, कहे मुताबिक न होना । **–टालना**–बात न मानना; सुनी अनसुनी करना । **–दुहराना**–दूसरेकी बातको उलटकर जवाब देना । **(मुँहसे)–न आना**–मुँहसे बोल न निकलना । **–न करना**–घमंडके मारे न बोलना । **–न पूछना**–खोज-खबर न लेना; तुच्छ समझना । **–निकलना**–चर्चा चलना । **–नीचे डालना**–अपनी बातको कट जाने देना, अपनी बातका आग्रह त्याग देना । **–पकड़ना**–कथनमें गलती, असंगति बताना; नुक्ताचीनी करना । **–पचना**–सुनी हुई बातको दूसरोंसे न कहना । **–पर आना**–अपनी बातका पक्ष, हठ करना । **–पर जाना**–किसीके कहेपर विश्वास कर लेना, बात मानना । **–पर बात कहना**–जवाब देना । **–पर बात निकलना**–चर्चा या प्रसंग, दूसरेके कुछ कहनेके कारण किसी बातका कहा जाना । **–पलटना**–बात बदलना । **–पी जाना**–बातको अनसुनी करना, बातको सह लेना । **–पूछना**–खोज-खबर लेना, ध्यान देना; * कद्र करना । **–फेरना**–बात पलटना । **–फैलना**–चर्चा फैलना । **–बढ़ना**–बातका बहस या झगड़ेका रूप ले लेना; मामलेका तूल खींचना; साख, मान-प्रतिष्ठा बढ़ना । **–बढ़ाना**–बहस, झगड़ा करना; मामलेको तूल देना । **–बदलना**–बातपर कायम न रहना, दूसरी बात कहना; बातका विषय, पहलू बदलना । **–बनना**–काम बनना; मान, साख बढ़ना । **–बनाना**–बहाना करना; काम सँभाल लेना, बिगड़ने न देना । **–बातमें**–हर बातमें । **–बिगड़ना**–काम बिगड़ना; साख नष्ट होना । **–मारना**–असल बात छिपा लेना; व्यंग्य बोलना । **–मुँहपर लाना**–बात बोलना । **–में फ़र्क़ आना**–बात झूठी ठह-

रना। **–में बात निकालना**–बातमें बारीकी निकालना, बालकी खाल खींचना। **–रखना**–कहा मान लेना, बातका आदर करना; मान रखना; अपने वचनका पालन करना; दुराग्रह करना। **–रहना**–वचनका पालन होना; प्रतिष्ठा बनी रहना। **–लगना**–बातसे आहत होना। **(बातें)छाँटना**–बढ़-बढ़कर बोलना।**–बनाना**–बनावटी बातें, बहाना करना; चापलूसी करना। **–सुनना**–कड़ी बातें सुनना। **(बातों)बातोँ में**–बातोंके सिलसिलेमें, बातचीतके दरमियान। **–में आना**–बातका विश्वास कर लेना, धोखा खाना। **–में उड़ाना**–इधर-उधरकी बात या हँसीमें टालना।

बाती*–स्त्री० बत्ती।

बातुल–वि० दे० 'वातुल'।

बातूनी–वि० बहुत बोलनेवाला, बक्की।

बाथ*–पु० गोद, अंक।

बाद–अ० बेमतलब, फ़जूल, बेकार। पु० दे० 'वाद'; बहस, हुज्जत; शर्त, बाजी। **मु०–मेलना***–शर्त बदना।

बाद–पु० दस्तूरी; अतिरिक्त मूल्य जो पीछे काट दिया जाता है। वि० छोड़ा हुआ। **मु०–करना,–देना**–अलग कर देना, काट देना।

बाद–अ० [अ०] पीछे, अनंतर। **–को,–में**–पीछे।

बाद–पु० [फ़ा०] हवा, वायु; घोड़ा। **–कश**–पु० छतसे लटकानेका पंखा; धौंकनी। **–गीर**–पु० झरोखा। **–नुमा**–पु० वायुकी दिशा बतानेवाला आला। **–बान**–पु० पाल।

बादना*–अ० क्रि० बहस करना, झगड़ा करना; ललकारना।

बादर–* पु० बादल।

बादरायण–पु० [सं०] वेदांत-सूत्रके रचयिता ऋषिविशेष, वेदव्यास। **–संबंध**–पु० बहुत दूरका, खींच-तानकर जोड़ा हुआ संबंध।

बादल–पु० वायुमंडलमें संचित और घनीभूत भाप जो मेहके रूपमें धरतीपर आती है, मेघ, अभ्र; एक तरहका दूधिया रंगका पत्थर। **मु०–उठना,–चढ़ना**–बादलोंका फैलना, छाना, घटा उठना।**–गरजना**–बादलोंके संघर्षसे घोर ध्वनि उत्पन्न होना। **–घिरना**–मेघोंका छाना। **–छँटना,–फटना**–घटाका बिखरना। **–में थिगली लगाना**–कठिन काम करना। **(बादलों)से बातें करना**–आकाशसे बातें करना, बहुत ऊँचा होना।

बादला–पु० चाँदीका चपटा तार जो गोटा बुनने या कलाबत्तू बनानेके काम आता है, जरबफ्त।

बादशाह–पु० [फ़ा०] राजा, सुलतान; सरदार; स्वतंत्र प्रकृतिका पुरुष; शतरंजका एक मुहरा; ताशका एक पत्ता। **–ज़ादा**–पु० बादशाहका बेटा, राजकुमार।

बादशाहत–स्त्री० [फ़ा०] राज्य, हुकूमत; बादशाहका पद; राजत्व।

बादशाही–वि० [फ़ा०] बादशाहका; राजोचित, शाहाना। स्त्री० राज्य, शासन; मनमाना व्यवहार। **–ख़र्च**–पु० शाहाना खर्च, भारी फ़ुज़ूलखर्ची। **–फ़रमान,–हुक्म**–पु० राजाज्ञा।

बादाम–पु० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध मेवा जिसकी गिरी खायी जाती और बहुत पुष्टिकर होती है; उसका पेड़।**–पाक**–पु० एक प्रसिद्ध पुष्टिकर पाक।

बादामी–वि० [फ़ा०] बादामके रंगका; बादामकी शकलका; बादामका बना हुआ। पु० बादामके छिलकेसे मिलता हुआ रंग। **–आँख**–स्त्री० बादामकी शकलकी छोटी आँख।

बादि*–अ० व्यर्थ, बेकार।

बादित*–वि० जो बजाया गया हो।

बादी–पु० दे० 'वादी'। वि० वातकारक, वातज। स्त्री० वातविकार। **–पन**–पु० वायुविकार; वातकारक होना। **–बवासीर**–स्त्री० बवासीरके दो भेदोंमेंसे एक जिसमें मस्सेसे खून नहीं आता।

बादीगर*–पु० बाजीगर।

बादुर*–पु० चमगादड़–'ते विधना बादुर रचे रहे उरध मुख झूल'–साखी।

बाध–पु० [सं०] प्रतिरोध; रोक, प्रतिबंध; कष्ट, पीड़ा; बाधा देनेवाला; † मूँजकी रस्सी।

बाधक–पु० [सं०] बाधा करनेवाला, रुकावट डालनेवाला; विघ्नकारक, कष्ट देनेवाला।

बाधन–पु० [सं०] बाधा डालना; विरोध करना; कष्ट देना।

बाधना*–स० क्रि० रुकावट डालना; विघ्न करना।

बाधा–स्त्री० [सं०] अड़चन, रुकावट, विघ्न; पीड़ा, कष्ट; भय (प्रेतबाधा)। **–हर**–वि० बाधा दूर करनेवाला।

बाधित–वि० [सं०] जिसमें रुकावट पड़ी हो; असंगत; ग्रस्त; आभारी।

बाध्य–वि० [सं०] पीड़ित; रोका हुआ; विवश।

बान–पु० बाण; एक तरहकी आतिशबाजी; ऊँची लहर; रुई धुननेका घुंबददार डंडा, मुठिया; बाध; * कांति; चमक। स्त्री० सजधज; आदत।

बानइत*–पु० दे० 'बानैत'।

बानक*–स्त्री० बाना, भेस; एक तरहका रेशम।

बानगी–स्त्री० थोड़ीसी चीज जो ग्राहकको देखनेके लिए दी जाय, नमूना।

बानना*–स० क्रि० बनाना।

बानबे–वि० नब्बे और दो। पु० ९२ की संख्या।

बानर*–पु० दे० 'बंदर'।

बाना–पु० पहनावा, भेस; बुनावट; तानेमें भरा जानेवाला आड़ा सूत; एक तरहका बारीक तागा; भाले जैसा एक हथियार जिसका ऊपरी हिस्सा दुधारी तलवारकासा होता है; रीति, चाल; पहली जुताई; * निशान; वर्ण, रंग। स० क्रि० फैलाना, प्रसारित करना (मुँह बाना)।

बानावरी*–स्त्री० बाणावली; बाणविद्या (?)।

बानि*–स्त्री० बान, आदत; सजधज; चमक; वचन, वाणी।

बानिक*–स्त्री० भेस, बाना।

बानिन, बानिनि–स्त्री० बनियेकी स्त्री।

बानिया*–पु० दे० 'बनिया'।

बानी*–स्त्री० दे० 'वाणी'; * वर्ण; चमक; * वाणिज्य। * पु० बनिया।

बानैत–पु० बाना फेरनेवाला; बाण चलानेवाला; योद्धा।

बाप–पु॰ पिता, जनक। **–का**–वि॰ पैतृक, मौरूसी। **–दादा**–पु॰ पुरखे, पूर्व पुरुष। **–रे,–रे बाप**–अ॰ दुःख या भय सूचित करनेवाला उद्गार। **मु॰–की चीज़ समझना**–अपनी मिलकीयत समझना। **–दादाका नाम डुबाना**–कुलकी प्रतिष्ठा मिटाना। **–दादा बखानना**–बाप-दादाको बुरा-भला कहना, गाली देना। **–दादा से**–पीढ़ियोंसे। **–बनाना**–अति सम्मान करना; चापलूसी करना।

बापी–स्त्री॰ दे॰ 'वापी'।

बापुरा–वि॰ गरीब, बेचारा; तुच्छ, नगण्य।

बापू†–पु॰ दे॰ 'बाप'; पिता या अन्य गुरुजनका संबोधन।

बाप्पा–पु॰मेवाड़के राजवंशका आदिपुरुष(जन्म७६९वि॰)।

बाफ़्ता, बाफ़्ता–पु॰ [फ़ा॰] एक तरहका रेशमी कपड़ा।

बाब–पु॰[अ॰]द्वार, दरवाजा; दरबार; पुस्तकका अध्याय।

बाबत–स्त्री॰ [फ़ा॰] विषय; जरीया। (**किसीकी बाबत**–किसीके विषय, बारेमें)।

बाबरची–पु॰ दे॰ 'बावरची'।

बाबा–पु॰ [फ़ा॰] बाप; दादा; बूढ़ा, पके बालोंवाला आदमी; साधु-संन्यासी; साधु-संन्यासियोंके लिए प्रयुक्त एक आदरसूचक शब्द; बच्चोंके लिए प्यारका शब्द।

बाबी*–स्त्री॰ साधुनी।

बाबुल–पु॰ बाप, पिता, बाबू।

बाबू–पु॰ बड़ा क्षत्रिय जमींदार; ठाकुर; शिक्षित, प्रतिष्ठित जन; क्लर्क (बड़े बाबू, हेड क्लर्क); दे॰ 'बाबूजी'। **–जी**–पु॰ पिता; पिता या अन्य आदरणीय जनका संबोधन। **–साहब**–पु॰ आदरणीय जनके लिए प्रयुक्त शब्द।

बाबूना–पु॰ दवाके काम आनेवाला एक पौधा।

बाम–वि॰ दे॰ 'वाम'।

बामा–वि॰, स्त्री॰ दे॰ 'वामा'।

बामी–स्त्री॰ बाँबी। वि॰ वाममार्गी।

बाम्हन–पु॰ दे॰ 'ब्राह्मण'।

बायँ*–वि॰ दे॰ 'बायाँ'; चूका हुआ। **मु॰–देना**–तरह देना; फेरा देना।

बाय*–स्त्री॰ वायु; वातका प्रकोप–'भटा एकको पित करै, करै एकको बाय'–; बापी, बावली।

बायक*–पु॰ वाचक; दूत।

बायन–पु॰ मित्रों, संबंधियोंके यहाँ भेजी जानेवाली मिठाई आदि (बाँटना); † दे॰ 'बयाना'। **मु॰–देना**–छेड़छाड़ करना (भले घर बायन दिया)।

बायबी–वि॰ बाहरी, गैर, अजनबी।

बायव्य–वि॰, पु॰ दे॰ 'वायव्य'।

बायलर–पु॰ [अं॰ 'ब्वायलर'] बड़ा बरतन जिसमें कोई चीज उबाली जाय; इंजनका वह भाग जहाँ भाप तैयार करनेके लिए पानी खौलाया जाता है।

बायला†–वि॰ वातकारक।

बायली*–वि॰ दे॰ 'बायबी'।

बायस*–पु॰ दे॰ 'वायस'।

बायस्कोप–पु॰ [अं॰] परदेपर चलते-फिरते चित्र दिखलानेवाला एक यंत्र।

बायाँ–वि॰ पूरबकी ओर मुँह होनेपर उत्तरकी ओर पड़नेवाला (अंग), दाहनाका उलटा, वाम; विरुद्ध, प्रतिकूल। [स्त्री॰ 'बायीं'।] पु॰ बायें हाथसे बजाया जानेवाला तबला। **मु॰–कदम लेना**–दे॰ 'बायाँ पाँव पूजना'। **–देना**–कतरा जाना; त्याग देना। **–पाँव या पैर पूजना**–गुरु मानना; हार मानना; उस्तादीका कायल होना। **(बायें) हाथका काम, खेल**–बहुत आसान काम। **–हाथसे गिनवा या रखवा लेना**–जबरदस्ती लेना, धरवा लेना।

बायु–स्त्री॰ दे॰ 'वायु'।

बायें–अ॰ बायीं ओर; प्रतिकूल (होना)। **मु॰–होना**–प्रतिकूल होना।

बारंबार–अ॰ फिर-फिर, कई बार।

बार–पु॰ द्वार (घर-बार); जनसमूह; टट्टर, घेरा; किनारा; धार; * केश, बाल; * बालक; ठिकाना; * वारि, जल। स्त्री॰ समय; देर; दफा, मर्तबा। **–तिय,–बधू,–बधूटी***–स्त्री॰दे॰ 'वारवधू'। **–मुखी***–स्त्री॰ वारवधू। **–बार**–अ॰ पुनः-पुनः, अनेक बार।

बार–पु॰ [फ़ा॰] बोझ, भार; ऋणभार; फल; वृक्षशाखा; गर्भ, भ्रूण; दरबार, इजलास; दखल, पहुँच। स्त्री॰ दफा, मर्तबा। **–गह,–गाह**–स्त्री॰ दरबार; कचहरी; शाही खेमा। **–दान,–दाना**–पु॰ वह चीज जिसमें कुछ रखा जाय, बोरा, थैला आदि; रसद; टूटे-फूटे सामान। **–बरदार**–वि॰ बोझ ढोनेवाला। पु॰ मोटिया, मजदूर। **–बरदारी**–स्त्री॰ बोझ-सामान ढोनेका काम; ढुलाई, ढोनेकी उजरत; ढुलाईका साधन, वाहन। **–हा**–अ॰ अनेक बार।

बारजा–पु॰ बालाखानेके सामने पाटकर बनाया हुआ खुला या छतदार बरामदा।

बारण–पु॰ दे॰ 'वारण'।

बारता*–स्त्री॰ दे॰ 'वार्ता'।

बारना–स॰ क्रि॰ रोकना, निवारण करना; न्योछावर करना; जलाना।

बार्निश–स्त्री॰ [अं॰ 'वारनिश'।] लकड़ी-चमड़े आदिपर चमक लानेके लिए लगाया जानेवाला रोगन।

बारह–वि॰ दससे दो अधिक। पु॰ दस और दोकी संख्या, १२। **–खड़ी**–स्त्री॰ व्यंजनोंके बारहों स्वरोंसे युक्त रूप। **–दरी**–स्त्री॰ वह कमरा जिसमें सब ओर बारह या अधिक दरवाजे हों। **–पानीका**–बारह बरसका (सूअर)। **–बान,–बाना**–वि॰ दे॰ 'बारहबानी'। **–बानी**–वि॰ खरा, खालिस (सोना); निर्दोष, बेऐब; पूरा, कामिल। **–मासा**–पु॰ वह पद्य या गीत जिसमें बारहों महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका वर्णन हो। **–मासी**–वि॰ बारहों महीने फलने-फूलनेवाला, सदाबहार; जो बारहों महीने रहे, काम करे। **–मुक़ाम**–पु॰ ईरानी संगीतके बारह परदे। **–वफात**–स्त्री॰ रबीउल-औवलकी १२ वीं तिथि जो मुहम्मदकी निधन-तिथि है। **–सिंगा,–सिंघा**–पु॰ हिरनका एक भेद जिसके नरके सींगोंमें अनेक शाखाएँ होती हैं। **मु॰–बाट करना**–तितर-बितर करना, बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट करना। **–बाट छालना***–दे॰ 'बारह बाट करना'। **–बाट जाना या होना**–तितर-बितर होना;

बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट होना।

बारहाँ–वि० बारहवाँ। अ० दे० 'बार-हा'।

बारा–वि० बालक, किशोर; कोमलवय, कमसिन। पु० बेटा; बालक। **बारेते***–बचपनसे।

बारा–पु० [फा०] समय, बार; विषय। **(बारेमें…के** विषयमें)।

बारात–स्त्री० दे० 'बरात'।

बाराती–पु० दे० 'बराती'।

बारादरी–स्त्री० दे० 'बारहदरी'।

बारानी–वि० [फा०] वर्षापर अवलंबित, सींची न जा सकनेवाली (फसल, जमीन)। स्त्री० वह जमीन जिसमें केवल वर्षासे सिंचाई हो, कुएँ आदिका सुभीता न हो; बिना सींचे होनेवाली फसल; बरसाती कोट।

बाराह–पु० दे० 'वाराह'।

बारि*–पु० दे० 'वारि'। (**–ज,–द**–आदि भी)। **–बाह**–पु० बादल।

बारिगर*–पु० हथियारोंपर सान रखनेवाला।

बारिगह*–स्त्री० दे० 'बारगह' (तम्बू)–'चितउर सौंह बारिगह तानी'–प०।

बारिश–स्त्री० [फा०] वर्षा, मेह; बरसात।

बारी–स्त्री० अनेक व्यक्तियोंमेंसे प्रत्येकको मिलनेवाला यथा-क्रम अवसर, पारी; पारीके बुखारका दिन। **–का**–बारीसे आनेवाला (ज्वर)। **–बारीसे**–एकके बाद दूसरा।

बारी–वि० स्त्री० कमसिन (लड़की)। स्त्री० किशोरी, बालिका; नवयुवती; बड़े पेड़ोंका बाग; किनारा; धार; छोर; औंठ; दे० 'बाली'; दे० 'बाड़'; घर; खिड़की। पु० एक हिंदू जाति जो दोने-पत्तल आदि बनानेका धंधा करती है।

बारीक–वि० [फा०] महीन, बहुत पतला; सूक्ष्म; समझनेमें कठिन, गूढ़।

बारीकी–स्त्री० [फा०] बारीकपन; सूक्ष्मता; खूबी, सूक्ष्म गुण-दोष।

बारीस*–पु० दे० 'वारीश'।

बारुणी, बारुनी*–स्त्री० दे० 'वारुणी'।

बारू*–स्त्री०, पु० दे० 'बालू'।

बारूद–स्त्री० शोरे, गंधक और कोयलेका बारीक चूर्ण जो अग्निके संयोगसे भड़क उठता और आतिशबाजी तथा तोप-बंदूक चलानेमें काम आता है। **–ख़ाना**–पु० बारूद या गोली-बारूदका भंडार।

बारे–अ० [फा०] अंतमें, आखिरकार; लेकिन; खैर।

बारोठा–पु० द्वार; ब्याहकी एक रस्म, द्वारपूजा।

बाल–स्त्री० जौ, गेहूँ आदिका वह भाग जिसमें दाने गुच्छे होते हैं, खोशा। पु० [सं०] बच्चा, बालक; वह जिसकी उम्र सोलह वर्षसे ऊपर न हो; केश, रोआँ; शीशे आदिकी चीजोंमें पड़ी हुई दरार। वि० जो पूरी बाढ़को न पहुँचा हो; नवोदित; नासमझ, मूर्ख। * स्त्री० बाला, तरुणी। **–कमानी**–स्त्री० [हिं०] घड़ीके बैलेंसमें लगायी जानेवाली बारीक कमानी। **–कांड**–पु० रामायणका पहला खंड जिसमें रामचंद्रके जन्म, बाललीला, विवाह आदिका वर्णन है। **–काल**–पु० बचपन, बाल्य। **–केलि,–केली**–स्त्री० बच्चोंका खेल, बालक्रीडा। **–क्रीडन**–पु० बच्चोंकी क्रीडा। **–क्रीडनक**–पु० खिलौना। **–क्रीडा**–स्त्री० दे० 'बालकेलि'। **–खंडी**–[हिं०] पु० ऐबी हाथी। **–खोरा**–पु० [हिं०] बाल झड़नेका रोग, गंजापन। **–गोपाल**–पु० बालक कृष्ण; बाल-बच्चे। **–ग्रह**–पु० बालकोंको पीड़ा पहुँचानेवाला उपग्रह या पिशाच (इनकी संख्या ९ बतायी गयी है); बालरोगविशेष। **–चंद्र**–पु० दूजका चाँद। **–चर**–पु० बालकोंमें चारित्र्य, लोकसेवा और स्वावलंबनका भाव लानेके लिए स्थापित संघका सदस्य (ब्वायस्काउट)। **–चरित**–पु० बाललीला, बचपनके काम। **–चर्या**–स्त्री० बच्चोंका रख-रखाव, शिशु-पालन। **–तोड़**–पु० [हिं०] बाल टूट जानेसे होनेवाला फोड़ा। **–धि**–स्त्री० पूँछ। **–धी***–स्त्री० दे० 'बालधि'। **–बच्चे**–पु०[हिं०] लड़के-बाले, संतान। **–बराबर**–अ० [हिं०] बहुत बारीक; जरासा, रत्तीभर। **–बाँधा गुलाम**–पु०[हिं०] हर आज्ञाका पालन करनेवाला, इशारेपर काम करनेवाला सेवक। **–बाल**–अ० पूरा; सिरसे पैरतक; हर-एक; जरासा। **–बुद्धि**–स्त्री० बालोचित बुद्धि; नासमझी, कमअकली। वि० लड़कोंकीसी अकल रखनेवाला; अल्पबुद्धि। **–बोध**–वि० बालकोंकी समझमें आनेवाला, आसान। **–ब्रह्मचारी(रिन्)**–पु० बचपनसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला आजन्म ब्रह्मचारी। **–भाव**–पु० बचपन; बालरूप। **–भोग**–पु० [हिं०] प्रातःकालका (कलेवारूप) नैवेद्य। **–भोज्य**–पु० चना। **–मुकुंद**–पु० बालक कृष्ण। **–रोग**–पु० बच्चोंको होनेवाला रोग। **–लीला**–स्त्री० बालचरित, बालक्रीडा। **–विधवा**–स्त्री० छोटी उम्रमें ही विधवा हो जानेवाली स्त्री। **–विधु**–पु० दूजका चाँद, बालचंद्र। **–विवाह**–पु० बचपनका, छोटी उम्रका ब्याह। **–सखा (खि)**–पु० बचपनका दोस्त; बच्चोंका दोस्त। **–सफ़ा**–[हिं०] वि० बाल सफा करने, उड़ानेवाला (साबुन, दवा)। **–सूर्य**–पु० उगता हुआ सूर्य। **–स्थान**–पु० बचपन। **–हठ**–पु० बच्चेका हठ, जिद। **मु०–का कंबल बनाना,–की भेड़ बनाना**–अतिरंजना करना, तिलका ताड़ बनाना। **–की खाल खींचना या निकालना**–बहुत छान-बीन करना। **–खिचड़ी होना**–स्याहसे सफेद बाल अधिक हो जाना। **–धूपमें पकाना**–बूढ़ा हो जानेपर भी ज्ञान, अनुभवसे कोरा रहना। **(किसी काममें)–पकाना**–(कुछ करते हुए) बूढ़ा होना; अनुभव प्राप्त करना। **–बाँका होना**–कष्ट, चोट पहुँचाना; हानि, अनिष्ट होना। **–बाँधा निशान उड़ाना**–पक्का, अचूक निशाना लगाना। **–बाल गुनहगार होना**–हर तरहसे, सिरसे पैरतक, अपराधी होना। **–बाल दुश्मन होना**–हर एकका दुश्मन होना, सभीका शत्रु हो जाना। **–बाल बचना**–विपद्में पड़ते-पड़ते बच जाना, पड़नेमें तनिकसी ही कसर रहना, साफ बचना। **–बाल बँधना या बँधा होना**–(किसीके ऋण-उपकारसे) बहुत अधिक बँधा, दबा होना।

बालक–पु० [सं०] बच्चा, लड़का; बछेड़ा; नाबालिग, अनजान, नासमझ आदमी; मोथा; हाथीका बच्चा।

बालकताई*–स्त्री० लड़कपन, नासमझी।

बालकपन–पु० बचपन; नासमझी।

बालकीय–वि० [सं०] बालक-संबंधी; बालकोंका।

बालटी–स्त्री० लोहे, पीतल आदिका बना डोल।

बालटू–पु० पेचको दूसरे सिरेसे कसनेवाला पेचदार छल्ला।

बालना–स० क्रि० जलाना।

बालपन–पु० बचपन।

बालम–पु० पति; प्रेमी। **–खीरा**–पु० एक तरहका खीरा।

बाला–पु० कानमें पहननेका एक गहना, बड़ी बाली; गेहूँ-जौकी फसलमें लगनेवाला एक कीड़ा। स्त्री०[सं०] लड़की, बालिका; १६ बरससे कम उम्रकी युवती; युवती। वि० [हिं०] कमसिन; बालस्वभाव, भोला। **–जोबन**–पु० उठती जवानी। **–पन**–पु० लड़कपन। **–भोला**–वि० सीधासाधा, सरल।

बाला–वि० [फा०] ऊपरका; ऊँचा। पु० डील; लंबाई-ऊँचाई। **–ख़ाना**–पु० ऊपरकी मंजिलका कमरा, अटारी। **–नशीन**–पु० बैठनेकी ऊँची जगह। वि० सबसे अच्छा, बढ़िया। **–बाला**–अ० ऊपर-ऊपर; बाहर-बाहर। **–य ताक़**–वि० अलग, दूर (रखना)।

बालाई–वि० [फा०] ऊपरका (हिस्सा)। स्त्री० मलाई। **–आमदनी**–स्त्री० ऊपरकी आमदनी, वेतन या बँधी वृत्तिके अतिरिक्त मिलनेवाली रकम।

बालातप–पु० [सं०] सवेरेकी धूप।

बालादित्य–पु० [सं०] नवोदित सूर्य।

बालाध्यापक–पु० [सं०] बच्चोंको पढ़ानेवाला।

बालामय–पु० [सं०] बच्चोंका रोग।

बालार्क–पु० [सं०] बालसूर्य; कन्याराशिमें स्थित सूर्य।

बालावस्था–स्त्री० [सं०] बचपन।

बालि–* स्त्री० मंजरी। पु० [सं०] दे० 'बाली'। **–हंता(तृ), –हा(हिन्)**–पु० राम। **–कुमार**–अंगद।

बालिका–स्त्री० [सं०] छोटी लड़की; बेटी; बाली। **–विद्यालय**–पु० लड़कियोंका मदरसा।

बालिग़–वि० [अ०] वयःप्राप्त, सयाना। पु० सयाना आदमी।

बालिग़ा–स्त्री० सयानी, १५ वर्षसे अधिक उम्रकी लड़की।

बालिश–वि० [सं०] बालोचित; बालबुद्धि, नासमझ; लापरवाह। पु० शिशु; मूर्ख व्यक्ति; [फा०] तकिया, मसनद; बढ़ती।

बालिश्त–पु० [फा०] अँगूठेके सिरेसे छिगुनीके छोरतककी लंबाई, बित्ता।

बालिस*–वि०, पु० दे० 'बालिश'।

बाली–स्त्री० सोने या चाँदीके तारका छल्ला जो कानमें पहना जाता है; गेहूँ-जौ आदिकी बाल, खोशा।

बाली(लिन्)–पु० [सं०] सुग्रीवका बड़ा भाई। **–कुमार, –तनय**–पु० अंगद।

बालुका–स्त्री० [सं०] बालू, रेत।

बालू–स्त्री०, पु० रेत। **–दानी**–स्त्री० वह डिबिया जिसमें स्याही सुखानेके लिए बालू रखी जाती है। **–शाही**–स्त्री० एक प्रसिद्ध मिठाई। **–की घड़ी**–शीशेका अंडाकार पात्र जिसमें भरी हुई रेत उसके छेदसे एक घंटेमें नीचेके पात्रमें गिर जाती है। **–की भीत**–क्षणभंगुर वस्तु।

बालेंदु–पु० [सं०] दूजका चाँद।

बालेय–वि० [सं०] बालकोंके लिए हितकर; बलिके योग्य; मृदु, मुलायम; बलिसे उत्पन्न। पु० बलिका बेटा; गदहा।

बालोपचार–पु० [सं०] बच्चोंका इलाज।

बाल्य–पु० [सं०] बचपन, बालकाल; १६ बरसतककी अवस्था; नासमझी। **–काल**–पु० बचपन।

बाल्हक, बाल्हिक, बाल्हीक–पु० [सं०] बलखदेश; बलखका रहनेवाला; बलखका घोड़ा; केसर; हींग।

बाव*–पु० दे० 'वायु'; अपानवायु; वातदोष।

बावड़ी–स्त्री० दे० 'बावली'।

बावन–वि० पचास और दो। पु० पचास और दोकी संख्या, ५२; † दे० 'वामन'। **–तोले पाव रत्ती**–बिलकुल ठीक। **–बीर**–बहुत चतुर और बहादुर।

बावर*–वि० दे० 'बावला'।

बावरची–पु० खाना पकानेवाला, रसोइया (मुसल०)। **–ख़ाना**–पु० रसोई, पाकशाला।

बावरा*–वि० पागल।

बावरि, बावरी–स्त्री० दे० 'बावली'।

बावला–वि० वातरोगी; पागल, सिड़ी। **–पन**–पु० पागलपन; सनक, सिड़।

बावली–स्त्री० चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जानेके लिए सीढ़ियाँ बनी हों; छोटा सोपानयुक्त तालाब।

बावाँ†–वि० दे० 'बायाँ'।

बाशिंदा–पु० [फा०] बसनेवाला।

बाष्प–पु० [सं०] आँसू; भाप; लोहा। **–कंठ**–वि० जिसका गला भर आया हो। **–मोचन**–पु० आँसू बहाना। **–सलिल**–पु० अश्रुजल।

बाष्पांबु–पु० [सं०] अश्रुजल।

बासंतिक–वि० 'वासंतिक', वसंत-संबंधी। पु० विदूषक।

बास–पु० निवास; वासस्थान; वस्त्र; * दिन। स्त्री० गंध; वासना; आग; एक हथियार। **–फूल**–पु० एक सुगंधित धान। **–मती**–पु० एक खुशबूदार चावल।

बासकसज्जा–स्त्री० दे० 'वासकसज्जा'।

बासठ–वि० साठ और दो। पु० ६२की संख्या।

बासन*–पु० बरतन; वस्त्र।

बासनवारा*–पु० सुगंधित करनेवाला।

बासना–स० क्रि० बसाना, सुवासित करना; स्त्री० दे० 'वासना'; गंध।

बासर*–पु० दे० 'वासर'।

बासव–पु० इन्द्र।

बाससी*–स्त्री० कपड़ा, वस्त्र।

बासा–पु० अडूसा; एक पक्षी; भोजनालय; * निवासस्थान। वि० बासी।

बासिग*–पु० 'वासुकि' नाग।

बासित*–वि० वासित, सुगंधित किया हुआ। कपड़ेसे ढका हुआ।

बासी–वि०, पु० रहनेवाला। वि० देरका पका हुआ, दूसरे जून या रातका बचा हुआ (खाना); पिछले दिनका तोड़ा, रखा हुआ (फल, पानी); सूखा, कुम्हलाया हुआ। **–ईद**–स्त्री० ईदका दूसरा दिन। **–तिबासी**–वि० कई

दिनोंका। **-मुहँ**-वि० जिसने सवेरेसे कुछ खाया न हो। अ० बिना कुछ खाये, खाली पेट। मु०-**कढ़ीमें उबाल आना**-बुढ़ापेमें जवानीका जोश जगना; समय बीत जानेपर कुछ करनेकी इच्छा होना।

बाह*-पु० प्रवाह; निकास, उपाय। स्त्री० खेतकी जुताई, जोत। वि० दृढ़, सशक्त।

बाहक-पु० दे० 'वाहक'; * सवार।

बाहकी*-स्त्री० पालकी ढोनेवाली कहारिन।

बाहन-पु० दे० 'वाहन'; एक पेड़।

बाहना-* स० क्रि० ढोना; हाँकना; फेंकना; मारना; खेत जोतना; † गाय आदिको गाभिन कराना। अ० क्रि० बहना।

बाहनी*-स्त्री० नदी; सेना।

बाहर-अ० स्थान या वस्तुविशेषकी सीमाके उस पार; अंदरका उलटा; अलग; दूर, अन्यत्र;-से अधिक (बूतेसे बाहर)। पु० बाह्य रूप, ऊपरी भाग; परदेश।**-का**-वि० जो घरका न हो, गैर; ऊपरका। **-जामी***-पु० ईश्वरका सगुण रूप। **-बाहर**-अ० ऊपर-ऊपर; दूर-दूर। **-भीतर**-अ० अंदर और बाहर। **-वाला**-पु० भंगी। वि० बाहरी। **-वाली**-स्त्री० भंगिन। **-से**-ऊपरसे, जाहिरा; दूसरे स्थान, परदेशसे। मु०-**करना**-निकाल देना, अलग करना, बहिष्कृत करना। **-की हवा लगना**-बाहरवालोंका असर पड़ना; आवारा होना।

बाहरी-वि० बाहरका; पराया; अजनबी; दिखाऊ।

बाहाँजोरी*-अ० हाथसे हाथ मिलाये हुए।

बाहिज*-अ० बाहरसे, ऊपरसे।

बाहिनी-स्त्री० सेना; सवारी।

बाहिर*-अ० बाहर।

बाहु-स्त्री० [सं०] बाँह, भुजा। **-ज**-पु० क्षत्रिय; तोता। **-त्र,-त्राण**-पु० बाहुपर बाँधा जानेवाला वर्म।**-दंड**-पु० भुजदंड। **-पाश**-पु० बाँहोंको फैलाकर हथेलियोंको मिला लेनेसे बननेवाला घेरा, आलिंगन करते समय बाहुओंकी मुद्रा। **-प्रलंब**-वि० जिसकी भुजाएँ बहुत लंबी हों। **-बल**-पु० भुजबल, शरीरबल; पराक्रम। **-भूषण**-पु०,**-भूषा**-स्त्री० भुजबंद, केयूर। **-मूल**-पु० कंधे और बाँहका जोड़।**-युद्ध**-पु० कुश्ती, भिड़ंत। **-लता**-स्त्री० लता जैसी बाँह; सुकुमार बाहु।**-हजार***-पु० दे० 'सहस्रबाहु'।

बाहुरना*-अ० क्रि० मुड़ना, लौटना, वापस आना।

बाहुल्य-पु० [सं०] बहुतायत, इफरात; बहुरूपता।

बाह्य-अ० बाहर, परे। वि० [सं०] बाहरी; गैर, बेगाना; बहिर्गत, बहिष्कृत; ऊपरी, दिखाऊ।**-रति**-स्त्री० आलिंगन, चुंबन आदि।**-रोगी**-पु० दे० 'बहिर्वासी रोगी'।

बाह्याचरण-पु० [सं०] ढकोसला।

बिंजन*-पु० दे० 'व्यंजन'।

बिंद*-पु० बिंदु, बूँद; भ्रूमध्य; बिंदी।

बिंदा-पु० बड़ी बिंदी। स्त्री० दे० 'वृंदा'।

बिंदी-स्त्री० सुन्ना, सिफर; नुक्ता; गोल टीका।

बिंदु-पु० [सं०] बूँद; बिंदी; शून्य; अधरक्षत; भ्रूमध्य; नाटकका वह स्थल जहाँ गौण घटनाओंका विस्तृत रूप ग्रहण करना आरंभ होता है।

बिंदुरी, बिँदुली-स्त्री० बिंदी, टिकली।

बिंध-पु० दे० 'विंध्याचल'।

बिँधना-अ०क्रि० बींधा जाना; उलझना। स०क्रि० छेदना।

बिंब-पु० [सं०] अक्स, प्रतिच्छाया; कमंडलु; सूर्य या चंद्रमाका मंडल; कुँदरू; गिरगिट; झलक; मंडल जैसा कोई तल; उपमेय; आईना; * बाँबी। **-फल**-पु० कुँदरू।

बिंबक-पु० [सं०] चंद्रमा या सूर्यका मंडल; कुंदरू।

बिंबा, बिंबी-स्त्री० [सं०] कुंदरूकी लता।

बिंबित-वि० [सं०] प्रतिबिंबित।

बिंबोष्ठ, बिंबौष्ठ-वि० [सं०] जिसके होंठ कुँदरूकी तरह लाल हों। पु० कुँदरू जैसा लाल होंठ।

बि, बिअ*-वि० दो।

बिआज†-पु० सूद; बहाना।

बिआध†-पु० व्याधा। स्त्री० व्याधि।

बिआधि*-स्त्री० दे० 'व्याधि'।

बिआना-स०क्रि० जनना। अ०क्रि० पशुका बच्चा जनना।

बिआहना*-स० क्रि० ब्याह करना।

बिकट-वि० दे० 'विकट'।

बिकना-अ० क्रि० बेचा जाना, दाम लेकर दिया जाना; * मुग्ध होना।

बिकरम*-पु० दे० 'विक्रम'; दे० 'विक्रमादित्य'।

बिकरार*-वि० बेकरार, विकल; दे० 'विकराल'।

बिकराल-वि० भयंकर, भीषण।

बिकल-वि० विकल, बेचैन।

बिकलई, बिकलाई*-स्त्री० विकलता, बेचैनी।

बिकलाना*-अ० क्रि० व्याकुल होना। स०क्रि० व्याकुल करना।

बिकवाना-स० क्रि० बेचनेका काम दूसरेसे कराना; बिकनेमें सहायता करना।

बिकसना-अ० क्रि० खिलना, फूलना; प्रसन्न होना; फूटना, फटना।

बिकसाना-स० क्रि० विकसित करना; प्रसन्न करना। * अ० क्रि० दे० 'बिकसना'।

बिकाऊ-वि० जो बेचा जानेवाला हो।

बिकाना*-अ० क्रि० बिकना; वशमें होना। स० क्रि० खरीदना।

बिकार-पु० दे० 'विकार'। * वि० विकृत।

बिकारी-स्त्री० मन, सेर, रुपये आदिके चिह्नरूप टेढ़ीपाई। वि० दे० 'विकारी'।

बिकास-पु० दे० 'विकास'।

बिकासना*-स० क्रि० विकसित करना, खोलना। अ० क्रि० विकसित होना; प्रकट होना।

बिकुंठ*-पु० वैकुंठ।

बिक्ख*-पु० विष।

बिक्रम-पु० दे० 'विक्रम'।

बिक्रमी-वि० दे० 'विक्रमी'।

बिक्री-स्त्री० बेचा जाना, विक्रय; बिक्रीकी आय।

बिख*-पु० दे० 'विष'।

बिखम*-वि० दे० 'विषम'।

बिखय*-अ० विषयमें, संबंधमें ।

बिखरना-अ०क्रि० चीजोंका बेतरतीबीसे इधर-उधर फैलना, तितर-बितर होना; फैल जाना ।

बिखराना-स० क्रि० दे० 'बिखेरना' ।

बिखाद*-पु० दे० 'विषाद' ।

बिखान*-पु० दे० 'विषाण' ।

बिखीला*-वि० विषैला ।

बिखै*-अ० दे० 'बिखय' ।

बिखेरना-स०क्रि०तितर-बितर करना, फैलाना,छिटकाना ।

बिगंध*-स्त्री० दुर्गंध, बदबू ।

बिग*-पु० वृक, भेड़िया ।

बिगड़ना-अ०क्रि० गुण-रूप आदिमें विकार होना; खराब होना; काम देने लायक न रहना; अच्छीसे बुरी दशामें आना; टूट-फूट जाना; बेकार खर्च होना; बुराईके रास्तेपर जाना; क्रुद्ध होना; डाँटना; हाथी-घोड़े आदिका सवार आदिके काबूमें न रह जाना; बिगाड़-अनबन होना; विद्रोह करना; नष्ट होना, गलना-सड़ना (फल आदि) ।
बिगड़े दिल-वि० बदमिजाज; लड़ाका ।

बिगड़ैल-वि० क्रोधी, हठी; कुमार्गगामी ।

बिगर*-अ० दे० 'बग़ैर' ।

बिगरना*-अ० क्रि० दे० 'बिगड़ना' ।

बिगराइल, बिगरायल, बिगरैल*-वि० दे० 'बिगड़ैल' ।

बिगलित-वि० दे० 'विगलित' ।

बिगसना*-अ० क्रि० दे० 'विकसना' । स० क्रि० देना, बकसना ।

बिगसाना*-स० क्रि० दे० 'बिकसाना' । अ० क्रि० दे० 'बिकसना' ।

बिगाड़-पु० बिगड़नेका भाव, खराबी; अनबन, झगड़ा ।

बिगाड़ना-स० क्रि० दोष-विकार उत्पन्न करना, खराब करना; टेढ़ा, विकृत करना(मुँह); बुराईकी ओर ले जाना; बहकाना; बुरी आदत लगाना; सतीत्व नष्ट करना; बरबाद करना; तोड़-फोड़ देना ।

बिगाना†-वि० दे० 'बेगाना' ।

बिगार-*पु० दे० 'बिगाड़' । † स्त्री० दे० 'बेगार' ।

बिगारि, बिगारी*-स्त्री० दे० 'बेगार' ।

बिगास*-पु० दे० 'विकास' ।

बिगासना*-स० क्रि० विकसित करना ।

बिगिर*-अ० दे० 'बग़ैर' ।

बिगुन*-वि० विगुण, गुणरहित, निर्गुण ।

बिगुर*-वि० जिसने गुरुसे शिक्षा या दीक्षा न ली हो, निगुरा ।

बिगुरचन, बिगुरचिन*-स्त्री० दे० 'बिगूचन' ।

बिगुरचना*-अ० क्रि० दिक्कतमें पड़ना ।

बिगुरदा*-पु० पुराने वक्तका एक हथियार ।

बिगुल-पु० [अं०] सेना या पुलिसमें सिपाहियोंको एकत्र करनेके लिए बजाया जानेवाला तुरहीके ढंगका बाजा । **मु०-बजना**-कूच करने आदिका आदेश होना, डंका बजना ।

बिगूचन*-स्त्री० उलझन, असमंजस; कठिनाई ।

बिगूचना*-अ० क्रि० उलझन, असमंजसमें पड़ना; दबाया जाना । स० क्रि० दबोचना ।

बिगूतना*-अ० क्रि० दे० 'बिगूचना' ।

बिगोना*-स० क्रि० बिगाड़ना; गँवाना, व्यर्थ बिताना; छिपाना; बहकाना; हैरान करना ।

बिग्यान*-पु० दे० 'विज्ञान' ।

बिग्रह-पु० दे० 'विग्रह' ।

बिघटन-पु० दे० 'विघटन' ।

बिघटना*-स० क्रि० तोड़ना, विघटित करना; बिगाड़ना ।

बिघन*-पु० विघ्न, बाधा; बड़ा हथौड़ा; अभ्यास करना । **-हरन***-पु० दे० 'विघ्नहरण' ।

बिघार*-पु० बाघ ।

बिच*-अ० दे० 'बीच' ।

बिचकना-अ०क्रि० चौंकना, भड़कना । वि० चौंकनेवाला ।

बिचकाना-स०क्रि० भड़काना; मुहँ बनाना, मुहँ चिढ़ाना ।

बिचच्छन*-वि० दे० 'विचक्षण'; प्रकाशमान ।

बिचरना-अ० क्रि० घूमना-फिरना, स्वच्छंद भ्रमण करना ।

बिचलना-अ० क्रि० विचलित होना, हटना; मुकरना ।

बिचला-वि० बीचका, मध्यम ।

बिचलाना-स०क्रि० विचलित करना; तितर-बितर करना ।

बिचवई-पु० बीच-बिचाव करनेवाला, मध्यस्थ । स्त्री० मध्यस्थता ।

बिचवान, बिचवानी*-पु० मध्यस्थ ।

बिचहुत*-पु० अंतर; दुविधा ।

बिचार-पु० विचार, खयाल; इरादा । **-मान***-वि० विचारवान्; विचारणीय ।

बिचारना-स०क्रि० विचार करना, सोचना; इरादा करना ।

बिचारा-वि० दे० 'बेचारा' ।

बिचारी-वि० विचारवान्, विचार करनेवाला ।

बिचाल*-पु० विचलित करनेका भाव; अंतर ।

बिचुकना*-वि० चौंकनेवाला ।

बिचेत*-वि० अचेत, बेहोश ।

बिचौंहाँ*-वि० बीचका, बीचवाला ।

बिच्छित्ति-स्त्री० दे० 'विच्छित्ति' ।

बिच्छी†-स्त्री० दे० 'बिच्छू' ।

बिच्छू-पु० एक जहरीला जंतु जिसके डंक मारनेसे बहुत पीड़ा होती है, वृश्चिक; एक तरहकी घास ।

बिच्छेप*-पु० दे० 'विक्षेप' ।

बिछना-अ० क्रि० बिछाया-फैलाया जाना ।

बिछलन-पु० फिसलन ।

बिछलना, बिछलाना-अ० क्रि० फिसलना; डगमगाना ।

बिछवाना-स०क्रि० बिछानेका काम किसी औरसे कराना ।

बिछाना-स० क्रि० आसन-बिस्तर आदिको जमीन, चारपाई आदिपर फैलाना; बिखेरना; मारकर गिरा देना ।

बिछायत*-स्त्री० बिछानेकी चीज, बिछावन ।

बिछावन-पु० दे० 'बिछौना' ।

बिछिप्त*-वि० दे० 'विक्षिप्त' ।

बिछिया-स्त्री० पाँवकी उँगलियोंमें पहननेका एक गहना ।

बिछुआ, बिछुवा-पु० पाँवका एक गहना; एक तरहकी छुरी (कटार) ।

बिछुड़न*-स्त्री० बिछुड़नेका भाव, वियोग, जुदाई ।

बिछुड़ना–अ० क्रि० साथ छूटना; वियोग होना।

बिछुरंता*–पु० बिछुड़नेवाला; वह जो बिछुड़ा हुआ हो।

बिछुरना*–अ० क्रि० दे० 'बिछुड़ना'।

बिछुरनि*–स्त्री० दे० 'बिछुड़न'।

बिछूना*–वि० बिछुड़ा हुआ।

बिछोई*–वि० दे० 'बिछोही'।

बिछोड़ा*–पु० बिछुड़न, वियोग।

बिछोय*–पु० दे० 'बिछोह'।

बिछोह–पु० वियोग, जुदाई।

बिछोही–वि० बिछुड़ा हुआ, वियुक्त।

बिछौना–पु० वह कपड़ा जिसे चारपाई आदिपर बिछाकर सोया जाय, बिस्तर।

बिजन*–पु० व्यजन, पंखा। वि० दे० 'विजन'–'बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं'–भू०।

बिजना*–पु० पंखा।

बिजय–स्त्री० दे० 'विजय'।–**घंट**–पु० मंदिरोंमें लटकाया जानेवाला बड़ा घंटा।

बिजयी–वि० दे० 'विजयी'।

बिजली–स्त्री० रगड़, रासायनिक क्रिया या चुंबकीय शक्तिसे उत्पन्न शक्ति-विशेष, विद्युत्, एकसे दूसरे बादलमें या बादलसे धरतीकी ओर बिजलीका विसर्जन; इस विसर्जनसे उत्पन्न प्रकाश, तड़ित्; विसर्जन; कानमें पहननेका एक गहना; गलेमें पहननेका एक गहना; आमकी गुठलीके भीतरका गूदा। वि० बहुत तेज, अति चंचल द्रुतगामी। –**घर**–पु० वह स्थान जहाँ बिजलीकी शक्ति उत्पन्न करके नगर या क्षेत्र-विशेषमें वितरित की जाय।–**बचाव**–पु० ऊँची इमारतोंपर बिजलीसे बचानेके लिए लगा हुआ नोंकदार लोहा। **मु०**–**गिरना**–बिजलीका आकाशसे धरतीकी ओर आना; किसी चीजका बिजलीके रास्ते या निशानेमें पड़ना, वज्रपात होना।

बिजहन–वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो, हतवीर्य।

बिजाती–वि० दे० 'विजातीय', दूसरी जातिका।

बिजान*–वि० ज्ञानरहित, अनजान।

बिजायठ–पु० बाजूबंद।

बिजुरी*–स्त्री० दे० 'बिजली'।

बिजूका, बिजूखा†–पु० पक्षियों आदिको भगानेके लिए खेतमें बनाया हुआ पुतला आदि, धोखा, धूहा।

बिजै*–स्त्री० 'विजय', जीत।

बिजोग*–पु० दे० 'वियोग'।

बिजोना*–स० क्रि० अच्छी तरह देखना; देख-रेख करना।

बिजोरा–पु० दे० 'बिजौरा'। † वि० निर्बल।

बिजौरा–पु० नीबूके वर्गका एक फल जो आकारमें बड़ी नारंगीके बराबर होता है, बीजपूर; तिलके मेलसे बनी हुई एक तरहकी चपटी बरी।

बिजौरी–स्त्री० एक प्रकारकी बरी।

बिज्जु*–स्त्री० दे० 'बिजली'। –**पात***–पु० बिजली गिरना, वज्रपात।

बिज्जुल*–स्त्री० दे० 'बिजली'। पु० छिलका, त्वचा।

बिज्जू–पु० एक वन्य जंतु जिसकी शकल बिल्लीसे मिलती है।

बिझकना*–अ० क्रि० दे० 'बिझुकना'।

बिझुकना*–अ० क्रि० दे० 'बिचकना'; तनना।

बिझुका*–पु० दे० 'बिजूका' (धोखा)।

बिझुकाना*–स० क्रि० चौंकाना; डराना; चंचल कर देना।

बिट–पु० विदूषक; वेश्यागामी; वैश्य। स्त्री० बीट।

बिटप–पु० वृक्ष; झाड़ी; वृक्षादिकी नयी शाखा।

बिटपी–पु० दे० 'विटपी'।

बिटरना*–अ० क्रि० घँघोला जाना।

बिटारना*–स० क्रि० घँघोलना, गंदा करना।

बिटिनिया†–स्त्री० दे० 'बिटिया'।

बिटिया†–स्त्री० बेटी, बच्ची।

बिटौरा*–पु० उपलोंकी राशि।

बिट्ठल–पु० विष्णुका एक नाम; पंढरपुर(सोलापुर)में स्थापित देवमूर्ति।

बिठलाना–स० क्रि० दे० 'बिठाना'।

बिठाना–स० क्रि० बैठाना।

बिठालना–स० क्रि० दे० 'बिठाना'।

बिडंब*–पु० आडंबर।

बिडंबना–स्त्री० दे० 'विडंबना'।

बिड–पु० बीट; दे० 'विट्'; [सं०] एक तरहका नमक, खारी नमक।

बिड़ई–स्त्री० गेंडुरी, इँडुरी।

बिड़र–वि० अलग-अलग, जो सटा न हो; * निडर; ढीठ।

बिड़रना*–अ० क्रि० तितर-बितर होना; भागना; डरना, चौंकना (जानवरोंका)।

बिड़राना–स० क्रि० तितर-बितर करना; भगाना।

बिड़वना*–स० क्रि० तोड़ना।

बिड़ा*–पु० वृक्ष–'कबिरा चंदनका बिड़ा बैठा आक पलास'–कबीर।

बिड़ारना–स० क्रि० तितर-बितर कर देना; विपक्षी दलको डराकर भगा देना–'मारीच बिडार्‍यो, जलधि उतार्‍यो'–राम०; नष्ट करना।

बिडाल–पु० [सं०] मार्जार, बिलाव; एक दैत्य; आँखका डेला।

बिडालाक्ष–वि० [सं०] जिसकी आँखें बिल्लीकी-सी हों।

बिडालिका–स्त्री० [सं०] छोटी बिल्ली; हरताल।

बिडाली–स्त्री० [सं०] बिल्ली; आँखका एक रोग।

बिड़ी†–स्त्री० दे० 'बीड़ी'।

बिढ़तो*–पु० कमाई; लाभ।

बिढ़वना, बिढ़ाना*–स० क्रि० कमाना; संचय करना।

बित*–पु० दे० 'वित्त'।

बितताना*–अ० क्रि० विकल होना। स० क्रि० दुःख देना, सताना।

बितना*–पु० बित्ता। अ० क्रि० दे० 'बीतना'।

बितरना*–स० क्रि० वितरण करना, बाँटना।

बितवना*–स० क्रि० बिताना।

बिताना–स० क्रि० गुजारना, व्यतीत करना। * अ० क्रि० बीतना–'भयो द्रौपदीको बसन बासर नहीं बिताय'–रसराज।

बितावना*–स० क्रि० दे० 'बिताना'।

बितीतना*–अ० क्रि० बीतना, गुजरना। स० क्रि०

बिताना ।

बितुंड–पु० दे० 'वितुंड' ।

बित्त–पु० वित्त, धन-दौलत; हैसियत; बूता, सामर्थ्य ।

बित्ता–पु० अँगूठेके सिरेसे छिँगुनीके छोरतककी लंबाई, बालिश्त ।

बिथकना–अ० क्रि० थकना; मुग्ध होना; चकित होना ।

बिथरना, बिथुरना–अ० क्रि० बिखरना; अलग-अलग होना; खिलना ।

बिथराना, बिथुराना*–स० क्रि० बिखेरना, छिटकाना ।

बिथा*–स्त्री० दे० 'व्यथा' ।

बिथारना*–स० क्रि० बिखेरना, छितराना ।

बिथित*–वि० दे० 'व्यथित' ।

बिथुरित*–वि० बिखरा हुआ ।

बिथोरना*–स० क्रि० दे० 'बिथराना' ।

बिदकना–अ० क्रि० चौंकना, भड़कना; फटना; घायल होना ।

बिदकाना*–स० क्रि० चौंकाना; फाड़ना; घायल करना ।

बिदरन*–स्त्री० विदीर्ण होना; दरार । वि० विदीर्ण करनेवाला ।

बिदरना*–अ० क्रि० फटना, विदीर्ण होना ।

बिदलना*–अ० क्रि० दलित करना ।

बिदहना†–स० क्रि० धान आदिको छीटकर जुताई करना ।

बिदहनी†–स्त्री० बिदहनेकी क्रिया ।

बिदा–स्त्री० रवानगी, रुखसत; जानेकी इजाजत; गौना ।

बिदाई–स्त्री० रुखसती, रवानगी; बिदा करते समय दिये जानेवाले रुपये आदि, रुखसताना ।

बिदारना*–स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना; नष्ट करना ।

बिदारी–पु० दे० 'विदारी' ।–**कंद**–पु० दे० 'विदारीकंद' ।

बिदिसा*–स्त्री० दे० 'विदिशा' ।

बिदीरना*–स० क्रि० विदीर्ण करना; आहत करना ।

बिदुराना*–अ० क्रि० मुस्कराना ।

बिदुरानि*–स्त्री० मुस्कराहट ।

बिदूखना, बिदूपना*–स० क्रि० दोष देना, लगाना; बिगाड़ना ।

बिदूरित–वि० दूर किया हुआ ।

बिदेस–पु० 'विदेश', परदेश ।

बिदेसी–वि० 'विदेशी', अन्य देशका परदेशी ।

बिदोख*–पु० बैर, विद्वेष ।

बिदोरना*–स० क्रि० चलाना; फैलाना–'खाय कै पान बिदोरत ओठ हैं, बैठि सभामें बने अलबेला'– ।

बिद्दत–स्त्री० बुराई; दुर्दशा; अत्याचार ।

बिद्ध–वि० बिंधा हुआ, छेदा हुआ ।

बिधँसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना ।

बिध–स्त्री०, पु० दे० 'विधि' । पु० हाथीका चारा या रातिब; जमाखर्चका हिसाब । मु०–**मिलाना**–आय-व्ययका हिसाब ठीक करना ।

बिधना–पु० विधि, ब्रह्मा । अ० क्रि० बेधा जाना, बिंधना । * स० क्रि० फँसाना ।

बिधवपन†–पु० वैधव्य ।

बिधवा*–स्त्री० 'विधवा' बेवा, मृतभर्तृका ।

बिधवाना–स० क्रि० छेद कराना ।

बिधाँसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना ।

बिधाई*–पु० विधायक ।

बिधान–पु० दे० 'विधान' ।

बिधाना–अ० क्रि० बेधा जाना ।

बिधानी*–पु० विधान करनेवाला, विधायक ।

बिधि–स्त्री०, पु० दे० 'विधि' ।

बिधिना*–पु० ब्रह्मा ।

बिधुंतुद–पु० दे० 'विधुंतुद' ।

बिधुंसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना ।

बिधुर–वि० दे० 'विधुर' ।

बिन*–अ० दे० 'बिना' ।

बिनई*–वि० दे० 'विनयी'

बिनउ*–स्त्री० दे० 'विनय' ।

बिनठना*–अ० क्रि० नष्ट होना; बिगड़ना ।

बिनता–स्त्री० दे० 'विनता' ।

बिनति*–स्त्री० दे० 'विनती' ।

बिनती–स्त्री० प्रार्थना, अर्ज ।

बिनन–स्त्री० बिननेकी क्रिया; बीनकर निकाली हुई चीज (कूड़ा-करकट); बुननेकी क्रिया ।

बिनना–स० क्रि० चुनना, छाँटना; डंक मारना; दे० 'बुनना' ।

बिनय–स्त्री० दे० 'विनय' ।

बिनयना*–स० क्रि० विनय, प्रार्थना करना ।

बिनवट–स्त्री० रूमाल या रस्सीमें पैसा आदि बाँधकर बनेठी भाँजनेकी कला ।

बिनवना*–स० क्रि० विनय करना ।

बिनवाना–स० क्रि० चुनवाना; दे० 'बुनवाना' ।

बिनशना, बिनसना*–अ० क्रि० नष्ट होना । स० क्रि० विनाश करना ।

बिनसाना*–स० क्रि० विनाश करना, मिटाना । अ० क्रि० नष्ट होना ।

बिना–अ० बगैर, छोड़कर । स्त्री० [अ०] नीवँ, बुनियाद; जड़; कारण ।

बिनाई–स्त्री० बीनने(चुनने)की क्रिया या भाव; बीननेकी मजदूरी; दे० 'बुनाई' ।

बिनाती*–स्त्री० दे० 'विनती' ।

बिनाना–स० क्रि० बुनवाना ।

बिनानी*–वि० नासमझ,–'रोवन लागे कृष्ण बिनानी'–सू०; विज्ञानी । स्त्री० विचार ।

बिनावट†–स्त्री० दे० 'बुनावट' ।

बिनास*–पु० दे० 'विनाश'; नाकसे खून जाना ।

बिनासना†–स० क्रि० विनाश करना ।

बिनासी*–वि० विनाशी, नष्ट होनेवाला, नश्वर ।

बिनाह*–पु० दे० 'विनाश'–'साकत संग न कीजिये जाते होइ बिनाह'–कबीर ।

बिनि, बिनु*–अ० दे० 'बिना' ।

बिनूठा*–वि० अनूठा ।

बिनै*–स्त्री० दे० 'विनय' ।

बिनौला–पु० कपासका बीज ।

बिपक्ष–पु० दे० 'विपक्ष'।

बिपक्षी–वि०, पु० दे० 'विपक्षी'।

बिपच्छ*–पु० शत्रु, विरोधी पक्ष। वि० प्रतिकूल, विमुख।

बिपच्छी*–वि०, पु० दे० 'विपक्षी'।

बिपत, बिपता*–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपति*, बिपत्ति–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपथ–पु० गलत रास्ता, कुमार्ग।

बिपद, बिपदा*–स्त्री० विपत्ति, मुसीबत, आफत।

बिपर*–पु० दे० 'विप्र'।

बिपाक–पु० दे० 'विपाक'।

बिपाशा, बिपासा–स्त्री० व्यास नदी।

बिपोहना–स० क्रि० दे० 'विपोहना'।

बिफर*–वि० दे० 'विफल'।

बिफरना*–अ० क्रि० भड़कना; नाराज होना; मचलना; विद्रोह करना; चमकना, उछलना (घोड़ेका)।

बिबछना–अ० क्रि० विपक्षी, विरोधी होना; उलझना।

बिबर–पु० दे० 'विवर'।

बिबरन*–वि० दे० 'विवर्ण'। पु० दे० 'विवरण'।

बिबस*–वि० दे० 'विवश'। अ० लाचार होकर।

बिबसाना*–अ० क्रि० विवश होना।

बिबहार*–पु० दे० 'व्यवहार'।

बिबाई–स्त्री० दे० 'विवाई'।

बिबाक*–वि० दे० 'बेबाक'।

बिबाकी*–स्त्री० दे० 'बेबाकी'।

बिबादना*–अ० क्रि० विवाद करना, झगड़ना।

बिबाहना*–स० क्रि० ब्याह करना।

बिबि*–वि० दो।

बिब्बोक–पु० [सं०] गर्वपूर्ण उपेक्षा; रूपादिके गर्वसे प्रियकी उपेक्षा (सा०)।

बिभचारी*–वि० दे० 'व्यभिचारी'।

बिभाना*–अ० क्रि० चमकना, शोभित होना।

बिभावरी–स्त्री० दे० 'विभावरी'।

बिभिचारी*–वि० दे० 'व्यभिचारी'।

बिभिनाना*–स० क्रि० भिन्न, अलग करना।

बिभीषक–वि० [सं०] भयकारक, त्रास उत्पन्न करनेवाला।

बिभीषिका–स्त्री० [सं०] दे० 'विभीषिका'।

बिभु*–पु० दे० 'विभु'।

बिभौ*–पु० ऐश्वर्य; प्राचुर्य।

बिमन*–वि० उदास, विमनस्क। अ० बिना मनके।

बिमर्दना*–स०क्रि० मर्दन करना, मसलना; नष्ट करना।

बिमान–पु० वायुयान; अनादर।

बिमानी*–वि० मानरहित। **–कृत**–वि० जो मानरहित किया गया हो, या जिसने विमान बनाया हो।

बिमूढ़–वि० दे० 'विमूढ'।

बिमोचना*–स० क्रि० टपकाना; छोड़ना, मुक्त करना।

बिमोट, बिमोटा–पु० बाँबी, वल्मीक।

बिमोहना*–अ० क्रि० मुग्ध, आसक्त होना। स० क्रि० मुग्ध करना।

बिय*–वि० दो; दूसरा। पु० बीज।

बियत–पु० आकाश; * एकांत स्थान।

बिया–* वि० दूसरा। † पु० बीज।

बियाज†–पु० सूद; बहाना।

बियाध, बियाधा*–पु० दे० 'व्याध'।

बियाधि*–स्त्री० दे० 'व्याधि'।

बियाना†–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'ब्याना'।

बियापना*–अ० क्रि० 'व्यापना', व्याप्त होना।

बियाबान–पु० दे० 'बयाबान'।

बियारी, बियारू, बियालू–पु० दे० 'ब्यालू'।

बियाल*–पु० साँप; शेर।

बियाहना*–स० क्रि० ब्याह करना।

बियोग–पु० दे० 'वियोग'।

बिरंग–वि० बेरंग; कई रंगोंवाला।

बिरंचि*–पु० ब्रह्मा।

बिरंजी–स्त्री० छोटी कील। वि० [अ०] पीतलका।

बिरई*–स्त्री० छोटा पौधा।

बिरकत*–वि० दे० 'विरक्त'–'वैरागी बिरकत भला ग्रेही चित्त उदार'–साखी।

बिरखभ, बिरषभ–पु० दे० 'वृषभ'।

बिरचना*–स० क्रि० रचना, बनाना; सजाना। अ० क्रि० उचटना।

बिरछ*–पु० दे० 'वृक्ष'।

बिरछिक, बिरछीक–पु० दे० 'वृश्चिक'।

बिरज–वि० निर्मल, निर्दोष; गुणरहित।

बिरझना*–अ०क्रि० उलझना; मचलना; क्रुद्ध होना।

बिरझाना*–अ० क्रि० क्रुद्ध होना।

बिरतंत, बिरतांत*–पु० दे० 'वृत्तांत'।

बिरता–पु० बूता, शक्ति।

बिरताना*–स० क्रि० वितरण करना, बाँटना।

बिरति*–स्त्री० दे० 'विरक्ति'।

बिरथा*–वि० व्यर्थ। अ० अकारण, निष्प्रयोजन।

बिरदंग*–पु० मृदंग।

बिरद–पु० नाम, बड़ाई, यश।

बिरदैत–वि० बड़े नामवाला, विख्यात। पु० नामी योद्धा।

बिरध*–वि० दे० 'वृद्ध'।

बिरधाई*–स्त्री० बुढ़ापा।

बिरधापन*–पु० बुढ़ापा।

बिरमना*–अ०क्रि० रुकना, अटकना; देर करना; विश्राम करना; प्रेममें बँधना।

बिरमाना*–स० क्रि० रोक रखना; मोह लेना; बिताना। अ० क्रि० ठहरना, विश्राम करना; भुलाना।

बिरल–वि० दे० 'विरल'।

बिरला–वि० बहुतोंमेंसे कोई एक।

बिरले–वि० (बहु०) इने-गिने, बहुत थोड़े।

बिरवा*–पु० पौधा, वृक्ष।

बिरवाई; बिरवाही†–स्त्री० छोटे पौधोंका समूह; वह स्थान जहाँ बहुतसे छोटे पौधे उगे हों।

बिरस–वि० दे० 'विरस'। पु० बिगाड़।

बिरसना*–अ० क्रि० दे० 'बिलसना'।

बिरह–पु० दे० 'विरह'।

बिरहा–पु० एक तरहका लोकगीत जिसे खास तौरसे

अहीर गाते हैं; दे० 'विरह'।

बिरहाना*-अ०क्रि० विरह-व्यथाका अनुभव करना-'राधा बिरह देखि बिरहानी, यह गति बिन नँदनंद'-सू०।

बिरही-वि०, पु० दे० 'विरही'।

बिराग-पु० दे० 'विराग'।

बिरागना*-अ० क्रि० विरक्त होना।

बिराजना-अ०क्रि० शोभित होना; बैठना, आसीन होना।

बिरादर-पु० [फ़ा०] भाई, बंधु; भाई-बंद, सजातीय। **-कुशी**-स्त्री० बंधुवध। **-ज़ादा**-पु० भतीजा।

बिरादराना-वि० [फ़ा०] भाईकासा, भाईके अनुरूप।

बिरादरी-स्त्री० [फ़ा०] भाईचारा; जाति, गोत्र। **मु०-से ख़ारिज, बाहर होना**-जातिच्युत होना।

बिरान*-वि० बेगाना, पराया।

बिराना*-वि० पराया। † स० क्रि० (मुँह) चिढ़ाना।

बिराल-पु० दे० 'विडाल'।

बिरावना*-स० क्रि० दे० 'बिराना'।

बिरास*-पु० दे० 'विलास'।

बिरासी*-वि० दे० 'विलासी'।

बिरिख*-पु० दे० 'वृक्ष'; दे० 'वृष'।

बिरिछ*-पु० वृक्ष।

बिरिध*-वि० दे० 'वृद्ध'।

बिरियाँ*-स्त्री० बेला, समय; बार, दफा।

बिरी*-स्त्री० पानका बीड़ा; गठरी; मिस्सी।

बिरुझ(झा)ना*-अ० क्रि० उलझना; झगड़ना; मचलना।

बिरुद-पु० दे० 'विरद'।

बिरुदैत-वि०, पु० दे० 'बिरदैत'।

बिरुधाई*-स्त्री० बुढ़ापा।

बिरूप*-वि० कुरूप, भद्दा; दे० 'विरूप'।

बिरोधना*-अ० क्रि० विरोध करना।

बिरोलना*-स० क्रि० दे० 'बिलोड़ना'।

बिलंद*-वि० दे० 'बुलंद'।

बिलंब-पु० दे० 'विलंब'।

बिलंबना*-अ० क्रि० देर करना; रुकना; लटकना।

बिलंबित-वि० दे० 'विलंबित'।

बिल-पु० [सं०] जमीन या दीवारमें बनाया हुआ लंबा छेद; इस तरहका छेद जिसमें कोई जंतु (चूहा, साँप आदि) रहता हो; इंद्रका घोड़ा। **-कारी(रिन्)**-पु० चूहा। **-शय,-शायी(यिन्)**-वि० बिलमें रहनेवाला। पु० ऐसा जंतु। **मु०-ढूँढ़ना**-बचावकी जगह ढूँढ़ना। **-में घुसना**-छिप जाना, घरमें बैठ रहना।

बिल-पु० [अं०] बेचे हुए माल या किये हुए कामके पावनेका पुरजा; कानूनका मस्विदा, विधेयक।

बिलकुल-अ० दे० 'बिल्'में।

बिलखना-अ० क्रि० विलाप करना; * ताड़ जाना।

बिलखाना*-अ० क्रि० दे० 'बिलखना'। स० क्रि० दुःख देना, रुलाना।

बिलग-वि० अलग, जुदा। * पु० बिलगाव; रंज; बुराई। **मु०-मानना**-बुरा मानना; दुःखी होना।

बिलगाना-अ०क्रि० अलग होना। स०क्रि० अलग करना।

बिलच्छन*-वि० दे० 'विलक्षण'।

बिलछना*-अ० क्रि० लखना, ताड़ना।

बिलटी-स्त्री० रेलसे भेजे जानेवाले मालकी रसीद जिसे दिखानेपर भेजा हुआ माल मिलता है।

बिलनी-स्त्री० आँखकी पलकपरकी फुंसी; एक कीड़ा, भृंगी।

बिलपना*-अ० क्रि० विलाप करना।

बिलफेल-अ० दे० 'बिल्'में।

बिलबिलाना-अ० क्रि० दुःख, पीड़ा आदिसे विकल, विह्वल होना, रोना-चिल्लाना; गिड़गिड़ाना; कीड़ोंका कुलबुलाना।

बिलम*-पु० दे० 'विलंब'।

बिलमना*-अ० क्रि० देर करना; रुकना, अटकना; प्रेममें बँधकर रुक जाना।

बिलमाना*-स० क्रि० रोकना, अटकाना; प्रेममें फँसाना।

बिललाना*-अ० क्रि० बिलखना, विलाप करना-'बिललात परे इक कटे गात'-सुजान; घबड़ाना।

बिलल्ला-वि० खेल-कूद, आवारगीमें समय बितानेवाला; बेशऊर, महामूर्ख।

बिलसना*-अ० क्रि० सजना, शोभित होना। स० क्रि० बरतना, भोगना।

बिलसाना*-स० क्रि० बरतना, भोगना; दूसरेको बरतनेमें प्रवृत्त करना।

बिलस्त†-पु० बित्ता।

बिलहरा-पु० बाँसकी तीलियोंका बना पान रखनेका डिब्बा।

बिला-अ० [अ०] बिना, बगैर। **-तकल्लुफ़**-अ० निस्संकोच, बिना रुके-अटके। **-नाग़ा**-अ० प्रति दिन, हर रोज। **-वजह**-अ० अकारण। **-शक,-शुभा**-अ० निस्संदेह, निश्चयपूर्वक। **-शर्त**-अ० बिना किसी शर्तके।

बिलाई-स्त्री० बिल्ली; सिटकिनी; कुएँमें गिरी हुई चीजें निकालनेका काँटा; कद्दूकश।

बिलाना-अ० नष्ट होना; छिन्न-भिन्न होना; लुप्त होना।

बिलाप-पु० दे० 'विलाप'।

बिलापना*-अ० क्रि० विलाप करना।

बिलायत-पु० दे० 'वलायत'। * वि० बहुत।

बिलार†-पु० बड़ी बिल्ली।

बिलारी†-स्त्री० बिल्ली।

बिलाव-पु० बड़ी बिल्ली, मार्जार।

बिलावल-पु० एक राग। स्त्री० पत्नी, स्त्री; प्रेमिका।

बिलास-पु० दे० 'विलास'।

बिलासना*-स० क्रि० बरतना, भोगना।

बिलासिनी-स्त्री० वेश्या।

बिलासी-वि० दे० 'विलासी'। पु० एक पेड़।

बिलिया-स्त्री० कटोरी।

बिलुठना*-अ० क्रि० लोटना।

बिलूर*-पु० दे० 'बिल्लौर'।

बिलेशय-पु० [सं०] बिलमें सोनेवाला, साँप आदि।

बिलैया†-स्त्री० बिल्ली; कद्दूकश; दरवाजेकी सिटकिनी।

बिलोकना*-स० क्रि० देखना, अवलोकन करना।

बिलोकनि*-स्त्री० चितवन, दृष्टि।

बिलोचन-पु० नेत्र।

बिलोड़ना*-स० क्रि० मथना; गड्डमड्ड करना।

बिलोन*-वि० अलोना; बदसूरत।

बिलोना–स० क्रि० मथना; डालना, गिराना (आँसू)–'तुलसी मँदोवै रोइ-रोइकै बिलोवै आँसु'–कविता। वि० दे० 'बिलोन'।

बिलोरना*–स० क्रि० दे० 'बिलोड़ना'।

बिलोल–वि० चंचल; सुंदर।

बिलोलना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना।

बिलोवना*–स० क्रि० दे० 'बिलोना'।

बिलौटा–पु० बिल्लीका बच्चा।

बिलौर–पु० दे० 'बिल्लौर'।

बिल्–अ० [अ०] से, साथ; लिए; द्वारा। **–कुल**–अ० सारा, तमाम; निपट। **–फ़ेल**–अ० अभी, सरेदस्त, फिलहाल।

बिल्ला–पु० नर बिल्ली; पद या संस्थाविशेषकी सदस्यता-सूचक पट्टी, बैज।

बिल्लाना–अ० क्रि० चीखें मारकर रोना, विलाप करना।

बिल्ली–स्त्री० शेर, चीते आदिकी जातिका एक मांसाहारी छोटा जंतु जो पालतू और जंगली दोनों तरहका होता है; सिटकिनी। **मु०–का रास्ता काटना**–बिल्लीका सामनेसे निकल जाना (अपशकुन)।

बिल्लौर–पु० शीशेके जैसा सफेद पारदर्शक पत्थर, स्फटिक।

बिल्लौरी–वि० बिल्लौरका बना हुआ; बिल्लौरकीसी चमकवाला।

बिल्व–पु० [सं०] बेलका पेड या फल।

बिवछना*–अ० क्रि० दे० 'बिबछना'।

बिवरना*–स० क्रि० सुलझाना। अ० क्रि० सुलझना।–'नीक सगुन बिवरहि झगर'–रामाज्ञा।

बिवराना–स० क्रि० (बालोंको) सुलझाना; सुलझवाना।

बिवसाइ*–पु० दे० 'व्यवसाय'।

बिवाई–स्त्री० पाँवके चमड़ेका फटना।

बिवान*–पु० विमान, रथ।

बिवेचना*–स० क्रि० विवेचन करना।

बिशाखा–स्त्री० राधाकी एक सखी।

बिष–पु० दे० 'विष'।

बिषया–स्त्री० विषय-वासना।

बिषान*–पु० सींग।

बिषारा*–वि० विषाक्त।

बिषिया*–स्त्री० दे० 'बिषया'।

बिसंच*–पु० संचयका अभाव, अपव्यय; लापरवाही; विघ्न; डर।

बिसंभर*–पु० दे० 'विश्वंभर'। वि० जो सँभाला न जा सके; बेखबर।

बिसँभार*–वि० जो सम्हाला न जा सके; बेसुध, अचेत।

बिस–पु० दे० 'विष'; [सं०] मृणाल।

बिसकरमा*–पु० दे० 'विश्वकर्मा'।

बिसखपरा–पु० गोहकी जातिका एक जहरीला जंतु।

बिसखापर, बिसखोपरा–पु० दे० 'बिसखपरा'।

बिसतरना*–स० क्रि० विस्तार करना। अ० क्रि० फैलना।

बिसतार*–पु० दे० 'विस्तार'।

बिसद*–वि० दे० 'विशद'।

बिसन*–पु० व्यसन; पतन; दुर्भाग्य; दोष।

बिसनी*–वि० दे० 'व्यसनी'।

बिसमउ, बिसमव*–पु० दे० 'बिसमय'।

बिसमय*–पु० विस्मय, आश्चर्य; संदेह; गर्व; विषाद।

बिसमरना*–स० क्रि० भूलना।

बिसमिल–वि० जबह किया हुआ; घायल।

बिसमिल्ला–पु० 'बिस्मिल्ला'।

बिसयक*–पु० प्रदेश, विषय; राज्य।

बिसरना–स० क्रि० भूल जाना।

बिसरात*–पु० खच्चर।

बिसराना–स० क्रि० भुला देना।

बिसराम*–पु० दे० 'विश्राम'।

बिसरामी*–वि० विश्राम देनेवाला, सुखद–'सुआ सो राजाकर बिसरामी'–प०।

बिसरावना*–स० क्रि० दे० 'बिसराना'।

बिसवास*–पु० दे० 'विश्वास'।

बिसवासिनि*–वि० स्त्री० विश्वासघात करनेवाली।

बिसवासी*–वि० विश्वासी; अविश्वसनीय–'पै यह पेट महा बिसवासी'–प०।

बिससना*–स० क्रि० विश्वास करना, पतियाना; वध करना; चीर-फाड़ करना।

बिसहना*–स० क्रि० दे० 'बिसाहना'।

बिसहर*–पु० विषधर, सर्प।

बिसा*–पु० दे० 'बिस्वा'।

बिसाइँध–स्त्री०, वि० दे० 'बिसायँध।

बिसाख*–स्त्री० दे० 'विशाखा'।

बिसात–स्त्री० [अ०] फैलाव; फैलायी, बिछायी जानेवाली चीज, दरी, चटाई आदि; वह कपड़ा जिसपर चौसर या शतरंज खेला जाय; पूँजी; हैसियत; हस्ती; शक्ति, सामर्थ्य। **–ख़ाना**–पु० बिसातीकी दुकान। **–बाना**–पु० बिसातीकी दुकानमें बिकनेवाला सामान (स्टेशनरी)।

बिसाती–पु० फुटकर चीजें बेचनेवाला, लिखने-पढ़ने, शृंगार, सीने-पिरोने, आदिका सामान बेचनेवाला।

बिसाना–* अ० क्रि० दे० 'बसाना';† विषका असर होना।

बिसायँध–स्त्री० दुर्गंध; मांस, मछलीकी गंध। वि० ऐसी गंधवाला।

बिसारद*–पु० दे० 'विशारद'।

बिसारना–स० क्रि० भुला देना, याद न रखना।

बिसारा*–वि० विषैला, विषयुक्त, 'विषारा'–'मैन बानसे बिसारे न बिसारे बिसरत हैं'–ललित०।

बिसास*–पु० दे० 'विश्वास'।

बिसासिन, बिसासिनि*–वि० स्त्री० विश्वास-घातिनी।

बिसासी*–वि० विश्वासघाती, छली।

बिसाह–पु० बिसाहनेकी क्रिया, खरीद।

बिसाहना†–स० क्रि० मोल लेना, खरीदना। पु० सौदा।

बिसाहनी*–स्त्री० खरीदी जानेवाली चीज, सौदा, क्रय।

बिसाहा*–पु० सौदा।

बिसियर*–वि० विषैला। पु० सर्प।

बिसुरना*–अ० क्रि० दे० 'बिसूरना'।

बिसूरना–अ० क्रि० दुःखित होना, सोच करना; चुपके-चुपके रोना। स्त्री० सोच, चिंता।

बिसेख, बिसेस*–वि० दे० 'विशेष'।

बिसेखता*-स्त्री० दे० 'विशेषता'।

बिसेखना*-अ० क्रि० विशेष रूपसे, विस्तारसे कहना; विशेष रूपसे प्रतीत होना।

बिसेसर*-पु० दे० 'विश्वेश्वर'।

बिसैँधा-वि० जिसमें मांस-मछलीकी गंध हो।

बिसोक*-वि० शोकरहित। पु० अशोक वृक्ष।

बिस्कुट-पु० आटा, आरारोट आदिकी बनी मीठी, नमकीन टिकिया।

बिस्तर-पु० [फा०] बिछौना।

बिस्तरना*-अ० क्रि० विस्तृत होना। स० क्रि० विस्तार करना।

बिस्तरा*-पु० दे० 'बिस्तर'।

बिस्तार-पु० दे० 'विस्तार'।

बिस्तारना-स० क्रि० विस्तार करना, फैलाना।

बिस्तुइया-स्त्री० छिपकली।

बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह-स्त्री० [अ०] 'अल्लाहके नामके साथ'; आरंभ; विद्यारंभ। **मु०-ही ग़लत होना**-शुरूमें ही गलती होना, 'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः'।

बिस्राम*-पु० दे० 'विश्राम'।

बिस्वा-पु० बीघेका बीसवाँ भाग। **-दार**-पु० पट्टीदार।

बिस्वास-पु० दे० 'विश्वास'।

बिहँग-पु० दे० 'विहंग'।

बिहंडना*-स० क्रि० काटना, टुकड़े करना, नष्ट करना।

बिहँसना*-अ० क्रि० मुस्कराना।

बिहँसाना*-स० क्रि० हँसाना। अ० क्रि० मुस्कराना; खिलना।

बिहँसौँहा*-वि० हँसता हुआ।

बिह-वि० [फा०] दे० 'बेह'। **-तर**-वि० दे० 'बेहतर'।

बिहग-पु० दे० 'विहंग'।

बिहद, बिहद्दा-वि० दे० 'बेहद'।

बिहवल*-वि० दे० 'विह्वल'; शिथिल।

बिहरना*-अ० क्रि० विचरना; विहार करना,-'जमुना जल बिहरत ब्रज...री'-सू०; * विदीर्ण होना, फटना।

बिहराना*-अ० क्रि० फटना।

बिहान-पु० सवेरा, भोर; अंत। आनेवाला कल।

बिहाना*-स० क्रि० त्यागना। अ० क्रि० बीतना।

बिहार-पु० दे० 'विहार'।

बिहारना*-अ० क्रि० विहार करना।

बिहारी-पु० बिहारका रहनेवाला। वि० दे० 'विहारी'।

बिहाल*-वि० दे० 'बेहाल'।

बिहि*-पुं० विधि, ब्रह्मा।

बिहिश्त-पु० [फा०] स्वर्ग, वैकुंठ, जन्नत; स्वर्गोपम स्थान। **-का जानवर**-मोर। **-का मेवा**-अनार।

बिहिश्ती-पु० [फा०] बिहिश्तका रहनेवाला; (मशकसे) पानी भरनेवाला, भिश्ती।

बिही-पु० [फा०] नाशपातीकी शकलका एक फल; उसका पेड़, अमरूद। **-दाना**-पु० बिहीका बीज।

बिहीन-वि० दे० 'विहीन'।

बिहुरना*-अ० क्रि० दे० 'बिछुरना'। स० क्रि० छोड़ना।

बिहून*-वि० दे० 'विहीन'।

बिहोरना*-अ० क्रि० बिछुड़ना।

बींदना*-स० क्रि० अनुमान करना; दे० 'बीनना'।

बींधना-स०क्रि० छेदना, बेधना। अ०क्रि०दे० 'बिँधना'।

बी-स्त्री० प्रतिष्ठित महिला, बीबी।

बीका-वि० दे० 'बाँका'।

बीख*-पु० डग, कदम; दे० 'विष'।

बीग*-पु० भेड़िया।

बीघा-पु० बीस बिस्वेका रकबा (एक जरीब लंबी और एक जरीब चौड़ी जमीन)।

बीच-पु० किसी वस्तु, क्षेत्र आदिका मध्य भाग, दरमियान, वस्त; दो चीजोंके मध्यका फासिला, अंतर, फर्क; * अवसर, अवकाश-'पायो बीच इंद्र अभिमानी, हरि बिन गोकुल जान्यो'-सू०। अ० बीचमें, दरमियान; अरसेमें। **-बिचाव**-पु० मध्यस्थता, बिचवई। **-बीचमें**-थोड़ी-थोड़ी देरपर। **बीचोबीच**-ठीक मध्यमें। **मु०-करना**-बिचवई करना। **-खेत**-खुल्लमखुल्ला, डंकेकी चोट। **-पड़ना**-(दशा आदिमें) फर्क होना। **-पारना**-भेद, बिलगाव करना। **-मेँ कूदना**-दखल देना, टाँग अड़ाना। **-मेँ डालना**-मध्यस्थ बनाना। **-मेँ पड़ना**-बिचवई करना; जिम्मेदार बनना। **-रखना**-भेद करना; छिपाना।

बीचि-स्त्री० दे० 'वीचि'।

बीछना*-स० क्रि० छाँटना, चुनना।

बीछी*-स्त्री०, **बीछू**-पु० दे० 'बिच्छू'।

बीज-पु० [सं०] फूलवाले पेड़-पौधेका गर्भांड, वह दाना या गुठली जिससे पेड़-पौधेका अंकुर उगे, तुख्म, बीया; शुक्र; मूल कारण, जड़; कथावस्तुका मूल; बीजगणित; मंत्रका बीज रूप; अक्षर या ध्वनि; मंत्रका मूल भाग; मज्जा। * स्त्री० बिजली। **-कोश,-कोष**-पु० फूलका वह भाग जिसमें बीज रहता है, बीजाधार। **-क्रिया**-स्त्री० बीजगणितकी क्रिया। **-गणित**-पु० गणितका एक भेद जिसमें संख्याकी जगह अक्षरका प्रयोग करते हैं। **-पुरुष**-पु० कुलका आदि पुरुष। **-पूर,-पूरक**-पु० बिजौरा नीबू। **-मंत्र**-पु० किसी देवताके लिए निश्चित मंत्र; गुर।

बीजक-पु० [सं०] बिजौरा नीबू। सूची; भेजे जानेवाले मालकी सूची जो दाम और खर्चके हिसाबके साथ खरीदारके पास भेजी जाती है; कबीरदासके पदोंका एक संग्रह।

बीजन, बीजना*-पु० व्यजन, पंखा।

बीजरी*-स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजल-वि० [सं०] बीजदार।

बीजांकुर-पु० [सं०] अंकुर। **-न्याय**-पु० बीजसे अंकुर और अंकुरसे बीजकी उत्पत्तिका अनादि प्रवाह।

बीजा-पु० बीज। * वि० दूसरा।

बीजाक्षर-पु० [सं०] मंत्रका प्रथम अक्षर।

बीजी-स्त्री० गिरी, मींगी, गुठली।

बीजी(जिन्)-वि० [सं०] बीजवाला। पु० पिता; क्षेत्रज संतानका असल बाप (क्षेत्रीसे भिन्न); सूर्य।

बीजु*-स्त्री० बिजली-'चमकहिं दसन बीजुकै नाईं'-प०। **-पात**-पु० वज्रपात।

बीजुरी*-स्त्री० बिजली।

बीजू–वि० बीजसे उत्पन्न; जो कलमी न हो (–आम)। पु० दे० 'बिज्जू'।

बीझ, बीझा*–वि० बीहड़, जनशून्य।

बीझना*–अ० क्रि० फँसना, उलझना।

बीट–स्त्री० चिड़ियोंका मैला।

बीड़–स्त्री० गुल्लीकी शकलमें रखे हुए रुपये।

बीड़ा–पु० पानकी गिलौरी; म्यानके मुँहके पास बँधी डोरी। **मु०–उठाना**–किसी कामका भार लेना, करनेकी प्रतिज्ञा करना। **–डालना,–रखना**–किसी कठिन कामका भार उठानेके लिए सामंतों, सरदारोंके सामने पानका बीड़ा रखना। **–देना**–नाचने-गानेवालों आदिको साई देना।

बीड़ी–स्त्री० छोटा बीड़ा; गड्डी; पत्ते लपेटकर बनाया हुआ सिगरेट; मिस्सी।

बीतना–अ० क्रि० गुजरना, कटना; दूर होना; घटित होना; पड़ना।

बीता*–पु० दे० 'बित्ता'।

बीती–स्त्री० किसीके ऊपर बीती गुजरी हुई बात, घटित घटना; वृत्तांत।

बीथि, बीथी–स्त्री० दे० 'वीथी'।

बीथित*–वि० दे० 'व्यथित'।

बीधना*–अ०क्रि०दे० 'बिँधना'। स०क्रि०दे० 'बीँधना'।

बीन–स्त्री० वीणा। **–कार**–पु० वीणावादक।

बीनना*–स० क्रि० चुनना; बुनना।

बीना–स्त्री० दे० 'वीणा'।

बीफै–पु० बृहस्पतिवार।

बीबी–स्त्री० भले घरकी स्त्री, कुलांगना; पत्नी; बेटी, स्त्री और छोटी ननदका आदरार्थक संबोधन; फातिमा।

बीभत्स–वि० [सं०] घृणा उत्पन्न करनेवाला; सड़ा-गला (मांसादि); पापी। पु० साहित्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव जुगुप्सा है; घृणोत्पादक वस्तु; अर्जुन।

बीमा–पु० [फ़ा०] मृत्यु, दुर्घटना, मालके रास्तेमें खो जाने आदिकी हानि भर देने, उसके बदलेमें नियत धन देनेकी जिम्मेदारी (इंश्योरेंस)। **–दार**–पु० बीमा करानेवाला (पालिसी होल्डर)। **–पत्रक**–पु० (इंश्योरेंस पालिसी) बीमा करनेवाली संस्था और बीमा करानेवाले व्यक्ति या व्यक्तियोंके बीच हुए समझौतेका लिखित पत्र। **मु०–करना**–क्षतिपूर्तिकी जिम्मेदारी लेना। **(बीमे)की पालिसी**–बीमेका इकरारनामा।

बीमार–पु० [फ़ा०] वह व्यक्ति जिसे रोग हुआ हो, मरीज। वि० रोगी; आशिक। **–दारी**–स्त्री० रोगीकी सेवा, तीमारदारी।

बीमारी–स्त्री० [फ़ा०] रोग, मर्ज; लत; झंझट।

बीय, बीया*–वि० दूसरा। पु० बीज।

बीर–वि० वीर, बहादुर। पु० वीर पुरुष; भाई; एक तरहका प्रेत। * स्त्री० सखी–'फिरत कहा है बीर बावरी भईसी'–हठी; कलाईका एक गहना; कानका एक गहना; चरागाह; चरानेका कर।

बीरउ*–पु० दे० 'बिरवा'।

बीरज*–पु० दे० 'वीर्य'।

बीरन–पु० भाई, बीर; वीरण, खस।

बीरबहूटी–स्त्री० किलनीकी जातिका, गहरे लाल रंगका एक बरसाती कीड़ा, इंद्रवधू।

बीरा*–पु० दे० 'बीड़ा'; प्रसादस्वरूप दिये जानेवाले फल-फूल आदि।

बीरी*–स्त्री० पानका बीड़ा; मिस्सी; कानका एक गहना; पत्तेसे बना हुआ सिगरेट।

बीरौ*–पु०दे०'बिरवा'–'जस अशोक बीरौ तर सीता'–प०।

बील–वि० पोल। पु० नीची जमीन जहाँ पानी जमा हो जाय; * मंत्र; बेल।

बीवी–स्त्री० [फ़ा०] बीबी, स्त्री; पत्नी, गृहिणी।

बीस–वि० दसका दूना, उन्नीससे एक अधिक; बढ़कर, श्रेष्ठ। पु० बीसकी संख्या, २०; * विष। **–बिस्वे**–अ० निश्चयपूर्वक, यकीनन; बहुत करके।

बीसरना*–अ० क्रि०, स० क्रि० भूल जाना।

बीसी–स्त्री० बीसका समूह, कोड़ी; साठ संवत्सरोंके तीनमेंसे कोई विभाग; जमीनकी एक नाप।

बीह*–वि० दे० 'बीस'–'साँचहु मैं लबार भुज बीहा'–रामा०।

बीहड़–वि० ऊबड़-खाबड़; विकट; विभक्त, जुदा।

बुंद–स्त्री०, पु० बूँद; वीर्य।

बुँदकी–स्त्री० छोटी बिंदी या दाग। **–दार**–वि० जिसपर बहुतसी बुंदकियाँ बनी हों।

बुंदा–पु० टिकली; टिकलीके आकारका गोदना; कानका एक गहना; * बूँद।

बुँदिया–स्त्री० 'बूँदी' नामक मिठाई।

बुंदीदार–वि० जिसपर बिंदियाँ हों।

बुंदेलखंड–पु० बुंदेलोंका देश, भारतका वह भूभाग जिसमें उत्तर प्रदेशके उत्तर-पश्चिमके कुछ जिले और पन्ना, छतरपुर आदिका क्षेत्र पड़ता है।

बुंदेलखंडी–वि० बुंदेलखंडका। पु० बुंदेलखंडका निवासी। स्त्री० बुंदेलखंडकी भाषा।

बुंदेला–पु० राजपूतोंका एक भेद जो बुंदेलखंडमें रहता है।

बुँदौरी*–स्त्री० बुँदिया नामकी मिठाई।

बुआ–स्त्री० दे० 'बूआ'।

बुक–स्त्री० एक बारीक कपड़ा जो बकरमकी तरह कड़ा होता है। पु० [सं०] हास्य।

बुक़चा–पु० [फ़ा०] कपड़ेकी गठरी।

बुकची–स्त्री० छोटा बुकचा; दर्जियोंकी थैली जिसमें वे सुई, तागा आदि रखते हैं।

बुकटा, बुकट्टा–पु० दे० 'बकोटा'।

बुकनी–स्त्री० चूर्ण, सफ़ूफ़; चूर्णरूप रंग।

बुकवा–पु० उबटन।

बुकुना*–पु० बुकनी; पाचक।

बुक्क–पु० [सं०] हृदय; हृदयस्थ अग्रमांस; बकरा; समय।

बुक्कन–पु० [सं०] कुत्ते आदि जानवरोंका बोलना।

बुक्का–पु० अभ्रकका चूर्ण।

बुख़ार–पु० [अ०] भाप; ज्वर; भड़ास, दिलका गुबार।

बुग़चा–पु० [तु०] कपड़ोंकी गठरी, बुकचा।

बुज़–पु०, स्त्री० [फ़ा०] बकरा, बकरी। **–कसाब**–पु०

कसाई, बूचड़। **–दिल**–वि० डरपोक, भीरु। **–दिली**–स्त्री० कायरपन, भीरुता।

बुज़ुर्ग–वि० [फा०] बड़ा, वृद्ध; आदरणीय। पु० गुरुजन; संत, महात्मा; पुरखा, बाप-दादा।

बुज़ुर्गाना–वि० [फा०] बुज़ुर्गके अनुरूप, गुरुजनोचित।

बुज़ुर्गी–स्त्री० [फा०] बड़प्पन, बड़ाई।

बुझना–अ०क्रि० (आग, दीपक आदिका) जलना बंद होना, शांत होना; जलती चीजका ठंडा होना; बुझाया जाना; शांत होना, मिटना (प्यास); (चित्तका) सुस्त, उदास होना।

बुझाई–स्त्री० बुझानेकी क्रिया या उजरत; बूझनेकी क्रिया।

बुझाना–स० क्रि० आग या जलती हुई चीजको ठंडा करना, जलनेका अंत करना, गुल करना; जलती हुई चीजको पानीमें डालकर ठंडा करना; तलवार आदिको जहर मिले हुए पानीमें डालकर ठंडा करना; शांत करना, मिटाना (प्यास); समझाना; बूझनेका काम दूसरेसे कराना, पहेली का उत्तर पूछना। *अ० क्रि० शांत होना; बुझना।

बुझौवल–स्त्री० किसी वस्तुका ऐसा अनोखा वर्णन जिसके आधारपर उसका अर्थ बूझने, उत्तर देने या वस्तुका नाम बतानेमें बहुत सोच-विचार करना पड़े, पहेली।

बुट*–स्त्री० दे० 'बूटी'।

बुटना*–अ० क्रि० हटना, भागना।

बुड़की*–स्त्री० डुबकी।

बुड़ना*–अ० क्रि० डूबना।

बुढ़भस–स्त्री० बूढ़ोंकी हिर्स, बुढ़ौतीमें जवानीकी उमंग।

बुड़ाना*–स० क्रि० दे० 'डुबाना'।

बुड़बुड़ाना–अ० क्रि० कुड़बुड़ाना।

बुड्ढा–वि० बूढ़ा।

बुढ़ाई–स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

बुढ़ाना–अ० क्रि० बूढ़ा होना।

बुढ़ापा–पु० बूढ़ा होनेकी अवस्था, वार्द्धक्य, बुढ़ौती।

बुढ़िया–स्त्री० वृद्धा स्त्री, बूढ़ी।

बुढ़ौती–स्त्री० बुढ़ापा।

बुत–पु० [फा०] मूर्ति, प्रतिमा; प्रेमपात्र, माशूक़। वि० मूर्तिकी तरह जड़, निश्चेष्ट। **–ख़ाना**–पु० मंदिर। **–तराश**–पु० मूर्तियाँ बनानेवाला। **–परस्त**–पु० मूर्ति की पूजा करनेवाला। **–परस्ती**–स्त्री० मूर्ति-पूजा। **–शिकन**–पु० मूर्तिको तोड़ने-फोड़नेवाला, मूर्तिभंजक। **मु०–बन (हो) जाना**–मूर्तिकी तरह स्थिर और मौन हो जाना।

बुतना–अ० क्रि० बुझना; शांत होना।

बुताना–स० क्रि० बुझाना; शांत करना। अ० क्रि० दे० 'बुतना'।

बुताम–पु० बटन।

बुत्त–वि० दे० 'बुत'।

बुत्ता–पु० झाँसा, दम।

बुदबुदा–पु० बुलबुला।

बुद्ध–वि० [सं०] जगा हुआ; ज्ञानी; पंडित; विकसित। पु० बौद्धधर्मके प्रवर्तक गौतम बुद्ध जो विष्णुके नवें अवतार माने जाते हैं, सिद्धार्थ (जन्म ई० पू० ५५७, निर्वाण ई० पू० ४४७)। **–गया**–स्त्री० गयाके पासका स्थान जहाँ बुद्धको बुद्धत्व प्राप्त हुआ। **–धर्म**–पु० बौद्ध धर्म। **–पुराण**–पु० पराशररचित ललितलघुविस्तर।

बुद्धत्व–पु० [सं०] बुद्धपद।

बुद्धागम–पु० [सं०] बौद्ध धर्मके सिद्धांत।

बुद्धि–स्त्री० [सं०] जानने, समझने और विचार करनेकी शक्ति, समझ, अक्ल; अंतःकरणकी निश्चयात्मिका वृत्ति (वे०); प्रकृतिका पहला परिणाम, महत्तत्त्व। **–कौशल**–पु० चतुराई। **–गम्य, –ग्राह्य**–वि० जो समझमें आ सके। **–चक्षु(स्)**–पु० प्रज्ञाचक्षु; धृतराष्ट्र। **–जीविवर्ग**–पु० (इंटेलिजेंशिया) बुद्धिसे जीविका प्राप्त करनेवाले, दिमागी काम करनेवाले लोगोंका समुदाय। **–दोष**–पु० समझकी कमी, खराबी। **–पर**–वि० बुद्धिकी पहुँचके बाहर। **–पुरस्सर, –पूर्वक**–अ० इरादा करके, इच्छा-पूर्वक, सोच-समझकर। **–बल**–पु० बुद्धिका बल। **–भ्रंश**–पु० एक दोष या रोग जिसमें बुद्धि ठिकानेसे काम नहीं करती। **–योग**–पु० ज्ञानयोग। **–वाद**–पु० अन्य विषयोंकी तरह धर्ममें भी बुद्धि ही सर्वोपरि प्रमाण है–यह मत (रैशनलिज्म)। **–वादी(दिन्)**–वि० बुद्धिवादको माननेवाला। **–विलास**–पु० कल्पना। **–वैभव**–पु० बुद्धिकी प्रखरता, बुद्धिबल। **–शक्ति**–स्त्री० बुद्धिबल। **–शाली(लिन्)**–वि० बुद्धिमान्। **–हीन**–वि० निर्बुद्धि, नासमझ।

बुद्धिमत्ता–स्त्री० [सं०] बुद्धिमानी, समझदारी।

बुद्धिमानी–स्त्री० दे० 'बुद्धिमत्ता'।

बुद्धिमान्(मत्)–वि० [सं०] चतुर।

बुद्धिवंत–वि० अक्लमंद, समझदार।

बुद्बुद–पु० [सं०] बुलबुला।

बुधंगड़*–वि० मूर्ख।

बुध–पु० [सं०] पंडित, विद्वान्; सौरमंडलका एक ग्रह जो पुराणोंके अनुसार चंद्रमाका बृहस्पतिकी पत्नी ताराके गर्भसे उत्पन्न पुत्र है; देवता; कुत्ता। **–जन**–पु० पंडित, विद्वान्। **–जायी***–पु० बुधके पिता, चंद्रमा। **–रत्न**–पु० पन्ना। **–वार, –वासर**–पु० मंगलवार और गुरुवारके बीचका दिन।

बुधवान*–पु० बुद्धिमान्।

बुधि*–स्त्री० दे० 'बुद्धि'।

बुध्य–वि० [सं०] जानने योग्य।

बुनकर–पु० कपड़ा बुननेवाला।

बुनना–स० क्रि० धागेसे कपड़ा बनाना, तानोंके सूतोंके बीच बानेका सूत भरना; ऊन आदिके धागोंसे सलाईके द्वारा मोजा, गुलूबंद आदि बनाना; सुतली, बान, बेतके छिलके आदिसे जाली बनाकर चारपाई, कुरसी आदिकी खाली जगह भरना।

बुनवाना–स० क्रि० बुननेका काम दूसरेसे कराना।

बुनाई–स्त्री० बुननेकी क्रिया; बुनावट; बुननेकी मजदूरी।

बुनावट–स्त्री० बुननेका ढंग, ताने-बानेका घना-झीना होना।

बुनियाद–स्त्री० [फा०] जड़, नीवँ, आधार; आरंभ।

बुनियादी–वि० [फा०] मूलगत; नीवँका कार्य देनेवाला,

आधाररूप।

बुबुकना–अ० क्रि० डाढ़ मारकर, जोर-जोरसे रोना।

बुबुकारी–स्त्री० डाढ़ मारकर रोना।

बुभुक्षा–स्त्री० [सं०] खानेकी इच्छा, भूख।

बुभुक्षित, बुभुक्षु–वि० [सं०] भूखा, क्षुधित।

बुर–स्त्री० भग, योनि (प्रायः गाली-गलौजमें प्रयुक्त)।

बुरकना–स० क्रि० चूर्ण जैसी वस्तुको छिड़कना।

बुरक़ा–पु० [अ०] लंबा पहनावा जिससे बाहर निकलनेके वक्त मुसलमान स्त्रियाँ अपना सारा शरीर ढक लेती हैं, नकाब। **–पोश**–वि० जो बुरका ओढ़े हो।

बुरा–वि० खराब, दूषित; हानिकर; खोटा, कुचाली। पु० बुराई; हानि, अनिष्ट। **–भला**–पु० अच्छा-बुरा, हानि-लाभ (सोचना); गाली-गलौज, अपशब्द (कहना,सुनना)। **–वक़्त**–पु० कष्टका समय, विपत्काल। **–हाल**–पु० दुर्दशा; अधिक कष्टकी स्थिति; तबाही। **(बुरी)खबर**–स्त्री० मौतकी खबर। **–गत,–गति**–स्त्री० दुर्दशा। **–घड़ी**–स्त्री० मुसीबतकी घड़ी, विपत्काल। **–तरह**–अ० बहुत ज्यादा; कसकर। **–नजर,–निगाह**–स्त्री० बुराईकी निगाह, पापकी दृष्टि। **–बला**–स्त्री० भारी बला, बहुत कष्ट देनेवाली चीज; विपद। **(बुरे) दिन**–पु० कष्टके दिन, विपद्काल। **मु० (बुरा) करना**–अनुचित काम करना, हानिकर कार्य करना; नुकसान पहुँचाना। **–कहना**–निंदा करना, बदनाम करना। **–चाहना**–बुराई चाहना **–मानना**–दुःखी होना; नाराज होना। **–लगना**–नागवार लगना। **–हाल होना**–घोर कष्टमें होना; (रोगीकी) हालत बिगड़ना। **मु० (बुरी) गत करना**–बहुत मारना। **–तरह पेश आना**–दुर्व्यवहार करना।

बुराई–स्त्री० बुरा होना, खराबी, दोष; खुटाई, दुष्टता; अनिष्ट; निंदा; दुश्मनी। **–भलाई**–स्त्री० नेकी-बदी। **मु०–आगे आना**–बुरे कामका फल मिलना।

बुरादा–पु० [फ़ा०] लकड़ीका चूरा; कोयलेका चूरा।

बुरुश–पु० [अं० 'ब्रश'] बाल या तारकी कूँची जो गर्द झाड़ने, दाँत माँजने, बाल सँवारने आदिके काममें लायी जाती है; तसवीर बनाने, रंग-रोगन करनेके काम आनेवाली बालोंकी कूँची।

बुर्ज–पु० गड़गज; मीनार; गुंबद, कलस; राशि। **–तोप**–स्त्री० (टरेट गन) (चारों तरफ घूमनेवाले) बुर्जमें लगायी गयी तोप।

बुर्जी–स्त्री० छोटा बुर्ज।

बुलंद–वि० [फ़ा०] ऊँचा। **–इक़बाल**–वि० भाग्यवान्, सौभाग्यशाली। **–हिम्मत,–हौसिला**–वि० ऊँची हिम्मत, हौसिलावाला।

बुलंदी–स्त्री० [फ़ा०] ऊँचाई; उत्कर्ष।

बुलबुल–स्त्री० [अ०] एक छोटी चिड़िया जिसकी बोली बहुत मधुर होती है और जो फारसी-उर्दू काव्यमें फूलोंकी आशिक मानी गयी है। **–बाज़**–पु० बुलबुल पालनेवाला।

बुलबुला–पु० पानीका बुल्ला;, बुद्बुद; क्षणभंगुर वस्तु।

बुलवाना–स० क्रि० बुलानेका काम दूसरेसे कराना; बोलनेमें प्रवृत्त करना।

बुलाक़–पु० [तु०] नाककी बिचली हड्डी; उसमें पहननेका एक गहना।

बुलाकी–पु० घोड़ेकी एक जाति।

बुलाना–स० क्रि० पुकारना, पास आनेको कहना; किसीको बोलनेमें प्रवृत्त करना।

बुलावा–पु० बुलानेका भाव, न्योता।

बुलौआ, बुलौवा†–पु० दे० 'बुलावा'।

बुल्ला*–पु० दे० 'बुलबुला'।

बुहारना–स० क्रि० झाड़ू देना, झाड़ना।

बुहारी–स्त्री० झाड़, बढ़नी।

बूँद–स्त्री० पानी या दूसरे तरल पदार्थका बहुत छोटा अंश, कतरा, बिंदु; वीर्य; एक रंगीन कपड़ा।

बूँदा–पु० बड़ी टिकली, बुंदा।

बूँदाबाँदी–स्त्री० हलकी वर्षा।

बूँदी–स्त्री० एक तरहकी मिठाई, बुँदिया; वर्षाके जलकी बूँद।

बू–स्त्री० [फ़ा०] गंध; सुगंध; दुर्गंध; (ला०) ठसका, आन-बान (नवाबीकी बू); ढंग।

बूआ–स्त्री० पिताकी बहिन, फूफी।

बूकना–स० क्रि० चूर करना, पीसना; छाँटना (अंग्रेजी बूकना)।

बूचड़–पु० कसाई, मांस-विक्रेता। **–ख़ाना**–पु० कसाई-खाना।

बूचा–वि० कनकटा; नंगा।

बूजना*–स० क्रि० धोखा देना।

बूझ–स्त्री० बूझनेका भाव; समझ।

बूझना–स० क्रि० समझना; जानना; * पूछना।

बूट–पु० हरा चना; चनेका पौधा; * पेड़; [अं०] मोटे तल्लेका अंग्रेजी जूता जिससे टखनेसे कुछ ऊपरतक पाँव ढक जाता है।

बूटना*–अ० क्रि० भागना–'कहूँ बाजि स्यौ साजके जात बूटे'–सुजान०।

बूटनि*–स्त्री० बीरबहूटी।

बूटा–पु० छोटा पौधा; फूलका छोटा पौधा; कपड़े आदिपर बनी हुई फूल-पत्ती।

बूटी–स्त्री० जड़ी; भंग; कपड़ेपर बने हुए छोटे बेल-बूटे; ताशके पत्तोंपर बनी हुई बिंदी।

बूड़ना*–अ० क्रि० डूबना, लीन होना।

बूढ़–* पु० लाल रंग; बीरबहूटी। † वि० बुड्ढा।

बूढ़ा–वि० बड़ी उम्रका, जो बुढ़ापेकी अवस्थामें हो, वृद्ध। † स्त्री० वृद्ध स्त्री। **–खुर्रांट†**–पु० चालाक, अनुभवी व्यक्ति। **–पाँग**–पु० बूढ़ा बेवकूफ। **–फूँस,–फूस**–पु० अति वृद्ध। **मु० (बूढ़े) तोतेको पढ़ाना**–पढ़ने-सीखनेकी उम्र बीत जानेपर सिखाना-पढ़ाना।

बूता–बल, शक्ति; बस, सामर्थ्य।

बूरना*–अ० क्रि० दे० 'बूड़ना'।

बूरा–पु० कच्ची चीनी; चीनी; चूर्ण।

बृंद–पु० दे० 'वृंद'।

बृक–पु० भेड़िया; गीदड़।

बृच्छ*–पु० दे० 'वृक्ष'।

बृष–पु० दे० 'वृष'। **–केतु,–ध्वज**–पु० शिव।

बृषभ–पु० दे० 'वृषभ'।

बृहत्–वि० [सं०] बड़ा, विशाल; लंबा-चौड़ा; शक्तिशाली; ऊँचा (स्वर)। **–कथा**–स्त्री० गुणाढ्य-रचित कहानियोंकी पुस्तक। **–कथा-मंजरी**–स्त्री० क्षेमेंद्र-रचित कहानियोंकी पुस्तक। **–काय**–वि० बड़े डील-डौलका।

बृहत्तर–वि० [सं०] और अधिक बड़ा; मूल पदार्थ, देश आदिसे अधिक आकार या विस्तारका (जिसमें आस-पासके कुछ और पदार्थ या देश सम्मिलित हों), जैसे बृहत्तर भारत।

बृहन्नला–स्त्री० [सं०] अर्जुनका विराट्के यहाँ स्त्री-रूपमें रहते समयका नाम।

बृहस्पति–पु० [सं०] सौर मंडलका पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह; एक ऋषि जो देवताओंके गुरु माने जाते हैं; एक स्मृतिकार। **–वार**–पु० गुरुवार।

बेँग*–पु० मेढक।

बेंच–स्त्री० [अं०] लकड़ी-लोहे आदिकी लंबी, कम चौड़ी चौकी; जजका आसन, पद; न्यायालय; न्यायालय-विशेषके विचारकर्ता; आनरेरी और स्पेशल मजिस्ट्रेटोंका इजलास; विधानसभामें पक्ष-विशेषके बैठनेका स्थान।

बेँट, बेँठा–स्त्री० मूठ, दस्ता।

बेँड़*–स्त्री० चाँड़, टेक।

बेँड़ना–स० क्रि० बंद करना; घेरना।

बेँड़ा*–वि० आड़ा; कठिन। पु० ब्योंड़ा।

बेँड़ी–स्त्री० पानी उलीचनेकी बाँसकी छिछली टोकरी।

बेँत–पु० एक लता जिसका डंठल मजबूत और लचीला होता है और टोकरे आदि बनानेके काम आता है; बेंतकी छड़ी। मु०**–की तरह काँपना**–डरसे बहुत काँपना।

बेँदा–पु० बड़ी टिकली; माथेपरका एक गहना; टीका, तिलक।

बेँदी–स्त्री० बिंदी; टिकली; सुन्ना; माथेपरका एक गहना।

बेँवड़ा–पु० ब्योंड़ा, अरगल।

बेँवता–स्त्री० दे० 'ब्योँत'।

बेँवताना–स० क्रि० ब्योंतनेका काम दूसरेसे कराना।

बे–अ० अरे, अबे; [फा०] बिना, बगैर, सिवाय। **–अंत***–वि० अथाह, जिसका अंत न हो। **–अक़ल,–अक़्ल**–वि० नासमझ, निर्बुद्धि। **–अक़्ली**–स्त्री० नासमझी। **–अदब**–वि० अशिष्ट, अविनीत, गुस्ताख। **–अदबी**–स्त्री० अविनय, ढिठाई। **–आब**–वि० जिसमें आब-चमक न हो। **–आबरू**–वि० बेइज्जत, प्रतिष्ठारहित। **–आबरूई**–स्त्री० बेइज्जती। **–इंसाफी**–स्त्री० अन्याय, नाइंसाफी। **–इज़्ज़त**–वि० प्रतिष्ठारहित, जलील; अपमानित। **–इज़्ज़ती**–स्त्री० अप्रतिष्ठा, अपमान। **–इल्म**–वि० अपढ़, विद्यारहित। **–ईमान**–वि० धर्मको न माननेवाला, बेदीन; बदनीयत; झूठा; नमकहराम। **–ईमानी**–स्त्री० बेदीनी; बद्दयानती; बदनीयती; झुठाई। **–उज़्र**–वि० जिसे किसी बातके मानने करनेमें कोई उज्र–आपत्ति न हो। अ० बिना किसी उज्रके। **–क़द्र**–वि० जिसकी कोई पूछ न हो। **–क़द्री**–स्त्री० आदर-मानका अभाव, बेइज्जती; पूछ न होना। **–क़रार**–वि० विकल, बेचैन। **–कल**–वि० बेचैन, विकल। **–कली**–स्त्री० बेचैनी। **–कस**–वि० असहाय; दीन, विवश। **–कसी**–स्त्री० असहाय-स्थिति; दीनता, विवशता। **–कहा**–वि० जो किसीका कहना, दाब न माने, स्वच्छंद। **–क़ानूनी**–वि० गैरकानूनी, नियमविरुद्ध। **–क़ाबू**–वि० जिसका बस न चले, विवश, लाचार। **–काम**–वि० दे० 'बेकार'। **–क़ायदगी**–स्त्री० बेफायदा होना, अनियमितता; अनियम। **–क़ायदा**–वि० नियम-विरुद्ध, अनियमित। **–कार**–वि० जिसके पास कोई काम न हो, निठल्ला; निकम्मा; बेरोजगार; निरर्थक। **–कारी**–स्त्री० बेकार होना; बेरोजगारी। **–कुसूर**–वि० निरपराध, निर्दोष। **–खटक,–खटके**–अ० बिना डर-संकोचके, बेधड़क। **–ख़बर**–वि० जिसे (किसी बातकी) जानकारी न हो; असावधान, लापरवा; बेसुध। **–ख़बरी**–स्त्री० बेखबर होना। **–ख़ुदी**––स्त्री० आत्म-विस्मृति; मदहोशी। **–ख़ौफ़**–वि० निडर। **–ख़्वाबी**–स्त्री० नींद न आना, जागरण। **–ग़म**–वि० जिसे कोई सोच-फिक्र न हो। **–गाना**–वि० गैर, पराया; अनजान। **–गुनाह**–वि० निरपराध, बेकुसूर। **–घर,–घरा**–वि० गृहहीन, जिसका कोई घर-बार न हो। **–चारगी**–स्त्री० बेचारापन, दीनता, विवशता। **–चारा**–वि० दीन, असहाय, विवश। **–चिराग़**–वि० जहाँ दीया न जलता हो; गैर-आबाद। **–चैन**–वि० बेकल, बेकरार। **–चैनी**–स्त्री० बेकली, घबराहट। **–चोबा**–पु० बिना खंभेका खेमा। **–जड़**–वि० बिना जड़का, निर्मूल। **–ज़बान**–वि० न बोलनेवाला, मूक (जानवर); जो अपनी दशा खुद न कह सके; दीन। **–जा**–वि० जो अपनी जगहपर न हो, बेमौका; अनुचित। **–जान**–वि० निष्प्राण, मुर्दा; दुर्बल। **–ज़ाबिता,–ज़ाब्ता**–वि० जो नियमानुकूल न हो, बेकायदा। **–ज़ार**–वि० नाराज; दुःखी; परीशान। **–ज़ारी**–स्त्री० नाराजगी; परीशानी। **–जोड़**–वि० बिना जोड़का, अखंड; लाजवाब; बेमेल। **–ठिकाना**–वि० जिसका कुछ ठीक न हो; अविश्वसनीय। **–ठिकाने**–वि० जो अपनी जगहपर न हो, असंगत; बगैर पते या निशानके। अ० बेमौके। **–डौल**–वि० भद्दा, कुरूप। **–ढंगा**–वि० बुरे ढंगवाला, बेशऊर; भद्दा; अव्यवस्थित। **–ढब**–वि० निराले ढंगवाला; टेढ़ा, हठी; खतरनाक। अ० बुरी तरह, बहुत ज्यादा। **–तकल्लुफ़**–वि० जिसमें बनावट न हो, सरल; दिखाऊ शिष्टाचार न बरतनेवाला; संकोच-रहित, घनिष्ठ (मित्र)। अ० निस्संकोच, बेधड़क। **–तकल्लुफ़ी**–स्त्री० संकोचका अभाव; सरलता; आजादी; घनिष्ठता। **–तमीज़**–वि० बदतमीज, उजड्ड। **–तरतीब**–वि० क्रमरहित, गड्डमड्ड, अव्यवस्थित। **–तरह**–अ० बुरी तरह, बहुत ज्यादा। **–तरीक़े**–अ० अनुचित रूपसे। **–तहाशा**–अ० बहुत तेजीसे, बदहवास होकर (भागना); बिना सोचे-बिचारे। **–ताब**–वि० बेचैन, विकल, अधीर। **–ताबी**–स्त्री० बेचैनी, अधीरता। **–तार**–वि० बिना तारका। **–तारका तार**–पु० बिना तारके विद्युत्यंत्रसे भेजा जानेवाला तार (वायरलेस)। **–तुका**–वि० बेमेल, असंगत; बेमौका (बात); बेतुकी बात कहनेवाला। **–तुकी**–वि० स्त्री० असंगत

(बात)। [**मु० बेतुकी हाँकना**–असंगत, बेतुकी बात बकना।] **–दख़ली**–स्त्री० कब्जेका हटाया जाना, असामीका खेतसे बेदखल कर दिया जाना। **–दम**–वि० बेजान, मुर्दा; शिथिल। **–दर्द**–वि० निठुर, निर्दय; जालिम। **–दर्दी**–स्त्री० निर्दयता, बेरहमी। * वि० दे० 'बेदर्द'। **–दाग़**–वि० निष्कलंक, निर्दोष। **–दाना**–वि० बिना दानोंका; मूर्ख। पु० अनारका एक बढ़िया भेद जिसके दानेमें नामको ही सीठी होती है; एक तरहका शहतूत; बिहीदाना। **–दानिशी**–स्त्री० नासमझी, बेअकली। **–दाम**–वि० मुफ्त, बिना दामका। **–दिल**–वि० उदास, भग्नहृदय। **–धड़क**–अ० निर्भय होकर, बिना सोचे-अटके। वि० निर्भय। **–धीर***–वि० धैर्यरहित। **–नज़ीर**–वि० बेजोड़, अनुपम। **–नाम**–वि० गुमनाम। **–नामोनिशान**–वि० बेपता। **–निमून***–वि० अद्वितीय, बेजोड़। **–नियाज़**–वि० जिसे किसी चीजकी चाह या आवश्यकता न हो, बेपरवा। **–नूर**–वि० जिसकी ज्योति चली गयी हो (आँख)। **–पता चिट्ठीघर**–पु० (डेड लेटर ऑफिस) दे० 'लापता 'चिट्ठीघर'। **–पनाह**–वि० जिससे बचाव न हो सके; निराश्रय। **–परदगी,–पर्दगी**–स्त्री० परदेका हट जाना; भेदका प्रकट हो जाना; बेइज्जती। **–परदा**–वि० परदेसे बाहर; जिस(स्त्री)का मुँह खुला हो; प्रकट, खुला। **–परवा,–परवाह**–वि० जिसे किसी बातकी फिक्र न हो, निर्द्वंद्व। **–परवाई, परवाही**–स्त्री० बेफिक्री, लापरवाई। **–पाइ***–वि० निरुपाय, भौचक। **–पीर**–वि० निर्दय, दूसरोंका दुख-दर्द न समझनेवाला; निगुरा। **–फ़सल,–फ़स्ल**–वि० बेमौसम; बेवक्त। **–फ़ायदा**–वि० जिससे कोई लाभ, फल न हो, बेकार। **–फ़िक्र**–वि० चिंतारहित, बेपरवा, निर्द्वंद्व। **–फ़िक्री**–स्त्री० निश्चिंतता। **–बस**–वि० विवश, असहाय। **–बसी**–स्त्री० विवशता, लाचारी। **–बाक**–वि० निडर, ढीठ। **–बाक़**–वि० जिस(हिसाब-खाते)में कुछ बाकी न हो, चुकाया हुआ; जिसने पूरा पावना चुका दिया हो। **–बाकी**–स्त्री० निर्भयता, धृष्टता। **–बाक़ी**–स्त्री० बेबाक होना, चुकता, पूरी सफाई। **–बुनियाद**–वि० बिना जड़का, निर्मूल; मनगढ़ंत। **–ब्याहा**–वि० अविवाहित। **–मज़ा**–वि० स्वादरहित; बदजायका। **–मतलब**–अ० निष्प्रयोजन, बेकार। वि० निरर्थक। **–मनका**–जिसमें मन न लगता हो। **–मरम्मत**–वि० जिसकी मरम्मत न हुई हो, टूटा-फूटा। **–मसरफ़**–वि० अनुपयोगी, निकम्मा। **–मानी**–वि० अर्थरहित; बेकार। **–मालूम**–वि० जिसका पता न लगे, अज्ञात। **–मिलावट**–वि० खालिस, शुद्ध। **–मुनासिब**–वि० अनुचित। **–मुरौवत**–वि० जिसमें लिहाज, मुरौवत न हो, तोताचश्म। **–मुरौवती**–स्त्री० बेमुरौवत होना, तोताचश्मी। **–मेल**–वि० जो मेल न खाता हो, अनमिल, बेजोड़। **–मौक़ा**–वि० जिसका अवसर न हो; अयुक्त, नामुनासिब। **–मौक़े**–अ० असमय, बिना अवसरके। **–मौत**–अ० बिना मौत आये, बिना कालके (मरना)। **–मौसिम**–वि० जिसका मौसिम न हो, असामयिक। अ० बिना उचित समयके। **–रंग**–वि० बेमजा, बेलुत्फ़। **–रहम**–वि० जिसमें रहम न हो, निर्दय। **–रहमी**–स्त्री० निर्दयता, बेदर्दी। **–राह**–वि० पथभ्रष्ट; कुचाली। **–रुख़**–वि० बेमुरौवत; रुष्ट, प्रतिकूल। **–रुख़ी**–स्त्री० उपेक्षा; प्रतिकूलता; बेमुरौवती। **–रोक-टोक**–अ० बिना किसी रुकावटके, बेखटके। **–रोज़गार**–वि० जिसके पास जीविकाका साधन न हो; नौकरीसे अलग किया हुआ, बेकार। **–रोज़गारी**–स्त्री० बेरोजगार होनेका भाव, बेकारी। **–रौनक़**–वि० जिसकी शोभा, चहल-पहल चली गयी हो, उदास। **–लगाम**–वि० मुँहजोर, सरकश, दाब न माननेवाला। **–लज़्ज़त**–वि० बेमजा, स्वादरहित; निष्फल। **–लाग**–वि० किसीकी रू-रिआयत न करनेवाला, खरा; दोटूक (बात)। **–लिहाज़**–वि० बेमुरौवत; निर्लज्ज। **–लुत्फ़**–वि० बेमजा, रसरहित। **–लुत्फ़ी**–स्त्री० रसभंग, बदमजगी, आनंद न आना। **–लौस**–वि० खरा; किसीका लिहाज, मुरौवत न करनेवाला। **–लौसी**–स्त्री० खरापन, निष्पक्षता। **–वक़अत,–वक़त**–वि० प्रतिष्ठारहित, तुच्छ, नगण्य। **–वक़ूफ़**–वि० निर्बुद्धि, नासमझ। **–वक़्त**–अ० असमय, बेमौके, कुसमयमें। **–वक़्तकी रागिनी (शहनाई)**–बेमौका बात। **–वफ़ा**–वि० वचनका पालन, प्रीतिका निर्वाह न करनेवाला; कृतघ्न; मित्रको धोखा देनेवाला। **–वफ़ाई**–स्त्री० बेवफ़ा होनेका भाव; बेमुरौवती; कृतघ्नता। **–शऊर**–वि० बेसलीका, फूहड़; बेअकल। **–शक**–अ० निस्संदेह, जरूर। **–शरम,–शर्म**–वि० निर्लज्ज। **–शर्मी**–स्त्री० निर्लज्जता। **–शुमार**–वि० अगणित; बेहिसाब। **–सँभर***–वि० बेहोश। **–सबब**–अ० अकारण, बिलावजह। **–सबरा**–वि० दे० 'बेसब्र'। **–सबरी**–स्त्री० अधैर्य। **–सब्र**–वि० जिसमें सब्र, धीरज न हो, अधीर। **–सब्री**–स्त्री० अधीरता। **–समझ**–वि० नासमझ। **–सर***–वि० आश्रयरहित। **–सरा,–सिरा**–वि० जिसके सिरपर कोई न हो, स्वच्छंद। **–सरोसामान**–वि० जिसके पास कोई सामग्री न हो। **–सलीक़ा**–वि० बेशऊर, फूहड़। **–सामान**–वि० जिसके पास माल-असबाब या जरूरी औजार आदि न हो, उपकरणहीन। **–सिलसिला**–वि० क्रमरहित, अव्यवस्थित। **–सिलसिले**–अ० बिना क्रम, सिलसिलेके। **–सुध**–वि० अचेत, बेहोश; आत्मविस्मृत। **–सुर**–वि० जिसका स्वर ठीक न हो। **–सुरा**–वि० जो शुद्ध स्वरमें न गा सके; स्वरदोषयुक्त, अशुद्ध स्वरमें गाया जानेवाला (गाना)। **–सूद**–वि० बेफ़ायदा, व्यर्थ। **–सोचे-समझे**–अ० बिना सोच-विचार किये, झट। **–स्वाद**–वि० स्वादरहित, बदजायका। **–हक़ीक़त**–वि० तुच्छ, उपेक्षणीय। **–हद**–वि० असीम; बहुत अधिक। **–हया**–वि० निर्लज्ज, बेशर्म। **–हयाई**–स्त्री० निर्लज्जता। [**मु०–हयाईका ज़ामा पहन लेना या बुरका ओढ़, मुँहपर डाल लेना**–नितांत निर्लज्ज हो जाना।] **–हाल**–वि० कष्टसे व्याकुल, जिसका हाल बुरा हो। **–हिजाबी**–स्त्री० बेपर्दगी; निर्लज्जता। **–हिम्मत**–वि० जिसमें हिम्मत न हो, डरपोक। **–हिसाब**–वि० बेहद, अमित; बहुत ज्यादा। **–हुनर,–हुनरा**–वि० जिसे कुछ आता न हो,

अनाड़ी, बेशऊर। **–हूदगी**–स्त्री० बेहूदापन; अशिष्टता, असभ्यता।**–हूदा**–वि० असंगत, बेतुका; अशिष्ट, भद्दा। **–हैफ़***–वि० बेफिक्र, निश्चिंत। **–होश**–वि० जिसे होश न हो, अचेत। **–होशी**–स्त्री० अचेतपन, मूर्च्छा। **मु०–परकी उड़ाना**–बेतुकी हाँकना, गप मारना। **–परके कबूतर उड़ाना**–चतुराईके बलसे अनहोनी बात कर लेना; हवामें गिरह बाँधना। **–पेंदीका लोटा (बधना)**–जो किसी बातपर स्थिर न रहे, जिसका मत बदलता रहे, ढुलमुल।

बेइलि*–पु०,स्त्री० दे० 'बेला' तथा 'बेल'।

बेकारयो*–पु० जोरसे बुलानेकी आवाज।

बेख*–पु० दे० 'वेष'।

बेग–पु० दे० 'वेग'; [तु०] अमीर, सरदार। [अं० 'बैग'] किरमिच, चमड़े आदिका लंबोतरा, बकसका काम देनेवाला थैला। **–पाइप**–पु० बैंडके साथ बजाया जानेवाला एक बाजा, मशकबीन।

बेगड़ी–पु० जौहरी; नगीने तराशनेवाला।

बेगना*–अ० क्रि० वेगपूर्वक करना, जल्दी करना।

बेगम–स्त्री० [तु० 'बेगुम'] बड़े आदमीकी बीबी, खातून; रानी; रानीकी शकलवाला ताशका पत्ता।

बेगर*–वि० पृथक्, भिन्न।

बेगार–स्त्री० [फ़ा०] जबर्दस्ती, बिना उजरत दिये कराया जानेवाला काम; बेमनका काम। **मु०–टालना**–बिना मन लगाये, बेगारकी तरह काम करना।

बेगारी–स्त्री० दे० 'बेगार'।

बेगि*–अ० जल्दी, वेगपूर्वक, झटपट।

बेचक*–पु० बेचनेवाला।

बेचना–स० क्रि० दाम लेकर देना, बिक्री करना; पैसेके बदलेमें देना (धर्म, ईमान इ०)। **मु० बेच खाना**–नष्ट कर देना; उड़ा डालना।

बेचवाना, बेचाना–स० क्रि० दे० 'बिकवाना'।

बेचवाल–पु० दे० 'बेचू'।

बेची–स्त्री० बिक्री, विक्रय।

बेचू–पु० बेचनेवाला।

बेझ*–पु० दे० 'बेझा'।

बेझड़–पु० जौ, चना, मटर आदिकी मिली हुई फसल; ऐसा अनाज।

बेझना*–स० क्रि० निशाना लगाना, बेधना।

बेझा*–पु० वेध, निशाना।

बेटकी*–स्त्री० दे० 'बेटी'।

बेटला, बेटवा*–पु० दे० 'बेटा'।

बेटा–पु० पुत्र, लड़का; स्नेहका संबोधन, बच्चा। **–बेटी**–स्त्री० बाल-बच्चे, संतान। **(बेटे)वाला**–पु० वरका पिता।

बेटी–स्त्री० लड़की, पुत्री; बड़ेकी ओरसे बालिका या युवतीका स्नेहसूचक संबोधन। **–वाला**–पु० कन्याका पिता। **–व्यवहार**–पु० विवाह-संबंध। **मु०–देना**–बेटी ब्याहना। **–लेना**–किसीकी बेटीसे ब्याह करना।

बेठन–पु० पुस्तक आदिको गर्दसे बचानेके लिए उसपर लपेटा जानेवाला कपड़ा, खोल।

बेड़–स्त्री० बाड़, थाला।

बेड़ना–स० क्रि० बाड़ लगाना, थाला बनाना।

बेड़ा–पु० लट्ठों या तख्तोंको बाँधकर और उनपर बाँसका टट्टर रखकर बनायी हुई नाव; नावों या जहाजोंका समूह; नाव। **मु०–डूबना**–काम बिगड़ना, नष्ट, तबाह होना। **–पार होना**–संकट कटना, काम हो जाना।

बेड़िन, बेड़िनी–स्त्री० नाचने-गानेका पेशा करनेवाली स्त्री, नटिनी।

बेड़ी–स्त्री० कैदियों, हाथी-घोड़ों आदिके पाँवोंमें पहनायी जानेवाली लोहेकी जंजीर, निगड (कटना, पड़ना); बंधन; छोटा बेड़ा, नाव; दे० 'बेंड़ी'।

बेढ़–पु० घेरनेका कार्य; नाश; अंकुरित बीज।

बेढ़ई–स्त्री० पीठी भरकर बनायी हुई रोटी या पूरी।

बेढ़ना–स० क्रि० बाड़ बनाना, रूँधना; ढोरोंको घेरकर ले जाना।

बेढ़ा–पु० एक तरहका कड़ा; मकानकी बारी; घेरा।

बेणी–स्त्री० दे० 'वेणी'। **–फूल**–पु० सीसफूल।

बेत–पु० दे० 'बेंत'। **–पानि**–वि० जिसके हाथमें बेत या दंड हो। **मु०–की तरह काँपना**–बहुत डरना।

बेतना*–अ० क्रि० जान पड़ना।

बेताल–पु० दे० 'वेताल'; * चारण।

बेद–पु० दे० 'वेद'; [फ़ा०] बेत।

बेदन*–स्त्री० दे० 'वेदन'।

बेदना–स्त्री० दे० 'वेदना'।

बेदार–वि० [फ़ा०] जागता हुआ, जागरूक; चौकन्ना। **–बख्त**–वि० भाग्यशाली।

बेदारी–स्त्री० [फ़ा०] जागरण, जागरूकता।

बेध–पु० छेद; मोती, मूँगे आदिमें किया हुआ छेद; दे० 'वेध'।

बेधक–वि० बेधनेवाला।

बेधना–स० क्रि० छेद करना; घाव करना।

बेधिया–पु० बेधनेवाला; अंकुश।

बेन*–पु० दे० 'वेणु'; महुवर।

बेना–†पु० बाँसके छिलकेका बना हुआ पंखा; एक गहना; * खस; बाँस।

बेनी–स्त्री० स्त्रियोंकी चोटी; त्रिवेणी; किवाड़के पल्लेके किनारे लगायी जानेवाली वह लकड़ी जो दूसरे पल्लेको खुलनेसे रोकती है।

बेनु–पु० दे० 'वेणु'।

बेनौरा–पु० दे० 'बिनौला'।

बेनौरी–स्त्री० बिनौलेके समान छोटे-छोटे ओले, बनौरी।

बेमौसिम–वि० दे० 'बे'के साथ।

बेर–पु० एक प्रसिद्ध फल; उसका पेड़। स्त्री० देर, समय; बार, दफा।

बेरवा†–पु० कलाईमें पहननेका कड़ा।

बेरा†–स्त्री० समय; सबेरा; दफा, बार। * पु० बेड़ा, नाव; पोत-समूह।

बेराम†–वि० दे० 'बीमार'।

बेरिआ, बेरियाँ†–स्त्री० बेला, समय।

बेरी*–स्त्री० दे० 'बेड़ी'; नौका।

बेलंद*–वि० बुलंद, ऊँचा।

बेलंब*–पु० बिलंब, देर।

बेल–पु० एक प्रसिद्ध वृक्ष या उसका फल, बिल्व, श्रीफल। **–गिरी**–स्त्री० बेलके फलका गूदा। **–पत्ती**–स्त्री०,**–पत्र**–पु० बेलका पत्ता। **–पात**–पु० बेलपत्ता।

बेल–स्त्री० जमीन, दीवार, पेड़ आदिपर फैलनेवाला बिना तनेका पौधा, लता; वंश; कागज, कपड़े आदिपर रंग, रेशम आदिसे बनाये हुए लताकी शकलके फूल-पत्ते;कपड़ेपर टाँका जानेवाला फीता जिसपर जरीके तारोंसे फूल-पत्तियाँ बनी हों; दाग-बेल; * बेला।**–बूटा**–पु० कागज, कपड़े आदिपर बनाये जानेवाले फूल-पत्ते। **मु०–बढ़ना**–वंश बढ़ना। **–मँढे चढ़ना**–कामका पूरा होना।

बेल–पु० एक तरहकी कुदाल। **–चा**–पु० छोटी कुदाल, लंबा खुरपा। **–दार**–पु० फावड़ा चलानेवाला मजदूर। **–दारी**–स्त्री० बेलदारका काम।

बेलड़ी, बेलरी*–स्त्री० बेल।

बेलन–पु० काठका बना लंबा, गोला दस्ता जिससे चकलेपर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं; पत्थर, लोहेका भारी गोला जिससे सड़क आदि दबाकर बराबर करते हैं (रोलर); छापने, ईख पेरनेकी कल आदिका बेलनकी शक्लका पुरजा।

बेलना–स० क्रि० चकलेपर बेलनसे रोटी, पूरी आदि बनाना। पु० दे० 'बेलन'।

बेलवाना–स० क्रि० बेलनेका काम दूसरेसे कराना; बेलनेमें साथ देना।

बेलसना*–अ० क्रि० मौज करना, विलासमें लिप्त रहना।

बेला–पु० एक सुगंधित फूल; उसका पौधा; समुद्रतट; मोगरा; कटोरा; सारंगी जैसा एक बाजा। स्त्री०दे० 'वेला'।

बेलि–स्त्री० दे० 'बेल'।

बेली–पु० साथी, सहायक।

बेवट*–स्त्री० विवशता, संकट।

बेवपार*–पु० दे० 'व्यापार'।

बेवपारी*–पु० दे० 'व्यापारी'।

बेवरा*–पु० दे० 'ब्योरा'। **(बेवरे)वार**–वि० तफसीलके साथ।

बेवसाउ*–पु० दे० दे 'व्यवसाय'।

बेवस्था*–स्त्री० शास्त्रीय विधान; प्रबंध; स्थिति।

बेवहरना*–स० क्रि० व्यवहार करना, बरतना।

बेवहरिया*–पु० महाजन, साहूकार; मुनीम।

बेवहार*–पु० दे० 'व्यवहार'।

बेवा–स्त्री० [फा०] विधवा, राँड़।

बेवाई–स्त्री० दे० 'बिवाई'।

बेवान*–पु० दे० 'विमान'।

बेश–वि० [फा०] ज्यादा, अधिक। **–क़ीमत**–वि० बहुमूल्य, दामी। **–क़ीमती**–वि० दे० 'बेशक़ीमत'।

बेशी–स्त्री० अधिकता, वृद्धि; नफा।

बेसंदर*–पु० वैश्वानर, अग्नि।

बेसँभर, बेसँभार*–वि० बेसुध, बेहोश।

बेस–पु० दे० 'वेश'।

बेसन–पु० मटर या चनेकी दालका आटा।

बेसनी–वि० बेसनका बना हुआ। स्त्री० बेसनकी बनी हुई पूरी।

बेसर–स्त्री० नाकका एक गहना, एक तरहका बुलाक। पु० गधा, खच्चर; एक अंत्यज जाति। * वि० दे० 'बे'में।

बेसरा*–पु० एक शिकारी चिड़िया;खच्चर। वि० निराश्रय।

बेसवा†–स्त्री० वेश्या, रंडी। **–पन**–पु० वेश्यावृत्ति।

बेसहना*–स० क्रि० खरीद करना, मोल लेना।

बेसा*–स्त्री० वेश्या, रंडी।

बेसारा*–वि० बैठनेवाला; रखने, जमानेवाला।

बेसाहना*–स० क्रि० मोल लेना, खरीदना।

बेसाहनी*–स्त्री० सौदा; खरीद।

बेसाहा*–पु० सौदा; खरीदी हुई चीज।

बेस्वा*–स्त्री० वेश्या।

बेहँसना*–अ० क्रि० दे० 'बिहँसना'।

बेह–*पु० छेद। वि० [फा०] अच्छा, भला। **–तर**–वि० अधिक अच्छा। अ० बहुत अच्छा, अच्छी बात है (स्वीकृति सूचित करता है)। **–तरी**–स्त्री० भलाई, हित। **–बूद,–बूदी**–स्त्री० भलाई, हित; खुशहाली।

बेहड़–†वि०दे०'बीहड़'। * पु० जंगल आदि विकट स्थान।

बेहना†–पु० धुनिया, जुलाहोंकी एक उपजाति।

बेहर*–वि० स्थावर; बिलग, जुदा। पु० बावली।

बेहरना†–अ० क्रि० फटना, दरार पड़ना।

बेहरा*–वि० अलग, जुदा।

बेहराना*–अ० क्रि० विदीर्ण होना, फटना। स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना।

बेहरी†–स्त्री० चंदा।

बेहु–पु० दे० 'बेह'।

बेहून*–अ० बिना, बगैर। वि० विहीन।

बैंक–पु० [अं०] लोगोंका रुपया जमा करने और माँगनेपर ब्याजसहित लौटा देनेका कारबार करनेवाली कोठी।

बैंकर–पु० [अं०] महाजन।

बैँगन–पु० दे० 'बैगन'।

बैँगनी, बैँजनी–वि० दे० 'बैगनी'। स्त्री० एक पकवान जो बैगनका टुकड़ा बेसनमें लपेटकर तेलमें तलनेसे तैयार होता है।

बैँड़ा*–पु० दे० 'बेँड़ा'।

बैँत, बैँता*–पु० दे० 'बेत'।

बै–स्त्री० जुलाहोंकी कंघी; दे० 'वय'। **–संधि**–स्त्री० वयःसंधि।

बै–स्त्री० [अ०] खेत आदिकी ऐसी बिक्री जिसमें खरीदनेवालेका उस चीजपर स्थायी और पूर्ण अधिकार होता है। **–नामा**–पु० वह कागज जो बेचनेवाला खरीदनेवालेको लिखता है।

बैकना*–अ० क्रि० बहकना।

बैकुंठ–पु० दे० 'वैकुंठ'।

बैखरी–स्त्री० दे० 'वैखरी' (वाक्शक्ति; चिल्लाहट)।

बैखानस–पु० दे० 'वैखानस'।

बैग–पु०[अं०] बेग, थैला, बोरा। **–पाइप**–पु० मशकबीन।

बैगन–पु० एक पौधा जिसका फल तरकारीके काम आता है, भंटा।

बैगनी–वि० बैगनके रंगका। पु० बैगनके रंगसे मिलता हुआ रंग। स्त्री० दे० 'बैँगनी'।

बैजंती, बैजयंती–स्त्री॰ दे॰ 'वैजयंती'।

बैज–पु॰ [अं॰] बिल्ला।

बैट–पु॰ [अं॰] गेंद खेलनेका बल्ला।

बैटरी–स्त्री॰ [अं॰] तोपखाना; रासायनिक पदार्थोंके योगसे विद्युत् उत्पन्न करनेका एक यंत्र।

बैठक–स्त्री॰ बैठनेका कमरा, चौपाल; बैठनेकी चीज, आसन; पेंदा; बैठनेका ढंग; बहुतसे लोगोंका किसी खास कामके लिए इकट्ठा बैठना, जमाव; जलसा, अधिवेशन; उठना-बैठना, सुहबत; मूर्ति या खंभेके नीचेका आधार; उठने-बैठनेकी कसरत; एक पेंच; बैठकी; एक तरहकी पूजा, नियाज। **–ख़ाना**–पु॰ बैठने, मिलने-जुलनेका कमरा। **–बाज़**–वि॰ धूर्त, शरारती।

बैठका–पु॰ बैठने या मित्रोंसे मिलने-जुलनेका कमरा।

बैठकी–स्त्री॰ उठने-बैठनेकी कसरत; आसन; मेजपर रखकर जलानेका लैंप (टेबुल-लैंप)।

बैठन*–स्त्री॰ बैठनेकी क्रिया; बैठनेका ढंग, आसन।

बैठना–अ॰ क्रि॰ इस तरह स्थित होना कि चूतड़ जमीन या किसी आसनपर टिका रहे और कमरसे ऊपरका धड़ उसके बल सीधा रहे, आसीन होना; चढ़ना, सवार होना; इजलास करना; अपनी जगहपर ठीक आना, छोटा-बड़ा न होना (चूल, नग); (नस, जोड़का) अपनी जगहपर आ जाना; अँटना; धँसना, दबना; गिरना, ढहना (घर); तहमें जमना; तौलमें ठहरना; लगना, खर्च होना; पड़ना, लगना (लाठी, डंडा); (स्त्रीका) रखेली बनना, घरमें पड़ना; बेकार रहना; डूबना, अस्त होना; काम बिगड़ना; सधना, मँजना (हाथ); अंडे सेना; (चावलका) सील खाकर थक्कासा हो जाना। **बैठा-ठाला**–वि॰ बेकार, निठल्ला। **बैठा-भात**–पु॰ पानी और चावलको एक साथ आगपर चढ़ाकर पकाया हुआ भात। **बैठी रोटी**–स्त्री॰ बिना मेहनतकी आमदनी (पेंशन आदि)। **बैठे-बिठाये, बैठे-बैठे**–अ॰ अकारण; मुफ्तमें; अचानक।

बैठनि*–स्त्री॰ बैठनेकी क्रिया या तरीका।

बैठवाना–स॰ क्रि॰ बिठाने, रोपनेका काम दूसरेसे कराना।

बैठाना–स॰ क्रि॰ किसीको भूमि या आसनपर स्थित कराना, बैठनेको कहना; स्थापित कराना; अपनी जगहपर स्थित करना; सवार कराना; जमाना, जड़ना; अपनी जगहपर लाना (नस, जोड़); दबाना, पिचकाना (फोड़ा); रोपना, गाड़ना; घरमें डाल लेना; बेकार बना देना।

बैठारना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बैठालना'।

बैठालना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बैठाना'।

बैडाल–वि॰ [सं॰] बिडाल-संबंधी। **–व्रतिक, –व्रती-(तिन्)**–वि॰ धर्मका आडंबर करनेवाला, ढोंगी।

बैढ़ना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बेढ़ना'।

बैत–स्त्री॰ [अ॰] शेर, पद्य। **–बाज़ी**–स्त्री॰ पद्य-पाठकी प्रतियोगिता; अंत्याक्षरी।

बैतरनी–स्त्री॰ दे॰ 'वैतरणी'।

बैताल–पु॰ बेताल; स्तुतिपाठक, भाट।

बैतालिक–पु॰ दे॰ 'वैतालिक'।

बैद–पु॰ दे॰ 'वैद्य'।

बैदई–स्त्री॰ वैद्यका पेशा।

बैदाई*–स्त्री॰ चिकित्सा, उपचार।

बैदेही–स्त्री॰ दे॰ 'वैदेही'।

बैन*–पु॰ वचन, बोल।

बैनतेय–पु॰ दे॰ 'वैनतेय', गरुड़।

बैना†–पु॰ दे॰ 'बायन'; दे॰ 'बेँदा'। * स॰ क्रि॰ बोना।

बैपारी–पु॰ दे॰ 'व्यापारी'।

बैयर*–स्त्री॰ स्त्री।

बैयाँ*–अ॰ घुटनोंके बल।

बैया*–पु॰ बैसर, कंघी; † छोटी नँनद।

बैरंग–वि॰[अं॰ 'बेयरिंग'] (चिट्ठी, पारसल आदि) जिसका महसूल भेजनेवालेने न चुकाया हो। **मु॰–लौटना**–बिना काम हुए, विफल लौटना।

बैर–पु॰ 'बेर' नामक फल; शत्रुभाव, दुश्मनी; विरोध, बुराई। **मु॰–काढ़ना, –लेना**–बदला लेना। **–ठानना**–शत्रुता करना। **–पढ़ना***–कष्ट देना।

बैरक़–पु॰ [अ॰] झंडा, निशान।

बैरख*–पु॰ दे॰ 'बैरक़'।

बैरन, बैरिन–स्त्री॰ शत्रु स्त्री; सौत।

बैराखी–स्त्री॰ एक गहना, बरेखी।

बैराग, बैराग्य–पु॰ दे॰ 'वैराग्य'।

बैरागर*–पु॰ खानि।

बैरागी–पु॰ वैष्णव साधुओंका एक भेद।

बैराना*–अ॰ क्रि॰ वातग्रस्त होना; दे॰ 'बौराना'।

बैरी–वि॰, पु॰ दुश्मन, विरोधी।

बैल–पु॰ गो-जातिका नर जो अनेक देशोंमें कृषिका मुख्य आधार है। वि॰ मूर्ख, निर्बुद्धि (ला॰)। **–गाड़ी**–स्त्री॰ बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी।

बैसंतर, बैसंदर*–पु॰ वैश्वानर, अग्नि।

बैस–स्त्री॰ वयस, उम्र; जवानी। **मु॰–चढ़ना**–जवानी आना।

बैसना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'बैठना'।

बैसर–पु॰ जुलाहोंका एक औजार, कंघी।

बैसवाड़ी–स्त्री॰ बैसवाड़की बोली, अवधीका एक भेद।

बैसाख–पु॰ चैतके बाद पड़नेवाला महीना, वैशाख। **–नंदन**–पु॰ 'वैशाखनंदन', गधा।

बैसाखी–स्त्री॰ वह लाठी जिसे टेककर लँगड़े चलते हैं; वैशाखकी पूर्णिमा।

बैसाना, बैसारना†–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बैठाना'।

बैसिक*–पु॰ दे॰ 'वैशिक' (वेश्यागामी)।

बैहर*–स्त्री॰ 'वायु'। * वि॰ डरावना।

बौँगना–पु॰ एक बरतन, बहुगुना।

बौँड़ा*–पु॰ बारूदमें आग लगानेकी रस्सी।

बोआई–स्त्री॰ बोनेका काम; बोनेकी उजरत।

बोआना–स॰ क्रि॰ बोनेका काम दूसरेसे कराना।

बोक*–पु॰ बकरा।

बोझ–पु॰ भार, वजन; भारी लगनेवाली चीज; गठरी, गट्ठा; उतना भार, सामान जितना एक आदमी, बैल, घोड़ा आदि एक बारमें उठा सके, खेप; भारी लगनेवाला काम, आदमी; कार्यभार, जिम्मेदारी। **मु॰–उठाना**–

कोई कठिन काम करनेका भार लेना। **–उतरना**–किसी कठिन कामसे फुरसत पाना; जी हलका होना।

बोझना–स॰ क्रि॰ लादना, बोझ रखना।

बोझल, बोझिल–वि॰ भारी, वजनदार।

बोझा–पु॰ दे॰ 'बोझ'।

बोझाई–स्त्री॰ बोझनेका काम; बोझनेकी उजरत।

बोटी–स्त्री॰ मांसका छोटा टुकड़ा। **मु॰–बोटी फड़कना**–अंग-अंग फड़कना, बहुत चुलबुलापन होना।

बोड़ना*–स॰ क्रि॰ डुबाना।

बोड़ा–पु॰ अजगर; एक पतली, लंबी फली जो तरकारी बनानेके काम आती है, लोबिया, बरबटी (छत्तीस॰)।

बोड़ी–स्त्री॰ दमड़ी; बहुत ही छोटी रकम; बौंडी।

बोतल–स्त्री॰ काँचका बरतन जिसकी गरदन लंबी, पतली होती है। **–वासिनी**–स्त्री॰ शराब। **मु॰–की बोतल चढ़ा जाना**–बोतलकी सारी शराब पी जाना।

बोतली–स्त्री॰ छोटी बोतल। वि॰ बोतलके रंगका।

बोदर*–स्त्री॰ लचीली छड़ी।

बोदा–वि॰ मोटी अक्लका, गावदी; दब्बू; सुस्त। **–पन**–पु॰ मोटी अक्लका होना; दब्बूपन।

बोध–पु॰[सं॰]ज्ञान; जानकारी; जताना; सांत्वना,तसल्ली। **–गम्य**–वि॰ समझमें आने लायक।

बोधक–वि॰[सं॰] बोध करानेवाला, जतानेवाला, सूचक। पु॰ शृंगार रसका एक हाव।

बोधन–पु॰ [सं॰] ज्ञान कराना, जताना; जगाना; उद्दीपन।

बोधना*–स॰ क्रि॰ समझाना-बुझाना; जताना।

बोधनीय–वि॰ [सं॰] जताने, जगाने योग्य।

बोधि–स्त्री॰ [सं॰] समाधिका एक भेद; पीपलका पेड़। **–तरु,–द्रुम,–वृक्ष**–पु॰ गयामें अवस्थित पीपलका पेड़ जिसके नीचे बुद्धको बुद्धत्वकी प्राप्ति हुई। **–सत्त्व**–पु॰ बुद्धत्व-प्राप्तिका अधिकारी जो अभी उस पदपर पहुँच न पाया हो, बुद्धविशेष।

बोधित–वि॰ [सं॰] जिसे बोध कराया गया हो।

बोधितव्य–वि॰ [सं॰] जताने योग्य; समझाने योग्य।

बोध्य–वि॰ [सं॰] जानने योग्य; जताने योग्य।

बोना–स॰ क्रि॰ बीज जमीनमें डालना, बिखेरना।

बोनी–स्त्री॰ बोनेकी क्रिया; बोनेका मौसम।

बोबा*–पु॰ स्तन; गठरी; घरकी चीज-वस्तु।

बोय*–स्त्री॰ दे॰ 'बू'।

बोरा†–स्त्री॰ बोरने, डुबानेकी क्रिया, डोब।

बोरका, बोरिका†–पु॰ दावात।

बोरना*–स॰ क्रि॰ डुबाना; डुबाकर तर करना; रँगना; मिलावट करना; चौपट करना, नाश करना (कुल प्रतिष्ठा)।

बोरसी†–स्त्री॰ अँगीठी।

बोरा–पु॰ टाटका बना बड़ा थैला जिसमे अनाज आदि रखते या भरकर अन्यत्र भेजते, ले जाते हैं; घुँघरू।

बोरिया–स्त्री॰ छोटा बोरा। पु॰ [फा॰] खजूरके पत्तोंकी चटाई। **मु॰–बँधना उठाना या समेटना**–चल देना, रास्ता लेना। **–सम्हालना**–चलनेकी तैयारी करना।

बोरी–स्त्री॰ छोटा बोरा।

बोर्ड–पु॰ [अं॰] लकड़ीका तख्ता; दफ्ती; कमेटी, मंडल; कार्य-विशेषके लिए स्थापित (सरकारी) मंडल, विभाग (रेलवे बोर्ड); म्युनिसिपल बोर्ड; जिला बोर्ड।

बोल–पु॰ वचन, जो कुछ बोला जाय, बात; शब्द; गीतका टुकड़ा जो गाया या बजाया जाय; किसी बाजेकी ध्वनि; ताना; संख्या; प्रतिज्ञा। **–चाल**–स्त्री॰ बातचीत; साधारण व्यवहारकी भाषा, रोजके बोलनेका ढंग; बातचीतका संबंध (–बंद होना)। **–पट**–पु॰ वह चित्रपट जिसमें पात्रोंके बोलने, गाने आदिकी आवाज सुनाई दे, सवाक चित्र। **मु॰–बाला होना**–बढ़ती-चढ़ती होना; मान-प्रतिष्ठा अधिक होना। **–मारना**–व्यंग्य करना।

बोलता–वि॰ बोलता हुआ; वाचाल; सजीव, सप्राण। पु॰ प्राण; आत्मा।

बोलती–वि॰ स्त्री॰ बोलती हुई। स्त्री॰ बोलनेकी शक्ति। **मु॰–बंद होना**–बोल न सकना; लज्जा या दुःखके अतिरेकसे मुँहसे बोल न निकलना।

बोलनहार*–पु॰ आत्मा, बोलता।

बोलना–अ॰ क्रि॰ मुँहसे शब्द, आवाज निकालना; शब्द करना (बाजे, पेट आदिका); चटखना (लकड़ी); रोक-टोक करना; भाषण करना। स॰ क्रि॰ कहना; आज्ञा देना; जवाब देना; * बुलाना, पुकारना; बुलवाना; * जानना; छेड़छाड़ करना। **मु॰ बोल जाना**–खतम हो जाना; जवाब देना, कामके लायक न रहना; हिम्मत हार देना। **बोलि पठाना***–बुला भेजना।

बोलवाना–स॰ क्रि॰ कहवाना; दे॰ 'बुलवाना'।

बोलसर–पु॰ मौलसिरी; एक तरहका घोड़ा।

बोलाचाली†–स्त्री॰ बातचीत; बातचीतका संबंध।

बोलावा–पु॰ दे॰ 'बुलावा'।

बोली–स्त्री॰ बोल, वचन; भाषा, बोलचाल; नीलामकी आवाज, खरीदारकी ओरसे लगाया गया चीजका दाम; व्यंग्य, फबती; पशु-पक्षियोंकी आवाज। **–ठोली**–स्त्री॰ व्यंग्य, कटाक्ष (–मारना)। **–दार**–पु॰ वह असामी जिसे खेत बिना लिखा-पढ़ीके दिया गया हो। **मु॰–कसना**–दे॰ 'बोली मारना'। **–बोलना**–व्यंग्य करना, फबती कसना; नीलाममें चीजके दाम लगाना। **–मारना**–ताने देना, आवाजें कसना।

बोवाई–स्त्री॰ दे॰ 'बोआई'।

बोवाना–स॰ क्रि॰ बोआना, बोनेका काम दूसरेसे कराना।

बोह*–स्त्री॰ डुबकी।

बोहनी–स्त्री॰ पहली बिक्री।

बोहित, बोहिथ*–पु॰ नाव, जहाज।

बोहित्थ–पु॰ दे॰ 'बोहित्थ'।

बौँड़*–स्त्री॰ लंबी टहनी; लता।

बौँड़ना*–अ॰ क्रि॰ टहनी फेंकना; दूरतक फैलना; आगे बढ़ना; लिपटना।

बौंडर*–पु॰ दे॰ 'बवंडर'।

बौँड़ी–स्त्री॰ कच्चा, छोटा फल, ढोढी; फली; दमड़ी, छदाम।

बौआना†–अ॰ क्रि॰ सपनेमें प्रलाप करना।

बौखल–वि॰ बदहवास, विक्षिप्त।

बौखलाना–अ॰ क्रि॰ होश-हवासमें न रहना, विक्षिप्तकेसे काम करना; क्रोधसे पागल हो उठना।

बौखलाहट–स्त्री० बदहवासी, विक्षिप्तता; क्रोधावेश ।

बौछाड़–स्त्री० दे० 'बौछार' ।

बौछार–स्त्री० हवाके झोंकेसे तिरछी होकर गिरनेवाली बूँदें; वर्षा, झड़ी; भरमार । (करना, पड़ना, होना) ।

बौड़ना–अ० क्रि० मतवाला होना ।

बौड़म–वि० मूर्ख, नासमझ; पागल । पु० पागल आदमी ।

बौड़हा–वि०, पु० दे० 'बौड़म' ।

बौद्ध–वि० [सं०] बुद्धि-संबंधी; बुद्ध-संबंधी । पु० बुद्ध-प्रवर्तित धर्मका अनुयायी । **–धर्म,–मत**–पु० बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म ।

बौना–पु० बहुत छोटे या ठिंगने कदका आदमी, वामन ।

बौर–पु० आमकी मंजरी, मौर ।

बौरई†–स्त्री० पागलपन ।

बौरना–अ० क्रि० आममें बौर लगना, आमका फूलना ।

बौरहा*–वि०, पु० बौड़म, पागल ।

बौरा–वि० पागल; भोला-भाला; गूँगा ।

बौराई*–स्त्री० बावलापन ।

बौराना*–अ० क्रि० बावला, पागल हो जाना । स० क्रि० उन्मत्त करना; बहकाना ।

बौराह*–वि० दे० 'बावला' ।

बौरी*–वि० स्त्री० बावली, पगली

बौलसिरी–स्त्री० मौलसिरी ।

बौहर*–स्त्री० वधू, दुलहिन ।

ब्यंग–पु० चुटकी, ताना; गूढ़ार्थ ।

ब्यंजन–पु० दे० 'व्यंजन'

ब्यक्ति–स्त्री०, पु० दे० 'व्यक्ति' ।

ब्यजन–पु० दे० 'व्यजन' ।

ब्यतीतना–*–अ० क्रि० व्यतीत होना, गुजरना ।

ब्यथा–स्त्री० दे० 'व्यथा' ।

ब्यलीक–वि०, पु० दे० 'व्यलीक' ।

ब्यवहरिया–पु० व्यवहार, लेन-देन करनेवाला ।

ब्यवहार–पु० व्यवहार, बर्ताव; रुपयेका लेन-देन; मुकदमा; शादी-गमीमें शरीक होनेका संबंध ।

ब्यवहारी–वि० व्यवहार, देन-लेन करनेवाला; व्यापारी; जिसके साथ मैत्री-संबंध हो ।

ब्यसन–पु० दे० 'व्यसन' ।

ब्याज–पु० सूद; दे० 'व्याज' । **–खोर**–पु० सूद खानेवाला । **–बट्टा**–पु० नफा-नुकसान ।

ब्याजू–वि० सूदपर दिया हुआ (रुपया) ।

ब्याध, ब्याधा–पु० दे० 'व्याध' ।

ब्याधि–स्त्री० दे० 'व्याधि' ।

ब्याना–स० क्रि० (पशुका) जनना । अ० क्रि० बच्चा देना ।

ब्यापक–वि० दे० 'व्यापक' । * स्त्री० व्यापकता ।

ब्यापना*–अ० क्रि० व्याप्त होना । स० क्रि० पकड़ना, ग्रसना ।

ब्यापार–पु० दे० 'व्यापार' ।

ब्यापारी–पु० दे० 'व्यापारी' ।

ब्यार, ब्यारि–स्त्री० हवा, 'बयारी' ।

ब्यारी–स्त्री० दे० 'ब्यालू' ।

ब्याल–पु० दे० 'व्याल' (साँप; हाथी; दुष्ट) ।

ब्याली–स्त्री० सर्पिणी । वि० सर्पधारण करनेवाला । पु० शिव ।

ब्यालू–पु० रातका भोजन ।

ब्याव*–पु० ब्याह ।

ब्याह–पु० विवाह, पाणिग्रहण ।

ब्याहता–वि० विवाहित; जिसके साथ ब्याह हुआ हो । स्त्री० विवाहिता पत्नी ।

ब्याहना*–स० क्रि० किसीको विधिवत् पति या पत्नी बनाना; ब्याह करना (बेटे या बेटीका) ।

ब्योँच–स्त्री० मोच ।

ब्योँचना–अ० क्रि० हाथ, पैर आदिके एकाएक मुड़ जानेसे नसका हट जाना, मोच आना ।

ब्योँत–स्त्री० कपड़ेकी काट, काट-छाँट; ढंग, ढब; युक्ति, उपाय; प्रबंध; योजना; किफायतसारी; * वृत्तांत, हाल –'बलि वामनको ब्योंत सुनि को बलि तुमहिं पत्याय'–बि० । **मु०–बनना**–उपाय होना, डौल निकलना ।

ब्योँतना–स० क्रि० सिलाईके लिए कपड़ेको नापसे काटना ।

ब्योतना–स० क्रि० दे० 'ब्योँतना' ।

ब्योताना–स० क्रि० कपड़ेको नापके अनुसार (दरजीसे) कटवाना ।

ब्योपार–पु० व्यापार ।

ब्योपारी–पु० व्यापारी ।

ब्योरन*–स्त्री० ब्योरने अर्थात् बालोंको सुलझाने, सँवारनेकी क्रिया या ढंग ।

ब्योरना*–स० क्रि० गुँथे हुए बालों, तारों आदिको अलग-अलग करना, सुलझाना–'बैठी ब्यौरति बार'–बि० ।

ब्योरा–पु० एक-एक बातको अलग-अलग कहना, विवरण, तफसील; हाल; अंतर । **(ब्योरे)वार**–अ० तफसीलके साथ, विस्तारपूर्वक ।

ब्योसाय–पु० दे० 'व्यवसाय' ।

ब्योहर–पु० रुपयेका देन-लेन, व्यवहार । **मु०–चलना**–महाजनीका कारबार होना ।

ब्योहरा, ब्योहरिया–पु० रुपयेका देन-लेन करनेवाला, महाजन ।

ब्योहार, ब्यौहार–पु० दे० 'व्यवहार' ।

ब्यौहरिया–पु० दे० 'ब्यवहरिया' ।

ब्रंद*–पु० वृंद, समूह ।

ब्रज–पु० दे० 'व्रज' । **–भाषा,–मंडल,–राज**–दे० 'व्रज' में ।

ब्रजना*–अ० क्रि० जाना, गमन करना ।

ब्रह्मंड*–पु० ब्रह्मांड ।

ब्रह्म(न्)–पु० [सं०] सच्चिदानंदस्वरूप जगत्का मूल तत्त्व; हिरण्यगर्भ; वेद; सत्य; तत्त्व; प्रणव; ब्रह्मा (समासमें); ब्राह्मण; तपस्या; ब्रह्मचर्य । **–कन्यका,–कन्या**–स्त्री० सरस्वती; ब्राह्मी बूटी । **–कर्म(न्)**–पु० ब्राह्मणके कर्तव्य कर्म; वेदविहित कर्म । **–कल्प**–पु० ब्रह्माकी आयु । वि० ब्रह्माके तुल्य । **–गाँठ**–स्त्री० [हिं०] जनेऊकी मुख्य गाँठ । **–ग्रह**–पु० ब्रह्मराक्षस । **–घातक,–घाती(तिन्)**–पु० ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला । **–घातिनी**–वि०, स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या करनेवाली ।

स्त्री० ऋतुके दूसरे दिन रजस्वलाकी संज्ञा। **—घोष—**पु० वेदपाठ; वेद। **—घ्न—**पु० ब्रह्महत्या करनेवाला। **—चर्य—**पु० अष्टविध मैथुनसे बचनेका व्रत, वीर्यरक्षा; उपनयनके अनंतर गुरुकुलमें रहकर द्विज बालकके वेदाध्ययनका काल; वर्णाश्रमी हिंदूके लिए विहित चार आश्रमोंमेंसे पहला; ब्रह्मके साक्षात्कारकी साधना। **—चारिणी—**स्त्री० ब्रह्मचर्य धारण करनेवाली; दुर्गा; ब्राह्मी बूटी। **—चारी-(रिन्)—**पु० ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेवाला; गुरुकुलमें रहकर ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए वेदाध्ययन करनेवाला। **—ज्ञ—**वि० ब्रह्मको जाननेवाला, ज्ञानी। **—ज्ञान—**पु० ब्रह्मको जानना, परमतत्त्वका ज्ञान। **—ज्ञानी(निन्)—**वि० ब्रह्मको जाननेवाला। **—तत्त्व—**पु० ब्रह्मका सच्चा ज्ञान। **—तेज(स्)—**पु० ब्रह्मका तेज; ब्राह्मणका तेज; ब्रह्मचर्य या ब्रह्मज्ञानका तेज। **—दंड—**पु० ब्राह्मणका अभिशाप; ब्रह्मचारीका डंडा। **—दूषक—**वि० वेदकी निंदा करनेवाला। **—देय—**पु० ब्राह्मणको दान की हुई चीज। **—दोष—**पु० ब्रह्महत्या। **—द्रोही(हिन्)—**वि० ब्राह्मण-द्रोही। **—द्वार—**पु० ब्रह्मरंध्र। **—द्विट्(ष्),—द्वेषी-(षिन्)—**वि० ब्राह्मणद्वेषी; वेदनिंदक। **—द्वेष—**पु० ब्राह्मण या वेदके प्रति द्वेष। **—नाभ—**पु० विष्णु। **—निष्ठ—**वि० ब्रह्मचिंतनमें डूबा रहनेवाला। **—पद—**पु० ब्रह्मत्व, मुक्ति; ब्राह्मणका पद। **—पारायण—**पु० संपूर्ण वेदोंका अध्ययन; संपूर्ण वेद। **—पाश—**पु० ब्रह्म-शक्तिसे परिचालित पाश। **—पिशाच—**पु० ब्रह्मराक्षस। **—पुत्र—**पु० ब्रह्माका पुत्र (नारद, वसिष्ठ, मनु, मरीचि, सनकादि); एक नद जो मानसरोवरसे निकलकर बंगालकी खाड़ीमें गिरता है। **—पुत्री—**स्त्री० सरस्वती; सरस्वती नदी। **—पुर—**पु० ब्रह्मलोक; हृदय; शरीर। **—पुराण—**पु० १८ महापुराणोंमेंसे एक। **—पुरी—**स्त्री० वाराणसी; ब्रह्मलोक। **—फाँस—**स्त्री० [हिं०] ब्रह्मपाश। **—बल—**पु० तपस्या आदिसे प्राप्त शक्ति। **—भाव—**पु० ब्रह्ममें लय होना। **—भूत—**वि० जो ब्रह्ममें लीन, ब्रह्मरूप हो गया हो। **—भोज—**पु० ब्राह्मणभोजन। **—मुहूर्त—**पु० दे० 'ब्राह्ममुहूर्त'। **—यज्ञ,—याग—**पु० वेद पढ़ना-पढ़ाना। **—रंध्र—**पु० मस्तकके मध्यमें माना जानेवाला एक छेद जिससे होकर प्राण निकलनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होना माना जाता है। **—राक्षस—**पु० प्रेतयोनि प्राप्त करनेवाला ब्राह्मण; शिवका एक गण। **—रेखा,—लेखा—**स्त्री० जीवके मस्तकपर ब्रह्मा द्वारा लिखित भाग्य-लेख। **—लिखित,—लेख—**पु० भाग्यलेख। **—लोक—**पु० ब्रह्माका लोक। **—वादी(दिन्)—**वि० वेद पढ़ने-पढ़ानेवाला; वेदांती। **—विद्—**वि० ब्रह्मको जाननेवाला; वेदार्थज्ञाता। **—विद्या—**स्त्री० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मविद्या; दुर्गा। **—वेत्ता(त्तृ)—**वि० ब्रह्मविद्, ब्रह्मज्ञानी। **—वेदी(दिन्)—**वि० ब्रह्मविद्। **—शासन—**पु० वेदका अनुशासन, आज्ञा; ब्राह्मणकी आज्ञा। **—समाज—**पु० दे० 'ब्राह्मसमाज'। **—सुता—**स्त्री० सरस्वती। **—स्व—**पु० ब्राह्मणका धन। **—स्वहारी(रिन्)—**वि० ब्राह्मणका धन चुरानेवाला। **—हत्या—**स्त्री० ब्राह्मणका वध जिसे मनुने महापातक बताया है।

ब्रह्मण्य—वि० [सं०] ब्रह्म-संबंधी; ब्राह्मणनिष्ठ; ब्राह्मणोंके योग्य; धार्मिक। पु० ब्रह्मतेज; नारायण; कार्त्तिकेय।

ब्रह्मत्व—पु० [सं०] ब्रह्मभाव; ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मर्षि—पु०[सं०] वसिष्ठ आदि मंत्रद्रष्टा ऋषि; ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मांड—पु० [सं०] अंडाकार भुवनकोष जिससे मनुस्मृति आदिके अनुसार, पितामह ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई, विश्व-गोलक, संपूर्ण विश्व; खोपड़ीके ऊपरका बीचवाला भाग।

ब्रह्मा (मन्)—पु० [सं०] हिंदूधर्ममें माने हुए त्रिदेवमेंसे प्रथम जिसे सृष्टि-रचनाका काम सौंपा गया है, विरंचि।

ब्रह्माणी—स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी शक्ति; ब्रह्माकी पत्नी; सरस्वती।

ब्रह्मानंद—पु०[सं०] ब्रह्मस्वरूपके साक्षात्कारका आनंद।

ब्रह्माभ्यास—पु० [सं०] वेदाध्ययन।

ब्रह्मार्पण—पु०[सं०] परमात्माको सर्वकर्मफलका समर्पण।

ब्रह्मावर्त—पु० [सं०] सरस्वती और दृषद्वती नदियोंके बीचका देश।

ब्रह्मासन—पु० [सं०] ब्रह्मके ध्यानके उपयुक्त माना जानेवाला एक आसन।

ब्रह्मास्त्र—पु० [सं०] ब्रह्मशक्तिसे परिचालित अमोघ माना जानेवाला एक अस्त्र।

ब्रह्मोपदेश—पु० [सं०] वेद, ब्रह्मज्ञानकी शिक्षा।

ब्रात*—पु० दे० 'व्रात्य'।

ब्राह्म—वि० [सं०] ब्रह्म-संबंधी; ब्रह्मा-संबंधी; ब्राह्मण-संबंधी; वैदिक; जिसके अधिष्ठाता ब्रह्मा हों (—मुहूर्त)। पु० स्मृत्युक्त आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्या वस्त्राभूषण सहित वरको, उससे कुछ लिये बिना, दान की जाती है, कन्यादान-विवाह। **—धर्म—**पु० राजा राममोहन रायका चलाया हुआ एकेश्वरवादी धर्म। **—पुराण—**पु० ब्रह्मपुराण। **—मुहूर्त—**पु० रातके पिछले पहरके अंतिम दो दंड। **—विवाह—**पु० कन्यादान-विवाह। **—समाज—**पु० राजा राममोहन रायका चलाया हुआ एकेश्वरवादी पंथ।

ब्राह्मण—पु० [सं०] हिंदू धर्मके माने हुए चार वर्णों या लोक-विभागोंमेंसे पहला; उस वर्णका जन, अग्रजन्मा; पुरोहित; वेदका मंत्र या संहितासे भिन्न विभाग। **—द्वेषी(षिन्)—**वि० ब्राह्मणसे द्वेष करनेवाला। **—प्रिय—**पु० विष्णु। **—भोजन—**पु० अनेक ब्राह्मणोंको एक साथ निमंत्रित कर खिलाना। **—वध—**पु० ब्राह्मणकी हत्या।

ब्राह्मणक—पु० [सं०] ब्राह्मणके कर्म न करनेवाला, कुत्सित ब्राह्मण; ऐसा ब्राह्मणकुल।

ब्राह्मणत्व—पु० [सं०] ब्राह्मणपन या ब्राह्मणका पद, भाव या धर्म।

ब्राह्मणी—स्त्री० [सं०] ब्राह्मणकी पत्नी; ब्राह्मण स्त्री; बुद्धि; छिपकलीकी जातिका एक छोटा जंतु, बम्हनी।

ब्राह्मण्य—पु० [सं०] ब्राह्मणका धर्म, ब्राह्मणत्व; ब्राह्मणोंका समूह; शनि ग्रह। वि० ब्राह्मणके योग्य, अनुरूप।

ब्राह्मी—स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी शक्ति; सरस्वती, वाणी; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र; ब्राह्मविधिसे विवाहिता स्त्री; वह प्राचीन लिपि जिससे देवनागरी और अन्य आधुनिक भारतीय

लिपियोंकी उत्पत्ति हुई; एक प्रसिद्ध बूटी जो आयुर्वेदमें बुद्धिवर्द्धक मानी गयी है।

ब्रिटिश–वि० [अं०] ब्रिटेनका, अंग्रेजी। **–राज**–पु० अंग्रेजी हुकूमत।

ब्रिटेन–पु० [अं०] इंग्लैंड, वेल्स और स्काटलैंड।

ब्रीड़–पु०, **ब्रीड़ा**–स्त्री० दे० 'व्रीड'।

ब्रीड़ना*–अ० क्रि० लज्जित होना।

ब्रीवियर–पु० [अं०] छापेके अक्षरों(टाइप)का एक भेद।

ब्रेक–पु०[अं०] पहिये या गतिचक्रकी गति रोकनेवाला यंत्र; (गार्डका) डब्बा जिसमें ब्रेक लगा हो। **मु०–लगाना**–गाड़ी आदिको रोकनेके लिए ब्रेकको दबाना।

ब्लाउज़–पु० [अं०] विलायती ढंगकी जनाना कुरती।

भ

भ–देवनागरी वर्णमालाका चौबीसवाँ व्यंजन वर्ण।

भंकार–पु० भीषण शब्द; भनभनाहट।

भंग–पु० [सं०] टूटना, खंडित होना; खंड, विघटन; ध्वंस, नाश (राज्यभंग, सत्त्वभंग); पराजय; संकोच; लहर; झुकाव; अस्वीकार; ग्रास; टेढ़ापन; छल; कुटिलता; बाधा; भय; सोता; लकवा। स्त्री० [हिं०] भाँग। **–घुटना**–पु० भाँग घोटनेका सोंटा। **–फ़रोश**–पु० भाँग वेचनेवाला।

भंगड़–वि० बहुत भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी।

भंगना*–अ० क्रि० टूटना; पराजित होना। स० क्रि० तोड़ना; नष्ट करना।

भँगरा–पु० एक बूटी, भँगरैया; दे० 'भँगेरा'।

भँगराज–पु० एक चिड़िया; भँगरा।

भँगरैया–स्त्री० भृंगराज।

भँगार–पु० दे० 'भगाड़'। स्त्री० कूड़ा-करकट, कतवार,–'वान्र भेप बनाइया भीतर भरी भँगार'–साखी।

भंगि, भंगी–स्त्री० [सं०] टेढ़ापन, कुटिलता; लहर; विच्छेद; ढंग; वेश-विन्यास; बहाना; छल; व्यंग्य; विनय।

भंगिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] वक्रता, कुटिलता।

भंगी–पु० मैले, कूड़ा-करकटकी सफाई करनेवाली एक जाति; उस जातिका व्यक्ति; दे० 'भंगि'। वि० भाँग छाननेवाला।

भंगी(गिन्)–वि० [सं०] भंग हो जानेवाला, नाशवान्; * भंग करनेवाला।

भंगुर–वि० [सं०] भंग होनेवाला; अधिक दिन न टिकनेवाला; टेढ़ा, कुटिल; छली।

भँगेड़ी–वि० भाँग पीनेका आदी, बहुत भाँग पीनेवाला।

भँगेरा, भँगेला–पु० भाँगके रेशेका बना हुआ कपड़ा।

भंजक–वि०, पु० [सं०] भंग करनेवाला, तोड़नेवाला।

भंजन–पु० [सं०] भंग करना; तोड़ना; ध्वंस, नाश करना; दंतक्षय। वि० भंग करनेवाला; पीड़ा देनेवाला। **–शील**–वि० (ब्रिटिल) (ठोस) जो गिर जानेपर या पीटे जानेपर टूट जाय, टुकड़े-टुकड़े हो जाय। **–शीलता**–स्त्री० (ब्रिटिलनेस) गिर जानेपर टुकड़े-टुकड़े हो जानेका ठोस पदार्थोंका गुण या क्रिया, दरकीलापन।

भंजना–स्त्री० [सं०] टूटना, बिखरना, नाश; पीड़ा; बाधा डालना। * स० क्रि० तोड़ना।

भँजना–अ० क्रि० भँजाया जाना; भाँजा जाना; बटा जाना।

भँजाई–स्त्री० भाँजनेकी क्रिया या उजरत; नोट आदि भुनानेके लिए दी जानेवाली रकम।

भँजाना†–स० क्रि० तुड़वाना; भुनाना (सिक्केका); भँजवाना (रस्सी आदिका)।

भंटा†–पु० बैगन।

भंड–पु० [सं०] भाँड़, अश्लील बातें बकनेवाला; * पात्र। वि० अश्लील बातें कहनेवाला; पाखंडी।

भँड़ताल, भँड़तिल्ला–पु० नाचके साथ होनेवाला एक तरहका गाना।

भंडना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'भाँड़ना'।

भंडरिया–स्त्री० दीवारमें बनी हुई छोटी आलमारी।

भँडरिया–पु० दे० 'भड्डर'। वि० पाखंडी; धूर्त। **–पन**–पु० धूर्तता, पाखंड।

भँड़सार, भँड़साल†–स्त्री० खत्ती।

भंडा–पु० भाँड़ा, बरतन; रहस्य। **–फोड़**–पु० भेद, छिपी बातका प्रकट हो जाना। **मु०–फूटना**–भेद खुलना।

भँडाना*–स० क्रि० चीजोंको तोड़ना-फोड़ना; उछल-कूद मचाना; ढूँढ़ना।

भंडार–पु० ढेर, खजाना; वह स्थान जहाँ घरका अन्नादि रखा जाय, कोठार; पाकशाला; पेट; अग्निकोण।

भंडारा–पु० साधुओंका भोज; पेट; भंडार; * समूह। **मु०–खुल जाना**–पेट फटकर आँतोंका बाहर निकल आना।

भंडारी–पु० भंडारका अध्यक्ष, तोशाखानेका दारोगा; रसोइया; * खजांची। स्त्री० दीवारमें बनी छोटी आलमारी; छोटी कोठरी; * कोश, खजाना।

भँड़िहा*–पु० चोर।

भँडुआ–पु० दे० 'भड़ुआ'।

भँडेरिया*–पु० दे० 'भँडरिया' (पु०); पंडेका नौकर।

भँड़ौआ–पु० हास्यरसकी भद्दी कविता; भाँडोंके गानेका गीत।

भँभाना–पु० गाय, बैल आदिका जोरसे बोलना, रँभाना।

भँभीरी–स्त्री० एक तरहका फतिंगा; फिरैरी, फिरकी।

भँभेरि*–स्त्री० भय, डर।

भँवना*–अ० क्रि० घूमना; चक्कर लगाना, मँडराना।

भँवर–पु० भ्रमर; जलावर्त; गड्ढा। **–कली**–स्त्री० कीलमें जड़ी हुई वह कड़ी जो सब ओर घूम सके (यह प्रायः पशुओंके गलेकी जंजीरमें लगायी जाती है)। **–जाल**–पु० सांसारिक झंझट। **–भीख**–स्त्री० घूम-फिरकर माँगी जानेवाली भीख, मधुकरी। **मु०–में पड़ना**–चक्कर, बखेड़ेमें पड़ना, घबड़ा जाना।

भँवरा–पु० भ्रमर, भौंरा; लट्टू।

भँवरी–स्त्री० जलका चक्कर, भँवर; सिर, डाढ़ी तथा पशुओंकी पीठ आदिपर बालोंका एक केंद्रपर घुमाव; भाँवर, परिक्रमा; गश्त; घूम-घूमकर सौदा बेचना।

भँवाना*-स० क्रि० घुमाना; फेरमें डालना, भ्रममें डालना।

भँवारा*-वि० घूमनेवाला, भ्रमणशील।

भ-पु० [सं०] नक्षत्र; ग्रह; शुक्राचार्य; राशि; शुक्र। **-कक्षा**-स्त्री० नक्षत्रोंका गमनमार्ग। **-कूट**-पु० राशियोंका समूह जिससे विवाहकी गणनामें वर-कन्याका शुभाशुभ जाना जाता है। **-गण**-पु० छंदःशास्त्रमें माना हुआ एक गण जिसमें आदि वर्ण गुरु और अंतके दो लघु होते हैं; राशिचक्र। **-गोल**-पु० नक्षत्रोंका गमनमार्ग। **-चक्र**-पु० राशिचक्र; नक्षत्रचक्र। **-मंडल,-वर्ग**-पु० दे० 'भचक्र'।

भइया-पु० भाई; बड़े भाई या बराबरवालेका संबोधन। **-जी**-पु० नौकर मालिकके सामने बेटे या नवयुवक मालिकको इस शब्दसे संबोधित करते हैं।

भउजाई†-स्त्री० दे० 'भौजाई'।

भकभकाना-अ० क्रि० 'भक-भक' शब्द करके जलना या रह-रहकर चमकना।

भकाऊँ-पु० डरावनी चीज, हौआ(बच्चोंको डरानेके लिए)।

भकुआ, भकुवा-वि० मूढ, हतबुद्धि, जिसकी अक्लि गुम हो गयी हो।

भकुआना, भकुवाना-अ० क्रि० भकुआ बनना; चिढ़ना। स० क्रि० चकपका देना।

भकूट-पु० [संध] दे० 'भ'के साथ।

भकोसना-स० क्रि० भक्षण करना; जल्दी-जल्दी खाना, ठूँसना।

भकोसू-वि० भकोसनेवाला।

भक्त-वि० [सं०] अनुरागी, वफादार; अनुगत; भक्तियुक्त; विभाजित; चाहा हुआ; पूजित; पकाया हुआ। पु० भोजन; अन्न; भात; भाग; उपासक, सेवक। **-कार**-पु० रसोइया। **-दास**-पु० वह दास जिसे श्रमके बदलेमें मालिकसे केवल भोजन मिलता रहे। **-बच्छल***-वि० दे० 'भक्तवत्सल'। **-मंड,-मंडक**-पु० भातका माँड़। **-वत्सल**-वि० भक्तको प्यार करनेवाला, भक्तके प्रति स्नेहयुक्त। **-शाला**-स्त्री० भोजनशाला; धर्मोपदेशका स्थान।

भक्ताई*-स्त्री० भक्ति।

भक्ति-स्त्री०[सं०] सेवा, आराधना; ईश्वर या पूज्य व्यक्तिके प्रति अत्यनुराग; श्रद्धा; विभाग; विभागरेखा। **-गम्य**-वि० सेवासे प्राप्य (शिव)। **-पूर्वक**-अ० भक्तिसहित। **-प्रवण**-वि० भक्तिमें लीन। **-भाजन**-वि० भक्तिके योग्य, श्रद्धेय। **-मार्ग**-पु० मोक्षप्राप्तिके तीन मार्गोंमेंसे एक। **-योग**-पु० भक्तिरूप योग, भक्तिके द्वारा भगवान्‌को पानेकी साधना।

भक्तिमान् (मत्)-वि० [सं०] भक्तियुक्त।

भक्ष-पु० [सं०] भोजन; खाना, भक्षण। **-कार**-पु० हलवाई; रसोइया।

भक्षक-वि०[सं०] खानेवाला, भक्षण करनेवाला; पेटू।

भक्षण-पु० [सं०] खाना; भोजन करना।

भक्षणीय-वि० [सं०] भक्षण करने योग्य।

भक्षना*-स० क्रि० भक्षण करना, खाना।

भक्षित-वि० [सं०] खाया हुआ। **-शेष**-पु० जूठन।

भक्षी (क्षिन्)-वि० [सं०] खानेवाला।

भक्ष्य-वि० [सं०] खाने-योग्य। पु० वह जो खाया जाय, आहार।

भक्ष्याभक्ष्य-वि० [सं०] खाद्य-अखाद्य (पदार्थ)।

भख*-पु० भक्ष्य, आहार।

भखना*-स० क्रि० खाना, भक्षण करना।

भगंदर-पु० [सं०] गुदावर्तके किनारे होनेवाला फोड़ा जो फूटनेपर नासूर हो जाता है।

भग-पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा; द्वादश आदित्योंमेंसे एक; ईश्वरकी ६ विभूतियाँ-ऐश्वर्य (अणिमादि); सौभाग्य; माहात्म्य; इच्छा; कांति; मोक्ष; योनि।

भगत-वि० भक्त, भगवद्‌भजनमें लगा रहनेवाला; निरामिषभोजी। पु० वैष्णव साधु; राजपूतानेकी एक जाति, भगतिया; होलीमें बनाया जानेवाला एक तरहका स्वाँग। **-बछल***-वि० दे० 'भक्तवत्सल'।

भगति, भगती*-स्त्री० दे० 'भक्ति'।

भगतिया-पु० राजपूतानेमें बसनेवाली एक जाति जो गाने-बजानेका पेशा करती है।

भगदड़, भगदर-स्त्री० बहुतसे लोगोंका बदहवास होकर एक साथ भागना (पड़ना, मचना)।

भगन*-वि० दे० 'भग्न'।

भगना-पु० भानजा। अ० क्रि० दे० 'भागना'।

भगनी-स्त्री० दे० 'भगिनी'।

भगर*-पु० दे० 'भगल'।

भगरना-अ० क्रि० खत्तेमें रखे हुए अनाजका गरमीसे सड़ने लगना।

भगल*-पु० छल, धोखेबाजी; बाजीगरी; जादू।

भगली-वि० छली, बाजीगर।

भगवंत*-वि० दे० 'भगवान्'।

भगवती-स्त्री० [सं०] दुर्गा; लक्ष्मी; देवी; सम्मान्य स्त्री।

भगवदीय-पु० [सं०] भगवद्भक्त। वि० भगवान्‌संबंधी।

भगवद्भक्ति-स्त्री० [सं०] भगवान्‌की भक्ति।

भगवा-पु० एक रंग, कषाय; इस रंगमें रँगा हुआ वस्त्र।

भगवान्(वत्)-वि० [सं०] ऐश्वर्यादि षड्‌भगयुक्त; पूज्य। पु० परमेश्वर; विष्णु; शिव; बुद्ध; जिन; पूज्य, महिमाशाली पुरुष।

भगाई*-स्त्री० भागनेकी क्रिया।

भगाड़-पु० जमीन धँसने या कुआँ बैठ जानेसे बना गड्ढा।

भगाना-स० क्रि० डरा-धमकाकर भागनेको विवश करना, खदेड़ना, दुतकारना; स्त्री, बच्चे आदिको बहकाकर साथ ले जाना। अ० क्रि० भागना।

भगिनिका-स्त्री० [सं०] बहिन।

भगिनी-स्त्री० [सं०] बहिन, सहोदरा; भाग्यवती स्त्री। **-पति-भर्ता(र्तृ)**-पु० बहनोई। **-सुत**-पु० भांजा।

भगीरथ-पु० [सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीपके पुत्र जो कहा जाता है कि घोर तप करके गंगाको स्वर्गसे पृथ्वीपर लाये। **-कन्या**-स्त्री० गंगा। **-प्रयत्न**-पु० महाप्रयास, असाधारण प्रयत्न। **-सुता**-स्त्री० गंगा।

भगेड़ू, भगेलू-वि० दे० 'भगोड़ा'।

भगोड़ा–वि० भागा हुआ, फरार; रणभूमिसे भागनेवाला, डरपोक।

भगोष्ठ–पु० [सं०] भगके बाहरी हिस्सेका किनारा।

भगौती*–स्त्री० दे० 'भगवती'।

भगौहाँ–वि० भगोड़ा; भगवा रंगमें रँगा हुआ, गेरुआ।

भग्गुल*–वि० रणभूमिसे भागा हुआ, भगोड़ा।

भग्गू–वि० खेलमें हारकर भागनेवाला, भगोड़ा।

भग्न–वि० [सं०] टूटा हुआ, खंडित; चूर किया हुआ, नष्ट; रोका हुआ; हराया हुआ; हताश। **–क्रम**–वि० जिसका क्रम भंग हो गया हो। **–चित्त**–वि० भग्नहृदय, निराश। **–चेष्ट**–वि० विफल होकर चेष्टासे विरत हो जानेवाला। **–दंष्ट्र**–वि० जिसके दाँत टूट गये हों। **–दर्प**–वि० जिसका घमंड तोड़ दिया गया हो, गलितगर्व। **–प्रक्रम**–पु० रचनाका क्रम बिगड़ जाना, काव्यका एक दोष। **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी हो। **–मना(नस्)**–वि० भग्नहृदय, हतोत्साह। **–मनोरथ**–वि० विफल-मनोरथ, जिसका मनोरथ भंग हो गया हो, नाकाम। **–व्रत**–वि० जिसका व्रत टूट गया हो। **–श्री**–वि० गतसौंदर्य।

भग्नांश–पु० [सं०] मूल द्रव्यका कोई अंश; समान विभागोंमेंसे कुछ अंश।

भग्नावशेष–पु० [सं०] खँडहर।

भग्नाश–वि० [सं०] हताश।

भग्नोत्साह–वि० [सं०] जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो।

भग्नोद्यम–वि० [सं०] जिसका प्रयत्न विफल हो गया हो।

भचक–स्त्री० भचकनेका भाव।

भचकना–अ० क्रि० लँगड़ाते हुए चलना।

भच्छ*–पु० दे० 'भक्ष्य'।

भच्छक*–वि० दे० 'भक्षक'।

भच्छन*–पु० दे० 'भक्षण'।

भच्छना*–स० क्रि० खाना, भक्षण करना।

भजन–पु० [सं०] सेवा, आराधना; भगवान् या उपास्य देवताका नाम जपना, स्मरण; भगवान् या किसी देवताकी स्तुतिमें रचित पद (हिं०); विभाजन। **–पूजन**–पु० पूजा-उपासना।

भजना–स० क्रि० सेवा, भक्ति करना; उपास्य देवताको याद करना; जपना; * आश्रय लेना। *अ० क्रि० भागना; पहुँचना।

भजनानंद–पु० [सं०] भजनका, भगवान्‌को याद करनेका आनंद। वि० भजनमें तल्लीन रहनेवाला।

भजनानंदी–वि० भजनानंद, भगवद्भजनमें मस्त रहनेवाला।

भजनी–वि० भजन गानेवाला।

भजनीक, भजनोपदेशक–पु० भजन गाकर उपदेश करनेवाला।

भजाना*–स० क्रि० भगाना। अ० क्रि० भागना।

भजियाउर*–स्त्री० घी, दही आदिके साथ पकाया हुआ चावल।

भट–पु० [सं०] योद्धा; सैनिक; एक वर्णसंकर जाति; दास; कूबर। **–भेरा***–पु० मुठभेड़, भिड़ंत; टक्कर; अचानक सामना या भेंट होना।

भटई–स्त्री० झूठी तारीफ, चापलूसी, भाटपन।

भटकटाई†, भटकटैया–स्त्री० एक वनौषधि, कंटकारी।

भटकना–अ० क्रि० रास्ता भूलना; रास्ता भूलकर इधर-उधर फिरना; व्यर्थ घूमना; तलाशमें फिरना; भ्रममें पड़ना; * चूक जाना।

भटका*–पु० व्यर्थ घूमनेकी क्रिया; चक्कर–'द्वार न पावै सबदका फिरि फिरि भटका खाय'–साखी।

भटकाना–स० क्रि० गलत रास्ता बताना, बहकाना।

भटकैया*–वि० भटकनेवाला।

भटकौहाँ*–वि० भटकानेवाला।

भटवास, भटवासा†–स्त्री० एक लता।

भटा†–पु० भंटा, बैगन।

भटू*–स्त्री० सखी, अलि (बराबरीकी स्त्रीका संबोधन)।

भट्ट–पु० [सं०] भाट; पंडित; दाक्षिणात्य ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; स्वामी (नाटकादिमें राजाओंका संबोधन)।

भट्टाचार्य–पु० [सं०] दर्शनशास्त्रका पंडित, सम्मानित अध्यापक (पदवीरूपमें प्रयुक्त)।

भट्टारक–वि० [सं०] पूज्य, माननीय। पु० राजा (ना०); मुनि; पंडित; सूर्य; देवता। **–वार**–पु० रविवार।

भट्टारिका–स्त्री० [सं०] सम्मान्य स्त्री, देवी।

भट्ठा–पु० बड़ी भट्ठी; ईंटें आदि पकानेका पजावा; बड़ा चूल्हा जिसपर कड़ाह चढ़ाकर गुड़, भोजके लिए पूरियाँ आदि बनायी जायँ।

भट्ठी–स्त्री० खास कामोंके लिए बना हुआ बड़ा चूल्हा; मद्य बनानेका स्थान; * माँद।

भठियारखाना–पु० भठियारोंका घर; वह जगह जहाँ बहुत शोरगुल होता हो; कमीने, असभ्य लोगोंकी बैठक।

भठियारन, भठियारिन, भठियारी–स्त्री० भठियारेकी स्त्री; लड़ाकी औरत। मु० **(भठियारिनों) की तरह लड़ना**–चिल्लाते, उगलियाँ आदि चमकाते और गंदी गालियाँ बकते हुए लड़ना।

भठियारपन–पु० भठियारोंकी तरह लड़ना, कमीनापन।

भठियारा–पु० सरायमें यात्रियोंके टिकने, खाने-पीनेका प्रबंध करनेवाला।

भठिहारिन–स्त्री० भठियारिन।

भड़क–स्त्री० चमक, दमक, भड़कीलापन; भड़कनेका भाव, झिझक। **–दार**–वि० चमक-दमकवाला।

भड़कना–अ० क्रि० प्रज्वलित होना, बल उठना, जोरसे जलने लगना; क्रुद्ध होना; चौंकना, बिदकना।

भड़काना–स० क्रि० आगको तेज करना, प्रज्वलित करना; उत्तेजित करना, बढ़ावा देना; बहकाना; चौंकाना, डराना।

भड़कीला–वि० चमक-दमकवाला, भड़कदार; भड़कनेवाला। **–पन**–पु० चमक-दमक; भड़कीला होनेका भाव।

भड़कैल–वि० भड़कनेवाला, चौंकने, बिदकनेवाला।

भड़भड़–स्त्री० बड़े ढोल, पोली चीज आदिकी आवाज; किसी चीजके जोरसे गिरनेकी आवाज; बकवास।

भड़भड़ाना–स० क्रि० 'भड़-भड़' आवाज पैदा करना। अ० क्रि० 'भड़-भड़' आवाज होना।

भड़भड़िया–वि० बक्की, डींग मारनेवाला ।

भड़भाँड़–पु० एक कँटीला पौधा ।

भड़भूँजा–पु० एक हिंदू जाति जो दाना भूनने और भाड़ झोंकनेका काम करती है, भुजवा ।

भड़वा–पु० दे० 'भड़ुआ' ।

भड़साईं, भड़सायँ†–स्त्री० भाड़ ।

भड़हर–पु० भाँड़ा, बरतन ।

भडार*–पु० दे० 'भंडार' ।

भड़ास–स्त्री० दिलमें भरी हुई बातें,गुबार,दिलका बुखार ।

भड़िहा†–पु० चोर ।

भड़िहाई*–स्त्री० चोरी । अ० चोरकी तरह–'इतउत चितै चला भड़िहाई'–रामा० ।

भड़ुआ–पु० सफरदाई; रंडियोंकी दलाली करनेवाला ।

भड़ेरिया–पु० दे० 'भँडेरिया' (भड्डुर) ।

भड्डुर–पु० ब्राह्मणोंकी एक जाति जो यात्रियोंको देवदर्शन आदि कराती या भविष्य बतलाती है ।

भणन–पु० [सं०] कहना, कथन; वर्णन ।

भणना*–स० क्रि० कहना, वर्णन करना ।

भणित–वि०[सं०] कहा हुआ, कथित । पु० कथन; वर्णन ।

भणिति–स्त्री० [सं०] कथन; वार्ता ।

भतवान–पु० ब्याहके संबंधमें होनेवाली कच्ची ज्योनार ।

भतार*–पु० दे० 'भर्तार' ।

भतीजा–पु० भाईका बेटा । (स्त्री० भतीजी ।)

भत्ता–पु० कोई बँधी रकम जो कर्मचारीको सफर-खर्च आदिके लिए वेतनके अतिरिक्त मिले ।

भदंत–वि० [सं०] सम्मानित; संन्यस्त । पु० बौद्ध भिक्षु ।

भदई†–वि० भादोंमें होनेवाला । स्त्री० भादोंमें होनेवाली फसल ।

भदेस*–वि० भोंड़ा, बेढंगा ।

भदौँह*–वि० दे० 'भदौहाँ' ।

भदौहाँ†–वि० भादोंमें होनेवाला (आम, अमरूद इ०) ।

भद्दा–वि० बेढंगा, भोंड़ा, बेडौल; अशिष्ट; अयुक्त ।**–पन**–पु० बेढंगापन; अशिष्टता; अयुक्तता ।

भद्र–वि० [सं०] भला, साधु; शुभ, मंगलकारी; श्रेष्ठ; सुंदर; * जिसके सिर, दाढ़ी आदिका मुंडन हुआ हो–'…सूर प्रभु पूछत भद्र भये क्यों भाई'–सू० । पु० मंगल, सुख-सौभाग्य; सोना; लोहा; शिव; * सिर, दाढ़ी-मूँछ आदिका मुंडन, भद्राकरण । **–जन**–पु० भला आदमी, शिष्ट जन । **–पुरुष**–पु० दे० 'भद्रजन' ।

भद्रा–वि० स्त्री० [सं०] भद्र । स्त्री० आकाशगंगा; फलित ज्योतिषका शुभ कार्यके लिए एक निषिद्ध योग; सुभद्रा; दुर्गा; गाय; हल्दी; पृथ्वी । **मु०–लगना**–विघ्न पड़ना, बाधा उपस्थित होना ।

भनक–स्त्री० धीमी, अस्पष्ट ध्वनि; उड़ती हुई खबर (पड़ना) ।

भनकना*–स० क्रि० बोलना ।

भनना*–स० क्रि० कहना ।

भनभनाना–अ० क्रि० 'भन-भन' आवाज करना; गुंजार करना ।

भनभनाहट–स्त्री० धीमी आवाज; गुंजार ।

भनित*–वि० स्त्री० दे० 'भणित' ।

भनिति*–स्त्री० दे० 'भणिति'; रचना ।

भबका–पु० अर्क खींचनेका यंत्र ।

भबकी–स्त्री० झूठी धमकी, बंदर-घुड़की ।

भब्भड़, भम्भड़–स्त्री० भीड़-भाड़, धक्कम-धक्का ।

भभक–स्त्री० भभकनेका भाव, भड़क उठना; तेज बदबू ।

भभकना–अ० क्रि० जोरसे जल उठना; भड़कना ।

भभका–पु० दे० 'भबका' ।

भभकी–स्त्री० दे० 'भबकी' ।

भभरना–अ० क्रि० डरना; घबराना; * भरमना, भ्रममें पड़ना, भूलना ।

भभीरी*–स्त्री० झींगुर; दे० 'भँभीरी'; 'भमीरी' ।

भभूका–पु० लपट, शोला; चिनगारी ।

भभूखा*–पु० दे० 'भभूका' ।

भभूत–स्त्री० वह भस्म जिसे शिवभक्त शरीरपर लगाते हैं, यज्ञकुंड, धूनी आदिकी राख । **मु०–रमाना**–वैराग्य धारण करना, साधु हो जाना ।

भभूदर–स्त्री० दे० 'भूभल' (गरम राख) ।

भमीरी*–स्त्री० झींगुर–'बरषा भये तें जैसे बोलत भमीरी स्वर'–सुंदर० ।

भयंकर–वि० [सं०] डरावना, भयोत्पादक ।

भय–पु० * अ० क्रि० हुआ । [सं०] विपद् या अनिष्टकी संभावनासे उत्पन्न दुःखजनक भाव, डर, खौफ; खतरा; भयानक रस ।**–कर,–जनक**–वि०भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना, खतरनाक । **–त्रस्त**–वि० बहुत डरा हुआ । **–त्राता(तृ)**–पु० भयसे छुड़ानेवाला । **–द,–दायी(यिन्)**–वि० भय उत्पन्न करनेवाला । **–नाशन**–वि० भयका नाश करनेवाला । पु० विष्णु । **–प्रद,–प्रदायी(यिन्)**–वि० डरावना । **–भीत**–वि० डरा हुआ । **–मोचन**–वि० भयसे छुड़ानेवाला ।**–विह्वल**–वि० डरसे जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, भयाकुल । **–शील**–वि० डरपोक ।**–शून्य**–वि० निर्भय । **–हरण,–हर्ता(तृ),–हारक,–हारी(रिन्)**–वि० भय दूर कर देनेवाला ।

भया*–अ० क्रि० हुआ ।

भयाकुल–वि० [सं०] डरसे घबराया हुआ, भय-विह्वल ।

भयाक्रांत–वि० [सं०] भयसे अभिभूत ।

भयातुर–वि० [सं०] दे० 'भयाकुल' ।

भयान*–वि० भयानक–'यह भूमि भई भारी भयान'–सुजा० ।

भयानक–वि० [सं०] भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना । पु० काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव भय है (सा०) ।

भयाना*–अ० क्रि० डरना । स० क्रि० डराना ।

भयारा*–वि० भयानक ।

भयार्त–वि० [सं०] डरा हुआ ।

भयावन*–वि० दे० 'भयावना' ।

भयावना–वि० डरावना ।

भयावह–वि० [सं०] भयजनक, खतरनाक ।

भरंत–स्त्री० भरनेकी क्रिया, भराई; *भ्रांति, भ्रम, शंका ।

भर–पु० एक हिंदू जाति । वि० सब, पूरा; (वजन, नाप

आदिमें किसीके) बराबर । *अ० के बल, द्वारा ।**–पाई–**स्त्री० भर पाने, चुकता हो जानेका भाव; भर पाने, बेबाकीकी रसीद । **–पूर–**वि० :पूरी तरह भरा हुआ, परिपूर्ण । अ० पूरे तौरसे । **–पेट–**अ० जी भरकर, पेट भरकर ।**–सक–**अ० शक्तिभर, जितना हो सके । **मु०–पाना–**पूरा पावना वसूल हो जाना; कियेका फल पाना ।

भर–पु० [सं०] भार; ढेर, समूह; आधिक्य, अतिरेक; पीनता । वि० (समासांतमें) भरण करनेवाला ।

भरकना*–अ० क्रि० दे० 'भड़कना' ।

भरकाना*–स० क्रि० दे० 'भड़काना' ।

भरण–पु० [सं०] पालन; पोषण; धारण; उत्पादन; भृति ।

भरणी–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे दूसरा; घियातरोई ।

भरत–पु० काँसा; भरी हुई चीज, भराव; एक तरहका लवा; [सं०] शकुंतलासे उत्पन्न दुष्यंतका पुत्र जिसके नामपर इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा; कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न दशरथ-पुत्र; एक मुनि जो नाट्यशास्त्रके प्रवर्तक माने जाते हैं । **–खंड–**पु० भारतवर्ष ।

भरता–पु० आलू-बैंगन आदिको भून और मसलकर बनाया हुआ सालन, चोखा ।

भरताग्रज–पु० [सं०] राम ।

भरतार*–पु० पति; स्वामी ।

भरती–स्त्री० एक चीजका दूसरीमें भरा, बैठाया जाना, भराव; भीतर भरी हुई चीज; पच्चीकारी; प्रवेश, दाखिला, लिया जाना (सेना, पुलिस, स्वयंसेवकदल आदिमें) ।

भरत्थ*–पु० रामानुज 'भरत' ।

भरथ–पु० [सं०] लोकपाल; राजा; * रामानुज 'भरत' ।

भरथरी–पु० दे० 'भर्तृहरि' ।

भरदूल–पु० भरत (पक्षी) ।

भरद्वाज–पु० [सं०] एक गोत्र-प्रवर्तक और मंत्रकार ऋषि; भरत पक्षी; एक अग्नि; एक अर्हत ।

भरना–स० क्रि० खाली बरतन आदिमें कोई चीज डालना, खाली जगहको किसी चीजसे पूर्ण करना; ढालना; छेद, अवकाशको बंद करना; तोप, बंदूक आदिमें गोला, गोली आदि डालना; चुकाना (ऋण); पूर्ति करना (नुकसानकी); पदपर नियुक्ति करना; सींचना; कुएँ आदिसे घड़े आदिमें पानी लाना; शिकायत करना; बरगलाना; चिलमपर तंबाकू और आग रखना; भेंटना; * गुजर करना; सहना; देहमें पोतना । अ० क्रि० भरा जाना, पूर्ण होना; घावका पूरा होना; मनका क्रोध, क्षोभ आदिसे पूर्ण होना; पुष्ट, मोटा होना (देह); गर्भवती होना (गाय, कुतिया आदिका) ।

भरनि*–स्त्री० पहनावा, वेशभूषा ।

भरनी–स्त्री० करघेकी ढरकी; छछूँदर; मोरनी; एक जंगली बूटी; सर्पका विष उतारनेका मंत्र; * दे० 'भरणी' ।

भरभराना–अ० क्रि० फूलना; रोमांच होना; घबड़ाना ।

भरभराहट–स्त्री० सूजन; घबड़ाहट ।

भरभेंटा*–पु० सामना, मुठभेड़ ।

भरम–पु० भ्रम; भेद; साख, प्रतिष्ठा (खुलना, खोना, गँवना)–'संपति भरम गँवाइकै बसे रहे कछु नाहि'–रहीम ।

भरमना*–अ० क्रि० फिरना; भटकना; बहकना; गुमराह होना । स्त्री० भ्रांति, भूल ।

भरमाना–स० क्रि० भ्रममें डालना; बहकाना, धोखा देना; व्यर्थ घुमाना । * अ० क्रि० भटकना; चकित होना ।

भरमार–स्त्री० बहुतायत, आधिक्य, बाहुल्य ।

भरराना–अ० क्रि० यकबारगी गिर पड़ना, अरराना; टूट पड़ना । स० क्रि० 'भरर' शब्दके साथ गिराना; किसीको टूट पड़नेमें प्रवृत्त करना ।

भरवाई–स्त्री० भरवानेकी क्रिया या उजरत; बोझ उठानेकी टोकरी ।

भरवाना–स० क्रि० भरनेका काम दूसरेसे कराना ।

भरसन, भरसना*–स्त्री० दे० 'भर्त्सना' ।

भरसाईं†–स्त्री० भाड़ ।

भरहरना, भरहराना–अ० क्रि० दे० 'भहराना' ।

भराँति*–स्त्री० दे० 'भ्रांति' ।

भरा–वि० भरा हुआ, पूर्ण; आबाद; संपन्न (घर); पुष्ट, मांसल (अंग, देह); क्रोध, क्षोभ, खीझसे भरा हुआ, जिसका क्षोभ बाहर निकला ही चाहता हो । [स्त्री० 'भरी' ।] **–पूरा–**वि० संपन्न, धन-धान्य, बाल-बच्चोंसे सुखी । **–भरा–**वि० आबाद; मांसल, मोटा । **(भरी) जवानी–**चढ़ी जवानी, जिस जवानीका उतार आरंभ न हुआ हो । **मु०(भरी) गोद या गोदी खाली होना–**संतानका मर जाना ।**–थालीमें लात मारना–**लगी नौकरी, मिलती रोजीको छोड़ देना । **–सभा या मजलिसमें–**सबके सामने ।

भराई–स्त्री० भरनेकी क्रिया या उजरत ।

भराव–पु० भरनेका भाव; भरती; कशीदेमें पत्तियों आदिका काम ।

भरित–वि० [सं०] भरा हुआ;···से पूर्ण; पोषित; हरा ।

भरी–स्त्री० एक रुपये या दस माशे भरकी तौल ।

भरु*–पु० भार, बोझ ।

भरुआना†–अ० क्रि० भारी होना, भार अनुभव करना ।

भरुहाना*–अ० क्रि० गर्व करना । स० क्रि० बहकाना; बढ़ावा देना; भ्रममें डालना–'तुमको नंद महर भरुहाये' –सू० ।

भरुही–स्त्री० एक तरहकी किलिक; एक पक्षी, भरत ।

भरेठ–पु० दरवाजेके ऊपर दीवारका बोझा सम्हालनेके लिए दी हुई लकड़ी ।

भरैत†–पु० किरायेदार ।

भरैया†–पु* भरनेवाला; भरण करनेवाला, पालक ।

भरोस*–पु० दे० 'भरोसा' ।

भरोसा–पु० पक्की आशा; सहारा, आसरा; विश्वास । **(भरोसे)का–**विश्वसनीय ।

भर्ग–पु० [सं०] भूनना; शिव; ब्रह्मा; तेज, ज्योति ।

भर्ता(र्तृ)–पु० [सं०] भरण करनेवाला; स्वामी; पति; नायक; विष्णु ।**–घ्नी–**स्त्री० पतिघातिनी स्त्री । **–दारक–**पु० युवराज, राजकुमार (ना०) । **–दारिका–**स्त्री० राजकुमारी (ना०) । **–देवता,–दैवता–**स्त्री० पतिको देवतारूपमें माननेवाली । **–व्रत–**पु० पतिव्रत । **–हरि–**पु० श्रृंगार-शतक, नीति-शतक, वैराग्य-शतकके कर्ता जो महाराज विक्रमादित्यके सौतेले बड़े भाई थे; वाक्यप्रदीपके कर्ता

वैयाकरण कवि।

भर्तार-पु० कांत, पति, स्वामी।

भर्तृमती-स्त्री० [सं०] सधवा स्त्री।

भर्त्सन-पु०, **भर्त्सना**-स्त्री० [सं०] निंदा, लानत-मलामत।

भर्म*-पु० दे० 'भ्रम'।

भर्मन*-पु० दे० 'भ्रमण'।

भर्य-पु० [सं०] भरण पोषणका खर्च, गुजारा (कौ०)।

भर्रा-पु० एक चिड़िया; दम, चकमा।

भर्राना-अ० क्रि० 'भर्र-भर्र' शब्द निकलना।

भर्सन*-पु० दे० 'भर्त्सन'।

भल*-वि०, पु० दे० 'भला'।

भलका*-स्त्री० गाँसी।

भलपति*-पु० भाला धारण करनेवाला।

भलमनसाहत, भलमनसी-स्त्री० भलामानुसपन, सज्जनता, शराफत।

भला-वि० अच्छा, नेक, साधु; सुंदर (लगना)। पु० भलाई, हित। अ० अच्छा, खूब; प्रश्नवाचक वाक्योंमें 'नहीं'का अर्थ देता है-'भला कहीं बालूसे तेल निकल सकता है ?', धमकीके अर्थमें-"भला बच्चा"। **-आदमी**-पु० भला मानस, नेक, शरीफ आदमी। **-चंगा**-वि० स्वस्थ, तंदुरुस्त, अच्छा-खासा। **-बुरा**-वि० अच्छा और बुरा; सख्त-सुस्त, खरी-खोटी (कहना, सुनाना)। **-मानस**-पु० दे० 'भला आदमी'; (व्यं०) दुष्ट। **(भले)मानुसोंका समझौता**-पु० (जंटिलमैंस ऐग्रीमेंट) एक तरहका अनौपचारिक समझौता जो केवल जबानी बातचीत या सामान्य पत्रालापके आधारपर किया गया हो, कोई पक्की लिखा-पढ़ी न की गयी हो।

भलाई-स्त्री० भलापन, अच्छाई; नेकी; हित, खैरियत।

भले-अ० खूब, अच्छा (भले आये)। **-ही**-अ० ऐसा हो तो हुआ करे, हो तो परवाह नहीं (भले ही तुम बुरा मानो)।

भलेरा*-पु० दे० 'भला'।

भल्ल-पु० [सं०] भाला; भालू; शिव; भिलावाँ। **-नाथ, -पति**-पु० जांबवान्।

भल्लक-पु० [सं०] भालू; भिलावाँ; एक (प्राचीन) जनपद।

भल्लात, भल्लातक-पु० [सं०] भिलावाँ।

भल्लुक-पु० [सं०] भालू।

भल्लूक-पु० [सं०] भालू; कुत्ता।

भवंग, भवंगा*-पु० सर्प।

भवंगम*-पु० सर्प।

भवंत-पु० [सं०] वर्तमान काल। * सर्व० आपका।

भवँना-अ० क्रि० घूमना, चक्कर खाना।

भवँर-पु० दे० 'भँवर'।

भव-* पु०; भय [सं०] उत्पत्ति, जन्म; होना; संसृति; प्राप्ति; संसार; अग्नि; शिव; कुशल। (समासमें 'से उत्पन्न'का अर्थ देता है)। **-चाप**-पु० शिवका धनुष्। **-भय**-पु० बार-बार जन्म लेने और मरनेका भय, कष्ट। **-भामिनी, -वामा**-स्त्री० पार्वती। **-भीति**-स्त्री० जन्म-मरणका भय, संसृतिका भय। **-भूप***-वि० दे० 'भवभूषण'। **-भूषण**-वि० जगत्के भूषणरूप। पु० शिवका भूषण, राख आदि। **-भोग**-पु० लौकिक सुखका उपभोग। **-मोचन**-पु० भवबंधनको काटनेवाला, परमेश्वर। **-शूल**-पु० भौतिक दुःख। **-शेखर**-पु० चंद्रमा। **-सागर, -सिंधु**-पु० समुद्ररूप संसार।

भवदनुगत-वि० [सं०] (युअर्स ओबिडिएंटली) आपकी आज्ञा माननेवाला, आपके आदेशानुसार चलनेवाला (किसी मातहत कर्मचारी द्वारा अथवा पुत्र या छोटे भाई द्वारा उच्च कर्मचारी, पिता या बड़े भाईको लिखे गये आवेदन-पत्र, कुशलपत्रादिके अंतमें, हस्ताक्षर करनेके ठीक पहले प्रयुक्त विशेषण)।

भवदनुरत-वि० [सं०] (युअर्स सिनसियरली) आपसे स्नेह, मित्रता या सद्भाव रखनेवाला (किसी मित्र या सामान्य परिचित व्यक्तिको लिखे गये पत्रके अंतमें लेखक द्वारा स्वयं अपने लिए प्रयुक्त विशेषण।)

भवदीय-वि० [सं०] आपका (स्त्री० भवदीया)।

भवन-पु० [सं०] होना, भाव; जन्म, उत्पत्ति; घर, मकान; स्थान, क्षेत्र। **-निर्माण-विज्ञान**-पु० (आर्किटेक्चर) मकान आदि बनानेकी कलाका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

भवना*-अ० क्रि० दे० 'भँवना'।

भवनापचरण-पु० [सं०] (हाउस-ट्रेसपास) किसीके मकानमें अवैध रूपसे प्रवेश करना।

भवनी*-स्त्री० गृहिणी; स्त्री।

भवन्निष्ठ-वि० [सं०] (फेथफुली युअर्स) आपमें विश्वास रखनेवाला (अंग्रेजी ढंगके व्यापारिक पत्रों या सामान्य कार्यके लिए प्रायः कम परिचित व्यक्तियोंके नाम लिखे गये पत्रोंके अंतमें, हस्ताक्षरके ठीक पहले, प्रयुक्त होनेवाला समस्तपद)।

भवाँ*-पु० फेरा।

भवाँना*-स० क्रि० घुमाना।

भवांबुधि-पु० [सं०] दे० 'भवसागर'।

भवा-स्त्री० पार्वती।

भवात्मज-पु० [सं०] कार्त्तिकेय; गणेश।

भवानी-स्त्री० [सं०] दुर्गा, पार्वती। **-कांत, -पति, -वल्लभ**-पु० शिव। **-नंदन**-पु० गणेश; कार्त्तिकेय।

भवाब्धि-पु० [सं०] दे० 'भवसागर'।

भवि*-वि० दे० 'भव्य'।

भवितव्य-वि० [सं०] होनहार, अवश्यंभावी।

भवितव्यता-स्त्री० [सं०] जिसका होना अटल हो, होनी; भाग्य।

भविष*-पु० दे० 'भविष्य'।

भविष्य-पु० [सं०] आनेवाला काल। वि० होनेवाला, भावी। **-काल**-पु० क्रियाके तीन कालोंमेंसे एक, अनागत काल (व्या०)। **-गुप्ता**-स्त्री० सुरतिगुप्ता नायिकाका एक भेद। **-ज्ञान**-पु० होनेवाली बातोंकी जानकारी। **-निधि**-स्त्री० (प्रॉविडेंट फंड) किसी सरकारी, अर्द्ध-सरकारी या व्यापारिक संस्था आदिमें काम करनेवाले कर्मचारीको कार्यसे अवसर ग्रहण कर लेनेपर भरण-पोषणमें सहायक होनेकी दृष्टिसे दी जानेवाली वह सहायता जो उसके वेतनमेंसे कटनेवाले उसके अपने अंशके साथ-

साथ नियोजकों द्वारा निधिके रूपमें जमा की जाती है, संचित कोष, संचित निधि, संभरणनिधि।

भविष्यत्–वि० [सं०] होनेवाला, भावी। पु० आनेवाला काल; जल; एक फल। –**काल**–पु० दे० 'भविष्यकाल'।

भविष्यद्वक्ता(क्तृ),–भविष्यद्वादी(दिन्)–पु० [सं०] वह जो आगे होनेवाली बातोंको पहले बता दे, ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी–स्त्री० [सं०] भविष्यकथन, पेशीनगोई।

भवीला*–वि० चाववाला; आनबानवाला।

भवेश–पु० [सं०] संसारका स्वामी, शिव।

भव्य–वि० [सं०] विद्यमान; होनेवाला, भावी; योग्य, उपयुक्त; सुंदर; शानदार; शांत, प्रसन्न; शुभ; सत्य।

भष*–पु० भक्ष्य, आहार।

भषना*–स० क्रि० दे० 'भखना'।

भसना†–अ० क्रि० तैरना; डूबना; धँसना।

भसमंत*–वि० जला हुआ।

भसम–पु० दे० 'भस्म'।

भसान†–पु० दुर्गा आदिकी प्रतिमाको पूजनोपरांत नदीमें प्रवाहित करना।

भसाना†–स० क्रि० तैराना; डुबाना; धँसाना।

भसिंड, भसींड–पु० कमलनाल।

भसुँड़–पु० हाथी।

भसुर–पु० पतिका बड़ा भाई, जेठ।

भसूँड़–पु० हाथीकी सूँड़।

भस्म(न्)–पु० [सं०] राख; चिताकी राख; दवाके कामके लिए फूँकी हुई धातु आदि, कुश्ता। –**चय,–पुंज**–पु० भस्मराशि। –**प्रिय**–पु० शिव। –**राशि**–स्त्री० राखका ढेर। –**सात्**–वि० जो भस्मरूप हो गया हो, भस्मीभूत। –**स्नान**–पु० सारी देहमें भस्म मलना।

भस्मावशेष–वि० [सं०] जो राखमात्र रह गया हो, जो जलकर राख हो गया हो। पु० राखके रूपमें बचा अंश।

भस्मासुर–पु० [सं०] एक दैत्य जिसने शिवसे यह वरदान प्राप्त किया था कि वह जिसके सिरपर हाथ रखेगा वह जल जायगा।

भस्मित–वि० जला या जलाया हुआ।

भस्मीभूत–वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो, नष्ट।

भस्सड़–वि० मोटा, बेडौल (मनुष्य)।

भस्सी–स्त्री० चूने, कोयले आदिका चूरा।

भहराना–अ० क्रि० यकबारगी गिरना; टूट पड़ना।

भाँइँ–पु० खरादी।

भाँउर, भाँउरि*–स्त्री० दे० 'भाँवर'।

भाँऊँ*–पु० दे० 'भाव'।

भाँग–स्त्री० गाँजेकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशा पैदा करती हैं; इसकी पत्तियाँ; इन पत्तियोंको घोंटकर बनाया हुआ पेय। **मु०–खा जाना**–नशेमें होनेकीसी बातें करना। –**छानना**–भाँग पीना। **(घरमें भूँजी)–न होना**–दरिद्र होना।

भाँज–स्त्री० भाँजनेकी क्रिया या भाव; मोड़, तह; भुनाई, बट्टा।

भाँजना–स० क्रि० तह करना; डोर आदिकी कई लड़ोंको एकमें मिलाकर बटना; घुमाना (मुगदर आदि)।

भांजा–पु० दे० 'भानजा'।

भाँजी–स्त्री० बहकाने, रुष्ट करनेवाली बात; चुगली। **मु०–मारना**–बाधा डालना।

भाँट–पु० दे० 'भाट'।

भांड–पु० [सं०] भाँड़ा, बरतन; घी, तेलका कुप्पा; दुकानका माल, सामान। –**शाला**–स्त्री० भंडार।

भाँड़–पु० दे० 'भाँड़ा'; * उपद्रव; हँसी; भंडाफोड़–'इहाँ कपटकर होइहि भाँड़ू'–प०; मसखरा; महफिलोंमें हँसी-मजाककी नकलें आदि करनेका पेशा करनेवाला; वह जिसके पेटमें बात न पचे; निर्लज्ज व्यक्ति। –**भगतिये**–पु० नाचने-गाने आदिका पेशा करनेवाले।

भाँड़ना–स० क्रि० बिगाड़ना, नष्ट करना; बदनाम करते फिरना; * घूम-घूमकर देखना। अ० क्रि० भटकना।

भाँड़ा–पु० बरतन; * भाँड़पन। **मु०–(भाँड़े) भरना**–पछताना; फूट-फूटकर रोना। –**मेँ जी देना**–किसीपर दिल लगा होना।

भांडागार–पु० [सं०] भंडार; गोदाम; खजाना।

भांडागारिक–पु० [सं०] भंडारी; खजांची।

भांडार–पु० [सं०] भंडार। –**पाल**–पु० (स्टोरकीपर) विविध वस्तुओंके संग्रह या भांडारकी रक्षा, देखरेख करनेवाला कर्मचारी।

भांडारिक, भांडारी(रिन्)–पु० [सं०] भंडारी; भंडारका रक्षक, अध्यक्ष; दे० स्कांधिक (स्टाकिस्ट)।

भाँड़्यौं*–पु० भाँड़पन।

भाँत–स्त्री० दे० 'भांति'।

भाँति–स्त्री० तरह, प्रकार, रंग; * मर्यादा। –**भाँतिके**–तरह-तरहके, रंग-बिरंगके।

भाँपना–स० क्रि० रंग-ढंगसे जान लेना, ताड़ना।

भाँपू–वि० भाँप जानेवाला, ताड़ जानेवाला।

भाँयँ-भाँयँ–पु० सन्नाटेमें होनेवाली आवाज।

भाँवना–स० क्रि० खरादपर घुमाना; * गढ़कर सुंदर बनाना।

भाँवर–स्त्री० परिक्रमा; विवाहके समय की जानेवाली अग्निकी परिक्रमा; खेत जोतते समय एक बार चारों ओर घूम आना। * पु० भौंरा। **मु०–भरना**–परिक्रमा करना।

भाँवरा–पु० परिक्रमा।

भाँवरि, भाँवरी*–स्त्री० चक्कर, परिक्रमा।

भाँस†–स्त्री० आवाज, स्वर, शब्द।

भा–* अ० चाहे, या। * अ० क्रि० हुआ। स्त्री० [सं०] चमक, दीप्ति; किरण; कांति।

भाइ*–पु० भाव; प्रेम; विचार। स्त्री० रीति, प्रकार; चाल-ढाल।

भाइप*–पु० भ्रातृत्व, भाईचारा।

भाई–पु० एक ही माँ-बापका बेटा, भ्राता, सहोदर; ज्ञातिबंधु; बराबरवाले(प्रियजन)का संबोधन। –**चारा**–पु० भाईका नाता या भाव, बंधुत्व। –**दूज**–स्त्री० भैयादूज। –**बंद**–पु० कुल-कुटुंबके लोग, ज्ञाति-जन, भाई। –**बिरादर**–पु० भाई-बंद।

भाउ*–पु० दे० 'भाव'।

भाऊ*–पु० भाव; प्रेम; स्वभाव; रूप; प्रभाव; वृत्ति;

महिमा; अस्थवा; भाई ।

भाएँ*–अ० (किसीकी) समझमें ।

भाकसी–स्त्री० भाड़, भट्ठी ।

भाकुर–पु० एक तरहकी मछली ।

भाखना*–अ० क्रि०, स० क्रि० कहना, बोलना ।

भाखा*–स्त्री० दे० 'भाषा' ।

भाग–पु० [सं०] हिस्सा, अंश; बँटवारा; चौथाई; परिधिका ३०वाँ भाग; राशिचक्रका ५०वाँ भाग; राशि या संख्या-विशेषको कई अंशोंमें बाँटनेकी क्रिया, तकसीम (गणित) । **–धेय**–पु० भाग; भाग्य; सौभाग्य; राजाको दिया जानेवाला कर; भाग पानेका अधिकारी । **–फल**–पु० भाज्यको भाजकसे भाग देनेपर प्राप्त संख्या, लब्धि । **–हर**–वि० हिस्सेदार । **–हारी(रिन्)**–वि० हिस्सेदार । पु० उत्तराधिकारी ।

भाग–पु० भाग्य, तकदीर; ललाट; पार्श्व; प्रातःकाल । **–भरा**–वि० भाग्यवान् । **–वंत***,**–वान**–वि० भाग्यवान्, खुशनसीब । मु० **–खुलना,–जागना**–तकदीर खुलना, भाग्योदय होना । **–फूटना**–बुरे दिन आना ।

भागड़–स्त्री० बहुतसे लोगोंका आतंकित होकर एक साथ भागना, भगदड़ ।

भागना–अ० क्रि० किसी जगहसे हट जानेके लिए दौड़ना, पलायन करना; चल देना; जान बचाना, हारकर पलायन करना ।

भागवत–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें मुख्यतः कृष्णकी कथा वर्णित है; देवीभागवत; भगवद्भक्त । वि० भगवत्संबंधी ।

भागाभाग–स्त्री० भागनेकी हलचल, भागड़ ।

भागिता–स्त्री० [सं०] (पार्टनरशिप) किसी कारबारमें साझा होना, साझेदारी, हिस्सेदारी ।

भागिनेय–पु० [सं०] भानजा ।

भागी(गिन्)–वि० [सं०] जिसमें भाग, हिस्से हों; हिस्सेदार; शामिल, शरीक (पापभागी); मालिक, अधिकारी; गौण । पु० हिस्सेदार ।

भागीरथ–वि० [सं०] भगीरथ-संबंधी । * पु० दे० 'भगीरथ' ।

भागीरथी–स्त्री०[सं०] गंगा; गंगाकी वह शाखा जो बंगालमें बहती है ।

भाग्य–वि० [सं०] विभाज्य; भाग, हिस्सेका अधिकारी । पु० शुभाशुभसूचक कर्मजन्य अदृष्ट, नियति, तकदीर; सौभाग्य । **–क्रम**–पु० भाग्यका क्रम, फेर । **–दा**–स्त्री० (लॉटरी) घुड़दौड़ आदिका परिणाम देखकर या चिट्ठी निकालकर टिकट खरीदनेवालोंमें इनाम बाँटनेकी पद्धति । **–दोष**–पु० भाग्यका दोष, तकदीरकी खराबी । **–पत्रक**–पु० (लॉट) वह चिट्ठी या कागजकी गोली आदि जिसे फेंककर या उठाकर किसी मालके बँटवारे, किसीकी नियुक्ति, चुने जाने आदिका विनिश्चय किया जाता है । **–बल**–पु० भाग्यका बल, तकदीर । **–लिपि**–स्त्री० तकदीरकी लिखावट, अदृष्ट-रेखा । **–वश,–वशात्**–अ० भाग्यके बल, किस्मतसे । **–वाद**–पु० भाग्यके अनुसार ही शुभाशुभकी प्राप्ति माननेका सिद्धान्त । **–विधाता(तृ)**–पु० तकदीर बनानेवाला, अदृष्टका नियंता । **–विपर्यय**–पु० भाग्यका उलट-फेर, दिनका फेर । **–विप्लव**–पु० दुर्भाग्य । **–शाली(लिन्)**–वि० भाग्यवान् । **–संपत्**–स्त्री० सौभाग्य । **–हीन**–वि० अभागा, बदनसीब ।

भाग्यवान्(वत्)–वि० [सं०] भाग्यशाली, खुशकिस्मत ।

भाग्योदय–पु० [सं०] भाग्यका खुलना, जागना ।

भाजक–पु० [सं०] भाग करनेवाला, विभाजक, वह संख्या जिससे किसी राशिको भाग दें ।

भाजन–पु०[सं०] बरतन, पात्र; योग्य अधिकारी; आधार; एक तौल, आढक; विभाग करना ।

भाजना*–अ० क्रि० दे० 'भागना' ।

भाजित–वि० [सं०] भाग किया हुआ, विभक्त ।

भाजी–स्त्री० [सं०] माँड़; साग आदि ।

भाज्य–वि० [सं०] भाग करने योग्य, विभाज्य । पु० वह अंक जिसमें भाग दिया जाय ।

भाट–पु० राजाओं आदिके यश, वंश, चरितका गान करनेवाला, वंदी; एक जाति जो अपने जजमानोंका वंशचरित सुनाने, स्तुतिपरक तुकबंदी आदि करनेका पेशा करती है; झूठी बड़ाई करनेवाला, चापलूस । स्त्री० नदीके किनारोंके बीचकी जमीन, पेटा; नदीकी धारा ।

भाटक–पु० [सं०] भाड़ा; (रेंट) मकान या जमीनका किराया, लगान । **–राशि**–स्त्री० (रेंटल) किरायेसे होनेवाली समस्त आय, किरायेके रूपमें प्राप्त धनराशि ।

भाटा–पु० समुद्रके पानीके नियतकालिक चढ़ावका उतार, ज्वारका उलटा; पथरीली जमीन ।

भाट्यौ*–पु० भाटका कार्य, स्तुतिपाठ ।

भाठ–स्त्री० नदीकी बाढ़में बहकर आनेवाली मिट्टी जो किनारेकी जमीनपर जम जाती है; धारा ।

भाठा–पु० दे० 'भाटा'; गढा ।

भाठी–स्त्री० भाटा; * दे० 'भट्ठी'; शराब बनानेकी जगह ।

भाड़–पु० भड़भूँजेकी भट्ठी जिसमें बालू गरमकर वह दाना भूनता है । मु० **–झोंकना**–तुच्छ काम करना; निरर्थक श्रम करना । **–में जाय**–चूल्हेमें जाय । **–में झोंकना,–में डालना**–चूल्हेमें डालना, नष्ट करना; त्यागना ।

भाड़ा–पु० वह रकम जो किसी चीजको इस्तेमाल करनेके बदले दी जाय, किराया; गाड़ी आदिका किराया । **(भाड़े)-का टट्टू**–उजरतपर काम करनेवाला; वह आदमी जिसे पैसा देकर जो चाहे काम ले ।

भाण–पु० [सं०] रूपक(दृश्यकाव्य)का एक भेद ।

भात–पु० उबाला हुआ चावल; ब्याहकी एक रस्म, वरके पिताका कन्याके पिताके घर जाकर कच्ची रसोई खाना ।

भाथा–पु० तीर रखनेकी थैली, तरकश; बड़ी भाथी ।

भाथी–स्त्री० चमड़ेकी धौंकनी ।

भादों, भादौं–पु० सावनके बादका महीना, भाद्रपद ।

भाद्र, भाद्रपद–पु० [सं०] भादोंका महीना ।

भान–पु० * सूर्य; [सं०] प्रकाश; दीप्ति; ज्ञान; प्रतीति ।

भानजा–पु० बहिनका पुत्र ।

भानना*–स० क्रि० तोड़ना; काटना; नष्ट करना ।

भानमती–स्त्री० जादूके खेल करनेवाली, जादूगरनी ।

−का कुनबा−जहाँ-तहाँसे लिये हुए बेमेल उपादानोंसे बनी वस्तु । **−का पिटारा**−वह जिसमें तरह-तरहकी चीजें मौजूद हों ।

भानवी*−स्त्री० यमुना ।

भानवीय−वि० [सं०] सूर्य-संबंधी । पु० दाहिनी आँख ।

भाना−अ० क्रि० रुचना, अच्छा लगना; फबना, * भान होना, जान पड़ना । स० क्रि० खरादपर चढ़ाना; चमकाना ।

भानु−पु० [सं०] सूर्य; प्रभा; किरण; राजा; स्वामी; विष्णु; शिव । **−ज**−पु० शनि; यम । **−जा,−तनया**−स्त्री० यमुना । **−दिन,−वार**−पु० रविवार । **−पाक**−पु० औषधको धूपमें रखकर तैयार करने या पकानेकी क्रिया । **−प्रताप**−पु० रामायणमें वर्णित एक राजा जो कहा जाता है कि ब्राह्मणोंके शापसे दूसरे जन्ममें रावण हुआ । **−मुखी**−स्त्री० सूर्यमुखी । **−सुत**−पु० यम; शनि । **−सुता**−स्त्री० यमुना ।

भानुमती−स्त्री० [सं०] गंगा; दुर्योधनकी पत्नी; विक्रमादित्यकी रानी जो इंद्रजाल विद्याकी पंडिता थी ।

भानुमान् (मत्)−वि०[सं०] तेजोमय, दीप्तिमान्; सुंदर । पु० सूर्य; कृष्णका एक पुत्र ।

भाप, भाफ−स्त्री० पानीको खौलानेसे निकलनेवाला वाष्पीय रूप, खौलते हुए जलसे ऊपर उठनेवाला सूक्ष्म जलकण, वाष्प; ठोस या तरल पदार्थका अधिक तापसे होनेवाला गैस रूप ।

भाभरा*−वि० लाल रंगका ।

भाभी−स्त्री० बड़े भाईकी स्त्री, भावज ।

भाम−पु०[सं०]दीप्ति, चमक;सूर्य;क्रोध; * स्त्री० भामिनी ।

भामक−पु० [सं०] बहनोई ।

भामता*−पु० भावता, प्रियतम ।

भामती*−स्त्री० भावती, प्रियतमा ।

भामा−स्त्री० [सं०] क्रोधी स्त्री; सत्यभामा; * स्त्री ।

भामिन*−स्त्री० दे० ‘भामिनी’ ।

भामिनी−स्त्री०[सं०] क्रोध करनेवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री ।

भामी (मिन्)−वि० [सं०] क्रोधी; क्रुद्ध; सुंदर ।

भाय*−पु० भाई; भाव; इच्छा; प्रेम; परिमाण; दर; ढंग ।

भायप−पु० भाईचारा ।

भाया*−वि० जो अच्छा लगता हो, प्यारा ।

भारंगी−स्त्री० [सं०] एक पौधा ।

भार−पु० [सं०] बोझ, गुरुत्व; राशि, ढेर; जिम्मेदारी; सँभाल; कठिन कार्य; २ हजार पलका एक वजन; बहँगीका बोझ; बहँगी; विष्णु; ढोल बजानेका एक ढंग; * आश्रय; भाड़ । वि० बोझसा लगनेवाला, कठिन, कष्टरूप । **−केंद्र**−पु० गुरुत्वकेंद्र, भारका मध्यबिंदु । **−क्षम**−वि० भार वहन करनेमें समर्थ (पोतादि) । **−ग्रस्त संपदा**−स्त्री० (एनकंबर्ड एस्टेट) वह संपत्ति या जायदाद जिसपर ऋणका भार हो गया हो । **−जीवी(विन्)**−पु० भारवाहक ।**−तुला**−स्त्री० स्तंभके नौ भागोंमेंसे बीचका भाग । **−दंड**−पु० बहँगी ।**−भृत्**−वि० भार वहन करनेवाला । **−यष्टि**−स्त्री० बहँगी । **−वाह,−वाहक,−वाहिक**−पु० बोझ ढोनेवाला, मोटिया ।**−वाहन**−पु०लद्दू पशु; गाड़ी । **−वाही(हिन्)**−वि० दे० भारवाहक’ । **−शंकु**−पु० लटकन, लिवर ।**−सह**−वि० भारी बोझ उठानेमें समर्थ । पु० गधा । **−हर**−पु० बोझ उठानेवाला ।**−हानि**−स्त्री० (लॉस ऑफ वेट) भार या वजनमें होनेवाली कमी । **−हारी(रिन्)**−पु० विष्णु; कृष्ण । **मु० (किसीका)−उठाना**−दायित्व ग्रहण करना । **−उतरना**−किसी कठिन कर्तव्यका पूरा होना; ऋणसे मुक्ति मिलना । **−देना**−बोझ डालना ।

भारत−पु० [सं०] भरतवंशमें उत्पन्न जन; भारतवर्ष, हिंदुस्तान; (भरतवंशका चरितरूप ग्रंथ) महाभारत; नाट्यशास्त्र (भरतकृत); नट; संग्राम (हिं०) ।−‘घरी एक भारत भा, भा असवारन्ह मेल’−प० । **−खंड**−पु० दे० ‘भरतखंड’ । **−महासागर**−पु० भारतवर्षके दक्षिणमें अवस्थित महासमुद्र ।**−माता(तृ)**−स्त्री० भारतवासियोंकी जननीरूप भारतभूमि । **−वर्ष**−पु० जंबूद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक, हिंदुस्तान । **−वासी(सिन्)**−पु० भारतमें बसनेवाला, हिंदुस्तानी । **−संतान**−स्त्री० भारतमें उत्पन्न जन, भारतवासी ।

भारतवर्षीय−वि० [सं०] भारतवर्ष-संबंधी ।

भारति*−स्त्री० दे० भारती ।

भारती−स्त्री० [सं०] वाणी; वाणीकी अधिष्ठात्री, सरस्वती; एक वृत्ति या वर्णनशैली (सा०); भारतमाता ।

भारतीय−वि० [सं०] भारत-संबंधी । पु० भारतवासी ।

भारतीयीकरण−पु० [सं०] भारतीय बनाना; संस्था या विभागविशेषके कर्मचारियोंमें भारतीयोंकी प्रधानता कर देना ।

भारथ*−पु० युद्ध; अर्जुन; दे० ‘भारत’ ।

भारथी*−पु० सिपाही ।

भारद्वाज−वि० [सं०] भरद्वाजके गोत्र या वंशमें उत्पन्न । पु० द्रोणाचार्य; अगस्त्य; मंगल ग्रह; भरदूल पक्षी ।

भारना*−स० क्रि० बोझ लादना; दबाना ।

भारा*−वि० भारी; विशाल; अधिक; असह्य । † पु० भाड़ा; दे० ‘भार’ ।

भाराक्रांत−वि० [सं०] बोझसे दबा हुआ ।

भारी−वि० कठिन; बड़ा; बहुत ज्यादा; गहरा; देरमें पचनेवाला; भाररूप, कष्टकर ।**−पन**−पु० भारी होनेका भाव; बोझ, गरिष्ठता । **−भरकम**−वि० बड़े डील-डौलका । **मु०−रहना**−चुप रहना । **(···पर)−होना**−जबर्दस्त पड़ना, (−से) प्रबल होना (अकेला दसपर भारी है) ।

भारोद्वह−पु० [सं०] बोझ ढोनेवाला, मोटिया ।

भार्गव−वि० [सं०] भृगु-संबंधी या भृगुसे उत्पन्न । पु० भृगुके वंशमें उत्पन्न पुरुष; शुक्राचार्य; परशुराम; मार्कंडेय; जमदग्नि; शिव; एक प्राचीन जनपद; धनुर्धारी; कुम्हार; ज्योतिषी; हाथी; एक हिंदू जाति । **−प्रिय**−पु० हीरा ।

भार्गवी−स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; पार्वती; देवयानी; दूब ।

भार्गवीय−वि० [सं०] भृगु-संबंधी ।

भार्गवेश−पु० [सं०] परशुराम ।

भार्या−स्त्री०[सं०] विवाहिता स्त्री, पत्नी ।**−द्रोही(हिन्)**−वि० पत्नीके प्रति द्वेष-भाव रखनेवाला ।

भार्याटिक–वि० [सं०] स्त्रीके शासनमें रहनेवाला ।

भार्यात्व–पु० [सं०] पत्नीत्व ।

भाल–पु० भाला; गाँसी; भालू; [सं०] माथा, ललाट; तेज, अंधकार । –**चंद्र**–पु० शिव; गणेश । –**नयन**,–**नेत्र**,–**लोचन**–पु० शिव ।

भालका*–स्त्री० दे० 'भलका' ।

भालना–स० क्रि० भली भाँति देखना; तलाश करना (केवल 'देखना'के साथ प्रयुक्त) ।

भाला–पु० बरछा, नेजा । –**बरदार**–पु० भाला धारण करने, चलानेवाला ।

भालि*–स्त्री० बरछी; शूल ।

भाली–स्त्री० भालेकी गाँसी; शूल ।

भालु–पु० भालू; [सं०] सूर्य ।

भालुक, भाल्लुक–पु० [सं०] रीछ, भालू ।

भालू–पु० एक वन्य हिंस्र जंतु जिसके शरीरपर लंबे-लंबे बाल होते हैं, रीछ ।

भालूक, भाल्लूक–पु० [सं०] रीछ ।

भावंता*–पु० प्रेमपात्र; होनहार ।

भाव–पु० दर, निर्ख; [सं०] जन्म, उत्पत्ति; होना, सत्ता, अभावका उलटा; चित्तमें उत्पन्न होनेवाला विकार, हर्ष, शोकादि मनोविकार; भावना; जो कुछ मनमें सोचा जाय, खयाल; शब्द या वाक्यका अर्थ, आशय; राग, प्रेम; भावसूचक अंगचेष्टा, भंगी; अवस्था, दशा; हैसियत, रूप (दासभाव); स्वभाव; श्रद्धा; भक्ति; जन्मकुंडलीके विभिन्न स्थान (तनु, धन आदि); गीतका भाव बतानेवाली अंगचेष्टा । –**गम्य**–वि० मनसे जानने योग्य । –**ग्राही**-(**हिन्**)–वि० भाव, तात्पर्यको समझनेवाला, रसज्ञ । –**ज**–पु० काम, कामदेव । –**ज्ञ**–वि० मनोभाव समझनेवाला । –**प्रधान**–वि० जिसमें भावकी प्रधानता हो; जिसकी भावानुभूति अधिक तीव्र हो, भाविक । –**प्रवण**–वि० भावप्रधान, भावुक । –**प्रवणता**–स्त्री० भावप्रधान होना; भावोंके वश, भावोंसे परिचालित होनेकी प्रवृत्ति; भावुकता । –**बोधक**–वि० भाव बताने या प्रकट करनेवाला । –**भक्ति**–स्त्री० श्रद्धा-भक्ति, आदर । –**मैथुन**–पु० मनमें मैथुनका विचार रखना (जैन) । –**वाचक**–वि० किसी चीजका भाव, धर्म गुण आदि बतानेवाला । –**वाच्य**–पु० क्रियाका वह रूप जिसमें वाक्यका उद्देश्य कर्ता या कर्म न होकर भाव होता है । –**व्यंजक**–वि० भावबोधक । –**शबलता**–स्त्री० एक अलंकार जिसमें भावोंकी संधि होती है । –**शांति**–स्त्री० एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भावकी शांतिके साथ दूसरेका उदय होता है और शांतिमें ही चमत्कार होता है । –**शुद्धि**–स्त्री० भावकी सचाई, नेकनीयती । –**शून्य**–वि० अनासक्त । –**संधि**–स्त्री० वह स्थिति जब मनमें एक साथ कई प्रबल भाव उत्पन्न हों ।

भावइ*–अ० मनमें आये, जी चाहे तो ।

भावक–* अ० थोड़ा । वि० [सं०] भावना करनेवाला; प्रेमी; उत्पादक; श्रेयस्कर; रसज्ञ; * भावभरा; भक्त । पु० भाव, मनोविकार ।

भावज–स्त्री० बड़े भाईकी स्त्री, भौजाई । पु० [सं०] दे० 'भाव'में ।

भावता*–वि० जो मनको भाये, अच्छा लगे । पु० प्रेमपात्र, प्रियतम । (भावती = प्रियतमा ।)

भावन–पु०[सं०] निमित्त कारण; स्रष्टा; चिंतन, कल्पना; किसी चूर्णको रससे तर करके घोटना; सुवासित करना; अनुभूति । * वि० भाने, अच्छा लगनेवाला ।

भावना–* अ० क्रि० दे० 'भाना' । स्त्री० [सं०] चिंतन, ध्यान, खयाल, कल्पना; उत्पादन; रुचिवर्धन; इच्छा, इरादा; स्मरण; प्रमाण; कौआ; जल; चूर्ण आदिको रस, क्वाथ आदिके साथ बारबार तर करके घोटना ।

भावनामय–वि० [सं०] भावनायुक्त; काल्पनिक ।

भावनि*–स्त्री० जो जीमें आये, जो कुछ सोचा हो ।

भावनीय–वि० [सं०] चिंतनके योग्य, सोचने-विचारने या कल्पनाके योग्य ।

भावांतर–पु० [सं०] मनकी अवस्था दूसरी हो जाना; अर्थांतर ।

भावानुग–वि० [सं०] भावका अनुसरण करनेवाला ।

भावाभास–पु० [सं०] बनावटी भाव; अनुपयुक्त स्थानमें भावका दिखलाया जाना (सा०) ।

भावार्थ–पु० [सं०] वह अर्थ जिसमें प्रत्येक शब्दका अर्थ न देकर समूचे वाक्यका आशय दे दिया जाय, मतलब, तात्पर्य ।

भाविक–वि० [सं०] भावनाप्रधान, भावुक; स्वाभाविक; * मर्मज्ञ । पु० एक अर्थालंकार–भूत या भविष्यकी घटनाओंका इस तरह वर्णन करना मानो वे आँखोंके सामने घटित हो रही हों ।

भावित–वि० [सं०] सोचा हुआ, चिंतित; जाना हुआ; प्रमाणित; प्राप्त; शोधित; जिसमें किसी रस आदिकी भावना दी गयी हो; वासित; मिश्रित; व्यक्त किया हुआ ।

भावी–स्त्री० होनी, होनेवाली बात ।

भावी(विन्)–वि० [सं०] होनेवाला, होनहार; भविष्यत् ।

भावुक–वि० [सं०] भावी; जो जल्दी भावों, विशेषतः कोमल, करुण भावोंके अधीन हो जाय, कोमलचित्त; सहृदय, रसज्ञ; मंगलयुक्त ।

भावुकता–स्त्री० [सं०] भावुक होना, भाव-प्रवणता ।

भावै*–अ० दे० 'भावइ' ।

भावोदय–पु० [सं०] एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भावकी शांति और दूसरेका उदय हुआ हो और उदयमें ही चमत्कार हो (सा०) ।

भावोद्दीपक–वि० [सं०] भावोंको उत्तेजित करनेवाला ।

भावोन्मत्त–वि० [सं०] भावविह्वल ।

भावोन्मेष–पु० [सं०] भावका उदय ।

भाव्य–त्रि० [सं०] होनेवाला, भावी; भावना करने योग्य, सिद्ध करने योग्य । पु० होनी ।

भाष–पु० भाषा, वाणी ।

भाषक–पु० [सं०] कहने, बोलनेवाला (समासांतमें) ।

भाषण–पु० [सं०] बोलना, कथन; व्याख्यान; कृपापूर्ण शब्द । –**प्रतियोगिता**–स्त्री० विषय-विशेषपर बोलनेकी प्रतियोगिता ।

भाषना*–स० क्रि० बोलना, कहना ।

भाषांतर–पु० [सं०] अनुवाद, उलथा, तर्जुमा । **–कार**–पु० उलथा करनेवाला, अनुवादक ।

भाषा–स्त्री० [सं०] भाव प्रकट करनेका साधन; किसी विशेष देश या जन-समाजमें प्रचलित शब्दावली और उसे बरतनेका ढंग, बोली; प्रादेशिक भाषा या बोली; हिंदी; व्यक्तिविशेषके लिखने-बोलनेका ढंग; परिभाषा; शैली; सरस्वती; अर्जीदावा; एक रागिनी । **–ज्ञान**–पु० शब्द, शब्दार्थ और व्याकरणका ज्ञान ।**–तत्त्व**–पु०भाषा-विज्ञान । **–बद्ध**–वि० भाषामें लिखित ।**–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० वह विज्ञान जिसमें भाषाकी उत्पत्ति, रूपपरिवर्तन आदि विषयोंका विचार किया गया हो । **–विद्**–पु० भाषा या भाषाओंका अच्छा ज्ञाता ।**–सम**–पु० एक शब्दालंकार–शब्दोंकी ऐसी योजना जिससे वाक्य कई भाषाओंका माना जा सके ।

भाषित–वि० [सं०] कथित, उक्त । पु० कथन, बोली ।

भाषिता(तृ)–पु० [सं०] बोलने, बात करनेवाला ।

भाषी(षिन्)–वि० [सं०] (समासके अंतमें) बोलनेवाला (हिंदीभाषी, बँगलाभाषी) ।

भाष्य–पु० [सं०] बोलना; भाषामें लिखित कोई ग्रंथ; सूत्र या मूल ग्रंथकी व्याख्या, विवृति; व्याख्या । वि० कहने योग्य । **–कार,–कृत्**–पु० भाष्य लिखनेवाला ।

भासंत–वि० [सं०] प्रकाशमान; सुंदर । पु० सूर्य; चंद्र; नक्षत्र ।

भासंती–स्त्री० [सं०] तारा ।

भास–पु० [सं०] चमक, दीप्ति; कल्पना; गोष्ठ; गीध; मुर्गा; स्वप्नवासवदत्ता आदिके कर्ता, कालिदाससे पूर्ववर्ती (संस्कृत) महाकवि; शकुंत पक्षी ।

भासक–पु० [सं०] चमकानेवाला, प्रकाशक ।

भासना*–अ० क्रि० प्रतीत होना; प्रकाशित होना; डूबना, धँसना–'यह मत दै गोपिन कहँ आवहु बिरह नदीमें भासति'–सू० । स० क्रि० बोलना, कहना ।

भासमंत*–वि० चमकदार !

भासमान–वि० [सं०] जान पड़ता हुआ; दिखाई देता हुआ । * पु० सूर्य ।

भासित–वि० [सं०] प्रकाशित, चमकीला ।

भासी(सिन्)–वि० [सं०] चमकनेवाला ।

भासुर–वि० [सं०] चमकीला, दीप्तिमान् ; भयंकर । पु० वीर; स्फटिक; कुष्ठौषध ।

भास्–स्त्री० [सं०] चमक, दीप्ति; किरण; आभास; प्रतिबिंब; इच्छा । **–कर**–पु० सूर्य; वीर; सिद्धांतशिरोमणिके कर्ता प्रसिद्ध ज्योतिषी (११ वीं-१२ वीं शती) । **–कर-द्युति**–पु० विष्णु ।**–कर-प्रिय**–पु० लाल । **–करि**–पु० शनि ग्रह ।

भास्कर–पु० धातु, पत्थर आदिको खोद, छीलकर मूर्ति आदि बनानेवाला; दे० 'भास'में ।

भास्कर्य–पु० धातु, पत्थर आदिकी मूर्ति बनानेकी कला ।

भास्वर–वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकीला । पु० सूर्य; दिन; अग्नि ।

भास्वान्(स्वत्)–वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकता हुआ । पु० सूर्य; वीर; दीप्ति ।

भिंग–* पु० दे० 'भृंग'; बिलनी ।† स्त्री० बाधा ।**–राज**–पु० दे० 'भृंगराज' ।

भिँगाना–स० क्रि० तर, सिक्त करना ।

भिँजाना†–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिँजोना, भिँजोवना*–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिंड–पु० [सं०] भिंडी ।

भिंडिपाल–पु० दे० 'भिंदिपाल' ।

भिंडी–स्त्री० [सं०] एक क्षुप जिसकी फली तरकारीके काम आती है, रामतरोई ।

भिंदपाल, भिंदिपाल–पु० [सं०] हाथसे फेंका जानेवाला छोटे डंडे जैसा अस्त्र; ढेलवाँस ।

भिंसार–पु० सबेरा, उषाकाल ।

भिआ*–पु० भाई ।

भिक्षण–पु० [सं०] भीख माँगना ।

भिक्षा–स्त्री० [सं०] माँगना, याचना, भीख; सेवा; भृति, मजदूरी; भिक्षु, संन्यासीको भोजनार्थ दिया जानेवाला (सिद्ध) अन्न (करना, कराना) । **–चर**–पु० भिक्षुक । **–चर्या**–स्त्री० भीख माँगना, भिक्षावृत्ति । **–जीवी (विन्)**–पु० भीख माँगकर जीविका चलानेवाला । **–पात्र**–पु० भीख माँगनेका बरतन, कपाल; भिक्षाका अधिकारी । **–भांड**–पु० भीख माँगनेका बरतन । **–भाजन**–पु० दे० 'भिक्षापात्र' । **–वृत्ति**–स्त्री० भीख माँगकर गुजर करना, भिखारीका जीवन ।

भिक्षाटन–पु० [सं०] भीख माँगनेके लिए फिरना ।

भिक्षान्न–पु० [सं०] भिक्षामें प्राप्त अन्न ।

भिक्षार्थी(र्थिन्)–वि०, पु० [सं०] भीख माँगनेवाला, भिखारी ।

भिक्षार्ह–वि० [सं०] भिक्षा देने योग्य ।

भिक्षित–वि० [सं०] भिक्षारूपमें प्राप्त ।

भिक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] भीख माँगनेवाला ।

भिक्षु–पु० [सं०] भीख माँगनेवाला; संन्यासी; बौद्ध संन्यासी । **–चर्या**–स्त्री० भिक्षावृत्ति । **–रूप**–पु० महादेव । **–संघ**–पु० बौद्ध संन्यासियोंका संघ ।**–संघाती**–स्त्री० भिक्षुकके कपड़े, चीवर, गुदड़ी । **–सूत्र**–पु० बौद्ध भिक्षुओंके लिए बने हुए नियमोंका संग्रह ।

भिक्षुक–पु० [सं०] भीख माँगनेवाला, भिखारी ।

भिक्षुकी–स्त्री० [सं०] भिक्षुक स्त्री ।

भिक्षुणी–स्त्री० [सं०] बौद्ध संन्यासिनी ।

भिखमंगन, भिखमंगिन–स्त्री० भिखारिन, भिक्षुकी ।

भिखमंगा–पु० भीख माँगनेवाला ।

भिखारिणी–स्त्री० दे० 'भिखारिन' ।

भिखारिन, भिखारिनी–स्त्री० भिक्षुकी, भिखमंगन ।

भिखारी–पु० भीख माँगनेवाला, भिक्षुक । वि० कंगाल, अकिंचन ।

भिखिया*–स्त्री० भीख ।

भिखियारी†–पु० भिखारी ।

भिगाना–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिगोना–स० क्रि० पानी आदिसे तर करना ।

भिच्छा*–स्त्री० दे० 'भिक्षा' ।

भिच्छु*–पु० दे० 'भिक्षु' ।

भिच्छुक*–पु० दे० 'भिक्षुक'।

भिजवना*–स० क्रि० भिगानेका काम दूसरेसे कराना; भिगोना।

भिजवाना–स० क्रि० भेजनेका काम दूसरेसे कराना।

भिजाना, भिजोना*–स० क्रि० दे० 'भिगोना'।

भिटनी–स्त्री० स्तनका अग्रभाग, चूचुक।

भिड़ंत–स्त्री० मुठभेड़, टक्कर।

भिड़–स्त्री० ततैया, बर्रे। **–का छत्ता**–ऐसा कुल, कुटुंब जिसके एक आदमीको छेड़िये तो सब लड़नेको अमादा हो जायँ।

भिड़ना–अ० क्रि० टकराना; सटना; लड़ना; गुथना।

भितरिया†–वि० भीतर रहने, आने-जानेवाला, अंतरंग। पु० वल्लभ-कुलके मंदिरोंमें भीतर रहनेवाला पुजारी।

भितल्ला–पु० कपड़ेके भीतरका पल्ला, अस्तर। वि० भीतरी।

भितल्ली–स्त्री० चक्कीके नीचेका पाट; दे० 'भितल्ला'।

भिताना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना।

भित्ति–स्त्री० [सं०] भीत, दीवार; नीवँ; चित्राधार; भेद, दरार; खंड; टूटी हुई वस्तु; चटाई; दोष; अवसर। **–चित्र**–पु० दीवारपर बना हुआ चित्र। **–चौर**–पु० सेंध मारनेवाला चोर।

भित्तिक–वि० [सं०] तोड़नेवाला। पु० दीवार।

भित्तिका–स्त्री० [सं०] दीवार; छिपकली।

भिद*–पु० भेद, अंतर।

भिदना–अ० क्रि० छिदना, विद्ध होना; घुसना, पैवस्त होना।

भिदुर–पु० [सं०] भिदना, फटना; नष्ट होना; पाकरका पेड़; वज्र; हाथी बाँधनेकी जंजीर। वि० छेदने, फाड़नेवाला; तुनुक; मिश्रित।

भिद्–वि० [सं०] (समासांतमें) तोड़ने, नष्ट करनेवाला। स्त्री० खंडन; अंतर; प्रकार।

भिद्य–वि० [सं०] भेदनीय। पु० एक नदी; करारोंको काटती हुई बहनेवाली नदी।

भिनकना–अ० क्रि० मक्खियोंका भिनभिनाना; किसी (गंदी) चीजपर मक्खियोंके झुंडका बैठना; बहुत गंदा होना; घिन लगना।

भिनभिनाना–अ० क्रि० मक्खियोंका 'भिन्न-भिन्न' करना।

भिनसार, भिनुसार*–पु० प्रातःकाल, भोर।

भिनहीं†–अ० सबेरे, तड़के।

भिन्न–वि० [सं०] अलग, जुदा; छिन्न, खंडित; प्रस्फुटित; दूसरा; ढीला किया हुआ; मिश्रित; परिवर्तित; मस्त(हाथी)। पु० वह संख्या जो पूर्ण संख्यासे कम हो (गणित); रत्नका एक दोष; जख्म; फूल। **–क्रम**–वि० क्रमभंग दोषयुक्त। पु० क्रमभंग। **–देशीय**–वि० दूसरे देशका। **–भिन्नात्मा(त्मन्)**–पु० चना। **–मतावलंबी(बिन्)**–पु० दूसरे मत, मजहबको माननेवाला। **–रुचि**–वि० जिसकी रुचि भिन्न हो। **–हृदय**–वि० जिसका हृदय छिद गया हो।

भिन्नता–स्त्री० [सं०] भिन्न होनेका भाव, भेद, बिलगाव।

भिन्नाना–अ० क्रि० चकराना।

भिन्नार्थ–वि० [सं०] भिन्न उद्देश्यवाला; स्पष्ट अर्थवाला।

भिन्नोदर–पु० [सं०] सौतेला भाई।

भियना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना।

भिया–स्त्री० [सं०] भय। * पु० दे० 'भिआ' (भाई)।

भिरंग*–पु० दे० 'भृंग'।

भिरना*–अ० क्रि० दे० 'भिड़ना'।

भिरिंग*–पु० दे० 'भृंग'।

भिलनी–स्त्री० दे० 'भीलनी'।

भिलावाँ–पु० एक जंगली पेड़ जिसका फल दवाके काम आता है और उससे तेल भी निकाला जाता है।

भिल्ल–पु० [सं०] भील। **–भूषण**–पु० घुँघची।

भिल्ली–स्त्री० [सं०] लोध।

भिश्त*–पु० दे० बिहिश्त'।

भिश्ती–पु० मशकसे पानी ढोनेवाला, सक्का।

भिषक(ज्)–पु० [सं०] वैद्य, चिकित्सक; दवा, उपचार। **–पाश**–पु० अताई वैद्य। **–प्रिया**–स्त्री० गुड़ुच।

भिषग्विद्–पु० [सं०] चिकित्सक, वैद्य।

भिष्टा, भिसटा†–स्त्री० मल, विष्ठा।

भिसत*–स्त्री० बिहिश्त, स्वर्ग।

भिस्ती–पु० दे० 'भिश्ती'।

भिस्स–स्त्री० कमलकी जड़।

भींगना–अ० क्रि० दे० 'भीगना'।

भींगी*–पु० दे० 'भृंगी'।

भींचना*–स० क्रि० खींचना, दबाना; बंद करना (आँख)।

भींजना*–अ० क्रि० भीगना; स्नान करना; प्रविष्ट होना; मेल-जोल बढ़ाना; गद्गद होना।

भींट–पु० दे० 'भीट'। स्त्री० दीवार।

भी–अ० अवश्य; तक; अधिक। स्त्री० [सं०] भय, भीति; आशंका। **–कर**–वि० भयोत्पादक।

भीउँ*–पु० दे० 'भीम'।

भीख–स्त्री० भिक्षा, याचना; माँगनेसे प्राप्त अन्नादि, खैरात।

भीखन*–वि० दे० 'भीषण'।

भीखम*–पु० वि० दे० 'भीष्म'। वि० दे० 'भीषण'।

भीगना–अ०, क्रि० पानीसे तर होना, गीला होना। **–(भीगी) बिल्ली**–भय या स्वार्थसे अति नम्र, दीन बना हुआ। **–रात**–आधी रातके बादकी रात जो अधिक ठंडी होती है।

भीजना*–अ० क्रि० 'भीगना'।

भीट–पु० दे० 'भीटा'।

भीटा–पु० टीला, ढूह; टीलेकी शकलकी जमीन; पानकी बेल चढ़ानेके लिए बनाया हुआ टीला।

भीड़–स्त्री० आदमियोंका जमाव, मजमा, जनसमूह; संकट (कटना, पड़ना)–**भड़क्का**–पु० दे० 'भीड़-भाड़'। **–भाड़**–स्त्री० भीड़, मजमा; धक्कमधक्का।

भीड़न*–स्त्री० मलनेकी क्रिया।

भीड़ना*–स० क्रि० मलना; भिड़ाना; मिलाना।

भीड़ा*–वि० तंग, संकीर्ण।

भीडी*–स्त्री० भिंडी।

भीत–वि० [सं०] डरा हुआ, भयग्रस्त। स्त्री० [हिं०] दीवार; छत। मु०**–में दौड़ना**–शक्तिसे बाहर, असंभव

कार्य करनेमें प्रवृत्त होना।

भीतर–अ० अंदर; घरके अंदर; मध्यमें। पु० अंतर, अंतःकरण; जनानखाना। **–का**–अंदरका; मनका; अप्रकट, मनमें रहनेवाला। **–ही भीतर**–मन ही मन।

भीतरि*–अ० भीतर।

भीतरिया–पु० दे० 'भितरिया'।

भीतरी–वि० भीतरका, अंदरूनी; मनका; अप्रकट।

भीति–स्त्री०[सं०] भय, डर; कंप।**–कर,–कारी(रिन्)**–वि० भयंकर। **–कृत्**–वि० भयोत्पादक।

भीती*–स्त्री० भय; दीवार।

भीन*–पु० भोर, गिनसार।

भीनना–अ० क्रि० भीगना; पैवस्त होना, जज्ब होना; भर जाना।

भीनी–वि० स्त्री० हल्की, मीठी (खुशबू)।

भीम–वि० [सं०] डरावना, भय उपजानेवाला; विशालकाय। पु० भयानक रस; शिव; परमेश्वर; पाँचों पांडवोंमेंसे दूसरे जो वायुके पुत्र माने जाते हैं, भीमसेन; दमयंतीके पिता विदर्भनरेश; कुंभकर्णका बेटा। **–कर्मा (र्मन्)**–वि० डरावने काम करनेवाला; महा पराक्रमी। **–कुमार**–पु० घटोत्कच। **–दर्शन**–वि० डरावनी शकलवाला, भीमरूप। **–द्वादशी**–स्त्री० माघ शुक्ला द्वादशी। **–नाद**–वि० डरावनी आवाजवाला। पु० डरावनी आवाज; शोर; प्रलयकालमें प्रकट होनेवाले सात बादलोंमेंसे एक। **–पराक्रम,–विक्रम**–वि० जिसका पराक्रम दूसरोंके दिलमें भय पैदा करे, महाबली। **–पूर्वज**–पु० युधिष्ठिर। **–रथी**–स्त्री० ७७वें वर्षके ७वें मासकी ७वीं रात जिसे पार करना बहुत कठिन माना गया है; एक पुराणोक्त नदी। **–रूप**–वि० डरावनी शकलवाला। **–विग्रह**–वि० भयानक शरीर, शकलवाला। **–वेग**–वि० भयानक वेगवाला। **–शासन**–पु० यम।**–सेन**–पु० पाँचों पांडवोंमेंसे दूसरे, भीम; दमयंतीके पिताका नाम; भीमसेनी कपूर। **–सेनी**–वि० [हिं०] भीमसेन-संबंधी। पु० भीमसेनी कपूर।**–सेनी एकादशी**–स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला एकादशी, निर्जला एकादशी। **–सेनी कपूर**–पु० एक तरहका कपूर जो अधिक सुगंधित होता है, बरास। **मु०–के हाथी**–न लौटनेवाली वस्तु।

भीमता–स्त्री० [सं०] डरावनापन।

भीमराज–पु० भृंगराज पक्षी।

भीमा–वि० स्त्री० [सं०] डरावनी, भीषण रूप, आकारवाली। स्त्री० रोचना नामका गंधद्रव्य; दुर्गा; चाबुक; दक्षिण भारतकी एक नदी।

भीर–* स्त्री० दे० 'भीड़'; आधिक्य–'उर न समात प्रेमकी भीर'–गीता०। वि० * भीत; भीरु; [सं०] डरानेवाला, भय प्रदर्शित करनेवाला।

भीरना*–अ० क्रि० डरना।

भीरु–वि० [सं०] डरपोक; (–से) डरनेवाला (पापभीरु)। पु० सियार; बाघ; कनखजूरा; एक तरहका ऊख। स्त्री० सतावर; भटकटैया; डरपोक स्त्री; चाँदी; बकरी; छाया।

भीरुता–स्त्री० [सं०] भयशीलता, बुजदिली।

भीरुताई*–स्त्री० दे० 'भीरुता'।

भीरू–वि० स्त्री० [सं०] भीरु स्वभाववाली (स्त्री)।

भीरे*–अ० पास, नजदीक।

भील–पु० मध्यभारत, राजपूताना आदिमें पायी जानेवाली एक जंगली जाति। **–भूषण**–पु० घुँघची।

भीलनी–स्त्री० भीलकी स्त्री।

भीलु–वि० [सं०] भीरु, डरपोक। पु० भालू।

भीलुक, भील्लुक–पु० [सं०] भालू। वि० भीरु।

भीव*–पु० भीम।

भीष*–स्त्री० दे० 'भीख'।

भीषज*–पु० भिषक्, वैद्य।

भीषण–वि० [सं०] भय उपजानेवाला, डरावना। पु० भयानक रस; शिव; कुँदरू; हिंताल।

भीषणता–स्त्री० [सं०] डरावनापन।

भीषणाकार–वि० [सं०] डरावनी शकलवाला।

भीषन*–वि० दे० 'भीषण'।

भीषम*–वि० दे० 'भीष्म'। पु० देवव्रत, गांगेय।

भीषा–स्त्री० [सं०] डराना, भयप्रदर्शन; भय।

भीष्म–वि० [सं०] भयानक, भीषण। पु० भयानक रस; रुद्र; गंगाके गर्भसे उत्पन्न शांतनुके पुत्र, देवव्रत, गांगेय। **–जननी,–सू**–स्त्री० गंगा।**–पंचक**–पु० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातकके पाँच दिन जिनमें व्रत रखनेका विधान है। **–पितामह**–पु० भीष्म।

भीष्मक–पु० [सं०] रुक्मिणीके पिता, विदर्भ-नरेश। **–सुता**–स्त्री० रुक्मिणी।

भीष्माष्टमी–स्त्री० [सं०] माघ-शुक्ला अष्टमी जिस दिन भीष्मने प्राणत्याग किया।

भीसम*–वि०, पु० दे० 'भीष्म'

भुँइ*–स्त्री० 'भुइँ', भूमि।

भुंजना*–स० क्रि० जलाना, भूनना।

भुँजना†–अ० क्रि० भूना जाना; झुलसना।

भुंजरियाँ†–स्त्री० जरई।

भुँजवा†–पु० भड़भूँजा।

भुंडा–वि० बिना सींगका (बैल आदि); दुष्ट, बदमाश –'कह्यो न माने भुंडी राँड़'–सुंदर०।

भुअंग भुअंगम–* पु० दे० 'भुजंग', 'भुजंगम'।

भुअ*–स्त्री० भौं।

भुअन*–पु० दे० 'भुवन'।

भुअना*–अ० क्रि० भूलना, बहकना।

भुआ–पु० दे० 'भूआ'।

भुआर, भुआल*–पु० भूपाल, राजा।

भुइँ*–स्त्री० दे० 'भूमि'। **–आँवला**–पु० एक घास जो दवाके काम आती है। **–कंप**–पु० दे० 'भूकंप'।**–चाल, –डोल***–पु० भूकंप। **–तरवर**–पु० सनायकी जातिका एक पेड़। **–धरा**–पु० तहखाना; आवाँ लगानेकी एक रीति। **–हरा***–पु० तहखाना। **–हार†**–पु० दे० 'भूमिहार'; एक जंगली जाति।

भुक*–पु० भोजन, आहार; अग्नि।

भुकड़ी†–स्त्री० फफूँदी।

भुकराँद, भुकरायँध–स्त्री० सड़नेसे उत्पन्न दुर्गंध।

भुकाना–स० क्रि० भूकने, बकवाद करनेमें प्रवृत्त करना।

भुक्कड़-वि० दे० 'भुक्खड़'।

भुक्खड़-वि० भूखा, पेटू; जिसके पास कुछ न हो, कंगाल।

भुक्त-वि० [सं०] खाया हुआ; भोगा हुआ; जो भोगा जा रहा हो। पु० भोजन (सं०)। **-पूर्व**-वि० जो पहले भोगा जा चुका हो। **-भोग**-वि० जो भोग चुका हो; जो भोगा गया हो। **-भोगी**-वि० [हिं०] जो किसी चीजका दुःख-सुख उठा चुका हो, कृतभोग। **-शेष**-पु० खानेसे बचा हुआ अन्नादि, उच्छिष्ट।

भुक्ति-स्त्री० [सं०] भोजन; भोग; आहार; कब्जा, दखल; ग्रहकी दैनिक गति; सीमा। **-पात्र**-पु० खानेका बरतन, थाल आदि।

भुक्तोच्छिष्ट-पु० [सं०] जूठन।

भुखमरा-वि० भूखों मरनेवाला, भुक्खड़।

भुखमरी-स्त्री० भूखों मरनेकी स्थिति; पोषणके अभावमें क्षीण होना।

भुखाना†-अ० क्रि० क्षुधित होना।

भुखालू*-वि० भूखा।

भुगत-स्त्री* बिसात; * दे० 'भुक्ति'।

भुगतना-स० क्रि० भोगना, सहना। अ० क्रि० बीतना, पूरा होना। मु० **भुगत लेना**-निबट लेना, समझ लेना।

भुगतान-पु० भुगतानेकी क्रिया, कीमत या देनका चुकता किया जाना; गाहकको खरीदा हुआ माल देना (डेलिवरी); निबटारा। **-तुला**-स्त्री० (बैलेंस ऑफ पेमेंट) हिसाबकी वे मदें (व्यापारकी वस्तुएँ, पूँजी, सूद, बीमा-शुल्क, जहाजका किराया आदि) जिनके संबंधमें एक देशको दूसरे देशोंसे कुछ पावना हो या दूसरे देशोंको देना हो।

भुगताना-स० क्रि० चुकाना, अदा करना; समाप्त करना; बिताना; पहुँचाना (मेरी सारी बातें वहाँ भुगता दी); भुगतनेके लिए बाध्य करना।

भुगाना-स० क्रि० भोग कराना, भोगवाना।

भुगुत-स्त्री० बिसात; * दे० 'भुक्ति'।

भुगुति*-स्त्री० दे० 'भुक्ति'-'चला भुगुति माँगै कहँ साधि कथा तप जोग'-प०।

भुग्गा-वि० बुद्धू, मूर्ख।

भुच्च, भुच्चड़-वि० मूर्ख, जड़मति।

भुजंग-पु० [सं०] साँप; जार; पति; सीसा; अश्लेषा नक्षत्र; आठकी संख्या; विदूषक। **-घातिनी**-स्त्री० काकोली। **-भुक्(ज्)**-पु० गरुड; मोर। **-भोगी(गिन्)**-पु० मोर; गरुड। **-भोजी(जिन्)**-पु० मोर; गरुड; एक तरहका साँप। **-शत्रु**-पु० गरुड।

भुजंगम-पु० [सं०] साँप; सीसा; राहु; आठकी संख्या।

भुजंगिनी-स्त्री० [सं०] सर्पिणी; एक छंद।

भुजंगी-स्त्री० [सं०] सर्पिणी, नागिन; एक वर्णवृत्त।

भुजंगेश-पु० [सं०] दे० 'भुजगेश'।

भुज-पु० [सं०] बाहु; बाजू; हाथ; हाथीकी सूँड़; डाली; रेखागणितके किसी क्षेत्रकी सीमारेखा, बाहु; त्रिभुजका आधार; छायाका मूल। **-कोटर**-पु० काँख। **-ग**-पु० साँप। **-ग-दारण, -ग-भोजी(जिन्)**-पु० गरुड़; मोर; नेवला। **-ग-राज**-पु० शेषनाग। **-च्छाया**-स्त्री० निरापद् आश्रय। **-दंड**-पु० दंड-रूप हाथ; लंबा हाथ; बाहँमें पहननेका तीन फेरेका एक गहना। **-दल**-पु० हाथ। **-पाश**-पु० गलबाहीं। **-बंद**-पु० [हिं०] बाजूबंद। **-बंध**-पु० केयूर। **-बंधन**-पु० भुजपाश, बाहोंके भीतर भर लेना। **-बल**-पु० बाहुबल। **-बाथ***-पु० अँकवार। **-मध्य**-पु० क्रोड। **-मूल**-पु० कंधा। **-यष्टि**-स्त्री० भुजदंड। **-लता**-स्त्री० लता जैसी कोमल कमनीय बाँह। **-वीर्य**-पु० भुजबल।

भुजगांतक-पु० [सं०] गरुड; मोर; नेवला।

भुजगाशन-पु० [सं०] मोर; गरुड़।

भुजगी-स्त्री० [सं०] सर्पिणी; अश्लेषा नक्षत्र।

भुजगेंद्र, भुजगेश-पु० [सं०] शेषनाग; वासुकि।

भुजपात*-पु० दे० 'भूर्जपत्र'।

भुजरिया*-स्त्री० जरई।

भुजवा†-पु० भड़भूँजा।

भुजा-स्त्री० [सं०] बाहु, भुजा; सर्पकी कुंडली; (आर्म) कोण बनानेवाली दो सरल रेखाओंमेंसे कोई भी एक। **-मूल**-पु० कंधा, बाहुमूल। मु०-**उठाकर कहना,-टेकना**-प्रतिज्ञा करना।

भुजाली-स्त्री० एक तरहका टेढ़ा छुरा, खुखरी।

भुजिया-पु० उबाले हुए धानका चावल।

भुजेना†-पु० चबैना।

भुजौना*-पु० भुना हुआ अन्न; भुनाईमें दिया जानेवाला अन्न।

भुट्टा-पु० मक्केकी हरी बाल; जुआर या बाजरेकी बाल।

भुतनी†-स्त्री० स्त्री प्रेत; दे० 'भूतिनी'।

भुनगा-पु० उड़नेवाला छोटा कीड़ा, फतिंगा; तुच्छ, नगण्य प्राणी।

भुनगी-स्त्री० ईखकी फसलको लगनेवाला एक कीड़ा।

भुनना-अ० क्रि० भूना जाना, सिंकना; रुपये आदिका छोटे सिक्कोंमें बदला जाना।

भुनभुनाना-अ० क्रि० 'भुन-भुन' करना, अस्पष्ट स्वरमें कुढ़न प्रकट करना।

भुनवाई, भुनाई-स्त्री० भुनानेके बदलेमें दी जानेवाली रकम, भाँज; भूननेकी उजरत।

भुनाना-स० क्रि० नोटको रुपयों या किसी बड़े सिक्केको छोटे सिक्कोंमें बदलवाना; भूननेका काम दूसरेसे कराना।

भुवि*-स्त्री० दे० 'भूमि'।

भुमिया-पु० दे० 'भूमिया' (जमींदार)।

भुरकना-स० क्रि० छिड़कना, बुरकना। अ० क्रि० भुरभुरा होना; * भूलना, बहक जाना।

भुरकस-पु० दे० 'भुरकुस'।

भुरकाना†-स० क्रि० भुरभुराना, छिड़कना; * भुलावा देना।

भुरकुन-पु० चूर्ण।

भुरकुस-पु० चूर्ण; वह वस्तु जो चूर-चूर हो गयी हो। मु०-**निकलना**-चूर-चूर होना; पीटकर भरता बना दिया जाना।

भुरता-पु० दे० 'भरता'।

भुरभुरा–वि० चूर्णरूप; जो झट टूटकर चूर्णरूप हो जाय। **–हट**–स्त्री० भुरभुरापन।

भुरवना*–स० क्रि० भुलावा देना, बहकाना।

भुरसना*–अ० क्रि०, स० क्रि० भुलसना।

भुरहरा*–पु० भोर, तड़का (भुरहरी बेर=प्रातःकाल)।

भुराई*–स्त्री० भोलापन।

भुराना*–अ० क्रि० भुलावेमें आना। स० क्रि० भुलवाना, बहकाना; भूल जाना।

भुरावना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'भुराना'।

भुर्भुरिका, भुर्भुरी–स्त्री० [सं०] एक तरहकी मिठाई।

भुर्रा–वि० बहुत काला। † पु० विशेष प्रकारसे बनायी हुई एक तरहकी चीनी।

भुलक्कड़–वि० बहुत भूलनेवाला, विस्मरणशील।

भुलना†–वि० विस्मरणशील। पु० एक तरहकी घास।

भुलवाना–स० क्रि० भूलनेको प्रेरित करना; बहकाना; भुलाना।

भुलसना–अ० क्रि०, स० क्रि० गरम राखमें झुलसना।

भुलाना–स० क्रि० भूलना; दे० भुलवाना। अ० क्रि० भुलावेमें पड़ना; बहकना; विस्मरण होना।

भुलावा–पु० बहकानेकी युक्ति, धोखा, चकमा।

भुवंग*–पु० दे० 'भुजंग'।

भुवंगम*–पु० दे० 'भुजंगम'।

भुव–पु० [सं०] भुवर्लोक; अग्नि। * स्त्री० भूमि; भौं। **–पति**–पु० राजा। **–पाल***–पु० दे० 'भूपाल'।

भुवन–पु० [सं०] जगत्, लोक (तीन या चौदह); जन, प्राणी; आकाश; जल; समृद्धि; चौदहकी संख्या (संकेत)। **–त्रय**–पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल। **–पावनी**–स्त्री० गंगा। **–भर्ता (र्तृ)**–पु० जगत्का धारण-पोषण करनेवाला। **–माता (तृ)**–स्त्री० दुर्गा। **–मोहिनी**–वि० स्त्री० जगत्को मोहनेवाली। **–विदित**–वि० जगत्प्रसिद्ध।

भुवनेश्वर–पु० [सं०] राजा; शिव; उड़ीसाके अंतर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ; वहाँ स्थापित शिवलिंग।

भुवनेश्वरी–स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक देवी।

भुवनौका (कस्)–पु० [सं०] देवता।

भुवर्लोक–पु० [सं०] अंतरिक्ष लोक।

भुवा–पु० घुआ; रुई।

भुवाल, भुवार*–पु० दे० 'भूपाल'।

भुवि*–स्त्री० दे० 'भूमि'।

भुशुंडि–पु० [सं०] काकभुशुंडि। स्त्री० एक अस्त्र।

भुस–पु० भूसा।

भुसी*–स्त्री० दे० 'भूसी'।

भुसुंड–स्त्री० सूँड़।

भुसुंडी*–पु० दे० 'भुशुंडि'।

भुसौरा–पु० भूसा रखनेका घर।

भूँकना–अ० क्रि० कुत्तेका भौं-भौं करना; व्यर्थ बकना।

भूँजना†–स० क्रि० पकाना; सताना; * भोगना–'राज कि भूँजब भरत पुर नृप कि जियहिं बिनु राम'–रामा०।

भूँजा†–पु० भड़भूँजा; भूना हुआ अन्न, चबैना।

भूँड़*–स्त्री० बालू मिली हुई भुरभुरी मिट्टी।

भूँडरी–स्त्री० नाऊ, बारी आदिको माफी मिलनेवाली जमीन।

भूँसना*–अ० क्रि० भूँकना।

भू–स्त्री० [सं०] भूमि, धरती, जमीन; स्थान; यज्ञाग्नि; एकका संकेत; पदार्थ। वि० (समासांतमें)…से उत्पन्न होनेवाला (स्वयंभू, मनोभू)। **–कंप**–पु० भूगर्भमें होनेवाली उथल-पुथलसे धरतीकी ऊपरी सतहका हिलना, भूचाल। **–कंप-मापक, –कंप-सूचक यंत्र**–पु० (साइजमोमीटर, साइजमोग्राफ) भूकंपके धक्के, भूकंपके केंद्रकी दूरी, प्रवेग आदि सूचित करनेवाला यंत्र। **–कंप-विज्ञान**–पु० (साइजमोलॉजी) भूकंपके कारणों तथा स्वरूप आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान। **–कर्ण**–पु० पृथ्वीका व्यास। **–कर्मी (र्मिन्)**–पु० (ग्राउंडस्टाफ) हवाई अड्डेके वे कर्मचारी जिन्हें उड़नेवाले विमानके साथ रहकर नहीं, वरन् भूमिपर ही काम करना पड़ता है। **–खंड**–पु० भूभाग। **–गर्भ**–पु० धरतीका भीतरी भाग। **–गर्भ-गृह**–पु० तहखाना। **–गर्भ-विद्या**–स्त्री० दे० 'भूगर्भशास्त्र'। **–गर्भ-शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिससे भूमिकी भीतरी बनावटका ज्ञान हो। **–गृह, –गेह**–पु० तहखाना। **–गोल**–पु० भूमंडल; भूगोलशास्त्र। **–गोल-विद्या**–स्त्री०, **–गोल-शास्त्र**–पु० पृथ्वीके बाह्य रूप, प्राकृतिक विभाग आदिका ज्ञान करानेवाली विद्या या शास्त्र। **–गोलक**–पु० भूमंडल। **–चर**–वि० स्थलचर। पु० स्थलचर प्राणी; शिव। **–चरी**–स्त्री० योगकी एक मुद्रा। **–चर्या, –च्छाया**–स्त्री०, धरतीकी छाया; अंधकार। **–चाल**–पु० [हिं०] भूकंप। **–छाया**–स्त्री० (अंब्रा) सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहणके समय सूर्य अथवा चंद्रमाके बिंबपर पड़नेवाली छाया। **–जंतु**–पु० हाथी; एक तरहका घोंघा। **–जंबु**–पु० गेहूँ; बनजामुन। **–जात**–पु० वृक्ष। **–डोल**–पु० [हिं०] भूकंप। **–तत्त्व**–पु० धरतीकी बनावटका विज्ञान। **–तत्त्व-विज्ञान**–पु०, **–तत्त्व-विद्या**–स्त्री० भूगर्भशास्त्र। **–तत्त्व-विद्**–पु० भूगर्भशास्त्रका पंडित। **–तल**–पु० जमीनकी सतह, धरातल, भूपृष्ठ। **–ताली**–स्त्री० भूपाटली; मुपली। **–तुंबी**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी। **–तृण**–पु० रूसा नामकी घास। **–दान**–पु० घर, जमीन, खेत आदिका दान; भूमिहीन वर्गमें भूमिका वितरण करनेके लिए चलाये गये आन्दोलनमें सहयोग करते हुए खेतों, बाग-बगीचों आदिका दान करना। **–दार**–पु० सूअर। **–दृश्य**–पु० (लैंडस्केप) भूमिका वह दृश्य जो किसी ओर दृष्टि डालनेपर दूर-दूरतक दिखाई दे, किसी भूभागमें स्थित पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदिका दृश्य। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–धन**–पु० राजा। **–धर**–पु० पहाड़; शेषनाग; रस आदि बनानेके काम आनेवाला एक यंत्र; कृष्ण; शिव; सातकी संख्या। **–धर-राज**–पु० हिमालय। **–नाग**–पु० भूमिनाग, केंचुआ। **–निंब**–पु० चिरायता। **–नेता (तृ)**–पु० राजा। **–प**–पु० राजा। **–पटल**–पु० पृथ्वीकी ऊपरी सतह। **–पति**–पु० राजा; शिव; इंद्र। **–पतित**–वि० पृथ्वीपर (घायल आदि होकर) गिरा, पड़ा हुआ। **–परिधि**–स्त्री० पृथ्वीकी परिधि। **–परिमाप**–स्त्री० (लैंड सर्वे) भूमिके किसी टुकड़े या देश, राज्यादिकी भूमिकी नाप-जोख। **–पवित्र**–पु०

गोबर। **-पाल**-पु० राजा; [हिं०] मध्य भारतका भोपाल राज्य; उसकी राजधानी। **-पुत्र**-पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **-पुत्री**-स्त्री० सीता। **-भर्ता(र्तृ)**-पु० राजा। **-भाग**-पु० भूखंड, प्रदेश। **-भार**-पु० धरतीपर होनेवाले पापका भार। **-भार-हारी(रिन्)**-पु० परमेश्वर। **-भुक्(ज्)**-पु० राजा। **-भृत्**-पु० पहाड़; राजा; विष्णु; सातकी संख्या। **-मंडल**-पु० धरती, भूगोल। **-मध्यसागर**-पु० यूरोप और एशिया-के बीच अवस्थित समुद्र। **-महेंद्र**-पु० राजा। **-मापन**-पु० (सर्वे) सीमा आदि निर्धारित करनेकी दृष्टिसे किसी खेत, भूमिके टुकड़े या देश-प्रदेश आदिकी नाप-जोख (पैमाइश) करना। **-रुह**-पु० वृक्ष; अर्जुन वृक्ष। **-रुहा**-स्त्री० दूब। **-लता**-स्त्री० केंचुआ। **-लोक**-पु० मर्त्यलोक। **-लोटन**-वि० [हिं०] धरतीपर लोटनेवाला। **-वलय**-पु० पृथ्वीकी परिधि। **-वल्लभ**-पु० राजा। **-शक्र**-पु० राजा। **-शय**-पु० विष्णु; बिलमें रहनेवाला जंतु। **-शय्या**-स्त्री० जमीनपर सोना। **-शायी(यिन्)**-वि० जमीनपर सोनेवाला; भूमिपर गिरा हुआ; मृत। **-संपत्ति**-स्त्री० जमीनके रूपमें संपत्ति (खेत, जमींदारी)। **-संस्कार**-पु० यज्ञके लिए भूमिको लीपना, नापना, रेखाएँ खींचना आदि। **-सुत**-पु० मंगल; नरकासुर। **-सुता**-स्त्री० सीता। **-सुर**-पु० ब्राह्मण। **-स्पृक्(श्)**-पु० मनुष्य। **-स्फोट**-पु० कुकुरमुत्ता। **-स्वर्ग**-पु० धरतीपर स्वर्गरूप स्थान; सुमेरु पर्वत। **-स्वामी(मिन्)**-पु० जमीनका मालिक, जमींदार। **-हरा***-पु० दे० 'भुइँहरा'।

भूआ-पु० रुई। वि० सफेद। * स्त्री० बुआ।

भूई-स्त्री० रुईका छोटा गाला।

भूक-स्त्री० भूख।

भूकना-अ० क्रि० दे० 'भूँकना'।

भूख-स्त्री० आहारकी आवश्यकतासे उत्पन्न विकलता, भोजनकी इच्छा, क्षुधा; इच्छा। **-हड़ताल**-स्त्री० बंदियों आदिका विरोधमें खाना न खाना। मु० **-मर जाना**-क्षुधाका नष्ट हो जाना; भूख न लगना। **(भूखों)मरना**-क्षुधा-कष्टसे पीड़ित होना, निराहार रहना।

भूखण, भूखन-पु० दे० 'भूषण'।

भूखना-* स० क्रि० सजाना, भूषित करना। अ० क्रि० उपवास करना।

भूखा-वि० जिसे भूख लगी हो, क्षुधित; किसी चीजकी चाह रखनेवाला, इच्छुक; भुक्खड़। **-नंगा**-वि० अन्न-वस्त्रके कष्टसे पीड़ित, दीन, दरिद्र। मु० **-रहना**-उपवास करना; व्रत रखना।

भूटानी-पु० भूटानका निवासी; भूटानका घोड़ा। स्त्री० भूटानकी भाषा। वि० भूटान-संबंधी; भूटानका।

भूटिया-वि० भूटानका। पु० भूटानका रहनेवाला।

भूड़-स्त्री० बलुई जमीन; कुएँका सोता।

भूत-वि० [सं०] जो हो चुका हो, अतीत, बीता हुआ; वस्तुतः घटित; उत्पन्न; सत्य; प्राप्त; युक्त; रूप या अवस्थाविशेषको प्राप्त (घनीभूत, पुंजीभूत); सदृश। पु० पंचमहाभूतों-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश-मेंसे कोई एक तत्त्व; प्राणी; प्रेत, पिशाच; बीता हुआ समय, भूत काल। **-काल**-पु० गत काल। **-कालिक**-वि० भूत काल-संबंधी। **-खाना**-पु० [हिं०] गंदा घर। **-ग्रस्त**-वि० जिसे भूत लगा हो। **-दया**-स्त्री० संपूर्ण प्राणियोंके प्रति दयाभाव। **-नाथ**-पु० शिव। **-नायिका**-स्त्री० दुर्गा। **-नाशन**-पु० रुद्राक्ष; सरसों; भिलावाँ; हींग। **-पूर्व**-वि० जो पहले हो चुका है, पूर्ववर्ती, पहला। **-प्रेत**-पु० भूत-पिशाच आदि। **-भावन**-पु० भूतोंके स्रष्टा, ब्रह्मा; शिव; विष्णु। **-भाषा**-स्त्री०,**-भाषित**-पु० प्रेतोंकी भाषा, पैशाची। **-वाद**-पु० भौतिक वाद। **-वाहन**-पु० शिव। **-विद्या**-स्त्री० आयुर्वेदका वह विभाग जिसमें पिशाच आदिकी बाधासे उत्पन्न रोगोंका इलाज बताया गया है। **-सिद्ध**-वि० जिसने भूत-प्रेत आदिको वशमें कर लिया है। **-सृष्टि**-स्त्री० भूतोंकी सृष्टि; भूतावेशसे उत्पन्न भ्रांति। **-हत्या**-स्त्री० जीववध। मु० **-उतरना**-पागल कर देनेवाले गुस्सेका उतर जाना; खब्तका दूर हो जाना। **-का पकवान,-की मिठाई**-भ्रमवश दिखाई देनेवाला पदार्थ, जल्द नष्ट हो जानेवाला पदार्थ। **-चढ़ना,-सवार होना**-गुस्सेमें पागलसा हो जाना। **-बनकर लगना**-बुरी तरह पीछे लगना। **-बनना**-नशेमें चूर होना; क्रोधाभिभूत होना; किसी काममें भिड़ जाना। **(किसी बातका)-सवार होना**-किसी चीजके पीछे पड़ जाना, उसका हठ पकड़ लेना।

भूतनी-स्त्री० स्त्रीप्रेत, भुतनी; दे० 'भूतिनी'।

भूतांतक-पु० [सं०] यम; रुद्र।

भूतात्मा(त्मन्)-पु० [सं०] परब्रह्म; हिरण्यगर्भ; विष्णु; शिव; जीवात्मा; देह।

भूताधिपति-पु० [सं०] शिव।

भूतानुकंपा-स्त्री० [सं०] जीवदया।

भूताविष्ट-वि० [सं०] जिसे भूत लगा हो।

भूतावेश-पु० [सं०] भूत लगना, प्रेतबाधा।

भूति-स्त्री० [सं०] होना, उत्पत्ति; संपत्ति, वैभव; अणिमादि अष्ट सिद्धियाँ; भभूत। **-भूषण,-वाहन**-पु० शिव। **-वर्धन**-वि० ऐश्वर्य बढ़ानेवाला।

भूतिनी-स्त्री० भूतयोनिप्राप्त स्त्री; डाकिनी।

भूतेश-पु० [सं०] शिव।

भूतेश्वर-पु० [सं०] शिव।

भूतोन्माद-पु० [सं०] प्रेतबाधासे उत्पन्न उन्माद।

भून*-पु० दे० 'भ्रूण'।

भूनना-स० क्रि० आगपर रखकर इस तरह पकाना कि छिलका कड़ा हो जाय; घी-तेलमें तलना; गरम रेतमें डालकर अन्नादिको पकाना; जलाना; बहुत कष्ट देना; बंदूकोंकी बाढ़ या मेशीनगनकी गोलियोंसे बहुतोंका एक साथ वध करना।

भूपेंद्र-पु० [सं०] राजाओंमें श्रेष्ठ, सम्राट्।

भूभल-स्त्री० गरम रेत या धूल; गरम राख।

भूभुर, भूभुरि-स्त्री० दे० 'भूभल'।

भूमय-वि० [सं०] मिट्टीका बना हुआ।

भूमयी-स्त्री० [सं०] सूर्यपत्नी, छाया।

भूमि–स्त्री० [सं०] जमीन, धरती; स्थान, क्षेत्र; देश (भारतभूमि); जमींदारी; भूमिका (ना०); विस्तार; जीभ; एककी संख्या; आधार; मंजिल, तल्ला (सप्तभूमिक प्रासाद); योगीके चित्तकी एक अवस्था; उत्पत्तिस्थान (वीरोंकी भूमि)। **–अवाप्ति-अधिनियम**–पु० (लैंड ऐक्विजिशन ऐक्ट) किसी सार्वजनिक कामके निमित्त या राज्यादिकी कोई विशेष आवश्यकता पूरी करनेके लिए दूसरेकी भूमि खरीदने, ले लेनेकी अधिकार प्रदान करनेवाला अधिनियम। **–कंप, –कंपन**–पु० भूकंप, भूचाल।**–कदंब**–पु० एक तरहका कदंब। **–कुष्मांड,–कूष्मांड**–पु० जमीनपर होनेवाला कुम्हड़ा, भुइँकुम्हड़ा। **–गृह**–पु० तहखाना। **–जा**–स्त्री० सीता। **–जीवी(विन्)**–पु० जमीनसे जीविका करनेवाला, कृषक।**–तल**–पु० जमीनकी सतह।**–दान**–पु० जमीनका दान। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–धर**–पु० पर्वत; शेषनाग; भूमिपर विशेष अधिकार रखनेवाला किसान (आ०)। **–नाग**–पु० केंचुआ। **–प**–पु० राजा। **–पक्ष**–पु० बहुत तेज घोड़ा। **–पति,–पाल**–पु० राजा; क्षत्रिय। **–भुक्(ज्)**–पु० राजा। **भृत्**–पु० राजा। **–रुज***–पु० वृक्ष।**–रुह**–पु० वृक्ष।**–रुहा**–स्त्री० दूब। **–लवण**–पु० शोरा।**–लाभ**–पु० मृत्यु। **–लेपन**–पु० धरती लीपना; गोबर। **–शयन**–पु०,**–शय्या**–स्त्री० जमीनपर सोना। **–संभव**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर।**–संभवा**–स्त्री० सीता। **–संरक्षण**–पु० (सॉइल कंसर्वेशन) कटाव आदिसे भूमिका बचाव। **–सत्र**–पु० भूमिदानरूप यज्ञ। **–सुत**–पु० दे० 'भूमिसंभव'। **–सुर**–पु० ब्राह्मण। **–स्वामी(मिन्)**–पु० राजा। **–हस्तांतर-अधिनियम**–पु० (लैंड एलियनेशन ऐक्ट) भूमिका स्वत्व या स्वामित्व हस्तांतरित करनेसे संबंध रखनेवाला अधिनियम। **–हार**–पु० मध्यदेशमें बसनेवाली एक हिंदू जाति जो अपनेको ब्राह्मण कहती है।

भूमिका–स्त्री० [सं०] धरती; तल्ला; वक्तव्य विषयकी पूर्व-सूचना, ग्रंथादिकी प्रस्तावना, तमहीद; लिखनेका तख्ता; योगसिद्धिकी दृष्टिसे योगीके चित्तकी कोई विशेष अवस्था (योग); नटकी वेशभूषा; अभिनेताका पार्ट। **–गत**–पु० नाटकीय वस्त्र पहननेवाला। **मु०–बाँधना**–किसी बातको सीधे-सीधे थोड़ेमें न कहकर उसे कहनेके लिए इधर-उधरसे बहुत-सी बातें लाकर जोड़-तोड़ भिड़ाना।

भूमिया–पु० जमींदार; देवता।

भूमीश्वर–पु० [सं०] राजा।

भूयः(यस्)–अ०[सं०] पुनः; और अधिक; साधारणतः।

भूयशः (यस्)–अ० [सं०] अधिकतर, बहुत करके।

भूयसी–वि० स्त्री० [सं०] बहुत अधिक।**–दक्षिणा**–स्त्री० धर्मकृत्यके अंतमें उपस्थित ब्राह्मणोंको दी जानेवाली थोड़ी-थोड़ी दक्षिणा।

भूयोभूयः–अ० [सं०] पुनः-पुनः, बार-बार।

भूर*–वि० दे० 'भूरि'। पु० रेत। स्त्री० भूल।

भूरज*–पु० दे० 'भूर्ज'। **–पत्र**–पु० दे० 'भूर्जपत्र'।

भूरपूर*–वि० भरपूर।

भूरसी दक्षिणा–स्त्री० दे० 'भूयसी दक्षिणा'; बड़े खर्चके बाद होनेवाले छोटे खर्च।

भूरा–पु० स्याह और सफेदके बीचका रंग, खाकी रंग; कच्ची चीनी; चीनी। वि० भूरे रंगका, कपासी।**–कुम्हड़ा**–पु० पेठा।

भूरि–वि० [सं०] प्रचुर, बहुत ज्यादा; बड़ा। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; इंद्र; सोना। अ० बहुत अधिक; प्रायः। **–द**–वि० बहुत देनेवाला, महादानी।**–दा***–वि० बहुत बड़ा दानी।**–भाग्य**–वि बड़भागी।

भूरिता–स्त्री० [सं०] आधिक्य, बाहुल्य।

भूर्ज–पु० [सं०] भोजपत्रका पेड़। **–पत्र**–पु० भोजपत्र।

भूर्लोक–पु० [सं०] मर्त्यलोक; विषुवत् रेखाके दक्षिणका देश।

भूल–स्त्री० भूलनेका भाव, भ्रम; चूक; दोष; गलती, अशुद्धि। **–चूक**–स्त्री० भूल, भ्रम; गलती। **–चूक लेनी-देनी**–हिसाबमें भूलचूक हो तो लेन-देनकी कमी-बेशी ठीक कर ली जाय (पुरजे, बिल, बीजक आदिपर लिखा जाता है)। **–भुलैया**–स्त्री० वह इमारत जिसका रास्ता ऐसा चक्करदार हो कि आदमी जल्दी बाहर न निकल सके। **–से**–भूलकर, गलतीसे।

भूलक*–वि० भूल करनेवाला।

भूलना–अ० क्रि० याद न रहना, बिसरना; गलती करना; भटकना, गलत रास्तेपर जाना; धोखा खाना, भुलावेमें पड़ना; बेखबर, अचेत होना; इतराना; खो जाना। स० क्रि० याद न रखना, भुला देना। † वि० विस्मरणशील। **भूलकर**–अ० भूलसे, गलतीसे (भी)। **मु० भूलकर नाम न लेना**–कभी याद न करना। **भूला-भटका**–जो रास्ता भूलकर, साथियोंसे बिछुड़कर भटक रहा हो। **भूले-भटके**–कभी-कभी।

भूवा–पु०, वि०*–दे० 'भूआ'।

भूषण–पु० [सं०] गहना, जेवर; सजावट; शोभाजनक वस्तु; विष्णु। **–पेटिका**–स्त्री० रत्नमंजूषा।

भूषणीय, भूष्य–वि० [सं०] अलंकृत करने योग्य।

भूषन*–पु० दे० 'भूषण'।

भूषना*–स० क्रि० सजाना, भूषित करना।

भूषा–स्त्री० [सं०] गहना, भूषण; सजावट, शृंगार।

भूषाचार–पु० [सं०] (फैशन) कपड़े आदि पहननेका विशिष्ट ढंग; समाजके उच्च वर्गोंमें प्रचलित या आदृत ढंग, रीति, तौर-तरीका।

भूषित–वि० [सं०] सजाया हुआ, अलंकृत।

भूसन*–पु० दे० 'भूषण'।

भूसना*–अ० क्रि० दे० 'भूँकना'।

भूसा–पु० गेहूँ, जौ आदिका टुकड़े-टुकड़े किया हुआ डंठल जो पशुओंको खिलाया जाता है।

भूसी–स्त्री० धान, चने, मटर आदिका छिलका।

भृंग–पु० [सं०] भौंरा; बिलनी; लंपट; भँगरा; भृंगराज पक्षी। **–ज**–पु० अगर; अभ्रक। **–जा**–स्त्री० भारंगी। **–पर्णिका**–स्त्री० छोटी इलायची। **–राज**–पु० बड़ा भौंरा; एक पक्षी; भँगरा नामक क्षुप।

भृंगावली–स्त्री० [सं०] भौंरोंकी पाँत।

भृंगि–पु० [सं०] शिवका एक अनुचर।

भृंगी–स्त्री० [सं०] भौंरी; बिलनी नामक कीड़ा–'हरि-

यत भृंगी कीट लौं मत वहई हुँ जाति'-वि०; अतिविषा; भाँग।

भृंगी(गिन्)-पु० [सं०] शिवका एक गण; बरगद।

भृंगीश-पु० [सं०] शिव।

भृकुटि(टी)-स्त्री० [सं०] भ्रूभंग, भौं चढ़ाना; भौं (हिं०)।

भृगु-पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि जो ब्रह्माके पुत्र माने जाते हैं; जमदग्नि; शुक्राचार्य; शुक्र ग्रह; शुक्रवार। **-ज,-तनय**-पु० शुक्राचार्य; शुक्र। **-तुंग**--पु० हिमालयकी एक चोटी। **-नंदन**-पु० परशुराम; शुक्र। **-नाथ,-नायक**-पु० परशुराम। **-पति**-पु० परशुराम। **-पुत्र**-पु० शुक्र। **-रेखा,-लता**-स्त्री० विष्णुकी छातीपर पड़ा हुआ भृगुके लात मारनेका चिह्न। **-वार,-वासर**-पु० शुक्रवार। **-श्रेष्ठ,-सत्तम**-पु० परशुराम। **-सुत,-सूनु**-पु० शुक्र; परशुराम।

भृत-वि० [सं०] प्राप्त; वहन किया हुआ; भरा हुआ; पोषित, पाला हुआ; मजदूरी या किरायेपर लिया हुआ। पु० वेतन लेकर काम करनेवाला दास, नौकर।

भृतक-वि० [सं०] मजदूरी या वेतनपर रखा हुआ। पु० वेतनपर काम करनेवाला नौकर।

भृतकाध्यापक-पु० [सं०] वेतन लेकर शिक्षणकार्य करनेवाला।

भृति-स्त्री० [सं०] ले जाना; लाना; भरण; भरणका साधन, वेतन, मजदूरी; भोजन। **-कर्मकर**-पु० मजदूर, वेतन लेकर काम करनेवाला नौकर। **-भोगी(गिन्)**-वि० (मर्सीनरी) वेतन लेकर अवसर-विशेषपर किसीके लिए भी काम करने या लड़नेवाला, केवल रुपयेके लालचसे किसीकी सेवा करनेवाला, किरायेका या भाड़ेका (सैनिक)।

भृत्य-वि० [सं०] भरण करने योग्य। पु० सेवक। **-भर्ता(र्तृ)**-पु० नौकरोंका पालन करनेवाला; गृहस्वामी। **-भाव**-पु० सेवाभाव, पराश्रय। **-वर्ग**-पु० दास-समूह। **-वृत्ति**-स्त्री० सेवकोंका पालन। **-शाली(लिन्)**-वि० जिसके बहुतसे सेवक हों।

भृत्या-स्त्री० [सं०] दासी; भृति।

भृश-वि० [सं०] अतिशय; प्रचंड; शक्तिशाली। अ० अत्यधिक। **-कोपन**-वि० बहुत क्रोधी। **-दुःखित,-पीडित**-वि० अत्यधिक कष्टग्रस्त।

भेँट-स्त्री० मिलन, मुलाकात; नजर।

भेँटना*-स० क्रि० मिलना; गले लगना या लगाना; छूना।

भेँना, भेँवना*-स० क्रि० तर करना।

भेइ, भेउ*-पु० दे० 'भेद'।

भेक-पु० [सं०] मेढक; मेघ; डरपोक आदमी। **-भुक्(ज्)**-पु० साँप। **-रव**-पु० मेढकोंका टर्राना।

भेकी-स्त्री० [सं०] मेढकी; मंडूकपर्णी।

भेख-पु० दे० 'भेस'।

भेखज*-पु० दे० 'भेषज'।

भेजना-स० क्रि० अन्य स्थानके लिए रवाना करना, पहुँचाये जानेका प्रबंध करना, प्रेषण करना।

भेजवाना-स० क्रि० भेजनेका काम दूसरेसे कराना।

भेजा-पु० रीढ़वाले प्राणियोंकी खोपड़ीके अंदर रहनेवाला भूरा गूदा जो नाडी-मंडल और मनकी क्रियाओंका केंद्र माना जाता है, दिमाग, मग्ज; चंदा; * मेढक। मु०-खाना,-पकाना-बकबक करके खोपड़ी खाना।

भेटना-स० क्रि० दे० 'भेँटना'।

भेड-स्त्री० [सं०] बकरीकी जातिका एक चौपाया जो दूध, रोयें और मांसके लिए भी पाला जाता है, मेष; बहुत सीधा, बेवक़ूफ आदमी।

भेड़-स्त्री० दे० 'भेड'। **-चाल**-स्त्री० भेड़ियाधसान।

भेड़िया धसान-पु० अंध अनुकरणकी प्रवृत्ति।

भेड़ा-पु० मेढ़ा, मेष।

भेड़िया-पु० कुत्तेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः भेड़-बकरियोंका शिकार किया करता है, वृक।

भेडी-स्त्री० [सं०] मेषी।

भेतव्य-वि० [सं०] जिससे डरा जाय।

भेत्ता(त्तृ)-वि० [सं०] भेदन करनेवाला; विघ्न डालनेवाला; भेद खोलनेवाला; षड्यंत्र रचनेवाला।

भेद-पु० [सं०] छेदना; दारण; बिलगाव, अंतर; तादात्म्यका अभाव; क्षति, चोट; परिवर्तन; द्रोह; पराजय; कोष्ठशुद्धि, रेचन; छिपी हुई बात, रहस्य; मर्म; प्रकार; फूट; खुलना, प्रकट होना (रहस्यभेद); राजनीतिके चार उपायोंमेंसे एक, शत्रुपक्षमें फूट डालना। **-कर,-कारक,-कारी(रिन्),-कृत्**-वि० भेद करनेवाला। **-दर्शी(र्शिन्),-दृष्टि**-वि० विश्वको परब्रह्मसे भिन्न समझनेवाला, द्वैतवादी। **-नीति**-स्त्री० फूट डालनेकी नीति। **-बुद्धि**-स्त्री० अंतर करनेवाली दृष्टि, द्वैतभाव। वि० द्वैतवादी। **-भाव**-पु० दो व्यक्तियों, वर्गोंके साथ दो तरहका व्यवहार, फर्क। **-वादी(दिन्)**-वि० द्वैतवादी।

भेदक-वि० [सं०] भेद करनेवाला; छेदन करनेवाला; नष्ट करनेवाला; अन्तर करनेवाला; रेचक।

भेदकातिशयोक्ति-स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें 'और ही', 'न्यारा' आदि शब्दों द्वारा उपमानसे उपमेयको भिन्न कहा जाय।

भेदन-पु० [सं०] छेदन; फाड़ना; बिलगाना; भेद, अंतर करना; रेचन, दस्त लाना।

भेदित-वि० [सं०] छेदा, फाड़ा, बिलगाया हुआ।

भेदिया-पु० भेद जाननेवाला; जासूस।

भेदी(दिन्)-वि० [सं०] भेदकारक; भेद जाननेवाला; भेद लेनेवाला। पु० अम्लबेत।

भेदीसार-पु० छेद करनेका औजार, बरमा।

भेदू*-पु० भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ।

भेद्य-वि० [सं०] भेदन करने योग्य। पु० विशेष्य। **-रोग**-पु० वह रोग जिसकी चिकित्सा चीर-फाड़के जरिये की जाय।

भेना*-स० क्रि० भिगोना।

भेय-वि० [सं०] दे० 'भेतव्य'।

भेर-पु० [सं०] नगाड़ा, डंका।

भेरा*-पु० एक तरहकी नाव, भेला।

भेरि, भेरी-स्त्री० [सं०] दे० 'भेर'। **-कार**-पु० भेरी बजानेवाला।

भेला*-पु० भेंट; भिड़ंत; भिलावाँ; एक ही लकड़ीमें बनी नाव, उडुप; † गुड़ आदिका बड़ा पिंड।

भेली-स्त्री० गुड़ आदिकी पिंडी; गुड़।

भेव*–पु० दे० 'भेद'; बारी ।

भेवना*–स० क्रि० भिगोना ।

भेष–पु० दे० 'भेस' ।

भेषज–पु० [सं०] दवा; उपचार ।

भेषजांग–पु० [सं०] दवा खानेके साथ या बाद खायी जानेवाली चीज, अनुपान ।

भेषजागार–पु० [सं०] दवाकी दुकान ।

भेषना*–स० क्रि० भेस बनाना ।

भेस–पु० बाह्य रूप; पहनावा; वेश-भूषा, पहनावे आदिसे बदला हुआ रूप (बनाना, बदलना) ।

भेसज*–पु० दे० 'भेषज' ।

भेसना*–स० क्रि० भेस बनाना ।

भैँस–स्त्री० गोजातीय एक मादा पशु जिसका दूध गायके दूधसे अधिक गाढ़ा और स्नेह-युक्त होता है, महिषी ।

भैँसा–पु० भैंसका नर, महिष ।

भै*–पु० दे० 'भय' । **–जन***–वि० दे० 'भयजनक' । **–दा***–वि० स्त्री० भयोत्पादक ।

भैक्ष–पु० [सं०] भिक्षा; भिक्षामें प्राप्त वस्तु, भीख । वि० भिक्षाजीवी । **–काल**–पु० भिक्षाका समय । **–चर्या**–स्त्री० घूम-घूमकर भीख माँगना । **–जीविका**–स्त्री० भिक्षापर जीवन व्यतीत करना । **–भुक् (ज्)**–वि० भिक्षाजीवी । **–वृत्ति**–स्त्री० दे० 'भैक्ष जीविका' ।

भैक्षान्न–पु० [सं०] भीखमें मिला हुआ अन्न ।

भैक्ष्य–पु० [सं०] भीख ।

भैचक, भैचक्क*–वि० दे० 'भौचक' ।

भैन, भैना, भैनी†–स्त्री० बहिन ।

भैने†–पु० भांजा ।

भैया–पु० भाई; बराबरवाले या छोटेका संबोधन । **–चार, –चारा**–पु० भाईचारा । **–चारी**–स्त्री० भाईचारा । **–दूज**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला द्वितीया ।

भैरव–वि० [सं०] भैरव-संबंधी; भयानक, डरावना; दुःखी । पु० शिवके अवताररूप माने जानेवाले शिवके अंगविशेष; शिव; भय; भयानक रस; एक नद; एक राग; तालका एक भेद; गीदड़; एक पर्वत । **–कारक**–वि० भयावना ।

भैरवी–स्त्री० [सं०] दुर्गा; दस महाविद्याओंमेंसे एक; एक रागिनी; एक नदी; शैव संन्यासिनी । वि० स्त्री० डरावनी । **–चक्र**–पु० तांत्रिक (वाममार्गी) साधकों, पंचमकारकी विधिसे उपासना करनेवालोंकी चक्ररूपमें बैठी हुई मंडली; मद्यपों आदिका समूह । **–यातना**–स्त्री० वह यातना जो काशीखंडके अनुसार काशीमें प्राणत्याग करनेवालोंको मरते समय पापोंसे शुद्धिके लिए भैरव द्वारा दी जाती है ।

भैरवीय–वि० [सं०] भैरव-संबंधी ।

भैरवेश–पु० [सं०] विष्णु; शिव ।

भैषज–पु० [सं०] औषध; लवा पक्षी ।

भैषजिक विद्यालय–पु०(मेडिकल कॉलेज) रोगोंके निदान, उपचार आदिकी शिक्षा प्रदान करनेवाला विद्यालय ।

भैषज्य–पु०[सं०] औषध, चिकित्सा; भिषक्पुत्र; आरोग्यदायक शक्ति । **–रत्नावली**–स्त्री० आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध चिकित्साग्रंथ ।

भैष्मकी–स्त्री० [सं०] भीष्मककी कन्या, रुक्मिणी ।

भैहा*–वि० भयग्रस्त, डरा हुआ; जिसपर किसी प्रेत आदिका आवेश होता हो ।

भोँकना–स० क्रि० शरीरमें नुकीली चीज (भाला, छुरा आदि) घुसेड़ना । अ० क्रि० भूँकना ।

भोंगाल–पु० आवाजको दूरतक पहुँचानेके लिए काममें लाया जानेवाला भोंपा ।

भोँचाल–पु० भूकंप ।

भोंडर–पु० दे० 'भोडर' ।

भोँड़ा–वि० भद्दा; बदशकल, बेडौल; * मूर्ख । **–पन**–पु० भद्दापन; अशिष्टता ।

भोँतरा, भोँतला†–वि० जिसकी धार तेज न हो ।

भोँदू–वि० मूर्ख, बुद्धू ।

भोँपा, भोँपू–पु० एक तरहकी तुरही; इंजिनमें लगा हुआ वह साधन जिसके द्वारा ऊँची आवाज पैदा की जाती है; ऐसी आवाज, सीटी ।

भोँ-भोँ–पु० भूँकनेकी आवाज ।

भो–अ० [सं०] हे, अहो (संबोधन); * दे० 'भया' ।

भोकस*–वि० भूखा । पु० राक्षस–'कीन्हेसि भोकस देव दईता'–प० ।

भोक्तव्य–वि० [सं०] भोगने योग्य ।

भोक्ता (क्तृ)–वि० [सं०] भोग करनेवाला; भोजन करनेवाला; सहन करनेवाला; शासन करनेवाला । पु० पति; राजा; विष्णु ।

भोक्तृत्व–पु० [सं०] भोग; अधिकार; अनुभूति ।

भोग–पु० [सं०] सुख-दुःखादिका अनुभव; सुख; दुःख; संभोग; भूमि आदिका फल भोगना, भुक्ति, कब्जा; वेश्याका शुल्क; संपत्ति; शासन; चीजको काममें लाना; पाप-पुण्यका फल; भोजन; लाभ, आय; देवताके आगे रखा जानेवाला मिष्टान्न आदि, नैवेद्य; सूर्यादिका राशिविशेषमें गतिकाल; साँपका (फैला हुआ) फन; कुंडली; पंक्तिबद्ध सेना; साँप; देह । **–जात**–वि० भोग या कष्टसे उत्पन्न । **–तृष्णा**–स्त्री० भोगकी बलवती इच्छा । **–देह**–स्त्री० मृत्युके बाद जीवात्माको पाप-पुण्यका फल भोगनेके लिए मिलनेवाला सूक्ष्म शरीर । **–धर**–पु० साँप । **–नाथ**–पु० पालन करनेवाला । **–पति**–पु० प्रदेशविशेषका शासक । **–पाल**–पु० साईस । **–पिशाचिका**–स्त्री० भूख । **–बंधक**–पु० वह बंधक या रेहन जिसमें रुपया देनेवालेको ब्याजके बदले बंधक रखी चीजको काममें लानेका अधिकार हो । **–भुक् (ज्)**–वि० भोग करनेवाला । **–भूमि**–स्त्री० भारतवर्षसे भिन्न देश (भारतवर्ष कर्म-भूमि कहा गया है) । **–भृतक**–पु० केवल भोजन-वस्त्र लेकर काम करनेवाला नौकर । **–लाभ**–पु० अनाजका ब्याज, डेढ़िया, सवाई । **–लिप्सा**–स्त्री० भोगकी तृष्णा । **–विलास**–पु० शारीरिक या इंद्रियजन्य सुखोंका अधिक भोग, मौज, ऐश । **–शील**–वि० भोगी । **–सद्म (न्)**–पु० जनानखाना, अंतःपुर । **–स्थान**–पु० शरीर; अंतःपुर ।

भोगना–स० क्रि० सुख-दुःखका अनुभव करना; सहना, भुगतना; लुत्फ उठाना; संभोग करना ।

भोगली†–स्त्री० नली; नाककी लौंग; कानमें पहननेकी

तरकी; लौंग आदिको अटकानेके लिए उसमें लगायी जानेवाली कील ।

भोगवती–स्त्री० [सं०] पाताल गंगा; नागिन; नागपुरी ।

भोगवना*–स० क्रि० दे० 'भोगना' ।

भोगवाना–स० क्रि० दे० 'भोगाना' ।

भोगवान्(वत्)–वि०[सं०] भोगयुक्त । पु० साँप; नाट्य ।

भोगाधिकार–पु० [सं०] (आकुपैंसी राइट) खेत, भूमि आदिके भोगका स्थायी अधिकार जो प्रायः उसपर निर्धारित अवधितक काबिज रहनेके बाद किसीको प्राप्त होता है ।

भोगाना–स० क्रि० दूसरेको भोग कराना ।

भोगार्ह–वि० [सं०] भोगोपयोगी । पु० धन-संपत्ति ।

भोगावास–पु० [सं०] अंतःपुर ।

भोगींद्र–पु० [सं०] शेष; वासुकि; पतंजलि ।

भोगी (गिन्)–वि०[सं०] भोग करनेवाला; विषयासक्त, भोग-विलासमें रत; कुंडलीयुक्त; फणदार । पु० साँप; जमींदार; राजा; नाई ।

भोग्य–वि० [सं०] भोग करने योग्य । पु० भोग्य वस्तु, धन-संपत्ति; भोगबंधक रखी हुई चीज ।

भोग्या–स्त्री० [सं०] वेश्या ।

भोज–पु० बहुतसे लोगोंका साथ बैठकर खाना, ज्योनार; [सं०] भोजपुर; राजा द्रुह्युका एक पुत्र; कान्यकुब्जमें नवीं शतीमें हुआ एक प्रतापी नरेश; मालवाका परमारवंशी राजा जो बड़ा पंडित, कवि और गुणी जनोंका आदर करनेवाला था (१०-११ वीं शती), राजा भोज । **–देव**–पु० कान्यकुब्ज-नरेश भोजराज । **–पति**–पु० भोजराज; कंस । **–पुर**–पु० भोजकट नामका जनपद । **–पुरिया**–वि० [हिं०] भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । **–पुरी**–वि० [हिं०] भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । स्त्री० भोजपुर प्रदेशकी बोली । **–राज**–पु० राजा भोज । **–विद्या**–स्त्री० इंद्रजाल ।

भोजक–पु० [सं०] भोजन करनेवाला; ज्योतिषी । वि० खानेवाला; भोजन देनेवाला; * भोगी; विलासी ।

भोजन–पु० [सं०] ठोस आहारको गलेके नीचे पहुँचाना, खाना; खानेकी चीज, खाद्य; खिलाना; भोगना; धन; एक पर्वत । **–काल**–पु० खानेका समय । **–खानी***–स्त्री० रसोई । **–गृह**–पु० रसोईघर, भोजनशाला । **–त्याग**–पु० आहारका त्याग, उपवास । **–भट्ट**–पु० [हिं०] पेटू । **–भूमि**–स्त्री० भोजन करनेका स्थान । **–वस्त्र**–पु० खाना-कपड़ा । **–वेला**–स्त्री०, **–समय**–पु० दे० 'भोजन-काल' । **–व्यय**–पु० खाने-पीनेका खर्च । **–शाला**–स्त्री० भोजन करनेका स्थान; रसोई ।

भोजनार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] भोजनका इच्छुक, भूखा ।

भोजनालय–पु० [सं०] भोजनशाला; होटल ।

भोजनीय–वि० [सं०] खाने योग्य, भोज्य । पु० आहार ।

भोजी(जिन्)–वि०[सं०] (समासांतमें)भोजनकरनेवाला ।

भोज्य–वि० [सं०] खाने योग्य, भोजनीय । पु० भोजन, खाद्य । **–काल**–पु० भोजनका समय ।

भोटिया–पु० भूटानका निवासी । स्त्री० भूटानकी भाषा ।

भोडर, भोडल*–पु० अभ्रक, बुक्का ।

भोथर, भोथरा–वि० जिसकी धार कुंद हो गयी हो ।

भोना*–अ० क्रि० रँगना; अनुरक्त होना; पैवस्त होना ।

भोपा–पु० दे० 'भोँपा' ।

भोमि*–स्त्री० दे० 'भूमि' ।

भोर–पु० रात बीतनेके बाद और सूर्योदय होनेके पहलेका समय, तड़का, प्रभात; एक सदाबहार वृक्ष; एक पक्षी; * भूल; भ्रम । * वि० भोला; चकित–'सूर प्रभुकी निरखि सोभा, भई तरुनी भोर'–सू०

भोरा*–वि० दे० 'भोला' । [स्त्री० 'भोरी' ।] **–नाथ***–पु० दे० 'भोलानाथ' । **–पन***–पु० भोलापन, सिधाई ।

भोराई*–स्त्री० भोलापन, सिधाई ।

भोराना*–स० क्रि० बहकाना, भुलाना । अ० क्रि० भ्रममें पड़ना; भुलावेमें आना ।

भोलना*–स० क्रि० बहकाना, भुलावा देना ।

भोला–वि० सीधा, सरल, जिसमें बनावट, छल-कपट न हो; मूर्ख, बुद्धू । **–नाथ**–पु० शिव । वि० सीधा-सादा । **–पन**–पु० सिधाई; मूर्खता । **–भाला**–वि० सीधा-सादा, निष्कपट ।

भोहरा*–पु० भुइँहरा; खोह ।

भौँ–स्त्री० आँखके ऊपरकी हड्डीपर धनुष्के आकारमें जमे हुए बाल, भ्रुकुटि । मु० **–चढ़ाना**, **–तानना**–रोष प्रकट करना, नाराज होना ।

भौँकना–अ० क्रि० दे० 'भूँकना' ।

भौँचाल†–पु० भूकंप ।

भौँड़ा†–वि० दे० 'भोँड़ा' ।

भौँतुवा–पु० प्रायः हाथमें होनेवाला एक तरहका वातज शोथ रोग; एक छोटा कीड़ा; तेलीका बैल ।

भौँर*–पु० भ्रमर; जलावर्त ।

भौँरा–पु० काला परदार कीड़ा जो फूलोंका प्रेमी माना जाता है, भ्रमर; बड़ी मधुमक्खी; पहियेकी नाभि; रहटकी खड़ी चरखी; * एक खिलौना, लट्टू; हिंडोलेमें ऊपर लगी हुई लकड़ी; तहखाना ।

भौँराना*–स० क्रि० घुमाना, भाँवर फिराना ।

भौँराला*–वि० घुँघराले (बाल) ।

भौँरी–स्त्री० चक्राकारमें उगे हुए बाल या रोयें जो शुभाशुभसूचक माने जाते हैं; भाँवर; भँवर; एक तरहका भौंरा ।

भौँह–स्त्री० दे० 'भौँ' ।

भौँहरा*–पु० दे० 'भुइँहरा' ।

भौ*–पु० दे० 'भव'; दे० 'भय' । **–जल**, **–जलि***–पु० भवजाल, भवसागर–'मैं बहुरि न भौजलि आउँगो'–कबीर ।

भौगोलिक–वि० [सं०] भूगोल-संबंधी ।

भौचक, भौचक्का–वि० भय या आश्चर्यसे हतबुद्धि, हक्का-बक्का, हैरान ।

भौजंग–वि० [सं०] सर्प-संबंधी; सर्प जैसा ।

भौज*–स्त्री० दे० 'भावज' ।

भौजाई, भौजी–स्त्री० भावज, बड़े भाईकी स्त्री ।

भौत–वि० [सं०] भूत-संबंधी; भूतनिर्मित, भौतिक; पैशाचिक; भूताविष्ट । पु० देवल, पुजारी; भूतपूजक; भूतयज्ञ; भूतोंका समूह ।

भौतिक–वि० [सं०] भूत-संबंधी; पंचमहाभूतों या किसी एक भूतसे बना हुआ, पार्थिव, माद्दी; शरीर-संबंधी; प्रेत-

संबंधी, पिशाचकृत। **-वाद**-पु० पंचभूतोंके आधारपर बना हुआ सिद्धांत।**-विज्ञान,-शास्त्र**-पु० (फिजिक्स) वह विज्ञान जिसमें तत्त्वोंके गुण आदिका विवेचन किया गया हो। **-विद्या**-स्त्री० जादूगरी।

भौन*-पु० दे० 'भवन'।

भौना*-अ० क्रि० चक्कर लगाना; घूमना।

भौम-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; भूमिसे उत्पन्न। पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; जल। **-प्रदोष**-पु० मंगलवारको पड़नेवाला प्रदोष। **-रत्न**-पु० मूँगा। **-वार,-वासर**-पु० मंगलवार।

भौमासुर-पु० [सं०] नरकासुर।

भौमिक-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; भूमिका। पु० भूस्वामी, जमींदार।

भौमी-स्त्री० [सं०] भूमिसुता, सीता।

भौम्य-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; पृथ्वीपरका।

भौर*-पु० भौंरा; भँवर; घोड़ोंका एक भेद।

भ्रंगी-पु० गुंजार करनेवाला एक फतिंगा।

भ्रंश, भ्रंस-पु० [सं०] नीचे गिरना, पतन, ह्रास; नाश; मार्गसे विचलित होना; परित्याग।

भ्रंशन, भ्रंसन-पु० [सं०] नीचे गिरना, पतन, भ्रष्ट होना। वि० नीचे गिरानेवाला।

भ्रंशित-वि० [सं०] नीचे गिराया हुआ; वंचित।

भ्रंशी(शिन्)-वि० [सं०] भ्रष्ट होनेवाला; छीजनेवाला; भटकनेवाला; बरबाद करनेवाला।

भ्रंशोद्धार-पु० (सैलवेज) डूबे हुए या ध्वस्त किये हुए जहाजका समुद्रगर्भसे उद्धार करना।

भ्रकुटि-स्त्री० [सं०] दे० 'भ्रुकुटी'।

भ्रमंत-पु० [सं०] छोटा मकान।

भ्रम-पु० [सं०] घूमना, चक्कर; भूल; भटकना; मिथ्या, अयथार्थ ज्ञान (जैसे रस्सीको साँप समझना); घबड़ाहट; जलावर्त; चकाचौंध; उत्स, सोता; चक्करका राग; चाक; चक्की; खराद; भ्रांति अर्थालंकार; * भरम, प्रतिष्ठा। **-कारी(रिन्)**-वि० भ्रमोत्पादक। **-जार***-पु० भ्रमजाल। **-जाल**-पु० मोहपाश। **-मूलक**-वि० भ्रमसे उत्पन्न, भ्रमजनित। **-वात**-पु० ऊपर ही ऊपर चलती रहनेवाली वायु। **-संशोधन**-पु० भूलसुधार।

भ्रमण-पु० [सं०] घूमना, फिरना; यात्रा; अस्थिरता; चक्कर; चकाचौंध। **-कारी(रिन्)**-वि० घूमनेवाला, घुमक्कड़। **-वृत्तांत**-पु० यात्राका वर्णन, पर्यटनकी कहानी।

भ्रमन*-पु० दे० 'भ्रमण'।

भ्रमना*-अ० क्रि० घूमना, भ्रमण करना; भ्रममें पड़ना, भूलना; भटकना।

भ्रमनि*-स्त्री० दे० 'भ्रमण'।

भ्रमर-पु० [सं०] भौंरा, मधुप; उद्धव; कामी; चाक; वटु, लड़का; चकाचौंध। **-कीट**-पु० एक तरहकी भिड़। **-गीत**-पु० वह गीत-संग्रह जिसमें भ्रमरको संबोधित कर गोपियोंने उद्धवको उलाहना दिया है। **-निकर**-पु० मधुमक्खियोंका झुंड। **-प्रिय**-पु० एक तरहका कदंब।

भ्रमरावली-स्त्री० [सं०] भौंरोंकी पंक्ति।

भ्रमरी-स्त्री० [सं०] मादा भौंरा; पार्वती; जंतुका लता।

भ्रमात्मक-वि० [सं०] धोखेमें डालनेवाला, संदिग्ध।

भ्रमाना*-स० क्रि० घुमाना; बहकाना, भ्रममें डालना।

भ्रमासक्त-पु० [सं०] तलवार आदि साफ करनेवाला।

भ्रमि-स्त्री० [सं०] चक्कर; कुम्हारका चाक; खराद; भँवर; बगूला; भ्रम, भूल; सेनाका चक्राकार व्यूह।

भ्रमित-वि० [सं०] घूमता, चक्कर खाता हुआ; घुमाया, चक्कर खिलाया हुआ। **-नेत्र**-वि० ऐंचा-ताना।

भ्रमी(मिन्)-वि० [सं०] घूमने, चक्कर खानेवाला; भ्रमयुक्त।

भ्रमीन*-वि० भ्रमण करनेवाला।

भ्रष्ट-वि० [सं०] नीचे गिरा हुआ; बिगड़ा हुआ; दूषित आचारवाला; क्षीण; नष्ट;...से च्युत। **-निद्र**-वि० निद्रासे वंचित। **-मार्ग**-वि० जो मार्ग भूल गया हो। **-श्री**-वि० भाग्यहीन।

भ्रष्टा-स्त्री० [सं०] पतित स्त्री, दुश्चरित्रा।

भ्रष्टाचार-वि० [सं०] जिसका आचार बिगड़ गया हो। पु० दूषित आचार-बेईमानी, घूसखोरी इ०।

भ्रांत-वि० [सं०] भूला हुआ; भ्रमयुक्त; हैरान, परेशान; भ्रमता, चक्कर खाता हुआ। पु० मतवाला हाथी; धतूरा; भ्रमण, चक्कर; भूल।

भ्रांतापह्नुति-स्त्री० [सं०] अपह्नुति अलंकारका एक भेद, जहाँ किसीको किसी पदार्थमें अन्य पदार्थका भ्रम हो जानेपर सच्ची बात कहकर उसका निराकरण किया जाय; भ्रांति दूर करनेके लिए सच्ची बात कहना।

भ्रांति-स्त्री० [सं०] अयथार्थ ज्ञान, भ्रम; चक्कर; अस्थिरता; संदेह; घबड़ाहट; एक अर्थालंकार जहाँ उपमानके सदृश उपमेयको देखनेपर उपमानका निश्चयात्मक भ्रम हो। **-कर**-वि० भ्रमजनक। **-नाशन**-वि० भ्रम, भ्रांतिका नाश करनेवाला। पु० शिव। **-हर**-वि० भ्रांतिका नाश करनेवाला।

भ्रांतिमान्(मत्)-वि० [सं०] भ्रमयुक्त; चक्कर खाता हुआ। पु० 'भ्रांति' नामक अर्थालंकार।

भ्राजक-वि० [सं०] चमकानेवाला।

भ्राजना*-अ० क्रि० शोभित होना; चमकना।

भ्राजमान*-वि० शोभायमान।

भ्राजि-स्त्री० [सं०] चमक, दीप्ति।

भ्रात*-पु० दे० 'भ्राता'।

भ्राता(तृ)-पु० [सं०] सगा भाई। **-ज**-पु० भाईका पुत्र। **-जा**-स्त्री० भाईकी पुत्री। **-जाया**-स्त्री० भावज। **-द्वितीया**-स्त्री० कार्तिक-शुक्ला द्वितीया, भैयादूज। **-पुत्र**-पु० भतीजा। **-भाव**-पु० भाईकासा स्नेह, भायप, भाईचारा। **-वधू**-स्त्री० भावज। **-श्वशुर**-पु० जेठ, पतिका बड़ा भाई।

भ्रातुष्पुत्र-पु० [सं०] भतीजा।

भ्रातुष्पुत्री-स्त्री० [सं०] भतीजी।

भ्रात्रीय-वि० [सं०] भ्राता-संबंधी। पु० भतीजा।

भ्रात्रेय-पु० [सं०] भतीजा। वि० भ्राता-संबंधी।

भ्राम-वि० [सं०] भ्रमयुक्त; घूमनेवाला। पु० भूल, धोखा; भ्रम, मिथ्या ज्ञान (यशोधरा)।

भ्रामक-वि० [सं०] भ्रमजनक; धूर्त; बहकानेवाला। पु० सियार; चुंबक; ठग।

भ्रामर-वि० [सं०] भ्रमर-संबंधी। पु० भौंरोंका इकट्ठा किया हुआ शहद; चुंबक।

भ्राष्ट्र-पु० [सं०] आकाश; वह अथरी जिसमें भड़भूजे दाना भूनते हैं।

भ्राश्विक-पु० [सं०] शरीरकी एक नाड़ी।

भ्रकंश, भ्रुकंस, भ्रूकंश, भ्रूकंस-पु० [सं०] स्त्रीके वेशमें काम करनेवाला नट।

भ्रुकुटि, भ्रुकुटी-स्त्री० [सं०] भ्रूभंग; भौं।

भ्रुव-स्त्री० भौंह।

भ्रू-स्त्री० [सं०] भौं। -कुटि,-कुटी-स्त्री० भ्रूभंग। -कुटी-मुख-पु० एक साँप। -क्षेप,-विक्षेप-पु० भौं टेढ़ी करना, भ्रूभंग। -भंग,-भेद-पु० भौं टेढ़ी करना, भौं चढ़ाकर रोष प्रकट करना। -मध्य-पु० दोनों भवोंके बीचका स्थान। -लता-स्त्री० मेहराबदार भौं। -विक्रिया-स्त्री० भ्रूभंग। -विलास-पु० भवोंका मोहक संचालन, भंगी।

भ्रूण-पु० [सं०] गर्भस्थ शिशु। -घ्न-पु० भ्रूणहत्या करनेवाला। -हत्या-स्त्री० गर्भपात द्वारा गर्भस्थ शिशुकी हत्या करना। -हा(हन्)-पु० भ्रूणहत्या करनेवाला।

भ्रेष-पु० [सं०] नाश; गमन; डर।

भ्वहरना*-अ० क्रि० भीत होना, डरना।

म

म-देवनागरी वर्णमालाका पचीसवाँ व्यंजन वर्ण।

मंखी-स्त्री० बच्चोंके गलेमें पहनानेका एक जेवर।

मंग-स्त्री० माँग, सीमंत।

मँगता, मंगन-पु० भिखमंगा, याचक।

मँगनी-स्त्री० माँगनेका भाव; माँगकर, काम हो जानेपर लौटा देनेका वचन देकर, पायी हुई चीज़; ब्याह पक्का करनेकी रस्म। -की चीज़-पुनः लौटा देनेकी शर्तपर ली हुई वस्तु।

मंगल-पु० [सं०] शुभ, कल्याण; सौभाग्य; अभीष्ट अर्थकी सिद्धि; सौरमंडलका एक ग्रह जो पृथ्वीका पुत्र माना जाता है; मंगलवार; विष्णु; अग्निका एक नाम। वि० कल्याणकारी, शुभ; शुभ लक्षणयुक्त; संपन्न; वीर। -कलश-पु० दे० 'मंगलघट'। -काम-वि० मंगलकी कामना करनेवाला, शुभचिंतक। -कामना-स्त्री० कल्याणकी कामना। -कारक,-कारी(रिन्)-वि० कल्याणकारी। -कार्य-पु० शुभ कार्य, ब्याह, जन्म आदिका उत्सव। -काल-पु० शुभ घड़ी। -गान-पु० मंगलके अवसरपर होनेवाला गाना-बजाना। -गीत-पु० मंगल अवसरपर गाया जानेवाला गीत। -ग्रह-पु० शुभ ग्रह; मंगल नामक ग्रह। -घट,-पात्र-पु० शुभ कार्योंमें देवताके सामने रखा जानेवाला जलपूर्ण घट। -वाद्य-पु० शुभ अवसरपर बजाये जानेवाले बाजे। -पाठक-पु० वंदीजन, स्तुतिपाठक। -प्रद-वि० कल्याणकारी। -प्रदा-स्त्री० हल्दी; शमीका पेड़। -वार,-वासर-पु० सोमवारके बादका दिन, भौमवार। -सूत्र-पु० हल्दीमें रँगा सूत जो ब्याहके समय वर-कन्याके हाथमें बाँध दिया जाता है; सधवा स्त्रियों द्वारा गलेमें पहना जानेवाला पवित्र सूत्र। -स्नान-पु० मांगलिक अवसरपर या मांगलिक पूजनके लिए किया जानेवाला स्नान।

मंगलमय-वि० [सं०] कल्याणमय, मंगलरूप।

मंगला-वि० मंगली (पुरुष); मंगलको पैदा होनेवाला। -मुखी-स्त्री० वेश्या।

मंगला-स्त्री० [सं०] पार्वती; पतिव्रता स्त्री; सफेद दूब।

मंगलाचरण-पु० [सं०] शुभ कार्यके आरंभमें मंगलकामनासे की जानेवाली देवस्तुति; ग्रंथारंभमें लिखा जानेवाला मांगलिक पद आदि।

मंगलाचार-पु० [सं०] मंगलकृत्यके पहले होनेवाला मंगलगान; शुभानुष्ठान।

मंगलाष्टक-पु० [सं०] वे मंत्र जिनका पाठ विवाहके समय वर-वधूके कल्याणार्थ किया जाता है।

मंगली-वि०(स्त्री या पुरुष) जिसकी कुंडलीमें चौथे, आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल पड़ा हो; (ऐसी कुंडली) जिसके चौथे, आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल हो। स्त्री० हलदी (कविप्रि०)।

मंगलेच्छु-वि० [सं०] मंगल चाहनेवाला, हितेच्छु।

मंगलोत्सव-पु० [सं०] मांगलिक उत्सव।

मंगल्य-वि०[सं०] मंगलकारक; सुंदर। पु० चंदन; सोना।

मँगवाना, मँगाना-स० क्रि० किसीसे कोई चीज लाने या भेजनेके लिए कहना।

मँगेतर-स्त्री० लड़की जिसकी किसीके साथ मँगनी हुई हो।

मंगोल-पु० मनुष्योंकी चार मूल जातियोंमेंसे एक जो तिब्बत, चीन, जापान आदिमें बसती है और जिसका रंग हलका पीला तथा नाक चिपटी होती है।

मंच-पु० [सं०] खाट; मचिया; मचान; सिंहासन; रंगभूमि। -मंडप-पु० फसलकी रखवालीके लिए या विवाहादिके अवसरपर बनाया हुआ मचान।

मंचिका-स्त्री० [सं०] मचिया।

मंछर*-पु० दे० 'मत्सर'; 'मच्छर'।

मंजन-पु० दाँत साफ करनेके लिए औषधियोंका बना चूर्ण; स्नान।

मँजना-अ० क्रि० माँजा जाना; अभ्यास होना, अनुभवसे दक्षता प्राप्त होना।

मंज़र-पु० [अ०] दृष्टिका आश्रय; दृश्य; नज्जारा; देखने योग्य वस्तु; स्थान; झरोखा।

मंजरित-वि० [सं०] मंजरियोंसे लदा हुआ।

मंजरी-स्त्री० [सं०] कल्ला, कोंपल; सींकेमें लगे हुए छोटे, घने फूल; मोती; लता; तुलसी। -चामर-पु० मंजरीकी शकलका चवँर।

मंजरीक-पु० [सं०] तुलसी; तिलक वृक्ष; बेत; अशोक वृक्ष; मोती।

मँजाई-स्त्री० माँजनेकी क्रिया; माँजनेकी उजरत।

मंजारी*-स्त्री० बिल्ली।

मंजिका-स्त्री० [सं०] वेश्या।

मंजिमा (मन्)-स्त्री० [सं०] सुंदरता, मनोहरता।

मंज़िल-स्त्री० [अ०] उतरने या ठहरनेकी जगह, पड़ाव, मुकाम; एक दिनका सफर; मकान; पांथशाला; मकानका दरजा या छत; वह स्थान जहाँ डाकके घोड़े बदले जायँ। **-गाह**-पु०स्त्री० उतरनेकी जगह। **(मंजिले)मकसूद**-स्त्री० असल मुराद। **-हस्ती**-स्त्री० जिदगी। **मु०-उठाना**-मकान बनाना। **-भारी होना**-यात्रा पूरी करना कठिन होना। **-मारना**-यात्रा पूरी करना; मुश्किल हल करना।

मंजिष्ठा-स्त्री० [सं०] मजीठ। **-मेह**-पु० एक प्रकारका प्रमेह (सुश्रुत)। **-राग**-पु० मजीठका रंग; मजीठके रंग जैसा पक्का, स्थायी अनुराग।

मंजीर-पु० [सं०] घुँघरू, नूपुर; ताल।

मँजीरा-पु० दे० 'मजीरा'।

मंजु-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर। **-केशी (शिन्)**-पु० कृष्ण। वि० सुंदर बालोंवाला। **-गति,-गमना**-वि० स्त्री० मनोहर गतिवाली। स्त्री० हंसिनी। **-घोषा**-स्त्री० एक अप्सरा; कोयल। **-भाषिणी**-वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। **-भाषी(षिन्)**-वि० मधुरभाषी।

मंजुल-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर।

मंज़ूर-वि० [अ०] पसंद किया हुआ, स्वीकृत।

मंजूरी-स्त्री० [अ०] स्वीकृति, मंजूर होना।

मंजूषा-स्त्री० [सं०] पिटारी; वह तश्तरी आदि जिसमें रखकर अभिनंदनपत्र भेंट किया जाता है।

मंजूसा-स्त्री० दे० 'मंजूषा'।

मँझला-वि० दे० 'मझला'।

मंझा-पु० दे० 'माँझा'; अटेरनके बीचकी लकड़ी; चरखेका मुँड़ला (चक्र); खटिया। * वि० मझला, बीचका।

मँझियाना-स० क्रि० धँसकर पार करना; नाव खेना।

मँझोला-वि० दे० 'मझोला'।

मंड-पु० [सं०] माँड़; सार; मलाई; सुरा; एरंड। **-प**-वि० माँड़ पीनेवाला। **-हारक**-पु० मद्य बनानेवाला, कलाल।

मंडन-पु० [सं०] सजाना, शृंगार करना; आभूषण; युक्ति-प्रमाणसे पक्ष-विशेषकी पुष्टि करना। **-प्रिय**-वि० अलंकार-प्रेमी। **-मिश्र**-पु० सुप्रसिद्ध मीमांसक जो कहा जाता है कि शंकराचार्यसे शास्त्रार्थमें पराजित हुए थे।

मंडना*-स० क्रि० सजाना, सँवारना; दे० 'माँड़ना'।

मंडप-पु० [सं०] छाया हुआ, पर चारों ओरसे खुला हुआ बैठनेका स्थान, मँड़वा; कुंज (जैसे लतामंडप)। वि० दे० 'मंड'में।

मंडपिका-स्त्री० [सं०] छोटा मंडप।

मंडपी-स्त्री० छोटा मंडप; मढ़ी।

मंडर*-पु० दे० 'मंडल'।

मँडरना*-अ०क्रि० मंडल बाँधना; सब ओरसे घेर लेना।

मँडराना-अ० क्रि० मंडलाकारमें चक्कर देते हुए उड़ना; किसीके आस-पास चक्कर काटना, घूमते रहना।

मंडल-पु० [सं०] गोल घेरा, हलका, कुंडली; सूर्य-चंद्रका बिंब; सूर्य-चंद्रके इर्द-गिर्द देख पड़नेवाला घेरा, परिवेश; गोल; समूह, मंडली; समिति; एक प्रकारका सैन्य-व्यूह; चाक; ऋग्वेदका प्रत्येक खंड; ग्रहोंका गतिपथ, कक्षा; क्षितिज; जिला, प्रदेश, ग्राम-समूह; एक तरहका साँप। **-नृत्य**-पु० मंडलाकार घूमते हुए नाचना।

मंडलाकार, मंडलाकृत-वि० [सं०] मंडलके आकारका, गोला।

मंडलाग्र-पु० [सं०] वह तलवार जिसकी नोक कुछ झुकी हो, खंजर।

मंडलाधिप-पु० [सं०] दे० 'मंडलेश्वर'।

मंडलाधीश-पु० [सं०] दे० मंडलेश्वर'।

मंडली-स्त्री० छोटा मंडल, जमात, समुदाय; दूब; गुडुच।

मंडली(लिन्)-वि० [सं०] मंडल, हलका बनानेवाला। पु० साँप; साँपका एक भेद; बिल्ली; सेंधुआर नामका जंतु; सूर्य; मंडलाधिपति; बरगद।

मंडलीक-पु० [सं०] मंडलका राजा; करद राजा।

मंडलीकरण-पु० [सं०] मंडल या कुंडली बनाना, कुंडली मारना।

मंडलेश-पु० [सं०] देशका शासक, नरेश।

मंडलेश्वर-पु० [सं०] एक मंडलका शासक, राजा, चार सौ योजन रकबेवाले प्रदेशका राजा।

मँड़वा-पु० मंडप; शामियाना।

मंडार, मँडारा-पु० झाबा, टोकरा; गड्ढा (पश्चा०)।

मंडित-वि० [सं०] सजाया हुआ, भूषित।

मंडी-स्त्री० (किसी खास चीजकी) थोक बिक्रीका बाजार, बड़ा बाजार; बाजार। **मु०-लगना**-बाजार लगना।

मंडील-पु० कामदार कपड़ेका मुरेठा, मंदील।

मँडुआ-पु० एक मोटा अनाज।

मंडूक-पु० [सं०] मेढक; एक ताल; एक नृत्य।

मंडूर-पु० [सं०] लोहेका मैल, कीट जो दवाके काम आता है।

मंढा-पु० कमख्वाब बुननेवालोंका एक औजार।

मंतव्य-वि० [सं०] मानने योग्य, माननीय। पु० मत।

मंत्र-पु० [सं०] गुप्त वार्ता, कानमें कही जानेवाली बात, सलाह, मंत्रणा; वह शब्द या शब्द-समूह जिससे किसी देवताकी सिद्धि या अलौकिक शक्तिकी प्राप्ति हो; वेदका संहिताभाग; कार्यसिद्धिका गुर (मूल मंत्र)। **-कार**-पु० मंत्र रचनेवाला, मंत्रद्रष्टा। **-कुशल**-वि० मंत्रणामें पटु। **-गृह**-पु० मंत्रणागृह। **-जल**-पु० अभिमंत्रित जल। **-ज्ञ**-वि० मंत्रणाकुशल। पु० मंत्री; गुप्तचर; तंत्र-मंत्र जाननेवाला। **-द,-दाता(तृ)**-पु० गुरु। **-दर्शी(र्शिन्)**-पु० वेदमंत्रोंका साक्षात्कार करनेवाला, मंत्रद्रष्टा। **-देवता**-पु० मंत्र-विशेष द्वारा आवाहित देवता। **-द्रष्टा**-पु० मंत्रदर्शी। **-पाठ**-पु० वेदमंत्रोंका पाठ। **-पूत**-वि० मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ। **-प्रयोग**-पु०,**-प्रयुक्ति**-स्त्री० मंत्रसे काम लेना। **-बल**-पु० मंत्रकी शक्ति। **-बीज,-बीज**-पु० मंत्रका पहला पद। **-भेद**-पु० गुप्त वार्ताका प्रकट कर दिया जाना। **-मुग्ध**-वि० मंत्रसे मोहित, वश

किया हुआ; जडवत्। **–वादी(दिन्)**–पु० मंत्रका उच्चारण करनेवाला, मंत्रज्ञ; जादूगर । **–विद्**–वि० मंत्रज्ञ । **–विद्या**–स्त्री० तंत्र-मंत्रकी विद्या । **–शक्ति**–स्त्री० मंत्रका प्रभाव । **–संहिता**–स्त्री० वेदोंका मंत्रभाग । **–साधन**–पु० मंत्रको सिद्ध करनेका यत्न करना । **–सिद्धि**–स्त्री० मंत्रका सिद्ध होना, मंत्रका प्रभावकर होना । **–हीन**–वि० बिना मंत्रका; अदीक्षित ।

मंत्रणा–स्त्री० [सं०] मश्विरा करना; सलाह । **–कार**–पु० (ऐडवाइज़र) सलाह या मंत्रणा देनेवाला, वह जिससे बहुधा सलाह ली जाती हो । **–परिषद्**–स्त्री० (ऐडवाइज़री कौंसिल) किसी विषयके संबंधमें सलाह देनेवाली परिषद् ।

मंत्रालय–पु० (मिनिस्ट्री) राज्यके किसी मंत्री तथा उसके विभागका कार्यालय; मंत्री, उसके सचिव तथा अन्य कर्मचारियोंका समूह (मंत्री और उसका विभाग) ।

मंत्रित–वि० [सं०] जिसका मंत्र द्वारा संस्कार किया गया हो, अभिमंत्रित ।

मंत्रित्व–पु० [सं०] मंत्रीका पद या कार्य ।

मंत्री(त्रिन्)–पु० [सं०] जिसके साथ एकांतमें मश्विरा किया जाय, सचिव; सलाह देनेवाला; राज्यके किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जिसकी सलाहसे उस विभागका कार्य संचालन हो । **–परिषद्**–स्त्री० (कैबिनेट कौंसिल) राज्यके मंत्रियोंकी सभा जिसमें प्रशासन-संबंधी विविध प्रश्नोंपर बातचीत, विचार-विमर्श आदि किया जाता है । **–मंडल**–पु० (कैबिनेट) किसी (लोकतंत्र) राज्यके मंत्रियोंका समूह जो शासनके विभिन्न विभागोंकी देख-भाल करता है (अमात्यमंडल) ।

मंत्रेला*–पु० मंत्र जाननेवाला (कबीर) ।

मंथ–पु० [सं०] मंथन; क्षोभ; मथानी; सूर्य ।

मंथन–पु० [सं०] मथना, बिलोना; तत्त्वबोधके लिए किसी विषयको बार-बार पढ़ना, सोचना; मथानी; रगड़से आग पैदा करना । **–घट**–पु० दही मथनेका मटका ।

मंथर–वि० [सं०] सुस्त, मंद; जड़मति; स्थूल; नीच; टेढ़ा; बड़ा, चौड़ा; गंभीर । **–गति**–स्त्री० मंद गति, धीमी चाल । वि० धीमी चालवाला ।

मंथरा–स्त्री० [सं०] कैकेयीकी कुबड़ी दासी ।

मंद–वि० [सं०] सुस्त; धीमा; गंभीर; मृदु; मूर्ख; हलका; थोड़ा, छोटा (मंदोदरी); दुर्बल (मंदाग्नि); नीच । **–कांति**–पु० चंद्रमा । **–ग**–वि० मंदगामी । पु० शनि । **–गति**–वि० धीमी चालवाला । **–चेता(तस्)**–वि० मंदबुद्धि । **–धी,–बुद्धि**–वि० मोटी अक्लवाला, अल्पबुद्धि । **–भागी(गिन्),–भाग्य**–वि० अभागा, बदनसीब । **–मति**–वि० मोटी या खोटी अक्लवाला । **–समीर**–पु० हलकी, सुखद वायु । **–स्मित,–हास्य**–पु० हलकी हँसी ।

मंदर–पु० [सं०] वह पर्वत जो पौराणिक कथाके अनुसार समुद्र मथनेमें मथानी बनाया गया था; मंदार; स्वर्ग ।

मंदला–पु० एक तरहका बाजा ।

मंदा–वि० मंद, धीमा; ढीला; जिसकी माँग कम हो, नीचे भावपर बिकनेवाला (सौदा); खराब ।

मंदाकिनी–स्त्री० [सं०] गंगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा, आकाशगंगा; संक्रांतिका एक भेद; एक वर्णवृत्त ।

मंदाक्रांता–स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

मंदाग्नि–स्त्री० [सं०] पाचनशक्तिका दुर्बल हो जाना, हाजमेका बिगड़ जाना ।

मंदात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] मूर्ख, नीच ।

मंदाना*–अ० क्रि० मंद पड़ना ।

मंदानिल–पु० [सं०] हलकी, सुखद वायु ।

मंदार–पु० [सं०] नंदनकाननके पाँच वृक्षोंमेंसे एक, पारिभद्र; मदार; धतूरा; हाथी; मंदारपुष्प । **–माला**–स्त्री० मंदारके फूलोंकी माला ।

मंदारक–पु० [सं०] दे० 'मंदार' ।

मंदिर–पु० [सं०] घर; देवालय; नगर; शिविर ।

मंदिल*–पु० मंदिर; घर ।

मंदी–स्त्री० मंद होनेका भाव, तेजीका उलटा, सस्ती ।

मंदोदरी–स्त्री० [सं०] रावणकी पत्नी जो मय दानवकी कन्या और पंचकन्याओंमेंसे एक मानी जाती है । वि० स्त्री० छोटे, तंग पेटवाली ।

मँदोवै*–स्त्री० मंदोदरी ।

मंदोष्ण–वि० [सं०] थोड़ा गरम, कुनकुना ।

मंद्र–पु० [सं०] गंभीर ध्वनि; संगीतके तीन स्वरसप्तकों- (मंद्र, मध्य, तार) मेंसे पहला; एक बाजा, मृदंग; एक तरहका हाथी । वि० गंभीर; प्रसन्न; आह्लादकारी, मंदा ।

मंद्राज–पु० मद्रास ।

मंशा, मंसा–स्त्री० मनशा, इच्छा, इरादा, आशय ।

मंसूख–वि० दे० 'मनसूख' ।

मँहगा–वि० दे० 'महँगा' ।

मँहगी–स्त्री० दे० 'महँगी' ।

म–पु० [सं०] शिव; ब्रह्मा; विष्णु; चंद्रमा; यम । **–गण**–पु० पिंगलका एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं ।

मइका*–पु० दे० 'मैंका' ।

मइमंत*–वि० दे० 'मैमंत' ।

मई–स्त्री० [अं० 'मे'] ईसवी सन्का पाँचवाँ महीना जो प्रायः वैशाखमें पड़ता है ।

मउनी–स्त्री० दे० 'मौनी' ।

मउर†–पु० दे० 'मौर' । **–छोराई†**–स्त्री० विवाह-समाप्तिके बाद मौर अलग करनेकी रस्म ।

मउलसिरी*–स्त्री० दे० 'मौलसिरी' ।

मउसी†–स्त्री० माँकी बहिन ।

मकई–स्त्री० ज्वार ।

मकड़ा–पु० बड़ी मकड़ी; एक घास ।

मकड़ाना–अ० क्रि० मकड़ीकी तरह चलना, अकड़कर चलना, इतराना ।

मकड़ी–स्त्री० एक कीड़ा जो अपने पेटसे एक तरहका लुआब निकालकर जाला बुनता है और उसमें फँस जानेवाली मक्खियों आदिको खा जाता है ।

मकतब–पु० [अ०] लिखने-पढ़नेका स्थान; पाठशाला ।

मकदूर–पु० [अ०] शक्ति, सामर्थ्य, बस; धन ।

मकना–पु० दे० 'मकुना' ।

मकफ़ूल–वि० [अ०] बीमा किया हुआ (आ०), बंधक

रखा हुआ, जमानतमें दिया हुआ।

मक़बरा–पु० [अ०] वह इमारत जिसमें किसीकी क़ब्र हो, समाधि, मजार।

मक़बूज़ा–वि० [अ०] जिसपर कब्जा किया गया हो, अधिकृत (वस्तु, संपत्ति)।

मक़बूल–वि० [अ०] कबूल किया गया, माना हुआ, प्रिय। **(मक़बूले).ख़ुदा**–वि० खुदाका प्यारा।

मक़बूलियत–स्त्री० [अ०] (किसीका) प्रिय या प्यारा होना; लोकप्रियता।

मकरंद–पु० [सं०] फूलोंका रस, मधु; फूलोंका केसर।

मकर–पु०[सं०] मगर; घड़ियाल; मछली, बारह राशियोंमेंसे दसवीं; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक। **–कुंडल**–पु० मकराकृत कुंडल। **–केतन,–केतु**–पु० कामदेव। **–क्रांति**–स्त्री० निरक्ष रेखासे २३ अंश दक्षिणमें स्थित अक्षरेखा। **–ध्वज**–पु० कामदेव; अहिरावणका द्वारपाल जिसकी उत्पत्ति हनूमान्‌का पसीना एक मछलीके पी लेनेसे बतायी गयी है; आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध रस, रससिंदूर। **–लांछन**–पु० कामदेव। **–वाहन**–पु० वरुण। **–व्यूह**–पु० मकरके आकारमें की हुई सैन्यरचना। **–संक्रांति**–स्त्री० माघ मासकी संक्रांति जिस दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं।

मक़र–पु० दे० 'मक्र'। **–चाँदनी**–स्त्री० दे० 'मक्रचाँदनी'।

मकरतार–पु० बादलेका तार।

मकराकृत–वि० [सं०] मगर या मछलीके आकारका। **–कुंडल**–पु० मछलीके आकारका कुंडल।

मकरालय–पु० [सं०] समुद्र।

मकराश्व–पु० [सं०] वरुण।

मकरी–स्त्री०[सं०] मादा मगर; मछली, मकड़ी; † जौंतकी कीलके ऊपर लगायी जानेवाली एक लकड़ी (ग्रामगी०)।

मक़सद–पु० [अ०] इरादा, मतलब, उद्देश्य; अभीष्ट।

मक़सूद–वि० [अ०] अभीष्ट, उद्दिष्ट। पु० उद्देश्य, मतलब।

मकाई–स्त्री० दे० 'मकई'।

मकान–पु० [अ०] रहनेका स्थान, घर। **–दार**–वि० मकानवाला। पु० मकानका मालिक। **मु०–हिला देना**–बहुत शोरगुल मचाना।

मक़ाम–पु० [अ०] दे० 'मुक़ाम'।

मकु*–अ० चाहे; बल्कि, शायद।

मकुट–पु० [सं०] मुकुट।

मकुना–पु० बिना दाँतका या बहुत छोटे दाँतोंवाला (नर) हाथी; मुच्छविहीन पुरुष।

मकुनी–स्त्री० आटेमें बेसन मिलाकर या भरकर बनायी हुई बाटी।

मकूनी*–स्त्री० दे० 'मकुनी'।

मक़ूला–पु० [अ०] उक्ति, वचन, कौल; कहावत।

मकोई*–स्त्री० दे० 'मकोय'।

मकोड़ा–पु० छोटा कीड़ा (कीड़ाके साथ प्रयुक्त)।

मकोय–स्त्री० एक क्षुप जिसके फल, पत्ते आदि दवाके काम आते हैं; इसका फल; रसभरीका पौधा या फल।

मकोरना*–स० क्रि० दे० 'मरोड़ना'।

मक्कर†–पु० दे० 'मक्र'।

मक्का–पु० मकई, बड़े दानेकी ज्वार; [अ०] अरबका एक प्रधान नगर जो मुहम्मदका जन्मस्थान और मुसलमानोंका सर्वप्रधान तीर्थ है।

मक्कार–वि० [अ०] मक्र करनेवाला, छली।

मक्कारी–स्त्री० [अ०] मक्र, कपट, धोखेबाजी।

मक्खन–पु० दूध या दहीकी चिकनाई जो मथनेसे निकलती है, कच्चा घी, नवनीत।

मक्खी–स्त्री० सर्वत्र पाया जानेवाला एक परदार कीड़ा, मक्षिका; मधुमक्खी; बंदूक, तमंचेका वह निशान जिससे लक्ष्यका निशाना ठीक किया जाता है। **–चूस**–वि० भारी कंजूस (दाल आदिमें पड़ी मक्खीतकको चूस जानेवाला)। **–मार**–वि० मक्खियाँ मारनेवाला, घिनौना। पु० एक छोटा जंतु। **मु०–छोड़ना, हाथी निगलना**–छोटे दोषसे बचना और बड़ा करना। **–पर मक्खी मारना**–बेसमझे, पूरी नकल करना। **मक्खियाँ मारना**–बेकार बैठा रहना, कुछ न करना।

मक्र–पु० [अ०] बनावट, धोखा, छल, कपट, फरेब। **–चाँदनी**–स्त्री० पिछली रातकी चाँदनी जिससे सबेरा होनेका धोखा होता है; धोखा देनेवाली चीज।

मक्षिका–स्त्री० [सं०] मक्खी। **–मल**–पु० मोम। **मु०–स्थाने मक्षिका**–पूरी और बेसोचे-समझे नकल।

मक्षिकासन–पु० [सं०] मधुमक्खियोंका छत्ता।

मख–पु० [सं०] यज्ञ। **–त्राता (तृ)**–पु० (विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा करनेवाले) राम। **–द्विट् (ष्)**–वि० यज्ञद्वेषी। पु० राक्षस। **–शाला**–स्त्री० यज्ञशाला। **–हा (हन्)**–पु० इंद्र; शिव।

मख़ज़न–पु०[अ०] खजाना, भंडार, जमा करनेकी जगह।

मखतूल–पु० काला रेशम।

मखतूली–वि० मखतूलका बना हुआ, काले रेशमका।

मखन*–पु० मक्खन।

मखनिया–पु० मक्खन बनाने, बेचनेवाला। वि० मक्खन निकाला हुआ (मखनिया दूध)।

मख़मल–स्त्री० [अ०] एक मोटा रेशमी कपड़ा जो ऊपरकी ओर बहुत नरम और रोयेंदार होता है।

मख़मली–वि० [अ०] मखमलका बना; मखमलसा।

मखाग्नि–स्त्री०, **मखानल**–पु०[सं०] यज्ञमें संस्कृत अग्नि।

मखान्न–पु० [सं०] यज्ञान्न; तालमखाना।

मखी*–स्त्री० दे० 'मक्खी'।

मखौल–पु० मजाक, ठट्ठा।

मखौलिया–वि० मखौल करनेवाला।

मग*–पु० रास्ता, मार्ग; मगध। **–दा***–वि० मार्गदर्शक।

मगज–पु० दे० 'मग्ज'। **–चट**–वि० मगज चाटनेवाला, बकवादी। **–चट्टी**–स्त्री० मगज चाट जाना, बकवास। **–पच्ची**–स्त्री० माथापच्ची।

मग़ज़ी–स्त्री०[फ़ा०] मिर्जई, रजाई आदिपर लगायी जानेवाली गोट।

मगद, मगदल–पु० मूँग या उरदके बेसनका लड्डू।

मगदूर*–पु० दे० 'मकदूर'।

मगध–पु० [सं०] दक्षिणी बिहार, कीकट देश; भाट, मागध।

मगन–वि० मग्न, डूबा हुआ; अति प्रसन्न, आनंदित।

मगना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; डूबना, लीन होना।

मगर–पु० एक हिंस्र जलजंतु, मकर, घड़ियाल; कानमें पहननेका एक गहना। **–मच्छ**–पु० मगर; बहुत बड़ी मछली।

मगर–अ० [फा०] लेकिन, पर।

मग़रिब–पु० [अ०] सूरज डूबनेकी दिशा, पच्छिम। **–की नमाज़**–शामकी नमाज।

मग़रिबी–वि० [अ०] पश्चिमका, पश्चिमी।

मग़रूर–वि० [अ०] गरूरवाला, घमंडी।

मगसिर–पु० दे० 'मार्गशीर्ष'।

मगह†–पु० दे० 'मगध'। **–पति**–पु० जरासंध।

मगहय, मगहर*–पु० मगध देश।

मगही–वि० मगधका; मगधमें उपजनेवाला। **–पान**–पु० मगधमें होनेवाला पान जो पानकी सबसे बढ़िया किस्म माना जाता है।

मगु*–पु० दे० 'मग'

मग्ग*–पु० दे० 'मग'।

मग़ज़–पु० [अ०] मींगी, गूदा, गिरी; भेजा, दिमाग; सार भाग। **–चट**–वि० मग्ज चाट जानेवाला, बक्की। **–चट्टी**–स्त्री० मग्ज चाट जाना, बकबक करके खोपड़ी खा जाना। **–पच्ची**–स्त्री० माथा-पची, सिर खपाना। **मु०–के कीड़े उड़ाना**–बकवाससे खोपड़ी खा जाना। **–खा जाना,–खा लेना,–चाट जाना**–बक-बक करके खोपड़ी खाली कर देना। **–पिलपिला करना**–मारकर भरता बना देना।

मग्न–वि० [सं०] डूबा हुआ; तन्मय; हर्ष-मग्न।

मघवा (वन्)–पु० [सं०] इंद्र। **–जित्**–पु० मेघनाद।

मघा–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे दसवाँ; एक औषध।

मघोनी*–स्त्री० इंद्राणी।

मघौना–पु० नीले रंगका कपड़ा; * दे० 'मघवा'।

मचकना–अ० क्रि० लकड़ी, चमड़े आदिकी चीजका दबकर 'मच-मच' आवाज करना, लचकना। स० क्रि० (दबाकर) 'मच-मच' शब्द उत्पन्न करना।

मचका–पु० मचक, झोंका; झूलेकी पेंग।

मचकाना–स० क्रि० लचकाना, हिलाना।

मचना–अ० क्रि० होना; जारी, बरपा, होना; (शोर, हलचल) फैलना।

मचमचाना–स० क्रि०, अ० क्रि० इस तरह लचकाना या लचकना कि 'मच-मच'की आवाज निकले।

मचलना–अ० क्रि० किसी चीजको लेने या न देनेका हठ पकड़ लेना, किसी चीजके लिए रोना-धोना।

मचला–वि० मचलनेवाला, हठी। पु० बाँसकी बनी डिबिया।

मचलाना–अ० क्रि० मतली मालूम होना।

मचली–स्त्री० मतली, वमनकी प्रवृत्ति।

मचवा–पु० खाट; मचिया।

मचान–पु० खंभोंपर बाँसके फट्टे आदि बाँधकर बनाया हुआ आसन, मंच।

मचाना–स० क्रि० मचनेका कर्ता, साधक होना; कराना; जारी या बरपा करना।

मचामच–स्त्री० 'मच-मच'की आवाज, किसी चीजके लचकनेसे होनेवाली आवाज।

मचिया–स्त्री० छोटी, चौकोर चौकी जो खाटकी तरह सुतली आदिसे बुनी गयी हो।

मचिलई*–स्त्री० मचलनेका भाव, हठ।

मच्छ–पु० दे० 'मत्स्य'; बड़ी मछली। **–घातिनी**–स्त्री० बंसी।

मच्छड़–पु० दे० 'मच्छर'।

मच्छर–पु० एक उड़नेवाला कीड़ा जो आम तौरसे बरसातमें पैदा होता और आदमियों-जानवरोंका खून पीता तथा कई रोगोंके फैलनेका कारण होता है। **–दानी**–स्त्री० मच्छरोंसे बचनेके लिए लगाया जानेवाला जालीदार परदा। **मु०–पर तोप लगाना**–छोटे आदमीको दबाने, दंड देनेके लिए भारी तैयारी करना।

मच्छर*–पु० दे० 'मत्सर'। **–ता***–स्त्री० मत्सर।

मच्छी–स्त्री० दे० 'मछली'। **–काँटा**–पु० एक तरहकी सिलाई। **–भवन**–पु० राजाओंके महलों, चिड़ियाघर आदिमें मछलियाँ पालनेके लिए बना तालाब या हौज। **–मार**–पु० मछुआ, मल्लाह।

मच्छोदरी*–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती।

मछली–स्त्री० एक प्रधान जलजीव जिसकी छोटी-बड़ी अगणित जातियाँ होती हैं और जो फेफड़ेके बदले गलफड़ेसे साँस लेता है, मत्स्य; मछलीकी शकलका लटकन। **–दार**–पु० दरीकी एक बुनावट। **–मार**–पु० मछुआ।

मछवा–पु० मछलीका शिकार करनेकी नाव।

मछुआ, मछुवा–पु० मछलियाँ पकड़नेका पेशा करनेवाला, मल्लाह। **–जहाज**–पु० (ट्रॉलर) मछलीका शिकार करनेकी नाव या जहाज।

मज़कूर–वि० [अ०] जिसका जिक्र किया गया हो, कथित।

मजकूरी–पु० समन आदि तामील करनेका काम करनेवाला; अवैतनिक चपरासी जिसे तलबानेसे उजरत दी जाय।

मज़दूर–पु० [फा०] उजरत, मजदूरीपर काम करनेवाला; मोटिया; बनिहार; शरीरश्रमसे जीविका करनेवाला। **–दल**–पु० संघटित श्रमिकवर्ग। **–संघ**–पु० श्रमिकों या व्यवसायविशेषके मजदूरोंका संघ।

मज़दूरी–स्त्री० [फा०] शरीरश्रम, बोझ ढोने आदिका काम; उजरत, पारिश्रमिक। **–पेशा**–वि० मेहनत-मजदूरीका पेशा करनेवाला।

मजना*–अ० क्रि० डूबना, निमग्न होना।

मजनू–वि० [अ०] पागल, बावला; सिड़ी; आशिक, किसी पर मरनेवाला। पु० अरबीकी प्रसिद्ध प्रेमकथा लैला-मजनूका नायक, कैस; बहुत दुबला-पतला आदमी।

मज़बूत–वि० [अ०] दृढ़, पक्का, टिकाऊ; पुष्ट, बलयुक्त।

मज़बूती–स्त्री० [अ०] दृढ़ता, टिकाऊपन; सबलता।

मजबूर–वि० [अ०] जिसपर जब्र किया गया हो, विवश, लाचार।

मजबूरन्–अ० [अ०] मजबूर होकर, लाचारीसे।

मजबूरी–स्त्री० [अ०] विवशता, लाचारी।

मजमा–पु० [अ०] लोगोंके जमा होनेकी जगह; भीड़, जमाव।

मजमूआ-वि० [अ०] जमा किया हुआ, संगृहीत।

मज़मून-पु० [अ०] लेखादिका विषय, लेखादिमें निबद्ध भाव; विषय, लेख, निबंध। **-नवीस**-पु० लेख लिखनेवाला, निबंधकार। **मु०-बाँधना**-किसी भावको लेख या पद्यमें व्यक्त करना।

मजलिस-स्त्री० [अ०] जलसेकी, बैठनेकी जगह; सभा, परिषद्, जलसा।

मज़लूम-वि० [अ०] जिसपर ज़ुल्म किया गया हो, पीड़ित।

मज़हब-पु० [अ०] रास्ता; पंथ, धर्म, संप्रदाय; दीन।

मज़हबी-वि० [अ०] मजहब, धर्मविशेषसे संबंध रखनेवाला। **-आजादी**-स्त्री० अपने धर्मके आचरणकी स्वतंत्रता।

मज़ा-पु० [अ०] स्वाद, रस, जायका; चसका; सुख, आनंद, लुत्फ़; तमाशा; सजा, कर्मफल। **-(ज़े) दार**-वि० स्वादिष्ट, बढ़िया, जिसमें लुत्फ़, आनंद आये। **-का**-मजेदार; ठिकानेका; उपयुक्त; काम चलाऊ, उपयोगी। **-की बात**-तमाशेकी, लुत्फकी बात। **-से**-सुखपूर्वक, मौजसे। **मु०-किरकिरा होना**-रसभंग होना, कार्यका आनंद न मिलना। **-चखना,-पाना**-लुत्फ उठाना; दंड, फल भोगना। **-चखाना**-कियेका फल चखाना, दंड देना। **-लूटना**-सुख भोगना, लुत्फ उठाना।

मज़ाक़-पु० [अ०] चखनेकी चाह; स्वाद, जायका; रुचि, मनका झुकाव; हँसी, दिल्लगी। **-पसंद**-वि० हँसोड़। **-का आदमी**-हँसोड़, परिहासप्रिय जन। **मु०-उड़ाना**-परिहास करना।

मज़ाक़न्-अ० [अ०] हँसीमें।

मज़ाक़िया-वि० [अ०] हँसोड़, विनोदी। अ० मजाकमें।

मजाज़-वि० [अ०] अवास्तविक, कल्पित; अधिकार प्राप्त।

मज़ार-पु० [अ०] जियारतकी जगह, दरगाह; कब्र।

मजारी*-स्त्री० बिल्ली, मार्जारी।

मजाल-स्त्री० [अ०] शक्ति, सामर्थ्य, मक़दूर।

मजिल-स्त्री० दे० 'मंजिल'।

मजीठ-स्त्री० एक लता जिसकी जड़ और डंठलको उबालकर लाल रंग निकाला जाता है।

मजीठी-वि० मजीठके रंगका, गहरा सुर्ख।

मजीर*-स्त्री० दे० 'मंजरी' (फूलोंका गुच्छा)।

मजीरा-पु० काँसेकी कटोरियोंकी जोड़ी जिसे ताल देनेके लिए बजाते हैं।

मजूर-† पु० दे० 'मज़दूर'; * दे० 'मयूर'।

मजूरी†-स्त्री० दे० 'मज़दूरी'।

मजेज*-स्त्री० गर्व, घमंड।

मज्ज*-स्त्री० दे० 'मज्जा'।

मज्जन-पु० [सं०] डूबना, गोता मारना; नहाना; मज्जा।

मज्जना*-अ० क्रि० नहाना; गोता लगाना।

मज्जा-स्त्री० [सं०] नलीकी हड्डीके भीतर भरा स्नेहरूप पदार्थ; पेड़-पौधोंका सारभाग। **-रस**-पु० शुक्र, वीर्य।

मज्झ*-पु० दे० 'मध्य'।

मझ*-वि० मध्य, बीच। **-धार**-स्त्री० बीच धारा। **मु०-धारमें छोड़ना**-कोई कार्य अपूर्ण अवस्थामें ही छोड़ देना; किसीको ऐसी असहाय स्थितिमें छोड़ देना जब वह न इधर जा सके, न उधर।

मझला-वि० बीचका, दरमियानी।

मझाना*-अ० क्रि० पैठना, प्रवेश करना। स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना।

मझार*-अ० बीचमें, मध्यमें।

मझावना*-अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'मझाना'।

मझियाना*-अ० क्रि० नाव खेना; मध्यसे निकलना।

मझियारा*-वि० मझला, बीचका।

मझु*-सर्व० मैं; मेरा।

मझोला-वि० मझला; न बहुत बड़ा, न छोटा।

मझोली-स्त्री० मोचियोंका एक औजार; एक तरहकी बैलगाड़ी।

मट*-पु० मटका।

मटक-स्त्री० मटकनेका भाव, नखरेका भाव, लचक।

मटकना-अ० क्रि० चलनेमें हाथ, आँख, भौं आदिको नाज-नखरेकी अदासे हिलाना, इठलाकर चलना; हिलना।

मटकनि*-स्त्री० दे० 'मटक'।

मटका-पु० बड़े मुँहका घड़ा, माट।

मटकाना-स० क्रि० किसी विशेष अंगसे मटकनेकी क्रिया करना, उसे नखरेकी अदासे हिलाना, चमकाना।

मटकी-स्त्री० छोटा मटका; मटक।

मटकीला-वि० मटकनेवाला।

मटकौअल-स्त्री० मटकानेका काम, मटक।

मटमँगरा-पु० व्याहके कुछ पहले होनेवाली एक रस्म।

मटमैला-वि० मिट्टीके रंगका, खाकी।

मटर-पु० एक द्विदल अन्न जिसकी दाल और रोटियाँ भी खायी जाती हैं। **-गश्त**-पु०, स्त्री० टहलना; आवारा फिरना। **-गश्ती**-स्त्री० दे० 'मटरगश्त'। **-चूड़ा**-पु० मटरके हरे दानोंके साथ चूड़ा मिलाकर बनायी हुई घुघरी।

मटिया-वि० मटमैला। स्त्री० मिट्टी; शव।

मटियाना-स० क्रि० मिट्टी मलकर धोना (हाथ, बरतन इ०)।

मटियाफूस-वि० जरासी ठेसमें बिखर जानेवाला, अति दुर्बल।

मटियामसान-वि० मटियामेट, नष्ट।

मटियामेट--वि० मिट्टीमें मिला हुआ, नष्ट।

मटियाला-वि० मटमैला।

मटुक-† पु० मुकुट (ग्रामगी०)।

मटुका-पु० दे० 'मटका'।

मटुकिया, मटुकी*-स्त्री० छोटा मटका।

मट्टी-स्त्री० दे० 'मिट्टी'।

मट्ठर-वि० सुस्त, धीमा।

मट्ठा-पु० पानी मिलाकर मथा हुआ दही जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो, छाँछ।

मठ-पु० [सं०] छात्रावास; साधु-संन्यासियोंके रहनेका स्थान, आश्रम; देवालय। **-धारी(रिन्)**-पु० मठका प्रधान साधु-संन्यासी।

मठरी-स्त्री० दे० 'मठली'।

मठली-स्त्री० मैदेकी बनी एक तरहकी नमकीन टिकिया।

मठा-पु० दे० 'मट्ठा'।

मठाधीश-पु० [सं०] महंत।

मठिया–स्त्री० छोटा मठ; फूलकी बनी हुई चूड़ियाँ ।

मठी–स्त्री० [सं०] छोटा मठ ।

मठी(ठिन्)–पु० [सं०] मठाधीश ।

मठोठा–पु० कुएँकी जगत ।

मठोर–स्त्री० दही मथनेकी मटकी; नील बनानेका माठ ।

मड़ई–स्त्री० लकड़ी आदिके खंभोंपर छप्पर रखकर बनायी हुई कुटी, झोपड़ी ।

मड़राना, मडलाना–अ० क्रि० दे० 'मँडराना' ।

मड़वा–पु० दे० 'मंडप' ।

मड़हट*–पु० दे० 'मरघट' ।

मड़ा–पु० 'माड़ा' नामक नेत्ररोग; प्रकोष्ठ, कमरा ।

मड़ुआ–पु० एक मोटा अनाज ।

मड़ैया–स्त्री० मड़ई, झोपड़ी ।

मढ़–पु० मठ । वि० जो एक जगह बैठ जानेपर वहाँसे जल्दी हटे नहीं ।

मढ़ना–स० क्रि० ऐसी चीज जड़ना, लगाना जिससे पूरी वस्तु ढक जाय (तसवीरपर शीशा, चौखटा; मेजपर कपड़ा); बाजेके मुँहपर चमड़ा लगाना; थोपना (दोष) ।

मढ़वाना–स० क्रि मढ़नेका काम दूसरेसे कराना ।

मढ़ाई–स्त्री० मढ़नेका काम; मढ़नेकी मजदूरी ।

मढ़ी–स्त्री० छोटा मठ; छोटा मंदिर; कुटी ।

मढ़ैया†–पु० मढ़नेवाला ।

मणि–पु०, स्त्री० [सं०] बहुमूल्य और कांतियुक्त पत्थर, रत्न, जवाहिर; श्रेष्ठजन; बकरीके गलेकी थैली; लिंगका अग्रभाग; योनिका अग्रभाग; कलाई, मणिबंध; घड़ा । **–कंकण**–पु० रत्नजटित कंकण । **–कांचन-योग**–पु० रत्न और सोने जैसा शोभा-सुंदरता बढ़ानेवाला संयोग । **–कुंडल**–पु० रत्न-जटित कुंडल । **–दीप**–पु० रत्नजटित दीप; दियेका काम देनेवाला मणि । **–दोष**–पु० रत्नका दोष । **–धर**–पु० साँप । **–बंध**–पु० कलाई । **–माला**–स्त्री० मणियोंकी माला; लक्ष्मी ।

मतंग–पु० [सं०] हाथी; बादल । **–ज**–पु० हाथी ।

मतंगी*–पु० हाथीका सवार ।

मत–अ० न, नहीं (निषेधात्मक, जैसे–मत करो) । स्त्री० दे० 'मति' । वि० [सं०] सम्मत, अभिप्रेत, माना हुआ; अर्चित; सोचा-विचारा हुआ; सम्मानित; बराबर किया हुआ । पु० राय, सम्मति; विचार; सिद्धांत; धर्ममत, पंथ; अभिप्राय, मंशा; चुनावमें, प्रस्ताव आदिके पक्ष-विपक्षमें, निर्धारित विधिसे प्रकट किया हुआ मत, वोट, राय (आ०) । **–गणना**–स्त्री० मतों, वोटोंकी गिनती । **–दाता-सूची**–स्त्री० (वोटर्स लिस्ट) किसी नगर, जिले आदिके उन बालिग व्यक्तियोंकी सूची जिन्हें मतदानका अधिकार प्राप्त हो । **–दान**–पु० चुनाव आदिमें विधिवत् मतप्रकाश । **–दानकक्ष, –दानकोष्ठ**–पु० (पोलिंग बूथ) मतदानकेंद्रका वह कमरा, घर या घेरा जहाँ किसी विशेष मुहल्ले या मुहल्लोंके मतदाताओं या किसी एक संख्यासे किसी अन्य विशेष संख्या-तकके निर्वाचकों या केवल स्त्रियों द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो । **–दानकेंद्र**–पु० (पोलिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँ विधानसभा आदिकी सदस्यताके लिए खड़े होनेवालोंके संबंधमें निर्वाचकों द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो । **–दान-पत्र**–पु० (बैलट) वह पत्र जिसपर चुनावमें खड़े होनेवाले व्यक्तिका नाम और उसका विशेष चिह्न अंकित रहता है और जिसपर मतदाता कोई चिह्न बनाकर किसीके पक्षमें अपना मत देता है । **–दानपेटिका, –पेटिका**–स्त्री० (बैलट बॉक्स) वह पेटी जिसमें मतदाताओं द्वारा मतपत्र छोड़े या डाले जाते हैं । **–देय**–पु०(वोटेबिल) वह विषय या व्ययकी वह मद जिसपर सदस्योंका मत लिया जा सके । **–पत्र**–पु० दे० 'मतदान-पत्र' । **–भेद**–पु० मतकी भिन्नता, राय न मिलना । **–संग्रह**–पु० प्रश्नविशेषपर मतप्रकाशके अधिकारियोंकी रायोंका इकट्ठा किया जाना । **–स्वातंत्र्य**–पु० मत, विचारकी स्वतंत्रता ।

मतना*–अ० क्रि० मत स्थिर करना; विचारना–'मतैं बैठि बादल औ गोरा'–प० । मतवाला होना ।

मतलब–पु० [अ०] अभिप्राय, आशय; अर्थ; गरज, स्वार्थ; प्रयोजन; वास्ता, सरोकार । **–का आशना, –का यार**–गरज निकालनेके लिए दोस्ती करनेवाला, खुदगर्ज ।

मतलबी–वि० [अ०] अपनी गरज देखनेवाला, स्वार्थी ।

मतवार, मतवारा*–वि० दे० 'मतवाला' ।

मतवाला–वि० (शराबके) नशेमें चूर, मस्त; बदमस्त; (बलादिके) गर्वसे इतराता हुआ । [स्त्री० 'मतवाली'।] पु० किलेकी दीवारसे शत्रुपर लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर ।

मतांतर–पु० [सं०] दूसरा मत, भिन्न मत ।

मता, मतो*–पु० सलाह, उपदेश, सम्मति ।

मताधिकार–पु० [सं०] (फ्रैंचाइज़) लोकसभा, विधानसभा, नगरपालिका आदिके लिए सदस्य चुननेका, मत प्रदान करनेका, अधिकार ।

मताधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] मत देनेका अधिकारी (वोटर) ।

मतानुयाचक–पु० [सं०] (कैनवैसर) वह जो किसी क्षेत्रके मतदाताओंके पास जाकर अपने पक्षमें मत देनेका अनुरोध करे ।

मतानुयायी(यिन्)–वि० [सं०] मतविशेषका अनुगमन करनेवाला ।

मतारी†–स्त्री० माता ।

मतार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] (कैंडिडेट) मत देनेके लिए प्रार्थना करनेवाला, उम्मेदवार । **–घटक**–पु० (पोलिंग एजेंट) मतदान केंद्रपर मतार्थीकी ओरसे काम करनेवाला, उसके हितों और अधिकारोंकी रक्षाका ध्यान रखनेवाला व्यक्ति ।

मतावलंबी(बिन्)–वि० [सं०] मत या धर्मविशेषका अवलंबन करनेवाला ।

मति–*अ० दे० 'मत' । वि० सदृश । स्त्री० [सं०] बुद्धि, समझ; राय; इच्छा; अभिप्राय । **–द्वैध**–पु० मतभेद । **–भ्रंश**–पु० बुद्धिनाश; पागलपन । **–भ्रम**–पु० बुद्धिका भ्रम, अक्लका उलटफेर । **–मंद**–वि०मंदबुद्धि, कमसमझ । **–हीन**–वि० निर्बुद्धि । मु०–**मारी जाना**–बुद्धिभ्रंश होना, अक्लका मारा जाना ।

मतिमान्(मत्)–वि० [सं०] बुद्धिमान्, समझदार ।

मतिमाह*–वि० दे० 'मतिमान्' ।

मती–स्त्री० दे० 'मति'। अ० दे० 'मत'।

मतीर, मतीरा–पु० तरबूज।

मतेई*–स्त्री० सौतेली माँ।

मतैक्य–पु० [सं०] किसी विषयपर सब या कुछ लोगोंकी एक ही राय होना, ऐकमत्य।

मत्कुण–पु० [सं०] खटमल; मकुना हाथी।

मत्त–वि० [सं०] मतवाला, मस्त; उन्मत्त; घमंडी।

मत्तता–स्त्री० [सं०] मस्ती, मतवालापन।

मत्तताई*–स्त्री० दे० 'मत्तता'।

मत्था–पु० माथा, ललाट; सिर; सामनेका या ऊपरका हिस्सा। **मु०–टेकना**–नमस्कार करना, वंदना करना।

मत्थे–अ० माथेपर, सिरपर; के ऊपर।

मत्सर–पु० [सं०] डाह, जलन; क्रोध, द्वेष।

मत्सरी(रिन्)–वि०[सं०] मत्सरयुक्त, जलनेवाला; द्वेषी।

मत्स्य–पु० [सं०] मछली; विराट् देश; मत्स्य-नरेश। **–गंधा**–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती। **–घाती(तिन्)**–पु० मछुआ। **–जीवी(विन्)**–पु० मछुआ। **–देश**–पु० विराट् देश। **–वेधनी**–स्त्री० बंसी, कँटिया।

मत्स्यावतार–पु० [सं०] विष्णुके दस अवतारोंमेंसे पहला।

मत्स्येंद्रनाथ–पु० [सं०] मध्यकालके एक प्रसिद्ध हठयोगी जो गोरखनाथके गुरु थे।

मत्स्योपजीवी(विन्)–पु० [सं०] मछुआ।

मथन–पु० [सं०] मथनेकी क्रिया या भाव, विलोडन;वध।

मथना–स० क्रि० आलोडन करना, दूध, दहीको मथानी आदिसे बिलोना; किसी बातको बार-बार सोचना, विचारना; छान डालना; दलन करना। * पु० मथानी।

मथनिया*–स्त्री० दे० 'मथानी'।

मथनी–स्त्री० दही मथनेका मटका; मथनेकी क्रिया; मथानी।

मथवाह–पु० हाथीवान, महावत; मस्तक-पीड़ा–'अनु मथवाह रहे सिर लागे'–प०।

मथानी–स्त्री० दूध, दही मथनेका डंडा जिसके एक सिरेपर कटावदार खोरिया लगी होती है।

मथित–वि० [सं०] मथा हुआ; पीडित; दलित।

मथी(थिन्)–पु० [सं०] मथानी।

मथुरिया–वि० मथुराका।

मथूल*–पु० मस्तूल (रत्नाकर)।

मथ्थ*–पु० दे० 'माथा'।

मद–स्त्री० [अ०] दे० 'मद्द'। * वि० मत्त। पु० * दे० 'मद्य'। [सं०] मद्यके सेवनसे मनमें होनेवाला विकार, नशा; मस्ती; मस्त हाथीकी कनपटीसे झरनेवाला जल; उन्माद; हर्ष; गर्व। **–कर**–वि० नशा पैदा करनेवाला। **–कल**–वि० मस्त, मदोन्मत्त, धीरे-धीरे, अस्पष्ट बोलनेवाला; मस्तीमें भूला हुआ; बावला। **–गंध***–पु० छितवन; मद्य। **–गल**–वि० दे० 'मदकल'। **–घ्नी**–स्त्री० पोय, पूतिका। **–जल**–पु० मस्त हाथीकी कनपटीसे झरनेवाला जल, दान। **–ज्वर**–पु० कामज्वर; बल आदिका मद, नशा। **–मत्त**–वि० मस्त, मतवाला, मदोन्मत्त। **–माता**–वि० [हिं०] मस्त, मदमत्त; कामुक। [स्त्री० 'मदमाती'।] **–मुकुलिताक्षी**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी आँखें नशेसे बंद सी हो रही हों।

मदक–स्त्री० अफीमके सत्त और पानके योगसे बननेवाला एक नशीला पदार्थ जिसे तंबाकूकी तरह पीते हैं। **–ची**–वि० मदक पीनेवाला।

मदद–स्त्री०[अ०] सहायता; कुमक। **–गार**–वि० सहायक।

मदन–पु० [सं०] कामदेव; काम; प्रेम; वसंतकाल; भ्रमर; खंजन। **–कंटक**–पु० सात्त्विक अनुराग-जनित रोमांच। **–कदन**–पु०शिव। **–कलह**–पु०प्रेमकलह। **–गोपाल**–पु० कृष्ण। **–दमन**–पु० शिव। **–दहन**–पु० कामको जला देनेवाले, शिव। **–दिवस**–पु० मदनोत्सव। **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० खंजन। **–फल**–पु० मैनफल। **–मस्त**–पु० [हिं०] चंपेकी जातिका एक तीव्र गंधवाला पुष्पवृक्ष। **–महोत्सव**–पु० आधुनिक होलीसे मिलता-जुलता एक प्राचीन उत्सव जो चैत्र-शुक्ला द्वादशीसे चतुर्दशीतक होता था; होली। **–मोहन**–पु० कृष्ण। **–रिपु**–पु० शिव।

मदनांतक–पु० [सं०] शिव।

मदनातुर–वि० [सं०] कामातुर।

मदनारि–पु० [सं०] शिव।

मदनोत्सव–पु० [सं०] मदन-महोत्सव; होली।

मदनोद्यान–पु० [सं०] प्रमोदवन।

मदर*–पु० चढ़ाई, हमला।

मदरसा–पु० [अ०] पढ़ानेकी जगह, पाठशाला।

मदहोश–वि० मतवाला; हैरान; भीरु; बेहोश।

मदांध–वि० [सं०] जो मस्ती या बल आदिके गर्वसे अंधा हो रहा हो।

मदानि*–वि० स्त्री० कल्याणकारिणी।

मदार–पु० आक। [सं०] मस्त हाथी; सूअर; कामुक।

मदारिया, मदारी–पु० बाजीगर; बंदर-भालू नचानेवाला।

मदालु–वि० [सं०] जिससे मद झरता हो; मस्त।

मदिर–वि० [सं०] नशा, मस्ती पैदा करनेवाला; मदभरा।

मदिरा–स्त्री० [सं०] मद्य, शराब।

मदिराक्षी–वि० स्त्री० [सं०] मस्त, मदभरी आँखोंवाली।

मदिरालय–पु० [सं०] शराबखाना।

मदीय–वि० [सं०] मेरा।

मदीला*–वि० नशेमें चूर, मत्त; नशा लानेवाला।

मदोन्मत्त–वि० [सं०] मतवाला; मदांध।

मदोवै*–स्त्री० मंदोदरी।

मद्द–स्त्री० [अ०] आड़ी लकीर जिसे खींचकर नीचे लेखा या लेख लिखना आरंभ करते हैं; लेखकी समाप्ति पर खींची जानेवाली लकीर; शीर्षक; विभाग; खाता; खाना। **(मद्दे) नज़र**–वि० जो निगाहके सामने हो; उद्दिष्ट, लक्ष्य। **–फ़ाजिल**–स्त्री० बेकार मद्द, बेकार चीज।

मद्दत*–स्त्री० दे० 'मदद'।

मद्दा–वि० दे० 'मंदा'।

मद्धिम–वि० मध्यम; कम अच्छा; मंदा।

मद्धे–अ० बीचमें; मद, खातेमें, हिसाबमें।

मद्य–पु० [सं०] महुए आदिकी पाँससे खींचा हुआ मादक अर्क, सुरा, शराब। **–प**–वि० मद्य पीनेवाला, शराबी। **–पान**–पु० शराब पीना। **–पायी(यिन्)**–वि०

मद्यप, शराबी । **-भांड**-पु० शराब रखनेका घड़ा, मधुघट ।

मद्यपाशन-पु० [सं०] गजक, चाट ।

मद्र-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद; मद्र-नरेश । **-सुता**-स्त्री० माद्री ।

मध, मधि*-वि० दे० 'मध्य' । अ० में ।

मधु-पु० [सं०] शहद; मद्य; पुष्परस; वसंत ऋतु; चैतका महीना; जल; सोमरस; दूध; मुलेठी; शर्करा; अशोक; विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य । वि० मीठा । **-कंठ**-पु० कोयल । **-कर**-पु० भौंरा; रसिक व्यक्ति; एक तरहका चावल । **-करी**-स्त्री० भ्रमरी; पके अन्नकी भिक्षा जो संन्यासीके लिए विहित है । **-कोश,-कोष**-पु० शहदका छत्ता । **-घोष**-पु० कोयल । **-चक्र**-पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता । **-ज**-पु० मोम । **-जा**-स्त्री० मिसरी; पृथ्वी । **-त्रय**-पु० तीन मीठी चीजें-शहद, घी और शर्करा । **-द्रुम**-पु० महुएका पेड़; आमका पेड़ । **-प**-पु० मधुकर, भ्रमर; * उद्धव । वि० शराबी (कवि-प्रि०) **-पटल**-पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता । **-पति**-पु० कृष्ण । **-पर्क**-पु० दही, घी, शहद, जल और शकरका योग जो देवता और अतिथिके सामने रखा जाता है । **-पुर**-पु०,**-पुरी**-स्त्री० मथुरा । **-बन**-पु० [हिं०] दे० 'मधुवन' । **-बाला**-स्त्री० भ्रमरी । **-मक्खी**-स्त्री० [हिं०] शहदकी मक्खी । **-मक्षिका,-मक्षी**-स्त्री० शहदकी मक्खी । **-मास**-पु० चैतका महीना । **-मेह**-पु० पेशाबके साथ शकर आनेका रोग, शर्करा-प्रमेह । **-मेही(हिन्)**-वि० मधुमेहका रोगी । **-यष्टि,-यष्टिका**-स्त्री० मुलेठी । **-रस**-वि० मधुर रसवाला, मीठा । पु० ईख; ताड़ । **-राज***-पु० भौंरा । **-रिपु**-पु० कृष्ण । **-लिट्(ह्),-लेह,-लोलुप**-पु० भौंरा । **-वन**-पु० वह वन जिसमें मधु दैत्य रहता था और जहाँ शत्रुघ्नने मथुरा नगरी बसायी; किष्किंधाका वह वन जिसमें सुग्रीव रहते थे; कोयल । **-वल्ली**-स्त्री० मुलेठी । **-शर्करा**-स्त्री० शहदसे बनायी हुई शकर । **-शिष्ट,-शेष**-पु० मोम । **-सख,-सहाय,-सारथि**-पु० कामदेव । **-सुहृद्**-पु० कामदेव । **-सूदन**-पु० मधु दैत्यको मारनेवाले कृष्ण । **-हा(हन्)**-पु० विष्णु ।

मधुक-पु० [सं०] महुआ; मुलेठी । वि० मीठा; सुरीला ।

मधुर-वि० [सं०] मीठा; प्रिय; सुंदर; कोमल; कानोंको प्रिय लगनेवाला; मनोरम; सौम्य । **-भाषी (षिन्)**-वि० जिसकी बोलीमें मिठास हो ।

मधुरई*-स्त्री० मिठास, माधुर्य ।

मधुरता-स्त्री०, **मधुरत्व**-पु० [सं०] मिठास, माधुर्य ।

मधुराई*-स्त्री० मधुरता, मिठास ।

मधुराना*-अ०क्रि० मिठास पैदा होना, मीठा होना ।

मधुरान्न-पु० [सं०] मिष्टान्न ।

मधुरिका-स्त्री० [सं०] सौंफ ।

मधुरिन-स्त्री० (ग्लिसरीन) बिना रंगका एक मीठा-सा द्रव पदार्थ जो प्रायः दवाके काम आता है तथा विस्फोटकोंके निर्माणमें भी प्रयुक्त होता है ।

मधुरिमा (मन्)-स्त्री० [सं०] मिठास, माधुर्य ।

मधुरी*-स्त्री० दे० 'माधुरी' । वि० स्त्री० मीठी, रुचिकर ।

मधूक-पु० [सं०] महुएका पेड़ या फूल; भ्रमर ।

मधूत्सव-पु० [सं०] वसंतोत्सव ।

मध्य-पु० [सं०] वस्तुका बीचका भाग, केंद्र; देहका मध्य भाग, कमर; वस्तुका भीतरी भाग; बीचकी अवस्था; संगीतमें बीचका सप्तक; नृत्यमें मध्यम गति । वि० बीचका, दरमियानी; अंतर्वर्ती; मध्यस्थ । * अ० बीचमें । **-ग**-पु० (ब्रोकर) वह व्यक्ति जो कमीशन लेकर खरीदनेवाले और बेचनेवालेके बीचमें पड़कर सौदा पटा देनेका काम करे, दलाल । **-गत**-वि० बीचमें स्थित, बीचका । **-जन**-पु०(मिडिलमैन) दो पक्षों या दलोंमें संपर्क स्थापित करानेवाला आदमी; वह व्यक्ति जो उत्पादकों तथा उपभोक्ताओंके बीचमें पड़कर मालके वितरण, खरीद-बिक्री आदिमें सहायता करता है । **-दिन,-दिवस**-पु० दोपहर । **-देश**-पु० हिमालय और विंध्य तथा कुरुक्षेत्र और प्रयागके बीचका देश; बीचका भाग । **-पूर्व**-पु० युरोपियोंकी दृष्टिसे एशियाका दक्षिण-पश्चिमी तथा अफ्रिकाका उत्तर-पूर्वी भाग (मिडिल ईस्ट) । **-युग**-पु० प्राचीन और अर्वाचीन कालके बीचका समय; भारतके इतिहासमें राजपूतकालसे मुगलकालतकका समय; यूरोपके इतिहासमें ६०० से १५०० ईसवीतकका काल । **-युगीन**-वि० (मिडीव्हल) इतिहासके मध्ययुगसे संबंध रखनेवाला । मध्ययुगका । **-रात्र**-पु०,**-रात्रि**-स्त्री० आधी रात । **-लोक**-पु० मर्त्यलोक, भूलोक । **-वय (स्)**-स्त्री० अधेड़ उम्र । वि० अधेड़ उम्रवाला । **-वर्ती (र्तिन्)**-वि० बीचमें स्थित, केंद्रवर्ती । **-वित्त**-वि० मध्य श्रेणीका, न अमीर, न गरीब । **-वित्तवर्ग**-पु० (बूर्ज्वा) समाजके उन लोगोंकी श्रेणी जो न अमीर कहे जा सकते हैं और न गरीब तथा जो प्रायः बुद्धिजीवी होते हैं । **-स्थ**-पु० (मीडियेटर) वह व्यक्ति जो दो पक्षोंके बीचमें पड़कर, दोनोंको समझा-बुझाकर उनका आपसी झगड़ा या विरोध दूर करनेका प्रयत्न करे । बिचुआ; तटस्थ, उदासीन । वि० मध्यमें स्थित । **-स्थल**-पु० मध्यभाग; कमर ।

मध्यम-वि० [सं०] बीचका, मँझला; मँझोला; न बढ़िया, न घटिया । पु० सात स्वरोंमेंसे चौथा; तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक (सा०); एक राग । **-पदलोपी (पिन्)**-पु० वह समास जिसमें पूर्व पदसे उत्तर पदका संबंध जोड़नेवाला पद लुप्त हो (स्वर्णकलश-सोनेका बना हुआ कलश, छायातरु) । **-पांडव**-पु० अर्जुन । **-पुरुष**-पु० पुरुषवाचक सर्वनामके तीन भेदोंमेंसे एक, वह पुरुष जिससे बात की जाय । **-लोक**-पु० मर्त्यलोक, भूलोक, धरती । **-वय (स्)**-स्त्री० अधेड़ उम्र । **-वयस्क**-वि० अधेड़ वयवाला ।

मध्यमा-स्त्री० [सं०] बीचकी उँगली; वह स्त्री या लड़की जिसे रजोदर्शन हो चुका हो; नायकके प्रेम या दोषके अनुसार उसका आदर-मान करनेवाली स्त्री ।

मध्यस्थता-स्त्री० [सं०] बिचवई; तटस्थता ।

मध्यांतर रेखा-स्त्री०[सं०] (मेरीडियन) वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवोंसे होती हुई किसी स्थानके पाससे पृथ्वीके चारों ओर गयी हो ।

मध्या–पु० [सं०] रजःप्राप्त स्त्री; बिचली उँगली; वह नायिका जिसमें काम और लज्जा समान हों।

मध्यावकाश–पु० [सं०] (रिसेस) दे० 'अल्पावकाश'।

मध्याह्न–पु० [सं०] दोपहर।

मध्याह्नोत्तर–पु० [सं०] तीसरा पहर, दोपहरके बादका समय।

मध्ये–अ० दे० 'मद्धे'।

मध्व–पु० एक संप्रदाय-प्रवर्तक और वेदांत-सूत्रोंपर भाष्य लिखनेवाले वैष्णव आचार्य। **–संप्रदाय**–पु० मध्व द्वारा प्रवर्तित वैष्णव-संप्रदाय।

मनः–पु० 'मनस्'का समासगत रूप। **–कल्पित**–वि० मनगढ़ंत, फर्ज़ी। **–क्षेप**–पु० मनका क्षोभ। **–प्रसाद**–पु० चित्तकी प्रसन्नता। **–प्रसूत**–वि० मनःकल्पित। **–शक्ति**–स्त्री० मनोबल। **–संताप**–पु० ग्लानि। **–संस्कार**–पु०मनपर पड़नेवाला प्रभाव; मनका परिष्कार।

मन–पु० चालीस सेरका वजन; * दे० 'मणि'।

मन(स्)–पु० [सं०] ज्ञान, संवेदन, संकल्प आदिकी साधनरूप अंतरिंद्रिय, चित्त; अंतःकरणकी संकल्प-विकल्प करनेवाली वृत्ति (वि०); इच्छा, जी। ['मन' शब्दसे बने हुए नीचे लिखे सामासिक शब्दोंका प्रयोग केवल हिंदीमें होता है।] **–कामना**–स्त्री० दे० 'मनोकामना'। **–गढ़ंत**–वि० मनका गढ़ा हुआ, कल्पित। **–घड़ंत**–वि० दे०'मनगढ़ंत'। **–चला**–वि० साहसी, हौसलेवाला; निडर; मनमौजी। **–चाहा**–वि०मनका चाहा हुआ,मनोभिलषित। **–चीता**–वि० सोचा हुआ, चाहा हुआ, मनभाया। **–जात**–पु० मनोभव, कामदेव। **–वांछित**–वि० दे० 'मनोवांछित'। **–भाया**–वि० मनको भानेवाला, मनोनुकूल, प्रिय। **–भावना,–भावन***–वि० जो मनको भाये, प्रिय लगे, प्यारा। **–मथन**–पु० कामदेव। **–माना**–वि० जो मनको भाये, रुचे; जो मनमें आये, जो जी चाहे। अ० यथेच्छ, जितना जी चाहे। **–मानी**–स्त्री० मनमाना काम। **–मानी-घरजानी**–स्त्री० स्वेच्छापूर्ण काररवाई। **–मुखी***–वि० मनमौजी। **–मुटाव**–पु० मनमें मैल या बुराई आ जाना, वैमनस्य। **–मोदक**–पु० मनका लड्डू, खयाली पुलाव। **–मोहन**–वि० मनको मोहनेवाला, प्यारा। पु० कृष्ण। **–मौजी**–वि० अपनी मौजसे, अपने इच्छानुसार काम करनेवाला, स्वच्छंद। **–रंज***–पु० दे० 'मनरंजन'। **–रंजन***–वि० मनोरंजक। पु० दे० 'मनोरंजन'। **–रोचन***–वि० मन लुभानेवाला। **–लाडू***–पु० मनमोदक। **–हर**–वि० दे० 'मनोहर'। पु० घनाक्षरी छंद। **–हरण**–वि० मनोहर। पु० मनको हरने, मोहनेकी क्रिया; एक वर्णवृत्त। **–हरन**–वि, पु० दे० 'मनहरण'। **–हार,–हारि**–वि० दे० 'मनोहारी'। मु० **(किसीसे)–अटकना,–उलझना**–किसीसे दिल फँसना, प्रेम होना। **(किसीपर)–आना**–किसीपर दिल आना। **–कच्चा करना**–दिल छोटा करना, हिम्मत हारना। **–करना**–इच्छा होना, जो चाहना। **–का कच्चा**–कमजोर दिलका। **–का मारा**–खिन्नहृदय। **–का मैल**– वैर; दुर्भावना। **–का मैला**–खोटा, बुरे दिलका। **–की मनमें रहना**–इच्छा पूरी न होना। **–की मौज**–मनकी लहर। **–के लड्डू खाना**–न होनेवाली बातकी आशा करके प्रसन्न होना, खयाली पुलाव पकाना। **–चलना**–जी चाहना, इच्छा होना। **–डोलना**–इच्छा होना, ललचना; (मनका) विचलित होना। **–देना**–मन लगाना। **–धरना***–ध्यान देना। **–फटना**–चाह-प्रीति न रहना, विरक्ति हो जाना। **–बढ़ना**–हौसला बढ़ना, उत्साहित होना। **–बढ़ाना**–उत्साह बढ़ाना, बढ़ावा देना। **–भरना**–तृप्ति होना, अघाना; तुष्टि, समाधान होना। **–भाना**–रुचना, अच्छा लगना। **–मानना**–संतोष होना; निश्चय होना; भाना; दिल मिलना, प्रीति होना; अक्ल ठिकाने लगना। **–मारना**–इच्छाओंको दबाना, मनोनिग्रह करना। **–मारे(हुए)**–खिन्नचित्त, उदास। **–मिलना**–रुचि, प्रवृत्तिमें समानता होना; प्रीति होना। **–में आना**–खयाल उठना, इच्छा होना। **–में मैल आना**–(किसीके विषयमें) मनमें बुराई, दुर्भाव पैदा होना। **–मैला करना**–उदास होना; मनमें दुर्भाव लाना। **–मैला होना**–किसीके बारेमें खयालका खराब हो जाना, खिन्न होना। **–मोहना**–मन लुभाना। **–लाना***–मन लगाना। **–से उतरना**–मनमें अनादर या तिरस्कार हो जाना। **–हरना**–मन मोहना। **–ही मन**–अंदर ही अंदर, चुपचाप। **–होना**–इच्छा होना।

मनई†–पु० आदमी, मानव।

मनकना–अ० क्रि० हिलना, हाथ-पाँव आदिसे कोई चेष्टा करना–'…जापता करन हारे नेकहू न मनके'–भू०।

मनका–पु० माला, सुमिरनी आदिका दाना, गुरिया।

मनकूला–वि० स्त्री० [अ०] चर, चल, जिसे दूसरी जगह ले जा सकें। **–जायदाद**–स्त्री० चल संपत्ति।

मनन–पु० [सं०] सोचना, समझनेके लिए बार-बार विचार करना; अनुमान। **–शील**–वि० जिसे मनन करनेकी आदत हो, विचारशील।

मननीय–वि० [सं०] मनन करने योग्य।

मनवाना–स० क्रि० माननेको प्रेरित करना; मनानेका काम दूसरेसे कराना।

मनशा–पु० [अ०] इच्छा, इरादा; भाव, विचार।

मनश्चक्षु–पु० [सं०] मनकी आँख, अंतर्दृष्टि।

मनसना*–स० क्रि० इच्छा, इरादा करना।

मनसब–पु० [अ०] पद, उहदा; अधिकार; दरजा; सेवा; वंशपरंपरासे मिलनेवाली वृत्ति। **–दार**–पु० अधिकारी; मनसब (वृत्ति) पानेवाला।

मनसा–* वि० मनसे उत्पन्न, मानस। स्त्री० मन; इच्छा; अभिलाष; इरादा; अभिप्राय; बुद्धि; [सं०] जरत्कारु मुनिकी पत्नी और वासुकि नागकी बहिन। अ० मनसे, मनके द्वारा (मनसा, वाचा, कर्मणा)।

मनसाना–अ० क्रि० उत्साहित होना, उमंगमें आना; दे० 'मनुसाना'।

मनसायन–पु० चहल-पहल।

मनसिज–पु० [सं०] कामदेव; काम; चंद्रमा।

मनसूख़–वि० [अ०] रद्द किया हुआ, काटा हुआ।

मनसूख़ी–स्त्री० [अ०] मनसूख होनेका भाव।

मनसूबा-पु०योजना, तजवीज; जोड़-तोड़, युक्ति; इरादा। **-बाज़**-पु० योजना बनानेवाला, युक्ति सोचनेवाला।

मनसूर-पु० [अ०] ९वीं शतीका एक प्रसिद्ध मुसलमान सूफी जो 'अनलहक़' (अहं ब्रह्मास्मि) कहा करता था।

मनस्-पु० [सं०] दे० 'मन(स्)'। **-कांत**-वि० प्यारा, मनको प्रिय लगनेवाला। **-काम**-पु० मनोरथ, मनकी इच्छा। **-ताप**-पु० मनका ताप, दुःख; अनुताप। **-तुष्टि**-स्त्री० मनका संतोष। **-तृप्ति**-स्त्री० मनकी तृप्ति।

मनस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] अच्छे, ऊँचे मनवाला; बुद्धिमान्; स्थिरचित्त, दृढनिश्चय। (स्त्री० मनस्विनी।)

मनहु*-अ० मानों।

मनहूस-वि० [अ०] अभागा; अशुभसूचक; उदासीसे भरा हुआ (मनहूस सूरत)।

मनहूसी-स्त्री० [अ०] मनहूस होनेका भाव, उदासी।

मना-पु० [अ०] रोकना, निषेध। वि० निषिद्ध, अविहित।

मनाई-स्त्री० दे० 'मनाही'।

मनाक्(ग्)-अ० [सं०] थोड़ासा, जरासा; धीरे-धीरे।

मनादी-स्त्री० दे० 'मुनादी'।

मनाना-स० क्रि० रूठे, बिगड़े हुएको प्रसन्न करना, राजी करना; किसी बातके होनेकी ईश्वरसे प्रार्थना करना; प्रार्थना करना, मनुहार करना।

मनार-पु० [अ०] मीनार, ज्योतिस्तंभ; मसजिदका वह स्तंभ जिसपर खड़ा होकर मुअज्जिन अजाँ देता है।

मनावन†-पु० मनानेकी क्रिया।

मनाही-स्त्री० मुमानियत, निषेध।

मनि-पु०,स्त्री० दे० 'मणि'। **-धर**-पु० दे० 'मणिधर'।

मनिका*-पु० दे० 'मनका'।

मनिया-स्त्री० मनका, गुरिया।

मनियार*-वि० चमकता हुआ; सुंदर, शोभायुक्त।

मनियारा-पु० जौहरी; दे० 'मनिहार'।

मनिहार-पु० चूड़ी, टिकली, सिंदूर आदि (फेरी करके) बेचनेवाला।

मनिहारन, मनिहारिन, मनिहारी-स्त्री० चूड़ी बेचने या पहनानेवाली स्त्री, चुड़िहारिन। **-लीला**-स्त्री० मनिहारिन बनकर राधाको चूड़ी पहनानेकी कृष्णकी लीला।

मनीआर्डर-पु० [अं०] डाकखानेका चेक जिसके जरिये अन्यत्र स्थित जनके पास रुपया भेजा जाता है।

मनीजर-पु० [अं० 'मैनेजर'] किसी कार्यालय, संपत्ति आदिका प्रबंधकर्ता।

मनीषा-स्त्री० [सं०] बुद्धि; इच्छा; विचार; स्तुति (वै०)।

मनीषिका-स्त्री० [सं०] बुद्धि, मनीषा; इच्छा।

मनीषी(षिन्)-वि० [सं०] बुद्धिमान्; पंडित, विचारशील। पु० बुद्धिमान् मनुष्य, पंडित, विचारशील पुरुष।

मनु-पु०* अ० मानों। [सं०] ब्रह्माके मानसपुत्र स्वायंभुव मनु जो आदि प्रजापति और मनुस्मृतिके कर्ता माने जाते हैं। **-ज, -जात**-पु० मनुसंतान, मनुष्य। **-ज्ञा**-स्त्री० स्त्री। **-संहिता**-स्त्री० मनुस्मृति। **-स्मृति**-स्त्री० आदि मनुका बनाया धर्मशास्त्र।

मनुजाद-पु० [सं०] नरभक्षी, राक्षस।

मनुजाधिप-पु० [सं०] राजा।

मनुजेंद्र, मनुजेश्वर-पु० [सं०] राजा।

मनुजोत्तम-पु० [सं०] वह जो मनुष्योंमें श्रेष्ठ हो।

मनुप*-पु० दे० 'मनुष्य'।

मनुष्य-पु० [सं०] आदमी, मानव, इनसान। **-कृत**-वि० मनुष्यका किया, बनाया हुआ। **-गणना**-स्त्री० मर्दुमशुमारी। **-लोक**-पु० मृत्युलोक, धरती।

मनुष्यता-स्त्री० [सं०] मनुष्योचित भाव, गुण, दया, धर्मबुद्धि, सौजन्य आदि, इनसानियत।

मनुस†-पु० मनुष्य; जवान, मर्द।

मनुसाई*-स्त्री० पुरुषार्थ, मर्दानगी।

मनुसाना-अ० क्रि० पुरुषत्वका अभिमान, मर्दानगीकी भावना जगना।

मनुहार-पु० मनानेके लिए की जानेवाली विनती, मनानेका यत्न; विनती, खुशामद। **-नीति**-स्त्री० मनाने, प्रसन्न करनेकी नीति।

मनुहारना*-स० क्रि० मनुहार करना, मनाना।

मनूरी-स्त्री० मुरादाबादी कलई करनेमें काम आनेवाला एक चूरा।

मने*-पु०, वि० दे० 'मना'।

मनौँ*-अ० दे० 'मानों'।

मनो-पु०[सं०] 'मनस्'का समासगत रूप। **-कामना**-स्त्री०[हिं०] मनकी कामना, अभिलाष। **-गत**-वि० मनमें भरा, छिपा हुआ। पु० इच्छा; विचार। **-गति**-स्त्री० इच्छा; मनकी गति। **-ज**-पु०कामदेव। **-ज्ञ**-वि० सुंदर, मनोहर। [स्त्री० 'मनोज्ञा'।] **-दंड**-पु० मनोनिग्रह। **-दाह**-पु० मनका क्लेश, पीडा, मनस्ताप। **-नयन**-पु० पसंद करना, चुनना। **-निग्रह**-पु० मनकी इच्छाओं, वृत्तियोंको वशमें रखना। **-नियोग, -निवेश**-पु० मन लगाना। **-नीत**-वि० पसंद किया हुआ; चुना हुआ। **-भंग**-पु० उदासी, विषाद; नैराश्य। **-भव**-पु० कामदेव। **-भाव**-पु० मनका भाव, वृत्ति। **-मालिन्य**-पु० मनमें मैल आना, मनमोटाव। **-योग**-पु० मनको किसी विषयमें एकाग्र करके लगाना। **-रंजक**-वि० मनोरंजन करनेवाला। **-रंजन**-पु० मनबहलाव, दिलका खुश होना। **-रंजन-कर**-पु० (एंटरटेनमेंट टैक्स) दे० 'प्रमोदकर'। **-रथ**-पु० मनकी कामना, अभिलाष। **-रम**-वि० सुंदर, मन लुभानेवाला। **-रमा**-स्त्री० गोरोचना; कार्तवीर्यार्जुनकी पत्नी। **-राज्य**-पु० कल्पनासृष्टि, जागतेका सपना, खयाली पुलाव। **-रोगचिकित्सक**-पु० (साइकिएट्रिस्ट) मानसिक रोगोंका उपचार करनेवाला। **-लीला**-स्त्री० (फैनटम) मनमें ही विद्यमान कल्पनाकी वस्तु जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व न हो, भ्रांति, सत्य-सी प्रतीत होनेवाली कोई छाया। **-वांछा**-स्त्री० मनकी अभिलाषा, इच्छा। **-वांछित**-वि० मनका चाहा हुआ, अभिलषित। **-विकार**-पु० मनकी भावना या मनका आवेग। **-विज्ञान**-पु० मनकी प्रकृति, वृत्तियों आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान, मानसशास्त्र। **-विश्लेषण**-पु० मनके विचारोंकी समीक्षा, चित्तविश्लेषण। **-वृत्ति**-स्त्री० मनका विकार, चित्त-

वृत्ति । **–वेग**–पु० मनका विकार, मनका आवेग । **–वैज्ञानिक**–वि० मनोविज्ञान-संबंधी । पु० मनोविज्ञानका ज्ञाता । **–व्याधि**–स्त्री० मानस रोग । **–हर**–वि० मनको हरने, चुरानेवाला, सुंदर । पु० छप्पय छंदका एक भेद । **–हारी(रिन्)**–वि० मन हरनेवाला, सुंदर ।

मनोमय–वि० [सं०] मनोरूप, मानस । **–कोष**–पु० आत्माके आवरणरूप पंचकोषोंमेंसे तीसरा ।

मनोरा–पु० गोबरसे बने चित्र ।

मनोरा झूमक–पु० एक गीत ।

मनोसर*–पु० मनोविकार ।

मनोहरता–स्त्री० [सं०] सुंदरता ।

मनोहरताई*–स्त्री० मनोहरता, सुंदरता ।

मनौती–स्त्री० मनावन; कार्यसिद्धि होनेपर किसी देवताकी विशेष पूजा करनेकी प्रतिज्ञा, मानता, मन्नत ।

मन्नत–स्त्री० किसी कार्यकी सिद्धि या अनिष्टके निवारणपर किसी देवताकी पूजा करनेका संकल्प, मनौती । **मु०–उतारना**–मन्नत पूरी करना । **–मानना**–मनौती मानना ।

मन्मथ–पु० [सं०] कामदेव; कैथका पेड़ । **–प्रिया**–स्त्री० रति ।

मन्मथालय–पु० [सं०] आमका पेड़; भग ।

मन्य–वि० [सं०] (समासांतमें) अपने आपको मानने, समझनेवाला (पंडितम्मन्य, लघुम्मन्य) ।

मन्यु–पु० [सं०] क्रोध; अहंकार; उत्साह; दैन्य; शोक ।

मन्युमान्(मत्)–वि० [सं०] क्रोध, अहंकार या दैन्य इत्यादिसे युक्त ।

मन्वंतर–पु० [सं०] (मनु+अंतर) मनुका अधिकारकाल, इकहत्तर चतुर्युगी; दुर्भिक्ष ।

मफ़रूर–वि० [अ०] भागा हुआ (अपराधी) ('गबन') ।

मम–सर्व० [सं०] मेरा, मेरी ।

ममता–स्त्री०, **ममत्व**–पु० [सं०] किसी चीजको अपनी समझना; अपनापन; स्नेह; अहंकार; बच्चेके प्रति माँका स्नेह; मोह ।

ममरखी†–स्त्री० मुबारकबादी, बधावा ।

ममाखी*–स्त्री० [बं० 'मौमाछी'] मधुमक्खी ।

ममिया–वि० ममेरा, मामाके दरजेवाला । **–ससुर**–पु० पति या पत्नीका मामा । **–सास**–स्त्री० पति या पत्नीकी मामी ।

ममियौरा†–पु० मामाका घर ।

ममीरा–पु० हलदीकी जातिका एक पौधा जो आँखके रोगोंकी उत्तम औषधि माना जाता है ।

ममोला–पु० एक छोटी चिड़िया, धोबिन ।

मयंक–पु० चंद्रमा ।

मयंद*–पु० मृगेंद्र, सिंह ।

मय–प्र० [सं०] जिस शब्दमें लगता है उससे बना हुआ (कनकमय), भरा हुआ (जलमय), युक्त (दयामय) आदि अर्थ उत्पन्न करता है । पु० दानव-शिल्पी जिसने इंद्रप्रस्थमें युधिष्ठिरके लिए अद्भुत सभागृह बनाया; खच्चर; घोड़ा; ऊँट; मेक्सिको(अमेरिका)में पुराने जमानेमें बसनेवाली एक जाति । **–तनया**–स्त्री० मंदोदरी ।

मय–अ० [अ०] दे० 'मै' । स्त्री० [फा०] शराब । **–कदा**, **–ख़ाना**–पु० मदिरालय । **–कश**–वि० शराब पीनेवाला । **–कशी**–स्त्री० शराब पीना, मद्यपान । **–परस्त**–वि० शराबी, मदिराभक्त । **–फ़रोश**–पु० शराब बेचनेवाला ।

मयगल*–पु० मस्त हाथी, मद्गल ।

मयन*–पु० मदन, कामदेव ।

मयमंत, मयमत्त*–वि० मदमत्त, मस्त ।

मयस्सर–वि० [अ०] दे० 'मुयस्सर' ।

मया*–स्त्री० माया; मोह; संसार; प्रेम-बंधन; दया, कृपा ।

मयार–वि० दयालु, कृपायुक्त । स्त्री० हिंडोलेके बीचका डंडा ।

मयारी–स्त्री० धरन ।

मयूख–पु० [सं०] किरण; शिखा; दीप्ति; शोभा; कील ।

मयूर–पु० [सं०] मोर; एक पर्वतका नाम । **–नृत्य**–पु० एक तरहका नाच । **–पुच्छ**–पु० मोरकी पूँछ ।

मयूरी–स्त्री० [सं०] मोरनी ।

मरंद–पु० [सं०] मकरंद ।

मरक–पु० [सं०] मरी, महामारी । * स्त्री० इशारा, शह, बढ़ावा–'अरतैं टरत न बर परे, दई मरक मनु मैन'–बि० ।

मरकज़–पु० [अ०] वृत्त या दायरेका मध्यबिंदु, केंद्र; सदर मुकाम, मुख्य स्थान ।

मरकज़ी–वि० [अ०] केंद्रीय, प्रधान (कमेटी, हुकूमत) ।

मरकत–पु० [सं०] पन्ना ।

मरकना–अ० क्रि० दबकर टूटना; दबना ।

मरकहा†–वि० (सींगसे) मारनेवाला (बैल, भैंसा इ०); हथछुट । [स्त्री० 'मरकही' ।]

मरकाना–स० क्रि० दबाकर तोड़ना ।

मरखन्ना–वि० मरकहा, सींगसे मारनेवाला ।

मरगजा–वि०, पु० दे० 'मलगजा' ।

मरघट–पु० मुर्दे जलानेका स्थान, मसान । **–का भुतना**–मसानका भूत; डरावनी शकलका आदमी ।

मरचा–पु० दे० 'मिरचा' ।

मरज़–पु० दे० 'मर्ज़' ।

मरजाद, मरजादा–स्त्री० दे० 'मर्यादा' ।

मरजिया–पु० पानीमें डूबकर चीजें निकालनेवाला, गोताखोर–'जो मरजिया होइ तहँ सो पावै वह सीप'–प० । वि० जो मरकर जिया हो; जो मरते-मरते बचा हो; अधमरा; मरनेको उद्यत ।

मरज़ी–स्त्री० [अ०] खुशी; स्वीकृति; इच्छा; रुचि ।

मरजीवा–पु० दे० 'मरजिया' ।

मरण–पु० [सं०] मरना, मृत्यु; बछनाग । **–गति**–स्त्री० (डेथरेट) आबादीके प्रतिसहस्र व्यक्तियोंके पीछे होनेवाली मृत्युओंकी संख्या । **–धर्मा(र्मन्)**, **–शील**–वि० मरनेवाला, मर्त्य । **–शुल्क**–पु० (डेथड्यूटी) किसीकी मृत्युके बाद उसकी संपत्तिपर लगनेवाला वह कर जो उसके उत्तराधिकारीसे वसूल किया जाय ।

मरणांतक–वि० [सं०] जिसका अंत मृत्यु हो, जानलेवा ।

मरणाशौच–पु० [सं०] मृत्युके कारण ज्ञातिजनोंको लगनेवाला अशौच ।

मरणीय–वि० [सं०] मरनेवाला, मर्त्य ।

मरणोन्मुख–वि० [सं०] जो मर रहा हो, आसन्न-मरण ।

मरतबा–पु० दे० 'मर्तबा'।

मरतबान–पु० रोगन किया हुआ मिट्टीका बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रखते हैं।

मरता–वि० मरता हुआ; दुर्बल। **मु०–क्या न करता**–जीवनसे निराश व्यक्ति सब कुछ करनेको तैयार हो जाता है। **–(ते)को मारना**–दुखियाको और सताना। **–जीते**–किसी तरह, ज्यों-त्यों करके। **–दमतक**–आखिरी वक्ततक, जिंदगीभर। **–मरते**–मरते समय; मौतके पास पहुँचकर।

मरद*–पु० दे० 'मर्द'।

मरदई–स्त्री० मरदानगी, वीरता।

मरदना–स० क्रि० मसलना; माँड़ना; रौंदना, तहस-नहस करना।

मरदनिया†–पु० मालिश करनेवाला टहलू।

मरदानगी–स्त्री० दे० 'मर्दानगी'।

मरदाना–वि०, अ० दे० 'मर्दाना'।

मरदूद–वि० [अ०] रद्द किया हुआ; बहिष्कृत; तिरस्कृत; निकम्मा; नीच।

मरन–पु० दे० 'मरण'।

मरना–अ० क्रि० जीता न रहना, जीवन-क्रियाका बंद हो जाना, मृत्यु होना; सूखना, मुरझाना; मृतप्राय हो जाना, गड़ जाना (शर्मसे मर जाना); अति श्रम, अति कष्ट करना, खपना; बुझना, प्रभावरहित हो जाना (चूना, सुहागा); दब जाना, नष्ट हो जाना (भूख, प्यास, पाखानेकी हाजत इ०); तबाह हो जाना; भस्म, कुश्ता हो जाना (धातु इ० का); भीतर जाना, सोखना (पानी); डूबना, वसूल न होना (पावना, रुपया); पिटना, मारा जाना (गोट, मोहरा); खेलनेका अधिकारी न रहना; आसक्त, मोहित होना (किसीपर मरना)। **मु० मरकर जीना**–मरते-मरते बचना। **मर-खप जाना**–मरकर नष्ट हो जाना। **मरना-जीना**–जीवन-मरण; जीवन-मरणका चक्र; शादी-गमी। **–पचना**–अति श्रम करना; अति कष्ट सहना; जान तोड़कर मेहनत, कोशिश करना। **मर-पिटकर**–बड़ी कठिनाईसे। **मर-मरकर**–बड़ी मेहनतसे, जान तोड़कर। **–(ने) तककी फुरसत न होना**–दम मारनेको फुरसत न मिलना, कामकी भारी भीड़में होना। **मर मिटना**–मरकर मिट जाना, जान दे देना; तबाह हो जाना।

मरनि*–स्त्री० दे० 'मरनी'।

मरनी–स्त्री० मौत; अंत्येष्टि; मृत्युशोक, गमी।

मरभुखा–वि० पेटू; भूखों मरता, कंगाल।

मरम–पु० दे० 'मर्म'।

मरमर–पु० [यू०] एक तरहका पत्थर जो बहुत चिकना होता और रगड़नेसे खूब चमकता है, संगमरमर।

मरमराना–अ० क्रि० 'मर-मर'की आवाज करना; डाल आदिका दबकर टूटना।

मरम्मत–स्त्री० [अ०] टूटी-फूटी चीजको फिरसे दुरुस्त करना, सुधार, दुरुस्ती; (ला०) मार, पिटाई, शारीरिक दंड। **–तलब**–वि० दे० 'मरम्मती'।

मरम्मती–वि० [अ०] मरम्मत करने लायक; मरम्मत-संबंधी।

मरवाना–स० क्रि० मारनेका काम दूसरेसे कराना, मारनेको उकसाना।

मरसा–पु० बरसातमें होनेवाला एक साग।

मरसिया–पु० [अ०] करुण रसकी कविता जिसमें किसीकी मृत्यु या वीरगतिका वर्णन हो; करबलाके शहीदोंके विषयमें रचित इस प्रकारका काव्य; मृत व्यक्तिकी गुणावली; मातम, सियापा। (कहना, पढ़ना।)

मरहट*–पु० दे० 'मरघट'।

मरहटा, मरहठा–पु० दे० 'मराठा'।

मरहठी–वि० मरहठोंसे संबद्ध। स्त्री० मराठी।

मरहम–पु० [अ०] घावपर लगानेका लेप; घावकी दवा। **–पट्टी**–स्त्री० घावपर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना; जख्मका इलाज।

मरहला–पु० [अ०] यात्रियोंके टिकनेकी जगह, पड़ाव; किलेके इर्द-गिर्द बनी हुई इमारत जिसपर बैठकर सैनिक युद्ध करते हैं; कठिन काम, झमेला; दर्जा।

मरहून–वि० [अ०] रेहन किया हुआ।

मरहूना–वि० स्त्री० [अ०] बंधक रखी हुई (संपत्ति)।

मरहूम–वि० [अ०] बख्शा हुआ; स्वर्गवासी।

मराठा–पु० महाराष्ट्र देशका निवासी; महाराष्ट्र देशका अब्राह्मण निवासी।

मराठी–स्त्री० महाराष्ट्रकी भाषा। वि० मराठोंसे संबंध रखनेवाला; मराठोंका।

मरातिब–पु० [अ०] पद, दरजा ('मरतबा'का बहु०); पताका; मकानका खंड।

मराना–स० क्रि० दे० 'मरवाना'।

मरायल*–वि० मारा, पीटा हुआ; मार खानेवाला–'सठहु सदा तुम मोर मरायल'–रामा०; हराया हुआ; मरियल।

मरार–पु० काछी (छत्तीसगढ़में); [सं०] अन्नभंडार।

मराल–पु० [सं०] राजहंस; कारंडव; बादल; काजल; घोड़ा।

मरिंद*–पु० दे० 'मलिंद'; मरंद।

मरिखम–पु० दे० 'मलखंभ'।

मरिच–स्त्री० [सं०] काली मिर्च।

मरिचा†–पु० दे० 'मिरचा'।

मरियम–स्त्री० [अ०] ईसाकी माता; कुमारी।

मरियल–वि० बहुत दुबला, कमजोर, बेदम।

मरी–स्त्री० बबाई बीमारी, महामारी; प्रेतोंका एक भेद; सागूदानेका पेड़।

मरीचि–पु० [सं०] ब्रह्माके दस मानसपुत्रोंमें सबसे बड़े जिनकी गणना सप्तर्षियोंमें है; किरण; ज्योति; मरीचिका। **–जल**–पु० मृगतृष्णा। **–माली(लिन्)**–पु० सूर्य। वि० जो किरणोंकी माला धारण किये हुए हो।

मरीचिका–स्त्री० [सं०] मृगतृष्णा।

मरीची(चिन्)–वि० [सं०] किरणोंवाला। पु० सूर्य।

मरीज़–वि० [अ०] जिसे रोग हो, रोगी।

मरु–पु० [सं०] मरुभूमि, रेगिस्तान; मारवाड़; पर्वत; कुरुवक वृक्ष; मरुआ नामक पौधा। **–देश**–पु० रेगि-

स्तान। **–द्वीप**–पु० मरुभूमिमें स्थित हरित स्थान, नखलिस्तान। **–भूमि**–स्त्री० रेगिस्तान, जलरहित रेतीला मैदान। **–स्थल**–पु० रेतीला मैदान, रेगिस्तान।

मरुआ–पु० बबरी जैसा एक पौधा; वह लकड़ी जिससे हिंडोला लटकाया जाता है; बँड़ेर।

मरुत्–पु० [सं०] प्राण; वायु; देवता; वायुका अधिष्ठाता देवता; सोना; मरुआ। **–तनय**–पु० हनूमान्; भीम। **–पट**–पु० बादबान। **–पति**–पु० इंद्र।

मरुत्वान्(त्वत्)–पु० [सं०] इंद्र; हनूमान्।

मरुद्वाह–पु० [सं०] धुआँ; आग।

मरुरना*–अ० क्रि० मरोड़ा जाना, बल खाना।

मरुवक–पु० [सं०] मरुआ; व्याघ्र; राहु।

मरू*–वि० कठिन। **–करि***–अ० कठिनाईसे।

मरूरा*–पु० मरोड़, ऐंठन।

मरोड़–स्त्री० ऐंठन, बल; आँवके रोगमें आँतोंमें होनेवाली ऐंठन, पेचिश; * क्षोभ; घमंड। **–फली**–स्त्री० पेचिशमें लाभ करनेवाली एक फली।

मरोड़ना–स० क्रि० ऐंठना, बल देना; उमेठना (कान); मसलना; पीड़ा देना; गरदन मरोड़कर मार डालना।

मरोड़ा–पु० ऐंठन, मरोड़; पेचिश।

मरोड़ी–स्त्री० मरोड़, ऐंठन; गीले आटे आदिकी बत्ती जो हाथोंको मलनेसे बन जाती है।

मरोर–स्त्री० ऐंठन; क्रोध; बेचैनी, अफसोस–'यों मनमाँह मरोर करै जिमि चोर भरे घर पैठ न पायो'–सुधानिधि।

मर्कट–पु० [सं०] बंदर; मकड़ा।

मर्कटी–स्त्री० [सं०] वानरी; मकड़ी; अजमोदा।

मर्ज़–पु० [अ०] रोग, व्याधि, बीमारी; आदत, लत।

मर्ज़ी–स्त्री० [अ०] दे० 'मरज़ी'।

मर्तबा–पु० [अ०] दरजा; पद; बार, दफा।

मर्तबान–पु० दे० 'मरतबान'।

मर्त्य–वि० [सं०] मरणशील, नश्वर। पु० मनुष्य। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० मरणशील। **–लोक**–पु० मनुष्यलोक, भूलोक।

मर्द, मर्द्द–पु० [सं०] मर्दन।

मर्द–पु० [फा०] पुरुष, नर; मनुष्य; वीर पुरुष; पति। **–आदमी**–पु० भला आदमी; बहादुर, मरदाना। **–बच्चा**–पु० वीर, बहादुर।

मर्दक–पु० [सं०] मर्दन करनेवाला।

मर्दन–पु० [सं०] मलने, रौंदने या कुचलनेकी क्रिया; चूर्ण करना; घोंटना; नाश करना।

मर्दना–स० क्रि० मर्दन करना, मालिश करना; रौंदना, कुचलना; गूँधना, माँड़ना; चूर्ण करना; नाश करना।

मर्दल–पु० [सं०] मृदंगसे मिलता-जुलता एक प्राचीन बाजा।

मर्दानगी–स्त्री० [फा०] बहादुरी; पुरुषत्व, मर्दानापन।

मर्दाना–वि० [फा०] पुरुष-संबंधी, मर्दोंका; पुरुषोचित; बहादुर; जवाँमर्द। पु० मर्दाना बैठक। अ० मर्दोंकी तरह, पुरुषोचित प्रकारसे।

मर्दित–वि० [सं०] मर्दन किया हुआ, मला, रौंदा, कुचला हुआ।

मर्दी–स्त्री० मर्दानगी; पुंस्त्व।

मर्दुआ–पु० तुच्छ पुरुष; गैर मर्द; पति (स्त्रि०)।

मर्दुम–पु० [फा०] मनुष्य; जनसाधारण; आँखकी पुतली। **–खोर**–पु० नरभक्षी। **–शिनास**–वि० आदमीको पहचाननेवाला। **–शुमारी**–स्त्री० देशमें रहनेवालोंकी गिनती कराना, मनुष्यगणना।

मर्दुमी–स्त्री० [फा०] मर्दानगी; पुंस्त्व।

मर्म(न्)–पु० [सं०] शरीरका वह नाजुक भाग जहाँ चोट लगनेसे अधिक पीड़ा हो या तुरत मृत्यु हो जाय, जीवन-स्थान; संधिस्थान; तात्पर्य; रहस्य, तत्त्व; गूढार्थ। **–कील**–पु० पति। **–ग**–वि० मर्मभेदी, तीव्र। **–घाती(तिन्)**–वि० मर्मपर आघात करनेवाला। **–घ्न**–वि० अत्यंत कष्टदायी। **–च्छिद्**–वि० दे० 'मर्मच्छेदी'। **–च्छेदी(दिन्)**–वि० मर्मभेदी। **–ज्ञ**–वि० तत्त्व, गूढार्थको जाननेवाला, रहस्यज्ञ। **–पीडा, –व्यथा**–स्त्री० हृदयमें होनेवाली तीव्र वेदना। **–प्रहार**–पु० मर्मस्थानपर किया गया आघात। **–भेद**–पु० रहस्यका उद्घाटन; हृदयका भेदन। **–भेदन**–पु० बाण। **–भेदी(दिन्)**–वि० मर्मस्थलको छेदनेवाला; अति दुःखद; दिलको लगनेवाला। पु० बाण। **–वचन**–पु० दिलको लगनेवाली बात; गूढ़ बात। **–वाक्य**–पु० भेदकी बात, गूढ बात। **–विद्**–वि० मर्मज्ञ। **–वेधी(धिन्)**–वि० मर्मभेदी। **–स्थल, –स्थान**–पु० शरीरकी नाजुक जगह, जीवनस्थान। **–स्पर्शी(र्शिन्), –स्पृक्**–वि० दिलको लगनेवाला, मर्मभेदी।

मर्मर–पु० [सं०] पत्तों या पेड़के हिलनेसे होनेवाली आवाज, पत्तोंकी खड़खड़ाहट। **–ध्वनि**–स्त्री० खड़खड़ाहट।

मर्मरित–वि० [सं०] जिससे मर्मर ध्वनि हो रही हो।

मर्मातक–वि० [सं०] हृदयको छेदनेवाला।

मर्माघात–पु० [सं०] मर्मस्थलपर आघात, हृदयपर गहरी चोट लगना।

मर्माहत–वि० [सं०] जिसके हृदयको कड़ी चोट पहुँची हो।

मर्मी–वि० मर्मज्ञ, रहस्य जाननेवाला।

मर्मोद्घाटन–पु० [सं०] रहस्यका प्रकट होना।

मर्याद*–स्त्री० दे० 'मर्यादा'।

मर्यादा–स्त्री० [सं०] सीमा; नदी, समुद्रका किनारा; अवधि; सीमाका चिह्न; न्याय्य पथमें स्थिति, सदाचार; आचारकी शास्त्र, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा; प्रतिष्ठा (हिं०)।

मर्षण–पु० [सं०] सहना, क्षमा करना।

मर्षणीय–वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।

मर्षित–वि० [सं०] सहा हुआ, क्षमा किया हुआ।

मलंग–पु० मुसलमान फकीरोंका एक भेद; सफेद रंगका बड़ा बगला।

मल–पु० [सं०] मैल, गंदगी; शरीरसे निकलनेवाला मैल–मूत्र, पुरीष, कफ, पसीना, खूँट आदि; विष्ठा, गू; लोह आदिका कीट; पाप; बुराई; विकार; वात, पित्त, कफ। वि० दुष्ट; गंदा; क्षुद्र। **–द्वार**–पु० गुदा। **–धात्री**–स्त्री० बच्चेका मल-मूत्रादि धोने, गंदे कपड़े आदि साफ

करनेवाली धाय । **-पृष्ठ**-पु० पुस्तकका पहला या बाहरी पृष्ठ । **-भुक(ज्)**-पु० कौआ । **-युग**-पु० कलियुग । **-रोधक**-वि० जो मलको रोके, काबिज, कब्ज करनेवाला । **-वाहनपद्धति**-स्त्री० (कॉनसर्वेंसी सिस्टम) नगरका कूड़ा-करकट, मल आदि बाहर हटवा देनेकी पद्धति । **-विसर्जन**-पु० मलत्याग, पाखाना फिरना । **-शुद्धि**-स्त्री० पेटका साफ हो जाना, कोष्ठशुद्धि ।

मलखंभ-पु० लकड़ीका खंभा जिसके सहारे एक खास कसरत की जाती है; मलखंभपर की जानेवाली कसरत ।

मलखम-पु० दे० 'मलखंभ' ।

मलखाना-पु० आल्हा-ऊदलका चचेरा भाई जो वत्सराजका पुत्र था । वि० * मलभक्षी ।

मलगजा*-वि० मला, दला हुआ, मरगजा । पु० बैगनेके लंबोतरे टुकड़ोंकी पकौड़ी ।

मलता-वि० घिसा हुआ ।

मलना-स० क्रि० मसलना; मालिश करना; मरोड़ना ।

मलबा-पु० कूड़ा-करकट; गिरे हुए मकानके ईंट-पत्थर, मिट्टी आदि ।

मलमल-स्त्री० भारतका एक बारीक, सफेद सूती कपड़ा जो बहुत पुराने जमानेसे प्रसिद्ध था ।

मलमलाना-स० क्रि० बार-बार खोलना, खोलना-बंद करना (आँख, पलक); * बार-बार आलिंगन करना ।

मलय-पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक पर्वत जो सात कुलपर्वतोंके अंतर्गत है और जिसपर चंदनके वृक्षोंकी बहुलता है; पश्चिमी घाटका मैसूरके दक्षिण और त्रिवांकुरके पूर्वमें पड़नेवाला भाग; मलाबार देश; उद्यान; नंदनकानन । **-गिरि**-पु० मलय पर्वत; * चंदन । **-ज**-पु० चंदन; राहु । **-द्रुम**-पु० चंदन; मदन वृक्ष । **-समीर**-पु० मलय पर्वतकी ओरसे आनेवाली हवा, दक्षिणी वायु ।

मलयागिरि, मलयाचल-पु० [सं०] दे० 'मलयगिरि' ।

मलयानिल-पु० [सं०] मलय-समीर ।

मलयालम-पु० दक्षिण भारतका एक प्रदेश, वहाँकी भाषा ।

मलयोद्भव-पु० [सं०] चंदन ।

मलवाना-स० क्रि० मलनेका काम दूसरेसे कराना ।

मलसा-पु० एक तरहका कुप्पा जिसमें घी इ० रखा जाय ।

मलहम-पु० दे० 'मरहम' ।

मलाई-स्त्री० दूध या दहीकी साढ़ी, बालाई; सार भाग; मलनेकी क्रिया; मलनेकी मजदूरी ।

मलाट-पु० मोटा, घटिया कागज जो कागजकी गाँठोंपर लपेटा रहता है ।

मलान-वि० दे० 'म्लान' ।

मलानि-स्त्री० दे० 'म्लानि' ।

मलाबार-पु० दक्षिण भारतका अरब सागरके तटपर बसा हुआ प्रदेश । **-हिल**-पु० बंबईकी एक पहाड़ी जहाँ धनिकोंका निवास है ।

मलामत-स्त्री० [अ०] झिड़की, फटकार, भर्त्सना; गंदगी ।

मलाया-पु० बर्माके दक्षिणमें स्थित एक प्रायद्वीप ।

मलार-पु० एक राग जो वर्षा ऋतुमें गाया जाता है, मल्हार ।

मलाल-पु० [अ०] दुःख, विषाद । **मु०-आना**-किसीकी ओरसे चित्तका खिन्न हो जाना, मनमें मैल आ जाना ।

मलावरोध-पु० [सं०] कब्ज ।

मलाशय-पु० [सं०] बड़ी आँतोंका निचला भाग जहाँ मल रहता है ।

मलाह-पु० दे० 'मल्लाह' ।

मलिंद-पु० भ्रमर ।

मलिक-पु०[अ०] बादशाह, सुलतान; सरहद और पंजाबके मुसलमानोंकी एक सम्मानजनक उपाधि ।

मलिका-स्त्री० [अ०] महारानी; [सं०] दे० 'मल्लिका' ।

मलिक्ष, मलिच्छ*-पु० दे० 'म्लेच्छ' ।

मलिन-वि० [सं०] मैला, मलयुक्त; काला; धूमिल; उदास; पापमें रुचि रखनेवाला; क्षुद्र; खोटा । **-मुख**-वि० उदास ।

मलिनाई*-स्त्री० मलिनता ।

मलिनाना*-अ० क्रि० मलिन, मैला होना ।

मलिनावास-पु० [सं०] (स्लम्ज) मजदूरों या गरीबोंकी गंदी बस्तियाँ ।

मलियामेट-वि० मिट्टीमें मिला हुआ, तहस-नहस ।

मलीदा-पु० चूरमा; कश्मीरमें बननेवाला ऊनी कपड़ा जो मला जानेके कारण अधिक नरम और गरम होता है ।

मलीन-वि० मैला, मलिन; क्षुद्र; उदास ।

मलीनता-स्त्री० मलिनता ।

मलूक-पु० एक चिड़िया; एक कीड़ा । वि० सुंदर ।

मलेच्छ-पु० दे० 'म्लेच्छ' ।

मलेरिया-पु० [अं०] जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी ।

मलैया†-पु० जाड़ेके दिनोंमें दूधको रातभर ओसमें रखनेके बाद उसमें शकर, केशर, इलायची आदि मिलाकर मथनेसे निकला हुआ फेन, नमश ।

मलोत्सर्ग-पु० [सं०] मलत्याग ।

मलोल*-स्त्री० मलोला, मलाल-'राधे अहो हरि भावतेको भरिके भुज भेंटिये मेटि मलोलें'-देव ।

मलोलना†-अ० क्रि० दुःखित होना, पछताना ।

मलोला-पु० अरमान; दुःख ।

मल्ल-पु० [सं०] कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान; एक प्राचीन व्रात्य क्षत्रिय जाति । **-क्रीडा**-स्त्री० मल्लयुद्ध । **-भूमि**-स्त्री० अखाड़ा । **-युद्ध**-पु० कुश्ती, बाहुयुद्ध । **-विद्या**-स्त्री० कुश्ती । **-शाला**-स्त्री० अखाड़ा ।

मल्लार-पु० [सं०] एक राग, मलार ।

मल्लाह-पु० [अ०] केवट, माझी ।

मल्लाही-वि० मल्लाह-संबंधी । स्त्री० मल्लाहका पेशा ।

मल्लिका-स्त्री० [सं०] बेलेकी जातिका एक सफेद और सुगंधित फूल; एक वर्णवृत्त ।

मल्हराना, मल्हाना, मल्हारना*-स० क्रि० चुमकारना, स्नेहसे हाथ फेरना ।

मवक्किल-पु० दे० 'मुवक्किल' ।

मवाद-पु० [अ०] मसाला, सामग्री; पीव ।

मवास-पु० गढ़, दुर्ग; आश्रयस्थान; किलेके परकोटे आदिपर लगे बाँस ।

मवासी-स्त्री० छोटा गढ़ । पु० किलेदार, नायक ।

मवेशी-पु० ढोर, डंगर, दूध देने या बोझ ढोनेके काम

आनेवाला चौपाया । **-ख़ाना**-पु० मवेशी रखनेका बाड़ा; पशुशाला; वह बाड़ा जिसमें दूसरेका खेत चरनेवाले मवेशी बंद किये जायँ ।

मशक-स्त्री० [फा०] भेड़ या बकरीकी खालको सीकर बनाया हुआ थैला जिससे भिश्ती पानी ढोते हैं । पु० [सं०] मच्छड़, मस्सा । **-हरी**-स्त्री० मसहरी ।

मशक़्क़त-स्त्री० [अ०] श्रम, मेहनत; कठोर श्रम ।

मशक़्क़ती-वि० [अ०] मशक़्क़त करनेवाला, मेहनती ।

मशगूल-वि० [अ०] किसी शगल या काममें लगा हुआ, कार्यरत ।

मशरिक़-पु० [अ०] पूरब ।

मशरू-पु० रेशम और सूत मिलाकर बुना जानेवाला एक धारीदार कपड़ा ।

मशवरा-पु० [अ०] मंत्रणा, सलाह; साजिश ।

मशविरा-पु० दे० 'मशवरा' ।

मशहूर-वि० [अ०] जिसकी शुहरत हुई हो, प्रसिद्ध ।

मशाल-स्त्री० [अ०] लंबी गोल लकड़ीके सिरे या लोहेकी सलाखपर कपड़ा लपेटकर बनायी हुई मोटी बत्ती जिसे तेलसे तर कर ब्याह-बरात आदिमें जलाते हैं । **-ची**-पु० मशाल दिखानेवाला । **मु०-लेकर ढूँढ़ना**-सावधानीसे ढूँढ़ना, अच्छी तरह तलाश करना ।

मशीन-स्त्री० [अं०] यंत्र, कल । **-गन**-स्त्री० चक्राकार बंदूक जिससे लगातार सैकड़ों गोलियाँ छूटती हैं । **-मैन** पु० मशीन चलानेवाला कर्मचारी; प्रेसमैन ।

मश्क़-पु० [अ०] किसी कामका अभ्यास, रब्त, कुशलता-प्राप्तिके लिए किसी कामको बार-बार करना ।

मष-पु० दे० 'मख' ।

मषि-स्त्री० [सं०] दे० 'मसि' ।

मष्ट*-वि० चुप, मौन (करना, मारना) ।

मस-स्त्री० मूछोंका आरंभिक, रोमावलीवाला रूप; † दे० 'मसि' । **मु० (मसें) भींगना**-मूँछोंका उगना, निकलने लगना ।

मस-पु० दे०'मशक' । **-हरी**-स्त्री० जालीदार कपड़ेका परदा जो मच्छरोंसे बचनेके लिए मसहरीके ऊपर लगाया जाता है; वह पलंग जिसके पायोंमें मसहरी लगानेके लिए डंडे लगे हों ।

मसक-पु०, स्त्री० दे० 'मशक' ।

मसकत*-स्त्री० दे० 'मशक़्क़त' । पु० अरब देशका एक नगर या वहाँसे आनेवाला अनार ।

मसकना-अ० क्रि० दबाव या तनावसे दरकना; कपड़ेका इस तरह फटना कि ताने-बानेमेंसे किसीके तार साबित न रहें; (चित्तका) मसोसना, विवशताकी -पीड़ा अनुभव करना । स० क्रि० दबाकर या तानकर फाड़ना, दरार डाल देना; मसलना ।

मसकरा*-वि०, पु० दे० 'मसख़रा' ।

मसक़ला-पु० [अ०] सिकलीगरोंका एक औजार ।

मसका-पु० मक्खन; दहीका पानी; * मच्छड़-'मसका कहत मेरी सरबरि कौन उड़ै'-सुंद० ।

मसकीन*-वि० दे० 'मिस्कीन' ।

मसख़रा-वि० [अ०] हँसोड़, परिहासप्रिय । पु० हँसी-मजाक पसंद करनेवाला, परिहासप्रिय व्यक्ति; विदूषक । **-पन**-पु० ठट्ठेबाजी, हँसोड़पन ।

मसखरी†-स्त्री० मसखरापन; हँसी ।

मसखवा*-वि० माँस खानेवाला ।

मसजिद-स्त्री० [अ०] सिजदा करनेकी जगह, उपासना-स्थल, वह इमारत जिसमें मुसलमान इकट्ठा होकर नमाज पढ़ते हैं । **मु०-में चिराग जलाना**-मन्नत पूरी करनेके लिए मसजिदके ताकोंमें दिये जलाना ।

मसनद-पु० [अ०] गद्दी; बड़ा तकिया । **-नशीं**-वि० मसनदपर बैठनेवाला । पु० राजा; बादशाह; अमीर ।

मसनवी-स्त्री० [अ०] उर्दू-फारसीका वह प्रबंध-काव्य जिसके हर शेरके दोनों मिसरोंका काफिया एक, पर हर शेरका काफिया जुदा हो ।

मसमुंद*-पु० धक्कमधक्का ।

मसयारा*-पु० मशाल ।

मसरफ़-पु० [अ०] सर्फ (खर्च) करनेकी जगह, मौका; काम; उपयोग ।

मसरू-पु० दे० 'मशरू' (एक रेशमी कपड़ा) ।

मसल-स्त्री० [अ०] कहावत, लोकोक्ति; मिसाल ।

मसलति*-स्त्री० दे० 'मसलहत'-'बैठे इकले जाइ करन मसलति भली'-सुजान० ।

मसलना-स० क्रि० किसी नरम चीजको दबाकर मलना, रगड़ना; माँड़ना ।

मसलन्-अ० [अ०] मिसालके तौरपर, उदाहरणरूपमें ।

मसलहत-स्त्री० [अ०] हितकर सलाह; हित, भलाई; हितकी दृष्टि, नीति । **-अंदेश**-वि० मसलहत सोचनेवाला, हितका विचार करनेवाला ।

मसलहतन्-अ० [अ०] (मसलहत-हित) लाभकी दृष्टिसे ।

मसला-पु० [अ०] सवाल, प्रश्न; पूछने योग्य बात; विषय (मजहबी मसले), समस्या । **मु०-हल होना**-उलझन, कठिनाईका दूर हो जाना ।

मसवारा-पु० प्रसूताका प्रसवके एक महीने बादका स्नान ।

मसवासी-पु० साधु-संन्यासी जो एक जगह एक महीनेसे अधिक न रहे । स्त्री० एक पुरुषके साथ एक महीनेसे अधिक न रहनेवाली स्त्री, वेश्या ।

मसविदा-पु० दे० 'मसौदा' ।

मसहार*-पु०, वि० दे० 'मांसाहारी' ।

मसा-पु० दे० 'मस्सा'; मच्छड़ ।

मसान-पु० मुरदे जलानेका स्थान, श्मशान, मरघट; बच्चोंको होनेवाला सूखा रोग; * रणभूमि । **मु०-जगाना**-शवसाधन करना ।

मसानिया-पु० मसान जगानेवाला; ओझा; डोम ।

मसानी-वि० मसान जगानेवाला । स्त्री० मसानमें रहनेवाली पिशाचिनी इ० ।

मसाल-स्त्री० दे० 'मशाल' । **-ची**-पु० दे० 'मशालची' ।

मसालहत-स्त्री० [अ०] सुलह करना, मेल-मिलाप, समझौता ।

मसाला-पु० वह सामग्री जिससे कोई चीज बनायी जाय, किसी कार्यकी साधनरूप वस्तु या सामग्री (मकान बनानेका मसाला, अखबारका मसाला, बरतन जोड़नेका मसाला

इ०); गुण, स्वाद आदि बढ़ानेवाली सामग्री (दाल, तरकारी, पान आदिका मसाला), धनिया, लौंग, मिर्च इ०; साधन, सामान (दिल्लगीका मसाला)। **–(ले) दार–**वि० जिसमें मसाला पड़ा हो (–तरकारी)। **–का तेल–**सुगंधित द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल।

मसाहत–स्त्री० [अ०] नापना, पैमाइश; क्षेत्रमिति।

मसाहति*–स्त्री० दे० 'मसाहत'।

मसि–स्त्री० [सं०] स्याही, रोशनाई; कालिख; काजल; निर्गुंडी; * मूछोंका आरंभिक रूप। **–धान**–पु०, **–धानी**–स्त्री० दवात। **–जीवी (विन्)**–पु० लेखनकार्य द्वारा जीविका चलानेवाला, लेखक। **–पत्र**–पु० (कार्बन-पेपर) वह कागज जिसपर कोयले आदिकी कालिख चढ़ा दी (फैला दी) गयी हो (इसे दो कागजोंके बीचमें रखकर लिखने या टाइप करनेसे ऊपरकी लिखी या टाइप की हुई सामग्री, ज्योंकी-त्यों, नीचे भी उतर आती है)। **–पात्र**–पु० दवात। **–बिंदु**–पु० दिठौना।

मसियर, मसियार–पु० मशाल।

मसियारा*–पु० मशालची।

मसी–स्त्री० [सं०] दे० 'मसि'।

मसीत, मसीद*–स्त्री० मसजिद।

मसीह–पु० [अ०] ईसाई धर्मके प्रवर्तक ईसा।

मसीहा–पु० [फा०] मसीह; मुर्देको जिला देनेकी शक्ति रखनेवाला।

मसीही–वि० मसीहका। पु० ईसाई।

मसुरिया†–स्त्री० दे० 'मसूरिका'।

मसुरी–स्त्री० दे० 'मसूर'।

मसू*–स्त्री० कठिनाई।

मसूड़ा, मसूढ़ा–पु० दाँतोंके नीचे-ऊपरका माँस।

मसूर–पु० [सं०] दालके काम आनेवाला एक अन्न जो रबीकी फसलमें बोया जाता है।

मसूरिका–स्त्री० [सं०] चेचकका एक भेद जिसके दाने बड़ी मातासे छोटे, मसूरकी दालके बराबर होते हैं।

मसूरी–स्त्री० [सं०] मसूरिका।

मसूस, मसूसन*–स्त्री० मन मसोसनेका भाव, अंतर्व्यथा।

मसूसना–अ० क्रि० दे० 'मसोसना'।

मसृण–वि० [सं०] चिकना; मुलायम; चमकदार।

मसेवरा*–पु० मांसकी बनी चीजें।

मसोसना–अ० क्रि० दबाना, मरोड़ना; दुःख, आकांक्षा आदिको (किसी विवशतावश) भीतर ही भीतर दबा रखना, मन ही मन दुःख करना, ऐंठना।

मसोसा–पु० मसोसनेका भाव, दुःख, कुढ़न।

मसौदा–पु० [अ० 'मसव्वदा'] दुहरानेके लिए लिखित–अशोधित–लेख, खर्रा; पुस्तकादिका मूल लेख; मनसूबा। **–नवीस**–पु० मसौदा बनानेवाला। **–(दे) बाज़**–वि० युक्ति सोचनेवाला, चालाक। मु० **–गाँठना**–मजमून बनाना; मनसूबा बाँधना।

मस्करी–स्त्री० दे० 'मसखरी' (अपढ़)।

मस्खरा–वि०, पु० [अ०] दे० 'मसखरा'।

मस्त–वि० नशेमें चूर, मत्त, मतवाला; बेफिक्र, बेपरवा; प्रसन्न; जिससे मस्ती टपके, मदभरा (आँखें); मस्तीपर आया हुआ, कामवश, जिसकी संभोगेच्छा प्रबल हो रही हो।

मस्तक–पु० [सं०] सिर, माथा। **–शूल**–पु० सिर-दर्द।

मस्ताना–वि० मस्तीसे भरा हुआ, मस्तकी तरह (चाल); मस्त। अ० क्रि० मस्त होना, मस्तीपर आना।

मस्तिष्क–पु० [सं०] भेजा, दिमाग।

मस्ती–स्त्री० मस्त होनेका भाव, मतवालापन, नशा; जवानीका नशा; काम, संभोगेच्छाकी प्रबलता; गर्व; वह पानी जो हाथी, ऊँट आदिके मस्त होनेपर उनकी कनपटी, गरदन आदिसे टपकता है, मद; कुछ वृक्षोंसे विशेष अवस्थाओंमें टपकनेवाला पानी। मु० **–झड़ना**–मस्ती उतरना, दूर होना, अक्ल ठिकाने आना। **–झाड़ना**–मस्ती (नशा, गर्व) दूर कर देना। **–पर आना**–मस्त होना।

मस्तूल–पु० [पुर्त०] नाव, जहाजके बीचमें गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा जिसमें पाल बाँधा जाता है।

मस्सा–पु० शरीरपर दानेके रूपमें उभरा हुआ मांसपिंड; बवासीरकी बीमारीमें गुदाके बाहर और भीतर निकल आनेवाला दाना।

महँ*–अ० में।

महँगा–वि० जिसके दाम अधिक या उचितसे अधिक हों।

महँगाई–स्त्री० महँगी; महँगीका भत्ता।

महँगी–स्त्री० महँगा होना; आवश्यक वस्तुओंकी दुर्लभता।

महंत–पु० मठाधीश, साधु-संघका मुखिया; मुखिया।

महंती–स्त्री० महंतका पद या कार्य।

मह*–वि० महत्, बड़ा। अ० दे० 'महँ'।

महक–स्त्री० गंध, वास। **–दार**–वि० महकनेवाला, खुशबूदार।

महकना–अ० क्रि० महक देना, वास आना।

महकनि*–स्त्री० महक।

महकमा–पु० [अ०] हुक्म करनेकी जगह; कचहरी; विभाग।

महकान–स्त्री० गंध, वास।

महकीला–वि० महकदार।

महज़–वि०, अ० [अ०] खालिस, निरा; केवल, सिर्फ; सरासर।

महज़र–पु० [अ०] हाजिर होनेकी जगह। **–नामा**–पु० किसी हत्या आदिके संबंधमें लिखाया गया साक्ष्यपत्र या शहादतनामा जिसपर आस-पासके बहुतसे लोगोंके हस्ताक्षर हों।

महजिद–स्त्री० दे० 'मसजिद'।

महज्जन–पु० [सं०] (महत्+जन) दे० 'महाजन'।

महत*–पु० महत्त्व। स्त्री० प्रतिष्ठा–'बचन कठोर कहत, कहि दाहत अपनी महत गँवावत'–सू०।

महता–पु० गाँवका मुखिया, महतो; मुंशी, मुहर्रिर। * स्त्री० अपनेको बड़ा मानना; गर्व।

महताब–स्त्री० [फा०] चाँदनी; महताबी। पु० चाँद।

महताबी–स्त्री० [फा०] एक तरहकी आतिशबाजी जिसके छूटनेपर सफेद रोशनी निकलती है; चाँदनीका आनंद लेनेके लिए बनाया गया चबूतरा, (नहर आदिके किनारे) बारहदरी आदि।

महतारी†–स्त्री० माता।

महती–वि० स्त्री० [सं०] दे० 'महत्'। स्त्री० नारदकी वीणा।

महतु*–पु० महत्त्व, बड़ाई–'वृंदावन ब्रजको महतु कापै

बरन्यो जाइ'–सू० ।

महतो–पु० गाँवका मुखिया; कुछ कुलोंकी उपाधि ।

महत्–वि० [सं०] बड़ा, बृहत्; श्रेष्ठ; ऊँचा; भारी; तीव्र; प्रधान । **–तत्त्व**–पु० प्रकृतिका प्रथम विकार; बुद्धितत्त्व (सांख्य०) ।

महत्तम–वि० [सं०] सबसे बड़ा । **–समापवर्तक**–पु० वह बड़ीसे बड़ी संख्या जिसका भाग दो या अन्य संख्याओंमें पूरा-पूरा जा सके ।

महत्तर–वि० [सं०] (दो पदार्थों आदिमें) अधिक बड़ा ।

महत्ता–स्त्री० [सं०] बड़प्पन; महिमा; गुरुता; उच्च पद ।

महत्त्व–पु० [सं०] बड़प्पन, महत्ता; गुरुता; वजन, अधिक परिणाम-जनक, अधिक आवश्यक होना; श्रेष्ठता । **–पूर्ण,–युक्त,–शाली (लिन्)**–वि० महत्त्ववाला ।

महत्त्वाकांक्षा–स्त्री० [सं०] बड़ा बनने, महत्त्व प्राप्त करनेकी अभिलाषा ।

महदाशय–वि० [सं०] ऊँचे मन, विचारवाला ।

महदी–पु० [अ०] पथ-प्रदर्शक, रहनुमा; मुसलमानोंके बारहवें इमाम जो प्रलयकालके कुछ पहले प्रकट होंगे ।

महदूद–वि०[अ०] जिसकी हद बाँध दी गयी हो, सीमित; नियत ।

महन*–पु० दे० 'मथन' ।

महना†–स० क्रि० दे० 'मथना' ।

महनिया†–पु० मथनेवाला ।

महनीय–वि० [सं०] पूजनीय, सम्मान्य; महिमा-मंडित ।

महनु*–पु० मथन करनेवाला; नाश करनेवाला ।

महफ़िल–स्त्री० [अ०] आदमियोंके जमा होनेकी जगह; जलसा, सभा; नाच-रंगका जलसा ।

महफ़ूज़–वि० [अ०] जिसकी हिफाजत की गयी हो, रक्षित, निरापद ।

महबूब–वि० [अ०] प्यारा, प्रेमपात्र ।

महबूबा–वि० स्त्री० [अ०] प्यारी, प्रेमिका ।

महमंत*–वि० मदमत्त–'मन कुंजर महमंत था, फिरता गहिर गभीर'–साखी ।

महमद*–पु० दे० 'मुहम्मद' ।

महमदी*–वि०, पु० दे० 'मुहम्मदी' ।

महमह–अ० महकते हुए, सुवास-सहित ।

महमहा–वि० महकता हुआ, खुशबूदार ।

महमहाना*–अ० क्रि० महकना, सुगंध बखेरना ।

महमा*–स्त्री० दे० 'महिमा' ।

महमेज़–स्त्री० [अ०] सवारोंके जूतेकी एड़ीपर लगा हुआ एक तरहका काँटा जिससे घोड़ेको एड़ लगाते हैं ।

महर–वि० सुगंधित, महकता हुआ । पु० मुखिया; व्रजमंडलमें प्रयुक्त एक आदरसूचक उपाधि; नंद; एक पक्षी; कहार; [अ०] वह धन या संपत्ति जो मुसलमान वर निकाहके समय कन्याको देता या देनेका वचन देता है । **मु०–बख्शवाना**–पतिका कह-सुनकर पत्नीसे महर माफ करा लेना । **–बाँधना**–महरकी रकम नियत करना ।

महरम–वि० [अ०] भेद जाननेवाला, आमिरा । पु० निकट संबंधी जिससे (मुसलमान कन्या या स्त्रीका) ब्याह जायज न हो–बाप, भाई, चाचा इ०; वह पुरुष जिससे परदा जायज न हो–पति, देवर इ० । स्त्री० अँगियाकी कटोरी; अँगिया । **–(मे)राज़**–वि० भेदी ।

महरा–पु० कहार । वि० बड़ा; मुखिया ।

महराई*–स्त्री० महरापन, प्रधानता ।

महराज, महराजा–पु० दे० 'महाराज' ।

महराना–पु० महरोंकी बस्ती, गाँव; नंदके रहनेकी जगह; दे० 'महाराणा' ।

महराब*–स्त्री० दे० 'मेहराव' ।

महरि–स्त्री० स्त्रीके लिए आदरसूचक उपाधि (व्रज); यशोदा; गृहस्वामिनी; ग्वालिन पक्षी ।

महरी–स्त्री० कहारिन, टहलनी; ग्वालिन पक्षी ।

महरूम–वि० [अ०] रोका गया, वर्जित; निषिद्ध; वंचित; हीन (किसी वस्तुसे); बेनसीब; नाकाम ।

महरूमी–स्त्री० [अ०] महरूम होना; बेनसीबी; नाकामी ।

महरेटा–पु० महरका बेटा; कृष्ण ।

महरेटी–स्त्री० महरकी बेटी; राधिका ।

महर्घता–स्त्री० [सं०] दे० 'महार्घता' ।

महर्लोक–पु० [सं०] ऊपरके सात लोकोंमेंसे चौथा ।

महर्षि–पु० [सं०] बहुत बड़ा ऋषि, परमर्षि (व्यास, नारद आदि); ब्रह्माके दस मानस पुत्र (मरीचि आदि) ।

महल–पु० [अ०] उतरनेकी जगह; बड़ा मकान; राजा-रईसका मकान, प्रासाद; मौका, वक्त; पत्नी, बेगम (दूसरे महलसे दो बेटे हैं) । **–दार**–पु० महलका प्रबंधक और रक्षक । **–सरा**–पु० जनानखाना, अंतःपुर । **–(ले)ख़ास**–पु० बड़ी बेगम, पटरानी ।

महल्ला–पु० [अ०] शहर या कसबेका एक भाग; टोला; महल्लेके लोग । **–(ल्ले)दार**–पु० महल्लेका चौधरी ।

महसिल*–पु० [अ० 'मुहसिल'] वसूल करनेवाला ।

महसूल–पु० [अ०] कर, राजस्व; मालगुजारी; किराया ।

महसूली–वि० [अ०] जिसपर महसूल लगे; बैरंग ।

महसूस–वि० [अ०] ज्ञानेंद्रियोंमेंसे किसीके द्वारा अनुभूत (विषय); ज्ञात; प्रकट । **मु०–करना,–होना**–अनुभव करना, होना ।

महाँ*–अ० दे० 'महँ' ।

महांग–वि० [सं०] महाकाय, भारी-भरकम ।

महांधकार–पु० [सं०] निबिड़ अंधकार; घोर अज्ञान ।

महा–* पु० मट्ठा; वि० [सं०] महत् शब्दका कर्मधारय और बहुव्रीहि समासोंके आदिमें लगनेवाला रूप; बड़ा, श्रेष्ठ; भारी । **–अहि***–पु० शेषनाग । **–कवि**–पु० बहुत बड़ा कवि; महाकाव्यका रचयिता; शुक्राचार्य । **–काय**–वि० भारी-भरकम शरीरवाला । पु० शिवका एक अनुचर; हाथी । **–कार्त्तिकी**–स्त्री० कार्त्तिकी पूर्णिमा । **–काल**–पु० अखंड, अनंत काल; शिवका संहारकारी रूप, रुद्र; उज्जैनमें स्थापित प्रसिद्ध शिवलिंग जो १२ ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक है; शिवका एक अनुचर । **–काली**–स्त्री० दुर्गाका एक भयानक रूप, रुद्राणी । **–काव्य**–पु० बड़ा काव्य; आठ या इससे अधिक सर्गोंवाला वह प्रबंध-काव्य जिसमें विविध ऋतुओं, दृश्यों आदिका वर्णन हो और जिसमें सभी रसों तथा विविध छंदोंका समावेश हुआ हो । **–कुमार**–पु० राजाका

सबसे बड़ा बेटा, युवराज। **–कोशल**–पु० दक्षिण कोशल, आधुनिक मध्यप्रदेशका हिंदीभाषी भाग। **–क्रतु**–पु० बड़ा यज्ञ–अश्वमेध, राजसूय आदि। **–खर्व**–पु० १०० खर्वकी संख्या। **–गणनाध्यक्ष**–पु० (अकाउंटेंट-जनरल) दे० 'महा-लेखापाल'। **–जन**–पु० श्रेष्ठजन, बड़ा आदमी; जाति या श्रेणी-विशेषका मुखिया; जनसमूह, जनता; देन-लेन करनेवाला, साहूकार; ऋणदाता, पावनेदार। **–जनी**–स्त्री० [हिं०] दे० क्रममें। **–ज्ञानी (निन्)**–वि० बहुत बड़ा ज्ञानी। **–तत्त्व*** –पु० दे० 'महत्तत्त्व'। **–तपा(पस्)**–वि० कठोर तप करनेवाला। पु० विष्णु। **–तल**–पु० नीचेके सात लोकोंमेंसे पाँचवाँ। **–तिक्त**–पु० नीम। **–त्याग,–त्यागी(गिन्)**–वि० अति त्यागशील। **–दंड**–पु० लंबी भुजा; भारी दंड, सजा। **–दंत**–पु० बड़े दाँतोंवाला हाथी; शिव। **–दंष्ट्र**–पु० शिव; एक राक्षस। **–दशा**–स्त्री० मनुष्यके जीवनमें ग्रहविशेषका निर्धारित भोग्यकाल। **–दान**–पु० बड़ा दान; उन सोलह दानोंमेंसे कोई जिनका फल स्वर्ग माना गया है (तुलापुरुष, सोनेकी गौका दान, गजदान, कन्यादान इ०)। **–दारु**–पु० देवदारु। **–देव**–पु० शिव। **–देवी**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती; सबसे बड़ी रानी, पट्टरानी। **–देश**–पु० भूमंडलका कोई मुख्य भाग जिसके अंदर कई देश हों, बर्रे आजम। **–द्वार**–पु० बड़ा या मुख्य दरवाजा। **–द्वीप**–पु० पृथ्वीका वह बड़ा भाग जिसमें कई देश हों, जैसे एशिया, यूरोप, महादेश; पुराणानुसार पृथ्वीके ये सात मुख्य विभाग–जंबु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर। **–नवमी**–स्त्री० आश्विन शुक्ला नवमी। **–नाटक** पु० दस अंकोंवाला नाटक। **–नाद**–पु० बहुत जोरकी आवाज; हाथी; गरजनेवाला बादल; बड़ा ढोल; शंख; सिंह। **–निंब**–पु० बकायन। **–निद्रा**–स्त्री० मृत्यु। **–निर्वाण**–पु० व्यष्टि सत्ताका पूर्ण नाश, परिनिर्वाण। **–निशा**–स्त्री० रात्रिका दूसरा और तीसरा पहर; दुर्गा; प्रलयरात्रि। **–नीच**–पु० रजक। **–नील**–वि० गहरा नीला। पु० एक तरहका नीलम। **–नृत्य**–पु० शिव। **–नेत्र**–पु० शिव। **–न्यायवादी(दिन्)**–पु० (एटर्नी-जनरल) दे० 'महाप्राभिकर्ता'। **–पंचविष**–पु० सिंघिया (शृंगी), कालकूट, मोथा, बछनाग और शंखकर्णी–इन पाँच विषोंका समूह। **–पत्रपाल**–पु० (पोस्टमास्टर-जनरल) राज्यकी राजधानीमें रहनेवाला डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी। **–पथ**–पु० राजपथ; महाप्रस्थानका पथ, मृत्यु; हिमालयके उत्तरका वह रास्ता जिससे युधिष्ठिर आदिने स्वर्गारोहण किया था; एक नरक। **–पद्म**–पु० श्वेत कमल; सौ पद्मकी संख्या; दक्षिण दिशाका दिग्गज; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; एक नंदवंशी राजाका नाम। **–पद्मनंद**–पु० नंदवंशका अंतिम राजा। **–पवित्र**–पु० विष्णु। **–पातक**–पु० बहुत बड़ा पाप; स्मृतिवर्णित ये पाँच महापाप–ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नीगमन और इन पाप करनेवालोंका संसर्ग। **–पातकी(किन्)**–वि० महापातक करनेवाला। **–पात्र**–पु० प्रेतकर्म कराने और उसका दान लेनेवाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण; महामंत्री। **–पाप**–पु० महापातक। **–पुर**–पु० दुर्ग आदिसे रक्षित नगर। **–पुराण**–पु० व्यासरचित अठारह महापुराणोंमेंसे कोई एक। **–पुरुष**–पु० श्रेष्ठजन, महिमाशाली पुरुष; नारायण; दुष्ट, हजरत (व्यंग्य)। **–प्रज्वलन**–पु० (कानफ्लेग्रेशन) विशाल और भयावह अग्निकांड जिसमें आगकी लपटें बहुत दूर-दूरतक पहुँचें और जिससे भारी क्षति होनेकी संभावना हो। **–प्रभ**–पु० परमेश्वर; राजा; इंद्र; चैतन्य महाप्रभु; वल्लभाचार्य; कोई बड़ा साधु-संन्यासी। **–प्रलय**–पु० ब्रह्माकी आयु शेष होनेपर होनेवाला संपूर्ण सृष्टिका नाश। **–प्रसाद**–पु० भगवान् या किसी बड़े देवताका प्रसाद; जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात; देवीको बलि किये हुए बकरेका मांस। **–प्रस्थान**–पु० महायात्रा, मृत्यु। **–प्राज्ञ**–वि० परमज्ञानी; महापंडित। **–प्राण**–वि० अधिक बल, सत्त्ववाला। पु० प्रत्येक वर्गका दूसरा और चौथा अक्षर (कवर्गमें 'ख', 'घ' और चवर्गमें 'छ', 'झ' इ०); काला कौआ। **–प्राभिकर्ता(र्तृ)**–पु० (ऐटर्नी-जनरल) वह विधिक अधिकारी जो राज्य-संबंधी मुकदमों-मामलोंमें सरकारकी ओरसे व्यवस्थादि करनेके लिए प्राधिकृत किया गया हो। **–बन**–पु० [हिं०] वृंदावनके अंतर्गत एक वन। **–बल**–वि० अतिबली। पु० वायु; सीसा; बुद्ध। **–बलाधिकृत**–पु० (फील्डमार्शल) सैन्य-मंत्री; सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी। **–बाहु**–वि० लंबी बाँहवाला; बलवान्। पु० विष्णु; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–ब्राह्मण**–पु० वह ब्राह्मण जो प्रेतकर्म कराता और उसमें किया जानेवाला दान लेता हो, महापात्र। **–भाग,–भागी(गिन्)**–वि० अति भाग्यवान्; सुविख्यात; पुण्यात्मा। **–भागवत**–पु० परम वैष्णव; मनु, सनकादि १२ महाभक्त; श्रीमद्भागवत (पुराण)। **–भारत**–पु० व्यासरचित इतिहास-ग्रंथ जिसमें भरतवंशका चरित और कौरव-पांडवोंमें हुए महासंग्रामका वर्णन है; कुरु-पांडव-युद्ध; महायुद्ध; महाग्रंथ। **–भाष्य**–पु० (पाणिनिकृत व्याकरण-सूत्रपर पतंजलिलिखित) बृहद्-भाष्य। **–भिक्षु**–पु० बुद्धदेव। **–भीता**–स्त्री० लजालू। **–भीम**–वि० अति भयंकर। पु० शिवका अनुचर भृंगी; राजा शांतनु। **–भीरु**–पु० ग्वालिन नामका कीड़ा। **–भूत**–पु० पंचभूत या उनमेंसे कोई एक; परमेश्वर। **–भैरव**–पु० शिव। **–मंडल**–पु० बड़ा, प्रधान, केंद्रीय मंडल या संघ। **–मंत्र**–पु० वेदमंत्र; अति शक्तिशाली मंत्र; उत्तम सलाह। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० प्रधान मंत्री। **–मणि**–पु० अधिक मूल्यवान् मणि, रत्न। **–मति**–वि० अति बुद्धिमान्; उदाराशय। **–मना(मनस्)**–वि० ऊँचे दिलवाला, उदारचित्त। **–महिम**–वि० (हिज एक्सेलेंसी) जिसकी बड़ी महिमा हो (राज्यपालादिके सम्मानार्थ प्रयुक्त शब्द), महामहिमायुक्त; अति महत्त्वशाली। **–महोपाध्याय**–पु० बहुत बड़ा उपाध्याय, अध्यापक; महापंडित; संस्कृतके महापंडितोंकी एक उपाधि। **–मांस**–पु० नरमांस; गोमांस। **–माई**–स्त्री० [हिं०] काली, देवी। **–मान्य**–वि० (हिज मैजेस्टी) अत्यंत माननीय (किसी स्वतंत्र नरेश या सम्राट्के लिए प्रयुक्त सम्मानका शब्द)। **–माया**–स्त्री० जगत्की

कारणभूता अविद्या; जगतकी अधिष्ठात्री दुर्गा; बुद्धदेवकी माता। **—मारी**—स्त्री० वबाई बीमारी, मरी। **—मुनि**—पु० मुनिश्रेष्ठ; व्यास; अगस्त्य; बुद्धदेव। **—मृग**—पु० बड़ा पशु; हाथी। **—मृत्युंजय**—पु० शिवका एक प्रसिद्ध मंत्र जो अकालमृत्यु-निवारक माना जाता है। **—यज्ञ**—पु० गृहस्थके लिए नित्य कर्तव्य पंचकर्म—वेदाध्ययन, अग्निहोत्र, तर्पण, अतिथि पूजन और भूतबलि। **—यान**—पु० बौद्ध धर्मके तीन मुख्य संप्रदायोंमेंसे एक। **—युद्धपोत**—पु० (कैपिटल शिप) भारी रण-पोत, जंगी जहाज। **—योगी(गिन्)**—पु० महान् योगी; शिव; विष्णु; मुर्गा। **—रत्न**—पु० बहुमूल्य रत्न—हीरा, मोती, वैदूर्य, पद्मराग, गोमेद, पुखराज, पन्ना, नीलम और मूँगा। **—रथ**—पु० भारी योद्धा; वह योद्धा जो अकेला दस सहस्र धनुर्धरोंसे लड़ सके। **—रथी(थिन्)**—पु० दे० 'महारथ'। **—रस**—पु० ईख; खजूर; काँजी; कसेरू; पारा; अभ्रक; सोनामक्खी; कांतिसार लोहा। **—राज**—पु० बड़ा राजा, बादशाह; राजा, ब्राह्मण, साधु-संत आदिका सम्मानसूचक संबोधन। [स्त्री० महाराज्ञी।] **—राजाधिराज**—पु० राजाओंका राजा, सम्राट्। **—राणा**—पु०[हिं०] मेवाड़ और धौलपुरके राजाओंकी उपाधि। **—रात्र**—पु०अर्धरात्रि। **—रात्रि**—स्त्री० महाप्रलय; आधी रातके बाद दो मुहूर्तका रात्रिकाल। **—रावण**—पु० अद्भुत रामायणमें वर्णित रावण जो जानकीजीके हाथों मारा गया। **—रावल**—पु० [हिं०] जैसलमेर और डूँगरपुरके राजाओंकी उपाधि। **—राष्ट्र**—पु० दक्षिण-पश्चिम भारतका एक प्रदेश; उस प्रदेशका निवासी; बड़ा राष्ट्र। **—राष्ट्री**—स्त्री० मध्यकालकी या दूसरी प्राकृतोंमेंसे एक मुख्य भाषा; महाराष्ट्र देशकी भाषा, मराठी। **—राष्ट्रीय**—वि० महाराष्ट्र-संबंधी; महाराष्ट्र देशवासी। **—रुद्र**—पु० शिव। **—रेता(तस्)**—पु० शिव। **—लक्ष्मी**—स्त्री० नारायणकी शक्ति, लक्ष्मी। **—लिंग**—पु० शिव। **—लेखापाल**—पु०(अकाउंटेंट-जनरल) सरकारके रेल विभाग, डाक-विभाग आदि सार्वजनिक विभागोंका प्रधान लेखापाल, महा-गणनाध्यक्ष। **—लौह**—पु० चुंबक। **—वरा**—स्त्री० दूब। **—वराह**—पु० विष्णुका वराह अवतार। **—वाक्य**—पु० महदर्थ-प्रकाशक वाक्य 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म' आदि उपनिषद्वाक्य। **—वाणिज्यदूत**—पु० (कौंसल जनरल) किसी देशका वह वाणिज्यदूत जो किसी अन्य देशकी राजधानीमें नियुक्त किया गया हो और जो उस देशमें स्थित अपने देशके इतर वाणिज्यदूतोंका प्रधान हो। **—वात**—पु० तूफानी हवा, अंधड़। **—वादी(दिन्)**—वि० शास्त्रार्थ करनेमें प्रबल। **—वायु**—स्त्री०दे० 'महावात'। **—वारुणी**—स्त्री० गंगास्नानका एक विशेष योग जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशीको शतभिषा नक्षत्र और शनिवार होनेसे पड़ता है। **—विद्या**—स्त्री० तंत्रोक्त दस देवियाँ—काली, तारा आदि। **—विद्यालय**—पु०उच्च शिक्षा देनेवाला विद्यालय (कालेज)। **—वीर**—वि० बहुत बड़ा वीर, योद्धा। पु० सिंह; वज्र; विष्णु, गरुड; हनूमान्; जैनोंके चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर (त्रिशलाके गर्भसे उत्पन्न महाराज सिद्धार्थके पुत्र जो युवावस्थामें ही राज-पाट छोड़कर तप करने वनमें चले गये। निर्वाणकाल ५२७ ई०)। **—वीर-चक्र**—पु० स्वतंत्र भारतमें सेनाके किसी वीरको रणभूमिमें असामान्य वीरता दिखानेपर दिया जानेवाला एक विशेष पदक जो परमवीर-चक्रसे छोटा माना जाता है। **—व्रण**—पु० दुष्ट व्रण। **—व्रत**—पु० बहुत बड़ा कठिन व्रत। **—शंख**—पु० बड़ा शंख; ललाट; सौ शंखकी संख्या; कुबेरकी एक निधि। **—शक्ति**—स्त्री० महती शक्ति; दुर्गा। **—श्मशान**—पु० काशी नगरी, वाराणसी। **—श्रमण**—पु० बुद्धदेव। **—संस्कार**—पु० अंत्येष्टि। **—सत्त्व**—वि० अति बलशाली; महामना। पु० बुद्धदेव; कुबेर। **—सभा**—स्त्री० बड़ा जलसा; महासंघ; हिंदू महासभा। **—सभाई**—वि०[हिं०] हिंदू महासभाका अनुयायी। **—समुद्र**—पु० बड़ा समुद्र, महासागर। **—सर्ग**—पु० महाप्रलयके बाद होनेवाली नयी सृष्टि। **—सांधिविग्रहिक**—पु० परराष्ट्रमंत्री। **—सागर**—पु० महासमुद्र। **—सारथि**—पु० अरुण। **—साहस**—पु० अति साहस; बलात्कार; जबरदस्ती छीन लेना, डकैती। **—साहसिक**—वि० अति साहसी। पु० बलात्कार करनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला। **—सिद्धि**—स्त्री० एक तरहका जादू। **—सुख**—पु० शृंगार; रति; बुद्धदेव।

महाई—स्त्री० मथनेका काम; मथनेकी उजरत।

महाउत*—पु० दे० 'महावत'।

महाउर*—पु० दे० 'महावर'।

महाचार्य—पु० [सं०] प्रधान आचार्य।

महाजनी—स्त्री० महाजनका पेशा, रुपयेके लेन-देन, हुंडी-पुरजेका काम।

महाढ्य—वि० [सं०] अति धनी; परम संपन्न।

महातम*—पु० दे० 'माहात्म्य'।

महात्मा(त्मन्)—पु० [सं०] जिसकी आत्मा या स्वभाव महान् हो, उच्चाशय; संत, योगी; सिद्ध पुरुष; परमात्मा।

महाधिकारपत्र—पु० [सं०] (मैग्ना कार्टा) वैयक्तिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करनेवाला वह प्रसिद्ध अधिकारपत्र जो ब्रिटेनके राजा जॉनसे सन् १२१५ ई० में लिखाया गया था।

महानता—स्त्री० महत्ता, बड़प्पन।

महानुभाव—पु० [सं०] ऊँचे मन, आशयवाला, महाशय।

महान्(हत्)—वि० [सं०] बड़ा, ऊँचा, महत्।

महापगा—स्त्री० [सं०] बड़ी नदी।

महाभियोग—पु० [सं०] (इंपीचमेंट) राज्यके प्रधान या राज्यके किसी बड़े अधिकारीपर, किसी जघन्य अपराध या बहुत ही अनुचित आचरणके कारण, चलाया गया अभियोग।

महामात्य—पु० [सं०] प्रधान मंत्री।

महाय*—वि० महा, बहुत अधिक।

महारंभ—वि० [सं०] बड़े काम उठानेवाला; बड़ा। पु० बड़ा काम।

महारण्य—पु० [सं०] भारी जंगल।

महार्घ—वि० [सं०] महँगा; दामी।

महार्घता—स्त्री० [सं०] महँगी, महँगापन।

महार्णव—पु० [सं०] महासमुद्र; शिव।

महार्बुद—पु० [सं०] एक अरब या १० अर्बुदकी संख्या।

महार्ह–वि० [सं०] बहुमूल्य। पु० सफेद चंदन।

महाल–पु० [अ०] महल्ला; वह जमींदारी जिसमें कई पट्टियाँ हों; विभाग।

महालया–स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्णा अमावस्या।

महावट–स्त्री० जाड़ेकी वर्षा।

महावत–पु० हाथीवान।

महावर–पु० लाखका रंग जिससे स्त्रियाँ पाँव रँगती हैं।

महावरा–पु० दे० 'मुहावरा'।

महावरी–स्त्री० महावरकी गोली।

महाशन–वि० [सं०] बहुत खानेवाला, अतिभोजी।

महाशय–वि० [सं०] उच्चाशय, महामना, उदार। पु० ऊँचे मन, आशयवाला पुरुप; समुद्र; पत्रालाप, संभाषण आदिमें किसीके लिए प्रयुक्त सामान्य आदरसूचक शब्द।

महाष्टमी–स्त्री० [सं०) आश्विन शुक्ला अष्टमी।

महास्पद–वि० [सं०] उच्चपदस्थ; शक्तिशाली।

महिँ*–अ० दे० 'महँ'।

महि–स्त्री० [सं०] महिमा; पृथ्वी; महत्तत्व। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–सुता**–स्त्री० सीता। **–सुर**–पु० ब्राह्मण।

महिख*–पु० दे० 'महिप'।

महिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] बड़ाई, बड़प्पन; महत्ता; माहात्म्य; अष्ट सिद्धियोंमेंसे एक, अपनी देहका चाहे जितना विस्तार कर लेनेकी शक्ति। **–मंडित**–वि० महिमायुक्त।

महिमामयी–वि० स्त्री० [सं०] महिमाशालिनी।

महियाँ*–अ० में–'प्रगटे भूतल महियाँ'–सू०।

महियाउर*–पु० महेरा।

महिला–स्त्री० [सं०] स्त्री; भद्र स्त्री; मदमत्त स्त्री। **–दीर्घा**–स्त्री० (लेडीज़ गैलरी) महिलाओंके वैठनेका लंबोतरा स्थान।

महिष–पु० [सं०] भैंसा; महिषासुर।

महिषाक्ष–पु० [सं०] भैंसा; गुग्गुल।

महिषासुर–पु० [सं०] एक असुर जो दुर्गाजीके हाथों मारा गया। **–घातिनी,–मर्दिनी**–स्त्री० दुर्गा।

महिषी–स्त्री० [सं०] भैंस; अभिषिक्ता रानी, 'पटरानी'।

महिषेश–पु० [सं०] महिषासुर।

मही–स्त्री० मट्ठा, छाछ; [सं०] धरती; मिट्टी; भूसंपत्ति, देश। **–ज**–पु० मंगल ग्रह; अदरक। **–जा**–स्त्री० सीता। **–धर**–पु० पर्वत; विष्णु। **–प,–पाल**–पु० राजा। **–पुत्र**–पु० मंगल; नरकासुर। **–पुत्री,–सुता**–स्त्री० सीता। **–भुक्(ज्),–भृत्**–पु० राजा। **–रुह**–पु० वृक्ष। **–सुत**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–सुर**–पु० ब्राह्मण।

महीन–वि० बारीक़; पतला।

महीना–पु० वर्षका बारहवाँ भाग, ३० दिनका समय, मास; दरमाहा; मासिक धर्म। **मु०–(ने)से होना**–ऋतुमती होना।

महीयान्(यस्)–वि० [सं०] अधिक बड़ा, महान्।

महीर–स्त्री० दे० 'महेरा'; खौलानेपर मक्खनके नीचे बैठा मैल।

महीश–पु० [सं०] पृथिवीपति, राजा।

महुँ*–अ० दे० 'महँ'।

महुअर–पु० मदारियों द्वारा बजाया जानेवाला एक बाजा, तूँबी। † स्त्री० दे० 'महुअरी'।

महुअरी†–स्त्री० महुआ मिलाकर पकायी हुई रोटी।

महुआ, महुवा–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके फूल, फल खाने और लकड़ी ईंधनके तथा इमारती कामोंमें आती है, मधूक।

महुआरी–स्त्री० महुएका बाग।

महुकम*–वि० दे० 'मुहकम'।

महुर्छा*–पु० महोत्सव।

महुलिया†–पु० महुवा (ग्राम०)। स्त्री० महुवेकी शराब।

महुवरि–स्त्री० दे० 'महुअर'।

महूख*–पु० दे० 'मधूक'।

महूरत–पु० दे० 'मुहूर्त'।

महूप–पु० महुवा; शहद (कविप्रि०)।

महेंद्र–पु० [सं०] विष्णु; इंद्र; एक कुलपर्वत।

महेर–स्त्री० दे० 'महेरा'; झगड़ा, अड़चन।

महेरा–पु० मट्ठेमें नमक या मीठा डालकर पकाया हुआ भात; मठा।

महेरि*–स्त्री० दे० 'महेरा'।

महेरी–स्त्री० उबाली हुई ज्वार; दे० 'महेरा'। वि० बाधा डालनेवाला।

महेलिका–स्त्री० [सं०] महिला, स्त्री।

महेश–पु० [सं०] शिव; परमेश्वर।

महेशानी–स्त्री० पार्वती (पूर्ण०)।

महेश्वर–पु० [सं०] शिव; परमेश्वर।

महेश्वरी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

महेस–पु० दे० 'महेश'।

महेसी*–स्त्री० पार्वती।

महेसुर*–पु० दे० 'महेश्वर'।

महोक्ष–पु० [सं०] बड़ा बैल।

महोख–पु० दे० 'महोखा'।

महोखा–पु० एक चिड़िया जिसकी बोली बहुत तेज होती है।

महोगनी–पु० एक सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुरसी आदि बनानेके काम आती है।

महोच्छव*–पु० दे० 'महोत्सव'।

महोत्सव–पु० [सं०] बड़ा उत्सव, समारोह।

महोदधि–पु० [सं०] समुद्र।

महोदय–वि०[सं०] अति समृद्ध; गौरवशाली। पु० महानुभाव; कान्यकुब्ज देश।

महोदया–स्त्री० [सं०] नागबला; महाशया।

महोदर–वि० [सं०] बड़े पेटवाला। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक राक्षस।

महोदार–वि० [सं०] अतिशय उदार।

महोद्यम–वि० [सं०] अतिशय उद्यम, उत्साहवाला।

महोन्नत–वि० [सं०] अतिशय उन्नत, ऊँचा।

महोपाध्याय–पु० [सं०] बड़ा अध्यापक, पंडित।

महोबा–पु० हमीरपुर जिलेका एक कसबा जो हिंदूकालमें चंदेल राजाओंकी राजधानी था और आल्हा-ऊदलका वासस्थान होनेके कारण बहुत प्रसिद्ध है।

महोबिया, महोबी–वि० महोबेका।

महोरस्क–वि [सं०] चौड़ी छातीवाला।

महोला*–पु० बहाना, छल।

महौघ–वि० [सं०] जिसकी धारा प्रखर हो।

महौजा(जस्)–वि० [सं०] अति ओज, तेजवाला, परम तेजस्वी।

माँ–स्त्री० माता, जननी। **–जाई**–स्त्री० सगी बहन। **–जाया**–पु० सगा भाई। **–बाप**–पु० माता-पिता। वि० मातृ-पितृ-तुल्य (सरकार)।

माँख*–पु० दे० 'माख'।

माँखना*–अ० क्रि० क्रोध करना, नाराज होना।

माँग–स्त्री० बालोंको सँवारकर बनायी हुई रेखा। **–चोटी**–स्त्री० माँग-पट्टी, बनाव-सिंगार। **–टीका**–पु० माथेपर पहननेका एक गहना। **–फूल**–पु० दे० 'माँगटीका'। **मु०–उजड़ना**–विधवा होना।

माँग–स्त्री० माँगनेकी क्रिया, भाव; याचना; चाह; तलब; अधिकाररूपमें की हुई याचना (आ०)। **–जाँचकर,–ताँगकर**–अ० इधर-उधरसे लेकर।

माँगन*–पु० माँगना, माँग; दे० 'मंगन'।

माँगना–स० क्रि० याचना करना, कुछ देनेकी प्रार्थना करना; चाहना; प्रार्थना करना; बुला मँगाना–'चहौं आजु माँगों धरि केसा'–प०। * पु० भिक्षुक।

मांगलिक–वि० [सं०] मंगलजनक, मंगलसूचक। [स्त्री० मांगलिकी।] पु० नाटकमें मंगलपाठ करनेवाला पात्र।

मांगल्य–वि० [सं०] मंगलकारी। पु० मंगलका भाव, मांगलिकता

माँचना*–अ० क्रि० फैलना, प्रसिद्ध होना–'कीरति जासु सकल जग माँची'–रामा०; शुरू होना।

माँजना–स० क्रि० रगड़कर साफ करना; रगड़कर चमकाना; माँझा देना। अ० क्रि० मश्क करना।

माँजा–पु० पहली वर्षाका फेन।

मांजिष्ठ–वि०[सं०] मजीठके रंगका, लाल। पु० लाल रंग।

माँझ*–अ० मध्य, भीतर।

माँझा–पु० पतंगकी डोरपर, उसे कड़ा और मजबूत करनेके लिए, मला जानेवाला मसाला; हलदी चढ़ानेके बाद वर-कन्याको पहनाये जानेवाले पीले कपड़े; नदीकी धाराके बीच छोटा टापू। **मु०–ढीला होना**–कमजोरी मालूम होना। **–(झे)का जोड़ा**–हलदीकी रस्मके बाद वर-कन्याको पहनाये जानेवाले कपड़े। **–बैठना**–वर-कन्याका ब्याहके दो-तीन दिन पूर्व पीले कपड़े पहनकर एकांतवास करने लगना।

माँझिल*–वि० दे० 'मँझला'।

माँझी–पु० नाव खेनेवाला, मल्लाह; * मध्यस्थ।

माँट*–पु० मटका।

माँठ–पु० मटका; नील घोलनेका मटका; बड़ी मठली।

माँड़–पु० पकाये हुए चावलका पानी, मंड, पसाव।

माँड़ना–स० क्रि० रौंदना; मसलना; गूँधना; अनाजकी बालोंको कुचलवाकर दाने निकालना;* लगाना, पोतना; सजाना; पूजा या सेवा करना; ठानना, शुरू करना–'हौं तुमसे फिर युद्धहिं माँड़ौं'–राम०।

मांडलिक–पु० [सं०] मंडलका राजा, मंडलाधीश।

माँडव*–पु० मंडप।

मांडवी–स्त्री० [सं०] कुशध्वजकी कन्या जो भरतको ब्याही गयी।

माँड़ा–पु० आँखका एक रोग; उसपर पड़नेवाला सफेद जाला; लुचुई, एक तरहका पराठा; मंडप।

माँड़ी–स्त्री० माँड़; कपड़े या सूतपर दिया जानेवाला कलफ।

माँडौ*–पु० मंडप; विवाहमंडप।

माँड्यो*–पु० मंडप; अतिथिशाला।

माँत*–वि० मत्त, उन्मत्त; फीका, माँद; मात, हारा हुआ।

माँतना*–अ० क्रि० मत्त, उन्मत्त होना।

माँता*–वि० मत्त, मतवाला।

मांत्रिक–वि० [सं०] मंत्र-संबंधी। पु० मंत्रवेत्ता, वेदमंत्रोंका पाठ करनेमें कुशल; जंतर-मंतर जानने, करनेवाला।

माँथ†–पु० दे० 'माथा'। **–बंधन**–पु० सिरके बाल बाँधनेकी डोरी; सिरपर लपेटनेका कपड़ा।

मांथर्य–पु० [सं०] मंथरत्व, धीमापन; सुस्ती।

माँद–स्त्री० खूँखार जानवरोंके रहनेकी जगह, गुफा। वि० फीका, बेआब, धूमिल। **मु०–पड़ना**–फीका पड़ना, बेआब होना।

माँदगी–स्त्री० [फा०] रोग; थकावट।

माँदा–वि० [फा०] बीमार; थका हुआ; बचा हुआ, छूटा हुआ (बाकी माँदा)।

मांद्य–पु० [सं०] मंदता; दुर्बलता।

माँपना–अ० क्रि० मतवाला होना, नशेसे प्रभावित होना।

मांस–पु० [सं०] प्राणियोंके शरीरका मुलायम, चिकना, रक्त वर्णका वह अंश जो हड्डी, चमड़े, नस आदिसे भिन्न होता है, आमिष, गोश्त; मछलीका मांस; फलका गुदारा भाग। **–ग्रंथि**–स्त्री० मांसकी गाँठ जो शरीरमें यत्रतत्र निकल आती है। **–ज**–पु० चरबी। **–प**–पु० पिशाच, दैत्य। **–पिंड**–पु० शरीर। **–पेशी**–स्त्री० शरीरके भीतर एक दूसरेसे जुड़े हुए मांसपिंड; ८वें दिनसे १४वें दिनतकका भ्रूण। **–भक्ष,–भक्षी (क्षिन्)**–वि० मांस खानेवाला। **–भेत्ता (त्तृ),–भेदी (दिन्)**–वि०, पु० जो मांस काटता हो। **–भोजी (जिन्)**–वि० दे० 'मांसभक्ष'। **–रस**–पु० मांसका रसा, शोरबा। **–विक्रय**–पु० मांसकी बिक्री। **–विक्रयी (यिन्)**–पु० कसाई; धनके लिए पुत्र या पुत्रीको बेचनेवाला। **–वृद्धि**–स्त्री० मांसका बढ़ जाना। **–सार,–स्नेह**–पु० चरबी।

मांसल–वि० [सं०] गुदारा, स्थूल; पुष्ट, बलवान्।

मांसाद, मांसादी (दिन्)–वि०[सं०] मांस खानेवाला।

मांसाशी (शिन्)–पु० [सं०] मांसाहारी; राक्षस।

मांसाहारी(रिन्)–पु०[सं०] मांसका आहार करनेवाला।

मांसोदन–पु० [सं०] मांसके साथ पकाया गया चावल, पुलाव।

मांसोपजीवी (विन्)–पु० [सं०] मांस बेचकर जीवन-निर्वाह करनेवाला, कसाब।

माँहीँ–अ० दे० 'माहँ'।

मा–अ० [सं०] निषेधार्थक–नहीं, मत। स्त्री० लक्ष्मी; माता; मान, मा। **–धव**–पु० दे० क्रममें।

माइँ, माइं–स्त्री० छोटे पुआ जैसा मीठा या नमकीन पकवान जो विवाहके समय बनाया जाता है; मामी; कुलदेवी।

माई–स्त्री० माता, माँ; वृद्धा, आदरणीया स्त्रीका संबोधन; किसी भी स्त्रीका संबोधन–हे सखी। **–का लाल**–हिम्मतवाला, वीर; उदार, दानी।

माक़ूल–वि० [सं०] अक्लमें आनेवाला, बुद्धिग्राह्य; ठीक, अच्छा; समझदार; शिष्ट; वादमें पराजित, कायल। **–पसंद**–वि० उचित बातको मान लेनेवाला, समझदार।

माख*–पु० अप्रसन्नता, रोष; गर्व–'तिनमहुँ रावन कवन तैं सत्य बदहि तज माख'–रामा०।

माखन–पु० दे० 'मक्खन'। **–चोर**–पु० माखन चुरानेवाला, कृष्ण।

माखना*–अ० क्रि० रोष करना, अप्रसन्न होना।

माखी*–स्त्री० मक्खी; सोनामक्खी।

मागध–वि० [सं०] मगधका; मगधमें .उत्पन्न। पु० मगध-नरेश; भाटका पेशा करनेवाली एक वर्णसंकर जाति; * जरासंध।

मागधी–स्त्री० [सं०] मगधकी भाषा; चार मुख्य प्राकृतोंमेंसे एक; मगधकी राजकुमारी।

माघ–पु० [सं०] फाल्गुनके पहलेका महीना; संस्कृतके प्रसिद्ध कवि।

माघी–वि० माघका। स्त्री० [सं०] माघकी पूर्णिमा।

माच*–पु० दे० 'मचान'।

माचना*–अ० क्रि० दे० 'मचना'।

माचल*–वि० मचलनेवाला, हठी।

माचा†–पु० बड़ी मचिया; पलंग; मचान।

माची†–स्त्री० मचिया, कुरसी; हलके साथ व्यवहारमें लाया जानेवाला जुआ; गाड़ीवानके बैठनेकी जगह।

माछ*–पु० मछली।

माछर*–पु० मच्छर।

माछी†–स्त्री० मक्खी।

माजरा–पु० [अ०] घटना; वृत्त, हाल।

माजू–पु० सरोंकी शक्लका एक झाड़। **–फल**–पु० माजूके झाड़का गोंद।

माजून–स्त्री० [अ०] चाशनीमें उबालकर बनायी हुई दवा।

माट–पु० दही रखनेका मटका; वह मटका जिसमें रंगरेज रंग रखता है।

माटा–पु० चींटोंकी शकलका एक कीड़ा।

माटी†*–स्त्री० मिट्टी; धूल; शरीर; शव।

माठ–पु० मैदेकी मोयनदार मोटी पूड़ी जो चाशनीमें पाग ली गयी हो; मटकी।

माड़ना–स० क्रि० धारण करना; सजाना; पूजना; * ठानना।

माड़वा†–पु० मंडप।

माढ़ा–पु० दूसरी मंजिलकी बैठक; मचिया।

माढी*–स्त्री० दे० 'मढ़ी'; मचिया।

माणिक, माणिक्य–पु० [सं०] गुलाबी या लाल रंगका एक रत्न।

मातंग–पु० [सं०] हाथी; चांडाल; किरात; एक ऋषि।

मात–* स्त्री० माता; [अ०] हार (शतरंज आदिमें)। वि० पराजित, हारा हुआ।

मातदिल–वि० दे० 'मोतदिल'।

मातना*–अ० क्रि० मत्त होना, नशेमें होना।

मातबर–वि० दे० 'मोतबर'।

मातबरी–स्त्री० विश्वसनीयता।

मातम–पु० [अ०] मृत्युशोक; रोना-पीटना, स्यापा। **–पुरसी**–स्त्री० मृत व्यक्तिके घर जाकर समवेदना-प्रकाश।

मातमी–वि० [अ०] मातम-संबंधी; शोक-सूचक। **–लिबास**–पु० शोक-सूचक पहनावा, काला या नीले रंगका कपड़ा।

मातरिपुरुष–पु० [सं०] वह जो माताके सामने या उसके ऊपर ही मर्दानगी दिखाये, गेहेशूर।

मातलि–पु० [सं०] इंद्रके सारथिका नाम।

मातहत–वि० [अ०] आज्ञाधीन; नीचे काम करनेवाला। पु० अधीन कर्मचारी, सहकारी।

मातहती–स्त्री० [अ०] मातहत होनेका भाव, अधीनता।

माता(तृ)–स्त्री० [सं०] माँ, जननी; आदरणीया, वयोवृद्ध स्त्रीका संबोधन; गाय; धरती; लक्ष्मी; दुर्गा; मातृका; .शीतला, चेचक।

माता(तृ)–वि० [सं०] मापनेवाला, मापक।

माता*–वि० मतवाला, नशेमें चूर।

मातामह–पु० [सं०] नाना।

मातामही–स्त्री० [सं०] नानी।

मातुल–पु० [सं०] मामा; धतूरा।

मातुला, मातुलानी, मातुली–स्त्री० [सं०] मामी।

मातुलेय–पु० [सं०] मामाका बेटा।

मातृ–स्त्री० [सं०] 'माता' शब्दका समासमें व्यवहृत रूप। **–कल्याणगृह**–पु० (मैटरनिटी वेलफेयर सेंटर) वह स्थान जहाँ शीघ्र ही माता बननेवाली या पहलेसे मातृत्वको प्राप्त स्त्रियोंकी देख-भाल, चिकित्सा, शिशुजन्म आदिका विशेष प्रबंध रहता है। **–गण**–पु० अष्ट (या सप्त) मातृकाएँ। **–गामी(मिन्)**–पु० माताके साथ संभोग करनेवाला। **–गोत्र**–पु० माताका गोत्र, कुल। **–घातक,–घाती(तिन्)**–पु० माताकी हत्या करनेवाला। **–देव**–पु० माताको देवता मानने, पूजनेवाला। **–पक्ष**–पु० मातृकुल, नाना, मामा आदि। **–पितृहीन**–वि० बिना माँ-बापका, अनाथ। **–पूजन**–पु० माताकी पूजा; मातृकापूजन। **–भाषा**–स्त्री० अपने जन्मस्थानकी, अपने घरमें बोली जानेवाली भाषा, स्वभाषा। **–भूमि**–स्त्री० जन्मभूमि। **–श्री**–स्त्री० माताजी (आदरार्थ प्रयुक्त)। **–ष्वसा**–स्त्री० मासी। **–सत्तात्मक**–वि० (मैट्रिआर्कल) (वह प्रथा या पद्धति) जिसमें माता या गृहस्वामिनीकी ही सत्ता सर्वोपरि मानी जाती रही हो। **–हंता(तृ)**–पु० माताकी हत्या करनेवाला।

मातृका–स्त्री० [सं०] माता; धाय; सौतेली माँ; वर्णमाला; ब्राह्मणी, माहेश्वरी, इंद्राणी आदि देवियाँ।

मातृत्व–पु० [सं०] संतानवती होना; माताका पद।

मात्र–अ० [सं०] केवल, सिर्फ।

मात्रा–स्त्री० [सं०] परिमाण; ह्रस्व वर्णके उच्चारणमें लगनेवाला काल; (संगीत) स्वरका स्थितिकाल, एक स्वरके उच्चारणमें लगनेवाला काल; अक्षरमें लगायी जानेवाली

स्वर-सूचक रेखा; औषधका एक बार सेवन करने योग्य परिमाण, खूराक।

मात्रिक–वि० [सं०] मात्रा-संबंधी; मात्राओंकी गणनावाला (छंद)। **–छंद**–पु० वह छंद जिसमें मात्राओंकी गणना की जाय।

मात्सर्य–पु०[सं०] दूसरेका उत्कर्ष देखकर जलना, कुढ़न।

मात्स्य–वि० [सं०] मत्स्य-संबंधी; मछलीका। **–न्याय**–पु० बलवान् द्वारा निर्बलको उदरस्थ कर जाना (जैसे बड़ी मछली छोटी मछलीको हड़प जाती है)।

माथ*–पु० दे० 'माथा'।

माथना*–स० क्रि० दे० 'मथना'।

माथा–पु० मस्तक, ललाट, पेशानी; वस्तुका अग्रभाग। मु०**–कूटना**–सिर पीटना। **–घिसना**–अनुनय-विनय करना; भूमिसे सिर लगाकर प्रणाम करना। **–टेकना**–भूमिसे सिर लगाकर प्रणाम करना। **–ठनकना**–किसी अनिष्टकी पहलेसे आशंका होना। **–पच्ची करना**–देर-तक सोचना-समझना; विशेष परिश्रमसे समझाना, सिर खपाना। **–मारना**–सिर मारना, माथापच्ची करना। **–रगड़ना**–दे० 'माथा घिसना'। **–(थे)पर बल पड़ना**–चेहरेसे रोष, अप्रसन्नता प्रकट होना।

माथुर–वि० [सं०] मथुराका। पु० मथुरावासी; चौबे; कायस्थोंकी एक उपजाति।

माथे–अ० माथेपर; भरोसे। मु०**–चढ़ाना**–शिरोधार्य करना। **–ठीका होना**–(किसी बातका) किसीके नाम ठीका होना, खास तौरसे किसीके जिम्मे होना। **–मढ़ना**–गले लगाना, सिर थोपना।

मादक–वि० [सं०] नशा पैदा करनेवाला; हर्षजनक।

मादकता–स्त्री० [सं०] नशीलापन।

मादन–पु० [सं०] मत्तता; कामदेव; धतूरा; लौंग। वि० मादक।

मादर–स्त्री० [फा०] माँ। **–जाद**–वि० जन्मका, पैदाइशी; सहोदर।

मादरिया*–स्त्री० दे० 'मादर' (मा)–'मादरिया घर बेटी आई'–कबीर०।

मादरी–वि० [फा०] माँका; पैदाइशी, जन्मसिद्ध। **–जबान**–स्त्री० मातृभाषा।

मादा–स्त्री० [फा०] स्त्री; स्त्री प्राणी, नरका उलटा।

मादिक*–वि० दे० 'मादक'। स्त्री० मदिरा।

माद्दा–पु० [अ०] वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो या बनायी जाय; जड़ पदार्थ; शब्दका मूल, धातु; समझ; योग्यता; मवाद।

माद्रवती–स्त्री० [सं०] माद्री जो नकुल-सहदेवकी माता थी; परीक्षितकी पत्नी।

माद्री–स्त्री० [सं०] पांडुकी दूसरी पत्नी। **–नंदन,–सुत**–पु० नकुल-सहदेव।

माद्रेय–पु० [सं०] माद्रीके पुत्र–नकुल और सहदेव।

माधव–पु० [सं०] विष्णु; कृष्ण; वसंत; वैशाख; महुएका पेड़। वि० मधुनिर्मित; वासंतिक।

माधवी–स्त्री०[सं०] एक सुगंधित फूलोंवाली लता, वासंती; शहदसे बनी शराब; मधुशर्करा।

माधुरई*–स्त्री० मिठास, माधुरी।

माधुरता*–स्त्री० दे० 'मधुरता'।

माधुरिया*–स्त्री० दे० 'माधुरी'।

माधुरी–स्त्री० [सं०] मधुरता, मिठास; शराब।

माधुर्य–पु० [सं०] मिठास; लावण्य, सहज सुंदरता; दयालुता; काव्यका एक गुण जिसमें टवर्ग और संयुक्ताक्षरोंका अभाव, सानुस्वार वर्णोंके प्रयोग तथा मृदु समासोंका व्यवहार होता है; शब्दावलीमें मनको मोह लेनेका गुण।

माधैया*–पु० दे० 'माधव'।

माधो, माधौ*–पु० दे० 'माधव'।

माध्य–वि० [सं०] मध्यका, बिचला।

माध्यम–वि० [सं०] मध्यका, बिचला, मध्यवर्ती। पु० वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय; कार्यविशेषकी वाहनरूप वस्तु (मीडियम); साधन, जरीया।

माध्यमिक–वि० [सं०] मध्यका, बिचला। **–शिक्षा**–स्त्री० (सेकंडरी एजुकेशन) प्रारंभिक शिक्षाके बादकी तथा उच्च शिक्षाके पूर्वकी शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षाकी समाप्तिसे लेकर मैट्रिक (कहीं-कही इंटर)तककी शिक्षा।

माध्यस्थ्य–पु०[सं०] मध्यस्थता, बीचबिचाव; निष्पक्षता।

माध्याकर्षण–पु०[सं०] पृथ्वीकी वह आकर्षणशक्ति जिससे ऊपर उछाली हुई चीज फिर नीचे आती है, गुरुत्वाकर्षण।

माध्याह्निक–वि० [सं०] मध्याह्नका।

माध्यिका–स्त्री० (मीडियन) वह सरल रेखा जो त्रिभुजके किसी शीर्षसे सामनेवाली भुजाके अर्धक बिंदुतक खींची गयी हो।

माध्व–वि० [सं०] मधुनिर्मित; मीठा; मध्वप्रवर्तित; मध्वका अनुयायी। **–संप्रदाय**–पु० मध्वाचार्य प्रवर्तित द्वैतवादी वैष्णव संप्रदाय।

माध्वी–स्त्री० [सं०] मधु आदिसे बनायी हुई शराब।

मान–पु० [सं०] आदर, प्रतिष्ठा; आत्म-सम्मान; अभिमान; नायकके किसी अपराधसे नायिकाका रूठना (सा०); क्रोध; परिमाण; पैमाना, मानदंड; नाप, तौल; प्रमाण; तालका एक विराम। **–कलह,–कलि**–पु० मानजनित कलह। **–गृह**–पु० कोपभवन। **–चित्र**–पु० नक्शा। **–दंड**–पु० नापनेका डंडा, काठा; पैमाना। **–देय**–पु० (ऑनॉरेरियम, हॉनॉरेरियम) किसी काम या सेवाके लिए स्वेच्छापूर्वक दिया जानेवाला पारिश्रमिक। **–धन**–वि० मानका धनी, प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो। **–पत्र**–पु० अभिनंदनपत्र। **–परेखा***–पु० भरोसा, विश्वास, आशा। **–भंग**–पु० मानहानि; (नायिकाके) मानका टूटना। **–मंदिर**–पु० वेधशाला; कोपभवन। **–मनौती**–स्त्री० [हिं०] रूठना-मनाना; मन्नत। **–मरोर***–पु० बिगाड़। **–मोचन**–पु० मान छुड़ाना, रूठे हुए प्रियको मनाना। **–हानि**–स्त्री० अपमान, बेइज्जती। मु०**–रखना**–बात रखना, (किसीके) बड़प्पनका सम्मान करना (उन्होंने इस कृत्यसे मेरा मान रख लिया)।

मानकंद–पु० एक तरहका मीठा कंद।

मानक–पु० मानकंद; (स्टैंडर्ड) दे० 'प्रमाप'।

मानता–स्त्री० मनौती।

मानना-स० क्रि० स्वीकार, कबूल करना; आदर, मान करना; गुण, योग्यताका कायल होना; (किसीपर) श्रद्धा करना; तिथि, पर्व आदि स्वीकार और उस दिनके विशेष कर्तव्योंका पालन करना, मनाना; मन्नत करना; समझना, खयाल करना। अ० क्रि समझना, फर्ज करना; राजी होना।

माननीय-वि० [सं०] मान करने योग्य, आदरणीय।

मानव-पु० [सं०] मनुष्यकी संतान, मनुष्य। वि० मनु-संबंधी; मनुष्योचित। **-धर्मशास्त्र**-पु० मनुस्मृति। **-पणन,-व्यापार**-पु० (ट्रैफिक इन ह्यूमन बीइंग्ज़) मनुष्योंको बेचने-खरीदनेका काम। **-विज्ञान**-पु० (एनथ्रोपॉलॉजी) दे० 'नृवंशविज्ञान'।

मानवता-स्त्री० [सं०] मनुष्यता।

मानवती-वि० स्त्री०, स्त्री० [सं०] मानिनी (नायिका)।

मानवी-वि० मानवका; मनुष्य-संबंधी। स्त्री० [सं०] नारी, स्त्री।

मानवीय-वि० [सं०] मानव-संबंधी, इनसानी।

मानवेंद्र-पु० [सं०] राजा; नरश्रेष्ठ।

मानस-पु० * मनुष्य-'मनु अनेक मानस उपजाये'-छत्र०;[सं०] मन, चित्त; मानसरोवर; रामचरितमानस। वि० मनसे उत्पन्न; मनःकृत। **-चारी(रिन्)**-वि० मानसरोवरमें रहनेवाला। पु० हंस। **-जन्मा(न्मन्)**-पु० कामदेव। **-देव***-पु० मानवेंद्र, राजा। **-पुत्र**-पु० (ब्रह्माके) संकल्पमात्रसे उत्पन्न पुत्र। **-पूजा**-स्त्री० बाह्योपचारके बिना मनसे की जानेवाली पूजा। **-शास्त्र**-पु० मनकी प्रकृति, क्रियाओं, वृत्तियों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मनोविज्ञान। **-शास्त्री(स्त्रिन्)**-पु० मानसशास्त्रका पंडित।

मानसिक-वि० [सं०] मन-संबंधी।

मानसी-स्त्री० [सं०] एक विद्यादेवी। वि० स्त्री० मनसे उत्पन्न, मनःकृत (-सृष्टि,-पूजा)।

मानहुँ*-अ० दे० 'मानो'।

माना*-स० क्रि० मापना, नाप-तौल करना। अ० क्रि० अटना, समाना।

मानिंद-वि० [फा०] सदृश, समान।

मानिक-पु० एक प्रसिद्ध रत्न, माणिक्य, लाल। **-चंदी**-स्त्री० साधारण सुपारी। **-रेत**-स्त्री० मानिकका चूरा।

मानित-वि० [सं०] सम्मानित।

मानिता-स्त्री०, **मानित्व**-पु० [सं०] मानी होनेका भाव, अभिमान, गौरव।

मानिनी-वि० स्त्री० [सं०] मान, अभिमान करनेवाली, मानवती। स्त्री० नायकके किसी अपराधसे रूठी हुई नायिका (सा०)।

मानी-पु०[अ०] अर्थ, मतलब, अभिप्राय; हेतु (बहुवचनमें)।

मानी(निन्)-वि० [सं०] मान करनेवाला; मानयुक्त, प्रतिष्ठित; स्वाभिमानी; रूठा हुआ (नायक)।

मानुख*-पु० दे० 'मनुष्य'।

मानुष-वि० [सं०] मनुष्य-संबंधी, मानव। पु० मनुष्य।

मानुषिक-वि० [सं०] मनुष्य-संबंधी।

मानुषी-वि० मनुष्यका। स्त्री० [सं०] स्त्री, नारी; चिकित्साके तीन भेदों-आसुरी, मानुषी, दैवी-मेंसे एक।

मानुष्य, मानुष्यक-पु० [सं०] मनुष्यता; मानवदेह; मनुष्य जाति। वि० मनुष्य-संबंधी; मनुष्यका।

मानुस*-पु० मनुष्य, आदमी।

माने-पु० मानी, मतलब, अर्थ।

मानौं, मानो-अ० जैसे, गोया।

मानौं*-अ० दे० 'मानों'।

मान्य-वि० [सं०] मानने योग्य, आदरणीय, पूज्य।

मान्यता-स्त्री० (किसी सिद्धान्त आदिका) मान्य होना; किसी संस्थाको स्वीकृति देना, प्रामाणिक मान लेना।

माप-स्त्री० मापनेकी क्रिया या भाव; नाप; परिमाण।

मापक-पु० [सं०] मापनेवाला; पैमाना; बाट; अनाज तौलनेवाला, बया (कौ०)।

मापन-पु० [सं०] नापना; तराजू।

मापना-स० क्रि० वस्तुका विस्तार, घनत्व या वजन मालूम करना, नापना, पैमाइश करना। * अ० क्रि० मत्त, मतवाला होना, मातना।

माफ़-वि० [अ० 'मुआफ'] क्षमा किया हुआ, बख्शा गया। **-करो**-क्षमा करो; रास्ता लो; जान छोड़ो।

माफिक-वि० अनुकूल, अनुसार।

माफी-स्त्री० क्षमा, माफ किया जाना; वह जमीन जिसकी मालगुजारी या लगान माफ हो, लाखिराज जमीन। **-दार**-वि० जिसके पास माफी जमीन हो।

माम*-पु० ममता, अहंता।

मामलत-स्त्री० [अ० 'मुआमिलत'] मामला; झगड़ा, विवाद। **-दार**-पु० तहसीलदार (म० प्र०)।

मामला, मामिला-पु०[अ०] काम-काज, धंधा; देन-लेन, खरीद-बेची; काम; घटना, बात; विवाद, मुकदमा। मु० **-करना**-तै करना, समझौता करना। **-पटाना**-सौदा करना।

मामा-पु० माँका भाई, मातुल। स्त्री० [फा०] माता; वृद्धा; खाना पकानेवाली, पाचिका; सेविका, नौकरानी।

मामी-स्त्री० मामाकी पत्नी, मातुलानी; अपना दोष न मानना। मु०**-पीना**-अपनी गलतीपर ध्यान न देना।

मामूँ-पु० मामा, मातुल।

मामूर-वि० [अ०] भरा हुआ; आबाद; समृद्ध।

मामूल-वि० [अ०] अमल किया हुआ; जिसपर अमल किया जाय। पु० वह बात जो रोज की जाय, नित्य नियम; अभ्यास; रीति, दस्तूर; दस्तूरी। **-के दिन**-रजोधर्मका समय।

मामूली-वि० [अ०] रोज होनेवाला, साधारण।

मायँ*-अ०मध्य, बीच। स्त्री० विवाह-समयका छोटा पुआ।

माय-स्त्री० माता, माँ; दे० 'माया'। अ० दे० 'महँ'।

मायक*-पु० माया करनेवाला।

मायका-पु० पीहर।

मायन*-पु० विवाहमें मातृकापूजनका दिन; उस दिनका कृत्य।

मायनी*-स्त्री० मायाविनी।

माया-स्त्री० [सं०] धोखा, कपट; इंद्रजाल, जादू; परमेश्वरकी अव्यक्त बीजरूप शक्ति जो प्रपंचकी कारणभूता

है; प्रकृति, अविद्या; जीवको बाँधनेवाले चार पाशोंमेंसे एक (शैवागम); मोहकारिणी शक्ति; लक्ष्मी; दुर्गा; प्रज्ञा (वे०); कृपा; बुद्धकी माताका नाम; लीला, करामात (यह सब उन्हींकी माया है); धन-दौलत (हिं०); ममता, (हिं०) संसारासक्ति, पुत्र-कलत्रादिमें राग। **-कार**-पु० जादूगर, इंद्रजाल करनेवाला। **-जाल**-पु० माया, मोहका फंदा; घर-गृहस्थीका जंजाल। **-जीवी(विन्)**-पु० दे० 'मायाकार'। **-पटु**-वि० मायावी। **-पति**-पु० ईश्वर। **-पाश**-पु० मायाकी फाँस, फंदा। **-पुरी**-स्त्री० हरिद्वार। **-मृग**-पु० सीताजीको छलनेके लिए मारीच राक्षस द्वारा धृत स्वर्णमृगका रूप। **-युद्ध**-पु० मायाबलसे किया जानेवाला युद्ध। **-वाद**-पु० संसारको मिथ्या माननेका सिद्धांत। **-वादी(दिन्)**-पु० मायावादको माननेवाला।

मायामय-वि० [सं०] मायायुक्त।

मायावती-स्त्री० [सं०] कामदेवकी स्त्री रति।

मायावान्(वत्)-वि० [सं०]दे० 'मायावी'। पु० कंस।

मायावी(विन्)-वि० [सं०] माया करने, जाननेवाला, जादूगर; छलनेवाला, फरेबी।

मायिक-वि० [सं०] मायावाला; मायाकृत, बनावटी। पु० जादूगर, माजूफल।

मायी(यिन्)-वि० [सं०] मायावाला; मायाविशिष्ट। पु० जादूगर; छलिया; परमेश्वर; कामदेव; अग्नि; शिव।

मायूर-वि० [सं०] मयूर-संबंधी; मयूरपंखका बना।

मायूस-वि० [अ०] निराश, भग्नहृदय।

मायूसी-स्त्री० [अ०] नैराश्य, नाउम्मेदी।

मार-पु० [सं०] मारण, वध; मृत्यु; कामदेव; विघ्न; प्रेम, राग; ललचाने, बहकानेवाली शक्ति (बौद्ध); धतूरा। **-जित्**-पु० शिव; बुद्ध।

मार-स्त्री० * दे० 'माला'; मारनेकी क्रिया, चोट; मार-पीट, लड़ाई; निशाना (तोपकी मार); कष्ट, क्लेश (गरीबीकी मार)। **-काट**-स्त्री० हरबे-हथियारकी लड़ाई, युद्ध; खूँरेजी। **-धाड़,-पीट**-स्त्री० लड़ाई, एक दूसरेको मारना।

मारक-वि० [सं०] मारनेवाला, जान लेनेवाला; नाशक; दमन या शमन करनेवाला। **-स्थान**-पु० कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ और दूसरा स्थान।

मारका-पु० [अं०'मार्क'] चिह्न, निशान; [अ०] युद्धस्थल; युद्ध; लड़ाई-झगड़ा; हंगामा। **-(के)का**-भारी, महत्त्वपूर्ण (मारकेकी बात)। **मु०-सर करना**-युद्धमें जयलाभ करना।

मारकीन-पु० एक मोटा· कोरा कपड़ा।

मारकेश-पु० [सं०] मृत्युकी संभावना उपस्थित करनेवाला ग्रहयोग।

मारग*-पु० दे० 'मार्ग'।

मारगन*-पु० दे० 'मार्गण', (बाण)-'राम मारगन-गन चले लहलहात जनु ब्याल'-रामा०।

मारजन-पु० दे० 'मार्जन'।

मारण-पु० [सं०] मारना, जान लेना; शत्रुताके लिए किया जानेवाला तांत्रिक अभिचार; भस्म करना।

मारतौल-पु० एक तरहका बड़ा हथौड़ा।

मारना-स० क्रि० पीटना, प्रहार करना; चोट पहुँचाना, किसी चीजसे आघात करना; ठोंकना (मेख); पटकना (सिर); पछाड़ना; जान लेना, हत्या करना; काटना, उड़ाना (गरदन); जीतना (मैदान, कुश्ती); नाश करना, बरबाद करना; पकड़ना (मछलियाँ); शिकार करना; दबाना (गुस्सा, पित्ता); सहना (भूख, प्यास); प्रभाव-रहित कर देना (जहरको मारना); भस्म, कुश्ता करना (धातु); लगाना (गोता, चक्कर)।

मारफत-स्त्री० [अ०] जरीया, वसीला; ज्ञान; अध्यात्म-ज्ञान; अध्यात्म-विषयक रचना।

मारवाड़ी-वि० मारवाड़ देशका। स्त्री० मारवाड़की भाषा।

मारा-वि० मारा हुआ; ग्रस्त, पीड़ित। * स्त्री० माला -'टूट आँसु जनु नखतन्ह मारा'-प०। **मु०-मारा फिरना**-दुर्दशाग्रस्त होकर जहाँ-तहाँ भटकना; दर-दरकी ठोकरें खाना।

मारात्मक-वि० [सं०] घातक, संहारकारी।

मारामार-स्त्री० इफरात, बहुतायत; हलचल, भगदड़; दौड़-धूप; मारपीट। अ० बहुत जल्दी।

मारि-स्त्री० [सं०] महामारी, मरी; मारण, वध।

मारिष-पु० [सं०] नाटकका सूत्रधार; नाटकादिमें किसी सम्मानित व्यक्तिके संबोधनका शब्द; मरसा नामका साग।

मारी-स्त्री० [सं०] मरी, महामारी; चंडी।

मारीच-पु० [सं०] एक राक्षस जिसने सीता-हरणके समय सोनेका मृग बनकर रामको ललचाया था; बड़ा हाथी।

मारुत-पु० [सं०] वायु; वायुके अधिष्ठाता देवता; श्वास। **-तनय,-सुत**-पु० हनूमान्।

मारुतात्मज-पु० [सं०] हनूमान्।

मारुति-पु० [सं०] हनूमान्; भीम।

मारू-पु० युद्धमें गाया-बजाया जानेवाला एक राग; डंका; मरुदेशवासी। वि० काट करनेवाला (मारू नयन); युद्धोत्साह, रणरंग जगानेवाला (मारू बाजा)।

मारे-अ०…के कारण, वजहसे।

मार्ग-पु०[सं०] रास्ता, पथ; भ्रमणपथ (ग्रहका)। **-तोरण**-पु० (अभिनंदन आदिके लिए) रास्तेमें बनाया हुआ तोरण या फाटक। **-दर्शक**-पु० रास्ता दिखानेवाला, रहनुमा। **-रक्षक**-पु० (एस्कर्ट) वह (सशस्त्र) व्यक्ति या व्यक्ति-समूह जो किसी अन्य व्यक्तिकी रक्षाके लिए मार्गमें उसके साथ-साथ चले; किसी जहाज या जहाजी बेड़ेकी रक्षाके लिए साथ-साथ चलनेवाला हवाई जहाज, विध्वंसक पोत आदि। **-शोधक**-पु० रास्ता साफ करनेवाला, अग्रणी।

मार्गण-पु० [सं०] अन्वेषण, खोज; जाँच; याचना; बाण।

मार्गणा-स्त्री० [सं०] अन्वेषण; याचना।

मार्गन*-पु० दे० 'मार्गण', (बाण, तीर)।

मार्गशिर, मार्गशीर्ष-पु० [सं०] अगहनका महीना।

मार्गित-वि० [सं०] अन्वेषित।

मार्गी(र्गिन्)-पु०[सं०] आगे बढ़कर रास्ता बतानेवाला; पथप्रदर्शक; रास्तेपर चलनेवाला (समासमें)।

मार्च-पु० [अं०] ईसवी सन्‌का तीसरा महीना; सैनिकोंका नपी-तुली चालसे चलना; सेनाका प्रस्थान, कूच।

मार्जन–पु० [सं०] धो-माँजकर साफ करना; शोधन; शरीरकी अंतर्बाह्य शुद्धिके लिए मंत्र पढ़ते हुए कुशादिसे जल छिड़कना; दोषक्षालन।

मार्जनी–स्त्री० [सं०] झाड़ू। (गात्रमार्जनी=तौलिया)।

मार्जनीय–वि० [सं०] मार्जन करने योग्य।

मार्जार–पु० [सं०] बिलाव। **–कंठ**–पु० मोर।

मार्जारी–स्त्री० [सं०] मादा बिल्ली; गंधनाकुली; कस्तूरी।

मार्जित–वि० [सं०] शोधित।

मार्तंड–पु० [सं०] सूर्य; शूकर; आक।

मार्त्तिक–वि०[सं०] मिट्टीसे बना हुआ, मृत्तिकासे निर्मित। पु० सकोरा; पुरवा।

मार्त्य–वि० [सं०] मर्त्य, मरणशील। पु० मरणशीलता।

मार्दव–पु० [सं०] मृदुता; चित्तकी कोमलता; नरमी; परायेका दुःख देखकर दुःखी होना।

मार्फ़त–स्त्री० [अ०] दे० 'मारफत'।

मार्मिक–वि० [सं०] मर्मज्ञ, खूबी-बारीकी समझनेवाला; मर्मस्पर्शी।

माल–स्त्री० चरखेके चक्रपर लपेटा जानेवाला सूत या डोरी जो तकुएको घुमाती है; दे०'माला'। पु०*दे०'मल्ल'। [अ०]असबाब, सामान; बहुमूल्य वस्तु; धन-दौलत; वस्तु, सामग्री; वाणिज्य-सामग्री; मालगुजारी, राजस्व; स्वादिष्ठ और तर भोज्य पदार्थ; रेल आदिसे भेजा जानेवाला सामान; वह चीज जिसपर चिट्ठी डाली जाय; उपादानभूत वस्तु; वर्गका घात; सड़कके आसपासकी कच्ची भूमि ('अणिमा'में); हकीकत, हस्ती (कुछ माल न समझना)। **–अदालत**–स्त्री० लगान, मालगुजारी आदिके मुकदमे सुननेवाली अदालत। **–खंभ**–पु० वह खंभा जिसपर तरह-तरहकी कसरत की जाती है। **–ख़ाना**–पु० माल-असबाब रखनेका स्थान, गोदाम। **–गाड़ी**–स्त्री० माल ढोनेके काम आनेवाली ट्रेन। **–गुज़ार**–पु० मालगुजारी अदा करनेवाला, जमींदार (मध्यप्रदेश)। **–गुज़ारी**–स्त्री० भूमिकर, जमीनका महसूल जो जमींदार सरकारको अदा करता है। **–गोदाम**–पु० बड़े व्यापारीका मालखाना, व्यापारकी वस्तुएँ रखनेका स्थान; रेल, जहाज आदिसे आने-जानेवाला माल रखनेका स्थान। **–टाल**–पु० रुपया-पैसा, माल-मत्ता। **–दार**–वि० धनी। **–मंत्री**–पु० (रेवेन्यू मिनिस्टर) दे० 'राजस्वमंत्री'। **–मता़**–पु० धन-दौलत, असबाब। **–मस्ती**–स्त्री० धनमद। **–महकमा**–पु० राजस्वका प्रबंध करनेवाला सरकारी विभाग। **मु०–उड़ाना**–तर माल खाना; रुपये खर्च करना या गायब करना। **–काटना**–दूसरेका पैसा हथियाना; नाजायज तौरसे रुपया पैदा करना; चलती ट्रेन आदिसे माल चुराना। **–मारना**–दूसरेका धन हथियाना, रिशवत, खयानत आदिसे पैसा पैदा करना। **–न समझना**–हकीकत न समझना, कुछ न गिनना।

मालकँगनी–स्त्री० एक लता जिसके दानोंका तेल दवाके काम आता है।

मालकोश–पु० [सं०] संपूर्ण जातिका एक राग।

मालति*–स्त्री० दे० 'मालती'।

मालती–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध लता जिसके फूलोंमें बड़ी मीठी सुगंध होती है; चाँदनी; युवती।

मालपूआ–पु० एक पकवान जो आटेको चीनीके रसमें घोलकर और मेवे डालकर घीमें पूरीकी तरह छान लेनेसे तैयार होता है।

मालय–वि० [सं०] मलय-संबंधी; मलयगिरिपर उत्पन्न। पु० चंदन।

मालव–पु०[सं०] मालवा; मालवाका निवासी; एक राग।

मालवीय–वि० [सं०] मालव-संबंधी; मालवाका। पु० मालवाका रहनेवाला; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

माला–स्त्री० [सं०] पंक्ति, श्रेणी; हार, माल्य; लड़ी; समूह। **–कर, –कार**–पु० माली, माला बनानेवाला। **–दीपक**–पु० दीपक अलंकारका एक भेद जहाँ पूर्व-पूर्व कथित वस्तु उत्तर-उत्तर कथित वस्तुके उत्कर्षका कारण हो (यह दीपक और एकावलीके मेलसे बनता है)। **मु०–फेरना**–जप करना, भगवद्भजन करना।

मालामाल–वि० [अ०] धन-धान्यसे भरा हुआ, समृद्ध; भरपूर।

मालिक–पु० [अ०] स्वामी, अधिपति; ईश्वर; पति।

मालिका–स्त्री० [सं०] पंक्ति; माला, हार; चंद्रमल्लिका।

मालिकाना–पु० [अ०] जमींदारीका हक जो काश्तकार जमींदारको देता है; स्वामित्व। वि० मालिक जैसा।

मालिकी–स्त्री० स्वामित्व; मालिकाना हक; मिलकियत।

मालित–वि० [सं०] जिसे माला पहनायी गयी हो; जो घेर लिया गया हो।

मालिन–स्त्री० मालीकी स्त्री; मालीका काम करनेवाली स्त्री।

मालिनी–स्त्री० [सं०] मालिन; चंपा नगरी; दुर्गा; मंदाकिनी; विभीषणकी माता; विराट्के महलमें गुप्त वास करते समय द्रौपदीका नाम; एक नदी जिसके तटपर शकुंतलाका जन्म हुआ; एक छंद।

मालिन्य–पु० [सं०] मलिनता; अपवित्रता; अंधकार।

मालियत–स्त्री० मूल्य; धन, दौलत।

मालिया–पु० [अ०] मालगुजारी; मालियत।

मालिश–स्त्री० [अ०] मलनेका भाव या काम, मर्दन।

माली–वि० [अ०] मालका, आर्थिक।

माली(लिन्)–वि० [सं०] जो माला पहने हो; युक्त, मंडित (अंशुमाली)। पु० माला बनाने, फूल बेचनेवाला; बागवान।

मालीख़ूलिया–पु० [यू०] विषाद रोग, चित्तका स्वभावतः उदास, सशंक रहना।

मालूम–वि० [अ०] जाना हुआ, ज्ञात; प्रकट; प्रसिद्ध।

मालोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद (इसमें एक उपमेयके अनेक उपमान कहे जाते हैं)।

माल्य–पु० [सं०] माला, हार; पुष्प। **–जीवक**–पु० माली।

माल्यवान्(वत्)–वि० [सं०] जो माला धारण किये हो। पु० पुराणोंमें वर्णित एक पर्वत; एक राक्षस।

मावत*–पु० दे० 'महावत'।

मावस*–स्त्री० दे० 'अमावस'।

मावा–पु० सत्त; माँड़; खोया; चंदनका इत्र; तंबाकूमें डाला जानेवाला सुगंधित खमीर, मसाला। † स्त्री० मा।

माश–पु० [फा०] उरद। **मु०–मारना**–उरदके दानोंपर मंत्र पढ़कर किसीपर फेंकना, जादू करना।

माशा–पु० आठ रत्तीका वजन, तोलेका बारहवाँ भाग। **मु०–तोला होना**–चित्तका स्थिर न होना, छन-छनमें बदलना।

माशाअल्लाह–अ० जो अल्लाह चाहे; क्या कहना है।

माशूक़–वि० [अ०] जिसपर कोई आशिक हो, प्रेमपात्र, प्यारा; सुंदर, मोहक।–**(क़े)हक़ीक़ी**–पु०ईश्वर, खुदा।

माशूक़ा–स्त्री० [अ०] प्रेयसी, प्रेमिका।

माशूक़ाना–वि० [अ०] माशूक़ों जैसा। **–अंदाज़,–अदा**–स्त्री० मन लुभानेवाली अदा, हाव-भाव।

माशूक़ी–स्त्री० [अ०] माशूक़पन; मोहक रूप, हाव-भाव।

माष–* पु० क्रोध, गर्व–तुम्हरे लाज, न रोष, न माषा' –रामा०; [सं०] उरद; माशा; मस्सा; महामूर्ख। **–पर्णी**–स्त्री० जंगली उरद। **–योनि**–पु० पापड़।

माषना*–अ० क्रि०ःदे० 'माखना'।

मास–पु० [सं०] वर्षका बारहवाँ भाग, महीना; १२ की संख्या।**–कालिक**–वि० महीने भर रहनेवाला।**–जात**–वि० एक महीनेका (शिशु)। **–देय**–वि० जिसे महीने भरमें चुकाना हो। **–प्रवेश**–पु० महीनेका आरंभ। **–फल**–पु० मास-विशेषका शुभाशुभ फल। **–मान**–पु० वर्ष। **–स्तोम**–पु० एक यज्ञ।

मासना*–अ० क्रि० मिलना। स० क्रि० मिलाना।

मासांत–पु० [सं०] महीनेका अंत; अमावस्या; संक्रांति।

मासावधिक–वि०[सं०] एक महीने बना रहने या महीने भरमें होनेवाला।

मासिक–वि० [सं०] मास-संबंधी; प्रति मास होनेवाला; माहवार, महीनेमें एक बार निकलनेवाला (पत्र, पुस्तक)। पु० प्रतिमास निकलनेवाला पत्र, माहनामा; मासिक श्राद्ध। **–धर्म**–पु० ऋतु, रजोधर्म।

मासी–स्त्री० मौसी, माँकी बहन।

मासूम–वि० [अ०] निष्पाप; निर्दोष; कलुष-रहित।

मास्टर–पु० [अं०] मालिक; गृहस्वामी; शिक्षक; व्यापारी जहाजका कप्तान; विषयविशेषमें निष्णात, उस्ताद। **–की**–स्त्री० वह कुंजी जिससे अलग-अलग कुंजियोंसे खुलनेवाले बहुतसे ताले खुल जायँ।

मास्टरी–स्त्री० मास्टरका भाव या काम, अध्यापक-वृत्ति।

मास्य–वि०[सं०] महीने भरका; महीने भर बना रहनेवाला।

माहँ*–अ० मध्य, बीच, में।

माह–*पु० दे० 'माघ'; [फा०] चाँद; महीना, मास। **–ताब**–पु० चाँदनी; चाँद। **–ताबी**–स्त्री० एक आतिशबाजी; छत या चबूतरा जिसपर बैठकर चाँदनीका आनंद ले सकें; चकोतरा। **–नामा**–पु० मासिक पत्र।**–बमाह**–अ० हर महीने, माहवार। **–वार**–अ० हर महीने, प्रति मास। वि० मासिक। **–वारा**–पु० मासिक वेतन, तनखाह। **–वारी**–अ० दे० 'माहवार'। स्त्री० मासिक वेतन, भृति; मासिकधर्म, रजोदर्शन।

माहत*–स्त्री० महत्ता, महिमा।

माहना*–अ० क्रि० उमड़ना, उमंगमें आना।

माहली–पु० महलका, अंतःपुरका सेवक; सेवक(कविता०)।

माहाँ*–अ० दे० 'महँ'; 'माहँ'।

माहा*–पु० कपड़ा, पट (कबीर)।

माहात्म्य–पु० [सं०] महात्मता, महिमा; गौरव; किसी व्रत, स्नान, पूजनका पुण्यजनक फल।

माहिँ*–अ० मध्य, भीतर।

माहिर–वि०[अ०] कुशल,निपुण; अच्छा जानकार; चतुर।

माहिला*–पु० माँझी।

माहिष–वि० [सं०] भैंसका (दूध, दही)।

माहिष्मती–स्त्री० [सं०] हैहय क्षत्रियोंकी राजधानी जो नर्मदाके तटपर बसी थी–(आधुनिक मंडला ?)

माही–स्त्री० [फा०] मछली। **–मरातिब**–पु० राजाओं, बादशाहोंकी सवारीके आगे चलनेवाले मछली, ग्रहों आदिकी आकृतियोंवाले, सात झंडे।

माहुर†–पु० जहर।

माहेंद्र–वि० [सं०] इंद्र-संबंधी; इंद्रकी पूजा करनेवाला। पु० यात्राके लिए शुभ माना जानेवाला एक योग।

मिँडाई–स्त्री० मींडनेकी क्रिया; मींडनेकी मजदूरी।

मित*–पु० मित्र, दोस्त।

मिआद–स्त्री० दे० 'मीआद'।

मिआन*–पु० पालकी। वि० छोटे डीलडौलका, दे० 'मियाना'।

मिकदार–स्त्री० [अ०] परिमाण; माप-तौल; मात्रा।

मिचकाना†–स० क्रि० (पलकें) झपकाना।

मिचना–अ० क्रि० (आँखोंका) बंद होना।

मिचराना–अ० क्रि० अरुचिसे थोड़ा-थोड़ा खाना।

मिचलाना–अ० क्रि० मतली आना।

मिचौनी, मिचौली–स्त्री० मीचने, मूँदनेकी क्रिया (केवल 'आँखमिचौली'में प्रयुक्त)।

मिछा*–वि० दे० 'मिथ्या'।

मिज़राब–स्त्री० [अ०] तारका बना छल्ला जिसकी नोकसे आघात कर सितार, तानपूरा आदि बजाते हैं।

मिज़ाज–पु० [अ०] मिलावट; पंचमहाभूतों(यूनानी और अरब दार्शनिकोंने चार ही तत्त्व माने हैं)के मिश्रणसे उत्पन्न होनेवाली अवस्था; तबीयत; प्रकृति; स्वभाव; आदत; गर्व, घमंड। **–पुरसी**–स्त्री० मिजाज पूछना, तबीयतका हाल पूछना (करना)। **–मुबारक**–दे० 'मिजाजशरीफ'। **–वाला**–वि० घमंडी, मिजाजदार। **–शरीफ**–मिजाज कैसा है ? तबीयत ठीक है तो ? **मु०–न मिलना**–घमंडके मारे किसीसे बात न करना, इतराना। **–पहचानना**–किसीके रुचि-स्वभावको समझना। **–पाना**–मिजाज, स्वभाव पहचान लेना।**–पूछना**–तबीयतका हाल पूछना, कुशल-प्रश्न करना। **–में आना**–दिलमें आना। **–सातवें आसमानपर होना**–घमंड बहुत बढ़ जाना, गर्वसे पाँव सीधे न पड़ना। **–होना**–घमंड होना।

मिज़ाजी–वि० [अ०] घमंडी, मिजाजवाला।

मिटना–अ० क्रि० चिह्न, दाग आदिका दूर होना, लुप्त होना; नष्ट होना; बरबाद होना।

मिटाना–स० क्रि० दाग, निशान आदि दूर करना; नष्ट, लुप्त करना; बरबाद करना; रद्द करना।

मिटिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा पात्र। वि० मिट्टीके रंगका;

मिट्टीका। **–महल**–पु० मड़ई, झोपड़ी (व्यं०)। **–साँप**–पु० मिट्टीके रंगका साँप।

मिटियाना–स० क्रि० मिट्टी लगाकर या मिट्टी रगड़कर साफ करना।

मिट्टी–स्त्री० धरतीकी ऊपरी सतह जो टूटी हुई चट्टानोंके चूरकी बनी होती है और जिसपर पेड़-पौधे उगते हैं; जमीन; धूल, खाक; भस्म, कुश्ता; शरीरकी बनावट; शरीर; प्रकृति; खमीर; लाश। **–का तेल**–एक प्रसिद्ध खनिज द्रव जो लैंपों आदिमें तेलकी तरह जलाया जाता है। मु० **–उठना**–लाश, जनाजा उठना। **–करना**–खराब, बरबाद करना। **–का पुतला**–मनुष्य (ला०)। **–की मूरत**–मानवशरीर। **–के माधव**–मूर्ख, भोंदू। **–के मोल**–बहुत सस्ते दामों (बिकना)। **–खराब (ख़्वार) होना**–अंत्येष्टि क्रिया-कर्म ठिकानेसे न होना। **–ठिकाने लगना**–अंत्येष्टि समुचित प्रकारसे होना। **–ठिकाने लगाना**–समुचित प्रकारसे (किसीकी) अंत्येष्टि करना। **–डालना**–ऐबपर परदा डालना। **–देना**–लाशको दफन करना; लाशको कब्रमें सुलानेके बाद उपस्थित जनोंका उसपर थोड़ी-थोड़ीसी मिट्टी डालना (मुसल०)। **–पलीद होना**–दुर्दशा होना; जलील होना; क्रिया-कर्म ठिकानेसे न होना। **–में मिलना**–नष्ट, बरबाद हो जाना।

मिट्टी–स्त्री० चुंबन।

मिट्ठू–वि० मधुरभाषी; चुप्पा। पु० तोता।

मिठ–वि० मीठाका समासगत लघु रूप। **–बोला**–वि० मधुरभाषी। **–लोना**–वि० जिसमें नमक कम पड़ा हो।

मिठाई–स्त्री० मिठास; मिष्टान्न, शीरीनी (लड्डू, पेड़ा, इमरती आदि)। मु० **–चढ़ाना**–मन्नत पूरी होनेपर किसी देवी-देवताको मिठाई अर्पित करना। **–बाँटना**–किसी सफलता या अभीष्ट-सिद्धिकी खुशीमें मिठाई बाँटना।

मिठाना*–अ० क्रि० मीठा होना।

मिठास–स्त्री०, पु० मीठापन, माधुर्य।

मिठौरी–स्त्री० उरद या चनेकी बरी।

मिडिल–वि० [अं०] बीचका, मध्यवर्ती। **–ची**–वि० मिडिल पास (तिरस्कार-सूचक)। **–क्लास**–पु० आठवीं कक्षा; मध्यम श्रेणी।

मिढुलिया†–स्त्री० मढ़िया, कुटी (ग्राम०)।

मितंग*–पु० हाथी।

मित–* स्त्री० मिति, सीमा–'ममकृत दोस लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ'–सू०। वि० [सं०] नपा-तुला, परिमित; थोड़ा; क्षिप्त। **–भाषी (षिन्)**–वि० कम बोलनेवाला; नपे-तुले शब्दोंमें अपनी बात कहनेवाला। **–भुक्,–भोजी (जिन्)**–वि० थोड़ा खानेवाला, मिताहार। **–मति**–वि० अल्पबुद्धि। **–व्ययिता**–स्त्री० किफायत-शिआरी। **–व्ययी (यिन्)**–वि० कम खर्च करनेवाला, किफायत-शिआर।

मिताई†–स्त्री० मित्रता, दोस्ती।

मिताक्षरा–स्त्री० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृतिकी विज्ञानेश्वरकृत टीका।

मितार्थ–वि० [सं०] परिमित अर्थवाला। पु० चतुराईके साथ थोड़ी बातें कहकर ही काम साधनेवाला दूत।

मिताहार–वि० [सं०] थोड़ा खानेवाला; नपी-तुली खुराक खानेवाला। पु० परिमित आहार।

मिति–स्त्री० [सं०] मान; सीमा; विज्ञान; समयकी सीमा।

मिती–स्त्री० तिथि, तारीख; हुंडी आदि चुकानेकी तिथि; दिन। **–काटा**–पु० गणितकी रीति जिससे हुंडीकी मुद्दत और ब्याज जोड़ते हैं। मु० **–काटना**–सूद काटना। **–पूजना**–हुंडीकी अवधि पूरी होना।

मितोपभोग योजना–स्त्री० [सं०] (आस्टेरिटी स्कीम) दे० 'अल्पभोग योजना'।

मित्त*–पु० दे० 'मित्र'।

मित्र–पु० [सं०] दोस्त, बंधु, सखा, साथी; युद्धादिमें साथ देनेवाला राष्ट्र; सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे पहला। **–कर्म (न्)**–पु० मित्रोचित कार्य। **–घ्न**–वि० विश्वासघाती, दोस्तको दगा देनेवाला। **–द्रोह**–पु० मित्रका अहित, अनिष्ट करना। **–द्रोही (हिन्)**–वि० मित्रका द्रोह करनेवाला। **–पंचक**–पु० घी, शहद, घुँघची, सुहागा और गुग्गुल–इन पाँचोंका योग। **–भाव**–पु० मित्रता, दोस्ती। **–भेद**–पु० दोस्तीका टूट जाना। **–राष्ट्र**–पु०, **–शक्ति**–स्त्री० (एलाइड पॉवर) मित्रतापूर्ण संबंध रखनेवाला देश या राज्य। **–लाभ**–पु० मित्रकी प्राप्ति, किसीसे दोस्ती होना।

मित्रता–स्त्री०, **मित्रत्व**–पु० [सं०] दोस्ती।

मित्राई*–स्त्री० मित्रता।

मित्रावरुण–पु० [सं०] मित्र और वरुण।

मिथः (स्)–अ० [सं०] परस्पर, अन्योन्य।

मिथिला–स्त्री० [सं०] विदेहकी राजधानी। **–पति**–पु० जनक।

मिथुन–पु० [सं०] नर-मादा, स्त्री-पुरुषका जोड़ा; संयोग; मैथुन; बारह राशियोंमेंसे तीसरी।

मिथुनीकरण–पु० [सं०] नर-मादाको इकट्ठा करना, जोड़ा मिलाना।

मिथुनीभाव–पु० [सं०] मैथुन, जोड़ा खाना।

मिथ्या–वि० [सं०] झूठ, असत्य; व्यर्थ। **–चर्या**–स्त्री० कपटाचरण, मक्कारी। **–जल्पित**–पु० असत्य भाषण, झूठी चर्चा। **–ज्ञान**–पु० भ्रम। **–नाम**–पु० (मिसनोमर) ऐसा नाम या ऐसा शब्द जो किसी व्यक्ति, कार्य, वस्तु आदिके लिए उपयुक्त न हो। **–पुरुष**–पु० दे० 'छायापुरुष'। **–प्रतिज्ञ**–वि० प्रतिज्ञाका पालन न करनेवाला। **–वचन,–वाद**–पु० झूठी बात, असत्य कथन। **–वादी (दिन्)**–वि० झूठा, मिथ्याभाषी।

मिथ्याचार–पु० [सं०] कपटाचरण, मक्कारी।

मिथ्यात्व–पु० [सं०] मिथ्यापन, झुठाई।

मिथ्याध्यवसिति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ कोई झूठी कही हुई बात साबित करनेके लिए दूसरी झूठी बात कही जाय।

मिथ्यापवाद–पु० [सं०] झूठी तुहमत, आरोप।

मिथ्याभियोग–पु० [सं०] झूठा अभियोग, झूठा इलजाम लगाना।

मिथ्यारोपण–पु० [सं०] (विलिफिकेशन) आधारहीन या झूठे आरोप लगाकर बदनाम करना।

मिथ्याहार–पु० [सं०] अयुक्त, प्रकृतिविरुद्ध आहार।

मिथ्योपचार–पु० [सं०] गलत इलाज।

मिनकना–अ० क्रि० डरते-डरते या धीरेसे कुछ बोलना।

मिनकी†–स्त्री० बिल्ली–'…मूसा इत उत फिरै, ताकि रही मिनकी'–सुंद०।

मिनट–पु० [अं०] घंटेका साठवाँ भाग, ६० सेकंड।

मिनमिनाना–अ० क्रि० 'मिन-मिन' करना।

मिनहा–पु० [अ०] घटाव, मुजरा, कटौती (करना,होना)। वि० जो काट लिया गया हो, जो घटा लिया गया हो।

मिनहाई–स्त्री० [अ०] मिनहा होना, कटौती।

मिन्नत–स्त्री० [अ०] विनती, आजिजी; चापलूसी; उपकार; कृतज्ञता। **–गुजार**–वि० कृतज्ञ।

मिमियाना–अ० क्रि० 'मैं-मैं' करना, बकरी या भेड़का बोलना।

मियाँ–पु० [फ़ा०] सरदार; मालिक; पति; शिक्षक,उस्ताद; अमीरजादा, मालिकका बेटा; मुसलमान; सम्मानित जनका संबोधन। **–बीवी,–बीबी**–पु० पति-पत्नी। **–मिट्ठू**–वि० मधुरभाषी; भोला, बुद्धू। पु० बच्चा; तोता। **मु०–की जूती, मियाँका सर**–जिसकी चीज हो, उसीके विरुद्ध उसका प्रयोग करना। **(अपने मुँह)–मिट्ठू बनना**–(अपने मुँह) अपनी तारीफ करना। **–मिट्ठू बनाना**–तोतेकी तरह रटाना, बिना समझाये पढ़ाना।

मियान–पु० [फ़ा०] मध्य भाग। स्त्री० तलवार आदिका खोल या गिलाफ।

मियाना–वि० [फ़ा०] बीचका, मझोला। पु० एक तरहकी पालकी; गाड़ीका बम।

मियानी–स्त्री० [फ़ा०] पाजामेमें दोनों पायँचोंके बीचका कपड़ा, रूमाल।

मिरग*–पु० दे०'मृग'।**–चिड़ा**–पु० एक छोटी चिड़िया। **–छाला**–पु० दे० 'मृगछाला'।

मिरगी–स्त्री० एक मानस रोग, अपस्मार।

मिरचा–पु० लाल मिर्च।

मिरजई–स्त्री० [फ़ा०] कमरतकका बंददार अँगरखा।

मिरज़ा–पु० [फ़ा०] अमीरजादा, शहजादा; मुगलोंकी उपाधि।

मिरजान–पु० [फ़ा०] मूँगा।

मिरदंग–पु० दे० 'मृदंग'।

मिरवना*–स० क्रि० मिलाना।

मिरिच–स्त्री० दे० 'मिर्च'।

मिरियासि*–स्त्री० बपौती, पैतृक संपत्ति–'यह तो संबुक मलिन सर करटनकी मिरियासि'–दीनद०।

मिर्गी–स्त्री० दे० 'मिरगी'।

मिर्च–स्त्री० काले रंगका गोल, कटुतीक्ष्ण स्वादवाला दाना जो मसालोंके रूपमें व्यवहृत होता है; लाल मिर्च,मिरचा। **मु०–(चें)लगना**–बहुत बुरा लगना, असह्य होना।

मिल–स्त्री० [अं०] आटा आदि पीसनेकी कल या कारखाना; कपड़ा बुनने, लकड़ी चीरने आदिकी कल।

मिलक*–स्त्री० दे० 'मिल्क'।

मिलकना*–अ० क्रि० जलना–'तब फिर जरनि भई नख सिखतें, दिया बाति जनु मिलकी'–सू०।

मिलकी*–पु० दे० 'मिल्की'।

मिलता-जुलता–वि० लगभग समान, एक-सा।

मिलन–पु० [सं०] मिलना, भेंट; इकट्ठा होना; मिश्रण।

मिलनसार–वि० जो सबसे प्रेमके साथ मिलता, मेल-जोल रखता हो, सुशील।

मिलनसारी–स्त्री० मिलनसार स्वभाव, सुशीलता।

मिलना–अ० क्रि० संयोग होना, जुड़ना, सटना; एक होना; मिश्रित होना; भेंट होना; भेंटना, गले मिलना; भिड़ना, छूना; समान होना, एकसा होना; पाना (पता, नफा); लाभ होना; सुरोंका मेल होना; पक्षमें हो जाना, अनुकूल हो जाना; * दूध दुहना। **मिल-जुलकर**–अ० इकट्ठे होकर, मेलके साथ। **–(ना)जुलना**–पु० भेंट-मुलाकात, राहोरस्म। **मु० मिल-बाँटकर खाना**–सबको बाँटकर, नफे आदिमें दूसरोंको शामिल करके खाना या उपभोग करना।

मिलनी–स्त्री० ब्याहकी एक रस्म, कन्यापक्षवालोंका वरपक्षवालोंसे गले मिलना और उन्हें रुपये देना।

मिलवना*–स० क्रि० दे० 'मिलाना'।

मिलवाई–स्त्री० मिलवानेकी क्रिया या भाव; मिलवानेके बदले दिया जानेवाला धन।

मिलवाना–स० क्रि० दूसरेको मिलने या मिलानेके लिए प्रेरित करना; मिलन कराना।

मिलाई–स्त्री० मिलानेकी क्रिया; मिलानेकी उजरत; भेंट, मिलन (कैदीके साथ); मिलनी।

मिला-जुला–वि० मिश्रित, गड्ड-मड्ड।

मिलान–पु० मिलानेकी क्रिया; मिलाकर जाँचना; तुलना; * पड़ाव–'ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई'–प०।**–केंद्र**–पु० (एक्सचेंज) नगर या जिलेका मुख्य दूरवाणी-कार्यालय जिससे वहाँके सभी दूरवाणी-यंत्र संबद्ध होते हैं और जहाँ स्थानीय लोगोंसे या अन्य नगरवालोंसे दूरभाष करनेके लिए परस्पर संबंध मिला देनेकी व्यवस्था की जाती है।

मिलाना–स०क्रि० एक चीजका दूसरी चीजमें योग करना, मिलावट करना; इकट्ठा करना, संयोग करना; सटाना, जोड़ना; भेंट कराना, एक व्यक्तिको दूसरेके पास पहुँचाना; स्त्री-पुरुषका संयोग कराना; मेल कराना; मिलाकर देखना, तुलना करना; मिलान करना; किसीको अपनी ओर करना; दूसरे पक्षसे फोड़ना; (बाजेके) स्वरोंका मेल करना।

मिलाप–पु० मेल; भेंट; प्रेम, दोस्ती।

मिलाव–पु० दे० 'मिलावट'।

मिलावट–स्त्री० मिलाया जाना, मिश्रण; बढ़िया चीजमें घटिया चीजका मेल।

मिलिंद–पु० [सं०] भौंरा।

मिलिक–स्त्री० दे० 'मिल्क'।

मिलित–वि० [सं०] युक्त, लगा हुआ, मिला हुआ।

मिलौनी–स्त्री० मिलावट, मेल; मिलनीकी रस्म।

मिल्क–स्त्री० [अ०] अधिकारयुक्त वस्तु, माल, जायदाद।

मिल्कियत–स्त्री० दे० 'मिल्कीयत'।

मिल्की–पु० [अ०] मिल्कवाला, जमींदार, जागीरदार।

मिल्कीयत–स्त्री० [अ०] वह चीज जिसपर मालिकाना हक हो, जायदाद, जमींदारी।

मिल्लत–स्त्री० मेल-जोल, मिलनसारी; [अ०] मजहब, दीन, संप्रदाय; जाति, फिर्का।

मिशन–पु० [अं०] विदेश भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल; भिन्नधर्मियोंको ईसाई बनानेके लिए भेजे हुए धर्मोपदेशकोंका मंडल। **–री**–पु० (ईसाई) धर्मोपदेशक, पादरी।

मिश्र–पु० दे०‘मिस्र’। वि० [सं०] जिसमें कोई चीज मिली हो या मिलायी गयी हो, कई चीजोंके संयोगसे बना हुआ; संयुक्त। पु० श्रेष्ठ, सम्मानित जन; ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि; हाथियोंकी एक जाति। **–गुणा**–पु० [हिं०] आने-पाई, मन-सेर आदिका गुणा। **–धातु**–स्त्री० (एलॉय) दो या दोसे अधिक धातुओंके परस्पर मिला दिये जानेसे बनी धातु; बढ़िया धातुके साथ घटियाके मिला दिये जानेसे बनी धातु। **–धान्य**–पु० वह धान्य जिसमें कई अनाज मिले हों, बेझड़। **–भाग**–पु० आने-पाई, मन-सेर आदि का भाग। **–वर्ण**–वि० दोरंगा; बहुरंगा। **–शब्द**–पु० खच्चर।

मिश्रण–पु० [सं०] मिलावट, दो या अधिक चीजोंको एकमें मिलाना।

मिश्रित–वि० [सं०] मिला या मिलाया हुआ, मिलावटवाला।

मिश्री–स्त्री० दे० ‘मिस्री’।

मिष–पु० [सं०] छल; बहाना; स्पर्धा, होड़।

मिष्ट–वि० [सं०] मीठा, स्वादिष्ठ; सिक्त, तर। पु०मिठास, मिठाई। **–भाषी(षिन्)**–पु० मधुरभाषी।

मिष्टान्न–पु० [सं०] मिठाई, मीठा पकवान।

मिस–पु० बहाना; ढोंग। **–हा***–वि०, पु० बहानेबाज, छली।

मिस–पु० [फा०] ताँबा। **–गर**–पु० कसेरा।

मिसकीन–वि० [अ०] दे० ‘मिस्कीन’।

मिसकीनता*–स्त्री० मिस्कीनी, दीनता।

मिसना*–अ० क्रि० मिलाया जाना; मला जाना।

मिसरा–पु० [अ०] दरवाजेका एक पट, किवाड़; शेर या बैतका आधा भाग। **–तर**–पु० बढ़िया, चुस्त मिसरा।

मिसरी–वि० मिस्र देशका। पु० मिस्र देशमें बसनेवाला। स्त्री० मिस्र देशकी भाषा; साफ करके कूजे या थालमें जमायी हुई चीनी। **–का कूजा**–कूजेमें भरकर जमायी हुई मिसरी। **–की डली**–बहुत मीठी चीज।

मिसरोटी–स्त्री० कई तरहकी दालोंके पीसे हुए आटेकी बनी मोटी रोटी, बाटी।

मिसल–स्त्री० दे० ‘मिसिल’।

मिसहा*–वि०, पु० दे० ‘मिस’के साथ।

मिसाल–स्त्री० [अ०] नजीर, दृष्टांत, नमूना; चित्र, प्रतिकृति; फरमान; स्वप्नजगत् (सूफी०)।

मिसिल–स्त्री० [अ०] मुकदमेकी काररवाईके कागजात जो इकट्ठा करके नत्थी कर दिये गये हों; छपे हुए फार्म जो सिलसिलेसे लगाकर रखे गये हों; फौजका एक टुकड़ा।

मिसिली–वि० [अ०] जिसके बारेमें कोई मिसिल बन चुकी हो, सजायाफ्ता।

मिस्कीन–वि० [अ०] कंगाल, अकिंचन; भूखा, दीन।

मिस्कीनी–स्त्री० [अ०] मिस्कीनपन, कंगाली; दीनता।

मिस्कोट–पु० खाना, भोजन; एक मेज या दस्तरखानपर बैठकर खाना खानेवाले; गुप्त मंत्रणा (कर्मभू०)।

मिस्टर–पु० [अं०] नाम या पद-बोधक संज्ञाके साथ लगाया जानेवाला सम्मानसूचक शब्द, महाशय, जनाब।

मिस्तरी–पु० कुशल कारीगर; कल-पुरजेके काम जाननेवाला। **–खाना**–पु० लोहार, बढ़ई आदिके मिलकर काम करनेकी जगह।

मिस्मिरेज़्म–पु० दूसरेकी इच्छाशक्तिपर असर डालकर उसे अचेत कर लेनेकी विद्या, सम्मोहनविद्या।

मिस्र–पु० [अ०] उत्तर-पूर्वी अफ्रीकाका एक प्राचीन देश।

मिस्री–स्त्री० एक तरहकी जमाई हुई चीनी, मिसरी। (दे० मिसरी)। वि० [अ०] मिस्रका। पु० मिस्रनिवासी। स्त्री० मिस्रकी भाषा।

मिस्ल–वि० [अ०] सदृश, तुल्य, मानिंद।

मिस्सा–पु० मूँग, मोठ आदिका भूसा; कई तरहकी दालोंको एक साथ पीसकर बनाया हुआ आटा।

मिस्सी–स्त्री० एक मंजन जिसे स्त्रियाँ सिंगारके लिए लगाती हैं और जिसके लगानेसे दाँतोंपर स्याह रंग चढ़ जाता है। **–काजल**–पु० बनाव-सिंगार। **–की घड़ी**–मिस्सीकी तह जो स्त्रियाँ ओठोंपर जमाती हैं। **–दान**–पु०, **–दानी**–स्त्री० मिस्सी रखनेका पात्र। **–सुरमा**–पु० बनाव-सिंगार।

मिहचना*–स० क्रि० मीचना, बंद करना।

मिहानी*–स्त्री० मथानी।

मिहिचना, मिहीचना*–स० क्रि० दे० ‘मीचना’।

मिहिर–पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा; बादल।

मिहीँ*–वि० दे० ‘महीन’।

मीँगनी–स्त्री० दे० ‘मेँगनी’।

मीँगी–स्त्री० गिरी, मग्ज।

मीँजना–स० क्रि० मसलना, दबाना, हाथसे मलना या रगड़ना, मर्दन करना।

मीँडक*–पु० दे० ‘मेँढक’।

मीँडना*–स० क्रि० माँजना, मसलना, हाथसे मलना।

मीआद–स्त्री० [अ०] कार्यविशेषके लिए नियत काल, अवधि, मुद्दत; दंडकी अवधि। मु०**–गुज़रना**–अवधि बीत जाना। **–बोलना**–कैदकी सजा सुनाना (बो०)।

मीआदी–वि० [अ०] मीयादवाला, जिसका काल नियत हो (बुखार, हुंडी); सजायाफ्ता, जो दंड भुगत चुका हो। **–बुखार**–पु० सान्निपातिक ज्वर जो ७ वें, १४ वें, २१ वें या २८ वें दिन जाता है (टायफायड)।

मीच(चु)*–स्त्री० मृत्यु, मौत।

मीचना–स० क्रि० (आँख) मूँदना, बंद करना।

मीजना*–स० क्रि० मलना, मसलना।

मीज़ान–पु० [अ०] जोड़, जमा; तराजू। **–(ने)कुल**–पु० कुल रकमों या संख्याओंका जोड़ (ग्रैंड टोटल)। मु०**–मिलना**–जमा-खर्चका मीजान बराबर होना।

मीटर–पु० [अं०] खर्च हुए पानी, बिजली आदिके नापनेका यंत्र।

मीठा–वि० जिसमें मिठास हो, मधुर रसवाला; स्वादिष्ठ, मजेदार; प्रिय; हलका; तीव्रतारहित; मंदा, धीमा; मधुर-

भाषी; हिजड़ा, जनखा। पु० मिठास; गुड़; मीठी वस्तु, मिठाई। **–कद्दू**–पु० कुम्हड़ा। **–चावल**–पु० चीनी या गुड़ डालकर पकाया हुआ चावल, मीठा पुलाव। **–ठग**–वि० मीठी-मीठी बातें करके ठगनेवाला, बनावटी दोस्त। **–तंबाकू**–पु० वह तंबाकू जिसमें गुड़ कुछ अधिक डाला गया हो। **–तेल**–पु० तिलका तेल। **–नीम**–पु० एक छोटा पेड़ जिसके पत्ते और फल नीमके जैसे होते हैं। **–पानी**–पु० लेमोनेड। **–बरस**–पु० स्त्रीका अठारहवाँ बरस (स्त्रियाँ इसे मनहूस समझती हैं)। **–भात**–पु० दे० 'मीठा चावल'। **–मीठा**–वि० हलका-हलका, थोड़ा-थोड़ा (दर्द)।

मीठी–वि० स्त्री० मिठासयुक्त, प्रिय, मधुर। **–गाली**–स्त्री० वह गाली जो बुरी न लगे, ससुरालमें मिलनेवाली गाली। **–छुरी**–वि० दोस्त बनकर गला काटनेवाला, विश्वासघाती। **–तूँबी**–स्त्री० कद्दू। **–नजर**–स्त्री० प्रेमभरी दृष्टि। **–नींद**–स्त्री० सुखकी नींद, निश्चिंतताकी नींद। **–मार**–स्त्री० वह मार जिसकी चोट ऊपर न दिखाई दे; प्रेमकी मार। **–लकड़ी**–स्त्री० मुलेठी। **मु०–छुरी चलाना**–दोस्तीके परदेमें गला काटना।

मींड़–स्त्री० एक स्वरसे दूसरे स्वरपर जानेका सुंदर ढंग (संगीत)।

मीत†–पु० दे० 'मित्र'।

मीन–पु० [सं०] मछली; बारह राशियोंमेंसे अंतिम। **–केतन**–पु० कामदेव। **–गंधा**–स्त्री० मत्स्यगंधा, सत्यवती। **–ध्वज**–पु० कामदेव। **मु०–मेख निकालना**–दोष निकालना, छिद्रान्वेषण करना।

मीना–पु० [फा०] नीला रंग; रंगबिरंगा शीशा; शीशे और सोने-चाँदीपर बनाया जानेवाला रंगीन काम; शराबकी बोतल, सुराही; (ला०) शराब। **–कार**–पु० मीनेका काम करनेवाला। **–कारी**–स्त्री० मीनेका काम। **–बाज़ार**–पु० जौहरी बाजार; सुंदर चीजोंका बाजार; वह बाजार जिसमें स्त्रियाँ ही सब चीजें बेचती हों।

मीनार–स्त्री० [अ० 'मनार'] स्तंभरूपमें बनी हुई, अधिक ऊँची इमारत; घड़ी लगाने, मस्जिदमें अजान देने, जहाजोंको रास्ता दिखानेके लिए बने हुए स्तंभ।

मीनालय–पु० [सं०] समुद्र।

मीमांसक–पु० [सं०] मीमांसा करनेवाला।

मीमांसा–स्त्री० [सं०] विचारपूर्वक तत्त्वनिर्णय, विवेचना करना; ६ दर्शनोंमेंसे एक जिसमें यज्ञादि वैदिक कर्मकांडका निरूपण और मंत्रोंकी अर्थविषयक शंकाओंका समाधान किया गया है, जैमिनीय दर्शन (इसे विशेषतः पूर्वमीमांसा और वेदांतदर्शनको उत्तरमीमांसा कहते हैं)। **–कार**–पु० मीमांसासूत्रके रचयिता जैमिनि ऋषि।

मीयाद–स्त्री० [अ०] दे० 'मीआद'।

मीर–पु० [सं०] समुद्र; जल; सीमा। **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी।

मीर–पु० [फा०] ('अमीर'का लघु रूप) सरदार; प्रधान अधिकारी; नेता; मुखिया; ताश या गंजीफेके बादशाहका पत्ता; प्रतियोगितामें जीतने, औवल होनेवाला। **–मुंशी**–पु० प्रधान लेखक, पेशकार। **–(रे) मंज़िल**–पु० मुसलमानी राज्यकालका एक कर्मचारी जिसका काम शाही फौजके पहुँचनेके पहले पड़ावपर पहुँचकर वहाँका प्रबंध करना होता था। **–मजलिस**–पु० सभापति।

मीरजा*–पु० दे० 'मिरज़ा'। दे० 'मीर-जा'।

मीरास–स्त्री० [अ०] मृत व्यक्तिकी छोड़ी हुई संपत्ति जो उसके उत्तराधिकारियोंको मिले, तरका, बपौती।

मीरासी–पु० [अ०] एक मुसलमान जाति जो गाने-बजानेका पेशा करती है।

मील–पु० [अं०] दूरीकी एक नाप, १७६० गज।

मीलित–वि० [सं०] मूँदा हुआ; सिकोड़ा हुआ, संकुचित। पु० एक अर्थालंकार जहाँ रूपादिका सादृश्य होनेके कारण उपमान-उपमेयमें भेद न जान पड़े, दोनों एकमें मिले हुए-से जान पड़ें।

मुँगरा–पु० गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोंकने-पीटनेके काम आती है।

मुँगरी–स्त्री० छोटा मुँगरा।

मुँगौछी*–स्त्री० मूँगका बना एक पकवान।

मुँगौरी–स्त्री० मूँगकी दालकी बरी।

मुंचन*–पु० दे० 'मोचन'।

मुंचना*–स० क्रि० मुक्त करना, छोड़ना।

मुंज–पु० [सं०] मूँज; राजा भोजका चचा जो अपभ्रंशका कवि था। **–मणि**–पु० पुखराज। **–मेखला**–स्त्री० मूँजकी बनी मेखला।

मुंड–पु० [सं०] सिर, मूँड़, मस्तक; कटा हुआ सिर; मुँड़ा हुआ सिर। **–कर**–पु० (पॉल टैक्स) प्रत्येक व्यक्तिपर लगनेवाला कर, फी आदमी पीछे वसूल किया जानेवाला कर। **–माला**–स्त्री० कटे हुए सिरों या खोपड़ियोंकी माला। **–माली(लिन्)**–पु० मुंडोंकी माला धारण करनेवाला, शिव।

मुँडकरी–स्त्री० घुटनोंके बीचमें सिर रखकर बैठनेकी मुद्रा।

मुँड़चिरा–पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो अपने सिर, चेहरे आदिपर छुरेसे घाव करके भीख माँगते हैं।

मुँड़चिरापन–पु० लेनदेन आदिमें झगड़ा और हठ।

मुंडक–पु० [सं०] मूँड़नेवाला, नाई; सिर।

मुंडन–पु० [सं०] मूँड़ना; द्विजादिके लिए विहित एक संस्कार, बालकके सिरके बाल पहली बार मूँड़नेकी रस्म।

मुँड़ना–अ० क्रि० मूँड़ा जाना, ठगा जाना।

मुँडला–पु० चरखेके मध्यका भाग, मंझा; एक जंगली जाति।

मुंडा–वि० मुंडित; गंजा; बिना सींगका (बैल, बकरा); ठूँठ। पु० बिना नोकका जूता; एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर, राँची, मिरजापुर आदिके जंगली भागोंमें बसती है। स्त्री० मुँडला लोगोंकी भाषा जिसके अंदर खरवार, संथाली, मुँडारी, कोरवा आदि अनेक बोलियाँ आती हैं; [सं०] मुंडिता स्त्री; संन्यासिनी, बैरागिन; गोरखमुंडी।

मुँड़ाई–स्त्री० मूँड़नेका काम; मूँड़नेकी मजदूरी।

मुँड़ाना–स० क्रि० दे० 'मुड़ाना'।

मुँडासा–पु० (मुँड + साफा) सिरपर बाँधनेका साफा।

मुंडित–वि० [सं०] मूँड़ा हुआ। पु० लोहा।

मुंडिया*–स्त्री० दे० 'मुड़िया'। पु० सिर मुँड़ाकर बना हुआ साधु, संन्यासी।

मुंडी–स्त्री० वह स्त्री जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो; बेवा औरत; गोरखमुंडी।

मुंडी(डिन्)–वि० [सं०] जिसके सिरके बाल मूँड़ दिये गये हों; बिना सींगका। पु० नाई; शिव; संन्यासी।

मुँडेर–स्त्री० खेतकी मेंड़; दे० 'मुँडेरा'।

मुँडेरा–पु० छतके चारों ओरकी मेंड़ जैसी दीवार; पुश्ता।

मुँडेरी–स्त्री० छोटा मुँडेरा।

मुंडो–स्त्री० सिरमुँड़ी स्त्री; राँड़।

मुंतज़िम–पु० [अ०] इंतजाम करनेवाला, प्रबंधक।

मुंतज़िर–पु० [अ०] इंतजार करनेवाला।

मुँदना–अ० क्रि० आँखका बंद होना, पलक लगना; ढकना, बंद होना; छिपना, तिरोहित होना।

मुँदरी–स्त्री० छल्ला, अँगूठी।

मुंशियाना–वि० मुंशियों जैसा; मुंशीके उपयुक्त।

मुंशी–पु० [अ०] मजमून सोचने, लिखनेवाला; लेखक; सुंदर भाषा, सुंदर अक्षर लिखनेवाला; किरानी; मुहर्रिर; उर्दू-फारसी पढ़ानेवाला। **–ख़ाना**–पु० उर्दू-फारसीका दफ्तर। **–गिरी**–स्त्री० लेखनवृत्ति, मुहर्रिरी।

मुंसरिम–पु० [अ०] प्रबंध करनेवाला; जजी, कलेक्टरी आदिके दफ्तरका प्रधान।

मुंसिफ–पु० [अ०] इंसाफ करनेवाला, न्यायाधीश; न्यायविभागका एक अधिकारी जिसका पद सब-जजसे छोटा होता है।

मुंसिफी–स्त्री० [अ०] न्यायशीलता; मुंसिफका पद; मुंसिफकी अदालत।

मुँह–पु० प्राणिदेहके शिरोभागमें स्थित वह छिद्र जिसमें आहारग्रहण और बोलनेके साधनरूप अवयव होते हैं, मुख; चेहरा; छेद, सूराख; बरतन आदिका वह छेद जिससे कोई चीज अंदर डाली जाय; बाढ़, धार; किनारा; योग्यता, लियाकत; सामर्थ्य; हिम्मत; मजाल। अ० की ओर, दिशामें (पूरब मुँह, किस मुँह बैठे हो?)। **–अँधेरे या उजाले**–अ० बहुत सवेरे, तड़के। **–अखरी***–वि० जबानी, मौखिक। **–चंग**–पु० एक बाजा। **–चटौवल†**–स्त्री० चूमाचाटी; बकवाद। **–चोर**–वि० जो दूसरोंसे मुँह छिपाये, दूसरोंके सामने जानेसे बचनेवाला; झेंपू। **–चोरी**–स्त्री० मुँहचोर होना। **–छुआई**–स्त्री० पूछनेकी रस्म अदा करना। **–छुट**–वि० मुँहफट। **–ज़ोर**–वि० बहुत बोलनवाला; लड़ाका, कल्लादराज; लगामको न माननेवाला (घोड़ा)। **–ज़ोरी**–स्त्री० लड़ाकापन, कल्लादराजी; बदलगामी। **–दर-मुँह**–अ० सामने, दू-बदू। **–दिखाई**–स्त्री० दुलहिनका मुँह देखनेकी रस्म; वह धन, आभूषण आदि जो दुलहिनका मुँह देखकर उसे दिया जाय। **–देखा**–वि० बिलकुल ऊपरी, दिखाऊ; मुँह ताकता रहनेवाला। **–पातर**–वि० मुँहका हलका, बकनेवाला। (रत्नाव०)। **–फट**–वि० जो मुँहमें आये वह बक देनेवाला, जबान-दराज, बदजबान। **–बंद**–वि० जिसका मुँह खुला न हो; बिनखिला। **–बँधा**–पु० मुँहपर कपड़ा बाँध रखनेवाला जैन साधु। **–बोला**–वि० मुँहसे कहकर बनाया हुआ, माना हुआ, अवास्तविक (भाई, बेटा)। **–भर**–अ० अच्छी तरह, दिलसे (बोलना, बात करना)। **–माँगा**–वि० अपना माँगा हुआ (दाम); मनका माँगा हुआ, मनोभिलषित (मुँहमाँगी मुराद)। **–लगा**–वि० ढीठ, शोख, सिरचढ़ा। **मु०–आँसुओंसे धोना**–बहुत रोना। **–आना**–मुँहमें छाले पड़ना। **–इतना-सा निकल आना**–चेहरा धँस जाना, बहुत दुबला हो जाना; लज्जित हो जाना। **–उजला होना**–इज्जत रह जाना, बेआबरूईसे बच जाना। **–उठाकर कहना**–बेसोचे-समझे बोलना, जो जीमें आये बक देना। **–उठाये चले जाना**–बेधड़क, बिना इधर-उधर देखे चले जाना। **–उतरना**–मुँहपर तेज, कांति न रहना; चेहरेसे सुस्ती, उदासी प्रकट होना। **–औंधा कर पड़ना या लेटना**–दुःख, रोष या मानसे अलग जाकर पड़ना। **–करना**–फोड़ेका फूटना। **(किसी ओरको)–करना**–किसी ओर जानेका विचार करना। **–का कच्चा**–जिसके पेटमें बात न पचे; जिसकी बातका भरोसा न हो; लगामका झटका न सहनेवाला (घोड़ा)। **–का कड़ा या सख़्त**–मुँहजोर; लगामका अंकुश न माननेवाला (घोड़ा)। **–का कौर या निवाला**–बहुत आसान काम। **–का निवाला छीनना**–किसीकी रोटी छीनना, मिलती हुई वस्तुसे वंचित करना। **–का मीठा**–ऊपरसे भला, पर दिलका खोटा; चिकनी-चुपड़ी बातें करनेवाला। **–काला करना**–(अपना) मुँहमें कालिख पोतना; व्यभिचार, बुरे कर्म करना; दूर होना, फिर मुँह न दिखाना (जा अपना मुँह काला कर); (दूसरेका) बेइज्जती करना; दूर करना, फेंकना; लानत भेजना (मुँहकाला करो ऐसी चीजका)। **(किसीका)–काला हो**–मुँहमें कालिख लगे; नाश हो (शाप)। **–काला होना**–मुँहमें कालिख लगना, बेइज्जत होना; दूर होना; नष्ट होना। **–का सच्चा**–बातका धनी, वादेका पक्का। **–किलना**–मुँह कील दिया जाना, जबान बंद हो जाना। **–की खाना**–थप्पड़ खाना, पिटना; कियेका फल पाना; बुरी तरह हारना, जलील होना। **–की या मुँहसे बात छीनना**–एक आदमी जो बात कहना चाहता हो दूसरेका उससे पहले कह देना। **–कील देना**–मंत्र-बलसे जबान बंद कर देना, चुप करा देना; घूससे मुँह बंद कर देना। **–के कौए उड़ जाना**–चेहरेपर हवाइयाँ उड़ने लगना; हवास गायब हो जाना। **–के बल गिरना**–किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए आतुर हो जाना; धोखा खाना। **–खुलना**–(फोड़े आदिका) मुँह बड़ा हो जाना; बोलनेमें ढीठ हो जाना, बदजबानीकी आदत लगना। **–खुलवाना**–बोलनेको लाचार करना; गुस्ताख बनाना। **–खुश्क होना**–दे० 'मुँह सूखना'। **–खोलकर रह जाना**–कुछ कहते-कहते चुप हो जाना। **–चपड़ा कर देना**–कल्लेपर जोरका तमाचा लगाना। **–चलाना**–खाना; घोड़ेका काटना; जबानदराजी करना। **–चाटना**–प्यार करना; खुशामद करना। **–चिढ़ाना**–किसीकी मुखाकृति, बोलनेके ढंग आदिकी नकल (चिढ़ानेके लिए) मुँह बिगाड़कर करना। **–चूम लेना**–किसीकी शक्ति, योग्यताका कायल हो जाना, अपनेसे बहुत बड़ा मान लेना (कोई कठिन काम करनेकी चुनौती देनेका भाव होता है–तुम अमुक काम कर सके तो तुम्हारा मुँह

चूम लूँगा)। **–छिपाना या छुपाना**–लज्जावश सामने न आना; लज्जित होना। **–छूना**–दिखानेके लिए ऊपरी मनसे कहना। **–ज़हर हो जाना**–मुँहका बहुत कड़ुआ हो जाना। **–जुठारना या जूठा करना**–खानेका नाम करना, जरा-सा खाकर छोड़ देना। **–जोड़ना**–कानाफूसी करना। **–झुलसना**–मुँहको आग लगाना; लानत भेजना। **–डालना**–चौपायेका चारेसे मुँह लगाना, खाना। **–तकना या ताकना**–किसीसे आस लगाये बैठे रहना; चकित, हतबुद्धि होकर किसीकी ओर देखना। **–ताक करके रह जाना**–चकित होकर चुप रह जाना। **–तोड़ जवाब**–निरुत्तर कर देने, चुप करा देनेवाला जवाब। **–थकना**–बकवाससे मुँह दुखने लगना। **–दिखाना**–सामने आना। **–देखकर उठना**–सवेरे आँख खुलते ही किसीपर निगाह पड़ना। **(किसीका)–देखकर**–(किसीका) लिहाज करके; (किसीको) प्रसन्न करनेके लिए (बच्चोंका मुँह देखकर सब सह रही हूँ)। **–देखकर बात कहना**–चापलूसीकी बातें करना। **–देखना**–दे० 'मुँह तकना'। **–देखी करना**–किसीकी इच्छा या खुशीका खयाल रखकर व्यवहार करना, पक्षपात करना। **–देखी बात**–लिहाज, मुरौवत, तरफदारी, चापलूसीकी बात। **–देखेकी**–ऊपरी, दिखाऊ (–प्रीति, चाह)। **–देना**–बैल, घोड़े आदिका चारेपर मुँह डालना। **–धो रखो**–इस चीजकी आशा न करो, अपना मुँह देखो। **–पकड़ना**–बोलनेसे रोकना। **–पड़ना**–हिम्मत होना। **–पर**–सामने, रू-बरू; होठोंपर, जबानपर; चेहरेपर। **–पर जाना**–लिहाज, मुरौवत करना। **–पर ठीकरी रख लेना**–बेमुरौवत हो जाना। **–पर ताला लग जाना**–जबान बंद हो जाना; चुप्पी साध लेना। **–पर थूकना**–अत्यधिक घृणाप्रकाश या तिरस्कार करना; अपमानित करना। **–पर न थूकना**–अति हेय समझना, उसकी ओर देखना तक नहीं। **–पर नाक न होना**–निर्लज्ज होना। **–पर फेँक देना, –पर फेंक मारना**–बहुत खफा होकर कोई चीज देना या लौटा देना। **–पर महताब छूटना**–चेहरा पीला हो जाना, चेहरेपर हवाइयाँ उड़ना। **–पर मुहर लगना या हो जाना**–चुप्पी साध लेना, एक शब्द भी न कहना। **–पर रखना**–चखना, खाना; (तोप आदिको) सामने निशानेपर रखना। **–पर लाना**–कहना, बयान करना। **–पर हवाइयाँ उड़ना**–भय, घबराहट आदिसे चेहरेका पीला या सफेद हो जाना। **–पसारकर दौड़ना**–कोई चीज पानेके लिए लपकना। **–पसारना**–मुँह फैलाना; (कुछ) पानेके लिए आगे बढ़ना; अधिक दाम माँगना। **–पाना**–रुख या मर्जी पाना, भावानुकूल दिखना। **–पेट चलना**–कै-दस्त दोनों होना। **–फटना**–सरदी, खुश्कीके कारण होठों, कपोलोंकी त्वचा सूखकर फटना। **–फुलाना**–नाराज होना, रूठना। **–फूँकना**–मुँहको आग लगाना, लानत भेजना। **–फेर लेना**–बेरुख या नाराज हो जाना। **–फैलाना**–अधिक दाम माँगना; अधिक लोभ करना। **–बंद कर देना**–चुप करा देना; घूस देकर अपने विरुद्ध कुछ करने, कहनेसे रोक देना। **–बंद कर लेना**–चुप हो जाना। **–बनाना**–चेहरेकी शकल बिगाड़ना; चेहरेसे रोष प्रकाश करना; मुँह चिढ़ाना। **–बाना**–दे० 'मुँह फैलाना'। **–बिगाड़ देना**–मारकर चेहरा खराब कर देना। **–बिगाड़ना**–मुँह बनाना, चेहरेसे नाराजगी प्रकट करना; मुँहका स्वाद बिगड़ जाना। **–भर आना**–मुँहमें पानी आना, मतली होना। **–भरके**–लबालब; भरपूर; यथेच्छ। **–भरना**–मुँहमें कौर डालना; घूस देना, मुँह बंद करना। **–मारना**–चारेपर मुँह डालना; काटनेको मुँह चलाना, काटना; बढ़ जाना, मात करना। **–मीठा करना**–मिठाई खाना, खिलाना; घूस, इनाम आदिके रूपमें कुछ देना। **–मीठा होना**–किसीसे कुछ मिलना; मँगनी होना। **–में आना**–जबानपर आना। **–में कालिख पुतना या लगना**–भारी बदनामी होना, कलंकका टीका लगना। **–में खाक**–मुँहमें खाक पड़े (अशुभ या ढिठाईकी बात अपने या दूसरेके मुँहसे निकलनेपर कहते हैं)। **–में खून लगना**–चसका लगना। **–में गुड़-घी या घी-शकर**–तुम्हारा मुँह मीठा हो (किसीके कोई हर्षका समाचार सुनानेपर कहते हैं)। **–में घुनघुनियाँ भर लेना**–चुप्पी साध लेना, मूक बन जाना। **–में जबान रखना या होना**–बोलनेमें समर्थ होना, वाक्शक्ति रखना (हम भी मुँहमें जबान रखते हैं)। **–में ज़बान न रखना**–गूँगा होना; बेजबान होना। **–में जाना**–खाया जाना, भक्ष्य बनना। **–में तिनका लेना**–अति दीन बनना, दाँतोंमें तिनका दाबना। **–में थूकना**–जलील, बेइज्जत करना। **–में दाँत, न पेटमें आँत**–अति वृद्ध होना। **–में पढ़ना या बोलना**–इतनी धीमी आवाजमें पढ़ना या बोलना कि दूसरोंको सुनाई न दे। **–में पानी भर आना**–राल टपकना, ललचाना। **–में लगाम न होना**–जबानपर अंकुश न होना, जो मनमें आये, बक देना। **–में लूका लगाना**–मुँह झुलसना; मुँह काला करना। **–मोड़ना**–बेरुखी करना, ध्यान न देना; अलग हो जाना; इनकार करना; हराना; पीछे ढकेल देना। **–लगना**–हुज्जत करना, उलझना; ढिठाईसे बोलना; चस्का लगना। **–लगाना**–होंठोंसे छुवाना, चखना; ढीठ, गुस्ताख बनाना। **–लटकाना**–मुँह फुलाना, मुखाकृतिसे रोष, नाराजगी प्रकट करना। **–लपेटकर पड़ रहना**–दुःख या रोषमें मुँह ढककर पड़ रहना। **–लाल होना**–क्रोधसे चेहरेका लाल हो जाना। **(अपनासा)–लेकर रह जाना**–लज्जित होकर चुप हो जाना, खिसियाकर रह जाना। **–शक्करसे भर देना**–(हर्ष-समाचार सुनानेवालेका) मुँह मीठा करना। **–सँभालना**–जबानको काबूमें रखना, सोच-समझकर बोलना (मुँह सँभालकर बातें करो)। **–सीना**–चुप्पी लगा लेना। **–सूखना**–गला, जबानका सूखना; मनमें भय भर जाना, घबरा जाना। **–से**–जबानी, ऊपरसे (–कहना)। **–से दूध टपकना, –दूधकी बू आना**–बच्चा, नादान, नासमझ होना। **–से निकलना**–कहा जाना। **–से फूल झड़ना**–बोल या बातोंमें बहुत मिठास होना। **–से बात न निकलना**–डर या गुस्सेके मारे मुँहसे आवाज न निकलना। **–से राल (लार) टपकना**–किसी वस्तुके लिए लालायित

होना, मनमें अति लोभ होना। **–से लाल उगलना–** मुँहसे बहुत मीठे शब्द निकलना, फूल झड़ना। **–स्याह होना–**दे० 'मुँह काला होना'। **–ही मुँहमें–**चुपके-चुपके (–कहना, बातें करना)।

मुँहाचही*–स्त्री० डींग मारना–'मुँहाचही सेनापति कीन्हीं सकटासुर मन गर्व बढ़ायो'–सू०।

मुँहामुँह–पु० मुँहतक, बिलकुल ऊपरतक।

मुँहासा–पु० युवावस्थामें चेहरेपर निकलनेवाली एक तरहकी फुंसी।

मुअज्ज़म–वि० [अ०] पूज्य, बुजुर्ग; महान्।

मुअज़्ज़िन–पु० [अ०] अजाँ देनेवाला, नमाजके लिए आह्वान करनेवाला।

मुअत्तल–वि० [अ०] खाली, बेकार, काम न देनेवाला (अंग); कामसे कुछ अरसेके लिए अलग किया हुआ, अस्थायी रूपसे पदच्युत (कर्मचारी)।

मुअत्तली–स्त्री० [अ०] मुअत्तल होनेका भाव।

मुअल्लिम–पु० [अ०] इल्म देनेवाला, शिक्षक।

मुआ–वि० मरा हुआ, मृत; निगोड़ा।

मुआइना, मुआयना–पु० [अ०] अवलोकन, निरीक्षण; जाँच-पड़ताल।

मुआफ़–वि० [अ०] दे० 'माफ़'।

मुआफ़िक़–वि० दे० 'मुवाफ़िक़'।

मुआफ़िक़त–स्त्री० अनुकूलता; मेल-जोल।

मुआमला–पु० [अ०] दे० 'मामला'।

मुआवज़ा–पु० [अ०] वह चीज जो किसीके बदलेमें दी जाय, बदला, पलटा; वस्तुका मूल्य; तावान, हर्जाना।

मुकट–पु० दे० 'मुकुट'।

मुकतई*–स्त्री० मुक्ति, मोक्षपद।

मुकता–* पु०, स्त्री० दे० 'मुक्ता'। † वि० बहुत (बुंदेल०) –'मुकती साँठि गाँठि जो करै'–प०।

मुकतालि*–स्त्री० मोतियोंकी लड़ी, मुक्तावली।

मुकति*–स्त्री० मुक्ति।

मुकदमा–पु० [अ० 'मुकद्दमा'] अदालतमें गया हुआ मामला, व्यवहार; दावा, नालिश। **–(मे)बाज़–**वि० मुकदमा लड़नेवाला, जिसे मुकदमा लड़नेका शौक हो। **–बाज़ी–**स्त्री० मुकदमा लड़ना।

मुक़द्दम––वि० [अ०] पहला, आला; जो पहले हो चुका हो, पुराना; फर्ज, अवश्य कर्तव्य। पु० गाँवका चौधरी।

मुक़द्दमा–पु०[अ०] आरंभ, प्रस्तावना; सिरनामा; घटना; अदालतमें गया हुआ मामला, व्यवहार।

मुक़द्दर–पु० [अ०] भाग्यलेख, भाग्य, तकदीर। **–आज़माई–**स्त्री० भाग्यकी परीक्षा करना।

मुकना*–अ० क्रि० मुक्ति, छुटकारा पाना; चुकना।

मुकम्मल––वि० [अ०] समाप्त; संपूर्ण, अखंड।

मुकरना–अ०क्रि० कही हुई बातसे हटना, नटना, इनकार करना।

मुकराना*–स०क्रि० मुक्त कराना; मुकरनेमें प्रवृत्त करना।

मुकरी–स्त्री० वह कविता जिसमें पहले कही हुई बातका अंतमें खंडन-सा किया जाय, पहेली जैसी कविता।

मुकर्रम–वि०[अ०] सम्मानित; पूज्य। [स्त्री०'मुकर्रमा'।]

मुक़र्रर–वि० [अ०] ठहराया हुआ, तै किया हुआ, नियत; नियुक्त।

मुकलाना*–स० क्रि० खोलना।

मुक़ाबला–पु० [अ०] बराबरी करना; बराबरी; आमना-सामना; मुठभेड़; लड़ाई; विरोध; मिलाकर जाँचना, मिलाना। **मु०–(ले) पर (में) आना–**लड़नेके लिए सामने आना; सामना करना।

मुक़ाबिल–वि० [अ०] मुकाबला, बराबरी करनेवाला; प्रतिस्पर्धी; सामनेका। अ० आमने-सामने।

मुक़ाम–पु० [अ० 'मक़ाम'] ठहरने, खड़ा होनेकी जगह, स्थान; पड़ाव; ठहराव; वासस्थान, घर; मौका।

मुक़ामी–वि० [अ०] स्थानीय, स्थानविशेषसे संबद्ध (लोकल)। **–अफ़सर–**पु० स्थानीय अधिकारी। **–ख़बर–**स्त्री० स्थानीय समाचार।

मुकियाना†–स० क्रि० मुक्की लगाकर शरीरकी मालिश करना; (हलके) घूँसे लगाना।

मुकुंद–पु० [सं०] विष्णु; कृष्ण।

मुकुंदक–पु० [सं०] प्याज; साठी धान।

मुकुट–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो ताजकी तरह धारण किया जाता था, किरीट। **–धर,–धारी-(रिन्)–**वि० मुकुट धारण करनेवाला (राजा)।

मुकुताहल*–पु० मोती।

मुकुर–पु० [सं०] दर्पण, आईना; मौलसिरी।

मुकुल–पु० [सं०] कली; वह कली जिसका मुँह जरा-जरा खुल रहा हो; शरीर; आत्मा।

मुकुलित–वि० [सं०] मुकुलविशिष्ट; अधखिला; अधमुँदा।

मुक्का–पु० घूँसा, मारनेके लिए बाँधी हुई मुट्ठी। **–(क्के)बाज़ी–**स्त्री० घूँसेबाजी, घूँसोंकी लड़ाई।

मुक्की–स्त्री० घूँसेबाजी; मालिशके लिए शरीरपर धीरे-धीरे मुक्के लगाना।

मुक्केस*–पु० दे० 'मुक़क़ैश'।

मुक़क़ैश––पु० सोने-चाँदीका तार, बादला; सोने-चाँदीके तारोंका बना कपड़ा, ताश।

मुक़क़ैशी–वि० सोने-चाँदीके तारोंका बना, जरी या ताशका बना हुआ। **–गोखरू–**पु० तारोंका बना महीन गोखरू।

मुक्त–वि० [सं०] मोक्षप्राप्त, भवबंधनसे मुक्त; बंधनरहित, खुला हुआ; छूटा हुआ; क्षिप्त, फेंका हुआ। **–कंचुक–**वि० (वह साँप) जिसने केंचुल उतार दी हो। **–केश–**वि० जिसके बाल बँधे, गुँथे न हों। **–केशी–**स्त्री० काली। वि० स्त्री० खुले बालोंवाली। **–चेता(तस्)–**वि० जिसका चित्त संसारकी आसक्तिसे, जिसकी आत्मा भवबंधनसे, मुक्त हो चुकी हो। **–द्वार–**वि० जिसका दरवाजा खुला हो, निर्बाध। **–द्वारनीति–**स्त्री० देसावरसे आनेवाले मालपर बाधक कर न लगानेवाली वाणिज्यनीति। **–वसन–**वि० निर्वस्त्र। पु० दिगंबर जैन। **–वाणिज्य,–व्यापार–**पु० (फ्री ट्रेड) विदेशोंके साथ होनेवाले आयात-निर्यात-संबंधी बाधाओं या करोंसे मुक्त व्यापार। **–व्यापारनीति–**स्त्री० (फ्री ट्रेड पॉलिसी) बाहरसे आनेवाले मालपर बाधक कर न लगाने, किसी

एक देशके साथ विशेष रियायत न करनेकी वाणिज्य-नीति। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ खुला हो, दानी, उदार। **मु०–कंठसे**–खुलकर; निस्संकोच रूपमें।

मुक्ता–स्त्री० [सं०] मोती। **–कलाप**–पु० मोतियोंका हार। **–गुण, –दाम(न्)**–पु० मोतियोंकी लड़ी। **–फल**–पु० मोती; कपूर। **–लता**–स्त्री० मोतियोंकी माला। **–हल***–पु० मुक्ताफल, मोती।

मुक्तागार–पु० [सं०] सीप।

मुक्तावली–स्त्री० [सं०] मोतियोंकी लड़ी।

मुक्ति–स्त्री० [सं०] छुटकारा; मोक्ष, जन्म-मरण-रूप बंधनसे छुटकारा मिलना, आत्माका जन्म-मरणसे मुक्त हो जाना; आजादी। **–क्षेत्र**–पु० काशी। **–धाम(न्)**–पु० मुक्ति देनेवाला स्थान, तीर्थ। **–पत्र**–पु० छुटकारेका परवाना। **–प्रद**–वि० मुक्ति देनेवाला। **–फौज**–स्त्री० [हिं०] ईसाइयोंका एक सेवा और धर्मप्रचारकार्य करनेवाला संघटन (सालवेशन आरमी)। **–मंडप**–पु० विश्वनाथमंदिर (काशी)। **–मार्ग**–पु० मुक्ति पानेका मार्ग, साधन। **–युद्ध**–पु० (वार ऑफ लिबरेशन) दूसरे राष्ट्रकी अधीनता, दासतासे अपने देशको स्वतंत्र करने, छुटकारा दिलानेके लिए किया जानेवाला संघर्ष। **–लाभ**–पु० मुक्ति, छुटकारा मिलना। **–स्नान**–पु० ग्रहणकी समाप्ति, मोक्षके बाद किया जानेवाला स्नान।

मुख–पु० [सं०] मुँह; दरवाजा, निकलने-पैठनेका रास्ता। **–कमल**–पु० कमल जैसा मुख। **–कांति**–स्त्री० चेहरेकी आब, सौंदर्य। **–चित्र**–पु० मुखपृष्ठपर छपा हुआ चित्र। **–चूर्ण**–पु० चेहरेपर मलनेका सुगंधित पाउडर। **–च्छद**–पु० (मास्क) चेहरेको छिपानेके लिए पहना जानेवाला कपड़ा, नकाब। **–ज**–वि० मुखसे उत्पन्न। पु० ब्राह्मण। **–दूषण**–पु० प्याज। **–दूषिका**–स्त्री० चेहरेपर होनेवाली फुंसी। **–धावन**–पु० मुँह धोना। **–पट**–पु० बुरका; घूँघट। **–पत्र**–पु० (आर्गन) किसी दल या संस्था द्वारा प्रकाशित वह सामयिक पत्र जिसमें उसके सिद्धांतों, उद्देश्यों आदिकी चर्चा की जाती है। **–पाक**–पु० मुँह पकना; बैलों, घोड़ों आदिको होनेवाला एक रोग **–पात्र**–पु० (स्पोक्समैन) सरकार या किसी संस्था आदिकी तरफसे आधिकारिक रूपसे कोई कथन करनेवाला, दे० 'प्रवक्ता'। **–पिंड**–पु० ग्रास; मृत व्यक्तिके उद्देश्यसे अंत्येष्टिके पूर्व दिया जानेवाला पिंड। **–पिडिका**–स्त्री० मुँहासा। **–पृष्ठ**–पु० पुस्तक, मासिक पत्र आदिका आवरण-पृष्ठ। **–प्रक्षालन**–पु० मुँहको धोना, साफ करना। **–प्रसाद**–पु० मुखकी प्रसन्नता, मुखकी प्रसन्न मुद्रा। **–प्रिय**–वि० जो खानेमें अच्छा लगे, सुस्वादु। पु० नारंगी; ककड़ी; लवंग। **–बंध, –बंधन**–पु० पुस्तककी प्रस्तावना, भूमिका। **–भूषण**–पु० पान। **–मंडल**–पु० चेहरा। **–मार्जन**–पु० मुँह साफ करना, मुखप्रक्षालन। **–रुचि**–स्त्री० मुखकांति। **–रोग**–पु० गले, मसूड़े, जीभ आदिमें होनेवाला रोग। **–रोधक (मुखावरोधक) अधिनियम**–पु० (गैगिंग ऐक्ट) मुख बंद कर देने, भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देनेवाला अधिनियम। **–रोधन**–पु० (गैगिंग) बलपूर्वक किसीका मुँह बंद कर देना, बोलने या भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देना। **–लेप**–पु० सौंदर्यके लिए मुखपर लगाया जानेवाला लेप। **–वाद्य**–पु० मुँहसे बजाया जानेवाला बाजा। **–वास**–पु० गंध तृण; कपूर, लौंग, आदि मुखको सुगंधित करनेवाली चीजें। **–शुद्धि**–स्त्री० दातुन आदिकी सहायतासे मुख साफ करना; भोजनके बाद पान, इलायची आदि खाकर मुख शुद्ध करना। **–शोथ**–पु० मुखकी सूजन। **–शोष**–पु० मुँह सूखना; प्यास। **–श्री**–स्त्री० मुँहकी शोभा, कांति। **–स्राव**–पु० लार, लाला; थूक, लारका बहना।

मुखड़ा–पु० चेहरा, मुख।

मुख़्तार–पु० [अ०] अधिकार-प्राप्त व्यक्तिविशेषके प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारी; एजेंट; कानून-पेशावर्गका एक भेद जो वकीलसे छोटा होता है। **–नामा**–पु० वह लेख जिसके जरीये कोई आदमी मुखतार बनाया जाय, मुखतारका अधिकार-पत्र। **–(रे)आम**–पु० वह व्यक्ति जिसे किसीकी ओरसे कोई कार्य करनेका अधिकार दिया गया हो। **–खास**–पु० वह जिसे किसी मुकदमेकी पैरवी या और कोई खास काम करनेका अधिकार दिया गया हो।

मुख़्तारी–स्त्री० [अ०] मुखतारका काम या पेशा।

मुख़न्नस–वि० [अ०] हिजड़ा, नपुंसक।

मुख़्बिर–पु० [अ०] खबर देनेवाला, जासूस; वह मुलजिम जो अपराध स्वीकार कर सरकारी गवाह बन जाय तथा जिसे माफी दे दी जाय।

मुख़्बिरी–स्त्री० [अ०] जासूसी।

मुखर–वि० [सं०] अधिक बोलनेवाला, वाचाल; अप्रियवादी।

मुखरित–वि० [सं०] ध्वनित, शब्दायमान।

मुखाकृति–स्त्री० [सं०] चेहरा।

मुखागर,* मुखाग्र–वि० [सं०] कंठस्थ, जबानी याद।

मुख़ातब–[अ०] जिससे बात-चीत की जाय, संबोध्य।

मुख़ातिब–वि० [अ०] खिताब या संबोधन करनेवाला, बात करनेवाला; मतवज्जह।

मुखापेक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] (दूसरेका) मुँह जोहनेवाला, पराश्रित।

मुखामय–पु० [सं०] मुखरोग।

मुखारी–स्त्री० मुखाकृति; ऊपर या सामनेका भाग; † दतुअन।

मुख़ालफ़त–वि० [अ०] विरोध; शत्रुता।

मुख़ालिफ़–वि० [अ०] विरोध करनेवाला; शत्रु; उलटा।

मुखासव–पु० [सं०] थूक; राल।

मुखिया–पु० प्रधान व्यक्ति, अगुआ; वह व्यक्ति जिसका कर्तव्य गाँवमें होनेवाले अपराधों, दुर्घटनाओं आदिकी सूचना थानेमें भेजवाना हो; वल्लभकुलके मंदिरोंमें मूर्तिके पूजन, भोग लगाने आदिका काम करनेवाला।

मुखिल–वि० खलल डालनेवाला, बाधक ('गबन')।

मुख़्तलिफ़–वि० [अ०] भिन्न, जुदा, विसदृश; कई तरहका।

मुख़्तसर–वि० [अ०] संक्षिप्त; साररूप; छोटा।

मुख़्तसरन्–अ० [अ०] थोड़ेमें, संक्षेपमें।

मुख़्तार–पु० [अ०] दे० 'मुख़तार'।

मुख्य–वि० [सं०] मुख-संबंधी; प्रधान, प्रथम, जो गौण न हो; श्रेष्ठ। पु० मुखिया, अगुआ; यज्ञादिमें शास्त्रोक्त प्रथम कल्प। **–निर्वाचन आयुक्त**–पु० (चीफ इलेक्शन कमिश्नर) वह प्रधान अधिकारी जिसे सारे देशके निर्वाचन-कार्यका आयोजन तथा संचालन करने और चुनाव-संबंधी याचिकाओंपर विचार करनेके लिए विशेष न्यायाधिकरण नियुक्त करने आदिका भार सौंपा गया हो। **–न्यायाधिपति**–पु० (चीफ जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति' के साथ। **–न्यायाधीश**–पु० (चीफ जज) किसी लघुवाद न्यायालयके या अन्य न्यायालयके न्यायाधीशोंमें जो प्रधान हो वह। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० (चीफ मिनिस्टर) भारतीय गणतंत्रके किसी राज्य (प्रांत)-का सबसे बड़ा मंत्री।

मुख्यतः(तस्)–अ० [सं०] प्रधानतः, खास तौरसे।

मुख्यार्थ–पु० [सं०] शब्दका प्रधान अर्थ।

मुख्यालय–पु० [सं०] (हेड क्वार्टर) प्रधान कार्यालय या मुख्य निवास।

मुख्याधिष्ठाता(तृ)–पु०[सं०] (रेक्टर) दे०'अधिशिक्षक'; विश्वविद्यालयकी व्यवस्था करनेवाला मुख्य (निर्वाचित) अधिकारी, प्रधान नियामक।

मुगदर–पु० गावदुम मुगरी जो व्यायामके काममें लायी जाती है, जोड़ी (फेरना, हिलाना)।

मुगरा–पु० दे० 'मुँगरा'।

मुग़ल–पु० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध लड़ाकू तातारी जाति।

मुग़लई, मुग़लाई–वि० [फ़ा०] मुगलोंकासा, मुगली। **–टोपी**–स्त्री० एक तरहकी ऊँचे गोशोंवाली टोपी।

मुग़लानी–स्त्री० [फ़ा०] मुगल स्त्री; अंतःपुरकी दासी। सिलाईका काम करनेवाली स्त्री।

मुग़लिया–वि० [फ़ा०] मुगलोंका।

मुग़ली–वि० [फ़ा०] मुगलोंका; मुगलोंका-सा। **–घुट्टी**–स्त्री० मुगल बच्चोंको दी जानेवाली एक विशेष घुट्टी।

मुग़ालता–पु० [अ०] धोखा; भ्रम।

मुगुध–वि० दे० 'मुग्ध'।

मुग्ध–वि० [सं०] मोहित; मूढ़; भोला; सुंदर। **–कर**–वि० मुग्ध, मोहित करनेवाला। **–बुद्धि**–वि० मूर्ख; नासमझ; भोला।

मुग्धा–स्त्री०[सं०] यौवनप्राप्त सरल स्वभाववाली नायिका।

मुचकुंद–पु०[सं०] एक पेड़ जिसकी छाल और फूल दवाके काम आते हैं; दे० 'मुचुकुंद'।

मुचना*–स० क्रि० दे० 'मुंचना' (सू०)।

मुचलका–पु० [तु०] कोई खास काम न करने या नियत तिथिपर हाजिर होनेका प्रतिज्ञापत्र जिसका पालन न होनेपर प्रतिज्ञा करनेवाला निर्धारित अर्थदंड देना स्वीकार करता है (देना, लिखना)।

मुचुकुंद–पु० [सं०] सूर्यवंशी राजा जो मांधाताका बेटा था और जिसकी निद्रा भंग करनेके कारण कालयवन जलकर भस्म हो गया; मुचकुंदका पेड़।

मुछंदर–पु० बड़ी मूँछोंवाला; भोंड़ी शकलवाला और भोंदू।

मुछमुंडा–वि० जिसने मूँछें मुँड़ा ली हों।

मुछाकड़ा, मुछियल, मुछैल–वि० बड़ी मूँछोंवाला।

मुज़क्कर–पु० [अ०] नर, पुरुष; पुंलिंग (व्या०)।

मुजमिल–वि० [अ०] संक्षेपमें कथित; जिसमें ब्योरा न हो; इकट्ठा किया हुआ। * पु० जुमला, योग (सू०)।

मुजरा–वि० [अ०] जारी किया हुआ; हिसाबमें लिया (या मिनहा किया) हुआ। पु० कटौती, मिनहाई; अदबसे सलाम करना; राजाओं आदिके सामने जाकर सलाम करना; वेश्याका महफिलमें बैठकर गाना। **–गाह**–पु०, स्त्री० शाही दरबारमें वह स्थान जहाँ खड़े होकर लोग मुजरा अर्ज करें। **मु०–करना**–मिनहा करना; अदबसे सलाम करना; वेश्याका बैठकर–बिना नाचके–गाना।

मुजरिम–पु० [अ०] जुर्म करनेवाला, अपराधी।

मुजाविर–पु०[अ०] मसजिदमें रहनेवाला; दरगाह आदिमें झाड़ू आदि लगानेवाला।

मुज़ायक़ा–पु० [अ०] अड़चन; परवा।

मुजाहिद–पु० [अ०] कोशिश करनेवाला; जिहाद करनेवाला।

मुझे–सर्व० 'मैं'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप।

मुटका–पु० एक मोटा रेशमी कपड़ा जो पूजन आदिमें धोतीकी जगह पहना जाता है।

मुटरी–स्त्री० दे० 'गठरी'।

मुटाई–स्त्री० मोटापन; पुष्टि; घमंड। **मु०–चढ़ना**–घमंड बढ़ना।

मुटाना–अ० क्रि० मोटा होना; घमंडी हो जाना।

मुटासा–वि० जो पैसेवाला हो जानेके कारण घमंडी और लापरवाह हो गया हो।

मुटिया–पु० बोझ ढोनेवाला।

मुट्ठा–पु० घास-फूस, सरपत आदिका मुट्ठीमें आने लायक पूला, पुलिंदा; दस्ता; मुठिया।

मुट्ठी–स्त्री० बँधी हुई हथेली, मुश्त, मुष्टि; मुट्ठीमें आनेभर वस्तु; मुट्ठीकी चौड़ाईकी माप; पकड़, कब्जा (–में आना, होना); चुसनी; मुट्ठीभर अन्न जो दानके लिए निकाला जाय, चुटकी। **मु०–गरम करना**–हाथमें चुपकेसे रुपये धर देना, घूस देना। **–में आना, होना**–कब्जे, काबूमें आना, होना। **–में हवा बंद करना**–अनहोनी बात करनेकी कोशिश करना।

मुठभेड़––स्त्री० भिड़ंत; सामना (–होना)।

मुठिका*–स्त्री० मुट्ठी; घूँसा।

मुठिया–स्त्री० कब्जा, दस्ता; धुनियोंका बेलन जिससे वे ताँतपर मारते हैं।

मुठी*–स्त्री० दे० 'मुट्ठी'।

मुडुकी*–स्त्री० काठका बना एक तरहका घुनघुना।

मुड़कना–अ० क्रि० मुरकना।

मुड़ना–अ०क्रि० सीधी चीजका झुकना; खम होना, अगल-बगल या पीछेकी ओर घूमना, गतिकी दिशा बदलना।

मुड़ला*–वि० गंजा।

मुडवरियाँ, मुड़वारी†–स्त्री० सिरहाना; मुँड़ेरा।

मुड़वाना–स० क्रि० मोड़नेका काम दूसरेसे कराना।

मुड़हर†–स्त्री० साड़ी या चादरका सिरके ऊपर रहनेवाला भाग।

मुड़ाना–स० क्रि० सिरके बाल उस्तरेसे बनवाना ।

मुड़िया–पु० जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो; संन्यासी; बैरागी। स्त्री० मोड़ी लिपि, महाजनी लिपि ।

मुतअल्लिक़–वि० [अ०] तअल्लुक, लगाव रखनेवाला, संबद्ध; संयुक्त ।

मुतअल्लिम–पु० [अ०] इल्म सीखनेवाला, शिक्षार्थी ।

मुतक्का–पु० कोठे या बरामदेके किनारे रेलिंगका काम देनेके लिए खड़ी की हुई, पतली, नीची दीवार; [अ०] तकिया लगानेकी जगह, तकियागाह ।

मुतफ़न्नी–वि० [अ०] चालबाज, फरेबी, फसादी ।

मुतफ़र्रिक़ात–स्त्री० [अ०] फुटकल चीजें; फुटकल खर्चोंकी मद ।

मुतबन्ना–वि० [अ०] गोद लिया हुआ । पु० दत्तक पुत्र ।

मुतलक़–वि० [अ०] बंधनरहित; निपट, निरा । अ० बिलकुल, कतई ।

मुतलाशी*–वि० ढूँढ़नेवाला–'जो देखो वह हुआ नौकरीका मुतलाशी'–पूर्ण० ।

मुतवज्जिह–वि० [अ०] तवज्जुह करनेवाला, ध्यान देनेवाला ।

मुतवल्ली–पु० [अ०] मस्जिद या वक्फ संपत्तिका प्रबंध करनेवाला; वली, संरक्षक ।

मुतसद्दी–पु० [अ०] लेखक, मुंशी; हिसाब लिखनेवाला ।

मुतसिरी*–स्त्री० मोतियोंकी कंठी ।

मुताबिक़–वि० [अ०] सदृश, अनुरूप । अ० अनुसार ।

मुतालबा–पु० [अ०] माँगना, माँग; पावना ।

मुतास–स्त्री० पेशाबकी हाजत ।

मुताह–पु० [अ०] मोयादी, अस्थायी निकाह जो मुसलमानोंके शीया संप्रदायमें जायज है ।

मुताही–स्त्री० [अ०] वह स्त्री जिससे मुताह किया गया हो; रखेली ।

मुतिलाडू*–पु० मोतीचूरका लड्डू ।

मुतेहरा†–पु० कलाईपर पहननेका एक गहना ।

मुत्तला–वि० [अ०] जिसे इत्तिला दी गयी हो, सूचित, आगाह ।

मुत्तहिदा–वि० [अ०] इकट्ठा, संयुक्त ।

मुद–पु० [सं०] हर्ष, उमंग ।

मुदर्रिस–पु० [अ०] शिक्षा (दर्स) देनेवाला, अध्यापक ।

मुदर्रिसी–स्त्री० [अ०] मुदर्रिसका काम, अध्यापकी ।

मुदवंत*–वि० हर्षयुक्त, मुदित ।

मुदा–स्त्री० [सं०] हर्ष, मोद । * अ० मतलब यह कि; लेकिन ।

मुदाख़लत–स्त्री० [अ०] दखल देना, हस्तक्षेप; रोक-टोक । **–बेजा**–स्त्री० दूसरेके घर या जमीनमें उसकी इजाजतके बिना चला जाना ।

मुदाम–अ० [अ०] सदा, नित्य ।

मुदामी–वि० [अ०] सदा रहनेवाला ।

मुदित–वि० [सं०] मोदयुक्त, आनंदित ।

मुदिता–स्त्री० [सं०] हर्ष, आनंद; चित्तकी वह अवस्था जिसमें दूसरेका सुख देखकर सुख होता है (योग); परकीया नायिका जो परपुरुषकी प्रीति पानेकी अपनी इच्छा अकस्मात् पूरी हो जानेसे प्रसन्न होती है ।

मुदिर–पु० [सं०] मेघ–'मुदिरसे मेदुर मुदित मतवारे हैं'–मति०; कामुक; व्यभिचारी; मेंढक ।

मुद्गर–पु० [सं०] मुगदर; हथौड़ा; मुँगरा; एक प्राचीन अस्त्र ।

मुद्दई–पु० [अ०] दावा करनेवाला, वादी, दावेदार ।

मुद्दत–स्त्री० [अ०] अरसा; लंबा अरसा; अवधि, मीआद ।

मुद्दती–वि० [अ०] मीआदवाला, सावधि ।

मुद्दालेह–पु० जिसपर दावा किया गया हो, प्रतिवादी ।

मुद्ध*–वि० दे० 'मुग्ध' ।

मुद्धा–पु० टखना ।

मुद्धी–स्त्री० रस्सी, डोरीकी खिसकनेवाली गाँठ ।

मुद्र–पु० (टाइप) छपाईके काममें प्रयुक्त होनेवाले सीसे आदिके अक्षर, टाइप । **–लिख**–पु० (टाइपराइटर) कागजपर टाइपके अक्षर छापनेकी मशीन । **–लेखक**–पु० (टाइपिस्ट) मुद्रलिखकी सहायतासे कागजपर टाइपके अक्षर छापनेवाला । **–लेखनयंत्र**–पु० दे० 'मुद्रलिख' ।

मुद्रक–पु० [सं०] छापनेवाला (प्रिंटर) ।

मुद्रण–पु० [सं०] मुहर करना; छापना; छपाई । **–यंत्र**–पु० किताब इत्यादि छापनेकी कल । **–स्वातंत्र्य**–पु० (फ्रीडम ऑफ प्रेस) सरकारी अधिकारीको दिखाये बिना या उसकी अनुमति लिये बिना किसी समाचार-पत्रमें किसी विषयपर लेख लिखने, टीका करने या किसी पुस्तकादिमें उसकी चर्चा करनेकी स्वतंत्रता ।

मुद्रणालय–पु० [सं०] छापाखाना, प्रेस ।

मुद्रांकन–पु० [सं०] मुद्रा, मुहरसे छापना; छपाई ।

मुद्रांकित–वि० [सं०] छपा हुआ; (सील्ड) जिसपर (नाम, पद आदिकी) मोहर लगा दी गयी हो, जो मोहर लगाकर बंद कर दिया गया हो ।

मुद्रा–स्त्री० [सं०] नामकी मुहर; सिक्का; नाम खुदी हुई अँगूठी; मुखचेष्टा; शरीरपर छपवाये हुए विष्णुके आयुधों–शंख, चक्र आदिके चिह्न; देवपूजनमें हाथकी उँगलियोंका विशेष विन्यास (तंत्र); हठयोगके आसन; परवाना-राहदारी; सीसेके ढले हुए अक्षर जो छापनेके काम आते हैं (टाइप); काँच या स्फटिकका बना कुंडल जो गोरखपंथी कानमें पहनते हैं; एक अलंकार जहाँ प्रस्तुत अर्थके सिवा अन्य अर्थ भी इंगित हो । **–कार**–पु० मुहर बनानेवाला । **–बाहुल्य,–विस्तार**–पु० (इनफ्लेशन) दे० 'मुद्रास्फीति' । **–यंत्र**–पु० छापनेकी कल, प्रेस (आ०) । **–रक्षक**–पु० वह अधिकारी जिसके पास राजकीय मुहर रहे । **–लिपि**–स्त्री० छाप । **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० मुद्रातत्त्व; पुराने सिक्कोंके आधारपर इतिहासका विवेचन करनेवाला शास्त्र (न्यूमिसमैटिक्स) । **–विस्फीति**–स्त्री० (डीफ्लेशन) मुद्राके प्रचलनमें हुई असाधारण वृद्धिको घटाना या सामान्य स्थितिमें लाना, मुद्राके अत्यधिक विस्तारमें कमी करना, मुद्रासंकोच । **–संकोच**–पु० (डीफ्लेशन) दे० 'मुद्राविस्फीति' । **–स्फीति**–स्त्री० (इनफ्लेशन) किसी राज्यमें कागजी मुद्राका चलन असाधारण रूपसे बढ़ जाना, जिससे वस्तुओंके दाम बहुत चढ़ जाते हैं, मुद्राबाहुल्य, मुद्राविस्तार । **–स्फीति-रोधक**–वि० (ऐंटी इनफ्लेशनरी) मुद्रास्फीति रोकनेवाला (उपाय इ०) ।

मुद्राध्यक्ष-पु० [सं०] अन्य राज्यमें जानेका परवाना (पासपोर्ट) देनेवाला अधिकारी (हि० का०)।

मुद्रिक*-स्त्री० दे० 'मुद्रिका'।

मुद्रिका-स्त्री० [सं०] मुहर; नाम खुदी हुई अँगूठी; अँगूठी।

मुद्रित-वि० [सं०] मुहर किया हुआ; छापा हुआ; मुँदा हुआ, बंद; बिनखिला।

मुधा-अ० [सं०] व्यर्थ, बेफायदा। * पु० झूठ।

मुनक्का-पु० [अ०] सुखाया हुआ अंगूर, द्राक्षा।

मुनहसर-वि० दे० 'मुनहसिर'।

मुनहसिर-वि० [अ०] धरा हुआ; अवलंबित; आश्रित।

मुनादी-पु० [अ०] पुकारनेवाला; ढिँढोरा पीटनेवाला। स्त्री० ढिँढोरा, ढोल पीटकर किसी बातकी घोषणा करना।

मुनाफ़ा-पु० [अ०] नफा, लाभ (शुद्ध 'मनाफ़ा')।

मुनार, मुनारा-पु० दे० 'मनार'-'मुल्ला मुनारे क्या चढहि साईं न बहरा होइ'-कबीर।

मुनासिब-स्त्री० [अ०] वाजिब, ठीक, उचित।

मुनि-वि० [सं०] मननशील। पु० मौनव्रती, वाक्संयमी, ऋषि; तपस्वी; जिन; बुद्ध; सातकी संख्या। **-कुमार**-पु० अल्पवयस्क मुनि। **-भक्त, -भोजन**-पु० तिन्नीका चावल।

मुनियाँ-स्त्री० लाल पक्षीकी मादा।

मुनींद्र-पु० [सं०] मुनिश्रेष्ठ; बुद्धदेव।

मुनी*-पु० दे० 'मुनि'।

मुनीम-पु० हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी।

मुनीमी-स्त्री० हिसाब-किताब रखनेका काम।

मुनीश, मुनीश्वर-पु० [सं०] मुनिश्रेष्ठ; बुद्धदेव; विष्णु।

मुन्ना, मुन्नूँ-पु० छोटे बच्चोंका प्यारका संबोधन।

मुन्यन्न-पु० [सं०] तिन्नीका चावल।

मुफ़लिस-वि० [अ०] गरीब, कंगाल, निर्धन।

मुफ़लिसी-स्त्री० [अ०] गरीबी, निर्धनता।

मुफ़सिद-पु० [अ०] फसाद करनेवाला; झगड़ालू; झगड़ा लगानेवाला।

मुफ़स्सल-वि० [अ०] तफसीलवार, विस्तृत। अ० खोलकर, ब्योरेवार। पु० केंद्रस्थ नगरके इर्द-गिर्दके स्थान।

मुफ़ीद-वि० [अ०] फायदा करने, देनेवाला, लाभकारी।

मुफ़्त-वि० [अ०] बिना दामका, सेंतमें मिला हुआ। अ० बिनदामों। **-खोर**-वि० बिना मेहनत किये, दूसरेकी कमाई खानेवाला। **-खोरा**-वि० दे० 'मुफ़्तखोर'। **-का**-बिना दिये प्राप्त, सेंतका; व्यर्थका; बेफायदा। **-में**-बिनदामों; व्यर्थ, बेकार।

मुफ़्ती-पु० [अ०] फतवा देनेवाला; इसलामी कानूनके अनुसार दंडाज्ञा करनेवाला, शरहे हाकिम।

मुबलग़, मुबलिग़-वि० [अ०] कुल; थोड़ासा; परखा हुआ। पु० मात्रा; रकम, रुपयेकी संख्या (मुबलिग पाँच रुपये)।

मुबारक-वि० [अ०] जिसमें बरकत दी गयी हो; बरकतका हेतु; सौभाग्यशाली; शुभ; भला। स्त्री० खुशखबरी। **-बाद**-स्त्री० बधाई, शुभकामना; मुबारक हो, खुदा बरकत दे, बधाई। **-बादी**-स्त्री० दे० 'मुबारकबाद'; बधाईके गीत।

मुबारकी-स्त्री० [अ०] मुबारकबादी, बधाई।

मुबाहसा-पु० [अ०] बहस, वाद; वाद-विवाद करना।

मुब्तला-वि० [अ०] पकड़ा हुआ; फँसा हुआ, लगा हुआ। **-ए-बला**-वि० मुसीबतमें फँसा हुआ, विपद्ग्रस्त।

मुमकिन-वि० [अ०] जो हो सके, होनेवाला, संभाव्य।

मुमानिअत, मुमानियत-स्त्री० [अ०] रोक, निषेध, मनाही।

मुमुक्षा-स्त्री० [सं०] मोक्षकी कामना।

मुमुक्षु-वि० [सं०] मोक्षका अभिलाषी।

मुमूर्षा-स्त्री० [सं०] मरनेकी इच्छा।

मुमूर्षु-वि० [सं०] जो मर रहा हो, आसन्न-मरण; मरणका इच्छुक।

मुयस्सर-वि० [अ०] आसानीसे मिलनेवाला; उपलब्ध; प्रस्तुत।

मुरंडा, मुरंदा†-पु० भूने गेहूँका लड्डू; लड्डू (प०)।

मुर-पु० [सं०] एक दैत्य जो विष्णुके हाथों मारा गया; वेठन। **-जित्, -दर, -रिपु**-पु० मुरारि, कृष्ण। **-हा (हन्), -हारी (रिन्)**-पु० विष्णु; कृष्ण।

मुरई†-स्त्री० दे० 'मूली'।

मुरक-स्त्री० मुरकनेकी क्रिया या भाव।

मुरकना-अ० क्रि० मुड़ना; मोच खाना; लौटना; * हिचकना; नष्ट होना।

मुरकाना-स० क्रि० मुरकनेका कारण होना; मोड़ना; फेरना; नष्ट करना।

मुरकी-स्त्री० कानमें पहननेकी छोटीसी बाली।

मुरखाई*-स्त्री० मूर्खता।

मुरगा-पु० एक पालतू पक्षी जिसके नरके सिरपर कलगी होती है, नर मुरगी, मुर्ग। **मु०-बनाना**-किसीको उकड़ूँ बैठाकर और घुटनोंके बीचसे दोनों हाथ निकलवाकर कान पकड़वाना, यंत्रणादंडका एक प्रकार।

मुरगाबी-स्त्री० [फ़ा०] मुर्गाबी, एक जलपक्षी जो कदमें मुरगीके बराबर होता है, जलकुक्कुट।

मुरगी-स्त्री० मादा मुरगा, कुक्कुटी। **-का**-मुरगीका जना (गाली)। **-का गू**-निकम्मी चीज। **-वाला**-पु० मुरगियाँ बेचनेवाला। वि० मुरगीका जना। **मु०-बिठाना**-मुरगीको अंडेपर बिठाना।

मुरचंग-पु० दे० 'मुँहचंग'।

मुरचा-पु० दे० 'मोरचा'।

मुरछना*-अ० क्रि० मूर्च्छित होना।

मुरछल-पु० दे० 'मोरछल'।

मुरछा-स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'। **-वंत**-वि० 'मूर्च्छित'।

मुरछाना*-अ० क्रि० मूर्च्छित होना।

मुरछित-वि० दे० 'मूर्च्छित'।

मुरज-पु० [सं०] पखावज, मृदंग।

मुरझना-अ० क्रि० कुम्हलाना।

मुरझाना-अ० क्रि० फूल-पत्तोंका सूखने लगना, कुम्हलाना; चेहरेसे शुष्कता, उदासी आदि प्रकट होना।

मुरदा-वि० [फ़ा०] मरा हुआ, मृत; मृतवत्; बेजान, अति दुर्बल; सूखा, मुरझाया हुआ; मारा हुआ (धातु), कुश्ता। पु० मृतक, शव, लाश। **-खोर**-वि० मुरदा खानेवाला। **-दिल**-वि० जिसकी तबीयत मरी हुई हो, निरुत्साह। **-दिली**-स्त्री० मुरदादिल होना। **-संख**-पु० दे०

'मुरदासंग'। **–संग**–पु० सीसा और सेंदुरका मिश्रण जो दवाके काम आता है।**–सन***–पु० दे० 'मुरदासंग'। **मु०–उठना**–जनाजा उठना; मरना (शाप–उसका मुरदा उठे)। **–उठाना**–मुरदेको दाह या दफन करनेके लिए ले जाना। **(किसीका)–निकले**–मर जाय, जनाजा उठे (शाप)।**–(दे)की कब्र (गोर) पहचानना**–दूसरेकी चालाकी, छल-छद्मको अच्छी तरह समझना; अति चतुर होना। **–की नींद सोना**–बेखबर होकर सोना, खुर्राटे भरना।

मुरदार–वि० [फा०] मरा हुआ; बेजान; अपवित्र, नापाक। पु० लाश; अपनी मौत मरा हुआ जानवर। **–खोर**–पु० मरे हुए जानवरका मांस खानेवाला। **–माल**–पु० हराम माल।

मुरधर*–पु० मरुस्थल, मारवाड़।

मुरना*–अ० क्रि० दे० 'मुड़ना'।

मुरब्बा–पु० [अ०] फलोंका पाक जो उन्हें उबालकर और चाशनीमें डालकर तैयार किया जाय। **–फरोश**–पु० मुरब्बे बेचनेवाला।

मुरब्बा(ब्बअ)–पु० [अ०] चतुष्कोण क्षेत्र जिसके चारों भुज बराबर और कोण समकोण हों। वि० वर्ग, वर्गीकृत।

मुरमुरा–पु० भुने मक्केकी ठुर्री; भुने हुए चावल, लाई आदि। **–(रॉँ) का थैला**–मोटा-ताजा आदमी।

मुररिया*–स्त्री० मुर्री, ऐंठन।

मुरला–स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी; मुरली।

मुरलिका–स्त्री० [सं०] मुरली।

मुरलिया*–स्त्री० मुरली।

मुरली–स्त्री० [सं०] वंशी, बाँसुरी। **–धर**–पु० मुरली धारण करनेवाले, कृष्ण। **–मनोहर**–पु० कृष्ण।

मुरवा†–पु० पैरका गट्टा; मोर।

मुरवी*–स्त्री० धनुषकी डोरी।

मुरशिद–पु० [अ०] सीधी राह (सन्मार्ग) दिखानेवाला; गुरु, पीर।

मुरहाँ†–पु० सिर।

मुरहा–वि० मूल नक्षत्रमें जनमा हुआ (बालक); नटखट; शैतान। पु० दे० 'मुर' में।

मुराड़ा*–पु० लुआठी–'हम घर जाल्या आपना लिया मुराड़ा हाथ'–कबीर।

मुराद–स्त्री० [अ०] मतलब, अभीष्ट; कामना, मनोरथ। **मु०–पाना,–बर आना**–कामना पूरी होना, मनोरथ सिद्ध होना। **–(दों)के दिन**–युवावस्था।

मुरादी–वि० [अ०] मुराद रखनेवाला, जिसकी कोई कामना हो।

मुराना–स० क्रि० चुभलाना; चबाना; दे० 'मोड़ना'।

मुराफ़ा–पु० [अ०] ऊँची अदालतमें पुनर्विचारकी प्रार्थना, अपील।

मुरार–पु० कमलकी जड़ जिसकी तरकारी बनती है, भसींड; दे० 'मुरारि'।

मुरारि–पु० [सं०] (मुर दैत्यको मारनेवाले) कृष्ण; विष्णु।

मुरायठा†–पु० मुरेठा, पगड़ी (ग्राम०)।

मुरासा*–पु० तरकी, कर्णफूल–'लसै मुरासा तिय स्रवन यौं मुकुतन दुति पाइ'–बि०; दे० 'मुँडासा'।

मुरीद–पु० [अ०] चेला, शिष्य; अनुगमन करनेवाला।

मुरीदी–स्त्री० [अ०] शिष्यत्व, शागिर्दी।

मुरु*–पु० दे० 'मुर'। **–सुत**–पु० वत्सासुर।

मुरुआ*–पु० पैरका गट्टा।

मुरुख*–वि० दे० 'मूर्ख'।

मुरुखाई*–स्त्री० मूर्खता।

मुरुझना*–अ० क्रि० दे० 'मुरझाना'।

मुरेठा–पु० साफा।

मुरेर–स्त्री० दे० 'मरोड़'।

मुरेरना*–स० क्रि० दे० 'मरोड़ना'।

मुरेरा–पु० दे० 'मुँडेर'; दे० 'मरोड़'।

मुरौवत–स्त्री० [अ०] उदारता; सौजन्य; दूसरोंका लिहाज; मुलाहजा।

मुरौवती–वि० मुरौवतवाला।

मुर्ग़–पु० [अ०] चिड़िया; मुरगा। **–बाज़**–पु० मुरगे लड़ानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० मुरगे लड़ाना।

मुर्ग़ाबी–स्त्री० [फा०] एक जल-पक्षी जो मुरगीके बराबर होता है, जलकुक्कुट।

मुर्दनी–स्त्री० [फा०] मृत्युके चिह्न जो चेहरेसे प्रकट हों; भारी भय या गहरी चिंताकी छाया (–छाना)।

मुर्दा–वि०, पु० [फा०] दे० 'मुरदा'।

मुर्रा–पु० मरोड़फली; मरोड़; फरवी। स्त्री० भैंसोंकी एक जाति जो अधिक दुधार होती है।

मुर्री–स्त्री० ऐंठन; धागों आदिके दो सिरोंको जोड़नेके लिए बट देना; धोतीको लपेटकर कमरपर डाला हुआ बल; कपड़ेकी धज्जी आदिको बटकर बनायी हुई बत्ती। **–दार**–वि० गाँठदार; ऐंठनदार।

मुर्वी–स्त्री० [सं०] धनुषकी डोरी।

मुलक–पु० दे० 'मुल्क'।

मुलकना*–अ० क्रि० पुलकित होना; मंद-मंद हँसना, मुस्कराना।

मुलकित*–वि० जो मंद-मंद हँस रहा हो।

मुलज़म, मुलज़िम–वि० [अ०] जिसपर कोई इलजाम, दोष लगाया गया हो। पु० वह व्यक्ति जिसपर किसी जुर्मका इलजाम लगाया जाय, अभियुक्त।

मुलतवी–वि० [अ०] दे० 'मुल्तवी'।

मुलतानी–वि० मुलतानका। पु० मुलतानका रहनेवाला। स्त्री० एक रागिनी। **–मिट्टी**–स्त्री० एक तरहकी चिकनी मिट्टी जो सिर मलने, रँगाईमें अस्तर देने आदिके काम आती है।

मुलना*–पु० दे० 'मुल्लाना'।

मुलमची–पु० मुलम्मा करनेवाला।

मुलम्मा–वि० [अ०] चमकाया हुआ; चाँदी या सोनेका पानी चढ़ाया हुआ। पु० चाँदी, सोनेका पानी जो दूसरी धातुपर चढ़ाया जाय; गिलट; कलई; मुलम्मेका काम; दिखावा, टीमटाम। **–गर,–साज़**–पु० मुलम्मा करनेवाला।

मुलहठी–स्त्री० दे० 'मुलेठी'।

मुलहा*–वि० 'मुरहा', शैतान; मूल नक्षत्रमें उत्पन्न।

मुलाँ*-पु० मुल्ला।

मुलाक़ात-स्त्री० [अ०] एक दूसरेसे मिलना, भेंट; मिलना-जुलना, हेल-मेल; जान-पहचान; साहब-सलामत।

मुलाक़ाती-पु० [अ०] मिलनेवाला, मित्र; परिचित।

मुलाज़मत-स्त्री० [अ०] नौकरी, सेवा। **-पेशा**-पु० नौकरीसे जीविका करनेवाला।

मुलाज़िम-पु० [अ०] नौकर, सेवक; कर्मचारी।

मुलायम-वि० [अ०] नरम, कोमल, सुकुमार; अनुकूल।

मुलायमत-स्त्री० [अ०] मुलायमपन, नरमी, कोमलता।

मुलायमी-स्त्री० मुलायमत।

मुलाहजा-पु० [अ०] देखना, निरखना; लिहाज, मुरौवत।

मुलुक-पु० दे० 'मुल्क़'।

मुलेठी-स्त्री० गुंजा लताकी जड़ जो दवाके काम आती है, यष्टिमधु, जेठीमधु।

मुल्क़-पु० [अ०] देश; राज्य; प्रदेश। **-गीरी**-स्त्री० दूसरे देशोंको जीतना और उनपर शासन करना, राज्य-विस्तार। **-दारी**-स्त्री० शासन।

मुल्क़ी-वि० [अ०] मुल्कका, देशी; शासन-प्रबंध-संबंधी, असैनिक। **-लाट**-पु० गवर्नर-जेनरल।

मुल्तवी-वि० [अ०] देर करनेवाला, आगेके लिए टालनेवाला; रोका या आगेके लिए टाला हुआ, स्थगित।

मुल्लह-पु० दे० 'कुट्टा'।

मुल्ला-पु० [अ०] मौलवी; मसजिदमें रहने या नमाज पढ़ानेवाला; मसजिद या मकतबमें बच्चोंको पढ़ानेवाला।

मुल्लाना-पु० मुल्ला (तिर०); मसजिदकी रोटियाँ खानेवाला; कट्टर मुसलमान (मौलानाका हिंदुस्तानी रूप)।

मुल्लानी-स्त्री० मुल्लाकी पत्नी।

मुवक्कल-पु० [अ०] वह जिसे कोई काम सौंपा गया हो; रखवाला; कार्यविशेषपर नियुक्त फरिश्ता।

मुवक्किल-पु० [अ०] वकील करनेवाला; काम सौंपनेवाला।

मुवज़्ज़िन-पु० [अ०] दे० 'मुअज़्ज़िन'।

मुवना*-अ० क्रि० मरना।

मुवाफ़िक़-वि० [अ०] अनुकूल, अनुसार; तुल्य, सदृश, मिलता-जुलता; योग्य, उचित।

मुशज्जर-वि० [अ०] बूटेदार, बेल-बूटेवाला। पु० बूटेदार कपड़ा।

मुशल-पु० [सं०] धान इत्यादि कूटनेका मोटा डंडा, मूसल।

मुशली(लिन्)-पु० [सं०] मुशलधारी बलराम।

मुशाइरा-पु० [अ०] शायरोंका इकट्ठा होकर शेर पढ़ना, कवितापाठकी मजलिस।

मुशाहरा-पु० [अ०] मासिक वेतन, वजीफा।

मुश्क-पु० [फ़ा०] कस्तूरी। स्त्री० कंधे और कोहनीके बीचका हिस्सा; बाँह। **-बिलाव**-पु० गंधबिलाव।

मुश्किल-वि० [अ०] कठिन, कष्टसाध्य; क्लिष्ट, कठिनाईसे समझमें आनेवाला; स्त्री० कठिनाई; कष्ट। **-पसंद**-पु० रचनामें क्लिष्ट शब्दावली रखनेवाला, क्लिष्टताप्रिय। **मु०-आसान होना**-कठिनाई दूर होना, संकट कटना।

मुश्कीं-वि० [फ़ा०] कस्तूरीके रंगका, स्याह; कस्तूरीकी गंधवाला; जिसमें कस्तूरी मिली हो।

मुश्की-वि० [फ़ा०] कस्तूरीके रंगका, स्याह। पु० स्याह रंगका घोड़ा।

मुश्त-पु० [फ़ा०] मुट्ठी; घूँसा, मुक्का। वि० मुट्ठीभर; थोड़ासा। **एकमुश्त**-एक साथ या एक ही बारमें दिया जानेवाला (धन)।

मुश्तरका-वि० [अ०] जिसमें कोई शरीक हो, साझेका, संयुक्त। **-ख़ानदान**-पु० संयुक्त परिवार। **-जायदाद**-स्त्री० संयुक्त संपत्ति, साझेकी चीज।

मुश्ताक़-वि० [अ०] इच्छुक, आकांक्षी, शौक रखनेवाला।

मुषल-पु० [सं०] मूसल।

मुषली(लिन्)-पु० [सं०] बलराम (मूसल जिनका एक अस्त्र है)।

मुषित-वि० [सं०] चुराया हुआ; वंचित।

मुषुर*-स्त्री० गुंजार।

मुष्टि-* वि० मष्ट, मौन-'मिलै असंत मुष्टि करि रहिये'-कबीर। स्त्री० [सं०] मुट्ठी; मुट्ठीभरकी मात्रा; घूँसा; मूँठ। **-द्यूत**-पु० एक तरहका जुआ जिसमें मुट्ठीके भीतरकी चीजका नाम, उसकी संख्या सम (जुफ्त) है या विषम (ताक) आदि पूछा जाता है। **-द्वंद्व**-पु० (बॉक्सिंग) वह आपसका द्वंद्व जिसमें गद्दीदार (गुलगुले) दस्तानोंसे एक दूसरेपर मुक्कोंका प्रहार किया जाय। **-बंध**-पु० मुट्ठी बाँधना। **-भिक्षा**-स्त्री० मुट्ठीभर चावलकी भिक्षा। **-मेय**-वि० मुट्ठीसे नापने योग्य; मुट्ठीभर; थोड़ा। **-युद्ध**-पु० घूँसेबाजी (बाक्सिंग)।

मुष्टामुष्टि-स्त्री० [सं०] घूँसोंकी लड़ाई, घूँसेबाजी।

मुष्टिक-पु० [सं०] कंसके दरबारका एक पहलवान जो बलरामके हाथों मारा गया; घूँसा; सुनार।

मुष्टिकांतक-पु० [सं०] बलराम।

मुष्टिका-स्त्री० [सं०] मुट्ठी; घूँसा।

मुसकनि, मुसकनिया*-स्त्री० दे० 'मुसकान'।

मुसकराना-अ० क्रि० इस तरह हँसना कि न शब्द हो, न दाँत दिखलाई दें, होंठोंमें हँसना, मंद-मंद हँसना।

मुसकराहट-स्त्री० मुसकरानेकी क्रिया, मंद हास।

मुसकान, मुसकानि*-स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुसकाना-अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकिराना, मुसकुराना-अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकिराहट, मुसकुराहट-स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुसक्यान*-स्त्री० दे० 'मुसकान'।

मुसक्याना*-अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसजर*-पु० दे० 'मुशज्जर'।

मुसटी-स्त्री० चुहिया।

मुसना*-अ० क्रि० छीना या चुराया जाना। स० क्रि० दे० 'मूसना'।

मुसन्ना-पु० [अ०] असल(लेख)की ठीक नकल, दूसरी प्रति; रसीदका अद्धा जो देनेवालेके पास रह जाता है।

मुसब्बर-पु० घीकुआरका जमाकर सुखाया हुआ रस जो दवाके काम आता है।

मुससुंद, मुससुंध*-वि० ध्वस्त, ढहा हुआ।

मुसम्मात-वि० स्त्री० [अ०] नामवाली, नामधेया। स्त्री० स्त्री (बो०)।

मुसल–पु० [सं०] मूसल । **–धार**–अ० दे० 'मुसलाधार' ।

मुसलमान–पु० [अ०] इसलाम मजहबको माननेवाला ।

मुसलमानी–वि० [अ०] मुसलमान-संबंधी । स्त्री० मुसलमान होना, मुसलमान बच्चेकी लिंगेंद्रियके अग्रभागकी त्वचाका काटा जाना, खतना ;मुसलम.न स्त्री ।

मुसलाधार–अ० मोटी धारसे, बड़ी-बड़ी बूँदोंसे (मेंह बरसना) । **मु०–मेँह बरसना**–देरतक जोरोंकी वर्षा होना ।

मुसलायुध–पु० [सं०] बलराम ।

मुसलिम–पु० [अ०] मुसलमान । **–लीग**–स्त्री० हिंदुस्तानके संप्रदायवादी मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था (१९०६ में स्थापित) ।

मुसली–स्त्री० [सं०] एक वनस्पति जिसकी जड़ दवाके काम आती है ।

मुसली(लिन्)–पु० [सं०] मूसल धारण करनेवाले, बलराम ।

मुसल्लम, मुसल्लमा–वि० [अ०] तसलीम किया हुआ, माना हुआ; अखंडित, पूरा; निर्विवाद ।

मुसल्ला–पु० [अ०] वह दरी या बोरिया जिसपर नमाज पढ़ी जाय, जानमाज; नमाज पढ़नेकी जगह, ईदगाह; * मुसलमान ।

मुसव्विर–पु० [अ०] तसवीर बनानेवाला, चित्रकार; बेलबूटे बनानेवाला ।

मुसव्विरी–स्त्री० [अ०] मुसव्विरका काम या पेशा; नक्काशी, चित्रकारी ।

मुसहर–पु० एक जंगली (आदिवासी) जाति जो दोने, पत्तलें बनाने आदिका काम करती है ।

मुसाफ़िर–पु० [अ०] सफर करनेवाला, यात्री; परदेशी । **–ख़ाना**–पु० मुसाफिरोंके ठहरनेकी जगह, सराय; रेलवे स्टेशनपर (तीसरे दरजेके) मुसाफिरोंके ठहरनेके लिए बना हुआ सायबान । **–गाड़ी**–स्त्री० यात्रियोंको ले जानेवाली रेलवे ट्रेन, पैसेंजर ट्रेन ।

मुसाफ़िरत, मुसाफ़िरी–स्त्री० [अ०] सफर, प्रवास; परदेश ।

मुसाहबत–स्त्री० [अ०] साथ उठना-बैठना, मुसाहिबी ।

मुसाहिब–पु० [अ०] साथ उठने-बैठनेवाला, साथी, सुहबती; राजा-नवाबोंके वे दरबारी जिनका खास काम बातचीतसे उनका दिल बहलाना होता है ।

मुसाहिबी–स्त्री० [अ०] मुसाहिबका पद या काम ।

मुसीबत–स्त्री० [अ०] कष्ट, दुःख; संकट; विपद्, आफत । **–ज़दा**–वि० विपद्ग्रस्त, दुखिया । **–का मारा**–विपद्ग्रस्त, अभागा । **–के दिन**–दुर्दिन, कष्टकाल ।

मुसुकाना*–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना' ।

मुसुकाहट–स्त्री० दे० 'मुसकराहट' ।

मुसौवर–पु० दे० 'मुसव्विर' ।

मुस्कराना–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना' ।

मुस्कराहट–स्त्री० दे० 'मुसकराहट' ।

मुस्क्यान*–स्त्री० दे० 'मुसकान' ।

मुस्टंडा–वि० मोटा-ताजा, तगड़ा; बदमाश ।

मुस्त, मुस्तक–पु० [सं०] नागरमोथा ।

मुस्तकबिल–वि० [अ०] भावी । पु० भविष्यत्काल ।

मुस्तक़िल–वि० [अ०] स्थिर, स्थायी; पक्का, दृढ़; पदविशेषपर स्थायी रूपसे नियुक्त । **–जगह**–स्त्री० स्थायी पद । **–मिज़ाज**–वि० स्थिरचित्त ।

मुस्तग़ीस–पु० [अ०] इस्तगासा दायर करनेवाला, फरियादी, अभियोक्ता ।

मुस्तनद–वि० [अ०] सनद मानने लायक, प्रामाणिक, टकसाली, विश्वसनीय ।

मुस्तसना–वि० [अ०] अलग किया हुआ, अपवादभूत ।

मुस्तैद–वि० [अ० 'मुस्तइद'] तैयार, आमादा; तत्पर; चुस्त, तेजीसे काम करनेवाला ।

मुस्तैदी–स्त्री० [अ०] तैयारी; तत्परता; चुस्ती, तेजी ।

मुहकम–वि० [अ०] पक्का, मजबूत, टिकाऊ ।

मुहक़मा–पु० [अ०] दे० 'महकमा' ।

मुहतमिम–पु० [अ०] इहतिमाम करनेवाला, प्रबंधक ।

मुहताज–वि० [अ०] जिसे किसी चीजका अभाव और आवश्यकता हो, हाजतमंद; चाह रखनेवाला; गरीब; किसी बातके लिए दूसरेपर आश्रित (ईश्वर किसीका मुहताज न करे); विवश । **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ गरीबोंको भोजन आदि दिया जाय ।

मुहताजी–स्त्री० [अ०] मुहताज होना ।

मुहब्बत–स्त्री० [अ०] चाह, प्रीति; प्रेम, इश्क; स्नेह, मित्रता ।

मुहब्बती–वि० [अ०] प्रेमी, स्नेहशील ।

मुहम्मद–वि० [अ०] बहुत सराहा हुआ, अति प्रशंसित । पु० इसलाम धर्मके प्रवर्तक जिन्हें मुसलमान ईश्वरका दूत और संदेशवाहक (रसूल, पैगंबर) मानते हैं । **–गोरी**–पु० शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी जिसने सन् ११९३ में महाराज पृथ्वीराजको पराजित किया ।

मुहम्मदी–वि० [अ०] मुहम्मदसे संबद्ध; मुहम्मदका । पु० मुहम्मदका अनुयायी, मुसलमान ।

मुहय्या–वि० [अ०] दे० 'मुहैया' ।

मुहर–स्त्री० किसी चीजपर खुदा हुआ नाम, पद या प्रतीक जिसे हस्ताक्षरके बदले या उसकी प्रामाणिकताके लिए छाप सकें, मुद्रा; इस प्रकार छापा हुआ नाम आदि, छाप; अँगूठी; अशर्फी । **–बरदार**–पु० (राजा या शासककी) मुहर रखनेवाला अधिकारी । **–शाही**–स्त्री० बादशाहकी मुहर, राजकीय मुद्रा । **मु०–करना**–मुहर लगाना । **–लगना**–(आज्ञा आदिका) पक्का हो जाना; प्रामाणिकताकी छाप लग जाना । **–लगाना**–पक्का कर देना; प्रामाणिकताकी सनद दे देना ।

मुहरा–पु० सामना, आगा; बरतन आदिका मुँह; मार, निशाना; घोड़ेके मुँहपर पहनानेका एक साज; सेनाका अग्रभाग । **मु०–लेना**–मुकाबला करना । **–(रे)पर खड़ा करना**–तोप आदिकी मारके सामने खड़ा करना ।

मुहरा–पु० [फा०] कौड़ी, सीप, शंख; शीशे या मूँगेका दाना, मनका; शतरंज या चौसरकी गोट; कागज आदि घोंटनेका आला, घोंटना । **–बाज़ी**–स्त्री० ऐयारी, बाजीगरी ।

मुहरी–स्त्री० दे० 'मोहरी', 'मोरी' ।

मुहर्रम–वि० [अ०] हराम ठहराया हुआ, निषिद्ध । पु० मुसलमानी सालका पहला महीना जिसकी दसवीं तारीख-

को इमामहुसैन शहीद हुए; शोककाल। **मु०–की पैदाइश**–सदा खिन्न, उदास रहने, रोनी शकल बनाये रखनेवाला।

मुहर्रमी–वि० [अ०] मुहर्रमका; रोनी सूरतवाला; शोकव्यंजक।

मुहर्रिर–पु० [अ०] लिखनेवाला, लेखक, मुंशी।

मुहर्रिरी–स्त्री० [अ०] मुहर्रिरका काम या पेशा।

मुहलत–स्त्री० [अ०] अवकाश, फुरसत; कार्य-विशेषके लिए मिलनेवाला समय।

मुहल्ला–पु० दे० 'महल्ला'।

मुहसिन–पु० [अ०] भलाई करनेवाला, हितैषी (सेवा०)।

मुहसिल*–पु० दे० 'मुहस्सिल'; प्यादा।

मुहस्सिल–पु० [अ०] महसूल वसूल करनेवाला, तहसीलदार; तहसीलका सिपाही।

मुहाफ़िज़–पु० [अ०] हिफाजत करनेवाला, रक्षक। **–ख़ाना**–पु० कचहरीके अंतर्गत वह स्थान जहाँ निर्णीत मामलोंकी मिसलें रखी जाती हैं। **–दफ़्तर**–पु० मुहाफिज खानेका निरीक्षक (रेकर्डकीपर)।

मुहार–स्त्री० [अ०] ऊँटकी नकेल।

मुहाल–वि० [अ०] कठिन; नामुमकिन, अनहोनी। पु० दे० 'महाल'।

मुहावरत–स्त्री० [अ०] परस्पर बातचीत करना।

मुहावरा–पु० [अ०] बोलचाल, बातचीत; लाक्षणिक या क्वचित् व्यंग्यार्थमें रूढ़ वाक्य या प्रयोग; अभ्यास।

मुहासबा–पु० [अ०] हिसाब; हिसाबकी जाँच, हिसाबके बारेमें पूछताछ। **मु०–तलब करना**–हिसाब माँगना।

मुहासरा–पु०[अ०] चारों ओरसे घेर लेना, घेरा(करना)।

मुहासिब–पु० [अ०] हिसाब जानने, करने, लेने या जाँचनेवाला।

मुहासिल–पु० [अ०] मालगुजारी, राजस्व; पैदावार; आय; नफा (महसूलका बहु०)।

मुहिं*–सर्व० दे० 'मोहिं'।

मुहिब्ब–पु० [अ०] मुहब्बत करनेवाला, प्रेमी; मित्र। **–(ब्बे)वतन**–पु० देशभक्त, स्वदेश-प्रेमी।

मुहिम–स्त्री० [अ०] कठिन या भारी काम; युद्ध, चढ़ाई। **मु०–सर करना**–लड़ाई जीतना; कठिन काम करना।

मुहीम*–स्त्री० दे० 'मुहिम'।

मुहुः(हुस्)–अ० [सं०] बार-बार, पुनः-पुनः।

मुहूर्त–पु० [सं०] १२ क्षणका समय; २ दंड या ४८ मिनटका समय; विवाह, यात्रा आदिके लिए फलित ज्योतिषके अनुसार शुभाशुभ काल।

मुहैया–वि० [अ०] तैयार, प्रस्तुत; आमादा; मौजूद।

मुह्यमान–वि० [सं०] मूर्च्छित होता हुआ; मोहयुक्त।

मूँग–स्त्री० दालके काम आनेवाला एक द्विदल अनाज। **मु०–की दाल खानेवाला**–बेदम; डरपोक।

मूँगफली–स्त्री० एक क्षुप जिसके फल खाने और तेल निकालनेके काम आते हैं, चीनियाबदाम।

मूँगरी–स्त्री० एक तरहकी तोप।

मूँगा–पु० चूनेके तत्त्वसे निर्मित कई रंगोंवाला एक कठोर पदार्थ जो समुद्रमें रहनेवाले एक तरहके कीड़ोंका घर होता है और जो रत्न माना जाता तथा दवाके भी काम आता है, प्रवाल; रेशमका एक भेद।

मूँगिया–वि० मूँगके रंगका, हरा। पु० हरे रंगका भेद।

मूँछ–स्त्री० ऊपरके होंठपर उगे हुए बाल जो पुरुषका चिह्न हैं; कुत्ते, बिल्ली, शेरके नथनोंके अगल-बगल उगनेवाले लंबे विरल बाल। **मु०–का बाल**–जिसका किसीके यहाँ बहुत मान-जान, प्रभाव हो। **–नीची होना**–लज्जित होना, बेइज्जत होना। **–(छँ) उखड़वाना**–मूँछोंके बाल चुनवा लेना; जलील करना, गर्व चूर करना। **–उखाड़ना**–गर्व नष्ट करना, कड़ी सजा देना। **–मरोड़ना**–दे० 'मूँछोंपर ताव देना'। **–मुँड़वाना**–हार मान लेना, पुरुषत्वका दावा त्याग देना (यह बात हुई तो मूँछें मुँड़वा दूँगा)। **–(छों)पर ताव देना**–मूँछोंके सिरोंके बालोंको मरोड़ना, अपनी बड़ाई करना।

मूँज–स्त्री० एक तृण जिसके छिलकेकी बान बटते और उपनयनके समय ब्रह्मचारीको जिसकी मेखला पहनाते हैं।

मूँड़–पु० सिर, कपाल। **–कटा**–पु० गला काटनेवाला; भारी नुकसान पहुँचानेवाला। **मु०–चढ़ाना**–सिर चढ़ाना। **–मुँड़ाना**–संन्यास लेना।

मूँड़न–पु० मुंडन-संस्कार। **–छेदन**–पु० मुंडन और कनछेदन।

मूँड़ना–स० क्रि० सिरके बाल उस्तुरेसे बनाना; हजामत बनाना; चेला मूँड़ना; ठगना।

मूँड़ी–स्त्री० सिर। **–काटा**–वि० सिरकटा, मरने योग्य, वध्य (पुरुषोंके लिए स्त्रियोंकी एक गाली)। **–बंध**–पु० कुश्तीका एक पेंच।

मूँदना–स० क्रि० बंद करना, ढकना; रुद्ध करना।

मूँदर*–स्त्री० मुँदरी, अँगूठी।

मूक–वि०, पु० [सं०] गूँगा। **–बधिर**–वि०, पु० गूँगा-बहरा। **–बधिर-विद्यालय**–पु० गूँगों-बहरोंका विद्यालय।

मूकना*–स० क्रि० त्यागना; बंधनमुक्त करना।

मूका*–पु० मोखा; दे० 'मुक्का'।

मूखना*–स० क्रि० दे० 'मूसना'।

मूचना*–स० क्रि० दे० 'मोचना'।

मूछ–स्त्री० दे० 'मूँछ'।

मूज़ी–वि०, पु० [अ०] ईजा देने, पीड़ा पहुँचानेवाला, जालिम; दुष्ट। **–का चंगुल**–जालिमका पंजा।

मूठ–स्त्री० कब्जा, दस्ता; मुट्ठी; मुट्ठीभर चीज; एक तरहका जुआ जो कौड़ियोंको मुट्ठीमें बंद करके खेला जाता है; एक तरहका मंत्रप्रयोग। **मु०–करना**–बटेरको मुट्ठीमें पकड़कर लड़ाईके लिए तैयार करना। **–मारना**–मंत्र पढ़कर शत्रुकी ओर कोई चीज फेंकना, टोना करना।

मूठना*–अ० क्रि० नष्ट होना।

मूठा–पु० दे० 'मुट्ठा'।

मूठि*–स्त्री० दे० 'मूठ'; दे० 'मुट्ठी'।

मूठी*–स्त्री० दे० 'मुट्ठी'।

मूड़–पु० दे० 'मूँड़'।

मूढ़–वि० [सं०] मुग्ध; हक्का-बक्का, हैरान; मूर्ख, जड़बुद्धि। **–गर्भ**–पु० मृत या बिगड़ा हुआ गर्भ। **–ग्राह**–पु० गलत धारणा; नासमझके मनमें जमी हुई बात, खब्त।

–चेता,–बुद्धि,–मति–वि० मूर्ख, नासमझ।

मूढता–स्त्री० [सं०] मूर्खता, नासमझी।

मूढात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] मूर्ख; भौचक।

मूत–पु० मूत्र, पेशाब।

मूतना–अ० क्रि० पेशाब करना।

मूत्र–पु० [सं०] रक्तसे गुर्दोंके द्वारा स्रवित पीतवर्ण द्रव जो मूत्राशय (मसाना)में जमा रहता है और मूत्रमार्गसे बाहर निकलता है, पेशाब। **–कृच्छ्र**–पु० शक्कर और कष्टके साथ पेशाब आनेका रोग। **–ग्रंथि**–स्त्री० मूत्राघात रोगका एक भेद। **–जठर**–पु० मूत्राघातके कारण उत्पन्न विकार। **–दोष**–पु० पेशाबमें कोई खराबी होना; प्रमेह। **–निरोध,–रोध**–पु० पेशाब रुक जानेकी बीमारी। **–पथ**–पु० मूत्रमार्ग, मूत्रनली। **–परीक्षा**–स्त्री० पेशाबकी जाँच, मूत्रके दोषोंको मालूम करना। **–ल**–वि० अधिक पेशाब लानेवाली (दवा)। **–वृद्धि**–स्त्री० मूत्रका प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होना। **–शुक्र**–पु० मूत्रके साथ वीर्य निकलनेका रोग। **–शूल**–पु० मूत्रनलीमें होनेवाला शूल (यूरिनरी कालिक)।

मूत्राघात–पु० [सं०] पेशाब बंद हो जानेका रोग।

मूत्राशय–पु० [सं०] पेड़ूमें स्थित थैली जिसमें पेशाब इकट्ठा होता है, मसाना।

मूत्रित–वि० [सं०] मूत्रके रूपमें निकला हुआ; जो पेशाब लग जानेके कारण गंदा हो गया हो।

मूर–पु० उत्तर-पश्चिम अफ्रीकामें बसनेवाली एक मुसलमान जाति; * मूल; मूल नक्षत्र; जड़ी; मूल धन।

मूरख*–वि० दे० 'मूर्ख'। **–ताई***–स्त्री० मूर्खता।

मूरछना*–स्त्री० दे० 'मूर्च्छना'। अ० क्रि० मूर्च्छित होना।

मूरछा*–स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'।

मूरत–स्त्री० दे० 'मूर्ति'।

मूरति–स्त्री० दे० 'मूर्ति'। **–वंत**–वि० मूर्तिमान्।

मूरध*–स्त्री० दे० 'मूर्धा'।

मूरि, मूरी*–स्त्री० मूल; जड़ी, बूटी।

मूरुख*–वि० दे० 'मूर्ख'।

मूर्ख–वि० [सं०] मूढ, नासमझ, अज्ञ। **–पंडित**–वि० पढ़ा-लिखा मूर्ख। **–मंडल**–पु०,**–मंडली**–स्त्री० मूर्खोंकी टोली, दल।

मूर्खता–स्त्री०, **मूर्खत्व**–पु० [सं०] मूढता, नासमझी।

मूर्खिनी*–स्त्री० मूर्खा, मूर्ख स्त्री।

मूर्च्छन–पु० [सं०] मूर्च्छित होना या करना; पारेका तीसरा संस्कार; बेहोश करनेका मंत्र; दे० 'मूर्च्छना'।

मूर्च्छना–स्त्री० [सं०] मूर्च्छा; संगीतमें ग्रामका सातवाँ भाग, सातों स्वरोंका क्रमसे आरोहण-अवरोहण।

मूर्च्छा–स्त्री० [सं०] बेहोशी, संज्ञालोप, सम्मोह; मूर्च्छन; वृद्धि; व्याप्ति। **–रोग**–पु० बेहोशीकी बीमारी, हिस्टीरिया रोग।

मूर्च्छित–वि० [सं०] मूर्च्छायुक्त, बेहोश; संस्कार किया हुआ (सोना, लोहा आदि धातु)।

मूर्त–वि० [सं०] मूर्तियुक्त, साकार; ठोस, कठिन।

मूर्ति–स्त्री० [सं०] शरीर; स्वरूप या शकल; प्रतिमा; मूर्तता, ठोसपन। **–कला**–स्त्री० मूर्ति गढ़नेकी कला। **–कार**–पु० मूर्ति बनानेवाला। **–प,–पूजक**–पु० मूर्तिकी पूजा करनेवाला, पुजारी, बुतपरस्त। **–पूजा**–स्त्री० देवप्रतिमाका पूजन। **–भंजक**–पु० मूर्तियोंको तोड़नेवाला, बुतशिकन।

मूर्तिमान्(मत्)–वि० [सं०] मूर्तिविशिष्ट, साकार। पु० शरीर।

मूर्द्ध, मूर्ध(न्)–पु०[सं०] मूर्द्धाका समासमें व्यवहृत रूप। **–खोल**–पु० [हिं०] छतरी, छत्र। **–ज**–वि० सिरसे उत्पन्न होनेवाला। पु० केश। **–वेष्टन**–पु० पगड़ी।

मू(र्द्ध)र्धन्य–वि० [सं०] मूर्धासे उत्पन्न; मूर्धासे उच्चरित; श्रेष्ठ, शीर्षस्थानीय। **–वर्ण**–पु० देवनागरी वर्णमालाके मूर्धासे उच्चरित वर्ण ('ऋ', 'ॠ', टवर्ग और 'ष')।

मूर्द्धा(र्द्धन्), मूर्धा(र्धन्)–स्त्री० [सं०] शिर।

मू(र्द्धा)र्धाभिषिक्त–वि० [सं०] जिसके सिरपर अभिषेक किया गया हो; श्रेष्ठ; सर्वमान्य (मत, नियम)।

मूर्द्धाभिषेक, मूर्धाभिषेक–पु० [सं०] राजाओंके राज्यारोहणके समय सिरपर किया जानेवाला अभिषेक।

मूल–पु० [सं०] जड़; कंद; आदि कारण; उत्पत्तिस्थान; आरंभ; ग्रंथकारकी मूल शब्दावली (टीका, व्याख्यासे भिन्न); मूल धन; हाथ-पाँव आदिका आदि भाग (भुजमूल, पादमूल); वस्तुका निचला भाग, पादप्रदेश (पर्वतमूल); चरण; २७ नक्षत्रोंमेंसे उन्नीसवाँ; गुणित राशिका मूल; निकुंज; सूरन। वि० आद्य, प्रधान। **–कर्म(न्)**–पु० उच्चाटन, वशीकरण आदिका प्रयोग जो मंत्र और जड़ी-बूटियोंकी जड़से किया जाय, टोना। **–कार**–पु० मूल ग्रंथकर्ता। **–कारण**–पु० आदि कारण, प्रधान हेतु। **–ग्रंथ**–पु० मूल ग्रंथकारकी रचना, असल किताब (जिसकी टीका, व्याख्या की गयी हो)। **–च्छेद,–च्छेदन**–जड़से उखाड़ देना, समूल नाश। **–धन**–पु० व्यापार आदिमें लगायी हुई पूँजी। **–धातु**–स्त्री० मज्जा। **–पदार्थ**–पु० भौतिक जगत्का उपादानभूत अयौगिक पदार्थ, तत्त्व। **–पाठ**–पु० (टेक्स्ट] किसी लेखक, विधायक या प्रस्तावकके वे मूल शब्द जिनका प्रयोग उसने स्वयं ही अपने लेख, विधेयक, प्रस्ताव आदिमें किया हो। **–पुरुष**–पु० वंशका आदि पुरुष। **–प्रकृति**–स्त्री० प्रपंचकी कारणरूप शक्ति; सत्त्व, रज, तमकी साम्यावस्था, प्रधान (सांख्य)। **–भूत**–वि० मूल, आधाररूप, जड़का काम देनेवाला, बुनियादी। **–मंत्र**–पु० कुंजी, मूल तत्त्व। **–वित्त**–पु० मूल धन। **–व्याधि**–स्त्री० मुख्य रोग, असल मर्ज। **–व्रती(तिन्)**–पु० केवल जड़ें-कंद, मूल खाकर रहनेवाला। **–स्थान**–पु० आदि स्थान, बाप-दादोंका वासस्थान; परमेश्वर; राजधानी; मुलतान नगर। **–स्रोत(स्)**–पु० झरने, नदी आदिका उद्गम-स्थान; मुख्य धारा।

मूलक–वि० [सं०] (समासके अंतमें) मूलवाला; मूलसे उत्पन्न (पापमूलक, भ्रांतिमूलक); मूल नक्षत्रमें उत्पन्न। पु० मूली।

मूलतः(तस्)–अ०[सं०] मूल रूपमें; आदिमें, प्रथमतः।

मूलिक–वि० [सं०] मूलगत; मौलिक; प्रधान, मुख्य; जो अभी प्रथम बार हुआ हो।

मूलिका-स्त्री० [सं०] जड़; जड़ोंका ढेर; जड़ी।

मूली-स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ और पत्ते शाककी तरह खाये जाते हैं। **मु०-गाजर समझना**-तुच्छ समझना।

मूल्य-पु०[सं०] वस्तुके बदलेमें दिया जानेवाला धन, कीमत, दाम; वेतन, पारिश्रमिक; उपयोगिता। **-तल,-स्तर**-पु० (लेवल ऑफ प्राइसेज़) मूल्योंकी ऊपरी रेखा या सतह। **-नियंत्रण**-पु० (प्राइस कंट्रोल) वस्तुओंके मूल्यमें अनुचित वृद्धि न होने देनेकी दृष्टिसे किया जानेवाला नियंत्रण या प्रतिबंधन। **-निरूपण**-पु० (वैलुएशन) किसी वस्तु, संपत्ति या किसीकी योग्यता आदिका मूल्य निश्चित करना, किसी जानकार द्वारा किसी वस्तु आदिके मूल्यका अनुमान लगाया जाना। **-रहित,-हीन**-वि० जिसका कुछ मूल्य न हो, निकम्मा। **-वृद्धि**-स्त्री० दाम बढ़ना। **-सूचनांक**-पु० (इंडेक्स नंबर) खाद्यान्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओंका विभिन्न समयोंका मूल्य बतलानेवाला अंक। (सामान्य स्थितिके समयका मूल्य प्रायः १०० मान लिया जाता है। इससे बढ़ते या घटते हुए अंक आपेक्षिक महँगी या सस्तीके परिदर्शक होते हैं।)-**ह्रास-कोप**-पु० (डेप्रीशियेशन फंड) यंत्र, सामान, उपकरणों आदिके घिस जाने, पुराने तथा बेकाम हो जानेके कारण उनके मूल्यमें क्रमशः होनेवाली घटी पूरी करनेके उद्देश्यसे स्थापित कोष या निधि।

मूल्यन-पु० [सं०] (वैलुएशन) दे० 'मूल्य-निरूपण'।

मूल्यवान् (वत्)-वि०[सं०] मूल्यवाला, दामी, कीमती।

मूल्यांकन-पु० [सं०] मूल्य निर्धारित या निश्चित करनेकी क्रिया; (वैलुएशन) मूल्य-निरूपण।

मूल्यादेय वस्तुएँ-स्त्री० (वैल्युपेयेबिल आर्टिकिल्स) डाकखाने द्वारा भेजी गयी वे वस्तुएँ, (या रेल द्वारा भेजे गये मालकी वे) रसीदें, बिल्टियाँ आदि जो पानेवालेके हाथ उनपर अंकित मूल्य लेकर ही अर्पित की जा सकती हैं।

मूल्याधिरोह-पु०[सं०] (एप्रीशियेसन) दे० 'मूल्योत्कर्ष'।

मूल्यानुपाती कर (शुल्क)-पु० [सं०] (ऐड वैलोरिम ड्यूटी) किसी वस्तुपर उसके मूल्यके अनुसार लगनेवाला कर या शुल्क।

मूल्यापकर्ष-पु० [सं०] (डेप्रीशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋणपत्रों, कारखानोंमें प्रयुक्त यंत्रादिके मूल्यमें कमी हो जाना, उतार आ जाना, मूल्यह्रास, मूल्यावरोहण।

मूल्यावपात-पु० [सं०] (स्लंप) वस्तुओंके मूल्यमें एकाएक तथा तेजीसे होनेवाली कमी, अर्घपतन, सस्ती।

मूल्यावरोहण-पु०[सं०](डेप्रीशियेशन) दे० 'मूल्यापकर्ष'।

मूल्योत्कर्ष-पु०[सं०] (एप्रीशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋणपत्रों आदिके सापेक्ष मूल्यमें वृद्धि होना, मूल्याधिरोह।

मूश-पु० [फा०] चूहा। **-दान**-पु० चूहा फँसानेका संदूक या पिंजड़ा।

मूष-पु० [सं०] चूहा; मूसनेवाला; गवाक्ष, मोखा; सोना-चाँदी गलानेकी कुल्हिया।

मूषक-पु० [सं०] चूहा; चोर। **-वाहन**-पु० गणेश।

मूषण-पु० [सं०] मूसना, चुराना।

मूषिक-पु० [सं०] चूहा; चोर; सिरसका पेड़; एक प्राचीन जनपद। **-रथ**-पु० गणेश। **-विषाण**-पु० चूहेका सींग, अनहोनी बात।

मूषिका-स्त्री० [सं०] चुहिया; कुल्हिया।

मूस-पु० चूहा। **-दानी**-स्त्री० चूहा फँसानेका संदूक या पिंजड़ा।

मूसना-स० क्रि० चुराना; चुराकर ले जाना।

मूसर*-पु० दे० 'मूसल'।

मूसल-पु० लकड़ीका मोटा डंडा जिससे धान कूटते हैं, मुषल। **-चंद**-पु० मुस्तंडा; धींगड़ा। **-धार**-अ० दे० 'मुसलाधार'। **मु०-(लों) ढोल बजाना**-बहुत खुशी मनाना, अत्यंत प्रसन्नता प्रकट करना।

मूसली-स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है।

मूसा-पु० चूहा; यहूदी धर्मके प्रवर्तक जो पैगंबर या ईश्वरके संदेशवाहक माने जाते हैं।

मृग-पु० [सं०] पशु, जंगली जानवर; हिरन; कपोत; मृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास; चंद्रमाका लांछन; कामशास्त्रमें माने हुए पुरुषके चार भेदोंमेंसे एक। **-कानन**-पु० उद्यान; शिकारके जानवरोंसे भरा हुआ वन। **-चर्म (न्)**-पु० हिरनकी खाल जो पवित्र मानी जाती है। **-छाला**-पु० [हिं०] दे० 'मृगचर्म'। **-छौना**-पु० [हिं०] मृगशावक, हिरनका बच्चा। **-जल**-पु० मृगतृष्णा। **-जल-स्नान**-पु० मृगजलमें स्नान, अनहोनी बात। **-तृषा,-तृष्णा,-तृष्णिका**-स्त्री० कड़ी धूपमें रेतीले मैदानोंमें होनेवाली जलधाराकी मिथ्या प्रतीति। **-दाव**-पु० शिकारके जानवरोंसे भरा हुआ वन; सारनाथ। **-धर**-पु० चंद्रमा। **-नयना,-नयनी**-वि०स्त्री० हिरन या मृगशावककीसी आँखोंवाली (स्त्री)। **-नाभि**-पु० कस्तूरी; कस्तूरीमृग। **-पति**-पु० सिंह। **-मद**-पु० कस्तूरी। **-मास**-पु० मार्गशीर्ष मास। **-मेद***-पु० मृगमद, कस्तूरी। **-राज**-पु० सिंह; व्याघ्र। **-राट् (ज्)**-पु० सिंह। **-रोचना**-स्त्री० पीला अंगराग। **-लांछन**-पु० चंद्रमा। **-लेखा**-स्त्री० चंद्रमाका धब्बा, मृगांक। **-लोचना,-लोचनी**-वि० स्त्री० मृगनयनी। **-वारि**-पु० मृगजल। **-शाव,-शावक**-पु० मृगछौना, हिरनका सुकुमार बच्चा। **-शिर (स्)**-पु०,**-शिरा**-स्त्री० २७ नक्षत्रोंमेंसे पाँचवाँ। **-शीर्ष**-पु० मृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास। **-श्रेष्ठ**-पु० व्याघ्र।

मृगया-स्त्री०[सं०] शिकार; आखेट। **-वन**-पु० शिकारगाह।

मृगांक-पु० [सं०] चंद्रमा; चंद्रमाका धब्बा; कपूर; वायु; एक प्रसिद्ध रसौषध।

मृगांतक-पु० [सं०] चीता।

मृगाक्षी-वि० स्त्री० [सं०] मृगनयनी।

मृगाजिन-पु० [सं०] मृगचर्म।

मृगादन-पु० [सं०] शेर; चीता।

मृगाश, मृगाशन-पु० [सं०] सिंह।

मृगी-स्त्री० [सं०] हिरनी; स्त्रियोंका एक भेद।

मृगेंद्र-पु० [सं०] सिंह; व्याघ्र।

मृग्य-वि० [सं०] जिसका पीछा या अन्वेषण किया जाय।

मृड-पु० [सं०] शिव।

मृडा, मृडानी-स्त्री० [सं०] पार्वती, दुर्गा।

मृडालिनी–स्त्री० [सं०] कमलका पौधा, कमलिनी; कमल-समूह; कमलोंसे भरा हुआ स्थान।

मृडाली–स्त्री० [सं०] कमलनाल।

मृणाल–पु० [सं०] कमलनाल, कमलकी जड़; खस।

मृणालिनी–स्त्री० [सं०] कमलनी; कमलका समूह; कमलसे युक्त सर।

मृण्मय–वि० [सं०] मिट्टीका बना हुआ।

मृत–वि० [सं०] मरा हुआ, मुर्दा; मृतवत्; मारा हुआ, कुश्ता (धातु)। **–कल्प**–वि० मृतप्राय, मरा हुआ-सा। **–गृह**–पु० कब्र। **–चेल**–पु० मुरदेके ऊपर डाला गया कपड़ा। **–दार**–वि०, पु० रँडुआ। **–निर्यातक**–पु० मुर्दोंको श्मशान पहुँचानेका पेशा करनेवाला। **–भर्तृका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो, राँड़। **–लेखा**–पु० (डेड अकाउंट) (डाकघरके सेविंग्स बैंकका) वह लेखा जिसमें लंबे अरसेसे कोई रकम जमा न की गयी हो अथवा न निकाली गयी हो, और इस कारण जो चालू न रह गया हो। **–वत्सा**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी संतान जीवित न रहती हो। **–संजीवनी**–वि० स्त्री० मुर्देको जिलानेवाली (ओषधि)। स्त्री० मुर्देको जिलानेकी विद्या, मंत्र। **–स्नान**–पु० किसी व्यक्तिके मरनेपर किया जानेवाला स्नान; मृतकका स्नान।

मृतक–पु० [सं०] मुर्दा, शव; मरणाशौच।

मृतकांतक–वि० [सं०] गीदड़, सियार।

मृताशौच–पु० [सं०] मृत्युका सूतक।

मृति–स्त्री० [सं०] मृत्यु, मौत।

मृत्(द्)–स्त्री० [सं०] मिट्टी। **–पात्र,–(द्)भांड**–पु० मिट्टीका बरतन। **–पिंड**–पु० मिट्टीका ढेला, लोंदा।

मृत्तिका–स्त्री० [सं०] मिट्टी। **–लवण**–पु० लोना।

मृत्युंजय–वि० [सं०] मौतको जीतनेवाला। पु० शिव; शिवका एक अकालमृत्युनिवारक मंत्र।

मृत्यु–स्त्री० [सं०] प्राणवियोग, मरण, मौत। पु० यम; ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। **–कर**–वि० मरणकारक। पु० किसीकी मृत्यु होनेपर उसकी संपत्तिके संबंधमें लगनेवाला कर। **–काल**–पु० मौतकी घड़ी। **–दूत**–पु० मौतकी खबर लानेवाला। **–पत्र**–पु० वसीयतनामा। **–पाश**–पु० यमका फंदा। **–योग**–पु० ग्रह-नक्षत्रोंका मृत्युकारक योग। **–लेख**–पु० (टेस्टेमेंट) मृत्युके समय या मृत्युके कुछ पहले संपत्तिके विभाजन, दान आदिके संबंधमें अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिए लिखा गया लेख या पत्र। **–लोक**–पु० यमलोक; मर्त्यलोक। **–शय्या**–स्त्री० वह शय्या जिसपर रोगीकी मृत्यु हो, मरनसेज; ऐसे रोगीकी शय्या जो दो-चार दिनका मेहमान हो या जिसकी मृत्यु निश्चित हो।

मृत्सा, मृत्स्ना–स्त्री० [सं०] अच्छी, चिकनी मिट्टी; मिट्टी।

मृथा*–अ० वृथा, व्यर्थ। वि० दे० 'मृषा'।

मृदंग–पु० [सं०] ढोलकी तरहका एक बाजा, मुरज।

मृदंगी(गिन्)–पु० [सं०] मृदंग बजानेवाला।

मृदा–स्त्री० [सं०] मिट्टी।

मृदित–वि० [सं०] कुचला, मसला, चूर किया हुआ।

मृदु–वि० [सं०] कोमल, मुलायम; दयायुक्त; जो तीखा न हो, मधुर (स्वर, वचन); मंद (गति)। **–कोष्ठ**–वि० नरम कोठेवाला, जिसे हलके विरेचनसे दस्त आ जाय। **–भाषी(षिन्)**–वि० मधुरभाषी। **–स्पर्श**–वि० जो छूनेमें मुलायम हो। पु० कोमल स्पर्श, बहुत हलके हाथोंसे छूना।

मृदुता–स्त्री० [सं०] नरमी, कोमलता; मंद-मधुर होना।

मृदुल–वि० [सं०] कोमल, मृदु।

मृदुलाई*–स्त्री० मृदुलता, नरमी।

मृदूकरण–पु० (मिटिगेशन) नरम या हलका बना देना; तीक्ष्णता कम कर देना; शमन।

मृनाल*–पु० दे० 'मृणाल'।

मृषा–अ० [सं०] झूठमूठ, झूठे तौरपर; वृथा। वि० झूठ, मिथ्या। **–ज्ञान**–पु० अज्ञान। **–भाषी(षिन्)**–वि० झूठ बोलनेवाला। **–वाद**–पु० झूठ; मिथ्या वाक्य; चापलूसी। **–वादी(दिन्)**–वि० झूठा, मिथ्याभाषी।

मृष्ट–वि० [सं०] शोधित, साफ किया हुआ; विचारित।

में–प्र० अधिकरण कारकका विभक्ति। स्त्री० बकरीकी बोली। **–में**–स्त्री० बकरीकी बोली।

मेँगनी–स्त्री० दे० 'मेगनी'।

मेँड़–स्त्री० खेतकी हदबंदी, सिंचाई आदिके लिए उसके इर्द-गिर्द बनाया हुआ मिट्टीका घेरा, डाँड़ा; प्रतिष्ठा। **–बंदी**–स्त्री० हदबंदी, मेंड़ बनाना।

मँडराना†–अ० क्रि० मँडराना,–'राजपंखि तेहिपर मेंड़राही'–प०।

मेँढक–पु० दे० 'मेढक'।

मेँढकी–स्त्री० दे० 'मेढकी'।

मेंबर–पु० [अं०] सदस्य, सभासद्।

मेँह–पु० वर्षा, झड़ी।

मेँहदी–स्त्री० दे० 'मेहँदी'।

मेकल–पु० [सं०] अमरकंटक पर्वत। **–कन्या,–सुता**–स्त्री० नर्मदा नदी।

मेख़–स्त्री० [फ़ा०] खूँटा; खूँटी; कील। **मु०–ठोँकना**–हाथ-पाँवमें कीलें ठोंक देनेकी सजा देना; हराना, दबा लेना। **–मारना**–कील ठोंकना; बाधक होना।

मेखड़ा–पु० झाबेके मुँहपर बाँधनेका बाँसकी फट्टीका घेरा।

मेखल–* स्त्री० दे० 'मेखला'। पु० [सं०] दे० 'मेकल'।

मेखला–स्त्री० [सं०] करधनी, किंकिणी; धागे आदिकी करधनी, कटिसूत्र; तीन लड़वाली मुंज-मेखला जो उपनयनकालमें ब्रह्मचारीको धारण करनी पड़ती है; तलवार बाँधनेका कमरबंद; पहाड़की ढाल, शैल-नितंब।

मेखली–स्त्री० रामलीला आदिमें व्यवहृत एक पहनावा; * करधनी।

मेगनी–स्त्री० भेड़-बकरी आदिकी लेंड़ी।

मेघ–पु० [सं०] बादल; छः मुख्य रागोंमेंसे एक। **–काल**–पु० वर्षाऋतु। **–गर्जन**–पु०,**–गर्जना**–स्त्री० बादलोंका गरजना। **–जाल**–पु० मेघसमूह, घनघटा। **–जीवन**–पु० चातक। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० बिजली। **–डंबर**–पु० बादलोंका गरजना। **–दीप**–पु० बिजली। **–दूत**–पु० महाकवि कालिदासका एक खंडकाव्य जिसमें एक विरही यक्षने अपनी प्रेयसीके पास अपना सँदेसा भेजनेके लिए मेघको दूत बनाया है। **–नाद**–पु० मेघका गर्जन;

रावणका बेटा इंद्रजित् । **-माला**-स्त्री० बादलोंकी पंक्ति । **-योनि**-पु० कुहरा; धुआँ । **-रेखा,-लेखा**-स्त्री० मेघपंक्ति । **-वाई***-स्त्री० मेघमाला, बादलोंका समूह । **-वाहन**-पु० इंद्र । **-व्रती(तिन्)**-पु० चातक । **-सार**-पु० चीनिया कपूर ।

मेघांत-पु० [सं०] वर्षाका अंत; शरत्काल ।

मेघा†-पु० मेंढक (ग्रामगीत) ।

मेघागम-पु० [सं०] वर्षाकाल; वर्षाका आरंभ ।

मेघाच्छन्न-वि० [सं०] बादलोंसे ढका हुआ ।

मेघाडंबर-पु० [सं०] बादलोंका गरजना ।

मेघानंद-पु० [सं०] बक; मयूर ।

मेघारि-पु० [सं०] वायु ।

मेघावरि*-स्त्री० घनघटा ।

मेघोदय-पु० [सं०] घटाका उठना ।

मेचक-वि० [सं०] काला, कृष्णवर्ण । पु० कालिमा; अंधकार; मेघ ।

मेचकता-स्त्री० [सं०] श्यामता, स्याही ।

मेचकताई-स्त्री० मेचकता ।

मेज़-स्त्री० [फा०] लकड़ी, संगमरमर आदिकी बनी ऊँची चौकी जो खाना खाने, लिखने आदिमें आधारके रूपमें काममें लायी जाती है, टेबुल । **-पोश**-पु० मेजपर बिछानेका कपड़ा । **-बान**-पु० आतिथ्य करनेवाला, भोजनका निमंत्रण देनेवाला । **-बानी**-स्त्री० अतिथि-सत्कार, मेहमानदारी ।

मेजा*-पु० मेढक ।

मेट-पु० कुलियों, मजदूरोंका मुखिया, जमादार ।

मेटक*-पु० मिटाने, नाश करनेवाला ।

मेटनहार*-पु० मिटाने, अन्यथा करनेवाला ।

मेटना*-स० क्रि० दे० 'मिटाना' ।

मेटा*-पु० भाँडा, घड़ा-'औ अमृत गुरंब भरे मेटा'-प० ।

मेड़िया-स्त्री० मढ़ी ।

मेढक-पु० एक छोटा जंतु जो जल-स्थल दोनोंमें रह सकता है, मंडूक ।

मेढकी-स्त्री० मादा मेढक, मंडूकी । **मु०-को जुकाम होना**-छोटे आदमीमें बड़ोंकी बराबरी करनेका हौसला होना ।

मेढ़ा-पु० नर भेड़, मेष ।

मेढ़ियाँ-स्त्री० मढ़ी, घर ।

मेढ़ी-स्त्री० तीन लड़ियोंवाली चोटी ।

मेथिका-स्त्री० [सं०] मेथी ।

मेथी-स्त्री० एक पत्रशाक जिसके दाने मसाले और दवाके भी काम आते हैं ।

मेथौरी-स्त्री० मेथीका साग मिलाकर बनायी हुई बरी ।

मेद(स्)-पु० [सं०] मांससे उत्पन्न एक धातु, चर्बी; चर्बी या मोटाई बहुत बढ़ जानेका रोग । * स्त्री० दे० 'मेदा' ।

मेदस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] मोटा, जिसके बदनमें अधिक चर्बी हो ।

मेदा-पु० [अ०] आमाशय, पेट ।

मेदिनी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती; मेदा; एक शब्दकोष ।

मेदुर-वि० [सं०] अतिशय चिकना; मोटा ।

मेध-पु० [सं०] यज्ञ, हवि ।

मेधा-स्त्री० [सं०] धारणाशक्ति; बुद्धि ।

मेधावान्(वत्)-वि० [सं०] मेधावी ।

मेधावी(विन्)-वि० [सं०] मेधायुक्त; बुद्धिमान्; पंडित ।

मेध्य-वि० [सं०] स्मृति, बुद्धि बढ़ानेवाला; पवित्र; यज्ञ-संबंधी; यज्ञके योग्य । पु० जौ; खदिर; बकरा ।

मेनका-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा जिसके गर्भसे शकुंतला-की उत्पत्ति हुई; हिमवान्की पत्नी, मेना ।

मेनकात्मजा-स्त्री० [सं०] शकुंतला; पार्वती ।

मेना-स्त्री० [सं०] हिमवान्की पत्नी, मेनका ।

मेम-स्त्री० विवाहिता अंग्रेज या यूरोपीय स्त्री; ताशका पत्ता जिसे 'रानी' भी कहते हैं । **-साहबा**-स्त्री० प्रतिष्ठित अंग्रेज या यूरोपीय महिला; मेमकी तरह रहनेवाली स्त्री ।

मेमना-पु० भेड़का बच्चा; * घोड़ेकी एक जाति ।

मेमार-पु० [अ०] इमारत बनानेवाला, राज, थवई ।

मेर*-पु० दे० 'मेल' ।

मेरवना*-स० क्रि० दे० 'मिलाना' ।

मेरा-सर्व० 'मैं'का संबंधकारक रूप, मदीय । * पु० दे० 'मेला' ।

मेराउ, मेराव*-पु० मिलाप; मेल, भेंट-'गहन छूट दिनअरकर ससिसौं भयेउ मेराउ'-प० ।

मेराना†-स० क्रि० मिलाना ।

मेरु-पु० [सं०] सुमेरु पर्वत; जपमालामें सबसे ऊपर रहने-वाला प्रधान मनका; हारका मध्यमणि; लघु-गुरुके विचारसे छंदोंकी संख्या जाननेकी प्रक्रिया (पिंगल); उत्तर ध्रुव । **-दंड**-पु० रीढ़; एकसे दूसरे ध्रुवको जानेवाली कल्पित सरल रेखा ।

मेल-पु० प्रीति, मनका मिलन; मित्रता; अनुकूलता, संगति; मिलावट; जोड़ या टक्कर; तरह, किस्म । [सं०] मिलन, मिलाप; संग; मेला । **-जोल,-मिलाप**-पु० [हिं०] प्रीति-संबंध, राहोरस्म, घनिष्ठता । **मु०-खाना,-बैठना**-पटना, अनुकूलता होना; संगतिके उपयुक्त होना ।

मेलन-पु० [सं०] मिलन; संग; मुठभेड़; मिलाना; मिलावट ।

मेलना*-स० क्रि० मिलाना; डालना, उँडेलना; पहनाना -'मेली कंठ सुमनकी माला'-रामा०; फेंकना, चलाना -'जापै मेलत सूल वह सुनिये त्रिभुवन राय'-राम०; ढकेलना । अ० क्रि० मिलना, समागम होना; पहुँचना ।

मेला-पु० भीड़, जमाव; चीजोंकी खरीद-बिक्री, देवदर्शन, तीर्थस्थान, सैर-तमाशे आदिके लिए नियत तिथि और स्थानमें होने-वाला लोगोंका जमाव । स्त्री०[सं०] मिलन, समागम; जमाव । **-ठेला,-तमाशा**-पु० [हिं०] मेला, सैर-तमाशा । **मु०-लगना**-जमाव होना, भीड़ लगना ।

मेलान*-पु० मंजिल, पड़ाव; डेरा डालना-'सागर तीर मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह'-राम० ।

मेलापक-पु० [सं०] मिलाने, इकट्ठा करनेवाला; ग्रहोंका संयोग; भीड़, जमाव ।

मेली-वि० अधिक लोगोंसे हेल-मेल रखनेवाला, मिलनसार । पु० मित्र, संगी । **-मुलाकाती**-पु० संगी-साथी, मित्र ।

मेवा-पु० [फा०] फल; सुखाया हुआ फल (चिलगोज़ा, बादाम आदि) । **-फ़रोश**-पु० ताजे या सुखाये हुए फल

बेचनेवाला।

मेवाटी–स्त्री॰ मेवा भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान।

मेवासा*–पु॰ दे॰ 'मवास'।

मेवासी*–पु॰ दे॰ 'मवासी', गृहस्वामी।

मेष–पु॰ [सं॰] भेड़, मेढ़ा; बारह राशियोंमेंसे प्रथम। **–पाल,–पालक**–पु॰ गड़ेरिया। **–संक्रांति**–स्त्री॰ सूर्यके मेषराशिमें प्रवेश और सौर वर्षके प्रारंभका दिन।

मेहँदी–स्त्री॰ एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीसकर स्त्रियाँ हाथ-पैर रँगनेके काममें लाती हैं।

मेह–पु॰ वर्षा; झड़ी (पड़ना, बरसना)। दे॰ 'मेघ'; [सं॰] मूत्र; प्रमेह; मेष, मेढ़ा; बकरा। **मु॰–की आँख न खुलना**–लगातार गहरी वर्षा होना।

मेहतर–पु॰ [फ़ा॰] भंगी, मैला साफ करनेवाला।

मेहतरानी–स्त्री॰ [फ़ा॰] भंगिन।

मेहनत–स्त्री॰ [अ॰] श्रम; कोशिश, उद्योग; कष्ट। **–कश**–वि॰, पु॰ मेहनत करनेवाला, मजदूर; कष्ट उठानेवाला। **–मजदूरी**–स्त्री॰ शारीरिक श्रमका काम, उजरतपर की जानेवाली मजदूरी **मु॰–ठिकाने लगना**–श्रम सफल होना।

मेहनताना–पु॰ पारिश्रमिक, मजदूरी; वकीलकी फीस।

मेहनती–वि॰ [अ॰] मेहनत करनेवाला, परिश्रमी।

मेहमान–पु॰ [फ़ा॰] जो दूसरेके घर जाकर टिके, अतिथि, पाहुना; भोजनके लिए निमंत्रित जन। **–ख़ाना**–पु॰ अतिथिशाला; मुसाफिरखाना। **–दार**–पु॰ अतिथि-सत्कार करनेवाला, मेजबान। **–दारी**–स्त्री॰ अतिथि-सत्कार, मेहमानोंकी खातिर-तवाजा। **–नवाज़**–वि॰ मेहमानोंकी खातिर-तवाजा करनेवाला, खिलाने-पिलानेका शौकीन। **–नवाज़ी**–स्त्री॰ मेहमानदारी।

मेहमानी–स्त्री॰ मेहमानदारी; किसीके यहाँ मेहमान होना, पहुनाई।

मेहर–स्त्री॰ दे॰ 'मेह्र'। **–बान**–वि॰ दे॰ 'मेह्रबान'।

मेहरा–पु॰ जनखा, स्त्रैण; खत्रियोंका एक अल्ल।

मेहराब–स्त्री॰ [अ॰] मसजिदमें वह धनुषाकार स्थान जहाँ इमाम खड़ा होकर नमाज पढ़ाता है; डाटवाला गोल दरवाजा; दरवाजेके ऊपरकी धनुषाकार बनावट, कमान। **–दार**–वि॰ मेहराबवाला, धनुषाकार।

मेहराबी–वि॰ [अ॰] मेहराबदार। स्त्री॰ एक तरहकी खमदार तलवार।

मेहरारू–स्त्री॰ स्त्री, औरत।

मेहरी–स्त्री॰ स्त्री, नारी; पत्नी।

मेह्र–पु॰ [फ़ा॰] सूर्य। स्त्री॰ प्रेम, प्रीति; कृपा, दया। **–बान**–वि॰ कृपालु, अनुग्रहकर्ता; प्रीति रखनेवाला। **–बानी**–स्त्री॰ कृपा, अनुग्रह; प्रीति।

मैं–सर्व॰ उत्तम पुरुषका कर्ताका रूप, अहम्।

मैंड़*–स्त्री॰ दे॰ 'मेंड़', प्रतिष्ठा (छात्र॰)।

मै–* प्र॰ दे॰ 'मय'। अ॰ [अ॰] साथ, सहित (मैखर्च, मैसूद)। स्त्री॰ [फ़ा॰] मद्य, शराब। **–कदा,–ख़ाना**–पु॰ शराबखाना, मदिरालय। **–कश,–ख़्वार,–नोश**–पु॰ शराब पीनेवाला, मद्यप। **–कशी,–ख़्वारी,–नोशी**–स्त्री॰ शराबखोरी, मद्यपान। **–परस्त**–वि॰ मद्यव्यसनी। **–परस्ती**–स्त्री॰ मद्यपानका व्यसन, शराबकी लत। **–फ़रोश**–पु॰ शराब बेचनेवाला, मद्य-विक्रेता।

मैका–पु॰ दे॰ 'मायका'।

मैगल*–वि॰ दे॰ 'मदगल'।

मैजल*–स्त्री॰ दे॰ 'मंज़िल'।

मैढ़*–स्त्री॰ मेंड, प्रतिष्ठा (छत्र॰)।

मैत्रावरुण, मैत्रावरुणि–पु॰ [सं॰] अगस्त्य; वसिष्ठ।

मैत्री–स्त्री॰ [सं॰] मित्रता, दोस्ती।

मैत्रेयी–स्त्री॰ [सं॰] याज्ञवल्क्यकी पत्नी; अहल्या।

मैत्र्य–पु॰ [सं॰] मित्रता।

मैथिल–वि॰ [सं॰] मिथिलाका। पु॰ मिथिलानिवासी; मिथिलानरेश (जनक)। **–कवि,–कोकिल**–पु॰ विद्यापति।

मैथिली–स्त्री॰ [सं॰] सीता; मिथिलाकी भाषा।

मैथुन–पु॰ [सं॰] जोड़ा खाना, स्त्री-पुरुषका समागम, रतिक्रिया; विवाह। **–ज्वर**–पु॰ कामज्वर।

मैथुनिक–वि॰ [सं॰] (सेक्शुअल) संभोग-क्रिया या संभोग-वासनासे संबंध रखनेवाला; स्त्री और पुरुषसे, उनके पारस्परिक व्यवहारादिसे जिसका संबंध हो।

मैदा–पु॰ [फ़ा॰] बहुत बारीक आटा। **–(दे)की लोई**–बहुत मुलायम (पेट)।

मैदान–पु॰ [फ़ा॰] चौड़ी-चकरी समतल जमीन; घुड़दौड़, खेल आदिका स्थान; रणक्षेत्र, अखाड़ा; कलमकी तराश; विस्तार; क्षेत्र (गजलका मैदान)। **–(ने) जंग**–पु॰ युद्ध-क्षेत्र, रणभूमि। **मु॰–करना***–युद्ध करना। **–छोड़ना**–जगह छोड़ना; रणक्षेत्रसे भागना। **–जाना**–शौचके लिए बस्तीके बाहर जाना। **–जीतना,–मारना**–लड़ाई जीतना, विजय-लाभ करना। **–बदना**–लड़ने, बल-परीक्षाके लिए दिन, स्थान नियत करना। **–में आना**–लड़ने, मुकाबलेके लिए सामने आना। **–में उतरना**–कुश्तीके लिए अखाड़ेमें आना; कार्यक्षेत्रमें आना। **–साफ कर देना**–विघ्न-बाधाओंको दूर कर देना; सबको मार भगाना। **–साफ होना**–रास्तेमें कोई विघ्न-बाधा न होना; (किसी-का) अकेला होना। **–हाथ रहना**–लड़ाई जीतना।

मैदानी–वि॰ मैदानका; मैदानमें काम आनेवाला; समतल। स्त्री॰ वह लालटेन जो आँगनमें लटकायी या गाड़ी जाय; आटे या मैदेका खमीरदार घोल।

मैन–पु॰ मोम; रालमें मिलाया हुआ मोम–'मैन तुरंग चढ़े पावक बिच नाहीं पिघरि परेंगे'–नागरी॰; दे॰ 'मयन'। **–फल**–पु॰ एक कँटीला वृक्ष; इसका फल जो दवाके काम आता है। **–मय***–वि॰ कामातुर।

मैनसिल–पु॰ एक खनिज द्रव्य जिसे शोधकर दवाके काम लाते हैं।

मैना–स्त्री॰ एक चिड़िया जो अपनी बोलकी मिठासके लिए प्रसिद्ध है, सारिका; पार्वतीजीकी माताका नाम।

मैनाक–पु॰ [सं॰] एक पर्वत जिसके पंख इंद्रके हाथों काटे जानेसे बच गये हैं; एक दानव।

मैमंत*–वि॰ मदमत्त; गर्बीला।

मैमत*–स्त्री॰ ममता।

मैया–स्त्री० माता ।

मैर–स्त्री० सर्प-विषकी लहर ।

मैल–पु० शरीर, कपड़े आदिसे चिपका हुआ मल, गर्द इ०; मैला करनेवाली चीज, मल; विकार; किसीकी ओरसे मनमें संचित दुःख-दुर्भाव । **–खोरा**–वि० जो मैलको छिपा सके, गर्दखोरा (रंग) । पु० वह कपड़ा जो दूसरे कपड़ोंको मैला होनेसे बचानेके लिए नीचे पहना जाय; नमदा । **मु०–काटना**–मैल दूर करना ।

मैला–वि० मैलवाला, समल, गंदा । पु० कूड़ा; गू । **–कुचैला**–वि० बहुत मैला ।

मैहर*–पु० मायका ।

मों*–प्र० दे० 'में' । सर्व० दे० 'मो' ।

मोंगरा–पु० दे० 'मुँगरा' तथा 'मोगरा' ।

मोंछ–स्त्री० दे० 'मूँछ' ।

मोंड़ा–† पु० लड़का, बालक ।

मोंढ़ा–पु० बाँस, बेंत आदिका तिपाई जैसा गोलाकार आसन ।

मो*–सर्व० 'मैं'का एक रूप जो ब्रज और अवधीमें विभक्ति लगनेसे हो जाता है, मेरा ।

मोक–पु० [सं०] केंचुल ।

मोकना*–स० क्रि० छोड़ना; फेंकना–'रोक्यो तहीं जोर नाराच मोक्यो'–राम० ।

मोकल*–वि० बंधनरहित, स्वच्छंद ।

मोकला*–वि० दे० 'मोकल' ।

मोक्ष–पु०[सं०] खुलना, बंधनसे छूटना, छुटकारा; जीवका जन्म-मरणके बंधनसे छूटना, मुक्ति; गिरना, झड़ना (आँसू, पत्ते); फेंकना (बाण); पाटलिका पेड़ । **–दा**–वि० स्त्री० मोक्ष देनेवाली । स्त्री० मार्गशीर्ष-शुक्ला एकादशी । **–दात्री,–दायिनी**–वि० स्त्री० मोक्ष देनेवाली ।

मोक्षक–पु० [सं०] मुक्ति या छुटकारा देनेवाला ।

मोक्षण–पु० [सं०] खोलना, छोड़ना; गिराना; फेंकना ।

मोक्ष्य–वि० [सं०] मोक्षके योग्य, मुक्तिका अधिकारी ।

मोखा–पु० रोशनदान, झरोखा; एक वृक्ष, मुस्कक ।

मोगरा–पु० बड़े और अधिक सुगंधित फूलवाला बेला ।

मोगल–पु० दे० 'मुगल' ।

मोघ–वि० [सं०] निरर्थक, व्यर्थ जानेवाला । पु० बाड़ा ।

मोच–स्त्री० हाथ-पाँवके किसी जोड़की नसमें चोट आदिसे शोथ और पीड़ा होना या उसका अपनी जगहसे हट जाना (आना) ।

मोचक–वि० [सं०] छुटकारा दिलानेवाला, मुक्तिकारक । पु० विरागी; मोक्ष; केला; सहिजन ।

मोचन–पु० [सं०] बंधन, कष्ट आदिसे छुड़ाना, छुटकारा देना, दिलाना; हरण (वस्त्र-मोचन) । वि० (समासमें) छुड़ानेवाला (संकटमोचन) ।

मोचना–* स०क्रि० गिराना (आँसू); छुड़ाना । पु० वह औजार जिससे नाई मूँछ आदिके पके बाल उखाड़ता है; लुहारोंका एक औजार ।

मोचयिता (तृ)–वि० [सं०] छुटकारा दिलानेवाला ।

मोचरस–पु० [सं०] सेमलका गोंद ।

मोची–पु० जूते सीनेवाला, चमड़ेका काम करनेवाला ।

मोची (चिन्)–पु०[सं०] मुक्त करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

मोच्छ*–पु० दे० 'मोक्ष' ।

मोज़ा–पु०[फ़ा०] पाँवमें पहननेका एक बुना हुआ कपड़ा, पायताबा; पाँवका टखने और पिंडलीके बीचका भाग ।

मोट–स्त्री० गठरी । पु० पुर, चरसा । * वि० दे०'मोटा' ।

मोटक–पु० [सं०] पितृतर्पणमें व्यवहृत दुहरा किया हुआ कुशत्रय ।

मोटर–स्त्री० [अं०] गतिशक्ति देनेवाला यंत्र; ऐसे यंत्र (आंतरिक दहनसे परिचालित इंजन) द्वारा चालित सवारी गाड़ी, मोटरकार । **–कार**–स्त्री० मोटर, हवागाड़ी । **–खाना**–पु० मोटरकार रखनेका स्थान (मोटर-गैरेज) । **–ड्राइवर**–पु० मोटर चलानेवाला । **–बस,–लारी**–स्त्री० आदमी या माल ढोनेवाली गाड़ी जो मोटर-इंजनसे परिचालित हो । **–बोट**–स्त्री० मोटर-इंजनसे चालित नाव । **–साइकिल**–स्त्री० मोटर-इंजनसे चलनेवाली साइकिल, 'फटफटिया' ।

मोटा–वि० जिसकी देहमें मांस-मेद अधिक हो, स्थूलकाय; मांसल; बड़े घेरेवाला; गाढ़ा, दबीज (कपड़ा, कागज); जो पतला या बारीक न हो (सूत, अक्षर, आटा); भारी; घटिया; सूक्ष्मका उलटा, स्थूल (बुद्धि, बात); भद्दा; * बलवान्, जबर्दस्त । **–असामी**–पु० मालदार असामी । **–काम**–पु० जिसमें अधिक बुद्धि या कुशलताकी आवश्यकता न हो । **–झोटा**–वि० घटिया, मामूली (अनाज, कपड़ा) । **–ताजा**–वि० हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा । **–(टी)अकल,–समझ**–स्त्री० सूक्ष्म, पेचदार बातोंको समझनेमें असमर्थ बुद्धि । **–आवाज़**–स्त्री० भारी, भद्दी आवाज । **–बात**–स्त्री० खुली, सबकी समझमें आने लायक बात । **–(टे)मल**–पु० अधिक मोटा, ढीले बदनवाला आदमी । **–हिसाब**–अ० अंदाजन, लगभग, कुछ कमो-बेश । **–तौरपर**–साधारण या स्थूल रूपसे । **मु०–(टा)खाना,–पहनना**–सस्ता, घटिया अन्न-वस्त्र खाना-पहनना ।

मोटाई–स्त्री० मोटा होना, स्थूलता; धन या बलका गर्व । **मु०–चढ़ना**–घमंडी, शरारती हो जाना । **–झड़ना**–घमंड या शरारत दूर होना ।

मोटाना–अ० क्रि० मोटा होना; पैसेवाला होना; घमंडी हो जाना ।

मोटापा–पु० मोटाई, स्थूलता; घमंड ।

मोटिया–पु० बोझ ढोनेवाला, कुली; गाढ़ा, गजी ।

मोट्टायित–पु० [सं०] एक हाव–प्रियकी चर्चा चलनेपर नायिकाके अनुरागका, छिपानेकी चेष्टा करते हुए भी, प्रकट हो जाना ।

मोठ–पु० दालके काम आनेवाला एक मोटा अन्न, वनमूँग ।

मोठस*–वि० चुप ।

मोड़–पु० मुड़नेका भाव, घुमाव; रास्तेका घुमाव, वह जगह जहाँसे-रास्ता दूसरी दिशाकी ओर गया हो; कागज आदिका मुड़ा हुआ कोना या वह लकीर जहाँसे वह मोड़ा गया हो । **–तोड़**–पु० घुमाव ।

मोड़ना–स० क्रि० घुमाना; झुकाना; टेढ़ा करना; दिशा बदलना; लौटाना, पीछेकी ओर फिराना; कागज इत्यादिको किसी स्थानपर उलटकर दबा देना या दोहरा कर देना।

मोड़ी–स्त्री० मराठी भाषाकी एक लिपि ।

मोतदिल–वि० [अ०] जिसमें एतदाल (समता) हो, न गरम न तर, समशीतोष्ण; औसत दरजेका ।

मोतबर–वि० [अ०] एतबार करने लायक, विश्वसनीय ।

मोतियदाम–पु० एक वर्णवृत्त ।

मोतिया–पु० बेलेका एक भेद; एक तरहका सलमा । स्त्री० एक चिड़िया । वि० मोतीके जैसा; छोटे गोल दानोंवाला । **–बिंद**–पु० आँखोंमें पानी उतरनेका रोग जो प्रायः बुढ़ापेमें होता है ।

मोती–पु० एक बहुमूल्य रत्न जो सीपीमेंसे निकलता है, मुक्ता । * स्त्री० बाली । **–चूर**–पु० छोटी बुँदियोंका लड्डू । **–झिरा**–पु० छोटे दानोंकी चेचक । **–बेल***–स्त्री० मोतिया बेला । **–भात***–पु० एक तरहका भात । **–(तियाँ)का झाला**–कानमें पहननेका एक आभूषण । **मु०–उगलना**–मुँहसे सुंदर मधुर शब्दावली निकालना । **–गरजना**–मोतीमें बल पड़ जाना । **–ठंढा होना**–मोतीका टूट जाना या बेआब हो जाना । **–धूलमें कोलना**–सुंदर, बहुमूल्य वस्तुकी बेकदरी करना । **–पिरोना**–मोतियोंकी लड़ी बनाना; बहुत सुंदर अक्षर लिखना; सुंदर, ललित शब्दावली लिखना, बोलना । **–रोलना**–मोती बटोरना; बिना मेहनतके धन कमाना । **–(तियाँ)से माँग भरना**–माँगमें मोती पिरोना । **–से मुँह भरना**–खुशखबरी या सुंदर बातसे रीझकर निहाल कर देना ।

मोतीसिरी*–स्त्री० मोतियोंकी माला ।

मोथरा*–वि० भोथरा, कुंद ।

मोथा–पु० नागरमोथा ।

मोद–पु० [सं०] हर्ष, आह्लाद; सुगंध ।

मोदक–पु० [सं०] लड्डू; मिठाई; एक वर्णसंकर जाति । **–कार**–पु० हलवाई ।

मोदन–पु० [सं०] हर्ष; आनंद देना; सुगंध बिखेरना ।

मोदना*–अ० क्रि० आनंदित होना, प्रसन्न होना; सुगंध फैलाना–'फूल फूलतरु फूल बढ़ावत । मोदत महामोद उपजावत'–राम० । स० क्रि० प्रसन्न करना ।

मोदित–वि० [सं०] मुदित, हर्षयुक्त ।

मोदी–पु० दाल, चावल आदि बेचनेवाला, परचूनिया ।

मोधू–वि० भोंदू, मूढ़ ।

मोन*–पु० दे० 'मोना' ।

मोना–* स० क्रि० भिगोना । † पु० झाबा, पिटारा ।

मोनिया†–स्त्री० छोटा मोना ।

मोनो-टाइप-मशीन–स्त्री० [अं०] कंपोज करनेवाली वह मशीन जिसमें एक-एक अक्षर ढलता और कंपोज होता चलता है ।

मोपला–पु० मलाबारमें बसनेवाली एक मुसलमान जाति ।

मोम–पु० हलके पीले रंगका पिघलनेवाला पदार्थ जिससे शहदकी मक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं; जमाया हुआ मिट्टीका तेल । **–गर्द**–पु० मोमकी चीजें बनानेवाला । **–जामा**–पु० मोमका रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा जिसपर पानी फिसल जाता है । **–दिल**–वि० नरम दिलवाला, दयार्द्रचित्त । **–बत्ती**–स्त्री० मोटे धागेपर मोम चढ़ाकर बनायी हुई बत्ती जिसे रोशनीके लिए जलाते हैं । **–की नाक**–अस्थिरचित्त व्यक्ति, जिससे जो बात चाहो मनवा लो । **–की मरियम**–अति सुकुमार स्त्री । **मु०–होना**–पिघलना, नरम होना; कठोर हृदयका दयासे द्रवित हो जाना ।

मोमिन–वि० [अ०] ईमानदार, सच्चा । पु० सच्चा मुसलमान; मुसलमान जुलाहा; शीया ।

मोमिया–स्त्री० [फा०] मसाला लगाकर रखी हुई सूखी लाश; वह मसाला जिसे सड़नेसे बचानेके लिए लाशपर लगाते थे ।

मोमियाई–स्त्री० [फा०] एक तरहका शिलाजतु ।

मोमी–वि० मोमका, मोमका बना हुआ । **–छींट**–स्त्री० एक तरहकी बहुत मुलायम छींट । **–मोती**–पु० एक तरहका नकली मोती ।

मोयन–पु० खस्तेपनके लिए गूँधते समय आटेमें घी देना । **–दार**–वि० जिसमें मोयन दिया गया हो ।

मोरंग–पु० नेपालका पूर्वी भाग ।

मोर–पु० एक बड़ा पक्षी जो अपनी सुंदरता और नृत्यके लिए प्रसिद्ध है, मयूर । [स्त्री०–'मोरनी'।]**–चंदा***–पु० दे० 'मोरचंद्रिका' । **–चंद्रिका**–स्त्री० मोरपंखके ऊपर बनी हुई चंद्राकार बूटियाँ । **–चाल**–पु० एक तरहकी कसरत । **–छल**–पु० मोरकी पूँछके परोंका चँवर । **–छली**–पु० मोरछल हिलानेवाला । **–छाँह***–स्त्री० दे० 'मोरछल' । **–ध्वज**–पु० एक राजा जो कृष्णके कहनेसे अपनी देह आरेसे चिरवानेके लिए तैयार हो गया था । **–पंखी**–वि० मोरके पंखके रंगका । स्त्री० वह नाव जो मोरके पंखके आकारकी हो; एक तरहका पंखा जो खोलनेसे मंडलाकार हो जाता है । **–पखा***–पु० मोरका पंख; मोरपंखकी कलगी । **–मुकुट**–पु० मोरपंखका मुकुट जिसे बाललीलाके समय कृष्ण धारण किया करते थे ।

मोरचा–पु० [फा०] किलेके रक्षार्थ उसके चारों ओर खोदी हुई खाई; युद्धके सुभीतेके लिए खोदी हुई खाई आदि; मोरचेपर या उसके भीतर रहनेवाली सेना । **–बंदी**–स्त्री० खाई, धुस आदिसे शत्रुसेनाकी मारसे बचते हुए लड़नेका प्रबंध करना । **मु०–बाँधना**–मोरचाबंदी करना । **–मारना, –लेना**–मोरचा जीतना ।

मोरचा–पु० [फा०] नमी पहुँचनेसे लोहेपर जमनेवाली पीलापन लिये हुए लाल तह जो उसको धीरे-धीरे खा डालती है, जंग; आईनेपर जमा हुआ मैल । **मु०–खाना**–जंग लगना; काम न लेनेसे गुण-शक्तिका घटना, छीजना ।

मोरन*–स्त्री० सिखरन ।

मोरना*–स० क्रि० दे० 'मोड़ना'; दहीसे मक्खन निकालना ।

मोरनी–स्त्री० मादा मोर; नथमें लटकानेका टिकरा ।

मोरवा–पु० एक वृक्ष, मुष्क; * मोर, मयूर ।

मोराना*–स० क्रि० फिराना; पत्थरके कोल्हूमें ईखकी अँगारियाँ डालना ।

मोरी–स्त्री० नाली; गंदे पानीकी नाली; * बागडोर–'आयो चोर तुरँग मुसि लै गयो मोरी राखत मुगध फिरै'–कबीर; मोरनी ।

मोर्चा–पु० दे० 'मोरचा' ।

मोल-पु० मूल्य, दाम। **-तोल,-भाव**-पु० दाम ठहराने, सौदा पटानेकी बातचीत (करना, होना)। **मु०-करना**-चीजके दाम तै करना; उचितसे अधिक दाम माँगना। **-बढ़ाना**-दाम चढ़ाना। **-लेना**-खरीद लेना; मनुष्यको धन देकर खरीदना, दास बनाना।

मोलना*-पु० मौलाना, मौलवी।

मोलवी-पु० दे० 'मौलवी'।

मोलाई*-स्त्री० मोल-तोल।

मोवना-स० क्रि० दे० 'मोना'।

मोष-पु० [सं०] चोरी; लूट; चोरीका माल; चोर; * मोक्ष -'मोहूँ दीजै मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो'-वि०।

मोषक-पु० [सं०] चोर; वध करनेवाला।

मोषण-पु० [सं०] चुराना; लूटना; काटना; वध।

मोषयिता(तृ)-पु० [सं०] चोरी या लूट करानेवाला।

मोह-पु० [सं०] मूर्च्छा; अज्ञान; अविद्या; देहादिमें आत्मबुद्धि; ममता; भ्रांति; (मोहजनित) दुःख; ३३ संचारी भावोंमेंसे एक; * स्नेह। **-निद्रा**-स्त्री० अज्ञान और अंधविश्वासमें डूबा रहना। **-निशा**-स्त्री० मोहरात्रि। **-भंग**-पु० भ्रांति-निवारण, अज्ञानका तिरोभाव। **-मंत्र**-पु० मोहमें डालनेवाला मंत्र। **-रात्रि**-स्त्री० ब्रह्माके ५० वर्ष बीतनेपर होनेवाला प्रलय; भाद्र-कृष्णा अष्टमीकी रात।

मोहक-वि० [सं०] मोहजनक; मुग्ध कर लेनेवाला।

मोहड़ा†-पु० बरतन आदिका मुहँ; वस्तुका अगला या ऊपरका भाग; दे० 'मोहरा'।

मोहताज-वि० दे० 'मुहताज'।

मोहन-वि० [सं०] मोहनेवाला; मोहकारक। पु० मोहना, लुभाना; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; कृष्णका एक नाम; सुरत, संभोग; (शत्रुको) बेसुध कर देनेवाला मंत्र, एक अभिचार; धतूरेका पौधा। **-भोग**-पु० [हिं०] एक तरहका हलवा। **-माला**-स्त्री० सोनेके दानोंकी बनी हुई माला।

मोहना-स० क्रि० लुभाना; छलना-'मायापति दूतहिं चह मोहा'-रामा०। अ० क्रि० मुग्ध होना।

मोहनास्त्र-पु० [सं०] मंत्रबलसे चालित एक अस्त्र जो शत्रुको मूर्च्छित कर देता था।

मोहनी-स्त्री० [सं०] माया; पोईका साग; मोहक प्रभाव, वशीकरण; एक तरहकी जूही। वि० स्त्री० दे० 'मोहिनी'। **मु०-डालना**-मन मोह लेना, जादू करना।

मोहब्बत-स्त्री० दे० 'मुहब्बत'।

मोहर-स्त्री० दे० 'मुहर'।

मोहरा-पु० बरतन आदिका मुँह; किसी चीजका ऊपरका या सामनेका हिस्सा; सेनाका बढ़ाव; सेनाका अग्रभाग; पशुओंके मुँहपर बाँधी जानेवाली जाली; अँगियाका बंद या तनी; बाहर निकलनेका छेद या द्वार; [फा०] शतरंजकी गोटी।

मोहरी-स्त्री० पाजामेका नीचेकी ओरका मुहँ, पायँचा; बरतन आदिका छोटा मुँह; † वह रस्सी जो मरकहे पशुओंके मुँहपर लगाकर पगहेसे जोड़ दी जाती है।

मोहर्रिर-पु० [अ०] दे० 'मुहर्रिर'।

मोहलत-स्त्री० [अ०] दे० 'मुहलत'।

मोहल्ला-पु० दे० 'मुहल्ला'।

मोहार-पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता; मुहरा, मुँह, द्वार।

मोहाल-पु० दे० 'महाल'। वि० दे० 'मुहाल'।

मोहिँ, मोहि*-सर्व० मुझे, मुझको (ब्रज और अवधी)।

मोहित-वि० [सं०] मोहप्राप्त, मुग्ध; लुभाया हुआ।

मोहिनी-वि० स्त्री० [सं०] मोहने, मन लुभानेवाली। स्त्री० एक अप्सरा; विष्णुका वह नारी रूप जो समुद्र-मंथनके समय उन्होंने दैत्योंको छलनेके लिए धारण किया था।

मोही(हिन्)-वि० [सं०] मोहकारक; मोहयुक्त; स्नेह करनेवाला; लोभी।

मौँगा-वि० पु०, **मौँगी***-वि० स्त्री० चुप, मौन।

मौंज-वि० [सं०] मूँजका बना हुआ।

मौंजी-स्त्री० [सं०] मूँजकी बनी हुई तीन लड़ोंकी मेखला। **-बंध,-बंधन**-पु० मूँजकी करधनी धारण करना, उपनयन।

मौँड़ा†-पु० लड़का।

मौक़ा-पु० [अ०] घटित होनेका स्थान, घटनास्थल; स्थित होनेका स्थान (मकानका मौक़ा); उपयुक्त काल, अवसर। **-बेमौक़ा**-अ० चाहे जब, अवसर-अनवसरका विचार किये बिना। **मु०-तकना,-देखना**-अनुकूल अवसरकी राह देखना, घातमें रहना। **-देना**-अवसर, अवकाश देना। **-(क़े)पर**-ऐन वक्तपर, आवश्यकताके समय। **-से**-उपयुक्त समयपर, यथावसर।

मौक़ूफ़-वि० [अ०] रोका, ठहराया हुआ; रद्द किया हुआ; छोड़ा हुआ; नौकरीसे छुड़ाया हुआ; वक़्फ़ किया हुआ; अवलंबित, मुनहसर। पु० वह अक्षर जिसपर और जिसके पहलेके अक्षरपर हरकत (जेर, जबर, पेश) न हो।

मौक़ूफ़ी-स्त्री० [अ०] काम या नौकरीसे अलग किया जाना, बरतरफी।

मौक्तिक-पु० [सं०] मोती। **-दाम (न्)**-पु० मोतियोंकी लड़ी; एक छंद। **-सर**-पु० मोतियोंका हार या लड़ी।

मौक्य-पु० [सं०] मूकता, मौन।

मौख-वि० [सं०] मुख-संबंधी। पु० मुखसे होनेवाला पाप (अभक्ष्य-भक्षण, अवाच्य-कथन इ०)।

मौखर्य-पु० [सं०] मुखरता।

मौखिक-वि० [सं०] मुख-संबंधी, ज़बानी। **-परीक्षा**-स्त्री० (व्हाइव्हा व्होसी) लिखकर नहीं, जबानी ली जानेवाली छात्रों, पदार्थियों आदिकी परीक्षा।

मौग्ध्य-पु० [सं०] मुग्धता।

मौज-स्त्री० [अ०] लहर, हिलोर; मनकी लहर, तरंग; उमंगमें दिया हुआ दान-'जाँचि निराखर हू चलै लै लाखनकी मौज'-वि०; सुख, आनंद; समृद्धि। **मु०-मारना**-सुख भोगना, ऐश करना; लहरें उठना। **-में आना**-मनमें उठना, मनमें आना; किसीको कुछ देने आदिकी इच्छा होना।

मौज़ा-पु० [अ०] स्थान, रखनेकी जगह; गाँव।

मौजी-वि० जो मनमें आये वह कर बैठनेवाला; आनंदी।

मौजूँ-वि० [अ०] वजन किया हुआ, तुला हुआ; ठीक,

उपयुक्त, यथायोग्य; छंदोबद्ध, छंदके नियमसे शुद्ध (पद्य)।

मौजूद-वि० [फा०] उत्पन्न, सृष्ट; स्थित, विद्यमान; सामने खड़ा, उपस्थित; तैयार; उपलब्ध।

मौजूदगी-स्त्री० [अ०] उपस्थिति, हाजिरी।

मौजूदा-वि० [अ०] वर्तमान, हालका। **-जमाना**-पु० वर्तमान काल।

मौड़ा*-पु० लड़का।

मौढ्य-पु० [सं०] मूढ़ता।

मौत-स्त्री० [फा०] मृत्यु, मरण; शामत, मुसीबत। **-का ढलका**-आसन्नमरण रोगीकी आँखोंसे पानी बहना। **-का तमाचा**-मौतकी याद दिलानेवाली बात। **-का पसीना**-रोगीके माथेसे छूटनेवाला पसीना जो मृत्युका लक्षण माना जाता है। **-का सामना**-भारी खतरा, प्राणभय। **-की घड़ी**-मृत्युकाल। मु० **-आना**-शामत, आफत आना। **-का घर देख जाना (लेना)**-बार-बार मृत्यु आनेकी आशंका होना। **-का सिरपर खेलना**-मौत करीब होना, मरनेके दिन आना। **-के घाट उतारना**-मार डालना। **-के दिन पूरे करना**-कष्टसे दिन काटना, कठिनाईसे जीना। **-के मुँहमें जाना**-खतरेमें पड़ना, जानकी जोखिम लेना। **-माँगना**-कष्ट, कठिनाइयोंसे ऊबकर मौत मनाना।

मौदक-वि० [सं०] मोदक, मिठाई-संबंधी।

मौदकिक-पु० [सं०] मोदक-विक्रेता, हलवाई।

मौद्गलि-पु० [सं०] कौआ।

मौद्गल्य-पु० [सं०] मुद्गल मुनिका पुत्र।

मौद्गल्यायन-पु० [सं०] गौतमबुद्धके एक प्रमुख शिष्य।

मौद्रिक-वि० [सं०] (मॉनेटरी) मुद्रा-संबंधी।

मौन-पु० [सं०] मुनिभाव; न बोलना, चुप्पी; * मोयन, घीका मेल। **-भंग**-पु० मौन तोड़ना, चुप्पी त्यागकर बोलना। **-मुद्रा**-स्त्री० चुप्पी, मौन-भाव। **-व्रत**-पु० न बोलनेका व्रत। **-व्रती (तिन्)**-वि० मौनव्रतधारी।

मौना-पु० टोकरा, पिटारा।

मौनी (निन्)-वि० [सं०] मौनव्रतधारी। पु० मुनि; मौनव्रतधारी साधु।

मौनी-† स्त्री० छोटा मौना, पिटारी; [सं०] मौनी अमावास्या। **-अमावास्या**-माघकी अमावास्या।

मौर-पु० एक तरहका मुकुट जो ब्याहके अवसरपर वरको पहनाया जाता है; * गरदनका पीठकी ओरका भाग;बौर, मंजरी। वि०(समासमें) श्रेष्ठ, शिरोमणि (सिरमौर)।

मौरना-अ० क्रि० बौर लगना।

मौरसिरी*-स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

मौरी-स्त्री० छोटा मौर।

मौरूसी-वि० [अ०] विरसेमें मिला हुआ, बाप-दादाका; (स्त्री) छोड़ी हुई (जायदाद), पैतृक। **-काश्तकार**-पु० वह काश्तकार जिसकी जमीनपर उसके वारिसोंको भी वही हक हासिल हो।

मौर्ख्य-पु० [सं०] मूर्खता।

मौर्य-पु० [सं०] भारतका एक प्राचीन राजवंश जो चंद्रगुप्तसे आरंभ हुआ।

मौर्वी-स्त्री० [सं०] धनुष्की डोरी; क्षत्रियोंके धारण करने योग्य मूर्वाकी मेखला।

मौलवी-पु० [अ०] इसलामी धर्मशास्त्र(शरा)का पंडित; अरबी-फारसीका आलिम; धर्मनिष्ठ (मुसलमान); अरबी-फारसी पढ़ानेवाला। **-गिरी**-स्त्री० मौलवीका काम, अध्यापकी।

मौलसिरी-स्त्री० एक सदाबहार पेड़ जिसके फूल बड़ी मधुर गंधवाले होते हैं, बकुल।

मौला-पु० [अ०] मालिक; परमेश्वर; बादशाह; आजाद किया हुआ गुलाम; सहायक; पड़ोसी। **-दौला**-वि० भोलाभाला; बेपरवाह; बड़ा दानी।

मौलाना-पु० [अ०] अरबीका बहुत बड़ा विद्वान्।

मौलि-पु० [सं०] चोटी; मस्तक; किरीट, मुकुट; अशोक वृक्ष। **-मणि**-पु० मुकुटमें जड़ा हुआ मणि।

मौलिक-वि० [सं०] मूल-संबंधी, मूलगत; मुख्य; अकुलीन; जो किसीकी छाया, उलथा, अनुकृति आदि न हो। पु० कंदमूल खोदने, बेचनेवाला।

मौलिकता-स्त्री० [सं०] मौलिक होनेका भाव।

मौली (लिन्)-वि० [सं०] जिसके सिरपर चोटी या मुकुट हो।

मौष्टा-स्त्री० [सं०] घूँसेबाजी, घूँसोंकी लड़ाई, मुष्टिद्वंद्व।

मौष्टिक-पु० [सं०] ठग, धूर्त।

मौसम-पु० दे० 'मौसिम'।

मौसर*-वि० दे० 'मुयस्सर'।

मौसा-पु० माँकी बहिन अर्थात् मौसीका पति।

मौसिम-पु० [अ०] काल, समय; ऋतु। **-(मे) खिजाँ**-पु० पतझड़। **-गुल, -बहार**-पु० वसंत ऋतु।

मौसिमी-वि० [अ०] जिसका मौसिम हो, (वर्तमान)ऋतुका; मौसिमके कारण होनेवाला (बुखार इ०)। **-फल**-पु० ऋतुफल। **-बुखार**-पु० चैत या भादों-कुआरके महीनोंमें होनेवाला जूड़ी-बुखार, मलेरिया।

मौसिया†-पु० 'मौसा'। वि० दे० 'मौसेरा'।

मौसी-स्त्री० मासी, माँकी बहन।

मौसूफ़-वि० [अ०] वस्फ़ किया हुआ, वर्णित; प्रशंसित।

मौसूम-वि० [अ०] नाम रखा हुआ, नामधारी। [स्त्री० 'मौसूमा'।

मौसेरा-वि० मौसीके नातेवाला, मौसीसे संबद्ध या उससे उत्पन्न (-भाई, बहिन इ०)।

मौहूर्तिक-वि० [सं०] मुहूर्तसे उत्पन्न। पु० मुहूर्तवेत्ता, ज्योतिषी; दक्षकी कन्या मुहूर्तासे उत्पन्न एक देवगण।

म्याँव-स्त्री० बिल्लीकी बोली। **-की ठौर**-बिल्लीका मुँह। मु० **-धीरेसे पकड़ना**-सबसे अधिक खतरेका काम करना। **-म्याँव करना**-डरके मारे धीमे स्वरमें बोलना।

म्यान-पु० [फा०] तलवार आदि रखनेका कोष या गिलाफ, खड्गकोष; * शरीर।

म्याना*-स० क्रि० (तलवार आदिको) म्यानमें करना, रखना। * पु० दे० 'मियाना'। वि० बीचका, मझोला; मोटा-'लाँबी है न ठेंगनी न पातरी न म्यानी है'-सुंद०।

म्यानी-स्त्री० दे० 'मियानी'।

म्युनिसिपलिटी-स्त्री० [अं०] स्थानीय आत्मशासनका अधिकारप्राप्त नगर या कसबा; ऐसे नगरका प्रबंध करने-

वाली कमेटी, नगरसभा, नगरपालिका।

म्याँ–स्त्री० दे० 'म्याँव'।

म्रक्षण–पु० [सं०] तेल; स्नेहन, लेपन; मिलाना, मिश्रण।

म्रजाद*–स्त्री० मर्यादा–'लाज म्रजाद मिली औरनको, मृदु मुसकनि मेरे वट आई'–नारा० स्वामी।

म्रदिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] मृदुता।

म्रदिष्ठ–वि० [सं०] अतिशय मृदु।

म्रियमाण–वि० [सं०] मरता हुआ; मरा हुआसा, मृतप्राय।

म्लात–वि० [सं०] कुम्हलाया हुआ, म्लान।

म्लान–वि० [सं०] कुम्हलाया, मुरझाया हुआ; दुर्बल; मलिन, गंदा। **–मना(नस्)**–वि० खिन्नचित्त, उदास।

म्लानि–स्त्री० [सं०] म्लानता, कांतिक्षय; मलिनता; उदासी।

म्लायी(यिन्)–वि० [सं०] कुम्हलाता, सूखता, छीजता हुआ।

म्लेच्छ–पु० [सं०] जो संस्कृत न बोलनेवाला हो, अनार्य; विदेशी; आर्य-सदाचारका पालन न करनेवाला; हिंगुल, शिंगरफ। वि० पापरत; नीच। **–कंद**–पु० लहसुन। **–जाति**–स्त्री० अनार्य, असंस्कृत-भाषी जाति। **–देश**–पु० अनार्य देश, चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था आदिसे रहित देश। **–भाषा**–स्त्री० अनार्य भाषा; विदेशी भाषा। **–भोजन**–पु० गेहूँ; यावक। **–मंडल**–पु० म्लेच्छ देश। **–मुख**–पु० ताँबा।

म्लेच्छाश–पु० [सं०] गेहूँ।

म्लेच्छित–पु० [सं०] म्लेच्छ भाषा; अपभाषा; परभाषा।

म्हारा*–सर्व० हमारा।

य

य–देवनागरी वर्णमालाका छब्बीसवाँ व्यंजन, अंतस्थ वर्ण।

यंत, यंता(तृ)–पु० [सं०] संचालक, शासक; सारथी; महावत।

यंत्र–पु० [सं०] अंक या अक्षरोंसे युक्त विशेष आकार या कोष्ठ जिनमें देवताओंका वास माना जाता है (तंत्र), जंतर; औजार, कल, मशीन; ताला; वीणा; बाजा; वाद्यसे उत्पन्न संगीत। **–गृह**–पु० वेधशाला; यंत्रणागृह (प्राचीन कालमें अपराधियोंके लिए होते थे); स्थान या घर जहाँ कल, औजार, मशीनसे काम होता हो, कारखाना। **–चातुर्य**–पु० (टेकनीक) यंत्रादि चलाने, कल-पुरजे आदि ठीक करने आदिकी विशेष योग्यता, चतुरता। **–जात**–पु० (मशीनरी) विभिन्न यंत्रोंका समूह। **–ज्ञ**–पु० दे० 'यंत्री'। **–पुत्रक**–पु० (रोबॉट) यंत्रादिकी सहायतासे हाथ-पाँव हिलानेवाला पुतला। **–मंत्र**–पु० टोना-टोटका। **–मातृका**–स्त्री० चौसठ कलाओंमेंसे एक जिसमें यंत्रका बनाना और उसका व्यवहार करना शामिल है। **–विद्**–पु० (एंजिनियर) यंत्रविद्या जाननेवाला, यंत्रशास्त्रका ज्ञाता। **–विद्या**–स्त्री०, **–शास्त्र**–पु० (एंजिनियरिंग) यंत्र, एंजिन आदि बनाने, चलाने तथा रेलका पुल आदि निर्मित करनेकी विद्या। **–शाला**–स्त्री० वेधशाला; वह स्थान जहाँ मशीनें, कलें और औजार आदि हों। **–सज्ज**–वि० तोपों, टैंकों तथा शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित (सेना)। **–सज्ज (सज्जित) सेना**–स्त्री० (मेकेनाइज्ड आर्मी) टैंकों, कवचित गाड़ियों, मोटरगाड़ियों तथा टेलीफोन आदि आधुनिक यंत्रोंका प्रयोग करनेवाली एवं उनसे लैस सेना। **–समुच्चय**–पु० (प्लांट) किसी कारखाने आदिमें बैठाये गये समस्त यंत्रों, उपकरणों आदिका समूह; उद्योग-यंत्रावली। **–सूत्र**–पु० कठपुतली नचानेका धागा, सूत।

यंत्रक–पु० [सं०] (मेकानिक) दे० 'यंत्री'।

यंत्रणा–स्त्री० [सं०] यातना, पीड़ा, क्लेश।

यंत्रालय–पु० [सं०] यंत्रशाला; छापाखाना, प्रेस।

यंत्रिका–स्त्री० [सं०] छोटी साली; छोटा ताला।

यंत्रित–वि० [सं०] ताला लगाया हुआ; यंत्रयोगसे बँधा हुआ; जकड़ा हुआ, बंद किया गया।

यंत्री(त्रिन्)–पु० [सं०] नियंत्रण करने, बाँधनेवाला; बलबलानेवाला; तांत्रिक; (मेकानिक) यंत्रादिकी सहायतासे काम करनेवाला, कारीगर; यंत्र बनाने या मरम्मत करनेवाला, यंत्रक, यंत्रज्ञ; यंत्रका प्रयोग करनेवाला।

य–पु० [सं०] यज्ञ, संयम; भाग। **–गण**–पिंगलका एक गण जिसमें पहला वर्ण लघु और शेष दोनों गुरु होते हैं।

यक–वि० [फा०] एक; अकेला। **–चश्म**–वि० काना; एक रुखका (तसवीर आदि)। **–चश्मी**–वि० सबको एक निगाहसे देखनेवाला; एक रुखी (तसवीर)। **–ज़बान**–वि० बातका पक्का; एक भाषाभाषी। (**मु०–ज़बान होकर कहना**–मिलकर एक बात कहना।) **–जा**–वि० इकट्ठा; मिले-जुले। **–जान**–वि० खूब घुलामिला हुआ, एकदिल। **–तरफ़ा राय**–स्त्री० वह राय जो दूसरे पक्षका विचार किये बिना दी या कायम की जाय। **–फ़र्दी या फसली**–वि० जो सालमें एक ही फसल पैदा करे (जमीन)। **–बयक**–अ० एकाएक, अचानक। **–बारगी**–अ० अकस्मात्, सहसा, अचानक। **–मुश्त**–अ० इकट्ठा, एक बारमें। **–रंग,–रंगा,–रंगी**–वि० एक रंगका, अंदर-बाहरसे एक। **–रुख़ा,–रुख़ी**–वि० एकतरफा, एक रुखका। **–लाई**–स्त्री० छोटे अर्जकी, एक पाटकी चादर; नकाब; चोगा। वि० फर्दी (साड़ी या धोती)। **–लौता**–वि० एकमात्र (पुत्र)। **–सर**–वि० अकेला; इकट्ठा, कुल। **–साँ**–वि० एकसा; एक प्रकारका। **–सानियत,–सानी**–स्त्री० सदृशता, यकसाँ होना। **–सार**–वि० एक जैसा। **–साला**–वि० एक सालका। **मु०–जान दो कालिब**–अभिन्नहृदय मित्र। **–न शुद् दो शुद्**–एक बला तो थी ही, दूसरी और पीछे पड़ी।

यकीन–पु० [अ०] विश्वास; प्रतीति (आना, करना)।

यकीनन–अ० [अ०] अवश्य; निःसंदेह; विश्वासपूर्वक।

यकीनी–वि० [फा०] असंदिग्ध।

यकुम–स्त्री० [फा०] महीनेकी पहली तारीख, तिथि, एक्कम।

यकृत–पु० [सं०] पेटमें दायीं ओर एक थैली जिसमें भोजनको पचानेवाला रस रहता है, जिगर।

यक्ष–पु० [सं०] एक देवयोनि; कुबेरके सेवक; कुबेर; प्रेत, भूत। **–कर्दम**–पु० कपूर, अगर, कस्तूरी और कंकोलके संयोगसे बना हुआ अंगराग (राम०)। **–ग्रह**–पु० एक कल्पित ग्रह; प्रेतबाधा।**–नायक,–प,–पति**–पु०कुबेर। **–पुर**–पु० यक्षोंका नगर, अलकापुरी। **–रस**–पु० फूलोंके रससे तैयार की हुई शराब।**–राज**–पु० कुबेर।

यक्षाधिप, यक्षाःधिपति–पु० [सं०] कुबेर।

यक्षिणी, यक्षी–स्त्री० [सं०] यक्षकी स्त्री; कुबेरकी स्त्री।

यक्ष्म, यक्ष्मा(क्ष्मन्)–पु० [सं०] क्षयरोग, तपेदिक।

यक्ष्मघ्नी–स्त्री० [सं०] दाख, अंगूर।

यक्ष्मी(क्ष्मिन्)–पु० [सं०] क्षयरोगी।

यख़नी–स्त्री० [फा०] शोरवा; उबले हुए मांसका रसा।

यगाना–वि० [फा०] आत्मीय, स्वजन; अकेला;अद्वितीय।

यग्य*–पु० दे० 'यज्ञ'।

यच्छ*–पु० दे० 'यक्ष'।

यच्छिनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

यजन–पु० [सं०] यज्ञ करना।

यजमान–पु० [सं०] यज्ञ करनेवाला; दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणोंसे धार्मिक कृत्य करानेवाला।

यजमानी–स्त्री० यजमानोंका वासस्थान; यजमानका भाव या धर्म; विवाह आदिके अवसरोंपर पुरोहित, नाई, बारीके काम करनेका अधिकार; पुरोहिती।

यजुर्विद्,यजुर्वेदी(दिन्)–पु०[सं०]यजुर्वेद जाननेवाला।

यजुर्वेद–पु० [सं०] चारों वेदोंमेंसे एक; वह वेद जिसमें यजुओं(गद्य मंत्रों)का संग्रह है, इसमें विशेषतया यज्ञकी क्रियाओं और उसके भेद-प्रभेदोंका विवरण और प्रतिपादन है।

यजुर्वेदी–वि० दे० 'यजुर्वेदीय'।

यजुर्वेदीय–वि० [सं०] यजुर्वेदका ज्ञाता; यजुर्वेदके अनुसार कृत्य करनेवाला (ब्राह्मण); यजुर्वेद-संबंधी।

यज्ञ–पु० [सं०] हवन-पूजनयुक्त एक वैदिक कृत्य, क्रतु, मख, याग; लोकहितके विचारसे की हुई पूजा; अनुष्ठान, होम; यज्ञ-देवता। **–काल**–पु० यज्ञका शास्त्रनिर्दिष्ट समय; पूर्णमासी। **–कुंड**–पु० हवन करनेका कुंड, अनलकुंड। **–कृत्**–वि० यज्ञ करने, करानेवाला। **–घ्न,–द्रुह (ह्)**–पु० यज्ञविध्वंसक; राक्षस।**–तुरंग**–पु० यज्ञका घोड़ा। **–त्राता (तृ)**–पु० यज्ञरक्षक; विष्णु। **–दक्षिणा**–स्त्री० शुल्क, यज्ञ करानेके उपलक्ष्यमें ब्राह्मणोंको दिया हुआ धन।**–द्वेषी (षिन्)**–पु० यज्ञविरोधी। **–द्रव्य**–पु० यज्ञकी सामग्री। **–धर**–पु० यज्ञधारणकर्ता पुरुष, विष्णु। **–धूम**–पु० होमका धुआँ। **–पति**–पु० यजमान; विष्णु। **–पत्नी**–स्त्री० यज्ञकी स्त्री, दक्षिणा। **–पशु**–पु० यज्ञका बलिपशु (घोड़ा, बकरा)। **–पात्र,–भांड,–भाजन**–पु० यज्ञके कामोंके लिए बने हुए काठके बरतन। **–पुरुष**–पु० विष्णु। **–फलद**–पु० यज्ञका फल देनेवाले विष्णु। **–भाग**–पु० यज्ञका अंश; (यज्ञांश पानेवाले) देवता। **–भूमि**–स्त्री० यज्ञका स्थान। **–भूषण**–पु० कुश।**–भृत्**–वि० यज्ञका आयोजन करनेवाले विष्णु। **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० विष्णु।**–मंडप**–पु० यज्ञका मंडप। **–महोत्सव**–पु० यज्ञका विशाल समारोह। **–मुख**–पु० यज्ञका आरंभ। **–यूप**–पु० यज्ञका बलिपशु बाँधनेका खंभ, यूपकाष्ठ, यज्ञस्तंभ।**–रस**–पु०सोम। **–राज**–पु० चंद्रमा। **–वराह**–पु० शूकरावतार (विष्णु, यज्ञरूप वराह)। **–वाह**–पु० यज्ञ करनेवाला। **–वाहन**–पु० यज्ञ करनेवाला; ब्राह्मण; विष्णु; शिव। **–वाही(हिन्)**–पु० यज्ञका सब काम करनेवाला। **–वेदी**–स्त्री० यज्ञकी वेदिका। **–शत्रु**–पु० राक्षस, असुर। **–शाला**–स्त्री० यज्ञ करनेका स्थान, यज्ञमंदिर। **–सदन**–पु० यज्ञमंडपका स्थान, यज्ञभूमि। **–स्थाणु**–पु० दे० 'यज्ञयूप'। **–होता(तृ)**–पु० यज्ञमें देवताओंका आवाहन करनेवाला; मनुका एक पुत्र।

यज्ञक–पु० [सं०] यज्ञकर्ता; यज्ञ।

यज्ञांग–पु० [सं०] यज्ञ-सामग्री; गूलर; खैर; विष्णु।

यज्ञागार–पु० [सं०] यज्ञस्थान, यज्ञशाला।

यज्ञात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] विष्णु।

यज्ञारि–पु० [सं०] शिव; राक्षस।

यज्ञिय–वि० [सं०] यज्ञ-संबंधी या यज्ञके उपयुक्त; यज्ञका मंगलकर्ता; कर्मकांडके लिए उपयोगी; पवित्र। पु० देवता। **–देश**–पु० होमादिके लिए उपयुक्त देश, भारतवर्ष; कृष्णसार मृगकी वासभूमि।

यज्ञीय–वि० [सं०] यज्ञ-संबंधी; यज्ञका।

यज्ञेश्वर–पु० [सं०] विष्णु।

यज्ञेष्ट–पु० [सं०] रोहित घास।

यज्ञोपवीत–पु० [सं०] यज्ञ द्वारा संस्कार किया हुआ उपवीत, यज्ञसूत्र, जनेऊ। **–संस्कार**–पु० उपनयन-संस्कार, जनेऊ पहनानेका संस्कार (द्विज–ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंका। भिन्न-भिन्न वर्णोंके लिए भिन्न-भिन्न वयः-काल निर्द्धारित किया गया है)।

यज्य–पु० [सं०] यजन करने योग्य, पूजनीय।

यज्वा(ज्वन्)–पु० [सं०] यज्ञ करनेवाला।

यतन–पु० [सं०] यत्न करना।

यतनीय–वि० [सं०] यत्न करने योग्य।

यतमान–पु० [सं०] यत्न करता हुआ, कोशिशमें लगा हुआ, चेष्टाशील।

यतात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] संयतमना, संयमी।

यति–पु० [सं०] जितेंद्रिय, विरक्त होकर मोक्षके लिए प्रयत्न करनेवाला; संन्यासी; योगी; श्वेतांबर जैन साधु; ब्रह्माका एक पुत्र; नहुषका एक पुत्र; ब्रह्मचारी; छप्पयका एक भेद। स्त्री० छंदोंमें विश्रामका स्थान; रोक, रुकावट; मनोविकार; विधवा; शलक रागका एक भेद, संधि; मृदंगका एक प्रबंध। **–धर्म**–पु० संन्यास। **–पात्र**–पु० यतिका भिक्षापत्र। **–भंग**–पु० छंददोष जिसमें यति निश्चित स्थानपर न हो। **–भ्रष्ट**–पु० यतिभंग दोषसे युक्त छंद।**–सांतपन**–पु० पंचगव्य और कुश-जल पीकर पालन किया जानेवाला तीन दिनोंका एक व्रत।

यती(तिन्)–पु० [सं०] दे० 'यति'।

यतीम–पु० [अ०] बे माँ-बापका बच्चा, अनाथ। वि० बिना माँ-बापका (बच्चा); बेजोड़। **–ख़ाना**–पु० अनाथालय।

यत्–सर्व० [सं०] जो। **–किंचित्**–अ० थोड़ासा, कुछ; बहुत कम। **–परो नास्ति**–जिससे उत्तम नहीं है,

बेहद, नितांत, अतिशय।

यत्न-पु० [सं०] उद्योग, उपाय; सार-सम्हाल; रोगशांतिका उपाय, उपचार। **-पर**-वि० दे० 'यत्नवान्'। **-पूर्वक**-अ० चेष्टापूर्वक, उपाय द्वारा। **-शील**-वि० सचेष्ट, आग्रही, अध्यवसायी।

यत्नवती-वि० स्त्री० [सं०] यत्नमें लगी हुई।

यत्नवान्(वत्)-वि०[सं०] प्रयत्नशील, यत्नमें लगा हुआ।

यत्र-अ० [सं०] जहाँ। **-तत्र**-अ० जहाँ-तहाँ; जगह-जगह।

यथांश-वि० [सं०] भागके अनुकूल; यथायोग्य।

यथा-अ० [सं०] जिस प्रकार, जैसे। **-कथित**-वि० जैसा पहले कहा गया हो। **-कर्तव्य**-अ० कर्तव्यके अनुकूल। **-कर्म(न्)**-अ० कर्मानुसार। **-काम**-अ० यथेच्छ, मनमाने। **-कामी(मिन्)**, **-कारी(रिन्)**-वि० स्वेच्छाचारी, मनमाना करनेवाला। **-काम्य**-अ० इच्छानुकूल। **-कार्य**-अ० कार्यके अनुकूल, जैसा करना चाहिये। **-काल**-अ० उचित समयपर। **-कुल**-वि० कुलानुसार। **-तथ**, **-तथ्य**-वि० ज्योंका त्यों, हूबहू, जैसा हुआ हो। **-तृप्ति**-अ० जी भरकर। **-दृष्ट**-वि० जैसा देखा हो। **-नियम**-वि० नियमानुसार। **-निर्दिष्ट**-वि० जैसा निर्देश दिया गया हो। **-पूर्व**-वि० पहलेका-सा, ज्योंका त्यों। **-प्रयोग**-अ० प्रयोगके अनुरूप। **-भाग**-वि० जितना भाग है उतना, यथोचित। **-मति**-वि० समझके अनुसार। **-मूल्य**-वि० मूल्यके अनुसार। **-यथ**-अ० यथोचित रूपसे। वि० जैसा उचित है, वैसा (साकेत)। **-योग्य**-वि० जैसा चाहिये, उपयुक्त। **-रीति**-वि० प्रचलित प्रथाके अनुसार। **-रुचि**-वि० इच्छाके अनुरूप। अ० इच्छानुसार। **-लब्ध**-वि० प्राप्तिके अनुसार; यथालाभ संतोषवाली (वृत्ति)। **-लाभ**-वि० जो मिले उसीके अनुरूप। **-विधि**-अ० विधिपूर्वक, जैसी विधि हो उसीके अनुसार। **-विहित**-वि० विधानके अनुसार, शास्त्रानुमोदित। **-शक्ति**-अ० शक्तिके अनुसार, शक्तिभर। **-शक्य**-वि० भरसक, जहाँतक हो सके वहाँतक। **-शास्त्र**-अ० शास्त्रानुसार। वि० जैसा शास्त्रमें दिया हो वैसा। **-शीघ्र**-अ० जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी। **-श्रुति**-वि० वेदानुसार। **-संख्य**-पु० एक अर्थालंकार, जहाँ कुछ वस्तुओंका वर्णन एक क्रमसे हो और आगे चलकर उनसे संबंधित वस्तुओंका वर्णन भी उसी क्रमसे किया जाय। **-संभव**, **-साध्य**-अ० जो हो सके, भरसक, सामर्थ्यभर। **-समय**-अ० निश्चित समयपर। वि० समयके अनुसार। **-स्थान**-अ० उचित स्थानपर। **-स्थिति**-अ० (ऐज दि केस मे बी) जैसी स्थिति हो उसीके अनुसार। **-स्थिति समझौता**-पु० [हिं०] (स्टडस्टिल ऐग्रीमेंट) वर्तमान या विद्यमान स्थितिको ज्योंका त्यों बनाये रखनेवाला समझौता।

यथानुपूर्वक-वि० [सं०] परंपराके अनुकूल।

यथारथ*-वि० दे० 'यथार्थ'।

यथार्थ-वि० [सं०] सत्य, प्रकृत, उचित। **-में**-अ० दरअसल, वस्तुतः। **-वाद**-पु० (रीयलिज्म) जो बात या वस्तु जिस रूपमें हो, उसी रूपमें उसका वर्णन करना या ग्रहण करना; साहित्यका यह सिद्धांत कि इसमें वस्तुएँ जिस रूपमें दिखाई दें, उसी रूपमें उनका वर्णन करना चाहिये (आदर्शवादका उलटा); यह दार्शनिक सिद्धांत कि भौतिक जगत्की स्वतंत्र सत्ता है। **-वादी(दिन्)**-वि० (रीयलिस्ट) यथार्थवादका अनुयायी।

यथार्थतः(तस्)-अ० [सं०] वस्तुतः; यथानुरूप।

यथावकाश-अ० [सं०] जैसा अवकाश मिले।

यथावत्-वि० [सं०] ज्योंका त्यों, हू-बहू। अ० जैसा चाहिये उसी तरह।

यथावसर-अ० [सं०] अवसरके अनुसार, जैसा अवसर हो उसीके अनुरूप।

यथेच्छ-वि० [सं०] इच्छानुसार, मनमाना।

यथेच्छाचार-पु० [सं०] स्वेच्छाचार, मनमाना काम करना।

यथेच्छाचारी(रिन्)-वि० [सं०] स्वेच्छाचारी, अपने मनकी करनेवाला।

यथेप्सित-वि० [सं०] यथेच्छ।

यथेष्ट-वि० [सं०] जितना चाहिये उतना।

यथेष्टाचरण, यथेष्टाचार-पु० [सं०] स्वेच्छाचार, मनमाना आचरण करना, जैसा पसंद हो वैसा आचरण करना।

यथेष्टाचारी(रिन्)-वि० [सं०] मनमाना काम करनेवाला।

यथोक्त-वि० [सं०] जैसा कहा गया हो, कथनानुसार।

यथोचित-वि० [सं०] जैसा जाहिये वैसा, समुचित।

यथोपयुक्त-वि० [सं०] यथायोग्य, यथोपयोगी।

यदपि*-अ० दे० 'यद्यपि'।

यदा-अ० [सं०] जब, जिस समय; जहाँ। **-कदा**-अ० जब-तब, कभी-कभी।

यदु-पु० [सं०] राजा ययातिका ज्येष्ठ पुत्र; यदुवंश। **-कुल**-पु० दे० 'यदुवंश'। **-नंदन**, **-नाथ**, **-पति**, **-भूप**, **-राज**-पु० कृष्ण। **-राई***-पु० यदुराज, कृष्ण। **-वंश**-पु० राजा यदुका कुल। **-वंशी(शिन्)**-पु० यदुकुलमें उत्पन्न पुरुष, यादव। **-वर**, **-वीर**-पु० कृष्ण।

यदृच्छा-स्त्री० [सं०] स्वेच्छाभाव, मनमानापन; आकस्मिक संयोग; स्वतंत्रता। **-लब्ध**-वि० दैवयोगसे उपलब्ध, अनायास प्राप्त।

यदृच्छया-अ० [सं०] मनमाने तौरपर, बिना किसी नियम या कारणके; अकस्मात्, दैवयोगसे।

यद्यपि-अ० [सं०] अगरचे, यदि चेत्, गो कि।

यद्वातद्वा-अ० [सं०] कभी-कभी, जब-तब। पु० टालमटोल।

यम-पु० [सं०] मृत्युके देवता, यमराज; जुड़वाँ संतान, यमज; संयम, निग्रह; एक मंत्रद्रष्टा ऋषि; कौआ; शनि; विष्णु; वायु; दोकी संख्या। **-कात**, **-कातर**-पु० यमका छुरा, खाँडा; एक प्रकारकी तलवार। **-कीट**-पु० केंचुवा। **-घंट**-पु० दीपावलीका दूसरा दिन, कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा; एक दुष्ट योग जिसमें शुभ काम वर्जित है। **-चक्र**-पु० यमराजका शस्त्र। **-ज**-पु० जुड़वाँ बच्चे; वह सदोष घोड़ा जिसका एक ओरका अंग हीन, दुर्बल और दूसरी ओर वही अंग ठीक हो; अश्विनीकुमार। **-जातना***-स्त्री० दे० 'यमयातना'। **-जित्**-पु०

मृत्युको जीतनेवाला, मृत्युंजय। **-तर्पण**-पु० यमकी तृप्तिके निमित्त किया जानेवाला एक यज्ञ। **-दंड**-पु० यमराजका दंड, कालदंड; मनुष्यके मस्तकपरकी दो प्रकारकी रेखाओंमेंसे एक। **-दंष्ट्रा**-स्त्री० यमकी दाढ़; रोग और मृत्युके विशेष भययुक्त काल, कातिक और अगहन महीनोंके कुछ दिन (वैद्यकमत)। **-दुतिया***-स्त्री० दे० 'यमद्वितीया'। **-दूत,-दूतक**-पु० कौआ; यमके दूत। **-द्वार**-पु० यमराजके घरका दरवाजा। **-द्वितीया**-स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला द्वितीया, भैयादूज। **-धर,-धार**-स्त्री० दोनों ओर धारवाली तलवार या कटारी। **-नक्षत्र**-पु० भरणी नक्षत्र। **-नाह*,-नाथ**-पु० यमोंके स्वामी, धर्मराज। **-पुर**-पु० यमका स्थान, यमलोक। **-पुरी**-स्त्री० यमनगरी, यमलोक। (**मु०-पुरी पहुँचाना**-मार डालना, प्राण ले लेना)। **-पुरुष**-पु० यमराज; यमके दूत। **-भगिनी**-स्त्री० यमुना नदी। **-यातना**-स्त्री० नरककी पीड़ा; अंतकालकी पीड़ा। **-रथ,-वाहन**-पु० भैंसा। **-राज**-पु० यमोंका स्वामी, धर्मराज। **-राज्य, -राष्ट्र,-सदन**-पु० यमलोक। **-ल**-वि०,पु० 'जुड़वाँ'। **-वरा**-वि० स्त्री० आजन्म अविवाहिता, चिरकुमारी। **-व्रत**-पु० यमके समान निष्पक्ष राजधर्म, राजाका दंड, नियम। **-सभा**-स्त्री० यमराजकी कचहरी। **-सूर्य**-पु० ऐसे दो कमरोंवाला मकान जिनमें एक कमरेका रुख उत्तर हो और दूसरेका पश्चिम। **-स्तोम**-पु० एक दिनमें होनेवाला एक यज्ञ। **-हंता(तृ)**-पु० कालका नाश करनेवाला।

यमक-पु० [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें एक ही शब्द या शब्दखंड-अगर सार्थक हो तो भिन्न अर्थोंमें-एक ही पद्यमें अनेक बार प्रयुक्त होता है; एक वृत्त; सेनाका एक व्यूह; यमज; संयम।

यमदग्नि-पु० [सं०] एक ऋषि, परशुरामके पिता।

यमन-पु० [सं०] निरोध करना; बंधन; विराम देना, रोकना; यमराज; [अ०] अरबका एक प्रदेश।

यमनिका-स्त्री० दे० 'यवनिका'।

यमनी-स्त्री० एक कीमती पत्थर, रत्न (यमनकी)।

यमला-स्त्री० [सं०] हिचकीका रोग, दुहरी हिचकी; एक नदी; एक तांत्रिक देवी।

यमलार्जुन-पु० [सं०] गोकुलके दो पौराणिक अर्जुन वृक्ष।

यमानुजा-स्त्री० [सं०] यमराजकी छोटी बहन, यमुना।

यमालय-पु० [सं०] यमका घर, यमपुर।

यमी-स्त्री० [सं०] यमकी बहन, यमुना नदी।

यमी(मिन्)-पु० [सं०] संयमी।

यमुना-स्त्री० [सं०] यमुना नदी; यमकी बहन; दुर्गा। **-भिद्**-पु० यमुनाके दो भाग करनेवाले, बलराम।

यमुनोत्तरी-स्त्री० हिमालयकी एक चोटी जो यमुनाका उद्गम-स्थान है।

ययावर*-पु० दे० 'यायावर'।

यव-पु० [सं०] जौ; एक जौकी तौल; लंबाईकी एक नाप, तिहाई इंच; वह वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो। **-क्षार**-पु० जौके पौधोंको जलाकर निकाला हुआ खार, जवाखार। **-द्वीप**-पु० जावा द्वीपका पुराना नाम।

यवन-पु० [सं०] वेग; तेज घोड़ा; यूनानका निवासी; मुसलमान। **-प्रिय**-पु० मिर्च।

यवनानी-स्त्री० [सं०] यूनानकी भाषा; यूनानकी लिपि।

यवनिका-स्त्री० [सं०] नाटकका पर्दा; कनात।

यवनी-स्त्री० [सं०] यवन जातिकी स्त्री; यवनकी स्त्री।

यवास, यवासक-पु० [सं०] जवासा नामका पौधा।

यवासा-स्त्री० [सं०] एक तृण।

यश(स्)-पु० [सं०] कीर्ति, सुख्याति, सुनाम; प्रशंसा। **मु०-गाना**-प्रशंसा करना; कृतज्ञ होना। **-मानना**-कृतज्ञ होना; निहोरा मानना।

यशब-पु० [अ०] एक प्रकारका हरा पत्थर जो बिजलीसे बचानेवाला और रोग दूर करनेवाला माना जाता है, संगे यशब।

यशस्कर-वि० [सं०] कीर्तिजनक।

यशस्काम-वि० [सं०] यशोलिप्सु।

यशस्वती-स्त्री० [सं०] कीर्तिमती।

यशस्वान्(स्वत्)-वि० [सं०] यशस्वी, कीर्तिमान्।

यशस्विनी-स्त्री० [सं०] बनकपास; महाज्योतिष्मती; गंगा। वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसे यश प्राप्त हो।

यशस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] सुख्यात, जिसका खूब यश फैला हो।

यशी-वि० यशस्वी।

यशील*-वि० कीर्तिमान्।

यशुमति*-स्त्री० दे० 'यशोदा'।

यशोगाथा-स्त्री० [सं०] कीर्तिगान, गौरवकथा।

यशोदा-स्त्री० [सं०] नंदकी पत्नी; दिलीपकी माताका नाम; एक वर्णवृत्त। **-नंदन**-पु० कृष्ण।

यशोधन-वि० [सं०] यश ही जिसका धन है, यशस्वी।

यशोधरा-स्त्री० [सं०] गौतम-बुद्धकी पत्नी।

यशोधरेय-पु० [सं०] यशोधराका पुत्र, राहुल।

यशोमति, यशोमती-स्त्री० [सं०] दे० 'यशोदा'।

यष्टि-स्त्री० [सं०] लाठी, छड़ी; पताकाका डंडा; टहनी, डाल; जेठी मधु, मुलेठी; मोतियोंका एक प्रकारका हार; लता; बाँह; ताँत। **-त्रय**-पु० (विकेट्स) धावनस्थलीके दोनों सिरोंपर खड़े किये जानेवाले वे तीन डंडे जिनके सामने खड़ा होकर बल्लेबाज दूसरी ओरसे फेंके हुए गेंदपर प्रहार करनेका प्रयत्न करता है और जिनके पीछे यष्टि-रक्षक या गोलंदाजका स्थान रहता है। **-मधु**-पु० मुलेठी, जेठीमधु। **-यंत्र**-पु० वह धूपघड़ी जिसमें गड़ी हुई छड़ीकी छायासे समयका ज्ञान प्राप्त हो। **-रक्षक**-पु० (विकेटकीपर) यष्टित्रय(विकेट्स)के ठीक पीछे खड़ा रहनेवाला वह क्षेत्ररक्षक जो बल्लेबाजके प्रहारसे उछाले गये गेंदको लोकने अथवा धावन करनेवाले खेलाड़ीके अपने स्थानपर न पहुँच पानेकी हालतमें वापस मिले हुए गेंदसे उनपर प्रहार करनेका प्रयत्न करता है।

यष्टिका-स्त्री०[सं०] छड़ी, लाठी; जेठी मधु; वापी, बावली; हार, यष्टी।

यष्टी-स्त्री० [सं०] मुलेठी; मोतियोंकी माला।

यह-सर्व० निकटस्थ वस्तुका निर्देशक सर्वनाम (वक्ता और श्रोताको छोड़कर शेष सभी जीवों और पदार्थोंके लिए

व्यवहृत होता है)। वि० जब 'यह'के साथ कोई संज्ञा होती है तब वह विशेषणका काम करता है–'जैसे 'यह आदमी'।

यहाँ–अ० इस स्थानमें, इस जगहपर।

यहि*–सर्व०'यह'का विभक्ति लगनेके पहलेका पुराना रूप।

यही–अ० [यह+ही] निश्चित रूपसे यह, यह ही।

यहूदिन–स्त्री० यहूदीकी स्त्री।

यहूदी–पु० यहूद देशका निवासी; एक शामी जाति।

यांचा–स्त्री० याच्ञा, माँगना; याचना करना।

यांत्रिक–पु०[सं०](मशीनिस्ट) मशीनों,यंत्रोंको चलानेवाला, उनके कल-पुरजोंका रहस्य जाननेवाला; मशीनें बनानेवाला। वि०(मेकानिकल)यंत्र-संबंधी; यंत्रवत् चलनेवाला।

या–सर्व०वि० व्रजभाषामें विभक्तिमें जोड़ा जानेवाला 'यह'-का रूप। [फा०] संदेह, विकल्पसूचक शब्द, अथवा, वा, किंवा; संबोधनसूचक हे, ऐ। **–अली,–इलाही**–पु० ऐ खुदा (दुआ माँगने, आश्चर्य प्रकट करनेके लिए)।

याक–पु० [तिब्ब० 'ग्याक्', सं० 'गावक'] हिमालयपर मिलनेवाला एक जंगली बैल जिसकी पूँछके बालसे चँवर बनता है। † वि० एक (बैसवाड़ी)।

याकूत–पु०[अ०]लाल रंगका एक बेशकीमत पत्थर, लाल।

याग–पु०[सं०]यज्ञ। **–संतान**–पु० इंद्रपुत्र जयंतका नाम।

याचक–पु० [सं०] माँगनेवाला, भिखारी।

याचकता–स्त्री०[सं०]भीख माँगनेकाकाम,भिखमंगीका पेशा।

याचन–पु० [सं०] दे० 'याचना' (स्त्री०)।

याचना–स० क्रि० प्रार्थना करना, माँगना। स्त्री० [सं०] माँगनेकी क्रिया।

याचमान–वि० [सं०] याचना करनेवाला, याचक।

याचिका–स्त्री०[सं०] (पिटीशन) आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र, अर्जी।

याचित–वि० [सं०] प्रार्थित, माँगा गया।

याचिता (तृ)–पु०[सं०] भिखारी; प्रार्थी।

याच्ञा–स्त्री० [सं०] दे० 'यांचा'।

याच्य–वि० [सं०] याचना करने योग्य, माँगने योग्य।

याज–पु० [सं०] अन्न; यज्ञ करनेवाला; एक ऋषिका नाम।

याजक–पु० [सं०] यज्ञ करने या करानेवाला।

याजन–पु० [सं०] यज्ञ करने, करानेका कार्य।

याजि–स्त्री० [सं०] यज्ञ। पु० यज्ञ करनेवाला।

याजी (जिन्)–पु० [सं०] यज्ञ करनेवाला।

याज्ञवल्क्य–पु० [सं०] प्रसिद्ध ब्रह्मवादी ऋषि, राजा जनकके गुरु, मैत्रेयी और गार्गीके पति; वैशंपायनके शिष्य एक ऋषि; याज्ञवल्क्य स्मृतिके रचयिता।

याज्ञसेनी–स्त्री० [सं०] यज्ञसेन(द्रुपद)की पुत्री, द्रौपदी।

याज्ञिक–पु० [सं०] यज्ञ करने, करानेवाला।

याज्य–वि० [सं०] यज्ञ कराने योग्य; जो यज्ञमें दिया या चढ़ाया जानेवाला हो; जो यज्ञ करनेसे प्राप्त हो (दक्षिणा)।

यात–वि० [सं०] गत; व्यतीत।

यातना–स्त्री० [सं०] अति कष्ट, पीड़ा।

यातायात–पु० [सं०] आना-जाना, गमनागमन; (ट्रैफिक) किसी पथसे होनेवाला मालका तथा यात्रियों आदिका गमनागमन।

यातुधान–पु० [सं०] राक्षस।

यात्रा–स्त्री० [सं०] जानेकी क्रिया; प्रस्थान; चढ़ाई, युद्ध-यात्रा; उपाय, व्यवहार; जीवन-निर्वाह; उत्सव; नृत्य-गान युक्त, रासलीलाके ढंगका बंगालमें प्रचलित एक अभिनय।

यात्राधिदेय–पु० [सं०] (ट्रैवलिंग अलाउंस) यात्रा करनेमें होनेवाले खर्चके बदले मिलनेवाला भत्ता।

यात्रावाल–पु०तीर्थ यात्रियोंको देवदर्शन करानेवाला,पंडा।

यात्रिक–पु० [सं०] यात्री; राहखर्च, यात्राकी सामग्री; तीर्थयात्री; वह जो जीवन-धारणके उपयुक्त हो; यात्राका उद्देश्य; उत्सव; उपाय। वि० यात्रा-संबंधी; रीतिके अनुसार, प्रथानुकूल।

यात्री(त्रिन्)–पु० [सं०] यात्रा करनेवाला, मुसाफिर; तीर्थाटन करनेवाला।

याथातथ्य–पु०[सं०]यथार्थता, असलियत, तथ्यानुरूपता।

याथार्थ्य–पु०[सं०] यथार्थ होनेका भाव, यथार्थता, सत्य।

याद–स्त्री० [फा०] स्मृति, स्मरणशक्ति; स्मरण करनेकी क्रिया। **–गार**–पु०,**–गारी**–स्त्री० स्मारक, स्मृतिचिह्न। **–दाश्त**–स्त्री० स्मरणशक्ति, स्मृति; स्मरणार्थ लिखा हुआ लेख। **मु०–करोगे**–स्मरण करोगे; पछताओगे। **–किया है**–बुलाया है। **–फरमाना**–बादशाह या उच्च पदाधिकारीका किसीको बुलाना।

यादव–पु० [सं०] यदुका वंशज; कृष्ण; गोधन।

यादवी–स्त्री० [सं०] यदुकुलकी स्त्री; दुर्गा; कुट्टिनी; सुरा; गृहयुद्ध (आ०)।

यादवीय–वि० [सं०] यादव-संबंधी। पु० गृहयुद्ध।

यादृश–वि०[सं०] जैसा, जिस प्रकारका।[स्त्री० 'यादृशी']

यान–पु० [सं०] सवारी, घोड़ा-गाड़ी इत्यादि वाहन; गमन, जाना; अभियान, आक्रमण। **–भत्ता**–पु० [हिं०] सवारी रखने तथा सवारीसे आने-जानेके खर्चके रूपमें मिलनेवाला भत्ता, यानाधिदेय।

यानांतरण–पु० [सं०] (ट्रांशिपमेंट) यात्रियों अथवा माल-असबाबका एक पोत या एक यानसे उतारकर दूसरे पोत या दूसरे यानमें पहुँचाया जाना।

यानाधिदेय–पु० [सं०] (कनवेयेंस अलाउंस) किसी कर्मचारीको साइकिल, इक्का आदि सवारी रखनेके लिए मिलनेवाला अधिदेय (भत्ता)।

यानी–अ० [अ०] अर्थात्, मतलब यह है।

यापन–पु० [सं०] बिताना; चलाना; व्यवहार करना।

याफ़्ता–वि० [फा०] पाया हुआ (जैसे 'सनदयाफ़्ता')।

याब–पु०[फा०] पानेवाला(जैसे 'कामयाब', 'फतहयाब')।

याम–पु० [सं०] पहर, तीन घंटेका समय; काल, समय। वि० यम-संबंधी। * स्त्री० रात। **–घोष**–पु० पहर-पहर पर बोलने, शब्द करनेवाला; शृगाल; मुर्गा; घड़ी।

यामाता(तृ)–पु० [सं०] दामाद, दे०'जामाता'।

यामि, यामी–स्त्री० [सं०] यामिनी, रात; कुलवधू।

यामिक–पु० [सं०] पहरुआ, पहरेदार। वि० याम-संबंधी।

यामित्र–पु० [सं०] लग्नराशिमें सातवाँ स्थान; दे० 'जामित्र'।

यामिन, यामिनि*–स्त्री० दे० 'यामिनी'।

यामिनी–स्त्री० [सं०] रात; हल्दी; कश्यपकी एक स्त्री। **–चर**–पु० राक्षस; उल्लू पक्षी; गुग्गुल।

याम्या–स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा; भरणी नक्षत्र; रात्रि।

याम्योत्तररेखा–स्त्री० [सं०] एक ऐसी कल्पित रेखा जो किसी स्थानसे चलकर सुमेरु-कुमेरुके चारों ओर मानी गयी है। भारतके ज्योतिषी उज्जयिनी या लंकासे इसका प्रारंभ मानते थे। आजकल इस रेखाका केंद्र प्रायः ग्रीनविच (इंग०) माना जाता है।

यायावर–पु० [सं०] खानाबदोश, वह जिसका कोई नियमित स्थान न हो; संन्यासी, परिव्राजक; अश्वमेधका घोड़ा। वि० सदा घूमनेवाला।

यायी(यिन्)–पु० [सं०] जानेवाला।

यार–पु० [फा०] मित्र; प्रेमी; परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला; साथी; सहायक; हिमायती।

याराना–पु० [फा०] मैत्री; अनुचित प्रेम (स्त्री-पुरुषका)। वि० मित्रकासा, मित्रताका।

यारी–स्त्री० [फा०] मैत्री, मित्रभाव।

याल–स्त्री० [तु०] घोड़ेकी गर्दनपरके बाल, अयाल।

यावक–पु० [सं०] जौ; जौका सत्तू; जौकी बनी हुई वस्तु; लाख; अलक्तक, आलता, महावर; साठी धान।

यावज्जीवन–अ० [सं०] जीवनपर्यंत, आजीवन।

यावत्–वि० [सं०] जितना; सब। अ० जहाँतक; जबतक।

यावनी–वि० यवन-संबंधी; मुसलमानी।

यावास–पु० [सं०] जवासेकी शराब।

यास–पु० [सं०] प्रयास, चेष्टा; लाल जवासा।

यासु*–सर्व० दे० 'जासु'।

युक्त–वि० [सं०] जुड़ा हुआ, जकड़ा हुआ; उचित, तर्कसंगत; संयुक्त, सहित; नियुक्त; मिलित; निपुण, चतुर। **–मना(नस्)**–वि० दत्तचित्त।

युक्ताक्षर–पु० [सं०] संयुक्त वर्ण, मिलित वर्ण।

युक्ताहार–पु० [सं०] उचित आहार। वि० उचित आहार करनेवाला।

युक्ति–स्त्री० [सं०] योग, मिलन; तर्क, ऊहा; दलील, उचित विचार; हेतु, कारण; न्याय, नीति; कौशल, चातुर्य; अनुमान; उपाय, योजना; चाल, रीति; एक अलंकार। **–कर,–पूर्ण**–वि० तर्कके अनुकूल; विचारपूर्ण। **–मूलक**–वि० (रैशनल) युक्ति या तर्कपर आधारित, तर्कसंगत, बुद्धिसंगत। **–युक्त**–वि० युक्तिपूर्ण, उचित; चतुर; प्रमाणित, सिद्ध। **–संगत**–वि० युक्ति या तर्कके अनुकूल।

युक्त्याभास–पु० [सं०] (सोफिस्ट्री) देखनेमें बुद्धिमत्तापूर्ण, किंतु वास्तवमें तथ्यहीन तर्क।

युगंधर–पु० [सं०] हरस, कूबर; गाड़ीका बम।

युग–पु० [सं०] युग्म, जोड़ा; बिसातपर चली जानेवाली पासेकी गोल गोटियाँ; पासेके खेलकी वे दो गोटियाँ जो साथ ही एक घरमें आ जायँ; समय, काल; पुराणमतसे कालका सुदीर्घ परिमाण–सत्य, त्रेता, द्वापर, कलियुग; (गाड़ीका) जूआ। वि० दोकी संख्यावाला। **–चेतना**–स्त्री० कालविशेषकी विशिष्ट प्रवृत्ति। **–धर्म**–पु० समयानुकूल आचरण, व्यवहार। **–पत्**–अ० एक जूएमें, अगल-बगल; साथ-साथ, एक साथ, एक समय। **–पुरुष**–वि० युगका महान्, श्रेष्ठ पुरुष। **–प्रतीक**–पु० युगका प्रतिनिधि, श्रेष्ठतम पुरुष। **–युग**–अ० बहुत दिनोंतक। **–ल**–पु० जोड़ा, युग्म। वि० वह जो दोकी संख्यामें हो।

युगति*–स्त्री० दे० 'युक्ति'।

युगम*–पु० दे० 'युग्म'।

युगलक–पु० [सं०] जोड़ा; पद्योंका वह जोड़ा जिसका एक साथ अन्वय हो।

युगांत–पु० [सं०] युग-समाप्ति; प्रलय।

युगांतक–पु० [सं०] प्रलय; प्रलयकाल।

युगांतर–पु० [सं०] अन्य युग; दूसरा समय। **मु०–करना**–आमूल परिवर्तन कर देना; समय, प्रथा, बदल देना।

युगावतार–वि० [सं०] युगका अवतारी महान् पुरुष।

युग्म–पु० [सं०] जोड़ा; अन्योन्याश्रय-संबंधयुक्त वस्तुएँ, बातें, द्वंद्व; मिथुन राशि। वि० दोकी संख्यावाले (व्यक्ति, पदार्थ आदि)। **–चारी (रिन्)**–वि० जोड़ेमें चलने, घूमनेवाले। **–ज**–पु० जुड़वा बच्चे, यमज, यमल।

युग्मक–पु० [सं०] जोड़ा, युग्म; (डबल्स) टेनिस या बैडमिंग्टनके खेलमें दो-दो पुरुष खेलाड़ियों या दो-दो स्त्री खेलाड़ियोंका जोड़ा।

युग्मेच्छा–स्त्री० [सं०] संभोगकी इच्छा।

युग्य–पु० [सं०] जोड़ी, वह गाड़ी जिसमें दो घोड़े या बैल जुतें; दो पशु जो एक साथ गाड़ीमें जुतें; जोड़ी। वि०जोता जाने योग्य; जोता जानेवाला। **–वाह**–पु० गाड़ीवान।

युत–वि० [सं०] युक्त, मिला हुआ; सहित।

युद्ध–पु० [सं०] परस्पर अभिघातके लिए शस्त्र-प्रहारका कर्म, संग्राम, लड़ाई, रण। **–कारी (रिन्)**–पु० योद्धा। वि० युद्ध करनेवाला। **–काल**–पु० युद्धका समय। **–क्षेत्र**–पु० दे० 'युद्धभूमि'। **–परिषद्**–स्त्री० (वार-कौंसिल) युद्धका संचालन करनेके लिए (मंत्रिमंडलके कतिपय सदस्योंसे) निर्मित विशेष समिति। **–पोत**–पु० लड़ाईमें काम आनेवाला जहाज, रणपोत। **–बंदी**–स्त्री० दे० 'लड़ाईबंदी'। पु० लड़ाईका कैदी। **–भू,–भूमि**–स्त्री०रणक्षेत्र, जिस स्थानपर युद्ध हो। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० युद्धविभागका संचालन करनेवाला मंत्री। **–मार्ग**–पु० युद्धकी पद्धति। **–रंग**–पु० युद्धस्थल; षडानन, कार्त्तिकेय। **–रत,–लिप्त**–वि० (बेलिजरेंट) (वह राष्ट्र या दल) जो नियमित रूपसे किसीके विरुद्ध लड़ाई ठानकर युद्धकार्योंमें लगा हुआ हो। **–विद्या**–स्त्री०,**–शास्त्र**–पु० युद्धका शास्त्र, विज्ञान। **–वीर**–पु० युद्ध करनेवाला पराक्रमी व्यक्ति; वीर रसके नायकका एक भेद। **–शक्ति**–स्त्री० युद्ध करनेकी शक्ति, बल। **–शाली (लिन्)**–वि० युद्धप्रेमी, युद्ध पसंद करनेवाला। **–सार**–पु० घोड़ा। **–स्थगन**–पु० (सीज़ फायर) युद्धमें स्थायी या अस्थायी संधि होनेके पहले लड़ाई बंद कर देनेकी स्थिति।

युद्धक–पु० [सं०] योद्धा; युद्ध; युद्धकारी विमान।

युद्धमय–वि० [सं०] युद्धप्रिय; युद्ध-संबंधी।

युद्धाचार्य–पु० [सं०] युद्ध-विद्याकी शिक्षा देनेवाला।

युद्धापराधी (धिन्)–पु० [सं०] (वारक्रिमिनल) वह जिसने युद्ध-संबंधी कोई अपराध–शत्रुके हाथ कोई उपयोगी सामग्री, समाचार, भेद आदि बेच देना–किया हो।

युद्धोत्तर-अर्थव्यवस्था–स्त्री० [सं०] (पोस्टवार एकॉनॉमी) युद्धसमाप्तिके बादकी स्थिति देखकर उसके अनुरूप तैयार की गयी आर्थिक समस्याओंके निपटारेकी व्यवस्था या योजना।

युद्धोत्तेजक–वि०[सं०] (वारमंगर) ऐसी नीतिका अनुसरण करनेवाला जिससे युद्ध छिड़ जानेकी संभावना हो।

युद्धोत्तेजन–पु० [सं०] (वारमंगरिंग) अपने भाषणों, वक्तव्यों, नीति आदिसे युद्धको उत्तेजन देनेका कार्य।

युद्धोन्मत्त–पु० [सं०] एक राक्षस, महोदर। वि० युद्धके लिए पागल; युद्धमें आत्मविस्मृत।

युद्धोपकरण–पु० [सं०] (आरमेमेंट्स) गोला-बारूद, तोपें आदि युद्धकी सामग्री।

युधिष्ठिर–पु० [सं०] कुंतीसे उत्पन्न पांडुके सबसे बड़े पुत्र, धर्मराज, धर्मपुत्र।

युध्य–वि०[सं०]युद्धके योग्य, जिससे युद्ध किया जा सके।

युयुत्सा–स्त्री० [सं०] युद्धकी इच्छा; शत्रुता।

युयुत्सु–वि० [सं०] युद्धका इच्छुक, लड़नेकी इच्छा रखनेवाला।

युवक–पु० [सं०] तरुण, जवान, सोलहसे तीस वर्षकी अवस्थाका पुरुष।

युवति, युवती–स्त्री० [सं०] जवान स्त्री; हलदी। वि० स्त्री० प्राप्त यौवना, जवान (स्त्री)।

युवा(वन्)–वि० [सं०] तरुण, जवान। **–गंड**–पु० मुहाँसा। **–पिडिका**–स्त्री० मुँहासा। **–राई***–स्त्री० युवराजका पद। पु० दे० 'युवराज'। **–राज**–पु० राज्यका उत्तराधिकारी राजकुमार। **–राजी**–स्त्री० [हिं०] युवराजका पद। **–राज्ञी**–स्त्री० युवराजकी पत्नी। **–रानी***–स्त्री० 'युवराज्ञी'।

युष्मदीय–वि० [सं०] तुम लोगोंका।

यूँ–अ० दे० 'यों'।

यूथ–पु० [सं०] सजातीय जीवोंका समूह, समुदाय, झुंड; सेना, फौज। **–चारी(रिन्)**–वि० झुंडमें चलनेवाले (बंदर, हाथी, हिरन आदि)। **–नाथ**–पु० झुंडका स्वामी, नेता; सेनाध्यक्ष। **–प, –पति**–पु० सेनापति; सरदार। **–पाल**–पु० दे० 'यूथपति'। **–बंध**–पु० सेनाकी एक टुकडी, समूह। **–भ्रष्ट**–वि० यूथसे निकला या निकाला हुआ। **–मुख्य**–पु० सेनाकी किसी टुकड़ीका प्रधान।

यूथक–पु० [सं०] दे० 'यूथ'।

यूथिका, यूथी–स्त्री० [सं०] जूही (फूल, पौधा)।

यूनानी–पु० यूनानका नागरिक। स्त्री० यूनानकी भाषा; यूनानकी चिकित्सा-प्रणाली, हकीमी। वि० यूनान देशका; यूनान-संबंधी।

यूनियन–स्त्री० [अं०] संघ, सभा।

यूनिवर्सिटी–स्त्री० [अं०] विविध विषयोंके शिक्षण, परीक्षण या दोनोंकी व्यवस्थाके लिए स्थापित शिक्षा-संस्था जो प्रायः कालेजों आदिका भी नियमन करती है, विद्यापीठ, विश्वविद्यालय।

यूप–पु० [सं०] यज्ञका खंभा जिससे बलिपशु बाँधा जाता है; स्तंभ जो यज्ञकी समाप्तिका चिह्न हो, विजयस्तंभ।

यूरेनियम–पु० [अं०] एक भारी और शुभ्र धातु-तत्त्व।

यूरोप–पु० [अं०] पूर्वी गोलार्द्धका सबसे छोटा महाद्वीप जिसके उत्तर आर्कटिक, पश्चिम अतलांतक, दक्षिण भूमध्यसागर तथा पूर्वमें काकेशस और यूराल पर्वत हैं।

यूरोपियन–पु० [अं०] यूरोपके किसी देशका नागरिक। वि० यूरोपका; यूरोप-संबंधी।

यूरोपीय–वि० यूरोपका; यूरोप-संबंधी।

यूष–पु० [सं०] दाल इत्यादिका पानी, जूस, शोरबा; शहतूतका पेड़।

यूह*–पु० समूह, झुंड; सेना।

ये–सर्व० 'यह'का बहुवचन।

येई*–सर्व० यही।

येऊ*–सर्व० यह भी।

येतो†–वि० इतना।

येन–सर्व० [सं०] जिससे। **–केन प्रकारेण**–जिस किसी भी तरह से।

येहू*–अ० यह भी।

यों–अ० इस प्रकार।

यो†–सर्व० यह।

योक्तव्य–वि० [सं०] जोड़ने योग्य; नियुक्त करने योग्य।

योक्ता(क्तृ)–पु० [सं०] जोड़ने, मिलाने या बाँधनेवाला; गाड़ीवान; उभाड़नेवाला, उत्तेजक।

योक्त्र–पु० [सं०] रस्सी; वह रस्सी जिससे गाड़ीका बैल जूएमें बँधा हो; रस्सी बाँधनेका पेच, औजार।

योग–पु० [सं०] जोड़नेका कार्य (गणित); संयोग; मिलाना, संबंध, संपर्क; युक्ति, उपाय; लाभ; धन; व्यवसाय; औषध; ध्यान; संगति; छल, विश्वासघात; शत्रुनाशके लिए आयोजित यंत्र, मंत्र, पूजा, छल, कपट आदि युक्तियाँ; दूत; सुभीता; सुयोग; चित्तवृत्तिका निरोध; मोक्षका उपाय; प्रेम; प्रयोग; मेल-मिलाप; वैराग्य; शुभ काल; साम आदि चार प्रकारके उपाय; सहयोगिता; ज्योतिषमें प्रधान नक्षत्र; युक्ति, प्रयोग, आभिचारिक अनुष्ठान जो बारह हैं, जोग, उतारा-पतारा; उत्सव, पर्व (स्नान आदिका); संपत्तिलाभ और वृद्धि; एक छंद; युक्ति; चंद्र-सूर्यकी विशेष स्थितिके कारण होनेवाले फलित ज्योतिषके विशिष्ट काल; विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रोंका निश्चित नियमसे पड़ना; अष्टांग योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधिका अंतर्भाव है; हठयोग। **–कन्या**–स्त्री० यशोदाकी कन्या। **–क्षेम**–पु० अलब्ध वस्तुका लाभ और लब्ध वस्तुकी रक्षा करना; राष्ट्रका सुप्रबंध; लाभ; कल्याण, मंगल; निर्वाण, शांति; दूसरेकी धन-संपत्तिकी रक्षा; वह वस्तु जो उत्तराधिकारियोंमें न बँटे। **–गामी(मिन्)**–वि० योगबलसे जानेवाला (वायुमार्गसे)। **–दर्शन**–पु० महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र। **–दान**–पु० सहयोग करना, हाथ बँटाना। **–निद्रा**–स्त्री० समाधि-निद्रा, अर्द्ध समाधि और निद्रा; योगकी समाधि; युद्ध-क्षेत्रमें वीरोंकी मृत्यु। **–फल**–पु० जोड़नेसे प्राप्त फल। **–बल**–पु० तपोबल; योगसाधनसे अर्जित अलौकिक शक्ति। **–भ्रष्ट**–पु० वह योगी जिसका योग पूर्ण न हुआ हो, योगमार्गसे च्युत। **–माया**–स्त्री० सूक्ष्म समाधिकी अलौकिक शक्ति; विष्णुकी शक्ति;

भगवती; यशोदाकी कन्या। **–रूढ़ि**–स्त्री० दो शब्दोंके योगसे बना शब्द जिसमें युक्त शब्द सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ देते हैं–जैसे पंचबाण (कामदेव)। **–विद्**–पु० योगका ज्ञानी; शिव; ओषधियोंके योगसे औषध बनानेवाला; बाजीगर, ऐंद्रजालिक। **–वृत्ति**–स्त्री० योगद्वारा प्राप्त चित्तकी शुभ वृत्ति। **–शक्ति**–स्त्री० योगसाधनसे प्राप्त शक्ति, तपोबल। **–शब्द**–पु० सामान्य अर्थ देनेवाला, यौगिक शब्द। **–शास्त्र**–पु० पतंजलि ऋषिकृत योग-विषयक ग्रंथ; छः शास्त्रोंमेंसे एक। **–शास्त्री (स्त्रिन्)**–पु० योगशास्त्रका ज्ञाता। **–सिद्ध**–पु० योगी, जिसका योग पूरा हो चुका हो। **–सिद्धि**–स्त्री० योगकी सफलता। **–सूत्र**–पु० पतंजलि-प्रणीत सूत्रोंका संग्रह।

योगवान्(वत्)–पु० [सं०] योगी। [स्त्री० 'योगवती'।]

योगांग–पु० [सं०] योगके अंग (ये आठ हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि)।

योगांजन–पु० [सं०] सिद्धांजन (कहा जाता है कि इसके लगानेसे भूगर्भस्थ वस्तुओंका दर्शन होता है); नेत्र-रोगोंको दूर करनेवाला अंजन, प्रलेप।

योगाभ्यास–पु० [सं०] योगसाधन, योगके अंगोंका यथाविधि अभ्यास।

योगाराधन–पु० [सं०] योगाभ्यास करना, योग-साधन।

योगासन–पु० [सं०] योगनिर्दिष्ट बैठनेकी विधि।

योगिनी–स्त्री० [सं०] रणपिशाचिनी; दुर्गाकी सखी, चौसठ देवियाँ; तपस्विनी, योगाभ्यासिनी; योगमाया।

योगींद्र–पु० [सं०] सर्वश्रेष्ठ योगी।

योगी(गिन्)–पु० [सं०] अलौकिक शक्ति-संपन्न पुरुष; आत्मज्ञानी, सुख-दुःखादिमें सम रहनेवाला; योगसिद्ध, सिद्ध पुरुष। **–राज**–पु० दे० 'योगींद्र'।

योगीश, योगीश्वर–पु० [सं०] योगिराज, सर्वश्रेष्ठ योगी; याज्ञवल्क्यका नाम; शिव।

योगीश्वरी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

योगेश, योगेश्वर–पु० [सं०] योगीश्वर; कृष्ण; शिव।

योगेश्वरी–स्त्री० [सं०] दुर्गाका विशेष रूप; दुर्गा।

योग्य–वि० [सं०] पात्र, अधिकारी, लायक; श्रेष्ठ, शीलवान्; उचित; जोड़ने लायक; सुंदर; आदरणीय; जोतने लायक; समर्थ; निपुण।

योग्यता–स्त्री० [सं०] उपयुक्तता; क्षमता; बुद्धिमानी; प्रतिष्ठा; औकात; अनुकूलता; वाक्यके तीन तात्पर्यबोधक गुणोंमेंसे एक; शब्द-अर्थ-संबंधकी संभवनीयता।

योजक–पु० [सं०] पृथिवीका वह पतला भाग जो दो बड़े भूखंडोंको मिलाये। वि० संयुक्त करनेवाला, संयोजक, जोड़नेवाला।

योजन–पु० [सं०] एकत्रीकरण, मिलान; योग; परमात्मा; दूरीका मानविशेष (दोसे आठ कोसतक)। **–गंधा, –गंधिका**–स्त्री० सत्यवती, शांतनुपत्नी।

योजना–स्त्री० [सं०] व्यवस्था, आयोजन; कोई काम करनेका विचार, भावी कार्यपद्धतिकी पूर्व कल्पना, स्कीम; जोड़, मिलान; बनावट, रचना; घटना; व्यवहार; प्रयोग।

योजनीय–वि० [सं०] योजना करने योग्य; मिलाने, जोड़ने योग्य।

योज्य–वि० [सं०] व्यवहार-योग्य; जोड़ने योग्य। पु० संख्याएँ जिनका योग किया जाय।

योद्धा(द्धृ)–पु० [सं०] युद्धकर्ता, रणकुशल व्यक्ति। वि० युद्ध करनेवाला।

योनि–स्त्री० [सं०] उत्पत्तिस्थान, जहाँसे कोई वस्तु पैदा हो; स्त्रियोंकी जननेंद्रिय; देह; गर्भाशय; जन्म; प्राणि-विभाग (पुराणमतसे इनकी संख्या ८४ लाख है, कुछ २१ लाख मानते हैं)। **–ज**–पु० योनिसे उत्पन्न जीव (जरायुज और अंडज)। **–दोष**–पु० उपदंश, गरमी। **–फूल**–[हिं०] पु० योनिके अंदरकी गांठ जिसमें एक छेद होता है और जिससे होकर वीर्य गर्भाशयमें जाता है। **–भ्रंश**–पु० एक योनिरोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थानसे हट जाता है। **–मुक्त**–पु० मुक्त, मोक्षप्राप्त व्यक्ति जो आवागमनसे छूट गया हो। **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक मुद्रा जिसमें उँगलियोंसे योनिका आकार बनाते हैं। **–शूल**–पु० योनिकी पीड़ा, स्त्रियोंका एक रोग। **–संभव**–पु० वह जो योनिसे पैदा हो, जरायुज-अंडज।

योषणा–स्त्री० [सं०] पुंश्चली, दुश्चरित्रा स्त्री; नवयुवती।

योषा–स्त्री० [सं०] स्त्री, नारी।

योषिता, योषित्–स्त्री० [सं०] स्त्री, नारी।

यौ*†–सर्व० 'यह'का बैसवाड़ेका रूप।

यौक्तिक–पु० [सं०] नर्म-सखा। वि० युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

यौगिक–वि० [सं०] मिला हुआ; योग संबंधी। पु० शब्दोंके तीन भेदोंमेंसे एक; (कंपाउंड) दो या अधिक तत्त्वोंसे बना हुआ पदार्थ (जैसे जल जो ओषजन तथा जलजनसे बनता है)।

यौतक, यौतुक–पु० [सं०] विवाह-कालका मिला हुआ धन, दहेज; वह संपत्ति जो कन्याके पितृवर्गकी ओरसे वरपक्षको दी जाती है; चढ़ावा; उपहार।

यौथिक–वि० [सं०] यूथका; झुंडमें रहनेवाला।

यौद्धिक–वि० [सं०] युद्धका; युद्ध-संबंधी।

यौन–वि० [सं०] योनिका; योनि-संबंधी; लैंगिक। **–रोग**–पु० (वेनेरियल डिज़ीज) दे० 'रतिज रोग'।

यौवन–पु० [सं०] बाल्यावस्थाके बादकी अवस्था जिसकी स्थिति १६ से ३०-३५ वर्षतक मानी जाती है, जवानी; युवतियोंका दल; दे० 'जोबन'। **–कंटक, –पिडक**–पु० मुहाँसा। **–लक्षण**–पु० लावण्य, सुंदरता; स्तन।

यौवराजिक–वि० [सं०] युवराजका; युवराज-संबंधी।

यौवराज्य–पु० [सं०] युवराजका पद; युवराजत्व।

यौवराज्याभिषेक–पु० [सं०] राज्यके उत्तराधिकारी राजकुमारका अभिषेक कर्म।

र

र–देवनागरी वर्णमालाका सत्ताईसवाँ व्यंजन वर्ण।

रंक–वि० [सं०] निर्धन, गरीब; कृपण, कंजूस; मंद, सुस्त। पु० निर्धन व्यक्ति; भिक्षुक; कृपण मनुष्य।

रंग–पु० [सं०] राँगा धातु; सोहागा; नाट्यस्थान; क्रीडा-

गार; रंगमंच; सभाभवन; नाचघर; रणभूमि, युद्धक्षेत्र; नृत्य; क्रीडा; वर्ण, किसी पदार्थका वह गुण जिससे वह सूर्यकिरणोंके कुछ रंगोंको वर्तित और कुछको परावर्तित कर आँखपर डालता तथा कुछको सोख लेता है; वह बुकनी आदिका घोल जिसमें या जिससे कोई चीज रँगी जाय (दे० 'रंग'–फा०); मिश्रित रंग; शरीरका वर्ण। **–क्षेत्र**–पु० अभिनय-स्थल; समारोहका स्थान। **–गृह**–पु० नाट्य, अभिनयका स्थान। **–जीवक**–पु० चित्रकार; अभिनेता। **–द्वार**–पु० रंगमंचका प्रवेशद्वार; नाटककी प्रस्तावना। **–पीठ**–पु० नृत्यशाला। **–प्रवेश**–पु० अभिनयके लिए किसी पात्रका रंगमंचपर आना। **–बिरंग,–बिरंगा**–वि० [हिं०] अनेक रंगोंवाला; भाँति-भाँतिका। **–भरिया**–पु० [हिं०] रंगसाज, रंग करनेवाला; किवाड़, दीवार आदिपर चित्र बनानेवाला। **–भवन**–पु० आमोद-प्रमोद, विलास-विहारका स्थान, रंगमहल। **–भूमि**–स्त्री० अभिनय, नाटक खेलनेका स्थान, नाट्यशाला; युद्धक्षेत्र; क्रीडास्थान, आक्रीड; उत्सवका स्थान। **–मंच**–पु० वह स्थान जहाँ नाटकादिका अभिनय, नृत्य, खेल, जलसा इत्यादि हो (स्टेज)। **–मंडप**–पु० रंगभूमि, नाट्यशाला। **–महल**–पु० [हिं०] भोग-विलासका स्थान, प्रमोदभवन; अंतःपुर; रंगभूमि, रंगशाला; रंगमंच, अभिनयका स्थान। **–माता,–मातृका**–स्त्री० लाख। **–रस**–पु० आनंद-क्रीडा, आमोद-प्रमोद। **–रसिया**–पु० [हिं०] मौजी, विलासी पुरुष। **–रूप**–पु० सूरत, शकल। **–विद्याधर**–पु० अभिनेता; नृत्यप्रवीण, कुशल व्यक्ति; तालके मुख्य साठ भेदोंमेंसे एक (संगीत)। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाय, नाट्यशाला; (स्टूडियो) उद्यान, जलाशय, ध्वन्यभिलेखन-यंत्रादिसे सज्जित प्रकोष्ठ तथा अन्य उपकरणोंसे युक्त वह लंबा-चौड़ा हाता जहाँ चित्रपटके लिए चलचित्र तैयार किये जाते हैं; आकाशवाणी-केंद्रका वह प्रकोष्ठ जहाँसे किसी ध्वनिक्षेपक यंत्र द्वारा भाषण, सामयिक वार्ता, रूपक, कविसम्मेलन आदिका प्रसारण होता अथवा जहाँ उनका ध्वन्यभिलेखन किया जाता है। **मु०–आना,–चढ़ना**–भली भाँति रंग लग जाना, रंग खुलना। **–उड़ना,–उतरना**–धूल, जल आदिके कारण रंगका हल्का पड़ना, उड़ जाना। **–खेलना,–डालना,–फेंकना**–पानीमें घुला रंग हाथ, पिचकारी आदिसे किसीपर डालना। **–निखरना**–रंग चटकीला होना। **–फीका पड़ना या होना**–दे० 'रंग उतरना'। **–भरना**–चित्रमें रंग पूरना; रँगना। **–मचना**–रणक्षेत्रमें उत्साह-पूर्वक भीषण युद्ध करना। **–मचाना**–खूब युद्ध करना; धूम मचाना।

रंग–पु० शोभा, सौंदर्य; धाक, आतंक; यौवन; आनंद, मौज; ठाट-बाट, साज-सामान, टीम-टाम; चाल, ढब–'तिनको दान लेत हैं हमसों,देखहु इनको रंग'–सू०;प्रकार, तरह; असर, प्रभाव; यौवन; सौंदर्य; हालत; अद्भुत दृश्य; व्यापार (विशेषतः समृद्धि आदिके प्रदर्शनमें ईश्वर, स्वामीके प्रति कृतज्ञताके लिए–जैसे लक्ष्मीकी यह अतुल कृपा उन्हींका रंग है); प्रेम, राग, अनुराग; तरंग, मौज। **–ढंग**–पु० हाल, दशा, स्थिति; तौरतरीका; व्यवहार, चलावा; चिह्न, लक्षण। **–तरा**–पु० बड़ी मीठी नारंगी, संतरा। **–रली**–स्त्री० आनंद, मौज, खेल। **मु०–आना**–आनंद आना। **–उखड़ना**–दूसरोंपर प्रभाव, रोब, धाक न रहना; प्रतिकूल स्थिति होना; आनंदका घट जाना, नाश हो जाना। **–उजड़ना,–उतरना**–शोभा, रौनक, घटना। **–काछना***–चाल चलना, ढंग पकड़ना, ग्रहण करना। **–चढ़ना**–हर्षित होना; रंजित होना; प्रभाव, असर पड़ना। **–चूना,–टपकना**–जवानी आना, जवानी उमड़ना, यौवनका विकास होना। **–जमना**–धाक, रोब प्रभाव, अनुकूल स्थिति होना; खूब आनंद, मजा होना। **–जमाना**–प्रभाव स्थापित करना, धाक बैठाना, बाँधना। **–पकड़ना,–पर आना**–रौनक, बहारपर आना। **–बँधना**–रोब जमना,धाक बँधना। **–बदलना**–स्थितिमें परिवर्तन होना; अच्छी दशामें होना। **–बरसना**–रौनक, शोभाकी वृद्धि होना। **–बाँधना**–महत्त्व, प्रभाव स्थापित करना; रोब गाँठना। **–बिगड़ना**–रोब, प्रभाव कम होना, नष्ट होना। **–बिगाड़ना**–रोब,महत्त्व घटाना, नष्ट करना; शेखी किरकिरी करना। **–में ढलना**–किसीके प्रभाव, असरमें आना; किसीके अनुकूल चलना, आचरण करना। **–में भंग करना**–बना-बनाया खेल बिगाड़ना; आनंद, हर्षके क्षणमें उपद्रव करना। **–में रँगना**–तन्मय होना; अनुकूल होना; किसीका अनुकरण करना। **–रचाना**–उत्सव, जशन करना। **–रलना**–क्रीडा, प्रमोद करना। **–लाना**–असर दिखाना; विशेषता प्रकट करना; स्थिति, अवस्था उत्पन्न करना।

रंग–पु० [फा०] वर्ण; वह बुकनीदार चीज जो बाजारोंमें मिलती और कपड़ा, लकड़ी आदि रँगनेके काम आती है; किरणोंका रंग (इसका प्रभाव आँखोंपर पड़ता है, और जो रंग किसी पदार्थ द्वारा परावर्तित होता है वही उसमें दिखाई देता है); दृश्य; ढंग, तरीका; खेल; उल्लास, आनंद; दशा, हालत; रौनक, खूबसूरती; ट्रंप, तुरुप (ताशके खेलमें); चौपड़की खास रंगकी आठ गोटियाँ। **–पाशी**–स्त्री० होलीका उत्सव। **–मार**–पु० ताशका एक खेल। **–साज़**–पु० रंग बनानेवाला; दीवार, मेज आदिपर रंग चढ़ानेवाला। **–साज़ी**–स्त्री० रंगसाजका काम।

रंगत–स्त्री० हालत, दशा; आनंद, मजा; रंग।

रँगना–स० क्रि० रंग देना (दीवार, चित्र आदिमें); रंगमें डुबोना (कपड़ा)।

रंगबाति*–स्त्री० सुगंधित द्रव्यकी बनी बत्ती (मति०)।

रंगरूट–पु० [अं० 'रिक्रूट'] नया सिपाही; नौसिखिया।

रँगरेज़–पु० [फा०] कपड़ा रँगनेका काम करनेवाला।

रँगरेली–स्त्री० दे० 'रंगरली'।

रँगवाई–स्त्री० दे० 'रँगाई'।

रँगवाना–स० क्रि० दे० 'रँगाना'।

रंगांगण–पु० [सं०] रंगभूमि।

रँगाई–स्त्री० रँगनेका काम या भाव; रँगनेकी मजदूरी।

रंगाजीव, रंगाजीवी(विन्)–पु० [सं०] रँगाईसे गुजर करनेवाला, रंगसाज।

रँगाना-स० क्रि० रँगनेका काम दूसरेसे कराना ।

रंगालय-पु० [सं०] रंगस्थल, रंगशाला ।

रँगावट-स्त्री० रँगाई ।

रंगावतारक-पु० [सं०] अभिनेता; रंगसाज ।

रंगावतारी(रिन्)-पु० [सं०] अभिनेता ।

रंगिणी-स्त्री० [सं०] शतमूली; कैवर्तिका लता । वि० स्त्री० रंगवाली; विनोदिनी, परिहास करनेवाली ।

रंगी(गिन्)-वि० [सं०] विनोदी, मौजी, परिहास करनेवाला; रंगवाला; रँगनेवाला; अनुरक्त; अभिनय करनेवाला ।

रंगीन-वि० [फ़ा०] रँगा हुआ; चमत्कारपूर्ण; विलासप्रिय, ऐशपसंद; सुखद कल्पनासे युक्त ।

रंगीनी-स्त्री० [फ़ा०] रंगीन होना; शृंगार, सजाव; रँगीलापन, विलासप्रियता ।

रँगीला-वि० मौजी; सुंदर; प्रेमी ।

रंगोपजीवी(विन्)-पु० [सं०] अभिनय द्वारा रोजी कमानेवाला, नट ।

रंच, रंचक-वि० थोड़ा, जरा, किंचित् ।

रंज-पु० [फ़ा०] दुःख; शोक; दर्द; अफसोस; पछतावा ।

रंजक-पु० [सं०] रँगरेज; रंगसाज; ईंगुर; मेहदी; भिलावाँ । वि० रँगनेका काम करनेवाला; मनोरंजक, हर्षकारक । स्त्री० [फ़ा०] बंदूक, तोपकी बारूदकी प्याली; बारूद जो इस प्यालीमें रखी जाय; उत्तेजक बात । **मु०-उड़ाना**-बंदूक, तोपकी प्यालीमें बारूद रखकर जलाना । **-चाट जाना**-तोप, बंदूककी प्यालीकी बारूदका यों ही जलकर रह जाना, गोली, गोला न छूटना । **-पिलाना**-तोप, बंदूककी प्यालीमें रंजक रखना ।

रंजन-पु० [सं०] रँगनेका काम, रँगना; मन प्रसन्न करना । वि० हर्षित करनेवाला, रंजक । **-कारी साहित्य**-पु० (लाइट लिटरेचर) ऐसी पुस्तकें, कहानियाँ आदि जिन्हें लोग मनबहलावके लिए पढ़ते हैं और जिन्हें पढ़ने-समझनेमें विशेष आयास नहीं करना पड़ता ।

रंजना*-स० क्रि० हर्षित करना; भजन करना; रँगना ।

रंजित-वि० [सं०] रँगा हुआ; हर्षित; अनुरक्त ।

रंजिश, रंजीदगी-स्त्री० [फ़ा०] नाराजगी; अनबन, वैमनस्य ।

रंजीदा-वि० [फ़ा०] नाराज; दुःखी ।

रंड-वि० [सं०] धूर्त; बेचैन; विफल । पु० निस्संतान मरनेवाला मनुष्य; अफल वृक्ष ।

रंडा-स्त्री० [सं०] राँड़, विधवा ।

रँड़ापा-पु० वैधव्य ।

रंडी-स्त्री० नाचने-गानेका व्यवसाय करनेवाली और धन लेकर संभोग करानेवाली स्त्री, वेश्या । **-बाज़**-पु० वेश्यागामी । **-बाज़ी**-स्त्री० वेश्यागमन ।

रँडुआ-पु० वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो, मृतस्त्रीक ।

रंता(तृ)-वि० [सं०] रमण, आनंद करनेवाला; *अनुरक्त ।

रंति-स्त्री० [सं०] क्रीड़ा; विराम । **-देव**-पु० एक परम दानी और यज्ञकर्मा पौराणिक राजा; विष्णु ।

रँदना-स० क्रि० रंदा फेरना, चलाना; रंदासे लकड़ीकी सतह चिकनाना ।

रंदा-पु० लकड़ीको चिकनी और सम बनानेका औजार ।

रंधक-पु० [सं०] रसोइया, राँधनेवाला ।

रंधन-पु० [सं०] रसोई, भोजन बनाना; नष्ट करना ।

रंध्र-पु० [सं०] छेद; दोष; भग; लग्नसे आठवाँ स्थान ।

रंभ-पु० [सं०] गर्जन, घोर शब्द-'माथे रंभ समुद जस होई'-प०; रेणु; केला (रघु०) ।

रंभण-पु० [सं०] रँभाना; आलिंगन ।

रंभन*-पु० दे० 'रंभण' ।

रंभा-पु० लोहेका मोटा, बड़ा डंडा जो दीवार आदिमें छेद करनेके काम आता है । स्त्री० [सं०] केला; एक अप्सराका नाम; गायका रँभाना, चिल्लाना; गौरी । **-पति**-पु० इंद्र । **-फल**-पु० केला ।

रँभाना-अ० क्रि० गायका बोलना ।

रंभित-वि० [सं०] शब्द, ध्वनि किया हुआ; बजाया हुआ ।

रंभोरु-वि० स्त्री० [सं०] कदलीस्तंभके समान जाँघोंवाली, सुंदर (स्त्री) ।

रँहचटा-पु० इच्छापूर्तिकी हविस, लालच, लोभ ।

रँहट-पु० दे० 'रहँट' ।

र-पु० [सं०] अग्नि; कामाग्नि; ताप । **-गण**-पु० तीन वर्णोंका शब्द जिसमें पहला, तीसरा गुरु और दूसरा लघु हो ।

रअ़य्यत-स्त्री० [अ०] रिआया, प्रजा; काश्तकार, असामी; नौकर; मुलाजिम; बिना किराया दिये मकानमें रहनेवाला आदमी । **-आज़ार**-वि० प्रजाको पीड़ा देनेवाला । **-दार**-पु० हाकिम, शासक । **-दारी**-स्त्री० हुकूमत, सल्तनत, राज्य, शासन । **-निवाज़**-वि० प्रजाकी सहायता, रक्षा करनेवाला (शासक, स्वामी) । **-परवर**-वि० प्रजापालक । **-वारी**-वि० एक-एक काश्तकारके साथ, अलग-अलग । स्त्री० एक बंदोबस्त जिसमें काश्तकार सीधे सरकारको मालगुजारी देता है ।

रइकौ*†-अ० राई भर भी, जरा भी ।

रइनि*†-स्त्री० रजनी, रात, रैन ।

रई-स्त्री० खैलर, मथनी, दही मथनेकी लकड़ी; गेहूँका दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण [रवाका अल्पार्थक रूप] । *वि० स्त्री० अनुरक्त, पगी हुई, डूबी हुई; सहित, युक्त ।

रईस-पु० [अ०] ताल्लुकेदार, सरदार (राजा, नवाब, सेनापति, शाहजादा, हाकिम, उच्च वर्गका आदमी, अमीर, धनी); शरीफ, शिष्ट, प्रतिष्ठित मनुष्य । **-ज़ादा**-पु० रईसका लड़का ।

रईसी-स्त्री० अमीरी, धनसंपन्नता ।

रउताई*†-स्त्री० प्रभुता, स्वामित्व ।

रउरे†-सर्व० मध्यम-पुरुषका आदरसूचक संबोधन, आप ।

रकत*-पु० लहू, रुधिर । वि० लाल । **-कंद***-पु० मूँगा, विद्रुम; रतालू; राजपलांडु ।

रकतांक*-पु० मूँगा; केसर, कुंकुम; लाल चंदन ।

रकबा-पु० क्षेत्रफल, लंबाई-चौड़ाईका गुणा करनेसे प्राप्त गुणनफल; घिरी हुई जमीन, घेरा, अहाता ।

रक़म-स्त्री० [अ०] धन, नियत संख्याके रुपये; मूल्यवान् वस्तु; गहना, जेवर; धनराशि; पूरी संख्या, जोड़; प्रकार, भाँति, ढंग ।

रकमी-वि०कीमती; निशान किया हुआ, लिखा हुआ। पु० एक तरहका किसान जिसके साथ रिआयत की जाती है।

रकाब-स्त्री० [अ०] लोहेका पावदान जो जीनमें दोनों ओर रस्सी या तस्मेसे लटकता रहता है और जिसपर पैर रखकर घोड़ेपर चढ़ते हैं; बादशाहों, अमीरोंकी सवारीका घोड़ा। **-दार**-पु० घोड़ेपर चढ़ानेवाला नौकर, साईस; वह नौकर जो अमीर आदमीके घोड़ेके साथ दौड़ता है; खासा बरदार, बादशाहोंके साथ खाना लेकर चलनेवाला सेवक; अचार, चटनी, मिठाई वगैरह बनाकर बेचनेवाला आदमी, हलवाई; रकाबियोंमें खाना लगाकर रखनेवाला। **मु०-थामना**-घोड़ेपर किसीके चढ़ते समय साईसका रकाब पकड़ना। **-में**-सहयात्रा, हमराह। **-में पाँव रखना**-घोड़ेपर सवार होना। **-में पाँव रहना**-हर वक्त चलनेको तैयार रहना।

रकाबत-स्त्री०[अ०] एक प्रेमिकाके कई प्रेमी होना; प्रणयकी प्रतियोगिता।

रकाबी-स्त्री० तश्तरी, चीनी मिट्टी इत्यादिकी बनी थाली; छिछली छोटी थाली जिसकी दीवार बाहर मुड़ी हो; घोड़ेकी बगलमें लटकनेवाली तलवार। **-चेहरा**-पु० चौड़ा मुँह, गोल मुँह।

रक्त-पु० [सं०] लहू, रुधिर; लाल रंग; ताँबा; पुराना आँवला; कुंकुम; कमल; लाल चंदन; सिंदूर; ईंगुर; गुलदुपहरिया, बंधूक। वि० अनुरक्त, आसक्त; रँगा हुआ; सुर्ख, लाल; विलासी। **-आमातिसार**-पु० एक रोग जिसमें लहूके दस्त आते हैं, रक्तातिसार। **-कंठ**-वि० लाल कंठवाला, सुरीली आवाजवाला। पु० कोयल। **-कुमुद**-पु० कुई। **-कुष्ठ**-पु० विसर्प रोग। **-क्षय**-पु० रुधिर बहना, रक्तस्राव। **-क्षेपण**-पु० (ब्लडट्रांसफ्यूजन) एक व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंसे रक्त निकालकर किसी अन्य व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंमें पहुँचाना। **-ग्रीव**-पु० कबूतर; राक्षस। **-चंचु**-पु० तोता, सुआ। **-चंदन**-पु० लाल चंदन। **-चाप**-पु० (ब्लडप्रेशर) हृदय द्वारा प्रक्षेपित रक्तका धमनी आदिकी दीवारपर पड़नेवाला दबाव जो उचित मात्रासे कम या अधिक होनेपर रोग या विकृतिका सूचक होता है। **-चूर्ण**-पु० सेंदुर; कमीला। **-ज**-वि० रक्तसे उत्पन्न; रक्तविकारसे होनेवाला। **-जवा**-स्त्री० देवीफूल, जवाकुसुम, अड़हुल। **-जिह्व**-पु० शेर, सिंह। वि० लाल जीभवाला। **-तुंड**-पु० तोता, सुआ। वि० जिसका मुँह लाल हो। **-दान-बैंक**-पु० [हिं०] (ब्लडबैंक) युद्धमें घायल होने या अन्य कारणोंसे जिनकी धमनियोंमें रक्तकी नितांत कमी हो गयी हो उनके शरीरमें रक्तका निक्षेपण करनेके लिए पहलेसे ही स्वस्थ व्यक्तियोंकी देहसे लिया गया रक्त संचय करनेवाली संस्था। **-दूषण**-वि० रक्त दूषित करनेवाला, खून खराब करनेवाला। **-दृग(क्)**-वि० लाल आँखोंवाला। पु० कोयल; कबूतर; चकोर। **-धातु**-स्त्री० गेरू; ताँबा। **-नयन**-पु० कबूतर; चकोर; कोयल। **-नेत्र**-पु० सारस; कोयल; चकोर; कबूतर। वि० लाल आँखोंवाला। **-प**-पु० राक्षस। वि० रक्तपायी, रक्त पीनेवाला। **-पट**-पु० श्रमण। वि० लाल कपड़े पहननेवाला। **-पल्लव**-पु० अशोक वृक्ष। **-पा**-स्त्री० जोंक; डाकिनी। **-पात**-पु० रक्त गिरना, बहना, रक्तस्राव; प्रहार जिससे किसीका रक्त बहे; खूनखराबी, मारकाट। **-पायी(यिन्)**-वि० रक्त पान करनेवाला, खून पीनेवाला। पु० खटमल, मत्कुण। **-पारद**-पु० ईंगुर, हिंगुल; शिंगरफ। **-पाषाण**-पु० लाल पत्थर, गेरू। **-पित्त**-पु० एक रोग जिसमें मुँह, नाक, कान, गुदा, योनि आदि इंद्रियोंसे रक्त गिरता है। **-पुष्प**-पु० कनेर, करवीर; अनार; बंधूक; पुन्नाग; अड़हुल। **-प्रदर**-पु० प्रदरका एक भेद जिसमें स्त्रीकी योनिसे रक्त-प्रवाह होता रहता है। **-प्रमेह**-पु० पुरुष-रोग; इसमें खूनका-सा दुर्गंधपूर्ण पेशाब होता है। **-फूल**-पु० अड़हुल; पलाश। **-मोचन**-पु० शीर, फस्द, शरीरका खून निकालना। **-रोग**-पु० रक्तको दूषित करनेवाला रोग, जैसे कुष्ठ। **-लोचन**-पु० कबूतर; दे० 'रक्तनेत्र'। **-वसन**-पु० संन्यासी। **-बीज**-पु० लाल बीजका अनार, बेदाना; रीठा; एक राक्षस जिसके धरतीपर गिरनेवाले रक्तके बिंदु-बिंदुसे राक्षस तैयार हो जाते थे, इसका वध चंडिकाने किया था (देवीभागवत)। **-वृष्टि**-स्त्री० आकाशसे लाल रंगके पानीकी वर्षा। **-व्रण**-पु० वह फोड़ा जिससे मवादकी जगह रक्त निकले। **-संबंध**-पु० वंशगत ऐक्य, वंश, कुलका संबंध। **-स्राव**-पु० खून बहना, निकलना, गिरना।

रक्तता-स्त्री० [सं०] लालिमा, ललाई, सुर्खी।

रक्तांबर-वि० [सं०] लाल वस्त्र धारण करनेवाला। पु० लाल कपड़ा (विशेषकर रेशमी); संन्यासी।

रक्तांबु-पु० [सं०] (सीरम) रक्तका पतला, पारदर्शी भाग; वह रस जो अभी रक्तके रूपमें लाल न हुआ हो, चेप, सौम्य।

रक्ताक्त-वि० [सं०] रक्तसे रंगा या चुपड़ा हुआ; लाल रंगका।

रक्ताक्ष-वि०[सं०] लाल नेत्रोंवाला; भयंकर। पु० कबूतर; सारस; चकोर; भैंस; साठमेंसे अट्ठावनवाँ संवत्सर।

रक्तातिसार-पु० [सं०] वह अतिसार, जिसमें खूनके दस्त आते हैं।

रक्ताधरा-स्त्री०[सं०] किन्नरी। वि०स्त्री० लाल ओठवाली।

रक्ताभ-पु० [सं०] बीरबहूटी। वि० रक्त जैसी आभाका।

रक्तार्श(स्)-पु०[सं०] खूनी बवासीर; दे० 'बवासीर'।

रक्तिम-वि० [सं०] ललाई लिये हुए, लालिमायुक्त।

रक्तिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] लाली, ललाई।

रक्तोत्पल-पु० [सं०] लाल कमल; सेमल।

रक्तोपल-पु० [सं०] गेरू; लाल नामक रत्न।

रक्ष-पु० [सं०] रक्षा करनेवाला, रक्षक; रक्षा।

रक्ष(स्)-पु० [सं०] राक्षस, असुर, दैत्य।

रक्षक-पु० [सं०] पहरा देनेवाला; पालन करनेवाला; रक्षा करनेवाला; सुरक्षित रखनेवाला। **-पोत**-पु० (एस्कर्ट वेसल) व्यापारिक बेड़े आदिकी रक्षाके लिए उसके साथ-साथ चलनेवाला पोत।

रक्षण-पु० [सं०] सुरक्षित रखना; रक्षा करना; रखवाली करना; पालन-पोषण। **-कर्ता(र्तृ)**-पु० रक्षा करनेवाला।

रक्षणीय–वि० [सं०] रखने योग्य; रक्षा करने योग्य।

रक्षन*–पु० दे० 'रक्षण'।

रक्षना*–स० क्रि० रक्षा करना; सँभालना।

रक्षस*–पु० राक्षस, असुर।

रक्षा–स्त्री० [सं०] (कष्ट, अनिष्ट, आपत्तिसे) बचानेकी क्रिया, रखवाली; रखना; सुरक्षा; कपास, रेशमका सूत्र जो विशेष अवसरपर कलाईपर बाँधा जाता था। **–गृह**–पु० चौकी; विश्राम-भवन; सौरी, सूतिकागृह। **–दल**–पु० (होमगार्ड) पुलिसके सहायक रूपमें काम करनेवाला नागरिकोंका संघटन। **–प्रदीप**–पु० दीपक जो भूत-प्रेतसे बचनेके लिए जलाया जाय (तंत्र)। **–बंधन**–पु० सलूनो नामका त्योहार जो श्रावणकी पूर्णिमाको होता है (इस अवसरपर बहनें अपने भाइयोंकी और पुरोहित अपने यजमानोंकी कलाईमें कपास या रेशमका अभिमंत्रित रक्षासूत्र बाँधते हैं)। **–भूषण**–पु० भूषण, जंतर, कवच जो भूत-प्रेतादिसे बचनेके लिए पहना जाता है। **–मणि, –रत्न**–पु० मणि, रत्न जो ग्रहकोपसे बचनेके विचारसे धारण किया जाय।

रक्षाइद*–स्त्री० राक्षसपन।

रक्षित–वि० [सं०] जिसकी रक्षा की गयी हो; रखा हुआ; प्रतिपालित; सुरक्षित।

रक्षी (क्षिन्)–पु० [सं०] पहरेदार, चौकीदार; रक्षा करनेवाला, रक्षक; * राक्षसोपासक।

रक्ष्य–वि० [सं०] रक्षणीय, रक्षा करने योग्य।

रक्ष्यमाण–वि० [सं०] जिसकी रक्षा हो रही हो; रक्षित होनेवाला।

रख, रखा–स्त्री० चर, पशुओंके चरनेके लिए सुरक्षित भूमि, रखौना, रखायी हुई चरभूमि या जंगल।

रखना–स० क्रि० धरना; टिकाना; ठहराना; बचाना, रक्षा करना (अपनी चीज रखना सीखो); निर्वाह, पालन करना (बात रखना); हिफाजत करना, नष्ट न होने देना (इज्जत रखना); एकत्र करना (जोड़-जोड़कर धन रखना); सौंपना, सिपुर्द करना; रेहन, बंधक करना; अपने हाथमें, अधिकारमें करना; पालन-पोषण, व्यवहारके लिए अपने अधिकारमें लेना (घोड़ा, गाय, पहलवान रखना); नियुक्त करना, तैनात करना (कामके लिए आदमी रखना); रोक लेना; चोट पहुँचाना (मुक्का, थप्पड़ रखना); मुल्तवी करना, दूसरे दिनपर टालना (यह बात कलपर रखो); उपस्थित न करना, बचना (यह जहमत अलग रखो); आरोप करना; जिम्मे लगाना, थोपना (सब कुछ मेरे सिर रखो); ऋणी, कर्जदार होना (पैसा न रखना); (मनमें) अनुमान, धारणा करना (विश्वास रखना); डेरा कराना, ठहराना (उन्हें धर्मशालामें रख दिया है); स्त्री-पुरुषसे संबंध करना (औरत, मर्द रखना); संभोग करना (बाजारू); गर्भ धारण कराना (पेट रखना); (चिड़ियोंका) अंडे देना (बतक सालमें कितने अंडे रखती है); बचाना (महीनेमें खा-पीकर क्या रखते हो)।

रखनी–स्त्री० रखेल, रखी हुई स्त्री, उपपत्नी।

रख-रखाव–पु० देखरेख करते हुए बनाये रखने, चालू रखनेकी क्रिया; पालन-पोषण।

रखला–पु० दे० 'रहँकला'।

रखवाई–स्त्री० पहरेदारी, चौकीदारी; रखवालीकी मजदूरी; रखनेकी क्रिया या ढंग; रखनेकी उजरत; चौकीदारीका टैक्स; खेत रखाना।

रखवाना–स० क्रि० रखनेका काम दूसरेसे कराना।

रखवार*–पु० रखवाला; चौकीदार, पहरेदार; रक्षा करनेवाला।

रखवारी†–स्त्री० दे० 'रखवाली'।

रखवाला–पु० रक्षा करनेवाला, रक्षक; चौकीदार।

रखवाली–स्त्री० रक्षाकार्य; हिफाजत, सुरक्षा।

रखाई–स्त्री० रक्षा करनेकी क्रिया; रक्षा करनेका भाव; धन जो रक्षा करनेके बदले दिया जाय।

रखान–स्त्री० रखौना, चराईकी भूमि, चर।

रखाना–स० क्रि० रखवाना; रक्षा करना, रखवाली करना।

रखिया*–वि० रखनेवाला, रक्षक।

रखियाना–स० क्रि० राखसे माँजना (बर्तन आदि)।

रखीसर*–पु० ऋषीश्वर (कबीर)।

रखेड़िया–पु० ढोंगी साधु, राख रगड़कर बना हुआ साधु।

रखेली–स्त्री० रखैल, रखनी, बैठाली, उपपत्नी (जो बिना विवाह किये घरमें रखी जाय)।

रखैया–पु० रक्षा करनेवाला; रखनेवाला।

रखैल–स्त्री० दे० 'रखेली'।

रखौंत, रखौना–पु० चर, चरी, चरनेके लिए रखायी हुई, सुरक्षित भूमि।

रग–स्त्री० [फा०] नस, नाड़ी; फूल, पत्तेका रेशा; आँखका डोरा; तार, तागा; नस्ल, जात; दूध पिलानेवालीका प्रभाव; बुरी आदत; हठ, जिद। **–रगमें**–हर रगमें; सारे शरीरमें। **मु०–उतरना**–आँत उतरना; जिद दूर होना; क्रोध उतरना। **–का खुल जाना**–फस्द खुलवानेपर बेहद खून निकलना। **–खड़ी होना**–नस फूल जाना। **–खुलना**–रगसे बहुतसा खून निकलना। **–चढ़ना**–किसी नसका अपनी जगहसे हटना; क्रोध आना; हठके वश होना। **–दबना**–डरना; दबाव मानना, किसीके प्रभाव, अधिकारमें होना। **–पहिचानना**–भेद, रहस्य जानना। **–फड़कना**–रगका हरकत करना; अनिष्टकी शंका होना, माथा ठनकना। **–फूलना**–खूनके दबावसे रगका मोटा हो जाना। **–मिलना**–फस्द खोलनेके लिए टटोलनेपर रगका पता लगना। **–में दौड़ जाना**–असर करना। **–रग फड़कना**–अधिक उत्साह, आवेशके लक्षण प्रकट होना। **–रगसे वाकिफ होना**–पूरी तरह जानना। **–(गें) निकल आना**–बहुत दुबला होना। **–मरना**–नसोंकी ताकत जाती रहना; नामर्द हो जाना; कमजोर हो जाना।

रगड़–स्त्री० घर्षण, घिसनेकी क्रिया या भाव; चिह्न जो घर्षणसे हो जाय; कड़ा परिश्रम; हठ; झगड़ा; द्वेष; हलकी चोट जिसमें चमड़ा छिल जाय। **मु०–खाना**–धक्के खाना। **–देना**–पीस डालना; तंग करना। **–पड़ना**–अधिक परिश्रम पड़ना (उसे बहुत रगड़ पड़ी, इसीसे थक गया)। **–लगना**–छिल जाना, हलकी चोट आना।

रगड़ना–स० क्रि० घिसना, घर्षण करना; पीसना(मसाला, भाँग); कोई काम बार-बार करना; कोई काम जल्दी और परिश्रमपूर्वक करना (यह काम तो दस दिनोंमें रगड़ डालोगे); तंग करना, परेशान करना। अ० क्रि० विकास न करना, जहाँका तहाँ रहना; अत्यधिक परिश्रम करना।

रगड़वाना–स० क्रि० रगड़नेमें प्रवृत्त करना, रगड़नेका काम दूसरेसे लेना।

रगड़ा–पु० रगड़, घर्षण; अति परिश्रम; झगड़ा; जल्दी अंत न होनेवाला झगड़ा। **–झगड़ा**–पु० लड़ाई-झगड़ा; बखेड़ा। **मु०–देना**–घिसना, रगड़ना।

रगड़ान–स्त्री० रगड़ा, रगड़नेकी क्रिया या भाव।

रगड़ी–वि० रगड़ा करनेवाला, झगड़ालू, उलझनेवाला।

रगद*–पु० रक्त, रुधिर (कबीर)।

रगदना–स० क्रि० दे० 'रगेदना'।

रगर*–स्त्री० दे० 'रगड़'।

रगरा†–पु० दे० 'रगड़ा'।

रगवाना*–स० क्रि० चुप कराना; बहलाना (बच्चोंको)।

रगाना–अ० क्रि० चुप शांत होना। स०क्रि० चुप कराना।

रगी–स्त्री० मैसूरमें होनेवाला एक मोटा अन्न।

रगीला–वि० जिद्दी, हठी, पाजी, बदजात।

रगेद–स्त्री० दौड़ाने, भगानेकी क्रिया; संभोग-प्रवृत्ति।

रगेदना–स० क्रि० भगाना, खदेड़ना, दौड़ाना।

रघु–पु० [सं०] सूर्यवंशोत्पन्न राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणाके पुत्र, अजके पिता। **–कुल**–पु० रघुका वंश। **कुल-गौरव,–कुल-चंद्र,–कुल-तिलक,–कुल-मणि**–पु० रामचंद्र। **–नंदन**–पु० रामचंद्र। **–नाथ**–पु० रघुओंके स्वामी, रामचंद्र। **–नायक**–पु०रघुकुलमें प्रधान,रामचंद्र। **–पति**–पु० रघुकुलके स्वामी, रामचंद्र। **–राइ*,–राय***–पु० रघुकुलके राजा रामचंद्र। **–रैया***–दे० 'रघुराय'। **–वंश**–पु० रघुका वंश, खानदान; कालिदास-निर्मित एक महाकाव्य। **–वंश-मणि**–रघुवंशके मणि, रामचंद्र। **–वंशी(शिन्)**–पु० वह जो रघुके वंशमें उत्पन्न हो; क्षत्रियोंकी एक उपजाति (ये रघुके वंशमें उत्पन्न कहे जाते हैं)। **–वर,–वीर,–श्रेष्ठ**–पु०रामचंद्र।

रघूत्तम–पु० [सं०] रघुश्रेष्ठ, रामचंद्र।

रचना–स० क्रि० सिरजना, निर्माण करना; निश्चित करना; विधान करना; ग्रंथ आदि लिखना; उत्पन्न करना; ठानना, करना; आयोजन करना; जाल रचना; कल्पना करना, काल्पनिक सृष्टि करना; शृंगार करना; क्रमसे रखना; सजाना; रँगना, रंजित करना। अ० क्रि० आसक्त या अनुरक्त होना; रँगा जाना, रंग चढ़ना। स्त्री० [सं०] निर्माण, बनानेकी क्रिया; निर्माणकी प्रक्रिया; व्यवस्था, प्रबंध; तैयारी; उत्पादन; नवसृष्टि; निर्मित वस्तु (घर, मूर्ति, ग्रंथ, कविता आदि); सृष्टि; विन्यास; सँवारना (बाल, वेश आदि); उद्यम, उद्योग।

रचयिता(तृ)–वि० [सं०] निर्माता, प्रणेता, रचनेवाला। पु० ग्रंथकार।

रचवाना–स० क्रि० (किसी औरसे) रचना कराना,रचनाके लिए किसीको प्रेरित करना; मेहँदी आदि लगवाना।

रचाना–स० क्रि० आयोजन, संभार, समारोह करना; दे० 'रचवाना'। अ० क्रि० मेहँदी, अलक्तक आदिसे हाथ-पैर रँगाना; (मेहँदी) लगाना।

रचित–वि० [सं०] निर्मित, बनाया हुआ।

रचिपचि–अ० परिश्रम करके, गढ़ गढ़कर (सू०)।

रच्छ*–पु० दे० 'रक्ष'।

रच्छक*–पु० दे० 'रक्षक'।

रच्छन*–पु० दे० 'रक्षण'।

रच्छस*–पु० दे० 'राक्षस'।

रच्छा*–स्त्री० दे० 'रक्षा'।

रज*–पु० चाँदी, रजत; धोबी, रजक। **–कण**–पु०[हिं०] धूलिकण, रजःकण, गर्द।

रज(स्)–पु० [सं०] स्त्रियोंका मासिक रक्तस्राव, ऋतु, कुसुम, आर्तव; तीन गुणोंमेंसे दूसरा (सांख्य); जल; स्त्री० धूल, गर्द; पराग।

रजक–पु० [सं०] धोबी।

रजतंत*–स्त्री० वीरता, शूरता।

रजत–वि० [सं०] शुभ्र, धवल, उज्ज्वल, चाँदीके रंगका; चाँदीका बना हुआ। पु० चाँदी, रूपा; सोना; मुक्ताहार; धवल रंग। **–जयंती**–स्त्री० (सिलवर जुबिली) किसी व्यक्ति या संस्था आदिके जीवनकालके २५ वर्ष समाप्त होनेपर मनाया जानेवाला उत्सव। **–पट**–पु० (सिलवर स्क्रीन) वह सफेद परदा जिसपर चलचित्र(सिनेमा)के चित्र दिखाये जाते हैं। **–पर्वत**–पु० चाँदीका पहाड़। **–पात्र,–भाजन**–पु० चाँदीका बरतन।

रजतमय–वि० [सं०] चाँदीका बना हुआ।

रजताई*–स्त्री० सफेदी।

रजताकर–पु० [सं०] चाँदीकी खान।

रजताचल–पु० [सं०] रजताद्रि, कैलास; चाँदीका पहाड़।

रजतोपम–पु० [सं०] रूपामाखी।

रजधानी*–स्त्री० दे० 'राजधानी'; राज्य–'हमको लिख-लिख जोग पठावत आपु करत रजधानी'–सू०।

रजन–वि०[सं०] रँगनेवाला। पु० रंगनेका काम; किरण। स्त्री० [अं० 'रेज़िन'] राल; एक प्रकारका गोंद।

रजना*–अ० क्रि० रँगा जाना; रंगमें डुबोया जाना। स० क्रि० रँगना; रंगमें डुबाना।

रजनी–स्त्री०[सं०] रात; नीली, नील; जतुका, एक पहाड़ी लता; हल्दी; दारु हल्दी; शाल्मली द्वीपकी एक नदी (पु०); लाह, लाख। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–गंधा**–स्त्री० हुसना नामक पुष्पवृक्ष। **–चर**–पु० राक्षस; चंद्रमा। वि० जो रातको चलता, घूमता-फिरता हो। **–जल**–पु० ओस, कुहरा; पाला, नीहार। **–पति**–पु० चंद्रमा। **–मुख**–पु० सायंकाल, प्रदोषकाल। **–रमण**–पु० रात्रिका स्वामी, चंद्रमा।

रजनीश–पु० [सं०] चंद्रमा।

रजपूत*–पु० दे० 'राजपूत'।

रजपूती*–स्त्री० राजपूतपन, क्षत्रियत्व; शूरता, वीरता।

रजब–पु०[अ०] मुसलमानोंके सालका सातवाँ चांद्रमास।

रजबहा–पु० नदी या नहरसे निकाला हुआ बड़ा नल।

रजवंती, रजवती–वि० वह स्त्री जिसे रजस्राव हो रहा हो, रजस्वला।

रजवाड़ा—पु० देशी रियासत, राज्य; राजा।

रजवार*—पु० राजद्वार; राजाका दरबार।

रजस्वला—वि० स्त्री० [सं०] ऋतुमती। स्त्री० वह स्त्री जिसका रज प्रवाहित हो रहा हो।

रज़ा—स्त्री० [अ०] मर्जी; इजाजत, अनुमति; खुशी, प्रसन्नताकी स्थिति; खुशनूदी; रुखसत, छुट्टी; स्वीकृति। **—कार**—वि० खुश। पु० स्वयंसेवक, वालंटियर। **—जोई**—स्त्री० दूसरेको खुश करनेकी कोशिश। **—पट्टी**—स्त्री० वर्षकी छुट्टियोंकी सूची। **—मंद**—वि० राजी, सहमत। **—मंदी**—स्त्री० राजी-खुशी; मंजूरी।

रजाइस, रजायस, रजायसु—स्त्री० आज्ञा,हुक्म,अनुमति।

रजाई—स्त्री० राजापन, राजा होनेका भाव; *दे०‘रजाय’।

रज़ाई—स्त्री०[फा०] रंगीन कपड़ेकी रुईदार दुलाई, छोटा लिहाफ।

रजाना*—स० क्रि० राज्यसुख भोग कराना (राज्य, राजके साथ ही प्रयुक्त होता है)।

रजाय*—स्त्री० आज्ञा,हुक्म; मर्जी, इच्छा; दे० ‘रज़ा’।

रजिया—स्त्री० डेढ़ सेरका एक मान जिससे अनाज नापा जाता है; काठका बरतन जिसमें डेढ़ सेर अनाज आता है।

रजिस्टर—पु० [अं०] सादे पन्नोंकी बड़ी किताब, बही जिसपर खानेवार, सिलसिलेवार किसी मदका आय-व्यय, किसी विषयका ब्योरेवार विवरण लिखा जाता हो; दफ्तर, याददाश्त, हाजिरीकी किताब—पंजी।

रजिस्टर्ड—वि० [अं०] दे० ‘रजिस्ट्रीशुदा’; पंजीबद्ध।

रजिस्ट्रार—पु० [अं०] वह व्यक्ति जो रजिस्टरमें दर्ज करे, जो रजिस्ट्री करे वह (पंजीयक); सरकारी कर्मचारीका एक पद; दे० ‘पीठस्थविर’।

रजिस्ट्री—स्त्री० [अं०] डाकघरमें महसूल देकर पत्र आदि रजिस्टरमें दर्ज कराकर भेजनेका कार्य; इस नियमसे भेजी जानेवाली चिट्ठी; रजिस्ट्रारके रजिस्टरमें कोई बात दर्ज कराना; कोई लिखित प्रतिज्ञापत्र कानूनके अनुसार सरकारी रजिस्टरोंमें दर्ज करानेका काम। **—शुदा**—वि० जिसकी रजिस्ट्री करायी गयी हो; रजिस्टरमें दर्ज किया हुआ, पंजीबद्ध; पक्को लिखा-पढ़ीवाला।

रजिस्ट्रेशन—पु० [अं०] रजिस्टरमें दर्ज करना (करना, कराना, होना), पंजीयन।

रज़ील—वि० [अ०] कमीना, पाजी; छोटी जातिका।

रजु—स्त्री० दे० ‘रज्जु’।

रजोकुल*—पु० राजपरिवार, राजवंश।

रजोगुण—पु० [सं०] प्रकृतिका धर्मविशेष; तीन गुणोंमेंसे एक जिसके कारण भोग, विलास, प्रदर्शनकी रुचि पैदा होती है (सांख्य)।

रजोदर्शन, रजोधर्म—पु० [सं०] रजस्वला होना, स्त्रियोंका मासिक धर्म।

रजोविरति—स्त्री० [सं०] (मेनोपॉज) स्त्रीके जीवनका वह परिवर्तन जिसमें रजःस्राव अंतिम रूपसे बंद हो जाता है।

रज़्ज़ाक—वि० [अ०] रोजी, खूराक देने, पहुँचानेवाला। पु० ईश्वर, खुदा।

रज्जु—स्त्री० [सं०] रस्सी, डोर, जेवरी; बागडोर, लगामकी डोरी; स्त्रियोंके सिरकी चोटी। **—कंठ**—पु० एक आचार्य। वि० जिसके गलेमें रस्सी लगी या बँधी हो।

रटंत—स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव, रटाई।

रट—स्त्री० किसी शब्दका बार-बार उच्चारण करना; कौवोंकी बोली।

रटन—स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव। * पु० जोर-जोरसे कहना, बोलना।

रटना—स० क्रि० किसी शब्द, पद, वाक्यकी बार-बार आवृत्ति करना; कंठाग्र करनेके लिए किसी अंश, पद, वाक्यका बोलकर पाठ करना, घोखना। अ० क्रि० बार-बार शब्द करना; बजना। स्त्री० रटनेकी क्रिया, धुन, रट।

रढना*—स० क्रि० दे० ‘रटना’।

रण—पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई, संग्राम। **—कर्म(न्)**—पु० युद्ध, संघर्ष। **—कामी(मिन्)**—वि० युद्धलिप्सु, संग्राम चाहनेवाला। **—कारी(रिन्)**—वि० युद्ध करनेवाला। **—कोष**—पु० युद्ध-कोष, युद्धकी सहायताके लिए विशेष रूपसे इकट्ठा किया गया धन। **—क्षेत्र**—पु० युद्धका स्थान, मैदान, स्थल। **—खेत***—पु० दे० ‘रणक्षेत्र’। **—छोड़**—पु० [हिं०] कृष्ण (जरासंधकी लड़ाईमें रणक्षेत्र छोड़कर द्वारका जानेसे यह नाम पड़ा)। **—दुंदुभी,—भेरी**—स्त्री० लड़ाईका विशेष बाजा तुरही। **—नीति**—स्त्री० (स्ट्रैटेजी) आक्रमण करने, युद्ध चलाने तथा सेनाका व्यूहन करने आदिका ढंग या नैपुण्य। **—पंडित**—वि० रणमें कुशल, प्रवीण, दक्ष। **—पोत**—पु० (वारशिप) युद्धके काम आनेवाला जहाज। **—प्रिय**—वि० युद्धप्रेमी। **—भू,—भूमि**—स्त्री० युद्धस्थल। **—मत्त**—पु० हाथी। **—रंग**—पु० युद्धक्षेत्र; युद्ध, संग्राम; लड़ाईका उत्साह। **—लक्ष्मी**—स्त्री० युद्धकी देवी जो विजय देनेवाली मानी जाती है, विजयलक्ष्मी। **—वंदी(दिन्)**—पु० (कैप्टिव) युद्धमें पकड़ा गया शत्रुका सैनिक, युद्धबंदी। **—वाद्य**—पु० युद्धका बाजा। **—शिक्षा**—स्त्री० युद्ध-विद्या या युद्ध-कौशलकी शिक्षा। **—संकुल**—पु० तुमुल युद्ध, घनघोर युद्ध। **—सज्जा**—स्त्री० युद्धकी तैयारी। **—सहाय**—पु० युद्धमें सहायक, मित्र। **—सिंघा,—सिंहा**—पु० [हिं०] तुरही, नरसिंघा। **—स्थल**—पु० रणक्षेत्र।

रणत्कार—पु० [सं०] झनझनाहट, शब्द; गुंजन।

रणांगण—पु० [सं०] युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान।

रत—वि० [सं०] अनुरक्त, प्रेममें पड़ा हुआ; लीन, लगा हुआ। पु० संभोग; लिंग; योनि; प्रेम।

रतजगा—पु० रात्रिजागरण; वह उत्सव जो रातभर जागकर हो; भाद्र-कृष्णा द्वितीया जब स्त्रियाँ कजली गाती हैं।

रतन—पु० दे० ‘रत्न’। **—जोत**—स्त्री० मणिविशेष; एक औषधोपयोगी पौधा, बृहद्दंती।

रतनाकर*—पु० दे० ‘रत्नाकर’; ‘रतनजोत’।

रतनागर*—पु० समुद्र, सागर।

रतनार—वि० दे० ‘रतनारा’।

रतनारा—वि० किंचित् लाल, ललछूं; लाल।

रतनारी—पु० एक विशेष धान। स्त्री० लाली, ललाई, सुर्खी। वि० स्त्री० दे० ‘रतनारा’।

रतनालिया*—वि० दे० ‘रतनारा’।

रतनावली—स्त्री० दे० ‘रत्नावली’।

रतमुँहाँ*–वि० लाल मुँहवाला। पु० बंदर।

रताना*–अ० क्रि० रत होना। स० क्रि० अपनेमें रत करना।

रति–* अ० दे० 'रती'। स्त्री० [सं०] दक्षप्रजापतिकी कन्या, कामदेवकी पत्नी; प्रेम, अनुराग, प्रीति, आसक्ति; संभोग, मैथुन; सौंदर्य, शोभा; शृंगार रसका स्थायी भाव; वह कर्म जिसके उदयसे मन प्रसन्न हो; रहस्य, गुप्त भेद; सौभाग्य। –**कर**–वि० आनंदवर्द्धक; प्रेमवर्द्धक। पु० एक समाधि। –**कलह**–पु० संभोग, मैथुन। –**कांत**–पु० कामदेव। –**कुहर**–पु० योनि, भग। –**केलि,–क्रिया**–स्त्री० संभोग। –**ज-रोग**–पु० (वेनीरियल डिजीज़) संभोगसे उत्पन्न या संक्रमित रोग। –**ज्ञ**–पु० वह जो रतिक्रियामें प्रवीण हो; स्त्रीमें अपने प्रति प्रेम उत्पन्न करनेमें दक्ष पुरुष। –**दान**–पु० प्रसंग, संभोग। –**नाथ,–नायक,–पति**–पु० कामदेव। –**नाह***–पु० कामदेव। –**प्रिय**–पु० कामुक। –**बंध**–पु० संभोगका ढंग, प्रकार, आसन। –**बंधु**–पु० पति; नायक। –**भवन,–मंदिर**–पु० प्रेमी-प्रेमिकाका रति-क्रीड़ागृह। –**भाव**–पु० स्त्री-पुरुषका परस्पर अनुराग, दांपत्यभाव (शृंगारका स्थायी भाव); प्रीति, अनुराग। –**भौन***–पु० दे० 'रतिभवन'। –**राइ***–पु० कामदेव। –**शक्ति**–स्त्री० संभोगशक्ति।

रतिक*†–अ० थोड़ासा, जरासा, रत्तीभर।

रतिवंत*–वि० खूबसूरत, सुंदर।

रती–* स्त्री० रति, कामदेवकी पत्नी; छवि, शोभा; संभोग; दे० 'रति'; † ढाई जौ या आठ चावलका मान; घुँघची, गुंजा। अ० थोड़ा, कम, जरा, जरासा, रत्तीभर, किंचित्।

रतीकौ*–अ० रत्तीभर भी, जरा भी–'केहू न छाँडत भूमि रतीकौ'–राम०।

रतीश–पु० [सं०] कामदेव।

रतोपल*–पु० लाल कमल; गेरू; लाल सुरमा।

रतौंधी–स्त्री० एक नेत्र-रोग जिसमें रोगीको रातके समय नहीं सूझता।

रत्त*–पु० दे० 'रक्त'।

रत्तक–पु० कुछ-कुछ लाल रंगका एक पत्थर।

रत्ती–स्त्री० ढाई जौ या आठ चावलका एक मान; घुँघची; * सौंदर्य, शोभा।

रत्थी–स्त्री० लकड़ी, बाँसका ढाँचा, संदूक आदि जिसपर रखकर शवको अंतिम संस्कारके लिए ले जाते हैं, टिकठी, अरथी, विमान।

रत्न–पु० [सं०] बहुमूल्य और चमकीले पदार्थ विशेषतः खनिज पत्थर जिन्हें आभूषणोंमें जड़ते हैं, हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, लाल, जवाहर, नगीना आदि (मुख्य रत्न नौ हैं–माणिक, नीलम, लहसुनिया, हीरा, पन्ना, पुखराज, मूँगा, मोती, गोमेद); अपने वर्गमें, जातिमें उत्कृष्ट वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ; सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र्य (जैन०)। –**कर्णिका**–स्त्री० कानोंका एक जड़ाऊ आभूषण (प्रा०)। –**गर्भा**–स्त्री० पृथ्वी। –**गिरि**–पु० बिहारका एक पहाड़ (इसपर राजगृह राजधानी स्थित थी)। –**गृह**–पु० स्तूपके मध्यकी कोठरी जिसमें धातु रखी जाती थी (बौद्ध)। –**च्छाया**–स्त्री० रत्नोंकी छाया, कांति, चमक। –**दीप**–पु० कल्पित रत्नविशेष (कहा जाता है, पातालमें इसीके कारण प्रकाश रहता है); रत्नका या रत्नजटित दीपक। –**निचय**–पु० रत्नोंकी राशि। –**निधि**–पु० समुद्र; सुमेरु पर्वत; विष्णु। –**परीक्षक**–पु० रत्नपारखी, जौहरी। –**पर्वत**–पु० सुमेरु पर्वत। –**पारखी***–पु० रत्न परखने, पहचाननेवाला। –**प्रदीप**–पु० रत्नविशेष जिसमें दीपकासा प्रकाश हो।

रत्नाकर–पु० [सं०] समुद्र; वाल्मीकि मुनिका पूर्व नाम; खान, मणियोंके निकलनेका स्थान; रत्नसमूह।

रत्नागिरि–पु० दे० 'रत्नगिरि'।

रत्नाचल–पु० [सं०] रत्नोंका ढेर या राशि; रत्नोंका कृत्रिम पहाड़ जिसे दानके लिए बनाते हैं (पु०)।

रत्नाधिपति–पु० [सं०] कुबेर।

रत्नाभूषण–पु० [सं०] रत्नजटित आभूषण, जड़ाऊ गहना।

रत्नावली–[सं०] मणियोंकी माला, श्रेणी; एक रागिनी; एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुत अर्थ निकलनेके साथ-साथ उचित क्रमसे कुछ अन्य वस्तुओं या तत्त्वोंका उल्लेख होता है; एक प्रकारका हार।

रत्नेश–पु० [सं०] कुबेर; समुद्र।

रथ–पु० [सं०] वाहन, गाड़ी, यान (घोड़ों आदिसे वाहित युद्ध, विहारका यान जिसमें दो या चार पहिये होते थे और दो या चार पशु नाधे जाते थे); पैर, चरण; शरीर। –**क्षोभ**–पु० रथका हिलना-डुलना। –**चरण,–पाद**–पु० रथका पहिया; चकवा, चक्रवाक। –**पति**–पु० रथी, रथका नायक। –**महोत्सव**–पु० रथयात्रा-उत्सव; दे० 'रथयात्रा'। –**यात्रा**–स्त्री० आषाढ़-शुक्ला द्वितीयाको पुरीमें होनेवाला पर्व, उत्सव जिसमें सुभद्रा, बलराम, जगन्नाथकी मूर्तियाँ रथपर निकालते हैं। –**वाह**–पु० सारथि; घोड़ा। –**वाहक**–पु० सारथि। –**शाला**–स्त्री० रथ रखनेकी जगह, गाड़ीखाना। –**शास्त्र**–पु०,–**विद्या**–स्त्री० रथ चलानेकी विद्या। –**सूत**–पु० सारथि, रथचालक।

रथवान् (वत्)–पु० [सं०] सारथि, रथ हाँकनेवाला।

रथांग–पु० [सं०] रथका पहिया; चक्र, एक अस्त्र; चकवा। –**पाणि**–पु० चक्रपाणि, विष्णु।

रथिक–पु० [सं०] रथका सवार, रथी।

रथी(थिन्)–वि० [सं०] रथपर चलनेवाला। पु० योद्धा।

रथोत्सव–पु० [मं०] रथयात्राका उत्सव।

रथोद्धता–स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

रथ्य–पु० [सं०] चक्र; पहिया; रथमें जुतनेवाला घोड़ा; सारथि।

रथ्या–स्त्री० [सं०] रथका मार्ग, लीक; राजमार्ग, सड़क, प्रशस्त पथ; २०, २१ हाथ चौड़ी सड़क (प्रा०); चौक, चौराहा; वह स्थान जहाँ कई मार्ग मिलें। –**यान**–पु० (ट्राम) सड़कोंपर बिछायी गयी लोहेकी पतली पटरियोंपर बिजली आदिकी सहायतासे चलनेवाली बड़ी सवारी गाड़ी।

रद–पु० [सं०] दाँत। –**छद**–पु० ओष्ठ, अधर। –**छद***–पु० ओठ; दाँतोंका चिह्न (विशेषतः रतिकालका)। –

दान–पु० दाँतोंका चिह्न डालना। **–पट**–पु० ओठ, अधर।

रद–वि० [अ०] खराब, रद्दी; तुच्छ, हीन; फीका। **–बदल**–पु० परिवर्तन, उलट-पुलट, अदल-बदल।

रदन–पु० [सं०] दाँत। **–च्छद**–पु० ओठ, अधर।

रदी(दिन्)–पु० [सं०] हाथी।

रद्द–वि० [अ०] काटा, छाँटा हुआ; तोड़ा, बदला हुआ; खराब, निकम्मा। पु० झुठलाना; गलत साबित करना; न मानना; फेर देना। **–बदल**–पु० फेरफार, उलट-फेर, परिवर्तन।

रद्दा–पु० तह, खंड, स्तर; चारों ओर एक बारमें उठायी जानेवाली मिट्टीकी दीवारका अंशविशेष; पूरी दीवारकी लंबाईमें एक ईंटकी जोड़ाई; मिठाइयोंका चुनाव (थालीमें); गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीसे आघात करना (कुश्ती); चमड़ेकी मोहरी (विशेषकर भालुओंके मुँहपर बाँधनेकी)। **मु०–जमाना**–आरोप करना, इलजाम लगाना। **–रखना**–एक तहपर दूसरी तह रखना; इलजाम रखना; खानेपर खाना।

रद्दी–वि० [फा०] निकम्मा, बेकार। स्त्री० बेकार फेंके हुए कागज आदि। **–खाना**–पु० वह स्थान जहाँ खराब, रद्दी चीजें फेंकी, रखी जायँ।

रन*–पु० युद्ध; जंगल, वन। **–छोर**–पु० दे० 'रणछोड़'। **–बंका**–पु० शूर-वीर; योद्धा, बहादुर। **–बाँकुरा**–पु० योद्धा, वीर।

रनकना–अ० क्रि० (घुँघरू आदिका) मंद-मंद शब्द होना।

रनना*–स० क्रि० शब्द करना; झनकार करना।

रनवास, रनिवास–पु० रानियोंका महल, अंतःपुर।

रनित*–वि० झंकार करता हुआ, बजता हुआ; ध्वनित।

रनी*–पु० योद्धा, वीर।

रपट†–स्त्री० आदत, अभ्यास, बान, 'रब्त'; फिसलन; ढाल, उतार; दौड़; इत्तला, सूचना, 'रिपोर्ट'।

रपटना–अ० क्रि० नीचे या आगेकी ओर फिसलना, सरकना, जम न पाना; तेजीसे चलना।

रपटाना–स० क्रि० सरकाना, फिसलाना।

रपट्टा–पु० फिसलन, फिसलाव; चपेट, झपट्टा; दौड़-धूप।

रफ–वि० [अ०] कच्चा या जल्दीमें किया हुआ, नमूनेके तौरपर बना हुआ; जो साफ, ठीक न बना हो; खुरदरा।

रफ़्ते-रफ़्ते–अ० दे० 'रफ़्ता-रफ़्ता'।

रफल–पु० ऊनी चादर, 'रैपर'। स्त्री० एक प्रकारकी बंदूक, 'राइफल'।

रफ़ा–पु० [अ०] उठाना; निकालना; दूर करना; पूरा करना; समाप्त करना; फैसला करना।

रफ़ू–पु० [अ०] जले, फटे कपड़ेके छोटे सुराखमें तागे भरकर बराबर करना, जाली लगाना। **–गर**–पु० रफू करनेवाला। **मु०–करना**–असंबद्ध, विपरीत बातोंमें सामंजस्य जोड़ना। **–खुलना**–रफूके तागे टूट जाना। **–चक्कर होना**–चंपत, गायब, फरार होना; खिसक जाना।

रफ़्तनी–स्त्री० [फा०] गमन, जाना; बिक्रीके लिए माल बाहर भेजना, मालकी निकासी, निर्यात।

रफ़्तार–स्त्री० [फा०] गति, चाल; चलनेका ढंग, भाव। **–ज़माना**–स्त्री० जमानेकी गर्दिश, गति, चाल। **–(२) मस्ताना**–स्त्री० मस्तानी चाल, झूम-झूमकर चलना; नखरोंकी चाल।

रफ़्ता-रफ़्ता–अ० क्रमशः; शनैः-शनैः, धीरे-धीरे।

रब–पु० [अ०] ईश्वर, मालिक; परवरदिगार; इसलाम–'दोहाई फेरी रबकी'–भू०।

रबड़–पु० एक वृक्षके रस या निर्यासको पकाकर बनाया जानेवाला लचीला पदार्थ; रबड़की बनी हुई चीज; एक वृक्ष। **–छंद**–पु० मात्राओं आदिके बंधनोंसे मुक्त छंद।

रबड़ी–स्त्री० औटाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी मिश्रित दूध, बसौंधी।

रबाना–पु० एक छोटा डफ जिसमें मजीरे भी लगे रहते हैं।

रबाब–पु० [अ०] एक तरहकी सारंगी।

रबाबिया–पु० रबाब बजानेवाला।

रबी–पु० [अ०] मौसम बहार, वसंत; वसंत ऋतुमें काटी जानेवाली फसल, चैती।

रब्त–पु० [अ०] अभ्यास, मश्क; संबंध, रिश्ता; मेल-जोल। **–ज़ब्त**–पु० मेल-जोल, राह-रस्म; आमद-रफ्त।

रब्ब–पु० [अ०] दे० 'रब'।

रभस–पु० [सं०] औत्सुक्य; आवेश; वेग, त्वरा (जल्दबाजी–बुरे भावमें), पूर्वापरका अविचार; शोक, पछतावा; मिलन; हर्ष; रंग; रहस्य; प्रेमोत्साह; प्रबल कामना; क्रोध।

रमक–स्त्री० लहर, तरंग; पेंग (झूलेकी)। पु० [सं०] प्रेमी; कांत।

रमकना–अ० क्रि० हिंडोलेपर झूलना, पेंग मारना–'झोटा बढ़ै रमकत दोऊ दिसि डार परसत जाय'–हरि०; झूमते, इतराते हुए चलना।

रमजना–पु० दे० 'रामजना'।

रमझोला–पु० नूपुर, घुँघरू।

रमण–वि० [सं०] रमनेवाला; प्रिय, मनोहर। पु० केलि, विलास, क्रीडा; संभोग, मैथुन; विचरण करना, घूमना; कामदेव; पति; गधा; जघन; अंडकोश; सूर्यका सारथि, अरुण; एक वर्णवृत्त; एक वन। **–गमना**–स्त्री० [हिं०] वह नायिका जिसका नायक तो संकेत-स्थानपर पहुँच गया हो पर वह स्वयं न उपस्थित हो पाये।

रमणा–स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री; पत्नी, प्रिया; एक वृत्त।

रमणी–स्त्री० [सं०] स्त्री; सुंदर स्त्री; एक गंधद्रव्य, बाला।

रमणीक–वि० सुंदर, मनोहर।

रमणीय–वि० [सं०] सुंदर, रुचिर, रम्य।

रमणीयता–स्त्री० [सं०] सुंदरता, मनोहरता; क्षण-क्षणमें नया रूप धारण करनेवाला माधुर्य।

रमता–वि० घुमक्कड़, एक जगह स्थिर रूपसे न रहनेवाला।

रमन*–वि०, पु० 'रमण'।

रमना–अ० क्रि० विहार करना; भोग-विलास, रतिक्रीडा करना; व्याप्त होना; अनुरक्त होना; घूमना-फिरना; चलता होना, चल देना; अदृश्य हो जाना; चैन करना, दिल बहलाना; सैर करना; बसना; समाना। पु० चरागाह; घेरा, हाता; बाग; सुंदर, रमणीक स्थान।

रमनी*–स्त्री० दे० 'रमणी'।

रमनीक*–वि० दे० 'रमणीक'।

रमनीय*-वि० दे० 'रमणीय'।

रमल-पु० [अ०] फलित ज्योतिपका प्रकार-विशेप जिसमें पासे फेंककर उसके बिंदुओंके अनुसार फलका अनुमान करते हैं (भारतमें इस विद्याका प्रवेश मुसलमानों द्वारा हुआ)।

रमसरा-पु० ऊखके खेतका एक पौधा।

रमा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; पत्नी; सौभाग्य; संपत्ति; वैभव; शोभा। **-कांत,-धव**-पु० विष्णु। **-नरेश***-पु० विष्णु। **-निकेत,-निवास**-पु० विष्णु। **-पति, -रमण**-पु० विष्णु।

रमाना-स० क्रि० लगाना, जोड़ना (रास); पोतना; मुग्ध करना, मोहित करना; अनुरक्त बनाना; रोकना, ठहराना; अनुकूल बनाना।

रमित*-वि० मुग्ध, लुभाया हुआ।

रमेश, रमेश्वर-पु० [सं०] विष्णु।

रमैती-स्त्री० काम लेकर वदलेमें काम करनेकी प्रथा ('हूँड़ या पैंठ'); ऐसे काममें लगनेवाला दिन।

रमैनी-स्त्री० बीजकका दोहों-चौपाइयोंसे युक्त भाग।

रमैया*-पु० राम; ईश्वर।

रम्माल-पु० [अ०] रमल फेंककर फलित कहनेवाला, ज्योतिपी, नजूमी।

रम्य-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर; रमणीय, मनोरम।

रम्हाना-स० क्रि० गायका वोलना, रँभाना, धाड़ना।

रय-पु० [सं०] वेग, तेजी; प्रवाह; * धूल, रज।

रयन*-स्त्री० दे० 'रयनि'।

रयना*-अ० क्रि० बोलना, रव करना; अनुरक्त होना, प्रेममग्न होना; रँगना, रंगसे भींगना; मिलना।

रयनि*-स्त्री रजनी, रात।

रय्यत†-स्त्री० दे० 'रैयत'।

रर*-स्त्री० रट, रटन।

ररना*-अ० क्रि० रटना, वार-वार एक ही वात कहना। स० क्रि० पुकारना-'कव जननी कहि मोहि ररै'-सू०।

ररिहा*-वि० ररनेवाला; गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला, माँगनेकी धुन लगानेवाला। पु० उल्लूकी जातिका एक पक्षी, रुरुआ, रटुआ।

रलना*-अ० क्रि० एकमें मिलना। **मु०-मिलना-** घुलना-मिलना, एक हो जाना।

रलाना*-स० क्रि० एकमें मिलाना, सम्मिलित करना।

रली-स्त्री० क्रीडा, विहार; खुशी, प्रसन्नता; † एक प्रकारका अन्न, चेना।

रल्ल*-पु० रेला, धक्कमधक्का; धावा; हल्ला।

रव-पु० [सं०] ध्वनि; शब्द; शोर; भनभनाहट, गुंजार; * रवि, सूर्य; † जहाजकी चाल, गति।

रवकना-अ० क्रि० झपटना, लपकना; उछलना, उमगना।

रवण-पु० [सं०] रव, शब्द; कोयल; ऊँट; विदूषक; भाँड़; काँसा; * रमण। वि० शब्द करता हुआ; गरम, तप्त; अस्थिर, चंचल। **-रेती**-स्त्री० [हिं०] यमुनातटकी रेतीली भूमि, कृष्णका विहार-स्थल।

रवताई-स्त्री० रावत (राजा) होनेका भाव, प्रभुता, स्वामित्व।

रवन*-वि० रमण करनेवाला। पु० पति, भर्ता, स्वामी; रमण।

रवना*-अ० क्रि० शब्द करना, बोलना; रमना; क्रीडा, रमण करना। पु० रावण।

रवनि, रवनी*-स्त्री० रमणी, सुंदरी, स्त्री।

रवन्ना-पु० रवाना होनेका, राहदारीका परवाना, जानेवाली चीजके साथ रहनेवाली चुंगीकी रसीद, प्रमाणपत्र; कागज जिसपर रवाना किये हुए मालका विवरण हो; घरेलू काम-काज करने या सौदा लानेवाला ड्योढ़ीदार।

रवा-पु० छोटा टुकड़ा, कण, दाना (चाँदी, चावल, चीनी, मिश्रीका रवा); घुँघुरूका छर्रा; वारूदका दाना; सूजी। **-दार**-वि० दानेदार, रवेवाला। **-भर**-अ० जरासा, बहुत थोड़ा।

रवा-वि० [फा०] उचित, ठीक; प्रचलित; पूरा करनेवाला (समासमें)। **-दार**-वि० हितैपी, शुभचिंतक; संबंध, लगाव रखनेवाला। **-रवी**-स्त्री० जल्दी; भाग-दौड़।

रवाज-पु० [फा०] चलन, रीति, प्रथा, परिपाटी।

रवानगी-स्त्री० [फा०] प्रस्थान, प्रयाण।

रवाना-वि० [फा०] प्रस्थित, चला हुआ; भेजा हुआ।

रवाब-पु० दे० 'रवाव'।

रवाबिया-पु० लाल, वलुआ पत्थर; दे० 'रबाबिया'।

रवायत-स्त्री० [अ०] कहानी; कहावत।

रवि-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; सरदार; आक, मदार; लाल अशोक; पहाड़; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; बारहकी संख्या। **-कर**-पु० सूर्यकिरण। **-कांतमणि**-पु० सूर्यकांतमणि। **-कुल**-पु० सूर्यवंश। **-कुलमणि**-पु० राम। **-ज**-पु० शनि; दे० 'रवितनय'। **-जा**-स्त्री० यमुना। **-तनय,-नंद,-पुत्र**-पु० सावर्णि मनु; वैवस्वत मनु; यमराज; शनि; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण। **-तनया, -तनुजा,-नंदिनी**-स्त्री० यमुना। **-पूत***-पु० दे० 'रवितनय'। **-बिंब**-पु० सूर्यका मंडल; माणिक्य। **-मंडल**-पु० सूर्यके चारों ओर दिखाई देनेवाला लाल मंडल; सूर्यका बिंव। **-मणि,-रत्न**-पु० सूर्यकांतमणि। **-वार,-वासर**-पु० इतवार, आदित्यवार। **-वंशी-(शिन्)**-पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुरुप, सूर्यवंशी। **-सारथि**-पु० अरुण। **-सुअन***-पु० दे० 'रवितनय'। **-सुत,-सूनु**-पु० दे० 'रवितनय'।

रविश-स्त्री० [फा०] वगीचेकी क्यारियोंके बीच चलनेके लिए पतला रास्ता; चाल, रफ्तार; ढंग, तौर; रस्म; रवैया।

रवैया-पु० चलन, प्रथा; तौर, तरीका।

रशना-स्त्री० [सं०] कांची, करधनी; रस्सी; जिह्वा; लगाम।

रशनोपमा-स्त्री० [सं०] दे० 'रसनोपमा'।

रश्क-पु० [फा०] जलन, डाह, कुढ़न, ईर्ष्या, हसद।

रश्मि-स्त्री० [सं०] किरण; रस्सी, डोरी; घोड़ेकी लगाम।

रस-पु० [सं०] स्वाद, रसनेंद्रियका ज्ञान, संवेदन (इनकी संख्या ६ है-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कपाय और तिक्त); ६ की संख्या (न्या०); खाये हुए अन्नका प्रथम परिणाम; तत्त्व, सार; मनमें उत्पन्न होनेवाला वह भाव जो काव्यपाठ, अभिनय-दर्शन आदिसे होता है, विभाव, अनुभाव

और संचारीके योग द्वारा व्यंजित स्थायी भावसे उत्पन्न चित्तवृत्ति-विशेष, आनंद (सा०); नौकी संख्या (सा०); आनंद; प्रेम; द्रव, तरल पदार्थ; जल; शराब; वेग जोश; इच्छा; केलि, कामक्रीड़ा; गुण; फलों, वनस्पतियोंका जलीय अंश जो कूटने, दबाने या निचोड़नेसे निकलता है; शोरबा, रसा; शरबत; ईखसे निकाला जानेवाला रस; वृक्षका निर्यास; लासा; वीर्य; राग; विष; दूध; अमृत; गंधरस; शिलारस; पारा; हिंगुल; शिगरफ, धातुओंको फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। **-कर्म (न्)**-पु० पारे द्वारा रस तैयार करनेकी क्रिया (आ०वे०)। **-केलि**-स्त्री० विहार, क्रीडा; हँसी, दिल्लगी। **-खीर**-स्त्री० [हिं०] मीठा भात। **-गंध, -गंधक**-पु० रसौत; शिगरफ; बोल नामक गंधद्रव्य। **-गुनी†**-पु० रसज्ञ, काव्य, संगीतका ज्ञाता। **-गुल्ला**-पु० [हिं०] छेनेसे बनायी जानेवाली एक मिठाई। **-घ्न**-पु० सुहागा। **-ज**-पु० गुड़; रसौत; शराबकी तलछट। **-जात**-पु० रसौत। **-ज्ञ**-वि० रसका ज्ञाता; कुशल, निपुण; काव्यमर्मज्ञ। **-ज्ञा**-स्त्री० जीभ; गंगा। **-ज्येष्ठ**-पु० शृंगार रस; मधुर, मीठा रस। **-द**-वि० सुखद, आनंददायक; स्वादिष्ठ। पु० चिकित्सक। **-दार**-वि० [हिं०] जिसमें रस हो, शोरबेदार; रसवाला (आम, नीबू आदि); स्वादिष्ठ। **-धातु**-स्त्री० पारा; शरीरकी सात धातुओंमेंसे एक। **-धेनु**-स्त्री० दानके निमित्त निर्मित गुड़की गाय। **-नाथ**-पु० पारा। **-नायक**-पु० पारा; शिव। **-पति**-पु० पारा; शृंगार रस; राजा; पृथ्वी; चंद्रमा। **-पर्पटी**-स्त्री० पारेको शोधकर बनाया जानेवाला एक रस (आ०वे०)। **-प्रबंध**-पु० नाटक; प्रबंधकाव्य, वह कविता जिसमें एक विषय अनेक परस्पर असंबद्ध पद्योंमें हो। **-भरी**-स्त्री० [हि०] एक फल, मकोय। **-भस्म**-पु० पारेका भस्म। **-भीना**-वि० [हिं०] आनंदमें मग्न; आर्द्र, तर। **-मसा***-वि० आनंदमग्न, रंगमें मस्त -'गोपी औ गोपालको अति रसमसो समाज'-हरिश्चंद्र; पसीनेसे भरा, श्रांत; तर, गीला। **-माता***-स्त्री० दे० 'रसमातृका'। **-मातृका**-स्त्री० जीभ। **-मारण**-पु० पारा मारने, शुद्ध करनेकी क्रिया। **-मुंडी**-स्त्री० [हिं०] एक बँगला मिठाई। **-मैत्री**-स्त्री० दो रसोंका उपयुक्त मेल (जैसे-कडुआ-तीता, तीता-नमकीन, शृंगार-हास्य इ०)। **-राज**-पु० शृंगार रस; रसौत; पारा; ताँबेके भस्म; गंधक, पारे आदिके योगसे बनायी जानेवाली एक औषधि। **-राय***-पु० दे० 'रसराज'। **-वाद**-पु० रसालाप, प्रेम, आनंदकी बातचीत; छेड़छाड़; झगड़ा; बकवाद। **-वाहिनी**-स्त्री० भोजनसे बने रसको फैलानेवाली नाडी (आ०वे०)। **-विक्रयी (यिन्)**-पु० मधुविक्रेता, शराब बेचनेवाला। **-विरोध**-पु० रसोंका अनुचित मेल (जैसे-तीता-मीठा, कडुआ-मीठा इ०-आ०वे०); एक पद्यमें दो प्रतिकूल रसोंकी स्थिति (जैसे-शृंगार-रौद्र, हास्य-भयानक इ०-सा०)। **-शार्दूल**-पु० एक आयुर्वेदोक्त रस जो प्रसूताके लिए उपयोगी है। **-शास्त्र**-पु० रसायन-शास्त्र। **-शोधन**-पु० सुहागा; पारेको शुद्ध करना। **-संरक्षण**-पु० पारेको शुद्ध करना, मूर्च्छित करना, बाँधना और भस्म करना। **-संस्कार**-पु० पारेका बंधन, मूर्च्छन, मारण आदि अठारह संस्कार। **-सार**-पु० मधु। **-सिंदूर**-पु० पारे, गंधकके योगसे निर्मित एक रसौषध।

रसद-पु० [फा०] अनाज, खानेका सामान; भत्ता, राशन; हिस्सा, बखरा; सेनाके लिए खाद्य सामग्री।

रसना-* अ० क्रि० रसमग्न होना; प्रफुल्ल होना; तन्मय होना; पूर्ण होना; † धीरे-धीरे बहना, टपकना। स० क्रि० कोई द्रव पदार्थ धीरे-धीरे छोड़ना, टपकाना। स्त्री० [सं०] जीभ; रसस्वाद (न्या०); एक ओषधि, रास्ना; मेखला, करधनी; रस्सी; लगाम; चंद्रहार। **-रव**-पु० पक्षी (दाँत न होनेसे जीभसे ही बोलनेवाला)।

रसनीय-वि० [सं०] स्वाद लेने या चखने योग्य; स्वादिष्ठ।

रसनेंद्रिय-स्त्री० [सं०] रसना, स्वादकी इंद्रिय, जीभ।

रसनोपमा-स्त्री० [सं०] उपमाका एक भेद जिसमें उपमाओंकी एक शृंखला रहती है और उपमेय उपमान होता जाता है।

रसमसा-वि० दे० 'रस'के साथ।

रसमि*-स्त्री० रश्मि, किरण; प्रकाश, आभा।

रसरी*-स्त्री० रस्सी, डोरी।

रसवंत*-वि० रसभरा, रसीला। पु० रसिक; प्रेमी; रसज्ञ।

रसवंती-स्त्री० रसौत।

रसवत-स्त्री० दे० 'रसौत'।

रसवत्ता-स्त्री० [सं०] रसीलापन, रसयुक्त होना; माधुर्य, मिठास; सुंदरता।

रसवान्(वत्)-वि० [सं०] रसवाला, जिसमें रस हो।

रसाँ, रसा-वि० [फा०] पहुँचानेवाला, दूर जानेवाला (जैसे-चिट्ठीरसाँ)।

रसांजन-पु० [सं०] रसौत।

रसा-स्त्री० [सं०] भूमि, पृथ्वी; नदी; जिह्वा। **-तल**-पु० पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे छठा। मु०-**तल पहुँचाना**-बरबाद कर देना, मटियामेट करना।

रसा-पु० शोरबा, झोल (तरकारी आदिका)। **-दार**-वि० झोल, शोरबेवाला।

रसाइन*-पु० दे० 'रसायन'।

रसाइनी*-पु० रसायनी, रसायन विद्या जाननेवाला, कीमियागर।

रसाई-स्त्री० [फा०] पहुँच; दाखिला।

रसात्मक-वि० [सं०] रसयुक्त; सुंदर।

रसाध्यक्ष-पु० [सं०] मादक द्रव्योंकी जाँच-पड़ताल तथा विक्रयकी व्यवस्था करनेवाला राजकर्मचारी।

रसाना*-अ० क्रि० आनंद लूटना-'राधा ब्रज मिश्रित जस रसनि रसाइये'-नागरी०।

रसाभास-पु० [सं०] किसी रसका अनुचित प्रकरण या स्थानपर वर्णन; एक अलंकार।

रसायन-पु० [सं०] पदार्थोंका तत्त्वगत ज्ञान, दे० 'रसायनशास्त्र'; जराव्याधिनाशक औषधि (जैसे-विडंगरस, ब्राह्मीरस इ०); ताँबेसे सोना बनानेका कल्पित योग; धातुओंको भस्म करने, एक धातुको दूसरी धातुमें परिवर्तित करनेकी विद्या। **-ज्ञ**-पु० रसायनविद्याका जानने-

वाला। **-विज्ञान**-पु० दे० 'रसायन'। **-शास्त्र**-पु० पदार्थोंमें मिलानेवाले तत्त्वोंका विवेचन करनेवाला और तत्त्वगत परमाणुओंमें परिवर्तन होनेपर पदार्थोंकी नयी स्थितिका निरूपण करनेवाला शास्त्र। **-श्रेष्ठ**-पु० पारा।

रसायनिक-वि०,पु० दे० 'रासायनिक'। पु० कीमियगर।

रसायनी-पु० रसायनज्ञ। स्त्री० [सं०] बुढ़ापेको दूर करनेवाली औषधि; गोरखदुद्धी, अमृतसंजीवनी; गुडुच; महाकरंज; मकोय।

रसार*-वि०, पु० दे० 'रसाल'

रसाल-वि० [सं०] रसीला; मीठा, मधुर; स्वादिष्ट; सुंदर; शुद्ध, मार्जित। पु० आम; कटहल; ईख; * राजस्व, कर, इरसाल; दे० 'रिसाल'। **-शर्करा**-स्त्री० ईखके रसकी चीनी।

रसालय-पु० [सं०] रसशाला, रसनिर्माणका स्थान; आमोद-प्रमोदका स्थान; आमका पेड़।

रसाला*-पु० 'रिसाला'।

रसाली(लिन्)-पु० [सं०] पौंढ़ा, गन्ना; चना।

रसाव-पु० रसनेकी क्रिया या भाव; जोतकर तथा हेंगा चलाकर खेतको यों ही रहने देना।

रसावर, रसावल-पु० दे० 'रसौर'।

रसाष्टक-पु० [सं०] पारा, लोहा, ईंगुर आदि आठ महारसोंका समाहार।

रसास्वादी(दिन्)-वि० [सं०] रसका आस्वादन करनेवाला, रस चखनेवाला; आनंद लेनेवाला। पु० भ्रमर।

रसिआउर†-पु० ईख या गुड़के रसमें पकाया हुआ चावल, बखीर; नववधू द्वारा प्रस्तुत रसियाउर जीमते समय गाया जानेवाला गीत।

रसिक-वि० [सं०] रस, स्वाद लेनेवाला; आनंदी, मौजी, क्रीडाप्रेमी; रसयुक्त, स्वादिष्ट; सुंदर, मनोहर। पु० प्रेमी; सहृदय; रसिया, विलासी; काव्यमर्मज्ञ; विषय-विशेषका पारखी, पंडित। **-विहारी(रिन्)-शिरोमणि**-पु० कृष्ण।

रसिकता-स्त्री० [सं०] रसिकपन; सुरुचि; हँसी-मजाक।

रसिकाई*-स्त्री० रसिकता।

रसित-वि० [सं०] रसयुक्त; ध्वनि करता, बजता, बोलता हुआ; मुलम्मा किया हुआ; जरा-जरा रसता, बहता हुआ।

रसिया-पु० रसिक, रस लेनेवाला; फागुनका एक गीत जिसके गानेका रवाज व्रज तथा बुंदेलखंडमें है।

रसियाव-पु० ईखके रसमें पका चावल, बखीर।

रसी*-पु० दे० 'रसिक'।

रसीद-स्त्री० [फा०] पहुँच, प्राप्ति; किसी चीजके मिलनेका प्रमाणपत्र; खबर, पता। मु०**-करना**-(चाँटा, थप्पड़ आदि) लगाना, देना। **-काटना**-रसीद लिखकर देना।

रसील*-वि० दे० 'रसीला'।

रसीला-वि० रसयुक्त, रसपूर्ण; स्वादिष्ट, मजेदार; रस, आनंद लेनेवाला; व्यसनी, विलासी; बाँका, छैला। **-पन**-पु० रसीला होना।

रसूम-पु० [अ०] (रसमका बहुवचन) रस्म; नियम, कानून; नेग, प्रथानुसार दिया जानेवाला धन; नजराना, भेंट (विशेषतः किसानोंकी ओरसे जमींदारोंको) **-अदालत**-पु० कानूनन सरकारी न्यायके लिए मुकदमा दायर करते समय दिया जानेवाला धन, कोर्टफीस, स्टांप।

रसूल-पु० [अ०] पैगंबर, ईश्वरका दूत।

रसेंद्र-पु० [सं०] जीरा, धनिया, पीपल, त्रिकुट, शहद, रससिंदूरके योगसे बननेवाली एक रसौषध; पारा।

रसे-रसे†-अ० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः।

रसेश्वर-पु० [सं०] पारा; एक रसौषध।

रसेस*-पु० कृष्ण; नमक।

रसोइया-पु० रसोई बनानेवाला, सूपकार।

रसोईं, रसोई-स्त्री० पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, भोजन; भोजन बनानेका घर, स्थान। **-खाना,-घर**-पु० भोजन पकानेका स्थान, पाकशाला। **-दार**-पु० रसोइया, भोजन पकानेवाला। **-दारी**-स्त्री० भोजन पकानेका काम या पद। **-बरदार**-पु० भोजन ले जानेवाला।

रसोदर-पु० [सं०] शिंगरफ, हिंगुल।

रसोद्भव-पु० [सं०] ईंगुर, शिंगरफ; रसौत।

रसोद्भूत-पु० [सं०] रसौत।

रसोय*-स्त्री० रसोई, भोजन।

रसौंत, रसौत-स्त्री० एक प्रसिद्ध औषधि, अग्निसार, कृतक, बालभैषज्य, रसगर्भ, रसनाभि।

रसौर-पु० ईखके रसमें पका चावल, रसिआउर।

रस्ता-पु० दे० 'रास्ता'।

रस्म-स्त्री० [अ०] प्रथा,चलन, रिवाज; बरताव, मेल-जोल।

रस्मि*-स्त्री० दे० 'रश्मि'।

रस्मी-वि० रस्म-संबंधी, जो रस्म या मान्य रीतिके अनुसार हो।

रस्सा-पु० अनेक मोटे तागोंसे बनायी हुई मोटी रस्सी।

रस्सी-स्त्री० डोरी, रज्जु। **-बाट**-पु० रस्सी बटने, बनानेवाला।

रहँकला-पु० एक हलकी गाड़ी; तोप लादनेकी गाड़ी; रहँकलेपर लदी छोटी तोप।

रहँचटा*-पु० चसका, लिप्सा; मनोरथपूर्तिकी आकांक्षा।

रहँट-पु० कुएँसे पानी निकालनेका यंत्रविशेष।

रहँटा-पु० सूत कातनेका चर्खा।

रहः(स्)-पु० [सं०] एकांत, निर्जन स्थान; आनंदमय लीला; यथार्थता; गुप्त भेद, रहस्य; गूढ़ तत्त्व, गुप्त बात।

रह-स्त्री० [फा] राहका संक्षिप्त रूप। **-जन**-पु० डाकू, लुटेरा। **-जनी**-स्त्री० डकैती, लुटेरापन। **-नुमा**-पु० पथप्रदर्शक। **-नुमाई**-स्त्री० पथप्रदर्शन।

रहचटा-पु० दे० 'रहँचटा'।

रहचह*-स्त्री० चहचहाहट, चिड़ियोंकी बोली।

रहठा-पु० अरहरका सूखा पौधा, डंठल।

रहन-पु० [अ०] गिरवी रखना (माल, जमीन आदि), दे० 'रेहन'। स्त्री० [हिं०] रहना; रहनेका ढंग, व्यवहार। **-सहन**-पु०, स्त्री० तौर-तरीका, ढंग, आचरण; चलावा; जीवननिर्वाहका ढंग।

रहना-अ० क्रि० ठहरना, स्थित होना; थम जाना, रुकना; बसना; विद्यमान होना; जीवित, जिंदा रहना; नौकरी, काम करना; स्थापित, स्थित होना (पेट रहना); रखेली बनकर रहना; बचना, छूटना।

रहनि, रहनी*–स्त्री० रहनेकी क्रिया या ढंग, रहन; चालढाल, आचरण; लगन, प्रेम–'जो पै रहनि राम सों नाहीं'–विनय०।

रहम–पु० [अ०] करुणा, दया, कृपा; बच्चादानी, जरायु। **–दिल**–वि० दयालु।

रहमत–स्त्री० [अ०] मेहरबानी, दया।

रहमान–वि० [अ०] परम कृपालु। पु० परमात्मा।

रहर, रहरी†–स्त्री० दे० 'अरहर'।

रहल–स्त्री०[अ०] रवानगी; सफर; रहनेकी जगह; लकड़ीका बना ढाँचा जिसपर पुस्तक रखकर पढ़ते हैं।

रहस*–पु० आमोद-प्रमोद, आनंद। **–बधावा**–पु० विवाहकी एक रीति (वर नववधूको जनवासे लाता है, जहाँ गुरुजन मुख देखते और उपहार देते हैं)।

रहसना*–अ० क्रि० प्रसन्न, आनंदित होना–'बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी'–रामा०।

रहसि*–स्त्री० एकांत, गुप्त स्थान।

रहस्य–पु० [सं०] गुप्त भेद, गोपनीय विषय; मर्म, भेद; निर्जन, एकांतमें घटित वृत्त; दुर्बोध्य तत्त्व; हँसी-मजाक। **–वाद**–पु० चिंतन, मनन द्वारा ईश्वरसे प्रत्यक्ष संपर्क स्थापनकी प्रवृत्ति। **–वादी(दिन्)**–पु० रहस्यवादका अनुयायी। वि० रहस्यवाद-संबंधी।

रहा-सहा–वि० बचा-बचाया, बचा-खुचा।

रहाइश–स्त्री० स्थिति, सकूनत; बरदाश्त; गुंजाइश।

रहाई*–स्त्री० रहना; आराम, चैन।

रहाना*–अ० क्रि० होना; रहना।

रहित–वि० [सं०] हीन, शून्य।

रहिला–पु० चना।

रहीम–वि० [अ०] रहम करनेवाला, कृपालु। पु० अब्दुल रहीम खानखानाका काव्यनाम; परमात्मा।

राँक, राँकब*–वि० दे० 'रंक'।

राँगड़ी†–पु० एक प्रकारका चावल।

राँगा–पु० एक प्रसिद्ध धातु–रंग, बंग, त्रपु, नाग, चक्र।

राँच*–वि० दे० 'रंच'। अ० जरा भी।

राँचना*–अ० क्रि० प्रेम करना, अनुरक्त होना, रंग पकड़ना। स० क्रि० रँगना, रंग चढ़ाना।

राँजना†–अ० क्रि० आँखमें काजल लगना। स० क्रि० रँगना; राँगेसे जोड़ना,टाँका लगाना (फूटे बरतन आदिमें)।

राँटा†–पु० टिटिहरी, टिट्टिभ; दे० 'रहँटा'।

राँड़–स्त्री० बेवा, विधवा, जिस स्त्रीका पति मर चुका हो।

राँध–अ० पास, निकट–'राँध न तहवाँ दूसर कोई'–प०; पड़ोस। वि० परिपक्व बुद्धिवाला (प०)। **–पड़ोस**–अ० आस-पास, अड़ोस-पड़ोस।

राँधना–स० क्रि० पकाना (भोजन), पाक करना।

राँपी†–स्त्री० मोचियोंका चमड़ा छीलने, तराशनेका एक औजार।

राँभना–अ० क्रि० बँबाना, बोलना, चिल्लाना (गाय, बैल, आदिका)।

राआ*–पु० राजा।

राइ–पु० राय, सरदार, छोटा राजा।

राइता–पु० दे० 'रायता'।

राइफल–स्त्री० [अं०] एक तरहकी बंदूक।

राई–स्त्री० एक छोटी सरसों; अल्प परिमाण; * राजसी, राजा होना। **–भर**–अ० बहुत थोड़ा। **मु०–काई करना या होना**–टुकड़े-टुकड़े करना, होना। **–नोन उतारना**–नजराये बच्चेके सिरके चारों ओर राई-नमक घुमाकर आगमें डालनेका टोटका। **–से पर्वत करना**–जरासी बातको बहुत बढ़ाना; हीनको महान् बनाना।

राउ*–पु० राजा।

राउत†–पु० राजवंशीय व्यक्ति; क्षत्रिय; वीर पुरुष; सरदार।

राउर*–पु० अंतःपुर, जनानखाना (राजाओंका)–'गे सुमंत तब राउर माहीं'–रामा०। † सर्व० आपका, श्रीमान्का।

राउल*–पु० राजकुलोत्पन्न पुरुष; राजा।

राकस*–पु० राक्षस।

राकसिन, राकसी*–स्त्री० राक्षसी।

राका–स्त्री० [सं०] पूर्णिमाकी रात; पूर्णिमा; पहले-पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री। **–पति**–पु० चंद्रमा।

राकेश–पु० [सं०] चंद्रमा।

राक्षस–पु० [सं०] दैत्य, निशाचर; दुष्ट, दुर्वृत्त व्यक्ति; उनचासवाँ संवत्सर। **–विवाह**–पु० वह विवाह जिसमें युद्ध द्वारा कन्या प्राप्त की जाय।

राक्षसी–स्त्री० [सं०] राक्षसकी स्त्री; राक्षस स्त्री; दुष्ट, क्रूर स्वभाववाली स्त्री।

राख–स्त्री० जले पदार्थका शेष, भस्म।

राखना*–स० क्रि० बचाना, रक्षा करना; रखवाली करना (बाग-बगीचे, फसल आदिकी); कपट करना, छिपाना; रोक रखना, जाने न देना, ठहराना; आरोप करना; दे० रखना।

राखी–स्त्री० रक्षाबंधनका डोरा, रक्षा, मंगलसूत्र (जो ब्राह्मण तथा बहनें श्रावणी पूर्णिमाको बाँधती हैं); † राख, भस्म।

राग–पु० [सं०] रंजन, मनको प्रसन्न करना; प्रीति, अनुराग; आकर्षण (प्रिय वस्तु, सांसारिक सुख-संबंधी); पंचक्लेशोंमें एक (योग); कष्ट, क्लेश; ईर्ष्या, द्वेष; सुगंधित लेप, अंगराग (चंदन, कपूर, कस्तूरी आदिसे निर्मित); अलक्तक, आलता; रंग (विशेषतः लाल); स्वरों, वर्णों, स्वरांगोंसे युक्त, विशिष्ट ताल-लय-युक्त ध्वनि।

रागना*–अ० क्रि० रँग जाना; अनुरक्त होना; निमग्न होना। स० क्रि० गाना, अलापना।

रागिनी–स्त्री० [सं०] रागकी पत्नी (कुल छत्तीस रागिनियाँ मानी जाती हैं–संगीत)।

रागी*–स्त्री० रानी, राजाकी स्त्री।

रागी(गिन्)–पु० [सं०] प्रेमी; अशोक वृक्ष; मड़ुआ; मकरा; छ मात्राओंके छंद। वि० रँगा हुआ, रंजित; लाल, अरुण; विषयासक्त; रंजन करने, रँगनेवाला।

राघव–पु० [सं०] राम; रघुकुलका व्यक्ति; दशरथ; अज; एक बहुत बड़ी समुद्री मछली।

राचना*–स० क्रि० रचना। अ० क्रि० रचा जाना; रँगा जाना; प्रेम करना, अनुरक्त होना; लीन, मग्न होना;

शोभा देना, फबना; प्रसन्न होना।

राछ–पु० कारीगरोंका औजार; तानेका तागा उठाने-गिरानेका जुलाहोंका औजार; लकड़ीके भीतरका साल, हीर; जुलूस; बरात; हथौड़ा; चक्कीके बीचका खूँटा। मु० **–घुमाना,–फिराना**–वरको पालकीपर चढ़ाकर कुएँ आदिकी परिक्रमा कराना।

राछस*–पु० दे० 'राक्षस'।

राज(न्)–पु० [सं०] राजाका समासमें व्यवहृत रूप (यह अनेक शब्दोंके साथ प्रयुक्त होकर बड़ाई, श्रेष्ठता आदिका अर्थ प्रकट करता है)। **–कदंब**–पु० बड़े, स्वादिष्ठ फलोंवाला कदंब। **–कन्या**–स्त्री० राजपुत्री; केवड़ेका फूल। **–कर**–पु० राजस्व, खिराज। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० राजा बनानेवाला, किसी भी व्यक्तिको राज्यासनपर प्रतिष्ठित करने, उतारनेकी शक्ति रखनेवाला। **–कुँअर***–पु० राजकुमार। **–कुमार**–पु० राजाका पुत्र। **–कुमारी**–स्त्री० राजाकी पुत्री। **–कुल**–पु० राजवंश; राजदरबार; राजप्रासाद। **–कुष्मांड**–पु० बैगन। **–कोषीयनीति**–स्त्री० (फिस्कल पॉलिसी) सरकारी कोष या आयसंबंधी नीति। **–गद्दी**–स्त्री० [हिं०] राजसिंहासन; राज्याधिकार; राज्याभिषेक। **–गृह**–पु० राजाका महल; बिहारमें एक ऐतिहासिक स्थान। **–चिह्न**–पु० (इनसिग्निया) राजाओंके अधिकारसूचक चिह्न–जैसे छत्र, दंड आदि, दे० 'पदसूचक चिह्न'। **–तंत्र**–पु० वह शासन-प्रणाली जिसका अधिपति राजा हो। **–तिलक**–पु० राज्याभिषेक; नये राजाके राज्यारोहणका उत्सव। **–दंड**–पु० राजशासन; राजाज्ञा, विधानसे दिया हुआ दंड। **–दंत**–पु० चौका, सामनेके नीचे और ऊपरके दो-दो बड़े दाँत। **–दया**–स्त्री० (क्लीमेंसी) प्राणदंड आदिकी सजा पाये हुए बंदीके प्रति राजा या प्रधान शासक द्वारा क्षमाप्रदान, दंडन्यूनन आदिके रूपमें दिखायी गयी दया। **–दूत**–पु० किसी राज्य या राजाका संदेश (संधि, विग्रह, नैतिक कार्यादि-संबंधी) लेकर किसी अन्य राज्यमें जानेवाला व्यक्ति; (एंबैसेडर) किसी अन्य देशकी राजधानीमें अपनी सरकारके प्रतिनिधि-रूपमें रहनेवाला प्रतिनिधि। **–दूतावास**–पु० (एंबैसी) राजदूतका निवास-स्थान। **–द्रोह**–पु० राज्य या राजाके विरुद्ध आचरण, बगावत, विद्रोह। **–द्रोही(हिन्)**–वि० राजद्रोह करनेवाला, बागी! **–द्वार**–पु० राजाका द्वार; न्यायालय। **–धर्म**–पु० राजाका धर्म, कर्तव्य (शांतिस्थापन, प्रजापालन आदि); महाभारतके शांतिपर्वका राजकर्तव्य-विषयक अंशविशेष। **–धानी**–स्त्री० मुख्य नगर, शासन-केंद्र; राजा, शासकके रहनेका नगर। **–नय**–पु० राजनीति। **–नीति**–स्त्री० राज्यकी रक्षा और शासनको दृढ़ करनेका उपाय बतानेवाली नीति। **–नीतिक**–वि० राजनीति-संबंधी। **–पंखी***–पु० बड़ा पक्षी (दे० मेंडराना)। **–पटोल**–पु० परवल। **–पत्नी**–स्त्री० रानी; पीतल। **–पत्रित**–वि० (गॅज़ेटेड) (वह अधिकारी) जिसकी नियुक्ति, पदवृद्धि, स्थानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिकी सूचना सरकारी गजटमें छपती हो। **–पथ**–पु० बड़ी सड़क, मुख्य मार्ग। **–पद्धति**–स्त्री० राजनीति; राजमार्ग; (पालिटी) नागरिक शासनका प्रकार, राजशासनकी प्रणाली। **–पुत्र**–पु० राजकुमार। **–पुत्रा**–स्त्री० राजमाता, जिस स्त्रीका पुत्र राजा हो। **–पुत्री**–स्त्री० राजकन्या; राजपूत बाला। **–पुरुष**–पु० राजकर्मचारी; (स्टेट्समैन) राज्यके शासन, प्रबंध आदिमें प्रमुख रूपसे भाग लेनेवाला अथवा उसकी कला या नीतिका जानकार, राजनेता, राष्ट्र-नायक। **–पूत**–पु० [हिं०] राजपुत्र; (राजपूतानाके क्षत्रिय)। **–प्रमुख**–पु० मैसूर, त्रिवांकुर आदि राज्यों या मध्यभारत आदि राज्य-संघोंमें राज्यपालका स्थान ग्रहण करनेवाला प्रमुख राजा। **–प्रासाद**–पु० राजभवन। **–बाड़ी**–स्त्री० [हिं०] राजवाटिका, राजाका उद्यान। **–बाहा**–पु० [हिं०] बड़ी नहर। **–भंडार**–पु० राजकोश, राजाका खजाना। **–भक्त**–वि० राज्य या राजामें भक्ति रखनेवाला। **–भक्ति**–स्त्री० राज्य या राजाके प्रति प्रेम। **–भवन**–पु० राजमहल, प्रासाद; (गवर्नमेंट हाउस) राजधानीका वह सरकारी भवन जहाँ राज्यपाल या उपराज्यपाल निवास करता है। **–भाषा**–स्त्री० देशकी वह भाषा जो राजकार्यों तथा न्यायालयों आदिमें प्रयुक्त हो। **–भोग**–पु० [हिं०] एक महीन धान। **–मंडल**–पु० राज्यके आस-पासके चारों ओरके राज्य(नीति-शास्त्रमें बारह राजमंडल माने गये हैं)। **–महल**–पु०[हिं०] राजाका भवन; बंगालका एक समुद्र-तटवर्ती पहाड़। **–महिषी**–स्त्री० पटरानी। **–माता(तृ)**–स्त्री० राजा या राज्यशासककी माता। **–मार्ग**–पु० मुख्य सड़क, राजपथ। **–मुद्रा**–स्त्री० राजाके नामकी या सरकारी मुहर। **–मुनि**–पु० राजर्षि। **–यक्ष्मा(क्ष्मन्)**–पु० क्षयरोग, तपेदिक। **–यक्ष्मी(क्ष्मिन्)**–वि० क्षयरोगी। **–यान**–पु० राजाकी सवारी; राजाका जुलूस, सवारी निकालना; पालकी। **–योग**–पु० योगशास्त्रोक्त एक योग, अष्टांगयोग; किसीके जन्मके समय ग्रहोंका ऐसा सन्निपात जिसके प्रभावसे उसके राजा या राजाके समान हो जानेकी संभावना रहती है। **–रथ**–पु० राजाका रथ। **–राज**–पु० कुबेर; चंद्रमा; सम्राट्। **–राजेश्वर**–पु० एक रसौषध (दाद, कुष्ठादिमें उपयोगी); राजाधिराज। **–राजेश्वरी**–स्त्री० दस महाविद्याओंमें एक; महारानी। **–रोग**–पु० असाध्य रोग; क्षय रोग। **–लक्षण**–पु० वे चिह्न जिनके होनेसे मनुष्य राजा होता है (सामुद्रिक)। **–लक्ष्मी**–स्त्री० राजश्री, राजवैभव; राजाकी शक्ति और शोभा। **–वंश**–पु० राजाका कुल। **–वर्त्म(र्त्मन्)**–पु० राजमार्ग; बड़ी चौड़ी सड़क। **–वल्लभ**–पु० बड़ा आम; खिरनी; पेउँदी बेर; एक रसौषध। **–विद्या**–स्त्री० राजनीति। **–विद्रोह**–पु० राजद्रोह, बगावत। **–विद्रोही(हिन्)**–वि० राजद्रोह करनेवाला, बागी। **–वीथी**–स्त्री० राजमार्ग। **–वैद्य**–पु० राजाओंके यहाँ रहनेवाला वैद्य; कुशल चिकित्सक। **–श्री**–स्त्री० राजाका वैभव; राजाकी शोभा। **–संसद्**–स्त्री० राजसभा, दरबार; न्यायालय, धर्माधिकरण जिसमें राजा हो। **–सत्ता**–स्त्री० राजशक्ति; राजतंत्र (आधु०); देशविशेषकी प्रजा, जनताके भरण-पोषणके लिए स्थापित शासन-व्यवस्था। **–सभा**–स्त्री० दरबार, राजाकी सभा; राजाओंकी सभा।

-समाज-पु० राजसभा; राजमंडली, राजागण । **-साक्षी(क्षिन्)**-पु० (ऐप्रूवर) अपराधियोंमेंसे वह व्यक्ति जो क्षमा-याचना कर सरकारी गवाह बन जाय और अपने पहलेके साथियोंका अपराध प्रमाणित करानेमें पुलिसकी सहायता करे, इकबाली गवाह । **-सिरी***-स्त्री० दे० 'राजश्री' । **-सूय**-पु० यज्ञविशेष जिसे करानेसे किसी राजाको 'सम्राट्' कहलानेका अधिकार प्राप्त हो जाता है । **-स्थान**-पु० राजपूताना । **-स्व**-पु० (रेवेन्यू) राज्यकी या सरकारकी भूमिकर आदिसे होनेवाली आय । **-स्वमंत्री(त्रिन्)**-पु० (रेवेन्यूमिनिस्टर) मालमंत्री । **-हंस**-पु० सोना पक्षी (इसकी चोंच और पैर लाल होते हैं); एक संकर राग ।

राज-पु० राज्य, शासित देश; जनपद; प्रजापालनकी व्यवस्था, शासन; अधिकारकाल (बाप-दादोंका राज); प्रभाव, पूरा अधिकार; सुव्यवस्थित राजनीतिक इकाई । **-काज**-पु० राज्यप्रबंध, व्यवस्था । **-पाट**-पु० शासन, राजसिंहासन; देश, जनपद (एक राजा, राज्यके अधीन) । **मु०-देना**-शासनभार देना । **-पर बैठना**-राजाका, राजकीय अधिकार पाना ।

राज-पु० मकान बनानेवाला, थवई । **-गीर**-पु० मकान बनानेवाला । **-गीरी**-स्त्री० राजगीरका काम या पद ।

राज़-पु० [फा०] रहस्य, भेद, गुप्त बात ।

राजकीय-वि०[सं०] राजा या राज्यसे संबंध रखनेवाला । **-पक्ष**-पु० (ऑफिशल पार्टी) वह दल जिसके हाथमें देशका शासनसूत्र हो, जो राज्यका संचालन कर रहा हो, सरकारी दल । **-प्राभियोक्ता**-पु० (गवर्नमेंट प्रासीक्यूटर) दे० 'प्राभियोक्ता'के साथ ।

राजता-स्त्री०, **राजत्व**-पु० [सं०] राजाका भाव या कर्म, राजपद ।

राजना*-अ० क्रि० बिराजना; रहना; शोभित होना ।

राजन्य-पु० [सं०] राजा; क्षत्रिय; अग्नि; खिरनीका पेड़ ।

राजर्षि-पु० [सं०] राजवंश, क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न ऋषि ।

राजस-वि० [सं०] रजोगुणसे उत्पन्न । पु० आवेश, क्रोध ।

राजसिक-वि० [सं०] रजोगुणसे उत्पन्न, राजस ।

राजसी-वि० राजाओंकासा; राजाके योग्य । वि० स्त्री० [सं०] रजोगुणमयी ।

राजस्व-पु० [सं०] दे० 'राज'में ।

राजांक-पु० [सं०] (इनसिग्निया) दे० 'राजचिह्न' ।

राजा(जन्)-पु० [सं०] किसी देश, मंडल, जातिका शासक और नियामक, नरेश, महीप, नृपति, नरेंद्र; अधिपति, स्वामी; अंग्रेजी शासनके समयकी एक उपाधि; धनी; प्रिय, प्रेमपात्र (बाजारू) ।

राजाज्ञा-स्त्री० [सं०] राजाकी आज्ञा ।

राजाधिदेय-पु० [सं०] (प्रिवी पर्स) राजा या शासकको निजी खर्चके लिए सरकारी खजानेसे दी जानेवाली बँधी हुई रकम ।

राजाधिराज-पु० [सं०] राजाओंका राजा, सम्राट् ।

राजाधिष्ठान-पु० [सं०] वह नगर जहाँ राजाका भवन हो, राजधानी ।

राजासन-पु० [सं०] सिंहासन, तख्त ।

राजि-स्त्री० [सं०] पंक्ति, कतार; रेखा, लकीर; राई ।

राजिका-स्त्री० [सं०] पंक्ति, श्रेणी; क्यारी; रेखा; काली सरसों; मडुआ; कठगूलर; छोटी फुंसियोंका रोग ।

राजित-वि० [सं०] शोभित, शोभायमान; उपस्थित ।

राजिव*-पु० कमल ।

राजी-* स्त्री० रजामंदी; [सं०] कतार, श्रेणी, काली सरसों; राई ।

राज़ी-वि० [अ०] अनुकूल, सहमत; नीरोग; खुश; सुखी; संतुष्ट । **-नामा**-पु० वादी-प्रतिवादीके मतैक्यसे मुकदमा उठाने, इच्छित निर्णय देनेके लिए दिया हुआ लेख ।

राजीव-पु० [सं०] कमल; नील कमल ।

राजेंद्र-पु० [सं०] राजाधिराज ।

राजेश्वर-पु० [सं०] महाराज, राजाधिराज, सम्राट् ।

राजोपकरण-पु० [सं०] राजचिह्न (झंडा, निशान इ०) ।

राजोपजीवी(विन्)-पु० [सं०] राजकर्मचारी, राजाकी सेवा करके जीविका अर्जन करनेवाला व्यक्ति ।

राज्ञी-स्त्री० [सं०] रानी; सूर्यकी पत्नी, संज्ञा ।

राज्य-पु० [सं०] शासन; एक राजा या राज्य-पद्धतिका देश (जैसे-ईरान, रूस आदि); मंडल, राष्ट्र, देश, विषय । **-कर्ता(र्तृ)**-पु० शासक, अधिकारी, राजा । **-क्षेत्रातीत अधिकार**-पु० (एक्सट्रा टेरिटोरियल राइट) एक राज्यके क्षेत्रके भीतर न्याय आदिके मामलेमें विदेशियोंको अपने ही देशके अधिकार प्राप्त होना । **-च्युत**-वि० राजसिंहासनसे हटाया हुआ, राज्यभ्रष्ट (राजा) ।**-च्युति**-स्त्री० राजाका राजसिंहासन, राज्याधिकारसे वंचित किया जाना । **-तंत्र**-पु० शासनका ढंग, प्रणाली, पद्धति । **-त्याग**-पु० राज्य करनेका, शासनका, अधिकार छोड़ देना । **-धुरा**-स्त्री० राज्यका शासनभार, शासनकी जिम्मेदारी । **-परिषद**-स्त्री० राज्योंसे चुने हुए प्रतिनिधियोंकी वह उच्च परिषद् जो निम्नसदनके निर्णयोंपर पुनर्विचार करती है, राजसभा । **-पाल**-पु० (गवरनर) किसी प्रदेश (भारतमें 'क' श्रेणीके किसी राज्य) का सर्वोच्च पदाधिकारी और शासक जिसकी नियुक्ति प्रायः राष्ट्रपति अथवा सर्वोच्च राजसत्ताकी स्वीकृतिसे होती है । **-भंग**-पु० राज्यका नाश, ध्वंस । **-लक्ष्मी**-स्त्री० विजयगौरव; राज्यश्री । **-लोभ**-पु० राज्यका लोभ, राज्यप्राप्तिकी आकांक्षा; भारी लोभ । **-व्यवस्था**-स्त्री० राज्यका नियम, नीति, विधान, कानून । **-संचालनपरिषद्**-स्त्री० (रीजेंसी काउंसिल) राजाकी अल्पवयस्कता, लंबी बीमारी आदिके समय राज्यका संचालन करनेके निमित्त नियुक्त कतिपय व्यक्तियोंकी परिषद् । **-संरक्षक**-पु० (रीजेंट) वह व्यक्ति जिसे राजाकी अल्पवयस्कता, दीर्घकालीन रुग्णता आदिके समय राज्यकी देख-रेख, व्यवस्था आदिका भार सौंपा गया हो । **-सभा**-स्त्री० (कौंसिल ऑफ स्टेट) दे० 'राज्यपरिषद' ।**-स्थायी(यिन्)**-पु० शासक, राजा ।

राज्यांग-पु० [सं०] प्रकृति, राज्यके साधक अंग (राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल, सुहृत्) ।

राज्याभिषेक-पु० [सं०] राज्यारोहण, राजगद्दीपर बैठानेकी रीति (वेदमंत्रसे पवित्र तीर्थोंके जल और औषधियोंसे

अभिषेक कराया जाता है); राजसूय यज्ञके बाद राजाका तीर्थजलादिसे अभिषेक।

राठ*–पु० राज्य; राजा।

राठवर*–पु० दे० 'राठौर'।

राठौर–पु० राजस्थानका एक प्रसिद्ध राजवंश; राजपूतोंकी एक उपजाति।

राणा–पु० राजा (राजपूतानाके कुछ राजाओं तथा नेपालके सरदारोंके लिए प्रयुक्त)।

रात–स्त्री० संध्यासे सबेरेतकका समय जब सूर्यका प्रकाश नहीं मिलता, रात्रि, रजनी। **–दिन**–अ० सदा, सर्वदा।

रातना*–अ० क्रि० अनुरक्त होना, मुग्ध होना; रँगा जाना; लाल हो जाना; लाल रंगसे रँगा जाना।

राता*–वि० रँगा हुआ; लाल, सूर्ख, किरमिजी।

राति*–स्त्री० दे० 'रात'। **–चर**–पु० राक्षस, निशाचर।

रातिब–पु० [अ०] पशुओंका दैनिक आहार; हाथियोंका खाद्य (विशेषतः अन्न)।

रात्रिंचर–वि० [सं०] रातमें घूमनेवाला। पु० राक्षस, निशाचर।

रात्रि–स्त्री० [सं०] रात, निशा। **–कर,–कार**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–चर,–चारी(रिन्)**–वि०, पु० दे० 'रात्रिंचर'। **–पाठशाला**–स्त्री० वह विद्यालय जहाँ दिनमें काम करनेवालोंके लिए रातमें पढ़ाईका प्रबंध हो। **–पुष्प**–पु० रातमें खिलनेवाला पुष्प, कुँई। **–मणि**–पु० चंद्रमा।

राव्यंध–पु० [सं०] रतौंधीका रोगी; रातको देख सकनेमें असमर्थ पशु-पक्षी (बंदर, कौआ आदि)।

राधना*–स० क्रि० पूजा, आराधना करना; पूरा, सिद्ध करना; साधना, काम निकालना।

राधा–स्त्री० [सं०] वैशाखकी पूर्णिमा; अनुराग, प्रीति; वृषभानुकन्या, कृष्णकी प्रेमिका; विद्युत्; विशाखा नक्षत्र; आँवला; एक वर्णवृत्त; अधिरथकी पत्नी जिसने कर्णका पालन किया था। **–कांत,–वल्लभ**–पु० कृष्ण। **–वल्लभी**–पु० [हिं०] एक वैष्णव संप्रदाय। **–स्वामी**–पु० एक मतप्रवर्तक आचार्य; एक संप्रदाय।

राधाष्टमी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद-शुक्ला अष्टमी।

राधिका–स्त्री० [सं०] राधा, वृषभानुकन्या।

राधेय–पु० [सं०] कर्ण (राधा–अधिरथकी पत्नीका अपत्य)।

राध्य–वि० [सं०] आराधनाके योग्य।

रान–स्त्री० [फा०] जाँघ।

राना–पु० दे० 'राणा'। अ० क्रि० अनुरक्त होना–'कौन कली जो भौंर न राई'–प०।

रानी–स्त्री० राजाकी स्त्री; स्वामिनी; प्रेमिकाके लिए आदरयुक्त संबोधन; स्त्रियोंके लिए सम्मानसूचक शब्द। **–काजर**–पु० एक धान।

राब–स्त्री० खाँड़, सीरेसे गाढ़ी चीज।

राबड़ी–स्त्री० रबड़ी, बसौंधी।

राम–पु० [सं०] परशुराम; बलराम; दाशरथि राम (दे० 'रामचंद्र'); तीनकी संख्या; ईश्वर। **–कजरा**–पु० [हिं०] एक धान। **–चंगी**–स्त्री० दे० क्रममें। **–चंद्र**–पु० कौशल्याके गर्भसे उत्पन्न राजा दशरथके पुत्र। **–जननी**–स्त्री० रेणुका; कौशल्या; रोहिणी। **–जना**–पु० [हिं०] जिस व्यक्तिके पिताका पता न हो; वर्णसंकर; जातिविशेष (इस जातिकी लड़कियाँ वेश्यावृत्ति करती हैं)। **–जनी**–स्त्री० [हिं०] रामजना जातिकी स्त्री; जिस स्त्रीके पिताका पता न हो; वेश्या। **–जमनी**–पु० [हिं०] एक बारीक चावल। **–तरोई**–स्त्री० भिंडी। **–तारक**–पु० रामोपासकोंका मंत्र, रां रामाय नमः। **–दल**–पु० रामकी वानरी सेना; बड़ी और अजेय सेना। **–दाना**–पु० [हिं०] बड़े सफेद दानोंवाला मरसेकी जातिका पौधा; उसके बीज; एक धान। **–दास**–पु० हनूमान्; समर्थ रामदास, शिवाजीके गुरु। **–दूत**–पु० हनूमान्। **–धाम(न्)**–पु० साकेत लोक। **–नवमी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला नवमी, रामका जन्म-दिवस। **–नामी**–स्त्री० [हिं०] चादर, दुपट्टा जिसमें राम-नामकी छाप लगी हो; सोनेका कंठहार। **–पुर**–पु० अयोध्या; स्वर्ग। **–फटाका**–पु० रामानंदी तिलक। **–फल**–पु० सीताफल, शरीफा। **–बाँस**–पु० [हिं०] एक मोटा बाँस (इससे नालकीका डंडा बनाते है)। **–बान**–पु० [हिं०] दे० 'रामबाण'। **–भोग**–पु० [हिं०] एक तरहका आम; एक तरहका चावल। **–मंत्र**–पु० दे० 'रामतारक'। **–रज**–स्त्री० [हिं०] एक प्रकारकी पीली मिट्टी। **–रस**–पु० [हिं०] नमक। **–राज्य**–पु० रामका शासन; सुशासन, रामकासा प्रजा-सुखकारी शासन। **–राम**–पु० [हिं०] नमस्कार, प्रणाम। स्त्री० भेंट, मुलाकात। अ० घृणा, आश्चर्य आदि सूचक शब्द, छिः, वाह। **–रौला**–पु० [हिं०] व्यर्थका शोरगुल। **–लवण**–पु० साँभर नमक। **–लीला**–स्त्री० रामके चरित्रका अभिनय; रामके चरित्रके अभिनयके लिए होनेवाला समारोह। **–बाण**–पु० अजीर्णके लिए उपयोगी एक रसौषध। वि० शीघ्र गुणकारी, उपयोगी, अमोघ (औषध)। **–शर**–पु० ईखके आकार-प्रकारका एक नीरस पौधा। **–शिला**–स्त्री० गयाकी एक पहाड़ी। **–सखा**–पु० सुग्रीव।

रामचंगी–स्त्री० एक तरहकी तोप (हिम्मत०)।

रामति*–स्त्री० भिक्षाके लिए घूमना-फिरना।

रामना*–अ० क्रि० विचरना, घूमना-फिरना।

रामा–स्त्री० [सं०] सुंदरी बाला, स्त्री; गान-कलाकुशल स्त्री; रुक्मिणी; राधा; सीता; लक्ष्मी। **–तुलसी**–स्त्री० सफेद डंठलवाली तुलसी।

रामायण–स्त्री० [सं०] रामचरित्र-संबंधी वाल्मीकि मुनिरचित आदि काव्यग्रंथ (अन्य कई ग्रंथ भी इसी नामसे परिचित हैं–जैसे अध्यात्म रामायण, अग्निवेश रामायण, तुलसीदासका रामचरितमानस इ०)।

रामायणी–वि० रामायण-संबंधी; रामायणका। पु० रामायणका पाठ करनेवाला; रामायणका पंडित।

रामायन–पु० दे० 'रामायण'।

रामायुध–पु० [सं०] धनुष्।

राय–पु० राजा; सरदार; मुस्लिम कालमें हिंदुओंको दी जानेवाली एक उपाधि; भाट। **–करौंदा**–पु० बड़ा करौंदा। **–भोग**–पु० राजभोग धान। **–मुनिया,–मुनी**–स्त्री० लाल पक्षीकी माँदा। **–रासि***–स्त्री० राज-

कोश, राजाका खजाना। **–साहब–**पु० संपन्न हिंदू राजभक्तोंको मिलनेवाली ब्रिटिश कालकी उपाधि।

राय–स्त्री० [फा०] मत; परामर्श, सलाह; समझ, विचार; सुझाव, तदवीर। मु०**–कायम करना–**निर्णय करना, एक निश्चयपर पहुँचना।

रायता–पु० उबले साग, कद्दू, कुम्हड़ा, बुँदियाको नमक, मिर्च, जीरा आदि मसाले मिलाकर तथा दही, मट्ठेमें डालकर तैयार किया हुआ एक भोज्य पदार्थ।

रायल–स्त्री० [अं०] कागजकी २० इंच चौड़ी और २६ इंच लंबी नाप; इस नापका कागज छापनेवाली मशीन।

रायसा–पु० डिंगलमें लिखित किसी राजाका चरित्र-विषयक काव्य-ग्रंथ, रासो (जैसे–पृथ्वीराज रासो)।

रार–स्त्री० झगड़ा, तकरार।

राल–स्त्री० दक्षिणी भारतके जंगलोंमें मिलनेवाला एक सदाबहार पेड़; इस पेड़का निर्यास, गोंद (काला, सफेद), धूप; पतला, लसदार थूक; पशुओंका एक रोग।

राव–पु० [सं०] शब्द, गुंजार, आवाज; [हि०] राजा; दरबारी सरदार; राजाओंकी पदवी (कच्छ, राजपूतानाके कुछ भागोंमें); धनी, अमीर; बंदीजन, भाट, चारण। –**–बहादुर–**पु० ब्रिटिश कालकी एक उपाधि।

रावचाव–पु० राग-रंग, नाच-गाना; प्यार-दुलार।

रावटी–स्त्री० कपड़े आदिका घर, छोलदारी; बारहदरी।

रावण–वि० [सं०] हाहाकार करानेवाला। पु० लंकाका प्रसिद्ध राजा जिसका वध रामने युद्धमें किया, दशानन।

रावणारि–पु० [सं०] राम।

रावणि–पु० [सं०] रावणका पुत्र (मेघनाद)।

रावत–पु० सरदार, सामंत; छोटा राजा; शूर, वीर; योद्धा।

रावन–पु० दे० 'रावण'। **–गढ़*–**पु० लंका।

रावना*–स० क्रि० दूसरोंको रुलाना।

रावर*–पु० अंतःपुर, रनिवास। सर्व० आपका।

रावरा–सर्व० दे० 'रावर'।

रावल–पु० राजा; कुछ राजाओंकी उपाधि; सरदार; आदर-सूचक संबोधन (संपन्न क्षत्रियोंके लिए); * अंतःपुर, रनिवास।

राशन–पु० [अं०] रसद, सिपाहियोंकी खुराक; नियंत्रित मूल्य तथा मात्रामें वस्तुओंके वितरणकी व्यवस्था।

राशि–स्त्री० [सं०] समान जातिकी बहुतसी वस्तुओंका ढेर; क्रांतिवृत्तमें आनेवाले विशेष तारासमूह (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन)। **–चक्र–**पु० ग्रहोंके चलनेका मार्ग, वृत्त; राशियोंका चक्र, मंडल। **–नाम(न्)–**पु० जन्मकालकी राशिके अनुसार रखा हुआ नाम। **–प–**पु० किसी राशिका स्वामी, अधिपति देवता। **–भाग–**पु० भग्नांश, किसी राशिका भाग, अंश। **–भोग–**पु० किसी ग्रहकी किसी राशिमें स्थिति; किसी ग्रहकी किसी राशिमें स्थितिका काल। मु०**–आना–**अनुकूल होना। **–बैठना–**दत्तक पुत्र होना, गोद बैठना। **–मिलना–**मेल मिलना; दो व्यक्तियोंकी एक राशिमें उत्पत्ति होना।

राष्ट्र–पु० [सं०] देश; राज्य; जाति, एक राज्यका समस्त जनसमूह (नेशन)। **–कूट–**पु० एक क्षत्रिय राजवंश, राठौर। **–पति–**पु० राष्ट्रका स्वामी; (प्रेसीडेंट) गणतंत्रका निर्धारित अवधितकके लिए चुना गया प्रधान (सर्वोच्च पदाधिकारी)। **–पति-भवन–**पु० राष्ट्रपतिका (भारतमें दिल्लीस्थित) सरकारी निवासस्थान। **–भाषा–**स्त्री० किसी राष्ट्रकी वह मुख्य प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग उस राष्ट्रके अन्य भाषा-भाषी नागरिक भी सार्वजनिक कार्योंमें करें। **–भेद–**पु० शत्रुराज्यमें विप्लव, विद्रोह उत्पन्न करानेकी नीति। **–मंडल–**पु० (कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स) ऐसे राष्ट्रोंका समूह जिसमें सबका पद समान हो और जो सामूहिक हितकी दृष्टिसे ऐक्यबद्ध होकर काम करनेका प्रयत्न करें। **–वाद–**पु० (नैशनलिज़्म) अपने राष्ट्रके हितोंको सर्वाधिक महत्त्व देनेका सिद्धांत; देशवासियोंमें राष्ट्रीयताकी भावनाके दृढ़ीकरण, राष्ट्रीय परंपराओंका गौरव अक्षुण्ण बनाये रखने तथा राजनीतिक एकता स्थापित करने या पराधीनतासे मुक्ति आदिके लिए किया जानेवाला आंदोलन। **–वादी(दिन्)**–पु० (नैशनलिस्ट) राष्ट्रके हितको सर्वाधिक महत्त्व देनेतथा उसकी एकता, सम्पन्नता आदिके लिए प्रयत्न करनेवाला। **–विप्लव–**पु० समूचे राष्ट्रका बलवा, विद्रोह। **–संघ–**पु० विश्वके राष्ट्रोंका संघ जो प्रथम महायुद्धके बाद राष्ट्रोंके आपसी झगड़े शांतिपूर्वक हल करनेके उद्देश्यसे बनाया गया था (लीग ऑफ नेशन्स)।

राष्ट्रिक–पु० [सं०] राजा; प्रजा; किसी राष्ट्रका निवासी या सदस्य (नेशनल)। वि० राष्ट्र-संबंधी; राष्ट्रका।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय–वि० [सं०] राष्ट्र-संबंधी; राष्ट्रका।

राष्ट्रीयकरण–पु० (नैशनैलिजेशन) मुआवजा देकर या बिना मुआवजाके देशके विशेष उद्योगों, भूमि आदिपर सरकारका अधिकार कर लेना और समूचे राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे उनकी व्यवस्था करना।

राष्ट्रीयता–स्त्री० [सं०] किसी राष्ट्रका नागरिक होनेका भाव; राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति।

रास–पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; कोलाहल; नृत्यक्रीडा (माना जाता है कि इसका प्रवर्तन कार्त्तिकी पूर्णिमाको कृष्णने किया); कृष्ण-लीलाका अभिनययुक्त नाटक; एक लोकगान, रसिया; नर्तकोंका समाज। **–धारी(रिन्)–**पु० कृष्णचरितका अभिनय करनेवाला व्यक्ति या समाज (इनका अभिनय गीत, नृत्य, वाद्यसे युक्त रहता है)। **–भूमि–**स्त्री० रासक्रीडाका स्थान। **–मंडल–**पु० रासक्रीडा करनेवालोंका वृत्ताकार समूह; रासधारीजनोंका अभिनय; रासधारियोंका समाज। **–मंडली–**स्त्री० रासधारियोंकी टोली। **–लीला–**स्त्री० कृष्णका गोपियोंके साथ कृत नृत्य, क्रीड़ा; रासधारियोंका कृष्णलीला-संबंधी अभिनय। **–विहारी(रिन्)–**पु० कृष्ण।

रास–स्त्री० लगाम, बाग; ढेर, राशि; मेषादि राशि; चौपायोंका समूह; जोड़; ब्याज। पु० एक छंद; लास्य नामक नृत्य; एक स्थान; गोद, दत्तक। **–चक्र–**पु० दे० 'राशिचक्र'। **–नशीन–**पु० वह जो गोद लिया गया हो, मुतबन्ना। मु०**–बैठाना, –लेना–**गोद लेना।

रासक–पु० [सं०] दृश्य काव्यका एक भेद।

रासभ–पु० [सं०] गधा।

रासभी–स्त्री० [सं०] गधी।

रासायनिक–वि० [सं०] रसायनशास्त्र या तत्त्वसंबंधी। पु० रसायनशास्त्री। **–परीक्षक**–पु० (केमिकल एग्ज़ामिनर) किसी वस्तुके रासायनिक तत्त्वोंका विश्लेपण कर मिलावट आदिका पता लगानेवाला।

रासि–स्त्री० दे० 'राशि'।

रासु*–वि० ठीक; सीधा।

रासो–पु० डिंगल भापा या पुरानी हिंदीमें लिखित काव्य-ग्रंथ (इसमें किसी राजाका चरित्र, युद्ध, वीरता, प्रेम-विपयक वर्णन रहता है–जैसे पृथ्वीराज रासो,खुमान रासो)।

रास्त–वि० [फा०] उचित; अनुकूल; दुरुस्त, ठीक, सही; सीधा; सच्चा। **–बाज़**–वि० सच्चा, ईमानदार।

रास्ता–पु० [फा०] राह; चाल, प्रथा; उपाय। **मु०–काटना**–चलनेवालेके आगे होकर एक ओरसे दूसरी ओर निकल जाना (अपशकुनसूचक–बिल्ली आदिके लिए प्रयुक्त)। **–देखना**–बाट जोहना, प्रतीक्षा करना। **–बताना**–टालना, हटाना। **–(स्ते) पर लाना**–ठीक करना; उचित मार्गपर लाना।

राह–* पु० दे० 'राहु'। स्त्री० [फा०] रास्ता, बाट, मार्ग; रीति-रिवाज, प्रथा। **–खर्च**–पु० मार्गव्यय। **–गीर**–पु० पथिक, मुसाफिर। **–चलता**–पु० रास्ता चलनेवाला; पथिक; साधारण आदमी; अजनबी। **–चाह**–स्त्री० रंग-ढंग। **–ज़न**–पु० लुटेरा, डाकू। **–ज़नी**–स्त्री० लूट, डकैती। **–दानी**–स्त्री० पारपत्र (पासपोर्ट)। **–दारी**–स्त्री० राह, सड़कका महसूल, कर; चुंगी। (**–दारीका परवाना**–आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी मार्गसे जाने, माल ले जानेका अधिकार दिया गया हो, परवाना राहदारी।) **–रस्म**–पु०, **–रीति**–स्त्री० व्यवहार, लेन-देन; परिचय। **–(हे) .खुदा**–अ० खुदाके लिए, खुदाके नामपर। पु० ईश्वर प्राप्तिका साधन,मार्ग। **मु०–देखना, –ताकना**–प्रतीक्षा करना। **–पड़ना***–लूट, डाका पड़ना। **–लगना**–काम देखना; रास्ते जाना।

राहत–स्त्री० [अ०] आराम, चैन, संतोष, सुख, करार।

राहना†–स० क्रि० चक्कीके पाटों या रेती आदिको खुरदरा करना। अ० क्रि० रहना।

राहर†–पु० अरहर।

राहि*–स्त्री० राधा।

राहित्य–पु० [सं०] रहित होनेका भाव, न होना।

राहिन–पु० [अ०] रेहन, वंधक रखनेवाला।

राही–*स्त्री० राधा (कबीर)। पु० [फा०] यात्री, मुसाफिर। **मु०–करना**–टालना,चलता करना। **–होना**–चल देना।

राहु–पु० एक मछली, रोहू; [सं०] नौ ग्रहोंमेंसे एक, विप्रचित्ति और सिंहिकाका पुत्र। **–ग्रसन, –ग्रास, –स्पर्श**–पु० ग्रहण, उपराग, सूर्य-चंद्रका राहु द्वारा ग्रस्त होना।

राहुल–पु० [सं०] यशोधरासे उत्पन्न गौतम बुद्धका पुत्र।

रिंगण–पु० [सं०] रेंगना, दबककर धीरे-धीरे चलना।

रिंगन*–स्त्री० दे० 'रिंगण'।

रिँगाना*–अ० क्रि० रेंगना। स० क्रि० घुमाना-फिराना, धीरे-धीरे चलाना; परिश्रमपूर्वक दौड़ाना (बच्चोंके लिए)।

रिंद–पु०[फा०] धार्मिक बंधनोंको न माननेवाला, स्वच्छंद, मनमौजी आदमी (सुंद०)।

रिआयत–स्त्री० [अ०] रहम, नरमी; बचाव; मिहरबानी, ध्यान, लिहाज; साधारण नियमोंकी कड़ाई छोड़कर कृपापूर्ण बरताव; तरफदारी।

रिआयती–वि० [अ०] रिआयत किया हुआ। **–छुट्टी**–स्त्री० ग्यारह महीनेका काम करनेके बाद एक महीनेतककी सवेतन मिलनेवाली छुट्टी।

रिआया–स्त्री० [अ०] प्रजा।

रिकवँछ†–स्त्री० बेसन या उरदकी पीठी और अरुईके पत्तों आदिसे बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

रिकशा–पु० [अं०] दो पहियोंकी एक छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचता है; साइकिलके ढंगकी गाड़ी जिसमें तीन पहिये होते हैं।

रिकाब–स्त्री० दे० 'रकाब'।

रिकाबी–स्त्री० दे० 'रकाबी'।

रिक्त–वि० [सं०] शून्य, खाली; निर्धन। **–स्थान**–पु० (वैकेंसी) दो या अधिक स्थानोंके बीचकी खाली जगह; दे० 'रिक्ति'।

रिक्तता–स्त्री० [सं०] शून्यता, खाली होना; (वैकेंसी) किसी पद, नौकरी या स्थानका खाली होना, किसी कार्यालय आदिमें कोई जगह (पद) रिक्त होना।

रिक्ता–स्त्री० [सं०] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ।

रिक्ति–स्त्री० [सं०] (वैकेंसी) वह पद या स्थान जिसपर अभी किसी अधिकारी या कार्यकर्त्ताकी नियुक्ति न हुई हो, रिक्तता, दे० 'रिक्तस्थान'।

रिक्थ–पु० [सं०] उत्तराधिकारमें प्राप्त धन; (एस्टेट) भू-संपत्ति, धन; (एसेट्स़) कारबारमें लगी वह पूँजी जो संपत्ति, सामान आदिके रूपमें हो। **–पत्र**–पु० (विल) वह पत्र जिसमें रिक्थ (अर्थात् उत्तराधिकारमें मिलनेवाले धन) के अमुक-अमुक प्रकारसे बँटवारेके संबंधमें इच्छा प्रकट की गयी हो, इच्छापत्र। **–हारी(रिन्)**–पु० उत्तराधिकारमें धन पानेवाला व्यक्ति; मामा।

रिक्थी(थिन्)–पु० [सं०] दे० 'रिक्थहारी'।

रिक्शा–पु० दे० 'रिकशा'।

रिक्ष–पु० दे० 'ऋक्ष'। **–पति**–पु० दे० 'ऋक्षपति'।

रिखभ*–पु० दे० 'ऋपभ'।

रिखि*–पु० ऋपि।

रिग*–पु० दे० 'ऋक्'।

रिचा*–स्त्री० दे० 'ऋचा'।

रिचीक*–पु० दे० एक प्राचीन जनपद और उसका निवासी; तृणविशेष।

रिच्छ*–पु० भालू।

रिज़क़–पु० [अ०] खूराक; रोजी, जीविका; खाना–'तेरो तो रिजक तेरे घर बैठे आइहै'–सुंद०।

रिजाली*–स्त्री० निर्लज्जता।

रिजु–वि० दे० 'ऋजु'।

रिज़्क़–पु० [अ०] रोजी; खूराक।

रिझकवार*–पु० रीझनेवाला; विशेषता या गुणपर प्रसन्न होनेवाला।

रिझवना–स० क्रि० दे० 'रिझावना'।

रिझवार†, रिझवैया–पु० (गुण, विशेषता, रूप आदिपर) प्रसन्न होनेवाला; अनुरागी, प्रेमी।

रिझाना–स० क्रि० अपने ऊपर किसीको प्रसन्न या तुष्ट करना; लुभाना, मोहित करना।

रिझायल*–वि० प्रसन्न होने, रीझनेवाला।

रिझाव–पु० प्रसन्न होना, रीझना।

रिझावना*–स० क्रि० दे० 'रिझाना'।

रित, रितु*–स्त्री० दे० 'ऋतु'। **–वंती**–स्त्री० ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

रितना*–अ० क्रि० खाली होना।

रितवना*–स० क्रि० खाली करना।

रिद्धि*–स्त्री० दे० 'ऋद्धि'।

रिन*–पु० दे० 'ऋण'। **–बंधी**–वि० कर्जदार।

रिनिआँ, रिनियाँ*–वि० ऋणी।

रिनी†–वि० ऋणी, कर्जदार।

रिपु–पु० [सं०] शत्रु, वैरी; लग्नसे छठा स्थान। **–घाती-(तिन्),–घ्न,–सूदन**–वि० शत्रुओंका नाशक।

रिपुता–स्त्री० [सं०] शत्रुता, वैर।

रिपोर्ट–स्त्री० [अं०] सूचनार्थ घटनाविशेषका विस्तृत वर्णन; प्रतिवेदन; कार्यका विवरण (संस्था, आंदोलन, आदिका); ज्ञातव्य बातोंका विवरण।

रिपोर्टर–पु० [अं०] संवाददाता (समाचारपत्रका); अदालत, कौंसिल आदिकी रिपोर्ट लिखनेवाला सरकारी आदमी।

रिमझिम–स्त्री० फुहार पड़ना, छोटी-छोटी बूँदें पड़ना।

रियासत–स्त्री० [अ०] राज, शासन, हुकूमत; रईसकी हुकूमतमें रहनेवाला इलाका; रईस होना, अमीरी।

रियासती–वि० [अ०] रियासतका; रियासत-संबंधी।

रियाह–स्त्री० [अ०] हवाएँ, अफरा।

रिर*–स्त्री० जिद, हठ।

रिरना†–अ० क्रि० दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना।

रिरिहा†–पु० गिड़गिड़ाकर, रट लगाकर माँगनेवाला।

रिलना*–अ० क्रि० घुसना; मिल जाना, एक हो जाना।

रिवाज–पु० [अ०] रीति, प्रथा, चलन।

रिवाल्वर–पु०[अं०] एक तरहका तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ भरी और एक-एक कर छोड़ी जाती हैं।

रिश्ता–पु० [फा०] संबंध, नाता। **–(श्ते)दार,–मंद**–पु० संबंधी। **–दारी**–स्त्री० संबंध।

रिश्वत–स्त्री० [अ०] लाँच, घूस, उत्कोच, नियम-विरुद्ध काम करानेके लिए किसी अफसरको धन आदि देना। **–खोर**–पु० घूस खानेवाला।**–खोरी**–स्त्री० घूस लेना।

रिषभ–पु० दे० 'ऋषभ'।

रिषि–पु० दे० 'ऋषि'।

रिष्ट–पु० [सं०] मंगल; हानि। वि० घायल; नष्ट; * प्रसन्न; मोटा-ताजा।

रिस–स्त्री० क्रोध, कोप। **मु०–मारना**–क्रोधको दबाना।

रिसना†–अ० क्रि० नन्हें-नन्हें छेदोंसे तरल द्रव्य (पानी, तेल, घी आदि) निकलना।

रिसवाना†–स० क्रि० दे० 'रिसाना'।

रिसहा†–वि० क्रोधी,बात-बातपर बिगड़नेवाला,चिड़चिड़ा।

रिसाना†–अ० क्रि० क्रुद्ध, नाराज, गुस्सा होना। स० क्रि० बिगड़ना, क्रोध करना।

रिसानि*, रिसानी*–स्त्री० क्रोध, रिस–'घोर धार भृगुनाथ रिसानी'–रामा०।

रिसाल†–पु० अन्य स्थानोंसे वसूल करके राजधानी भेजा जानेवाला कर।

रिसालदार–पु० [फा०] रिसाले, घुड़सवार सेनाका अफसर; रिसाल, राजकर ले जानेवालोंका मुख्य संचालक।

रिसाला–पु० [अ०] छोटी किताब; पत्र (मासिक, आदि); सौ सवारोंका दस्ता; अश्वारोही सेना।

रिसि*–स्त्री० दे० 'रिस'।

रिसिआना, रिसियाना–अ० क्रि० क्रुद्ध, कुपित होना। स० क्रि० किसीपर बिगड़ना, क्रोध करना।

रिसिक*–स्त्री० खड्ग, तलवार।

रिसौंहा†–वि० किंचित् कुपित, क्रुद्ध।

रिहन–पु० [अ०] गिरवी; गिरवी रखना। **–नामा**–पु० रेहनकी दस्तावेज।

रिहल–स्त्री० [अ०] पोथी रखकर पढ़नेके लिए काठकी बनी एक प्रकारकी खुलने और बंद होनेवाली तख्ती।

रिहा–वि०[फा०] छूटा हुआ, मुक्त (बंधन, कारा आदिसे); उबरा, बचा हुआ (संकट आदिसे)।

रिहाई–स्त्री० [फा०] मुक्ति, छुटकारा।

रींधना–स० क्रि० पकाना, उबालना, राँधना।

री–अ० एरी, अरी (सखियोंके लिए संबोधन)।

रीछ–पु० भालू। **–पति,–राज***–पु० जांमवंत।

रीझ–स्त्री० रीझना, प्रसन्न होना; मुग्ध होना।

रीझना–अ० क्रि० प्रसन्न होना; किसीके गुण आदिपर मुग्ध होना; † चुरना, पकना (ग्राम०)।

रीठ*–स्त्री० तलवार; युद्ध। वि० खराब; अशुभ।

रीठा–† पु० चूना बनानेके लिए कंकड़ फूँकनेका भट्ठा; [सं०] करंज; करंजकी जातिका वृक्ष; करंजका फल, फेनिल (इसके फलको भिगोकर मलनेसे फेन निकलता है जिससे ऊनी कपड़े साफ किये जाते हैं)।

रीठी–स्त्री० दे० 'रीठा'।

रीढ़–स्त्री० मेरुदंड, गर्दनसे कटितक जानेवाली एक अस्थि-शृंखला; आधार भूत अंग या तत्त्व।

रीत–स्त्री० दे० 'रीति'।

रीतना*–अ० क्रि० रिक्त, खाली होना।

रीता–वि० रिक्त, शून्य, खाली।

रीति–स्त्री०[सं०] क्षरण, झरना; ढंग, ढब, प्रकार; रवाज, चलन, परिपाटी; नियम, कायदा;विशिष्ट पदरचना जिसके कारण ओज, माधुर्य, प्रसादकी स्थिति हो (इसके तीन भेद हैं–वैदर्भी, गौडी और पांचाली–सा०)। **–काल**–पु० हिं० सा० का वह काल जब रीति-ग्रंथ रचनेकी विशेष प्रवृत्ति थी (१६वीं से १९वीं सदीतक)।**–ग्रंथ**–पु० ओज, माधुर्य आदि गुणोंके प्रयोगका (पिंगल, अलंकार आदिका) विवेचन करनेवाले ग्रंथ।

रीम–स्त्री० [अं०] बीस दस्ते कागजकी गड्डी।

रीस–स्त्री० दे० 'रिस'; * डाह; स्पर्धा, बराबरी–'देखन

सीस चढ़ाइ कौन तव रीस करैगो'–दीन० ।

रीसना*–अ० क्रि० क्रुद्ध या खफा होना ।

रुंज*–पु० एक प्रकारका बाजा ।

रुंड–पु० [सं०] धड़ जिसमें सिर न हो, कबंध; बिना हाथ-पाँवका शरीर ।

रुँदवाना–स० क्रि० पैरोंसे कुचलवाना, खुँदवाना ।

रुंधती*–स्त्री० अरुंधती, वसिष्ठकी पत्नी ।

रुँधना–अ० क्रि० रुकना; मार्ग न मिलनेसे रुकना; फँसना, उलझना; घिरना; किसी काममें लगना ।

रु*–अ० 'अरु'का संक्षिप्त रूप, और ।

रुआ*–पु० रोआँ, शरीरके छोटे बाल ।

रुआना*–स० क्रि० दे० 'रुलाना' ।

रुआब†–पु० दबदबा, धाक, रोब; आतंक, भय ।

रुई–स्त्री० कपासकी ढोंढ़ी, कोशका भीतरी घूआ, रेशा, तूल । वि० रुईके समान नरम, मुलायम (कोई चीज) । **–दार**–वि० जिसमें रुई भरी हो । **–सा**–रुईके समान नरम ।

रुकना–अ० क्रि० थमना, ठहरना; आगे न बढ़ना; कार्यमें बाधा होना; आगापीछा करना; बंद होना (साथियों बिना काम रुका है); क्रम टूटना (बाढ़का रुकना) । **–रुक-रुककर**–ठहर-ठहरकर ।

रुकवाना–स० क्रि० रोकनेका काम दूसरेसे कराना ।

रुकाव–पु० अवरोध, अटकाव; मलावरोध, कब्ज; स्तंभन ।

रुकावट–स्त्री० रोक, बाधा, अड़चन, प्रतिबंध ।

रुक़्क़ा–पु० [अ० रुक्अ] पुर्जा, चिट, छोटा पत्र; कर्जदारकी ओरसे महाजनको लिखा हुआ कागज ।

रुक्ख*–पु० रूख, पेड़ ।

रुक्मिणी–स्त्री० [सं०] कृष्णकी प्रथम पत्नी, विदर्भनरेश भीष्मककी पुत्री ।

रुक्ष–वि० [सं०] रूखा; नीरस; कठोर ।

रुक्षता–स्त्री० [सं०] रूखापन, रुखाई ।

रुख़–पु० [फा०] चेहरा, मुख; गाल, कपोल; चेहरेका भाव; कृपादृष्टि; आगेका भाग; शतरंजका एक मोहरा । अ० तरफ, ओर; सामने ।

रुख़सत–स्त्री० [अ०] छुट्टी, तातील; परवानगी, इजाजत; बिदाई, प्रस्थान, रवानगी; मुहलत, अवकाश ।

रुख़सताना–पु० [फा०] बिदाईके समय दिया जानेवाला धन, विदाई; राजा-रईसके यहाँसे रुखसतके समय दिया जानेवाला धन ।

रुखसती–वि० जिसे छुट्टी मिली हो । स्त्री० विदाई (दुलहिनकी); बिदाईके समय दिया जानेवाला धन, विदाई ।

रुख़सार–पु० [फा०] कपोल, गाल ।

रुखाई–स्त्री० रूखापन, रूखा होनेकी क्रिया या भाव; शुष्कता; बेमुरौवती, शीलका त्याग, व्यवहारकी कठोरता ।

रुखाना*–अ० क्रि० रूखा होना, चिकना न रहना; सूखना । स० क्रि० रूखा करना; की तरफ रुख करना ।

रुखानी–स्त्री० बढ़इयोंका एक औजार (जिससे लकड़ी छीलते, काटते और उसमें छेद करते हैं); संगतराशोंकी टाँकी; तेलीका घानी चलानेका औजार ।

रुखावट, रुखाहट–स्त्री० रुखाई ।

रुखिता*–स्त्री० क्रोध करनेवाली नायिका, मानवती ।

रुखौँहा–वि० रुखासा, रुखाई लिये हुए ।

रुग्ण–वि० [सं०] बीमार, अस्वस्थ; झुका हुआ ।

रुग्णतावकाश–पु०[सं०] (मेडिकल लीव) बीमारीके कारण ली गयी छुट्टी ।

रुच*–स्त्री० दे० 'रुचि' । **–रुच***–अ० मनोयोगपूर्वक ।

रुचना–अ० क्रि० प्रिय, अच्छा जान पड़ना, पसंद आना ।

रुचा–स्त्री० [सं०] दीप्ति, प्रकाश; इच्छा; शोभा, सुंदरता ।

रुचि–स्त्री० [सं०] इच्छा; अनुराग; प्रवृत्ति, पसंद; किरण; शोभा, सुंदरता; भूख, खानेकी इच्छा; स्वाद । **–कर**–वि० प्रिय, अच्छा लगनेवाला; स्वादिष्ठ । **–कारक**–वि० रुचि पैदा करनेवाला; स्वादिष्ठ । **–कारी(रिन्)**–वि० सुस्वादु; मनोहर; रुचिकारक । **–वर्द्धक**–वि० रुचि बढ़ानेवाला; भूख बढ़ानेवाला ।

रुचिता–स्त्री० [सं०] रुचि होना; रोचकता; शोभा ।

रुचिमती–स्त्री० [सं०] देवकीकी माता, उग्रसेनकी पत्नी ।

रुचिर–वि० [सं०] चमकीला; सुंदर, मनोहर; मीठा, मधुर; भूख बढ़ानेवाला ।

रुचिराई*–स्त्री० सुंदरता, मनोहरता ।

रुच्छ*–वि० क्रुद्ध; रूखा; कठोर । पु० दे० 'रूख' ।

रुज–पु० रोग (रुज्); घाव; कष्ट । **–ग्रस्त**–वि० रोगी ।

रुजाली–स्त्री० [सं०] रोग, पीड़ाका समूह ।

रुजी*–वि० रोगी, बीमार ।

रुजू–वि० [अ० रजूअ] प्रवृत्त ।

रुझना*–अ० क्रि० भरना, पूजना (घाव आदिका); दे० 'अरुझना', 'उलझना' ।

रुझान–पु० झुकाव, किसी ओर प्रवृत्त होना ।

रुठ*–पु० क्रोध, गुस्सा ।

रुठना†–अ०क्रि० दे०'रूठना' । वि० रूठने, मचलनेवाला ।

रुठाना–स० क्रि० नाराज, असंतुष्ट करना ।

रुणित–वि० [सं०] बजता, झनकारता, शब्द करता हुआ ।

रुत–पु० [सं०] कलरव; ध्वनि, शब्द । * स्त्री० दे० 'ऋतु' ।

रुतबा–पु० [अ०] ओहदा, दरजा, मर्तबा; इज्जत । **–दार**–वि० शरीफ, प्रतिष्ठित ।

रुदन–पु० रोदन, रोना, विलाप, क्रंदन ।

रुदराछ*–पु० दे० 'रुद्राक्ष' ।

रुदित–वि० [सं०] जो रो रहा हो । पु० रुदन ।

रुद्ध–वि० [सं०] रोका हुआ, घेरा हुआ; रुका हुआ; मुँदा हुआ; जिसकी गति रोक दी गयी हो । **–कंठ**–वि० जिसका गला रुँधा और बोलनेमें असमर्थ हो ।

रुद्र–पु० [सं०] एक प्रकारके गणदेवता (इनकी संख्या ग्यारह मानी जाती है); ग्यारहकी संख्या; शिवका एक उग्र रूप; रौद्र रस । वि० रोनेवाला; भयंकर । **–पति**–पु० शिव । **–पत्नी**–स्त्री० दुर्गा । **–प्रिया**–स्त्री० पार्वती; हर्रे । **–भूमि**–स्त्री० श्मशान, मरघट । **–विंशति**–स्त्री० रुद्रबीसी, प्रभवादि ६० वर्षोंमेंसे अंतिम बीस साल ।

रुद्राक्ष–पु० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसके दानोंकी माला जपनेके लिए परम पवित्र मानी जाती है और शैवोंमें जिसका अत्यंत समादर है । वि० लाल आँखोंवाला ।

रुद्राणी–स्त्री० [सं०] रुद्रपत्नी, पार्वती ।

रुद्रारि–पु० [सं०] कामदेव ।

रुद्रावास–पु० [सं०] काशी; कैलास; श्मशान।

रुधिर–पु० [सं०] रक्त, खून, लहू; लाल वर्ण; मंगल ग्रह। **–पायी(यिन्)**–वि० खून पीनेवाला। पु० राक्षस। **–पित्त**–पु० रक्तपित्त।

रुधिराशन–वि० [सं०] रुधिर पीनेवाला। पु० राक्षस।

रुनझुन–स्त्री० नूपुर आदिकी झनकार।

रुनाई*–स्त्री० लालिमा, सुर्खी।

रुनित*–वि० बजता, झनकार करता हुआ।

रुनुक-झुनुक–स्त्री० नूपुर आदिकी लगातारकी झनकार।

रुनुझुनु*–स्त्री० नूपुर आदिकी झनकार।

रुपना–अ० क्रि० जमना; लगाया, गाड़ा या रोपा जाना; अड़ना, डट जाना।

रुपमनी*–वि० स्त्री० रूपवती, सुंदर–'एकसों एक चाहि रुपमनी'–प०।

रुपया–पु० भारतका मुख्य सिक्का (चाँदीका बना); धन-संपदा। **–पैसा**–पु० धन-दौलत। **–वाला**–वि० धनी, अमीर। मु० **–उठाना**–रुपया खर्च करना। **–उड़ाना**–रुपया खर्च, बरबाद करना। **–ठीकरी करना**–अनावश्यक खर्च करना। **–पानीमें फँकना**–पैसा बरबाद करना।

रुपहला–वि० चाँदीके रंगका, चाँदी जैसा।

रुपैया†–पु० दे० 'रुपया'।

रुबाई–स्त्री० [अ०] चार मिसरोंका एक उर्दू-फारसी छंद।

रुमंच*–पु० दे० 'रोमांच'।

रुमांचित–* वि० दे० 'रोमांचित'।

रुमा–स्त्री० [सं०] सुग्रीवकी पत्नी।

रुमाल–पु० दे० 'रूमाल'।

रुमावली*–स्त्री० दे० 'रोमावली'।

रुराई*–स्त्री० सौंदर्य, शोभा।

रुरु–पु० [सं०] काला हिरन; एक ऋषि; एक वृक्ष।

रुरुआ–पु० एक प्रकारका बड़ी जातिका उल्लू।

रुरुक्षु–वि० [सं०] रूखा, रुक्ष, जो चिकना न हो।

रुलना†–अ० क्रि० इधर-उधर फिरना, हिलना-डुलना; दबा रह जाना–'मनकी मसूसें मन हीमें रुलि जाति हैं'–रत्ना०।

रुलाई–स्त्री० रोना; रोनेकी इच्छा या प्रवृत्ति।

रुलाना–स० क्रि० किसीको रोनेमें प्रवृत्त करना; भटकाना, फिराना; बरबाद करना।

रुवाई–स्त्री० दे० 'रुलाई'।

रुष्ट–वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित, नाराज।

रुष्टता–स्त्री० [सं०] रुष्ट होनेका भाव, अप्रसन्नता।

रुसना*–अ० क्रि० दे० 'रूसना'।

रुसवा–वि० [फा०] निंदित; जलील, लांछित; अपमानित; बदनाम। * पु० बदनामी।

रुसवाई–स्त्री० [फा०] फजीहत; बेइज्जती; बदनामी।

रुंसित*–वि० रुष्ट, अप्रसन्न।

रुसूम–पु० दे० 'रसूम'।

रुसूल–पु० [अ०] खुदाकी तरफसे पैगाम लानेवाला व्यक्ति, पैगंबर, रसूल।

रुस्ट*–वि० दे० 'रुष्ट'।

रुस्तम–पु० [फा०] फारसका प्रसिद्ध पहलवान, जीलका बेटा। वि० वीर, बहादुर; छिपा हुआ गुणी।

रुहठि*–स्त्री० रूठना।

रुहिर*–पु० रक्त, लहू, रुधिर।

रुहेलखंड–पु० अवधके पश्चिम-उत्तरवाला प्रदेश।

रुहेला–पु० रुहेलनिवासी; पठानोंकी एक जाति।

रूँदना–स० क्रि० दे० 'रौंदना'।

रूँधना–स० क्रि० (रक्षाके लिए) काँटेदार पौधों आदिसे घेर देना, बारी या घेरा बना देना; रास्ता बंद कर देना।

रू–पु० [फा०] चेहरा, मुँह; शकल, सूरत; सामनेका हिस्सा, आगा; ऊपरी भाग, सिरा; कारण, वजह; ध्यान; बहाना, हीला, टालमटोल।

रूई–स्त्री० दे० 'रुई'।

रूक्ष–वि० [सं०] जो कोमल, चिकना न हो। पु० वृक्ष।

रूख–पु० वृक्ष, पेड़। * वि० रूखा।

रूखना*–अ० क्रि० रूठना, नाराज होना।

रूखरा–पु० वृक्ष। वि० दे० 'रूखा'।

रूखा–वि० जिसमें चिकनापन न हो (जैसे–रूखे बाल); बिना तेल-घीका बना हुआ, अरुचिकर, स्वादहीन (भोजन;) नीरस, शुष्क; खुरदरा; स्नेहहीन, प्रेमशून्य; कठोर; विरक्त, उदासीन। **–पन**–पु० रुखाई, रूखा होना; नीरसता; कड़ाई, कठोरता; स्वादहीनता; उदासीनता। **–सूखा**–वि० बिना घी और मसालेका बना; सादा (भोजन)। मु० **–पड़ना**–शील-संकोच-रहित होना, बेमुरौवत होना; तीखा पड़ना, नाराज होना।

रूचना*–अ० क्रि० दे० 'रुचना'।

रूज–पु० [अं०] कलई करनेकी एक बुकनी।

रूझना*–अ० क्रि० दे० 'अरुझना', 'उलझना'।

रूठ, रूठन–स्त्री० रूठना, नाराज होना, क्रोध।

रूठना–अ० क्रि० अप्रसन्न, नाराज होना।

रूठनि*–स्त्री० दे० 'रूठन'।

रूड़, रूड़ो*–वि० उत्तम; श्रेष्ठ।

रूढ–वि० [सं०] उत्पन्न, संजात; प्रचलित, प्रसिद्ध; अविभाज्य, अकेला; (वह संख्या) जो विभक्त न हो; चढ़ा हुआ, आरूढ़; *गँवार, उजड्ड; कठोर, कड़ा। पु० वह शब्द जो समुदायशक्तिसे अर्थबोधक हो, जिसका खंड न हो (यौगिकका विलोम–जैसे घट, गौ इ०); प्रकृति-प्रत्यययुक्त अर्थके स्थानपर दूसरे अर्थका प्रकाशक शब्द। **–यौवना**–स्त्री० एक प्रकारकी मध्या नायिका।

रूढा–स्त्री० [सं०] प्रचलित अर्थमें विनियुक्त लक्षणा(सा०)।

रूढि–स्त्री० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; प्रसिद्धि, ख्याति; प्रथा, चाल; चढ़ाई, चढ़नेका भाव; वृद्धि; उभार, उठान; शब्दकी शक्ति जो यौगिक न होनेपर भी अर्थ स्पष्ट करती है।

रूप–पु० [सं०] आकार; सूरत, शकल; दृश्य पदार्थ, वस्तु (विशेष वर्णसे भिन्न); प्रकृति, स्वभाव; वेश; सौंदर्य; शरीर; विभक्ति, प्रत्ययके योगसे बना शब्दका रूपांतर, स्वरूप; देश-कालका भेद, दशा; लक्षण, चिह्न, आकार; विकार, भेद; रूपक; * रूपा, चाँदी। वि० समान, अनुरूप; रूपवान्–'समय समय सुंदर सबै रूप-कुरूप न कोइ'–बि०। **–गर्विता**–स्त्री० नायिका जिसे अपने रूपका गर्व हो। **–जीविनी**–स्त्री० वेश्या। **–जीवी(विन्)**–पु० बहुरुपिया।

–भेद–पु० (माडिफिकेशन) अर्थ या स्वरूप आदिमें आंशिक परिवर्तन करना,इधर-उधर बदल देना ।**–माला**–स्त्री० एक मात्रिक छंद । **–रेखा**–स्त्री० किसी कार्य या योजनाका स्थूल रूप; वह चित्र जो अभी केवल रेखाओंके रूपमें हो; किसी आकृति या चित्रका रेखामय रूप । **–शाली(लिन्)**–वि० रूपवान्, सुंदर ।

रूपक–पु० [सं०] (रूपका आरोप करना) अभिनय-प्रदर्शन-युक्त दृश्य काव्य (इसके दस भेद और अठारह उपभेद उपरूपक हैं); एक अर्थालंकार (अभेद और तद्रूपरूपक–दो भेद, उपमेय उपमान रूपमें हो तो तद्रूप और अभेदता हो तो अभेद रूपक ।); मूर्ति, प्रति-कृति; चाँदी; रुपया । **–कार्यक्रम**–पु० (फीचर प्रोग्राम) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित नाटक, प्रहसन आदि-संबंधी कार्यक्रम ।

रूपकातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] अतिशयोक्तिका एक भेद जिसमें उपमेय, वाचक धर्मादिका लोप कर केवल उपमानका उल्लेख किया जाता है ।

रूपमनी*–वि० स्त्री० रूपवती ।

रूपमय–वि० [सं०] परम सुंदर ।

रूपवंत, रूपव*–पु० सुंदर, रूपवान्–'रूपव कौन अधिक सीतातें जन्म वियोग भरे'–सू० ।

रूपवान्–वि० [सं०] सुंदर, खूबसूरत ।

रूपांकक–पु० [सं०] (डिजाइनर) भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदिकी रूप-रेखा, वनावट-बुनावट आदिका ढंग निश्चित करने या सोचनेवाला ।

रूपांकन–पु० [सं०] (डिजाइनिंग) किसी भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदिकी रूप-रेखा बनाना, मनमें किसी योजना आदिका रूप निश्चित करना, बनावट-बुनावट आदिका कोई विशेष ढंग या तर्ज सोचना, निर्धारित करना ।

रूपांतर–पु० [सं०] (ट्रांसफॉरमेशन) किसी वस्तुका बदला हुआ रूप ।

रूपांतरण–पु० [सं०] (ट्रांसफॉरमेशन) किसी वस्तुके रूप, आकार आदिका वदल दिया जाना, उनमें परिवर्तन हो जाना ।

रूपांतरित–वि० [सं०] (ट्रांसफार्म्ड) जिसका रूप, आकार आदि बदल गया हो या बदल दिया गया हो ।

रूपा–पु० चाँदी; घटिया चाँदी; सफेद बैल या घोड़ा ।

रूपाजीवा–स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी ।

रूपाध्यक्ष–पु० [सं०] टकसालका प्रधान अफसर, नैष्ठिक ।

रूपी(पिन्)–वि० [सं०] रूपवाला, रूपधारी; समान, सदृश; सुंदर, रूपवान् ।

रूपोपजीविनी–स्त्री० [सं०] वेश्या ।

रूपोपजीवी(विन्)–पु० [सं०] बहुरुपिया ।

रूप्यक–पु० [सं०] रुपया ।

रूम–पु० [फा०] तुर्की ।

रूमना*–स० क्रि० झूमना; झूलना ।

रूमाल–पु० [फा०] हाथ-मुँह पोंछनेका कपड़ेका चौकोर टुकड़ा; चिकन, चौकोन शालका टुकड़ा; मियानी, पाजामेकी मोहरियोंको जोड़नेवाला चौकोर टुकड़ा ।

रूरना*–अ० क्रि० जोर-जोरसे शब्द करना, चिल्लाना ।

रूरा–वि० अच्छा, उत्तम ।

रूल–पु० [अं०] नियम, कायदा; रेखा, लकीर खींचनेका डंडा; सतर, कागजपर सीधी खींची हुई लकीर ।

रूलर–पु० [अं०] रेखा, लकीर, सतर खींचनेका डंडा ।

रूलना–स० क्रि० दवा देना । अ० क्रि० दे० 'रुलना' ।

रूष*–पु० दे० 'रूख' ।

रूषा*–वि० दे० 'रूखा' ।

रूसना–अ० क्रि० रोष करना, नाराज होना, रूठना–'रूसेउ नागर नाह'–प० ।

रूसा–पु० अड़ूसा, वासक वृक्ष (मति०) ।

रूसी–स्त्री०सिरपर जमा हुआ मैल; [फा०] रूसकी भाषा । वि० रूसका; रूसमें उत्पन्न । पु० रूसनिवासी ।

रूह–स्त्री० [अ०] आत्मा; दिल, जी; आभ्यंतरिक इच्छा; सत, सार (जैसे–रूहगुलाव) ।

रूहना*–अ० क्रि० उमड़ना; चढ़ना; छा जाना, घेरना ।

रूहानी–वि० आत्मा-संवंधी, आत्मिक ।

रेँकना–अ० क्रि० गदहेका वोलना; भद्दे प्रकारसे गाना ।

रेँगटा–पु० गदहेका वच्चा ।

रेँगना–अ० क्रि० कीड़ों, सरीसृपोंका चलना; धीरे-धीरे चलना ।

रेँगनी–स्त्री० भटकटैया ।

रेँगाना–स० क्रि० पेटके वल या धीरे-धीरे चलाना ।

रेँट–पु० नाकका मल ।

रेँड़–पु० औषध और जलाने आदिके काम आनेवाला एक लघु आकारका वृक्ष, एरंड । **–खरबूजा,–मेवा**–पु० पपीता, रेंड़फल, अंडकाकुनी ।

रेँड़ी–स्त्री० रेंड़के वीज ।

रे–अ० [सं०] संवोधनका शब्द, अरे, ए, ओ ।

रेउड़ी†–स्त्री० दे० 'रेवड़ी' ।

रेख–स्त्री० रेखा, लकीर; चिह्न, निशान; गिनती, गणना; मस भीनना; निकलती हुई मूँछें । मु०**–आना,–भीजना,–भीनना**–मूँछें निकलना शुरू होना । **–खाँचना,–खीँचना**–रेखा अंकित करना; कोई बात जोर देकर कहना ।

रेख़ता–पु० [फा०] अरवी-फारसी-मिश्रित हिंदीका गाना, गजल; उर्दूका आरंभिक नाम ।

रेखना*–स० क्रि० रेखा, लकीर खींचना; चिह्न करना; खरोंचना ।

रेखा–* स्त्री० कण, टुकड़ा; [सं०] (लाइन) बिंदुकी गति जिसमें लंबाई हो, चौड़ाई, मोटाई न हो, लकीर; सूचक चिह्न (किसी पदार्थ, वस्तु आदिका–जैसे कर्म, भाग्यरेखा); गणना; आकार, सूरत; हाथ, तलवे आदिकी लकीरें (इनके आधारपर भविष्यकथन, शुभाशुभ-निर्णय किया जाता है); हीरेके वीचकी दोषपूर्ण लकीर । **–गणित**–पु० (ज्यामेट्री) वह गणित जिसमें रेखाओं, कोणों, वृत्तों आदिका विवेचन होता है । **–चित्र**–पु० (स्केच) किसी व्यक्ति या वस्तुका केवल रेखाओंसे वना हुआ चित्र; (चार्ट) दे० 'रेखापत्र' । **–पत्र**–पु० (चार्ट) विशेष सूचना या जानकारी प्रदान करनेवाला, मुख्य रूपसे रेखाओंका बना वह चित्र जिसमें मुख्य-मुख्य बातें यथास्थान दिखायी

गयी हों; खाने बनाकर तालिकाओं आदिके रूपमें दिया गया विवरण; नाविकों, जहाजके कप्तानों आदिके पास रहनेवाला वह समुद्री नक्शा जिसमें समुद्रतट, चट्टानें, खतरेके स्थान आदि दिखाये गये रहते हैं; वस्तुओंके उत्पादन एवं मूल्यादि-संबंधी तथा तापमानके घटने-बढ़ने आदि-संबंधी परिवर्तन ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरनेवाली रेखाओं द्वारा दिखलानेवाला पत्र।

रेखित–*वि० अंकित, लिखित, खिंचा हुआ; लकीर खींचा हुआ। –**धनादेश**–पु० (क्रास्ड चेक) वह धनादेश जिसमें बायीं ओर नीचेसे ऊपरतक दो समानांतर रेखाएँ खींच दी गयी हों (इसका रुपया किसीके बैंकके खातेमें जमा होनेके बाद ही निकाला जा सकता है)।

रेग–स्त्री० [फा०] बालू।

रेगिस्तान–पु० बालूका मैदान, मरुस्थल।

रेचक–वि० [सं०] दस्त लानेवाला, दस्तावर। पु० प्राणायामकी एक क्रिया (खींची हुई साँसको बाहर निकालना)।

रेचन–पु० [सं०] दस्त लाना, कोठा शुद्ध करना; जुलाब।

रेचना*–सं० क्रि० वायु, मल बाहर निकालना।

रेजगारी–स्त्री० दे० 'रेजगी'।

रेज़गी–स्त्री० [फा०] खुर्दा, छुट्टा; इकन्नी-दुअन्नी आदि छोटे सिक्के; सोना-चाँदीके तारका छोटा टुकड़ा।

रेज़ा–पु० [फा०] बहुत छोटी चीज, छोटा टुकड़ा, खंड; मजदूर लड़का (बड़े राजगीरोंके साथ काम करनेवाला); सुनारोंका एक औजार; नग, थान, अदद।

रेणु–स्त्री० [सं०] धूल; बालू; कणिका।

रेणुका–स्त्री०[सं०] बालू; धूल; परशुरामकी माता; *पृथ्वी।

रेत–स्त्री० बालू; बलुई भूमि।

रेत (स्)–पु० [सं०] वीर्य; जल; पारा।

रेतना–स० क्रि० रेतीसे रगड़कर काटना, चिकना करना; औजारकी धार रगड़ना; धीरे-धीरे रगड़कर काटना।

रेता–स्त्री० बालू; धूल, मिट्टी। पु० बलुई भूमि।

रेती–स्त्री० एक औजार जिससे रगड़कर कोई वस्तु काटी या चिकनी की जाती है; नदी, समुद्रतटकी बलुई भूमि; नदीका द्वीप, पानी घटनेसे धाराके बीच निकली रेतीली भूमि।

रेतीला–वि० बलुआ, बालुकामय।

रेनु*–स्त्री० दे० 'रेणु'।

रेनुका*–स्त्री० दे० 'रेणुका'।

रेफ–पु० [सं०] 'र' अक्षर; 'र'का किसी वर्णके पहले आनेपर हलंत्, मस्तकस्थ रूप (जैसे–दर्पमें)।

रेरुआ, रेरुवा–पु० घुग्घू, बड़ा उल्लू।

रेल–स्त्री० बहाव, धारा; भीड़; बहुतायत। –**ठेल**, –**पेल**–स्त्री० भीड़भाड़; धक्कमधक्का; अधिकता, बहुतायत।

रेल–स्त्री० [अं०] लोहेकी शहतीर, सलाख जोड़ी हुई लाइन जो जमीनपर बिछी रहती है, लोहेकी पटरी (जिसपर रेलगाड़ी चलती है); रेलगाड़ी। –**गाड़ी**–स्त्री० [हिं०] लोहेकी पटरियोंपर चलनेवाली गाड़ी (रेलवे ट्रेन)। –**मंत्री**–पु० [हिं०] मंत्रिमंडलका वह सदस्य जिसके जिम्मे रेलका मोहकमा हो।

रेलना–स०क्रि० धक्का देना, ढकेलना; अधिक खा लेना। अ० क्रि० अधिक होना, खूब भरा होना।

रेला–पु० धावा, चढ़ाई, आक्रमण; भीड़भाड़; जलका बहाव; तोड़; अधिकता; समूह।

रेवड़–पु० भेड़ोंका समूह, गल्ला।

रेवड़ी–पु० चीनी या गुड़की चाशनीसे फेटकर बनायी हुई टिकियाँ जिनपर तिल जमाया होता है।

रेवतक–पु० पारेवत वृक्ष, एक तरहका खजूर।

रेवती–स्त्री० [सं०] सताईसवाँ नक्षत्र; गाय; एक बालग्रह; बलरामकी पत्नी। –**रमण**–पु० बलराम।

रेवा–स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी; कामदेवकी स्त्री, रति।

रेशम–पु० [फा०] उम्दा, मजबूत और चमकीला रेशा जिसे रेशमका कीड़ा कोया, कोश बनानेके लिए निर्मित करता है; रेशमका सूत; रेशमका कपड़ा। –**के लच्छे**–रेशमके धागोंका गुच्छा; एक मिठाई जो रेशमके धागोंकी तरह होती है।

रेशमी–वि० [फा०] रेशमका; रेशमसे बना हुआ; रेशमसा मुलायम या चिकना, बहुत ही नरम।

रेशा–पु० [फा०] सुतड़ा, सूतकीसी इकहरी चीज। –**दार**–वि० रेशेवाला।

रेष–पु० [सं०] हानि, क्षति। * स्त्री० दे० 'रेख'।

रेह–स्त्री० खारमिश्रित धूल जैसी मिट्टी; रेखा–'लसत कसौटीमें मनो तनक कनककी रेह'–मति०।

रेहन–पु० [फा०] ऋण देनेवालेको कुछ धन-संपत्ति उस समयतकके लिए देना जबतक उसका हिसाब चुका न दिया जाय, बंधक, गिरवी। –**दार**–पु० जिसके पास कोई जायदाद बंधक रखी हो। –**नामा**–पु० वह कागज जिसपर रेहनकी शर्तोंकी लिखा-पढ़ी की गयी हो।

रेहल–स्त्री० [अ०] पेचदार तख्ती (जिसपर पढ़ते समय किताब रखते हैं), दे० 'रिहल'।

रेहुआ–वि० रेहवाला, जिसमें रेह अधिक हो।

रैअति*–स्त्री० दे० 'रैयत'।

रैतुवा–पु० दे० 'रायता'।

रैदास–पु० रामानंदका शिष्य और कबीर आदिका समकालीन चमार भक्त; चमार।

रैन*–स्त्री० रात; रेणु।

रैनि*–स्त्री० रात।

रैनी–स्त्री० तार खींचनेकी चाँदी-सोनेकी गुल्ली।

रैमुनिया–स्त्री० लाल चिड़ियाकी मादा; एक अरहर।

रैयत–स्त्री० [अ०] प्रजा, रिआया।

रैयाराव–पु० छोटा राजा; एक पुरानी पदवी जो राजा अपने सरदारोंको प्रदान करते थे।

रैल*–स्त्री० राशि, समूह–'बिघनकी रैलपर लंबोदर लेखिये'–भू०।

रैवत–पु० [सं०] एक पर्वत; एक साममंत्र; शिव; एक दैत्य जिसकी गणना बालग्रहमें है।

रौंआँ–पु० दे० 'रोयाँ'।

रौंगटा–पु० रोयाँ, लोम। **मु०–(टे) खड़े होना**–रोमांच होना।

रौंगटी–स्त्री० बेईमानी करना (खेलमें)।

रौंव*–पु० रोआँ।

रोआब–पु० दबदबा, प्रभाव, 'रुआब'।

रोक–पु० [सं०] नकद रुपया, रोकड़। वि० नकद। स्त्री० [हिं०] अटकाव, रुकाव, छेंक; रोकनेवाली चीज; प्रतिबंध; मनाही, निषेध। **–झोंक,–टोक**–स्त्री० बाधा, अवरोध, प्रतिबंध; मनाही। **–थाम**–स्त्री० रोकटोक, अवरोध।

रोकड़–स्त्री० नकद रकम, रुपया; जमा, पूँजी। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें नकद रुपयोंके लेन-देनका हिसाब हो। **–बिक्री**–स्त्री० वह बिक्री जो नकद दामपर की गयी हो। **मु०–मिलाना**–आय-व्ययका हिसाब लगाकर रकमके घटने-बढ़नेका पता लगाना।

रोकड़िया–पु० रोकड़ रखनेवाला, मुनीम, खजांची।

रोकना–स० क्रि० गति, चाल बंद करना; जानेसे मना करना; किसी काम, बातका क्रम बंद करना; बाधा, अड़चन डालना; मना करना; ऊपर न आने देना (लाठी, तलवार आदिका प्रहार); वश, काबूमें रखना, संयत रखना; सामना करना (आक्रमण रोकना); छेंकना।

रोख*–पु० दे० 'रोष'।

रोग–पु० [सं०] शरीरकी विकारपूर्ण अवस्था, अस्वास्थ्य, बीमारी; कोई बीमारी (हैजा, प्लेग, चेचक इ०)। **–कारक**–वि० बीमारी पैदा करनेवाला। **–ग्रस्त**–वि० बीमार, रोगसे पीड़ित। **–नाशक**–वि० बीमारी दूर करनेवाला। **–निदान**–पु० रोगके मूल कारण, उसके लक्षणोंकी पहचान करना। **–निरोधक द्रव्य**–पु० (प्रोफिलैक्टिक ड्रग) रोगोंकी उत्पत्ति तथा प्रसार रोकनेवाली दवा। **–प्रतिबंधनिरोधा**–स्त्री० (कारैनटान) दे० 'निरोधा'।

रोग़न–पु० [फ़ा०] कोई चिकनी चीज, तेल, घी इ०; एक पतला लेप, वार्निश, पालिश (जूते, लकड़ी आदिपर चमक लानेके लिए प्रयुक्त); लाख आदिका बना मसाला (मिट्टीके बरतनोंपर चढ़ाया जाता है); बर्रेके तेलका बना मसाला (चमड़ेको मुलायम करनेके लिए)। **–दार**–वि० रोगन चढ़ाया हुआ, चमकीला।

रोग़नी–वि० [फ़ा०] तेल, घी लगा या चुपड़ा हुआ; वार्निश किया हुआ।

रोगाक्रांत–वि० [सं०] रोगी, रोगसे पीड़ित।

रोगातुर–वि० [सं०] रोगसे घबराया हुआ, पीड़ित।

रोगार्त–वि० [सं०] रोगसे दुःखी, व्याकुल।

रोगिणी–वि० स्त्री० [सं०] रोगसे पीड़ित (स्त्री)।

रोगिया, रोगिहा†–पु० बीमार, रोगी।

रोगी(गिन्)–वि० [सं०] अस्वस्थ, व्याधिग्रस्त, बीमार। **–वाहक गाड़ी**–स्त्री० (एंबूलेंसकार) दे० 'परिचारगाड़ी'।

रोगोत्तर स्वास्थ्यलाभ–पु० [.सं०] (कनवेलेसेंस) रोग अच्छा हो जानेके बाद स्वास्थ्यकी पूर्वस्थिति तथा पूर्वबल प्राप्त करनेकी क्रिया।

रोचक–वि० [सं०] रुचनेवाला, प्रिय; मनोरंजक।

रोचन–वि० [सं०] प्रिय, अच्छा लगनेवाला; शोभावान्; दीप्तियुक्त। पु० काला सेमर; सफेद सहिजन; प्याज; गोरोचन; रोचना, रोली; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक।

रोचना–स्त्री० [सं०] रक्त कमल; वंशलोचन; उज्ज्वल आकाश; काला सेमर; गोरोचन; सुंदर स्त्री।

रोचि(स्)–स्त्री० [सं०] प्रभा, चमक, कांति; किरण।

रोचिष्णु–वि० [सं०] चमकदार; दीप्तिमय।

रोज*–पु० रोना-धोना; विलाप, रोना-पीटना।

रोज़–पु० [फ़ा०] दिन; वक्त। अ० प्रति दिन, हर रोज, नित्य। **–नामचा**–पु० वह किताब जिसमें दैनिक विवरण लिखा जाय (डायरी); बही जिसमें रोजका हिसाब लिखा जाय; वह रजिस्टर या किताब जिसमें पटवारी अपना हर रोजका काम लिखता है; पुलिस थानेका रजिस्टर नं० १ जिसमें पुलिसके दैनिक कार्योंका विवरण लिखते हैं। **–ब-रोज़**–अ० प्रति दिन, हर रोज; क्रमशः, लगातार। **–मर्रा**–अ० नित्य, प्रति दिन, हर रोज। पु० अहले जबानकी भाषा, उनकी बोल-चालके शब्द और मुहावरे।

रोज़गार–पु० [फ़ा०] जीविका; कारबार, व्यापारव्यवसाय।

रोज़ा–पु० [फ़ा०] एक मजहबी फर्ज जिसमें प्रातःकाल एक घड़ी रातसे संध्याके एक घड़ी बादतक बिलकुल नहीं खाते (मुसलमानोंमें); उपवास, अनाहार; रोजेका दिन; रोजेका महीना, रमजान। **–दार**–पु० वह जो रोजा रखता है।

रोज़ाना–अ० [फ़ा०] नित्य, हर रोज।

रोज़ी–स्त्री० [फ़ा०] खूराक; जीविका। **–दार**–वि० जिसे खर्चके लिए नित्य कुछ दिया जाय।

रोज़ीना–पु० [फ़ा०] दैनिक वेतन, मजदूरी (जो रोजाना मिले); खूराक (जो रोजाना दी जाय); पेंशन, वजीफा।

रोझ†–स्त्री० नीलगाय; (पु० भी) 'हम भी पाहन पूजते होते बनके रोझ'–साखी।

रोट–पु० बहुत मोटी रोटी; शरबत, महुएके रसमें बनायी हुई मोटी मीठी रोटी; लिट्ट, हाथियोंका रातिब।

रोटिका–स्त्री० [सं०] फुलकी, हलकी-छोटी रोटी।

रोटिहा†–पु० रोटियोंके बदलेमें काम करनेवाला नौकर।

रोटी–स्त्री० गुँधे आटेकी तवेपर या आगपर सिंकी गोल टिकिया, चपाती, फुलका; खाना, आहार, भोजन। **–कपड़ा**–पु० खाना-कपड़ा, गुजर-बसरकी सामग्री। **मु०–कमाना**–जीविका, रोजी चलाना।

रोठा†–पु० एक तरहका बाजरा (प०)।

रोड़ा–पु० कंकड़, ईंट-पत्थरके टुकड़े; बाधा।

रोदन–पु० [सं०] रोना, विलाप करना।

रोदसी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; स्वर्ग।

रोदा–पु० धनुष्की डोरी, प्रत्यंचा; बारीक, सूक्ष्म ताँत।

रोध–पु० [सं०] रोक, निषेध, बाधा; घेरा; तीर, किनारा।

रोधक–पु० [सं०] रोकनेवाला।

रोधन–पु० [सं०] बुध ग्रह; रोक, अवरोध; दमन।

रोधना*–स० क्रि० रोकना।

रोना–अ० क्रि० शोक, कष्टजनित विकलताके कारण कुछ कह उठना; कुछ विशेष प्रकारके स्वर निकलना और आँसू बहना; चिल्लाना तथा आँसू बहाना, रुदन या विलाप करना, आँसू बहाना; शिकायत करना; अफसोस करना; शोक करना; कुढ़ना; वावैला करना; फरियाद करना; दुःख बयान करना; पछताना। वि० रोनेवाला; चिड़चिड़ा। पु० रुदन, कुहराम; मातम; अफसोस, गम; शिकायत; तकलीफ; फरियाद; वावैला; कुढ़न। **–मु०–**

आना–दिल भर आना, अफ़सोस होना। **–पड़ना–** मातम होना, कुहराम मचना। **–पीटना–**चिल्लाकर, छाती पीटकर रोना।

रोनी-धोनी–वि० रोनेधोनेवाली, मुहर्रमी। स्त्री० रुदन, विलापकी प्रवृत्ति; मनहूसी।

रोपक–वि० [सं०] जमाने, लगाने, स्थापित करनेवाला।

रोपण–पु० [सं०] लगाना, बैठाना (बीज, पौधा); स्थापित करना; ऊपर रखना; खड़ा करना, उठाना।

रोपना–स० क्रि० लगाना, जमाना; एक जगहसे दूसरी जगह गाड़ना; स्थापित करना, रखना; ठहराना, टिकाना; बीज बोना; रखना; पसारना।

रोपनी–स्त्री० रोपाई, रोपनेका काम।

रोपित–वि० [सं०] जमाया, लगाया हुआ; उठाया, खड़ा किया हुआ; रखा हुआ, स्थापित; भ्रांत।

रोब–पु० [अ० 'रुआब'] धाक, दबदबा; तेज, प्रताप; आतंक। **–दाब**–पु० तेज; आतंक। **–दार**–वि० तेजस्वी; प्रभावशाली। **मु०–में आना**–धाक, प्रभाव मानना।

रोमंथ–पु० [सं०] जुगाली, पागुर।

रोम(न्)–पु० [सं०] रोयाँ, रोंगटा, शरीरपरके बाल; पर। **–कूप,–द्वार**–पु० त्वचाके वे छोटे-छोटे छेद जिनसे रोयें निकलते हैं। **–राजी,–लता**–स्त्री० रोमावली, रोमोंकी श्रेणी; नाभिसे ऊपरके बाल। **–हर्ष**–पु० रोयें, रोंगटे खड़े होना, रोमांच। **–हर्षण**–पु० रोयोंका खड़ा होना (हर्ष, शोक, भय आदिके कारण)। वि० रोंगटे खड़े करनेवाला, भयंकर, भीषण। **मु०–रोममें**–सारे शरीरमें, अंग-अंगमें। **–रोमसे**–पूर्ण हृदयसे, तन-मनसे।

रोमांच–पु० [सं०] रोयोंका उभरना, खड़ा होना (आनंद, भय आदिसे), पुलक।

रोमांचित–वि० [सं०] पुलकित, हृष्टरोमा, जिसके रोयें खड़े हों।

रोमाग्र–पु० [सं०] रोयेंका सिरा, नोक।

रोमानी–वि० जिसमें मुख्य रूपसे शारीरिक प्रेमका वर्णन हो।

रोमाली, रोमावलि, रोमावली–स्त्री० [सं०] रोमोंकी पंक्ति; नाभिसे ऊपरकी ओर जानेवाली रोमपंक्ति।

रोमिल–वि० रोमयुक्त, रोयेंवाला (गुलाब)।

रोयाँ–पु० लोम, रोम, रोंगटा। **मु०–खड़ा होना**–रोमांच होना। **–टेढ़ा न होना**–कुछ न बिगड़ पाना।

रोर–स्त्री० रौला, कोलाहल, हल्ला; बहुतसे लोगोंकी एक साथ निकली हुई समवेत ध्वनि; रोने-चिल्लानेका शब्द; हलचल, धूमधाम; उपद्रव; निर्धनता, गरीबी–'रोरके जोरते सोर घरनी कियो…'–सू०; विपत्ति। वि० दुर्दमनीय, प्रचंड; उद्धत; दुष्ट, अत्याचारी।

रोरा–पु० गाँजेका चूर; दे० 'रोर'।

रोरी†–स्त्री० हल्दी-चूनेकी बनी लाल रंगकी बुकनी, रोली (इसका तिलक लगाते हैं); *धूम, चहल-पहल, कोलाहल –'रोरि परी गोकुलमें जहँ तहँ गाइ फिरत पय दोहनको' –सू०। वि० स्त्री० रुचिर, सुंदर।

रोल–पु० पानीका रेला, तोड़, बहाव; रुखानी जैसा एक औजार। स्त्री० हल्ला, कोलाहल; शब्द, ध्वनि।

रोला–पु० शोरगुल, कोलाहल; घोर युद्ध; एक छंद।

रोली–स्त्री० हल्दी-चूनेकी बनी लाल बुकनी, श्री।

रोवनहार*–वि०, पु० रोनेवाला; मृत्युका शोक करनेवाला।

रोवना–वि०, पु० बहुत जल्दी रोनेवाला, बुरा माननेवाला; चिढ़नेवाला; खेल, हँसीमें बुरा माननेवाला। * अ० क्रि० रोना।

रोवनिहारा*–वि०, पु० दे० 'रोवनहार'।

रोवनी-धोवनी†–स्त्री० दे० रोनी-धोनी'।

रोवाँ–पु० दे० 'रोयाँ'।

रोवासा–वि० रोनेको तैयार, रोनेका इच्छुक।

रोशन–वि० [फ़ा०] जलता हुआ; प्रकाशित; प्रकाशपूर्ण, चमकदार; प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर; प्रकट। **–चौकी**–स्त्री० एक किसके बाजेवालोंकी चौकी, शहनाई, नफीरी। **–ज़मीर,–दिमाग़**–वि० अक़्लमंद, सुबुद्ध। **–दान**–पु० मोखा, झरोखा।

रोशनाई–स्त्री० [फ़ा०] स्याही, मसि; प्रकाश, रोशनी।

रोशनी–स्त्री० [फ़ा०] प्रकाश, उजाला; चिराग, दिया; दीपमालाका प्रकाश, दीपोत्सव; ज्ञान, शिक्षाका प्रकाश।

रोष–पु० [सं०] क्रोध; विद्वेष; चिढ़; लड़नेका जोश।

रोस–पु० दे० 'रोष'। स्त्री० दे० 'रौस'।

रोसनाई–स्त्री० दे० 'रोशनाई'।

रोसनी–स्त्री० दे० 'रोशनी'।

रोह–पु० [सं०] चढ़ाई; चढ़ना; अंकुर; † नील गाय।

रोहक–पु० [सं०] चढ़नेवाला; सवार।

रोहण–पु० [सं०] चढ़ना; उगना; ऊपरकी ओर बढ़ना।

रोहना–अ० क्रि० चढ़ना; ऊपरको बढ़ना; सवार होना। स० क्रि० चढ़ाना; धारण करना; सवार कराना।

रोहिणी–स्त्री० [सं०] गाय; बिजली; नववर्षीया कन्या; वसुदेवकी स्त्री, बलरामकी माता; सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे चौथा। **–पति,–वल्लभ**–पु० चंद्रमा; वसुदेव।

रोहिणीश–पु० [सं०] चंद्रमा; वसुदेव।

रोहित–वि० [सं०] लाल रंगका, लोहित। पु० लाल रंग; रक्त, खून; इंद्रधनुष्; केसर; कुंकुम।

रोहिनी*–स्त्री० दे० 'रोहिणी'।

रोही(हिन्)–वि० [सं०] चढ़नेवाला। पु० वट वृक्ष; एक मृग; रोहू मछली; * एक अस्त्र।

रोहू–पु०, स्त्री० एक मछली जो बहुत अच्छी मानी जाती है।

रौँट–स्त्री० खेल-हँसीमें बुरा मानना; बेईमानी करना।

रौँद–स्त्री० रौंदनेका भाव या काम; चक्कर, गश्त, 'राउंड' (सिपाही)। **मु०–पर जाना**–गश्तके लिए निकलना।

रौँदन–स्त्री० रौंदनेकी क्रिया या भाव, मर्दन।

रौँदना–स० क्रि० पैरोंसे कुचलना, पददलित करना; बरबाद, तहस-नहस करना; लातोंसे मारना-पीटना।

रौँस–पु० घट्ठा, निशान–'रामहिं राम पुकारतो जिभ्या परिगो रौंस'–बीजक।

रौ–* पु० दे० 'रव'। स्त्री० [फ़ा०] चाल, गति; वेग; पानीका बहाव, तोड़, रेला; ढंग, चाल; धुन, खयाल; जोश।

रौक्ष्य–पु० [सं०] रूखापन, रुखाई।

रौग़ान–पु० [अ०] चिकनी चीज, तेल, घी आदि; लाख

आदिसे निर्मित पक्का रंग।

रौग़नी–वि० [अ०] तेलका; रौगन फेरा हुआ।

रौचनिक–वि० [सं०] रोली, गोरोचन-संबंधी; रोली, गोरोचनसे रँगा हुआ।

रौज़ा–पु० [अ०] वाग; मकवरा, समाधि।

रौताइन–स्त्री० राव, रावतकी पत्नी, ठकुराइन; स्त्रियोंके लिए एक आदरसूचक संबोधन; † कहारिन।

रौताई–स्त्री० राव, रावत होना; ठकुराई, सरदारी।

रौद्र–वि०[सं०] रुद्र-संबंधी; रुद्रका; भयंकर; क्रोधपूर्ण। पु० काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव क्रोध है; क्रोध; धूप, घाम; यमराज; एक केतु; साठमेंसे चौवनवाँ संवत्सर।

रौद्रता–स्त्री० [सं०] भयंकरता; प्रचंडता, उग्रता।

रौद्री–स्त्री० [सं०] रुद्रकी पत्नी, गौरी।

रौन*–पु० रमण करनेवाला, पति।

रौनक़–स्त्री० [अ०] चमक, ताव; खूबी; ताजगी; चहल-पहल; वहार। **–दार**–वि० वहारदार; सजा हुआ।

रौनी*–स्त्री० दे० 'रमणी'।

रौप्य–वि० [सं०] चाँदीका; चाँदीका वना हुआ। पु० चाँदी, रूपा।

रौर*–पु० रोर, कुहराम।

रौरव–वि० [सं०] डरावना, भयंकर; कपटी, धूर्त। पु० एक भीषण नरक।

रौरा†–पु० दे० 'रौला'। सर्व० रावरा, आपका।

रौराना†–स० क्रि० वकना, हल्ला, प्रलाप करना।

रौरे†–सर्व० आदरसूचक संबोधन, आप।

रौल*–स्त्री० दे० 'रौलि'।

रौला–पु० हल्ला, हुल्लड़; ऊधम, हलचल।

रौलि†–स्त्री० धौल, तमाचा, झापड़।

रौशन–वि० दे० 'रोशन'।

रौशनी–स्त्री० दे० 'रोशनी'।

रौस–स्त्री० गति, हरकत, चाल; रंग-ढंग; वागकी क्यारियोंके वीचका रास्ता; मकानकी ऊपरवाली मंजिलमें (आँगनके ऊपरका) चारों तरफका पतला रास्ता।

रौहिणेय–पु० [सं०] रोहिणीपुत्र, वलराम; बुध ग्रह।

ल

ल–देवनागरी वर्णमालाका अठाईसवाँ व्यंजन, अंतस्थ वर्ण।

लंक*–स्त्री० कमर; लंका नामक द्वीप, रावणकी वासभूमि। **–नाथ, –नायक, –पति**–पु० रावण; विभीषण।

लंकलाट–पु० [अं० 'लांगक्लाथ'] एक मजवूत मोटा सूती कपड़ा।

लंका–स्त्री० [सं०] भारतके दक्षिणका एक द्वीप, सिंहल; एक झील। **–नाथ, –पति**–पु० रावण; विभीषण।

लंकाधिपति, लंकाधिराज–पु० [सं०] रावण; विभीषण।

लंकूर*–पु० दे० 'लंगूर'।

लंकेश, लंकेश्वर–पु० [सं०] रावण; विभीषण।

लंग–स्त्री० लाँग, काछ। वि० [फा०] लँगड़ा। पु० लँगड़ापन।

लंगड़–वि० लँगड़ा। पु० लंगर।

लँगड़ा–वि० जिसका एक पैर टूटा, वेकार हो। † पु० एक प्रसिद्ध कलमी आम।

लँगड़ाना–अ० क्रि० लँगड़ाकर चलना।

लंगर–पु० [फा०] लोहेका वहुत भारी काँटा जिसे नाव या जहाजको खड़ा करनेके लिए रस्सी या जंजीरसे वाँधकर नदी या समुद्रमें गिरा देते हैं; मोटा रस्सा या जंजीर; वह स्थान जहाँ गरीवोंको पका खाना वाँटा जाय, पके खानेका सत्र; पहलवानोंका लँगोट; वखिया करनेके पहले कपड़ेमें भरे जानेवाले टाँके; हरहाई गायके गलेमें वाँधा जानेवाला खूँटा; घड़ियों आदिमें तार आदिके सहारे लटकायी जानेवाली भारी चीज; कमरके नीचेका हिस्सा; पैरमें पहननेका चाँदीका तोड़ा; * वागडोर। वि० वजनदार; शरारती, ढीठ; लँगड़ा। **–ख़ाना**–पु० पके खानेका सत्र। **–गाह**–पु०, स्त्री० लंगर करने, जहाजोंके ठहरनेका स्थान। मु० **–उठाना**–रुके हुए जहाजका रवाना होना। **–करना**–जहाजका ठहरना, पड़ाव करना; शरारत करना। **–डालना**–जहाजके लंगरको नदी या समुद्रमें फेंकना, जहाजको खड़ा करना। **–वाँधना**–पहलवानी करना; लड़नेको प्रस्तुत होना; ब्रह्मचर्य धारण करना।

लँगरई, लँगराई*–स्त्री० शरारत, ढिठाई।

लँगराना†–अ० क्रि० दे० 'लँगड़ाना'।

लँगरी*–स्त्री० शरारत।

लँगरैया*–स्त्री० शरारत, धृष्टता।

लंगूर–पु० लांगूली, काले मुँहका वंदर; दुम (वंदरकी)।

लँगोट, लँगोटा–पु० कमरपर वाँधनेका वस्त्रविशेष (इससे उपस्थ और नितंव आवृत रहते हैं)। **–(ट) वंद**–वि० ब्रह्मचारी; लँगोट वाँधनेवाला।

लँगोटिया यार–पु० वालमित्र।

लँगोटी–स्त्री० छोटा लँगोट, कोपीन। मु० **–पर फाग खेलना**–थोड़ा साधन होनेपर विलासकी ओर दौड़ना। **–बँधवाना**–दरिद्र वना देना। **–बाँध लेना**–दरिद्र होना; सांसारिक सुखोंका त्याग करना। **–में मस्त**–गरीवीकी हालतमें खुश रहनेवाला।

लंघक–वि० [सं०] लाँघनेवाला; नियम तोड़नेवाला।

लंघन–पु० [सं०] अनाहार, उपवास; डाँकना, लाँघना।

लंघनक–पु० [सं०] लाँघने, पार जानेका साधन; पुल।

लंघना–*वि० जिसने लंघन किया हो, भूखा। स० क्रि० लाँघना, डाँकना। स्त्री० [सं०] उपेक्षा, अवमानना।

लंघनीय–वि० [सं०] लाँघनेके योग्य; उल्लंघन करने योग्य।

लँघाना–स० क्रि० पार उतारना या करना।

लंघित–वि० [सं०] लाँघा हुआ; उल्लंघित; उपेक्षित।

लंजिका–स्त्री० [सं०] वेश्या।

लंठ–वि० मूर्ख; असभ्य, उजड्ड।

लँडूरा–वि० दुम कटा (पक्षी)।

लंतरानी–स्त्री० [अ०] डींग, आत्मप्रशंसा।

लंदराज-पु० एक तरहकी मोटी चादर।

लंप-पु० [अं० 'लैंप'] चिराग, दीपक।

लंपट-वि० [सं०] कामी, विषयी। पु० कामी पुरुष।

लंपटता-स्त्री० [सं०] कुकर्म; कामुकता।

लंब-पु० [सं०] किसी सरल रेखाके आधारपर समकोण बनानेवाली रेखा (परपेंडीक्यूलर); विपुन्न रेखाकी समानांतर एक रेखा (ज्यो०)। वि० लंबा। *स्त्री० दे० 'विलंब'। **-कर्ण**-वि० जिसके कान बड़े हों। पु० बकरा; हाथी; गधा; खरगोश; बाज। **-केश**-वि० जिसके बाल लटकते हों। **-ग्रीव**-पु० ऊँट। **-जठर**-वि० तोंदवाला। **-तड़ंग**-वि० [हिं०] ताड़सा लंबा।

लंबन-पु० [सं०] झूलनेकी क्रिया; अवलंब, आश्रय; कोई काम कुछ समयके लिए टल जाना, रुक जाना (अबेयेंस)।

लंबमान-वि० [सं०] दूरतक गया या फैला हुआ।

लंबर-पु० दे० 'नंबर'। **-दार**-पु० दे० 'नंबरदार'।

लंबा-वि० जिसके दोनों सिरे एक दूसरेसे दूर हों, जिसका विस्तार चौड़ाईसे अधिक हो (जैसे लंबा बाँस, रास्ता, सफर); जो अधिक ऊँचा हो (लंबा आदमी, पेड़); अधिक विस्तारवाला (समय कालमानके लिए-जैसे गरमीके दिन और जाड़ेकी रातें लंबी होती हैं); दीर्घ, परिमाणमें अधिक (जैसे लंबा खर्च)। **-चौड़ा**-वि० विस्तृत। **-सफर**-पु० दूरकी यात्रा; मृत्यु। मु० **-करना**-किसीको चलता या चित करना; दराज करना। **-बनना, -होना**-चल देना, भाग जाना। **-(बी) चौड़ी हाँकना**-डींग मारना। **-तानकर सोना**-बेफिक्र होकर सोना। **-तानना**-बेफिक्रीसे सो जाना; बेखबर होकर देरतक सोना। **-साँस भरना या लेना**-शोक-दुःखसे साँस लेना, आहें भरना।

लंबाई-स्त्री० लंबा होनेका भाव; लंबानका परिमाण।

लंबान-स्त्री० लंबाई। **-चौड़ान**-स्त्री० लंबाई-चौड़ाई।

लंबायमान-वि० [सं०] बहुत लंबा; लेटा हुआ।

लंबित-वि० [सं०] लटकता हुआ; अवलंबित; धँसा, डूबा हुआ; (पेंडिंग) (वह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंधमें अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चयकी) अवस्थामें हो।

लंबू-वि० लंबी टाँगोंवाला (आदमी,-व्यंग्यमें)।

लंबोतरा-वि० कुछ-कुछ लंबा, लंबाई लिये हुए।

लंबोदर-पु० [सं०] गणेश। वि० बड़ी तोंदवाला; पेटू।

लंबोष्ठ-पु० [सं०] ऊँट। वि० लंबे ओठवाला।

ल-पु० [सं०] इंद्र; पृथ्वीबीज (तंत्र)।

लउ*-स्त्री० लौ, लगन।

लउआ†-पु० लौआ।

लउकी†-स्त्री० लौकी।

लउटी*-स्त्री० लकुटी।

लकड़दादा-पु० परदादासे बड़ा दादा।

लकड़बग्घा-पु० भेड़ियेकी जातिका एक जंगली जानवर।

लकड़हारा-पु० जंगल आदिसे लकड़ियाँ तोड़कर बेचनेवाला।

लकड़ा-पु० लकड़ीका बड़ा और मोटा कुंदा।

लकड़ाना†-अ० क्रि० सूखकर लकड़ीकी तरह सख्त हो जाना; बिना मांसका हो जाना, हाड़-हाड़ हो जाना, बिलकुल दुबला हो जाना।

लकड़ी-स्त्री० पेड़का कोई भी सूखा हुआ भाग, शाखा, टहनी आदि; मेज, कुर्सी आदि बनाने या जलानेके लिए काटकर सुखाया हुआ पेड़; ईंधन; लाठी, बैसाखी; गतका; पटा, बिनवट। मु० **-चलना**-लाठी चलना, मार-पीट होना। **-देना**-मुरदा जलाना। **-सा**-बहुत दुबला। **-होना**-दुबला और कमजोर होना।

लक़दक़-पु० [फ़ा०] चटियल मैदान, बीरान बंजर, वह मैदान जहाँ पेड़-पौधे और घास न हो।

लक़ब-पु० [अ०] गुण, योग्यता या पद-सूचक नाम, पदवी।

लक़लक़-पु० [अ०] लंबी टाँग और गर्दनका एक जल-पक्षी, सारस। वि० लंबी टाँगोंवाला, दुबला-पतला (आदमी)।

लक़वा-पु० [अ०] एक बीमारी जिसमें मुँह टेढ़ा हो जाता है और अन्य अंगोंपर भी इसका असर होता है; एक नाडी-संबंधी रोग जिसके कारण प्रभावित अंग निश्चेतन और शक्तिहीन हो जाता है, पक्षाघात, फालिज। मु० **-मारना**-लकवा रोगसे ग्रस्त होना।

लकसी-स्त्री० एक प्रकारकी लग्गी।

लकीर-स्त्री० कागज, स्लेट आदिपर खींचा हुआ लंबा निशान, रेखा; जमीनपर उँगली आदिसे बनायी हुई लंबी रेखा; साँपकी गतिका चिह्न; धारी; छकड़ों और गाड़ियोंके पहियोंका निशान; कतार, क्रम; पंक्ति। मु० **-का फकीर**-पुरानी रीतियोंपर आँख मूँदकर चलनेवाला। **-पर चलना**-पुराने तरीकेपर चलना। **-पीटना**-पुरानी प्रथाओंपर चलना; पछताना।

लकुच-पु० [सं०] बड़हर; * दे० 'लकुट'।

लकुट-पु० एक पेड़; [सं०] छड़ी; लाठी।

लकुटिया, लकुटी*-स्त्री० छड़ी।

लकुरी*-स्त्री० लकुटी, लकड़ी।

लक्कड़-पु० दे० 'लकड़ा'।

लक्का-पु० [फ़ा० 'लक़ा'] चील; गिद्ध; एक कबूतर जिसकी पूँछ पंखेकी तरह और ऊपर उठी होती है तथा गर्दन पीछेको झुकी होती है। **-कबूतर**-पु० नाचकी एक मुद्रा जिसमें नर्तक कमरके बल बगलसे झुककर सिरको जमीनके समीपतक ले जाता है; दे० 'लक्का'।

लक्खी-पु० घोड़ोंका एक भेद; लखपती। वि० लाखके रंगका।

लक्तक-पु० [सं०] अलक्तक, महावर; लत्ता, चिथड़ा।

लक्ष-वि० [सं०] सौ हजार। पु० सौ हजारकी संख्या, १०००००; निशान, चिह्न; पैर; मोती; बहाना; अस्त्रका संहार-विशेष; दे० 'लक्ष्य'। **-पति**-पु० लखपती। **-वेधी(धिन्)**-वि० निशानेका वेध करनेवाला।

लक्षण-पु० [सं०] विशेषता-सूचक शब्द; शरीरस्थ रोग-सूचक चिह्न; शुभाशुभकी सूचना देनेवाले अंगस्थित चिह्न (सामुद्रिक); शरीरपर स्थित विशेष प्रकारका काला दाग, लच्छन; निर्धारित दर; लक्ष्य, उद्देश्य; प्रस्तुत विषय; नाम; दर्शन; परिभाषा; चाल-ढाल; दे० 'लक्ष्मण'; सारस पक्षी। वि० बतलानेवाला, सूचक। **-कर्म(न्)**-पु० गुणोंका वर्णन; परिभाषा। **-ज्ञ**-वि० शरीरपरके चिह्नोंको जाननेवाला। **-भ्रष्ट**-वि० अच्छे चिह्नोंसे वंचित,

भाग्यहीन। **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद जिसमें एकका लक्षण दूसरेको प्राप्त हो जाता है।

लक्षणा–स्त्री० [सं०] वह शब्दशक्ति जो सामान्य अर्थसे भिन्न अर्थ प्रकट करती है, अभिप्रेत अर्थ प्रकट करनेवाली शब्दशक्ति; लक्ष्य, उद्देश्य; हंसी; सारसी।

लक्षणी(णिन्)–वि० [सं०] चिह्न या लक्षणवाला; लक्षणोंका पारखी, जोननेवाला।

लक्षना*–अ० क्रि० दिखाई पड़ना। स० क्रि० देखना। स्त्री० दे० 'लक्षणा'।

लक्षि*–स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'। पु० दे० 'लक्ष्य'।

लक्षित–वि० [सं०] देखा हुआ; अनुमानतः समझा, जाना हुआ; लक्षण, चिह्नवाला। **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद।

लक्षिता–स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका परपुरुष-प्रेम प्रकट हो गया हो।

लक्षितार्थ–पु० [सं०] लक्षणाशक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ।

लक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] अच्छे चिह्नोंवाला।

लक्ष्म(न्)–पु० [सं०] चिह्न; दाग; विशेषता।

लक्ष्मण–पु० [सं०] सुमित्रासे उत्पन्न दशरथके पुत्र; चिह्न।

लक्ष्मणा–स्त्री० [सं०] एक पुत्रदा जड़ी, श्वेत कंटकारी।

लक्ष्मी–स्त्री० [सं०] एक देवी जो धनकी अधिष्ठात्री मानी जाती है (समुद्रमंथनसे प्राप्त १४ रत्नोंमें एक यह भी थी); महालक्ष्मी, कमला, श्री, लोकमाता; सुंदरता, शोभा; प्रभुशक्ति; चंद्रमाकी ग्यारहवीं कला; अभ्युदय; सौभाग्य; सफलता; वीरांगना; गृह-स्वामिनी। **–कांत**–पु० विष्णु; नरेश। **–नाथ**–पु० विष्णु। **–निधि**–पु० जनकका पुत्र। **–पति**–पु० विष्णु; राजा। **–पुत्र**–पु० धनी आदमी। **–पूजा**–स्त्री० लक्ष्मीके पूजनका त्योहार जो दीपावलीके दिन होता है। **–फल**–पु० श्रीफल, बेल। **–रमण, –वल्लभ**–पु० विष्णु।

लक्ष्मीवान्(वत्)–वि० [सं०] धनवान्, संपत्तिमान्।

लक्ष्मीश–पु० [सं०] विष्णु; आमका पेड़; संपन्न व्यक्ति।

लक्ष्य–पु० [सं०] निशाना लगानेकी वस्तु (विंदु, निश्चित स्थान, पशु या अन्य कोई जीव जिसपर निशाना लगाया जाय); निशाना; अभीष्ट वस्तु, उद्देश्य; अनुमानका विषय, अनुमेय; लक्षणाशक्तिसे प्राप्त अर्थ; व्याज, बहाना। **–भेद**–पु० स्थिर या गतिशील लक्ष्यका (जैसे–दौड़ते हुए मृग, उड़ते हुए पक्षीका) भेदन करना। **–वेध**–पु० दे० 'लक्ष्य-भेद'। **–वेधी(धिन्)**–पु० उड़ते या दौड़ते जीवोंका लक्ष्यभेद करनेवाला। **–सिद्धि**–स्त्री० उद्देश्यकी प्राप्ति। **–हा(हन्)**–पु० बाण।

लक्ष्यार्थ–पु० [सं०] शब्दकी लक्षणा-शक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ।

लखघर, लखाघर*–पु० दे० 'लाक्षागृह'।

लखन*–पु० रामानुज लक्ष्मण। स्त्री० देखनेका भाव।

लखना*–स० क्रि० देखना; समझना; ताड़ जाना।

लखपती–पु० लाखों रुपयोंका मालिक; बहुत धनी आदमी।

लखपेड़ा–वि० लाख, अधिक पेड़ोंवाला (बाग)।

लखराउँ, लखरावँ–पु० लाख पेड़ोंवाला बाग, बहुत बड़ा बाग।

लखलुट*–वि० लाखों लुटा देनेवाला, अपव्यय करनेवाला।

लख़लख़ा–वि० [अ०] अंबर, कस्तूरी, अगर आदिका योग जो बेहोशी दूर करनेके काम आता है; वह पात्र जिसमें यह चीज रखी जाती है।

लखाइ*–स्त्री० पहचान।

लखाउ*–पु० दे० 'लखाव'।

लखाना*–अ० क्रि० दिखाई देना। स० क्रि० दिखाना; सुझाना, अनुमान कराना।

लखाव*–पु० पहचान, चिह्न; निशानी, पहचानकी चीज।

लखिमी*–स्त्री० लक्ष्मी।

लखिया*–पु० लखनेवाला।

लखी–पु० लाखके रंगका घोड़ा, लाखी।

लखुआ, लखुवा†–पु० गेहूँका एक रोग, लाखा, लाही।

लखेदना*–स० क्रि० खदेड़ना।

लखेरा–पु० लाखकी चूड़ियाँ बनानेवाला।

लखौट*–स्त्री० लाखकी चूड़ियाँ।

लखौटा–पु० लिखावट; लेख-पत्र; * सिंदूरकी डिबिया; एक सुगंधित लेप; लाखकी चूड़ी।

लखौरी–स्त्री० भँवरीका घर; पुराने ढंगकी छोटी और पतली ईंट; किसी देवताको उसके प्रिय तरुका पत्ता, फूल एक लाखकी संख्यामें चढ़ाना।

लग*–अ० तक, पर्यंत; समीप, पास; लिए, वास्ते; संग, साथ; के समान। स्त्री० प्रेम, लगन।

लगन–स्त्री० मन, प्रवृत्तिका किसी ओर लगना, झुकना, लौ, धुन; प्यार, प्रेम। पु० विवाहका मुहूर्त, लग्न; सहालग, जिन दिनों विवाह आदि होते हैं वे दिन; [फा०] मोमबत्ती जलानेकी एक थाली; आटा गूँधने, मिठाई आदि रखनेकी थाली। **–पत्री**–स्त्री० विवाह-तिथि-सूचक चिट्ठी (जिसमें विवाहका दिन, मुहूर्त निश्चित किया जाता है)। **मु०–धरना**–विवाहका मुहूर्त ठहराना।

लगनवट*–स्त्री० प्रेम, लगन।

लगना–* पु० एक मृग। अ० क्रि० जुड़ना, किसी चीजमें दूसरी चीजका जोड़ा जाना; सटना; जड़ा जाना, सिया जाना; रगड़ खाना; ...से मारा-पीटा जाना; भिड़ना; रगड़से छिल जाना, कट जाना; गड़ना, धसना, चुभना; बंद होना; तलपर पहुँचना; पकड़ना, संयोग होना; चाट, चस्का पड़ना; हुज्जत करना; प्रभाव, असर करना; हानिकर प्रभाव होना; ...का असर करना; अनुभव होना, जान पड़ना; ...का पीछा करना; ...का आतंक होना; ...का बंसीमें फँसना; पीछा करना, साथ धरना; पद, संबंध, रिश्ता होना; काम आना, खर्च होना; सो जाना; प्रेम होना; दिलचस्पी होना; जलन, चुनचुनाहट करना; आरंभ होकर जारी रहना; कमजोर, कृश होना; नशीली चीजोंका दिलोदिमागपर तेज असर होना; फल आदिका सड़ना; फलीभूत होना; छूना, समीप जाना; छेड़छाड़ करना; बदलेमें जाना; छोर, ठिकानेपर पहुँचना; पौधोंका उगना, जमना; फलना; काममें लाना; दुहा जाना, दूध देते रहना; बाजी, दाँव रखना; छपना, निशान होना; निश्चित कार्य, स्थानपर पहुँचना; होना; लेप किया जाना; सन जाना, लिपट जाना; बिछना; जारी होना; दरकार, आवश्यक होना; सजना; व्यवस्था होना; सफेद होना;

पानी जल जानेके बाद पकनेवाले पदार्थका तहमें सटकर जल जाना; मिलना;···में लोगोंका उपस्थित होना; देयका निश्चित होना; आरोप किया जाना; जलना; रोशनी होना; ठीक बैठना (कुंजी); हिसाब होना; का ठहराव करना; ताकमें रहना; जानवरोंका जोड़ा लगना; प्रवृत्त होना। **लगती बात**–चुभने, अखरनेवाली बात, चुटीली बात। **लगे हाथ, हाथों**–साथ ही, इसी सिलसिलेमें।

लगनि*–स्त्री० दे० 'लगन'।

लगभग–अ० करीब-करीब।

लगर*–पु० एक शिकारी चिड़िया, बाज।

लगलग*–वि० कमजोर, दुबला-पतला, लकलक।

लगव*–वि० बेकार, झूठ।

लगवाना–स० क्रि० लगानेका काम दूसरेसे कराना।

लगवार*–पु० यार, उपपति।

लगातार–अ० निरंतर,बराबर, बिना रुके हुए,सिलसिलेसे।

लगान–पु० राजा,सरकार, जमींदारको मिलनेवाला भूमि-कर, पोत, राजस्व; वह स्थान जहाँ बोझिया बोझ रखकर सुस्ताये; नावोंके ठहरनेका स्थान; लगने, लगानेकी क्रिया।

लगाना–स० क्रि० जोड़ना, दो चीजोंको जोड़ना; एकमें करना, संलग्न करना; सजाना, सिलसिलेसे रखना; रोपना; सटाना; कोई चीज पोतना, मलना; कायम करना, व्यवस्था करना; अनुभव करना; किसीमें नयी आदत डालना; सड़ाना; भीड़, मजमा कर लेना; अपराधी बनाना; दातव्य ठहराना; गाड़ना, ठोकना; नियुक्त करना; दूध दुहना; अपने साथ, पीछे किसीको ले चलना; हिसाब करना; संबद्ध करना; चुगली करना; बंद करना; बाजी, दाँवपर रखना; अपने आपको किसी विषयमें बढ़ चढ़कर समझना; धारण करना, ओढ़ना; छुलाना, संपर्क कराना; ध्यान देना; पास पहुँचाना; नियत स्थानपर पहुँचाना; धार तेज करना, सान धरना; दाम कूतना, तय करना, ठहराना; बदलेमें देना, करना; चिह्नित करना; फैलाना, बिछाना; करना; खर्च करना; विचार करना। **–(ने) वाला**–वि० चुगलखोर, इधरकी उधर करनेवाला।

लगाम–स्त्री० [फा०] लोहेका दाँतेदार छड़ जो घोड़ेके मुँहमें लगा रहता है; इस छड़के सिरोंपर बँधी रस्सी, रास, बाग। **मु०–कड़ी करना**–घोड़ेकी चाल धीमी करना; कार्यादिका नियंत्रण करना। **–ढीली करना**–घोड़ेको मनचाही चाल चलने देना; कार्यादिका नियंत्रण न रखना। **(किसी चीज़की)–हाथमेँ लेना**–संचालन-सूत्र हाथमें लेना।

लगाय*–स्त्री० प्रेम, लगन–'तिनसों क्यों कीजिये लगाय'–सू०।

लग़ायत–अ० [अ०] अंततक (वाक्यमें 'से', 'तक'का अर्थ देता है)।

लगार*–स्त्री० सिलसिला, क्रम; लगन, प्रेम; घनिष्ठ संबंधी; भेद लेनेवाला; लगाव, संबंध; बराबर कोई काम करते जाना, बँधेज; वह स्थान जहाँ जुआरियोंको निश्चित ठिकानेका पता मिले।

लगालगी–स्त्री० लाग, प्यार; मेल-जोल; लगने, लगाने या उलझनेकी क्रिया।

लगाव–पु० संबंध, ताल्लुक़।

लगावट–स्त्री० संबंध; प्रेम, प्यार; रब्त-जब्त।

लगावन–स्त्री० रोटीके साथ खायी जानेवाली चीज,सालन; * लगाव, संबंध।

लगि*–अ० दे० 'लग'। स्त्री० लगन; दे० 'लग्गी'।

लगी–स्त्री० मेल, प्रेम; ख्वाहिश; भूख; आग; *दे०'लग्गी'।

लगुड, लगुर, लगुल–पु० [सं०] लाठी; दंड।

लगूर, लगूल*–स्त्री० दुम।

लगौंहाँ–वि० लगनेवाला, रिझवार।

लग्गा–पु० अँकसीदार लंबा-पतला बाँस; नाव चलानेका बाँस; काम शुरू करना, काममें हाथ डालना।

लग्गी–स्त्री० छोटा लग्गा।

लग्घड़–पु० बाज; एक तरहका चीता, लकड़बग्घा।

लग्घी–स्त्री० दे० 'लग्गी'।

लग्न–पु० [सं०] राशिविशेषके उदयकालका दिनांश (ज्यो०); किसी कामको करनेका शुभ मुहूर्त (ज्यो०); विवाहका समय; व्याह। वि० लगा हुआ, जुड़ा हुआ। **–कुंडली**–स्त्री० जन्मपत्री, जन्मकुंडली। **–पत्र**–पु०, **–पत्रिका**–स्त्री० वह पत्र जिसमें विवाहकर्म और उसकी तिथि आदिका उल्लेख हो।

लग्नक–पु० [सं०] प्रतिभू, जामिन; रागविशेष।

लग्नेश–पु० [सं०] लग्नका स्वामी ग्रह (ज्यो०)।

लघिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] एक सिद्धि जिसके प्रभावसे सिद्ध पुरुष यथेष्ट छोटा, हलका हो सकता है; लघुत्व।

लघु–वि० [सं०] फुर्तीला; हलका; छोटा; निर्बल; तुच्छ, क्षुद्र; कम, अल्प; निस्सार; अस्थिरचित्त; स्वस्थ; ह्रस्व, एक मात्रावाला। पु० एक मात्राके स्वर–अ, इ, उ, ऋ (व्या०); एक मात्रा (छंद)। **–काय**–पु० बकरा। वि० छोटे शरीर-वाला। **–गति**–वि० तेज चलनेवाला। **–चेता(तस्)**–वि० नीच, नीचाशय। **–पाक**–वि० सुपाच्य; जल्द पकनेवाला। **–लिपि**–स्त्री० (शार्ट हैंड) दे० 'शीघ्र-लिपि'। **–वाद-न्यायालय**–पु० (स्माल कॉज कोर्ट) छोटे वादों(मामलों, मुकदमों)पर विचार करनेवाली अदालत। **–शंका**–स्त्री० पेशाब करना। **–हस्त**–वि० तेजीसे बाण चलानेवाला। पु० अच्छा धनुर्धर।

लघुतम–वि० [सं०] सबसे छोटा। **–समापवर्त्य**–पु० वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओंसे पूरी-पूरी बँट जाय।

लघूकरण–पु० (कम्यूटिंग) कड़ी सजा घटाकर हलकी कर देना, दंडादेशको कुछ मुलायम कर देना।

लघ्वी–स्त्री० [सं०] बेर नामक फल; असबरग; छोटा रथ; कोमल अंगोंवाली पतली स्त्री।

लच–स्त्री० लचकन, लचन; किसी वस्तुके दबने, झुकनेका गुण।

लचक, लचकन–स्त्री० लचकनेका भाव या क्रिया।

लचकना–अ० क्रि० लंबी चीजका दबाव आदिसे झुकना; स्त्रियोंकी कमरका नखरे-नजाकतसे झुकना; चलते समय स्त्रियोंका प्रायः झुक-झुककर चलना।

लचकनि*–स्त्री० लचक; लचीलापन।

लचकाना—स० क्रि० झुकाना, लचाना।

लचकीला—वि० दवने या लचनेवाला, लचकदार।

लचकौंहाँ*—वि० लचकीला, लचकनेवाला, झुका हुआ।

लचन, लचनि—स्त्री० दे० 'लचक'।

लचना—अ० क्रि० दे० 'लचकना'; लपना।

लचलचा—वि० लचकदार।

लचाना—स० क्रि० लचकाना।

लचार*—वि० दे० 'लाचार'।

लचारी*—स्त्री० दे० 'लाचारी'; † ग्रामगीतोंका एक भेद; * वड़ोंको दी जानेवाली भेंट, उपायन, नजर।

लचीला—वि० लचनेवाला, जो आसानीसे मुड़ सके।

लच्छ*—पु० बहाना, व्याज; निशानेके लिए निश्चित स्थान, वस्तु; सौ हजारकी संख्या, लाख। स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छण, लच्छन*—पु० लक्षण, चिह्न; लक्ष्मण।

लच्छना*—स्त्री० दे० 'लक्षणा'। स० क्रि० अच्छी तरह देखना।

लच्छमी—स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छा—पु० तरतीबदार तार, डोरेका गुच्छा, झुप्पा (रेशम, सूत आदिका लच्छा); लंबे, पतले, वारीक कटे हुए टुकड़े; लच्छेके ढंगकी बनायी हुई कोई चीज; मैदेसे बनी एक मिठाई जो सूतसी लंबी और रेशेदार होती है; पाँवका एक गहना। **—(च्छे)दार**—वि० जिसमें लच्छे पड़े हों (कोई खानेकी चीज); मजेदार (बात)।

लच्छि*—पु० लाख, एक लाखकी संख्या। स्त्री० लक्ष्मी। **—नाथ, —निवास**—पु० विष्णु।

लच्छित*—वि० लक्ष्य, चिह्नित किया हुआ; लक्षणयुक्त; आलोचित।

लच्छिमी*—स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छी—पु० घोड़ोंका एक भेद। स्त्री० अंटी, ऊन, कलाबत्तू, सूत आदिका लपेटा हुआ गुच्छा; * दे० 'लक्ष्मी'—'लच्छी-सी जहँ मालिन बोलै'—सू०।

लछन*—लक्षण; लक्ष्मण।

लछमन—पु० दे० 'लक्ष्मण'। **—झूला**—पु० रस्सों, तारोंका लटकनेवाला पुल; ऋषिकेशके पासका एक पुल।

लछमी, लछिमी*—स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लछारा*—वि० लंबा; वड़ा।

लज़*—स्त्री० लज्जा, शर्म।

लजना*—अ० क्रि० शर्मिंदा, लज्जित होना।

लजवाना—स० क्रि० लज्जित, शर्मिंदा करना।

लजाधुर†—वि० शर्मीला, बहुत लजानेवाला।

लजाना—अ० क्रि० अपने अनुचित, भद्दे आचरणका अनुभव करके संकुचित होना, शर्माना। स० क्रि० लज्जित करना।

लजारू*—पु० दे० 'लजालू'।

लजालू—पु० स्पर्शसे सिकुड़ जानेवाला एक पौधा।

लजावनहारा*—पु० लज्जित करनेवाला।

लजावना*—स० क्रि० दे० 'लजवाना'।

लजियाना*—अ० क्रि० दे० 'लजाना'। स० क्रि० लजवाना, लज्जित करना।

लज़ीज़—वि० [अ०] स्वादिष्ट, लज्जतदार; प्यारा।

लजीला—वि० शर्मीला, लज्जाशील।

लजुरी†—स्त्री० रस्सी, डोर, लेजुर (कुएँसे पानी भरनेकी)।

लजोर*—वि० लज्जाशील।

लजोहा*—वि० लज्जाशील, शर्मीला।

लजौना*—वि० शर्मीला; लज्जित करनेवाला।

लजौहाँ*—वि० लज्जाशील।

लज़्ज़त—स्त्री० [अ०] स्वाद, मजा; सुख। **—दार**—वि० स्वादिष्ठ, जायकेदार।

लज्जा—स्त्री० [सं०] स्वभाव या अपने किसी अनुचित आचरणके कारण हुई मनकी संकोचपूर्ण अवस्था, व्रीडा; मान, प्रतिष्ठा। **—कर, —कारी (रिन्), —प्रद, —वह**—वि० लज्जाजनक, शर्मिंदा करनेवाला। **—शील**—वि० शर्मीला; विनम्र। **—शून्य, —हीन**—वि० जिसमें लज्जा न हो, निर्लज्ज।

लज्जालु—पु० [सं०] लजालू नामका पौधा; वि० लज्जाशील।

लज्जावंत—वि० लजीला। पु० लजालू, लाजवंती।

लज्जावान्(वत्)—वि० [सं०] लज्जाशील।

लज्जित—वि० [सं०] लजाया हुआ, लज्जायुक्त, शर्मिंदा।

लट—स्त्री० नीचे लटकनेवाले सिरके लंबे वालोंका एक गुच्छा; उलझे हुए बालोंका गुच्छा; एक बेंत। * लपट। **—जीरा**—पु० चिचड़ा।

लटक—स्त्री० लटकन; झुकाव; सुंदर चाल, अंग-भंगी।

लटकन—पु० लटकनेकी क्रिया; लटकनेवाली चीज; सुंदर चाल; नाकका एक गहना; सिरपेचमें लगा हुआ रत्नगुच्छ।

लटकना—अ० क्रि० ऊँची जगहके आश्रयसे नीचेकी ओर अवलंबित होना; ऊँची जगहसे किसी चीजका आधारच्युत होकर झूलना; टँगना; कुछ चल-विचल होना; किसीके आसरेमें रहना; काम पूरा न होना, देर होना। **लटकती चाल**—बल खाती हुई सुंदर चाल।

लटकवाना—स० क्रि० लटकानेका काम दूसरेसे कराना।

लटका—पु० टोटका; रोग आदिका छोटा नुसखा; गति, ढब; बात-चीतका बनावटी ढंग; एक तरहका चलता गाना।

लटकाना—स० क्रि० लटकनेमें प्रवृत्त करना; टाँगना; किसी खड़ी वस्तुको किसी ओर झुकाना; इंतजार कराना।

लटकीला—वि० बल खानेवाला, लचकनेवाला, झूमता हुआ।

लटकौआ, लटकौवा—वि० लटकनेवाला।

लटना—अ० क्रि० थककर गिरना; रोग, परिश्रम आदिसे कमजोर पड़ जाना; ढीला, सुस्त पड़ना; व्याकुल होना; * इच्छा करना, ललचाना; अनुरक्त, आसक्त होना—'केहरि कोटि लटैं कटि ऊपर'—भाववि०।

लटपट—वि० दे० 'लटपटा'।

लटपटा—वि० गिरता-पड़ता; ढीला-ढाला, सरका हुआ; टूटा-फूटा (शब्द); अंट-संट, जो व्यवस्थित न हो; शिथिल; बेवस; थका हुआ; न बहुत गाढ़ा, न पतला, लुटपुटा; मला-मसला, गींजा हुआ, सलवटदार (कपड़ा)।

लटपटाना—अ० क्रि० कमजोरी, नशे आदिके कारण सीधे न चल पाना, लड़खड़ाना, गिरना-पकड़ना; विचलित, अस्थिर होना; चूक जाना, ठीक न चल सकना; मोहित हो जाना; अनुरक्त, आसक्त होना।

लटा*—वि० दुवला; लुच्चा; पतित; तुच्छ; लंपट; बुरा

–'(चाँदनी) लगै चोर चितमें लटी घटि रहीम मन आइ' –रहीम ।

लटापटी–स्त्री० लटपटाना; लड़ाई-झगड़ा; भिड़ंत; मिश्रण ।

लटापोट*–वि० 'लहालोट', मुग्ध, आसक्त ।

लटिया–स्त्री० लच्छी, आँटी ।

लटी–स्त्री० गप, झूठी बात–'अरु झूठनके बदन निहारत मारत फिरत लटी'–सू०; बुरी बात; वेश्या; साधुनी ।

लटुआ*–पु० दे० 'लट्टू' ।

लटुरी*–स्त्री० दे० 'लटूरी' ।

लटू*–पु० दे० 'लट्टू' ।

लटूरी*–स्त्री० सिरके बालोंका लटकनेवाला गुच्छा,अलक।

लट्टू–पु० लकड़ीका चढ़ाव-उतारदार एक प्रकारका गोल बट्टा जिसे जमीनपर फेंककर नचाते हैं; बिजलीका बल्ब । **मु०–होना**–मोहित, मुग्ध होना ।

लट्ठ–पु० मोटी लाठी । **–बंद**–पु० लठैत, लाठी बाँधनेवाला आदमी । **–बाज़**–वि० लाठी चलानेवाला; लाठी बाँधनेवाला । **–मार**–वि० कठोर, कड़ी (बात) । **मु०–लिये फिरना**–लाठी लेकर चलना; किसी वस्तु, सिद्धांत, व्यक्तिका बराबर विरोध करना; विरुद्ध आचरण करना (जैसे–अक्लके पीछे लट्ठ लिये फिरना) ।

लट्ठा–पु० जमीन नापनेका बाँस जो साढ़े पाँच हाथ लंबा होता है; लकड़ीका लंबा टुकड़ा, शहतीर; लकड़ीका खंभा; छाजन, पाटनमें लगा बल्ला; गाढ़ा मोटा कपड़ा, गफ मारकीन।

लठिया†–स्त्री० लाठी, डंडा ।

लठैत–वि० लाठी चलानेमें कुशल, लट्ठबाज ।

लड़ंत–स्त्री० भिड़ंत; मुकाबला ।

लड़–स्त्री० किसी वस्तुकी क्रमबद्ध–गोल, लंबाईमें संलग्न पंक्ति; रस्सीके एकमें मिलाकर बटे हुए तारोंमेंसे कोई एक; पंक्ति; कतार, क्रम; फूलों, बौरोंका छड़ीके ढंगका गुच्छा ।

लड़क–पु० 'लड़का' का समासमें व्यवहृत रूप । **–खेल,–खेलवाड़**–पु० बच्चोंका खेल;मामूली बात, आसान काम । **–पन**–पु० बालावस्था; बच्चोंकीसी चंचलता । **–बुद्धि**–स्त्री० बच्चों जैसी बुद्धि, अपरिपक्व मति ।

लड़कई†–स्त्री० लड़कपन; नादानी; चिलबिलापन ।

लड़का–पु० बालक (जो सोलह वर्षसे कम वयका हो); पुत्र । **–बाला**–पु० संतान, औलाद; परिवार, पुत्र-कलत्रादि ।**–(कों)का खेल**–आसान या महत्त्वहीन काम ।

लड़काई†–स्त्री० दे० 'लड़कई' ।

लड़किनी†–स्त्री० दे० 'लड़की' ।

लड़की–स्त्री०बालिका (जिसकी अवस्था १६ वर्षसे कम हो); पुत्री, बेटी ।**–वाला**–पु० कन्याका पिता; कन्यापक्ष ।

लड़कोर, लड़कौरी–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी गोदमें बच्चा हो ।

लड़कैयाँ†–स्त्री० लड़कपन ।

लड़खड़ाना–अ० क्रि० डगमगाना, हिलना-डुलना; झोंका खाकर गिर पड़ना; विचलित होना; चूक जाना ।

लड़खड़ी–स्त्री० लड़खड़ाहट, डगमगाहट ।

लड़ना–अ०क्रि० एक पदार्थ, व्यक्तिका दूसरे पदार्थ व्यक्तिसे टक्कर खाना, भिड़ जाना; कुश्ती करना, एक दूसरेको पटकनेका प्रयत्न करना; एक दूसरेपर प्रहार करना; झगड़ा, वाग्युद्ध करना; बहस करना; प्रतिपक्षकी चालोंको बेकार करनेके लिए कानूनी कोशिश करना; मेल खाना, पूरा पड़ना, अनुकूल पड़ जाना; संयुक्त होना ।

लड़बावरा(ला)–वि० दुर्ललित, दुलरुआ; उजड्ड और नासमझ, लड़कपन (बुरे अर्थमें)से भरा हुआ; गँवार ।

लड़बौरा–वि० दे० 'लड़बावरा' ।

लड़ाई–स्त्री० प्रहार, चोट करनेवालेपर प्रहार, चोट करना, युद्ध; दो सेनाओं, राज्योंका एक दूसरेपर आक्रमण, संग्राम; कुश्ती, मल्लयुद्ध; झगड़ा, कलह; बहस; टक्कर; कानूनी दाँव-पेच करना; वैर, अनबन । **–बंदी**–स्त्री० युद्ध या लड़ाईका आपसके समझौतेसे बंद कर दिया जाना ।

लड़ाका–वि० लड़नेवाला, झगड़ालू; पु० सैनिक, योद्धा ।

लड़ाना–स० क्रि० एक दूसरेमें लड़ाई कराना; झगड़े, कलहमें लगाना; फेंकना, डालना; फँसाना, उलझाना; सफलताके लिए सोच-विचार करना; एक चीजको दूसरी चीजसे सवेग भिड़ाना; प्यार, दुलार करना; * प्रेमसे देना ।

लड़ायता*–वि० लड़ैता, प्यारा ।

लड़ी–स्त्री० कतार, पंक्ति; छड़ीके रूपका गुच्छा; एक साथ मिलाकर बटे हुए रस्सी, गुच्छेके तार; एक सीधमें गुँथी, लगी हुई किसी चीजकी माला, पंक्ति ।

लड़ीला–वि० लाड़ला, प्यारा ।

ल.डुआ, ल.डुवा–पु० लड्डू ।

लड़ैता–वि० लड़नेवाला, लड़ाका; लाड़ला ।

लड्डु, लड्डुक–पु० [सं०] दे० 'लड्डू ।

लड्डू–पु० पिंडीके आकारकी बनी हुई एक मिठाई, मोदक । **मु० (मनके)–खाना**–ऐसे लाभकी कल्पना करना जिसका होना कठिन हो ।

लड्याना*–स० क्रि० अधिक लाड़-प्यार करना ।

लढ़ा*–पु० बैलगाड़ी–'जातहिं दैहैं लदाय लढ़ा भरि'–सुदामा० ।

लढ़िया†–स्त्री० छोटी बैलगाड़ी ।

लत–स्त्री० बुरी आदत, बान, टेव; 'लात'का समासमें व्यवहृत रूप ।**–खोर,–खोरा**–वि० हमेशा लात खानेवाला, नीच । पु० दास; चौखट, देहली; पायंदाज, दरवाजेपर रखा हुआ पैर पोंछनेका कपड़ा आदि । **–हा**–वि० लात मारनेवाला (घोड़ा, बैल आदि) ।

लतड़ी–स्त्री० दे० 'लतरी' ।

लतरी–स्त्री० मोट, केसारी; एक तरहकी चप्पल ।

लता–स्त्री० [सं०] जमीन या किसी आधारपर फैलनेवाला पौधा, बेल; कोमल शाखा, कांड; माधवी, जूही, जाती; इ० । **–कुंज**–पु० लतासे घिरा, छायामय स्थान । **–गृह,–भवन**–पु० लताओंसे मंडपकी तरह निर्मित स्थान। **–पता**–पु० [हिं०] लता और पत्ते, पेड़-पौधे; हरियाली; जड़ी-बूटी । **–मंडप**–पु० लताओंको सघन करके बनाया हुआ घर, स्थान । **–वितान**–पु० लताओंसे बना हुआ मंडप ।

लताड़–स्त्री० दे० 'लथाड़' ।

लताड़ना–स० क्रि० रौंदना, कुचलना; लातसे मारना;

फटकारना; हैरान करना, थकाना ।

लतिका–स्त्री० [सं०] बेल, छोटी लता; मोतियोंकी लड़ी ।

लतियर, लतियल–वि० लतखोर ।

लतियाना–स० क्रि० रौंदना; लातोंसे खूब मारना ।

लतीफ़–वि० [अ०] बारीक; साफ-सुथरा; जायकेदार; बढ़िया; सुपाच्य । **–मिज़ाज**–वि० खुशमिजाज ।

लतीफ़ा–पु० [अ०] चुटकुला, हास्यरसकी लघु कहानी; हँसी-मजाककी बात; अनूठी बात । **–बाज़**–वि० चुटकुले छोड़नेवाला, विनोदी ।

लत्ता–पु० फटा-पुराना कपड़ा; कपड़ेका टुकड़ा ।

लत्ती–स्त्री० मारनेके लिए चलाया हुआ पैर (घोड़े, बैल आदिका); लात मारना; कपड़ेकी लंबी धज्जी ।

लथपथ–वि० तर, भीगा हुआ; सना हुआ, लिपटा हुआ ।

लथाड़–स्त्री० पटककर घसीटना; पराजय; हानि; झिड़की ।

लथाड़ना–स० क्रि० कीचड़ आदि पोतकर गंदा करना; पछाड़ना; झिड़कना; रौंदना ।

लथेड़ना–स० क्रि० कीचड़ आदि लपेटना, सानना; गंदा करना; पटककर भूमिपर घसीटना, रगड़ना; पटकना, पछाड़ना; थकाना, हैरान, परेशान करना; डाँटना-डपटना ।

लदना–अ० क्रि० भारयुक्त होना; किसी चीजसे किसी चीजका ढक, भर जाना; किसी भारी चीजका दूसरी चीजपर रखा जाना; सामान ले जानेवाली सवारियोंपर असबाब रखा जाना; कैद होना; मर जाना; गत होना, समाप्त होना । वि० बोझ ढोनेवाला ।

लदवाना–स० क्रि० लादनेका काम दूसरेसे कराना ।

लदाउ, लदाऊ*–पु० लदाव, भराव ।

लदान–स्त्री० (माल) लादनेकी क्रिया ।

लदाना–स० क्रि० 'लदवाना' ।

लदाव–पु० लादनेका काम; बोझ; छत आदिका पटाव; बिना कड़ी, धरनके ठहरनेवाली ईंटकी जोड़ाई ।

लदावना*–स० क्रि० लदवाना; माल लादकर ले जाना ।

लदुआ, लदुवा–वि० बोझ ढोनेवाला, लदुआ ।

लद्दू–वि० बोझ ढोनेवाला ।

लद्धड़–वि० सुस्त, काहिल । **–पन**–पु० ढिलाई, सुस्ती ।

लद्धना*–स० क्रि० पाना, भेंटना ।

लप–पु० लचीली छड़ीको तेजीसे हिलानेसे उत्पन्न शब्द; तलवार आदिकी चमककी चाल, तेजी; अंजलि; अंजलि-भर कोई वस्तु । **–झप**–वि० चंचल, अस्थिर; अधीर; तेज, फुर्तीला । स्त्री० तेजी; चंचलता; हाथकी सफाई ।

लपकना–अ० क्रि० झटपट चल पड़ना; तेजीसे जाना; किसीपर झपटना, टूट पड़ना, आक्रमण करना; कोई चीज पानेके लिए हाथ बढ़ाना ।

लपट–स्त्री० आगकी लौ, ज्वाला; तपी हुई हवा, आँच, गरमी; गंध; गंधपूरित वायुका झोंका; * झलक ।

लपटना–अ० क्रि० आलिंगन करना; सटना, लग्न होना; घिरना; लगा रहना; सूत आदिका लपेटा जाना ।

लपटा–पु० गीली और गाढ़ी चीज; कढ़ी; लेई ।

लपटाना†–स० क्रि० लिपटाना, चिपटाना; आलिंगन करना, गले लगाना; घेरना; सूत, डोर जैसी चीजसे फेरे डालकर घेरना, लपेटना । अ० क्रि० सटना, लगना; फँसना, उलझना; * लथपथ होना ।

लपटौआँ–वि० लिपटनेवाला; सटा हुआ । पु० दे० 'लपटौना' ।

लपटौना†–पु० एक तरहकी घास जिसकी बाल कपड़ेसे चिपक जाती है । वि० दे० 'लपटौआँ' ।

लपना–अ० क्रि० पतली, लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे लचना; झुकना; तेजीसे चलना; * ललचना; † हैरान, परेशान होना ।

लपलपाना–अ० क्रि० लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे झुकना; हिलना-डुलना; तलवार आदिका चमकना । स० क्रि० तलवार आदिको घुमाकर झुकाना; लंबी, पतली चीजको हिलाना-डुलाना; तलवार आदिको निकालकर चमकाना ।

लपलपाहट–स्त्री० किसी पतली, लचीली वस्तुके दबाव या झोंकसे झुकनेकी क्रिया; चमक ।

लपसी–स्त्री० थोड़ा घी डालकर बनाया हुआ आटेका पतला हलवा; लपटा, लेई ।

लपाना–स० क्रि० लचनेवाली चीजको तेजीसे घुमाकर झुकाना; आगे बढ़ाना ।

लपेट–स्त्री० लपेटनेकी क्रिया; फेरा; किसी चीजकी मोटाईका विस्तार; बल, ऐंठन; कपड़ेकी तह जो गठरी बाँधनेमें लगती है; चक्कर, उलझन; पकड़; कुश्तीका एक दावँ ।

लपेटन–स्त्री० लपेट; घुमाव, फेरा; उलझन, फँसाव; मरोड़, ऐंठन । पु० लपेटनेवाली चीज, बाँधने, घेरनेके काम आनेवाली चीज; वह चीज जो पैरमें उलझे ।

लपेटना–स० क्रि० सूत, कपड़े आदिको किसी चीजके चारों ओर फेरा, घेरा देकर लगाना, बाँधना; किसी चीजको तह लगाकर मोड़ना, समेटना; बेठन आदिमें बाँधना; समस्त शरीरको बटोरकर घेरना; काबू, पकड़में करना; चाल, गति बंद करना; झंझट, उलझनमें डालना, फँसाना; गाढ़ी, गीली, चिपकनेवाली चीजको मलना या पोतना ।

लपेटवाँ–वि० लपेटी हुई; लपेटने योग्य; लपेटकर बनी हुई; चाँदी सोनेके तार लपेटकर बनायी हुई; जिसका अर्थ गूढ़ हो; घुमाव-फिराववाला, चक्करदार ।

लप्पड़†–पु० दे० 'थप्पड़' ।

लफंगा–वि० [फा० 'लफ़ंग'] आवारा, शोहदा; बदमाश ।

लफना*–अ० क्रि० दे० 'लपना' ।

लफलफानि*–स्त्री० लपलपानेकी क्रिया; चमक ।

लफाना*–स० क्रि० दे० 'लपाना' ।

लफ़्ज़–पु० [अ०] शब्द; बात । **–ब-लफ़्ज**–अ० शब्दशः ।

लफ़्ज़ी–वि० [अ०] शाब्दिक, वाच्य । **–मानी**–पु० शब्दार्थ, वाच्यार्थ ।

लफ़्फ़ाज़–वि० [अ०] लच्छेदार बातें करनेवाला, अतिरंजना करनेवाला, बातूनी ।

लब–पु० [फा०] ओठ, होंठ, किनारा, तट । **–(बे)सड़क**–अ० सड़कके किनारे । **–(बो)लहजा**–पु० बोलनेका ढंग; उच्चारण और स्वराघातकी विशेषता । **मु०–खोलना**–बोलना, बात करना । **–पर आना**–होंठोंपर आना, कहा जाना । **–(बों)पर जान(दम)आना**–मरणासन्न होना ।

लबझना*–अ० क्रि० फँसना, उलझना ।

लबड़धौंधौं–स्त्री० व्यर्थका गुलगपाड़ा, हल्ला-गुल्ला; अंधेर, अव्यवस्था; अनीति; अन्याय; वेईमानी।

लबड़ना*–अ० क्रि० झूठ बोलना; गप मारना।

लबनी†–स्त्री० लंबी हाँड़ी जिसमें ताड़ी चुलायी जाती है।

लबरा*–वि० गप्पी; झूठा, झूठा बोलनेवाला।

लबलबी–स्त्री० बंदूकके घोड़ेकी कमानी।

लबादा–पु० [फा०] एक लंबा, ढीला-ढाला पहनावा, चोंगा; रुईदार चोंगा।

लबाब–वि० [अ०] खालिस, बेमेल। पु० सारांस, खुलासा; गूदा; मग्ज।

लबार†–वि० झूठा; गप्पी, बक्की।

लबारी–स्त्री० झूठ बोलना। * वि० चुगलखोर; झूठा।

लबालब–अ० मुँह या किनारेतक (भरा हुआ)।

लबेद–पु० रूढ़ि, रीति, लोकाचार, परंपरा।

लबेदी–स्त्री० छोटा, पतला डंडा; जबरदस्ती।

लब्ध–वि० [सं०] प्राप्त, मिला हुआ; भाग करनेसे प्राप्त (फल–गणित); अर्जित। **–काम**–वि० जिसकी वांछा पूरी हो गयी हो। **–कीर्ति,–नामा(मन्),–प्रतिष्ठ**–वि० प्रसिद्ध, यशस्वी। **–चेता(तस्),–संज्ञ**–वि० होशमें आया हुआ। **–विद्य**–वि० विद्वान्। **–सिद्धि**–वि० जिसको सिद्धि प्राप्त हो गयी हो।

लब्धि–स्त्री० [सं०] लाभ, प्राप्ति; भाज्यको भाजक द्वारा विभक्त करनेसे प्राप्त भागफल (गणित)।

लभनी†–स्त्री० दे० 'लबनी'।

लभ्य–वि० [सं०] पाने योग्य; उचित, न्याय्य।

लम–वि० 'लंबा'का समासगत रूप। **–गोड़ा,–टंगा**–वि० लंबी टाँगवाला। **–घिचा**–वि० लंबी गरदनवाला। **–छड़**–पु० लंबी बंदूक (पुराने ढंगकी); भाला, साँगा। वि० लंबा और पतला। **–छुआ**–वि० लंबोतरा। **–तड़ंग**–वि० लंबा-तगड़ा (आदमी)।

लमकना*–अ० क्रि० उत्सुक, उत्कंठित होना; लपकना।

लमधी†–पु० समधीका पिता।

लमाना*–स० क्रि० लंबा करना; दूरतक बढ़ाना। अ० क्रि० दूर बढ़, निकल जाना।

लय–स्त्री० स्वर; गानेकी धुन, शैली; सम (संगीत)। पु० [सं०] मिलना, एक वस्तुका दूसरीमें विलीन होना; ध्यानका एकाग्र होना; कार्यका कारणमें लीन होना; प्रकृतिका विपरिणाम, सृष्टिका प्रलयावस्थामें अव्यक्त हो जाना; लोप; क्रीड़ा; गाने और बाजेके स्वरोंका मेल; स्थैर्य, विश्राम; विश्रामस्थल; मानसिक निष्क्रियता; आलिंगन।

लर*–स्त्री० दे० 'लड़'।

लरकई*–स्त्री० लड़कपन, नादानी।

लरकना*–अ० क्रि० लटकना; झुकना; तिरछा होना।

लरका*–पु० दे० 'लड़का'।

लरकाना*–स० क्रि० लटकाना; झुकाना; तिरछा करना; हटाना, जरा इधर-उधर स्थित करना।

लरकिनी*–स्त्री० लड़की।

लरखरना*–अ० क्रि० दे० 'लड़खड़ाना'।

लरखरनि*–स्त्री० डगमगाहट; लड़खड़ाहट।

लरखराना*–अ० क्रि० दे० 'लड़खड़ाना'।

लरजना*–अ० क्रि० काँपना, हिलना-डुलना; दहल जाना, भयभीत होना; झेंपना।

लरज़ा–पु० [फा०] कँपकँपी; भूडोल; जूड़ी-बुखार।

लरझर*–वि० बहुत अधिक मात्रामें उपलब्ध; प्रचुर।

लरना*–अ० क्रि० दे० 'लड़ना'।

लरनि*–स्त्री० लड़ाई; होड़–'बदन बिधु जित्यो लरनि'–गीता०; लड़नेका तरीका।

लराई*–स्त्री० दे० 'लड़ाई'।

लराका*–वि०, पु० दे० 'लड़ाका।

लरिकई*–स्त्री० दे० 'लरिकाई'।

लरिकसलोरी*–स्त्री० लड़कोंका खेल, शरारत–'सूरदास प्रभु करत दिनहिं दिन ऐसी लरिकसलोरी'–सू०।

लरिका*–पु० दे० 'लड़का'।

लरिकाई*–स्त्री० बचपन, बाल्यावस्था; नादानी।

लरिकिनी*–स्त्री० लड़की।

लरिया–पु० दुपट्टा (ग्राम०)।

लरी*–स्त्री० दे० 'लड़ी'।

ललक–स्त्री० बलवती इच्छा, गहरी लालसा।

ललकना–अ० क्रि० किसी चीजके लिए अत्यधिक उत्सुक होना, गहरी लालसा होना; उमंगसे भर जाना।

ललकार–स्त्री० लड़नेके लिए प्रतिपक्षीको चुनौती देना, प्रचारणा; किसीको लड़नेके लिए बढ़ावा देनेकी क्रिया।

ललकारना–स० क्रि० विपक्षीको लड़नेकी चुनौती देना; किसीको किसी आदमीसे लड़नेका बढ़ावा देना, उभाड़ना।

ललकित–वि० गहरी चाहसे प्रेरित।

ललचना–अ०क्रि० किसी अभिलषित वस्तुकी प्राप्तिके लिए उत्सुक, अधीर होना; लुब्ध होना; लालसा करना।

ललचाना–स०क्रि० किसीको कुछ पानेकी आशा बँधाकर अधीर करना; कोई लुभावनी चीज दिखाकर पानेके लिए आकुल, व्यग्र, करना। अ० क्रि० दे० 'ललचना'।

ललचौंहाँ*–वि० ललचाया हुआ।

ललन–वि० [सं०] क्रीड़ाशील। पु० क्रीड़ा; प्यारा बच्चा; * नायकके लिए प्रेमव्यंजक शब्द।

ललना–स्त्री० [सं०] स्त्री; कामिनी; जीभ। **–प्रिय**–पु० कदंबका पेड़; एक गंधद्रव्य; बेर। वि० जीभको प्रिय लगनेवाला, स्वादिष्ठ; रमणीको प्रिय लगनेवाला।

ललनी*–स्त्री० बाँसकी नली।

ललरी–स्त्री० कानकी लोलकी।

ललही छठ–स्त्री० हल-षष्ठी (भाद्र कृष्ण)।

लला–पु० लड़कोंका सामान्य संबोधन; लड़का (जो प्यारा, दुलारा हो); प्रेमी, नायकका संबोधन।

ललाई–स्त्री० सुर्खी, लाली।

ललाट–पु० [सं०] माथा; भाग्य। **–तट**–पु० ललाटकी ढाल या तल। **–पटल,–पट्ट,–फलक**–पु० माथेका तल, विस्तार। **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० मस्तककी रेखाएँ; भाग्यलेख। मु०**–का लिखा**–भाग्यका लेख। **–में होना**–भाग्य, तकदीरमें होना।

ललाटाक्ष–पु० [सं०] शिव।

ललाना*–अ० क्रि० किसी चीजपर मोहित, लुब्ध होना,

किसी चीजके लिए ललचना, पानेके लिए अधीर होना।

ललाम–वि० [सं०] चिह्नवाला; सुंदर, रमणीय; श्रेष्ठ, उत्तम। पु० भूषण; रत्न; तिलक।

ललामी–स्त्री० सुंदरता; लाली।

ललित–वि०[सं०] सुंदर, रमणीय; सरल; निर्दोष; ईप्सित, प्रिय; दोलायमान, हिलता-डोलता हुआ। पु० शृंगार रसका एक कायिक हाव; एक अलंकार जहाँ वर्ण्य वस्तुके संबंधमें जो कुछ कहना हो, उसे न कहकर उसका प्रतिबिंबरूप कथन किया जाय, जैसे–'लिखत सुधाकर लिखिगा राहू',–राज्य देना था, दे दिया वनवास; नृत्यमें हाथोंकी एक विशेष मुद्रा; एक राग; एक विषम वर्णवृत्त; क्रीड़ा; सौंदर्य। **–कला**–स्त्री० सौंदर्यके आश्रयसे व्यक्त होनेवाली कला (संगीत, काव्य आदि)। **–पद**–वि० सुंदर पद, शब्दवाला। पु० एक मात्रिक छंद, सार, दोवै। **–पुराण**–पु० ललितविस्तर, बुद्धका चरित्रग्रंथ। **–लोचन**–वि० सुंदर नेत्रोंवाला। **–विस्तर**–पु० दे० 'ललितपुराण'।

ललितई*–स्त्री० दे० 'ललिताई'।

ललिता–स्त्री० [सं०] एक मूर्च्छना; पार्वती; कामिनी; राधाकी सखी (पद्म, ब्रह्मवै० पु०); कस्तूरी; एक नदी। वि०स्त्री० सुंदरी। **–पंचमी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला पंचमी।

ललिताई*–स्त्री० सुंदरता।

ललितोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक उपभेद जहाँ उपमेय-उपमानमें सादृश्य दिखलानेके लिए इव, लौं, सम आदिवाचक शब्दोंका प्रयोग न कर ईर्ष्या, निरादर, बराबरी आदिके सूचक पद रखे जायँ।

लली–स्त्री० लड़कियोंके संबोधनका शब्द; प्यार, दुलारसे पली लड़की; नायिकाके लिए प्रेमव्यंजक संबोधन।

ललौहाँ*–वि० ललाई लिये हुए, आताम्र।

लल्ला–पु० लड़कोंके लिए प्यारका संबोधन; प्यार, दुलारका लड़का; नौजवानोंका स्नेहपूर्ण संबोधन (वयस्कोंओं द्वारा), 'लाला'।

लल्लो–स्त्री० जीभ। **–चप्पो, –पत्तो**–स्त्री० चाटुकारिता, ठकुर-सुहाती, चिकनी-चुपड़ी बात।

लवंग–पु०[सं०] लौंग; लौंगका पेड़। **–लता**–स्त्री० लौंगका पेड़; राधिकाकी एक सखी; [हिं०] एक तरहकी मिठाई।

लव*–स्त्री० दे० 'लौ'। **–लीन**–वि० तन्मय, मग्न।

लव–पु०[सं०] अल्प मात्रा, थोड़ा अंश; कालका एक मान, ३६ निमेषका समय; लवा पक्षी; काटना; विनाश; वह जो काटा जाय; ऊन, बाल; काटा हुआ अंश; सुरा गायकी पूँछके बाल; जायफल; लवंग; रामके एक पुत्रका नाम। **–लेश**–पु० स्वल्पमात्रा; थोड़ा संबंध। **–लेस***–पु० दे० 'लवलेश'।

लवकना†–अ० क्रि० चमकना, कौंधना; दिखाई देना।

लवका†–स्त्री० चमक, कौंध; बिजली।

लवण–वि० [सं०] नमकीन; सुंदर; काटनेवाला। पु० (सॉल्ट) वह यौगिक जो किसी धातु तथा अम्लकी क्रिया द्वारा बने (नमक, नीलाथोथा, कसीस, नौसादर); लोन, नमक; काटनेका औजार, हँसिया, छुरी आदि। **–त्रय**–पु० सैंधव, विट और सचल नामक तीन नमकोंका समुच्चय। **–भास्कर**–पु० एक पाचक चूर्ण। **–समुद्र**–पु० खारे पानीका समुद्र।

लवणांतक–पु० [सं०] लवणासुरको मारनेवाले, शत्रुघ्न।

लवणालय–पु०[सं०] समुद्र; मधुपुरी (लवणासुरकी बसायी पुरी, आधुनिक मथुरा)।

लवणिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] सलोनापन; सौंदर्य।

लवणोदधि–पु० [सं०] लवणसागर।

लवन–पु० [सं०] काटना; खेतकी कटाई, लुनाई।

लवना–स० क्रि० फसलको काटकर बटोरना। * वि० नमकीन; सुंदर।

लवनाई*–स्त्री० सुंदरता।

लवनि–स्त्री० लवन, पकी खेती काटना; खेत काटनेकी मजदूरी।

लवनी–* स्त्री० नवनीत, मक्खन; दे० 'लवनि'; [सं०] शरीफेका पेड़ या फल; काटनेकी क्रिया; काटनेकी उजरत; काटनेका औजार।

लवनीय, लव्य–वि० [सं०] काटने योग्य।

लवर–स्त्री० आँच, ज्वाला, लपट।

लवली*–स्त्री० हरफारेवड़ीका वृक्ष या उसका फल।

लवा–पु० एक पक्षी; † लाजा, लावा, ख़ील।

लवाई–वि०स्त्री० सद्यः प्रसूता, हालकी ब्यायी हुई (गाय)। स्त्री० लवनी, खेतकी कटाई; खेत काटनेकी मजदूरी।

लवाज़िमा–पु० [अ०] जरूरी सामान; यात्रा आदिमें साथ रहनेवाला सामान।

लवारा†–पु० बछड़ा। वि० आवारा।

लवासी*–वि० गप्पी, बक्की; लंपट।

लशकर–पु० [फ़ा०] सेना; सशस्त्र दल (खासकर सरहदी पठानोंका); छावनी। **–गाह**–पु०, स्त्री० छावनी, शिविर। **–नवीस**–पु० सेनामें तनखाह बाँटनेवाला कर्मचारी, फौजका बख्शी।

लशुन, लशून–पु० [सं०] लहसुन।

लश्करी–पु० [फ़ा०] सैनिक; जहाजपर काम करनेवाला। वि० सेना-संबंधी; जहाजी। स्त्री० जहाजियोंकी भाषा। **–बोली**–स्त्री० फौजवालोंकी बोली जो आमतौरसे खिचड़ी होती है।

लषन*–पु० दे० 'लखन'।

लषना*–स० क्रि० दे० 'लखना'।

लषित–वि० [सं०] इच्छित।

लस–पु० चिपकनेका गुण; चिपकानेवाली चीज, गोंद, लासा; आकर्षण। **–दार**–वि० लसवाला।

लसकर, लसगर†–पु० दे० 'लशकर'।

लसना–अ० क्रि० चमकना, झलकना; स्थित होना, दिखाई देना, विराजना; नाचना। स० क्रि० चिपकाना, सटाना।

लसनि*–स्त्री० शोभित होना; बिराजना, उपस्थिति।

लसम*–वि० खोटा, निकम्मा (सोना आदि)।

लसलसा–वि० चिपचिपा, गोंदकी तरह चिपकनेवाला।

लसलसाना–अ० क्रि० चिपचिपाना, चिपकना।

लसलसाहट–स्त्री० चिपचिपाहट।

लसा–स्त्री० [सं०] हल्दी; केसर।

लसिका–स्त्री० [सं०] थूक, लाला; पेशी।

लसित–वि० [सं०] सुशोभित; प्रकट; क्रीडाशील।

लसी–स्त्री० लस, चिपक; आकर्षण; संसर्ग, संबंध; लोभ; दूध या दही और बर्फके मेलसे बना शरबत।

लसीका–स्त्री० [सं०] लाला; मांस और चमड़ेके बीच रहने वाला रस; ईखका रस।

लसीला–वि० चिपचिपा, लसदार; आकर्षक, सुंदर।

लसुनिया–पु० एक बहुमूल्य पत्थर।

लसोड़ा–पु० एक वृक्ष या उसका फल जो झड़बेरी जैसा छोटा और लसदार होता है।

लसौंढ़ा–पु० दे० 'लसोड़ा'।

लसौटा–पु० बहेलियोंका चिड़िया फँसानेके लिए लासा रखनेका बाँसका चोंगा, गोंददानी।

लस्टमपस्टम–अ० किसी-किसी तरह, ज्यों-त्यों करके।

लस्त–वि० थका हुआ, ढीला; अशक्त, कमजोर।

लस्सी–स्त्री० चिपचिपाहट, लस; मठा (पश्चिम); दूध या दही और बर्फके योगसे बनाया हुआ शरबत।

लहँगा–पु० स्त्रियोंका कमरसे नीचेका घेरादार एक पहनावा जो कमरमें नारेसे बाँधा जाता है, घाँघरा।

लहक–स्त्री० आगकी लपट; चमक; शोभा।

लहकना–अ० क्रि० हवाका चलना, झोंके देना; लहराना, हिलना-डुलना (हवाके जोरसे पेड़ पौधेका); आगका जगना, जल उठना, धधकना; लोभ, चाहसे कोई चीज पाने, देखनेके लिए बढ़ना, लपकना; चाहसे अधीर होना।

लहकाना–स० क्रि० झोंका खिलाना; आगे बढ़ाना; बढ़ावा देना; लपकाना; ताव दिलाना, उभाड़ना (किसीके विरुद्ध)।

लहकारना–स० क्रि० उभाड़ना, ताव दिलाना; प्रोत्साहित करना; कुत्तेको सनकारना (शिकार आदिपर)।

लहकौर, लहकौरि*–स्त्री० दूल्हे और दुलहिनका कोहबरमें एक-दूसरेको अपने हाथसे कुछ खिलाना।

लहजा–पु० [अ०] बोलने या शब्दोंके उच्चारणका खास ढंग; बोलचाल; लय।

लहज़ा–पु० [अ०] पल, छन; निमेप।

लहनदार–पु० महाजन, ऋणदाता; पावनेदार।

लहना–* स० क्रि० पाना; लाभ करना। पु० उधार, ऋण दिया हुआ धन; कामके बदले मिलनेवाला धन; भाग्य, तकदीर। **मु०–चुकाना,–पटाना**–ऋण दे देना, कर्ज अदा करना।

लहबर–पु० लंबी और ढीली पोशाक, चोगा, लबादा; एक तरहका तोता; छड़ी; झंडा, निशान।

लहमा–पु० क्षण, पल, मिनट, अत्यल्प काल।

लहर–स्त्री० वायुकी गति और स्पर्शसे पानीमें होनेवाली चढ़ाव-उतारदार हरकत, हिलकोर, हिलोरा; जोश, उमंग; वेगमयी भावना, मनकी मौज; किसी विजातीय द्रव्यके संसर्गसे शरीरमें रह-रहकर बेहोशी, पीड़ा आदिका अनुभव करना; आनंद, हर्ष, उल्लासका वेग; वायुमें होनेवाला स्वरकंप, गूँज; मोड़ लेती हुई टेढ़ी चाल; वक्र, कुटिल रेखा; हवाका झोंका; कसीदेकी धारी। **–दार**–वि० लहरोंवाला; वक्रगतिसे जानेवाला; लहरियादार। **–पटोर** –पु०, **–पटोरी**–स्त्री० लहरियादार रेशमी कपड़ा। **–बहर**–स्त्री० आनंद और सुख। **मु०–आ जाना**–धुन बँधना; इच्छाका जोर मारना। **–आना**–मौज उठना, उमंग पैदा होना; साँपके काटनेपर बदनमें लहर उठना। **–उठना**–मौज आना, जोश होना, उमंग उठना। **–देना या मारना**–रह-रहकर कष्ट या पीड़ा होना; सीधा न चलकर मुड़ते हुए जाना। **–लेना**–लहरमें नहाना; दरियाका मौज मारना। **–(रें) गिनना**–बेकार रहना।

लहरना–* अ० क्रि० दे० 'लहराना'; † परचना।

लहरा–पु० लहर; मजा, आनंद; बाजोंकी गत जिसमें ताल-स्वरोंकी केवल लय होती है; बादलोंका कुछ देर जोरसे बरसना, झड़।

लहराना–अ० क्रि० हवाके झोंकेसे हिलना-डुलना, थरथराना; हवाका चलना; पानीका हवाके झोंकेसे हलकोरा लेना; काले-काले बादलोंका उमड़ना; टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलना; उमंग, उल्लासमें हो जाना; उत्कंठित होना, लपकना (किसी वस्तुके लिए); दहकना, भड़कना (आगका); बिराजना, शोभायमान होना। स० क्रि० हिलाना-डुलाना (वायुके प्रवेगमें); टेढ़ा-मेढ़ा चलाना।

लहरिया–पु० टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओंका समूह, श्रेणी; गोटे, लच्चे आदिकी लहरदार टँकाई; रंगीन साड़ी, कपड़ा जिसपर टेढ़ी रेखाएँ बनी हों; जरीके कपड़ेके किनारेपर बने हुए बेल-बूटे; एक कपड़ा। * स्त्री० लहर। **–दार**–वि० लहरिया बना हुआ, लहरदार; बेल-बूटोंवाला।

लहरी–स्त्री० [सं०] लहर, तरंग। † वि० मनमौजी।

लहलहा–वि० डहडहा, हरा-भरा, प्रफुल्ल; आनंदमय।

लहलहाना–अ० क्रि० हरा-भरा, सरसब्ज होना; खुशीसे भर जाना; सूखे, मुरझाये पौधे, पेड़में विकासके लक्षण आना, पनपना; मोटाना, हृष्ट-पुष्ट होना।

लहसुन–पु० एक पौधा जिसकी जड़ पंक्तिबद्ध जवोंसे बनी होती है (इसकी गंध प्याजकी तरह उग्र होती है); माणिकका एक दोष, अशोभक।

लहसुनिया–पु० धूमिल रंगका एक कीमती पत्थर जो लाल, पीले, हरे रंगका भी होता है।

लहा*–पु० दे० 'लाह'।

लहाछेह–पु० नाचकी एक गति; नाच, नृत्यकी द्रुत गति।

लहालह*–वि० हरा-भरा; प्रफुल्ल।

लहालोट–वि० हँसीसे लोटता हुआ; प्रसन्न; उल्लसित; मुग्ध; लुब्ध, लट्टू।

लहासी–स्त्री० नाव, जहाज बाँधनेकी मोटी रस्सी; रस्सी।

लहि*–अ० तक, पर्यंत।

लहु*–अ० पर्यंत, तक। वि० लघु, छोटा।

लहुरा*–वि० लघु, छोटा, कनिष्ठ।

लहू–पु० खून, रक्त। **–लुहान**–वि० खूनसे तर। **मु०–उबलना**–सख्त गुस्सा आना। **–उभर आना**–किसी जगहसे लहू थोड़ा-थोड़ा करके निकलना। **–औंटना**–क्रोध या गमसे जोश पैदा होना। **–का घूँट पीकर रह जाना**–गुस्सा सह लेना। **–का प्यासा**–जानी दुश्मन। **–पसीना एक करना,–पानी एक करना**–सख्त मुसीबत उठाना। **–पानी एक होना**–गुस्सेके मारे खाना-पीना अंग न लगना। **–पी जाना**–कत्ल करना। **–पी-पीकर रह जाना**–गुस्सा चुपचाप बरदाश्त कर लेना।

—बिगड़ना—खूनका खराब होना। **—बोलना**—हत्याका स्वयं प्रकट होना। **—में नहाना**—क्षत-विक्षत होना। **—लगा(मल)कर शहीद होना**—थोड़ा काम करके बड़ा काम करनेवालोंमें अपनी गणना करना। **—सफेद हो जाना**—सहानुभूति या दयाका न रहना।

लाँक*—स्त्री० लंक, कमर, कटि; तुरंतकी कटी हुई फसल।

लाँग—स्त्री० धोतीका वह सिरा जिसे जंघोंके बीचसे पीछे ले जाकर कमरमें बँधे हुए फेटेमें खोंसते हैं, काछ।

लाँघना—स० क्रि० डाँक जाना, नाँघना, पार करना।

लाँचा†—स्त्री० घूस, रिश्वत।

लांछन—पु० [सं०] धब्बा; निशान, चिह्न; दोष, कलंक।

लांछना—स्त्री० [सं०] दोष, कलंक; निंदा।

लांछनित*—वि० दे० 'लांछित'।

लांछित—वि० [सं०] दोषयुक्त, कलंकित; अलंकृत।

लाँबा*—वि० दे० लंबा'।

ला—स्त्री० [सं०] लेने या देनेकी क्रिया। अ० [अ०] न, नहीं, बिना। **—इलाज**—वि० जिसका इलाज, उपाय न हो, असाध्य। **—इल्म**—वि० विद्यारहित; अनभिज्ञ; बेखबर। **—ख़िराज**—वि० (जमीन) जिसपर लगान या मालगुजारी न देनी पड़े। स्त्री० माफी-जमीन। **—चार**—वि० विवश, मजबूर; अशक्त; दीन, असहाय। अ० लाचार होकर, मजबूरन। **—चारी**—स्त्री० लाचार होना, विवशता, अशक्तता। **—जवाब**—वि० निरुत्तर; वादमें हारा हुआ; बेजोड़। **—तादाद**—वि० अगणित, बेहिसाब। **—पता**—वि० जिसका पता न हो। **—पता चिट्ठीघर**—पु० (डेड लेटर ऑफिस) डाक-विभागका वह कार्यालय जहाँ ऐसे पत्रादि, जिनपर पता लिखना छूट गया हो या जिनपर गलत या अपर्याप्त पता लिखा गया हो, खोलकर पढ़े जाते हैं और उन्हें यथासंभव भेजनेवालेके पास लौटा देनेका प्रयत्न किया जाता है। **—परवा, —परवाह**—वि० बेपरवा, बेफिक्र। **—परवाई**—स्त्री० बेपरवाई। **—मज़हब**—वि० जिसका कोई धर्म, मजहब न हो, बेदीन; नास्तिक। **—मिसाल**—वि० अद्वितीय, बेजोड़। **—वबाली**—वि०, स्त्री०, पु० दे० क्रममें। **—वल्द**—वि० निस्संतान, बेऔलाद। **—वारिस**—वि० (व्यक्ति) जिसका कोई वारिस, उत्तराधिकारी न हो, निगोड़ा, निपूता; (माल) जिसका कोई अधिकारी या दावेदार न हो। **—वारिसी**—वि० लावारिस (माल)। **—सानी**—वि० बेजोड़, जिसका सानी न हो। **—हल**—वि० जो हल न हो सके, कठिन, असाध्य।

लाइ*—स्त्री० अग्नि; प्रेमकी लगन।

लाइन—स्त्री [अं०] सतर, पंक्ति; कतार; रेखा; रेलकी सड़क; सिपाहियोंका आवास, बारिक।

लाई†—स्त्री० धानका लावा; भुजिया चावलका लावा; चुगली, निंदा। **—लुतरी**—स्त्री० चुगली; चुगलखोरी।

लाकड़ी, लाकरी*—स्त्री० दे० 'लकड़ी'।

लाकुटिक—वि० [सं०] डंडा धारण करनेवाला। पु० पहरेदार; सेवक।

लॉकेट—पु० [अं०] जंजीर आदिमें शोभाके लिए लगाया जानेवाला लटकन।

लाक्षणिक—वि० [सं०] लक्षणोंको प्रकट करनेवाला; लक्षण-संबंधी; लक्षणोंको जाननेवाला; लक्ष्यार्थवाला; गौण; पारिभाषिक। पु० लक्षण पहचानने, जाननेवाला।

लाक्षा—स्त्री० [सं०] एक तरहका लाल रंग; लाख, लाह; एक कीड़ा जिससे लाल रंग तैयार किया जाता है। **—गृह**—पु० लाखका घर जिसे दुर्योधनने पांडवोंको जीवित जला देनेके लिए वारणावतमें बनवाया था। **—रस**—पु० महावर, अलक्तक।

लाख—वि० लक्ष, सौ हजार; बहुत अधिक। पु० सौ हजारकी संख्या। अ० बहुत, हदसे ज्यादा। स्त्री० पीपल आदि वृक्षोंपर लगनेवाले एक तरहके कीड़ोंसे बना हुआ पदार्थ-विशेष; लाल रंगके छोटे-छोटे कीड़े जिनसे लाह निकलती है। **—पती**—पु० लखपती। मु० **—टकेकी बात**—बहुत उपयोगी बात। **—से लीख होना**—सब कुछ खो बैठना।

लाखना*—स० क्रि० लाखसे फूटे बर्तनका छेद बंद करना; जान लेना, समझ लेना।

लाखा—पु० लाखसे बना हुआ एक रंग जिससे स्त्रियाँ होंठ रँगती हैं; गेहूँके पौधोंका एक रोग। **—गृह**—पु० दे० 'लाक्षागृह'।

लाखी—वि० मटमैला, धुँधला लाल, लाखके रंगका। पु० लाखकासा, मटमैला लाल रंग; इस रंगका घोड़ा।

लाग—* अ० तक, पर्यंत। स्त्री० संबंध, लगाव; प्रेम; सहारा; लगन, धुन, लगावट; उपाय, तरकीब; चढ़ा-ऊपरी; कौशलपूर्ण स्वाँग (इसमें छुरी, कटारीको पेट, गर्दनमें धँसी हुई, आरपार दिखाते हैं); वैर, दुश्मनी; जादू, टोना; टीका लगानेका चेप, लोशन; भस्म, धातुको फूँककर तैयार किया हुआ रस; नेग, नियत धन (जो भाट, नाई, ब्राह्मणको दिया जाता है); लगान, भूमिकर; नृत्यका एक भेद; * रसद। **—डाँट**—स्त्री० होड़; दुश्मनी।

लागत—स्त्री० किसी चीजकी तैयारीमें लगनेवाला खर्च।

लागना*—अ० क्रि० दे० 'लगना'।

लागि*—अ० तक, पर्यंत; से, जरिये; हेतु; निमित्त।

लागुडिक—वि० [सं०] जो डंडेसे लैस हो। पु० प्रहरी।

लागू—वि० लगनेवाला; संगत, चरितार्थ होनेवाला।

लागे*—अ० लिए, वास्ते।

लाघव—पु० [सं०] छोटा होना, लघुता; फुर्ती, त्वरा, तेजी; अल्पता, कम होना; आरोग्य; नपुंसकता; अविवेक; महत्त्वहीनता। * अ० फुर्ती, जल्दीसे; सहज ही।

लाघवी*—स्त्री० फुर्ती, जल्दी।

लाची†—स्त्री० दे० 'इलायची'। **—दाना**—पु० इलायचीके योगसे चीनीकी बनी हुई मिर्चके आकारकी एक मिठाई।

लाछन*—पु० लांछन, कलंक।

लाछी*—स्त्री० लक्ष्मी।

लाज—स्त्री० लज्जा, शर्म; प्रतिष्ठा। **—वंत**—वि० लज्जावान्, हयादार। **—वंती, —वती**—स्त्री० लजालू। मु० **—रखना**—आबरू बचाना। **—से गठरी होना**—लज्जावश सिकुड़ जाना। **—से गड़ जाना या गड़ना**—बहुत ज्यादा शर्मिंदा होना।

लाज—पु० [सं०] धानका लावा, खील; खस; पानीमें

भीगा चावल । –भक्त–पु० रोगियोंको पथ्य दिया जानेवाला खोईका भात ।

लाजक–पु० [सं०] धानका लावा ।

लाजना*–अ० क्रि० लजाना, लज्जित होना । स० क्रि० लज्जित करना ।

लाजवर्द–पु० [फा०] नीले रंगका एक पत्थर जिसकी गणना रत्नोंमें है, राजवर्तक ।

लाजवर्दी–वि० [फा०] लाजवर्दके रंगका, नीला ।

लाजा–स्त्री० [सं०] चावल; धानका लावा, खील ।

लाज़िम–वि० [फा०] लगा हुआ, जो अलग न किया जा सके; फर्ज, अवश्य कर्तव्य ।

लाज़िमी–वि० [अ०] दे० 'लाजिम' ।

लाट–स्त्री० मोटा ऊँचा खंभा (यह पत्थर, लकड़ी या किसी धातुका होता है, जैसे अशोककी लाट, तालाबकी लाट) । पु० [अं० 'लार्ड'] प्रांत या देशका सबसे बड़ा शासक, गवर्नर; [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें शब्द-अर्थ एक रहते हैं, अन्वय करनेपर वाक्यार्थ बदल जाता है; पानीके बहावको रोकनेके लिए बनाया हुआ बाँध; गुजरातके एक भागका प्राचीन नाम; लाटका निवासी ।

लॉटरी–स्त्री० [अं०] रुपये या सामानके रूपमें पुरस्कार देनेकी एक व्यवस्था जिसमें चिट्ठी डालकर या टिकटके सहारे विजेताका नाम निश्चित किया जाता है ।

लाटानुप्रास–पु० [सं०] एक शब्दालंकार (दे० 'लाट') ।

लाटिका–स्त्री० [सं०] छोटे-छोटे पद और समासवाली रचनारीति (तीन और रीतियाँ हैं–वैदर्भी, गौडी, पांचाली) ।

लाटी–* स्त्री० थूक और ओठ सूखनेकी दशा–'सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी'–रामा० ।

लाठालाठी–स्त्री० लाठीसे परस्पर प्रहार करना ।

लाठी–स्त्री० डंडा, बाँसकी लंबी लकड़ी (जो गाँठोंको छीलकर बनायी जाती है और टेकने, मारपीट आदिके काम आती है) । **मु०–चलना**–लाठीसे मार-पीट होना । **–चलाना**–लाठीसे मार-पीट करना । **–बाँधना**–लाठी साथ रखना, लिये रहना ।

लाड़–पु० लालन, प्यार, दुलार । **–चाव**–पु० प्यार-दुलार । **–लड़ैता**–वि० बड़े प्यारके साथ पला हुआ ।

लाड़ला–वि० प्यारा, दुलारा ।

लाडू*–पु० लड्डू ।

लात–स्त्री० पैर, पद; पाद-प्रहार । **मु०–खाना**–मार खाना; पैरकी ठोकरसे मारा जाना । **–चलाना**–लातसे मारना । **–मारना**–किसी वस्तुको तुच्छ समझकर छोड़ देना; उपेक्षा, घृणा करना ।

लाद–स्त्री० चीजें दूसरी जगह ले जानेके लिए ऊँट, बैल, गाड़ी आदिपर बोझना, लदाई; आँत, अँतड़ी; पेट ।

लादना–स० क्रि० अनेक चीजोंको एकपर एक रखना; ढोनेके लिए बोझा भरना; किसीपर जिम्मेदारी, भार डालना ।

लादिया–पु० बोझ लादकर ले जानेका काम करनेवाला ।

लादी–स्त्री० धोबियोंकी गठरी; लदा हुआ बोझा ।

लाधना*–स० क्रि० पाना, प्राप्त करना–'जो सुख शिव सनकादि न पावत सो सुख गोपिन लाधो'–सू० ।

लानत–स्त्री० [अ०] फटकार, धिक्कार, भर्त्सना । **–मलामत**–स्त्री० भर्त्सना, धिक्कार, झिड़की । **मु०–का तौक़ (गलेमें) पड़ना**–बदनाम, बेइज्जत होना । **–का मारा**–घृणित, कुत्सित; अभागा । **–की बौछार**–लगातार, अत्यधिक भर्त्सना । **–बरसना**–चेहरेपर उदासी, मनहूसी होना; लानतकी बौछार होना । **–भेजना**–धिक्कारना; कोसना; घृणापूर्वक त्याग देना ।

लाना–स० क्रि० ले आना, कहींसे कोई वस्तु लेकर आना; उपस्थित करना, सामने रखना; पैदा करना (पेड़ोंका फल आदि); * आग लगाना; लगाना ।

लाने*–अ० लिए, वास्ते ।

लापसी*–स्त्री० दे० 'लपसी' ।

लाबर*–वि० झूठ बोलनेवाला, लबार ।

लाभ–पु० [सं०] प्राप्ति, लब्धि; फायदा, नफा; भलाई, उपकार; अनुभूति, ज्ञान; विजय । **–कर,–कारक,–कारी(रिन्),–दायक**–वि० जिससे लाभ हो । **–कर जोत**–स्त्री० [हिं०](एकॉनॉमिक होल्डिंग) काश्तकार द्वारा जोती-बोयी जानेवाली वह भूमि जिसकी उपज आर्थिक दृष्टिसे लाभकर या भरण-पोषणके लिए पर्याप्त हो । **–लिप्सा**–स्त्री० लाभकी प्रबल इच्छा । **–विभाजन-योजना**–स्त्री० (प्रॉफिट शेयरिंग स्कीम) किसी व्यापारिक संस्था आदिमें होनेवाले लाभका नियोजकों तथा नियुक्तोंमें–मालिकों और श्रमिकोंमें–उचित ढंगसे वितरण करनेकी योजना । **–स्थान**–पु० जन्मकुंडलीमें लग्नसे ग्यारहवाँ स्थान (जो धन, विद्या आदिका द्योतक होता है)।

लाभांश–पु० [सं०] (डिविडेंड) कारखाने आदिमें लगी हुई पूँजीपर मिलनेवाले ब्याज या लाभकी रकमका वह हिस्सा जो वितरित किये जानेपर हिस्सेदारको मिले ।

लाभालाभ–पु० [सं०] हानि-लाभ ।

लाम–पु० फौजका दस्ता (जिसमें पैदल, सवार और तोपखाना होता है), ब्रिगेड; समूह (लोगोंका, सेनाका) । **मु०–पर जाना**–लड़ाईके मोर्चेपर जाना । **–बाँधना**–सामान और बहुतसे लोगोंको एकत्र करना ।

लाम–† अ० दूर । पु० [अ०] अरबी वर्णमालाका एक वर्ण । **–काफ़**–पु० बेहूदा बातें; खरी-खोटी, अपशब्द ।

लामन–* पु० लटकना; हिलना; † लहँगा ।

लामा–पु० [ति०] तिब्बत और मंगोलियाके बौद्धोंका धर्माध्यक्ष और शासक । † वि० लंबा ।

लामैं†–अ० दूर ।

लाय*–स्त्री० लपट, ज्वाला; अग्नि ।

लायक*–पु० लाजक, धानका लावा ।

लायक़–वि० [अ०] योग्य; गुणवान्; अधिकारी; उपयुक्त, मुनासिब ।

लायक़ी–स्त्री० [अ०] योग्यता ।

लायची†–स्त्री० इलायची ।

लार–स्त्री० कोई चीज खाते समय मुँहसे निकलनेवाला लसदार तरल द्रव्य, लाला; कतार; लुभाव । **मु०–आना, –टपकना**–किसी चीजको पानेका लोभ होना ।

लार*–अ० साथ, पीछे । **मु०–लगाना**–फँसाना ।

लारी-स्त्री० [अं०] माल और मुसाफिरोंको ढोनेके काम आनेवाली बड़ी मोटर गाड़ी।

लारू*-पु० लड्डू।

लाल-वि० माणिक, रक्त आदिके रंगका; अत्यधिक क्रुद्ध; बीचके खानेमें पहुँची हुई (चौसरकी गोटी)-'परो दाव तेरो खरो करि लै सारी लाल'-दीन०; जिसकी सब गोटियाँ बीचके खानेमें पहुँच गयी हों (चौसरका खेलाड़ी); सबसे पहले सफल होनेवाला (खेलाड़ी); साम्यवादका अनुसरण करनेवाला (लाल चीन)।**-अंगारा,-भभूका**-वि० निहायत सुर्ख; गुस्सेकी वजहसे लाल, क्रोधसे तमतमाया हुआ। **-चंदन**-पु० रक्त चंदन। **-फीता**-पु० सरकारी कागजपत्रों, फाइलोंको बाँधनेमें काम आनेवाला लाल फीता; सरकारी कार्योंमें,जाब्तेके बहुत अधिक अनुसरणसे, होनेवाली देरी, दीर्घसूत्रता (रेडटेपिज्म)। **-बुझक्कड़**-पु० बिना मर्म जाने अटकलसे मतलब लगानेवाला, अगम्य बातोंको समझनेका दावा करनेवाला। **-मन***-पु० कृष्ण; एक तरहका तोता। **-शक्कर**-स्त्री बिना साफ की हुई चीनी, खाँड़। **-समुद्र**-पु० दे० लाल सागर। **-साग**-पु० मरसा। **-सागर**-पु० अरब और अफ्रीकाके मध्य स्थित एक समुद्र जिसका पानी लाल दिखाई देता है। **-सिखा*,-सिखी**-पु० मुर्गा-'भानु आगमन जानिकै लाल सिखा धुनि कीन'-रघु०। **-सेना**-स्त्री० साम्यवादी देशकी सेना जिसके झंडेका रंग लाल हो। **मु०-पड़ना या होना**-क्रोध करना। **-पीला होना**-क्रोध करना। **-होना**-निहाल होना।

लाल-स्त्री० लाला, थूक, राल; * लालसा, इच्छा;। पु० भूरापन लिये लाल रंगकी छोटी चिड़िया; चौपायोंका एक रोग; प्यारा बच्चा; पुत्र, लड़का; प्रिय, प्यारा व्यक्ति; प्रणयी; प्रेमी आदमी; * लालन, प्यार, दुलार; [फा०] माणिक; सुर्ख रंग। **मु०-उगलना**-अच्छी, प्यारी, महत्त्वकी बातें कहना।

लालच-पु० कोई चीज पानेकी बहुत बढ़ी हुई इच्छा, लोभ।

लालचहाँ*-वि० जिसे बहुत अधिक लोभ हो, लालची।

लालची-वि० लोभी, लोलुप।

लालटेन-स्त्री० [अं० 'लैंटर्न'] हाथमें लटकाने लायक चिमनीदार लैंप।

लालड़ी-स्त्री० नथ और बालियोंमें मोतीके दोनों ओर लगाया जानेवाला लाल रंगका एक नगीना।

लालन-पु० बालक, प्यारा बच्चा; प्रिय व्यक्ति; [सं०] प्यार करना; बहुत अधिक लाड़ करना; प्यार। वि० प्यार करनेवाला।

लालना*-स० क्रि० प्यार करना; इच्छा करना।

लालनीय-वि० [सं०] प्यार करने योग्य।

लालरी-स्त्री० लालड़ी, लाल रंगका नगीना।

लालस-वि० [सं०] चंचल; लोलुप; उत्सुक।

लालसा-स्त्री० [सं०] किसी चीजके पानेके लिए अत्यधिक इच्छा, अभिलाषा; औत्सुक्य; गर्भिणीकी इच्छा।

लालसी*-वि० इच्छुक, उत्सुक, इच्छा करनेवाला।

लाला-पु० आदर-सूचक संबोधन; कायस्थ या खत्री जातिका सूचक शब्द; देवर या छोटे, प्रिय व्यक्तिके लिए संबोधनका शब्द; * दे०-'लालो', अ.फत-'लाला प्राननको परत लहत न कोऊ त्राण'-कलस०; [फा०] एक प्रसिद्ध फूल। वि० लाल रंगका। स्त्री० [सं०] मुखस्राव, राल, लसदार थूक।**-प्रमेह,-मेह**-पु० प्रमेह रोगका एक भेद जिसमें रालकी तरह पेशाब निकलता है। **-स्राव**-पु० राल, थूक बहना।

लालायित, लालालु-वि० [सं०] लार टपकाता हुआ; लुब्ध, ललचाया हुआ; प्यारा; दुलारा।

लालित-वि० [सं०] प्यार, दुलार किया हुआ।

लालित्य-पु० [सं०] ललित होनेका भाव, सौंदर्य, रमणीयता; सरसता।

लालिमा-स्त्री० लाली, सुर्खी।

लाली-स्त्री० लालिमा, सुर्खी; इज्जत, आबरू; पीसी हुई ईंट, सुरखी; प्रेताविष्ट होना * लाड़ली लड़की, लली।

लाले-पु० अरमान, हविस। **मु०-पड़ना**-किसी चीजको पाने, देखनेके लिए तरसना, लालायित होना।

लालो*-पु० दे० 'लाले'; संकट।

लाल्य-वि० [सं०] लालन, प्यार करने योग्य।

लाल्हा*-पु० लाल रंगका एक साग।

लाव-पु० लौ, लगन; प्रीति। *स्त्री० आँच, आग; † रस्सी; † बंधक रखी हुई चीजपर दी जानेवाली रकम; एक चरसेसे एक दिनमें सींची जाने योग्य भूमि। **-दार**-पु० तोपमें बत्ती लगानेवाला। वि० दागनेके लिए तैयार (तोप)। **-लश्कर**-पु०सामग्री, सामान, असबाब। **मु०-चलाना**-चरसेसे पानी निकालकर खेत सींचना।

लावक-पु० [सं०] लवा पक्षी; काटनेवाला, विभाजक।

लावणिक-वि० [सं०] लवण-संबंधी; नमकका। पु० लवण-विक्रेता।

लावण्य-पु० [सं०] लवणत्व, नमकीनी; सुंदरता; सुशीलता। **-लक्ष्मी,-श्री**-स्त्री० अत्यधिक सुंदरता।

लावनता*-स्त्री० लावण्य, सुंदरता।

लावना*-स० क्रि० 'लाना'।

लावनि*-स्त्री० लावण्य, सुंदरता।

लावनी-स्त्री० एक गीत-छंद; एक तरहका चलता गाना। **-बाज़**-वि० लावनीका शौकीन; लावनी गानेवाला।

ला-वबाली-वि०निडर, बेफिक्र। स्त्री० आवारगी, बेफिक्री; शोखी। पु० आवारा या बेफिक्र आदमी।

लावा-पु० लवा पक्षी; लाजा, खील। **-परछन**-पु० एक वैवाहिक रीति। **मु०-मेल देना***-मंत्रसे उच्चाटन करना।

लाविक-पु० [सं०] भैंसा।

लाश-स्त्री० [फा०] मृत देह, शव।

लाष*-स्त्री० लाख, लाह। वि० सौ हजार (दे०'पैका'में)।

लाषना*-स० क्रि० लाहसे छेद बंद करना।

लास-पु० [सं०] उछल-कूद; नृत्य; रास; स्त्रियोंका कोमल भावमय नृत्य; जूस, रसा; लार।

लासक-पु० [सं०] मयूर; नाचनेवाला; अभिनेता।

लासकी-स्त्री० [सं०] नर्तकी; अभिनेत्री।

लासा-पु० लसदार, चिपचिपी चीज; फँसानेवाली चीज, गोंद, चेप। **मु०-लगाना**-झगड़ा कराना; फाँसना।

लासि, लासु*–पु० दे० 'लास्य'।

लासिका–स्त्री० [सं०] नर्तकी; वेश्या; उपरूपकका एक भेद।

लास्य–पु० [सं०] नृत्य; वह नृत्य जिसमें वाद्य और गीतका योग हो; स्त्री-नृत्य; नर्तक, अभिनेता।

लाह*–स्त्री० लाक्षा, लाख, लाही; चमक। पु० लाभ।

लाहल*–पु० दे० 'लाहौल'।

लाही†–स्त्री० लाख पैदा करनेवाला लाल कीड़ा; फसलके लिए हानिकर एक कीड़ा जो विशेषकर गेहूँ-जौमें लगता है। वि० मटमैलापन लिये लाल, लाहके रंगसे मिलता हुआ।

लाहौरी नमक–पु० सेंधा नमक।

लाहौल–पु० [अ०] शैतान या प्रेतात्माओंको भगानेके लिए प्रयुक्त, 'लाहौलवलाकूवत इल्लाबिल्ला'का पहला शब्द जो घृणा, विरक्ति प्रकट करनेके लिए बोलते हैं।

लिंग–पु० [सं०] चिह्न, किसी वस्तु, पदार्थकी पहचानका साधन; नकली चिह्न; प्रमाण; कारण, अनुमान, साधक हेतु (न्या०); प्रधान, मूल प्रकृति (सांख्य०); पुरुषकी जननेंद्रिय, शिश्न; शिवलिंग; देवमूर्ति; व्याकरणके शब्दोंका पु०, स्त्री० आदिका भेद। **–देह**–स्त्री०,**–शरीर**–पु० सूक्ष्म देह, मृत्युके बाद फलभोगके लिए जीवात्माके साथ लगा रहनेवाला सूक्ष्म शरीर। **–धर**–वि० केवल चिह्न धारण करनेवाला, ढोंगी। **–धारी(रिन्)**–वि० चिह्न धारण करनेवाला। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० शिवलिंगकी स्थापना। **–वृत्ति**–पु० वेश बनाकर जीविका अर्जन करनेवाला; नकली साधु। वि० ढोंगी।

लिंगार्चन–पु० [सं०] शिवलिंगका पूजन।

लिंगिनी–स्त्री० [सं०] धर्मका आडंबर करनेवाली स्त्री; एक लता।

लिंगी(गिन्)–पु० [सं०] ब्रह्मचारी; वेशभूषासे जीविका चलानेवाला; हाथी; शिवलिंग पूजनेवाला; ढोंगी।

लिंगेंद्रिय–स्त्री० [सं०] शिश्न, पुरुषकी मूत्रेंद्रिय।

लिंफ–पु० [अं०] टीका लगानेके काममें आनेवाला चेचकका चेप।

लिए–निमित्त, प्रयोजन आदिके सूचनके लिए प्रयुक्त होनेवाली संप्रदान-कारककी विभक्ति।

लिक्खाड़–पु० बहुत बड़ा लेखक (व्यंग्यमें)।

लिक्षा–स्त्री० [सं०] लीख, जूँका अंडा; एक परिमाण जो बहुत छोटा, आठ त्रसरेणुके बराबर होता है।

लिक्षिका–स्त्री० [सं०] लीख।

लिख–वि०, पु० [सं०] लिखनेवाला।

लिखत–स्त्री० दे०'लिखित'। पु०; (इंस्ट्रूमेंट) वह लिखित-पत्र जिसमें दो पक्षोंके बीच हुए किसी समझौतेकी शर्तें आदि दी गयी हों, विलेख। **–पढ़त**–स्त्री० लिखा-पढ़ीका कागज।

लिखधार*–पु० लेखक, मुहर्रिर।

लिखना–स० क्रि० कोई बात लिपिबद्ध करना, कागज आदिपर उतारना; रेखाएँ, चिह्न खींचना; चित्र बनाना; ग्रंथ रचना। **मु०–पढ़ना**–अध्ययन करना, विद्यार्जन करना। [**किसीके नाम लिखना**–किसीके जिम्मे पावना दिखलाना।]

लिखनी†–स्त्री० लेखनी, कलम; लिखनेकी क्रिया; होनी।

लिखवाई–स्त्री० दे० 'लिखाई'।

लिखवाना–स० क्रि० दे० 'लिखाना'।

लिखवार*–पु० दे० 'लिखधार'।

लिखाई–स्त्री० लिखनेका काम; लिखनेकी मजदूरी; लिखावट; लेख, लिपि। **–पढ़ाई**–स्त्री० विद्योपार्जन।

लिखाना–स० क्रि० लिखनेका काम किसी अन्यसे कराना। **मु०–पढ़ाना**–शिक्षा देना; लिपिबद्ध कराना।

लिखापढ़ी–स्त्री० किसी ठहराव, शर्तको कागजपर लिखकर पक्का करना; पत्र-व्यवहार, चिट्ठियोंका आदान-प्रदान।

लिखावट–स्त्री० लिखनेका ढंग; लिपि, लेख।

लिखित–वि० [सं०] लिखा हुआ। पु० लिखी बात, लेख; प्रमाणपत्र, दस्तावेज; रचना, पुस्तक। **–पाठक**–पु० हस्तलिखित लेख आदि पढ़नेवाला।

लिखितव्य–वि० [सं०] लिखने, चित्रित करने योग्य।

लिख्या–स्त्री० [सं०] दे० 'लिक्षा'।

लिच्छवि–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजवंश (इसका शासन नेपाल, मगध, कोशलमें था। बुद्ध, महावीर इसी वंशमें हुए थे)।

लिटाना–स० क्रि० पौढ़ाना, किसीको लेटनेमें प्रवृत्त करना।

लिट्ट–पु० मोटी रोटी (विशेषकर आगपर सेंकी हुई)।

लिट्टी–स्त्री० आगपर सेंककर तैयार की जानेवाली बाटी।

लिडार–† पु० गीदड़। * वि० डरपोक, कायर।

लिपटना–अ०क्रि० सट जाना, चिपकना; आलिंगन करना; किसी काममें मनोयोगपूर्वक लग जाना।

लिपटाना–स० क्रि० सटाना, चिमटाना; गले लगाना।

लिपड़ी–स्त्री० लेईकी तरह गीला पदार्थ; कपड़ा-लत्ता।

लिपना–अ०क्रि० गीली चीजसे पोता जाना; रंग आदिका फैल जाना। **लिपापुता**–वि० साफ, स्वच्छ; जिसपर रंग या और कोई चीज फैल गयी हो।

लिपवाना–स० क्रि० लीपनेका काम दूसरेसे कराना।

लिपाई–स्त्री० लीपनेकी क्रिया या उजरत।

लिपाना–स० क्रि० लेप कराना, पुताना, गोबर, मिट्टी आदिकी तह चढ़वाना।

लिपि–स्त्री० [सं०] लिखावट; लिखनेकी पद्धति (जैसे रोमन, नागरी, अरबी लिपि); पत्र, लेख आदि। **–कर, –कार**–पु० लेखक, क्लार्क। **–कर्म(न्)**–पु० चित्रकारी। **–ज्ञान,–शास्त्र**–पु० लिखनेकी कला। **–फलक**–पु० पत्थर, धातुपत्र, तख्ती, पत्र आदि। **–बद्ध**–वि० लिखा हुआ। **–सज्जा**–स्त्री० लिखनेका साधन।

लिपिक–पु० [सं०] कार्यालयमें लिखापढ़ीका काम करनेवाला (क्लार्क), किरानी। **–विभ्रम**–पु० (क्लेरिकल मिस्टेक) लिपिक या लेखक द्वारा की गयी भूल।

लिप्त–वि० [सं०] किसी चीजसे पुता हुआ, चर्चित; आसक्त; ढका हुआ; फँसा हुआ, व्यसनादिमें डूबा हुआ; लीन।

लिप्सा–स्त्री० [सं०] पानेकी इच्छा; इच्छा।

लिप्सु–वि० [सं०] पानेकी इच्छा रखनेवाला, इच्छुक।

लिफ़ाफ़ा–पु० [अ०] खोल; कागजका थैला; कागजका चौकोर थैला जिसमें चिट्ठियाँ इ० रखकर भेजते हैं; पह-

नावा; (ला०) आडंबर, ठाटवाट; (ला०) जल्दी टूटने-फटनेवाली चीज। **मु०–खुल जाना**–भेद प्रकट होना। **–बदलना**–ठाट बदलना, नयी वेश-भूपा धारण करना। **–बनाना**–ठाट बनाना।

लिफ़ाफ़िया–वि० कमजोर, चंदरोजा (गहने इ०); दिखाऊ।

लिबड़ना–अ०क्रि०लथपथ होना, सनना (कीचड़ आदिमें)।

लिबड़ी–स्त्री० लुगड़ी, कपड़ा-लत्ता। **–बरताना,–बारदाना**–पु० गुजर, निर्वाहका सामान; असबाब।

लिबास–पु० [अ०] पहननेके कपड़े, पोशाक।

लियाक़त–स्त्री० [अ०] योग्यता, बुद्धिमत्ता; पात्रता; गुण।

लिलाट*–पु० दे० 'ललाट'।

लिलार*–पु० माथा; कुएँसे सटकर मोटका पानी उलटनेका जरा गहरा बना हुआ स्थान।

लिलोही*–वि० लालची, लोभी।

लिव*–स्त्री० लौ, लगन।

लिवाना–स० क्रि० थमाना, पकड़ाना; लानेका काम कराना; साथ लाना।

लिवाल–पु० खरीदार, लेनेवाला।

लिवैया†–पु० लेनेवाला; लानेवाला।

लिसोड़ा–पु० दे० 'लसोड़ा'।

लिहाज़–पु० [फा०] ध्यानसे देखना; ध्यान, खयाल; खास खयाल; रिआयत, मुलाहजा; संकोच, अदब।

लिहाज़ा–अ० [अ०] इसलिए, अतः; निदान।

लिहाड़ा–वि० नीच, खराब; निकम्मा।

लिहाड़ी†–स्त्री० हँसी, निंदा। **मु०–लेना**–निंदा करना।

लिहाफ़–पु० [अ०] मोटी रजाई; घोड़ेकी झूल।

लिहित*–वि० चाटता हुआ।

लीक–स्त्री० लंबी रेखा; गाड़ी, सर्प आदिके चलनेसे बनी हुई रेखा; पगडंडी; मर्यादा; लोकरीति, रस्म-रिवाज; गणना; प्रतिबंध; लांछन, दाग; जूँका अंडा। **–करके**–लीक खींचकर। **मु०–खींचना**–दृढ़ निश्चय करना। **–पीटना**–पुरानी रसपर चलते जाना। **–लीक चलना**–रास्तेपर चलना; पुरानी रस्मपर चलना।

लीख–स्त्री० जूँका अंडा; एक बहुत छोटी तौल।

लीग–स्त्री० [अं०] सभा, संघ।

लीचड़, लीचर–वि० सुस्त; चिपटनेवाला; लेन-देन साफ न रखनेवाला।

लीची–स्त्री० एक वृक्ष या उसका फल जो मीठा होता है।

लीढ–वि० [सं०] चाटा, खाया हुआ; आस्वादित।

लीथोग्राफ–पु० [अं०] पत्थरका छापा (इसमें एक विशेष प्रकारके कागजपर हाथसे लिखकर गरम किये हुए विशेष पत्थरपर छाप उतारते हैं। यह उलटा रहता है। बादमें कागजपर छापनेपर अक्षर सीधे हो जाते हैं।)

लीद–स्त्री० गधे, घोड़े, खच्चर आदि पशुओंका मल।

लीन–वि० [सं०] विलीन; तन्मय; तत्पर; किसीके सहारे टिका हुआ; छिपा हुआ; ध्यानमग्न; संलग्न; अभिशोपित।

लीनता–स्त्री० [सं०] संलग्नता; तल्लीनता; निःसंगता।

लीपना–स०क्रि० पोतना; सफाईके लिए जमीन, दीवारपर मिट्टी, गोबर चढ़ाना, पोतना। **मु०–पोतना**–सफाई करना। **लीप-पोतकर बराबर करना**–काम बिगाड़ना, चौपट करना।

लीबर*–वि० मैल, कीचड़ आदिसे भरा हुआ–'अँखियाँ लीवर बेसवै नासै'–ग्राम०। पु० कीचड़, गंदगी, मैलापन।

लीमू*–पु० नीबू।

लीर*–स्त्री० पतला टुकड़ा, धज्जी–'वागाको दावन फट गयो और लीर झाड़ पै रह गयी'–अष्टछाप।

लील*–वि० नीले रंगका। पु० नील। **–कंठ†**–पु० दे० 'नीलकंठ'। **–गऊ,–गाय**–स्त्री० दे० 'नील-गाय'। **–गर†**–पु० दे० 'रँगरेज़'।

लीलना*–स० क्रि० निगलना।

लीलया–अ० [सं०] खेलमें; सहज ही।

लीलहिँ*–अ० खेलमें, अनायास–'अति उतंग तरु सैल गन लीलहिं लेहिं उठाइ'–रामा०।

लीलांबुज–पु० [सं०] दे० 'लीलाकमल'।

लीला–* पु० गोदना; काला घोड़ा। * वि० नीला। स्त्री० [सं०] क्रीड़ा, केलि; विलास, विहार; सौंदर्य; शृंगार-चेष्टा; प्रेमीका अनुकरण; अवतारोंके चरित्रका अभिनय; रहस्यपूर्ण कार्य; एक मात्रावृत्त; एक वर्णवृत्त। **–कमल,–पद्म**–पु० विनोद या क्रीड़ाके लिए हाथमें लिया हुआ कमल। **–कलह**–पु० क्रीड़ाके लिए किया जानेवाला कलह, प्रणयकलह। **–गृह,–गेह,–वेश्म(न्)**–पु० क्रीड़ा-भवन। **–चतुर**–वि० क्रीड़ामें कुशल। **–साध्य**–वि० सहज ही संपन्न होनेवाला। **–स्थल**–पु० क्रीड़ाका स्थान।

लीलाब्ज, लीलारविंद–पु० [सं०] दे० 'लीलाकमल'।

लीलाभरण–पु० [सं०] केवल क्रीड़ाके लिए पहना हुआ भूपण (जैसे कमलका कंकण आदि)।

लीलामय–वि० [सं०] क्रीड़ायुक्त; क्रीड़ा-संबंधी।

लीलायित–वि० [सं०] क्रीड़ा करनेवाला; अभिनय करनेवाला। पु० क्रीड़ा; सहजसिद्ध कार्य।

लीलावती–वि० स्त्री० [सं०] क्रीड़ा, विलास करनेवाली। स्त्री० दुर्गाका एक नाम; सुंदर स्त्री; भास्कराचार्यकी पुत्री और उसकी बनायी हुई गणितकी प्रसिद्ध पुस्तक।

लीलावान्(वत्)–वि० [सं०] सौंदर्यमय, रमणीय; क्रीड़ाशील।

लीलोद्यान–पु०[सं०] वह उद्यान जिसमें क्रीड़ा की जाय।

लुँगाड़ा–वि० लुच्चा, बदमाश।

लुंगी–स्त्री० छोटी धोती, तहमत; कपड़ेका टुकड़ा; खारुवा।

लुंचन–पु०[सं०] काटने, नोचने, छीलने आदिकी क्रिया।

लुंचित–वि० [सं०] नोचा, उखाडा, काटा, छीला हुआ। **–केश,–मूर्धज**–पु० जैन यति (जिसके सिरके बाल नुचे हों)।

लुंज–वि० बिना हाथ-पैरका, लँगड़ा-लूला। पु० बिना पत्तोंका पेड़, ठूँठ।

लुंठन–पु० [सं०] चोरी, लूट; लुढ़कन।

लुंठित–वि० [सं०] लुढ़का हुआ; लूटा या चुराया हुआ।

लुंड*–पु० रुंड, कबंध। **–मुंड**–वि० बिना सिर-पैर-हाथका (धड़); लँगड़ा-लूला; ठूँठ; गठरीकासा लपेटा हुआ।

लुंडा–वि० पुच्छ-पंखहीन (पक्षी); (बैल आदि) जिसकी पूँछपर बाल न हों। लपेटे हुए सूतकी पिंडी।

लुंडिका–स्त्री॰ [सं॰] गेंद, गोल पिंड ।

लुँड़ियाना†–स॰ क्रि॰ पिंडीके रूपमें लपेटना ।

लुंडी–वि॰स्त्री॰जिसकी पूँछ था पर झड़ गया हो (चिड़िया) । स्त्री॰ पिंडी, गोली (लपेटे हुए सूतकी) ।

लुंबिनी–स्त्री॰ [सं॰] कपिलवस्तुके निकट एक वन जहाँ बुद्धका जन्म हुआ था; एक राजकुमारी ।

लुआठ–पु॰ दे॰ 'लुआठा' ।

लुआठा–पु॰ जलती हुई या अधजली लकड़ी ।

लुआठी–स्त्री॰ छोटा लुआठा ।

लुआब–पु॰ [अ॰] थूक; लसदार रस । **–दार**–वि॰ जिससे लुआब निकले; लसदार ।

लुआर*–स्त्री॰ लू, गरम हवा–'कैधों यह ग्रीषमकी भीषम लुआर है'–रत्ना॰ ।

लुकंजन*–पु॰ एक अंजन जो लगानेवालेको अदृश्य कर देता है ।

लुक–पु॰ एक रोगन जिसे मिट्टीके वरतनोंपर चमक लानेके लिए लगाते हैं; आगकी लपट, चिनगारी । **–दार**–वि॰ जिसपर लुक फेरा गया हो । **–साज़**–पु॰ लुक फेरनेका काम करनेवाला ।

लुकना–अ॰ क्रि॰ छिपना, आड़में हो जाना । **मु॰ लुक-छिपकर**–बहुत ही गुप्त रूपसे ।

लुक़्मा–पु॰ [अ॰] कौर, ग्रास ।

लुक़्मान–पु॰ [अ॰] कुरानमें वर्णित एक हकीम जो अपनी बुद्धिमत्ताके लिए प्रसिद्ध है । **मु॰–के पास दवा नहीं**–रोगका असाध्य होना ।

लुका-छिपी–स्त्री॰ लुकने-छिपनेका एक खेल ।

लुकाट–पु॰ एक वृक्ष या उसका फल ।

लुकाठ*–पु॰ दे॰ 'लुआठ'; 'लुकाट' ।

लुकाना–स॰ क्रि॰ छिपाना । अ॰ क्रि॰ छिपना, लुकना ।

लुकार*–स्त्री॰ अग्नि, जलानेवाली शक्ति ।

लुकेठा*–पु॰ जलती हुई लकड़ी, लुआठी ।

लुकोना*–स॰ क्रि॰ छिपाना ।

लुक्कायित–वि॰ [सं] छिपा हुआ, अदृश्य, अंतर्हित ।

लुगड़ा–पु॰ कपड़ा; ओढ़नी ।

लुग़त–स्त्री॰ [अ॰] शब्द; भाषा; शब्दकोश ।

लुगदा–पु॰ गीली चीजका गोला, लोंदा ।

लुगदी–स्त्री॰ पीसी हुई गीली वस्तुका पिंड ।

लुगरा*–पु॰ कपड़ा; ओढ़नी, छोटी चादर; फटा कपड़ा ।

लुगरी–स्त्री॰ फटी-पुरानी धोती; † पीठ पीछे किसीका दोष कहना, चुगली ।

लुगाई–स्त्री॰ स्त्री; पत्नी ।

लुग़ात–पु॰ [अ॰] शब्दावली; शब्दकोश ।

लुगी*–स्त्री॰ लुंगी; फटी धोती; लहँगेका किनारा ।

लुग्गा*–पु॰ कपड़ा ।

लुचवाना–स॰ क्रि॰ नोचवाना ।

लुचुई*–स्त्री॰ (मैदेकी) नरम और पतली पूरी ।

लुच्चा–वि॰कोई चीज लुचककर भागनेवाला, चाई; कमीना; बदमाश; दुराचारी, लंपट ।

लुच्ची–स्त्री॰ दे॰ 'लुचुई' । वि॰ स्त्री॰ दे॰ 'लुच्चा' ।

लुटंत*–स्त्री॰ लूट ।

लुटकना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'लटकना' ।

लुटना–अ॰ क्रि॰ डाकुओं आदि द्वारा लूटा जाना; बरबाद, तबाह होना; लोटना; निछावर होना ।

लुटरना–अ॰ क्रि॰ लोटना; लुढ़कना ।

लुटरा–वि॰ घुँघराला ।

लुटाना–स॰ क्रि॰ डाकुओं या दूसरोंको धन लूटने देना; उचितसे कम दामपर कोई चीज ग्राहकको दे देना; बरबाद करना; अंधाधुंध, बेरोक दान या खर्च करना ।

लुटावना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'लुटाना' ।

लुटिया–स्त्री॰ छोटा लोटा । **मु॰–डुबाना**–अपयशका काम करना; काम चौपट करना ।

लुटेरा–पु॰ लूटनेवाला, डाकू ।

लुठना*–अ॰क्रि॰ भूमिपर लोट जाना, लोटना; लुढ़कना ।

लुठाना*–स॰ क्रि॰ लोटाना; लुढ़काना ।

लुठित–वि॰ [सं॰] लुढ़का, गिरा या लोटा हुआ ।

लुड़कना, लुढ़कना–अ॰ क्रि॰ चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना या गिरना, नीचे-ऊपर होते हुए घिसटना, रपटना ।

लुड़काना, लुढ़काना–स॰ क्रि॰ कोई चीज इतनी तेजीसे फेंकना, ढकेलना कि चक्कर खाती हुई बढ़े ।

लुढ़ना*–अ॰ क्रि॰ लुढ़कना; गिरना; पुष्पादिका तोड़ा जाना ।

लुढ़ाना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'लुढ़काना' ।

लुढ़ियाना–स॰ क्रि॰ गोल तुरपना, गुलना ।

लुतरा–वि॰ झगड़ा लगानेवाला, निंदक, चुगलखोर; शरारती; बदमाश ।

लुत्थ*–स्त्री॰ लोथ, लाश ।

लुत्फ़–पु॰ [अ॰] रस, मजा; आनंद; खूबी; अनुग्रह ।

लुनना–स॰ क्रि॰ फसल काटना; नष्ट करना; हटाना ।

लुनाई–स्त्री॰ सुंदरता, सलोनापन; फसल काटनेकी क्रिया या मजदूरी ।

लुनेरा–पु॰ फसल काटनेवाला; एक जाति जो शोरा आदि बनानेका काम करती है, नोनिया ।

लुपना*–अ॰ क्रि॰ लुकना, छिपना ।

लुप्त–वि॰ [सं॰] छिपा हुआ; अदृश्य; नष्ट; जिसका लोप हो गया हो; जिसका प्रयोग न होना हो ।

लुप्तोपमा–स्त्री॰ [सं॰] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें उसका एक या एकाधिक अंग लुप्त होते हैं ।

लुबधना*–अ॰ क्रि॰ लुब्ध होना ।

लुबुध*–वि॰ लुब्ध, लुभाया या ललचाया हुआ ।

लुबुधना†–अ॰ क्रि॰ लुब्ध, मोहित होना ।

लुब्ध–वि॰ [सं॰] आसक्त; लुभाया हुआ; मोहित ।

लुब्धक–पु॰ [सं॰] लोभी व्यक्ति; लंपट; बहेलिया; एक प्रकाशमान तारा ।

लुब्धना*–अ॰ क्रि॰ लुब्ध होना ।

लुब्ब–पु॰ [अ॰] सार भाग, गूदा; खुलासा । **–लुबाब**–पु॰ सारका सार, निचोड़; इत्र ।

लुभाना–अ॰ क्रि॰ आकृष्ट या मोहित होना; लालचमें पड़ना । स॰ क्रि॰ मोहित करना, रिझाना ।

लुरकना†–अ॰ क्रि॰ झूलना, लटकना ।

लुरका–पु॰ झुमका ।

लुरकी–स्त्री० कानका झुमका, कानकी बाली ।

लुरना*–अ० क्रि० लटकना, झूलना; झुक पड़ना; हिलना-डोलना; एक दारगी आ जाना; मुग्ध, आकृष्ट होना ।

लुरियाना*–अ० क्रि० एकाएक आ आना; प्रवृत्त होना; प्रेमपूर्वक स्पर्श करना, लपटना-झपटना–'बाघनके लेरुवा लरत लुरियात हैं'–रत्ना० ।

लुरी–स्त्री० हालकी ब्यायी गाय ।

लुलना*–अ० क्रि० लहराना, लटकते हुए झूलना ।

लुलित–वि० [सं०] लटकता, झूलता हुआ; अशांत; बिखरा हुआ । **–कुंडल**–वि० जिसके कुंडल हिलते हों ।

लुवार*–स्त्री० गरम और तपी हुई हवा, लू ।

लुहना*–अ० क्रि० मोहित होना; ललचना ।

लुहार–पु० लोहेका काम करनेवाला; लोहेका काम करनेवाली एक जाति । [स्त्री० 'लुहारिन' ।]

लुहारी–स्त्री० लोहेका काम; लुहारकी स्त्री ।

लूँबरी*–स्त्री० लोमड़ी ।

लू–स्त्री० तपी हुई वायु या उसका झोंका । **मु०–मारना, –लगना**–तप्त हवा लगनेसे ज्वर आदिका हो जाना ।

लूक–पु० टूटा हुआ तारा, उल्का; आगकी लपट, ज्वाला; जलती लकड़ी (जिसका कोई छोर जल रहा हो)–'यक लूक लीन्हों बार'–रघु० । स्त्री० गरमीकी तपी हुई हवा, लू ।

लूकट*–पु० आग; लुआठी ।

लूकना*–स० क्रि० आग लगाना, जलाना । अ० क्रि० छिपना ।

लूका–पु० आगकी लपट; चिनगारी; लकड़ी जिसका सिरा जलता हो । **मु०–लगाना**–आग लगाना, जलाना । **(मुँहमें)–लगाना**–मुँह जलाना, तिरस्कार करना ।

लूखा*–वि० दे० 'रूखा' ।

लूगड़–पु० कपड़ा; चादर, ओढ़नी ।

लूगा†–पु० वस्त्र; धोती ।

लूघर*–पु० लुआठ, जलती हुई लकड़ी ।

लूट–स्त्री० लूटनेकी क्रिया, डकैती; अपहृत, लूटा हुआ माल । **–क***–पु० लुटेरा, डाकू; सुंदरतामें बढ़नेवाला । **–खसोट**–स्त्री० लूटमार; आर्थिक शोषण । **–खूँद, –पाट, –मार**–स्त्री० लोगोंको शारीरिक यंत्रणा देकर उनका धन छीनना ।

लूटना–स० क्रि० जबरदस्ती छीनना; बरबाद, तबाह करना; धोखे, अन्याय, अनुचित ढंगसे किसीका धन ले लेना; उचितसे अधिक दाम लेना, ठगना; वशीभूत करना ।

लूटि*–स्त्री० दे० 'लूट' ।

लूत–* स्त्री० मकड़ी । वि० [सं०] खंडित, विभक्त ।

लूता–स्त्री० [सं०] मकड़ी; फफोले जैसी फुंसियाँ (कहा जाता है, ये मकड़ीके मूतनेसे होती हैं); चींटी ।

लूतामय–पु० [सं०] मकड़ी नामक रोग ।

लूती–स्त्री० लुआठी । **मु०–लगाना**–झगड़ा लगाना ।

लूनना*–स० क्रि० (फसल) काटना ।

लूम–पु० एक राग (सभी शुद्ध स्वरोंका), मेघ रागका पुत्र; [सं०] पूँछ, लांगुल; चक्कर, फेरा । **–विष**–पु० पूँछसे डंक मारनेवाला जीव (बिच्छू आदि) ।

लूमड़ी†–स्त्री० लोमड़ी ।

लूमना*–अ० क्रि० झूलना, लटकना ।

लूरना*–अ० क्रि० दे० 'लुरना' ।

लूला–वि० बिना हाथका; बेकाम; असहाय ।

लूहा†–स्त्री० लू ।

लूहर*–स्त्री० लू; पु० लूका, लूघर ।

लेँड़–पु० बँधा हुआ मल जो बत्तीके रूपमें निकलता है ।

लेँड़ी–स्त्री० बकरी आदिका गोल बँधा हुआ मल ।

लेँहड़ा–पु० (चौपायोंका) समूह, झुंड ।

लेँहड़ी–स्त्री० (भेड़ों, बकरियों आदिका) झुंड ।

लेई–स्त्री० लपसी; चिपकानेके कामके लिए घोलकर पकाया हुआ आटा; ईंटोंकी जोड़ाईके लिए गाढ़ा घोला हुआ सुरखी मिश्रित बरीका चूना । **–पूँजी**–स्त्री० सारी जमा ।

लेख–* वि० लिखने या लेखा करने योग्य । * स्त्री० पक्की बात; रेखा । पु० [सं०] पंक्ति; लिपि; लिखावट; लिखी बात, लिखकर प्रकट किये गये विचार; पत्र; लेखा, हिसाब-किताब । **–पद्धति, –प्रणाली**–स्त्री० लिखनेकी शैली । **–पाल**–पु० दे० 'पटवारी' । **–हार, –हारक**–पु० पत्रवाहक । **–हारी(रिन्)**–वि० पत्र ले जानेवाला ।

लेखक–पु० [सं०] लिपिकार; लिखनेवाला, क्लर्क; चित्रकार; ग्रंथ-रचयिता; पत्रादिके लिए लेख लिखनेवाला । **–प्रमाद**–पु० लिपिकारकी भूल ।

लेखन–पु० [सं०] लिखनेका काम; लिखनेकी कला; चित्रकारी; कूतना, लेखा लगाना । **–सामग्री**–स्त्री० (स्टेशनरी) कागज, कलम, स्याही आदि सामग्री जो लिखनेका कार्य करते समय आवश्यक हो ।

लेखनहार*–वि० लिखनेवाला, लेखक ।

लेखना*–स० क्रि० लिखना; चित्र बनाना; हिसाब लगाना; सोचना, समझना । **मु०–जोखना**–अंदाज लगाना; कूतना, जाँच करना ।

लेखनिका–स्त्री० [सं०] तूलिका ।

लेखनी–स्त्री० [सं०] लिखने, अक्षर बनानेका साधन, कलम । **–कर्मरोधन**–पु० (पेनडाउन स्ट्राइक) किसी कार्यालयके कर्मचारियोंका अधिकारियोंके किसी आदेश, व्यवहारादिका विरोध करनेके लिए लिखने-पढ़नेका काम स्थगित कर अपने स्थानपर चुपचाप बैठ रहना । **–जिह्वा**–स्त्री० (निब) अंग्रेजी ढंगकी कलमोंके सिरेपर खोंसी जानेवाली लोहे, ताँबे आदिकी बनी वह नोकदार वस्तु जिससे लिखा जाता है । **मु०–उठाना**–लिखना शुरू करना ।

लेखनीय–वि० [सं०] लिखने योग्य ।

लेखा–स्त्री० [सं०] रेखा; चित्रण; लिपि; चिह्न; किनारा; शरीरपर चंदनादिसे रेखाएँ बनाना ।

लेखा–पु० हिसाब; आय-व्ययका ब्योरा; अंदाज; गणना; विचार । **–कर्म**–पु० (अकाउंटेंसी) हिसाब-किताब रखनेका कार्य, मुनीमी । **–छलयोजन**–पु० (मैनिपुलेशन ऑफ अकाउंट्स) हिसाब तैयार करनेमें चालबाजी करना । **–पत्तर**–पु०, **–बही**–स्त्री० हिसाब-किताबका कागज; रोकड़बही । **–परीक्षक**–पु० (ऑडिटर) आय-व्ययकी जाँच-पड़ताल करनेवाला । **–परीक्षण**–पु० (ऑडिट) हिसाबकी जाँच-पड़ताल । **–पाल**–पु० (अकाउंटेंट) हिसाब (लेखा) रखने या लिखनेवाला, जो लेखा रखनेमें चतुर

हो, मुनीम। मु०–डेवढ़ करना–हिसाब साफ करना; चौपट करना। –पूरा या साफ करना–हिसाब चुकता करना।

लेखाध्यक्ष–पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

लेखिका–स्त्री०[सं०] छोटी रेखा; लेख या ग्रंथ लिखनेवाली।

लेखित–वि० [सं०] लिखवाया हुआ; लिखा हुआ।

लेखे–अ० विचारानुसार, समझमें।

लेख्य–वि० [सं०] खरोंचने योग्य; लिखने योग्य; जो लिखनेके लिए हो। पु० लेख-लिखनेकी कला; चित्र; पत्र; दस्तावेज; (डाकूमेंट) दे० 'प्रलेख'। –कृत–वि० जो लिखा-पढ़ी करके पक्का किया गया हो। –पत्र,–पत्रक–पु० लेख; पत्र; दस्तावेज; ताड़का पत्ता।

लेख्यारूढ–वि०[सं०] लिखा-पढ़ी किया हुआ, दस्तावेजी।

लेज़म–पु० [फा०] एक तरहकी कमान जिसमें ताँतकी जगह लोहेकी जंजीर लगी होती है और जिसके सहारे कसरत की जाती है; नरम और लचीली कमान जिसपर तीरंदाजीका अभ्यास किया जाता है।

लेजिम–पु० दे० 'लेज़म'।

लेजुर*–स्त्री० रस्सी; कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी।

लेटा†–स्त्री० लेटने, पौढ़नेकी क्रिया; चूने-सुरखी आदिका बिछाया हुआ मसाला।

लेटना–अ० क्रि० किसी आधारपर पड़ रहना; पौढ़ना; आराम करना; किसी चीजका झुककर गिरना।

लेटरबक्स–पु० [अं०] भेजी जानेवाली चिट्ठी डालनेका संदूक; आनेवाली चिट्ठी छोड़नेका, मकानके द्वारपर लगा हुआ संदूक।

लेटाना–स० क्रि० दे० 'लिटाना'।

लेडी–स्त्री० [अं०] महिला, भले घरकी स्त्री; अंग्रेजी फैशनवाली स्त्री। –डॉक्टर–स्त्री० स्त्री-डॉक्टर।

लेन–पु० लेनेकी क्रिया; प्राप्य धन, लहना, पावना। –दार–पु० महाजन, लहनेदार, उत्तमर्ण। –देन–पु० लेना-देना, आदान-प्रदान; ऋण लेने-देनेका काम, महाजनी। –हार*–पु० लहनेदार, लेनेवाला। मु०–देन न होना–सरोकार-संबंध न होना।

लेना–स० क्रि० प्राप्त करना, पकड़ना, थामना; खरीदना; जीतना, अधिकार, कब्जेमें करना; उधार, कर्ज ग्रहण करना; भागते हुएको पकड़ना; अगवानी करना; किसी कामका भार उठाना; किसीको स्वीकार, धारण करना (पूजाके लिए फूल लेना); सेवन करना; संभोग करना। ले आना–लाना। लेना-देना–पु० लेन-देन। मु० ले उड़ना–कोई चीज लेकर भाग जाना; बिना समझे बातका बतंगड़ करना। ले डालना–नष्ट, खराब करना; हराना; पूरा करना, निबटाना (कोई काम)। ले डूबना–अपने साथ दूसरोंको भी नष्ट करना। ले-देकर–जोड़-जाड़कर; कठिनाईसे। ले-दे करना–हुज्जत करना; अत्यधिक यत्न करना। लेना एक न देना दो–कोई प्रयोजन, मतलब न होना। लेनेके देने पड़ना–लाभके बदले हानि होना। ले बैठना–बोझ सहित डूब जाना (नाव आदिका); अपने साथ नष्ट करना; किसी कारबारका पूँजी सहित नष्ट हो जाना। ले मरना–अपने साथ बरबाद करना। ले रखना–खरीदकर रख छोड़ना।

लेप–पु० [सं०] लेपने, पोतनेकी क्रिया; पोतनेके काम आनेवाली कोई गीली चीज; उबटन; मरहम; लगाव।

लेपक–पु० [सं०] लेप करनेवाला; सफेदी करनेवाला।

लेपन–पु० [सं०] लेपनेकी क्रिया, लेप चढ़ाना; उबटन।

लेपना–स० क्रि० गीली चीज पोतना, चुपड़ना।

लेमू–पु० [फा०] नीबू। –निचोड़–पु० वह आदमी जो हर एकके साथ खानेमें शामिल हो जाय।

लेरुआ–* पु० बछड़ा; † लड्डू।

लेलिहान–वि० [सं०] चखने, बार-बार चाटनेवाला; लुब्ध, ललचाया हुआ।

लेव–पु० घाव आदिपर लगानेकी दवा; आँचसे बचानेके लिए हंडी आदिकी पेंदीपर लगाया जानेवाला राख या मिट्टीका लेप; दीवारपर लगानेका गिलावा।

लेवा–वि० लेनेवाला (यौगिकरूपमें प्रयुक्त–जैसे नामलेवा)। पु० कहगिल, गिलावा; वर्षाके पानीमें मिट्टीका घुल जाना।

लेवादेई–स्त्री० लेन-देन।

लेवाल–पु० लेने, खरीदनेवाला।

लेश–पु० [सं०] अणु; सूक्ष्म अंश, अल्पता; समयका एक मान; एक अर्थालंकार जहाँ गुणको दोषके समान और दोषको गुणके सदृश दिखानेका प्रयत्न किया जाय।

लेष*–पु० दे० 'लेश', 'लेख'।

लेषना*–स० क्रि० दे० 'लखना', 'लिखना'।

लेषनी*–स्त्री० दे० 'लेखनी'।

लेषे*–अ० दे० 'लेखे'।

लेस–* पु० दे० 'लेश;' † गिलावा, कहगिल; पानीमें घोलकर गाढ़ी बनायी हुई चीज, लस। –दार–वि० लसीला, लसदार।

लेसना†–स० क्रि० जलाना, प्रज्वलित करना; पोतना, चिपकाना; दीवारपर मिट्टी आदि पोतना; चुगली खाना।

लेहन–पु० [सं०] चाटनेकी क्रिया।

लेहाज़ा–अ० दे० 'लिहाज़ा'।

लेहाड़ा†–वि० दे० 'लिहाड़ा'।

लेहाड़ी–स्त्री० दे० 'लिहाड़ी'।

लेहाफ़–पु० दे० 'लिहाफ़'।

लेह्य–वि० [सं०] चाटने योग्य। पु० चाटने योग्य चीज, चटनी।

लैंग–वि० [सं०] लिंग-संबंधी (व्या०)।

लैंगिक–वि० [सं०] लिंग, चिह्नोंसे प्राप्त (प्रमाण); लिंग-संबंधी; स्त्री-पुरुषकी जननेंद्रियसे संबंध रखनेवाला; यौन (सेक्सुअल)।

लैंप–पु० [अं०] चिराग, दीपक, लालटेन।

लै*–अ० तक, पर्यंत।

लैटिन–स्त्री० इटलीकी पुरानी भाषा जो रोमनकालमें प्रचलित थी, लातीनी।

लैन–स्त्री० [अं० 'लाइन'] रेखा; सीमा-रेखा; पंक्ति; पैदल सेना; सिपाहियोंका निवासस्थान, बैरक।

लैरू–पु० बछड़ा, छोटा बच्चा।

लैला–स्त्री० [सं०] लैला-मजनूँकी प्रेम-कहानीकी नायिका और मजनूँकी प्रेमिका; प्रेयसी; सुंदरी; श्यामा। –मजनूँ–

पु० लैला और मजनूँ; आशिक-माशूक़ ।

लैसंस-पु० [अं० 'लाइसेंस'] विशेष अधिकारका प्रमाण-पत्र, सनद ।

लैस-वि० तैयार, कीलकाँटेसे दुरुस्त, सजा हुआ; * निमग्न । पु० फीता (कपड़ेपर चढ़ानेका); एक तरहका सिरका; कमानी; * एक तरहका बाण ।

लौं*-अ० समान; तक ।

लौंड़ी†-स्त्री० कानकी लौ ।

लौंदा-पु० किसी गीली वस्तुका पिंड ।

लोइ*-पु० लोग । स्त्री० चमक; लौ, ज्वाला ।

लोइन*-पु० नमकीनपन; नमक, सौंदर्य; लोचन, नेत्र ।

लोई-स्त्री० रोटी बनानेके लिए साने हुए आटेकी गोली; एक तरहका ऊनी कंबल । * पु० लोग ।

लोकंजन*-पु० दे० 'लुकंजन' ।

लोकंदा*-पु० पहली बार ससुराल जानेवाली लड़कीके साथ दासीका जाना ।

लोकंदी†-स्त्री० पहली बार ससुराल जानेवाली लड़कीके साथ जानेवाली दासी ।

लोक-पु० [सं०] विश्वका एक विभाग, भुवन (साधारणतः स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल-ये तीन लोक माने जाते हैं, पर विशेष विभागके अनुसार १४ माने जाते हैं-७ ऊपर, ७ नीचे); संसार; पृथ्वी; मानवजाति, समाज; (पब्लिक) प्रजा, सामान्य लोग, जनता; समूह; भूभाग, प्रांत; निवासस्थान; दिशा; सांसारिक व्यवहार । **-कंटक,-पीडक**-वि० (पब्लिक न्यूसेंस) सर्वसाधारणको तंग करनेवाला, सतानेवाला, हानि पहुँचानेवाला । **-कथा**-स्त्री० जन-समाजमें प्रचलित कथाएँ । **-कर्ता(र्तृ)**-पु० ब्रह्मा; विष्णु; महेश । **-कार्य**-पु० (पब्लिक अफेयर्स) लोक या सर्वसाधारणसे संबंध रखनेवाले कार्य । **-गीत**-पु० साधारण जनतामें प्रचलित गीत । **-घोषणा**-स्त्री० (मेनिफेस्टो) दे० 'नीतिघोषणा' । **-जित्**-वि० लोकविजयी । पु० ऋषि; बुद्ध । **-तंत्र**-पु० वह शासन-प्रणाली जिसमें शासनाधिकार जन-प्रतिनिधियोंके हाथमें हो । **-तंत्रीकरण**-पु० (डिमॉक्रैटिजेशन) किसी राज्य, शासनपद्धति आदिको लोकतंत्रका रूप देना, उसे लोकतांत्रिक-सिद्धांतोंके अनुरूप बनाना । **-त्रय**-पु०,**-त्रयी**-स्त्री० तीनों लोक-आकाश, पाताल और मर्त्यलोक । **-धुनि***-स्त्री० लोकध्वनि, अफवाह, जनश्रुति । **-नाथ**-पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; राजा; बुद्ध । **-नायक**-पु० लोकोंका नयन करनेवाला (सूर्य) । **-निर्माण-विभाग**-पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) सार्वजनिक भवन, सड़कें इत्यादि तैयार करनेवाला विभाग । **-नृत्य**-पु० (फोक डांस) सामान्य जनतामें प्रचलित नृत्यकी प्रथा । **-नेता(तृ)**-पु० शिव । **-प,-पाल**-पु० दिक्पाल; नरेश । **-पति**-पु० ब्रह्मा; विष्णु; नरेश । **-पथ**-पु०,**-पद्धति**-स्त्री० दुनियाका तरीका । **-प्रत्यय**-पु० वह जो संसारमें सर्वत्र प्रचलित हो (प्रथा आदि) । **-प्रवाद**-पु० सर्वसाधारणमें प्रचलित बात । **-प्रवाही-(हिन्)**-वि० दुनियाके साथ बहनेवाला । **-प्रसिद्ध**-वि० विश्व-विख्यात, सर्वज्ञात । **-प्रिय**-वि० जो बहुतसे लोगोंको प्रिय लगे, रुचे । **-बंधु,-बांधव**-पु० शिव; सूर्य । **-बाह्य**-वि० दुनियासे भिन्न; सनकी; समाजसे बहिष्कृत । **-भर्ता(र्तृ)**-पु० संसारका भरण-पोषण करनेवाला । **-भावन,-भावी (विन्)**-पु० लोककी भलाई करनवाला; लोक-रचना करनेवाला । **-मत**-पु० जनताकी राय । **-यात्रा**-स्त्री० लोकव्यापार; आचारण, व्यवहार । **-रंजन**-पु० जनताको संतुष्ट कर उसका विश्वास प्राप्त करना । **-रव**-पु० अफवाह, जनश्रुति । **-लीक**-स्त्री० [हिं०] लोक-मर्यादा । **-लोचन**-पु० सूर्य । **-वचन**-पु० अफवाह । **-वाद**-पु०,**-वार्ता**-स्त्री० अफवाह । **-वाहन**-पु० (पब्लिक कैरियर) जनताका सामान ढोनेके लिए प्रयुक्त मोटर ट्रक । **-विज्ञात**-वि० लोकप्रसिद्ध । **-विरुद्ध**-वि० जनमतके विरुद्ध; सबसे भिन्न मत रखनेवाला । **-विश्रुत**-वि० जगद्विख्यात । **-व्यवहार**-पु० लोकाचार । **-शिक्षण-संचालक**-पु० (डायरेक्टर ऑफ पब्लिक एजुकेशन) सार्वजनिक शिक्षा-विभागके प्रधान अधिकारी । **-श्रुति**-स्त्री० लोकख्याति; अफवाह । **-संग्रह**-पु० लोककल्याण; लोगोंकी भलाई चाहना; मानवसंपर्कसे प्राप्त अनुभव; लोकोंका संग्रह, सारा विश्व । **-सत्ता**-स्त्री० वह शासन-व्यवस्था जिसमें सत्ता जनताके हाथमें हो । **-सत्तात्मक**-वि० जनता द्वारा संचालित (शासन) । **-सभा**-स्त्री० (हाउस ऑफ पीपुल) लोकतंत्रवादी राज्योंमें विधान आदि बनानेवाली जनप्रतिनिधियोंकी सभा; भारतीय गणराज्यकी संसद्‌का निम्न सदन । **-सेवक**-पु० (पब्लिक सर्वेंट) जनताकी सेवा-संबंधी कार्योंमें नियुक्त सरकारी कर्मचारी । **-सेवा**-स्त्री० (पब्लिक सर्विस) जनताके हितकी दृष्टिसे किया जानेवाला कार्य; राज्यकी या सरकारकी नौकरी जिससे जनताकी सेवा या कष्ट-निवारण हो । **-सेवा-आयोग**-पु० (पब्लिक सर्विस कमीशन) प्रशासन-कार्य चलानेके लिए उच्च श्रेणीके लोक-सेवकोंका परीक्षादि द्वारा चुनाव करनेमें सहायता देनेवाला आयोग । **-सिद्ध**-वि० लोक या समाज द्वारा स्वीकृत; प्रचलित । **-स्वास्थ्य**-पु० (पब्लिक हेल्थ) जनताका स्वास्थ्य । **-हित**-पु० (पब्लिक गुड) सर्वसाधारणका हित या लाभ ।

लोकटी*-स्त्री० लोमड़ी ।

लोकना-स०क्रि० किसी चीजको गिरनेसे पहिले ही हाथोंसे पकड़ लेना; रास्तेमें ही उड़ा लेना ।

लोकांतर-पु० [सं०] परलोक । **-गमन**-पु० स्वर्गवास ।

लोकांतरित-वि० [सं०] परलोक गया हुआ, मृत ।

लोकाचार-पु० [सं०] संसारका व्यवहार, चलन ।

लोकाट-पु० एक वृक्ष या उसका फल जो बेरके बराबर और पकनेपर पीला और मीठा होता है ।

लोकाधिप-पु० [सं०] लोकपाल; बुद्ध; नरेश ।

लोकाना†-स० क्रि० कोई चीज उछालना; किसीको कोई चीज उछालकर देना (जैसे गेंद आदि) ।

लोकानुग्रह-पु० [सं०] लोगोंका कल्याण ।

लोकापवाद-पु० [सं०] लोकनिंदा, बदनामी ।

लोकाभ्युदय-पु० [सं०] संसारकी उन्नति ।

लोकायत-पु० [सं०] इसी लोकपर आस्था, विश्वास

रखनेवाला व्यक्ति; चार्वाकका अनुयायी; चार्वाक दर्शन (परोक्ष, परलोकवादका खंडन करनेवाला नास्तिक मत)।

लोकायतिक-पु० [सं०] नास्तिक; चार्वाकका अनुयायी।

लोकेश्वर-पु० [सं०] लोकका स्वामी; ईश्वर; बुद्ध।

लोकैषणा-स्त्री० [सं०] उत्कर्ष, सम्मान आदिकी कामना; सुखकी अभिलाषा।

लोकोक्ति-स्त्री० [सं०] कहावत; एक अलंकार (इसमें लोकोक्तिका प्रयोग किया जाता है)।

लोकोत्तर-वि० [सं०] लोकमें प्राप्त पदार्थोंसे उत्तम, श्रेष्ठ, असाधारण, विलक्षण।

लोकोपकार-पु० [सं०] सार्वजनिक लाभका काम।

लोकोपयोगी(गिन्)-वि० [सं०] लोगोंके लिए उपयोगी, जनताके कामका। **-सेवा**-स्त्री० (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस) वह सेवा, कार्य या व्यवस्था जो जनताके लिए विशेष उपयोगी या कामकी हो (जैसे नगरकी जलकल-व्यवस्था, बिजली, सफाई आदिका काम)।

लोखड़ी†-स्त्री० लोमड़ी।

लोखर-पु० नाई, बढ़ई आदिके लोहेके औजार; किसबत।

लोग-पु० मनुष्य (बहुवचनमें प्रयुक्त)। **-बाग**-पु० सर्वसाधारण, जनता।

लोगाई*-स्त्री० दे० 'लुगाई'।

लोच-स्त्री० लचीलापन, लचक; कोमलता, मृदुता; अच्छा ढंग; * रुचि, अभिलाषा; लुंचन, नोचना; उखाड़ना।

लोचन-वि० [सं०] चमकानेवाला। पु० आँख; देखनेकी क्रिया। **-गोचर,-पथ,-मार्ग**-पु० दृष्टिपथ, दृष्टिके अंदर पड़नेवाला क्षेत्र।

लोचनांचल-पु० [सं०] आँखका कोना।

लोचना†-स० क्रि० रुचि, हविस पैदा करना; इच्छा करना; * प्रकाशित करना। अ० क्रि० चाहना, ललचना; विराजना। † पु० कन्याके संतानवती होनेपर पितृगृहसे भेजा जानेवाला मांगलिक उपहार जिसमें सोंठ, गुड़ आदि चीजें रहती हैं।

लोट-स्त्री० लुढ़कना, लोटनेकी क्रिया। पु० घाट; *त्रिवली। **-पोट**-स्त्री० आराम करना, लेटना। वि० हँसीके प्रवेगसे अधीर। **मु०-पोट होना**-अधिक हँसनेके कारण गिर पड़ना। **-लगाना**-लुढ़कना; लेट जाना; किसी चीजपर आशिक होना; जिद करना। **-हो जाना,-होना**-रीझना; व्याकुल होना।

लोटन-पु० भूमिपर लुढ़कनेवाला एक कबूतर; गहरी जोताई करनेका एक हल; रास्तेपरका कंकड़। **-सज्जी**-स्त्री० एक तरहकी सज्जी।

लोटना-अ० क्रि० नीचे-ऊपर होते हुए जाना, लुढ़कना; करवटें बदलना, छटपटाना; आराम करना, लेटना। **-पोटना**-अ० क्रि० लेटना; सोना। **मु० लोट जाना**-लुढ़कना; संज्ञाहीन होना या मर जाना। **लोटता फिरना**-तड़पता फिरना, व्याकुल होना। **लोट-पोटकर उठ खड़ा होना**-बीमार होकर अच्छा हो जाना।

लोटपटा*-पु० विवाहमें वर-वधूका पीढ़ा बदलनेकी रीति; उलट-फेर।

लोटा-पु० जल रखनेका धातुका एक छोटा पात्र।

लोटिया-स्त्री० छोटा लोटा।

लोडन-पु० [सं०] हिलाने-डुलाने, क्षुब्ध या अशांत करनेकी क्रिया, मंथन।

लोड़ना*-स० क्रि० चाहना, जरूरत महसूस करना।

लोडित-वि० [सं०] मथित, क्षुब्ध किया हुआ।

लोढ़ना-स०क्रि० ओटना; साफ करना; * (फूल) तोड़ना। * अ० क्रि० लोटना, जमीनपर घसिटना।

लोढ़ा-पु० सिलपर पीसनेके लिए बना हुआ पत्थरका गोल, लंबा टुकड़ा, बट्टा।

लोढ़िया-स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लोथ-स्त्री० शव, लाश। **-पोथ**-वि० लथपथ, थका हुआ।

लोथड़ा-पु० मांसका बड़ा टुकड़ा।

लोथरा*-पु० दे० 'लोथड़ा'।

लोथि*-स्त्री० दे० 'लोथ'।

लोन*-पु० लवण, नमक; सुंदरता, लावण्य। **-हरामी***-वि० नमकहराम, कृतघ्न (मुहावरे) नमकके साथ।

लोना-वि० नमकीन; सलोना, सुंदर। पु० क्षार, नोना; एक साग, अमलोनी। स्त्री० एक जादूगरनी। स० क्रि० लुनना, काटना।

लोनाई*-स्त्री० सुंदरता।

लोनिया-पु० नमक बनाने और बेचनेका व्यवसाय करनेवाली एक जाति, नोनियाँ। स्त्री० लोनी साग।

लोनी-स्त्री० एक साग, अमलोनी; चनेकी पत्तियोंपर मिलनेवाला खार, क्षार; शोरा या नमक निकालनेकी मिट्टी; लोना; * सुंदर नायिका। * पु० नवनीत।

लोप-पु० [सं०] नाश; अभाव; छिपना; शब्दमेंके किसी अक्षरका लुप्त होना। **-विभ्रम**-पु०(एरर्स एंड ओमिशन्स) (हिसाब, ब्यौरे आदिमें हुई) भूल और छूट, भूल-चूक।

लोपना*-स० क्रि० मिटाना, लुप्त करना; भंग करना; छिपाना। अ० क्रि० लुप्त होना; छिपना।

लोपांजन-पु० [सं०] एक अंजन जिसे लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोबान-[अ०] एक वृक्षका निर्यास जिसे सुगंधके लिए आगपर जलाते हैं और दवाके भी काममें लाते हैं।

लोबानी-वि० [अ०] जिसमें लोबान हो या जिससे लोबान निकले; लोबान जैसा, सफेद।

लोबिया-पु० बोड़ेका एक भेद जिसकी तरकारी बनाते हैं और बीजोंसे दाल और दालमोठ तैयार करते हैं।

लोभ-पु०[सं०] दूसरेकी कोई वस्तु लेनेकी इच्छा, लालच; लालसा, आकांक्षा; अधीरता; कंजूसी।

लोभना*-अ० क्रि० आसक्त, लुब्ध होना। स० क्रि० लुभाना, मुग्ध करना।

लोभनीय-वि० [सं०] लुभानेवाला, मनोहर, आकर्षक।

लोभाना*-स० क्रि० मोहना, मुग्ध करना। अ० क्रि० मोहित, मुग्ध होना।

लोभार*-वि० लुभाने, मुग्ध करनेवाला।

लोभित-वि० [सं०] मुग्ध, लुब्ध।

लोभी(भिन्)-वि० [सं०] किसी वस्तुका लोभ रखनेवाला, लालची; लुब्ध।

लोम(न्)-पु० [सं०] शरीरपरके बाल, रोम; *छ;

* लोमड़ी। **–कीट**–पु० जूँ। **–कूप,–गर्त,–रंध्र,–विवर**–पु० रोएँकी जड़मेंका छेद। **–घ्न**–पु० वालोंको नष्ट करनेवाला रोग, गंजापन। **–राजि**–स्त्री० लोमावली। **–हर्ष**–पु० रोमांच। **–हर्षक**–वि० रोमांचकारी। **–हर्षण**–पु० रोमांच। वि० अत्यधिक भय, हर्ष आदि द्वारा रोएँ खड़े कर देनेवाला (दृश्य, वृत्त आदि)।

लोमड़ी–स्त्री० गीदड़की जातिका एक जानवर।

लोमा–स्त्री० [सं०] वच।

लोमालि, लोमाली, लोमावली–स्त्री० [सं०] सीनेसे नाभितक उगे हुए घने बाल।

लोय*–पु० लोक, लोग; आँख। स्त्री० ज्वाला, लौ–'करनी विसकी लोय'–साखी। अ० दे० 'लौँ'।

लोयन*–पु० लोचन, आँख।

लोर*–वि० लोल, चंचल; उत्कंठित, उत्सुक। पु० कानकी लोलकी, ललरी; कानका कुंडल; लटकन, झुमका; आँसू–'चारु आनन लोरधारा बरनि कापै जाय'–सू०।

लोरना*–अ० क्रि० चंचल होना; झुक जाना, झुकना; लपकना, ललकना; लोटना; लिपटना; तैरना।

लोरवा†–पु० आँसू (ग्राम०)।

लोरी–स्त्री० बच्चोंको सुलाते समय गानेका गीत।

लोल–वि० [सं०] चंचल; हिलता-डोलता; क्षुब्ध, अशांत; अस्थिर; बदलनेवाला; उत्सुक; लोभी। **–चक्षु(स्),–नयन,–नेत्र,–लोचन**–वि० जिसकी आँखें चारों तरफ दौड़ती हों। **–जिह्व**–वि० लालची। पु० सर्प।

लोलक–पु० [सं०] नथ आदिका लटकन; घंटेका लटकन; लोलकी।

लोलकी–स्त्री० कानका निचला भाग, ललरी।

लोलना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना; चंचल होना। स० क्रि० हिलाना।

लोला–स्त्री० [सं०] जीभ; लक्ष्मी; चंचला स्त्री; एक वर्ण-वृत्त; बिजली; एक विशेप प्रकारकी नाव।

लोलाक्षिका, लोलाक्षी–स्त्री० [सं०] चंचल नेत्रोंवाली स्त्री।

लोलिनी–स्त्री० [सं०] चंचला स्त्री।

लोलुप–वि० [सं०] लालची, लोभी; कोई वस्तु पानेके लिए अधीर, उत्सुक; चटोर।

लोलुपता–स्त्री०, **लोलुपत्व**–पु० [सं०] लालच; लालसा।

लोवा–स्त्री० लोमड़ी। पु० लवा नामका पक्षी।

लोष्ट–पु० [सं०] ढेला।

लोहँड़ा*–पु० लोहेका पात्र, तसला आदि।

लोह–वि० [सं०] ताँबेके रंगका, लाल; लोहेका बना। पु० लोहा; रक्त; हथियार। **–कार**–पु० लोहार। **–किट्ट**–पु० लोहेका मैल। **–चून**–पु० [हिं०] दे० 'लोहचूर्ण'। **–चूर्ण**–पु० लोहेका मैल, मोरचा; लोहेका बुरादा। **–प्रतिमा**–स्त्री० निहाई; लोहेकी मूर्ति। **–मल**–पु० मोरचा। **–लंगर**–पु० [हिं०] जहाजका लंगर; कोई बहुत भारी चीज। **–सार**–पु० फौलाद।

लोहवान–पु० दे० 'लोबान'।

लोहाँगी–स्त्री० वह लाठी जिसमें किसी सिरेपर लोहा लगा हो।

लोहा–पु० एक प्रसिद्ध धातु; हथियार; लौहनिर्मित वस्तु; धोबीकी इस्तरी; युद्ध–'दुऔ अनी सनमुख भई लोहा भयेउ असूझ'–प०; धाक। मु० **–करना,–देना**–इस्तरी करना। **–गहना***–युद्ध करना; युद्धके लिए तैयार होना। **–बजना**–युद्ध होना। **–बरसना**–घमासान युद्ध चलना। **(किसीका)–मानना**–(किसीका) प्रभाव, प्रभुत्व मानना। **(किसीसे)–लेना**–लड़ना, साहसपूर्वक सामना करना। **–(हे)का दिल**–निष्ठुर दिल। **–का पानी**–तलवार आदिपर चढ़ाया जानेवाला पानी। **–के चने चबाना**–बहुत कठिन कार्य करना।

लोहाना–अ० क्रि० लोहेके पात्रमें रहनेके कारण किसी वस्तुमें उसका स्वाद या रंग आना।

लोहार–पु० लोहेका काम करनेवाली एक जाति। **–ख़ाना**–पु० लोहारके काम करनेका स्थान। मु० **–ख़ानेमें सेवइयाँ बेचना**–बेवकूफीका काम करना।

लोहारी–स्त्री० लोहारका काम या व्यवसाय।

लोहिका–स्त्री० [सं०] लोहेका तसला।

लोहित–वि० [सं०] लाल; ताँबेका बना हुआ। पु० लाल रंग; मंगल ग्रह; सर्प; ताँबा; रक्त। **–ग्रीव**–पु० अग्नि। **–नयन**–वि० जिसकी आँखें (क्रोधसे) लाल हों।

लोहिया–पु० लोहेका कारबार करनेवाला; मारवाड़ी बनियोंकी एक जाति; लाल बैल; लोहेकी गोली। वि० लोहेका; लाल रंगका (जानवर आदि)।

लोही–स्त्री० प्रत्यूपकी लाली–'होत भोर लोही लागत कुस कै जनम भये'–ग्राम०; लोई; * चुगली। मु० **–फटना**–पौ फटना।

लोहू–पु० रक्त, लहू।

लौँ*–अ० तक, पर्यंत; समान, बराबर।

लौँकना*–अ० क्रि० चमकना; चकाचौंध होना; सूझना, दिखाई देना।

लौँग–स्त्री० एक प्रकारका वृक्ष या उसकी कली; नाक-कानका एक आभूपण। **–लता**–स्त्री० एक बँगला मिठाई।

लौंडा–पु० छोकरा, लड़का। वि० नादान। **–पन**–पु० लौंडा होना; लड़कपन; छिछोरपन। **–(डे)बाज़**–पु० बालकोंसे प्रेम और अप्राकृतिक संबंध करनेवाला। वि० स्त्री० किशोरवयके बालकोंसे अनुचित संबंध रखनेवाली प्रौढ़ा (स्त्री)। **–बाज़ी**–स्त्री० लौंडेबाज होना, लौंडोंसे अनुचित संबंध रखना।

लौँड़ी–स्त्री० दासी, टहलनी, मजदूरनी।

लौँद–पु० मलमास।

लौँदरा†–पु० पहली वर्षा।

लौ–स्त्री० लपट, ज्वाला; दीपशिखा; लोलकी; चाह, धुन।

लौआ†–पु० लौकी, कद्दू।

लौकना†–अ० क्रि० देख पड़ना; चमकना।

लौकायतिक–पु० [सं०] चार्वाकका अनुयायी, नास्तिक।

लौकिक–वि० [सं०] लोकका, सांसारिक; व्यवहार-संबंधी, व्यावहारिक; सामान्य।

लौकी†–स्त्री० घिया, कद्दू।

लौटपटा–पु० दे० 'लोटपटा'।

लौटना–अ० क्रि० वापस आना, फिरना; पीछे मुँह फेरना;

स्वीकृत बातको अस्वीकार करना। स० क्रि० उलटना-पलटना, इधरसे उधर करना। **लौट-पौट**–स्त्री० दोरुखी छपाई; उलटने-पलटनेका काम; दे० 'लोटपोट'। **लौट-फेर**–पु० भारी परिवर्तन, उलट-फेर।

लौटाना–स० क्रि० वापस करना; फेरना, बदलना; उलटे पैर वापस करना; उलट-पुलट करना।

लौटानी–अ० लौटती वार।

लौन*–पु० लवण, नमक।

लौना†–पु० जानवरोंका अगला और पिछला पैर साथ बाँधनेकी रस्सी; फसलकी कटाई; ईंधन। * वि० सुंदर।

लौनी–स्त्री० फसलकी कटाई; अँकवारमें अमानेवाला कटा हुआ डंठल। * पु० नवनीत, मक्खन।

लौरी*–स्त्री० बछिया–'सो सुनि राधिका काँपि गई डरि दौरिकै लौरिहि सी लपटानी'–सुधानिधि।

लौल्य–पु० [सं०] चंचलता, अस्थिरता; लोभ।

लौस–पु० [फा०] लिप्त होना; मिलावट; धब्बा (बेलौस)।

लौह–पु० [सं०] लोहा; शस्त्रास्त्र, हथियार। वि० लोहे या ताँबेका बना हुआ; लाल। **–आवरण,–पट**–पु० (आयर्न करटेन) ऐसा आवरण या प्रतिबंध-व्यवस्था जिसकी आड़में होनेवाली बातें दूसरोंपर प्रकट न होने पायें (विशेषकर आधुनिक रूसकी स्थितिके लिए प्रयुक्त)। **–कार**–पु० लोहार। **–ज**–पु० मोरचा। **–दीवार**–स्त्री० [हिं०] (आयर्न करटेन) दे० 'लौहपट'। **–बंध**–पु० लोहेकी जंजीर; हथकड़ी। **–भांड**–पु० लोहेका पात्र; (हार्डवेयर) लोहे-ताँबेके बने पात्र तथा अन्य वस्तुएँ। **–मल**–पु० लोहेका मैल। **–युग**–पु० लोहेके प्राथमिक प्रयोगका ऐतिहासिक काल। **–विहीन**–वि० (नॉन-फेरस) दे० 'लौहेतर'। **–सार**–पु० लौहनिर्मित एक नमक।

लौहित्य–पु० [सं०] लाल सागर; लाल रंग।

लौहेतर–वि० [सं०] (नॉन-फेरस) (वह धातु) जिसमें लोहेका मेल न हो, लोहेको छोड़कर अन्य (धातु)।

ल्याना, ल्यावना*–स० क्रि० दे० 'लाना'।

ल्यौ*–स्त्री० लौ, धुन।

ल्वारि*–स्त्री० लू।

व

व–देवनागरी वर्णमालाका उनतीसवाँ व्यंजन, अंतस्थ वर्ण।

वंक–वि० [सं०] टेढ़ा, झुका हुआ। **–नाली**–स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।

वंकट–वि० टेढ़ा; विकट।

वंकिम–वि० कुछ-कुछ टेढ़ा।

वंक्षण–पु० [सं०] पेड़ू और जाँघके बीचका भाग; ऊरु-संधि।

वंग–पु० [सं०] बंगाल; राँगा; राँगेका भस्म।

वंगीय–वि० [सं०] बंगालका; बंगाल-संबंधी।

वंचक–वि० [सं०] ठग; धूर्त; खल।

वंचकता–स्त्री० [सं०] ठगी; धूर्तता।

वंचन–पु० [सं०] ठगी; धूर्तता, प्रतारणा।

वंचना–स्त्री० [सं०] छल; ठगी; नष्ट काल या श्रम। * स० क्रि० ठगना, धोखा देना; † पढ़ना, बाँचना।

वंचित–वि० [सं०] ठगा, धोखा खाया हुआ, प्रतारित; रहित, विमुख।

वंजुल–पु० [सं०] तिनिश; अशोक; वेतस; स्थलपद्म।

वंटन–पु० [सं०] हिस्सा लगाना, बाँटना; (एलॉटमेंट) दे० 'आवंटन'।

वंटनीय–वि० [सं०] जो बाँटा जाय, बाँटने योग्य।

वंटित–वि० [सं०] बँटा हुआ, विभाजित।

वंटितांश–पु० [सं०] (कोटा) वह अंश या हिस्सा जो किसीको वंटित या किसीके लिए निर्धारित किया गया हो, नियतांश।

वंदन–पु० [सं०] स्तुति; पूजन; नमस्कार; सिंदूर। **–माला,–मालिका**–स्त्री० वंदनवार। **–वार**–पु० [हिं०] दे० 'वंदनवार'।

वंदना–स्त्री० [सं०] स्तुति; प्रणाम; पूजन। स० क्रि० 'वंदना'।

वंदनीय–वि० [सं०] वंदना, सम्मानके योग्य।

वंदारु–पु० [सं०] स्तोत्र; चारण। वि० विनम्र, वंदनशील।

वंदित–वि० [सं०] पूजित; पूज्य।

वंदितव्य–वि० [सं०] पूज्य, पूजा करने योग्य।

वंदी (दिन्)–पु० [सं०] बंदी, चारण; कैदी। **–जन**–पु० चारण, भाट। **–पाल**–पु० कैदियोंका रक्षक, जेलर।

वंद्य–वि० [सं०] आदरणीय, पूजनीय।

वंध्य–वि० [सं०] अनुत्पादक; निष्फल; सदोष।

वंध्या–स्त्री० [सं०] वह स्त्री या गाय जिसे बच्चा न होता हो; एक गंधद्रव्य। **–तनय,–पुत्र,–सुत,–सूनु**–पु० कोई अनहोनी वस्तु, खयाली चीज।

वंध्यीकरण–पु० (स्टेरिलाइजेशन) विशेष प्रक्रिया द्वारा (भूमिको) अनुत्पादक या (स्त्रीको) वंध्य बना देना; उत्पादनक्षमता या पुंस्त्वसे रहित कर देना।

वंश–पु० [सं०] बाँस; बाँसकी गाँठ; ईख; शहतीर; बँड़ेर; बाँसुरी; मेरुदंड; नाककी ऊपरकी हड्डी; कोई लंबी पोली हड्डी; कुल, परिवार; जाति; संतान; एक ही जैसी वस्तुओंका समूह। **–कपूर**–पु० [हिं०] दे० 'वंशकर्पूर'। **–कर्पूर**–पु० वंसलोचन। **–कर्म (न्)**–पु० बाँसकी टोकरी आदि बनानेका काम। **–ज**–वि० बाँसका बना हुआ;…के वंशमें उत्पन्न। **–जा**–स्त्री० वंसलोचन; कन्या। **–तंडुल**–पु० बाँसका चावल। **–तालिका**–स्त्री० वंश-वृक्ष। **–तिलक**–पु० एक छंद। **–धर,–धारी (रिन्)**–पु० बाँस धारण करनेवाला; कुलका रक्षक; संतान। **–नाडिका,–नाडी,–नालिका**–स्त्री० बाँसकी नली; बाँसुरी। **–नाथ**–पु० कुलका मुखिया। **–राज**–पु० बहुत लंबा बाँस। **–रोचना**–स्त्री० बंसलोचन। **–लोचन**–पु० बाँसके पोले भागमें बननेवाला सफेद पदार्थ। **–वर्धन**–वि० कुलकी उन्नति करनेवाला। पु० वंशकी उन्नति करना। **–वृक्ष**–पु० बाँसका पेड़; किसी कुलके पूर्वपुरुषों तथा वर्तमान सदस्योंकी वृक्षके ढंगपर बनायी हुई तालिका, कुरसीनामा। **–वृद्धि**–स्त्री० कुलोन्नति।

–स्थ–पु० एक वृत्त। –हीन–वि० निर्वंश, जिसके वंशमें कोई न हो; संतानहीन।

वंशागत–वि०[सं०]वंशपरंपरासे प्राप्त; उत्तराधिकारमें प्राप्त।

वंशावली–स्त्री० [सं०] वंशतालिका।

वंशिका–स्त्री० [सं०] बाँसुरी; अगर; पिप्पली।

वंशी–स्त्री० [सं०] बाँसुरी। –धर–पु० कृष्ण। –रव–पु० वंशीकी ध्वनि।–वट–पु० वह बरगदका पेड़ जिसके नीचे कृष्ण बंसी बजाते थे।–वादन–पु० वंसी बजाना।

व–अ० [फा०] और भी (संयोजक अव्यय, द्वंद्व समास बनानेमें व्यवहृत–पूर्वाक्षरके अकारसे मिलकर 'ओ' हो जाता है–जैसे कमोबेश।)

वक–पु० [सं०] दे० 'बक' (समास भी)।

वक़अत(वक़त)–स्त्री० [अ०] इज्जत, प्रतिष्ठा; साख।

वकालत–स्त्री० [फा०] वकीलका काम, पेशा; दूसरेकी ओरसे मुकदमेकी पैरवी करना; प्रतिनिधित्व। –नामा–पु० किसी मुकदमेमें वकील होनेका प्रमाणपत्र, वह लेख जिसके जरिये किसी वकीलको किसी मुकदमेकी पैरवीका अधिकार दिया जाय।

वकील–पु० [अ०] प्रतिनिधि; दूसरोंकी ओरसे मुकदमोंकी पैरवी करनेवाला; वकालत करनेका अधिकारी; राजप्रतिनिधि, राजदूत।

वकीली†–स्त्री० वकालत।

वकुल–पु० [सं०] दे० 'बकुल'।

वक़्त–पु० [अ०] समय, काल; अवकाश; मौका; नियत काल; मौतकी घड़ी; मुसीबतका वक्त, मुश्किल; वर्तमानकाल, ऋतु। –का–वर्तमानकालिक, जमानेका। –का पाबंद–जो सब काम नियत समयपर करता हो; समयपालक। –की ख़ूबी–कालका प्रभाव; दुर्भाग्यकी देन।–की चीज़–सामयिक वस्तु; काल या ऋतुविशेषके अनुरूप राग, रागिनी। –नावक़्त–दे० 'वक्त-बेवक़्त'। –बेवक़्त–समय-कुसमय; किसी समय, हमेशा। मु०–आ जाना–नियतकाल, मौतकी घड़ी आ जाना। –गुज़ारना–समय नष्ट करना, दिन काटना। –तंग होना–कालका प्रतिकूल होना।–देना–किसीसे मिलने, बातचीत आदिके लिए समय नियत कर देना। –पड़ना–मुसीबत आना, कठिनाईमें पड़ना।–पड़ेपर–मुसीबतके वक्त। –पर–मौकेपर; काम पड़नेपर, गाढ़े वक्तपर। –बेवक़्त काम आना–जरूरतके समय काम आना।

वक्तन् फवक्तन्–अ० [अ०] जबतब, समय-समयपर।

वक्तव्य–वि० [सं०] कहने योग्य; निंदनीय। पु० कथन, वचन; किसी विषयमें कथनीय बात।

वक्ता(क्तृ)–वि० [सं०] कहने, बोलनेवाला; भाषणकलामें प्रवीण, विद्वान्। पु० कथा कहनेवाला पुरुष, व्यास।

वक्तृता–स्त्री०, **वक्तृत्व**–पु० [सं०] भाषण; वाक्कौशल, वाग्मिता।

वक्त्र–पु० [सं०] मुख, थूथन, चोंच; दंत। –ज–पु० ब्राह्मण; दाँत।

वक्त्रासव–पु० [सं०] राल, लाला।

वक्फ़–पु० [अ०] ठहराव; खुदाके नामपर छोड़ी हुई चीज; देवोत्तर संपत्ति; लोकोपकारार्थ दी हुई वस्तु (करना)। –नामा–पु० वह लेख जिसके द्वारा कोई चीज वक्फ की जाय।

वक्र–वि० [सं०] टेढ़ा, झुका हुआ; तिरछा; चालबाज; बेईमान; निर्दय, क्रूर। –गति–वि० उलटी गतिवाला (ग्रहादि); बेईमान; कुटिल। स्त्री० उलटी, टेढ़ी चाल। –गामी(मिन्)–वि० दे० 'वक्रगति'। –ग्रीव–पु० ऊँट। –चंचु–पु० तोता। –तुंड–पु० तोता; गणेश। –दृष्टि–स्त्री० टेढ़ी निगाह; क्रोधपूर्ण दृष्टि; मंद दृष्टि। –धर*–पु० शिव (जो दूजके वक्र चाँदको धारण करते हैं)। –नासिक–पु० उल्लू। वि० टेढ़ी नाकवाला। –पाद–वि० जिसका पैर टेढ़ा हो। –बुद्धि,–मति–वि०धूर्त; बेईमान। स्त्री०धूर्तता; बेईमानी।–रेखा–स्त्री० (कर्व्ड लाइन) वह रेखा जो सरल या सीधी न होकर टेढ़ी, घुमावदार हो।

वक्रता–स्त्री०, **वक्रत्व**–पु० [सं०] टेढ़ापन; कुटिलता; पीछेकी ओर हटना।

वक्री(क्रिन्)–वि० [सं०] कुटिल; गरदन टेढ़ी करने, झुकानेवाला; पीछेकी ओर गमन करनेवाला (ग्रह); बेईमान; धूर्त।

वक्रोक्ति–स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें काकु या श्लेषके बलपर भिन्न अर्थ किया जाता है; चमत्कारपूर्ण उक्ति; काकु उक्ति।

वक्षःस्थल, वक्षस्थल–पु० [सं०] सीना, हृदय।

वक्ष(स्)–पु० [सं०] पेट और गलेके बीचका हिस्सा, छाती; बैल।

वक्षश्छद–पु० [सं०] कवच।

वक्षोज, वक्षोरुह–पु० [सं०] कुच, स्तन।

वक्ष्यमाण–वि० [सं०] वक्तव्य; जो कहा जा रहा हो, जो कथनका विषय हो।

वगला, वगलामुखी–स्त्री० [सं०] दस महाविद्यालयोंमेंसे एक।

वग़ैरह–अ० [अ०] इत्यादि।

वचन–पु० [सं०] बोलनेकी क्रिया; आदमीके मुँहसे निकले हुए सार्थक शब्दोंका समूह, बात, वाणी; कही हुई बात; शास्त्रादिका वाक्य; आदेश; घोषणा; उच्चारण; शब्दका अर्थ या भाव; राय; शिक्षा; एक, अनेकका बोध करानेवाला व्याकरणका विशेष विधान। –कार,–कारी(रिन्)–वि० आज्ञापालक। –पटु–वि० बोलनेमें कुशल। –पत्र–पु० (प्रामिसरी नोट) वह ऋणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ ऋण लेकर यह प्रतिज्ञा करती है कि अमुक व्यक्तिसे इतना ऋण लिया गया और उसका सूद इस हिसाबसे ऋणदाताको दिया जायगा; दे० 'प्रतिज्ञा-पत्र-मुद्रा'। –बंध–पु० (एंगेजमेंट) किसीसे मिलने या भविष्यमें कोई काम करने आदिका आपसी निश्चय या वचन देना। –बद्ध–वि० जिसने कोई वादा किया हो, प्रतिश्रुत। –विदग्धा–स्त्री० वह परकीया नायिका जो वाक्चातुर्यसे किसीको वशीभूत करे।

वचसा–अ० [सं०] वचन द्वारा।

वचस्वी(स्विन्)–वि० [सं०] भाषणपटु।

वच्छ*–पु० वक्ष, छाती; वत्स, बच्चा।

वज़न–पु० [अ०] तौलनेकी क्रिया; तौल; भार; छंदके वर्णों या मात्राओंकी माप (उर्दू-फारसी); वकअत, महत्त्व; मान, प्रतिष्ठा। **–कश**–पु० तौलनेवाला। **–दार**–वि० बोझवाला, भारी; महत्त्वयुक्त, वकअत रखनेवाला।

वज़नी–वि० वजन रखनेवाला, भारी; महत्त्वयुक्त।

वजह–स्त्री० [अ०] कारण, सबब; जरिया।

वज़ा (वज़अ्)–पु० [अ०] रखना; तरतीब देना; बनाना; बनावट; ढंग; रीति-नीति; वेशभूषाका प्रचलित ढंग,फैशन; प्रसव; भिनहाई।**–दार**–वि० सजधजका, शौकीन, तरहदार; सुंदर; फैशनका खयाल रखनेवाला; जो अपनी वजापर कायम रहे, अपनी रीति-नीतिका त्याग न करे।

वज़ारत–स्त्री० [अ०] वजीरका काम या पद।

वजाहत–स्त्री० [अ०] सुंदरता; भव्यता; बड़प्पन।

वज़ाहत–स्त्री० [अ०] खोलकर कहना, विस्तारसे बताना।

वज़ीफ़ा–पु० [अ०] नित्यपाठकी प्रार्थना; दैनिक वृत्ति; मासिक वेतन; पेंशन; छात्रवृत्ति।

वज़ीर–पु० [अ०] मंत्री। **–(रे) आज़म**–पु० प्रधान मंत्री।**–खारजा**–पु० परराष्ट्रमंत्री।**–जंग**–पु० युद्धमंत्री। **–तालीम**–पु० शिक्षामंत्री।**–माल**–पु० राजस्वमंत्री।

वज़ीरी–पु० सरहदी पठानोंका एक कबीला या जाति। स्त्री० दे० 'वजारत'।

वज़ू–पु० दे० 'वुजू'।

वजूद–पु० [अ०] विद्यमानता, मौजूदगी, जिंदगी। (बावजूद=इतना होनेपर भी)।

वजूहात, वुजूह–स्त्री०[अ०] 'वजह'का बहु०।

वज्र–वि० [सं०] बहुत कठोर; भीषण; अनीदार, काँटेदार। पु० इंद्रका अस्त्र, कुलिश, अशनि; बिजली; कोई घातक अस्त्र; भाला; हीरा आदि छेदनेका औजार। **–घोष**–पु० बिजलीकी कड़क जैसी आवाज। **–तुंड**–पु० गणेश; गरुड़; गीध; मच्छर; सेहुँड़। **–पाणि**–पु० इंद्र। **–पात**–पु० वज्रका या वज्रसा गिरना; भारी विपत्ति।**–लेप**–पु० एक पलस्तर, दीवार आदिपर लगानेका एक मसाला। **–सार**–पु० हीरा। **–हृदय**–वि० बहुत कड़े दिलका।

वज्रांग–पु० [सं०] हनूमान्; साँप।

वज्रायुध–पु० [सं०] इंद्र।

वज्री (ज्रिन्)–पु० [सं०] इंद्र।

वज्रोली–स्त्री० [सं०] उँगलियोंकी एक विशेष स्थिति।

वट–पु० [सं०] बरगदका वृक्ष; कौड़ी; गोली; वटिका।

वटक–पु० [सं०] बड़ा, पकौड़ा; बट्टा; गोली; आठ मासेकी तौल।

वटिका–स्त्री० [सं०] गोली; बरी; शतरंजकी गोटी।

वटी–स्त्री० [सं०] गोली; रस्सी।

वटु–पु० [सं०] ब्रह्मचारी; बालक।

वटुक–पु० [सं०] भैरव-विशेष; बालक; ब्रह्मचारी।

वट्टक–पु० [सं०] गोली, वटिका।

वडवा–स्त्री०[सं०] घोड़ी; अश्विनी नक्षत्र; दासी।**–मुख**–पु० वडवानल; शिव। **–सुत**–पु० अश्विनीकुमार।

वणिक (ज्)–पु० [सं०] व्यापार करनेवाला; बनिया। **–(क्)कटक**–दे० 'वणिक्सार्थ'। **–कर्म (न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० बनियेका पेशा, सौदागरी। **–सार्थ**–पु० व्यापारियोंका गिरोह, कारवाँ।

वणिग्ग्राम–पु० [सं०] व्यापारियोंका मंडल।

वतन–पु० [अ०] जन्मस्थान; मूल वासस्थान, स्वदेश। **–परस्ती**–स्त्री० देशभक्ति।

वतनी–वि० [अ०] अपने देशका, स्वदेशी; स्वदेशवासी।

वतीरा–पु० [अ०] तरीका, दस्तूर, चलन, राह।

वत्–अ० [सं०] सादृश्य या समानतासूचक एक शब्द जो संज्ञा या विशेषणके अंतमें जोड़ा जाता है।

वत्स–पु० [सं०] बछड़ा, गायका बच्चा; संतान; पुत्र (प्रायः प्यारका सूचन करनेके लिए संबोधनमें प्रयुक्त); वर्ष; वत्सासुर; वक्ष, छाती; एक देश। **–कामा**–स्त्री० बच्चोंको प्यार करनेवाली; बच्चेकी चाह करनेवाली (स्त्री या गाय)। **–दंत**–पु० एक तरहका बाण। **–नाभ**–पु० एक विषैला पौधा, एक तेज जहर, बछनाग (औषधोपयोगी)। **–पाल, –पालक**–पु० बछड़ोंकी देखभाल करनेवाला; कृष्ण; बलराम। **–पीता**–स्त्री० वह गाय जो बछड़ेको दूध पिला चुकी हो। **–राज**–पु० वत्स देशका राजा, उदयन।

वत्सतरी–स्त्री० [सं०] तीन सालकी बछिया, कलोर।

वत्सर–पु० [सं०] वर्ष, साल।

वत्सल–वि० [सं०] पुत्र-प्रेमसे युक्त; छोटोंके प्रति पुत्रसा प्रेम करनेवाला।

वत्सिमा(मन्)–स्त्री० [सं०] बचपन।

वदंती–स्त्री० [सं०] बात, कथन; कथा।

वदतोव्याघात–पु० [सं०] कथनका दोष, पहले कही हुई बातके विरुद्ध कहना।

वदन–पु० [सं०] चेहरा, मुखड़ा; मुख; शकल; भाषण, कथन; अग्रभाग; त्रिभुजका शीर्ष। **–पवन, –मारुत**–पु० साँस।

वदनामय–पु० [सं०] मुखका रोग।

वदन्य, वदान्य–वि० [सं०] उदार; अत्यंत दानशील; वाग्मी; मधुरभाषी, बातसे संतुष्ट करनेवाला।

वदाम–पु० [सं०] बादाम नामक फल।

वदि–अ० [सं०] कृष्ण पक्षमें (महीनेके नामके अंतमें जोड़ा जाता है)।

वदी–अ० दे० 'वदि'।

वदुसाना–स० क्रि० भला बुरा कहना, दोषारोप करना।

वद्य–वि० [सं०] कहने योग्य, अनिंद्य। पु० बात, कथन; कृष्ण पक्षके दिन। **–पक्ष**–पु० कृष्ण पक्ष।

वध–पु० [सं०] मार डालना, नाश, हनन; मृत्यु या शारीरिक दंड; आघात; लकवा; विलोप; गुणनक्रिया; मारनेवाला। **–कर्माधिकारी (रिन्)**–पु० जल्लाद। **–जीवी (विन्)**–पु० वधका काम करके रोजी कमानेवाला–कसाई, जल्लाद, व्याधा आदि। **–दंड, –निग्रह**–पु० फाँसीकी सजा। **–भूमि**–स्त्री०, **–स्थान**–पु० वह स्थान जहाँ प्राणदंड दिया जाय, वधस्थल।

वधक–वि० [सं०] हत्या करनेवाला; घातक। पु० जल्लाद।

वधार्ह–वि० [सं०] वधके योग्य।

वधालय–पु० [सं०] (स्लॉटर हाउस) पशुओंके वध करनेका स्थान।

वधिक-पु० दे० 'वधिक'; [सं०] कस्तूरी।

वधिर-वि० [सं०] दे० 'बधिर'।

वधु, वधुका-पु० [सं०] पुत्रवधू; दुलहिन; युवती।

वधू-स्त्री० [सं०] दुलहिन; पत्नी; पतोहू; स्त्री। **-गृहप्रवेश** -पु० स्त्रीका पतिके घरमें प्रवेश करनेकी एक विधि। **-धन**-पु० स्त्रीका निजी धन।

वधूटी-स्त्री० [सं०] नवयुवती; पुत्रवधू।

वधूत*-पु० दे० 'अवधूत'।

वधोपाय-पु० [सं०] मारनेका हथियार या उपाय।

वध्य-वि० [सं०] हंतव्य, मार डालने योग्य; दंड्य। पु० वह जिसका वध या सजा की जानेवाली हो। **-घातक,-घ्न**-वि०, पु० प्राणदंड पाये हुए व्यक्तिका वध करनेवाला। **-भूमि**-स्त्री०, **-स्थल,-स्थान**-पु० दे० 'वधभूमि'।

वन-पु० [सं०] (फॉरेस्ट) जंगल; बाग, उपवन; जल; घर। **-कदली**-स्त्री० जंगली केला। **-कुंजर,-गज**-पु० जंगली हाथी। **-गमन**-पु० संन्यास-ग्रहण। **-चर**-पु० वनमें भ्रमण करनेवाला आदमी; जंगली आदमी; पशु; एक जीव; शरभ। **-चारी(रिन्)**-पु० वनचर। **-ज,-जात**-पु० जंगलमें रहनेवाला; हाथी; कमल; मोथा; जंगली विजौरा नीबू। **-जीवी(विन्)**-पु० लकड़हारा; बहेलिया। **-द**-पु० बादल। **-देव,-देवता**-पु० जंगलका अधिष्ठाता देवता। **-देवी**-स्त्री० जंगलकी अधिष्ठात्री देवी। **-नाशन**-पु० (डीफॉरेस्टेशन) किसी क्षेत्रको जंगल या जंगलोंसे रहित कर देना। **-पाल**-पु० (रेंजर) जंगल या वनकी देख-भाल करनेवाला अधिकारी। **-प्रस्थ**-वि० तपस्वी। **-मातंग**-पु० वनकुंजर। **-मानुप**-पु० बंदर और आदमी दोनोंसे मिलता-जुलता एक तरहका जंगली प्राणी। **-माला**-स्त्री० वनके फूलोंकी माला; घुटनोंतक लंबी ऋतु-कुसुमोंकी माला (कृष्णकी)। **-माली(लिन्)**-वि० वनमाला पहननेवाला। पु० कृष्ण। **-रक्षक,-संरक्षक**-पु० (कनसर्वेटर ऑफ फॉरेस्ट्स) वनोंका संरक्षण करनेवाला, उन्हें हानि या विनाशसे बचानेवाला। **-राज**-पुं० सिंह। **-राजि, -राजी**-स्त्री० वन, जंगल, वृक्षसमूह; जंगलकी पगडंडी। **-रुह**-पु० कमल। **-रोपण**-पु० (एफॉरेस्टेशन) किसी भूमिको वन या जंगलके रूपमें परिणत करनेका काम। **-लक्ष्मी**-स्त्री० वनकी शोभा; केला। **-वास**-पु० वनमें रहना। **-वासी(सिन्)**-वि० वनमें रहनेवाला। पु० वनमें रहनेवाला व्यक्ति। **-विज्ञान**-पु० (सिलवी कलचर) वृक्षारोपण आदि-संबंधी विज्ञान। **-व्रीहि**-पु० तिन्नी। **-स्थ**-पु० वनवासी व्यक्ति; वानप्रस्थ; मृग। **-स्थली**-स्त्री० वनकी भूमि, जहाँ वन हो। **-हास**-पु० काँस; एक फूल, कुंद।

वनस्पति-स्त्री० [सं०] बिना फूलोंके वृक्ष (गूलर, पीपल, पाकर आदि-मनु०); पेड़-पौधे; दे० 'वनस्पति घी'। **-घी (तेल)**-पु० [हिं०] बिनौले, मूँगफली आदिका जमाया हुआ तेल। **-शास्त्र**-पु० पेड़, पौधों आदिके विषयमें सांगोपांग विवेचन करनेवाला विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान।

वनांत-पु० [सं०] वनकी भूमि; वनका सीमांत भाग।

वनांतर-पु० [सं०] अन्य वन; वनका भीतरी भाग।

वनाग्नि-स्त्री० [सं०] वनमें लगनेवाली आग, दावानल।

वनिता-स्त्री० [सं०] स्त्री; प्रिया, प्रेयसी।

वनी-स्त्री० [सं०] छोटा वन।

वनोत्सर्ग-पु० [सं०] मंदिर, कूप आदि बनवाकर सार्वजनिक उपयोगके लिए दान करना।

वनौषधि-स्त्री० [सं०] जंगली जड़ी-बूटी।

वन्य-वि० [सं०] वनमें पैदा होनेवाला; जंगली।

वन्या-स्त्री० [सं०] सघन वन; वनोंका समूह; जल-प्लावन।

वपन-पु० [सं०] बीज बोना; केश-मुंडन।

वपित-वि० बोया हुआ।

वपु-पु० [सं०] शरीर।

वपुमान-वि० वपुष्मान्, सुंदर और पुष्ट देहवाला।

वपुष्मान्(ष्मत्)-वि० [सं०] शरीरी, मूर्त; सुंदर।

वप्ता(प्तृ)-पु० [सं०] पिता, जनक; बीज बोनेवाला।

वप्र-पु० [सं०] भीटा, डूहा, मिट्टीका स्तूप; साँड़ आदिका सींगसे डूह आदिकी मिट्टी कुरेदना। **-क्रिया,-क्रीड़ा**-स्त्री० साँड़ आदिका डूहकी मिट्टी कुरेदना।

वफ़ा-पु० [अ०] वचनका पालन; (प्रीति मित्रता आदिका) निर्वाह; कर्तव्यपालन; कृतज्ञता। **-दार**-वि० वचनपालक; प्रीति, मित्रता आदिका निर्वाह करनेवाला; स्वामिभक्त, राजभक्त। **-दारी**-स्त्री० वफ़ादार होना।

वफ़ात-स्त्री० [अ०] मृत्यु, मौत। मु०-पाना-मर जाना।

वफ़्द-पु० [सं०] दूतमंडल, प्रतिनिधि-मंडल (डेपुटेशन)।

वबा-स्त्री० [अ०] मरी, महामारी। **-ई**-वि० महामारीरूप, छुतही (बीमारी)।

वबाल-पु० [अ०] कठिनाई; बोझ, भार; बला, अभिशाप।

वमन-पु० [सं०] उलटी, कै करना; बाहर निकालना।

वमना*-स० क्रि० कै करना।

वमित-वि० [सं०] वमन किया हुआ; वमन कराया हुआ।

वयःपरिणति-स्त्री० [सं०] अवस्थाकी प्रौढ़ता।

वयःसंधि-स्त्री० [सं०] बाल्य और तारुण्यके बीचका काल।

वयःस्थ-वि० [सं०] जवान; बली; प्रौढ़। पु० समसामयिक व्यक्ति; समवयस्क मित्र।

वय (स्)-पु० [सं०] उम्र, अवस्था।

वयन-पु० [सं०] बुनना, बुननेकी क्रिया।

वयस-पु० अवस्था, उम्र; [सं०] पक्षी।

वयस्क-वि० [सं०] उम्र, अवस्थाका (समस्तरूपमें प्रयुक्त, जैसे अल्पवयस्क, समवयस्क); सयाना, बालिग। **-मताधिकार**-पु० (ऐडल्ट सफरेज) विधानसभा आदिके प्रतिनिधि चुननेका वह अधिकार जो राज्यके सभी वयस्क नागरिकोंको, बिना किसी भेद-भावके, प्राप्त होता है।

वयस्य-वि० [सं०] समवयस्क; हमजोली। पु० मित्र, साथी।

वयस्या-स्त्री० [सं०] सहेली; अंतरंग सखी।

वयोवृद्ध-वि० [सं०] बूढ़ा।

वरंच-अ० [सं०] बल्कि, अपितु; लेकिन।

वर-पु० [सं०] चुनाव; पसंद; इच्छा; देवता या गुरुजनोंसे इच्छा-पूर्तिके लिए की जानेवाली प्रार्थना या उनकी कृपासे मिलनेवाला फल; दूल्हा; प्रेमिक। वि० श्रेष्ठ। **-ज**-वि० बड़ा, ज्येष्ठ, अग्रज। **-द,-दाता (तृ)**-वि० वर देनेवाला। **-दक्षिणा**-स्त्री० कन्यापक्षकी ओरसे

विवाहके समय वरको दिया जानेवाला धन, दहेज। **-दान**-पु० देवता गुरुजनका प्रसन्न होना; किसीको इष्ट वस्तु देना; किसीकी कृपासे प्राप्त वस्तु। **-दानी (निन्)**-वि० वर देनेवाला; वरप्राप्त (वीर)। **-दायक**-वि० वर देनेवाला। **-पक्ष**-पु० बराती। **-यात्रा**-स्त्री० व्याहके समय वरका बाजे-गाजेके साथ कन्याके घर जाना; बरात।

वरक़-पु० [अ०] कटा हुआ कागज, पुस्तकका पन्ना; सोने, चाँदीका पत्तर; फूलकी पँखड़ी। **-साज़**-पु० चाँदी सोनेका पत्तर बनानेवाला। **मु०-उलटना**-पुस्तकको उलट-पलटकर देखना, पुस्तकपर सरसरी निगाह डालना; भारी परिवर्तन, क्रांति होना। **-स्याह करना**-बहुत लिखना।

वरज़िश-स्त्री० [फ़ा०] अभ्यास; शारीरिक श्रम; कसरत।

वरण-पु० [सं०] चुनना; याचना करना; घेरना; ढकना; रक्षण; पतिका चुनाव; * रंग। **-स्वातंत्र्य**-पु० (फ्रीडम ऑफ चॉइस) वरण करने, चुननेकी स्वतंत्रता।

वरणी-स्त्री० किसी धार्मिक कार्यके लिए वस्त्र, पात्रादि द्वारा पुरोहितादिका सम्मान।

वरणीय-वि० [सं०] चुनने योग्य; ग्रहण करने योग्य; प्रार्थना करने योग्य (वरके लिए)।

वरदी-स्त्री० [अं०] किसी विभागके कर्मचारियोंके लिए निर्धारित विशेष पहनावा।

वरना-*स० क्रि० चुनना, वरण करना;पतिरूपमें स्वीकार करना। पु० ऊँट। अ० [फ़ा०] नहीं तो, फिर।

वरन्-अ० वरम्, बल्कि, ऐसा नहीं (क०)।

वरस-पु० कवच; [अ०] शोथ, सूजन।

वरही*-पु० मोर।

वरांग-पु० [सं०] मस्तक; भग, योनि; मुख्य भाग।

वरांगना-स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।

वराक-पु०[सं०] शिव; युद्ध। वि० दीन; दयनीय; भाग्यहीन; दुःखी; हीन, बुरा।

वराट-पु० [सं०] कौड़ी; रस्सी।

वराटक-पु० [सं०] कौड़ी; रस्सी; कमलगट्टा।

वराटिका-स्त्री० [सं०] कौड़ी; नागकेसर; तुच्छ वस्तु।

वरानना-स्त्री० [सं०] सुमुखी, सुंदर स्त्री।

वरान्न-पु० [सं०] उत्तम अन्न।

वरार्थी(र्थिन्)-वि० [सं०] वर चाहनेवाला।

वरासत-स्त्री० [अ०] वारिस होना; उत्तराधिकार; मृत पुरुषकी छोड़ी हुई संपत्ति, तरका, रिक्थ। **-की सनद**-वारिस होनेका प्रमाण-पत्र। **-नामा**-पु० उत्तराधिकार-पत्र।

वरासतन्-अ० [अ०] उत्तराधिकाररूपमें।

वरासन-पु० [सं०] दूल्हेके बैठनेका पीढ़ा; उत्तम आसन।

वराह-पु० [सं०] सूअर; भेड़ा; साँड़।

वरिष्ठ-वि० [सं०] पूजनीय; सबसे अच्छा; बहुत भारी।

वरीयता-स्त्री० (प्रेफरेंस) किसी वस्तुको दी गयी तरजीह, अधिमान्यता।

वरीयान्(यस्)-वि० [सं०] बड़ा, श्रेष्ठ; अधिक मान्य।

वरुण-पु० [सं०] एक आदित्य; एक देवता जो जलके अधिपति और पश्चिमके दिक्‌पाल कहे गये हैं; जल; समुद्र; एक ग्रह (नेपच्यून)।

वरुणात्मजा-स्त्री० [सं०] वारुणी, शराब।

वरुणालय-पु० [सं०] समुद्र।

वरुणावास-पु० [सं०] समुद्र।

वरूथ-पु० [सं०] बख्तर, सन्नाह; बचाव; रथपरका घेरा; ढाल; सेना; समूह। **-प**-पु० दलनायक; सेनापति।

वरूथिनी-स्त्री० [सं०] सेना।

वरेण्य-वि० [सं०] मुख्य; पूजनीय; सर्वोत्कृष्ट।

वरोरु, वरोरू-वि० स्त्री० [सं०] उत्तम जाँघोंवाली; सुंदरी।

वर्ग-पु० [सं०] स्वजातीय या समान-धर्मियोंका समूह; दल; एक स्थानसे उच्चरित होनेवाले वर्णोंका समूह; ग्रंथका विभाग, अध्याय; समान अंकोंका घात; (स्क्वेयर) वह समानांतर चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ बराबर और सब कोण समकोण हों। **-पद**-पु० वर्गमूल, वह संख्या जिसके घात, गुणनसे वर्गका अंक प्राप्त हो। **-पहेली**-स्त्री० [हिं०] (क्रॉसवर्ड पज़ल) वह पहेली जिसमें दिये हुए संकेतोंके अनुसार खड़े और पड़े स्तंभोंके रिक्त खानोंमें, जिनकी संख्या दोनों ओरसे (लंबाईके बल चाहे चौड़ाईके बल) बराबर होती है, उपयुक्त अक्षर बैठाकर शब्द बनाने पड़ते हैं तथा जहाँ एकसे अधिक शब्द बननेकी गुंजाइश हो वहाँ स्वविवेकसे सर्वोचित शब्दका चुनाव करना पड़ता है। **-फल**-पु० समान राशियोंका गुणनफल। **-मूल**-पु० वह संख्या जिससे वर्गांक बनता है।

वर्गलाना-स० क्रि० उकसाना; बहकाना; किसीको उकसाकर कोई काम कराना।

वर्गांक-पु० [सं०] वह अंक जो किसी संख्याका वर्ग हो।

वर्गीकरण-पु० [सं०] वर्गके अनुसार वस्तुओंका विभाग करना।

वर्गीय-वि० [सं०] वर्ग-विशेषसे संबद्ध। पु० एक ही वर्गका सदस्य, अक्षर आदि।

वर्चस्व-पु० तेज, प्रभाव; श्रेष्ठता (असाधु)।

वर्चस्वान्(स्वत्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; तेजोमय।

वर्चस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] तेजस्वी; उत्साही।

वर्जक-वि० [सं०] छोड़नेवाला; निषेध करनेवाला।

वर्जन-पु० [सं०] निषेध; छोड़ना, त्याग; हिंसा, वध।

वर्जना*-स० क्रि० निषेध करना, रोकना।

वर्जित-वि० [सं०] त्यक्त, छोड़ा हुआ; अग्राह्य; निषिद्ध।

वर्ज्य-वि० [सं०] वर्जनीय; निषिद्ध।

वर्ण-पु० [सं०] रंग; रँगने, लिखनेके काम आनेवाला रंग; जाति; भेद; अक्षर; शब्द; स्वर; ख्याति, यश; अच्छा गुण; प्रशंसा; बाह्य रूप; पोशाक; एककी संख्या; सोना; धार्मिक कृत्य; अंगरागलेपन; केसर। **-क्रम**-पु० रंगोंका क्रम। **-खंडमेरु**-पु० छंदःशास्त्रकी एक क्रिया जिसके अनुसार बिना मेरुके निश्चित वर्णोंके वृत्तों आदिकी संख्या मालूम हो जाती है। **-गत**-वि० रँगा हुआ, वर्णित; बीजगणित-संबंधी। **-च्छटा**-स्त्री० (स्पेक्ट्रम) दे० 'वर्णपट'। **-नाश, -पात**-पु० किसी अक्षरका शब्दमेंसे लुप्त हो जाना। **-पट**-पु० (स्पेक्ट्रम) किसी छिद्र या दरारसे आनेवाले प्रकाशके त्रिपार्श्वकाच(प्रिज़्म)पर पड़नेसे दिखाई देनेवाले सात रंगोंकी पट्टी, वर्णच्छटा (ये रंग वे ही होते हैं जो इंद्रधनुषके होते हैं)। **-पताका**-स्त्री० छंद-

शास्त्रकी एक विधि जिससे वर्णवृत्तोंके भेदोंमें आनेवाली लघु और गुरु मात्राओंकी संख्या मालूम हो जाती है। **—परिचय**—पु० संगीतका ज्ञान; अक्षरोंका ज्ञान या यह करानेवाली पुस्तिका। **—प्रत्यय**—पु० वर्णवृत्तोंके कुल भेद जाननेकी छंदःशास्त्रकी विशेष प्रक्रिया। **—प्रस्तार**—पु० निश्चितसंख्यक वर्णोंके भेद-उपभेद और स्वरूप प्रकट करनेवाली छंदःशास्त्रकी विशेष प्रक्रिया। **—भेद**—पु० रंग या जातिके कारण होनेवाला भेदभाव। **—मर्कटी**—स्त्री० छंदःशास्त्रकी एक विशेष प्रक्रिया जिससे निश्चितसंख्यक वर्णोंके संभाव्य वृत्तों आदिका पता लगता है। **—माला,—राशि**—स्त्री० अक्षरोंकी यथाक्रम सूची, स्वर-व्यंजन सहित सभी अक्षर। **—विकार**—पु० किसी वर्णका दूसरे वर्णका रूप ग्रहण करना (निरुक्त)। **—विचार**—पु० वर्णोंके आकार, उच्चारण और संधिके नियमोंसे युक्त व्याकरणका एक भाग। **—विद्वेष**—पु० (कलर प्रेजुडिस) (अश्वेत) वर्ण या रंगके कारण किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूहसे विद्वेष करनेकी प्रवृत्ति। **—विपर्यय**—पु० वर्णोंका उलट-फेर होना (निरुक्त)। **—वृत्त**—पु० वह छंद जिसके चरणोंमें लघु गुरु यथाक्रम और वर्णसंख्या समान हो। **—व्यवस्था,—व्यवस्थिति**—स्त्री० हिंदू समाजके चार वर्णोंमें विभाजित किये जानेकी परिपाटी; वर्णविभाग। **—संकर**—पु० दो भिन्न जातियोंके स्त्री-पुरुषके सहवाससे उत्पन्न व्यक्ति।

वर्णक—पु० [सं०] नकाब, अभिनेताकी पोशाक।

वर्णन—पु० [सं०] चित्रण; रंगना; लिखना; कोई बात ब्योरेवार कहना, बयान; प्रशंसा, गुणकथन।

वर्णना—स्त्री० [सं०] ब्योरेवार कुछ कहना; प्रशंसा, गुणकथन।

वर्णनातीत—वि० [सं०] जिसका वर्णन न किया जा सके।

वर्णनीय—वि० [सं०] चित्रण या वर्णनके योग्य।

वर्णांतर—पु० [सं०] भिन्न जाति, दूसरी जाति।

वर्णांध—वि० [सं०] (कलर ब्लाइंड) जिसे रंगोंका ज्ञान न हो, जो रंगोंमें भेद न कर सके।

वर्णानुक्रमसे—अ० (एलफाबेटिकली) वर्णोंके अनुक्रमसे।

वर्णाश्रम—पु० [सं०] जाति और आश्रम। **—धर्म**—पु० वर्ण और आश्रम-संबंधी कर्तव्य।

वर्णिक—पु० [सं०] लेखक। वि० वर्ण-संबंधी। **—वृत्त**—पु० दे० 'वर्णवृत्त'।

वर्णिका—स्त्री०[सं०] चित्र या चित्र-शैलीमें व्यवहृत विशिष्ट वर्णों, रंगोंका समवाय; स्याही, मसि।

वर्णित—वि० [सं०] कथित; वर्णन किया हुआ; चित्रित।

वर्ण्य—पु० [सं०] प्रस्तुत विषय; उपमेय। वि० वर्णन या चित्रणके योग्य।

वर्तका, वर्तकी—स्त्री० [सं०] मादा बटेर।

वर्तन—पु० [सं०] चक्कर खाना; घुमाना; फेर-फार; व्यवहार, आचरण; (कमीशन) एजेंट या दलालको किसी सौदेपर मिलनेवाली छूट या रकम, दस्तूरी। **—अभिकर्ता(र्तृ)**—पु० (कमीशन एजेंट) कमीशन या दलाली लेकर किसी बड़े व्यवसायी या व्यापारिक संस्थाके प्रतिनिधि, अभिकर्ता(एजेंट)का काम करनेवाला।

वर्तनी—स्त्री० [सं०] मार्ग; पिसाई; तकला; रहना; हिज्जे।

वर्तमान—वि० [सं०] जो इस समय चल रहा हो, चालू; उपस्थित, विद्यमान; साक्षात्; आधुनिक, हालका। पु० व्याकरणका एक काल जिससे सूचित होता है कि क्रिया मौजूदा समयमें हुई या हो रही है; वृत्तांत।

वर्ति—स्त्री० [सं०] कोई लपेटी हुई वस्तु, बत्ती; अंजन; घावमें भरनेकी बत्ती; घावपर बाँधनेकी एक तरहकी पट्टी। **—ग्रह**—पु० (बर्नर) किसी दीपक, लैंप आदिका वह भाग जिसमें बत्ती पड़ी रहती है तथा जो उसकी लौका नियंत्रण करता है (कुछ लोग इसे 'दग्धक' भी कहते हैं)।

वर्तिका—स्त्री० [सं०] बत्ती; सलाई, शलाका; तूलिका।

वर्तित—वि० [सं०] घुमाया, चलाया हुआ; संपादित।

वर्ती—स्त्री० [सं०] दे० 'वर्ति'।

वर्ती(र्तिन्)—वि० [सं०] बरतनेवाला; स्थित रहनेवाला (पदांतमें—जैसे दूरवर्ती आदि); करनेवाला।

वर्तुल—वि० [सं०] गोल, वृत्ताकार। पु० गाजर; मटर।

वर्तुलाकार, वर्तुलाकृति—वि० [सं०] गोल।

वर्त्म(न्)—पु० [सं०] मार्ग; लीक; प्रथा; पलक; औंठ, बारी, किनारी; आधार, आश्रय।

वर्दी—स्त्री० दे० 'वरदी'।

वर्द्धक, वर्धक—वि० [सं०] बढ़ानेवाला; पूर्तिकारक।

वर्द्धकी(किन्), वर्धकी(किन्)—पु० [सं०] बढ़ई।

वर्द्ध(र्ध)न—पु० [सं०] काटना, छीलना; पाल-पोसकर बड़ा करना; बढ़ाना; अभ्युदय करनेवाला; बढ़ानेवाला; दूसरे दाँतपर जमनेवाला दाँत।

वर्द्ध(र्ध)मान—वि० [सं०] बढ़ता हुआ; वृद्धिशील।

वर्द्ध(र्ध)यिता(तृ)—पु० [सं०] बढ़ानेवाला।

वर्द्धित, वर्धित—वि० [सं०] बढ़ा हुआ; कटा हुआ; भरा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु—वि० [सं०] वृद्धिशील।

वर्म(न्)—पु० [सं०] बख्तर, कवच; आश्रयस्थान; बचाव। **—धर,—हर**—वि० कवच धारण करनेवाला, कृतसन्नाह।

वर्मा(र्मन्)—पु० [सं०] एक उपाधि जिसका क्षत्रिय, कायस्थ आदि प्रयोग करते हैं।

वर्वट—पु० [सं०] बोड़ा, लोबिया ('बरबटी' छत्तीस०)

वर्वर—पु० [सं०] एक देश; नीच जाति; वर्वर देशका निवासी (घुँघराले बालवाला); मूर्ख।

वर्य—वि० [सं०] श्रेष्ठ; चुनने योग्य; प्रधान (पदांतमें प्रयुक्त—जैसे 'पंडितवर्य')। पु० कामदेव।

वर्ष—पु० [सं०] वर्षा; एक काल परिमाण, साल (सौर, चांद्र, नाक्षत्र और सावन); पृथ्वीका खंड; भारत। **—गाँठ**—स्त्री० [हिं०] दे० 'बरसगाँठ'। **—घ्न**—वि० वर्षा रोकने या वर्षासे बचानेवाला। **—त्र,—त्राण**—पु० छाता। **—पति**—पु० वर्षका अधिपति (ग्रह)। **—प्रवेश**—पु० नये सालका आरंभ। **—प्रिय**—पु० चातक। **—फल**—पु० वर्षभरका शुभाशुभ, इष्टानिष्ट सूचित करनेवाली कुंडली। **—बोध**—पु० (ईयर बुक) प्रतिवर्ष प्रकाशित होनेवाली वह पुस्तक जिसमें वर्षभरकी मुख्य घटनाओं, सामाजिक और राजनीतिक हलचल तथा विशेष जानकारीकी बातोंका संकलन किया गया हो।

वर्षक—वि० [सं०] बरसानेवाला; वर्षा करनेवाला।

वर्षण-पु० [सं०] वृष्टि।

वर्षांग-पु० [सं०] महीना।

वर्षा-स्त्री० [सं०] वृष्टि; बरसात। **-काल**-पु० बरसात। **-प्रिय**-पु० चातक। **-बीज**-पु० ओला।

वर्षागम-पु० [सं०] वर्षाका आरंभ।

वर्षाधिप-पु० [सं०] वर्षका अधिपति (ग्रह)।

वर्षाशन-पु० [सं०] वर्षभरके भोजनके रूपमें दिया जानेवाला अन्नदान।

वर्षीण, वर्षीय-वि० [सं०]...सालका।

वर्षेश-पु० [सं०] दे० 'वर्षाधिप'।

वर्षोपल-पु० [सं०] ओला।

वर्ह-पु० [सं०] मोरका पंख; पत्ता।

वर्ही(र्हिन्)-पु० [सं०] मोर।

वलन-पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; क्षोभ; ग्रह आदिका मार्गसे विचलित होकर चलना, वक्रगति।

वलभि, वलभी-स्त्री० [सं०] वड़भी, चंद्रशाला; घरकी चोटी; छाजन; सौराष्ट्रकी एक पुरानी नगरी।

वलय-पु० [सं०] कंकण; छल्ला, अँगूठी; कटिबंध; घेरा।

वलयित-वि० [सं०] घिरा हुआ, वेष्टित; चक्कर खाता हुआ; गोल मुड़ा हुआ।

वलाक-पु० [सं०] बक, बगला।

वलायत-स्त्री० [अ०] वली होना; दे० 'विलायत'।

वलाहक-पु० [सं०] दे० 'बलाहक'।

वलि-स्त्री० [सं०] सिकुड़न, झुर्री; चंदनादिसे शरीरपर बनी हुई रेखा; पेटमें पड़नेवाला बल; कतार।

वलित-वि० [सं०] बल खाया हुआ; मोड़ा, झुकाया हुआ; घेरा हुआ; संबद्ध; युक्त; सिकुड़नदार; लिपटा हुआ।

वली-पु० [अ०] स्वामी; संरक्षक; अल्लाहका प्यारा; सिद्ध पुरुष; नाबालिगकी जायदादकी रक्षाके लिए जिम्मेदार आदमी। स्त्री०[सं०] दे०'वलि'; तरंग। **-मुख**-पु० बंदर।

वलीवर्द-पु० [सं०] बैल।

वल्कल-पु० [सं०] पेड़की छाल; पेड़की छालका कपड़ा।

वल्द-पु० [अ०] बेटा; पुत्र।

वल्दीयत-स्त्री० [अ०] माँ-बापका नाम, वंश-परिचय।

वल्मी-स्त्री० [सं०] चींटी, दीमक। **-कूट**-पु० बिमौट।

वल्मीक-पु० [सं०] दीमक, चींटी आदिकी चाली हुई मिट्टीका ढेर, बिमौट; श्लीपद नामक रोग।

वल्लकी-स्त्री० [सं०] वीणा; सलईका पेड़।

वल्लभ-वि० [सं०] प्रिय, प्यारा। पु० प्रियजन; नायक; पति; अध्यक्ष; स्वामी।

वल्लभा-स्त्री० [सं०] प्रियतमा, प्रेयसी। वि० प्यारी।

वल्लभी-स्त्री० [सं०] गुजरातका एक राजनगर; गोपिका।

वल्लरि, वल्लरी-स्त्री० [सं०] लता; मंजरी।

वल्लवी-स्त्री० [सं०] गोपिका।

वल्लाह-अ० [अ०] खुदा कसम, सचमुच।

वल्ली-स्त्री० [सं०] लता।

वशंकर-वि० [सं०] वशमें करनेवाला।

वशंवद-वि० [सं०] वशवर्ती; आज्ञाकारी।

वश-पु०[सं०] किसीका प्रभाव, शक्ति जिससे दूसरेसे कोई काम करा लिया जाय, काबू; इच्छा, चाह; किसी बातको अपने अनुकूल करानेकी शक्ति; अधिकारमें करना। वि० अधीन; आज्ञाकारी; मुग्ध। **-कर**-वि० वशमें करनेवाला। **-गा**-स्त्री० आज्ञामें रहनेवाली स्त्री। **-वर्ती(र्तिन्)**-वि० जो किसीके वशमें हो। मु० **-का**-जिसपर जोर या अधिकार हो। **-चलना**-कुछ करनेकी शक्ति होना। **-में होना**-अधिकार, आज्ञामें होना।

वशा-स्त्री० [सं०] स्त्री; गाय; हथिनी; कन्या; ननद।

वशानुग-पु० [सं०] आज्ञाकारी, दास। वि० वशीभूत।

वशिता-स्त्री०, **वशित्व**-पु०[सं०] अधीनता; सम्मोहन।

वशिष्ठ-पु० [सं०] दे० 'वसिष्ठ'।

वशी(शिन्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; संयमी, अपनेको वशमें रखनेवाला।

वशीकर-वि० [सं०] वशमें करनेवाला।

वशीकरण-पु० [सं०] वशमें लाना; मंत्रादिके प्रयोगसे किसीको वशीभूत करना।

वशीकृत-वि० [सं०] वशमें किया हुआ; मंत्र द्वारा वशमें किया हुआ।

वशीभूत-वि० [सं०] अधीन, जो वशमें हो गया हो।

वश्य-वि० [सं०] वशमें किये जाने योग्य या किया जानेवाला; वशमें किया हुआ। पु० दास; आश्रित।

वश्यका-स्त्री० [सं०] आज्ञामें रहनेवाली स्त्री।

वश्यता-स्त्री० [सं०] अधीनता।

वश्या-स्त्री० [सं०] वशीभूता स्त्री; लगाम; गोरोचन।

वसंत-पु० [सं०] छ ऋतुओंमेंसे एक जो चैत्र-वैशाखमें होती है (वसंत देवरूपमें कामदेवका सहचर माना जाता है); अतिसार; मसूरिका। **-काल**-पु० वसंत ऋतु। **-घोष,-घोषी(षिन्)**-पु० कोकिल। **-तिलक**-पु०,**-तिलका**-स्त्री० एक वर्णवृत्त। **-पंचमी**-स्त्री० माघशुक्ला पंचमी और उस दिन होनेवाला त्योहार। **-बंधु**-पु० कामदेव। **-महोत्सव**-पु० होलिकोत्सव। **-यात्रा**-स्त्री० वसंतोत्सव। **-व्रण**-स० मसूरिका। **-सख**-पु० कामदेव; मलयानिल।

वसंती-पु० सरसोंके फूल जैसा एक हलका पीला रंग। वि० वसंती रंगका। स्त्री० वासंती लता।

वसंतोत्सव-पु० [सं०] होलिकोत्सव।

वसअत-स्त्री० [अ०] फैलाव; कुशादगी; गुंजाइश; आराम।

वसति, वसती-स्त्री० [सं०] वास, रहना; घर; शिविर; आबादी, बस्ती; आधार।

वसन-पु० [सं०] वस्त्र; ढकनेकी वस्तु, आवरण; निवास।

वसवास-पु० [अ०] भुलावा; भ्रम; शंका, संदेह।

वसवासी-वि० [अ०] भुलावेमें डालनेवाला; शक करनेवाला।

वसह*-पु० बैल।

वसा-स्त्री० [सं०] मेद; मेद या चरबीवाला पदार्थ; भेजा।

वसित-वि० [सं०] पहना हुआ; बसा हुआ; जमा किया हुआ। पु० वस्त्र; वास-स्थान;

वसितव्य-वि० [सं०] पहनने, धारण करने योग्य।

वसिष्ठ-पु० [सं०] एक ऋषि; सप्तर्षिमंडलका एक तारा; एक स्मृतिकार।

वसी-पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसको वसीयत की गयी हो

या जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो।

वसीअत, वसीयत–स्त्री० [अ०] मृत्यु या लंबी यात्राके अवसरपर मृत्युके बाद अपनी संपत्तिके प्रबंध, उपभोग आदिके विषयमें किया हुआ आदेश। **–नामा**–पु० मृत्युके बादके कर्तव्योंका आदेश-पत्र, मृत्युपत्र।

वसीक़ा–पु० [सं०] कौल-करार; इकरारनामा; दस्तावेज; ऋणपत्र। **–दार**–वि०, पु० जिसके हकमें वसीका लिखा गया हो; महाजन।

वसीला–पु० [अ०] जरिया; सहारा; सहायता।

वसुंधरा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; देश; राज्य।

वसु–पु० [सं०] धन; रत्न; सोना; जल; पदार्थ; आठ देवताओंका एक वर्ग; आठकी संख्या; कुबेर; शिव; अग्नि; सूर्य। स्त्री० प्रकाश, दीप्ति; प्रकाश-रश्मि; अमरावती; अलका। **–देव**–पु० कृष्णके पिता। **–धा**–स्त्री० पृथ्वी, क्षिति; राज्य; लक्ष्मी। **–धा-धर**–पु० पहाड़; विष्णु। **–श्रेष्ठ**–वि० वसुओंमें श्रेष्ठ (कृष्ण)।

वसुमती–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; देश; राज्य।

वसूल–वि० [अ०] मिला हुआ, प्राप्त।

वसूली–स्त्री० [अ०] वसूल करनेकी क्रिया; उगाही।

वस्तव्य–वि० [सं०] रहने, ठहरने योग्य।

वस्ति–स्त्री० [सं०] पेड़ू, नाभिके नीचेका भाग; मूत्राशय; पिचकारी; निवास; कपड़ेका छोर। **–कर्म(न्)**–पु० लिंग, गुदा आदिमें पिचकारी देना। **–कोश**–पु० मूत्राशय।

वस्ती–वि० [अ०] दरमियानी, बीचका।

वस्तु–स्त्री० [सं०] वह पदार्थ जिसकी स्थिति, सत्ता हो; सत्य; चीज, पदार्थ; व्यावहारिक पदार्थ; वृत्तांत, इतिवृत्त; नाटककी कहानी, घटना, कथा-वस्तु। **–जगत्**–पु० दृश्यमान जगत्। **–ज्ञान**–पु० वस्तुकी पहचान; तत्त्व-ज्ञान, मूल तत्त्वका बोध। **–निर्देश**–पु० वह मंगलाचरण जिसमें कथाका कुछ संकेत, आभास रहता है; सूची। **–प्रेषणादेश**–पु० (इनडेंट) माल भेजनेके लिए (देशके बाहरसे) दिया गया लिखित आदेश। **–वाद**–पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें दृश्य जगत्को यथारूप सत् मानते हैं, भूतवाद। **–विनिमय**–पु० वस्तुओंका अदल-बदल। **–स्थिति**–स्त्री० वास्तविक स्थिति।

वस्तुतः(तस्)–अ० [सं०] यथार्थतः, असलमें।

वस्तूत्प्रेक्षा–स्त्री० [सं०] उत्प्रेक्षा अलंकारका एक भेद।

वस्तूपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद।

वस्त्र–पु० [सं०] कपड़ा; पोशाक। **–गृह**–पु० खेमा। **–ग्रंथि**–स्त्री० इजारबंद, नीवी। **–दशा**–स्त्री० कपड़ेकी किनारी। **–धारणी**–स्त्री० अलगनी। **–पुत्रिका**–स्त्री० गुड़िया। **–पूत**–वि० कपड़ेसे छाना हुआ। **–बंध**–पु० नीवी, नारा। **–भवन**–पु० खेमा। **–भेदक, –भेदी(दिन्)**–पु० दर्जी। **–विलास**–पु० वेष-भूषा-प्रियता। **–वेश्म(न्)**–पु० खेमा।

वस्त्रांचल, वस्त्रांत–पु० [सं०] कपड़ेका छोर।

वस्त्रागार–पु० [सं०] कपड़ेकी दुकान।

वस्ल–पु० [अ०] मिलन, प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन; संभोग।

वह–सर्व० बातचीतमें दूरस्थित, परोक्ष व्यक्तिके संकेतका शब्द; दूरस्थ, परोक्ष पदार्थोंका संकेत (विशेषणके रूपमें भी प्रयुक्त होता है–जैसे वह लड़का)। वि० [सं०] ले जानेवाला, वहन करनेवाला (जैसे 'भारवह')।

वहन–पु० [सं०] बेड़ा, नाव; खींचकर, लादकर कहीं ले जाना; सिर, कंधेपर लेना, धारण करना, उठाना; (कॉन-वेक्शन) ताप या विद्युत्के एक स्थानसे दूसरे स्थानको जानेकी वह रीति जिसमें पदार्थके कण घनत्वमें अंतर होनेके कारण एक स्थानसे हटकर दूसरे स्थानपर पहुँचते हैं और ताप या बिजली देते हैं।

वहनीय–वि० [सं०] उठा या खींचकर ले जाने योग्य; धारणीय, ऊपर लेने योग्य।

वहम–पु० [अ०] शक; शंका; कल्पना; भ्रममूलक, गलत खयाल। **–का पुतला**–वहमी।

वहमी–वि० [अ०] भ्रमजनित; वहम करनेवाला।

वहशत–स्त्री० [अ०] वहशीपन, आदमियोंसे भड़कनेका भाव; घबराहट; चित्तकी अति चंचलता; भय, सनक।

वहशियाना–वि० [अ०] वहशीकी तरह, जंगली जानवर या आदमीके अनुरूप।

वहशी–वि० [अ०] जंगली, आदमियोंकी सुहबतसे घबराने, भागनेवाला; उजड्ड, असभ्य।

वहाँ–अ० उस जगह (दूरके लिए)।

वहित्र–पु० [सं०] पोत; एक तरहका रथ।

वहिरंग–वि०, पु० [सं०] दे० 'बहिरंग'।

वहिर्गत–वि० [सं०] दे० 'बहिर्गत'।

वहिर्देश–पु० [सं०] गाँव या नगरके बाहरका स्थान; परदेश, बहिर्देश।

वहिर्द्वार–पु० [सं०] दे० 'बहिर्द्वार'।

वहिर्मुख–वि०, पु० [सं०] दे० 'बहिर्मुख'।

वहिर्लापिका–स्त्री० [सं०] दे० 'बहिर्लापिका'।

वहिर्विकार–पु० [सं०] दे० 'बहिर्विकार'।

वहिष्कार–पु० [सं०] दे० 'बहिष्कार'।

वहिष्कृत–वि० [सं०] दे० 'बहिष्कृत'।

वहीं–अ० उसी जगह (दूर, परोक्षके लिए)।

वही–सर्व० पूर्ववर्णित व्यक्ति, निर्दिष्ट व्यक्ति, दूसरा नहीं।

वहै*–सर्व० वह ही, वही।

वह्नि–पु० [सं०] अग्नि; जठराग्नि; पाचन; क्षुधा। **–कुंड**–पु० आग रखनेके लिए बना हुआ गड्ढा। **–जाया**–स्त्री० स्वाहा। **–मित्र**–पु० वायु। **–मुख**–पु० देवता। **–शिखा**–स्त्री० आगकी लपट; कलिकारी; धातकी।

वांछनीय–वि० [सं०] चाहने योग्य, अभिलषणीय।

वांछा–स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह।

वांछित–वि० [सं०] इच्छित, चाहा हुआ। पु० इच्छा।

वांछितव्य, वांछ्य–वि० [सं०] अभिलषणीय।

वा–अ० [सं०] या, अथवा। * सर्व० 'वह'का विकृत रूप।

वाइ*–सर्व० उसको। स्त्री० वापी।

वाइदा–पु० [अ०] दे० 'वादा'।

वाक–पु० [सं०] वाक्य; बगलोंका झुंड। * स्त्री० वाणी, सरस्वती।

वाक़ई–अ० [अ०] वस्तुतः, सचमुच।

वाक़ि(क़े)आ–पु० [अ०] घटना; वृत्त; दुर्घटना, हादिसा।

–नवीस,–निगार–पु० खबरें लिखनेवाला, वृत्त-लेखक।

वाक़िआती–वि० [अ०] घटनामूलक, परिस्थितिसे प्राप्त। **–शहादत–**स्त्री० (घटनाकी) परिस्थितिसे मिलनेवाली (अप्रत्यक्ष) शहादत।

वाक़िफ़–वि० [अ०] जानकार, जानने, समझनेवाला। अभिज्ञ। **–कारी–**स्त्री० जानकारी, परिचय।

वाक़िफ़ीयत–स्त्री० [अ०] जानकारी, अभिज्ञता, परिचय।

वाक़े(वाक़ेअ)–वि० [अ०] होनेवाला, घटित होनेवाला, सामने आनेवाला; असली। **मु०–होना–**घटित होना।

वाकोवाक्य–पु० [सं०] कथोपकथन, बातचीत; तर्क।

वाक्(चू)–स्त्री० [सं०] शब्द; वाणी, वाक्य; कथन; वादा; बोलनेकी इंद्रिय; सरस्वती। **–कलह–**पु० झगड़ा, कहासुनी। **–केलि–**स्त्री० हँसी-मजाक। **–चपल–**वि० बड़बड़िया। **–छल–**पु० बहाना, टालमटूलवाली बात; काकुके सहारे वितंडा खड़ा करना। **–पटु–**वि० बात करनेमें चतुर। **–पति–**पु० बृहस्पति; पुष्य नक्षत्र; भाषणकुशल व्यक्ति, वाग्मी। **–पाटव–**पु० भाषण-पटुता। **–पारुष्य–**पु० कर्कशता, अपशब्द आदि। **–प्रतोद–**पु० ताना। **–शलाका–**स्त्री० लगनेवाली बात। **–स्तंभ–**पु० अवाक् रह जाना, बोल न निकलना।

वाक्य–पु० [सं०] पदोंका वह समूह जिससे वक्ताका अभिप्राय स्पष्टतः समझमें आ जाय; कथन; आदेश; साक्ष्य; तर्क। **–खंडन–**पु० तर्कका खंडन। **–पद्धति–**स्त्री० वाक्य बनानेका नियम। **–रचना–**स्त्री० वाक्य बनाना, वाक्यका निर्माण। **–विन्यास–**पु० पदोंका यथास्थान रखा जाना (व्या०)। **–विशारद–**वि० भाषण-पटु।

वागना*–अ० क्रि० दे० 'बागना'; चलना–'ठुमुकि ठुमुकि वागैं कौसिलाके आँगनमें'–रघु०।

वागीश–पु० [सं०] कवि; वक्ता; ब्रह्मा; बृहस्पति। वि० अच्छा बोलनेवाला।

वागीशा, वागीश्वरी–स्त्री० [सं०] सरस्वती; वाणी।

वागीश्वर–पु० [सं०] कवि; ब्रह्मा; बृहस्पति; एक बोधिसत्त्व।

वागीसा–स्त्री० दे० 'वागीशा', वाणी–'तदपि देवि मैं देव असीसा। सफल होन हित निज वागीसा'–रामा०।

वागुरा–स्त्री० [सं०] फंदा, जाल।

वागुरिक–पु० [सं०] हिरन फँसानेवाला व्याधा।

वाग्–स्त्री० [सं०] 'वाक्(च्)'का समासगत रूप। **–जाल–**पु० बातोंकी लपेट। **–दंड–**पु० डाँट-फटकार, भर्त्सना। **–दत्त–**वि० जिसको देनेकी बात कह दी गयी हो। **–दत्ता–**स्त्री० वह कन्या जिसके विवाहकी ठहरौनी किसीके साथ हो चुकी हो। **–दान–**पु० किसीके साथ कन्याका विवाह-संबंध तय करना। **–देवता–**पु० स्त्री० सरस्वती। **–देवी–**स्त्री० सरस्वती। **–दोष–**पु० बोलनेकी त्रुटि; व्याकरण-संबंधी दोष। **–युद्ध–**पु० शब्दोंका युद्ध, झगड़ा। **–विदग्ध–**वि० पंडित; वार्ता-कुशल। **–विभव–**पु० वर्णनशक्ति; भाषाका विशेष ज्ञान। **–विरोध–**पु० कहासुनी। **–विलास–**पु० मौज, दिलबहलावके लिए बातचीत करना। **–वीर–**पु० वह व्यक्ति जो बोलनेमें विशेष कुशल हो। **–वैदग्ध्य–**पु० भाषण, कथोपकथनमें चतुरता; अलंकार और चमत्कार-मयी उक्तियोंमें दक्षता, प्रवीणता।

वाग्मिता–स्त्री०, **वाग्मित्व–**पु० [सं०] पांडित्य; भाषण-पटुता।

वाग्मी(ग्मिन्)–वि० [सं०] भाषण-पटु, अच्छा बोलनेवाला; बहुत बोलनेवाला; पंडित। पु० बृहस्पति; विष्णु।

वाङ्मय–वि० [सं०] वाक्यात्मक; वाक्य, वचन-संबंधी; वचन, वाणीसे किया हुआ (जैसे–वाङ्मय पाप); पठन-पाठन-संबंधी। पु० गद्य-पद्यरूपमें लिखित वाक्य; वाक्य-समूह; ग्रंथ, ग्रंथ-समूह; साहित्य।

वाङ्मुख–पु० [सं०] भाषणका आरंभिक अंश, भूमिका।

वाचक–वि० [सं०] सूचक, बतानेवाला; मौखिक। पु० पाठक, बोलनेवाला; दूत; महत्त्वपूर्ण शब्द; उपमासूचक शब्द; संज्ञा, संकेत, नाम। **–धर्मलुप्ता–**स्त्री० वह उपमा जिसमें वाचक और साधारण धर्मका लोप हो। **–पद–**पु० साभिप्राय शब्द, सार्थक शब्द। **–लुप्ता–**स्त्री० वह उपमा जिसमें उपमावाचक शब्द न हो।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता–स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक, उपमान और धर्म लुप्त हों।

वाचकोपमानलुप्ता–स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक और उपमान न हों।

वाचकोपमेयलुप्ता–स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक और उपमेयका लोप हो।

वाचन–पु० [सं०] पढ़नेकी क्रिया, पठन; उच्चारण, बाँचना; (रीडिंग) विधानसभा या लोकसभामें किसी विधेयकके रखे जानेपर उसका विचार, बहस आदिके लिए पहली, दूसरी या तीसरी बार पढ़ा जाना, जिसके बाद ही वह अंतिम रूपसे स्वीकार किया जा सकता है।

वाचनालय–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ समाचारपत्र और पत्रिकाएँ पढ़नेके लिए रखी हों।

वाचस्पति–पु० [सं०] बृहस्पति; विद्वान्; सुवक्ता।

वाचा–अ० [सं०] वचनसे, वचन द्वारा। स्त्री० वचन, शब्द; वाणी; शपथ; सरस्वती। **–बंध*–**वि० प्रतिज्ञा-बद्ध। **–बंधन–**पु० प्रतिज्ञामें बँधना। **–बद्ध–**वि० वादे, प्रतिज्ञासे विवश। **–विरुद्ध–**वि० जो कथनके योग्य न हो।

वाचाट–वि० [सं०] बकवादी, बातूनी; डींग मारनेवाला।

वाचाल–वि० [सं०] बोलनेमें तेज, पटु; बकवादी; डींग मारनेवाला; शब्दमय।

वाचालता–स्त्री० [सं०] बहुभाषण, बातचीतकी निपुणता।

वाचिक–वि० [सं०] वाणी-संबंधी; मौखिक, वाणी द्वारा व्यक्त। पु० अभिनयका एक भेद जिसमें केवल वाणीके आश्रयसे अभिनय किया जाता है।

वाची(चिन्)–वि० [सं०] वाक्ययुक्त, बोलता हुआ; बोधक, सूचक (पदांतमें)।

वाच्य–वि० [सं०] कहने योग्य; जिसका अभिधाशक्तिसे बोध हो; निंद्य। पु० अभिधेयार्थ; क्रियाका एक रूप (व्या०)।

वाच्यार्थ–पु० [सं०] मूल अर्थ, शब्दका नियत अर्थ, अभिधेयार्थ।

वाच्यावाच्य–पु० [सं०] कहने-न-कहने योग्य बात।

वाजपेयी(यिन्)–पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

वाजिब–वि० [अ०] जरूरी; उचित; करणीय।

वाजिबी–वि० [अ०] उचित; आवश्यक।

वाजी(जिन्)–पु० [सं०] घोड़ा; अड़ूसा।

वाजीकरण–पु० [सं०] औषध द्वारा शक्तिवर्द्धन या कामोद्दीपन।

वाट–पु० [सं०] बाड़ा, घेरा; सड़क, मार्ग।

वाटिका–स्त्री० [सं०] बगीचा; उद्यान।

वाडव, वाडव–वि० [सं०] घोड़ी-संबंधी। पु० समुद्रके अंदरकी आग; ब्राह्मण; घोड़ा या घोड़ियोंका समूह।

वाडवाग्नि–स्त्री० [सं०] समुद्रके अंदरकी आग।

वाडवानल–पु० [सं०] दे० 'वाडवाग्नि'।

वाण–पु० [सं०] दे० 'बाण'।

वाणिज्य–पु० [सं०] व्यापार; (कॉमर्स) बड़े पैमानेपर किया जानेवाला व्यापार जिसमें बैंकोंका कारबार, कंपनियोंके हिस्सोंकी खरीद-बिक्री, बीमा-संबंधी उद्योग आदि भी सम्मिलित हैं। **–दूत**–पु० किसी देशका वह प्रतिनिधि जो अन्य देशमें स्वदेशके व्यापारिक हितोंकी रक्षाके लिए नियुक्त हो।

वाणिज्यालय–पु० [सं०] (एंपोरियम) वाणिज्यका मुख्य स्थान, बाजार; बड़ी दुकान।

वाणी–स्त्री० [सं०] सरस्वती; सार्थक शब्द, वचन; बोली।

वात–पु० [सं०] वायु; पवनदेव; शरीरसे निकली हुई हवा; शरीरस्थ वायुके प्रकोपसे होनेवाले रोग, गठिया आदि। **–चक्र**–पु० ज्योतिषमें एक योग (इसमें वायुकी दिशासे फलाफलका विचार किया जाता है); बवंडर। **–ज**–वि० वायुसे उत्पन्न। **–ज्वर**–पु० वात कुपित होनेसे उत्पन्न होनेवाला एक ज्वर। **–प्रकोप**–पु० वायुकी अधिकता। **–व्याधि**–स्त्री० गठिया। **–सख**–पु० अग्नि।

वातात्मज–पु० [सं०] हनूमान्; भीम।

वातापि–पु० [सं०] एक राक्षस (कहते हैं यह भेड़ बन जाता था और उसका भाई आतापि इसे मारकर ऋषियोंको खिला देता था और फिर नाम लेकर पुकारता तो यह पेट फाड़कर निकल आता। ऐसे ही एक अवसरपर अगस्त्य इसे पचा गये।)**–द्विट् (ष्)**,**–सूदन**,**–हा (हन्)**–पु० अगस्त्य।

वातायन–पु० [सं०] झरोखा, खिड़की।

वातारि–पु० [सं०] एरंड; शतमूली; शेफालिका; सूरन।

वातावरण–पु० [सं०] पृथ्वीके चतुर्दिक् स्थित वायु; परिस्थिति, जीवनको प्रभावित करनेवाली परिस्थिति।

वातावर्त–पु० [सं०] बवंडर।

वाताश, वाताशी (शिन्)–पु० [सं०] साँप।

वातास*–स्त्री० बयार, हवा।

वातुल–वि० [सं०] वातग्रस्त, गठिया रोगसे पीड़ित; वायुप्रकोपसे जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो; पागल।

वात्या–स्त्री० [सं०] बवंडर; अंधड़। **–चक्र**–पु० बवंडर।

वात्सरिक–वि० [सं०] वार्षिक। पु० ज्योतिषी।

वात्सल्य–पु० [सं०] प्रेम, स्नेह; संतानके प्रति मातापिताका स्नेह। **–रस**–पु० एक भाव (कुछ आचार्य वात्सल्य रसको दसवाँ रस मानते हैं)।

वाद–पु० [सं०] बातचीत; किसी तत्त्व, सिद्धांत आदिपर विचार-विमर्शके लिए होनेवाली बातचीत; तर्क; बहस; विवरण; व्याख्या; सिद्धांत; किसी शास्त्रके विशेषज्ञों द्वारा निश्चित मूलभूत तत्त्वों या सिद्धान्तोंका समाहार; ध्वनि; ध्वनि करना; अफवाह; उत्तर; दावा। **–ग्रस्त**–वि० अनिश्चित, अनिर्णीत, विवादास्पद। **–पत्र**–पु० (प्लैंट) वादी द्वारा किसीके विरुद्ध न्यायालयमें उपस्थित किया गया लिखित आरोप। **–पद**–पु० (इशू) न्यायालयके सामने रखा गया वह विषय जो उभय पक्षोंके बीचके झगड़ेका मूल कारण हो। **–प्रतिवाद**–पु० बहस, उत्तर-प्रत्युत्तर; शास्त्रीय तत्त्वविचारमें होनेवाला कथोपकथन। **–मूल**–पु० (कॉज ऑफ ऐक्शन) कोई व्यवहार या मुकदमा न्यायालयमें उपस्थित किये जानेका कारण; वह झगड़ा जिसके कारण न्यायालयमें मामला चलाया जाय। **–युद्ध**–पु० झगड़ा; बहस। **–विवाद**–पु० झगड़ा; बहस। **–विषय**–पु० (मैटर फॉर डिसकशन, सबजेक्ट मैटर) वह विषय जिसके संबंधमें विवाद या चर्चा की जाय, विचारणीय विषय। **–व्यय**–पु० (कास्ट्स) वाद या मुकदमेका व्यय जो न्यायालय द्वारा जीतनेवाले पक्षको दिलाया जाय। **–समाप्ति**–स्त्री० (अबेटमेंट ऑफ सूट) मामले या मुकदमेका खारिज कर दिया जाना। **–हेतु**–पु० (इशू) झगड़ेका विषय जो न्यायालयके सामने उपस्थित हो और जिसके संबंधमें न्यायाधीशको निर्णय करना हो; दे० 'वादमूल'।

वादक–पु० [सं०] शास्त्रार्थ करनेवाला; बजानेवाला। **–दल**,**–वृंद**–पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशालामें विशेष स्थानपर समवेत होकर बाजा बजानेवालोंका दल या समूह।

वादन–पु० [सं०] बाजा बजाना।

वादा–पु० [अ० 'वायदा'] वचन, प्रतिज्ञा, करार; कर्ज अदा करनेका वक्त। **–ख़िलाफ़**–वि० वचन भंग करनेवाला, जो वादोंको पूरा न करे। **–ख़िलाफ़ी**–स्त्री० वचन-भंग। **–शिकन**–वि० वादोंको तोड़नेवाला।

वादानुवाद–पु० [सं०] शास्त्रार्थ, तर्क-वितर्क।

वादित्र–पु० [सं०] बाजा; संगीत। **–लगुड**–पु० नगाड़ा आदि बजानेकी लकड़ी।

वादी (दिन्)–पु० [सं०] बोलनेवाला, वक्ता; पूर्ववक्ता, अदालतमें कोई अभियोग, मुकदमा चलानेवाला, मुद्दई; गायक; बाजा बजानेवाला; रागका मुख्य स्वर।

वाद्य–पु० [सं०] बाजा, बाजेका स्वर बजाना; कथन, भाषण। वि० जो कहा या बजाया जानेको हो। **–संगीत**–पु० (इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक) वाद्य-यंत्रों द्वारा उत्पन्न की गयी मधुर ध्वनि। **–स्थान**–पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशाला या वाद्यभवनका वह स्थान जहाँ सामूहिक रूपसे बाजा बजानेवाले बैठते हैं।

वाद्यमान–वि० [सं०] जो बजने या बोलनेमें प्रवृत्त किया जाय। पु० वाद्य-संगीत।

वानप्रस्थ–पु० [सं०] आर्योंके चार जीवन-विभागों, आश्रमोंमेंसे तीसरा; इस आश्रममें प्रविष्ट व्यक्ति; उदासी;

संन्यासी।

वानप्रस्थ्य–पु० [सं०] वानप्रस्थकी अवस्था।

वानर–पु० [सं०] बंदर। –**केतन,**–**केतु,**–**ध्वज**–पु० अर्जुन।

वानरी–स्त्री०[सं०] केवाँच; मर्कटी, बंदरी; *बंदरोंकी सेना –'करिहौं महि बिनु वानरी बाढ़ी मन यह जोम'–रघु०।

वानरेंद्र–पु० [सं०] सुग्रीव या हनूमान्।

वानस्पतिक खाद–स्त्री० (कंपोस्ट) गोबर, मल, पौधों आदि(के मिश्रण)से निर्मित खाद, कूड़े आदिसे बनी खाद।

वानस्पत्य–वि० [सं०] वृक्ष-संबंधी; वृक्षसे प्राप्त या प्रस्तुत होनेवाला; वृक्षके नीचे होनेवाला (यज्ञादि); वृक्षके नीचे रहनेवाला (शिव)। पु० पौधा; फूल-फल देनेवाला वृक्ष, आम, जामुन आदि; किसी वृक्षका फल; वृक्षोंका समूह।

वाना–स्त्री० [सं०] बटेर।

वानिक–वि० [सं०] जंगलमें रहनेवाला।

वानीर–पु० [सं०] बेंत या सरकंडा; चित्रक। –**गृह**–पु० सरकंडेका मंडप।

वानीरक–पु० [सं०] मूँज।

वापस–वि० [फा०] लौटा हुआ; लौटाया, फेरा हुआ।

वापसी–वि० फेरा, लौटाया हुआ। स्त्री० वापस होने, करनेका भाव। –**किराया**–पु० वापसी यात्राका किराया। –**टिकट**–पु० वापसी यात्राके लिए मिलनेवाला टिकट। –**मुलाक़ात**–स्त्री० मुलाकातके बदलेमें की जानेवाली मुलाकात। –**यात्रा**–स्त्री०,–**सफर**–पु० प्रस्थानके स्थानको लौटनेकी यात्रा; लौटानीकी यात्रा।

वापि–स्त्री० [सं०] तालाब।

वापिका–स्त्री० [सं०] चौड़ा कुआँ, बावली; छोटा तालाब।

वापी–स्त्री० [सं०] तालाब; बावली।

वाम–* स्त्री० स्त्री, वामा। वि० [सं०] बायाँ; विरुद्ध; टेढ़ा; नीच; बुरा; कठोर, निर्दय; सुंदर; प्रिय। –**दृशी**–स्त्री० दे० 'वामनयना'। –**देवी**–स्त्री० दुर्गा; सावित्री। –**नयना,**–**लोचना**–स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री। –**पंथी,**–**पक्षी**–पु० (लेफ्टिस्ट) राजनीति आदिमें उग्र विचारोंका अनुयायी। –**भ्रू**–स्त्री० सुंदर भौंओंवाली स्त्री; बायीं भौं। –**मार्ग**–पु० वेदविरुद्ध तंत्रमत (इसमें मद्य, मांस, मैथुन आदि निषिद्ध बातोंका विधान है)। –**मोष**–पु० बहुमूल्य वस्तुओंकी चोरी। –**रथ**–पु० एक गोत्रकार ऋषि, वामरथ्य गोत्रके मूल पुरुष। –**शील**–वि० बुरे स्वभावका। –**स्वभाव**–वि० अच्छे स्वभावका। –**हस्तिक**–वि० (लेफ्ट हैंडर) दे० 'बयँहत्था'।

वामक–वि० [सं०] वमन करनेवाला; प्रतिकूल; निष्ठुर। पु० एक संकर जाति; एक भावभंगी।

वामन–वि० [सं०] बौना, बहुत छोटे डील-डौलका; ह्रस्व, खर्व, नीच। पु० बौना आदमी; विष्णुका एक अवतार।

वामनक–वि० [सं०] छोटे कदका, बौना। पु० छोटे कदका आदमी, बौना; एक पहाड़; ठिंगनापन।

वामांगिनी, वामांगी–स्त्री० [सं०] पत्नी।

वामा–स्त्री० [सं०] स्त्री; दुर्गा, गौरी; लक्ष्मी; सरस्वती; एक वर्णवृत्त; स्कंदकी एक अनुचरी।

वामाक्षी–स्त्री० [सं०] दे० 'वामनयना'।

वामागम, वामाचार–पु० [सं०] एक तांत्रिक मत (इसमें पंचमकारोंके आश्रयसे उपास्यकी पूजा की जाती है)।

वामाचारी(रिन्)–पु० [सं०] तांत्रिक मतका अनुयायी, वाममार्गी।

वामावर्त–वि० [सं०] बायीं ओरको घूमा हुआ; बायीं ओरसे घूमकर की जानेवाली (परिक्रमा)। पु० वह शंख जिसमें बायीं ओरका घुमाव हो।

वामी–स्त्री० [सं०] घोड़ी; गधी; गीदड़ी।

वामी(मिन्)–वि० [सं०] वामाचारी; वमन करनेवाला।

वामेक्षणा–स्त्री० [सं०] दे० 'वामनयना'।

वामोरु, वामोरू–स्त्री० [सं०] सुंदर उरु–जाँघोंवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री।

वाय–* स्त्री० वापी; वायु। * सर्व० वाहि, उसको। पु० [सं०] बुनना; सीना; तागा; पक्षी; नायक। –**दंड**–पु० करघा। –**रज्जु**–स्त्री० करघेकी वै।

वायक–पु० [सं०] जुलाहा।

वायन–पु० [सं०] देवपूजाके लिए या विवाहादिके अवसरपर बननेवाली मिठाई।

वायव–वि० [सं०] वायु-संबंधी; पश्चिमोत्तर।

वायवी–स्त्री० [सं०] उत्तर-पश्चिमका कोण।

वायवीय–वि० [सं०] वायु-संबंधी।

वायव्य–वि०[सं०] वायु-संबंधी। पु० पश्चिमोत्तर कोण।

वायव्या–स्त्री० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा।

वायस–पु० [सं०] अगर; तारपीन; कौवा।

वायसाराति, वायसारि–पु० [सं०] उल्लू।

वायसी–स्त्री० [सं०] कौवेकी मादा; काकमाची, छोटी मकोय; सफेद घुँघची।

वायु–स्त्री० [सं०] हवा (पाँच तत्त्वोंमेंसे एक); साँस। –**ग्रस्त**–वि० गठिया या उन्माद रोगसे आक्रांत। –**घट**–पु० (गैसजार) बेलनकी शक्लका शीशेका लंबासा विशेष पात्र जिसमें ओषजन आदि वायव्य द्रव्य भरकर विविध प्रयोग किये जाते हैं। –**तनय,**–**नंदन,**–**पुत्र,**–**सुत,**–**सूनु**–पु० हनूमान्; भीम। –**पंचक**–पु० शरीरस्थ पाँच वायुओंका समाहार। –**पथ,**–**मार्ग**–पु० (एयर-वेज़) आकाशमें वायुयानोंके आने-जानेका–विमान-यात्राका–मार्ग। –**भक्ष,**–**भोजन**–वि० वायु पीकर रहनेवाला। पु० साँप; योगी, तपस्वी। –**भक्षक**–वि०, पु० हवा पीकर रहनेवाला। –**भक्ष्य**–वि० हवा पीकर रहनेवाला। पु० सर्प। –**भारमापक यंत्र**–पु० (बैरोमीटर) वायु-मंडलमें हवाका दबाव या भार नापनेका यंत्र। –**भुक्(ज्)**–वि०, पु० दे० 'वायुभक्ष'। –**मंडल**–पु० आकाश; वातावरण; बवंडर। –**यान**–पु० हवाई जहाज। –**लोक**–पु० एक लोक (पु०)। –**वर्त्म(न्)**–पु० आकाश। –**वाह**–पु० धुआँ; वाष्प। –**वाहन**–पु० धुआँ; विष्णु; शिव। –**संभव**–पु० हनूमान्; भीम। –**सख,**–**सखि**–पु० अग्नि।

वारंट–पु० [अं०] वह आज्ञापत्र जिससे किसीको कोई विशेष कार्य करनेका अधिकार दिया जाय। –**गिरफ्तारी**–पु०[हिं०] सरकारी कर्मचारीको किसीको गिरफ्तार करनेके लिए दिया गया अधिकार-पत्र। –**तलाशी**–पु० [हिं०]

किसी सरकारी कर्मचारीको किसी स्थान या व्यक्तिकी तलाशी लेनेके लिए दिया गया अधिकारपत्र। -**रिहाई**-पु० [हिं०] अदालतका आज्ञापत्र जिसके अनुसार सरकारी कर्मचारी बंदीको मुक्त कर सके या कुर्क जायदाद वापस कर सके।

वारंवार-अ० दे० 'बारंबार'।

वार-पु० आक्रमण; आघात; नदी आदिका इधरका किनारा; [सं०] रोक; ढक्कन; द्वार; घिरा हुआ स्थान; नियत समय; बारी, दफा; दिन (सोम, भौम आदि); अवसर; जनसमूह; वाण; शिव; मदिरापात्र, पानपात्र; एक कृत्रिम विष; कुंज वृक्ष; जलराशि। -**कन्यका**,-**कन्या**,-**नारी**, -**मुखी**,-**युवती**,-**योषित्**-स्त्री० वेश्या। -**तिय***-स्त्री० वेश्या। -**पार**-पु० [हिं०] नदी आदिके दोनों किनारे। अ० इस ओरसे उस ओरतक। -**पार करना**-पूरी मोटाई बेधकर दूसरी ओर निकलना। मु०-**पार होना**-पूरा विस्तार तै करना।] -**वधू**,-**वनिता**, -**वाणी**,-**विलासिनी**,-**सुंदरी**,-**स्त्री**-स्त्री० वेश्या। -**सेवा**-स्त्री० कसब, वेश्यावृत्ति। मु०-**खाली जाना**-आघातका निशानेपर न लगना; युक्तिका सफल न होना।

वारक-पु० [सं०] रोकनेवाला, प्रतिरोधक।

वारण-पु० [सं०] निवारण; प्रतिरोध; निषेध; हाथी; अंकुश; कवच; प्रतिरोधका साधन। -**शाला**-स्त्री० हस्तिशाला।

वारणीय-वि० [सं०] निषेध करने योग्य, मना करने लायक।

वारद*-पु० बादल।

वारदात-स्त्री० दे० 'वारिदात'।

वारन*-स्त्री० निछावर। पु० वंदनवार; हाथी।

वारना-स० क्रि० बलि जाना; उत्सर्ग करना; राई, नोन आदि उतारना। मु० **वारने जाना**-निछावर होना।

वारनिश-स्त्री० [अं० 'वार्निश'] लकड़ी आदिपर चमक लानेके लिए लगाया जानेवाला एक रोगन।

वारांगना-स्त्री० [सं०] वेश्या।

वारा-पु० बचत, किफायत; लाभ; नदी आदिका इधरका किनारा। वि० सस्ता; उत्सर्गीकृत, जो निछावर हुआ हो। -**न्यारा**-पु० फैसला, निपटारा। मु०-**पड़ना**,-**बैठना**-बचत होना। -**होना**-निछावर होना।

वाराणसी-स्त्री० [सं०] काशी, बनारस।

वाराणसेय-वि० [सं०] काशीमें उत्पन्न या बना हुआ।

वाराह-वि० [सं०] शूकर-संबंधी; वराह अवतार-संबंधी। पु० विष्णुका एक अवतार; शूकरांकित ध्वजा।

वाराही-स्त्री० [सं०] शूकरी; वाराह रूपधारी विष्णुकी शक्ति।

वारि-पु० [सं०] जल; वर्षा। स्त्री० सरस्वती; हाथी बाँधनेकी जंजीर; हाथी फँसानेका गड्ढा या फंदा; हाथी बाँधनेका स्थान; [हिं०] निछावर। -**चर**-पु० पानीके जीव-जंतु; मछली; शंख। -**चामर**-पु० सेवार। -**चारी (रिन्)**-वि० जलमें रहनेवाला (जंतु)। -**ज**-पु० कमल; मछली; शंख; घोंघा; द्रोणी लवण; कौड़ी; उत्तम, खरा सोना; लौंग; एक साग। वि० जलमें उत्पन्न। -**जात**-पु० दे० 'वारिज'। -**जीवक**-वि० जलसे जीविका चलानेवाला। -**तस्कर**-पु० सूर्य; बादल। -**त्रा**-स्त्री० छाता। -**द**-पु० मेघ; नागरमोथा। वि० जल देनेवाला। -**दुर्ग**-वि० जलके कारण दुर्गम। -**धर**-वि० जल धारण करनेवाला। पु० बादल। -**धानी**-स्त्री० जलाधार। -**धारा**-स्त्री० जलकी धारा-वर्षा। -**धि**,-**निधि**-पु० समुद्र। -**नाथ**-पु० बादल; वरुण; समुद्र; नागलोक। -**प**-वि० जल पीनेवाला; जलकी रक्षा करनेवाला। -**पथिक**-वि० जलके मार्गसे गमन करनेवाला। -**पर्णी**,-**पूर्णी**,-**पृश्नी**-स्त्री० जलकुंभी, पानीकी काई। -**प्रवाह**-पु० जलधारा; जलप्रपात। -**बंधन**-पु० बाँध बाँधकर जलको रोकना। -**बालक**-पु० एक गंधद्रव्य। -**भव**-पु० रसांजन। -**मुक् (च्)**-पु० बादल। -**मूली**-स्त्री० दे० 'वारिपर्णी'। -**यंत्र**-पु० पानी खींचनेका यंत्र; फौवारा। -**रथ**-पु० नाव। -**राज**-पु० वरुण। -**राशि**-पु० समुद्र। -**रुह**-पु० कमल। -**वदन**-पु० पानी-आमला। -**वर**-पु० करौंदा। -**वर्त**-पु० एक मेघ। -**वल्लभा**-स्त्री० विदारी। -**वह**-वि० पानी ले जानेवाला। -**वाह**-पु० मेघ; मोथा। वि० जल ले जानेवाला। -**वाहन**-पु० मेघ। -**वाही (हिन्)**-वि० जल ढोनेवाला। -**विहार**-पु० जलक्रीड़ा। -**श**-पु० विष्णु। -**शय**-वि० जलमें सोनेवाला। -**शास्त्र**-पु० गर्गप्रणीत फलित ज्योतिषका एक ग्रंथ (इससे वृष्टिके स्थान और समयका पता लगाया जाता है)। -**संभव**-पु० लौंग; एक तरहका सीसा; उशीर।

वारित-वि० [सं०] जिसका निवारण किया गया हो, रोका हुआ; मना किया हुआ; छिपाया हुआ, ढका हुआ। -**साहित्य**-पु० (प्रोस्क्राइब्ड लिटरेचर) वह प्रकाशित पुस्तक, लेख आदि जिसे पढ़ने या पासमें रखनेकी सरकार द्वारा मनाही कर दी गयी हो।

वारिद-पु० [सं०] दे० 'वारि'में।

वारिदात-स्त्री० घटना; दुर्घटना; हाल, वृत्त; जुर्म, चोरी-डकैती इत्यादि।

वारियाँ-स्त्री० निछावर, बलि।

वारिस-पु० [अ०] उत्तराधिकारी, मृत जनकी संपत्तिका अधिकारी; मालिक; खोज-खबर लेनेवाला; रक्षक।

वारींद्र-पु० [सं०] समुद्र।

वारीफेरी-स्त्री० किसी प्रिय जनकी बाधा दूर करनेके लिए उसके सिरके चारों ओर घुमाकर कोई वस्तु उत्सर्ग करना।

वारीश-पु० [सं०] समुद्र।

वारुणी-स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा; शराब, मदिरा; वरुणकी स्त्री या पुत्री; दूब; इँदारुन; हथिनी।

वारुणीश-पु० [सं०] विष्णु।

वार्-पु० [सं०] जल; रक्षक। -**आसन**-पु० जलाधार। -**धानी**-स्त्री० घड़ा। -**धारा**-स्त्री० जलकी धारा। -**धि**-पु० समुद्र। -**धेय**-पु० समुद्री नमक। -**वाह**-पु० बादल।

वार्ड-पु० [अं०] बड़े नगरोंमें कई मुहल्लोंका समूह, हलका (प्रबंध आदिकी सुविधाके विचारसे बनाया जाता है); अलग कमरा, विभाग (जेल, अस्पतालमें)।

वार्डर-पु० [अं०] रक्षक, रक्षा करनेवाला; जेलके भीतर

रहनेवाला पहरेदार ।

वार्तमानिक–वि० [सं०] वर्तमानकाल-संबंधी; जो विद्यमान हो ।

वार्ता–स्त्री० दे० 'वार्त्ता' ।

वार्त्ता–स्त्री० [सं०] जनश्रुति, अफवाह; घटना; वृत्तांत, हाल; विषय, प्रसंग; बातचीत; वृत्ति, जीविका (कृषि, वाणिज्य आदि); दुर्गा; भंटा; अन्य द्वारा खरीदा-बेचा जाना । **–वह**–पु० संदेश ले जानेवाला-दूत । **–हर,–हर्ता(र्तृ),–हार**–पु० दूत ।

वार्त्तालाप–पु० [सं०] बातचीत ।

वार्त्तावह–पु० संदेश पहुँचानेवाला, दूत ।

वार्त्तिक–पु० [सं०] व्याख्या-ग्रंथ (कात्यायन आदिका); किसान; व्यवसायी; वैद्य; व्याख्या; विवाहका भोजन; आचारशास्त्रका अध्ययन करनेवाला; दूत, चर, जासूस; भंटा । वि० व्यवसाय कुशल; समाचार-संबंधी; व्याख्यात्मक । **–कार**–पु० कात्यायन ।

वार्द्धक्य–पु० [सं०] बुढ़ापा ।

वार्षभ–वि० [सं०] वृष, बैल-संबंधी ।

वार्षिक–वि० [सं०] वर्ष-संबंधी; प्रति वर्ष होनेवाला; वर्षाकालमें होनेवाला; एक वर्ष टिकनेवाला । **–वित्तविवरण**–पु० (एन्नुअल फाइनैनशल स्टेटमेंट) राज्यकी या किसी संस्थाकी वर्ष भरकी वित्तीय स्थितिका विवरण ।

वार्षिकी–स्त्री० [सं०] प्रति वर्ष दी जानेवाली छात्रवृत्ति; वर्षमें नियमित रूपसे होनेवाली पूजादि; (एन्नुइटीज) वार्षिक रूपसे मिलनेवाली वृत्ति, लाभांश, अनुदान आदि ।

वार्हस्पत्य–वि० [सं०] बृहस्पति-संबंधी । पु० बृहस्पतिका शिष्य; नास्तिक; अग्नि ।

वालंटियर–पु० [अं०] पुरस्कार या वेतन न लेकर सेना आदिमें काम करनेवाला व्यक्ति, स्वयंसेवक ।

वाल–पु० [सं०] (घोड़े आदिकी) पूँछके बाल । **–धि**–पु० पूँछ; एक मुनि; भैंसा । **–प्रिय,–मृग**–पु० गायकी जातिका एक जानवर जिसकी पूँछका चँवर बनता है ।

वालि–पु० [सं०] एक वानर, सुग्रीवका भाई; एक मुनि ।

वालिका–स्त्री० [सं०] मुहरकी अँगूठी, मुद्रा; बालू; दे० 'बालिका' ।

वालिद–पु० [अ०] बाप, पिता ।

वालिदा–स्त्री० [अ०] माँ ।

वालिदैन–पु० [अ०] माँ-बाप ।

वालुका–स्त्री० [सं०] रेत, बालू; चूर्ण; कपूर; ककड़ी ।

वालुकाब्धि, वालुकार्णव–पु० [सं०] रेगिस्तान ।

वाल्कल–वि० [सं०] छालका बना हुआ । पु० छालका बना वस्त्र ।

वाल्मीकि–पु० [सं०] रामायणके प्रणेता एक मुनि ।

वाल्मीकीय–वि०[सं०] वाल्मीकि-संबंधी; वाल्मीकिप्रणीत ।

वाल्लभ्य–पु० [सं०] प्यार; प्रिय होनेका भाव; लोकप्रियता ।

वावैला–पु० [अ०] रोना-पीटना, क्रंदन (–मचाना) ।

वाष्प–पु० [सं०] भाफ; आँसू; उष्मा, भटकटैया; लोहा । **–कंठ**–वि० जिसका कंठ वाष्पसे भर आया हो । **–पूर**–पु० आँसुओंकी बाढ़ । **–मोक्ष,–मोक्षण**–पु० अश्रुपात । **–वृष्टि**–स्त्री० आँसुओंकी वर्षा । **–शील**–वि० (वोलैटाइल) जो शीघ्रतापूर्वक वाष्प बनकर उड़ जाय; अस्थिर (ला०) ।

वाष्पाकुल–वि० [सं०] जो आँसुओंके कारण धुँधला हो गया हो ।

वाष्पीकरण–पु० [सं०] (इवैपोरेशन) किसी पदार्थका, विशेषकर द्रवपदार्थका, वाष्परूपमें परिणत होना या किया जाना, भाफ बन जाना या बनाया जाना ।

वासंतिक–पु० [सं०] विदूषक, भाँड़; नर्तक; अभिनेता; वसंतोत्सव । वि० वसंत-संबंधी; वसंतकालीन ।

वासंतिकता–स्त्री० [सं०] वसंतका आनंद ।

वासंती–स्त्री० [सं०] जूही; माधवी; नेवारी; गनियारी ।

वास–पु० [सं०] निवास, रहना; घर, मकान; कपड़ा, पोशाक; अवस्थिति, स्थान; अड़ूसा; सुगंध; गंध; एक दिनकी यात्रा; पत्रक । **–गृह,–गेह,–भवन,–वेश्म(न्)**–पु० अंतःपुर, शयनागार । **–यष्टि**–स्त्री० पालतू पक्षियोंके लिए बनी हुई छतरी । **–व्यवस्था**–स्त्री० (ऐकोमोडेशन) रहने या ठहरनेका स्थान, सुविधा या प्रबंध ।

वासक–पु० [सं०] वस्त्र; गंध; अड़ूसा; वासर, दिन । वि० वासने, सुगंधित करनेवाला; रहनेके लिए प्रेरित करनेवाला । **–सज्जा,–सज्जिका**–स्त्री० शृंगार करके नायककी प्रतीक्षा करनेवाली नायिका ।

वासतेय–वि० [सं०] रहने, बसने योग्य ।

वासन–पु० [सं०] वासना, सुगंधित करना; वस्त्र; वास; बसाना; ज्ञान; जलपात्र; संदूक; मंजूषा ।

वासना–स० क्रि० दे० 'बासना' । स्त्री० [सं०] संस्कार; भावना, कल्पना; इच्छा, कामना; अज्ञान, भ्रम, मिथ्या-संस्कार; स्मृतिहेतु; प्रमाण ।

वासयिता(तृ)–पु०[सं०] वस्त्राच्छादित करनेवाला; रक्षा करनेवाला ।

वासर–पु० [सं०] दिन; एक नाग; नवदंपतीका पहली रातका शयनमंदिर; बारी । वि० प्रातःकाल-संबंधी । **–कन्यका**–स्त्री० रात्रि । **–कृत्,–मणि**–पु० सूर्य ।

वासराधीश, वासरेश–पु० [सं०] सूर्य ।

वासव–पु० [सं०] इंद्र । वि० वसु-संबंधी; इंद्र-संबंधी । **–चाप**–पु० इंद्रधनुष् । **–ज**–पु० अर्जुन; जयंत; बालि । **–दिक्(श्)**–स्त्री० पूर्व दिशा ।

वासा–स्त्री० [सं०] अड़ूसा; माधवी लता ।

वासागार–पु० [सं०] दे० 'वासगृह' ।

वासित–वि० [सं०] बसाया, सुगंधित किया हुआ; मसाला डाला हुआ; कपड़ेसे ढका, वस्त्राच्छादित; ठहराया हुआ, रोका हुआ; किसी स्थानपर बसाया हुआ ।

वासिल–वि० [अ०] जुड़ा, मिला हुआ; जो वसूल हो चुका हो । **–नवीस**–पु० तहसीलका कर्मचारी जो वसूलशुदा और बाकी मालगुजारीका हिसाब रखता है । **–बाकी**–स्त्री० वसूल हो चुकी और बाकी रकमें; ऐसी रकमोंका हिसाब ।

वासी(सिन्)–वि० [सं०] रहनेवाला, अधिवासी ।

वासुकि–पु० [सं०] एक देवता; तीन प्रमुख नागराजों मेंसे एक (समुद्र-मंथनमें इसका रज्जुके रूपमें उपयोग किया गया था) ।

वासुकी–पु० दे० 'वासुकि'।

वासुदेव–पु०[सं०] वसुदेव-पुत्र, कृष्ण; अश्वत्थ वृक्ष(बो०)।

वास्कट–स्त्री० [अं० 'वेस्टकोट'] फतूही, बिना आस्तीनका परिधान जिसे कोटके नीचे और कमीजके ऊपर पहनते हैं।

वास्तव–वि० [सं०] यथार्थ, सत्य, निश्चित। पु० असल तत्त्व, परमार्थभूत वस्तु। **–मेँ**–सत्यतः, यथार्थतः, सचमुच।

वास्तविक–वि० [सं०] सत्य, परमार्थभूत; यथार्थ, ठीक।

वास्तव्य–वि० [सं०] किसी स्थानपर छोड़ा हुआ (निकम्मा समझकर); बसा हुआ, आबाद; रहनेवाला; वास योग्य।

वास्ता–पु० [अ०] संबंध, लगाव; नाता; जरिया; काम, सरोकार; बिचुआ, मध्यस्थ। **मु०–देना**–बीचमें डालना; दुहाई देना। **–पड़ना**–काम पड़ना, सरोकार होना।

वास्तु–पु० [सं०] मकान बनाने योग्य स्थान; गृह, भवन; मकानकी नीवँ; कमरा; एक वस्तु; बथुआ; पुनर्नवा; एक अन्न। **–कर्म(न्)**–पु० गृहनिर्माण। **–कर्मकार,–कर्मज्ञ**–पु० (आर्किटेक्ट) इमारत, पुल आदि बनानेकी कला जाननेवाला। **–काल**–पु० गृहनिर्माणके लिए उपयुक्त समय। **–विद्या**–स्त्री०,**–शास्त्र**–पु० गृहनिर्माण-संबंधी विद्या।

वास्ते–अ० [अ०] लिए, हेतु, कारण।

वास्तोष्पति–पु० [सं०] इंद्र।

वाह–अ० [फा०] साधु, धन्य, शाबाश (प्रशंसासूचक अव्यय। कभी-कभी आश्चर्य और व्यंग्यमें निंदाका भाव भी प्रकट करता है)। **–वाह**–अ० साधु-साधु, धन्य-धन्य, क्या कहना है! **–वाही**–स्त्री० वाह-वाह होना, बहुतोंके मुँहसे वाह-वाह निकलना, साधुवाद।

वाहक–वि० [सं०] ढोने, ले जानेवाला; बहानेवाला; गति प्रदान करनेवाला। पु० बोझ ढोनेवाला, भारवाहक; सारथि या आरोही; एक विषैला कीड़ा। **–धनादेश**–पु० (बेयरर चेक) वह धनादेश (चेक) जिसका रुपया किसी भी ऐसे व्यक्तिको दिया जा सकता है जो उसे ले जाकर बैंकके सामने उपस्थित करे। **–नलिका**–स्त्री० (जाइनिंग ट्यूब) एक पात्रसे दूसरे पात्रमें ले जाने, पहुँचानेवाली नलिका।

वाहन–पु० [सं०] घोड़ा, रथ या अन्य कोई सवारी; ढोना; ले जाना; सवारीके काम आनेवाला या माल ढोनेवाला जानवर; प्रयत्न, उद्योग करना। **–कार**–पु० रथादि बनानेवाला। **–श्रेष्ठ**–पु० घोड़ा।

वाहना–स्त्री० [सं०] सेना। * स० क्रि० दे० 'बाहना'।

वाहिता(तृ)–पु० [सं०] चलानेवाला, नायक।

वाहिद–वि० [अ०] एक, अकेला, अद्वय। पु० एककी संख्या; खुदाका एक नाम।

वाहिदिया–पु० मुसलमानोंका एक संप्रदाय।

वाहिनी–स्त्री० [सं०] सेना; सेनाका एक विभाग (८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल); नदी। **–निवेश**–पु० सेनाका पड़ाव, शिविर। **–पति**–पु० सेनानायक; (ब्रिगेडियर) वह सेनानायक जो वाहिनी (ब्रिगेड) का नेतृत्व करे; समुद्र।

वाहिनीश–पु० [सं०] सेनानायक।

वाहियात–वि० [फा०] 'वाहीयत'का बहु०, बेहूदा, निकम्मी (बातें)। स्त्री० खुराफात; बदमाशी-आवारगी।

वाही–वि० [अ०] टूटा-फूटा हुआ; कमजोर; निकम्मा; बेहूदा, बेसिर-पैरकी (बात); आवारा, बदचलन। **–तबाही**–वि० निरर्थक बेहूदा (बातें) (–बकना, हाँकना)।

वाही(हिन्)–वि० [सं०] वहन करनेवाला, ढोनेवाला; बहनेवाला; बहानेवाला।

वाहु–स्त्री० [सं०] दे० 'बाहु'।

वाह्य–पु० [सं०] यान, सवारी; घोड़ा, हाथी आदि भारवाहक पशु। वि० खींचा, ढोया या चढ़ा जानेवाला; दे० 'बाह्य'।

वाह्यांतर–वि० [सं०] बाहर-भीतरका। अ० बाहर-भीतर।

वाह्येंद्रिय–स्त्री० [सं०] बाह्य विषयोंका ग्रहण करनेवाली पाँच ज्ञानेंद्रियाँ (आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा)।

विंदक–पु० [सं०] प्राप्त करनेवाला; *जाननेवाला, वेत्ता।

विंदु–पु० [सं०] एक बूँदका परिमाण; हाथीके शरीरपर बनायी हुई रंगकी बिंदी; अनुस्वारका चिह्न; शून्य; जलानेसे बना हुआ बिंदी जैसा चिह्न; भौंहोंके बीच बनी हुई बिंदी; रत्नका एक दोष; छोटा टुकड़ा; मूँजका धुआँ; (पाइंट) रेखागणितमें वह अत्यंत छोटा कल्पित स्थान जिसमें केवल स्थिति हो, किंतु लंबाई, चौड़ाई, मोटाई न हो; दे० 'बिंदु'। **–पातक**–पु० (ड्रॉपर) आँख, कान आदिमें दवा छोड़नेकी शीशेकी वह नलिका जिसमें ऊपरकी ओर रबड़ लगा रहता है (इसे दबानेसे एक-एक बूँद टपकानेमें आसानी होती है)।

विंदुर*–पु० बुँदकी, बेंदी।

विंध*–पु० विंध्याचल।

विंध्य–पु० [सं०] भारतके मध्यमें स्थित एक पर्वतश्रेणी जो उत्तर भारतको दक्षिणसे अलग करती है। **–कूट,–कूटक,–कूटन**–पु० अगस्त्य मुनि। **–गिरि,–पर्वत,–शैल**–पु० विंध्यश्रेणी। **–निवासी(सिन्)**–पु० दे० 'विंध्यवासी'। **–वासिनी**–स्त्री० देवीकी एक मूर्ति। **–वासी(सिन्)**–वि० विंध्यपर रहनेवाला।

विंध्याचल–पु० [सं०] विंध्य पर्वत; विंध्य पर्वतकी एक शाखापर स्थित एक बस्ती जहाँ विंध्यवासिनी देवीका मंदिर है।

विंध्याटवी–स्त्री० [सं०] विंध्य पर्वतपरका जंगल।

विंध्याद्रि–पु० [सं०] विंध्य पर्वत।

विंध्यारि–पु० [सं०] अगस्त्य मुनि।

विंबक–पु० [सं०] दे० 'बिंबक'।

विंब–पु० [सं०] दे० 'बिंब'।

विंबा, विंबी–स्त्री० [सं०] दे० 'बिंबा'।

विंबित–वि० [सं०] दे० 'बिंबित'।

विंबोष्ठ, विंबौष्ठ–वि० [सं०] दे० 'बिंबोष्ठ'।

विंश–वि० [सं०] बीसवाँ। पु० बीसवाँ भाग।

विंशति–वि० [सं०] बीस; बीसकी संख्याका। स्त्री० बीसकी संख्या; बीसकी संख्याका सूचक अंक, २०; एक प्रकारका व्यूह। **–बाहु,–भुज**–पु० रावण। **–वार्षिक**–वि० बीस वर्ष टिकनेवाला।

विंशोत्तरी–स्त्री० [सं०] मनुष्यका शुभाशुभ जाननेकी विशेष रीति (ज्यो०)।

वि–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पूर्व लगनेपर पार्थक्य (वियोग), कार्यवैपरीत्य (विक्रय, विस्मरण), भाग या अंशीकरण (विभाग), अंतर (विशेष), क्रम (विधा), प्रतिकूलता (विरोध), आधिक्य (विध्वंस), निषेध या राहित्य (विमल), परिवर्तन (विकार) आदिका सूचन करता है। पु० घोड़ा; अन्न; आकाश; आँख।

विकंपन–पु० [सं०] एक राक्षस; (सूर्यका) काँपना; गति।

विकंपित–वि० [सं०] काँपता हुआ, अस्थिर।

विकंपी(पिन्)–वि० [सं०] काँपता हुआ, हिलता हुआ।

विकच–पु० [सं०] ध्वजा; एक धूमकेतु; एक दानव; बालोंका समूह, लट। वि० खिला हुआ, विकसित; फैला हुआ; केशहीन, बिना बालोंका।

विकचित–वि० [सं०] खुला हुआ; खिला हुआ।

विकट–वि० [सं०] भद्दा; विशाल; भयंकर; दुर्गम; बड़ा, विस्तृत; टेढ़ा; मुश्किल।

विकटाकृति–वि० [सं०] भयावनी शकलवाला।

विकटाक्ष–वि० [सं०] डरावनी आँखोंवाला।

विकत्थन–वि०[सं०] डींग मारनेवाला। पु० डींग मारना; व्यंग्य; मिथ्या श्लाघा; प्रशंसा।

विकत्था–स्त्री०[सं०] डींग; प्रशंसा; मिथ्या प्रशंसा; व्यंग्य।

विकरार*–वि० विकराल, भयंकर; विकल, व्याकुल।

विकराल–वि० [सं०] भीषण, भयंकर।

विकर्ण–पु० [सं०] (डायेगोनल) वह सरल रेखा जो चतुर्भुजके आमने-सामनेके कोणोंके शीर्षोंको मिलाती है। (कर्ण = हाइपॉटेन्यूस)। वि० बड़े कानोंवाला; कर्णरहित; बहरा।

विकर्म(न्)–पु० [सं०] निषिद्ध, अनुचित कर्म; विभिन्न प्रकारके कार्य; कामसे अवसर ग्रहण करना। वि० दुराचारी, कर्मभ्रष्ट; कर्म न करनेवाला।

विकल–वि० [सं०] भीत; बेचैन, व्याकुल; क्षुब्ध; हतोत्साह; अपूर्ण; खंडित; अपंग; घटा हुआ, न्यून।

विकलन–पु० [सं०] (डेबिट) किसीको ऋणादिके रूपमें दी गयी रकम, या दिये गये माल आदिके मूल्यरूपमें प्राप्य धन, खातेमें उसके नाम लिखना; किसीके खातेमें खर्चकी ओर कोई रकम लिखना।

विकलांग–वि०[सं०] अधिक अंगवाला; अंगहीन, न्यूनांग।

विकला–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका स्राव बंद हो गया हो; समयका एक बहुत छोटा मान, कलाका ६०वाँ भाग।

विकलाना*–अ० क्रि० व्याकुल होना।

विकलित–वि० व्याकुल, बेचैन; दुःखी, पीड़ित।

विकलीकृत–वि० (डिसेबिल्ड) जो विकलांग (लँगड़ा, लूला आदि) हो जानेके कारण अपना काम करनेमें असमर्थ हो गया हो।

विकल्प–पु० [सं०] विभिन्नता; उपाय; भेदयुक्त ज्ञान; अनिश्चय, संदेह; भूल; अज्ञान; वक्तव्य, कथन; भ्रांत धारणा; गणना; चिंतन; संबंध; एक समाधि; अवांतर कल्प; वैचित्र्य; कई नियमों आदिमेंसे एकका ग्रहण; एक अर्थालंकार जहाँ दो समान बलवाली विरुद्ध बातोंको लेकर कहा जाय कि या तो यही बात होगी नहीं तो वह–या काम पूरा करूँगा, या शरीर छोड़ दूँगा।

विकल्पन–पु० [सं०] अनिश्चय, संदेह मानना; दो या दोसे अधिक विषयोंमेंसे किसी एकको मानना।

विकल्पित–वि० [सं०] व्यवस्थित; विभक्त; अनिश्चित, संदिग्ध; अनियमित।

विकसन–पु० [सं०] खिलना, प्रस्फुटन।

विकसना–अ० क्रि० खिलना, प्रस्फुटित होना।

विकसाना–स० क्रि० दे० 'बिकसाना'।

विकसित–वि० [सं०] प्रस्फुटित, प्रफुल्ल; प्रसन्न।

विकस्वर–वि० [सं०] खुला हुआ; प्रफुल्ल; विकासशील; साफ सुनाई देनेवाला (शब्द); निष्कपट। पु० एक काव्यालंकार (इसमें विशेष बातकी पुष्टि सामान्य बातसे की जाती है)।

विकार–पु० [सं०] रूप; धर्म आदि स्वाभाविक अवस्थाका परिवर्तित होना; परिवर्तन; रोग; दोष; विचार, उद्देश्य आदिमें परिवर्तन होना; भावना; वासना; क्षोभ; आकृति, शकलका विकृत होना; व्याकरणके नियमोंसे शब्दका रूप बदलना।

विकारी(रिन्)–वि० [सं०] परिवर्तनशील; विकारयुक्त, विकारवाला; क्रोध आदि दुष्ट मनोविकारोंवाला; आसक्त; विकारग्रस्त, परिवर्तित। पु० एक संवत्सर।

विकाल, विकालक– पु० [सं०] दिनांत, संध्या; उपयुक्त समय बीत जानेके बादका समय, अतिकाल।

विकाश–पु० [सं०] प्रदर्शन; प्रकाश; विस्तार, फैलाव; खुलना; खिलना, प्रस्फुटन; एक काव्यालंकार।

विकाशित–वि० [सं०] दे० 'विकासित'।

विकाशी(शिन्)–वि० [सं०] चमकने या देख पड़नेवाला; खुलने या खिलनेवाला, विकासशील।

विकास–पु० [सं०] खिलना; खुलना (मुख आदिका); प्रसन्नता, आनंद; फैलाव; बाढ़। **–वाद**–पु० डर्विन द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि प्राणियोंका प्रादुर्भाव एक ही मूल तत्त्वसे हुआ है और वे क्रमशः विकसित होते हुए वर्तमान रूपमें पहुँचे हैं।

विकासक–वि० [सं०] खोलने या (बुद्धि) बढ़ानेवाला।

विकासन–पु०[सं०] प्रदर्शन; खिलाना; फैलाना; खोलना।

विकासना*–स० क्रि० विकसित करना; प्रकट करना; निकालना। अ० क्रि० प्रकट या विकसित होना।

विकासित–वि० [सं०] प्रकाशित; प्रदर्शित; प्रस्फोटित; विस्तारित।

विकिर–पु० [सं०] पक्षी; कुआँ; बिखेरना।

विकिरण–पु० [सं०] छितरानेकी क्रिया, तितर-बितर करना; चारों ओर फैलना या फैलाना; (रैडियेशन) एक स्थान या केंद्रसे ताप, प्रकाश आदिका सीधी रेखाओंमें चलकर इधर-उधर फैलना; किरणोंका एकत्रीकरण (जैसे आतिशी शीशेमें); एक समाधि।

विकीर्ण–वि० [सं०] छितराया, फैलाया हुआ; भरा हुआ; मशहूर। **–कारी**–वि० [हिं०] फैलानेवाला। **–केश,–मूर्धज**–वि० जिसके बाल बिखरे हों।

विकुंचित–स्त्री० [सं०] सिकुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ।

विकुंठ–वि० [सं०] तेज धारवाला; जो कुंठित न हो; जो रोका न जा सके; बहुत भोथरा । पु० विष्णु; विष्णुलोक, वैकुंठ ।

विकुंठित–वि० [सं०] भोथरा; निर्बल ।

विकृत–वि० [सं०] परिवर्तित; विकारयुक्त, बिगड़ा हुआ; असंस्कृत; भद्दा, कुरूप; बीभत्स; अस्वाभाविक; अधूरा, अपूर्ण; अराजक, विद्रोही; रोगी; भावाविष्ट । **–टंक**–पु० (डिफेस्ड कॉइन) वह सिक्का जो घिसकर बदशकल-सा हो गया हो और जिसकी लिखावट पढ़नेमें भी कठिनाई हो । **–दर्शन**–वि० जिसकी सूरत बदल गयी हो । **–दृष्टि**–वि० ऐंचाताना ।

विकृति–स्त्री० [सं०] विकार, परिवर्तन; असाधारण या आकस्मिक घटना; रोग; उत्तेजना, क्षोभ; भावावेश; परिवर्तित रूप ।

विकृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ, आकृष्ट; पृथक् किया हुआ; फैलाया हुआ; लुटा हुआ; ध्वनित ।

विकेंद्रीयकरण–पु० (डिसेंट्रलिजेशन) केंद्रमें प्रस्थापित सत्ता, अधिकार आदिको आस-पासके अंगों, अधीन राज्यों आदिमें बाँटना ।

विक्टोरिया–स्त्री [अं०] फिटनसे मिलती-जुलती एक तरहकी घोड़ा-गाड़ी ।

विक्रम–पु० [सं०] बल, तेज आदिकी अधिकता; वीरता; शक्ति; दे० 'विक्रमादित्य' । * वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।

विक्रमाजीत–पु० दे० 'विक्रमादित्य' ।

विक्रमादित्य–पु० [सं०] उज्जयिनीका एक प्रतापी राजा (यह विक्रम नामक संवत्का प्रवर्तक माना जाता है) ।

विक्रमाब्द–पु० [सं०] विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित संवत्, विक्रम-संवत् ।

विक्रमी–वि० विक्रमादित्य-संबंधी ।

विक्रमी(मिन्)–वि० [सं०] बल, पराक्रमवाला, वीर । पु० शूर; विष्णु; शेर ।

विक्रय–पु० [सं०] दाम लेकर कोई चीज देना, बेचना । **–कला**–स्त्री० माल बेचनेकी चतुराई । **–धन**–पु० (टर्नओवर) व्यापारी द्वारा की गयी एक दिन, एक सप्ताह आदिकी बिक्रीसे प्राप्त कुल धनराशि । **–पंजी**–स्त्री० (सेल्स जर्नल) प्रति दिनकी बिक्री आदिका विवरण लिखनेकी पंजी, बिक्री-बही । **–पत्र**–पु० वह कागज जिसमें किसी चीजका नाम, दाम और ग्राहक तथा विक्रेताका विवरण रहता है; नगदी चिट्ठा (कैश मेमो) । **–प्रपंजी**–स्त्री० (सेल्स लेजर) वह खाता-बही जिसमें विभिन्न तिथियोंको बेची गयी विभिन्न वस्तुओंका ब्यौरा, प्रत्येकका पृथक्-पृथक्, लिखा रहता है । **–लेख**–पु० (सेलडीड) वह कागद या लेख-पत्र जिसमें खेत, घर आदिकी बिक्रीका पूरा ब्यौरा (नाम, पता, शर्तें, मूल्य आदि) लिपिबद्ध कर दिया गया हो तथा जिसका विधिवत् पंजीयन करा दिया गया हो, बैनामा ।

विक्रयक–पु० [सं०] बेचनेवाला ।

विक्रयण–पु० [सं०] बिक्री, बेचना ।

विक्रयिक–पु०[सं०] बेचनेकी कलामें चतुर व्यक्ति, विक्रेता; (सेल्समैन) दूकानपर बैठकर ग्राहकोंके हाथ सौदा बेचनेके लिए रखा गया कर्मचारी ।

विक्रयी(यिन्)–पु० [सं०] विक्रेता, बेचनेवाला ।

विक्रिया–स्त्री० [सं०] परिवर्तन; विकार; उत्तेजना; क्रोध; अप्रसन्नता; बुराई; अस्वस्थता ।

विक्री–स्त्री० बेचनेकी क्रिया; बेचनेसे मिला हुआ धन ।

विक्रीत–वि० [सं०] बेचा हुआ ।

विक्रेतव्य, विक्रेय–वि० [सं०] बिकनेवाला, बिकने योग्य ।

विक्रेता(तृ)–पु० [सं०] बेचनेवाला ।

विक्रोध–वि० [सं०] क्रोधरहित ।

विक्लांत–वि० [सं०] हतोत्साह; श्रांत, थका हुआ ।

विक्षत–वि० [सं०] आहत, घायल, चोट खाया हुआ ।

विक्षिप्त–वि० [सं०] फेंका, बिखेरा हुआ; त्यक्त, छोड़ा हुआ; पागल; व्यग्र, व्याकुल । पु० योगकी पाँच अवस्थाओंमेंसे एक जिसमें चित्तवृत्ति प्रायः अस्थिर हो जाती है ।

विक्षिप्तता–स्त्री० [सं०] पागलपन, उन्माद ।

विक्षिप्तालय–पु० [सं०] (लूनैटिक असाइलम) पागल या विक्षिप्त मनुष्योंके रहनेका वह स्थान जहाँ उनकी देख-रेख तथा उपचारादिकी व्यवस्था हो ।

विक्षुब्ध–वि० [मं०] अशांत; जिसका मन शांत न हो ।

विक्षेप–पु० [सं०] बिखेरना; फेंकना; हिलाना; चिल्ला चढ़ाना; असंयम; वक्त बर्बाद करना; अनवधानता; घबराहट; भय; चित्तकी अस्थिरता; तर्कका खंडन; बाधा ।

विक्षेपण–पु० [सं०] फेंकना, बिखेरना; भेजना; हिलाना, झटका देना; धनुष्की डोरी खींचना; विघ्न, बाधा ।

विक्षोभ–पु० [सं०] मनका आवेग, क्षोभ; घबराहट; आतंक; उथल-पुथल ।

विखंडन–पु० [सं०] (ऐग्रोगेशन) दे० 'उत्सादन' ।

विखंडित–वि० [सं०] टुकड़ोंमें कटा हुआ; विघटित किया हुआ; अंग-भंग किया हुआ; दो भागोंमें बँटा हुआ; क्षुब्ध; जिसका खंडन किया गया हो (तर्क) ।

विख*–पु० विष, जहर । **–हा***–पु० दे० 'विषहा' ।

विखाद–पु० * दे० 'विषाद' ।

विखान*–पु० दे० 'विषाण' ।

विखायँध–स्त्री० जहरकीसी, कड़वी गंध ।

विख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध, मशहूर, सर्वविदित ।

विख्याति–स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि, शोहरत ।

विख्यापन–पु० [सं०] प्रसिद्ध करना; घोषणा करना ।

विगत–वि० [सं०] अतीत, बीता हुआ; बीते हुएसे पूर्वका; मृत; नष्ट; अनुपस्थित; मुक्त, विहीन, रहित (समस्त पदोंमें) । **–कल्मष**–वि० जो पापमुक्त हो गया हो । **–ज्ञान**–वि० जिसकी समझ मारी गयी हो । **–नयन**–वि० जिसके नेत्र न हों, अंधा । **–भय, –भी**–वि० निर्भीक । **–राग**–वि० जिसमें राग न रह गया हो ।

विगतार्तवा–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका मासिक स्राव बंद हो गया हो, जो गर्भधारणकी अवस्था पार कर गयी हो ।

विगतासु–वि० [सं०] मृत ।

विगति–स्त्री० [सं०] दुर्दशा, दुर्गति ।

विगद–वि० [सं०] रोगरहित, नीरोग ।

विगर्हणीय–वि० [सं०] निंदनीय; दुष्ट ।

विगर्हित–वि० [सं०] निंदित; कुत्सित, बुरा; निषिद्ध ।

विगलन–पु० [सं०] नाश; पिघलना; गलना; रिसना; बह जाना; गायब होना; घुल जाना; शिथिल होना ।

विगलित–वि० [सं०] बहा हुआ; पिघला हुआ; टपककर, रिसकर निकला हुआ; ढीला पड़ा हुआ, शिथिल ।

विगुण–वि० [सं०] निर्गुण; बुरा; जिसमें डोरी न हो ।

विग्रह–पु० [सं०] अलगाना; फैलाना; विस्तार; विभाग; पार्थक्य; समस्त पदके खंडोंको अलग करना (व्या०); कलह; युद्ध; शरीर; रूप; फूट पैदा करना; खंड, भाग ।

विघटन–पु० [सं०] अलग करना; तोड़ना; छिन्न-भिन्न करना; नाश, बरबादी ।

विघटिका–स्त्री० [सं०] समयका एक लघु मान ।

विघटित–वि० [सं०] तोड़ा, पृथक् किया हुआ; विभक्त; नष्ट किया हुआ ।

विघन*–पु० दे० 'विघ्न' ।

विघात–पु० [सं०] चोट, आघात; टुकड़े-टुकड़े करना; निवारण; रोक; तोड़ना-फोड़ना; नाश; हत्या; व्याकुलता ।

विघाती(तिन्)–वि० [सं०] हत्याकारी; चोट पहुँचानेवाला; विरोध करनेवाला, बाधक ।

विघूर्णन–पु० [सं०] घुमाना, चक्कर देना ।

विघूर्णित–वि० [सं०] घुमाया या चक्कर दिलाया हुआ ।

विघोषण–पु० [सं०] ऊँची आवाजमें घोषित करनेकी क्रिया, चिल्लाना ।

विघ्न–पु० [सं०] बाधा, अड़चन, कठिनाई; विरोध । **–कर,–कर्ता(र्तृ),–कृत्**–वि० बाधा उपस्थित करनेवाला । **–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'विघ्नक'; देखनेमें भयानक । **–जित्,–नाशक,–हरण**–पु० गणेश ।

विघ्नक–वि० [सं०] अड़चन, बाधा डालनेवाला ।

विघ्नांतक–पु० [सं०] गणेश ।

विघ्नेश–पु० [सं०] गणेश । **–कांता**–स्त्री० सफेद दूब । **–वाहन**–पु० चूहा ।

विचकित–वि० [सं०] घबराया हुआ, भौचक ।

विचक्षण–वि०[सं०]विद्वान् ,दूरदर्शी,चतुर; पारंगत; दक्ष ।

विचच्छन*–वि० दे० 'विचक्षण' ।

विचय, विचयन–पु० [सं०] इकट्ठा करना; परीक्षा करना; सिलसिलेवार, तरतीबसे रखना; तलाश करना ।

विचरण–पु० [सं०] घूमना-फिरना, भ्रमण करना,पर्यटन ।

विचरन*–पु० दे० 'विचरण' ।

विचरना–अ० क्रि० इतस्ततः घूमना ।

विचरनि*–स्त्री० दे० 'विचरण' ।

विचर्चिका–स्त्री० [सं०] खुजली नामक रोग ।

विचल–वि० [सं०] निरंतर घूमने या हिलनेवाला; अस्थिर; स्थानसे हटा हुआ; प्रण, प्रतिज्ञासे हटा हुआ ।

विचलना*–अ० क्रि० स्थानभ्रष्ट होना; प्रतिज्ञासे डिगना; विचलित होना ।

विचलाना*–स० क्रि० विचलित करना; घबड़ाहटमें डालना ।

विचलित–वि० [सं०] अस्थिर, चंचल; डगमगाया हुआ; स्थान या प्रतिज्ञासे डिगा हुआ; घबराया हुआ ।

विचार–पु० [सं०] निर्णय; तत्त्व-निर्णय; तत्त्व-परीक्षा; किसी विषयपर गंभीरताके साथ सोचना; कार्य-विधि; स्थान-परिवर्तन; संदेह; हिचक; वाद-विवाद; चुनाव; विज्ञता; अभियोग आदिका निर्णय । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सोचने-विचारनेवाला; अभियोगका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश । **–ज्ञ**–वि० विचार करनेमें कुशल, प्रवीण । पु० न्यायाधीश, जज । **–धारा**–स्त्री० (आइडिऑलॉजी) किसी जाति या संप्रदाय-विशेषकी विचारशैली; किसी राजनीतिक या आर्थिक सिद्धांत-परंपराके मूलमें रहनेवाली विचार-सरणी । **–पति**–पु० मुकदमेका फैसला करनेवाला, जज । **–मूढ़**–वि० जिसे सोचने-समझनेकी शक्ति न हो । **–शक्ति**–स्त्री० विचार करनेकी शक्ति । **–शास्त्र**–पु० मीमांसा शास्त्र । **–शील**–पु० सोच-विचार करनेकी शक्तिवाला । **–शीलता**–स्त्री० बुद्धिमानी, समझदारी । **–सरणी**–स्त्री० विचार करनेकी पद्धति । **–स्थल**–पु० किसी विषयपर विचारका स्थान; न्यायालय, अदालत; तर्क । **–स्वातंत्र्य**–पु० विचार प्रकट करनेकी स्वतंत्रता ।

विचारक–पु० [सं०] विचार करनेवाला, दार्शनिक आदि; जज, न्यायाधीश; नेता, पथप्रदर्शक; गुप्तचर ।

विचारणीय–वि० [सं०] विचार करने योग्य; चिंत्य; संदिग्ध ।

विचारना–स० क्रि० गौर करना; खोज करना, ढूँढ़ना ।

विचारवान्(वत्)–वि० [सं०] विचारशील, सोचने-विचारनेवाला ।

विचाराध्यक्ष–पु० [सं०] प्रधान विचारक, जज ।

विचारालय–पु० [सं०] न्यायालय ।

विचारित–वि० [सं०] विचार किया हुआ, सोचा-समझा हुआ; विचाराधीन ।

विचारी(रिन्)–वि० [सं०] विचरण करनेवाला; विचार करनेवाला ।

विचार्य–वि० [सं०] विचार-योग्य, विचारणीय; संदिग्ध ।

विचिकित्सा–स्त्री० [सं०] संदेह; अनिश्चय; भूल ।

विचित्त–वि० [सं०] अचेत; कर्तव्यविमूढ़ ।

विचित्ति–स्त्री० [सं०] विभ्रम; चित्त ठिकाने न रहना ।

विचित्र–वि० [सं०] कई प्रकारके रंगों, वर्णोंवाला; असाधारण; विस्मित करनेवाला; सुंदर; मनोरंजक; चित्रित; रँगा हुआ । पु० एक अर्थालंकार (इसमें फलसिद्धिके लिए उलटा प्रयत्न दिखाया जाता है) । **–वीर्य**–पु० शांतनु-सत्यवतीके द्वितीय पुत्र (ये निःसंतान मरे । द्वैपायनने इनकी पत्नियोंसे नियोग द्वारा धृतराष्ट्र और पांडुको पैदा किया था) ।

विचित्रता–स्त्री० [सं०] रंगवैभिन्न्य; अनोखापन ।

विचित्रांग–पु० [सं०] मयूर; व्याघ्र ।

विचुंबित–वि० [सं०] विशेष रूपसे चूमा हुआ; स्पर्श किया हुआ ।

विचूर्णित–वि० [सं०] अच्छी तरह पीसा हुआ ।

विचेतन–वि०[सं०] संज्ञाहीन, अचेत; मूर्ख, विवेकरहित ।

विचेष्ट–वि० [सं०] निश्चेष्ट, चेष्टाहीन; गतिहीन, अचल ।

विच्छित्ति-स्त्री०[सं०] काटकर अलग करना, भंग करना; विनाश; पार्थक्य; रोक, बाधा; कमी, त्रुटि; वेपभूषा आदिकी लापरवाही, वेढंगापन; एक हाव (शोभा बढ़ानेवाले साधारण शृंगारसे ही पुरुषको मुग्ध करनेका प्रयत्न)।

विच्छिन्न-वि० [सं०] काटकर अलग किया हुआ, विभक्त; जुदा, अलग; जिसका अंत किया जा चुका हो; कुटिल।

विच्छेद-पु० [सं०] काटकर अलग करना; क्रम टूटना; अलग, टुकड़े-टुकड़े करना; क्षति; नाश; निषेध; अलगाव।

विछलना*-अ० क्रि० फिसलना, स्थानभ्रष्ट होना।

विछेद*-पु० विच्छेद, वियोग।

विछोई*-वि० वियोगी, जिसका प्रियसे वियोग हुआ हो।

विछोह*-पु० वियोग, प्रियसे पृथक् होना।

विछोही*-वि०, पु० वियोगी।

विजन-वि० [सं०] जनशून्य, एकांत। पु० निर्जन या एकांत स्थान; * दे० 'विजना'।

विजनता-स्त्री० [सं०] एकांतता, जनशून्य होना।

विजना*-पु० पंखा, बीजन।

विजय-स्त्री० [सं०] बहस, युद्ध आदिमें होनेवाली जीत। **-चिह्न**-पु० (ट्रॉफी) दे० 'विजयोपहार'। **-दुंदुभि**-स्त्री० विजयके समय बजाया जानेवाला नगाड़ा। **-पताका**-स्त्री० जीतके समय फहरायी जानेवाली ध्वजा; विजय-सूचक चिह्न। **-यात्रा**-स्त्री० विजय, जीतकी कामनासे की जानेवाली यात्रा। **-लक्ष्मी,-श्री**-स्त्री० विजयकी अधिष्ठात्री देवी। **-शील**-वि० सदा जीतनेवाला।

विजया-स्त्री० [सं०] दुर्गा; दुर्गाकी एक सखी; एक विद्या जिसे विश्वामित्रने रामको सिखलाया था; विजयोत्सव; भाँग; एक वर्णवृत्त। **-दशमी**-स्त्री० आश्विन-शुक्ला दशमीको होनेवाला हिंदुओं, विशेषतः क्षत्रियोंका एक त्योहार।

विजयार्थी (र्थिन्)-वि० [सं०] विजय चाहनेवाला।

विजयास्त्र-पु० [सं०] (ट्रंपकार्ड) विजय दिलानेवाला अस्त्र या साधन।

विजयी (यिन्)-वि०[सं०] जिसकी जीत हुई हो। पु० विजेता, जीतनेवाला।

विजयोत्सव-पु० [सं०] विजयादशमीका उत्सव; विजय प्राप्त करनेपर मनाया जानेवाला उत्सव।

विजयोपहार-पु०[सं०](ट्रॉफी) युद्धमें हुई जीत या हॉकी, क्रिकेट आदिके खेलमें प्राप्त विजयके स्मृतिस्वरूप रखी जानेवाली कोई वस्तु (शील्ड, कप आदि)।

विजल-वि० [सं०] निर्जल, जलरहित। पु० अवर्षण।

विजाति-स्त्री० [सं०] भिन्न जाति या वर्ग।

विजातीय-वि० [सं०] भिन्न जाति या वर्गका।

विजानना*-स० क्रि० विशेष रूपसे जानना।

विज़ारत-स्त्री० [अ०] वजीरका पद या कार्य; वजीरका दफ्तर, मंत्रिमंडल।

विजिगीषा-स्त्री० [सं०] विजयकी कामना।

विजिगीषु-वि० [सं०] विजयका इच्छुक।

विजित-वि० [सं०] जीता हुआ, जिसपर विजय हुई हो।

विजुली†-स्त्री० विद्युत्, बिजली।

विजृंभ-पु० [सं०] सिकोड़ना (भौं); जँभाई।

विजृंभक-पु० [सं०] एक विद्याधर।

विजृंभण-पु० [सं०] जँभाई लेना; खुलना; खिलना।

विजृंभा-स्त्री० [सं०] जँभाई।

विजेता (तृ)-पु० [सं०] जय प्राप्त करनेवाला; वह जिसने जय प्राप्त की हो।

विजेय-वि० [सं०] जीतने योग्य।

विजै*-स्त्री० जीत, विजय।

विजोग*-पु० वियोग।

विजोगी*-वि० वियोगी।

विजोर†-पु० बिजौरा नीबू। वि० कमजोर, निर्बल।

विज्जु*-स्त्री० बिजली। **-लता***-स्त्री० विद्युल्लता; बिजली।

विज्ञ-वि० [सं०] जानकार; समझदार, विद्वान्। पु० चतुर मनुष्य।

विज्ञता-स्त्री०, **विज्ञत्व**-पु०[सं०] जानकारी; बुद्धिमत्ता।

विज्ञप्त-वि० [सं०] सूचित, जनाया हुआ।

विज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] सूचित करनेकी क्रिया; इश्तहार, विज्ञापन; निवेदन, प्रार्थना।

विज्ञात-वि० [सं०] जाना, समझा हुआ; प्रसिद्ध।

विज्ञान-पु० [सं०] ज्ञान, समझ, प्रज्ञा; विवेक, निश्चयात्मिका बुद्धि; दक्षता, कार्यकुशलता; अनुभवजन्य ज्ञान; कारबार; संगीत; चौदहों विद्याओंका ज्ञान; किसी विषयका क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान; कर्म; आत्मा, मोक्ष आदिका ज्ञान; भौतिक तत्त्वों, विकारों आदिका शास्त्रीय विवेचन करनेवाली विद्या (आ०)। **-वादी(दिन्)**-वि० विज्ञानवादका सिद्धांत माननेवाला; आधुनिक विज्ञानका पक्षपाती।

विज्ञानमय-वि० [सं०] प्रज्ञायुक्त। **-कोश,-कोष**-पु० ज्ञानेंद्रियोंके साथ बुद्धि।

विज्ञानी(निन्)-वि० [सं०] किसी विषयका उत्तम ज्ञाता; किसी विज्ञानमें निष्णात; वैज्ञानिक; महान् ज्ञानी।

विज्ञापक-पु० [सं०] समझाने, बतलानेवाला; इश्तहार करनेवाला।

विज्ञापन-पु० [सं०] समझाना; सूचना देना; इश्तहार; निवेदन, प्रार्थना। **-दाता(तृ)**-पु०(ऐडवरटाइजर) पत्रों आदिमें विज्ञापन छपवानेवाला। **-पत्र**-पु० विज्ञापनका अखबार। **-पुस्तिका**-स्त्री० वह किताब जिसमें विक्रेय वस्तुओंका परिचय दिया रहता है, सूचीपत्र।

विज्ञापित-वि० [सं०] विज्ञप्त, बतलाया हुआ; सूचित, इश्तहार किया हुआ।

विज्ञेय-वि० [सं०] जानने, समझने, सीखने योग्य।

विट-पु० [सं०] कामुक, कामी; वेश्याप्रेमी, वेश्या रखनेवाला; वैशिक; धूर्त; विदूषककी श्रेणीका एक नाटकीय पात्र, नायकका सखा; धूर्त नायक; साँचर नमक; एक खनिज द्रव्य। **-प**-पु० दे० क्रममें।

विटप-पु० [सं०] पेड़; कोंपल; झाड़ी।

विटपी(पिन्)-वि० [सं०] शाखाओंवाला। पु० वृक्ष।

विट् (श्)-पु० [सं०] प्रवेश; वैश्य, बनिया; मनुष्य। स्त्री० कन्या; प्रजा; जाति; परिवार। **-पति**-पु० नरेश; वैश्योंका मुखिया; जामाता; प्रधान व्यापारी।

विट्ठल-पु० [सं०] एक देवता जो विष्णुके अवतार माने जाते हैं (कहा जाता है कि पंढरपुरके पुंडरीक नामक

ब्राह्मणमें विष्णुका बहुत कुछ अंश आ गया था, उनकी मूर्ति वहीं स्थापित है और विष्णुके प्रतीकके रूपमें पूजी जाती है। **–कवच**–पु० एक प्रसिद्ध कवच।

विडंब–पु० [सं०] नकल; चिढ़ाना; हेय समझना; कष्ट देना; खिन्न करना, कुढ़ाना; छेड़खानी।

विडंबन–पु०, **विडंबना**–स्त्री० [सं०] नकल उतारना; चिढ़ाना; छेड़खानी करना; कष्ट देना; निंदा करना; निराश करना; छलना; उपहासका विषय; लज्जाकी बात।

विडंबनीय–वि० [सं०] नकल करने योग्य; उपहास्य।

विडंबित–वि० [सं०] जिसकी नकल उतारी गयी हो, विकृत किया हुआ; जो परेशान किया गया हो; नीच; दीन; धोखा खाया हुआ; निराश।

विडंबी(बिन्)–पु० [सं०] विडंबना करनेवाला।

विड–पु० [सं०] काला नमक; नोनहा नमक; टुकड़ा।

विडरना*–अ० क्रि० चौंकना; डरना; भागना; तितर-बितर होना।

विडराना*–स० क्रि० चौंकाना; भगाना; तितर-बितर करना; नष्ट करना।

विडारना*–स० क्रि० दे० 'विडराना'।

विडाल–पु० [सं०] दे० 'बिडाल'।

विडालाक्ष–वि० [सं०] दे० 'बिडालाक्ष'।

विडाली–स्त्री० [सं०] बिल्ली; विदारीकंद।

विडोजा(जस्), विडौजा (जस्)–पु० [सं०] इंद्र।

वितंडा–स्त्री०[सं०] अपने पक्षकी स्थापना; निरर्थक दलील, हुज्जत। **–वाद**–पु० निरर्थक दलीलका सहारा लेना।

वितंत*–पु० बिना तारका बाजा।

वित*–वि० कुशल; जानकार, वेत्ता। पु० धन; शक्ति।

वितत–वि० [सं०] विस्तृत, चौड़ा; फैला हुआ; खींचा हुआ (धनुष्का गुण); झुकाया हुआ (धनुष्)।

वितताना*–अ० क्रि० अधीर होना, बेचैन होना।

वितति–स्त्री० [सं०] विस्तार, फैलाव; आतिशय्य।

वितथ–वि० [सं०] मिथ्या; व्यर्थ, निरर्थक।

वितन*–वि०, पु० दे० 'वितनु'।

वितनु–वि० [सं०] अति सूक्ष्म; शरीररहित; सारहीन। पु० कामदेव।

वितपन्न*–वि० व्युत्पन्न, कुशल, प्रवीण; विकल।

वितरक–पु० वितरण करने, बाँटनेवाला।

वितरण–पु० [सं०] अर्पित करना, देना; बाँटना।

वितरन*–पु० बाँटना; बाँटनेवाला।

वितरना*–स० क्रि० वितरण करना, बाँटना।

वितरिक्त*–अ० व्यतिरिक्त, सिवा।

वितरित–वि० [सं०] बाँटा हुआ।

वितरेक*–अ० व्यतिरिक्त, सिवा। पु० दे० 'व्यतिरेक'।

वितर्क–पु० [सं०] विचार; संदेह; संदेहका विषय; अनुमान; किसी तर्कके विरुद्ध कही गयी बात या पेश की गयी दलील; एक अर्थालंकार।

वितल–पु० [सं०] सात अधोलोकोंमेंसे एक।

वितस्ता–स्त्री० [सं०] झेलम नदी।

विताडन–पु० [सं०] दे० 'ताडन'।

वितान–पु० [सं०] फैलाव, विस्तार; प्राचुर्य; यज्ञ; तंबू, चँदोवा।

वितानना*–स० क्रि० शामियाना, तंबू आदि तानना; तानना, चढ़ाना (धनुष् आदि)–'जिन रघुनाथ पिनाक वितान्यो तोर्यो निमिष मही'–सू०।

वितिक्रम*–पु० व्यतिक्रम, क्रमभंग।

वितीत*–वि० व्यतीत, बीता हुआ।

वितुंड–पु० हाथी।

वितुष–वि०[सं०]जिसका छिलका निकाल दिया गया हो।

वितृष्ण–वि० [सं०] तृष्णारहित, उदासीन, निस्पृह।

वितृष्णा–स्त्री० [सं०] तृष्णाका अभाव; संतुष्टि; विरक्ति।

वित्त–वि० [सं०] प्राप्त। पु० धन-संपत्ति; अधिकार; शक्ति; (फाइनेंस) किसी राज्य या संस्था आदिके आय-व्ययके साधन, राज्यकी सार्वजनिक पूँजी या धन; राज्यकी वित्त-संबंधी व्यवस्था। **–काम**–वि० धनका इच्छुक; लोभी। **–जाय**–वि० विवाहित, जिसने पत्नी प्राप्त की है। **–द**–वि० धन देनेवाला; सहायक। **–नाथ**–पु० कुबेर। **–निचय**–पु० धनकी बहुत बड़ी राशि। **–प**–वि० धन की रक्षा करनेवाला। पु० कुबेर। **–पति,–पाल**–पु० कुबेर। **–प्रबंधक**–पु० (फाइनेंशियर) सरकारी आय या धनका प्रबंध करनेवाला अधिकारी। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० (फाइनेंस मिनिस्टर) राज्यके धन, आय-व्ययके साधनों आदि-संबंधी विभागकी देख-रेख करनेवाला मंत्री। **–विधेयक**–पु० (फाइनेंस बिल) पु० संसद या विधानसभामें पुरःस्थापित किया जानेवाला आय-व्यय-संबंधी विधेयक। **–साधन**–पु० (फाइनेंसेज) राज्य या संस्था आदिके धन प्राप्त करनेके जरिये।

वित्तवान्(वत्)–वि० [सं०] धनवान्।

वित्तागम–पु० [सं०] धनकी प्राप्ति या प्राप्तिका साधन।

वित्ताढ्य–वि० [सं०] बहुत धनी।

वित्ताप्ति–स्त्री० [सं०] धनकी प्राप्ति।

वित्तीय–वि० [सं०] वित्त-संबंधी; वित्तकी व्यवस्थाके विचारसे चलनेवाला (वर्ष)।

वित्तेश, वित्तेश्वर–पु० [सं०] कुबेर।

वित्तेहा, वित्तैषणा–स्त्री० [सं०] धनकी इच्छा, लालच।

वित्रप–वि० [सं०] बेहया, निर्लज्ज।

वित्रस्त–वि० [सं०] डरा हुआ, भीत।

विथकना*–अ० क्रि० थकना, शिथिल पड़ना; मुग्ध या चकित होनेपर कुछ बोल न सकना।

विथकित*–वि० थका हुआ; जो मुग्ध या चकित होनेके कारण कुछ बोलनेमें असमर्थ हो।

विथराना, विथारना*–स०क्रि० फैलाना, छितराना।

विथा*–स्त्री० व्यथा, पीड़ा, कष्ट।

विथित*–वि० व्यथित, दुःखित, कष्टमें पड़ा हुआ।

विथुर–पु० [सं०] क्षय, नाश; चोर। वि० थोड़ा; दुःखी।

विथुरा–स्त्री० [सं०] पतिवियोगिनी, विरहिणी; विधवा।

विदंत–वि० [सं०] दंतहीन (हस्ती)।

विदग्ध–वि० [सं०] निपुण; पंडित; रसिक, रसज्ञ; जला हुआ; जठराग्निसे पका हुआ, पचा हुआ; नष्ट, गला हुआ; जो जला या पचा न हो; सुंदर; भद्रतापूर्ण। पु० चतुर या धूर्त आदमी; एक घास।

विदग्धक-पु० [सं०] जलती हुई लाश (बौद्ध)।

विदग्धता-स्त्री० [सं०] विद्वत्ता; कुशलता; रसिकता।

विदग्धा-स्त्री० [सं०] चतुरतासे परपुरुषको अपनेमें अनुरक्त करनेवाली नायिका।

विदमान*-वि० विद्यमान, उपस्थित, मौजूद। अ० मौजूदगीमें, सामने।

विदरना*-अ० क्रि० फटना। स० क्रि० विदीर्ण करना, फाड़ना।

विदर्भ-पु० [सं०] आधुनिक बरार; एक राजा; एक ऋषि; मसूड़ेका एक रोग; दाँत हिलना। **-जा**-स्त्री० अगस्त्य-पत्नी, लोपामुद्रा; दमयंती; रुक्मिणी। **-तनया, -सुभ्रू**-स्त्री० दमयंती। **-राज**-पु० विदर्भका राजा, भीष्मक।

विदलन-पु० [सं०] मलने, दबाने, दलनेकी क्रिया; टुकड़े-टुकड़े करना; दमन; फाड़ना; फटना।

विदलना*-स० क्रि० दलित, नष्ट करना।

विदलित-वि० [सं०] दला, रौंदा, मला हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

विदा-स्त्री० [सं०] ज्ञान; समझ; विद्या; [अ० 'विदाअ'] विदाई, रुखसती; दुलहिनकी मैकेसे विदाई। वि० प्रस्थित।

विदाई-स्त्री० विदा होनेकी क्रिया; विदा होनेकी अनुमति; जानेके समय दी जानेवाली रकम।

विदार-पु० [सं०] युद्ध; प्लावन, जलाशयके पानीका ऊपरसे बहना; दे० 'विदारण'।

विदारक-वि० [सं०] फाड़ने, विदारण करनेवाला।

विदारण-पु० [सं०] टुकड़े करना, फाड़ना; रौंदना; युद्ध, लड़ाई; मुँह खोलना; जंगल आदि काटकर साफ करना; कष्ट देना; वध करना।

विदारना*-स० क्रि० फाड़ना।

विदारिका-स्त्री० [सं०] एक डाकिनी; कड़वी तूँबी।

विदारित-वि० [सं०] फाड़ा हुआ।

विदारी-स्त्री० [सं०] शालपर्णी; भूमिकुष्मांड; एक कंठरोग; बगल या पट्ठेकी सूजन; कानका एक रोग। **-कंद**-पु० भूमिकुष्मांड।

विदारी(रिन्)-वि० [सं०] फाड़नेवाला; काटनेवाला।

विदित-वि० [सं०] जाना हुआ, अवगत, ज्ञात।

विदिशा-स्त्री० [सं०] दो दिशाओंके बीचकी दिशा; एक प्राचीन नगरी (वर्तमान भेलसा)।

विदिसा*-स्त्री० दे० 'विदिशा'।

विदीर्ण-वि० [सं०] फाड़ा हुआ; चीरा हुआ; निहत; फैला हुआ; खुला हुआ। **-मुख**-वि० जिसका मुख खुला हो। **-हृदय**-वि० जिसका दिल फट गया हो, मर्माहत।

विदुर-वि० [सं०] चतुर; जानकार; कुशल। पु० चतुर व्यक्ति; षड्यंत्रकारी; धृतराष्ट्र और पांडुके भाई जो व्यास और अंबिकाकी दासीके पुत्र थे।

विदुष*-पु० पंडित, विद्वान्।

विदुषी-स्त्री० [सं०] पंडिता स्त्री।

विदूर-वि० [सं०] सुदूरवर्ती। पु० दूरस्थ देश, प्रदेश।

विदूषक-[सं०] नकल आदि करके हँसानेवाला (पुराने समयमें राजाओंके मनोरंजनके लिए इनकी नियुक्ति होती थी); मसखरा; चार नायकोंमेंसे एक। वि० दूषित या गंदा करनेवाला; मजाक करनेवाला; परनिंदक।

विदूषण-पु० [सं०] निंदा करगा; दोषारोप करना।

विदूषना*-स० क्रि० सताना, कष्ट देना; दोषी ठहराना। अ० क्रि० दुःखी होना।

विदेश-पु० [सं०] दूसरा देश, परदेश, देशांतर। **-गत**-वि० प्रवसित, परदेश गया हुआ। **-गमन**-पु० परदेश जाना। **-ज**-वि० दूसरे देशमें उत्पन्न। **-वास**-पु० दूसरे देशमें रहना। **-वासी(सिन्)**-वि० परदेशमें रहनेवाला। **-स्थ**-वि० परदेशमें रहने या घटित होनेवाला।

विदेशी-वि० दे० 'विदेशीय'। पु० परदेशका रहनेवाला।

विदेशीय-वि० [सं०] परदेशी, दूसरे देशका।

विदेह-वि० [सं०] शरीररहित; अचेत, बेसुध; मृत; विरागी; दैहिक चिंताओंसे रहित; जिसकी उत्पत्ति माता-पितासे न हो (देवता आदि)। पु० राजा जनक; निमि; मिथिला; मिथिलाके निवासी; शरीररहित व्यक्ति। **-कुमारी, -जा**-स्त्री० सीता।

विदेहत्व-पु० [सं०] शरीर न होनेका भाव।

विद्-वि० [सं०] ज्ञाता, जानकार; पंडित (समासांतमें)।

विद्ध-वि० [सं०] छेदा हुआ; आहत; विदीर्ण; आबद्ध।

विद्यमान-वि० [सं०] उपस्थित, वर्तमान; यथार्थ।

विद्यमानता-स्त्री० [सं०] उपस्थिति, मौजूदगी।

विद्या-स्त्री० [सं०] ज्ञान-विज्ञान; किसी विषयका विशेष ज्ञान; गुण; जादू। **-दाता(तृ)**-पु० पढ़ानेवाला, शिक्षक। **-दान**-पु० विद्या पढ़ाना; ग्रंथ, पुस्तक आदि देना। **-धन**-पु० विद्या द्वारा अर्जित धन; विद्यारूपी धन। **-धर**-वि० विद्यावाला, जादूगर। पु० एक देवयोनि (गंधर्व, किन्नर आदि)। **-धरी**-स्त्री० विद्याधर जातिकी स्त्री। **-पति**-पु० राजदरबारका सबसे बड़ा विद्वान्; एक प्रसिद्ध मैथिल कवि। **-पीठ**-पु० शिक्षाकेंद्र; बड़ा विद्यालय। **-बल**-पु० जादूकी शक्ति; विद्या, शास्त्रज्ञानका बल। **-भाक्(ज्)**-वि० विद्वान्। **-मंदिर**-पु० विद्यालय। **-मठ**-पु० महाविद्यालय; साधुओंका विद्यालय। **-लाभ**-पु० विद्याकी प्राप्ति। **-विक्रय**-पु० धन लेकर पढ़ाना। **-विद्**-वि० विद्वान्। **-विहीन**-वि० मूर्ख। **-वृद्ध**-वि० विद्या या ज्ञानमें बढ़ा हुआ। **-व्रत**-पु० गुरुके पास रहकर विद्योपार्जन करना। **-हीन**-वि० अशिक्षित, मूर्ख। **मु०-चलना**-चतुराई, करतब (बाजीगरोंका), धूर्तताका सफल होना। **-झूठी पड़ना**-चतुराई, करतब (बाजीगरी), धूर्तताका नाकामयाब होना। **-फलना**-विद्याका फलीभूत, सफल होना। **-लगना**-दे० 'विद्या चलना']

विद्यागम-पु० [सं०] विद्या, ज्ञानकी प्राप्ति।

विद्याधिराज-पु० [सं०] श्रेष्ठ विद्वान्, पूर्ण पंडित।

विद्यानुसेवन-पु० [सं०] विद्याध्ययन।

विद्याभ्यास-पु० [सं०] विद्याध्ययन।

विद्यारंभ-पु० [सं०] विद्याकी पढ़ाई आरंभ करनेका संस्कार।

विद्यार्जन-पु० [सं०] विद्याकी प्राप्ति; ज्ञान या शिक्षा द्वारा

कुछ प्राप्त करना ।

विद्यार्जित–वि० [सं०] विद्याके द्वारा प्राप्त ।

विद्यार्थी(र्थिन्)–पु० [सं०] विद्या पढ़नेवाला, छात्र, शिष्य । वि० विद्याका इच्छुक ।

विद्यालय–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ अध्ययन किया जाता है, विद्यागृह ।

विद्यावान्(वत्)–वि० [सं०] विद्वान् ।

विद्युच्चालक–वि० [सं०] (वह पदार्थ) जिसके एक सिरेसे स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरेतक चली जाय (ताँबा आदि) ।

विद्युत्–स्त्री० [सं०] बिजली; वज्र । **–कंप**–पु० बिजलीका कौंधना । **–पात,–प्रपतन**–पु० बिजलीका गिरना, वज्रपात ।

विद्युदणु–पु० [सं०] (इलेक्ट्रॉन, प्रोटान) दे० 'ऋणविद्युदणु' तथा 'धनविद्युदणु' ।

विद्युदुन्मेष–पु० [सं०] बिजलीकी कौंध ।

विद्युद्घात–पु० [सं०] (इलेक्ट्रोक्यूशन) विद्युत्का संस्पर्श कराकर दिया जानेवाला प्राणदंड; बिजलीके संस्पर्शसे होनेवाली मृत्यु ।

विद्युद्दर्शक यंत्र–पु० [सं०] (इलेक्ट्रॉसकोप) कोई दी हुई वस्तु:विद्युन्मय है या नहीं, यह बतलानेवाला यंत्र ।

विद्युद्दाम (न्)–पु० [सं०] बिजलीकी चमक या उसकी रेखा ।

विद्युद्द्योत–पु० [सं०] बिजलीकी चमक ।

विद्युद्धारक–पु० (लाइटनिंग अरेस्टर) बिजली गिरते समय टेलीफोन, रेडियो आदिके यंत्रोंको क्षतिग्रस्त होनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला साधन ।

विद्युन्मापक–पु० [सं०] बिजलीकी शक्ति, गति आदिकी दिशा मालूम करनेका यंत्र ।

विद्युन्माला–स्त्री० [सं०] बिजलीका समूह; एक छंद ।

विद्युल्लता–स्त्री० [सं०] बिजलीकी टेढ़ीमेढ़ी रेखा ।

विद्युल्लेखा–स्त्री० [सं०] बिजलीकी लीक; एक वर्णवृत्त ।

विद्योतक, विद्योती (तिन्)–वि० [सं०] प्रकाशमान करनेवाला ।

विद्योपार्जन–पु० [सं०] ज्ञानार्जन, अध्ययन ।

विद्रधि–स्त्री० [सं०] फोड़ा, विशेषकर अंदरका ।

विद्रावक–वि० [सं०] भगानेवाला; पिघलानेवाला ।

विद्रावण–वि० [सं०] भगानेवाला; घबड़ाहटमें डालनेवाला । पु० भगाना;पराभूत करना; पलायन; पिघलाना ।

विद्रावित–वि० [सं०] पराभूत किया हुआ; भगाया हुआ; तितर-बितर किया हुआ; पिघलाया हुआ ।

विद्रावी (विन्)–वि० [सं०] भागनेवाला; भगानेवाला; पिघलनेवाला ।

विद्रुत–वि० [सं०] गला हुआ; पिघला हुआ; भागा हुआ; डरा हुआ, घबराया हुआ; नष्ट । पु० युद्धका एक ढंग ।

विद्रुम–पु० [सं०] प्रवाल, मूँगा । वि० वृक्षरहित ।

विद्रोह–पु० [सं०] हानि पहुँचानेके विचारसे किया हुआ कार्य; किसी राज्य, सरकारको उलटनेके लिए किया जानेवाला बलवा, उपद्रव, क्रांति ।

विद्रोही (हिन्)–वि० [सं०] विद्रोह, द्वेष, वैर करनेवाला; राज्यका अनिष्ट करनेवाला, क्रांतिकारी ।

विद्वज्जन–पु० [सं०] विद्वान्, चतुर आदमी; ऋषि ।

विद्वत्ता–स्त्री०, **विद्वत्त्व**–पु० [सं०] पांडित्य, बुद्धि,ज्ञान ।

विद्वान् (द्वस्)–वि०[सं०]विद्याविशिष्ट;अत्यधिक शिक्षित, पंडित; तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञ । पु० पंडित, चतुर व्यक्ति ।

विद्विट् (ष), विद्विष–वि० [सं०] द्वेष, शत्रुता रखनेवाला । पु० शत्रु ।

विद्वेष–पु० [सं०] शत्रुता, वैर; घृणा ।

विद्वेषक–पु० [सं०] विद्वेष करनेवाला, शत्रु ।

विद्वेषण–पु० [सं०] वैर; दो जनोंमें वैर करा देना ।

विद्वेषणी–स्त्री० [सं०] कोपना स्त्री; द्वेष करनेवाली स्त्री ।

विद्वेष्य–वि० [सं०] घृणा, द्वेष, वैरका पात्र ।

विधंस*–वि० विध्वस्त, नष्ट । पु० विध्वंस, नाश ।

विधंसना*–स० क्रि० विध्वस्त करना, नष्ट करना ।

विध–पु० [सं०] तरीका; * ब्रह्मा ।

विधना–*पु० देव, ब्रह्मा । स० क्रि० फँसाना; वेधना; प्राप्त करना । अ० क्रि० वेधा जाना; फँसाया जाना ।

विधनुष्क, विधन्वा(न्वन्)–वि० [सं०] जिसके पास धनुष् न हो ।

विधर्म–वि० [सं०] बुरा, अन्याय्य; निर्गुण । पु० अन्याय; परधर्म ।

विधर्मी(र्मिन्)–पु० [सं०] स्वधर्मके विरुद्ध आचरण करनेवाला, धर्मभ्रष्ट; परधर्मका अनुयायी ।

विधवा–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके पतिकी मृत्यु हो गयी हो, मृतभर्तृका, बेवा, राँड़ । **–गामी(मिन्)**–वि० विधवासे यौन संबंध रखनेवाला । **–विवाह**–पु० विधवासे विवाह करना ।

विधवापन–पु० वैधव्य, रँड़ापा ।

विधवाश्रम–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विधवाओंके भरण-पोषण आदिका प्रबंध हो ।

विधाँसना*–स० क्रि० विध्वस्त करना, बरबाद करना ।

विधाता(तृ)–वि० [सं०] व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला । पु० विभाग, व्यवस्था करनेवाला; बनानेवाला; देनेवाला; ब्रह्मा; प्रारब्ध; विष्णु; शिव ।

विधात्री–स्त्री० [सं०] रचने, विधान करनेवाली; जननी; व्यवस्था करनेवाली; पीपल, पिप्पली ।

विधान–पु० [सं०] कार्यका आयोजन; प्रबंध, व्यवस्था; नियंत्रण; आदेश; काम करनेका ढंग, प्रणाली; निर्माण; साधन; संपादन; (लेजिस्लेशन) राज्यके विधानमंडल द्वारा स्वीकृत कोई अधिनियम, व्यवस्था या विधि जैसा प्रभाव रखनेवाला विनिश्चय । **–ज्ञ**–वि० विधान जाननेवाला । पु० शिक्षक, आचार्य । **–परिषद्**–स्त्री० वह परिषद्, सभा जो व्यवस्थाको सुचारु रूपसे चलानेके लिए कानून बनाये; (लेजिस्लेटिव कौंसिल) (भारतके) जिस राज्यमें विधानमंडलके दो सदन हों उसका वह दूसरा (अर्थात् विधानसभाको छोड़कर अन्य) सदन जिसके सदस्य नगरपालिकाओं, विश्वविद्यालयके स्नातकों तथा शिक्षा-संस्थाओंके अध्यापकोंके बने निर्वाचनमंडलों द्वारा और विधानसभाके सदस्यों द्वारा निर्वाचित किये जायँ । **–मंडल**–पु० (लेजिस्लेचर) राज्यके लिए विधान बना-

नेवाले व्यक्तियोंका समूह–भारतके जिन राज्योंमें दो सदन हैं, वहाँ उन दोनों (और जिनमें एक ही सदन है उनमें उक्त सदन) तथा राज्यपालको संयुक्त रूपसे यह नाम दिया गया है । **–सभा**–स्त्री० (लेजिस्लेटिव असेंबली) जनप्रतिनिधियोंकी वह सभा जो राज्यके लिए विधान बनाती, आय-व्ययक स्वीकार करती तथा शासन-कार्योंका नियंत्रण करती है ।

विधानक–वि०[सं०] व्यवस्था करनेवाला; विधान जाननेवाला ।

विधायक–वि० [सं०] कार्य करनेवाला; बनानेवाला; व्यवस्था देनेवाला; रचनात्मक; कानून बनानेवाला (आधु०); सुपुर्द करनेवाला । पु० संस्थापक, निर्माता; (लेजिस्लेटर) विधानसभाका सदस्य; विधान-संहिताके निर्माणका कार्य करनेवाला ।

विधायन–पु० [सं०] विधान करना या बनाना; विधान-सभा आदि द्वारा विधान, अधिनियम आदिका निर्माण ।

विधायी(यिन्)–वि० [सं०] व्यवस्था देनेवाला; बनाने, पूरा करनेवाला; रचनात्मक; सुपुर्द करनेवाला । **–कार्य**–पु० (लेजिस्लेटिव बिजनेस) (विधान-सभा आदिमें) विधान-निर्माणका कार्य ।

विधारा–पु० एक लता जो उपदंश, क्षय आदि रोगोंमें बहुत गुणकारी होती है ।

विधावन–पु० [सं०] इधर-उधर दौड़ना ।

विधावित–वि० [सं०] विभिन्न दिशाओंमें पलायित, तितर-बितर ।

विधि–स्त्री० [सं०] कार्य करनेका ढंग; संगति, मेल; प्रयोग; शास्त्रसम्मत व्यवस्था; (लॉ) मनुष्योंके हितों, अधिकारों आदिकी रक्षाके लिए राजा, मंत्रिमंडल या विधानसभा आदि द्वारा निर्मित वे विधान या अधिनियम जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्तिके लिए अनिवार्य होता है और जिनकी अवहेलना करनेपर उसे दंड मिलता या मिल सकता है; धर्मग्रंथ, शास्त्र द्वारा निश्चित कर्तव्य-निर्देश; क्रियाका वह रूप जिसमें किसीको काम करनेका आदेश किया जाता है (व्या०); एक अर्थालंकार जिसमें सिद्ध विपयका फिर विधान होता है; कार्य; भाग्य; एक देवी; चाल-ढाल, आचार-व्यवहार । पु० सृष्टिकी रचना करनेवाला, ब्रह्मा; विष्णु ।**–ग्राह्य मुद्रा**–स्त्री० (लीगल टेंडर मनी) वह मुद्रा जिसका प्रयोग ऋण चुकानेके लिए करना विधिविहित हो ।**–घ्न**–वि० नियमोल्लंघन करनेवाला । **–ज्ञ**–पु०(लॉयर) विधि-विधान जाननेवाला ।**–निषेध**–पु० कोई काम करने या न करनेका शास्त्रीय निर्देश । **–परामर्शी(र्शिन्)**–पु० (लीगल रिमेम्ब्रेंसर) सरकारको विधि (कानून)-संबंधी सलाह देनेवाला पदाधिकारी । **–पालक**–वि० (लॉ अवाइडिंग) राज्यकी विधियों-(कानूनों)का पालन करते हुए जीवन-यापन करनेवाला (नागरिक) । **–पूर्वक,–वत्**–अ० नियमानुसार । **–प्रयोग**–पु० नियमका प्रयोग । **–भंग**–पु० (ब्रीच ऑफ लॉ) विधि-(कानून)की उपेक्षा करना, विधिविरोधी कार्य द्वारा विधिका उल्लंघन । **–रानी**–स्त्री० [हिं०] दे० 'विधिवधू' । **–लोक**–पु० ब्रह्मलोक, सत्यलोक । **–लोप**–पु० नियमोल्लंघन । **–वधू**–स्त्री० ब्रह्माकी पत्नी, सरस्वती । **–वशात्**–अ० दैवयोगसे, भाग्य-वशात् । **–वाहन**–पु० हंस । **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० (ज्यूरिस प्रूडेंस) नियमों, विधियों, सिद्धांतों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र । **–विपर्यय**–पु० भाग्यकी प्रतिकूलता ।**–विहित**–वि० नियम या शास्त्रके अनुसार प्रतिष्ठापित; शास्त्रानुमोदित ।**–सचिव**–पु० (लीगल सेक्रेटरी) विधि-संबंधी प्रश्नोंमें सलाह देने या पत्रव्यवहारादि करनेवाला सचिव । **–स्नातक**–पु० (बैचलर ऑफ लॉज़) वह व्यक्ति जिसने विधि (कानून)की परीक्षामें उत्तीर्ण होकर उपाधि प्राप्त की हो । **–हीन**–वि० अनियमित, अविहित । **मु०–बैठना**–मेल खाना; इच्छानुकूल कार्य होना ।

विधिक–वि० (लीगल) विधि (कानून)-संबंधी; जो विधिके अनुकूल या अनुरूप हो ।

विधुंत*–पु० दे० 'विधुंतुद' ।

विधुंतुद–पु० [सं०] चंद्रमाको कष्ट देनेवाला, राहु ।

विधु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; ब्रह्मा । **–क्षय**–पु० चंद्रमाका क्षीण होना; असित पक्ष । **–दार**–स्त्री० चंद्रमाकी स्त्री, रोहिणी । **–प्रिया**–स्त्री० रोहिणी; कुमुदिनी । **–बंधु**–पु० कुमुदका फूल । **–बैनी***–स्त्री० दे० 'विधुमुखी' ।**–मंडल**–पु० चंद्रमंडल । **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि । **–मुखी,–वदनी**–स्त्री० सुंदरी स्त्री, चंद्रमाके समान मुखवाली स्त्री ।

विधुर–वि०[सं०] दुःखी; वियोगी; वंचित; व्याकुल; असमर्थ; असहाय । पु०वह पुरुप जिसकी स्त्री मर गयी हो ।

विधुरा–स्त्री० [सं०] कानके पासकी एक ग्रंथि; दहीकी लस्सी ।

विधूत–वि० [सं०] कँपाया या हिलाया हुआ; काँपता हुआ; अस्थिर; परित्यक्त; हटाया, दूर किया हुआ । **–कल्मष,–पाप्मा(प्मन्)**–वि० पापमुक्त ।**–केश**–वि० जिसके बाल बिखरे या लहरा रहे हों ।

विधूनन–पु० [सं०] हिलाना; कंपन; अनिच्छा, विकर्षण ।

विधूनित–वि० [सं०] हिलाया हुआ; कंपित; उत्पीड़ित ।

विधूम–वि० [सं०] धूमरहित (अग्नि) ।

विधूम्र–वि० [सं०] धूसर, मटमैला ।

विधेय–वि० [सं०] देने योग्य; प्राप्य;करने योग्य; स्थापनाके योग्य; प्रदर्शित करने योग्य; प्रज्वलित करने योग्य; अधीन, वशवर्ती; विनम्र; शासित करने योग्य । पु० कर्तव्य कर्म; आवश्यकता; वाक्यका वह अंश जो किसीके संबंधमें कहा गया हो । **–ज्ञ**–वि० कर्तव्य समझनेवाला ।

विधेयक–पु० [सं०] किसी विधान, अधिनियम आदिका वह प्रारूप (मसौदा) जो पारित होनेके लिए लोकसभा, विधानसभा आदिमें रखा जाय (बिल) ।

विधेयता–स्त्री० [सं०] विधिके योग्य होना; अधीनता ।

विधेयत्व–पु० [सं०] उपयोगिता; निर्भरता; अधीनता ।

विध्य–वि० [सं०] छिदने योग्य; जिसे बेधना, छेदना हो ।

विध्यनुकूल–वि० [सं०] (वैलिड) विधि(कानून)की दृष्टिसे जिसमें कोई त्रुटि न हो; जिसमें विधिक आवश्यकताओंका भली भाँति पालन या अनुसरण किया गया हो ।

विध्यलंकार–पु०, **विध्यलंक्रिया**–स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार, जहाँ किसी सिद्ध बातका, विशेष अभिप्रायसे, पुनः विधान किया जाय।

विध्याभास–पु० [सं०] एक अर्थालंकार।

विध्वंस–पु० [सं०] विनाश; क्षति; वैमनस्य; अनादर।

विध्वंसक–वि० [सं०] नाशक; लंपट। पु० विनाशक रण-पोत।

विध्वंसन–पु० [सं०] नाश, बरबाद करना; अपमान करना। वि० नाश करनेवाला; सतीत्व नष्ट करनेवाला।

विध्वंसित–वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विध्वंसी(सिन्)–वि० [सं०] नष्ट होनेवाला; नाशक।

विध्वस्त–वि० [सं०] नष्ट; बरबाद किया हुआ।

विन*–अ० बिना, बगैर।

विनत–वि० [सं०] झुका हुआ, नमित; विनम्र।

विनतड़ी*–स्त्री० दे० 'विनती'।

विनता–स्त्री० [सं०] कूबड़वाली लड़की; दक्ष प्रजापतिकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी, गरुड़की माता। **–नंदन,–सुत,–सूनु**–पु० गरुड़; अरुण।

विनति–स्त्री० [सं०] झुकाव; नम्रता; विनती, प्रार्थना।

विनती–स्त्री० प्रार्थना।

विनम्र–वि० [सं०] झुका हुआ; विनीत, विनयी, सुशील। **–कंधर**–वि० जिसकी गरदन झुकी हो।

विनय–स्त्री० [सं०] अनुशासन; भद्रता; शिष्टता; नम्रता; आचरण; प्रार्थना। **–कर्म(न्)**–पु० शिक्षण। **–पिटक**–पु० अनुशासन-संबंधी नियमोंका संग्रह (बौद्ध)। **–प्रमाथी(थिन्)**–वि० अनुशासन भंग करनेवाला। **–वाक्(च)**–वि० मधुरभाषी। **–शील**–वि० विनम्र।

विनयन–पु० [सं०] विनय; शिक्षण; निराकरण।

विनयवान्(वत्)–वि० [सं०] नम्र, शिष्ट।

विनयावनत–वि० [सं०] विनम्र।

विनयी(यिन्)–वि० [सं०] विनम्र।

विनवना*–स० क्रि० प्रार्थना, अनुरोध करना।

विनशन–पु० [सं०] हानि, नाश; लोप।

विनशना*–अ० क्रि० नष्ट होना, बरबाद होना।

विनशाना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना। अ० क्रि० नष्ट होना।

विनश्वर–पु० [सं०] नष्ट होनेवाला, नाशवान्; जो चिरस्थायी न हो, अनित्य।

विनश्वरता–स्त्री०, **विनश्वरत्व**–पु० [सं०] अनित्यता, नश्वरता।

विनष्ट–वि० [सं०] ध्वस्त; विलुप्त; मरा हुआ; बिगड़ा हुआ, विकृत; भ्रष्ट। पु० शव। **–चक्षु(स्)**–वि० जिसकी आँख नष्ट हो गयी हो। **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि नष्ट हो गयी हो। **–धर्म**–वि० जिसके विधान भ्रष्ट हों (देश)।

विनष्टि–स्त्री० [सं०] नाश; पतन; लोप।

विनसना*–अ० क्रि० नष्ट होना।

विनसाना*–अ०क्रि० नष्ट होना। स०क्रि० नष्ट करना।

विना–अ० [सं०] न होनेपर, अभावमें, बगैर।

विनाती*–स्त्री० विनती, प्रार्थना।

विनायक–वि० [सं०] ले जानेवाला; हटानेवाला। पु० गणेश; नायक; गरुड़; बुद्धदेव; देवीका एक स्थान; गुरु, आचार्य; विघ्न। **–केतु**–पु० गरुडध्वज, कृष्ण। **–चतुर्थी**–स्त्री० गणेशचौथ, माघ-सुदी चौथ।

विनाश–पु० [सं०] अस्तित्व न रहना, नाश; क्षय; लोप; बिगड़ जाना। **–धर्मा(र्मन्),–धर्मी(र्मिन्)**–वि० नश्वर, नष्ट होनेवाला; क्षणभंगुर। **–हेतु**–पु० विनाश या मृत्युका कारण।

विनाशक–वि० [सं०] नाश करनेवाला; बिगाड़नेवाला।

विनाशन–पु० [सं०] नाश करना; लुप्त करना; हटाना।

विनाशयिता (तृ)–वि०, पु० [सं०] नाश करनेवाला।

विनाशी (शिन्)–वि०[सं०] नश्वर; नाश करनेवाला।

विनाशोन्मुख–वि० [सं०] नाशकी ओर प्रवृत्त।

विनास–वि० [सं०] नासिकाहीन। * पु० दे० 'विनाश'।

विनासक, विनासिक–वि० [सं०] नासिकाहीन।

विनासन–पु० दे० 'विनाशन'।

विनासना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना; खराब करना।

विनिंदक–वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

विनिंदित–वि० [सं०] जिसकी बहुत निंदा की गयी हो, लांछित।

विनिद्र–वि०[सं०] निद्रारहित, जाग्रत्; जागकर बिताया हुआ; खिला या फैला हुआ।

विनिद्रता–स्त्री०, **विनिद्रत्व**–पु० [सं०] प्रबोध, जागरूकता; निद्राका अभाव; जाग्रत् अवस्था।

विनिपतित–वि० [सं०] नीचे गिरा हुआ।

विनिपात–पु० [सं०] पतन; ध्वंस, विनाश; संकट; मृत्यु; वध, हत्या; अनादर, अवमान; असफलता।

विनिपातक–वि० [सं०] विनाशकारी; गिरानेवाला।

विनिपातित–वि० [सं०] गिराया हुआ; नष्ट किया हुआ।

विनिमय–पु० [सं०] अदल-बदल, प्रतिदान; बंधक; वर्णपरिवर्तन। **–अधिकोष**–पु० (एक्सचेंज बैंक) वह अधिकोष (बैंक) जहाँ एक देशकी मुद्राके बदले दूसरे देशकी मुद्रा देने या बाहर प्रेषित करने आदिका काम होता है।

विनिमीलन–पु० [सं०] बंद होना, मुँदना (आँख, फूल आदिका)।

विनिमीलित–वि०[सं०] जो बंद हो गया हो, मुँदा हुआ।

विनिमीलितेक्षण–वि० [सं०] जिसने आँखें बंद कर ली हों या जिसकी आँखें बंद हो गयी हों।

विनिमेष, विनिमेषण–पु० [सं०] पलकोंका गिरना; पलक मारना।

विनियंत्रण–पु०[सं०](डी-कंट्रोल) युद्धस्थिति या उपलब्धिकी कमी आदिके कारण किसी वस्तुपर लगायी गयी मूल्य या वितरण-संबंधी नियंत्रण-व्यवस्थाका उठा लिया जाना।

विनियताहार–वि० [सं०] जिसका आहार संयत हो, मिताहारी, अधिक खानेसे परहेज करनेवाला।

विनियम–पु० [सं०] रोक; संयम; नियंत्रण; शासन; (रेगुलेशन) वह विशेष नियम जो किसी संस्था आदिके प्रबंध या नियंत्रणके लिए प्राधिकृत आदेशसे या विशेष निश्चयके अनुसार बनाया गया हो।

विनियमक–वि० (रेगुलेटर) (पंखे आदिकी) गति या

वेगका नियंत्रण करनेवाला आला।

विनियमन–पु० [सं०] (रेगुलेशन, रेगुलेटिंग) नियमादि बनाकर नियंत्रित करना; गति, वेग, विस्तार आदि अधिक न बढ़ने देना, आवश्यकतानुसार घटाना-बढ़ाना या ठीक करना।

विनियम्य–वि० [सं०] रोक-थाम करने योग्य; संयत, नियंत्रित करने योग्य।

विनियुक्त–वि० [सं०] काममें लगाया हुआ, नियोजित; अर्पित; आदिष्ट; प्रेरित; कार्यसे मुक्त किया हुआ।

विनियोक्ता (क्तृ)–वि०,पु०[सं०] नियुक्त करनेवाला।

विनियोग–पु० [सं०] विभाग, बँटवारा; नियुक्ति; कार्य-भार; प्रयोग; संबंध; (ऐप्रोप्रियेशन) (कोई वस्तु या धन) अधिकारमें ले लेना या अपने प्रयोगमें ले आना, उपयोजन। **–विधेयक**–पु० (ऐप्रोप्रियेशन बिल) वह विधेयक जिसमें इस बातका भी ब्यौरा दिया रहता है कि राजस्वका कितना अंश किस मदमें खर्च किया जायगा।

विनियोजित–वि० [सं०] नियुक्त, लगाया हुआ; अर्पित; प्रेरित।

विनियोज्य–वि० [सं०] काममें लगाया जानेवाला; प्रयोगमें लाया जानेवाला।

विनिर्गत–वि० [सं०] बाहर निकला हुआ; मुक्त; व्यतीत।

विनिर्दिष्ट–वि० [सं०] विशेष रूपसे निर्दिष्ट।

विनिर्देश–पु०[सं०] (स्पेसिफिकेशन) निश्चित रूपसे कोई बात कहना या निर्देश करना; इस प्रकार कही हुई बात; विशेषताओं-संबंधी विवरण।

विनिर्मल–वि० [सं०] अत्यधिक स्वच्छ; जिसमें जरा भी मल न हो।

विनिर्मित–वि० [सं०] ...से बना हुआ; रचित; मनाया हुआ (उत्सव); निर्धारित, निश्चित।

विनिर्मुक्त–वि० [सं०] छोड़ा हुआ; बंधनरहित; निकला हुआ।

विनिवर्तित–वि० [सं०] लौटाया हुआ; पलटा हुआ।

विनिवृत्त–वि० [सं०] लौटा हुआ; हटा हुआ; समाप्त; मुक्त; लुप्त।

विनिवृत्ति–स्त्री० [सं०] विराम, अंत; छुटकारा।

विनिवेदित–वि० [सं०] घोषित, जनाया हुआ।

विनिश्चय–पु०[सं०] (डिसीजन) कोई काम करने आदिके संबंधमें किसी सभा आदिमें विशेष रूपसे कुछ निश्चय किया जाना, किसी प्रश्नका निपटारा।

विनिषिद्ध व्यापार–पु० [सं०] (कंट्राबैंड ट्रेड) उन वस्तुओंका व्यापार जिनके आयात या निर्यातकी मनाही कर दी गयी हो या जिन्हें युद्धग्रस्त देशोंके हाथ बेचना तटस्थ राष्ट्रोंके लिए अनुचित ठहराया गया हो।

विनीत–वि० [सं०] हटाया हुआ, ले गया हुआ; नम्र, विनयी; जानकार, ज्ञान रखनेवाला; जितेंद्रिय। **–वेष**–पु० सादी पोशाक।

विनीतता–स्त्री०, **विनीतत्व**–पु० [सं०] नम्रता, शिष्टता।

विनु*–अ० बिना।

विनोक्ति–स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार, जहाँ किसी एक वस्तुके बिना अपर वस्तुका शोभित होना, या शोभित न होना, दिखलाया जाय।

विनोद–पु० [सं०] मनोरंजन; मनोरंजक बात; परिहास; क्रीडा; प्रसन्नता, प्रमोद।

विनोदन–पु० [सं०] क्रीडा करना; मन बहलाना।

विनोदी(दिन्)–वि० [सं०] क्रीड़ाशील; मौजी।

विन्यस्त–वि० [सं०] रखा हुआ; जमाया, जड़ा हुआ; डाला हुआ; प्रवृत्त किया हुआ; व्यवस्थित; अर्पित; जमा किया हुआ।

विन्यास–पु० [सं०] रखना, स्थापन करना; जड़ना; धारण करना; सुपुर्द करना; व्यवस्थित करना; [एरेंजमेंट) सिलसिलेसे रखने, क्रम ठीक करने आदिका काम; अंगोंकी स्थिति; फैलाना; प्रदर्शन; आधार; संग्रह, समूह।

विपंच–पु० (अंपायर) पंचोंके बीच मतभेद होनेपर अग्निनिर्णयके लिए आमंत्रित अन्य व्यक्ति।

विपंचिका, विपंची–स्त्री० [सं०] एक तरहकी वीणा; क्रीड़ा, केलि।

विपक्ष–पु० [सं०] विरोधी पक्ष; शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी; किसी बातके विरोधमें कुछ कहना; किसी नियमके विरुद्ध व्यवस्था, बाधक नियम, अपवाद (व्या०); वह पक्ष जिसमें साध्यका अभाव हो (न्याय); निष्पक्षता; वह दिन जब पाख बदले।

विपक्षी(क्षिन्)–पु० [सं०] विरुद्ध पक्षका व्यक्ति; शत्रु।

विपज्जनक–वि० [सं०] संकट पैदा करनेवाला।

विपणि, विपणी–स्त्री० [सं०] हाट; दुकान; बिक्रीका माल; व्यापार; बिक्री।

विपणी(णिन्)–पु० [सं०] व्यापारी, दुकानदार।

विपत्काल–पु० [सं०] संकटके दिन, दुर्दिन।

विपत्ति–स्त्री० [सं०] संकट, आफत; मृत्यु; नाश; यातना। **–कर**–वि० संकट उत्पन्न करनेवाला। **–काल**–पु० कष्टके दिन। **मु०–उठाना,–झेलना**–तकलीफ सहना। **–काटना**–दुःखके दिन बिताना। **–ढहना**–किसीपर सहसा भारी दुःख पड़ना। **–भोगना**–कष्ट सहना। **–में डालना**–किसीको दुःख देना। **–में पड़ना**–संकटग्रस्त होना। **–मोल लेना**–जान-बूझकर संकटमें पड़ना। **–सिरपर लेना**–व्यर्थ झंझट, दिक्कतमें पड़ना।

विपत्र–पु०[सं०](बिल) किसी महाजन, बैंक, खजाने आदि द्वारा दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा हो कि इसमें निर्दिष्ट रकम अमुक तिथितक चुका दी जायगी, हुंडी; खरीदे या मँगाये गये मालका मूल्य चुकानेके लिए जारी किया गया वह लिखित पत्र या साधन जो ऋण चुकानेके लिए दोनों पक्षों द्वारा स्वीकार किया गया हो, विनिमयपत्र।

विपथ–पु० [सं०] भिन्न मार्ग; गलत रास्ता। **–गा**–वि० स्त्री० कुमार्गपर जानेवाली; स्त्री० नदी। **–गामी(मिन्)**–वि० कुमार्गगामी।

विपदा–स्त्री० [सं०] विपत्ति, दुःख।

विपद्–स्त्री० [सं०] आफत, संकट; मृत्यु; नाश। **–आक्रांत**–वि० संकट-ग्रस्त। **–ग्रस्त**–वि० संकटापन्न।

विपन्न–वि० [सं०] मृत; नष्ट; संकटग्रस्त।

विपरिधान–पु० [सं०] (यूनीफार्म) सेना, पुलिस आदिके कर्मचारियोंके लिए निर्धारित विशेष पहनावा, जो प्रायः

सबके लिए एक-सा होता है, समपरिधान।

विपरीत–वि० [सं०] उलटा; प्रतिकूल; नियमविरुद्ध; असत्य; विरुद्ध; बेमेल; अशुभ; भिन्न। पु० एक अर्थालंकार –'जहाँ कार्यसिद्धिमें स्वयं साधकका ही बाधक होना दिखलाया जाय'–(केशव); एक रतिबंध। **–कर,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि० विरुद्ध काम करनेवाला। **–गति**–वि० उलटी दिशामें जानेवाला। **–चेता(तस्),–बुद्धि,–मति**–वि० जिसका दिमाग फिर गया हो। **–रति**–स्त्री० रतिका एक प्रकार। **–लक्षणा**–स्त्री० व्यंग्यमें उलटी बात कहना।

विपरीततः भी–अ० (वाइस वर्सा) (पहले कहे हुएके) उलटे प्रकार या क्रमसे भी, विपर्ययसे भी।

विपरीतता–स्त्री०, **विपरीतत्व**–पु० [सं०] विपर्यय, विपरीत होनेका भाव।

विपरीता–स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा, पुंश्चली।

विपरीतार्थ–वि० [सं०] उलटे अर्थवाला।

विपर्णक–वि० [सं०] बिना पत्तोंका। पु० पलाशका पेड़।

विपर्यय–पु० [सं०] व्यतिक्रम; विपरीतता, प्रतिकूलता; चक्कर; पलायन; समाप्ति; परिवर्तन (स्थान, वस्त्रादिका); हानि; विनाश; विनिमय; भूल; संकट; शत्रुता; विरोध। **–से भी**–अ० (वाइस वर्सा) दे० 'विपरीततः भी'।

विपर्यस्त–वि० [सं०] परिवर्तित; अस्त-व्यस्त; उलटा-पलटा हुआ; औरका और समझा हुआ।

विपर्याय–पु० [सं०] (एंटॉनिम) किसी शब्दका बिलकुल विरोधी अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द।

विपर्यास–पु० [सं०] परिवर्तन; विपरीतता, प्रतिकूलता; उलट-पुलट; भ्रम, भूल, मिथ्या ज्ञान।

विपल–पु० [सं०] समयका एक बहुत छोटा मान, पलका साठवाँ भाग।

विपलायन–पु० [सं०] भागना; विभिन्न दिशाओंमें भागना।

विपाक–पु० [सं०] पकना; पूर्ण दशाको प्राप्त होना; पचना; परिणाम; कर्मका फल; अवस्था-परिवर्तन।

विपाटक–वि० [सं०] फाड़ने, फोड़ने, उखाड़नेवाला।

विपाटन–पु० [सं०] उखाड़ने, फोड़नेकी क्रिया।

विपादिका–स्त्री० [सं०] पैरका एक रोग, पादस्फोट, बेवाई।

विपादित–वि० [सं०] नष्ट किया हुआ; वध किया हुआ।

विपाशा–स्त्री० [सं०] व्यास नदी।

विपिन–पु० [सं०] जंगल, वन; उपवन। **–चर**–पु० वनचर; जंगली आदमी; पशु, पक्षी आदि। **–पति**–पु० सिंह। **–विहारी(रिन्)**–पु० वनमें विहार करनेवाला; कृष्ण।

विपुत्र–वि० [सं०] पुत्रहीन।

विपुल–वि० [सं०] बृहत्, बड़ा; विस्तृत; अधिक, प्रचुर; गहरा, अगाध।

विपुलता–स्त्री, **विपुलत्व**–पु० [सं०] आधिक्य; प्राचुर्य; विस्तार।

विपुला–स्त्री० [सं०] पृथ्वी; एक छंद; आर्या छंदका भेद।

विपुलाई*–स्त्री० दे० 'विपुलता'।।

विपुलेक्षण–वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला।

विपुष्ट–वि० [सं०] जो पुष्ट न हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विपोहना*–स० क्रि० पोहना, छेदना; पोतना; संहार करना।

विप्र–पु० [सं०] ब्राह्मण; पुरोहित; चतुर आदमी। **–चरण,–पद**–पु० विष्णुके हृदयपर अंकित भृगुका चरण-चिह्न। **–समागम**–पु० ब्राह्मणोंसे मेल-जोल रखना। **–स्व**–पु० ब्राह्मणकी संपत्ति।

विप्रकृत–वि० [सं०] अपकृत, अनादृत; क्षतिग्रस्त।

विप्रकृति–स्त्री० [सं०] अपकार; परिवर्तन; क्षति; विरोध; प्रतिशोध।

विप्रकृष्ट–वि० [सं०] खींचकर हटाया हुआ, दूर किया हुआ; दूरवर्ती; बहुत दूर; फैलाया हुआ।

विप्रच्छन्न–वि० [सं०] छिपा हुआ, गुप्त।

विप्रणाश–पु० [सं०] नाश, लोप; मृत्यु।

विप्रतारित–वि० [सं०] जो छला गया हो।

विप्रतिकृत–वि० [सं०] जिसका विरोध या प्रतिशोध किया गया हो।

विप्रतिपत्ति–स्त्री० [सं०] विरोध; मतभिन्नता; दो नियमोंका परस्पर विरुद्ध होना; भ्रांत धारणा; संदेह; विरोधी भाव; पारस्परिक संबंध; घबराहट; अभिज्ञता; अपकीर्ति; विकृति।

विप्रतिपद्य–वि० [सं०] जिसका विरोध किया जाय; विभिन्न प्रकारसे सिद्ध किया जानेवाला।

विप्रनष्ट–वि० [सं०] जो पूर्णतः नष्ट हो गया हो; लुप्त; निष्फल, बेकार।

विप्रमत्त–वि० [सं०] प्रमादरहित।

विप्रमोहित–वि० [सं०] हतबुद्धि।

विप्रयाण–पु० [सं०] चल देना; पलायन।

विप्रयुक्त–वि० [सं०] अलग किया हुआ; वियुक्त; मुक्त किया हुआ; वंचित, विहीन।

विप्रयोग–पु० [सं०] वियोग (विशेषकर प्रियसे), विच्छेद।

विप्रयोगी(गिन्)–वि० [सं०] (प्रिय आदिसे) वियुक्त, जो अलग हो।

विप्रलंभ–पु० [सं०] छल, धोखा, बहकावा; नैराश्य; प्रेमियोंका वियोग; विच्छेद; कलह। **–शृंगार**–पु० वियोग-शृंगार जिसमें विरह-वर्णन होता है।

विप्रलंभन–पु० [सं०] छल करना, धोखा देना।

विप्रलब्ध–वि० [सं०] वंचित; छला हुआ; निराश; क्षतिग्रस्त; विरही।

विप्रलब्धा–स्त्री० [सं०] संकेत-स्थलमें प्रियके न मिलनेसे दुःखी नायिका।

विप्रलाप–पु० [सं०] बेमतलब बकना; परस्पर खंडन-मंडन करना; विवाद।

विप्रेषक–पु० [सं०] (रेमिटर) किसी दूर रहनेवाले व्यक्तिके पास रुपया-पैसा या अन्य वस्तु भेजनेवाला।

विप्रेषण–पु० [सं०] (रेमिटैंस) किसी दूरस्थ आदमीके पास रुपया-पैसा आदि भेजना; वह वस्तु जो दूर भेजी जाय।

विप्रोषित–वि० [सं०] परदेशमें रहनेवाला; निष्कासित। **–भर्तृका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति विदेशमें हो।

विप्लव–पु० [सं०] प्लावन; उपद्रव, अशांति; हल्ला-गुल्ला;

विद्रोह; नाश, बर्बादी; क्षति; आईनेपरका धब्बा; नियम आदिका भंग।

विप्लवी(विन्)–वि० [सं०] क्षणभंगुर, अस्थायी; विप्लव, क्रांति करनेवाला।

विप्लावक–पु० [सं०] विप्लव, उपद्रव करनेवाला, बलवाई, विद्रोही, क्रांतिकारी; बाढ़ लानेवाला; फैलानेवाला।

विप्लावित–वि० [सं०] बहाया हुआ; घबराहटमें डाला हुआ; नष्ट किया हुआ।

विप्लुत–वि० [सं०] बिखरा हुआ; अस्त-व्यस्त; घबराया हुआ; भटका हुआ; नष्ट-भ्रष्ट; जो धुँधला हो गया हो (नेत्र); भग्न (प्रतिज्ञा आदि); उत्तेजित; आचारहीन; जिसका उपचार गलत हुआ हो; कुटिल; प्रतिकूल; जलप्लावित। पु० फटन, स्फोट। **–नेत्र,–लोचन**–वि० जिसकी आँखें अश्रुपूर्ण हों। **–भाषी(षिन्)**–वि० अस्पष्ट बोलनेवाला।

विप्लुति–स्त्री० [सं०] हलचल, अशांति; नाश, बर्बादी।

विप्सा–स्त्री० क्रम, सिलसिला; दे० 'वीप्सा'।

विफल–वि० [सं०] बिना फलका, फलहीन (वृक्ष); व्यर्थ, बेकार, निरर्थक; असफल; हताश, निराश; अंडहीन।

विफ़ाक़–पु० [अ०] अनुकूलता; संघ।

विबंधन–वि० [सं०] कब्ज करनेवाला। पु० दोनों ओरसे बाँधनेकी क्रिया (पीठ आदिका फोड़ा)।

विबंधु–वि० [सं०] बंधुहीन; जिसके कोई संबंधी न हो; असहाय।

विबल–वि० [सं०] बलहीन, निर्बल; विशेष बलवान्।

विबाधा–स्त्री० [सं०] कष्ट, पीड़ा, यंत्रणा।

विबुध– वि० [सं०] विद्वानोंसे रहित। पु० विद्वान्, चतुर व्यक्ति; देवता; चंद्रमा। **–गुरु**–पु० बृहस्पति। **–तटिनी,–नदी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–द्विट्(ष्),–रिपु,–शत्रु**–पु० दैत्य। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–पति**–पु० इंद्र। **–प्रिया**–स्त्री० देवांगना; एक वृत्त। **–बेलि**–स्त्री० [हिं०] कल्पलता। **–मति**–वि० चतुर। **–राज**–पु० इंद्र। **–वन**–पु० नंदनवन। **–विलासिनी**–स्त्री० अप्सरा। **–वैद्य**–पु० अश्विनीकुमार। **–सद्म (न्)**–पु० स्वर्ग। **–स्त्री**–स्त्री० देवांगना; अप्सरा।

विबुधाचार्य–पु० [सं०] बृहस्पति।

विबुधाधिप, विबुधाधिपति–पु० [सं०] इंद्र।

विबुधापगा–स्त्री० [सं०] आकाशगंगा।

विबुधावास–पु० [सं०] देवमंदिर।

विबुधेश्वर–पु० [सं०] इंद्र।

विबोध–वि० [सं०] अनवधान। पु० जागरण; अनुभूति; प्रज्ञा, समझ; एक विभाव (सा०); अनवधानता; उद्देश्यसिद्धिमें गुणों या शक्तिका व्यक्त होना (ना०)।

विबोधन–पु० [सं०] जागना; जगाना; समझाना; तसल्ली देना।

विबोधित–वि० [सं०] जगाया हुआ; सिखलाया, समझाया हुआ; विकासित।

विब्बोक–पु० [सं०] दे० 'बिब्बोक'।

विभक्त–वि० [सं०] बँटा हुआ; विभाग किया हुआ; अलग किया हुआ; भिन्न।

विभक्ता (क्तृ)–वि० [सं०] व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला।

विभक्ति–स्त्री० [सं०] बँटवारा; विभाग; उत्तराधिकारमें प्राप्त हिस्सा; पार्थक्य; कारकका चिह्न (व्या०)।

विभज्य–वि० [सं०] जिसका विभाग करना हो; जिसका भेद दिखलाना हो।

विभव–पु० [सं०] धन, संपत्ति, ऐश्वर्य; महत्ता; उच्च पद; उदाराशयता; प्रभाव; अनावश्यक, भोगविलासकी वस्तु; मोक्ष; एक संवत्सर; प्रलय (बौद्ध)। **–मद**–पु० ऐश्वर्यका मद। **–शाली (लिन्)**–वि० दे० 'विभववान्'।

विभववान् (वत्)–वि० [सं०] धनी, ऐश्वर्यशाली; शक्तिशाली।

विभवी (विन्)–वि० [सं०] दे० 'विभववान्'।

विभाँति–स्त्री० भेद, प्रकार, किस्म। वि० कई तरहका। अ० कई तरहसे।

विभा–स्त्री० [सं०] प्रभा, कांति; किरण; सौंदर्य। **–कर**–पु० सूर्य; आक; अग्नि; राजा; चंद्रमाका सूर्य द्वारा प्रकाशित अंश। **–वसु**–पु० अग्नि; सूर्य; चंद्रमा; एक तरहका हार; एक वसु; एक दानव।

विभाग–पु० [सं०] बँटवारा; पैतृक संपत्तिका हिस्सा; किसी वस्तुका कोई भाग; भिन्नका अंश; पार्थक्य; अध्याय; व्यवस्था; मुहकमा। **–कल्पना**–स्त्री० हिस्से बैठाना। **–धर्म**–वि० बँटवारा-संबंधी कानून। **–पत्रिका**–स्त्री० वह दस्तावेज जिसमें बँटवारेका ब्योरा दिया गया हो। **–रेखा**–स्त्री० सीमा-रेखा।

विभागक–पु० [सं०] बँटवारा करनेवाला; व्यवस्था करनेवाला।

विभागतः (तस्)–अ० [सं०] हिस्सेके मुताबिक।

विभागशः(शस्)–अ० [सं०] हिस्सेके हिसाबसे।

विभागाध्यक्ष–पु० [सं०] किसी विभागका अध्यक्ष या प्रधान अधिकारी (डिपार्टमेंटल हेड)।

विभागी(गिन्)–पु० [सं०] विभाग, बँटवारा करनेवाला; हिस्सेदार।

विभाजक–पु० [सं०] बाँटनेवाला; वह संख्या जिससे भाग दिया जाय, भाजक। वि० बाँटनेवाला; टुकड़े करनेवाला।

विभाजन–पु० [सं०] बाँटना, विभाग करना; बँटवाना। **–घंटी**–स्त्री० [हिं०] (डिवीजनबेल) संसद् या विधानसभामें किसी प्रस्ताव आदि-संबंधी विवाद समाप्त हो जानेपर सभाका मत जाननेके लिए सदस्योंको अपना-अपना स्थान ग्रहण कर दो पृथक्-पृथक् समूहोंमें विभक्त होनेके लिए तैयार रहनेकी सूचना देनेवाली घंटी।

विभाजित–वि० [सं०] बँटवाया हुआ; विभक्त।

विभाज्य–वि० [सं०] जिसका बँटवारा किया जाय; भाग करने योग्य। पु० वह संख्या जिसमें किसी संख्यासे भाग दिया जाय।

विभाति–स्त्री० [सं०] चमक; शोभा, सुंदरता (दीनद०)।

विभाना*–अ० क्रि० चमकना; शोभा देना।

विभारना*–अ० क्रि० चमकना।

विभाव–पु० [सं०] भावके तीन अंगोंमेंसे एक–वह वस्तु

या अवस्था जो मनमें किसी भावको उत्पन्न या उद्दीप्त करे; भावोदय या भावोद्दीपनका कारण (सा०)।

विभावन–पु० [सं०] कल्पना; चिंतन; अनुभूति; तर्क; परीक्षण; वह मानसिक व्यापार जिसके द्वारा काव्यके नायकादिके साथ श्रोता या पाठकका तादात्म्य होता है, साधारणीकरण (सा०)।

विभावना–स्त्री०[सं०] एक अर्थालंकार जहाँ (१) कारणके विना या (२) अपर्याप्त कारणसे अथवा (३) कारणका प्रतिबंध करनेवाली वस्तुके रहते हुए भी कार्यकी उत्पत्ति हो या (४) जहाँ अहेतुसे या (५) विपरीत हेतुसे कार्यकी उत्पत्ति दिखायी जाय या फिर (६) कार्यसे ही कारणकी उत्पत्तिका वर्णन हो।

विभावरी–स्त्री० [सं०] रात; तारोंवाली रात; हल्दी। –**कांत**–पु० चंद्रमा। –**मुख**–पु० संध्या।

विभावरीश–पु० [सं०] चंद्रमा।

विभावसु–पु० [सं०] दे० 'विभा'के साथ।

विभाषा–स्त्री० [सं०] विकल्प, चुनाव, पसंदकी स्वतंत्रता; व्याकरणका वह स्थान जहाँ अपवाद और विधान दोनों पाये जायँ।

विभाषित–वि० [सं०] वैकल्पिक।

विभास–पु० [सं०] चमक; सात सूर्योंमेंसे एक; एक राग।

विभासना*–अ० क्रि० चमकना, झलकना।

विभासित–वि० [सं०] दीप्त; चमकाया हुआ; प्रकाशित।

विभिन्न–वि० [सं०] काटा, तोड़ा हुआ; छिदा हुआ; आहत; कई तरहका; मिश्रित।

विभिन्नता–स्त्री० [सं०] विभिन्न होना, अलगाव।

विभीषण–वि०[सं०] अति भयानक, बहुत डरावना; देशद्रोही (आ०)। पु० रावणका एक भाई जो रामका पक्ष लेकर रावणसे लड़ा।

विभीषिका–स्त्री० [सं०] डरवाना; आतंक; भयंकर कांड।

विभु–वि० [सं०] सर्वव्यापक; शक्तिशाली; योग्य, सक्षम; जितेंद्रिय; स्थायी; विस्तृत; महान्। पु० स्वामी, प्रभु; ईश्वर।

विभुता–स्त्री०, **विभुत्व**–पु० [सं०] स्वामित्व, प्रभुत्व; ऐश्वर्य; शक्ति; व्यापकता।

विभूति–स्त्री० [सं०] ऐश्वर्य; शक्ति; अलौकिक शक्ति; महत्ता; अभ्युदय, समृद्धि; उच्च पद; धन; प्राचुर्य; गोबरकी राख; शक्ति-प्रदर्शन; प्रभुता; लक्ष्मी; एक श्रुति (संगीत)।

विभूतिमान्(मन्)–वि० [सं०] शक्तिशाली; अलौकिक शक्तिसंपन्न; भस्म धारण किया हुआ।

विभूषण–वि० [सं०] अलंकृत करनेवाला। पु० सजाना; अलंकार; मंजुश्री; सौंदर्य; कांति।

विभूषना*–स० क्रि० अलंकृत करना, सजाना; शोभित करना।

विभूषित–वि० [सं०] अलंकृत सजाया हुआ; गुणादिसे युक्त; शोभित।

विभेँटन*–पु० भेंटनेकी क्रिया, आलिंगन।

विभेद–पु० [सं०] तोड़ना, खंडित करना; विभाग करना; छेदना; पार्थक्य; संकोच; बाधा; परिवर्तन; मत-भिन्नता, फूट; अंतर; प्रकार; विरोध, खंडन। –**कारी(रिन्)**–वि० छेदने, काटनेवाला; अंतर करनेवाला; फूट डालनेवाला।

विभेदक–वि०, पु० [सं०] काटने, छेदनेवाला; भेद दिखानेवाला; अंतर डालनेवाला।

विभेदन–पु०[सं०] काटने, फाड़ने आदिकी क्रिया; धँसना; फूट डालना; पृथक करना।

विभेदना*–स० क्रि० काटना; छेदना; प्रवेश करना।

विभेदी(दिन्)–वि० [सं०] काटने, छेदनेवाला; दूर, नष्ट करनेवाला; छेदकर प्रवेश करनेवाला; फर्क करनेवाला।

विभेदीकरण–पु० [सं०] (डिसक्रिमिनेशन) करारोपण या व्यवहारादिमें एककी तुलनामें दूसरेसे विभेद करना, विभेद या पार्थक्यका ध्यान रखना (अनुपालन करना)।

विभेद्य–वि० [सं०] काटने, छेदने योग्य।

विभोर–वि० निमग्न, तल्लीन।

विभौ*–पु० दे० 'विभव' (ऐश्वर्य, धन, प्रभुत्व)।

विभ्रम–पु० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करना; चक्कर खाना; लुढ़कना; अस्थिरता; घबड़ाहट; संदेह; भ्रांति; सौंदर्य, शोभा; प्रणय-केलि; एक हाव (सा०)।

विभ्रांत–वि० [सं०] घूमा हुआ; चक्कर खाता, घूमता हुआ; चारों ओर फैला हुआ; भ्रममें पड़ा हुआ, घबड़ाया हुआ। –**मना(नस्)**–वि० हतबुद्धि।

विभ्रांति–स्त्री० [सं०] चक्कर खाना; जल्दबाजी, घबड़ाहट; भूल, भ्रम।

विभ्राजित–वि० [सं०] चमकाया हुआ।

विभ्राट–पु० बखेड़ा, गड़बड़ी; आफत।

विमंडन–पु० [सं०] सजाना, अलंकरण; अलंकार।

विमंडित–वि० [सं०] सजाया हुआ, अलंकृत;...से युक्त।

विमत–वि० [सं०] भिन्न या विरुद्ध मतका। पु० विपरीत मत; शत्रु।

विमति-टिप्पणी–स्त्री० [सं०] (मिनिट ऑफ डिसेंट) किसी विषयकी जाँच, अध्ययन आदिके बाद तैयार किये गये प्रतिवेदनमें बहुमतने जो सम्मति दी हो, उससे अपना मतभेद प्रकट करनेके लिए एक या एकाधिक सदस्यों द्वारा अलगसे जोड़ी गयी टिप्पणी या वक्तव्य।

विमद–वि० [सं०] मदरहित; 'निरानंद, जो मस्त न हो (हाथी)।

विमन–वि० खिन्न, उदास, अनमना।

विमनस्क–वि० [सं०] खिन्न, उदास; व्याकुल; अधीर।

विमर्द–पु० [सं०] रगड़ना, पीसना; रौंदना; संघर्ष; नाश।

विमर्दक–वि० [सं०] मलने, रौंदने, नष्ट करनेवाला।

विमर्दित–वि० [सं०] पीसा, रौंदा हुआ; रगड़ा हुआ।

विमर्श–पु० [सं०] विचार, विवेचन; परीक्षण; समीक्षा; तर्क; ज्ञान। –**वादी(दिन्)**–वि० तर्क करनेवाला।

विमर्शन–पु० [सं०] तर्क-वितर्क; परीक्षण; समीक्षा।

विमर्शी(र्शिन्)–वि०[सं०] विचार करनेवाला; समीक्षक।

विमर्ष–पु० [सं०] विचारणा, विवेचन; आलोचना; उद्वेग; व्याकुलता; क्षोभ।

विमल–वि० [सं०] साफ, बेदाग; विशुद्ध; निर्दोष; स्पष्ट; पारदर्शक; श्वेत; सुंदर।

विमला–स्त्री० [सं०] सिद्धिकी दस भूमियों, अवस्थाओंमेंसे एक; चाँदीका मुलम्मा; सरस्वती। –**पति**–पु० ब्रह्मा।

विमांस–पु० [सं०] (कुत्ते आदिका) अखाद्य मांस।

विमाता(तृ)–स्त्री० [सं०] सौतेली माँ। **–ज**–पु० सौतेला भाई।

विमान–वि० [सं०] असम्मानित। पु० असम्मान; देवयान, वायुयान; राजप्रासाद; देवमंदिर; सजी हुई अरथी; रामलीला आदिमें काम आनेवाला एक तरहका यान। **–कर्मी(र्मिन्)**–पु० (एअर क्रू) विमानमें काम करनेवाला कर्मचारी। **–गृह,–घर**–पु० (हैंगर) वायुयान रखनेका घर। **–चारी(रिन्)**–वि० विमानसे यात्रा करनेवाला। **–चालक**–पु० वायुयान चलानेवाला (पायलट)। **–चालन**–पु० (ऐवियेशन) हवाई जहाज चलानेकी विद्या या क्रिया, उड्डयन। **–चालनविज्ञान**–पु० (एरोनॉटिक्स) विमान चलाने आदिकी विद्या। **–वाहक पोत**–पु० (एअरक्राफ्ट कैरियर) विमानोंको ढोकर ले जानेवाला जहाज। **–वेधी तोप**–स्त्री०[हिं०] (एंटी एअरक्राफ्ट गन) विमानोंपर गोले बरसाकर उन्हें नष्ट कर डालनेवाली तोप। **–सेनाधिकारी(रिन्)**–पु० (विंग कमांडर) विमान-सेनाकी टुकड़ीका नायक।

विमानना–स्त्री० [सं०] अनादर, तिरस्कार।

विमानास्थान–पु० [सं०] (एअरबेस) हवाई जहाजोंके ठहरने, रखे जाने आदिका स्थान या केंद्र।

विमानित–वि० [सं०] अनादृत, तिरस्कृत।

विमानीकृत–वि० [सं०] निरादृत; विमान बनाया हुआ।

विमार्ग–पु० [सं०] कुमार्ग; झाड़ना। **–गामी(मिन्)**–वि० बुरे रास्तेपर जानेवाला। **–गा**–स्त्री० पुंश्चली।

विमार्जन–पु० [सं०] धोना, साफ करना; पवित्र करना।

विमुक्त–वि० [सं०] मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ; स्वतंत्र; परित्यक्त; फेंका, चलाया हुआ; वंचित; धीर, शांत;...से स्रवित; बचा हुआ; बरी किया हुआ। **–कंठ**–वि० जोरसे चिल्लाने या रोनेवाला। **–शाप**–वि० जिसे शापसे छुटकारा मिल गया हो।

विमुक्ति–स्त्री० [सं०] रिहाई, छुटकारा; पार्थक्य; मोक्ष; अभियोगसे बरी होना। **–पथ**–पु० मोक्षका मार्ग।

विमुख–वि० [सं०] बहिर्मुख; विरत; प्रतिकूल; वंचित; हताश; परहेजगार; उदासीन; मुखहीन; छिद्ररहित।

विमुग्ध–वि० [सं०] हतबुद्धि, घबड़ाया हुआ; भ्रममें पड़ा हुआ; भीत; मोहित; मत्त। **–कारी(रिन्)**–वि० मोहनेवाला; भ्रममें डालनेवाला।

विमुग्धक–पु० [सं०] मोहनेवाला; अभिनयका एक भेद।

विमुद–वि० [सं०] निरानंद, खिन्न।

विमुद्रीकरण–पु०[सं०] (डीमॉनेटाइजेशन) किसी सिक्का, नोट आदिका मुद्राके रूपमें चलन बंद कर देना, उसका विधि-ग्राह्य न रह जाना, (किसी धातु आदिका मुद्राके रूपमें) व्यर्थीकरण।

विमूढ–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ; मूर्ख; बेसुध; मोहित; चतुर। **–गर्भ**–पु० वह गर्भ जिसमें बच्चा मर गया हो और प्रसवमें कष्ट हो। **–चेता(तस्),–धी**–वि० मूर्ख, नासमझ। **–भाव**–पु० बेसुध होनेकी अवस्था।

विमूढक–पु० [सं०] एक तरहका प्रहसन (ना०)।

विमूर्च्छ–वि० [सं०] जिसकी मूर्छा दूर हो गयी हो।

विमूल–वि० [सं०] जड़से उखाड़ा हुआ; मूलहीन; नष्ट।

विमूलन–पु० [सं०] मूलोच्छेद करना; नाश करना।

विमृश्य–वि० [सं०] जिसपर विवेचन या विचार करना हो; जिसकी समीक्षा करनी हो।

विमोक्ता(क्तृ)–वि० [सं०] मुक्त करनेवाला।

विमोक्ष–पु० [सं०] छुटकारा; मुक्ति, निर्वाण; आजाद करना; दान; (बाण) चलाना; ग्रहणका अंत।

विमोक्षण–पु० [सं०] विमोचन, बंधनमुक्त करना; परित्यजन; (बाण आदिका) चलाना।

विमोघ–वि० [सं०] व्यर्थ, बेकार, निष्फल; अमोघ।

विमोचक–वि० [सं०] मुक्त करनेवाला; गिरानेवाला; छोड़नेवाला।

विमोचन–पु० [सं०] दूर करना; मुक्त करना; सबूतके अभावमें अभियोगसे बरी होना; (रिडेंपशन) मूल्य चुकाकर वापस लेना या बंधनादिसे छुड़ाना; बंधन या कैदसे छूटना; जुएसे हटाना; निकालना; फेंकना; गिराना; शिव।

विमोचना*–स० क्रि० बंधन-मुक्त करना; छोड़ना; गिराना।

विमोचनीय–वि० [सं०] छोड़ने योग्य।

विमोचित–वि० [सं०] खोला हुआ, मुक्त किया हुआ।

विमोह–पु० [सं०] मतिभ्रंश; भ्रम; अज्ञान; आसक्ति।

विमोहक–वि० [सं०] भ्रममें डालनेवाला; क्षुब्ध करनेवाला।

विमोहन–पु० [सं०] भ्रम; बुद्धिभ्रंश; उच्चाटन; लुभाना। **–शील**–वि० भ्रममें डालनेवाला; मुग्ध करनेवाला।

विमोहना*–अ० क्रि० मुग्ध होना; धोखा खाना। स० क्रि० मुग्ध करना, लुभाना; प्रभावित कर वशीभूत करना; भ्रांत करना।

विमोहित–वि० [सं०] लुब्ध, मुग्ध; बेसुध, मूर्च्छाग्रस्त।

विमोही(हिन्)–वि० [सं०] मुग्ध करनेवाला; भ्रममें डालनेवाला; अचेत करनेवाला।

विमौट–पु० बमीठा, बाँबी।

वियंग*–पु० दो अंगोंवाले, महादेव।

विय*–वि० दो; दूसरा।

वियत्–पु० [सं०] आकाश; वायुमंडल। वि० गतिशील। **–पताका**–स्त्री० बिजली।

वियद्गंगा–स्त्री० [सं०] आकाशगंगा।

वियन्मणि–पु० [सं०] सूर्य।

वियुक्त–वि० [सं०] अलग किया हुआ, परित्यक्त; रहित, वंचित; जिसका किसीसे पार्थक्य हुआ हो, जुदा।

वियो*–वि० दूसरा।

वियोग–पु० [सं०] विच्छेद; पार्थक्य; विरह; अभाव; छुटकारा; व्यवकलन, घटाव। **–शृंगार**–पु० शृंगाररसका वह विभाग जिसमें प्रेमियोंके विरहका वर्णन होता है।

वियोगांत–वि० [सं०] जिसके कथानकका अंत वियोगमें हो, दुःखांत (नाटकादि)।

वियोगावसान–वि० [सं०] जिसका वियोगमें अंत हो।

वियोगिन–स्त्री० दे० 'वियोगिनी'।

वियोगिनी–स्त्री०[सं०] प्रेमीसे बिछुड़ी हुई स्त्री, विरहिणी।

वियोगी(गिन्)–वि० [सं०] प्रियासे बिछुड़ा हुआ, विरही। पु० विरही पुरुष; चक्रवाक।

वियोजक–पु० [सं०] पृथक् करनेवाला; घटायी जानेवाली

छोटी संख्या।

वियोजन–पु० [सं०] पृथक् करना; जुदाई; व्यवकलन।

वियोजित–वि० [सं०] पृथक् किया हुआ; वंचित, रहित।

वियोज्य–वि० [सं०] अलग करने योग्य, जिसे पृथक् करना हो। पु० वह संख्या जिसमेंसे कोई संख्या घटायी जाय।

विरंग–वि० जिसका रंग अच्छा न हो, बदरंग; कई रंगोंका।

विरंच, विरंचि–पु० [सं०] ब्रह्मा।

विरंजन–पु० [सं०] (ब्लीचिंग) रंग उड़ानेका गुण या कार्य, रंगोंसे रहित बना देना।

विरंजित–वि० [सं०] जिसका प्रणय, आसक्ति मंद पड़ गयी हो; रंगोंसे रहित बनाया हुआ।

विरक्त–वि० [सं०] जिसके रंग, स्वभाव आदिमें परिवर्तन हो गया हो; अननुरक्त; उदासीन; खिन्न; आसक्त। पु० ताल देनेके काम आनेवाले बाजे।

विरक्ति–स्त्री० [सं०] भाव आदिका परिवर्तन; विराग; अनासक्ति; उदासीनता; खिन्नता।

विरचन–पु० [सं०] सजानेकी क्रिया; धारण करना; निर्माण, रचना।

विरचना*–स० क्रि० निर्माण करना, सजाना। अ० क्रि० विरक्त होना, उदासीन होना।

विरचयिता(तृ)–पु० [सं०] निर्माण, रचना करनेवाला।

विरचित–वि० [सं०] निर्मित; पूरा किया हुआ; लिखित।

विरजस्–वि० [सं०] दे० 'विरजा (जस्)'।

विरजस्का–स्त्री० [सं०] गतार्तवा स्त्री।

विरजा(जस्)–वि० [सं०] धूलिरहित, स्वच्छ; विरक्त। स्त्री० गतार्तवा स्त्री।

विरत–वि० [सं०] निवृत्त; जिसने हाथ खींच लिया हो; कार्य, पद आदिसे हटा हुआ; विरक्त।

विरति–स्त्री० [सं०] विराम; मनका हट जाना, विराग।

विरथ–वि० [सं०] रथ-रहित।

विरद–पु० प्रसिद्धि, नाम; यश, कीर्ति। वि० [सं०] दंतहीन।

विरदावली–स्त्री० कीर्तिकथा, गुणवर्णन।

विरदैत*–वि० नामवर, यशस्वी।

विरमण–पु० [सं०] रुकना, ठहरना; हाथ खींच लेना, त्याग करना; रमना।

विरमना*–अ० क्रि० रमना, मन लगाना; ठहरना; मुग्ध होकर रुक जाना; देर लगाना।

विरमाना*–स० क्रि० मुग्ध करना; फँसा रखना; भ्रममें डाले रखना।

विरल–वि० [सं०] अवकाश द्वारा पृथक् किया हुआ, घना नहीं; कम मिलनेवाला; बारीक; थोड़ा; ढीला; पतला।

विरलित–वि० [सं०] जो घना न हो।

विरव–वि० [सं०] बिना शब्दका, नीरव।

विरस–वि० [सं०] नीरस; स्वादहीन; अप्रिय; जी उबानेवाला; कष्टकर। पु० कष्ट; काव्यके रसका अभाव।

विरह–पु० [सं०] जुदाई, वियोग; अभाव; अविद्यमानता; परित्याग। –ज,–जनित,–जन्य–वि० वियोगसे उत्पन्न। –ज्वर–पु० विरहजन्य ताप।

विरहागि*–स्त्री० दे० 'विरहाग्नि'।

विरहाग्नि–स्त्री० [सं०] दे० 'विरहानल'।

विरहानल–पु० [सं०] विरहकी अग्नि।

विरहिणी–स्त्री० [सं०] पति, प्रियसे बिछुड़ी हुई नायिका।

विरहित–वि० [सं०] शून्य, बिना; परित्यक्त; रहित।

विरही(हिन्)–वि० [सं०] प्रियाके वियोगसे दुःखी; प्रियासे वियुक्त; एकाकी।

विरहोत्कंठिता–स्त्री० [सं०] नायकके किसी कारणसे न आनेसे दुःखी नायिका।

विराग–पु० [सं०] रंगका परिवर्तन; रागका अभाव; असंतोष; अरुचि; विकर्षण; विरक्ति।

विरागी (गिन्)–वि० [सं०] चाह, अनुरागरहित, उदासीन; विरक्त, निर्विषय।

विराजना–अ० क्रि० शोभित होना; बैठना; रहना।

विराजमान–वि० [सं०] प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ; वर्तमान, विद्यमान; बैठा हुआ।

विराजित–वि० [सं०] उपस्थित; सुशोभित; प्रकाशित।

विराट–पु० [सं०] मत्स्य देश (अलवर, जयपुर आदिका भूभाग); मत्स्य देशका राजा; बुद्ध; एक ताल (संगीत)।

विराट् (ज्)–पु० [सं०] आदि पुरुष; सौंदर्य; कांति; क्षत्रिय; शरीर। वि० बहुत बड़ा।

विराम–पु० [सं०] ठहराव, अंत; विश्राम; वाक्यांश, वाक्य आदिके बाद रुकनेका स्थान। –काल–पु० थोड़ी देर आराम करनेके लिए मिलनेवाली छुट्टी। –संधि–स्त्री० (ट्रूस) किसी विशेष स्थितिमें दोनों पक्षोंकी स्वीकृतिसे कुछ समयके लिए युद्ध बंद रखनेकी संधि।

विरामण–पु० [सं०] ठहराव।

विराल–पु० [सं०] बिल्ली।

विराव–पु० [सं०] शब्द; चिल्लाहट; हल्ला, शोर

विरास*–पु० दे० 'विलास'।

विरासत–स्त्री० दे० 'वरासत'।

विरासी*–वि० दे० 'विलासी'।

विरिंच, विरिंचन, विरिंचि–पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; शिव।

विरिक्त–वि० [सं०] खाली किया हुआ; निकालकर साफ किया हुआ; जिसे दस्त कराये गये हों।

विरुज–वि० [सं०] पीड़ा देनेवाला; नीरोग।

विरुझना*–अ० क्रि० उलझना।

विरुझाना*–स० क्रि० उलझाना। अ० क्रि० मचलना; उलझना।

विरुत–वि० [सं०] चिल्लाया हुआ; गूँजता हुआ, शब्दायमान। पु० चिल्लाहट; शोर; गान; गुंजन; कलरव।

विरुद–पु० [सं०] कीर्ति-गाथा, वह कविता आदि जिसमें किसीके यश आदिका वर्णन किया गया हो; प्रशंसासूचक पदवी; चिल्लाहट; घोषणा।

विरुदावली–स्त्री० [सं०] विस्तृत यशोगान।

विरुद्ध–वि० [सं०] बाधित, रोका हुआ; जिसका प्रतिरोध किया गया हो; अवरुद्ध; संदिग्ध; खतरनाक; विरोधी, प्रतिकूल; शत्रुतापूर्ण; अप्रिय; जो अनुकूल न पड़े (आहार-आदि); जो मेलमें न हो; असंगत।

विरुद्धता–स्त्री० [सं०] प्रतिकूलता, वैपरीत्य।

विरुद्धाचरण-पु०[सं०] प्रतिकूल या बुरा आचरण, बुरा कर्म ।

विरुद्धाशन-पु० [सं०] निषिद्ध या वर्जित आहार ।

विरुद्धोक्ति-स्त्री० [सं०] प्रतिकूल वचन, कलह ।

विरूक्ष-वि० [सं०] रूखा, कड़ा, कर्कश (वचन) ।

विरूढ-वि० [सं०] अंकुरित; उत्पन्न; चढ़ा हुआ ।

विरूप-वि० [सं०] बदशकल, भद्दा; जिसकी आकृति विकृत हो गयी हो; कदाकार; विभिन्न प्रकारका; परिवर्तित; विरुद्ध । पु० पांडु रोग; शिव; कुरूपता; रूपभिन्नता; भद्दी शकल ।

विरूपक-वि० [सं०] कुरूप; भयंकर; अनुचित ।

विरूपता-स्त्री० [सं०] कुरूपता; विभिन्नता, बहुरूपता ।

विरूपाक्ष-वि०[सं०] जिसकी आँखें कुरूप हों । पु० शिव; शिवका एक गण ।

विरेचक-वि० [सं०] सारक, दस्त लानेवाला ।

विरेचन-पु० [सं०] दस्तावर दवा, जुलाब; दस्त लाना ।

विरोचन-वि० [सं०] प्रकाशित करनेवाला । पु० सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; अर्क ।

विरोद्धा(द्धृ)-वि० [सं०] विरोध करनेवाला ।

विरोध-पु० [सं०] बाधा; प्रतिरोध; विपक्षता; अवरोध; रोक, प्रतिबंध; सामंजस्यहीनता; विपरीतता; वैर, शत्रुता; कलह; संकट; एक अर्थालंकार, विरोधाभास; कथावस्तुकी प्रगतिमें पड़नेवाली बाधा । **-कारक**-वि० कलह पैदा करनेवाला । **-कारी(रिन्)**-वि० कलह बढ़ानेवाला । **-कृत्**-वि० विरोध करनेवाला । पु० शत्रु । **-क्रिया**-स्त्री० झगड़ा, संघर्ष । **-परिहार**-पु० विरोधका दूर होना, सामंजस्य स्थापित होना ।

विरोधक-वि० [सं०] कलह पैदा करनेवाला; बाधक ।

विरोधन-वि० [सं०] विरोध करनेवाला; लड़नेवाला । पु० बाधा, रोक; कलह; संघर्ष; प्रतिरोध; क्षतिग्रस्त करना; असामंजस्य; अवरोध; नाश ।

विरोधना*-स० क्रि० वैर, विराध करना ।

विरोधाभास-पु० [सं०] विरोधका आभास; एक अर्थालंकार, जहाँ वास्तविक विरोध न होकर विरोधका आभास मात्र हो ।

विरोधित-वि० [सं०] जिसका विरोध किया गया हो ।

विरोधिता-स्त्री० [सं०] विरोधी होनेका भाव; नक्षत्रोंकी प्रतिकूल दृष्टि (ज्यो०) ।

विरोधी(धिन्)-वि० विरोध करनेवाला; बाधक; अवरोध करनेवाला; हटानेवाला; वैरी; अनुकूल न पड़नेवाला (आहार); प्रतिकूल; बेमेल; प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला; झगड़ालू । पु० विरोध करनेवाला; शत्रु; विपक्षी ।

विरोपित-वि० [सं०] रोपा हुआ; भरा हुआ (घाव) । **-व्रण**-वि० जिसका घाव भर गया हो ।

विरोमा(मन्)-वि० [सं०] बिना रोयेंका, रोमरहित ।

विलंघना-स्त्री० [सं०] लाँघना; पराजित करना ।

विलंघनीय-वि० [सं०] लाँघने, पराभूत करने योग्य ।

विलंघ्य-वि० [सं०] पार करने योग्य (नदी आदि); पराभूत करने योग्य; सहन करने योग्य ।

विलंब-पु० [सं०] लटकना, झूलना; देर; दीर्घसूत्रता. सुस्ती; एक संवत्सर । वि० लटकनेवाला । **-कारी प्रस्ताव**-पु० (डाइलेटरी मोशन) विधानसभा आदिके सामने उपस्थित किसी विषयकी काररवाई समाप्त होनेमें अधिकसे अधिक विलंब लगे, इसी उद्देश्यसे प्रस्थापित किया जानेवाला प्रस्ताव । **-शुल्क**-पु० (डेमरेज) पारसल आदि अधिक देरसे छुड़ानेपर लगनेवाला अर्थदंड; रेलका डब्बा या जहाज निर्दिष्ट अवधिके बाद भी रोक रखनेपर हरजानेके रूपमें ली जानेवाली रकम ।

विलंबन-पु० [सं०] लटकना; देर होना; सुस्ती, दीर्घसूत्रता ।

विलंबना-अ० क्रि० देर करना; रम जाना; लटकना; अवलंब लेना ।

विलंबित-वि० [सं०] लटकता हुआ; आश्रित; अवलंबित; जिसमें देर हुई हो; धीमी लयवाला, द्रुतका उलटा (संगीत) । **-करना**-स० क्रि० (पोस्टपोन) (कोई प्रश्न; कार्य, विचारादि) किसी भावी तिथि या समयके लिए टाल देना, निश्चित या अनिश्चित कालतक रोक रखना ।

विलंभ-पु० [सं०] भेंट; दान; उदारता ।

विलक्षण-वि० [सं०] अलौकिक, असाधारण; भिन्न चिह्नोंवाला; जिसमें कोई विशेष लक्षण न हो; वह अवस्था जिसका कारण न जान पड़े; अशुभ चिह्नोंवाला ।

विलक्षित-वि० [सं०] अचिह्नित; जो गौरसे देखा, समझा गया हो; हतबुद्धि, चकराया हुआ; कुढ़ा हुआ; जिसका भेद न किया गया हो, पार्थक्य न दिखलाया गया हो ।

विलक्ष्य-वि० [सं०] जिसका कोई लक्ष्य न हो; निशाना चूक जानेवाला (बाण) ।

विलखना-अ० क्रि० दुःखी होना;*ताड़ जाना, भाँप लेना ।

विलखाना*-स० क्रि० कष्ट देना, दुःख देना । अ० क्रि० दुःखित होना ।

विलग-वि० अलग । पु० अंतर, भेद ।

विलगाना*-स०क्रि०अलग करना । अ०क्रि०अलग होना ।

विलग्न-वि० [सं०] आबद्ध, संबद्ध, संलग्न; अवलंबित; लटकता हुआ; पतला, नाजुक । **-मध्या**-स्त्री० पतली कमरवाली स्त्री ।

विलच्छन*-वि० दे० 'विलक्षण' ।

विलज्ज-वि० [सं०] निर्लज्ज, बेहया ।

विलज्जित-वि० [सं०] लजाया हुआ, शर्मिंदा ।

विलपन-पु० [सं०] विलाप करना; गप-शप करना; तेल आदिका नीचे बैठा हुआ मैल ।

विलपना*-अ० क्रि० रोना, विलाप करना ।

विलपाना*-स० क्रि० रुलाना, विलाप कराना ।

विलपित-वि० [सं०] रोया, विलाप किया हुआ । पु० विलाप ।

विलय-पु० [सं०] द्रवण, विगलन; विलीन होना; (मर्जर) किसी छोटे राज्यका पड़ोसके बड़े राज्यमें मिलकर एक हो जाना, इस तरह संयुक्त हो जाना कि उसकी पृथक् सत्ताका विलोप हो जाय; लोप; मृत्यु; नाश; प्रलय ।

विलयन-पु० [सं०] द्रवण, विगलन; विलय; क्षय होना; हटाना, दूर करना; क्षय करना; क्षय करनेवाला पदार्थ ।

विलसन-पु० [सं०] चमकना; क्रीड़न ।

विलसना*-अ० क्रि० शोभित होना; विलास करना,

मौज, आनंद करना।

विलसाना*–स० क्रि० भोगना; भोगनेमें प्रवृत्त करना।

विलसित–वि० [सं०] चमकता हुआ; शोभित; व्यक्त; विनोदी।

विलाप–पु० [सं०] रोना; शोक करना।

विलापना*–अ० क्रि० विलाप करना।

विलापी (पिन्)–वि० [सं०] रोने, विलाप करनेवाला।

विलायत–स्त्री० [अ०] विदेश; ईरान-अफगानिस्तान; ब्रिटेन; यूरोप।

विलायती–वि० विलायतका; ईरानी; यूरोपीय; विदेशी। –**डाक**–स्त्री० यूरोपसे आनेवाली चिट्ठियाँ, अखबार आदि। –**बैंगन,**–**भंटा**–पु० एक तरहका सफेद बैंगन; टमाटर।

विलास–पु० [सं०] चमकना; व्यक्त होना; क्रीड़ा; प्रणय-क्रीड़ा; हाव-भाव; सजीवता; लंपटता; सौंदर्य; आनंद; सुखोपभोग; किसी चीजका सुंदर ढंगसे हिलना-डुलना; अंगभंगी; एक वृत्त। –**कोदंड,**–**चाप,**–**धन्वा (न्वन्)**–पु० कामदेव। –**गृह,**–**भवन,**–**मंदिर**–पु० प्रमोदगृह।

विलासक–वि० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करनेवाला; नृत्य करनेवाला।

विलासन–पु० [सं०] क्रीड़ा; प्रेमालिंगन; विमोहन।

विलासिनी–स्त्री०[सं०] सुंदरी युवती; कामुक स्त्री; वेश्या।

विलासी (सिन्)–वि० [सं०] सुखभोगमें डूबा रहनेवाला, क्रीड़ाशील; कामी; आरामतलब।

विलिखित–वि० [सं०] खरोंचा हुआ; लिखा हुआ।

विलीक*–वि० व्यलीक, अनुचित।

विलीन–वि० [सं०] संबद्ध, संलग्न; जड़ा हुआ; छिपा हुआ; लुप्त; नष्ट।

विलीयन–पु० [सं०] पिघलना, घुलना।

विलुंठन–पु० [सं०] लूटना; चोरी करना; लोटना।

विलुंठित–वि० [सं०] जो लूटा गया हो; लोटा हुआ।

विलुप्त–वि० [सं०] भंग किया हुआ; क्षीण; नष्ट; गायब; अपहृत; लूटा हुआ। –**वित्त**–वि० जिसका धन लूट लिया गया हो।

विलुलित–वि० [सं०] हिलता हुआ, लहराता हुआ; अस्थिर; क्षुब्ध; अस्त-व्यस्त।

विलेख–पु० [सं०] खरोंचना; फाड़ना; आहत करना; (डीड) वह लिखित या मुद्रित साधनपत्र जिसमें किसी समझौते, संविदा, विक्रय आदिका विवरण दिया गया हो और जिसपर निष्पादकने विधिवत् हस्ताक्षर किये हों (तथा उसे दूसरे पक्षके पास भेज दिया हो), संलेख।

विलेखन–पु० [सं०] खरोंचना; खोदना; उखाड़ना; चिह्न बनाना; चीरना; नदीका मार्ग; विभाग करना। वि० खरोंचनेवाला।

विलेप–पु० [सं०] लेप, चुपड़नेकी चीज; अंगराग; गारा, पलस्तर; लेपना; गारा लगाना।

विलेपन–पु० [सं०] अंगराग लगाना; लगाने, लेप करनेका पदार्थ, अंगराग।

विलेपनी–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे अंगराग लगा हो; सुवेशा स्त्री; माँड़।

विलेपी (पिन्)–वि० [सं०] लेप करनेवाला; पलस्तर करनेवाला; लसदार; चिपका हुआ, साथ लगा हुआ।

विलेप्य–वि० [सं०] जिसका लेप या पलस्तर किया जाय (गारा आदि)।

विलेवासी(सिन्)–पु० [सं०] सर्प।

विलेशय–पु० [सं०] बिलमें रहनेवाला जीव, सर्प, चूहा, गोह, खरहा आदि।

विलोकन–पु० [सं०] देखना; विचार करना; तलाश करना; जानकारी हासिल करना; ध्यान देना, अध्ययन।

विलोकना*–स० क्रि० देखना।

विलोकनि*–स्त्री० देखनेकी क्रिया।

विलोकनीय–वि० [सं०] देखने योग्य; समझने योग्य; सुंदर।

विलोकी(किन्)–वि० [सं०] देखनेवाला; जानकारी हासिल करनेवाला।

विलोचन–पु० [सं०] आँख; नजर। –**पथ**–पु० दृष्टिपथ।

विलोचनांबु–पु० [सं०] आँसू।

विलोडक–पु० [सं०] चोर।

विलोडन–पु० [सं०] मथना; हिलाना; इधर-उधर करना।

विलोड़ना–स० क्रि० मथना; क्षुब्ध करना; हिलाना।

विलोडित–वि० [सं०] हिलाया हुआ; क्षुब्ध; मथित।

विलोना–स० क्रि० दे० 'बिलोना'।

विलोप–पु० [सं०] अपहरण, लेकर भाग जाना; बाधा; (ओमीशन) किसी वाक्य, रचना आदिसे कुछ अंश निकाल देनेकी क्रिया; (कैंसेलेशन) रद कर देना, काट देना, निकाल देना।

विलोपन–पु० [सं०] भंग करना; नष्ट करना; काटकर या तोड़कर अलग करना; लूटना; लुप्त करना; (ओमीशन; कैंसेलेशन) दे० 'विलोप'।

विलोपना*–स० क्रि० लोप करना; लेकर भागना; बाधा डालना।

विलोपित–वि० [सं०] भंग किया हुआ; नष्ट किया हुआ; लुप्त किया हुआ।

विलोपी(पिन्)–पु० [सं०] नाश, विलोप करनेवाला; भंग करनेवाला।

विलोपीकरण–पु० [सं०] (रिपील) विलुप्त कर देना, रद या अप्रभावी कर देना।

विलोप्य–वि०[सं०] तोड़ने, भंग करने, नष्ट करने योग्य।

विलोभन–पु० [सं०] भ्रममें डालना; बहकाना; प्रलोभन।

विलोम–वि०[सं०] उलटा, विपरीत, क्रम या रीतिविरुद्ध; उलटे क्रमसे उत्पन्न; पीछेका। पु० उलटा क्रम; सर्प; कुत्ता; वरुण; पानी निकालनेका एक यंत्र; स्वरका अवरोह।

विलोमा(मन्)–वि० [सं०] उलटी ओर मुड़ा हुआ; केशरहित।

विलोमित–वि० [सं०] उलटा हुआ।

विलोमी–स्त्री० [सं०] आँवला।

विलोल–वि० [सं०] चंचल, अस्थिर; क्षुब्ध; ढीला; अस्त-व्यस्त; बिखरे हुए (बाल); सुंदर। –**तारक**–वि० चंचल आँखोंवाला। –**लोचन**–वि० जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हों। –**हार**–वि० जिसका हार हिल रहा हो।

विलोलित–वि० [सं०] घुमाया, हिलाया हुआ; क्षुब्ध किया

हुआ। **–दृक्(श)**–वि० जिसकी आँखें चंचल हों।

विलोलुप–वि० [सं०] तृष्णारहित, जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो।

विल्व–पु० [सं०] दे० 'बिल्व'।

विंवंधक–पु० [सं०] रोकनेवाला; कब्ज करनेवाला।

विव*–वि० दूसरा; दो।

विवक्ता(क्तृ)–वि० [सं०] कहनेवाला; व्याख्याता; सुधार करनेवाला।

विवक्षा–स्त्री० [सं०] कहने, व्यक्त करनेकी इच्छा; इच्छा; अभिप्राय, आशय; संदेह; हिचक।

विवक्षित–वि० [सं०] कथनीय; कथित, उक्त; अभिप्रेत, इच्छित, अभिलषित; अपेक्षित; प्रधान; प्रिय; शाब्दिक। पु० अभिप्राय; उद्देश्य;आशय, अर्थ; जो कहनेकी इच्छा हो।

विवक्षु–वि० [सं०] बोलनेकी इच्छा रखनेवाला।

विवदना*–अ० क्रि० झगड़ा, विवाद करना।

विवर–पु० [सं०] बिल; गड्ढा; गुफा; अवकाश; एकांत स्थान; छिद्र, दोष; अंतर।

विवरण–पु० [सं०] व्याख्या; वर्णन; ब्योरा। **–पत्रिका**–स्त्री० (प्रास्पेक्टस) किसी विद्यालय या किसी परीक्षा आदिकी नियमावली, पाठ्यक्रम तथा अन्य विवरण देनेवाली पुस्तिका।

विवरणिका–स्त्री० [सं०] किसी घटना या संस्था आदिकी काररवाईका क्रमबद्ध विवरण जो किसीके लिए तैयार किया जाय।

विवरणी–स्त्री० [सं०] (रिटर्न) आँकड़ों आदिके साथ तैयार की गयी पैदावार आदिकी (सरकारी) रिपोर्ट जो उच्चाधिकारियोंके पास भेजी जाय।

विवरना*–स० क्रि० अ० क्रि० दे० 'बिवरना'।

विवर्जन–पु० [सं०] त्याग, परहेज; उपेक्षा; निषेध।

विवर्जित–वि०[सं०] मना किया हुआ; परित्यक्त; वंचित।

विवर्ण–वि० [सं०] वर्णहीन; बदरंग; बेआब; नीच; श्रीहत। पु० एक भाव जिसमें भय आदिके कारण चेहरेका रंग फीका पड़ जाता है।

विवर्त–पु० [सं०] घूमना, गोलाईमें चक्कर लगाना; चक्र, भँवर; रूपांतर; भ्रम।

विवर्तन–पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; पीछेकी ओर घूमना; नीचेकी ओर लुढ़कना।

विवर्तित–वि० [सं०] घूमा या घुमाया हुआ; चक्कर खाया हुआ; परिवर्तित; निवारित; स्थानभ्रष्ट; खंडित; उन्मीलित।

विवर्धन–पु० [सं०] बाढ़, वृद्धि; अभ्युदय; विभाग, खंडित करना। वि० बढ़ानेवाला; वृद्धि, अभ्युदय करनेवाला।

विवर्धित–वि० [सं०] बढ़ा या बढ़ाया हुआ; उन्नत किया हुआ; संतुष्ट; प्रसन्न।

विवश–वि० [सं०] शक्तिहीन; लाचार; अधीन; जिसका अपनेपर वश न हो।

विवशता–स्त्री० [सं०] लाचारी; असहायावस्था।

विवस*–वि० दे० 'विवश'।

विवसता*–स्त्री० दे० 'विवशता'।

विवसन–वि० [सं०] वस्त्रहीन, नग्न। पु० दिगंबर जैन।

विवस्त्र–वि० [सं०] वस्त्ररहित, नंगा।

विवस्वान्(स्वत्)–पु०[सं०] सूर्य; सूर्यका सारथि अरुण।

विवाद–पु० [सं०] बहस; झगड़ा; खंडन; मुकदमा। **–निवारक समिति**–स्त्री० (कंसीलियेशन बोर्ड) श्रमिकों तथा कारखानेदारों आदिके बीच चलनेवाले झगड़ोंको निपटानेका प्रयत्न करनेवाली समिति। **–शमन**–पु० झगड़ा तै करना। मु० **–उठाना**–बहस शुरू करना; झगड़ा खड़ा करना।

विवादांतप्रस्ताव–पु० [सं०] (मोशन आफ क्लोजर) (संसद या विधानसभा आदिमें) विवाद समाप्त करनेके लिए पूरी सभा द्वारा किया गया प्रस्ताव, समापनप्रस्ताव।

विवादार्थी(र्थिन्)–पु० [सं०] वादी, मुद्दई; मुकदमा लड़नेवाला।

विवादास्पद–पु० [सं०] विवादका विषय, विवाद-वस्तु। वि० जो विवादका विषय हो, विवादके योग्य (हिं०)।

विवादी(दिन्)–वि० [सं०] कलह करनेवाला, झगड़ालू; मुकदमेबाज।

विवास–पु० [सं०] गृहत्याग; निर्वासन; पार्थक्य।

विवासन–पु० [सं०] निर्वासित करना।

विवासित–वि० [सं०] निर्वासित।

विवाह–पु० [सं०] शादी, दांपत्यसूत्रमें आबद्ध होनेकी एक प्रथा। **–काम**–वि० विवाहेच्छु। **–काल,–समय**–पु० ब्याह करनेका उचित समय। **–विच्छेद**–पु० पति-पत्नीका विवाह-संबंध तोड़ना, तलाक। **–संबंध**–पु० विवाहके द्वारा होनेवाला संबंध।

विवाहना*–स० क्रि० दे० 'ब्याहना'।

विवाहित–वि० [सं०] ब्याहा हुआ।

विवाहिता–वि० स्त्री० [सं०] जिस(स्त्री)का पाणिग्रहण-संस्कार हो चुका हो, ब्याही हुई।

विवाही*–वि० स्त्री० विवाहिता, ब्याही हुई।

विवि*–वि० दो; दूसरा।

विविक्त–वि० [सं०] वियुक्त, पृथक् किया हुआ; अकेला; अकेलेमें गुप्त रूपसे किया जानेवाला (विचार); गंभीर। पु० एकांत स्थान; एकाकीपन।

विविध–वि० [सं०] विभिन्न प्रकारका, कई तरहका।

विविर–पु० विवर, गुफा, खोह; बिल; दरार।

विवीत–पु० [सं०] घिरा हुआ स्थान, विशेष कर गोचर भूमि। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० गोचर भूमिका स्वामी।

विवृत–वि० [सं०] व्यक्त; स्पष्ट, प्रत्यक्ष; खुला हुआ; घोषित; जिसकी व्याख्या की गयी हो; फैला हुआ; विस्तृत; नग्न; तरुहीन। **–द्वार**–वि० जिसका द्वार खुला हो; अनियंत्रित; असीम। **–भाव**–वि० निष्कपट, स्वच्छहृदय।

विवृतानन–वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो।

विवृति–स्त्री० [सं०] भाष्य, टीका; प्रकटीकरण; स्पष्टीकरणके लिए दिया गया वक्तव्य।

विवृतोक्ति–स्त्री० [सं०] स्पष्ट कथन; एक अर्थालंकार, जहाँ श्लेषसे छिपायी हुई बात कवि द्वारा स्वयं प्रकट कर दी जाय।

विवृत्त–वि० [सं०] ऐंठा हुआ; चलित; चक्कर खाता हुआ; भ्रमणशील; लौटा हुआ; अनावृत; प्रदर्शित।

विवृत्ति-स्त्री० [सं०] फैलाव, विकास; चक्कर खाना; लुढ़कना।

विवृद्धि-स्त्री० [सं०] बाढ़, वृद्धि; उन्नति, तरक्की; समृद्धि। **-कर**-वि० उन्नत करनेवाला।

विवेक-पु० [सं०] यथार्थ ज्ञान; विचार, छान-बीन; भले-बुरेकी पहचान; वस्तुओंमें उनके गुणके अनुसार भेद करनेकी शक्ति। **-रहित**-वि० ज्ञानहीन। **-विरह**-पु० अज्ञान। **-विशद**-वि० स्पष्ट, बोधगम्य। **-विश्रांत**-वि० मूर्ख, ज्ञानहीन।

विवेकवान्(वत्)-वि० [सं०] ज्ञानी, विचारवान्।

विवेकाधीन-वि० [सं०] (इन दि डिसक्रीशन) (किसीकी) विवेक बुद्धिके अधीन या उसपर अवलंबित।

विवेकिता-स्त्री० (सं०] विवेकी, ज्ञानी होनेका भाव, विचार-शीलता।

विवेकी(किन्)-वि० [सं०] भले-बुरेकी पहचान करनेवाला; ज्ञानी, विचारवान्; छान-बीन करनेवाला।

विवेचक-वि० [सं०] जो विवेचन, भले-बुरेका भेद कर सके; चतुर, ज्ञानी।

विवेचन-पु० [सं०] विवेक, सदसत्‌का निर्णय; अनुसंधान; मीमांसा; परीक्षण।

विवेचनीय-वि० [सं०] विवेचन करने योग्य।

विवेचित-वि० [सं०] निश्चित, तै किया हुआ; विवेचन किया हुआ; जिसका अनुसंधान किया गया हो।

विव्वोक-पु० [सं०] दे० 'विब्बोक'।

विशंक-वि० [सं०] शंकारहित, निर्भय; निरापद्।

विशद-वि० [सं०] साफ, स्वच्छ; बेदाग; श्वेत; चमकीला; सुंदर; स्पष्ट; प्रकट; शांत; चिंतारहित।

विशल्य-वि० [सं०] कष्टरहित; काँटेसे मुक्त; जिसका बाणका घाव भर गया हो। **-करण**-वि० बाणका घाव भरनेवाला।

विशल्या-स्त्री० [सं०] गुडूची; अग्निशिखा; दंती।

विशसिता (तृ)-पु०[सं०] काटने, चीरनेवाला; चांडाल।

विशस्त-वि० [सं०] काटा हुआ; उजड्ड, धृष्ट; प्रशंसित।

विशस्त्र-वि० [सं०] शस्त्रहीन।

विशांपति-पु० [सं०] राजा; जामाता; व्यापारियोंका मुखिया।

विशाखा-स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र; पूर्वा; श्वेत पुनर्नवा; एक प्राचीन जनपद।

विशारद-वि० [सं०] अनुभवी, कुशल; विद्वान्; चतुर।

विशाल-वि० [सं०] बृहत्, बड़ा; विस्तृत; भव्य; प्रख्यात; शक्तिशाली।

विशालता-स्त्री० [सं०] महत्ता, गुरुता; विस्तार; ख्याति।

विशाला-स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी; उज्जयनी नगरी; उपोदकी; महेंद्रवारुणी; एक तीर्थ; दक्षकी एक कन्या।

विशालाक्ष-वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला। पु० एक तरहका उल्लू; शिव; गरुड़; एक नाग।

विशालाक्षी-स्त्री० [सं०] बड़ी आँखोंवाली स्त्री; नागदंती; पार्वती; स्कंदकी एक मातृका; एक योगिनी।

विशिख-वि०[सं०] शिखाहीन; गंजा; (बाण) जिसकी नोक भोथरी हो गयी हो; (आग) जिसमें लपट न हो; पुच्छहीन (धूमकेतु)। पु० बाण; भाला; एक तरहका सरकंडा।

विशिष्ट-वि० [सं०] विशेषतायुक्त; असाधारण; प्रसिद्ध; उत्तम;...में सर्वश्रेष्ठ; युक्त; विशेष रूपसे शिष्ट, भद्र। **-कुल**-वि० सद्वंशजात। पु० उत्तम कुल। **-जनीन मतसंग्रह**-पु० (गैलप-पाल) सर्वसाधारण जनताका प्रतिनिधित्व कर सकनेवाले विशिष्ट जन-समूह द्वारा किसी विषयपर प्रकट किये गये मतोंका संग्रह, जिसकी व्यवस्था प्रायः किसी समाचारपत्रादि या मतसंग्रह करानेवाली संस्थाओं द्वारा की जाती है।

विशिष्टता-स्त्री० [सं०] विशेषता।

विशिष्टांग-पु० [सं०] (फीचर्स) किसी वस्तु, नाटक, लेख, समाचारपत्र आदिकी मुख्य विशेषताएँ।

विशिष्टाद्वैत-पु० [सं०] रामानुज द्वारा प्रवर्तित एक मत जिसमें प्रकृति और पुरुषको भिन्न और सत्य मानते हुए भी दोनोंको अभिन्न मानते हैं। **-वादी(दिन्)**-वि० विशिष्टाद्वैत मतका अनुयायी।

विशिष्टाधिकार-पु० [सं०] (प्रीरोगेटिव) राजा या प्रधान शासकका वह विशिष्ट अधिकार जिसपर सिद्धांततः किसी तरहका प्रतिबंध न हो (परमाधिकार); वह विशेष अधिकार जिसका और कोई भागीदार न हो; किसीके विशेष पद, स्थिति आदिसे उद्भूत होनेवाला विशेष अधिकार।

विशिष्टीकरण-पु०[सं०](स्पेशलाइजेशन) विशिष्ट लक्षणोंके अनुसार किसी वस्तुको पृथक् या स्वतंत्र करना; विशेषता-सूचक (विशिष्ट) रूप देना; किसी विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना, विशिष्ट अध्ययन करना, विशेषता प्राप्त करना।

विशीर्ण-वि० [सं०] क्षीण; भग्न; बिखरा हुआ; जो तितर-बितर हो गया हो (सैन्य); गिरा हुआ (दंतादि); अपव्यय किया हुआ, उड़ाया हुआ (खजाना); नष्ट, ध्वस्त; शुष्क।

विशुद्ध-वि० [सं०] साफ किया हुआ; पवित्र; निष्पाप; बेदाग; ठीक; धर्मात्मा; विनम्र; चमकता हुआ सफेद; सुनिश्चित; सर्फ, खर्च किया हुआ (खजाना)। **-चरित्र**-वि० शुद्ध चरित्रवाला।

विशुद्धात्मा (त्मन्)-वि० [सं०] जिसका आचरण पवित्र हो।

विशुद्धि-स्त्री० [सं०] पवित्रता, शुद्धता; संदेह आदि दूर करना; (वैर, ऋणका) परिशोध; भूलसुधार; पूर्ण ज्ञान; सादृश्य। **-चक्र**-पु० एक चक्र जिसका स्थान गलेमें माना जाता है। **-वाद**-पु० (प्यूरिटैनिज्म) विशुद्ध या कठोर धार्मिक जीवनको प्रधानता देनेवाला प्रोटेस्टैंट ईसाइयोंका सिद्धांत, कठोरतावाद; कठोर जीवन।

विशूचिका-स्त्री० दे० 'विसूचिका'।

विशून्य-वि० [सं०] पूर्णतः रिक्त।

विश्रृंखल-वि० [सं०] श्रृंखलारहित, बंधनहीन; अनियंत्रित; लंपट; बहुत अधिक शब्द करनेवाला।

विश्रृंग-वि० [सं०] बिना सींगका, श्रृंगहीन; (वह पर्वत) जिसके कोई चोटी न हो।

विशेष-वि० [सं०] असाधारण, असामान्य; अधिक; प्रचुर। पु० भेद; खास धर्म या गुण; एक अर्थालंकार-(१) जहाँ

बिना आधारके ही आधेयका वर्णन हो. (२) थोड़ा सा काम करनेपर ही बड़ा काम या लाभ हो अथवा (३) जहाँ एक वस्तुका एक साथ कई स्थानोंमें होना वर्णित हो। **–ज्ञ,–विद्**–वि० किसी विषयका विशेष ज्ञान रखनेवाला।

विशेषक–वि० [सं०] भेद स्पष्ट करनेवाला (चिह्न)। पु० भेद करनेवाला गुण; तिलक; रंगीन गंधद्रव्यसे शरीरपर रेखाएँ खीचना; एक अर्थालंकार।

विशेषण–वि० [सं०] विशेषताद्योतक। पु० संज्ञाका गुण बतलानेवाला शब्द (व्या०), विशेषता, अंतर प्रकट करनेवाला चिह्न।

विशेषता–स्त्री० [सं०] खसूसियत, खूबी।

विशेषना*–स० क्रि० विशेषता प्रदान करना।

विशेषित–वि० [सं०] विशेषणयुक्त; लक्षित; विशेष गुणके द्वारा जिसका भेद किया गया हो; उत्तम, श्रेष्ठ। **–स्वीकृति**–स्त्री० (कालिफाइड एक्सेप्टेंस) किसी प्रस्ताव आदिके संबंधमें विशेष प्रतिबंधोंके साथ या सीमित स्थितिमें दी गयी स्वीकृति, सप्रतिबंध स्वीकृति।

विशेषोक्ति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार, जहाँ पूर्ण या समर्थ कारणके रहते हुए भी कार्यका न हो सकना दिखाया जाय।

विशेष्य–पु० [सं०] विशेषणयुक्त संज्ञा (व्या०)। वि० जिसका भेद करना हो, विशेषता दिखलानी हो।

विशोक–पु० [सं०] शोकका अंत। वि० शोकरहित; जिसमें शोककी कोई चर्चा न हो।

विशोणित–वि० [सं०] रक्तहीन।

विशोधन–पु० [सं०] शुद्ध करना, साफ करना।

विशोधनीय–वि० [सं०] शुद्ध, साफ करने योग्य; रेचन कराने योग्य; सुधार करने योग्य।

विशोधित–वि० [सं०] साफ, शुद्ध किया हुआ; मैल, दाग आदिसे मुक्त किया हुआ।

विशोषण–वि० [सं०] शुष्क करनेवाला; (घाव) सुखानेवाला। पु० शुष्क करनेकी क्रिया।

विशोषित–वि० [सं०] शुष्क किया हुआ; मुर्झाया हुआ।

विशोषी(षिन्)–वि० [सं०] अच्छी तरह सोखनेवाला; सुखानेवाला।

विश्–स्त्री० [सं०] दे० 'विट्' (कन्या, प्रजा)।

विश्रंभ–पु० [सं०] विश्वास; घनिष्ठता, आत्मीयता; गोपनीय विषय; विश्राम; प्रणय-कलह; स्नेहपूर्वक पूछताछ करना। **–कथा**–स्त्री० प्रेमालाप।

विश्रंभण–पु० [सं०] विश्वास प्राप्त करना।

विश्रंभी(भिन्)–वि० [सं०] विश्वास करनेवाला; विश्वस्त।

विश्रब्ध–वि० [सं०] विश्वसनीय; निर्भीक; शांत; धीर। **–नवोढा**–स्त्री० नायकपर विश्वास करनेवाली नवोढा नायिका।

विश्रांत–वि० [सं०] सुस्ताया हुआ, विश्राम किया हुआ; विश्राम करनेवाला; शांत; घटा हुआ (दुःखादि)।

विश्रांति–स्त्री० [सं०] आराम, विश्राम; कमी; अंत। **–काल**–पु० (रिसेस) दे० 'अल्पावकाश'।

विश्राम–पु० [सं०] श्रम दूर करना; आराम; शांति; आराम करनेकी जगह। **–भवन**–पु० (रेस्ट-हाउस) यात्रा या दौरेपर जानेवाले व्यक्तियों अथवा छोटे अधिकारियों आदिके ठहरने, भोजन, विश्रामादि करनेके लिए बनाया गया भवन। **–वेश्म(न्)**–पु० आराम करनेका कमरा।

विश्रामालय–पु० [सं०] पांथशाला, यात्रियोंके विश्राम करनेका स्थान; दे० 'विश्राम-भवन' (रेस्ट-हाउस)।

विश्री–वि० [सं०] श्रीहीन, कांतिहीन; बदशकल।

विश्रुत–वि० [सं०] बहा हुआ; विख्यात; प्रसिद्ध।

विश्रुति–स्त्री० [सं०] ख्याति; क्षरण, स्राव।

विश्लथ–वि० [सं०] ढीला; बंधनमुक्त; क्लांत।

विश्लथित–वि० [सं०] ढीला, बंधनमुक्त किया हुआ।

विश्लिष्ट–वि० [सं०] ढीला किया हुआ; पृथक् किया हुआ; दलसे अलग किया हुआ; स्थान-भ्रष्ट (अंगादि)।

विश्लेष–पु० [सं०] वियोग; विप्रलंभ; पार्थक्य; हानि।

विश्लेषण–पु० [सं०] पृथक् करना, किसी चीजके अंगोंको अलग-अलग करना; भंग करना।

विश्लेषी(षिन्)–वि० [सं०] बिखरनेवाला; ढीला किया हुआ; (प्रिय वस्तुसे) अलग, वियुक्त।

विश्वंभर–वि० [सं०] सबका भरण करनेवाला। पु० ईश्वर।

विश्वंभरा, विश्वंभरी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्व–पु० [सं०] एक देववर्ग; समग्र ब्रह्मांड; संसार; विष्णु। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सृष्टिका रचयिता, परमेश्वर। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० देवशिल्पी; सूर्य; परमेश्वर; शिव; राज; बढ़ई। **–काय**–वि० ब्रह्मांड जिसका शरीर है। पु० विष्णु। **–कोश,–कोष**–पु० वह भंडार जिसमें विश्वकी सारी वस्तुएँ संगृहीत हों; वह ग्रंथ जिसमें संसारके सारे विषयोंका विवरण हो। **–गुरु**–पु० लोकपिता, विष्णु। **–गोचर**–वि० सबके लिए बोधगम्य। **–चक्षु(स्)**–वि० सबको देखनेवाला। पु० विष्णु। **–जनीन,–जनीय,–जन्य**–वि० सबके लिए उपयुक्त; सबके लिए लाभदायक। **–जयी(यिन्)**–वि० संसारको जीतनेवाला। **–जित्**–वि० सबको जीतनेवाला। **–नाथ**–पु० शिव; काशीका एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग। **–नाथनगरी,–नाथपुरी**–स्त्री० काशी। **–पा**–पु० सबकी रक्षा करनेवाला, परमात्मा; सूर्य। **–पाल**–पु० विश्वका पालन करनेवाला, ईश्वर। **–पावन**–वि० सबको पवित्र करनेवाला। **–पावनी,–पूजिता**–स्त्री० तुलसी। **–पूजित**–वि० सबके द्वारा पूजा जानेवाला। **–पूज्य**–वि० सर्वसम्मान्य। **–प्रकाशक**–पु० सबको प्रकाशित करनेवाला, सूर्य। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० सबका भरण करनेवाला, ईश्वर। **–भुक(ज्)**–वि० सबका भोग करनेवाला। पु० इंद्र। **–भोजन**–पु० सब प्रकारकी चीजें खाना। **–मूर्ति**–वि० सब रूपोंमें रहनेवाला, सर्वव्यापक। पु० ईश्वर; शिव। **–मोहन**–वि० सबको मुग्ध करनेवाला। **–लोचन**–पु० सूर्य; चंद्रमा। **–विख्यात**–वि० जो सारे संसारमें प्रसिद्ध हो। **–विजयी(यिन्)**–वि० सबको विजित करनेवाला। **–विद्**–वि० सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ। पु० ईश्वर। **–विद्यालय**–पु० वह महान् विद्यापीठ जिसमें विविध

विषयोंकी उच्च शिक्षा देनेवाले अनेक महाविद्यालय हों। **-विश्रुत**-वि० विश्वविख्यात। **-व्यापक,-व्यापी(पिन्)**-वि० जो सर्वत्र व्याप्त हो। पु० ईश्वर। **-श्रवा(वस्)**-पु० रावणका पिता। **-श्री**-वि० सबके लिए उपयोगी (अग्नि)। **-संभव**-वि० जिससे सब कुछ उत्पन्न हुआ हो। पु० ईश्वर। **-संहार**-पु० विश्वका नाश **-सख**-पु० सबका मित्र। **-सृक्(ज्)**-वि० सबकी रचना करनेवाला। पु० ब्रह्मा। **-सृष्टि**-स्त्री० विश्वकी रचना। **-स्रष्टा(ष्टृ)**-पु० सृष्टिका रचयिता। **-स्वास्थ्य-संघटन**-पु० (वर्ल्ड हेल्थ-आरगेनिज़ेशन) संसारके विभिन्न देशोंमें लोकस्वास्थ्यकी उन्नतिके प्रयत्नोंमें सहायता करनेवाली अंतरराष्ट्रीय संस्था। **-हर्ता(र्तृ)**-पु० शिव। **-हेतु**-पु० सबकी उत्पत्तिका कारण, विष्णु।

विश्वसनीय-वि० [सं०] विश्वास-योग्य, जिसका एतबार किया जा सके।

विश्वस्त- वि० [सं०] विश्वसनीय; विश्वासपूर्ण; निर्भय।

विश्वात्मा(त्मन्)-पु० [सं०] ईश्वर; सूर्य; ब्रह्मा; शिव।

विश्वाद्-वि० [सं०] सर्वभक्षी। पु० अग्नि।

विश्वाधार-पु० [सं०] विश्वका सहारा, ईश्वर।

विश्वाधिप-पु० [सं०] विश्वका स्वामी, ईश्वर।

विश्वामित्र-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि (ये मूलतः क्षत्रिय थे। इनके पिताका नाम गाधि था और ये कान्यकुब्जके नरेश थे। एक गाय-नंदिनी-के लिए वसिष्ठसे इनका युद्ध हुआ जिसमें ये पराजित हो गये। ब्राह्मणत्वका इनपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और ये उसे प्राप्त करनेके लिए तपस्या करने लगे। अंतमें इसमें उन्हें सफलता मिली और वसिष्ठने भी इन्हें ब्रह्मर्षिके रूपमें स्वीकार कर लिया)।

विश्वास-पु० [सं०] किसीके विषयमें उसके विशेष प्रकारका होनेकी धारणा, यकीन; भरोसा; गुप्त संवाद या भेद। **-कारक,-कृत्**-वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला। **-घात**-पु० विश्वासके विपरीत कार्य करना। **-घातक,-घाती(तिन्)**-वि० विश्वास भंग करनेवाला; विश्वासके विपरीत कार्य करनेवाला। **-पात्र,-भाजन**-वि० जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय। **-प्रद**-वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला। **-प्रस्ताव**-पु० (मोशन ऑफ कॉनफिडेंस) किसी मंत्रिमंडलमें या किसी संस्थाके अध्यक्षादिमें विश्वास प्रकट करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला प्रस्ताव। **-भंग**-पु० विश्वासके प्रतिकूल कार्य करना।

विश्वासिक-वि० [सं०] जो विश्वासयोग्य हो।

विश्वासी(सिन्)-वि० [सं०] विश्वास करनेवाला; जिसका विश्वास किया जाय; दे० 'बिसवासी'।

विश्वास्य-वि० [सं०] विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य।

विश्वेदेव-पु० [सं०] अग्नि; एक देववर्ग; तेरहकी संख्या।

विश्वेश-पु० [सं०] विश्वका स्वामी (ब्रह्मा, विष्णु; शिव)।

विश्वेश्वर-पु० [सं०] ईश्वर; शिवकी एक मूर्ति (काशीस्थ)।

विश्वोत्पत्ति-विज्ञान-पु० [संव] (कॉस्मोगोनी) विश्वकी उत्पत्ति तथा विकासका विवेचन करनेवाला विज्ञान, सृष्टिविज्ञान।

विष-पु० [सं०] जहर; गरल; वत्सनाभ; जल; कमलनाल; एक सुगंधित गोंद। **-कंठ**-पु० शिव। **-कन्यका,-कन्या**-स्त्री० वह विषाक्त कन्या जिससे संभोग करनेवालेकी मृत्यु हो जाती है। **-कुंभ**-पु० विषपूर्ण घट। **-घातक**-वि० विषका प्रभाव हरण करनेवाला; विषका प्रयोग कर मारनेवाला। **-घाती(तिन्)**-वि० विषका प्रभाव नष्ट करनेवाला। **-घ्न**-वि० विषनाशक। पु० सिरिसका पेड़; जवासा। **-तंत्र**-पु० साँप आदिका विष दूर करनेकी प्रक्रिया (आ० वे०)। **-दंड**-पु० विषका हरण करनेवाली जादूकी लकड़ी; कमलनाल। **-दोषहर**-वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला। **-धर**-वि० विषैला। पु० साँप; जलाधार। **-धरी**-स्त्री० सर्पिणी। **-पन्नग**-पु० जहरीला साँप। **-पुच्छ**-पु० बिच्छू। **-प्रयोग**-पु० औषधमें विषका प्रयोग करना। **-भक्षण**-पु० जहर खाना। **-भिषक्(ज्)**-पु० विषवैद्य। **-मंत्र**-पु० सर्पदंशका मंत्र; मंत्र द्वारा सर्पविष दूर करनेवाला, सँपेरा। **-वमन**-पु० जहर उगलना, बहुत ही अप्रिय एवं कड़वी बातें कहना। **-विज्ञान**-पु० (टॉक्सिकोलॉजी) विषोंकी उत्पत्ति, प्रभाव आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **-वृक्ष**-पु० विषैला वृक्ष; गूलर। **-वृक्ष-न्याय**-पु० एक न्याय जिसमें कहा जाता है कि वस्तु बुरी होते हुए भी उत्पादकको उसे नष्ट नहीं करना चाहिये। **-वैद्य**-पु० औषधि या मंत्र आदिसे विषका प्रभाव दूर करनेवाला। **-व्रण**-पु० एक तरहका विषैला फोड़ा, जहरबाद। **-हंता(तृ)**-वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला। पु० सिरिस। **-हर**-पु० विषका प्रभाव हरनेवाला मंत्र या औषध; चोरक। **-हा(हन्)**-वि० विष नष्ट करनेवाला। पु० एक तरहका कदंब। **-हीन**-वि० जिसमें विष न हो (सर्प आदि)। **-हृदय**-वि० कुटिलहृदय, बुरे दिलका।

विषण्ण-वि० [सं०] दुःखी, विषादयुक्त; शोकमग्न। **-चेता(तस्),-मना(नस्)**-वि० खिन्न, उदास। **-मुख,-वदन**-वि० जिसके चेहरेसे उदासी झलकती हो।

विषण्णता-स्त्री० [सं०] उदासी; जड़ता।

विषम-वि० [सं०] जो समतल न हो, असम; असमान, दोसे पूरा-पूरा न बँटनेवाली (संख्या); कठिन; दुर्बोध, जो जल्द समझमें न आये; विकट, जटिल, जो जल्द हल न हो; दुर्गम; रुखड़ा, मोटा; कष्टकर; उग्र, प्रचंड; खतरनाक; बुरा, प्रतिकूल; असाधारण, अद्वितीय; बेईमान, छली; दुष्ट; सविराम, अंतर देकर होनेवाला (ज्वर आदि); भिन्न। पु० संकट; ऊबड़-खाबड़ जमीन; असम वृत्त, ऐसा छंद जिसके चरणोंके अक्षरादि बराबर न हों; एक काव्यालंकार, जहाँ अत्यंत विलक्षणता या विभिन्नताके कारण दो वस्तुओंका संयोग-'कहाँ यह कहाँ वह' कहकर-अयोग्य बतलाया जाय; या जहाँ कार्य तथा कारण एक दूसरेसे बिलकुल विरूप या विरुद्ध हों; या फिर कोई अच्छा काम करनेकी चेष्टा करनेपर लाभ न होकर उलटे हानि उठानी पड़े। **-कोण-समचतुर्भुज**-पु० (रोंबस) वह समानांतर चतुर्भुज जिसकी दो आसन्न भुजाएँ बराबर हों, परंतु जिसका कोई भी कोण समकोण न हो। **-चतुर्भुज,-चतुष्कोण**-पु० वह चतुर्भुज जिसकी भुजाएँ असमान हों।

–ज्वर–पु० जीर्णज्वर । **–त्रिभुज**–पु० वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ असमान हों । **–दृष्टि**–वि० ऐंचा-ताना । **–नयन,–नेत्र,–विलोचन**–पु० शिव । **–पाद**–वि० जिसके चरण असमान हों । **–बाण,–विशिख,–शर**–पु० कामदेव । **–बाहु-त्रिभुज**–पु० (स्केलीन ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसकी कोई भी दो भुजाएँ बराबर न हों । **–वृत्त**–पु० वह छंद जिसके चरणोंकी मात्राएँ आदि समान न हों । **–संधि**–स्त्री० एक तरहकी संधि, समसंधिका विलोम ।

विषमता–स्त्री०, **विषमत्व**–पु० [सं०] असमता; अंतर; निरापदता; भीषणता; जटिलता ।

विषमाक्ष–पु० [सं०] शिव ।

विषमायुध–पु० [सं०] कामदेव ।

विषमित–वि० [सं०] असमय या दुर्गम बनाया हुआ; अव्यवस्थित; जो खतरनाक, बैरी बन गया हो ।

विषमेक्षण–पु० [सं०] शिव ।

विषमेषु–पु० [सं०] कामदेव ।

विषय–पु० [सं०] ज्ञानेंद्रियों द्वारा गृहीत होनेवाले पदार्थ (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द), इंद्रियार्थ; भौतिक पदार्थ; कारबार; इंद्रियजन्य आनंद; लक्ष्य; क्षेत्र, विस्तार; विभाग; व्याख्या आदिका प्रकरण; देश; राज्य; शासन-व्यवस्थायुक्त बृहत् क्षेत्र; आश्रय-स्थान; ग्राम-समूह । **–कर्म(न्)**–पु० सांसारिक कार्य । **–ज्ञान**–पु० सांसारिक कार्योंका ज्ञान । **–निरति**–स्त्री० विषयासक्ति । **–निर्धारिणी समिति,–निर्वाचिनी समिति**–स्त्री० किसी सभामें उपस्थित किये जानेवाले विषय, प्रस्ताव आदिका निश्चय करनेवाली उपसमिति । **–पति**–पु० राज्यपाल (गवर्नर) ।**–पराङ्मुख**–वि० सांसारिक विषयोंसे विरक्त । **–लोलुप**–पु० विषयसुखका लोभी । **–समिति**–स्त्री० कुछ चुने हुए सदस्योंकी वह समिति जो किसी सम्मेलनादिमें प्रस्तुत किये जानेवाले प्रस्तावों या विषयोंके संबंधमें निश्चय करती है । **–सुख**–पु० इंद्रियजन्य सुख । **–स्पृहा**–स्त्री० विषय-सुखकी इच्छा ।

विषयक–वि० [सं०] संबंधी, विषयका ।

विषयांतर–पु० [सं०] प्रसंगको छोड़कर भिन्न विषयका उपस्थापन करना; मूल विषयको छोड़कर इधर-उधरकी चर्चा करना ।

विषया–स्त्री० विषयवासना; विषयवासनाकी वस्तु ।

विषयात्मक–वि० [सं०] विषय-संबंधी; इंद्रिय-संबंधी ।

विषयाधिप–पु० [सं०] दे० 'विषय-पति' ।

विषयाधिपति–पु०[सं०] प्रांतका शासक(गवर्नर); राजा ।

विषयानुक्रमणिका–स्त्री०[सं०] विस्तृत विषयसूची(इंडेक्स) ।

विषयाभिरति, विषयाभिलाष–पु० [सं०] विषयभोग ।

विषयासक्त–वि० [सं०] विषय-रत ।

विषयासक्ति–स्त्री० [सं०] विषयभोगमें लीन रहना ।

विषयी(यिन्)–वि० [सं०] विलासी, कामी । पु० कामी पुरुष; कामदेव; अमीर ।

विषांतक–पु० [सं०] शिव । वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला ।

विषाक्त–वि० [सं०] विषमिश्रित ।

विषाण–पु० [सं०] शृंग (बाजा); सींग; शूकर, हाथी या गणेशका दाँत ।

विषाणी(णिन्)–वि० [सं०] सींगवाला; दाँतवाला । पु० सींग या दाँतवाला जानवर; हाथी; ऋषभक; शृंगाटक ।

विषाद–पु० [सं०] अवसाद, उदासी; गम; नैराश्य; उत्साहहीनता; तंद्रा, क्लांति; सुस्ती; जड़ता; मन उचट जाना; एक संचारी भाव ।

विषानन–पु० [सं०] साँप ।

विषान्न–पु० [सं०] विषमिश्रित खाद्य पदार्थ ।

विषापहरण–पु० [सं०] विषका प्रभाव नष्ट करना ।

विषायुध–पु०[सं०] साँप; विषैला जंतु; जहरमें बुझा अस्त्र ।

विषास्त्र–पु० [सं०] साँप; जहरमें बुझाया हुआ हथियार ।

विषुव–पु० [सं०] वह समय जब दिन-रातका मान बराबर होता है । **–रेखा**–स्त्री० वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवोंके बीचोबीच पृथ्वीतलपर चारों ओर गयी है ।

विषुवत्–वि० [सं०] बीचका, मध्यस्थित । पु० दे० 'विषुव' ।

विषुवद्दिन, विषुवद्दिवस–पु० [सं०] वह दिन जब दिन-रातके मानमें कोई अंतर नहीं होता ।

विषूचिका–स्त्री० [सं०] एक तरहका अजीर्ण जिसमें कै और दस्त होता है और पेशाब नहीं उतरता, हैजा ।

विष्कंभ–पु० [सं०] बाधा, रोक; अर्गल; शहतीर; स्तंभ; अंकोंके मध्य रखा जानेवाला वह अंश जिसमें कथानककी प्रगतिका संकेत रहता है (ना०) ।

विष्टप–स्त्री० [सं०] स्थान, भूभाग; स्वर्गलोक ।

विष्टि–स्त्री० [सं०] व्याप्ति; काम, पेशा; मजदूरी, वेतन; बेगार ।

विष्ठा–स्त्री० [सं०] मल, पाखाना; पेट । **–भुक्(ज)**–पु० शूकर ।

विष्णु–पु० [सं०] आर्यों और हिंदुओंके एक प्रधान देवता (इनकी त्रिदेवमें गणना है और ये पालनकर्ता माने जाते हैं); अग्नि । **–पदी**–स्त्री० गंगा नदी । **–पुरी**–स्त्री० वैकुंठ, विष्णुलोक । **–प्रिया**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसीका पौधा । **–यान,–रथ**–पु० गरुड़ । **–लोक**–पु० वैकुंठ, गोलोक । **–वल्लभा**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसीका पौधा; कलियारी, अग्निशिखा । **–वाहन,–वाह्य**–पु० गरुड़ । **–शक्ति**–स्त्री० लक्ष्मी ।**–शिला**–स्त्री० शालग्राम, काले चिकने पत्थरकी गोल बटिया ।

विष्फार–पु० [सं०] दे० 'विस्फार' (धनुष्की टंकार) ।

विसंगत–वि० [सं०] बेमेल, जिसके साथ संगति न हो ।

विसंवाद–पु० [सं०] झूठा कथन; धोखा; प्रतिज्ञा भंग करना; निराश करना; खंडन, असहमति ।

विसंवाहक–पु० (इन्स्यूलेटर) चीनी मिट्टी आदिका बना वह कुचालक पदार्थ जो विद्युत् या तापका प्रवाह रोकनेके लिए विद्युन्मय या तापमय पदार्थ तथा विद्युद्विहीन तापविहीन पदार्थके बीचमें लगा दिया जाता है ।

विसंवाहन–पु० (इनस्यूलेशन) विद्युत् या तापका प्रवाह रोकनेके लिए किसी वस्तुको कुचालक पदार्थ द्वारा पृथक् कर देना ।

विस–पु० [सं०] दे० 'बिस' (पौनार) । † सर्व० उस ।

विसदृश–वि० [सं०] असमान, भिन्न; असाधारण ।

विसयना, विसवना*-अ० क्रि० अस्त होना।

विसर्ग-पु० [सं०] दान; हटाना, पृथक् करना; परित्याग; मोक्ष; एक अक्षरका संकेत (:) जिसका उच्चारण आधे 'ह्'के समान होता है; प्रलय।

विसर्जन-पु० [सं०] दान; अंत, समाप्ति; त्याग; फेंकना; किसी कामपर भेजना; हाँक ले जाना(पशुओंको); प्रतिमाका धारामें बहाया जाना; आहूत देवताओंसे जानेकी प्रार्थना करना (आवाहनका उलटा); भंग किया जाना।

विसर्जित-वि० [सं०] भेजा हुआ; हटाया हुआ; त्यक्त।

विसर्पि, विसर्पिका-स्त्री० [सं०] खुजली नामका रोग।

विसर्पी (र्पिन्)-वि० [सं०] पसरने, फैलनेवाला; रेंगनेवाला; खुजली रोगसे पीड़ित।

विसाल-* वि०दे० 'विशाल'। पु०[अ०] मिलन, संयोग।

विसूचिका, विसूची-स्त्री० [सं०] दे० 'विषूचिका'।

विसूरण-पु०, **विसूरणा**-स्त्री० [सं०] दुःख, शोक; चिंता; विरक्ति।

विसृष्ट-वि० [सं०] त्यक्त; प्रेषित; फेंका हुआ; प्रदत्त।

विस्तर-वि० [सं०] विस्तृत; लंबा; प्रभूत। पु० फैलाव, विस्तार; ब्योरा; आसन, पीठ, पलंग।

विस्तरणी-स्त्री०[सं०] (स्ट्रैचर) असमर्थ रोगी या हताहत व्यक्तिको उठाने -ले जानेका फैला हुआ ढाँचा जिसे दोनों ओरसे दो आदमी थामे रहते हैं।**-वाहक**-पु० (स्ट्रैचर-वेयरर) विस्तरणोमें रोगी या आहत व्यक्तिको उठाकर ले जानेवाला (प्रत्येक) व्यक्ति।

विस्तार-पु० [सं०] फैलाव; लंबाई-चौड़ाई; विशालता; ब्योरा।

विस्तारण-पु० [सं०] बढ़ाने या फैलानेकी क्रिया।

विस्तारना*-स० क्रि० फैलाना।

विस्तारित-वि० [सं०] फैलाया हुआ; विस्तारपूर्वक कहा हुआ।

विस्तारी विधेयक-पु० (एक्सटेंडिंग बिल) किसी पुराने अधिनियम आदिकी अवधि बढ़ानेके लिए विधानसभा आदिमें उपस्थापित विधेयक।

विस्तीर्ण-वि० [सं०] फैला हुआ, विस्तृत; लंबा-चौड़ा।

विस्तृत-वि० [सं०] फैला हुआ; खुला हुआ; विस्तारवाला; बड़ा, विशाल; प्रचुर; व्याप्त।

विस्तृति-स्त्री० [सं०] फैलाव, विस्तार; लंबाई, चौड़ाई।

विस्थापन-पु० (डिसप्लेसमेंट) किसी स्थानपर रहनेवाले लोगोंका वहाँसे जबरन् हटा दिया जाना, उद्वासन।

विस्थापित-वि० (डिसप्लेस्ड) जो अपने निवासस्थानसे जबरन् हटा दिया गया हो, उद्वासित।

विस्फार-पु० [सं०] थरथराहट; ज्याकी टंकार; खुलना।

विस्फारण-पु० [सं०] फैलाना (डैना); खोलना।

विस्फारित-वि०[सं०] खोला, फैलाया हुआ; फाड़ा हुआ।

विस्फीति-स्त्री० (डीफ्लेशन) बहुत फूले हुए पदार्थमेंसे हवा निकाल लेने, फुलाव कम कर देनेकी क्रिया; मुद्राका बाहुल्य या विस्तार घटाकर पूर्व स्थितिपर पहुँचा देना।

विस्फुटित-वि० [सं०] खिला हुआ; खुला हुआ।

विस्फोट-पु० [सं०] फटना, फूट पड़ना; जहरीला फोड़ा।

विस्फोटक-पु० [सं०] बड़ा फोड़ा; एक प्रकारका कुष्ठ; चेचक; फूटने, भड़कनेवाला पदार्थ। वि० फूटनेवाला।

विस्फोटन-पु०[सं०] फूट पड़ना; फोड़ा निकलना; गर्जन।

विस्मयंकर, विस्मयंगम-वि० [सं०] आश्चर्यजनक।

विस्मय-पु० [सं०] समझमें न आ सकनेवाले पदार्थके देखने, सुनने आदिसे उत्पन्न होनेवाला भाव, आश्चर्य, अचंभा; एक स्थायी भाव (सा०); **-कारी(रिन्)**-वि० आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।

विस्मयन-पु० [सं०] आश्चर्य होना।

विस्मयाकुल-वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त।

विस्मयी(यिन्)-वि० [सं०] विस्मययुक्त, अचंभेमें पड़ा हुआ।

विस्मरण-पु० [सं०] भूल जाना।

विस्मित-वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त, चकित।

विस्मृत-वि० [सं०] भूला हुआ।

विस्मृति-स्त्री० [सं०] विस्मरण, भूल जाना।

विस्रब्ध-वि० [सं०] दे० 'विश्रब्ध'।

विस्रस्त-वि० [सं०] बिखरा हुआ; ढीला पड़ा हुआ; कमजोर, अशक्त। **-बंधन**-वि० जिसके बंधन खुल गये हों। **-वसन**-वि० जिसके वस्त्र ढीले पड़ गये हों। **-हार**-वि० जिसका हार सरककर गिर गया हो।

विस्राम*-पु० विश्राम, आराम।

विस्रावण-पु० [सं०] बहाना; रक्त बहाना; अर्क चुलाना।

विस्रुत-वि० [सं०] बहा हुआ, रिसा हुआ।

विस्रुति-स्त्री० [सं०] बहना, क्षरण।

विस्वर-वि० [सं०] स्वरहीन; बेमेल (स्वर); कर्कश।

विस्वाद-वि० [सं०] स्वादहीन।

विहंग-पु० [सं०] पक्षी; बाण; बादल; सूर्य; चंद्रमा। वि० आकाशमें गमन करनेवाला। **-राज**-पु० गरुड।

विहंगम-पु० [सं०] पक्षी; सूर्य; एक देववर्ग।

विहंगमा-स्त्री० [सं०] चिड़िया (मादा); बहँगी।

विहंगमिका-स्त्री० [सं०] बहँगी।

विहंगाराति-पु० [सं०] बाज।

विहंगिका-स्त्री० [सं०] बहँगी।

विहँडना*-स० क्रि० नष्ट करना; मार डालना।

विहंतव्य-वि० [सं०] वध करने योग्य; नष्ट करने योग्य।

विहँसना*-अ० क्रि० मुसकाना।

विहग-पु० [सं०] पक्षी; बाण; सूर्य; चंद्र; मेघ; ग्रह। **-पति,-राज**-पु० गरुड़।

विहगेंद्र, विहगेश्वर-पु० [सं०] गरुड़।

विहरण-पु० [सं०] हटाना, ले जाना; आनंदके लिए घूमना-फिरना; मौज।

विहरना*-अ० क्रि० विहार करना, घूमना-फिरना।

विहसन-पु० [सं०] मंद, मधुर हास्य, मुसकान।

विहसित-पु० [सं०] मुसकान। वि० मुसकुराता हुआ; जो हँसा गया हो।

विहान-पु० भोर, प्रातःकाल।

विहाना*-स० क्रि० छोड़ना, अपनेको पृथक् करना।

विहायस-पु० [सं०] आकाश; पक्षी।

विहार-पु० [सं०] हरण; मटरगश्ती; घूमकर मनोरंजन करना; कदम बढ़ाना; क्रीड़ा; क्रीडोद्यान, मनोरंजनका

स्थान; भिक्षुओंका मठ; कंथा; इंद्रका प्रासाद या ध्वजा; प्रासाद; फैलाव। **−गृह**−पु० क्रीड़ा-भवन। **−भूमि**−स्त्री० मनोरंजनका स्थान; चरागाह। **−वन**−पु० क्रीड़ोद्यान। **−वापी**−स्त्री० क्रीड़ाके लिए बना हुआ तालाव। **−स्थली**−स्त्री०,**−स्थान**−पु० क्रीड़ास्थान।

विहारी(रिन्)−वि० [सं०] मनोरंजनके लिए घूमनेवाला; आनंद लेनेवाला; सुंदर। पु० कृष्ण।

विहास−पु० [सं०] मुसकान।

विहित−वि० [सं०] किया हुआ, कृत; आदिष्ट; रखा हुआ; करने योग्य; जिसका विधान किया गया हो। **−निषिद्ध कर्म**−पु० (एक्ट्स ऑफ कमीशन एंड ओमिशन) वे कर्म जिन्हें करनेका शास्त्र आदेश देता है तथा वे जिन्हें न करनेका शास्त्रीय विधान हो; वे कर्म जिन्हें करना चाहिये तथा वे जिन्हें न करना चाहिये।

विहीन−वि० [सं०] पूर्णतः त्यक्त; नीच; वंचित, रहित। **−जाति,−योनि,−वर्ण**−वि० नीच जातिका।

विहून*−वि० रहित।

विहृत−पु० [सं०] स्त्रियोंके दस हावोंमेंसे एक (सा०)।

विह्वल−वि० [सं०] क्षुब्ध, अशांत; व्याकुल; भयाभिभूत; हतबुद्धि।

विह्वलता−स्त्री०, **विह्वलत्व**−पु०[सं०] व्याकुलता,चिंता।

वीक्ष−पु० [सं०] दृष्टि; दृश्य वस्तु; (लेंस) किरणोंको केंद्रीभूत करनेवाला शीशेका ताल।

वीक्षण−पु० [सं०] विशेष रूपसे देखना, निरीक्षण; जाँच; दृष्टि, नजर; आँख।

वीक्षणीय−वि० [सं०] देखने योग्य; विचार करने योग्य।

वीचि, वीची−स्त्री० [सं०] तरंग, लहर; अविवेक। **−क्षोभ**−पु० तरंगोंका उठना। **−तरंगन्याय**−पु० लगातार उठनेवाली लहरोंकी तरह एकके बाद दूसरा कार्य होना। **−माली (लिन्)**−पु० समुद्र।

वीज−पु० [सं०] दे० 'बीज' (समास भी)।

वीजक−पु० [सं०] दे० 'बीजक'।

वीजन−पु० [सं०] पंखा; चँवर; पंखा झलना; चकोर।

वीजांकुर-न्याय−पु० [सं०] दे० 'बीजांकुर-न्याय'।

वीजित−वि० [सं०] झला हुआ, पंखा झलकर ठंढा किया हुआ; जलसे सींचा हुआ।

वीटक−पु० [सं०] पानका बीड़ा।

वीटा−स्त्री० [सं०] प्राचीन कालमें खेला जानेवाला लड़कोंका एक खेल, एक तरहका गुल्ली-डंडा; गुल्ली।

वीटि, वीटी−स्त्री० [सं०] नागवल्ली; पानका बीड़ा।

वीटिका−स्त्री०[सं०] दे० 'वीटि'; कपड़ेका बंधन या गाँठ।

वीण−स्त्री० दे० 'वीणा'।

वीणा−स्त्री० [सं०] सितार जैसा एक बाजा जिसके दोनों सिरोंपर तुंबे लगे रहते हैं; बिजली। **−दंड**−पु० वीणाका लंबा दंड, तुंबोंके बीचका हिस्सा। **−पाणि**−पु० नारद। स्त्री० सरस्वती। **−रव**−पु० वीणाका स्वर। वि० वीणाकी तरह गुनगुनानेवाला। **−वादक**−पु० वीणा बजानेवाला। **−वादन**−पु० मिजराब; वीणा बजाना। **−वादिनी**−स्त्री० सरस्वती।

वीत−वि० [सं०] गत, लुप्त; प्रस्थित; छोड़ा हुआ; अपवाद किया हुआ; स्वीकृत; जो युद्धमें काम आने योग्य न हो; शांत; पालतू; रहित, निवृत्त; इच्छित। **−कल्मष**−वि० पापसे मुक्त। **−काम**−वि० इच्छासे रहित। **−घृण**−वि० निर्दय, निष्ठुर। **−चिंत**−वि० चिंतामुक्त। **−जन्म-जरस**−वि० जन्म और बुढ़ापेसे मुक्त। **−तृष्ण**−वि० जिसमें वासनाएँ न रह गयी हों। **−दंभ**−वि० निरभिमान, विनम्र। **−भय**−वि० निर्भीक। पु० विष्णु; शिव। **−भीति**−वि० निर्भीक। **−मत्सर**−वि० मत्सररहित, द्वेषादिसे रहित। **−मल**−वि० स्वच्छ; निष्पाप। **−मोह**−वि० मोहसे रहित। **−राग**−वि० वासनारहित; इच्छाहीन; शांत; बिना रंगका। पु० वह व्यक्ति जिसने आसक्ति आदिका परित्याग कर दिया है; बौद्ध या जैन महात्मा। **−व्रीड**−वि० निर्लज्ज। **−शंक**−वि० निःशंक, निर्भय। **−शोक**−वि० शोकरहित, गतशोक। पु० अशोक वृक्ष।

वीथि, वीथी−स्त्री० [सं०] पंक्ति, कतार; दौड़का चक्र, घुड़दौड़का रास्ता; बाजार; दुकान; चित्रोंकी कतार; नक्षत्रोंके अवस्थानका एक भाग; सूर्यका मार्ग; मकानमें सामनेका छज्जा; मार्ग, सड़क; दृश्य काव्यका एक भेद जिसमें एक ही अंक, एक-दो पात्र और विषय शृंगारप्रधान होता है और पात्र आकाश-भाषितके रूपमें बोलता है।

वीथिका−स्त्री० [सं०] पंक्ति; सड़क; चित्रोंकी पंक्ति; चित्रांकित दीवार या पट्ट; छज्जा; दृश्य काव्यका एक भेद (दे० 'वीथी')।

वीप्सा−स्त्री० [सं०] व्याप्ति; कार्यका नैरंतर्य सूचित करनेके लिए शब्दकी आवृत्ति, पुनरुक्ति; एक शब्दालंकार, जहाँ आदर, आश्चर्य आदिका भाव प्रकट करनेके लिए एक शब्द कई बार कहा जाय।

वीर−स्त्री० दे० 'बीर'। वि० [सं०] बहादुर, जवांमर्द, शूर; शक्तिशाली। पु० योद्धा; एक रस (जिसके चार भेद हैं−दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर); अभिनेता; अग्नि; पुत्र; पति; जैन; विष्णु; सरकंडा; काली मिर्च; काँजी; खस, उशीरमूल; शृंगी विष; पुष्करमूल; एक असुर; * पु० भाई। **−कर्मा(मन्)**−वि० वीरोचित कर्म करनेवाला। **−केश(स)री(रिन्)**−वि० वीरोंमें सिंहके समान पराक्रमी। **−गति**−स्त्री० युद्धमें प्राणांत होनेपर मिलनेवाली गति, स्वर्ग। **−चक्र**−पु० स्वतंत्र भारतके किसी सैनिकको रणक्षेत्रमें विशेष वीरता दिखानेपर दिया जानेवाला तृतीय श्रेणीका पदक। **−चक्रेश्वर**−पु० विष्णु। **−जननी**−स्त्री० वीर पुत्रको जन्म देनेवाली माता। **−धन्वा(न्वन्)**−पु० कामदेव। **−पट्ट**−पु० एक प्रकारका सैनिक वस्त्र (ललाटपर पहननेका)। **−पत्नी**−स्त्री० वीरकी भार्या। **−पाण,−पाणक**−पु० एक पेय जो युद्धमें जाते समय या युद्धमें सैनिक पीते थे। **−पान,−पानक**−पु० दे० 'वीरपाण'। **−पूजा**−स्त्री० (हीरो वरशिप) वीरों, महान् पुरुषोंका समुचित आदर-सम्मान। **−प्रजायिनी,−प्रजावती**−स्त्री० वीर उत्पन्न करनेवाली स्त्री, वीरमाता। **−प्रसवा,−प्रसविनी,−प्रसू**−स्त्री० दे० 'वीरप्रजायिनी'। **−भट**−पु० योद्धा। **−भद्र**−पु० अश्वमेधका घोड़ा; खस; शिवकी जटासे उत्पन्न एक वीर; श्रेष्ठ वीर। **−भद्रक**−पु० उशीर, खस।

-भार्या-स्त्री० वीरपत्नी । **-मर्दल,-मर्दलक**-पु० युद्धका नगाड़ा । **-माता(तृ)**-स्त्री० वीर-जननी । **-मानी(निन्)**-वि० अपनेको वीर समझनेवाला । **-मार्ग**-पु० स्वर्ग । **-रस**-पु० प्रबल शत्रुका दमन करने, आर्त्त जनोंका दुःख दूर करने तथा किसी भारी कठिनाई आदिपर विजय पानेके प्रयत्नमें प्रदर्शित दृढ़ता एवं उत्साहका द्योतन करनेवाला एक काव्यरस; वीरताका भाव । **-राघव**-पु० राम । **-व्रत**-वि० दृढ़संकल्प, दृढव्रत । **-शयन**-पु०,**-शय्या**-स्त्री० वीरोंके सोनेका स्थान, रणक्षेत्र; बाणोंकी शय्या । **-श्रेष्ठ**-पु० अद्वितीय वीर । **-सू**-स्त्री० वीरमाता, वीरजननी ।

वीरा-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों; वीर-भार्या; पत्नी; माता; मदिरा ।

वीराचारी(रिन्)-पु० [सं०] वाममार्गियोंका एक भेद जो मद्यादिमें देवताओंकी कल्पना करते हैं ।

वीरान-वि० [फा०] उजड़ा हुआ, जनहीन; तबाह ।

वीराना-पु० [फ़ा०] उजाड़ जगह; जंगल ।

वीरासन-पु० [सं०] योगासनका एक प्रकार; एक घुटना टेककर बैठना ।

वीरुत्(ध्)-स्त्री० [सं०] लता; शाखा, टहनी ।

वीरेंद्र-पु० [सं०] वीरोंका प्रधान ।

वीरेश, वीरेश्वर-पु० [सं०] महादेव; बहुत बड़ा योद्धा ।

वीर्य-पु० [सं०] वीरता, पौरुष; शक्ति, बल; पुंस्त्व; शरीरकी एक धातु, शुक्र, रेत; साहस ।

वीर्यवान्(वत्)-वि० [सं०] बलवान्, शक्तिशाली; पुष्ट ।

वीर्याधान-पु० [सं०] गर्भाधान ।

वीहार-पु० [सं०] मंदिर, मठ (बौद्ध, जैन) ।

वुज़ू-पु० [अ०] नमाजसे पहले यथाविधि हाथ-पाँव और मुँह धोना ।

वुराना*-अ० क्रि० उराना, समाप्त होना (बिहारी) ।

वुसूल-पु० [अ०] पहुँचना; मिलना; हासिल, प्राप्ति । **-बाक़ी**-स्त्री० वह हकम जो प्राप्त न हुई हो; बकाया रकम या रुपया वसूल करना ।

वुसूली-वि० [अ०] वसूल करने योग्य । स्त्री० वह रकम जिसे वसूल करना हो या जो वसूल की गयी हो ।

वृंत-पु० [सं०] बोड़ी, ढेंढ़ी; डंठल; चूचुक ।

वृंद-पु० [सं०] दल, समूह, झुंड; गुच्छा; एक मुहूर्त । वि० बहुसंख्यक । **-गायक**-पु० कई गायकोंके साथ गानेवाला ।**-वाद्य**-पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशाला आदिमें विशेष स्थानपर समवेत वादकों द्वारा सामूहिक रूपसे प्रस्तुत किया गया वाद्य ।

वृंदा-स्त्री० [सं०] तुलसी; राधा । **-वन**-पु० गोकुलके पासका एक स्थान जो तीर्थ माना जाता है ।

वृंदार-पु० [सं०] देवता ।

वृंदारक-पु० [सं०] श्रेष्ठ जन; नायक; देवता ।

वृक-पु० [सं०] भेड़िया; गीदड़; उल्लू; कौवा; चोर । **-कर्मा(र्मन्)**-वि० भेड़ियेकी तरह काम करनेवाला । **-दंश**-पु० कुत्ता ।

वृकाराति, वृकारि-पु० [सं०] कुत्ता ।

वृकोदर-पु० [सं०] भीमसेन; ब्रह्मा ।

वृक्क, वृक्कक-पु० [सं०] गुरदा ।

वृक्का-स्त्री० [सं०] हृदय ।

वृक्ष-पु० [सं०] पेड़; विटप; वंशवृक्ष, कुरसीनामा । **-रोपण**-पु० वृक्ष लगानेकी क्रिया । **-वाटिका,-वाटी**-स्त्री० उपवन, बाग । **-सेचन**-पु० वृक्षमें पानी देना, सींचना । **-स्नेह**-पु० पेड़का निर्यास, गोंद ।

वृक्षायुर्वेद-पु० [सं०] वृक्षोंके रोग और चिकित्सा-संबंधी शास्त्र ।

वृज-पु० दे० 'व्रज' ।

वृजन्य-वि० [सं०] ग्राममें रहनेवाला, सरल (व्यक्ति) ।

वृजिन-पु० [सं०] पाप; दुःख, कष्ट; बाल; घुँघराले बाल; दुष्ट जन; रक्त चर्म ।

वृत्त-वि० [सं०] घटित; पूरा किया हुआ; निष्पन्न; किया हुआ; गत, व्यतीत; गोलाकार । पु० घटना; इतिहास; वृत्तांत; समाचार; आचरण, चालचलन; एक तरहका छंद; (सरकिल) वह समक्षेत्र जो ऐसी वक्र रेखासे घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उक्त क्षेत्रके केंद्र या मध्य बिंदुसे समान दूरीपर हो । **-खंड**-पु० वृत्तका कोई भाग; (सेक्टर) दो त्रिज्याओं (अर्द्धव्यास रेखाओं) तथा चापके द्वारा घिरा वृत्तका अंश । **-चूड**-वि० जिसका चूड़ाकरण संस्कार हो चुका हो । वि० मेहराबदार (झरोखा) । **-पत्र**-पु० (जर्नल) वह बही या पंजी जिसमें प्रति दिनके कार्य या घटनावलीका विवरण अथवा जिसमें विधानसभा आदिके प्रति दिनके विनिश्चयोंका संक्षिप्त अभिलेख लिखा जाता है । **-पत्रक**-पु० (हिस्ट्री-शीट) वह पत्रक या फलक जिसपर किसी बंदीके पूर्वापराधोंका इतिहास या लेखा दिया रहता है, अपराध-लेखा, दुर्वृत्त-फलक ।

वृत्तांत-पु० [सं०] समाचार; विवरण; वर्णन ।

वृत्तांतानुमेय साक्ष्य-पु० [सं०] (सरकम्सटैंशल एवीडेंस) कोई बात साबित करनेमें सहायता करनेवाली ऐसी बातें जो किसीने अपने बयानमें न कही हों, पर परिस्थिति या जानी हुई घटनाओंके आधारपर जिनका अनुमान किया जा सके ।

वृत्तार्ध-पु० [सं०] वृत्तका अर्धभाग ।

वृत्ति-स्त्री० [सं०] अस्तित्व, रहना; मनकी अवस्था, हालत; कार्य, व्यापार; तरीका, ढंग; पेशा; स्वभाव; रहन-सहन (समासांतमें); जीविका; पारिश्रमिक; कार्यका कारण; सम्मानपूर्ण बर्ताव; व्याख्या, कारिका; चक्कर खाना; लुढ़कना; चक्र या वृत्तकी परिधि; शब्द-शक्ति (अभिधा आदि); रचनाशैली (कैशिकी आदि); सहायतार्थ दिया जानेवाला धन; विचारसरणी; आधेय; एक अस्त्र; प्रचलन; अनुप्रासका एक भेद, 'वृत्त्यनुप्रास' । **-कर**-पु० (प्रोफेशन टैक्स) वृत्ति या पेशेपर लगनेवाला कर । **-मूलक प्रतिनिधित्व**-पु० (फंक्शनल रेप्रेजेंटेशन) दे० 'व्यावसायिक प्रतिनिधित्व' ।

वृत्त्यनुप्रास-पु० [सं०] अनुप्रास अलंकारका एक भेद (जहाँ एक या अनेक वर्णोंकी समानता कई बार दिखायी जाय) ।

वृत्य-वि० [सं०] नियुक्तिके योग्य; वरणके योग्य; घेरा

जाने योग्य; रखा जाने योग्य।

वृत्र–पु०[सं०] अंधकारका मूर्त रूप एक दानव जिसे इंद्रने मारा था; बादल; अंधकार; शत्रु। **–घ्न,–हंता(तृ),–हा(हन्)**–पु० इंद्र।

वृत्रारि–पु० [सं०] इंद्र।

वृथा–अ० [सं०] बेकार, बेमतलब, निष्प्रयोजन। वि० अनुचित; झूठ; निरर्थक, निरुपयोगी।**–वादी(दिन्)**–वि० झूठ बोलनेवाला।

वृद्ध–वि० [सं०] बढ़ा हुआ; बूढ़ा, अधिक अवस्थाका; बड़ा; चतुर; विद्वान्; योग्य या सम्मानित। पु० बूढ़ा आदमी; सम्मानित व्यक्ति।

वृद्धता-अधिदेय–पु० [सं०] (सूपर एनुएशन अलाउंस) वृद्धताके कारण किसी कर्मचारीके काम करनेमें असमर्थ हो जानेपर दी जानेवाली वृत्ति या भत्ता।

वृद्धा–वि० स्त्री० [सं०] बुढ़िया, बुड्ढी। स्त्री० बूढ़ी स्त्री।

वृद्धावस्था–स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।

वृद्धाश्रम–पु० [सं०] संन्यास।

वृद्धि–स्त्री०[सं०] बढ़ती, बाढ़; प्रगति; चंद्रकलाका बढ़ना; धन-संपत्तिका बढ़ना; अभ्युदय; सफलता; संपत्ति; ब्याज, सूद; सूदखोरी; लाभ; शोथ; अ, इ, उ आदिका आ, ऐ, औ आदि रूप ग्रहण करना (व्या०)। **–कर**–वि० वृद्धि करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० नांदीमुख श्राद्ध।

वृश्चिक–पु० [सं०] बिच्छू; एक राशि; मार्गशीर्ष मास।

वृष–पु० [सं०] बैल, साँड़; एक राशि; वह जो अपने वर्गमें सर्वश्रेष्ठ हो (प्रायः समासांतमें); मजबूत, हट्टा-कट्टा आदमी (कामशास्त्रके अनुसार चार प्रकारके पुरुषोंमेंसे एक)। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० बैलकी तरह काम करनेवाला। **–केतन**–पु० शिव। **–पति**–पु० शिव; छोड़ा हुआ साँड़। **–भान***–पु० राधाका पिता। **–भानु**–पु० वृषका सूर्य; राधाका पिता। **–भानुजा,–भानुनंदिनी,–भानुसुता**–स्त्री० राधा। **–वाहन**–पु० शिव।

वृषण–पु० [सं०] अंडकोश; अंड; शिव।

वृषभ–पु० [सं०] बैल, साँड़।**–केतु,–ध्वज**–पु० शिव। **–धुज***–पु० दे० 'वृषभध्वज'।

वृषल–पु० [सं०] शूद्र; अधार्मिक व्यक्ति; चंद्रगुप्त मौर्य।

वृषली–स्त्री० [सं०] शूद्रा; अविवाहित रजस्वला कन्या; वह स्त्री जिसे रजःस्राव हो रहा हो; वंध्या स्त्री।

वृषादित*, वृषादित्य–पु०[सं०] ज्येष्ठकी संक्रांतिके सूर्य।

वृषोत्सर्ग–पु०[सं०] एक धार्मिक कृत्य, मृत जनोंके नामपर चक्रसे दागकर साँड़ छोड़ना।

वृष्ट–वि० [सं०] बरसा हुआ; वर्षाके रूपमें गिरा हुआ।

वृष्टि–स्त्री० [सं०] वर्षा, मेघसे जलबिंदुओंका गिरना; वर्षाकी तरह किसी चीजका बहुत बड़ी संख्या या परिमाणमें गिरना, झड़ी। **–कर**–वि० वृष्टि करनेवाला। **–काल**–पु० बरसात, प्रावृट्। **–पात,–संपात**–पु० वर्षाका होना।

वृष्य–वि०[सं०] पुंस्त्व बढ़ानेवाला; कामोद्दीपक।

वृहत्–वि० [सं०] बड़ा, महान्; भारी।

वृहन्नला–स्त्री० [सं०] विराटराजके यहाँ अज्ञातवास करते समयका अर्जुनका नाम।

वृहस्पति–पु० [सं०] दे० 'बृहस्पति'।

वेंकटेश, वेंकटेश्वर–पु० [सं०] विष्णु (वेंकटगिरिस्थ मूर्ति)।

वे–सर्व० 'वह'का बहुवचन।

वेकट–पु०[सं०] एक मछली, भाकुर; विदूषक; युवा; जौहरी।

वेक्षण–पु० [सं०] अच्छी तरह देखना; देखभाल।

वेग–पु० [सं०] तीव्र प्रवृत्ति; प्रचंडता; प्रवाह; मल-मूत्रके निकलनेकी प्रवृत्ति; शक्ति; संचार (विषादिका); जल्दी, शीघ्रता; बाणकी गति; प्रगाढ़ प्रणय; आंतरिक भावकी बाह्य अभिव्यक्ति, अनुभाव; तेज, वायु आदिमें पाया जानेवाला एक गुण (न्या०)। **–गा**–स्त्री० नदी। **–वृद्धि**–स्त्री० (एक्सिलरेशन) वेग या रफ्तार बढ़नेकी क्रिया।

वेगवान्(वत्)–वि० [सं०] वेगयुक्त; तेज चलनेवाला; तीव्र, उग्र।

वेगानिल–पु० [सं०] प्रचंड वायु, प्रभंजन।

वेणि–स्त्री० [सं०] चोटी गूँथना; बालोंकी लटकती हुई चोटी; जल-प्रवाह; दो या अधिक नदियोंका संगम; गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम।

वेणी–स्त्री० [सं०] बालोंकी चोटी; धारा। **–दान**–पु० प्रयागमें बाल कटवानेका एक संस्कार। **–संवरण,–संहरण,–संहार**–पु० चोटी गूँथना, जूड़ा बाँधना।

वेणु–पु० [सं०] बाँस; नरसल; बाँसुरी। **–कार**–पु० बाँसुरी बनानेवाला। **–वादक**–पु० बाँसुरी बजानेवाला। **–वादन,–वाद्य**–पु० बाँसुरी बजाना।

वेणुमय–वि० [सं०] बाँसका बना हुआ।

वेतन–पु० [सं०] नियत समयपर, प्रायः महीने-महीने, दिया जानेवाला पारिश्रमिक, तनख्वाह; वृत्ति। **–क्रम**–पु० (ग्रेड ऑफ पे) वेतनका क्रम या दरजा। **–जीवी(विन्)**–वि० वेतनसे अपना निर्वाह करनेवाला; वेतन लेकर काम करनेवाला। **–दाता(तृ)**–पु० (पे मास्टर) सैनिकों, श्रमिकों आदिको वेतन वितरित करनेवाला। **–फलक**–पु० (पे-शीट) कर्मचारियों, कर्मियोंको मिलनेवाले किसी मासके वेतनका पूरा-पूरा ब्यौरा देनेवाला कागज या फलक। **–भोगी(गिन्)**–पु० वेतन लेकर काम करनेवाला, वैतनिक कर्मचारी।

वेताल–पु० [सं०] प्रेत (विशेषकर जिसका शवपर अधिकार हो); शिवका एक गणाधिप; द्वारपाल। **–साधन**–पु० साधना द्वारा वेतालको वशमें करना।

वेत्ता(त्तृ)–वि० [सं०] जानकार, ज्ञाता; अनुभव करनेवाला। पु० ऋषि जिसे आत्मा-परमात्माका ज्ञान हो।

वेत्र–पु० [सं०] बेंत; डंडा; द्वारपालका दंड। **–कार**–पु० बेंतका काम करनेवाला। **–धर,–धारक**–पु० द्वारपाल; छड़ीबरदार। **–धारी(रिन्)**–पु० रईसका नौकर। **–पाणि,–हस्त**–पु० छड़ीबरदार। **–भृत्**–दे० 'वेत्र-धर'।

वेत्रक–पु० [सं०] सरपत।

वेत्राघात–पु० [सं०] बेंत लगाना, बेंतकी छड़ीसे मारना।

वेत्रासन–पु० [सं०] बेंतकी कुरसी या बेंतकी कुरसीनुमा डोली।

वेत्री(त्रिन्)–पु० [सं०] द्वारपाल; आसाबरदार।

वेद–पु० [सं०] ज्ञान; यथार्थ ज्ञान; हिंदुओंके आदि धर्म-ग्रंथ (पहले ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद–ये ही तीन थे, पीछे अथर्ववेद भी मिलाया गया)। **–घोष**–पु० वेद-पाठकी ध्वनि। **–ज्ञ**–वि० वेदोंका जानकार। **–तत्त्व**–पु० वेदोंका रहस्य, मुख्य अभिप्राय। **–त्रय**–पु०, **–त्रयी**–स्त्री० ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदका समाहार। **–ध्वनि**–स्त्री०, **–नाद**–पु० दे० 'वेदघोष'। **–निंदक**–पु० वेदोंमें अविश्वास करनेवाला–नास्तिक, बौद्ध, जैन। **–निंदा**–स्त्री० वेदोंमें अविश्वास। **–पाठ**–पु० वेदोंका पाठ करना। **–पाठक**, **–पाठी (ठिन्)**–पु० वेदका पाठ करनेवाला। **–पारग**–वि० वेदज्ञ। पु० वेदज्ञ ब्राह्मण। **–माता (तृ)**–स्त्री० सरस्वती; गायत्री। **–वचन**–पु० वेदमें आये हुए वचन या मंत्र। **–वाक्य**–पु० वेदका वाक्य; पूर्णतः प्रामाणिक वाक्य; अखंडनीय बात। **–वाद**–पु० वेदोंके संबंधमें होनेवाली बहस। **–वादी (दिन्)**–वि० वेदज्ञ। **–विक्रयी (यिन्)**–वि० धन लेकर वेद पढ़ानेवाला। **–विद्**–वि० वेदज्ञ। पु० विष्णु; वेदज्ञ ब्राह्मण। **–विहित**–वि० वेदानुमोदित। **–व्यास**–पु० दे० 'कृष्ण-द्वैपायन'। **–सम्मत**–वि० वेदानुमोदित।

वेदक–वि० [सं०] जाननेवाला; होशमें लानेवाला।

वेदन–पु०, **वेदना**–स्त्री० [सं०] ज्ञान; अनुभूति; पीड़ा।

वेदांग–पु० [सं०] वेदोंके अंग, वेदोंके अंगस्वरूप कुछ ग्रंथ जो वेदमंत्रोंके उच्चारण, अर्थ समझने आदिमें सहायक होते हैं (इनकी संख्या ६ है–शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और व्याकरण)।

वेदांत–पु० [सं०] ब्रह्मविद्या (उपनिषद् और आरण्यकके अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा और जगत्का निरूपण किया गया है); छः दर्शनोंमेंसे एक (इसमें ब्रह्मको ही पारमार्थिक सत्ता कहा है और जीव तथा जगत् अतिरिक्त पदार्थ नहीं माने गये हैं)। **–ज्ञ**–वि० वेदांत जाननेवाला। **–वादी (दिन्)**–वि० वेदांत दर्शन माननेवाला।

वेदांती (तिन्)–वि०, पु० [सं०] वेदांतका पंडित, ब्रह्मवादी।

वेदाध्ययन–पु० [सं०] वेदोंका अध्ययन।

वेदाध्यापक–पु० [सं०] वेदका अध्यापन करनेवाला, आचार्य।

वेदाध्यायी (यिन्)–वि० [सं०] वेदोंका पाठ करनेवाला।

वेदिका–स्त्री० [सं०] वेदी, यज्ञभूमि; धार्मिक कृत्योंके लिए बनाया हुआ छोटा चबूतरा; आसन।

वेदित–वि० [सं०] निवेदित, सूचित; देखा हुआ।

वेदितव्य–वि० [सं०] ज्ञातव्य, जानने योग्य।

वेदी–स्त्री० [सं०] यज्ञ इत्यादिके लिए तैयार किया हुआ स्थान; मंदिर या प्रासादके प्रांगणमें बना हुआ चतुष्कोण स्थान या मंडप।

वेदोक्त–वि० [सं०] वेदोल्लिखित, वेदानुमोदित।

वेद्य–वि० [सं०] जानने, समझने योग्य; कथनीय, कहने योग्य; बतलाने योग्य; स्तुत्य; प्राप्त करने योग्य।

वेध–पु० [सं०] वेधना, छेद करना; घुसाना; आहत करना; छिद्र, बिल; खुदाई; गड्ढेकी गहराई; निशाना मारना; सूर्य, किसी ग्रहका दूसरे ग्रहके सामने पहुँचना; छेड़छाड़। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ यंत्रोंकी सहायतासे ग्रहों आदिकी गतिका पर्यवेक्षण किया जाता है।

वेधक–वि० [सं०] छेद करनेवाला, छेदनेवाला (रत्नों आदिको); प्रभावित करनेवाला।

वेधन–पु० [सं०] छेदनेकी क्रिया; (बाणसे) निशाना मारना; प्रवेश; खनन; गहराई; गड़ाना, आहत करना।

वेधनिका–स्त्री० [सं०] (रत्नमें) छेद करनेकी तेज नोकवाली बरमी।

वेधनी–स्त्री० [सं०] रत्नमें छेद करनेकी बरमी; हाथीका अंकुश।

वेधनीय–वि० [सं०] छेदा जाने योग्य, भेदनीय।

वेधालय–पु० [सं०] दे० 'वेधशाला'।

वेधित–वि० [सं०] छेदा हुआ, विद्ध।

वेधी (धिन्)–वि० [सं०] वेध करनेवाला, छेद करनेवाला; निशाना मारनेवाला।

वेध्य–वि० [सं०] वेधन करने योग्य। पु० निशाना, लक्ष्य।

वेपथु–पु० [सं०] कँपकँपी, कंप।

वेपन–पु० [सं०] काँपना, कंपन; वातरोग। वि० काँपनेवाला; कँपानेवाला।

वेला–स्त्री० [सं०] सीमा, मर्यादा; फासला; समुद्र और स्थलकी सीमा; तट, कूल; समुद्रतट; समुद्रकी लहर; समय; समयका एक मान, घंटा या पहर; अवसर; अवकाश; तरंग; प्रवाह। **–कूल**–पु० समुद्रतट; ताम्रलिप्त देश। **–जल**, **–सलिल**–पु० ज्वारका जल (टाइडल वाटर्स)। **–तट**–पु० समुद्रतट। **–पत्रक**–पु० (टाइमटेबुल) दे० 'समयसारिणी'।

वेलातिक्रम–पु० [सं०] विलंब।

वेलातिग–वि० [सं०] किनारेके ऊपरसे बहनेवाला।

वेलाद्रि–पु० [सं०] समुद्रतटवर्ती पर्वत।

वेल्लि–स्त्री० [सं०] लता।

वेश–पु० [सं०] प्रवेश; मकान; खेमा; वेश्यालय; वेश्याका बर्ताव; बाना। **–धर**, **–धारी (रिन्)**–वि० दूसरेका बाना धारण करनेवाला। **–भूषा**–स्त्री० पहनावा, पोशाक। **–युवती**, **–योषित्**, **–वधू**, **–वनिता**–स्त्री० वेश्या।

वेश्म (न्)–पु० [सं०] घर, मकान।

वेश्मांत–पु० [सं०] अंतःपुर, जनानखाना।

वेश्या–स्त्री० [सं०] नाच-गान तथा कसबसे जीविका चलानेवाली स्त्री, गणिका। **–गमन**–पु० कामवासनाकी तृप्तिके लिए गणिकाके पास जाना। **–गामी (मिन्)**–पु० रंडीबाज। **–गृह**–पु० चकला। **–घटक**–पु० वेश्या पहुँचानेवाला दलाल। **–पति**–पु० वेश्याका पति, जार। **–पुत्र**–पु० वेश्याका पुत्र, अवैध पुत्र। **–वृत्ति**–स्त्री० कसब कमाना, धन लेकर पर-पुरुषोंसे संभोग कराना।

वेश्यालय–पु० [सं०] (ब्रोथेल) वेश्या या वेश्याओंके रहनेकी जगह, चकला।

वेष–पु० [सं०] वेश; नेपथ्य, रंगमंचके पीछे वेश-रचनाका स्थान; बदला हुआ भेस। **–धर**–वि० दूसरेका भेस धारण करनेवाला। **–धारी (रिन्)**–वि० दे० 'वेशधारी'; ढोंगी।

वेष्टन–पु० [सं०] घेरना, लपेटना; लपेटनेवाली चीज;;

बेठन; पगड़ी; पट्टी; बंध; चहारदीवारी; आवरण, खोल।

वेष्टित-वि० [सं०] घिरा हुआ; लपेटा हुआ; वस्त्राच्छादित।

वेष्य-वि० [सं०] जिसने भेस बदला है (अभिनेताके रूपमें)। पु० श्रम; कर्म; पगड़ी; पट्टी; जल।

वेसन-पु० [सं०] दे० 'बेसन'।

वेसर-पु० [सं०] खच्चर, अश्वतर।

वेस्टकोट-पु० [अं०] फतुही, जाकेट।

वै*-अ० एक निश्चयबोधक शब्द। वि० दो।

वैकटिक-पु० [सं०] जौहरी, रत्नपरीक्षक।

वैकट्य-पु० [सं०] विकटता; विशालता; भीषणता।

वैकथिक-पु० [सं०] बढ़-बढ़कर बातें कहनेवाला, डींग मारनेवाला।

वैकल्पिक-वि० [सं०] ऐच्छिक; संदिग्ध, अनिश्चित। **-सदस्य**-पु० (आलटरनेटिव मेंबर) दो सदस्योंमेंसे एक; एकके सदस्यता स्वीकार न करने आदिकी स्थितिमें उसका स्थान ग्रहण कर सकनेवाला सदस्य।

वैकल्य-पु० [सं०] विकलता; क्षोभ, उत्तेजना; दोष, त्रुटि।

वैकाल-पु० [सं०] अपराह्ण; संध्या।

वैकालिक-वि० [सं०] संध्या-संबंधी; संध्या समय होनेवाला। पु० संध्याकालकी प्रार्थना; ब्यालू।

वैकालीन-वि० [सं०] दे० 'वैकालिक'।

वैकुंठ-पु० [सं०] इंद्र; विष्णु; विष्णुलोक; स्वर्ग। **-चतुर्दशी**-स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला चतुर्दशी। **-भुवन, -लोक**-पु० विष्णुलोक।

वैक्रम-वि० [सं०] विक्रम-संबंधी; शक्ति-संबंधी।

वैक्रमीय-वि० [सं०] विक्रमका; विक्रम-संबंधी (संवत्)।

वैक्लव, वैक्लव्य-पु० [सं०] विकलता, व्याकुलता; पीड़ा।

वैखरी-स्त्री० [सं०] कंठसे उच्चार्यमाण स्वरविशेष; वाक्-शक्ति; वाग्देवी, सरस्वती।

वैखानस-वि० [सं०] वानप्रस्थ, तपस्वी।

वैगुण्य-पु० [सं०] गुणका अभाव, गुणराहित्य; अच्छे गुणोंका अभाव; दोष, त्रुटि; गुण या धर्मकी भिन्नता।

वैचक्षण्य-पु० [सं०] चातुर्य; कुशलता।

वैचित्र-पु० [सं०] विचित्रता।

वैचित्र्य-पु० [सं०] विचित्रता, अनोखापन; भिन्नता।

वैजन्य-पु० [सं०] एकांत, निर्जनता।

वैजयंत-पु० [सं०] इंद्रप्रासाद; घर; इंद्र; स्कंद; एक पर्वत; अरणी, अग्निमंथ वृक्ष; ध्वजा; इंद्रकी ध्वजा।

वैजयंती-स्त्री० [सं०] झंडा; चिह्न; विजयमाल; जानुतक लटकनेवाली पाँच रंगोंकी एक माला; एक फूल।

वैजयिक-वि० [सं०] विजय-संबंधी; विजयदायक; विजय-सूचक।

वैजात्य-पु० [सं०] विजातीयता; वर्ण या जातिकी भिन्नता; वैचित्र्य।

वैज्ञानिक-पु० [सं०] विज्ञानका पंडित। वि० विज्ञान-संबंधी।

वैडूर्य-पु० [सं०] एक रत्न, वैदूर्य; एक पर्वत।

वैतंडिक-पु० [सं०] व्यर्थका झगड़ा करनेवाला; तर्कप्रिय। वि० वितंडा-संबंधी,

वैतथ्य-पु० [सं०] मिथ्यात्व, असत्यता।

वैतनिक-वि० [सं०] वेतन या मजदूरी लेकर काम करनेवाला, वेतनभोगी।

वैतरणि, वैतरणी-स्त्री० [सं०] एक पौराणिक नदी; इस नदीको पार करानेवाली गाय (जो ब्राह्मणको दी जाती है); उड़ीसाकी एक पवित्र नदी।

वैतस-वि० [सं०] बेंत-संबंधी; बेंत जैसा (प्रबल शत्रुके सामने झुक जाना-जैसे वैतसी वृत्ति)।

वैताल-वि० [सं०] वेतालका; वेताल-संबंधी। पु० दे० 'वेताल'; स्तुतिपाठक।

वैतालिक-पु० [सं०] स्तुतिपाठक, स्तुति-पाठ करके राजाओंको सबेरे जगानेवाला; वेतालका उपासक।

वैतुष्य-पु० [सं०] भूसीका निकाला जाना।

वैतृष्ण्य-पु० [सं०] प्यास बुझाना; इच्छासे रहित होना, उदासीनता।

वैत्तपाल्य-वि० [सं०] कुबेर-संबंधी।

वैत्रक-वि० [सं०] बेंतदार।

वैत्रकीय-वि० [सं०] बेंत या छड़ी-संबंधी।

वैत्रासुर-पु० [सं०] एक असुर।

वैद-पु० वैद्य। वि० [सं०] विद्वान्-संबंधी; विद्वान्।

वैदक†-पु० दे० 'वैद्यक'।

वैदग्ध, वैदग्ध्य-पु० [सं०] दक्षता; चतुरता; पांडित्य।

वैदर्भी-स्त्री० [सं०] विदर्भकी राजकुमारी; अगस्त्य-पत्नी; दमयंती; रुक्मिणी; एक रीति जिसमें माधुर्य-व्यंजक वर्णोंका प्रयोग किया जाता है (सा०), उपनागरिका।

वैदिक-वि० [सं०] वेद-संबंधी; जो वेदके अनुकूल हो, वेदविहित; पवित्र। पु० वेदज्ञ ब्राह्मण। **-कर्म(न्)**-पु० वेदविहित कर्म।

वैदूर्य-पु० [सं०] एक रत्न, लहसुनिया।

वैदेशिक-वि० [सं०] विदेशका; विदेश-संबंधी। पु० दूसरे देशका व्यक्ति, विदेशी। **-नीति**-स्त्री० किसी राष्ट्रकी परराष्ट्र या अन्य राष्ट्रोंके साथ बरती जानेवाली नीति। **-व्यापार**-पु० किसी देशका अन्य देशोंकेसाथ होनेवाला व्यापार।

वैदेही-स्त्री० [सं०] विदेहकी राजकुमारी, सीता।

वैद्य-वि० [सं०] वेद-संबंधी; वेदविहित। पु० विद्वान्; आयुर्वेदका ज्ञाता, चिकित्सक। **-राज**-पु० धन्वंतरि; श्रेष्ठ वैद्य। **-विद्या**-स्त्री० चिकित्साशास्त्र। **-शास्त्र**-पु० चिकित्सा-संबंधी ग्रंथ या विद्या।

वैद्यक-पु० [सं०] चिकित्सक; चिकित्साशास्त्र। वि० चिकित्सा-संबंधी।

वैद्या-स्त्री० [सं०] काकोली; वैद्यकी स्त्री; स्त्री वैद्य।

वैद्युत-वि० [सं०] बिजलीका; बिजली-संबंधी। पु० वपुष्मान्का एक पुत्र; बिजलीकी अग्नि।

वैद्रुम-वि० [सं०] विद्रुम, मूँगेका।

वैध-वि० [सं०] विधि-संगत, विहित; जायज; कानूनके मुताबिक।

वैधर्मिक-वि० [सं०] जो धर्मसंगत न हो, अविहित।

वैधर्म्य-पु० [सं०] असमानता, अंतर; धर्म या गुणकी भिन्नता; कर्तव्यकी भिन्नता; वैपरीत्य; अवैधता; नास्तिकता।

वैधव-पु० [सं०] विधु-चंद्रमाका पुत्र, बुध।

वैधवेय–पु० [सं०] विधवाका, विधवाके गर्भसे उत्पन्न पुत्र।

वैधव्य–पु० [सं०] रँड़ापा। **–लक्षणोपेता**–स्त्री० वैधव्यके चिह्नोंसे युक्त (विवाहके अयोग्य) कन्या।

वैधानिक–वि० [सं०] विधान-संबंधी; विधान(संविधान)के अनुकूल।

वैधीकरण–पु० [सं०] (वैलिडेशन) विधिके अनुरूप या अनुकूल बना देना, वैध रूप दे देना।

वैधुर्य–पु० [सं०] विधुरता; वियोग; अविद्यमानता; कातरता; नैराश्य।

वैनतेय–पु० [सं०] विनता-पुत्र, गरुड़।

वैनयिक–वि० [सं०] विनय, शिष्टता, अनुशासन-संबंधी।

वैनायक–वि० [सं०] विनायक, गणेश-संबंधी।

वैनाशिक–वि० [सं०] विनाश-संबंधी; नश्वर; विनाशमें विश्वास करनेवाला; विनाश करनेवाला।

वैपरीत्य–पु० [सं०] विपरीत होनेका भाव, प्रतिकूलता।

वैपारी†–पु० दे० 'व्यापारी'।

वैपुल्य–पु० [सं०] प्राचुर्य, अधिकता; विशालता।

वैफल्य–पु०[सं०] विफलता; निरर्थकता, उपयोगराहित्य।

वैभव–पु० [सं०] शक्ति; ऐश्वर्य; गौरवान्वित पद; महत्ता; अलौकिक शक्ति। **–शाली(लिन्)**–वि० वैभव-विशिष्ट; ऐश्वर्यवाला।

वैभाषिक–वि० [सं०] वैकल्पिक। पु० विभाषा (एक बौद्ध संप्रदाय)का अनुयायी।

वैभिन्न्य–पु० [सं०] विभिन्नता।

वैभ्राज–पु० [सं०] विष्वक्सेन; एक लोक; एक पर्वत; एक देवोद्यान; देवोद्यानस्थ सरोवर; एक अरण्य।

वैभ्राजक–पु० [सं०] एक देवोद्यान।

वैमत्य–पु० [सं०] मतभेद, फूट; नापसंदी। **–सूचक**–वि० (डिसकॉर्डेंट) असहमति या भिन्न मत सूचित करनेवाला।

वैमनस्य–पु० [सं०] अन्यमनस्कता; मनमुटाव, वैर।

वैमल्य–पु० [सं०] निर्मलता, स्वच्छता, विशुद्धता।

वैमात्र, वैमात्रेय–वि० [सं०] सौतेला। पु० सौतेला भाई।

वैमात्रक–पु० [सं०] सौतेला भाई।

वैमात्रा, वैमात्री, वैमात्रेयी–स्त्री० [सं०] सौतेली बहन।

वैमानिक–वि० [सं०] विमान-संबंधी। पु० विमानारोही; गगनपर्यटक; (एअरमैन) विमान-चालन आदिका काम करनेवाला, विमानका चालक या अन्य कर्मचारी।

वैमुख्य–पु० [सं०] विरक्ति; विमुखता; पलायन; घृणा।

वैयक्तिक–वि० [सं०] व्यक्तिगत, निजी। **–बंध**–पु० (पर्सनल बांड) किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया ऐसा प्रतिज्ञापत्र जिसमें लिखी हुई बातें पूरी करनेको वह बाध्य हो तथा जिन्हें पूरा न करनेपर निर्धारित धन दंड-स्वरूप देनेके लिए वह अपने आपको जिम्मेदार समझे।

वैया–पु० एक प्रत्यय = वाला, (कोई काम) करनेवाला।

वैयाकरण–पु० [सं०] व्याकरणका विद्वान्।

वैयाघ्र–वि० [सं०] व्याघ्र-संबंधी; व्याघ्र जैसा।

वैयात्य–पु० [सं०] धृष्टता; निर्लज्जता; अविनय; उजड्डपन।

वैरंकर–वि० [सं०] शत्रुता दिखलानेवाला।

वैर–पु० [सं०] विरोध, शत्रुता, दुश्मनी; घृणा। **–कारक**–वि० शत्रुता पैदा करनेवाला। **–कारी(रिन्)**, **–कृत्**–वि० झगड़ालू। **–प्रतिक्रिया**–स्त्री०, **–प्रतीकार**–पु० वैर-प्रतिशोध। **–भाव**–पु० शत्रुता। **–रक्षी(क्षिन्)**–वि० शत्रुताका निवारण करनेवाला। **–शुद्धि**–स्त्री० वैरका बदला। **–व्रत**–पु० शत्रुताका व्रत, प्रतिज्ञा।

वैरल्य–पु० [सं०] विरलता, न्यूनता।

वैरस, वैरस्य–पु० [सं०] विरसता; अनिच्छा, इच्छा न होना, अरुचि।

वैरागी(गिन्)–पु० [सं०] एक वैष्णव संप्रदाय, उदासी। वि० विषयकी इच्छासे रहित, विरक्त, उदासीन।

वैराग्य–पु० [सं०] रंग बदलना, विवर्ण होना; विषय-वासना और सांसारिक संबंधोंसे मनका उचट जाना, विरक्ति, उदासीनता।

वैराज्य–पु० [सं०] दो राजाओंकी संयुक्त शासनप्रणाली, दुराज; ऐसे शासनवाला देश; विदेशी शासन।

वैरि–पु० [सं०] वैरी, दुश्मन।

वैरी(रिन्)–वि० [सं०] शत्रुतापूर्ण। पु० शत्रु; योद्धा।

वैरूप्य–पु० [सं०] विरूपता; विकृति; कुरूपता; रूप-विभिन्नता।

वैरेचन, वैरेचनिक–वि० [सं०] विरेचन-संबंधी।

वैरोचन–वि० [सं०] सूर्य-संबंधी; विरोचनसे उत्पन्न। पु० सूर्यका एक पुत्र; विरोचनका पुत्र, बलि। **–निकेतन**–पु० पाताल।

वैरोचनि–पु० [सं०] बलि; एक बुद्ध; सूर्यका एक पुत्र।

वैलक्षण्य–पु० [सं०] विचित्रता; विभिन्नता; अंतर।

वैवर्ण–पु० दे० 'वैवर्ण्य'।

वैवर्ण्य–पु० [सं०] विवर्णता, रंग बदल जाना; मालिन्य।

वैवश्य–पु० [सं०] विवशता; आत्मनियंत्रणका अभाव।

वैवाहिक–वि० [सं०] विवाह-संबंधी।

वैवाह्य–वि० [सं०] विवाह-संबंधी; विवाह द्वारा संबद्ध। पु० विवाह-संस्कार।

वैशंपायन–पु० [सं०] वेदव्यासके शिष्य (इन्होंने जनमेजयको महाभारतकी कथा सुनायी थी); एक प्राचीन ऋषि।

वैशद्य–पु० [सं०] विशदता, निर्मलता; कांति; स्पष्टता।

वैशाख–पु० [सं०] चैत्रके बादका महीना; मथानी। **–नंदन**–पु० गधा।

वैशाखी–स्त्री० [सं०] वैशाखकी पूर्णिमा।

वैशारद्य–पु० [सं०] दक्षता, पांडित्य; बुद्धि।

वैशिक–वि० [सं०] वेश्यागामी। पु० वेश्यागामी नायक।

वैशिष्ट–पु० [सं०] विशिष्टता, विशेषता; अंतर।

वैशिष्ट्य–पु० [सं०] विशेषता, अंतर; श्रेष्ठता।

वैशेषिक–वि० [सं०] विशेषतायुक्त; श्रेष्ठ; विशेष विषय-संबंधी; वैशेषिक दर्शन-संबंधी। पु० कणाद-प्रवर्तित एक दर्शन जिसमें तत्त्वोंका विवेचन किया गया है; इस दर्शनका अनुयायी।

वैशेष्य–पु० [सं०] विशेषता; प्राधान्य।

वैश्य–पु० [सं०] द्विजातियोंमें तीसरा और अंतिम वर्ण (जिसका पेशा कृषि, वाणिज्य आदि है)। वि० वैश्य जाति-संबंधी। **–कर्म(न्)**–पु० वैश्यका पेशा–कृषि, वाणिज्य आदि। **–वृत्ति**–स्त्री० वैश्यका पेशा।

वैश्रवण–पु० [सं०] कुबेर; रावण। वि० कुबेर-संबंधी।

वैश्वजनीन–वि० [सं०] विश्व भरके लोगोंसे संबंध रखनेवाला; समस्त विश्वके लोगोंका कल्याण-साधक।

वैश्वदेव–वि० [सं०] सब देवोंसे संबंध रखनेवाला। पु० विश्वदेवके उद्देश्यसे किया हुआ होम, यज्ञ; एक एकाह; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

वैश्वदेवत, वैश्वदैवत–पु० [सं०] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्वदेव कहे जाते हैं।

वैश्वदेविक, वैश्वदेव्य–वि० [सं०] विश्वदेव-संबंधी।

वैश्वमनस–पु० [सं०] एक साम।

वैश्वयुग–पु० [सं०] बृहस्पतिके पाँच संवत्सरोंका समाहार।

वैश्वरूप–वि० [सं०] बहुतसे रूपोंवाला; विभिन्न प्रकारका। पु० विश्व।

वैश्वरूप्य–वि० [सं०] दे० 'वैश्वरूप'। पु० बहुरूपता; विभिन्नता।

वैश्वानर–वि० [सं०] अग्नि-संबंधी। पु० अग्नि; जठराग्नि, पित्त; चित्रक वृक्ष।

वैषम्य–पु० [सं०] विषमता; समतल न होना; अनुपात-राहित्य; कठिनाई; संकट; कठोरता; अनौचित्य; भूल।

वैषयिक–वि० [सं०] विषय-संबंधी; प्रदेश, भूभाग-संबंधी; पु० कामी, लंपट।

वैषुवत–पु० [सं०] विषुव (संक्रांति); केंद्र, मध्य। वि० मध्यवर्ती; विषुव रेखा-संबंधी।

वैष्णव–वि० [सं०] विष्णु-संबंधी; विष्णुको पूजनेवाला। पु० विष्णुकी उपासना करनेवाला; एक धार्मिक संप्रदाय (जिसमें विष्णुकी उपासना की जाती है)।

वैष्णवी–स्त्री० [सं०] वैष्णव-संप्रदायकी स्त्री; विष्णुकी शक्ति; दुर्गा और मनसा; अपराजिता; शतावरी; तुलसी।

वैसा–वि० उस तरहका। अ० उस प्रकार; उतना।

वैसादृश्य–पु० [सं०] विषमता, असमानता; अंतर।

वैसे–अ० उस प्रकारसे; यों।

वैहायस–वि० [सं०] आकाशमें विचरण करनेवाला; आकाशस्थ; वायु-संबंधी। पु० देवता; एक झील।

वैहासिक–पु० [सं०] विदूषक; अभिनेता। वि० हँसानेवाला।

वोक*–स्त्री० तरफ, ओर–'सूर स्याम कालीपर निर्तत आवत ब्रजकी वोक'–सू०।

वोछा*–वि० दे० 'ओछा'।

वोट–पु० [अं०] किसी व्यक्तिके निर्वाचनके लिए दिया जानेवाला मत।

घोड़ना*–स० क्रि० फैलाना, पसारना।

वोढव्य–वि० [सं०] सहनीय; ले जाये जाने योग्य, वाह्य।

वोद–वि० [सं०] आर्द्र, गीला।

वोदर, वोद्र*–पु० उदर–'जग जाके वोदर बसै तिहि तूँ ऊपर लेय'–दास।

वोर*–स्त्री० अंत; तरफ।

वोहित्थ–पु० [सं०] जहाज, पोत, बड़ी नाव।

व्यंग्य–वि० [सं०] व्यंजनावृत्ति द्वारा बोधित, संकेतित। पु० संकेतितार्थ, गूढ़ार्थ; चिढ़ाने, नीचा दिखाने आदिके उद्देश्यसे कहे गये विपरीतार्थ-बोधक शब्द, ताना। **–चित्र**–पु० व्यंग्य या उपहासकी दृष्टिसे बनाया गया चित्र।

व्यंग्योक्ति–स्त्री० [सं०] गूढ़ भाषा, वह उक्ति जिसमें व्यंग्य हो।

व्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करनेवाला, प्रकाशक; अर्थका संकेत करनेवाला।

व्यंजन–पु० [सं०] प्रकट करना; स्वरहीन वर्ण; चिह्न; परिचायक चिह्न; भोजन-सामग्री, मसाले आदि; पका हुआ भोजन (बोलचाल); पंखा (व्यजनका विकृत रूप); दे० 'व्यंजना' (सा०)। **–कार**–पु* भोजन बनानेवाला। **–संधि**–स्त्री० व्यंजन वर्णोंके मिलनसे होनेवाला विकार।

व्यंजना–स्त्री० [सं०] व्यक्त करनेकी क्रिया; तीन प्रकारकी शब्दशक्तियोंमेंसे एक जो अभिधा और लक्षणाके विरत हो जानेपर संकेतितार्थ प्रकट करती है। **–वृत्ति**–स्त्री० व्यंग्यपूर्ण भाषा लिखनेकी शैली; व्यंजना-शक्ति।

व्यंजित–वि० [सं०] प्रकट किया हुआ; चिह्नित; संकेतित।

व्यक्त–वि० [सं०] प्रकट; विकसित; प्रत्यक्ष, स्पष्ट, दृश्य।

व्यक्ति–स्त्री० [सं०] व्यक्त, प्रकट होनेकी क्रिया; प्रकट रूप; स्पष्टता। पु० व्यष्टि, जन (जाति या समष्टिका उलटा)। **–गत**–वि० एक व्यक्तिका, अपना, निजी।

व्यक्तित्व–पु० [सं०] व्यक्तिकी अपनी विशेषता, गुण; वह विशेषता जो किसी व्यक्तिमें असामान्य रूपसे पायी जाय।

व्यक्तीकरण–पु० [सं०] व्यक्त, प्रकट करनेकी क्रिया।

व्यक्तीभूत–वि० [सं०] जो प्रकट हो गया हो।

व्यग्र–वि० [सं०] व्याकुल, परेशान, घबड़ाया हुआ; डरा हुआ; संलग्न, व्यस्त; अस्थिर। **–मना (नस्)**–वि० घबड़ाया हुआ, परेशान।

व्यजन–पु० [सं०] पंखा झलना; पंखा।

व्यतिक्रम–पु० [सं०] बीतना, गुजरना (समय); उल्लंघन; उपेक्षा; रीति-भंग; क्रम-विपर्यय; संकट; बाधा।

व्यतिक्रमण–पु० [सं०] क्रमभंग करना; पाप करना, बुराई करना।

व्यतिक्रमी (मिन्)–वि० [सं०] पापी, अपराधी।

व्यतिक्रांत–वि० [सं०] भंग किया हुआ; उल्लंघित; विपर्यस्त; बिताया हुआ।

व्यतिक्षेप–पु० [सं०] अदल-बदल; वितंडा, कहासुनी, झगड़ा।

व्यतिचार–पु० [सं०] पापाचरण, बुराई।

व्यतिपात–पु० [सं०] विष्कंभ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे एक।

व्यतिरिक्त–वि० [सं०] अतिशय, बहुत अधिक; पृथक्। अ० सिवा, अलावा, छोड़कर।

व्यतिरेक–पु० [सं०] भेद, अंतर, पार्थक्य; अभाव, राहित्य; एक काव्यालंकार जहाँ उपमानकी अपेक्षा उपमेयकी अधिकता कही जाय।

व्यतीत–वि० [सं०] बीता हुआ, गत; प्रस्थित; मृत; त्यक्त।

व्यतीतना*–अ० क्रि० व्यतीत होना, बीतना, गुजरना।

व्यतीपात–पु० [सं०] दे० 'व्यतिपात'; भारी उपद्रव।

व्यत्यय, व्यत्यास–पु० [सं०] व्यतिक्रम; विपर्यय, वैपरीत्य; परिवर्तन; विरोध; बाधा।

व्यथयिता (तृ)–वि० [सं०] पीड़ा देनेवाला; दंड देनेवाला।

व्यथा–स्त्री० [सं०] पीड़ा, दुःख । **–कर**–वि० कष्टदायक ।

व्यथाकुल–वि० [सं०] कष्टग्रस्त, व्यथित ।

व्यथाक्रांत–वि० [सं०] दे० 'व्यथित' ।

व्यथित–वि० [सं०] पीड़ित, दुःखित; डरा हुआ ।

व्यपकर्ष–पु० [सं०] अपवाद ।

व्यपगत–वि० [सं०] गया हुआ, प्रस्थित; लुप्त;...से गिरा हुआ; वंचित, रहित; (लैप्स्ड) ढिलाई या भूलसे उचित समयपर काममें न लाये जानेके कारण जो हाथसे निकल गया हो या बेकार (रद्द) हो गया हो । **–रश्मि**–वि० जिसकी किरणें विलीन हो गयी हों ।

व्यपगति–स्त्री०, **व्यपगमन**–पु० [सं०] (लैप्स) किसी अधिकार, सुविधा आदिका उचित समयके भीतर प्रयोग न होनेके कारण हाथसे निकल जाना या रद्द हो जाना ।

व्यपगम–पु० [सं०] प्रस्थान; लोप; बीतना (समय) ।

व्यभिचार–पु० [सं०] कुमार्ग-गमन; पाप, दुराचार, दुष्कर्म; अनुचित यौन संबंध; नियमका अपवाद; गलत तर्क, एक तर्क छोड़कर दूसरेका सहारा लेना; गलत हेतु, साध्यरहित हेतु (न्या०) ।

व्यभिचारिणी–स्त्री० [सं०] पुंश्चली, कुलटा ।

व्यभिचारी(रिन्)–वि० [सं०] कुमार्गगामी; दुश्चरित्र; अनुचित यौन संबंध करनेवाला; जो स्थिर न रहे, अस्थायी; भंग करनेवाला, उल्लंघन करनेवाला; नियम-विरुद्ध; कई गौण अर्थोंवाला (शब्द) । **–भाव**–पु० एक प्रकारके भाव जो स्थायी न रहकर सभी रसोंमें सहायकके रूपमें संचरण करते हैं (आचार्योंने इनकी संख्या तैंतीस मानी है), संचारीभाव (सा०) ।

व्यय–पु० [सं०] क्षय, लोप, नाश; धन आदिका किसी काममें लगना, खर्च (आयका उलटा); त्याग; लग्नसे बारहवाँ स्थान; एक संवत्सर । **–शाली(लिन्)**, **–शील**–वि० अपव्ययी ।

व्ययित–वि० [सं०] खर्च, व्यय किया हुआ ।

व्ययी(यिन्)–वि० [सं०] खूब खर्च करनेवाला; क्षय होनेवाला ।

व्यर्थ–वि० [सं०] निरुपयोगी, बेकार; निष्फल; संपत्तिहीन; बेमानी; असंगत । अ० यों ही, बिना मतलबके, नाहक ।

व्यर्थन–पु० [सं०] पहलेके किसी आदेश या निर्णयादिको रद्द कर व्यर्थ बना देना (नलिफिकेशन) ।

व्यलीक–वि०[सं०] असत्य; अप्रिय; कष्टकर;अनुचित । पु० अप्रिय वस्तु; दुःखका कारण; अपराध; छल; अप्रियता ।

व्यवकलन–पु० [सं०] पार्थक्य, जुदाई; एक संख्यामेंसे दूसरी संख्या घटाना, बाकी, घटाव ।

व्यवकलित–वि० [सं०] वियोगित; हीनित; व्यवकलन किया हुआ, घटाया हुआ ।

व्यवच्छिन्न–वि० [सं०] काटकर अलग किया हुआ; पृथक् किया हुआ; विभक्त; भिन्न; विशेषित; बाधित ।

व्यवच्छेद–पु० [सं०] काटकर अलग करना; विभाजन; शवच्छेद; पृथक् करना; अंतर दिखलाना; निश्चय ।

व्यवच्छेदक–वि० [सं०] भिन्न करनेवाला, विशेषता दिखलानेवाला, अलग करनेवाला ।

व्यवदात–वि० [सं०] साफ; चमकीला ।

व्यवदान–पु० [सं०] शुद्धि, संस्कार, सफाई ।

व्यवदीर्ण–वि० [सं०] खंडित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; हतबुद्धि ।

व्यवधा–स्त्री० [सं०] वह जो बीचमें आ पड़े, व्यवधान; परदा, आवरण; छिपाव ।

व्यवधाता(तृ)–वि० [सं०] पृथक् करनेवाला; बीचमें पड़नेवाला; परदा करनेवाला, आड़ करनेवाला ।

व्यवधान–पु० [सं०] बीचमें पड़नेवाली वस्तु; बाधा; ओटमें हो जाना; आवरण, परदा; पार्थक्य, विभाग; अंत, समाप्ति ।

व्यवधायक–वि० [सं०] परदा करनेवाला, ओटमें करनेवाला; ढकनेवाला; खलल डालनेवाला, बाधक ।

व्यवसाय–पु० [सं०] प्रयास, उद्योग; अभिप्राय; व्यापार, कारबार; कर्म; अवस्था; कौशल; छल; कोई पेशा करना; जीविका; वृत्ति, आचरण; डींग; विष्णु; शिव; धर्मका एक पुत्र । **–प्रशिक्षण**–पु० (वोकेशनल ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय या पेशेमें योग्यता प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला प्रशिक्षण । **–बुद्धि**–वि० दृढ़निश्चय । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० दृढ़ निश्चयके साथ काम करनेवाला । **–संघ**–पु० (ट्रेडयूनियन) किसी व्यवसाय, कारखाने आदिमें काम करनेवाले श्रमिकों तथा अन्य कर्मचारियोंकी संस्था जो मालिकों या नियोजकोंके सामने कर्मियोंके हितके संबंधकी बातें रखने आदिमें उनका प्रतिनिधित्व करे ।

व्यवसायात्मक–वि० [सं०] संकल्प, उत्साहसे पूर्ण ।

व्यवसायी(यिन्)–वि० [सं०] उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी; दृढ़संकल्प; अध्यवसायी; कोई काम करता हुआ; किसी पेशेमें लगा हुआ । पु० व्यापारी; कारबार करनेवाला; शिल्पी ।

व्यवस्था–स्त्री० [सं०] प्रबंध, इंतजाम; आपेक्षिक अंतर या स्थिति; दृढ़ता; अध्यवसाय; निश्चित सीमा; विधान; अवस्था, स्थिति; अवसर; शर्त; वस्तुओंकी स्थिति या क्रम, उन्हें करीनेसे रखना; पार्थक्य । **–पत्र**–पु० किसी विषयका लिखित शास्त्रीय विधान; दस्तावेज ।

व्यवस्थान–पु० [सं०] प्रबंध; निश्चय; विधान; स्थिरता; दृढ़ता; अध्यवसाय; पार्थक्य; अवस्था; विष्णु । **–प्रज्ञप्ति**–स्त्री० एक बहुत बड़ी संख्या (बौद्ध) ।

व्यवस्थापक–पु० [सं०] प्रबंध करनेवाला; करीनेसे रखनेवाला; निश्चय करनेवाला; किसी विषयपर शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला; व्यवस्थापिका सभाका सदस्य ।

व्यवस्थापिका सभा–स्त्री० [सं०] विधान बनानेवाली वह सभा जिसके अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित किये गये होते हैं ।

व्यवस्थापित–वि० [सं०] जिसकी व्यवस्था की गयी हो; विधिपूर्वक रखा या रखवाया हुआ; नियमित ।

व्यवस्थित–वि० [सं०] ठीक हालतमें किया हुआ, विधिपूर्वक रखा हुआ; व्यूहबद्ध; स्थित; निश्चित; निर्णीत; विधान द्वारा निर्दिष्ट; अवलंबित, आधृत; जो ठहरा हो; अविकारी; वर्तमान ।

व्यवस्थिति–स्त्री० [सं०] अलग रखा जाना, भेद किया

जाना; ठहरना; रहना; लगा रहना, अध्यवसाय; निश्चित नियम।

व्यवहर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] कारबार करनेवाला; रीति-नीतिका पालन करनेवाला। पु० किसी कारबारका प्रबंधक या संचालक; विचारपति; मुकदमा लड़नेवाला; वादी; साथी; वैश्य।

व्यवहार–पु० [सं०] कार्य; अनिवार्य कार्य; आचरण, बर्ताव; प्रयोग; कारबार; पेशा; व्यापार; महाजनी; विषय, माजरा; रीति, प्रथा, रिवाज; शर्त, पण; स्थिति; विवाद; मुकदमा; मुकदमेका कारण; मुकदमेका विचार; दंड; कारबार सँभालनेकी योग्यता; औचित्य (विधानके विचारसे); संबंध; पद; खड्ग; एक वृक्ष। **–ज्ञ**–वि० दुनियाके तौर-तरीकेका जानकार; अपना कारबार सँभालने योग्य, बालिग; मुकदमेकी कारवाई समझनेवाला। **–तंत्र**–पु० आचारशास्त्र। **–दर्शन**–पु० मुकदमेकी जाँच, मुकदमेका विचार। **–द्रष्टा(ष्टृ)**–पु० विचारपति। **–निरीक्षक**–पु० वह अधिकारी जो सामान्य मुकदमोंमें सरकारकी ओरसे पैरवी करता है (कोर्ट इन्स्पेक्टर)। **–न्यायालय**–पु० (सिविल कोर्ट) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादोंपर विचार करनेवाला न्यायालय। **–पद**–पु० व्यवहार, मुकदमेका विषय। **–प्राप्त**–वि० जिसकी अवस्था सोलह वर्षसे अधिक हो गयी हो, बालिग। **–लक्षण**–पु० मुकदमेकी जाँच-संबंधी विशेषता। **–वाद**–पु० (सिविल सूट) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादका मामला। **–विधि**–स्त्री० व्यवहारका विधान, न्यायशास्त्र। **–विषय,–स्थान**–पु० मुकदमेका विषय। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें विवाद-संबंधी बातोंका विवेचन किया गया हो। **–सिद्धि**–स्त्री० धर्मशास्त्रके अनुसार मुकदमेका निर्णय। **–स्थिति**–स्त्री० मुकदमेके विचारसे संबंध रखनेवाली कारवाई।

व्यवहारक–पु० [सं०] व्यापारी।

व्यवहारार्थी(र्थिन्)–पु० [सं०] वादी, मुद्दई।

व्यवहारासन–पु० [सं०] न्यायासन, विचारासन।

व्यवहारास्पद–पु० [सं०] फरियाद, नालिश।

व्यवहारिक–वि० [सं०] कारबार-संबंधी; कारबारमें लगा हुआ; कानून-संबंधी; मुकदमेबाज; प्रचलित व्यवहारमें आनेवाला। **–जीव**–पु० ज्ञानमय कोष (वेदांत)।

व्यवहारी(रिन्)–वि० [सं०] कारबारमें लगा हुआ; मुकदमा लड़नेवाला; प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो।

व्यवहार्य–वि० [सं०] व्यवहारके योग्य, काममें लाने योग्य; करने योग्य; जिसके साथ व्यवहार किया जा सके, जिसका साथ किया जा सके; प्रचलित; मुकदमेके लायक (विषय)। पु० खजाना।

व्यवहित–वि० [सं०] अलग रखा हुआ; किसी वस्तुके द्वारा पृथक् किया हुआ; रोका हुआ; छिपाया हुआ; दूरवर्ती; जिसका लगातार संबंध न हो।

व्यवहृत–वि० [सं०] आचरित, अनुष्ठित; व्यवहार या प्रयोगमें लाया हुआ।

व्यष्टि–स्त्री० [सं०] प्राप्ति; सफलता; एक होनेका भाव; समष्टिका एक स्वतंत्र अंश। **–वाद**–पु० व्यष्टिकी स्वतंत्र सत्ता तथा अधिकार माननेका सिद्धांत।

व्यसन–पु० [सं०] खामी, त्रुटि; संकट, विपत्ति; दुर्भाग्य; पाप, दुराचरण; बुरी आदत, लत; बहुत ज्यादा आदी होना; प्रिय विषय। **–काल**–पु० संकटका समय, दुर्दिन। **–प्राप्ति**–स्त्री० दुर्दिन आना।

व्यसनाक्रांत–वि० [सं०] संकटग्रस्त।

व्यसनागम–पु० [सं०] दुर्दिनका आना।

व्यसनात्यय–पु० [सं०] संकटका अंत।

व्यसनान्वित, व्यसनाप्लुत–वि० [सं०] संकटमें पड़ा हुआ, विपद्ग्रस्त।

व्यसनार्त–वि० [सं०] संकटापन्न।

व्यसनी(निन्)–वि० [सं०] जिसे किसी विषयका बहुत शौक हो; विषयासक्त; किसी बुरी चीजका आदी; पापी; बदनसीब; किसी कार्यमें जी-जानसे लगा हुआ।

व्यस्त–वि० [सं०] फेंका हुआ, उछाला हुआ; तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ; हटाया हुआ; निकाला हुआ, पृथक् किया हुआ; व्यष्टि रूपमें ग्रहण किया हुआ; समास-रहित (व्या०); विभिन्न; घबड़ाया हुआ; क्षुब्ध; जो क्रममें न हो, जो ठीक हालतमें न हो; उलटा हुआ; व्याप्त, निहित; कार्यादिमें संलग्न, उलझा हुआ; परिवर्तित। **–केश**–वि० जिसके बाल बिखरे हों।

व्याकरण–पु० [सं०] वह विद्या जिसके द्वारा भाषाके शब्दों, उनके रूपों और प्रयोगों आदिका ज्ञान होता है।

व्याकीर्ण–वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा हुआ; अस्त-व्यस्त; व्याकुल, क्षुब्ध। पु० अस्तव्यस्तता; गड़बड़।

व्याकुल–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि; व्यग्र; भीत; अभिभूत; किसी काममें लगा हुआ; तेजीसे इधर-उधर चलता हुआ, कंपित (जैसे विद्युत्)। **–चित्त,–मना(नस्),–हृदय**–वि० जिसका दिल बहुत घबड़ाया हुआ हो, व्यग्र। **–मूर्धज**–वि० जिसके बाल बिखरे हों। **–लोचन**–वि० जिसकी दृष्टि मंद हो गयी हो।

व्याकुलित–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ; भीत।

व्याकूति–स्त्री० [सं०] छल, कपट; बुरी नीयत।

व्याकृति–स्त्री० [सं०] पार्थक्य, भेद, अंतर; विश्लेषण; व्याख्या; रूप-परिवर्तन; व्याकरण।

व्याक्रोश–पु० [सं०] गाली देना, भर्त्सना करना; चिल्लाना।

व्याख्या–स्त्री० [सं०] कठिन पदादिका अर्थ स्पष्ट करनेवाला विवरण, टीका; वर्णन। **–गम्य**–वि० व्याख्याके जरिये समझा जानेवाला।

व्याख्यात–वि० [सं०] जिसकी व्याख्या, टीका की गयी हो; वर्णित, कथित।

व्याख्यातव्य–वि० [सं०] व्याख्या करने योग्य, जिसकी व्याख्या करनी हो।

व्याख्याता (तृ)–पु० [सं०] व्याख्या करनेवाला; भाषण करनेवाला।

व्याख्यान–पु० [सं०] टीका करना, व्याख्या करना; वर्णन; भाषण, वक्तृता। **–पीठ**–पु० (रोस्ट्रम) मंचका वह ऊँचा स्थान जहाँ खड़ा होकर कोई वक्ता व्याख्यान देता या भाषण करता है। **–शाला**–स्त्री० व्याख्यान, भाषणके लिए बना स्थान।

व्याघात–पु० [सं०] चोट, आघात; पराजय; क्षोभ; खलल; बाधा, विघ्न; (दो कथनोंका) परस्पर विरोध; एक काव्यालंकार जहाँ एक व्यक्ति द्वारा जिस उपायसे जो कार्य किया जाय, वहाँ अन्य व्यक्ति द्वारा उसी उपायसे उसके विपरीत किया जाय, अथवा जहाँ परस्पर विरोधी क्रियाओं द्वारा एक ही कार्यका होना दिखलाया जाय ।

व्याघ्र–पु० [सं०] एक हिंस्र जंतु, बाघ । वि० (समासांतमें) सर्वश्रेष्ठ, प्रधान ।**–चर्म(न्)**–पु० बाघकी खाल ।**–नख**–पु० बाघका नख या पंजा; नखी नामक गंधद्रव्य । **–पुच्छ,–पुच्छक**–पु० बाघकी पूँछ; एरंड । **–लोम(न्)**–पु० शेरके बाल; मुँहपरके बाल, मूँछ ।**–वक्त्र**–वि० बाघकेसे मुखवाला ।

व्याघ्राण–पु० [सं०] सूँघनेकी क्रिया ।

व्याघ्री–स्त्री० [सं०] बाघिन; कंटकारी; एक कौड़ी ।

व्याज–पु० [सं०] छल, धोखा, फरेब; बहाना; कौशल, धूर्तता; दुष्टता । **–निंदा**–स्त्री० स्तुतिकी ओटमें निंदा; एक काव्यालंकार जहाँ किसीकी स्तुतिसे वस्तुतः निंदा ही प्रकट हो अथवा जहाँ एककी निंदा करनेसे किसी अन्यकी निंदा प्रकट हो । **–स्तुति**–स्त्री० निंदाके बहाने स्तुति; एक काव्यालंकार जहाँ देखनेमें तो किसीकी निंदा की जाय किंतु समझनेपर वह स्तुति प्रकट हो अथवा जहाँ किसी एककी बड़ाई करनेसे अन्यकी बड़ाई जान पड़े ।

व्याजी–स्त्री० [सं०] तौलनेके बाद कुछ दे देना, घलुआ ।

व्याजोक्ति–स्त्री० [सं०] छलपूर्ण बात; एक काव्यालंकार जहाँ प्रकट होती हुई बातका कपटसे, बहाना आदि बनाकर, गोपन किया जाय ।

व्याड–पु०[सं०] (व्याघ्रादि) शिकारी जानवर; सर्प; खल । दुष्ट, इंद्र । वि० द्वेषी; बुराई करनेवाला ।

व्यादान–पु० [सं०] खोलने, फैलानेकी क्रिया ।

व्याध–पु० [सं०] शिकार द्वारा जीविका चलानेवाली एक संकर जाति; यह पेशा करनेवाला आदमी, बहेलिया ।

व्याधि–स्त्री० [सं०] पीड़ा; रोग; झंझट; कष्ट पहुँचानेवाला व्यक्ति या वस्तु (ला०); एक संचारी भाव (सा०) ।**–कर**–वि० रोग उत्पन्न करनेवाला, अस्वास्थ्यकर । **–ग्रस्त**–वि० रोगग्रस्त, रुग्ण, बीमार । **–निग्रह**–पु० रोगका दबाया जाना । **–पीडित**–वि० रोगग्रस्त । **–भय**–पु० रोगका भय । **–मंदिर**–पु० शरीर । **–युक्त**–वि० रुग्ण । **–रहित**–वि० रोगमुक्त ।**–हर**–वि० रोगनाशक।

व्याधित–वि० [सं०] रोगग्रस्त, रुग्ण ।

व्यान–पु० [सं०] शरीरस्थ पाँच वायुओंमेंसे एक ।

व्यापक–वि० [सं०] दूरतक, सर्वत्र फैला हुआ, जो किसी चीजके सारे विस्तारमें हो; आच्छादक; जिसमें वहसके सारे विचारणीय विषयोंका अंतर्भाव हो; जो एक भावसे किसीमें हमेशा रहता हो; जो व्याप्यसे अधिक विस्तृत हो (न्या०) । **–पुरुषमताधिकार**–पु० (यूनिवर्सल मैनहुड सफरेज) देशके या राज्यके प्रायः प्रत्येक प्राप्तवयस्क व्यक्तिको, जो पागल न हो तथा जिसने किसी बड़े अपराधमें दंड न पाया हो, दिया गया मत प्रदान करनेका अधिकार ।

व्यापन–पु० [सं०] सर्वत्र फैलना, भरना, व्याप्त होना ।

व्यापना–अ० क्रि० व्याप्त होना, फैलना ।

व्यापादक–वि० [सं०] नाशकारी; घातक (जैसे रोग) ।

व्यापादनीय, व्यापाद्य–वि०[सं०] नष्ट, वध करने योग्य ।

व्यापादित–वि० [सं०] नष्ट किया हुआ, ध्वस्त; हत ।

व्यापार–पु० [सं०] कार्य, काम; क्रिया; कारबार, पेशा; वाणिज्य; प्रयोग; अभ्यास; उद्योग; प्रभाव; सहायता करना । **–चिह्न**–पु० (ट्रेडमार्क) किसी व्यापारी या उद्योगपति द्वारा अपने मालपर अंकित किया जानेवाला वह विशेष चिह्न जिससे उक्त माल अन्य किसीके मालसे अलग पहचाना जा सके । **–मंडल**–पु० (चेंबर ऑफ कामर्स) व्यापारियोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था ।

व्यापारिक–वि० [सं०] व्यापार-संबंधी ।

व्यापारी–वि० व्यापार-संबंधी ।

व्यापारी(रिन्)–पु० [सं०] काम करनेवाला; रोजगारी, व्यवसायी; अभ्यास करनेवाला । वि० किसी व्यवसाय या कार्यमें लगा हुआ ।

व्यापी(पिन्)–वि० [सं०] व्याप्त होनेवाला; सर्वत्र फैलनेवाला; आच्छादक ।

व्याप्त–वि० [सं०] पूरित, भरा हुआ; आच्छादित; समाक्रांत; स्थगित; परिवेष्टित; प्राप्त; ढकनेवाला; अंतर्भूत; प्रसिद्ध; फैला हुआ; नित्य साथ रहनेवाला ।

व्याप्ति–स्त्री० [सं०] व्याप्त होनेका भाव; एक पदार्थमें दूसरेका पूर्णतः मिल जाना; नित्य साहचर्य; विश्वजनीन नियम; पूर्णता; प्राप्ति; व्यापकता; आठ ऐश्वर्योंमेंसे एक।

व्यामूढ–वि० [सं०] बहुत घबड़ाया हुआ ।

व्यामोह–पु० [सं०] अज्ञान; घबड़ाहट ।

व्यायाम–पु० [सं०] फैलाना; कसरत; अभ्यास; क्लांति; श्रम; फौजकी कवायद ।**–भूमि,–शाला**–स्त्री० व्यायाम करनेका स्थान ।

व्यायामी(मिन्)–वि० [सं०] व्यायाम, कसरत करनेवाला, कसरती; परिश्रमी ।

व्यायोग–पु० [सं०] एक प्रकारका रूपक जो एक ही अंकका और वीररसप्रधान होता है ।

व्याल–पु० [सं०] दुष्ट हाथी; सर्प; सिंह; बाघ; चीता; राजा; ठग; विष्णु । **–खड्ग,–नख**–पु० व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य । **–ग्राह,–ग्राही (हिन्)**–पु० सर्प पकड़नेवाला, सँपेरा । **–पाणि,–प्रहरण,–बल,–वल**–पु० दे० ‘व्यालनख’ । **–सूदन**–पु० गरुड़ ।

व्यालाद्–पु० [सं०] सर्प खानेवाला, गरुड़ ।

व्यालू–पु० दे० ‘ब्यालू’ ।

व्यावर्तक–वि० [सं०] घेरनेवाला; अलग करनेवाला, हटानेवाला; भेद, अंतर करनेवाला ।

व्यावर्तन–पु० [सं०] पराङ्मुख होना; निवारण, अलग करना; सर्पकुंडली; लौटना, मुड़ना; चक्कर खाना; परिवेष्टित करना; बराबर होनेवाला परिवर्तन ।

व्यावर्तित–वि० [सं०] मोड़ा, लौटाया हुआ; चक्कर खिलाया हुआ; बदला हुआ ।

व्यावसायिक प्रतिनिधित्व–पु० [सं०] (फंक्शनल रेप्रेजेंटेशन) व्यवसाय या पेशेके आधारपर दिया गया प्रतिनिधित्व ।

व्यावहारिक–वि० [सं०] साधारण जीवन, व्यवहार, कार्य-संबंधी; व्यवहारमें आने लायक; प्रचलित; वास्तविक; मिलनसार; मुकदमा-संबंधी । **–ऋण**–पु० व्यवसाय आदिके लिए लिया हुआ ऋण ।

व्यावृत–वि० [सं०] खुला हुआ, अनावृत; ढका हुआ, परदा किया हुआ; हटाया हुआ, पृथक् किया हुआ; अपवाद किया हुआ ।

व्यावृति–स्त्री० [सं०] आवृत करना, ढकना; पृथक् करना, छाँटना; अनावृत करना (?) ।

व्यावृत्त–वि० [सं०] हटा हुआ; अलग किया हुआ, छाँटा हुआ; अविद्यमान; चक्कर खाया हुआ; परवेष्टित; विरत; विभक्त; भिन्न; तोड़ा-मरोड़ा हुआ; लौटा हुआ; असंगत; मुक्त; गत, लुप्त; पसंद किया हुआ; घेरा हुआ; प्रशंसित ।

व्यावृत्ति–स्त्री० [सं०] मुँह मोड़ना; घेरना; पीछेकी ओर लुढ़काना; घुमाना (नेत्रादि); आवृत्ति; छुटकारा, मुक्ति; वंचित होना, छोड़ दिया जाना; हटाया जाना; भेद, अंतर, पार्थक्य; स्पष्टता; भिन्नता; विराम, अंत; एक प्रकारका यज्ञ; ढकना; प्रशंसा, स्तुति; खंडन; पसंद; अविद्यमानता ।

व्यासंग–पु० [सं०] अत्यधिक आसक्ति; प्रबल इच्छा; भक्ति; अध्यवसायपूर्ण अध्ययन; मनोयोग; पार्थक्य, बिलगाव; घबड़ाहट; योग, जोड़ ।

व्यास–पु० [सं०] पार्थक्य; अंगोंमें विभाग करना; समस्त पदके अंगोंको अलग-अलग करना; मिश्र पदार्थ आदिका विश्लेषण; चौड़ाई; केंद्रसे होती हुई दोनों ओर परिधिपर समाप्त होनेवाली रेखा अथवा दूरी (डाइमीटर); विस्तार; विस्तृत विवरण; एक उच्चारण-दोष; संकलन करना; संकलनकर्ता; एक मुनि, कृष्णद्वैपायन (ये सत्यवतीके गर्भसे पराशरसे उत्पन्न हुए थे। पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर नियोग द्वारा इन्हींसे उत्पन्न हुए थे। इन्होंने वेदोंका वर्तमान रूपमें संकलन किया और महाभारत, वेदांतसूत्र तथा १८ पुराणोंकी रचना की); रामायण, महाभारत आदिकी कथाएँ लोगोंको सुनानेवाला ब्राह्मण, कथावाचक । **–कूट**–पु० महाभारतमें आये हुए कूट-श्लोक; वे कूट-श्लोक जो रामने माल्यवान् पर्वतपर रहते समय मनबहलावके लिए रचे थे। **–देव**–पु० बादरायण, कृष्णद्वैपायन । **–पूजा**–स्त्री० गुरु और व्यासकी पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमाको होती है। **–माता (तृ),–सू**–स्त्री० सत्यवती ।

व्यासक्त–वि० [सं०] अत्यधिक आसक्त; संबद्ध; संलग्न ।

व्यासार्द्ध–पु० [सं०] केंद्रसे परिधितककी दूरी ।

व्यासासन–पु० [सं०] कथावाचकका आसन ।

व्यासिद्ध–वि० [सं०] निषिद्ध; वर्जित (माल) ।

व्यासेध–पु० [सं०] निषेध; वर्जन; रोक, प्रतिबंध ।

व्याहत–वि० [सं०] चोट पहुँचाया हुआ; निवारित; निषिद्ध; व्यर्थ; परस्पर विरोधी ।

व्याहृति–स्त्री० [सं०] उक्ति; कथन; भूः, भुवः आदि सप्तलोकात्मक मंत्र (किसी-किसीके मतसे इसके आरंभिक तीन मंत्र) जिनका जप संध्या करते समय किया जाता है।

व्युत्क्रम–पु० [सं०] सन्मार्गका त्याग; अतिक्रमण; व्यतिक्रम, क्रमभंग; अस्तव्यस्तता; अपराध; मृत्यु ।

व्युत्थान–पु० [सं०] सचेष्टता, सक्रियता; विरोधमें उठना; (रिवोल्ट, अपराइजिंग) राजा या राज्यशासकके विरुद्ध उठ खड़ा होना ।

व्युत्पत्ति–स्त्री० [सं०] उत्पत्ति; मूल, उद्गम; शब्दका मूल रूप; बाढ़, विकास; दक्षता; प्रगाढ पांडित्य । **–रहित**–वि० जिसका मूल रूप अज्ञात हो ।

व्युत्पन्न–वि० [सं०] उत्पादित; मूल रूपसे बनाया हुआ; जिसकी व्युत्पत्ति की गयी हो; पूरा किया हुआ; पूर्ण पंडित ।

व्युत्पादक–वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला; शब्दकी व्युत्पत्ति करनेवाला ।

व्युपदेश–पु० [सं०] बहाना, ठगी ।

व्यूढ–वि० [सं०] फैला हुआ; विकसित; दृढ़; व्यवस्थित; व्यूहबद्ध; जिसका स्थान परिवर्तित हो गया हो; विवाहित ।

व्यूह–पु० [सं०] यथास्थान, विधिपूर्वक रखना; सैनिकोंको युद्धभूमिमें यथोचित स्थानपर रखना; अलग करना, विभाग करना; स्थान-परिवर्तन; रचना; समूह; शरीर । **–भंग,–भेद**–पु० सैनिकोंका यथास्थान न रहना, सेनाका छिन्न-भिन्न होना । **–रचना**–स्त्री० सैनिकोंको यथास्थान रखना ।

व्यूहन–पु०[सं०] व्यूहकी रचना,सैनिकोंको विशेष स्थितिमें रखना; शरीरके अंगोंकी बनावट; स्थानपरिवर्तन ।

व्यूहित–वि० [सं०] व्यूहबद्ध ।

व्योम(न्)–पु०[सं०] आकाश; अवकाश; शरीरस्थ वायु । **–केश,–केशी(शिन्)**–पु० शिव । **–गंगा**–स्त्री० आकाशगंगा । **–ग,–गामी(मिन्)**–वि० गगनचारी । पु० देवता आदि । **–गमनीविद्या**–स्त्री० आकाशमें उड़नेकी विद्या । **–चर**–वि० गगनचारी । पु० तारा इत्यादि । **–चारी(रिन्)**–वि० दे० 'व्योम-ग' । पु० पक्षी; देवता; संत; ब्राह्मण; आकाशीय पिंड । **–पुष्प**–पु० असंभव वस्तु । **–यान**–पु० वायुयान, विमान । **–रत्न**–पु० सूर्य । **–वर्त्म(न्)**–पु० आकाश-मार्ग । **–सरिता**–स्त्री० [हिं०] आकाशगंगा । **–सरित्**–स्त्री० आकाशगंगा । **–स्थली**–स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

व्रज–पु० [सं०] मार्ग, सड़क; गमन, भ्रमण; समूह, झुंड; गोस्थान, गोष्ठ; मथुराके पासका एक स्थान; गोपोंकी बस्ती । **–किशोर,–नाथ**–पु० कृष्ण । **–भाषा**–स्त्री० मथुरा आदिकी तरफ बोली जानेवाली एक बोली जो कई सौ वर्षोंतक हिंदी काव्यकी मुख्य भाषा रही है । **–भू**–वि० व्रजमें उत्पन्न । स्त्री० व्रजभूमि । **–मंडल**–पु० व्रजका क्षेत्र । **–मोहन,–राज,–वल्लभ**–पु० कृष्ण । **–युवती,–रामा,–वधू,–वनिता,–सुंदरी,–स्त्री**–स्त्री० गोपिका ।

व्रजक–पु० [सं०] भ्रमण करनेवाला संन्यासी ।

व्रजन–पु० [सं०] गमन, भ्रमण; देशत्याग ।

व्रजांगना–स्त्री० [सं०] व्रजकी रहनेवाली स्त्री; गोपी ।

व्रजेंद्र, व्रजेश, व्रजेश्वर–पु० [सं०] कृष्ण ।

व्रज्या–स्त्री० [सं०] भ्रमण; गति; संन्यासीके रूपमें भ्रमण करना; कूच, आक्रमण; श्रेणी, वर्ग; वर्गीकरण; समूह; रंगभूमि ।

व्रण–पु० [सं०] फोड़ा; घाव, जख्म । –**कारक गैस**–स्त्री० [हिं०] (ब्लिस्टर गैस) एक तरहकी विषाक्त गैस, जिसका संस्पर्श होनेसे शरीरपर चकत्ते-से निकल आते हैं । –**ग्रंथि**–स्त्री० फोड़ेकी गाँठ । –**पट्ट,**–**पट्टक**–पु०,–**पट्टिका**–स्त्री० फोड़ेपर बाँधी जानेवाली पट्टी ।–**शोधन**–पु० घावकी सफाई । –**संरोहण**–पु० घावका भरना ।

व्रणित–वि० [सं०] जिसे घाव लगा हो, आहत; (अलसरेटेड) जो व्रणमें परिणत हो गया हो; जिसमें व्रण हो गया हो ।

व्रणी(णिन्)–वि०[सं०] जिसे व्रण हुआ हो; आहत ।

व्रत–पु० [सं०] धार्मिक कृत्य, धार्मिक अनुष्ठान, नियम, संयम आदि; पुण्यके विचारसे उपवास करना; प्रतिज्ञा । –**ग्रहण**–पु० कोई धार्मिक कार्य करनेका संकल्प करना; संन्यास लेना । –**चर्या**–स्त्री० धार्मिक अनुष्ठान, व्रत रखना । –**पारण**–पु०,–**पारणा**–स्त्री० व्रत, उपवासकी समाप्ति । –**भंग**–पु० व्रत, प्रतिज्ञाका खंडित हो जाना । –**लोप,**–**लोपन**–पु० व्रत-भंग । –**विसर्जन**–पु० व्रत समाप्त करना । –**संरक्षण**–पु० व्रतका पालन । –**समापन**–पु० व्रतकी पूर्ति । –**स्नान**–पु० व्रतके बादका स्नान । –**हानि**–स्त्री० व्रतका परित्याग ।

व्रतति, व्रतती–स्त्री० [सं०] लिपटनेवाली लता; फैलाव, विस्तार ।

व्रती(तिन्)–वि० [सं०] व्रतका अनुष्ठान करनेवाला; धर्माचारी । पु० ब्रह्मचारी; संन्यासी; यजमान ।

व्राचट, व्राचड–स्त्री० एक अपभ्रंश भाषा जो पहले सिंधमें बोली जाती थी; पैशाचिक भाषाका एक भेद ।

व्रात–पु० [सं०] समूह, दल, झुंड; विवाहोत्सवमें सम्मिलित होनेवाले लोग; मनुष्य; शारीरिक श्रम; दैनिक श्रम, मजदूरी । –**पति**–पु० संघका अध्यक्ष ।

व्रात्य–पु० [सं०] संस्कारहीन, जातिच्युत द्विज ।

व्रीड–पु० [सं०] लज्जा ।

व्रीडन–पु० [सं०] अपकर्ष; शर्म, लज्जा; नम्रता ।

व्रीडा–स्त्री० [सं०] लज्जा; संकोच; नम्रता ।

व्रीडित–वि० [सं०] लज्जित; विनीत ।

व्रीहि–पु० [सं०] चावल; चावलका दाना; बरसातमें पकनेवाला धान ।

श

श–देवनागरी वर्णमालाका तीसवाँ व्यंजन, ऊष्म वर्ण ।

शंकना*–अ० क्रि० संदेह करना; डरना ।

शंकनीय–वि० [सं०] जिसके संबंधमें शंका करनेकी गुंजाइश हो, शंकायोग्य ।

शंकर–पु० [सं०] शिव; शंकराचार्य; एक छंद; एक राग; भीमसेनी कपूर; * दे० 'संकर' । वि० कल्याणकारी ।

शंकरा–पु० एक राग । स्त्री० पार्वती; मंजिष्ठा ।

शंकराचार्य–पु० [सं०] अद्वैतवादके प्रवर्तक प्रसिद्ध दार्शनिक (ये ईसाकी आठवीं शतीके अंत तथा नवीं शतीके आरंभमें विद्यमान थे) ।

शंकरी–स्त्री० [सं०] पार्वती; मजीठ; शमी वृक्ष ।

शंका–स्त्री० [सं०] संशय; भय; एक संचारी भाव । –**जनक**–वि० शंका उत्पन्न करनेवाला । –**निवारण**–पु० संशयका दूर होना या दूर किया जाना । –**निवृत्ति**–स्त्री० दे० 'शंका-निवारण' । –**शील**–वि० शंका करना जिसका स्वभाव हो, जो प्रायः शंका किया करता हो । –**समाधान**–पु० शंकाका निराकरण ।

शंकित–वि० [सं०] शंकायुक्त; भीत ।

शंकु–पु० [सं०] भाला; कील; खूँटी; बाणकी नोक; ठूँठ ।

शंकुला–स्त्री० [सं०] सुपारी काटनेका औजार, सरौता ।

शंख–पु० [सं०] समुद्रमें पैदा होनेवाले एक जंतुका खोल या घर जो पत्थरसा कड़ा और सफेद होता है; सौ पद्मकी संख्या; शंखासुर (जो विष्णु द्वारा मारा गया); ललाट; हाथीके दोनों दाँतोंके बीचका भाग । –**क्षीर**–पु० असंभव बात । –**चरी,**–**चर्ची**–स्त्री० (ललाटका) चंदनका टीका । –**धर**–पु० विष्णु; कृष्ण । –**पाणि,**–**भृत्**–पु० विष्णु । –**विष**–पु० संखिया । **मु०** –**बजना**–सफलता मिलना । –**बजाना**–सफलता मिलनेपर आनंद करना; (व्यंग्य) असफल होनेपर पछताना, बकबक करना आदि । –**फूँकना**–युद्धकी घोषणा करना; देश, व्यक्ति, जातिमें जागरण, उत्साह आदिकी भावना भरना ।

शंखासुर–पु० [सं०] ब्रह्माके यहाँसे वेद चुराकर समुद्रमें छिपानेवाला एक राक्षस (इसीको मारनेके लिए विष्णुने मत्स्यावतार लिया था); मुर राक्षसका पिता ।

शंखिनी–स्त्री० [सं०] कामशास्त्रके अनुसार स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक; बौद्धों द्वारा मानी जानेवाली एक शक्ति (देवी); एक प्रकारकी अप्सरा; एक वनौषधि ।

शंगरफ–पु० [फा०] ईंगुर, शिंगरफ ।

शंजरफ–पु० [फा०] ईंगुर ।

शंठ–पु० [सं०] मूर्ख व्यक्ति; हिजड़ा ।

शंड–पु० [सं०] साँड़; नपुंसक; अंतःपुरका परिचारक ।

शंपा–स्त्री० [सं०] बिजली, विद्युत् ।

शंब–पु० [सं०] इंद्रका वज्र; बिजली ।

शंबर–पु० [सं०] जल; बादल; धन; युद्ध; एक राक्षस । –**सूदन**–पु०कामदेव (प्रद्युम्न जिन्होंने शंबरको मारा था) ।

शंबरारि–पु० [सं०] कामदेव ।

शंबल–पु०[सं०] तट; यात्राके लिए भोज्य पदार्थ, पाथेय ।

शंबु, शंबुक, शंबुक्क–पु० [सं०] घोंघा ।

शंबूक–पु० [सं०] घोंघा; शंख; हाथीकी सूँड़की नोक; रामराज्यमें बसा एक शूद्र तपस्वी ।

शंभु–पु०[सं०] शिव; ग्यारह रुद्रोंमें प्रधान रुद्र ।–**लोक**–पु० कैलास, शिवलोक ।

शंस, शंसा–स्त्री० [सं०] प्रशंसा; इच्छा; मंगल-कामना ।

शऊर–पु० दे० 'शुऊर' । –**दार**–वि० कामका ढंग जाननेवाला, सलीकादार ।

शक–पु० [अ०] संदेह, संशय, शंका; भ्रांति; [सं०] प्राचीन कालमें शकद्वीप(मध्य एशिया)में रहनेवाली एक समृद्ध जाति । –**संवत्**–पु० ईसवी सन्के ७८ वर्ष पीछे

महाराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत् ।

शकट–पु० [सं०] गाड़ी जिसे पशु अथवा मनुष्य खींचे, छकड़ा, सग्गड़, बैलगाड़ी; एक राक्षस । **–व्यूह**–पु० शकटके आकारमें रचित व्यूह, सैन्यरचना ।**–हा(हन्)**–पु० कृष्ण ।

शकर–स्त्री०[फ़ा०] चीनी, शर्करा, बूरा ।**–कंद**–पु०मोटी मूलीकी शकलका एक कंद जो काफी मीठा होता है और जिसे उबाल या भूनकर खाते हैं । **–ज़बान**–वि० मधुरभाषी । **–पारा**–पु० एक मिठाई (एक तरहका खुरमा)। **मु०–से मुँह भरना**–खुशखबरी सुनानेवालेको मिठाई खिलाना ।

शकल–पु० [सं०] चमड़ा; छिलका, छाल; खंड, टुकड़ा ।

शकल–स्त्री० दे० 'शक्ल'।**–सूरत**–स्त्री० मुखाकृति, रूप।

शकांतक–पु० [सं०] शक लोगोंको देशके बाहर निकाल देनेवाला, विक्रमादित्य ।

शकाब्द–पु० [सं०] दे० शक-संवत्' ।

शकारि–पु० [सं०] दे० 'शकांतक' ।

शकुंत–पु० [सं०] चिड़िया, पक्षी; नीलकंठ ।

शकुंतला–स्त्री० [सं०] मेनका और विश्वामित्रके सहवाससे उत्पन्न तथा कण्व ऋषि द्वारा पालित-पोषित कन्या, दुष्यंतकी पत्नी तथा उनके पुत्र भरतकी माता; कालिदासका एक प्रसिद्ध नाटक ।

शकुन–पु० [सं०] विशिष्ट पशु, पक्षी, व्यक्ति, वस्तु, व्यापारके देखने-सुनने, होने आदिसे मिलनेवाली शुभ, अशुभकी पूर्वसूचना, सगुन; शुभ घड़ी, शुभ अवसरपर होनेवाले, मंगल कार्यमें गाये जानेवाले गीत; पक्षी । **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें शकुनके शुभाशुभ होने तथा उसके फलोंका विचार किया गया हो ।

शकुनि–पु० [सं०] पक्षी; गिद्ध; चिल्ह; दुर्योधनका मामा ।

शक्कर–स्त्री० दे० 'शकर' (चीनी) ।

शक्की–वि० शक करनेवाला, शंकाशील ।

शक्त–वि० [सं०] शक्तिमान्; समर्थ; पटु ।

शक्ति–स्त्री० [सं०] बल, सामर्थ्य; क्षमता, योग्यता; वश; प्रभाव; एक तरहका बाण; साँग; तलवार; तंत्रमतवर्णित किसी पीठकी सृष्टि, पालन, प्रलय आदि सामर्थ्यसे युक्त अधिष्ठात्रि देवी; दुर्गा; लक्ष्मी, गौरी; ईश्वर-शक्ति (माया, प्रकृति); देव-शक्ति (वैष्णवी, रौद्री इ०); राज-शक्ति (प्रभु, मंत्र, उत्साह); शब्द-शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) । **–तुलाधर**–पु० स्वामी कार्त्तिकेय; भाला-बरदार ।**–परस्तात्**–अ० (अल्ट्रावायर्स) किसीकी शक्ति या अधिकारके बाहर ।**–पूजक**–पु० शक्तिका उपासक, शाक्त, तांत्रिक । **–पूजा**–स्त्री० शक्तिकी उपासना । **–भृत्**–पु० स्वामी कार्त्तिकेय ।**–संतुलन**–पु० (बैलेंस ऑफ पावर) परस्पर विरोध करनेवाले देशोंका ऐसा विभाजन या गुटबंदी जिससे दोनों ओरकी शक्ति संतुलित रहे, बलसाम्य । **–संपन्न**–पु० शक्तिशाली, बलवान् ।

शक्तिमत्ता–स्त्री०, **शक्तिमत्व**–पु० [सं०] शक्ति-युक्त होनेका भाव ।

शक्तु–पु० [सं०] सत्तू ।

शक्य–वि० [सं०] होने योग्य, साध्य, संभव ।

शक्यार्थ–पु० [सं०] शब्दकी अभिधा शक्तिसे ज्ञेय अर्थ ।

शक्र–पु० [सं०] इंद्र; शिव; चौदहकी संख्या (चौदह इंद्र होनेके कारण) । **–गोप**–पु० इंद्रगोप, बीरबहूटी । **–चाप**–पु० इंद्रधनुष । **–ज,–जात**–पु० कौआ । **–जित्**–पु० मेघनाद ।**–नंदन**–पु० अर्जुन । **–वाहन**–पु० मेघ । **–सुत**–पु० जयंत; बालि; अर्जुन ।

शक्राणी–स्त्री० [सं०] शची, इंद्राणी ।

शक्ल–स्त्री० [अ०] रूप, आकृति; चेहरा; नकशा, बनावट; ढंग, अंदाज; उपाय, ढब (निकलना, निकालना); रेखागणितकी कोई आकृति । **मु० (अपनी)–तो देखो (देखिये)**–अपनी योग्यता, अपनी सामर्थ्य तो देखो, अनधिकार चेष्टापर व्यंग्य । **–दिखाना**–मिलना, सामने आना । **–देखते रह जाना,–देखा करना**–चकित, मुग्ध हो जाना । **–न दिखाना**–न मिलना, मुँह छिपाना । **–पकड़ना**–रूप, आकार ग्रहण करना । **–पहचानना**–सूरतसे पहचानना; चेहरा या सूरत देखकर शीलस्वभाव जान लेना (मैं चोरको शक्लसे पहचानता हूँ) । **–बनाना**–शक्ल बिगाड़ना, असुंदर बन जाना । **–बिगाड़ना**–चेहरेको असुंदर कर लेना या कर देना; पीटकर मुँहको सुजा देना ।

शख़्स–पु० [अ०] मानवदेह; व्यक्ति, आदमी ।

शख़्सी–वि० [अ०] एक आदमीका, वैयक्तिक ।**–हुकूमत**–स्त्री० एकतंत्र राज्य ।

शख़्सीयत–स्त्री० [अ०] वैयक्तिक विशेषताएँ; व्यक्तित्व ।

शग़ल–पु० [अ०] काम; धंधा; मनबहलाव ।

शगुन–पु० दे० 'शकुन'; विवाह पक्का होनेकी रस्म; तिलक ।

शगूफ़ा–पु० दे० 'शिगूफ़ा' ।

शचि, शची–स्त्री०[सं०] इंद्राणी; बल; क्रियाशक्ति; वाणी, वाक्यशक्ति; पवित्र कर्म; प्रज्ञा; सतावर । **–पति**–पु० इंद्र ।

शजरा–पु० [अ०] वंशवृक्ष, नसबनामा ।

शटा–स्त्री० [सं०] जटा; सिंहकेसर, शेरका अयाल ।

शठ–वि० [सं०] धूर्त; लंपट; मूढ; आलसी; मध्यस्थ; जड़ । पु०छलिया; नकली प्रेम प्रकट करनेवाला नायक; धतूरेका पेड़; तगर; कुंकुम; लोहा ।

शठता–स्त्री०, **शठत्व**–पु० [सं०] शठका भाव, कर्म अथवा धर्म ।

शण–पु० [सं०] सनका क्षुप ।

शत–पु० [सं०] सौकी संख्या । वि० सौ; असंख्य । **–कोटि**–पु० इंद्रका वज्र । स्त्री० सौ करोड़ । **–क्रतु**–वि० जिसने सौ यज्ञ किये हों । पु० इंद्र । **–खंड**–पु० सोना, सुवर्ण । **–गु**–वि० सौ गायोंका मालिक ।**–ग्रंथि**–स्त्री०दूब ।**–घ्नी**–स्त्री० पत्थरमें लोहेकी कीलोंको गाड़कर बनाया गया चार ताल लंबा प्राचीन शस्त्र; एक बारमें सौ आदमियोंको मारनेवाला शस्त्र (या तोप ?) । **–दल**–पु० कमल । **–द्रु**–स्त्री० पंजाबकी पाँच नदियोंमेंसे एक, सतलज नदी । **–पत्र**–पु० कमल; मयूर । **–पद**–पु० कनखजूरा, गोजर । **–पदी**–स्त्री० दे० 'शतपद' । **–पाद**–पु० दे० 'शतपद' । **–पुत्री**–स्त्री० सतपुतिया । **–मख**–पु० इंद्र; उल्लू । **–मन्यु**–वि०

महाक्रोधी। पु० इंद्र, उल्लू। **-वार्षिक**-वि० सौ वर्षों पर होनेवाला। **-वार्षिकी**-वि० स्त्री० सौ वर्षोंमें होनेवाली, सौ वर्ष-व्यापिनी। स्त्री० सौ वर्षपर होनेवाला उत्सव। **-वीर**-पु० विष्णु। **-शीर्ष**-पु० विष्णु। **-ह्रदा**-स्त्री० बिजली; वज्र।

शतक-वि० [सं०] सौकी संख्यासे संबद्ध। पु० प्रायः एक ही प्रकार अथवा एक ही व्यक्तिकी सौ वस्तुओं, रचनाओं आदिका संग्रह (जैसे-शृंगारशतक, अमरुशतक आदि); शती, शताब्दी; क्रिकेटके खेलमें किसी एक बल्लेबाज द्वारा किये गये सौ धावनोंका समूह (सेंचुरी), शतक।

शतधा-अ० [सं०] सौ प्रकारसे।

शतरंज-पु०, स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध खेल जिसके मुहरे बादशाह, वजीर, हाथी, घोड़ा, प्यादे आदि होते हैं (संस्कृत चतुरंग या फारसी शतरंगका विकृत रूप)। **-का नक्शा**-शतरंजके कुछ मोहरोंकी ऐसी चाल जिससे विपक्षीको मात दी जा सके। **-बाज़**-पु० शतरंज खेलनेवाला। **-बाज़ी**-स्त्री० शतरंज खेलना।

शतरंजी-स्त्री० [अ०] रंग-बिरंगी या शतरंजके खानोंकी-सी बुनावटवाली मोटी चादर जो दरी आदिके ऊपर बिछायी जाती है; रंग-बिरंगी दरी; शतरंज खेलनेकी बिसात। पु० शतरंजबाज।

शतशः(शस्)-अ० [सं०] सैकड़ों प्रकारसे।

शतांश-पु० [सं०] सौवाँ हिस्सा। **-तापमापक**-पु० (सेंटीग्रेड थर्मामीटर) सौ अंशोंमें विभक्त तापमापक यंत्र।

शतानंद-पु० [सं०] राजा जनकके राजपुरोहित।

शतानीक-पु० [सं०] वृद्ध; श्वशुर; एक मुनि।

शताब्द-पु०, **शताब्दी**-स्त्री०[सं०] शती, सौ सालोंका समय।

शतायु(स्)-वि० [सं०] सौ वर्षोंकी आयुवाला।

शतावधान-पु० [सं०] मनोयोगपूर्वक बिना त्रुटिके सौ अथवा बहुतसे कामोंको एक साथ करनेवाला व्यक्ति।

शती-स्त्री० [सं०] सौका संग्रह; सदी, शताब्दी; क्रिकेटमें सौ धावनोंकी संख्या (सेंचुरी)।

शत्रुंजय-वि० [सं०] शत्रुको जीतनेवाला।

शत्रु-पु० [सं०] वैरी; दुश्मन। **-घ्न**-वि० शत्रु-नाशक। पु० दशरथकी पत्नी सुमित्राके पुत्र। **-जित्**-वि० शत्रुको जीतनेवाला। **-हंता(तृ)**-वि० दे० 'शत्रुहा', शत्रुघ्न। **-हा(हन्)**-वि० शत्रुको मारनेवाला।

शत्रुता-स्त्री० [सं०] दुश्मनी, वैर।

शत्वरी-स्त्री० [सं०] रात्रि।

शद्रि-पु० [सं०] हाथी; बादल; अर्जुन। स्त्री० बिजली।

शनाख्त-स्त्री०[फा०] पहचान; परिचय। **मु०-करना**-पहचानना।

शनि-पु०[सं०] नवग्रहोंमेंसे सातवाँ ग्रह; सप्ताहका अंतिम दिन, शनिवार। **-प्रिय**-पु० नीलम। **-वार**-पु० शुक्रवारके बादका दिन।

शनैः-अ० [सं०] धीरे, चुपचाप; क्रमशः; उत्तरोत्तर। **-शनैः**-अ० धीरे-धीरे, क्रमशः।

शनैश्चर-पु० [सं०] दे० 'शनि'। वि० धीरे चलनेवाला।

शपथ-स्त्री०[सं०] सौगंद, कसम; प्रतिज्ञा (करना, लेना)। **-ग्रहण**-पु० कोई पदादि ग्रहण करते समय निष्ठा एवं गुप्तता आदिकी शपथ लेना। **-पत्र**-पु० (एफीडेविट) किसी न्यायालयमें शपथपूर्वक दिया गया लिखित वक्तव्य जो प्रमाणके रूपमें प्रयुक्त किया जा सके, हलफनामा।

शपन-पु० [सं०] शपथ; दुर्वचन, गाली।

शफ़क़त-स्त्री० [अ०] अनुग्रह; दया; प्रेम।

शफर-पु०, **शफरी**-स्त्री० [सं०] पोठी मछली।

शफ़ा-स्त्री० [अ०] नीरोगता, स्वास्थ्य। **-ख़ाना**-पु० अस्पताल, चिकित्सालय।

शब-स्त्री०[फा०] रात। **-नम**-स्त्री० ओस। **-(बे)वस्ल**-स्त्री० मिलनरात्रि; वह रात जिसमें प्रेमीका प्रेमिकासे मिलन हो। **-(बो)रोज**-अ० रात-दिन, हर वक्त।

शबनम-स्त्री०[फा०] दे० 'शब'में; सफेद रंगका एक निहायत बारीक कपड़ा।

शबनमी-स्त्री० [फा०] वह कपड़ा जो ओससे बचनेके लिए छपरखटपर तान देते हैं; मसहरी।

शबर-पु० [सं०] दक्षिण भारतकी एक पहाड़ी और असभ्य जाति; जंगली मनुष्य; शिव। वि० दे० 'शबल'।

शबरी-स्त्री० [सं०] शबर जातिकी नारी; रामायणमें वर्णित शबर जातिकी एक रामभक्त नारी।

शबल-वि० [सं०] विविध रंगोंवाला; कई रंगोंसे अंकित; विभिन्न भागोंमें विभक्त; अनुकृत।

शबला-स्त्री० [सं०] चितकबरी गाय; कामधेनु।

शबाब-पु० [अ०] जवानी, बीससे चालीसतककी उम्र।

शबीह-स्त्री० [अ०] रूपसाम्य; चित्र, तसवीर।

शब्द-पु० [सं०] आकाशमें किसी भी प्रकारसे उत्पन्न क्षोभ जो वायुतरंग द्वारा कानोंतक जाकर सुनाई पड़े अथवा पड़ सके, ध्वनि, आवाज; आप्त-वचन, आप्त पुरुष द्वारा व्यक्त ज्ञान, शिक्षा आदिकी बातें। **-कोश,-कोष**-पु० वह ग्रंथ जिसमें शब्दोंके सम्यक् वर्ण-विन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय आदि हों, अभिधान। **-चातुर्य**-पु० शब्द-प्रयोगकी कला, चातुरी, बोलनेके ढंगकी निपुणता। **-चित्र**-पु० एक शब्दालंकार; साहित्यरचनाका एक नवीन प्रकार जिसमें शब्दों द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति आदिका रूप खड़ा किया जाता है (स्केच)। **-चोर**-पु० दूसरेकी रचनाके शब्द उड़ाकर अपनी कविता, लेखादिमें प्रयोग करनेवाला। **-पति**-पु० कहने भरको स्वामी या राजा। **-प्रमाण**-पु० मौखिक प्रमाण; आप्तप्रमाण। **-भेद**-पु० (पार्ट्स ऑफ स्पीच) वाक्यमें प्रयुक्त शब्दोंका, व्याकरणके अनुसार, उनके कार्यों, प्रयोग आदिकी दृष्टिसे, किया गया भेद। **-भेदी(दिन्)**-पु० दे० 'शब्दवेधी'। **-विद्या**-स्त्री० शब्दशास्त्र, व्याकरण। **-वेधी(धिन्)**-पु० वह व्यक्ति जो केवल शब्द सुनकर बिना देखे ही लक्ष्यपर बाण मारे; एक प्रकारका बाण; अर्जुन; दशरथ। **-शक्ति**-स्त्री० शब्दकी विशेष अर्थबोधक शक्ति (यह तीन प्रकारकी होती है-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)। **-शास्त्र**-पु० व्याकरण। **-श्लेष**-पु० किसी शब्दका दो या दोसे अधिक अर्थोंमें प्रयुक्त होना। **-संग्रह**-पु० शब्दोंका चयन; शब्दकोष। **-साधन**-पु० शब्दोंकी व्युत्पत्ति, रूपांतर आदि दिखानेवाला व्याकरणका भाग।

–सौंदर्य–पु० दे० 'शब्दसौष्ठव'।**–सौकर्य**–पु० शब्दोंके उच्चारणकी सरलता, सुगमता, मुखसुख। **–सौष्ठव**–पु० रचना-शैलीके शब्दोंका सौंदर्य, किसी शब्दयोजनाकी सुंदरता।

शब्दशः(शस्)–अ० [सं०] किसीके लिखे या कहे गये प्रत्येक शब्दके अनुसार, उसके शब्दोंका ठीक-ठीक अनुसरण करते हुए।

शब्दाडंबर–पु० [सं०] अनावश्यक रूपसे और बिना प्रसंग विद्वत्ताके ज्ञापनार्थ बड़े-बड़े शब्दोंका प्रयोग जिसमें भावाभिव्यक्तिकी कमी हो, शब्दोंका घटाटोप, शब्दजाल।

शब्दातीत–वि० [स०] जिसका शब्दों द्वारा वर्णन न हो सके, वर्णनातीत। पु० ईश्वर।

शब्दाध्याहार–पु० [सं०] वाक्यगत संपूर्ण अर्थकी प्राप्तिके लिए उसमें आवश्यक शब्दोंका समावेश करना।

शब्दायमान–वि० [सं०] शब्द करता हुआ, शब्दकारी।

शब्दार्थ–पु० [सं०] शब्दका अर्थ या अभिप्राय।

शब्दालंकार–पु० [सं०] वे अलंकार जिनमें रचनाका चमत्कार या माधुर्य विशिष्ट शब्दों अथवा वर्णोंके प्रयोगपर निर्भर करता है, उनके अर्थपर नहीं।

शब्दावली–स्त्री० [सं०] किसी कथन या रचनामें प्रयुक्त शब्द-समूह।

शम–पु० [सं०] शांति; मानसिक स्थिरता; मुक्ति; अंतःकरण और मनका संयम।**–लोक**–पु० शांतिलोक, स्वर्ग।

शमई–वि० शमाका; शमाके रंगका। **–रंग**–पु० स्याहीमायल हरा रंग।

शमन–पु० [सं०] शांति; बुझाना; दूर करना; दबाना; यम। वि० निवारक, दूर करनेवाला।

शमशीर, शमशेर–स्त्री० [फा०] तलवार। **–का खेत**–रणक्षेत्र। **–ज़नी**–स्त्री० तलवारकी लड़ाई। **–दम**–वि० तलवारकी बाढ़ रखने, तलवारकी काट करनेवाला। **–बहादुर**–वि० खड्गवीर, तलवारका धनी।

शमा–स्त्री० [अ० 'शमअ'] मोम; मोमबत्ती; दीया। **–दान**–पु० वह चीज जिसमें मोमबत्ती लगाकर जलाते हैं; दीवट।**–व परवाना**–पु० दीपक और पतंग; (ला०) प्रेमी और प्रेमपात्र।

शमित–वि० [सं०] जिसका शमन किया गया हो; शांत।

शमी–स्त्री० [सं०] एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसकी लकड़ीके भीतर विशेष आग होती है जो रगड़नेपर निकलती है); शिंबा।

शमी(मिन्)–वि० [सं०] शांत; आत्मसंयमी।

शमीकरण–पु० [सं०] (पैसिफिकेशन) दो पक्षोंके बीच चलनेवाले झगड़े या विवादको दूर करना; शान्ति स्थापित करना; क्रुद्ध या उत्तेजित व्यक्तियों (सेना, भीड़ आदि)-को शांत करना।

शय–पु० [सं०] शय्या; निद्रा; साँप; दावँ; हाथ; शाप।

शयन–पु०[सं०]निद्रा; शय्या; नारी-सहवास।**–आरती**–स्त्री० [हिं०] रात्रिमें देवताओंको सुलाते समय की जानेवाली आरती। **–कक्ष,–गृह**–पु० सोनेका घर, शयनागार। **–मंदिर**–पु० दे० 'शयनकक्ष'।**–शाला**–स्त्री० (डॉरमिटरी) वह बड़ा शयनकक्ष जिसमें कई व्यक्तियोंके सोनेकी व्यवस्था हो।

शयनागार–पु० [सं०] दे० 'शयनकक्ष'।

शयनीय–वि० [सं०] शयन करने योग्य। पु० शय्या।

शयालु–वि० [सं०] निद्राशील; सोया हुआ। पु० अजगर; कुत्ता; गीदड़।

शयित–वि० [सं०] निद्रित, सोया हुआ; लेटा हुआ।

शय्या–स्त्री० [सं०] सेज, पलंग, खाट; विस्तर। **–गत**–वि० पलंगपर सोया हुआ; अस्वस्थताके कारण खाटपर पड़ा हुआ, बीमार।**–दान**–पु० मृतककर्मके अंतर्गत प्रेत-शांतिके लिए एकादशाह तथा द्वादशाहको महापात्र या पुरोहितको दिया जानेवाला पलंग, बिछावन आदिका दान, सेजियादान। **–पाल,–पालक**–पु० राजाके शयन-गृहका प्रबंधक। **–व्रण**–पु० (बेडसोर) रोगीके बहुत दिनोंतक शय्या-ग्रस्त रहनेके कारण उसकी रीढ आदिके छिल जानेसे होनेवाला घाव।

शय्याध्यक्ष–पु० [सं०} दे० 'शय्यापाल'।

शरंड–पु०[सं०] पक्षी; गिरगिट; छलिया; लंपट।

शर–पु० [सं०] बाण; शरपत्र, सरपत; सरकंडा; खस; हिंसा; चिता; 'पाँच'की संख्या; दहीकी मलाई।**–कांड**–पु० सरकंडा। **–जाल**–पु० बाणोंका समूह। **–धि**–वि० तरकश। **–पट्टा***–पु० एक शस्त्र। **–वारण**–पु० ढाल। **–शय्या**–स्त्री० वीरगतिप्राप्त योद्धाके लिए निर्मित बाणोंकी शय्या। **–संधान**–पु० बाण द्वारा लक्ष्य-साधन, निशाना लगाना।

शरअ.–स्त्री० [अ०] सीधी राह; वह सीधी राह जो ईश्वरने बनायी और बंदोंके लिए बतायी हो; इसलामी धर्मशास्त्र, शरीअत। **–अन्**–अ० शरअके अनुसार।

शरई–वि० [अ०] शरअके अनुकूल। **–दाढ़ी**–स्त्री० एक मुट्ठी और दो अंगुल लंबी दाढ़ी। **–पाजामा**–पु० वह पाजामा जो टखनोंसे ऊँचा हो। **–शादी**–स्त्री० बिना धूमधाम, गाजे-बाजेका व्याह।

शरघा*–स्त्री० मधुमक्खी (कविप्रि०)।

शरच्चंद्र–पु० [सं०] शरत् ऋतुका चंद्रमा। **–चंद्रिका**–स्त्री० शरद ऋतुकी चाँदनी।

शरण–स्त्री० [सं०] आश्रय; घर; रक्षाका स्थान; अधीन व्यक्ति; रक्षक। **–दाता(तृ)**–वि० आश्रयदाता, रक्षक। **–स्थान**–पु० (सेंक्चुअरी) वह स्थान जहाँ शरण लेनेसे कोई आदमी सजा पाने, पकड़े जाने आदिसे अपने आपको बचा सकता है।

शरणागत–पु० [सं०] शरणमें आया व्यक्ति। वि० शरणमें आया हुआ।

शरणापन्न–वि० [सं०] दे० 'शरणागत'।

शरणार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०]शरण चाहनेवाला, अपनी रक्षाका अभिलाषी। पु० (रिफ्यूजी) वह जो एक देशसे विस्थापित होकर दूसरे देशमें आश्रय ग्रहण करे।**–बस्ती**–स्त्री० [हिं०] (रिफ्यूजी टाउनशिप) शरणार्थी जहाँ बस गये या बसाये गये हों वह बस्ती।

शरणि–स्त्री० [सं०] मार्ग; पृथ्वी; पंक्ति, अवली; हनन।

शरण्य–वि० [सं०] रक्षाके योग्य, शरण देने योग्य; शरण देनेवाला; शरणागतका रक्षक।

शरता*–स्त्री० वाण चलानेकी कला (कविप्रि०)।

शरत्, शरद्–स्त्री० [सं०] एक ऋतुका नाम जो क्वारसे कातिकतक रहती है; वत्सर, वर्ष। **–काल**–पु० शरत् ऋतुकी अवधि, क्वार और कातिकका महीना।

शरबत–पु० [अ०] पेय; पेयकी वह मात्रा जो एक बारमें पी ली जाय; फल, फूल या औषधिका अर्क जो चीनी या मिसरीमें पका लिया जाय; शकर, खाँड़ आदिको पानीमें घोलकर प्रस्तुत किया हुआ पेय, रस। **–पिलाई**–स्त्री० शरवत पिलानेकी रस्मका नेग। **–(ते)दीदार**–पु० शरवतरूप (शर्वत सरीखा मधुर, तृप्ति–शांतिकर) दर्शन। **मु०–पिलाना**–व्याहके पहले या पीछे बरातियोंको शरवत पिलाना (एक रस्म)। **–के प्यालेपर निकाह कर (पढ़ा)देना**–विना कुछ खर्च किये व्याह कर देना।

शरबती–वि० [अ०] शरवतके रंगका; रसदार, सरस। पु० हलका पीला रंग जिसमें थोड़ी सुर्खी भी हो; मलमलसे मिलता-जुलता एक निहायत बारीक और बढ़िया कपड़ा; एक तरहका कबूतर; चकोतरा नीबू। **–नीबू**–पु० मीठा नीबू, चकोतरा। **–फ़ालसा**–पु० फालसेका एक भेद जो कुछ बड़ा और खट-मीठा होता है।

शरभ–पु० [सं०] हाथीका बच्चा; ऊँट; सिंहसे भी बलवान् एक कल्पित पशु जिसे 'अष्टपाद' (आठ पैरोंवाला) कहते हैं; टिड्डी; एक वर्णवृत्त।

शरम–स्त्री० दे० 'शर्म' (फा०)।

शरमाऊँ–वि० दे० 'शरमीला'।

शरमाना–स०क्रि०लज्जित करना। अ०क्रि०लज्जित होना।

शरमाशरमी–अ० शर्मकी वजहसे।

शरमिंदा–वि० दे० 'शर्मिंदा'।

शरमीला–वि० लजाधुर, लज्जाशील।

शरह–स्त्री० [अ०] वर्णन; व्याख्या; दर, भाव। **–बंदी**–स्त्री० भावोंकी तालिका। **–मुऐयन**–वि० जिसकी मालगुजारी सुनिश्चित हो, अतः जिसमें वृद्धिकी संभावना न हो। **–लगान**–स्त्री० लगानकी दर। **–सूद**–स्त्री० व्याजकी दर।

शराकत–स्त्री० [फा०] साझा, हिस्सेदारी।

शराटि, शराटिका, शराडि, शराति–स्त्री० [सं०] एक चिड़िया जो प्रायः जलके निकट रहती है, टिट्टिभ, कुररी।

शराफ–पु० दे० 'सराफ'।

शराफत–स्त्री० [अ०] भलमनसी; भद्रता; कुलीनता।

शराफा–पु० दे० 'सराफ'।

शराफी–स्त्री० दे० 'सराफी'।

शराब–स्त्री० [अ०] पेय; मद्य। **–ख़ाना**–पु० शराबकी दुकान, मदिरालय। **–ख़ोर**–पु० दे० 'शराबख्वार'। **–ख़ोरी**–स्त्री०दे० 'शराबख्वारी'। **–ख़्वार**–पु० शराबी, मद्यव्यसनी। **–ख़्वारी**–स्त्री० शराब पीनेका व्यसन। **–(बे)बहूर**–स्त्री० बिहिश्तमें मिलनेवाली पवित्र शराब। **मु०–का दौर चलना**–पानगोष्ठीमें सम्मिलित लोगोंका प्यालेपर प्याला खाली करना, पीनेवालोंके प्यालोंका भरा और खाली किया जाना।

शराबी–पु० शराब पीनेवाला, मद्यव्यसनी।

शराबोर–वि० भींगा हुआ, बिलकुल गीला।

शरारत–स्त्री० [अ०] शरीर (दुष्ट) होनेका भाव, पाजीपन, शैतानियत।

शराश्रय–पु० [सं०] तूणीर, तरकश।

शरासन–पु० [सं०] धनुष्।

शरिष्ठ*–वि० दे० 'श्रेष्ठ'।

शरीअ़त–स्त्री० [अ०] खुदाके बनाये हुए कानून; मजहबी कानून; न्याय।

शरीक–वि० [अ०] शिरकत रखनेवाला, मिला हुआ, शामिल; साझी; जोड़ीदार; साथ देनेवाला। **–(के) जलसा**–वि० सभामें उपस्थित (जन)। **–जुर्म**–वि० अपराधमें साथ देने, सहायता करनेवाला।

शरीफ़–वि० [अ०] भला, नेक; कुलीन; प्रतिष्ठित; ऊँचे घरानेका; पवित्र (अन्य शब्दसे युक्त होकर सम्मानका अर्थ प्रकट करता है–'कुरानशरीफ़', 'मक्काशरीफ़')। पु० भलामानस, कुलीन, प्रतिष्ठित जन; मक्केके शासककी पदवी। **–ज़ादा**–पु० शरीफका बेटा; कुलीन जन।

शरीफा–पु० एक फल या उसका वृक्ष, सीताफल।

शरीर–वि० [अ०] दुष्ट, नटखट, पाजी। पु० [सं०] अस्थि, मांस, मज्जा आदिसे निर्मित स्थलचर, जलचर, नभचर जीवोंके संपूर्ण अंगोंका समुच्चय। **–ज**–पु० कामदेव; काम-वासना; पुत्र; रोग। **–त्याग**–पु० मृत्यु। **–दंड**–पु० शारीरिक दंड; शरीरको कष्ट देना। **–पतन**–पु० शरीरका क्रमशः जीर्ण होना; मृत्यु। **–पात**–पु० मृत्यु। **–बंध**–पु० देहयष्टि, शरीरका ढाँचा। **–भृत्**–पु० वह जिसने शरीर धारण किया है, शरीरधारी; आत्मा। **–यात्रा**–स्त्री० जीवन-रक्षणके साधन; जीवनवर्धनकी वस्तुएँ; जीवन। **–रक्षक**–पु० आक्रमण आदिसे राजा, अमीर-उमरा आदिके शरीरकी रक्षा करनेवाला व्यक्ति, अंगरक्षक। **–विज्ञान**–पु० दे०'शरीरशास्त्र'। **–वृत्ति**–स्त्री० शरीर-रक्षाके लिए व्यापार, नौकरी इ०, जीविका। **–शास्त्र**–पु० शरीरके बाहरी-भीतरी अवयवोंकी रचना, क्रिया आदिकी विवेचना करनेवाला शास्त्र, शरीर-विज्ञान।

शरीरांत–पु० [सं०] मृत्यु, देहावसान।

शरीरी(रिन्)–पु० [सं०] शरीरधारी; मनुष्य; प्राणी।

शरु–पु० [सं०] कण; हथियार; इंद्रका वज्र; क्रोध; हिंसा; हिंसक। वि० शीर्ण; सूक्ष्म; पतला।

शर्करा–स्त्री० [सं०] शक्कर, रवादार चीनी; बालुकाकण। **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए शक्करकी बनी गाय। **–प्रमेह**–पु० मधुमेह रोग।

शर्त–स्त्री० [अ०] प्रतिज्ञा, किसी संधि-समझौतेकी अंगभूत प्रतिज्ञा; वह बात जिसपर किसी बातका होना, किया जाना, कायम रहना अवलंबित हो; वस्तु या कार्यविशेषके लिए अनिवार्य वस्तु; कैद, पाबंदी; होड़, बाजी। **–बंद**–वि० शर्तसे बँधा हुआ, प्रतिज्ञापत्र लिखकर नियत अवधितक काम करनेको बँधा हुआ (मजदूर), 'गिरमिटिया'। **मु०–बद(बाँध)कर सोना**–बहुत देरतक सोना, बड़ी लंबी नींद लेना। **–बदना, –बाँधना**–बाजी लगाना। **(किसी बातकी)–होना**–किसी बातके लिए अनिवार्य, अत्यावश्यक होना। **–यह है**–इस

शर्तपर।

शर्तिया, शर्तीया–वि० अचूक, पक्का (–इलाज)। अ० शर्त बदकर।

शर्ती–वि० किसी शर्त, प्रतिज्ञापर आश्रित। अ० दे० 'शर्तिया'।

शर्बत–पु० दे० 'शरबत'।

शर्बती–वि० दे० 'शरबती'।

शर्म–स्त्री० [फ़ा०] लज्जा, ह्या; इज्जत, लाज (रखना, रहना); खयाल, लिहाज। **–गीं**–वि० शर्मिंदा, लज्जायुक्त। **–नाक**–वि० लजानेलायक, लज्जाजनक। **–सार**–वि० शर्मिंदा, लज्जित। **मु०–आना**–लाज लगना। **–करना**–लज्जित होना; लिहाज करना। **–की बात**–लज्जाजनक कार्य। **–खाना**–लज्जा अनुभव करना। **–से गठरी हो जाना**–(दुलहिनका) लाजके मारे सुकड़कर गठरीसा बन जाना, जमीनमें गड़ जाना।

शर्म(न्)–पु० [सं०] सुख; आनंद; गृह (वै०); आश्रय; आशीर्वचन; रक्षा। **–द**–वि० आनंददायक। पु० विष्णु।

शर्मा(र्मन्)–पु० [सं०] ब्राह्मणवर्ण-बोधक उपाधि।

शर्माऊ, शर्मालू–वि० लज्जाशील, शर्मीला।

शर्माना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'शरमाना'।

शर्माशर्मी–अ० लज्जावश, संकोचवश।

शर्मिंदगी–स्त्री० [फ़ा०] शर्मिंदा होना।

शर्मिंदा–वि० [फ़ा०] लज्जित, लजाया हुआ।

शर्मीला–वि० लज्जाशील।

शर्व–पु० [सं०] शिव; विष्णु।

शर्वर–पु० [सं०] कंदर्प, कामदेव; अंधकार; संध्याकाल।

शर्वरी–स्त्री० [सं०] रात्रि; हल्दी। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–नाथ,–पति**–पु० चंद्रमा।

शर्वरीश–पु० [सं०] चंद्रमा।

शर्वाणी–स्त्री० [सं०] शिव-पत्नी, पार्वती।

शलग़म–पु० [फ़ा०] एक कंदशाक जिसकी जड़ तरकारी, अचार आदिके रूपमें और पत्ते सागकी तरह खाये जाते हैं।

शलजम–पु० दे० 'शलग़म'।

शलजमी–वि० शलजमसे मिलता-जुलता। **–आँखें**–बड़ी-बड़ी आँखें।

शलभ–पु० [सं०] पतंग, फतिंगा; टिड्डी; छप्पय छंदका एक भेद; एक असुर (साहित्यमें शलभ (पतंग)को प्रेमीका प्रतीक माना गया है)।

शलाका–स्त्री० [सं०] किसी धातु, लकड़ी आदिकी बनी सलाई, सीख; सुरमा लगानेकी सलाई; फोड़े, घाव आदिकी गहराई नापनेवाली डाक्टरकी सलाई; छातेकी तीली; पासा; वाण; चित्रकारकी कूँची, तूली; सलई; (बैलट) वह छोटी, रंगीन गोली, पुरजा या टिकट जो चुनावके समय मतदाता द्वारा गुप्त रूपसे मत-दान-पेटीमें डाला जाता है; इस प्रकारका गुप्त मतदान।

शली–स्त्री० [सं०] साही नामक जंतु जिसके शरीर भरमें काँटे होते हैं।

शल्का–पु० दे० 'सलूका'।

शल्य–पु० [सं०] कील, खूँटी; काँटा; शलाका; बाण; भाला; डाक्टरका चीरफाड़ करनेका औजार; विष; दुर्वचन; पाप; अस्थि; साही जानवर। **–कर्ता(र्तृ),–कार**–पु० जर्राह, सर्जन, चीर-फाड़ द्वारा चिकित्सा करनेवाला, शल्यचिकित्सक। **–क्रिया**–स्त्री० शस्त्रचिकित्सा। **–चिकित्सक**–पु० (सर्जन) फोड़ों, विकृत या रुग्ण अंगोंको चीर-फाड़कर ठीक करनेवाला तथा टूटी या स्थानच्युत हड्डी आदिको जोड़ने-बैठानेवाला चिकित्सक। **–चिकित्सा**–स्त्री० चीर-फाड़ द्वारा शरीरको नीरोग करनेकी विधि। **–तंत्र**–पु० शल्यशास्त्र-संबंधी आयुर्वेदीय ग्रंथ, सुश्रुतमें वर्णित आठ तंत्रोंमेंसे एक तंत्र जिसमें चीर-फाड़के शस्त्रों आदिका वर्णन है। **–लोम(न्)**–पु० साहीका काँटा। **–विज्ञान**–पु०, **–विद्या**–स्त्री० (सर्जरी) चीर-फाड़ द्वारा फोड़ों या विकृत एवं रुग्ण अंगादि ठीक करनेकी विद्या या शास्त्र। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें शल्यचिकित्साका वर्णन हो।

शल्यारि–पु० [सं०] शल्यराजको मारनेवाले युधिष्ठिर।

शल्याहरण–पु० [सं०] शरीरमें गड़े काँटे, बाण आदिको निकालनेका कार्य।

शल्योद्धरण–पु० [सं०] दे० 'शल्याहरण'।

शल्योद्योग–पु० (सर्जिकल इन्स्ट्रुमेंट्स इंडस्ट्री) शल्यचिकित्सामें प्रयुक्त होनेवाले औजारोंके निर्माणका उद्योग।

शल्ल–पु० [सं०] त्वचा; वल्कल, पेड़की छाल; मेढक।

शल्लक–पु० [सं०] सलईका पेड़; दे० 'शल्ल'।

शल्ली–स्त्री० [सं०] दे० 'शल्ल'; साही नामक जंतु।

शव–पु० [सं०] लाश, मृत शरीर। **–काम्य**–पु० कुत्ता। **–दहन,–दाह**–पु० मृत शरीर जलानेकी क्रिया। **–दाहस्थान**–पु० श्मशान। **–परीक्षा**–स्त्री० मृत्युके कारणका पता लगानेके लिए की गयी शवकी जाँच। **–भस्म(न्)**–पु० जले मुर्देकी राख। **–यान,–रथ**–पु० श्मशानतक शव ले जानेके लिए बाँस, लकड़ी आदिकी बनी अरथी, टिकठी। **–शयन**–पु० श्मशान। **–समाधि**–स्त्री० शवको भूगर्भ अथवा जलमें रखने, डालनेका संस्कार। **–साधन**–पु० श्मशानमें शवपर बैठकर मंत्र जगानेकी तंत्रशास्त्रोक्त क्रिया, साधना।

शवर–पु० [सं०] दे० 'शबर'। **–लोध्र**–पु० सफेद लोध्र।

शवरी–स्त्री० दे० 'शबरी'।

शवल–वि० [सं०] दे० 'शबल'।

शवलित–वि० [सं०] मिश्रित; चिह्नित।

शवली–स्त्री० [सं०] दे० 'शबला'। (चितकबरी गाय)।

शवाच्छादन–पु० [सं०] कफन, मृतचेल।

शवान्न–पु० [सं०] गला-पचा अन्न; अखाद्य अन्न; शवमांस।

शव्वाल–पु० [अ०] हिजरी सन्का दसवाँ महीना।

शश–पु० [सं०] शशक, खरगोश, खरहा; चंद्रलांछन, चाँदका धब्बा; लोध्र वृक्ष; बोल गंधद्रव्य; कामशास्त्रोक्त पुरुषके चार प्रकारोंमेंसे एक प्रकार (शशपुरुष मृदुभाषी, सुशील, कोमल शरीरवाला, सुकेश, सकलगुणनिधान और सत्यभाषी होता है)। **–घातक,–घाती(तिन्)**–पु० बाज पक्षी। **–धर**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–लक्षण,–लांछन**–पु० चंद्रमा। **–विषाण,–शृंग**–पु० जैसे खरगोशके सींगोंका होना असंभव है वैसी ही कोई असंभव बात, आकाशकुसुम।

शश–वि० [फ़ा०] पाँच और एक, छ। पु० ६ की संख्या।

–पहल,–पहलू–वि॰ छ कोनोंवाला, षट्‌कोण। **–माही**–वि॰ हर छ महीनेमें होनेवाला (परीक्षा इ॰), छमाही।

शशक–पु॰[सं॰] खरगोश। **–विषाण**–पु॰असंभव बात।

शशांक–पु॰ [सं॰] चंद्रमा। **–ज**–पु॰ बुध। **–मुकुट, –शेखर**–पु॰ शिव। **–सुत**–पु॰ बुध ग्रह।

शशा–पु॰ दे॰ 'शश'।

शशि*–पु॰ दे॰ 'शशी'।

शशी(शिन्)–पु॰ [सं॰] चंद्रमा। **–कर**–पु॰ चंद्रमाकी किरण। **–कला**–स्त्री॰ चंद्रकला, चंद्रमाका अंश; एक वर्णवृत्त। **–कांत**–पु॰ चंद्रकांत मणि; कुमुद। **–खंड**–पु॰ चंद्रमाकी कला; शिव। **–ग्रह**–पु॰ चंद्रग्रहण। **–ज**–पु॰ बुध ग्रह। **–तिथि**–स्त्री॰ पूर्णिमा। **–धर**–पु॰ शिव। **–पुत्र**–पु॰ बुध ग्रह। **–प्रभ**–वि॰ जो चंद्रमाके सदृश प्रभासे युक्त हो। पु॰ मोती; कुमुद। **–प्रभा**–स्त्री॰ चाँदनी। **–प्रिया**–स्त्री॰ सत्ताईसों नक्षत्र जिन्हें पुराणोंने चंद्रमाकी पत्नियाँ माना है। **–भाल,–भूषण,–भृत्**–पु॰ शिव। **–मंडल**–पु॰ चंद्रमंडल, चंद्रमाका घेरा। **–मणि**–पु॰ चंद्रकांत मणि। **–मुख**–वि॰ चंद्रमाके समान मुखवाला। [स्त्री॰ 'शशिमुखी']। **–मौलि**–पु॰ शिव। **–रस**–पु॰ सुधा, अमृत। **–रेखा**–स्त्री॰ चंद्रकला। **–लेखा**–चंद्ररेखा; एक वर्णवृत्त; गुडुची। **–वदना**–स्त्री॰ एक वर्णवृत्त। वि॰ स्त्री॰ शशिमुखी। **–शाला**–स्त्री॰ शीशमहल। **–शेखर**–पु॰ शिव। **–सुत**–पु॰ बुध। **–हीरा**–पु॰ [हिं॰] चंद्रकांत मणि।

शशीश–पु॰ [सं॰] शिव।

शस्ति–स्त्री॰ [सं॰] प्रशंसा; स्तुति।

शसा*–पु॰ खरहा।

शस्त्र–पु॰ [सं॰] हथियार, अस्त्र; औजार, उपाय। **–कर्म-(न्)**–पु॰ फोड़े आदिके चीरने-फाड़नेका काम। **–कार,–कारक**–पु॰ शस्त्र-निर्माता। **–कोष**–पु॰ शस्त्र रखनेका खाना, म्यान। **–क्रिया**–स्त्री॰ फोड़े आदिको चीरने-फाड़नेका काम। **–गृह**–पु॰ जहाँ अनेक प्रकारके शस्त्र रखे जाते हों, शस्त्रागार। **–चिकित्सा**–स्त्री॰ शस्त्र द्वारा उपचार, शल्य-चिकित्सा (सर्जरी)। **–जीवी-(विन्)**–पु॰ युद्ध ही जिसकी जीविका हो वह, सैनिक। **–त्याग**–पु॰ हथियार डाल देना, शस्त्रन्यास। **–धर,–धारी(रिन्),–भृत्**–वि॰ शस्त्र धारण करनेवाला। पु॰ योद्धा, सैनिक। **–निर्माणशाला**–स्त्री॰ (आर्डनेंस फैक्टरी) तोप, गोले तथा शस्त्रादि तैयार करनेका कारखाना। **–न्यास**–पु॰ शस्त्रोंका परित्याग। **–पाणि**–वि॰, पु॰ दे॰ 'शस्त्रधर'। **–पूत**–वि॰ शस्त्रों द्वारा रणभूमिमें निहत होनेके कारण जो पवित्र हो गया हो। **–प्रहार**–पु॰ शस्त्रकी चोट या आघात। **–विद्या**–स्त्री॰ शस्त्र चलानेका ज्ञान, कौशल; धनुर्वेद। **–वृत्ति**–पु॰ वह जिसकी जीविका शस्त्र चलानेपर ही आश्रित हो, सैनिक। **–शाला**–स्त्री॰ शस्त्रगृह, शस्त्रागार। **–शास्त्र**–पु॰ दे॰ 'शस्त्रविद्या'। **–हत**–वि॰ शस्त्र द्वारा मारा गया (आदमी, जानवर आदि)।

शस्त्राख्य–पु॰ [सं॰] शस्त्रकेतु, पूर्वमें उदित होनेवाला एक प्रकारका केतु जिसके दिखाई देनेपर महामारी फैलती है।

शस्त्रागार–पु॰ [सं॰] दे॰ 'शस्त्रगृह'।

शस्त्राजीव–पु॰ [सं॰] दे॰ 'शस्त्रजीवी'।

शस्त्री–स्त्री॰ [सं॰] छोटा शस्त्र, छुरी।

शस्त्री(स्त्रिन्)–वि॰ [सं॰] शस्त्रधारी, शस्त्रसे सुसज्जित। पु॰ सैनिक।

शस्त्रोपजीवी(विन्)–पु॰ [सं॰] दे॰ 'शस्त्रजीवी'।

शस्य–वि॰ [सं॰] प्रशंसनीय; श्रेष्ठ, बढ़िया। पु॰ नयी घास; फसल; अन्न, धान्य; वृक्षादिसे निकला हुआ फल, फूल आदि; योग्यता, गुण। **–क्षेत्र**–पु॰ अनाजका क्षेत्र। **–ध्वंसी(सिन्)**–पु॰ तून या तूर्णका पेड़। वि॰ धान्यका नाश करनेवाला। **–भक्षक**–वि॰ अनाज खानेवाला। **–मंजरी**–स्त्री॰ गेहूँ आदिकी नयी बाल, कणिश। **–शाली(लिन्),–संपन्न**–वि॰ धान्यसे परिपूर्ण। **–संपद्**–स्त्री॰ धान्यकी बहुलता।

शस्यागार–पु॰ [सं॰] अन्न रखनेका स्थान, खलिहान।

शस्यारु–पु॰ [सं॰] शमी वृक्षका एक भेद।

शहंशा, शहंशाह–पु॰[फा॰] राजाओंका राजा, सम्राट्।

शहंशाही–स्त्री॰ शहंशाहका भाव या कार्य; शाही रंग-ढंग; शहंशाहका पद। वि॰ शाही ढंगका, राजसी।

शह–पु॰ [फा॰] (शाहका लघु रूप) बादशाह; मदद; हिमायत; उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहको दी गयी किश्त; पतंगको धीरे-धीरे डोर पिलानेकी क्रिया, ढील। **–कार**–पु॰ दे॰ 'शाहकार'। **–चाल**–स्त्री॰ शतरंजके बादशाहकी चाल जो कोई और मुहरा न रह जानेपर चली जाती है। **–ज़ादगी**–स्त्री॰ शहजादा होनेकी स्थिति, चाल। **–ज़ादा**–पु॰ शाहका बेटा, राजकुमार। **–ज़ादी**–स्त्री॰ बादशाहकी बेटी, राजकुमारी। **–ज़ोर**–वि॰ अति बली। **–ज़ोरी**–स्त्री॰ बलवान् होना; जबरदस्ती। **–तरा**–पु॰ दे॰ 'शाहतरा'। **–तीर**–पु॰ पाटनके नीचे दी हुई बड़ी कड़ी। **–तूत**–पु॰ एक प्रसिद्ध पेड़ और उसका फल जो पकनेपर काफी मीठा होता है। **–पर**–पु॰ पक्षीके डैनेका सबसे बड़ा पर। (**मु॰–पर झाड़ना**–पक्षीका डैनेको फैलाकर जोरसे हिलाना कि खराब और कमजोर पर झड़ जायँ)। **–बाज़**–पु॰ बड़ा बाज; बड़ी जातिका बाज। **–बाला**–पु॰ विवाहकी प्रायः सभी रस्मोंमें वरके साथ रहनेवाला छोटा लड़का जो आम तौरसे उसका छोटा भाई होता है। **–बुलबुल**–स्त्री॰ लाल देह और काली गर्दनवाली बुलबुल। **–मात**–स्त्री॰ शतरंजमें बादशाहको ऐसी जगह किश्त देना कि उसके चलनेके लिए कोई घर न रह जाय और मात हो जाय; (ला॰) निरुत्तर, चुप कर देनेवाली बात। (**मु॰–मात करना**–निरुत्तर, चुप कर देना)। **–रग**–स्त्री॰ दे॰ 'शाहरग'। **–रुख़**–स्त्री॰ शतरंजमें बादशाहको रुख(हाथी)की शह। **–रुख़ी**–स्त्री॰ बादशाहको ऐसे घरमें रखना जिससे रुखकी शह पड़े; सामनेकी चोट। **–सवार**–पु॰ कुशल घोड़सवार। **–सवारी**–स्त्री॰ अच्छी घोड़सवारी। **मु॰–देना**–लड़ने-झगड़नेको उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहको किश्त देना; पतंगको डोर पिलाना, ढील देना।

शहद-पु० [अ०] किंचित् लाली लिये हुए पीले या सफेद रंगका मीठा शीरा जो मधुमक्खियों और कुछ अन्य कीड़ों द्वारा संगृहीत पुष्परसका रूपांतर होता है, मधु। वि० अति मधुर। **-की छुरी**-मीठी छुरी; जबानका मीठा, दिलका खोटा। **-की मक्खी**-मधुमक्खी; लोभी और पीछा न छोड़नेवाला आदमी। **मु० (जबानमें)-घुलना**-मिठाससे भर जाना। **(कानोंमें)-घोलना**-अति मधुर, सुखद वचन बोलना। **-लगाकर अलग हो जाना**-झगड़ा लगाकर आप अलग हो जाना, दूरसे तमाशा देखना। **-लगाकर चाटना**-निरर्थक चीजको यत्नसे रखे रहना।

शहना-स्त्री० [फा०] दे० 'शहनाई'।

शहनाई-स्त्री० [फा०] मुँहसे फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा, नफीरी।

शहर-पु० [फा०] नगर। **-ख़बरा**-वि० शहरभरकी, घर-घरकी खबर रखनेवाला। **-गश्त,-गिर्द**-वि० शहरमें घूमनेवाला, पतरौल। **-दार**-पु० शहरका रहनेवाला, शहरी। **-पनाह**-स्त्री० परकोटा, नगरके रक्षार्थ बनायी हुई चहारदीवारी। **-बंद**-पु० जेलखाना; कैदी। **-बदर**-वि० निर्वासित (करना, होना)। **-बशहर**-अ० एकसे दूसरे और दूसरेसे तीसरे शहरतक; जगह-जगह। **-बाश**-पु० शहरका रहनेवाला, शहरी। **-यार**-पु० बादशाह; समकालीन बादशाहोंमें प्रमुख। **-यारी**-स्त्री० बादशाही; शाहाना दबदबा। **मु०-की दाई**-घर-घरकी खबर रखनेवाली स्त्री।

शहवत-स्त्री० [अ०] कामना; भोगेच्छा; संभोगकी इच्छा।

शहादत-स्त्री० [अ०] गवाही, साक्ष्य; खुदाकी राहमें शहीद होना; धर्मयुद्धमें लड़ते हुए मारा जाना; वध। **-नामा**-पु० वह पुस्तक जिसमें इमाम हुसैनकी शहादतका वर्णन हो; कपड़ेपर लिखा हुआ शहादतका कलमा जिसे मुसलमान मुर्देके कफनमें रख देते हैं।

शहाना-वि०[फा०] ('शाहाना'का लघु रूप)। राजसी, राजोचित; सुंदर, बढ़िया। पु० दूल्हेको पहनाया जानेवाला लाल जोड़ा; ब्याहका एक गीत; एक गत; संपूर्ण जातिका एक राग। **-कान्हड़ा**-पु० कान्हड़ा रागका एक भेद। **-जोड़ा**-पु० दूल्हेका सुर्ख जोड़ा; सुर्ख पोशाक। **-वक्त**-पु० शामका वक्त; सुहावना समय। **-(नी) चूड़ियाँ**-स्त्री० लाल रंगकी सुंदर चूड़ियाँ। **-मेँहदी**-स्त्री० गहरे रंगवाली मेंहदी।

शहाब-पु० [फा०] गहरा लाल रंग; कुसुमको भिगोकर निकाला जानेवाला गहरा लाल रंग।

शहाबी-वि० शहाबके रंगका, लाल।

शही-स्त्री० बादशाही; मिठाई।

शहीद-वि०[अ०] जो धर्म या शुभ कार्यके लिए लड़ते हुए मारा जाय; हत, कतल किया हुआ; अपनेको बलि, कुरबान कर देनेवाला।

शहीदी-वि० शहीद होनेको तैयार; लाल! **-जत्था**-पु० शहीद होनेको तैयार जनोंका जत्था। **-तरबूज**-पु० तरबूजकी एक बढ़िया किस्म जिसका छिलकातक सुर्ख होता है।

शांकर-पु० [सं०] शंकराचार्यके मत, संप्रदायका अनुयायी। वि० शिव-संबंधी; शंकराचार्य-संबंधी।

शांख-पु० [सं०] शंख-ध्वनि। वि० शंख-निर्मित, शंखका; शंख-संबंधी।

शांत-वि० [सं०] शांतियुक्त; मौन, चुप; निःशब्द, सुनसान; धीर, स्थिरमना, अचंचल, अनुद्वेगशील; श्रांत, थका हुआ; स्थित, रुका हुआ; शमित, मिटा हुआ; संतुष्ट; जीवनके लक्षणोंसे हीन, मृत; सांसारिकतासे निवृत्त; इंद्रियोंको दमित करने या जीतनेवाला; उत्साहहीन, अप्रयत्नशील, शिथिल; शिष्ट, सौम्य प्रकृतिवाला, विनम्र; समाप्त, बुझा हुआ; क्रोधादिसे निवृत्त, मनोविकारहीन, स्वस्थमना; किसी घटना, किसी बात, किसी मनोभाव आदिसे प्रभावित न होनेवाला। पु० साहित्यशास्त्रवर्णित नौ रसोंमेंसे एक रस (इसका स्थायी भाव 'निर्वेद' है)।

शांतनु-पु० [सं०] महाराज प्रतीपके पुत्र, भीष्मके पिता (ये चंद्रवंशी थे और द्वापरयुगमें हुए थे)।

शांता-स्त्री० [सं०] महाराज दशरथकी कन्या जिसे अंगराज लोमपादने गोद लिया था और जो शृंगी ऋषिको ब्याही गयी थी।

शांति-स्त्री० [सं०] निःशब्दता, सूनापन; धीरता, मनकी स्थिरता, अनुद्वेगशीलता; सांत्वना, तसल्ली; काम, क्रोध, रोग, पीड़ा, अग्नि, ताप आदिका शमन; आराम, चैन, सुख; मृत्यु; जितेंद्रियता; शिष्टता, सौम्यता; क्रोधादि मनोविकारोंसे निवृत्ति, मनकी स्वस्थता; सांसारिकतासे विराग; युद्धादिका रुक जाना या न होना; अनिष्ट, अमंगल आदिका पूजा, व्रत, यज्ञ आदि द्वारा शमन (जैसे ग्रहशांति आदि)। **-कर,-कारी(रिन्)**-वि० शांति करने, लानेवाला। **-कर्म(न्),-कार्य**-पु० दे० 'शांतिक'। **-कलश,-घट**-पु० शांतिके लिए स्थापित कलश। **-गृह**-पु० यज्ञके अंतमें शांति-जलसे स्नान करनेका घर; विश्रामगृह। **-जल**-पु० यज्ञ, पूजा आदिमें सुख, शांतिदायक मंत्रपूत अवशिष्ट जल। **-द,-दाता(तृ),-दायक,-दायी(यिन्)**-वि० शांति देनेवाला। **-निकेतन**-पु० शांतियुक्त, शांतिदायक गृह, स्थान; विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा बंगाल प्रांतके बोलपुर नामक स्थानमें स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्यासंस्था। **-पर्व(न्)**-पु० 'महाभारत'का बारहवाँ पर्व (इसमें युद्धकी विभीषिकासे तप्त युधिष्ठिरके मनकी शांतिके लिए ज्ञान, उपदेश आदिके प्रसंग वर्णित हैं)। **-पात्र**-पु० यज्ञ, पूजा आदिके अवसरोंपर ग्रह, अमंगल आदिकी शांतिके लिए जलयुक्त पात्र। **-प्रद**-वि० शांतिदायक। **-प्रिय**-वि० (वह व्यक्ति) जिसे शांति प्रिय हो, शांतिका अभिलाषी। **-भंग**-पु० शांति-नाश; उपद्रवका होना; शासन, अनुशासन आदिका न माना जाना, विघ्नोत्पादन। **-रक्षक**-पु० अमन कायम रखनेवाला। **-रक्षा**-स्त्री० उपद्रव-निवारण। **-वाद**-पु० (पैसिफिज्म)विश्वमें शांति बनाये रखने, किसी भी स्थितिमें युद्ध न होने देनेपर जोर देनेका सिद्धांत या इसके लिए किया जानेवाला आंदोलन। **-वादी(दिन्)**-वि० (पैसिफिस्ट) शांतिवादके सिद्धांतका अनुयायी। **-स्थापन**-

पु० अमन कायम करना।

शांतिक—वि० [सं०] शांति-संबंधी। पु० अमंगल, दुष्ट ग्रहादिके निवारणार्थ होनेवाला पूजापाठ, यज्ञ इत्यादि।

शांतिमय—वि० [सं०] शांतियुक्त, शांतिपूर्ण; शांति-गुणयुक्त; निर्विघ्न।

शांब—पु० [सं०] जांबवतीसे उत्पन्न कृष्णका पुत्र।

शांबर—वि० [सं०] शंबर मृग-संबंधी; शंबर राक्षस-संबंधी।

शांबरिक—पु० [सं०] ऐंद्रजालिक, जादूगर।

शांबरी—स्त्री० [सं०] इंद्रजाल, मायाविद्या, जादू (शंबर दैत्यने इसका निर्माण किया था, अतः इसे 'शांबरी' कहते हैं); ऐंद्रजालिका, जादूगरनी।

शांबुक, शांबूक—पु० [सं०] घोंघा।

शांभव—वि० [सं०] शंभु-संबंधी। पु० शंभुका पुत्र; शंभुका उपासक, शैव; कपूर; गुग्गुल; विषका एक प्रकार; शिव-मल्लीका पौधा; देवदारु वृक्ष।

शांभवी—स्त्री० [सं०] पार्वती, दुर्गा; नीली दूब; ब्रह्मरंध्र।

शाइक़—वि० [अ०] दे० 'शायक़'।

शाइर—पु० [अ०] दे० 'शायर'।

शाइरा—स्त्री० [अ०] दे० 'शायरा'।

शाइस्तगी—स्त्री० [फा०] शिष्टता, सभ्यता; विनय।

शाइस्ता—वि० [फा०] शिष्ट, सभ्य; विनीत, सुशील; सीधा, शरारत न करनेवाला (—घोड़ा)।

शाकंभरी—स्त्री०[सं०] दुर्गा;शांभरी (साँभर) नामक नगर।

शाकंभरीय—वि० [सं०] साँभर झीलसे उत्पन्न। पु० साँभर नमक।

शाक—पु० [सं०] खाद्य जड़, डंठल, पत्ती, फूल, फल आदि जो प्रायः उबाल, पकाकर खाये जाते हैं, साग, तरकारी; शाक वृक्ष, सागौनका पेड़; शिरीष वृक्ष; एक द्वीप; शक-राज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित संवत्। —तरु,—द्रुम—पु० सागौनका पेड़। —भक्ष—वि० शाक खानेवाला। पु० वह व्यक्ति जो शाक ही खाता हो, मांस न खाता हो।

शाकल—वि० [सं०] शकल या टुकड़ेसे संबद्ध। पु० एक द्वीपका नाम; हवन-सामग्री।

शाकाहार—पु० [सं०] पत्र, फूल, फल, अन्न आदि खाद्य पदार्थ अथवा इनका भोजन।

शाकाहारी(रिन्)—वि०, पु० [सं०] दे० 'शाकभक्ष'।

शाकिनी—स्त्री० [सं०] शाकयुक्त भूमि; दुर्गाकी एक अनुचरी।

शाकिर—वि० [अ०] शुक्र करनेवाला, कृतज्ञ।

शाकी—वि० [अ०] शिकायत करनेवाला; फरियाद करने-वाला।

शाकुंतल, शाकुंतलेय—वि० [सं०] शकुंतला-संबंधी। पु० शकुंतलासे संबद्ध कालिदासकृत 'अभिज्ञान शाकुंतल' नाटक; शकुंतलाका पुत्र भरत।

शाकुंतिक—पु० [सं०] चिड़ीमार, बहेलिया।

शाकुन—वि० [सं०] पक्षियों-संबंधी; पक्षियोंका; शकुन-(सगुन)संबंधी। पु० पक्षी आदिके रूप, लक्षण आदि देखकर मनुष्यके शुभाशुभका निश्चय करानेवाला ग्रंथ, शास्त्र; सगुन बतानेवाला; पक्षी पकड़नेवाला।

शाकुनिक—पु० [सं०] चिड़ीमार, बहेलिया, व्याध; सगुन बतानेवाला, शकुनज्ञ।

शाकुनेय—पु० [सं०] छोटा उल्लू; वृकासुर। वि० पक्षि-संबंधी।

शाक्त—पु० [सं०] वह जो शक्तिकी उपासना करता हो, दुर्गा, काली आदि देवियोंका उपासक; तंत्र-संप्रदायमें दीक्षित। वि० शक्ति-संबंधी।

शाक्तिक—पु० [सं०] शाक्त, शक्तिका उपासक; शक्ति, भाला नामक हथियार रखने, चलानेवाला व्यक्ति।

शाक्तेय, शाक्त्य—पु० [सं०] शक्तिकी उपासना करने-वाला व्यक्ति।

शाक्य—पु० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रियकुल जिसमें गौतम-बुद्ध उत्पन्न हुए थे; बुद्धदेव। —मुनि—पु० बुद्धदेव।

शाक्र—वि० [सं०] शक्र, इंद्र-संबंधी; इंद्रार्पित।

शाख़—स्त्री० [फा०] शाखा, डाली; पौधेकी कलम; सींग; नदी या नहरकी मुख्य धारासे निकली हुई छोटी धारा; टुकड़ा; फाँक; अंश; (ला०) वंश; कमानकी लकड़ी। —दर-शाख़—वि० दूरतक फैला हुआ, शाखा-प्रशाखाओं-वाला। मु०—निकालना—टहनी निकालना; ऐब निकालना, नुक्ता-चीनी करना; नयी बात पैदा करना।

शाखा—स्त्री० [सं०] विटप, पेड़की डाल; बाहु; शरीराव-यव; ग्रंथपरिच्छेद, अध्याय; पक्षांतर, प्रतिपक्ष; किसी वस्तु आदिका अंग, भाग, भेद; किसी दर्शन, शास्त्र आदिका भेद, संप्रदाय (स्थूल); वेदकी संहिताओंको पदपाठ और स्वरकी दृष्टिसे व्यवस्थित करनेवाले किसी ऋषिके नामपर उसके वंशजों अथवा शिष्यों द्वारा परंपराके रूपमें चलाया जानेवाला संप्रदाय। —चंक्रमण—पु० एक डालसे दूसरी डालपर कूदना; हाथमें लिये एक कामको पूरा किये बिना ही दूसरा काम करने लगना, कोई कार्य अव्यवस्थित रूपसे करना। —चंद्रन्याय—पु० अवास्तविक वस्तु, घटना आदिको सत्य मान लेनेके अव-सरपर कही जानेवाली एक उक्ति (किसी विशेष स्थानसे देखनेपर ज्ञात होता है कि चंद्र वृक्षकी शाखापर ही है, मगर स्थिति ऐसी होती नहीं। इसी स्थितिके आधारपर यह उक्ति बनी है)। —नगर—पु० उपनगर। —पित्त—पु० हाथ-पैरमें जलन पैदा करनेवाला एक रोग। —पुर—पु० दे० 'शाखानगर'। भृत्—पु० वृक्ष। —मृग—पु० वानर; गिलहरी। —रंड—पु० अन्यशाखक, वेदकी अपनी शाखाको छोड़कर दूसरेकी शाखाका अध्येता। —रथ्या—स्त्री० बड़ी सड़कसे निकली हुई छोटी सड़क। —वात—पु० एक प्रकारका वातरोग।

शाख़ा—पु० [फा०] टहनी, शाखा; सींग; सींगकी शकलका प्याला; वह लकड़ी जिसमें अपराधीका सिर और हाथ देकर उसे दंड देते हैं।

शाखोच्चार—पु० [सं०] विवाह-मंडपमें पाणि-ग्रहणके अवसर पर वर तथा कन्या-पक्षके पुरोहितों द्वारा अपने-अपने यज-मानकी कुलीनताके ज्ञापनार्थ उनकी वंशावलीका बखान।

शाखोट, शाखोटक—पु० [सं०] सिहोरका पेड़।

शाख्य—वि० [सं०] शाखा-संबंधी; शाखाके सदृश।

शागिर्द—पु० [फा०] गुरुसे विद्या या शिक्षा-प्राप्त करने-वाला, विद्यार्थी, शिष्य। —पेशा—पु० किसी दफ्तर या

विभागके (मातहत) कर्मचारियोंकी समष्टि, अमला, नौकर-चाकर; नौकर-चाकरके रहनेके मकान जो बँगलों आदिमें एक किनारे या पास ही बना दिये जाते हैं।

शागिर्दाना–वि० [फा०] शिष्योचित, शागिर्दकी तरह। पु० गुरुदक्षिणा।

शागिर्दी–स्त्री० शागिर्द होना, शिष्यता। मु०–**करना**–शागिर्द बनकर सीखना, शिष्य होना।

शाज़–वि० [अ०] दुर्लभ, कमयाब; अनोखा।

शाटिका, शाटी–स्त्री० [सं०] साड़ी; वस्त्र।

शाठ्य–पु० [सं०] शठता।

शाण–पु० [सं०] सान, एक प्रकारका कृत्रिम पत्थर जिसपर रगड़कर हथियार, औजार आदिकी धार तेज की जाती है; सन(शण)का बना वस्त्र; कसौटी; चार माशेकी एक तौल; करपत्र, आरा। वि० सनका बना हुआ।

शाणक–पु० [सं०] सनका बना वस्त्र।

शाणाजीव–पु० [सं०] शाणपर काम करके अपनी जीविका चलानेवाला व्यक्ति, हथियारों, औजारों आदिकी सफाई, उन्हें तेज करनेवाला व्यक्ति, अस्त्र-मार्जक।

शाणि–स्त्री० [सं०] पट्टवृक्ष, पटुआ।

शाणित–वि० [सं०] जो तेज या तीक्ष्ण किया गया हो, सान रखा हुआ; कसौटीपर कसा हुआ।

शाणी–स्त्री० [सं०] सनके रेशोंसे बना वस्त्र, टाट; तंबू; छिद्रमय वस्त्र, फटी पोशाक; उपनयन संस्कारके अवसरपर ब्रह्मचारीको पहननेके लिए दिया जानेवाला सनका बना वस्त्र; सान; कसौटी।

शाणोपल–पु० [सं०] सान धरनेका पत्थर।

शात–वि०[सं०] निशित, तेज किया हुआ; पतला; दुबला, कमजोर; पतित; सुंदर; सुखी; दीप्तिशाली।

शातिर–वि० [अ०] चालाक, काइयाँ; चोर, गठकतरा; पक्का चोर; शतरंज खेलनेवाला।

शातोदरी–स्त्री० [सं०] क्षीण कटिवाली औरत।

शात्रव–पु० [सं०] शत्रुता, दुश्मनी; शत्रु-समूह, दुश्मनोंका गिरोह। वि० शत्रु-संबंधी।

शादियाना–पु० [फा०] ब्याहमें बजायी जानेवाली नौबत, खुशीका बाजा (बजाना); ब्याह या खुशीके मौकोंपर गाया जानेवाला गीत (गाना); बधावा; किसानों द्वारा शादीके अवसरपर जमींदारको दी जानेवाली रकम।

शादी–स्त्री० [फा०] खुशी; हर्षोत्सव; विवाह।

शाद्वल–वि० [सं०] नयी, हरी घाससे युक्त; हरा। पु० घासका मैदान, हरित भूमि, गोचारणभूमि; मरुद्वीप (ओएसिस)।

शान–पु० [सं०] शाण; निकष, कसौटी। स्त्री० [फा०] गौरव, बड़प्पन; दबदबा; ताकत; कुदरत (खुदाकी शान); प्रतिष्ठा (शान घटना); ठाट; ठसक, आन, अंदाज; रूप, शकल; अवसर।–**गुमान**–पु०दे०'सानगुमान'।–**दार**–वि० शानवाला, भड़कीला, भव्य, सुंदर। –**शौकत**–स्त्री०ठाट-बाट। मु०–**बरसना**–गौरव, दबदबा प्रकट होना।–**में बट्टा लगना**–प्रतिष्ठा घटना, हेठी होना।

शाप–पु० [सं०] 'अमुकका बुरा हो' ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, आक्रोश, बददुआ; जली-कटी सुनाना। –**ग्रस्त**–वि० अभिशप्त। –**निवृत्ति,–मुक्ति**–स्त्री० शापसे छुटकारा। –**मुक्त**–वि० अभिशप्त होकर बादमें जो किसी कारणवश उससे मुक्त हो गया हो।

शापना*–स० क्रि० शाप देना।

शापांत–पु० [सं०] शापकी समाप्ति।

शापांबु–पु०[सं०] वह जल जिसे हाथमें लेकर शाप दिया जाय, शापोदक।

शापावसान–पु० [सं०] दे० 'शापांत'।

शापित–वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो, अभिशप्त; जिसे शपथ दिलायी गयी हो।

शापोद्धार–पु० [सं०] शापसे छूटना, शाप-मोक्ष, शाप-मुक्ति।

शाफरिक–पु० [सं०] मछली मारनेवाला व्यक्ति, मछुआ।

शाफ़ा–पु०[फा०] रुईकी बत्ती जो दवामें भिगोकर जख्मके अंदर रखी जाय; आँखके ऊपर रखा जानेवाला रुईका फाया; पाखाना लानेके लिए प्रयुक्त साबुनकी बत्ती।

शाबर–वि० [सं०] शबर-संबंधी; जंगली, क्रूर। पु० अपराध, गलती; पाप; दुष्टता, बदमाशी; शबर मृगका चमड़ा; ताँबा; अँधेरा।

शाबरी–स्त्री० [सं०] शबर जातिकी भाषा।

शाबल्य–पु०[सं०] शबलता, कई रंगों या वस्तुओंका मेल।

शाबाश–अ० [फा०'शाहबाश'–'खुश रहो'का लघु रूप] खुश रहो; वाहवा; साधु-साधु।

शाबाशी–स्त्री० [फा०] सराहना, साधुवाद।

शाब्द–वि० [सं०] शब्द-संबंधी; शब्दमय; शब्दपर ही आश्रित ('आर्थ'का उलटा); शब्दाडंबरसे युक्त (व्याख्यान, शैली); मौखिक। –**व्यंजना**–स्त्री० वाक्यमें प्रयुक्त शब्द-विशेषके आधारपर हुई व्यंजना (सा०)।

शाब्दिक–वि०[सं०] शब्द-संबंधी; एक-एक शब्दके विचारसे ठीक (अनुवाद, लिटरल)।

शाम–स्त्री०[फा०] सूर्यास्तका समय, संध्या;(ला०) अंतकाल (शामे जवानी, शामे जिंदगी)। पु० सीरिया नामक देश। मु०–**का फूलना**–सूर्यास्तकालमें पश्चिमी क्षितिजपर लालीका छिटकना। –**की सुबह करना**–सारी रात जागकर बिताना, सबेरा कर देना।–**सुबह करना या लगाना**–टालमटोल करना।

शामत–स्त्री० [अ०] दुर्भाग्य, कमबख्ती; मुसीबत। मु०–**आना**–बुरे दिन आना, दुर्दैवकी प्रेरणा होना, कमबख्ती आना।–**का मारा**–जिसकी शामत आयी हो, अभागा, दुर्दशाग्रस्त। –**की मार**–दुर्भाग्य, कमबख्ती। (**किसीपर**)–**सवार होना**–दे० 'शामत आना'।

शामती–वि० शामतका मारा, अभागा।

शामियाना–पु० [फा०] बड़ा और साधारणतः चारों ओर खुला हुआ तंबू।

शामिल–वि० [अ०] मिला हुआ; इकट्ठा। –**मिसिल**–वि० मुकदमेके कागजातके साथ नत्थी किया हुआ।

शामिलात–स्त्री० साझेकी जायदाद, अनेक हिस्सेदारोंकी संयुक्त संपत्ति; हिस्सेदारी (यह महाल शामिलात है)।

शामिलाती–वि० संयुक्त।

शामी–वि० शाम देश-संबंधी या शाम देशका। पु० छड़ी

या औजार आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला लोहे, पीतलका छल्ला।

शायक–पु० [सं०] बाण; तलवार।

शायक़–वि० [अ०] शौक करनेवाला; इच्छुक।

शायद–अ० [फा०] कदाचित्; संभवतः।

शायर–पु० [अ०] शेर कहनेवाला, कवि।

शायरा–स्त्री० [अ०] स्त्री कवि, कवयित्री।

शायरी–स्त्री० [अ०] शेर कहना; कविकर्म; कविता।

शाया–वि० [अ०] प्रकट; विज्ञापित; प्रकाशित (पुस्तक आदि)। **मु०–करना**–प्रकाशित करना।

शायित–वि० [सं०] सोया, लेटा हुआ; लेटाया हुआ।

शायी(यिन्)–वि० [सं०] सोने, लेटनेवाला।

शारंग–पु० [सं०] दे० 'सारंग'।

शारंगी–स्त्री० [सं०] दे० 'सारंगी'।

शारद–वि० [सं०] शरत्कालमें उत्पन्न; शरत्कालसे संबद्ध; वार्षिक, वर्ष-संबंधी; नवीन। **–ज्योत्स्ना**–स्त्री० शरद् ऋतुकी चाँदनी जो उज्ज्वलता और शीतलताके लिए प्रसिद्ध है।

शारदा–स्त्री० [सं०] सरस्वती; दुर्गा; एक प्रकारकी वीणा; ब्राह्मी।

शारदीय–वि० [सं०] शरद्-ऋतु-संबंधी; शरत्कालका।

शारद्य–वि० [सं०] शारदीय, शरद्-ऋतु-संबंधी। पु० शरद्‌में होनेवाला अन्न।

शारि–पु० [सं०] जुआ खेलनेका सामान; पासेकी गोट; शतरंजकी गोटी; छोटा गेंद। स्त्री० शारिका, मैना।

शारिका–स्त्री० [सं०] मैना पक्षी; वीणा आदिका वादन; शतरंजकी गोटी; शतरंज आदिका खेलना।

शारीर–वि० [सं०] शरीर-संबंधी; शरीरसे संबद्ध; देहज।

शारीरक–वि० [सं०] देह-संबंधी; देहज। पु० आत्मा।

शारीरिक–वि० [सं०] दे० 'शारीरक'।

शार्कर–वि० [सं०] शर्करानिर्मित, चीनीका या चीनीसे बना हुआ; शर्करायुक्त; रवीला, रवेदार।

शार्ङ्ग–वि० [सं०] शृंग-संबंधी; सींगका बना हुआ; धनुर्धारी। पु० धनुष्; विष्णुका धनुष्। **–धन्वा(न्वन्), –धारी(रिन्), –पाणि, –भृत्**–पु० विष्णु; कृष्ण; धनुर्धर सैनिक।

शार्ङ्गायुध–पु० [सं०] दे० 'शार्ङ्गधन्वा'।

शार्दूल–पु० [सं०] व्याघ्र, बाघ; चीता; पक्षि-विशेष। वि० श्रेष्ठ (जैसे–नर-शार्दूल)।

शार्वरी–स्त्री० [सं०] रात।

शाल–पु०[सं०] साखू, सखुआका पेड़; वृक्ष; मत्स्यविशेष। **–ग्राम**–पु० एक पर्वत; जलप्रवाहसे घिसी, गोली, अति चिकनी, श्याम वर्ण उस पर्वतके पत्थरकी वटिका जो विष्णुके रूपमें पूजी जाती है।

शाल–स्त्री० [फा०] ऊनी या रेशमी चादर; कश्मीरमें बननेवाली दुंबेके बालोंकी चादर। **–दोज़**–पु० शालपर बेलबूटे बनानेवाला। **–बाफ़**–पु० शाल बुननेवाला।

शालभ–वि० [सं०] शलभ-संबंधी।

शाला–स्त्री० [सं०] गृह; स्थान।

शालाकी(किन्)–पु० [सं०] शल्य-चिकित्सक; अस्त्र-वैद्य; नाई; बरछी धारण करनेवाला।

शालाक्य–पु० [सं०] आयुर्वेदोक्त शल्यचिकित्सा-संबंधी एक शाखा, तंत्र जिसमें गर्दनके ऊपरकी इंद्रियोंकी चिकित्साका विवेचन है; उक्त इंद्रियोंका शल्यचिकित्सक।

शालातुरीय–पु० [सं०] पाणिनि (ये शालातुर नामक ग्राममें उत्पन्न हुए थे, इसी कारण इनका यह नाम पड़ा)।

शालि–पु० [सं०] चावल; जड़हन चावल, जिसका पौधा रोपा जाता है (वह हेमंत ऋतुमें होता है)। **–गोप**–पु० धानके खेतका रखवाला; खेत, खलिहान, बारी, बगीचा आदिका रखवाला। **–चूर्ण**–पु० चावलका आटा। **–धान**–पु० [हिं०] बासमती चावल, अगहनी चावल। **–वाहन**–पु० शक-संवत्‌का प्रवर्तक शक जातीय एक प्रसिद्ध राजा। **–होत्र**–पु० घोड़ा; अश्वशास्त्रप्रवर्तक एक राजा; पशुचिकित्सा-विज्ञान। **–होत्री(त्रिन्)**–पु० घोड़ोंका चिकित्सक; घोड़ा।

शाली(लिन्)–वि० [सं०] युक्त, सहित (समासमें)।

शालीन–वि० [सं०] विनम्र; लज्जाशील; सुशील; धनी।

शालीनता–स्त्री० [सं०] विनम्रता; लज्जा।

शालीय–वि० [सं०] शाला-संबंधी।

शालेय–पु० [सं०] वह खेत जिसमें शालि धान पैदा हो; सौंफ। वि० शाला तथा शाल वृक्ष-संबंधी।

शाल्मल, शाल्मलि–पु० [सं०] शाल्मली, सेमलका पेड़; पृथ्वीके सात खंडोंमेंसे एक खंड।

शाव–पु० [सं०] शिशु, विशेषतः पशुपक्षीका शिशु।

शावक–पु० [सं०] पशु-पक्षीका बच्चा।

शाश्वत–वि० [सं०] नित्य, निरंतर; सततस्थायी।

शाश्वतिक–वि० [सं०] दे० 'शाश्वत'।

शासक–पु० [सं०] राजा, शासन करनेवाला व्यक्ति, शासनकर्ता, शास्ता; राज्य-शासनका संचालक, व्यवस्थापक, हाकिम; दंड देनेवाला व्यक्ति; जहाजका शासन या प्रबंध जिसके हाथमें हो वह। **–मंडली**–स्त्री०, **–वर्ग**–पु० राज्यके विभिन्न विभागोंके संचालकों, हाकिमोंका संघ, समूह।

शासन–पु० [सं०] किसी सरकार द्वारा किसी व्यक्ति, जाति, नगर, प्रांत, देशके नियंत्रण, संचालन, हुकूमतका कार्य; आज्ञा, हुकम; राज्यादेश, सरकारी हुक्म; किसीके कार्यादिकी देखरेख, उनका निर्देशन, नियंत्रण; अनुशासन; किसीको वशमें रखना; कागज, ताम्रपट्ट आदिपर लिखित दान आदि; शास्ति, दंड। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० शासक। **–तंत्र**–पु० राज्यशासनप्रणाली, रीति, पद्धति। **–पत्र**–पु० राज्यादेशपत्र, राज्याज्ञापत्र, सरकारी हुक्मनामा, फरमान; ताम्रपत्रादिपर खुदी भूमि-दानादि-संबंधी राजाज्ञा। **–प्रणाली**–स्त्री० शासनकी विधि या पद्धति। **–व्यवस्था**–स्त्री० शासन-संबंधी प्रबंध, शासनप्रणाली।

शासनांतर्गत, शासनाधीन–वि० [सं०] जो शासनमें, शासनके भीतर हो; अधिकृत; वशीभूत।

शासनादिष्टप्रदेश–पु०[सं०] (मैनडेटेड टेरीटरी) वे पिछड़े हुए प्रदेश या भूखंड जिनका शासनभार प्रथम महायुद्धके बाद राष्ट्रसंघके आदेशसे ब्रिटेन आदि उन्नत विजेता राष्ट्रोंको सौंप दिया गया था।

शासनादेश–पु०[सं०](मैनडेट) प्रथम महायुद्धके पूर्व जर्मनी

तथा तुर्कीके अधिकारमें जो उपनिवेश या क्षेत्र थे, उनपर उनके स्वशासनयोग्य होनेतक शासन करनेका ब्रिटेन, फ्रांस आदिको राष्ट्रसंघ द्वारा दिया गया आदेश।

शासनिक विपर्यय–पु० [सं०] (कूडेटा) शासन-व्यवस्थामें एकाएक एवं बलपूर्वक किया गया परिवर्तन; बलात् सत्तापहरण।

शासनीय–वि०[सं०] शासन या नियंत्रणके योग्य; दंड्य।

शासित–वि०[सं०]जिसका शासन किया गया हो;दंडित।

शासिता(तृ)–वि०[सं०]शासन करनेवाला;दंड देनेवाला।

शासिनिकाय–पु० [सं०] (गवर्निंग बॉडी) (किसी विद्यालय, चिकित्सालय आदिका) प्रबंध या नियंत्रण करनेवाले व्यक्तियोंका समूह या मंडल।

शास्ता (स्तृ)–पु० [सं०] शासक; राजा; शिक्षक, गुरु।

शास्ति–स्त्री० [सं०] शासन; आज्ञा; दंड; राजदंड।

शास्त्र–पु० [सं०] धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला आदि-संबंधी ग्रंथ जिनके द्वारा मानव-समाज तथा जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंकी स्थिति और रक्षाकी प्रत्यक्ष या परोक्षरूपसे शिक्षा मिलती है; ज्ञानकी कोई शाखा। **–कार,–कृत**–पु० शास्त्र-निर्माता; शास्त्रकर्ता ऋषि। **–कोविद**–वि० शास्त्रोंका विशेष-ज्ञान रखनेवाला। **–चक्षु**–पु० व्याकरण जो शास्त्रोंके अध्ययनके लिए नेत्र (परम आवश्यक वस्तु) है। **–चर्चा**–स्त्री० शास्त्रका अध्ययन, मनन, अनुशीलन; शास्त्रपर विचार-विमर्श। **–ज्ञ**–वि०, पु० शास्त्रका जाननेवाला। **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० वह व्यक्ति जिसने शास्त्र देखा, सुना है, शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ। **–प्रवक्ता,–वक्ता (क्तृ)**–पु० शास्त्रोपदेशक; आचार, व्यवहार आदिके संबंधमें शास्त्रपर दृष्टि रखते हुए निर्णय देनेवाला,घोषणा करनेवाला व्यक्ति। **–वित्,–विद्**–वि०, पु० शास्त्रज्ञ। **–विधान**–पु०, **–विधि**–स्त्री० आचार, व्यवहार-संबंधी शास्त्रोक्त आदेश, अनुशासन। **–विमुख**–वि० जो शास्त्राध्ययन न करता हो; शास्त्रोंसे जिसे चिढ़ हो। **–विरुद्ध**–वि० जिसका विधान शास्त्रमें न हो, अशास्त्रीय; अवैध। **–विहित**–वि० शास्त्रानुमोदित, शास्त्र-सम्मत। **–संगत,–सम्मत**–वि० दे० 'शास्त्र-विहित'। **–सिद्ध**–वि० शास्त्र द्वारा प्रमाणित; शास्त्रानुकूल।

शास्त्राचरण–पु० [सं०] शास्त्रादेशका पालन; शास्त्रका अध्ययन, मनन, अनुशीलन।

शास्त्रानुमोदित–वि० [सं०] दे० 'शास्त्र-विहित'।

शास्त्रानुशीलन–पु० [सं०] शास्त्रका अध्ययन, मनन।

शास्त्रार्थ–पु० [सं०] शास्त्रका अर्थ, तात्पर्य, अभिप्राय; वाद-विवाद (जो शास्त्रके अर्थ, ज्ञानके सहारे होता है)।

शास्त्री (स्त्रिन्)–वि०[सं०] शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ। पु० वह व्यक्ति जिसने शास्त्रका पक्का ज्ञान कर लिया है, शास्त्रका पूर्ण अधिकारी, विद्वान्, पंडित; परीक्षामें उत्तीर्ण होनेपर प्राप्त होनेवाली एक उपाधि।

शास्त्रीय–वि० [सं०] शास्त्र-संबंधी; शास्त्र-सम्मत, शास्त्रानुमोदित; वैज्ञानिक।

शास्त्रोक्त–वि० [सं०] शास्त्र द्वारा कथित; शास्त्र-विहित।

शास्य–वि० [सं०] शासन-योग्य; शिक्षणीय; दंडनीय।

शाहंशाह–पु० शाहोंका शाह, सम्राट्, राजाधिराज।

शाहंशाही–स्त्री०शाहंशाह, राजाधिराजका पद या कार्य।

शाह–पु० [फ़ा०] स्वामी; राजा, बादशाह; मुसलमान फ़क़ीरोंकी पदवी; ताश और गंजीफेका एक पत्ता; शतरंजका एक मुहरा। (कर्मधारय समासमें बड़ा, प्रधान, श्रेष्ठका अर्थ देता है–'शाहकार','शाहरग' इ०।) **–कार**–पु० किसी कलाकारकी सबसे अच्छी कृति। **–ख़र्च**–वि० शाहोंकी तरह; बहुत अधिक, खर्च करनेवाला। **–ज़ादगी**–स्त्री० शाहजादा होनेकी स्थिति, काल; शाहजादेकी किशोरावस्था। **–ज़ादा**–पु० बादशाहका बेटा, राजकुमार। **–तरा**–पु० पितपापड़ा। **–दरा**–पु० गाँव या बस्ती जो शाही महल या किलेके नीचे या सामने हो। **–बंदर**–पु० देशविशेषका प्रधान बंदरगाह। **–रग**–स्त्री० गलेसे होकर जानेवाली बड़ी रग। **–राह**–स्त्री० राजमार्ग, चौड़ा और आम रास्ता।

शाहाना–वि० [फ़ा०] बादशाहके लायक, राजसी, राजोचित; बहुत बढ़िया। पु० शहानी चूड़ियोंका जोड़ा। **–जोड़ा**–पु० दूल्हेको पहनाया जानेवाला सुर्ख जोड़ा; सुर्ख पोशाक। **–मिज़ाज**–पु० राजसी, नाजुक मिज़ाज।

शाहिद–पु० [अ०] शहादत देनेवाला, गवाह। वि० सुंदर।

शाही–वि० [फ़ा०] बादशाहका; शाहाना।

शिंगरफ़–पु० ईंगुर।

शिंगरफ़ी–वि० ईंगुर जैसा लाल।

शिंघाण–पु० [सं०] काँच, शीशेका पात्र; फेन, गाज; लौहमल, जंग; नासिकामल; कफ, श्लेष्मा।

शिंघाणक–पु० [सं०] नासिकामल; कफ, बलगम।

शिंजन–पु० [सं०] नुपूर आदिकी झनकार; मधुर ध्वनि, आवाज।

शिंजित–वि० [सं०] झंकृत, झनझनाता हुआ, ध्वनि करता हुआ; बजता हुआ।

शिंजिनी–स्त्री० [सं०] प्रत्यंचा, धनुष्की डोरी; नूपुर।

शिंबा, शिंबि, शिंबिका, शिंबी–स्त्री०[सं०]छीमी; सेम।

शिंशपा–स्त्री० [सं०] शीशमका पेड़; अशोकवृक्ष।

शिंशुपा*–स्त्री० दे० 'शिंशपा'।

शिंशुमार–पु० [सं०] दे० 'शिशुमार'।

शिकंजबीन–पु० दे० 'सिकंजबीन'।

शिकंजा–पु० [फ़ा०] यंत्रणा देनेका यंत्र जिसमें पुराने जमानेमें अपराधियोंके हाथ-पाँव देकर दबा दिये जाते थे; एक यंत्र जिसमें जिल्दसाज किताबें दबाकर पन्ने काटते हैं; रूई दबानेकी कल; कोल्हू; (ला०) यंत्रणा; पकड़; दबाव।

शिकन–स्त्री० [फ़ा०] सिलवट, सिकुड़न। वि० (समासमें) तोड़नेवाला (बुतशिकन, दिलशिकन)।

शिकम–पु० [फ़ा०] पेट। **–परवर**–वि० पेट पालनेवाला, पेटू।

शिकमी–वि० [फ़ा०] पेटका; पैदाइशी; भीतरी (शिकमी शरीक)। पु० वह काश्तकार जो असल काश्तकारसे जमीन लेकर जोते-बोये।

शिकरम–स्त्री० एक तरहकी गाड़ी।

शिकरा–पु० [फ़ा०] एक शिकारी पक्षी जो बाजसे कुछ

छोटा होता है। **मु०–पालना**–बोझ अपने सिर लेना।

शिकवा–पु० [फा०] शिकायत।

शिकस्त–स्त्री० [फा०] हार, मात (खाना, देना, पाना)।

शिकस्ता–वि०[फा०] टूटा हुआ, भग्न;घसीट (लिखावट)। **–दिल**–वि० खिन्न, भग्नहृदय। **–नवीस**–वि०, पु० घसीट लिखनेवाला। **–हाल**–वि० फटेहाल, गरीब; परीशान।

शिकायत–स्त्री० [अ०] दोषकथन, गिला, निंदा, बुराई; दुखड़ा; रोग, पीड़ा (पेटकी शिकायत); दोष माननेका कारण, शिकायतकी वजह। **मु०–करना**–गिला करना, दुखड़ा रोना; बुराई करना; उलाहना देना; पीड़ा बताना (शिरदर्दकी शिकायत करना)।

शिकायती–वि० शिकायत करनेवाला; जिसमें शिकायत हो (शि० चिट्ठी)।

शिकार–पु० आखेट, पशु-पक्षियोंको (क्रीड़ा या आहारके लिए) मारना; मारा हुआ पशु-पक्षी, शिकारका जानवर; लूटका माल; दलाल, वेश्या, डाकू आदिके फंदेमें आया हुआ आदमी। **–गाह**–पु०, स्त्री० शिकार खेलनेकी जगह, जंगल, रमना; जंगलमें बना हुआ वह मंच जिसपर बैठकर शेर, बनैले सूअर आदिका शिकार किया जाता है। **–बंद**–पु० वह तसमा जो घोड़ेकी दुमके पास चारजामेके पीछे शिकार या दूसरी जरूरी चीज बाँध लेनेके लिए लगा होता है। **–की टट्टी**–छोटीसी टट्टी जिसपर घास बिछाकर बहेलिये अपने साथ-साथ रखते हैं। **मु०–करना**–आखेट करना; फंदेमें फाँसना; मुट्ठीमें करना। **–खेलना**–आखेट करना। **(किसीका)–होना**–फंदेमें फँसना; किसी रोग, दुर्घटना आदिसे मरना या पीड़ित होना; किसीके रोषादिकी बलि होना।

शिकारी–वि०, पु० शिकार करनेवाला; व्याध। **–कुत्ता**–पु० शिकार पकड़नेवाला, शिकारमें सहायक कुत्ता। **–जानवर**–पु० वह जानवर जो आहारके लिए दूसरे पशुओंका शिकार करता है।

शिक्य–पु०,–**शिक्या**–स्त्री०[सं०]छींका,सिकहर।

शिक्षक–पु० [सं०] शिक्षा देनेवाला; अध्यापक, गुरु।

शिक्षण–पु० [सं०] शिक्षा देने या लेनेका काम; शिक्षाप्राप्ति। **–कला**–स्त्री० पढ़ानेकी कला। **–शास्त्र**–पु० (पेडेगाजी) छात्रोंको पढ़ाने, शिक्षा देनेकी विद्या।

शिक्षणीय–वि० [सं०] शिक्षाके योग्य, पढ़ाने योग्य।

शिक्षा–स्त्री० [सं०] व्यवस्थित रूपसे किसी शिक्षा-संस्थामें या शिक्षक, गुरु आदिसे ज्ञान या विद्याकी प्राप्ति; चारित्रिक तथा मानसिक शक्तियोंका विकास; प्रशिक्षण, ट्रेनिंग (जैसे–'व्यायाम-शिक्षा'); उपदेश; सबक, दंड (व्यंग्य); विद्या, विज्ञान, कला (जैसे–'संगीत-शिक्षा', 'रण-शिक्षा'); वेदके षडंगोंमेंसे एक अंग जिसमें वेदमंत्रोंके उच्चारणकी विवेचना है; उच्चारण-विज्ञान (फोनेटिक्स) (जैसे–'पाणिनीय शिक्षा'); श्योनाक वृक्ष। **–गुरु**–पु० शिक्षक; ज्ञानदाता गुरु, 'दीक्षागुरु'का विलोम। **–दीक्षा**–स्त्री० शिक्षा, उपदेश आदि द्वारा किसीका बौद्धिक, चारित्रिक, मानसिक विकास। **–पद्धति**–स्त्री० शिक्षा देनेका ढंग। **–परिषद्**–स्त्री० वैदिक शिक्षाके अध्ययन-अध्यापनके लिए तत्कालीन शिक्षालय जहाँ उसके अधिकारी किसी विशेष ऋषिकी शिक्षा-पद्धति चलती थी और जो उसीके नामसे प्रसिद्ध होता था; किसी विद्यापीठ (विश्वविद्यालय)के अध्यापकों तथा अन्य शिक्षाविशेषज्ञोंकी वह परिषद् जो पाठ्यक्रम, शिक्षणनीति आदिका निर्णय करती है। **–प्रणाली**–स्त्री० दे० 'शिक्षा-पद्धति'। **–प्रद**–वि० शिक्षादायक। **–प्रसार-योजना**–स्त्री० (एजुकेशन एक्सपैंशन स्कीम) बालकों, स्त्रियों, प्रौढ़ों, अंधों आदिमें अधिकाधिक विस्तारपूर्वक शिक्षा फैलानेकी योजना। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० शिक्षा-विभागकी देखरेख करनेवाला मंत्री। **–विभाग**–पु० शिक्षाकी व्यवस्था तथा उसके सँभालनेके निमित्त बना विभाग। **–शास्त्र**–पु० शिक्षाविधिका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

शिक्षार्थी(र्थिन्)–पु० [सं०] शिक्षाप्राप्तिके लिए इच्छुक व्यक्ति, विद्यार्थी, छात्र।

शिक्षालय–पु० [सं०] विद्यालय, स्कूल, कालिज।

शिक्षित–वि० [सं०] शिक्षायुक्त; अधीत; मेधावी, निपुण; विनीत; पालतू; विद्वान्, विज्ञ।

शिक्षिताक्षर–पु० [सं०] शिक्षक; छात्र; लेखक, मुहर्रिर।

शिक्ष्यमाण–वि०,पु० [सं०] (ऐप्रेंटिस) दे० 'पदशिक्षार्थी'।

शिखंड, शिखंडक–पु० [सं०] चोटी, कलँगी, शिखा; मयूरपुच्छ; काकपक्ष, काकुल।

शिखंडिनी–वि०, स्त्री० [सं०] शिखंडयुक्ता। स्त्री० मोरनी; यूथिका, जूही; गुंजा, घुँघची; राजा द्रुपदकी कन्या।

शिखंडी(डिन्)–वि० [सं०] शिखायुक्त। पु० मोर; मोरकी पूँछ; मुर्गा; स्वर्णयूथिका; घुँघची; बाण; द्रुपदका पुत्र जो स्त्रीरूपमें उत्पन्न हुआ था, मगर तपस्या द्वारा एक यक्षसे अपने स्त्रीरूपको बदलकर पुरुष हो गया था।

शिख*–स्त्री० शिखा ('नखशिख'में प्रयुक्त)।

शिखर–पु० [सं०] पर्वताग्र, पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, श्रृंग, कूट; मकानका सबसे ऊँचा हिस्सा, मुड़ेर; मंदिरका सर्वोच्च भाग, कलश, कँगूरा; वृक्षका सबसे ऊपरी हिस्सा, इसका सिरा; खड्गका अग्रभाग; किसी भी वस्तुका सिरा, अग्रभाग, उसकी चोटी, नोक आदि; शिखा।

शिखरन–पु० दहीमें चीनी, केसर आदि मिलाकर तैयार किया गया पेय या लेह्य पदार्थ, श्रीखंड।

शिखरिणी–स्त्री० [सं०] नारीरत्न, उत्तम कोटिकी नारी; रसाला, सिखरन, श्रीखंड; रोमावली जो वक्षस्थलसे चलकर नाभितक जाती है; मल्लिका; किशमिश; एक वर्णवृत्त। वि० स्त्री० शिखरवाली, शिखरयुक्ता।

शिखरी(रिन्)–वि० [सं०] शिखरयुक्त। पु० पर्वत;पहाड़ी किला; वृक्ष; अपामार्ग, चिचड़ा; वंदाक; कुंदरुक; कर्कटश्रृंगी, काकड़ासिंगी; यावनाल, ज्वार; सिखरन।

शिखलोहित–पु० [सं०] कुकुरमुत्ता।

शिखा–स्त्री० [सं०] चूड़ा, चोटी; आगकी लपट; दीयेकी लौ; प्रकाशकी किरण; मोर, मुर्गा आदि जंतुओंके सिरपरकी कलँगी; किसी वस्तुकी नोक या नुकीला सिरा; पैरके पंजेका अगला हिस्सा; पेड़की जटायुक्त जड़; पेड़(विशेष रूपसे जड़ पकड़ते हुए)की शाखा, डाली; एक वर्णवृत्त; दे० 'शिखर'। **–तरु**–पु० दीपाधार, दीवट। **–धर**–

पु० मयूर; मंजुघोष। **–बंधन–**पु० चोटियाका बाँधना। **–मणि–**पु० सिरपर पहननेका रत्न। **–वृद्धि–**स्त्री० प्रतिदिन बढ़नेवाला ब्याज। **–सूत्र–**पु० चोटी और जनेऊ, जो द्विजोंके चिह्न हैं।

शिखावान्(वत्)–वि० [सं०] शिखायुक्त; ज्वालयुक्त। पु० दीपक; अग्नि; चित्रक वृक्ष; केतु ग्रह; पुच्छल तारा।

शिखिनी–स्त्री० [सं०] मोरनी; मुर्गी।

शिखी(खिन्)–वि० [सं०] शिखायुक्त, शिखावाला; नुकीला; अभिमानी। पु० मयूर; कुक्कुट; बैल; घोड़ा; अग्नि; दीपक, दीया; बाण; पर्वत; वृक्ष। **–पिच्छ,–पुच्छ–**पु० मोरकी पूँछ। **–वाहन–**पु० कार्त्तिकेय।

शिगाफ़–पु० [फा०] चीरा; दरार; झरी; छिद्र।

शिगूफ़ा–पु० [फा०] कली; अनोखी बात; चुटकुला। **मु०–खिलाना–**कोई अनोखी बात करना;झगड़ा उठाना। **–छोड़ना–**झगड़ा-फसाद खड़ा करानेवाली बात कहना, करना।

शित–वि० [सं०] तेज किया हुआ,सान धरा हुआ;दुबला-पतला, क्षीण, कृश; कमजोर, दुर्बल।

शिताफल–पु० [सं०] सीताफल, शरीफा।

शिताब–अ० [फा०] जल्द, झटपट। वि० जल्दबाज।

शिताबी–स्त्री० जल्दी; उतावली, घबराहट।

शिति–वि० [सं०] सफेद; काला। पु० भूर्जवृक्ष। **–कंठ–**पु० मोर; चातक; शिव।

शिथिल–वि० [सं०] ढीला; बिन बँधा, खुला हुआ; सुस्त, आलसी; श्रमसे थका हुआ; (डालसे) गिरा, टूटा हुआ; बिना पूरे दबावका, जिसे कुछ छूट दी गयी हो; पूरी सावधानीसे जिसका पालन न हो। **–बल–**वि० जिसकी ताकत कम पड़ गयी हो।

शिथिलता–स्त्री० [सं०] ढीलापन; सुस्ती, आलस्य;श्रांति; छूट देना, नियमका पालन करानेपर पूरा ध्यान न देना; काव्य-रचना, वाक्य रचना आदिमें दोषके कारण चुस्तीका न होना; तर्क आदिकी अपुष्टता।

शिथिलाई*–स्त्री० शिथिलता।

शिथिलाना*–अ० क्रि० ढीला पड़ना, मंद पड़ना,थकना।

शिथिलित–वि० [सं०] जो श्लथ हो गया हो, जो ढीला हो गया हो।

शिथिलीकरण–पु० [सं०] ढीला करनेका काम।

शिथिलीकृत–वि० [सं०] ढीला किया हुआ।

शिथिलीभूत–वि० [सं०] दे० 'शिथिलित'।

शिद्दत–स्त्री० [अ०] कठिनाई; कष्ट; तीव्रता; कठोरता; अधिकता, प्रबलता (बारिशकी, जाड़ेकी शिद्दत)। **–का–**जोरका, तीव्र (शिद्दतका बुखार)।

शिनाख्त–स्त्री० [फा०] पहचान; भले-बुरे, सच्चे-झूठेका भेद समझनेकी शक्ति, परख।

शिप्रा–स्त्री० [सं०] शिप्र सरोवरसे निकली एक नदीका नाम जिसके तटपर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है।

शिफर*–पु० सिपर, ढाल।

शिफ़ा–स्त्री० [अ०] स्वास्थ्य, आरोग्य, रोगसे मुक्ति। (देना, पाना)। **–ख़ाना–**पु० चिकित्सालय, अस्पताल।

शिबिका–स्त्री० [सं०] दे० 'शिविका'।

शिरःपीडा–स्त्री० [सं०] सिरदर्द; सिरदर्दका रोग।

शिरःशूल–पु० [सं०] दे० 'शिरःपीडा'।

शिर–पु० [सं०] सिर। **–ज–**पु० बाल, केश। **–त्राण*–**पु० दे० 'शिरस्त्राण'। **–पँच–**पु० [हिं०] दे० 'सिरपेंच'। **–फूल–**पु० [हिं०] सीस फूल नामक आभूषण।

शिर(स्)–पु० [सं०] सिर; पर्वतकी चोटी, शिखर; वृक्षाग्र; किसी वस्तुका सर्वोच्च अंश, भाग; सेनाका अगला भाग, नासीर; मुखिया, प्रधान।

शिरकत–स्त्री० [अ०] शरीक होना; साझा। **–नामा–**पु० वह दस्तावेज जिसमें साझेकी शर्तें लिखी हों।

शिरकती–वि० साझेका; संयुक्त।

शिरश्छेद, शिरश्छेदन–पु० [सं०] सिर काटना। **–यंत्र–**पु० (गिलोटिन) शिरश्छेद कर देने, धड़से सिरको उड़ा देनेके निमित्त प्रयुक्त होनेवाला यंत्र।

शिरसिज, शिरसिरुह–पु० [सं०] दे० 'शिरज'।

शिरस्क–पु० [सं०] पगड़ी; शिरस्त्राण।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण–पु० [सं०] लोहेका टोप, जो युद्धादिके अवसरोंपर अस्त्र-शस्त्रसे शिरके रक्षार्थ पहना जाता है, 'खूँड़'।

शिरस्थ–पु० [सं०] मुखिया, नेता, प्रधान।

शिरहन*–पु० सिरहाना, तकिया।

शिरा–स्त्री० [सं०] धमनी, खूनकी नाड़ी, रक्तवहा नाड़ी।

शिराकती–वि० साझेका, संयुक्त। **–कारबार–**पु० साझेका कारबार।

शिरीष, शिरीषक–पु० [सं०] अति कोमल फूलोंवाला एक वृक्ष, सिरिस।

शिरोगृह, शिरोगेह–पु० [सं०] अट्टालिकाके सबसे ऊपरका घर, चंद्रशाला।

शिरोज–पु० [सं०] बाल।

शिरोदाम(न्)–पु० [सं०] पगड़ी, मुरेठा, साफा।

शिरोधार्य–वि० [सं०] शिरपर धारण करने योग्य, सादर स्वीकार करने योग्य, अतिशय मान्य।

शिरोपाव–पु० दे० 'सिरोपाव'।

शिरोभूषण–पु० [सं०] शिरपर पहननेका आभूषण (जैसे–कलँगी, टीका, सीसफूल आदि); श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोभ्यंग–पु० [सं०] सिरमें तेल मालिश करना।

शिरोमणि–पु० [सं०] मस्तकपर धारण करनेका रत्न, शिरोरत्न, चूड़ामणि। वि० सर्वश्रेष्ठ।

शिरोमाली(लिन्)–पु० [सं०] मुंडमालधारी शिव।

शिरोरुह–पु० [सं०] सिरके बाल।

शिरोरोग–पु० [सं०] सिर-दर्द, मस्तक-पीड़ा।

शिरोवर्ती(र्तिन्)–वि०, पु० [सं०] प्रधान, मुखिया।

शिरोवेष्टन–पु० [सं०] शिरोदाम, पगड़ी, मुरेठा।

शिर्क–पु०[अ०] खुदाके साथ किसी औरको शरीक जानना, ईश्वरमें द्वैतभावना रखना।

शिल–पु० [सं०] उंछ, खेत कट जानेके पश्चात् उसमेंसे शेष अन्न बीननेकी क्रिया।

शिलक, शिल्लक–स्त्री० नकद, रोकड़।

शिला–स्त्री० [सं०] पत्थर; पत्थरकी पटिया, पट्टी; उंछ वृत्ति। **–ज–**पु० शिलाजीत; लोहा; पेट्रोल। **–जतु–**पु०

शिलाजीत; गेरू। **–जित्,–जीत**–स्त्री० [हिं०] सूर्यके तापसे तपी शिलाओंसे निकला काला रस जो वैद्यकके अनुसार पुष्टिकारक माना गया है। **–तल**–पु० पत्थरका ऊपरी भाग, शिला, पाषाण-पृष्ठ। **–दान**–पु० पुराणोक्त एक दान जिसमें ब्राह्मणको शालग्रामकी बटिया दी जाती है। **–निर्माण-विज्ञान**–पु० (पिट्रोलॉजी) चट्टानोंकी रचना, स्वरूप आदिका अध्ययन करनेकी विद्या। **–निर्यास**–पु० दे० 'शिलाजीत'। **–न्यास**–पु० (भवनादिकी) नीवँका पत्थर रखना। **–पट्ट,–पट्टक**–पु० कोई चीज पीसनेके लिए शिला-खंड, सिल; बैठनेके लिए शिला-खंड, पत्थरकी चौकी; पत्थरका टुकड़ा, चट्टान। **–पुत्र,–पुत्रक**–पु० किसी वस्तुको पीसनेवाला थोड़ा लंबा और गोला पत्थर, लोढ़ा। **–फलक**–पु० शिलापट्टक, पत्थरकी पटिया। **–बंध**–पु० पत्थरका बना परकोटा, किलेकी चहारदीवारी। **–भव**–पु० शिलाजीत; शैलेय। **–मुद्रित**–वि० (लिथोग्राफ्ड) विशेष प्रकारके पत्थरपर लिख या खोदकर छापा हुआ। **–रस**–पु० शैलेय नामक गंधद्रव्य। **–रोपण**–पु० दे० 'शिला-न्यास'। **–लिपि**–स्त्री०,**–लेख**–पु० सम्राट्, धर्माचार्य आदि विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किसी वस्तुके प्रचार, प्रमाण, स्थायित्व आदिके लिए पत्थरपर खोदवाया अनुशासन, आदेश, दान आदि। **–वृष्टि**–स्त्री० उपलवृष्टि, ओलोंकी वर्षा। **–सार**–पु० लोहा। **–स्वेद**–पु० शिलाजीत। **–हरि**–पु० शालग्रामकी बटिया, मूर्ति।

शिलात्मज–पु० [सं०] लोहा।

शिलात्व–पु० [सं०] शिलाका भाव या धर्म, पत्थरपन।

शिली–स्त्री० [सं०] दरवाजेके चौखटके नीचेकी लकड़ी, डेहरी; स्तंभशीर्ष; भाला; बाण; मेंढकी; केंचुआ। **–पद**–पु० श्लीपद, पादस्फीति, फीलपाँव रोग। **–मुख**–पु० भ्रमर; युद्ध; बाण; मूर्ख।

शिलेय–वि० [सं०] शिला-संबंधी; पथरीला। पु० शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजीत।

शिलोद्भव–पु०[सं०] शैलेय गंधद्रव्य; एक प्रकारका चंदन।

शिल्प–पु० [सं०] कला आदि कर्म, हुनर, कारीगरी; स्रुवा। **–कला**–स्त्री० दस्तकारीका कौशल, हुनरकी दक्षता। **–कार,–कारक,–कारी (रिन्)**–पु० शिल्पी, कारीगर। **–कौशल**–पु० शिल्पकला, शिल्पचातुर्य। **–गृह**–पु० कारीगरोंके काम करनेका स्थान, कारखाना। **–जीवी(विन्)**–पु० कारीगरीका काम करके जीवन-यापन करनेवाला व्यक्ति, शिल्पी। **–लिपि**–स्त्री० पत्थर आदिपर अक्षर खोदना। **–विद्या**–स्त्री० वस्तु-निर्माण-पद्धतिका ज्ञान, चीजोंको बनानेके ढंगकी जानकारी। **–विद्यालय**–पु० शिल्प-शिक्षाका स्कूल। **–शाला**–स्त्री० शिल्प-विद्यालय; शिल्प संबंधी काम करनेका स्थान या घर, शिल्पगृह, कारखाना। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र, विद्या, ग्रंथ जिसमें शिल्प-संबंधी निर्माणका ज्ञान, विवेचन हो, शिल्प-विद्या, शिल्प-विज्ञान।

शिल्पी(ल्पिन्)–पु० [सं०] शिल्पकार, कारीगर।

शिव–पु० [सं०] महादेव, महेश, हिंदुओंके तीन प्रधान देवताओं(त्रिमूर्ति)मेंसे एक जिनका कार्य सृष्टिसंहार है; मंगल, कल्याण; सुख; अद्वैत ब्रह्म; मोक्ष। वि० मंगलकारी, शुभावह; सुखी। **–कांता**–स्त्री० पार्वती, दुर्गा। **–कारी-(रिन्)**–वि० मंगलकारी, शुभावह। **–धातु**–स्त्री० पारा। **–निर्माल्य**–पु० शिवार्पित वस्तु, शिवपूजनकी सामग्री, शिवभोग आदि; अग्राह्य वस्तु। **–पुरी**–स्त्री० काशीपुरी, वाराणसी, बनारस। **–प्रिय**–वि० वह जो शिवको प्रिय हो। पु० रुद्राक्ष; स्फटिक; धतूरा; बिल्वपत्र; वक वृक्ष। **–प्रिया**–स्त्री० दुर्गा। **–बीज**–पु० पारा। **–मौलिसुता**–स्त्री० गंगा। **–रात्रि**–स्त्री० शिवका एक व्रत-पर्व जो फाल्गुन-कृष्णा चतुर्दशीको होता है। **–रानी**–[हिं०] स्त्री० पार्वती। **–लिंग**–पु० मिट्टी, पत्थरकी शिवकी लिंगमूर्ति, पिंडी। **–लोक**–पु० वह लोक जहाँ शिव निवास करते हैं, कैलास। **–वल्लभ**–पु० आम्र वृक्ष। **–वल्लभा**–स्त्री० शतपत्री, सेवती; सफेद गुलाब; दुर्गा, पार्वती। **–वीर्य**–पु० पारा।

शिवता–स्त्री०, **शिवत्व**–पु० [सं०] शिवपद, शिव-सायुज्य; अमरता; मोक्ष।

शिवा–स्त्री० [सं०] शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा; शृगाली; मुक्ति; कल्याणी नारी, भाग्यशालिनी स्त्री।

शिवानी–स्त्री० [सं०] शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा।

शिवाराति–पु० [सं०] कुत्ता (शिवा–शृगाली); कामदेव।

शिवालय–पु० [सं०] वह मंदिर जिसमें शिवमूर्ति, शिव-लिंग स्थापित हो; देवमंदिर।

शिवाला–पु० दे० 'शिवालय'।

शिविका–स्त्री० [सं०] डोली, पालकी; अरथी; चबूतरा।

शिविर–पु० [सं०] सेनाके लिए विश्रामस्थल, सेना-निवेश; तंबू, खेमा; दुर्ग, किला।

शिवेतर–वि० [सं०] अमंगल, अशुभ।

शिशिर–पु० [सं०] भारतकी छः ऋतुओंमेंसे एक ऋतु जो माघ और फाल्गुनमें पड़ती है; ओस; शीत, शीत-काल। वि० शीतल। **–काल,–समय**–पु० जाड़ेकी ऋतु, शिशिर ऋतु। **–किरण,–दीधिति**–पु० चंद्रमा। **–घ्न**–पु० अग्नि। **–मयूख,–रश्मि**–पु० चंद्रमा।

शिशिरांत–पु० [सं०] शिशिर ऋतु समाप्त होनेपर आने-वाली ऋतु, वसंत ऋतु।

शिशिरांशु–पु० [सं०] चंद्रमा।

शिशु–पु० [सं०] नवजातसे लेकर लगभग आठ वर्षतकके वयका बालक; बालक, बच्चा; जानवरों, पक्षियों आदिका बच्चा, शावक। **–कल्याण-केंद्र**–पु० (चाइल्डवेलफेयर सेंटर) वह स्थान जहाँ बच्चोंके स्वास्थ्य आदिकी देखभाल की जाती और विविध उपायों द्वारा उनके हित-साधनका प्रयत्न किया जाता है। **–पाल**–पु० चेदि (वर्तमान बुंदेलखंड) का एक प्रसिद्ध राजा जिसे कृष्णने मारा था। **–मार**–पु० सूँस नामका जलजीव।

शिशुता–स्त्री० [सं०] लड़कपन, बचपन।

शिशुताई*–स्त्री० दे० 'शिशुता'।

शिशुत्व–पु० [सं०] दे० 'शिशुता'।

शिशुपन*–पु० बचपन, लड़कपन।

शिश्न–पु० [सं०] पुरुषकी जननेंद्रिय, पुरुषका उपस्थ।

शिश्नोदरपरायण–वि० [सं०] कामुक और उदरंभरि,

लंपट और पेटू।

शिश्नोदरवाद–पु० [सं०] वह वाद, शास्त्र, मत, संप्रदाय जिसका संबंध जननेंद्रिय और उदरसे हो; फ्रायडका कामसिद्धांत तथा मार्क्सका समाजवाद (व्यंग्य)।

शिष*–पु० शिष्य। स्त्री० सीख, शिक्षा, नेक सलाह; चोटी, चुटिया।

शिषा*–स्त्री० शिखा।

शिषी*–पु० मोर।

शिष्ट–वि० [सं०] सभ्य; शिक्षा-दीक्षा द्वारा संस्कृत हो सभ्य समाजमें रहने योग्य; आधुनिक लोकाचार, व्यवहार आदिमें पटु; सुशील; शांत; बुद्धिमान्; धीर; विनीत; शिक्षित; नीतिमान्; श्रेष्ठ; वशीभूत, आज्ञाधीन; अवशिष्ट। पु० मंत्रदाता, सलाहकार; किसी सभाके सदस्य, सभ्य, पार्षद्। **–प्रयोग**–पु० शिष्टों द्वारा व्यवहारमें लाया जाना। **–मंडल**–पु० (मिशन; डेलीगेशन) किसी सभा, संधि-वार्ता आदिमें भाग लेनेके लिए भेजे गये अधिकृत प्रतिनिधियोंका दल।**–सभा**–स्त्री०शिष्ट-परिषद्, राज्य-परिषद्। **–सम्मत**–वि० शिष्टों द्वारा अनुमोदित।

शिष्टता–स्त्री०, **शिष्टत्व**–पु० [सं०] शिष्ट होनेका भाव, भलमनसाहत, सौजन्य, सभ्यता।

शिष्टाचार–पु० [सं०] शिष्ट व्यक्तियोंका आचार, व्यवहार, सदाचार; विनम्रता; किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण (फारमैलिटी)।

शिष्टाचारी(रिन्)–वि० [सं०] शिष्टआचरण करनेवाला, सदाचारी; विनम्र; किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण करनेवाला।

शिष्य–वि० [सं०] शिक्षणीय; उपदेश्य; शासनयोग्य। पु० छात्र, विद्यार्थी; (शिक्षकसे शिक्षा प्राप्त करनेवाला) चेला। **–परंपरा**–स्त्री०किसी गुरुसंप्रदायकी परंपरित शिष्यमंडली।

शिष्यता–स्त्री०, **शिष्यत्व**–पु० [सं०] शिष्य होनेका भाव, कर्म आदि।

शिस्त–स्त्री० [फा०] सीध, निशाना।

शीआ–पु० [अ०] मुसलमानोंके दो बड़े संप्रदायोंमेंसे एक जो मुहम्मदके बाद अलीकोही खिलाफतका हकदार और उनके पहलेके तीनों खलीफाओंको अपहारक मानता है।

शीकर–पु० [सं०] वायुप्रेरित जलकण, फुहार; जलकण।

शीघ्र–अ० [सं०] क्षिप्र, सत्वर, जल्द, तुरत, झटपट। **–कारी (रिन्)**–वि० तुरत काम करनेवाला; तुरत असर करनेवाला (भोजन, औषध आदि)। **–कोपी-(पिन्)**–वि० जल्द क्रुद्ध हो उठनेवाला, चिड़चिड़ा। **–ग**–वि० द्रुतगामी। पु० वायु; सूर्य।**–गामी (मिन्)**–वि० दे० 'शीघ्रग'। **–पतन**–पु० नारीसंभोग करते समये वीर्यका शीघ्र स्खलन, गिरना। **–बुद्धि**–वि० तीक्ष्ण बुद्धिवाला। **–लिपि**–स्त्री० (शॉर्ट हैंड) लिखनेका वह ढंग या प्रणाली जिसमें बोलनेवालेके शब्द अत्यंत शीघ्रतासे, उनके उच्चरित होनेके साथ-साथ लिखे जा सकें, त्वरालिपि, लघुलिपि। **–वेधी (धिन्)**–पु० निशानेपर तुरत तीर चलानेवाला, कुशल वाण चलानेवाला, लघुहस्त।

शीघ्रता–स्त्री०, **शीघ्रत्व**–पु० [सं०] क्षिप्रता, फुरती।

शीत–वि० [सं०] शीतल; आलस्ययुक्त। पु० शीतकाल जो अगहन, पूस, माघ तीन महीनोंका होता है; जाड़ा, ठंढक, शीतलता; सरदी, जुकाम; जल; तुषार। **–कटिबंध**–पु० भूमंडलके उत्तरी तथा दक्षिणी अंशोंके दो कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखाके ६६॥ अंश उत्तर तथा इतने ही अंश दक्षिणसे शुरू होकर ध्रुवप्रदेशतक फैले हैं। **–कर**–पु० हिमकर, चंद्रमा; कपूर। वि० शीतल करनेवाला। **–कारी यंत्र**–पु० (रेफ्रीजरेटर) ठंढक पहुँचाने, ठंढा बनानेवाला यंत्र; ठंढा बनाये रखकर भोजन आदिको शीघ्र खराब होनेसे बचानेवाला आलमारी या संदूकके ढंगका ढाँचा। **–काल**–पु० जाड़ेका मौसिम जो अगहन, पूस और माघमें पड़ता है, हेमंत और शिशिर ऋतु; अगहन और पूस महीनोंमें पड़नेवाली हेमंत ऋतु। **–कालीन**–वि० शीतकाल-संबंधी; शीतकालमें होनेवाला। **–किरण**–पु० चंद्रमा।**–ज्वर**–पु० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी, जड़ैया बुखार।**–तरंग**,**–लहर**–स्त्री० (कोल्ड वेव) किसी स्थान या क्षेत्रमें तुषारपात आदि होनेके कारण ठंढ बहुत अधिक बढ़ जानेसे उसके प्रभावमें आयी हुई हवाकी लहर जो अन्य स्थानोंमें भी जाड़ा या गलाव उत्पन्न कर देती है। **–दीधित**–पु० चंद्रमा। **–द्युति**–पु० चंद्रमा। **–प्रधान**–वि० (वह स्थान) जहाँ शीतका प्राधान्य हो; (वह वस्तु) जिसमें शीतगुणका आधिक्य, प्राधान्य हो। **–भानु**–पु० हिमकर, चंद्रमा। **–मयूख**,**–मरीचि**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–मूलक**–पु० उशीर, खस। वि० ठंढी जड़वाला। **–युद्ध**–पु० (कोल्ड वार) वह स्थिति जिसमें सेनाओं और शस्त्रास्त्रोंके प्रत्यक्ष प्रयोगकी भीषणता न होते हुए भी राष्ट्रोंमें परस्पर अमैत्रीपूर्ण भाव विद्यमान हो, एक दूसरेके विरुद्ध प्रचारकार्य किया जा रहा हो तथा आर्थिक विध्वंसका भी प्रयत्न हो रहा हो। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–संग्रह**–पु० (कोल्ड स्टोरेज) विशेष रूपसे ठंढे बनाये गये कोष्ठ या कमरेमें रखी गयी वस्तुओंका संग्रह जिसमें वे सड़नेबिगड़ने न पायें।

शीतल–वि० [सं०] शीतगुणयुक्त, ठंढा; सौम्य, मृदु; शांत, ठंढे दिमागवाला; संतुष्ट, आनंदित। **–चीनी**–स्त्री० [हिं०] एक प्रकारका मसाला, कबाबचीनी।**–पाटी**–स्त्री० [हिं०] एक प्रकारकी पतली और चिकनी चटाई।

शीतलता–स्त्री० [सं०] शैत्य, ठंढापन, ठंढक; जड़ता।

शीतलताई*–स्त्री० दे० 'शीतलता'।

शीतलत्व–पु० [सं०] दे० 'शीतलता'।

शीतला–स्त्री० [सं०] एक विस्फोटक रोग जो वसंत और ग्रीष्म ऋतुओंमें अधिक होता है, चेचक, वसंतरोग। **–वाहन**–पु० गधा।

शीतांशु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

शीताकुल–वि० [सं०] ठंढसे व्याकुल; जाड़ेके मारे काँपनेवाला।

शीतातप–पु० [सं०] जाड़ा और गर्मी।

शीताद–पु० [सं०] (पायोरिया) मसूड़ोंके पक जाने या उनमें.व्रण हो जानेका रोग।

शीताद्रि–पु० [सं०] हिमवान् पर्वत, हिमालय पर्वत ।

शीताभ्र–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।

शीतोष्ण–वि० [सं०] ठंढा और गरम ।

शीत्कार–पु० [सं०] रतिकालमें संभोग्य स्त्री द्वारा की गयी अव्यक्त, अस्फुट ध्वनि; ('सी-सी' ध्वनि) ।

शीन–पु० [अ०] अरबी-फारसी वर्णमालाका एक वर्ण जो देवनागरीके तालव्य 'श'का काम करता है। मु०–**क़ाफ़ दुरुस्त न होना**–उच्चारण शुद्ध, अस्खलित न होना ।

शीभर–पु० [सं०] शीकर, जलकी फुहार। वि० आनंददायक ।

शीर–पु० [फा०] दूध, क्षीर । –**खोर**–वि० दे० 'शीर-ख्वार' । –**ख़्वार**–वि० दूधपीता (बच्चा) ।–**(रे)मादर**–पु० माँका दूध । वि० हलाल, जायज (ला०) ।

शीराँ–पु० [फा०] चाशनी, किवाम; किसी चीजको घोंट-छानकर प्रस्तुत किया हुआ पेय (बादामका शीराँ) ।

शीरा–पु० दे० 'शीराँ' ।

शीराज़ा–पु० [फा०] किताबकी जुजबंदीके बंद जो पुश्तेके दोनों ओर लगा दिये जाते हैं; पुस्तक और पुट्ठोंपर की जानेवाली सिलाई; (ला०) प्रबंध; शृंखला । –**बंद**–वि० (पुस्तक) जिसकी सिलाई, जिल्दबंदी हो चुकी हो। मु०–**बँधना**–किताबके जुजोंकी सिलाई होना; बिखरी हुई चीजोंका इकट्ठा, शृंखलित किया जाना । –**बिखरना**–विशृंखलित हो जाना, बिगड़ जाना ।

शीराज़ी–वि० [फा०] शीराजका । पु० शीराजका रहनेवाला; गोला कबूतरका एक भेद; एक शराब ।

शीरीं–वि० [फा०] मीठा, मधुर; प्यारा, प्रिय । स्त्री० फरहादकी प्रेयसी । –**कलाम**,–**ज़बान**–वि० मधुरभाषी, सुंदर भाषा बोलनेवाला । –**बयान**–वि० मधुरभाषी । –**बयानी**–स्त्री० मधुरभाषण, मीठा बोलना ।

शीरीनी–स्त्री० [फा०] मिठास; मिठाई (चढ़ाना, बाँटना)।

शीर्ण–वि० [सं०] कुम्हलाया हुआ; सड़ा-गला, नष्ट; टूटा-फूटा, चिथड़े-चिथड़े हुआ; छितराया हुआ, विकीर्ण; कृश; शुष्क । –**काय**–वि० कृश शरीरवाला ।

शीर्णता–स्त्री०, **शीर्णत्व**–पु० [सं०] शीर्ण होनेका भाव या धर्म; कृशता; टूटा-फूटा होना ।

शीर्ष–पु० [सं०] सिर; मस्तक, माथा,ललाट;किसी वस्तुका सिरा, सबसे ऊपरी हिस्सा; खातेकी मद; (वरटेक्स) किसी त्रिभुजकी आधाररेखाके ऊपरका वह बिंदु जिसपर दो सरल रेखाएँ दो ओरसे आकर कोण बनायें । –**च्छेद**–पु० सिर काटनेकी क्रिया, मस्तकच्छेदन । –**त्राण**–पु० शिरस्त्राण । –**पट**,–**पटक**–पु० शिरमें बाँधनेका कपड़ा, पगड़ी, साफा आदि । –**रक्ष**–पु० शिरस्त्राण । –**बिंदु**–पु० सिरके ऊपर सबसे ऊँचा स्थान; मोतियाबिंद; (ज़ेनिथ) दे० 'ऊर्ध्वबिंदु' ।–**स्थान**–पु० माथा; सिर; सर्वोच्चस्थान । –**स्थानीय**–वि० मूर्धन्य, सर्वोच्च, प्रधान, श्रेष्ठ ।

शीर्षक–पु० [सं०] सिर; सिरा; सिरकी रक्षा करनेवाली वस्तु (लोहेका टोप आदि); सिरकी हड्डी,शिरोस्थि; पगड़ी, टोपी आदि सिरपर देनेकी वस्तु; किसी निबंध, ग्रंथ आदिके विषयका परिचायक शब्द, शब्दसमूह जो इन-(निबंध, ग्रंथ आदि)के ऊपर रखा जाता है (हेडिंग) ।

शील–पु० [सं०] चरित्र, चालचलन; मनकी स्थायी वृत्ति, स्वभाव; सद्वृत्ति, शुद्ध चरित्र; सत्स्वभाव; रागद्वेषविहीनता, तटस्थ व्यवहार, चालचलन; संकोची प्रकृति,स्वभाव, मुरौवत । वि० प्रवृत्त, उन्मुख; स्वभाववाला, (समासमें) । मु०–**तोड़ना**–बेमुरौवत होना, निःसंकोच हो रिआयत, दया आदि न करना। **(आँखोंमें)**–**न होना**–बेमुरौवत होना, क्रूरताका व्यवहार करना । –**निभाना**–किसीके द्वारा अपना अनिष्ट होनेपर भी पूर्वकी भाँति ही उसके साथ सद्वृत्तिपूर्वक व्यवहार करना; सत्स्वभावको न छोड़ना । –**मर जाना**–संकोच, सद्भाव, सद्वृत्ति आदिका किसी व्यक्तिसे निकल जाना, दुर्वृत्त होना; बेमुरौवत होना । –**रखना**–मुरौवत न छोड़ना, सद्व्यवहार रखना, करना ।

शीलवान(वत्)–वि० [सं०] अच्छे शील या आचरणवाला, सुशील, नेकचलन ।

शीश*–पु० दे० 'शीर्ष' ।

शीशमहल–पु० वह कमरा या भवन जिसमें हर तरफ शीशे जड़े हों ।

शीशम–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुर्सी आदि बनानेके काम आती है, शिंशपा ।

शीशा–पु०[फा०] काँच; आईना; काँचकी सुराही, बोतल। मु०–**(शे)में उतारना**–भूत-प्रेतको शीशे-बोतलमें उतार लेना; वशमें कर लेना ।

शीशी–स्त्री० शीशेका छोटा पात्र जिसमें दवा आदि रखी जाय ।

शुंग–पु० [सं०] वटवृक्ष; प्राचीन भारतका एक ब्राह्मण राजवंश ।

शुंठि, शुंठी–स्त्री० [सं०] शुष्कार्द्रक, सूखा अदरक, सोंठ ।

शुंड–पु० [सं०] जवान हाथीके गंडस्थल, कनपटीसे बहनेवाला मद, दान; हाथीकी सूँड़ ।

शुंडक–पु० [सं०] शराब उतारनेवाला, शौंडिक; रणभेरी ।

शुंडा–स्त्री० [सं०] हाथीकी सूँड़; सुरा; मद्यपानगृह ।

शुंडापान–पु० [सं०] मद्यशाला ।

शुंडाल–पु० [सं०] हाथी ।

शुंडिका–स्त्री० [सं०] गलेका कौआ, घाँटी; दे० 'शुंडा ।

शुंडी(डिन्)–पु० [सं०] शौंडिक, मद्य बेचनेवाला;हाथी ।

शुंभ–पु० [सं०] एक दानव जो गवेष्ठीका पुत्र और प्रह्लादका पौत्र था (यह दुर्गा द्वारा मारा गया था) ।–**घातिनी**, –**नाशिनी**,–**मर्दिनी**–स्त्री० दुर्गा ।

शुंशुमार–पु० [सं०] सूँस नामक जलजंतु ।

शुऊर–पु० [अ०] ज्ञान; बुद्धि; ढंग, सलीका ।–**दार**–वि० जिसे कामका ढंग आता हो, तमीजदार ।

शुक–पु० [सं०] सुग्गा, तोता; वस्त्र, पोशाक; व्यास मुनिके पुत्र, शुकदेव ।–**तरु**–पु० सिरीसका पेड़ ।–**तुंड**–पु० सुग्गेकी चोंच । –**देव**–पु० कृष्णद्वैपायन वेदव्यासके पुत्र । –**द्रुम**–पु० दे० 'शुकतरु' । –**नलिका न्याय**–पु० लोभवश फँसनेकी रीति (पक्षी फँसानेकी लासा लगी, नलिनी, नलिका लगाकर उसके पास चारा रख देते हैं, सुग्गा (या पक्षी) चारेके लोभसे नलिनीपर बैठता है और उसके पंजे लासेमें फँस जाते हैं । लोभवश फँसनेकी इसी

क्रियाके आधारपर यह न्याय बना)। **-नासिका**-स्त्री० सुग्गेकी ठोरकीसी नाक। **-पुच्छ**-पु० सुग्गेकी पूँछ; गंधक।**-वल्लभ**-पु० दाड़िम, अनार।**-वाह,-वाहन**-पु० कामदेव जिसका वाहन शुक माना गया है।

शुकादन-पु० [सं०] दाड़िम, अनार।

शुकी-स्त्री० [सं०] सुग्गी।

शुकेष्ट-पु० [सं०] सिरिसका पेड़।

शुकोदर-पु० [सं०] तालीशपत्र।

शुकोह-पु०[फा०] दबदबा, प्रताप; आतंक (दाराशुकोह)।

शुक्त-वि० [सं०] साफ किया हुआ, चमकदार; पवित्र किया हुआ; जोड़ा हुआ, सटाया हुआ; अम्ल, खट्टा; निष्ठुर; कठोर; निर्जन। पु० मांस; कांजिक, काँजी; वह (मधुर) वस्तु जो कुछ दिन रखी रहनेके कारण खट्टी हो गयी हो; सिरका; खटाई; द्रवद्रव्यविशेष।

शुक्ति-स्त्री० [सं०] सुतुही नामक जलजीव; सुतुही नामक जलजंतुका कड़ा खोल (वैद्य इसका भस्म बनाकर औषधके काममें भी लाते हैं); सीप जिससे मोती निकलता है; सीपका खोल; शंख; शंखनख, छोटा शंख; नखी गंधद्रव्य; कपालखंड; अश्वावर्त, घोड़ेकी छाती(गरदन)पर बालोंकी भौंरी; एक नेत्ररोग; अर्शरोग, बवासीर; एक तौल जो दो कर्ष या चार तोलेके बराबर होता है। **-ज**-पु० मोती। **-पत्र,-पर्ण**-पु० सप्तपर्ण वृक्ष, छतिवनका पेड़।**-पुट**-पु०,**-पेशी**-स्त्री० सीपका खोल, सुतुही। **-बीज,-मणि**-पु० मोती। **-वधू**-स्त्री० सीपी; सीपीके भीतर रहनेवाला कीड़ा।**-स्पर्श**-पु० मोतीके धब्बे।

शुक्र-पु० [सं०] वीर्य, बीज, रेत; सार, तत्त्व; बल, शक्ति; एक ग्रह, सुकवा; सप्ताहका छठा दिन (यह शुक्र ग्रहका भोग्य दिन माना जाता है); शुक्राचार्य, दैत्यगुरु; अग्नि; ज्येष्ठ मास; चित्रक वृक्ष; एक नेत्ररोग, फूली। वि० चमकीला; श्वेत, उज्ज्वल; विशुद्ध।**-दोष**-पु० वीर्यके दोषके कारण हुई नपुंसकता। **-प्रमेह**-पु० वीर्यक्षीणता (यह रोग माना गया है)। **-भुक (ज्)**-स्त्री० मयूरी। **-भू**-पु० मज्जा। **-ल**-वि० शुक्र-संबंधी; वीर्यवृद्धि करनेवाला।**-वार,-वासर**-पु० सप्ताहका छठा दिन। **-स्तंभ**-पु० बहुत दिनोंतक ब्रह्मचर्य रखनेके कारण उत्पन्न एक रोग, नपुंसकताका एक भेद, ध्वजभंग।

शुक्र-पु० [अ०] कृतज्ञताप्रकाश, उपकार मानना, ईश्वरके उपकारोंकी बड़ाई।**-गुज़ार**-वि० एहसान माननेवाला, शुक्र अदा करनेवाला। **-गुज़ारी**-स्त्री० कृतज्ञता प्रकट करना। **मु०-करना**-(खुदाका) एहसान मानना; भगवान्के कियेपर संतुष्ट, प्रसन्न रहना।**-बजा लाना**-कृतज्ञता प्रकाश करना।**-है**-खुदाका शुक्र है, भगवान्का परम अनुग्रह है।

शुक्रांग-पु० [सं०] मोर पक्षी।

शुक्रा-स्त्री० [सं०] वंशलोचन नामक एक औषध।

शुक्राचार्य-पु० [सं०] एक ऋषि जो राक्षसोंके गुरु थे। ये भृगुके पुत्र थे।

शुक्राना-पु० [फा०] वह रकम जो वकील या पेशकारको मुकदमा जीतनेके बाद, मेहनतानेके अतिरिक्त, दी जाय।

शुक्रिया, शुक्रीया-पु० [फा०] कृतज्ञताप्रकाश, उपकार मानना (करना, अदा करना)।

शुक्ल-वि० [सं०] श्वेत, सफेद; उज्ज्वल, शुद्ध। पु० रजत, चाँदी; नवनीत, मक्खन; श्वेत वर्ण, शुभ्र वर्ण; शुक्ल पक्ष, उजाला पाख; शुक्ल नामक योग जिसमें शुभ कार्य करनेका विधान है (ज्यो०); आँखके सफेद अंशमें होनेवाला एक रोग; श्वेत एरंड वृक्ष, शिव; विष्णु; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि। **-दुग्ध**-पु० सिंघाड़ा नामक जलफल। **-धातु**-स्त्री० खड़िया मिट्टी। **-पक्ष**-पु० महीनेका कृष्ण पक्षके अतिरिक्त दूसरा पक्ष जिसमें चंद्रमाकी कला प्रति दिन बढ़ती है और रात उजेली होती जाती है। **फेन**-पु० समुद्रफेन नामक औषध।

शुक्ला-स्त्री० [सं०] सरस्वती; शर्करा; काकोली; विदारी; सेंहुड़; श्वेतवर्णवाली स्त्री।

शुक्लिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] श्वेतता।

शुक्लौदन-पु० [सं०] अरवा चावल।

शुचि-वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध; निर्दोष, निरपराध; निर्मल, साफ; निष्कपट, निश्छल; श्वेत, उजला; चमकदार, देदीप्यमान। पु० अग्नि; सूर्य; चंद्र; श्वेत वर्ण; शृंगार; शिव। स्त्री० पवित्रता, सफाई। **-कर्मा(र्मन्)**-वि० पवित्र कर्म करनेवाला, अच्छे काम करनेवाला।**-द्रुम**-पु० पीपलका पेड़।**-रोचि(स्)**-पु० चंद्र।**-व्रत**-वि० पवित्र संकल्प करनेवाला, अच्छे कामका बीड़ा उठानेवाला।

शुचिता-स्त्री०, **शुचित्व**-पु० [सं०] पवित्रता, निर्मलता।

शुचिष्मान्(ष्मत्)-वि० [सं०] देदीप्यमान, प्रकाशयुक्त।

शुजा-वि० [अ०] वीर, बहादुर।

शुतुर-पु० [फा०] ऊँट। **-ख़ाना**-पु० उष्ट्रशाला। **-गाव**-पु० एक चौपाया जिसकी गरदन ऊँटकीसी और खुर बैलकासा होता है, जिराफा। **-नाल**-स्त्री० छोटी तोप जो ऊँटकी पीठपर लादी और उसीपरसे चलायी जाती है। **-मुर्ग़**-पु० एक विशालकाय पक्षी जिसकी गरदन ऊँटकी तरह लंबी होती है। **-सवार**-पु० साँड़नीसवार।

शुदनी-स्त्री० [फा०] भवितव्यता, होनहार।

शुदा-वि० [फा०] जो हो या बीत चुका हो (समासमें-पासशुदा, रजिस्ट्रीशुदा)।

शुद्ध-वि० [सं०] पवित्र; निर्मल, साफ; निर्दोष; सही, ठीक; श्वेत, सफेद; चमकीला; बिना मिलावटका, सच्चा, असली; साफ, निर्मल किया हुआ; निश्छल; केवल; निष्पाप; निष्कलंक। **-कर्मा(र्मन्)**-वि० शुद्ध कार्य करनेवाला; पवित्र। **-धी,-मति**-वि० शुद्ध विचारोंवाला, सच्चा, ईमानदार। **-पक्ष**-पु० शुक्ल पक्ष। **-हृदय**-वि० जिसका हृदय पवित्र, निष्कपट हो।

शुद्धता-स्त्री०, **शुद्धत्व**-पु० [सं०] शुद्ध होनेका भाव।

शुद्धांत-पु० [सं०] अंतःपुर, रनिवास (‘साकेत’)।**-चारी(रिन्)**,**-रक्षक**-पु० अंतःपुररक्षक।

शुद्धा-स्त्री० [सं०] इंद्रजौ।

शुद्धात्मा(त्मन्)-पु० [सं०] शिव। वि० पवित्र, शुद्ध, साफ हृदयवाला।

शुद्धापह्नति-स्त्री० [सं०] अपह्नुति अलंकारका एक भेद-

जहाँ वास्तविक उपमेयका निषेध करके उपमानकी स्थापना की जाय।

शुद्धि-स्त्री० [सं०] शुद्ध करनेकी क्रिया, मार्जन; पवित्रता; सफाई; बुरा कर्म करने, दूसरे धर्ममें परिवर्तित होने आदिके कारण अपवित्र हुए व्यक्तिको शुद्ध करते समयका संस्कार (वैदिक धर्म)। **-पत्र**-पु० वह पत्र, सूची, जिसमें (प्रायः) शब्द वा अर्थ शुद्ध करके रखे गये हों; शुद्धिके पश्चात् धर्मशास्त्रज्ञ पंडितों द्वारा शुद्धि वा प्रायश्चित्तके प्रमाणरूप दिया गया व्यवस्थापत्र।

शुद्धोदन-पु० [सं०] बुद्धके पिता जिनके राज्यकी राजधानी कपिलवस्तु थी।

शुद्धयशुद्धि-स्त्री० [सं०] शुद्ध और अशुद्धका भाव।

शुन-पु० [सं०] कुत्ता।

शुनक-पु० [सं०] कुत्ता; कुत्तेका पिल्ला।

शुनाशीर, शुनासीर-पु० [सं०] इंद्र; उल्लू।

शुनी-स्त्री० [सं०] कुक्कुरी, कुतिया; कुष्मांडी।

शुनीर-पु० [सं०] कुक्कुरीसमूह, कुतियोंका झुंड।

शुबहा-पु० [अ०] भ्रम, धोखा, संदेह।

शुभंकर-वि० [सं०] मंगलकारी, कल्याणकर।

शुभंकरी-वि०स्त्री०[सं०]मंगलकारिणी। स्त्री०पार्वती,दुर्गा।

शुभ-वि० [सं०] मंगलमय, कल्याणकर; सुखद; अनुकूल; अच्छा। पु० मंगल, कल्याण; सुख। **-कर**-वि० कल्याणकारी, मंगलकारक। **-करी**-वि० स्त्री० मंगलकारिणी। स्त्री० पार्वती। **-कर्मा (र्मन्)**-वि० अच्छा कर्म करनेवाला। **-ग**-वि० सुंदर; भाग्यवान्। **-ग्रह**-पु० मंगलकारी, अनुकूल ग्रह-गुरु, शुक्र आदि। **-चिंतक**-वि० किसीकी भलाई चाहनेवाला, हितैषी। **-दंती**-स्त्री० सुंदर दाँतोंवाली स्त्री। **-दर्शन**-वि० सुंदर; जिसके दर्शनसे मंगल हो, जिसका मुँह देखनेसे शुभ शकुन हो। **-दायी (यिन्)**-वि० मंगलप्रद, शुभद। **-लग्न**-पु० शुभ मुहूर्त, मंगल-घड़ी। **-शंसी (सिन्)**-वि० मंगलकथन करनेवाला, मंगलकी सूचना देनेवाला। **-सूचक**-वि० मंगलकी सूचना देनेवाला। **-सूचन**-पु०,**-सूचना**-स्त्री० मंगलज्ञापन, मंगलसूचना। **-स्थली**-स्त्री० मंगलभूमि; यज्ञस्थल।

शुभांग-वि० [सं०] सुंदर।

शुभांगी-वि० स्त्री० [सं०] सुंदरी (नारी)। स्त्री० रति।

शुभा-पु०दे०'शुबहा'। स्त्री० [सं०] शोभा, सौंदर्य; दीप्ति, कांति; कामना, इच्छा; देवसभा।

शुभाकांक्षी (क्षिन्)-वि० [सं०] हितैषी, हितेच्छु।

शुभागमन-पु० [सं०] मंगलप्रद, सुखद आगमन।

शुभानुष्ठान-पु० [सं०] मांगलिक कर्म।

शुभावह-वि० [सं०] मंगलकारी।

शुभाशीर्वाद-पु० [सं०] मंगलकारी आशीर्वचन।

शुभाशीष-पु० दे० 'शुभाशीर्वाद।

शुभ्र-वि० [सं०] उज्ज्वल; देदीप्यमान, चमकीला; सफेद। पु० श्वेत वर्ण, सफेद रंग; चंदन; अभ्रक, अबरक; सेंधा नमक; चाँदी; कसीस। **-कर**-पु० (श्वेत किरणोंवाला) चंद्रमा; कपूर। **-भानु**-पु० चंद्रमा। **-रश्मि**-पु० चंद्रमा।

शुभ्रता-स्त्री० [सं०] उज्ज्वलता, सफेदी; दीप्ति।

शुभ्रांशु-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

शुमार-पु० [फा०] भय; गिनती; लेखा। मु०**-में न रहना,-में न होना**-बेशुमार, संख्यातीत होना। **-में न लाना**-कुछ न समझना, नितांत उपेक्षणीय मानना।

शुमाली-वि० [अ०] उत्तरका, उत्तरी। **-अमरीका**-पु० उत्तरी अमरीका।

शुरुआत-स्त्री० 'शुरुअ'का बहु० (हिंदीमें एकवचनमें प्रयुक्त) आरंभ।

शुरू-पु० [अ० 'शुरुअ'] आरंभ; उठान।

शुल्क-पु० [सं०] कर, महसूल जो राज्य द्वारा घाट, मार्ग आदिपर लिया जाता है; आवेदनपत्र देने, पढ़ने आदिका कर; फीस (जैसे-प्रवेशशुल्क आदि); कन्याके माता-पिता द्वारा वरके माता-पितासे अथवा स्वयं वरसे कन्या देनेके बदले लिया हुआ द्रव्य; दहेज; स्त्री-धनका भेद (जैस-भगिनीशुल्क); संभोगके बदले दिया गया द्रव्य; ग्राह्य धन। **-ग्राहक,-ग्राही (हिन्)**-पु० शुल्क एकत्र करनेवाला। **-द**-पु०विवाहके लिए शुल्क देनेवाला।

शुल्काध्यक्ष-पु० [सं०] चुंगीका अध्यक्ष।

शुल्कार्ह-वि० [सं०] (ड्यूटिएबिल) शुल्क या कर बैठाये जाने योग्य,जो उन वस्तुओंकी सूचीके अंतर्गत हो जिनपर शुल्क ग्रहण करनेका निश्चय हुआ हो।

शुश्रूषक-वि० [सं०] सेवा-कार्य करनेवाला, खिदमतगार; आज्ञाकारी। पु० नौकर, दास।

शुश्रूषा-स्त्री० [सं०] सेवा-टहल; (बच्चेका) पालन-पोषण; खिदमतगारी; स्वास्थ्यकी देखरेख, परिचर्या; कथन; सुननेकी इच्छा। **-प्रणाली**-स्त्री० रोगीकी यथोचित सेवाका ढंग, नियम।

शुष्क-वि० [सं०] सूखा, अनार्द्र, जिसमें गीलापन न हो; शीर्ण; नीरस, कठिन, दिमागको थकानेवाला (जैसे-शुष्क कार्य); समाजके सुख-दुःखपर ध्यान न रखनेवाला, हृदयहीन (जैसे-शुष्क व्यक्ति); निष्प्रयोजन, निस्सार। **-वृक्ष**-पु० धव वृक्ष। **-व्रण**-पु० वह घाव जो सूख गया हो, अच्छा हो गया हो, भरा, पूजा घाव।

शुष्कता-स्त्री० [सं०] नीरसता; कठिनता, हृदयहीनता; व्यर्थता।

शुष्कांग-वि० [सं०] जिसका शरीर सूख गया हो, दुबला-पतला। पु० धव वृक्ष।

शुष्कार्द्र, शुष्कार्द्रक-पु० [सं०] सोंठ, शुंठी।

शुहदा-पु० [अ०] गुंडा; बदमाश, बदचलन। **-पन,-पना**-पु० गुंडई; बदमाशी।

शुहरत-स्त्री० [अ०] ख्याति, प्रसिद्धि; चर्चा; नेकनामी; बदनामी (देना, पाना, होना)।

शूक-पु० [सं०] किसी वस्तुका चिकना नुकीला अग्रभाग; जौ आदिका नुकीला अग्रभाग, जौ आदिकी बालका नुकीला हिस्सा, टूँड़; शिखा; दया; जल-मलमें पैदा होनेवाला जहरीला कीड़ा; (पिन) दे० 'कंटिका'। **-धानी**-स्त्री० (पिनकुशन) दे० 'कंटिकाधार'। **-धान्य**-पु० टूँड़वाले अनाज (जैसे-जौ आदि)। **-पत्र**-पु० विषहीन सर्प। **-पिंडी,-शिंबा,-शिंबी**-स्त्री० केवाँच,

कपिकच्छु।

शूकर-पु० [सं०] वाराह, सूअर नामक पशु। **-कंद**-पु० वाराही कंद। **-क्षेत्र**-पु० सूकरखेत, सोरों नामक तीर्थस्थान।

शूकरी-स्त्री० [सं०] सूअरी, वाराही; वराहक्रांता।

शूकवती-स्त्री० [सं०] केवाँच, कपिकच्छु।

शूचिवेधन-पु० दे० 'सूचीवेधन'।

शूची*-स्त्री० सूई।

शूति-स्त्री० [सं०] वृद्धि, बढ़ती। **-पर्ण**-पु० आरग्वध वृक्ष, अमलतासका पेड़।

शूद्र-पु० [सं०] वैदिक आर्यों द्वारा निर्धारित वर्णव्यवस्थामेंसे चतुर्थ वर्ण, सबसे निम्न वर्ण जिसका कर्तव्य अन्य तीन वर्णोंकी सेवा है; अछूत, हरिजन; निम्न कोटिका व्यक्ति। **-जन्मा(न्मन्)**-वि० शूद्रसे उत्पन्न। **-प्रिय**-पु० पलांडु, प्याज। **-याजक**-पु० शूद्रके लिए यज्ञ करानेवाला। **-सेवन**-पु०, **-सेवा**-स्त्री० शूद्रकी परिचर्या या नौकरी करना।

शूद्रक-पु० [सं०] 'मृच्छकटिक' नाटकके रचयिता प्रसिद्ध कवि और राजा।

शूद्रा-स्त्री० [सं०] शूद्र वर्णकी स्त्री। **-वेदी(दिन्)**-पु० शूद्रासे विवाह करनेवाला उच्च वर्णका व्यक्ति। **-सुत**-पु० शूद्राके गर्भसे उत्पन्न पुत्र।

शूद्राणी-स्त्री० [सं०] शूद्रकी स्त्री, शूद्री।

शूद्रान्न-पु० [सं०] शूद्र वर्णके स्वामीका अन्न; शूद्र वर्णके स्वामीसे प्राप्त जीविका।

शूद्री-स्त्री० [सं०] शूद्राणी, शूद्रकी स्त्री।

शून-वि० [सं०] शून्य; फूला हुआ; वर्द्धित।

शूना-स्त्री० [सं०] घंटी; अधोजिह्विका; प्राणिवधस्थान; गृहस्थीके वे स्थान या वस्तुएँ जहाँ या जिनसे छोटे-छोटे जीवोंकी हत्या होनेकी संभावना रहती है (वे स्थान हैं-चूल्हा, चक्की, झाड़ू, ऊखल आदि)।

शून्य-वि० [सं०] असंपूर्ण, रिक्त, खाली; निर्जन; तुच्छ; हीन, रहित (जैसे-ज्ञानशून्य); निराकार; उदास। पु० रिक्तता; अभावसूचक चिह्न, बिंदु; निर्जन स्थान, खाली जगह; आकाश; अभाव; ब्रह्म। **-गर्भ**-पु० एक फल, पपीता। **-दृष्टि**-स्त्री० लक्ष्यहीन, उदास दृष्टि। **-पथ**-पु० आकाश; निर्जन मार्ग। **-पदवी**-स्त्री० ब्रह्मरंध्र। **-मध्य**-वि० (वह वस्तु) जिसका भीतरी हिस्सा खाली हो (नल, नलिका, नरकट आदि)। **-मनस्क**, **-मना(नस्)**-वि० अन्यमनस्क, भग्नचेता, कोई काम करते, किसीकी बात सुनते हुए भी मनको दूसरी ओर लगाये रखनेवाला। **-वाद**-पु० वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदिकी सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन; नास्तिकता। **-वादी(दिन्)**-पु० बौद्ध; नास्तिक। **-हृदय**-वि० शून्यमनस्क; खुले दिलवाला; जिसके मनमें किसी तरहका संदेह न हो।

शून्यता-स्त्री०, **शून्यत्व**-पु० [सं०] शून्यका भाव।

शूप-पु० 'शूर्प'।

शूरंमन्य-वि० [सं०] शूर न होते हुए भी जो व्यर्थ ही अपनेको शूर मानता हो, शूरमानी।

शूर-वि० [सं०] शौर्यशाली, वीर; शक्ति-संपन्न। पु० शौर्यवान् या वीर व्यक्ति। **-मानी(निन्)**-पु० अपनी वीरतापर घमंड करनेवाला व्यक्ति। **-विद्या**-स्त्री० युद्ध-विद्या। **-वीर**-पु० वीर व्यक्ति, योद्धा। **-श्लोक**-पु० वीरोंके शौर्यपूर्ण कार्योंकी स्तुति, प्रशंसा, कहानी। **-सेन**-पु० मथुरा और उसके आस-पासका प्रदेश; कृष्णके पितामहका नाम जो शूरसेन प्रदेशके राजा थे। **-सेनप**-पु० शूरोंकी सेनाके पालक, रक्षक, कार्त्तिकेय।

शूरण-पु० [सं०] एक जमींकंद, सूरन; श्योनाक।

शूरता-स्त्री०, **शूरत्व**-पु० [सं०] शूर होनेका भाव।

शूरताई*-स्त्री० दे० 'शूरता'।

शूरा*-पु० शूर, योद्धा; सूर्य, रवि।

शूर्प-पु० [सं०] अन्न साफ करने, पछोड़नेके लिए सींक, बाँसके छिलके आदिका बना पात्र, सूप। **-कर्ण**-पु० वह जिसके कान शूपके सदृश हों-हाथी, गणेश आदि। **-णखा**, **-णखी**-स्त्री० रावणकी बहिन जिसे लक्ष्मणने नाक-कानविहीन कर दिया।

शूल-पु० [सं०] शरीरगत वातप्रकोपजन्य एक वेदना रोग; वेदना, व्यथा, पीड़ा; खूब नुकीला लोहेका काँटा; त्रिशूल; एक शस्त्र, बरछा, भाला; प्राचीन कालमें मृत्युदंड देनेका एक औजार, सूली; मांस भूननेका काँटा, सीखचा; केतन, ध्वज, झंडा; मृत्यु; ज्योतिषके अनुसार विष्कंभ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे नवाँ योग। **-धन्वा(न्वन्)**, **-धर**-पु० शिव। **-धारी(रिन्)**-पु० शिव। **-नाशन**-पु० सौवर्चल लवण; कई औषधोंको मिलाकर बना हुआ एक चूर्ण जो शूल रोगमें खाया जाता है (आ०वे०)। **-नाशी(शिन्)**-पु० हींग। **-पाणि**-पु० शिव। **-हस्त**-वि० शूल धारण करनेवाला। पु० शिव। **-हृत**-पु० हींग। मु० **-उठना**-शूल चुभानेकीसी पीड़ाका होना। **-देना**-तीव्र व्यथा उत्पन्न करना।

शूलना*-अ० क्रि० शूलकी भाँति गड़ना; पीड़ा देना।

शूलिका-स्त्री० [सं०] सलाख जिसमें माँस गोदकर भूनते हैं।

शूलिनी-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शूली-स्त्री० [सं०] दे० 'सूली'।

शूली(लिन्)-वि० [सं०] शूल धारण करनेवाला। पु० शिव; भालाबरदार।

शूल्य-वि० [सं०] शूलमें खोंसकर पकाया हुआ। पु० कबाब; सूली देने योग्य व्यक्ति। **-पाक**, **-मांस**-पु० कबाब।

श्रृंखल-पु० [सं०] श्रृंखला, सिक्कड़, सिकड़ी; हाथीका पैर बाँधनेके लिए लोहेकी जंजीर, निगड़; पादबंधन; बेड़ी; बंधन; करधनी; परंपरा, सिलसिला।

श्रृंखलता-स्त्री० [सं०] क्रमिकता, श्रृंखलाबद्धता।

श्रृंखला-स्त्री० [सं०] परंपरा, क्रम; कोटिक्रम, श्रेणी; कमरकी पेटी जिससे पुरुष अपनी धोती आदि बाँधते हैं, कमरबंद; दे० 'श्रृंखल'। **-बद्ध**-वि० क्रमयुक्त, श्रृंखलित।

श्रृंखलित-वि० [सं०] सिकड़ीसे जकड़ा हुआ; बँधा हुआ; क्रमयुक्त।

श्रृंग-पु० [सं०] पर्वतशिखर, पहाड़की चोटी; मकान,

मंदिर आदिका ऊपरी हिस्सा, कँगूरा; ऊपरी भाग; कोटि, सिरा; चंद्रमाकी नोक, शशिविषाण; बाणकी नोक; सींग; 'सिंघा' नामक बाजा। **–ग्राहिता न्याय**–पु० मरकहे साँड़का एक सींग पकड़ लेनेपर दूसरा सींग भी आसानीसे पकड़ा जा सकता है, इसी तथ्यके आधारपर यह न्याय बना है, इसका तात्पर्य यह है कि किसी दुष्कर कार्यका कुछ हिस्सा हो जानेपर उसका शेष भाग भी संपन्न हो जाता है। **–ज**–पु० अगुरु चंदन, अगर; बाण। वि० शृंगसे उत्पन्न। **–प्रहारी(रिन्)**–वि० सींगसे मारनेवाला। **–प्रिय**–पु० शिव। **–मूल**–पु० सिंघाड़ा।

शृंगार–पु० [सं०] साहित्यशास्त्रके नवरसोंमेंसे एक प्रधान रस (इसे रसराज कहते हैं जिसका कारण इसकी व्यापकता है, अर्थात् जीवनके दो प्रधान पक्षों संयोग तथा वियोग दोनोंतक इसकी पहुँच है। इसीसे इसके दो भेद माने गये हैं—संयोगशृंगार और वियोग वा विप्रलंभशृंगार। इसके रसराज कहे जानेका एक कारण यह भी है कि इसमें रसके सभी अवयव–विभाव, अनुभाव, संचारी अपने सभी भेदों सहित प्राप्त होते हैं); संभोग, सहवास; सौंदर्यके प्रसाधनों द्वारा स्त्री वा पुरुष-शरीरका बनाव-सजाव; किसी वस्तुका सजाव; शोभाकी वस्तु; हाथीके शरीरपर बनाये गये सेंदुरके निशान। **–चेष्टा**–स्त्री० काम-चेष्टा, संभोग-चेष्टा। **–भाषित**–पु० प्रेमालाप। **–भूषण**–पु० सिंदूर। **–वेश**–पु० रमणीय, आकर्षक, सुंदर वेशभूषा जिसे धारण कर प्रेमी अपने प्रियसे मिलनके लिए जाता है। **–हाट**–पु० वेश्याओंके बैठनेका बाजार।

शृंगारण–पु० [सं०] सजानेकी क्रिया; शृंगारचेष्टा।

शृंगारिणी–स्त्री०[सं०]खूब बनाव-सजाव करनेवाली नारी।

शृंगारिक–वि०[सं०] शृंगारसे संबंध रखनेवाला, शृंगारका।

शृंगारिया–पु० शृंगार करनेवाला; बहुरुपिया।

शृंगारी(रिन्)–वि०[सं०] शृंगारकी वृत्तिसे युक्त; शृंगारिक। पु० कामुक, प्रेमी व्यक्ति; सुंदर वेशवाला व्यक्ति।

शृंगी–स्त्री० [सं०] सिंघी नामक मछली; गहना बनानेके लिए सोना; विष; अतीस।

शृंगी(गिन्)–वि० [सं०] शृंगयुक्त। पु० पर्वत; हाथी; मेष, भेड़ा; वृक्ष; एक ऋषि (इन्हींके शापसे परीक्षितको तक्षकने डसा था); सिंगा बाजा; शिव।

शृग–पु० शृगाल।

शृगाल–पु० [सं०] सियार; डरपोक व्यक्ति; खल; धूर्त आदमी।

शेख–पु० दे० 'शैख़'; मुसलमानोंकी चार जातियों (शेख, सैयद, मुगल, पठान)मेंसे एक। **–चिल्ली**–पु० एक कल्पित मूर्ख जिसकी मूर्खताकी अनेक कहानियाँ जनसाधारणमें प्रसिद्ध हैं; बड़ी-बड़ी हवाई योजनाएँ बनानेवाला व्यक्ति। **–चिल्लीका मनसूबा**–हवाई योजना। **–सद्दो**–पु० अपढ़ स्त्रियोंमें पूजित एक पीर या जिन।

शेखर–पु० [सं०] शिरोभूषण, किरीट, मुकुट आदि; सिरपर लपेटी हुई माला; पर्वत-शिखर, शृंग, चोटी; शीर्ष।

शेखी–स्त्री० घमंड; डींग। **–खोर**–वि० दे० 'शेखीबाज़'। **–बाज़**–वि० डींग मारनेवाला, दूनकी लेनेवाला। मु० **–किरकिरी होना, –झड़ना**–घमंड चूर होना। **–बघारना**–डींग मारना, अपने मुहँ अपनी बड़ाई करना।

शेफालिका, शेफाली–स्त्री० [सं०] निर्गुंडी, नीलिका; नील सिंधुवारका पौधा।

शेर–पु० [फ़ा०] बाघ, व्याघ्र; सिंह; (ला०) वीर पुरुष; निडर व्यक्ति। [स्त्री० 'शेरनी'।] **–दरवाज़ा**–पु० वह द्वार या फाटक जिसके दोनों ओर शेरकी प्रतिमा बनी हो, सिंहद्वार। **–दहाँ**–वि० शेरकासा मुहँवाला (कड़ा); (मकान) जो सामने अधिक और पीछे कम चौड़ा हो। **–दिल**–वि० वीर, निडर। **–नुमा**–वि० शेरकी शकलवाला। **–पंजा**–पु० एक हथियार, बघनखा। **–बच्चा**–पु० शेरका बच्चा; एक तरहकी छोटी बंदूक। वि० वीर, साहसी। **–बबर**–पु० सिंह। **–का नाख़ून**–बघनखा। **–का बाल**–शेरकी मूँछका बाल जो विष है और जिसे खानेसे, कहते हैं कि कलेजा कटकर गिर पड़ता है। **–की ख़ाला**–बिल्ली। मु० **–करना**–हौसला बढ़ा देना, निडर बना देना। **–की नज़र घूरना**–कोपभरी दृष्टिसे देखना। **–के मुँहमें जाना**–जान-जोखिमवाले स्थानमें जाना। **–के मुँहसे शिकार लेना**–जबरदस्तसे कोई चीज छीन लेना। **–बकरीका एक घाट पानी पीना**–शुद्ध न्यायका राज्य होना, छोटे-बड़े सबके साथ एकसा व्यवहार होना। **–होना**–हौसला बढ़ना; प्रबल होना।

शेरवानी–स्त्री० एक तरहका आधुनिक ढंगका अँगरखा।

शेल*–पु० शल्य, बरछी (कविप्रि०)।

शेवाल–पु० [सं०] सेवार।

शेष–वि० [सं०] बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट; छोड़ा हुआ; उच्छिष्ट; समाप्त। पु० स्वीकृत वस्तुसे अतिरिक्त वस्तु; कामकी चीजके अलावा बची चीज, भागकी बाकी (गणित); घटानेके बाद बची संख्या; वध; नाश; ध्वंस; अनंत नामक सर्पराज; लक्ष्मण; बलराम;। **–काल**–पु० मरणकाल। **–धर**–पु० शिव। **–रात्रि**–स्त्री० रात्रिका अंतिम प्रहर, पिछली रात। **–शयन, –शायी(यिन्)**–पु० विष्णु।

शेषर*–पु० दे० 'शेखर'।

शेषांश–पु० [सं०] बचा भाग; अंतिम भाग।

शेषावस्था–स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।

शेषोक्त–वि० [सं०] सबके या सब कुछ कह लेनेके बाद अंतमें कहा हुआ; सबके अंतमें लिखा हुआ।

शैख़–पु०[अ०]वृद्ध; गुरुजन; धर्मशास्त्रका पंडित; खानकाह या दरगाहका खलीफा; महंत; अरब कबीलोंका सरदार; मुसलमानोंकी चार जातियोंमेंसे एक।

शैतान–पु० [अ०] कुरानके अनुसार अजाजील जिन जो बड़ा पंडित था और फिरिश्तोंको पढ़ाया करता था, पर खुदाके आदमको सिजदा करनेकी आज्ञाका अहंकारवश पालन न करनेके कारण स्वर्गसे निकाला गया और तबसे वह आदमकी संतान मनुष्य जातिको सन्मार्गसे बहकानेका काम करने लगा, इबलीस; प्रेत, पिशाच। वि० बहकानेवाला; नटखट; दुष्ट; उपद्रव खड़ा करानेवाला। **–का बच्चा**–भारी दुष्ट, खुराफाती आदमी। **–का लश्कर**–नटखट लड़कोंका समूह। **–की आँत**–बहुत लंबी चीज, वह चीज जिसका सिलसिला बहुत दूरतक

चला जाय; लंबी कथा । **–की ख़ाला**–दुष्ट, कलह करनेवाली स्त्री । **–की डोर**–मकड़ीके जालेका तार जो अक्सर रास्तेमें उड़ता रहता है और आँखमें पड़ जाता है । **मु०–उतरना**–क्रोध शांत होना; बुराई या उपद्रवकी प्रवृत्ति या हठका दूर होना । **–के कान काटना**–शैतानीमें शैतानसे बढ़ जाना । **–(सिरपर) चढ़ना,–सवार होना**–गुस्सा चढ़ना; शरारत, बुराईपर आमादा होना; जिद चढ़ना ।

शैतानी–वि० [अ०] शैतानका । स्त्री० शैतानका काम; शरारत, दुष्टता ।

शैत्य–पु० [सं०] शीतलता, सर्दी ।

शैथिल्य–पु० [सं०] शिथिलता, सुस्ती; ढीलापन ।

शैदा–वि० [फा०] प्रेममें पागल हो जाने, सुध-बुध खो देनेवाला ।

शैल–वि० [सं०] शिला-संबंधी; पथरीला; पत्थर जैसा कठोर । पु० पर्वत, पहाड़, गिरि; बड़ा पत्थर या शिला । **–कन्या,–कुमारी**–स्त्री० गिरिजा, पार्वती, शिव-पत्नी । **–कूट**–पु० पहाड़की चोटी । **–ज,–जात**–पु० शैलेय । **–जा**–स्त्री० पार्वती, दुर्गा । **–तटी**–स्त्री० पहाड़की घाटी । **–तनया**–स्त्री० पार्वती । **–धर**–पु० गोवर्धनधारी कृष्ण । **–नंदिनी**–स्त्री० गिरिजा, पार्वती । **–निर्यास**–पु० शिलाजीत । **–पति**–पु० पहाड़ोंका स्वामी हिमालय । **–पुत्री**–स्त्री० पार्वती; गंगा जिसका उद्गम हिमालय पहाड़ है । **–रंध्र**–पु० गुफा, गह्वर । **–राज**–पु० हिमालय । **–राज-सुता**–स्त्री० पार्वती, दुर्गा; गंगा नदी । **–बीज**–पु० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ । **–सुता**–स्त्री० गिरिजा; ज्योतिष्मती ।

शैलाधिप, शैलाधिराज–पु० [सं०] हिमालय ।

शैली–स्त्री० [सं०] किसी कामके करनेका ढंग, तरीका, रीति, पद्धति; साहित्य, कला आदिकी रचना, अभिव्यक्तिकी रीति; इनकी रचना, अभिव्यक्तिका कौशल । **–कार**–पु० साहित्य, कला आदिकी विशिष्ट, आकर्षक शैलीका निर्माण करनेवाला व्यक्ति ।

शैलूष–पु० [सं०] नट, अभिनेता; नर्तक; धूर्त, शैतान ।

शैलेंद्र–पु०[सं०] हिमालय । **–सुता**–स्त्री० पार्वती; गंगा ।

शैलेय–वि० [सं०] शैल-संबंधी; शैलसे उत्पन्न; पथरीला; पहाड़ सदृश अचल; पत्थरके समान कठिन । पु० शैलज नामक गंधद्रव्य; शिलाजतु; तालपर्णी; सैंधव, सेंधा नमक ।

शैल्य–वि०[सं०] शिला-संबंधी; पथरीला; पत्थरसा कड़ा ।

शैव–वि० [सं०] शिवका या शिवसे संबंध रखनेवाला । पु० शिव-संबंधी संप्रदाय, मत, दर्शनका अनुयायी; शिवभक्त; शिवोपासक संप्रदाय ।

शैवल–पु० [सं०] पद्मकाष्ठ, सेवार ।

शैवलिनी–स्त्री० [सं०] नदी, सरिता ।

शैवाल–पु० [सं०] सेवार ।

शैशव–पु० [सं०] शिशुकी अवस्था, बचपन, शिशु-वृत्ति । वि० शिशु-संबंधी ।

शैशिर–वि० [सं०] शिशिर ऋतु-संबंधी; शिशिर ऋतुमें उत्पन्न ।

शोक–पु०[सं०] इष्ट वस्तु अथवा प्रिय व्यक्ति(बंधु-बांधव)के वियोग, नाशसे मनमें बार-बार उठनेवाली चिंता, मनःपीड़ा । **–कारक**–वि० शोकदायक, पीड़ा देनेवाला । **–नाशन**–वि० शोक दूर करनेवाला । **–परायण**–वि० शोकसे ग्रस्त, पीडाभिभूत । **–विकल,–विह्वल**–वि० शोकाकुल । **–संतप्त**–वि० गमसे जला हुआ, शोक-पीड़ित । **–सूचक**–वि० शोककी सूचना देनेवाला, शोक-प्रकाशक । **–हर**–वि० शोकहर्ता

शोकाकुल–वि० [सं०] शोकसे विह्वल, व्याकुल ।

शोकातुर–वि० [सं०] शोकसे छटपटानेवाला ।

शोकाभिभूत–वि० [सं०] शोकसे त्रस्त, पीड़ित ।

शोकार्त–वि० [सं०] शोकके कारण दीन-हीन बना हुआ, शोकके कारण जिसकी अवस्था कारुणिक हो गयी हो ।

शोकाविष्ट–वि० [सं०] शोकसंत्रस्त ।

शोकावेग–पु० [सं०] गमका दौर, बार-बार शोककी तीव्र अनुभूतिका होना ।

शोकोपहत–वि० [सं०] गमका मारा ।

शोख़–वि० [फा०] ढीठ; चंचल; नटखट; गहरा (रंग) ।

शोख़ी–स्त्री० [फा०] ढिठाई; चंचलता; (रंगका) गहरापन ।

शोच–पु० [सं०] चिंता; शोक; दुःख, पीड़ा ।

शोचनीय–वि० [सं०] चिंत्य, चिंतनीय, शोच्य; जिसे देखकर पीड़ा, रंज हो, रंज करने लायक ।

शोच्य–वि० [सं०] शोचनीय; चिंतनीय; दयनीय ।

शोण–वि० [सं०] लाल, लालिमायुक्त । पु० लाल रंग; लालिमा, लाली; रुधिर, रक्त; सिंदूर; अग्नि; सोन नद जो गोंडवानेसे निकल पटनेके पास गंगामें मिला है । **–पद्म**–पु० लाल कमल । **–भद्र**–पु० सोन नद । **–रत्न**–पु० पद्मराग मणि, लाल, मानिक ।

शोणित–वि० [सं०] लाल, रक्तवर्णवाला । पु० रक्त, खून; कुंकुम । **–चंदन**–पु० लाल चंदन ।

शोणितोपल–पु० [सं०] माणिक्य, लाल ।

शोणिमा(मिन्)–स्त्री० [सं०] लालिमा ।

शोथ–पु०[सं०]सूजन । **–घ्नी**–स्त्री०पुनर्नवा, गदहपूरना ।

शोथारि–पु० [सं०] गदहपूरना ।

शोध–पु० [सं०] शुद्धि, सफाई; गलतको सही, शुद्ध करनेकी क्रिया, संस्कार; चुकाना, अदा करना; खोज, अनुसंधान ।

शोधक–पु० [सं०] शुद्धिकर्ता, सफाई करनेवाला व्यक्ति; त्रुटि शुद्ध करनेवाला व्यक्ति; खोजी, अन्वेषक । वि० शुद्ध करनेवाला ।

शोधन–वि० [सं०] शुद्धिकारक, साफ करनेवाला । पु० शुद्धीकरण; संशोधन, सही करनेकी क्रिया; परिष्करण, मार्जन (जैसे–व्रण आदिका शोधन); ऋण चुकानेकी क्रिया; प्रतिशोध; अन्वेषण, खोज करनेका कार्य; धातुको औषधरूपमें प्रयोगके लिए उसे शुद्ध करनेकी क्रिया (आ० वे०); किसी शुभ कार्यके लिए विहित-अविहित मास, दिन आदिके विचार करनेकी क्रिया (ज्यो०); शरीर-शुद्धिके लिए विरेचन; सफाई आदिके लिए वस्तुओंका हटाना, अपनयन; भाज्यमेंसे भाजकको घटाना (गणित) ।

शोधना–स०क्रि० शुद्ध करना; गलतको सही करना; साफ करना, परिष्कार करना; खोज करना; धातुको औषधरूपमें

प्रयोगके लिए शुद्ध करना (आ० वे०); किसी शुभ कार्यके लिए मास, तिथि आदिका विचार करना (ज्यो०)।

शोधनी-स्त्री० [सं०] मार्जनी, झाड़ू; ताम्रवल्ली; नीली।

शोधनीय-वि० [सं०] शोधनके योग्य, शोध्य।

शोधवाना-स० क्रि० शोधका कार्य कराना; साफ़ कराना; ठीक कराना; खोज कराना।

शोधाई-स्त्री० शोधनेकी क्रिया या उजरत।

शोधित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ; सही किया हुआ, सुधारा हुआ; मार्जित; चुकाया हुआ; अन्वेषित।

शोधैया-पु० शोधक, शुद्ध करनेवाला।

शोध्य-वि० [सं०] शोधनीय। **-पत्र**-पु० (प्रूफ) किसी छपनेवाली वस्तुका वह नमूना जो उसकी छपाईके पहले अशुद्धियाँ ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है।

शोबदा-पु० [अ०] जादू या इंद्रजालका काम; हाथकी सफ़ाईका काम, करतब, बाजीगरी; छल, धोखा। **-बाज़** वि० शोबदा करनेवाला, बाजीगर; छलिया।

शोबा-पु० [अ०] टुकड़ा, विभाग; शाखा।

शोभ*-स्त्री० शोभा, दीप्ति।

शोभन-वि० [सं०] दीप्तिमान्; सुंदर, मनोहर; मंगल, शुभ; सज्जित। पु० सौंदर्य; अलंकार, मंडन; शुभ।

शोभना-स्त्री० [सं०] हरिद्रा, हल्दी; गोरोचना; सुंदर स्त्री। * अ० क्रि० सोहना, शोभा देना, शोभित होना।

शोभांजन-पु० [सं०] शोभनक वृक्ष, सहिजनका पेड़।

शोभा-स्त्री० [सं०] प्रभा, कांति, चमक; (शारीरिक तथा प्राकृतिक) सौंदर्य, छवि; काव्यगत दस गुणोंमेंसे एक गुण; एक काव्यालंकार; एक वर्णवृत्त; हरिद्रा, हल्दी। **-कर**-वि० सौंदर्य उत्पन्न करनेवाला। **-धर**-वि० शोभा धारण करनेवाला, सुंदर। **-शून्य,-हीन**-वि० असुंदर, सौंदर्यरहित।

शोभान्वित-वि० [सं०] सौंदर्यपूर्ण, छविमय।

शोभामय-वि० [सं०] सौंदर्ययुक्त।

शोभायमान-वि० [सं०] जो देखनेमें सुंदर लगता हो।

शोभित-वि० [सं०] शोभायुक्त, शोभान्वित; सज्जित; विराजमान।

शोभिनी-वि० स्त्री० [सं०] शोभा देनेवाली, सुंदरी।

शोभी(भिन्)-वि० [सं०] दीप्तिमान्, कांतिमान्; शोभा देनेवाला, सुंदर।

शोर-पु० [फ़ा०] हल्ला, कोलाहल (करना, मचना, मचाना) धूम, प्रसिद्धि। **-गुल**-पु० हल्ला।

शोरबा, शोरवा-पु० [फ़ा०] तरकारी, मांस आदिका रसा। **-(बे)दार**-वि० रसेदार।

शोरा-पु० [फ़ा०] एक क्षार जो बारूद बनाने, पानी ठंडा करने आदिके काममें आता है। **-(रे)की पुतली**-अति गौरवर्ण युवती।

शोरिश-स्त्री० [फ़ा०] शोर-गुल, कोलाहल; उपद्रव।

शोला-पु० [अ०] आगकी लपट; आँच।

शोशा-पु० [फ़ा०] छोटा टुकड़ा, रेजा; सोनेका डला; फारसी-अरबी अक्षरोंके नीचे लगाया जानेवाला चिह्न; निकली हुई नोक; (ला०) अनोखी बात, झगड़ा उठानेवाली बात। मु० **-छोड़ना**-अनोखी या झगड़ा खड़ा करनेवाली बात कहना।

शोष-पु० [सं०] शुष्कता, सूखापन; सूखनेका भाव या क्रिया; क्षीण होने, दुबला-पतला होने, मुरझानेका भाव; यक्ष्मा रोगका एक प्रकार जिसमें आदमी क्षीण और पीला होता जाता है; सुखंडी रोग।

शोषक-वि०, पु० [सं०] शोषण करनेवाला, सोखनेवाला; सुखानेवाला; चूसनेवाला; क्षीण करनेवाला।

शोषण-पु० [सं०] सोखनेकी क्रिया; चूसनेकी क्रिया; रस, स्नेहसे रहित करना; क्षीण करनेकी क्रिया; किसीके श्रमसे या व्यापार आदिसे अनुचित लाभ उठाना।

शोषणीय-वि० [सं०] शोषणके योग्य।

शोषयिता(तृ)-वि०, पु० [सं०] शोषण करनेवाला।

शोषित-वि० [सं०] सोखा हुआ; सुखाया हुआ; क्षीण किया हुआ; खत्म किया हुआ, नष्ट किया हुआ।

शोषी(षिन्)-वि० [सं०] शोषण करनेवाला।

शोहदा-पु० दे० 'शुहदा'। **-पन**-पु० दे० 'शुहदापन'।

शोहरत-स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि, ख्याति; धूम, जोरदार खबर।

शोहरा-पु० दे० 'शोहरत'।

शौंड-वि० [सं०] मत्त, मतवाला; मद्य पीनेका अभ्यासी, शराबी; दक्ष, कुशल, चतुर।

शौंडिक-पु० [सं०] प्राचीन-कालीन विशेष जाति जो मद्य प्रस्तुत कर इसका व्यापार करती थी।

शौंडिकी, शौंडिनी-स्त्री० [सं०] शौंडिक जातिकी स्त्री।

शौंडी(डिन्)-पु० [सं०] शौंडिक, मद्यविक्रेता।

शौआल, शौवाल-पु० [अ०] मुसलमानोंका दसवाँ चांद्र मास जिसकी पहली तारीखको ईद मनायी जाती है।

शौक़-पु० [अ०] प्रबल इच्छा, चाह; रुचि; चसका, व्यसन; उत्साह; धुन। मु० **-करना**-भोग करना (हुक्का, सिगरेट आदि देते समय 'शौक कीजिये' कहते हैं)। **-चर्राना**-इच्छाका तीव्र होना। **-से**-रुचिपूर्वक; खुशीसे; निस्संकोच।

शौकत-स्त्री० [फ़ा०] बल, शक्ति; प्रताप, दबदबा; गौरव।

शौक़िया-अ० दे० 'शौक़ीया'।

शौक़ीन-वि० शौक-चाह, रुचि रखनेवाला; बनाव-सिंगारका शौक रखनेवाला, छैला; तमाशबीन।

शौक़ीनी-स्त्री० शौकीन होना।

शौक़ीया-अ० [अ०] शौकसे, शौक होनेसे; दिल-बहलावके लिए।

शौक्तिक-वि० [सं०] सीपीसे उत्पन्न; मोती-संबंधी; अम्ल। पु० मोती।

शौक्तिकेय, शौक्तेय-पु० [सं०] मुक्ता।

शौक्र-वि० [सं०] शुक्र-संबंधी।

शौक्ल्य-पु० [सं०] शुक्लता, उज्ज्वलता, सुफ़ेदी।

शौच-पु० [सं०] शुद्धि, पवित्रता, शुचिता; किसी निकट-संबंधीकी मृत्यु होनेपर लोक-व्यवहारके अनुसार निश्चित दिन क्षौरकर्म आदि कराकर शुद्ध होना; प्रातःकालीन नैमित्तिक कर्म द्वारा शुद्धि; मल-त्याग द्वारा शरीर-शुद्धि, पाखाने जाना। **-कर्म(न्)**-पु० लोक-व्यवहार और शास्त्रानुसार शुद्धिकी क्रिया। **-कूप**-पु० संडास।

—गृह—पु० पाखानेकी कोठरी आदि ।

शौचागार—पु० [सं०] शौचगृह ।

शौचाचार—पु० [सं०] दे० 'शौच-कर्म' ।

शौचालय—पु० [सं०] (लैवेटरी) शौच जानेकी कोठरी या स्थान; वह कोठरी या कक्ष जिसमें पानीकी तथा लघुशंका इत्यादिकी व्यवस्था हो; दे० 'प्रक्षालन-गृह' ।

शौद्धोदनि—पु० [सं०] महाराज शुद्धोदनके पुत्र बुद्ध ।

शौध*—वि० शुद्ध, निर्मल, पवित्र । स्त्री० सुधि (सू०) ।

शौनिक—पु०[सं०] मांसविक्रेता, कसाई; बहेलिया,वधिक ।

शौरसेन—पु० [सं०] महाराज शूरसेनका राज्य, आधुनिक व्रज-मंडल (इसकी राजधानी शूरसेन—मथुरा थी)।

शौरसेनी—वि० शौरसेन प्रदेश-संबंधी । स्त्री०[सं०] प्राचीन कालमें शौरसेन प्रदेशमें (मथुराके आस-पास) बोली जानेवाली प्राकृत भाषा; प्राचीन कालमें उक्त प्रदेशमें व्यवहृत अपभ्रंश भाषा ।

शौर्य—पु०[सं०] शूरता, वीरता; पराक्रम; आरभटी नामक नाट्यवृत्ति जिसका उपयोग वीर और अद्भुत रसोंके अभिनयमें होता है ।

शौल्किक—वि०[सं०] शुल्क-संबंधी । पु० कर वसूल करनेवाला; शुल्काध्यक्ष, शुल्काधिकारी ।

शौहर—पु० [फा०] पति, स्वामी, खाविंद ।

श्मशान—पु० [सं०] शवदाह-स्थान, मसान, मरघट । **—निवासी (सिन्)**—पु० शिव; भूत, प्रेत । **—पति**—पु० शिव । **—पाल**—पु० चांडाल, डोम चौधरी । **—वैराग्य**—पु० श्मशानमें जानेपर संसारकी अस्थिरता देखनेसे उत्पन्न क्षणिक वा अस्थायी वैराग्य । **—साधन**—पु० तांत्रिकोंके अनुसार श्मशानमें मुर्देकी छातीपर बैठकर किसी सिद्धिके लिए अर्ध रात्रिमें मंत्र-साधना करना ।

श्मश्रु—पु० [सं०] डाढ़ी-मूँछ । **—कर**—पु० डाढ़ी बनानेवाला, नाई । **—मुखी**—स्त्री० डाढ़ी-मूँछवाली औरत ।

श्मश्रुल—वि० [सं०] डाढ़ी-मूँछवाला, श्मश्रुधारी ।

श्याम—वि० [सं०] काला, साँवला; काला और नीला मिश्रित; गाढ़ा हरा । पु० कृष्ण;काला रंग; गाढ़ा हरा रंग; काला और नीला मिश्रित रंग; मेघ, बादल; कोयल; प्रयागका प्रसिद्ध वटवृक्ष जो यमुनाके किनारे है ।**—कंठ**—पु० शिव; नीलकंठ पक्षी; मयूर, मोर । **—कर्ण**—पु० काले कानवाला घोड़ा जिसका सारा शरीर श्वेत और केवल कान काला होता है (इसे सुलक्षण माना गया है । यह घोड़ा अश्वमेधके उपयुक्त माना जाता है) । **—कांडा**—स्त्री० गंडदूर्वा, गाँड़र दूब । **—चटक**—पु०,**—चूड़ा**—स्त्री० श्यामा पक्षी । **—टीका**—पु०[हिं०] दिठौना । **—सुंदर**—पु० कृष्ण ।

श्यामता—स्त्री०[सं०] श्याम, काला होनेका भाव, कालापन।

श्यामल—वि० [सं०] श्याम वर्णवाला । पु० काला रंग ।

श्यामलता—स्त्री० [सं०] श्यामता ।

श्यामा—स्त्री० [सं०] कृष्णप्रिया राधा; काली, कालिका देवी; श्याम वर्णकी स्त्री; षोडशवर्षीया युवती; सुंदरी नारी; तरुणी स्त्री जिसे संतान न हुई हो; तपे हुए सोनेके रंगकी युवती जो सर्वांगसे शीतमें सुखोष्ण और ग्रीष्ममें सुखशीतल होती है; श्यामा नामकी चिड़िया, कृष्ण सारिका; काले रंगकी गाय; यमुना; (अंधकारमयी) रात्रि; छाया; तुलसी ।

श्यामाक—पु० [सं०] साँवाँ चावल ।

श्यामिका—स्त्री० [सं०] कालापन, श्यामता; अपवित्रता; खोटापन; मलिनता; मैल (बरतन आदिका) ।

श्याल—पु० [सं०] साला, पत्नीका भाई; * शृगाल ।

श्यालक—पु० [सं०] श्याल, साला ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली—स्त्री० [सं०] साली ।

श्येन—पु० [सं०] बाज पक्षी; हिंसा । **—जीवी (विन्)**—पु० बाज पकड़ और उसे बेचकर जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति ।

श्येनिका—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त; मादा बाज ।

श्येनी—स्त्री० [सं०] दे० 'श्येनिका' ।

श्रद्धा—स्त्री० [सं०] प्रेम और भक्तियुक्त पूज्यभाव, मनोवृत्तिविशेष; संप्रत्यय, विश्वास; आदर; शुद्धि, पवित्रता; स्पृहा; कामना; दोहद, गर्भवती स्त्रीकी इच्छा; किसी धर्म, संप्रदाय, शास्त्र, दर्शन आदिमें आस्था; मनःशांति, मनकी प्रसन्नता; प्रजापतिकी पुत्री; दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी; वैवस्वत मनुकी पत्नी ।

श्रद्धालु—वि० [सं०] श्रद्धावान्; कामनायुक्त ।

श्रद्धावान् (वत्)—वि० [सं०] श्रद्धायुक्त ।

श्रद्धास्पद—वि० [सं०] श्रद्धाका पात्र, श्रद्धा करने योग्य, श्रद्धेय ।

श्रद्धेय—वि० [सं०] प्रेम और भक्तिके योग्य, पूजनीय, विश्वसनीय, श्रद्धा-भाजन ।

श्रम—पु० [सं०] परिश्रम, मेहनत; प्रयत्न, प्रयास, दौड़-धूप; श्रांति, थकान; व्यायाम, कवायद; तप; शास्त्राभ्यास; खेद; साहित्यशास्त्रोक्त एक संचारी भाव । **—कण**—पु० शारीरिक श्रम करनेसे निकली पसीनेकी बूँदें । **—कार्यालय**—पु० (लेबर ब्यूरो) श्रमिकोंकी संख्या, स्थिति आदि-संबंधी जानकारी देनेवाला कार्यालय । **—घ्न**—वि० थकान दूर करनेवाला । **—जल**—पु० प्रस्वेद, पसीना । **—जित**—वि० [हिं०] श्रमसे न थकनेवाला । **—जीवी (विन्)**—वि० शारीरिक तथा बौद्धिक परिश्रम कर जीविका चलानेवाला । पु० मेहनतकश, मजदूर । **—दान**—पु० सड़क, विद्यालय, कुआँ आदि बनाने तथा सार्वजनिक हितके लिए, कोई पारिश्रमिक न लेकर, स्वेच्छासे अपने श्रमका दान करना, निर्माणकार्यमें सहयोग देना । **—वारि,—विंदु**—पु० प्रस्वेद, स्वेद, पसीना । **—विभाग**—पु० कामका बँटवारा, किसी कामको पूर्ण करनेके लिए उसके विभिन्न अंगोंको विभिन्न व्यक्तियोंके जिम्मे कर, बाँट देना (अर्थशास्त्र); श्रमिकोंके हितादि-संबंधी मामलोंकी देख-रेख करनेवाला सरकारी महकमा । **—विवाद**—पु० (लेबर डिसप्यूट) श्रमिकोंके वेतन, अधिलाभांश तथा अन्य प्रश्नोंके संबंधमें उठखड़ा हुआ विवाद या झगड़ा । **—शीकर,—सीकर**—पु० श्रमजल, पसीना, प्रस्वेद-बिंदु । **—शील**—वि० परिश्रमी । **—संघ**—पु० (लेबर यूनियन) कारखानों आदिमें काम करनेवाले श्रमिकोंका संघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हितरक्षाकी ओर ध्यान देता है । **—साध्य**—वि० जो (काम) परि-

श्रम, दौड़-धूप, प्रयत्नसे पूर्ण हो सके, परिश्रमसे होवे, सधनेवाला।

श्रमण–पु० [सं०] बौद्ध संन्यासी, बौद्ध भिक्षु, यति।

श्रमणक–पु० [सं०] बौद्ध या जैन संन्यासी।

श्रमिक–पु० [सं०] शारीरिक श्रम कर रोजी कमानेवाला, मेहनतकश,मजदूर। **–कल्याण-कार्य**–पु०(लेबर वेलफेयर वर्क) श्रमिकोंकी भलाईके लिए किया जानेवाला कार्य (स्वास्थ्य-रक्षा, साफ और हवादार मकानोंकी व्यवस्था आदि)। **–कल्याण-केंद्र**–पु० (लेबर वेलफेयर सेंटर) वह केंद्र या स्थान जहाँ श्रमिकोंकी भलाईके विभिन्न कार्य किये जाते हैं। **–क्षतिपूर्ति-अधिनियम**–पु० (वर्कमेंस कंपेनसेशन ऐक्ट) श्रमिकों तथा कर्मकारोंको काम करते समय लगनेवाली चोट या अन्य रूपसे होनेवाली हानिके बदलेमें मालिकों या व्यावसायिक संस्थाओंसे हरजाना दिलानेके लिए बनाया गया अधिनियम, कर्मकार-हानिपूरण-अधिनियम। **–दिन**–पु० (मैन डेज) एक दिनमें एक आदमी द्वारा किये गये कामको इकाई मानकर हड़ताल आदिके समय हुई हानिका हिसाब लगानेसे प्राप्त दिनोंकी संख्या।

श्रमित–वि० [सं०] परिश्रम करकेथका हुआ; थका हुआ।

श्रवण–पु० [सं०] श्रवणेंद्रिय, कर्ण, कान; सुननेकी क्रिया; कर्णेंद्रियज्ञान, कानसे सुनकर हुआ ज्ञान; नौ प्रकारकी भक्तियोंमेंसे एक भक्ति जिसके अनुसार भक्त भगवान्‌के नाम, रूप, गुण, लीला, धाम आदिका श्रवण करता है; सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान;अंधतापसका पुत्र जो माता-पिताका अनन्य भक्त था; सत्ताईस नक्षत्रोंमें बाईसवाँ नक्षत्र; बहना, टपकना, क्षरण, रसना। **–गोचर**–वि० जो सुनाई पड़नेकी सीमामें हो, श्रवणप्रत्यक्ष। **–पथ**–पु० सुननेकी शक्तिसे युक्त श्रवणेंद्रिय, कान। **–पालि, –पाली**–स्त्री० कानकी नोक, कानकी ललरी। **–प्रत्यक्ष**–वि० श्रवण-गोचर। **–विद्या**–स्त्री० वह विद्या जो कानसे सुनकर ग्रहण की जाती हो। **–विवर**–पु० कानका छेद। **–विषय**–पु० श्रवणेंद्रियकी सीमामें आनेवाला विषय, श्रवण-गोचर वस्तु, व्यापार आदि।

श्रवणीय–वि० [सं०] श्रवण योग्य, सुनने योग्य।

श्रवणेंद्रिय–स्त्री० [सं०] सुननेकी शक्ति; कान।

श्रवन*–पु० कान; सुनना।

श्रवना*–अ० क्रि० बहना, टपकना, चूना। स० क्रि० बहाना, गिराना, टपकाना, चुआना।

श्रवित–वि० [सं०] क्षरित, टपका हुआ, बहा हुआ।

श्रव्य–वि० [सं०] सुनने योग्य। **–काव्य**–पु० इंद्रिय-प्रत्यक्षकी दृष्टिसे भारतीय साहित्यशास्त्र द्वारा निर्धारित काव्यके दो भेदों–दृश्य, श्रव्य–मेंसे एक भेद (श्रव्य काव्य सुना जाता है, इसका अभिनय नहीं होता)।

श्रांत–वि० [सं०] श्रांतियुक्त, थका हुआ।

श्रांति–स्त्री० [सं०] थकान; श्रम; खेद।

श्राद्ध–पु० [सं०] शास्त्रविहित पितृ-कर्म, शास्त्र तथा लोक-विधिके अनुसार पितरोंका क्रिया-कर्म; पितरोंकी प्रसन्नताके लिए श्रद्धा-पूर्वक अन्न, वस्त्र आदिका दान; कोई काम चौपट कर देना, बुरे ढंगसे करना। **–कर्ता(र्तृ), कर्मा(र्मन्)**–पु० श्राद्धकर्म करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० श्राद्धके सिलसिलेमें होनेवाले (शास्त्रोक्त, लोक-व्यवहारके) काम। **–दिन**–पु० वार्षिक श्राद्धका दिन, किसी व्यक्तिके मरनेकी तिथि, जिस तिथिको वर्षमें एक बार उसके लिए श्राद्धकर्म किया जाता है। **–पक्ष**–पु० क्वारका कृष्ण पक्ष जिसे पितृ-पक्ष भी कहते हैं।

श्राद्धिक–वि० [सं०] श्राद्ध-संबंधी। पु० श्राद्धभोक्ता।

श्राप–पु० शाप।

श्रावक–वि० [सं०] सुननेवाला। पु० बौद्ध भिक्षु; जैन-संन्यासी; शिष्य।

श्रावण–पु० [सं०] चांद्र वर्षके बारह महीनोंमेंसे पाँचवाँ महीना जो वर्षाकालमें पड़ता है; श्रवणेंद्रियग्राह्य ज्ञान; पाषंड। वि० श्रवणेंद्रिय-संबंधी; श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न।

श्रावणी–स्त्री० [सं०] चांद्र श्रावण मासकी पूर्णिमा (इस दिन ब्राह्मणोंका 'रक्षा-बंधन'का पर्व होता है); रक्षाबंधनका त्योहार, सलोनो।

श्रावस्ती–स्त्री० [सं०] उत्तर कोसलस्थित लवकी पुरी (रामायणमें इसे 'शरावती' कहा गया है)।

श्रावा–स्त्री० [सं०] माँड़।

श्रावित–वि० [सं०] सुनाया गया, कथित।

श्राव्य–वि० [सं०] सुनने योग्य, जो सुना जा सके।

श्री–स्त्री० [सं०] शोभा, सौंदर्य; संपद्, संपत्ति; विभूति, शान-शौकत; राजोचित गौरव; वेश-विन्यास, वेश-रचना; सजावट; प्रभा; कीर्ति, यश; वृद्धि; सिद्धि; विष्णुकी पत्नी, लक्ष्मी; सरस्वती, वाणी; त्रिवर्ग–धर्म, अर्थ, काम; प्रकार; उपकरण, साधन; अधिकार; ऋद्धि नामक औषध; लवंग; सरल वृक्ष; कमल; बिल्व वृक्ष; रागविशेष, छः रागोंमेंसे पाँचवाँ राग; एक वैष्णव संप्रदायका नाम, वैष्णवोंका निंबार्क संप्रदाय; आदर-सूचक शब्द जो प्रायः व्यक्तियोंके नामके पूर्व लगाया जाता है; एक एकाक्षर वृत्त। **–कंठ**–पु० शिव; महाकवि भवभूतिका नामांतर। **–कर**–पु० विष्णु; रक्तोत्पल, लाल कमल। वि० कल्याणकारक। **–कांत**–पु० कमलापति, विष्णु। **–कारी(रिन्)**–पु० एक प्रकारका मृग। **–क्षेत्र**–पु० जगन्नाथ पुरी। **–खंड**–पु० चंदन; सिखरन, एक लेह्य पदार्थ। **–गणेश**–पु० आरंभ। **–दामा(मन्)**–पु० कृष्णके साले (ये राधाके भाई थे); कृष्णके एक सखा, सुदामा। **–धाम**–पु० लक्ष्मीके रहनेका स्थान, कमल। **–नंदन**–पु० लक्ष्मीपुत्र, कामदेव। **–नाथ**–पु० विष्णु। **–निकेत,–निकेतन**–पु० लक्ष्मीका वास-स्थान; वैकुंठ; विष्णु। **–निवास**–पु० विष्णु; लक्ष्मीका निवासस्थान; विष्णुलोक, वैकुंठ। **–पंचमी**–स्त्री० वसंतपंचमी, जो माघ-शुक्ला पंचमीको पड़ती है। **–पति**–पु० लक्ष्मीपति, विष्णु; राजा, नृपति। **–पथ**–पु० राजमार्ग। **–फल**–पु० बिल्व वृक्ष, बेलका पेड़; खिरनीका पेड़; लक्ष्मीकी कृपाका फल, धन, द्रव्य। **–भ्राता(तृ)**–पु० चंद्रमा; घोड़ा। **–मुख**–पु० शोभायुक्त आनन, मुख। **–मूर्ति**–स्त्री० विष्णु या लक्ष्मीकी प्रतिमा। **–युक्त,–युत**–वि० लक्ष्मीवान्; सौंदर्यपूर्ण; आदर-सूचनार्थ पुरुषोंके नामके पूर्व लगाया जानेवाला विशेषण।

–रमण–पु० विष्णु। **–रवन***–पु० विष्णु। **–राग**–पु० छः रागोंमेंसे तीसरा राग। **–राम**–पु० दशरथ-पुत्र राम। **–वत्स**–पु० विष्णु; विष्णुके वक्षस्थलपर बना भृगुके लात मारनेका चिह्न। **–वर**–पु० विष्णु। **–वल्लभ**–पु० विष्णु; जो व्यक्ति लक्ष्मीका प्रिय है, धनी व्यक्ति। **–सहोदर**–पु० (समुद्र-मंथनमें लक्ष्मीके साथ उत्पन्न होनेवाला) चंद्रमा। **–हत**–वि० सौंदर्यहीन; कांतिहीन। **–हरि**–पु० विष्णु।

श्रीमंत–वि० धनी, लक्ष्मीवान्; सौंदर्य-शाली। पु० एक शिरोभूषण; सीमंत देश, माँग।

श्रीमती–स्त्री० [सं०] राधिका; स्त्रियोंके नामके पूर्व जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द; पुरुषोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाये जानेवाले 'श्रीमान्' शब्दका स्त्रीलिंग रूप जिससे उनकी पत्नीका बोध होता है; पत्नी।

श्रीमान्(मत्)–वि० [सं०] शोभायुक्त; धनी, संपत्ति-शाली, संपन्न, गौरवशाली। पु० विष्णु; शिव; कुबेर; पुरुषोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जानेवाला शब्द।

श्रील–वि० [सं०] शोभायुक्त; जो अश्लील न हो।

श्रीवंत*–वि० श्रीमंत, श्रीमान्।

श्रीश–पु० [सं०] लक्ष्मीपति विष्णु।

श्रुत–वि० [सं०] सुना हुआ, आकर्णित; विश्रुत, प्रसिद्ध। पु० परंपरासे सुनकर रक्षित वेद, शास्त्र। **–कीर्ति**–स्त्री० जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जिसका विवाह शत्रुघ्नसे हुआ था। **–शील**–वि० जिसका शील, सदाचार विश्रुत, प्रसिद्ध हो।

श्रुताध्ययन–पु० [सं०] वेदका अध्ययन।

श्रुतानुश्रुत–पु० [सं०] (हियरसे) बहुतोंसे सुनी हुई बात, गप्प, किंवदंती। वि० बहुतोंसे सुना हुआ; इधर-उधर जिसकी चर्चा हो। **–साक्ष्य**–पु० (हियरसे एव्हीडेंस) विभिन्न लोगोंसे सुनी हुई बातोंपर आधारित साक्ष्य।

श्रुति–स्त्री० [सं०] सुननेकी क्रिया; कान; शब्द, ध्वनि; वेद; ज्ञान; किंवदंती, जनश्रुति; श्रवण नक्षत्र; चारकी संख्या; अनुप्रासका एक प्रकार; एक स्वरसे दूसरे स्वरपर जाते समयका अत्यंत सूक्ष्म स्वरांश (संगीत)। **–कटु**–वि० कर्णकटु, कानोंको खटकने, कठोर लगनेवाला। पु० एक काव्य-दोष जो कर्णकटु वर्णों, 'ट'वर्ग आदिके प्रयोगसे आ जाता है। **–कीर्ति**–स्त्री० दे० 'श्रुतकीर्ति'। **–गम्य,–गोचर**–वि० जो सुना जा सके, श्रवणेंद्रियग्राह्य; श्रुत, सुना हुआ। **–पथ**–पु० कर्ण-कुहर, श्रवणेंद्रियका मार्ग; वेद-मार्ग, वेद-विहित पथ। **–प्रमाण**–पु० वेदका प्रमाण, वेदकी स्वीकृति। **–भाल**–पु० चतुरानन, ब्रह्मा। **–मंडल**–पु० कानका बाहरी घेरा। **–मधुर**–वि० कानको मीठा लगनेवाला, कर्ण-सुखद। **–मुख**–पु० ब्रह्मा। **–मूल**–पु० कर्णमूल, कानकी जड़; वेदका मूल पाठ, वेद-संहिता। **–रंजक,–रंजन**–वि० कानोंको आनंद-दायक, कर्ण-मधुर। **–लेख**–पु० (डिक्टेशन) किसीके बोले हुए वाक्योंको सुनकर लिखना या इस तरह जो कुछ लिखा जाय, आलेख, इमला। **–विवर**–पु० कर्णकुहर। **–विषय**–पु० श्रवणेंद्रियका विषय, शब्द, ध्वनि; वेदस्थित विषय, वेद-वर्णित वस्तु। **–वेध**–पु० कर्णवेध संस्कार, कनछेदन। **–सुख**–वि० कानोंके लिए सुखद। पु० श्रवणेंद्रिय द्वारा प्राप्त आनंद, संगीत आदि द्वारा मिली कर्ण-तृप्ति। **–सुखकर,–सुखद**–वि० कर्ण-मधुर, श्रवणानंददायक। **–स्मृति**–स्त्री० वेद और धर्म-शास्त्र। **–हर,–हारी(रिन्)**–वि० श्रवणेंद्रियको आकृष्ट करनेवाला (जैसे–संगीत आदि)।

श्रुत्य–वि० [सं०] श्रवणीय, सुना जाने योग्य; विश्रुत, विख्यात।

श्रुत्यनुप्रास–पु० [सं०] अनुप्रासका एक भेद, जिसमें मुखके एक ही स्थानसे उच्चरित होनेवाले व्यंजनोंकी कई वार आवृत्ति हो।

श्रुवा–स्त्री० [सं०] सुवा।

श्रूयमाण–वि० [सं०] जो सुना जाय; सुना जाता हुआ।

श्रेणि–स्त्री० [सं०] विच्छेद-रहित पंक्ति, शृंखला; रेखा; अवली; समूह, संघ, दल, वर्ग; एक ही व्यापार, शिल्प-कार्य आदि करनेवालोंका संघटन, संघ, समूह; जल-पात्र। **–बद्ध**–वि० दे० 'श्रेणीबद्ध'।

श्रेणिका–स्त्री० [सं०] तंबू।

श्रेणी–स्त्री०[सं०] दे० 'श्रेणि'। **–धर्म**–पु० किसी संप्रदाय, वर्ग, दल आदिके नियम; व्यापारिवर्गकी रीति, इसका नियम। **–पाद**–पु० श्रेणी-प्रधान राष्ट्र, जनपद। **–बद्ध**–वि० एक पंक्तिमें स्थित; एक शृंखलामें बँधा हुआ; दल-बद्ध। **–भुक्त**–वि० श्रेणीके बीच आया, मिला हुआ, श्रेणीबद्ध।

श्रेणीकरण–पु० [सं०] क्रमसे सजाने, लगानेका कार्य; अलग-अलग श्रेणियोंमें बाँटना, वर्गीकरण।

श्रेणीकृत–वि० [सं०] क्रमसे लगाया हुआ, वर्गीकृत।

श्रेय(स्)–पु०[सं०] धर्म; मुक्ति (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अर्थात् चतुर्वर्गको भी श्रेय कहा गया है); शुभ, मंगल; यश; सुख; पुण्य (श्रेयान्)। वि० अपेक्षाकृत अच्छा, बेहतर; श्रेष्ठ; उपयुक्त; हितकर, मंगलमय।

श्रेयस्कर–वि० [सं०] मंगलकारी, कल्याणकर।

श्रेष्ठ–वि० [सं०] सबसे अच्छा, अति उत्तम, उत्कृष्ट; सर्व-प्रधान; वयमें सबसे बड़ा, ज्येष्ठ; अत्यंत प्रिय।

श्रेष्ठा–स्त्री० [सं०] (सौंदर्य, शील आदिमें) उत्तम नारी।

श्रेष्ठाश्रम–पु० [सं०] गृहस्थाश्रम (इस आश्रमको श्रेष्ठ इसलिए कहा गया कि इसमें रहकर तीनों आश्रमोंका पालन-पोषण हो सकता है); गृहस्थ।

श्रेष्ठी(ष्ठिन्)–पु० [सं०] व्यापारियों, व्यवसायियों, बनियोंका प्रधान; सेठ; अत्यंत धनी व्यक्ति।

श्रोण–वि०[सं०] पंगु, लँगड़ा। पु० एक रोग; *शोण, लहू।

श्रोणि–स्त्री० [सं०] कटि, कमर; नितंब। **–सूत्र**–पु० मेखला; कमरसे लटकती हुई तलवार आदिका बंधन।

श्रोणित*–पु० दे० 'शोणित'।

श्रोणी–स्त्री० [सं०] दे० 'श्रोणि'।

श्रोत(स्)–पु० [सं०] कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय; इंद्रिय (जिनके मार्गसे शरीरके मल तथा आत्मा निकलती है)।

श्रोतव्य–वि० [सं०] श्रवणीय, श्रव्य, जो सुना जाय, सुनने योग्य।

श्रोता (तृ)-पु० [सं०] श्रवणकर्ता, सुननेवाला व्यक्ति। -**वर्ग**-पु० (आडिएंस) एक स्थानमें समवेत होकर किसी नेता, उपदेशक, व्याख्याता आदिका भाषण, उपदेश, प्रवचन सुननेवाले समस्त लोग।

श्रोत्र-पु० [सं०] कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय; वेद, श्रुति; वेद-विषयक नैपुण्य। -**पेय**-वि० कानों द्वारा ग्रहण करने-योग्य, श्रवणीय। -**मूल**-पु० कर्णमूल। -**सुख**-वि०, पु० दे० 'श्रुतिसुख'।

श्रोत्रिय-वि० [सं०] वेदज्ञ, वेदाध्ययनकर्ता। पु० वेदज्ञ ब्राह्मण, वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण।

श्रोत्री-पु० दे० 'श्रोत्रिय'।

श्रोन*-पु० दे० 'शोण'।

श्रोनित*-पु० दे० 'शोणित'।

श्रौत-वि० [सं०] श्रवण, कर्ण-संबंधी; वेद, श्रुति-संबंधी; वेदोक्त, वेदसम्मत; यज्ञ-संबंधी।

श्रौत्र-पु० [सं०] कर्ण, कान; श्रोत्रियकर्म।

श्रौन*-पु० दे० 'श्रवण'।

श्लक्ष्ण-वि० [सं०] अल्प या महीन; चिक्कण, चिकना; कोमल, नरम; मधुर; मनोहर, सुंदर। -**त्वक् (च्)**-पु० अश्मंतक वृक्ष; सुंदर वल्कल।

श्लक्ष्णक-वि० [सं०] श्लक्ष्ण। पु० पूगफल, सुपारी।

श्लथ-वि० [सं०] शिथिल, ढीला; ढीला किया हुआ; छूटा हुआ, बिखरा हुआ (जैसे-बाल); दुर्बल।

श्लथांग-वि० [सं०] जिसके अंग ढीले हो गये हों।

श्लाघन-पु० [सं०] (अपनी) प्रशंसा, तारीफ करना; चापलूसी करना।

श्लाघनीय-वि० [सं०] श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

श्लाघा-स्त्री० [सं०] प्रशंसा; चापलूसी; आत्म-प्रशंसा, आत्मगुण-कथन; अभिलाष; परिचर्या।

श्लाघ्य-वि० [सं०] श्लाघनीय, प्रशस्य।

श्लिष्ट-वि० [सं०] आलिंगित, परिरंभित; सम्मिलित, संयुक्त; श्लेषयुक्त, द्व्यर्थक, अनेकार्थक। -**रूपक**-पु० वह अलंकार जहाँ श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपकका विधान किया गया हो।

श्लिष्टि-स्त्री० [सं०] आलिंगन; सटाव, लगाव।

श्लीपद-पु० [सं०] टाँग या पैर फूलनेका रोग, फीलपाँव।

श्लीपदी (दिन्)-वि० [सं०] फीलपाँवका रोगी।

श्लील-वि० [सं०] जो अश्लील न हो, शिष्ट समाजमें दिखाये या पढ़े जाने योग्य, सभ्योचित; श्रेष्ठ; शोभायुक्त।

श्लेष-पु० [सं०] आलिंगन; संयोग, लगाव; एक शब्दालंकार जिसमें एक शब्दके कई अर्थों द्वारा काव्यमें चमत्कार उत्पन्न किया जाता है।

श्लेष्मा (ष्मन्)-पु० [सं०] कफ, बलगम।

श्लैष्मिक-वि० [सं०] कफ-संबंधी; कफ पैदा करनेवाला।

श्लोक-पु० [सं०] यश, कीर्ति (जैसे-पुण्यश्लोक); प्रशंसा; संस्कृतका अनुष्टुप् छंद या कोई पद्य।

श्वः (श्वस्)-अ० [सं०] आगामी कल।

श्व (न्)-पु० [सं०] 'श्वा'का समस्त पदोंमें व्यवहृत रूप। -**पच**,-**पाक**-पु० चांडाल; वधिक, फाँसी देनेवाला; कुत्तेका मांस पकाने, खानेवाला। -**पति**-पु० कुत्तोंका मालिक, कुत्ते पालनेवाला। -**भीरु**-पु० (कुत्तेसे डरनेवाला) स्यार, शृगाल। -**वृत्ति**-स्त्री० (कुत्तेके समान) पराधीन वृत्ति, सेवा, नौकरी; कुत्तेकी भाँति जूठन खाने, चाटनेवाली वृत्ति, पराश्रित रहनेकी आदत।

श्वशुर, श्वशुरक-पु० [सं०] ससुर-पति या पत्नीका पिता।

श्वश्रू-स्त्री० [सं०] पति या पत्नीकी माता, सास।

श्वसन-पु० [सं०] साँस लेना; हाँफना; आह भरना; वायु।

श्वसित-पु० [सं०] श्वास; आह। वि० श्वास निकालने, ग्रहण करनेवाला; श्वासयुक्त, जीवित; आह भरनेवाला।

श्वस्तन-वि० [सं०] आगामी कल-संबंधी; भविष्य-संबंधी।

श्वा (श्वन्)-पु० [सं०] कुत्ता।

श्वान-पु० [सं०] कुक्कुर, कुत्ता; दोहेका एक प्रकार; छप्पयका एक प्रकार। -**निद्रा**-स्त्री० कुकुर-निंदिया, कुत्तेकी भाँति तुरत खुल जानेवाली नींद, हलकी नींद। -**वैखरी**-स्त्री० कुत्तेका गुर्राना।

श्वानी-स्त्री० [सं०] कुतिया।

श्वापद-वि० [सं०] जंगली, बर्बर। पु० हिंस्र पशु।

श्वास-पु० [सं०] नाकसे प्राणवायु, ताजी हवा शरीरके भीतर ले जाने तथा भीतरसे दूषित वायु निकालनेका कार्य, साँस, श्वसित; आह; हाँफनेकी क्रिया; वायु; श्वास, दमा नामक रोग। -**कष्ट**-पु० साँस लेने और निकालनेकी तकलीफ ('श्वास-कष्ट' का प्रयोग प्रसंगतः 'दमा' रोगके लिए भी होता है)। -**कास**-पु० श्वासयुक्त कास रोग; श्वासजनित खाँसी, दमा। -**क्रिया**-स्त्री० श्वास-ग्रहण और त्यागका कार्य। -**कुठार**-पु० श्वास रोगकी एक औषध। -**धारण**-पु० दम रोकनेका काम, कुंभक प्राणायाम। -**प्रश्वास**-पु० साँस लेना और निकालना। -**रोध**-पु० साँस लेनेकी क्रियाको बंद रखना; श्वासका रुद्ध होना, दम घुटना। -**हिक्का**-स्त्री० एक प्रकारकी हिचकी। -**हीन**-वि० मृत।

श्वासा-स्त्री० साँस।

श्वासोच्छ्वास-पु० [सं०] वेगपूर्वक साँस लेना और बाहर निकालना।

श्वेत-वि० [सं०] सफेद, उज्ज्वल, उजला; बेधब्बेका, निष्कलंक; गौर, गोरा (जैसे-श्वेत जाति)। पु० शुक्ल वर्ण, सफेद रंग; चाँदी, रूपा। -**काक**-पु० सफेद कौआ-कोई अनहोनीसी बात। -**कुष्ठ**-पु० सफेद कोढ़। -**गज**-पु० इंद्रका ऐरावत हाथी। -**च्छद**-पु० हंस। -**दूर्वा**-स्त्री० सफेद दूब। -**द्युति**-पु० चंद्रमा। -**धातु**-स्त्री० खड़िया मिट्टी; सफेद रंगकी धातु। -**पत्र**-पु० हंस; (ह्वाइट पेपर) किसी वार्ता, संधि-चर्चा आदिके अंतमें उसमें तय हुई बातों आदिके संबंधमें सरकार द्वारा प्रकाशित लिखित विवरण या वक्तव्य। -**प्रदर**-पु० प्रदरका एक भेद जिसमें स्त्रियोंकी जननेंद्रियसे सफेद रंगका स्राव होता है। -**प्रस्तर**-पु० सफेद संगमर्मर। -**भानु**-पु० चाँद, चंद्रमा। -**मयूख**-पु० चंद्रमा। -**सार**-पु० खदिर, खैर; (स्टार्च) सफेद सत्त जैसा खाद्यतत्त्व जो आलू, चावल इत्यादिमें अधिक मात्रामें पाया जाता है (कपड़ोंपर कलफ करनेमें इसका प्रयोग किया जाता है)। -**हय**-पु० इंद्रका

उच्चैः श्रवा घोड़ा; सफेद घोड़ा; अर्जुन; इंद्र। **-हस्ती-(स्तिन्)**-पु० इंद्रका ऐरावत हाथी।

श्वेतांक-पु० [सं०] (वाटर-मार्क) कागजके भीतर, उसकी बनावटमें ही, विशेष प्रक्रियासे बनाया हुआ सफेद-सा चिह्न, छाप या अक्षरावली।

श्वेतांकित-वि० [सं०] (वाटरमार्क्ड) जिसपर श्वेतांक बना हो।

श्वेतांग-वि० [सं०] जिसके शरीरका रंग सफेद हो, गौरवर्णका, गौरांग।

श्वेतांबर-पु० [सं०] श्वेत, सफेद वस्त्र; जैनोंके एक प्रमुख संप्रदायका नाम।

श्वेतांशु-पु० [सं०] दे० 'श्वेत-मयूख'।

ष

ष-नागरी वर्णमालाका इकतीसवाँ व्यंजन, ऊष्म वर्ण।

षंड-पु० [सं०] बैल; साँड़; नपुंसक, हिजड़ा।

षंडक-पु० [सं०] नपुंसक, हिजड़ा।

षंढ-पु० [सं०] नपुंसक, क्लीव।

षंढा-स्त्री० [सं०] पुरुष जैसी प्रवृत्तिवाली स्त्री, मरदानी औरत।

षट्(ष्)-वि०[सं०] छः, पाँच और एक। **-कर्म(न्)**-पु० ब्राह्मणोंके छः कर्तव्य (अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह); ब्राह्मणोंके निर्वाह-संबंधी छः कर्म (उंछ, प्रतिग्रह, भिक्षा, वाणिज्य, कृषि और पशुपालन); छः तांत्रिक कर्म (मारण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण, शांति और विदूषण); योग संबंधी छः कर्म (धौती, वस्ती, नेती, त्राटक, नौलिक और कपालभाती)। **-कोण**-वि० (वह क्षेत्र) जिसमें छः कोण हों; छपहला। पु० इंद्रका वज्र; हीरा। **-चक्र**-पु० शरीरके भीतर सुषुम्ना नाड़ीके मध्य स्थित अतिसूक्ष्म कमलाकार छः चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा); षड्यंत्र। **-तिला**--स्त्री० माघ-कृष्णा एकादशी। **-पद**-वि० छः पैरोंवाला। पु० छः पैरोंवाला प्राणी; भ्रमर; किलनी; छः पदोंवाला छंद। **-पदी**-वि० स्त्री० छः पैरोंवाली। स्त्री० भ्रमरी; किलनी; छः चरणोंवाला छंद, छप्पय। **-रस**-वि०, पु० [हिं०] दे० 'षड्रस'। **-राग**-पु० [हिं०] दे० 'षड्राग'। **-रिपु**-पु० [हिं०] दे० 'षड्रिपु'। **-शास्त्र**-पु० वेदको प्रमाण मानकर चलनेवाले छः हिंदू-दर्शन।

षड्-वि० [सं०] 'षष्'का समासगत रूप। **-अंग**-वि० छः अंगोंवाला। पु० छठा भाग; शरीरके छः अवयव (शिर, धड़, दो हाथ और दो पैर); वेदके छः अंग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण, ज्योतिष); गायसे प्राप्त छः पदार्थ (मूत्र, गोमय, क्षीर, सर्पि, दधि और रोचन); किन्हीं छः वस्तुओंका समाहार; छोटा गोखरू। **-अंघ्रि**-पु० भ्रमर। **-अग्नि**-स्त्री० कर्मकांड-संबंधी छः प्रकारकी अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि)। **-आनन**-वि० छः मुखोंवाला। पु० कार्त्तिकेय। **-ऋतु**-स्त्री० छः ऋतुएँ। **-गुण**-वि० छगुना; छः गुणोंसे युक्त। पु० परराष्ट्रनीतिकी सफलताके लिए राजा द्वारा व्यवहार्य छः उपाय-संधि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय; छः गुणोंका समाहार। **-दर्शन**-पु० हिंदुओंके ये छः दर्शन-सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग और वेदांत। **-यंत्र**-पु० दुरभिसंधि, किसी व्यक्तिके अनजानमें उसके अनिष्ट साधनके उपाय करना, साजिश। **-योग**-पु० योगाभ्यासमें प्रयुक्त छः तरीके। **-योनि**-पु० शिलाजतु। **-रस**-वि० छः प्रकारके स्वादोंवाला। पु० छः प्रकारके स्वाद-मीठा, नमकीन, कड़वा, तीता, कसैला और खट्टा। **-राग**-पु० भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोस और दीपक-ये छः राग; झंझट, बखेड़ा। **-रिपु**-पु० काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, अहंकार-ये षड्विकार। **-लवण**-पु० सैंधव, सामुद्र आदि छः प्रकारके नमक। **-वक्त्र,-वदन**-वि० छः मुखोंवाला। पु० स्कंद। **-वर्ग**-पु० छः पदार्थों आदिका समाहार; षड्रिपु; पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और मन। **-विकार**-पु० शरीरधारी(जीव)के छः विकार-उत्पत्ति, वृद्धि, बाल्यावस्था, यौवन, वार्धक्य और मृत्यु। **-विध**-वि० छः प्रकारका।

षड्धा-अ० [सं०] छः प्रकारसे।

षण्-वि० [सं०] 'षष्'का समासगत रूप। **-मास**-पु० छः मास। **-मासिक**-वि० अर्धवार्षिक। **-मास्य**-पु० छः मासका समय। वि० छः मासका। **-मुख**-वि० छः मुखोंवाला। पु० स्कंद; एक बोधिसत्त्व।

षष्टि-स्त्री० [सं०] साठकी संख्या। वि० साठ।

षष्ट्यंशक-पु० [सं०] एक यंत्र जिससे नक्षत्रोंके सहारे जहाजकी स्थिति निर्धारित की जाती है।

षष्ठ-वि० [सं०] छठा।

षष्ठांश-पु० [सं०] छठा भाग, विशेषकर अन्नका वह छठा भाग जो राजस्वके रूपमें दिया जाता था।

षष्ठी-स्त्री० [सं०] पक्षकी छठी तिथि; संतानोत्पत्तिके दिनसे छठा दिन, छट्ठी; कात्यायनी (दुर्गाका एक नाम) जिनकी बच्चेके कल्याणके लिए छट्ठीको पूजा होती है; संबंधकारककी विभक्ति। **-तत्पुरुष**-पु० तत्पुरुष समासका एक भेद जिसमें पूर्वपद संबंधकारककी विभक्ति षष्ठीमें होता है (जैसे-विद्यालय)।

षाड्गुण्य-पु० [सं०] षड्गुणसमुच्चय, छः गुणोंका समूह; राजनीतिमें व्यवहार्थ छः अंग, कर्म, दे० 'षड्गुण'; किसी संख्याको छःसे गुणा करनेपर प्राप्त गुणनफल।

षाण्मातुर-पु० [सं०] कार्त्तिकेय (जिनका पालन छः माताओंने किया था)।

षाण्मासिक-वि० [सं०] छमाही, छः महीनेका। पु० मृत्युके छः महीने पश्चात् होनेवाला मृतक-श्राद्ध।

षोडंत-वि० [सं०] छः दाँतोंवाला।

षोडन्(त्)-वि० [सं०] छः दाँतोंवाला। पु० छः दाँतों-

वाला बैल ।

षोडश–वि० [सं०] सोलहवाँ ।

षोडश(न्)–वि० [सं०] सोलह । पु० सोलहकी संख्या । **–कल**–वि० सोलह अंशोंवाला । **–कला**–स्त्री० अमृता, मानदा, पूषा आदि चंद्रमाकी सोलह कलाएँ (अंश) जो यथातिथि घटती-बढ़ती रहती हैं । **–दान**–पु० श्राद्ध आदिके अवसरपर देय भूमि, आसन, गाय, सोना आदि सोलह वस्तुएँ । **–पूजन**–पु० दे० 'षोडशोपचार' । **–मातृका**–स्त्री० गौरी, पद्मा, शची आदि सोलह देवियाँ । **–विध**–वि० सोलह प्रकारका । **–शृंगार**–पु० साज-सज्जाके सोलह अंग, संपूर्ण शृंगार (उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सवाँरना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भालपर तिलक बनाना, ठोड़ीपर तिल बनाना, मेंहदी रचना, सुगंधित द्रव्योंका प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, ओठ रँगना और मिस्सी लगाना) । **–संस्कार**–पु० शास्त्रविहित गर्भाधानसे लेकर मृत्युतकके सोलह संस्कार ।

षोडशी–स्त्री० [सं०] दस या बारह महाविद्याओंमेंसे एक; सोलह वर्षकी स्त्री, तरुणी; प्रेतकर्मविशेष ।

षोडशोपचार–पु० [सं०] देवपूजनके सोलह अंग (आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना) ।

ष्ठीवन–पु० [सं०] थूकनेकी क्रिया; थूक, लार ।

ष्ठीवित–वि० [सं०] थूका हुआ ।

स

स–देवनागरी वर्णमालाका बत्तीसवाँ व्यंजन, ऊष्म वर्ण ।

सँइतना†–स० क्रि० जोड़ना, बटोरना; सुरक्षित रखना ।

सँउपना*–स० क्रि० दे० 'सौंपना' ।

संक*–स्त्री० शंका, डर; भ्रम ।

संकट–वि० [सं०] संकीर्ण, तंग । पु० [सं०] तंग रास्ता; दर्रा; कठिनाई; खतरा; विपत्ति, मुसीबत; भीड़ । **–नाशन**–वि० कष्ट दूर करनेवाला । **–मुख**–वि० जिसका मुँह तंग हो । **–मोचन**–वि० संकटसे छुड़ानेवाला । पु० हनूमान्‌की काशीस्थ एक मूर्त्ति । **–संकेत**–पु० (एस. ओ. एस., 'एसोएस') डूबते हुए जहाज, ध्वस्त होते हुए विमान आदिसे भयंकर संकटकी सूचना देनेके लिए बेतारके तार द्वारा प्रेरित संदेश ।

संकटापन्न–वि० [सं०] विपद्ग्रस्त, कष्टमें पड़ा हुआ ।

संकत*–पु० दे० 'संकेत' ।

संकना*–अ० क्रि० डरना; शंका, संदेह करना ।

संकर–पु० [सं०] मिश्रण; योग, एकमें मिलना; दो जातियोंका मिश्रण; अंतर्जातीय संबंधसे उत्पन्न संतान; एक ही वाक्यमें दो या अधिक अलंकारोंका मिश्रण (सा०) ।

संकर*–पु० दे० 'शंकर' । [स्त्री० 'संकरी' ।] **–घरनी***–स्त्री० पार्वती ।

सँकरा†–वि० तंग, संकीर्ण । पु० संकट; एक राग । स्त्री० सिकड़ी, जंजीर । मु० **–(रे)में पड़ना**–कष्टमें पड़ना ।

सँकराना–स० क्रि० तंग, संकुचित, संकीर्ण करना ।

संकरीकरण–पु० [सं०] मिलाना; जातिका अवैध मिश्रण ।

संकर्षण–पु० [सं०] खींचकर निकालना; पास लाना; जोतना; बलराम । **–विद्या**–स्त्री० एक स्त्रीके पेटसे बच्चा निकालकर दूसरी स्त्रीके पेटमें रखनेकी विद्या ।

संकल–पु०[सं०] एकत्र करना; राशि, ढेर; योग । † स्त्री० साँकल, जंजीर ।

संकलन–पु०[सं०]एकत्रीकरण; योग, जोड़; अच्छे विषयोंको चुनकर एकत्र करना; इस ढंगसे बना हुआ ग्रंथ ।

संकलना–स्त्री० [सं०] एकत्र करना; मिलाना, जोड़ना ।

संकलप*–पु० दे० 'संकल्प' ।

संकलपना*–स० क्रि० संकल्प करना, निश्चय करना; दानादि धार्मिक कृत्य करनेका निश्चय या प्रतिज्ञा करना । अ० क्रि० इरादा करना ।

संकलित–वि० [सं०] एकत्रीकृत; संगृहीत; मिलाया हुआ; गृहीत; जोड़ा हुआ (गणित) ।

संकल्प–पु० [सं०] इच्छा; निश्चय; नीयत; विचार, कल्पना; कोई कृत्य करनेकी प्रतिज्ञा; सती होनेकी इच्छा; मंत्रोच्चारणके साथ धार्मिक कृत्य करनेकी प्रतिज्ञा करना ।

संकल्पक–वि०[सं०]संकल्प करनेवाला;विचार करनेवाला ।

संकल्पित–वि०[सं०] जिसका संकल्प, निश्चय किया गया हो; जिसका विचार या कल्पना की गयी हो ।

संकष्ट–पु० दे० 'संकट' ।

संका*–स्त्री० शंका, डर ।

सँकाना*–अ० क्रि० शंकित होना, डरना ।

संकारना*–स० क्रि० संकेत, इशारा करना ।

संकाश–वि० [सं०] तुल्य, समान (समासमें); निकटवर्ती । अ० निकट, पास ।

संकास*–वि० दे० 'संकाश' ।

संकीर्ण–वि० [सं०] तंग, संकुचित; छोटा ।

संकीर्णता–स्त्री० [सं०] तंगी; क्षुद्रता ।

संकीर्तन–पु० [सं०] सम्यक् वर्णन; प्रशंसा; स्तुति; देवताके नामका जप ।

संकु–पु० [सं०] छिद्र (?); * बर्छी ।

संकुचन–पु० [सं०] सिकुड़ना, संकुचित होना ।

सँकुचना–अ० क्रि० दे० 'सकुचना' ।

संकुचित–वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ; तंग; बंद; नत ।

संकुपित–वि० [सं०] क्रुद्ध; उत्तेजित ।

संकुल–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ; भरा हुआ, घना; संकीर्ण; असंगत; जटिल । पु० भीड़, मजमा, झुंड; युद्ध; असंगत वाक्य ।

संकुलता–स्त्री०[सं०] परिपूर्णता;गड़बड़;जटिलता;घनापन ।

संकुलित–वि० [सं०] भरा हुआ, पूरित (समासमें); सिकोड़ा हुआ; अस्त-व्यस्त; घबड़ाया हुआ ।

संकेंद्रण–पु० [सं०] (कॉनसेंट्रेशन) केंद्रकी ओर ले जाना, जमाना, एक स्थान या केंद्रपर लगाना, इकट्ठा करना

(ध्यान, शक्ति, फौजें)। **–सिद्धांत**–पु० (थिअरी ऑफ कॉनसेंट्रेशन) मार्क्सवादियोंका यह सिद्धांत कि बड़े-बड़े पूँजीपति अंततोगत्वा प्रायः सभी छोटे पूँजीपतियोंको या तो निकाल बाहर करेंगे या अपनेमें मिला लेंगे जिससे सारी पूँजी थोड़ेसे शक्तिशाली गुटों, न्यासों (ट्रस्टों) या बैंकोंमें संकेंद्रित हो जायगी।

संकेंद्रित प्रयास–पु० [सं०] (कॉनसेंट्रेटेड एफर्ट) वह प्रयास जिसमें सारी शक्ति एक ही स्थान या कामपर लगा दी गयी हो।

संकेत–पु० [सं०] अभिप्रायसूचक अंगचेष्टा, इंगित, इशारा; चिह्न; ठहराव; प्रेमी-प्रेमिकाका आपसका ठहराव; प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका निर्दिष्ट स्थान; शर्त। **–गृह, –निकेतन**–पु० प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका स्थान। **–चिह्न, रूप**–पु० (ऍब्रीवियेशन) नाम, पद आदिके सूचक वे चिह्न या लघु रूप जो संकेतकी तरह प्रयुक्त होते हैं (जैसे अ० क्रि०–अकर्मक क्रिया)। **–भूमि**–स्त्री०, **–स्थान**–पु० दे० 'संकेत-गृह'।

सँकेत†–पु० संकटकी स्थिति, कठिनाई।

संकेतना*–स० क्रि० संकट, विपत्तिमें डालना। अ० क्रि० संकुचित होना,–'कँवल सँकेता, कुमदिनि फूलीं'–प०।

संकेताक्षर–पु० [सं०] (साइफर) संकेत रूपमें लिखे गये अक्षर, गुप्त लिपि।

संकेतित–वि० [सं०] ठहराया हुआ, निश्चित; इशारा किया हुआ।

सँकेलना†–स० क्रि० समेटना, बटोरना; खींचकर इकट्ठा करना।

संकोच–पु० [सं०] सिकुड़ना; बंद होना, मुँदना (नेत्रका); हलकी लज्जा; संक्षेप; सूखना (जलाशयका); कमी; हिचक; एक अलंकार। **–कारी(रिन्)**–वि० विनम्र, शरमानेवाला। **–रेखा**–स्त्री० झुर्री, सिलवट।

संकोचन–पु० [सं०] सिकुड़ना; एक पहाड़; (कॉम्प्रेशन) दबाव डालकर किसी वस्तुका आयतन कम करना।

संकोचना*–स० क्रि० संकुचित करना। अ० क्रि० संकोच करना।

संकोचनी–स्त्री० [सं०] लजालू।

संकोची(चिन्)–वि० [सं०] संकुचित होनेवाला (पुष्पादि); सिकुड़नेवाला; लजानेवाला; विनम्र।

संकोपना*–अ० क्रि० क्रोध करना।

संक्रम–पु० [सं०] साथ जाना; गमन; भ्रमण; प्रगति; संक्रमण; सूर्य या नक्षत्रकी वीथी; तंग रास्ता, दुर्गम मार्ग; कठिनाईसे आगे बढ़ सकना; पुल, सेतु; घाट; उद्देश्य-प्राप्तिका साधन; तारेका टूटना; स्कंदका एक अनुचर।

संक्रमण–पु० [सं०] गमन; भ्रमण; एक स्थिति या अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश; राश्यंतरमें सूर्यका प्रवेश, संक्रांति; हस्तांतरण; मृत्यु। **–काल**–पु० (ट्रांजीशनल पीरियड) एक स्थिति या युगसे निकलकर पूर्ण रूपसे दूसरी स्थिति या युगमें संक्रमित (प्रविष्ट) हो जानेके बीचका समय। **–नाश**–पु० (डिसइनफेक्शन) रोगके संक्रमणसे बचाव या मुक्ति। **–नाशक**–वि० (डिसइनफेक्टेंट) जो रोग फैलनेवाले कीटाणुओंका नाश कर सके, रोगका संक्रमण न होने दे (दवा इ०)।

संक्रमित–वि० [सं०] पहुँचाया, प्रवेश कराया हुआ; हस्तांतरित। **–माल**–पु० [हिं०] (गुड्स इन ट्रांजिट) वह माल जो किसी स्थानसे रवाना कर दिया गया हो, पर अभी उद्दिष्ट स्थानतक पहुँचा न हो–बीचमें, यात्रामार्गमें ही हो।

संक्रांत–वि० [सं०] गत, गुजरा हुआ; प्रविष्ट; स्थानांतरित; प्राप्त; गृहीत; प्रतिफलित, प्रतिबिंबित; चित्रित।

संक्रांति–स्त्री० [सं०] साथ गमन; मिलन; एक बिंदुसे दूसरे बिंदुतकका मार्ग; सूर्य या किसी ग्रहका एक राशिसे दूसरी राशिमें प्रवेश करना; हस्तांतरण; प्रतिबिंब; अंकन। **–काल**–पु० (ट्रांजीशनल पीरियड) दे० 'संक्रमणकाल'।

संक्रामक–वि० [सं०] एकसे दूसरेमें संक्रमण करनेवाला; छूत आदिसे फैलनेवाला (रोग)।

संक्रामित–वि० [सं०] हस्तांतरित किया हुआ; दूसरेको बतलाया हुआ।

संक्रामी(मिन्)–वि० [सं०] संक्रमण करनेवाला; फैलनेवाला; संपर्क द्वारा फैलनेवाला; हस्तांतरित होनेवाला।

संक्रोन*–पु० संक्रांति, संक्रमण–'काहू पुन्यन पाइयत बैस संधि संक्रोन'–वि०।

संक्रोश–पु० [सं०] साथ-साथ चिल्लाना, जोरसे शब्द करना; क्रोधमें चिल्लाना।

संक्षिप्त–वि० [सं०] फेंका हुआ; छोटा किया हुआ; घटाया हुआ; खुलासा; छोटा। **–लिपि**–स्त्री० लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें विशेष ध्वनियोंके लिए छोटे-छोटे चिह्न निश्चित रहते हैं (शार्टहैंड राइटिंग)। **–विधिक विचार**–पु० (समरी ट्रायल) न्यायालय द्वारा किसी वाद या मामलेपर विधिक दृष्टिसे संक्षेपमें किया गया विचार।

संक्षिप्तीकरण–पु० [सं०] किसी कथा, विषय आदिको संक्षिप्त करना, संक्षेपण।

संक्षेप–पु० [सं०] फेंकना; हरण; घटाना; छोटा रूप; सारांश।

संक्षेपक, संक्षेप्ता(प्तृ)–वि० [सं०] फेंकनेवाला; संक्षिप्त या छोटा रूप देनेवाला।

संक्षेपण–पु० [सं०] फेंकना; (एब्रिजमेंट) संक्षिप्त करना।

संक्षेपतः(तस्)–अ० [सं०] संक्षेपमें, थोड़ेमें।

संख–पु० दे० 'शंख'। **–नारी**–स्त्री० एक छंद।

संखिया–पु० एक बहुत तेज विष जो एक उपधातु है; इस उपधातुका भस्म।

संख्यक–वि० [सं०] संख्यावाला (समासांतमें)।

संख्या–स्त्री० [सं०] गणना, गिनती; अंक; तादाद; लिखे गये पत्रों या सामयिक पत्रादिपर दिया गया क्रमांक; नाम। **–लिपि**–स्त्री० लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें अक्षरोंकी जगह अंक रखते हैं। **–वाचक**–वि० जिससे संख्याका बोध हो, संख्याका सूचक।

संख्यातीत–वि० [सं०] अगणित, बेशुमार।

संख्यान–पु० [सं०] गणना, शुमार; राशि, संख्या; माप।

संख्येय–वि० [सं०] गणनीय, जो गिना जा सके; विचारणीय।

संग–अ० साथ, सहित। पु० [सं०] मिलन; साथ होना; योग; दो नदियोंका मिलना, संगम; संसर्ग; स्पर्श,

संपर्क; मैत्री; साथ; आसक्ति। **–त्याग**–पु० विरक्ति। **–साथ**–पु० [हिं०] मैत्री, दोस्ती। मु०**–करना**–साथ होना; दोस्ती करना।**–छोड़ना**–साथ छोड़ना। **–जाना**–साथ जाना, हमराह होना। **–लग लेना**–साथ हो लेना; ख्वाहमख्वाह साथ हो जाना, पीछा करना।**–लेना**–साथ ले चलना।**–होना**–साथ होना, हमराह होना।

संग–पु० [फा०] पत्थर, चट्टान।**–अंदाज**–पु० ढेलवाँस; किलेकी दीवारमें शत्रुपर पत्थर फेंकनेके लिए बने हुए छेद; इन छेदोंसे शत्रुपर पत्थर फेंकनेवाला। **–चक़माक़**–पु० एक तरहका पत्थर जिसपर चोट लगनेसे आग निकलती है।**–तराश**–पु० पत्थर गढ़नेवाला।**–दिल**–वि० कठोरहृदय, निर्दय। **–दिली**–स्त्री० बेरहमी, निर्दयता। **–पुश्त**–पु० कछुवा। **–मरमर(मर्मर)**–पु० एक तरहका सफेद पत्थर जो इमारतमें लगाया जाता है।**–मुरदार**–पु० मुरदासंख।**–मूसा**–पु० एक तरहका काला चिकना पत्थर। **–रेजा**–पु० पत्थरकी गिट्टी। **–साज़**–पु० छापेका पत्थर दुरुस्त करनेवाला। **–सार**–पु० एक तरहकी सजा, पत्थर मारकर मार डालना। वि० पत्थर मारनेवाला। **–सारी**–स्त्री० दे० 'संगसार'। **–सुर्ख़**–पु० एक तरहका लाल पत्थर। **–सुलेमानी**–पु० एक तरहका पत्थर जो काला और सफेद होता है। **–(गे)आतिश**–पु० चकमाक। **–पा**–पु० पैरका मैल साफ करनेका पत्थर, झाँवाँ। **–मज़ार**–पु० कब्रमें लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृत व्यक्तिका नाम आदि अंकित हो। **–राह**–पु० रास्तेपर पड़ा हुआ पत्थर जिससे आने-जानेवालोंको कष्ट हो।

संगठन–पु० दे० 'संघटन'।

संगठित–वि० दे० 'संघटित'।

संगणना–स्त्री० [सं०] (कांप्यूटेशन) गिनकर या हिसाब लगाकर देखना, आँकड़ों आदिके आधारपर ठीक-ठीक अंदाज़ लगाना।

संगत–वि० [सं०] मिला हुआ, युक्त; एकत्रीभूत; ठीक तरहसे बैठने, खप जानेवाला, उपयुक्त, मौजूँ। स्त्री० मेल; मिलन; संबंध, संपर्क; साथ; मैत्री; गाने आदिके साथ बाजा बजाना (हिं०); उदासी साधुओंका मठ (हिं०)। मु०**–करना**–गानेवालेके साथ कोई वाद्य बजाना।

संगतरा–पु० [फा०] संतरा।

संगतार्थ–वि० [सं०] उपयुक्त अर्थवाला।

संगति–स्त्री०[सं०] मेल; मिलन, योग; संघ; साथ; संपर्क, संसर्ग; मिलनके लिए जाना; सामंजस्य; उपयुक्तता, मौजूँ होना।

संगतिया, संगती–पु० साथी; गाने आदिके साथ साज बजानेवाला।

संगम–पु० [सं०] मिलन, संयोग; साथ, संगति; संपर्क, स्पर्श; मैथुन; नदियोंका मिलन; उपयुक्तता; युद्ध, मुकाबला; (ग्रहोंका) योग।

संगमित–वि० [सं०] मिलाया, संयुक्त किया हुआ।

संगर–पु० [फा०] खेत या बागके चारों ओर बनायी जानेवाली काँटोंकी बाड़; दीवार जो लड़ाईके मौकेपर बनायी जाती है; मोरचा; खाई; [सं०] संघर्ष, युद्ध; ठहराव, वादा; अंगीकार; सौदा; ज्ञान; भक्षण; विष; आपत्, संकट; शमीका फल।

संगराम*–पु० दे० 'संग्राम'।

संगाती–पु० साथ रहनेवाला, साथी, संगी; दोस्त।

संगायन–पु० [सं०] साथ-साथ गाना या स्तुति करना।

संगिनी–स्त्री० [सं०] साथ रहनेवाली, साथिन; पत्नी।

संगिस्तान–पु० [फा०] पथरीला प्रदेश।

संगी–वि० [फा०] पत्थरका, संगीन। पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।

संगी(गिन्)–वि० [सं०] साथ रहनेवाला; संपर्कमें आनेवाला; आसक्त; कामुक। पु० साथी; दोस्त।

संगीत–वि० [सं०] साथ मिलकर गाया हुआ। पु० वह गाना जिसे कई आदमी मिलकर गायें; वाद्योंके साथ गाया जानेवाला गाना; नृत्य, वाद्य और गीतका समाहार; नृत्य और वाद्यके साथ गानेकी कला। **–ज्ञ**–पु० संगीत विद्याका ज्ञाता, गायक। **–वेश्म(न्)**–पु०,**–शाला**–स्त्री० संगीत-भवन। **–विद्या**–स्त्री० वह विद्या जिसमें संगीत-संबंधी विषयोंका निरूपण हो। **–शास्त्र**–पु० संगीतविद्या।

संगीन–वि० [फा०] पत्थरका; पत्थरका बना हुआ; सख्त, कठोर; भारी; भीषण; मजबूत। स्त्री०, पु० एक तरहका नोकदार हथियार जो बंदूकपर चढ़ाया जाता है।**–जुर्म**–पु० ऐसा अपराध जो कठिन दंडके योग्य हो। **–दिल**–वि० दे० 'संगदिल'। **–दिली**–स्त्री० बेरहमी।

संगीनी–स्त्री० [फा०] मजबूती; ठोसपन।

संगुप्त–वि० [सं०] भली-भाँति छिपाया हुआ; सुरक्षित।

संगृहीत–वि० [सं०] संग्रह किया हुआ, एकत्र किया हुआ; जकड़ा हुआ; संयत किया हुआ, शासित; प्राप्त, स्वीकार किया हुआ।

संगृहीता–पु० दे० 'संग्रहीता'।

संगोपन–पु० [सं०] छिपाना।

संग्रंथन–पु० [सं०] एक साथ बाँधना; संघटन।

संग्रह–पु० [सं०] पकड़ना; ग्रहण करना; जमा करना; एक साथ इकट्ठी की हुई वस्तुएँ; शासन, नियंत्रण करना; राशीकरण; (ग्रंथादिका) संकलन; जोड़; सूची; भांडार-गृह; मंत्र-बलसे प्रक्षिप्त अस्त्र लौटा लेना; कोष्ठबद्धता; विवाह; **–कार**–पु० संकलनकर्ता।

संग्रहण–पु० [सं०] ग्रहण करनेकी क्रिया; प्राप्त करना; संकलन करना; एकत्र करना; (रत्नादि) जड़ना।

संग्रहणी–स्त्री० [सं०] अतीसारका एक रूप जिसमें खाना बिना पचे ही मलके रूपमें निकल आता है।

संग्रहणीय–वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; (औषधके रूपमें) सेवन करने योग्य; एकत्र करने योग्य।

संग्रहना*–स० क्रि० संग्रह, संचय करना; अपनाना।

संग्रहाध्यक्ष, संग्रहालयाध्यक्ष–पु० [मं०] (क्यूरेटर) किसी संग्रहालय (म्यूजियम)की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला मुख्याधिकारी।

संग्रहालय–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विशेष प्रकारकी वस्तुओंका संग्रह किया गया हो।

संग्रही(हिन्)–पु० [सं०] संग्रह, जमा करनेवाला।

संग्रहीता(तृ)–वि० [सं०] एकत्र, संग्रह करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; अपनानेवाला ।

संग्राम–पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई । **–जित्**–वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला । **–तूर्य**–पु० युद्धपटह । **–पटह**–पु० युद्धमें बजाया जानेवाला नगाड़ा । **–भूमि**–स्त्री० समरभूमि, युद्धक्षेत्र । **–मृत्यु**–स्त्री० वीर-गति ।

संग्रामांगण–पु० [सं०] युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान ।

संग्रामार्थी (र्थिन्)–वि० [सं०] युद्धेच्छु ।

संग्राहक–पु० [सं०] संग्रह, जमा करनेवाला; संकलनकर्ता । वि० एकत्र करनेवाला; कब्ज करनेवाला, काबिज ।

संग्राही (हिन्)–वि० [सं०] एकत्र करनेवाला; कब्ज करनेवाला; अपने साथ करने, अपनानेवाला ।

संग्राह्य–वि० [सं०] संग्रह, एकत्र करने योग्य; रोकने योग्य; अपनाने योग्य ।

संघ–पु० [सं०] समूह, झुंड, दल, मंडली; विशेष उद्देश्यसे एक साथ रहनेवाले व्यक्तियोंका समूह; समाज; विशेष-उद्देश्यकी पूर्तिके लिए बना हुआ श्रमिकों आदिका संघटन; बौद्ध भिक्षुओं आदिका समूह; प्राचीन भारतमें प्रचलित एक प्रकारका प्रजातंत्र; मठ । **–चारी (रिन्)**–वि० झुंडमें चलनेवाला, बहुमतके पीछे चलनेवाला । पु० मछली । **–जीवी (विन्)**–वि० दल बनाकर रहनेवाला । **–न्यायालय**–पु० (फेडेरल कोर्ट) संघराज्यका सर्वोच्च न्यायालय । **–पति**–पु० दलनायक । **–भेद**–पु० संघमें फूट डालना जो पाँच अक्षम्य अपराधोंमें गिना जाता है (बौद्ध) । **–भेदक**–वि० संघमें फूट डालनेवाला (बौद्ध) । **–वृत्ति**–स्त्री० साथ मिलनेकी वृत्ति, दलमें रहने या काम करनेका भाव । **–समाजवाद**–पु० (सिंडिकेलिज्म) वह क्रांतिकारी श्रमिक आंदोलन जो व्यवसायसंघों (ट्रेड यूनियन्स)को ही सामाजिक क्रांतिका तथा भावी समाजका आधार मानता है (हड़ताल कराना इसका मुख्य साधन और लक्ष्य है); राज्यसंस्था समाप्त कर व्यवसायसंघोंकी सत्ता स्थापित करना ।

संघट–वि०[सं०] राशीकृत, ढेर लगाया हुआ । पु० राशि; * झगड़ा; संयोग; संघट्ट ।

संघटन–पु० निर्माण, रचना, व्यवस्थित करनेका कार्य, गठन; संग्रंथन; कार्यविशेषकी सिद्धिके लिए निर्मित कोई संस्था; [सं०] संयोग, मेल ।

संघटना–स्त्री० [सं०] मिलाना, संयुक्त करना; स्वरों या शब्दोंका संयोग ।

संघटित–वि० कार्यविशेषके लिए परस्पर संबद्ध; व्यवस्थित; [सं०] एकत्रीभूत; वादित (संगीत) ।

संघट्ट–पु० [सं०] संघर्ष; मुठभेड़, भिड़ंत; स्पर्द्धा; आघात, चोट; संयोग; दूतीकी सहायतासे नायक-नायिकाका मिलन; आलिंगन ।

संघट्टन–पु०, **संघट्टना**–स्त्री० [सं०] संघर्षण; टक्कर; घनिष्ठ संपर्क; दो पहलवानोंकी भिड़ंत, गुत्थमगुत्था ।

संघट्टित–वि० [सं०] घर्षित; माँड़ा, गूँधा हुआ; एकत्रीकृत; परिचालित ।

संघती†–पु० साथी ।

संघरना*–स०क्रि० संहार, नाश करना; वध करना ।

संघर्ष–पु० [सं०] दो चीजोंका आपसमें रगड़ खाना; होड़, स्पर्द्धा; द्वेष; कामोत्तेजना; धीरे-धीरे लुढ़कना, रेंगना, संसर्प । **–शाली (लिन्)**–वि० स्पर्द्धा, द्वेष करनेवाला । **–समिति**–स्त्री० (कमिटी ऑफ ऐक्शन) स्वाधीनता या प्राप्य अधिकारों, माँगों आदिकी पूर्तिके लिए चलाये जानेवाले आंदोलन या संघर्षका संचालन करनेवाली समिति, आंदोलनसमिति ।

संघर्षण–पु० [सं०] रगड़ खाने या रगड़नेकी क्रिया; रगड़ने, मलनेके काम आनेवाली वस्तु, उबटन आदि ।

संघर्षी (र्षिन्)–वि० [सं०] रगड़नेवाला; स्पर्द्धा, द्वेष करनेवाला ।

संघात–पु० [सं०] आघात; वध; बंद करना (द्वार); युद्ध; ठोस, घनीभूत करना; संग, साथ–'धुआँ उठै मुख साँस सँघाता'–प०; संयोग; समूह; झुंड; राशि; साथ यात्रा करनेवालोंका दल, कारवाँ । **–चारी (रिन्)**–वि० दलमें रहनेवाला ।

संघाती–पु० साथ देनेवाला, साथी; दोस्त ।

संघाती (तिन्)–वि० [सं०] घातक, प्राणहारी ।

सँघाती*–पु० दे० 'संघाती' ।

संघार*–पु० दे० 'संहार' ।

संघारना*–स० क्रि० संहार, नाश करना; वध करना ।

संघाराम–पु०[सं०]बौद्ध भिक्षुओंके रहनेका स्थान, विहार ।

संघीय संविधान–पु० [स०] (फेडेरल कांस्टिट्यूशन) उन राज्योंके संघका संविधान जो आंतरिक मामलोंमें तो प्रायः स्वतंत्र हों, किंतु रक्षा एवं परराष्ट्र-नीतिके संबंधमें केंद्रीय या संघसरकारके अधीन हों ।

संघोष–पु० [सं०] जोरका शब्द; घोष, ग्वालोंकी बस्ती ।

संच–*पु० एकत्र करना; रक्षण, देखभाल; कुशल ।

संचक–पु० संचय करनेवाला ।

संचना*–स०क्रि०जमा करना, बटोरना; देखभाल करना ।

संचय–पु० [सं०] एकत्र करना; भांडार, राशि, ढेर ।

संचयन–पु० [सं०] एकत्र करनेकी क्रिया, ढेर लगाना ।

संचयिक–पु० [सं०] संग्रह करनेवाला ।

संचयी (यिन्)–वि० [सं०] संचय करनेवाला; कंजूस, कृपण; धनवान् ।

संचरण–पु० [सं०] गमन; गति; पार करना; फैलाना ।

संचरना*–अ० क्रि० चलना, फिरना; फैलना; पहुँचना । स० क्रि० चलाना ।

संचान–पु० [सं०] श्येन, बाज, शिकरा ।

संचार–पु० [सं०] गमन; भ्रमण; सूर्यका दूसरी राशिमें प्रवेश; रोग-संक्रमण । **–जीवी (विन्)**–वि० खानाबदोश; शरणापन्न । **–पथ**–पु० टहलनेका स्थान । **–साधन**–पु० (मीन्स ऑफ कम्यूनिकेशन) दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियोंके बीच संबंध स्थापित करनेके साधन–डाक, तार, समुद्री तार, रेडियो आदि (वार्तावहनके साधन) ।

संचारक–वि० [सं०] ले जाने, फैलानेवाला ।

संचारण–पु०[सं०] नजदीक लाना या ले जाना; मिलाना, जोड़ना; संवाद कहना ।

संचारना*–स० क्रि० फैलाना; प्रवेश कराना; उत्पन्न

करना; प्रयोगमें लाना ।

संचारिका–स्त्री० [सं०] कुटनी; दूती ।

संचारित–वि० [सं०] गतिमान् किया हुआ, चलाया हुआ; उकसाया हुआ, जिसे बढ़ावा दिया गया हो; संक्रमित किया हुआ (रोग) ।

संचारी(रिन्)–वि० [सं०] गतिशील, चल; भ्रमणकारी; एकसे दूसरेमें संक्रमण करनेवाला, संक्रामक (रोग); प्रवेश करनेवाला; साथ आने, मिलनेवाला; अस्थिर । पु० एक प्रकारके भाव जो तैंतीस होते हैं और स्थायी भावको पुष्ट कर विलीन हो जाते हैं, व्यभिचारी भाव (सा०) ।

संचालक–पु० [सं०] संचालन करनेवाला, गति प्रदान करनेवाला; कारखाने आदिके ठीकसे जारी रहनेका प्रबंध करनेवाला ।

संचालन–पु० [सं०] चलाना, गति देना । **–व्यय**–पु० (वर्किंग एक्सपेंसेज़) किसी कारखाने, संस्था, प्रमंडल आदिके चलानेका व्यय ।

संचित–वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ । **–कर्म(न्)**–पु० पूर्वजन्मके वे कर्म जिनका फलभोग नहीं हुआ है । **–कोष**–पु० (प्रॉविडेंट फंड) दे० 'भविष्यनिधि' ।

संचिति–स्त्री० [सं०] एकत्र करने, जमा करनेकी क्रिया ।

संचेय–वि० [सं०] संचय करने योग्य ।

संजम*–पु० दे० 'संयम' ।

संजमी–वि० दे० 'संयमी' ।

संजय–पु० [सं०] एक प्रकारका व्यूह; धृतराष्ट्रका एक सारथि जो उन्हें युद्धका समाचार सुनाया करता था ।

संजात–वि० [सं०] उत्पन्न; व्यक्त; व्यतीत (समय आदि) । **–कोप**–पु० क्रुद्ध । **–कौतुक**–वि० चकित । **–निर्वेद** वि० विरक्त ।

संजाफ़–पु० [फ़ा०] हाशिया, गोट; एक तरहका कपड़ा जिसकी गोट लगाते हैं ।

संजाफ़ी–वि० [फ़ा०] हाशियादार; जिसमें किनारी लगी हो ।

संजाव*–पु० एक तरहका घोड़ा ।

संजीदगी–स्त्री० [फ़ा०] संजीदा होना; गांभीर्य; समझदारी, शिष्टता ।

संजीदा–वि० [फ़ा०] तुला हुआ; गांभीर्ययुक्त; शिष्ट, समझदार ।

संजीवन–पु० [सं०] साथ रहना; पुनर्जीवित करना; एक नरक । वि० जीवनशक्ति देनेवाला ।

संजीवनी–स्त्री० [सं०] मृतको जीवित करनेवाली एक कल्पित औषधि । वि० स्त्री० जीवन देनेवाली । **–विद्या**–स्त्री० मृत व्यक्तिको जिलानेकी एक कल्पित विद्या ।

संजीवित–वि० [सं०] पुनर्जीवित किया हुआ ।

संजुक्त–वि० दे० 'संयुक्त' ।

संजुग*–पु० युद्ध, संग्राम ।

संजुत*–वि० मिला हुआ, सहित ।

सँजूत*–वि० तैयार, सन्नद्ध,–'होहु सँजूत बहुरि नहिं अवना'–प०; सावधान ।

सँजोइ*–अ० संग, साथमें । पू०क्रि० इकट्ठा कर, जुटाकर ।

सँजोइल*–वि० इकट्ठा किया हुआ; सज्जित ।

सँजोउ*–पु० संयोग; तैयारी–'अबही बेगहिं करो सँजोऊ' –प०; सामग्री ।

संजोग*–पु० दे० 'संयोग' ।

संजोगिता–स्त्री० जयचंदकी कन्या जिसका पृथ्वीराजने हरण किया था ।

संजोगिनी*–स्त्री० दे० 'संयोगिनी' ।

संजोगी*–वि० दे० 'संयोगी' । पु० वह पुरुष जो अपनी प्रियाके साथ हो ।

सँजोना–स० क्रि० सजाना; एकत्र करना; संचित करना; पूरा करना ।

सँजोवना*–स० क्रि० दे० 'सँजोना' ।

सँजोवल*–वि० सजा हुआ; सन्नद्ध; सैन्यादिविशिष्ट ।

संज्ञा–स्त्री० [सं०] बोध, ज्ञान; होश; प्रज्ञा; संकेत, इंगित; नाम; वह शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु आदिका नाम हो (व्या०); गायत्रीमंत्र; सूर्यकी स्त्री जो विश्वकर्माकी पुत्री थी । **–करण**–पु० नाम रखना । **–पुत्री**–स्त्री० यमुना । **–सुत**–पु० शनि । **–हीन**–वि० बेहोश ।

संज्ञात–वि० [सं०] अच्छी तरह जाना, समझा हुआ ।

संज्ञान–पु० [सं०] बोध, ज्ञान; सम्यक् अनुभूति ।

सँझला†–वि० संध्या-संबंधी; मँझलेसे छोटा (भाई, पुत्र) ।

सँझवाती–स्त्री० विवाहादिमें शामको गाया जानेवाला गीत; शामको जलाया जानेवाला दीप ।

संझा*–स्त्री० संध्या ।

सँझोखा*–पु० संध्याकाल ।

सँझोखें*–अ० संध्याकालमें ।

संड–पु० पंड, साँड़ । **–मुसंड**–वि० मोटा-ताजा ।

सँड़सा–पु० दो छोटे छड़ोंका बना हुआ एक कैंचीनुमा औजार जो गरम चीजें आदि पकड़नेके काम आता है ।

सँड़सी–स्त्री० एक तरहका छोटा सँड़सा जिससे गरम बटलोई आदि पकड़कर उतारते हैं ।

संडा–वि० मोटा-ताजा, मजबूत ।

संडास–पु० कुएँ जैसा बना हुआ पाखाना जिसे मेहतर साफ नहीं करता, मल जमा होनेपर सोडा आदि डाल देते हैं; ऊपरकी मंजिलपर इसी तरहका बना हुआ पाखाना जिसमें मल नीचे गिरता और मेहतरसे साफ कराया जाता है ।

सँड़ासी–स्त्री० सँड़सी (प०) ।

संत–पु० ['सत्'का प्रथमा बहुवचनांत रूप] साधु, धर्मात्मा, विरक्त, महात्मा; गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला साधु । **–समागम**–पु० संतोंका सत्संग । **–स्थान**–पु० साधुओंका स्थान, मठ ।

संतत–* स्त्री० संतति, संतान । वि० [सं०] अविच्छिन्न; बराबर रहनेवाला । अ० हमेशा; लगातार, निरंतर । **–ज्वर**–पु० बराबर रहनेवाला ज्वर, विषम ज्वर ।

संतति–स्त्री० [सं०] फैलाव, विस्तार; नैरंतर्य; अविच्छिन्नता; कुल; संतान । **–निरोध**–पु० प्राकृतिक (संयम आदि) अथवा कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान न होने देना ।

संतपन–पु० [सं०] बहुत तपना; तप्त करना; कष्ट देना, उत्पीड़न ।

संतप्त–वि० [सं०] तप्त, जलता हुआ; जला हुआ, झुलसा

हुआ; पिघला हुआ; कष्टग्रस्त, पीड़ित; क्लांत।

संतरण-वि० [सं०] पार करनेवाला; उद्धारक। पु० पार करनेकी क्रिया; (लांचिंग) तैयार हो जानेपर किसी पोत आदिको पहली बार पानीमें उतारना, तैराना। **-शील हिमशिला**-स्त्री० (आइसबर्ग) पानीमें उतराती हुई वर्फकी चट्टान।

संतरा-पु० एक तरहका मीठा नीबू, बड़ी नारंगी।

संतरी-पु० [अं० 'सेंट्री'] प्रहरी, पहरेदार; द्वारपाल।

संतर्जन-पु० [सं०] धमकाना; डाँट-डपट करना।

संतान-स्त्री० [सं०] वंश; संतति, औलाद; शाखा-प्रशाखा। **-कर्म(न्)**-पु० संतानोत्पादन, प्रजनन। **-निग्रह**-पु० दे० 'संतति-निरोध'।

संताप-पु० [सं०] तेज गरमी; अग्नि; कष्ट, पीड़ा; ग्लानि, पापादिसे उत्पन्न अनुताप। **-कर,-कारी(रिन्)**-वि० कष्ट देनेवाला। **-हर,-हारक**-वि० ताप दूर करनेवाला; आराम देनेवाला; सांत्वना देनेवाला।

संतापन-पु० [सं०] ताप देना, तप्त करना, जलाना; कष्ट देना; कामके पाँच बाणोंमेंसे एक।

संतापना*-स० क्रि० पीड़ा, कष्ट देना।

संतापित-वि० [सं०] तपाया हुआ, झुलसा हुआ; पीड़ित।

संती-* अ० द्वारा; † बदलेमें।

संतुलन-पु० [सं०] आपेक्षिक ताल बराबर होना या रखना; दो देशों, पक्षोंका बल बराबर रखना या होना; आय तथा व्ययमें, आयात-निर्यातमें सामंजस्य रखना।

संतुलित-वि० [सं०] जिन (दो देशों, राशियों, वस्तुओं आदि) का भार, बल, फैलाव आदि बराबर रखा गया हो, जिनमें संतुलन हो।

संतुष्ट-वि० [सं०] जिसे संतोष हो गया हो; तृप्त;··· से प्रसन्न; राजी, रजामंद।

संतुष्टि-स्त्री० [सं०] संतुष्ट होनेका भाव; तृप्ति, इच्छापूर्ति।

संतोख*-पु० दे० 'संतोष'।

संतोखी*-वि० दे० 'संतोषी'।

संतोष-पु० [सं०] जो मिले उसीसे प्रसन्न रहनेका भाव; तृप्ति; प्रसन्नता।

संतोषक-वि० [सं०] संतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला।

संतोषण-पु० [सं०] संतुष्ट, प्रसन्न करनेकी क्रिया।

संतोषना*-स० क्रि० संतुष्ट करना। अ० क्रि० संतुष्ट होना।

संतोषित-वि० [सं०] संतुष्ट, प्रसन्न किया हुआ; * संतुष्ट।

संतोषी(षिन्)-वि० [सं०] संतुष्ट रहनेवाला; सब्र करनेवाला।

संत्यक्त-वि० [सं०] परित्यक्त;···से रहित, वंचित।

संत्यजन-पु० [सं०] परित्याग।

संत्रस्त-वि० [सं०] बहुत डरा हुआ, भयसे काँपता हुआ।

संत्रास-पु० [सं०] भय, आतंक; अहितकी संभावनासे उत्पन्न भय (सा०)।

संत्रासित-वि० [सं०] डरवाया हुआ।

संत्री-पु० दे० 'संतरी'।

संथा-स्त्री० पाठ, सबक।

संदंश-पु० [सं०] सँड़सी; चिमटी।

संदंशिका-स्त्री० [सं०] सँड़सी; चिमटी।

संद-†पु० छेद, बिल; * दबाव।

संदर्भ-पु० [सं०] एक साथ बाँधना; व्यवस्थित करना; साहित्यिक रचना, निबंध आदि; संबंध-निर्वाह; लेख-पुस्तक आदिमें आया हुआ प्रसंग जिसका उल्लेख हो; अर्थ-प्रकाशक ग्रंथ। **-विरुद्ध**-वि० जिसमें संबंधका निर्वाह न हुआ हो।

संदर्शन-पु० [सं०] अच्छी तरह देखना; टकटकी लगाकर देखना; परस्पर मिलन; पर्यवेक्षण, विचार।

संदल-पु० [अ०] चंदन। **-का बुरादा**-चंदनका चूरा।

संदली-वि० [अ०] चंदनका; चंदनके रंगका। स्त्री० चौकी; ऊँची तिपाई जिसपर चढ़कर दीवारपर चूना आदि करते हैं। पु० हलका पीला रंग।

संदि*-स्त्री० मेल, संधि।

संदिग्ध-वि० [सं०] जिसमें संदेह हो, अनिश्चित; जो खतरेसे खाली न हो (पोतादि); जिसपर संदेह हो। **-जनसूची**-स्त्री० (ब्लैक लिस्ट) दे० 'दुर्वृत्तसूची'। **-बुद्धि,-मति**-वि० शक्की, जो हर बातमें संदेह किया करे।

संदिग्धता, संदिग्धत्व-पु० [सं०] संदिग्ध होना; एक दोष जो वाक्यका अर्थ स्पष्ट न होनेपर माना जाता है।

संदिग्धार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ संदेहयुक्त हो।

संदीपक-वि० [सं०] उद्दीपक।

संदीपन-पु० [सं०] उद्दीपन; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; एक ऋषि, कृष्णके गुरु।

संदूक़-पु० [अ०] लकड़ी या लोहेका बकस जो कपड़े आदि रखनेके काम आता है; वह लंबा बकस जिसमें मुरदे दफन करनेके लिए ले जाते हैं, ताबूत।

संदूक़चा-पु० छोटा संदूक।

संदूक़ची-स्त्री० छोटा संदूकचा।

संदूकड़ी-स्त्री० छोटा संदूक।

संदूख*-पु० दे० 'संदूक'।

संदूर*-पु० दे० 'सिंदूर'।

संदेश-पु० [सं०] संवाद; आदेश; किसीके पास भेजवाया गया महत्त्वपूर्ण आदेश या समाचार; एक मिठाई। **-वाहक,-हर,-हारक,-हारी(रिन्)**-पु० संवाद-वाहक।

संदेशा-पु० संवाद, खबर।

संदेस-पु० दे० 'संदेश'।

सँदेसा-पु० दे० 'संदेशा'।

संदेह-पु० [सं०] शक, अनिश्चय; खतरा; एक अर्थालंकार, जहाँ किसी वस्तुके संबंधमें, सादृश्यके कारण, अन्य वस्तु होनेका संदेह हो और वह दूर न होकर बना रहे। **-वाद**-पु० (स्केप्टिसिज्म) सत्यके संबंधमें कोई स्थिर विश्वास या सिद्धांतपर न पहुँचनेकी स्थिति, प्रवृत्ति, संशयवाद। **-वादी(दिन्)**-वि० (स्केप्टिक) वस्तुतः सत्य या तत्त्व क्या है, इस संबंधमें जो कोई निश्चय न कर सका हो, जिसके मनमें बराबर संदेह बना रहता हो (ऐसा दार्शनिक); अविश्वासी, संशयात्मा।

संदेहात्मक-वि० [सं०] संदेहपूर्ण, संदिग्ध।

संदोह-पु० [सं०] दुहना, साथ दुहना; सारा दूध (सारे

झुंडका); राशि; प्राचुर्य ।

संधना*–अ० क्रि० मिलना, संयुक्त होना ।

संधाता–पु०[सं०] (वेल्डर) लोहे आदिके पदार्थों, टुकड़ोंको जोड़नेवाला; विष्णु ।

संधान–पु० [सं०] मिलाना, जोड़ना; योग; संघटन; सुधार; निशाना लगाना; लक्ष्य–'एक पंथ और एक संधाना'–प०; संधि; ध्यान; दिशा; सँभालना; मदिरा चुलाना; पीनेकी इच्छा उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीजें; अचार आदि; सीमा; घावका भरना; मैत्री, दोस्ती; अनुभूति; काँजी; काँसा; अन्वेषण ।

संधानना*†–स० क्रि० बाण चढ़ाना, निशाना लगाना; चलानेके लिए कोई अस्त्र ठीक करना ।

संधाना–पु० अचार–'पुनि संधाने आये बसौंधे'–प० ।

संधानित–वि० [सं०] जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ; बद्ध ।

संधि–स्त्री० [सं०] संयोग, मेल, संबंध; समझौता; सुलह; दोस्ती; शरीरका जोड़; सुरंग, छेद, दरार; सेंध; विभाग, पार्थक्य; दो शब्दोंके साथ-साथ आनेपर एकके अंतिम और दूसरेके प्रथम वर्णके मिलनेसे होनेवाला विकार, संहिता; अवकाश, विराम; परिवर्तनकाल; शुभ अवसर; नाटककी पाँचों अवस्थाओंको मिलानेवाले स्थल, मुखसंधि आदि; तारुण्य, कैशोर आदि अवस्थाओंका योग। **–कुशल** –वि० मैत्री-स्थापनमें चतुर । **–चोर,–चौर,–तस्कर**–पु० सेंध लगाकर चोरी करनेवाला । **–भंग**–पु० किसी जोड़का संबंध छूट जाना; सुलहकी शर्तें तोड़ देना ।**–विग्रहक,–विग्रहिक**–पु० संधि और युद्धका निर्णायक मंत्री । **–विच्छेद**–पु० समझौता तोड़ना या टूटना; व्याकरणमें संधि-गत शब्दोंको अलग-अलग करना ।

संधेय–वि० [सं०] जोड़ने, मिलाने योग्य; शांत करने योग्य; जिससे संधि की जा सके ।

संध्या–स्त्री० [सं०] योग, मेल; सुबह, दुपहरी या शामका वह समय जब दिनके भागोंका मेल होता है; इन समयोंपर किये जानेवाले धार्मिक कृत्य; दो युगोंके बीचका समय; साँझ, शाम; ब्रह्माकी पुत्री; सूर्यकी स्त्री ।**–कार्य**–पु० संध्योपासन ।**–राग**–पु० शामकी लालिमा; शामको गाया जानेवाला राग (शामकल्याण) । **–वंदन**–पु० संध्योपासन ।

संध्योपासन–पु० [सं०] संध्याके समय की जानेवाली पूजा आदि ।

संन्यास–पु० [सं०] दे० 'सन्न्यास' ।

संन्यासी(सिन्)–वि०, पु० [सं०] दे० 'सन्न्यासी' ।

संपति*–स्त्री० दे० 'संपत्ति' ।

संपत्ति–स्त्री० [सं०] समृद्धि, संपन्न स्थिति; ऐश्वर्य; धन, जायदाद; सिद्धि; बहुतायत, प्राचुर्य । **–दान**–पु० धन-संपत्तिका दान; भूमिहीनोंको भूमि दिलानेके आंदोलनकी सफलताके लिए धन-संपत्तिका दान देकर सहयोग करना ।

संपदा–स्त्री० धन-संपत्ति, ऐश्वर्य ।

संपद्–स्त्री० [सं०] सफलता, सिद्धि; संपत्ति, धन;समृद्धि; सौभाग्य; बाहुल्य;कोष,खजाना;सद्गुणोंकी वृद्धि;सौंदर्य।

संपन्न–वि० [सं०] उन्नतिशील; धनी; कृतकाम; साधित, पूरा किया हुआ; पूर्ण; प्राप्त, लब्ध;···से युक्त ।

संपरीक्षण–पु० [सं०] (स्क्रूटिनी) किसी लेख, मनोनयनपत्र, कार्य आदिकी सूक्ष्म जाँच कर यह देखना कि वह ठीक और नियमानुरूप है या नहीं ।

संपर्क–पु० [सं०] संयोग, लगाव; स्पर्श; मैथुन । **–पदाधिकारी(रिन्)**–पु० (लियेजाँ आफिसर) भिन्न देशकी सेनाओंमें या सरकार और प्रजाजनोंमें परस्पर संबंध स्थापित करनेवाला पदाधिकारी, ग्रथनाधिकारी ।

संपा–स्त्री० [सं०] बिजली (दास०); साथ पान करना ।

संपात–पु० [सं०] एक साथ गिरना या मिलना; भिड़ंत, टक्कर; वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरीसे मिले या काटकर आगे बढ़ जाय; संगम ।

संपाती (तिन्)–वि० [सं०] एक संग कूदने, झपटनेवाला; एक साथ उड़नेवाला; उड़नेमें होड़ करनेवाला । पु० एक पौराणिक पक्षी, संपाति; एक राक्षस ।

संपादक–वि० [सं०] प्रस्तुत करनेवाला; पूरा करनेवाला । पु० वह व्यक्ति जो दूसरेकी रचना शुद्ध कर प्रकाशनके योग्य बनाता या सामयिक, दैनिक आदि पत्रका संपादन-संचालन करता है ।

संपादकीय–वि० [सं०] संपादक-संबंधी । पु० पत्रका वह लेख, टिप्पणी आदिवाला अंश जो स्वयं संपादकका लिखा हो ।

संपादन–पु०[सं०] पूरा करना; प्रस्तुत करना; क्रम आदि ठीक करना; ग्रंथादि शुद्ध कर प्रकाशनके योग्य बनाना; सामयिक या दैनिक पत्र विषय आदिकी दृष्टिसे ठीक करना और उसका संचालन करना । **–कला**–स्त्री० पत्र, पुस्तकें आदि संपादित करनेकी विशेष कला ।

संपादना–स० क्रि० पूरा करना, ठीक करना–'विविध अन्न संपति संपादहु'–रघु० ।

संपादित–वि० [सं०] निष्पन्न, पूरा किया हुआ; प्रस्तुत, तैयार किया हुआ; ठीक कर प्रकाशनके योग्य बनाया हुआ (ग्रंथादि) ।

संपालक–पु० [सं०] (कस्टोडियन) दे० 'अभिरक्षक' ।

संपीडन–पु० [सं०] दबाना; निचोड़ना; प्रेषण; क्षुब्ध करना; कष्ट देना ।

संपुट–पु० [सं०] कटोरे जैसी कोई वस्तु; दोना; अंजली; रसादि फूँकनेका मिट्टीका बना हुआ पात्र; रत्न-मंजूषा; गोलार्द्ध; * घुँघरू–'नाचे तदपि घरीक लौं, संपुट पगन बजाइ'–छत्र० । * वि० बंद–'घोष सरोज भये हैं संपुट दिनमणि ह्वै बिगसाओ'–भ्र० ।

संपुटी–स्त्री० प्याली, छोटी कटोरी या तश्तरी ।

संपुष्टि स्त्री०[सं०](कॉरोबोरेशन) किसीके कथन, वक्तव्यकी अन्य सूत्रोंसे पुष्टि हो जाना ।

संपूज्य–वि० [सं०] बहुत आदरणीय ।

संपूर्ण–वि० [सं०] पूरे तौरसे भरा हुआ, युक्त, भरा-पूरा; सारा; अत्यधिक, अतिशय; पूरा किया हुआ, संपन्न । पु० रागकी वह जाति जिसमें सातों स्वर लगते हैं ।

संपूर्णतः (तस्), संपूर्णतया–अ० [सं०] पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह ।

संपृक्त–वि० [सं०] मिश्रित, मिला हुआ; संयुक्त; संबद्ध । **–द्रावण**–पु० (सैचुरेटेड सॉल्यूशन) वह द्रावण या

घोल जिसमें, विशेष तापक्रम हो जानेपर, और घुल्य न घुल सके।

संपृष्ट–वि० [सं०] जिससे प्रश्न किये गये हों, पूछ-ताछ की गयी हो।

सँपेरा–पु० साँप पकड़ने, पालने या साँपका तमाशा दिखलानेवाला।

संपै*–स्त्री० दे० 'संपत्ति'–'संपै देखि न हर्षिये विपति देखि ना रोइ'–कबीर।

सँपोला–पु० साँपका बच्चा।

सँपोलिया–पु० साँप पकड़नेवाला।

संपोषित–वि०[सं०]भली भाँति पोषण किया हुआ,पालित।

संपोष्य–वि० [सं०] पालन-पोषणके योग्य।

संप्रज्ञात–वि० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ। **–योगी-(गिन्)**–पु० वह योगी जिसका विषय-बोध बना हुआ हो। **–समाधि**–स्त्री० समाधिका एक भेद जिसमें विषयोंका बोध बना रहता है।

संप्रति–अ० [सं०] अभी, इस काल, वर्तमान समयमें।

संप्रदान–पु० [सं०] देना, प्रदान करना, हस्तांतरित करना; ब्याह देना; दान; भेंट; चतुर्थ कारक (व्या०)।

संप्रदाय–पु० [सं०] परंपरागत विश्वास या प्रथा; विशेष धार्मिक मत; किसी मतके अनुयायियोंका समूह (कम्यूनिटी; स्कूल)। **–वाद**–पु० केवल अपने संप्रदायको ही विशेष महत्त्व देना और अन्य संप्रदायवालोंसे द्वेष करना। **–वादी(दिन्)**–पु० वह कट्टर विचारोंवाला व्यक्ति जो केवल अपने संप्रदायको श्रेष्ठता प्रदान करे तथा अन्य संप्रदायवालोंको हेय समझे (कम्यूनलिस्ट)।

संप्रसारण–पु० [सं०] विस्तार करना; य्, व्, र् ल्, का इ, उ, ऋ, ऌ में परिवर्तन (व्या०)।

संप्राप्त–वि० [सं०] अच्छी तरह प्राप्त; जिसने प्राप्त किया है, पहुँचा हुआ; प्रस्तुत (काल); उत्पन्न; घटित। **–यौवन**–वि० बालिग, युवा। **–विद्य**–वि० जिसने पूरी विद्या प्राप्त कर ली हो।

संप्रेक्षक–पु० [सं०] दर्शक।

संप्रेक्षण–पु० [सं०] भली भाँति देखना; निरीक्षण, जाँच करना।

संप्रेषण–पु०[सं०](ट्रांसमिशन) एक स्थान या एक व्यक्तिके पाससे दूसरे स्थान या व्यक्तिके पास (समाचार, रोगाणु, विचारादि) भेजना, पहुँचाना, स्थानांतरित करना।

संबंध–पु० [सं०] एक साथ बँधना या जुड़ना, मेल; साथ; रिश्ता, नाता; विवाह; मैत्री; छठा कारक (व्या०)। **–कारक**–पु० एक शब्दका दूसरेसे संबंध सूचित करनेवाला कारक, जैसे 'रामका पत्र'में 'रामका' संबंध कारकमें है।

संबंधातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकारका भेदविशेष, जहाँ असंबंधसे संबंध दिखलाकर अतिशयोक्ति की जाय।

संबंधी(धिन्)–वि० [सं०]…से संबद्ध; संबंध रखनेवाला; प्रसंग, प्रकरण, विषयका; जिसका विवाह आदिके कारण संबंध हो। पु० वह जिसके साथ विवाहके कारण संबंध हो; समधी; रिश्तेदार, नातेदार। **–शब्द**–पु० संबंध प्रकट करनेवाला शब्द।

संबत्*–पु० दे० 'संवत्'।

संबद्ध–वि० [सं०] साथ जुड़ा या बँधा हुआ; संलग्न; संबंधी, विषयक; अर्थ-संबंध रखनेवाला।

संबद्धीकरण–पु०[सं०] (एफिलियेशन) किसी एक परिवार या समाजका सदस्य बना लिया जाना; किसी विद्यालय या महाविद्यालयका संबंध विश्वविद्यालयसे हो जाना।

संबर–पु० [सं०] सेतु, पुल; एक तरहका हिरन।

संबरण*–पु० दे० 'संवरण'।

संबरना*–स० क्रि० रोकना, नियंत्रण करना।

संबल–पु० [सं०] जल; दे० 'शंबल'; सहारा।

संबाद*–पु० दे० 'संवाद'।

संबुक*–पु० घोंघा।

संबुद्ध–वि०[सं०] पूर्णतः जाग्रत्; ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्, पूर्णतः ज्ञात। पु० बुद्ध; जिन।

संबुद्धि–स्त्री० [सं०] पूर्ण-बोध या ज्ञान; पूरी चेतना।

संबोध–पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान, सम्यक् बोध; समझाना, बतलाना; ढाढ़स; भेजना; फेंकना; नाश, बरबादी।

संबोधन–पु० [सं०] जगाना; बतलाना, समझाना; संबोधित करना; संबोधन करनेमें प्रयुक्त की जानेवाली उपाधि; वह शब्द जिससे किसीको पुकारने या उससे कुछ कहनेकी बात सूचित हो, आठवाँ कारक (व्या०); आकाशभाषित (ना०)।

संबोधना*–स० क्रि० सांत्वना देना; समझाना।

संबोधित–वि० [सं०] चिताया हुआ; जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो; बोध कराया हुआ।

संबोध्य–वि० [सं०] जिसे बतलाया, समझाया जाय; जिसे संबोधित किया जाय।

संभर–वि०[सं०] भरण, पोषण करनेवाला; दे० 'संभार'।

संभरण–पु० [सं०] पालन, पोषण; साथ रखना; रचना। **–निधि**–स्त्री० (प्रॉविडेंट फंड) दे० 'भविष्यनिधि', सुविधायक कोष।

सँभरना*–अ० क्रि० दे० 'सँभलना'।

सँभलना–अ०क्रि० अपनी बिगड़ती हुई स्थिति ठीक कर लेना; रुकना, थमना; काबूमें रहना; सावधान होना; टिका रहना; स्वस्थ होना; चोट आदिसे बचाव करना।

संभव–पु० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; अस्तित्व; होना, घटित होना; उत्पत्ति और पोषण; कारण, मूल। वि० जिसकी सत्ता हो; जो सकता हो।

संभवतः(तस्)–अ० [सं०] संभव है, हो सकता है।

संभवना*–स० क्रि० पैदा करना, उत्पन्न करना। अ० क्रि० पैदा होना; हो सकना, संभव होना।

संभवनीय–वि० [सं०] मुमकिन, हो सकनेवाला।

संभार–पु० [सं०] इकट्ठा, एकत्र करना; तैयारी;–'भलो विचार कियो नरनायक करहु यज्ञ संभारा'–रघु०; साज-सामान, उपकरण; संपत्ति; पूर्णता; समूह; परिमाण; अतिशयता, आधिक्य; पालन-पोषण।

सँभार*–पु०, स्त्री० रोक-थाम; देख-भाल–'सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी काहे न करत सँभार'–सू०; पालन-पोषण; होश; तैयारी; संपत्ति; राशि, समूह।

सँभारना*–स० दे० 'सँभालना'; स्मरण करना–'यह मुनि बोली नारि कैकयी अपनो वचन सँभारो'–सू०, 'तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा'–रामा०।

सँभाल––स्त्री० देख-भाल; व्यवस्था, प्रबंध; चेत, होश; पोषणादिका भार।

सँभालना–स० क्रि० रोक-थाम करना; टेकना, सहारा देना; रक्षा करना; पालन करना; ग्रहण करना; काबूमें रखना; सहायता देना; प्रबंध करना; सहेजना; भार उठाना; अपनेको जब्त करना, संयत करना।

सँभाला–पु० मरनेके पहलेकी चेतनावस्था।

संभावना–स्त्री० [सं०] पूजा-सत्कार, आदर-भाव; हो सकना, मुमकिन होना; एक काव्यालंकार–जहाँ किसी एक बातके होनेपर दूसरीके होनेकी संभावना वर्णित की जाय।

संभावनीय–वि० [सं०] पूज्य, सम्मान्य; कल्पनाके योग्य; जिसकी संभावना हो, मुमकिन।

संभावित–वि० [सं०] सम्मानित, आदृत; स्वाभिमानी; प्रस्तुत किया हुआ; विचारित; कल्पित; मुमकिन।

संभावितव्य–वि० [सं०] दे० 'संभावनीय'।

संभाव्य–वि० [सं०] आदरणीय, सम्मान्य; विचारणीय; मुमकिन; उपयुक्त; योग्य।

संभाषण–पु० [सं०] बातचीत; कथोपकथन। **–निपुण**–वि० वार्तालाप करनेमें कुशल।

संभाषणीय–वि० [सं०] बातचीत करने योग्य।

संभाषी(षिन्)–वि० [सं०] बात कहनेवाला; वार्तालाप करनेवाला।

संभाष्य–वि० [सं०] बात करने योग्य।

संभीत–वि० [सं०] बहुत डरा हुआ।

संभु*–पु० दे० 'शंभु'।

संभुक्त–वि० [सं०] खाया हुआ; उपभोग किया हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ; अतिक्रांत।

संभूत–वि०[सं०] उत्पन्न;...से निर्मित, रचित;...से मिला हुआ, युक्त, संपन्न; उपयुक्त।

संभूय–अ० [सं०] साथ होकर या आपसमें मिलकर; साझेमें। **–समुत्थान**–पु० साझेका कारबार, कारबारमें साझेदारी।

संभृति–स्त्री० [सं०] संग्रह; राशि; समूह; साज-सामान, तैयारी; आधिक्य; पूर्णता; पालन-पोषण; रक्षा।

संभेद–पु० [सं०] टूटना; भिदना; ढीला होना; अलगाव; वियोग, पार्थक्य; फूट पैदा करना।

संभोग–पु० [सं०] उपभोग; किसी चीजमें आनंद लेना; रति, मैथुन; शृंगार रसका एक भेद, संयोग-शृंगार; उपयोग, कब्जा।

संभोगी(गिन्)–वि०[सं०] कामुक; उपभोग करनेवाला। पु० लंपट, कामी पुरुष।

संभोजन–पु० [सं०] बहुतोंके साथ खाना; भोज, दावत।

संभ्रम–पु० [सं०] चक्कर खाना; उतावली; जल्दबाजी; हलचल; घबड़ाहट; उत्साह; आदर,सम्मान; भूल, गलती; शोभा, सौंदर्य। * अ० उतावलीमें, शीघ्रतापूर्वक।

संभ्रांत–वि० [सं०] घबड़ाया हुआ; क्षुब्ध, उत्तेजित; तेज, त्वरामय, स्फूर्तियुक्त; समादृत, सम्मानित। पु० आदरणीय व्यक्ति।

संभ्रांति–स्त्री० [सं०] घबड़ाहट; उतावली; चकपकाहट।

संभ्राजना*–अ० क्रि० शोभित, शोभायमान होना।

संयत–वि० [सं०] रोका हुआ, दमित; संयमी, जितेंद्रिय; बद्ध, कैद किया हुआ; व्यवस्थित किया हुआ; उद्यत; सीमित। **–चेता(तस्)**,**–मना(नस्)**–वि० जिसका मन, चित्तवृत्ति नियंत्रित हो।

संयतात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] दे० 'संयतचेता'।

संयताहार–वि० [सं०] मिताहारी।

संयति–स्त्री० [सं०] तपश्चर्या, निरोध, संयमन।

संयम–पु० [सं०] रोक, निग्रह, नियंत्रण; दमन; इंद्रिय-निग्रह; बाँधना; बंद करना (नेत्र); ध्यान, धारणा और समाधि (योग); धार्मिक अनुष्ठान या व्रत; तपस्या; तपस्या आरंभ करनेके पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य; बुरी वस्तुओंसे परहेज।

संयमन–पु० [सं०] निग्रह, दमन; आत्मनिग्रह; बाँधना, जकड़ना; खींचना; कैद करना।

संयमित–वि० [सं०] नियंत्रित, रोका हुआ; दमन किया हुआ; बँधा हुआ; रोक रखा हुआ; धार्मिक प्रवृत्तिवाला।

संयमी(मिन्)–वि० [सं०] निग्रह, निरोध करनेवाला; आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय; बँधा हुआ।

संयुक्त–वि० [सं०] जुड़ा, मिला हुआ; संबद्ध; संबंधी; किसी कामको संयुक्त रूपसे करनेवाला (–संपादक); संपन्न, अन्वित, सहित। **–कुटुंब**,**–परिवार**–पु० वह कुटुंब जिसमें माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-भतीजे आदि मिलकर साथ-साथ रहते हों। **–निर्वाचकवर्ग**–पु० (जॉइंट इलेक्टरेट) निर्वाचकोंका वह समूह जिसमें सभी संप्रदायोंके लोग हों तथा जिन्हें असांप्रदायिकताके आधारपर ही मत देनेका अधिकार हो। **–राष्ट्रसंघ**–पु० (यूनाइटेड नेशन्स आरगेनिजेशन) अंतरराष्ट्रीय झगड़ों और समस्याओंपर विचार करनेवाली विश्वके बहुसंख्यक देशोंके आधिकारिक प्रतिनिधियोंकी संस्था। **–लेखा**–पु० [हिं०](जॉइंट एकाउंट) एकसे अधिक व्यक्तियोंके नाम संयुक्त रूपसे चलनेवाला हिसाब-किताब। **–सरकार**–स्त्री०[हिं०] (कोलीशन गवर्नमेंट) संकट या विशेष आवश्यकताकी स्थितिमें बनायी गयी दो या अधिक दलोंके सदस्योंकी सरकार। **–स्कंधप्रमंडल**–पु० (जॉइंट स्टॉक कंपनी) वह प्रमंडल जिसमें एकाधिक व्यक्तियोंकी साझेदारी हो।

संयोग–पु० [सं०] मिलन, मेल; घनिष्ठ संपर्क; मिश्रण; संबंध, वैशेषिकोंके चौबीस गुणोंमेंसे एक; विवाहजन्य संबंध; युक्त, अन्वित होना; मतैक्य; किसी कार्यमें संलग्न होना; दो आकाशीय पिंडोंका योग (ज्यो०); जोड़; योगफल; दो व्यक्तियों, बातों आदिका अचानक एक साथ होना, इत्तफाक; शृंगार रसका एक भेद, प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन (सा०)। **–शृंगार**–पु० शृंगार रसका वह भेद जिसमें प्रेमियोंके मिलन आदिसे संबद्ध बातोंका वर्णन होता है।

संयोगिनी–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतमके साथ हो, वियोगिनी न हो।

संयोगी(गिन्)–वि० [सं०] मिलनेवाला; जो संपर्क,

संसर्गमें हो। पु० वह प्रेमी जो प्रियासे युक्त हो।

संयोजक-पु० [सं०] जोड़ने, मिलानेवाला; शब्दों या वाक्योंको जोड़नेवाला शब्द; सभा, समिति आदिकी बैठकका आयोजन करनेवाला (कनवीनर)।

संयोजन-पु० [सं०] जोड़ने, मिलानेकी क्रिया; सभा-समितिकी बैठकका आयोजन। -करना-अ० क्रि० (टु कनवीन) सभा आदिका आयोजन करना, समाह्वान करना।

संयोज्य-वि० [सं०] जोड़ने, मिलाने योग्य।

संयोना*-स० क्रि० दे० 'सँजोना'।

संरक्षक-वि०, पु० [सं०] रक्षा करनेवाला, देख-भाल, निरीक्षण करनेवाला, पालक; आश्रयदाता।

संरक्षकता-स्त्री०[सं०] संरक्षक होनेका भाव;संरक्षकका कार्य।

संरक्षण-पु० [सं०] रक्षा करनेकी क्रिया, हिफाजत; विदेशी प्रतियोगिता आदिसे बचाना; देखरेख, निगरानी; निरीक्षण; प्रतिबंध। -कर-पु० (प्रोटेक्टिव ड्यूटी) अनुचित प्रतियोगितासे देशी उद्योग-व्यवसायकी रक्षा करनेके लिए बाहरी मालपर लगाया जानेवाला कर।

संरक्षणीय-वि० [सं०] रक्षा करने योग्य; जिसे (विदेशी प्रतियोगिता आदिसे) बचाना उचित हो; सुरक्षित रखने योग्य।

संरक्षित-वि० [सं०] सुरक्षित; अच्छी तरह बचाया हुआ; संरक्षणमें लिया हुआ। -राज्य-पु० (प्रोटेक्टरेट) वह छोटी तथा कमजोर रियासत जो सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी बड़े राज्यके अधीन या आश्रित हो।

संरक्ष्य-वि० [सं०] रक्षणके योग्य, देख-भाल करने योग्य।

सँरसी*-स्त्री० मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी।

संराधन-पु० [सं०] प्रसन्न करना; पूजा आदिके द्वारा तुष्ट करना; (रिकांसिलियेशन) रूठे या असंतुष्ट व्यक्तियोंको प्रसन्न करना, झगड़ेवाले दो पक्षोंमें पुनः अच्छे संबंध स्थापित कराना; ध्यान; नारा; ऊँची आवाज।

संराधित-वि० [सं०] पूजा आदिके द्वारा तुष्ट किया हुआ।

संराध्य-वि० [सं०] तुष्ट करने योग्य; ध्यान द्वारा प्राप्त करने योग्य।

संलग्न-वि० [सं०] सटा, लगा या चिपका हुआ; संबद्ध; लीन।

संलाप-पु० [सं०] वार्तालाप, गपशप; अपने आप बकना या बड़बड़ाना (पूर्वानुरागकी एक दशा); आवेगरहित कथोपकथन (ना०)।

संलिप्त-वि० [सं०] गर्क, लीन; प्रसक्त, लगा हुआ।

संलेख-पु० [सं०] (डीड) कोई विधिक कृत्य या उसका प्रामाणिक ब्यौरा देनेवाला लिखित पत्र, दे० 'विलेख'।

संवत्-पु० [सं०] सन्, वर्ष, साल (संवत्सरका लघु रूप); विक्रम-संवत्सर; वर्षगणनाका कोई वर्ष।

संवत्सर-पु० [सं०] सन्, वर्ष; विक्रम संवत्।

संवत्सरीय-वि० [सं०] हर साल होनेवाला, वार्षिक।

संवर*-स्त्री० स्मरण, स्मृति; हाल।

संवरण-पु० [सं०] रोकना, दबाना; निग्रह; ढकना, छिपाना; अंत करना; आवरण, ढक्कन; चुनना, पसंद करना; पति चुनना। -शील-वि० जिसमें रोकनेकी शक्ति हो। -शेष-पु० (क्लोजिंग बैलेंस) दिनका हिसाब बंद करते समय बची हुई रकम, रोकड़ बाकी। -स्कंध-पु० (क्लोजिंग स्टॉक) दिनका (या निर्धारित अवधिका) लेन-देन समाप्त होनेके बाद गोदाममें बचा हुआ माल।

सँवरना*-अ० क्रि० ठीक होना; सँभलना-'विधि अब सँवरी बात बिगारी'-रामा०; सज्जित होना। स० क्रि० स्मरण करना-'जौलहि जिऔं रातदिन सँवरौं ओहिकर नाँव'-प०।

सँवरिया*-वि० दे० 'साँवला'। पु० कृष्ण।

संवर्ती सूची-स्त्री० (कॉनकरेंट लिस्ट) वह सूची जो एक साथ कई स्थानोंसे प्रकाशित की जाय।

संवर्द्धक, संवर्धक-वि० [सं०] बढ़ानेवाला; आवभगत करनेवाला, अतिथिपरायण।

संवर्द्धन, संवर्धन-पु० [सं०] बढ़ना; पालन-पोषण करना; उन्नत करना।

संवल-पु० [सं०] दे० 'संबल'।

सँवाँ*-वि० सदृश, समान। -'…सोना सँवाँ सरीर' -कबीर।

संवाद-पु० [सं०] वार्तालाप; बहस, वाद-विवाद; संदेश, खबर; विवरण; सहमति, स्वीकृति। -दाता(तृ)-पु० समाचार भेजनेवाला। -विलोपन-पु० (ब्लैक आउट) सदाचारपत्रोंमें कुछ विशेष प्रकारके समाचारोंका जान-बूझकर छोड़ दिया जाना, बिलकुल ही प्रकाशित न किया जाना।

संवादन-पु० [सं०] राजी होना; वार्तालाप करना; एकराय होना; बजाना।

संवादी(दिन्)-वि० [सं०] बात करनेवाला; सहमत होनेवाला; सदृश, समान। पु० संगीतमें वह स्वर जिसका वादीसे मेल हो और जो राग-विशेषमें वादीसे कम पर अन्य स्वरोंसे अधिक महत्त्व रखता हो।

संवार*-पु० रचना; समाचार।

सँवारना-स० क्रि० सुसज्जित करना,सजाना; ठीक करना, तरतीबसे रखना; सँभालना।

संवारित-वि० [सं०] हटाया हुआ; वारित; ढका, छिपाया हुआ।

संवार्य-वि० [सं०] हटाने, दूर रखने योग्य; मना करने योग्य; ढकने, छिपाने योग्य।

संवावदूक-वि०[सं०]सहमत होनेवाला, राजी होनेवाला।

संवास-पु० [सं०] साथ बसना; मिलना-जुलना; बस्ती; सभा, खेल आदिका सार्वजनिक स्थान; सुगंध।

संवासित-वि० [सं०] सुगंधित बनाया हुआ।

संवाहक-पु० [सं०] मुक्की लगानेवाला, बदन दबानेवाला नौकर; ले जानेवाला। वि० गति प्रदान करनेवाला, चलानेवाला।

संवाहन-पु० [सं०] ले जाना, ढोना; बदन दबाना।

संवित्-स्त्री० [सं०] दे० 'संविद्'। -पत्र-पु० संधिपत्र।

संविद-वि० [सं०] चेतन, सज्ञान। पु० करार, ठहराव।

संविदा-स्त्री० [सं०] (कंट्रैक्ट) कुछ निश्चित शर्तोंपर दो या दोसे अधिक पक्षोंके बीच होनेवाला समझौता; ठहराव, करार।

संविदात–वि० [सं०] जाननेवाला, समझदार; सामंजस्य-पूर्ण।

संविद्–स्त्री० [सं०] प्रज्ञा; चेतना; अनुभूति; बोध, ज्ञान; ठहराव; स्वीकृति; युद्ध, लड़ाई; नाम, संज्ञा; संकेत;तोषण; सहानुभूति; वार्तालाप; भाँग; समाधि; संकेतस्थल, मिलन-स्थान; योजना; वृत्तांत, हाल; संपत्ति।

संविधान–पु० [सं०] व्यवस्था, प्रबंध, आयोजन; संपादन; रचना; योजना; (कांस्टिट्यूशन) वह विधान तथा मौलिक सिद्धांतोंका समूह जिसके अनुसार किसी देश या राज्य या संस्थाका संघटन, संचालन आदि होता है। **–सभा**–स्त्री० (कांस्टिटुएंट असेम्बली) किसी देशका संविधान तैयार करनेवाली सभा।

संविधि–स्त्री०[सं०] (स्टैट्यूट) विधानसभा द्वारा स्वीकृत वह लिखित विधान जो स्थायी विधि(कानून)के रूपमें हो।

संविभाजन–पु०[सं०] (एपोर्शनमेंट) लोगोंको देने, बाँटने आदिकी दृष्टिसे किसी वस्तुके अलग-अलग अंश या टुकड़े करना; दोष या दायित्व आदिका संश्लिष्ट व्यक्तियोंमें उचित रूपसे विभाजन करना।

संवृत–वि०[सं०] ढका हुआ, छिपा हुआ; गुप्त; घिरा हुआ; रक्षित;…से युक्त; अलग रखा हुआ; दबाया हुआ; रुद्ध।

संवृद्ध–वि० [सं०] पूरा बढ़ा हुआ; उन्नति करता हुआ; जो बढ़कर बड़ा, लंबा, ऊँचा हो गया हो।

संवृद्धि–स्त्री० [सं०] बढ़ती, अभ्युदय; शक्ति।

संवेग–पु० [सं०] तीव्र उत्तेजना, क्षोभ; भय; तीव्र वेग; तीव्रता; जोर; उग्रता, प्रचंडता; शीघ्रता, आतुरता।

संवेदन–पु० [सं०] दे० 'संवेदना'। **–वाद**–पु० (सेनसेशनलिज्म) यह सिद्धांत या मत कि हमें समस्त ज्ञानकी प्राप्ति संवेदनसे ही होती है।

संवेदना–स्त्री० [सं०] ज्ञान; अनुभूति; जताना, सूचित करना; प्रकट करना।

संवेदनीय–वि० [सं०] अनुभव करने योग्य; बोध, ज्ञान कराने योग्य।

संवेदित–वि० [सं०] अनुभव किया हुआ; बोध कराया हुआ, जताया हुआ।

संवेष्टक–पु०[सं०] (पैकर) वह व्यक्ति जो पुस्तकें, दवाएँ या अन्य माल कागज, दफ्ती, बोरे आदिमें लपेटकर या संदूकमें रखकर अन्यत्र भेजनेके लिए प्रस्तुत करे।

संवेष्टन–पु० [सं०] ढकना; लपेटना; फेरना; लपेटनेका कपड़ा, वेठन। **–व्यय**–पु० (पैकिंग चार्जेज) बाहर भेजनेके लिए माल किसी डिब्बे, बोरे, थैले आदिमें बंद करनेके कारण होनेवाला व्यय।

संवेष्टिका–स्त्री० [सं०] (पैकेट) किसी वस्तुका छोटा बंडल, लकड़ी,दफ्ती आदिके डिब्बों आदिमें बंद किया हुआ माल।

संवेष्टित–वि० [सं०] (एनक्लोज्ड) जो किसी अन्य कागज, पत्रादिके साथ भीतर रख दिया गया हो।

संशय–पु० [सं०] अनिश्चय, हिचक; संदेह; खतरा, संकट, कठिनाई।

संशयात्मक–वि० [सं०] संदेहपूर्ण, अनिश्चित।

संशयात्मा(त्मन्)–वि०, पु० [सं०] शक्की, अविश्वासी, संदेहवादी।

संशयालु–वि० [सं०] संदेहशील।

संशयित–वि० [सं०] संशयमें पड़ा हुआ; संदिग्ध; जो निरापद् न हो।

संशयिता(तृ)–पु० [सं०] अविश्वासी, संशय करनेवाला।

संशयी(यिन्)–वि० [सं०] संशय, संदेह करनेवाला।

संशयोच्छेदी(दिन्)–वि० [सं०] संदेह दूर करनेवाला।

संशयोपमा–स्त्री० [सं०] उपमाका एक प्रकार जिसमें संदेहके रूपमें सादृश्यका कथन हो।

संशीति–स्त्री० [सं०] संदेह, अनिश्चय।

संशीलन–पु० [सं०] नियमित रूपसे अभ्यास करना; किसी कामको आदतन् करना; संसर्ग।

संशुद्ध–वि० [सं०] पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, विशुद्ध; चमकाया, पालिश किया हुआ; जुर्मसे बरी किया हुआ; जिसने प्रायश्चित्त आदिके द्वारा अपनेको निर्दोष बना लिया है; परीक्षित।

संशुद्धि–स्त्री० [सं०] पूरी सफाई; शुद्धीकरण; सुधार।

संशोधक–वि०[सं०] सुधारनेवाला; परिष्कार करनेवाला।

संशोधन–पु० [सं०] दोष या त्रुटि ठीक करना; शुद्धीकरण; अदायगी; सुधारना; संस्कार करना।

संशोधनीय–वि० [सं०] दे० 'संशोध्य'।

संशोधित–वि० [सं०] ठीक किया हुआ; सुधारा हुआ।

संशोधी विधेयक–पु० (एमेंडिंग बिल) किसी अधिनियम आदिमें संशोधन या सुधार करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला विधेयक।

संशोध्य–वि० [सं०] सुधारने, साफ करने योग्य; जिसे सुधारा, साफ किया जाय; चुकाने योग्य।

संश्रय–पु० [सं०] संयोग, मेल; संपर्क, संबंध; सहारा लेना, आश्रय ग्रहण करना; पनाह।

संश्रयण–पु० [सं०] शरण लेना, सहारा लेना।

संश्रयी(यिन्)–वि० [सं०] सहारा, शरण लेनेवाला।

संश्रित–वि० [सं०] लगा हुआ, संयुक्त; किसीके सहारे टिका हुआ, परावलंबी; शरणागत; आश्रित।

संश्लिष्ट–वि० [सं०] आलिंगित; मिला हुआ; जुड़ा हुआ; मिश्रित; संलग्न; संबद्ध; अस्पष्ट।

संश्लेष–पु० [सं०] संयोग; संबंध; संधि, जोड़; आलिंगन; बंधन, तसमा।

संश्लेषण–पु० [सं०] जुटाना, मिलाना; संलग्न करना, लगाना; संबद्ध करना; विभिन्न कारणों या परिणामोंपर विचारकर संबंध दिखलाना, मिलान करना (सिनथेसिस)।

संश्लेषित–वि० [सं०] जोड़ा, मिलाया हुआ; संबद्ध किया हुआ; आलिंगित।

संस–*पु० दे० 'संशय'; † बरकत।

संसइ*–पु० दे० 'संशय'।

संसक्त–वि० [सं०] लगा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध; प्रवृत्त, संलग्न, लीन; अनुरक्त; आसन्न, निकटवर्ती। **–चेता(तस्),–मना(नस्)**–वि० जिसका मन किसी विषयपर जमा हुआ हो।

संसक्ति–स्त्री० [सं०] लगाव, घनिष्ठ संबंध; घनिष्ठता, मेल-जोल; आसक्ति; प्रवृत्ति।

संसज्जन–पु० [सं०] (मोबिलाइज़ेशन) युद्धके लिए (सेनाका) पूर्णतः तैयार या शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित किया जाना।

संसज्जित–वि० [सं०] (मोबिलाइज़्ड) युद्धके लिए प्रस्तुत या तैयार की गयी (सेना)।

संसत्, संसद्–स्त्री० [सं०] सभा; न्यायालय; न्याय, धर्मकी सभा; (पार्लिमेंट) किसी देश या राज्यकी जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंकी वह सर्वोच्च (केंद्रीय) विधानसभा जिसका काम शासन-संबंधी कार्योंमें सहायता देना, आयव्ययक स्वीकार करना, विधान बनाना, उनमें संशोधन करना आदि हो (साधारणतया इसमें दो सदन होते हैं, जैसे ब्रिटेनमें कामंस सभा तथा सरदार सभा और भारतमें लोकसभा तथा राज्यसभा)।

संसय–पु० दे० 'संशय'।

संसरण–पु० [सं०] गमन, भ्रमण; जन्म और पुनर्जन्म, पार्थिव जीवन; राजमार्ग।

संसर्ग–पु० [सं०] साथ रहनेसे होनेवाला संबंध; संपर्क; साथ; मिलन; सहवास; वह बिंदु जहाँ दो रेखाएँ कटती हों। **–ज**–वि० संपर्कसे उत्पन्न। **–दोष**–पु० संगतिसे उत्पन्न बुराई।

संसा–*पु० दे० 'संशय'; † सँड़सा।

संसार–पु० [सं०] संसृति, जन्म-मरण; जगत्, दुनिया; मायाजाल, लौकिक प्रपंच; मर्त्यलोक; गृहस्थी। **–चक्र**–पु० भवचक्र, संसृति। **–बंधन**–पु० सांसारिक बंधन। **–यात्रा**–स्त्री० संसारमें रहना, जीवन बिताना; जिंदगी। **–सुख**–पु० भौतिक सुख।

संसारी(रिन्)–वि० [सं०] लौकिक; भौतिक; दुनियादार; दुनियामें रहनेवाला; व्यवहार-कुशल। पु० संसारी मायामें लिप्त जीव या व्यक्ति।

संसिक्त–वि० [सं०] तर किया हुआ, सींचा हुआ।

संसिद्ध–वि० [सं०] अच्छी तरह निष्पन्न किया हुआ; पककर तैयार (भोजन); उद्यत, तैयार; संतुष्ट; चतुर, कुशल; जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो, मुक्त।

संसिद्धि–स्त्री० [सं०] कार्यका सम्यक् संपादन, सफलता; मोक्ष, अंतिम फल; निश्चित मत; पककर तैयार होना।

संसूचित–वि० [सं०] प्रकट किया हुआ; दिखलाया हुआ; डाँटा-फटकारा हुआ; भली भाँति सूचित कराया हुआ।

संसृति–स्त्री० [सं०] आवागमन; संसार।

संसृष्ट–वि० [सं०] सहजात, एक साथ उत्पन्न (जैसे पशु-शावक); मिला हुआ, संयुक्त; मिश्रित; अंतर्भूत, सम्मिलित।

संसृष्टि–स्त्री० [सं०] साथ-साथ होनेवाली उत्पत्ति; संयोग, मेल; मेल-जोल; एकत्रीकरण; निर्माण, रचना; साझेदारी; एक परिवारमें रहना; राशि, समूह; एक ही वाक्यमें दो या अधिक अलंकारोंका इस तरह प्रयुक्त होना कि दोनोंका रूप पृथक्-पृथक् दिखाई दे।

संसेवित–वि० [सं०] जिसकी भली भाँति सेवा की गयी हो; अच्छी तरह व्यवहारमें लाया हुआ।

संसौ*–पु० श्वासा, प्राण (बि०)।

संस्करण–पु० [सं०] क्रमबद्ध करना; शुद्ध करना, परिष्कृत करना; पुस्तकादिका एक बारका मुद्रण।

संस्कर्ता(र्तृ)–पु० [सं०] शुद्ध करनेवाला; संस्कार करनेवाला।

संस्कार–पु० [सं०] सुधारना; शुद्धि, सफाई; धातुकी चीजें माँजकर चमकाना; शब्दों, वाक्यों आदिकी शुद्धता; पवित्रीकरण; पापादिका प्रक्षालन करनेवाले यज्ञादि कृत्य; द्विजातियोंके शास्त्रविहित कृत्य (जो मनुके अनुसार बारह और कुछ लोगोंके अनुसार सोलह हैं); अंत्येष्टि क्रिया; शुद्ध करनेवाला कोई कृत्य; स्मरण-शक्ति; मनपर पड़ी हुई छाप; पूर्वजन्मके कृत्योंकी वासना; बाह्य जगत्-विषयक कल्पना, भ्रांति-मूलक विश्वास; धारणा। **–कर्ता (र्तृ)**–पु० संस्कार करनेवाला ब्राह्मण। **–ज**–वि० संस्कारसे उत्पन्न। **–पूत**–वि० संस्कार द्वारा विशुद्ध किया हुआ; शिक्षा आदिके द्वारा परिष्कृत। **–रहित,–वर्जित**–वि० दे० 'संस्कार-हीन'। **–हीन**–वि० जिसके संस्कार न हुए हों। पु० द्विजातिका वह व्यक्ति जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, व्रात्य।

संस्कारक–वि० [सं०] सुधारनेवाला; तैयार करनेवाला; शुद्ध करनेवाला; मनपर छाप डालनेवाला।

संस्कृत–वि० [सं०] सुधारा हुआ, परिष्कृत; संस्कार द्वारा शुद्ध, पवित्र किया हुआ; सजाया हुआ। स्त्री० भारतीय आर्योंकी प्राचीन साहित्यिक भाषा (जो वैदिक भाषाके बाद प्रयोगमें आयी थी)।

संस्कृति–स्त्री० [सं०] शुद्धि; सुधार, परिष्कार; निर्माण; सजावट; आचरण-गत परंपरा।

संस्खलित–वि० [सं०] गिरा हुआ; भूला, चूका हुआ।

संस्तवन–पु० [सं०] स्तुति करना; (कॉमेंडिंग) प्रशंसा करनेका कार्य, किसी व्यक्तिको योग्य बताकर किसीके सामने उसका समर्थन करने या उसकी नियुक्ति आदिपर जोर देनेका कार्य।

संस्ताव–पु० [सं०] प्रशंसा, स्तुति; सम्मिलित स्तुति-पाठ; यज्ञमें स्तुति-पाठकोंके रहनेका स्थान। **–करना**–अ० क्रि० (कॉमेंड) योग्य समझकर किसीके पक्षमें अनुकूल सम्मति देना या उसकी नियुक्ति आदिपर जोर देना।

संस्ताव्य–वि० [सं०] (कॉमेंडेबिल) प्रशंसनीय।

संस्था–स्त्री० [सं०] ठहरना, रहना; सभा; समूह, मंडली; स्थिति, अवस्था; रहन-सहनका बँधा हुआ तरीका, रूढ़ि; विधि, नियम; सदाचार; धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक कार्योंकी दृष्टिसे स्थापित सभा या समिति; विशिष्ट सिद्धांतों, नियमोंके अनुसार संघटित समाज या मंडल; चिरकालसे चली आनेवाली कोई सामाजिक परंपरा या प्रथा (जैसे विवाह)।

संस्थागार–पु० [सं०] सभाभवन।

संस्थान–पु०[सं०) ठहरना, रहना, स्थिति; सत्ता, अस्तित्व, जीवन; निवासस्थान, बस्ती; सार्वजनिक स्थान (नगरस्थ); साहित्यादिकी उन्नतिके लिए स्थापित संस्था; समाप्ति; सामीप्य; पड़ोस; चतुष्पथ, चौराहा; चिह्न; ढाँचा।

संस्थापक–पु० [सं०] स्थापित करनेवाला (संस्था, औषधालय आदि); मत आदिका प्रवर्तक।

संस्थापन–पु० [सं०] खड़ा करना, निर्माण करना; स्थापित करना; रूप प्रदान करना; कोई नयी बात जारी करना।

संस्थापित–वि० [सं०] जमाया हुआ; स्थापित किया हुआ; खड़ा किया हुआ; बनाया हुआ; प्रवर्तित।

संस्थिति–स्त्री० [सं०] साथ होना; ठहरना; खड़ा, टिका रहना; सामीप्य; निवास-स्थान; अवस्था, स्थिति ।

संस्फेट, संस्फोट–पु० [सं०] भिड़ंत, लड़ाई ।

संस्मरण–पु० [सं०] स्मरण, याद करनेकी क्रिया; नाम लेना, जपना; स्मृतिके आधारपर किसी विषय या व्यक्तिके संबंधमें लिखित लेख या ग्रंथ ।

संस्मरणीय–वि० [सं०] याद करने योग्य; महत्त्वपूर्ण ।

संस्मारक–पु० [सं०] स्मरण करानेवाला; किसी व्यक्तिकी स्मृतिमें निर्मित भवन, स्तंभ, संस्था आदि ।

संहत–वि० [सं०] जुड़ा हुआ, संयुक्त; मिलाकर एक किया हुआ; ठोस, कड़ा; घना; दृढ़; एकत्र ।

संहति–स्त्री० [सं०] दृढ़ संबंध; एका, मेल; संधि, संयोग; घनत्व, ठोसपन; सामंजस्य; समूह, राशि, ढेर ।

संहरण–पु० [सं०] बटोरना; एक साथ बाँधना, गूँथना (केश); पकड़ना; लौटा लेना (मंत्रसे बाण आदि); नाश, ध्वंस करना ।

संहरना*–अ०क्रि०नष्ट, विनष्ट होना। स०क्रि०नष्ट करना ।

संहार–पु० [सं०] बटोरना, एकत्र करना; (हाथीका) सूँड़ अंदरकी ओर ले जाना; बाँधना (बाल); (मंत्रबलसे) छोड़ा हुआ बाण लौटाना; नाश; प्रलय; (नाटक या नाटकके किसी अंकका) अंत ।**–कारी(रिन्)**–वि० प्रलय करनेवाला; नाश करनेवाला । **–काल**–पु० प्रलयकाल ।

संहारक–वि०, पु० [सं०] नाश करनेवाला ।

संहारना*–स० क्रि० नाश करना; वध करना ।

संहारी(रिन्)–वि० [सं०] नाश करनेवाला ।

संहित–वि० [सं०] साथ रखा हुआ, मिलाया हुआ, संयुक्त किया हुआ; एकत्र किया हुआ, संकलित ।

संहिता–स्त्री० [सं०] संयोग, मेल; संधि (व्या०); संग्रह, संकलन; मनु आदि द्वारा रचित धर्म-शास्त्र; वेदोंका मंत्र-भाग; अधिनियमों, विधियों आदिका क्रमबद्ध संग्रह (कोड) ।

संहृति–स्त्री० [सं०] संकोच, संक्षेप; सार; नाश; प्रलय; अंत; रोक; पकड़ना, ग्रहण; संचय, संग्रह; हरण ।

संहृष्ट–वि० [सं०] रोमांचयुक्त (भय, आनंद आदिसे); प्रसन्न; खड़ा (रोम); ज्वलित । **–मना(नस्)**–वि० प्रसन्नचित्त ।

स–पु० [सं०] विष्णु; सर्प; शिव; पक्षी; वायु; चंद्रमा इ०; षड्ज स्वरका सूचक अक्षर (संगीत)। उप० यह शब्दोंके आरंभमें आकर सह (सरोप), समान (सजाति, सगोत्र), वही (सपिंड) आदि अर्थोंका द्योतन करता है ।

सइ*–अ० साथ, से । प्र० करण और अपादानकी विभक्ति।

सइना*–स्त्री० सेना, फौज ।

सइयो*–स्त्री० सहेली, सखी ।

सई–स्त्री० बढ़ती, वृद्धि, बरकत; * सरस्वती नदी; सखी ।

सईस–पु० साईस ।

सउँ*–अ० (विभक्ति) सों, से ।

सक–स्त्री० शक्ति, बल, सामर्थ्य । † पु० शक, संदेह; * साका, धाक; मर्यादा स्थापित करना ।

सकट–पु० शकट, सग्गड़, छकड़ा ।

सकत*–स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य; धन, वैभव । अ० यथाशक्ति, भरसक ।

सकता–स्त्री० शक्ति, बल, ताकत, सामर्थ्य । पु० [अ०] मूर्छा रोग; किसी शब्दके घट-बढ़ जानेसे शेरका वजन बिगड़ जाना ।

सकती*–स्त्री० शक्ति, बल, सामर्थ्य; एक अस्त्र, शक्ति ।

सकना–अ० क्रि० समर्थ होना, योग्य होना; संभव होना, मुमकिन होना ।

सकपक–स्त्री० हिचक, घबड़ाहट ।

सकपकाना–अ० क्रि० हिचकना, आगा-पीछा करना; चकित होना; लज्जा आदिके कारण घबड़ाहटमें पड़ जाना; हिलना ।

सकर–वि० [सं०] हस्तयुक्त; सूँड़वाला (हाथी); किरणोंवाला । † स्त्री० शकर । **–पाला**–पु० एक तरहकी चौकोर मिठाई या नमकीन; इस शकलकी सिलाई; एक काबुली नीबू ।

सकरना–अ० क्रि० स्वीकार किया जाना, कबूला जाना ।

सकरा–वि० तंग, संकीर्ण; जूठा । पु० जूठन ।

सकरुण–वि० [सं०] कोमलचित्त, करुणाशील, दयायुक्त ।

सकर्ण–वि० [सं०] कानोंवाला; सुननेवाला ।

सकर्मक–वि० [सं०] प्रभावकारी; कोई काम करनेवाला; जो कर्मके साथ हो, (वह क्रिया) जिसका प्रभाव कर्तापर न पड़कर दूसरेपर पड़े (व्या०) ।

सकल–वि० [सं०] सब, समस्त, सब अंगोंसे युक्त; सारी कलाओंसे पूर्ण (चंद्रमा) । **–परिसंपत्**–स्त्री० (ग्रॉस असेट्स) वह समस्त परिसंपत् जिसमेंसे ऋणादिकी रकम बाद न की गयी हो । **–प्रिय**–वि० जो सबको अच्छा लगे । पु० चना ।

सकलात–पु० रजाई, दुलाई; भेंट, उपहार; मखमल ।

सकलाती–वि० अति उत्तम, बढ़िया; मखमलका ।

सकसकाना*–अ० क्रि० बहुत डरना ।

सकसना*–अ० क्रि० भयभीत होना; अँड़स जाना ।

सकसाना*–अ० क्रि० भयभीत होना, डर मानना । स० क्रि० अँड़साना ।

सका†–पु० दे० 'सक्का' ।

सकाना*–अ० क्रि० शंका करना, डरना; हिचकना ।

सकाम–वि०[सं०] कामनायुक्त; इच्छुक; लब्धकाम, तृप्तकाम; कामी; फलाकांक्षासे कार्य करनेवाला; प्रेमी ।

सकारना–स० क्रि० स्वीकार करना, मंजूर करना, मान लेना; हुंडीपर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार कर लेना ।

सकारा–पु० हुंडी सकारने और समय बढ़ानेके लिए लिया जानेवाला धन; * सबेरा ।

सकारात्मक–वि० सहमति-सूचक, स्वीकारात्मक ।

सकारे, सकारैं*–अ० तड़के, सबेरे; कुछ जल्दी ।

सकाल–वि० [सं०] समयोचित । अ० ठीक समयपर; सबेरे –'कनक छायामें, जब कि सकाल खोलती कलिका उरके द्वार'–पल्लव ।

सकाश–पु० [सं०] सामीप्य, निकटता; पड़ोस । अ० पास ।

सकिलना*–अ० संकुचित होना; इकट्ठा होना, बटुरना ।

सकुच*–स्त्री० संकोच, लज्जा ।

सकुचना*–अ० क्रि० लज्जा करना, लज्जित होना; संकु-

चित होना, सिकुड़ना; मुँदना, संपुटित होना ।

सकुचाई*–स्त्री० संकोच, शर्मिंदगी, हया ।

सकुचाना*–अ० क्रि० संकोच करना । स० क्रि० सिकोड़ना; संकुचित, लज्जित करना ।

सकुचीला†–वि० संकोची, शर्मीला ।

सकुचौहाँ*–वि० संकोचशील ।

सकुड़ना†–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सकुन*–पु० दे० 'शकुंत'; शकुन ।

सकुनी*–पु० दुर्योधनका मामा, शकुनि । स्त्री० पक्षी; चील ।

सकुपना*–अ० क्रि० क्रोध करना ।

सकुल्य–वि०[सं०] सगोत्र (तीसरीसे आठवीं पीढ़ीतकका); पु० एक ही कुलका, पर दूरका संबंधी ।

सकूनत–स्त्री० दे० 'सुकूनत' ।

सकूनती–वि० दे० 'सुकूनती' ।

सकृत्–अ० [सं०] एक बार; किसी समय; फौरन; सर्वदा ।

सकेत–*_पु० संकेत, इशारा; प्रेमी-प्रेमिकाका मिलनस्थल; कष्ट, संकट । † वि० संकीर्ण, तंग ।

सकेतना*–अ० क्रि० संपुटित होना, संकुचित होना ।

सकेरना*–स० क्रि० इकट्ठा करना, समेटना; बंद करना ।

सकेलना*–स० क्रि० इकट्ठा, जमा करना ।

सकेला–पु० एक तरहका लोहा । स्त्री० इस लोहेकी बनी तलवार ।

सकैतव–वि० [सं०] छली, कपटी ।

सकोच*–पु० दे० 'संकोच' ।

सकोड़ना–स० क्रि० दे० 'सिकोड़ना' ।

सकोपना*–अ० क्रि० क्रोध करना ।

सकोपित*–वि० क्रुद्ध, नाराज ।

सकोरना*–स० क्रि० सिकोड़ना ।

सकोरा–पु० कटोरी जैसा मिट्टीका एक बरतन, कसोरा ।

सक़्क़ा–पु० [फा०] पनभरा; भिश्ती । **–(क़्क़े)की बादशाही**–दो-चार दिनकी हुकूमत (निजाम नामके भिश्तीने हुमायूँको डूबनेसे बचाकर इनाममें २॥ दिनकी बादशाही पायी और राज्यमें चमड़ेका सिक्का चलाया) ।

सक्तु–पु० [सं०] भूने हुए अन्नका पिसान, सत्तू (विशेषकर जौका) ।**–कार,–कारक**–पु० सत्तू बनाने, बेचनेवाला । **–धानी**–स्त्री० सत्तू रखनेका पात्र ।

सक्थि–स्त्री० [सं०] जंघा; हड्डी; गाड़ीका लट्ठा ।

सक्र*–पु० दे० 'शक्र' । **–धनु**–पु० इंद्रधनुष् ।

सक्रारि*–पु० इंद्रका शत्रु, मेघनाद ।

सक्रिय–वि० [सं०] क्रियायुक्त; फुर्तीला; भ्रमणशील । **–सेवा**–स्त्री० (ऐक्टिव सरविस) किसी सैनिक द्वारा युद्धक्षेत्रादिमें किया गया काम या सेवा ।

सक्षण–वि० [सं०] सावकाश, बाफुरसत ।

सक्षम–वि० [सं०] क्षमता-युक्त, शक्तिशाली, समर्थ ।

सखर–पु० [सं०] एक राक्षस; * चोखा; तेज; उग्र; खर राक्षससे युक्त–'सखर सुकोमल मंजु'–रामा० ।

सखरच, सखरज*–वि० खुलकर अमीरोंकी तरह खर्च करनेवाला, शाहखर्च ।

सखरस–पु० मक्खन ।

सखरा–वि० खारा; निखराका उलटा । पु० कच्ची रसोई ।

सखरी–स्त्री० कच्ची रसोई (दाल-भात आदि) ।

सखसावन†–पु० आरामकुर्सी; पलंग; पालकी ।

सखा(खि)–पु० [सं०] साथी, संगी; मित्र; सहचर, सहयोगी; नायकका सहचर (ना०) ।**–भाव**–पु० घनिष्ठता ।

सख़ा, सख़ावत–स्त्री० [अ०] उदारता, दानशीलता ।

सखी–स्त्री० [सं०] सहचरी, सहेली; नायिकाकी सहेली (ना०); एक छंद । **–भाव**–पु० अपनेको उपास्य देवकी पत्नी माननेका भाव । **–संप्रदाय**–पु० वैष्णवोंका एक संप्रदाय जिसमें भक्त अपनेको उपास्य देवकी स्त्री मानता है ।

सख़ी–वि० [अ०] दाता, दानशील, उदार ।

सखुआ–पु० दे० 'साखू' ।

सख़ुन–पु० दे० 'सुख़न' ।

सख़्त–वि० [अ०] कड़ा, कठोर; दृढ़; कठिन; तीखा, तेज (सख्त धूप); भारी (सख्त मुश्किल); सख्ती करनेवाला, कठोरहृदय । **–गीर**–वि० सामान्य दोषपर भी कड़ी सजा देनेवाला; जालिम । **–घड़ी**–स्त्री० कष्ट, कठिनाईका काल । **–ज़बान**–वि० कटुभाषी, बदजबान । **–दिल**–वि० कठोरहृदय, निर्दय । **–पंजा**–वि० लोभी । **–मिज़ाज**–वि० क्रोधी । **–लगाम**–वि० मुहँजोर, सरकश (घोड़ा) ।

सख़्ती–स्त्री० [अ०] कड़ापन; कठोरता; दृढ़ता; कष्ट, कठिनाई; अर्थकष्ट, तंगी; जुल्म, कठोर व्यवहार । मु० **सख़्तियाँ उठाना, सख़्ती उठाना**–जुल्म बरदाश्त करना; मुसीबत झेलना । **–से**–कष्ट, कठिनाईसे (सख्तीसे दिन गुजारना) । **–से पेश आना**–कड़ाई करना, कठोर, निर्दयताका व्यवहार करना ।

सख्य–पु० [सं०] सखापन; मैत्री, दोस्ती, सौहार्द; ईश्वरको सखा मानकर उपासना करनेका भाव (वैष्णव); समानता; मित्र । **–विसर्जन**–पु० मैत्री-भंग ।

सख्यता–स्त्री० मैत्री, दोस्ती (असाधु) ।

सगंध–वि० [सं०] गंधयुक्त; खुशबूदार; उसी गंधका; अभिमानी । पु० ज्ञाति, संबंधी ।

सग*–वि० सगा, अपना । **–पन**–पु० दे० 'सगापन' ।

सगड़ी–स्त्री० छोटा सग्गड़ ।

सगण–वि० [सं०] दल या सेनासे युक्त । पु० शिव; छंदःशास्त्रका एक गण जिसमें दो लघुके बाद एक गुरु मात्रा होती है ।

सगन*–पु० सगण (पिंगल); शकुन ।

सगनौती–स्त्री० शकुन विचारना ।

सगपहती†**,सगपैती**–स्त्री०साग मिलाकर पकायी हुई दाल ।

सगबग*–वि० आर्द्र, तर, सराबोर; द्रवित; भीत ।

सगबगना*–अ० क्रि० जाग्रत होना, उद्बुद्ध होना ।

सगबगाना–अ० क्रि० सकपकाना, घबड़ा जाना; हिलना-डुलना; तर होना, सराबोर होना ।

सगभत्ता†–पु० साग मिलाकर पकाया हुआ भात ।

सगर–वि० [सं०] विषयुक्त । पु० एक सूर्यवंशी राजा जिनके साठ हजार पुत्र थे; † सागर; तालाब–'काहेक दादुल सगर खोदायेउ...'–गीत ।

सगरा–वि० सब, समस्त । पु० तालाब; झील ।

सगर्भ–वि० [सं०] सगा, सहोदर (भाई)।

सगर्भा–स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री; सगी बहन।

सगल*–वि० सकल, सब।

सगा–वि० एक माँ-बापसे उत्पन्न, सहोदर; निकट संबंधी। **–पन**–पु० आत्मीयतापूर्ण संबंध, सगा होनेका भाव।

सगाई–स्त्री० मँगनी, विवाहका ठहराव; नाता, रिश्ता; विधवा या परित्यक्ताका एक तरहका विवाह या विवाह जैसा संबंध।

सगारत–स्त्री० सगापन।

सगुण–वि० [सं०] ज्यायुक्त; गुणवान्; सद्गुणसंपन्न; भौतिक; साहित्यिक गुणोंसे युक्त (रचना)। पु० सत्त्व, रज, तमसे युक्त ब्रह्म; ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना करनेवाला संप्रदाय-विशेष।

सगुणोपासना–स्त्री० [सं०] साकार ब्रह्मकी उपासना।

सगुन–पु० शकुन। वि०, पु० दे० 'सगुण'।

सगुनाना–अ० क्रि० शकुन विचारना, शकुन बतलाना।

सगुनिया–पु० शकुनका विचार करनेवाला।

सगुनौती–स्त्री० शकुन विचारने, निकालनेकी क्रिया।

सगुरा–वि० जिसने गुरुसे दीक्षा ली हो।

सगृह–वि० [सं०] सपरिवार, घर-गृहस्थीवाला।

सगोत–वि० दे० 'सगोत्र'।

सगोती–वि० एक ही गोत्रका। पु० एक ही गोत्रके लोग, भाईबंद।

सगोत्र–वि० [सं०] एक ही गोत्रका। पु० एक ही गोत्रका व्यक्ति; तर्पण, पिंडदान आदि साथ करनेवाला व्यक्ति, एक ही कुलका व्यक्ति; दूरका संबंधी; वंश, खानदान।

सगौती–स्त्री० खानेका गोश्त, कलिया।

सग्गड़–पु० सामान ढोनेकी गाड़ी या ठेला, जिसे आदमी खींचते हैं।

सघन–वि० [सं०] घना, गझिन; ठोस; मेघाच्छन्न।

सघनता–स्त्री० [सं०] निविड़ता।

सच–पु० सच्ची बात। वि० सत्य, ज्योंकी त्यों कही हुई (देखी, सुनी बात)। **–मुच**–अ० वस्तुतः, यथार्थमें, निस्संदेह।

सचकित–वि० [सं०] आश्चर्यमें पड़ा हुआ, विस्मित; भयसे काँपता हुआ।

सचना*–स० क्रि० पूरा करना–'···पितु तर्पणादि क्रिया सची'–राम०; सजाना; जमा करना, बटोरना। अ० क्रि० प्रसन्न होना।

सचर*–वि० सचल, चलायमान, जंगम।

सचरना*–अ० क्रि० फैलना; प्रचलित होना; प्रसिद्ध होना; प्रवेश करना।

सचराचर–वि० [सं०] जिसमें स्थावर-जंगम सभी हों।

सचल–वि० [सं०] चलनेकी शक्तिसे युक्त, जंगम। पु० जंगम पदार्थ।

सचलता–स्त्री० [सं०] गतिशीलता।

सचल लवण–पु० साँचर नमक।

सचाई–स्त्री० सत्यता; ईमानदारी; वास्तविकता।

सचान–पु० बाज, श्येन।

सचारना*–स० क्रि० फैलाना, संचारित करना।

सचारु–वि० [सं०] बहुत सुंदर।

सचावट–स्त्री० सचाई।

सचिंत–वि० [सं०] चिंतायुक्त, चिंतित।

सचिक्कण–वि० [सं०] बहुत चिकना।

सचिक्कन–वि० दे० 'सचिक्कण'।

सचित्त–वि० [सं०] बुद्धिमान्, प्रज्ञा-विशिष्ट; सावधान; जिसका ध्यान किसी एक विषयपर हो।

सचित्र–वि० [सं०] चित्रोंसे युक्त; चित्रित।

सचिव–पु० [सं०] साथी, मित्र; काला धतूरा; (सेक्रेटरी) मंत्री; किसी संस्था या संघटनके संचालनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति; किसीके निजी कार्य, पत्रव्यवहार, व्यवस्था आदिमें सहायता करनेवाला व्यक्ति; शासनव्यवस्थाके किसी विभागका उच्चाधिकारी।

सचिवता–स्त्री०, **सचिवत्व**–पु० [सं०] मंत्रित्व, वजारत।

सचिवालय–पु० [सं०] (सेक्रेटैरियट) किसी राज्यकी सरकारके सचिवों, मंत्रियों तथा विभिन्न विभागोंके प्रधान अधिकारियों आदिके कार्यालयोंका समूह, वह इमारत या स्थान जहाँ ये स्थित हों।

सची–स्त्री० [सं०] दे० 'शची'; अगर। **–नंदन,–सुत**–पु० जयंत; चैतन्यदेव।

सचु*–पु० सुख, आनंद; प्रसन्नता।

सचेत–वि० चेतनाविशिष्ट, समझदार; सावधान, सतर्क।

सचेतक–पु० [सं०] (ह्विप) दे० 'चेतक'।

सचेतन–वि० [सं०] चेतनायुक्त, समझदार, सज्ञान; सावधान। पु० सज्ञान प्राणी।

सचेती–स्त्री० सतर्कता, सावधानी।

सचेल,सचैल–वि० [सं०] वस्त्राच्छादित। अ० वस्त्रों सहित।

सचेष्ट–वि० [सं०] चेष्टाशील; चेष्टा करनेवाला।

सच्चरित, सच्चरित्र–वि० [सं०] अच्छे चरित्रका, सदाचारी। पु० अच्छा आचरण; सदाचारियोंका वृत्त।

सच्चा–वि० सच बोलनेवाला; ईमानदार; यथार्थ; विशुद्ध।

सच्चाई–स्त्री० सच्चापन, सत्यता; ईमानदारी।

सच्चापन–पु० सचाई, सत्यता।

सच्चिकन*–वि० दे० 'सचिक्कण'।

सच्चिदानंद–पु० [सं०] सत्, चित् और आनंद-स्वरूप, परमेश्वर।

सच्छंद*–वि० दे० 'स्वच्छंद'।

सच्छत*–वि० घायल।

सच्छाय–वि० [सं०] छायादार; सुंदर रंगोंवाला, चमकदार; एक ही रंगका।

सच्छास्त्र–पु० [सं०] उत्तम शास्त्र, अच्छा सिद्धांत-ग्रंथ।

सच्छिद्र–वि० [सं०] छेददार; सदोष।

सच्छी*–पु०, स्त्री० दे० 'साक्षी'।

सच्छील–पु० [सं०] सदाचार। वि० शीलवान्; उदाराशय।

सछिद्रता–स्त्री० (पोरासिटी) ऐसे छिद्रोंसे युक्त होना जिनसे होकर पानी एक ओरसे दूसरी ओर चला जाय।

सज–स्त्री० सजना, सजावट; रूप, आकृति; शोभा; † एक वृक्ष। **–दार**–वि० सुडौल, अच्छी आकृतिका, सुंदर। **–धज,–बज**–स्त्री० सजावट, बनाव-शृंगार; ठाटबाट।

सजग–वि० सतर्क, सावधान, होशियार।

सजन–पु० पति, प्रियतम; सज्जन; [सं०] एक ही परिवारके आदमी, संबंधी। वि० जनयुक्त; मनुष्यों द्वारा अधिवसित।

सजना–अ० क्रि० वस्त्राभूषणसे अलंकृत होना; उत्तम लगना, फबना, भला जान पड़ना; युद्धादिके लिए तैयार होना। स० क्रि० धारण करना; सजाना।

सजनी–स्त्री० सखी, सहेली।

सजल–वि० [सं०] जलयुक्त, भीगा हुआ; अश्रुपूर्ण; आबदार, चमकदार। **–नयन**–वि० जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हों।

सजवना*–पु० सजना, तैयारी–'बहुतन अस गढ कीन्ह सजवना'–प०।

सजवाई–स्त्री० सजवानेकी क्रिया या पारिश्रमिक।

सजवाना–स० क्रि० किसीको सजनेके काममें प्रवृत्त करना या सहायता पहुँचाना।

सज़ा–स्त्री० [फ़ा०] अपराधका बदला, दंड; जुर्माना। **–ए-मौत**–स्त्री० प्राणदंड, फाँसीकी सजा। **–याफ़्ता**–वि० दंडप्राप्त, दंडित। **–याब**–वि० सजा पानेवाला, दंडका अधिकारी।

सजाइ*–स्त्री० सजा, दंड।

सजाई–स्त्री० सजानेकी क्रिया; सजानेकी मजदूरी।

सजागर–वि० [सं०] जागरूक; सावधान, सतर्क।

सजात–वि० [सं०] साथ उत्पन्न, एक ही समय उत्पन्न; संबंधियोंसे युक्त। **–काम**–वि० संबंधियोंपर शासन करनेका इच्छुक।

सजाति–वि० [सं०] एक ही जाति या वर्गका; एक जैसा।

सजातीय–वि० [सं०] दे० 'सजाति'। **–कर्म**–पु० (कागनेट आब्जेक्ट) किसी क्रियाका वह कर्म जिसका वही अर्थ हो जो क्रियाका हो (जैसे मैं 'दौड़' दौड़ता हूँ)।

सजात्य–पु० [सं०] भ्रातृत्व; संबंध, रिश्ता।

सजान*–वि० सज्ञान, जानकार।

सजाना–स० क्रि० सँवारना, सुसज्जित करना; व्यवस्थित करना।

सजानि–वि० [सं०] सपत्नीक।

सजाय–*स्त्री० दे० 'सज़ा'। वि० [सं०] सपत्नीक, विवाहित।

सजाव–पु० सजावट।

सजावट–स्त्री० अलंकरण, सज्जा; शोभा; तैयारी।

सजावन*–पु० अलंकरण; तैयार, सुसज्जित करना।

सज़ावल–पु० [तु०] मालगुजारी या सरकारी रुपया वसूल करनेवाला; दारोगा।

सजीउ*–वि० दे० 'सजीव'।

सजीला–वि० सजधजवाला, सजधजसे रहनेवाला, छैला।

सजीव–वि० [सं०] सप्राण, प्राणयुक्त, जीवित; ज्यायुक्त।

सजीवन–पु० संजीवनी बूटी। **–बूटी**–स्त्री० रुद्रवंती, संजीवनी बूटी। **–मूर, –मूल***–पु० संजीवनी बूटी।

सजीवनी–स्त्री० दे० 'सजीवन'। **–मंत्र**–पु० मृतकको जिलानेवाला कल्पित मंत्र; कार्यसाधक उपाय।

सजुग*–वि० दे० 'सजग'।

संजूरी–स्त्री० एक मिठाई।

सजोना–अ० क्रि० शृंगार करना, सज्जित करना; तैयारी करना, सामान आदि ठीक करना।

सजोयल*–वि० दे० 'सँजोइल'।

सजोषण–पु० [सं०] साथ-साथ आनंदोपभोग करना; पुरानी प्रीति।

सज्ज–वि० [सं०] सजा हुआ; तैयार; शस्त्रादिसे युक्त।

सज्जन–पु० [सं०] तैयारी करना; पहरेदार; तैयारी; कुलीन व्यक्ति; भला आदमी; प्रिय व्यक्ति।

सज्जनता–स्त्री० [सं०] सौजन्य, भलमंसी।

सज्जनताई*–स्त्री० दे० 'सज्जनता'।

सज्जा–स्त्री० शय्या; [सं०] पोशाक, सजावट; साज-सामान; फौजी सामान, कवच आदि।

सज्जाद–वि० [अ०] सिजदा करनेवाला, पूजक, उपासक।

सज्जादा–पु० [अ०] नमाज पढ़नेका आसन, जानमाज; किसी साधु-संतकी गद्दी। **–नशीं**–वि० गद्दीधर (फ़कीर, महंत)।

सज्जित–वि० [सं०] सजा हुआ, अलंकृत; सामान आदिसे युक्त, तैयार; हथियारोंसे लैस।

सज्जी–स्त्री० एक प्रकारकी क्षारयुक्त मिट्टी। **–खार**–पु० सज्जी। **–बूटी**–स्त्री० एक क्षुप जिससे सज्जीखार बनाते हैं।

सज्ञान–वि० [सं०] ज्ञानयुक्त; बुद्धिमान्, समझदार।

सज्य–वि० [सं०] ज्यायुक्त (धनुष्)।

सज्या*–स्त्री० शय्या।

सटक–स्त्री० लचनेवाली पतली छड़ी; लंबा, मुड़नेवाला नैचा; चुपकेसे चल देनेकी क्रिया।

सटकना–अ० क्रि० धीरेसे खिसक जाना। स० क्रि० नाज निकालनेके लिए डंठल पीटना।

सटकाना–स० क्रि० छड़ी आदिसे मारना; 'गुड़-गुड़' ध्वनि उत्पन्न करते हुए हुक्का पीना।

सटकार–स्त्री० सटकानेकी क्रिया; झटकारना; गौ आदिको हाँकना।

सटकारना–स० क्रि० छड़ी आदिसे मारना; झटकारना।

सटकारा*–वि० चिकना और लंबा।

सटकारी–स्त्री० पतली, लचीली छड़ी।

सटक्का–पु० झपट, दौड़। मु० **–मारना**–तेजीसे जाना।

सटना–अ० क्रि० दो वस्तुओंका एक साथ लग जाना; चिपकना; साथ होना।

सटपट–स्त्री० हिचकिचाहट, संकोच; द्विविधा; घबराहट।

सटपटाना–अ० क्रि० संकोच करना, हिचकिचाना; भौंचक्का होना; दब जाना; 'सटपट' शब्द करना।

सटर-पटर–वि० तुच्छ; बहुत मामूली। स्त्री० झंझट, बखेड़ा; अदनी चीज।

सट-सट–अ० 'सट-सट' शब्द करते हुए; जल्द, फौरन।

सटा–स्त्री० [सं०] साधुओंकी जटा; शेरका अयाल; सूअरका बाल; कबरी, जूड़ा; कलँगी, शिखा।

सटाक–पु० 'सट'की ध्वनि।

सटाकी–स्त्री० पैनेके सिरेपर बँधी हुई चमड़ेकी पट्टी।

सटान–स्त्री० सटनेकी क्रिया; जोड़।

सटाना–स० क्रि० जोड़ना, मिलाना; चिपकाना।

सटियल–वि० घटिया।

सटिया–स्त्री० सोने-चाँदीकी चूड़ी; सिंदूर भरनेकी चाँदीकी शलाका; षड्यंत्र रचना; * छड़ी, साँटी।

सटीक-वि० बिलकुल ठीक; [सं०] टीका, व्याख्यासे युक्त।

सटोरिया-पु० दे० 'सट्टेबाज़'।

सट्ट-पु० [सं०] दरवाजेकी चौखटमें दोनों पार्श्वोंमें लगायी जानेवाली लकड़ियाँ।

सट्टक-पु० [सं०] प्राकृत भाषामें रचित एक उपरूपक; जीरा मिला हुआ तक्र।

सट्टा-पु० इकरारनामा; बाजार। **-बट्टा**-पु० मेल-जोल; छलपूर्ण उपाय (लड़ाना)। **-(ट्टे) बाज़**-पु० अधिक लाभकी आशासे जोखिम उठाते हुए भी चीजोंका सौदा करना।

सट्टी-स्त्री० किसी एक चीजका बाजार। **मु०-मचाना**-शोरगुल करना। **-लगाना**-चीजें अस्त-व्यस्त करना।

सठ*-वि०, पु० दे० 'शठ'।

सठता*-स्त्री० शठता; मूर्खता।

सठियाना-अ० क्रि० साठ वर्षकी अवस्थाका होना; वृद्ध होना; वार्द्धक्यके कारण मानसिक शक्तिका ह्रास होना।

सड़क-स्त्री० मनुष्यों, सवारियों आदिके गमनागमनके योग्य बना हुआ चौड़ा मार्ग; मार्ग, रास्ता।

सड़न-स्त्री० सड़नेकी क्रिया।

सड़ना-अ० क्रि० किसी चीजका गलना, संयोजक तत्त्वोंका अलग-अलग हो जाना; बुरी हालतमें रहना।

सड़सठ-वि० साठसे सात अधिक। पु० साठ और सातकी संख्या, ६७।

सड़ान-स्त्री० सड़नेकी क्रिया; सड़नेकी बू।

सड़ाना-स० क्रि० किसी चीजको सड़नेमें प्रवृत्त करना; बुरी हालतमें रखना।

सड़ायँध-स्त्री० सड़ी हुई चीजसे निकलनेवाली दुर्गंध।

सड़ाव-पु० सड़नेकी क्रिया या स्थिति।

सड़ासड़-अ० 'सड़-सड़'की ध्वनिके साथ।

सड़ियल-वि० सड़ा, गला हुआ; खराब, रद्दी; तुच्छ।

सण-पु० [सं०] दे० 'शण'। **-तूल**-पु० सनके रेशे। **-सूत्र**-पु० सनकी रस्सी।

सत*-वि० सत्य, यथार्थ। पु० सचाई, यथार्थता; सत्त्व, किसी पदार्थका सार, मूल तत्त्व; जीवशक्ति। **-कार**-पु० आदर-सम्मान। **-गुरु**-पु० अच्छा गुरु; परमात्मा। **-जुग**-पु० सत्ययुग। **-भाय,-भाव***-पु० सद्भाव। **-युग**-पु० सत्ययुग। **-वंती**-स्त्री० सती, पतिव्रता। **-संग**-पु०,**-संगति**-स्त्री० अच्छी संगति। **-संगी**-वि० सत्संगमें रहनेवाला। **मु०-पर चढ़ना**-सती होना। **-पर रहना**-पातिव्रत्यका पालन करना।

सत*-वि० सौ। **-दल***-पु० शतदल, कमल। **-पत्र***-पु० कमल। **-परबा**-पु० बाँस। **-मख***-पु० इंद्र। **-मूली**-स्त्री० शतमूली, शतावर।

सत-वि० 'सात'का समासगत रूप। **-कोन**-वि० सात कोनोंवाला। **-दंता**-वि० सात दाँतोंवाला (पशु)। **-पतिया**-स्त्री० एक तरहकी तरोई; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्चली। **-पुतिया**-स्त्री० एक तरहकी तरोई। **-पदी,-भौंरी**-स्त्री० दे० 'सतफेरा' **-फेरा**-पु० सप्तपदी नामक वैवाहिक कृत्य। **-मासा,-वाँसा**-वि० सात मासमें उत्पन्न होनेवाला (बच्चा)। पु० वह बच्चा जिसकी पैदाइश सात महीनेपर हुई हो। **-रंगा**-वि० सात रंगोंवाला। पु० इंद्रधनुष्। **-लड़ा**-वि० सात लड़ियोंवाला (हार)। **-लड़ी,-लरी**-स्त्री० सात लड़ियोंका हार। **-सई**-स्त्री० सात सौ पद्योंवाला ग्रंथ।

सतकारना*-स० क्रि० आदर-सम्मान करना।

सतत-वि० [सं०] अविच्छिन्न (समासमें)। अ० हमेशा, सर्वदा। **-गति**-पु० वायु। **-ज्वर**-पु० हमेशा बना रहनेवाला ज्वर। **-दुर्गत**-वि० हमेशा कष्टमें रहनेवाला।

सतनजा-पु० सात तरहके अनाजोंका मिश्रण।

सतनु-वि० [सं०] शरीरवाला; शरीरयुक्त।

सतरंज-पु०, स्त्री० दे० 'शतरंज'।

सतरंजी-स्त्री० दे० 'शतरंजी'।

सतर-* वि० वक्र, टेढ़ा, कुटिल; क्रुद्ध। स्त्री० [अ०] पंक्ति, लकीर। पु० छिपाना; स्त्री या पुरुषका गोपनीय स्थान, गुह्यांग; परदा। **-पोश**-वि० (वह चीज) जिससे तन ढाँके, लज्जा-निवारण करें। **-पोशी**-स्त्री० तन ढाँकना, लज्जा-निवारण।

सतरह-वि०, पु० दे० 'सत्तरह'।

सतराना*-अ० क्रि० कोप, गुस्सा करना; कुढ़ना, बिगड़ना।

सतराहट*-स्त्री० कोप, रोष।

सतरौहाँ*-वि० क्रोधयुक्त; क्रोधसूचक-'सतरौंही भौंहनि नहीं दुरै दुराये नेह'-मति०।

सतर्क-वि० [सं०] तर्कयुक्त; तर्ककुशल; सचेत, सावधान।

सतर्कता-स्त्री० [सं०] सावधानी, होशियारी।

सतर्पना*-स० क्रि० अच्छी तरह संतुष्ट, तृप्त करना।

सतलज-स्त्री० पंजाबकी एक नदी, शतद्रु।

सतह-स्त्री० [अ०] वस्तुका ऊपरी भाग; तल; वह वस्तु जिसमें लंबाई-चौड़ाईभर हो, गहराई न हो (ग०); जलका ऊपरी भाग; फर्श; छत।

सतहत्तर-वि० सत्तरसे सात अधिक। पु० सत्तरसे सात अधिककी संख्या, ७७।

सतांग*-पु० रथ-'कोउ तुरंग चढ़ि कोउ मतंग चढ़ि, कोउ सतांग चढ़ि धाये'-रघु०।

सतानंद-पु० [सं०] गौतमके पुत्र जो राजा जनकके पुरोहित थे, शतानंद।

सताना-स० क्रि० पीडित करना, कष्ट देना; परेशान करना।

सतार-वि० [सं०] ताराओंसे युक्त। पु० ग्यारहवाँ स्वर्ग (जैन)।

सताल्लू-पु० दे० 'सफताल्लू'।

सतावना*-स० क्रि० दे० 'सताना'।

सतावर-स्त्री० एक बेल जो झाड़दार होती है और दवाके काम आती है, शतावर।

सतासी-वि० अस्सीसे सात अधिक। पु० सतासीकी संख्या, ८७।

सति-स्त्री० दान; अंत, नाश। * वि०, पु० दे० 'सत्य'।

सतिवन-पु० सप्तपर्ण, छतिवन।

सती-स्त्री० पु० सत्यका अनुयायी (जती-सती)। [सं०] साध्वी, पतिव्रता स्त्री; पतिके शवके साथ जल जानेवाली स्त्री; संन्यासिनी; दक्षकी एक कन्या; एक वृत्त। **-चौरा**-पु० [हिं०] किसी सतीके स्मारकके रूपमें बना हुआ चबूतरा।

–पुत्र–पु० साध्वी स्त्रीका पुत्र। **–व्रत**–पु० पातिव्रत्य। **–व्रता**–स्त्री० पतिव्रता स्त्री। मु० **–होना**–पतिके शवके साथ जल मरना; किसीके पीछे परेशान होना, मर मिटना।

सतीत्व–पु० [सं०] सती होनेका भाव, पातिव्रत्य। **–हरण**–पु० सतीत्व नष्ट करना।

सतीन–वि० [सं०] यथार्थ, वास्तविक। पु० मटरका एक भेद, कलाय; बाँस; जल।

सतीपन–पु० दे० 'सतीत्व'।

सतीर्थ–वि० [सं०] तीर्थयुक्त। पु० सहाध्यायी, साथ अध्ययन करनेवाले ब्रह्मचारी; शिव।

सतुआ–पु० भुने हुए अन्नका चूर्ण, सक्तु, सत्तू। **–संक्रांति**–स्त्री० मेषकी संक्रांति (जिस दिन सत्तूके दान और भोजनका विधान है)। **–सोंठ**–स्त्री० एक तरहकी सोंठ।

सतुआन–स्त्री० दे० 'सतुआ-संक्रांति'।

सतुष–वि० [सं०] भूसीवाला। पु० तुषयुक्त अन्न।

सतून–पु० [फा०] खंभा, स्तंभ।

सतूना–पु० बाजके झपटनेका एक ढंग।

सतृद् (ष्), सतृष, सतृष्ण–वि० [सं०] प्यासा; इच्छुक।

सतेजा (जस्)–वि० [सं०] कांतियुक्त; जीव-शक्ति-संपन्न।

सतोखना*–स० क्रि० संतोष देना; ढाढ़स दिलाना; संतुष्ट करना।

सतोगुण–पु० दे० 'सत्त्वगुण'।

सतोगुणी†–वि० सत्त्वगुणसे युक्त।

सतौसर–पु० सात लड़ियोंका हार।

सत्–वि० [सं०] सत्तायुक्त; वर्तमान, विद्यमान; यथार्थ, सत्य; स्थायी; भला, धार्मिक; पवित्र; उच्च, उत्तम; उचित; सम्मान्य; विद्वान्, चतुर; सुंदर; धीर। पु० संत, सज्जन, धार्मिक व्यक्ति; वह जिसका अस्तित्व हो; यथार्थता, सत्य; ब्रह्म। **–कथा**–स्त्री० अच्छी वार्ता या कथा। **–करण**–पु० सत्कार करना; अंत्येष्टि क्रिया। **–कर्तव्य**–वि० जिसका सम्मान करना हो। **–कर्ता (र्तृ)**–पु० अच्छा काम करनेवाला; हितैषी; सत्कार करनेवाला; विष्णु। **–कर्म (न्)**–पु० नेक काम, पुण्य कर्म, वेदविहित कर्म; सत्कार; अंत्येष्टि; प्रायश्चित्त। **–कर्मा (र्मन्)**–वि० अच्छा काम करनेवाला। **–कला**–स्त्री० ललित कला। **–कवि**–पु० उत्तम कवि, सुकवि। **–कायदृष्टि**–स्त्री० मृत्युके बाद आत्मा, शरीर आदिकी सत्ताका भ्रांत सिद्धांत (बौद्ध)। **–कार**–पु० आदर-सत्कार, आवभगत; आतिथ्य; देखभाल; पर्व, उत्सव; दावत। **–कार्य**–वि० सम्मानके योग्य; जिसकी अंत्येष्टि की जाय। पु० कारणमें कार्यका निहित रखना (सांख्य); अच्छा काम। **–कार्यवाद**–पु० कारणके अभावमें कार्यकी उत्पत्ति न माननेका सिद्धांत। **–कीर्ति**–स्त्री० सुयश, अच्छी कीर्ति। वि० जिसका अच्छा नाम फैला हो। **–कुल**–पु० उत्तम कुल। वि० कुलीन, सद्वंशजात। **–कुलीन**–वि० अच्छे वंशका। **–कृत**–वि० अच्छी तरह किया हुआ; पूजित; सम्मानित; जिसकी आवभगत की गयी हो; जिसका अच्छा स्वागत किया गया हो। पु० शिव; सम्मान; आतिथ्य; पुण्य कार्य। **–कृति**–स्त्री० अच्छा कर्म करना, पुण्य; सद्व्यवहार; आदर-सत्कार। **–क्रिय**–वि० अच्छा कर्म करनेवाला। **–क्रिया**–स्त्री० नेक काम, पुण्य; व्यवस्थित करना; सत्कार, आतिथ्य; सौजन्य; संस्कार; मृतककर्म। **–पथ**–पु० सुमार्ग, अच्छी सड़क; सदाचार। **–पात्र**–पु० योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जो कोई चीज पानेके योग्य हो। **–पुत्र**–पु० योग्य पुत्र; वह पुत्र जो पितरोंके निमित्त विहित कर्म करे। **–पुरुष**–पु० भला आदमी, सज्जन। **–संग**–पु०, **–संगति**–स्त्री० अच्छे आदमियोंका साथ। **–संसर्ग**–पु० दे० 'सत्संग'। **–सन्निधान, –समागम**–पु० दे० 'सत्संग'। **–सहाय**–पु० अच्छा मित्र। वि० जिसके मित्र नेक हों।

सत्त–पु० सत्त्व, सारभाग, रस; तत्त्व; * सत्य; सतीत्व।

सत्तम–वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ; परम पूज्य।

सत्तर–वि० साठसे दस अधिक। पु० सत्तरकी संख्या, ७०।

सत्तरह–वि० दससे सात अधिक। पु० सत्तरहकी संख्या, १७।

सत्तांतरित प्रदेश–पु० [सं०] (सीडेड टेरिटरी) वह प्रदेश जिसका शासन या सत्ता दूसरेको सौंप दी गयी हो, जो दूसरेको अर्पित कर दिया गया हो।

सत्ता–पु० सात बूटियोंवाला ताशका पत्ता। स्त्री० [सं०] अस्तित्व; यथार्थता; उत्तमता; अधिकार, प्रभुत्व (हिं०)। **–धारी (रिन्)**–वि० जिसके हाथमें शासनसूत्र हो।

सत्ताइस, सत्ताईस–वि० बीससे सात अधिक। पु० सत्ताइसकी संख्या, २७।

सत्तानबे–वि० नब्बेसे सात अधिक। पु० सत्तानबेकी संख्या, ९७।

सत्तार–पु० [अ०] परदा डालनेवाला, दोष ढाँकनेवाला; ईश्वर।

सत्तावन–वि० पचाससे सात अधिक। पु० सत्तावनकी संख्या, ५७।

सत्तासी–वि० अस्सीसे सात अधिक। पु० सत्तासीकी संख्या, ८७।

सत्तू–पु० सक्तु, भुने हुए अन्न (जौ, चने) का आटा। मु० **–बाँधकर पीछे पड़ना**–किसीके विरुद्ध निरंतर चेष्टाशील रहना; पूरी तैयारीसे किसी काममें लगना।

सत्त्र–पु० [सं०] सोमयज्ञ जो साधारणतः तेरहसे सौ दिनोंतक चलता था; यज्ञ; होम, दानादि; उदारता; पुण्य, धर्म; मकान; आच्छादन; वस्त्र; संपत्ति; जंगल; तालाब; छल, धोखा; छद्मवेश; आश्रयस्थान, पनाह; वह स्थान जहाँ दरिद्रोंको खाना बाँटा जाता है, लंगर; दो बड़े अवकाशोंके बीच किसी संस्थाका लगातार चलनेवाला कार्यकाल।

सत्त्व–पु० [सं०] अस्तित्व; सहजात प्रकृति, स्वभाव; धर्म, गुण; आत्मतत्त्व, चैतन्य; प्राण वायु, जीवन; भ्रूण; पदार्थ; धन; मूल तत्त्व, वायु आदि; प्राणी, जीवधारी; प्रेत; धार्मिकता; सत्य, यथार्थता; शक्ति, जीवशक्ति; बुद्धि, समझदारी; विशेषता; प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक जो सर्वोच्च है (सांख्य); संज्ञा। **–कर्ता (र्तृ)**–पु० प्राणियोंका स्रष्टा। **–गुण**–पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक। **–गुणी (णिन्)**–वि० सत्त्व गुणवाला। **–धाम (न्)**–पु० विष्णु। **–पति**–पु० जीवधारियोंका स्वामी।

–प्रधान–वि० सत्त्वगुणी । **–लक्षणा**–स्त्री० गर्भके लक्षणोंसे युक्त स्त्री । **–लोक**–पु० जीवलोक । **–शाली-(लिन्)**–वि० उत्साही, साहसी । **–शील**–वि० सत्त्वगुणी । **–संपन्न**–वि० सत्त्वगुणयुक्त; धीर, शांतचित्त ।

सत्त्ववान्(वत्)–वि० [सं०] जीवित, जिसका अस्तित्व हो; सत्त्वयुक्त; पुण्यात्मा; साहसी ।

सत्यंकार–पु० [सं०] सत्य करना; वादा पूरा करना, समझौतेकी शर्तें पूरी करना; वादे, ठेकेका काम पूरा करनेके लिए जमानतके रूपमें पेशगी दी जानेवाली रकम ।

सत्य–वि० [सं०] सच, यथार्थ; यथातथ्य; ईमानदार; विश्वस्त; पूरा किया हुआ; पुण्यात्मा; खरा, सच्चा । पु० ब्रह्मलोक; पीपलका पेड़; रामचंद्र; विष्णु; नांदीमुखश्राद्धका देवता; सच्ची बात; सचाई, यथार्थता; लगन; विशुद्धता, खरापन; अच्छाई; पारमार्थिक सत्ता; शपथ; वादा; कृतयुग, सत्ययुग; प्रमाणित सिद्धांत; जल; ब्रह्मा; नवाँ कल्प; मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक । **–काम**–वि० सत्यका प्रेमी । **–घ्न**–वि० प्रतिज्ञा भंग करनेवाला । **–जित्**–पु० तीसरे मन्वंतरका इंद्र; एक दानव; एक यक्ष । **–ज्ञ**–वि० सत्यका जानकार । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सत्या-सत्यका विवेक करनेवाला । पु० तेरहवें मन्वंतरका एक ऋषि । **–दृक्(श्)**–वि० दे० 'सत्यदर्शी' । **–धन**–वि० सत्यको ही सर्वस्व माननेवाला, परम सत्यवादी । **–धर्म**–पु० शाश्वत सत्य; तेरहवें मनुका एक पुत्र । वि० जिसके आदेश सत्य हों । **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम सही हो । **–नारायण**–पु० एक देवता (जो बंगालमें सत्यपीर कहे जाते हैं) । **–निष्ठ**–वि० सत्यपर निष्ठा रखनेवाला, सत्यका प्रेमी । **–पर, –परायण**–वि० ईमानदार, सच्चा । **–पारमिता**–स्त्री० सत्यकी सिद्धि (बौद्ध) । **–पूत**–वि० सत्य द्वारा विशुद्ध किया हुआ । **–प्रतिज्ञ**–वि० वादेका पक्का, वचनका पालन करनेवाला । **–भामा**–स्त्री० सत्राजितकी एक कन्या और कृष्णकी आठ पत्नियोंमेंसे एक । **–भेदी(दिन्)**–वि० वचन भंग करनेवाला । **–युग**–पु० चार युगोंमेंसे पहला, कृतयुग । **–युगी**–वि० [हिं०] सत्ययुगका; बहुत नेक; बहुत पुराना । **–रत**–वि० सत्यपरायण । **–लोक**–पु० सबसे ऊपरका लोक, ब्रह्मलोक । **–वक्ता(क्तृ)**–वि० सत्यवादी । **–वचन**–पु० सत्य भाषण; वादा, प्रतिज्ञा । वि० सत्यवादी । **–वाक**–पु० सत्य बोलना । **–वाक्(च्)**–स्त्री० सत्य वचन । पु० ऋषि; एक अस्त्र-मंत्र; कौवा; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; मनु सावर्णिका एक पुत्र । वि० सत्यवादी । **–वाक्य**–पु० सत्य वचन । **–वाचक**–वि० सत्यवादी । **–वाद**–पु० वादा, प्रतिज्ञा । **–वादी(दिन्)**–वि० स्पष्टवक्ता । **–वाहन**–वि० सत्यका वहन करनेवाला (स्वप्न) । **–वृत्त**–पु० सदाचार । वि० सदाचारी । **–वृत्ति**–स्त्री० सत्यका आचरण । **–व्रत**–वि० सत्यका व्रत रखनेवाला । पु० सत्यपालनका व्रत; एक प्राचीन नरेश; मनु वैवस्वत; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । **–शील, –शीली-(लिन्)**–वि० सत्यपरायण । **–संकल्प**–वि० दृढ़-संकल्प । **–संगर**–वि० अपने वचनका पालन करनेवाला । पु० कुबेर । **–संध**–वि० वचन पूरा करनेवाला, सत्यसंकल्प । **–संधा**–स्त्री० द्रौपदी । **–संरक्षण**–पु० वचन-पालन करना । **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० विश्वस्त गवाह । **–सार**–वि० पूर्णतः सत्य । **–स्थ**–वि० अपने वचनपर टिकनेवाला । **–स्वप्न**–वि० जिसके स्वप्न सत्य होते हों ।

सत्यतः(तस्)–अ० [सं०] सचमुच, दरअसल, वस्तुतः ।

सत्यता–स्त्री० [सं०] सचाई, वास्तविकता; नित्यता ।

सत्यवती–स्त्री० [सं०] पराशरकी पत्नी और व्यासकी माता मत्स्यगंधा; नारदकी पत्नी ।

सत्यवान्(वत्)–वि० [सं०] सत्यसे युक्त, सच्चा । पु० एक अस्त्र-मंत्र; मनु रैवतका एक पुत्र; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; सावित्रीके पति ।

सत्या–स्त्री० [सं०] सच्चाई; एक शक्ति; सीता; व्यासजननी सत्यवती; सत्यभामा; धर्मकी एक कन्या ।

सत्याग्रह–पु० [सं०] सत्यके लिए आग्रह (सत्य पक्षके लिए कष्ट आदि झेलते हुए लक्ष्यकी प्राप्तिका उद्योग करना) ।

सत्याग्रही(हिन्)–वि० [सं०] उद्देश्य-पूर्तिके लिए सत्याग्रहका सहारा लेनेवाला ।

सत्यात्मक–वि० [सं०] सत्य जिसका सार हो ।

सत्यात्मज–पु० [सं०] सत्या या सत्यभामाका पुत्र ।

सत्यात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] सत्यपरायण । पु० सत्यवादी व्यक्ति ।

सत्यानास–पु० सर्वनाश, बरबादी ।

सत्यानासी–वि० सत्यानास, सर्वनाश करनेवाला; अभागा, भाग्यहीन । स्त्री० भड़भाँड़, घमोय ।

सत्यानुरक्त–वि० [सं०] सत्यवादी, सत्यभक्त ।

सत्यापन–पु० [सं०] सत्यकी जाँच-पड़ताल; (वेरिफिकेशन) जाँच-पड़तालके बाद किसी बातकी सत्यता स्थापित करना; प्रमाणादि देकर किसी कथनकी सत्यता दिखाना; सत्य भाषण या सत्यका पालन; सौदेका इकरार ।

सत्यालापी(पिन्)–वि० [सं०] सत्यवादी ।

सत्येतर–पु० [सं०] वह जो सत्यसे भिन्न हो, असत्यता ।

सत्र–पु० [सं०] दे० 'सत्त्र' । **–न्यायालय**–पु० (सेशन-कोर्ट) जूरी आदिकी सहायतासे हत्या आदि अभियोगोंपर विचार करनेवाली अदालत ।

सत्रप–पु० दे० 'क्षत्रप' । वि० [सं०] लज्जाशील, संकोची; विनम्र ।

सत्रह–वि०, पु० दे० 'सत्तरह' ।

सत्रहीँ–स्त्री० मृत्युके बाद १७वें दिनका कृत्य ।

सत्रावसान–पु० [सं०] (प्रोरोगेशन) विधानसभा आदिका पूर्णतः भंग या उत्सर्जन किये बिना अनिश्चित कालके लिए, प्रायः अगले सत्रतकके लिए, स्थगित कर दिया जाना ।

सत्रु*–पु० दे० 'शत्रु' । **–घन, –हन**–पु० दे० 'शत्रुघ्न' ।

सत्व–पु० दे० 'सत्त्व' ।

सत्वर–वि० [सं०] तेज, फुर्तीला । अ० शीघ्र, फौरन ।

सथर*–पु० स्थल, भूमि, पृथ्वी ।

सथिया*–पु० दीवार, कलश आदिपर अंकित किया जानेवाला एक मांगलिक चिह्न, स्वस्तिक [卐] ।

सथूत्कार–वि० [सं०] जिसके मुँहसे बोलते समय थक

निकले। पु० वातके साथ थूक निकलना।

सद*—वि० ताजा—'सद माखन साजो दधि मीठो मधु मेवा पकवान'—सू०। नया, हालका। स्त्री०आदत, टेव। अ० सद्यः, तुरंत।

सद(स्)—पु० [सं०] निवास-स्थान; सभा।

सदई*—अ० दे० 'सदा'।

सदक़ा—पु० [अ०] वह चीज जो खुदाके नामपर फक़ीरोंको दी जाय; खैरात; वह चीज जो किसीपर वारकर दान की जाय या चौराहेपर रख दी जाय; अनुग्रह, प्रसाद (यह सब……का सदका है)। —(क़े)का—सदका किया हुआ, वारा हुआ (…का कौआ, चिराग, बुलबुल इ०)। **—का कौआ**—वह कौआ जो किसीपर वारकर छोड़ दिया जाय; (ला०) काला-कलूटा आदमी। **—का गुड्डा**—दे० 'सदक़ेका पुतला'। **—का चौराहा**—वह चौराहा जहाँ सदकेकी चीजें रखी जायँ। **—का पुतला**—वह पुतला जो सदकेकी चीजोंके साथ चौराहेपर रख दिया जाता है। **मु०—(क़े) उतारना**—कोई चीज किसीके सिरके चारों ओर घुमाकर किसीको देना या चौराहेपर रख आना। **—करना**—निछावर करना, वारना;(स्त्रि०)चूल्हेमें डालना ('उन हाथोंके सदके करूँ जो मेरे बच्चेपर चलें')। **—जाना**—वारी जाना, निछावर होना। **—में छोड़ना**—वारकर छोड़ना (किसी चिड़ियाको)। **—होना**—निछावर होना, वारी जाना।

सदन—पु० [सं०] निवासस्थान, घर, मकान; वह भवन या स्थान जहाँ किसी विधानसभा आदिका अधिवेशन हो; उक्त स्थानमें होनेवाली सभा या उसमें उपस्थित सदस्योंका समूह; यज्ञभवन; बैठना, आसन; एक भक्त कसाई।

सदमा—पु० [अ०] धक्का, आघात; चोट; दिलपर लगनेवाली चोट, दुःख शोकका आघात; हानि, नुकसान। **मु०—उठाना**—दुःख, हृदयपर हुए आघातको सह लेना। **—पहुँचना**—चोट लगना; नुकसान पहुँचना।

सदय—वि० [सं०] दयालु, रहमदिल। **—हृदय**—वि० रहमदिल, कोमलचित्त।

सदर—पु० दे० 'सद्र'। **—अमीन**—पु० वह अधिकारी जो जजके मातहत हो। **—आला**—पु० मातहत जज (सब जज)। **—जहाँ**—पु० मुसलमान स्त्रियोंका माना हुआ एक जिन। **—दीवान**—पु० .शाही खजानेका प्रधान अधिकारी। **—दीवानी-अदालत**—स्त्री० हाईकोर्ट। **—बाज़ार**—पु० छावनीका बड़ा बाजार। **—बोर्ड**—पु० मालका सर्वोच्च विभाग। **—मालगुजार**—पु० वह आदमी जो सीधे सरकारको मालगुजारी अदा करे।

सदरी—स्त्री० बिना आस्तीनकी मिरजई, फतुही।

सदर्थना*—स० क्रि० समर्थन, पुष्टि करना।

सदर्प—वि० [सं०] घमंडी। अ० दर्प-पूर्वक।

सदसद्विवेक—पु० [सं०] भले-बुरेकी पहचान।

सदसि—अ० [सं०] सभामें। * गृह; सभा।

सदस्य—पु० [सं०] किसी सभा, समाजसे संबंध रखनेवाला व्यक्ति, सभ्य, सभासद, पंच।

सदस्यता—स्त्री० [सं०] सदस्यकी स्थिति, भाव या पद।

सदा—अ० [सं०] नित्य, हमेशा; निरंतर। **—गति**—वि० जो हमेशा गतियुक्त रहे। पु० वायु (कविप्रि०); सूर्य; ब्रह्म। **—फल**—वि० हमेशा फलनेवाला। पु० बेल; कटहल; नारियल; गूलर; एक नीबू। **—बरत**—पु० [हिं०] दे० 'सदावर्त'। **—बहार**—पु० [हिं०] एक फूल। वि० हमेशा फूलनेवाला; जिसमें हमेशा पत्तियाँ रहें। **—वर्त**—पु० [हिं०] हमेशा अन्न बाँटनेका व्रत; ऐसा अन्न। **—वर्ती**—वि०, पु० हमेशा अन्न वितरण करनेवाला, दानी। **—शिव**—वि० जो सदा दयालु रहे; जो हमेशा प्रसन्न या उन्नतशील रहे। पु० शिव। **—सुहागिन**—वि०, स्त्री० [हिं०] जो हमेशा सुहागिन बनी रहे। स्त्री० सिंदूरपुष्पी; एक छोटी चिड़िया; वेश्या।

सदा—पु० [अ०] ध्वनि, आवाज; प्रतिध्वनि; आहट; फकीरके माँगनेकी आवाज; पुकार, रट। **मु०—देना,—लगाना**—फकीरका आवाज लगाना; पुकारना।

सदाक़त—स्त्री० [अ०] सचाई; खरापन; तसदीक।

सदाचरण—पु० [सं०] सद्व्यवहार, अच्छा चाल-चलन।

सदाचार—पु० [सं०] अच्छा चाल-चलन, अच्छा व्यवहार।

सदाचारिता—स्त्री० [सं०] दे० 'सदाचरण'।

सदाचारी(रिन्)—वि० [सं०] अच्छे चाल-चलनवाला, सुकर्मी।

सदात्मा(त्मन्)—वि० [सं०] अच्छे स्वभावका, नेक।

सदानंद—वि० [सं०] हमेशा आनंदमें रहनेवाला; हमेशा आनंद देनेवाला। पु० हमेशा रहनेवाला आनंद; शिव; विष्णु।

सदार—वि० [सं०] सपत्नीक।

सदारत—स्त्री० [अ०] सद्रका पद, सभापतित्व।

सदाशय—वि० [सं०] उदाराशय, ऊँचे विचारका।

सदिया—स्त्री० भूरे रंगकी मुनियाँ।

सदी—स्त्री० [फ़ा०] सौ सालका काल, शताब्दी; सैकड़ा।

सदुक्ति—स्त्री० [सं०] अच्छे शब्द, अच्छा कथन।

सदुपदेश—पु० [सं०] उत्तम शिक्षा; अच्छी सलाह।

सदुपयोग—पु० [सं०] अच्छा उपयोग, अच्छे काममें लगाया जाना।

सदूर*—पु० शार्दूल, सिंह।

सदृश—वि० [सं०] समान, एक जैसा; उचित; उपयुक्त।

सदृशता—स्त्री० [सं०) समानता, एकरूपता।

सदेह—वि० [सं०] देहयुक्त। अ० बिना शरीर छोड़े।

सदैव—अ० [सं०] सर्वदा, हमेशा ही।

सदोष—वि० [सं०] दोषयुक्त, दोषी, अपराधी। **—मानव-हत्या**—स्त्री० (कल्पेबिल होमीसाइड) ऐसा मानववध जो दोष या अपराध माना जाय।

सद्—वि० [सं०] 'सत्'का समासगत रूप। **—गति**—स्त्री० अच्छी दशा; मोक्ष-प्राप्ति। **—गव**—पु० अच्छा साँड़। **—गुण**—वि० अच्छे गुणोंसे युक्त। पु० अच्छा गुण; सज्जनता। **—गुरु**—पु० अच्छा गुरु, धर्मगुरु। **—ग्रंथ**—पु० उत्तम ग्रंथ; सन्मार्गकी ओर प्रवृत्त करनेवाला ग्रंथ। **—ग्रह**—पु० शुभ ग्रह। **—धर्म**—पु० अच्छा धर्म; अच्छा नियम; अच्छा न्याय। **—भाव**—पु० नेकमिज़ाजी; सज्जनता; अच्छी नीयत; दयालुता। **—वंश**—पु० अच्छा बाँस; अच्छा कुल। **—वार्ता**—स्त्री० अच्छी वार्ता; अच्छा

समाचार । **-वृत्त**-पु० सुंदर वर्तुलाकार आकृति; सदाचार। वि० सदाचारयुक्त; अच्छे छंदोंवाला । **-वृत्ति**-स्त्री० सद्व्यवहार, सदाचार ।

सद्द*-पु० शब्द, ध्वनि । अ० शीघ्र । वि० ताजा, टटका।

सद्म (न्)-पु० [सं०] मकान, निवास-स्थान; वेधशाला; युद्ध, संघर्ष; पृथ्वी और आकाश ।

सद्यः (द्यस्)-अ० [सं०] आज ही; उसी दिन; तत्क्षण, फौरन; तेजीसे; हालमें ही, कुछ ही काल पूर्व, अभी-अभी । **-(द्यः) कृत**-वि० जो तुरंत, उसी समय किया गया हो । **-क्रीत**-वि० उसी दिन खरीदा हुआ । पु० एक एकाह । **-प्रसूता**-स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी-अभी प्रसव किया है । **-प्राणकर**-वि० तुरंत शक्ति बढ़ानेवाला । **-फल**-वि० जिसका फल तुरंत देख पड़े । **-स्नात**-वि० तुरंतका नहाया हुआ ।

सद्यश्छिन्न-वि० [सं०] तुरंतका काटा या काटकर अलग किया हुआ ।

सद्यस्तन-वि० [सं०] ताजा, नया; उसी समयका ।

सद्योजात-वि० [सं०] जो अभी उत्पन्न हुआ हो ।

सद्योजाता-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो ।

सद्योत्पन्न-वि० [सं०] दे० 'सद्योजात' ।

सद्योव्रण-पु० [सं०] ताजा घाव ।

सद्योहत-वि० [सं०] जो अभी हत हुआ हो ।

सद्र-पु० [अ०] छाती, सीना; सर्वोच्च स्थान; शीर्षभाग; उच्च पदस्थ जनके बैठनेका स्थान; प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान; सदर मुकाम; सभापति; मकानका सहन; सामनेका रुख । **-अदालत**-स्त्री० सर्वोच्च न्यायालय । **-(द्रे)आज़म**-पु० वजीरे आजम, प्रधान मंत्री; प्रधान जज । **-मजलिस**-पु० सभापति, मीर मजलिस ।

सधन-वि० [सं०] धनी, धनयुक्त। पु० सम्मिलित धन, सामान्य धन ।

सधना-अ० क्रि० काम पूरा होना, कार्य सिद्ध होना; सँभलना; अपने अनुकूल होना; घोड़ों आदिका सीखकर कामके लायक होना, निकलना; अभ्यस्त होना; साधा जाना, नापा जाना; निशाना ठीक होना ।

सधर*-पु० ऊपरी ओठ ।

सधर्म-वि० [सं०] एक ही धर्म या स्वभाववाला; एक ही नियमके अंदर आनेवाला, समान, सदृश; पुण्यात्मा, सच्चा; एक ही जैसे कर्तव्योंवाला ।

सधर्मा(र्मन्)-वि० [सं०] समान धर्मयुक्त ।

सधर्मी(र्मिन्)-वि० [सं०] समान धर्मका अनुयायी ।

सधवा-स्त्री० [सं०] सुहागिन, सौभाग्यवती ।

सधाना-स० क्रि० साधनेके काममें दूसरेको प्रवृत्त करना ।

सधावर-पु० गर्भवती स्त्रीको दिया जानेवाला उपहार ।

सधूम-वि० [सं०] धुएँसे भरा या ढका हुआ ।

सनंदन-पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक ।

सन-वि० स्तब्ध । * प्र० करणकी विभक्ति। पु० एक पौधा जिसकी छालसे रस्सी आदि बनाते हैं; दे० 'सन्'; [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक; लाभ, प्राप्ति; हाथीका कान फटफटाना । **-पर्णी**-स्त्री० असनपर्णी ।

सऩ-स्त्री० किसी चीजके हवामें तेजीसे चलनेसे उत्पन्न शब्द । **-सन**-स्त्री० हवाकी आवाज, सनसनाहट ।

सनअ़त-स्त्री० [अ०] कारीगरी; हुनर; पेशा; अलंकार (सा०) । **-गर**-पु० कारीगर; पेशावर ।

सनई-स्त्री० सनका एक भेद ।

सनक-पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानसपुत्रोंमेंसे एक । स्त्री० [हिं०] धुन, झोंक; खब्त, दीवानगी, पागलपन । **मु०-आना**-पागल होना । **-चढ़ना,-सवार होना**-धुन सवार होना । **-लेना**-पागलपनका कोई काम करना ।

सनकना-अ० क्रि० उन्मत्त, पागल, झक्की होना ।

सनकाना-स० क्रि० किसीको पागल बनाना ।

सनकारना*-स० क्रि० इशारा करना; इशारेसे बुलाना-'सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ'-रामा०; किसी कामके लिए संकेत करना ।

सनकियाना-स० क्रि० संकेत करना; पागल बनाना । अ० क्रि० पागल होना ।

सनत्-पु० [सं०] ब्रह्मा । **-कुमार**-पु० ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक; जैनोंके बारह चक्रवर्तियोंमेंसे एक; यौवनकीसी अवस्था बनाये रखनेवाला कोई संत; तीसरा स्वर्ग (जैन) ।

सनद-स्त्री० [अ०] वह जिसपर पीठ टेकी जाय, तकियागाह; प्रमाण; प्रमाणपत्र, सर्टिफिकेट; अनुमति-पत्र; तमस्सुक, किबाला; काजी या मुफ्तीकी मुहर । वि० प्रामाणिक, प्रमाणरूप; भरोसा करने योग्य । **-याफ़्ता**-वि० जिसके पास सनद या प्रमाणपत्र हो ।

सनदी-वि० प्रामाणिक; सनदयाफ्ता । * स्त्री० हाल, वृत्तांत ।

सनना-अ० क्रि० जलके योगसे चूर्णादिका एकमें मिलना; लथपथ होना; लिप्त होना, पगना ।

सननी-स्त्री० पानीमें साना हुआ भूसा, सानी ।

सनमान*-पु० दे० 'सम्मान' ।

सनमानना*-स० क्रि० आदर, सत्कार करना ।

सनमुख*-अ० दे० 'सम्मुख' ।

सनसनाना-अ० क्रि० गतिशील पदार्थमें हवा लगने, हवा चलने या पानी उबलने आदिसे 'सन-सन' शब्द उत्पन्न होना ।

सनसनाहट-स्त्री० हवा चलने, कोरे घड़ेमें पानी डालने, जलके उबलने आदिसे उत्पन्न 'सन-सन'की आवाज ।

सनसनी-स्त्री० झुनझुनी; भय, आश्चर्य आदिके कारण उत्पन्न स्तब्धता; सन्नाटा; खलबली; सनसनाहट ।

सनहकी-स्त्री० मुसलमानोंके काममें आनेवाला बड़ी तश्तरी जैसा मिट्टीका एक बरतन ।

सनाढ्य-पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति ।

सनातन-वि० [सं०] नित्य; अनादि; सुनिश्चल, स्थायी; प्राचीन । पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव । **-धर्म**-पु० प्राचीन धर्म; परंपरागत धर्म (जो साधारण हिंदू जनतामें प्रचलित है) । **-पुरुष**-पु० विष्णु; आदि पुरुष ।

सनातनी-वि० सनातन धर्मका अनुयायी; बहुत पुराना । स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; दुर्गा; सरस्वती ।

सनाथ-वि० [सं०] स्वामियुक्त, जिसका कोई रक्षक हो;

···से युक्त; * सफल-'भये सखि नैन सनाथ हमारे'-सू०; कृतकृत्य-'जो कदाचि मोहिं मारिहैं तौ पुनि होव सनाथ'-रामा०। **मु०-करना**-आश्रय देना।

सनाथा-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, जीवद्भर्तृका।

सनाभि-वि० [सं०] नाभियुक्त; समान केंद्रवाले (जैसे पहियेके आरे); सहोदर, सगा; सपिंड; समान, सदृश। पु० सगा भाई; सातवीं पीढ़ीतकका संबंधी।

सनाभ्य-पु० [सं०] एक ही वंशका सातवीं पीढ़ीतकका संबंधी।

सनामा(मन्)-वि० [सं०] समान या एक ही नामका।

सनाय-स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं, सोनामुखी।

सनाह-पु० कवच, बख्तर।

सनि*-पु० दे० 'शनि'।

सनित*-वि० साना, मिलाया हुआ, मिश्रित।

सनिद्र-वि० [सं०] सोया हुआ, निद्रायुक्त।

सनियम-वि० [सं०] नियमित; जो धर्मानुष्ठान कर रहा हो।

सनिर्घृण-वि० [सं०] निष्ठुर, कठोर, बेरहम।

सनीचर*-पु० दे० 'शनैश्चर'।

सनीचरी-स्त्री० शनिकी दशा। † वि०शनिवारको लगनेवाला (बाजार)।

सनीड, सनील-वि० [सं०] जो एक ही घोंसलेमें रहते हों; साथ रहनेवाले; संबंधी, समीपी।

सनेस, सनेसा*-पु० दे० 'संदेश'।

सनेह*-पु० दे० 'स्नेह'।

सनेहिया*-पु० दे० 'सनेही'।

सनेही-वि० स्नेही, प्रेमी। पु० प्रेम करनेवाला।

सनै-सनै*-अ० दे० 'शनैः-शनैः'।

सनोवर-पु० [अ०] चीड़का पेड़।

सन्-पु० [अ०] साल, संवत्। **-ईसवी**-पु० ईसाइयोंका संवत् जो ईसाके जन्मदिनसे चला है। **-हाल**-पु० वर्तमान संवत्। **-हिजरी**-पु० मुसलमानोंका संवत् जिसका आरंभ मुहम्मदके मक्केसे हिजरत करनेकी तिथिसे हुआ है। **-(ने)जुलूस**-पु० किसी राजाके राज्याभिषेककी तिथिसे चलनेवाला संवत्।

सन्न-वि० भय आदिसे स्तब्ध, स्तंभित।

सन्नद्ध-वि० [सं०] कटिबद्ध; बक्तरबंद; युद्धके लिए तैयार; व्याप्त,···से संपन्न, युक्त; संलग्न।

सन्नाटा-पु० निस्तब्धता, नीरवता; निर्जनता; स्तब्धता, चुप्पी; हवा चलनेका शब्द, सनसनाहट। वि० निर्जन; नीरव। **मु०-खींचना,-मारना**-बिलकुल चुप हो जाना। **-बीतना**-उदासीमें वक्त कटना। **-(टे)का**-सनसन आवाजके साथ बहनेवाला। **-के साथ,-से**-तेजीसे। **-में आना**-स्तंभित हो जाना, चुप रह जाना।

सन्नाह-पु० [सं०] हथियारसे लैस होना; कवच।

सन्निकट-अ० [सं०] पास, नजदीक।

सन्निकर्ष-पु० [सं०] निकट लाना; सामीप्य; उपस्थिति; संबंध; इंद्रियका विषयसे संबंध (न्या०)।

सन्निधान-पु०, **सन्निधि**-स्त्री० [सं०] साथ, पास रखना; सामीप्य; गोचरता; आधार; अपने पास रखना; योग।

सन्निपात-पु० [सं०] एक साथ गिरना; मिलना, संगम; टक्कर; मेल, योग; समूह; वात, पित्त और कफका एक साथ प्रकोप जो भीषण होता है।

सन्निविष्ट-वि० [सं०] साथ बैठा हुआ; एकत्रीभूत; लीन; समाया हुआ, प्रविष्ट; आसन्नवर्ती, निकटस्थ; जिसने पड़ाव डाला हो। **-करना**-स० क्रि० (टु इनसर्ट) हटाये हुए शब्द, शब्दसमूह आदिके स्थानमें अन्य शब्द, शब्दसमूह आदि रखना या बैठाना।

सन्निवेश-पु० [सं०] प्रवेश करना; साथ बैठना; एकत्र होना; समाना, अँटना; बैठने, रहनेका स्थान; कुटीर, वासस्थान; उचित स्थानपर बैठाना; जमाना; नगर आदिके पासका वह मैदान जहाँ मनोरंजन, व्यायाम आदिके लिए लोग एकत्र होते हैं; रचना, निर्माण।

सन्निवेशन-पु० [सं०] बैठाना; रखना; जमाना; जड़ना; मूर्ति स्थापित करना; वासस्थान; व्यवस्था।

सन्निवेशित-वि० [सं०] प्रविष्ट कराया हुआ; बैठाया, जमाया हुआ; ठहराया हुआ; स्थापित किया हुआ।

सन्निहित-वि० [सं०] पास रखा हुआ; निकटस्थ, आसन्न; उपस्थित; रखा, जमाया हुआ; ठहराया हुआ; उद्यत, तैयार; ठहरा हुआ, स्थित।

सन्न्यसन-पु० [सं०] त्याग; अलग करना; सांसारिक विषयोंका त्याग; जमा करना, सौंपना; रखना, धरना।

सन्न्यस्त-वि० [सं०] अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ; विरक्त; रखा हुआ; जमा किया हुआ; सौंपा हुआ; ठहराया हुआ।

सन्न्यास-पु० [सं०] छोड़ना, परित्याग; विरक्ति; हिंदुओंका चतुर्थाश्रम; धरोहर; पण, दावँ, बाजी; शरीरत्याग, मृत्यु; जटामासी; ठहराव, शर्त; एक तरहका मूर्च्छारोग। **-ग्रहण**-पु० चतुर्थाश्रममें प्रवेश करना।

सन्न्यासी(सिन्)-वि० [सं०] त्याग करनेवाला; पृथक् करनेवाला; भोजनका त्याग करनेवाला, त्यक्ताहार। पु० चतुर्थाश्रममें प्रविष्ट व्यक्ति।

सन्मान-पु० दे० 'सम्मान'; [सं०] सज्जनोंका आदर।

सन्मानना*-स० क्रि० दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग-पु० [सं०] सुमार्ग, सुपथ।

सन्मुख-अ० दे० 'सम्मुख'।

सन्यासी-पु० दे० 'सन्न्यासी'।

सपक्ष-वि० [सं०] डैनोंवाला; पंखदार (बाण); पक्षवाला, जिसका दो पक्षोंमेंसे कोई एक पक्ष हो; एक ही (समान) पक्षका; मित्रों, सहायकोंसे युक्त; एकजातीय; समान, सदृश (ला०); जिसमें साध्य या अनुमानका विषय हो। पु० मित्र, सहायक; समर्थक; सहजातीय व्यक्ति; वह दृष्टांत जिसमें साध्य हो।

सपच्छ*-वि०, पु० दे० 'सपक्ष'।

सपत*-अ० दे० 'सपदि'।

सपताक-वि० [सं०] झंडेसे युक्त।

सपत्न-वि० [सं०] शत्रुताका भाव रखनेवाला, वैरी। पु० शत्रु, दुश्मन। **-जित्**-वि० शत्रुओंको जीतनेवाला।

सपत्नी–स्त्री० [सं०] सौत।

सपत्नीक–वि० [सं०] पत्नीके साथ।

सपत्र–वि० [सं०] पंखदार।

सपथ–स्त्री० दे० 'शपथ'।

सपदि–अ० [सं०] शीघ्र, तत्काल, तुरंत।

सपन*–पु० दे० 'स्वप्न'।

सपना–पु० दे० 'स्वप्न'। मु०–**होना**–अप्राप्य होना।

सपरदा, सपरदाई–पु० नाचनेवाली वेश्याके साथ साज बजानेवाला, साजिंदा, समाजी, भँड़ुआ।

सपरना–अ० क्रि० पार लगना, पूरा होना, हो सकना; तैयारी करना; † स्नान करना (बुंदेल०)।

सपराना–स० क्रि० पूरा करना, खतम करना, पार लगाना; तैयारी कराना; † स्नान कराना।

सपरिकर–वि०[सं०]अनुचरोंके दलके साथ,दलबलके साथ।

सपरिजन–वि० [सं०] दे० 'सपरिकर'।

सपरिवार–वि०[सं०] परिवारके सदस्योंके साथ।

सपरिवाह–वि० [सं०] उपटकर बहता हुआ; ऊपरतक भरा हुआ।

सपरिश्रम कारावास–पु० [सं०] (रिगरस इंप्रिज़न्मेंट) वह कारावास जिसमें बंदीसे कठिन परिश्रमके काम कराये जायँ।

सपाट–वि० चौरस, समथर, जो ऊबड़-खाबड़ न हो।

सपाटा–पु० तेजी, झोंक; झपट; दौड़।

सपाद–वि० [सं०] चरण-सहित; चतुर्थांश बढ़ाया हुआ।

सपिंड–पु०[सं०] उन्हीं (समान) पितरोंको पिंड देनेवाला; छः पुश्त ऊपरसे छः पुश्त नीचेतकका संबंधी।

सपिंडीकरण–पु० [सं०] श्राद्धविशेष जिसमें मृतकको पिंडदान द्वारा पितरोंके साथ मिलाते हैं, किसीको सपिंड होनेका अधिकार प्रदान करना।

सपुलक–वि० [सं०] रोमांचयुक्त।

सपूत–पु० अच्छा, कुलका नाम बढ़ानेवाला, पुत्र।

सपूती–स्त्री० सपूत होनेका भाव; अच्छे पुत्रकी माता।

सपेत*–वि० सफेद, श्वेत।

सपेती*–स्त्री० दे० 'सफ़ेदी'।

सपेद–वि० [फ़ा०] दे० 'सफ़ेद'।

सपेला, सपोला–पु० पोवा, साँपका छोटा बच्चा।

सप्त (न्)–वि० [सं०] छः से एक अधिक। पु० सातकी संख्या। –**ऋषि**–पु० दे० 'सप्तर्षि'। –**कोण**–पु० सात रेखाओंसे घिरा हुआ क्षेत्र। –**जिह्व**–वि० सात जिह्वाओंवाला। पु०अग्नि।–**ज्वाल**–पु०अग्नि।–**दश(न्)**–वि० सत्तरह। –**द्वीप**–पु० पृथ्वीके सातों खंड। –**धातु**–वि० सात धातुओंवाला (शरीर)। स्त्री० शरीरके सात तत्त्व–पित्त, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, मज्जा और शुक्र। –**नाडिका**–स्त्री० सिंघाड़ा। –**पदी**–स्त्री० विवाहकी एक विधि जिसमें अग्निकी सात बार परिक्रमा की जाती है; संधि पक्की करनेके लिए अग्निकी सात बार परिक्रमा करना। –**पर्ण,–पर्णक**–वि० सात पत्तोंवाला। पु० छतिवन। –**पर्णी**–स्त्री० लजालू; छतिवनका फूल; एक मिठाई। –**पाताल**–पु० सात अधोलोक–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।–**पुत्री**–स्त्री० एक तरहकी तुरई, सतपुतिया। –**पुरी**–स्त्री० सात पुरियाँ–अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका–जो मोक्ष देनेवाली मानी जाती हैं। –**प्रकृति**–स्त्री० राज्यके सात अंग–राजा, मंत्री, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग और सेना। –**भुज**–पु० (हेप्टेगॉन) सात भुजाओंवाली आकृति। –**राशिक**–पु० त्रैराशिक जैसी गणितकी एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं। –**विध**–वि० सात प्रकारका। –**शती**–स्त्री० सात सौका समूह; सात सौ पद्योंका संग्रह। –**स्वर**–पु० संगीतका सप्तक। –**हय**–पु० दे० सप्ताश्व' (सूर्य)।

सप्तक–पु० [सं०] सातका संग्रह; संगीतके सात स्वरोंका समाहार।

सप्तम–वि० [सं०] सातवाँ।

सप्तमी–स्त्री० [सं०] पक्षकी सातवीं तिथि; अधिकरण कारककी विभक्ति (व्या०)।

सप्तर्षि–पु० [सं०] सात ऋषियों—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि–का मंडल; सात ताराओंका एक मंडल।

सप्तांशु–वि० [सं०] सात किरणोंवाला। पु० अग्नि।

सप्तार्चि(स्)–वि० [सं०] सात शिखाओंवाला। पु० अग्नि।

सप्तार्णव–पु० [सं०] सातों समुद्र।

सप्तालु–पु० [सं०] सफ्तालू, सतालू।

सप्तास्र–पु० [सं०] सप्तभुज क्षेत्र।

सप्ताश्व–पु० [सं०] सूर्य (सात घोड़ोंवाले रथके कारण)।

सप्ताह–पु० [सं०] सात दिनकी अवधि, हफ्ता।

सप्रतिबंध स्वीकृति–स्त्री० [सं०] (कंडीशनल या क्वालिफाइड एक्सेप्टेंस) दे० 'विशेषित स्वीकृति'।

सप्रमाण–वि० [सं०] प्रमाणयुक्त; प्रामाणिक, ठीक।

सफ़–स्त्री० [अ०] पाँत, कतार; फर्श; चटाई। –**दर**–वि० [अ०] सफोंको तोड़नेवाला; वीर, योद्धा।

सफतालू–पु० एक फल-वृक्ष, आड़ू।

सफ़र–पु० [अ०] हिजरी सन्का दूसरा महीना जिसे मुसलमान स्त्रियाँ मनहूस समझती हैं; शहरसे बाहर जाना; यात्रा; रवानगी, कूच। –**ख़र्च**–पु० सफरका खर्च, मार्गव्यय। –**नामा**–पु० भ्रमणवृत्तांत।

सफरमैना–पु० [अं० सैपरमैन] सेनाके वे कर्मचारी जो फौजके आगे जाकर खाईं, रास्ता आदि तैयार करते हैं।

सफरी–स्त्री० [सं०] एक तरहकी छोटी चमकीली मछली।

सफ़री–वि० [अ०] सफरका; यात्रा-संबंधी; यात्राके उपयुक्त। पु० मुसाफिर, यात्री; अमरूद–'सफरी, सेब, छुहारे, पिस्ता जे तरबूजा नाम'–सू०। स्त्री० राहखर्च।

सफल–वि० [सं०] फलयुक्त; फल उत्पन्न करनेवाला; कृतकार्य, कामयाब; सार्थक; अंडयुक्त, बधिया नहीं।

सफलता–स्त्री० [सं०] कामयाबी; पूर्णता; सार्थकता।

सफलित–वि० दे० 'सफलीभूत'।

सफलीकरण–पु० [सं०] सफल करना; सिद्ध, पूर्ण करना।

सफलीभूत–वि० [सं०] कामयाब; जो सिद्ध, पूर्ण हो।

सफ़हा–पु० [अ०] पन्ने या वरकका एक पार्श्व, पृष्ठ।

सफ़ा–स्त्री० [अ०] सफाई। वि० दे० 'साफ'। –**चट**–

वि० बिलकुल साफ़, मैदान, जिसपर कोई पेड़-पौधा न हो; अच्छी तरह मुँड़ा हुआ (सिर)। पु० सफ़हा, पृष्ठ।

सफ़ाई–स्त्री० साफ होना, स्वच्छता; झाड़-पोंछ; मैल-गंदगीका दूर किया जाना; चमक; चिकनाहट; खुरदरापनका न रहना; सरलता; हृदय-शुद्धि; नेकनीयती, सचाई, खरापन; हिसाबका चुकता हो जाना; मेल, सुलह (सफ़ा हो जाना); समाप्ति; तबाही, बरबादी; दोषसे मुक्ति; अभियुक्तका बचाव, उसकी निर्दोषता सिद्ध करनेके लिए पेश की जानेवाली गवाही इ०, अभियुक्तपक्ष (–का गवाह, वकील); फुरती, चतुराई (–का हाथ); (ला०) निर्लज्जता।

सफ़ाया–पु० समाप्ति; नाश; संहार। **मु०–कर देना**–खत्म कर देना, मिटा देना; सबको मार डालना।

सफ़ीना–पु० किताब; बही; समन।

सफीर–स्त्री० चिड़ियोंकी आवाज; सीटी; आवाज।

सफ़ीर–पु० [अ०] दूत, राजदूत।

सफील–स्त्री० दे० 'सफीर' (सीटी; आवाज)।

सफ़ूफ़–पु० [अ०] चूर्ण; चूर्णरूप औषध, चूरन।

सफ़ेद–वि० [फ़ा०] उजला, श्वेत; गोरा; कोरा; सादा (कागज)। **–दाग़**–पु० श्वेतकुष्ठ। **–पोश**–वि० सफेद कपड़े पहननेवाला; भला आदमी; जो अमीर न होते हुए भी भले आदमियोंकी तरह रहे, शिष्ट किंतु अल्पवित्त (जन)। **–(दो) सियाह**–पु० भला-बुरा, बनाना-बिगाड़ना। **मु०–पड़ जाना**–(भय, रोग आदिसे) चेहरेका रंग उड़ जाना, पीला पड़ जाना।

सफ़ेदा–पु० एक तरहका आम; एक पेड़ जिसका धड़ सफेद होता है; जस्तेसे बनाया जानेवाला सफेद चूर्ण जो दवाके काम आता है।

सफ़ेदी–स्त्री० सफेद होना, श्वेतता; गोराई; चूनेकी पुताई (करना, फेरना, होना); सबेरेका उजाला; सफेद रंगका स्राव। **मु०–आना**–बुढ़ापा आना, बाल सफेद होना।

सबंधमुक्ति–स्त्री०[सं०](पैरोल) किसी बंदीका कारागृहसे इस प्रतिबंधपर कुछ समयके लिए छोड़ दिया जाना कि अवधि समाप्त होते ही वह पुनः कारागारमें उपस्थित हो जायगा और मुक्तिकालमें कोई अवांछनीय या वर्जित कार्य न करेगा, सप्रतिबंधमुक्ति, साधिमुक्ति।

सब–वि० कुल (संख्या या राशि); समस्त, सारा, संपूर्ण।

सबक़–पु० [अ०] पाठ, पुस्तकका उतना अंश जितना एक दिनमें गुरुसे पढ़ा जाय; शिक्षा, सीख; वह दंड जो चेतावनीका काम दे (देना, मिलना)। **मु०–पढ़ाना**–शिक्षा देना; पट्टी पढ़ाना, बहकाना। **–लेना–पढ़ना**; नसीहत लेना।

सबज–वि० दे० 'सब्ज़'।

सबद*–पु० शब्द; किसी महात्माकी बानी, भजन आदि।

सबब–पु० [अ०] कारण; उपादान कारण, हेतु; दलील।

सबर–पु० दे० 'सब्र'। * वि० दे० 'सबल'।

सबरा*–वि० सब, कुल, सारा।

सबरी–स्त्री० गड्ढा या दीवार खोदनेका आला, छोटा रंभा; दे० 'शबरी'।

सबल–वि० [सं०] सशक्त, बलवान्; सेनायुक्त।

सबार, सबारै*–अ० जल्द, शीघ्र।

सबील–स्त्री०[अ०] रास्ता; उपाय–'बचै न बड़ी सबील हू चील घोंसुआ मांस'–वि०; वसीला; वह स्थान जहाँ लोगोंको पानी, शरबत आदि पिलाया जाय, प्याऊ।

सबीह–स्त्री० दे० 'शबीह'। वि० [अ०] गोरा-चिट्टा।

सबूत–पु० दे० 'सुबूत'।

सबेरा–पु० दे० 'सवेरा'।

सब्ज़–वि० [फ़ा०] हरा, कच्चा; हरा-भरा। **–क़दम**–वि० जिसके क़दम, पौरा, अमंगलकर माने जाते हों, मनहूस (केवल व्यंग्यमें)। **–बख़्ती**–स्त्री० खुशनसीबी, सौभाग्य। **मु०–बाग़ दिखाना**–ठगनेके लिए झूठी आशाएँ दिलाना, धोखा देना। **–होना**–हरा-भरा होना, फलना-फूलना।

सब्ज़ा–पु० [फ़ा०] हरी घास, हरियाली; पन्ना; नीलकंठ; वह घोड़ा जिसकी सफेदीमें स्याह रंगकी झलक हो।

सब्ज़ी–स्त्री० [फ़ा०] हरा रंग; हरियाली; साग-पात, हरी तरकारी; भंग। **–फ़रोश**–पु० साग-तरकारी बेचनेवाला। **–मंडी**–स्त्री० वह जगह जहाँ साग-तरकारी और ताजा फल बिकते हों।

सब्र–पु० [अ०] सहन, बरदाश्त; धैर्य; संतोष, तसल्ली। **मु०–आना**–धीरज धरना। **–करना**–ज़ुल्मको चुपचाप सह लेना; ठहरना, धैर्य रखना। **–की सिल छाती-(दिल)पर रखना**–चुपचाप धैर्यपूर्वक सह लेना। **–देना**–(ईश्वरका) सहनेकी शक्ति देना; धीरज बँधाना।

सभंग–वि० [सं०] खंडयुक्त। **–श्लेष**–पु० श्लेषका एक प्रकार जो शब्दका खंड करनेपर बनता है।

सभय–वि० [सं०] डरा हुआ, भययुक्त; खतरनाक।

सभर्तृका–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा।

सभा–स्त्री० [सं०] गोष्ठी, मजलिस; परिषद्, समिति; सभास्थल, सभाभवन; न्यायालय; दरबार; द्यूतशाला; पथिकालय; अतिथिशाला; भोजनालय; वह स्थान जहाँ लोग प्रायः आते-जाते हों; कार्य-विशेषके लिए संघटित संस्था। **–कक्ष**–पु० (लॉबी) दे० 'प्रकोष्ठ'। **–गृह**–पु० सभा-भवन। **–चातुर्य**–पु० सभा, समाजमें बोलने, व्यवहार करनेकी चतुरता। **–त्याग**–पु० (वॉक आउट) अध्यक्षकी किसी व्यवस्था या सभाकी किसी कार्रवाई आदिके विरोधमें एक या अधिक सदस्योंका सभा छोड़कर बाहर चला आना। **–नायक, –पति**–पु० सभाका अध्यक्ष; जुएका अड्डा चलानेवाला। **–नेता(तृ)**–पु० (लीड ऑफ दि हाउस) दे० 'सभाग्रणी'। **–मंडन**–पु० सभा-भवनकी सजावट। **–सचिव**–पु० (पार्लिमेंटरी सेक्रेटरी) विधानसभा या लोकसभाका वह सदस्य जो किसी मंत्रीके साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कार्योंमें सहायता करता और जिसे इस कार्यके लिए वेतन भी मिलता है; संसत्सचिव। **–सद, –सद्**–पु० सदस्य; जूरीका सदस्य, अदालतकी पंचायतका सदस्य।

सभागा*–वि० भाग्यशाली; सुंदर।

सभाग्य–वि० [सं०] भाग्यशाली।

सभाग्रणी–पु० [सं०] (लीडर ऑफ दि हाउस) संसद या विधानसभाके सदस्यों द्वारा चुना गया वह नेता जो संसद या सभाका कार्यक्रम आदि निर्धारित करता

है (कभी-कभी यह प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्रीसे भिन्न भी होता है)।

सभार्य, सभार्यक–वि० [सं०] सपत्नीक।

सभेय–वि० [सं०] सभोचित; विद्वान्; शिष्ट।

सभोचित–वि० [सं०] सभाके योग्य।

सभ्य–वि० [सं०] सभाका; सभासे संबद्ध; सभाके योग्य; शिष्ट, संस्कृत; नम्र; विश्वस्त। पु० सभासद; पंच।

सभ्यता–स्त्री०, **सभ्यत्व**–पु० [सं०] सभ्य होनेका भाव; सदस्यता; शिष्टता, नम्रता, भद्रता; कुलीनता।

सभ्येतर–वि० [सं०] उजड्ड, बेशऊर।

समंजस–वि० [सं०] उचित, उपयुक्त; ठीक, समीचीन।

समंत–पु० [सं०] सीमा, हद।

समंद–पु० [फा०] बादामी रंगका घोड़ा जिसका अयाल, दुम और जाँघ या पाँव और जाँघके बाल स्याह हों; (अच्छी नस्लका) घोड़ा।

समंदर*–पु० समुद्र।

सम–* स्त्री० समता, बराबरी। वि० [सं०] एक ही, अभिन्न; सदृश, एकसा; बराबर; चौरस, हमवार; जो दोसे पूरा-पूरा बँट जाय, विषम नहीं; पक्षपात रहित, निष्पक्ष; ईमानदार, सच्चा; साधु, नेक; मामूली, साधारण; कमीना; सीधा; उपयुक्त, सुविधाजनक; उदासीन, विरक्त; सब, समग्र। पु० चौरस मैदान; एक काव्यालंकार (१) जहाँ दो वस्तुओंमें यथायोग्य संबंधका होना दिखाया जाय या (२) जहाँ कारणके साथ कार्यका सारूप्य हो अथवा (३) जिसके लिए प्रयत्न किया जाय उसकी सिद्धि बिना अनिष्टके ही होना वर्णित किया जाय; तालका एक अंग, संगीतमें वह स्थान जहाँ लयकी समाप्ति और तालका आरंभ होता है; * दे० 'शम'। **–कक्ष**–वि० समान वजनका, बराबरीका। **–कक्ष सरकार**–स्त्री०[हिं०] (पैरेलल गवर्नमेंट) दे० 'प्रति-सरकार'। **–कालीन**–वि० एक समयमें रहने या होनेवाले (कनटेंपोरेरी), समसामयिक। **–कोण**–वि० बराबर कोणोंवाला (क्षेत्र)। पु० (राइट एंगिल) वह कोण जो ९० अंशके बराबर हो। **–कोण त्रिभुज**–पु०(राइट एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण समकोण हो। **–क्षेत्र**–पु०, **–तलाकृति**–स्त्री० (प्लेन फिगर) समतलका वह भाग जो एक या अधिक सरल या वक्र रेखाओंसे घिरा हो। **–चतुरश्र, –चतुरस्र**–वि०जिसके चारों कोण बराबर हों। पु०वर्गक्षेत्र (ज्या०)। **–चतुर्भुज**–पु० वह क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ बराबर हों (ज्या०)। **–चतुष्कोण**–वि० जिसके चारों कोण बराबर हों (ज्या०)। **–चर**–वि० एकसा व्यवहार या आचरण रखनेवाला। **–चित्त**–वि० धीर, शांत; उदासीन; जिसके विचार एक ही विषयपर केंद्रित हों। **–चेता(तस्)**–वि० दे० 'समचित्त'। **–जातीय**–वि० (होमोजीनिअस) समान जाति या प्रकारका, एक ही प्रकारका। **–तल**–वि० चौरस, हमवार। पु० (प्लेन सरफेस) वह तल जिसमें यदि कोई भी दो बिंदु ले लिये जायँ तो इनको मिलानेवाली सरल रेखा सब जगह उसी तलमें रहती है। **–तुलित**–वि० बराबर वजनका। **–तूल***–वि०समान–'सुजनक प्रेम हेम समतूला'–विद्या०। **–तोलन**–पु० समान करना; तराजूके पलड़ोंको बराबर करना। **–त्रिबाहु त्रिभुज**–पु० (ईक्विलेटरल ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों। **–त्रिभुज**–वि० जिसकी तीनों भुजाएँ समान हों। पु० ऐसा क्षेत्र (ज्या०)। **–दर्शन**–वि० एकरूप, एक जैसी शकलवाला; एक नजरसे देखनेवाला। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सबको एकसा देखने-समझनेवाला। **–दृष्टि**–वि० दे० 'समदर्शी'। स्त्री० सबको एक नजरसे देखनेकी क्रिया। **–द्युति**–वि० समान कांतियुक्त। **–द्विबाहु त्रिभुज**–पु० (आइसॉसिलीज ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों। **–द्विभाग करना**–स० क्रि० (टु बाइसेक्ट) दो बराबर भागोंमें बाँटना। **–द्विभुज**–वि० जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों। पु० ऐसा चतुर्भुज। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० एक जैसे स्वभावका। **–परिधान**–पु० (यूनीफार्म) दे० 'विपरिधान'। **–प्रभ**–वि० समान कांतिवाला। **–बहुभुज**–पु० (रेगुलर पॉलीगान) वह बहुभुज जो समान भुजिक और समान कोणिक, दोनों हो। **–बुद्धि**–वि० सुख-दुःखादि एकसा समझनेवाला, उदासीन। स्त्री० वह बुद्धि जो किसी हालतमें विचलित न हो। **–भाग**–पु० बराबर हिस्सा। वि० बराबर हिस्सा पानेवाला। **–भुज (या समानभुजिक) बहुभुज**–पु० (ईक्विलेटरल पॉलीगॉन) वह बहुभुज जिसकी सब भुजाएँ आपसमें बराबर हों। **–भूमि**–स्त्री० हमवार जमीन। **–मित आकृति**–स्त्री० (सिमेट्रिकल फिगर) वह आकृति जिसको बीचकी रेखाके बल तह करनेपर रेखाके एक ओरका भाग ठीक-ठीक दूसरी ओरके भागको ढँक ले। **–रस**–वि० एक ही, समान भावसे युक्त; एक रसवाला; एकसा। **–रूप**–वि० समान रूपका। **–रूप प्रस्ताव**–पु० (आइडेंटिकल मोशन) किसी अन्य प्रस्तावसे बिलकुल मिलता-जुलता प्रस्ताव। **–लंब चतुर्भुज**–पु० (ट्रैपीज़ियम) वह चतुर्भुज जिसकी केवल एक जोड़ी आमने-सामनेकी भुजाएँ समानांतर हों। **–लोष्टकांचन**–वि० जिसकी दृष्टिमें ढेला और सोना बराबर हों। **–वयस्क**–वि० बराबर उम्रका, एक ही उम्रका, हमउम्र। **–वर्ण**–वि० एक ही रंगका; एक ही जातिका। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० किसीके प्रति पक्षपात न दिखानेवाला; एकसा व्यवहार करनेवाला; समान दूरीपर स्थित; (कॉनकरेंट) साथ-साथ होने, रहने या चलनेवाला। **–वितरण**–पु० (राशनिंग) खाद्यान्न या वस्त्रादिकी कमी होनेपर नागरिकोंको प्रति दिन या प्रति मासके लिए निर्धारित समान मात्रा वितरित करनेका कार्य या व्यवस्था, खुराकबंदी। **–विभाग**–पु० बराबर हिस्सोंमें संपत्तिका बँटवारा। **–विषम**–पु० वह जमीन जो ऊबड़-खाबड़ हो। **–वीर्य**–वि० बराबर बलवाला। **–वृत्त**–पु० वह छंद जिसके चारों चरण समान हों। वि० बराबर गोलाईवाला। **–वृत्ति**–स्त्री० धीरता, मनकी स्थिरता। **–वेष**–पु० एक जैसी पोशाक। **–शीतोष्ण**–वि० (स्थान) जहाँ सर्दी-गर्मीकी मात्रा बराबर रहे, न अधिक उष्णता हो न शीत। **–शीतोष्ण कटिबंध**–पु० (टेंपरेट ज़ोन) उष्ण कटिबंध तथा उत्तरी शीत कटिबंध

और उष्ण कटिबंध तथा दक्षिणी शीत कटिबंधके बीचमें पड़नेवाले पृथ्वीके वे दो कल्पित भाग जहाँ प्रायः समशीतोष्ण जलवायु पाया जाता है। **–शील**–वि० एक ही जैसे स्वभाव या आचरणका। **–संधि**–स्त्री० बराबरीकी शर्तपर होनेवाली सुलह; पूरी सहायता करनेकी शर्तके साथ होनेवाली संधि (कौ०)। **–समयवर्ती(र्तिन्)**–वि० युगपत् होनेवाले, साथ-साथ होनेवाले। **–सामयिक**–वि० (वे दो या अधिक) जो एक ही समयमें हुए हों या विद्यमान रहे हों।

समक्ष–वि० [सं०] जो आँखोंके सम्मुख हो, गोचर, उपस्थित। अ० सामने।

समग्र–वि० [सं०] सब, पूरा।

समझ–स्त्री० बुद्धि, प्रज्ञा; खयाल, विचार। **–दार**–वि० बुद्धिमान्।

समझना–अ० क्रि० जान लेना; विचारना। स० क्रि० अच्छी तरह ध्यानमें लाना; किसी बातको जान लेना। **समझ-बूझकर**–जान-बूझकर।

समझाना–स० क्रि० बोध, ज्ञान कराना, जतलाना।

समझाव, समझावा–पु० समझने, समझानेका भाव।

समझौता–पु० दोनों पक्षों द्वारा संधिकी शर्तोंकी स्वीकृति, राजीनामा, मेल।

समता–स्त्री०, **समत्व**–पु० [सं०] चौरस होनेका भाव; सादृश्य, बराबरी, अनुरूपता; निष्पक्षता; धीरता।

समत्थ*–वि० दे० 'समर्थ'।

समदन–* पु० भेंट, नजर, उपहार; [सं०] युद्ध।

समदना*–अ० क्रि० भेंटना, मिलना। स० क्रि० भेंट, नजर करना; सौंपना; ब्याहमें देना–'दुहिता समदौ सुख पाइ अबै'–राम०; आनंदसे मनाना।

समदाना*–स० क्रि० सौंपना; रखना, धरना।

समधिक–वि० [सं०] बहुत अधिक, अतिशय।

समधियाना–पु० पुत्र या पुत्रीकी ससुराल।

समधी–पु० पुत्रका या पुत्रीका ससुर।

समधीत–वि० [सं०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ, अध्ययन किया हुआ।

समधौरा†–पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें समधी परस्पर मिलते हैं।

समध्व–वि० [सं०] साथ यात्रा करनेवाला।

समन–* पु० शमन; यम; [अं० 'सम्मन्स'] प्रतिवादी या गवाहको अदालतमें हाजिर होनेके लिए उसकी ओरसे भेजी जानेवाली लिखित सूचना।

समनुज्ञा–स्त्री० [सं०] अनुमति।

समनुज्ञात–वि० [सं०] पूर्णतः स्वीकृत; जिसे अधिकार दिया गया हो; जिसे जानेकी आज्ञा दी गयी हो; अनुगृहीत।

समन्वय–पु० [सं०] नियमित क्रम; संबद्ध फल, कार्य-कारण-संबंधका निर्वाह; संयोग; मेल, पटरी।

समन्वित–वि० [सं०] संयुक्त; स्वाभाविक रूपमें क्रमबद्ध; अनुगत; ...से युक्त; ...द्वारा प्रभावित।

समन्वेषण–पु० [सं०] (एक्सप्लोरेशन) किसी प्रदेश या क्षेत्रके भीतर जाकर, वहाँ पहुँचकर, चारों तरफकी स्थिति आदिका पता लगाना।

समपहरण–पु० [सं०] (कनफिसकेशन) दंडके रूपमें सरकार द्वारा किसीके धन या संपत्तिका छीन लिया जाना, उसपर कब्जा कर लेना।

समय–पु० [सं०] काल, वक्त; अवसर; फुरसत; उपयुक्त काल; अंत समय; ठहराव; प्रथा; विहिताचार; कविसमय; समझौता; नियम; संकटकी स्थिति; शपथ; संकेत; प्रतिज्ञा; अंत। **–च्युति**–स्त्री० मौका चूक जाना, अवसर हाथसे निकल जाना। **–ज्ञ**–वि० समयका ज्ञान रखनेवाला। **–दान**–पु० (एंगेजमेंट) किसीसे मिलने, बात करने आदिके लिए कोई समय पहलेसे निर्धारित या निश्चित कर देना। **–निष्ठ**–वि० (पंक्चुअल) समयकी पाबंदी रखनेवाला, प्रत्येक काम समयपर करनेवाला। **–बंधन**–वि० प्रतिज्ञाबद्ध। पु० प्रतिज्ञाका बंधन। **–भेद**–पु० प्रतिज्ञा भंग करना। **–विपरीत**–वि० वादेके खिलाफ; वादा पूरा न करनेवाला। **–विभाग, –विभागपत्र**–पु० (टाइमटेबिल) दे० 'समयसूची'। **–सारिणी, –सूची**–स्त्री० (टाइमटेबिल) ट्रेनोंके पहुँचने तथा छूटने या विशेष विषयोंकी पढ़ाई, परीक्षा आदि शुरू होनेके लिए निर्धारित समयकी सूची, समय-विभागपत्र, वेलापत्रक।

समयानुवर्ती(र्तिन्)–वि० [सं०] प्रचलित रीतिके अनुसार चलनेवाला।

समयोचित–वि० [सं०] अवसरके उपयुक्त।

समर–पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई। **–कर्म(न्)**–पु० युद्धकर्म, लड़नेका कार्य। **–भूमि**–स्त्री० युद्धक्षेत्र। **–पोत**–पु० युद्धपोत, रणपोत। **–विजयी(यिन्)**–वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला। **–शूर**–पु० युद्धमें वीरता प्रकट करनेवाला व्यक्ति। **–सीमा**–स्त्री० युद्धभूमि।

समरत्थ*–वि० दे० 'समर्थ'।

समरथ*–वि० दे० 'समर्थ'।

समरांगण–पु० [सं०] युद्धभूमि।

समरागम–पु० [सं०] युद्ध छिड़ना।

समराजिर–पु० [सं०] युद्धक्षेत्र।

समराना*–स० क्रि० पहनाना, सजाना–'आभूषन सब जड़ावके समराये'–अष्टछाप।

समरोचित–वि० [सं०] युद्धके उपयुक्त (जैसे हाथी)।

समरोद्यत–वि० [सं०] युद्धके लिए तैयार।

समर्घ–वि० [सं०] सस्ता, कम दामका।

समर्चन–पु० [सं०] अच्छी तरह पूजन करना; आदर-सत्कार करना।

समर्चना–स्त्री० [सं०] दे० 'समर्चन'।

समर्थ–वि० [सं०] बलवान्, सशक्त; योग्य, उपयुक्त।

समर्थक–वि० [सं०] समर्थन करनेवाला, पुष्टि करनेवाला।

समर्थता–स्त्री०, **समर्थत्व**–पु० [सं०] योग्यता, सामर्थ्य।

समर्थन–पु० [सं०] पुष्टि करना; विवेचन; पक्ष ग्रहण करना; किसी वस्तुके औचित्यानौचित्यका निर्णय करना।

समर्थना–स्त्री० [सं०] आमंत्रण; अनुरोध।

समर्थनीय–वि० [सं०] समर्थन करने योग्य।

समर्थित–वि० [सं०] जिसकी पुष्टि की गयी हो; प्रमाणित।

समर्पक–वि० [सं०] समर्पण करनेवाला।

समर्पण–पु० [सं०] सौंपना, देना, भेंट करना; जतलाना।

—मूल्य—पु० (सरेंडर वैल्यू) अवधि पूरी होनेके पहले ही बीमापत्र समर्पित कर देनेपर बीमा करानेवालेको उसके बदले दिया जानेवाला धन ।

समर्पना*—स० क्रि० सौंपना, समर्पण करना ।

समर्पयिता (तृ)—वि० [सं०] समर्पण करनेवाला ।

समर्पित—वि० [सं०] समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, सौंपा हुआ; निक्षिप्त; रखा या जमाया हुआ; प्रत्यर्पित ।

समलंकृत—वि० [सं०] खूब सजा हुआ, अलंकारादिसे पूर्णतः विभूषित ।

समल—वि० [सं०] मलयुक्त, गंदा; अशुद्ध; पापी ।

समवरोध—पु० [सं०] (ब्लाकेड) किसी स्थान आदिका शत्रुकी सेनाओं, जहाजों आदि द्वारा इस तरह घेर लिया जाना जिससे आवागमनके मार्ग बिलकुल अवरुद्ध हो जायँ, नाकेबंदी ।

समवाय—पु० [सं०] संयोग, मेल; राशि, समूह; एकत्र होना; घनिष्ठ संबंध; अभेद्य संबंध, नित्य संबंध (जैसे—पदार्थ और गुण, अंगी और अंगका—वैशेषिक दर्शन); नियमानुसार गठित वह व्यापारिक संस्था जिसमें कई हिस्सेदारोंकी पूँजी लगी हो, जिन्हें अपने हिस्सोंकी पूँजीके अनुसार लाभांश पानेका हक होता है ।

समवायी (यिन्)—वि०[सं०] घनिष्ठ रूपमें संबद्ध; जिसके साथ अभेद्य संबंध हो, नित्य संबंधी; राशिमय; बहुल । पु० हिस्सेदार; अंग, अवयव । **—कारण**—पु० वह कारण जो पृथक् न किया जा सके, अंतर्निहित हो, उपादान कारण (वैशेषिक) ।

समवेत—वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ, संयुक्त, एकत्र ।

समवेतन—पु० (रैली) बालचरों, अनुयायियों आदिका एक स्थानपर जमा होना; तितर-बितर हुए सैनिकोंका पुनः एकत्र होना; समागमन ।

समवेत होना—अ० क्रि० (टु मीट, टु असेंबल) इकट्ठा होना, सभाके सदस्योंका सभाके रूपमें एकत्र होना ।

समष्टि—स्त्री० [सं०] संपूर्णता; एक जैसे अंगोंका समूह, व्यष्टिका उलटा ।

समसर*—स्त्री० बराबरी—'प्रीतम रूप कजाकके समसर कोई नाहिं'—रतन० ।

समसेर*—स्त्री० शमशेर, तलवार ।

समस्त—वि० [सं०] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ; समासके रूपमें परिणत; सब, संपूर्ण; संक्षिप्त किया हुआ ।

समस्या—स्त्री० [सं०] पूर्ण करनेके लिए दिया जानेवाला छंदका अंतिम चरण या चरणांश; कठिन विषय, जटिल प्रश्न । **—पूर्त्ति**—स्त्री० छंदके चरण या चरणांशके आधारपर उसे अंतमें रखते हुए छंदकी पूर्ति करना ।

समाँ—पु० समय; ऋतु; जमाना, मौका; बहार; दृश्य, नजारा; रौनक, चमक-दमक । **मु०—बँधना**—रंग जमना; गाने या नाचसे लोगोंका प्रभावित होना । **—बदल जाना**—स्थिति बदल जाना । **—बाँधना**—रंग जमाना ।

समा—पु० दे० 'समाँ'; [अ०] आकाश, आसमान । स्त्री० [सं०] वर्ष, संवत्सर, साल ।

समाई—स्त्री० समानेका भाव; सामर्थ्य; औकात; गुंजाइश ।

समाउ*—पु० गुंजाइश, निर्वाह ।

समाकलन—पु० [सं०] (क्रेडिट) किसीके खातेमें उससे प्राप्त कोई रकम या धन जमाकी ओर लिखना ।

समाख्यान—पु० [सं०] नाम लेना; वर्णन; व्याख्या ।

समागत—वि० [सं०] पहुँचा हुआ; कहींसे आया हुआ; जो सामने उपस्थित या विद्यमान हो ।

समागम—पु० [सं०] भेंट, मिलना; भिड़ंत; साथ, संगति; आना, आगमन; (ग्रहोंका) योग; संघ, समूह; मैथुन ।

समागमन—पु० [सं०] (रैली) दे० 'समवेतन' ।

समाचार—पु० [सं०] वृत्तांत, संवाद, खबर; विवरण । **—पत्र**—पु० वह कागज जिसमें देश-विदेशकी खबरें छपी रहती हैं, अखबार । **—प्रेष**—पु० (न्यूज डिस्पैच) समाचारोंका भेजा जाना; वह सामग्री जो समाचारके रूपमें भेजी जाय, समाचार-सामग्री । **—सूचना**—स्त्री० (प्रेस नोट) समाचारपत्रोंके लिए या समाचारके रूपमें प्रकाशित सूचना ।

समाज—पु० [सं०] मिलना, एकत्र होना; समूह; संघ, दल; सभा, समिति; आधिक्य; समान कार्य करनेवालोंका समूह; विशेष उद्देश्यकी पूर्तिके लिए संघटित संस्था; ग्रहोंका एक योग । **—वाद**—पु० (सोशलिज्म) यह सिद्धांत कि उत्पादनके समस्त साधनोंपर समाजका अधिकार हो और उनसे उत्पन्न होनेवाली संपत्तिका यथासंभव समान रूपसे वितरण हो । **—वादी (दिन्)**—पु० (सोशलिस्ट) समाजवादका अनुयायी । **—शास्त्र**—पु० मनुष्यको सामाजिक प्राणी मानकर समाजके प्रति उसके कर्तव्यों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।**—सेवक**—पु० समाजके हितके लिए कार्य करनेवाला ।**—सेवा**—स्त्री०समाजका हित-साधन ।

समाजी—पु० आर्य समाजके सिद्धांतोंको माननेवाला; वेश्याओंके साथ तबला, मँजीरा आदि बजानेवाला, सपरदाई ।

समाजीकरण—पु० [सं०] (सोशलाइजेशन) किसी उद्योग-व्यवसायादिको ऐसा रूप देना जिससे उसपर सारे समाजका अधिकार हो जाय और उसका लाभ सब लोग समान रूपसे उठा सकें ।

समाज्ञात—वि० [सं०] जाना हुआ; माना हुआ ।

समादत्त—वि० [सं०] गृहीत; प्राप्त ।

समादर—पु० [सं०] विशेष आदर, प्रतिष्ठा, सत्कार ।

समादरणीय—वि० [सं०] विशेष आदर करने योग्य, सम्मान्य ।

समादान—पु० [सं०] पूर्ण रूपसे ग्रहण करना; अपनेपर लेना; * दे० 'शमादान' ।

समादृत—वि० [सं०] सत्कृत, सम्मानित ।

समादेय—वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य ।

समादेश—पु० [सं०] आज्ञा, आदेश, निर्देश ।

समाद्रित*—वि० दे० 'समादृत' ।

समाधान—पु० [सं०] मिलाना; मेल बैठाना; ध्यान; समाधि; संदेहनिवारण, निराकरण; प्रतिपादन; सहमत होना; मुख-संधिका एक अंग, बीजस्थापन (वह घटना जिससे कथानककी उत्पत्ति होती है) ।

समाधानना*—स०क्रि० संतोष, समाधान करना; सांत्वना देना ।

समाधि–स्त्री॰ [सं॰] साथ रखना, मिलाना; एक जगह जमाना; योगका अंतिम अंग–मनको ब्रह्मपर केंद्रित करना; मनोयोग; तपस्या; मतभेद दूर करना; मौन; अंगीकार, स्वीकृति; प्रतिज्ञा; परिशोध; पूरा करना; अध्यवसाय; असंभव बातके लिए प्रयत्न करना; (दुर्भिक्षमें) अन्न जमा करना; वह मकान आदि जो शव-स्थलपर बनाया जाता है; एक अर्थालंकार जिसमें अन्य कारणोंके योगसे कार्य-सिद्धि वर्णित होती है। **–क्षेत्र,–स्थल**–पु॰ वह स्थान जहाँ साधुओं आदिको गाड़ते हैं। **–दशा**–स्त्री॰ ध्यानमें ब्रह्म-साक्षात्कारकी अवस्था। **–निष्ठ**–वि॰ समाधिस्थ। **–भंग**–पु॰ बाधा पड़नेके कारण समाधि, ध्यानका भंग होना। **–लेख**–पु॰ (एपिटा) किसी कब्र या समाधिके पत्थरपर याददाश्तके रूपमें लिखा जानेवाला लेख। **–स्थ**–वि॰ समाधिमें स्थित।

समाधित–वि॰ [सं॰] तुष्ट, शांत किया हुआ; जिसने समाधि लगायी या ली हो (?)।

समाधी(धिन्)–वि॰ [सं॰] समाधिस्थ।

समाधेय–वि॰[सं॰] (कंपाउंडेबिल) जिसे आपसमें निपटा लेने–समाधान करनेका अधिकार दोनों पक्षोंको हो (अपराध, विवाद)।

समान–वि॰ [सं॰] तुल्य, सदृश, एकसा, बराबर आकार, उम्र, पद आदिका; नेक, भला; साधारण; तुल्य परिमाणका। **–कोणिक बहुभुज**–पु॰ (ईक्विएंग्यूलर पॉलीगॉन) वह बहुभुज जिसके सब कोण आपसमें बराबर हों। **–धर्मा(र्मन्)**–वि॰एक ही जैसे गुणवाला(ले)। **–नामा(मन्)**–वि॰ समान नामवाला, नामरासी। **–वयस्क**–वि॰ हमउम्र। **–वर्ण**–वि॰ एकसे रंगवाले; एक ही स्वर-वर्णवाले। **–शील**–वि॰ वैसे ही स्वभाववाले। **–संख्य**–वि॰ बराबर संख्यावाला।

समानता–स्त्री॰, **समानत्व**–पु॰ [सं॰] तुल्यता, सादृश्य, बराबरी।

समानयन–पु॰ [सं॰] एकत्र करना;आदरपूर्वक ले आना।

समानांतर–वि॰ [सं॰] (पैरेलल) (रेखाएँ आदि) जो नित्य समान अंतरपर रहें; साथ-साथ चलने, काम करनेवाला (–सरकार)। **–चतुर्भुज**–पु॰ (पैरेलेलोग्राम) वह चतुर्भुज जिसकी आमने-सामनेकी भुजाएँ समानांतर हों। **–रेखाएँ**–स्त्री॰ (पैरेलल लाइंस) वे रेखाएँ जो एक ही समतलमें हों और जो एक दूसरीसें न मिलें चाहे वे दोनों ओर कितनी भी दूरतक बढ़ायी जायँ।

समाना–अ॰ क्रि॰ भीतर आना; अटना। स॰ क्रि॰ अटाना, भरना।

समानाधिकरण–वि॰ [सं॰] समान कारक विभक्तिसे युक्त; एक ही श्रेणीका; जिनका आधार एक ही पदार्थ हो (वैशेषिक); जो समान स्थानपर हो। पु॰ एक ही कारककी विभक्तिसे युक्त होना; समान श्रेणी; समान आधार आदि।

समानाधिकार–पु॰ [सं॰] जातीय गुण; बराबरीका अधिकार।

समानार्थ–वि॰ [सं॰] जिनका उद्देश्य एक हो; एक अर्थवाले (शब्द)।

समानार्थक–वि॰ [सं॰] एक ही अर्थ रखनेवाले (शब्द)।

समानोदक–वि॰[सं॰] साथ तर्पण करनेवाले (ग्यारहवींसे चौदहवीं पीढ़ीतक एक ही पूर्वजवाले–सातवींतकके संबंधी समानोदक होनेके साथ सपिंड भी होते हैं)।

समानोदर्य–वि॰ [सं॰] एक गर्भसे उत्पन्न, सहोदर। पु॰ सगा भाई।

समापक–वि॰ [सं॰] समाप्त, पूर्ण करनेवाला।

समापन–पु॰ [सं॰] पूर्ण, समाप्त करना; प्राप्ति; वध करना; (वाइंडिंग अप, क्लोजर) कुछ और कहने या तर्क आदि देनेके बाद किसी प्रश्नका विचार या विवाद समाप्त करना। **–प्रस्ताव**–पु॰ (मोशन ऑफ क्लोजर) दे॰ 'विवादांतप्रस्ताव'।

समापनीय–वि॰ [सं॰] समाप्त करने योग्य; वध करने योग्य, वध्य। **–पट्टा**–पु॰[हिं॰] (टरमिनेबिल लीज़) कुछ समयके बाद समाप्त हो जानेवाला पट्टा।

समापन्न–वि॰ [सं॰] प्राप्त; घटित; आया हुआ; पूरा किया हुआ;…से युक्त; कष्टग्रस्त; निहत।

समापादन–पु॰ [सं॰] पूरा करना; मूल रूप प्रदान करना।

समापिका–स्त्री॰ [सं॰] वाक्य-पूर्तिके निमित्त आनेवाली क्रिया (व्या॰)।

समापित–वि॰ [सं॰] समाप्त, पूर्ण किया हुआ।

समापी (पिन्)–वि॰ [सं॰] समाप्त करनेवाला।

समाप्त–वि॰ [सं॰] पूरा किया हुआ; चतुर, बुद्धिमान्। **–प्राय**–वि॰ लगभग समाप्त।

समाप्ति–स्त्री॰ [सं॰] अंत, पूर्ति, पूर्ण होना; पूर्ण प्राप्ति (विद्यादिकी); शरीरकी पंचत्व-प्राप्ति, विभिन्न तत्त्वोंमें मिल जाना; विवादका अंत करना, अंतर दूर करना।

समाप्य–वि॰ [सं॰] समाप्त, पूरा करने योग्य।

समायुक्त–वि॰ [सं॰] जोड़ा हुआ; तैयार किया हुआ।

समायोग–पु॰[सं॰] युक्त करना (धनुषसे बाण); निशाना ठीक करना;राशि,समूह; बहुत आदमियोंका एकत्र होना।

समायोजन–पु॰[सं॰](सप्लाई) आवश्यक वस्तुओंका जोगाड़ करना; जो कुछ आवश्यक हो उसे जुटाना और ऐसी व्यवस्था करना कि जिसे चाहिये उसे वह मिल जाय, उसके पास पहुँच जाय।

समारंभ–पु॰ [सं॰] आरंभ; उद्यम, साहसपूर्ण कार्य।

समारंभण–पु॰ [सं॰] ग्रहण करना; आरंभ करना; आलिंगन; अंगराग लगाना।

समारब्ध–वि॰ [सं॰] आरंभ किया हुआ; जिसने कार्यारंभ किया है; घटित।

समारभ्य–वि॰ [सं॰] आरंभ करने योग्य।

समाराधन–पु॰ [सं॰] तुष्ट, प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेका साधन; सेवा-टहल, आराधना।

समारूढ–वि॰ [सं॰] जो चढ़ा हो; जो चढ़ा गया हो; जिसने अंगीकार किया है; बढ़ा हुआ; भरा हुआ (घाव)।

समारोप–पु॰ [सं॰] ऊपर रखना; चढ़ाना (धनुष्); स्थानांतरण।

समारोपक–वि॰ [सं॰] उपजानेवाला; बढ़ानेवाला।

समारोपण–पु॰ [सं॰] आरोप करना; स्थानांतरण;

चढ़ाना (धनुष्) ।

समारोपित–वि०[सं०] चढ़ाया हुआ; ताना हुआ (धनुष्); रखा हुआ; स्थानांतरित ।

समारोह–पु०[सं०]धूमधाम; धूमधामसे होनेवाला उत्सव ।

समार्हता–स्त्री० [सं०] (पैरिटी) मूल्य, योग्यता आदिमें समान होना ।

समालिंगन–पु० [सं०] प्रगाढ आलिंगन ।

समालोचक–पु० [सं०] किसी वस्तुकी सम्यक् परीक्षा करनेवाला; किसी पदार्थके गुण-दोष आदिका सम्यक् विवेचन करनेवाला; किसी कृति, रचना, ग्रंथ आदिके गुण, दोष, महत्त्व आदिका प्रतिपादन करनेवाला ।

समालोचन–पु० [सं०] समालोचना ।

समालोचना–स्त्री० [सं०] अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना; किसी वस्तु, कृति, व्यक्ति आदिमें गुण-दोषका सम्यक् विचार करना; गुण-दोषका विचार प्रस्तुत करनेवाला निबंध, ग्रंथ आदि, आलोचना ।

समावर्तन–पु० [सं०] लौटना, वापस होना; अध्ययन पूर्ण करनेके बाद ब्रह्मचारीका घर लौटना; इस अवसरपर होनेवाला संस्कार; पदवीदान-समारोह ।

समावह–वि० [सं०] उत्पन्न, प्रस्तुत करनेवाला; कारण बननेवाला (आ० वे०) ।

समावाय–पु० [सं०] संबंध, साथ; अभेद्य संबंध; समूह, राशि ।

समावास–पु० [सं०] निवास-स्थान; टिकनेका स्थान; शिविर, पड़ाव ।

समावासित–वि० [सं०] बसाया, ठहराया हुआ ।

समाविष्ट–वि० [सं०] पूर्णतः प्रविष्ट; जिसका समावेश हुआ हो; समाया हुआ ।

समावृत–वि० [सं०] घेरा हुआ; ढका हुआ; छिपाया हुआ; रक्षित; रोका हुआ ।

समावृत्त–वि० [सं०] लौटा हुआ; अध्ययन समाप्त कर गुरुकुलसे लौटा हुआ; पूरा किया हुआ ।

समावेश–पु० [सं०] प्रवेश; साथ रहना; मिलना, एकत्र होना; अंतर्भाव, शामिल होना; प्रेतावेश; घुसना, व्याप्त होना; साथ-साथ होना या घटित होना ।

समाश्लिष्ट–वि० [सं०] सम्यक् रूपमें आलिंगित; संलग्न ।

समाश्लेप–पु० [सं०] प्रगाढ़ आलिंगन ।

समाश्वस्त–वि० [सं०] जिसे जीमें जी आया हो, तसल्ली हो गयी हो, ढाढ़स बँध गया हो; प्रोत्साहित; विश्वासपूर्ण ।

समाश्वासन–पु० [सं०] ढाढ़स बँधाना; उत्साह बढ़ाना ।

समास–पु०[सं०] योग, मेल; समर्थन; संबंध; साथ रहना; संक्षिप्त करना; संक्षेप–'कपि सब चरित समास बखाने'–रामा०; दो या अधिक पदोंको मिलाकर एक पदका रूप देना । **–चिह्न**–पु० (हाइफन) दे० 'समास-रेखा' । **–प्राय**,**–बहुल**–वि० जिसमें समासोंकी बहुलता हो । **–रेखा**–स्त्री० (हाइफन) दो या दोसे अधिक शब्दोंको मिलाकर संयुक्त शब्द बनानेके लिए उनके बीचमें दी जानेवाली लघु रेखा ।

समासीन–वि० [सं०] सम्यक् प्रकारसे बैठा हुआ; साथ बैठा हुआ ।

समासोक्ति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार, जहाँ विशेष शब्दरचनाके कारण प्रस्तुतसे अप्रस्तुतका भान हो ।

समाहरण–पु० [सं०] संयुक्त करना; एकत्र करना ।

समाहर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] मिलाने, जमा करनेवाला । पु० (कर आदिका) संग्राहक ।

समाहार–पु० [सं०] ग्रहण; जोड़; संग्रह; समूह । **–द्वंद्व**–पु० द्वंद्व समासका एक भेद (जिसमें दो पद आपसमें मिलकर वर्ग या समूहके बोधक होते हैं, जैसे 'पंचवटी') ।

समाहित–वि० [सं०] एकत्र किया हुआ; तै किया हुआ; शांत; लीन; पूरा किया हुआ; व्यवस्थित; स्थापित, प्रतिपादित; स्वीकृत । पु० एक अलंकार ।

समाहूत–वि० [सं०] बुलाया हुआ; ललकारा हुआ ।

समाह्वाता(तृ)–वि० [सं०] आह्वान करनेवाला; ललकारने, चुनौती देनेवाला ।

समाह्वान–पु० [सं०] सम्यक् प्रकारसे आह्वान करना; चुनौती देना; जानवरोंकी लड़ाईपर बाजी रखना ।

समितिंजय–पु० [सं०] युद्धविजेता; सभाविजेता; यम ।

समिति–स्त्री० [सं०] एकत्र होना; सभा; युद्ध; विशेष कार्यके लिए गठित थोड़ेसे आदमियोंकी सभा ।

समिध–पु० [सं०] अग्नि; ईंधन ।

समिधा, समिधि–स्त्री० यज्ञमें जलानेकी लकड़ी ।

समिध्–स्त्री० [सं०] ईंधन; यज्ञीय लकड़ी ।

समीकरण–पु० [सं०] समान, बराबर करना; ज्ञात राशि की सहायतासे अज्ञात राशि निकालनेकी क्रिया (गणित); जमीन बराबर करनेका बड़ा बेलन (रोलर) ।

समीक्षक–वि० [सं०] सम्यक् रूपसे देखनेवाला, छानबीन करनेवाला; समालोचक ।

समीक्षण–पु० [सं०] देखना; अन्वेपण; जाँच, परीक्षा ।

समीक्षा–स्त्री० [सं०] सम्यक् परीक्षा; छानबीन, अनुसंधान; समालोचना ।

समीचीन–वि० [सं०]संगत, उचित; ठीक, यथार्थ; न्याय्य ।

समीचीनता–स्त्री० [सं०] संगति, औचित्य; यथार्थता ।

समीति*–स्त्री० दे० 'समिति'; समाधान ।

समीप–वि०,अ०[सं०] निकट, पास । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० निकट रहनेवाला, पासका । **–स्थ**–वि०दे० 'समीतवर्ती' ।

समीपता–स्त्री० [सं०] निकटता, सामीप्य ।

समीर–पु० [सं०] हवा, वायु । **–कुमार**–पु० हनुमान् ।

समीरण–पु० [सं०] वायु; पवनदेव ।

समीहा–स्त्री०[सं०] चेष्टा, उद्योग; इच्छा; जाँच, अन्वेपण ।

समुंद*–पु० समुद्र ।

समुंदर–पु० दे० 'समुद्र' । **–फल**–पु० दे० 'समुद्र-फल' ।

समुचित–वि० [सं०] उपयुक्त; ठीक, उचित; यथेष्ट ।

समुच्चय–पु०[सं०] कई वस्तुओंका एक साथ होना; समूह, राशि, समाहार; एक काव्यालंकार, जहाँ कई भावोंका एक साथ ही प्रकट होना दिखलाया जाय या जहाँ एक ही कार्यके लिए कई कारणोंका विद्यमान रहना वर्णित किया जाय ।

समुच्छित्ति–स्त्री० [सं०] टुकड़े-टुकड़े करना; बरबादी, विनाश ।

समुच्छिन्न–वि० [सं०] फटा हुआ; उन्मूलित; नष्ट-विनष्ट ।

समुच्छेद-पु० [सं०] ध्वंस, विनाश; उन्मूलन ।

समुच्छेदन-पु० [सं०] जड़से उखाड़ना; ध्वस्त करना ।

समुच्छ्वास-पु० [सं०] दीर्घ प्रश्वास ।

समुज्ज्वल-वि० [सं०] अत्यंत उज्ज्वल; चमकीला ।

समुझ*-स्त्री० दे० 'समझ' ।

समुझना*-अ० क्रि० दे० 'समझना' ।

समुझनि*-स्त्री० समझनेकी क्रिया ।

समुत्कंटकित-वि० [सं०] रोमांचयुक्त ।

समुत्कंठा-स्त्री० [सं०] गहरी इच्छा ।

समुत्कीर्ण-वि० [सं०] अच्छी तरह खोदा हुआ; पूरे तौरसे छेदा हुआ ।

समुत्थान-पु० :[सं०] ऊपर उठना; उन्नति; उत्तोलन (ध्वजाका); उद्भव ।

समुत्थापक-वि० [सं०] उठानेवाला;जगानेवाला (बौद्ध) ।

समुत्सुक-वि० [सं०] अधीर, विशेष इच्छुक, उत्कंठित ।

समुद-वि० [सं०] प्रसन्नतायुक्त । अ० प्रसन्नतापूर्वक । * पु० समुद्र । **-लहर***-पु० एक कपड़ा (प०) ।

समुदय-पु० [सं०] (सूर्यका) ऊपर आना, उदित होना; विकास; उत्थान; अभ्युदय; राशि, समूह, समुदाय ।

समुदाय-पु० [सं०] समूह, राशि, झुंड ।

समुदायि*-पु०:समूह, झुंड ।

समुदाव*-पु० समूह, झुंड, राशि ।

समुदित-वि० [सं०] ऊपर उठा हुआ; ऊँचा; उत्पन्न ।

समुद्गीर्ण-वि० [सं०] वमित; उत्तोलित; कथित ।

समुद्धरण-पु० [सं०] ऊपर उठाना; खींचकर निकालना, उद्धार करना; हटाना, दूर करना; उन्मूलन ।

समुद्धर्ता(र्तृ)-वि०,पु० [सं०] उठानेवाला, उद्धार करनेवाला; उन्मूलन करनेवाला ।

समुद्धार-पु० [सं०] दे० 'समुद्धरण' ।

समुद्बोधन-पु० [सं०[पूर्णतः जाग्रत् करना; होशमें लाना ।

समुद्यत-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; तैयार; प्रवृत्त ।

समुद्र-पु० [सं०] सागर; चारकी संख्या; (ला०) गुण आदिका बहुत बड़ा परिमाण (समासमें) । **-गमन**-पु० समुद्रयात्रा । **-गा**-स्त्री० नदी । **-गामी(मिन्)**-वि० समुद्रमें जाने या समुद्री व्यापार करनेवाला । **-झाग**-पु० [हिं०] समुद्रका फेन । **-तटवर्ती प्रदेश**-पु० (मैरिटाइम प्रॉविंस) किसी देशका वह भूभाग जो समुद्रके किनारे हो । **-दयिता,-पत्नी**-स्त्री० नदी । **-फल**-पु० एक वृक्ष या उसका फल । **-फेन**-पु० समुद्रका झाग । **-मंथन,-मथन**-पु० समुद्रका विलोड़न; अनेक ग्रंथों या विषयोंकी छानबीन । **-मालिनी**-स्त्री० पृथ्वी । **-मेखला**-स्त्री० पृथ्वी । **-यात्रा**-स्त्री० समुद्री सफर ।**-यान**-पु० समुद्रयात्रा; पोत ।**-लवण**-पु० समुद्रजलसे निकलनेवाला नमक । **-वल्लभा**-स्त्री० पृथ्वी ।**-वसना**-स्त्री० पृथ्वी ।**-वह्नि**-पु० बड़वानल । **-वासी(सिन्)**-वि० समुद्रके पास रहनेवाला ।

समुद्रांबरा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

समुद्री-वि० समुद्रका; समुद्र-संबंधी; समुद्रकी ओरसे आनेवाली (हवा);समुद्रपर की जानेवाली; नौबल संबंधी । **-तार**-पु० (केबिल) समुद्रमें पानीके भीतरसे जानेवाला तार ।

समुद्रीय-वि० [सं०] समुद्रका; समुद्र-संबंधी ।

समुद्वेग-पु० [सं०] घबड़ाहट; भय, त्रास ।

समुन्नत-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; विशेष रूपसे उन्नत, ऊँचा; गौरवान्वित ।

समुन्नति-स्त्री० [सं०] ऊपर उठाना; ऊँचाई, उच्चता; गौरव; उच्च पद; प्राधान्य; उन्नति, समृद्धि ।

समुन्मूलन-पु० [सं०] जड़से उखाड़ देना, निर्मूलन ।

समुपकरण-पु० [सं०] सामग्री, सामान ।

समुपस्थित-वि० [सं०] उपस्थित, आया हुआ; प्रकट ।

समुल्लास-पु० [सं०] विशेष आनंद, उमंग; क्रीड़ा; ग्रंथका परिच्छेद ।

समुल्लेख-पु० [सं०] चारों ओर जमीन खोदना (पैर आदिसे); उत्सादन, उन्मूलन ।

समुहा*-वि० आगे, सामनेका । अ० आगे, सामने ।

समुहाना*-अ० क्रि० सामने आना, होना-'अति भयत्रसित न कोउ समुहाई'-रामा० ।

समुहैँ*-अ० सामने ।

समूचा-वि० संपूर्ण, समग्र, पूरा ।

समूढ-वि० [सं०] एकत्र किया हुआ; राशीकृत; विवाहित; नीत; सद्योजात; भुक्त; संगत ।

समूर-पु० [सं०] दे० 'समूरु' । * वि०, अ० दे० 'समूल' ।

समूरु, समूरुक-पु० [सं०] सावर हिरन ।

समूल-वि० [सं०] जड़वाला, मूलयुक्त; सकारण । अ० जड़से, मूलसहित ।

समूह-पु०[सं०] ढेर,राशि; झुंड, समुदाय; समाज, वर्ग । **-कार्य**-पु० समाज या वर्गविशेषका कार्य । **-वाद**-पु० (कलेक्टिविज्म) उद्योग-व्यवसायमें सामूहिक पूँजीके प्रयोगका प्रतिपादन करनेवाला सिद्धांत; भूमि तथा उत्पादनके साधनोंपर सामूहिक प्रभुत्वकी आवश्यकतापर जोर देनेवाला सिद्धांत ।

समूहोत्पादन-पु०[सं०](मासप्रॉडक्शन)दे०'पुंजोत्पादन' ।

समृद्ध-वि० [सं०] उन्नतिशील; प्रसन्न; धनी, संपन्न ।

समृद्धि-स्त्री० [सं०] बढ़ती, उन्नति; संपन्नता; बाहुल्य ।

समेटना-स० क्रि० बटोरना, इकट्ठा करना (बिखरी चीजें); तह करके रखना (जाजिम आदि); अंगीकार करना ।

समेत-अ० साथ । वि० [सं०] मिला हुआ, एकत्र, संयुक्त।

समै, समैया*-पु० समय ।

समो*-पु० समय ।

समोखना*-स० क्रि० ताकीदसे कहना ।

समोना*-स० क्रि० मिलाना ।

समोसा-पु० सिंघाड़ेकी शकलका एक नमकीन पकवान ।

समौ*-पु० समय ।

समौरिया†-वि० समवयस्क, हमउम्र ।

सम्-उप० [सं०] यह शब्दोंके पूर्व आकर साथ, पूर्णता, आधिक्य, सामीप्य, अच्छाई आदिका द्योतन करता है ।

सम्मंत्रणा-स्त्री०[सं०](कानफरेंस) परस्पर सलाह-मशविरा करनेका कार्य ।

सम्मत-वि० [सं०] एक ही रायका, सहमत; माना हुआ; विचारित; प्रसिद्ध; सम्मानित; प्रिय ।

सम्मति–स्त्री० [सं०] सहमति; स्वीकृति; राय, मत ।

सम्मन–पु० [अं० 'सम्मन्स'] अदालतकी ओरसे प्रतिवादी या गवाहको नियत तिथिपर उपस्थित होनेके लिए भेजी जानेवाली लिखित सूचना या आदेश, आह्वानपत्र ।

सम्मर्द–पु० [सं०] रगड़ना; युद्ध; झगड़ा; भीड़ ।

सम्मान–पु० [सं०] इज्जत, आदर, प्रतिष्ठा; मापना ।

सम्मानना*–स० क्रि० आदर करना ।

सम्मानित–वि० [सं०] पूजित, आदृत ।

सम्मान्य–वि० [सं०] आदरणीय, आदरके योग्य ।

सम्मार्जक–पु०[सं०] मेहतर; झाड़ू । वि० साफ करनेवाला ।

सम्मार्जन–पु० [सं०] झाड़ना-बहारना, साफ करना ।

सम्मार्जनी–स्त्री० [सं०] झाड़ू ।

सम्मार्जित–वि० [सं०] अच्छी तरह झाड़ा-बुहारा या साफ किया हुआ; हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ ।

सम्मिलन–पु० [सं०] मिलना, एकत्र होना । **–विलेख**–पु० (इंस्ट्रूमेंट ऑफ ऐक्सेशन) वह लिखित समझौता, जिसमें किसी राज्य, भू-क्षेत्रादिके अन्य राज्यमें सम्मिलित किये जानेकी शर्तें दी हों और जिसपर दोनों पक्षोंके आधिकारिक व्यक्तियोंके हस्ताक्षर हों ।

सम्मिलित–वि० [सं०] साथ मिला हुआ, युक्त; एकत्र ।

सम्मिश्रक–पु० [सं०] (कंपाउंडर) अस्पतालों या पश्चिमी ढंगके औषधालयोंमें कई औषधियोंका सम्मिश्रण कर रोग-विशेषकी दवा तैयार करनेवाला कर्मचारी ।

सम्मिश्रण–पु० [सं०] मिलानेकी क्रिया; मिलावट ।

सम्मिश्रित–वि० [सं०] मिलाया हुआ, एक साथ किया हुआ; मिलावटी ।

सम्मीलन–पु०[सं०] (पुष्पादिका) संकुचित होना, मुँदना ।

सम्मुख–वि०[सं०] जो सामने हो; अनुकूल । अ० सामने । **–कोण**–पु० (वर्टिकली अपोज़िट एंगिल्स) दो सरल रेखाओंके किसी एक बिंदुपर एक दूसरीको काटनेसे बने हुए आमने-सामनेके कोण ।

सम्मेलन–पु० [सं०] आपसमें मिलना, एकत्र होना; जमघट; सभा आदि; मिश्रण; मेल ।

सम्मोदन–पु०(सैंक्शन) किसी नियम, अधिनियम आदिकी उच्चाधिकारियों द्वारा पुष्टि, आधिकारिक स्वीकृति ।

सम्मोह–पु० [सं०] व्याकुलता; मूर्च्छा, संज्ञाहीनता; अज्ञान, मूर्खता; विमोहन, वशीकरण ।

सम्मोहक–वि० [सं०] बेहोश, संज्ञाहीन करनेवाला; मुग्ध, वशमें करनेवाला ।

सम्मोहन–वि० [सं०] दे० 'सम्मोहक' । पु० मुग्ध करना; बहकाना; कामदेवका एक बाण; एक पौराणिक अस्त्र ।

सम्मोहित–वि० [सं०] मुग्ध किया हुआ; मूर्च्छित ।

सम्म्राज*–पु० साम्राज्य ।

सम्यक् (**च्**, **म्यंच्**)–वि० [सं०] ठीक, सही; उपयुक्त; उचित; मनोनुकूल, प्रिय; संपूर्ण, समग्र । अ० अच्छी तरह; ठीक-ठीक; पूर्णतः; स्पष्टतः ।

सम्याना*–पु० दे० 'शामियाना' ।

सम्रथ*–वि० समर्थ ।

सम्राज्ञी–स्त्री० [सं०] सम्राट्की पत्नी; साम्राज्यके शासन-सूत्रका संचालन करनेवाली स्त्री ।

सम्राट्(ज्)–पु० [सं०] वह जिसका शासन और राजाओंपर हो, राजेश्वर (जिसने राजसूय यज्ञ किया है) ।

सम्हलना–अ० क्रि० दे० 'सँभलना' ।

सय*–वि० सौ ।

सयण, सयन*–पु० लेटनेकी क्रिया; बिस्तर ।

सयान*–पु० समझदारी, बुद्धिमानी । वि० चतुर । **–प, –पन**–पु० चतुराई ।

सयाना–वि० प्राप्त-वयस्क, प्रौढ़ अवस्थाका; बुद्धिमान्, चालाक । पु० वृद्ध जन, बड़ा-बूढ़ा आदमी ।

सरंजाम–पु० [फा०] कामका नतीजा; पूर्ति; प्रबंध, तैयारी (करना, होना) ।

सरंड–पु० [सं०] पक्षी; लंपट; गिरगिट; दुष्ट व्यक्ति; एक आभूषण ।

सरःकाक–पु० [सं०] हंस ।

सरःकाकी–स्त्री० [सं०] हंसी ।

सर–पु० [फा०] सिर; चोटी, शीर्ष भाग; आदि, आरंभ; शीर्षक; सिरा, सरदार (सरपंच); किनारा; ताश, गंजीफेका कोई बड़ा पत्ता (इक्का, बादशाह इ०) । **–अंजाम**–पु० दे० 'सरंजाम' । **–कश**–वि० उद्दंड; जो किसीसे न दबे; बागी । **–कशी**–स्त्री० उद्दंडता; विद्रोह । **–कार**–स्त्री० दे० 'क्रममें' । **–ख़त**–पु० किरायानामा; वह कागज जिसपर नौकरीकी तारीखकी याददाश्त लिखी जाय । **–ग़ना**–वि० सरदार, मुखिया । **–गरोह**–पु० सरदार, नेता, मुखिया । **–गर्मी**–स्त्री० मुस्तैदी; उत्साह; दिलसे और पूरी शक्तिके साथ प्रयत्न करना । **–ज़मीन**–स्त्री० देश, मुल्क; राज्य । **–ज़ोर**–वि० सरकश, अवज्ञाकारी । **–तराश**–पु० नाई; सिर मूँड़नेवाला । **–ताज**–पु० दे० 'सिरताज' । **–दर्द**–पु० सिरका दर्द; व्यथा, कष्ट । **–दार**–पु० मुखिया, नेता; सेनापति; सिखोंकी पदवी । **–दारनी**–स्त्री० सरदारकी पत्नी; प्रतिष्ठित सिख महिला । **–दारी**–स्त्री० सरदारका पद । **–नाम**–वि० नामी, मशहूर । **–नामा**–पु० चिट्ठी पानेवालेका पता जो चिट्ठीके ऊपर या आरंभमें लिखा जाता है, प्रशस्ति । **–पंच**–पु० प्रधान पंच, पंचोंका मुखिया । **–परस्त**–वि० संरक्षक; सहायक; वली । **–परस्ती**–स्त्री० संरक्षण; सहायता । **–पँच, –पेच**–पु० पगड़ीके ऊपर लगानेका एक गहना; एक तरहका गोटा । **–फ़राज़**–वि० जिसका सिर ऊँचा हो; जिसे बड़ाई मिली हो, सम्मानित; घमंडी । **–फ़रोश**–वि० जानपर खेलनेवाला, निडर । **–फ़रोशी**–स्त्री० जान देनेको तैयार होना; वीरता । **–बराह**–वि० प्रबंधकर्ता, कारिंदा । **–बसर**–अव्य० बराबर; सोलहों आने, सरासर । **–बाज़**–वि० जानपर खेलनेवाला; निडर । **–बुलंद**–वि० जिसका सिर ऊँचा हो; उच्चपदस्थ; प्रतिष्ठित, सम्मानित । **–माया**–पु० दे० 'क्रम'में । **–व(रो)पा**–अ० सिरसे पैरतक, नख-शिख । पु० सर्वांग । **–व(रो)-सामान**–पु० सामान, असबाब । **–शुमारी**–स्त्री० सिरोंकी गिनती, मर्दुमशुमारी । **–हद, –हद्**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कोई देश समाप्त होता हो । **–हदी**–वि० सीमा-संबंधी; सरहदका । **–(रे)इजलास**–अ० भरी कचहरीमें, हाकिमके सामने । **–दरबार**–अ०

खुल्लमखुल्ला, भरे दरबारमें । **–बाज़ार**–अ० खुले खजाने, सबके सामने । **–राह**–अ० रास्तेके सिरेपर, रास्तेमें । **–लश्कर**–पु० सेनापति । **–शाम**–अ० शामके शुरूमें, संध्या होते ही । **मु०–करना**–(किला, मुहिम) जीतना; हराना; दबाना, काबूमें कर लेना; दागना, छोड़ना (तोप-बंदूक); ताश, गंजीफेमें खिलाड़ीका ऐसा पत्ता डालना जिसपर दूसरे खिलाड़ियोंको बड़ा पत्ता डालना पड़े ।

सर*–पु० बाण; चिता–'ककनू पंखि जैस सर साजा'–प०; सरकंडा–'मसि खूटी सागर जल भीजे, सर दौ लागि जरें'–सू० । **–घर**–पु० तरकश । **–पंजर**–पु० बाणोंका पिंजड़ा ।

सर(स्)–पु० [सं०] झील, ताल, जलाशय; जल ।

सरई–स्त्री० सरपतका एक भेद ।

सरकंडा–पु० एक सरपत जिसमें गाँठें होती हैं ।

सरक–पु० [सं०] पथिकोंकी लगातार पंक्ति; ताल, झील; रत्न; सरकना; काफिला, कारवाँ; आकाश; मदिरा । * स्त्री० खुमार ।

सरकना–अ० क्रि० जमीनसे सटे हुए आगे बढ़ना, रेंगना, खिसकना; हट जाना; काम चलना; समयका टल जाना ।

सरकस–पु० [अं०] दे० 'सर्कस' ।

सरकार–स्त्री० [फा०] राजदरबार; राज्य, हुकूमत; शासन करनेवाली संस्था, शासनमंडल; अधिकारी; रियासत । पु० प्रांतका एक विभाग, जिला (मुगलराज्य-प्रबंध); मालिक; घरका मालिक; प्रबंधकर्ता; बड़ेका संबोधन, हुजूर ।

सरकारी–वि० सरकारका, राजकीय; दफ्तरका; मालिकका । **–अहलकार,–मुलाज़िम**–पु० राजकर्मचारी । **–आमदनी**–स्त्री० राज्यकी आय, राजस्व । **–काग़ज़**–पु० स्टांपका कागज; प्रामिसरी नोट । **–काम**–पु० सरकारका काम, दफ्तरका काम ।

सरग*–पु० स्वर्ग । **–तिय**–स्त्री० अप्सरा ।

सरगम–पु० स्वरोंके आरोह-अवरोहका क्रम (संगीत) ।

सरगही–स्त्री० दे० 'सहरगही' ।

सरगुन*–वि० दे० 'सगुण' ।

सरगुनिया*–पु० वह जो सगुणोपासक हो ।

सरजना*–स० क्रि० सृष्टि करना; बनाना, निर्माण करना ।

सरजा–पु० सिंह; सरदार; शिवाजीकी उपाधि ।

सरजीव*–वि० सजीव, जीववाला (कबीर) ।

सरण–पु० [सं०] गमन, सरकना, खिसकना; लौहकिट्ट । वि० युद्धसे संबद्ध । **–मार्ग**–पु० गमन करनेका मार्ग ।

सरणि, सरणी–स्त्री० [सं०] मार्ग, रास्ता; व्यवस्था; तरीका; सीधी या लगातार पंक्ति; रेखा; पगडंडी ।

सरताबरता–पु० बँटाई; हिस्सा-बाँट । **मु०–करना**–एक दूसरेकी सहायतासे काम चलाना ।

सरतारा*–वि० निश्चिंत, बाफ़ुरसत, सावकाश–'वैद भये हरगोविंदजी तबसे जमदूत फिरैं सरतारे'–गुलाब ।

सरद–वि० दे० 'सर्द' । * स्त्री० शरत् ऋतु ।

सरदई–वि० दे० 'सर्दई' ।

सरदर–अ० औसतन; एक सिरेसे ।

सरदा–पु० दे० 'सर्दा' ।

सरधन*–वि० धनी, अमीर–'जो निर्धन सरधन कै जाई, आगे बैठा पीठ फिराई'–कबीर ।

सरधा*–स्त्री० श्रद्धा; शक्ति ।

सरन*–स्त्री० दे० 'शरण' ।

सरनदीप*–पु० स्वर्णद्वीप; सिंहल, लंका ।

सरना–अ० क्रि० सरकना; काम चलना, पूरा पड़ना; निकलना; * सड़ना; बीत जाना, पूरा हो जाना–'सुनहु कंस तेरो आयु सर्‍यो'–सू०; कटना ।

सरनी*–स्त्री० रास्ता, मार्ग ।

सरपा†–पु० सर्प ।

सरपट–स्त्री० घोड़ेकी सबसे तेज चाल जिसमें घोड़ा अगले पैरोंको एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है । वि० सपाट । अ० सरपट चालमें ।

सरपत–पु० कुशकी जातिका एक तृण ।

सरपि*–पु० घी ।

सरफराना*–अ० क्रि० व्यग्र होना, घबराना ।

सरफा–पु० दे० 'सर्फा' ।

सरब*–वि० दे० 'सर्व' । **–बियापी**–वि० सर्वव्यापक ।

सरबत्तरि*–अ० सर्वत्र–'सो मुलना सरबत्तरि गाजा'–कबीर ।

सरबदा*–अ० सर्वदा, हमेशा ।

सरबस*–पु० सर्वस्व, सब कुछ ।

सरबोर*–वि० दे० 'सराबोर' ।

सरम*–स्त्री० लज्जा ।

सरमद–वि० [अ०] सदा रहनेवाला, नित्य, कायम; मस्त ।

सरमा–पु० [फा०] जाड़ेका मौसिम, शीतकाल । स्त्री० [सं०] देवताओंकी कुतिया, देवशुनी (कहा जाता है, यह यमके चार आँखवाले कुत्तेकी जननी थी); कुतिया; विभीषणकी स्त्री । **–पुत्र,–सुत**–पु० कुत्ता ।

सरमाई–वि० [फा०] जाड़ेका । स्त्री० जाड़ेके कपड़े, जड़ावर ।

सरमाया–पु० [फा०] पूँजी, मूल धन । **–दार**–पु० पूँजीपति, धनी । **–दारी**–स्त्री० सरमायादार होना । वि० पूँजी प्रधान, पूँजीवादको माननेवाली (सरकार, हुकूमत) ।

सरयू–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध नदी जिसके तटपर अयोध्या स्थित है, घाघरा ।

सरराना*–अ० क्रि० हवाके तेज चलने या किसी वस्तुकी तीव्र गतिसे 'सर-सर' शब्द उत्पन्न होना ।

सरल–वि० [सं०] सीधा, जो वक्र न हो; सही, ठीक; खरा, निश्छल, सीधे स्वभावका; यथार्थ, असली; आसान, सुकर । पु० चीड़का पेड़; अग्नि; गंधाबिरोजा । **–काष्ठ**–पु० चीड़की लकड़ी । **–द्रव,–निर्यास**–पु० गंधाबिरोजा । **–रेखा**–स्त्री० (स्ट्रेट लाइन) वह रेखा जिसकी दिशा सर्वत्र एक ही रहती है ।

सरलता–स्त्री० [सं०] सीधापन; खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, सिधाई; आसानी; सादगी ।

सरलित–वि० [सं०] सीधा किया हुआ; सीधा ।

सरलीकरण–पु० [सं०] (सिंप्लिफिकेशन) कठिन विषयको आसान बना देना; किसी जटिल या कठिन भिन्नको सरल रूपमें परिणत करना (गणित) ।

सरव–वि० [सं०] शब्दायमान । * पु० दे० 'सराव' ।

सरवन–पु० दे० 'श्रमण'; 'श्रवण' ।

सरवनी*–स्त्री० सुमिरनी।

सरवर*–पु० सरोवर। स्त्री० बराबरी।

सरवरि*–स्त्री० बराबरी, स्पर्द्धा।

सरवरिया–वि० सरयूपार, सरवारका। पु० वह ब्राह्मण जो सरयूपारका हो।

सरवाक*–पु० संपुट; प्याला, कसोरा, दीया।

सरवान†–पु० खेमा, तंबू।

सरवार–पु० सरयूपारका भूखंड।

सरस–वि० [सं०] रसयुक्त, रसीला; स्वादिष्ठ; गीला; पसीनेसे तरबतर; ताजा; सुंदर, मोहक; रसपूर्ण (काव्य०)।

सरसई–स्त्री० सरसों जैसे फलके दाने; * सरस्वती (नदी, देवी); सरसता, ताजगी।

सरसठ–वि० साठ और सात। पु० सरसठकी संख्या, ६७।

सरसना*–अ० क्रि० रसयुक्त होना; पनपना, हरा-भरा होना, लहलहाना; शोभा देना; भावाविष्ट होना।

सर-सर–पु० हवाके चलने या साँप आदिके रेंगनेका शब्द। अ० 'सर-सर' ध्वनिके साथ।

सरसराना–अ० क्रि० 'सर-सर' आवाज होना; हवाका तेजीसे चलना; साँप आदिका रेंगना।

सरसराहट–स्त्री० हवा, साँप आदिके चलनेका शब्द।

सरसरी–वि० जल्दी या रवारवीका, लापरवाईसे किया जानेवाला, चलता (काम)। अ० जल्दीमें, बिना अधिक सोचे-विचारे, चलते तौरपर, बिना बारीकीसे देखे-समझे। **–तहक़ीक़ात**–स्त्री० वह जाँच या तहकीकात जिसमें पूरी शहादत न लिखी जाय। **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० चलती निगाह। **–तौरपर**–मोटे तौरपर।

सरसाई*–स्त्री० सरसता; आधिक्य; सुंदरता।

सरसाना*–स० क्रि० हरा-भरा करना; रसपूर्ण करना। अ० क्रि० दे० 'सरसना'।

सरसिका–स्त्री० [सं०] बावली; छोटा ताल, सरोवर।

सरसिज–पु० [सं०] कमल। **–योनि**–पु० ब्रह्मा।

सरसी–स्त्री० [सं०] छोटा ताल; बावली। **–रुह**–पु० कमल।

सरसुति*–स्त्री० सरस्वती।

सरसेटना–स० क्रि० फटकार बतलाना, डाँटना।

सरसों–स्त्री० एक तेलहन, सर्षप।

सरसौंहाँ*–वि० सरस बनाया हुआ, रसयुक्त।

सरस्वती–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध नदी; विद्यादेवी जो ब्रह्माकी पत्नी मानी जाती हैं, वाग्देवी; देववाणी; वाणी, शब्द, स्वर। **–पूजन**–पु०, **–पूजा**–स्त्री० सरस्वतीके जन्मदिनके उपलक्ष्यमें होनेवाली पूजा जो माघ-शुक्ला पंचमीको होती है।

सरहंग–पु० सेनापति; कोतवाल।

सरह*–पु० शलभ, पतंग।

सरहज–स्त्री० सालेकी स्त्री।

सरहद–स्त्री० दे० 'सर'के साथ।

सरहरा–वि० ऊपरको सीधे बढ़ा हुआ (पेड़), लंबोतरा।

सरहरी–स्त्री० सरपत जैसा एक तृण; सर्पाक्षी।

सरहिंद–पु० यमुना और सतलजके बीचका भूभाग।

सरा–* स्त्री० चिता–'सत कहँ सती सँवारै सरा'–प०; [फा०] घर; मुसाफिरखाना, धर्मशाला।

सराई–स्त्री० कसोरा; दीया; † सलाई; सरकंडेकी पतली लंबी छड़ी; पाजामा; * ठंढक।

सराग–* पु० सीखचा, शलाका–'बिरह सरागन्हि भूँजै माँसू'–प०; कुलाबेके बीचकी लकड़ी। वि० [सं०] रंग-वाला, रंगदार; लाखसे रँगा हुआ; प्रेमाविष्ट; सुंदर।

सराजाम†–पु० सामान, सामग्री।

सराध*–पु० दे० 'श्राद्ध'।

सराना*–स० क्रि० संपादित कराना, पूरा कराना।

सराप–पु० दे० 'शाप'।

सरापना*–स० क्रि० शाप देना, बुरा-भला कहना।

सरापा–अ० [फा०] सिरसे पैरतक, संपूर्ण। पु० सर्वांग, नख-शिख; वह पद्य जिसमें नख-शिखका वर्णन हो।

सराफ़–पु० [अ० 'सर्राफ़'] रुपये, गहने इत्यादिका लेन-देन करनेवाला; सोने-चाँदीके गहने, बरतन आदि बेचनेवाला; भाँज लेकर नोट, रुपये आदिके बदलेमें छोटे सिक्के देनेवाला। **–ख़ाना**–पु० बंक, कोठी।

सराफ़ा–पु० सराफी; सराफोंका बाजार; बंक, कोठी।

सराफ़ी–स्त्री० सराफका धंधा; भाँज, भुनाई; कोठीवाली लिपि। **–पारचा**–पु० हुंडी, चेक। मु० **–करना**–रुपये-पैसे परखना; सराफका काम करना।

सराब–पु० [अ०] रेतीले मैदानपर सूर्यकी किरणें पड़नेसे होनेवाली जलकी भ्रांति, मृगमरीचिका; धोखा, भ्रांति। † स्त्री० दे० 'शराब'।

सराबोर–वि० तरबतर, अच्छी तरह भीगा हुआ।

सराय–स्त्री० [फा०] सरा, मुसाफिरखाना। **–ए-फ़ानी**–स्त्री० दुनिया। **–का कुत्ता**–(ला०) अति लोभी।

सराव*–पु० प्याला, मधुपात्र; कसोरा; दीया।

सरावगी–पु० जैनमतानुयायी।

सरावन†–पु० पटेला, हेंगा।

सरास*–पु० भूसी–'कहो कौन पै कढो जाइ कन बहुत सरास पछोरी'–सू०।

सरासन*–पु० धनुष, कमान।

सरासर–अ० इस सिरेसे उस सिरेतक, सोलहों आने, पूर्णतया। वि० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करनेवाला।

सरासरी–वि०,अ० दे० 'सरसरी'। स्त्री० जल्दी; आसानी; अनुमान।

सराह*–स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई।

सराहना–स० क्रि० प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई करना। स्त्री० तारीफ, बड़ाई।

सराहनीय*–वि० प्रशंसनीय, उत्तम।

सरि–स्त्री० [सं०] झरना; जलप्रपात; दिशा; * नदी; लड़, माला; बराबरी, समता। * वि० तुल्य, सदृश। * अ० तक, पर्यंत–'आऊ सरि राजा पहँ रहा'–प०।

सरिका–स्त्री० [सं०] गमन, प्रस्थान; हिंगुपत्री; जानेवाली स्त्री; मोतियोंकी लड़ी; मुक्ता; ताल, झील; एक तीर्थ।

सरिगम–पु० दे० 'सरगम'।

सरित*–स्त्री० नदी।

सरितांपति–पु० [सं०] समुद्र; चारकी संख्या।

सरिता–स्त्री० नदी; धारा।

सरित्–स्त्री० [सं०] नदी; सूत्र, डोरी। **–पति**–पु० समुद्र।

सरित्वान् (त्वत्)-पु० [सं०] समुद्र।

सरियाना-स० क्रि० तरतीबसे रखना, व्यवस्थित करना; बटोरकर ठीक तरहसे रखना।

सरिवन-पु० एक ओषधि, शालपर्णी।

सरिवर, सरिवरि*-स्त्री० बराबरी, समता।

सरिश्त-स्त्री० [फा०] सृष्टि; बनावट; प्रकृति, स्वभाव।

सरिश्ता-पु० [फा०] दफ्तर, महकमा; कचहरी; रीति; उपाय। **-दार**-पु० दफ्तरका प्रधान; माल और दीवानी दफ्तरोंका एक विशेष कर्मचारी।

सरिस*-वि० समान, तुल्य, बराबर।

सरी-स्त्री० [सं०] छोटा सरोवर; सोता, झरना।

सरीक-वि० दे० 'शरीक'।

सरीकता*-स्त्री० साझा, शिरकत।

सरीखा-वि० समान, सदृश।

सरीफा-पु० दे० 'शरीफा'।

सरीर*-पु० दे० 'शरीर'।

सरीसृप-वि० [सं०] रेंगनेवाला। पु० रेंगनेवाला कीड़ा, साँप आदि।

सरीहन्-अ० [अ०] खुले तौरपर।

सरुज-वि० [सं०] रोगयुक्त, रोगी।

सरुष-वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित।

सरुहना*-अ० क्रि० सुधरना, अच्छा, ठीक होना।

सरुहाना*-स० क्रि० अच्छा, चंगा करना।

सरूप-वि० [सं०] साकार, रूपवाला; एक ही रूपका; समान, तुल्य, एक सा; सुंदर। * पु० दे० 'स्वरूप'।

सरूपता-स्त्री०,**सरूपत्व**-पु० [सं०] तुल्यरूपता,सादृश्य।

सरूर-पु० दे० 'सुरूर'।

सरेख*-वि० उम्रमें बड़ा और चालाक; सज्ञान।

सरेखना-स०क्रि० सहेजना, सँभालनेके लिए प्रवृत्त करना।

सरेखा*-वि० दे० 'सरेख'-'हँसि हँसि पूछहिं सखी सरेखी'-प०।

सरेश-पु० [फा०] एक लसदार पदार्थ जो पशुओंके चमड़े आदिसे तैयार किया जाता है। वि० लसदार।

सरेस-पु० दे० 'सरेश'।

सरौंट*-स्त्री० कपड़ोंकी सिलवट, सिकुड़न।

सरो-पु० बनझाऊ, एक सुंदर, सुडौल पेड़ जो सीधा बढ़ता और ऊपरकी ओर गावदुम होता है (उर्दू-फारसी कवितामें कद या सुंदर देह-यष्टिका उपमान।

सरोई-पु० एक ऊँचा पेड़।

सरोकार-पु० [फा०] लगाव, वास्ता; प्रयोजन।

सरोकारी-वि० [फा०] सरोकार रखनेवाला।

सरोज-वि० [सं०] ताल आदिमें उत्पन्न। पु० कमल। **-मुखी**-स्त्री० कमलके समान मुखवाली स्त्री।

सरोजना*-स० क्रि० पाना।

सरोजिनी-स्त्री० [सं०] कमलोंसे भरा तालाब; कमलसमूह; कमलका पौधा।

सरोता*-पु० श्रोता; सरौता।

सरोद-पु० [फा०] एक बाजा।

सरोरुह-पु० [सं०] कमल।

सरोवर-पु० [सं०] तालाब; ताल, झील।

सरोष-वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित।

सरोही-स्त्री० दे० 'सिरोही'।

सरौता-पु० सुपारी काटनेका एक औजार।

सरौती-स्त्री० छोटा सरौता; एक तरहका ऊख।

सर्कस-पु० [अं०] वह स्थान जहाँ नृत्य, शौर्य आदिके प्रदर्शनके साथ सिखाये हुए जानवरोंके खेल दिखाये जायँ; नटों और पशुओंके खेलोंका प्रदर्शन करनेवाली मंडली।

सर्कार-स्त्री० दे० 'सरकार'।

सर्ग-पु० [सं०] त्याग; रचना, निर्माण; सृष्टि; प्रकृति; प्रवृत्ति; स्वभाव; (काव्य) ग्रंथका अध्याय; कूच; आक्रमण; मलत्याग; मूल, उद्गम; प्रजनन; संतान; उद्यम, चेष्टा; (किसी तरल पदार्थका) प्रवाह; गति; प्राणी। **-कर्ता-(र्तृ)**-पु० सृष्टिकर्ता। **-बंध**-पु० सर्गोंमें विभक्त महाकाव्य।

सर्ग*-पु० दे० 'स्वर्ग'। **-पताली**-वि० ऐंचाताना। पु० वह बैल जिसका एक सींग ऊपर गया हो और दूसरा नीचे झुका हो।

सर्गुन*-वि० दे० 'सगुण'।

सर्चलाइट-स्त्री० [अं०] बिजलीकी तेज रोशनी जिसे प्रकाशपरावर्तक द्वारा बहुत दूरतक फैलाया जाता है, अन्वेषक प्रकाश, प्रकाश-प्रक्षेपक (जो जहाज आदिमें लगाया जाता है)।

सर्ज-स्त्री० [अं०] एक तरहका बढ़िया गरम कपड़ा। पु० [सं०] शालवृक्ष; धूना; सलईका पेड़। **-निर्यासक,-रस**-पु० धूना।

सर्जन-पु० [सं०] त्याग, छोड़ना; निर्माण, रचना, सृष्टि।

सर्जू*-स्त्री० सरयू नदी।

सर्त*-स्त्री० दे० 'शर्त'।

सर्द-वि० [फा०] ठंढा; फीका, बेमजा; उदास, बेरौनक; (ला०) निरुत्साह; निर्जीव। **-गर्म**-वि० ऊँच-नीच; काल या दशाके उलट-फेर। (मु०-**गर्म झेलना**-दुनियाके भले-बुरे, दशाके परिवर्तनोंका अनुभव प्राप्त करना। **-गर्म देखे हुए होना**-जमाना देखे हुए होना)। **-बाज़ारी**-स्त्री० बाजारका ठंढा होना, माँग या पूछ न होना। **-मिज़ाज**-वि० शीतप्रकृति; उत्साहहीन; बेमुरौवत। मु०-**हो जाना**-ठंढा हो जाना; गरमी दूर हो जाना; मर जाना।

सर्दई-वि० सर्देके रंगका, हरापन लिये हुए पीला।

सर्दा-पु० [फा०] खरबूजेका एक भेद।

सर्दार-पु० दे० 'सरदार'।

सर्दी-स्त्री० ठंढा, जाड़ा; जाड़ेका मौसिम; जुकाम; जूड़ी। **-गरमी**-स्त्री० जाड़ा-गरमी। मु०-**खाना**-ठंढ लगना; ठंढसे कष्ट पाना।

सर्प-पु० [सं०] रेंगना, सरकना; गमन; साँप; म्लेच्छोंकी एक जाति। **-कोटर**-पु० साँपका बिल। **-गृह**-पु० साँपका बिल। **-फेण**-पु० अफीम। **-बेलि**-स्त्री० [हिं०] नागवल्ली, पान। **-भक्षक**-पु० मयूर; नकुलकंद। **-भुक(ज्)**-पु० मयूर; सारस; गरुड़; नकुलकंद। **-मणि**-पु० सर्पके सिरपर पाया जानेवाला मणि। **-यज्ञ,-याग**-पु० सर्पोंके नाशका यज्ञ (जो

जनमेजयने किया था)। **–राज**–पु० वासुकि। **–लता, –वल्ली**–स्त्री० नागवल्ली। **–विद्**–वि० जिसे सर्पोंका ज्ञान हो। पु० सँपेरा। **–विद्या**–स्त्री० सर्प-संबंधी विद्या; साँपोंको पकड़ने आदिकी विद्या। **–विवर**–पु० साँपका बिल। **–वेद**–पु० सर्पविद्या। **–सत्र**–पु० दे० 'सर्पयज्ञ'। **–हा(हन्)**–पु० नेवला; गरुड़।

सर्पण–पु० [सं०] रेंगनेकी क्रिया; धीरेसे खिसकना; टेढ़ा चलना; बाणका जमीनके पाससे उसके समानांतर चलना।

सर्पा–स्त्री० [सं०] साँपिन; फणिलता।

सर्पाक्ष–पु० [सं०] रुद्राक्ष।

सर्पाराति–पु० [सं०] दे० 'सर्पारि'।

सर्पारि–पु० [सं०] गरुड़; नेवला; मोर।

सर्पावास–पु० [सं०] साँपके रहनेका स्थान; बामी; चंदन।

सर्पाशन–पु० [सं०] मोर; गरुड़।

सर्पि–पु० [सं०] घी; एक ऋषि।

सर्पिणी–स्त्री० [सं०] साँपिन; एक लता, भुजगी।

सर्पिल–वि० [सं०] साँपकासा; साँपकी तरह कुंडली मारे हुए।

सर्पी*–पु० घी।

सर्पी(पिन्)–वि० [सं०] रेंगने, धीरे-धीरे चलनेवाला।

सर्फ़–पु० [फ़ा०] फजूल खर्च, अपव्यय; [अ०] खर्च करना; बसर करना, बिताना।

सर्फ़ा–पु० [अ०] खर्च; अपव्यय; कंजूसी, खर्चमें तंगी करना (फ़ा०)।

सर्फ़ी–वि० [अ०] व्याकरण जाननेवाला, वैयाकरण।

सर्वस*–पु० दे० 'सर्वस्व'।

सर्म*–स्त्री० दे० 'शर्म'।

सर्राफ़–पु० [अ०] सोना-चाँदी-रुपये आदि परखनेवाला; दे० 'सराफ़'।

सर्राफ़ा–पु० दे० 'सराफ़ा'।

सर्राफ़ी–स्त्री० दे० 'सराफ़ी'।

सर्वंकष–वि० [सं०] सबको पीड़ित करनेवाला, निर्दय। पु० दुष्ट व्यक्ति; पाप।

सर्वंभरि–वि० [सं०] सबका भरण-पोषण करनेवाला।

सर्वंसहा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

सर्वंहर–वि० [सं०] सब कुछ ले जानेवाला।

सर्व–वि० [सं०] सब, समस्त, समग्र, कुल। पु० शिव; विष्णु; एक मुनि; एक जनपद; जल। **–कांचन**–वि० खालिस सोनेका। **–काम**–वि० सब इच्छाएँ रखनेवाला; सब तरहकी इच्छा पूरी करनेवाला। पु० शिव; एक अर्हत्। **–कामिक**–वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों। **–कामी(मिन्)**–वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; स्वेच्छापूर्वक काम करनेवाला; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों। **–काम्य**–वि० सर्वप्रिय; जिसकी हर एक व्यक्ति इच्छा करे। **–कारी(रिन्)**–वि० सब कुछ करनेवाला या करनेमें समर्थ। पु० सबका निर्माता। **–काल**–अ० सर्वदा, हमेशा। **–कालीन**–वि० सब कालका। **–कृत्**–वि० सर्वोत्पादक। **–क्षमा**–स्त्री० (एमनेस्टी) किसी विशेष अवसरपर या विशेष कारणसे किसी कोटिके बहुतसे बंदियोंको क्षमा प्रदान कर कारागृहसे मुक्त कर देना। **–क्षय**–पु० सबका नाश, प्रलय। **–क्षारनीति**–स्त्री० (स्कार्चड अर्थ पालिसी) युद्ध-भूमिमें पीछे हटनेवाली सेना द्वारा इमारतों, खेतों, पुलों, रेलों आदिका संपूर्ण विनाश जिससे शत्रु उनका प्रयोग न कर सके या उनसे लाभ न उठा सके, सर्वस्वाहानीति। **–गंध**–वि० जिसमें हर तरहकी गंध हो। पु० कपूर, कक्कोल, अगुर आदिका समाहार। **–ग**–वि० सब जगह जानेवाला, सर्वव्यापक। पु० ब्रह्म; आत्मा; शिव; जल। **–गामी(मिन्)**–वि० दे० 'सर्वग'। **–ग्रंथि, –ग्रंथिक**–पु० पिप्पलीमूल। **–ग्रह**–वि० सब कुछ एक ही बार खा जानेवाला। **–ग्रास**–वि० सब खा जानेवाला। पु० खग्रास ग्रहण। **–जनीन**–वि० सबसे संबंध रखनेवाला, सार्वजनिक। **–जनीय**–वि० सबके हितका। **–जित्**–वि० सबको जीतनेवाला, अजेय। पु० मृत्यु। **–जीवी(विन्)**–वि० जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह जीवित हों। **–ज्ञ**–वि० सब कुछ जाननेवाला। पु० ईश्वर; देवता। **–ज्ञाता(तृ)**–वि० सर्वज्ञ। **–द**–वि० सब देनेवाला। पु० शिव। **–दम, –दमन**–वि० सबका दमन करनेवाला। पु० शकुंतलाका पुत्र, भरत। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सब कुछ देखनेवाला। पु० ईश्वर। **–दा**–वि०, स्त्री० सब कुछ देनेवाली। **–दाता(तृ)**–वि० सब कुछ देनेवाला। **–दान**–पु० सर्वस्वका दान। **–दिग्विजय**–स्त्री० विश्वविजय। **–देवमय**–वि० जिसमें सब देव हों। पु० शिव। **–देशीय**–वि० सब देशोंसे संबद्ध; सब देशोंमें पाया जानेवाला। **–द्रष्टा(ष्टृ)** वि० सर्वदर्शी। **–धन्वी(न्विन्)**–पु० कामदेव। **–नाम(मन्)**–पु० संज्ञाके स्थानमें प्रयुक्त होनेवाला शब्द (व्या०)। **–नाश**–पु० विध्वंस, बरबादी, तबाही। **–नियंता(तृ)**–पु० सबको अपने वशमें रखनेवाला। **–पावन**–वि० सबको पवित्र करनेवाला। पु० शिव। **–पूजित**–वि० सबके द्वारा पूजित। पु० शिव। **–पूत**–वि० पूर्णतः शुद्ध। **–प्रद**–वि० सब कुछ देनेवाला। **–प्रिय**–वि० जो सबको प्रिय हो, लोकप्रिय; जिसे सब प्रिय हों। **–बंधविमोचन**–वि० सभी बंधनोंसे मुक्त करनेवाला। पु० शिव। **–भक्षी(क्षिन्)**–वि० सब कुछ खानेवाला। पु० अग्नि। **–भोगी(गिन्)**–वि० सबका भोग करनेवाला; सब कुछ खानेवाला। **–भोग्य**–वि० सबके लिए लाभदायक, सबके भोगके योग्य। **–मंगला**–स्त्री० दुर्गा; लक्ष्मी। **–रक्षी(क्षिन्)**–वि० सबकी रक्षा करनेवाला। **–रसोत्तम**–पु० नमक। **–वल्लभ**–वि० जो सबको प्रिय हो। **–वल्लभा**–स्त्री० असती नारी, व्यभिचारिणी। **–विद्**–वि० सर्वज्ञ। पु० ईश्वर। **–विद्य**–वि० सारी विद्याएँ जाननेवाला, सर्वज्ञ। **–वेत्ता(त्तृ)**–वि० सर्वज्ञ। **–व्यापक**–वि० सबमें रहनेवाला। **–व्यापी(पिन्)**–वि० दे० 'सर्वव्यापक'। पु० ईश्वर; एक रुद्र। **–शक्तिमान्(मत्)**–वि० सब कुछ करनेकी शक्तिसे युक्त। पु० ईश्वर। **–शून्य**–वि० बिलकुल रिक्त; सबको अस्तित्वरहित माननेवाला। **–श्राव्य**–वि० सबके सुनने योग्य। **–श्री**–वि० आदर

सूचित करनेवाला एक विशेषण जिसका प्रयोग अनेक व्यक्तियोंके नाम एक साथ आनेपर, उन सबके लिए सामूहिक रूपसे केवल एक बार, आरंभमें, किया जाता है। **–श्रेष्ठ**–वि० सर्वोत्तम। **–संगत**–पु० एक तरहका जल्द तैयार होनेवाला धान, साठी। **–सम्मत**–वि० सब सदस्यों आदिकी राय जिसके पक्षमें हो। **–सम्मति**–स्त्री० सबकी स्वीकृति या राय। **–सह**–वि० सब कुछ सहन करनेवाला, सहनशील। पु० गुग्गुल। **–सहा**–स्त्री० पृथ्वी। **–साक्षी (क्षिन्)**–वि० सब कुछ देखनेवाला। पु० ईश्वर; वायु; अग्नि। **–साधारण**–पु० साधारण लोग, जनता। **–सामान्य**–वि० जो सबमें पाया जाय (कामन); जो सबके प्रयोगके लिए हो (पब्लिक)। **–सुलभ**–वि० जो सबको आसानीसे प्राप्त हो सके। **–स्व**–पु० सब कुछ, सारी संपत्ति; सर्वांश। **–स्व-दंड,–स्व-हरण,–स्व-हार**–पु० सारी संपत्तिका हरण। **–स्व-युद्ध**–पु० (टोटल वार) समस्त साधनोंसे लड़ा जानेवाला युद्ध, वह युद्ध जिसमें शत्रुके विरुद्ध समस्त साधन और सारी शक्ति लगा दी जाय, सर्वांगिक युद्ध। **–स्वाहानीति**–स्त्री० (स्कॉर्चड अर्थ पॉलिसी) दे० 'सर्वक्षारनीति'। **–हारा**–पु० [हिं०] (प्रोलेटेरियट) समाजका अकिंचन वर्ग, निम्नतम श्रमिक वर्ग।

सर्वतः (तस्)–अ० [सं०] चारों ओर, सर्वत्र; सब प्रकारसे; सब तरफसे; पूर्णतः।

सर्वतोदक्ष–वि० [सं०] (ऑल राउंडर) जो कई बातों, कामों आदिमें दक्ष हो; (वह खेलाड़ी) जो बल्लेबाजी, गोलंदाजी, क्षेत्ररक्षण आदि सबमें दक्ष हो।

सर्वतोभद्र–वि० [सं०] जो सब प्रकारसे कल्याणकर हो; जिसके सारे सिर, मूँछ आदिके बाल मुँड़े हों। पु० वह वर्गाकार मंदिर या प्रासाद जिसमें चारों तरफ द्वार हों; एक तरहका व्यूह; एक तरहका चित्रकाव्य; (पूजाके समय) वेदी ढँकनेके वस्त्रपर बनाया जानेवाला एक चिह्न; वह मकान जिसमें चारों ओर छज्जा हो; सिर, मूँछ आदिका मुँड़ाया जाना।

सर्वतोमुख–वि० [सं०] जिसका मुँह चारों ओर हो; पूर्ण; असीम।

सर्वत्र–अ० [सं०] सब जगह; हर वक्त, हमेशा।

सर्वथा–अ० [सं०] हर तरहसे; पूर्णतः; बिलकुल; अत्यंत।

सर्वदा–अ०[सं०]हमेशा, सदा। वि०स्त्री०दे०'सर्व'के साथ।

सर्वरी–स्त्री० दे० 'शर्वरी'।

सर्वरीस*–पु० दे० 'शर्वरीश'।

सर्वशः(शस्)–अ० [सं०] पूर्णतः; सब प्रकारसे।

सर्वस*–पु० सर्वस्व, सब कुछ।

सर्वांग–पु० [सं०] सारा शरीर; संपूर्ण अंश या अवयव। **–पूर्ण**–वि० सब तरहसे पूर्ण। **–सम त्रिभुज**–पु० (आइडेंटिकली ईक्वल; कांग्रुएंट) वे दोनों त्रिभुज जिनमेंसे एकके सभी छः अंग (तीनों भुजाएँ व तीनों कोण) दूसरेके छः अंगोंके बराबर हों। **–सुंदर**–वि० जिसके सब अंग सुंदर हों, बहुत सुंदर।

सर्वांगीण–वि० [सं०] सब अंगोंसे संबंध रखनेवाला; संपूर्ण, बहुक्षेत्र-व्यापी।

सर्वांतक–वि० [सं०] सबका अंत करनेवाला।

सर्वात्मा(त्मन्)–पु० [सं०] समस्त, संपूर्ण विश्वकी आत्मा, ब्रह्म; शिव।

सर्वाधिक–वि० [सं०] सबसे बढ़ा हुआ, सबसे अधिक।

सर्वाधिकार–पु०[सं०] पूरा अख्तियार; सब कुछ करनेका अधिकार।

सर्वाधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] सारे अधिकार रखनेवाला; शासक; निरीक्षक; अध्यक्ष।

सर्वाधिपत्य–पु० [सं०] वह आधिपत्य या प्रभुता जो सबपर हो।

सर्वान्नभक्षक, सर्वान्नभोजी(जिन्)–वि० [सं०] हर तरहका खाद्य-पदार्थ खानेवाला।

सर्वाशय–पु० [सं०] सबका आश्रय, आधार; शिव।

सर्वाशी(शिन्)–वि० [सं०] सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद–पु० [सं०] समस्त वस्तुओंकी सत्ताको वास्तव मानना (वैभाषिक बौद्ध सिद्धांतके चार भेदोंमेंसे एक जो गौतमपुत्र राहुल द्वारा प्रवर्तित माना जाता है)।

सर्वेश, सर्वेश्वर–पु० [सं०] सबका स्वामी, मालिक; चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; शिव; ईश्वर। **–वाद**–पु० (पैंथीइज्म) सर्व जगत् ईश्वरका प्रतिरूप है और ईश्वर सर्व जगत्का, यह सिद्धांत; सब देवताओंको मानने, उनकी पूजा करनेका सिद्धांत।

सर्वेसर्वा–वि० जिसे किसी मामलेमें सब कुछ करनेका अधिकार हो, प्रधान कर्ताधर्ता, पूर्णाधिकारी।

सर्वोच्च–वि० [सं०] सबसे ऊँचा; सबसे बड़ा। **–न्यायालय**–पु० (सुप्रीम कोर्ट) देशका सबसे बड़ा न्यायालय, उच्चतम न्यायालय। **–सत्ता**–स्त्री० (पैरामाउंट पॉवर) देशकी सबसे बड़ी या प्रधान सत्ता (शक्ति)।

सर्वोत्तम–वि० [सं०] सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोदय–पु० [सं०] सब लोगोंके आर्थिक, नैतिक, सामाजिक उत्थानके लिए चलाया गया स्वतंत्र भारतका एक आंदोलन।

सर्वोपकारी(रिन्)–वि० [सं०] सबका उपकार, सहायता करनेवाला।

सर्वोपरि–अ० [सं०] सबसे ऊपर या बढ़कर।

सर्षप–पु० [सं०] सरसों; एक बहुत छोटी तौल।

सलई–स्त्री० चीड़; चीड़का गोंद।

सलक्षण–वि० [सं०] समान चिह्नोंवाला।

सलग*–वि० समग्र; पूरा, अखंडित, समूचा–'सलग रुपैया मैया कापै दयो जात है'।

सलगम, सलजम–पु० दे० 'शलगम'।

सलज्ज–वि० [सं०] हयादार, लज्जाशील; विनम्र।

सलतनत–स्त्री० दे० 'सल्तनत'।

सलना*–अ० क्रि० गड़ना; छिदना, साला जाना; किसी छिद्रमें (लकड़ी आदि) बैठाया जाना। पु० बरमा।

सलभ*–पु० दे० 'शलभ'; पतंग।

सलमा–पु० सोने-चाँदीका गोलाईमें लपेटा हुआ तार, बादला।

सलवट–स्त्री० दे० 'सिलवट'।

सलवार–स्त्री० जाँघिया; पंजाबी ढंगका ढीला-ढाला पैजामा।

सलहज–स्त्री० सालेकी पत्नी।

सला–स्त्री० [अ०] भोजनके लिए बुलाना; दावतका निमंत्रण। **–(ए)आम**–स्त्री० आम दावत, वह भोज जिसमें हर आदमी निमंत्रित समझा जाय।

सलाई–स्त्री० धातु या लकड़ीकी पतली और छोटी तीली; दियासलाई; सालनेकी क्रिया या मजदूरी; सलई। मु० **–फेरना**–सुरमा, दवा लगाना (आँखमें); आँख फोड़ना, सलाई गरम करके आँखमें लगाना।

सलाक*–स्त्री० शलाका, सलाई; तीर, बाण।

सलाख–स्त्री० धातुकी छड़, सलाई।

सलाकना†–अ० क्रि० सलाई या सलाई जैसी चीजसे निशान बनाना।

सलाजीत–स्त्री० दे० 'शिलाजीत'।

सलात–स्त्री० [अ०] नमाज।

सलातीन–पु० [अ०] 'सुल्तान'का बहुवचन।

सलाद–पु० [अं० 'सैलैड'] कच्चे मूल, पत्र आदिका नीबू, सिरके आदिके योगसे तैयार किया जानेवाला एक खाद्य; एक पौधा जिसके पत्ते उपर्युक्त रूपमें खाये जाते हैं।

सलाबत–स्त्री० [अ०] कठोरता; वीरता; प्रताप।

सलाम–पु० [अ०] नमस्कार, प्रणाम, बंदगी। **–अलैकुम**–स्त्री० तुम सलामत रहो, तुमपर सलामती हो (मुसलमान एक दूसरेको प्रायः यही कहकर नमस्कार करते हैं। दूसरा व्यक्ति जवाबमें 'वालैकुम स्सलाम' 'तुमपर भी सलामती हो' कहता है)। मु० **(किसीको)–करना**–दूर रहनेकी इच्छा प्रकट करना; त्यागना; बिदा होना; (किसीकी) उस्तादी, बड़ाई आदि मान लेना।

सलामत–स्त्री० [अ०] बचाव, रक्षा; कुशल। वि० सुरक्षित; स्वस्थ; जीवित; अखंड, साबित। अ० सकुशल, सही-सलामत। मु० **–रहना**–कायम रहना, बना रहना।

सलामती–स्त्री० [फा०] रक्षा; कुशल; तंदुरुस्ती; जीवित होना, जिंदगी (मुसल० स्त्रि०)। मु० **–का जाम पीना**–स्वास्थ्यकामनाका प्याला पीना। **–चाहना**–कुशल मनाना। **–से**–भगवत्कृपासे, खुदाके फज्लसे (मुसल० स्त्रियाँ अच्छी बात कहनेके पहले मंगलकी भावनासे कहती हैं–'सलामतीसे उसके चार बच्चे हैं।')

सलामी–स्त्री० [फा०] सलाम करनेकी रस्म; हथियारोंको उठाकर सलाम करना; तोपों या बंदूकोंकी बाढ़ जो राजाओं, बड़े अधिकारियों आदिके सम्मानार्थ दागी जाय (देना, लेना); वह धन जो दूल्हे या दुलहिनको सलामकी रस्ममें दिया जाय; नजराना। मु० **–उतारना**–किसीके सम्मानार्थ तोपों या बंदूकोंकी बाढ़ दागना।

सलाह–* स्त्री० सुलह, मेल–'सिवासों सलाह राखिये तौ बात भली है'–भू०। [अ०] मंत्रणा, मशवरा; राय। **–कार**–वि० सलाह देनेवाला।

सलिंगी(गिन्)–वि० [सं०] केवल चिह्न धारण करनेवाला, आडंबरी, ढोंगी।

सलि*–स्त्री० चिता।

सलिता*–स्त्री० सरिता, नदी।

सलिल–पु० [सं०] जल; वर्षाका जल; वर्षा; अश्रु। **–कुंतल**–पु० शैवाल। **–कुक्कुट**–पु० एक जलीय पक्षी, मुर्गाबी। **–क्रिया**–स्त्री० पितृतर्पण; शव-स्नान। **–ज**–वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल; जलीय जीव; घोंघा। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल। **–पति**–पु० वरुण। **–प्रिय**–पु० शूकर। **–भय**–पु० जल या जलप्लावनका भय। **–भर**–पु० झील, ताल। **–मुक्(च्)**–पु० बादल। **–योनि**–वि० जलसे उत्पन्न। पु० ब्रह्मा; जलसे उत्पन्न पदार्थ। **–राज**–पु० दे० 'सलिलपति'। **–राशि**–पु० समुद्र; जलाशय।

सलिलांजलि–स्त्री० [सं०] जलांजलि, तर्पण।

सलिलाधिप–पु० [सं०] वरुण।

सलिलार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] पिपासित, प्यासा।

सलिलालय–पु० [सं०] समुद्र।

सलिलाशय–पु० [सं०] तालाब; ताल।

सलिलेचर–वि० [सं०] जलचर। पु० जलीय जीव।

सलिलेश, शलिलेश्वर–पु० [सं०] वरुण।

सलिलोद्भव–वि० [सं०] जलमें उत्पन्न। पु० कमल; घोंघा।

सलिलोपजीवी(विन्)–वि० [सं०] पानीसे जीविका प्राप्त करनेवाला। पु० मछुआ।

सलिलौका(कस्)–वि० [सं०] जलमें रहनेवाला। स्त्री० जोंक।

सलीक़ा–पु० [अ०] हर चीजको ढंगसे और यथास्थान रखनेकी बुद्धि; ढंग, शऊर; गुण; योग्यता; सभ्यता, शिष्टता। **–दार,–मंद**–वि० शऊरदार।

सलीता–पु० एक तरहका मोटा मारकीन।

सलीम–वि० [अ०] सरल, विनीत; ठीक, दुरुस्त; स्वस्थ। पु० जहाँगीरका युवराजकालका नाम। **–चिश्ती**–पु० अकबरके समयके एक प्रसिद्ध मुसलमान संत जो फतहपुर सिकरीमें रहते थे। जहाँगीरका जन्म इनके आशीर्वादका फल मानकर अकबरने उसका पुकारनेका नाम उन्हींके नामपर, शाहजादा सलीम रखा था। **–शाही**–स्त्री० दिल्लीमें बननेवाली एक तरहकी सुंदर, मुलायम जूती।

सलीस–वि० [अ०] आसान; चलती (भाषा), क्लिष्ट शब्दावलीसे रहित; समतल। **–ज़बान**–स्त्री० सुबोध भाषा।

सलूक–पु० दे० 'सुलूक'।

सलूका–पु० पूरी बाँहकी (जनानी) कुरती, बंडी; बंदर नचानेवाला।

सलूनो–पु० दे० 'सलोनो'।

सलैना†–स० क्रि० काटकर ठीक करना, सालना।

सलैला*–वि० पिच्छिल, फिसलनवाला, चिकना।

सलोट*–स्त्री० दे० 'सिलवट'।

सलोतर–पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्साशास्त्र।

सलोतरी–पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्सक।

सलोन*–वि० दे० 'सलोना'।

सलोना–वि० लवणयुक्त, नमकीन; लावण्यमय, सुंदर। **–पन**–पु० लावण्य, सौंदर्य।

सलोनो–पु० श्रावण-पूर्णिमाको होनेवाला एक त्योहार, रक्षाबंधन।

सलौना*–वि० दे० 'सलोना'।

सल्तनत–स्त्री० [अ०] राज्य, बादशाहत; हुकूमत, अमलदारी; प्रबंध।

सल्लकी–स्त्री० [सं०] सलईका पेड़ ।

सल्लम†–पु०, स्त्री० एक मोटा कपड़ा, गजी, गाढ़ा ।

सव–पु० * शव ।

सवत, सवति*–स्त्री० दे० 'सौत' ।

सवत्स–वि० [सं०] जो बछड़ेके साथ हो; संतानयुक्त ।

सवधूक–वि० [सं०] सपत्नीक ।

सवन–पु० [सं०] सोमरस निचोड़कर निकालना; यज्ञ; तर्पण; यज्ञ-स्नान; प्रसव; अग्नि ।

सवयस, सवयस्क–वि० [सं०] समवयस्क, हमउम्र ।

सवर्ण–वि० [सं०] समान रंगका; समान जातिका ।

सवर्णन–पु० [सं०] भिन्नोंको समान हरवाले भिन्नोंके रूपमें लाना (गणित) ।

सवाँग–* पु० दे० 'स्वाँग'; † अपने परिवारका व्यक्ति ।

सवा–वि० चतुर्थांशके साथ (एक या कोई अंक), सपाद ।

सवाई–वि० चतुर्थांशयुक्त एक, सवा; बढ़-चढ़कर । स्त्री० सूद लेनेका एक प्रकार जिसमें मूल धन अपने चतुर्थांशसे युक्त हो जाता है; जयपुर नरेशोंकी उपाधि ।

सवाक् चित्र–पु० [सं०] (टॉकी) वह चलचित्र जिसमें पात्रोंके कार्य ही न दिखाई दें, उनका बोलना, गाना, रोना आदि भी सुनाई दे–जो मूक न रहकर बोलता हुआ-सा जान पड़े, बोलपट ।

सवाद*–पु० दे० 'स्वाद' ।

सवादिक, सवादिल*–वि० स्वाद देनेवाला, स्वादिष्ठ ।

सवाब–पु० [अ०] बदला; सुफल; सत्कर्मका (परलोकमें मिलनेवाला) फल । मु०–**कमाना**–पुण्य संचय करना ।

सवाया–वि० सवा गुना ।

सवार–पु० [फा०] घोड़े, हाथी, ऊँट आदिपर चढ़ा हुआ, आरोही; अश्वारोही; अश्वारोही सैनिक । वि० सवारी- (गाड़ी, मोटर आदि) पर बैठा हुआ; (ला०) मस्त, नशेमें चूर । * अ० सवेरे, जल्द ।

सवारा*–पु० प्रातःकाल, सवेरा ।

सवारी–स्त्री० सवार होनेकी क्रिया; वह चीज जिसपर सवार हों (घोड़ा, गाड़ी, पालकी इ०); सवार; जुलूस (निकलना); कुश्तीका एक पेंच ।

सवारे, सवारैं*–अ० जल्द, शीघ्र–'तुरत चलौ अब ही फिर आवैं, गोरस बेंचि सवारैं'–सू०; सवेरे ।

सवाल–पु० [अ० 'सुवाल'] माँगना; माँग; पूछना; प्रश्न; याचना, भिक्षाकी याचना (फकीरका सवाल); प्रार्थना, निवेदन; अर्जी; नालिश, फ़रियाद; गणितका प्रश्न; मसला । **–ख्वानी**–स्त्री० अदालतमें दर्खास्तोंको पढ़ना । **–जवाब**–पु० प्रश्नोत्तर; बहस; जिरह । मु०–**करना**–पूछना; जाँचके लिए कोई बात पूछना; माँगना; याचना करना । **–कुछ, जवाब कुछ**–प्रश्नसे असंबद्ध उत्तर देना ।

सविकल्प, सविकल्पक–वि० [सं०] विकल्पयुक्त; संदिग्ध; (ज्ञाता और ज्ञेयका) अंतर माननेवाला, निर्णय न कर पानेके कारण दोनोंको माननेवाला, संशयवादी ।

सविकार–वि० [सं०] परिवर्तनयुक्त; जिसके भावोंमें परिवर्तन हो गया हो; जो सड़-गल रहा हो ।

सविता(तृ)–पु० [सं०] सूर्य; अकवन; बारहकी संख्या । **–पुत्र, –सुत**–पु० शनि, यमादि ।

सविद्य–वि० [सं०] एक ही, समान विषयका अध्ययन करनेवाला; विद्वान्, विज्ञानविद् ।

सविधि–वि० [सं०] विधियुक्त । अ० विधिके अनुसार ।

सविनय–स्त्री० [सं०] विनययुक्त, शिष्टतापूर्ण; विनम्र । **–अवज्ञा**–स्त्री० (अन्यायपूर्ण) मुल्की कानूनकी अवमानना ।

सविशेष–वि०[सं०] विशेष गुणोंसे युक्त; असाधारण;श्रेष्ठ ।

सविस्तर–वि० [सं०] ब्योरेके साथ, तफ़सीलवार । अ० विस्तारपूर्वक ।

सविस्मय–वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त । अ० विस्मयके साथ ।

सवेरा–पु० सूर्योदय-काल, प्रातःकाल ।

सवैया–पु० सवा सेरका बाट; सवाका पहाड़ा; एक छंद ।

सव्य–वि० [सं०] बायाँ; दक्षिणी; प्रतिकूल; दाहिना । पु० विष्णु; जनेऊ । **–साची(चिन्)**–पु० अर्जुन (दोनों हाथोंसे एक जैसे वेगसे बाण चलानेके कारण); कृष्ण ।

सव्येतर–वि० [सं०] दाहिना ।

सशंक–वि० [सं०] शंकायुक्त, शंकित; भीरु, डरपोक ।

सशंकना*–अ० क्रि० डरना; शंकित होना ।

सशब्द–वि० [सं०] शब्दयुक्त; शोरगुलसे भरा हुआ ।

सशरीर–पि० [सं०] शरीरयुक्त, मूर्त;अस्थियुक्त ।**–प्रतिभू**–पु० (होस्टेज) जमानतके रूपमें रखा गया आदमी;ओल ।

सशस्त्र–वि० [सं०] शस्त्र या शस्त्रोंसे युक्त, शस्त्रसज्जित ।

सश्रम कारावास–पु० [सं०] (रिगरस इंप्रिज़नमेंट) दे० 'सपरिश्रम कारावास' ।

सस*–पु० चंद्रमा; शशक; शस्य, धान्य । **–धर, –हर**–पु० चंद्रमा ।

ससक*–पु० शशक, खरहा ।

ससकना*–अ०क्रि० दिल धड़कना, घबड़ाना, झिझकना ।

ससना, ससाना*–अ० क्रि० दे० 'ससकना'–'·· चौंक चितै मुख सूख ससानी'–वसंतमंजरी ।

ससहाय–वि० [सं०] साथियों आदिके साथ ।

ससा–* पु० शशक; † खीरा ।

ससि*–पु० दे० 'सस' । **–धर, –हर**–पु० चंद्रमा ।

ससी*–पु० चंद्रमा ।

ससुर–पु० दे० 'श्वशुर' । वि० [सं०] देवताओंसे युक्त ।

ससुरा–पु० ससुर; एक गाली; † ससुराल ।

ससुरार, ससुरारि*–स्त्री० दे० 'ससुराल' ।

ससुराल–स्त्री० पति या पत्नीके पिताका घर ।

ससेन, ससैन्य–वि० [सं०] सेनाके साथ ।

सस्ता–वि० अल्प मूल्यका; जिसका मूल्य घट गया हो, मंदा; जो आसानीसे मिल सके; घटिया । **–माल**–पु० घटिया माल । **–समय**–पु० सस्तीका जमाना । मु०–**छूटना, सस्ते छूटना**–ज्यादा खर्च आदिकी जगह थोड़ेमें ही काम चल जाना । **–लगा देना**–सस्ता बेचना ।

सस्ताना†–अ० क्रि० सस्ता हो जाना । स० क्रि० दाम कम करना ।

सस्ती–स्त्री० सस्तापन, मंदी, मँहगीका न होना ।

सस्त्रीक–वि० [सं०] स्त्री, पत्नीसहित; विवाहित ।

सस्नेह–वि० [सं०] तैलयुक्त; प्रेमपूर्ण ।

सस्पृह–वि० [सं०] इच्छुक, ख्वाहिशमंद ।

सस्मित–वि०[सं०]अल्पहासयुक्त । अ० मुस्कराहटके साथ ।

सस्य–पु० [सं०] धान्य ।**–आवर्त्तन**–पु० (क्रॉप-रोटेशन) खेतमें क्रम-क्रमसे दूसरी फसल बदल-बदलकर तैयार करना, फसल-बदल । **–पाल,–रक्षक**–पु० खेतका रखवाला ।

सहँगा*–वि० सस्ता, 'महँगा'का उलटा ।

सह–अ० [सं०] साथ, सहित; साथ-साथ, युगपत् । वि० सहन करनेवाला; धीर; समर्थ; सशक्त । **–कर्ता (र्तृ)**–पु० साथ काम करनेवाला; सहायक । **–कार**–पु० साथ काम करना, सहायता देना; एक तरहका सुगंधित आम । **–कारता,–कारिता**–स्त्री० सहायता; सहायक होनेका भाव । **–कारी (रिन्)**–वि० साथ काम करनेवाला । पु० सहायक कार्यकर्ता । **–गमन**–पु० साथ जाना; सती होना । **–गवन***–पु० दे० 'सहगमन' । **–गान**–पु० कई व्यक्तियोंका एक साथ मिलकर गाना, समवेतगान; वह गीत जो इस प्रकार गाया जाय (कोरस) । **–गामिनी**–स्त्री० सती होनेवाली स्त्री; पत्नी ।**–गामी(मिन्)**–वि० साथ जानेवाला ।**–गौन***–पु०दे० 'सहगमन' ।**–चर**–वि० साथ चलने या रहनेवाला । पु० साथी, मित्र; अनुचर, सेवक । **–चरी**–स्त्री० सखी; पत्नी । **–चारिणी**–स्त्री० सखी; पत्नी ।**–ज**–वि० साथ-साथ या एक ही समय उत्पन्न; जन्मजात; प्राकृतिक; आद्यंत एकसा रहनेवाला; साधारण; आसान । पु०सगा भाई; स्वभाव ।**–जात**–वि० एक साथ उत्पन्न; एक ही समय उत्पन्न, समवयस्क; प्राकृतिक; जुड़वाँ (बच्चे); सहोदर ।**–देव**–पु०माद्रीसे उत्पन्न पांडुके पाँचवें पुत्र । **–धर्मिणी**–स्त्री० पत्नी । **–धर्मी(र्मिन्)**–वि० समान कर्तव्योंवाला; समान धर्मवाला । **–पाठी(ठिन्)**–पु० साथ पढ़नेवाला । **–प्रतिवादी(निन्)**–पु० (को-डिफेंडेंट) किसी मामलेमें मुख्य प्रतिवादीके साथ गौण रूपसे मान लिया गया अन्य प्रतिवादी । **–भोज**–पु० (विभिन्न जातियों, श्रेणियोंके) बहुतसे आदमियोंका एक साथ बैठकर भोजन करना । **–भोजन**–पु० मित्रों आदिके साथ भोजन करना । **–मत**–वि० जिसका मत दूसरेसे मिलता हो । **–मरण**–पु० सती होना, सहगमन ।**–योग**–पु०साथ मिलकर काम करना; सहायता । **–योगी(गिन)**–वि०,पु० सहयोग करनेवाला; मददगार; साथ काम करनेवाला या साथ प्रकाशित होनेवाला; समकालीन । **–लंगी***–पु० साथी; हमराही ।**–वर्ती(र्तिन्)**–वि० साथ करने, रहनेवाला । **–वास**–पु० साथ रहना; संभोग, मैथुन । **–विस्तारी(रिन्)**–वि० (कोएक्सटेंसिव) साथ-साथ फैला हुआ । **–शय्या**–स्त्री० साथ सोना ।

सहजन*–पु० दे० 'सहिजन' ।

सहजारि–पु० [सं०] वह जो प्रकृत्या शत्रु हो (जिससे संपत्ति आदिके संबंधमें झगड़ा होनेकी संभावना हो, जैसे सौतेला या चचेरा भाई) ।

सहजै*–अ० सरलतापूर्वक, आसानीसे, अनायास ।

सहजोदासीन–वि० [सं०] जो प्रकृत्या मित्र या शत्रु न हो, साधारण रूपमें परिचित ।

सहत*–पु० दे० 'शहद' । † वि० सस्ता ।

सहताना*–अ० क्रि० सुसताना, थकान मिटाना; सस्ता होना ।

सहदानी*–स्त्री० चिह्न, निशानी ।

सहदूल*–पु० दे० 'शार्दूल' ।

सहदेई–स्त्री० एक वनौषधि ।

सहन–पु० [अ०] आँगन; खुली हुई समतल भूमि; बड़ा थाल; एक बढ़िया रेशमी कपड़ा; [सं०] सहिष्णुता; सहनेकी क्रिया; क्षमा । वि० सहिष्णु, धीर; क्षमाशील; शक्तिशाली । **–शील**–वि० सहिष्णु, धीर; संतोषी ।

सहनभंडार*–पु० धनराशि, खजाना ।

सहना–स० क्रि० झेलना, सहन करना, बरदाश्त करना; फल भोगना; भार ग्रहण करना ।

सहनाई*–स्त्री० दे० 'शहनाई' ।

सहनीय–वि० [सं०] सहने योग्य; क्षमाके योग्य ।

सहबाला–पु० दे० 'शहबाला' ।

सहम–पु० [फा०] डर, भय । **–नाक**–वि० डरावना, भयंकर ।

सहमना–अ० क्रि० डरना; शंका मानना; घबरा जाना ।

सहमाना–स० क्रि० डराना; घबराहटमें डालना ।

सहर–पु० जादू, टोना; सिहोर; * शहर; [सं०] एक दानव; [अ०] भोर, सूर्योदयके पहलेका काल । **–गही**–स्त्री० वह हलका भोजन जो रमजानके दिनोंमें रोजा रखनेवाले मुसलमान कुछ रात रहते कर लेते हैं (हिंदू स्त्रियाँ भी हरितालिका और जीवत्पुत्रिका व्रतोंसे पहले सहरगही (सरगही) खाती हैं ।**–गाह,–दम**–अ० तड़के ।

सहराई–वि० [अ०] जंगली, वन्य ।

सहराना*–स० क्रि० दे० 'सहलाना' । अ० क्रि० सिहरना; डरना ।

सहरी–स्त्री० शफरी मछली, सिधरी । वि० [अ०] प्रातःकालीन । स्त्री० दे० 'सहरगही' ।

सहल–वि० [अ०] नरम; सहजमें होनेवाला, आसान ।

सहलाना–स० क्रि० धीरे-धीरे मलना या हाथ फेरना, सुहराना; गुदगुदाना । अ० क्रि० गुदगुदी मालूम होना ।

सहस–वि० [सं०] हासयुक्त, हँसता हुआ; * दे०'सहस्र' । **–किरण,–गो***–पु० सूर्य । **–जीभ,–फन,–बदन,–मुख,–सीस**–पु० शेषनाग । **–दल,–पत्र**–पु० कमल ।

सहसा–अ० [सं०] अचानक, एकाएक; प्रचंड वेगसे; हठात् ।

सहसाक्रामक चमू–स्त्री०[सं०](शॉक ट्रूप्स) सेनाकी वह टुकड़ी जिसे अचानक ऐसा भयावह आक्रमण करनेकी शिक्षा दी गयी हो जिसमें असाधारण वीरता और साहसकी आवश्यकता हो ।

सहसाक्षि, सहसाखी*–पु० सहस्राक्ष, इंद्र ।

सहसानन*–पु० शेषनाग ।

सहसोपचार–पु०[सं०] (शॉक ट्रीटमेंट) चकित करने या झकझोर देनेवाला वह उपाय जो सहसा काममें लाया जाय, वह उपचार जो सहसा किसीकी मानसिक स्थितिपर प्रभाव डालकर रोगादिका शमन करनेके लिए किया जाय ।

सहस्र–वि० [सं०] दस सौ, हजार । पु० हजारकी संख्या ।

–कर,–किरण–पु० सूर्य। **–कांडा**–स्त्री० श्वेत दूर्वा। **–गु**–वि० हजार गायोंवाला; हजार किरणोंवाला; हजार नेत्रोंवाला। पु० सूर्य; इंद्र। **–गुण**–वि० हजार गुना। **–घाती(तिन्)**–वि० एक हजारको मारनेवाला। पु० एक युद्धयंत्र। **–चक्षु(ष्)**–वि० हजार नेत्रोंवाला। पु० इंद्र। **–दल**–पु० शतदल। **–दीधिति**–पु० सूर्य। **–धी**–वि० बहुत चतुर। **–नयन,–नेत्र**–पु० विष्णु; इंद्र। **–नामा(मन्)**–वि० हजार नामोंवाला। पु० विष्णु; शिव। **–पति**–पु० हजार गाँवोंका शासक या स्वामी। **–पत्र**–पु० कमल। **–बाहु**–पु० कार्तवीर्य, बाणासुर। **–बुद्धि**–वि० बहुत चतुर। **–भानु**–वि० हजार किरणोंवाला। पु० सूर्य। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा, महालक्ष्मी (महिषासुरका वध करनेवाली)। **–मरीचि, –रश्मि**–पु० सूर्य। **–लोचन**–पु० इंद्र; विष्णु। **–वक्त्र**–वि० हजार मुखोंवाला। **–वदन**–पु० विष्णु। **–शीर्षा(र्षन्)**–वि० हजार सिरोंवाला। पु० विष्णु।

सहस्रधा–अ० [सं०] हजार भागोंमें; हजार गुना; हजार तरहसे।

सहस्रशः(शस्)–अ० [सं०] हजारहा।

सहस्रांशु–पु० [सं०] सूर्य। **–ज**–पु० शनि।

सहस्राक्ष–वि० [सं०] हजार आँखोंवाला। पु० इंद्र।

सहस्राधिपति–पु० [सं०] एक हजार गाँवोंका शासक राजप्रतिनिधि; एक हजार व्यक्तियोंका नायक।

सहस्रानन–पु० [सं०] विष्णु; शेषनाग।

सहस्राब्दि–स्त्री० [सं०] हजार वर्षोंकी समाप्तिपर होनेवाला कार्य या उत्सव।

सहा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

सहाइ*–पु० सहायक। स्त्री० सहायता।

सहाई*–पु० सहायक। स्त्री० सहायता।

सहाध्यायी(यिन्)–पु० [सं०] सहपाठी; एक ही, समान विषयका अध्ययन करनेवाला।

सहाना–पु० एक राग। * वि० दे० 'शहाना'।

सहानुभूति–स्त्री० [सं०] किसीके दुःखादिसे दुःखी होना, हमदर्दी।

सहापराधी(धिन्)–पु०[सं०](एकांप्लिस) किसी अपराधमें मुख्य अपराधीका साथ देनेवाला, उसकी सहायता करनेवाला।

सहाब–पु० दे० 'शहाब'; [अ०] बादल, मेघ।

सहाय–पु० [सं०] साथी; मैत्री; सहायक; सहायता।

सहायक–पु० [सं०] सहायता करनेवाला, सहकारी; अधीनतामें काम करनेवाला। **–आजीविका**–स्त्री० (सबसिडियरी आक्युपेशन) मुख्य पेशे या कामसे होनेवाली आमदनीसे पूरा न पड़नेपर सहायताके रूपमें किया जानेवाला कोई अन्य कार्य या धंधा। **–नदी**–स्त्री० वह नदी जो किसी बड़ी नदीमें मिलती हो। **–संपादक**–पु० वह व्यक्ति जो किसी संपादकको संपादन-कार्यमें सहायता देता हो।

सहायता–स्त्री० [सं०] साथ, मैत्री; मदद; मित्र-मंडली। **–गृह**–पु० (रेस्क्यू होम) खतरे या संकटमें पड़े हुए लोगोंकी सहायताके लिए स्थापित गृह।

सहार–पु० सहना, बरदाश्त करना; सहनशीलता।

सहारना*–स० क्रि० सहन करना–'भूख और प्यास सहारी'–रत्ना०; सँभालना; गवारा करना।

सहारा–पु० भरोसा, मदद; आश्रय; टेक।

सहालग–पु० शुभ वर्ष (ज्यो०); शादी, विवाहके दिन।

सहावल–पु० [फा० 'शाकूल'] लटकन, साहुल।

सहिँजन, सहिजन–पु० एक वृक्ष, शोभांजन, 'मुनगा'।

सहिजानी*–स्त्री० दे० 'सहिदानी'।

सहित–अ० [सं०] साथ, समेत।

सहिता(तृ)–वि० [सं०] सहन करनेवाला, सहनशील।

सहिथी*–स्त्री० बरछी।

सहिदान*–पु० पहिचान, चिह्न।

सहिदानी*–स्त्री० निशान, पहचान, परिचय-चिह्न–'दीन्हि राम तुम कहँ सहिदानी'–रामा०।

सहिष्णु–वि० [सं०] सहनेवाला, सहनशील।

सहिष्णुता–स्त्री०, **सहिष्णुत्व**–पु० [सं०] सहनशीलता, तितिक्षा; क्षमा।

सही–वि० दोषरहित; ठीक, दुरुस्त। स्त्री० हस्ताक्षर; * सखी। अ० निश्चयपूर्वक। **–सलामत**–वि० नीरोग, स्वस्थ; दोषरहित; निरापद।

सहुँ*–अ० सामने, सम्मुख; तरफ, ओर।

सहूलियत–स्त्री० [अ०] नरमी; आसानी।

सहृदय–वि० [सं०] कोमलचित्त; दयालु; सच्चा; समझदार; प्रसन्नमना; रसिक। पु० विद्वान् व्यक्ति; वह जो गुण पहचाने; रसका अनुभव करनेवाला व्यक्ति।

सहृदयता–स्त्री० [सं०] दयालुता; चित्तकी कोमलता।

सहेजना–स० क्रि० सँभालना; कोई चीज सचेत करके सौंपना।

सहेट*–पु० दे० 'सहेत'।

सहेत*–पु० प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका निश्चित स्थान, संकेतस्थल।

सहेतु–वि० [सं०] कारणयुक्त, युक्तियुक्त।

सहेतुक–वि० [सं०] सकारण, सोद्देश्य।

सहेलरी*–स्त्री० सखी, सहेली।

सहेली–स्त्री० साथ, संग रहनेवाली स्त्री; सखी, साथिन; दासी, सेविका।

सहैया–वि० सहने, बरदाश्त करनेवाला। * पु० सहायक; मददगार।

सहोक्ति–स्त्री० [सं०] साथ बोलना; एक अर्थालंकार, जहाँ संग, सहित आदि पदोंका प्रयोग करते हुए एक ही कामके साथ अन्य कितनी ही बातोंका होना मनोरंजक ढंगसे वर्णित किया जाय।

सहोदर–वि० [सं०] सगा, एक मातासे उत्पन्न; एक जैसा। पु० सगा भाई।

सह्य–वि० [सं०] जो सहा जा सके; सहन करनेमें समर्थ; मुकाबला करनेमें समर्थ; शक्तिशाली; प्रिय, सुमधुर। पु० सह्यादि-श्रेणी; आरोग्य; सहायता; उपयुक्तता।

सह्याद्रि–पु० [सं०] बंबई प्रांतकी एक पर्वतश्रेणी जो समुद्रतटके समीप स्थित है।

साँईं–पु० स्वामी; ईश्वर; पति; मुसलमान फकीर।

साँकड़–स्त्री० जंजीर, सीकड़; पैरका एक गहना, साँकड़ा।

साँकड़ा–पु० पैरका एक गहना।

साँकर*–पु० संकट, कष्ट। स्त्री० जंजीर, सीकड़। वि० सँकरा, तंग; कष्टयुक्त।

साँकरा*–पु० कष्ट–'साँकरेकी साँकरन सनमुख होत तोरै'–रामा०; † साँकड़ा। वि० तंग।

सांकर्य–पु० [सं०] मिश्रण, मिलावट, संकरता।

साँकल†–स्त्री० शृंखला, जंजीर।

सांकेतिक–वि० [सं०] संकेत-संबंधी, संकेतवाला।

सांक्रमिक–वि० [सं०] संक्रमण करनेवाला, संक्रामक।

सांक्षेपिक–वि० [सं०] संक्षिप्त, छोटा किया हुआ।

सांख्य–वि० [सं०] संख्या-संबंधी; गणना करनेवाला। पु० छः दर्शनोंमेंसे एक जिसके कर्ता कपिल ऋषि थे (इसमें प्रकृति ही सारे विश्वका मूल और पुरुष द्रष्टामात्र माना गया है)।

सांख्यिक–पु० (स्टैटिस्टीशियन) जनन, मरण, उत्पादन आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े एकत्र करनेवाला कर्मचारी अथवा विशेषज्ञ, आंकिक।

सांख्यिकी–स्त्री० (स्टैटिसटिक्स) जनन, मरण, उत्पादन, अपराध आदि-संबंधी आँकड़े (संख्याएँ) प्रामाणिक रूपसे एकत्र करने, तैयार करने आदिकी विद्या; इस तरह तैयार किये गये आँकड़ोंका समूह।

सांख्यिकीय मंत्रणाकार–पु० (स्टैटिस्टिकल एडवाइजर) जनन, मरण, उत्पादन आदिके आँकड़ोंके संग्रह, अध्ययन, विवेचन इत्यादिके संबंधमें परामर्श देनेवाला(आंकिक मंत्रणाकार)।

सांग–वि० [सं०] अंगयुक्त; प्रत्येक अवयवसे पूर्ण; छः अंगोंसे युक्त।

साँग–स्त्री० बरछी।

सांगतिक–वि० [सं०] संगति-संबंधी; सामाजिक। पु० अतिथि; अजनबी; जो किसी कारबारके सिलसिलेमें आया हो।

साँगी–स्त्री० बरछी; जुएपर गाड़ीवानके बैठनेका स्थान।

सांगोपांग–वि० [सं०] अंगों, उपांगों और उपनिषदोंसे युक्त; अंगोंसे युक्त, पूर्ण।

सांघात–पु० [सं०] दल, यूथ, समूह।

सांघातिक–वि० [सं०] मारात्मक, घातक, हननकारक।

सांघिक–वि० [सं०] (भिक्षुओं आदिके) संघ-संबंधी।

साँच*–वि० ठीक, सत्य। पु० सच्ची बात।

साँचर नमक–पु० सौवर्चल लवण।

साँचला†–वि० सत्यवादी, सच्चा।

साँचा–पु० वह ढाँचा जिसमें कोई गीली चीज भरकर खास शकलकी चीज ढालते हैं; छोटा नमूना; कपड़ेपर फूल आदि छापनेका लकड़ीका ठप्पा। * वि० सच्चा। **–(चे)में ढला**–सुडौल, सुंदर।

सांचारिक–वि० [सं०] जंगम।

साँचिया–पु० साँचा बनानेवाला; साँचेमें कोई चीज ढालनेवाला।

साँचिला*–वि० सच्चा।

साँची–पु० एक तरहका पान। स्त्री० छपाई तथा कागजकी भाँजका एक प्रकार।

साँझ*–स्त्री० संध्या, सायंकाल।

साँझा–पु० दे० 'साझा'।

साँझी–स्त्री० मंदिरमें देवमूर्तिके सामने चौक पूरने जैसी की जानेवाली फूलोंकी सजावट।

साँट–स्त्री० छड़ी; कोड़ा; छड़ीकी चोटका दाग।

साँटा–पु० डंडा; ईख।

साँटिया*–पु० डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी–स्त्री० पतली छड़ी; बाँसकी कमची, कइन; * मेल-जोल; बदला, प्रतिकार।

साँठ–पु० साँटा; ईख; अन्न पीटनेका डंडा; सरकंडा; मेल, योग। **–गाँठ**–स्त्री० हेल-मेल; गुप्त-संबंध; दुरभिसंधि, साजिश।

साँठना*–स० क्रि० पकड़े रहना।

साँठि, साँठी*–स्त्री० पूँजी, धन–'बाम्हन तहवाँ लेइ का, गाँठि साँठि सुठि थोर'–प०।

सांड–वि० [सं०] अंडयुक्त, जो बधिया न किया गया हो।

साँड़–पु० मृतककी स्मृतिमें दागकर छोड़ा हुआ बैल; वह बैल या घोड़ा जो बधिया न कर जोड़ खिलानेके लिए पाला गया हो। वि० शक्तिशाली, मोटा-ताजा; आवारा, लंपट। मु० **–की तरह घूमना**–आजादी और बेफिक्रीसे घूमते फिरना। **–की तरह डकरना**–जोरसे चिल्लाना।

साँड़नी–स्त्री० (तेज चालवाली) ऊँटनी।

साँड़ा–पु० गिरगिटकी जातिका एक जंतु जिसका तेल दवाके काम आता है।

साँड़िया–पु० तेज रफ्तारवाला ऊँट; साँड़नीका सवार।

सांत–* वि० दे० 'शांत'; [सं०] अंतयुक्त; प्रसन्न।

सांतर–वि० [सं०] अंतर या अवकाशयुक्त; झीना।

सांतापिक–वि० [सं०] ताप पहुँचानेवाला; कष्ट देनेवाला।

सांति*–स्त्री० दे० 'शांति'।

सांत्वन–पु० [सं०] तुष्ट करना, ढाढ़स बँधाना; तसल्ली; तुष्ट करनेका साधन; तुष्ट करनेवाले शब्द।

सांत्वना–स्त्री० [सं०] दे० 'सांत्वन'।

साँथरी–स्त्री० दे० 'साथरी'।

सांदीपनि–पु० [सं०] एक मुनि जो कृष्ण और बलरामके गुरु थे।

सांद्र–वि० [सं०] घना, ठस, गफ; मोटा; एकमें मिला हुआ; हृष्ट-पुष्ट; अत्यधिक; प्रचंड; स्निग्ध; चिकना; कोमल। पु० राशि, झुंड; जंगल।

सांध–वि० [सं०] संधि, जोड़-संबंधी; जो जोड़पर हो।

साँध–पु० निशाना, लक्ष्य।

साँधना*–स० क्रि० निशाना लगाना; लक्ष्यपर रखना, चढ़ाना–'करतल चाप रुचिर सर साँधा'–रामा०; सिद्ध करना; साधना; सानना, मिलाना, गूँधना।

सांधिविग्रहिक–पु० [सं०] संधि और युद्धका निश्चय करनेवाला मंत्री।

सांध्य–वि० [सं०] प्रातःकाल या संध्या-संबंधी। **–कुसुमा**–स्त्री० शामको फूलनेवाला पौधा या बेल। **–भोजन**–पु० ब्यालू।

साँप–पु० पेटके बल रेंगनेवाला एक प्रसिद्ध विषैला कीड़ा,

सर्प । **-धरण***-पु० शिव । मु०-**उतारना**-साँपका जहर दूर करना । **-कलेजे या छातीपर लोटना**-बहुत व्याकुल होना; भारी सदमा पहुँचना । **-का पाँव देखना**-असंभव बातके लिए प्रयत्न करना ।**-का बच्चा**-दुष्ट, जालिम । **-की तरह जमीन पकड़ना**-जरा भी न हिलना । **-की तरह फन झाड़ या मारकर रह जाना**-वश न चलना, प्रयत्नमें विफल होना । **-कीलना**-मंत्र द्वारा साँपको काटनेसे रोकना ।**-की सी केँचुली झाड़ना या डालना**-साफ-सुथरा होना; आरोग्य लाभ करना । **-के मुँहमें**-खतरेमें । **-खेलाना**-मंत्रके बलसे साँप पकड़ना । **-छछूँदरकी गति या दशा**-द्विविधाकी स्थिति । **-लहराना**-साँपकी तरह आचरण करना; बहुत व्याकुल होना; ईर्ष्यासे जलना । **-सा लोटना**-बहुत व्याकुल होना । **-सूँघ जाना**-साँपका काटना या काटनेसे मर जाना । **-से खेलना**-खतरनाक आदमीसे मेल-मिलाप करना ।

सांपत्तिक-वि० [सं०] संपत्ति-संबंधी, आर्थिक ।

सांपद-वि० [सं०] संपत्ति-संबंधी;···के उपकरण-संबंधी ।

साँपा-पु० सियापा ।

साँपिन-स्त्री० सर्पिणी, साँपकी मादा; घोड़े, बैलके शरीर-परकी एक तरहकी भौंरी जो बुरी मानी जाती है ।

साँपिया-पु० साँपके रंगसे मिलता हुआ रंग ।

सांप्रत-अ० [सं०] तत्काल, अभी, इस समय ।

सांप्रतिक-वि० [सं०] आधुनिक, वर्तमानकाल-संबंधी (करेंट); उपयुक्त, ठीक ।

सांप्रदायिक-वि०[सं०]किसी संप्रदायसे संबंध रखनेवाला ।

सांप्रदायिकता-स्त्री० [सं०] सांप्रदायिक होनेका भाव; केवल अपने संप्रदायका हित चाहना और दूसरे संप्रदायोंके हितोंकी उपेक्षा करनेको तैयार रहना ।

सांबर-पु० पाथेय; [सं०] साँभर हिरन; साँभर नमक ।

साँभर-पु० राजपूतानेकी एक झील; उस झीलसे प्राप्त नमक; एक तरहका हिरन; * संबल, पाथेय-'साँभर सोइ गाँठि जो होई'-प० ।

साँमुहे†-अ० सामने ।

साँवत-पु० एक राग; * योद्धा ।

सांवत्सर-वि० [सं०] वार्षिक । पु० गणक, ज्योतिषी, पंचांग बनानेवाला; चांद्रमास । **-रथ**-पु० सूर्य ।

सांवत्सरिक-वि० [सं०] वार्षिक; वार्षिक यज्ञ-संबंधी । **-श्राद्ध**-पु० हर साल किया जानेवाला श्राद्ध ।

सांवत्सरी-स्त्री० [सं०] मृत्युके एक साल बाद होनेवाला श्राद्ध ।

साँवरा†-वि० साँवला ।

साँवलताई†-स्त्री० साँवलापन ।

साँवला-वि० श्याम वर्णका । पु० कृष्ण; पति; प्रेमी । **-पन**-पु० श्यामता ।

साँवलिया-वि० श्याम रंगका । पु० कृष्ण ।

साँवाँ-पु० कँगनी जैसा एक कदन्न ।

सांवादिक-वि० [सं०] संवाद या समाचार-संबंधी । पु० समाचार भेजनेवाला; पत्रकार; (न्यूज़मैन) सड़कपर घूम-घूमकर समाचार-पत्र बेचनेवाला ।

सांव्यवहारिक-वि० [सं०] प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो । पु० साझेमें व्यापार करनेवाला व्यक्ति ।

सांशयिक-वि० [सं०] संदिग्ध; संदेह करनेवाला ।

साँस-स्त्री० नाक या मुँहसे अंदर खींची और बाहर निकाली जानेवाली हवा; गुंजाइश; फुरसत; दमा । मु०-**अंदरकी अंदर, बाहरकी बाहर रह जाना**-भयसे स्तब्ध रह जाना । **-उखड़ना**-हाँफना, साँस छूटना । **-उड़ना**-दम रुकना । **-उलटी चलना,-ऊपरको चढ़ना**-आसन्न-मृत्यु होना । **-ऊपर-नीचे होना**-बहुत व्यस्त होना; साँस रुकना । **-खींचना**-जोरसे साँस लेना; दम साधना । **-गिनना**-आसन्नमृत्युकी साँस देखकर हालतका निश्चय करना । **-चढ़ना**-हाँफना, साँस फूलना । **-चढ़ाना**-दम साधना, मुर्दा बन जाना । **-चलना**-जिंदा होना । **-टूटना**-साँसका नियमित रूपसे न चलना ।**-डकार न लेना**-माल पचा जाना और पता न लगने देना । **-तक न लेना**-बिलकुल मौन रहना, कुछ न बोलना । **-न निकालना**-चुप रहना । **-फूलना**-दम चढ़ जाना, हाँफना । **-भरना**-ऊपरका दम लेना, हाँफना; आह भरना । **-रहते**-जीते जी । **-रुकना**-दम बंद होना; साँस लेनेमें तकलीफ होना । **-लेना**-साँस फेफड़ोंमें ले जाना और बाहर निकालना; आह भरना; दम लेना, रुक जाना, सुस्ता लेना । **(उलटी) -लेना**-बड़ी तकलीफमें होना । **-लेनेकी फुरसत**-थोड़ीसी फुरसत । **-सीनेमें अड़ना**-साँस रुकना, मरणासन्न होना ।

साँसत-स्त्री० साँस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बखेड़ा । **-घर**-पु० कालकोठरी, जेलके अंदर वह छोटीसी कोठरी जिसमें कैद-तनहाईकी सजावाला आदमी अकेले रखा जाता है ।

साँसति*-स्त्री० दे० 'साँसत' ।

सांसद-वि० [सं०] जो संसद या उसके सदस्योंकी मर्यादा के अनुकूल हो ।

साँसना*-स० क्रि० शासन करना, दंड देना; पीड़ा देना ।

साँसा-पु० फिक्र, चिंता; अंदेशा, शंका; डर; सोच-विचार; साँस; पीड़ा । मु०-**पड़ना**-संदेह होना; फिक्र पड़ना । **-रहना**-अंदेशा रहना ।

सांसारिक-वि० [सं०] संसार-संबंधी, लौकिक, ऐहिक ।

सांस्कारिक-वि० [सं०] संस्कार-संबंधी; अंत्येष्टि या अन्य संस्कारोंके लिए आवश्यक ।

सांस्कृतिक-वि० [सं०] संस्कृति-संबंधी ।

सांस्पर्शिक-वि० [सं०] (कंटेजस) संस्पर्श या छूतसे होने, फैलनेवाला (रोग); छूतका, छूतवाला (रोग) ।

सा-पु० सप्तकके प्रथम स्वर-'षड्ज'का सांकेतिक रूप । अ० सदृश, समान, जैसा; एक मानसूचक शब्द (फारसीमें यह 'साँ' और 'आसा'का संक्षिप्त रूप है और तुल्य आदि अर्थोंका ही द्योतक है)।

साइक*-पु० दे० 'शायक'; संध्याकाल ।

साइत-स्त्री० [अ० 'साअत'] पल, छन; मुहूर्त, लग्न; (टलना, देखना; बिचारना इ०) ।

साइबान-पु० दे० 'सायबान' ।

साइयाँ*–पु० दे० 'साँई'।

साइर†–पु० दे० 'सायर'।

साईँ–पु० दे० 'साँई'।

साई–स्त्री० वह धन जो गाने-बजाने या इस तरहके काम करनेवालोंको नियत समयपर काम करनेके लिए अग्रिम दिया जाता है, बयाना; † किसानोंकी आपसकी सहायता। वि० [अ०] सई (कोशिश) करनेवाला; दौड़-धूप करनेवाला।

साईस–पु० घोड़ेकी देखभाल करनेवाला नौकर।

साईसी–स्त्री० साईसका काम।

साउज*–पु० वे जानवर जिनका शिकार किया जाय–'कीन्हेसि साउज आरन रहई'–प०।

साक–पु० तरकारीके रूपमें खाया जानेवाला पौधेका पत्ता, साग; सागौन। * स्त्री० साख; धाक।

साकट*–पु० शाक्त मत माननेवाला; मद्य, मांस आदिका सेवन करनेवाला, निगुरा; खल।

साकत*–पु० दे० 'साकट'।

साकर–† वि० सँकरा, तंग। * स्त्री० साँकल।

साकल्य–पु० दे० 'शाकल्य'; [सं०] समग्रता, संपूर्णता। **–वचन**–पु० पूरा पाठ।

साकांक्ष–वि० [सं०] इच्छायुक्त, इच्छुक; जिसके लिए पूरक आवश्यक हो।

साका–पु० शाका, संवत्; रोब, दबदबा; नामवरी; कीर्ति-स्मारक। * स्त्री० इच्छा, चाह–'आजु आइ पूजी वह साका'–प०। मु०–**चलना**–रोब माना जाना। **–चलाना**–दबदबा कायम करना।

साकार–वि० [सं०] आकारयुक्त, रूपविशिष्ट, मूर्त, स्थूल; अच्छे आकारका, सुंदर। पु० ईश्वरका सगुण रूप।

साकारोपासना–स्त्री०[सं०] ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना।

साकिन–वि० [अ०] गति हीन। पु० हलवर्ण; रहनेवाला, निवासी। **–हाल**–वर्तमान निवासी (वर्तमान निवास बतानेके लिए कहते हैं)।

साक़ी–पु०[अ०] पानी पिलानेवाला; शराब पिलानेवाला।

साकूत–वि० [सं०] सार्थक, अर्थगर्भ; साभिप्राय; क्रीड़ा-युक्त। **–स्मित,–हसित**–पु० साभिप्राय मंद हास; प्रणयसूचक हास और चितवन।

साकेत, साकेतन–पु० [सं०] अयोध्या।

साकेतक–पु० [सं०] अयोध्या-निवासी।

साक्तुक–पु० [सं०] जौ; जौका सत्तू; एक विष। वि० सत्तू-संबंधी।

साक्ष–वि० [सं०] नेत्रयुक्त; जपमालासे युक्त।

साक्षर–वि० [सं०] पढ़ा-लिखा, शिक्षित।

साक्षरता–स्त्री० [सं०] पढ़े-लिखे होनेका भाव। **–आंदोलन**–पु० (लिटरेसी कैंपेन) निरक्षरोंको साक्षर, अपढ़ोंको पढ़ा हुआ, बनानेके लिए चलाया गया आंदोलन।

साक्षात्–अ० [सं०] आँखोंके सामने, प्रत्यक्ष; स्पष्टतः; वस्तुतः; सीधे। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० प्रत्यक्ष, गोचर करनेवाला; मिलनेवाला। **–करण**–पु० आँखोंके सामने रखनेकी क्रिया; अनुभूति; किसी बातका तात्कालिक कारण। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० सब कुछ देखनेवाला। **–कार**–पु० ज्ञान, अनुभूति; मिलन, देखादेखी। **–कृत** वि० प्रत्यक्ष, गोचर कराया हुआ।

साक्षाद्दृष्ट–वि० [सं०] (अपनी) आँखों देखा हुआ।

साक्षिता–स्त्री०, **साक्षित्व**–पु० [सं०] गवाही, प्रमाण।

साक्षी–स्त्री० गवाही, गवाहका बयान।

साक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] (अपनी) आँखों देखनेवाला, चश्मदीद। पु० अहम्; चश्मदीद गवाह। **–परीक्षण**–पु०, **–परीक्षा**–स्त्री० गवाहकी परीक्षा, जिरह, दे० 'प्रतिपरीक्षण' (क्रास-इग्जामिनेशन)।

साक्षीकरण–पु० [सं०] (अटेस्टेशन) किसी बातके साक्षि-रूपमें हस्ताक्षर करना, किसी लेख या प्रमाणपत्रादिकी प्रतिलिपिपर हस्ताक्षर कर स्वीकार करना कि वह सच्ची और सही प्रतिलिपि है, सत्यापन।

साक्षीकृत–वि० [सं०] (अटेस्टेड) जिसपर साक्षिरूपमें हस्ताक्षर किया गया हो, हस्ताक्षर द्वारा जिसका सच्ची प्रतिलिपि होना स्वीकार किया गया हो।

साक्षेप–वि०[सं०] आक्षेपात्मक; जिसमें व्यंग्य, ताना हो।

साक्ष्य–पु० [सं०] गवाही; प्रमाण। **–विधि**–स्त्री० (लॉ ऑफ एविडेंस) साक्ष्य-संबंधी विधि या कानून।

साख–स्त्री० रोब, दबदबा; लेन-देन-संबंधी एतबार या प्रतिष्ठा; * डाली; जाति या वंशका भाग या अंग। **–पत्र** पु० (सिक्यूरिटीज़) साखपर लिये गये ऋणका सूचक पत्र, उस तरहके सार्वजनिक ऋणका सूचक पत्र जिसकी जामिन प्रायः देशकी सरकार होती है और कंपनियोंके हिस्सों आदिकी तरह जिसकी खरीद-बिक्री अंकित मूल्यसे कम या अधिकपर की जा सकती है।

साखना*–स० क्रि० गवाही, साक्षी देना।

साखर*–वि० दे० 'साक्षर'।

साखा*–स्त्री० शाखा, डाली; जाति या वंशका अंग।

साखी–पु० गवाह; पंच; * वृक्ष। स्त्री० गवाही; (कबीर आदिके) ज्ञान-विराग-विषयक पद।

साखू–पु० शालका पेड़, सखुआ।

साखोचार, साखोचारन*–पु० दे० 'शाखोचार'।

साख्य–पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती।

साग–पु० भाजीके रूपमें खायी जानेवाली पत्तियाँ, शाक; तरकारी। **–पात**–पु० साग-भाजी; रूखा-सूखा भोजन।

सागर–पु० [सं०] समुद्र (कहा जाता है कि राजा सगरके नामपर इसका नाम सागर पड़ा); सरोवर; चार या सातकी संख्या; एक बहुत बड़ी संख्या (दस पद्म); एक नाग; सगर राजाके पुत्र; एक मृग; (ला०) बहुत बड़ी राशि या पुंज। वि० समुद्र-संबंधी। **–गंभीर**–पु० समाधिका एक प्रकार। **–गम,–गामी(मिन्)**–वि० समुद्रमें जानेवाला। **–गा**–स्त्री० नदी; गंगा। **–गा-सुत**–पु० भीष्म। **–ज**–पु० समुद्रलवण। **–धरा**–स्त्री० पृथ्वी। **–धीर,–चेता(तस्)**–वि० जिसका मन सागर-की तरह शांत और गंभीर हो। **–नेमि,–नेमी–**
–मेखला–स्त्री० पृथ्वी। **–वासी(सिन्)**–वि० समुद्र-तटपर रहनेवाला। **–शुक्ति**–स्त्री० समुद्री सीप। **–सूनु**–पु० चंद्रमा।

सागरांत–पु० [सं०] समुद्रतट।

सागरांता, सागरांबरा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

सागवन, सागवान–पु० दे० ‘सागौन’ ।

सागू–पु० [अं० ‘सैगो’] ताड़की जातिका एक पेड़ जिसके तनेके अंदरके पदार्थसे सागूदाना बनाया जाता है । **–दाना**–पु० सागूके तनेके अंदरका भाग पीसकर बनाया हुआ दाना ।

सागौन–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुरसी आदि बनानेके काम आती हैं ।

साचि–अ०[सं०] तिरछे, टेढ़े । **–विलोकित**–पु० तिरछी चितवन ।

साचिविक–वि० [सं०] (सेक्रेटेरियल) सचिव या उसके कर्तव्योंसे संबंध रखनेवाला । **–स्तरपर**–वि० (ऑन सेक्रेटेरियल लेवल) (समझौते, जाँच आदि-संबंधी बातचीत) जो दो या अधिक राज्योंके विभागीय सचिवोंके बीच की जाय ।

साज़–पु० [फा०] सामग्री, सामान; सजावटकी सामग्री; लहँगेकी सजावट; गानेके साथ बजाये जानेवाले बाजे (सारंगी, तबला इ०); घोड़ेको सवारीके लिए तैयार करने या सजानेका सामान (जीन, काठी, लगाम इ०); युद्धसामग्री, आयुध; मेल-जोल; अनुकूलता; सुरोंका मेल; साजिश, साठ-गाँठ । वि० (केवल समासमें) बनानेवाला (कारसाज़, रंगसाज़); बनाया हुआ (खुदासाज़, ईश्वरका बनाया हुआ; दस्तसाज़–हाथका बनाया हुआ) । **–बाज़**–पु० ठाट-बाट; मेल-जोल; तैयारी; . साजिश, साँठ-गाँठ । **–सामान,–(ज़ो) सामान**–पु०(वस्तु या कार्यविशेषके लिए) आवश्यक सामग्री; सामान, चीज, वस्तु । **–का परदा**–सारंगी, सितार आदिका वह पुरजा जिससे कोई विशेष स्वर बजाया जाय । **मु०–करना**–मेल करना; साजिश करना । **–छेड़ना**–साज बजाना ।

साजन–पु० प्रेमी; पति, भर्ता; सज्जन, सुजन; ईश्वर ।

साजना*–स० क्रि० सजाना, सुसज्जित करना; तैयार करना । पु० साजन ।

साजा*–वि० सुंदर–‘ये सुत कौनके शोभहिं साजे’–राम०; अच्छा ।

साजात्य–पु० [सं०] जाति या वर्गकी समानता, सहवर्गीयता ।

साज़िंदा–पु०[फा०] साज बजानेवाला (सारंगिया, इ०) ।

साजिद–वि०[अ०] सिजदा करनेवाला,वंदना करनेवाला ।

साज़िश–स्त्री० [सं०] मेल-जोल; अविहित या अपराधरूप कार्यमें गुप्त सहयोग; ऐसे कार्यके लिए की जानेवाली गुप्त मंत्रणा, चक्र ।

साज़िशी–वि० [फा०] साजिश करनेवाला, चक्री ।

साजुज्य*–पु० दे० ‘सायुज्य’ ।

साझा–पु० शिरकत, हिस्सेदारी; पत्ती । **–(झे)दार**–पु० दे० ‘साझी’ । **–दारी**–स्त्री० साझेदार होना, हिस्सेदारी ।

साझी–पु० हिस्सेदार; वह जिसकी पत्ती हो ।

साट–स्त्री० छड़ी; छड़ीकी चोटका दाग । **–मार**–पु० हाथियोंको लड़ानेवाला ।

साटक–पु० भूसी, छिलका; तुच्छ वस्तु; एक छंद ।

साटन–पु० [अं० ‘सैटिन’] एक बढ़िया रेशमी कपड़ा ।

साटना–स० क्रि० मिलाना, जोड़ना; चिपकाना ।

साटा*–पु० बदला ।

साटी–स्त्री० छड़ी, कमची; पत्रभंग; सामान; † गदहपूर्ना; * बदला ।

साटोप–वि० [सं०] घमंडसे फूला हुआ; गरजता हुआ (जैसे बादल) ।

साठ–वि० पचाससे दस अधिक । पु० साठकी संख्या,६० । स्त्री० साँठि, पूँजी ।

साठनाठ–वि० जिसकी पूँजी नष्ट हो गयी हो, धनहीन; रसहीन, रूखा; छिन्न-भिन्न ।

साठा–वि० साठ वर्षकी अवस्थाका । पु० साठी धान; ऊख; लंबा-चौड़ा खेत; एक मधुमक्खी ।

साठी–पु० एक धान जो बहुत जल्द तैयार होता है ।

साड़ी–स्त्री० स्त्रियोंकी धोती; साढ़ी ।

साढ़साती*–स्त्री० दे० ‘साढ़ेसाती’ ।

साढ़ी–स्त्री० असाढ़में बोयी जानेवाली फसल; मलाई ।

साढ़ू–पु० पत्नीकी बहनका पति ।

साढ़े–वि० आधेके साथ । **–साती**–स्त्री० शनि ग्रहकी एक अनिष्टकर स्थिति । **मु०–साती आना या चढ़ना**–विपत्तिग्रस्त होना ।

सात–वि० छः और एक । पु० सातकी संख्या, ७ । **–पाँच**–पु०चालाकी, चालबाजी; दगा; बहाना; तकरार । स्त्री० सप्तपदी । **मु०–की नाक कटना**–सारे परिवारका बदनाम होना । **–घर भीख माँगना**–दर-दर माँगना । **–परदे लगना**–परदेमें रहना (उस स्त्रीके लिए प्रयुक्त जो अमीर होनेपर परदेमें रहने लगी हो) । **–परदोंमें रखना**–छिपाकर रखना; बड़ी सावधानीसे रखना । **–पाँच न जानना**–भोला-भाला होना । **–राजाओंकी साक्षी देना**–किसी बातकी सचाईपर जोर देना । **–समुंदर पार**–बहुत दूर । **–(तों) भूल जाना**–होशहवास खो देना ।

सातत्य–पु० [सं०] नैरंतर्य, अविच्छिन्नता; स्थायित्व ।

साति–स्त्री० * दंड, शास्ति ।

सातिक, सातिग*–वि० दे० ‘सात्त्विक’ ।

सात्त्विक–वि० [सं०] यथार्थ; सत्य, प्राकृतिक; सत्त्वगुणयुक्त, ईमानदार, नेक; शक्तिशाली; सत्त्वगुण-संबंधी; सत्त्वगुणप्रधान; भावजन्य । पु० एक भाव (अनुभाव) जिसमें स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय–ये आठ प्रकारके अंग-विकार होते हैं; इन अंग-विकारोंका प्रदर्शन करनेवाला अभिनय; ब्रह्मा; ब्रह्म; प्रजापतिकी आठवीं सृष्टि ।

सात्म्य–पु०[सं०] प्रकृतिके अनुकूल होनेका भाव; सारूप्य; अनुकूल आहार आदि; अभ्यास ।

सात्रिक परीक्षा–स्त्री० [सं०] (टरमिनल इग्ज़ामिनेशन) विद्यालय आदिका एक सत्र समाप्त होनेपर ली जानेवाली परीक्षा ।

सात्विक–वि०, पु० दे० सात्त्विक’ ।

साथ–पु० संग, हेल-मेल; साथी । अ० सहित; से; विरुद्ध; प्रति; * द्वारा । **–साथ**–अ० एक साथ (चलना, रहना आदि) । **मु०–करना**–संपर्कमें रहना, पास रहना ।

–का खेला–लँगोटिया यार, बचपनका साथी। **–घसीटना**–जबरदस्ती शरीक करना। **–छूटना**–साथियोंसे अलग होना, वियुक्त होना; दोस्ती छूटना। **–देना**–निबाहना; सहायता देना; शरीक होना; साथ यात्रा करना। **–निबहना**–निबाह होना। **–रहना**–संग रहना। **–सुलाना,–सोना**–किसीका एक बिस्तरेपर दूसरेके निकट सोना; हमबिस्तर होना, सहवास करना। **–सोकर मुँह छिपाना**–घनिष्ठता होनेपर भी संकोच करना। **–ही**–सिवा, अलावा। **–ही-साथ**–एक साथ। **–होना**–शरीक होना।

साथरा*–पु० दे० 'साथरी'।

साथरी*–स्त्री० कुश आदिकी चटाई।

साथी–पु० वह जो साथ रहता हो; मित्र, दोस्त; सहायक।

साद–पु० [सं०] विषाद; क्लांति; क्षीणता; क्षय, नाश; पीड़ा; स्वच्छता, विशुद्धता; शरण; गति। वि० [अ०] भला, भद्र; शुभ, मांगलिक। पु० किसी बातको ठीक मानने, पसंद करने या स्वीकार करनेका चिह्न। मु० **–करना**–सही मानना, स्वीकृति सूचित करना।

सादगी–स्त्री० [फा०] सादापन, बनावटका अभाव; सरलता; भोलापन।

सादर–अ० [सं०] आदरके साथ।

सादा–वि०[फा०] बिना सजावट, बिना काम, बिना गोटे-किनारीका; जिसमें बनावट न हो; कोरा, बिना लिखा हुआ (कागज); सरलहृदय, भोला; खालिस, बेमेल; जिसपर टिकट या स्टांप न लगा हो। **–कपड़ा**–पु० वह वस्त्र जिसपर काम न हो या जिसका रंग शोख न हो। **–कागज़**–पु० कोरा कागज; कागज जिसपर स्टांप न लगाया गया हो। **–कार**–पु० सोने-चाँदीपर बढ़िया काम बनानेवाला (सुनार)। **–दिल**–वि० सरलचित्त, सीधा। **–मिज़ाज**–वि० जिसके मिजाजमें बनावट न हो।

सादिक़–वि० [अ०] सच्चा; ठीक, दुरुस्त।

सादित–वि० [सं०] विषादित; शरण प्राप्त कराया हुआ; समाप्त किया हुआ; क्षीण किया हुआ; क्लांत किया हुआ।

सादी–स्त्री० एक चिड़िया (यह लालजातिकी, भूरे रंगकी, छोटी सी होती है); बिना पीठीवाली पूरी; † दे० 'शादी'। पु० फारसीका यशस्वी कवि और गुलिस्ताँ-बोस्ताँ आदिका रचयिता, शेख मुसलिहुद्दीन शीराजी (११८४-१२९२ ई०) वि० स्त्री० दे० 'सादा'।

सादूर*–पु० सिंह; हिंसक जीव।

सादृश्य–पु० [सं०] समानता, तुल्यता; बराबरी, तुलना।

साद्यंत–वि० [सं०] पूरा, संपूर्ण।

साध–वि० अच्छा, भला, उत्तम। * पु० महात्मा, साधु; सज्जन; योगी। स्त्री० कामना, इच्छा।

साधक–वि० [सं०] सिद्ध करनेवाला; संपन्न, पूरा करनेवाला; समर्थ, योग्य; कुशल; मंत्रबलसे सिद्ध करनेवाला; सहायता देनेवाला; उपयोगी। पु० सहायक; साधन; कुशल व्यक्ति (विशेषकर जादूमें); आराधक; तपस्वी; योगी।

साधन–पु० [सं०] पूरा करना; सिद्धि; उद्देश्यप्राप्ति; जरिया, वसीला; कारण; करणकारक (व्या०); औजार; सामग्री; पदार्थ, द्रव्य; सेना; सहायता; प्रमाण; उपाय; हेतु (न्या०); तुष्टीकरण; अनुगमन; तपश्चर्या; मंत्रादि सिद्ध करना; मोक्षप्राप्ति; धातु-शोधन, औषध-निर्माण; शरीरका कोई अवयव; शिश्न; धन, संपत्ति; मैत्री; लाभ; मृत-संस्कार। **–हार***–वि० सिद्ध करनेवाला; सिद्ध होने योग्य।

साधनता–स्त्री०, **साधनत्व**–पु० [सं०] उद्देश्यपूर्तिका जरिया होना; सिद्ध करनेकी क्रिया; सिद्धिकी अवस्था।

साधना–स्त्री० [सं०] कार्य-सिद्धि; आराधना, उपासना; तुष्टीकरण। स० क्रि० सिद्ध करना, पूरा करना; अभ्यास करना; शुद्ध करना; ठीक करना; इकट्ठा करना; निशाना लगाना; वशमें करना; जाँच करना; नापना; प्रमाणित करना; * सहन करना।

साधनीय–वि० [सं०] सिद्ध करने योग्य; निर्माण करने योग्य (शब्द); प्राप्त करने योग्य (जैसे ज्ञान); प्रमाणित करने योग्य।

साधयिता(तृ)–पु० [सं०] साधक, सिद्ध करनेवाला।

साधर्म्य–पु० [सं०] धर्म, स्वभाव, पद, कर्तव्य आदिका साम्य, एकधर्मता।

साधस*–पु० दे० 'साध्वस'।

साधार–वि० [सं०] जिसका कोई आधार हो, जो किसीपर टिका हो।

साधारण–वि० [सं०] निर्विशेष, मामूली; सदृश, समान; सामान्य, लौकिक; आसान, सरल; मिला-जुला; एकाधिक विषयोंसे संबद्ध, अनैकांतिक (न्या०); बीचका। **–धर्म**–पु० सबमें पाया जानेवाला धर्म; सार्वजनिक कर्तव्य (अहिंसा, सत्य आदि)। **–निर्वाचन**–पु० (जनरल इलेक्शन) समूची विधानसभा या संसद् आदिके सदस्योंका निर्वाचन ('उपनिर्वाचन'से भिन्न)। **–स्त्री**–स्त्री० वेश्या।

साधारणतः (तस्)–अ० [सं०] आम तौरपर, प्रायः।

साधारणतया–अ० [सं०] दे० 'साधारणतः'।

साधिका–वि० स्त्री० [सं०] सिद्ध करनेवाली।

साधित–वि० [सं०] सिद्ध, पूरा किया हुआ; बसमें किया हुआ; प्रमाणित; प्राप्त; दंडित; दापित; शोधित (ऋणादि)।

साधु–वि० [सं०] बढ़िया, उत्तम; पूर्ण; उपयुक्त, ठीक; धार्मिक, धर्मपरायण; दयालु; शुद्ध; प्रिय; कुलीन; शिष्ट। पु० सच्चा या नेक आदमी; संत; मुनि; जौहरी; व्यापारी। **–भाव**–पु० अच्छा स्वभाव, दयालुता। **–वाद**–पु० शाबाशी देना। **–वादी (दिन्)**–वि० उचित कहनेवाला; प्रशंसा करनेवाला। **–संसर्ग**–पु० सत्संगति। **–सम्मत**–वि० अच्छे व्यक्तियोंको मान्य। **–साधु**–अ० शाबाश; धन्य-धन्य।

साधुता–स्त्री०, **साधुत्व**–पु० [सं०] सज्जनता; नेकी; सरलता; विशुद्धता, पवित्रता; सचाई।

साधू–पु० दे० 'साधु'।

साधो*–पु० दे० 'साधु' (संबोधनमें)।

साध्य–वि० [सं०] सिद्ध होने योग्य; पूरा किये जाने योग्य; प्रयोगमें लाये जाने योग्य; सरल; प्राप्य; प्रमाणित

करने योग्य; निष्पाद्य; वशमें करने योग्य; अच्छा करने योग्य (रोग); वध्य; शोधनीय । पु० एक देववर्ग; देवता; एक मंत्र; सिद्धि, पूर्ति; वह जिसे प्रमाणित करना हो; सत्ताईस योगोंमेंसे एक; अनुमेय पक्ष । **-पक्ष**-पु० वह पक्ष जिसे प्रमाणित करना हो (व्यवहार) । **-सिद्धि**-स्त्री० जिसे करना है उसका संपादन, निष्पत्ति ।

साध्यता-स्त्री० [सं०] शक्यता; (रोगका) अच्छा किये जानेकी स्थितिमें होना ।

साध्वस-पु० [सं०] क्षोभ; भय, त्रास; घबड़ाहट; बनावटी भय (ना०) ।

साध्वाचार-पु० [सं०] साधुओंका आचार; शिष्टाचार, भद्रोचित कार्य ।

साध्वी-स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री; धर्मपरायणा स्त्री ।

सानंद-वि० [सं०] आनंदयुक्त, प्रसन्न । अ० आनंदपूर्वक, खुशीके साथ ।

सान-पु० पत्थरकी वह चक्की जिसपर उस्तुरा, कैंची आदिकी धार तेज की जाती है (चढ़ाना, देना, धरना) । † स्त्री० शान । **-गुमान**-पु० सुराग; निशान; खयाल; इशारा ।

सानना†-स० क्रि० गूँधना, माँड़ना; शरीक करना, भागी बनाना; लपेटना ।

सानी-स्त्री० पशुओंका पानीमें साना हुआ चारा; गाड़ीके पहियेमें लगाया जानेवाला गिट्टक; बेतरीके मिलाये हुए कई तरहके खाद्यपदार्थ (व्यंग्य); † सनई । वि० [अ०] दूसरा; जोड़; समता करनेवाला ।

सानु-पु० [सं०] पहाड़की चोटी, शृंग ।

सानुकंप-वि० [सं०] दयालु, कोमलचित्त ।

सानुकूल-वि० [सं०] दे० 'अनुकूल' ।

सानुक्रम संस्थान-पु० [सं०] (हायरैरकी) क्रमानुगत अधिकारियोंवाली कोई संस्था ।

सानुक्रोश-वि० [सं०] दयालु, करुणाशील ।

सानुज-वि० [सं०] अनुज, छोटे भाईसे युक्त ।

सानुनय-वि० [सं०] विनयशील, शिष्ट । अ० विनयपूर्वक ।

सानुनासिक-वि० [सं०] जिस(अक्षर)के उच्चारणमें नाकका योग हो; नाकके योगसे गाने या बोलनेवाला ।

सानुप्रास-वि० [सं०] अनुप्रासयुक्त ।

सान्नहनिक-वि० [सं०] कवच-धारण-संबंधी; युद्धार्थ प्रस्तुत होनेके लिए प्रोत्साहित करनेवाला । पु० कवचधारी सैनिक ।

सान्निध्य-पु० [सं०] सामीप्य; सन्निकटता; मुक्तिका एक प्रकार ।

सान्निपातिक-वि० [सं०] जटिल, विषम; त्रिदोषजन्य विषम रोगवाला ।

सान्वय-वि० [सं०] आनुवंशिक; वंशजोंसे युक्त; सकुल; अर्थगर्भ; समान कार्य करनेवाला ।

साप*-पु० दे० 'शाप' ।

सापत्न-वि० [सं०] सौत-संबंधी या सौतसे उत्पन्न । पु० सौतेली संतान ।

सापत्नक-पु० [सं०] सौतोंकी आपसकी होड़ या दुश्मनी ।

सापत्नेय-वि० [सं०] सौतेला ।

सापत्न्य-पु० [सं०] सपत्नीभाव, सौतपन; सौतेलापन; सौतका पुत्र; सौतेला भाई; शत्रुता; प्रतिद्वंद्वी शत्रु ।

सापना*-स० क्रि० शाप देना; कोसना ।

सापवादक-वि० [सं०] अपवादयुक्त, जिसमें अपवाद हो सके ।

सापिंड्य-पु० [सं०] सपिंडता ।

सापेक्ष-वि० [सं०] जिसमें किसीकी अपेक्षा हो, जो दूसरेपर अवलंबित हो ।

साप्ताहिक-वि० [सं०] सप्ताह-संबंधी; सप्ताह भरका; एक सप्ताहके अंतरसे होने या निकलनेवाला । पु० नियत दिन हर हफ्ते निकलनेवाला समाचारपत्र ।

साफ़-वि० [अ०] स्वच्छ, निर्मल; उज्ज्वल; बेदाग; निर्दोष; खालिस, शुद्ध; पवित्र; स्पष्ट; खुला हुआ; पढ़ने, सुनने, समझनेमें आसान (लिखावट, आवाज); जिसमें मैल, बुराई न हो, बिना छल-कपटका; पक्का, दोटूक; समतल, बराबर; जिसमें कोई पेच-पाच न हो (बात, मामला); जिसमें सफाई हो (मँजा हुआ) । अ० खुले तौरपर (साफ कहना); पूरे तौरपर (साफ छिपना); सफाईसे, कुशलतापूर्वक (उड़ाना, निकल जाना, इ०); स्पष्ट रूपसे (साफ देखना) । **-इनकार**-पु० स्पष्ट, दोटूक इनकार । **-गोई**-स्त्री० स्पष्टभाषिता । **-जवाब**-पु० दोटूक जवाब । वि० दोटूक जवाब देनेवाला । **-दिल**-वि० जिसके दिलमें छल-कपट, वैर-बुराई न हो । **-साफ़**-अ० खुले तौरपर, स्पष्टतः । मु० **-करना**-सफाई करना; धोना, माँजना; मल दूर करना; फिरसे लिखना, कटीकुटी लिखावटको ठीक करके लिखना; समतल, मैदान बनाना (जंगल); विघ्न-बाधा दूर करना, खोलना (रास्ता); चुकाना, निबटाना (हिसाब); कुछ बाकी न छोड़ना, सब उठा ले जाना (चोरोंने घर साफ कर दिया); सब खा-पी डालना; मार डालना; सबको खतम कर देना, किसीको जीवित न छोड़ना (हैजेने घरके घर साफ कर दिये); अभ्यास पक्का करना (हाथ साफ़ करना) । **-कहना**-खरी, बेलाग कहना, सच्ची बात बिना कुछ घटाये-छिपाये कहना; खुलकर, स्पष्ट रूपमें कहना । **-छूटना**-बेदाग छूटना, निर्दोष सिद्ध होकर रिहाई पाना । **-बचना**-बाल-बाल बचना, तनिक भी आँच न आना । **-बनना**-पाक-साफ बनना, सचाई, साधुताका ढोंग करना । **-बोलना**-उच्चारण और लहजा ठीक होना, शुद्ध प्रवाहके साथ बोलना । **-मैदान पाना**-कोई विघ्न-बाधा न होना; एकांत मिलना । **-होना**-साफ किया जाना ।

साफल्य-पु० [सं०] उपयोगिता; लाभ; सफलता ।

साफ़ा-पु० एक तरहकी पगड़ी जो कुछ अधिक ऊँची होती है, मुरेठा; वह कपड़ा जो इस काममें लाया जाय । मु० **-देना**-शिकारी जानवरोंको इसलिए भूखा रखना कि वे शिकारपर ज्यादा तेजीसे टूटें; कबूतरको अधिक ऊँचे उड़नेके लिए भूखा रखना ।

साफ़िर-वि० [अ०] सफर करनेवाला । पु० दुबला घोड़ा ।

साफ़ी-स्त्री० छाननेका कपड़ा, खासकर वह कपड़ा जिससे भंग छानी जाय; गाँजेकी चिलमके नीचे लपेटनेका कपड़ा; वह कपड़ा जिससे बावरची देग आदि पकड़कर चूल्हेसे

उतारते हैं । –**नामा**–पु० राजीनामा ।

साबर–पु० एक मंत्र जो शिवका बनाया माना जाता है; साँभर हिरन या उसका चमड़ा; सेंहुड़; मिट्टी आदि खोदनेका रुखानी जैसा एक औजार, सबरी ।

साबल–पु० भाला, बरछी; सबरी ।

साबिक़–वि० [अ०] पिछला, बीता हुआ, गत । –**दस्तूर**–अ० पुराने दस्तूर, रीतिके अनुसार, यथापूर्व । –**में**–अतीत कालमें, पहले ।

साबिक़ा–पु० [अ०] वास्ता; सरोकार; काम (पड़ना, होना) ।

साबित–वि० [अ०] स्थिर; दृढ़; सिद्ध; प्रमाणित; साबूत, अखंड, समूचा । –**क़दम**–वि० दृढ़; वचन, निश्चयपर दृढ़ रहनेवाला ।

साबिर–वि० [अ०] सब्र करनेवाला, सहन करनेवाला ।

साबुन–पु० दे० 'साबून' ।

साबूदाना–पु० दे० 'सागूदाना' ।

साबून–पु० [अ०] कास्टिक सोडा, सज्जी, तेल आदिके योगसे प्रस्तुत एक प्रसाधन जिसे पानीमें रगड़नेसे फेन निकलता और जो शरीर, कपड़े आदि साफ करनेके काम आता है । –**साज़ी**–स्त्री० साबुन बनानेका धंधा ।

साभिप्राय–वि० [सं०] अभिप्राययुक्त; विशेष अर्थयुक्त; अपने निश्चयपर दृढ़; विशेष प्रयोजनवाला ।

साभिमान–वि०[सं०]गर्वीला, घमंडी । अ०घमंडके साथ ।

सामंजस्य–पु० [सं०] औचित्य; संगति; अनुकूलता; उपयुक्तता; विरोध, विषमता न होना, मेल ।

सामंत–वि० [सं०] सीमावर्ती, पड़ोसी; सार्वभौम । पु० पड़ोसी; पड़ोसका राजा; कर देनेवाला राजा; मांडलिक, बड़ा जमींदार; योद्धा; नायक; पड़ोस ।–**चक्र**–पु० पड़ोसके राजाओंका मंडल । –**तंत्र**,–**वाद**–पु० (फ्यूडल सिस्टम, फ्यूडलिज्म) किसी राज्यकी वह शासन-व्यवस्था जिसमें राज्यकी भूमि बड़े-बड़े सामंतों, सरदारों या जमींदारोंके जिम्मे रहती थी और ये उसके बदले राजाको आर्थिक या सैनिक सहायता देते थे ।

सामंतेश्वर–पु० [सं०] सम्राट्, राजेश्वर ।

साम–पु० एशियाका एक देश, स्याम; [अ०] नूहका बड़ा बेटा, अरब, यहूदी, मिस्री आदि जिसकी संतान माने जाते हैं । वि० [सं०] जो अच्छी तरह पचा न हो; * श्याम, काले रंगका । † स्त्री० दे० 'शाम'; शामी ।

साम(न्)–पु० [सं०] चार वेदोंमेंसे एक; वेदके गेय मंत्र; स्तुतिमंत्र; शांत करना; तुष्ट करना; राजाके चार उपायोंमेंसे एक (कह-सुनकर अपनी ओर कर लेना); मधुर वचन; कोमलता, नरमीयत ।–**कारी(रिन्)**–वि० ढाढ़स बँधानेवाला, शांत करनेवाला; मधुरभाषी । पु० सामका निर्माता; एक तरहका सामगान । –**ग**–पु० सामवेदी ब्राह्मण; विष्णु ।–**गर्भ**–पु० विष्णु ।–**गान**–पु० सामका गायक; सामका गान ।–**गान-प्रिय**–पु० शिव ।–**गाय**,–**गीत**–पु० सामका गान । –**गायक**–पु० सामवेदी ब्राह्मण । –**गायी(यिन्)**–वि०, पु० साम गानेवाला । –**त्रय**–पु० सोंठ, हर्रें और गिलोयका समाहार ।–**ध्वनि**–स्त्री० सामगानकी ध्वनि । –**वाद**–पु० मीठे वचन । –**विद्**–वि० सामवेदका ज्ञाता । –**वेद**–पु० तीसरा वेद । –**वेदी(दिन्)**–पु० सामवेद जाननेवाला ब्राह्मण । –**साली***–वि०, पु० राजनीतिज्ञ ।

सामग्री–स्त्री० [सं०] आवश्यक वस्तुओंका समूह, सामान, माल-असबाब; प्रयोजन-संबंधी वस्तुएँ, उपकरण; साधन ।

सामत*–स्त्री० शामत, विपत्ति, बदकिस्मती । पु०सामंत ।

सामध*–पु० समधियोंका । आपसमें मिलना (एक रस्म) –'सामध देखि देव अनुरागे'–रामा० ।

सामना–पु० मुकाबला; भेंट; लड़ाई, भिड़ंत, मुठभेड़; किसी चीजका अगला हिस्सा, मोहरा; गुस्ताखी, धृष्टता ।

सामने–अ० आगे; मुकाबलेमें; रूबरू; मौजूदगीमें; सीधमें । मु०–**आना**–मुकाबलेमें आना; रूबरू होना; मुँह दिखाना; दिखाई देना । –**करना**–मुकाबलेमें लाना; पेश करना; आगे करना । –**का**–आगेका, मौजूदगीका; अपना देखा हुआ । –**की चोट**–खुली हुई चोट । –**की बात**–मौजूदगीका हाल ।–**पड़ना**–रोककर खड़ा होना; संयोगसे मिल जाना । –**से उठ जाना**–मौजूदगीमें न रहना; मर जाना । –**होना**–रूबरू होना; परदा न करना; मुकाबला करना; लड़नेको तैयार होना; धृष्टतापूर्वक बर्ताव करना ।

सामयिक–वि० [सं०] समयोचित, समयके विचारसे उपयुक्त; समय-संबंधी; वर्तमानकाल-संबंधी; जो ठहरावके मुताबिक हो; अस्थायी; नियत समयपर होने या निकलनेवाला । –**पत्र**–पु० नियत समयपर प्रकाशित होनेवाले पत्र या पत्रिकाएँ; (पीरियाडिकल) दे० 'सावधिक पत्र' । –**वार्ता**–स्त्री० (टॉपिकल टॉक) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की जानेवाली सामयिक घटनाओं या किसी सामयिक प्रश्न, विषय आदिकी चर्चा; मुकदमेकी शामिल पैरवीके लिए (वकीलोंका) लिखा जानेवाला इकरारनामा ।

सामर–* पु० समर । * वि० श्याम रंगका; [सं०] देवयुक्त, समर-संबंधी ।

सामरथ, सामर्था–स्त्री० दे० 'सामर्थ्य' ।

सामराधिप–पु० सेनापति ।

सामरिक–वि० [सं०] युद्ध-संबंधी; समरका ।

सामरिकता–स्त्री० [सं०] युद्धकार्योंमें लग्न रहना, लड़ाई-भिड़ाई ।

सामरेय–वि० [सं०] समर-संबंधी ।

सामर्थ–स्त्री० दे० 'सामर्थ्य' ।

सामर्थ्य–पु०, स्त्री० [सं०] शक्ति, बल, क्षमता; शब्दकी अर्थशक्ति । –**हीन**–वि० शक्तिहीन, निर्बल ।

सामवायिक–वि० [सं०] समूह, दल-संबंधी; अभेद्य संबंधविषयक । –**राज्य**–पु० युद्ध भयसे आत्मरक्षार्थ मैत्री करनेवाला राज्य (कौ०) ।

सामसाली*–वि०, पु० दे० 'साम'में ।

सामस्त*–वि० दे० 'समस्त' ।

सामहिँ, सामहि*–अ० सामने, समक्ष ।

सामाँ, सामा*–पु० साँवाँ; सामान । स्त्री० डौल, प्रबंध ।

सामाजिक–वि० [सं०] समाज-संबंधी; समाजमें पाया जानेवाला । –**व्यवस्था**–स्त्री० (सोशल आर्डर) समाजके निर्माणादिका ढंग ।–**सुरक्षा**–स्त्री० (सोशल सिक्यूरिटी)

बेकारी और अभाव तथा चोर-डाकुओं आदिसे परित्राणकी व्यवस्था।

सामान—पु० [फ़ा०] असबाब, चीज-वस्तु; किसी कार्यके लिए आवश्यक, साधनरूप वस्तुएँ, सामग्री। **—(ने)जंग**—पु० युद्ध-सामग्री। **—सफ़र**—पु० यात्राके लिए आवश्यक वस्तुएँ। मु० **—करना**—तैयारी .करना, आवश्यक चीजें जुटाना। **—बनना, —होना**—प्रबंध या तैयारी होना।

सामान्य—वि० [सं०] साधारण, मामूली; समान; औसत दरजेका; तुच्छ, अदना, महत्त्वहीन; संपूर्ण, समग्र। पु० सादृश्य, समानता; मानसिक साम्य; मध्यकी अवस्था; सबमें पाया जानेवाला गुण या चिह्न; एक अर्थालंकार —जहाँ दो या अधिक वस्तुओंका पृथक्. अस्तित्व होते हुए भी एकरूपता, समानता आदिके कारण भेद न जान पड़े। **—ज्ञान**—पु० सामान्य बातोंका ज्ञान। **—नायिका**—स्त्री० दे० 'सामान्यवनिता'। **—भविष्यत्**—पु० भविष्यत् कालका एक भेद जिसमें भविष्यमें होनेवाली क्रियाका साधारण रूप रहता है। **—भूत**—पु० भूत कालका एक भेद जिसमें भूत कालकी क्रियाका साधारण रूप रहता है, कोई विशेषता नहीं होती। **—लक्षण**—पु० वह चिह्न जो जाति भरमें पाया जाय। **—वनिता**—स्त्री० वेश्या। **—वर्तमान**—पु० वर्तमान कालका एक भेद जिसमें क्रियाका वर्तमान कालमें होना दिखलाया जाता है। **—विधि**—स्त्री० आदेशका साधारण रूप जिसमें कोई विशेष बात, अपवाद आदि न हो।

सामान्यतः(तस्)सामान्यतया—अ० [सं०] साधारणतः, मामूली तौरसे।

सामासिक—वि० [सं०] सामूहिक; संक्षिप्त; समास-संबंधी।

सामिष—वि० [सं०] मांसयुक्त।

सामी—* पु०दे०'स्वामी'। † स्त्री० छड़ी, औजार आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला लोहे, पीतल आदिका छल्ला।

सामीप्य—पु० [सं०] निकटता, समीपता, पड़ोस।

सामुझि*—स्त्री० दे० 'समझ'।

सामुदायिक—वि० [सं०] समुदाय-संबंधी; सामूहिक। **—योजना**—स्त्री० (काम्यूनिटी प्रोजेक्ट) कृषिसुधार, शिक्षा-प्रसार, पथ-निर्माण, नल-कूपखनन आदिकी ऐसी योजना जिसे देशके किसी भागका जनसमूह ही, मुख्य रूपसे, कार्यान्वित करे।

सामुद्र—वि०[सं०] समुद्रजन्य; समुद्र-संबंधी। पु० नाविक; सामुद्रिक व्यापार करनेवाला; समुद्रलवण; समुद्र-फेन; देहचिह्न; नारियल। **—ज्ञ**—वि० दे० 'सामुद्रविद्'। **—बंधु**—पु० चंद्रमा। **—विद्**—वि० देह चिह्नोंका ज्ञाता।

सामुद्रक—पु० [सं०] समुद्रलवण; देहचिह्नोंके शुभाशुभ होनेका विचार करनेवाला ग्रंथ या व्यक्ति।

सामुद्रिक—वि० [सं०] देहचिह्न-संबंधी; समुद्रजन्य। पु० सामुद्रक; वह विद्या जिसके सहारे इन चिह्नोंका ज्ञान प्राप्त किया जाता है; नाविक।

सामुहाँ*—अ० सामने।

सामुहें*—अ० सामने।

सामूहिक—वि० [सं०] समूह-संबंधी; समूहमें एकत्र।

सामोद—वि० [सं०] आनंदयुक्त, प्रसन्न; सुगंधित।

सामोपचार, सामोपाय—पु० [सं०] नरम उपाय काममें लाना।

साम्मत्य—पु० [सं०] सहमति, सम्मत होनेका भाव।

साम्मुख्य—पु० [सं०] उपस्थिति, विद्यमानता; अनुग्रह।

साम्य—पु० [सं०] सादृश्य, समानता; सामंजस्य; उदासीनता, निष्पक्षता; दृष्टिकोणकी एकरूपता। **—तंत्र**—पु० साम्यवादके सिद्धांतानुसार चलनेवाली शासन-प्रणाली। **—वाद**—पु० मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसका उद्देश्य ऐसे वर्गहीन समाजकी स्थापना है जिसमें संपत्तिपर समाजका समान अधिकार होगा और व्यक्तिसे शक्ति भर काम लेकर उसकी सारी आवश्यकताएँ पूर्ण की जायँगी। **—वादी (दिन्)**—वि० साम्यवादका सिद्धांत माननेवाला।

साम्यावस्था—स्त्री०, **साम्यावस्थान**—पु० [सं०] प्रकृतिके तीनों गुणों—सत्त्व, रज और तम—की समावस्था।

साम्राज्य—पु० [सं०] सार्वभौम सत्ता; पूर्ण प्रभुता; आधिपत्य; प्राधान्य, बाहुल्य; शासनाधीन बहुत बड़ा क्षेत्र जिसमें कई देश हों। **—लक्ष्मी**—स्त्री० साम्राज्यकी अधिष्ठात्री देवी (तंत्र); साम्राज्यका वैभव। **—वाद**—पु० एक राष्ट्रका दूसरेको अधिकारमें लाकर उसे अपने हितका साधन बनानेका सिद्धांत; (इंपीरियलिज्म) सैनिक विजय, राजनीतिक छलबल अथवा आर्थिक आधिपत्य द्वारा साम्राज्य स्थापित करनेकी प्रवृत्ति या नीति। **—वादी (दिन्)**—वि० साम्राज्यवादका अनुयायी।

साम्राज्यांतर्गत अधिमान्यता—स्त्री० [सं०] (इंपीरियल प्रेफरेंस) व्यापार-वाणिज्यके मामलेमें ब्रिटिश साम्राज्यके भीतरके देशोंको, अन्य देशोंकी तुलनामें, परस्पर कम आयात निर्यात-कर लगाकर, अधिमान्यता देनेकी नीति।

साम्हने†—अ० दे० 'सामने'।

सायं—अ०[सं०] 'सायम्'का समासगत रूप। **—काल**—पु० शामका वक्त। **—कालिक, —कालीन**—वि० संध्याकाल-संबंधी। **—गृह**—वि० जहाँ संध्या हो वहीं घर बना लेने, ठहर जानेवाला। **—निवास**—पु० सायंकालका विश्राम-गृह। **—प्रातः(तस्)**—अ० सुबह-शाम। **—भोजन**—पु० ब्यालू। **—संध्या**—स्त्री० गोधूलि, मंद प्रकाश; सायंकालीन उपासना; वह देवी जिसकी उपासना संध्या समय की जाय।

सायक—पु० [सं०] बाण; खड्ग; पाँचकी संख्या (कामदेवके पाँच बाणोंसे); * सायंकाल। **—पुंख**—पु० बाणका पंख-वाला भाग।

सायत—स्त्री० दे० 'साइत'।

सायन—वि० [सं०] अयनांश अर्थात् क्रांतवृत्त और नाडीवृत्तोंके संपातसे युक्त (सूर्यकी स्थिति)।

सायबान—पु० [फ़ा०] वह छप्पर या कपड़े आदिका परदा जो धूप या वर्षासे बचावके लिए मकान या खीमेके आगे लगा लिया गया हो।

सायम़—वि० [अ०] रोजा रखनेवाला।

सायम्—अ० [सं०] संध्याके समय, शामके वक्त।

सायर—*पु० सागर—'नैन नीर सब सायर भरे'—प०;

† पटेला। वि० [अ०] सैर करनेवाला, भ्रमणकारी; अनियत, अस्थायी। पु० महसूल, चुंगी। **–ख़र्च–**पु० फुटकर खर्च, अनिश्चित, असाधारण खर्च।

सायल–वि०, पु० [अ०] सवाल करनेवाला; चाहनेवाला; प्रार्थी, अर्जी देनेवाला; याचना करनेवाला।

साया–पु० साड़ीके नीचे पहननेकी घाँघरेकीसी एक पोशाक; [फा०] छाया, छाँह; परछाईं; (ला०) आश्रय, संरक्षण; सुहबतका असर; जिन, परीकी सवारी, प्रेतबाधा; चित्र या फोटोका छाया दिखानेवाला भाग। **–दार–**वि० छायायुक्त, छाँहवाला। **मु०–उठना–**संरक्षकका मर जाना। **–उतरना–**छायाका ऊपरसे नीचे आना; प्रेतबाधा दूर होना। **–पड़ना–**छाँह पड़ना; सुहबतका असर होना। **–होना–**जिन, परीका असर, प्रेतबाधा होना। **–(ये)की तरह साथ साथ फिरना या होना–**हर वक्त साथ लगे रहना, छन भरके लिए भी विलग न होना। **–में आना–**जिन, परी आदिका असर पड़ जाना, प्रेतबाधा होना। **–से बचकर चलना–**बहुत दूर रहना, असर न पड़ने देना। **–से भागना–**भड़कना; सामीप्यसे डरना; नफरत करना।

सायुज्य–पु० [सं०] ऐसा संयोग जिसमें कोई भेद न रहे, एकमें मिल जाना, एकत्व; मुक्तिका एक भेद जिसमें जीवात्मा परमात्मामें लीन हो जाता है; एकरूपता।

सारंग–वि० [सं०] नानावर्ण; बुंदोंवाला; रंजित; * सुंदर; सरस। पु० विभिन्न वर्ण; चित्रमृग; मृग–'सारंग प्रीति करी जो नाद सो सनमुख बान सह्यो'–सू०; सिंह; हाथी; भ्रमर; कोयल; खंजन; लवा पक्षी; मयूर; राजहंस; चातक; मधुमक्खी; एक वृत्त; एक राग; बादल; वृक्ष; छाता; वस्त्र; बाल; शंख; शिव; कामदेव; पुष्प; कमल; कपूर; धनुष्; विष्णुका धनुष्; चंदन; एक वाद्य, सारंगी; आभूषण; सुवर्ण; पृथ्वी; रात्रि; प्रकाश; दीप्ति; शोभा; रत्न; अश्व; सरोवर; समुद्र; जल; कपोत; स्तन; वायस; हाथ; नक्षत्र; हल; मेढक; आकाश; अंजन; विद्युत्; सर्प; चंद्रमा। **–चर–**पु० शीशा। **–ज–**पु० हिरन। **–ज-दृशी–**वि० स्त्री० मृगनयनी। **–नाथ–**पु० सारनाथका प्राचीन नाम। **–पाणि–**पु० विष्णु। **–पानि*–**पु० विष्णु। **–लोचना–**वि० स्त्री० मृगनयनी।

सारंगा–स्त्री० एक ही लकड़ीकी बनी हुई डोंगी; एक तरहकी बनी नाव; एक रागिनी।

सारंगाक्षा–वि० स्त्री० [सं०] मृगनयनी।

सारंगिक–पु० [सं०] बहेलिया, चिड़ीमार; एक वर्णवृत्त।

सारंगिया–पु० सारंगी बजानेवाला।

सारंगी–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध तंत्रवाद्य।

सार–* स्त्री० संदेश, खबर–'तलफत छाँड़ि चले मधुवनको, फिर कै लई न सार'–सू०; होश-हवास। वि० [सं०] मुख्य; सर्वोत्तम; यथार्थ; दृढ़। पु० मूल भाग; सत; मज्जा; गूदा; यथार्थ बात; निर्यास, गोंद; मथितार्थ; शक्ति, बल; शौर्य; साहस; दृढ़ता; संपत्ति; अमृत; ताजा मक्खन; वायु; साढ़ी; रोग; पूय; श्रेष्ठता; शतरंजका मोहरा; पाँसा; वज्रक्षार; हृदय; औचित्य; जंगल; इस्पात, लोहा–'मुए चामकी साँस ते सार भसम हो जाय'; अस्थि, मज्जा आदि शरीरस्थ आठ (कुछके मतसे सात) पदार्थ; मूल्य, महत्त्व; गोबर; नतीजा, फल; दुहनेके बाद तुरंत औटा हुआ दूध; चिरौंजीका पेड़; अनारका वृक्ष; मूँग; काढ़ा; नीलका पौधा; गमन, गति; विस्तार, फैलाव; एक वृत्त; एक अर्थालंकार–जहाँ वर्णित वस्तुओंका उत्तरोत्तर उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाया जाय; †साला; *सँभाल, सेवा–'करिहैं सास ससुर सम सारा'–रामा०; हथियार; शल्य; धैर्य; शय्या; मैना। **–गर्भ,–गर्भित–**वि० तत्त्वपूर्ण। **–ग्राही(हिन्)–**वि० किसी वस्तुका मुख्य तत्त्व ग्रहण करनेवाला। **–दा–**स्त्री० सरस्वती; दुर्गा। **–भुक्(ज्)–**वि० किसी वस्तुका मुख्य भाग खा जानेवाला। पु० अग्नि (लोहा खा जानेके कारण)। **–भूत–**वि० जो सर्वश्रेष्ठ हो, सर्वोत्तम। पु० मुख्य या सर्वश्रेष्ठ वस्तु। **–मिति–**पु० वेद। **–रूप–**वि० सर्वोत्तम, मुख्य। **–लोह–**पु० इस्पात। **–वर्जित–**वि० निःसार; नीरस। **–वस्तु–**स्त्री० मूल्यवान् या महत्त्वपूर्ण वस्तु। **–विद्–**वि० किसी चीजका मूल्य या तत्त्व जाननेवाला। **–शून्य–**वि० निःसार; निकम्मा।

सार–पु० [फा०] ऊँट। **–बान–**पु० ऊँटहारा।

सारखा†–वि० सदृश, समान।

सारणि–स्त्री० [सं०] छोटी नदी; धारा; प्रणाली।

सारणिक–पु० [सं०] पथिक, यात्री।

सारणी–स्त्री० [सं०] क्षुद्र नदी; जल-प्रणाली; तालिका।

सारथि–पु० [सं०] रथ चलानेवाला, सूत; नायक; सागर, समुद्र; साथी, सहायक।

सारथी–पु० दे० 'सारथि'।

सारद*–स्त्री० दे० 'शारदा'। * वि० दे० 'शारद'।

सारदी–स्त्री० [सं०] जलपीपल। * वि० शारदीय।

सारदूल*–पु० दे० 'शार्दूल'।

सारना*–स० क्रि० दूर करना, निकालना; पोंछना, साफ करना; पूरा करना; लगाना; काढ़ना–'जातहिं राम तिलक तेहि सारा'–रामा०; दुरुस्त करना; सँभालना; सुंदर बनाना; चलाना।

सारनाथ–पु० बनारसके उत्तर-पूरब, लगभग तीन मीलपर स्थित एक स्थान जो बौद्धोंका प्रसिद्ध तीर्थ है।

सारभाटा–पु० दे० 'ज्वारभाटा'।

सारमेय–पु० [सं०] सरमाकी संतान; कुत्ता (विशेषकर यमके चार आँखोंवाले दो कुत्तोंमेंसे एक)। **–चिकित्सा–**स्त्री० कुत्तेके काटनेका उपचार।

सारमेयी–स्त्री० [सं०] कुतिया।

सारल्य–पु० [सं०] सरलता; सचाई, ईमानदारी।

सारवान्(वत्)–वि० [सं०] कठिन, ठोस; दृढ़, मजबूत; पोषक; मूल्यवान्; रसदार; जिसमेंसे निर्यास निकले।

सारस–वि० [सं०] तालाब-संबंधी; चिल्लानेवाला; सारस पक्षी-संबंधी। पु० हंसकी जातिका लंबी टाँगोंवाला एक पक्षी; हंस; पक्षी; चंद्रमा; कमल; कमरबंद, करधनी; गरुड़का एक पुत्र; छप्पय छंदका एक भेद; झील आदिका जल; एक ताल (संगीत)। **–प्रिया–**स्त्री० सारसी।

सारसुता*–स्त्री० यमुना।

सारसुती*–स्त्री० दे० 'सरस्वती'।

सारस्य–पु०[सं०] पुकार, चिल्लाहट; जलप्राचुर्य; सरसता।

सारस्वत–वि० [सं०] सरस्वती(देवी या नदी)-संबंधी; सारस्वत ऋषि-संबंधी; सारस्वत देश-संबंधी; वाग्मी, विद्वान्। पु० सरस्वतीतटवर्ती देश-विशेष; एक ऋषि (जिनकी उत्पत्ति सरस्वती नदीसे मानी जाती है); सारस्वत देशका निवासी; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; सरस्वती-पूजा-संबंधी एक विशेष कृत्य। **–कल्प**–पु० सरस्वती-पूजा-संबंधी कृत्य विशेष।**–व्रत**–पु० सरस्वतीके निमित्त किया जानेवाला व्रत-विशेष।

सारस्वतोत्सव–पु० [सं०] सरस्वती-पूजनका समारोह।

सारांश–पु० [सं०] सार, निचोड़; नतीजा; तात्पर्य, मथितार्थ; उपसंहार।

सारा–वि० पूरा, संपूर्ण, समस्त। * पु० दे० 'साला'। स्त्री० [सं०] दूर्वा; कुश; कृष्ण त्रिवृता; थूहर; केला।

सारार्थी (र्थिन्)–वि०[सं०] किसी चीजसे लाभ उठानेका इच्छुक।

सारि–पु०, स्त्री० [सं०] शतरंज या पासेकी गोटी–'आसा फिरि-फिरि मारसी ज्यों चौपड़की सारि'–कबीर। स्त्री० मैना; सारंगीकी खूँटी (?); पाँसा–'बैठि कुँअरि सब खेलहिं सारी'–प०। **–फलक**–पु० बिसात।

सारिउँ*–स्त्री० मैना।

सारिका–स्त्री० [सं०] मैना पक्षी; चांडालवीणा; तंत्रवाद्यका पुल जैसा वह हिस्सा जिसपर तार टिके रहते हैं, घोरिया। **–मुख**–पु० एक विषैला कीड़ा।

सारिखा*–वि० दे० 'सरीखा'।

सारिणी–स्त्री० [सं०] सहदेई; दुरालभा; प्रसारिणी; रक्त पुनर्नवा; जल-धारा, जलप्रणाली।

सारिवा–स्त्री० [सं०] अनंतमूल।

सारी–स्त्री० [सं०] सारिका, मैना; सप्तला; भ्रूभंगिमा; गोटी; पासा; †साढ़ी, मलाई; साली; * साड़ी।**–क्रीड़ा**–स्त्री० शतरंज जैसा एक खेल।

सारूप्य–पु० [सं०] एकरूप होनेका भाव; रूप-सादृश्य।

सारो–†पु० एक अगहनिया धान। * स्त्री०दे०'सारिका'।

सारोपा–स्त्री० [सं०] लक्षणाका एक प्रकार जिसमें एक पदार्थमें दूसरेका आरोप किया जाता है (सा०)।

सार्थ–वि० [सं०] अर्थयुक्त,अभिप्राययुक्त; उपयोगी; धनी। पु० धनी आदमी; कारवाँ, वणिक्समूह; जनसमूह; समूह; व्यापारिक माल (कौ०); व्यापारी। **–घ्न**–वि० कारवाँको नष्ट करनेवाला। पु० डाकू। **–पति**–पु० कारवाँका मुखिया। **–पाल**–पु० कारवाँका रक्षक। **–भृत्**–पु० कारवाँका नेता। वि० मालदार। **–हा(हन्)**–वि० कारवाँको नष्ट करनेवाला। पु० डाकू। **–हीन**–वि० जिसका कारवाँसे साथ छूट गया हो।

सार्थक–वि० [सं०] अर्थपूर्ण; उपयोगी; लाभदायक।

सार्थकता–स्त्री० [सं०] महत्त्व; उपयोगिता।

सार्दूल–पु० दे० 'शार्दूल'।

सार्द्ध, सार्ध–वि० [सं०] आधेके साथ पूर्ण (संख्या)। अ० सहित, साथ।

सार्द्र–वि० [सं०] नम, गीला, भीगा हुआ।

सार्पिष, सार्पिष्क–वि० [सं०] घृत-संबंधी; घीमें बनाया हुआ; घृतयुक्त।

सार्व–वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला, आम; सबके लिए उपयुक्त।

सार्वकालिक–वि० [सं०] सब समयोंके लिए उपयुक्त; सब काल-संबंधी।

सार्वजनिक–वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला; सबके लिए उपयुक्त। **–निर्माण-विभाग**–पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) दे० 'लोकनिर्माण-विभाग'। **–व्यवस्था**–स्त्री० (पब्लिक आर्डर) सर्वसाधारणमें शांति बनाये रखने तथा विधि-विधानोंके समादरणका भाव; जनतामें उपद्रव, अशांति या विधिके उल्लंघनकी प्रवृत्ति न फैलने देना।

सार्वदेशिक–वि० [सं०] सब देशोंसे संबद्ध।

सार्वनामिक–वि० [सं०] सर्वनाम-संबंधी (व्या०)।

सार्वभौतिक–वि० [सं०] सब भूतों, जीवोंसे संबंध रखनेवाला।

सार्वभौम–वि० [सं०] सारी भूमि-संबंधी; सारी पृथ्वीका शासन करनेवाला। पु० चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; कुबेरका हाथी (उत्तरका दिग्गज); विश्वका साम्राज्य।

सार्वभौमिक–वि० [सं०] सारी पृथ्वीपर फैला हुआ।

सार्वरात्रिक–वि० [सं०] सारी रात टिकनेवाला (दीपक आदि)।

सार्वलौकिक–वि० [सं०] सबको ज्ञात; सारे संसारमें व्याप्त; सार्वजनिक।

सार्वत्रिक–वि० [सं०] सब स्थानोंसे संबंध रखनेवाला; सब स्थानों या अवस्थाओंमें लागू होनेवाला।

सार्षप–वि० [सं०] सरसों-संबंधी। पु० सरसोंका शाक, तेल आदि।

सालंकार–वि० [सं०] आभूषणयुक्त, अलंकृत।

सालंब–वि० [सं०] जिसे किसीका सहारा हो (समासमें)।

साल–* स्त्री० शाला। पु० जख्म; पीड़ा; छेद; काँटा; वह जो दुःख देता हो; *धान। [सं०] वृक्षविशेष, साखू; सालका निर्यास; जड़; वृक्ष; परकोटा, प्राकार; दीवार; एक तरहकी मछली। **–ग्राम**–पु० दे० 'शालग्राम'। **–रस**–पु० राल। **–वाहन**–पु० शालिवाहन नरेश।

साल–पु० [फा०] बरस, १२ महीनेका काल। **–आइंदा**–पु० आनेवाला वर्ष। **–गिरह**–स्त्री० वार्षिक जन्मतिथि, नव वर्षमें प्रवेशका उत्सव, बरसगाँठ। **–गुज़श्ता**–पु० बीता हुआ साल, गतवर्ष। **–तमाम**–पु० वर्षका अंत। **–तमामी**–स्त्री० वार्षिक विवरण। **–नामा**–पु० किसी पत्र-पत्रिकाका विशेषांक जो नये वर्षमें प्रवेशके अवसरपर निकाला जाय। मु०**–पलटना**–बरस पूरा होकर दूसरा आरंभ होना। **–भारी होना**–वर्षका अशुभ, अनिष्टकर होना।

सालक*–वि० सालने, दुःख देनेवाला।

सालन–पु० मांस; रसेदार तरकारी; [सं०] सालनिर्यास।

सालना–स० क्रि० कष्ट देना; चुभाना; चारपाईकी पाटी ठीक करना। अ० क्रि० चुभना; कष्टकर होना; खटकना।

सालम मिस्री–स्त्री० क्षुपविशेष, सुधामूली।

सालसा–पु० एक रक्तशोधक औषध।

साला–पु० पत्नीका भाई; इस संबंधके आधारपर बनी

एक गाली; * सारिका, मैना। * स्त्री० दे० 'शाला'।

सालातुरीय–पु० दे० 'शालातुरीय'।

सालाना–वि०[फा०] सालका, वार्षिक; साल भरपर होनेवाला। अ० हर साल, साल-ब-साल। पु० भृति या वृत्ति जो सालमें एक बार, वर्षांतमें दी जाय।

सालार–पु० [फा०] नायक, नेता, सरदार। **–(रे)जंग**–पु० सेनापति।

सालि–पु० दे० 'शालि'।

सालिग्राम–पु० दे० 'शालग्राम'।

सालिम–वि० [अ०] सुरक्षित; अखंड, पूरा, साबित।

सालियाना–पु० वार्षिक वृत्ति। वि० सालाना।

सालिस–पु० [अ०] पंच, तिसरैत। **–नामा**–पु० पंचनामा।

साली–स्त्री० जमीन या बँधी हुई रकम जो बढ़ई, नाई आदिको उनके कामके बदले दी जाती है; पत्नीकी बहन। * पु० धान।

सालोक्य–पु० [सं०] एक ही लोकमें रहना, मुक्तिका एक प्रकार।

सावंत–पु० दे० 'सामंत'।

साव–पु० दे० 'साहु'।

सावक–पु० बौद्ध या जैन संन्यासी; [सं०] शावक।

सावकाश–वि० [सं०] जिसे अवकाश, फुरसत हो, बाफुरसत। अ० फुरसतसे, मौकेसे। पु० अवकाश, मौका।

सावचेत*–वि० सतर्क, सावधान।

सावचेती–स्त्री० सतर्कता, होशियारी।

सावज*–पु० दे० 'साउज'।

सावत*–पु० सौतियाडाह; ईर्ष्या।

सावधान–वि० [सं०] सचेत, सतर्क, खबरदार।

सावधानता–स्त्री० [सं०] सतर्कता, होशियारी।

सावधि–वि० [सं०] जिसकी अवधि, सीमा निश्चित कर दी गयी हो। **–आधि**–स्त्री० नियत समयके अंदर छुड़ा ली जानेवाली गिरवी। **–निक्षेप**–पु० (फिक्स्ड डिपॉजिट) विशेष अवधितकके लिए रुपया जमा करना; मीयादी खातेमें जमा की गयी रकम।

सावधिक–वि० (पीरियाडिकल) निश्चित अवधिके बाद होने या निकलनेवाला। **–पत्र**–पु० (पीरियाडिकल) वह पत्र या पत्रिका जिसका प्रकाशन एक निश्चित अवधि–एक सप्ताह, एक पक्ष, एक माह–के बाद होता हो। **–प्रस्फोट**–पु० (टाइम बम) वह प्रस्फोट (बम) जो निर्धारित अवधिके बाद अपने आप फट पड़े, प्रज्वलित हो उठे।

सावन–पु० आषाढ़के बादका महीना, श्रावण; सावनमें गाया जानेवाला एक लोकगीत, कजली; * समूह; प्राचुर्य, आधिक्य; [सं०] यजमान; पूरा दिन और रात।

सावनी–स्त्री० वरपक्षसे वधूके यहाँ सावनमें भेजी जानेवाली सौगात; सावनमें गाया जानेवाला लोकगीत।

सावर–पु० शिवकृत एक मंत्र; एक मृग।

सावर्ण्य–पु० [सं०] रंग या जातिकी समानता।

सावशेष–वि० [सं०] जिसका कुछ अंश बाकी बचा हो; अपूर्ण, अधूरा। पु० शेष, बचा हुआ अंश। **–जीवित**–वि० जिसका जीवन अभी समाप्त न हुआ हो, जिसकी आयु बची हो। **–बंधन**–वि० जिसका बंधन अभी बना हो।

सावित्री–स्त्री० [सं०] गायत्री; उपनयनसंस्कार; ब्रह्माकी पत्नी; पार्वती; अश्वपतिकी पुत्री और सत्यवान्‌की पत्नी (जिसने अपने सतीत्वके बलसे अपने पतिको यमराजके हाथसे छुड़ाया था); दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी; कश्यपकी पत्नी; धारानरेश भोजकी पत्नी; अष्टावक्रकी एक पुत्री; यमुना नदी; सरस्वती नदी। **–व्रत**–पु० पतिकी दीर्घायुके लिए ज्येष्ठकी अमावस्याको रखा जानेवाला हिंदू स्त्रियोंका एक व्रत।

सावित्रेय–पु० [सं०] यम।

साश्चर्य–वि०[सं०] आश्चर्यजनक। अ० आश्चर्यके साथ।

साश्रु–वि० [सं०] अश्रुपूर्ण, रोता हुआ।

साष्टांग–वि० [सं०] आठ अंगोंसे युक्त। **–प्रणाम**–पु० आठ अंगों(सिर, हाथ, पैर, आँख, जाँघ, हृदय, वचन और मन)के योगसे किया जानेवाला प्रणाम। **–योग**–पु० यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि–इन आठों अंगोंवाला योग।

सास–स्त्री० पति या पत्नीकी माता।

सासति*–स्त्री० दंड, सजा, शासन–'सासति करि पुनि करहिं पसाऊ'–रामा०।

सासन†–पु० दे० 'शासन'।

सासना*–स्त्री० दे० 'शासन' (दंड, साँसत, कष्ट)।

सासरा*–पु० ससुराल।

सासा*–स्त्री० संशय, संदेह; श्वास।

सासुर†–पु० ससुराल; ससुर।

साहु–पु० सुजन; साहूकार; महाजन; देहलीजका बाजू, चौखटके आधारपर लगनेवाले आमने-सामनेके स्तंभ; दे० 'शाह'। **–बुलबुल**–स्त्री० एक तरहकी लंबी पूँछवाली सफेद बुलबुल।

साहचर्य–पु० [सं०] सहगमन, सहचरता; साथ, संगति।

साहजिक–वि० [सं०] सहजात, स्वाभाविक।

साहनी*–स्त्री० मेल; सेना–'आये निसाचर साहनी साजि'–रघु०। पु० साथी; प्रधान; पारिषद।

साहब–पु० [अ०] मित्र, साथी; मालिक, स्वामी; हाकिम, सरदार; ईश्वर (संत कवि); आदरणीय व्यक्तिका संबोधन; नाम या पदवीके साथ व्यवहृत 'जी'का समानार्थक शब्द; यूरोपियन; अंग्रेज या अंग्रेजी ढंगसे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर। **–ज़ादा**–पु० बड़े आदमीका बेटा; संबोध्य जनका बेटा; (ला०) अल्हड़, अनुभवहीन नवयुवक। **–बहादुर**–पु० अंग्रेज अफसर; साहबी ढंगसे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर। **–सलामत**–स्त्री० परस्पर अभिवादन, सलाम-बंदगी; सामान्य परिचय।

साहबाना–वि० [अ०] साहबका; साहबी।

साहबी–वि० साहबका; साहब जैसा (–ठाठ)। स्त्री० साहबपन, अफसरी; (संत सा०) हुकूमत; मालिकी; ईश्वरत्व, ऊँचा पद; एक तरहका अंगूर; एक धारीदार कपड़ा। मु०**–करना**–अफसरी शान दिखाना।

साहबीयत–स्त्री० साहबी चाल-ढाल; अंग्रेजोंकी नकल।

साहस–पु०[सं०] हिम्मत, किसी असाधारण कार्यमें दृढ़तापूर्वक प्रवृत्त होनेकी वृत्ति, जीवट; जल्दबाजी; औद्धत्य; दंड; जुर्माना; बलात्कार; लूट, अपहरण; परस्त्रीगमन।

साहसिक–वि० [सं०] हिम्मतवर, दिलेर; निर्भीक; उद्धत; अविवेकी; निष्ठुर, अत्याचारी; परुषवादी। पु० हिम्मतवर आदमी; डाकू, लुटेरा; खतरनाक आदमी; परस्त्रीगामी।

साहसी(सिन्)–वि० [सं०] प्रचंड; पराक्रमी; हिम्मतवर; निष्ठुर; उद्धत।

साहस्र–वि० [सं०] हजार-संबंधी; एक हजारवाला; एक हजारमें खरीदा हुआ; हजार पीछे दिया जानेवाला।

साहाय्य–पु० [सं०] सहायता, मदद; मैत्री, साथ।

साहि*–पु० राजा; भला आदमी।

साहित्य–पु० [सं०] साथ, संयोग, मेल; वाक्यमें पदोंका सापेक्ष-संबंध; गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना; लिपिबद्ध विचार, ज्ञान आदि; ग्रंथोंका समूह, वाङ्मय; काव्यशास्त्र; हितयुक्त होनेका भाव। **–शास्त्र**–पु० साहित्यके विभिन्न अंगों–रस, अलंकार आदि–का विवेचन या विवेचनात्मक ग्रंथ।

साहित्यादि महाविद्यालय–पु० [सं०] (आर्ट्‌स कालेज) साहित्य, इतिहास आदि विषयोंकी शिक्षा प्रदान करनेवाला महाविद्यालय।

साहित्यिक–वि० [सं०] साहित्य संबंधी। पु० साहित्यसेवी, साहित्यकार (असाधु)। **–उपनाम**–पु० (पेन-नेम) लेखक या कवि द्वारा साहित्यिक रचनाओंमें अपने असली नामके बदले या उसके साथ-साथ प्रयुक्त किया जानेवाला बनावटी नाम।

साहिनी–स्त्री० दे० 'साहनी'।

साहिब–पु० दे० 'साहब'।

साहियाँ*–पु० दे० 'साँईं'।

साहिल–पु० [अ०] समुद्र या नदीका किनारा।

साही–स्त्री० एक छोटा (बिल्लीसे कुछ बड़ा) जानवर जिसका सारा शरीर तेज लंबे काँटोंसे भरा रहता है और जो जमीनमें माँद बनाकर रहता है। वि० दे० 'शाही'।

साहु–पु० भला आदमी, सज्जन; महाजन; बनियोंका आदरपूर्ण संबोधन।

साहुल–पु० डोरेसे लटकनेवाला लट्टू जैसा राजगीरोंका एक औजार जिससे दीवारकी सीध जाँची जाती है।

साहू–पु० दे० 'साहु'।

साहूकार–पु० बड़ा व्यापारी, धनाढ्य महाजन।

साहूकारा–पु० रुपयोंके लेन-देनका काम; साहूकारोंकी बस्ती; बाजार। वि० साहूकारोंका।

साहूकारी–स्त्री० साहूकारका काम, महाजनी।

साहेब–पु० दे० 'साहब'।

साहैं*–स्त्री० भुजाएँ, बाजू। अ० सामने, सम्मुख।

सिँउँ*–अ० दे० 'स्यों'।

सिँकना–अ० क्रि० सेंका जाना (आँचपर); पकना।

सिंगरफ–पु० ईंगुर।

सिँगरौर–पु० प्राचीन शृंगवेरपुरका वर्तमान नाम।

सिंगल–पु० दे० 'सिगनल'।

सिंगा–पु० फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा, शृंग।

सिंगार, सिँगार–पु० शृंगार, सजावट; सजधज; शृंगार रस। **–दान**–पु० प्रसाधन रखनेका छोटा संदूक। **–मेज**–स्त्री० वह आईनेदार मेज जिसके सामने बैठकर शृंगार किया जाता है। **–हाट**–स्त्री० वेश्याओंका वासस्थान।

सिँगारना*–स० क्रि० शृंगार करना, सँवारना, सजाना।

सिंगारिया–पु० मूर्तिका शृंगार करनेवाला।

सिंगारी–पु० दे० 'सिंगारिया'।

सिंगिया–पु० एक विष जो एक पौधेका मूल है और सूखनेपर सींगकी शकलका होता है।

सिंगी–स्त्री० तूँबी लगानेकी नली। पु० सींगका बना बाजा।

सिँगौटी–स्त्री० तेल आदि रखनेका सींगका पात्र; सिंदूर आदि रखनेकी पिटारी; बैलके सींगका गहना।

सिंघ*–पु० दे० 'सिंह'।

सिंघण–पु० [सं०] लोहेका मुरचा; नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा, रेंट।

सिंघल*–पु० दे० 'सिंहल'।

सिंघली–वि० दे० 'सिंहली'।

सिंघाड़ा–पु० पानीमें पैदा होनेवाला एक तिकोना फल; सिंघाड़ेके आकारकी एक मिठाई और एक नमकीन; तिकोनी सिलाई; एक तरहकी आतिशबाजी।

सिंघाण–पु० [सं०] दे० 'सिंघण'।

सिंघासन*–पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंघिनी–स्त्री० शेरनी।

सिंघी–स्त्री० सिंगी मछली; सोंठ।

सिंघेला*–पु० शेरका बच्चा।

सिंचन–पु० [सं०] सींचना, खेत, पेड़ आदिमें पानी डालना।

सिँचना–अ० क्रि० सींचा जाना।

सिँचाई–स्त्री० सींचनेका काम; सींचनेकी उजरत।

सिँचाना–स० क्रि० किसीको सींचनेमें प्रवृत्त करना।

सिंचित–वि० [सं०] सींचा हुआ।

सिँचौनी–स्त्री० दे० 'सिँचाई'।

सिंजा–स्त्री० [सं०] गहनोंके हिलने आदिसे उत्पन्न झंकार।

सिंजित–पु० [सं०] दे० 'सिंजा'।

सिंदन*–पु० स्यंदन, रथ।

सिंदूर–पु० [सं०] एक वृक्ष; एक लाल चूर्ण जिससे स्त्रियाँ माँग भरती हैं। **–तिलक**–पु० सिंदूरका चिह्न; हाथी। **–तिलका**–स्त्री० सधवा स्त्री (जिसकी माँग सिंदूरसे भरी रहती है)। **–दान**–पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें वर वधूकी माँगमें सिंदूर लगाता है। **–बंदन, –वंदन**–पु० दे० 'सिंदूरदान'।

सिंदूरिया–वि० सिंदूरके रंगका।

सिंदूरी–वि० सिंदूरके रंगका। स्त्री० [सं०] रोचनी।

सिंदोरा–पु० सिंदूर रखनेकी लकड़ीकी डिबिया।

सिंध–पु० पाकिस्तानका एक प्रांत। स्त्री० एक प्रसिद्ध नदी; एक रागिनी।

सिंधी–वि० सिंध देशका। पु० इस देशका रहनेवाला; एक तरहका घोड़ा। स्त्री० इस देशकी भाषा।

सिंधु–पु० [सं०] सागर, समुद्र; एक प्रसिद्ध नदी; इस नदीके आस-पासका देश; चारकी या सातकी संख्या।

–कन्या–स्त्री० लक्ष्मी । **–ज**–पु० सेंधा नमक; सोहागा; शंख । **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी; सीप । **–जन्मा-(न्मन्)**–वि० समुद्र या सिंधदेशमें उत्पन्न । पु० चंद्रमा; सेंधा नमक । **–संगम** –पु० नदीका मुहाना । **–सुता**–स्त्री० लक्ष्मी; सीप ।

सिंधुर–पु० [सं०] हाथी; आठकी संख्या । **–मणि**–पु० गजमुक्ता । **–वदन**–पु० गणेश, गजानन ।

सिंधुरागामिनी–वि० स्त्री० [सं०] गजगामिनी ।

सिँधोरा–पु० लकड़ीका बना हुआ सिंदूरपात्र ।

सिँधोरी–स्त्री० सेंदुर रखनेकी छोटी डिबिया ।

सिंसपा–स्त्री० शीशमका पेड़ ।

सिंह–पु० [सं०] केसरी, मृगेंद्र, शेर; बारह राशियोंमेंसे एक राशि; (समासमें) अपने वर्गका सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति । **–द्वार**–पु० प्रासाद आदिका प्रधान द्वार; सदर दरवाजा । **–ध्वनि**–स्त्री० सिंहका गर्जन; ललकार, रणनाद । **–नाद**–पु० सिंहका गर्जन; युद्ध-ध्वनि, ललकार; जोर देकर कोई बात कहना । **–पौर**–पु० [हिं०] सिंहद्वार । **–वाहना,–वाहिनी**–स्त्री० दुर्गा ।

सिंहनी–स्त्री० शेरनी, सिंहकी मादा; एक वृत्त ।

सिंहल–पु० [सं०] भारतके दक्षिण स्थित एक द्वीप, लंका ।

सिंहली–वि० सिंहल द्वीप-संबंधी; सिंहलका । स्त्री० एक तरहकी पिप्पली; सिंहलकी भाषा ।

सिंहाण, सिंहान–पु० [सं०] 'सिंघण', नाकका मल, रेंट; लोहेका मुरचा ।

सिंहानक–पु० [सं०] नाकका मल ।

सिंहारहार*–पु० हरसिंगार ।

सिंहावलोकन–पु० [सं०] सिंहका आगे बढ़ते हुए पीछेकी ओर देखना; आगे बढ़ते हुए पीछेकी बातोंपर दृष्टिपात कर लेना (न्या०); छंदकी रचनाका एक प्रकार जिसमें दूसरा चरण पहले चरणके अंतिम शब्दोंसे आरंभ होता है ।

सिंहासन–पु० [सं०] राजा, देवता आदिका आसन । **–भ्रष्ट**–वि० गद्दीसे उतारा हुआ, राज्यच्युत । **–स्थ**–वि० तख्तनशीन ।

सिंहिका–स्त्री० [सं०] राहुकी माता । **–तनय,–पुत्र**–पु० राहु ।

सिंहिकेय–पु० [सं०] सिंहिकापुत्र, राहु ।

सिंहिनी–स्त्री० [सं०] एक देवी (बौद्ध); * शेरनी, सिंहनी ।

सिंही–स्त्री० [सं०] शेरनी; राहुकी माता, सिंहिका; नस; अडूसा; थूहर; सिंघा नामक बाजा; नाडीशाक; कंटकारी ।

सिंहोदरी–वि० स्त्री० [सं०] सिंहके समान कटिवाली ।

सिअनि*–स्त्री० सिलाई ।

सिअरा*–वि० ठंढा किया हुआ, ठंढा–'सिअरे बदन सूखि गये कैसे'–रामा० ।

सिआना*–स० क्रि० दे० 'सिलाना' ।

सिआर–पु० गीदड़ ।

सिकंजबीन–स्त्री० [फा०] नीबूके रस या सिरकेका पका हुआ शरबत ।

सिकंजा–पु० दे० 'शिकंजा' ।

सिकंदर–पु० सुप्रसिद्ध यूनानी विजेता जो मकदूनिया-नरेश फिलिप्स(फैलक्स)का बेटा था और जिसने मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान और हिंदुस्तानमें तक्षशिला तथा सिंधुके इस पारका कुछ भाग भी जीत लिया था ।

सिकंदरा–पु० रेलका सिगनल ।

सिकड़ी–स्त्री० साँकल, जंजीर; जंजीर जैसा गलेका एक गहना; करधनी; जंजीर जैसी उनचन ।

सिकत*–स्त्री० बालू ।

सिकता–स्त्री० [सं०] बलुई जमीन, बालुकायुक्त भूमि; बालू ।

सिकतामय–वि० [सं०] बालुकामय । पु० बालूसे बना हुआ तट; वह द्वीप जिसके तट बालूसे बने हों ।

सिकत्तर–पु० [अं० 'सेक्रेटरी'] किसी संस्था या व्यक्तिका कार्यनिर्वाहक मंत्री ।

सिकर*–पु० शृगाल–'सिकर स्वान दुइ पंथ निहारैं'–बीजक । स्त्री० जंजीर ।

सिकली–स्त्री० हथियार माँजकर तेज करना । **–गढ़***–पु० दे० 'सिकलीगर' । **–गर**–पु० हथियार तेज करनेवाला; चमक लानेवाला ।

सिकहर–पु० छींका ।

सिकहरा*–पु० दे० 'सिकहर' ।

सिकार*–पु० दे० 'शिकार' ।

सिकारी*–वि०, पु० दे० 'शिकारी' ।

सिकुड़न–स्त्री० सिकुड़नेकी क्रिया, संकोच; सिकुड़नेका चिह्न, शिकन ।

सिकुड़ना–अ० क्रि० संकुचित होना; बटुरना, सिमटना; तंग होना; शिकन पड़ना ।

सिकुरना*–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सिकोड़ना–स० क्रि० संकुचित करना; बटोरना, समेटना ।

सिकोरना*–स० क्रि० दे० 'सिकोड़ना' ।

सिकोरा–पु० कसोरा ।

सिकोही*–वि० गर्वीला; पराक्रमी, वीर ।

सिक्कड़–पु० जंजीर, सिकड़ी ।

सिक्कर*–पु० दे० 'सिक्कड़' ।

सिक्का–पु० [अ०] ठप्पा, छाप; मुद्रा; रुपया; वह ठप्पा जिससे रुपये आदि अंकित करते हैं; पदक । **मु०–चलाना** –(अपना) सिक्का जारी करना । **–जमना,–बैठना**–रोब-दाब कायम होना, अधिकार स्थापित होना । **–जमाना,–बैठाना**–रोब-दाब कायम करना, अधिकार स्थापित करना ।

सिक्ख–पु० गुरु नानकका चलाया हुआ एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी ।

सिक्त–वि० [सं०] सींचा हुआ; गीला, भींगा हुआ ।

सिक्थ–पु० [सं०] मोम, मधूच्छिष्ट; माँड़ निकाला हुआ भात; भातका पिंड या ग्रास; नीली; मोतियोंका गुच्छा ।

सिखंडी–पु० दे० 'शिखंडी' ।

सिख–पु० दे० 'सिक्ख'; शिष्य । * स्त्री० शिक्षा, उपदेश; चोटी ।

सिखना*,–स० क्रि० सिखाना ।

सिखर*–पु० दे० 'शिखर'; मुकुट; सिकहर ।

सिखरन–स्त्री० दे० 'शिखरन' ।

सिखलाना–स० क्रि० सिखाना ।

सिखवना*–स० क्रि० सिखलाना ।

सिखा*–स्त्री० दे० 'शिखा'।

सिखाना–स० क्रि० शिक्षा देना, पढ़ाना, बतलाना; ताड़ना, दंड देना।

सिखापन*–पु० शिक्षा, उपदेश; शिक्षणकार्य।

सिखावन–स्त्री० शिक्षा, उपदेश; नसीहत।

सिखावना*–स० क्रि० दे० 'सिखाना'।

सिखिर*–पु० शिखर; जैनोंका एक तीर्थ, पारसनाथ पहाड़।

सिखी*–पु० मुर्गा; मोर।

सिगनल–पु० [अं०] रेलगाड़ीके आने-जानेका सूचक चिह्न-विशेष, सिंगल, सिकंदरा; संकेत।

सिगरा*–वि० संपूर्ण, सब।

सिगरेट–पु०, स्त्री० [अं०] धूमपानके लिए कागजमें तंबाकू लपेटकर बनायी हुई एक तरहकी बत्ती।

सिगरो, सिगरौ*–वि० दे० 'सिगरा'।

सिगार–पु० [अं०] चुरुट।

सिचान*–पु० बाज चिड़िया।

सिचाना–स० क्रि० दे० 'सिँचाना'।

सिच्छक*–पु० शिक्षा देनेवाला; दंड देनेवाला–'साहिन के सिच्छक, सिपाहिनके पातसाह'–भू०।

सिच्छा*–स्त्री० शिक्षा।

सिजदा–पु० [अ०] माथा टेकना; खुदाके आगे सिर झुकाना; मुसलमानोंकी उपासनाका एक अंग जिसमें माथा, नाक, कुहनियाँ, घुटने और पाँवोंकी उँगलियाँ जमीनपर लगती हैं। **–गाह**–पु०, स्त्री० उपासना-स्थल।

सिझना–अ० क्रि० आँचपर पक जाना, सिझाया जाना।

सिझाना–स० क्रि० आँचपर पकाना, राँधना; शरीरको कष्टमय स्थितिमें रखना; (बरतन आदिके लिए मिट्टी) तैयार करना; (चमड़ा) पकाना।

सिटकिनी–स्त्री० किवाड़ बंद करनेके लिए उसमें लगा हुआ छोटासा छड़, चटखनी।

सिटपिटाना–अ० क्रि० दब जाना; भय खाना; मंद पड़ जाना; स्तब्ध हो जाना।

सिट्टी–स्त्री० बढ़-चढ़कर बातें करना, वाचालता। **मु०–गुम होना**–घबराकर चुप हो जाना, सिटपिटा जाना।

सिट्ठी–स्त्री० दे० 'सीठी'।

सिठाई–स्त्री० फीकापन।

सिड़–स्त्री० पागलपन, दीवानगी, खब्त, सनक; धुन। **–पन,–पना**–पु० दे० 'सिड़'। **–बिला,–बिल्ला**–वि० मूर्ख, बेअक्ल; पागल, सनकी। **मु०–सवार होना**–सनक सवार होना।

सिड़ी–वि० सनकी, पागल; मनमौजी।

सितंबर–पु०[अं० 'सेप्टेंबर'] ईसवी सनका नवाँ महीना।

सित–वि०[सं०] श्वेत, सफेद; चमकीला; विशुद्ध, निर्मल। पु० सफेद रंग; शुक्ल पक्ष; शुक्र ग्रह; शुक्राचार्य; बाण; चाँदी; चंदन; शर्करा। **–कंठ**–वि० सफेद गरदनवाला। पु० चातक; * शिव। **–कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० वासक। **–कर्मा (र्मन्)**–वि० जिसके कर्म पवित्र हों। **–काच**–पु० हलब्बी शीशा; बिल्लौर, स्फटिक। **–कुंजर**–पु० इंद्र; ऐरावत; सफेद हाथी। **–खंड**–पु० मिसरीका डला। **–गुंजा**–स्त्री० सफेद घुँघची। **–च्छद**–वि० सफेद पत्रोंवाला; सफेद पंखोंवाला। पु० हंस; सहिजनका एक प्रकार। **–तुरग**–पु० अर्जुन। **–दर्भ**–पु० श्वेत दूर्वा। **–दीधिति**–पु० चंद्रमा। **–द्रु**–शुक्लवर्ण वृक्ष; मोरट-विशेष। **–द्रुम**–पु० शुक्लवर्ण वृक्ष; अर्जुन। **–द्विज**–पु० हंस। **–धातु**–स्त्री० श्वेत खनिज द्रव्य; खड़िया मिट्टी। **–पक्ष**–पु० उजेला पाख; सफेद पंख; हंस। **–पच्छ***–पु० हंस; शुक्ल पक्ष। **–पद्म**–पु० श्वेत कमल। **–पुंडरीक**–पु० श्वेत कमल। **–भानु**–पु० चंद्रमा। **–मणि**–पु० स्फटिक। **–मना-(नस्)**–वि० पवित्र हृदयवाला। **–यामिनी**–स्त्री० चाँदनी रात; चंद्रिका। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा। **–राग**–पु० चाँदी। **–रुचि**–वि० सफेद रंगका। पु० चंद्रमा। **–वराह**–पु० श्वेत वराह। **–वल्लरी**–स्त्री० कठजामुन। **–वाजी (जिन्)**–पु० अर्जुन। **–वारण**–पु० दे० 'सित-कुंजर'। **–सर्षप**–पु० पीली सरसों। **–सिंधु**–पु० क्षीरसागर। स्त्री० गंगा नदी।

सितकंठ*–पु० शिव; दे० 'सित'में।

सितता–स्त्री० [सं०] श्वेतता, सफेदी।

सितम–पु० [फा०] जुल्म, अन्याय, उत्पीडन; अंधेर; गजब। **–कश,–ज़दा,–रसीदा**–वि० जुल्म सहनेवाला, उत्पीड़ित। **–गर,–गार**–वि० जालिम, अन्यायी, अत्याचारी। **मु०–ढाना**–जुल्म, भारी अन्याय करना। **–तोड़ना**–अन्याय, अत्याचार करना।

सितांग–पु० [सं०] श्वेत रोहित; कपूर; शिव; बेला।

सितांबर–वि० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी। पु० एक तरहके जैन साधु, श्वेतांबर।

सितांबुज, सितांभोज–पु० [सं०] श्वेत पद्म।

सितांशु–पु० [सं०] कर्पूर; चंद्रमा।

सितांशुक–वि० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी, सफेदपोश।

सिता–स्त्री० [सं०] शर्करा; मिसरी; चंद्रिका; सुंदरी; सुरा; श्वेत दूर्वा; मल्लिका; श्वेत कंटकारी; बकुची; गंगा; आठ देवियोंमेंसे एक (बौद्ध)।

सितातपत्र–पु०[सं०] श्वेत छत्र (राज-चिह्न)।

सितानन–वि० [सं०] श्वेत मुखवाला। पु० गरुड़।

सिताब*–अ० तुरंत, झटपट। स्त्री० शीघ्रता–'तातें ढील न होइ, काम यह है सिताबकौ'–सुजान०।

सिताबी*–अ० दे० 'सिताब'। स्त्री० शीघ्रता; चाँदनी।

सिताब्ज–पु० [सं०] श्वेत पद्म।

सितार–पु० एक प्रसिद्ध तंत्रवाद्य। **–बाज़**–वि०, पु० सितार बजानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० सितार बजाना।

सितारा–पु० [फा० 'सतारा'] तारा, नक्षत्र; (ला०) भाग्य; चाँदी-सोनेके पत्तरकी टिकली जो टोपी, जूते आदिपर लगायी जाती है, चमकी; आतिशबाज़ी; बंदूककी टोपीका गोल और सफेद भाग; कुछ घोड़ोंके माथेपर पाया जानेवाला सफेद निशान जो अँगूठेसे ढक जाय (यह चिह्न अशुभ माना जाता है); * सितार। **–(रे)हिंद**–पु० एक उपाधि जो भारतमें अंग्रेज सरकारकी ओरसे सम्मानार्थ दी जाती थी। **मु०–चमकना**–भाग्य जगना, बढ़ती-चढ़तीके दिन होना। **–बुलंद होना**–सौभाग्यकाल होना।

सितारिया–पु० सितार बजानेंवाला।

सिताश्व–पु० [सं०] अर्जुन; चंद्रमा।

सितासित–वि० [सं०] सफेद और काला; भला और बुरा। पु० बलदेव; शुक्र और शनि; प्रयाग।

सिति–वि० [सं०] बाँधनेवाला; दे० 'शिति' (समास भी)।

सितुई, सितुही–स्त्री० सुतुही, सीपी।

सितांत्पल–पु० [सं०] सफेद कमल।

सितोद्भव–पु० [सं०] चंदन। वि० चीनीका; चीनीसे बना हुआ।

सितोपल–पु० [सं०] बिल्लौर, स्फटिक; खरिया, दुद्धी।

सितोपला–स्त्री० [सं०] चीनी; मिस्री; खरिया।

सिथिल*–वि० दे० 'शिथिल'।

सिदना*–स० क्रि० कष्ट पहुँचाना।

सिदामा*–पु० दे० 'श्रीदामा'।

सिदिक–स्त्री० दे० 'सिद्क़'। * वि० सच्चा।

सिदौसी*–अ० शीघ्रतापूर्वक।

सिद्क़–स्त्री० [अ०] सचाई, निष्कपट भाव, दिलकी सफाई।

सिद्ध–वि० [सं०] पूरा किया हुआ; प्राप्त, लब्ध; निश्चित; प्रमाणित; दृढ़, पक्का (नियम); सत्य माना हुआ; निर्णीत, जिसका फैसला हो गया हो (व्यवहार); चुकाया हुआ; पकाया हुआ (भोजन); पका हुआ (फलादि); अच्छी तरह तैयार किया हुआ; प्रस्तुत (रुपया); पराभूत; वशीकृत (मंत्रादि द्वारा); दक्ष, विशेषज्ञ; शुद्ध किया हुआ (तपश्चर्या आदिसे); मुक्त; अलौकिक शक्तिसे संपन्न; धर्मात्मा; पवित्र; अमर; प्रसिद्ध; दीप्तिमान्; ठीक घटा हुआ। पु० संत या योगी जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो; संत; ऋषि; एक देवयोनि; जादूगर; मुकदमा, व्यवहार; एक योग (ज्यो०)। **–काम**–वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों। **–कार्य**–वि० कृतकार्य, सफल। **–गुटिका**–स्त्री० एक मंत्रसिद्ध वटिका जिसे मुहँमें रखनेपर मनुष्य अदृश्य हो सकता है। **–जल**–पु० पकाया हुआ पानी; माँड़। **–तापस**–पु० अलौकिक शक्तियुक्त साधु। **–नर**–पु० दैवज्ञ; वह व्यक्ति जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो। **–नाथ**–पु० महादेव। **–पक्ष**–पु० किसी प्रतिज्ञाका वह पक्ष जो प्रमाणित हो गया है। **–पुरुष**–पु० वह व्यक्ति जिसे योगादिमें सिद्धि प्राप्त हो गयी हो। **–प्राय**–वि० जो करीब-करीब सिद्ध हो चुका हो। **–भूमि**–स्त्री० सिद्धोंका स्थान; वह स्थान जहाँ योगादिकी सिद्धि शीघ्र होती हो। **–मंत्र**–पु० सिद्धिप्राप्त मंत्र। **–योगी(गिन्)**–पु० शिव। **–रस**–पु० पारा; वह जिसने पारा सिद्ध कर लिया है; कीमियागर; धातुप्रभृति। **–रसायन**–पु० दीर्घायु बनानेवाला रस। **–लक्ष**–वि० जिसने निशाना ठीक-ठीक लगाया है; जिसका निशाना न चूके। **–लोक**–पु० सिद्धोंका लोक। **–विनायक**–पु० गणेशकी एक मूर्ति। **–संकल्प**–वि० जिसका संकल्प पूरा हो गया हो। **–सारस्वत**–वि० जिसे सरस्वती सिद्ध हो। **–सिंधु**–स्त्री० मंदाकिनी, स्वर्गगंगा। **–स्थाली**–स्त्री० सिद्ध पुरुषकी बटुई जिससे इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ मँजा हो, दक्ष, कार्यकुशल।

सिद्धता–स्त्री०, **सिद्धत्व**–पु० [सं०] सिद्ध होनेका भाव; सिद्धि; पूर्णता; प्रामाणिकता।

सिद्धांगना–स्त्री० [सं०] सिद्ध जातिके देवोंकी स्त्री; वह स्त्री जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो।

सिद्धांजन–पु० [सं०] एक अंजन (कहा जाता है इसके प्रयोगसे भूगर्भकी चीजें दिखाई देने लगती हैं)।

सिद्धांत–पु० [सं०] अंतिम उद्देश्य या अभिप्राय; पूर्वपक्षके खंडनके बाद सिद्ध मत; निश्चित मत जिसको सत्यके रूपमें ग्रहण किया जाय, उसूल; पक्की राय; निर्धारित मतके आधारपर लिखित शास्त्रीय ग्रंथ। **–कोटि**–स्त्री० तर्कका वह स्थल या बिंदु जो निर्णायक हो। **–कौमुदी**–स्त्री० भट्टोजिदीक्षित-रचित संस्कृत व्याकरणका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–ज्ञ**–वि० सिद्धांत जाननेवाला, तत्त्वज्ञ। **–पक्ष**–पु० तर्कसंगत पक्ष। **–वाद**–पु० मतवाद।

सिद्धांती (तिन्)–पु० [सं०] आपत्तियोंका निराकरण कर अनुमानकी स्थापना करनेवाला; मीमांसक; वह जो सिद्धांतग्रंथोंका जानकार हो।

सिद्धांतीय–वि० [सं०] सिद्धांत-संबंधी।

सिद्धांबा–स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सिद्धान्न–पु० [सं०] पक्क अन्न।

सिद्धापगा–स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धसिंधु'।

सिद्धार्थ–वि० [सं०] जिसकी कामनाएँ पूरी हो गयी हों, सफलमनोरथ; लक्ष्यतक ले जानेवाला; जिसका अभिप्राय ज्ञात हो। पु० गौतम बुद्ध; एक मारपुत्र; स्कंदका एक अनुचर; महावीरके पिता; दशरथका एक मंत्री; सफेद या पीली सरसों; एक संवत्सर।

सिद्धासन–पु० [सं०] एक योगासन।

सिद्धि–स्त्री० [सं०] सफलता, अभ्युदय; निष्पत्ति; अनुमान; निश्चय; (ऋणका) परिशोध; पाक–क्रिया; प्रश्नका हल; पूर्ण शुद्धि; अणिमा, गरिमा आदि अलौकिक शक्तियाँ; दक्षता, निपुणता; सुपरिणाम; मोक्ष; योगका एक प्रकार; दक्षकी एक कन्या; गणेशकी एक पत्नी। **–कर**–वि० सफल बनानेवाला, समृद्ध करनेवाला। **–कारक**–वि० लक्ष्य प्राप्ति करानेवाला; प्रभावकर। **–कारी(रिन्)**–वि० किसी बातकी सिद्धि करानेवाला। **–द**–वि० मोक्ष देनेवाला; सिद्धि देनेवाला। **–दाता(तृ)**–पु० गणेश। **–प्रद**–वि० सिद्धि देनेवाला। **–भूमि**–स्त्री० वह स्थान जहाँ सिद्धि जल्द मिले। **–मार्ग**–पु० सिद्धलोकमें पहुँचानेवाला रास्ता। **–यात्रिक**–पु० सिद्धिकी प्राप्तिके लिए यात्रा करनेवाला व्यक्ति। **–लाभ**–पु० सिद्धिकी प्राप्ति। **–वाद**–पु० ज्ञानगोष्ठी। **–विनायक**–पु० गणेशकी एक मूर्ति। **–स्थान**–पु० तीर्थ स्थान; मोक्षप्राप्तिका स्थान।

सिद्धीश्वर–पु० [सं०] महादेव; एक तीर्थ।

सिद्धेश्वर–पु० [सं०] योगिराज; शिव; गुलतुर्रा।

सिद्धेश्वरी–स्त्री० [सं०] देवीविशेष।

सिध*–वि० दे० 'सिद्ध'।

सिधाई–स्त्री० सरलता, सीधापन।

सिधाना*–अ० क्रि० चला जाना, प्रस्थान करना; आना, –'तब कर जोरि कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो'

-रघु० ।

सिधारना-अ० क्रि० जाना, प्रस्थान करना; विदा, रवाना होना; मर जाना । * स० क्रि० सुधारना ।

सिधि*-स्त्री० दे० 'सिद्धि' । **-गुटका**-पु० दे० 'सिद्ध-गुटिका' ।

सिध्मा-स्त्री० [सं०] कुष्ठका दाग; कुष्ठ रोग ।

सिन(न्न)-पु० [अ०] उम्र, वय ।

सिनक-स्त्री० नाकका मल, रेंट ।

सिनकना-स० क्रि० साँसके झोंकेसे नाकका मल निकालना, छिनकना ।

सिनी-स्त्री० [सं०] गौरवर्णकी स्त्री ।

सिनीवाली-स्त्री० [सं०] एक वैदिक देवी; शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा ।

सिनेट-स्त्री० [अं०] विश्वविद्यालयकी प्रवंध-समिति ।

सिनेमा-पु० [अं०] चलचित्र, छायाचित्र; वह स्थान जहाँ चलचित्र प्रदर्शित किये जायँ ।**-हाउस**-पु० सिनेमाघर ।

सिन्नी†-स्त्री० मिठाई; खुशीमें या देवताको चढ़ाकर प्रसाद के रूपमें बाँटी जानेवाली मिठाई ।

सिपर-स्त्री० [फा०] ढाल, फरी; रोक; (ला०) पनाह; मददगार । **मु०-डाल या फेंक देना**-हथियार डाल देना, हार मान लेना । **-मुँहपर लेना**-हिफाजतके लिए ढाल उठाना ।

सिपरा-स्त्री० दे० 'सिप्रा'

सिपह-पु० [फा०] 'सिपाह'का लधु रूप । **-गरी**-स्त्री० सिपाहीका काम या पेशा, सैनिकवृत्ति । **-दार**-पु० सेना नायक । **-सालार**-पु० सेनापति ।

सिपाई*-पु० दे० 'सिपाही' ।

सिपारस†-स्त्री० दे० 'सिफ़ारिश' ।

सिपारसी†-वि० दे० 'सिफ़ारिशी' ।

सिपारिश-स्त्री० [फा०] दे० 'सिफ़ारिश' ।

सिपाह-पु० [फा०] सेना, फौज । **-गरी**-स्त्री० सिपाही का काम या पेशा, सैनिक वृत्ति ।**-सालार**-दे० 'सिपहसालार' ।

सिपाहियाना-वि० [फा०] सिपाहियोंकासा, सैनिकोचित (सिपा० ठाट) ।

सिपाही-पु० [फा०] सैनिक; योद्धा; कांस्टेबिल; चपरासी ।

सिपुर्द-वि० [फा०] सौंपा हुआ, हवाले किया हुआ । **-गी**-स्त्री० सिपुर्द करनेका भाव; तहवील, हिरासत । (...में लेना) । **-नामा**-पु० सिपुर्द करनेका लेख, समर्पणपत्र । **मु०-करना**-सौंपना, हवाले करना; हिरासतमें देना ।

सिप्पर*-स्त्री० दे० 'सिपर' ।

सिप्पा-पु० सीपका अर्धांश; ढब; निशाना; मतलब; काम निकालनेका उपाय, डौल, टिप्पस; धाक । **मु०-जमाना**-भूमिका बाँधना, डौल खड़ा करना । **-भिड़ना,-लड़ना**-मौका मिलना, उपाय लग जाना । **-भिड़ाना,-लड़ाना**-टिप्पस जमाना, तदवीर करना । **-मारना,-लगाना**-निशाना लगाना; फंदा लगाना, जाल डालना ।

सिप्रा-स्त्री० [सं०] स्त्रियोंका कटिबंध; भैंस; एक झील; उज्जैनके पासकी एक नदी ।

सिफ़त-स्त्री० [अ०] गुण, विशेषता; लक्षण; विशेषणपद ।

सिफ़र-पु० [अ०] विंदु; शून्य । वि० मूल्यरहित ।

सिफलगी-स्त्री० कमीनापन, नीचता ।

सिफ़ला-वि० [अ०] कमीना, नीच, क्षुद्र, छिछोरा । **-पन**-पु० ओछापन, नीचता ।

सिफ़ली-वि० [अ०] नीचेका, निचला । **-अमल**-पु० वह मंत्र जिसमें शैतान या प्रेतात्माओंसे सहायता ली जाय ।

सिफा-स्त्री० दे० 'शिफा' ।

सिफ़ारत-स्त्री० [अ०] सफीर (दूत)का पद या काम, दूतत्व; एक राज्यसे दूसरेको भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल । **-ख़ाना**-पु० दूतावास, राजदूतका दफ्तर ।

सिफ़ारिश-स्त्री० [फा०] किसीके विषयमें भलाईकी वात कहना; किसीका कोई काम करनेके लिए दूसरेसे कहना; किसीमें किसी पद, कार्य इत्यादिकी योग्यता वताना; खुशामद; जरीया (क०) ।**-नामा**-पु०सिफारिशी चिट्ठी ।

सिफ़ारिशी-वि० [फा०] जिसमें किसीकी सिफारिश की गयी हो; सिफारिश करनेवाला ।**-टट्टू**-पु० वह आदमी जो योग्यताके विना, महज सिफारिश या चापलूसीसे कोई पद पा जाय ।

सिफ़ाल-पु० [फा०] मिट्टीका बरतन; ठीकरा ।

सिफ़ाला-पु० [फा०] मिट्टीका वरतन; ठीकरा; खपड़ा ।

सिविका*-स्त्री० दे० शिविका' ।

सिमंत*-पु० दे० 'सीमंत' ।

सिमई-स्त्री० सिवई ।

सिमटना-अ० क्रि० सिकुड़ना, संकुचित होना; सिकुड़न पड़ना; एकत्र होना, वटुरना; लज्जित हो जाना, सहमना ।

सिमरना*-स० क्रि० दे० स्मरण, याद करना ।

सिमल-पु० हलका जूआ; जूएकी खूँटी ।

सिमाना†-पु० हद, सीवाना । * स०क्रि०दे० सिलाना ।

सिमिटना*-अ० क्रि० दे० सिमटना ।

सिमृति*-स्त्री० दे० 'स्मृति' ।

सिमेटना*-स० क्रि० दे० 'समेटना' ।

सिय*-स्त्री० सीता ।

सियना*-स० क्रि० सर्जन करना, बनाना, उत्पन्न करना; † सीना ।

सियरा*-वि० शीतल, ठंडा; कच्चा । पु० छाया;†सियार ।

सियराई*-स्त्री० शीतलता, ठंढक ।

सियराना-अ० क्रि० शीतल, ठंडा होना ।

सिया*-स्त्री० सीता, जानकी ।

सियादत-स्त्री० [अ०] सरदारी, वड़ाई; राज्य; सैयदजाति ।

सियाना†-वि० दे० 'सयाना' । स० क्रि० दे 'सिलाना' ।

सियापा-पु० स्त्रियोंका एकत्र होकर कुछ दिनोंतक मातम मनाना (पंजाब आदिका एक रिवाज); मातम ।

सियार†-पु० गीदड़, शृगाल ।**-लाठी**-स्त्री०अमलतास ।

सियाल*-पु० शृगाल, गीदड़ ।

सियाली†-वि० जाड़ेके मौसिमका; जाड़ेमें होनेवाली (फसल) । स्त्री० एक तरहका विदारी कंद ।

सियासत-स्त्री० [अ०] देशरक्षा; राज्यप्रवंध; राजकाज; दंड; शास्ति; दवदवा; भय; मारपीट । **-दाँ**-वि० राजनीतिज्ञ; शासनपटु ।

सियासी–वि० राज्यप्रबंध या राजकाजसे संबद्ध; राजनीतिक।

सियाह–वि० [फा०] काला, श्याम; अशुभ। **–कार**–वि०बदकार, दुराचारी; अत्याचारी।**–कारी**–स्त्री०बदकारी, पाप; जुल्म।**–चश्म**–वि० काली आँखोंवाला; बेमुरौवत, बेवफा। **–ज़बान**–वि० बदजबान; जिसका शाप जल्दी पड़े।**–दिल**–वि०बेमुरौवत; निर्दय।**–पोश**–वि० काले रंगके कपड़े पहननेवाला; शोक या मातम मनानेवाला। [**मु०–पोश होना**–मातम मनाना।] **–बख़्त**–वि० अभागा। **–सफ़ेद**–पु० भलाई-बुराई। **मु० (काग़ज) –करना**–लिखना; बहुत लिखना।

सियाहा–पु० [फा०] वह रोजनामचा जिसमें रोजका आमदनी-खर्च लिखा जाय, बही; वह बही जिसमें लगान या मालगुजारीकी वसूली लिखी जाय। **–नवीस**–पु० सियाहा लिखनेवाला; रजिस्टरमें आज्ञाएँ लिखनेवाला।

सियाही–स्त्री० [फा०] कालापन; कालिमा, कालिख; अंधकार; रोशनाई, मसि; दोष। **–चट,–सोख**–पु० स्याही सोखनेवाला कागज (ब्लाटिंग पेपर)।

सिर–पु० मनुष्य तथा अन्य जानवरोंका गरदनके ऊपरका हिस्सा; खोपड़ी, कपाल; किसी चीजका ऊपरका हिस्सा; चोटी; आरंभ; किनारा; सरदार; दिमाग; पिप्पलीमूल। **–कटा**–वि० जिसका सिर कटा हो; दूसरोंका सिर काटनेवाला, अपकारी। **–खप**–वि० सिर खपानेवाला, मेहनती; बहादुर। **–खपी**–स्त्री० जान लगाकर मेहनत करना। **–चंद**–पु० हाथीके मस्तकका एक अर्द्धचंद्राकार भूषण। **–चढ़ा**–वि० मुँहलगा, ढीठ। **–ताज**–पु० सरदार; मालिक; स्त्रियोंका एक सिरका गहना; पति, शौहर। **–त्राण***–पु० दे० ‘शिरस्त्राण’। **–दार***–पु० दे० ‘सरदार’। **–दारी***–स्त्री० दे० ‘सरदारी’। **–नामा**–पु० पत्रपर लिखा जानेवाला पता; लेखादिका शीर्षक। **–नेत**–पु० सिरकी पगड़ी–‘रे नेही मत डगमगै बाँधि प्रीति-सिरनेत’–रतन०। **–पाँव,–पाव***–पु० दे० ‘सिरोपाव’। **–पेँच,–पेच**–पु० पगड़ी; पगड़ीके ऊपरका छोटा कपड़ा; पगड़ीपर बाँधनेका एक गहना। **–पोश**–पु० सिरका आवरण। **–फूल**–पु० स्त्रियोंका एक शिरोभूषण। **–फेँटा,–बंद**–पु० पगड़ी। **–बंदी**–स्त्री० माथेपरका एक गहना। **–मगज़न**–पु० माथापच्ची। **–मनि***–पु० शिरोमणि। **–मुँड़ा**–वि० जिसके सिरके बाल मुँड़े हों; निगोड़ा (स्त्रि०)। **–मौर**–पु० दे० ‘सिरताज’। **–रुह***–पु० दे० ‘शिरोरुह’। **–हाना**–पु० खाटका वह हिस्सा जिधर सिर रहता है। **मु०–आँखोंपर,–आँखोंसे**–स्वीकार है, शौकसे। **–आँखोंपर बि(बै)ठाना**–बहुत इज्जत करना। **–आँखोंपर रखना**–बड़ी आवभगत करना। **–आँखोंपर होना**–खुशीसे स्वीकार होना। **–आना**–सिरपर वार करना; प्रेताविष्ट होना; किसीके पीछे पड़ना, झगड़ना। **–आ बनना**–इलजाम लगना; मुसीबत पाना। **–उकसाना**–सिर ऊँचा करना; बगावत करना। **–उठाकर चलना**–इतराना, गरूर करना। **–उठाना**–फुर्सत, साँस, अवकाश पाना; उपद्रव, फसाद करना; अकड़ दिखाना, घमंड करना; प्रतिष्ठा, आत्मसम्मानसे रहना। **–उठानेकी फुरसत नहीं**–जरा भी अवकाश नहीं। **–उड़ाना,–उतारना**–सिर काटना। **–ऊँचा करना**–आत्मसम्मानपूर्वक रहना। **(किसीका)–ऊँचा करना**–प्रतिष्ठा देना। **–कदमपर रखना**–पाँवपर सिर रखना, मिन्नत करना; इज्जत करना। **–करना**–जिम्मेवार बनाना; लड़ाना-भिड़ाना; जबर्दस्ती देना; चोटी गूँथना; ताश आदिकी बाजी जीतना। **–का पसीना पाँवको आना या पाँवपर बहना**–बहुत ज्यादा मेहनत करना। **–का बोझ उतरना**–किसी कामसे फुरसत पाना। **–का बोझ उतारना या टालना**–लापरवाहीसे कोई काम करना। **–की टली जानपर आयी**–एक तरफ संकट टला, दूसरी तरफसे आया।**–की सुध, न पाँवकी बुध**–कुछ होश नहीं, लापरवाह।**–के बल**–सिरके सहारे, अदबके साथ (चलना, जाना)। **–खपाना**–किसी काममें बहुत माथापच्ची करना। **–खाना**–व्यर्थकी बातोंसे परेशान करना; शोर मचाना।**–ख़ाली करना**–बेकार माथापच्ची करना; बकझक करना। **–खुजलाना,–खुजाना**–शामत आना, मार खानेको जी चाहना (व्यंग्य)।**–गंजा करना**–इतना मारना कि सिरपर बाल न रह जायँ; कंगाल कर देना। **–घुटनोंमें देना**–खिन्न होना; लज्जित होना।**–घूमना,–चकराना**–सिरमें दर्द होना; चक्कर आना; बेहोशी होना; पागल हो जाना। **–चढ़कर**–निडर होकर; खुद छेड़खानी करके।**–चढ़कर बोलना**–अपने आप भेद खुलना; भूत-प्रेत आदिके आवेशमें रोगीकी बकझक। **–चढ़कर लड़ना**–लड़ाई लेना; खाहमखाह छेड़खानी करना। **–चढ़ाकर पटकना**–आदर देकर अपमानित करना। **–चढ़ाना**–आदरका भाव दिखाना; गुस्ताख बनाना; देवी-देवताको बलि देना। **–जाना**–सिर कटना; किसीके जिम्मे पड़ना। **–जोड़कर बैठना**–मंत्र-परामर्शके लिए पास-पास बैठना।**–जोड़ना**–सिर मिलाना; एकत्र होना; मेल होना; राय करना; षड्यंत्र करना। **–झुकना**–सिर नीचा होना (लज्जा, पराजय आदिसे)। **–झुकाना**–नमस्कार करना; लज्जासे गर्दन नीची करना; चुपचाप स्वीकार कर लेना। **–तोड़ कोशिश करना**–बेहद कोशिश करना।**–थामकर बैठ जाना या बैठना**–शोक, क्षोभ, आघात आदिके वेगसे सिर पकड़कर बैठ जाना। **–थोपना**–किसीके जिम्मे करना; इलजाम लगाना। **–दबाना,–दाबना**–सिरकी मालिश करना; पराजित करना। **–दुखाना**–सिरमें दर्द पैदा करना; परेशान करना। **–देना**–प्राण निछावर करना, जान देना। **–दे मारना**–सिर पीटना (शोकादिमें)। **–धुनना**–शोक, पश्चात्ताप आदिके वेगसे सिर पीटना; शोक करना; पछताना। **–धोना**–सिरके बालोंको खली, मिट्टी वगैरह डालकर पानीसे साफ करना (स्त्रि०)। **–नंगा करना**–सिर खोलना; बेइज्जत करना। **–न उठाने देना**–दम भरकी मुहलत न देना, काममें लगाये रखना; सरकशी न करने देना; बोलनेकी फुरसत न देना।**–न पाँव,–न पैर**–बेतुका, बेतरतीब, क्रमहीन। **–नवाना**–नमस्कार करना; दीन बनना। **–नीचा करना**–लज्जित करना;

उदास होना। **–नीचा होना**–पराजित होना; लज्जित होना। **–पचाना**–सोच-विचार करनेमें हैरान होना। **–पटकना**–बहुत परिश्रम करना; सिर फोड़ना; तिलमिलाना; सिर धुनना, पछताना; नाराज होना; घबड़ाना। **–पड़ना**–जिम्मे पड़ना; हिस्सेमें आना। **–पड़ेका सौदा**–जिम्मे पड़ेका मामला, मजबूरीका सौदा। **–पर**–बहुत निकट, पास। **–पर अजल या मौतका खेलना या हँसना**–मृत्युके लक्षण दिखाई देना। **–पर आ चढ़ना**–पीछे पड़ जाना, छातीपर आ मौजूद होना। **–पर आ जाना**–बहुत समीप आ जाना, थोड़े ही दिन और रह जाना। **–पर आना**–बहुत पास आ जाना। **–पर आ पड़ना**–जिम्मे पड़ना; अपने ऊपर घटित होना। **–पर आ पहुँचना**–सन्निकट आना। **–पर आसमान उठाना**–बहुत शोर-गुल मचाना। **–पर आसमान टूटना**–बहुत बड़ी विपत्ति आना; दैवीकोप होना। **–पर उठाना, –पर उठा लेना**–बहुत ऊधम, शोर-गुल करना (घरको सिरपर उठा लेना)। **–पर कफ़न बाँधना**–मरनेके लिए तैयार रहना। **–पर क़यामत टूटना**–मुसीबत, विपत्ति आना। **–पर कोई न होना**–कोई मददगार या संरक्षक न होना। **–पर कोदों दलना**–दूसरेको जलानेके लिए कोई काम करना; सौत लाना। **–पर खड़ा होना**–सामने रहना; सन्निकट होना; बेअदबीसे खड़ा होना। **–पर ख़ून चढ़ना, –पर ख़ून सवार होना**–किसी हत्यारेपर हत्याका आवेश आना, हत्या करनेका लक्षण प्रकट होना। **–पर खेलना**–प्रेतका सिरपर आकर बातें करना, सिरपर आना; जान जोखिममें डालना। **–पर चढ़ना**–मुँह लगना। **–पर चढ़ाना**–इज्जत करना; बढ़ावा देना, मुँहलगा करना। **–पर चिल्लाना**–पास आकर शोर करना। **–पर छत उठा लेना**–बहुत हल्ला-गुल्ला करना, चिल्लाना। **–पर जहान भरका बेड़ा उठा लेना**–बड़ा झगड़ा मोल लेना, बूतेसे बाहर काम ले बैठना। **–पर जिन खेलना**–अभुआना, प्रेतके आवेशमें अंगोंका अस्वाभाविक परिचालन और प्रलाप करना। **–पर जिन सवार होना**–भूत-प्रेतका सिरपर आना; जिद, हठ होना। **–पर जूँ न रेंगना**–चेत न होना, होश न होना। **–पर ढोल बजाना**–शोर-गुल करना, चिल्लाना। **–पर नक्क़ारा बजना**–हंगामा, शोर-गुल होना। **–पर न रहना**–किसी बड़े-बूढ़े, अभिभावक, मददगारका मर जाना। **–पर पड़ना**–माथे होना, जिम्मे होना। **–पर पत्थर ढोना**–बड़ी तकलीफसे जिंदगी बिताना, अत्यधिक कष्ट सहना; बहुत मेहनत करना। **–पर पहाड़ गिरना**–मुसीबत आ पड़ना। **–पर पाँवका जूता टूटना**–जूतोंसे किसीका इतना पीटा जाना कि जूता टूट जाय। **–पर पाँव रखकर उड़ जाना**–तेजीसे भाग जाना। **–पर पाँव रखना**–बहुत जल्द भाग जाना; उद्दंडताका व्यवहार करना। **–पर पृथ्वी उठाना**–बहुत उत्पात करना; बहुत परिश्रमका काम करना। **–पर बाल होना**–बोलनेकी ताकत होना, मजाल होना। **–पर बि(बै)ठाना**–सम्मानपूर्वक पास बैठाना; बहुत इज्जत करना। **–पर बोझ पड़ना**–अहसानमंद होना; चिंतित होना; जिम्मेवारी पड़ना। **–पर बोलना**–मंत्रबलसे साँपकाटे रोगीका साँपकी ओरसे बोलना, बात करना। **–पर भूत सवार होना**–बदहवास होना; पागल होना; किसी बातकी धुन होना; सिरपर भूत-प्रेतका आना। **–पर मौतका खेलना**–मौत निकट आना। **–पर रखना**–आदरार्थ कोई चीज सिरपर रखना; आदर देना। **–पर शैतान चढ़ना या सवार होना**–दुराग्रह, हठ होना; क्रोध चढ़ना; पापकी प्रवृत्ति होना। **–पर सनीचर सवार होना**–मुसीबत आना। **–पर सफ़ेदी आना**–बुढ़ापा आना। **–पर सवार रहना**–धृष्ट होना; साथ रहना; साथ न छोड़ना; कड़ाईसे निगरानी करना। **–पर सवार होना**–भूत-प्रेतका साया, प्रभाव होना; किसी बातकी धुन होना। **–पर साया रखना**–किसीका अभिभावकत्व करना; कृपा रखना। **–पर हाथ फेरना**–धीरज, दिलासा देना; प्यार करना। **–पर होना**–सहायक, समर्थक होना; जिम्मे पड़ना; थोड़े दिनकी अवधि रह जाना, बहुत निकट आ पड़ना। **–पाँव न होना**–सिलसिला न होना, बेढंगा होना। **–पाँवपर धरना**–पैरों पड़ना, दीनता प्रकट करना। **–पैर न होना**–आदि और अंतका न होना। **–फट जाना**–सिर फूटना, सिरपर गहरी चोट लगना (लाठी आदिसे)। **–फटा जाना, –फटा पड़ना**–सिर और आँखोंमें अत्यधिक पीड़ा होना। **–फिर जाना**–सिर चकराना; पागल होना। **–फूटना**–सिरका घायल होना (ईंट, पत्थर, लाठी आदिकी चोटसे)। **–फोड़ना**–सिर दे मारना, पत्थर, ईंट आदिसे सिरको चुटीला करना। **(किसीके)–बीतना**–सिरपर पड़ना। **–मग़ज़न करना**–बकवास करना। **–मढ़ना**–बलपूर्वक किसीके जिम्मे लगाना। **–मारते फिरना**–सिर टकराते फिरना; कठिनाइयोंसे जान-बूझकर उलझना। **–मारना**–समझाते-समझाते हैरान होना; सोचने-विचारनेमें हैरान होना; अत्यधिक परिश्रम करना; चिल्लाना। **–मुँड़ाते ही ओले पड़ना**–आरंभमें ही विघ्न-बाधा पड़ना। **–मुँड़ाना**–बाल घुटाना; साधु हो जाना। **–में बाल होना**–मार खाने, झेलनेकी ताकत होना। **–रँगना**–सिर फोड़ना, लहू-लुहान करना। **–से कफ़न बाँधना**–मरनेके लिए तैयार होना। **–से खेल जाना**–मरनेके लिए तैयार हो जाना; बड़ी दिलेरीका काम करना। **–से जिन उतारना**–क्रोध धीमा करना; भय दूर करना। **–से टलना**–पीछा छूटना। **–से पाँवतक**–आदिसे अंततक; ऊपरसे नीचेतक, तमाम। **–से पैरतक**–आदिसे अंततक; ऊपरसे नीचेतक। **–से पैरतक आग लगना**–अत्यधिक क्रोध चढ़ना। **–से बेगार टालना**–बेदिलीसे काम करना। **–से बोझ उतरना**–निश्चितता, बेफिक्री होना, झंझट दूर होना। **–से बोझ उतारना**–बोझ टालना; किसी भार और दायित्वसे मुक्ति प्राप्त करना। **–से लगाना**–आदर, सम्मान करना। **–से साया उठना**–अभिभावक, गुरुजनका देहावसान होना। **(किसीके)–से सेहरा बँधना**–औरोंसे अधिक सफलता या यश प्राप्त करना। **–हथेली पर धरना, रखना, लिये फिरना, लेना**–बहादुरीसे जान देनेके लिए तैयार रहना, जान-बूझकर

दिलेरीसे मौतका सामना करना। **–हिलाना**–सिरको ऊपर-नीचे या अगल-बगल हिलाना (प्रशंसा, स्वीकृति, अस्वीकृति आदिकी सूचनाके लिए)। **(किसीका किसीके)–होना**–पीछा न छोड़ना, पीछा करना; बार-बार किसी चीजका आग्रह करके परेशान करना; उलझ पड़ना, झगड़ा करना। **(किसी बातके)–होना**–समझ लेना, ताड़ लेना।

सिरई–स्त्री० सिरहानेकी पाटी।

सिरका–पु० [फा०] धूपमें सड़ाकर खमीर उठाया हुआ ईख, अंगूर आदिका रस।

सिरकी–स्त्री० सरकंडा, सरहरी; सरकंडेकी बनी हुई टट्टी।

सिरगा*–पु० घोड़ोंकी एक जाति।

सिरजक*–पु० सृष्टिकर्ता, बनानेवाला।

सिरजन*–पु० निर्माण, सृष्टि करना। **–हार**–पु० कर्तार, निर्माता, स्रष्टा।

सिरजना*–स० क्रि० उत्पन्न करना, रचना, बनाना; संचय करना। स्त्री० सृष्टि, रचना।

सिरजित*–वि० रचा हुआ, सृष्ट।

सिरस, सिरिस–पु० दे० 'शिरीष'।

सिरहाना–पु० दे० 'सिर'में।

सिरा–पु० अंतका भाग, छोर; शुरूका भाग; ऊपरका भाग; अगला भाग; नोक। **–(रे)का**–परले दरजेका।

सिरा–स्त्री० [सं०] रक्तनलिका, धमनी, नाड़ी; नाड़ी जैसा जलका तंग सोता, जलकी संकीर्ण प्रणाली; नसोंकी तरह एक-दूसरीको काटनेवाली रेखाएँ; डोल। **–जाल**–पु० नाड़ियोंका जाल; आँखकी केशिकाओं (सूक्ष्म धमनियों)-का शोथ। **–प्रहर्ष**–पु० दे० 'सिराहर्ष'। **–हर्ष**–पु० नाड़ियोंका पुलक; आँखके डोरोंकी लालीका बढ़ जाना।

सिराजी–पु० शीराजका घोड़ा।

सिरात–स्त्री० [अ०] रास्ता, सड़क; मुसलमानोंके विश्वासानुसार कयामतके दिन दोजखपर बनाया जानेवाला पुल।

सिराना*–अ० क्रि० ठंढा होना; बीतना, समाप्त होना –'चरचहिं सिगरी रैन सिरानी'–प्रागनि; दूर होना; उत्साह ढीला पड़ना; शांत होना, हार मान लेना। स० क्रि० ठंढा करना; पानीमें डुबाना–'तुलसी भाँवरके परे नदी सिरावत मौर'–तुलसी; खतम करना; बिताना।

सिरावन–पु० हेंगा, पाटा, पटेला।

सिरावना*–स० क्रि० दे० 'सिराना'।

सिरिख*–पु० दे० 'शिरीष'।

सिरिश्ता–पु० दे० 'सरिश्ता' (समास भी)।

सिरी–स्त्री० * लक्ष्मी, ऐश्वर्य; शोभा, सौंदर्य; रोली; सिरका एक गहना। **–पंचमी**–स्त्री० वसंत पंचमी।

सिरीस–पु० दे० 'शिरीष'।

सिरोपाउ*–पु० दे० 'सिरोपाव'।

सिरोपाव–पु० सिरसे पैरतकका पहनावा जो बादशाहकी ओरसे सम्मानार्थ मिलता था, खिलअत।

सिरोमनि*–पु० दे० 'शिरोमणि'।

सिरोरुह*–पु० दे० 'शिरोरुह'।

सिरोही–पु० तलवारके लिए प्रसिद्ध राजपूतानाका एक स्थान। स्त्री० तलवार; † एक चिड़िया।

सिर्का–पु० दे० 'सिरका'।

सिर्फ़–वि० [अ०] खालिस; अकेला; केवल। अ० केवल।

सिल–स्त्री० शिला, चट्टान; मसाला आदि पीसनेकी पत्थरकी चौकोर पटिया; इमारतमें लगानेकी गढ़ी हुई पटिया; पूनी बनानेकी काठकी पटरी। पु० उंछ वृत्ति। **–बट्टा**–पु० सिल और लोढ़िया। **–वट**–पु० सिल; सिल और बट्टा। स्त्री० दे० क्रममें।

सिलगना*–अ० क्रि० दे० 'सुलगना'।

सिलप*–पु० दे० 'शिल्प'।

सिलपट–वि० चौरस, बराबर; साफ, चौपट। पु० चप्पल।

सिलवट–स्त्री० शिकन, सिकुड़न। पु० दे० 'सिल'में।

सिलवाना–स० क्रि० किसीसे सीनेका काम कराना।

सिलसिला–* वि० आर्द्र, चिकना–'ऐसी सिलसिली ओप सुंदर कपोलनकी खिसिल खिसिल परै दीठि जिन परतें'–सुंदर०। पु० [अ०] कड़ी, शृंखला; बेड़ी; पंक्ति; क्रम, तरतीब; वंश; कुरसीनामा; लगाव, संबंध(जोड़ना,तोड़ना)। **–(ले)वार**–वि० क्रमयुक्त, तरतीबवार।

सिलह–पु० [अ०] हथियार, आयुध। **–ख़ाना**–पु० अस्त्रागार। **–पोश**–वि० हथियारोंसे लैस, शस्त्रसन्नद्ध।

सिलहिला–वि० पंक आदिके कारण चिकना, जिसपर पैर फिसले, पिच्छल।

सिला–* स्त्री० दे० 'शिला'। पु० फसल कटनेके बाद खेतमें गिरे हुए दाने; उंछ वृत्ति; फटकनेके लिए रखा हुआ गल्लेका ढेर। **–जीत**–पु० दे० 'शिलाजतु'। **–रस**–पु० सिल्हक वृक्ष; उसका निर्यास। **–वट**–पु० दे० क्रममें।

सिलाई–स्त्री० सीनेका काम या मजदूरी; सीयन, टाँका; सीनेका ढंग।

सिलाना–स० क्रि० दे० 'सिलवाना'; दे० 'सिराना'।

सिलाबी–वि० सैलाबी; गीला, नम।

सिलावट–पु० पत्थर काटनेवाला, संगतराश।

सिलाह–पु० [अ०] हथियार, आयुध। **–ख़ाना**–पु० शस्त्रागार। **–पोश,–बंद**–वि० हथियारबंद।

सिलाही–पु० सैनिक, सिपाही।

सिलिप*–पु० शिल्प, कारीगरी।

सिलीपट–पु० [अं० 'स्लीपर'] लकड़ी आदिकी वह पटिया जिसपर रेल बिछायी जाती है।

सिलीमुख–पु० दे० 'शिलीमुख'।

सिलेट–स्त्री० दे० 'स्लेट'।

सिलोच्च*–पु० एक पर्वत जो रामको जनकपुरकी यात्राके मार्गमें मिला था।

सिलौट, सिलौटा–पु० सिल; सिल और बट्टा।

सिलौटी–स्त्री० भाँग आदि पीसनेकी छोटी सिल।

सिल्क–पु० [अं०] रेशम; रेशमी वस्त्र।

सिल्ला–पु० कटनीके बाद खेतमें गिरे हुए दाने; खलियानमें गिरा हुआ अन्न।

सिल्ली–स्त्री० उस्तुरा आदि तेज करनेका पत्थर; पत्थरकी पटिया; फटके जानेवाले अनाज या भूसेका ढेर।

सिव*–पु० दे० 'शिव'। **–लिंग**–पु० दे० 'शिवलिंग'।

सिवइँ–स्त्री० आटे या मैदेके सुखाये हुए लच्छे जिन्हें घीमें तलनेके बाद चीनीके साथ दूधमें पकाकर खाते हैं।

सिवा–अ० [अ०] अलावा, छोड़कर, अतिरिक्त। वि० अधिक, बढ़ा हुआ। * स्त्री० पार्वती; शृगाली।

सिवाइ–अ० दे० ‘सिवा’।

सिवान–पु० सीमांत, सरहद; गाँवकी सीमावर्ती भूमि।

सिवाय–अ०, वि० दे० ‘सिवा’।

सिवार–पु० एक जलीय पौधा, शैवाल।

सिवाल–पु० दे० ‘सिवार’।

सिवाला–पु० शिवालय, मंदिर।

सिविका*–स्त्री० दे० ‘शिविका’।

सिविर*–पु० दे० ‘शिविर’।

सिवैयाँ–स्त्री० दे० ‘सिवईं’।

सिष, सिष्य*–पु० दे० ‘शिष्य’।

सिष्ट*–स्त्री० वंसीकी डोरी। वि० दे० ‘शिष्ट’।

सिस*–पु० दे० ‘शिशु’–‘बदन चंदके लखनको सिस ज्यों बिरझत नैन’–रतन०।

सिसकना–अ० क्रि० भीतर ही भीतर रोना, खुलकर न रोना; सिसकी भरना; व्याकुल होना।

सिसकारना–अ० क्रि० मुँहसे सीटीकी सी आवाज निकालना; शीत्कार करना। स० क्रि० (कुत्तोंको) आक्रमण करनेके लिए बढ़ावा देना, लहकारना।

सिसकारी–स्त्री० मुँहसे निकाली हुई सीटीकी सी आवाज; लहकारनेकी क्रिया; शीत्कार।

सिसकी–स्त्री० सिसकनेकी आवाज; शीत्कार।

सिसिर*–पु० दे० ‘शिशिर’।

सिसु*–पु० दे० ‘शिशु’। **–पाल**–पु० दे० ‘शिशुपाल’। **–मार**–पु० दे० ‘शिशुमार’।

सिसुता*–स्त्री० बचपन, शैशव।

सिस्टि*–स्त्री० दे० ‘सृष्टि’।

सिस्य*–पु० दे० ‘शिष्य’।

सिहरन–स्त्री० सिहरनेकी क्रिया, कंपन।

सिहरना–अ०क्रि० काँपना; ठंढसे काँपना; भयभीत होना, दहल जाना; रोमांच होना।

सिहरा–पु० दे० ‘सेहरा’।

सिहराना†–स० क्रि० कँपाना; भयभीत करना; सहलाना। अ० क्रि० दे० ‘सिहलाना’।

सिहलाना–अ०क्रि०ठंढा होना; सरदी खाना; ठंढ पड़ना।

सिहरी–स्त्री० कँपकँपी; भय; रोमांच; जूड़ीका बुखार।

सिहाना*–अ० क्रि० ईर्ष्या करना; ललचना; देखकर प्रसन्न होना; मुग्ध होना। स० क्रि० ईर्ष्या या तृष्णाकी दृष्टिसे देखना; प्रशंसा करना।

सिहारना*–स० क्रि० ढूँढना; ढूँढ़कर लाना।

सिहिटि*–स्त्री० सृष्टि।

सिहोड़, सिहोर†–पु० थूहर, सेहुँड़।

सींक–स्त्री० मूँजकी जातिके एक तृणकी तीली जिसकी झाड़ू बनाते हैं; किसी घासका लंबा-पतला डंठल; नाकमें पहननेकी कील।

सींका–पु० पेड़-पोधोंकी बहुत पतली टहनी। दे० ‘छीका’

सींकिया–वि० सींकसा पतला। पु० एक धारीदार कपड़ा। **–पहलवान**–पु० बहुत दुबला-पतला आदमी जो अपने आपको बली समझे (व्यंग्य)।

सींग–पु० गाय, बैल, भैंसे, मेढ़े, हिरन आदिके सिरके दोनों ओर निकली हुई कड़ी नुकीली शाखा जैसी चीज जिससे वे दूसरे प्राणियोंपर आघात करते हैं, शृंग, विषाण सींगका बना हुआ बाजा, सींगी। मु० **–कटा(तुड़ा)कर बछड़ोंमें मिलना**–बूढ़ा या बड़ी उम्रका होकर भी बच्चोंके से काम करना, उनकी सुहबत करना। मु० **–निकलना**–(ला०) सनक जाना। **–पूँछ गिरा देना**–अति दीन बन जाना। **–समाना**–स्थान, मौका मिलना, ठिकाना दिखाई देना (जहाँ सींग समाये वहाँ चले जाओ)। **(सिरपर, में)–होना**–कोई विशेषता, कोई विशेष चिह्न होना (क्या बेवकूफके सिरमें सींग होते हैं)।

सींगड़ा–पु० सींगका बना हुआ चोंगा जिसमें बारूद रखते हैं, बारूददान; सींगी।

सींगी–स्त्री० हिरनके सींगका बना हुआ बाजा; सूराखदार सींग जिसे शरीरपर लगाकर खराब खून निकालते हैं। मु० **–लगाना**–सींग लगाकर रक्त चूसना।

सींच–स्त्री० सींचनेकी क्रिया, सिंचाई।

सींचना–स० क्रि० पेड़-पौधोंको पानी देना, सिंचाई करना; तर करना; छिड़कना।

सींवँ, सींव*–स्त्री० सीमा, हद। मु० **–चरना**–जोर-जबरदस्ती करना, कष्ट पहुँचाना।

सी–अ० ‘सा’का स्त्रीलिंग रूप, सदृश, समान। स्त्री० पीड़ाकी हलकी अनुभूति होने या सरदी लगनेपर मुहँसे निकलनेवाली आवाज, सीत्कार।

सीउ*–पु० दे० ‘शीत’।

सीकर–पु० [सं०] पानीका छींटा, जलकण, शीकर; स्वेद-बिंदु; * गीदड़–‘सीकर स्वान कागका भोजन तनकी यहै बड़ाई’–बीजक। * स्त्री० सिकड़ी, जंजीर।

सीकल–पु० दे० ‘सैकल’, सिकली; † डालका पका हुआ आम।

सीकस*–पु० ऊसर, बंजर भूमि।

सीका–पु० शिरोभूषण; दे० ‘छीँका’।

सीकाकाई–स्त्री० एक वृक्ष जिसकी फलियोंका झाग बाल मलनेके काम आता है।

सीख–स्त्री० सिखावन, शिक्षा; सलाह। मु० **–लेना**–शिक्षा, उपदेश ग्रहण करना।

सीख़–स्त्री० [फा०] लोहेकी सलाख या छड़ जिसपर कबाब भूनते हैं; सूआ; छड़के आकारकी लकड़ी जिससे बोरियोंका मुँह बाँधते हैं।

सीखन*–पु० सिखावन, सीख।

सीखना–स० क्रि० किसी विषयका ज्ञान प्राप्त करना, पढ़ना; किसी हुनर या कलाकी शिक्षा प्राप्त करना, अभ्यास करना (सितार सीखना); शिक्षा ग्रहण करना, अनुभव प्राप्त करना (आदमी कुछ खोकर सीखता है)।

सीखा-पढ़ा–वि० शिक्षित, जानकार; चतुर।

सीखा-सिखाया–वि० शिक्षित, कुशल; किसी कला या हुनरका जानकार।

सीग़ा–पु० [अ०] साँचा; विभाग; क्रियाका रूप (काल, पुरुष, प्रयोग आदिकी दृष्टिसे); शीओंका निकाह।

सीजना–अ० क्रि० दे० ‘सीझना’।

सीझ–स्त्री० सीझने, पकनेकी क्रिया, पकाव।

सीझना–अ० क्रि० आग और पानीकी सहायतासे पकना; पककर नरम होना; गलना–'रहिमन नीर पखान भीजै पै सीझै नहीं'–रहीम; चमड़ेका सिझावसे नरम, चिकना होना; पगना; कष्ट पाना; तपस्या करना; ठंढ खाना; पसेव निकलना; रिसना; प्राप्त होनेकी स्थितिमें होना (जैसे ब्याज आदि); ऋणका भुगताया जाना।

सीटी–स्त्री० दोनों होठोंको सिकोड़कर बीचसे हवा निकालनेसे पैदा होनेवाली सुरीली आवाज; छोटा बाजा जिसे मुँहसे फूँकनेसे इस तरहकी आवाज निकलती है; बाजे आदिसे निकला हुआ सीटी जैसा शब्द। **–बाज़**–पु० सीटी बजानेवाला। **मु०–देना**–सीटी बजाना; सीटी बजाकर कोई संकेत करना; रेलका खुलनेके पहले इंजनमें लगे हुए यंत्रसे सीटीकी सी आवाज निकालना।

सीठा–वि० फीका, बेमजा। **–पन**–पु० नीरसता।

सीठी–स्त्री० रस चूस या निकाल लिये जानेपर बचा हुआ फोक या फुजला; साररहित वस्तु।

सीड़–स्त्री० दे० 'सील' (आर्द्रता, नमी)।

सीढ़ी–स्त्री० ऊँचे नीचे स्थानपर चढ़ने-उतरनेके लिए बना हुआ लकड़ी, पत्थर, लोहे आदिके डंडों या पायोंका सिलसिला, जीना, निसेनी; उन्नति-क्रम।

सीत*–पु० दे० 'शीत'। **–कर***–पु० चंद्रमा।

सीतल*–वि० दे० 'शीतल'। **–चीनी**–स्त्री० दे० 'शीतल-चीनी'। **–पाटी**–स्त्री० दे० 'शीतल-पाटी'।

सीतला–स्त्री० दे० 'शीतला'। **–माई**–स्त्री० शीतलादेवी।

सीता–स्त्री० [सं०] हलके फालसे धरतीमें बननेवाली रेखा, कूँड़; जोती हुई जमीन; कृषिकर्म; फाल; सीरध्वज जनककी कन्या जो रामको ब्याही गयी। **–जानि,–नाथ,–पति**–पु० रामचंद्र। **–फल**–पु० शरीफा; कुम्हड़ा। **–रमण**–पु० राम। **–रवन,–रौन***–पु० दे० 'सीतारमण'। **–वर,–वल्लभ**–पु० रामचंद्र। **–हरण**–पु० सीताका रावण द्वारा अपहरण।

सीताध्यक्ष–पु० [सं०] राजाकी सीरका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

सीत्कार–पु०, **सीत्कृति**–स्त्री० [सं०] 'सी-सी'की ध्वनि; सिसकी।

सीथ*–पु० पके हुए चावल या जूठनका दाना–'बचे सीथ संतनके पाऊँ'–ललितकि०।

सीथि*–पु० दे० 'सीथ'।

सीदना*–अ० क्रि० कष्ट पाना।

सीध–स्त्री० सीधा होनेका भाव; ठीक सामनेकी दिशा; ऋजुता।

सीधा–पु० भोजनकी असिद्ध, कच्ची सामग्री (चावल, दाल, आटा आदि) जो किसीको पकाकर खानेके लिए या दानरूपमें दी जाय। वि० जो ठीक सामनेकी ओर या किसी एक ही दिशामें गया हो, जिसमें टेढ़ापन या घुमाव न हो, सरल, ऋजु; खड़ा; जो शरीर, फसादी, लड़ाका न हो, भला; जिसमें ऐंठ, अकड़, बनावट आदि न हो, भोला-भाला, बिना छक्के-पंजेका; खुला, साफ, बिना ऐंच-पेंचका (सीधा जवाब), आसान (काम); जो कटहा, मरकहा न हो (गाय, घोड़ा), नम्र, विनीत; दाहिना (सीधा हाथ)। अ० ठीक सामने; बिना मुड़े-घूमे; बिना और कहीं गये या रुके (सीधा घरका रास्ता लिया)। **–उलटा**–दे० वि० 'उलटा सीधा'। **–पन**–पु० सिधाई; भोलापन। **–सादा(धा)**–वि० भोला-भाला, सरलस्वभाव। **–तीरसा**–बिलकुल सीधा, ठीक सामने (सीधा तीरसा गया) **मु०–आना**–सामनेसे आना; सामना करना, भिड़ना (दिल्ली)। **–करना**–वक्रता, कुटिलता, ऐंठ, अकड़ दूर करना, सीधी राहपर लाना; ठोंक-पीटकर ठीक करना; निशाना बाँधनेके लिए तीर, बंदूकको लक्ष्यके सामने करना। **–होना**–सीधा किया जाना, ऐंठ, कुटिलता आदि दूर होना; आमादा होना; मेहरबान होना।

सीधी–वि०, स्त्री० दे० 'सीधा'। **–तरह**–अ० भलमनसीसे, सिधाईसे। **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० कृपादृष्टि, प्रसन्नतासूचक दृष्टि। **–बात**–स्त्री० खुली, साफ बात, आसानीसे समझमें आनेवाली बात। **–राह**–स्त्री० भलाईका रास्ता, सत्पथ। **–लकीर**–स्त्री० सरल रेखा। **मु०–उँगलियों घी नहीं निकलता**–नरमीसे काम नहीं चलता। **–सुनाना**–खरी-खरी कहना; खुली गालियाँ देना।

सीधे–अ० ठीक सामने, बिना मुड़े-झुके; बिना और कहीं गये या रुके; सिधाईसे; नरमी, भलमनसीसे। **–मुँह**–अ० शिष्टता, भलमनसीसे (सीधे मुँह बात न करना)। **–से**–भलमनसीसे, सिधाईसे।

सीन–पु० [अं०] दृश्य, नज्जारा; नाटकका कोई परदा, गर्भांक; नाटक या कहानीमें वर्णित घटनाओंके घटित होनेका स्थान, घटनास्थल। **–सीनरी**–स्त्री० रंग-मंचकी सजावटका सामान।

सीनरी–स्त्री० [अं०] किसी स्थानके प्राकृतिक दृश्य; रंग-मंचकी सजावटका सामान।

सीना–स० क्रि० सूई या सुएसे किये हुए छेदोंसे तागा निकालकर कपड़े, टाट, चमड़े आदिके टुकड़ोंको जोड़ना, टाँका मारना, सिलाई करना। **–पिरोना**–स० क्रि० सिलाई-बुनाईका काम करना। पु० सिलाईका काम।

सीना–पु० [फा०] छाती। **–ज़ोर**–वि० बली, जबरदस्त। **–ज़ोरी**–स्त्री० जबरदस्ती, धींगा-धींगी। **–बंद**–पु० अँगिया; घोड़ेकी पेटी जो तंगके ऊपर कसी जाती है; वह कपड़ा जो बच्चोंकी छातीपर इसलिए बाँध देते हैं कि राल टपकनेसे और कपड़े खराब न हों; रुईदार फतुही या वास्कट।

सीप–पु०, स्त्री० शंख, घोंघे आदिकी जातिका एक जलजीव, शुक्ति; इस कीड़ेका किश्तीनुमा, कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनाते हैं और जिसका भस्म दवाके काम आता है। **–ज***–पु० मोती। **–सुत***–पु० मोती।

सीपति*–पु० दे० 'श्रीपति'।

सीपर*–स्त्री० दे० 'सिपर'।

सीपिज*–पु० मोती।

सीपी–स्त्री० दे० 'सीप'।

सीबी*–स्त्री० 'सी-सी'का शब्द, सीत्कार।

सीमंत–पु० [सं०] सिरमें निकाली हुई माँग; हद, सीमारेखा; सीमंतोन्नयन संस्कार; हड्डियोंका जोड़, अस्थि-

संघात। -करण-पु० माँग काढ़ना।

सीमंतोन्नयन-पु० [सं०] द्विज स्त्रियोंके लिए विहित बारह संस्कारोंमेंसे एक, जो गर्भवतीको गर्भके चौथे, छठे या आठवें महीने करना होता है।

सीम*-स्त्री० दे० 'सीमा'। मु०-काँड़ना,-चरना-दे० 'सीँव' के साथ। -चाँपना-हद दबाना, दूसरेकी हदमें घुसकर उसकी जमीनपर कब्जा करना।

सीमल*-पु० सेमल।

सीमांकन-पु० [सं०] (डिमार्केशन) (किसी खेत, भूक्षेत्र आदिकी) सीमा निश्चित या निर्धारित करना।

सीमांत-पु० [सं०] हद, सीमा; सिवाना, सीमावर्ती स्थान। -पूजन-पु० सीमाकी पूजा; गाँवकी सीमाके पास आनेपर की जानेवाली वरकी पूजा। -प्रदेश-पु० सरहदी इलाका।

सीमा-स्त्री० [सं०] हद; सिवाना; खेत, गाँव आदिकी सीमापरका बाँध या मेंड़; सीमाचिह्न; बाँध; किनारा, कूल; चरम बिंदु। -गुल्म-पु० (बैरियर) सीमापर स्थित चौकी। -चिह्न-पु० (लैंडमार्क) किसी देश, स्थान आदिकी सीमा बतानेवाला पदार्थ; देश, जाति या व्यक्तिके इतिहासकी कोई मुख्य परिवर्तनकारी घटना। -पारण, -प्रक्षेपण-पु० (बाउंडरी) बल्लेसे गेंदपर इतने जोरका प्रहार करना कि वह खेलके मैदानकी बाहरी सीमातक पहुँच जाय या उसके पार हो जाय। -बद्ध-वि० जिसकी सीमा बाँध दी गयी हो, परिमित। -शुल्क-पु० (कस्टम्स ड्यूटी) बाहर जानेवाले या भीतर आनेवाले मालपर देशकी सीमाके समीप वसूल किया जानेवाला शुल्क।

सीमातिक्रमण-पु० [सं०] सीमोल्लंघन।

सीमेंट-पु० [अं०] पत्थरका विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ चूर्ण जो पलस्तर आदि करनेके काम आता है।

सीमोल्लंघन-पु० [सं०] सीमा पार करना।

सीय*-स्त्री० सीता।

सीयन†-स्त्री० सिलाई; सिलाईका जोड़।

सीयरा*-वि० दे० 'सियरा'।

सीर-पु० [सं०] हल; हलमें जोता जानेवाला बैल; सूर्य; आक। -धर-पु० बलराम। -ध्वज-पु० राजा जनक; बलराम। -पाणि,-भृत्-पु० बलराम। -वाह,-वाहक-पु० हल जोतनेवाला, हलवाहा।

सीर-स्त्री० वह जमीन जिसे जमींदार खुद जोतता हो। पु० रक्तनलिका। * वि० ठंढा, शीतल। मु०-करना-जमींदारका किसी जमीनको खुद जोतना, काश्त करना। -खुलवाना-फस्द खुलवाना।

सीरख, सीरष*-पु० दे० 'शीर्ष'।

सीरनी-स्त्री० दे० 'शीरीनी'।

सीरा-पु० दे० 'शीरा'; सिरहाना। * वि० ठंढा; शांत।

सीरायुध-पु० [सं०] बलराम।

सील-स्त्री० जमीनकी नमी, सील। * पु० दे० 'शील'। -वंत,-वान-वि० सुशील।

सीला-पु० डाँठसे झड़े हुए दाने जो फसल काटनेके बाद खेतमें पड़े रह जाते हैं, शिल; ऐसे दानोंको चुनकर निर्वाह करनेकी वृत्ति, उंछ वृत्ति। वि० नम, जिसमें सील हो।

सीवँ-स्त्री० दे० 'सीमा'।

सीवक-पु० [सं०] सीनेवाला।

सीवन-स्त्री० [सं०] सिलाई, सूचीकर्म; टाँका; संधि।

सीस-पु० [सं०] सीसा। -अंकनी-स्त्री० (लेडपेंसिल) सीसेकी बनी पेंसिल। -ज-पु० सिंदूर।

सीस*-पु० सिर, शीर्ष। -ताज-पु० वह टोपी जिससे शिकारके लिए पाले हुए बाज आदिका सिर, आँख ढककर रखी जाती है और शिकारके वक्त खोली जाती है, कुलहा। -त्रान*-पु० दे० 'शिरस्त्राण'। -फूल-पु० सिरपर पहननेका एक गहना।

सीसक-पु० [सं०] सीसा।

सीसम-पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी दरवाजा, टेबुल, कुरसी आदि बनानेके काम आती है।

सीसमहल-पु० वह कमरा या मकान जिसकी दीवारोंपर हर जगह शीशा जड़ा हो।

सीसा-पु० एक प्रसिद्ध मूल धातु जिसकी चादरें, गोलियाँ आदि बनती और जिसका भस्म ओषधरूपमें प्रयुक्त होता है; * शीशा।

सीसी-स्त्री० 'सी-सी'की आवाज; * शीशी।

सीसौं, सीसो†-पु० सीसम।

सीह*-स्त्री० गंध। पु० दे० 'सिंह'।

सुँ*-अ० दे० 'सों'।

सुंगवंश-पु० अंतिम मौर्य सम्राट् बृहद्रथके सेनापति पुष्पमित्र द्वारा संस्थापित राजवंश।

सुँघनी-स्त्री० सूँघनेकी चीज; तंबाकूके पत्तेका बारीक चूर्ण, नास।

सुँघाना-स० क्रि० किसीकी नाकके पास कोई चीज इस उद्देश्यसे लगाना कि वह उसकी गंध ग्रहण करे, आघ्राण कराना।

सुंड-पु० दे० 'शुंड'। -भुसुंड*-पु० हाथी।

सुंडा-स्त्री० सूँड़; लद्दू गधेकी पीठपर रखनेका गद्दा।

सुंदर-वि० [सं०] जो आँखोंको अच्छा लगे, सुरूप, खूबसूरत, शोभन; भला, अच्छा।

सुंदरता-स्त्री०, **सुंदरत्व**-पु० [सं०] सौंदर्य, खूबसूरती।

सुंदरताई*-स्त्री० दे० 'सुंदरता'।

सुंदरम्मन्य-वि० [सं०] अपनेको सुंदर माननेवाला।

सुंदराई*-स्त्री० सुंदरता।

सुंदरी-वि०,स्त्री० [सं०] रूपवती। स्त्री० सुंदर स्त्री; त्रिपुरसुंदरी देवी; सवैया छंद; एक वर्णवृत्त।

सुँधाई, सुँधावट-स्त्री० सोंधापन।

सुंबा, सुंभा-पु० पत्थर तोड़नेका एक भारी औजार; तोपका गज; खूँटी।

सुंबुल-पु० [फा०] एक सुगंधित घास जो फारसी-उर्दू कवितामें सुंदर घुँघराले केशका उपमान मानी गयी है।

सु-उप० [सं०] शब्दोंके साथ जुड़कर यह सुंदर (सुदर्शन), उत्तम (सुगंध), अधिक, अतिशय (सुयोग्य), सहज, अनायास (सुकर, सुलभ), भली भाँति, पूरे तौरपर (सुजीर्ण, सुसेवित, सुशासित) आदि अर्थोंका द्योतन करता है। वि० अच्छा; भला; सम्मानार्ह। * सर्व० दे० 'सो'। * अ० तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति।

सुअ*–पु० पुत्र ।

सुअटा*–पु० शुक, तोता ।

सुअन*–पु० बेटा, पुत्र ।

सुअनजर्द*–पु० एक फूल, सोनजर्द ।

सुअना*–पु० शुक, तोता । अ० क्रि० उत्पन्न होना, जनमना; उदय होना ।

सुअर–पु० दे० 'सूअर' ।**–दंता**–वि० जिसके दाँत सूअरकेसे हों । पु० वह हाथी जिसके दाँत जमीनकी ओर झुके हुए हों ।

सुअवसर–पु० अच्छा अवसर, मौका ।

सुआ–* पु० तोता, शुक; बड़ी सुई ।

सुआउ*–वि० बड़ी आयुवाला, दीर्घायु ।

सुआद*–पु० स्वाद ।

सुआन*–पु० दे० 'श्वान' ।

सुआमी*–पु० दे० 'स्वामी' ।

सुआर*–पु० दे० 'सूपकार'–'लागे परसन निपुन सुआरा'–रामा० ।

सुआरव*–वि० मधुर ध्वनि करनेवाला, सुरीला ।

सुआसन–पु० सुंदर, बढ़िया आसन ।

सुआसिन, सुआसिनी*–स्त्री० सुहागिन स्त्री; पड़ोसिन ।

सुई–स्त्री० दे० 'सूई' ।

सुकंठ–वि० [सं०] अच्छे गलेवाला, सुरीला । पु० सुग्रीव ।

सुकंदक–पु० [सं०] प्याज; वाराहीकंद ।

सुक–पु०दे०'शुक' ।**–देव**–पु०दे० 'शुकदेव' ।**–नासा**–वि० जिसकी नाक तोतेकी ठोर जैसी नुकीली हो ।

सुकचाना*–अ० क्रि० दे० 'सकुचाना' ।

सुकड़ना–अ० क्रि० सिमटना, ठिठुरना; शिकन पड़ना ।

सुकन्या–स्त्री० [सं०] च्यवन ऋषिकी पत्नी जो महाराज शर्यातिकी कन्या थी; अच्छी कन्या ।

सुकर–वि० [सं०] जो आसानीसे किया जा सके, सरल; जो आसानीसे काबूमें किया जा सके (घोड़ा, गाय) ।

सुकरा–स्त्री० [सं०] सीधी गाय ।

सुक़रात–पु० [अ०] प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो आफलातून(प्लेटो)का गुरु था ।

सुकराना*–पु० दे० 'शुक्राना' ।

सुकरित*–वि० भला, अच्छा । पु० दे० 'सुकृत' ।

सुकर्मा (र्मन्)–वि० [सं०] सत्कर्म करनेवाला, पुण्यशाली; कर्मकुशल । पु० विश्वकर्मा; कुशल कारीगर ।

सुकर्मी(र्मिन्)–वि०[सं०] अच्छा काम करनेवाला; अच्छे कर्मोंवाला, पुण्यात्मा, सदाचारी ।

सुकल्पित–वि० [सं०] सुसज्जित, हथियारोंसे लैस ।

सुकाना*–स० क्रि० दे० 'सुखाना' ।

सुकाल–पु० [सं०] अच्छा समय; वह वर्ष या काल जिसमें अन्न खूब उपजा हो, सुभिक्ष ।

सुकावना*–स० क्रि० दे० 'सुखाना' ।

सुकिज*–पु० दे० 'सुकृत' ।

सुकिया*–स्त्री० स्वकीया नायिका ।

सुकीउ*–स्त्री० स्वकीया नायिका ।

सुकीर्ति–स्त्री० [सं०] सुयश, नेकनामी । वि० अच्छी कीर्तिवाला ।

सुकुआर–वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकुड़ना–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सुकुति*–स्त्री० दे० 'शुक्ति' ।

सुकुमार–वि० [सं०] कोमल; बहुत नाजुक । पु० सुंदर, कोमलांग बालक या किशोर; काव्यका एक गुण ।

सुकुमारता–स्त्री०, **सुकुमारत्व**–पु० [सं०] कोमलता, मृदुलता, नजाकत ।

सुकुमारी–वि०, स्त्री० [सं०] कोमलांगी । स्त्री० कोमलांगी बालिका; नवमल्लिका ।

सुकुरना*–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सुकुल–पु० [सं०] सद्वंश । वि० कुलीन; * शुक्ल ।**–ज,–जन्मा(न्मन्)**–वि० सद्वंशजात ।

सुकुवाँर, सुकुवार–वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकूनत–स्त्री० [अ०] निवास, रहाइश ।

सुकूनती–वि० [अ०] रहनेका, रहाइशी (–मकान) ।

सुकृत–पु० [सं०] पुण्य, सत्कर्म; सौभाग्य । वि० शुभ, सुविहित; भाग्यवान्; ठीक तरहसे किया हुआ; सुनिर्मित ।

सुकृति–स्त्री० [सं०] सत्कर्म, पुण्य । वि० धर्मात्मा ।

सुकृती(तिन्)–वि० [सं०] धार्मिक, पुण्यवान्; भाग्यशाली; बुद्धिमान् ।

सुकृत्–वि० [सं०] पुण्यवान्, धार्मिक, सुकृती; बुद्धिमान्; विद्वान्; भाग्यशाली । पु० कुशल कार्यकर्ता; त्वष्टा ।

सुकृत्य–पु० [सं०] सत्कर्म, पुण्य ।

सुकेशा–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर बालोंवाली (स्त्री) ।

सुकेशी–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर केशवाली (स्त्री) । स्त्री० एक अप्सरा; एक सुरांगना ।

सुक्ख*–पु० दे० 'सुख' ।

सुक्ति–* स्त्री० दे० 'शुक्ति' । पु० [सं०] एक पर्वत ।

सुक्र*–पु० दे० 'शुक्र' ।

सुक्रित*–पु० दे० 'सुकृत' ।

सुक्ल*–वि० दे० 'शुक्ल' ।

सुक्षम*–वि० दे० 'सूक्ष्म' ।

सुखंडी–स्त्री० बच्चोंको होनेवाला एक रोग, सूखा रोग । वि० दुबला, क्षीण ।

सुखंद*–वि० सुख देनेवाला, सुखद ।

सुख–पु० [सं०] वह अनुभूति जो तन-मनको भाये, अनुकूल हो; कामनाकी पूर्तिसे होनेवाला आनंद; आराम, आनंद; आमोद; चैन; अभ्युदय; कल्याण; सुविधा; स्वर्ग; आरोग्य । वि० प्रसन्न; अनुकूल, प्रिय; धार्मिक; सरल; उपयुक्त । **–आसन**–पु० [हिं०] पालकी । **–कंद**–वि० सुख देनेवाला । **–कंदन***–वि० दे० 'सुखकंद' । **–कंदर***–वि० जो सुखका धाम, सुखका आकर है । **–कर**–वि० आनंददायक; सुकर, सरल । पु० राम । **–करण**–वि० सुखोत्पादक । **–करन***–वि० दे० 'सुखकरण' । **–कारक,–कारी(रिन्),–कृत**–वि० सुखदायक । **–ग**–वि० सुखपूर्वक जानेवाला । **–ग्राह्य**–वि० जो आसानीसे ग्रहण किया जा सके; सुबोध । **–जनक**–वि० सुख देने, उपजानेवाला । **–ढरन***–वि० सुखधाम । **–तला**–पु० [हिं०] चमड़ेका वह टुकड़ा जिसे जूतेके अंदर रखते हैं । **–थर***–पु०

सुखस्थल, सुखका स्थान। **–द**–वि० सुख देनेवाला, आनंददायक। **–दनियाँ***–वि० सुखदायक। **–दा**–वि० स्त्री० सुख देनेवाली। स्त्री० अप्सरा। **–दाइन***–वि० स्त्री० दे० ‘सुखदायिनी’। **–दाई***–वि० दे० ‘सुखदायी’। **–दात***–वि० दे० ‘सुखदाता’। **–दाता(तृ)**–वि० सुखदायक, आनंददायक। **–दान*,–दानी**–वि० [हिं०] सुख देनेवाला। **–दाय,–दायो***–वि० दे० ‘सुखदाता’। **–दायक**–वि० दे० ‘सुखदाता’। **–दायिनी**–वि० स्त्री० सुख देनेवाली। **–दायी(यिन्)**–वि० सुख देनेवाला। **–दाव***–वि० सुख देनेवाला। **–दास†**–पु० बढ़िया जातिका एक धान। **–दुःख**–पु० आराम और कष्ट; आनंद और शोक। **–देनी,–दैनी***–वि० स्त्री० सुख देनेवाली। **–दैन***–वि० सुख देनेवाला। **–दोह्या**–स्त्री० वह गाय जो आसानीसे दुही जा सके। **–धाम**–पु० सुखका घर, वैकुंठ। वि०[हिं०] सुखदायक; सुखी। **–पाल**–पु०[हिं०] एक तरहकी पालकी। **–प्रद**–वि०आनंददायक। **–प्रश्न**–पु० कुशल-प्रश्न। **–प्रसवा**–वि० स्त्री० आरामसे, विना कष्टके बच्चा जननेवाली (स्त्री, गाय इ०)। **–प्राप्त**–वि० सुखी; आसानीसे मिला हुआ। **–भाक्(ज्),–भागी(गिन्)**–वि० सुखी, सुख भोगनेवाला। **–भुक्(ज्)**–वि० सुखी; भाग्यवान्। **–भोगी(गिन्)**–वि० सुखका भोग करनेवाला। **–भोजन**–पु० स्वादिष्ठ भोजन। **–रात्रि**–स्त्री० दिवालीकी रात; सुहागरात; शांत और आनंददायक रात। **–राशि**–वि० जो सुखकी राशि, भंडार है। **–रास,–रासी***–वि० दे० ‘सुखराशि’। **–वाद**–पु० इंद्रियसुख, शरीरसुख ही जीवनकी सार्थकता है, यह मत। **–शयन**–पु० आरामसे सोना। **–शय्या**–स्त्री० आरामदेह पलंग आदि; आरामकी नींद। **–शांति**–स्त्री० सुख और शांति, सुख-चैन। **–सलिल**–पु० कुनकुना या गरम पानी। **–सागर**–पु० सुखका समुद्र; एक ग्रंथ जो भागवतके दशम स्कंधका हिंदी अनुवाद है। **–साधन**–पु० सुख प्राप्त करनेका जरिया। **–साध्य**–वि० जो आसानीसे हो या किया जा सके, सहज; आसानीसे दूर होनेवाला (रोग)। **–सार**–पु० मोक्ष। **–स्पर्श**–वि० जिसका स्पर्श सुखद हो। **–स्वप्न**–पु० सुखमय जीवनकी कल्पना। **–की नींद**–वह नींद जिसमें खलल न पड़े, आरामकी नींद। मु० **–मानना**–किसी परिस्थितिमें आराम मानना। **–लूटना**–सुखोपभोग करना।

सुखक*–वि० दे० ‘शुष्क’।

सुखता–स्त्री०, **सुखत्व**–पु० [सं०] आराम, चैन, आनंद।

सुख़न(सुखुन)–पु० [अ०] बात, वचन, बातचीत; उक्ति; कौल; कविता, पद्यरचना। **–तकिया**–पु० वह शब्द, वाक्यखंड या लघुवाक्य जो सार्थक होते हुए निरर्थक होता है और जिसे कुछ लोग आदतके कारण, वाक्यके बीचमें, अक्सर आगेकी बात झट सोच न सकनेपर, कहा करते हैं (‘क्या नाम है’, ‘जो है सो’ इ०), अवलंबन।

सुखना*–अ० क्रि० दे० ‘सूखना’।

सुखमन*–स्त्री० दे० ‘सुषुम्ना’।

सुखमा–स्त्री० एक वर्णवृत्त; * दे० ‘सुषमा’।

सुखवंत*–वि० सुखी, प्रसन्न; सुखद।

सुखवन†–पु० सूखनेके लिए धूपमें डाला हुआ अनाज; सूखनेसे चीजकी तौलमें होनेवाली कमी।

सुखवा*–पु० सुख।

सुखवान्(वत्)–वि० [सं०] सुखी।

सुखवार–वि० सुखी, प्रसन्न।

सुखांत–वि० [सं०] जिसका अंत, परिणाम सुखमय हो। **–नाटक**–पु० पाश्चात्य नाटकका एक प्रकार जिसका अंत सुखमय होता है (कामेडी)।

सुखाधिकारवाद–पु० (सूट ऑफ ईज़मेंट) वह मामला या नालिश जो दूसरेकी किसी भूमि, पथ आदिका अपने आरामके लिए प्रयोग करनेसे हो या अपनी भूमि आदिका दूसरे द्वारा दुरुपयोग होनेसे रोकना ही जिसका विषय हो, सुविधाधिकार-संबंधी वाद।

सुखाना–स० क्रि० तरी, गीलापन दूर करना; गीली चीजको सूखी बनाना, खुश्क करना। अ० क्रि० दे० ‘सूखना’।

सुखानुभव–पु० [सं०] सुखकी अनुभूति।

सुखापन्न–वि० [सं०] जिसे सुख प्राप्त हो।

सुखारा, सुखारी*–वि० सुखी, सुखमय।

सुखार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] सुख चाहनेवाला।

सुखाली*–वि० आनंददायक।

सुखावह–वि० [सं०] सुखजनक, सुखद।

सुखासन–पु० [सं०] सुखद आसन, वह आसन जिसपर बैठनेमें आराम मिले; पद्मासन; पालकी।

सुखासीन–वि० [सं०] जो सुखसे बैठा हो।

सुखिआ*–वि० दे० ‘सुखिया’।

सुखित–* वि० सूखा हुआ, शुष्क; [सं०] सुखी, प्रसन्न। पु० आनंद, सुख।

सुखिया–वि० दे० ‘सुखी’।

सुखिर*–पु० साँपका बिल।

सुखी(खिन्)–वि० [सं०] सुखयुक्त, जिसे सुख प्राप्त हो, जिसकी जिंदगी आरामसे कट रही हो; प्रसन्न; जिसे खाने-पीने, रुपये-पैसेका सुख प्राप्त हो, खुशहाल।

सुखेतर–पु० [सं०] वह जो सुखसे भिन्न हो, कष्ट। वि० जो सुखी न हो, भाग्यहीन।

सुखेन–*पु० ‘सुषेण’। अ० [सं०] सुखपूर्वक।

सुखैना*–वि० सुखदायी।

सुखैषी(षिन्)–वि० [सं०] सुख चाहनेवाला।

सुखोत्सव–पु० [सं०] आनंदोत्सव, उछाव-बधाव; यति।

सुखोदक–पु० [सं०] दे० ‘सुख-सलिल’।

सुखोपेक्षी(क्षिन्)–पु० [सं०] (स्टोइक) विविध सुखों एवं विलासादिके प्रति उदासीन रहते हुए सदाचारमय सात्त्विक जीवन बितानेको ही परम लक्ष्य माननेवाला दार्शनिक।

सुखोष्ण–वि० [सं०] कुनकुना। पु० कुनकुना जल।

सुख्ख*–पु० सुख।

सुख्यात–वि० [सं०] सुप्रसिद्ध।

सुख्याति–स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि, नामवरी।

सुगंध–वि०[सं०] खुशबूदार, सुंदर गंधवाला। स्त्री०अच्छी गंध, सुवास, खुशबू। **–बाला**–स्त्री० एक सुगंधयुक्त वनौ-

पधि जो ज्वर, अतिसार, रक्तविकार आदिकी दवा है।

सुगंधि-वि० [सं०] सुंदर गंधवाला; खुशबूदार। स्त्री० अच्छी गंध, सुवास।

सुगंधित-वि० [सं०] सुगंधयुक्त, खुशबूदार।

सुगठित-वि० सुंदर गठन, गढ़नवाला; कसा हुआ।

सुगणक-वि० [सं०] अच्छा ज्योतिषी।

सुगत*-वि० सरल, आसान-'मेरे जान ब्रह्मको विचारिबो सुगत है'-वेनी०। पु० [सं०] बुद्ध भगवान्; बौद्ध।

सुगति-स्त्री० [सं०] सद्गति; मोक्ष; कल्याण; सुख।

सुगना†-पु० दे० तोता; सहिजन।

सुगम-वि० [सं०] सहजमें जाने या पाने योग्य; आसान, सुबोध।

सुगमता-स्त्री० [सं०] सुगम होना, आसानी।

सुगर*-वि० सुकंठ; सुघर; चतुर।

सुगल*-पु० सुग्रीव।

सुगाध-वि० [सं०] जिसकी थाह सहजमें मिल सके, कम गहरा, अगाधका उलटा;जो आसानीसे पार किया जा सके।

सुगाना*-अ० क्रि० क्रुद्ध होना; खिन्न होना। स० क्रि० शक करना।

सुगुप्त-वि० [सं०] अच्छी तरह छिपाया हुआ, जो बहुत गुप्त रखा गया हो। **-लेख**-पु० अत्यंत गुप्त पत्र; ऐसे अक्षरों या चिह्नोंमें लिखा हुआ पत्र जिसे पानेवालेके सिवा और कोई न समझ सके।

सुगुरा-वि० जिसका गुरु अच्छा हो।

सुगृहीत-वि० [सं०] अच्छी तरह पकड़ा हुआ; अच्छी तरह समझा हुआ; प्रातःस्मरणीय। **-नामा (मन्)**-वि० जिसका नाम सबेरे कल्याणकी कामनासे लिया जाय, प्रातःस्मरणीय।

सुगैया*-स्त्री० चोली।

सुग्गा†-पु०दे० 'शुक'।**-पंखी**-पु० एक तरहका धान।

सुग्रीव-वि० [सं०] सुंदर गरदनवाला। पु० किष्किंधाका वानर राजा जो वालिका छोटा भाई था; हंस; इंद्र; शंख।

सुघट-वि० [सं०] सुघड़, सुडौल।

सुघटित-वि० [सं०] जिसकी बनावट, गठन, सुंदर हो, सुडौल।

सुघड़-वि० जिसकी बनावट सुंदर हो, सुडौल; किसी कार्यमें कुशल, चतुर, हुनरमंद।**-पन**-पु० सुंदरता; कुशलता।

सुघड़ई, सुघड़ता-स्त्री० सुघड़पन; सुंदरता; निपुणता।

सुघड़ाई-स्त्री० सुघड़पन; सुंदरता; कुशलता, ढब।

सुघड़ी-स्त्री० अच्छी, शुभ घड़ी।

सुघर-वि० दे० 'सुघड़'। **-पन**-पु० दे० 'सुघड़पन'।

सुघरई, सुघरता-स्त्री० दे० 'सुघड़ई'।

सुघराई-स्त्री० दे० 'सुघड़ाई'।

सुघरी*-स्त्री० दे० 'सुघड़ी'। वि० स्त्री० दे० 'सुघड़'।

सुच*-वि० दे० 'शुचि'।

सुचक्षु (स्)-वि०[सं०] सुंदर आँखोंवाला (शिव);अच्छी निगाहवाला; बुद्धिमान्, विवेकी। पु० गूलरका पेड़।

सुचना*-स० क्रि० जोड़ना, संचय करना।

सुचरित-वि० [सं०] सदाचारी, सत्कर्मी। पु० सदाचार।

सुचरिता-स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री।

सुचरित्र-वि०[सं०] सदाचारी, नेकचलन। पु० सदाचार।

सुचा*-स्त्री० ज्ञान, चेतना; विचार। वि० शुचि, निर्मल।

सुचाना-स० क्रि० सोचनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; ध्यान आकृष्ट करना; चिताना, समझाना।

सुचार*-स्त्री० दे० 'सुचाल'। वि० दे० 'सुचारु'।

सुचारु-वि० [सं०] अति चारु, सुंदर, मनोहर।

सुचाल-स्त्री० अच्छी चाल, सदाचार, 'कुचाल'का उलटा।

सुचालक-वि० [सं०] (गुड कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका परिचालन सुगमतासे हो सके, सुसंवाहक।

सुचाली-वि० अच्छे चाल-चलनवाला, नेकचलन।

सुचाव-पु० सुचाना; सूचना, सुझाव।

सुचिंतित-वि० [सं०] भली भाँति सोचा-विचारा हुआ।

सुचि*-वि० दे० 'शुचि'। स्त्री० सूई। **-कर्मा**-वि० दे० 'शुचिकर्मा'।**-मंत**-वि० शुद्ध आचरणवाला, पाक-साफ।

सुचित-वि० दे० 'सुचित्त'।

सुचितई-स्त्री० सुचित्तता।

सुचिती*-वि० दे० 'सुचित्त'।

सुचित्त-वि० [सं०] स्थिरचित्त; चिंतानिवृत्त; संपन्न।

सुचित्तता-स्त्री०[सं०]सुचित्त होना,इतमीनान,निश्चितता।

सुचित्र-वि० [सं०] विभिन्न प्रकारका; विभिन्न रंगोंका।

सुची*-स्त्री० 'शची', इंद्राणी।

सुचेत-वि० सावधान; सचेत।

सुचेता(तस्)-वि० [सं०] सुंदर चित्तवाला; उदाराशय।

सुच्छंद*-वि० दे० 'स्वच्छंद'।

सुच्छ*-वि० दे० 'स्वच्छ'।

सुच्छम*-वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सुजंघ-वि० [सं०] सुंदर जाँघोंवाला।

सुजन-पु० [सं०] सज्जन, भला आदमी; * स्वजन।

सुजनता-स्त्री० [सं०] भद्रता, भलमनसी।

सुजनी-स्त्री० [फा० 'सोज़नी'] कई तह कपड़ेको साटकर और ऊपर सुईसे बारीक काम करके बनाया हुआ बिछौना; एक तरहका पलंगपोश।

सुजन्मा(न्मन्)-वि० [सं०] सत्कुलमें उत्पन्न, कुलीन।

सुजला-वि० स्त्री० [सं०] जहाँ जलकी बहुतायत हो; नदीबहुला।

सुजस*-पु० दे० 'सुयश'।

सुजाक†-पु० दे० 'सूज़ाक'।

सुजागर-वि० प्रकाशमान; सुंदर, मनोहर।

सुजात-वि० [सं०] सुजन्मा, कुलीन; सुंदर।

सुजाता-वि० स्त्री० [सं०] कुलीना; सुंदरी। स्त्री० एक किसान बालिका जिसने भगवान् बुद्धको बुद्धत्व-प्राप्तिके बाद खीर खिलायी थी; तुवरी; गोपीचंदन।

सुजान-वि०चतुर; ज्ञानी, सुविज्ञ; प्रवीण। पु०प्रेमी; प्रभु।

सुजानता-स्त्री० सुजान होना।

सुजानी*-वि० दे० 'सुजान'।

सुजिह्व-वि० [सं०] सुंदर जीभवाला; मधुरभाषी।

सुजेय-वि० [सं०] आसानीसे जीतने योग्य।

सुजोग*-पु० दे० 'सुयोग'।

सुजोधन*-पु० दे० 'सुयोधन'।

सुजोर*-वि० शहजोर, बलवान्; दृढ़, पायदार ।

सुज्ञ-वि० [सं०] सुविज्ञ; पंडित ।

सुझाना-स० क्रि० दिखाना; बताना, सूचना देना । अ० क्रि० दिखाई देना, सूझ पड़ना ।

सुझाव-पु० सुझानेकी क्रिया; तजवीज, सलाह ।

सुटुकना†-अ० क्रि० चुपकेसे निकल जाना; सिकुड़ना । स० क्रि० चाबुक लगाना; निगल जाना ।

सुठ*-वि० दे० 'सुठि' ।

सुठहर*-पु० अच्छा ठौर, स्थान ।

सुठार*-वि० 'सुडौल' ।

सुठि*-वि० सुंदर, अच्छा । अ० अति, बहुत ज्यादा; पूरा-पूरा ।

सुठौना*-वि० अच्छा, सुंदर ।

सुड़कना-स० क्रि० किसी तरल पदार्थको नाककी राह, साँसके साथ भीतर खींचना, नास लेना; नाकके मलको ऊपरकी ओर खींचकर निगलना; पी जाना ।

सुड़सुड़ाना-स० क्रि० (हुक्का आदि) इस तरह पीना कि 'सुड़-सुड़'की आवाज निकले ।

सुडौल-वि० सुंदर बनावटवाला, सुघड़, सुंदर ।

सुढंग-पु० अच्छा, सुंदर ढंग । वि० सुंदर, सुघड़; अच्छे स्वभावका ।

सुढर*-वि० प्रसन्न, अनुकूल; सुडौल ।

सुढार*-वि० सुडौल, सुंदर ।

सुतंत*-वि० दे० 'स्वतंत्र' ।

सुतंतर*-वि० दे० 'स्वतंत्र' ।

सुतंत्र*-वि०दे०'स्वतंत्र'। *अ०स्वतंत्रतापूर्वक; आजादीसे ।

सुत-वि० [सं०] उत्पन्न, पैदा किया हुआ । पु० बेटा, पुत्र । **-दा**-वि० स्त्री० पुत्र देनेवाली । स्त्री० पुत्रदा लता; एक देवी ।

सुतधार*-पु० सूत्रधार, नियंता ।

सुतना†-पु० सूथन । अ० क्रि० सोना ।

सुतनु-वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला; बहुत ही नाजुक, दुबला-पतला । स्त्री० सुंदर स्त्री, कोमलांगी ।

सुतर*-पु० दे० 'शुतुर' । **-नाल***-स्त्री० दे० 'शुतुरनाल' । **-सवार***-पु० दे० 'शुतुरसवार' ।

सुतरां(राम्)-अ० [सं०] और भी; अतः, इसलिए ।

सुतरी-* स्त्री० तुरही; † दे० 'सुतली' ।

सुतल-पु० [सं०] नीचेके सात लोकोंमेंसे छठा ।

सुतली-स्त्री० सन या पटसनके रेशोंसे बटकर बनायी हुई डोरी जिससे खाट बुनते और दूसरे काम लेते हैं ।

सुतहर, सुतहार*-पु० दे० 'सुतार' ।

सुतही-स्त्री० सीपी ।

सुता-स्त्री० [सं०] लड़की, बेटी । **-दान**-पु० कन्यादान। **-पति**-पु० दामाद । **-पुत्र,-सुत**-पु० नाती ।

सुतान-वि० [सं०] सुंदर; सुरीला ।

सुताना†-स० क्रि० दे० 'सुलाना' ।

सुतार-पु० बढ़ई; शिल्पी; † सुभीता, अनुकूल अवसर । * वि० बहुत अच्छा ।

सुतारी-स्त्री० जूता सीनेका सूआ; बढ़ईगिरी ।

सुतार्थी(र्थिन्)-वि० [सं०] संतानका अभिलाषी ।

सुतिन*-स्त्री० दे० 'सुतनु' ।

सुतिनी-स्त्री० [सं०] बेटेवाली स्त्री, पुत्रवती ।

सुतिया†-स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना, हँसली ।

सुतिहार*-पु० सुतार, शिल्पी ।

सुती(तिन्)-वि० [सं०] जिसके बेटा हो, पुत्रवान् ।

सुतीक्षण*-वि०, पु० दे० 'सुतीक्ष्ण' ।

सुतीक्ष्ण-वि०[सं०] अति तीक्ष्ण । पु० अगस्त्य मुनिके भाई जो वनवासमें रामसे मिले थे; सहिजन ।

सुतीखन, सुतीच्छन*-वि०, पु० दे० 'सुतीक्ष्ण' ।

सुतीर्थ-वि० [सं०] जो आसानीसे पार किया जा सके । पु० अच्छा मार्ग; पवित्र स्नानस्थल; पूज्य वस्तु ।

सुतुही†-स्त्री० सीपी ।

सुतोत्पत्ति-स्त्री [सं०] पुत्रजन्म ।

सुतोष, सुतोषण-वि० [सं०] जो जल्द प्रसन्न हो जाय ।

सुत्थना-पु० सुथना ।

सुथना-पु० पायजामा ।

सुथनिया*-स्त्री० सुथनी, ढीला जायजामा ।

सुथनी-स्त्री०स्त्रियोंके पहननेका ढीला पायजामा; एक कंद, पिंडालू ।

सुथरा-वि० साफ, स्वच्छ; परिष्कृत; निर्दोष (सुथरा मजाक) । **-पन**-पु० स्वच्छता, सफाई; परिष्कार ।

सुथराई-स्त्री० सुथरापन ।

सुदंत-वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाला । पु० अच्छा दाँत ।

सुदंष्ट्र-वि० [सं०] दृढ़ या सुंदर दाँतोंवाला ।

सुदक्षिण-वि० [सं०] बहुत कुशल; नम्र; सच्चा, खरा; बहुत उदार, दक्षिणा देनेवाला । पु० एक कंबोजनरेश ।

सुदक्षिणा-स्त्री०[सं०] दिलीपकी पत्नी; कृष्णकी एक पत्नी ।

सुदच्छिन*-पु० दे० 'सुदक्षिण' ।

सुदती-वि० स्त्री० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली (स्त्री) ।

सुदरसन*-पु० दे० 'सुदर्शन' । **-पानि**-पु० विष्णु ।

सुदर्श-वि० [सं०] जो देखनेमें सुंदर हो; जो आसानीसे देखा जा सके ।

सुदर्शन-वि० [सं०] प्रियदर्शन, सुंदर; जिसका सहजमें दर्शन हो सके, सुदृश्य । पु० गृध्र; शिव; विष्णुका चक्र; मत्स्य । **-चक्र**-पु० विष्णुका चक्र । **-चूर्ण**-पु० आयुर्वेदका एक योग जो ज्वरकी प्रसिद्ध औषध है । **-पाणि**-पु० विष्णु ।

सुदामा(मन्)-पु० [सं०] बादल; एक पर्वत; ऐरावत; समुद्र; कृष्णका एक दरिद्र सहपाठी जिसे उन्होंने ऐश्वर्यशाली बना दिया ।

सुदि-स्त्री० शुक्ल पक्ष ।

सुदिन-पु० [सं०] अच्छा दिन, शुभ दिन; सुखके दिन ।

सुदी-स्त्री० शुक्ल पक्ष ।

सुदीपति*-स्त्री० दे० 'सुदीप्ति' ।

सुदीप्ति-स्त्री० [सं०] तेज रोशनी या चमक ।

सुदीर्घ-वि० [सं०] बहुत लंबा (देश, काल); सुविस्तृत ।

सुदुःसह-वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो ।

सुदुर्लभ-वि० [सं०] अति दुर्लभ, जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो; बहुत नायाब ।

सुदुष्कर-वि० [सं०] अति कष्टसाध्य, बहुत ही कठिन ।

सुदुष्प्राप–वि० [सं०] जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो।

सुदुस्त्यज–वि० [सं०] जिसका त्याग करना बहुत कठिन हो।

सुदूर–अ० [सं०] अति दूर, बहुत दूर। वि० बहुत दूरका। –पूर्व–पु० अति पूर्वके देश, चीन, जापान इत्यादि।

सुदृढ–वि० [सं०] बहुत मजबूत; सुरक्षित।

सुदृष्टि–वि० [सं०] अच्छी निगाहवाला। पु० गिद्ध।

सुदेश–पु० [सं०] उपयुक्त स्थान; अच्छा, सुंदर, देश। * वि० सुंदर।

सुदेस*–पु० अच्छा स्थान; स्वदेश। वि० अच्छा, सुंदर।

सुदेसी†–वि० दे० 'स्वदेशी'।

सुदौसी*–अ० शीघ्रतापूर्वक।

सुद्दा–पु० [अ०] सूखा, कड़ा मल।

सुद्ध*–वि० दे० 'शुद्ध'।

सुद्धि*–स्त्री० दे० 'शुद्धि'; दे० 'सुध'।

सुधंग*–पु० अच्छा ढंग।

सुध–स्त्री० याद; होश, चेत; खबर। * वि० शुद्ध। –बुध–स्त्री० होश-हवास, चेत। –मना*–वि० होशवाला, सचेत। मु०–दिलाना–याद दिलाना। –न रहना–याद, होश न होना। –बिसरना–याद न रहना, होश न रहना। –लेना–खोज-खबर लेना; याद करना।

सुधन–वि० [सं०] अति धनी, बहुत पैसेवाला (वै०)।

सुधना–अ० क्रि० शुद्ध होना, ठीक किया जाना।

सुधन्वा(न्वन्)–वि० [सं०] जिसका धनुष् बहुत बढ़िया हो; धनुर्विद्यामें कुशल।

सुधरना–अ० क्रि० दुरुस्त होना, दोष या विकृतिका दूर होना, बिगड़े हुएका बनना।

सुधरवाना–स० क्रि० सुधार कराना, ठीक कराना।

सुधराई–स्त्री० सुधार; सुधारनेकी उजरत।

सुधर्म–पु० [सं०] सुंदर, उत्तम धर्म, न्याय, कर्तव्य।

सुधाँ*–अ० साथ, समेत।

सुधांग–पु० [सं०] चंद्रमा।

सुधांशु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

सुधा–स्त्री० [सं०] अमृत; मकरंद; रस; दूध; जल; शहद; पृथ्वी; विष; चूना; सफेदी। –कंठ–पु० कोयल। –कार–पु० चूना, सफेदी करनेवाला, राज। –क्षालित–वि० सफेदी किया हुआ। –गेह–पु० चंद्रमा। –घट–पु० चंद्रमा। –जीवी(विन्)–पु० सफेदी करनेवाला, राज। –दीधिति–पु० चंद्रमा। –धर–पु० चंद्रमा; –धवल–वि० सफेदी किया हुआ; चूनेसा सफेद। –धवलित–वि० सफेदी किया हुआ। –धी*–वि० सुधावाला; सुधातुल्य। –निधि–पु० चंद्रमा; समुद्र; एक वृत्त। –पाषाण–पु० सफेद खली, खड़िया। –भवन–वि० चूना पुता हुआ मकान; पंचम मुहूर्त। –भित्ति–स्त्री० सफेदी की हुई दीवार। –भुक्(ज्),–भोजी-(जिन्)–पु० अमृतपान करनेवाला, देवता। –मयूख–पु० चंद्रमा। –रश्मि–पु० चंद्रमा। –रस–पु० अमृत; दूध। वि० सुधा सा स्वादिष्ट। –वर्ष–पु०,–वृष्टि–स्त्री० अमृतकी वर्षा। –वर्षी(र्षिन्)–वि० अमृत बरसानेवाला। पु० ब्रह्मा; चंद्रमा; एक बुद्ध। –श्रवा*–पु० अमृत बरसानेवाला। –सदन–पु० चंद्रमा। –सागर–पु० अमृतका समुद्र। –सिंधु–पु० सुधाका समुद्र। –सिक्त–वि० सुधासे सींचा हुआ, सुधासे तर।

सुधाई†–स्त्री० दे० 'सिधाई'।

सुधाकर–पु० [सं०] चंद्रमा।

सुधाधर–वि० [सं०] जिसके अधरमें अमृत हो। पु० दे० 'सुधामें'।

सुधाना*–स० क्रि० सुध कराना, याद दिलाना; ठीक कराना; शोध कराना।

सुधामय–वि० [सं०] अमृतपूर्ण; चूनेका बना हुआ। पु० प्रासाद।

सुधार–पु० दोष दूर करने या होनेका भाव; संस्कार। वि० अच्छी धार या नोंकवाला (बाण)। –प्रन्यास–पु० (इंप्रूवमेंट ट्रस्ट) किसी नगरके सुधार, नवनिर्माण आदिके लिए स्थापित संस्था।

सुधारक–पु० सुधार करनेवाला; सुधारका आंदोलन करनेवाला।

सुधारना–स० क्रि० दोष, त्रुटि दूर करना, दुरुस्त करना।

सुधारा*–वि० सीधा, भोला।

सुधारालय–पु० (रिफार्मेटरी) एक तरहका वंदीगृह जहाँ अपराध करनेके कारण सजा पाये हुए बालक रखे जाते हैं और शिल्प इत्यादिकी शिक्षा देकर उन्हें सुधारनेका प्रयत्न किया जाता है।

सुधावास–पु० [सं०] चंद्रमा।

सुधि–स्त्री० दे० 'सुध'।

सुधी–पु० [सं०] पंडित, बुद्धिमान् व्यक्ति। स्त्री० सुंदर बुद्धि, सुबुद्धि। वि० सुंदर बुद्धिवाला, सुबुद्धियुक्त।

सुधीर–वि० [सं०] दृढ़, धैर्यवान्।

सुधौत–वि० [सं०] अच्छी तरह धुला, साफ किया हुआ; चमकाया हुआ।

सुनकिरवा–पु० एक कीड़ा जिसके पर पन्नेके रंगके होते हैं, जुगनू; * एक पौधा (?)।

सुनगुन–स्त्री० हलकी, अस्पष्ट चर्चा, कानाफूसी; उड़ती हुई खबर; टोह (पाना, मिलना)।

सुनत–वि०[सं०] बहुत झुका हुआ। * स्त्री०दे० 'सुन्नत'।

सुनति–पु० [सं०] एक दैत्य। * स्त्री० दे० 'सुन्नत'।

सुनना–स० क्रि० श्रवणेंद्रियसे शब्दका ग्रहण करना, कानोंसे आवाज मालूम करना; ध्यान देना; बुरा-भला सहना, फटकारा जाना (एक कहोगे, दस सुनोगे); मुकदमा सुनना। मु० सुना-सुनाया–दूसरोंके मुहँसे सुना हुआ, जो आँखों देखा न हो। सुनी-अनसुनी करना–बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना।

सुनबहरी–स्त्री० एक तरहका कुष्ठ रोग जिसमें रुग्ण-स्थल सुन्न हो जाता है।

सुनयना–वि० स्त्री० [सं०] सुलोचना। स्त्री० नारी; राजा जनककी पत्नी।

सुनरिया, सुनरी†–स्त्री० सुंदरी।

सुनवाई–स्त्री० श्रवण; मुकदमे या फरियादका सुना जाना।

सुनवैया–पु० सुननेवाला; * सुनानेवाला।

सुनसान–वि० निर्जन, जनशून्य; वीरान। पु० सन्नाटा।

सुनहरा, सुनहला–वि० सोनेके रंगका ।

सुनहा*–पु० श्वान, कुत्ता ।–'सुनहा खेदै कुंजर असवारा' –कबीर ।

सुनाई–स्त्री० दे० 'सुनवाई' ।

सुनाद–वि० [सं०] सुंदर ध्वनिवाला, सुस्वर । पु० शंख ।

सुनाना–स० क्रि० किसीके सामने, किसीको संबोधित करके कुछ कहना, दूसरेको श्रवण कराना; जताना; खरी-खोटी कहना, फटकारना ।

सुनाभ–वि० [सं०] सुंदर नाभिवाला; बढ़िया मूठवाला । पु० सुदर्शन चक्र; मैनाक पर्वत; पर्वत ।

सुनाभि–वि० [सं०] सुंदर नाभिवाला (वै०) ।

सुनाम(न्)–पु० [सं०] नेकनामी, कीर्ति, यश ।

सुनामा(मन्)–वि०[सं०] सुंदर नामवाला; कीर्तिशाली ।

सुनार–पु० सोने-चाँदीके गहने गढ़नेवाला, स्वर्णकार ।

सुनारी–स्त्री० सुनारका काम; सुनारकी स्त्री ।

सुनावनी–स्त्री० परदेशसे किसी स्वजन-संबंधीकी मृत्युका समाचार आना; ऐसा समाचार मिलनेपर किया जानेवाला स्नान आदि ।

सुनासा–स्त्री० [सं०] सुंदर नाक; काकनासा ।

सुनासिक–वि० [सं०] सुंदर नाकवाला ।

सुनासीर–पु० [सं०] इंद्र; देवता ।

सुनाहक*–अ० दे० 'नाहक़' ।

सुनिग्रह–वि० [सं०] अच्छी तरह नियंत्रित; जिसपर आसानीसे नियंत्रण किया जा सके ।

सुनिद्र–वि० [सं०] गाढ़ी नींदमें सोया हुआ ।

सुनिश्चय–पु० [सं०] पक्का निश्चय; सुंदर निश्चय ।

सुनिश्चित–वि० [सं०] भली भाँति निश्चित, पक्का ।

सुनीति–स्त्री० [सं०] सुंदर नीति; ध्रुवकी माता ।

सुनेत्र–वि० [सं०] सुंदर आँखोंवाला ।

सुनैया–पु० सुननेवाला ।

सुनोची*–पु० एक तरहका घोड़ा ।

सुन्न–पु० शून्य, सुन्ना । वि० निर्जीव, जड़वत्, संवेदन-रहित । –**सान**–वि० दे० 'सुनसान' ।

सुन्नत–स्त्री० [अ०] राह; रीति, दस्तूर; वह रास्ता या आचारपथ जिसपर मुहम्मद और उनके प्रमुख साथी–पहलेके चार खलीफा–चले हों; खतना, मुसलमानी ।

सुन्ना–पु० शून्य, सिफर ।

सुन्नी–पु० [अ०] मुसलमानोंका एक फ़िर्क़ा ।

सुपंख–वि० [सं०] सुंदर पंखोंवाला; सुंदर तीरोंवाला ।

सुपंथ–पु० [सं० 'सुपंथाः'] उत्तम मार्ग; सन्मार्ग ।

सुपक*–वि० दे० 'सुपक्व' ।

सुपक्व–वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ । पु० एक सुगंधयुक्त आम ।

सुपच*–पु० दे० 'श्वपच' ।

सुपठ–वि० [सं०] जो आसानीसे पढ़ा जा सके ।

सुपत*–वि० जिसकी अच्छी प्रतिष्ठा हो, प्रतिष्ठित ।

सुपत्त्र–पु० [सं०] तेजपत्ता; हिंगोट; आदित्यपत्र । वि० सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखोंवाला; सुंदर परसे युक्त(बाण)।

सुपत्थ*–पु० दे० 'सुपथ' ।

सुपथ–पु० [सं०] अच्छा रास्ता; सन्मार्ग, सदाचार; एक वृत्त । वि० सुंदर मार्गवाला; * चौरस ।

सुपथ्य–वि० [सं०] बहुत हितकर; बहुत स्वास्थ्यकर ।

सुपन, सुपना*–पु० दे० 'स्वप्न' ।

सुपनाना*–स० क्रि० सपना दिखाना । अ० क्रि० स्वप्न देखना ।

सुपरण, सुपरन*–वि०, पु० दे० 'सुपर्ण' ।

सुपररायल–पु [अं०] कागजके तावकी एक नाप (२२×२९ इंच) ।

सुपरस*–पु० दे० 'स्पर्श' ।

सुपर्ण–वि० [सं०] सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखवाला । पु० सुंदर पत्ता; देवगंधर्व; गरुड़; कोई बड़ा शिकारी पक्षी ।

सुपर्णक–वि० [सं०] सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखोंवाला । पु० गरुड़ या कोई दिव्य पक्षी; अमलतास; सप्तपर्ण ।

सुपर्णी–स्त्री० [सं०] कमलिनी; गरुड़की माता; मादा चिड़िया; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; रात्रि; पलाशी ।

सुपर्णेय–पु० [सं०] गरुड़ ।

सुपर्वा–स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा ।

सुपर्वा(र्वन्)–वि० [सं०] सुंदर गाँठों या पोरोंवाला; सुंदर पर्वों, अध्यायोंवाला (ग्रंथ); बहुप्रशंसित । पु० शुभ काल; बेंत; बाँस; बाण; धूम, धुआँ; देवता ।

सुपात्र–पु०[सं०] सुंदर पात्र; योग्य व्यक्ति (जो दानादिका अधिकारी हो) ।

सुपार–वि० [सं०] जो आसानीसे पार किया जा सके; जो जल्द गुजर जाय (जैसे वर्षा); सफलताकी ओर ले जानेवाला ।–**ग**–वि० अच्छी तरह पार जानेवाला ।

सुपारण–वि० [सं०] जिसका पाठ या अध्ययन करना आसान हो ।

सुपारी–स्त्री० नारियलकी जातिका एक पेड़; इस पेड़का फल जो पानके साथ या अलगसे मुख-शुद्धिके लिए खाया जाता है, छालिया, डली; शिश्नका अगला भाग । मु०–**लगना**–सुपारीके टुकड़ेका गलेमें अटक जाना ।

सुपार्श्व–पु० [सं०] सुंदर पार्श्व; वर्तमान अवसर्पिणीके ७ वें तीर्थंकर या अर्हत् (जैन) । वि० सुंदर पार्श्ववाला ।

सुपास–पु० आराम, सुभीता ।

सुपासी–वि० सुख,आराम देनेवाला; सुखी–'तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी'–विनय० ।

सुपीन–वि० [सं०] बहुत मोटा ।

सुपुत्र–पु० [सं०] लायक बेटा, सपूत; जीवक वृक्ष । वि० अच्छे पुत्रोंवाला ।

सुपुत्रिका–वि० स्त्री० [सं०] अच्छे पुत्र(या पुत्रों)वाली ।

सुपुरुष–पु० [सं०] भला आदमी; सुंदर पुरुष ।

सुपुर्द–वि० दे० 'सिपुर्द' ।

सुपुष्करा–स्त्री० [सं०] स्थलपद्मिनी ।

सुपूत–पु० दे० 'सपूत' । वि० [सं०] अतिपूत, पवित्र ।

सुपूती–स्त्री० दे० 'सपूती' ।

सुपेत, सुपेद†–वि० सफेद ।

सुपेती*–स्त्री० दे० 'सफ़ेदी' ।

सुपेदी†–स्त्री० तोशक; रजाई; दे० 'सफ़ेदी' ।

सुपेली–स्त्री० छोटा सूप ।

सुस–वि० [सं०] निद्रित, सोया हुआ; सोनेके लिए लेटा

हुआ; सुप्त; मुँदा हुआ; संकुचित (जैसे पुष्प); निष्क्रिय, बेकार; सुस्त; अविकसित (शक्ति)। **-घातक**-वि० सोये हुएकी हत्या करनेवाला, हिंस्र। **-ज्ञान,-विज्ञान**-पु० स्वप्न देखना; स्वप्न। **-प्रबुद्ध**-वि० सोकर जागा हुआ। **-प्रलपित**-पु० (स्वप्नावस्थामें) बर्राना। **-वाक्य**-पु० स्वप्नावस्थामें निकले हुए शब्द।

सुप्तता-स्त्री०, **सुप्तत्व**-पु० [सं०] निद्रित होनेका भाव; नींद; निश्चेष्टता (अंगकी)।

सुप्तांग-पु० [सं०] वह अंग जो सुन्न, निश्चेष्ट हो गया हो।

सुप्ति-स्त्री० [सं०] नींद, ऊँघ; सपना; सुन्न हो जाना।

सुप्तोत्थित-वि० [सं०] सोकर उठा हुआ।

सुप्रज-वि० [सं०] अधिक या अच्छी संतानोंवाला।

सुप्रतिज्ञ-वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला।

सुप्रतिष्ठ-वि० [सं०] दृढ़तापूर्वक स्थित रहनेवाला; अच्छी प्रतिष्ठावाला; सुप्रसिद्ध।

सुप्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] सुंदर प्रतिष्ठा; प्रसिद्धि।

सुप्रतिष्ठित-वि० [सं०] सुंदर प्रतिष्ठायुक्त; सुप्रसिद्ध; दृढ़तापूर्वक स्थित; अच्छी तरह स्थापित किया हुआ।

सुप्रयुक्त-वि० [सं०] ठीक तरहसे चलाया या प्रयुक्त किया हुआ; सुंदर ढंगसे पाठ किया हुआ; (कपट) जिसकी योजना खूब सोच-विचारकर बनायी गयी हो; सुव्यवस्थित।

सुप्रसन्न-वि० [सं०] बहुत खुश; बहुत साफ (जैसे जल); बहुत चमकीला (जैसे चेहरा); बहुत अनुकूल या कृपालु।

सुप्रसव-पु० [सं०] आसानीसे, बिना कष्टके होनेवाला प्रसव।

सुप्रसिद्ध-वि० [सं०] अति प्रसिद्ध, खूब मशहूर।

सुप्राप, सुप्राप्य-वि० [सं०] सुलभ।

सुप्रिया-वि० स्त्री० [सं०] अति प्यारी। स्त्री० एक अप्सरा; एक छंद; प्रिय पत्नी।

सुफल-पु० [सं०] सुंदर फल; अनार; बेर; कैथ। वि० सुंदर फलोंसे युक्त; सुंदर फलवाला(खड्गादि), सफल(हिं०)।

सुफलक*-पु० श्वफल्क, अक्रूरके पिता। **-सुत**-पु० अक्रूर।

सुफेद-वि० दे० 'सफ़ेद'।

सुबंत-वि० [सं०] प्रथमासे सप्तमीतककी विभक्तियोंसे युक्त (शब्द)। **-पद**-पु० कारक विभक्तियुक्त शब्द।

सुबंधु-पु० [सं०] अच्छा भाई; एक बौद्ध नाटककार।

सुबरन*-पु० सोना, सुवर्ण; अच्छा रंग; सुंदर अक्षर (शब्द)-'सुबरन कहँ ढूँढ़त फिरैं कवि, बिभिचारी, चोर'।

सुबल-वि० [सं०] अति बली। पु० शिव; शकुनिका पिता; कृष्णका एक सखा; एक दिव्य पक्षी (वैनतेयका पुत्र)।

सुबस*-वि० अच्छी तरह बसा हुआ; स्वाधीन। अ० स्वेच्छापूर्वक, आजादीसे;...के कारण।

सुबह-स्त्री० [अ० 'सुब्ह'] सबेरा, भोर, प्रातःकाल। **-दम**-अ० गजरदम, मुहँअँधेरे। **-सुबह**-अ० बहुत सबेरे, तड़के। **-का तारा,-का सितारा**-शुक्र ग्रह। **-का सफ़ेदा**-पौ फटनेके समयका उजाला। **-से शामतक**-सारा दिन। मु० **-उठकर हाथ देखना**-सबेरे आँख खुलते ही अपने दोनों हाथोंकी रेखाएँ देखना, जिसमें किसी मनहूसका मुँह देखनेसे अधिक अनिष्ट होनेका डर न रहे। **-कर देना**-रात गुजार देना। **-का निकला शामको आना**-आवारागर्दी करना। **-शाम करना**-टाल-मटोल, आज-कल करना।

सुबहान, सुभान*-अ० पवित्र परमेश्वर।

सुबास-स्त्री० दे० 'सुगंध'।

सुबासना*-स्त्री० सुगंध। स० क्रि० सुवासित करना।

सुबासिक, सुबासित-वि० दे० 'सुवासित'।

सुबाहु-पु० [सं०] एक राक्षस जो मारीचका भाई था और उसके साथ विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न करते हुए राम-लक्ष्मणसे पराजित हुआ। वि० सुंदर या बलवान् बाँहोंवाला। * स्त्री० सेना, फौज। **-शत्रु**-पु० राम।

सुबिस्ता-†पु० सुभीता, सुविधा।

सुबीज-पु० [सं०] अच्छा बीज; खसखस; शिव। वि० सुंदर या अच्छे बीजोंवाला।

सुबीता-पु० दे० 'सुभीता'।

सुबुक-वि० [फ़ा०] हलका; नाजुक; तेज, चुस्त; * सुंदर। **-दस्त**-वि० फुरतीसे काम करनेवाला, लघुहस्त। **-दस्ती**-स्त्री० हाथकी फुरती, हस्त-लाघव।

सुबुद्धि-स्त्री० [सं०] अच्छी, सुंदर बुद्धि। वि० अच्छी बुद्धिवाला, बुद्धिमान्।

सुबू-स्त्री० दे० 'सुबह'।

सुबूत-पु० [अ०] प्रमाण; साक्ष्यसे सिद्धि।

सुबोध-वि० [सं०] जो सहज ही समझमें आये, आसान।

सुभंग-वि० [सं०] जो आसानीसे टूट जाय, तुनुक। पु० नारियलका पेड़।

सुभ*-वि० दे० 'शुभ'।

सुभक्ष्य-पु० [सं०] बढ़िया भोजन।

सुभग-वि० [सं०] भाग्यवान्; सुंदर; प्रिय; नाजुक।

सुभगा-वि० स्त्री० [सं०] सुंदरी; सुहागिन। स्त्री० पति-प्रिया, पतिकी प्यारी स्त्री; (दुर्गाके प्रतीकके रूपमें पूजी जानेवाली) पंचवर्षीया कुमारी; एक रागिनी; हल्दी।

सुभग्ग*-वि० दे० 'सुभग'।

सुभट-पु० [सं०] रणकुशल योद्धा।

सुभटवंत*-पु० दे० 'सुभट'।

सुभट्ट-पु० नामी योद्धा; [सं०] बहुत बड़ा पंडित।

सुभद्र-वि० [सं०] अति शुभ, अति मांगलिक।

सुभद्रा-स्त्री० [सं०] कृष्णकी बहिन जिसे अर्जुनने हरण करके ब्याह किया और जिससे अभिमन्युकी उत्पत्ति हुई।

सुभद्रेश-पु० [सं०] अर्जुन।

सुभर-वि० अच्छी तरह भरा हुआ; सुपुष्ट-'सिर औ पायँ सुभर गिउ छोटी'-प०; शुभ्र, उज्ज्वल-'मानसरोवर सुभर जल हंसा केलि कराहिं'-कबीर; [सं०] घना; प्रचुर।

सुभाइ*-पु० दे० 'स्वभाव'। * अ० दे० 'स्वभावतः'।

सुभाउ*-पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभाग-वि० [सं०] भाग्यवान्। * पु० सौभाग्य।

सुभागी-वि० भाग्यवान्।

सुभागीन*-वि० सौभाग्यशाली।

सुभाग्य*-पु० दे० 'सौभाग्य'।

सुभाना*-अ० क्रि० सुहाना, शोभित होना।

सुभानु-वि० [सं०] सुंदर दीप्तियुक्त। पु० कृष्णका एक

पुत्र; सतरहवाँ संवत्सर।

सुभाय*–पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभायक*–वि० दे० 'स्वाभाविक'।

सुभाव*–पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभावित–वि० [सं०] अच्छी तरह सिक्त किया हुआ।

सुभाषित–वि० [सं०] सुंदर रूपसे कथित; वाग्मी; सुंदर भाषण करनेवाला। पु० सुंदर, कवित्वमय उक्ति, सूक्ति। **–और विनोद**–पु० (विट एंड ह्यूमर) अनोखी बात कहने–विलक्षण उत्तर देने–की क्षमता तथा हास्य-प्रियता।

सुभाषी(षिन्)–वि० [सं०] सुंदर भाषण करनेवाला, सुवक्ता।

सुभास्वर–वि० [सं०] खूब चमकनेवाला, दीप्तिमान्। पु० पितरोंका एक वर्ग।

सुभिक्ष–पु० [सं०] भिक्षा या अन्नकी सुलभता; वह काल जब देशमें अन्नकी बहुतायत हो, भिक्षा सुलभ हो, सुकाल।

सुभी*–वि० स्त्री० शुभकारिणी।

सुभीता–पु० आसानी; सुयोग; आराम।

सुभुज–वि० [सं०] सुंदर भुजाओंवाला।

सुभूषित–वि० [सं०] सुंदर रूपसे भूषित, खूब सजाया, सँवारा हुआ।

सुभौटी*–स्त्री० शोभा।

सुभ्र*–वि० दे० 'शुभ्र'।

सुभ्रु, सुभ्रू–वि० [सं०] सुंदर भौंवाला। स्त्री०सुंदरी, नारी।

सुमंगली–स्त्री० कन्यापक्षके पुरोहितको दी जानेवाली सिंदूरदानकी दक्षिणा।

सुमंत–पु० दे० 'सुमंत्र'।

सुमंत्र–पु० [सं०] दशरथका मंत्री और सारथि जो वनको जाते समय रामको रथपर बैठाकर नगरसे बाहर ले गया; सुंदर मंत्र, अच्छी सलाह।

सुमंत्रित–वि० [सं०] जिसे अच्छी सलाह दी गयी हो; जिसकी योजना बुद्धिमत्तापूर्वक बनायी गयी हो।

सुम–पु० [फा०] घोड़े या गधेका खुर जो बीचसे फटा नहीं होता; [सं०] फूल; चंद्रमा। **–दोन***–पु० फूलोंसे भरा दोना–'गुरु समीप सुमदोन दोउ धरि पद कियो प्रनाम'–रघु०।

सुमत*–स्त्री० दे० 'सुमति'।

सुमति–वि० [सं०] बहुत चतुर। स्त्री० अच्छी बुद्धि या स्वभाव, उदाराशयता; सुरुचि।

सुमधुर–वि० [सं०] अति मधुर; बहुत नाजुक।

सुमध्यमा, सुमध्या–वि० स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री)।

सुमन(स्)–पु० [सं०] पुष्प; * देवता। **–चाप**–पु० [हिं०] कामदेव। **–माल**–पु० [हिं०] पुष्पहार। **–राज***–पु० इंद्र।

सुमनस–पु० देवता; विद्वान्; पुष्प। वि०सुंदर मनवाला, प्रसन्न।

सुमनस्क–वि० [सं०] प्रसन्नचित्त।

सुमना–स्त्री० [सं०] चमेली; सेवती; कबरी गाय; धर्मकी पत्नी; केकय नरेशकी एक कन्या।

सुमना(नस्)–पु० [सं०] देवता; नेक आदमी; विद्वान्; गेहूँ। वि० उदाराशय; संतुष्ट।

सुमनित*–वि० सुंदर मणि या मणियोंसे युक्त।

सुमनोकस, सुमनौकस–पु० [सं०] स्वर्ग।

सुमरन*–पु० दे० 'स्मरण'। स्त्री० सुमरनी।

सुमरना*–स० क्रि० स्मरण करना, जपना।

सुमरनी–स्त्री० २७ दानोंकी जपमाला।

सुमात्रा–पु० मलयद्वीपपुंजके अंतर्गत एक द्वीप।

सुमानस–वि० [सं०] अच्छे मनवाला, नेकमिजाज।

सुमानी(निन्)–वि० [सं०] स्वाभिमानी।

सुमार–† पु० दे० 'शुमार'। * वि० चुना हुआ।

सुमार्ग–पु० [सं०] अच्छी राह, सुपथ।

सुमाली(लिन्)–पु० [सं०] एक राक्षस जिसकी कन्या केकसीके गर्भसे रावण, कुंभकर्ण आदिकी उत्पत्ति हुई।

सुमित्र–पु० [सं०] अच्छा दोस्त, सन्मित्र।

सुमित्रा–स्त्री० [सं०] दशरथकी मँझली रानी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थीं; मार्कंडेयकी माता। **–तनय, –नंदन,**–पु० लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमिरन†–पु० दे० 'स्मरण'।

सुमिरना–स० क्रि० दे० 'सुमरना'।

सुमिरनिया*–स्त्री० दे० 'सुमरनी'।

सुमुख–वि०[सं०] सुंदर मुखवाला, सुंदर, मनोज्ञ; प्रसन्न।

सुमुखी–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर मुखवाली। स्त्री० सुंदरी स्त्री; आईना; एक मूर्छना (संगीत); एक वृत्त; एक अप्सरा।

सुमृत, सुमृति*–स्त्री० दे० 'स्मृति'।

सुमेध*–वि० दे० 'सुमेधा'।

सुमेधा–स्त्री० [सं०] ज्योतिष्मती, मालकँगनी।

सुमेधा(धस्)–वि०[सं०] सुंदर मेधा, बुद्धिवाला, सुबुद्धि।

सुमेरु–पु०[सं०] एक पर्वत जो पुराणोंके अनुसार इलावृत-वर्षमें अवस्थित है और सोनेका बना हुआ है, स्वर्णगिरि; उत्तर ध्रुव; जपमालाके बीचका बड़ा दाना; एक वर्णवृत्त।

सुयं*–अ० दे० 'स्वयम्'। **–वर***–पु० दे० 'स्वयंवर'।

सुयश(स्)–पु० [सं०] सुंदर यश, सुकीर्ति।

सुयशा(शस्)–वि० [सं०] सुंदर यशवाला।

सुयुक्ति–स्त्री० [सं०] सुंदर युक्ति, अच्छा उपाय।

सुयोग–पु० [सं०] सुंदर योग; बढ़िया मौका।

सुयोग्य–वि० [सं०] अति योग्य, बहुत लायक।

सुयोधन–पु० [सं०] दुर्योधन।

सुरंग–पु० लाल या लाखी रंगका घोड़ा। वि० [सं०] सुंदर रंगवाला; सुंदर; * सरस; स्वच्छ। स्त्री० सेंध; मकानके नीचे खोदकर बनाया हुआ गुप्त मार्ग; जमीनके नीचे खोदकर बनायी हुई नाली जिसमें बारूद बिछाकर किलेकी दीवार, चट्टान आदि उड़ाते हैं (आधुनिक); जमीन या समुद्रमें रखा जानेवाला बारूद आदिसे भरा गोला जिसका स्पर्श होनेपर विस्फोट होता है और जहाज आदि नष्ट हो जाते हैं। **–प्रसारक पोत**–पु० (माइनलेयर) आक्रमणकारी शत्रुके जहाजोंको रोकनेके लिए समुद्रमें बारूदकी सुरंगें बिछानेवाला पोत। **–मार्जक(–हारक) पोत**–पु० (माइनस्वीपर) समुद्रमें बिछायी गयी बारूदसे भरी सुरंगोंको हटाने, दूर करनेवाला जहाज।

सुर–पु० [सं०] देवता; सूर्य; मुनि; पंडित। **–कंत***–पु०

इंद्र। **–कानन**–पु० देवोद्यान। **–कामिनी**–स्त्री० अप्सरा। **–कारु**–पु० देवताओंके शिल्पी, विश्वकर्मा। **–कार्मुक**–पु० इंद्रधनुष्। **–गज**–पु० ऐरावत। **–गाय**–स्त्री० [हिं०] कामधेनु। **–गिरि**–पु० मेरु। **–गुरु**–पु० बृहस्पति। **–गैया***–स्त्री० कामधेनु। **–चाप**–पु० इंद्रधनुष्। **–जन**–पु० देववर्ग; दे० क्रममें। **–तरंगिणी**–स्त्री० आकाशगंगा; गंगा नदी। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–तात**–पु० कश्यप; इंद्र। **–त्राण,–त्राता(तृ)**–पु० विष्णु; इंद्र। **–द्रुम**–पु० कल्पवृक्ष; देवदारु। **–द्विट्(ष्)**–पु० सुरद्वेषी, असुर; राहु। **–धाम(न्)**–पु० स्वर्ग। (**मु०–धाम सिधारना**–मर जाना।) **–धुनी**–स्त्री० गंगा। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–नदी**–स्त्री० गंगा। **–नाथ,–नायक**–पु० इंद्र। **–नारी**–स्त्री० देवांगना। **–नाह***–पु० दे० 'सुरनाथ'। **–निम्नगा**–स्त्री० गंगा। **–निर्झरिणी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–प***–पु० दे० 'सुरपति'। **–पति**–पु० इंद्र; शिव। **–पतितनय**–पु० अर्जुन; जयंत। **–पथ**–पु० आकाश; छायापथ। **–पर्वत**–पु० मेरु पर्वत। **–पादप**–पु० कल्पवृक्ष। **–पाल,–पालक**–पु० इंद्र। **–पुर**–पु० अमरावती; स्वर्ग। **–पुरी**–स्त्री० अमरावती। **–पुरोधा(धस्)**–पु० बृहस्पति। **–प्रिया**–स्त्री० जाती, चमेली; अप्सरा। **–बाला**–स्त्री० देवांगना। **–बृच्छ***–पु० दे० 'सुरवृक्ष'। **–बेल**–स्त्री० [हिं०] कल्पलता। **–भवन**–पु० देवमंदिर। **–भान***–पु० इंद्र; सूर्य। **–भिषक्(ज्)**–पु० अश्विनीकुमार। **–भूप**–पु० [हिं०] इंद्र; विष्णु। **–भूरुह**–पु० देवदारु; कल्पवृक्ष। **–भोग**–पु० देवताओंका भोग्य, अमृत। **–भौन***–पु० दे० 'सुरभवन'। **–मणि**–पु० चिंतामणि। **–मृत्तिका**–स्त्री० गोपीचंदन। **–मौर***–पु० विष्णु। **–युवति,–योषित्**–स्त्री० अप्सरा। **–राइ***–पु० इंद्र; विष्णु। **–राज,–राट्(ज्)**–पु० इंद्र। **–राय,–राव***–पु० दे० 'सुरराज'। **–रिपु**–पु० देवशत्रु, राक्षस, दानव। **–रूख***–पु० कल्पवृक्ष। **–लता**–स्त्री० महाज्योतिष्मती लता। **–लोक**–पु० स्वर्ग, देवलोक। **–लोक-सुंदरी**–स्त्री० अप्सरा; दुर्गा। **–वधू**–स्त्री० देवांगना। **–वन**–पु० देवोद्यान। **–वर्त्म(न्)**–पु० आकाश। **–वल्लभा**–स्त्री० सफेद दूब। **–वाणी**–स्त्री० देववाणी, संस्कृत। **–वास**–पु० स्वर्ग। **–वाहिनी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–विटप,–वृक्ष**–पु० कल्पवृक्ष। **–वैरी**–पु० (देवताओंके शत्रु) असुर। **–विलासिनी**–स्त्री० अप्सरा। **–वीथी**–स्त्री० नक्षत्रवीथी, नक्षत्रोंका मार्ग। **–वीर***–पु० इंद्र। **–वैद्य**–पु० अश्विनीकुमार। **–शत्रु**–पु० असुर। **–शाखी(खिन्)**–पु० कल्पवृक्ष। **–शिल्पी(ल्पिन्)**–पु० विश्वकर्मा। **–श्रेष्ठ**–पु० वह जो देवताओंमें श्रेष्ठ हो; विष्णु; शिव; गणेश; इंद्र; धर्म। **–सदन,–सद्म(न्)**–पु० स्वर्ग; देवालय। **–सरि(री)***–स्त्री० गंगा; गोदावरी। **–सरिता**–स्त्री० [हिं०] दे० 'सुरसरित्'। **–सरित्**–स्त्री० गंगा। **–सरित्सुत**–पु० भीष्म। **–साईं***–पु० इंद्र; विष्णु; शिव। **–साल***–वि० देवताओंको सालनेवाला, सुरपीडक। **–साहब***–पु० देवताओंके स्वामी, विष्णु; इंद्र। **–सिंधु**–स्त्री० गंगा; मंदाकिनी। **–सुंदरी**–स्त्री० अप्सरा; दुर्गा; एक योगिनी। **–सुरभी**–स्त्री० कामधेनु। **–सेनप**–पु० देवताओंके सेनापति, कार्त्तिकेय। **–सेना**–स्त्री० देवताओंकी सेना। **–सैयाँ***–पु० दे० 'सुरसाईं'। **–सैनी***–स्त्री० हरिशयनी एकादशी। **–स्त्री**–स्त्री० अप्सरा। **–स्रोतस्विनी**–स्त्री० गंगा। **–स्वामी(मिन्)**–पु० इंद्र; विष्णु; शिव।

सुर–पु० स्वर, आवाज। **–कुदाव***–पु० स्वर-परिवर्तन द्वारा धोखा देना। **–तान**–स्त्री० स्वरका आलाप; दे० क्रममें। **–ताल**–पु० स्वर और ताल। **–दार**–वि० सुरीला। **–फाँकताल**–पु० तालका एक प्रकार। **–बहार**–पु० सितार जैसा एक बाजा। **–भंग**–पु० दे० 'स्वर-भंग'। **–सिंगार**–पु० एक बाजा। **मु०–मिलाना**–आवाज मिलाना; स्वरोंका मेल करना।

सुरकना–स० क्रि० दे० 'सुड़कना'।

सुरक्त–वि० [सं०] गाढ़ा रँगा हुआ; गाढ़ा लाल; बहुत प्रभावित; अनुरक्त; बहुत सुंदर।

सुरक्षण–पु० [सं०] सम्यक् रक्षण।

सुरक्षा–स्त्री० [सं०] सम्यक्, समुचित रक्षा। **–परिषद्**–स्त्री० (सिक्यूरिटी काउंसिल) संयुक्त राष्ट्रसंघकी कार्यपालिका परिषद् जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस तथा चीन–इन देशोंके पाँच स्थायी सदस्य और अन्य राष्ट्रोंके चार अस्थायी सदस्य लिये जाते हैं। (विश्वशांति-संबंधी समस्याएँ मुख्य रूपसे इसीके सामने विचारार्थ उपस्थित की जाती हैं।)

सुरक्षित–वि० [सं०] भली भाँति, अच्छी तरह रक्षित। **–कोष्ठक**–पु० (सेफ्टीवाल्ट) किसी अधिकोष(बैंक)के कोषागारमें कबूतरके दरबेकी तरह बने हुए कोष्ठक, घर या खाने जिनमें ग्राहकोंसे किराया लेकर उनकी बहुमूल्य वस्तुएँ–आभूषण, सोना, रत्नादि–सुरक्षित रखी जाती हैं।

सुरख*–वि० दे० 'सुर्ख़'।

सुरखा*–पु० दे० 'सुर्ख़ा'।

सुरख़ाब–पु० दे० 'सुर्ख़ाब'।

सुरखिया–स्त्री० एक चिड़िया जिसका सिर, गरदन और पीठ लाल रंगकी होती है।

सुरखी–स्त्री० दे० 'सुर्ख़ी'।

सुरग*–पु० दे० 'स्वर्ग'।

सुरच्छन*–पु० दे० 'सुरक्षण'।

सुरज*–पु० सूर्य।

सुरजन*–पु० सुजन, नेक आदमी। वि० चतुर।

सुरझन*–स्त्री० दे० 'सुलझन'।

सुरझना*–अ० क्रि० दे० 'सुलझना'।

सुरझाना*–स० क्रि० दे० 'सुलझाना'।

सुरझावना*–स० क्रि० दे० 'सुलझाना'।

सुरत*–स्त्री० ध्यान, याद। पु० [सं०] संभोग, कामक्रीड़ा; एक भिक्षु (बौद्ध)। वि० क्रीड़ाशील; अति अनुरक्त। **–केलि,–क्रीड़ा**–स्त्री० कामक्रीड़ा। **–गुप्ता,–गोपना**–स्त्री० रतिचिह्न छिपानेवाली नायिका। **–ग्लानि**–स्त्री० सुरत-जनित शिथिलता।

सुरता–स्त्री० [सं०] देवत्व; सुरसमूह; एक अप्सरा; पत्नी;

* ध्यान; होश। पु० समाधि लगानेवाला, ध्यान करनेवाला; श्रोता–'कथता, बकता, सुरता सोई···'–कबीर।

सुरतान–पु० दे० 'सुलतान'; दे० 'सुर' [हिं०] में।

सुरति–स्त्री० [सं०] रति, कामक्रीड़ा, विहार। **–गोपना**–स्त्री० दे० 'सुरत-गोपना'।

सुरतिवंत*–वि० कामविह्वल।

सुरती–स्त्री० तंबाकूका सुखाया हुआ पत्ता।

सुरत्न–वि० [सं०] अच्छे रत्नोंवाला; सर्वश्रेष्ठ। पु० सुवर्ण; लाल आदि अच्छे रत्न।

सुरथा–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा; एक पुराणवर्णित नदी।

सुरथाकार–पु० [सं०] एक वर्ष, भूखंड, देश।

सुरखुली–स्त्री० एक पौधा जिसकी छालसे रंग बनाते हैं।

सुरभि–वि० [सं०] सुगंधित, खुशबूदार; प्रिय, मनोरम। स्त्री० सुगंधि, सुवास; सल्लकी; एक पौराणिक गाय जो गोजातिकी माता मानी जाती है; गाय; पृथ्वी; तुलसी। **–चूर्ण**–पु० खुशबू मिलाया हुआ चूरा (पाउडर)। **–तनय,–पुत्र**–पु० बैल। **–तनया**–स्त्री० गाय। **–मास**–पु० वसंत ऋतु; चैत्र मास। **–मुख**–पु० वसंतका आरंभ। **–समय**–पु० वसंत ऋतु।

सुरभित–वि० [सं०] सुगंधित किया हुआ, बासा हुआ।

सुरभिमान्(मत्)–वि० [सं०] सुगंधियुक्त।

सुरभी–स्त्री० [सं०] खुशबू; गाय; सलई।

सुरमई–वि० सुरमेके रंगका, हलका नीला। पु० सुरमेके रंगसे मिलता-जुलता रंग; इस रंगका कबूतर। स्त्री० हलके काले रंगकी एक चिड़िया।

सुरमा–पु० [फा०] एक खनिज पदार्थ जिसका बारीक चूर्ण आँखोंमें अंजनके रूपमें लगाया जाता है; अंजन। वि० बहुत बारीक (करना, होनाके साथ)। **–कश**–वि० सुरमा लगानेवाला। पु० सुरमा लगानेकी सलाई। **–दान**–पु०,**–दानी**–स्त्री० सुरमा रखनेकी डिबिया।

सुरमै*–वि०, पु० दे० 'सुरमई'।

सुरम्य–वि० [सं०] अति रमणीय, मनोहर।

सुरर्षि–पु० [सं०] देवर्षि।

सुरली*–स्त्री० सुंदर क्रीड़ा।

सुरवाल–पु० पायजामा; सेहरा।

सुरस–वि० [सं०] सुंदर रसयुक्त, रसीला; सुस्वादु; मधुर।

सुरसती*–स्त्री० दे० 'सरस्वती'।

सुरसा–स्त्री० [सं०] समुद्र लाँघकर लंका जाते समय हनूमान्का रास्ता रोकनेवाली एक नागमाता; एक राक्षसी।

सुरसुराना–अ० क्रि० कीड़ोंका रेंगना; खुजली होना।

सुरसुराहट–स्त्री० हलकी खुजली; सुरसुरानेका भाव।

सुरसुरी–स्त्री० सुरसुराहट; छछूँदर नामकी आतिशबाजी।

सुरहना*–अ० क्रि० (घाव आदिका) भर आना, सूख जाना–'सुरह्यो घाइ देह बल आयो'–छत्र०।

सुरहरा*–वि० जिससे 'सुर-सुर'की आवाज निकलती हो।

सुरही–स्त्री० चमरी गाय; एक घास; दे० 'सोरही'।

सुरांगना–स्त्री० [सं०] देवपत्नी; अप्सरा।

सुरा–स्त्री० [सं०] मद्य, शराब। **–कार**–पु० शराब चुआनेवाला, कलाल। **–कुंभ,–घट**–पु० शराब रखनेका मटका या घड़ा, मद्यपात्र। **–गृह**–पु० मदिरालय। **–जीवी(विन्)**–पु० कलाल। **–प**–वि० सुरापान करनेवाला, शराबी। **–पात्र**–पु० शराब रखने या पीनेका पात्र। **–पान**–पु० शराब पीना; मद्यपानके समय खायी जानेवाली चाट, गजक। **–पीत**–वि० जिसने मद्यपान किया है। **–प्रिय**–वि० जिसे मद्य प्रिय हो। **–मंड**–पु० (खमीर पैदा होनेपर) शराबके ऊपर उठ आनेवाला फेन, मद्यफेन। **–भांड**–पु० दे० 'सुरा-पात्र'। **–भाजन**–पु० मदिरा रखने या पीनेका पात्र। **–मत्त**–वि० मदमस्त, शराबके नशेमें चूर। **–मद**–पु० शराबका नशा। **–समुद्र**–पु० दे० 'सुराब्धि'। **–सार**–पु० मद्यका सार (स्पिरिट), (अलकोहल)।

सुराई*–स्त्री० शूरता, बहादुरी।

सुराख–पु० दे० 'सूराख़'; सुराग।

सुराग–पु० दे० 'सुराग़'; [सं०] प्रगाढ़ प्रेम; अच्छा रंग।

सुराग़–पु० [अ०] खोज, निशान; पद-चिह्न।

सुरागाय–स्त्री० एक तरहकी जंगली गाय जिसकी पूँछके बालका चँवर बनाते हैं।

सुरागार–पु० [सं०] शराबखाना; देवालय।

सुराग़ी–पु० खोजी; जासूस; मुखबिर।

सुराचार्य–पु० [सं०] बृहस्पति।

सुराज–पु० अच्छा राज्य; स्वराज्य।

सुराजा(जन्)–पु० [सं०] अच्छा राजा।

सुराजीव–पु० [सं०] विष्णु; कलाल।

सुराजीवी(विन्)–पु० [सं०] कलाल।

सुराज्य–पु० [सं०] सुंदर, प्रजारंजक राज्य; † दे० 'स्वराज्य'।

सुराधानी–स्त्री० [सं०] शराब रखनेका छोटा घड़ा।

सुराधिप, सुराधीश–पु० [सं०] इंद्र।

सुरानीक–पु० [सं०] देवसेना।

सुरापगा–स्त्री० [सं०] गंगा।

सुराब्धि–पु० [सं०] सुराका समुद्र, पुराणोक्त समुद्र-विशेष।

सुराय*–पु० अच्छा, श्रेष्ठ राजा।

सुरायुध–पु० [सं०] देवास्त्र।

सुरारि–पु० [सं०] (देवताओंका शत्रु) असुर, राक्षस। **–हंता(तृ)**–पु० असुरोंका नाश करनेवाले, विष्णु। **–हा(हन्)**–पु० शिव।

सुरार्चन–पु० [सं०] देवपूजा।

सुरालय–पु० [सं०] स्वर्ग; मेरु; देवालय; मदिरालय।

सुराव–पु० [सं०] सुंदर ध्वनि।

सुरावास–पु० [सं०] सुमेरु; स्वर्ग; देवालय।

सुराश्रय–पु० [सं०] मेरु पर्वत।

सुरासार–पु० दे० 'सुरा'में।

सुरासुर–पु० [सं०] सुर और असुर।

सुराही–स्त्री० [अ०] लंबी गरदन और तंग मुहँका बरतन जो पहले शराब और अब अधिकतर पानी रखनेके काम आता है; सुराहीकी शकलका कपड़ा जिसे अँगरखे आदिकी दोनों बगलोंके नीचे सुंदरताके लिए लगाते हैं; नैचेका चिलमके नीचे रहनेवाला हिस्सा। **–दार**–वि० सुराहीकी शकलका। **–दार गरदन**–स्त्री० लंबी और सुंदर गरदन।

—नुमा—वि० सुराहीकी शकलका ।

सुरी—स्त्री० [सं०] देवांगना—'नरी किन्नरी आसुरी, सुरी रहत सिरनाय'—कवि० ।

सुरीला—वि० मधुर स्वरवाला ।

सुरुख*—वि० जिसका रुख अच्छा हो, प्रसन्न; दे० 'सुर्ख़' । —रू*—वि० 'सुर्ख़रू' ।

सुरुचि—स्त्री० [सं०] सुंदर, संस्कृत रुचि; सुंदर प्रकाश; सुदीप्ति; राजा उत्तानपादकी पत्नी, ध्रुवकी सौतेली माँ । वि० सुंदर रुचिवाला । पु० एक यक्ष; एक गंधर्व राजा ।

सुरुज—वि० [सं०] बहुत बीमार । * पु० दे० 'सूर्य' । —मुखी*—स्त्री० दे० 'सूर्यमुखी' ।

सुरूप—वि० [सं०] अच्छी शक्लवाला, सुंदर ।

सुरूर—पु० [अ०] आनंद; हलका, सुखद नशा, खुमार; मादकता ।

सुरेंद्र—पु० [सं०] देवराज, इंद्र । —गोप—बीरबहूटी । —चाप—पु० इंद्रधनुष् ।

सुरेश—पु० [सं०] देवराज, इंद्र; विष्णु; शिव ।

सुरेस*—पु० दे० 'सुरेश' ।

सुरै*—स्त्री० एक हानिकर घास ।

सुरैत—स्त्री० रखेली । —वाल, —वाला—पु० सुरैतके पेटसे जनमा हुआ लड़का ।

सुरैतिन—स्त्री० दे० 'सुरैत' ।

सुरोचि*—वि० सुंदर ।

सुरोपम—वि० [सं०] देवतुल्य ।

सुर्ख़—वि० [फ़ा०] लाल । —पोश—वि० जो लाल कपड़े पहने हो । —रू—वि० जिसका मुँह लाल हो; सफल, यशस्वी; प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला । —सर, —सार—पु० एक चिड़िया जिसका सिर लाल होता है; (ला०) ईरानी । —(र्ख़ो) सफ़ेद—वि० जिसकी गोराईमें सुर्खी मिली हो; सुंदर । पु० सुर्खी मिली हुई गोराई; (ला०) सोना-चाँदी । मु०—होना—दे० 'लाल होना' ।

सुर्ख़ा—पु० [फ़ा०] लाल रंग; लाल रंगका कबूतर; घोड़ेका एक रंग; आँखपर होनेवाली सुर्खी ।

सुर्ख़ाब—पु० [फ़ा०] चक्रवाक, चकवा-चकवी । —का पर—अनोखी बात, खास-खूबी (कलगियोंमें लगाये जानेके कारण) । मु०—का पर लगा होना—कोई अनोखी बात, कोई खास खूबी होना ।

सुर्ख़ी—स्त्री० [फ़ा०] लाल रंग; लाल स्याही; शीर्षक; ईंटोंका चूरा जो ईंटोंकी जुड़ाई और फर्श बनानेके काम आता है । —मायल—वि० जिसमें हल्की लाल रंगत हो । मु०—कायम करना—शीर्षक लगाना ।

सुर्ता*—वि० समझदार ।

सुर्ती—स्त्री० दे० 'सुरती' ।

सुलंक, सुलंकी*—पु० दे० 'सोलंकी' ।

सुलक्ष—वि० [सं०] शुभ लक्षणोंवाला; भाग्यवान् ।

सुलक्षण—वि० [सं०] सुंदर या शुभ लक्षणोंवाला; भाग्यशाली । पु० सुंदर या शुभ लक्षण; परीक्षण ।

सुलक्षणा—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर या शुभ लक्षणोंवाली ।

सुलक्षणी—वि०, स्त्री० दे० 'सुलक्षणा' ।

सुलग*—अ० निकट, पास ।

सुलगन—स्त्री० सुलगनेकी क्रिया ।

सुलगना—अ०क्रि० (लकड़ी, उपले आदिका) आग पकड़ना, जलने लगना; (तंबाकू आदिका) धुआँ देने लगना, पीने लायक होना; (ला०) ईर्ष्यासे जलना, कुढ़ना ।

सुलगाना—अ० क्रि० आग जलाना; भड़काना; झगड़ा उकसाना; (तंबाकू आदि) पीने योग्य बनाना ।

सुलच्छन*—वि०, पु० दे० 'सुलक्षण' ।

सुलच्छनी*—वि० स्त्री० दे० 'सुलक्षणा' ।

सुलछ*—वि० देखनेमें सुंदर ।

सुलझन—स्त्री० सुलझनेकी क्रिया; सुलझाव ।

सुलझना—अ० क्रि० गुत्थी, उलझी हुई डोर आदिका खुलना; मसलेका हल होना, उलझन, पेचीदगीका दूर होना ।

सुलझाना—स० क्रि० गुत्थी खोलना, उलझन दूर करना; हल करना, पेचीदगी दूर करना ।

सुलझाव—पु० सुलझनेका भाव: निबटारा ।

सुलटा—वि० सीधा, 'उलटा'का उलटा ।

सुलतान—पु० [अ०] बादशाह; हिंदुस्तानके तुर्क बादशाहों और तुर्कोंके सम्राटोंकी पदवी ।

सुलताना—स्त्री० [अ०] मलिका; सुलतानकी पत्नी या माँ । —चंपा—पु० एक पेड़, पुन्नाग ।

सुलतानी—वि० सुलतानका, शाही । स्त्री० राज्य, बादशाही । —बानात—स्त्री० एक तरहकी बहुत बढ़िया और मोटी बानात । —बुलबुल—स्त्री० बुलबुलका एक भेद जिसकी चोटी स्याह और पर सुर्खी मायल होते हैं ।

सुलप*—वि० दे० 'स्वल्प' ।

सुलफ—वि० लचीला; नाजुक ।

सुलफ़ा—पु० बिना तवा रखे भरा हुआ तंबाकू; गाँजेकी तरह भरकर पिया जानेवाला तंबाकू; चरस । —(फ़े)बाज़—वि० गाँजा, चरस पीनेवाला ।

सुलभ—वि० [सं०] जो आसानीसे मिल जाय, सुखलभ्य, आसान; (किसीके लिए) स्वाभाविक, समुचित; उपयोगी । —मुद्रा—स्त्री० (सॉफ्ट करेंसी) किसी देशकी वह मुद्रा जो अन्य देशोंके पास आवश्यकतासे अधिक संख्यामें इकट्ठी हो गयी हो और जिसे वे उस देशसे और अधिक माल मँगाकर खर्च करनेमें असमर्थ हों (यह सुवर्णमें परिणत नहीं की जा सकती, अन्यथा इसे देकर अन्यान्य देशोंसे माल मँगा लिया जाता और यह बढ़ने न पाती) । —मुद्रा-क्षेत्र—पु० (सॉफ्ट करेंसी एरिया) सुलभ-मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र ।

सुलभ्य—वि० [सं०] जो आसानीसे प्राप्त हो सके ।

सुललित—वि० [सं०] अति ललित, सुंदर; क्रीडाशील ।

सुलह—स्त्री० [अ०] मेल, परस्पर अनुकूलता; लड़ाई या झगड़ेके बाद किया जानेवाला मेल, समझौता । —कुल—वि० सबके साथ मेल रखनेवाला, जो किसीके साथ शत्रुभाव न रखे । स्त्री० सबके साथ मेल, मैत्री रखना । —नामा—पु० वह कागज जिसमें सुलह हो जानेकी बात या उसकी शर्तें लिखी गयी हों, राजीनामा, संधिपत्र ।

सुलाखना—* स०क्रि० छेद करना; † सोने-चाँदीको तपाकर परखना ।

सुलागना*-अ॰ क्रि॰ दे॰ 'सुलगना'।

सुलाना-स॰ क्रि॰ किसीको सोने या लेटनेमें प्रवृत्त करना।

सुलाह*-स्त्री॰ दे॰ 'सुलह'।

सुलिपि-स्त्री॰ [सं॰] उत्तम, स्पष्ट लिपि।

सुलूक-पु॰ [अ॰] बर्ताव, व्यवहार, आचरण;नेकी,भलाई; मेल; मुहब्बत (सुलूकसे रहना); ईश्वरसामीप्यकी इच्छा।

सुलेख-वि॰ [सं॰] शुभ रेखाओंवाला। पु॰ अच्छी लिखावट।

सुलेखक-पु॰ [सं॰] सुंदर अक्षर लिखनेवाला,खुशनवीस; सुंदर लेख, निबंध लिखनेवाला, प्रसिद्ध लेखक।

सुलेमाँ-पु॰ दे॰ 'सुलैमान'।

सुलैमान-पु॰ [फा॰] दाऊदका बेटा; यहूदियोंका तीसरा बादशाह जिसने यरूशलम नगरका निर्माण कराया।

सुलोक-पु॰ [सं॰] स्वर्ग।

सुलोचन-वि॰ [सं॰] सुंदर आँखोंवाला। पु॰ हिरन।

सुलोचना-वि॰ स्त्री॰ [सं॰] सुंदर आँखोंवाली। स्त्री॰ मेघनादकी पत्नी जो वासुकि नागकी कन्या थी।

सुलोचनी-वि॰ स्त्री॰ दे॰ 'सुलोचना'।

सुलोम-वि॰ [सं॰] सुंदर रोमों या बालोंवाला।

सुलोहित-वि॰ [सं॰] गहरा लाल। पु॰ सुंदर लाल रंग।

सुव*-पु॰ पुत्र।

सुवक्ता(क्तृ)-वि॰, पु॰ [सं॰] सुंदर वक्ता, वाग्मी।

सुवक्त्र-वि॰ [सं॰] सुंदर मुखवाला, सुमुख।

सुवक्षा-स्त्री॰ [सं॰] त्रिजटा और विभीषणकी माता।

सुवक्षा(क्षस्)-वि॰ [सं॰] सुंदर, चौड़ी छातीवाला।

सुवच-वि॰ [सं॰] जो आसानीसे कहा जा सके।

सुवचन-पु॰ [सं॰] सुंदर वचन। वि॰ सुवक्ता;मधुरभाषी।

सुवटा*-पु॰ दे॰ 'सुभटा'।

सुवदन-वि॰ [सं॰] सुंदर मुखवाला। पु॰ एक पौधा।

सुवदना-वि॰ स्त्री॰ [सं॰] सुमुखी। स्त्री॰ एक वृत्त।

सुवन-* वि॰ अच्छे मनवाला। * पु॰ पुत्र; पुष्प, सुमन; देवता; पंडित; [सं॰] सूर्य; अग्नि; चंद्रमा।

सुवना*-पु॰ तोता।

सुवनारा*-पु॰ दे॰ 'सुअन'।

सुवपु(स्)-वि॰ [सं॰] सुंदर शरीरवाला।

सुवरण-पु॰ सुवर्ण, सोना; धन; अच्छी जाति; अच्छा रंग; अच्छा शब्द।

सुवर्चक, सुवर्चिक-पु॰ [सं॰] सज्जी।

सुवर्चल-पु॰ [सं॰] एक देश; काला नमक; शिव।

सुवर्चला-स्त्री॰ [सं॰] सूर्यकी पत्नी; ब्राह्मी; अलसी; आदित्यभक्ता, हुरहुर; सूर्यमुखी फूल।

सुवर्चस-पु॰ [सं॰] शिव। वि॰ दीप्तिमान्।

सुवर्चस्क-वि॰ [सं॰] कांतिमान्, दीप्तिमान्।

सुवर्ण-वि॰ [सं॰] अच्छे रंगका; पीला, सुनहला; चमकीला; सोनेका बना हुआ; अच्छी जातिका; प्रसिद्ध। पु॰ अच्छा रंग; अच्छी जाति; सोना; एक यज्ञ; शिव; धतूरा; सोनेका सिक्का; धन, दौलत; एक तरहका गेरू, स्वर्णगैरिक। **-कदली**-स्त्री॰ चंपाकेला। **-कमल**-पु॰ रक्त कमल। **-करनी***-स्त्री॰ एक जड़ी। **-कार**, **-कृत्**-पु॰ सुनार। **-गर्भा**-वि॰ स्त्री॰ सोनेकी खानोंवाली, स्वर्णप्रसवा (भूमि)। **-गिरि**-पु॰ एक पर्वत (जो राजगृहमें है)। **-गैरिक**-पु॰ लाल गेरू। **-द्वीप**-पु॰ सुमात्रा टापू। **-धेनु**-स्त्री॰ दानके लिए निर्मित सोनेकी गाय। **-पद्म**-पु॰ लाल कमल। **-पृष्ठ**-वि॰ जिसकी सतह सोनेकी हो, जिसपर सोनेका पत्तर चढ़ाया गया हो। **-प्रतिमा**-स्त्री॰ सोनेकी मूर्ति। **-मान**-पु॰ (गोल्ड स्टैंडर्ड) वह मुद्रा-प्रणाली जिसमें बैंकके नोटों-(कागजी मुद्रा) का भुगतान किसी भी समय, निर्धारित दरके अनुसार, सुवर्णके रूपमें किया जा सके। **-मित्र**-पु॰ सुहागा। **-यूथिका**,**-यूथी**-स्त्री॰ सोनजूही। **-रंभा**-स्त्री॰ चंपाकेला। **-लेखा**-स्त्री॰ (कसौटपरकी) सोनेकी लकीर। **-सूत्र**-पु॰ सोनेकी सिकड़ी।

सुवर्षा-स्त्री॰ [सं॰] अच्छी वर्षा; मल्लिका, मोतिया।

सुवस*-वि॰ जो अपने अधिकारमें हो।

सुवह-वि॰ [सं॰] सुखसे वहन करने योग्य; धीर।

सुवा*-पु॰ सुग्गा, तोता।

सुवाग्मी(ग्मिन्)-वि॰, पु॰ [सं॰] सुवक्ता।

सुवाच्य-वि॰ [सं॰] आसानीसे पढ़े जाने योग्य।

सुवाना*-स॰ क्रि॰ दे॰ 'सुलाना'।

सुवार-पु॰ [सं॰] सुंदर दिन; * सूपकार, रसोइया।

सुवास-पु॰ [सं॰] सुंदर वास, सुगंध; सुंदर आवास।

सुवासित-वि॰ [सं॰] सुवासयुक्त, सुगंधित।

सुवासिन*-स्त्री॰ दे॰ 'सुआसिन'।

सुवासिनी-स्त्री॰ [सं॰] पिताके घरमें रहनेवाली युवती; सुहागिन; भद्र सधवा स्त्रीके लिए प्रयोगमें आनेवाला एक आदर-सूचक शब्द।

सुविख्यात-वि॰ [सं॰] बहुत प्रसिद्ध।

सुविग्रह-वि॰ [सं॰] सुंदर देहवाला, रूपवान्।

सुविचारित-वि॰ [सं॰] भली भाँति सोचा-विचारा हुआ।

सुविदग्ध-वि॰ [सं॰] बहुत चालाक, काइयाँ।

सुविदित-वि॰ [सं॰] अच्छी तरह विदित, ज्ञात।

सुविद्-पु॰ [सं॰] विद्वान् या चतुर व्यक्ति। वि॰ विद्वान्।

सुविद्य-वि॰ [सं॰] बड़ा विद्वान्, सुपंडित।

सुविधा-स्त्री॰ दे॰ 'सुभीता'।

सुविधाधिकार-पु॰ (राइट ऑफ ईज़मेंट) किसीकी भूमि, पथ आदिका अपने आरामके लिए प्रयोग करने या अपनी भूमि आदिका दूसरे द्वारा दुरुपयोग होनेसे रोकनेका अधिकार।

सुविधायक कोष-पु॰ (प्रॉविडेंट फंड) दे॰'भविष्य-निधि', संचित कोष।

सुविधि-स्त्री॰[सं॰]अच्छा नियम या आदेश; अच्छा ढंग।

सुविनीत-वि॰[सं॰] अति विनीत;अच्छी तरह सिखाया, सधाया हुआ (घोड़ा आदि)।

सुविस्मित-वि॰ [सं॰] बहुत चकित; बहुत आश्चर्यजनक।

सुविहित-वि॰ [सं॰] अच्छी तरह किया हुआ; अच्छी तरह रखा हुआ; सुव्यवस्थित।

सुवीज-पु॰, वि॰ [सं॰] दे॰ 'सुबीज'।

सुवीर-वि॰ [सं॰] बहुत बड़ा वीर, योद्धा; बहुतसे वीरों, पुत्रों आदिवाला। पु॰ स्कंद; शिव; बेरका पेड़।

सुवृत्त-वि॰ [सं॰] सच्चरित्र, नेक; खूब गोल; अच्छे छंदमें

रचित । पु० सुंदर वृत्त, चरित्र; सूरन; कल्याण ।

सुवृत्ति-स्त्री० [सं०] सुंदर वृत्ति, जीविका; सुंदर आचरण, सदाचार; संयम, पवित्रताका जीवन; ब्रह्मचर्य ।

सुवेल-पु० [सं०] लंकाका त्रिकूट पर्वत जिसपर रामकी सेनाने पड़ाव किया था । वि० शांत; बहुत झुका हुआ ।

सुवेश, सुवेष-वि० [सं०] सुंदर वेशयुक्त; सुंदर कपड़े पहने हुआ; सुंदर; सजीला । पु० बढ़िया पोशाक ।

सुवेस*-वि० दे० 'सुवेश' । पु० सुंदर वेश ।

सुवैया-पु० सोनेवाला ।

सुव्यवस्था-स्त्री० [सं०] सुंदर व्यवस्था, सुप्रबंध ।

सुव्यवस्थित-वि० [सं०] सुंदर व्यवस्थायुक्त ।

सुव्रत-वि० [सं०] सुंदर व्रतधारी; दृढ़तासे व्रतका पालन करनेवाला, धर्मनिष्ठ; सीधा, सधा हुआ (घोड़ा आदि) । पु० ब्रह्मचारी; एक प्रजापति ।

सुव्रता-वि० स्त्री० [सं०] सुंदर व्रतवाली; साध्वी । स्त्री० दक्षकी एक पुत्री; सीधी गाय; पतिव्रता स्त्री ।

सुशंस-वि०[सं०] प्रशंसनीय; कीर्तिमान्; प्रख्यात ।

सुशब्द-वि०[सं०] सुस्वर, मधुर स्वरयुक्त (जैसे बाँसुरी) ।

सुशासन-पु० [सं०] सुंदर शासन, उत्तम राज्य-प्रबंध, सुराज्य ।

सुशासित-वि० [सं०] भली भाँति शासित; सुनियंत्रित ।

सुशास्य-वि० [सं०] जिसपर आसानीसे शासन या नियंत्रण किया जा सके ।

सुशिक्षित-वि० [सं०] सुशिक्षाप्राप्त, जिसने अच्छी शिक्षा पायी हो; अच्छी तरह सधाया, सिखाया हुआ(घोड़ा आदि)।

सुशील-वि० [सं०] सुंदर शीलवाला, सत्स्वभाव; सच्चरित्र; विनीत; सीधा । पु० अच्छा स्वभाव ।

सुशीलता-स्त्री० [सं०] सच्चरित्रता; विनम्रता; सीधापन ।

सुशीला-स्त्री० [सं०] सुदामाकी पत्नी; यमकी पत्नी; कृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक; राधाकी एक सहेली ।

सुशोभन-वि० [सं०] अति सुंदर, सुहावना ।

सुशोभित-वि० [सं०] अति शोभायुक्त; विराजमान ।

सुश्राव्य-वि० [सं०] जो सुननेमें अच्छा लगे, श्रुतिमधुर ।

सुश्री-वि० [सं०] अति सुंदर, शोभन; अति धनी । स्त्री० स्त्रियोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जानेवाला शब्द ।

सुश्रीक-वि० [सं०] सुंदर श्री-युक्त ।

सुश्रुत-वि० [सं०] अच्छी तरह सुना हुआ; बहुत प्रसिद्ध; वेदज्ञ । पु० आयुर्वेदके अति प्राचीन और स्तंभभूत आचार्य जो विश्वामित्रके पुत्र कहे जाते हैं और जिनका ग्रंथ सुश्रुतसंहिता आयुर्वेदकी बृहत्त्रयीके अंतर्गत है; सुश्रुतसंहिता । -**संहिता**-स्त्री० सुश्रुतरचित प्रसिद्ध चिकित्सा-ग्रंथ ।

सुश्रूखा*-स्त्री० दे० 'शुश्रूषा' ।

सुश्रूषा*-स्त्री० दे० 'शुश्रूषा' ।

सुश्रोणि-वि०स्त्री०[सं०]सुंदर नितंबोंवाली । स्त्री०एक देवी ।

सुश्लिष्ट-वि० [सं०] मजबूतीसे जुड़ा, मिला हुआ ।

सुश्लोक-वि० [सं०] पुण्यशाली; सुप्रसिद्ध ।

सुष*-पु० सुख ।

सुषमना*-स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुषमनि*-स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुषमा-स्त्री० [सं०] परम शोभा, अतिशय सुंदरता; एक वर्णवृत्त । -**शाली(लिन्)**-वि० अति सुंदर ।

सुषाना*-स० क्रि० सुखाना । अ० क्रि० सूखना ।

सुषारा*-वि० दे० 'सुखारा' ।

सुषिक्त-वि० [सं०] अच्छी तरह सींचा हुआ ।

सुषिर-वि० [सं०] छेदवाला, सूराखदार, खोखला; सावकाश । पु० बाँस; बेंत; काठ; चूहा; छेद; अग्नि; फूँककर बजाया जानेवाला बाजा ।

सुषुप्त-वि० [सं०] गहरी नींदमें सोया हुआ । पु० सुषुप्तावस्था ।

सुषुप्ति-स्त्री० [सं०] गहरी नींद; सत्त्वप्रधान अज्ञान, आनंदमय कोष ।

सुषुम्णा, सुषुम्ना-स्त्री० [सं०] मेरुदंडके बहिर्मार्गमें इड़ा और पिंगला नाड़ियोंके बीचमें स्थित एक नाड़ी; आयुर्वेदके अनुसार नाभिके मध्यमें स्थित एक प्रधान नाड़ी ।

सुषेण-वि० [सं०] दिव्यास्त्रवाला (कृष्ण, इंद्र) । पु० विष्णु; एक गंधर्व; एक वानर जो सुग्रीवका चिकित्सक था ।

सुषोपति, सुषोप्ति*-स्त्री० दे० 'सुषुप्ति' ।

सुष्ठु-अ० [सं०] अतिशय; सुंदर रीतिसे; ठीक-ठीक । वि० उत्तम; सुंदर ।

सुष्ठुता-स्त्री [सं०] सुंदरता; कल्याण, अभ्युदय ।

सुष्मना*-स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुसंग-पु० [सं०] अच्छी सुहबत, सत्संग ।

सुसंगत-वि० [सं०] बहुत उचित, युक्त ।

सुसंगति-स्त्री० [सं०] अच्छी सुहबत; अच्छा मेल; (रलीवेंसी) अच्छी तरह मेल खाने, ठीक बैठने, उपयुक्त होनेकी क्रिया या भाव ।

सुसंपन्न-वि० [सं०] अति संपन्न, जिसके पास यथेष्ट धनसंपत्ति हो; अच्छी तरह पूरा किया हुआ ।

सुसंस्कृत-वि० [सं०] सुंदर संस्कारयुक्त; भली भाँति संस्कार किया हुआ; घृतादि द्वारा भली भाँति पकाया हुआ ।

सुस*-स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सुसकना*-अ० क्रि० दे० 'सिसकना' ।

सुसज्जित-वि० [सं०] अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ ।

सुसताना-अ० क्रि० दे० 'सुस्ताना' ।

सुसमय-पु० [सं०] अच्छा समय, सुकाल ।

सुसमा*-स्त्री० दे० 'सुषमा' ।

सुसर-पु० पति या पत्नीका पिता, श्वशुर ।

सुसरा-पु० दे० 'सुसर' ।

सुसरार, सुसरारि-स्त्री० दे० 'ससुराल' ।

सुसराल-स्त्री० दे० 'ससुराल' ।

सुसह-वि० [सं०] जिसका सरलतासे सहन किया जा सके; सहनशील । पु० शिव ।

सुसा*-स्त्री० दे० 'स्वसा' । पु० एक चिड़िया ।

सुसाध्य-वि० [सं०] जिसका साधन सहज हो, सुखसाध्य; जो आसानीसे नियंत्रणमें रखा जा सके; आसान ।

सुसाना*-अ० क्रि० सिसकना, सिसकी भरना ।

सुसिक्त-वि० [सं०] दे० 'सुषिक्त' ।

सुसिद्ध–वि० [सं०] अच्छी तरह पका या पकाया हुआ; जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो।

सुसुकना–अ० क्रि० 'सिसकना।

सुसुप्ति*–स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।

सुसेन–पु० दे० 'सुषेण'।

सुसेव्य–वि० [सं०] सेवा करने योग्य; आसानीसे अनुधावन करने योग्य (मार्ग)।

सुस्त–वि० [फ़ा०]ढीला; कमजोर; आलसी; धीमा; मंदबुद्धि; उदास, उतरा हुआ (चेहरा)। **–क़दम**–वि० धीमा चलनेवाला।

सुस्तना, सुस्तनी–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर स्तनोंवाली (स्त्री)।

सुस्ताई*–स्त्री० सुस्ती।

सुस्ताना–अ० क्रि० थकावट दूर करना, आराम करना।

सुस्ती–स्त्री० [फ़ा०] ढिलाई; कमजोरी; आलस्य; पुरुषेंद्रियकी शिथिलता। **मु०–उतारना,–तोड़ना**–अँगड़ाई लेना।

सुस्तैन*–पु० दे० 'स्वस्त्ययन'।

सुस्थ–वि० [सं०] सुखपूर्वक स्थित; स्वस्थ; सुखी; उन्नतिशील। **–चित्त,–मानस**–वि० प्रसन्नचित्त; सुखी।

सुस्थता–स्त्री० [सं०] आरोग्य, स्वास्थ्य; सुख; प्रसन्नता।

सुस्थिति–स्त्री० [सं०] अच्छी हालत; सुखकी स्थिति; अभ्युदय।

सुस्थिर–वि० [सं०] अधिक स्थिर, खूब दृढ़; शांत।

सुस्नात–वि० [सं०] जिसने यज्ञोपरांत स्नान किया हो; अच्छी तरह स्नान किया हुआ।

सुस्पर्श–वि० [सं०] छूनेमें बहुत अच्छा मालूम होनेवाला, मुलायम, कोमल।

सुस्मित–वि० [सं०] मधुर हास्ययुक्त, मुस्कराता हुआ।

सुस्मिता–स्त्री० [सं०] हँसमुख स्त्री।

सुस्वर–वि० [सं०] सुमधुर स्वरवाला; सुरीला; जोरका (शब्द)। पु० मधुर शब्द; शंख; गरुड़का एक पुत्र।

सुस्वाद–वि० [सं०] अच्छे स्वादका, जायकेदार; मीठा।

सुस्वादु–वि० [सं०] दे० 'सुस्वाद'। **–तोय**–वि० मीठे जलवाला।

सुहंग*–वि० दे० 'सुहँगा'।

सुहँगम*–वि० सरल, सुगम।

सुहँगा–वि० सस्ता, महँगाका उलटा।

सुहटा*–वि० सुंदर, सुहावना।

सुहनी*–स्त्री० दे० 'सोहनी'।

सुहबत–स्त्री० [अ०] संग, साथ; मित्रता; साथ उठनाबैठना; जलसा, गोष्ठी; सहवास, मैथुन। **मु०–उठाना**–किसीकी सुहबतमें रहकर कुछ सीखना; पास रहना। **–बिगड़ना**–अनबन हो जाना, मित्रता भंग हो जाना; खराब सुहबतमें पड़ जाना।

सुहबती–वि० साथ उठने-बैठनेवाला; मैत्रीभाव रखनेवाला।

सुहराब–पु० [फ़ा०] रुस्तमका बेटा जो उसीके हाथों मारा गया।

सुहल*–पु० दे० 'सुहैल'।

सुहा–पु० लाल नामकी चिड़िया।

सुहाग–पु० सुहागिन होनेकी अवस्था, सौभाग्य, अहिवात; ब्याहमें गाया जानेवाला मांगलिक गीत; वे गहने-कपड़े जो सुहागिन स्त्री पहनती है; वह कपड़ा जो ब्याहके समय दूल्हा पहनता है; सौभाग्य-सूचक सिंदूर (देना, लेना); एक तरहका इत्र; प्यार, मुहब्बत, प्रणय-चेष्टा (अपना सुहाग अपने पास रखो)। **–घोड़ी**–स्त्री० ब्याहके गीत जो दूल्हेके घरमें दुलहिनके रूप-गुणके बखानमें गाये जाते हैं। **–पिटारा**–पु०,**–पिटारी**–स्त्री० गहनों और शृंगार-सामग्रीका डिब्बा जो दूल्हेकी ओरसे दुलहिनको दिया जाता है। **–पुड़ा**–पु०,**–पुड़िया**–स्त्री० गोट आदि लगाकर कागजकी बनायी हुई सुंदर पुड़िया जिसमें सुगंधित वस्तुएँ रखकर दुलहिनके लिए भेजी जाती हैं। **–भरी**–वि० स्त्री० सुख-सौभाग्ययुक्त, सुखी। **–रात**–स्त्री० दूल्हे-दुलहिनके मिलनकी पहली रात। **–सेज**–स्त्री० बरातका पलंग जिसपर दूल्हा-दुलहिन सोते हैं। **मु०–उजड़ना**–विधवा होना। **–उतरना**–पतिके मरनेपर पत्नीके शरीरसे सुहागकी चीजों (चूड़ियाँ, सिंदूर आदि)का उतारा जाना; विधवा होना। **–मनाना**–सौभाग्य, अहिवातकी कामना करना।

सुहागन, सुहागिन–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीता हो, सधवा, सौभाग्यवती।

सुहागा–पु० एक क्षारद्रव्य जो सोना गलाने और दवाके काम आता है; † लकड़ीका आला जिससे किसान खेतके मिट्टीके ढेले तोड़ते हैं।

सुहागिनि, सुहागिनी, सुहागिल*–स्त्री०दे०'सुहागिन'।

सुहाता–वि० सहने लायक।

सुहाना–अ० क्रि० शोभित होना, सुंदर लगना, फबना, भाना, पसंद आना। वि० सुंदर, सुहावना।

सुहाया*–वि० सुहावना।

सुहारी†–स्त्री० सादी पूरी।

सुहाल–पु० एक नमकीन पकवान जो मैदेमें मोयन देकर बनाया जाता है।

सुहाव*–वि० दे० 'सुहावना'। पु० सुंदर हाव।

सुहावता*–वि० सुहानेवाला।

सुहावन*–वि० दे० 'सुहावना'।

सुहावना–वि० सुंदर, भला लगनेवाला।

सुहावला*–वि० दे० 'सुहावना'।

सुहास–पु० [सं०] सुंदर, मृदु हास।

सुहासिनी–वि० स्त्री० [सं०] सुंदर हँसी हँसनेवाली, मधुर मुस्कानयुक्त (स्त्री)।

सुहृत्–वि० [सं०] सुंदर, स्नेहयुक्त हृदयवाला। पु०मित्र; कुंडलीमें लग्नसे चौथा स्थान। **–त्याग**–पु० मित्रका परित्याग। **–प्राप्ति**–स्त्री० मित्रकी प्राप्ति।

सुहृत्ता–स्त्री० [सं०] मैत्री, दोस्ती।

सुहृदय–वि० [सं०] सुंदर हृदयवाला; स्नेही।

सुहृद्–वि०, पु० [सं०] दे० 'सुहृत्'। **–बल**–पु० मित्र (राजा)की सेना। **–भेद**–पु० मित्रका पृथक् होना।

सुहेल–पु० दे० 'सुहैल'।

सुहेलरा*–वि० दे० 'सुहेला'।

सुहेला–वि० सुहावना; सुखद। पु०मंगलगीत; *प्रियजन।

सुहैल–पु० [अ०] एक तारा जिसका उदित होना शुभावह समझा जाता है।

सूँ*–अ० दे० 'सों', से।

सूँइस–पु० दे० 'सूँस'।

सूँघना–स० क्रि० नाकसे गंध ग्रहण करना, वास लेना; (ला०) बहुत कम खाना; (साँपका) डँसना।

सूँघा–पु० मिट्टी सूँघकर जमीनके अंदरकी चीजें बतलानेवाला; सूँघकर शिकारकी टोह लगानेवाला; भेदिया, जासूस।

सूँड़–स्त्री० हाथीकी स्तंभाकार नाक जो नीचे लटकती रहती है, शुंड।

सूँडाल–पु० शुंडाल, हाथी।

सूँड़ी–स्त्री० फसलोंमें लगनेवाला एक कीड़ा।

सूँस–पु० चार-पाँच हाथ लंबा एक जल-जंतु जो नदीकी धारामें कभी-कभी कलैया लेता हुआ-सा देख पड़ता है।

सूँह*–अ० सामने।

सूअर–पु० एक जानवर जिसके पालतू और जंगली दो भेद होते हैं, पालतू मैलाखोर और जंगली बहुत बलवान् तथा हिंस्र होता है। **–वियान**–स्त्री० प्रति वर्ष बच्चा जननेवाली स्त्री; बहुत बच्चे जनना। **–का बच्चा**–हरामजादा (गाली)।

सूअरनी–स्त्री० शूकरी; (ला०) बहुत बच्चोंकी माँ।

सूआ–पु० बड़ी सूई; * तोता, शुक।

सूई–स्त्री० लोहेका बारीक, नोकदार तार जिसके एक सिरेपरके छेदमें तागा डालकर कपड़ा सीते हैं, सूची; सूएके आकारका छिद्ररहित काँटा जिससे बुनाई, जाली बनाने आदिका काम करते हैं; तराजूका काँटा; घड़ी, कुतुबनुमा आदिका काँटा; रगोंमें दवा प्रविष्ट करानेका नलीके ढंगका नुकीला औजार; इस औजारसे दवा भीतर प्रविष्ट करानेकी क्रिया (इनजेक्शन, अंतःक्षेपण); अनाज, कपास आदिका अँखुआ। **–कारी**–स्त्री० (नीडिल वर्क) दे० 'सूचीकार्य'। **–डोरा**–पु० मालखंभकी एक कसरत। **–का काम**–सूईसे बनाये हुए बेल-बूटे। **–का नाका**–सूईका छेद। मु० **–का भाला (फावड़ा) बना देना**–जरासी बातको बहुत तूल दे देना। **–के नाकेसे ऊँट निकालना**–अनहोनी बात कर दिखाना। **–पिरोना**–सूईके छेदमें तागा डालना। **–सूइयों नाज पिरोना**–बहुत कंजूसी करना (स्त्रि०)।

सूक–पु० [सं०] बाण; वायु; कमल; ह्रदका एक पुत्र; * दे० 'शुक्र'–'उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ'–प०।

सूकना*–अ० क्रि० दे० 'सूखना'।

सूकर–पु० [सं०] सूअर, शूकर; एक तरहका हिरन। **–क्षेत्र**–पु० एक पुराना तीर्थस्थान, सोरों। **–खेत***–पु० दे० 'सूकरक्षेत्र'। **–गृह**–पु० सूअरके रहनेका बाड़ा, खोभार।

सूकरी–स्त्री० [सं०] मादा सूअर, सूअरी।

सूका†–पु० रुपयेका चतुर्थांश, चवन्नी; सूखा, अवर्षण। वि० सूखा।

सूक्त–वि० [सं०] सुंदर रीतिसे कथित; सुंदर उक्तिविशिष्ट (वाक्य)। पु० वेदका मंत्र या स्तोत्र; सुंदर कथन।

सूक्ति–स्त्री० [सं०] सुंदर उक्ति; चमत्कारपूर्ण वाक्य, पद्य।

सूक्षम*–वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूक्ष्म–वि० [सं०] बहुत बारीक; बहुत छोटा; अणुरूप; तहतक पहुँचनेवाली, बारीक बातोंको देखने-समझनेमें समर्थ (दृष्टि, बुद्धि); रोमकूपसे प्रवेश करनेवाली (औषध); कठिनाईसे समझमें आने, ग्रहण करने योग्य; महत्त्वहीन, तुच्छ। पु० अणु; परमात्मा; शिव; अध्यात्म; एक अर्थालंकार जहाँ दूसरेका किया हुआ कोई सूक्ष्म कृत्य देखकर संकेतसे उसका उत्तर देना या समाधान कर देना दिखाया जाय। **–कोण**–पु० न्यून कोण। **–तंडुल**–पु० खसखास, पोस्तेका दाना। **–दर्शकयंत्र**–पु० खुर्दबीन, अणुवीक्षण। **–दर्शी(र्शिन्)**, **–दृष्टि**–वि० अत्यंत छोटी-छोटीबातें तक समझ लेनेवाला, बहुत बुद्धिमान्। **–देह**–स्त्री० सूक्ष्म शरीर। **–पत्रिका**–स्त्री० सौंफ; शतावरी; लघुब्राह्मी; छोटी पोय; दुरालभा; आकाशमांसी। **–परीक्षण**–पु० (स्क्रुटिनी) बारीकीसे जाँच करना; ब्योरे आदिके संबंधमें अच्छी तरह छानबीन करना; बेईमानी, पक्षपात आदिकी शंका होनेपर मतदानपत्रों, उत्तर-पुस्तकों आदिकी सावधानतापूर्वक फिरसे की जानेवाली जाँच। **–बदर**–पु०, **–बदरी**–स्त्री० झड़बेरी। **–बीज**–पु० पोस्ता दाना। **–बुद्धि**, **–मति**–स्त्री० बारीक बातोंको समझ सकनेवाली, तहको पहुँचनेवाली बुद्धि। वि० ऐसी बुद्धिवाला, तीक्ष्ण-बुद्धि। **–शरीर**–पु० जीवका भोगशरीर, पंच प्राण, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच तन्मात्र और मन-बुद्धि–इन १७ अवयवोंका समूह। **–शर्करा**–स्त्री० रेत, बालुका।

सूक्ष्मा–स्त्री० [सं०] यूथिका, जूही; छोटी इलायची।

सूख*–वि० सूखा हुआ, शुष्क।

सूखना–अ० क्रि० जलहीन होना; तरी या गीलापनका न रह जाना; रसहीन होना; दुबला होना; डरना; नष्ट होना; कड़ा पड़ जाना। मु० **सूखकर काँटा हो जाना**–बहुत दुबला हो जाना। **सूख जाना**–सुन्न, स्तब्ध हो जाना (...सुनकर सूख गया)।

सूखा–वि० सूखा हुआ, खुश्क, रसहीन; निस्तेज, उदास; स्नेहरहित; निरा; बेमुरौवत (सूखा आदमी); कोरा, दोटूक। पु० अवर्षण, अकाल (...पड़ना); बच्चोंका एक रोग जिसमें उनकी देह सूखती और हड्डियाँ, खासकर रीढकी हड्डी नरम होती जाती है; नदी किनारेकी सूखी जमीन; खुश्क तंबाकू; भाँग। **–जवाब**–पु० सफा, दोटूक इनकार। **–(खी)खुजली**–स्त्री० वह खुजली जिसमें दाने निकलकर पकते नहीं, केवल खुजली होती है। **–तनख्वाह**–स्त्री० जिसके साथ भोजन, भत्ता या ऊपरी आमदनी न हो। **–तरकारी**–स्त्री० बिना रसेकी तरकारी। **–(खे)टुकड़े**–पु० रोटीके सूखे टुकड़े, गरीबका भोजन। मु० **–टालना**–कोरा जवाब देना। **–पड़ना**–पानी न बरसना, अकाल पड़ना। **–लगना**–सूखा रोग होना, दुबला हो जाना। **–(खी)सुनाना**–साफ जवाब देना, दोटूक इनकार करना। **–(खे)घाटों उतारना**–वंचित रखना। **–टुकड़ोंपर कौए उड़ाना**–छोटीसी तनखाहपर जलील करना। **–धानोंपर पानी पड़ना**–नैराश्यकी दशामें मनोकामना पूरी होना।

सूघर*–वि० दे० 'सुघड़'।

सूचक–वि० [सं०] सूचना करनेवाला, जतानेवाला, ज्ञापक; भेद बतानेवाला। पु० सीनेवाला, दरजी; सूई; चुगलखोर; भेदिया; शिक्षक; वर्णन करनेवाला; नाटकका सूत्रधार; कुत्ता; कौआ; दुष्ट व्यक्ति। **–वाक्य**–पु० भेदियेकी बतायी हुई बात।

सूचन–पु० [सं०] सूचित करना, जताना, ज्ञापन; छेदनेकी क्रिया; भेद खोलना; संकेत करना, इशारेसे बतलाना; वर्णन करना; जासूसी करना; दुष्टता; चोट पहुँचाना; मार डालना।

सूचना–* अ० क्रि० प्रकट करना, व्यक्त करना। स्त्री० [सं०] बताने, जतानेकी क्रिया; कुछ बताने, जतानेके लिए कही, लिखी गयी बात, इत्तिला; संकेत; विज्ञापन। **–पट्ट**–पु० (नोटिसबोर्ड) वह तख्ता जिसपर लोगोंकी जानकारीके लिए सूचनाएँ चिपका या टाँग दी जाती हैं। **–पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जिसमें कोई सूचना हो, इत्तलानामा, इश्तिहार। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० (इनफरमेशन मिनिस्टर) जनहित-संबंधी सरकारी कार्योंकी सूचना जनतामें प्रसारित करने और जनताकी माँगों, शिकायतों, कष्टों.आदि-संबंधी विवरण सरकारतक पहुँचानेका काम करनेवाले विभागका नियंत्रण करनेवाला मंत्री।

सूचनाधिकारी(रिन्)–पु०[सं०] (इनफरमेशन ऑफिसर) राज्यका या किसी संस्थाका वह अधिकारी जो उसके कार्यों या प्रगति आदि-संबंधी प्रामाणिक जानकारी लोगोंमें प्रसारित या वितरित करता है।

सूचनालय–पु० [सं०] (इनफरमेशन ब्यूरो) आवश्यक समाचार या जानकारी प्रसारित करने, प्रदान करनेवाला कार्यालय।

सूचनीय–वि० [सं०] सूचना करने, बताने, जताने योग्य।

सूचा*–वि० शुद्ध, साफ; संज्ञायुक्त, होश-हवासमें।

सूचि–स्त्री० [सं०] सूई या छेद करनेका कोई आला; किसी नोकदार चीजकी नोक; दर्भांकुर; सिटकनी; कटघरा; सेनाका एक व्यूह; ग्रंथके विषयोंकी तालिका। **–पत्र**–पु० दे० 'सूचीपत्र'। **–भेद्य**–वि० सूईसे भेदन करने योग्य; बहुत घना (जैसे अंधकार)।

सूचिक–पु० [सं०] सिलाई करनेवाला, दरजी।

सूचिका–स्त्री० [सं०] सूई; हाथीकी सूँड़। **–धर**–पु० हाथी। **–मुख**–वि० नुकीले मुहँवाला। पु० शंख।

सूचित–वि० [सं०] बताया, जताया हुआ, ज्ञापित; कहा हुआ; इशारेसे बताया हुआ; छेद किया हुआ।

सूचितव्य–वि० [सं०] दे० 'सूच्य'।

सूची–स्त्री० [सं०] दे० 'सूचि'; मात्रिक छंदोंकी शुद्धता, संख्या आदि जाँचनेकी एक रीति। **–कटाह-न्याय**–पु० एक न्याय जिसका प्रयोग सरल और कठिन दो प्रकारके कामोंमेंसे पहले सरल काम करनेके संबंधमें किया जाता है। **–कर्म(न्)**–पु० सीनेका काम, सिलाई। **–कार्य,–शिल्प**–पु० (नीडिल वर्क) कपड़े आदिपर सूई और डोरेसे बेल-बूटे या कोई आकृति आदि बनानेका काम, सूईकारी। **–पत्र**–पु० वह पत्र या पुस्तक जिसमें पुस्तकों या और किसी चीजकी नामावली विषय, दाम आदि बताते हुए दी गयी हो। **–भेद्य**–वि० दे० 'सूचिभेद्य'। **–मुख**–पु० सूईकी नोक; एक नरक; सितकुश; हीरा; पक्षी; मच्छर। वि० सूई जैसी चोंच आदिवाला; सूई जैसा तीक्ष्ण। **–वेधन**–पु० (इनजेक्शन) सूईकी सहायतासे दवाका प्रवेश कराना, अंत:क्षेपण (सूई देना,–लगाना)। **–व्यूह**–पु० एक तरहकी व्यूहरचना। **–सूत्र**–पु० सीनेका तागा।

सूच्छम*–वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूच्य–वि० [सं०] सूचना करने योग्य; व्यंग्य (?)।

सूच्यग्र–पु० [सं०] सूईकी नोक; (ला०बहुत थोड़ा); काँटा।

सूच्याकार–वि० [सं०] सूईकेसे आकारका।

सूच्यार्थ–पु० [सं०] व्यंग्यार्थ।

सूछम, सूछिम*–वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूज–* स्त्री० सूई; † सूजन।

सूजन–स्त्री० सूजनेका भाव या स्थिति, वरम, शोथ।

सूजना–अ० क्रि० किसी अंगका फूल आना, वरम या शोथ होना। मु० सूजा-फूला–मुँह फुलाये हुए, खफा।

सूजनी–स्त्री० दे० 'सुजनी'।

सूजा–पु० बड़ी सूई या इस तरहका कोई आला।

सूज़ाक–पु० [फा०] एक रोग जिसमें पेशाबमें जलन और पीड़ा होती है।

सूजी–स्त्री० गेहूँका रवेदार आटा जो हलवा आदि बनानेके काम आता है; * सुई। * पु० दरजी, सूचिक।

सूझ–स्त्री० सूझनेका भाव; निगाह; उपज, कल्पना; कोई नयी या दूरकी बात सोचना। **–बूझ**–स्त्री० सोचने-समझनेकी शक्ति, बुद्धि।

सूझना–अ० क्रि० दिखाई देना; दिमाग या ध्यानमें आना; * छुट्टी पाना।

सूट–पु० [अं०] पूरा (अंग्रेजी) पहनावा, कोट-पतलून आदि। **–केस**–पु० पहननेके कपड़े रखनेका बक्स।

सूत–पु० रुई, रेशम आदिका बारीक तार, कच्चा धागा, सूत्र; धागा, डोरा; लकड़ी या पत्थरपर निशान डालनेकी डोरी; इस तरह डाला हुआ निशान; एक नाप, तसूका १६ वाँ भाग; मोटाईकी एक नाप, इंचका ८ वाँ भाग (४ सूतका छड़ = १·२ इंच मोटा छड़); लहसुनियापरकी रेखा; * करधनी; बच्चोंके गलेका गंडा; * बहुत थोड़ेमें कहा हुआ बहुलार्थक वाक्य, सूत्र। * वि० अच्छा, भला। **–धार**–पु० बढ़ई। **–लड़**–पु० रहँट। मु० **–धरना,–बाँधना**–लकड़ी आदिपर निशान डालना।

सूत–पु० [सं०] रथ हाँकनेवाला; रथ हाँकनेका काम करनेवाली एक वर्णसंकर जाति; बंदी, भाट; पुराणकी कथा कहनेवाला; व्यासके शिष्य लोमहर्षण मुनि; सूर्य; बढ़ई; पारा। वि० उत्पन्न, प्रसूत; प्रेरित। **–कर्म(न्)**–पु० रथ चलानेका काम। **–ज**–पु० सारथिका पुत्र; कर्ण। **–तनय**–पु० कर्ण। **–नंदन**–पु० उग्रश्रवा। **–पुत्र**–पु० सारथिका पुत्र; सारथि; कर्ण; कीचक। **–पुत्रक**–पु० कर्ण।

सूतक–पु० [सं०] जन्म; जन्मका अशौच, जननाशौच; अशौच; पारा; बाधा। **–गेह**–पु० प्रसूतिगृह। **–भोजन**–पु० जन्म-संबंधी भोज।

सूतका–स्त्री० [सं०] दे० 'सूतिका'।

सूतकाशौच–पु० [सं०] संतान-जन्मके कारण लगनेवाला अशौच।

सूतता–स्त्री० [सं०] सूत, सारथिका काम।

सूतना†–अ० क्रि० दे० 'सोना'।

सूतरी*–स्त्री० दे० 'सुतली'।

सूति–स्त्री० [सं०] जनन, प्रसव; संतान; सिलाई; सोम-निष्पीडन; सोमरस निकालनेका स्थान; उद्गम; फसलकी पैदावार। **–काल**–पु० प्रसवकाल। **–गृह**–पु० सूतिकागृह, जच्चाखाना। **–मारुत,–वात**–पु० प्रसववेदना। **–रोग**–पु० दे० 'सूतिकारोग'।

सूतिका–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने तुरत या हालमें ही बच्चा जना हो, नवप्रसूता, जच्चा; सद्यःप्रसूता गौ। **–गृह,–गेह,–भवन**–पु० जच्चाखाना, सौरी। **–मारुत**–पु० दे० 'सूतिमारुत'। **–रोग**–पु० प्रसूताको आहार-विहारके दोषसे होनेवाला रोग।

सूतिकागार, सूतिकावास–पु० [सं०] जच्चाखाना।

सूती–* स्त्री० सीपी; [सं०] सूतकी पत्नी। वि० सूतका, सूतका बना हुआ। **–कपड़ा**–पु० सूतका बना हुआ कपड़ा।

सूतीगृह–पु० [सं०] दे० 'सूतिगृह'।

सूतीघर–पु० सूतिकागार।

सूत्कार–पु० [सं०] सिसकारी, सीत्कार।

सूत्र–पु० [सं०] सूत, तंतु; तागा; धागोंकी राशि; यज्ञसूत्र, जनेऊ; कठपुतली नचानेकी डोरी; रेशा; व्यवस्था, नियम; योजना; छोटा, अर्थगर्भ वाक्य जिसमें दर्शनादि शास्त्रोंकी रचना हुई है; ऐसे वाक्योंमें रचित मूल ग्रंथ (कल्पसूत्र, गृह्यसूत्र इ०); करधनी; कारण, निमित्त; (हिं०) जरीया, किसी सूचना-समाचारके मिलनेका स्थान (विश्वसनीय सूत्रसे)। **–कंठ**–पु० ब्राह्मण; कबूतर; पेंडुकी; खंजन। **–करण**–सूत्रवाक्यका निर्माण। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सूत्र-ग्रंथका रचयिता। **–कर्म(र्मन्)**–पु० बढ़ई, मेमारका काम; जुलाहेका काम। **–कार**–पु० सूत्र रचनेवाला; बढ़ई; सूत कातनेवाला; जुलाहा। **–कृत्**–पु० दे० 'सूत्रकार'। **–क्रीडा**–स्त्री० सूतका एक खेल जिसकी गणना ६४ कलाओंमें है। **–जाल**–पु० सूतका बना हुआ जाल। **–दरिद्र**–वि० जिसकी बुनावटमें कम सूत लगाया गया हो, झीना। **–धर**–वि० सूत्र धारण करनेवाला। पु० सूत्रज्ञ व्यक्ति; दे० 'सूत्रधार'। **–धार**–पु० नाट्यशालाका व्यवस्थापक या प्रधान नट; इंद्र; बढ़ई। **–पदी**–वि० स्त्री० सूत जैसे पतले पैरवाली। **–पात**–पु० कार्यका आरंभ; मापवाले सूतसे मापनका कार्य। **–बद्ध**–वि० सूत्ररूपमें लिखित, रचित। **–भृत्**–पु० नाटकका सूत्रधार। **–यंत्र**–पु० सूतका बना जाल; करघा; ढरकी। **–वाप**–पु० बुननेका कार्य। **–विद्**–वि० सूत्रज्ञ। **–वीणा**–स्त्री० वीणाका एक भेद जिसमें तारकी जगह सूत लगे होते थे, लाबुकी। **–वेष्टन**–पु० बुननेकी क्रिया; ढरकी। **–शाला**–स्त्री० सूत कातने, एकत्र करनेका कारखाना (कौ०)। **–संचालक**–पु० (वायर पुलर) वह राजनीतिज्ञ जो गुप्त रूपसे घटनाओंका सूत्र-संचालन करता हो, दुरभि-संधिक।

सूत्रण–पु० [सं०] सूत्ररूपमें रचना; सूत्ररूपमें नत्थी करना; सिलसिलेसे सजाना।

सूत्रिका–स्त्री० [सं०] सेंवई; हार, माला।

सूत्रित–वि० [सं०] नत्थी किया हुआ; सिलसिलेसे लगाया हुआ; सूत्ररूपमें कथित।

सूत्री(त्रिन्)–वि० [सं०] सूत्र-विशिष्ट। पु० कौआ; (नाटकका) सूत्रधार।

सूत्रीय–वि० [सं०] सूत्र-संबंधी।

सूथन–पु० दे० 'सुथना'।

सूथनी–स्त्री० स्त्रियोंके पहननेका पाजामा।

सूद–पु० [सं०] हनन, वध; व्यंजन; रसोइया। **–शाला**–पु० रसोईघर। **–शास्त्र**–पु० पाकविद्या।

सूद–पु० [फा०] लाभ, नफा; ब्याज। **–ख़ोर,–ख़्वार**–पु० सूद लेनेवाला, ब्याजसे जीविका चलानेवाला। **–ख़ोरी**–स्त्री० सूद लेना, ब्याज-बट्टेका रोजगार। **–दरसूद**–पु० वह ब्याज जो मूल और ब्याज दोनोंको जोड़कर लगाया जाय, चक्रवृद्धि ब्याज।

सूदक–वि० [सं०] मारने, नष्ट करनेवाला।

सूदन–पु० [सं०] हनन, वध; फेंकना; अंगीकार करना; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि, ('सुजान-चरित्र' के रचयिता)। वि० हनन, नाश करनेवाला (रिपुसूदन, मधुसूदन)।

सूदना*–स० क्रि० हनन करना, नष्ट करना।

सूदी–वि० (रकम) जिसपर ब्याज मिलता हो। **मु०–चलाना**–सूदपर रुपया देना।

सूद्र†–पु० दे० 'शूद्र'।

सूध*–वि० दे० 'सूधा'; शुद्ध। स्त्री० सीध। * अ० सीधा।

सूधना*–अ० क्रि० सत्य होना; सफल होना।

सूधरा*–वि० दे० 'सूधा'।

सूधा*–वि० निष्कपट, भोला-भाला, सीधा; जो वक्र न हो; जो उलटा न हो।

सूधे*–अ० सीधेसे। **–सूध**–अ० सीधा, दोटूक।

सून*–वि० दे० 'शून्य'; दे० 'सूना'; रहित। **–सान**–वि० दे० 'सुनसान'।

सून–वि० [सं०] जनमा हुआ, जात; खिला हुआ; रिक्त, खाली। पु० प्रसव; कली; फूल; फल; पुत्र। **–शर**–पु० कामदेव।

सूना–वि० खाली, शून्य, जनहीन। पु० एकांत स्थान। **–पन**–पु० सूना लगना, शून्यता। **मु०–लगना**–उचाट, उदास लगना।

सूना–स्त्री० [सं०] कन्या, पुत्री; पशुओं आदिका वध-स्थान; मांसविक्रय; चोट पहुँचाना; वध करना; गलेका कौवा; गलग्रंथियोंका शोथ; गलसुआ; हाथीकी सूँड़; घरकी उन पाँच वस्तुओं (चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा और झाड़ू) मेंसे कोई जिनसे जीवहिंसाकी संभावना हो; तत्काल होनेवाली मृत्यु। **–दोष**–पु० घरकी उक्त पाँच वस्तुओंसे होनेवाली हिंसाका दोष।

सूनिक, सूनी(निन्)–पु० [सं०] व्याध; मांस बेचनेवाला।

सूनु–पु० [सं०] बेटा; बच्चा; नाती; छोटा भाई; सूर्य।

सूनू–स्त्री० [सं०] बेटी।

सूनृत-वि० [सं०] सत्य और प्रिय; प्रिय; सद्भावपूर्ण ।

सूप-पु० [अ०] पकी हुई दाल; रसा, जूस; मसाला; बरतन; रसोइया; बाण । **-कर्ता(र्तृ),-कार,-कृत्**-पु० रसोइया, पाचक । **-कारी***-पु० दे० 'सूपकार' । **-धूपक,-धूपन**-पु० हींग । **-शास्त्र**-पु० पाकशास्त्र ।

सूप-पु० अनाज फटकनेका छाज । **-नखा**-स्त्री० शूर्पणखा नामकी राक्षसी जो रावणकी बहन थी । **-झरना**-पु० एक तरहका सूप जो झरनेका भी काम देता है ।

सूपक-पु० रसोइया ।

सूपच*-पु० दे० 'श्वपच' ।

सूपा†-पु० [सं०] सूप, छाज ।

सूपिक-पु० [सं०] सूपकार, रसोइया ।

सूफ़-पु० [अ०] ऊन; दवातमें डाला जानेवाला कपड़ा, घावमें भरा जानेवाला कपड़ा ।

सूफ़िया-पु० [अ०] मुसलमान साधुओंका एक संप्रदाय ।

सूफ़ियाना-वि० [अ०] सूफियों जैसा, सादा ।

सूफ़ी-वि० [फा०] ऊनी कपड़े पहननेवाला; संत; पवित्र । पु० संसारकी आसक्तिसे मुक्त होकर ईश्वरप्राप्तिकी साधना करनेवाला; सूफिया संप्रदायका अनुयायी । **-ख़याल**-वि० सूफियोंकेसे विचार रखनेवाला ।

सूबा-पु० [अ०] राज्यका विभाग जिसमें कई जिले शामिल हों, प्रदेश, प्रांत; सूबेदार । **-(बे)दार**-पु० सूबेका शासक, गवर्नर; फौजका एक छोटा अफसर । **-दारी**-स्त्री० सूबेदारका पद या कार्य ।

सूभर*-वि० दे० 'शुभ्र' ।

सूम-वि० कंजूस, कृपण ।

सूमड़ा-वि० सूम ।

सूमी†-पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीसे मेज, कुर्सी आदि बनाते हैं ।

सूर-वि० अंधा । पु० सूरदास । **-दास**-पु० ब्रजभाषा और कृष्णकाव्यके सर्वश्रेष्ठ कवि ।

सूर*-वि० दे० 'शूर; शूल'; पु० शूकर; भूरे रंगका घोड़ा । **-कुमार**-पु० वसुदेव । **-ज**-पु० शूरवीरका लड़का । **-वीर**-पु० दे० 'शूरवीर' । **-सावंत**-पु० वीर सरदार; युद्धसचिव । **-सेन**-पु० दे० 'शूरसेन' । **-सेन पुर**-पु० मथुरा नगरी ।

सूर-पु० [सं०] सूर्य; आक; विद्वान् व्यक्ति, आचार्य । **-कंद**-पु० सूरन, ओल । **-कांत**-पु० सूर्यकांत मणि । **-ज**-पु० शनि; सुग्रीव; यम; कर्ण; दे० क्रममें । **-जा**-स्त्री० यमुना । **-पुत्र**-पु० सुग्रीव; शनि; कर्ण । **-मुखी-(खिन्)**-पु० दे० 'सूर्यमुखी' । **-मुखीमनि***-पु० सूर्यकांत मणि । **-सुत**-पु० दे० 'सूरज' । **-सुता**-स्त्री० यमुना । **-सूत**-पु० सूर्यका सारथि, अरुण ।

सूर-पु० [अ०] तुरही, नरसिंघा ।

सूरज-पु० सूर्य; एक तरहका गोदना; सूरदास, दे० 'सूर' में । **-तनी***-स्त्री० सूर्यतनया, यमुना । **-बंसी**-पु० दे० 'सूर्यवंशी' । **-भगत**-पु० एक तरहकी गिलहरी । **-मुखी**-पु० दे० 'सूर्यमुखी' । **-सुत**-पु० सुग्रीव । **-सुता**-स्त्री० यमुना । मु० **-को चिराग (दीपक) दिखाना**-अति गुणवान् या बुद्धिमान्को कुछ बताना-सिखाना; अति प्रसिद्ध पुरुषका परिचय देना । **-पर थूकना,-पर धूल फेंकना**-नितांत निर्दोष जनपर लांछन लगाकर खुद लांछित होना ।

सूरण-पु० [सं०] शूरण, जमीकंद ।

सूरत-पु० भारतका एक प्रसिद्ध नगर । * स्त्री० स्मरण, याद; सुध; [अ०] कुरानका एक अध्याय; रूप, शकल; चित्र; सुंदरता; भेस; हालत, स्थिति; उपाय, ढब; ढंग, तौर; लक्षण, रंग-ढंग; वस्तुका बाह्य रूप, ऊपरी हालत । **-आशना**-वि० शकल पहचाननेवाला, मामूली जान-पहचानवाला । **-आशनाई**-स्त्री० जान-पहचान, अल्प-परिचय । वि० रूपकी पूजा करनेवाला; केवल रूप देखनेवाला, जाहिर-परस्त । **-शकल,-शक्ल**-स्त्री० रूप । **-हराम**-वि० जो ऊपरसे अच्छा और भीतरसे बुरा हो, जिसकी सूरतसे धोखा हो । **-(ते)हाल**-स्त्री० स्थिति, वर्तमान अवस्था । मु० **-दिखाना**-शकल दिखाना, सामने आना । **-नज़र आना**-उपाय सूझना । **-निकल आना**-अधिक सुंदर हो जाना; उपाय सूझ जाना । **-पर झाड़ू फेरना**-अतिशय घृणाके कारण शक्ल न देखना, नाम न लेना (स्त्रि०) । **-बदलना**-भेस बदलना; हालत बदलना । **-बनाना**-शकल बनाना; चेहरेसे कोई भाव प्रकट करना; चित्र बनाना; मुँह चिढ़ाना; रूपरेखा बनाना । **-बिगड़ना**-शकल बुरी हो जाना; अवस्था बिगड़ना । **-बिगाड़ना**-शकल खराब कर देना; चेहरेसे दोष, अप्रसन्नता प्रकट करना । **-से बेज़ार होना**-अतिशय घृणा या रोष होना, देखना भी सह्य न होना ।

सूरता, सूरताई*-स्त्री० वीरता ।

सूरति*-स्त्री० शकल, रूप; याद, स्मरण ।

सूरन-पु० एक कंद शाक, शूरण, जमीकंद ।

सूरपनखा*-स्त्री० दे० 'शूर्पणखा' ।

सूरमा-पु० बहादुर, योद्धा, शूरवीर । **-पन**-पु० वीरता ।

सूरवाँ*-पु० दे० 'सूरमा' ।

सूरा-पु० * अंधा मनुष्य ।

सूराख़-पु० [फा०] छेद । **-दार**-वि० जिसमें छेद हो ।

सूरि-पु० [सं०] सूर्य; पंडित; ऋत्विक्; पूजा करनेवाला; कृष्ण; जैनाचार्योंकी उपाधि ('मल्लिनाथ सूरि') ।

सूरी-स्त्री० [सं०] सूर्यपत्नी; कुंती; राई; पंडिता; * शूली; बरछा । वि० [फा०] सूर जातिका । पु० भारतका एक मुसलिम राजवंश जो शेरशाहसे चला और जिसने १५३० से १५५६ ई० तक राज्य किया ।

सूरुज*-पु० दे० 'सूर्य' ।

सूरुवा*-पु० दे० 'सूरमा' ।

सूर्प-पु० [सं०] 'शूर्प' । **-नखा**-स्त्री० [हिं०] दे० 'शूर्पणखा' ।

सूर्य-पु० [सं०] सौर-मंडलका प्रधान पिंड या तारा जिसकी पृथ्वी और मंडलके दूसरे ग्रह प्रदक्षिणा किया करते हैं और जो पृथ्वीको प्रकाश तथा उष्णता मिलनेका स्रोत और उसके ऋतुक्रमका कारण है, आदित्य, रवि, भानु; आक; १२ की संख्या । **-कमल**-पु० सूरजमुखीका फूल । **-कर**-पु० सूर्यकिरण । **-कांत**-पु० एक

तरहका स्फटिक जिससे सूर्यके सामने करनेसे आँच निकलती है, आतशी शीशा; स्फटिक; एक पुष्प (आदित्यपर्णी)। **–कांति**–स्त्री० सूर्यकी दीप्ति, चमक। **–ग्रहण**–पु० चंद्रमाकी छाया पड़नेसे सूर्य-बिंबका छिप जाना (पौराणिक मतसे राहु या केतु द्वारा सूर्यका ग्रास)। **–ज**–पु० दे० 'सूर्य-तनय'। **–जा**–स्त्री० दे० 'सूर्य-तनया'। **–तनय**–पु० शनि; यम; सावर्णि मनु; रेवंत; सुग्रीव; कर्ण। **–तनया**–स्त्री० यमुना। **–तेज(स्)**–पु० सूर्यका तेज, धूप। **–नंदन**–पु० दे० 'सूर्य-तनय'। **–नगर**–पु० कश्मीरका एक प्राचीन नगर, कश्मीरकी राजधानी। **–नारायण**–पु० सूर्य भगवान्। **–पक्व**–वि० सूर्यतापसे पका हुआ, स्वयं पक्व। **–पत्नी**–स्त्री० संज्ञा; छाया। **–पर्व(न्)**–पु० सूर्यके नयी राशिमें प्रवेश या सूर्यग्रहण आदिका पुण्यकाल। **–पुत्र**–पु० वरुण; शनि; यम; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण। **–पुत्री**–स्त्री० यमुना; बिजली। **–पुर**–पु० दे० 'सूर्यनगर'। **–प्रभ**–वि० सूर्यके समान प्रकाशित, प्रभायुक्त। **–बिंब**–पु० सूर्यका मंडल। **–मंडल**–पु० सुर्यका घेरा; एक गंधर्व। **–मणि**–पु० सूर्यकांत मणि; एक फूल। **–मुखी**(**खिन्**)–पु० पीले रंगका एक बड़ा फूल जो सूर्यकी गतिके साथ ऊपर उठता और नीचे झुकता है। **–यंत्र**–पु० सूर्योपासनामें व्यवहृत सूर्यका चित्र या प्रतिमा; सूर्यके वेधमें काम आनेवाला एक यंत्र। **–रश्मि**–स्त्री० सूर्यकी किरण; सविता। **–लोक**–पु० सूर्यका लोक, सौरभुवन। **–वंश**–पु० भारतवर्षके दो प्रमुखतम राजवंशोंमेंसे एक जिसकी उत्पत्ति वैवस्वत मनुके पुत्र इक्ष्वाकुसे मानी जाती है, इक्ष्वाकुवंश। **–वंशी**(**शिन्**)–वि० सूर्यवंशका। पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुरुष। **–संक्रम**, **–संक्रमण**–पु०, **–संक्रांति**–स्त्री० सूर्यका दूसरी राशिमें प्रवेश। **–सिद्धांत**–पु० भास्कराचार्य-रचित गणित ज्योतिषका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–सुत**–पु० शनि; सुग्रीव; कर्ण; यम।

सूर्यांशु–पु० [सं०] सूर्यकी किरण।

सूर्या–स्त्री० [सं०] सूर्यकी पत्नी संज्ञा; इंद्रवारुणी; नवविवाहिता स्त्री।

सूर्याणी–स्त्री० [सं०] सूर्यपत्नी, छाया।

सूर्यातप–पु० [सं०] धूप।

सूर्यात्मज–पु० [सं०] शनि; कर्ण; सुग्रीव; यम।

सूर्यावर्त–पु० [सं०] हुरहुरका पौधा; सुवर्चला; गज, पिप्पली; अर्द्धकपाली, आधासीसी; समाधिका एक प्रकार।

सूर्यास्त–पु० [सं०] सूरजका डूबना; सूरजके डूबनेका समय, संध्या।

सूर्योदय–पु० [सं०] सूरजका उगना; सूरजके उगनेका समय, सवेरा। **–गिरि**–पु० उदयाचल।

सूर्योपासक–पु० [सं०] सूर्यकी उपासना करनेवाला, सूर्यपूजक।

सूर्योपासना–स्त्री० [सं०] सूर्यदेवकी पूजा, आराधना।

सूल*–पु० दे० 'शूल', भालाका फुलरा। **–धर**–पु० दे० 'शूलधर'। **–धारी**–पु० दे० 'शूलधारी'। **–पानि**–पु० दे० 'शूलपाणि'।

सूलना*–अ० क्रि० दुखना, चुभना, व्यथित होना। स० क्रि० भालेसे छेदना; दुःख देना।

सूली–स्त्री० नुकीला लोहेका छड़ हूलाकर प्राणदंड देनेका एक प्रकार। * पु० दे० 'शूली'।

सूवना*–अ० क्रि० बहना, स्रवना। पु० सुग्गा, तोता।

सूवर†–पु० दे० 'सूअर'।

सूवा–पु० सुग्गा।

सूस–पु० एक जलजंतु, शिशुमार। स्त्री० [अ०] मुलेठी; [फा०] एक जंतु, गोह।

सूसमार–पु० सूँस। स्त्री० [फा०] गोह।

सूसि*–पु० दे० 'सूस'।

सूहा–पु० एक तरहका गहरा लाल रंग; एक संकर राग। वि० लाल। **–कान्हड़ा**–पु० एक संकर राग। **–टोड़ी**–स्त्री० एक रागिनी। **–बिलावल**–पु० एक संकर राग। **–श्याम**–पु० एक संकर राग।

सूही–वि० स्त्री० दे० 'सूहा'। स्त्री० लालिमा।

सृंखला*–स्त्री० दे० 'शृंखला'।

सृंग*–पु० शृंग, चोटी, सिरा, कँगूरा; सींग; शृंगबाजा। **–बेर**–पु० अदरक; सोंठ। **–बेर पुर***–पु० दे० 'शृंगबेरपुर'।

सृंगी*–पु० दे० 'शृंगी'।

सृकंडु–स्त्री० [सं०] कंडू रोग, खुजलीकी बीमारी।

सृक–पु० [सं०] वायु, हवा; कमल; बाण, तीर; वज्र। * स्त्री० माला।

सृकाल*–पु० दे० 'शृगाल'।

सृग–पु० [सं०] भिंदिपाल, एक प्रकारका बरछा; भाला; बाण। * स्त्री० माला।

सृगाल–पु० [सं०] गीदड़; दुष्ट, धूर्त, बुरे स्वभावका या कटुभाषी मनुष्य; कायर आदमी।

सृगालिनी, **सृगाली**–स्त्री० [सं०] गीदड़ी; लोमड़ी।

सृग्विनी*–स्त्री० दे० 'स्रग्विणी'।

सृजक*–पु० स्रष्टा, रचनेवाला।

सृजन*–पु० दे० 'सर्जन'। **–शीलता**–स्त्री० रचनाशक्ति। **–हार**–पु० स्रष्टा, सृष्टिकर्ता।

सृजना*–स० क्रि० रचना करना, बनाना, उत्पन्न करना।

सृज्य–वि० [सं०] छोड़ने योग्य; उत्पन्न करने योग्य।

सृत–वि० [सं०] गत; विचलित; खिसका हुआ।

सृष्ट–वि० [सं०] निर्मित, बनाया हुआ; युक्त; त्यक्त, त्यागा हुआ; फेंका हुआ; सज्जित, विभूषित; संपन्न,...से युक्त; तुला हुआ; प्रचुर; निश्चित।

सृष्टि–स्त्री० [सं०] परित्याग; निर्माण, निर्मिति; जगत्, संसार; प्रकृति; संसारकी उत्पत्ति, संसारके बनानेकी क्रिया; समूह। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० ब्रह्मा। **–कृत्**–पु० सृष्टि करनेवाला; ईश्वर; ब्रह्मा। **–विज्ञान**, **–शास्त्र**–पु० सृष्टिकी रचना आदिकी, मीमांसा करनेवाला शास्त्र दे० 'विश्वोत्पत्ति विज्ञान' (कॉस्मोजेनी)।

सृष्ट्यंतर–पु० [सं०] अंतर्जातीय विवाहसे उत्पन्न संतान।

सेँक–स्त्री० सेंकनेकी क्रिया।

सेँकना–स० क्रि० आगपर पकाना; गरम करना। मु०–आँखें सेंकना–सुंदर छवि देखकर नेत्रोंकी तृप्ति करना।

सेँगर–पु० एक पौधा; बबूलकी छीमी; एक धान; राज-

पूतोंका एक भेद ।

सैंट-* स्त्री० दूधकी धार। पु० [अं०] सुगंधिपूर्ण द्रव्य ।

सैँत-स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिमें कुछ रुपया-पैसा न लगना । **-मेँत**-अ० मुफ्तमें, बिना दाम दिये; नाहक। **-का**-वह जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो। **-में**-मुफ्तमें ।

सैँतना*-स० क्रि० सँभालकर रखना; बटोरना; समेटना ।

सैँति, सेँती*-स्त्री० दे० 'सैंत' । प्र० करण और अपादानकी विभक्ति ।

सैँथी*-स्त्री० शक्ति, बरछी ।

सैँदुर*-पु० दे० 'सिंदूर' ।

सैँदुरा-वि० दे० 'सैंदुरिया' ।

सैँदुरिया-पु० लाल फूलोंवाला एक पौधा । वि० सिंदूरके रंगका । **-आम**-पु० एक आम जो पकनेपर कुछ लाल होता है ।

सेँदुरी-वि० दे० 'सेंदुरिया' । स्त्री० लाल रंगकी गाय ।

सेंद्रिय-वि० [सं०] इंद्रिययुक्त, सजीव; पुंस्त्वयुक्त ।

सैँध-स्त्री० वह छेद जो चोर दीवार तोड़कर बनाते हैं, सुरंग ।

सेँधना†-स० क्रि० सेंध लगाना ।

सेँधा-पु० सिंधु नदीके पाससे निकलनेवाला एक खनिज नमक ।

सेँधिया-वि० सेंध लगानेवाला । पु० एक मराठा राजवंश ।

सेँधुआर†-पु० एक मांसाहारी जंतु ।

सेँमल*-पु० शाल्मलि, सेमल ।

सेंवई-स्त्री० मैदेसे बनाये हुए सूतकेसे लच्छे। मु०-पूरना,-बटना-हथेलियोंसे बटकर सेंवई बनाना ।

सेँवर*-पु० दे० 'सेमल' ।

सेँहुआ-पु० एक तरहका चर्मरोग जिसमें चमड़ेपर सफेद-सा धब्बा हो जाता है ।

सेँहुड़-पु० स्नुही, थूहर ।

से-प्र० करण कारक और अपादान कारकका चिह्न । वि० 'सा' का बहुवचन, समान, तुल्य । सर्व० 'सो' या 'जे' का अवधी बहुवचन रूप, वे ।

सेई†-स्त्री० काठका एक बरतन जिससे अनाज नापते हैं ।

सेउ*-पु० सेब नामका फल ।

सेकंड-पु० [अं०] कालका एक बहुत छोटा परिमाण, मिनिटका साठवाँ हिस्सा । वि० दूसरा ।

सेक-पु० [सं०] सींचनेकी क्रिया; छिड़काव; आर्द्र करना; अभिषेक; तर्पण; स्राव; नहानेके काम आनेवाला फुहारा । **-पात्र,-भाजन**-पु० पानी सींचनेका बरतन, डोल ।

सेक्तव्य-वि० [सं०] सींचने योग्य ।

सेक्ता(क्तृ)-वि० [सं०] सींचनेवाला । पु० वह जो सींचनेका काम करे; पानी लानेवाला; पति ।

सेक्रेटरी-पु०[अं०] किसी संस्था, संघटनके कार्य-संचालनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति (जैसे सोशलिस्ट पार्टीका सेक्रेटरी), मंत्री; किसीके निजी कार्य, पत्रव्यवहार, व्यवस्थामें सहायता करनेवाला; शासन-व्यवस्थाके किसी विभागका उच्च अधिकारी, सचिव ।

सेख*-पु० शेषनाग; बचा हुआ अंश; अंत, समाप्ति; दे० 'शेख़' ।

सेखर*-पु० दे० 'शेखर' ।

सेखावत-पु० राजपूतोंकी एक उपशाखा ।

सेखी†-स्त्री० दे० 'शेखी' ।

सेगा-पु० दे० 'सीग़ा' (विभाग) ।

सेच-पु० [सं०] सिंचाई, छिड़काव ।

सेचक-पु० [सं०] बादल । वि० सींचनेवाला ।

सेचन-पु० [सं०] सिंचाई; छिड़काव; अभिषेक; स्राव; नहानेका फुहारा; ढलाई (लोहे आदिकी); बालटी; पानी उलीचनेका पात्र । **-घट**-पु० सींचनेका बरतन ।

सेचनक-पु० [सं०] नहानेका फुहारा; अभिषेक ।

सेचनी-स्त्री० [सं०] डोल, बालटी ।

सेचनीय-वि० [सं०] सींचने, छिड़काव करने योग्य ।

सेचित-वि० [सं०] सींचा, तर किया हुआ ।

सेच्य-वि० [सं०] दे० 'सेचनीय' ।

सेज-स्त्री० शय्या, बिस्तरा । **-पाल**-पु० राजाके शयनागारका पहरेदार ।

सेजरिया*-स्त्री० दे० 'सेज' ।

सेजिया†-स्त्री० दे० 'सेज' ।

सेज्या*-स्त्री० दे० 'सेज' ।

सेझदारि*-पु० सह्याद्रि श्रेणी ।

सेझना*-अ० क्रि० पृथक् होना, अलग होना ।

सेटना-स० क्रि० मानना, समझना; कुछ महत्त्व समझना ।

सेठ-पु० महाजन, बड़ा साहूकार; व्यापारी; धनी आदमी; सुनार । [स्त्री० 'सेठानी'] ।

सेढ़ा-* पु० नाकका मैल-'...आँखिमें गीडर नाकमें सेढ़ो' -सुंदर० ।

सेत*-वि० श्वेत, सफेद । **-द्युति**-पु० चंद्रमा ।

सेत*-पु० सेतु, पुल । **-बंध**-पु० दे० 'सेतुबंध' ।

सेती*-प्र० से ।

सेतु-पु० [सं०] मेंड़; बाँध; पुल; बंधन; पहाड़परका तंग रास्ता; मर्यादा, सीमा; रोक; निश्चित नियम; प्रणव, ओम्; कारिका, टीका । * वि० श्वेत । **-कर**-पु० पुल आदिका निर्माण करनेवाला । **-कर्म (न्)**-पु० पुल आदिके निर्माणका काम । **-पथ**-पु० पहाड़ी, दुर्गम स्थानोंमें जानेवाला मार्ग । **-बंध**-पु० बाँध, पुल आदिका निर्माण; रामके लंका जानेके लिए समुद्रपर नल-नीलका बनाया हुआ पुल; पुल; नहर (कौ०) । **-बंधन**-पु० पुलका निर्माण; बाँध; पुल; सीमापरकी मेंड़ आदि । **-भेत्ता (त्तृ)**-पु० बाँध, पुल आदि तोड़नेवाला । **-भेद**-पु० बाँध, पुल आदिका टूटना । **-शैल**-पु० सीमाका काम देनेवाला पर्वत ।

सेतुक-पु० [सं०] बाँध; पुल; वरुण वृक्ष । * अ० सामने, सम्मुख ।

सेतुवा*-पु० सत्तू ।

सेथिया-पु० नेत्रचिकित्सक ।

सेद*-पु० दे० 'स्वेद' । **-ज**-पु० स्वेदजन्य कीट ।

सेदरा-पु० तीन द्वारोंवाला दालान ।

सेन-पु० शरीर; वैद्यजातीय बंगालियोंकी उपाधि; दिगंबर जैन साधुओंका एक भेद; * श्येन, बाज पक्षी । स्त्री०

* सेना । **–कुल,–वंश**–पु० बंगालका एक राजवंश । **–जित्**–वि० सेनाको विजित करनेवाला ।**–प*,–पति***–पु० सेनानायक ।

सेनक–पु० [सं०] शंबरका एक पुत्र; एक वैयाकरण ।

सेनांग–पु० [सं०] सेनाका कोई अंग–पैदल, हाथी, घोड़ा और रथ; सेनाका कोई भाग, टुकड़ी । **–पति**–पु० टुकड़ीका नायक ।

सेना–स्त्री० [सं०] रणशिक्षा प्राप्त और सशस्त्र व्यक्तियोंका दल, वाहिनी, फौज; शक्ति, भाला; इंद्राणी ।**–कक्ष**–पु० सेनाका पार्श्व । **–कर्म(न्)**–पु० सेनाका प्रबंध या नेतृत्व ।**–चर**–पु० सैनिक, सिपाही ।**–दार**–पु० [हिं०] सेनानायक, चलानेवाला, सैनिक ।**–नायक**–पु० सेनापति । **–नी**–पु० सेना-नायक, कार्तिकेय; एक रुद्र । **–पति**–पु० सिपहसालार; कार्त्तिकेय; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि । **–पति-पति**–पु० प्रधान सेनापति । **–पाल**–पु० सेनानायक । **–पृष्ठ**–पु० सेनाका पृष्ठभाग । **–भंग**–पु० सेनाका तितर-बितर हो जाना । **–मुख**–पु० सेनाका अग्रभाग । **–रसद-विभाग**–पु० (कमिसैरियट) सेनाके लिए खाद्य सामग्री आदि जुटाने, पहुँचानेवाला विभाग । **–वास**–पु० शिविर; फ़ौजकी छावनी । **–वाह**–पु० सेनानायक । **–व्यूह**–पु० सैनिकोंकी विशेष स्थानोंपर स्थापना । **–स्थान**–पु० शिविर; छावनी ।

सेनाग्र–पु० [सं०] सेनाका अगला हिस्सा ।

सेनाजीव, सेनाजीवी(विन्)–पु० [सं०] सैनिक कार्योंसे आजीविका प्राप्त करनेवाला ।

सेनाधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] सेनानायक, फौजी अफसर ।

सेनाधिनाथ–पु० [सं०] सेनाका प्रधान ।

सेनाधिप, सेनाधिपति–पु० [सं०] सेनापति ।

सेनाधीश–पु० [सं०] सेनापति ।

सेनाध्यक्ष–पु० [सं०] सेनापति ।

सेनाभिगोप्ता(प्तृ)–पु० [सं०] सेनाका रक्षक ।

सेनायत्त करना–स० क्रि० (कमांडियर) लोगोंको सेनामें भरती होनेके लिए विवश करना; सेनाकी आवश्यकताओंके लिए किसीकी संपत्ति आदिपर कब्जा कर लेना ।

सेनि*–स्त्री० श्रेणी, पंक्ति ।

सेनिका–स्त्री० मादा बाज, एक छंद ।

सेनी–पु० सहदेवका अज्ञातवासकालीन नाम । स्त्री० रकाबी; * श्रेणी; सीढ़ी; * मादा बाज ।

सेनुर†–पु० सिंदूर ।

सेफालिका–स्त्री० दे० 'शेफालिका' ।

सेब–पु० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़ ।

सेम–स्त्री० एक फली जो तरकारीके काम आती है, शिंबी।

सेमई–वि० हलके सब्ज रंगका । पु० ऐसा रंग । * स्त्री० सेंवई ।

सेमर*–पु० शाल्मलि, सेमल; † दलदल ।

सेमल–पु० एक बड़ा वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं और फलोंसे रुई निकलती है ।**–मूसला**–पु० सेमलकी जड़ ।

सेमिटिक–पु० नृवंश-शास्त्र के अनुसार एक मानव-वर्ग जिसमें अरब, यहूदी, मिस्री और सीरियन जातियोंकी गणना है । वि० शेमसे उत्पन्न (जातियाँ) ।

सेर–पु० [सं०] सोलह छटाँककी एक तौल; * शेर, व्याघ्र । **–साहि***–पु० शेरशाह जिसने हुमायूँको परास्त कर दिल्लीका शासन प्राप्त किया था ।

सेरवा†–पु० ओसानेके लिए परौता मारने, भूसा उड़ानेका कपड़ा; दे० 'सेरा'; दीवालीके प्रातःकाल सूप पीटनेकी प्रथा ।

सेरही–स्त्री० फसलकी उपजपर लगनेवाला एक कर ।

सेरा–पु० खाटकी सिरकी ओरकी पाटी; वह जमीन जिसकी सिंचाई हो चुकी हो ।

सेराना–स० क्रि० ठंढा करना; तृप्त करना; बहा देना । अ० क्रि० ठंढा होना; तृप्त होना; समाप्त होना; मारना । † पु० सिरहाना ।

सेरी–स्त्री० [फ़ा०] तृप्ति; जी भर जाना । * रास्ता, मार्ग । –'जा सेरी साधू गया सो तो राखी मूँदि'–साखी ।

सेर्ष्य–वि० [सं०] ईर्ष्यासे भरा हुआ ।

सेल–पु० साँग, भाला ।

सेलखड़ी–स्त्री० एक चिकना पत्थर; खरिया मिट्टी ।

सेलना†–अ० क्रि० दे० 'सेल्हना'; छेदना ।

सेला–पु० रेशमी चादर या साफा (वर आदिका); उसना चावल ।

सेलिया*–पु० घोड़ेकी एक जाति । स्त्री० बिल्ली ।

सेली–स्त्री० बरछी; छोटी चादर; सूत आदिकी योगियोंकी बद्धी; स्त्रियोंका एक गहना; एक मछली ।

सेल्ल, सेल्ला–पु० भाला, बरछा ।

सेल्ह–पु० भाला, बरछा ।

सेल्हना†–अ० क्रि० चल बसना, मर जाना ।

सेल्हा–पु० एक अगहनिया धान; † रेशमी चादर या साफा ।

सेल्ही–स्त्री० छोटी चादर; सूत, ऊन आदिकी माला ।

सेवँ†–पु० एक ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ीसे आलमारी आदि बनाते हैं ।

सेवँई–स्त्री० दे० 'सेँवई'; चारेके काम आनेवाली एक घास।

सेवँर*–पु० ब्याहकी एक रस्म ।

सेव–पु० बेसनसे बननेवाला सूत या डोरी जैसा पतला या कुछ मोटा पकवान जो नमकीन या मीठा होता है; [सं०] दे० 'सेवन'; [फ़ा०] दे० 'सेब' । * स्त्री० सेवा ।

सेवक–वि० [सं०] सेवा, पूजा, सम्मान करनेवाला; अभ्यास करनेवाला; प्रयोगमें लानेवाला; आश्रित । पु० नौकर, परिचारक; आश्रित व्यक्ति; भक्त; आराधक ।

सेवकाई–स्त्री० सेवा, टहल, परिचर्या ।

सेवग*–पु० दे० 'सेवक' ।

सेवड़ा–पु० मैदेका एक पकवान; जैन साधुओंका एक भेद ।

सेवति*–स्त्री० दे० 'स्वाति' ।

सेवती–स्त्री० [सं०] एक फूल, सफेद गुलाब ।

सेवन–पु० [सं०] सेवा, टहल; पूजन, उपासना, भक्ति; अभ्यास; व्यवहार; उपभोग; वास करना; बाँधना; सीना ।

सेवना–*स० क्रि० सेवा करना । स्त्री० [सं०] आराधना ।

सेवनी–स्त्री० [सं०] सुई; सीवन; * दासी ।

सेवनीय्–वि० [सं०] आराध्य, पूज्य; व्यवहार्य; सेव्य।

सेवर–पु० दे० 'शवर'; * सेमल। † वि० कम पका हुआ ('खर' का उलटा)।

सेवरा*–पु० दे० 'सेवड़ा'।

सेवरी*–स्त्री० दे० 'शवरी'।

सेवांजलि–स्त्री० [सं०] अंजलिमें कोई वस्तु रखकर किसीको भक्तिपूर्वक अर्पित करना; अंजलिबद्ध होकर भक्तिपूर्वक प्रणाम करना।

सेवा–स्त्री० [सं०] परिचर्या, खिदमत, नौकरी; पूजा, आराधना; प्रयोग; उपभोग; संभोग; व्यसन, आसक्ति; आश्रयण, शरण; रक्षण। **–काल**–पु० वह अवधि या समय जिसमें किसीने कोई सेवा या नौकरी की हो। **–जन**–पु० नौकर, सेवक। **–टहल**–स्त्री० [हिं०] खिदमत, शुश्रूषा। **–दक्ष**–वि० सेवा करनेमें कुशल। **–धर्म**–पु० सेवा-संबंधी कर्तव्य। **–नियोजनालय**–पु० (एम्प्लॉयमेंट ब्यूरो) दे० 'नियोजन-केंद्र'। **–भृत्**–वि० सेवा, आराधनामें संलग्न। **–योजक**–पु० (एम्प्लॉयर) कोई काम करने या किसी सेवाके लिए व्यक्तियोंको अपने कारखाने आदिपर नियुक्त करनेवाला, नियोजक। **–योजनालय**–पु० (एम्प्लॉयमेंट ब्यूरो) दे० 'नियोजनालय'। **–विलासिनी**–स्त्री० सेविका, दासी। **–वृत्ति**–स्त्री० सेवा द्वारा प्राप्त जीविका, नौकरी।

सेवाती*–स्त्री० दे० 'स्वाति'।

सेवाभिरत–वि० [सं०] सेवामें लीन।

सेवायुक्त–वि० (एम्प्लॉइड) जो कोई काम करने या किसी सेवाके लिए नियुक्त किया गया हो, नियोजित।

सेवार–पु० दे० 'सिवार'।

सेवारा*–पु० दे० 'सेवड़ा'।

सेवाल*–पु० दे० 'सिवार'।

सेवि*–वि० पूज्य, आराध्य; पूजित।

सेविका–स्त्री० [सं०] दासी, परिचारिका।

सेवित–वि० [सं०] जिसकी सेवा की गयी हो; पूजित; प्रयुक्त; उपभुक्त; आश्रित;···से युक्त, संपन्न।

सेवितव्य–वि० [सं०] बसने, रहने योग्य; प्रयोगमें लाने योग्य; रक्षा करने योग्य।

सेविता(तृ)–पु० [सं०] सेवक; पूजक; अनुसरण करनेवाला।

सेवी(विन्)–वि० [सं०] सेवा करनेवाला; आराधक, उपासक; (समासांतमें) संभोग, उपभोग करनेवाला।

सेवोपहार–पु० (ग्रैड(चु)इटी) वह धन जो किसी सैनिक या कर्मचारीको अवकाश-ग्रहणके समय, उसके (लंबे) सेवाकालके उपहारस्वरूप दिया जाय।

सेव्य–वि० [सं०] सेवा करने योग्य; आराध्य, पूज्य; व्यवहारमें लाने योग्य; रक्षणीय; अध्ययनके योग्य; संचित करने योग्य। पु० स्वामी। **–सेवक भाव**–पु० उपास्यको स्वामी मानकर सेवकके समान अपना आचरण रखना।

सेश्वर–वि० [सं०] ईश्वरकी सत्ता माननेवाला (दर्शन–ये न्याय और योग हैं); ईश्वरयुक्त।

सेष*–पु० दे० 'शेष'; दे० 'शैख़'।

सेस*–पु० दे० 'शेष'। **–नाग**–पु० शेषनाग।

सेसर–पु० ताशका एक खेल; जाल; धूर्त्तता।

सेसरिया–वि० जाल करनेवाला, जालिया।

सेहत–स्त्री०[अ० 'सेह्हत'] स्वास्थ्य, आरोग्य; रोगमुक्ति; शुद्धि; सही, ठीक होना; निर्दोष होना। **–ख़ाना**–पु० पाखाना, शौचालय। **–नामा**–पु० शुद्धिपत्र; तंदुरुस्तीका प्रमाणपत्र। **–बख़्श**–वि० आरोग्यप्रद। मु०**–पाना**–आरोग्यलाभ करना, रोगमुक्त होना।

सेहरा–पु० वे फूलों या गोटे आदिकी लड़ियाँ जो दूल्हे और दुलहिनके सिरपर बाँधी जाती हैं और मुँहपर लटकती रहती हैं; वह गाना जो सेहरा बाँधनेके समय गाया जाता है; कब्रके ताखेपर रखी जानेवाली फूलकी माला। **–बँधाई**–स्त्री० सेहरा बाँधनेका नेग जो बहनोईको मिलता है। मु०**–बाँधना**–सेहरा सिरपर रखा जाना; दूल्हा बनाया जाना; कामका श्रेय दिया जाना। **–के फूल खिलना**–विवाहका समय आना।

सेहरी–स्त्री० एक तरहकी मछली, सहरी।

सेही–स्त्री० दे० 'साही'।

सेहुँआ–पु० दे० 'सेँहुआ'।

सैँगर–पु० बबूलकी फली।

सैँतना–स० क्रि० दे० 'सेंतना'।

सैँतालीस–वि० चालीस और सात। पु० सैंतालीसकी संख्या, ४७।

सैँतीस–वि० तीस और सात। पु० सैंतीसकी संख्या, ३७।

सैँथी*–स्त्री० भाला, शक्ति–'इंद्रजीत लीन्हीं जब सैंथी देवन हहा कर्‍यो'–सू०।

सैँदूर–वि० [सं०] सिंदूरी, सिंदूरके रंगवाला; सिंदूरसे रँगा हुआ।

सैँधव–वि० [सं०] सिंधु प्रदेशका; सिंधु, समुद्र-संबंधी; सिंधुमें उत्पन्न; समुद्रमें उत्पन्न। पु० सिंधनरेश; सिंधु-प्रदेशके निवासी; एक प्रकारका लवण, सेंधा नमक; सिंधु प्रदेशका घोड़ा, सिंधी घोड़ा। **–पति**–पु० सिंध-नरेश; जयद्रथ।

सैँधवी–स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

सैँयाँ–पु० दे० 'सैयाँ'।

सैँह–वि० [सं०] सिंह-संबंधी; सिंहका; सिंह जैसा। * अ० दे० 'सौँह'।

सैँहथी–स्त्री० बर्छी, छोटा बर्छा।

सैँहिकेय–वि० [सं०] सिंहिकासे उत्पन्न। पु० सिंहिकाकी संतान (एक दानववर्ग); राहु।

सै*–वि०, पु० दे० 'सौ'। स्त्री० शक्ति, ताकत; सार; वृद्धि, बढ़ती।

सैकड़ा–पु० सौ।

सैकड़े–अ० प्रति शत, फी सदी, सौ पीछे।

सैकत–वि० [सं०] सिकतामय, बालूसे भरा, रेतीला; बालुकासे बना। पु० बालुकामय तट; रेतीला किनारा।

सैकतिक–वि० [सं०] सिकतामय, रेतीला।

सैक़ल–पु० [अ०] सफाई, जिला; हथियारोंको माँजकर चमकाना।

सैथी–स्त्री० छोटा बरछा, भाला।

सैद*–पु० दे० 'सैयद'; [अ०] शिकार; शिकारका जानवर। –**गाह**–पु०, स्त्री० शिकारगाह।

सैद्धांतिक–वि० [सं०] सिद्धांत-संबंधी; सिद्धांतज्ञ। पु० सिद्धांत जाननेवाला व्यक्ति।

सैन–स्त्री० संकेत, इशारा; निशान, परिचायक चिह्न; * सेना। * पु० शयन; बाज पक्षी। –**पति**–पु० सेनापति। –**भोग**–पु० शयनकालका भोग, नैवेद्य।

सैना*–स्त्री० फौज, सेना। पु० संकेत। –**पति**–पु० सेनानायक।

सैनापत्य–वि० [सं०] सेनापति-संबंधी। पु० सेनापतिका कार्य, सेनापतित्व।

सैनिक–वि० [सं०] सेना-संबंधी, फौजी। पु० सिपाही, योद्धा; प्रहरी, संतरी। –**वाद**–पु० युद्धका समर्थन करनेवाला सिद्धांत। –**सहचारी**–पु० (मिलिटरी अटेशे) किसी राजदूतके दलबलका वह सैनिक कर्मचारी जिसे सैनिक विषयोंकी विशेष जानकारी हो।

सैनिकता–स्त्री० [सं०] सैनिक जीवन; युद्ध; सुसज्जित सेना रखने और युद्धके लिए तैयार रहनेका भाव।

सैनिकीकरण–पु० [सं०] लोगोंको सैनिक बनाने तथा सैन्य सामग्री एकत्र करनेका कार्य। (मिलिटैरिजेशन)।

सैनी*–स्त्री० दे० 'सेना'। पु० नापित, नाई।

सैनेय*–वि० युद्ध करने योग्य।

सैनेश, सैनेस*–पु० सेनापति, सिपहसालार।

सैन्य–वि० [सं०] सेना-संबंधी। पु० सेना; सैनिक, सिपाही; रक्षक, प्रहरी, संतरी; शिविर। –**कक्ष**–पु० सेनाका पार्श्व। –**क्षोभ**–पु० सेनाका विद्रोह। –**द्रोह**–पु० (म्यूटिनी) संघटित राजसत्ताके विरुद्ध, विशेषकर उच्चाधिकारियोंके विरुद्ध, सेना द्वारा किया गया विद्रोह। –**नायक**–पु० सेनापति। –**निवेशभूमि**–स्त्री० सेनाके ठहरने, पड़ाव डालनेका स्थान। –**पति**,–**पाल**–पु० सेनापति। –**पृष्ठ**–पु० सेनाका पिछला भाग। –**वास**–पु० शिविर, सेनाका पड़ाव। –**विभागाध्यक्ष**–पु० (एडजूटैंट जनरल) सेनाके किसी विभागका अध्यक्ष जो सेनापतिके आदेशों आदिका पालन करता है। –**वियोजन**–पु० (डिमोबिलाइजेशन) युद्धकी आवश्यकतावश प्रस्तुत किये गये सैनिकोंको सैन्यसेवासे पृथक् करना, सैन्यविघटन। –**शिक्षार्थी**–पु० (केडेट) सैनिक विद्यालयमें शिक्षा पानेवाला युवक। –**संसज्जन**–पु० (मोबिलीजेशन ऑफ दि आरमी) सेनाओंको शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित कर युद्धार्थ प्रयाणके लिए तैयार रखना। –**सज्ज**–स्त्री० सेना या युद्धकी तैयारी।

सैन्यादेशवाहक–पु० (एडेकांग) युद्ध-क्षेत्रमें सेनापतिके आदेश विभिन्न अधिकारियों, सैनिकों आदिके पास पहुँचाने तथा वस्तुस्थितिका विवरण सेनापतिको देनेवाला कर्मचारी।

सैन्याधिपति, सैन्याध्यक्ष–पु० [सं०] सेनानायक।

सैन्यावास–पु० (बैरक) सैनिकोंके रहनेके लिए बने दालान जैसे आवास, 'बारिक'।

सैन्योपवेशन–पु० [सं०] सेनाका पड़ाव डालना।

सैफ़–स्त्री० [अ०] तलवार।

सैफी*–वि० तिरछा, टेढ़ा।

सैफ़ी–स्त्री० [अ०] तसबीह; एक दुआ (मु०)।

सैयद–पु० [अ०] नेता, सरदार; इमाम; फातमासे उत्पन्न अलीका वंश; इस वंशका जन।

सैयाँ*–पु० पति, मालिक; स्वामी।

सैया*–स्त्री० शय्या, बिस्तरा।

सैयाद–पु० [अ०] बहेलिया; चिड़ीमार; शिकारी; मछुआ।

सैरंध्र–पु० [सं०] एक तरहका निम्नश्रेणीका या घरका काम करनेवाला नौकर; एक संकर जाति।

सैरंध्रिका–स्त्री० [सं०] दासी, नौकरानी।

सैरंध्री–स्त्री० [सं० अंतःपुरकी दासी; अज्ञातवासमें विराट्-नरेशके अंतःपुरमें काम करते समय द्रौपदीका नाम।

सैर–स्त्री० [अ०] भ्रमण; मन बहलावके लिए भ्रमण; किसी रमणीय स्थानमें जाकर खाना-पीना, गाना-बजाना; दृश्य; तमाशा, (ला०) मनोरंजनके लिए किसी पुस्तकको पढ़ना, उलट-पुलटकर देखना। –**गाह**–पु०, स्त्री० सैरकी जगह, रमणीय स्थान; वह कंदील जिसमें कागजके हाथी घोड़ोंकी छाया चलती हुई दिखाई देती है। –**सपाटा**–पु० मनबहलाव या सुंदर दृश्य देखनेके लिए घूमना।

सैरिंध्री–स्त्री० [सं०] दे० 'सैरंध्री'।

सैल–स्त्री०, पु० [अ०] पानीका बहाव, जलधारा; बाढ़। * पु० दे० 'शैल'। स्त्री० दे० 'सैर'। –**कुमारी,**–**जा,**–**तनया,**–**सुता**–स्त्री० पार्वती।

सैला–पु० लकड़ीका चीरा हुआ टुकड़ा; छेद आदिमें भरनेका पच्चड़; जुएके सिरेपर लगायी जानेवाली खूँटी; डंठलसे दाने झाड़नेका डंडा; पतवारका दस्ता।

सैलात्मजा*–स्त्री० पार्वती।

सैलानी–वि० सैर करनेका शौकीन, घुमक्कड़; मनमौजी।

सैलाब–पु० [फ़ा०] बाढ़, पानीका चढ़ाव। –**ची**–स्त्री० चिलमची।

सैलाबा–पु० पानीमें डूबी हुई फसल।

सैलाबी–वि० [फ़ा०] बाढ़-संबंधी। स्त्री० ठंढक, तरी; वह जमीन जो नदीकी बाढ़से सींची जाती हो।

सैलूख*–पु० दे० 'शैलूष'।

सैव*–पु० दे० 'शैव'।

सैवल*–पु० दे० 'शैवाल'।

सैवलिनी*–स्त्री० दे० 'शैवलिनी'।

सैब्य*–पु० 'शैब्य' (घोड़ा; कृष्णका एक घोड़ा; पांडवोंकी सेनाका एक यूथप)।

सैस, सैसक–वि० [सं०] सीसा-संबंधी; सीसेका बना।

सैसव*–पु० दे० 'शैशव'।

सैसवता*–स्त्री० दे० 'शैशव'।

सैवाल–पु० [सं०] दे० 'शैवाल'।

सैहथी–स्त्री० शक्ति, भाला, बरछी, सैंथी।

सौँ*–प्र० करण तथा अपादान कारकोंका चिह्न, 'से'। वि० सदृश, तुल्य। अ० सम्मुख, सामने; साथ, सहित, संग। स्त्री० सौंह, शपथ। सर्व० सो, वह।

सौँचर नमक–पु० सौवर्चल, काला नमक।

सौँजा–स्त्री० दे० 'सौँज'।

सौँटा–पु० लाठी, डंडा; भाँग घोंटनेके काममें आनेवाला

डंडा, भंगघोंटना; एक पौधा, लोबिया। **-बरदार**-पु० बल्लमबरदार, आसावरदार जो राजा, सरदार, अमीर आदिकी सवारीके आगे-आगे चलता है।

सौँठ-स्त्री० सूखा अदरक, शुंठी।

सौँठौरा-पु० जच्चाको दिया जानेवाला गुड़ या चीनीके योगसे सोंठ, मेवा आदि मिलाकर बनाया हुआ एक पुष्टिकारक मोदक।

सौँध-* पु० दे० 'सौँध'। † दे० 'सौँधा'। † वि० दे० 'सौँधा'।

सौँधा-वि० सुगंधित, सुवासित; मिट्टीपर प्रथम वर्षाका जल पड़नेसे उठी गंध जैसा। पु० बाल, केश साफ करने, धोनेके काम आनेवाला एक सुगंधित द्रव्य, मसाला; तपी जमीन, मिट्टी, धूलपर पानी पड़नेसे उठी गंध; अन्न भूनते समय उठी सुगंध; महँक, सुगंध।

सौँधु*-वि० सोंधा।

सौँह*-स्त्री० दे० 'सौँह'। अ० सामने।

सौँही*-अ० दे० 'सौँह'।

सौँहैं*-अ० दे० 'सौँह'।

सो-सर्व० वह। * वि० समान, भाँति। अ० इसलिए।

सोऽहम्-[सं०] मैं वह (वही) हूँ (इसका तात्पर्य यह है कि 'मैं' ब्रह्म हूँ-यह वेदांत दर्शनका वाक्य है)।

सोऽहमस्मि-[सं०] दे० 'सोऽहम्'।

सोअना*-अ० क्रि० दे० 'सोना'।

सोआ-पु० एक साग जिसकी पत्तियाँ बहुत महीन होती हैं।

सोई-सर्व० वही। अ० इसलिए।

सोऊ*-सर्व० वह भी।

सोक*-पु० दे० 'शोक'।

सोकन-पु० कालापन लिये हुए सफेद रंगका बैल।

सोकना*-अ० क्रि० शोक करना। स० क्रि० सोखना।

सोकित*-वि० शोकित, शोकान्वित, शोकयुक्त।

सोखक*-वि०, पु० शोषक, आर्द्रता दूर करनेवाला; रस चूस लेनेवाला; तत्त्व हरण करनेवाला।

सोखता-वि० दे० 'सोख़्ता'।

सोखना-स० क्रि० कोई तरल पदार्थ या किसी पदार्थका रस ग्रहण या जज्ब कर लेना।

सोखाई-स्त्री० सोखनेकी क्रिया; किसी वस्तुको सोखाने या सोखनेकी मजदूरी।

सोख़्त-स्त्री० [फा०] जलन। मु०**-होना**-जब्त, नष्ट, बेकार होना।

सोख़्ता-पु० स्याहीसोख। वि० [फा०] जला हुआ, दग्ध; खिन्न, विषादयुक्त; प्रेमी, आशिक। पु० बुझा हुआ कोयला जिसमें जल्दी आग लग जाती है।

सोग*-पु० शोक, किसीके मरनेपर दुःखकी अभिव्यक्ति।

सोगिनी*-वि० स्त्री० शोक करनेवाली, शोकान्वित (स्त्री)।

सोगी*-वि० शोक करनेवाला।

सोच-पु० सोचनेकी क्रिया; शोक, किसी प्रियके मरनेपर दुःखका प्रकटीकरण; चिंता; पश्चात्ताप, पछतावा, सोच-विचार। **-विचार**-पु० किसी विषय, व्यक्ति आदिपर बुद्धिपूर्वक छानबीन करना; गौर।

सोचना-स० क्रि० विचार करना, किसी विषय, बात आदिकी विवेचना करना। अ० क्रि० शोक, दुःख करना; चिंता करना; पछताना।

सोचाना-स० क्रि० किसीको सोचनेमें प्रवृत्त करना, विचार करवाना, दिखलाना।

सोज-स्त्री० शोथ, सूजन; सौंज, सामग्री, सामान।

सोज़-पु० [फा०] जलन; मनस्ताप, वेदना।

सोज़न-स्त्री० [फा०] सूई। **-कारी**-स्त्री० सूईकारी।

सोजाक-पु० दे० 'सूज़ाक'।

सोझ*-वि० जो टेढ़ा न हो, सरल, सीधा। अ० सीधे।

सोझा-* वि० सीधा, सरल; खड़ा। † अ० सामने।

सोटा-पु० दे० 'सोँटा'; * तोता।

सोडा-पु० [अं०] सज्जीसे रासायनिक क्रिया द्वारा तैयार किया हुआ एक क्षार, सार्जिकाक्षार। **-वाटर**-पु० सर्जिकाक्षारके योगसे बनाया जानेवाला एक प्रकारका पाचक खार। जल जिसे गैसकी सहायतासे बोतलमें भरकर रखते हैं।

सोढ-वि० [सं०] सहन किया हुआ; सहिष्णु, धीर।

सोढर*-वि० बुद्धू, बेवकूफ, भोंदू।

सोढव्य-वि० [सं०] सहन करने योग्य, क्षम्य।

सोत*-पु० दे० 'सोता'।

सोता-पु० नदी, नाले, झरने आदिका उद्गम-स्थान; झरना; नदी, नाले आदिकी शाखा; मूल, मूल स्थान (ला०)।

सोतिया*-स्त्री० छोटा सोता।

सोतिहा†-वि० जिसमें स्रोत या सोतेका पानी आता हो (कूप)।

सोती-स्त्री० स्रोत; धारा; जलकी शाखा; * स्वाती नक्षत्र।

सोत्कंठ-वि० [सं०] प्रबल इच्छासे युक्त, लालसाभरा।

सोत्कर्ष-वि० [सं०] उन्नत, उन्नतिशील; उत्तम।

सोत्सव-वि० [सं०] उत्सवयुक्त, उछाहभरा; आनंदित।

सोथ-पु० शोथ, सूजन।

सोदर-वि० [सं०] सगा, एक उदरसे उत्पन्न। पु० सगा भाई।

सोदरा, सोदरी-स्त्री० [सं०] सगी बहिन।

सोदरीय-वि० [सं०] सोदर, सहोदर।

सोध*-पु० अनुसंधान, अनुशीलन, खोज; हालचाल, खोज-खबर; सुधार; होशहवास, सुध-बुध; किसी व्यक्तिसे ऋण आदि लेकर उसे चुकानेकी क्रिया।

सोधक*-पु० दे० 'शोधक'।

सोधन*-पु० अनुसंधान करनेकी क्रिया, खोज करनेका काम; सुधारने, ठीक करनेका काम; अदा करने, चुकानेका काम।

सोधना*-स० क्रि० अनुसंधान, अनुशीलन करना; ढूँढ़ना, खोजना; त्रुटि दूर करना, गलती दुरुस्त करना, संशोधन करना; ऋण आदि चुकाना, अदा करना; किसी वस्तुकी गंदगी दूर करना, सफाई करना; गणना करना, विचार देना (जन्मपत्री आदि); औषधके लिए धातु(पारा, सोना आदि)की सफाई करना।

सोधवाना†-स० क्रि० ढुँढ़वाना, खोज करवाना; ठीक कराना; साफ करवाना।

सोधाना*–स० क्रि० दे० 'सोधवाना'।

सोन–पु० गंगाकी एक प्रसिद्ध सहायक नदी जो दानापुरके पास उसमें मिलती है, शोण; * सोना; 'सोना'का समासगत रूप; एक जलपक्षी। * वि० लाल। **–किरवा**–पु० दे० 'सुनकिरवा'। **–केला**–पु० चंपाकेला। **–गेरू**–पु० सोनागेरू। **–चंपा**–पु० पीला, सोनेके रंगका चंपा। **–चिरी***–स्त्री० नर्तकी, नटी। **–जरद,–जर्द,–जिरद***–स्त्री० सोनजूही, स्वर्णयूथिका। **–जूही**–स्त्री० जूहीका एक प्रकार जो पीला होता है, स्वर्णयूथिका। **–भद्र**–पु० सोन नदी। **–रास***–पु० पका हुआ पान। **–हार***–पु० एक समुद्री पक्षी।

सोनरास*–पु० दे० 'सोन'के साथ।

सोनवाना*–वि० सोनेका, सुनहला।

सोनहला–वि० सोनेके रंग और चमकका, स्वर्णिम।

सोनहा–पु० कुत्तेकी जातिका एक जंगली हिंस्र पशु जो बाघको भी मार डालता है।

सोना–पु० पीले रंगकी एक बहुमूल्य धातु जो विशेष रूपसे आभूषण आदि बनानेके काम आती है और भस्म करके दवाके रूपमें इस्तेमाल की जाती है; (ला०) बढ़िया और बहुमूल्य वस्तु, श्रेष्ठ व्यक्ति आदि; एक तरहका हंस; एक वृक्ष। **–गेरू**–पु० गेरूका एक भेद। **–चाँदी**–स्त्री० माल, धन, दौलत। **–पाठा**–पु० एक ऊँचा वृक्ष। **–मक्खी,–माखी**–स्त्री० एक खनिज द्रव्य जिसमें सोनेका कुछ अंश होता है और जो औषधके काममें भी आता है; एक तरहका रेशमका कीड़ा। **–मुखी**–स्त्री० स्वर्णपत्री, सनाय। मु० **–कसना**–सोना जाँचना, परखना। **–कसाना**–सोनेको परखवाना। **–चढ़ना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा होना। **–चढ़वाना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा करवाना। **–चढ़ाना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा करना। **–लेकर मिट्टी (तक) न देना**–बेईमानी करना, नादेहंदा होना। **–(ने)का घर मिट्टी हो जाना**–बना-बनाया घर मिट जाना, बनी गृहस्थी बिगड़ जाना। **–का पानी**–सोनेका मुलम्मा। **–की चिड़िया**–मालदार आदमी; अमीर आदमी। **–की चिड़िया उड़ जाना या हाथसे निकल जाना**–मालदार आदमीका चंगुलसे निकल जाना; सुअवसरका निकल जाना। **–की चिड़िया मिलना, हाथ आना या लगना**–किसी बहुमूल्य वस्तुका मिलना; किसी मालदार आदमीका काबूमें आना। **–की तौल तौलना**–कोई मामूली कीमतकी भी चीज तौलमें एकदम ठीक देना। जैसा सोना तौलनेमें किया जाता है, कम कीमतकी चीज भी अधिक कीमतकी चीजकी भाँति तौलना। **–के महल उठाना**–बहुत धनवान् होना। **–के मोल**–बहुमूल्य। **–में घुन लगना**–असंभव बातका होना। **–में सुगंध होना**–किसी अच्छी वस्तुमें और भी अच्छाई या विशेषताका होना। **–में सुहागा**–गलते सोनेमें सुहागा मिला देनेसे उसका रंग निखर जाता है; किसी वस्तु अथवा व्यक्तिका उच्चतर, बेहतर होना। **–से लदे रहना या होना**–बहुत गहने पहने रहना।

सोना–अ० क्रि० निद्राग्रस्त होना, शयन करना; लेटना। **सोते-जागते**–अ० हरवक्त, हमेशा।

सोनिजरद*–स्त्री० दे० 'सोनजर्द'।

सोनित*–पु० दे० 'शोणित'।

सोनी–पु० स्वर्णकार, सोनार।

सोपकरण–वि० [सं०] उपकरणयुक्त।

सोपत*–पु० सुविधा, सुभीता।

सोपाधि, सोपाधिक–वि० [सं०] उपाधिसहित; किसी विशेषतासे युक्त; विशिष्ट।

सोपान–पु० [सं०] निःश्रेणी, सीढ़ी; मोक्षप्राप्तिका उपाय (जैन)। **–कूप**–पु० सीढ़ीदार कुआँ। **–पंक्ति,–परंपरा**–स्त्री० सीढ़ियोंका सिलसिला। **–पथ,–मार्ग**–पु० जीना, सीढ़ी। **–पद्धति**–स्त्री० दे० 'सोपान-पथ'।

सोपानिका–स्त्री० [सं०] (लिफ्ट) दे० 'उत्थानक'। **–चालक**–पु० (लिफ्टमैन) उत्थानकमें बैठाकर नीचे-ऊपर ले जानेवाला कर्मचारी।

सोपानित–वि० [सं०] सोपानयुक्त।

सोपि*–सर्व० [सं०] 'सोऽपि' वह भी।

सोफता–पु० ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो, एकांत स्थान।

सोफ़ा–पु० [अं०] गद्दीदार पुश्त और बिस्तरेवाला आसन जो बैठने या लेटनेके काम आता है (कोच)।

सोफियाना–वि० दे० 'सूफ़ियाना'; सादा देख पड़ते हुए भी भला लगनेवाला।

सोफी–वि०, पु० दे० 'सूफ़ी'।

सोभ*–स्त्री० शोभा।

सोभन*–वि०, पु० दे० 'शोभन'।

सोभना*–अ० क्रि० सुंदर लगना, शोभायुक्त होना।

सोभनीक*–वि० शोभायुक्त, सुंदर।

सोभर–पु० सूतिगृह, सौरी।

सोभांजन–पु० [सं०] दे० 'शोभांजन'।

सोभा*–स्त्री० दे० 'शोभा'। **–कारी**–वि० शोभायुक्त, सुंदर।

सोभायमान–वि० दे० 'शोभायमान'।

सोभार–वि० उभारदार। अ० उभारके साथ।

सोभित–वि० दे० 'शोभित'।

सोम–पु० [सं०] एक लता जिसका रस यज्ञमें तर्पण तथा पान करनेके काम आता था; इस लताका रस; चंद्रमा; चंद्रवार; सोमयज्ञ; अमृत; कपूर; वायु; जल; प्रधान (नृसोम); एक स्त्री रोग। **–कर**–पु० चंद्रकिरण। **–कलश**–पु० सोमरस रखनेका घड़ा। **–कांत**–वि० चंद्रमा जैसा सुंदर; चंद्रमा जैसा प्रिय। पु० चंद्रकांत मणि। **–काम**–पु० सोमपानकी इच्छा। वि० सोमपानका इच्छुक। **–जाजी***–पु० सोमयाजी। **–देव**–पु० चंद्रदेव; कथासरित्सागरके रचयिता (जो कश्मीरमें ग्यारहवीं शताब्दीमें हुए थे)। **–नाथ**–पु० भारतके सुप्रसिद्ध बारह लिंगमंदिरोंमेंसे एक :जिसे महमूद गजनवीने १०२४ ईसवीमें लूटा था। **–प**–वि० सोमरस पीनेवाला। **–पर्व(न्)**–पु० सोमोत्सवका समय। **–पा**–वि० सोमरस पीनेवाला। पु० सोमयज्ञ; यज्ञ करनेवाला। **–पात्र**–पु० सोमरस रखनेका पात्र। **–पान**–पु० सोमरस पीना। **–पायी**

–(यिन्)–वि० सोमरस पीनेवाला।**–पुत्र**–पु० बुध ग्रह। **–प्रदोष**–पु० सोमवारको किया जानेवाला विशेष प्रदोषव्रत। **–प्रभ**–वि० चंद्रमा जैसा कांतिमान्। **–बंधु**–पु० कुमुद; सूर्य; बुध। **–बेल**–स्त्री० [हिं०] गुलचाँदनी। **–मख**–पु० सोमयज्ञ। **–मद**–पु० सोमपानसे होनेवाला नशा। **–यज्ञ**–पु० एक तरहका यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था। **–याग**–पु० सोमयज्ञ; एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमपान होता था। **–रस**–पु० सोमलताका रस। **–राग**–पु० राग-विशेष (संगीत)। **–राज**–पु० चंद्रमा।**–राज्य**–पु० चंद्रलोक। **–रोग**–पु० प्रमेह जैसा स्त्रियोंका एक रोग। **–लता**–स्त्री० सोम नामकी लता, सोमवल्ली; गोदावरी नदी। **–लतिका**–स्त्री० गुडूची; सोमलता। **–लोक**–पु० चंद्रलोक। **–वंशीय,–वंश्य**–वि० चंद्रवंश-संबंधी; चंद्रवंशोत्पन्न। **–वल्लरि,–वल्लरी**–स्त्री० सोमलता; ब्राह्मी। **–वल्ली**–स्त्री० गुडूची; सोमलता; सोमराजी; ब्राह्मी। **–वार,–वासर**–पु० रविवारके बादका दिन, चंद्रवार। **–विक्रयी(यिन्)**–वि०, पु० सोम बेचनेवाला।**–सुत**–पु० बुध ग्रह। **–सुता**–स्त्री० नर्मदा नदी।

सोमन*–पु० एक अस्त्र।

सोमनस*–पु० दे० 'सौमनस्य'।

सोमवती अमावास्या–स्त्री० [सं०] सोमवारको पड़नेवाली अमावास्या।

सोमाष्टमी–स्त्री० [सं०] सोमवारको पड़नेवाली अष्टमी।

सोमास्त्र–पु० [सं०] एक अस्त्र जिसका संबंध सोम(चंद्रमा)-से माना जाता है।

सोमाह–पु० [सं०] चंद्रवार, सोमवार।

सोमाहुति–स्त्री० [सं०] सोमयज्ञ।

सोमेश्वर–पु० [सं०] दे० 'सोमनाथ'।

सोमोद्भव–वि० [सं०] चंद्रमासे उत्पन्न। पु० कृष्ण।

सोमोद्भवा–स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी।

सोम्य–वि० [सं०] सोम-संबंधी; मुलायम, कोमल।

सोय*–सर्व० वही। वि० वैसा।

सोयम–वि० [फा०] तीसरा।

सोया–पु० दे० 'सोआ'।

सोर–* पु० शोरगुल, कोलाहल; ख्याति। † स्त्री० मूल, जड़; * सौरी।

सोरठ–पु० भारतका एक प्रांत, सौराष्ट्र; एक रागिनी। **–मल्लार**–पु० एक राग।

सोरठा–पु० एक मात्रिक छंद।

सोरठी–स्त्री० एक रागिनी।

सोरनी†–स्त्री० झाड़ू; एक मृतक-संस्कार।

सोरवा–पु० दे० 'शोरवा'।

सोरह*–वि०, पु० दे० 'सोलह'।

सोरही–स्त्री० सोलह चित्ती कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ; उक्त प्रकारका जुआ खेलनेके निमित्त एकत्र सोलह चित्ती कौड़ियाँ।

सोरा*–पु० दे० 'शोरा'।

सोलंकी–पु० क्षत्रियोंका एक राजवंश जिसका राज्य गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना आदिमें था।

सोल–वि० [सं०] शीतल, ठंढा; कसैला, खट्टा और तीता। पु० ठंढक; कसैला, खट्टा और तीता स्वाद।

सोलह–वि० पंद्रह और एक। पु० सोलहकी संख्या, १६। **–नहाँ**–पु० सोलह नखोंवाला (हाथी)। **–सिंगार**–पु० दे० 'षोडश-शृंगार'। **–(हों)आने**–बिलकुल, पूर्णतः।

सोला†–पु० दलदली भूमिमें उगनेवाला एक झाड़ जिसकी सीधी और मजबूत डालियोंके छिलकेसे सोला हैट बनता है।

सोल्लास–वि० [सं०] उल्लासयुक्त, आनंदभरा। अ० उल्लासके साथ।

सोवज*–पु० शिकारका जानवर आदि।

सोवन*–पु० सोनेकी क्रिया।

सोवना*–अ० क्रि० दे० 'सोना'।

सोवनार*–स्त्री० सोनेका कमरा, शयनागार।

सोवरी*–स्त्री० सौरी।

सोवा–पु० दे० 'सोआ'।

सोवाना*–स० क्रि० दे० 'सुलाना'।

सोवियत–पु० [रूसी] रूसके किसी जिलेकी वह सभा जो मजदूरों और सिपाहियोंके चुने हुए प्रतिनिधियोंसे बनी हो; रूसका आधुनिक प्रजातंत्र।

सोवैया*–पु० सोनेवाला।

सोषक*–वि०, पु० दे० 'शोषक'।

सोषण*–पु० दे० 'शोषण'।

सोषना–स० क्रि० दे० 'सोखना'।

सोषु, सोसु*–वि० सुखा डालनेवाला।

सोसनी*–वि० सौसनके फूलके रंगका, लाली लिये हुए नीले रंगका।

सोस्मि*–दे० 'सोऽहमस्मि'।

सोहँ*–अ० दे० 'सौंह'।

सोहं*–दे० 'सोऽहम्'।

सोहंग*–दे० 'सोऽहम्'।

सोहंगम*–दे० 'सोऽहम्'।

सोहगी–स्त्री० तिलकके बादकी एक रस्म जिसमें कन्याके लिए वस्त्राभूषण, खिलौने आदि भेजे जाते हैं; सुहागकी चीजें।

सोहन–* वि० शोभन, सुंदर, मोहक, सुहावना। पु० सुंदर व्यक्ति; नायक; † एक वृक्ष; रेती। स्त्री० एक पक्षी जिसका शिकार करते हैं। **–पपड़ी**–स्त्री० एक रेशेदार मिठाई जो मैदा और चीनी एकमें मिलाकर बनायी जाती है।**–हलवा**–पु० मेवे, घी, चीनी आदिके मेलसे बनी एक स्वादिष्ठ तथा प्रसिद्ध मिठाई जो कतरोंके रूपमें जमी और घीसे तर रहती है।

सोहना–स० क्रि० (खेत) निराना। * अ० क्रि० भला मालूम होना, सुंदर लगना। † वि० सुंदर, मोहक।

सोहनी–स्त्री० कूँची, झाड़ू; एक रागनी; निरानेकी क्रिया।

सोहबत–स्त्री० [अ०] मंडली, संगति; संभोग।

सोहमस्मि*–दे० 'सोऽहमस्मि'।

सोहर–पु० संतानोत्पत्तिके अवसरपर गाया जानेवाला एक मंगलगीत।

सोहरत*–स्त्री० दे० 'शोहरत'।

सोहराना*–स० क्रि० दे० 'सहलाना'।

सोहला–पु० सोहर; मंगलगीत; पूजाके अवसरपर गाया जानेवाला गीत।

सोहाइन*–वि० सुहावना, रमणीक।

सोहाई–स्त्री० निरानेका काम; निरानेकी मजदूरी।

सोहाग*–पु० सुहागा; सुहाग, सौभाग्य, अहिवात; सुहागका गीत; एक सदाबहार पेड़।

सोहागा–पु० दे० 'सुहागा'; हेंगा, पटेला।

सोहागिन, सोहागिनी, सोहागिल–स्त्री०दे० 'सुहागिन'।

सोहाता–वि० दे० 'सुहाता'; * सुंदर, सुहावना।

सोहाना*–वि० सुहावना। अ० क्रि० अच्छा लगना, मनोनुकूल होना; सुशोभित होना।

सोहाया*–वि० सुंदर, मनोहर, सुशोभित।

सोहारद*–पु० दे० 'सौहार्द'।

सोहारी–स्त्री० पूरी।

सोहावन–वि० दे० 'सुहावना'।

सोहावना*–वि० सुंदर। अ० क्रि० अच्छा लगना, भला मालूम होना; शोभित होना।

सोहासित*–वि० मनोनुकूल, सुहावना; सुभाषित, अच्छा लगनेवाला, मुँहदेखा।

सोहिँ*–अ० दे० सौँह'।

सोहिनी–स्त्री० एक रागिनी।

सोहिल–पु० दे० 'सुहैल'।

सोहिला*–पु० दे० 'सोहला'।

सोहीं, सोहैँ*–अ० सामने।

सौँ*–स्त्री० सौंह, शपथ, कसम। अ० समान, सदृश, भाँति। प्र० करण और अपादानकी विभक्ति।

सौँकारा, सौँकेरा†–पु० सबेरा, तड़का।

सौँकेरे†–अ० तड़के; समयसे कुछ पहले।

सौँघा*–वि० भला, अच्छा।

सौँघाई*–स्त्री० अच्छाई; आधिक्य, प्रचुरता, बहुतायत।

सौँचना†–अ० क्रि० मलत्याग करना; आबदस्त लेना।

सौँचर नमक–पु० काला नमक।

सौँचाना*†–स० क्रि० शौच, पाखाना कराना; आवदस्त दिलाना।

सौँज*–स्त्री० सामग्री, सामान–'मातु वचन सुनि मैथिली सकल सौंज लै साथ। जाय अलिनयुत पूजिकै गिरिजहिं नायो माथ'–रामरसा०; सरंजाम।

सौँजाई*–स्त्री० सजावटकी वस्तु।

सौँतुख*–अ० सम्मुख, सामने।

सौँदन–स्त्री० धोबियोंका गंदे कपड़े रेहमें सानना।

सौँदना–स० क्रि० सानना, लिप्त करना; मिट्टीसे गंदा करना।

सौँदर्ज*–पु० दे० 'सौंदर्य'।

सौँदर्य–पु० [सं०] सुंदरता, खूबसूरती; उदाराशयता। **–विज्ञान**–पु० (ईस्थेटिक्स) सौंदर्य, सुरुचि और कला-संबंधी शास्त्र।

सौँदर्यता*–स्त्री० दे० 'सौंदर्य' (असाधु)।

सौँध*–स्त्री० सुगंध, खुशबू। पु० महल, प्रासाद, अट्टालिका।

सौँधना–स० क्रि० सुगंधयुक्त करना, सुगंधित करना, खुशबूदार बनाना; सानना, लिप्त करना।

सौँधा*–वि० सुगंधित; रुचिकर। पु० खुशबू; बालोंमें लगानेका एक सुगंधित मसाला।

सौँनमक्खी*–स्त्री० दे० 'सोना-मक्खी'।

सौँनी*–पु० सोनी, सुनार।

सौँपना–स० क्रि० (कोई वस्तु आदि) किसीके जिम्मे, सिपुर्द करना; सहेजना।

सौँफ–स्त्री० सोए जैसा एक पौधा जिसका फल दवा और मसालेके काम आता है, शतपुष्पा।

सौँफिया, सौँफी–वि० (खाद्यपदार्थ या पेय) जिसमें सौंफका योग हो। स्त्री० सौंफके योगसे बनी हुई शराब; वह बीड़ी जिसकी सुरतीमें सौंफका अर्क पड़ा हो।

सौँभरि*–पु० एक प्राचीन ऋषि, सोभरि (जिन्होंने मांधाताकी पचास कन्याओंसे विवाह किया था)।

सौँर–स्त्री० चादर। † पु० संतानोत्पत्तिके दसवें दिन फेंके या तोड़े जानेवाले मिट्टीके पात्र।

सौँरई*–स्त्री० श्यामलता, साँवलापन।

सौँरना*–स० क्रि० स्मरण करना, याद करना–'लरिकाईके सौंरियत चोर मिहिचनी खेल'–मति०; सुमिरन करना। अ० क्रि० दे० 'सँवरना'।

सौँरा*–वि० श्यामल, साँवला।

सौँह*–स्त्री० कसम, शपथ। अ० सामने, रूबरू।

सौँही–स्त्री० एक प्रकारका अस्त्र। अ० सामने।

सौ–वि० नब्बे और दस, शत; बहुत। पु० सौकी संख्या, १००। * अ० सा। मु०**–की एक बात**–बहुत ही उचित बात; सर्वमान्य बात। **–के सवाये करना**–पचीस प्रतिशत लाभ करना। **–कोस भागना**–दूर रहना, अलग रहना। **–छिपायेँ**–चाहे किसी तरह भी गोप्य रखें; हरचंद छिपायें। **–जतन करना**–बहुत प्रयत्न करना। **–जानसे**–पूरे दिलसे, पूर्णतः। **–जानसे आशिक होना, फिदा होना**–अत्यंत मुग्ध होना। **–दो सौमें**–बहुतमें (से कुछ–छाँटनेके अर्थमें)। **–पचास**–कई, अनेक। **–पर सौ**–शत-प्रतिशत, सौ फी सदी। **–बातकी एक बात**–सारांश। **–बात सुनाना**–बुरा-भला कहना, लानत-मलामत करना। **–मनका**–बहुत भारी। **–में एक**–बहुत कम। **–में कहना**–बिना हिचकिचाहटके खुले तौरसे कोई बात कहना। **–सुनाना**–बहुत गालियाँ देना, बहुत बुरा-भला कहना। **–सौ कोस (दूर) भागना**–निकट न आना, बहुत दूर भागना। **–सौ घड़े पानी पड़ना**–बहुत लज्जित होना। **–सौ नाम धरना**–अनेक त्रुटियाँ निकालना, बहुत नुक्ताचीनी करना। **–सौ पलटे लेना,–सौ फेरे करना**–किसी जगहके बहुत चक्कर लगाना। **–सौ बल खाना**–बहुत पेच खाना। **–सौ मनके पाँव होना**–डर, घबड़ाहटके कारण चल न सकना। **–हाथका कलेजा हो जाना**–प्रसन्नताके कारण अत्यंत उत्साहित होना। **–हाथकी जबान होना**–चटोर होना।

सौक–* वि० एक सौ। स्त्री० सपत्नी, सौत। † पु० दे० 'शौक़'।

सौकर, सौकरक–वि० [सं०] सूकर-संबंधी; वाराहावतार-(विष्णु)संबंधी। पु० इस नामका तीर्थ।

सौकरिक–पु० [सं०] सूअरका शिकार करनेवाला व्यक्ति; बहेलिया।

सौकरीय–वि० [सं०] सूकर-संबंधी।

सौकर्य–पु० [सं०] सुकरता, आसानी; साध्यता; दक्षता।

सौकीन–वि० दे० 'शौक़ीन'।

सौकुमार्य–पु० [सं०] सुकुमारता, कोमलता, मुलायमियत; यौवन। वि० कोमल।

सौक्ष्म्य–पु० [सं०] सूक्ष्मता, बारीकी।

सौख*–पु० शौक़।

सौख्य–पु० [सं०] सुख, आनंद; कल्याण। **–द, –दायी-(यिन्)**–वि० सुख देनेवाला। **–दायक**–वि० सुखद।

सौगंद–स्त्री० कसम, शपथ।

सौगंध–स्त्री० शपथ। वि० [सं०] सुगंधित, खुशबूदार। पु० अत्तार; सुगंधि, सुवास, खुशबू; एक तृण, कत्तृण।

सौगंधिक–वि० [सं०] सुगंधयुक्त, खुशबूदार। पु० सुगंध, इत्र, तेल आदिका व्यवसायी, गंधी; नीलोत्पल; श्वेत कमल; पद्मराग मणि; गंधक; एक प्रकारकी सुगंधित घास।

सौगंध्य–पु० [सं०] सुवास, खुशबू।

सौगत–वि० [सं०] सुगत-संबंधी; सुगतमतको माननेवाला। पु० बौद्ध, शून्यवादी।

सौगतिक–पु० [सं०] बौद्ध; बौद्ध भिक्षु; अनीश्वरवादी।

सौगम्य–पु० [सं०] सुगमता; सुविधा।

सौग़ात–स्त्री० [फ़ा०] भेंट, उपहार, तुहफा।

सौग़ाती–वि०[फ़ा०]उपहारमें देने योग्य; बढ़िया, उत्तम।

सौघा*–वि० सस्ता, महँगाका उलटा।

सौच*–पु० दे० 'शौच'।

सौचि, सौचिक–पु० [सं०] सूची, सूईका काम करके निर्वाह करनेवाला व्यक्ति, दरजी।

सौचिक्य–पु० [सं०] दरजीका काम।

सौज*–स्त्री० दे० 'सौंज'।

सौजना*–अ० क्रि० शोभा देना, सजना।

सौजन्य–पु०[सं०] सुजन होनेका भाव, सुजनता, सज्जनता, भलमनसी; उदाराशयता।

सौजन्यता–स्त्री० दे० 'सौजन्य' (असाधु)।

सौजा†–पु० आखेट योग्य पशु-पक्षी।

सौत–स्त्री० पतिकी दूसरी पत्नी, सपत्नी।

सौतन, सौतनि*–स्त्री० सौत।

सौति–*स्त्री० सौत। पु० [सं०] (सूतपालित) कर्ण।

सौतिन*–स्त्री० सौत।

सौतिया डाह–स्त्री०दो सौतोंमें होनेवाली ईर्ष्या,द्वेष आदि।

सौतुक, सौतुख, सौतुप*–अ० दे० 'सौँतुख'।

सौतेला–वि० सौत-संबंधी, जिसका संबंध सौतसे हो; सौतसे उत्पन्न (सौतेला भाई)।

सौत्र–वि० [सं०] सूत्र-संबंधी; सूतका बना हुआ।

सौत्रांतिक–पु० [सं०] बौद्ध मतकी चार प्रमुख शाखाओंमेंसे एक (यह 'अनुमान'-प्रधान शाखा है)।

सौदा–पु० [अ०] उन्माद, सनक; प्रेम, इश्क; [फ़ा०] खरीद-बेची; वाणिज्य; वह चीज जो बाजारसे खरीदी जाय; क्रय-विक्रयकी वस्तु, माल। **–गर**–पु० व्यापारी, तिजारत करनेवाला। **–गरी**–स्त्री० सौदागरका काम, व्यापार, तिजारत। वि० तिजारती। **–गरी माल**–पु० तिजारती माल, बिक्रीके लिए इकट्ठा किया हुआ माल। **–बही**–स्त्री० खरीद-बेची लिखनेकी बही। **–सुलफ़ (सुलुफ़)**–पु० बाजारसे खरीदी जानेवाली चीजें। **–(दे) बाज**–वि० अपने लाभका पूरा ध्यान रखकर सौदा पटानेवाला। **मु०–पटना**–खरीद-बेचीका मामला तै होना, भाव या दाम ठीक होना। **–पटाना**–मोल-भाव करके दाम तै करना। **–होना**–सौदा पट जाना।

सौदाई–वि०[अ०] पागल, सनकी; खब्ती; प्रेमी,आशिक।

सौदामनी, सौदामिनी–स्त्री० [सं०] विद्युत्; मालाकार विद्युत्; ऐरावत(गज)की पत्नी; एक रागिनीका नाम।

सौदायिक–पु० [सं०] विवाहके अवसरपर माता-पिता तथा संबंधियोंसे कन्याको मिलनेवाला धन जिसपर विधानतः कन्याका अधिकार होता है; दहेज।

सौध–वि० [सं०] सुधा-संबंधी; सुधायुक्त; चूना (सुधा) पुता हुआ, पलस्तर किया हुआ। पु० चूना पुता निवास, घर; महल, प्रासाद; चूना; दुधिया पत्थर, दुग्धपाषाण; चाँदी; एक रत्न। **–कार**–पु० सौधनिर्माण करनेवाला व्यक्ति, राज, राजगीर, मेमार। **–तल**–पु० महलका नीचेका तला।

सौधर्म्य–पु० [सं०] सुधर्मका भाव, साधुता, सज्जनता।

सौन–वि० [सं०] पशुवधालय-संबंधी। पु० बूचड़; बूचड़ द्वारा प्रस्तुत विक्रयार्थ ताजा मांस। * अ० सामने।

सौनक*–पु० एक ऋषि, शौनक।

सौनन–स्त्री० दे० 'सौँदन'।

सौना*–पु० दे० 'सोना'।

सौनिक–पु०[सं०] पशु-पक्षियोंका मांस बेचनेवाला व्यक्ति–कसाई, बूचड़; व्याध।

सौनीतेय–पु० [सं०] सुनीतिके पुत्र, ध्रुव।

सौपना–स० क्रि० दे० 'सौँपना'।

सौभद्र–वि० [सं०] सुभद्रा-संबंधी। पु० सुभद्राके पुत्र अभिमन्यु; एक तीर्थ।

सौभद्रेय–पु० [सं०] सुभद्रा-पुत्र अभिमन्यु; बहेड़ा।

सौभांजन–पु० [सं०] सहिजन।

सौभागिनी–स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री, सधवा।

सौभागिनेय–पु० [सं०] ज्येष्ठा (सबसे प्रिय) पत्नीका पुत्र; सम्मानित माताका पुत्र।

सौभाग्य–पु०[सं०] अच्छा भाग्य, खुश-किस्मती; कल्याण; समृद्धि; सफलता; सौंदर्य; प्रेम; कृपा; आनंद; शुभकामना; सुहाग, अहिवात; सिंदूर; सुहागा; एक पौधा; ज्योतिषका एक योग; एक व्रत। **–चिह्न**–पु० अच्छे भाग्यका चिह्न; अहिवातका चिह्न (जैसे सिंदूर आदि)। **–तंतु, –सूत्र**–पु० वह सूत्र जो विवाहमें वर द्वारा कन्याके गलेमें बाँधा जाता है; मंगल सूत्र। **–तृतीया**–स्त्री० हरितालिका, तीज।

सौभाग्यवती–स्त्री० [सं०] सधवा, सुहागिन।

सौभाग्यवान्(वत्)–वि० [सं०] भाग्यशाली, खुश-

किस्मत।

सौभिक्ष्य–पु० [सं०] सुकाल, सुभिक्ष।

सौम*–वि० दे० 'सौम्य'।

सौमन–पु० [सं०] एक दिव्यास्त्र।

सौमनस–वि० [सं०] सुमन-संबंधी; मनोहर; रुचिकर। पु० आनंद; संतोष; कृपा, दया; एक अस्त्रका नाम।

सौमनस्य–पु० [सं०] तुष्टि, प्रसन्नता; विवेक।

सौमिक–वि० [सं०] सोमरस-संबंधी; सोमरस द्वारा किया जानेवाला (यज्ञ); सोमयज्ञ-संबंधी; चंद्र-संबंधी; चांद्रायण व्रत करनेवाला। पु० सोमरसका पात्र।

सौमित्र–पु० [सं०] मैत्री; सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण।

सौमित्रा*–स्त्री० दे० 'सुमित्रा'।

सौमित्रि–पु० [सं०] सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण; शत्रुघ्न।

सौमुख्य–पु० [सं०] सुमुखता, सुर्खरूई; प्रसन्नता।

सौम्य–वि० [सं०] सोम (चंद्रमा या सोमलता)-संबंधी; सोमके गुणोंसे युक्त; सुंदर, प्रिय; नम्र और सुशील; मृदुल-कोमल; स्निग्ध; शांत। पु० बुध; ब्राह्मणके संबोधनकी उचित उपाधि; वह रस जो अभी रक्तके रूपमें लाल न हुआ हो। **–ग्रह**–पु० शुभ ग्रह। **–दर्शन**–वि० देखनेमें भला। **–मुख**–वि० सुंदर मुखवाला।

सौम्यता–स्त्री० [सं०] स्निग्धता; नम्रता; उदारता; सौंदर्य।

सौम्यत्व–पु० [सं०] मार्दव, कोमलता; सौंदर्य; उदारता।

सौम्याकृति–वि० [सं०] सुंदर आकृतिवाला।

सौर–स्त्री० चादर; सौरी मछली। वि० [सं०] सूर्य-संबंधी; सूर्यसे उत्पन्न; सूर्यार्पित; सूर्योपासक; सूर्यकी गतिका अनुसरण करनेवाला; देवता-संबंधी; मदिरा-संबंधी। पु० सूर्यकी पूजा करनेवाला व्यक्ति; शनि ग्रह। **–मास**–पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला महीना। **–लोक**–पु० दे० 'सूर्यलोक'। **–वर्ष**, **–संवत्सर**–पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला वर्ष।

सौरज*–पु० दे० 'शौर्य'

सौरभ–पु० [सं०] सुगंधि, खुशबू; केसर; धनिया; आम।

सौरभित–वि० [सं०) सौरभयुक्त, सुगंधयुक्त, खुशबूदार।

सौरस्य–पु० [सं०] सुरस होनेका भाव, सुरसता।

सौराज्य–पु० [सं०] सुराज्य, अच्छा शासन।

सौराष्ट्र–पु० [सं०] सुराष्ट्र देश, काठियावाड़ तथा गुजरातका पुराना नाम; सुराष्ट्र देशका निवासी। **–मृत्तिका**–स्त्री० सुराष्ट्र देशकी एक तरहकी मिट्टी जो सुगंधित होती है, गोपीचंदन।

सौराष्ट्रिक–वि० [सं०] सौराष्ट्र प्रदेशसे संबद्ध। पु० एक विष; सुराष्ट्र-निवासी; काँसा।

सौरास्त्र–पु० [सं०] एक दिव्य अस्त्र।

सौरि–पु० [सं०] शनि; असन वृक्ष; * वसुदेव; कृष्ण **–रत्न**–पु० नीलम।

सौरी–स्त्री० सूतिगृह; सफरी मछली।

सौर्य–वि०[सं०] सूर्य-संबंधी। पु० सूर्यका पुत्र, शनि; वर्ष।

सौर्यप्रभ–वि० [सं०] सूर्यकी प्रभासे संबंध रखनेवाला।

सौलक्षण्य–पु०[सं०] सुलक्षण होनेका भाव, सुलक्षणता।

सौलभ्य–पु० [सं०] सुलभ होनेका भाव, सुलभता।

सौवर्चल–वि० [सं०] सुवर्चल देश-संबंधी या वहाँ उत्पन्न होनेवाला। पु० सोंचर नमक; सर्जिकाक्षार।

सौवर्चस–वि० [सं०] चमकदार, कांतिमान्।

सौवर्ण–वि० [सं०] सुवर्णका, स्वर्ण-निर्मित। पु० सोना।

सौवर्णिक–पु० [सं०] सुनार।

सौवीर–पु० [सं०] बदरीफल, बेर; कांजीविशेष जो जौसे बनायी जाती है; सिंधु नदीके पासका एक प्रदेश; इस प्रदेशके निवासी।

सौवीरांजन–पु० [सं०] सुरमा।

सौष्ठव–पु० [सं०] उत्तमता; सौंदर्य, सुडौलपन; दक्षता।

सौसन–स्त्री० [फा०] लाली लिये नीले रंगका एक फूल जो उर्दू-फारसी कवितामें जबानका उपमान है।

सौहँ*–स्त्री० कसम, शपथ। अ० सम्मुख, समक्ष, सामने।

सौहर†–पु० दे० 'शौहर'।

सौहार्द–पु० [सं०] हृदयकी सरलता; सद्भाव; मैत्री।

सौहार्द्य–पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती।

सौहीं–* अ० सामने, सम्मुख। † पु० एक तरहकी रेती।

सौहृद–वि० [सं०] मित्र-संबंधी। पु० मित्र; मैत्री।

सौहृद्य–पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती।

स्कंत्ता(त्त)–वि०[सं०] कूदनेवाला, छलाँग मारनेवाला।

स्कंद–पु० [सं०] क्षरण, बहना; नाश, ध्वंस; पारा; उछलना; शरीर; कार्त्तिकेय। **–गुप्त**–पु० गुप्तवंशका एक प्रसिद्ध सम्राट्। **–जननी**–स्त्री० पार्वती।

स्कंदक–पु० [सं०] कूदने उछलनेवाला व्यक्ति; सैनिक।

स्कंध–पु० [सं०] कंधा, पीठका ऊपरी भाग; पेड़का तना; मोटी डाल; विज्ञान आदिका कोई विभाग; ग्रंथका भाग या खंड जिसमें अनेक अध्याय होते हैं (जैसे भागवतके १२ स्कंध); सेनाका कोई अंग या भाग; सेनाका व्यूह; समूह, झुंड; पाँचों ज्ञानेंद्रियोंके विषय; जीवनके पाँच तत्त्व–रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान (बौद्ध); पिंड (जैन); अभिषेकके अवसरपर काम आनेवाले छत्र, जलपूर्ण कलश आदि उपकरण; युद्ध; सड़क, मार्ग; (स्टॉक) बेचनेके लिए रखा गया तरह-तरहके मालका भांडार। **–पंजी**–स्त्री० (स्टॉक रजिस्टर) भांडार या गोदाममें मौजूद मालका विवरण लिखनेकी पंजी। **–मणि**–पु० एक तरहका रक्षाकवच। **–वाह**, **–वाहक**–पु० कंधेपर भार वहन करनेवाला (बैल आदि)। **–वाह्य**–वि० जो कंधेपर ढोया जाय।

स्कंधावार–पु० [सं०] राजाका शिविर; राजधानी; सेना; सैन्यस्थिति; व्यापारियोंके ठहरनेका स्थान।

स्कंधिक–पु० [सं०] कंधेपर भार ढोनेवाला बैल; दे० 'स्कांधिक'।

स्कंभ–पु० [सं०] खंभा, टेक, सहारा; पुरुष; परमेश्वर।

स्कांधिक–पु० [सं०] (स्टॉकिस्ट) बिक्रीके लिए बहुत-सी चीजें अपनी दूकान या गोदाममें रखनेवाला।

स्कूल–पु० [अं०] पाठशाला, अध्यापनका स्थान; विशिष्ट विचारधारा।

स्कूली–वि० स्कूलका।

स्खलन–पु० [सं०] पतन; मार्गसे विचलित होना; लड़खड़ाना; थरथराहट; भूल करना, गलती; क्षरण।

स्खलित–वि० [सं०] लुढ़का हुआ, पतित; लड़खड़ाया

हुआ; अस्थिर; मत्त; भूल करनेवाला; क्षरित; विफल।

स्टांप–पु० [अं०] पक्की लिखापढ़ी करने या अर्जीदावा लिखनेका कागज; डाकखानेका टिकट; छाप, मोहर।

स्टीमर–पु० [अं०] भापसे चलनेवाला छोटा जहाज।

स्टूल–पु० [अं०] तीन या चार पायोंकी एक कुर्सीनुमा छोटी चौकी, तिपाई।

स्टेशन–पु० [अं०] रेलगाड़ियोंके ठहरनेका स्थान जहाँ यात्री उतरते और चढ़ते हैं; रिक्शे, मोटर आदि सवारियोंके ठहरनेका स्थान; कार्यविशेषके लिए लोगोंकी नियुक्ति और निवासका स्थान (जैसे पुलिस स्टेशन)। **–मास्टर**–पु० रेलवे स्टेशनका प्रधान अधिकारी।

स्तंब–पु० [सं०] गुल्म, प्रकांड-रहित पौधा–झिंटी आदि; तृणादिका गुच्छ; झुरमुट; हाथी बाँधनेका खूँटा, खंभा।

स्तंभ–पु० [सं०] गतिहीनता; संज्ञाहीनता; खंभा; पेड़का तना; सहारा, टेक; मंत्रबलसे किसी शक्ति या अनुभूतिका दमन; जड़ता; एक सात्त्विक भाव (सा०); (कॉलम) समाचारपत्रादिके पृष्ठका खड़ा विभाग या किसी विशेष विषयके लिए निर्धारित स्थान। **–लेखक**–पु० (कॉलमिस्ट) समाचार-पत्रमें विशेष विषयपर लेखादि लिखनेवाला।

स्तंभक–वि० [सं०] रोकनेवाला; कब्ज करनेवाला; वीर्यको शीघ्र स्खलित होनेसे रोकनेवाला।

स्तंभन–वि० [सं०] जड़ बना देनेवाला; रोकनेवाला; कब्ज करनेवाला। पु० कामदेवका एक बाण; सहारा देना; जड़ीकरण; (मंत्रादिके द्वारा) किसीकी शक्ति कुंठित करना; वीर्य आदिका स्राव आदि रोकना; वीर्य रोकनेवाली दवा।

स्तंभित–वि० [सं०] स्थिर किया हुआ, दृढ़ किया हुआ; जड़ीभूत, स्तब्ध; चकित; रोका हुआ; दबाया हुआ।

स्तनंधय–वि० [सं०] स्तन-पान करनेवाला। पु० शिशु।

स्तन–पु० [सं०] स्त्रियोंका अंगविशेष, कुच; मादा पशुका थन; चूचुक, ढेपनी। **–कलश**, **–कुंभ**–पु० सुपुष्ट स्तन। **–कील**–पु० स्तनका एक रोग, थनैली। **–कुड्मल**, **–कोरक**–पु० कली जैसा स्तन। **–चूचुक**–पु० ढेपनी। **–त्याग**–पु० स्तनपानका त्याग। **–दात्री**–स्त्री० स्तनपान करानेवाली। **–प**–वि० स्तन-पान करनेवाला। पु० दुधमुँहा बच्चा। **–पतन**–पु० स्तनका ढीला पड़ना, लटकना। **–पान**–पु० स्तनका दूध पीना। **–पायी(यिन्)**–वि० दे० 'स्तनप'। **–मंडल**–पु० स्तनका घेरा। **–मुख**–पु० ढेपनी। **–शोष**–पु० स्तन सूखनेका एक रोग।

स्तनन–पु० [सं०] ध्वनि; मेघशब्द; कराहना।

स्तनांशुक–पु० [सं०] स्तन बाँधने, ढकनेका कपड़ा।

स्तनाग्र–पु० [सं०] ढेपनी, चूचुक।

स्तनावरण, **स्तनोत्तरीय**–पु० [सं०] स्तन ढकनेका कपड़ा।

स्तनित–वि० [सं०] गर्जित, ध्वनित, शब्दायमान। पु० मेघनिर्घोष; ताली बजानेका शब्द; शब्द; टंकोर।

स्तन्य–वि० [सं०] जो स्तनमें हो; स्तन-संबंधी। पु० दूध। **–त्याग**–पु० बच्चेका स्तन-पान छोड़ना। **–दा**–वि० स्त्री० जिसके स्तनोंसे दूध निकले। **–दान**–पु० स्तनपान कराना; स्तनसे दूध देना। **–प**–वि० स्तन-पान करनेवाला। पु० दुधमुँहाँ बच्चा। **–पान**–पु० स्तनका दूध पीना; शैशवकाल। **–पायी(यिन्)**, **–भुक्(ज्)**–वि० दूधपीता। **–रोग**–पु० माताके दूधके विकारसे होनेवाला रोग।

स्तबक–पु० [सं०] गुच्छ; फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; मोरकी पूँछका पंख; समूह; रेशमका झब्बा।

स्तब्ध–वि० [सं०] स्थिर, दृढ़; कड़ा; जड़ीभूत, गतिहीन; संज्ञाहीन; धीमा, सुस्त; रुद्ध। **–दृष्टि**, **–नयन**–वि० जिसकी पलकें न गिर रही हों, टकटकी बँध गयी हो। **–बाहु**–वि० जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों। **–मति**–वि० मंदबुद्धि, जिसकी बुद्धि कुंठित हो।

स्तब्धता–स्त्री०, **स्तब्धत्व**–पु० [सं०] जड़ता, कड़ापन; स्थिरता; निश्चेष्टता, स्पंदनहीनता; घमंड।

स्तब्धाक्ष–वि० [सं०] दे० 'स्तब्धदृष्टि'।

स्तब्धि–स्त्री० [सं०] जड़ता; स्थिरता, निश्चलता; दृढ़ता।

स्तभि–स्त्री० [सं०] जड़ता।

स्तर–पु० [सं०] कोई फैली हुई चीज; तह; कालविशेषमें पड़ी हुई भूमिकी परत; सतह; मान; शय्या, पलंग।

स्तरण–पु० [सं०] फैलाना, बिछाना; पलस्तर करना।

स्तरिमा (मन्)–पु० [सं०] तल्प, सेज।

स्तरीभूत–वि० [सं०] (स्ट्रैटिफाइड) जो स्तरके रूपमें परिणत हो गया हो।

स्तव–पु० [सं०] प्रशंसा, स्तुति; स्तोत्र।

स्तवक–पु० [सं०] स्तुति; स्तुतिपाठक, वंदीजन; फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; समूह; अध्याय, परिच्छेद।

स्तवन–पु० [सं०] स्तुति करना; स्तोत्र।

स्तवनीय, **स्तवन्य**–वि० [सं०] स्तुतिके योग्य।

स्तावक–वि० [सं०] स्तुति करनेवाला। पु० वंदीजन।

स्तिमित–वि० [सं०] गीला, आर्द्र; स्थिर, निश्चल; शांत। **–नयन**–वि० जिसे टकटकी लग गयी हो।

स्तीर्ण–वि० [सं०] छितराया, बिखेरा, फैलाया हुआ।

स्तुक–पु० [सं०] केशगुच्छ; संतान।

स्तुत–वि० [सं०] जिसकी स्तुति की गयी हो, प्रशंसित।

स्तुति–स्त्री० [सं०] गुणगान, प्रशंसा; स्तोत्र; चाटुकारिता। **–पाठक**–पु० स्तुतिका पाठ करनेवाला, वंदीजन। **–प्रिय**–वि० प्रशंसाका इच्छुक। **–वचन**, **–वाद**–पु० प्रशंसात्मक वचन, गुणानुवाद। **–वादक**–पु० प्रशंसा करनेवाला; मुँहदेखी बोलनेवाला।

स्तुत्य–वि० [सं०] स्तवनीय, प्रशंसनीय।

स्तूप–पु० [सं०] केशगुच्छ; ढेर, राशि; मिट्टी, ईंट आदिसे बना ढूह, विशेषकर बौद्धोंका (बुद्धके अवशिष्ट चिह्न रखनेके लिए)। **–भेदक**–पु० स्तूप नष्ट करनेवाला।

स्तेन–पु० [सं०] चोर; लुटेरा; चोरी। **–निग्रह**–पु० चोरोंका दमन।

स्तेय–पु० [सं०] चोरी; रहजनी; चोरी गयी हुई या चोरी जाने योग्य वस्तु; छिपायी हुई या गोप्य वस्तु।

स्तैन, **स्तैन्य**–पु० [सं०] चोरी; चोर।

स्तोक–वि० [सं०] छोटा, लघु; कुछ; थोड़ा; नीच। **–काय**–वि० छोटे कदका।

स्तोतव्य–वि० [सं०] स्तुत्य।

स्तोता (तृ)–वि० [सं०] प्रार्थना, स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र–पु० [सं०] स्तुति; स्तुत्यात्मक श्लोक; श्लोकबद्ध

स्तुतिपरक ग्रंथ। **–कारी(रिन्)**–वि० स्तोत्रका पाठ करनेवाला।

स्तोत्रार्ह–वि० [सं०] स्तुत्य।

स्तोम–पु० [सं०] स्तुति, गुणगान; यज्ञ; समूह, राशि।

स्तोम्य–वि० [सं०] स्तुतिके योग्य।

स्तौपिक–पु० [सं०] बुद्ध-द्रव्य, स्तूपमें रखे हुए दंत, अस्थि आदि अवशिष्ट पदार्थ।

स्त्रींद्रिय–स्त्री० [सं०] योनि।

स्त्री–स्त्री० [सं०] औरत; पत्नी; मादा पशु; सफेद चींटी, दीमक। **–कुसुम**–पु० रजःस्राव। **–गमन**–पु० संभोग, रतिक्रिया। **–घातक,–घ्न**–वि० किसी स्त्री या पत्नीकी हत्या करनेवाला। **–चरित्र**–पु० स्त्रियोंके कार्य। **–चित्तहारी(रिन्)**–वि० स्त्रियोंका मन हरण करनेवाला। पु० शोभांजन, सहिजन। **–चिह्न**–पु० योनि; स्त्री-संबंधी कोई चिह्न। **–जन**–पु० स्त्रीजाति। **–जननी**–स्त्री० सिर्फ कन्याएँ उत्पन्न करनेवाली स्त्री। **–जाति**–स्त्री० स्त्रीवर्ग। **–जित**–वि० स्त्रीके वशमें रहनेवाला, जनमुरीद। **–तंत्र**–पु० (आइनैरकी) स्त्री या स्त्रियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था। **–द्विट्(प्),–द्वेषी(षिन्)**–पु० स्त्रियोंसे द्वेष करनेवाला, रमणी-द्वेषी। **–धन**–पु० वह धन या संपत्ति जिसपर स्त्रीका ही अधिकार हो (जैसे दहेज आदि)। **–धर्म**–पु० स्त्रियोंका कर्तव्य; स्त्री-संबंधी विधान; मैथुन, संभोग; रजःस्राव। **–धर्मिणी**–स्त्री० ऋतुमती स्त्री। **–नाथ**–वि० स्त्री जिसकी स्वामिनी हो। **–पण्योपजीवी(विन्)**–पु० वेश्याएँ रखकर जीविका चलानेवाला। **–पर**–वि० कामी, लंपट। **–पुर**–पु० स्त्रियोंके रहनेका स्थान, अंतःपुर। **–प्रसंग**–पु० संभोग। **–प्रसू**–स्त्री० दे० 'स्त्री-जननी'। **–प्रिय**–वि० स्त्रियोंको प्यारा। पु० आम; अशोक। **–बाध्य**–वि० स्त्रीसे परेशान किया जानेवाला। **–बुद्धि**–स्त्री० स्त्रीकी बुद्धि। **–भोग**–पु० मैथुन। **–रंजन**–पु० पान। **–रज(स्)**–पु० रजःस्राव। **–रत**–वि० स्त्रीके प्रति विशेष अनुरक्त। **–रत्न**–पु० उत्तम स्त्री; लक्ष्मी। **–राज्य**–पु० स्त्रियों द्वारा शासित एक महाभारतोक्त प्रदेश; दे० 'स्त्री-तंत्र'। **–रोग**–पु० स्त्रियोंके विशेष रोग। **–लंपट**–वि० स्त्रीका इच्छुक, कामी। **–लक्षण**–पु० कोई स्त्री-संबंधी चिह्न। **–लिंग**–पु० जननेंद्रिय, योनि; स्त्री-बोधक लिंग (व्या०)। **–लोल**–वि० दे० 'स्त्री-लंपट'। **–लौल्य**–पु० स्त्रीकी चाह। **–वश,–वश्य**–वि० स्त्री द्वारा शासित। **–वित्त**–पु० पत्नीसे प्राप्त होनेवाला धन। **–वियोग**–पु० पत्नीसे पृथक् होना। **–विषय**–पु० मैथुन। **–व्यंजन**–पु० स्त्री होनेके चिह्न–स्तन आदि। **–व्रत**–पु० अपनी पत्नीके सिवा दूसरी स्त्रीकी कामना न करनेका व्रत, एकपत्नीव्रत। **–शेष**–वि० जिसमें केवल स्त्रियाँ बच रही हों। **–संग**–पु० स्त्रियोंके साथ संपर्क; संभोग। **–संग्रहण**–पु० किसी स्त्रीका बलात् आलिंगन या भोग करना। **–संज्ञ**–वि० ऐसे नामवाला जिसका अंत स्त्रीवाचक शब्दसे होता हो। **–संभोग**–पु० मैथुन। **–संसर्ग**–पु० स्त्रियोंका संपर्क; मैथुन। **–समागम**–पु० मैथुन। **–सुख**–पु० संभोग; शोभांजन। **–सेवन**–पु० संभोग, मैथुन। **–स्वभाव**–पु० स्त्रियोंकी प्रकृति; खोजा। **–हरण**–पु० बलात् स्त्रीका हरण कर ले जाना। **–हारी(रिन्)**–पु० स्त्रीका बलात् हरण करनेवाला पुरुष।

स्त्रीता–स्त्री०, **स्त्रीत्व**–पु० [सं०] स्त्री होनेका भाव, नारीत्व; पत्नीत्व; नारीसुलभ कोमलता, दुर्बलता आदि।

स्त्रैण–वि० [सं०] स्त्री-संबंधी; स्त्रियोंके योग्य, नारीसुलभ; स्त्रीरत; स्त्री द्वारा शासित।

स्त्र्यागार–पु० [सं०] अंतःपुर।

स्त्र्याजीव–पु० [सं०] अपनी या दूसरी स्त्रियोंसे वेश्यावृत्ति कराकर रोजी कमानेवाला।

स्थंडिल–पु० [सं०] अनावृत भूमि; यज्ञके लिए साफ और चौरस की हुई चौकोर जमीन; सीमा। **–शायी(यिन्)**–वि०, पु० बिना बिस्तरके जमीनपर सोनेवाला।

स्थ–वि० [सं०] (समासमें) ठहरा हुआ, स्थित; उपस्थित; संलग्न, रत; रहनेवाला। पु० स्थल, स्थान। **–पति**–पु० राजा; शासक; शिल्पी; बढ़ई; मेमार, राज; सारथि।

स्थगन–पु० [सं०] छदन, आवृत करना, ढकना; छिपाना; अपवारण; समिति आदिकी काररवाई स्थगित करना (आधु०)।

स्थगित–वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ; अवरुद्ध; कुछ समयके लिए मुलतवी किया हुआ।

स्थल–पु० [सं०] दृढ़ और सूखी भूमि; किनारा, कछार; धरती; स्थान; मैदान; भूभाग; ठहरनेका स्थान; ढूह; विषय (विचार आदिका); पुस्तकका अध्याय; परिस्थिति, अवसर। **–कमल**–पु०, **–कमलिनी**–स्त्री० स्थलपर होनेवाला एक पुष्प, स्थलपद्म। **–कुमुद**–पु० करवीर। **–चर,–चारी(रिन्)**–वि० जमीनपर रहनेवाला (प्राणी)। **–च्युत**–वि० किसी स्थान या पदसे गिरा या हटाया हुआ। **–देवता**–पु० स्थानीय देवता। **–नीरज**–पु० स्थलपद्म। **–पथ**–पु० खुश्की रास्ता। **–पद्म**–पु० मानकच्चू; स्थलकमल; छत्रपत्र, तमालक। **–पद्मिनी**–स्त्री० दे० 'स्थलकमलिनी'। **–मार्ग**–पु० खुश्की रास्ता। **–युद्ध**–पु० भूभागपर चलनेवाली लड़ाई। **–वर्त्म(न्)**–पु० दे० 'स्थलमार्ग'। **–शुद्धि**–स्त्री० भूमिकी सफाई। **–सेना**–स्त्री० स्थलपर लड़नेवाली सेना।

स्थली–स्त्री० [सं०] शुष्क भूमि; प्राकृतिक भूमि (जैसे वनकी); उपत्यका।

स्थलीय–वि० [सं०] स्थल, भूमि-संबंधी; स्थानीय।

स्थलेशय–वि० [सं०] भूमिपर सोनेवाला। पु० ऐसा जीव (वाराह आदि)।

स्थविर–वि० [सं०] दृढ़, स्थिर, अचल; वृद्ध; प्राचीन; आदरणीय। पु० वृद्ध व्यक्ति; ब्रह्मा; वृद्ध भिक्षु।

स्थविरता–स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था।

स्थाई–वि० दे० 'स्थायी'।

स्थाणु–वि० [सं०] दृढ़, स्थिर, अचल। पु० शिव; स्तंभ, खंभा; खूँटी; पेड़का ठूँठ।

स्थातव्य–वि० [सं०] ठहरने योग्य, रहने योग्य।

स्थान–पु० [सं०] स्थित होने, ठहरनेकी क्रिया, टिकाव, ठहराव; स्थिति, अवस्था; जगह; पद, ओहदा; संबंध;

रहनेकी जगह, घर; देश, भूभाग; नगर; अवसर; विषय; कारण; उपयुक्त अवसर; पवित्र जगह, मंदिर आदि; अवकाश। **–ग्राही पदाधिकारी**–पु० (रिलीविंग ऑफिसर) वह अधिकारी जो किसी अन्य अधिकारीके पदका भार ग्रहण कर उसे छुट्टी आदि लेकर कहीं जाने या अपने पदसे कुछ कालके लिए हटनेका अवसर दे। **–च्युत**–वि० स्थानभ्रष्ट, अपने स्थानसे गिरा हुआ; अपने पदसे हटाया हुआ, पदच्युत। **–त्याग**–पु० निवास-स्थानका त्याग; पदकी हानि। **–पति**–पु० स्थानका अधिकारी; विहार आदिका अध्यक्ष। **–पाल**–पु० स्थानविशेषका रक्षक या प्रधान निरीक्षक; प्रहरी, चौकीदार। **–प्राप्ति**–स्त्री० किसी स्थान या पदका मिलना। **–बद्ध करना**–स० क्रि० (टु इंटर्न) किसी व्यक्तिकी गति-विधि स्थानविशेषके भीतर ही सीमित कर देना, दे० 'अंतर्वासित करना'। **–भंग**–पु० किसी स्थानकी बर्बादी या पतन। **–माहात्म्य**–पु० किसी स्थानका गौरव या देवता आदिके कारण प्राप्त महत्त्व। **–वंचित**–वि० (अनसीटेड) दे० 'अनासीन'। **–सीमन**–पु० (लोकेलिज़ेशन) इधर-उधर फैले हुए कार्यों, व्यापार, उपद्रवों आदिको बटोरकर या काबूमें लाकर एक स्थानपर आबद्ध करना, सीमित करना; (उद्योगादिका) क्षेत्रविशेषके भीतर कर दिया जाना; किसीके लिए कोई स्थान निर्धारित करना या बताना।

स्थानांतर–पु० [सं०] भिन्न, दूसरा स्थान। **–गत**–वि० जो अन्यत्र चला गया हो।

स्थानांतरण–पु० [सं०] [सं०] (ट्रांसफर) किसी व्यक्ति या वस्तुका एक स्थानसे हटाकर किसी दूसरे स्थानपर पहुँचाया या भेजा जाना, तबादला करना।

स्थानांतरित–वि० [सं०] (ट्रांसफर्ड) एक स्थानसे दूसरे स्थानपर किया हुआ; जिसका तबादला हो गया हो।

स्थानाध्यक्ष–पु० [सं०] स्थानविशेषका रक्षक या शासक।

स्थानापन्न–वि०[सं०] दूसरेकी जगह अस्थायी रूपसे काम करनेके लिए नियुक्त।

स्थानाबद्धकारी अधिनियम–पु०(पेगिंग ऐक्ट) वह अधिनियम जिसके अनुसार कुछ जातियों या वर्गोंका निवास विशेष स्थान या क्षेत्रतक ही सीमित कर दिया गया हो (जैसा कि दक्षिण अफ्रीकामें किया गया है)।

स्थानाश्रय–पु० [सं०] खड़े होनेकी जगह, आधार।

स्थानासेध–पु० [सं०] किसी व्यक्तिको किसी स्थानपर कैद करना या रोक रखना।

स्थानिक–वि० [सं०] स्थानविशेषसे संबद्ध, स्थानीय। पु० स्थानविशेषके लिए उपयुक्त। **–स्वशासन**–पु० विभिन्न नगरों, जिलों आदिको अपना स्थानीय प्रबंधादि करनेके लिए मिला हुआ अधिकार।

स्थानीय–वि० [सं०] स्थानविशेषसे संबंध रखनेवाला; स्थानविशेषके लिए उपयुक्त। **–करण**–पु० दे० 'स्थानसीमन'। **–स्वशासन**–पु० (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट) देश या राज्योंके नगरों, जिलों आदिको प्राप्त अपनी सड़कें बनवाने, सफाई, पानी आदिकी व्यवस्था करनेका अधिकार; वह शासनपद्धति जिसके अनुसार नगरों, जिलों आदिको यह परिमित स्वराज्य प्राप्त हो।

स्थानेश्वर–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ, थानेश्वर।

स्थापक–वि० [सं०] स्थापित करनेवाला; खड़ा करनेवाला; स्थिर करनेवाला। पु० मूर्तिकी स्थापना करनेवाला; कोई संस्था स्थापित करनेवाला; किसीके पास कुछ जमा करनेवाला; सूत्रधारका सहायक (ना०)।

स्थापत्य–पु० [सं०] भवन-निर्माण; अंतःपुरका रक्षक; किसी भूभागके शासकका पद; वास्तुविद्या। **–कला**–स्त्री० वास्तुविद्या। **–वेद**–पु० एक उपवेद, वास्तुशास्त्र।

स्थापन–पु० [सं०] खड़ा करना, स्थित करना; स्थिर करना, जमाना; स्थापित करना (संस्था आदि); निर्देशन, रंगमंचकी व्यवस्था; ध्यान; धारणा; निवासस्थान; गर्भाधान संस्कार; पुंसवन; प्रतिपादन; लटकाना; अंगोंको सशक्त करना।

स्थापना–स्त्री० [सं०] रखना, जमाना, स्थापित करना; सँभालना; एकत्र करना; संरक्षण करना; प्रतिपादन।

स्थापनीय–वि० [सं०] स्थापित करने योग्य।

स्थापयिता(तृ)–वि०[सं०]स्थापित करनेवाला, संस्थापक।

स्थापित–वि० [सं०] जिसकी स्थापना की गया हो; जमाया हुआ; कायम किया हुआ, प्रतिष्ठित किया हुआ।

स्थाप्य–वि० [सं०] स्थापित करने योग्य (मूर्ति आदि); रखे जाने योग्य; किसी पदपर नियुक्त किये जाने योग्य।

स्थायिता–स्त्री०, **स्थायित्व**–पु० [सं०] बने रहनेका भाव; टिकाव, ठहराव; दृढ़ता, स्थिरता।

स्थायी(यिन्)–वि० [सं०] स्थितियुक्त; ठहरने, टिकनेवाला, बना रहनेवाला; विशेष स्थितिमें रहनेवाला। **–भाव**–पु० भावका एक प्रकार जो मनमें बना रहता है और परिपाक होनेपर रसावस्थामें परिणत होता है (रति, हास, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, विस्मय, भय, उत्साह और निर्वेद)। **–समिति**–स्त्री० (स्टैंडिंग कमिटी) चुने हुए सदस्योंकी वह समिति जो अगले अधिवेशनतक सब कामोंकी व्यवस्था करती रहे; स्थायी रूपसे बनी रहकर कोई विशेष कार्य करनेके लिए नियुक्त की गयी समिति।

स्थाल–पु० [सं०] थाल, कटोरा, बटलोई आदि पात्र।

स्थाली–स्त्री० [सं०] मिट्टीके बने हुए पाकपात्र–हंडी, कड़ाही आदि; सोमरस तैयार करनेके काम आनेवाला एक तरहका पात्र; पाटला वृक्ष। **–पुलाक**–पु० स्थालीमें पकाया हुआ चावल। **–पुलाक-न्याय**–पु० एक चावलकी परीक्षासे सारेका पता लग जानेकी तरह अंशके आधारपर अंशीके संबंधमें अनुमान करना।

स्थावर–वि० [सं०] गतिहीन; अचल; स्थायी; निष्क्रिय; अचल संपत्ति-संबंधी। पु०पर्वत; कोई गतिहीन या निर्जीव पदार्थ (पत्थर, पौधा आदि)।

स्थित–वि० [सं०] खड़ा; ठहरा हुआ; टिका हुआ; रहता हुआ; घटित; किसी स्थानपर रखा या नियुक्त किया हुआ; किसी नियम, आदेश आदिका पालन करनेमें रत; रोका हुआ, वारित; जड़ा हुआ, जमाया हुआ; स्थिर, दृढ़; कृतसंकल्प; विहित; धीर; कर्तव्य-परायण। **–प्रज्ञ**–वि० जो संयमी, आत्मसंतुष्ट, धीर, स्थिरबुद्धि और निष्काम हो।

स्थिति–स्त्री० [सं०] रहना; ठहरना; निवास; रुकना;

चुपचाप खड़ा रहना; अवस्था; सामाजिक, आर्थिक आदि दृष्टियोंसे देखी जानेवाली किसी व्यक्ति, संस्था, देश आदिकी दशा; अभियोग, वक्तव्य आदिपर प्रकाश डालनेवाली वे बातें जो कोई व्यक्ति अपनी ओरसे उपस्थित करे; स्वभाव, प्रकृति; स्थायित्व; पद, ओहदा; निर्वाह; जीवनका बना रहना; मर्यादा; किसी स्थानपर लगातार बने रहना; जड़ता, निश्चलता। **–प्रद**–वि० दृढ़ता या स्थायित्व प्रदान करनेवाला। **–स्थापक**–वि० पूर्व अवस्था प्रदान करनेवाला; लचीला। **–स्थापकत्व**–स्त्री० (इलैस्टिसिटी) (मोड़े या खींचे जानेके बाद) पुनः पूर्व अवस्था प्राप्त कर लेनेकी शक्ति या गुण, लचीलापन।

स्थिर–वि० [सं०] दृढ़; गतिहीन; अचल; स्थायी; शांत; धीर; नियत; विश्वस्त; निश्चित। **–चित्त,–चेता(तस्)**–वि० अपने विचारों, मतादिपर दृढ़ रहनेवाला, स्थिरबुद्धि। **–बुद्धि**–वि० जिसकी बुद्धि संकटादिके कारण विचलित न हो, दृढ़चित्त। **–मति**–स्त्री० स्थिर बुद्धि। वि० स्थिरबुद्धिवाला। **–मना(नस्)**–वि० स्थिरचित्त।

स्थिरक–पु० [सं०] सागौन।

स्थिरता–स्त्री०, **स्थिरत्व**–पु० [सं०] स्थिर होनेका भाव, दृढ़ता; अचलता; कठोरता; स्थायित्व; धीरता, शांति।

स्थिरा–स्त्री० [सं०] स्थैर्ययुक्त स्त्री; पृथ्वी; शालपर्णी।

स्थिरात्मा(त्मन्)–वि० [सं०] दृढ़चित्त।

स्थिरानुराग–पु० [सं०] सच्चा प्रेम। वि० जिसका प्रेम स्थिर हो।

स्थिरीकरण–पु० [सं०] स्थिर करना; अस्थिर रहनेवाली, घटने-बढ़नेवाली वस्तुओं, उनके स्वरूप, भावादिको स्थिरता प्रदान करना; दृढ़ करना; समर्थन।

स्थूल–वि० [सं०] बड़ा; पीन, मोटा; घना; बली; विषम; अपरिपक्व; मोटे हिसाबसे अनुमान किया गया; सुस्त; (व्याख्या या विवरण) जो बारीकी या ब्योरेके साथ न देकर मोटे तौरपर दिया गया हो। **–बुद्धि**–वि० मंदबुद्धि, मूर्ख।

स्थूलता–स्त्री०, **स्थूलत्व**–पु० [सं०] मोटापन; मूर्खता।

स्थैर्य–पु० [सं०] स्थिरता; दृढ़ता; धैर्य; शांति; स्थायित्व।

स्थौल्य–पु० [सं०] स्थूलता; भारीपन; बुद्धिकी मंदता।

स्नपित–वि० [सं०] नहाया हुआ, स्नात।

स्नात–वि० [सं०] नहाया हुआ। पु० वह जिसका वेदाध्ययन पूरा हो गया हो; स्नातक।

स्नातक–पु० [सं०] वह जो वेदाध्ययन समाप्त करनेके अनंतर स्नान कर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करे; वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक उद्देश्यसे भिक्षु बन गया हो; किसी विश्वविद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर उपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति। **–व्रत**–पु० स्नातकके कर्तव्य। वि० दे० 'स्नातकव्रती'। **–व्रती(तिन्)**––वि० स्नातकके कर्तव्योंका पालन करनेवाला।

स्नातकोत्तर-अध्ययन–पु० [सं०] (पोस्ट ग्रेजुएट स्टडी) स्नातक (ग्रेजुएट) हो जानेके बाद किया जाने, जारी रखा जानेवाला अध्ययन।

स्नातव्य–वि० [सं०] स्नान कराने योग्य।

स्नान–पु० [सं०] जलसे सारे शरीरको धोना; धूप, वायु आदिका सेवन; जलकी सहायतासे धोकर शुद्ध करना; मूर्तिको नहलाना। **–गृह**–पु० नहानेका कमरा। **–तीर्थ**–पु० वह स्थान जहाँ धार्मिक स्नान किया जाय। **–वेश्म(न्)**–पु० स्नानगृह। **–शाला**–स्त्री० स्नानागार।

स्नानांबु–पु० [सं०] स्नान करनेका जल।

स्नानागार–पु० [सं०] दे० 'स्नानगृह'।

स्नानी(निन्)–वि० [सं०] स्नान करनेवाला।

स्नानोदक–पु० [सं०] दे० 'स्नानांबु'।

स्नापक–पु० [सं०] स्नान करानेवाला सेवक।

स्नापित–वि० [सं०] नहलाया हुआ।

स्नायविक–वि० [सं०] स्नायु-संबंधी।

स्नायी(यिन्)–वि० [सं०] स्नान करनेवाला।

स्नायु–स्त्री० [सं०] रग, नाड़ी; पेशी; धनुष्की डोरी। पु० एक रोग जिसमें अंगोंके छोरपर चर्मस्फोट होता है। **–मंडल,–संस्थान**–पु० (नर्व्हस सिस्टम) सुषुम्ना तथा उससे संबद्ध मस्तिष्ककी और शरीरके अन्य भागोंकी नाड़ियोंका समूह, नाड़ी-संस्थान। **–रोग**–पु० नहरुआ रोग। **–शूल**–पु० स्नायुओंमें होनेवाली वेदना।

स्निग्ध–वि० [सं०] तेल लगा हुआ; चिपकनेवाला; चिकना; आर्द्र; ठंढा करनेवाला; अनुरक्त; दयालु; मृदुल; सुंदर, प्रिय; घना। **–जन**–पु० प्रिय व्यक्ति।

स्नुषा–स्त्री० [सं०] पुत्रवधू; थूहड़।

स्नुहा, स्नुहि, स्नुही–स्त्री० [सं०] थूहड़।

स्नेह–पु० [सं०] प्रेम, मुहब्बत; कोमलता; दयालुता; तेल, मलाई आदि चिकने पदार्थ; वसा, भेजा आदि शरीरके रसवाले पदार्थ; आर्द्रता; एक राग। **–कुंभ,–घट**–पु० तेल रखनेका भाँड़ा आदि। **–गर्भ**–पु० तिल। **–पक्व**–वि० तेलमें तला हुआ। **–पात्र**–पु० प्रेमका पात्र, प्यारा व्यक्ति; तेलका बरतन। **–पान**–पु० दवाके रूपमें तेल पीना। **–प्रिय**–पु० दीपक। वि० जिसे तेल अधिक प्रिय हो। **–बद्ध**–वि० प्रेमसूत्रमें बँधा हुआ। **–भांड**–पु० तेल रखनेका बरतन। **–सम्मेलन**–पु० (सोशल गैदरिंग) दे० 'प्रीति·सम्मेलन'। **–सार**–पु० मज्जा। वि० जिसका मुख्य अंग तेल हो।

स्नेहक–वि० [सं०] प्रेम करनेवाला, प्रेमी; दयालु।

स्नेहन–पु० [सं०] तैलमर्दन; तैलयुक्त होना; उबटन।

स्नेहाकुल–वि० [सं०] प्रेमसे विह्वल।

स्नेहाश, स्नेहाशय–पु० [सं०] दीपक।

स्नेहित–वि० [सं०] जिससे प्रेम किया गया हो; दयालु; प्रेमी; तेल लगाया हुआ। पु० मित्र।

स्नेही(हिन्)–वि० [सं०] प्रेमयुक्त; तैलयुक्त। पु० प्रेम करनेवाला; मित्र; तेल मलनेवाला।

स्नेहोत्तम–पु० [सं०] तिलका तेल।

स्नेह्य–वि० [सं०] स्नेह करने योग्य; तेल लगाने, चिकनाने योग्य।

स्पंज–पु० [अं०] बहुतसे छेदों और रेशोंवाला एक मुलायम पदार्थ जो पानी ग्रहण कर लेता और दबानेपर निकाल देता है, मुरदाबादल।

स्पंद–पु० [सं०] कंपन; प्रस्फुरण, फड़कना; गति।

स्पंदन–पु० [सं०] कंपन, हिलना; विस्फुरण, फड़कना।

स्पंदित–वि० [सं०] कंपायमान, काँपता हुआ; गतिशील किया हुआ; गया हुआ। पु० स्पंदन, फड़कन; कंपन।

स्पर्द्धन, स्पर्धन–पु० [सं०] होड़; ईर्ष्या।

स्पर्द्धनीय, स्पर्धनीय–वि० [सं०] स्पर्द्धा करने योग्य; अभिलपणीय।

स्पर्द्धा, स्पर्धा–स्त्री० [सं०] होड़, प्रतियोगिता; ईर्ष्या; हौसला, अभिलापा;···की बराबरी; चुनौती।

स्पर्द्धी(र्द्धिन्), स्पर्धी(र्धिन्)–वि० [सं०] होड़, प्रतियोगिता करनेवाला; ईर्ष्यालु; घमंडी।

स्पर्श–पु० [सं०] छूना, संपर्क; संपर्कज्ञान; त्वचाका विपय; छूनेसे होनेवाला ज्ञान (ताप आदिका); प्रभाव; रोग; 'क्'से 'म्'तकके वर्ण; ग्रहणकी छायाका आरंभ। **–कोण**–पु० परिधिके किसी विंदुपर किसी सीधी रेखाका संपर्क होनेसे बननेवाला कोण। **–ज**–वि० स्पर्शसे .उत्पन्न होनेवाला। **–जन्य**–वि० दे० 'स्पर्शज'। **–दिशा**–स्त्री० ग्रहणमें छायाके स्पर्शकी दिशा। **–मणि**–पु० पारस पत्थर। **–रेखा**–स्त्री० (टैनजेंट) वृत्तकी परिधिको एक विंदुपर स्पर्श करती हुई बाहर ही बाहर एक ओरसे दूसरी ओर जानेवाली सरल रेखा। **–वर्ण**–पु० 'क्'से 'म'तकके वर्ण। **–वेद्य**–वि० स्पर्शके द्वारा जिसका ज्ञान हो। **–संचारी(रिन्)**–वि० संक्रामक। **–सुख**–वि० जिसका स्पर्श आनंददायक हो। **–स्नान**–पु० ग्रहण आरंभ होनेके समयका स्नान। **–हानि**–स्त्री० त्वचाकी स्पर्शसे संवेदन ग्रहण करनेकी शक्तिका नष्ट हो जाना।

स्पर्शक–वि० [सं०] छूनेवाला; अनुभव करनेवाला।

स्पर्शनीय–वि० [सं०] छूने योग्य।

स्पर्शनेंद्रिय–स्त्री० [सं०] स्पर्शकी इंद्रिय, त्वचा।

स्पर्शी(र्शिन्)–वि० [सं०] छूनेवाला, प्रवेश करनेवाला (समासांतमें)।

स्पर्शेंद्रिय–स्त्री० [सं०] स्पर्शका ज्ञान प्राप्त करनेवाली इंद्रिय, त्वचा।

स्पर्शोपल–पु० [सं०] पारस पत्थर।

स्पष्ट–वि० [सं०] जो साफ-साफ देखा जा सके; व्यक्त; प्रत्यक्ष; बोधगम्य; सरल, सीधा (वक्रका उलटा); वास्तविक, सत्य; सही। **–गर्भा**–स्त्री० वह स्त्री जिसके गर्भके साफ चिह्न देख पड़ें। **–तारक**–वि० साफ दिखाई देनेवाले तारोंवाला (आकाश)। **–भाषी(षिन्),–वक्ता(क्तृ),–वादी(दिन्)**–वि० साफ-साफ कहनेवाला।

स्पष्टार्थ–वि० [सं०] जिसका अर्थ साफ, सुबोध हो।

स्पष्टीकरण–पु० [सं०] किसी बातको सुगम करके समझाना, स्पष्ट करना।

स्पष्टीकृत–वि० [सं०] स्पष्ट किया हुआ।

स्पृश्य–वि० [सं०] छूने लायक; अधिकृत करने योग्य।

स्पृष्ट–वि० [सं०] छुआ हुआ;···से प्रभावित; पहुँचनेवाला पु० 'क्'से 'म्'तकके वर्णोंके उच्चारणमें होनेवाला आभ्यंतर प्रयत्न।

स्पृष्टास्पृष्ट–पु०, **स्पृष्टास्पृष्टि**–स्त्री० [सं०] छुआछूत, स्पर्शास्पर्श, परस्पर स्पर्शन।

स्पृहणीय–वि० [सं०] जिसके लिए स्पृहा की जाय, अभिलपणीय; ईर्ष्या करने योग्य; रमणीय, मोहक।

स्पृहयालु–वि० [सं०] इच्छा करनेवाला, अभिलाषी।

स्पृहा–स्त्री० [सं०] अभिलाषा; धर्मानुकूल पदार्थकी प्राप्तिकी कामना (न्या०); ईर्ष्या।

स्पृहालु–वि० [सं०] दे० 'स्पृहयालु'।

स्पृही (हिन्)–वि० [सं०] इच्छुक; ईर्ष्या करनेवाला।

स्पृह्य–वि० [सं०] वांछनीय।

स्फटन, स्फटिकीकरण–पु० [सं०] (क्रिस्टेलिज़ेशन) ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु स्फटिकका (या स्फटिक सदृश) रूप ग्रहण कर ले; निश्चित और ठोस आकार धारण करना।

स्फटा–स्त्री० [सं०] साँपका फन।

स्फटि, स्फटी–स्त्री० [सं०] फिटकिरी।

स्फटिक–पु० [सं०] बिल्लौर; सूर्यकांत मणि; कपूर; फिटकिरी। वि० (क्रिस्टलाइन) पीसनेपर जिसके कण चमकीले और खुरदरे जान पड़ें। **–प्रभ**–वि० स्फटिक जैसा चमकीला, पारदर्शी। **–मणि**–पु०,**–शिला**–स्त्री० बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकाचल–पु० [सं०] कैलास पर्वत।

स्फटिकाद्रि–पु० [सं०] कैलास पर्वत।

स्फटित–वि० [सं०] विदीर्ण।

स्फरण–पु० [सं०] काँपना; फड़कना; प्रवेश करना।

स्फार–वि० [सं०] बड़ा; बढ़ा हुआ; विकट; घना; ऊँचा (स्वर); फैला हुआ; बहुत, प्रचुर। पु० वृद्धि; धक्का।

स्फारण–पु० [सं०] स्फुरण, कंपन।

स्फारित–वि० [सं०] फैलाया हुआ।

स्फालन–पु० [सं०] हिलाना, कँपाना; फटफटाना; थपथपाना; घर्षण।

स्फीत–वि० [सं०] बढ़ा हुआ; घना; मोटा; फूला हुआ; सफल; समृद्ध; बहुत अधिक।

स्फीति–स्त्री० [सं०] वृद्धि; प्राचुर्य; मुद्रा आदिका परिमाण बहुत अधिक बढ़ जाना।

स्फुट–वि०[सं०] फटा हुआ; खिला हुआ, विकसित; व्यक्त, प्रकट; स्पष्ट; प्रथित; फैला हुआ; अत्युच्च (स्वर); फुटकर। **–चंद्रतारक**–वि० चंद्रमा और ताराओंसे प्रकाशित (रात्रि)। **–पुंडरीक**–पु० (हृदयका) खिला हुआ कमल।

स्फुटन–पु० [सं०] फटना, विदीर्ण होना; विकसित होना; (जोड़ोंका) चटकना।

स्फुटा–स्त्री० [सं०] साँपका फन।

स्फुटित–वि० [सं०] फटा हुआ; खिला हुआ।

स्फुटीकरण–पु० [सं०] प्रकट, स्पष्ट करना; ठीक करना।

स्फुत्कार–पु० [सं०] फुफकार।

स्फुरण–पु० [सं०] काँपना, हिलना; फड़कना (अंग); फूटकर व्यक्त होना; चमकना; मनमें एकाएक आना।

स्फुरति*–स्त्री० दे० 'स्फूर्ति'।

स्फुरना*–अ० क्रि० हिलना; फड़कना; व्यक्त होना; प्रकाशित होना।

स्फुरित–वि० [सं०] स्पंदनयुक्त, कंपित; अस्थिर; चमकता हुआ; व्यक्त, प्रकट।

स्फुर्तना, स्फुर्दना*–स्त्री० स्फूर्ति; किसी बातका अचानक ज्ञान होना; स्पष्टतः देख पड़ना; प्रकाशित होना।

स्फुलिंग–पु० [सं०] अग्निकण, चिनगारी।

स्फुलिंगिनी–स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

स्फूर्ज–पु० [सं०] बादलोंकी गड़गड़ाहट; इंद्रका वज्र।

स्फूर्जित–वि० [सं०] गर्जित; गरजनेवाला।

स्फूर्त–वि० [सं०] कंपित; जिसकी अचानक स्मृति हुई हो।

स्फूर्ति–स्त्री० [सं०] कंपन, स्फुरण; उछलना; मानसिक आवेश, उत्तेजना; उत्साह; तेजी, फुरती।

स्फोट–पु० [सं०] फूटकर निकलना; फैलना; (किसी बातका) प्रकट हो जाना; फोड़ा; अर्बुद; टुकड़ा।

स्फोटक–पु० [सं०] फोड़ा; फुंसी; भल्लातक।

स्फोटन–पु० [सं०] फाड़ना, विदारण करना; व्यक्त करना; अचानक फट पड़ना; उँगलियाँ चटकाना।

स्फोटा–स्त्री० [सं०] साँपका फन; हाथ हिलाना; सफेद अनंतमूल।

स्फोटित–वि० [सं०] जिसका स्फोट किया गया हो; प्रकटित। –**नयन**–वि० जिसकी आँखें फोड़ दी गयी हों।

स्फोटिनी–स्त्री० [सं०] कर्कटी, ककड़ी।

स्मयन–पु० [सं०] मंद हास, मुसकान।

स्मयी(यिन्)–वि० [सं०] मंद हासयुक्त, मुसकानेवाला।

स्मर–पु० [सं०] स्मृति, स्मरण; प्रेम; कामदेव। –**कथा**–स्त्री० प्रेमवार्ता। –**ज्वर**–पु० कामज्वर, कामजन्य ताप। –**दशा**–स्त्री० शरीरकी कामजन्य अवस्था (असौष्ठव, ताप, पांडुता, कृशता, अरुचि, अधृति, अनालंबन, तन्मयता, उन्माद और मरण)। –**दहन**–पु० शिव। –**पीडित**–वि० कामदेवका सताया हुआ। –**प्रिया**–स्त्री० रति। –**शत्रु**–पु० शिव। –**शर**–पु० कामदेवके बाण। –**सख**–पु० ऋतुराज; चंद्रमा। –**हर**–पु० शिव।

स्मरण–पु० [सं०] स्मृति, याद; चिंता; स्मृतिशक्ति; स्मृतिके आधारपर हस्तांतरित होना; देवताके नामका जप (भक्तिका एक प्रकार); खेदपूर्ण स्मृति; एक अर्थालंकार जहाँ कोई सदृश वस्तु (कभी-कभी विसदृश वस्तु) देखकर, सुनकर या सोचकर किसी विशेष वस्तुका स्मरण हो आवे। –**पत्र,**–**पत्रक**–पु० याद दिलानेके लिए लिखा हुआ पत्र। –**शक्ति**–स्त्री० याद रखनेकी शक्ति।

स्मरणीय–वि० [सं०] स्मरण करने योग्य।

स्मरना*–स० क्रि० याद करना।

स्मरांध–वि० [सं०] कामांध।

स्मराकुल–वि० [सं०] कामरोगसे ग्रस्त, कामविह्वल।

स्मरातुर–वि० [सं०] कामातुर।

स्मर्ण*–पु० दे० 'स्मरण'।

स्मर्तव्य–वि० [सं०] स्मरणके योग्य; जिसकी केवल स्मृति शेष रह गयी हो।

स्मर्ता(र्तृ)–वि० [सं०] याद करने, रखनेवाला।

स्मर्य–वि० [सं०] स्मरणीय।

स्मशान, स्मसान†–पु० दे० 'श्मशान'।

स्मार–पु० [सं०] (मेमो) दे० 'ज्ञापन'।

स्मारक–वि० [सं०] याद दिलानेवाला। पु० किसीकी स्मृति-रक्षाके अभिप्रायसे निर्मित भवन, स्तंभ आदि (मेमोरियल)। –**ग्रंथ**–पु० (कमेमोरेशन वाल्यूम) किसी विद्वान्, दार्शनिक, नेता आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रचित ग्रंथ।

स्मारी(रिन्)–वि० [सं०] स्मरण रखनेवाला; याद दिलानेवाला।

स्मार्त–वि० [सं०] स्मृति-संबंधी; जो स्मृतिमें हो; स्मृतिके आधारपर बना हुआ, स्मृतिविहित; वैध; स्मृतिको माननेवाला; गृह-संबंधी (जैसे अग्नि)। पु० स्मृतिविहित कर्म; स्मृतियोंके अनुसार चलनेवाला एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी। –**कर्म(न्)**–पु० स्मृतिविहित कर्म।

स्मित–पु० [सं०] मंद हास, मुसकान। वि० खिला हुआ; मुसकाता हुआ। –**मुख**–वि० हँसमुख।

स्मिति–स्त्री० [सं०] मंदहास; हास।

स्मृत–वि० [सं०] स्मरण किया हुआ; उल्लिखित।

स्मृति–स्त्री० [सं०] स्मरण, याद; चिंतन; एक संचारी भाव; धर्मशास्त्र। –**उपायन**–पु० (सुवेनीर) पुरानी घटनाओं, अवसरों, स्थानों आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रखा गया या किसीको भेंटमें दिया गया चित्रादिका संग्रह या अन्य कोई वस्तु। –**कार**–पु० स्मृतिका निर्माता - –**कारक**–वि० स्मरण-शक्ति बढ़ानेवाला। –**भ्रंश**–पु० स्मृतिका नष्ट हो जाना, याद न रहना; ज्ञान न रहना। –**विभ्रम**–पु० स्पष्ट स्मरण न होना। –**विरुद्ध**–वि० शास्त्रविरुद्ध। –**शास्त्र**–पु० धर्मशास्त्र। –**शेष**–वि० जिसकी केवल स्मृति रह गयी हो, गत, मृत। पु० (रेलिक) किसी महात्मा या महापुरुषके शरीरकी अस्थि, केश, दाँत आदि अथवा उसका कोई वस्त्र, खड़ाऊँ, पात्र आदि जो उसकी मृत्युके बाद उसकी स्मृतिके रूपमें सुरक्षित रखा गया हो। –**शैथिल्य**–पु० स्मरणशक्तिकी दुर्बलता। –**सम्मत**–वि० धर्मशास्त्रविहित। –**सिद्ध**–वि० शास्त्रविहित। –**हीन**–वि० जो स्मरण न रख सके, विस्मरणशील।

स्यंद–पु० [सं०] रिसना, चूना, टपकना, स्राव; प्रवाहित होना; पसीना निकलना; गलना, पानी होना।

स्यंदन–वि० [सं०] तेजीसे जानेवाला (जैसे रथ); बहनेवाला; रिसनेवाला; गलनेवाला। पु० रथ; युद्धरथ; वायु; तीव्र गति या प्रवाह; स्राव; जल; तिनिश वृक्ष; तिंदुक वृक्ष।

स्यंदनारूढ–वि० [सं०] रथारूढ।

स्यंदी(दिन्)–वि० [सं०] स्राव करनेवाला, रिसनेवाला।

स्यमंतक–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि जिसे चुरानेका दोष कृष्णको लगा था।

स्यात्–अ० [सं०] कदाचित्, शायद।

स्याद्वाद–पु० [सं०] जैनोंका संशयवाद, अनेकांतवाद।

स्यान*–वि० दे० 'स्याना'। –**पन**–पु० चतुरता, चालाकी।

स्यानप*–पु० दे० 'स्यानपन'।

स्याना–वि० चतुर, होशियार; धूर्त; बालिग, प्रौढ। पु० बड़ा-बूढ़ा; ओझा; नंबरदार, मुखिया; हकीम। –**चारी†**–स्त्री० गाँवके मुखियाको मिलनेवाला रस्म। –**पन**–पु० बालिग होनेकी अवस्था, युवावस्था; होशियारी,

चालाकी; धूर्तता ।

स्यापा–पुं० दे० 'सियापा' । मु०–**पड़ना**–रुदन-क्रंदन होना; सुनसान, उजाड़ होना ।

स्याबास*–अ० दे० 'शाबास' ।

स्याम–पु० बरमाके पूर्वमें स्थित एक देश; * दे० 'श्याम'। * वि० दे० 'श्याम'। –**करन**–पु० दे० 'श्यामकर्ण' । –**ता**,–**ताई**–स्त्री० दे० 'श्यामता' ।

स्यामक*–पु० वसुदेवके एक भाई, श्यामक ।

स्यामल*–वि० दे० 'श्यामल' । –**ता**–स्त्री० श्यामलता, साँवलापन ।

स्यामलिया*–पु० कृष्ण ।

स्यामा*–स्त्री० दे० 'श्यामा' ।

स्यार–पु० गीदड़, सियार । –**जन**–पु० डरपोक आदमी। –**पन**–पु० शृगालकीसी आदत ।

स्यारी–स्त्री० शृगाली, गीदड़ी; † जाड़ेकी फसल ।

स्याल–पु० स्यार; [सं०] साला, श्याल ।

स्यालक–पु० [सं०] साला ।

स्यालिका–स्त्री० [सं०] पत्नीकी छोटी बहन ।

स्याली–स्त्री० [सं०] साली ।

स्यालू†–पु० ओढ़नी, चादर, सालू ।

स्यावज*–पु० सावज, शिकार ।

स्याह–वि०[फा०] काले कानोंवाला एक हिंस्र जंतु (समास भी) । –**गोसर***–पु० दे० 'सियाहगोश' ।–**जीरा**–पु० काला जीरा । –**तालू**–पु० वह घोड़ा जिसका तालू काला हो (यह अशुभ माना जाता है) ।

स्याहा–पु० दे० 'सियाहा' ।

स्याही–स्त्री० साही नामक जानवर; [फा०] कालापन; अँधेरा; कालिख; काजल; रोशनाई; दाग; दोष, ऐब । –**चट**–पु० सोख्ता । –**दान**–पु० दवात । –**साज़**–पु० स्याही बनानेवाला । –**सोख**–पु० सोख्ता (ब्लाटिंग पेपर) । मु०–**जाना**–उम्र ढलना । –**दौड़ना**–स्याही छा जाना । –**धो जाना**–दुर्भाग्य या दोष दूर होना । –**लगाना**–मुँह काला करना, बदनाम करना ।

स्यूत–वि० [सं०] सिया हुआ; बुना हुआ; भिदा हुआ ।

स्यूति–स्त्री० [सं०] सिलाई; बुनाई; संतान; थैला ।

स्यूना–स्त्री० [सं०] किरण; कमरबंद ।

स्यूम–पु० [सं०] जल; किरण ।

स्यूमक–पु० [सं०] आनंद ।

स्यौं, स्यो*–अ० सहित; नजदीक, पास ।

स्योनाक–पु० [सं०] एक वृक्ष, सोनापाढ़ा ।

स्रंग*–पु० दे० 'शृंग' ।

स्रंस–पु० [सं०] पतन; शयन, सोना ।

स्रंसित–वि० [सं०] गिराया हुआ; ढीला किया हुआ ।

स्रंसी (सिन्)–वि० [सं०] फिसलने, गिरनेवाला; लटकनेवाला; ढीला पड़नेवाला; पात होनेवाला (गर्भ) ।

स्रक् (ज्)–स्त्री० [सं०] पुष्पहार (विशेषकर सिरपर बाँधनेका); माला; एक वृक्ष; एक वृत्त; एक योग (ज्यो०) ।

स्रग*–स्त्री० दे० 'स्रक्' ।

स्रगाल*–पु० गीदड़ ।

स्रग्धरा–स्त्री० [सं०] एक वृत्त; एक देवी (बौद्ध) ।

स्रग्विणी–स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त; एक देवी ।

स्रजन*–पु० सृष्टि, सर्जन ।

स्रजना*–स० क्रि० रचना, बनाना, निर्माण करना ।

स्रद्धा*–स्त्री० दे० 'श्रद्धा' ।

स्रम*–पु० श्रम, मेहनत ।

स्रमना*–अ० क्रि० श्रम करना; थक जाना ।

स्रमित*–वि० श्रमित, थका हुआ, क्लांत ।

स्रवंती–स्त्री० [सं०] जलप्रवाह; नदी; एक बूटी; यकृत-प्रदेश ।

स्रव–पु० [सं०] क्षरण, स्राव; निर्झर; प्रवाह; * श्रवण ।

स्रवण–पु०[सं०] बहना, प्रवाहित होना; गर्भपात; प्रस्वेद ।

स्रवन*–पु० दे० 'श्रवण' ।

स्रवना*–अ० क्रि० टपकना, चूना; गिरना । स० क्रि० बहाना, टपकाना; गिराना ।

स्रष्टव्य–वि० [सं०] सर्जन करने योग्य ।

स्रष्टा(ष्टृ)–वि० [सं०] निर्माता, रचयिता । पु० सृष्टिका निर्माण करनेवाला, ब्रह्मा ।

स्रस्त–वि० [सं०] च्युत, पतित; ढीला पड़ा हुआ; हिलता हुआ, लटकता हुआ; धँसा हुआ (जैसे नेत्र) ।

स्राध*–पु० दे० 'श्राद्ध' ।

स्राप*–पु० दे० 'शाप' ।

स्रापित*–वि० दे० 'शापग्रस्त' ।

स्राव–पु० [सं०] बहाव, क्षरण; टपकना, रिसना; गर्भपात; निर्यास ।

स्रावक–वि० [सं०] बहाने, स्राव करानेवाला ।

स्रावनी*–स्त्री० दे० 'श्रावणी' ।

स्रावित–वि० [सं०] स्राव कराया हुआ ।

स्रावी (विन्)–वि० [सं०] बहानेवाला; टपकानेवाला, चुआनेवाला ।

स्राव्य–वि० [सं०] स्राव कराने योग्य ।

स्रिंग*–पु० दे० 'शृंग' ।

स्रिजन*–पु० सर्जन, सृष्टि, रचना ।

स्रिय*–स्त्री० मंगल, कल्याण ।

स्रुक् (च्)–स्त्री० [सं०] यज्ञाग्निमें घी डालनेके लिए पलाश या खदिरकी लकड़ीकी बनी हुई स्रुवा ।

स्रुत–वि० [सं०] बहा हुआ, क्षरित; जो रिसकर खाली हो गया हो; * दे० 'श्रुत' ।

स्रुति–स्त्री० [सं०] बहाव; क्षरण; निर्यास; स्रोत, प्रवाह; * दे० 'श्रुति' ।–**कीर्ति***–स्त्री०'श्रुतिकीर्ति' ।–**माथ***–पु० विष्णु ।

स्रुवा–स्त्री० [सं०] घीकी आहुति डालनेकी एक करछी (लकड़ीकी बनी); शल्लकी ।

स्रेनी*–स्त्री० दे० 'श्रेणी' ।

स्रोत–पु० [सं०] धारा, सोता ।

स्रोत(स्)–पु० [सं०] जलप्रवाह, धारा; नदी; तीव्र वेग; शरीरके पोषण पहुँचानेवाले मार्ग; तरंग ।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी–स्त्री० [सं०] नदी ।

स्रोता*–पु० दे० 'श्रोता' ।

स्रोतोंजन(स्रोतोंऽजन)–पु० [सं०] सुरमा ।

स्रोन*–पु० दे० 'श्रवण' ।

स्रोनित*–पु० दे० 'शोणित'।

स्लीपर–पु० [अं० 'स्लिपर'] एड़ीकी ओर खुली हुई जूती; लकड़ीका चौकोर लंबा टुकड़ा (जो रेलकी पटरियोंके नीचे बिछाते हैं)।

स्लेट–स्त्री० [अं०] एक तरहके काले पत्थरकी चौकोर पटरी जो लिखनेके काम आती है।

स्व–पु० [सं०] आत्मीय जन, संबंधी; आत्मा; विष्णु; धन, संपत्ति। वि० आत्मीय, अपना; सहजात, स्वाभाविक। **–गत**–वि० आत्मीय; अपने प्रति कथित। अ० आप ही आप (कहना)। **–गत कथन**–पु० किसी पात्रका बोलकर अपना विचार इस प्रकार व्यक्त करना जैसे दूसरे उसे सुनते न हों। **–गृह**–पु० अपना घर। **–गृहस्मारी(रिन्)**–वि० (होमसिक) जिसे बाहर जानेपर बार-बार अपने घरका स्मरण आये, घरसे दूर जानेपर जिसे दुःखका अनुभव हो। **–चालित तोप**–स्त्री० [हिं०] (ऑटोमैटिक गन) बिना किसी चालकके, स्वतः चलनेवाली तोप। **–च्छंद**–पु० अपनी इच्छा या पसंद। वि० अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला, अनियंत्रित, स्वाधीन; आपसे आप उगा हुआ, जंगली। **–च्छंद·चर,–च्छंद·चारी(रिन्)**–वि० अपनी इच्छासे चलनेवाला, आजाद। **–च्छंद·चारिणी**–स्त्री० वेश्या। **–जन**–पु० आत्मीय जन; संबंधी। **–जन·पक्षपात**–पु० (नेपाटिज्म) (संरक्षण आदि देनेमें) अपने संबंधियों, मित्रों आदिके प्रति पक्षपात करना। **–जनी**–स्त्री० सखी; सहेली। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जो आप ही आप उत्पन्न हुआ हो। **–जा**–स्त्री० पुत्री। **–जात**–वि० अपनेसे उत्पन्न। पु० पुत्र। **–जाति**–स्त्री० अपनी जाति या वर्ग। वि० अपने वर्गका। **–जाति·द्विट्(ष्)**–पु० कुत्ता। **–जातीय,–जात्य**–वि० अपनी जाति या वर्गका। **–जित**–वि० आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय। **–तंत्र**–वि० स्वाधीन, आजाद; बालिग। **–तंत्रता**–स्त्री० स्वाधीनता, आजादी। **–तंत्र पत्रकार**–पु० (फ्री लांस जर्नलिस्ट) वह पत्रकार जो किसी एक ही पत्र या संवादसंस्था आदिका वेतन-भोगी कर्मचारी न होकर स्वतंत्र रूपसे लेख लिखकर या संवाद भेजकर पारिश्रमिक पाता हो और उसीसे निर्वाह करता हो। **–दार**–स्त्री० अपनी पत्नी। **–दारगामी(मिन्)**–वि० केवल अपनी पत्नीसे संबंध रखनेवाला। **–देश**–पु० जन्मभूमि, मातृभूमि, वतन। **–देश·निस्सारण**–पु० (एक्सपैट्रियेशन) किसीको स्वदेशसे बाहर भेज देना। **–देश·प्रतिप्रेषण**–पु० (रिपैट्रियेशन) किसीको जबरन् उसके देश वापस भेज देना। **–देश·प्रेम**–पु० जन्मभूमिका प्रेम। **–देशस्मारी(रिन्)**–वि० घरके लिए उत्सुक, घरसे अधिक प्रेम रखनेवाला। **–देशी**–वि० [हिं०] दे० स्वदेशीय'। **–देशीय**–वि० अपने देशसे संबंध रखनेवाला; अपने देशका; स्वदेशमें बना। **–धर्म**–पु० अपना कर्तव्य; अपनी विशेषता। **–धर्म·च्युत**–वि० अपने अधिकारसे वंचित; अपने कर्तव्यका पालन न करनेवाला। **–नामधन्य**–वि० जो अपने नामके कारण धन्य हो। **–नामा(मन्)**–वि० जो अपने नामसे विख्यात हो। **–पक्ष**–पु० अपना पक्ष या दल; अपने पक्षका व्यक्ति, मित्र; अपना मत। **–पक्षत्यागी(गिन्)**–वि० (रेनीगेड) अपने पूर्व-विचारों या सिद्धांतोंका, अपने पक्षवालोंका, परित्याग कर देनेवाला। **–प्रकाश**–वि० जो अपने आप स्पष्ट हो; स्वयं प्रकाशित। **–बंधु**–पु० अपना संबंधी या मित्र। **–भट**–पु० वह जो स्वयं अपनी रक्षा करता हो। **–भाउ***–पु० स्वभाव, प्रकृति। **–भाव**–पु० अपनी अवस्था; सहज प्रकृति। **–भावज,–भावजनित**–वि० सहज, प्राकृतिक। **–भावतः(तस्)**–अ० स्वभावसे ही, प्रकृतितः। **–भावसिद्ध**–वि० सहज, प्राकृतिक। **–भावोक्ति**–स्त्री० दे० क्रममें। **–भू**–वि० आप ही आप उत्पन्न होनेवाला। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव। स्त्री० स्वदेश। **–रस**–पु० किसीका अपना (अमिश्रित) रस; पत्रादिका पीसकर निकाला हुआ रस; प्राकृतिक स्वाद; तैलीय पदार्थ सिलपर पीसनेपर लगी हुई तरौंछ; अपनी मनोवृत्ति; अपने लोगोंके प्रति होनेवाली भावना। वि० रुचिके अनुकूल। **–राजी**–वि० [हिं०] स्वराज्यके लिए आंदोलन करनेवाला। **–राज्य**–पु० स्वाधीन राज्य, जहाँके शासक वहींके लोग हों; एक साम। **–राज्यभोगी(गिन्)**–वि० जिसे स्वराज्य या आत्मशासन प्राप्त हो। **–राट्(ज्)**–वि० जो स्वयं प्रकाशित हो। पु० ब्रह्मा; विष्णु; सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक; ऐसे राज्यका राजा जहाँ स्वराज्य हो। **–राष्ट्र**–पु० अपना राज्य; एक जनपद। **–राष्ट्रमंत्री(त्रिन्)**–पु० देशके आंतरिक शासन-संबंधी कार्योंकी देख-भाल करनेवाला। **–राष्ट्रसदस्य**–पु० (शासनपरिषद्का) गृहसदस्य। **–रुचि**–स्त्री० अपनी रुचि या पसंद। वि० अपनी रुचिसे चलनेवाला। **–रूप**–पु० अपनी आकृति; अपनी विशेषता, स्वभाव; आत्मा; विशेष उद्देश्य; प्रकार; मूर्ति; चित्र। अ० (समासांतमें) तौरपर। वि० अपनी विशेषतासे युक्त; समान, तुल्य; सुंदर, मनोहर। **–रूपज्ञ**–वि० तत्त्वज्ञानी, आत्मा-परमात्माका रूप समझनेवाला। **–रूपप्रतिष्ठा**–स्त्री० अपनी विशेषतासे युक्त होना। **–रूपमान***–वि० दे० 'स्वरूपवान्'। **–रूपवान्(वत्)**–वि० सुंदर। **–लक्षण**–पु० विशेषता, विशेष गुण। **–लिखित**–वि० अपना लिखा हुआ। **–वंश्य**–वि० अपने परिवारका। **–वर्गीय**–वि० अपने वर्गका। **–वश**–वि० आत्मनिग्रही; स्वाधीन। **–वश्य**–वि० अपने ही वशमें रहनेवाला। **–वासिनी**–स्त्री० पिताके घर रहनेवाली कन्या या विवाहिता स्त्री। **–विकत्थन**–वि० डींग मारनेवाला। **–विग्रह**–पु० अपना शरीर। **–विधेय**–वि० जो अपने करनेका हो। **–विनाश**–पु० अपना नाश, आत्महत्या। **–विवेक**–पु० उचित-अनुचित समझनेकी अपनी शक्ति। **–वृत्ति**–स्त्री० अपने जीवन-यापनका ढंग; आत्मनिर्भरता। वि० आत्मनिर्भर, स्वावलंबी। **–श्लाघा**–स्त्री० आत्मप्रशंसा। **–संभूत**–वि० आत्मसंभव। **–संवेदन**–पु० अपना प्राप्त किया हुआ ज्ञान। **–संवेद्य**–वि० जिसका ज्ञान केवल अपनेको हो सके। **–सचिव**–पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) दे० 'निजसचिव'। **–स्थ**–वि० अपनेमें स्थित; जो अपनी स्वाभाविक अवस्थामें हो; तंदुरुस्त, नीरोग; स्थिरचित्त; संतुष्ट, सुखी; स्वाधीन; आत्मनिर्भर। **–स्थ चित्त**–वि०

जिसके मनमें किसी तरहका विकार न हो। **-स्थित**-वि० स्वाधीन। **-हंता(तृ)**-पु० आत्महत्या करनेवाला। **-हरण**-पु० संपत्तिका हरण। **-हस्त**-पु० अपना हाथ; हस्ताक्षर। **-हस्तिका**-स्त्री० कुदाल। **-हित**-वि० अपने लिए लाभदायक।

स्वकीय-वि० [सं०] अपना, निजी; अपने परिवारका। पु० मित्र, अपने लोग।

स्वकीया-स्त्री० [सं०] अपनी पत्नी; केवल अपने पतिसे प्रेम करनेवाली नायिका।

स्वक्ष-* वि० दे० 'स्वच्छ' [सं०] सुंदर धुरीवाला; पूर्ण अंगोंवाला; सुंदर नेत्रोंवाला।

स्वच्छ-वि० [सं०] निर्मल, पवित्र; सफेद; स्पष्ट; निश्छल; सुंदर, स्वस्थ। **-मणि**-पु० बिल्लौर।

स्वच्छता-स्त्री० [सं०] सफाई, निर्मलता; विशुद्धता। **-वर्द्धक**-वि० (सैनिटरी) गंदगीका निवारण कर मकान आदिके चारों तरफकी स्वच्छता बढ़ानेवाला; स्वच्छता आदिके कारण स्वास्थ्यरक्षामें सहायक।

स्वच्छत्व-पु० [सं०] दे० 'स्वच्छता'।

स्वच्छना*-स० क्रि० साफ करना।

स्वच्छी*-वि० 'स्वच्छ'।

स्वतः(तस्)-अ० [सं०] आप ही, अपनेसे। **-प्रमाण, -सिद्ध**-वि० स्वयं सिद्ध, स्वयं प्रत्यक्ष।

स्वतोविरोधी(धिन्)-वि० [सं०] अपना ही विरोध करनेवाला।

स्वत्व-पु० [सं०] अपना भाव; स्वतंत्रता; अधिकार, स्वामित्व। **-संलेख**-पु० (टाइटिल डीड) वह संलेख या आधिकारिक लिखित पत्र जिसमें किसी मकान, खेत आदिपर किसीके पूर्ण और निर्द्वंद्व स्वत्वकी बात स्वीकार की गयी हो। **-स्व**-पु० (रायल्टी) दे० 'स्वामिस्व'। **-हस्तांतरण**-पु० (एलियनेट) किसी संपत्ति आदिका अधिकार (स्वत्व) दूसरेको देना या उसके नाम लिखना। **-हानि**-पु० अधिकारका न रहना।

स्वत्वाधिकारी(रिन्)-पु० [सं०] स्वामी, मालिक।

स्वदन-पु० [सं०] आस्वादन, खाना; लेह, चाटना।

स्वदित-वि० [सं०] चखा हुआ, खाया हुआ।

स्वधा-अ० [सं०] पितरोंके उद्देश्यसे हवि देते समय उच्चारण करनेका एक शब्द। स्त्री० अपनी प्रकृति, स्वभाव; पितरोंको दी जानेवाली हवि। **-भुक्(ज्), -भोजी(जिन्)**-पु० पितर; देवता।

स्वधाधिप-पु० [सं०] अग्नि।

स्वधाशन-पु० [सं०] पितर।

स्वधीत-वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह पाठ किया गया हो; अच्छी तरह अध्ययन किया हुआ।

स्वनंदा-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

स्वन-पु० [सं०] ध्वनि, शब्द; एक अग्नि।

स्वनि-पु० [सं०] ध्वनि, शब्द; अग्नि।

स्वनित-वि०[सं०] शब्दित, ध्वनित। पु० शब्द; बादलोंकी गर्जना; गर्जन।

स्वपच*-पु० दे० 'श्वपच'।

स्वपन-पु० [सं०] नींद; स्वप्न; संज्ञाहीनता (त्वचाकी)।

स्वपना*-पु० दे० 'स्वप्न'।

स्वपनीय, स्वप्तव्य-वि० [सं०] सोने योग्य।

स्वप्न-पु० [सं०] निद्रा; अर्द्ध सुप्तावस्थामें जाग्रत् मनका व्यापार-विशेष, ख्वाब, सपना; ऊँची कल्पना, कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करनेका विचार। **-कर**-वि० निद्रा लानेवाला। **-काम**-वि० सोनेका इच्छुक। **-कृत्**-वि० निद्रा लानेवाला। **-गत**-वि० जो सो गया हो। **-गृह**-पु० शयनागार। **-ज्ञान**-पु० स्वप्नमें होनेवाली अनुभूति। **-दर्शन**-पु० स्वप्न देखना। **-दोष**-पु० स्वप्नावस्थामें होनेवाला शुक्रपात। **-प्रपंच**-पु० स्वप्नमें प्रकट होनेवाला संसार। **-लब्ध**-वि० स्वप्नमें प्राप्त, स्वप्नमें दृष्ट। **-विकार**-पु० स्वप्नकृत परिवर्तन। **-विचारी(रिन्)**-वि० स्वप्नका विचार करनेवाला। पु० स्वप्नशास्त्री। **-विनश्वर**-वि० स्वप्न जैसा क्षणभंगुर। **-शील**-वि० निद्रालु। **-सात्**-वि० स्वप्नमें लीन। **-सृष्टि**-स्त्री० स्वप्नका निर्माण। **-स्थान**-पु० शयनागार।

स्वप्नाना*-स० क्रि० स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु-वि० [सं०] निद्रालु।

स्वप्नावस्था-स्त्री० [सं०] स्वप्नकी अवस्था (जीवनके लिए प्रयुक्त)।

स्वप्निल-वि० [सं०] सुप्त; स्वप्नका।

स्वप्नोपम-वि० [सं०] स्वप्नतुल्य।

स्वबरन*-पु० सुवर्ण, सोना।

स्वभाविक-वि० दे० 'स्वाभाविक'।

स्वभावोक्ति-स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार, जहाँ जो जिसका स्वभाव हो, जैसा जिसका रूप, गुण आदि हो, ठीक उसी तरह वर्णित किया जाय।

स्वयं-अ० [सं०] दे० 'स्वयम्'। **-कृत**-वि० आत्मकृत, अपना किया हुआ; प्राकृतिक; गोद लिया हुआ। **-कृष्ट**-वि० खुद जोता हुआ। **-ज्योति(स्)**-वि० जो आप ही आप प्रकाशित हो। पु० परमेश्वर। **-दत्त**-वि० जिसने अपनेको स्वयं दे दिया है। पु० वह लड़का जो दूसरेका दत्तक पुत्र बन गया हो। **-दूत**-पु० स्वयं अपना दूतत्व करनेवाला नायक। **-दूती**-स्त्री० अपना दूतत्व आप ही करनेवाली नायिका। **-पतित**-वि० जो आप ही आप गिरा हो। **-पाकी(किन्)**-वि० स्वयं अपना भोजन बनानेवाला। **-प्रकाश**-वि० जो खुद प्रकाशित हो। **-प्रकाशमान**-वि० दे० 'स्वयंप्रकाश'। **-प्रज्वलित**-वि० जो आप ही आप जल रहा हो। **-प्रभ**-वि० जो आप ही आप चमक रहा हो। **-प्रभा**-स्त्री० एक अप्सरा; मयकी एक कन्या। **-प्रभु**-वि० जो स्वयं शक्तिशाली हो; जो खुद अपना मालिक हो। **-प्रमाण**-वि० जो स्वयं प्रमाणित हो, जिसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता न हो। **-भू**-वि० जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो; बुद्ध-संबंधी। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; बुद्ध; कामदेव; * स्वायंभुव। **-भूत**-वि० जो आप ही आप उत्पन्न हुआ हो। **-मृत**-वि० जिसकी प्राकृतिक मृत्यु हुई हो; जो स्वेच्छासे मरा हो। **-वर**-पु० उपस्थित विवाहार्थियोंमेंसे कन्या द्वारा स्वयं पतिका वरण या चुनाव; ऐसे

वरणकी सभा या उत्सव। **-वर-विवाह**-पु० स्वयंवरकी विधिसे होनेवाला विवाह, स्मृतियोंमें जायज माने हुए आठ प्रकारके ब्याहोंमेंसे एक। **-वरण**-पु० पतिका चुनाव। **-वरयित्री**-स्त्री० स्वयं पतिका चुनाव करनेवाली कन्या। **-वरा**-स्त्री० पतिका स्वयं वरण, चुनाव करनेवाली कन्या, पतिंवरा। **-वश**-वि० स्वाधीन। **-विक्रीत**-वि० जिसने खुद अपनेको बेचा हो। **-विलीन**-वि० जो आप ही आप (दूसरेमें) लीन हो गया हो। **-सिद्ध**-वि० जिसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता न हो; जो स्वयं अपनेमें पूर्ण हो (लोक)। **-सिद्धि**-स्त्री० (एक्शम) ऐसी सरल बात जिसका सच होना बिना किसी प्रमाणके ही मानना पड़े। **-सेवक**-पु० (वालंटियर) किसी तरहकी सामाजिक सेवा या ऐसा ही अन्य कार्य स्वेच्छासे, बिना वेतन लिये करनेवाला व्यक्ति। **-सेविका**-स्त्री० स्त्री स्वयंसेवक।

स्वयम्-अ० [सं०] खुद, आप, अपने आप, अपने तईं, स्वतः; अकेले। **-अर्जित**-वि० खुद उपार्जित किया हुआ (धन)। **-आगत**-वि० आपसे आप आया हुआ; बिना कहे किसी बातमें दखल देनेवाला। **-उद्घाटित**-वि० जो आप ही आप खुल गया हो (दरवाज़ा)। **-उपस्थित**-वि० जो आप ही, अपनी इच्छासे आया हो। **-उपागत**-वि० स्वेच्छासे आया हुआ। **-एव**-अ० स्वयं ही, अपने आप।

स्वर-पु० [सं०] आवाज; कंठध्वनि; वह वर्ण जिसका पूरा उच्चारण अन्य वर्णकी सहायताके बिना हो सके (व्या०); संगीतके सात सुरों-षड्ज, ऋषभ आदिमेंसे कोई; श्वास; सातकी संख्या; उच्चारणमें स्पंदनकी मात्रा (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित); खर्राटा; *स्वर्; आकाश; विष्णु। **-कंप**-पु० स्वरका हिलना। **-कर**-वि० आवाजको खोलने, सुरीली बनानेवाला, स्वर उत्पन्न करनेवाला। **-क्षय**-पु० स्वरकी हानि। **-ग्राम**-पु० संगीतके सातों स्वरोंका क्रम, स्वर-सप्तक, सरगम। **-च्छिद्र**-पु० बाँसुरीका स्वरवाला छेद। **-नादी**-(दिन्)-पु० मुहँसे फूँककर बजानेका बाजा। **-पात**-पु० शब्दके उच्चारणमें किसी अक्षरपर कुछ रुक जाना (एक्सेंट)। **-प्रधान**-वि० (राग) जिसमें स्वरकी ही प्रधानता हो, तालकी नहीं। **-बद्ध**-वि० ताल-स्वरमें बँधा हुआ (गाना)। **-भंग**-पु० गले या आवाजका बैठ जाना; गलेका एक रोग। **-भंगी(गिन्)**-वि० स्वरभंग रोगसे पीड़ित। **-भेद**-पु० स्वरभंग; आवाजका बैठ जाना; उच्चारणमें लाया जानेवाला अंतर; संगीतके स्वरका अंतर। **-मात्रा**-स्त्री० उच्चारणकी मात्रा। **-योग**-पु० शब्द, ध्वनि। **-लहरी**-स्त्री० स्वरोंकी लहर, तरंग। **-लिपि**-स्त्री० संगीतके स्वरोंको लिखनेकी लिपि या रीति, रागविशेषमें प्रयुक्त स्वर, ताल, लय, मात्रा इत्यादि बतानेवाले चिह्नोंका समूह; ऐसे चिह्नोंकी सहायतासे प्रस्तुत पाठ। **-वाही(हिन्)**-वि० (बाजा) जो केवल स्वर निकाल सके, ताल आदि नहीं। **-विकार**-पु० आवाजका बिगड़ जाना। **-विज्ञान**-पु० स्वरोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान, स्वरतत्त्व। **-वेधी(धिन्)**-पु० 'शब्दवेधी'। **-शास्त्र**-पु० दे० 'स्वरविज्ञान'। **-शून्य**-वि० बेसुरा। **-संक्रम**-पु० सुरोंके उतार-चढ़ावका क्रम (संगीत)। **-संगति**-स्त्री० सुरोंका मेल। **-संदर्भ**-पु० दे० 'स्वरसंक्रम'। **-संधि**-स्त्री० स्वरवर्णों या स्वरांत और स्वरादि पदोंमें होनेवाली संधि। **-संपद्**-स्त्री० स्वरोंका मेल, सुर (संगीत)। **-संपन्न**-वि० सुरीला, जिसमें स्वरोंका मेल हो। **-सप्तक**-पु० संगीतके सात सुरोंका समूह। **-साधन**-पु० विभिन्न सप्तकोंके स्वरोंको ठीक-ठीक निकालनेका अभ्यास करना। **मु०-उतरना**-स्वरका धीमा पड़ना। **-चढ़ाना**-स्वर ऊँचा करना। **-निकालना**-स्वर उत्पन्न करना। **-भरना**-एक ही स्वरको देरतक निकालना; एक ही स्वर बजाकर बजानेवालेके स्वरकी पूर्ति करना। **-मिलाना**-किसीके स्वरके अनुसार स्वर निकालना। **-साधना**-सप्तकके स्वरोंका अभ्यास करना।

स्वरग*-पु० दे० 'स्वर्ग'।

स्वरांत-वि० [सं०] स्वरसे अंत होनेवाला।

स्वरांतर-पु० [सं०] दो स्वरोंके उच्चारणके बीचका विराम।

स्वरांश-पु० [सं०] आधा या चौथाई स्वर (संगीत); सप्तमांश।

स्वरित-वि० [सं०] स्वरयुक्त; ध्वनित; उच्चरित। पु० उदात्त-अनुदात्तके बीचका, मध्यम स्वर।

स्वरोदय-पु० [सं०] स्वरका उदय, उत्पत्ति; श्वासभेदसे शुभाशुभ फल जाननेकी विद्या।

स्वरोपघात-पु० [सं०] स्वरभंग।

स्वर्-पु०[सं०] स्वर्ग; आकाश। **-आपगा**-स्त्री० स्वर्गंगा। **-गंगा**-स्त्री० गंगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा, मंदाकिनी। **-ग**-वि०, पु० दे० क्रममें। **-गणिका**-स्त्री० अप्सरा। **-गति**-स्त्री०, **-गमन**-पु० मृत्यु, स्वर्ग जाना। **-गा**-स्त्री० दे० 'स्वर्गंगा'। **-धुनी, -नदी**-स्त्री० मंदाकिनी। **-धेनु**-स्त्री० कामधेनु। **-नगरी**-स्त्री० अमरावती। **-पति**-पु० इंद्र। **-मणि**-पु० सूर्य। **-योषित्**-स्त्री० अप्सरा। **-लोक**-पु० स्वर्ग; मेरु; देवता। **-वधू**-स्त्री० अप्सरा। **-वाहिनी**-स्त्री० मंदाकिनी। **-वेश्या**-स्त्री० अप्सरा। **-वैद्य**-पु० अश्विनीकुमार।

स्वर्ग-वि० [सं०] देवलोक जानेवाला। पु० हिंदुओंके माने हुए ऊपरके सात लोकोंमेंसे तीसरा जिसका विस्तार सूर्यलोकसे ध्रुवलोकतक है और जहाँ पुण्य कर्म करनेवाले देह-त्यागके अनंतर जाकर दुःखलेशरहित सुखका भोग करते हैं, देवलोक; अमरावती; अतिसुंदर, सुखद, स्वर्गकी समता करनेवाला स्थान; आकाश (हिं०); *ईश्वर। **-काम**-वि० स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला। **-गंगा**-स्त्री० मंदाकिनी। **-गत**-वि० स्वर्ग गया हुआ, मृत। **-गति**-स्त्री०, **-गमन**-पु० स्वर्गकी यात्रा करना, मरण। **-गामी(मिन्)**-वि० स्वर्ग गमन करनेवाला। **-गिरि**-पु० मेरु पर्वत। **-च्युत**-वि० स्वर्गसे गिरा हुआ। **-जित्**-वि० स्वर्गको जीतनेवाला। **-जीवी(विन्)**-वि० स्वर्गमें रहनेवाला। **-तरंगिणी**-स्त्री०

मंदाकिनी। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–द, –दायक**–वि० स्वर्ग प्रदान करनेवाला। **–धाम(न्)**–पु० स्वर्गलोक। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–नदी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–पति**–पु० इंद्र। **–पुरी**–स्त्री० अमरावती। **–प्रद**–वि० दे० 'स्वर्गद'। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० स्वर्गपति, इंद्र। **–लाभ**–पु० स्वर्गकी प्राप्ति; मृत्यु। **–लोक**–पु० देवलोक। **–वधू**–स्त्री० अप्सरा। **–वाणी**–स्त्री० आकाशवाणी। **–वास**–पु० स्वर्गमें निवास करना; मरना। [मु० **–वास होना**–मरना] **–वासी(सिन्)**–वि० स्वर्गमें निवास करनेवाला; मृत। **–श्री**–स्त्री० स्वर्गका वैभव। **–संपादन**–पु० स्वर्गकी प्राप्ति। **–सुख**–पु० स्वर्गमें प्राप्त होनेवाला सुख। **–स्त्री**–स्त्री० अप्सरा। **–स्थ**–वि० स्वर्गमें स्थित, मृत। **–स्थित**–वि० दे० 'स्वर्गस्थ'।

स्वर्गापगा–स्त्री० [सं०] मंदाकिनी, स्वर्गंगा।

स्वर्गाभिकाम–वि० [सं०] स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला।

स्वर्गारूढ–वि० [सं०] स्वर्ग गया हुआ।

स्वर्गारोहण–पु० [सं०] स्वर्गगमन, मरना।

स्वर्गिक–वि० स्वर्गीय।

स्वर्गी(र्गिन्)–वि० [सं०] स्वर्ग-संबंधी; स्वर्गीय; स्वर्गको जाननेवाला; स्वर्गगामी, मृत। पु० देवता।

स्वर्गीय–वि० [सं०] स्वर्गका; अलौकिक; स्वर्गवासी, मृत।

स्वर्ग्य–वि० [सं०] स्वर्ग दिलाने, स्वर्गकी प्राप्ति करानेवाला; स्वर्ग-संबंधी।

स्वर्जिका–स्त्री० [सं०] सज्जी। **–क्षार**–पु० सज्जीखार।

स्वर्जी(र्जिन्)–पु० [सं०] सज्जी; शोरा।

स्वर्ण–पु० [सं०] अग्नि-विशेष; सोना नामकी धातु; सोनेका सिक्का; एक तरहका गेरू; धतूरा; नागकेशर। **–कदली**–पु० सोनकेला। **–कमल**–पु० रक्तपद्म। **–काय**–पु० गरुड़। वि० सोने जैसी देहवाला। **–कार, –कारक**–पु० सुनार। **–कूट**–पु० हिमालयकी एक चोटी **–कृत्**–पु० सुनार। **–केतकी**–स्त्री० पीले रंगकी केतकी। **–क्षीरिणिका, –क्षीरी**–स्त्री० सत्यानासी। **–गिरि**–पु० एक पर्वत, सुमेरु। **–गैरिक**–पु० एक तरहका पीला गेरू। **–चूड, –चूडक**–पु० नीलकंठ; मुर्गा। **–चूल**–पु० दे० 'सुवर्णचूड'। **–ज**–पु० राँगा। वि० सोनेसे उत्पन्न। **–जीवी(विन्)**–पु० सुनार। **–जूही**–स्त्री० [हिं०] पीली जूही। **–तीर्थ**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–दीधिति**–पु० अग्नि। **–द्वीप**–पु० सुमात्रा द्वीप। **–धातु**–स्त्री० सोना; पीले रंगका गेरू। **–पत्र**–पु० सोनेका पत्तर। **–पत्री**–स्त्री० सनाय। **–पुरी**–स्त्री० लंका। **–प्रतिमा**–स्त्री० सोनेकी मूर्ति। **–फल**–पु० धतूरा। **–फला**–स्त्री० पीत रंभा, चंपाकेला। **–बंध, –बंधक**–पु० सोना गिरवी रखना। **–माक्षिक**–पु० एक उपधातु, सोनामक्खी। **–मुखी**–स्त्री० सनाय। **–मुद्रा**–स्त्री० सोनेका सिक्का। **–युग**–पु० सुख-समृद्धिका समय। **–यूथिका, –यूथी**–स्त्री० पीली जूही। **–रंभा**–स्त्री० चंपाकेला। **–रेखा**–स्त्री० सोनेकी लकीर (कसौटीपरकी); एक नदी। **–लाभ**–पु० स्वर्णकी प्राप्ति; एक अस्त्र-मंत्र। **–वणिक्(ज्)**–पु० सर्राफ; सोनेका व्यापारी। **–वर्ण**–वि० सोनेके रंगका। पु० हलदी; हरताल; पीला गेरू। **–वर्णा**–स्त्री० हरिद्रा; दारुहलदी। **–विद्या**–स्त्री० सोना बनानेकी विद्या, कीमियागरी।

स्वर्णांक–पु० [सं०] सोना। वि० सोनेका, सुनहला।

स्वर्णिम–वि० [सं०] सोनेका; सुनहला।

स्वर्णोपधातु–स्त्री० [सं०] सोनामक्खी।

स्वल्प–वि० [सं०] बहुत थोड़ा, अत्यल्प; बहुत छोटा; तुच्छ; संक्षिप्त। **–चटक**–पु० गौरैया। **–जंबुक**–पु० लोमड़ी। **–दृष्टि**–वि० अदूरदर्शी। **–भाषी(षिन्)**–वि० कम बोलनेवाला, मितभाषी। **–विरामज्वर**–पु० वह ज्वर जो बीच-बीचमें कम पड़ जाता हो। **–व्यक्तितंत्र**–पु० चंद लोगोंका शासन (ओलिगार्की)। **–शरीर**–वि० बहुत छोटे कदका, ठिंगना। **–स्मृति**–वि० जिसे बहुत कम याद रहे।

स्वल्पांगुलि–स्त्री० [सं०] कनिष्ठिका, कानी उँगली।

स्वल्पायु(स्)–वि० [सं०] अल्पजीवी।

स्वल्पाहार–वि० [सं०] थोड़ा खानेवाला।

स्वल्पिष्ठ–वि० [सं०] थोड़ेसे थोड़ा; छोटेसे छोटा।

स्वल्पेच्छ–वि० [सं०] जिसकी इच्छाएँ बहुत कम हों, संतोषी।

स्ववरन*–पु० सुवर्ण।

स्वशुर–पु० दे० 'श्वशुर'।

स्वसा(सृ)–स्त्री० [सं०] बहिन।

स्वस्ति–अ० [सं०] 'कल्याण हो' इस अर्थका आशीर्वाद; दान-स्वीकारका मंत्र। स्त्री० कल्याण; ब्रह्माकी एक पत्नी। **–कर्म(न्)**–पु० कल्याण करना। **–कार**–पु० स्वस्तिका उच्चारण करनेवाला बंदीजन। **–पाठ**–पु० 'स्वस्ति नः' आदि मंत्रका पाठ। **–मुख**–वि० जिसके मुखपर स्वस्ति शब्द हो। पु० ब्राह्मण; स्तुतिपाठक। **–वचन**–पु० स्वस्ति शब्दका उच्चारण। **–वाचक**–पु० आशीर्वाद; आशीर्वाद देनेवाला व्यक्ति। **–वाचन, –वाचनक**–पु० यज्ञ या मंगलकार्य आरंभ करते समय किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य; ऐसे अवसरपर ब्राह्मणको दी जानेवाली दक्षिणा आदि। **–वाचनिक**–वि० आशीर्वाद देनेवाला, कल्याण मनानेवाला। पु० दे० 'स्वस्तिवाचन'।

स्वस्तिक–पु० [सं०] चारणोंका एक प्रकार (जो स्वस्तिपाठ करता है); कोई मंगलद्रव्य; एक मंगलचिह्न जो शरीर या किसी पदार्थपर बनाया जाता है (卐); नष्ट शल्य निकालनेका एक प्राचीन यंत्र; एक योगासन। **–यंत्र**–पु० नष्ट शल्य निकालनेका एक प्राचीन यंत्र।

स्वस्तिमती–स्त्री० [सं०] एक मातृका। वि० स्त्री० कल्याणी।

स्वस्तिमान्(मत्)–वि० [सं०] सुखी, सौभाग्ययुक्त।

स्वस्त्ययन–पु० [सं०] कृत्य-विशेषके आरंभमें विघ्नशांतिकी कामनासे किया जानेवाला मंत्रोच्चार या प्रायश्चित्त-विधान; समृद्धिप्राप्तिका साधन; किसी मांगलिक कृत्यमें जाते समय दलके आगे-आगे ले जाया जानेवाला जलपूर्ण कलश; दान स्वीकारके बाद ब्राह्मणका आशीर्वाद देना। वि० मंगलकारक।

स्वस्रीय–पु० [सं०] बहिनका बेटा, भानजा।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी–स्त्री० [सं०] बहिनकी बेटी, भानजी।

स्वहाना*–अ० क्रि० दे० 'सुहाना'।

स्वांग–पु० [सं०] अपना ही अंग।

स्वाँग–पु० हँसी-मजाक या धोखा देनेके लिए बनाया हुआ दूसरेका रूप; हँसी-मजाकका खेल-तमाशा; होली आदिपर निकाला जानेवाला हास्यजनक वेशभूषावाला जुलूस; करतब; जो न हो वैसा होनेका ढब अख्तियार करना। **मु०–बनाना,–भरना**–रूप भरना, भेस बनाना; नकल करना। **–लाना**–दे० 'स्वाँग भरना'।

स्वाँगना*–स० क्रि० स्वाँग बनाना।

स्वाँगी–पु० ढोंगी, स्वाँग करनेवाला, अनेक रूप भरनेवाला व्यक्ति। वि० रूप बनानेवाला।

स्वांगीकरण–पु० (एसीमिलेशन) किसी पोषकतत्त्व, विचार, सिद्धांतादिको अपनेमें पूरी तरह मिला लेना या मिलाकर एक कर लेना, आत्मसात् करना।

स्वांतःसुखाय–[सं०] केवल अपना मन प्रसन्न करने, जी बहलानेके लिए, किसी अन्य लाभके लिए नहीं।

स्वांत–पु० [सं०] अपना अंत, मृत्यु; हृदय, अंतःकरण; गह्वर। **–ज**–पु० प्रेम; काम। **–स्थ**–वि० हृदयस्थ।

स्वाँस*–पु०, स्त्री० दे० 'साँस'।

स्वाँसा*–स्त्री० दे० 'साँस'।

स्वाक्षर–पु० [सं०] दस्तखत, हस्ताक्षर, सही; (आटोग्राफ) किसी (प्रसिद्ध) व्यक्तिका स्वहस्ताक्षर। **–युक्त**–वि० जिसपर दस्तखत किया गया हो।

स्वाक्षरित–वि० [सं०] हस्ताक्षर किया हुआ।

स्वागत–पु० [सं०] किसीके आगमनपर कुशल-प्रश्न आदिके द्वारा हर्षप्रकाश, अगवानी; एक बुद्ध। वि० स्वयं आया हुआ; बौद्ध उपायोंसे प्राप्त (धनादि)। **–कारिणी-समिति,–समिति**–स्त्री० किसी सभा, सम्मेलनमें आनेवाले प्रतिनिधियों, दर्शकोंको टिकाने, खिलाने-पिलानेका प्रबंध करनेवाली स्थानीय समिति (रिसेप्शन कमीटी)। **–कारी(रिन्)**–वि० स्वागत करनेवाला। **–पतिका**–स्त्री० दे० 'आगत-पतिका'। **–प्रश्न**–पु० मिलनेपर स्वास्थ्यादिके संबंधमें पूछना। **–भाषण**–पु० स्वागत-समितिके अध्यक्षका भाषण।

स्वागतिक–वि०, पु० [सं०] स्वागतकर्ता।

स्वाच्छंद्य–पु० [सं०] स्वच्छंदता, नियंत्रणका अभाव, निरंकुशता।

स्वातंत्र्य–पु० [सं०] आजादी, स्वतंत्रता। **–युद्ध**–पु० (वार ऑफ इंडिपेंडेंस) विदेशी शासनसे मुक्त होने या स्वतंत्र होनेके लिए किया जानेवाला युद्ध। **–संग्राम**–पु० आजादीकी लड़ाई। **–प्रिय,–प्रेमी(मिन्)**–वि० स्वतंत्रताका प्रेमी, आजादी-पसंद।

स्वात*–स्त्री० दे० 'स्वाति'।

स्वाति–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे १५ वाँ जो शुभ माना गया है (कवि-समयके अनुसार चातक इसमें ही होनेवाली वर्षाका जल पीता है, और वही जल सीपके संपुटमें पहुँचकर मोती और बाँसमें वंशलोचन बनता है); सूर्यकी एक पत्नी; तलवार। **–पंथ,–पथ***–पु० आकाशगंगा। **–बिंदु**–पु० स्वाति नक्षत्रमें बरसनेवाले जलकी बूँद। **–योग**–पु० आषाढ़के शुक्ल पक्षमें स्वाति नक्षत्रका चंद्रमाके साथ योग। **–सुत,–सुवन***–पु० मोती।

स्वाती–स्त्री० [सं०] दे० 'स्वाति'।

स्वाद–पु० [सं०] कुछ खाने-पीनेसे जीभको होनेवाला रसानुभव, जायका, लज्जत; मजा; (काव्यगत) सौंदर्य; * चाह, इच्छा। **मु०–चखाना**–दे० 'मजा चखाना'।

स्वादक–पु० [सं०] स्वाद चखनेवाला; राजा आदिकी पाकशालामें इस कामपर नियुक्त कर्मचारी।

स्वादन–पु० [सं०] स्वाद लेना, चखना; रस लेना (कविता आदिका); जायकेदार बनाना।

स्वादनीय–वि० [सं०] जायकेदार; स्वाद लेने योग्य।

स्वादित–वि० [सं०] चखा हुआ, जिसका स्वाद लिया गया हो; जायकेदार बनाया हुआ; प्रसन्न किया हुआ।

स्वादिष्ट–वि० दे० 'स्वादिष्ठ'।

स्वादिष्ठ–वि० [सं०] अतिशय स्वादु, बहुत ही जायकेदार।

स्वादी(दिन्)–वि० [सं०] स्वाद लेनेवाला।

स्वादीला–वि० स्वादिष्ठ, जायकेदार, सुस्वादु।

स्वादु–वि० [सं०] स्वादयुक्त, जायकेदार; रुचिकर; मीठा; सुंदर; इष्ट। **–फला**–स्त्री० बेरका पेड़; खजूरका पेड़; मुनक्का।

स्वादेशिक–वि० [सं०] स्वदेश-संबंधी।

स्वाद्य–वि० [सं०] स्वाद लेने योग्य; जायकेदार।

स्वाधिकार–पु० [अ०] अपना अधिकार या पद; अपना कर्तव्य।

स्वाधिष्ठान–पु० [सं०] हठयोगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे दूसरा जिसका स्थान शिश्नमूल और रूप षड्दलकमलका माना जाता है; अपना स्थान।

स्वधीन–वि० [सं०] जो अपने ही अधीन हो, दूसरेके नहीं, स्वतंत्र, आजाद; जो अपने वशमें हो; स्वच्छंद, किसीका अंकुश, दाब न माननेवाला। **–पतिका,–भर्तृका**–स्त्री० पतिको अपने वशमें रखनेवाली नायिका।

स्वाधीनता–स्त्री० [सं०] स्वतंत्रता, आजादी। **–प्रेम**–पु० स्वातंत्र्यप्रियता, आजादीका प्रेम।

स्वाधीनी*–स्त्री० दे० 'स्वाधीनता'।

स्वाध्याय–पु० [सं०] आवृत्तिपूर्वक वेदाध्ययन; शास्त्राध्ययन; वेद; अध्ययन; वह दिन जब अनध्यायके बाद वेदपाठ आरंभ होता है।

स्वाध्यायार्थी(र्थिन्)–पु०[सं०] वह विद्यार्थी जो अध्ययनकालमें अपनी जीविका खुद कमानेका यत्न करे।

स्वाध्यायी(यिन्)–वि० [सं०] वेदपाठ करनेवाला; नियमपूर्वक अध्ययन करनेवाला।

स्वान–पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; घड़घड़ाहट (रथादिकी); * दे० 'श्वान'।

स्वाना*–स० क्रि० 'सुलाना'।

स्वानुभव–पु०, **स्वानुभूति**–स्त्री० [सं०] अपना अनुभव।

स्वानुरूप–वि० [सं०] अपने अनुरूप, योग्य; सहज।

स्वाप–पु० [सं०] नींद; स्वप्न; तंद्रा; सुन्न हो जाना।

स्वापक–वि० [सं०] निद्रा लानेवाला।

स्वापन–पु० :[सं०] सुलाना, नींद लाना; मंत्रबलसे चालित एक अस्त्र जिसके प्रभावसे शत्रुदल सो जाता था;

नींद लानेवाली दवा । वि० नींद लानेवाला ।

स्वापराध–पु० [सं०] अपने प्रति अपराध ।

स्वापी(पिन्)–वि० [सं०] नींद लानेवाला ।

स्वाप्त–वि० [सं०] बहुत अधिक; सुकुशल; विश्वस्त; अपने प्रयत्नसे प्राप्त । **–समाचार**–पु० (स्कूप न्यूज) विशेष महत्त्वका समाचार जो किसी संवाददाताने खोज निकाला हो तथा अपने पत्रको सबसे पहले दिया हो, एकांतिक समाचार ।

स्वाभाविक–वि० [सं०] स्वभावसे उत्पन्न, स्वभावसिद्ध, प्राकृतिक; पैदाइशी । **–वर्णन**–पु० यथार्थ, बनावट या अत्युक्ति-रहित वर्णन ।

स्वाभिमान–पु० [सं०] अपनी प्रतिष्ठाका अभिमान, आत्म-सम्मान ।

स्वामि*–पु० दे० 'स्वामी' ।

स्वामित*–पु० स्वामित्व ।

स्वामिता–स्त्री, **स्वामित्व**–पु० [सं०] मालिकपन, प्रभुत्व; राजत्व ।

स्वामिनी–स्त्री० [सं०] मालिकिन; प्रभुकी पत्नी; राधिका (वल्लभ-संप्रदाय) ।

स्वामी(मिन्)–वि० [सं०] जिसे स्वत्व प्राप्त हो । पु० मालिक, प्रभु; नरेश; पति, शौहर; गुरु, आचार्य; घरका मुखिया; विद्वान् ब्राह्मण; संन्यासी; कार्त्तिकेय; ईश्वर । **–कार्त्तिक**–पु० कार्त्तिकेय; एक ताल (संगीत) । **–कार्य**–पु० राजा या मालिकका कार्य । **–कार्यार्थी(र्थिन्)**–वि० मालिकका फायदा चाहनेवाला । **–कुमार**–पु० कार्त्तिकेय । **–भक्त**–वि० स्वामीमें भक्ति रखनेवाला, वफादार (नौकर) । **–भक्ति**–स्त्री० स्वामीके प्रति भक्ति-भाव, वफादारी । **–भट्टारक**–पु० उत्तम स्वामी । **–भाव**–पु० स्वामित्व, स्वामीका भाव । **–सेवा**–स्त्री० स्वामीकी टहल; पतिका आदर-सम्मान । **–स्व**–पु० (रायल्टी) किसी ग्रंथके लेखकको, किसी वस्तुका आविष्कार करनेवालेको या किसी भूमिके स्वामीको उसकी रचना, आविष्कार या स्वामित्वसे होनेवाले लाभके रूपमें मिलनेवाला पूर्ण आयका निश्चित अंश । **–हीनत्व**–पु० (बोना वैकेंशिया) किसी वस्तुके मिलने पर उसका कोई स्वामी न जान पड़ना ।

स्वाम्य–पु० [सं०] प्रभुत्व, मालिकी; स्वत्व; शासनाधिकार ।

स्वाम्युपकारक–वि० [सं०] मालिकका हित करनेवाला ।

स्वायंभुव–पु० [सं०] प्रथम मनु जिनकी उत्पत्ति स्वयं ब्रह्माके दाहिने अंगसे मानी जाती है; अत्रि; नारद ।

स्वायंभू–पु० [सं०] स्वायंभुव ।

स्वायत्त–वि० [सं०] जो अपने ही अधीन, अपने ही अधिकारमें हो, जिसपर दूसरेका शासन-नियंत्रण न हो । **–शासन**–पु० लोकप्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन; (ऑटोनॉमी) अपने देशका शासन स्वयं ही करनेका अधिकार; स्थानिक शासन (जिला बोर्ड आदिका) । **–शासी(सिन्)**–वि० (ऑटोनॉमस) (वह देश) जिसे अपना शासन स्वयं ही करनेका अधिकार प्राप्त हो ।

स्वारथ*–पु० स्वार्थ, अपना फायदा, अपना काम । वि० सिद्ध, सफल, कृतार्थ ।

स्वारथी*–वि० स्वार्थी, अपना लाभ देखनेवाला, खुदगर्ज ।

स्वारस्य–पु० [सं०] सहज, स्वाभाविक रस, मिठास; खूबी; स्वाभाविकता ।

स्वाराज्य–पु० [सं०] स्वाधीन राज्य; इंद्रका राज्य, स्वर्गलोक; ब्रह्मके साथ तादात्म्य या अभेद ।

स्वारी*–स्त्री० दे० 'सवारी' ।

स्वार्जित–वि० [सं०] अपना कमाया हुआ ।

स्वार्थ–पु० [सं०] (शब्दका) अपना अर्थ, वाच्यार्थ; अपना धन; अपना मतलब, गरज, प्रयोजन; अपना लाभ । **–त्याग**–पु० अपने स्वार्थ, अपने लाभका त्याग, आत्मत्याग । **–त्यागी(गिन्)**–वि० स्वार्थत्याग करनेवाला । **–पंडित**–वि० स्वार्थसाधनमें चतुर । **–पर, –परायण**–वि० जिसे अपने ही स्वार्थकी चिंता हो, जो अपना ही मतलब देखे, खुदगर्ज । **–परता, –परायणता**–स्त्री० स्वार्थीपन, खुदगर्जी । **–भाक्(ज्)**–वि० अपना कारबार देखनेवाला । **–लिप्सु**–वि० स्वार्थसाधनके लिए लालायित रहनेवाला । **–संपादन**–पु० दे० 'स्वार्थ-साधन' । **–साधक**–वि० अपना मतलब निकालनेवाला । **–साधन**–पु० अपनी गरज, मतलब निकालना, प्रयोजनकी पूर्ति । **–साधनतत्पर**–वि० अपना मतलब निकालनेपर तुला हुआ । **–सिद्धि**–स्त्री० प्रयोजनकी पूर्ति, काम निकलना ।

स्वार्थांध–वि० [सं०] जो स्वार्थचिंता, स्वार्थ-साधनमें अंधा हो गया हो, जो केवल अपना ही मतलब देखे, दूसरेकी हानि और लाभका खयाल न करे ।

स्वार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] जो अपना ही मतलब देखे, खुदगर्ज ।

स्वाल*–पु० दे० 'सवाल' ।

स्वावमानन–पु०, **स्वावमानना**–स्त्री० [सं०] आत्म-भर्त्सना ।

स्वावलंबन–पु० [सं०] अपना ही भरोसा करना, दूसरेसे सहायता न लेना ।

स्वावलंबी(बिन्)–वि० [सं०] अपने ही बलपर काम करनेवाला, दूसरेका भरोसा न रखने, दूसरेसे सहायता न लेनेवाला ।

स्वाश्रय–पु० [सं०] अपने भरोसे रहना । वि० विचारणीय विषयसे संबंध रखनेवाला; जिसे केवल अपना भरोसा हो ।

स्वाश्रित–वि० [सं०] स्वावलंबी ।

स्वास*–पु०, **स्वासा***–पु०, स्त्री० दे० 'श्वास' ।

स्वास्थ्य–पु० [सं०] स्वस्थता, आरोग्य; संतोष, चित्तका शांत, निरुद्विग्न होना । **–कर, –प्रद**–वि० स्वास्थ्य देनेवाला । **–निवास**–पु० (सैनेटोरियम) स्वास्थ्य-सुधारके लिए, विशेषकर यक्ष्मापीड़ित व्यक्तियोंके लिए, पहाड़ी आदिपर बनाया गया निवास-स्थान, आरोग्यशाला । **–भंग**–पु० स्वास्थ्य बिगड़ जाना । **–रक्षा**–स्त्री० स्वास्थ्य, तंदुरुस्तीकी रक्षा । **–विज्ञान**–पु० (हाइजीन) स्वास्थ्य-रक्षणके नियमों, सिद्धांतों, उपाय आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र । **–विभाग**–पु० राज्य, म्युनिसिपल बोर्ड आदिका जनस्वास्थ्यकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला महकमा । **–सदन**–पु० (सैनेटोरियम) दे० 'स्वास्थ्य-निवास' । **–हानि**–स्त्री० स्वास्थ्यका नाश, तंदुरुस्तीका

बिगड़ जाना।

स्वाहा–स्त्री०[सं०] हवि; अग्निकी पत्नी। अ० हविर्दानके समय उच्चारण किया जानेवाला एक शब्द। वि० [हिं०] नष्ट। –**करण**–पु० स्वाहाका उच्चारण करते हुए हवि देना। –**कार**–पु० 'स्वाहा' शब्दका उच्चारण; [हिं०] विनाश। –**पति,**–**प्रिय,**–**वल्लभ**–पु० अग्नि।–**भुक्(ज्)**–पु० देवता। **मु०**–**करना**–फूँक डालना, नष्ट कर देना। –**होना**–नष्ट होना।

स्विदित–वि० [सं०] जिसे पसीना निकला या निकल रहा हो; पिघला हुआ।

स्विन्न–वि० [सं०] पसीनेसे तर; उबला हुआ, सीझा हुआ; सिक्त।

स्वीकरण–पु० [सं०] स्वीकार करना, ग्रहण करना, अपनाना; मानना; वचन देना; पत्नी-रूपमें ग्रहण करना।

स्वीकरणीय, स्वीकर्तव्य–वि० [सं०] स्वीकारके योग्य।

स्वीकर्ता (र्तृ)–वि० [सं०] स्वीकार करनेवाला।

स्वीकार–पु० [सं०] अंगीकार; अपनानेकी क्रिया, अपना कर लेना; ग्रहण; पत्नी-रूपमें ग्रहण; मानना, कबूल करना; वचन, इकरार।

स्वीकारना*–स० क्रि० स्वीकार करना; ग्रहण करना।

स्वीकारात्मक–वि० [सं०] (अफरमेटिव) (ऐसा वाक्य, कथन या उत्तर) जिसमें कोई बात स्वीकार की गयी हो, मान ली गयी हो या उसकी पुष्टि की गयी हो,'हाँ'सूचक।

स्वीकारोक्ति–स्त्री०[सं०](अपना अपराध) स्वीकार करना।

स्वीकार्य–वि० [सं०] स्वीकार करने योग्य।

स्वीकृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रत।

स्वीकृत–वि०[सं०] स्वीकार किया हुआ, माना, अपनाया हुआ; वादा किया हुआ।

स्वीकृति–स्त्री० [सं०] स्वीकार, मंजूरी; सम्मति।

स्वीय–वि० [सं०] अपना, स्वकीय। पु० आत्मीय, स्वजन।

स्वीया–स्त्री० [सं०] पतिमें अनुराग रखनेवाली, पतिव्रता स्त्री, स्वकीया।

स्वे*–वि० दे० 'स्व'।

स्वेच्छा–स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा, मरजी। –**कृत,**–**दत्त,**–**प्रेरित**–वि० (वालंटरी) जो बिना किसी बाहरी दबावके, स्वेच्छासे किया या दिया गया हो।–**चार**–पु० दे० क्रममें।–**चारी (रिन्)**–वि० दे० क्रममें।–**मरण**–पु०, वि० दे० 'स्वेच्छा-मृत्यु'। –**मृत्यु**–स्त्री० अपनी इच्छासे मरना। पु० भीष्मपितामह। वि० अपनी इच्छासे मरनेवाला, स्वेच्छामरणका अधिकारी। –**सेवक**–पु० दे० 'स्वयं-सेवक'। –**सैनिक**–पु० अवैतनिक सिपाही, या अफसर।–**सैनिकदल**–पु०(वालंटरी कोर) स्वेच्छासे सैन्यसेवाके लिए अपना नाम देनेवाले लोगोंका दल।

स्वेच्छाचार–पु० [सं०] मनमाना आचरण, जो मनमें आये वह करना, निरंकुशता।

स्वेच्छाचारिता–स्त्री० [सं०] निरंकुशता, अपनी मनमानी करनेका भाव।

स्वेच्छाचारी (रिन्)–वि० [सं०] मनमाने आचरण करनेवाला, निरंकुश, यथेच्छाचारी; नियम-कानूनका बंधन न माननेवाला (शासक)।

स्वेत*–वि० दे० 'श्वेत'।

स्वेद–पु० [सं०] पसीना; भाप; गरमी; पसीना लानेका साधन। –**चूषक**–पु० ठंडी हवा। –**ज**–वि० पसीनेसे उत्पन्न होनेवाला; ताप या भापसे उत्पन्न होनेवाला। पु० स्वेदसे उत्पन्न होनेवाले जीव–खटमल आदि। –**जल**–पु० पसीना। –**जलकण**–पु०,–**जलकणिका**–स्त्री० पसीनेकी बूँद। –**बिंदु**–पु० पसीनेकी बूँद। –**वारि**–पु० दे० 'स्वेदजल'।

स्वेदक–वि० [सं०] पसीना लानेवाला। पु० कांतिलौह।

स्वेदन–पु० [सं०] पसीना; पसीना लाना; स्वेदन-यंत्र; पारेका शोधन; बफारा देना। वि० पसीना लानेवाला।

स्वेदनी–स्त्री० [सं०] तवा; कड़ाही।

स्वेदांबु–पु० [सं०] स्वेदजल।

स्वेदित–वि० [सं०] जिसे पसीना हुआ हो, स्वेदयुक्त; बफारा दिया हुआ; जिसका पसीना निकाला गया हो।

स्वेदोदक–पु० [सं०] स्वेदजल।

स्वै*–सर्व० सो ही, वही।

स्वैर–वि० [सं०] मनमाना आचरण करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी; सुस्त, मंद; ढीला; धीरे-धीरे, सतर्कतापूर्वक चलनेवाला; ऐच्छिक। पु० मनमानी, स्वच्छंदता; यथेच्छ विहार। –**कथा**–स्त्री० अबाधित वार्तालाप, बकवास।–**गति**–स्त्री० स्वेच्छापूर्वक भ्रमण करना। –**चारी(रिन्)**–वि० मनमाने काम करनेवाला, स्वतंत्र। –**विहारी(रिन्)**–वि० इच्छानुसार भ्रमण करनेवाला। –**वृत्ति**–वि० इच्छानुसार काम करनेवाला। स्त्री० मनमानी, स्वच्छंदता।

स्वैरता, स्वैरिता–स्त्री० [सं०] मनमानी, स्वच्छंदता।

स्वैराचार–वि० [सं०] स्वेच्छाचारी। पु० स्वेच्छाचार।

स्वैराचारी(रिन्)–वि० [सं०] स्वेच्छाचारी, निरंकुश।

स्वैरिणी–स्त्री० [सं०] कुलटा, व्यभिचारिणी।

स्वैरी(रिन्)–वि० [सं०] इच्छानुसार घूमने या काम करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छंद।

स्वोपार्जित–वि० [सं०] अपना कमाया हुआ, स्वयमर्जित।

स्वोरस–पु० [सं०] तैलीय पदार्थ सिलपर पीसनेके बाद उसमें लगा हुआ (उस पदार्थका) अंश या तलछट।

ह

ह–नागरी वर्णमालाका तैंतीसवाँ और अंतिम ऊष्म वर्ण।

हंक*–स्त्री० हाँक, पुकार; ललकार; बढ़ावा।

हँकड़ना–अ० क्रि० हुंकारना, चुनौती देना, ललकारना; गला फाड़कर चिल्लाना; साँड़ आदिका जोरसे बोलना।

हँकड़ान–स्त्री०, **हँकड़ाव**–पु० हँकड़नेकी क्रिया।

हँकरना*–अ० क्रि० दे० 'हँकड़ना'। स० क्रि० बुलवाना, बुला भेजना।

हँकराना*–स० क्रि० बुलाना, पुकारना; बुलवाना।

हँकराव, हँकरावा-पु० बुलावा, आमंत्रण, निमंत्रण; पुकारने; बुलानेकी क्रिया।

हँकवा-पु० शेरके शिकारमें शोर-गुल मचा, बाजा आदि बजाकर उसे मचानके निकट लाना जिसमें शिकारी उसका शिकार कर सके।

हँकवाना-स० क्रि० चौपायोंको किसीके द्वारा हटवाना, भगवाना; (इक्के, बैलगाड़ी आदिको किसीके द्वारा) चलवाना; किसीसे किसीको पुकरवाना, बुलवाना।

हँकवैया-पु० हाँकनेवाला व्यक्ति।

हंका*-स्त्री० हाँक, पुकार; ललकार। **मु०-देना,-मारना**-ललकारना; पुकारना।

हँकाई-स्त्री० चौपायोंको हाँकनेकी क्रिया; बैलगाड़ी आदिके हाँकनेका काम; हाँकनेका पारिश्रमिक।

हँकाना-स० क्रि० हँकवाना; हाँकना।

हंकार-स्त्री० वह ललकार जो युद्ध, लड़ाई-झगड़ेके अवसरोंपर सुनी जाती है, हुंकार। * पु० अहंकार, घमंड।

हँकार-स्त्री० ललकार; किसीको पुकारने, संबोधन करनेकी ऊँची आवाज, हुंकार। **मु०-देना**-पुकारना। **-पड़ना,-लगना**-बुलाने, संबोधन करनेकी क्रियाका होना, पुकार या चिल्लाहट मचना।

हँकारना-स० क्रि० ललकारना; ऊँचे स्वरसे बुलाना, पुकारना, संबोधित करना; पास बुलाना, निकट आनेके लिए कहना। अ० क्रि० हुँकारना, हुंकार भरना।

हँकारा-पु० बुलावा, आमंत्रण, निमंत्रण; पुकार, बुलवानेकी क्रिया।

हंकारी*-वि० अहंकारी, घमंडी।

हंगामा-पु० [फा०] मार-पीट, हल्ला-गुल्ला, उपद्रव।

हंटर-पु० एक तरहका चाबुक जो लंबा होता है, कोड़ा।

हंडना-अ० क्रि० घूमना, फिरना; बेमतलब घूमना। स० क्रि० चीजोंको उलट-पलटकर ढूँढ़ना।

हंडा-पु० पानी इत्यादि भरनेका ताँबे या पीतलका बना घड़े जैसा बड़ा पात्र। स्त्री० [सं०] मिट्टीका बहुत बड़ा पात्र; निम्न जातिकी स्त्री, दासी आदि।

हंडिका-स्त्री० [सं०] बटलोई जैसी आकृतिवाला मिट्टीका बरतन, हाँड़ी।

हँड़िया-स्त्री० एक प्रकारका मिट्टीका बर्तन; हंडिकाके ढंगका शीशेका पात्र जो शोभाके लिए रईसोंके कमरेमें अथवा विवाह आदिके अवसरोंपर छतसे लटकाया जाता है; एक तरहकी शराब जो जौ, चावल आदिसे बनायी जाती है।

हंडी-स्त्री० [सं०] दे० 'हंडिका'।

हंत-अ० [सं०] खेद, विषाद, अनुकंपादि सूचक शब्द।

हंतव्य-वि० [सं०] वध्य, हननके योग्य, मार डालने योग्य।

हंता(तृ)-पु० [सं०] मार डालनेवाला, विनाशक; डाकू।

हंत्री-वि० स्त्री० [सं०] वध करनेवाली।

हँथोरी*-स्त्री० दे० 'हथेली'।

हँथौरा-पु० दे० 'हथौड़ा'।

हँथौरी-स्त्री० दे० 'हथौड़ी'।

हँफनि*-स्त्री० हाँफनेकी क्रिया।

हंबा, हंभा-स्त्री० [सं०] बैल आदिका राँभना।

हंस-पु० [सं०] बड़ी-बड़ी झीलोंमें रहनेवाला एक सफेद जलपक्षी (कविसमयके अनुसार यह दूधसे पानी अलग कर देता है); ब्रह्म; आत्मा; जीवात्मा; पंच प्राणवायुओंमेंसे एक; सूर्य; शिव; विष्णु; कामदेव; संन्यासियोंका एक भेद। **-गति**-स्त्री० हंसकीसी मोहक गति; ब्रह्मप्राप्ति; एक वृत्त। **-गमन**-पु० हंसकी चाल। **-गामिनी**-स्त्री० हंसकीसी गतिवाली स्त्री; ब्रह्माणी। **-ज**-पु० स्कंदका एक अनुचर; धर्मराज, कर्ण आदि। **-जा**-स्त्री० सूर्यपुत्री, यमुना। **-नाद**-पु० हंसध्वनि, हंसका कलरव। **-नादिनी**-वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। **-नादी(दिन्)**-वि० हंस जैसी ध्वनि करनेवाला। **-माला**-स्त्री० हंसपंक्ति; एक तरहकी बतख; एक वृत्त। **-रथ**-पु० ब्रह्मा। **-राज**-पु० बड़ा हंस; एक बूटी। **-वंश**-पु० सूर्यवंश। **-वाहन**-पु० ब्रह्मा। **-सुता**-स्त्री० यमुना नदी।

हंसक-पु० [सं०] हंस पक्षी; पैरोंमें पहननेका भूषण, नूपुर, बिछिया आदि।

हँसन-स्त्री० हँसनेकी क्रिया; हँसनेका ढंग।

हँसना-अ० क्रि० खुले मुँहसे वेगपूर्वक हर्षध्वनि निकालना; प्रसन्न होना; खुशी मनाना; मजाक करना; अच्छा देख पड़ना, रौनकदार जान पड़ना। * स० क्रि० उपहास करना। **हँसता चेहरा,-मुँह**-पु० प्रसन्न मुखड़ा।

हँसतामुखी*-वि० प्रसन्नवदन। **मु० हँसकर बात उड़ाना**-किसी बातको अनावश्यक समझकर उसपर ध्यान न देना। **हँसते-बोलते**-मजाक करते-करते, दिल्लगीसे। **हँसते-हँसते**-हँस-हँसकर, बहुत हँसते हुए। **हँसते-हँसते पेटमें बल पड़ जाना**-अधिक हँसनेके कारण पेटमें एक प्रकारकी ऐंठन होने लगना। **हँसते-हँसते लोट जाना**-बहुत हँसते हुए लोटपोट होने लगना। **हँस देना**-हँसने लगना। **हँसना-बोलना**-दिल्लगी, मजाक करना; प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना। **हँस पड़ना**-हँस देना। **हँस-बोलकर बसर करना**-प्रसन्नतापूर्वक जीवन-निर्वाह करना। **हँस-बोल लेना**-प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना, हँसी-खुशीसे बातचीत करना।

हँसनि*-स्त्री० दे० 'हँसन'।

हंसनी-स्त्री० मादा हंस, हंसी।

हँसमुख-वि० प्रसन्न, प्रफुल्लवदन, हँसते चेहरेवाला; दिल्लगीबाज, विनोदी।

हँसली-स्त्री० गलेके नीचेकी एक हड्डी; स्त्रियोंका एक गहना जो गलेमें पहना जाता है।

हँसाई-स्त्री० ठट्ठा, हँसी; निंदा, बदनामी; उपहास।

हंसाधिरूढा-स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हँसाना-स० क्रि० किसीको हास्योन्मुख करना, हँसनेमें प्रवृत्त करना; खुश करना। **मु० हँसा मारना**-बहुत हँसाना।

हँसाय*-स्त्री० हँसी, हँसाई।

हंसारूढ-वि० [सं०] हंसपर सवार। पु० ब्रह्मा।

हंसारूढा-स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हंसावली-स्त्री० [सं०] हंस-श्रेणी।

हंसिका—स्त्री० [सं०] हंसी।

हंसिनी—स्त्री० हंसी; [सं०] चलनेका एक विशेष ढंग।

हँसिया—पु० लोहेका एक धनुपाकार औजार जिससे फसल, तरकारी आदि काटते हैं।

हंसी—स्त्री [सं०] मादा हंस; एक वर्णवृत्त।

हँसी—स्त्री० हँसनेकी क्रिया, हास; मजाक, दिल्लगी; उपहास; वदनामी; खेल, आसान काम।**—खेल**—पु० दिल्लगी और खेल, आसान काम। **—ठठोली**—स्त्री० हँसी-मजाक, दिल्लगी। मु०**—उड़ना**—किसीका मजाक होना, किसीका वनाया जाना। **—उड़ाना**—किसीको वनाना, किसीकी भद्द करना। **—छूटना**—तेजीसे हँसी आना।**—ज़ब्त कर लेना**—हँसी रोक लेना। **—मानना**—मामूली या आसान काम या वात समझना। **—में उड़ जाना,—में उड़ना**—किसी कामका मजाक या दिल्लगीमें टल जाना। **—में उड़ा देना,——में उड़ाना**—किसी कामको दिल्लगीमें टाल देना। **—में टालना**—किसी बुरी वातको गंभीरतापूर्वक ग्रहण न करना, किसीकी बुरी हरकतपर गौर न कर हँसकर सहन कर लेना। **—में फूल झड़ना**—किसीका हँसना (हँसनेकी क्रिया) अच्छा लगना,मधुर हँसी हँसना। **—में ले जाना**—किसी वातको मजाक बना देना। **—में ले लेना**—किसी वातको गंभीरतापूर्वक ग्रहण न करना। **—समझना**—आसान वात या काम मानना; खयाल, परवाह न करना। **—सूझना**—हास्य, विनोद, मजाक करनेकी प्रवृत्ति होना।

हँसुली†—स्त्री० दे० 'हँसली'।

हँसोड़—वि० विनोदप्रिय, विनोदी, दिल्लगीवाज।

हँसोर*—वि० दे० 'हँसोड़'।

हँसोहाँ, हँसौहाँ*—वि० हास्ययुक्त; मजाकभरा, परिहासपूर्ण; हँसनेकी प्रकृतिवाला, जो स्वभावसे ही हँसनेवाला हो।

ह—पु० [सं०] शिव; जल; आकाश; स्वर्ग।

हई*—पु० हयी, आश्वारोही, घुड़सवार। स्त्री० आश्चर्य।

हउँ*—अ० क्रि० दे० 'हौं'। सर्व० दे० 'हौं'।

हक†—पु० आश्चर्य, शोक आदिके अवसरोंपर हृदयके सहसा धड़क उठनेकी क्रिया, धक। **—दक**—वि० चकित, विस्मित। **—बक**—वि० हक्काबक्का।

हक़—पु० [अ०] सत्य, सचाई; उचित पक्ष; ईश्वर, खुदा; स्वत्व; अधिकार; दावा; फर्ज, कर्तव्य; नेग; दस्तूरी; वदला, मुआवजा (नमकका हक)। वि० ठीक, दुरुस्त, सही; न्याय्य; प्राप्य।**—असाइश**—पु० पड़ोसीकी जमीनपर रास्ता आदि पानेका अधिकार। **—तलफ़ी**—स्त्री० हक मारना; बेइंसाफी; नुकसान।**—ताला**—पु० महिमाशाली ईश्वर, परमेश्वर। **—दार**—वि० हकवाला, अधिकारी। **—नाहक**—पु० हक और नाहक, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य। अ० जवर्दस्ती; व्यर्थ।**—परस्त**—वि० ईश्वरभक्त; सच्चा; न्यायशील।**—मौरूसी**—पु०आनुवंशिक अधिकार। **—रसी**—स्त्री० न्याय पाना, न्याय मिलना। **—शफ़ा**—पु० दे० 'हक़शुफ़ा'।**—शुफ़ा**—पु०अपनी जायदादसे लगी हुई जायदादको दूसरोंसे पहले खरीदनेका हक। मु० **(किसी चीज़का)—अदा करना**—फर्ज पूरा करना, जैसा चाहिये उस तरह करना (नौकरीका हक अदा करना)। **—पर लड़ना**—हकके लिए, न्यायके लिए लड़ना। **—पर होना**—न्यायका पक्ष लेना, न्याय्य अधिकारका आग्रह करना। **—मारना**—नेग आदि न देना। **(किसीके)—में**—विषयमें; पक्षमें;…के लिए। **(किसीके)—में काँटे बोना**—बुराई करना।

हकबकाना—अ० क्रि० स्तंभित होना, भौचक रह जाना।

हकला—वि० हकलानेवाला, रुक-रुककर बोलने, एक ही अक्षर या शब्द कई वार कहनेवाला। **—पन**—पु० दे० 'हकलाहट'।

हकलाना—अ० क्रि० वाग्यंत्रके दोष (विशेषतः जिह्वादोष)-के कारण रुक-रुककर बोलना।

हकलाहट—स्त्री० हकलानेका भाव; हकलानेका दोष।

हकलाहा*—वि० हकला, हकलानेवाला।

हकार—मु० [सं०] 'ह' की ध्वनि या 'ह' वर्ण।

हक़ारत—स्त्री०[अ०] हलकापन, तुच्छता। मु०**—की नज़र (निगाह)से देखना**—तुच्छ समझना, हेय मानना।

हक़ीक़त—स्त्री० [अ०] वस्तुका स्वरूप; असलीयत, यथार्थता; सचाई, सच बात; हालत; हाल, वृत्तांत; शब्दका असली, अभिधेयार्थमें व्यवहार; हैसियत, विसात (उसकी क्या हकीकत है)। मु०**—खुल जाना**—सत्यका प्रकट हो जाना। **—मेँ**—दरअसल, सचमुच, वस्तुतः।

हक़ीक़तन्—अ० [अ०] हकीकतमें, वस्तुतः।

हक़ीक़ी—वि०[अ०] असली, सच्चा; सगा (~भाई; बहिन)।

हकीम—पु० [अ०] ज्ञानी; बुद्धिमान्; यूनानी चिकित्साशास्त्रका पंडित, तबीब।

हकीमी—स्त्री० [अ०] हकीमका काम, पेशा; यूनानी चिकित्साशास्त्र। वि० हकीमका (—इलाज)।

हक़ूक़—पु० [अ०] 'हक़'का बहुवचन।

हक्क़—पु० [अ०] दे० 'हक़'। **—(क़्क़े)नमक**—पु० नमकका हक, किसीका नमक खानेसे उसके प्रति होनेवाला कर्तव्य (हक़ अदा करना)। **—मालिकाना**—पु० मालिकका हक।

हक्काक—पु० [अ०] नग जड़नेवाला, नगीनासाज; मुहर खोदनेवाला।

हक्काबक्का—वि० स्तंभित, घबड़ाया हुआ, भौचक, चकित।

हक्कार—पु० [सं०] आह्वान, पुकार।

हक्कारना*—स० क्रि० चुनौती देना, ललकारना।

हगना—अ० क्रि० शौच करना, पाखाना फिरना; (ला०) अत्यधिक मात्रामें देना (जैसे—आजकल उनका रोजगार रुपया हग रहा है); (ला०) धमकी या दबावके कारण विवश होकर किसीको कोई चीज दे देना (जैसे—लात खानेपर वे चुरायी चीजें हग देंगे)। वि० हगनेवाला; अधिक हगनेवाला। मु०**हग मारना**—मलका वेग सँभाल न सकनेके कारण तुरंत उसे त्याग देना; बहुत डर जाना; कोई वस्तु बहुत गंदी कर देना।

हगनेटी, हगनौटी—स्त्री०पाखाना जानेका स्थान,शौचालय।

हगाना—स०क्रि० पाखाना फिराना। मु० **हगा मारना**—बहुत थका देना; परेशान करना।

हगास—स्त्री० हगनेकी आवश्यकताका अनुभव, पाखानेकी

हाजत।

हगोड़ा, हग्गू—वि० बार-बार शौच जानेवाला।

हचक—स्त्री० धक्का, झोंका, झटका।

हचकना—अ० क्रि० ऊपर-नीचे, आगे-पीछे हिलना-डोलना, झोंकेसे इधर-उधर होना। स० क्रि० झोंका देना, हिलाना-डुलाना; (ला०) जोरसे मारना।

हचका—पु० दे० 'हचक'।

हचकाना—स० क्रि० झोंकेसे हिलाना-डुलाना।

हचकीला—वि० झोंकेसे, तेजीसे हिलने-डोलनेवाला।

हचकोला—पु० हचक, हचका।

हचना*—अ० क्रि० किसी कामके करनेमें असमंजस होना; हाँ-नहीं करना, हिचकना।

हज—पु० मुसलमानोंका मक्केकी यात्रा करना।

हज़म—पु० [अ०] पाचन-क्रिया; गबन, चोरी। **मु०—कर जाना, —करना**—पचाना; गबन कर लेना, माल मारना। **—होना**—पचना; गबनका प्रकट न होना।

हज़रत—पु० [अ०] समीपता; दरबार; सम्मानसूचक संबोधन, जनाब, महोदय; (ला०) मुहम्मद। वि० दुष्ट, खोटा; चालबाज; शरारत करनेवाला (व्यंग्य)।

हजामत—स्त्री० [अ०] सिर मूँड़ना, क्षौर; सफाई; दुर्दशा। **मु०—बनाना**—सिर मूँड़ना; ठगना, लूटना।

हज़ार—वि० [फा०] दस सौ; अनगिनत। पु० हजारकी संख्या। अ० कितना ही, हरचंद। **—हा**—वि० सहस्रों; बेहद; अनगिनत।

हज़ारा—पु० [फा०] फौवारा; छिड़कावके काम आनेवाली एक बाल्टी जिसमें बहुतसे छेदोंवाला नल लगा रहता है; बहुतसे पटलोंवाला फूल; एक आतिशबाजी।

हज़ारी—वि० [फा०] हजारसे संबंध रखनेवाला। पु० हजार आदमियोंका सरदार; हजार आदमियोंकी पलटन।

हज़ारों—वि० दे० 'हज़ारहा'। **मु०—घड़े पानी पड़ जाना**—बहुत लज्जित होना। **—में**—बहुतोंमें; खुल्लम-खुल्ला।

हजूम—पु० [अ०] जमघट, भीड़भाड़; भीड़ करना।

हजूर*—पु० दे० 'हुज़ूर'।

हजूरी*—स्त्री०, पु०, वि० दे० 'हुज़ूरी'।

हजो—स्त्री० व्यंग्योक्ति; निंदा।

हज्ज—पु० [अ०] संकल्प करना; नियत कालपर कावेके दर्शन और प्रदक्षिणा करना, हज; मक्केकी यात्रा।

हज्जाम—पु० [अ०] हजामत बनानेवाला, नाई।

हज्जामी—स्त्री० हज्जामका धंधा।

हटक*—स्त्री० मना करनेकी क्रिया, वर्जन; चौपायोंको हटाने, हाँकनेकी क्रिया।

हटकन†—स्त्री० दे० 'हटक'; पटकनी, चौपायोंको हाँकनेकी लाठी।

हटकना*—स० क्रि० बरजना, मना करना, रोकना, कहींसे किसीको विरत करना, हटाना; चौपायोंको किसी ओर जानेसे रोककर दूसरी ओर मोड़ना, हाँकना। अ० क्रि० पश्चात्पद होना, हिचकिचाना।

हटका†—पु० दरवाजे आदि खुलने, हटनेसे रोकनेके लिए लगी हुई चीज; अर्गल, ब्योंड़ा।

हटतार—* पु० मालाका सूत। † स्त्री० हड़ताल।

हटताल—स्त्री० किसी कर, अन्याय-अत्याचार आदिके विरोधमें दुकानोंमें ताले लगाकर खरीद-बेच, काम-काज आदि बंद कर देना, हड़ताल।

हटना—अ० क्रि० किसी स्थानसे चलकर, खिसककर दूसरी जगह जाना; किसी पदसे हट जाना, पद-त्याग करना; किसी स्थानसे अवकाश, विश्राम ग्रहण करना; पीछे हटना, भागना; आलसी होना, काम न करना, जी चुराना; किसी कामका आगेके लिए टल जाना; वादेपर कायम न रहना। * स० क्रि० हटकना। **मु०—बढ़ना**—चुपकेसे भाग जाना, खिसक जाना, इधर-उधर होना।

हटबया—पु० हाट, बाजारमें सामान लगाकर बेचनेवाला व्यक्ति, दूकानदार।

हटवाई—*स्त्री० बाजारका काम, सामान खरीदने-बेचनेका काम, दूकानदारी; † हटवानेकी मजदूरी।

हटवाना—स० क्रि० हटानेका काम दूसरेसे करवाना।

हटवार—* पु० हाट, बाजारमें सामान बेचनेवाला व्यक्ति, दूकानदार। † वि० हटानेवाला।

हटवैया—वि० हटाने, हटवानेवाला।

हटाना—स० क्रि० किसी वस्तु, व्यक्तिको एक स्थानसे दूसरे स्थानपर रखना, स्थानांतरित करना, खिसकाना; किसी बातपर ध्यान न देना, किसीको महत्त्व न देना, उपेक्षा करना; खत्म करना, बंद करना, सिलसिला तोड़ना; खदेड़ना; किसी पद, नौकरीसे अलग करना।

हटुवाई†—स्त्री० दूकानदारी।

हट्ट—पु० [सं०] हाट, बाजार; मेला। **—चौरक**—पु० बाजारमें चोरी करनेवाला व्यक्ति, गँठकटा, पाकेटमार।

हट्टा-कट्टा—वि० हृष्ट-पुष्ट; मोटा-ताजा; बलवान्।

हट्टाध्यक्ष—पु० [सं०] बाजारका निरीक्षक।

हठ—पु० [सं०] बलात्कार, बलप्रयोग, जबरदस्ती; उत्पीड़न; किसी बातपर अड़े रहनेकी प्रवृत्ति, दुराग्रह; दृढ़ प्रतिज्ञा; शत्रुके पृष्ठभागमें पहुँच जाना। **—कर्म(न्)**—पु० बलप्रयोगका काम। **—धर्म**—पु० सत्यासत्यका विवेक किये बिना किसी बातको सत्य मानकर उसपर डटे रहना। **—धर्मी**—स्त्री० [हिं०] हठधर्म, दुराग्रह। **—योग**—पु० योगका एक प्रकार जिसमें नेती-धोती, आसन आदि क्रियाएँ करते और त्राटक, धारणा, ध्यान आदिके द्वारा चित्तवृत्ति बाह्य विषयोंसे हटाकर अंतर्मुख करते हैं। **—योगी(गिन्)**—पु० हठयोग करनेवाला व्यक्ति। **—विद्या**—स्त्री० हठयोगकी विद्या। **—शील**—वि० हठी, जिद्दी। **मु०—पकड़ना**—जिद करना। **—माँड़ना***—हठ पकड़ना। **—में पड़ना**—हठ करना; किसीके दृढ़ संकल्पका शिकार होना। **—रखना**—किसीके दृढ़ संकल्पकी पूर्ति करना। **—रोपना**—हठ माँड़ना।

हठना*—अ० क्रि० हठ करना, जिद्द करना—'करिहौं न तुमसों मान हठ, हठिहौं न माँगत दान'—सू०।

हठात्—अ० [सं०] हठपूर्वक; बलपूर्वक। **—कार**—पु० बलात्कार, जबरदस्ती।

हठादेशी(शिन्)—वि० [सं०] किसीके विरुद्ध बलप्रयोगका उपाय बतलानेवाला।

हठाश्लेष-पु० [सं०] बलपूर्वक आलिंगन करना।

हठी(ठिन्)-वि० [सं०] हठ करनेवाला, जिद्दी।

हठीला-वि० हठी; युद्धमें दृढ़; धीर; दृढ़संकल्प।

हड़-स्त्री० हर्रे; एक गहना, लटकन। पु० 'हाड़'का समासगत रूप। **-कंप**-पु० तहलका, आतंक। (**मु०-कंप मचना**-आतंक फैलना।) **-फूटन**-स्त्री० हड्डियोंमें होनेवाला दर्द।

हड़क-स्त्री० पागल कुत्तेके काटनेसे उत्पन्न जलका भय, जलातंक; कोई वस्तु पानेकी उत्कट इच्छा।

हड़कना-अ० क्रि० किसी वस्तुके लिए लालायित होना।

हड़का-पु० हड़कनेका भाव; तरसनेका भाव, तरस।

हड़काना-स० क्रि० तरसाना; हतोत्साह करना; दूर हटा देना; तंग करनेमें किसीको प्रवृत्त करना।

हड़काया-वि० उतावला; पागल (कुत्ता)।

हड़ताल-स्त्री० दे० 'हटताल'। **-तोड़क**-पु० (ब्लैकलेग) वह कर्मचारी जो किसी कारखाने या व्यापारिक संस्थामें हड़ताल हो जानेपर भी अपने मालिकके लिए काम करनेको, हड़तालियोंकी चेष्टा विफल करनेको कटिबद्ध हो।

हड़प-पु० खूराक निगलना; ग्रास एक ही बार निगल जाना; बिना चबाये निगल जाना; किसीका माल लेकर हजम कर जाना।

हड़पना-स० क्रि० किसी वस्तुको अनुचित साधनों द्वारा कभी न देनेकी इच्छासे अपने अधिकारमें कर लेना, जबरदस्ती या चोरीसे किसी वस्तुको लेकर कभी न देना; जल्दी (और प्रायः अधिक) खाना, निगलना।

हड़प्पा-पु० दे० 'हड़प'; गाली जो मर्द औरतोंको देते हैं; सिंधका एक स्थान जहाँ बहुत प्राचीन चिह्न पाये गये हैं।

हड़बड़-स्त्री० घबड़ाहटसे उत्पन्न जल्दबाजी, उतावली।

हड़बड़ाना-अ० क्रि० हड़बड़ी, घबड़ाहटमें कोई काम करना। स० क्रि० जल्दी कार्य करनेके लिए किसीको प्रेरित करना।

हड़बड़िया-वि० हड़बड़ी मचानेवाला, जल्दबाज।

हड़बड़ी-स्त्री० हड़बड़, जल्दबाजी, उतावली। **मु०-पड़ना**-किसी कामके लिए जल्दबाजी होना; घबड़ाहट होना। (**पेटमें**)-**पड़ना**-बहुत घबड़ाना।-**सवार होना**-किसी कामको जल्दी करनेकी धुन होना।

हड़हड़ाना-स० क्रि० 'हड़-हड़' शब्द करना; शीघ्र कार्य करनेके लिए किसीको प्रेरित करना। अ० क्रि० 'हड़-हड़' शब्द होना।

हड़हा-वि० हाड़-संबंधी; अस्थिशेष (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डी-हड्डी रह गयी हो, बहुत दुबला-पतला।

हड़ावरि, हड़ावल*-स्त्री० हड्डियोंका ढेर; अस्थिपंजर, ठठरी; अस्थिमाल, हड्डियोंकी माला।

हड़ीला-वि० हड्डीवाला, अस्थिशेष (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डियाँ ही रह गयी हों, बहुत दुबला-पतला।

हड्ड-पु० [सं०] अस्थि, हड्डी, हाड़। **-ज**-पु० मज्जा।

हड्डा-पु० भिड़की जातिका एक कीड़ा जो उससे कुछ बड़ा होता है।

हड्डी-स्त्री० शरीरका वह कड़ा भाग जिससे उसका ढाँचा बनता है; (ला०) कुल, खानदान। **मु०-उखड़ना**-हड्डियोंका जोड़ खुल जाना। **-गढ़ना**-बुरी तरह पीटना। **-गुड्डी तोड़ना,-तोड़ना**-बुरी तरह पीटना। **-चबाना**-किसी वस्तुका अभाव होनेपर भी उसे जबरदस्ती प्राप्त करनेका प्रयत्न करना। **-बोलना**-हड्डी टूटना। **-से हड्डी बजाना**-लड़ना, लड़ाई-झगड़ा करना। **-हड्डी चूसना**-अशक्त व्यक्तिसे जबरदस्ती लेना, काम कराना आदि। **हड्डियाँ दिखाई पड़ना,-निकल आना**-इतना दुबला हो जाना कि हड्डियाँ दिखाई देने लगें।

हत-वि० [सं०] मार डाला हुआ; घायल किया हुआ; ताडित, पीटा हुआ; फोड़ा हुआ (जैसे नेत्र); तंग किया हुआ; विरहित; छला हुआ; विफलप्रयास, निराश, भग्नहृदय; जिसमें बाधा डाली गयी हो; भ्रष्ट किया हुआ; ध्वस्त, विलुप्त; गुणित; ग्रस्त (कष्टसे); संपर्कमें आया हुआ (ज्यो०) निकम्मा; सदोष। **-किल्बिष**-वि० जिसके पाप नष्ट हो गये हों। **-चित्त,-चेता(तस्)**-वि० बेसुध; घबड़ाया हुआ। **-चेतन**-वि० हतज्ञान। **-जीवन**-पु० दुःखमय जीवन। **-ज्ञान**-वि० संज्ञाहीन, बेसुध। **-त्रप**-वि० निर्लज्ज। **-दैव**-वि० हतभाग्य, भाग्यहीन। **-द्विट्(ष्)**-वि० जिसने अपने शत्रुओंका नाश कर दिया है। **-धी,-बुद्धि**-वि० दे० 'हतचित्त'। **-ध्वांत**-वि० अंधकारसे मुक्त। **-पुत्र**-वि० जिसके पुत्रकी हत्या की गयी हो। **-प्रभ**-वि० जिसकी कांति क्षीण हो गयी हो। **-प्रभाव**-वि० जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो, अधिकारवंचित। **-प्राय**-वि० जो करीब-करीब मार डाला गया हो। **-भाग,-भाग्य**-वि० भाग्यहीन, बदकिस्मत। **-भागी***-वि० दे० 'हतभाग'। **-वीर्य**-वि० जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो। **-व्रीड**-वि० निर्लज्ज। **-शिश्न,-शेष**-वि० जो जीवित बच गया हो। **-श्री**-वि० जिसका वैभव नष्ट हो गया हो; मुरझाया हुआ, उदास। **-संपद**-वि० दे० 'हतश्री'। **-स्त्रीक**-वि० जिसने किसी स्त्रीका वध किया हो; जिसकी स्त्री मार डाली गयी हो। **-स्मर**-पु० शिव। **-स्वर**-वि० जिसका स्वर भंग हो गया हो। **-हृदय**-वि० भग्नहृदय, हताश।

हतक-वि० [सं०] जिसे चोट पहुँचायी गयी हो;…से ग्रस्त (दुर्दैव आदिसे); दीन-दुःखी; पापी-'अब सजनी दूनो चढ्यो हतक मनोजहिं दाप'-मतिराम। पु० नीच व्यक्ति; भीरु आदमी। स्त्री० [अ०] बेइज्जती, मानहानि, हेठी; धृष्टता। **-इज्जती**-स्त्री० मानहानि, बेइज्जती।

हतना*-स० क्रि० जानसे मारना, वध करना; मारना-पीटना।

हतवाना*-स० क्रि० मरवा डालना; पिटवाना।

हता-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका सतीत्व भंग किया गया हो। * अ० क्रि० होनाका भूतकाल-था।

हताना*-स० क्रि० दे० 'हतवाना'।

हतावशेष-वि० [सं०] दे० 'हतशिष्ट'।

हताश-वि० [सं०] जिसकी आशा नष्ट हो गयी हो; दीन।

हताश्रय-वि० [सं०] जिसका सहारा नष्ट हो गया हो, निराश्रय।

हताहत–वि० [सं०] मारे गये और घायल।

हते*–अ० क्रि० 'हता'का बहुवचन, थे।

हतो*–अ० क्रि० दे० 'हता' (था)।

हतोज*–वि० दे० 'हतौजा'।

हतोत्तर–वि० [सं०] निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके।

हतोत्साह–वि० [सं०] जिसका उत्साह भंग हो गया हो।

हतोद्यम–वि० [सं०] विफलप्रयत्न।

हतौजा(जस्)–वि० [सं०] ओजहीन, वीरोत्साहसे रहित।

हत्थ*–पु० हाथ।

हत्था–पु० किसी वस्तुका वह भाग जो हाथसे पकड़ा जाय या जिसपर हाथ रखा जाय, मूठ, दस्ता; कुरसीकी बाँही; दंड करते समय हाथके नीचे रखनेका पत्थर या ईंट; पूजन आदिके अवसरोंपर ऐपन आदिसे दीवाल या भूमिपर बनाया जानेवाला हाथके पंजेका चिह्न; केलेका घौद; कंबल बुनते समय उसकी पटिया ठोंकनेका एक औजार; रेशमी वस्त्र बुननेके काममें आनेवाला एक औजार जो छतसे लटका रहता है; खेतकी नालीके पानीको चारों ओर उलीचनेका एक औजार।

हत्थि*–पु० हाथी।

हत्थी–स्त्री० औजार, हथियार आदिका दस्ता; कड़ाहमें रखा ईखका रस चलानेकी लकड़ी; बुनाईके कामका एक औजार।

हत्थे–अ० हाथमें। मु०–**चढ़ना**–अनजाने अपने विरोधीके पंजेमें, हाथमें आ जाना; उपयुक्त अवसरपर वशमें आना। –**लगना**–हाथमें आना, मिलना।

हत्या–स्त्री० [सं०] जानसे मारनेका काम, खून, वध; हत्या करनेका पाप; बखेड़ा; झगड़ा; बहुत दुबला-पतला या बीमार व्यक्ति आदि। मु०–**टलना**–झंझट दूर होना; –**पल्ले बाँधना**–झगड़ेसे संबंध स्थापित करना। –**मोल लेना**–हत्या पल्ले बाँधना। –**सवार होना**–मुखाकृति आदिसे हत्याकी प्रवृत्ति प्रकट होना, खून चढ़ना। –**सिर मढ़ना**–अपराधी ठहराना; लड़ाई-झगड़ेका काम सौंपना। –**सिर लेना**–पापका भागी होना।

हत्यार†, हत्यारा–पु० हत्या करनेवाला व्यक्ति, खूनी।

हत्यारी–स्त्री० हत्या करनेवाली स्त्री, हत्यारिन।

हथ–पु० 'हाथ'का समासगत रूप; [सं०] चोट, आघात; वध; मृत्यु; हताश मनुष्य। –**उधरा**–पु० दे० 'हथउधार'। –**उधार**–पु० बिना लिखा-पढ़ीके किसीको थोड़े समयके लिए कर्ज देना। –**कंडा**–पु० षड्यंत्र; धूर्तता करनेकी पद्धति; चतुराईकी चाल; किसी कामके करनेमें हाथको फुर्तीसे इस ढंगसे चलाना कि कामकी गुप्त पद्धतिको देखनेवाला भाँप न सके; किसी कामके करनेमें हस्तलाघव, हाथकी सफाई। (मु०–**कंडा चलना**–चालबाजी कारगर होना। –**कंडा दिखाना**–हाथकी सफाईका प्रदर्शन करना; चालबाजीकी कला दिखाना।) –**कड़ी**–स्त्री० लोहेका विशेष ढंगका बना कड़ा जो कैदी या अपराधीको विवश करनेके लिए पहनाते हैं। (मु०–**कड़ी डालना**–हथकड़ी पहनाना; दोषी करार देना। –**कड़ी पड़ना**–हथकड़ीसे हाथोंका बाँधा जाना; अपराधी माना जाना; दोषी ठहराया, जाना।) –**छुट**–वि० जिसे तुरत उत्तेजित होकर मार बैठनेकी आदत हो। –**छोड़†**–वि० दे० 'हथछुट'। –**फूल**–पु० एक आतिशबाजी; हाथके पंजेके ऊपरी भागपर पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण। –**फेर**–पु० द्रव्य लेने-देनेवालेके हाथकी सफाई जिससे खोटा या कम सिक्का दूसरे पक्षके जिम्मे पड़ जाता है; हस्त-कौशल द्वारा किसी वस्तुको गायब करनेकी क्रिया; प्यारसे शरीरपर हाथ फेरनेकी क्रिया; हथउधार। वि० हाथकी सफाईसे चीजोंको गायब करनेवाला, हथलपक। –**लपक**–वि० आँख बचाकर चुपकेसे चीजोंको गायब कर देनेवाला, हथफेर। –**लपका†**, –**लपक्का†**–वि० हथलपक। –**लेवा**–पु० हाथको हाथमें लेनेवाला व्यक्ति ('नामलेवा'की भाँति); विवाहके अवसरपर वर द्वारा कन्याका हाथ अपने हाथमें लेनेका कृत्य, पाणिग्रहण। –**वाँस**–पु० नाव खेनेका सामान। –**संकर**, –**साँकड़**, –**साँकर**, –**साँकल**, –**साँकला**–पु० हथफूल नामक आभूषण।

हथनाल–स्त्री० हाथीपर चलनेवाली तोप।

हथनी–स्त्री० हाथीकी मादा।

हथवाँसना*–स० क्रि० अधिकार करना–'हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोह'–रामा०; अधिकार करके इस्तेमाल करना; पहले-पहल प्रयोगमें लाना।

हथसार–स्त्री० हाथियोंके रहनेका स्थान, हस्तिशाला, फीलखाना।

हथाहथी*–अ० हाथोहाथ, शीघ्र, जल्द।

हथिनी–स्त्री० हाथीकी मादा।

हथिया–पु० हस्त नक्षत्र।

हथियाना–स० क्रि० अपने अधिकारमें कर लेना; जबरदस्ती किसीकी चीज ले लेना; हाथसे पकड़ना।

हथियार–पु० अस्त्र-शस्त्र; औजार। –**घर**–पु० अस्त्र-शस्त्र रखनेका बड़ा घर, शस्त्रागार। –**बंद**–वि० अस्त्र-शस्त्र धारण करनेवाला, सशस्त्र। मु०–**उठाना**–युद्धके लिए प्रस्तुत होना। –**डालना**–लड़ाई बंद करना। –**बाँधना**, –**लगाना**–अस्त्र-शस्त्रसे सज्जित होना।

हथुईरोटी–स्त्री० वह रोटी जो बेलनेसे न बेलकर हाथकी अँगुलियोंसे दबाकर चौड़ी की गयी हो।

हथेरा–पु० खेतमें पानी उलीचनेका हत्था।

हथेरी*–स्त्री० दे० 'हथेली'।

हथेली–स्त्री० कलाईके आगे नीचेका चिकना और चौड़ा भाग, करतल; चरखेकी मुठिया। मु०–**का फफोला**–अत्यन्त कोमल वस्तु जिसके टूटनेका भय बराबर बना रहे। –**खुजलाना**–द्रव्यप्राप्तिका शकुन होना, द्रव्यप्राप्तिकी पूर्व सूचना मिलना। –**देना**, –**लगाना**–हाथका सहारा देना। –**पर जान रखना या लेना**–दे० 'हथेलीपर सर रखना या लेना'। –**पर जान होना**–जान जानेकी स्थितिमें होना। –**पर दही जमाना**–कोई काम करानेके लिए जल्दी मचाना। –**पर बाल जमना**–किसीमें साहस, शक्तिका आना। –**पर सर रखना या लेना**–जान देनेके लिए तैयार रहना। –**पर सरसों जमाना**–कोई कठिन काम फुर्तीसे करना। –**पीटना**, –**बजाना**–ताली बजाना।

हथोड़ा–पु० दे० 'हथौड़ा'।

हथोरी–स्त्री० हथेली।

हथौटी—स्त्री० हस्तकौशल, काम करनेका अच्छा ढंग; किसी काममें हाथ लगाना। **मु०—जमना,—मँजना,—सधना**—हाथ खूब सध जाना, कौशल प्राप्त होना।

हथौड़ा—पु० धातु, पत्थर, ईंट, लोहा आदि पीटने, ठोंकनेके काम आनेवाला लोहेका एक औजार।

हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हथ्यानाॐ—स० क्रि० दे० 'हथियाना'।

हथ्यार*—पु० दे० 'हथियार'।

हद—स्त्री० [अ० 'हद्द'] किनारा; सीमा; अंत; औचित्यकी सीमा; इसलामी शरीअतके अनुसार दिया हुआ दंड। **—बंदी**—स्त्री० हद बाँधना, सीमानिर्धारण। **मु०—कर देना,—करना**—अति कर देना, औचित्यकी सीमा लाँघ जाना। **—से ज़्यादा**—अत्यधिक।

हदका*—पु० धक्का, हचका—'अति खाय भग हदका पताका फरफराति अपार'—सत्यना०।

हदस—स्त्री० ऐसी घबराहट या भय जिससे बालक (या व्यक्ति) स्तब्ध-सा रह जाय।

हदसना—अ० क्रि० भयसे सन्न हो जाना, डर बैठना।

हद्द—स्त्री० [अ०] दे० 'हद'।

हनन—पु० [सं०] वध करना, जानसे मार डालना; पीटना, मारना; गुणन। **—शील**—वि० खूनी स्वभावका, निष्ठुर।

हनना*—स० क्रि० वध करना, कत्ल करना; पीटना, मारना—'बाँक नैन जनु हनहि कटारी'—प०; लकड़ीसे पीटकर नगाड़ा आदि बजाना।

हननीय—वि० [सं०] वध्य, मार डालने योग्य।

हनवाना*—स० क्रि० मरवा डालना; पिटवाना, ठुकवाना।

हनाना*—अ० क्रि० दे० 'नहाना'।

हनितवंत*—पु० हनुमान्।

हनु—स्त्री० [सं०] ऊपरी जबड़ा; ठुड्ढी।

हनुमंत*—पु० दे० 'हनुमान्'।

हनुमज्जयंती—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृष्ण चतुर्दशी या चैत्रपूर्णिमा जिसे हनुमान्का जन्मदिन मानते हैं।

हनुमत*—पु० दे० 'हनुमान्'।

हनुमान—पु० दे० 'हनुमान्'। **—बैठक**—स्त्री० बैठक-(कसरत)का एक प्रकार।

हनुमान्(मत्)—पु० [सं०] सुग्रीवके एक मंत्री (ये अंजनासे उत्पन्न पवनके पुत्र थे। रामके ये अनन्य भक्त थे। सीताका पता इन्हींने लगाया था)। वि० जबड़ेवाला। **—कवच**—पु० हनुमान्को प्रसन्न करनेका एक मंत्र; हनुमान्की एक स्तुति।

हनुव*—पु० दे० 'हनुमान्'।

हनू—स्त्री० [सं०] दे० 'हनु'।

हनूमान(मत्)—पु० [सं०] दे० 'हनुमान्'।

हनोद—पु० एक राग।

हन्यमान—वि० [सं०] हननीय, वध्य; मारा जाता हुआ।

हफ़्त—वि० [फा०] सात।

हफ़्ता—पु० [फा०] सप्ताह।

हबकना†—स० क्रि० किसी वस्तु—फल आदि—को झटसे दाँतसे काटकर खाना, चटसे काटना; किसी व्यक्तिको झपटकर दाँतसे काटना।

हबड़ा—वि० बड़दंता; कुरूप।

हबरदबर, हबरहबर—अ० जल्दी-जल्दी; हड़बड़ीके साथ।

हबराना†—अ० क्रि० दे० 'हड़बड़ाना'।

हबश, हबशा—पु० [अ०] हब्शियोंका देश, पूर्वी अफ्रीकाके अंतर्गत एक देश।

हबशी—पु० [अ०] हबशका रहनेवाला; हबशी जातिका आदमी। वि० काला-कलूटा।

हबीब—वि० [अ०] प्रेमी; दोस्त; प्यारा।

हबेली—स्त्री० दे० 'हवेली'।

हब्बा—पु० अनाजका दाना; रत्ती; अत्यल्प मात्रा; (ला०) पैसा-कौड़ी। **—भर**—रत्तीभर। **—हब्बा**—पैसा-पैसा, कौड़ी-कौड़ी।

हब्बा-डब्बा—पु० [अ०] बच्चोंका एक रोग जिसमें उनको साँस बहुत तेजीसे चलती है।

हब्स—पु० [अ०] कैद, अवरोध; कैदखाना; ऊमस (हि०)।

हम—सर्व० 'मैं'का बहुवचन रूप;। * पु० अहंकार, घमंड; बड़प्पनकी भावना। **—ता***—स्त्री० अहंकार।

हम—अ० [फा०] समान, एक-सा; संग, साथ; आपसमें। **—असर**—वि० एक जैसे प्रभाववाले; समप्रवृत्ति। **—उम्र**—वि० समवयस्क। **—क़ौम**—वि० एक जातिवाले, सजातीय। **—ख़्वाबा**—वि० स्त्री० साथ सोनेवाली (पत्नी) **—जिंस**—वि० एकसा; एक ही पेशावाले। **—जोली**—वि० एक ही उम्रका; बचपनमें साथ खेला हुआ। **—दर्द**—वि० (कष्ट, पीड़ा, दुःखमें) सहानुभूति रखनेवाला। **—दर्दी**—स्त्री० सहानुभूति, दर्दमंदी। **—पेशा**—वि० समान पेशा करनेवाला; सहव्यवसायी। **—बिस्तर**—वि० (किसीके साथ) एक ही बिस्तरपर सोनेवाला। **—बिस्तरी**—स्त्री० एक ही बिस्तरपर सोनेकी क्रिया, सहशयन, संभोग। **—मज़हब**—वि० समान धर्मको माननेवाला, सहधर्मी। **—राह**—वि० साथ चलनेवाला। अ० साथमें। (**मु०—राह करना**—किसीको कहीं जानेके लिए किसीके साथ कर देना। **—राह होना**—साथ जाना।) **—राही**—वि० सहगामी। **—वतन**—पु० एक ही देशके निवासी। **—वार**—वि० बराबर, चौरस; एकसा। **—सफ़र**—वि० साथ यात्रा करनेवाला। **—सबक़**—वि० साथ पढ़नेवाला। **—साया**—पु० पड़ोसी। **—सिन**—वि० दे० 'हमउम्र'।

हमन*—सर्व० दे० 'हम'।

हमरा†, हमरो†—सर्व० दे० 'हमारा'।

हमल—पु० [अ०] बोझ; गर्भ; भ्रूण। **—(ले)हराम**—पु० हरामका हमल, व्यभिचारसे स्थित गर्भ।

हमला—पु० [अ०] आक्रमण, धावा, चढ़ाई; चोट, वार। **—आवर(हमलावर)**—वि०, पु० हमला करनेवाला, आक्रमणकारी।

हमाक़त—स्त्री० [अ०] मूर्खता, नासमझी, हिमाकत।

हमाम—पु० दे० 'हम्माम'।

हमायल—स्त्री० [अ०] परतला; गलेमें डालनेकी चीज़; गलेमें पहननेका एक गहना, हुमेल।

हमार*—सर्व० दे० 'हमारा'।

हमारा—सर्व० 'हम'का संबंध-कारकका रूप।

हमाल—पु० दे० 'हम्माल'।

हमाहमी-स्त्री० अनेकके स्वार्थमें अपने स्वार्थके लिए दौड़-धूप, स्वार्थपरायणता; अपने अहंभावको ही आगे करनेका यत्न। मु०-करना-स्वार्थपरायण होना, स्वार्थी होना, अपने अहंकारकी तुष्टिके लिए यत्न करना, अपनी बात जबरदस्ती मनवानेका प्रयत्न करना।

हमीर-पु० दे० 'हम्मीर'।

हमें-सर्व०'हम'का कर्म तथा संप्रदान कारकका रूप,हमको।

हमेल-स्त्री० सोने या चाँदीके गोल सिक्कों या सिक्केके रूपमें गढ़े हुए धातुखंडोंमें कोंढ़ा लगाकर बनी हुई माला।

हमेव*-पु० अहंकार, घमंड।

हमेशा-अ० [फ़ा०] सदैव।

हमेस, हमेसा*-अ० दे० 'हमेशा'।

हमैं*-सर्व० दे० 'हमें'।

हम्द-पु० [फ़ा०] ईश्वरस्तुति, ईश्वरकी महिमाका गान।

हम्माम-पु० [अ०] स्नानका स्थान; गरम स्नानागार। -की लुंगी-नहानेकी लुंगी; (ला०) वह चीज जो हर आदमीके काममें आये।

हम्मार*-सर्व० दे० 'हमारा'।

हम्माल-पु० [अ०] बोझ उठानेवाला, मोटिया, कुली।

हम्मीर-पु० रणथंभोरका एक वीर नरेश (चौदहवीं सदी) जो अलाउद्दीन खिलजीसे युद्ध करते समय मारा गया; [सं०] एक संकर राग। -नट-पु० एक संकर राग।

हयंद*-पु० अच्छा घोड़ा, बड़ा घोड़ा।

हय-पु० [सं०] घोटक, घोड़ा; एक विशेष जातिका आदमी; सातकी संख्या; एक छंदका नाम; इंद्र; धनु राशि। -कोविद-वि०, पु० अश्वविद्या जाननेवाला। -गृह-पु० घुड़सार, अश्वशाला। -ग्रीव-पु० विष्णुका एक रूप जो मधु-कैटभसे वेदोंका उद्धार करनेके लिए ग्रहण किया गया था; एक दैत्य। -ज्ञ-पु० घोड़ेका व्यापारी; साईस। -नाल-स्त्री० घोड़ेसे खींची जानेवाली तोप। -निर्घोष-पु० घोड़ेके टापकी आवाज।-प-पु० साईस। -प्रिय-पु० जौ; जई।-विद्या-पु० अश्व-संबंधी विद्या। -शाला-स्त्री० घुड़सार, अस्तबल। -शास्त्र-पु०, -शिक्षा-स्त्री० घोड़ोंको शिक्षा देनेकी विद्या। -शीर्ष, -शीर्षा (र्षन्)-वि० घोड़ेके सिरवाला। पु० विष्णु।

हयना*-स० क्रि० दे० 'हनना'; काटना-'प्रभु बहु बार बाहु सिर हये'-रामा०।

हयांग-पु० [सं०] धनु राशि।

हया-स्त्री० [अ०] लज्जा, शर्म। -दार-वि० लाज-शर्मवाला, लज्जाशील। -दारी-स्त्री० लज्जाशीलता।

हयात-स्त्री० [अ०] जीवन, जिंदगी; प्राण।

हयाध्यक्ष-पु० [सं०] अश्वपाल, घोड़ोंका निरीक्षक।

हयानन-पु० [सं०] हयग्रीव; हयग्रीवके रहनेकी जगह।

हयायुर्वेद-पु० [सं०] अश्वचिकित्सा-संबंधी शास्त्र।

हयारूढ, हयारोह-पु० [सं०] अश्वारोही।

हयालय-पु० [सं०] अश्वशाला, अस्तबल।

हयी-स्त्री० [सं०] घोड़ी।

हयी (यिन्)-पु० [सं०] अश्वारोही; घोड़ेवाला।

हर-वि० [सं०] हरण करनेवाला, दूर करनेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; ले जानेवाला; ग्रहण करनेवाला; आकृष्ट करनेवाला; हकदार; विभाजन करनेवाला; कब्जा करनेवाला। पु० शिव; भाजक; भिन्नका निम्नांक; ग्रहण। -गिरि-पु० कैलास पर्वत।-गौरी-स्त्री० शिवकी अर्धनारीश्वर मूर्ति।-द्वार-पु० [हिं०] हरिद्वार। -बीज-पु० शिवका वीर्य; पारद, पारा। -वाहन-पु० (शिवका वाहन) बैल। -शेखरा-स्त्री० गंगा। -सूनु-पु० कार्त्तिकेय; गणेश।-हार-पु० शेषनाग; सर्प।

हर-वि० [फ़ा०] प्रत्येक।-एक-वि० प्रत्येक। -कहीं-अ० हर जगह। -चंद-अ० जिस कदर, कितना ही। -जाई-वि० मारा-मारा फिरनेवाला, आवारागर्द; सब जगह जानेवाला। वि० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा। -तरह-अ० हर हालतमें। -दम-अ० हमेशा। -फ़न मौला-वि० हर एक फन जाननेवाला।-रोज़-अ० प्रति दिन।

हर*-पु० दे० 'हल'। -पुजी-स्त्री० हलका पूजन जो किसान कार्त्तिकमें करते हैं। -वाह,-वाहा-पु० हल जोतनेवाला। -वाही-स्त्री० हल जोतनेका काम या मजदूरी।

हरएँ*-अ० धीरे-धीरे, आहिस्तेसे-'दिनकर तनया स्याम जल द्वै घट भरे बनाइ। ताके भर गरुए भये हरएँ धारति पाइ'-मति०।

हरकत-स्त्री० [अ०] हिलना-डोलना, गति, चेष्टा; स्वर; (व्या०) स्वरसूचक चिह्न, मात्रा (जेर, जबर, पेश); काम; बुरा काम, शरारत। मु०-करना-हिलना; चलना, प्रस्थान करना (फौजका हरकत करना)। -देना-जेर, जबर, पेश लगाना।

हरकना*-स० क्रि० रोकना, वर्जन करना।

हरकारा-पु० दूत; डाकिया, डाक ढोनेवाला।

हरख*-पु० दे० 'हर्ष'।

हरखना*-अ० क्रि० प्रसन्न होना, खुश होना।

हरखाना*-अ० क्रि० दे० 'हरखना'। स० क्रि० खुश करना, प्रसन्न करना।

हरगिज़-अ० [फ़ा०] कभी, किसी हालतमें।

हरज-पु० [अ०] हानि, क्षति; देर, समय-नाश; काममें होनेवाली रुकावट (करना, होना)।

हरजा-पु० [अ०] नुकसान; हरजाना, तावान।

हरजाना-पु० [फ़ा०] नुकसानके बदलेमें दी जानेवाली रकम, क्षतिपूर्ति।

हरट्ट*-वि० हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।

हरण-वि० [सं०] (समासांतमें) ले लेनेवाला; दूर करनेवाला; धारण करनेवाला। पु० नष्ट करना; दूर करना; ले लेना, छीन लेना; चुरा लेना; ले जाना या ले आना; भगा ले जाना; वंचित करना; भाग (गणित)।

हरणीय-वि० [सं०] हरण करने, छीन लेने योग्य।

हरता*-पु० दे० 'हर्ता'। -धरता-पु० बनाने-बिगाड़नेवाला, सर्वेसर्वा; सर्वशक्तिमान्।

हरतार*-स्त्री० दे० 'हरताल'।

हरताल-स्त्री०गंधक और संखियाके योगसे बना एक पीला खनिज द्रव्य। मु०-फेरना,-लगाना-किसी बने कामको बिगाड़ देना, नष्ट करना।

हरताली–वि० हरतालके रंगका। पु० हरतालकासा रंग।

हरद*–स्त्री० दे० 'हल्दी'।

हरदिया*–वि० हल्दीके रंगका, पीला। पु० पीले रंगका घोड़ा।

हरदियादेव*–पु० दे० 'हरदौल'।

हरदी†–स्त्री० हल्दी।

हरदौल–पु० ओड़छाके राजा जुझारसिंहके छोटे भाई जो वीरता और भ्रातृभक्तिके लिए बड़े प्रसिद्ध हैं (राजा जुझारसिंहने अपनी पत्नीके साथ अनुचित संबंध होनेके संदेहमें उसकी सतीत्व-परीक्षाके लिए उसीके हाथसे इन्हें विष खिलवाकर इनका अंत करा दिया)।

हरना–स० क्रि० हरण कर लेना, छीन लेना; दूर करना; आकृष्ट करना। अ० क्रि० हार जाना; परास्त होना; शिथिल पड़ जाना। * पु० मृग, हिरन।

हरनाकस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरनाच्छ*–पु० 'हिरण्याक्ष'।

हरनी†–स्त्री० हिरनकी मादा।

हरनौटा–पु० हिरनका बच्चा।

हरपा†–पु० वह छोटा डब्बा जिसमें सुनार तराजू आदि रखते हैं; सिंधोरा।

हरफ़–पु० दे० 'हर्फ़'।

हरफारेवड़ी–स्त्री० आँवलेके बराबर खट्टे फलोंवाला एक वृक्ष या उसका फल, लवली।

हरफारयोरी*–स्त्री० दे० 'हरफारेवड़ी'।

हरबर*–स्त्री० दे० 'हड़बड़'। अ० हड़बड़ीके साथ, उतावलीमें, जल्द–'...तहँ मुनिवर हरबर आयो'–रघु०।

हरबराना*–अ० क्रि० हड़बड़ाना।

हरबा–पु० [अ०] युद्धका साधन, हथियार, आयुध। –हथियार–पु० अस्त्र-शस्त्र।

हरबोंग–वि० गुंडा, लट्ठधारी; मूढ़, मूर्ख। पु० कुव्यवस्था; अंधेर। –पुर–पु० अंधेर नगरी।

हरम–पु० [अ०] काबेकी चहारदीवारी, घेरा; अंतःपुर; विवाहिता स्त्री; रखेली बनायी हुई बाँदी। –ख़ाना,–सरा–पु० जनानखाना, अंतःपुर।

हरमज़दगी–स्त्री० हरामजादापन, दुष्टता, शरारत।

हरयाल*–स्त्री० 'हरियाली'।

हरये*–अ० दे० 'हरएँ'।

हरवल–पु० बिना ब्याजके हलवाहेको दिया हुआ द्रव्य; * पु० दे० 'हरावल'।

हरवली*–स्त्री० सेनाका नेतृत्व; मालिकका पद, स्वामित्व।

हरवा*–पु० दे० 'हार'। वि० हलका।

हरवाना*–अ० क्रि० हड़बड़ाना, जल्दी करना; हलका होना। स० क्रि० 'हराना' और 'हरना'का प्रेरणार्थक रूप।

हरष*–पु० दे० 'हर्ष'।

हरषना, हरसना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना।

हरषाना, हरसाना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना। स० क्रि० प्रसन्न करना।

हरषित*–वि० दे० 'हर्षित'।

हरसिंगार–पु० एक फूल, परजाता।

हरहट†–वि० दे० 'हरहा'।

हरहा–वि० हैरान, परेशान करनेवाला, भागा फिरनेवाला (पशु)। पु० हलमें जुतनेवाला बैल; † भेड़िया।

हरहाई–वि० स्त्री० शरारती (गाय)।

हराँस*–पु०, स्त्री० ज्वरांश, हरारत; थकावट।

हरा–वि० घास-पत्तोंके रंगका, सब्ज, हरित; अधपका; बिना पूजा, भरा (घाव); तरोताजा; खुश, आनंदित, प्रफुल्ल। पु० हरा रंग; चौपायोंका हरा चारा; * हार, माला। स्त्री० [सं०] हर, शिवकी पत्नी पार्वती। –भरा–वि० हरियालीसे भरा हुआ; ताजा; प्रसन्न, प्रफुल्ल। मु०–करना–आनंदित, हर्षित, प्रसन्न करना। –दिखाई पड़ना,–सूझना–सुख, आशा आदिकी व्यर्थ कल्पना, अपने अज्ञानके कारण झूठी आशा बाँधना। –बाग दिखाई पड़ना, सूझना–दे० 'हरा दिखाई पड़ना'।

हराना–स० क्रि० युद्ध, लड़ाई-झगड़े, प्रतिद्वंद्विता आदिमें शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदिको परास्त करना, पछाड़ना; थकाना।

हराम–वि० [अ०] निषिद्ध, अविहित; धर्मशास्त्रमें निषिद्ध; शरअ(इसलामी धर्मशास्त्र)के विरुद्ध, हलालका उलटा; त्याज्य; अग्राह्य; अपवित्र। पु० पापकर्म; व्यभिचार, बदकारी। –कार–पु० व्यभिचारी, बदकार। –कारी–स्त्री० व्यभिचार, बदकारी। –ख़ोर–वि० हराम चीजें खानेवाला; हरामका माल खानेवाला; घूसखोर; मुफ्तखोर; नमकहराम। –ख़ोरी–स्त्री० मुफ्तखोरी; घूसखोरी; नमकहरामी। –ज़ादा–पु० जारज, दोगला; दुष्ट, पाजी। –ज़ादी–स्त्री० दोगली स्त्री; खोटी स्त्री। मु०–कर देना–कठिन, दुःखद बना देना, नामुमकिन कर देना (जीना, खाना, सोना, हराम कर देना)। –का खाना–बिना मेहनत किये खाना, मुफ्तखोरी करना। –का जना–जो हराम, व्यभिचारके गर्भसे जनमा हो, हरामजादा। –का पिल्ला, –का बच्चा–दोगला; दुष्ट। –का पेट–व्यभिचार, अविहित संबंधसे रह जानेवाला गर्भ। –का माल–अधर्म, बेईमानीसे कमाया हुआ धन; मुफ्तका माल। –की कमाई –अधर्म, बेईमानीसे कमाया हुआ पैसा, पापकी कमाई। –की मौत मरना–जहर खाकर मरना, आत्मघात करना। –होना–कठिन, दुःखद, नामुमकिन होना; त्याज्य होना (रोजा हराम होना)।

हरामी–वि० [अ०] हरामका जना; दुष्ट, पाजी।

हरारत–स्त्री० [अ०] गर्मी; हलका ज्वर; (ला०) जोश।

हरावर*–पु० दे० 'हरावल'।

हरावरि*–स्त्री० दे० 'हड़ावरि'।

हरावल–पु० [तु०] सेनाका अग्रभाग; ठगोंका मुखिया।

हरास–पु० ह्रास; विषाद, दुःख; नैराश्य–'धनुष तोरि हरि सबकर हर्‍यो हरास'–बरवै रामा०; दुर्घटनाका भय, आशंका; डर।

हराहर*–पु० दे० 'हलाहल'।

हराहरि*–स्त्री० थकावट, क्लांति–'सुठि अंग हराहरि खोइ गयी'–उ० राम०।

हरि–वि० [सं०] हरा; हरापन लिये पीला; पिंगल; पीत। पु० विष्णु; इंद्र; शिव; ब्रह्मा; यम; सूर्य; चंद्रमा; मनुष्य; प्रकाशकी किरण; अग्नि; वायु; सिंह; सिंह राशि; अश्व; गीदड़; इंद्रका घोड़ा; बंदर; बनमानुस; हंस; कोयल;

मेढ़क; साँप; मोर–'हरि (बादल) गर्जन सुनि हरि (मेढक) बोलेला, हरिक सबद सुन हरि (साँप) चलेला। हरि (मोर) बिचहिं मिलल, हरि हरिके लिलल; हरिक परतापसे हरि बचेला'; तोता; कृष्ण; राम; भर्तृहरि; शुक्र; एक पर्वत; एक लोक; एक वर्ष, भूभाग। **–कथा**–स्त्री० विष्णुके अवतारोंके चरित्रोंका वर्णन। **–कीर्तन**–पु० हरि–विष्णुके अवतारों आदि–का गुणगान। **–गण**–पु० घोड़ोंका झुंड। **–गिरि**–पु० एक पर्वत। **–गीतिका**–स्त्री० एक वृत्त। **–चंदन**–पु० पाँच देवतरुओंमेंसे एक; पीला चंदन। **–चाप**–पु० इंद्रधनुष्। **–जन**–पु० भगवानका सेवक; अछूत जातिका व्यक्ति (आधु०)। **–जान***–पु० विष्णुवाहन, गरुड़। **–तालिका**–स्त्री० दूर्वा; भाद्र-शुक्ला तृतीया, जिस दिन स्त्रियाँ तीजका पर्व मनाती हैं। **–तुरंगम, –तुरग**–पु० इंद्रका घोड़ा। **–दास**–पु० विष्णुभक्त। **–दिक्(श्)**–स्त्री० इंद्रकी दिशा, पूरब दिशा। **–द्वार**–पु० हृषीकेशके पासका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। **–द्विट्(ष्)**–पु० असुर। **–धनुष्**–पु० इंद्रधनुष्। **–धाम(न्)**–पु० वैकुंठ। **–नख**–पु० सिंहका नख; बाघके नखवाला तावीज जो बच्चोंको पहनाया जाता है। **–नग***–पु० सर्पमणि। **–नाथ**–पु० हनुमान्। **–पद**–पु० वैकुंठ। **–पर्ण**–वि० हरी पत्तियोंवाला। पु० मूली। **–पर्वत**–पु० एक पहाड़। **–पुर**–पु० वैकुंठ। **–प्रिय**–वि० विष्णुको प्रिय। पु० कदंब; बंधूक; विष्णुकंद; शंख; उशीर; मूर्ख; पागल आदमी; रक्त या कृष्ण चंदन। **–प्रिया**–स्त्री० लक्ष्मी; पृथ्वी; तुलसी; सुरा। **–बीज**–पु० हरताल। **–बोधिनी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशी। **–भक्त**–पु० भगवान्का भक्त, हरिसेवक। **–भक्ति**–स्त्री० भगवान्की भक्ति। **–भुक्(ज्)**–पु० (मेढक खानेवाला) सर्प। **–मंदिर**–पु० विष्णुमंदिर। **–मणि**–पु० सर्पका मणि। **–मेध**–पु० अश्वमेध; विष्णु। **–यान**–पु० गरुड़। **–वंश**–पु० कृष्णका वंश; बंदरोंका वंश; एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो महाभारतका परिशिष्ट है। **–वर्ष**–पु० जंबूद्वीपका एक खंड। **–वल्लभा**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसी; जया; अधिक मासकी एकादशी। **–वास**–वि० पीत वस्त्रधारी (विष्णु)। पु० अश्वत्थ, पीपल। **–वासर**–पु० एकादशी; रविवार। **–वाहन**–पु० गरुड़; इंद्र; सूर्य। **–शयनी**–स्त्री० आषाढ़-शुक्ला एकादशी (विष्णुके सोनेका दिन)। **–संकीर्तन**–पु० विष्णुका गुणगान। **–सुत**–पु० अर्जुन; प्रद्युम्न। **–सूनु**–पु० अर्जुन। **–सौरभ**–पु० कस्तूरी। **–हय**–पु० इंद्रका घोड़ा; इंद्र; सूर्य; स्कंद; गणेश। **–हर**–पु० विष्णु और शिव। **–हर-क्षेत्र**–पु० एक तीर्थस्थान जो सोनपुर(बिहार)में है और जहाँ कार्त्तिकी पूर्णिमाको बहुत बड़ा मेला लगता है।

हरि*–अ० धीरे। **–हरि**–अ० धीरे-धीरे, आहिस्ते-आहिस्ते।

हरिअर*–वि० हरा।

हरिअराना†–अ० क्रि० हरा होना।

हरिअरी*–स्त्री० हरियाली, हरी वनस्पतिका ढेर, हरी घास, हरे पेड़-पौधोंकी राशि; हरा रंग।

हरिआना*–अ० क्रि० हरे रंगका होना, हरा होना; थकानका दूर होना, ताजा होना; आनंदित, प्रसन्न होना।

हरिआली–स्त्री० दे० 'हरिअरी'।

हरिचंद*–पु० दे० 'हरिश्चंद्र'।

हरिजाई*–वि० स्त्री० दे० 'हरजाई'।

हरिण–पु० [सं०] मृग, हिरन; शिव; विष्णु; सूर्य; नेवला; हंस; एक लोक; पीलापन लिये सफेद रंग, पांडुवर्ण। वि० पीलापन लिये सफेद, भूरा, पांडु रंगका; हरा। **–कलंक**–पु० चंद्रमा। **–चर्म(न्)**–पु० मृगछाला। **–धामा(न्)**–पु० चंद्रमा। **–नयना, –नयनी, –नेत्रा**–स्त्री० हरिण जैसी आँखोंवाली स्त्री। **–लक्षण, –लांछन**–पु० चंद्रमा। **–लोचना**–स्त्री० दे० 'हरिणनयनी'। **–लोलाक्षी**–स्त्री० हरिण जैसी चंचल आँखोंवाली स्त्री। **–हृदय**–वि० हरिणके समान भीरु हृदयवाला, बुजदिल।

हरिणांक–पु० [सं०] चंद्रमा।

हरिणाक्षी–स्त्री० [सं०] दे० 'हरिणनयना'।

हरिणाधिप–पु० [सं०] सिंह।

हरिणारि–पु० [सं०] सिंह।

हरिणी–स्त्री० [सं०] मादा हरिण, मृगी; हरिद्रा; हरा रंग; स्वर्णजूथी, सोनजुही; मंजिष्ठा, मजीठ; स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक जिसे चित्रिणी कहते हैं; तरुणी, युवती; सुंदरी स्त्री; एक वर्णवृत्त; स्वर्णप्रतिमा। **–दृशी, –नयना**–स्त्री० मृगी जैसे नेत्रोंवाली स्त्री।

हरिणेश–पु० [सं०] सिंह।

हरित–वि० [सं०] हरा; ताजा; भूरा; पीला; गहरा नीला। पु० हरा रंग; भूरा रंग; इन रंगोंका पदार्थ। सोना; सब्जी आदि; पांडु रोग। **–कपिश**–वि० पीलापन लिये भूरा। **–गोमय**–पु० ताजा गोबर। **–धान्य**–पु० कच्चा अन्न (जो अभी पका न हो)। **–नेमी(मिन्)**–वि० जिसके रथके पहिये सुवर्णके हों (शिव)। **–प्रभ**–वि० जिसका रंग पीला पड़ गया हो, पांडु। **–भेषज**–पु० कमला रोगकी दवा। **–मणि**–पु० मरकत।

हरिताश्म(न्)–पु० [सं०] मरकत मणि, पन्ना; तूतिया।

हरितोपल–पु० [सं०] मरकत।

हरित्–वि० [सं०] हरा; पीला; पिंगल; हरा मिश्रित पीला। पु० हरा रंग; पीला रंग; पिंगल वर्ण; सूर्यका एक घोड़ा; मरकत; विष्णु; सूर्य; सिंह; मूँग; घास। स्त्री० हलदी; दिशा; तृण, घास। **–पति**–पु० दिक्पति। **–पर्ण**–पु० मूली।

हरिदंबर–वि० [सं०] पीला या हरा वस्त्र धारण करनेवाला।

हरिद्र–पु० [सं०] पीला चंदन।

हरिद्रा–स्त्री० [सं०] हलदी; हलदीका चूर्ण; एक नदी। **–गणपति, –गणेश**–पु० 'तंत्रसारोक्त' एक प्रकारके पीत रंगके गणेश। **–प्रमेह, –मेह**–पु० एक प्रकारका प्रमेह, जिसमें जलनके साथ पीला पेशाब होता है। **–राग**–वि० जिसका प्रेम हलदीके रंगकी तरह अस्थायी हो। पु० अस्थायी प्रेम।

हरिद्राभ–वि० [सं०] हलदीके रंगका, पीला।

हरिन–पु० कुरंग, मृग; (क्लोरिन) पीले तथा हरेसे रंगकी दुर्गंधियुक्त गैस, जो वजनदार भी होती है।

हरिनाकुस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरिनाक्ष, हरिनाच्छ*–पु० दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरिनीदृग-वि० स्त्री० मृगनैनी (उदा० 'हरैं हरैं') ।

हरिन्मणि-पु० [सं०] मरकत मणि, पन्ना ।

हरिमा (मन्)-स्त्री० [सं०] पीलापन, पांडुता; हरापन ।

हरियर*-वि० दे० 'हरिअर' ।

हरियराना*-अ० क्रि० दे० 'हरिअराना' ।

हरियाई*-स्त्री० दे० 'हरियाली' ।

हरियाथोथा-पु० तूतिया ।

हरियाना-अ० क्रि० दे० 'हरिआना' । पु० बाँगड़ देश ।

हरियानी†-स्त्री० हिंदीकी एक बोलीका नाम; बाँगड़ू, जाटू बोली ।

हरियाली-स्त्री० दे० 'हरिआली' । मु०-सूझना-(प्रायः भ्रमसे) सुख ही सुखका आभास होना ।

हरिल†-पु० हारिल पक्षी ।

हरिश्चंद्र-पु० [सं०] त्रेतायुगके सूर्यवंशके २८ वें राजा (ये त्रिशंकुके पुत्र थे और अपनी उदारता तथा सत्यवादिताके लिए प्रसिद्ध थे) ।

हरिस-स्त्री० हलकी वह लंबी लकड़ी जिसका एक सिरा हलकी फालवाली मोटी लकड़ीसे संबद्ध होता है और दूसरा बैलोंके जुएसे ।

हरिसिंगार-पु० हरसिंगार, परजाता ।

हरिहाई*-वि० स्त्री० दे० 'हरहाई' । स्त्री० पशुओंकी परेशान करनेवाली प्रवृत्ति ।

हरी-स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त; बंदरोंकी माता; * जमींदारको दी जानेवाली हलकी बेगार । * पु० दे० 'हरि' ।

हरीक्षणा-स्त्री० [सं०] मृगनयनी ।

हरीत-पु० दे० 'हारीत' ।

हरीतकी-स्त्री० [सं०] हड़, हर्रका पेड़; इस पेड़का फल ।

हरीतिमा-स्त्री० हरा रंग, हरियाली ।

हरीफ़-पु० [अ०] हमपेशा; प्रतिद्वंद्वी; लड़नेवाला, शत्रु ।

हरीरा-पु० [अ०] प्रसूताके लिए हलदी, सोंठ, पंचमेवा आदि गुड़में पकाकर बनाया जानेवाला पेय, अछवानी । † वि० हरा; * प्रसन्न, ताजा ।

हरीश-पु० [सं०] बानरोंका राजा, सुग्रीव; हनुमान् ।

हरीषा-स्त्री० [सं०] मांसका एक व्यंजन ।

हरीस-स्त्री० दे० 'हरिस' । वि० [अ०] हिर्स करनेवाला, लोभी, लालची; पेटू ।

हरुअ, हरुआ, हरुवा*-वि० हलका ।

हरुआई, हरुवाई*-स्त्री० हलकापन ।

हरुआना*-अ० क्रि० हलका होना; जल्दी करना ।

हरुए*-अ० धीरे-धीरे, हलके-हलके ।

हरू*-वि० दे० 'हरुअ' ।

हरूफ़-पु० [अ०] 'हर्फ़'का बहुवचन ।

हरैं*-अ०दे० 'हरुए' । -हरैं-अ० धीरे-धीरे,हौले-हौले ।

हरे*-अ० आहिस्ते, धीरे, हौले । -हरये*-अ० धीरे-धीरे, हौले-हौले ।-हरे-अ० राम! राम!!; * धीरे-धीरे ।

हरेक-वि० दे० 'हर-एक' ।

हरेरी*-स्त्री० हरिअरी, सब्जी ।

हरेव*-पु० मंगोल जाति; मंगोल देश ।

हरेवा-पु० हरे रंगका एक पक्षी ।

हरैं*-अ० दे० 'हरे' । -हरैं-* अ० धीरे-धीरे-'सापनेमें बिछुरे हरि हेरि हरैंइ हरैं हरिनीदृग रोवैं'-भाववि० ।

हरैना-पु० हलका वह भाग जिसमें नीचेकी ओर फाल लगाते हैं; बैलगाड़ीका वह भाग जो सामनेकी ओर निकला रहता है ।

हरैया*-पु० हरण करनेवाला, दूर करनेवाला ।

हरोल, हरौल*-पु० दे० 'हरावल' ।

हरौती-स्त्री० दे० 'हलवत' ।

हर्ज-पु० दे० 'हरज' ।

हर्तव्य-वि० [सं०] हरण करने योग्य ।

हर्ता(र्तृ)-पु० [सं०] हरण करनेवाला; ले जानेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; डाकू; चोर; काटकर अलग करनेवाला; कर लगानेवाला (राजा) ।

हर्फ़-पु० [अ०] अक्षर, वर्ण; शब्द, बात (शिकायतका हर्फ़); अव्यय, प्रत्यय (व्या); दोष, ऐब ।

हर्ब-पु० [अ०] युद्ध । -गाह-पु०, स्त्री० युद्धभूमि ।

हर्बा-पु० दे० 'हरबा' ।

हर्म्य-पु० [सं०] बहुत बड़ा मकान, महल, प्रासाद ।

हर्र-स्त्री०, **हर्रा**-पु०, **हर्रे**-स्त्री० हरीतकी । मु० हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाय-बेखर्चके काम बन जाय ।

हर्रैया-पु० हर्रे जैसे दानोंवाला हाथका एक गहना; कंठेके छोरोंपरका दाना ।

हर्ष-पु० [सं०] प्रिय वा इष्ट वस्तु, व्यक्ति आदिके देखने, उनके विषयमें सुनने, पढ़ने आदिसे उत्पन्न होनेवाला एक सुखात्मक भाव, आनंद, प्रसन्नता; रोमांच, रोंगटोंका खड़ा होना; एक संचारी भाव (सा०); कामोत्तेजना; दे० 'हर्षवर्द्धन' । -कर,-कारक-वि० प्रसन्न करनेवाला । -गद्गद-वि० जिसकी आवाज आनंदसे भर्रायी हुई हो, गद्गदकंठ । -चरित-पु० बाणभट्टरचित एक गद्यकाव्य जिसमें सम्राट् हर्षवर्द्धनका चरित वर्णित है । -ज-वि० हर्षसे उत्पन्न । पु० शुक्र । -दान-पु० आनंदपूर्वक दिया हुआ दान । -ध्वनि-स्त्री०,-नाद-पु० आनंदातिरेकसे की जानेवाली आवाज । -वर्द्धन,-वर्धन-वि० हर्षको बढ़ानेवाला, आनंदवर्धक । पु० विक्रमकी सातवीं शतीमें होनेवाले भारतके अंतिम सम्राट् (चीनी यात्री हुएन्त्सांग इन्हींके राजत्वकालमें आया था । ये स्वयं कवि थे और सुप्रसिद्ध संस्कृतकवि बाणभट्टके आश्रयदाता थे) । -विवर्धन-वि० आनंद बढ़ानेवाला । -विह्वल-वि० आनंदविभोर । -समन्वित-वि० आनंदयुक्त । -स्वन-पु० आनंदध्वनि ।

हर्षक-वि० [सं०] आनंददायक, प्रसन्न करनेवाला । पु० एक पर्वत; चित्रगुप्तका एक पुत्र ।

हर्षण-वि० [सं०] आनंददायक, प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला । पु० प्रसन्न होना; (रोंगटोंका) खड़ा होना; आनंद; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक ।

हर्षना*-अ० क्रि० आनंदित होना, प्रसन्न होना ।

हर्षमाण-वि० [सं०] हर्षयुक्त, प्रसन्न ।

हर्षातिशय-पु० [सं०] आनंदातिरेक ।

हर्षाना*-अ० क्रि० दे० 'हर्षना' । स० क्रि० आनंदित,

प्रसन्न करना।

हर्षान्वित; हर्षाविष्ट–वि० [सं०] आनंदयुक्त, प्रसन्न।

हर्षाश्रु–पु० [सं०] आनंदसे निकले हुए आँसू, आनंदाश्रु।

हर्षित–वि० [सं०] आह्लादित, प्रसन्न; प्रसन्न किया हुआ।

हर्षोत्फुल्ललोचन–वि० [सं०] जिसके नेत्र आनंदसे खिले हुए हों।

हलंत–वि०[सं०]जिसके अंतमें स्वररहित व्यंजन वर्ण हो।

हल–पु० [सं०] खेत जोतनेका एक औजार, लांगल; भूमिकी एक माप; एक शस्त्र। **–कुकुद्**–पु० हलका वह भाग जिसके नीचेके हिस्सेमें फाल जड़ते हैं। **–ग्राही(हिन्)**–वि० हल चलानेवाला। **–जीवी(विन्)**–वि० हलके सहारे जीविका चलानेवाला। **–जुता**–पु० [हिं०] हल जोतनेवाला किसान, साधारण कृषक; गँवार आदमी। **–दंड**–पु० हरिस। **–धर**–पु० बलराम। **–पाणि**–पु० बलराम। **–भृति**–स्त्री० कृषिकर्म, किसानी। **–भृत्**–पु० हलधर। **–मार्ग**–पु० जुताईसे बनी हुई लकीर, कूँड़। **–मुख**–पु० फाल। **–वंश**–पु० हरिस। **–वाह**–पु० [हिं०] हल जोतनेका काम करनेवाला। **–वाहा**–पु० [हिं०] हलवाह।

हल–पु० [अ०] खुलना, सुलझाव; कठिनाईका दूर होना; घुलना; गणितकी प्रक्रिया; सवालका जवाब। मु० **–करना**–सुलझाना, घोंटना, पीसकर मिलाना; सवालका जवाब निकालना, पहेली बूझना।

हलकंप–पु० दे० 'हड़कंप'।

हलक़–पु० [अ० 'हल्क़'] गला, कंठ; गरदन। मु० **–का दरबान**–खाने-पीनेमें रोक-टोक करनेवाला; बोलनेसे रोकनेवाला। **–तक भरना**–ठूँस-ठूँसकर खाना। **–पर छुरी फेरना**–दे० 'गलेपर छुरी फेरना'। **–से उतरना**–गलेसे उतरना; मनमें बैठना।

हलकई†–स्त्री० हलकापन; छोटापन; अप्रतिष्ठा।

हलकन*–स्त्री० हिलने-डुलनेकी क्रिया।

हलकना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना, पानीका हिलकोरा मारना।

हलका–वि० कम वजनवाला, जो भारी न हो; मात्रामें थोड़ा, कम; मामूली, कम मूल्यवाला; पतला, अधिक जल या अन्य तरल वस्तु मिला हुआ; कम सांघातिक, जो (प्रहार) तेज या अधिक कष्टप्रद न हो; मंद, मामूली; महीन, पतला, झीना; एकदम खाली, छूँछा; ताजा, थकानरहित, श्रांतिहीन; कमीना, नीच, ओछा; निंदित, अप्रतिष्ठित; कम परिश्रममें ही हो जानेवाला, सहल; अनुपजाऊ; जो गाढ़ा, गहरा, चटकीला न हो, ओछा। **–पन**–पु० हलका होनेका भाव, भार न होना; तुच्छता, ओछापन; बुराई; कमीनापन; अपमान, बेइज्जती।

हलक़ा–पु० [अ०] घेरा, मंडल; वृत्ताकार वस्तु; मंडली; पहिया; पहियेका हाल; लोह या लकड़ीका गोल कुंडा; गाँवों आदिका मंडल जो किसी विशेष कर्मचारी या अधिकारीका कार्यक्षेत्र हो। मु० **–बाँधना**–घेरा डालना।

हलकान†–वि० दे० 'हलाकान'।

हलकाना†–स० क्रि० हलका करना; किसी तरल वस्तुको हिलाना-डुलाना, हलकोरना। अ० क्रि० हलका होना।

हलकारा*–पु० दे० 'हरकारा'।

हलकोरा†–पु० जलकी तरंग, लहर, हिलोरा।

हलचल–स्त्री० किसी अनिष्ट घटना, अवसर आदिके उपस्थित होनेपर होनेवाला लड़ाई-झगड़ा, भाग-दौड़, शोरगुल, तोड़-फोड़ आदि; अराजकता, उपद्रव, हड़कंप; (तरल पदार्थकी) अस्थिरता, हिलने-डोलनेकी क्रिया। मु० **–डालना**–उथल-पुथल मचाना, अराजकता, अव्यवस्था उत्पन्न करना। **–पड़ना**–उपद्रव, अराजकताका होना। **–मचना**–दे० 'हलचल पड़ना'। **–मचाना**–दे० 'हलचल डालना'।

हलदिया–पु० एक रोग जिससे आँख और सारा शरीर पीला पड़ जाता है, कँवल रोग; एक प्रकारका विष।

हलदी–स्त्री० एक प्रकारका पौधा जिसकी जड़में होनेवाली पीले रंगकी गाँठ मसाले, रंग और औषधके काममें आती है। मु० **–उठना, –तेल उठना**–विवाहके कुछ दिन पहले वर और कन्याको हलदी और तेल मिला उबटन लगानेकी रस्म। **–का हाथ होना**–विवाह होना। **–चढ़ना**–दे० 'हलदी उठना'। **–लगना**–विवाह होना। **–लगाकर बैठना**–कोई काम न करना; अपनेको बहुत कुछ समझना।

हलद्दी–स्त्री० [सं०] हरिद्रा, हलदी।

हलना*–अ० क्रि० हिलना, अस्थिर होना; प्रविष्ट होना।

हलफ़–पु० [अ०] शपथ, कसम। **–दरोग़ी**–स्त्री० झूठी शपथ लेना। **–नामा**–पु० लिखा हुआ हलफी बयान। मु० **–उठाना, –लेना**–कसम खाना, कुरान या गंगाजल लेकर कहना।

हलफ़न्–अ० [अ०] हलफकी रूसे, शपथ-पूर्वक।

हलफा–पु० लहर; ऊँची तरंग; तेज साँस। मु० **–चलना**–बहुत तेज साँस चलना (बच्चोंका हब्बा-डब्बासे ग्रस्त होना)। **–मारना**–ऊँची-ऊँची तरंगोंका पछाड़ खाना।

हलफ़ी–वि० [अ०] हलफ लेकर कहा, दिया हुआ (–बयान)।

हलब–पु० [अ०] शामका एक नगर जहाँका शीशा पुराने समयमें प्रसिद्ध था।

हलबल*–स्त्री० हलचल, खलबली।

हलबी–वि० [अ०] हलबका। पु० हलबका आईना, बढ़िया मोटे दलका शीशा।

हलब्बी–पु० दे० 'हलबी'।

हलबलाना*–अ० क्रि० घबड़ाना। स० क्रि० दूसरोंको घबड़ाहटमें डालना।

हलबली*–स्त्री० दे० 'हलबल'।

हलभल*–स्त्री० दे० 'हलबल'।

हलभली*–स्त्री० हलचल।

हलराना–स० क्रि० छोटे बच्चोंको हाथपर या गोदमें लेकर उन्हें प्यार करने, चुप कराने, सुलाने आदिके लिए हिलाना।

हलवत–स्त्री० वर्षमें पहली बार खेतमें हल ले जानेकी रस्म, हरौती।

हलवा–पु० [अ०] एक मिष्ठान्न जो सूजी या आटेको घीमें भूनकर पानी या दूधमें शकर देकर पकानेसे बनता है,

मोहनभोग; (ला०) तर और मुलायम चीज; बहुत आसान काम (हलवा समझना)। **–सोहन**–पु० घी-मैदेके योगसे बननेवाली एक मशहूर मिठाई। **मु०–निकल जाना**–कचूमर निकल जाना; गत बन जाना।**–निकाल देना**–पीटकर गत बना देना। **(अपने) हलवे माँडेसे काम होना**–केवल अपना भला, अपना मतलब देखना, दूसरेके हानि-लाभकी परवाह न करना।

हलवाई–पु० [अ०] हलवा बनाने-बेचनेवाला, मिठाई बनाने-बेचनेवाला, मोदककार।

हलहलाना†–स० क्रि० घुसेड़ना; झटकेसे हिलाना, झकझोरना; तरल पदार्थ भरे पात्र या वस्तुको झकझोरना, हिलाना। अ० क्रि० काँपना।

हला–स्त्री० [सं०] सखी; पृथ्वी; जल; मदिरा। अ० सखीको संबोधित करनेका एक शब्द (ना०)। * पु० हल्ला।

हलाक–पु० [अ०] मौत; तबाही; बरबादी। वि० इच्छुक। **मु०–होना**–मरना; तबाह होना।

हलाकान†–वि० हैरान, परेशान।

हलाकानी†–स्त्री० हैरानी, परेशानी।

हलाकू–वि० [अ०] वधिक, घातक।

हलाना*–स० क्रि० दे० 'हिलाना'; धसाना।

हलाभला–पु० निबटारा, तै-तमाम; नतीजा, फल।

हलायुध–पु० [सं०] बलराम।

हलाल–वि० [अ०] 'हराम'का उलटा, विहित, जायज; शरअके अनुकूल; जिसका ग्रहण, भोग विहित हो। पु० शरई रीतिसे पशु-वध। **–ख़ोर**–पु० भंगी, मेहतर। **–ख़ोरी**–स्त्री० हलालखोरका काम; हलालखोरकी स्त्री। **मु०–करके खाना**–मेहनत करके, बदलेमें पूरा काम करके खाना। **–करना**–पशुका शरअकी विधिसे वध करना, जबह करना; गला काटना; यंत्रणा देना; बदलेमें पूरा काम कर देना, स्वकर्तव्यका पालन करना। **–का**–जायज, वैध (संतान), हरामका उलटा।**–की कमाई**–ईमानदारी, मेहनतसे कमाया हुआ पैसा।

हलाहल–पु० [सं०] एक तरहका भीषण विष, कालकूट; समुद्रमंथनसे प्राप्त एक भयंकर विष; एक विषैला पौधा।

हली(लिन्)–पु० [सं०] किसान; बलराम।

हलीम–वि० [अ०] सहनशील, धीर; शांत।

हलुआ, हलुवा†–पु० दे० 'हलवा'।

हलुक, हलुका*–वि० दे० 'हलका'।

हलोर*–स्त्री० हिलोर, लहर।

हलोरना–स० क्रि० जल अथवा अन्य तरल पदार्थको हाथसे हिलाना, चंचल करना; सूप या अन्य पात्रमें अन्न अथवा दूसरी वस्तुओंको रखकर उन्हें इस प्रकार पछोड़ना कि उनका खोखला अंश अलग हो जाय; बहुत सहूलियतके साथ अधिक परिमाणमें द्रव्य प्राप्त करना (व्यंग्य)।

हलोरा*–पु० दे० 'हलोर'।

हल्–पु० [सं०] स्वरहीन व्यंजन, विशुद्ध व्यंजन [ऐसे व्यंजनके नीचे एक विशेष चिह्न (्) दिया जाता है]।

हल्क़–पु० [अ०] दे० 'हलक़'।

हल्का–वि० दे० 'हलका'।

हल्दी–स्त्री० दे० 'हलदी'।

हल्य–वि० [सं०] हल-संबंधी; जोती हुई; जोतने योग्य (जमीन); विरूप, भद्दा।

हल्ला–पु० अनेक आदमियोंकी बातचीत, लड़ाई-झगड़े आदिसे हुई सम्मिलित स्वरध्वनि, शोर-गुल; ललकार; धावा, हमला। **–गुल्ला**–पु० शोर-गुल, कोलाहल। **मु०–बोलना**–ललकारकर धावा करना। **–मचना**–शोर होना। **–मचाना**–शोर करना।

हल्लीश–पु० [सं०] स्त्रियोंका मंडलाकार नृत्य जिसमें एक पुरुष और कई स्त्रियाँ होती हैं; अठारह उपरूपकोंमेंसे एक जिसमें नृत्य-गानकी प्रधानता होती है।

हल्लीशक–पु० [सं०] स्त्रियोंका मंडलाकार नृत्य।

हवन–पु० [सं०] मंत्र पढ़कर किसी देवताके लिए अग्निमें आहुति देना, होम; अग्नि या अग्निदेव; हवनकुंड; स्रुवा; होम करना।

हवनीय–वि० [सं०] आहुतिके रूपमें दिये जाने योग्य।

हवलदार–पु० फौजका एक छोटा अफसर जिसके मातहत कुछ सिपाही होते हैं; बादशाही जमानेका एक कर्मचारी जो कर-संग्रह आदिका निरीक्षण करता था।

हवस–स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह; उमंग; शौक; लालच; दिलेरी; खब्त; झूठा प्रेम। **मु०–निकलना**–हौसला पूरा होना। **–निकालना**–उमंग पूरी करना। **–पकाना**–किसी इच्छाकी पूर्तिके लिए मन ही मन मंसूबे बाँधना। **–बुझना**–उमंग शांत होना।

हवा–स्त्री० [अ०] एक तत्त्व जो भूमंडलको चारों ओरसे घेरे हुए है और कुछ गैसों–विशेषकर आक्सीजन और नाइट्रोजन–के मेलसे बना है, समीर, वायु; साँस; गोज; भूत, प्रेतादि; लालच; खाहिश, अरमान; धुन; ख्याति; साख; संबंधजन्य प्रभाव; जमाना; अफवाह; चकमा; आडंबर; (ला०) बहुत हलकी वस्तु। **–ख़ोरी**–स्त्री० टहलना (वायुसेवन)। **–चक्की**–स्त्री० हवासे चलनेवाली चक्की। **–दार**–वि० जहाँ खूब हवा आती हो; खैरखाह। पु० अमीरोंके काम आनेवाली एक तरहकी सवारी जिसे कहार ढोते हैं। **–पानी**–पु० आबहवा। **–बाज़**–पु० वायुयानचालक। **–रोक**–वि० (एयर-टाइट) जिसमेंसे होकर या जिसके द्वारा हवा न आ-जा सके। **मु०–उखड़ना**–बाजारमें साख न रहना। **–उड़ना**–किसी समाचारका प्रसारित होना, अफवाह फैलना।**–उड़ाना**–झूठी बातका प्रचार करना, अफवाह फैलाना; गोज करना। **–करना**–पंखा झलना; किसी वस्तुसे पंखेका काम लेकर हवा उत्पन्न करना। **–का गुज़र न होना**–किसीकी रसाई न होना। **–का रुख़ जानना**–परिस्थिति समझना। **–का रुख़ देखना**–जमानेका हाल समझकर काम करना। **–का रुख़ बताना**–परिस्थितिका आभास पहले ही दे देना; परिस्थितिका ज्ञान कराना।**–के घोड़ेपर आना**–बहुत तेज आना। **–के घोड़ेपर सवार होना**–बहुत जल्दीमें होना। **–के रुख जाना**–हवाकी गतिकी दिशामें जाना; जमानेके मुताबिक चलना। **–खाना**–खुली जगहमें टहलना; असफल रहना, नाकामयाब होना। **(कहींकी)–खाना**–कहीं जाना। **–खिलाना**–किसीको असफल बनाना; बहकाना, चकमा

देना। **(कहींकी)-खिलाना**-कहीं भेजना। **-गाँठमें या मुट्ठीमें बाँधना**-असंभव कामके लिए प्रयत्न करना। **-गिरना**-तेज हवाका मंद हो जाना। **-छोड़ना**-अपानवायु छोड़ना, गोज करना। **-देखना**-जमानेकी हालत समझना। **-देना**-हवा करना; हवामें रखना; मुँहसे आग या और कोई चीज फूँकना; फसाद कराना; कबूतरोंको उड़ाना। **-पलटना**-हवाका रुख बदलना; परिस्थितिका परिवर्तित होना। **-पीकर, फाँककर रहना**-निराहार रहना (व्यंग्य)। **-पीटना**-व्यर्थ ही कोई काम करना, ऐसा कोई काम करना जिसका कोई नतीजा न हो। **-फिरना**-दे० 'हवा पलटना'। **-फेँकना**-किसी वस्तुसे तेजीके साथ हवाका बाहर निकलना। **-बताना**-टालमटोल करना; टरका देना। **-बदलना**-दे० 'हवा पलटना'। **-बाँधकर जाना**-हवाकी उलटी ओर नाव खेना। **-बाँधना**-नाम करना; धाक जमाना; डींग मारना; बात बनाना। **-बिगड़ना**-वायुमंडलका दूषित होना; परिस्थिति खराब होना; किसी स्थानका रीति-रवाज बिगड़ जाना। **-भर जाना**-खुशीसे फूल जाना; घमंड होना; मतका बदल जाना। **-लगना**-हवाका मिलना, हवाका शरीरसे स्पर्श होना; वात रोगसे ग्रस्त होना; प्रेताविष्ट होना; दिमाग फिरना; प्रभावमें आना। **(कहींकी)-लगना**-किसी स्थानसे विशेष प्रेम होना। **(किसीकी)-लगना**-किसीके संसर्गका प्रभाव पड़ना, संसर्गजन्य दोष आना। **-से बातें करना**-हवाकी तरह तेज दौड़ना; आप ही आप बड़बड़ाना। **-से लड़ना**-झगड़ा करनेके लिए मौका ढूँढ़ना; अकारण झगड़ा करना। **-हो जाना**-बहुत तेजीसे भागना; गायब हो जाना।

हवाई-वि० हवासे संबद्ध, वायु-संबंधी; हवाको चीरकर चलनेवाला; तीव्र गतिवाला; चालाक; आवारा; डींग मारनेवाला; कल्पित, व्यर्थ। स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी, अगिनबान; ऊपरी आमदनी; बेहूदा बात; अफवाह; नकली वस्तु। **-अड्डा**-पु० (एरोड्रोम) हवाई जहाजोंके उतरने, रुकने या प्रस्थान करनेका स्थान। **-आँख**-स्त्री० वह आँख जो एक जगह न रहे। **-क़िला,-महल**-पु० खयाली पुलाव, मनोराज्य। **-ख़बर,-बात**-स्त्री० अफवाह। **-जहाज़**-पु० वायुयान। **-डाक**-स्त्री० वायुयानसे जानेवाली डाक। **-तोपची**-पु० (एयर गनर) हवाई जहाजपर रखी हुई तोप चलानेवाला कर्मचारी। **-पत्रचित्र**-पु० (एयरग्राफ) हवाई डाक द्वारा प्रेषित करनेके लिए चिट्ठियों आदिका पहलेसे ले लिया गया चित्र, डाकीय लघुचित्र। **-फ़ैर**-पु० डराने आदिके लिए सिर्फ बारूद भरकर या ऊपरकी ओर किया जानेवाला फैर। **-बंदूक**-स्त्री० नकली बंदूक। **-मार्ग,-रास्ता**-पु० वायुयानके गमनागमनका मार्ग। **-मुठभेड़**-स्त्री० युद्धक विमानोंकी भिड़ंत। **-युद्ध**-पु०,**-लड़ाई** स्त्री० वायुयानोंसे लड़ी जानेवाली लड़ाई। **-हमला**-पु० वायुयानों द्वारा होनेवाला हमला। मु० **-उड़ना**-अफवाह फैलना; मुँह फक होना। **-उड़ाना**-अफवाह फैलाना। **-गुम होना**-अक्ल गायब होना, सिटपिटाना। **-छोड़ना**-आतिशबाजी छोड़ना। **-होना**-चेहरेका रंग उड़ जाना। **(चेहरे, मुँहपर) हवाइयाँ उड़ना**-मुखका विवर्ण होना, चेहरेके रंगका फीका पड़ना।

हवाल*-पु० समाचार, खबर; अवस्था, दशा; फल।

हवालदार-पु० दे० 'हवलदार'।

हवाला-पु० [अ०] सिपुर्दगी, सौंपनेकी क्रिया; पता, निशान; पते या प्रमाणके लिए उल्लेख (देना)। मु० **-देना**-पता-निशान देना, प्रमाणके लिए (पुस्तक, पृष्ठ आदिका) उल्लेख करना। **-(ले)करना**-कब्जेमें देना, सौंपना। **-पड़ना***-कब्जेमें, बसमें आना।

हवालात-स्त्री० [अ०] पहरे-चौकीमें रखना, हिरासत; वह मकान जिसमें विचाराधीन कैदी रखे जाते हैं।

हवालाती-वि० जो हवालातमें रखा गया हो, विचाराधीन हो। पु० विचाराधीन कैदी।

हवाली-पु० [अ०] आसपासका स्थान। **-मवाली**-पु० संगी-साथी।

हवास-पु० [अ०] 'हासा'का बहु०, देखने, सुनने, चखने आदिकी शक्तियाँ, पंचज्ञानेंद्रिय; मनकी शक्तियाँ (कल्पना, विचार, स्मृति इ०); संवेदनकी शक्ति; होश, सुध। **-बाख़्ता**-वि० खब्तुलहवास, घबड़ाया हुआ, भौचक। मु० **-उड़ना,-गुम होना**-होश ठिकाने न रहना।

हवि(स्)-स्त्री० [सं०] हवनीय द्रव्य, यज्ञ, हवनमें देवताओंके लिए अग्निमें छोड़ी जानेवाली आहुतिके द्रव्य।

हविष्य-वि० [सं०] हविके उपयुक्त या उसके लिए तैयार किया हुआ; हवि पानेके योग्य (जैसे शिव)। पु० हविका द्रव्य; घी; तिन्नी; घी मिला हुआ चावल।

हविष्यान्न-पु० [सं०] व्रत आदिके अवसरोंपर खाये जानेवाले पवित्र पदार्थ।

हविस†-स्त्री० दे० 'हवस'।

हवेली-स्त्री० [अ०] चारदीवारीवाला मकान; बड़ा और पक्का मकान, महल।

हव्य-वि०[सं०] यज्ञमें आहुतिके रूपमें छोड़े जाने योग्य। पु० यज्ञमें किसी देवताके लिए दी जानेवाली आहुति; आहुति; घृत। **-कव्य**-पु० क्रमशः देवताओं तथा पितरोंको दी जानेवाली आहुति। **-भुक्(ज्)**-पु० अग्नि।

हव्याद-वि० [सं०] हव्य खानेवाला।

हव्याश, हव्याशन-पु० [सं०] हुताशन, अग्नि।

हश्र-पु० [अ०] प्रलय, कयामत; कोलाहल; उपद्रव।

हसद-पु० [अ०] दूसरेकी अच्छी हालत देखकर जलना, कीना, डाह, ईर्ष्या।

हसन-पु० [सं०] हँसनेकी क्रिया; मजाक। वि० [अ०] भला, नेक; सुंदर। पु० अलीके बड़े बेटेका नाम।

हसनीय-वि० [सं०] हँसने योग्य; उपहास योग्य।

हसरत-स्त्री० [अ०] खेद, दुःख; वस्तुकी अप्राप्तिका दुःख; चाह, अरमान, लालसा। **-भरा**-वि० लालसाओंसे भरा हुआ। मु० **-करना**-इच्छा करना, चाहना। **-टपकना**-हसरत जाहिर होना। **-निकलना**-लालसा पूरी होना। **-निकालना**-अरमान निकालना। **-बरसना**-विषादकी व्यंजना होना; नैराश्य प्रकट होना। **-बाकी रहना**-अरमान पूरा न होना।

हसित–वि० [सं०] हँसा या हँसता हुआ; जो हँसा है; विकसित; जो हँसा गया है। पु० हास्य; परिहास।

हसिता(तृ)–वि० [सं०] हँसनेवाला।

हसीन–वि० [अ०] सुंदर, हुस्नवाला; प्यारा, लुभावना।

हस्त–पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ–चौबीस अंगुल–की एक माप; हाथीकी सूँड़; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; एक नक्षत्र। **–कला**–स्त्री० (मैनुअल आर्ट) हाथसे किया गया कलात्मक काम, हस्त-कौशल। **–कार्य**–पु० हाथसे किया जानेवाला काम, दस्तकारी। **–कौशल**–पु० हाथका काम करनेकी कुशलता। **–क्रिया**–स्त्री० दस्तकारी; हस्तमैथुन। **–क्षेप**–पु० दूसरोंकी बात या काममें दखल देना, दस्तंदाजी। **–गत**–वि० हाथमें आया हुआ, अधिकृत, प्राप्त। **–ग्रह**–पु० पाणिग्रहण, विवाह। **–चापल्य**–पु० हस्तकौशल, हाथकी सफाई। **–चालन**–पु० हाथ हिलाना, हाथसे संकेत करना। **–तल**–पु० हथेली। **–त्राण**–पु० अस्त्रादिसे हाथकी रक्षाके लिए धारण किया जानेवाला दस्ताना। **–दीप**–पु० हाथकी लालटेन। **–दोष**–पु० नाप या तौलमें चोरी करनेका दोष; हाथसे होनेवाली भूल। **–धारण**–पु० हाथ पकड़कर सहारा देना; आघातका निवारण करना; पाणिग्रहण। **–पाद**–पु० हाथ-पैर। **–पुस्तिका**–स्त्री० (मैनुअल) हाथमें आसानीसे आ जाने लायक, छोटी-सी पुस्तक; किसी लंबे-चौड़े विषयपर सार रूपमें लिखी गयी लघु पुस्तक। **–पृष्ठ**–पु० हथेलीका पृष्ठभाग। **–प्रद**–वि० सहारा देनेवाला। **–प्राप्त**–वि० हस्तगत। **–मणि**–पु० कलाईपर पहना जानेवाला रत्न। **–मुद्रा**–स्त्री० नृत्यमें हाथकी भाव-सूचक विशेष स्थिति। **–मैथुन**–पु० शिश्नका हाथसे संचालन कर वीर्यपात करना। **–रेखा**–स्त्री० हथेलीपरकी रेखाएँ (जिनके आधारपर शुभाशुभ फल निकालते हैं)। **–लक्षण**–पु० हस्तरेखाओंका शुभाशुभ फल। **–लाघव**–पु० हाथकी फुर्ती, हाथकी कुशलता; हाथकी सफाई, बाजीगरी। **–लिखित**–वि० हाथका लिखा हुआ (ग्रंथादि)। **–लिपि**–स्त्री० हाथकी लिखावट, हस्तलेख। **–लेख**–पु० हाथकी लिखावट, चित्रादि। **–विज्ञापनक**–पु०(हैंडबिल) सिनेमा, सरकस आदि या किसी दवा, सार्वजनिक सभा इत्यादिका वह छोटा विज्ञापन जो इधर-उधर हाथसे वितरित किया जाय। **–विन्यास**–पु० हाथोंकी स्थिति। **–विषमकारी(रिन्)**–वि० हाथकी कुशलतासे बाजी जीतनेवाला। **–श्रम**–पु० (मैनुअल लेबर) हाथकी मेहनत, शारीरिक परिश्रम, व्रात। **–संवाहन**–पु० हाथसे रगड़ना, मालिश करना या दबाना। **–सिद्धि**–स्त्री० हाथसे किया जानेवाला काम; हाथका श्रम। **–सूत्र, –सूत्रक**–पु० विवाहके अवसरपर बाँधा जानेवाला मंगलसूत्र।

हस्तक–पु० [सं०] हाथ; एक हाथकी माप; हाथोंकी स्थिति; हस्तमुद्रा; ताल (संगीत); ताली; करताल नामका बाजा।

हस्तांकित ऋणपत्र–पु० [सं०] (हैंडनोट) ऋण लेते समय हाथसे लिखा गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि ऋण लेनेवाला निर्धारित अवधिके भीतर कुल रकम ब्याज समेत चुका देगा, प्रोनोट।

हस्तांजलि–स्त्री० [सं०] हाथोंकी वह स्थिति जिसमें वे गहराई बनाते हुए मिले हों, करसंपुट।

हस्तांतर–पु० [सं०] दूसरा हाथ; दूसरे हाथमें जाना। **–पत्र**–पु० (कानवेयंस) संपत्ति आदिके हस्तांतरण-संबंधी प्रलेख।

हस्तांतरण–पु० [सं०] दूसरेके हाथमें देना; (ट्रांसफरेंस) (संपत्ति, शक्ति, अधिकार आदिका) एक व्यक्तिके हाथसे दूसरे हाथमें जाना या दिया जाना।

हस्तांतरित–वि० [सं०] दूसरेके हाथमें दिया हुआ। (ट्रांसफर्ड) (वह संपत्ति आदि) जो एकके हाथसे दूसरेके हाथमें गयी या दी गयी हो।

हस्ता–स्त्री० [सं०] हस्त नक्षत्र।

हस्ताक्षर–पु० [सं०] दस्तखत, सही। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० (सिग्नेटरी) वह जिसने किसी संधि-पत्र, आवेदन-पत्र आदिपर हस्ताक्षर किये हों।

हस्ताक्षरित–वि० [सं०] जिसपर हस्ताक्षर किया गया हो।

हस्ताग्र–पु० [सं०] हाथका अगला भाग, अँगुली।

हस्तामलक–पु० [सं०] हाथमेंका आँवला (जो बिलकुल स्पष्ट और बोधगम्य होनेका सूचक है)।

हस्ताहस्ति–स्त्री० [सं०] हाथापाई।

हस्ताहस्तिका–स्त्री०[सं०] गुत्थमगुत्थी, दस्तबदस्त लड़ाई।

हस्तिनापुर–पु० [सं०] चंद्रवंशी नरेश हस्ती द्वारा निर्मित एक (प्राचीन) नगर जो वर्तमान दिल्लीसे लगभग ५७ मील पूर्वोत्तर था।

हस्तिनी–स्त्री०[सं०] हथिनी; स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक; हस्तिनापुर।

हस्ती–स्त्री० [फा०] जीवित, विद्यमान होनेका भाव, अस्तित्व। मु० **–खोना**–नष्ट होना, (किसीके) नामोनिशानका न रहना। **–मिटना**–नाश होना; बरबाद होना। **–मिटाना**–नष्ट, बरबाद करना। **–होना**–जीवित, विद्यमान रहना; महत्त्वका होना।

हस्ती(स्तिन्)–वि० [सं०] कर-युक्त; सूँड़वाला; कार्यकुशल। पु० हाथी। **–पाल, –पालक**–पु० पीलवान। **–राज**–पु० बहुत बड़ा हाथी; हाथियोंके झुंडका मुखिया। **–व्यूह**–पु० हाथियोंसे बना एक तरहका व्यूह जिसमें हाथी मध्य और पक्षमें रहते हैं। **–शाला**–स्त्री० गजगृह, फीलखाना। **–शुंड**–पु० हाथीकी सूँड़।

हस्ते–अ० हत्थे, द्वारा, मार्फत।

हस्त्य–वि० [सं०] हाथ-संबंधी; हाथसे किया हुआ; हाथसे दिया हुआ।

हस्त्यध्यक्ष–पु० [सं०] हाथियोंका निरीक्षक।

हस्त्यायुर्वेद–पु० [सं०] हस्तिचिकित्सा-संबंधी शास्त्र।

हस्त्यारोह–पु० [सं०] महावत, पीलवान।

हस्त्यारोही(हिन्)–पु० [सं०] हाथीका सवार। वि० हाथीपर सवारी करनेवाला।

हस्ब–अ०[अ०] अनुसार, अनुकूल, मुताबिक। **–जाबिता**–अ० जाबिते, कानूनके अनुसार, यथानियम। **–(स्बे) ज़ैल**–अ० नीचे लिखे हुए ब्योरेके अनुसार। **–हैसियत**–अ० अपनी हैसियत, अपने वित्तके अनुसार।

हहर–स्त्री० भय; चकपकाहट; प्रसन्नता-मिश्रित हड़बड़ी।

हहरना-अ० क्रि० डरना; आश्चर्यचकित होना, चकपकाना; दंग होना; परेशान होना-'बरसि बरसि हहरे सब बादर'-सू०; डरसे काँपना; शीतसे काँपना; अतीव प्रसन्नता और उत्सुकतापूर्वक किसीसे मिलना; किसीकी संपन्नता देखकर ईर्ष्या करना, सिहाना। **मु० हहरकर मिलना**-अत्यंत प्रसन्नता तथा उत्सुकतापूर्वक किसीसे मिलना।

हहराना-अ० क्रि० दे० 'हहरना'। स० क्रि० भीत करना, डराना, दहलाना।

हहल-स्त्री० दे० 'हहर'। पु० [सं०] हलाहल विष।

हहलना-अ० क्रि० दे० 'हहरना'।

हहलाना-अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'हहराना'।

हहा-स्त्री०दे० 'हाहा'। **मु०-खाना**-बहुत गिड़गिड़ाना।

हाँ-अ० स्वीकृति, निश्चय, आत्मसंतोष, स्मृति आदिका सूचक शब्द। स्त्री० स्वीकृति; स्वीकृति देने-हाँ कहनेका कार्य। **-कारी**-पु० (आइज) किसी प्रस्तावके पक्ष या संबंधमें 'हाँ' कहनेवाले सदस्य। **-हाँ**-अ० वर्जन करनेके लिए प्रयुक्त शब्द। **मु०-जी-हाँजी करना**-चापलूसी करना। **-में हाँ मिलाना**-चापलूसी करना; बिना समझे किसीकी स्वीकृतिको ठीक मान लेना, खुशामद, भय आदिके कारण बिना विचार किये ही दूसरे द्वारा स्वीकृत बातको ठीक कहना। **-हाँ करना**-स्वीकृति देना, किसी वस्तुके सही होनेकी बात मानना।

हाँक-स्त्री० जोरसे बोलकर किसीको पुकारनेकी क्रिया; हुंकार, गर्जना, ललकार; युद्ध, प्रतियोगिता आदिमें किसीको आगे बढ़नेके लिए दी गयी ललकार, बढ़ावा; उद्धार, सहायता, रक्षा आदिके लिए किसी सशक्त व्यक्ति या ईश्वरका आह्वान। **मु०-देना,-मारना,-लगाना**-ऊँची आवाजसे पुकारना, संबोधित करना।

हाँकना-स०क्रि० इक्का, बैलगाड़ी आदि बाहनोंको चलाना; गाड़ीमें जुते घोड़ा, बैल आदि चौपायोंको चाबुक मारकर या मुँहसे बोलकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर करना; चौपायोंसे प्रायः किसी वस्तुकी रक्षाके लिए उन्हें किसी स्थानसे हटाना; पंखा झलना; लंबी-चौड़ी बातें करना, बढ़ा-चढ़ाकर बातें कहना; अत्यधिक दाम बताना; उच्च स्वरसे बोलकर पुकारना, आह्वान करना; हाँक लगाना, ललकारना। **मु० हाँक पुकारकर कहना**-सबको जनाकर कोई बात कहना।

हाँका-पु० दे० 'हँकवा'; * दे० 'हाँक'।

हांगर-पु० [सं०] एक बड़ी मछली।

हाँगा-पु० ताकत, जोर, शारीरिक बल; बलप्रयोग।

हाँगी-स्त्री० मंजूरी, हामी, स्वीकृति। **मु०-भरना**-मंजूर करना, स्वीकृति देना, हामी भरना।

हाँड़ना-अ० क्रि० आवारागर्दी करना। वि० आवारागर्द।

हाँड़ी-स्त्री० दे० 'हंडी'। **मु०-उबलना**-पकती हुई चीजका उबलना; मारे खुशीके फूलना। **-पकना**-हाँड़ीमें रखी वस्तुओंका आँचके कारण पकना; किसी षड्यंत्रका रचा जाना; गप लड़ना। **(किसीके नामपर)-फोड़ना**-किसी अप्रिय व्यक्तिके चले जानेपर प्रसन्नता प्रकट करना।

हाँता*-वि० त्यक्त, छोड़ा हुआ; हटाया हुआ; दूर।

हाँपना, हाँफना-अ० क्रि० किसी प्रकारके शारीरिक श्रम या रोगके कारण साँसकी गतिका तीव्र होना।

हाँफा-पु० हाँफनेकी क्रिया। **मु०-छूटना**-कड़ा शारीरिक श्रम करनेपर तुरंत हाँफने लगना।

हाँफी-स्त्री० दे० 'हाँफा'।

हाँसना*-अ० क्रि० दे० 'हँसना'।

हाँसल-पु० एक प्रकारका घोड़ा जिसका रंग मेहँदीका सा और चारों पैर कुछ काले रंगके होते हैं।

हाँसी-स्त्री० हँसनेकी क्रिया, हँसी; मजाक, दिल्लगी, परिहास; बदनामी, निंदा, उपहास।

हाँसु*-स्त्री० हँसी; हँसली।

हा-अ० [सं०] आनंद, शोक, खेद, पीड़ा, घृणा, आश्चर्य, क्रोध आदिका सूचक शब्द। **-हंत**-अ० बड़े शोककी अवस्थामें निकलनेवाला एक शब्द। **-हा**-अ०दे०क्रममें।

हा (हन्)-वि० [सं०] मार डालनेवाला, नष्ट करनेवाला (समासांतमें)।

हाइ*-अ० दे० 'हाय'। स्त्री० ढंग; अवस्था; गौं।

हाइल-वि० दे० 'हायल'।

हाई*-स्त्री० ढंग, पद्धति, ढब; अवस्था, परिस्थिति। वि० [अं०] ऊँचा; बड़ा। **-कोर्ट**-पु० उच्च न्यायालय, प्रांत या राज्यकी सबसे बड़ी अदालत। **-स्कूल**-पु० वह अँगरेजी स्कूल जिसमें मैट्रिकतककी पढ़ाई होती है।

हाऊ-पु० छोटे बच्चोंको डरवानेके लिए एक मनगढ़ंत डरावने जीवका नाम, भकाऊँ, हौवा।

हॉकर-पु० [अं०] फेरी करके छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचनेवाला व्यक्ति।

हाकिम-पु० [अ०] हुक्म करनेवाला; हुकूमत करनेवाला, शासक; राजा; प्रधान अधिकारी; मालिक। **-(मे)बाला**-पु० प्रधान अधिकारी, बड़ा अफसर; (ला०) ईश्वर। **-के कुत्ते**-बड़े अफसरके नौकर-चाकर जो बिना भेंटपूजाके उसके पास न जाने दें।

हाकिमाना-वि० हाकिमके जैसा, अधिकारीके योग्य। (:-ढंग, लहजे)।

हाकिमी-स्त्री० हुकूमत; अफसरी। वि० शासन-संबंधी।

हॉकी-स्त्री० [अं०] एक अंग्रेजी खेल जिसमें टेढ़े डंडेके सहारे गेंद आगे बढ़ाते हुए गोल करते हैं।

हाजत-स्त्री० [अ०] आवश्यकता; अभाव; इच्छा, चाह; शौच आदिका वेग; हवालात। **-ख्वाह**-वि० मुहताज; प्रार्थी। **-मंद**-वि० जिसे अभाव, आवश्यकता हो; मुँहताज; इच्छुक। **-रवा**-वि० हाजत पूरी करनेवाला। **-रवाई**-स्त्री० जरूरत पूरी करना, किसीका काम निकालना। **मु०-रफ़ा करना**-हाजत पूरी करना; पाखाने जाना।

हाजती-स्त्री० वह बरतन जिसमें बीमार चारपाईपर पड़े-पड़े पेशाब कर ले; रातको अमीरोंके पलंगके पास पेशाब करनेके लिए रखा जानेवाला बरतन। पु० फकीर; प्रार्थी। वि० हाजतवाला; हवालाती।

हाज़मा-पु० [अ०] हजम करने, पचानेकी ताकत। **मु०-खराब होना,-बिगड़ना**-पाचन क्रियाका ठीक तरहसे न होना।

हाजिर—वि० [अ०] जो सामने हो, उपस्थित, मौजूद; प्रस्तुत, तैयार ।**—जवाब**—वि० जो बातका तुरत जवाब दे, जिसे बातका बढ़िया,यथायोग्य जवाब तुरत सूझ जाय। **—जवाबी**—स्त्री० हाजिर जवाब होना,बातका तुरत बढ़िया जवाब सोच लेनेकी शक्ति ।**—ज़ामिन**—पु० वह जो किसी आदमीको अदालतमें हाजिर कर देनेकी जिम्मेदारी ले। **—नाज़िर**—वि० मौजूद और देखनेवाला ।

हाज़िरात—स्त्री० [फा०] अनेक प्रेतात्माओंका एक साथ आवाहन, जिन, भूत-प्रेत इत्यादिकी हाजिरीका जलसा (करना, होना)।

हाज़िरी—स्त्री० [फा०] उपस्थिति, मौजूदगी; दरबादारी; सवेरेका खाना; अंग्रेजोंका नाश्ता; (मुसल०) वह खाना जो मुर्देके दफन किये जानेके बाद मृत जनके कुटुंबियोंके लिए भेजा जाय । **मु०—देना**—हाजिर होना,उपस्थितिकी सूचना देना ।**—बजाना**—किसी बड़े आदमीके पास बराबर रहना, दरबारदारी करना । **—लेना**—नाम पुकारकर छात्रों आदिकी उपस्थिति मालूम करना, लिखना ।

हाज़िरीन—पु० [अ०] 'हाजिर'का बहु०, (सभा आदिमें) उपस्थित जन, श्रोतृमंडली । **—(ने) जलसा**—पु० सभामें उपस्थित जनसमाज ।

हाजी—पु० [अ०] हज करनेवाला; जो हज कर चुका हो!

हाट—स्त्री० बाजार; बाजार लगनेका दिन; दुकान। **—व्यवस्था**—स्त्री० (मारकेटिंग) उत्पादित वस्तुओंके खरीदने, बेचने तथा बिकवानेकी व्यवस्था । **मु०—करना**—दुकान करना, किसी बाजारमें दुकान खोलकर बेचना-खरीदना; बाजारमें सामान खरीदना । **—खोलना**—दुकान करना; दुकान लगाना । **—चढ़ना**—बाजारमें बिकनेके लिए जाना । **—बाजार करना**—सौदा खरीदनेके लिए बाजार जाना । **—लगना**—बाजार, दुकानमें बेचनेके लिए चीजोंका सजाया जाना ।

हाटक—वि० [सं०] स्वर्णनिर्मित, स्वर्णमय। पु० स्वर्ण, सोना; धतूरा; दुकानका किराया; एक देश । **—गिरि**—पु० सुमेरु ।**—पुर**—पु० (स्वर्णनिर्मित) लंका ।**—लोचन**—पु० हिरण्याक्ष ।

हाटकेश, हाटकेश्वर—पु० [सं०] गोदावरी नदीके तटपर पूजित होनेवाला एक शिवलिंग ।

हाड़*—पु० हड्डी; कुलीनता ।

हाड़ा—पु० क्षत्रिय जातिकी एक शाखा; हड्डा ।

हातव्य—वि० [सं०] छोड़ने, त्याग करने योग्य ।

हाता—पु० दे० 'एहाता'; रोक। * वि० परित्यक्त; दूर; नाशक ।

हातिम—पु० [अ०] अरबके तै कबीलेका एक सरदार जो दानशीलता और परोपकार-परायणताका आदर्शसा माना जाता है । वि० अति दानशील; अति परोपकारी ।**—ताई**—पु० हातिम; हातिमताईका किस्सा। **मु०—की कब्रपर लात मारना**—दानशीलता या परोपकारमें हातिमसे बढ़ जाना ।

हात्र—पु० [सं०] वेतन, पारिश्रमिक ।

हाथ—पु० दे० 'हस्त'; ताश, कौड़ी आदि खेलनेवालोंकी बारी, दावँ; दस्ता, मूठ; कर्मचारी। **—कंडा**—पु० दे० 'हथकंडा'। **—तोड़**—पु० कुश्तीका एक दाँव । **—पान**—पु० पानके आकारका एक आभूषण जो हाथके पंजेके ऊपरी भागपर पहना जाता है। **—फूल**—पु० हथेलीके ऊपरी भागपर पहननेका फूलके आकारका एक गहना । **मु०—आँखोंसे लगाना**—बहुत आदर-सम्मान करना (कारीगरीकी प्रशंसा आदिके अवसरपर) । **—आगे करना**—किसी वस्तुको लेने या देनेके लिए हाथ बढ़ाना। **—आजमाना**—किसी कामके करनेमें अपनी कारीगरी, शक्ति आदिकी आजमाइश करना । **—आना**—वशमें होना, अधिकारमें होना; फायदा होना ।**—उठा-उठाकर कोसना**—आसमानकी ओर हाथ करते हुए बहुत बददुवाएँ देना। **—उठाकर देना**—स्वेच्छासे किसीको कुछ देना; दान देना । **(किसीको)—उठाना**—किसीका अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना। **(किसीपर)—उठाना**—किसीको ताड़ित करना, मारना। **—उठा बैठना**—किसीको मार बैठना; असहयोग कर देना, किसी काममें सहायता देना बंद करना । **—उठा लेना**—सहायता बंद करना । **—उतरना**—हाथ उखड़ना, हाथकी हड्डीका स्थानभ्रष्ट होना। **—ऊँचा करना**—खर्चीला होना; किसीके लिए दुवा करना, किसीको आशीर्वाद देना ।**—ऊँचा होना**—दानी होना;दानवृत्तिकी ओर उन्मुख होना; खर्चीला होना ।**—कट जाना**—विवश हो जाना, बेकाबू हो जाना; किसीको किसी कामके लिए वचन देकर बँध जाना । **—कटा देना,—कटाना,—कटा लेना**—दे० 'हाथ कट जाना'। **—करना**—ताश आदि खेलमें बाजी जीतना । **—क़लम करना**—पूरा हाथ काटना । **—का झूठा**—रुपये-पैसेके मामलेमें, लेन-देनमें जिसपर विश्वास न किया जाय, बेईमान ।**—काट देना**—विवश कर देना, बेकाबू कर देना; किसी द्वारा किसीके लिए पत्र, वचन आदि दिलाकर उसे विवश, बेकाबू कर देना । **—का दिया**—दान दिया हुआ; दान ('हाथदिया' रूप भी चलता है)। **—का मैल**—सामान्य परिश्रमसे मिल जानेवाला पदार्थ; तुच्छ वस्तु । **—का सच्चा**—रुपये-पैसेके मामलेमें, लेन-देनमें जिसपर विश्वास किया जाय, ईमानदार । **—की सफाई**—हाथके उद्योग, बाजीगरी आदिमें हाथकी कारीगरी; लड़ाई-भिड़ाईमें वार करनेका अच्छा अभ्यास। **—को हाथ नज़र न आना**—घना अंधकार होना। **—खाली जाना**—जुए आदिमें दाँव, बाजीका न आना;वार चूकना, हमला नाकामयाब होना; युक्ति, चालाकी, उपायका न लगना, न सफल होना। **—खाली न होना**—काममें व्यस्त रहना, कामसे फुर्सत न मिलना। **—खाली होना**—बिना पैसेका होना। **—खींचना**—किसी कामसे हट जाना, उसमें सहयोग न करना; द्रव्य देना बंद करना, आर्थिक सहायता रोकना। **—खुजलाना**—द्रव्यप्राप्तिकी पूर्व सूचना मिलना; चपत जमाने, थप्पड़ लगाने, पीटनेकी प्रवृत्ति होना ।**—खुलना**—दानोन्मुख होना; खर्चीला होना; हाथका चलना, काम देने लगना; हथछुट होना। **—खोलना**—दान करना; खूब खर्च करना; आजादी देना; तंगी न रहने देना। **—गलना**—हाथ ठिठुरना, अत्यंत शीतसे हाथका सुन्न

पड़ जाना। **-घिस जाना**-बहुत ही परिश्रमसे कोई (हाथका) काम बहुत देरतक करना। **-चढ़ना**-दे० 'हाथ आना'। **-चमकाना**-औरतोंकी तरह हाथ उठा, हिलाकर बातें करना; औरतोंका हाथकी उँगलियाँ टेढ़ी कर हाथ हिलाना; तलवारको म्यानसे निकालकर हिलाना। **-चलना**-किसीके द्वारा कामका अच्छी तरह किया जाना; किसीका मारनेकी ओर अधिक प्रवृत्त होना। **-चलाना**-किसी कामको भली भाँति करना; मारना। **-चूमना**-किसीके हाथकी कारीगरीसे प्रभावित होकर उसके हाथोंको चूमना। **-छुटा होना**-बेधड़क मारनेकी आदत होना। **-छूटना**-मारनेके लिए प्रवृत्त होना, मारनेके लिए हाथ उठना; वैवाहिक संबंधका विच्छिन्न होना। **-छोड़ना**-मारना; वैवाहिक संबंध भंग करना। **-जड़ना**-तमाचा लगाना, थप्पड़ मारना, प्रहार करना, मारना। **-जमना**-तमाचा, थप्पड़ पड़ना, प्रहार होना; किसी हाथके कामके करनेमें हाथका अभ्यस्त होना, किसी व्यक्तिका किसी हस्तकौशलमें निपुण, प्रवीण होना। **-जमाना**-दे० 'हाथ जड़ना'; किसी हस्तकौशलमें हाथको अभ्यस्त, निपुण करना, किसी हस्तकौशलमें कुशल होना। **-जोड़ देना**-हार मान लेना; क्षमा माँग लेना। **-जोड़ना**-प्रायः साक्षात्कार होनेपर दोनों हाथोंको मिलाकर अभिवादन करना, नमस्कार, प्रणाम करना; प्रार्थना, अनुनय, विनय करना; मारे डरके किसीको हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करना, प्रार्थना करना; संबंध-विच्छेद करना (व्यंग्य)। **-झाड़कर खड़ा हो जाना**-पासमें एक पैसा भी न होनेकी बात करना। **-झाड़कर जाना**-जुए आदिमें रुपया-पैसा हारकर खाली हाथ जाना। **-झाड़ना**-दे० 'हाथ झाड़कर खड़ा होना'; तड़ातड़ थप्पड़, पटाका मारना, प्रहार करना; मार-पीट, युद्धमें खुलकर अस्त्र-शस्त्र चलाना। **-झुलाते आना**-दे० 'हाथ हिलाते आना'। **-झूठा होना, -झूठा पड़ना**-हाथ सुन्न होना, हाथका काम करनेके योग्य न रहना; वार खाली जाना। **-टेकना**-सहारा, सहायता लेना। **-डालना**-कोई काम आरंभ करना; किसी काममें दखल देना; द्रव्य आदि लूटना। **-तंग होना**-रुपये-पैसेकी कमी होना। **-तकना**-किसीके भरोसे रहना, किसीपर अवलंबित होना। **-दिखाना**-हस्तरेखाविद्को भूत, भविष्यके संबंधमें जानकारीके लिए हाथकी रेखाएँ दिखाना; वैद्यको नाड़ी दिखाना। **-देखना**-भूत, भविष्यकी बातोंको बतानेके लिए हस्तरेखा देखाना; नाड़ी देखना। **-देना**-सहायता देना, सहायक होना; वचन देना (वाग्बद्ध होते समय लोग आपसमें हाथ मिला लेते हैं); बाजी लगाना; जुआ जादिके खेलमें बाजी हारना; मारना, पीटना; रुकनेके लिए इशारा करना। **-धरना**-सहारा देना, सहायता करना; रक्षा करना; किसीको कोई काम करनेसे रोकना, मना करना; पाणिग्रहण करना। **-धोकर पीछे पड़ना**-जी-जानसे किसी काममें (विशेषकर किसीका अनिष्ट करनेमें) जुट जाना। **-धोना, -धो बैठना**-खो देना, खो बैठना। **-पकड़ते पहुँचा पकड़ना**-थोड़ीसी रिआयत पा जानेसे ही बहुत हिलमिल जाना; थोड़ासा सहारा मिल जानेपर अधिक प्राप्तिका अवसर ढूँढ़ना (दे० 'उँगली'के मु०में)। **-पकड़ना**-दे० 'हाथ धरना'। **-पकड़ेकी लाज करना, -पकड़ेकी लाज रखना**-किसीको वचन या आश्रय देकर उसका निर्वाह करना। **-पड़ जाना**-बिना परिश्रम, प्रयत्नके, यों ही किसी वस्तुका मिल जाना; चोरी हो जाना। **-पड़ना**-दे० 'हाथ आना'; लूटा जाना। **-पत्थर तले दबना**-संकटमें पड़ना, किसीपर विपत्ति आ जाना; किसी चलते कामको एकदम रोक देनेके लिए बाध्य, विवश होना। **-पर तोता पालना**-अपने हाथके घाव, फोड़े, फुंसीको अच्छा न होने देना; अपने हाथको चोटैल, जख्मी करना। **-पर धरा रहना**-किसी वस्तुका किसीके लेनेके लिए हाथपर होना, तैयार रहना। **-पर धरा हुआ होना**-किसी वस्तुका हर वक्त पास या तैयार रहना। **-पर नाग खेलाना**-जान जोखों डालना, प्राणको संकटमें डालना। **-पर हाथ धरकर बैठ जाना**-निराश हो जाना। **-पर हाथ धरे बैठना, बैठे रहना**-कुछ काम न करना, निरुद्यम होना, आलसी होना। **-पर हाथ मारना**-वाग्बद्ध होना, प्रतिज्ञा करना; बाजी लगाना। **-पसारना**-याचना करना, माँगना; भिक्षा माँगना। **-पसारे जाना**-इस संसारसे बिना कुछ लिये परलोक जाना, इस जगत्से खाली हाथों जाना। **-पाँव कहनेमें होना**-हाथ-पैरका काबूमें रहना। **-पाँवका जवाब देना, -पाँवका हारना**-अस्वस्थता या बुढ़ापेके कारण शरीरका काम करनेके योग्य न रह जाना। **-पाँव चलना**-उद्योगी होना; शरीरमें शक्तिका रहना। **-पाँव चलाना**-उद्योग करना, कर्मशील होना। **-पाँव ठंडे होना**-मरणासन्न होना; मृत्यु होना, मर जाना; अत्यंत भीत होना; स्तब्ध होना, काठ मार जाना। **-पाँव पटकना**-तड़फड़ाना, छटपटाना। **-पाँव फूलना**-विपत्तिसे घबड़ा जाना। **-पाँव फैलाना**-उन्नति करना; कार्यक्षेत्र बढ़ाना। **-पाँव बचाना**-किसी कष्ट, खतरे आदिसे शरीरको बचाना। **-पाँव मारना**-तैरनेमें हाथ-पैर हिलाना, चलाना; खूब कोशिश करना, कष्ट सहते हुए भी प्रयत्न करना; खूब काम करना; पीड़ा, शोक आदिसे तड़फड़ाना, छटपटाना। **-पाँव सीधे करना**-सीधा लेटकर हाथ-पाँवको आराम देना। **-पाँव हारना**-निःशक्त होना; निराश होना; साहसहीन होना। **-पाँव हिलाना**-दे० 'हाथ-पाँव मारना'। **-पीले करना**-विवाह करना। **-फेंकना**-जुए आदिके खेलमें अपनी पारीपर कौड़ी, पासा आदि फेंकना। **-फेर देना**-किसी वस्तुको चुरा, उड़ा लेना। **-फेरना**-प्यारसे किसीकी पीठ, किसीका सिर सहलाना, लाड़-प्यार करना। **-फैलाना**-याचना करना। **-बँटाना**-सहायता देना, सहयोग करना। **-बचाना**-आक्रमण रोकना, वार बचाना। **-बढ़ाना**-कोई वस्तु लेने, पकड़ने आदिके लिए हाथ आगे करना, फैलाना; अपने अधिकार, हक, अपनी सीमासे अधिक माँगना, जाना। **-बाँधे खड़ा रहना, -बाँधे रहना**-हाथ जोड़े खड़ा रहना; सेवाभि-

मुख रहना, खिदमतके लिए हर वक्त तैयार रहना। **(किसीके)–बिकाना**–किसीका क्रीत दास होना, विवश हो, किसीके कहनेके अनुसार काम करना। **–बैठना**–दे० 'हाथ जमना'। **–भरका कलेजा होना**–बहुत खुश होना; खुशीसे दिल बढ़ जाना। **–भरकी ज़बान होना**–कटुभाषी होना, गुस्ताख होना; खाद्य पदार्थोंका लालची होना। **–भरा होना**–धनवान्, दौलमंद होना; हाथमें किसी चीज(मेहँदी आदि)का लगा रहना। **–मँजना**–दे०'हाथ जमना'। **–मलना**–पछताना, पश्चात्ताप करना। **–माँजना**–अभ्यास करना। **–मारना**–हाथ साफ करना; हाथपर हाथ मारना, बाजी लगाना; किसी वस्तुको सफाईसे चुरा लेना, गायब करना, हड़पना; अच्छा भोजन मिलनेपर खूब खाना; कुशलतापूर्वक किसीपर हथियारका वार करना। **(उलटा)–मारना**–प्रत्याक्रमण करना, वारका जवाब वारसे देना। **–मिलाना**–साक्षात्कार होनेपर अभिवादनके रूपमें आपसमें हाथका मिलाना (यह अंगरेजी प्रथा है); कुश्ती लड़नेके पूर्व लड़नेवालेंसे हाथ मिलाना; रोजगारियोंका आपसमें सौदा तै करना, खरीद-फरोख्त करना। **–मींजना**–दे० 'हाथ मलना'। **–मुँहपर रख देना**–बोलने न देना। **–में करना**–बलात् या प्रेमपूर्वक किसीको वशमें करना; अधिकार करना। **–में जाना**–किसीके अधिकारमें जाना, किसीके पास पहुँचना। **–में ठीकरा देना**–किसीकी आर्थिक स्थिति खराब कर उसे गरीब, भिखारी बनाना। **–में पड़ना**–दे० 'हाथ आना'। **–में लेना**–किसी कामका जिम्मा अपने ऊपर लेना, किसी कामकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ना; पकड़ना। **–में सनीचर आना**–बहुत गरीब हो जाना। **–में हाथ देना**–पाणिग्रहण कराना, ब्याह कराना। **–में हुनर होना**–हाथकी कारीगरीमें काबिल होना। **–में होना**–वशमें होना, अधिकारमें होना। **–रँगना**–कोई अकरणीय कार्य कर बदनाम होना; हाथमें मेहँदी लगाना, हाथको मेहँदीसे रँगना; घूस लेना। **(किसीके सिरपर)–रखना**–किसीका रक्षक, प्रतिपालक होना। **–रोकना**–किसी कामके करनेमें अड़ंगा लगाना, किसी कामके करनेमें बाधा उपस्थित करना; काम करना बंद करना; किसीको मारते-मारते रुकना; किसी कारणवश किसीको मारनेके लिए उद्यत होकर भी न मारना। **–लगना**–अधिकारमें आना, मिलना; किसी द्वारा किसी कामका होना; किसी चीजका किसीके हाथसे छू जाना, स्पर्श हो जाना; किसी कामका शुरू, आरंभ होना; गणितके प्रश्नोंमें दहाईकी संख्याका आगे जोड़नेके लिए बचना। **–लगाना**–कोई काम आरंभ करना; किसी चीजको छूना। **–लगाये कुम्हलाना**–अत्यंत कोमल, निहायत नाज़ुक होना। **–लगे मैला होना**–किसी वस्तुका इतना चमकदार और स्वच्छ होना कि वह छूनेमात्रसे मैली हो जाय। **–लपकाना**–हाथ बढ़ाना। **–समेटना**–दे० 'हाथ खींचना'। **–साधना**–दे० 'हाथ आजमाना'; दे० 'हाथ माँजना'; दे० 'हाथ साफ करना'। **(किसीपर)–साफ करना**–किसीको मार डालना; हड़पना; दे० 'हाथ मारना'। **–से काम निकलना**–किसीके जरिये कोई काम होना। **–से जाना,–से निकलना**–हाथसे छूट, गिर जाना; किसीके काबू, वशके बाहर होना; अधिकारमें न रहना। **–से दिल जाना,–से दिल फिसलना**–किसीपर मुग्ध, आशिक होना। **–हिलाते आना**–खाली हाथों आना, बिना पैसा-कौड़ी लिये आना। **–होना**–वश, सहयोग या कारस्तानी होना। **–(थोँ) उछलना**–खूब तड़पना; खूब कूदना। **–कलेजा उछलना**–अत्यंत उत्साहित होना; अत्यंत प्रसन्न होना। **–के तोते उड़ जाना**–भौंचक्का होकर रह जाना। **–में रखना**–बड़े प्यारसे पालना, रखना। **(दोनोँ)–समेटना**–खूब धन एकत्र करना। **–हाथ**–एक हाथसे दूसरे हाथमें, तुरत, शीघ्र। **–हाथ उठाकर ले जाना**–ऊपर ही ऊपर ले जाना। **हाथ उड़ जाना, बिक जाना**–तुरत, दम मारते भरमें बिकना। **–हाथ लेना**–अत्यंत आदरके साथ स्वागत करना।

हाथा–पु० हथियार आदिका दस्ता, मुठिया; खेत सींचनेका एक औजार, हत्था; दीवारपर पंजेसे डाली हुई ऐपनकी छाप। **–छाँही**–स्त्री० लेन-देन आदिमें धूर्तता करना। **–पाई,–बाँही**–स्त्री० ऐसी सामान्य लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरेको हाथ-पैरके बलसे मारते, पटकते हैं, उठा-पटक, भिड़ंत।

हाथी–पु० हस्ती, एक सूँड़दार चौपाया जो बहुत बड़ा होता है और पालतू बनाकर सवारीके काममें भी लाया जाता है; शतरंजका एक मोहरा। * स्त्री० हाथका सहारा। **–ख़ाना**–पु० हस्तिशाला, फीलखाना। **–दाँत**–पु० हाथीके मुँहके बाहर निकले हुए गोल और लंबे दाँत जिनसे आभूषण, सजावटके सामान आदि बनाये जाते हैं। **–पाँव**–पु० फीलपाँव नामक रोग। **–वान**–पु० महावत। मु०**–के साथ गन्ने खाना**–ऐसे व्यक्तिकी बराबरी करनेकी चेष्टा करना जिसकी बराबरी करना संभव न हो। **–पर चढ़ना**–बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त करना; बहुत धनी होना। **–पर चढ़ाना**–बहुत सम्मान देना।

हादसा, हादिसा–पु० [अ०] दुर्घटना, विपद्।

हान–पु० [सं०] परित्याग; नुकसान; विफलता।

हानि–स्त्री० [सं०] परित्याग; नुकसान, क्षति; विफलता; अनस्तित्व, लोप; ह्रास; उपेक्षा; क्षय; कमी; त्रुटि; बरबादी। **–कर,–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० हानि पहुँचानेवाला, अपकारी। **–लाभ**–पु० व्यापारादि या किसी काममें होनेवाला नुकसान और फायदा। मु०**–उठाना**–घाटा सहना, नुकसान बरदाश्त करना।

हाफ़िज़–वि० [अ०] हिफाजत करनेवाला, रक्षक (खुदाहाफ़िज़–ईश्वर रक्षक है)। पु० वह आदमी जिसे पूरा कुरान कंठ हो।

हामिल–वि० [अ०] बोझ उठानेवाला; ले जानेवाला।

हामिला–स्त्री० [अ०] गर्भवती स्त्री।

हामी–स्त्री० स्वीकृति। वि० [अ०] हिमायत करनेवाला, पृष्ठपोषक; सहायक। मु०**–भरना**–किसी कामको करनेकी स्वीकृति देना, स्वीकार करना।

हाय–अ० मानसिक और शारीरिक पीड़ा होनेपर मुखसे निकलनेवाला शब्द । स्त्री० व्यथा, कष्ट, तकलीफ ।–**हाय**–अ० दे० 'हाय' । स्त्री० दे० 'हाय'; व्यस्तता, परेशानी, घबड़ाहट । मु०–**करके रह जाना**–विवश होकर शारीरिक या मानसिक पीड़ा सह लेना । –**पड़ना**–कष्ट देनेवालेको किसीको दिये हुए कष्टका बुरा परिणाम मिलना । **हाय करना**–परेशान होना, व्यस्त रहना । –**होना**–किसीके सुख, वैभव आदिको देखकर पीड़ा होना, डाह करना ।

हायन–पु० [सं०] संवत्सर, वर्ष; अग्निशिखा ।

हायल–वि० बीचमें आनेवाला, रुकावट डालनेवाला, बाधक; * चोटैल, घायल; दुःखी; क्लांत ।

हार–स्त्री० जीतका उलटा, पराजय, असफलता ।–**जीत**–स्त्री० जय-पराजय । मु०–**खाना**–पराजित होना, हार जाना । –**देना**–पराजित करना ।

हार–* पु० जंगल; हाल–'हारिल विनवै आपन हारा'–प० । वि० [सं०] ले जानेवाला; हरण करनेवाला; चुरानेवाला; (कर) बैठाने, लगाने, उगाहनेवाला । पु० हरण; जब्ती; क्षय; श्रांति; हानि; माला; मुक्तामाला; वियोग । –**गुटिका**–स्त्री० मालाका मोती या दाना ।

हारक–वि० [सं०] हरण, ग्रहण करनेवाला; चुरा या लूट लेनेवाला; आकृष्ट करनेवाला; मोहक । पु० चोर; लुटेरा; ठग; खल; जुआरी; भाजक (गणित); मोतियोंकी लड़ी ।

हारद*–वि० हृदय-संबंधी, हार्दिक ।

हारना–अ० क्रि० युद्ध, खेल, प्रतियोगिता, मुकदमे आदिमें असफल, पराजित होना; थकना । स० क्रि० खोना; देना; त्यागना ।

हारमोनियम–पु० [अं०] एक संदूकनुमा अँगरेजी बाजा ।

हारला–पु० दे० 'हारिल' ।

हारवार*–स्त्री० हड़बड़ी, उतावली, जल्दबाजी ।

हारा–प्र० 'वाला'-सूचक एक प्रत्यय । [स्त्री० 'हारी' ।]

हारावलि, हारावली–स्त्री० [सं०] मोतियोंकी लड़ी ।

हारि–वि० [सं०] रुचिर, मनोहर । पु० हार, पराजय, जुएमें दाँव हारना । * स्त्री० थकावट ।

हारिल–पु० एक पक्षी जो अपने चंगुलमें पतली लकड़ी लिये रहता है ।

हारी(रिन्)–वि० [सं०] हरण करनेवाला, अपहारक; वहन करनेवाला, वाहक; चोरी करने, लूट लेनेवाला; नाश करनेवाला; अस्त-व्यस्त करनेवाला, गड़बड़ करनेवाला; ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला; इकट्ठा करने, उगाहनेवाला; मोहक, मनोहर; आनंदकारी, प्रसन्न करनेवाला ।

हारीत–पु० [सं०] चोर; शठ; धूर्त; चोरी; एक कबूतर ।

हारौल–पु० दे० 'हरावल' ।

हार्दिक–वि० [सं०] हृदय-संबंधी, आंतरिक, दिली ।

हार्य–वि० [सं०] हरणयोग्य; ग्रहण करने योग्य, ग्रहणीय; वहन करने योग्य; हटाये जाने योग्य ।

हाल–स्त्री० लकड़ीके पहियेपर चढ़ाया जानेवाला लोहेका पट्टा; हिलना, कंप; झोंका, झटका । –**गोला**–पु० गेंद । –**डोल**–पु० हिलना-डुलना; हलचल ।

हाल–पु० [अ०] वर्तमान काल; दशा, अवस्था; वृत्तांत, समाचार । अ० * हालमें; अभी, तुरत । –**का**–थोड़े दिनोंका, कुछ ही दिन पहलेका ।–**में**–थोड़े दिन पहले ।

हालत–स्त्री० [अ०] दशा, अवस्था; आर्थिक स्थिति ।

हालना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना; काँपना; झूमना ।

हालरा–पु० बच्चोंको गोदमें लेकर हिलाना; झटका, झोंका; पानीका झटका, झोंका, लहर ।

हालहल–पु० [सं०] दे० 'हलाहल' ।

हालाँकि–अ० यद्यपि, गोकि ।

हाला–स्त्री० [सं०] मद्य, शराब ।

हालात–पु० [फा०] 'हाल'का बहु०, दशाओंकी समष्टि, परिस्थिति; वृत्त, समाचार ।

हालाहल–पु० [सं०] एक विषैला पौधा; इसकी जड़से बना हुआ घातक विष; समुद्रमंथनसे प्राप्त विष ।

हालिक–वि० [सं०] हल-संबंधी । पु० हलवाहा; कृषक, किसान; हल खींचनेवाला (जैसे बैल); शस्त्रके रूपमें हल लेकर लड़नेवाला व्यक्ति; एक छंदका नाम; कसाई, बूचड़ ।

हाली–वि० [अ०] वर्तमान कालका; सामयिक । † अ० अभी, तत्काल ।

हाव–पु० [सं०] स्त्रियोंके हृदयमें शृंगार, प्रेमका भाव उदित होनेपर उनके द्वारा की गयी स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुषोंको आकृष्ट करती हैं । –**भाव**–पु० नाज-नखरा, चोचला ।

हावन–पु० [फा०] कूटनेका बरतन, खल । –**दस्ता**–पु० खल-बट्टा ।

हावहाव–स्त्री० किसी वस्तुको प्राप्त करनेकी लालच भरी आकुलता, हाही ।

हावी–वि० [अ०] घेरनेवाला; दबा रखनेवाला ।

हाशिया–पु० [अ०] गोट, किनारा; कोर; लिखते समय पृष्ठके किनारे खाली छोड़ी हुई जगह; हाशियेपर लिखित टीका, फुटनोट; टीकाकी टीका । मु०–**चढ़ाना**–गोट टाँकना या टीका लिखना; अपनी ओरसे कुछ जोड़ना, बढ़ाना, नमक-मिर्च लगाना । –**(ये) का गवाह**–वह गवाह जो किसी दस्तावेजके हाशियेपर अपना नाम लिखे या सही बनाये ।

हास–पु० [सं०] हँसनेकी क्रिया, हँसी; प्रसन्नता, खुशी; हास्य रसका स्थायी भाव (सा०); उपहास; मजाक, हँसी दिल्लगी; खिलना, विकास ।

हासक–पु० [सं०] मजाकिया, विदूषक, हँसोड़ ।

हासिल–वि० [अ०] जो कुछ बचा हो; जो कुछ हाथ लगे, लब्ध । पु० वस्तुका अवशेष; लाभ; उपज; नतीजा । मु० –**आना**–(गणित) आगे जोड़ने या लिखे जानेके लिए बच रहना, हाथ लगना (ग्यारह दुना बाईसके दो, हासिल आयी दो) । –**करना**–पाना; कमाना; पैदा करना । –**होना**–मिलना, हाथ लगना ।

हास्तिक–वि० [सं०] हाथी-संबंधी । पु० महावत, पीलवान; हाथीपर चढ़नेवाला व्यक्ति; हाथियोंका झुंड ।

हास्य–वि० [सं०] हँसने योग्य; उपहास्य; हास्यजनक । पु० हँसी; आनंद, प्रसन्नता; मजाक, दिल्लगी; एक रस (सा०) । –**कथा**–स्त्री० हँसी-उत्पन्न करनेवाली वार्ता । –**कर, –जनक**–वि० हास्योत्पादक, हँसी उत्पन्न करने-

वाला।–कौतुक–पु० हँसी-खेल, हँसी-तमाशा। –रस–पु० एक काव्यरस जिसका स्थायी भाव हास है। –रसात्मक–वि० जिसमें हास्यरस हो (काव्य)।–रसिक–वि० विनोदप्रिय; हास्यरसका प्रेमी।

हास्यास्पद–पु० [सं०] हास्यका आलंबन, हँसीका विषय, वह जिसे देखकर हँसी उत्पन्न हो; उपहासका विषय।

हास्योत्पादक–वि० [सं०] हास्य उत्पन्न करनेवाला।

हा हंत–अ० [सं०] दे० 'हा'के साथ।

हाहा–पु० [सं०] एक गंधर्व। अ० आश्चर्य, शोक आदिका सूचक एक शब्द। –कार–पु० रुदनकी उच्च ध्वनि; युद्धका कोलाहल। –रव–पु० 'हाहा' करके चिल्लानेकी आवाज। –हूत*–पु० भयजन्य कोलाहल।

हाहा–पु० खुलकर हँसनेकी आवाज; अनुनय-विनय, गिड़गिड़ानेकी आवाज। –ठीठी–स्त्री० हँसी-मजाक, हास-परिहास, हँसी-ठट्ठा।–हीही–दे०'हाहा-ठीठी'।–हूहू–पु० हँसी-ठट्ठा। मु०–करना,–खाना–गिड़गिड़ाना। –हीही करना–हँसी-ठट्ठा करना।

हाही–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए व्यग्रता। मु०–पड़ना–किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए अत्यंत व्यग्र होना।

हाहू*–पु० ऊधम, हुड़दंग, शोरगुल।

हिंकरना–अ० क्रि० हिनहिनाना, हिंसना; कराहना।

हिंकार–पु० [सं०] 'हिं' ध्वनि करनेकी क्रिया; रँभानेका शब्द; बाघके बोलनेका शब्द।

हिंग–पु० हींग।

हिंगु–पु० [सं०] एक वृक्ष जो मुलतान तथा खुरासानमें विशेष रूपसे होता है; इस वृक्षके मूलका निर्यास, हींग; वंशपत्री।

हिंगुक–पु० [सं०] हिंगु वृक्ष।

हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुलु–पु० [सं०] ईंगुर।

हिंगोट–पु० हिंगुपत्र, इंगुदी।

हिंछा*–स्त्री० इच्छा।

हिंडक–वि० भ्रमणशील।–पोत–पु० (क्रूजर) द्रुतगामी युद्धपोत, प्रधावी पोत, गश्ती जहाज।

हिंडन–पु० [सं०] भ्रमण; संभोग; लेखन।

हिँडोरना*–पु० दे० 'हिँडोला'–'हिंडोरनो माई झूलत गोकुलचंद'–सू०। स० क्रि० दे० 'हिँडोलना'।

हिँडोरा*–पु० दे० 'हिँडोला'।

हिँडोरी*–स्त्री० छोटा हिंडोला।

हिँडोल–पु० हिंडोला; एक राग।

हिँडोलना†–पु० हिँडोला। स० क्रि० आलोडित करना, घँघोलना।

हिँडोला–पु० झूला; पालना; नीचे-ऊपर चक्कर खानेवाला एक तरहका झूला।

हिंडोली–स्त्री० एक रागिनी।

हिंताल–पु० [सं०] छोटी जातिका एक जंगली खजूर।

हिंद–पु० [फा०] भारतवर्ष, हिंदुस्तान।

हिंदवी–स्त्री० [फा०] हिंदुस्तानकी भाषा (उर्दू-फारसी और कुछ पुराने हिंदी लेखकों द्वारा हिंदीके अर्थमें प्रयुक्त।

हिंदी–वि० [फा०] हिंद, हिंदुस्तानसे संबद्ध। पु० हिंद-निवासी। स्त्री० भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा (जो उत्तर प्रदेश, बिहार आदिमें मुख्य रूपसे बोली जाती है)।

हिंदुत्व–पु० हिंदू होनेका भाव या गुण; हिंदुओंके आचार-विचार; हिंदू-धर्मका भाव।

हिंदुस्तान–पु० [फा०] हिंदुओंका निवास-स्थान, भारतवर्ष; भारतवर्षका उत्तरी भाग जो गंगा तथा यमुनाके द्वाबेके मध्यमें पड़ता है, जिसे प्राचीन समयमें अंतर्वेद या मध्य देश कहते थे।

हिंदुस्तानी–वि० [फा०] हिंदुस्तान-संबंधी। पु० हिंदुस्तानमें रहनेवाला व्यक्ति, भारतवासी। स्त्री० हिंदुस्तानकी भाषा; खड़ी बोली हिंदीका वह बनावटी रूप जिसमें अरबी, फारसी, उर्दूके तत्सम शब्दोंका बाहुल्य तथा संस्कृत, हिंदी और अँगरेजी शब्दोंकी विरलता हो।

हिंदुस्थान–पु० दे० 'हिंदुस्तान'।

हिंदू–पु० [फा०] प्रत्यक्षतः या परोक्षतः वेदोक्त विचारोंके आधारपर बने आचार-व्यवहार, रीति-नीति, समाज-व्यवस्था, धर्म आदिमें किसी न किसी रूपमें विश्वास करने और उनपर चलनेवाला भारतीय। –पन–पु० दे० 'हिंदुत्व'।

हिंदूकुश–पु० [फा०] अफगानिस्तानके उत्तरमें स्थित एक पर्वत-श्रेणी जो हिमालयसे मिली हुई है।

हिंदोल–पु० [सं०] झूला, हिंडोला; श्रावणके शुक्ल पक्षमें होनेवाला दोलोत्सव; एक राग; भगवद्यात्रा।

हिंदोलक–पु०, **हिंदोला**–स्त्री० [सं०] झूला; पालना।

हिंदोस्तानी–वि०, पु०, स्त्री० दे० 'हिंदुस्तानी'।

हियाँ*–अ० यहाँ।

हिँवार†–पु० हिम।

हिंस*–स्त्री० घोड़ेकी हिनहिनाहट, हींस।

हिंसक–वि० [सं०] हिंसा करनेवाला; घातक; बुराई करनेवाला, हानिकर। पु० हिंस्र पशु, खूँखार जानवर।

हिंसन–पु० [सं०] मारना; चोट पहुँचाना; सताना।

हिंसना*–अ० क्रि० हींसना, हिनहिनाना। स० क्रि० मार डालना; चोट पहुँचाना; सताना; नुकसान पहुँचाना।

हिंसा–स्त्री० [सं०] घात, मारण; नाश; चोट या हानि पहुँचाना; क्षति; बुराई। –कर्म(न्)–पु० नुकसान पहुँचानेवाला काम, बुराईका काम; तंत्रप्रयोग द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कार्य।

हिंसात्मक–वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो; हिंसायुक्त; बुराई करनेवाला, हानिकारक।

हिंसालु–वि० [सं०] हिंसा करनेवाला, हिंसक।

हिंस्र–वि० [सं०] हानिकारक, बुराई करनेवाला; घातक; निष्ठुर, निर्दय; भयानक; जंगली, खूँखार।–जंतु,–पशु–पु० खूँखार जानवर।

हिंस्रक–पु० [सं०] हिंस्र पशु, खूँखार जानवर।

हि*–प्र० एक विभक्ति जो कई कारकों, विशेषकर कर्म और संप्रदानमें प्रयुक्त होती थी। अ० ही।

हिअ*, हिआ*–पु० वक्ष, छाती; हृदय।

हिआउ, हिआव*–पु० हिम्मत, साहस।

हिकमत–स्त्री० [अ०] बुद्धिमानी, चतुराई; बुद्धि; चाल, युक्ति; चिकित्साकार्य, हकीमी।

हिकमती–वि० चालाक, जोड़-तोड़ लगानेवाला।

हिक़ारत–स्त्री० दे० 'हक़ारत'।

हिक्का–स्त्री० [सं०] हिचकी; हिचकीका रोग।

हिक्किका–स्त्री० [सं०] हिचकी; खर्राटा।

हिचक–स्त्री० सफलतामें संदेह, सामर्थ्यहीनता आदिके कारण किसी कामके करनेमें मनका रुकना; आगा-पीछा करना, हिचकिचाहट, झिझक।

हिचकना–अ० क्रि० कोई काम करनेसे पहले किसी आशंकासे या असमर्थता आदिके कारण कुछ रुकना, आगा-पीछा करना।

हिचकिचाना–अ० क्रि० मनका आगा-पीछा करना।

हिचकिचाहट–स्त्री० दे० 'हिचक'।

हिचकी–स्त्री० दे० 'हिक्का'; अत्यधिक रोनेके बाद एक साथ तीन-चार बार जोर-जोरसे साँस लेनेकी क्रिया। मु० **–बँध जाना,–लगना**–ज्यादा रोनेसे साँस रुकने लगना। **हिचकियाँ लगना**–प्राणांतके समय वायुका मुखसे निकलनेके प्रयत्नके कारण ठहर-ठहरकर हिचकीका आना; मृत्युके निकट होना। **–लेना**–रोते समय साँसका रुक-रुककर निकलना।

हिचर-मिचर–पु० हिचक; टालमटोल।

हिजड़ा–पु० नपुंसक, खोजा।

हिजरी–पु० [अ०] मुसलमानी संवत् जो मुहम्मदके मक्कासे मदीना पलायन करनेकी तिथि १५ जुलाई, सन् ६२२से आरंभ होता है।

हिजाब–पु० [अ०] परदा, ओट; लज्जा।

हिज्जे–पु०[अ०] किसी शब्दमें आये हुए वर्णों तथा मात्राओंको अलग-अलग कहना, वर्ण-विवृति, वर्त्तनी।

हिज्र–पु० [अ०] वियोग, विरह, जुदाई।

हिडिंब–पु० [सं०] एक विशालकाय राक्षस जिसे भीमने मारा था। **–जित्,–द्विट्(ष्)–रिपु**–पु० भीम।

हिडिंबा–स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जो हिडिंबकी बहन थी (इसने अपनेको सुंदर स्त्रीके रूपमें परिवर्तित कर भीमसे ब्याह किया। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम घटोत्कच था)। **–पति,–रमण**–पु० भीम।

हित–वि० [सं०] उचित, अच्छा; लाभदायक, उपयोगी; अनुकूल, स्वास्थ्यकर; उदार; शुभ। पु० मित्र; संबंधी; भलाई चाहनेवाला; लाभ, भलाई; उपयुक्त वस्तु; कल्याण, मंगल; सद्भाव, प्रेम। अ० [हिं०]···के निमित्त, के लिए। **–कर**–वि० मित्रसा व्यवहार करनेवाला, हितेच्छु; उपयोगी, लाभप्रद; स्वास्थ्यवर्धक। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० उपकार करनेवाला। पु० उपकारी व्यक्ति। **–काम**–वि० हितेच्छु, मंगलाकांक्षी। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'हितकर'। **–चिंतक**–वि० किसीकी भलाईके लिए सोचने, विचारने, चिंतना करनेवाला। **–चिंतन**–पु० किसीकी भलाई सोचना या चाहना। **–बुद्धि**–स्त्री० मैत्रीपूर्ण भावना। **–मित्र**–पु० उदार मित्र; भाई-बंद। **–वचन, –वाक्य**–पु० मैत्रीपूर्ण परामर्श। **–वादी(दिन्)**–वि० भलाईकी बात कहनेवाला; सत्परामर्श देनेवाला।

हितवना*–अ० क्रि० हित, मित्र जैसा आचरण करना।

हितवार*–पु० प्रेम, स्नेह–'चुंबत अंग परस्पर मनु जुग चंद करत हितवार'–सू०।

हिताई–स्त्री० संबंध, रिश्ता; मेलजोल।

हिताकांक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] भलाई चाहनेवाला।

हिताधिकारी(रिन्)–पु० [सं०] (बेनीफिशियरी) वह जिसे किसी वस्तु, व्यवस्था आदिसे लाभ हो रहा हो या होनेकी संभावना हो।

हिताना*–अ० क्रि० मित्र सदृश होना, भलाई करनेवाला होना; प्रेमयुक्त होना, किसीकी ओर प्रेमकी दृष्टि होना; प्रिय लगना, अनुकूल मालूम पड़ना; अच्छा प्रतीत होना –'नवल वधूके संगमें अहितौ बात हिताति'–मति०।

हितार्थी(र्थिन्)–वि० [सं०] मंगलाकांक्षी, हितेच्छु।

हितावह–वि० [सं०] कल्याणकारी।

हिताहित–पु० [सं०] भलाई-बुराई; लाभालाभ।

हिती–वि० हितैषी, भलाई चाहनेवाला। पु० हितैषी व्यक्ति, मित्र, दोस्त।

हितु*, हितू–पु० हितेच्छु व्यक्ति; मित्र, सखा; संबंधी।

हितेच्छा–स्त्री० [सं०] हितकामना, किसीकी भलाईकी इच्छा।

हितेच्छु–वि० [सं०] भलाई चाहनेवाला, हितैषी।

हितैषणा–स्त्री० [सं०] हितेच्छा।

हितैषिता–स्त्री० [सं०] हितैषी होनेका भाव।

हितैषी (षिन्)–वि० [सं०] हितेच्छु। पु० मित्र।

हितोक्ति–स्त्री० [सं०] सत्परामर्श, अच्छी, नेक सलाह।

हितोपदेश–पु० [सं०] हितकारी उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह; विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र-संबंधी एक ग्रंथ।

हितौना*–अ० क्रि० दे० 'हिताना'।

हिदायत–स्त्री० [अ०] मार्ग-प्रदर्शन, रहनुमाई, आदेश। **–नामा**–पु० हिदायतों, आदेशों आदिकी किताब।

हिनती*–स्त्री० हीनता।

हिनवाना–पु० तरबूज।

हिनहिनाना–अ० क्रि० (घोड़ेका) हींसना।

हिनहिनाहट–स्त्री० (घोड़ेके) हींसनेकी आवाज।

हिना–स्त्री० [अ०] मेहँदी। **–बंदी**–मुसलमानोंमें होनेवाली ब्याहकी एक रस्म।

हिनाई–वि० मेंहदीके रंगका। स्त्री० पीलापन लिये हुए सुर्ख रंग; हीनता; मानहानि।

हिफ़ाज़त–स्त्री० [अ०] रक्षा, निगरानी; बचाव।

हिब्बा–पु० दे० 'हब्बा'; दान, नजर। **–नामा**–पु० दानपत्र।

हिमंचल†–पु० दे० 'हिमाचल'।

हिमंत–पु० दे० 'हेमंत'।

हिम–वि० [सं०] ठंढा, शीतल। पु० बर्फ, पाला; शीत, ठंढक, जाड़ा; हेमंत ऋतु; हिमालय पर्वत; चंदन; चंदन वृक्ष; चंद्रमा; नवनीत, मक्खन; कपूर। **–उपल**–पु० ओला, पत्थर। **–ऋतु**–स्त्री० जाड़ेका मौसिम, हेमंत ऋतु। **–कण**–पु० ओसकी बूँदें; बर्फके कण। **–कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। वि० ठंढक लानेवाला। **–कर-तनय**–पु० बुध ग्रह। **–किरण**–पु० चंद्रमा। **–कूट**–पु० शिशिर ऋतु; हिमालय पर्वत; हिमालयकी चोटी। **–खंड**–पु० ओला। **–गर्भ**–वि० बर्फसे भरा हुआ। **–गिरि**–पु० हिमालय पर्वत। **–गिरि-सुता**–स्त्री०

पार्वती । –गु–पु० चंद्रमा । –गृह,–गृहक–पु० वह कमरा जो ठंढक लानेवाली चीजोंके जरिये ठंढा बनाया गया हो । –गौर–वि० वर्फ जैसा सफेद । –घ्न–वि० हिमका निवारण करनेवाला । –जा–स्त्री० पार्वती, गिरि-सुता; शची; खिरनीका पेड़ । –ज्वर–पु० जाड़ा-बुखार । –दीधिति–पु० चंद्रमा । –दुर्दिन–पु० पाला, अति ठंढक पड़नेके कारण कष्टदायक दिन या मौसिम । –द्युति–पु० चंद्रमा । –धर–पु० हिमालय पर्वत । –धामा (मन्)–पु० चंद्रमा । –ध्वस्त–वि० पालेका मारा हुआ ।–पात–पु० पालेका पड़ना; ओलेका गिरना । –भानु,–मयूख–पु० चंद्रमा । –रश्मि,–रुचि–पु० चंद्रमा । –रेखा–स्त्री० (स्नोलाइन) पर्वतोंकी ऊँचाईपर मानी गयी वह रेखा जिसके ऊपर वर्फ निरंतर जमी रहती है, गर्मीमें भी नहीं पिघलती । –वृष्टि–स्त्री० पाला पड़ना; ओले गिरना । –शिलास्खलन–पु० (एवेलांश) हिमराशिका मिट्टी, पत्थर आदिसे मिलकर बड़ी चट्टान जैसा रूप धारण करनेके बाद वेगपूर्वक नीचे खिसक पड़ना । –शीतल–वि० बहुत ठंढा; जमा देनेवाला (शीत) । –शुभ्र–वि० वर्फ जैसा सफेद ।–शैल–पु० हिमालय पर्वत । –संघात–पु०,–संहति–स्त्री० वर्फका ढेर ।

हिममय वृष्टि–स्त्री० (स्लीट) वह वर्षा जिसमें पानीके साथ-साथ ओलों या हिमकी भी वर्षा हो ।

हिमर्तु–स्त्री० [सं०] हेमंत ऋतु, जाड़ेका मौसिम ।

हिमवान् (वत्)–पु० [सं०] हिमालय; कैलास । वि० वर्फीला । –सुत–पु० मैनाक । –सुता–स्त्री० पार्वती; गंगा ।

हिमांक–पु० [सं०] (फ्रीजिंग पाइंट) वह तापमान जहाँ पानी जमकर वर्फ बनने लगता है (फारेन हाइटका ३२ अंश अथवा सेंटीग्रेड तापमापक यंत्रमें शून्य अंश) ।

हिमांत–पु० [सं०] जाड़ेके मौसिमकी समाप्ति ।

हिमांबु, हिमांभ (स्)–पु० [सं०] ठंढा पानी; ओस ।

हमांशु–पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।

हिमाक़त–स्त्री० दे० 'हमाक़त' ।

हिमाचल–पु० [सं०] हिमालय पर्वत ।

हिमाच्छन्न–वि० [सं०] तुपारावृत ।

हिमाद्रि–पु० [सं०] हिमालय पहाड़ । –जा–स्त्री० गंगा; पार्वती; खिरनी । –तनया–स्त्री० दुर्गा; गंगा; पार्वती ।

हिमानिल–पु० [सं०] सर्द हवा, वर्फीली हवा ।

हिमानी–स्त्री० [सं०] हिम-समूह, पालेका समूह; ओस-कण-समूह; हिमशर्करा ।

हिमाब्ज–पु० [सं०] नील कमल ।

हिमायत–स्त्री० [अ०] तरफदारी; मदद; रखवाली ।

हिमायती–वि० [फा०] तरफदारी करनेवाला, पक्ष ग्रहण करनेवाला ।

हिमाराति–पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; अर्क वृक्ष; चित्रक वृक्ष ।

हिमारि–पु० [सं०] अग्नि ।

हिमार्त–वि० [सं०] पालेसे ठिठुरा, जमा हुआ ।

हिमाह्व–पु० [सं०] हिमालय ।

हिमालय–पु० [सं०] भारतवर्षकी उत्तरी सीमापर स्थित एक पर्वतमाला (इसकी चोटियाँ बहुत ऊँची-ऊँची हैं और उनपर बराबर बर्फ जमी रहती है) ।–सुता–स्त्री० पार्वती ।

हिमि*–पु० दे० 'हिम' ।

हिमिका–स्त्री० [सं०] पाला, तुपार ।

हिमीकर–वि० (रिफ्रीजरेटर) हिमकी तरह (ठंढा) बना देनेवाला । पु० (खाद्य पदार्थोंको) ठंढा बनाकर सड़ने या नष्ट होनेसे बचानेका यंत्र ।

हिमेश–पु० [सं०] हिमालय ।

हिम्मत–स्त्री० [अ०] साहस; वीरता, बहादुरी; पौरुष, पराक्रम । मु०–पड़ना–साहस होना । –हारना–पस्त हो जाना, साहस छोड़ना ।

हिम्मती–वि० [अ०] साहसी; वीर; पराक्रमी, पुरुपार्थी ।

हिय*–पु० हृदय, मन; वक्षःस्थल, छाती, सीना । मु०–हारना–हिम्मत हारना, शारीरिक या मानसिक दृष्टिसे थक जाना ।

हियरा–पु० दे० 'हिय' ।

हियाँ†–अ० यहाँ ।

हिया–पु० दे० 'हिय' । मु०–जलना–बहुत गुस्सा करना । –ठंढा होना–कलेजा ठंढा होना, सुख, आनंदका अनुभव होना ।–फटना–कलेजा फटना, शोक, दुःख, पीड़ाके अतिरेकका अनुभव होना । –भर आना–करुणार्द्र होना, शोककातर होना, दुःखार्त होना । –भर लेना–शोक, दुःख, पीड़ा आदिके कारण लंबी साँस लेना; शोक, दुःख, पीड़ा आदिकी अभिव्यक्ति करना ।–शीतल होना –दे० 'हिया ठंढा होना' । –(ये)का अंधा–भीतरी आँखोंसे हीन, अज्ञान, मूर्ख, बेवकूफ । –की फूटना–सत् असत्का विवेक न रहना, ज्ञानका न रहना । –पर पत्थर धरना–सब्र कर लेना ।–में लोन सा लगना–कटेपर लोन लगनेकी तरह मनमें बहुत पीड़ा होना । –लगना–हृदयसे लगना, भेंटना ।

हियाव*–पु० साहस । मु०–खुलना–धड़क खुलना; साहस, दृढ़ताका आना । –पड़ना–हिम्मत पड़ना ।

हिरकना*–अ० क्रि० किसी व्यक्ति या वस्तुसे सटना, चिपकना–'फिरैं फिरकीसी मौन फिरकी रहैं न नेक, कोउ खिरकीमें कोऊ हिरकी किवारमें'–रामरसा० ।

हिरकाना*–स० क्रि० निकट ले जाना, सटाना, स्पर्श कराना ।

हिरण–पु० [सं०] स्वर्ण; * हिरन, मृग ।

हिरण्मय–वि० [सं०] सोनेका, सोनेका बना; सुनहरा । पु० ब्रह्मा; एक ऋषि; अग्नीध्रका एक पुत्र; संसारके नौ खंडोंमेंसे एक । –कोश–पु० सूक्ष्म शरीर, आत्माके सप्त आवरणोंमेंसे एक जो अंतिम है ।

हिरण्य–पु० [सं०] सुवर्ण; स्वर्णपात्र; चाँदी । वि० स्वर्ण-निर्मित । –कंठ–वि० सोनेके कंठवाला । –कर्ता(र्तृ)–पु० सुनार । –कवच–वि० सोनेके कवचवाला । पु० शिव । –कशिपु–पु० कश्यप और अदितिका पुत्र और प्रसिद्ध भक्त प्रह्लादका पिता जिसे विष्णुने नरसिंहके रूपमें खंभेसे प्रकट होकर मारा था । –कार–पु० सुनार । –केश–वि० सोनेके केशवाला । पु० विष्णु । –गर्भ–पु० ब्रह्मा (सोनेके अंडेसे उत्पन्न होनेके कारण); विष्णु;

सूक्ष्म शरीर धारण करनेवाली आत्मा, सूत्रात्मा; एक लिंग। वि० ब्रह्मा-संबंधी। **–पुरुष**–पु० स्वर्णनिर्मित पुरुष-प्रतिमा। **–रेता(तस्)**–पु० अग्नि; सूर्य; शिव; चित्रक वृक्ष। **–वर्चस**–वि० सोनेकीसी कांतिवाला। **–वाह**–पु० सोन नदी; शिव। **–वीर्य**–पु० अग्नि; सूर्य। **–स्रज्**–स्त्री० सोनेकी माला या सिकड़ी।

हिरण्याक्ष–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुका यमज भाई जिसे विष्णुने वराहका रूप धारण कर मारा था।

हिरदय*–पु० दे० 'हृदय'।

हिरदा*–पु० हृदय।

हिरदावल–पु० घोड़ेके सीनेपरकी भौंरी जो अशुभ है।

हिरन–पु० हरिण, मृग। मु०**–हो जाना**–चंपत हो जाना, लुप्त हो जाना; तुरत भागकर दूर हो जाना।

हिरनाकुस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हिरनौटा–पु० मृगशावक, हिरनका बच्चा।

हिरमज़ी–स्त्री० [फा०] एक तरहकी लाल मिट्टी जिससे दीवार आदि रँगते हैं; एक तरहका लाल फूल जिससे कपड़े रँगते हैं; एक रंग।

हिरस†–स्त्री० दे० 'हिर्स'।

हिराती–वि० हिरात-संबंधी। पु० एक तरहका घोड़ा (जो हिरात नामक स्थानमें होता है)।

हिराना–अ० क्रि० खो जाना, लुप्त हो जाना; अस्तित्व न रह जाना, अभाव होना; सुध-बुध खो देना; स्तब्ध रह जाना; नष्ट होना। स० क्रि० याद न रखना, विस्मरण करना, भूलना; ढुँढ़वाना।

हिरास–स्त्री० [फा०] डर, भय, दहशत; नैराश्य; मायूसी। वि० हिरासाँ, निराश–'यों कहि सुमंत हिये है हिरास' –रामरसा०।

हिरासत–स्त्री० [अ०] निगरानी; नजरबंदी; हवालात।

हिरासाँ–वि० [फा०] भीत; निराश, मायूस।

हिरौल*–पु० दे० 'हरावल'।

हिर्स–पु० [अ०] लोभ, लालच; तृष्णा, हवस।

हिर्साहिर्सी–अ० दूसरोंको करते देखकर, देखा-देखी।

हिर्सी–वि० [फा०] लालची।

हिलकना†–अ० क्रि० दे० 'हिरकना'; हिचकी लेना; सिसकना। स० क्रि० सिकोड़ना।

हिलकी*–स्त्री० हिचकी–'जागत हू पिय हिय लगी, हिलकी तऊ न जाय'–मति०; सिसकनेकी क्रिया, सिसक; उमंग; लहर।

हिलकोर–पु० जलकी तरंग, हिल्लोल।

हिलकोरना–स० क्रि० जलको तरंगित करना, पानीमें लहरें उठाना।

हिलकोरा–पु० दे० 'हिलकोर'। मु०**–देना**–पानीको धक्केसे हिलाना, तरंगित करना। **–लेना**–तरंगित होना।

हिलग–स्त्री० परचनेका भाव, मेलजोल; प्रेम–'हिलगके पद गायो करते'–अष्टछाप।

हिलगना–अ० क्रि० परचना; मेलजोल होना, हिरकना; उलझना, फँसना; पास आना।

हिलगाना–स० क्रि० परचाना; मेलजोल कायम करना; फँसाना, उलझाना; पास लाना।

हिलना–अ० क्रि० अस्थिर होना, चंचल होना; किसी स्थानपर स्थिर, जमा या दृढ़ न रहना; किसी स्थानसे इधर-उधर जाना, डोलना, होना; काँपना; जलमें प्रविष्ट होना; परचना, परिचित होना। मु० **हिल जाना**–परच जाना। **हिलना-डोलना**–चंचल होना; घूमना-फिरना; काम-धाम करना; उद्यम, प्रयत्न, कोशिश करना। **–मिलना**–घुलना-मिलना, एक हो जाना; भेंट-मुलाकात करते रहना।

हिलमोचि, हिलमोचिका–स्त्री० [सं०] एक शाक।

हिलसा–स्त्री० एक तरहकी मछली।

हिलाना–स० क्रि० चंचल करना, अस्थिर करना, किसी चीजको इधर-उधर करना, डोलाना; किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानसे हटाना, खिसकाना; कँपाना; जलमें प्रविष्ट कराना; परचाना; किसी वस्तुको ऊपर-नीचे, दायें-बायें ले जाना, डोलाना।

हिलाल–पु० [अ०] नया चाँद; नया और आखिरी चाँद।

हिलोर–स्त्री० हिल्लोल, जल-तरंग।

हिलोरना–स० क्रि० हिलकोरना; हलोरना; कपड़ेको पानीमें डालकर हिलाना जिससे मैल छँट जाय।

हिलोरा–पु० हिलोर। मु०**–लेना**–हिलकोरा लेना, तरंगित होना।

हिलोल–पु० हिल्लोल, लहर।

हिल्लोल–पु० [सं०] लहर; मनकी तरंग; हिंदोल राग।

हिल्वला–स्त्री० [सं०] मृगशिरा नक्षत्रके सिरके पासके पाँच छोटे तारे।

हिवाँ†–पु० बर्फ; तुषार, पाला।

हिवंचल–पु० हिमाचल; पाला, हिम, वर्फ।

हिवाँर–पु० हिम, पाला। मु०**–होना**–बहुत शीतल होना।

हिस(हिस्स)–स्त्री० [अ०] अनुभूति; किसी ज्ञानेंद्रियके द्वारा जानना, संवेदन; गति, चेष्टा।

हिसाब–पु० [अ०] गिनती, गणना; जोड़, किसी आर्थिक व्यवहारका विवरण, लेन-देन, खरीद-बेची आदिका ब्योरा, लेखा; गणित विद्या; गणितका प्रश्न; भाव, निर्ख; नियम, रीति; हाल; ढंग, तरीका; लेन-देन; राय, खयाल, समझ। **–किताब**–पु० आर्थिक व्यवहारका ब्योरा, लेखा; लेन-देन; बही-खाता; (ला०) ढंग, तरीका। **–चोर**–पु० वह जो हिसाब करनेमें कोई रकम दबा ले। **–दाँ**–वि० हिसाब जाननेवाला, गणितज्ञ। **–दार**–पु० हिसाब रखनेवाला। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें आमदनी-खर्चका ब्योरा लिखा जाय। मु०**–करना**–देना-पावना समझना, जोड़ना। **–चुकता करना**–देना चुका देना। **–तलब करना**–हिसाब माँगना, हिसाब समझानेको कहना। **–देना**–हिसाब समझाना। **–न होना**–बे हिसाब होना, गिनती न होना। **–पर चढ़ना**–बही या खातेमें लिखा जाना। **–पाक करना**–देना चुका देना। **–पूछना**–हिसाब माँगना। **–बेबाक करना**–खातेमें कुछ बाकी न रह जाना। **–बैठना**–ब्योंत बैठना, सब कामों, आवश्यकताओंका उपाय निकल आना; मेल

मिलना। –साफ़ करना–हिसाब चुकता करना। –से–अंदाजासे, परिमित मात्रामें, किफायतसे (हिसाबसे खर्च करो, चलो); क्रमसे,…मात्रामें (जिस हिसाबसे ज्वर बढ़ेगा…); हिसाबके मुताबिक। (किसीके)–से–…की दृष्टिसे,…के विचारसे। –से चलना–नाप-तौलकर काम करना; किफायतसे खर्च करना।

हिसाबी–वि० हिसाब जाननेवाला; हिसाबसे चलनेवाला।

हिसार–पु० [अ०] घेरा, इहाता; परकोटा; किला। मु०–करना–घेरा डालना। –बाँधना–घेरा डालना; चारों ओर सैनिकोंकी पाँत या कोई दूसरी रोक खड़ी कर देना।

हिसिषा*–स्त्री० ईर्ष्या–'जो ऐसहि हिसिषा करहिं नर विवेक अभिमान'–रामा०; स्पर्द्धा; किसीसे चढ़ा-ऊपरी करनेकी भावना, होड़।

हिस्सा–पु० [अ०] भाग, अंश; खंड; बाँट, बखरा; विभाग; अंशाधिकार, साझा; अंग (बदनके किसी हिस्सेमें)। –बखरा–पु० अंश, भाग। [मु०–बखरा होना–बटवारा होना, जायदादका हिस्सेदारोंमें बँट जाना]। –रसदी–अ० हिस्सेके अनुसार, जितना जिसके हिस्सेमें आये। –(स्से)दार–पु० अंशका अधिकारी, जिसका किसी संपत्ति या रोजगारमें हिस्सा हो, साझी। –दारी–स्त्री० हिस्सेदार होना, साझा। मु०–लेना–शिरकत करना, भाग लेना। –(स्से)करना–बाँटना। –में आना–बाँटेमें पड़ना, बटवारेसे मिलना।

हिहिनाना*–अ० क्रि० दे० 'हिनहिनाना'।

हींग–स्त्री० दे० 'हिंगु'।

हींछना*–अ०क्रि० इच्छा करना, चाहना; कामना करना।

हींछा*–स्त्री० इच्छा, कामना।

हींताल–पु० [सं०] हिंतालवृक्ष।

हींस–स्त्री० घोड़ेकी हिनहिनाहट।

हींसना–अ० क्रि० घोड़ेका हिनहिनाना।

हींसा*–पु० हिस्सा, भाग।

ही–अ० इसका प्रयोग निश्चय, सीमा, कमी, अकेलापन, अनन्यता आदिके अवसरोंपर होता है। सभी अवस्थाओंमें यह किसी बातपर जोर देने तथा निश्चयके लिए ही प्रयुक्त मिलता है। * पु० हिय, हृदय। * अ० क्रि० थी।

हीअ*–पु० दे० 'हिय'।

हीक–स्त्री० एक प्रकारकी दुर्गंध जिससे प्रायः मतली आती है; हिचकी। मु०–मारना–बार-बार बुरी महक फेंकना, गंधाना।

हीचना*–अ० क्रि० हिचकिचाना, किसी कामके करनेमें आगा-पीछा देखना।

हीछना†–अ० क्रि० दे० 'हींछना'।

हीन–वि० [सं०] अधम, नीच; निंद्य, गर्ह्य; रहित, वर्जित; परित्यक्त; निम्न कोटिका; जिसकी आर्थिक स्थिति बुरी हो, दीन; दबता हुआ, कमजोर; अनुपयुक्त; पद, मार्ग, स्थान आदिसे च्युत, भ्रष्ट; सदोष; अधूरा; क्षीण। –कर्मा(र्मन्)–वि० नीच काम करनेवाला। –कुल–वि० नीच कुलका, कलंकित वंशका। –क्रम–पु० काव्यगत एक दोष जिसमें वर्णित विषयोंके क्रमका निर्वाह न हुआ हो। –चरित–वि० कदाचारी, बुरे आचरणका। –नायक–वि० जिसका नायक अधम हो (नाटक)। –पक्ष–पु० तर्क द्वारा समर्थित न होनेवाला पक्ष, तर्क, दलीलकी दृष्टिसे कमजोर पक्ष। वि० अरक्षित। –बल–वि० निर्बल, कमजोर। –बुद्धि,–मति–वि० बुद्धिहीन, मूढ़, मूर्ख। –यान–पु० बौद्ध मतकी दो शाखाओंमेंसे एक (इसकी दूसरी शाखाका नाम 'महायान' है)। –योनि–वि० बुरे खानदानमें उत्पन्न, नीच जातिका। –रस–पु० काव्यगत एक दोष जो रसविरोधी भावके प्रसंगकी नियोजनासे होता है। –रोमा (मन्)–वि० केशहीन, गंजा। –वर्ग,–वर्ण–वि० नीच जातिका; शूद्रवर्णका। –वाद–पु० दोषपूर्ण तर्क; विरोधी बात, तर्क; कमजोर दलील; दोषी प्रमाण, साक्ष्य। –वादी-(दिन्)–वि० परस्पर विरोधी बातें कहनेवाला, (ऐसा व्यक्ति या गवाह) जिसकी पूर्वापर कही बातें असंगत हों, विरुद्धार्थवादी।

हीनता–स्त्री०, **हीनत्व**–पु० [सं०] सदोषता; राहित्य, अभाव; नीचता; बुराई।

हीनांग–वि० [सं०] अंगहीन, विकलांग।

हीनोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें बड़ेकी उपमा छोटेसे दी जाय।

हीय, हीयरा, हीया*–पु० दे० 'हिय', 'हियरा', 'हिया'।

हीर–पु० सार अंश, गूदा; वीर्य, शक्ति; [सं०] एक रत्न, हीरा; वज्र; शिव; सिंह; सर्प।

हीरक–पु० [सं०] हीरा नामक रत्न; एक वृत्त। –जयंती–स्त्री० (डायमंड जुबिली) किसीके शासन, विवाहित जीवन आदिके साठवें वर्षका उत्सव; किसी संस्था आदिकी स्थापनाका साठवाँ वार्षिकोत्सव।

हीरा–पु० एक बहुमूल्य रत्न जो अत्यंत कठिन और प्रायः श्वेत कांतियुक्त होता है, हीरक; (ला०) उत्तम व्यक्ति या वस्तु। –आदमी–पु० बहुत नेक आदमी, भलामानुस। –कसीस–पु० गंधकके योगसे उत्पन्न लोहेका विकार। –मन–पु० लोककथाओंमें वर्णित तोतेकी एक कल्पित जाति। मु०–खाना–आत्महत्या करनेके विचारसे हीरेका कण खा लेना; ईर्ष्यासे जान देना। –चाटना–हीरा चाटकर मर जाना। –(रे)की कनी खाना, चाटना–दे० 'हीरा खाना'।

हीलना*–अ० क्रि० दे० 'हिलना'।

हीला–पु० [अ०] बहाना, बनावट; वसीला; रोजगार, काम; † कीचड़। –हवाला–पु० टालमटोल। –(ले)गर,–बाज़,–साज़–वि० बहाने बनानेवाला। –गरी,–बाज़ी,–साज़ी–स्त्री० बहानेबाजी, फरेब। मु०–निकलना–उपाय निकल आना। –होना–बहाना होना; नौकर होना; कोशिश होना।

हीसका*–स्त्री० ईर्ष्या; प्रतिद्वंद्विता।

हीही–स्त्री० जोरसे हँसनेकी ध्वनि, उच्च हास्य-ध्वनि; हीनता प्रदर्शित करते हुए हँसना।

हुँ–अ० बात करते समय बात सुनने या उस बातकी स्वीकृतिका सूचक शब्द, हाँ; * दे० 'हूँ'।

हुंकना, हुँकरना–अ० क्रि० दे० 'हुंकारना'।

हुंकार–पु० [सं०] दर्पयुक्त होकर 'हुं' शब्द करना;

गर्जना; ललकार; सूअरका गुर्राना; धनुष्की टंकोर ।

हुंकारना–अ० क्रि० दर्पयुक्त होकर 'हुं' शब्दका उच्चारण करना; गर्जन करना; युद्ध, लड़ाई-झगड़े, प्रतियोगिता आदिमें अपने शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदिको ललकारना; चिग्घाड़ना ।

हुँकारी–स्त्री० 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा स्वीकृति सूचित करनेकी क्रिया; बिकारी । **मु०–भरना**–कहानी सुनते समय 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा कहानी सुनते रहनेकी सूचना देना; किसी कामके लिए स्वीकृति देना ।

हुंकृत–पु० [सं०] हुंकार; सूअरकी गुर्राहट; मेघगर्जन; मंत्र; रँभानेका शब्द ।

हुंकृति–स्त्री० [सं०] दे० 'हुंकार' ।

हुँड़ार–पु० भेड़िया ।

हुंडावन–पु० हुंडीकी दस्तूरी; हुंडीकी दर ।

हुंडी–स्त्री० [सं०] वह पत्र जो आपसमें लेन-देन करनेवाले महाजन किसीको रुपया दिलानेके लिए भेजते हैं, महाजनी 'चेक'; कर्ज देनेका एक तरीका जिसमें महाजन सूदकी रकम मूलमें पहले ही शामिल करके एक बार या किस्त करके लेता है । **–बही**–स्त्री० [हिं०] हुंडियोंका ब्योरा रखनेकी बही; वह बही जिसमेंसे हुंडी काटकर दी जाय । **मु०–करना**–हुंडी लिखना । **–खड़ी रखना**–किसी वजहसे हुंडीको मुल्तवी रखना । **–पटना**–हुंडीके रुपयेका अदा होना । **–भेजना**–हुंडी द्वारा द्रव्य चुकता करना, अदा करना । **–सकारना**–हुंडीमें लिखी रकम देना स्वीकार करना ।

हुँत, हुँते–प्र० हिंदीके करण तथा अपादान कारकोंकी विभक्ति; से, द्वारा; (किसीकी) ओरसे; (किसीके) लिए, हेतु, वास्ते, –'तुम हुँत मँडप गयेउ परदेसी'–प० ।

हु*–अ० भी ।

हुआँ–पु० गीदड़ोंके बोलनेकी आवाज । † अ० वहाँ ।

हुआना–अ० क्रि० 'हुआँ-हुआँ' शब्द करके बोलना ।

हुक–पु० [अं०] एक ओर मुड़ी कील, कँटिया जिसमें या जिससे कोई चीज फँसायी जाती है । † स्त्री० गर्दन या पीठकी नसोंका तनाव जिससे उस अवयवको हिलाना-डुलाना मुश्किल होता और ऐसा करनेसे चिलक होती है ।

हुकरना–अ० क्रि० दे० 'हुँकरना' ।

हुकुम–पु० दे० 'हुक्म' ।

हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर–स्त्री० शारीरिक कमजोरी, भय, आशंका आदिके कारण हृद्गतिका तीव्र होना, कलेजेका जल्दी-जल्दी धड़कना ।

हुक़ूक़–पु० [अ०] 'हक़'का बहुवचन ।

हुकूमत–स्त्री० [अ०] शासन, राज्य; अधिकार, प्रभुत्व । **मु०–चलाना**–अधिकारका उपयोग करना; दूसरेपर हुक्म चलाना । **–जताना**–अधिकार, प्रभुत्वका प्रदर्शन करना ।

हुक्का–दे० 'हुक़्क़ा' ।

हुक़्क़ा–पु० [अ०] तंबाकू पीनेका, नरकुलकी दो नलियों और फरशीके योगसे प्रस्तुत. यंत्र, गुड़गुड़ी; जवाहिरात रखनेकी डिबिया । **–पानी**–पु० हुक्का पीने-पिलानेका व्यवहार, जाति-बिरादरीका संबंध । [**मु०–पानी पिलाना**–आवभगत करना । **–पानी बंद करना**–बिरादरीसे खारिज कर देना, खान-पान बंद करना ।] **–बरदार**–पु० हुक्का लेकर साथ चलनेवाला टहलू । **–बाज़**–पु० जो बहुत हुक्का पीये; मदारी, बाजीगर । **मु० –ताजा करना**–फरशीका पानी बदलना और नैचेको तर करना । **–भरना**–चिलमपर तंबाकू और आग रखकर हुक्का तैयार करना ।

हुक्काम–पु० [अ०] 'हाकिम'का बहुवचन ।

हुक्म–पु० [अ०] आज्ञा, आदेश; फैसला; शरई फैसला, फतवा; इजाजत; हुकूमत, अधिकार; ताशका एक रंग, काला पान । **–क़तई**–पु० अंतिम निर्णय । **–गश्ती**–पु० वह आज्ञा जो सब जगह फिरायी जाय । **–दरमियानी**–पु० वह आज्ञा जो अंतिम निर्णय या कतई हुक्मके पहले दी जाय । **–नामा**–पु० आज्ञापत्र । **–बरदार**–वि० आज्ञापालक । **–बरदारी**–स्त्री० आज्ञाका पालन, फरमाँबरदारी । **–रान**–वि० हुक्म चलानेवाला; शासन करनेवाला । **–रानी**–स्त्री० हुकूमत, शासन । **मु०–की तामील**–आज्ञापालन । **–चलना**–हुकूमत होना, अधिकार होना । **–चलाना**–आज्ञा प्रचारित करना; हुकूमत करना । **–बजा लाना**–आज्ञाका पालन करना । **–में होना**–आज्ञाधीन होना; अधिकारमें होना । **–लगाना**–पक्की राय देना, फैसला करना ।

हुक्मी–वि० अचूक, खता न करनेवाला (–दवा); आज्ञाधीन, जो हुक्म मिले वह करनेवाला (–बंदा) । **–बंदा**–पु० आज्ञाधीन, हुक्मका गुलाम ।

हुचकी–स्त्री० दे० 'हिचकी' ।

हुजूम–पु० [अ०] जनसमूह, भीड़ ।

हुजूर–पु० [अ०] हाजिर होना, सामने आना, उपस्थिति; दरबार, इजलास; सम्मान्य जनका संबोधन, श्रीमन्, जनाबआली; (मातहत कर्मचारी अफसरका तथा वकील, मुख्तार जज-कलेक्टर आदिका इसी शब्दसे संबोधन करते हैं) । **–तहसील**–स्त्री० सदर तहसील । **–वाला**–पु० (संबोधन) श्रीमन्, जनाबआली । **(किसीके)–में**–दरबारमें; सामने; सेवामें ।

हुजूरी–स्त्री० समीपता; हाजिरी; शाही दरबार । पु० (राजा आदिका) खास नौकर; दरबारी ।

हुज्जत–स्त्री० [अ०] दलील; बहस; विवाद, झगड़ा ।

हुज्जती–वि० हुज्जत करनेवाला, झगड़ालू ।

हुड़क–स्त्री० दे० 'हुड़का' ।

हुड़कना–अ० क्रि० छोटे बच्चेका अपने प्रिय व्यक्ति (जिससे वह हिला-मिला हो) के न मिलनेपर रोना, डरना, खाना-पीना छोड़ देना आदि ।

हुड़का–पु० विरहजनित पीड़ा (विशेषतः बच्चोंको होनेवाली); दे० 'हुडुक्क' ।

हुड़काना–स० क्रि० तलफाना, दुःखित करना ।

हुड़दंग, हुड़दंगा–पु० ऊधम, उपद्रव, हुल्लड़ ।

हुडुंब–पु० [सं०] भूना हुआ चिउड़ा ।

हुडुक–पु० दे० 'हुडुक्क' ।

हुडुक्क–पु० [सं०] एक बाजा जो डमरूकी शकलका, पर आकारमें उससे बड़ा होता है; एक पक्षी ।

हुढक्क*–पु० हुडुक बाजा ।

हुत–* अ० क्रि० 'होना'का भूतकाल, था। वि० [सं०] हवन किया हुआ; जिसके निमित्त हवन किया गया है। पु० शिव; हवन-सामग्री। **–भक्ष**–पु० अग्नि। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि। **–शिष्ट,–शेष**–पु० हवनका बचा हुआ अंश।

हुता*–अ० क्रि० दे० 'हुत' (था)।

हुताग्नि–स्त्री० [सं०] हवनकी अग्नि, यज्ञाग्नि।

हुताशन–पु० [सं०] अग्नि।

हुति–स्त्री० [सं०] होम, हवन। * प्र० अपादान और करणकी विभक्ति।

हुतो*–अ० क्रि० दे० 'हुत (था)।

हुदकाना*–स० क्रि० उभाड़ना।

हुदना*–अ० क्रि० आश्चर्यचकित होना, ठक रह जाना।

हुदहुद–पु० [अ०] कठफोड़ा पक्षी।

हुदूद–पु०, स्त्री 'हद' का बहु०; चारों ओरकी सीमा।

हुन–पु० स्वर्ण, सोना; स्वर्णमुद्रा, सोनेका सिक्का। **मु०–बरसना**–द्रव्यका आधिक्य होना।

हुनना–स० क्रि० हव्य–घृत, यव आदि–अग्निमें डालना, आहुति देना; यज्ञ करना, होम करना; भस्म करना।

हुनर–पु० [फा०] फन, कारीगरी; हाथकी कारीगरी; खूबी; निपुणता; योग्यता। **–मंद**–वि० हुनर जाननेवाला, गुणी; निपुण, कुशल। **–मंदी**–स्त्री० कारीगरी; कुशलता, निपुणता।

हुन्न, हुन्ना*–पु० दे० 'हुन'–'पीरी-पीरी हुन्नै तुम देत हौ मँगाय हमैं, सुबरन हम सों परखि करि लेत हौ'–भू०।

हुब्ब–स्त्री० [अ०] प्रेम, मुहब्बत; मित्रता; चाह।

हुब्बुलवतन, हुब्बेवतन–स्त्री० [अ०] स्वदेशप्रेम, वतनकी मुहब्बत।

हुमकना, हुमगना–अ० क्रि० उल्लसित होना, आनंदातिरेकसे उछलना-कूदना; छोटे बच्चोंका अल्हड़पनके साथ चलना, ठुमकना; चोट करनेके लिए पैरको फुर्तीसे उठाना, तानना।

हुमसाना, हुमसावना*–स० क्रि० मनमें कामना, इच्छा, विचार आदि उठाना, हृदयके भावों, मनके विचारोंको उत्तेजित करना; जोर लगाकर उठाना, हटाना।

हुमा–पु० [फा०] एक कल्पित पक्षी (कहा जाता है कि यह जिसके सिरसे गुजर जाय वह राजा हो जाय।)

हुमेल–स्त्री० स्त्रियोंके गलेका एक गहना जो अशर्फियों, रुपयोंमें कोंढ़ा जोड़कर और उन्हें तागोंमें गूँथकर पहननेके योग्य बनाया जाता है (पशुओंके गलेका भी यह गहना है)।

हुरदंग, हुरदंगा–पु० दे० 'हुड़दंग'।

हुरमत–स्त्री० [अ०] इज्जत, आबरू; बड़ाई, प्रतिष्ठा।

हुरमति*–स्त्री० दे० 'हुरमत'–'कहै कबीर बाप रामराय, हुरमति राखहु मेरी'–कबीर।

हुरहुर–पु० एक बरसाती पौधा जिसके कई भेद होते हैं और जो दवाके भी काममें आता है।

हुरिहार*–पु० होलीका राग-रंग करनेवाला, होली खेलनेवाला।

हुलकना–अ० क्रि० वमन करना, कै करना।

हुलकी–स्त्री० उलटी, वमन, कै।

हुलना–अ० क्रि० लाठी आदिका ठेला जाना।

हुलसना–अ० क्रि० उल्लसित, आनंदित, होना; स्फुरित होना, उमड़ना; * शोभित होना। * स० क्रि० उल्लसित करना।

हुलसाना–स० क्रि० आनंदित करना। * अ० क्रि० दे० 'हुलसना'।

हुलसी–स्त्री० हुलास, उल्लास, मनकी तरंग; गोस्वामी तुलसीदासकी माताका नाम (कुछ लोगोंके मतसे)।

हुलहुल–पु० दे० 'हुरहुर'।

हुलास–पु० उल्लास, मनकी उमंग, आनंदकी उठान; उत्साह। † स्त्री० सुँघनी। **–दानी**–स्त्री० नसदानी।

हुलासी–वि० उल्लासपूर्ण, आनंदयुक्त; उत्साहपूर्ण।

हुलिया–पु० [अ०] चेहरा; शकल; नख-शिख, शकल-सूरतका ब्योरा। **–नामा**–पु० शकल-सूरत आदिका विवरणपत्र। **मु०–कराना,–लिखाना**–भगे या खोये हुए आदमीकी पहचान पुलिसमें लिखाना। **–तंग होना**–परेशानीमें पड़ना। **–बताना,–बयान करना**–शकल-सूरतका हाल बताना। **–बिगड़ना**–बुरी हालत होना, गत बनना। **–बिगाड़ देना,–बिगाड़ना**–मुँहपर ऐसा मारना कि सूरत बिगड़ जाय।

हुल्लड़–पु० शोर-गुल, हो-हल्ला; उत्पात, ऊधम; दंगा-फसाद; गड़बड़।

हुश–अ० किसीको अकरणीय कार्य करने या करनेके प्रयत्नसे विरत करनेके लिए झटकेसे मुँहसे निकलनेवाला एक शब्द; पशु-पक्षी आदिको भगानेका शब्द।

हुसियार*–वि० दे० 'होशियार'।

हुसैन–पु० [अ०] अलीके दूसरे बेटे जो करबलाके युद्धमें शहीद हुए।

हुस्न–पु० [अ०] भलाई, खूबी; सुंदरता, लावण्य; शोभा। **–परस्त**–वि० सौंदर्यकी पूजा करनेवाला, सौंदर्यप्रेमी। **–परस्ती**–स्त्री० सौंदर्य-प्रेम, सौंदर्योपासना।

हुस्यार*–वि० दे० 'होशियार'।

हूँ–अ० दे० 'हुँ'; दे० 'हू'। अ० क्रि० उत्तम पुरुषके एक वचनके साथ प्रयुक्त होनेवाला 'होना' क्रियाका वर्तमानकालिक रूप। * सर्व० हौं, मैं।

हूँकना–अ० क्रि० 'हुँ' शब्द करना, हुंकार करना, गर्जन करना; मानसिक या शारीरिक पीड़ासे जोर-जोरसे रोना; पीड़ाके कारण गायका रँभाना, बोलना, हुड़कना।

हूँकार–पु० [सं०] दे० 'हुंकार'।

हूँठ*–वि० साढ़े तीन।

हूँठा–पु० साढ़े तीनका पहाड़ा।

हूँड़–स्त्री० सिंचाई आदि खेतीके कामोंमें किसानोंकी आपसकी सहायता।

हूँस–स्त्री० किसीको सकारण और अकारण भी कटूक्ति कहते रहनेकी क्रिया, भर्त्सना; ईर्ष्या; बुरी नजर।

हूँसना–स० क्रि० बुरी नजरसे देखना, नजर लगाना। अ० क्रि० ईर्ष्या करना; कुढ़ना, बुरा-भला कहना।

हू*–अ० भी।

हूक–स्त्री० साल; पीड़ा, कसक; मानसिक पीड़ा; खटका।

हूकना-अ० क्रि० पीड़ा होना, दर्द करना; सालना।

हूटना*-अ०क्रि०विलग होना, पृथक् होना; विमुख होना, मुँह मोड़ना-'काल-वस जंगतें नाहिं हूट्यो'-सुजान।

हूठा-पु० अँगूठा; ठेंगा; चिढ़ानेकी मुद्रा। **-देना**-मु० अँगूठा दिखाना; चिढ़ाना।

हूड़-वि० हुड्डु, अनाड़ी, मूढ़; लापरवाह।

हूण, हून-पु० [सं०] एक म्लेच्छ जाति जिसने भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर कई बार आक्रमण किया था और जिसे एक बार विक्रमादित्यने बुरी तरह हराया भी था; एक स्वर्णमुद्रा।

हूत-वि० [सं०] बुलाया हुआ, आमंत्रित।

हूति-स्त्री० [सं०] आह्वान; ललकार; नाम, संज्ञा।

हूतो*-अ० दे० 'हुति'।

हूदा-पु० पीड़ा, शूल; धक्का।

हूनना-स० आगमें डालकर भूनना; विपत्तिमें झोंकना।

हूबहू-वि० ज्योंका त्यों, वैसा ही।

हूर-स्त्री० [अ०] बिहिश्त या स्वर्गलोककी स्त्री, अप्सरा; (ला०) परम सुंदरी, परी जैसी सुंदर स्त्री; * दे० 'हूल' **-का बच्चा**-बहुत सुंदर आदमी।

हूरना-स० क्रि० पेलना, ठेलना; चुभाना, गड़ाना। -'किछु दूर ही ते दये हूरि नेजा'-सुजान।

हूरा-पु० लाठी आदिका छोर।

हूल-स्त्री० लाठीके हूरे, तलवार, भाले आदिकी नोक तेजीसे कहीं गड़ाने, गोदने, भोंकनेकी क्रिया; पीड़ा, वेदना, शूल; वमन, कैकी प्रवृत्तिका होना; हल्ला-गुल्ला, उलट-पलट, शोर-गुल-'परी हूल जोगिन गढ़ छेंका' -प०; आनंदध्वनि, खुशीसे उत्पन्न आवाज; प्रसन्नता, हर्ष; युद्ध आदिके हेतु आह्वान, ललकार; बहेलियेका चिड़िया फँसानेका लासा लगा बाँस।

हूलना-स० क्रि० दे० 'हूरना'।

हूला-पु० हूलने, हूरनेकी क्रिया।

हूश-वि० जाहिल, जंगली, उजड्ड।

हूह-स्त्री० युद्धकी ललकार; हुंकार, गर्जन।

हूहू-पु० आगके जलनेका शब्द; [सं०] एक गंधर्व।

हृत-वि० [सं०] हरण किया हुआ; गृहीत; वहन किया हुआ, ले जाया गया हुआ; वंचित; मुग्ध; स्वीकृत; विभक्त। पु० भाग, हिस्सा। **-दार**-वि० पत्नी-रहित। **-द्रव्य,-वित्त**-वि० संपत्तिसे वंचित। **-प्रतिदान**-पु० (रेस्टीट्यूशन) छीनी हुई या जब्त की हुई वस्तु, संपत्ति आदिका पुनः लौटा दिया जाना। **-प्रत्यर्पण**-पु० (रेस्टोरेशन) हरे हुए, छीने हुए व्यक्ति या राज्यादिको पुनः अर्पित कर देना, सौंप देना; दे० 'पूर्ववत्करण'। **-वासा(सस्)**-वि० वस्त्रविरहित। **-सर्वस्व**-वि० जिसका सब कुछ ले लिया या नष्ट कर दिया गया हो।

हृताधिकार-वि० [सं०] अधिकारवंचित, पदच्युत।

हृति-स्त्री० [सं०] अपहरण, ले लेने, लूटनेकी क्रिया; ध्वंस, नाश।

हृत्-वि० [सं०] (समासांतमें) हरण करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; ले जानेवाला; मुग्ध करनेवाला। पु० हृदय। **-कंप**-पु० दिलकी धड़कन। **-कमल**-पु० योगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे एक जो हृदयके पास स्थित है। **-ताप**-पु० हृदयकी जलन, मनोव्यथा। **-पंकज,-पद्म**-पु० कमलवत् हृदय। **-पिंड**-पु० सीनेके पास स्थित अंगविशेष, हृदय। **-पीड़न**-पु० हृदयको कष्ट देना। **-पीड़ा**-स्त्री० मनोव्यथा।

हृदयंगम-वि० [सं०] मर्मस्पर्शी; सुंदर; हृदयगत; समझमें आया हुआ; आकर्षक; आनंददायक; प्रिय।

हृदय-पु० [सं०] वक्षके भीतर बायीं ओर स्थित मांसका रक्तकोश जिसमें भरा शुद्ध रक्त नाड़ियों द्वारा सारे शरीरमें प्रवाहित होता है, दिल; छाती, सीना; मन, अंतःकरण; आत्मा; नीरक्षीरविवेकिनी बुद्धि; किसी स्थानका भीतरी भाग जो प्रायः महत्त्वपूर्ण होता है; सार वस्तु, तत्त्व, हीर; बहुत ही प्रिय, प्यारा व्यक्ति। **-क्षोभ**-पु० मनकी अशांति। **-गत**-वि० हृदय-संबंधी, हार्दिक, आंतरिक; हृदयस्थित। **-ग्रंथि**-स्त्री० हृदयकी गाँठ, दिलको कष्ट देनेवाली बात। **-ग्राही(हिन्)**-वि० मनोहर; मनोरंजक। **-चोर**-पु० हृदयका हरण करनेवाला व्यक्ति। **-च्छिद्**-वि० हृदयका छेदन करनेवाला। **-ज**-पु० पुत्र। **-ज्ञ**-वि० दिलकी बात समझनेवाला; रहस्य जाननेवाला। **-ज्वर**-पु० दिलकी जलन। **-दाही(हिन्)**-वि० हृदय जलानेवाला। **-दौर्बल्य**-पु० दिलकी कमजोरी। **-निकेत,-निकेतन**-पु० मनोज, कामदेव। **-प्रमाथी(थिन्)**-वि० मनको क्षुब्ध करनेवाला; मुग्ध करनेवाला। **-प्रिय**-वि० दिलको प्यारा, स्वादिष्ठ। **-रोग**-पु० हृदयमें होनेवाला रोग। **-वल्लभ**-पु० प्राणप्रिय व्यक्ति, प्रियतम। **-विदारक**-वि० हृदयको विदीर्ण करनेवाला, शोक, करुणा आदि उत्पन्न करनेवाला। **-विध,-वेधी(धिन्)**-वि० मर्माहत करनेवाला। **-व्यथा**-पु० मानसिक पीड़ा। **-व्याधि**-स्त्री० हृदयका रोग। **-शल्य**-पु० दिलका काँटा; दिलका जख्म। **-शून्य**-वि० दे० 'हृदयहीन'। **-स्थ**-वि० जो हृदयमें स्थित हो। **-स्थली**-स्त्री०,**-स्थान**-पु० वक्षःस्थल। **-स्पर्शी(र्शिन्)**-वि० हृदयको प्रभावित करनेवाला। **-हारी(रिन्)**-वि० मनको मुग्ध करनेवाला। **-हीन**-वि० निष्ठुर; अरसिक।

हृदयवान्(वत्)-वि० [सं०] कोमलहृदय, दयालु।

हृदयालु-वि० [सं०] दे० 'हृदयवान्'; उदार; सहृदय।

हृदयिक, हृदयी(यिन्)-वि० [सं०] दे० 'हृदयवान्'।

हृदयेश, हृदयेश्वर-पु० [सं०] पति; परम प्रिय व्यक्ति।

हृदयेशा, हृदयेश्वरी-स्त्री० [सं०] पत्नी, प्रियतमा।

हृद्-पु० [सं०] दिल, मन; आत्मा; सीना; किसी पदार्थका भीतरी भाग, हीर। **-गत**-वि० मनमें आया हुआ; हृदयस्थ; हृदय-संबंधी; वांछित; प्रिय; आनंददायक; अभिप्रेत। **-दाह**-पु० हृदयकी जलन। **-देश**-पु० हृदयका क्षेत्र; हृदय; वक्षःस्थल। **-रोग**-पु० हृदयका रोग; शोक; प्रेम। **-व्यथा**-स्त्री० मनोव्यथा; हृदयका स्पंदन। **-व्रण**-पु० कलेजेका जख्म।

हृद्य-वि० [सं०] हार्दिक; प्रिय; वांछित; अनुकूल; आनंददायक; सुंदर, मनोहर; स्वादिष्ठ; हृदयसे उत्पन्न।

हृषीकेश-पु० [सं०] परमात्मा, इंद्रियोंका स्वामी; मन;

विष्णु; कृष्ण; एक तीर्थ जो हरिद्वारके निकट है।

हृष्ट–वि० [सं०] प्रसन्न; रोमांचित; विस्मित। **–चित्त,–चेतन,–चेता (तस्)**–वि० प्रसन्नचित्त। **–पुष्ट**–वि० तगड़ा, हट्टा-कट्टा। **–मना (नस्),–मानस**–वि० प्रसन्नचित्त। **–रोमा (मन्)**–वि० रोमांचयुक्त। **–वदन**–वि० प्रसन्न मुद्रावाला।

हृष्टि–स्त्री० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता; रोमांच; दर्प।

हेँगा–पु० जोती हुई जमीन बराबर करनेका पटरा, पटेला।

हेँ-हेँ–अ० धीरे-धीरे हँसनेकी ध्वनि; गिड़गिड़ानेके वक्त निकलनेवाला शब्द। **मु०–करना**–गिड़गिड़ाना।

हे–अ० [सं०] संबोधन, आह्वानके लिए प्रयुक्त शब्द; अवज्ञा, घृणा-सूचक शब्द। * अ० क्रि० थे।

हेकड़–वि० बलवान् (बुरे अर्थमें), जबरदस्त; अशिष्ट, जाहिल, उजड्ड; मजबूत शरीरवाला, तंदुरुस्त।

हेकड़ी–स्त्री० जबरदस्ती, बलात् कुछ करनेकी प्रवृत्ति; अशिष्टता, उजड्डपन।

हेच–वि० [फा०] निकम्मा; बेकार; अकिंचन, क्षुद्र, तुच्छ; निस्तत्त्व, सारहीन। **–पोच**–वि० अदना, घटिया; निकम्मा।

हेठ*–वि० कम; नीचा; हीन। अ० नीचे–'हेठ दाबि कपि भालु निसाचर'–रामा०।

हेठा–वि० दे० 'हेठ'।

हेठी–स्त्री० अप्रतिष्ठा, मानहानि, हीनता।

हेडिंग–स्त्री० [अं०] शीर्षक।

हेत*–पु० हेतु; प्रीति, प्रेम।

हेति–स्त्री० [सं०] अस्त्र; सूर्यकिरण; आगकी लपट, लौ; प्रकाश, तेज; आघात, चोट; जख्म।

हेती*–पु० प्रेमी, हित-मित्र; संबंधी।

हेतु–पु० [सं०] कारण; लक्ष्य, मकसद; प्रेम; ऐसी घटना, काम आदि जिसके बिना हुए दूसरी घटना, दूसरा काम न हो, मूल कारण, एकमात्र कारण; एक अर्थालंकार जहाँ कारणको ही कार्यरूप वर्णन करते हैं; तर्क, दलील; तर्कशास्त्र; व्यापक ज्ञापक कारण, ऐसा कारण जो व्याप्ति, अव्याप्ति और अतिव्याप्ति नामक दोषोंसे दूषित न हो; * प्रेम। अ० वास्ते,…के लिए। **–युक्त**–वि० सकारण, साधार। **–वादी (दिन्)**–पु० तर्क करनेवाला, तार्किक; नास्तिक। **–विद्या**–स्त्री०, **–शास्त्र**–पु० तर्कशास्त्र। **–शून्य**–वि० हेतुरहित, निराधार। **–हेतुमद्भाव**–पु० कारण और कार्यका संबंध। **–हेतुमद्भूत**–पु० भूतकालका एक भेद जिसमें कारणरूप क्रिया न होनेपर कार्यरूप क्रियाका न होना दिखलाया जाता है।

हेतुता–स्त्री०, **हेतुत्व**–पु० [सं०] कारणका होना।

हेतुमान् (मत्)–वि० [सं०] जो सकारण हो; तर्कयुक्त; साधार। पु० कार्य।

हेतूत्प्रेक्षा–स्त्री० [सं०] उत्प्रेक्षा अलंकारका एक भेद जहाँ अहेतुको हेतु मानकर उत्प्रेक्षा की जाय।

हेत्वपह्नुति–स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें प्रकृतके निषेधका हेतु व्यक्त रहता है।

हेत्वाभास–पु० [सं०] वह हेतु जो किसी कार्यका कारण तो न हो परंतु हेतुसा आभासित हो, कुतर्क, हेतुदोष।

हेमंत–पु० [सं०] छः ऋतुओंमेंसे एक जो मार्गशीर्ष और पौषमें पड़ती है। **–समय**–पु० जाड़ेका मौसिम।

हेम–पु० [सं०] सुवर्ण; धतूरा; काले या भूरे रंगका घोड़ा।

हेम (न्)–पु० [सं०] सोना; जल; पाला, हिम; धतूरा। **–कार,–कारक**–पु० सुनार। **–कूट**–पु० हिमालयके उत्तरका एक पर्वत। **–तरु**–पु० धतूरा। **–प्रतिमा**–स्त्री० सोनेकी मूर्ति। **–माली (लिन्)**–वि० सोनेका हार धारण करनेवाला; सोनेसे अलंकृत। पु० सूर्य।

हेमाढ्य–वि० [सं०] सोनेसे भरा-पूरा।

हेमाद्रि–पु० [सं०] मेरु।

हेय–वि० [सं०] त्याज्य; बुरा, खराब; जाने योग्य; तुच्छ।

हेरंब–पु० [सं०] गणेश; भैंसा।

हेर*–स्त्री० खोज, तलाश।

हेरना*–स० क्रि० किसी चीजको ढूँढ़ना, तलाश करना, खोजना; देखना, निहारना; किसी वस्तुको विवेकपूर्वक देखना, परीक्षा करना, जाँच-पड़ताल करना, परखना। **मु०–फेरना**–एक जगहकी चीज दूसरी जगह करना, उलट-पलट करना; अदल-बदल करना, परिवर्तन करना।

हेरफेर–पु० परिवर्तन, उलट-पलटकी क्रिया; अदल-बदल करनेका काम, विनिमय; भेद, अंतर, दूरी; टेढ़ी-सीधी बात, साफ-साफ बात न करनेकी क्रिया; चालबाजी।

हेरवाना†–स० क्रि० पता लगवाना, खोजवाना; खोना।

हेराना*–स० क्रि० दे० 'हेरवाना'। अ० क्रि० गायब हो जाना, खो जाना; एकदम न रह जाना, अभाव हो जाना; अपनेको भूल जाना, अपनी सुध-बुध खोना।

हेरा-फेरी–स्त्री० हेर-फेर; उलट-पलट, वस्तुओंका यथास्थान न रह जाना, चीजोंका इधर-उधर होना।

हेरी*–स्त्री० आह्वान, पुकार, गुहार। **मु०–देना**–गुहार लगाना, आह्वान करना।

हेलन–पु० [सं०] अवहेलना; रस-क्रीड़ा, किलोल।

हेलना–स्त्री० [सं०] दे० 'हेलन'। * अ० क्रि० राग-रंग मनाना, क्रीड़ा करना; निश्चित रहना, परवाह न करना; खेलना (जानपर); प्रवेश करना (जलमें); हँसी-मजाक करना। स० क्रि० अवहेलना, उपेक्षा करना, तुच्छ समझना; तैरना, हलकर पार करना।

हेलनीय–वि० [सं०] उपेक्षाके योग्य।

हेलमेल–पु० मेल-जोल, घनिष्ठता।

हेलया–अ० [सं०] खेल ही खेलमें, आसानीसे।

हेला–पु० मेहतर; आह्वान, पुकार; उतारा–'और घाट है कीजे हेला'–छत्र०; आक्रमण, धावा; ठेलनेकी क्रिया, धक्का; खेवा, खेप। स्त्री० [सं०] तिरस्कार, अवज्ञा; अपमान; केलि, क्रीड़ा; चंद्रिका; आनंद, प्रसन्नता; स्त्रियोंका शृंगार-सूचक व्यक्त हाव जो अनुभावोंका एक उपभेद है।

हेली*–स्त्री० सखी, सहेली।

हेलीमेली–वि० जिससे हेल-मेल हो।

हेवंत*–पु० दे० 'हेमंत'।

हैं–अ० क्रि० 'है'का बहुवचन रूप। अ० आश्चर्यसूचक शब्द; अस्वीकृति, निषेधसूचक शब्द।

हैंडबैग–पु० [अं०] हाथमें लेने योग्य चमड़े आदिका छोटा बक्स।

है-अ० क्रि० 'होना'का वर्तमान कालका एकवचन रूप। *पु० हय, अश्व, घोड़ा। **-बर**-पु० सुंदर घोड़ा।

हैकड़-वि० दे० 'हेकड़'।

हैकल-स्त्री० चौकोर, पानके तथा अन्य प्रकारके आकारके कई जंतरोंसे बना गलेमें पहननेका एक गहना, हुमेल।

हैज़-पु० [अ०] स्त्रियोंको होनेवाला मासिक रजःस्राव।

हैज़ा-पु० [अ०] संक्रामक माना जानेवाला एक रोग जिसमें कै और दस्त आते हैं, विपूचिका।

हैट-पु० [अं०] अंग्रेजी टोप।

हैदर-पु० [अ०] शेर।

हैना*-स० क्रि० मारना, हनन करना।

हैफ़-पु० [अ०] खेद, अफसोस। अ० हा, हंत, अफ़सोस।

हैबत-स्त्री० [अ०] डर, भय, दहशत। **-ज़दा**-वि० भीत, डरा हुआ। **-नाक**-वि० डरावना।

हैमंत-वि० [सं०] हेमंत-संबंधी; जाड़ेमें उत्पन्न होनेवाला; जाड़ेके उपयुक्त। पु० हेमंत ऋतु।

हैम-वि० [सं०] हिम-संबंधी; हिमसे उत्पन्न; जाड़ेमें होनेवाला; बर्फ़से ढका हुआ; हिमालय-संबंधी; सोनेका बना हुआ; सोनेके रंगका। पु० हिम, पाला; ओस। **-मुद्रा, -मुद्रिका**-स्त्री० सोनेका सिक्का। **-वल्कल**-वि० सोनेका पत्तर चढ़ा हुआ।

हैरत-स्त्री० [अ०] अचंभा, विस्मय। **-अंगेज**-वि० विस्मयजनक। **-ज़दा**-वि० चकित, विस्मित; भौचक्का।

हैरान-वि० [अ०] चकित; हतबुद्धि, भौचक्का; परेशान।

हैरानी-स्त्री० [अ०] विस्मय; परेशानी।

हैवान-पु० [अ०] प्राणी; पशु। वि० (ला०) उजड्ड।

हैवानियत-स्त्री० पशुता; जंगलीपन।

हैसियत-स्त्री० [अ० 'हैसीयत'] ढंग, तौर; योग्यता; सामर्थ्य; बिसात; मालियत; आर्थिक योग्यता; धन-संपत्ति; दरजा, श्रेणी (जमीनकी है०); मान-प्रतिष्ठा। **-दार**-वि० हैसियतवाला, जिसके पास पैसा या जायदाद हो।

हैहय-पु० [सं०] एक देश या वहाँका निवासी। **-राज**-पु० सहस्रार्जुन।

है-है-अ० खेद, दुःख आदिका सूचक शब्द, हाय-हाय।

हों-अ० क्रि० 'होना'का संभावना-सूचक (बहुवचन) रूप।

होंठ-पु० मुँहके बाहरका ऊपर या नीचेका भाग, ओष्ठ, दंतच्छद; घड़े आदिके मुँहका किनारा। **मु०-काटना, -चबाना**-क्रोध, शोक आदिके आवेशमें दाँतोंसे होंठको काटना। **-चाटना**-कोई स्वादिष्ठ पदार्थ अधिकसे अधिक खानेकी इच्छा करना; किसी अच्छी चीजका स्वाद याद आना। **-चिपकना**-किसी मनचाही मीठी चीजका नाम सुनते ही उसे पानेकी प्रबल इच्छा होना। **-चूसना**-अधर(रस)पान करना। **-सी लेना**-मौन हो जाना। **-हिलाना**-बोलना। **होंठोंपर छठीका दूध याद आ जाना**-बहुत बड़ी मुसीबतमें पड़ना।

होंठल-वि० बड़े-बड़े मोटे होंठोंवाला।

हो-अ० क्रि० 'होना'का संभावनासूचक (अन्य पुरुष, एकवचनका) रूप; * 'होना'का सामान्य भूत, था। अ० संबोधनमें प्रयुक्त शब्द, हे।

होटल-पु० [अं० 'होटेल'] द्रव्य देकर यात्रियों तथा अन्य लोगोंके भी खाने, रहने, मनोरंजन आदिकी आधुनिक ढंगकी व्यवस्थासे युक्त स्थान।

होड़-स्त्री० किसी विषयमें एक दूसरेसे बढ़ जानेकी चाह और प्रयत्न, लाग-डाट, चढ़ा-ऊपरी, प्रतिस्पर्धा; किसी काममें हार-जीत होनेपर पूर्वनिश्चयके अनुसार किसीको कुछ देने या उससे कुछ लेनेकी प्रतिज्ञा, बाजी, शर्त।

होड़ाहोड़ी-स्त्री० दे० 'होड़'। अ० होड़ लगाकर।

होतव, होतव्य-पु०, **होतव्यता***-स्त्री० होनेवाली बात, भवितव्यता, होनहार।

होतव्य-वि० [सं०] हवन करने योग्य।

होता(तृ)-वि० [सं०] हवन करनेवाला। पु० मंत्र पढ़ते हुए यज्ञ-कुंडमें हव्य डालनेवाला व्यक्ति, यज्ञकर्ता, यज्ञ करानेवाला पुरोहित।

होनहार-वि० होनेवाला, अवश्यमेव होनेवाला; भविष्यमें उत्कर्ष, समृद्धि आदिका आभास देनेवाला। पु०, स्त्री० भवितव्यता, अवश्यमेव घटित होनेवाली घटना, बात आदि।

होना-अ० क्रि० कायम, मौजूद, विद्यमान रहना; परिस्थिति, अवस्था आदिमें परिवर्तन आना, एक स्थितिसे दूसरी स्थितिका आना, कुछसे कुछ होना; प्रस्तुत होना, बनना, तैयार होना; किसी कार्यका पूरा होना, निर्मित होना; शरीरमें किसी प्रकारकी व्याधिका होना; समयका व्यतीत होना, दिन बीतना; किसी घटनाका घटित होना; उत्पन्न होना, पैदा होना; काम चलना, निकलना, किसी कामका हो जाना। **मु० (जो) हुआ सो हुआ**-जो घटना या बात हो चुकी उसके लिए चिंता करनेकी आवश्यकता नहीं; जो घटना या बात हो चुकी उसे पुनः भविष्यमें न होने देना चाहिये, काम तो बुरा हुआ, अब फिर इसे कदापि न करना चाहिये। **तो क्या हुआ?**-जाने दो, कोई परवाह नहीं (नहीं करना चाहते हो तो कोई परवाह नहीं)। **हुआ-हुआ**-किसीसे कोई काम न होनेपर कही जानेवाली उक्ति (व्यंग्यरूपमें प्रयुक्त होनेके कारण यह विधिमें रहकर भी निषेधका अर्थ देता है); बहुत कुछ कह चुकनेपर किसीको मना करनेके लिए कही गयी बात। **हो आना**-कहीं जाकर लौट आना; किसीसे भेंट-मुलाकात करने जाना, मिलने जाना। **होकर**-पाससे, समीपसे, बीचसे, मध्यसे। **होकर रहना**-जरूर होना, अवश्य घटित होना। **हो गुजरना**-घटनाका घटित होना; समाप्त होना। **हो चलना**-समाप्तिके निकट आना; बहुत हो जाना। **हो चुकना**-समाप्त हो जाना, तमाम हो जाना; खर्च हो जाना; मर जाना; किसी बात, वस्तु आदिका सीमातक पहुँच जाना, हद हो जाना। **हो जाना**-काम पूरा हो जाना, काम बन जाना; कहीं आकर चला जाना; किसीसे मिलकर चला जाना; मर जाना; बन जाना, किसी भी क्षेत्रमें स्थितिका अच्छा हो जाना; (किसी कामका) खतम हो जाना; लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट हो जाना; कुछ लायक हो जाना; भूत-प्रेतका प्रभाव पड़ जाना; भोजन आदिका तैयार हो जाना। **होते हुए**-दे० 'होकर'। **हो न हो**-कौन जाने (अनिश्चय-सूचनार्थ)। **(लाखोंमें एक) होना**-किसीका अनेकमें श्रेष्ठ होना, अत्यंत उच्च कोटिका होना।

होना-हवाना-होना-जाना । होनेका-होनेवाला । होने लगना-किसी कामका आरंभ होना । हो पड़ना-अकस्मात् कुछ घटित हो जाना; अचानक झगड़ा-तकरार हो जाना । हो बैठना-हो जाना, बन पड़ जाना; कुछ हो जाना; (बड़ा आदमी आदि); दे० 'हो पड़ना' । हो रहना-हो जाना, होना । (कहींका) हो रहना-कहींसे लौटनेमें बहुत देर लगाना; कहींसे न लौटना । (किसीका) हो रहना-किसीका प्रिय या प्रेमी हो जाना । हो लेना-हो चुकना, समाप्त होना; पूरा होना, पूर्ण रूपसे होना; कोई मार्ग ग्रहण कर लेना; किसी पक्षका हो जाना; साथ चलना; पैदा होना, उत्पन्न होना; लड़ाई-झगड़ा होना । (पीछे-पीछे) हो लेना-पीछे-पीछे जाना, चलना; किसीकी पैरवी करना । हो सो हो-चाहे जो कुछ हो (निश्चयार्थक) । हो-हवा चुकना-हो चुकना ।

होनिहार*-वि०, पु०, स्त्री० दे० 'होनहार' ।

होनी-स्त्री० होनहार ।

होम-पु० [सं०] हवन, यज्ञ; गृहस्थों द्वारा नित्य किये जानेवाले पंच महायज्ञोंमेंसे एक, देवयज्ञ । -कर्म(न्)-पु० यज्ञ-संबंधी कर्तव्य या विधियाँ । -द्रव्य-पु० हवनकी सामग्री, घी आदि । -धान्य-पु० तिल । -धूम-पु० होमकी अग्निका धुआँ । -भस्म(न्)-पु० हवनकी राख । -शाला-स्त्री० यज्ञशाला । मु०-करते हाथ जलना-किसीका उपकार करते (उपकार करनेवालेका) अपकार होना । -कर देना-बलिदान कर देना, उत्सर्ग कर देना; अग्निमें जला डालना; जलाकर नष्ट कर देना ।

होमना-स० क्रि० हवन करना; बलिदान करना; अर्पण करना; नष्ट करना ।

होमाग्नि-स्त्री०, **होमानल**-पु० [सं०] यज्ञाग्नि ।

होमियोपैथ-पु० [अं०] होमियोपैथिक-पद्धतिके अनुसार चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति ।

होमियोपैथी-स्त्री० [अं०] हनीमान द्वारा आविष्कृत एक चिकित्सा-पद्धति ।

होरसा-पु० रोटी बेलने या चंदन आदि घिसनेका पत्थरका बना चौका ।

होरहा-पु० चनेका फलदार हरा पौधा; आगपर भूना हुआ चने आदिका हरा दाना ।

होरा-पु० दे० 'होला' । स्त्री० [सं०] ज्योतिष शास्त्रोक्त लग्न; ढाई घड़ी; आधी राशि; होराज्ञापक शास्त्र; जन्मपत्री; चिह्न, रेखा । -विद्-वि० जन्मपत्री देखनेमें कुशल । -शास्त्र-पु० फलित ज्योतिष ।

होरिल, होरिलवा, होरिला*-पु० शिशु; नवजात शिशु ।

होरिहार*-पु० होली खेलनेवाला ।

होरी-स्त्री० दे० 'होली'; जहाजपर माल लादने और उसपरसे उतारनेके काम आनेवाली बड़ी नाव ।

होला-पु० मटर आदिकी आगपर भूनी हुई फलियाँ । स्त्री० [सं०] होलीका त्योहार । -खेलन-पु० फाग खेलना ।

होलाका-स्त्री० [सं०] वसंतोत्सव, होलीका त्योहार ।

होलाष्टक-पु० [सं०] होलीके पूर्वके आठ दिन जिनमें विवाह नहीं होता ।

होलिका-स्त्री० [सं०] होलीका त्योहार; लकड़ी, पेड़, घास-फूस आदिका ढेर जिसका दहन होलीके दिन होता है; एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपुकी भगिनी थी ।

होली-स्त्री० होलीका त्योहार; एक प्रकारका गीत जो विशेष रूपसे होलीके अवसरपर गाया जाता है; दे० 'होलिका' । मु०-खेलना-फाग खेलना, एक दूसरेपर रंग आदि डालना ।

होश-पु० [फा०] जीवकी अपनी संज्ञा, जीवित रहनेका ज्ञान, चेतना; सुधबुध, स्मरण; अक्ल, बुद्धि, समझ । -मंद-वि० बुद्धिमान्, समझदार । -हवास-पु० सुधबुध । मु०-आना-समझ आना, समझदार होना, चतुर होना, अक्ल, बुद्धि आना; आपेमें आना, चेतनायुक्त होना । -उड़ जाना,-उड़ना,-उड़ा देना,-उड़ाना-बदहोश हो जाना, घबड़ा जाना; आश्चर्यचकित हो जाना, हैरतमें आ जाना; अक्ल खोना । -काफ़ूर होना-दे० 'होश उड़ जाना' । -खोना-दे० 'होशसे बाहर होना' । -गुम होना-होश उड़ना । -जाता रहना,-जाना-दे० 'होश उड़ जाना' । -ठिकाने रहना-होशहवास दुरुस्त रहना । -ठिकाने होना-अक्ल ठीक होना । -दंग होना-दे० 'होश उड़ना' । -दिलाना-स्मरण कराना, याद दिलाना । -न रहना-खबर न रहना, होश उड़ जाना; बेहोश हो जाना । -न होना-होश-हवास दुरुस्त न होना । -बाख़्ता होना-दे० 'होश उड़ जाना' । -बिखरना-दे० 'होश उड़ जाना' । -में आना-ज्ञान प्राप्त करना, अक्ल हासिल करना; तमीज सीखना, व्यवहार सीखना; समझदार, होशियार होना; आपेमें आना, सँभलना । -रखना-बुद्धिमान् होना, अक्ल रखना । -सँभालना-सयाना होना, बड़ा होना; आचार-व्यवहार, तमीज सीखना । -से बाहर होना-चेतनाहीन होना, बेहोश होना, बेखुद हो जाना । -हवा होना,-हिरन होना-दे० 'होश उड़ जाना' । -होना-अक्ल होना; खबर होना; होश-हवास दुरुस्त होना; किसी प्रकारके नशेमें न होना; बड़ा होना, सयाना होना ।

होशियार-वि० [फा०] अक्लमंद, बुद्धिमान्; खबरदार, सावधान, सजग; प्रवीण; अनुभवी । मु०-करना-असावधानको सावधान करना । -रहना-सावधान रहना, चौकस रहना । -हो जाना-सावधान हो जाना ।

होशियारी-स्त्री० [फा०] बुद्धिमानी; सावधानी; चालाकी ।

होस*-पु० दे० 'होश' ।

होस्टल-पु० [अं० 'होस्टेल'] छात्रावास ।

हौं-सर्व० उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम, मैं । अ० क्रि० वर्तमानकालिक क्रिया 'होना'के उत्तम पुरुष एकवचनका रूप, हूँ ।

हौंकना-* अ० क्रि० हुंकारना, गर्जन करना; हाँफना; । † स० क्रि० पंखे आदिकी हवासे आगको दहकाना; पंखे आदिसे हवा करना ।

हौंस-स्त्री० दे० 'हौस' ।

हौंसला-पु० दे० 'हौसला' ।

हौ*-अ० क्रि० 'होना'का मध्यम पुरुष एकवचनका वर्तमानकालिक रूप, हो; 'होना'का भूतकालिक रूप, था;

दे० 'हो'।

हौआ–पु० एक कल्पित वस्तु जिसका नाम लेकर स्त्रियाँ बच्चोंको डराया करती हैं, भकाऊँ; असाधारण और डरावनी चीज। स्त्री० दे० 'हौवा'।

हौका–पु० खानेकी तृष्णा, पेटूपन; लोभ, लालच।

हौज़–पु० [अ०] कुंड, चहबच्चा; नाँद।

हौज़ा–पु० [फा०] हौदा, हाथीकी अम्मारी।

हौड़*–स्त्री० दे० 'होड़'।

हौद–पु० हौज, कुंड; नाँद।

हौदा–पु० दे० 'हौज़ा'; दे० 'हौज़'।

हौरा†–पु० हल्ला, शोरगुल।

हौरे-हौरे*–अ० धीरे-धीरे, हौले-हौले, आहिस्तेसे।

हौल–पु० [अ०] भीति, भय, डर, दहशत। **–खौल,–जौल**–स्त्री० जल्दी, शीघ्रता; उतावली; शीघ्रताजनित उद्विग्नता, घबराहट। **–दिल**–स्त्री० दिलकी धड़कन, हृत्कंप; दिल धड़कनेकी एक बीमारी। वि० भीत, डरा हुआ; व्यग्र, व्याकुल; जिसे दिलकी धड़कन (की बीमारी) होती हो। **–दिला**–वि० डरपोक। **–नाक**–वि० भयंकर, खौफनाक। मु० **–पैठना,–बैठना**–मनमें डर पैदा होना, दहशत समाना।

हौली–स्त्री० शराब बिकनेकी जगह, कलवरिया, मदिरालय।

हौले-हौले–अ० धीरे-धीरे, आहिस्तेसे।

हौवा–स्त्री [अ०] आदमकी पत्नी, इसलाम, ईसाई-यहूदी धर्मोंके अनुसार मानव जातिकी माता; दे० 'हौआ'।

हौस–स्त्री० [अ०] हवस, हौसला; मनकी तरंग, उमंग; उत्कंठा, प्रबल इच्छा।

हौसला–पु० [अ०] सामर्थ्य; साहस, हिम्मत, उत्साह; लालसा। **–मंद**–वि० हौसलेवाला, उत्साही। मु० **–निकालना**–अरमान पूरा करना, हवस निकालना। **–पस्त होना**–जोश ठंढा पड़ना, हिम्मत टूट जाना।

ह्याँ*–अ० यहाँ।

ह्यो*–पु० हिया, हृदय।

ह्रद–पु०[सं०] गहरा जलाशय; गहरी झील; गहरा गड्ढा।

ह्रदिनी–स्त्री० [सं०] नदी; विद्युत्।

ह्रसित–वि० [सं०] संक्षिप्त किया हुआ, छोटा किया हुआ, घटाया हुआ; ध्वनित।

ह्रस्व–वि०[सं०] छोटा, लघु (दीर्घका उलटा); नाटा, ठिंगना; तुच्छ; नीचा, अनुच्च (जैसे द्वार)। पु० बौना।

ह्रस्वांग–वि० [सं०] वामन, बौना, ठिंगना।

ह्रास–पु० [सं०] क्षय, क्षीणता; अवनति; शब्द, ध्वनि; छोटी संख्या; अभाव, कमी।

ह्रासन–पु० [सं०] क्षीण करनेकी क्रिया; कम करनेका काम, घटाना।

ह्रासनीय–वि० [सं०] कम करने, घटाने योग्य।

हृत–वि० [सं०] हरण किया हुआ, लाया हुआ, नीत।

ह्री–स्त्री० [सं०] लज्जा, व्रीडा, संकोच। **–जित**–वि० लज्जाके वशीभूत, लज्जाशील, संकोची।

ह्लादक–वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला।

ह्लादित–वि० [सं०] आनंदित।

ह्वाँ*†–अ० वहाँ।

ह्वान–पु०[सं०] शोरगुल; पुकार, निकट बुलाना, आह्वान।

ह्वै*–पूर्वका० क्रि० 'होकर'।

छूटे हुए शब्द और अर्थ

अ

अंततोगत्वा–अ०[सं०] अंतमें जाकर, निदान, आखिरकार।

अंतर्द्वंद्व–पु० [सं०] हृदयके भीतरका द्वंद्व, असमंजसकी अवस्था।

अत्यंतातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] अतिशयोक्तिका एक भेद–जहाँ कारणका आरंभ होनेके पूर्व ही कार्यका हो जाना वर्णित किया जाय।

आ

आंकिक–पु० [सं०] सांख्यिक (स्टेटिशियन)।

आख़ता, आख़्ता–वि० [फा०] (वह घोड़ा आदि) जिसका अंडकोष निकाल लिया गया हो, बधिया।

आबला–पु० [फा०] छाला, फफोला (चलते-चलते पाँवमें आबले पड़ गये)।

आमक्रु–पु० वह श्मशान जहाँ मृत व्यक्तियोंके शरीर कौओं, गृद्धों आदिके खानेके लिए यों ही फेंक दिये जाते हैं।

आवर्तनी–स्त्री० [सं०] धातु गलानेकी कुल्हिया; दोहरानेकी क्रिया।

आहव–पु० [सं०] यज्ञ; युद्ध; (तुमुल)।

इ

इंसान–पु० दे० 'इनसान'।

इज़ाफ़त–स्त्री० [अ०] संबंध, लगाव; एक शब्दका दूसरेसे संबंध, समास (व्या०)।

इमरतीदार–वि० इमरतीके ढंगकी बनावटवाला।

उ

उड़नतश्तरी–स्त्री०, **उड़नथाल**–पु० उड़नेवाली तश्तरी जैसा एक आधुनिक युद्धोपकरण।

उत्कर्णता–स्त्री० [सं०] सुननेकी उत्सुकता–'देख भाव-प्रवणता, वर-वर्णता, वाक्य सुननेको हुई उत्कर्णता'–साकेत।

उलटबाँसी–स्त्री० कवितामें ऐसी उक्ति जिसमें सामान्यसे उलटी बात कही गयी हो।

उसवास–पु० प्रवेग, प्रवृत्ति।

ऐ

ऐतिह्य–पु० [सं०] परंपरा-प्राप्त उपदेश या प्रमाण–'नहिं पराग…'वाले दोहेका ऐतिह्य लोक-प्रसिद्ध है'–चुने फूल।

ओ

ओषजन-पु० आक्सिजन नामक गैस जिसके योगसे पानी बनता है।

क

कणिश-पु० [सं०] जौ-गेहूँ आदिकी बाल।

कथकाली, कथाकाली-स्त्री० नृत्यकी एक विशिष्ट शैली।

कलमुँही†-स्त्री० कलैया-'कलमुँडी खाकर'-गद्यभारती।

काठ-पु०···मु०-मार जाना-गतिहीन हो जाना, सुन्न हो जाना।

क़ालिब-पु० [अ०] साँचा, कलबूत; देह।

किल्विषी(षिन्)-वि० [सं०] पापी; दोषयुक्त।

कुणप-पु० [सं०] लाश; भाला; दुर्गंध।

कुत्ता-पु० तालेके अंदरका वह खटका जिसे ताली द्वारा सरका देनेसे ताला बंद हो जाता है।

क्षीव-वि० [सं०] उन्मत्त, मतवाला-'विजयका उत्साह दिखाने वे यहाँ किस मुँहसे आये हैं जो हिंसक, पाखंडी, क्षीव और क्लीव हैं'-ध्रुवस्वा०।

ख

खँगवा†-पु० खुर पकनेका रोग, खाँग।

खजमजाना†-अ० क्रि० (तबीयतका) कुछ अस्त-व्यस्त-सा हो जाना, अस्वस्थता जैसी प्रतीति होना।

खेवइया-पु० दे० 'खेवैया'।

ग

गुलता-पु० गुलेलेसे फेंकी जानेवाली मिट्टीकी गोली।

गेंड़ी-स्त्री० बाँसके दो डंडे जिनमेंसे प्रत्येकपर खड़ाऊँ जैसा एक-एक पावदान लगा रहता है-इनपर चढ़कर लोग चलते-फिरते, कूदते-फाँदते हैं (अंग्रेजी 'स्टिल्ट')।

गेसू-पु० [फा०] जुल्फ, काकुल।

घ

घड़ी-स्त्री० पानी, बिजली आदिके खर्चका परिमाण सूचित करनेवाला यंत्र, 'मीटर' (पढ़ना, देखना)।

घोष-पु० [सं०] एक वर्ण-समूह (प्रत्येक वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण और य, र, ल, व, ह)।

च

चेना-पु० कँगनी या साँवाँकी जातिका एक मोटा अनाज।

छ

छायापात्र-धु० [सं०] घी या तेलसे भरी हुई वह कटोरी आदि जिसमें अपने शरीरकी छाया देखी जाती है (अरिष्ट-निवारणार्थ)।

ज

ज़नमुरीद-वि० [फा०] पत्नीके वशमें रहनेवाला, जोरूका गुलाम।

जरा-मना-अ० थोड़ा-बहुत।

जलवायु-पु० [सं०] किसी स्थानकी गर्मी, जाड़ा, वर्षा आदि सूचित करनेवाली वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्रभाव वहाँकी आबादी तथा वनस्पति आदिपर पड़ता है, आब-हवा।

जीवप्रभा-स्त्री० [सं०] आत्मा (केशव०)।

जी-हुजूरी-स्त्री० 'जी हुज़ूर, जी हुज़ूर' कहते रहनेका भाव, खुशामद।

जोम-पु० समूह, झुंड; तीक्ष्णता; उत्साह, उमंग।

ट

टीपटाप-स्त्री० छत आदिकी छिटफुट मरम्मत।

ड

डेढ़िया-पु० (अनाज) उधार देनेका वह प्रकार जिसमें फसलपर मूलका ड्योढ़ा वसूल किया जाता है।

ढ

ढँका†-पु० दे० 'झोँझ'।

त

तबेला*-पु० एक तरहका बरतन।

तव्वर*-पु० पुत्र।

तर*-पु० तरु, वृक्ष।

तसू-पु० इमारती कामकी एक माप।

ताल-पु० चश्मेके शीशेका पल्ला।

ताला*-पु० लोहेका तवा।

तूफानी दस्ता-पु० पुलिस या सेनाकी वह टुकड़ी जो संकट या आकस्मिक आवश्यकताके समय क्षिप्र गतिसे सहायतार्थ भेजी जा सके।

थ

थमाना-स० क्रि० किसीको (कोई वस्तु) थामनेमें प्रवृत्त करना, पकड़ाना, ग्रहण कराना।

थूक-स्त्री० थूकनेकी क्रिया।

द

दिवसस्वप्न-पु० [सं०] दे० 'दिवास्वप्न'।

देवका†-स्त्री० दीमक।

देवापगा-स्त्री० [सं०] गंगा।

दौंगरा†-पु० तपी हुई धरतीपर होनेवाली ग्रीष्म ऋतुकी अल्पवृष्टि; शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला।

ध

धौंस-स्त्री० दे० 'धुवाँस'।

न

नउजा†-अ० दे० 'नौज'।

ना-किस-वि० [फा०] नीच, बुरा; निकम्मा, नालायक।

नामरासी-वि० समान नामवाला, हमनाम।

निरधन*-वि० दे० 'निर्धन'।

निरफल*-वि० व्यर्थ; अंडकोश-हीन।

प

पंगुपीठ-पु० [सं०] लँगड़ेको बिठाकर कहीं ले जानेकी गाड़ी।

पगड़ी-स्त्री० दूकान आदि किरायेपर देनेके पूर्व भावी किरायेदारसे नजरानेके रूपमें ली जानेवाली रकम।

पटोली*-स्त्री० चादर, पटोरी।

पट्टकीट-पु० [सं०] रेशमका कीड़ा।

पनारीदार चादर-स्त्री० कलईदार चद्दर जिसमें नालियाँ-सी बनी होती हैं और जो ख़ासकर छाजनके काम आती है (कोरोगेटेड टिन)।

परवाह†-पु० शवको बिना जलाये नदीमें बहा देना।

परिवेषण-पु० [सं०] भोजन परसना-'परिवेषणतक मृदुल करोंसे तुम्हें न करने दूँगी मैं'-पंचव०; दे० 'परिवेष'।

परिसेवना-स्त्री० [सं०] विशेष सेवा।

पाँगुर*-पु० पैरकी उँगली।

पान–पु० जूतेमें एड़ीके पीछे लगाया जानेवाला पानके आकारका टुकड़ा ।

पींड़ी–स्त्री० पौधा उखाड़ते समय जड़के चारों ओरकी मिट्टीका पिंड, पिंडी ।

पूखन*–पु० पूपण, सूर्य ।

पौध–स्त्री०···; पीढ़ी, 'नयी पौधके लेखक'–आज ।

प्रघट्टक–पु० [सं०] अनुच्छेद, पैरा ।

प्रतिष्ठान–पु० [सं०] संघटन, संस्था (आ०) ।

प्रतिहार्य–वि० [सं०] लौटाया, हटाया जानेवाला; जिसका प्रतिरोध किया जाय ।

प्रदीपिका–स्त्री०[सं०] (किसी विपयकी) जानकारी करानेवाली छोटी पोथी (मेला-प्रदीपिका) ।

प्रयोजनीय, प्रयोज्य–वि० [सं०] प्रयोगमें लाने योग्य ।

प्रस्फुटन–पु० [सं०] प्रकट या विकसित होना, विकास ।

फ

फटफटिया–स्त्री० 'फट-फट' करती हुई पेट्रोलकी सहायतासे चलनेवाली सायकिल, मोटर-सायकिल ।

फाला–पु० हलमें लगाया जानेवाला फाल ।

फेनिल–पु० [सं०] रीठा ।

ब

बतकट–वि० जो कही हुई बातको काट दे, खंडन किया करे–'नसकट खटिया, वतकट जोय'–घाघ ।

बादशाह–पु० [फा०] ईश्वर ।

वारक*–अ० एक वार ।

वावेला–पु० दे० 'वावैला' ।

यिडौजा–पु० दे० 'विडौजा' ।

बिमौट, बिमौटा–पु० बाँवी (मूलमें 'बिमोट' छप गया है)।

बुर्दा-फरोश–पु० स्त्रियोंको उड़ाकर बेच देनेवाला (किड्नैपर)।

बूड़ा–पु० जलमें डूबकर मरनेवाला आदमी जो प्रेत बन गया हो ।

भ

भरेटा–पु० दे० 'भरेठ'।

म

मझुआ–पु० कलाईपर दूसरे गहनोंके बीचमें पहननेका एक गहना ।

मसाना–पु० [अ०] पेशावकी थैली, मूत्राशय, फुकना ।

महारथी–पु० महान् एवं अनुभवी योद्धा, लेखक, आदि; उद्भट विद्वान् ।

माधुकरी–वि० स्त्री० [सं०] मधुकर जैसी, भ्रमरकी-सी ।

मानकच्चू–पु० एक तरहका मीठा कंद, मानकंद ।

मिल-मालिक–पु० किसी कल-कारखानेका मालिक, संचालक।

मुकुत*–पु० मुक्ता, मोती ।

मुकेस*–पु० एक तरहका कपड़ा, वादला ।

मुक्तागृह–पु० [सं०] सीप।

र

रसर*–स्त्री० रस्सी–'दो घड़े काँख कर, कंधे पड़ी रसर, चली अपनी डगर'–'आज' ।

राग-रंग–पु० [सं०] गाना-वजाना, रंग छिड़कना आदि ।

रुक्ष–पु० [सं०] वृक्ष, रूक्ष ।

रूपसी*–स्त्री० रूपवती स्त्री ।

रौरि*–स्त्री० कोलाहल, शोर ।

ल

लचर–वि० तथ्यहीन, कमजोर (--दलील) ।

लस्तगा–पु० प्रारंभ करना (इस कामका लस्तगा लगा दो); लगाव, संबंध; सिलसिला (दूरतक लस्तगा चला गया है) ।

लुक–पु० दे० 'लूक' भी ।

लहरि, लहरी–स्त्री० [सं०] महातरंग ।

व

वाष्पीकरण–पु० [सं०] (इवैपोरेशन) वह क्रिया जिससे कोई द्रव पदार्थ गैस रूपमें परिवर्तित हो जाय ।

श

शरास–पु० [सं० शरासन] धनुष्–'दीखते उनसे विचित्र तरंग हैं; कोटि शक्र-शरास होते भंग हैं'–साकेत ।

शेर–पु० [अ०] फारसी, उर्दू कविता आदिके दो चरण ।

स

संस्कारी (रिन्)–वि० [सं०] अच्छे संस्कारवाला (आशाराम संस्कारी पुरुष थे) ।

समसीरा–स्त्री० [सं० 'समक्षीरा'] भाईकी बराबरीसे दूध पीनेवाली, बहिन ।

सरीह–वि० [अ०] खुला हुआ, प्रकट; स्पष्ट ।

सवाई–स्त्री०, **सवाया**–पु० (अनाज) उधार देनेका वह प्रकार जिसमें फसलपर मूलका सवाया वसूल किया जाता है ।

सापना*–पु० दे० 'स्वप्न' (उदा० 'हरैं-हरैं') ।

सालि*–स्त्री० दे० 'साल' (पीड़ा) ।

सुखलभ्य–वि०[सं०]आसानीसे प्राप्त होने योग्य, सुलभ ।

सुसन, सुसना–पु० एक साग ।

सौंतना–स० क्रि० वार करनेके लिए (तलवार, भाला आदि) तत्पर करना, सन्नद्ध करना ।

स्थायी(यिन्)–पु० [सं०] गीतका पहला चरण, जो अंतराओंको गा-गाकर फिर-फिर गाया जाता है, टेक ।

स्फट–पु० [सं०] रवा ।

ह

हाथ–पु० वार करनेका ढंग ।

पारिभाषिक शब्दावली—अंग्रेजी-हिन्दी

A

Abandonment परित्यजन
Abatement ह्रास, उपशमन, न्यूनीकरण; समाप्ति
Abatement of suit वाद-समाप्ति
Abbreviation संकेतचिह्न
Abdicate राजत्व-त्याग, राजपद-त्याग
Abduction अपनयन
Abetment दुरुत्साहन
Abeyance आस्थगन
Abhorence जुगुप्सा, घृणा
Abide अनुपालन, अनुसरण करना
Abnormal असाधारण
Abolition उन्मूलन, समाप्ति
Aboriginal आदिवासी
Abortive निष्फल, विफल
Above par अंकित मूल्यसे ऊपर, अधिमूल्यपर
Abridge न्यून करना, संक्षेप करना
Abridged संक्षिप्त
Abridgement न्यूनन, संक्षेपण
Abrogate निराकरण; उत्सादन; विखंडन
Absconder पलायक, भगोड़ा
Absolute monarchy निरंकुश राजतंत्र
Absolute power परम सत्ता
Abstinence संयम, विरति, निवृत्ति
Abstract सारांश; उपसंक्षेप
Abuse दुरुपयोग
Academic discussion शास्त्रीय वाद-विवाद
Access प्रवेश
Accession सम्मिलन
Accommodation वास-व्यवस्था;वासस्थान;सुविधा-दान
Accomplice सहापराधी, अभिषंगी
Account लेखा, गणना
Account, audited अंकेक्षित लेखा
Accountancy लेखाकर्म, मुनीमी
Accountant लेखाध्यक्ष, गणनाध्यक्ष, गणक, लेखापाल
Accountant General महागणनाध्यक्ष, महालेखापाल
Accredited विश्वस्त, प्रमाणित (प्रतिनिधि इ०)
Accrued प्राप्त, उपार्जित
Accumulated पुंजित, संचित
Accurate यथार्थ
Accusation अभियोग
Accused अभियुक्त
Acknowledgment प्राप्तिस्वीकार; प्राप्तिपत्र, पावतीपत्र
Acquired प्राप्त, अधिगत, अर्जित
Acquisition प्राप्ति, अर्जन
Acquittal मुक्ति, रिहाई
Act अधिनियम
Acting कार्यकारी
Acting n. अभिनय
Acting in his discretion स्वविवेकसे कार्य करते हुए
Action, Direct प्रत्यक्ष कारवाई
Active service सक्रिय सेवा
Activities गतिविधि, कार्यकलाप, हलचल
Activity कार्यकलाप
Actuals वास्तविक आँकड़े
Adapt अनुरूप या अनुकूल बनाना
Adaptation अनुकूलन
Adaptation of Act अधिनियमका अनुकूलीकरण
Adapted अनुकूलित, अनुरूपित
Addendum संयोज्यांश, अनुयोजितांग
Addition जोड़; परिवृद्धि
Additional अतिरिक्त
Address संबोधन; अभिभाषण; अभिनंदनपत्र; पता
Addressed संबोधित
Addressee पानेवाला, प्रेषिती
Adherence अनुषक्ति
Ad hoc Committee तदर्थ समिति
Adjourn स्थगित करना
Adjournment motion कार्य-स्थगन प्रस्ताव
Adjudication न्यायिक निर्णय
Adjustment समाधान; समायोजन
Adjutant सहसेनाध्यक्ष
Adjutant general सैनिक कार्यालयका विभागाध्यक्ष, सैन्यविभागाध्यक्ष
Administrative function प्रशासनीय कृत्य
Administrator प्रशासक
Admiral नौबलाध्यक्ष, नौकाध्यक्ष
Admiralty नौकाधिकरण
Admissible ग्राह्य
Admissibility ग्राह्यता
Admission Card प्रवेशपत्रक
Adolescent किशोर, अल्पवयस्क
Adoption दत्तक-ग्रहण; ग्रहण, स्वीकरण
Adult franchise,—suffrage वयस्क मताधिकार
Adulteration अपमिश्रण
Ad valorem मूल्यानुसार
Advance अग्रिमधन, अग्रिम
Adventure साहसिक प्रयत्न

Advertiser विज्ञापनदाता, विज्ञापक

Advertising agency विज्ञापनक संस्था

Advice मंत्रणा, परामर्श; सूचना

Advisor मंत्रणाकार

Advisory Committee परामर्शदात्री समिति

Advocate अधिवक्ता

Advocate general महाधिवक्ता

Aegis संरक्षण, छत्रछाया

Aerial bombardment हवाई बमवर्षा

Aerodrome हवाई अड्डा

Aeronautical Survey of India भारतीय हवाई पर्यवलोकन

Aeronautical Wireless Service वैमानिक बेतार-व्यवस्था

Aeronautics विमानचालन-विज्ञान

Aesthetics सौंदर्यबोध; सौंदर्यविज्ञान

Affectation बनाव, बाह्याडंबर

Affected areas प्रभावित क्षेत्र

Affectionate gift स्नेहोपहार

Affidavit शपथ-पत्र

Affiliation संबद्धीकरण

Affinity निकट संबंध, बंधुता; सादृश्य

Affirmation प्रतिज्ञान; पुष्टि

Affirmative स्वीकारात्मक

Afforestation वनरोपण

After-thought परिचिंतन

Age-limit वयःसीमा

Agency अभिकरण

Agenda कार्यसूची

Agent कार्यवाहक, अभिकर्ता, घटक

Agent, Polling मतार्थी घटक

Aggrarian कृषिक, कृषिसंबंधी

Aggression प्रथमाक्रमण

Agnosticism अज्ञेयवाद

Agreement संविदा, करार; सहमति

Agricultural कृषि विषयक

Aid, Grant in सहायक अनुदान

Aide-De-Camp अंगरक्षक; सैन्यादेशवाहक

Air battle आकाश-युद्ध

Air communication हवाई यातायात

Air-conditioned तापनियंत्रित

Air-conditioning ताप-नियंत्रण

Aircraft carrier विमानवाहक पोत

Air-crash विमानध्वंस, विमानपात

Air-crew विमान-कर्मी

Air-graph हवाई चित्र

Air-gunner हवाई तोपची

Air-man वैमानिक

Air-navigation विमानसंचालन, विमानपरिवहन

Air-raid-alarm हवाई खतरेका भोंपू

Air raid precautions हवाई हमलेसे हिफाजत
A. R. P. (ह. ह. हि.)

Air Raid Shelter हवाई शरणगृह, हवाई आश्रय

Air Squadron विमानदल, हवाईदस्ता

Air strip अवतरण-पथ

Air-tight हवारोक

Airways वायुमार्ग, वायुपथ

Alarm खतरेकी घंटी; 'पगली' (जेलका शब्द)

Album चित्राधार

Alcohol सुरासार, मद्यसार

Alibi अन्यत्र उपस्थिति, अन्यत्रोपस्थिति-तर्क

Alien अन्यदेशीय

Alienate स्वत्वहस्तान्तरण, अन्य संक्रामण

Alienation of land भूमिका हस्तांतरण

Alimentary Canal अन्ननलिका, पोषिका

Alimony भृति, निर्वाह-व्यय

Alkali क्षार

Alkaloid क्षारोद, उपक्षार

All clear signal 'खतरा दूर' की सूचना

Allegation अभिकथन

Alleged तथाकथित

Allegiance, Oath of निष्ठाकी शपथ

Alliance मैत्रीसंधि

Allied power मित्र-शक्ति

Alliteration अनुप्रास

All round progress सर्वतोमुखी उन्नति

Allocation बँटवारा, विभाजन, निर्दिष्टि

Allot आवंटन

Allotment निर्दिष्ट, निर्धारण, आवंटन;—of shares अंश निर्दिष्टि

Allottee नियतभागी, आवंट्य

Allowance अधिदेय, भत्ता; छूट

Allowance, Conveyance यानाधिदेय

Allowance, Superannuation वृद्धता अधिदेय

Allowance, Travelling यात्राधिदेय

Alloy मिश्र धातु; मिश्रण, मेल, संकर

Alluvial soil जलोढ भूमि, पूरानीत भूमि, कछारी भूमि

Almanac पंचांग, तिथिपत्र

Alphabetical order वर्णक्रम, अक्षरक्रम

Alrernate एकान्तर; एकान्तरिक

Alternative n. विकल्प, adj वैकल्पिक

Alternative foods वैकल्पिक खाद्य

Alternative member वैकल्पिक सदस्य

Altitude समुद्रकी सतहसे ली जानेवाली ऊँचाई; त्रिभुज-लंब (ज्यामिति)

Altruism परार्थवाद

Alum फिटकिरी

A. M. मध्याह्नपूर्व (म. पू.)

Amalgamation सम्मिश्रण

Ambassador राजदूत

Ambiguous संदिग्धार्थ, द्व्यर्थक, अस्पष्ट
Ambulance आहत-परिचर्या विभाग।—Car परिचार-गाड़ी; रोगीवाहक गाड़ी। —Corps आहतोपचारी दल
Amendment संशोधन
Amenities सुखसुविधाएँ
Ammunition गोलाबारूद,युद्धसामग्री;—dump गोला बारूदका ढेर
Amnesty सर्वक्षमा
Amphibious operations जल-स्थलीय कारवाई
Amputation अंगविच्छेद
Amulet जंतर, ताबीज
Amusement-tax प्रमोद-कर
Anachronism कालदोष
Anaesthesia(sis) अचेतनीकरण, अचेतनता
Anaesthetic अचेतनक
Analogy सादृश्य, समरूपता
Analysis विश्लेषण
Anarchism अराजकतावाद
Ancillary सहायक
Animal husbandry पशुपालन
Annexation संयोजन, अधिकारकरण
Annexed संयोजित
Annexure संयोजित वस्तु
Anniversary वार्षिकोत्सव, वार्षिकी
Annotated सटीक
Announcement अभिज्ञापन; घोषणा, ऐलान
Announcer अभिज्ञापक, प्रघोषक
Annual संवत्सरी, वर्षबोध, अब्द-कोश
Annual financial statement वार्षिक वित्त-विवरण
Annual review वार्षिक सिंहावलोकन
Annuities वार्षिक वृत्ति, वार्षिकी
Annulment, Annulling अभिशून्यन
Anonymous अनाम, गुप्तनाम
Antedated पूर्वतिथीय
Antediluvial पूर्वप्लावनिक
Anthropological Survey नृवंशविज्ञान-पर्यवलोकन विभाग
Anthropology नृवंशविज्ञान, मानवविज्ञान, नृतत्त्व-विज्ञान
Anti-aircraft guns विमानवेधी तोपें
Antibiotic जीवाणुनाशक
Anticipated excess प्रत्याशित व्यय-वृद्धि
Anticipation प्रत्याशा, पूर्वानुमान; प्रत्यपेक्षा
Anti-note मारक
Anti-inflationary मुद्रास्फीतिरोधक
Anti Rabic जलातंक रोग
Anti-rabbies Centre प्रत्यलर्क केंद्र
Anti-septic प्रतिपौतिक
Anti-Venom Serum विषनिरोधक रस
Antonym विपर्याय, विरुद्धार्थक
Apartheid policy पृथग्वासन-नीति
Apathy अरति, औदासीन्य
Apoplexy अपस्मार
Apparatus उपकरण-समूह; उपकरण, प्रयोगयंत्र
Apparent प्रतीयमान, भासमान
Apparition छायापुरुष; छायाव्यक्ति
Appeal पुनेरावेदन, पुनर्न्याय-प्रार्थना
Appeasement तुष्टीकरण
Appellant पुनरावेदक, पुनर्न्याय-प्रार्थी
Appellate tribunal अपीली अदालत, पुनर्विचार न्यायाधिकरण
Appellate authority अपील सुननेवाला अधिकारी, पुनर्विचारक अधिकारी
Appellation उपाधि
Appended संलग्न
Appendix परिशिष्ट
Applause प्रशंसा-घोष
Application आवेदनपत्र; प्रयोग
Apportionment संविभाजन
Appreciation मूल्योत्कर्ष, मूल्याधिरोह; रसास्वादन; प्रशंसा; यथोचित गुणावधारण
Apprentice शिक्ष्यमाण; उम्मेदवार, पदशिक्षार्थी
Appropriate समुचित; v. विनियोजन करना
Appropriation Bill विनियोग विधेयक
Approval अनुमोदन
Approver राजसाक्षी
Apropos अनुसार, अनुरूप;—to प्रसंगमें
Aquarium मत्स्यागार, मत्स्यालय
Aquarius कुंभराशि
Arbitral tribunal पंच न्यायाधिकरण
Arbitration पंच-निर्णय
Arbitrator पंच
Arc चाप
Archaeologist पुरातत्त्वज्ञ
Archaeology पुरातत्त्वविज्ञान
Archipelago द्वीपपुंज
Architect वास्तुकार· वास्तुकर्मज्ञ
Architecture भवन-निर्माण-विज्ञान
Archive पुरालेख
Archivist पुरालेख-पाल
Aries मेष राशि
Aristocracy अभिजात-तंत्र, कुलीनतंत्र
Armaments युद्धोपकरण; सज्जसेना
Armistice अस्थायी संधि
Armoured Car कवचित यान, बख्तरबंद गाड़ी
Armoury आयुध शाला
Army Head-quarters सेनाका प्रधान कार्यालय, बड़ा सैनिक दफ्तर
Arrangement of files नस्तित पत्रियोंका विन्यास
Arrear अवशेष (ऋणावशेष या कार्यावशेष)

Arsenal अस्त्रागार
Arsenic संखिया
Artery धमनी
Article अनुच्छेद; लेख
Articles of association संस्थाके नियम
Artisan शिल्पी
Aspirate महाप्राण
Assault प्रहार
Assemble समवेत होना, एकत्र होना; समवेत करना
Assembly विधान सभा; सभा
Assent स्वीकृति, अनुमति
Assessed कूता हुआ; आँका हुआ
Assessment करनिर्धारण
Assets आदेय, परिसम्पत् (संपत्ति), मालमत्ता
Assets and liabilities देना-पावना, देयादेय
Assign स्वत्वार्पण करना, नियत करना, बाँटना, जिम्मे लगाना
Assigned अभ्यर्थित
Assignee अभ्यर्थिती
Assignment अभिहस्तांकन
Assignor अभ्यर्पक, अभ्यर्पी
Assimilation स्वांगीकरण; समीकरण
Association संघ, संस्था; साहचर्य
Association, Memorandum of प्रतिष्ठानपत्र
Asterisk तारक, तारक चिह्न
Astronomy ज्योतिष (गणित)
Atheism निरीश्वरवाद, नास्तिकता
Atlas मानचित्र-संग्रह, मानचित्रावली
Atomic आणविक
Atomism परमाणुवाद
Attache सहचारी
Attached आसिद्ध, (आसंजित)
Attachment आसेध, कुर्की
Attested साक्षीकृत
Attestation साक्षीकरण
Attorney प्राभिकर्त्ता
Attorney General महान्यायवादी, महाप्राभिकर्त्ता
Auctioneer नीलाम करनेवाला, घोष-विक्रेता
Audible श्रव्य
Audience श्रोतृवर्ग; दर्शन, साक्षात्कार
Audit लेखापरीक्षण
Audited account अंकेक्षित लेखा
Auditor General महालेखापरीक्षक
Auditorium दर्शक स्थान
Austerity scheme अल्पभोग या अल्पोपभोग-योजना, न्यूनाहार-योजना, कष्ट-सहन-योजना
Authentication प्रमाणीकरण
Authorisation प्राधिकरण
Authorised प्राधिकृत
Authorised Agent प्राधिकृत अभिकर्ता
Authority प्राधिकारी; प्राधिकार
Autobiography आत्मचरित
Autograph स्वाक्षर
Automatic स्वचालित
Autonomous स्वायत्तशासी
Autonomy स्वायत्त शासन
Avalanche हिमशिलास्खलन
Award पंचनिर्णय, पंचाट, परिनिर्णव
Axiom स्वयंसिद्धि
Axis धुरी, अक्ष
Axis country धुरीदेश, धुरीराष्ट्र
Ayes हाँ पक्षवाले; हाँकारी

B

Bachelor of law विधिस्नातक
Back bencher क्वचिद्भाषी (अल्पवादी) सदस्य
Back door चोरदरवाजा, पक्ष-द्वार
Background पृष्ठभूमि, पूर्वपीठिका
Bacteria जीवाणु
Bacteriologist जीवाणुविद्
Bacteriology जीवाणु-विज्ञान
Bad conductor कुचालक, बुरा परिचालक
Badge बिल्ला, परिचायक चिह्न
Bail प्रतिभू
Bailable प्रतिभूमोच्य, प्रतिभाव्य
Balance शेष; संतुलन
Balanced diet संतुलित भोजन
Balance of payment भुगतान-तुला
Balance of power शक्ति-संतुलन
Balance of trade व्यापाराधिक्य
Balance sheet चिट्ठा, देयादेय फलक
Ballad गाथा; गीत
Ballot box मतपेटिका
Ballot paper मतपत्र, शलाका, गूढ़पत्र
Banish निर्वासित करना
Bank अधिकोष, बैंक
Banker अधिकोषिक, कोठीवाल
Bankrupt दिवालिया, नष्टनिधि
Bancruptcy दिवालियापन, नष्टनिधित्व
Banner heading पताका-शीर्षक, पृष्ठ-शीर्षक
Bar रुकावट, अर्गल; अधिवक्तृत्व; पानालय;—fetters डंडा बेड़ी
Barometer वायुभारमापक यंत्र
Barrack सैन्यावास
Barrier सीमा-गुल्म, प्रतिबंध, रुकावट
Barter वस्तुविनिमय
Bases, War सामरिक अड्डे
Basic Education आधारभूत शिक्षा
Batsman बल्लेबाज
Battallion-बटालियन, पलटन
Batting बल्लेबाजी

Battleship जंगी जहाज, महारणपोत
Bearer Cheque वाहक धनादेश
Beat गश्त; हलका, क्षेत्र
Bed pan हाजती
Bedsore शय्या-व्रण
Beleaguer सैन्यावरोध करना
Belligerency युद्धस्थिति, युद्धलिप्ति
Belligerent युद्धरत, युद्धलिप्त, युद्धग्रस्त
Below par बट्टेसे, अवमूल्यपर
Bench न्यायाधीशवर्ग, (न्यायपीठ), पीठ
Beneficiary लाभार्थी, हिताधिकारी
Benefit हित
Betting पण लगाना, पणन, पणक्रिया
Bibliography (विशिष्ट) ग्रन्थसूची
Bicameral द्विसदनात्मक, द्व्यागारिक
Bicycle द्विचक्रयान, पैरगाड़ी
Biennial द्विवार्षिक
Bigamy द्विविवाहकरण, द्विगामित्व
Bilateral contract द्विपक्षीय संविदा
Bill विधेयक
Bill विपत्र; प्राप्यक
Billiard अंटेका खेल;—room गेंदघर
Bimetallic द्विधात्वीय
Bimetallism द्विधातुता, द्विधातुत्व
Biology जीव-विज्ञान
Birth certificate जन्म-प्रमाणक
Birth control संतति-निग्रह
Birthrate जननगति
Bisect समद्विभाग करना
Bisector अर्द्धक
Black-leg हड़तालतोड़क
Black list असित-सूची, दुर्वृत्त-सूची, सन्दिग्धजन-सूची
Black market चोर बाजार
Blackout चिरागगुल, अंधाकुप्प; संवाद-विलोपन
Bladder मूत्राशय
Blank Cheque निरंक धनादेश
Bleaching विरंजन
Blinds झँझरी, झिलमिली
Blister gas व्रणकारक गैस
Blockading नाकाबंदी, समवरोध
Blocked capital समवरुद्ध पूँजी
Bloodbank रक्त-संग्रह बैंक
Blood pressure रक्तचाप
Blood transfusion रक्तक्षेपण
Blue print मूलयोजना
Blunder भारी त्रुटि
Board मण्डल; पटल
Board, Arbitration पंच मण्डल
Board, District जिलापालिका, जिला बोर्ड, मांडलिक समिति, मंडल परिषद्
Board, Municipal नगरपालिका
Board of Directors संचालक-मंडल
Board of revenue राजस्व-मंडल
Boarding house छात्रावास
Body निकाय, वर्ग
Body, corporate निगम निकाय
Body, governing शासी निकाय
Boiling point क्वथनांक
Bomb प्रस्फोट, बम
Bomb, incendiary दाहक बम, दाहक प्रस्फोट
Bombast शब्दाडंबर
Bomber बमवर्षी, बमवर्षक, बममार
Bonafide विश्वस्त, प्रामाणिक; सद्भावपूर्ण (या सद्भावपूर्वक)
Bonafides विश्वस्तता, प्रामाणिकता; सद्भाव
Bona vacantia स्वामिहीनत्व
Bond बंधपत्र (ऋणपत्र)
Bone of contention कलहकारण
Bonus अधिलाभांश
Book, v दर्ज करना
Book depot पुस्तक-विक्रयालय, पुस्तक-भवन
Booking प्रवेशपत्र (प्रयोगपत्र) विक्रय; प्रेष्यवस्तु-आलेखन
Booking office प्रयोगपत्र-कार्यालय, टिकटघर
Booklet पुस्तिका
Bookpost पुस्तडाक
Booty लूटका माल
Borrower अधमर्ण
Borrowings उधार-ग्रहण
Boss अधिपुरुष
Botany वनस्पति-शास्त्र
Bottleneck उत्पादनबाधा;परिवहन-बाधा, परिवहन-कष्ट
Bottleneck policy गलाघोंटू नीति
Bottleup विकासावरोध
Boundary सीमा; सीमा-प्रक्षेपण
Boundary, Natural प्राकृतिक सीमा
Bounds परिधि
Burgeois मध्यवित्त वर्ग
Bowler गेंदबाज, गोलंदाज
Bowling गेंदबाजी, गोलंदाजी
Boxing मुष्टिद्वन्द्व, मुक्केबाजी, मुक्की
Boyscout बालचर
Breach दरार, छिद्र; भंग
Breach of law विधिभंग
Breach of peace शांतिभंग
Breach of trust विश्वासघात
Breakdown of administration प्रशासन-विस्थापन
Brengun ब्रेनगन, छोटी पेंचदार तोप
Brevity लघुता, अल्पता, संक्षिप्त कथन, लघूक्ति
Bridgehead गुल्म

Brief-n. वादसंक्षेप
Brigade वाहिनी
Brigadier वाहिनीपति
Broadcast प्रसारित करना
Broadcast talk प्रसारित वार्ता
Broad gauge बड़ी लाइन
Broker मध्यग, दलाल
Bronze age कांस्ययुग
Brothel वेश्यालय
Buck ammunition छर्रा
Budget आयव्ययक
Budget, Deficit घाटेका आयव्ययक
Budget estimate आयव्ययका प्राक्कलन
Budget, Supplementary अनुपूरक आयव्ययक
Buffer State अंतराल राज्य
Bulletin आधिकारिक विज्ञप्ति
Bullion सोना-चाँदी
Bureau कार्यालय, कार्यपीठ
Bureau, Information सूचनालय
Bureaucracy नौकरशाही, अधिकारिराज्य, कर्मचारितंत्र, अधिकारिवर्ग
Burner वर्त्तिग्रह
Business कार्य, कारबार
Business crisis व्यापार-संकट
Business, Government सरकारी कार्य
Businessman व्यवसायी
Business-mindedness व्यावसायिक बुद्धि
Bust आवक्ष प्रतिमा
Buying and selling क्रयविक्रय
Byelection उपनिर्वाचन
Bye-law उपविधि
By-pass बचके निकल जाना
By-products उपोत्पादन

C

Cabbage पातगोभी
Cabinet मंत्रिमंडल
Cabinet Council मंत्रिपरिषद्
Cabinet Councillor मंत्रि-पारिषद्
Cabinet crisis मंत्रिमंडलीय संकट
Cabinet system मंत्रिमंडलीय प्रणाली
Cable, to समुद्री तार भेजना
Cadet सैन्यशिक्षार्थी, सैन्यछात्र
Cadre of service सेवास्तर
Calculation, Rough स्थूलगणन
Calendar तिथिपत्र
Called up capital आहूत पूँजी, अभियाचित पूँजी
Calling आजीविका
Calory उष्णांक; (पोषणकी मात्रा)
Camera meeting बंद कमरेमें बैठक
Camouflage छलावरण, छद्मावरण
Camp शिविर, स्कंधावार, निवेश
Campaign अभियान, आंदोलन
Canal system नहरजाल
Cancellation विलोपन; निरसन
Candidate अभ्यर्थी, उम्मेदवार; पदार्थी
Canned products टिनबंद चीजें
Canvasser मतानुयाचक, अनुयाचक
Capacity सामर्थ्य; आयतन, अभाव
Capillary कैशिक adj.; केशिका n.
Capital expenditure पूँजीगत व्यय
Capital goods पूँजीगत माल
Capital levy पूँजीकर
Capital, Issued निर्गमित पूँजी
Capital market पूँजीका बाजार
Capital, Paid परिदत्त पूँजी
Capital Ship महायुद्ध पोत
Capital, Subscribed प्रार्थित पूँजी
Capitation tax प्रतिव्यक्ति कर
Capitulation आत्मसमर्पण
Capricornus मकर
Capsule पुटी
Capsuled पुटित
Captain कप्तान, नायक; दलनेता (खेल)
Caption शीर्षक
Captive रणबंदी
Carbon अंगारक
Carbon paper मसिपत्र
Carbuncle दुष्टव्रण
Careerism उदर पूर्त्तिवाद
Caretaker अवधायक, अवधाता
Cargo boat पण्यवाहक नौका, भारवाही पोत
Carriage परिवहन; गाड़ी
Carrier वाहक; वाहन
Carrier, public लोकवाहन
Carrot गाजर
Carry-out कार्यान्वित करना
Case कांड, वाद, मामला
Cashbook रोकड़ बही
Cash Memo विक्रयपत्र, नकदी पुरजा, रोकपत्रक
Cashier रोकड़िया
Cash-crop नकदी फसलें
Casting vote निर्णायक मत
Casual vacancy आकस्मिक रिक्ति (रिक्तस्थान)
Casuality हताहत (संख्या)
Cataract मोतियाबिंद
Catchment area जलप्राप्ति क्षेत्र
Catechism प्रश्नोत्तरी
Category प्रवर्ग, कोटि
Cattle-pound पशुनिरोध-गृह, पशुनिरोधिका, काँजी हाउस

Cauliflower फूलगोभी
Cause वाद
Cause of action वादमूल, वादहेतु
Caution money परिभाव्य धन
Cease-fire युद्धस्थगन
Ceded territories सत्तांतरित प्रदेश
Ceiling price उच्चतम (अधिकतम) मूल्य
Cell कोशाणु
Censor दोषवेचक; दोषवेचन
Censorship दोषवेचन, समाचार-नियंत्रण
Census जनगणना
Centralisation केंद्रीयकरण
Central Housing Board केंद्रीय आवासमंडल
Centrifugal forces केंद्रापसारी शक्तियाँ
Centripetal forces केंद्रोपसारी (केंद्रोन्मुख) शक्तियाँ
Century शती, शतक (खेलकी या समयकी); शताब्दी, सदी (समयकी)
Cereals अनाज
Ceremonial आनुष्ठानिक
Ceremony अनुष्ठान
Certificate प्रमाणपत्र, (प्रमाणक)
Certification प्रमाणन
Certiorary, Writ of उत्प्रेषण-लेख, उत्प्रेषणादेश
Cess उपकर
Chair कुर्सी, मंचिका; अधिपीठ, पीठिका (वि. विद्या.)
Chamber मंडल
Chamber of Commerce व्यापार-मंडल
Chamber of Princes नरेंद्रमंडल
Chancellor प्रधान मंत्री (जर्मनी); अधिपति (विश्वविद्यालयका)
Chancellor of the exchequer ब्रिटेनका अर्थमंत्री
Channel प्रणाली
Channel, Through proper उचित क्रमसे, संबद्ध अधिकारियोंके पास होते हुए
Character roll आचरण-पत्र
Charge आरोप, दोषारोप; प्रभार; अधिरोप; व्यय
Charge de aflairs प्रभारी राजदूत
Charge of offiee पदभार (देना, लेना)
Chargeable अधिरोप्य
Charged विद्युन्मय
Charge sheet आरोपपत्र, आरोपफलक
Charitable and religious endowment पूर्त्त तथा धर्मस्व, पूर्त्त तथा देवोत्तर सम्पत्ति
Charitable instituion धर्मार्थिक संस्था, पूर्त्त संस्था
Charity दातव्य; सहायता
Chart रेखापत्र
Charter अधिकार-पत्र
Chartered accountant अधिकृत गणक
Chemical examiner रासायनिक परीक्षक
Chemical fertiliser रासायनिक खाद या उर्वरक

Cheque धनादेश, चेक
Cheque, Bearer वाहक धनादेश
Cheque, Blank निरंक धनादेश
Cheque, Crossed रेखित धनादेश
Cheque, Order आदिष्ट धनादेश
Cheque, Postdated उत्तरतिथीय धनादेश
Chief Election Commissioner :मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief Judge मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice मुख्य न्यायाधिपति
Chief minister मुख्य मंत्री
Chief of staff सैनिक दफ्तरका प्रधान
Child welfare centre शिशु-कल्याणकेंद्र
Chord जीवा, चापकर्ण
Chorus सहगान, समवेत गान
Chronic चिरकालिक, जीर्ण
Chronicle पुरावृत्त
Chronology कालक्रम
C. I. D. गुप्तचर विभाग
Cinema चलचित्र; चलचित्र-मंदिर; सिनेमा
Cipher संकेताक्षर, शून्य
Circle क्षेत्र, मंडल; हलका; वृत्त
Circular परिपत्र; गश्ती चिट्ठी
Circulate परिचारित या परिपत्रित करना
Circulation प्रचार, परिचारण; प्रचार (संख्या)
Circumference परिधि
Circumlocation वाग्जाल
Circumscribed circle परिगत वृत्त, परिवृत्त
Circumstantial evidence वृत्तांतानुमेय साक्ष्य
Citation प्रोद्धरण
Citizenship नागरिकता
City Council नगर-परिषद्
City father नगरपिता
City slums नगरकी गंदी बस्तियाँ (मलिनावास)
Civic नागरिक
Civic guard नगर-रक्षक
Civil नागरिक, असैनिक
Civil aviation department नागरिक उड्डयन विभाग
Civil Court व्यवहार न्यायालय
Civil estimates प्रशासकीय व्ययानुमान
Civil liberty नागरिक स्वतंत्रता
Civil service नागरिक भृत्या (सेवा)
Claim दावा
Clarification स्पष्टीकरण
Clarion-call समाह्वान
Classical Economics प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र
Classification वर्गीकरण
Clause खंड
Cleavage संभेद, विभेद, दरार, पार्थक्य, मतभिन्नता
Clemency राजदया

Clerical mistake लिपिक-विभ्रम
Clerk लिपिक, लेखक
Climax पराकाष्ठा, चरमविन्दु
Client ग्राहक, मवक्किल
Clinic निदानगृह; निजी उपचारगृह
Clique गुट्ट
Cliquish गुट्टबाज
Clock-tower घंटाघर
Clock-wise घटिकानुक्रमसे
Closing balance रोकड़ बाकी, संवरण शेष
Closing entry संवरण प्रविष्टि
Closing stock संवरण स्कंध
Closure motion समापन प्रस्ताव, विवादांत प्रस्ताव, बहसबंदीका प्रस्ताव ।
Clue संकेत, सूत्र, सुराग
Coach गाड़ी; सवारीका डब्बा
Coagulation जमाव, आतंचन
Coalition government संयुक्त सरकार
Coastal traffic समुद्रतटवर्ती यातायात
Cockpit अखाड़ा; संघर्षभूमि
Code संहिता; सांकेतिक भाषा
Co-defendent सहप्रतिवादी
Codified संगृहीत, संहित
Codification of law विधियोंका ग्रंथीकरण
Coexisting सहवर्ती
Coextensive सहविस्तारी
Cognate सजातीय; –object सजातीय कर्म
Cognisance अभिज्ञान; हस्तक्षेप
Cognition संज्ञान
Cognizable हस्तक्षेप्य, संज्ञेय, पुलिसके हस्तक्षेप योग्य
Coherence सामंजस्य
Cohesion संसक्ति
Coin टंक, मुद्रा, सिक्का
Coin, spurious जाली सिक्का
Coinage, Coining टंकण
Coincidence संपात, संयोग
Coir Industry नारियलजटा उद्योग
Cold शीत; प्रतिश्याय, जुकाम
Cold storage शीत-संग्रह; स्थगित करना
Cold war "शीत" युद्ध,राजनीतिक युद्ध, अशस्त्रीययुद्ध
Cold wave शीत लहर, शीत तरंग, शीत लहरी
Collapsible सिमटने या सिकुड़नेवाला, आकुंचनशील, संहरणशील
Collection संग्रहण, एकत्रीकरण
Collection charges संग्रहण व्यय
Collection of data सामग्री-संग्रहण
Collective सामूहिक
Collective responsibility सामूहिक उत्तरदायित्व
Collective security सामूहिक सुरक्षा
Collectivism समूहवाद; सामूहिकतावाद

Collector समाहर्त्ता; जिलाधीश
Collector, Deputy प्रति समाहर्त्ता
College महाविद्यालय
Colony उपनिवेश
Colonisation उपनिवेशन
Colour blind वर्णान्ध
Colour prejudice वर्ण-विद्वेष
Coloured races अश्वेत जातियाँ
Column स्तंभ
Columnist (पत्रका) स्तंभलेखक
Combatants and noncombatants युद्ध-प्रवृत्त और युद्ध-निवृत्त
Combustible दह्य, ज्वल्य, ज्वलनशील
Come of age (प्राप्त) वयस्क होना
Comma अल्पविराम
Command समादेश; पूर्ण अधिकार, प्रभुत्व
Commandant सेनानायक
Commandeer सेनायत्त करना
Commander समादेशक; सेनानायक
Commander-in-chief प्रधान सेनापति
Commend संस्ताव करना
Comment टीका, मतविवेचन, आलोचना
Commentary विवृत्ति, अभिटिप्पण, टीका
Commerce वाणिज्य
Commercial वाणिज्यिक
Commercial crops वाणिज्यिक फसलें
Commissar मंत्री
Commissariat सेना-रसद-विभाग
Commission आयोग
Commission छूट, बट्टा, वर्त्तन
Commission agent वर्त्तन अभिकर्ता
Commission and omission, Acts of विहित-निषिद्ध कर्म
Commissioned officer आयुक्त अधिकारी
Commissioner आयुक्त
Commit सिपुर्द करना
Committee समिति; –of action संघर्ष समिति
Committee, Select प्रवर समिति
Committee, Standing स्थायी समिति
Commodity पण्य द्रव्य, पण्य वस्तु; जिंस
Commodity market पण्यक्षेत्र, जिंस बाजार
Common seal सामान्य मुद्रा
Common sense सामान्य बुद्धि
Commonwealth राष्ट्रमंडल
Communalist संप्रदायवादी
Communicate संचार करना, संसूचित करना
Communication संचारण; संचार; संसूचना; संवाद-वहन
Communication, Means of संचारसाधन
Communique विज्ञप्ति

Communism साम्यवाद
Communist साम्यवादी
Community समाज, सम्प्रदाय
Community project सामुदायिक योजना
Commute लघुकरण
Commutation of pension पेंशनका संराशिकरण
Company प्रमंडल
Comparative तुलनात्मक
Compass परकार; दिग्दर्शक यंत्र
Compassion अनुकंपा
Compatible संगत
Compendium संक्षेपण; उपसंक्षेप; लघुपुस्तिका
Compensate क्षतिपूरण
Compensatory allowance प्रतिकर भत्ता
Compensation क्षतिपूर्त्ति, प्रतिकर
Competent सक्षम, समर्थ
Compilation संकलन
Compiled संकलित
Complainant अभियोक्ता
Complaint अभियोग, शिकायत, फरियाद; परिदेवना, परिवाद; परिवादपत्र
Complement (विधेयार्थ) पूरक
Complementary adj. पूरक
Compliance मान लेना, पालन, पूरा करना
Compliments शुभकामना; प्रशंसा
Component parts अंशभूत भाग, अवयवभूत अंश
Compost वानस्पतिक खाद, कूड़ेकी खाद
Compound यौगिक
Compoundable मिश्रणशील; समाधेय
Compoundable offence समाधेय अपराध, राजीनामे योग्य अपराध
Compounder संमिश्रक
Comprehensive questionaire विस्तृत प्रश्नावलि
Compromise समझौता, बीचका रास्ता
Comptroller नियंत्रक
Compulsory अनिवार्य, बाध्यतामूलक, आवश्यक
–retirement अनिवार्य निवृत्ति
Computation संगणना
Concave lens नतोदर ताल
Concentration संकेंद्रण
Concentration of authority प्राधिकारका संकेंद्रण
Concentration camp निरोधन शिविर, नजरबंदी शिविर; कारा-शिविर
Concentrated efforts एकाग्रीकृत प्रयास, संकेंद्रित प्रयास
Conception अवधारणा
Concerned सम्बद्ध, संश्लिष्ट
Concession छूट, रियायत
Conciliation board संराधन समिति, विवाद-निवारक-समिति

Conclave गुप्त सभा
Conclusion परिणाम, निष्पत्ति
Conclusive निश्चयात्मक, अखंड्य
Concommitant सहवर्त्ती, साथ-साथ चलनेवाला (दंडादि), युगपद्चारी, संधावी, समचारी
Concurrence सहमति
Concurrent संगामी, संवर्ती
Concurrent list समवर्ती सूची
Condensed food घनीभूत खाद्य
Conditional सप्रतिबंध
Conditions of service सेवाकी शर्तें
Condolence संवेदना
Condominium द्वैराज्य; शामलात
Condonation क्षमादान
Condone क्षमा करना
Conductor संवाहक
Cone शंकु, शंक्वाकार घन
Confederation परिसंघ
Conference सम्मेलन; संमंत्रणा
Confession अपराध-स्वीकरण; स्वीकारोक्ति
Confirmation अभिपुष्टि, पुष्टिकरण; स्थायीकरण
Confiscation समपहरण, जब्ती
Conflagration अग्निकांड, महाप्रज्वलन
Congential सहजात
Congratulation बधाई, प्रतिनंदन
Congruent सर्वांगसम (त्रिभुज)
Consanguine सगोत्र
Consanguinity सगोत्रता
Conscience अंतःकरण
Conscript अनिवार्य भर्त्ती करना; वि० इस तरह भर्त्ती किया हुआ।
Conscription अनिवार्य भर्त्ती
Consecutive क्रमागत; लगातार
Consensus एकरूपता, समानता
Consensus of opinion ऐकमत्य
Consent सम्मति
Consequential आनुषंगिक
Consequently फलतः, परिणामस्वरूप
Conservancy system मलवाहन पद्धति
Conservation संरक्षण
Conservator of forests वनसंरक्षक
Consigned परेषित, अर्पित
Consignment परेषण, परेषित वस्तु
Consignee परेषणी
Consignor परेषक
Consistancy संगति
Consolidated एकीकृत, संचित, संपिंडित
Consolidated fund संचित निधि
Consolidation of debt ऋण-संपिंडन
Consolidation of holdings खेतोंकी चकबंदी

Conspiracy षड्यंत्र
Constant cost स्थिर परिव्यय
Constellation नक्षत्र
Constipation मलावरोध, मलबद्धता, कब्ज
Constituency निर्वाचन-क्षेत्र ।
Constituent Asembly संविधान सभा
Constitution संविधान; संघटन; संकल्पपत्र; देहयष्टि
Constitutional deadlock सांविधानिक गतिरोध
Constitutionalist संविधानवादी
Constructive programme रचनात्मक कार्यक्रम
Construe अर्थ करना
Consul वाणिज्य-दूत; राजप्रतिनिधि
Consul-general महावाणिज्यदूत
Consulate वाणिज्य दूतावास
Consulting room परामर्शालय, परामर्शकक्ष
Consumer's goods उपभोग्य वस्तुएँ
Consumption उपभोग; क्षय, क्षयरोग
Contagious सांस्पर्शिक, सांसर्गिक
Contamination दूषण
Contemporary समसामयिक, समवर्त्ती, समकालीन; सहयोगी (समाचारपत्र)
Contempt अवमान, अवमानना, अपमान
Contents अन्तर्वस्तु, अन्तर्विषय
Context संदर्भ
Contiguity संसक्ति, सान्निध्य, संलग्नता
Contingency आकस्मिकता
Contingency fund प्रासंगिक व्यय, आकस्मिकता-निधि
Contraband trade विनिषिद्ध व्यापार, प्रतिबंधित व्यापार
Contradiction खंडन, प्रतिवाद; असंगति
Contrary विरुद्ध, प्रतिकूल
Contribution अंशदान, अवदान, योगदान; चंदा
Contributory Provident fund अंशदायी सुविधायक (या संचित) कोष
Control Room नियंत्रण-कोष्ठ
Controversy खंडनमंडन, वादविवाद
Convalescence (रोगोत्तर) स्वास्थ्यलाभ
Convection वहन
Convener संयोजक
Convention प्रसभा; अभिसमय, रूढ़ि
Conventional यथाचार, पारंपरिक
Convergent एककेंद्राभिमुख, एकबिंदुगामी
Converse प्रतिलोम
Conversion परिवृत्ति; धर्मपरिवर्त्तन; मतपरिवर्त्तन
Convertible परिवर्त्त्य
Convertion रूपांतरण, परिवर्तन
Convex उन्नतोदर; उन्नतोदर बहुभुज (ज्यामिति)
Conveyance हस्तांतरपत्र; सवारी
Convicted अभिशस्त, दोषसिद्ध
Convocation दीक्षांत समारोह, समावर्त्तन, पदवीदान समारोह
Cooperative Society सहकारी समिति
Co-opt विनियुक्त करना, अधिनिर्वाचित करना
Coopted members अधिनिर्वाचित सदस्य
Coordinate समान पदवाला, समकक्ष; v. मेल बैठाना
Coordination एकसूत्रीकरण; समन्वय
Co-partner सहयोगी, साझेदार
Copied प्रतिलिपित
Copper age ताम्रयुग
Copper plate ताम्रपत्र
Copy प्रतिकृति, प्रतिलिपि
Copyholder लेखधारक
Copyist प्रतिलेखक; प्रतिलिपिक
Copyright कृतिस्वाम्य
Coroner अपमृत्यु मीमांसक
Corporal punishment शारीरिक दंड
Corporate नैगम
Corporation निगम, पौरसंघ
Corps निकाय, दल, सैन्यदल
Corps, Diplomatique राजदूत समूह, दूतसमाज
Corrected शोधित
Correspondence पत्र-व्यवहार, पत्राचार
Correspondent संवाददाता
Corresponding तत्स्थानीय, तदनुरूप; संगत (कोण)
Corridor गलियारा, बीचमेंसे होकर जानेवाला संकीर्ण पथ
Corroboration अभिपुष्टि
Corrupt practice भ्रष्टाचार
Cosmic Rays ब्रह्मांड रश्मि
Cosmogeny विश्वोत्पत्तिविज्ञान
Cosmology ब्रह्मांड विज्ञान
Cosmopolitan सार्वदेशिक, सार्वभौम; विश्वनागरिक
Cosmos ब्रह्मांड
Cost परिव्यय, लागत
Cost of living जीवन-यापन व्यय
Cost of maintenance निर्वाह-परिव्यय
Cost of production उत्पादन-परिव्यय
Costs वाद-व्यय
Cottage Industry गृहोद्योग, गृहशिल्प, कुटीर-शिल्प
Council परिषद्
Councillor पारिषद्
Council of action कार्य-परिषद्
Council of States राज्य-परिषद्
Counter गणनाफलक; "खिड़की"
Counter act विप्रतिकार करना, प्रभावहीन या व्यर्थ बनाना
Counter action प्रतिकरण, प्रतिकारात्मक कार्य
Counter attack प्रत्याक्रमण
Counter balance प्रतिसंतुलन
Counter charge प्रत्यारोप

Counterfeit जाली
Counterfoil प्रतिपत्रक, प्रतिपर्ण, दूसरी प्रति
Counter part प्रतिरूप, प्रतिमूर्त्ति
Countersigned प्रतिहस्ताक्षरित
Counter statement प्रत्यावेदन; प्रतिवक्तव्य
Countervailing duty प्रतिशुल्क
Coup d'etat आकस्मिक शासन-परिवर्त्तन, शासनिक विपर्यय; बलात् सत्तापहरण
Coupon पर्णिका, कूपन
Courier धावक, धावन, हरकारा
Course पाठ्यक्रम; मार्ग, पथ; प्रवाह, धारा; रीति
Court fee न्यायशुल्क, अधिकरण शुल्क
Court, High उच्च न्यायालय
Court Inspector व्यवहार-निरीक्षक
Court martial सैनिक विचार; सैनिक न्यायालय
Court of appeal पुनर्विचार न्यायालय
Court of records अभिलेख न्यायालय
Court of wards प्रतिपालक अधिकरण
Court, Regional क्षेत्रीय न्यायालय
Court, Supreme सर्वोच्च न्यायालय
Covenant प्रतिश्रुति, प्रतिश्रुतिपत्र, प्रतिज्ञापत्र; समझौता
Covenanted प्रतिश्रुत
Crane भारोत्तोलन यंत्र, भारोद्वहन यंत्र
Credentials परिचयपत्र
Credit प्रत्यय, साख; समाकलन; उधार
Credit balance समाकलन आधिक्य
Credit bill विश्वसनीय हुण्डी
Credit entry समाकलन-प्रवृष्टि
Credit facilities ऋणसुविधा
Credit note जमाकी हुंडी, समाकलन-पत्र
Creditor उत्तमर्ण, महाजन
Credit sale उधार-विक्रय
Credit side धनपक्ष, जमाकी तरफ
Cremation ground, crematory श्मशान
Crew नाविक दल, खलासी; विमानकर्मी
Cricket गेंदबल्ला, क्रिकेट
Crime अपराध
Criminal वि० दंड्य; अपराधशील, पु० अपराधी
Criminal breach of trust दंडनीय विश्वासघात
Criminal conspiracy दंड्य या अपराद्ध षड्यंत्र
Criminal court दंड न्यायालय
Criminal investigation department अपराधान्वेषण विभाग, गुप्तचर विभाग
Criminal procedure code दंडविधि संहिता
Criminal settlement जरायमपेशा लोगोंकी बस्ती
Criminal tribes अपराधशील जातियाँ
Criterion निकष, मानदंड, कसौटी
Crop rotation शस्य आवर्त्तन; फसल-बदल
Cross breeding अन्योन्य प्रजनन
Cross-examination प्रतिपरीक्षण; जिरह, साक्षि-परीक्षा
Crossword puzzle वर्गपहेंली
Crusade धर्मयुद्ध
Cruiser गश्ती जहाज, हिंडक पोत
Crystalisation स्फटिकीकरण, कणीकरण
Culpable homicide अपराद्ध नरहत्या
Cultivable कृष्य, कृषियोग्य
Cultivable land कृषियोग्य भूमि
Culture संस्कृति, संस्कार; पालन (जैसे कोशकीटपालन)
Cumulated समुच्चित, समुच्चयित
Curable चिकित्स्य, साध्य
Curator अध्यक्ष, परिरक्षक (संग्रहालय आदिका)
Currency चलार्थ, मुद्रा; प्रचलन
Current प्रचलित, चालू; n. धारा
Current account चालू खाता
Curve वक्रता, वक्र, (वक्ररेखा), मोड़
Curved line वक्ररेखा
Custodian संपालक, अभिरक्षक
Custodian of evacuee property निष्क्रांतोंकी संपत्तिका अभिरक्षक
Custody अभिरक्षा, हिरासतमें लेना
Custom रूढ़ि, अभ्यास, रीति
Customs निराक्रम्यकर, सीमाशुल्क
Cut motion कटौती प्रस्ताव
Cut-throat competition कंठच्छेदि स्पर्धा
Cycle चक्र; द्विचक्रयान
Cyclostyle चक्रलेखित्र
Cypher code गूढ़लेख संहिता

D

Daily register दैनिक पंजी
Dairy दुग्धशाला, गव्यशाला
Dais मंच
Damages क्षतिपूर्ति
Dash समरेखा-चिह्न
Data आँकड़ा, सामग्री
Date तिथि, दिनांक
Dated तिथित, दिनांकित
Daybook दैनिकी
Day dream दिवास्वप्न
Day, Preceding पूर्ववर्त्ती दिन
Day scholar अनावासिक छात्र
Days of grace अनुग्रहकाल
Dead account मृत लेखा
Dead language मृत भाषा
Dead letter office बेपता चिट्ठीघर
Dead-lock गतिरोध, गत्यवरोध
Dealer व्यापारी
Dealings व्यवहार, लेना-देना
Death certificate मरण-प्रमाणक, मृत्यु-प्रमाणक
Death-rate मरण-गति
Debacle ध्वंस, विभंग; पूर्ण पराजय

Debate वाद-विवाद
Debenture ऋणपत्र
Debit देयांश, विकलन
Debt conciliation board ऋण समझौता बोर्ड
Debt redemption ऋणमुक्ति
Debtor अधमर्ण, ऋणी
Decade दशाब्द, दशक, दशी
Decadence अवक्षय, ह्रास
Decagon दशभुज
Deceased प्रमीत, मृत
Decentralization विकेंद्रीयकरण
Deciding vote विनिश्चयकारी मत
Decimal system दाशमिक-क्रम, दशमलव-पद्धति
Decision विनिश्चय
Decision, pending the विनिश्चय होने तक
Decisive विनिश्चयात्मक
Declaration ज्ञापन, घोषणा
Declension कारक-रचना, रूपसाधन
Decontrol विनियंत्रण
Decorum शिष्टाचार, शिष्टता
Decree आदेश, आज्ञप्ति
Dedicate समर्पण
Dedicated समर्पित
Deduction काटना, कटौती; निगमन
Deed संलेख
Defaced coin विकृत टंक
De facto तत्वतः, तथ्यतः
Defalcation व्यय, हरण, खयानत
Defamatory अपकीर्तिकर
Defaulter प्रमादी, तिथि-संक्रामी
Defeatist attitude पराजयमूलक भावना
Defence bond प्रतिरक्षा ऋण-पत्र
Defence expenditure प्रतिरक्षा व्यय
Deferred अभिस्थगित
Deficit घाटा, न्यूनता
Deficit area अभावग्रस्त क्षेत्र
Deficit budget घाटेका आयव्ययक
Deficit financing न्यूनार्थ-व्यवस्था
Defined परिभाषित
Deflation विस्फीति
Deflection वलन
Deforestation वननाशन
Deformity विरूपता
Degenerate अपजात
Degeneration आपजात्य
Degree अंश
Dehumidifying plant आर्द्रतानाशक यंत्र
Dehydrated vegetable निर्जलीकृत शाक
Dehydration निर्जलीकरण
Deism ईश्वरवाद

De-Jure विधानतः, अधिकारतः
Delegated प्रदत्त, प्रत्यायुक्त, प्रत्यायोजित किया हुआ
Delegation प्रत्यायोजन; शिष्टमंडल
Delete अपमार्जन करना, निकालना
Delimitation परिसीमन
Delinquency कर्त्तव्यहीनता, अपराध
Deliverence उद्धार, मुक्ति
Delivery सामानका भुगतान देना; सौंपना; पत्र-वितरण; बटनी; भाषणविधि; प्रसव; रिहाई
Deluge प्लावन
Demand अभियाचन, माँग
Demarcation सीमांकन
Demilitarisation असैनिकीकरण
Demobilisation सैन्य-विघटन, सैन्य-वियोजन
Democratisation लोकतंत्रीकरण
Demonetisation विमुद्रीकरण
Demonstration प्रदर्शन; उपपादन
Demurrage विलम्ब-शुल्क
De novo नये सिरेसे
Dentistry दन्तचिकित्सा
Departmental वैभागिक, विभागीय
Depot भरतीकेन्द्र; गोदाम
Depopulation निर्जनीकरण
Deposit जमा करना, निक्षेप करना
Deposit, current चलनिक्षेप
Deposition साक्षीका कथन
Depositor निक्षेपक
Depreciatory remark अपमानकारी अभ्युक्ति
Depreciation मूल्यह्रास, मूल्यापकर्ष मूल्यावरोह, अर्घपतन
Depressed class दलित वर्ग
Depression अवसाद, व्यापारिक शैथिल्य, मन्दी
Deprive वंचित करना
Depth charge समुद्री गोला, जलप्रस्फोट
Deputation शिष्टमंडल; प्रतिनियुक्ति
Deputed प्रतिनियुक्त
Deputy speaker उपाध्यक्ष
Derailment पटरीपरसे उतर जाना
Deranged अस्त-व्यस्त, विक्षिप्त, विक्षुब्ध
Derivation व्युत्पत्ति
Derivative व्युत्पन्न
Derogatory लघूकारक, अपकीर्तिकर, अपमानकारी
Descendent वंशज
Descent उद्भव
Desert संपरित्याग करना, छोड़ देना
Deserter दलत्यागी, भगोड़ा, पलायक
Design परिकल्पना, रूपांकन, रचना-वैशिष्ट्य, परिरूप
Designate (v.) नामोद्देशन करना, नामाभिधान करना; वि० नामोद्दिष्ट, मनोनीत
Designation पदनाम, ओहदा

Designer परिरूपक
Despatch-book प्रेषण पुस्तक
Despatcher डाकप्रेषक; प्रेषणकर्मी; प्रेषक
Destroyer विध्वंसपोत
Detailed विस्तृत, ब्योरेवार
Details विस्तार, विवरण, ब्यौरा
Detention कारारोध, अवरोध, निरोध, निरोधन
Deterioration of currency चलार्थकी अवनति
Determination पक्का निश्चय, अवधारणा
Determinist नियतिवादी
Deterrent sentence निवारक दंड, निरोधक दंड
Detrimental अहितकारी
Devaluation अवमूल्यन
Development expenses विकास व्यय
Deviate विचलित होना
Devolution of power अधिकारका अवक्रमण
Devolve अवक्रमण होना, सौंपना, जिम्मे आ पड़ना
Diagnosis निदान
Diagonal विकर्ण
Dialectical materialism द्वंद्वात्मक भौतिकवाद
Dialogue कथोपकथन
Diametre व्यास
Diamond jubilee हीरक जयंती
Diarchy द्वैधशासन
Diary दिनपंजी, दैनंदिनी
Dictation आलेख, इमला, श्रुतिलेख
Dictator अधिनायक
Dictatorship अधिनायकवाद; अधिनायकतंत्र; अधिनायकत्व
Didactics शिक्षाशास्त्र
Diehard कट्टर, दुराग्रही (राजनीतिज्ञ)
Dietics आहार-शास्त्र
Differntial duty सापेक्ष कर, भेदक कर
Diffuse विस्तारित करना, प्रसारित करना, विकीर्ण या प्रक्षेपित करना
Digest संक्षिप्त संग्रह
Dilemma धर्मसंकट, उभयसंकट
Diluvial प्लावनिक
Diminishing आह्रासी; ह्रासमान
Dimunitive अल्पार्थक, न्यूनताबोधक
Diplomacy कूटनीति, राजनय
Diploma उपाधिपत्र
Direct निदेश करना
Direct election प्रत्यक्ष निर्वाचन
Direction निदेश
Directorate विभाग
Director अधिकर्ता, संचालक, निदेशक
Director General Commercial Intelligence and Statistics वाणिज्यिक तथ्यांक विभागके प्रधान संचालक
Director, Managing प्रबंध-संचालक
Director of Public Education लोकशिक्षण-संचालक
Directory निदेशिका
Disability निर्योग्यता
Disabled विकलीकृत
Disagreement असहमति
Disapprobation प्रतिनिन्दन, अमान्यन
Disapproved निरनुमोदित
Disarmament निरस्त्रीकरण
Disarmed निरस्त्रीकृत
Disband सेनाभंग
Disbursing officer भुगतानक अधिकारी
Disbursement आयोजित वितरण
Discharge उन्मोचन; परिशोधन; पालन; स्राव
Discharge of functions कृत्योंका निर्वहन
Discipline अनुशासन
Discord मतभेद, वैमत्य, फूट, झगड़ा
Discordant वैमत्यसूचक, विस्वर
Discount, At a बट्टे पर
Discovery आविष्कार
Discrepancy भिन्नता, अंतर; असंगति
Discretion स्वविवेक
Discretionary विवेकाधीन
Discrimination विभेदीकरण, विभेद
Discussion पर्यालोचन, चर्चा
Disease, Venereal रतिज रोग, यौन रोग
Dishonesty अनार्जव
Dishonour अनादरण
Dishonoured cheque अनादृत धनादेश
Disinfectant संक्रमण-नाशक
Disinterested अलिप्त, निस्पृह
Dismissal पदच्युति; अमान्यन
Disparity असमता, असमानता
Dispensary (दातव्य) औषधालय
Disperse विसर्जन
Displaced विस्थापित
Displacement विस्थापन; स्थान-च्युति, हटाव
Disposal निस्तारण, समापन, निपटाना
Disposition मनोवृत्ति, मनोभाव; शील; विक्रय
Disprove असत्य प्रमाणित करना, खंडन करना
Dispute विवाद
Disqualification निर्योग्यता, अनर्हता
Disqualified अनर्ह
Disqualify निर्योग्य बना देना, अनर्हीकरण
Dissection विच्छेदन
Dissemination फैलाना
Dissent विमति (असहमति)
Dissolution विलयन, विसर्जन, भंग होना, समापन
Distillary अभिस्रावणी

Distillation अभिस्रावण
Distilled water अभिस्रावित जल
Distinct भिन्न
Distinction विशेष योग्यता
Distress warrant अभिहरणका अधिपत्र
Distribution वितरण; विभाजन
District जिला, मंडल; प्रदेश, क्षेत्र
District Board, see 'board'
District Magistrate जिलाधीश
Ditto तदेव
Divergent अवसारी, विभिन्न दिशागामी
Diversion विपर्यांतर; विचलन
Dividend लाभांश; भाज्य
Divisible भाज्य, भागार्ह
Division भाग; विभाजन, विभाग; प्रमंडल; प्रखंड; चमू (वाहिनी = ब्रिगेड)
Divisional प्रामंडलिक, प्राखंडिक
Division bell विभाजन घंटी
Divorce विवाहविच्छेद; त्याग, पृथकीकरण
Dock नौनिवेश, जहाजी मालघाट, गोदी; कटघरा
Doctrine धार्मिक सिद्धांत
Document प्रलेख
Documentary film प्रलेख चित्र
Documentary proof लिखित प्रमाण
Domestic गृह्य, गार्हस्थ्य, घरेलू
Domestic science गार्हस्थ्य-विज्ञान, गृहशास्त्र
Domicile अधिवास
Domicile certificate अधिवासी प्रमाणक
Domiciled अधिवासी
Dominion अधिराज्य, स्वतंत्र उपनिवेश
Donation दान
Donee प्रतिगृहीता, दानगृहीता
Donor दाता
Dormant सुप्त
Dormatory शयनशाला
Double द्विगुण; पु० प्रतिरूप
Double plough दुफारा हल
Double member constituency द्विसदस्य-निर्वाची क्षेत्र
Double shift दोहरी पारी
Doubles युग्मक
Draft प्रारूप; मसौदा; हुंडी
Draftsman प्रारूपकार; मानचित्रकार
Drain निर्गम; नाली; उत्सारण
Drainage scheme जलोत्सारण योजना
Draught cattle भारवाही (भाराकर्षी) पशु
Drawee आहार्यी; भुगतानकर्त्ता
Drawer आहर्त्ता, हुंडीकार
Dressing मरहमपट्टी; प्रतिसारण
Dropper विन्दुपातक
Drought सूखा, अनावृष्टि
Dry cleaning निर्जल धुलाई
Dualism द्वैतवाद
Duck शून्य
Due प्राप्य; देय; उपयुक्त, यथावत्
Duet दोगाना
Duly विधिवत्
Dump, Ammunition गोला बारूदका ढेर
Dumping of goods वस्तुओंका राशिपातन; विदेशोंमें माल अधिक सस्ता बेचना
Duplicate प्रतिलिपि
Duplicate copy द्वितीय प्रतिलिपि
Duress दबाव, धमकी
During the pleasure of प्रसादपर्यंत
Dustbin अवकरी (अवकर = कूड़ा, कतवार), अवकरपात्र, कूड़ेकी टोकरी
Dutiable शुल्कयोग्य, शुल्कार्ह
Duty शुल्क; कर्त्तव्य
Duty, On काम पर
Dyarchy द्वैध शासन
Dynamic गतिशील
Dynamics गतिविज्ञान
Dynamite प्रध्वंसक

E

Earmarked पृथक् रक्षित
Earned leave अर्जित छुट्टी
Earnest money बयाना, सत्यंकार, साई
Easement, Right of सुविधाधिकार, गमन-निर्गमनाधिकार, सुखाधिकार
Ecclesiastical धार्मिक, चर्च संबंधी
Ecoing प्रतिध्वनन
Economic advisor आर्थिक मंत्रणाकार
Economic blockade आर्थिक समवरोध
Economic dislocation आर्थिक अस्तव्यस्तता
Economy अर्थव्यवस्था; मितव्ययिता
Economy committee बचत समिति
Economy, Planned योजनायुक्त अर्थनीति
Edible खाद्य
Edict राजादेश, राजघोषणा
Edition, Evening सायं संस्करण
Editorial संपादकीय (वि०, सं० दोनोंमें)
Education Expansion scheme शिक्षाप्रसार-योजना
Educationist शिक्षाविशेषज्ञ, शिक्षाविशारद
Effective, To be प्रभावी होना
Effects संपत्ति
Efficiency कार्यक्षमता, दक्षता
Efficiency bar दक्षता-अर्गल
Egress चले जाना, निर्गमन, निष्क्रमण
Ejectment निष्कासन, बेदखली
Elastic स्थितिस्थापक

Election निर्वाचन
Election, Bye उपनिर्वाचन
Election campaign निर्वाचन-आंदोलन
Election commissioner निर्वाचन आयुक्त
Election malpractices निर्वाचन कदाचरण
Election petition निर्वाचन-प्रार्थनापत्र, निर्वाचन-याचिका
Election returns निर्वाचन-विवरण
Election tactics निर्वाचनकी चाल
Election-tribunal निर्वाचन-अधिकरण
Electoral college निर्वाचक मंडल
Electoral roll निर्वाचक-नामावली, निर्वाचक-सूची
Electorate निर्वाचकगण
Electric mains विद्युत् प्रसंवाही
Electrical वैद्युतिक
Electrified विद्युन्मय
Electron विद्युदणु
Electrocution विजलीकी फाँसी, विद्युद्घात
Electroscope विद्युद्दर्शक यंत्र
Element तत्व, भूत; अंश
Elevans एकादशक
Eliciting opinion सम्मति प्राप्त करना, राय जानना-
Eligible पात्र, वरणीय
Eliminating अपाकरण, दूरीकरण
Elocution वक्तृत्वकला
Elocution competition वक्तृत्व प्रतियोगिता
Elucidation स्पष्टीकरण, विशदीकरण
Emancipation उद्धार, विमोचन
Embarkation आरंभ करना
Embargo पोताधिरोध; प्रतिबंध
Embassy दूतावास; राजदौत्य
Embezzlement मोषण, गबन, अपभोग, अपहार
Embryo भ्रूण
Embryology भ्रूणविज्ञान, गर्भविज्ञान
Emergency आकस्मिक संकटकाल, आपात
Emergency area आपात-क्षेत्र
Emergency commission आपातिक आयोग
Emergency order आकस्मिक आदेश
Emergency meeting आपाती अधिवेशन
Emergency, State of संकटकी स्थिति
Emergency Reserve संकटकोष
Emigrant उत्प्रवासी (प्रवासी)
Emigration उत्प्रवास
Emissory प्रणिधि
Emmersion प्रवाह, मसान
Emoluments परिलाभ, उपलब्धियाँ
Empiricism अनुभूतिवाद
Employed सेवायुक्त
Employee सेवी, कर्मचारी
Employees State Insurance Act कर्मचारी बीमा कानून
Employer सेवायोजक, नियोजक
Employer's liability सेवायोजक उत्तरवादिता
Employment सेवानियोजन, नियोजन
Employment exchange कामदिलाऊ दफ्तर, भृतियोजनालय; सेवायोजनालय, नियोजनालय
Emporium वाणिज्यालय
Emulation स्पर्द्धा
Enact अधिनियम बनाना
Enactment विधायन, अधिनियमन
Enblock सामूहिक रूपसे, समूहतः; गुटका गुट, दलका दल
Enclave परिगत भूभाग, अंतर्गत भूभाग
Enclosed संवेष्टित, सन्निविष्ट, संपुटित
Enclosure संवेष्टित वस्तु; घेरा, संवेष्टन
Encumberance ऋणग्रस्तता, ऋणभार
Encumbered भारग्रस्त, ऋणग्रस्त
Encyclopaedia विश्वकोश
Endorsement पृष्ठांकन
Endorsed पृष्ठांकित
Endowment प्राभृत, धर्मस्व
Endowment policy बंदोबस्ती बीमापत्र
Energy ऊर्जा, शक्ति
Enforcement प्रवर्त्तन
Engagement समयदान; विवाह-निश्चय; संघट्ट
Engine गंत्र, इंजन
Engineer अभियंत्रा, यंत्रविद्, इंजीनियर
Engineering यंत्रशास्त्र, यंत्रविद्या
Engineering industry यंत्रोद्योग
Engrave उत्कीर्ण करना
Enima वस्ति
Enlargement परिवर्द्धन
Enquiry परिपृच्छा
Enquiry office परिपृच्छा-गृह
Entrolment fee नामलेखन शुल्क, पंजीयन शुल्क
Ensign पोतध्वज
Entente राष्ट्रमैत्री, गुटबंदी
Entertainment tax प्रमोदकर
Enthralment दासता
Enticement परिलोभन, परिमोहन
Entomology कीटविज्ञान
Entrance fee प्रवेश-शुल्क
Entrepreneur उपक्रमी
Entry प्रविष्टि
Enumerated प्रगणित
Environment वातावरण
Envoy दूत
Epic महाकाव्य
Epidemic महामारी
Epigraph शिलालेख

Epitah समाधि-लेख
Equal protection of laws विधियोंका समान संरक्षण
Equation समीकरण
Equator भूमध्य रेखा, विषुवत् रेखा
Equiangular polygon समानकोणिक बहुभुज
Equilateral समानभुजिक
Equilibrium साम्य, साम्यावस्था
Equinox सायन
Equipment सज्जा, साज-सज्जा, साज-सामान
Equitable न्याय्य, (उपयुक्त)
Equitable tax न्यायसंगत कर
Equity न्यायभावना; साम्य
Equivalent पर्यायवाची, समानार्थक; बराबर; n. पर्याय
Era युग; संवत्
Erase उद्घर्षण; अवमर्षण
Erasures कटकुट
Erosion कटाव
Erratum शुद्धिपत्र
Error विभ्रम
Errors and omissions लोप-विभ्रम, भूलचूक
Escort रक्षकवर्ग; मार्गरक्षक
Escort vessel रक्षक पोत
Espionage चारकर्म, चारव्यवस्था
Essential service परमावश्यक सेवाएँ
Establish स्थापित करना
Establishment प्रतिष्ठान; स्थापना
Establishment charges स्थापना-प्रभार, स्थापनव्यय
Estate रिक्थ, सम्पदा, भूसंपत्ति
Estimates प्राक्कलन, अनुमान
Estimated cost प्राक्कलित (अनुमानित) परिव्यय
Eternal शाश्वत, चिरंतन
Ether आकाश; सूक्ष्म वायु
Evacuation निष्क्रमण
Evacuee निष्क्रांत
Evacuee property निष्क्रांतोंकी संपत्ति
Evaporation वाष्पीकरण
Evasion अपवंचन
Evasion of tax करापवंचन
Even distribution समवंटन
Eviction अधिनिष्कासन
Evidence साक्ष्य
Evidence, Circumstantial वृत्तांतानुमेय साक्ष्य
Evidence, Hearsay श्रुतानुश्रुत साक्ष्य
Evolution उद्विकास
Evolutionary उद्विकासी
Evolved उद्विकसित
Exaction बलाद्ग्रहण
Exaggerated अतिरंजित
Exaggeration अतिशयोक्ति, अतिरंजन
Examination Hall परीक्षाभवन, परीक्षालय
Examinee परीक्षित, परीक्षार्थी
Excavation खुदाई, उत्खनन
Except as provided उपबंधितके अतिरिक्त, इसमें दिये गये उपबंधोंको छोड़कर
Excess profit tax अतिरिक्त लाभ-कर
Exchange, Bank of विनिमय अधिकोष
Exchange, Favourable अनुकूल विनिमय
Exchange of opinion विचार-विनिमय
Exchange, Telephone दूरवाणी-मिलान-केंद्र
Exchequer राजकोष, अर्थविभाग; वित्त
Excise duty उत्पादन-कर
Excise Commissioner, Central केंद्रीय उत्पादन-कर आयुक्त
Excise department आबकारी विभाग
Excluded Area अपवर्जित क्षेत्र
Exclusion अपवर्जन
Exclusive एकांतिक, अनन्य
Exclusive jurisdiction अनन्य क्षेत्राधिकार
Execution निष्पादन, इकरसी, तामील; पूरा करना; फाँसी
Executed निष्पादित, निष्पन्न; प्राणदंडित
Executive कार्यकारिणी, कार्यपालिका
Executive authority अधिशासी अधिकारी
Executor निष्पादक, निर्वाहक; रिक्थसाधक
Exemption मुक्ति
Exequatur वाणिज्य दूतको राजमान्यता देना
Exercise of right अधिकारका उपयोग
Exhibit प्रदर्शित वस्तु
Exhibition प्रदर्शनी, नुमाइश
Exit बहिर्गमनद्वार
Exodus बहिर्गमन
Ex-officio पदेन
Expanding (university) प्रसारी (विश्वविद्यालय)
Expansion प्रसार
Expansion of credit प्रत्यय-प्रसार
Ex-parte एक-पक्षीय
Expatriation स्वदेश-निस्सारण
Expedient उपपन्न, समयोचित, (वांछनीय)
Expedite शीघ्रता करना
Expedition अभियान
Expel निष्कासित करना
Expenditure, Contingent सम्भाव्य व्यय
Expenditure charge on revenue राजस्वपर निहित (भारित) व्यय
Expenditure, Side पार्श्व-व्यय
Expenditure, Recurring आवर्त्ती व्यय
Experiment प्रयोग; परीक्षण
Experimental प्रायोगिक; संपरीक्ष्य
Experimental farm संपरीक्ष्य प्रक्षेत्र
Expert committee विशारद-समिति, विशेषज्ञ-समिति

Expiration अवसान
Expiry समाप्ति, अवसान
Explanation व्याख्या; स्पष्टीकरण
Explanation, To demand जवाब तलब करना
Explanatory statement व्याख्यात्मक कथन
Exploitation शोषण
Exploited शोषित
Exploiter शोषक
Exploration समन्वेषण
Explosive विस्फोटक; विस्फोटक पदार्थ
Export Bank निर्यात अधिकोष
Export trade निर्यात व्यापार
Exporter निर्यातक
Exposition विवृत्ति
Express स्पष्ट; आशुग; v. व्यक्त करना
Express letter आशुपत्र
Expressive व्यंजक, अभिव्यंजक
Expropriate संपत्तिहरण
Expulsion अपसारण, निष्कासन
Expunge निकाल देना, उन्मार्जित कर देना, व्यामृष्ट करना
Extempore speech अतर्कित (अप्रस्तुत) भाषण; अलिखित भाषण, तत्कालप्रस्तुत भाषण।
Extending bill विस्तारी विधेयक
Extension विस्तार
Extent विस्तार
Extern निर्वासन, बहिष्प्रेषण
External trade बाह्य व्यापार
Extinction निर्वाण, उच्छेद; लोप
Extirpation उन्मूलन, उत्पाटन
Extortion बलात् आदान
Extract उद्धरण, निष्कर्ष
Extra curricular activities पठनेतर कार्य
Extradite अपराधीको प्रत्यर्पित करना
Extradition वंदि-प्रत्यर्पण, उदर्पण
Extraordinary charge असाधारण प्रभार
Extra payment अतिरिक्त भुगतान
Extra-territorial राज्यक्षेत्रातीत
Extreme चरमसीमा; अत्यधिक
Extremist चरमपंथी
Exuberance प्राचुर्य
Eye-witness प्रत्यक्षदर्शी, चाक्षुष गवाह

F

Fabricated evidence गढ़ा हुआ (अप-रचित) साक्ष्य
Fabrication छलरचना
F.A.O. खाद्य तथा कृषिसंघटन
Face value अंकित मूल्य
Facility सुविधा, सौकर्य, सौगम्य
Facsimile अनुलिपि
Fact तथ्य
Facts and figures तथ्य और अंक
Factory उद्योगालय, निर्माणशाला, निर्माणी, कारखाना
Factory Act निर्माणी-अधिनियम
Factory cost निर्माणी-प्ररिव्यय
Factory system निर्माणी-पद्धति
Fair dealing सत्य व्यवहार, न्याय्य व्यवहार
Fair-wages committee उचित-वेतन-समिति
Fair price उचित मूल्य
Fait accompli सिद्ध वस्तु, सिद्ध कार्य
Faith श्रद्धा, विश्वास; निष्ठा, धर्म
Faith and credit विश्वास तथा प्रत्यय
Faithfully yours भवन्निष्ठ
Fallacy (भ्रांति); हेत्वाभास
Fallow land अक्षेत्रा भूमि, परती भूमि
False accounts फर्जी हिसाब-किताब, कल्पित लेखा
False charge मिथ्या आरोप
Family allowanc परिवार-अधिदेय
Family doctor पारिवारिक चिकित्सक
Family pedigree वंशवृक्ष
Family planning परिवारनियोजन, पारिवारिक आयोजन
Family tradition कुल-परंपरा
Famine relief fund दुर्भिक्ष-सहायता-कोष
Fanatic धर्मांध, मतांध; कठमुल्ला
Farce प्रहसन, दिखाऊ वस्तु, तमाशा
Far East पूर्वी एशिया, "दूर पूर्व"
Fare किराया
Farewell address प्रस्थानकालिक मानपत्र
Far-fetched बलात् संकलित, अस्वाभाविक, क्लिष्ट
Far-reaching दूरप्रभावी; दूरव्यापी, बहुकालव्यापी
Fashion भूषाचार; देशाचार
Fatal सांघातिक
Fatalist भाग्यवादी, दैववादी
Fatherland पितृभूमि, पितृदेश
Fatigue duty दलेल
Favourable balance of trade अनुकूल व्यापार-संतुलन (तुला)
Favouritism पक्षपात
Feasible संभाव्य
Feature घटना विवरणात्मक लेख
Feature programme रूपक कार्यक्रम
Features वैशिष्ट्य, विशिष्टांग
Federal Assembly संघीय विधानसभा
Federal Constitution संघीय संविधान
Federal Court संघ न्यायालय
Federation संघ, संधान
Fee शुल्क
Fellow (महाविद्यालयका) पारिषद
Fermentation अंतःक्षोभ
Ferry toll घट्ट-कर

Fertiliser उर्वरक, खाद
Feudalism सामंतवाद
Feudal system सामंत-तंत्र
Fictitious account अवास्तविक लेखा
Fictious assets अवास्तविक परिसंपत् (देय, मालमत्ता)
Field book क्षेत्रमाप-पुस्तिका
Fielder क्षेत्ररक्षक
Field-glasses क्षेत्र-दूरेक्षिका
Fieldgun रणक्षेत्रीय तोप
Fielding क्षेत्ररक्षण, क्षेत्ररक्षा
Field investigation क्षेत्रानुसंधान
Field-worker क्षेत्रकर्मी
Fifth columnist पंचमांगी
Fighter plane युद्धक विमान
Figurative आलंकारिक
Figure of speech अलंकार, काव्यालंकार
Figure-head नामधारी (अगुआ), नाममात्रका प्रमुख
File नस्ती, नत्थी; नस्तित पत्रसमूह, संगृहीत पत्रादि, नस्तिपत्री; रेती
Filed नस्तित; प्रस्तुत किया या दायर किया (मामला)
File register नस्ती-पंजी
Filibuster अनावश्यक बाधा डालनेवाला
Film company चलचित्र-प्रमंडल
Filteration निर्गलन, गालन
Filterred water निर्गलित जल
Final bill अंतिम प्राप्यक
Final dividend अंतिम लाभांश
Finance bill वित्त-विधेयक
Finances वित्तसाधन, अर्थव्यवस्था
Financial वैत्तिक, वित्तीय
Financier वित्तप्रबंधक, अर्थविनियोक्ता
Financing वित्त-प्रबंध करना
Finding न्यायिक निर्णय
Finger-print अंगुलांक
Fire fighting equipment आग बुझानेका सामान
Fire proof अग्निवारक, अग्निरोधक, अग्निजित्, अग्न्यभेद्य,
Firm adj. दृढ़
Firm n. व्यावसायिक प्रतिष्ठान, कोठी
First aid प्रथमोपचार
First aid post प्रथमोपचार-केंद्र; प्रारंभिक-सहायता-केंद्र
Fisc राजकोप
Fiscal policy राजकोपीय नीति, राजस्वविषयक नीति
Fiscal year राजकोपीय वर्ष, माली साल
Fisheries मीनक्षेत्र
Fixation of pay वेतन-निर्धारण
Fixed asset स्थायी परिसंपत्
Fixed capital स्थिर पूँजी
Fixed deposit स्थायी जमा, सावधि निक्षेप
Fixed deposit account मीयादी खाता, सावधि निक्षेप-लेखा
Fixtures स्थावर संपत्ति; खेल-प्रतियोगिता आदि संबंधी तिथि-निर्धारण
Flagged पताकित
Flag, halfmast आधा झुका झंडा, अर्द्धोत्तोलित ध्वज
Flag-hoisting ध्वजोत्तोलन
Flagship ध्वज-पोत
Flag-staff ध्वजदंड, ध्वजस्तंभ
Flag, unfurling or breaking ध्वजा फहराना, ध्वज-विस्फारण
Flank guard पार्श्वरक्षक सेना
Flexible नम्य, आनम्य, नमनीय, लचीला, लचकदार
Flexible constitution नम्य (या लचीला) संविधान
Floating capital चल पूँजी
Floating debt अल्पकालिक ऋण, प्लवमान ऋण
Floor price निम्नतम (न्यूनतम) मूल्य
Florid पुष्पसज्जित, अलंकृत, अलंकारमयी (भाषा)
Fluctuating market अस्थिर बाजार
Flush latrine स्वक्षालन शौचालय
Flying boat उड़न नौका
Flying fortress उड़न किला
Flying squad द्रुतगामी दल, (आरक्षी) त्वरित दल, (पुलिसका) तूफानी दस्ता
Fodder चारा, पशुभोजन
Folk dance लोकनृत्य
Folk lore लोक-साहित्य
Folk song लोकगीत
Following निम्नलिखित, अधोलिखित, n. अनुयायी
Fomentation सेंक, सेचन, प्रस्वेदन; उद्दीपन, उत्तेजन
Food-control खाद्य-नियंत्रण
Foodgrains खाद्यान्न
Food rationing खाद्य-समवितरण, नियंत्रित खाद्य-वितरण
Foot-path अनुरथ्या, पटरी
Footing आधार, दृढ़स्थिति
Foot-wear पादुका, पदत्राण
F. O. R. price रेल भाड़ायुक्त मूल्य, भाड़े समेत मूल्य
Forbearance क्षमाशीलता, धैर्य
Force, By बलात्
Forced labour बेगार
Forced landing विवश अवतरण, बलादवतरण
Forcelanded बलादवतरित
Fordable सुगाध
Forecast पूर्वानुमान
Forecast of weather ऋतु-संबंधी भविष्यकथन
Forceps एक तरहकी चिमटी, गर्भशंकु, संदंशक
Foregoing पूर्वगामी
Foregone conclusion पूर्वानुमित निष्कर्ष
Foreign bill विदेशी हुंडी
Foreign exchange वैदेशिक विनिमय
Foreign minister विदेशमंत्री, परराष्ट्रमंत्री

Foreman श्रमप्रमुख, श्रमनायक
Forest department वन-विभाग
Forest-ranger वनरक्षक
Forest Research Institute वन-अनुसंधानशाला
Forestry वनविद्या
Foreword प्राक्कथन
Forfeit अपवर्त्तन करना, राजसात् करना, जब्त करना, हरण करना
Forfeiture अपवर्तन, हरण, जब्ती
Forged जाली, कूट
Forgery जालसाजी
Form प्रपत्र; आकारपत्र, रूपपत्र; रूप; फरमा
Formal औपचारिक, यथानियम
Formality औपचारिकता
Formally औपचारिक रूपसे, उपचारतः, नियमतः
Formula सूत्र
Formulated सूत्रित, संनिबद्ध
For public purposes लोक-प्रयोजनार्थ
For the time being तत्काल,फिलहाल,संप्रति;सांप्रतिक
Forwarded अग्रेप्रेषित, अग्रसारित
Forward delivery अग्रेप्रदान
Forward exchange अग्रेविनिमय
Forward market वादा, वादेका बाजार
Forward price अग्रेमूल्य
Fossil (भूमिगत) जीवावशेष, पुरावशेष
Foundation laying शिलान्यास
Founder प्रतिष्ठाता, प्रवर्त्तक, संस्थापक
Foundry ढलाईघर
Four dimensions चतुर्विस्तृति
Fours चौवे, चौके
Foxhole रणक्षेत्रमें एकाकी सैनिक किलेबंदी
Fracas संक्षोभ, कोलाहल, विवाद
Fraction भिन्न, प्रभाग, लघु अंश; फूट
Fracture अस्थिभंग; विभंग
Fragment अपखंड
Fragmentation of holdings क्षेत्रापखंडन
Frame ढाँचा; चौखटा; देहयष्टि, शरीर
Frame a charge, To अपराध लगाना
Franchise मताधिकार
Franchise, functional वृत्तिमूलक (या व्यावसायिक) मताधिकार
Fraternity बंधुत्व, भ्रातृभाव
Fraud धोखा, छल
Fraudulent कपटी, प्रतारक
Free competition अवाध प्रतियोगिता
Freedom of action कार्य-स्वातंत्र्य
Freedom of choice वरण-स्वातंत्र्य
Freedom of press मुद्रण-स्वातंत्र्य
Freedom of speech भाषण-स्वातंत्र्य
Freedom of worship उपासना-स्वातंत्र्य
Free gift निर्मूल्य देन, स्वेच्छा दान
Free-hold उन्मुक्त भूम्यधिकार
Freelance journalist स्वतंत्र पत्रकार
Free of charge निःशुल्क
Free passage निःशुल्क यात्रा
Free port उन्मुक्त पोताश्रय
Free-thinker स्वतंत्र मनीषी
Free trade अबाध व्यापार, मुक्त वाणिज्य
Freeze ऋण-पावनेका भुगतान बंद करना, रिक्थावरोध
Freezing जड़ीकरण, स्तंभन
Freezing point हिमांक
Freights वस्तु-भाड़ा
Frequency वारंवारता, विशेष ध्वनिलहरी, ध्वनि-घनत्व
Fresco भित्तिचित्र, स्तरचित्र (स्तर = पलस्तर)
Friction संघर्ष; घर्षण
Front मोर्चा
Front benches सरकारी बेंचें (पंक्तियाँ)
Front line अग्रिम पंक्ति
Frontier सीमांत
Frozen assets जड़ीकृत परिसंपत्
Fruit preservation फल-परिरक्षण
Fugitive भगोड़ा, पलायक
Full bench पूर्ण न्यायपीठ
Fully paid shares पूर्णदत्त अंश
Fumigation धूम्रीकरण, धुआँना, धूपन
Function कृत्य, कार्य; उत्सव, समारोह
Function, administrative प्रशासनीय कृत्य
Functional representation व्यावसायिक प्रतिनिधित्व, वृत्तिमूलक प्रतिनिधित्व
Functionary पदाधिकारी
Fund निधि, कोष, संस्थाकोष
Fund, Depreciation मूल्यह्रास-कोष, घिसाई कोष
Fund, Sinking ऋणपरिशोध-कोष, ऋणशोधन-कोष
Fundamental आधारभूत; मौलिक, तात्त्विक
Fundamental rights मूल अधिकार
Fungus छत्रक
Furnished उपस्कृत
Furniture उपस्कर; परिवर्ह (पुराना शब्द)
Fuse (पतले तारका) दहन; दहनवर्त्ति
Fusion विलय, विलयन
Future market वादा बाजार

G

Gag मुख बंद करना, बोलने न देना, मुखरोधन, मुखावरोधन
Gallery दीर्घा
Gallery, Assembly सभा-दीर्घा
Gallery, Council परिषद्-दीर्घा
Gallery, Distinguished visitors' विशिष्टदर्शक-दीर्घा
Gallery, Ladies' महिला-दीर्घा
Gallery, Press पत्रकार-दीर्घा

Gallery, Speaker's अध्यक्ष-दीर्घा
Gallup survey विशिष्टजनीन मतसंग्रह
Gang समूह, दल, (काम करनेवालों, डाकुओं आदिका)
Gamut सप्तक, स्वरग्राम.
Garrage गराज, यानशाला, गाड़ीखाना
Garrison दुर्गरक्षक सेना, दुर्ग-निवेश
Gazette राजपत्र
Gazetted राजपत्रित
Gear दंतिचक्र, दाँता, गीयर; उपयांत्र
Gemini मिथुन
Genealogy वंशावली
General व्यापक; सामान्य, सार्विक
General Headquarters प्रधान सैनिक केंद्र
Generalisation साधरणीकरण, व्यापक परिणाम (निष्पत्ति) निकालना
Generation उत्पादन; पीढ़ी
Generator उत्पादन-यंत्र (गैस आदिका)
Genius प्रतिभा; प्रतिभावान् व्यक्ति
Genocide प्रजातिसंहार
Gentleman's agreement भलेमानुसोंका समझौता
Gentlemen of the jury सभ्यगण
Genuine वास्तविक, अकृत्रिम, विशुद्ध
Geologist भूगर्भ-विशेषज्ञ
Geology भूगर्भविज्ञान
Geographical भौगोलिक
Geometrical ज्यामितिक, रेखागणित-संबंधी;
Geometry ज्यामिति, रेखागणित (भूमिति)
Germ कीटाणु
Germination अंकुरण
Glacier हिमानी, हिमनद, हिमप्रवाह
Gilt edged securities उत्तम (प्रथम श्रेणीके) साखपत्र
Gland ग्रंथि, गिलटी
Glandular ग्रंथिमय
Glass ware काच-भांड, काँचके सामान
Glider इंजनहीन विमान
Glucose द्राक्षशर्करा
Glycerine मधुरिन
Goal-keeper गोलकी, प्रवेशरोधक
God-father धर्मपिता:
Godown भांडागार, गोदाम
Going concern उन्नतिशील संस्था
Gold currency सुवर्ण चलार्थ
Gold reserve सुवर्ण-कोष
Gold standard सुवर्णमान
Good conductor सुचालक, अच्छा परिचालक, सुसंवाहक
Good faith सद्भाव
Goods वस्तु, सामान, माल
Goods, Consumer's उपभोग्य वस्तुएँ
Goods, Contraband विनिषिद्ध वस्तुएँ
Goodwill सद्भाव; सुनाम, ख्याति
Gorge घाटीमार्ग
Governed by के द्वारा शासित, या नियमित
Government सरकार, शासन
Government house राजभवन
Governor राज्यपाल, प्रांतपति
Gradation क्रमस्थापन; कोटिबंध
Grade of pay वेतनक्रम, वेतन-स्तर
Gradding of eggs अंडोंका क्रमस्थापन
Graduate स्नातक; v. चिह्नांकित करना, मापांकित करना
Graduated आनुक्रमिक, चिह्नांकित
Grammar व्याकरण
Grant अनुदान
Grantee माफीदार
Grant-in-aid सहायक अनुदान
Graph paper बिंदुरेखापत्र
Gratification अनुतोषण
Gratuitous निर्मूल्य; स्वेच्छा-प्रदत्त; निष्कारण
Gratuity सेवोपहार, अनुग्रहधन
Gravitation, Law of गुरुत्वाकर्षण
Greater India बृहत्तर भारत
Grievous hurt दारुण आघात
Grounded आधारित; जो किनारेपर चढ़ गया हो; भू-अवतरित; जो उड़नेसे रोक दिया गया हो (विमान)
Grouping of states रियासतोंका समूहीकरण
Gross assets सकल परिसंपत्
Gross income सकल आय
Gross revenue सकल आगम
Gross value सकल अर्हा
Gurantee प्रत्याभूति, प्रतिश्रुति
Guardian अभिभावक, अभिरक्षक
Guerilla warfare छापामार लड़ाई
Guest-house अतिथिगृह, अतिथि-भवन, अतिथिशाला
Guidance पथ-प्रदर्शन
Guide पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक
Guild शिल्पिसंघ, श्रमिक-निकाय
Guild socialism निकाय-समाजवाद, श्रेणी-समाजवाद
Guillotine शिरश्छेदयंत्र; मुखबंध
G. a motion प्रस्ताव-विवाद-नियंत्रण, मुखबंध-प्रयोग
Guilty अपराधी
Guilty, To plead अपराध-स्वीकृतिका प्रतिपादन
Gun, Anti-air-craft विमानध्वंसक (विमानवेधी) तोप
Gun, Automatic स्वचालित तोप
Gun, Long range दूरप्रहारी तोप, लंबीमार तोप, दूरमार तोप
Gun, Machine मशीनगन, चक्रतोप, यंत्रचालित तोप
Gunpowder बारूद
Gunshot छर्रा
Gunner तोपची

Gunnery तोपविद्या
Gutter गंदी नाली
Gynarchy स्त्री-राज्य, स्त्रीतंत्र
Gyroplane घिरनीदार विमान

H

Habeas corpus व्यक्ति-स्वातंत्र्य, बंदी-प्रत्यक्षीकरण
Habitual drunkard अभ्यस्त मद्यप
Habitual offender अभ्यस्त अपराधी, पक्का अपराधी
Haemorrhage रक्तस्राव
Hail ओला, उपल
Hall-mark प्रमाणांक
Hallucination दृष्टिभ्रम, विभ्रम, दृष्टि-बंध
Halo प्रभामंडल, परिवेश
Hand bill हस्त-वितरणीय विज्ञापन, हस्त-विज्ञापनक
Hand cuffed निगड हस्त
Hand-grenade हथगोला
Handicraft हस्तशिल्प, दस्तकारी
Handloom industry करघा उद्योग
Handmaid कठपुतली
Handnote हस्तांकित ऋणपत्र
Hand-out हस्तपत्रक, हस्तज्ञापन
Hand-to-hand fight हस्ताहस्तिका
Hangar विमानगृह, विमानघर, विमानशाला
Hard currency area दुर्लभ-मुद्रा-क्षेत्र
Hardware लौहभाण्ड
Haves and have-nots अस्तिमंत तथा नास्तिमंत, सस्व तथा निःस्व, सधन+अधन
Hazardous संकटास्पद, संकटावह
Head शीर्ष, मद; प्रधान, अध्यक्ष
Heading शीर्ष
Headman मुखिया
Head of the department विभागाध्यक्ष
Head office प्रधान कार्यालय
Head quarters सदर मुकाम, मुख्यालय, प्रधान निवास, मुख्यावास
Hear, hear साधु, साधु; क्या खूब ! क्या कहना है !
Hearing सुनवाई
Hearsay श्रुतानुश्रुत; सुनीसुनाई
Heatwave तापतरंग
Heater तापक
Heaven आकाश; स्वर्ग; सुखप्रदस्थान; ईश्वर
Heinous गर्हित
H. offence गर्हित अपराध
Heir उत्तराधिकारी
Heir apparent युवराज, विधिक उत्तराधिकारी, निकटतम उत्तराधिकारी
H. expectance प्रत्याशित उत्तराधिकारी
H. presumptive सम्भावित उत्तराधिकारी
Hemp सन
Herald अग्रदूत
Hereditary वंशागत, आनुवंशिक
Heredity वंशपरंपरा, आनुवंशिकता
Heresy वैधर्म्य, धर्मद्रोह, ईश्वरनिंदा
Her Excellency शुभमूर्त्ति, महामहिमावती
Heritage पैतृक संपत्ति, दाय (थाती)
—, cultural सांस्कृतिक उत्तराधिकार
Hero-worship वीर-पूजा
Heterogeneous विजातीय, भिन्न जातीय
Hierarchy पुरोहिततंत्र, पुरोहित राज्य; सानुक्रम संस्थान; अनुक्रम; आनुपूर्व्य
High command हाईकमान, उच्चाधिकारी
High commissioner हाईकमिश्नर,उच्चायुक्त(कारभारी)
High court उच्च न्यायालय
High-way राजमार्ग, राजपथ
Hindu law हिन्दूधर्म, हिन्दूविधि
His Excellency महामहिम
His Majesty महामान्य
History-sheetइतिवृत्त-पत्रक, दुर्वृत्त फलक
History-sheeter पूर्वापराधी
Hoarding अनुचित संग्रह, अपसंग्रह, अपसंचय
Hoarding and Profiteering Act अपसंचय तथा अपलाभ-विरोधी अधिनियम
Hold good काम देना, लागू होना
Holding कृषिस्वामित्व; क्षेत्र, जोत
Holding, uneconomic अलाभकर जोत
Homage श्रद्धांजलि
Home-guard गृहरक्षक
Home minister गृहमंत्री
Home-sick स्वगृहस्मारी
Homicide मानवहत्या, नरहत्या
H. by misadventure दुर्दैवात् नरहत्या
Homicide, Culpable अपराद्ध नरहत्या
H., justifiable न्याय्य नरहत्या
H. mania नरहत्योन्माद
Homogeneous एकजातीय, एकरूप
Homologous एकानुरूप
Honey-moon आनंदमास, प्रमोदकाल
Honorarium मानदेय
Honorary अवैतनिक
Honour, Military सैनिक सम्मान
Honour (*a bill or draft*) सकारना
Honourable माननीय
Honourable minister माननीय मंत्री
Horizon क्षितिज
Horizontal क्षैतिज, अनुप्रस्थ, दिगंतसम, सपाट
Horse power अश्वशक्ति
Horticultural scheme औद्यानिक योजना
Horticulture उद्यानकर्म
Host मेजमान, आतिथेय
Hostage सशरीर-प्रतिभू, व्यक्ति-प्रतिभू, ओल

Hostility युद्ध-स्थिति; शत्रुता, द्वेषभाव
House सदन, भवन
H., Lower निम्न सदन, अवरागार, प्रथम सदन
H., Upper उच्च सदन, वरागार, द्वितीय सदन
H. of commons कामन सभा, ब्रिटिश लोक-सभा
H. of lords सरदार-सभा
H. of People लोक-सभा
H. of representatives प्रतिनिधिसभा (अमेरिका)
House-tax गृह-कर
House-trespass भवनमें अनधिकृत प्रवेश, भवनापचरण
Humanism मानववाद
Humanitarianism मानवदयावाद, मानवतावाद
Humidity आर्द्रता
Humour विनोद
Hunger-strike भूख हड़ताल
Husbandry कृषिकर्म
Hydraulic उदिक
Hydrodynamics नदीप्रवाह-विज्ञान
Hydro-electric जलविद्युतीय
Hydro-electric power जलविद्युच्छक्ति
Hydro-electrycity जलविद्युत्, पनबिजली
Hydrogen उदजन, जलजन
Hydropathy जलचिकित्सा
Hydrophobia जलातंक
Hygiene स्वास्थ्यविज्ञान
Hygrometry आर्द्रतामिति
Hyphen समासरेखा, समास-चिह्न
Hypotenuse कर्ण
Hypothesis उपकल्पना
Hypothetic उपकल्पित

I

Iceburg हिमशैल
Ideal आदर्श
Idealism आदर्शवाद; वेदांत
Idealist आदर्शवादी
Identical motion समरूप प्रस्ताव
Identification अभिज्ञान, पहिचान
Identity ऐकात्म्य; परिचय
I. card परिचयपत्रक, अभिज्ञान-पत्रक
Ideology विचारधारा
Ideological सैद्धांतिक, विचारधारा-संबंधी
Ill-advised कुमंत्रित, अपमर्शित
Illegal अवैध
Illegal practice अवैधाचरण
Illegitimate अवैधज; विधिविरुद्ध; जारज
Illicit अवैधजात; अवैधप्राप्त, अननुमत
Illusion भ्रांति, माया; इंद्रजाल
Illusory भ्रांतिजनक, मायामय
Illustrative निदर्शी
I. election निदर्शी निर्वाचन

Imaginary काल्पनिक
Imaginative कल्पनात्मक
Immersion प्रवाह; भसान; डुबोना, निमज्जन
Immigrant आप्रवासी
I. labour आप्रवासी श्रमिक
Immature अपरिपक्व
Immigration आप्रवास (आवास)
Imminent आसन्न
Immoral अनैतिक
Immovable property अचल संपत्ति, स्थावर संपत्ति
Immunity उन्मुक्ति
Impartiality निष्पक्षता
Impeach प्राभियोग लगाना
Impeachment महाभियोग, प्राभियोग
Imperative Mood आज्ञार्थनियम
Imperial साम्राज्य-संबंधी; शाही, राजकीय
I. preference साम्राज्यगत अधिमान्यता
Imperialism साम्राज्यवाद
Impersonation छद्मव्यक्तिता
Implement n. उपकरण
Implement v. अभिपूर्ति करना, अमल करना; कार्यान्वित करना
Implicate आलिप्त करना, फँसाना
Implied ध्वनित, लक्षित, गर्भित
Import आयात
Import duty आयातशुल्क
Importer आयातकर्ता, आयातक
Impose आरोपित करना, लगाना; छापते समय टाइपके पृष्ठोंका सिलसिला ठीक करना; n. पृष्ठक्रम
I. restriction निर्बंध लगाना
Imposition आरोपण
Impost कर
Impounding रोधन (रोक रखना, बाँध रखना)
Impregnated गर्भित
Impregnation गर्भाधान
Imprest अग्रिम देय; अग्रधन
I. account पेशगीका हिसाब
Imprison कारावास देना
Imprisonment कारावास, कारारोध
Improved समुन्नत
Improvement trust सुधार-प्रन्यास
Impulse अंतःप्रेरणा, प्रेरणा, आवेग
Impute अध्यारोपित करना
Imputation अध्यारोप; अभ्यारोप
Imputed value अध्यारोपित मूल्य
In abeyance आस्थगित, निलंबित स्थितिमें
In accordance with law विधिके अनुसार
Inadmissible अग्राह्य
Inadvertence असावधानता, अनवधानता, प्रमाद
Inalienable अहस्तांतरकरणीय; असंक्राम्य

Inalienability of sovereignty प्रभुसत्ताकी अहस्तांतरकरणीयता
In anticipation प्रत्याशामें
Inappropriate अनुपयुक्त
Inauguration उद्घाटन
In-camera गुप्त
Incapacity असमर्थता
Incarceration कारारोधन, कारावास
Incarnation अवतार
Incendiary bomb दाहक प्रस्फोट
Incentive वि० उत्तेजक; पु० उत्तेजन
In-charge प्रभारी, कार्यवाहक
Incidence of taxation करानुपात
Incident प्रसंग
Incidental प्रासंगिक, आनुषंगिक
In-circle अंतर्वृत्त; अंतर्गत वृत्त
Incite उत्तेजित करना
Inclement weather आँधी-पानी आदि, प्रतिकूल मौसम
Inclination झुकाव, नति
Inclusion अंतर्भाव
Inclusive मिलाकर
Income, National राष्ट्रीय आय
Income-tax आयकर
Income-tax officer आयकर अधिकारी
Income, unearned अनर्जित आय
Incompatible अननुरूप, संगतिविरुद्ध
Incompetency अयोग्यता, अक्षमता
Incongruous असंबद्ध, विसंगत
Inconsistency असंगति
Inconsistent असंगत
Incontrovertible अखंडनीय, निर्विवाद
Inconvertible अपरिवर्त्य
Incorporate (*v.*) मिलाना, निगमित करना
Incorporated (*adj.*) समाविष्ट, निगमित; अंतर्भावित
Incorporated company निगमित प्रमंडल
Incorporation निगमन
Increment वृद्धि
Incumbent निर्भर
I. of an office पदधारी
Incumbrance ऋणभार
Incurable असाध्य, अचिकित्स्य
Incurred उपगत, प्राप्त, उठाया, सह्य
Indebted ऋणी
Indebtedness ऋणग्रस्तता
Indemnification क्षतिपूरण
Indemnify क्षतिपूर्ति कराना
Indemnity क्षतिपूर्ति
Indemnity bill क्षतिपूर्ति-विपत्र
Indent (n.) वस्तु-प्रेषणादेश, माँगपत्र; पार्श्व-वृद्धि, पार्श्व-प्रसारण
Indent (v.) वस्तु मँगाना
Indenture प्रतिज्ञापत्र
Indentured labour प्रतिज्ञाबद्ध श्रमिक,अनुबद्ध श्रमिक
Independent स्वतंत्र; अदलीय
Indeterminate अनिर्धारित
,, sentence अनिर्धारित दंड
Index finger प्रदेशिनी, तर्जनी, देशिनी
Indexing सूचीबद्ध करना
Index number मूल्य सूचनांक
Index of production उत्पादन-सूचनांक, उत्पादन-निर्देशनांक
India Act, Govt. of भारत-शासनविधान
India office भारत-मंत्री-कार्यालय
Indian administrative service भारतीय प्रशासन-सेवा, भारतीय प्रशासन-विभाग
Indian Council of Agricultural Research भारतीय कृषि-अनुसंधान-परिषद्
Indian Penal Code भारतीय दंडसंहिता
Indian Police Service भारतीय आरक्षी सेवा, भारतीय पुलिस विभाग
Indians overseas प्रवासी भारतीय
Indianization भारतीयकरण
Indict आरोप करना
Indigenous देशी; देशज
Indirect tax अप्रत्यक्ष कर
indirect election परोक्ष निर्वाचन
Indiscriminate अविवेकी; विभेदहीन, अंधाधुंध
Indispensable अपरिहार्य
Indisputable निर्विवाद
Individualism व्यष्टिवाद
Individualist व्यक्तिवादी, व्यष्टिवादी
Individuality व्यक्तित्व, विशिष्टत्व
Indivisible अविभाज्य
Indoor patient प्रविष्ट रोगी, अंतर्वासी रोगी
Indorsement (See Endorsement) सकारना
Induction अनुगम; उपपादन (विद्युत्का)
In due course यथासमय
Industrial औद्योगिक
Industrial Chemist औद्योगिक रसायनज्ञ
Industrial Court औद्योगिक न्यायालय
Industrial data औद्योकिक तथ्य
Industrial depression औद्योगिक मंदी
Industrial dispute औद्योगिक विवाद
Industrial efficiency औद्योगिक दक्षता
Industrial expansion औद्योगिक प्रसार
I. housing औद्योगिक वास-व्यवस्था
I. Truce औद्योगिक शांतिसमझौता
Industrialisation औद्योगिकीकरण
Industrialist उद्योगपति

Industry, Key आधारोद्योग, प्रमुख उद्योग
Inefficiency अदक्षता
Ineligible अपात्र, अयोग्य, अवरणीय
Ineligibility अपात्रता
Inequality असमानता
Inequitable न्याय-विरुद्ध
Inequity विषमता
Inevitable अपरिहार्य
Inevitable payments अपरिहार्य भुगतान
Inexpedient असमयोचित, अनुपयुक्त
Infant mortality शिशु-मरण
Infanticide शिशु-हत्या
Infantile paralysis शिशु-पक्षाघात
Infantry पैदल सेना, पदाति
Infection संक्रमण
Infectious संक्रामक
Inference निष्कर्ष, अध्याहार
Inferior Court निम्न न्यायालय
Inferior servant निम्न कर्मचारी, अवर सेवक
Inferiority complex हीन मनोभाव, लघुंमन्यता
Infinite अनंत; असीम
Infirmity निर्बलता, कमजोरी
Inflammable ज्वलनशील
Inflammatory उत्तेजक
Inflation मुद्रास्फीति, मुद्राविस्तार
Inflationary trend मुद्रास्फीतिकारी प्रवृत्ति, मुद्राधिक्यप्रवृत्ति
Inflexible अनाम्य
Inflexible constitution अनाम्य संविधान
Influence, undue अयुक्त प्रभाव
Influx अंतरागम, बढ़ाव
Informal behaviour अनौपचारिक व्यवहार
Informal meeting अयथाविधि भेंट; अनौपचारिक बैठक
Informant सूचक
Information सूचना; जानकारी
Information department सूचना-विभाग
Information minister सूचना-मंत्री
Information, On point of सूचनार्थ
Informer भेदिया
Infringe उल्लंघन करना
Infringement उल्लंघन, व्याघात
Ingenious पटु, चतुर; पटुतापूर्ण
Ingenuity पटुता, चातुर्य
Ingredient संघटक, संयोगांग
Ingress आना, प्रवेश
Inhabitant निवासी
Inherent सहज, जन्मजात; अंतर्निहित
Inherent disease पैतृकरोग, जन्मज व्याधि
Inherent power अंतर्निहित शक्ति
Inherent right जन्मज अधिकार
Inherit दाय पाना।
Inheritance दाय, रिक्थ
Inheritance, Law of दायविधि
Inheritance, Right of दायाधिकार
Inheritance tax दायकर, रिक्थकर
In his discretion स्वविवेकसे
Inhuman अमानुषिक
Initialled आद्यक्षरित
Initial pay आरंभिक वेतन
Initials संक्षिप्त हस्ताक्षर, नामके आद्यक्षर
Initiate सूत्रपात या प्रारंभ करना, उपक्रमण करना
Initiative पहल, प्रेरणा; पहलकारी
Initiative and referendum उपक्रम और जननिर्देश
Injection शूच्चिवेधन, सूई देना; सूई ('लेना'के साथ); वेधनोपचार; शूचीचिकित्सा
Injunction निरोधाज्ञा
Injunction, Writ of निरोधाज्ञा, समादेश
Inland अंतर्देशीय
Inland revenue अंतर्देशीय आय
Inland trade अंतर्देशीय व्यापार
Inland waterways अंतर्देशीय जलपथ
Innermost अंतरतम
Innings पाली
Innocent निरीह, निरपराध, निश्छल
Innocuous अनपकारी, अहानिकर
Innovation अभिनव परिवर्तन
Innuendo व्यंग्योक्ति, सूचकोक्ति, पर्यायोक्ति
Inoculation टीका लगाना
In open court खुली अदालतमें
Inoperative अप्रवृत्त, अप्रवर्ती
Inopportune असामयिक
In order नियम-संगत; नियमानुकूल; यथाक्रम
Inordinate delay अत्यधिक विलंब
in person स्वयं
In query प्रश्नवाचक चिह्नमें
Inquest अकाल-मृत्यु-विचारणा
Inquiry जाँच, परिप्रश्न, परिपृच्छा
Inquisition न्यायालयिक अन्वेषण
Inscribed अंतर्लिखित, अंतरंकित
Inscription अंतर्लेखन, अंतरंकन
Insecticide कीटनाशक; कीटनाशन
Insemination गर्भ-रोपण
Insert सन्निविष्ट करना
Insertion प्रकाशन; सन्निवेश
Insignia राजांक, राजचिह्न; पदसूचक चिह्न
Insolvency दिवालियापन, असंपन्नता
Insolvent दिवालिया, शोधनाक्षम
Insomnia उन्निद्ररोग
Inspection निरीक्षण

Inspector निरीक्षक
Inspector-General of Police पुलिसका महानिरीक्षक, आरक्षी महानिरीक्षक
Inspectorate निरीक्षक-कार्यालय, निरीक्षकालय
Inspiration दैवी-प्रेरणा, अंतःप्रेरणा
Inspired अंतःप्रेरित, उत्प्रेरित
Installation अधिष्ठापन, प्रतिष्ठापन
Instalment प्रभाग, किस्त, खंडिका, विखंड
Instinct सहज प्रवृत्ति, आंतरिक प्रेरणा
Instinctive साहजिक
Institute ज्ञानमंदिर; प्रतिष्ठान; v. दायर करना, बैठाना
Institution संस्था; प्रथा
Instruction अनुदेश, (निर्देश), शिक्षा
Instrument विलेख; लिखत; करण, करणपत्र
Instrumental (*music*) वाद्यसंगीत
Instrument of Association सम्मिलन-विलेख
Instrument of instructions निर्देशका विलेख
Insubordination अविनय, आज्ञा-भंग
Insular संकुचित, संकीर्णहृदय; द्वीपिक
Insulation विसंवाहन
Insulator विसंवाहक
In supersession of अकारथ या रद करते हुए
Insurance बीमा
Insurance, Fire आग-बीमा
Insurance, Life जीवन-बीमा
Insurance policy बीमा-पत्रक
Insurgency प्रजाक्षोभ
Insurrection उपप्लव
Intact अविकल, अक्षुण्ण, अखंड
Integration एकीकरण
Integrity अखंडता; ईमानदारी; न्यायशीलता
Intellectualism बुद्धिवाद
Intelligence बुद्धि
Intelligence department खुफिया विभाग
Intelligence test बुद्धिपरीक्षा
Intelligentia बुद्धिजीवी वर्ग
Intensive cultivation घना कृषिकार्य, घनी खेती
Intercede मध्यस्थ बनना, बिचवई करना
Intercept बीचमें रोक लेना
Inter-dependent अन्योन्याश्रित
Interest ब्याज
Interest, Compound सूददरसूद, चक्रवृद्धि ब्याज
Interest, vested निहित स्वार्थ
Interim अंतरिम, मध्यवर्ती
Interior, Minister of the गृहमंत्री, स्वदेशमंत्री
Intermediary उभय-मध्यस्थ, अंतःस्थायी
Intern अंतर्वासित करना, स्थानबद्ध करना, नजरबंद करना
Internal आंतरिक
Internal affair घरेलू विषय
Internal disorder आंतरिक अशांति
Internal regulation आंतरिक विनियम
International अंतरराष्ट्रीय
International conference अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन
International, first मार्क्स द्वारा स्थापित प्रथम अंतरराष्ट्रीय समाजवादी संस्था
International, second प्रथम अंतरराष्ट्रीयके विसर्जनके बाद स्थापित समाजवादियोंकी दूसरी अंतरराष्ट्रीय संस्था
International, third कम्युनिस्टोंकी अंतरराष्ट्रीय संस्था
Internationale कम्युनिस्टोंका अंतरराष्ट्रीय गीत
Internecine war परस्पर संहारक युद्ध
Internee नजरबंद; अंतर्वासित
Internment नजरबंदी, अंतर्वासन, क्षेत्रीय निरोध, स्थानासेध
Interpellation प्रश्नोत्तर
Interpose अंतस्स्थापन, बीचमें रखना
Interpret व्याख्या करना, अर्थ करना
Interpretation व्याख्या, निर्वचन, अर्थापन; अर्थ
Interpreter दुभाषिया
Inter regnum राजसिंहासन जब रिक्त हो
Interrex राजप्रतिनिधि
Interrogate प्रश्न करना
Interrogatory प्रश्नात्मक, प्रश्नसूचक
Intestacy इच्छापत्र-हीनत्व
Intimation (लिखित) सूचना
Intimidate धमकी देना, भयभीत करना
In toto पूर्णतया
Intoxication मादकता
Intransigent दुराग्रही
Intra wires अधिकारांतर्गत
Intricate जटिल
Intrigue दुरभिसंधि
Intrinsic value धात्विक मूल्य, वास्तविक मूल्य
Introduce प्रस्तुत करना, पुरः स्थापित करना; परिचय कराना
Introduction, Letter of परिचय-पत्र
Intrusion अनाहूत प्रवेश
Intuition अंतर्ज्ञान, अंतर्बोध
In unequivocal terms असंदिग्ध शब्दोंमें
Invalid अमान्य; असमर्थ
Invalidity pension असमर्थता निवृत्तिवेतन
Inventory संपत्ति-सूची, सामान-सूची
Inversion विलोमना
invest पूँजी लगाना
Investigation जाँच-पड़ताल
Investiture अभिषेक
Investment पूँजी लगाना; धनविनियोग
Invidious द्वेषजनक
Invigilator निरीक्षक
In vogue प्रचलित
Invoice बीजक

Involve अंतर्ग्रसन
Involved अंतर्ग्रस्त, अंतर्गत
Ipso facto यथार्थतः, तथ्यतः
Iron-age लौहयुग
Iron curtain लौहपट, लौह-दीवार, लौह-आवरण
Iron ore कच्चा लोहा
Irony व्यंग्य
Irrecoverable अप्रत्यादेय
Irredeemable अमोचनीय, अशोध्य
Irregular अनियमित
Irrelevent असंगत, अप्रासंगिक
Irrigation भूसिंचन, सिंचाई
Isolate एकाकीकरण, पृथक् करना
Isolationist Policy पृथक्तावादी नीति
Issue समस्या; निर्गम; वादविषय; वादपद, विवादविषय
Issue department निर्गम-विभाग
Issue price निर्गम-मूल्य
Issues (n) वादहेतु
Isthmus स्थल-डमरूमध्य
Item मद, विषय
Items on the agenda कार्यावलीका विषयक्रम
Itemwise विषय-क्रमसे

J

Jaggery गुड़
Jail कारागार
Jailor कारागारिक, कारापाल
Jammed अवरुद्ध (मार्ग); जकड़ गया (यंत्र, पुरजा)
Job कृत्य; नौकरी
Jobbers ठेकेदार
Join कार्य ग्रहण या आरम्भ करना
Joining time कार्य-ग्रहणकाल
Joint संयुक्त
Joint account संयुक्त लेखा
Joint and several responsibility संयुक्त तथा पृथक् उत्तरदायित्व
Joint capital संयुक्त पूँजी
Joint electorate संयुक्त निर्वाचक वर्ग
Joint estate संयुक्त भूसम्पत्ति
Joint family संयुक्त परिवार
Joint ownership संयुक्त स्वामित्व
Joint production संयुक्त उत्पादन
Joint secretary संयुक्त सचिव
Joint stock company संभूय समुत्थान, संयुक्त स्कंध-प्रमंडल
Jointure स्त्रीधन
Journal दैनिक पंजी; वृत्तपत्र
Journal entry पंजी-प्रविष्टि
[purchasers j. क्रयपंजी, खरीद-बही;
sales j. विक्रयपंजी, बिक्री-बही]
Journalism पत्रकारी, पत्रकारता; पत्रकारकला
Journalistic etiquette पत्रकारीका नैतिक आदर्श
Judge v. निर्णय करना
Judge n. न्यायाधिकारी, न्यायाधीश
Judge, additional अपर न्यायाधीश
Judge, Sessions दौरा जज, सत्र-न्यायाधीश
Judgement निर्णय, न्याय-निर्णय, (अदालतका) फैसला
Judicature न्यायाधिकरण, न्यायव्यवस्था
Judicial न्यायिक
Judicial decision न्यायिक निर्णय
Judicial department न्याय-विभाग
Judicial enquiry न्यायिक जाँच
Judicial proceedings न्यायालयकी कारवाई,अदालतकी कारवाई
Judiciary न्यायपालिका; न्यायाधिकारी वर्ग
Judicious विवेकपूर्ण; न्यायसम्मत
Jurisdiction अधिकार-क्षेत्र; क्षेत्राधिकार
Jurisprudence न्यायशास्त्र; विधिशास्त्र
Jurist न्यायज्ञ
Jury न्याय-सभ्य; जूरी
Justice न्यायाधिपति; न्याय
Justice of peace शांतिके न्यायाधिकारी
Justiciable निर्णेय, व्यवहार्य
Justifiable न्यायानुमोद्य, न्यायतः समर्थनीय
Juvenile delinquency किशोरोंकी अपराधवृत्ति

K

Kaleidoscope बहुरूपदर्शक
Keeper of records अभिलेखपाल (उल्लेखपाल)
Kennel श्वानालय
Key industry आधारोद्योग, प्रमुख उद्योग
Kidnapping (बालापहरण); अपहरण
Kind, In उपज या मालके रूपमें
Kindred (adj.) सगोत्र, तद्वत्,तत्समान; n. रक्तसंबंध
Kine house पशुनिरोधशाला
Kinship रक्तसंबंध
Kit यात्राका सामान, सामानका झोला
Kleptomania चौर्योन्माद
Kulak धनिक किसान

L

Lable नामपत्र
Labelled नामपत्रित
Labial ओष्ठ्य
Labio-dental दंतौष्ठ्य
Laboratory प्रयोगशाला
Labour श्रम; श्रमिक
Labour bureau श्रमालय, श्रमकार्यालय
Labour dispute श्रम-विवाद
Labour federation श्रमिक संधान
Labour, organized संघटित श्रमिक
Labour party श्रमिकदल
Labour union श्रमिक-संघ

Labour unrest श्रमिक अशांति
Labour, Unskilled अकुशल श्रमिक
Labour welfare work श्रमिक-कल्याण-कार्य
Lactation period दूध देनेकी अवधि
Lady-president सभानेत्री
Ladies-gallery महिला दीर्घा
Laissezfaire अहस्तक्षेप-नीति
Laminated wood परतदार लकड़ी
Lance Corporal उप-कारपोरल
Land acquision act भूमि-अवाप्ति-अधिनियम
Land alienation act भूमि-हस्तांतरण-अधिनियम
Landing ground अवतरण-भूमि
Landlord भूस्वामी
Landmark सीमाचिह्न
Land records भू-अभिलेख
Land revenue भू-राजस्व, मालगुजारी
Land route स्थल-मार्ग
Landed interest भूमिहित, भूमिगत स्वार्थ
Landed property भूसंपत्ति
Landscape भूदृश्य
Land-survey भूपरिमाप
Lapse व्यपगत होना (कालातीत होना)
Large scale industry बड़े पैमानेके उद्योग
Large scale production बड़े पैमानेपर उत्पादन
Late भूतपूर्व; स्वर्गीय
Late news छपते-छपतेका समाचार
Latent अप्रकट, अदृश्य
Latitude अक्षांश
Launch (आंदोलनादि) आरम्भ करना
Launching a ship पोत-संतरण
Lavatory शौचालय, प्रक्षालनगृह
Law विधि; नियम; सिद्धांत
—abiding विधिपालक
—book विधि-पुस्तक
—charges विधि-व्यय
—, International अंतरराष्ट्रीय विधि (या विधान)
—of marginal utility सीमांत उपयोगिता नियम
—of nature प्रकृतिका नियम
Lawful विधिवत्, विध्यनुसार, (वैध)
Lawlessness अव्यवस्था, अराजकता
Law of evidence साक्ष्यविधि
Lawn दूर्वाक्षेत्र
Lawyer विधिज्ञ, वकील
Lay-man सामान्य जन, अविशेषज्ञ
Lay-out अभिन्यास
Lead अग्रांश, अग्रभाग
Leader नेता, अग्रणी; अग्रलेख
Leader, Floor गृहाग्रणी
Leader of the House सभाग्रणी, सभानेता
Leader of the opposition विरोधी दलका नेता, प्रतिपक्ष-नेता
Leaderette संपादकीय टिप्पणी या छोटा अग्रलेख
Leading article अग्रलेख
Lead pencil सीस-अंकनी, पेंसिल
Leaflet पर्णक, पर्चा, चौपतिया
League of Nations राष्ट्रसंघ
Leakage च्यवन; च्यवन-छूट, च्यवनमोक, रहस्यका प्रकट हो जाना
Leap-year (अधिक दिनयुक्त वर्ष) अधिवर्ष, लौंदका साल
Lease n. पट्टा
Lease v. पट्टेपर देना
Lease deed पट्टेका कागज, पट्ट-विलेख
Lease, permanent दवामी पट्टा
Lease, terminable समापनीय पट्टा
Leave अवकाश, छुट्टी; अनुमति
Leave, Maternity प्रसवावकाश, प्रसूति-छुट्टी, प्रसूत्यवकाश
Leave of absence अनुपस्थितिकी अनुमति
Leave, privilege रियायती छुट्टी
Leave preparatory to retirement निवृत्तिके पूर्वकी छुट्टी
Leave, quarentine स्पर्शवर्जन छुट्टी
Leave to withdraw a motion प्रस्ताव वापस लेनेकी अनुमति
Ledger प्रपंजी
creditors 1. उत्तमर्ण प्रपंजी
purchases 1. क्रय-प्रपंजी
sales 1. विक्रय-प्रपंजी
suppliers 1. उत्तमर्ण प्रपंजी
general 1. सामान्य प्रपंजी
Ledger account प्रपंजी लेखा
L entry प्रपंजी-प्रविष्टि
L. folio प्रपंजी-पृष्ठ
Left hander बयँहत्था, वामहस्तिक; वामहस्ताघात
Left side वाम पार्श्व
Leftist वामपक्षी, वामपंथी
Leg before wicket पदबाधा, पदरोध
Legacy बपौती; मृत्युपत्र; दायदान
Legal वैध, विधि-विहित; विधिक
Legal action वैध काररवाई, कानूनी काररवाई
Legal defect वैधानिक त्रुटि
Legal interest वैध हित
Legal monopoly वैध एकाधिकार
Legal procedure वैध प्रक्रिया
Legal process वैध प्रणाली
Legal remembrancer विधि-परामर्शी, विधि-प्रज्ञापक
Legal Secretary विधि-सचिव
Legal tender विधिग्राह्य
Legal tender money विधिग्राह्य मुद्रा
Legate (विदेशस्थित) उपराज-प्रतिनिधि, उपराजदूत

Legation उपदूतावास
Legislation विधान
Legislative विधायी
Legislative Assembly विधान-सभा
Lagislative Council विधान-परिषद्
Legislature विधान-मंडल
Legitimate न्याय्य; वैध; युक्तियुक्त; यथार्थ; औरस
Lender उधार देनेवाला, महाजन, साहूकार
Lens वीक्ष, ताल
Lentil मसूर
Leo सिंह राशि
Leper asylum कुष्ठालय
Lessee पट्टेदार, पट्टधारी
Lessor पट्टा देनेवाला
Lethal weapon घातक शस्त्र
Letter box पत्रपेटिका
Letter of administration प्रशासन-पत्र
Letter of credit प्रत्यय-पत्र
Letter of introduction परिचय-पत्र
Letters patent एकस्व-पत्र
Level of prices मूल्य-तल, मूल्य-स्तर
Leviable आरोप्य
Levy आरोपण; उद्ग्रहण
Levy a tax कर लगाना, करारोपण
Lewis gun झड़ीदार बंदूक
Lexicon शब्दकोश, कोश
Liabilities देय, देय धन, ऋण
Liability देयता, दायित्व
Liasison officer ग्रथनाधिकारी, संपर्क पदाधिकारी
Libel अपमानलेख
Liberal Federation उदारदल संघ
Liberty, Civil नागरिक स्वाधीनता
Liberty of conscience विवेक-स्वातंत्र्य, अंतःकरणकी स्वतंत्रता
Liberty of press मुद्रण-स्वातंत्र्य
Liberty of speech भाषण-स्वातंत्र्य
Libra तुला राशि
Librarian ग्रंथागारिक, पुस्तकाध्यक्ष
Licence अनुज्ञापत्र, अनुज्ञप्ति
Licence fees अनुज्ञा-शुल्क
Licensed प्राप्तानुज्ञ, दत्तानुज्ञ
Licensee अनुज्ञाधारी, प्राप्तानुज्ञ
Licensor अनुज्ञाता
Lieutenant Governor उपराज्यपाल
Life belt जीवनरक्षक पेटी
Life boat जीवन-नौका
Lift उत्थानक, उन्नयन-यंत्र, सोपानिका, लिफ्ट
Liftman सोपानिकाचालक, उन्नयनयंत्रचालक
Light प्रकाश
Light-house प्रकाशस्तंभ, कंडीलिया
Light literature रंजनकारी साहित्य
Lightning arrester विद्युद्धारक
Lightning war क्षिप्रगति-युद्ध, विद्युद्युद्ध
Limit सीमा
Limitation परिसीमा, परिसीमन; न्यूनता, त्रुटि
Limited coinage सीमित टंकण
Limited company सीमित प्रमंडल
Limited legal tender सीमित विधिग्राह्य
Limited liability company सीमित-देय प्रमंडल
Limited monarchy सीमित राजतंत्र
Limited option सीमित विकल्प
Limited partnership सीमित भागिता
Line रेखा, पंक्ति
Liner नियमित यात्री-पोत
Linguist भाषाविद्
Linguistics तुलनात्मक भाषाविज्ञान
Liquidate परिसमापन करना
Liquidation of debt ऋण-परिसमापन
Liquidator परिसमापक; विघटनकर्ता
List of business कार्यसूची
List of prices मूल्य-सूची
Literacy campaign साक्षरता-आंदोलन
Lithographed प्रस्तर-मुद्रित, शिलामुद्रित
Litigant विवादी
Litigation मुकदमेबाजी
Livestock पशुधन
 —farm पशुप्रक्षेत्र
 —inspector पशुनिरीक्षक
Living wage निर्वाहभृति, (जीवनभृति)
Load stone चुंबक प्रस्तर
Loan उधार, ऋण
Loan and advances ऋण एवं अग्रिम
Loan at short notice अल्पसूचना-देय ऋण
Loan, Public राज्य-ऋण
Loaves & fishes व्यक्तिगत लाभ
Lobby सभाकक्ष, प्रकोष्ठ
Lobby talk प्रकोष्ठ-वार्त्ता, सभाकक्षीय वार्त्ता
Local administration स्थानीय प्रशासन
Local authority स्थानीय प्राधिकारिवर्ग; स्थानीय प्राधिकार
Local board स्थानीय समिति
Local bodies स्थानीय संस्थाएँ
Local government स्थानीय शासन
Local self-government स्थानीय स्वशासन
Local staff स्थानीय कर्मचारिवर्ग
Local tax स्थानीय कर
Localisation स्थान-सीमन, स्थानीय-करण
Localisation of industries उद्योगोंका स्थान-सीमन
Localisation of sovereignty प्रभुत्वका स्थाननिर्धारण
Lockout द्वारताल, तालाबंदी

Lock-up हवालात, अस्थायी बंदीगृह, बंदीखाना
Locomotive चलित्र
Loco workshop लोको कारखाना, इंजनघर
Locus निधि
Locous standi मान्य स्थिति
Locust टिड्डी
Logic तर्कविज्ञान, न्यायशास्त्र; तर्क
Logical तर्कसंगत, तर्कप्रेरित
Logician नैयायिक, तर्कशास्त्री, तार्किक
Longing उत्कट अभिलाषा, उत्कंठा
Longitude देशांतर
Longstanding complaint पुरानी शिकायत
Long term credit दीर्घावधि प्रत्यय, दीर्घकालिक उधार
Loose leaf ledger अवद्धपत्र प्रपंजी
Loose tools अवद्ध उपकरण
Loss हानि
Loss, gross सकल (संपूर्ण) हानि
Loss, Net वास्तविक (या विशुद्ध) हानि
Loss of weight भार-हानि
Loss sustained प्रसोढ हानि, उठायी या सही हुई हानि
Loss, Total समस्त हानि
Lost लुप्त, जो खो गया हो
Lost bill लुप्त विपत्र
Lost cheque लुप्त धनादेश
Lots भाग्यपत्रक, (भाग्यक)
Lottery भाग्यदा, लाटरी
Loud-speaker ध्वनि-विस्तारक, ध्वनि-वर्धक
Lounge उपवेशिका
Lower exchange निम्न विनिमय
Lower house अवरागार, निम्न भवन, निम्न सदन, प्रथम सदन
Lower house of legislature विधानमंडलका अवरागार (निम्न सदन, प्रथम सदन)
Loyalty राजभक्ति, निष्ठा
Lubricants चिकनाई, तेल
Lucrative प्रलाभी
Lull स्तब्धता, शांति
Lullaby लोरी
Lump sum एक मुश्त, एक राशि, पिंडराशि
Lunacy उन्माद
Lunatic asylum विक्षिप्तालय, पागलगृह
Luxury goods विलास-वस्तुएँ
Lymph चर्मोदक, लसीका
Lyric गीत, गीतकाव्य
Lyric poet गीतकार
Lyrical गीतात्मक

M

Machine यंत्र
Machine gun मशीनगन, यंत्र-तोप, यंत्रचालित तोप
Machine-made यंत्र-निर्मित
Machine-shop यंत्रशाला
Machine tool यंत्रोपकरण
Machinery यंत्रजात, यंत्रसमूह
Machinist यांत्रिक
Magazine शस्त्रागार; पत्रिका
Magistrate दंडाधीश, दंडाधिकारी
Magna charta महाधिकार-पत्र
Magnetic चुंबकीय
Magnitude परिमाण; मात्रा; वितान; विस्तार; महत्त्व
Maiden speech प्रथम भाषण
Maintained by the state राज्य द्वारा संपोषित
Maintenance भरण-पोषण; रोटी-कपड़ा
—, cost of भरण-पोषणका व्यय; निर्वाह-व्यय
Maintenance of law and order कानून और व्यवस्थाका संधारण
Major प्राप्तवयस्क, बालिग
Major charge मुख्य आरोप
Majority बहुमत, प्राप्तवयस्कता
—party बहुसंख्यक दल, संख्यागरिष्ठ दल
Majority, Absolute पूर्ण बहुमत
Malaria सविरामज्वर, हिमज्वर, शीतज्वर, जूड़ी
Maldistribution कुवंटन, कुवितरण
Mala fide दुर्भावपूर्वक; दुर्भावपूर्ण
Malleability कुट्ट्यता, कुट्टनीयता, घनवर्धनीयता
Malnutrition कुपोषण, अपर्याप्त पोषण, न्यून पोषण
Malpractice कदाचार
Malpractitioner कदाचारी
Mammal स्तनपायी
Man-at-arms सैनिक
Management charges प्रबंध-व्यय
Managing agents प्रबंध-अभिकर्ता
Managing committee प्रबंध-समिति
Managing director प्रबंध-संचालक
Mandamus परमादेश
Mandate शासनादेश
Mandated territory शासनादिष्ट प्रदेश
Man-days श्रमिक दिन
Manifestation अभिव्यक्ति
Manifesto नीति-घोषणा, लोक-घोषणा
Manipulation छलयोजन
Manipulation of accounts लेखा-छलयोजन
Manipulation of statistics सांख्यकीय छलयोजन
Manoeuvre युद्धाभ्यास, सैन्यव्यूहन; दुर्योजन, तिकड़मबाजी
Man-of-war शस्त्रसज्ज-पोत
Manor स्वामिभू, जागीर
Manpower जनशक्ति
Manual हस्तपुस्तिका, गुटका; वि० हाथसे किया जानेवाला, शारीरिक (श्रम)
Manual art हस्तकला

Manual labour हस्तश्रम
Manual training हस्तकला-प्रशिक्षण
Manufacture निर्माण
Manufactured goods निर्मित वस्तुएँ
Manuscript हस्तलिपि, पांडुलिपि
March n. क्रमप्रयाण, प्रयाण
March v. प्रयाण करना, कूच करना
Margin पार्श्व, उपांत, सीमांत, मात्रा
Margin of profit लाभकी मात्रा
Marginal सीमांत
Marginal cost सीमांत परिव्यय
Marginal heading पार्श्व-शीर्षक
Marginal note पार्श्व-टिप्पण
Marginal ptice सीमांत मूल्य
Marginal profit सीमांत लाभ
Marginal utility सीमांत उपयोगिता
Marine सामुद्र, —hospital नाविक चिकित्सालय
Maritime सामुद्रिक, —law सामुद्रिक विधि, नौविधि
Mark चिह्न; अंक; वेध्य
Marked चिह्नित
Marked cheque चिह्नित धनादेश
Marketable विपण्य
Marketable goods विपण्य वस्तुएँ
Marketing हाट-व्यवस्था
Mars मंगल ग्रह
Marshal बलाधिकृत
Marshal, Field महाबलाधिकृत
Marshalling एकत्र करना
Martial सैनिक; युद्धप्रिय
Martial law फौजी कानून, सैनिक विधि
Masculine पुंलिंग; वि० पुरुषोचित, पुरुषोंके योग्य, पुरुषों जैसा
Mask वर्णक, नकाब, मुखावरण, मुखच्छद
Mass contact जनसंपर्क
Mass migration सामूहिक प्रव्रजन, सामूहिक स्थानांतर-गमन
Mass production पुंजोत्पादन, समूहोत्पादन
Mass treatment समूहोपचार
Match जोड़; आनुरूप्य; समर, प्रतियोगिता
Material n. सामग्री; adj. भौतिक
Material civilisation भौतिक सभ्यता
Materal goods भौतिक वस्तुएँ
Material prosperity भौतिक वैभव
Material resources भौतिक साधन
Material well-being भौतिक कल्याण
Materials, consumed उपभुक्त सामग्री
Maternity relief प्रसूति-साहाय्य
Maternity welfare centre मातृकल्याणगृह
Maternity welfare work प्रसूति-कल्याण-कार्य, मातृकल्याण-कार्य
Matriarchal मातृसत्तात्मक
Matriatchy मातृसत्ता
Matricide मातृवध, मातृहत्या
Matron मातृका
Matter of fact तथ्यात्मक
Mathematically गणितानुसार
Maturation परिपाक, परिपचन
Mature, matured परिपक्व, प्रौढ़
Maturity परिपक्वता, परिपाक
Maturity, Date of परिपाक-तिथि
Maxim सूत्र; सिद्धांत; सिद्धांतवाक्य, नीतिवचन; अनुभवोक्ति, तथ्योक्ति
Maximum अधिकतम, महत्तम
Mayor नगरनिगमाध्यक्ष, नगरपति
Mean मध्यपरिमाण; मध्य
Means साधन
—of communication संचारके साधन
—of subsistence निर्वाहके साधन
—of transportation परिवहनके साधन
Measure उपाय; परिमाण; प्रस्ताव; कारवाई
Mechanic यांत्रिक, यंत्रविद्, मिस्त्री
Mechanical advantage यांत्रिक लाभ
Mechanical condition यांत्रिक दशा
Mechanical transport यांत्रिक परिवहन
Mechanically propelled vessels यंत्र-प्रणोदित पोत, यंत्रचालित नौकाएँ
Mechanisatian of Agriculture कृषि-यंत्रीकरण
Mechanised army यंत्रसज्जित सेना
Mechanism यंत्ररचना; यंत्रचालन; रचना, बनावट; प्रक्रिया, गतिविधि
Median माध्यिका, मध्यांतर रेखा
Mediation मध्यस्थता
Media of publicity प्रकाशनके माध्यम
Medical भैषजिक, चिकित्सकीय, चिकित्सा-संबंधी
—certificate भैषजिक (चिकित्सकीय) प्रमाणपत्र
—colloge भैषजिक विद्यालय
—department चिकित्सा-विभाग
—equipment चिकित्सा-सज्जा
—expenses चिकित्सा-व्यय
—institution भैषजिक संस्था
—literature भैषजिक साहित्य
—practitioner भैषजवृत्तिक, चिकित्साजीवी
—science भैषजिक विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान
Medicine भेषज
Medicinal भेषजीय (मेडिकल = भैषजिक)
Medicinal science भेषजविज्ञान (ओषधिविज्ञान)
Medieval मध्ययुगीन, मध्यकालीन
Meditation ध्यान, चिंतन
Mediterranean Sea भूमध्य सागर
Medium माध्यम, साधन

Medium gauge मझोली लाइन
Medium of exchange विनिमय-माध्यम
Medium of instruction शिक्षाका माध्यम
Meeting अधिवेशन, बैठक
—, Emergent आपाती अधिवेशन
—, Extraordinary असाधारण अधिवेशन
Melting point द्रवणांक
Member in charge प्रभारी सदस्य
Memo स्मार; ज्ञाप, ज्ञापन
Memoir संस्मरण; अनुसंधान-लेख
Memorandum स्मारकपत्र, ज्ञापन; अनुरोधक; संक्षेप-लेख
Memorandum of Association प्रतिष्ठानपत्र
Memorial आस्मारक
Menace अभिशाप, विभीषिका
Menopause रजोविरति
Menses मासिकधर्म, माहवारी
Mensuration क्षेत्रमिति
Mental deficiency मनोवैकल्य
,, weakness मनोदौर्बल्य
Mentioned उल्लिखित, कथित, चर्चित
Mercenary adj. भृतिभोगी। n. भृतक सैनिक
Merchandise वाणिज्य-द्रव्य, माल
Merchantile marine वाणिज्यपोत, व्यापारिक बेड़ा
Merchantman, merchantship वाणिज्यपोत
Mercury पारद, पारा; बुधग्रह
Mercy, Petition of दयाभिक्षा
Merged विलीन (विलयित)
Merger विलय, विलयन
Merit, according to गुणानुक्रमसे, योग्यता-क्रमसे
Messenger संदेशहर, वार्त्तावाहक
—service संदेशहर-व्यवस्था
Metallurgy धातुविज्ञान
Metaphor रूपक
Metaphor, sustained सांग रूपक
Meteorology अंतरिक्षविज्ञान
Meter gauge छोटी लाइन
Mica अबरक
Microphone ध्वनिक्षेपक यंत्र
Microscope सूक्ष्मदर्शक यंत्र, अणुवीक्षण यंत्र
Micro wave अणुतरंग
Middle East मध्यपूर्व (पश्चिमी एशिया तथा उत्तर-पूर्वी अफ्रीका)
Middle man दलाल, मध्यजन
Midwife प्रसाविका, दाई, धात्री
Midwifery धात्रीविद्या
Migrant प्रव्रजक
Migration प्रव्रजन
Migration certificate विश्वविद्यालयांतरण प्रमाणक
Milch breeds दुधारू नस्लें
Mileage क्रोश-संख्या; क्रोशाधिदेय
Militarisation सैनिकीकरण
Militarism सैनिकवाद
Military attache सैनिक सहचारी
,, installation सैनिक प्रतिष्ठान
Military tribunal सैनिक न्यायालय
Militia देशरक्षक सेना, जानपद सैन्य
Mill निर्माणी, मिल, कारखाना; चक्की
[Flour mill आटा-चक्की]
Millenium सहस्राब्दी; सुवर्णयुग
Mine-field सुरंग-क्षेत्र
Minelayer सुरंग-प्रसारक पोत, सुरंगपोत
Mineral resources खनिज-साधन, खनिज-संपत्
Minerology खनिजशास्त्र, खनिजविज्ञान
Mine-sweeper सुरंग-मार्जक पोत, सुरंगहारक या सुरंगनाशक पोत
Miniature लघु रूप
Minimum न्यूनतम, अल्पिष्ठ
Minimum subscription अल्पिष्ठ अभिदान, न्यूनतम चंदा
Mining settlement खनिवसति
Minister in-charge प्रभारी मंत्री
Minister of State राज्य-मंत्री
Minister Plenipotentiary पूर्णाधिकारी दूत
Minister without portfolio बिना विभागका मंत्री, निर्विभाग मंत्री
Ministerial party मंत्रिपक्ष, मंत्रिपक्षीय दल
Ministerial service निम्न कर्मचारिवर्ग
Ministry मंत्रिविभाग, मंत्रालय
—of industry and supply उद्योग और रसद-मंत्रालय
Minor अवयस्क, नाबालिग, न्यूनवयस्क; लघु, अमुख्य
Minor head लघु शीर्षक, लघु मद
Minority अल्पसंख्यक वर्ग, अल्पमत; अवयस्कता
,, party अल्पसंख्यक दल, संख्यालघिष्ठ दल
Mint पुदीना; टकसाल.
Minus वियुक्त, विरहित; ऋण-चिह्न
Minute-book कार्य-विवरण-पुस्तक
Minute of dissent विमति-टिप्पण
Minutes of proceeding कार्यवाहीका संक्षेप; (बैठकका) संक्षिप्त कार्यविवरण
Miracle आश्चर्यकी बात, चमत्कार
Misappropriation अपयोजन, दुरुपयोजन
Misbehaviour कदाचार
Miscarriage गर्भपात; विफलता; अपगमन
Miscarriage of justice न्यायवैफल्य, न्यायविभ्रंश
Miscellaneous प्रकीर्ण, —account प्रकीर्ण लेखा
Misconception मिथ्याचरण
Misdemeanour दुराचरण
Misdirection विमार्ग-दर्शन, कुपथ-नयन

Misnomer मिथ्या नाम, अयथार्थ नाम
Misrepresentation मिथ्या प्रदर्शन, भ्रांत कथन, मृषा वर्णन
Mission प्रचारक दल; उद्देश्य, जीवन-लक्ष्य; सेवाव्रत, दौत्य
Mis-understanding गलतफहमी, समझकी भूल, विभ्रम
Mitigation मृदूकरण, (न्यूनीकरण), शमन
Mixture मिश्रण
Mob mentality सामूहिक मनोवृत्ति, सामूहिक प्रवृत्ति
Mob psychology सामूहिक मनोविज्ञान, सामूहिक मनोभाव
Mobile चलिष्णु, चलता-फिरता
Mobilisation of the army सैन्यसंसज्जन,सैन्यसंघटन
Mobilisation of industry उद्योग-संघटन
Model प्रतिमान, आदर्श
Moderate संयत, संतुलित; अनुग्र; अनधिक
Moderation संयम; नरमी, मुलायमियत
Moderator नरम बना देनेवाला, मध्यस्थ
Modest विनयशील, नम्र; सलज्ज; लघु
Modesty शील, सतीत्व (outrage the...of शीलाघात, शील भंग करना, सतीत्वनाश)
Modification संपरिवर्तन, रूपभेद
Modus operandi कार्यप्रणाली, कार्यविधि
Mofussil नगरेतर क्षेत्र
Mole तिल
Molecule अणु
Momentum प्रवर्त्तक शक्ति, वेगबल
Monarchy राजतंत्र
Monetary मुद्रा-संबंधी, मौद्रिक
Monetary fund मुद्राकोष
Monetary unit मौद्रिक एकक (इकाई)
Money bill (मुद्राविधेयक), धनविधेयक
Money-lending साहूकारी, महाजनी
Money order धनप्रेपादेश, धनप्रेषणादेश, (धनादेश)
Monism अद्वैतवाद
Monitor छात्रनायक
Monitoring जाँचके लिए रेडियो या टेलीफोनपर सुनना
Monogamy एकपत्नी-विवाह, एकनिष्ठ विवाह
Mono-metallism एकधातुता
Monopoly एकाधिकार, इजारा
Monotony एकतानता, एकरसता; वैचित्र्याभाव, नीरसता
Monument स्मारक
Moral end नैतिक उद्देश्य; —force नैतिक बल; —support नैतिक समर्थन
Morale नैतिक स्तर, नैतिकता; हौसला
Moratorium शोध-विलंबकाल; ऋण-स्थगन
Mortar मॉर्टर नामक छोटी तोप
Mortgage बंधक, प्राधि;—deed बंधकपत्र
Mortgagee बंधक-ग्रहीता
Mortgager बंधककर्ता
Mortuary मुर्दाघर, शवालय, मृतकगृह
Motherland मातृ-भूमि, मातृदेश
Mother tongue मातृभाषा
Motion गति; प्रस्ताव
Motion, Adoption of प्रस्ताव स्वीकृत करना
—, Adjournment काम-रोको प्रस्ताव, कार्य-स्थगन प्रस्ताव
—for consideration विचारार्थ प्रस्ताव
Motive उद्देश्य; प्रेरक हेतु
Motive, To impute नीयतमें शक करना
Movable property चल संपत्ति
Move, to प्रस्ताव करना
Movement आंदोलन
Mover प्रस्तावक
Movies चल चित्र
Multifarious बहुमुखी
Multimember constituency बहुसदस्य-निर्वाची क्षेत्र
Multipoint sales tax प्रतिपद बिक्रीकर
Multipurpose society वहुप्रयोजन-समिति
,, scheme बहुमुखी योजना
Mummy पुरातन शव, (सुरक्षित शव), ममी
Municipal area नगरक्षेत्र
Municipal committee नगरसमिति, नगरपालिका
Municipal corporation नगर-निगम
Municpality नगरपालिका
Munition युद्ध-सामग्री
Muscle मांसपेशी
Museum संग्रहालय, अजायबघर
Mushroom छत्रक, खुमी
Mushroom growth अनियमित बाढ़, आकस्मिक वृद्धि
Music, Instrumental वाद्य-संगीत
Music, Vocal कंठ-संगीत
Muster एकत्र करना
Mutation परिवर्तन, नामांतर-लेखन
Mutatis mutandis आवश्यक परिवर्तन सहित
Mutiny सैन्य-द्रोह
Muzzle मुखबंधनी
Mycology फफूँद-विज्ञान
Mystic रहस्यवादी
Mysticism रहस्यवाद
Myth पुराणकथा; कल्पना, दंतकथा

N

Nadir अधोबिंदु
N. B. (see Nota Bene)
Naked debenture अप्रतिभूत ऋणपत्र
Naming नामोल्लेख
Narration वर्णन, आख्यान

Nasal अनुनासिक
Nascent नवजात, उदीयमान
Natal जन्मसंबंधी
Nation राष्ट्र
National राष्ट्रीय, जातीय
National Anthem राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान
National debt राष्ट्रीय ऋण
National Dietary राष्ट्रीय भोजन-विज्ञान
National health राष्ट्रीय स्वास्थ्य
Nationalisation राष्ट्रीयकरण
Nationality राष्ट्रीयता, जातीयता
Native देशी
Natural-born citizen जन्मतः नागरिक
Natural boundary प्राकृतिक सीमा
Naturalisation देशीय-करण
Naturalism प्रकृतिवाद
Nautical नौकाविषयक, नौपरिवहन-विषयक
Naval नौसेना-संबंधी, नाविक
Naval attache नाविक सहचारी
Navicert पोत-प्रमाणपत्र
Navigable नौगम्य, नौतार्य, नाव्य
Navigation नौपरिवहन, नौतरण
Navy नौसेना, जहाजी बेड़ा
Near East "निकट पूर्व", पूर्वी यूरोप
Needlework सूचीशिल्प, सूचीकार्य, सूईकारी
Negative नकारात्मक; विलोम; ऋण
Negative attribute विलोम गुण
Negatived निषेधित
Negative number ऋण-संख्या
Negative quantity ऋणराशि
Negative vote नकारात्मक मत
Negation निषेध
Negotiable हस्तांतरणीय, परक्राम्य
Negotiate समझौता-वार्त्ता करना
Negotiation परक्रामण, हस्तांतरण; पत्रालाप
Nepotism स्वजन-पक्षपात, कुनबापरस्ती
Neptune वरुण
Nerve स्नायु
Nervous system स्नायुसंस्थान, स्नायुमंडल
Net शुद्ध; वास्तविक
—income शुद्ध आय
—loss शुद्ध हानि, वास्तविक हानि
—profit शुद्ध लाभ
—price शुद्ध मूल्य
Neuralgia वातशूल
Neurasthenia नाड़ी दौर्बल्य
Neutral तटस्थ
Neutralisation तटस्थीकरण
Neutrality तटस्थता
New-deal नव्य अर्थनीति (अमेरिकाकी)
News समाचार
News agency समाचार-समिति, वृत्त-संस्था
News commentary संवाद-आलोचना
News correspondent संवाददाता
News despatch समाचार-प्रेष
,, reel समाचार-फलक
News relay समाचार-प्रसारण
Newsman सांवादिक
Newspaper समाचारपत्र
News sheet समाचार-पत्रक
Nib लेखनी-जिह्वा
Nihilism शून्यवाद, निषेधवाद
No-confidence motion अविश्वासका प्रस्ताव
Noes असहमत, 'ना' पक्ष, नाकारी
Nomad यायावर, भ्रमणशील (जाति), खानाबदोश
No-man's land निःस्वामिक भूमि, नीराज्यिक भूमि
Nomenclature नामपद्धति
Nominal नाममात्रका, अभिहित
Nominal capital अभिहित पूँजी
Nominal cost अभिहित परिव्यय
Nominal price नाममात्रकी कीमत
,, value अभिहित मूल्य
Nominated मनोनीत
Nomination paper नामनिर्देशन-पत्र, नामांकनपत्र मनोनयन पत्र
Nominee मनोनीत व्यक्ति
Non-aggression pact अनाक्रमण संधि
Non-bailable अप्रतिभाव्य, अलग्नक मोच्य
Non-cognizable अहस्तक्षेप्य, अननुसंधेय
Non-combatant अयोद्धा
Non-cumulative असंचयी
Non-commissioned बे-सनद, अनायुक्त
—officer अनायुक्त अधिकारी
Non-entity नगण्य व्यक्ति
Nonferrous लौहेतर, लौहविहीन (धातु), अलोह
Non-gazetted अराजपत्रित
Non-metallic अधात्वीय
Non-observance न बरतना, अपालन
Non-official गैर-सरकारी
Non-party conference निर्दल सम्मेलन
Non-payment न चुकता करना, अशोधन (ऋणादिका) अदातृत्व, अप्रदानता (करादिकी)
Non-productive अनुत्पादी
Non-recurring expenditure अनावर्त्ती व्यय
Non-regulation province विधान बहिःप्रांत
Non-resident अनावासिक
Non-sovereign state पूर्ण प्रभुत्वहीन राज्य
Non-stop बिना रुके, अविराम
Non-transferable अपरावर्त्तनीय, अहस्तांतरणीय
Non-violent resistance अहिंसात्मक प्रतिरोध

Non-votable expenditure अमतदेय व्यय
Normal सामान्य
Normal, Below सामान्यसे नीचे
Normal school प्रशिक्षण विद्यालय
Nota bene पुनश्च, विशेप सूचनार्थ (धि० सू०), इदमपि अवधेयं (इ० अ०)
Notary लेख्य-प्रमाणक
Notation स्वरलिपि, संकेत-प्रणाली
Note टिप्पणी; लघुलेख; संक्षिप्त अभिलेख; पाठसूत्र; पत्रमुद्रा
Noted उल्लिखित; ख्यातिप्राप्त; अभिलिखित
Notice सूचना; सूचनापत्र
Notice-board सूचना-पट्ट
Notice in writing लिखित सूचना
Notice of motion प्रस्ताव-सूचना
Notice to quit निष्कासन-सूचना
Notification अधिसूचना
Notified area अधिसूचित क्षेत्र
Notless than से अन्यून
Nucleus केंद्रबिंदु, नाभि-हृदय
Nudism नग्नतावाद
Nuisance कंटक, बाधक, बाधा
Null and void शून्य और व्यर्थ
Nullification अभिशून्यन
Nullify रद्द करना
Numbered संख्यात, जिसपर नंवर डाला गया हो
Numerical order संख्याक्रम
Numismatics मुद्राविज्ञान
Nurse n. उपचारिका, परिचारिका
Nurse v. परिचर्या (परिचारण) करना
Nursery जखीरा, बीजोद्यान, पौधशाला; शिशुशाला, शिशुभवन
Nutrition पोषण
Nux Vomica कुचला

O

Oasis हरितभूमि, मरुद्वीप, शाद्वल
Oath of allegiance निष्ठाकी शपथ
Oath of fidelity एकांतनिष्ठाकी शपथ
Oath of office पदकी शपथ
Oath of secrecy गूढ़ताकी शपथ, गोपन-शपथ
Oath, to administer शपथ देना
Obdurate दुराग्रही
Obedient servant, Most परम आज्ञाकारी सेवक
Obituary notice मृत्यु-समाचार
Object लक्ष्य, अभिप्राय
Object and reason उद्देश्य और हेतु
Objection, technical शाब्दिक आपत्ति, प्राविधिक आपत्ति
Objective वस्तुरूप, वस्तुगत; बाह्य
Obligation आभार; दायित्व; अवश्य करणीयता, बंधन, बाध्यता
Obligation and right दायित्त्व और अधिकार
Obligatory अनिवार्य, अवश्यकरणीय, बाध्यतामूलक
Obliterate नष्ट करना, अभिलोपन करना
Oblivion, Act of विस्मृति व्यवस्था
Obnoxious अप्रीतिकर
Observation पर्यवेक्षण
Observation post (पर्यवेक्षण) चौकी
Observatory वेधशाला
Observer पर्यवेक्षक; प्रेक्षक
Obtuse angle अधिक कोण
Obverse n. सीधी तरफका या सामनेका भाग, चेहरा; तथ्यका दूसरा पक्ष या भाग, adj. सीधा
Occidental पाश्चात्य
Occupancy right भोगाधिकार, दखीलकारी
Occupation व्यवसाय, धंधा; अधिवास
Occupation, Army of आधिपत्य करनेवाली सेना, अधिकारिका सेना
Occupation-franchise व्यावसायिक मताधिकार
Octagon अष्टभुज
Octavo अठपृष्ठी, अठपेजी
Octroi barrier उद्घाट; चुंगी-चौकी
Octroi-tax चुंगीकर
Off duty कार्यसे छुट्टीपर
Offence अपराध; आक्षेप; आक्रमण; उत्कोपन, आकोपन
Offence against law विधि-विरुद्ध अपराध
Offence, Capital मृत्युदंड योग्य अपराध
Offensive expression आक्षेपवचन, आक्षेपपद, रोषकारी पदावली, अप्रीतिकर शब्दावली
Offer प्रस्ताव, दित्सा-प्रस्ताव
Office पद; कार्यालय
Officer in charge प्रभारी अधिकारी, अवधायक अधिकारी
Official adj. सरकारी, शासकीय; n. अधिकारी
Official party राजकीय पक्ष, सरकारी पक्ष
Official Reporter राजकीय प्रतिवेदक, सरकारी प्रतिवेदक
Official residence पदावास
Official visit शासकीय परिदर्शन; आधिकारिक आगमन
Officiating स्थानापन्न
Offset अनुलंब
Offtake निकासी; निष्क्रम-नलिका
Oil-tanker तैल-पोत
Oligarchy अभिजाततंत्र, अल्पजनतंत्र
Omission विलोपन, विलोप, (दे० विधि-निषेध), अनाचरण
Omnipotent सर्वशक्तिसंपन्न
Omnipresent सर्वव्यापक
Omniscient सर्वज्ञ
On average pay औसत वेतनपर
On service राजसेवामें, राजप्रेष्य
Onus भार, दायित्व

Open General Licence सर्वमुक्त साधारण अनुज्ञापत्र
Open door policy मुक्तद्वार नीति
Opening balance प्रारंभिक रोकड़
Opening entry प्रारंभिक प्रविष्टि
Open market खुला बाजार
Opera गीति-नाट्य
Operate शल्यक्रिया करना; कार्यसंपादन करना, प्रवर्त्तित करना
Operation शल्यक्रिया, शल्योपचार, चीरफाड़; व्यापार
Operation, military सामरिक कार्य
Operator चालक
Opinion, Favourable अनुकूल मत
Opportune समयानुकूल
Opportunism अवसरवादिता, अवसरवाद
Opportunist अवसरवादी
Opposition विरोधी पक्ष, प्रतिपक्ष; विरोध
Opposition bench विरोधी पीठ, विरोधी दलपंक्ति
Opposition, Leader of the विरोधी पक्षका नेता, प्रतिपक्ष-नेता
Optics नेत्रविज्ञान, दृष्टिविज्ञान, काशिकी
Optimism आशावाद
Optimist आशावादी
Option विकल्प
Optional वैकल्पिक, ऐच्छिक
Oracle देववाणी, आकाशवाणी
Oral evidence मौखिक साक्ष्य
Orator सुवक्ता, वाग्मी
Orchestra वादकदल, वादकवृन्द; वाद्यस्थान; वृंदवाद्य, समूहवादन
Ordeal अग्नि-परीक्षा
Order आदेश, आज्ञा; क्रम; व्यवस्था
Order, By आज्ञानुसार, की आज्ञासे
Order-form प्रेषणादेश पत्र
Order-in-Council सपरिषद्-आदेश
Order, Law and विधि और व्यवस्था
Order of merit योग्यतानुसार, योग्यता-क्रमसे
Order, Order शांति ! शांति !
Order, Standing स्थायी आदेश
Ordinance अध्यादेश
Ordnance factory गोलाबारूदका कारखाना, शस्त्र-निर्माणशाला
Ordnance Stores अस्त्रभंडार
Organ अवयव, इंद्रिय; मुखपत्र
Organic सेंद्रिय
Organisation संघटन
Organiser संघटनकर्त्ता, आयोजक
Orgasm कामोन्माद, मदनलहरी
Oriental प्राच्य, पौर्वात्य
Original budget estimate आयव्ययका प्रथम अनुमान
Original draft मूल प्रारूप
Original jurisdiction मूल अधिकार-क्षेत्र
Originating chamber उद्भव वेश्म
Originator आरंभक (प्रवर्त्तक)
Orphanage अनाथालय
Orthography वर्णविचार
Out-door patient बाह्य रोगी, बहिर्वासी रोगी
Outflank पीछेसे हमला करना
Outgoing पदमुक्त
Outhouse बाह्यगृह
Outlet निर्गम-द्वार, निकास
Outline रूपरेखा, स्थूल रूप
Out-of-date दिनातीत, तिथ्यतीत
Outpost बाहरी चौकी, नाका
Outskirts नगरोपांत, ग्रामांत, उपकंठ, परिसर
Ovary डिंबाशय
Overall deficit कुल घाटा
Overdraw (जमा किये हुए रुपयोंके हिसाबमेंसे) क्षमतासे अधिक लेना या निकालना
Overdraft अधिविकर्ष
Overloaded अतिभारित
Over-lord अधिराज
Overpayments अधिक भुगतान
Overpopulation अतिप्रजनन, अतिजनसंख्या
Overproduction अत्युत्पादन
Overruled रद्द कर दिया गया, विपर्यस्त; अधिविक्षेपित; अध्यनुशासित
Over-sea समुद्र-पार
Overseer अधिकर्मी, कार्य-निरीक्षक
Ovum डिंब
Own स्वामित्व होना; स्वीकार करना
Owner स्वामी
Ownership, Limited सीमित स्वामित्व

P

Pacification शांतिकरण, समीकरण
Pacifism शांतिवाद
Pacifist शांतिवादी
Packer संवेष्टक
Packet संवेष्टिका
Packing charges संवेष्टन-व्यय
Pact समझौता
Paid वैतनिक
Paid up Capital प्राप्त पूँजी, चुकता मूलधन
Painting चित्रण, रंग लगाना, रंजन
Palatal तालव्य
Paleo Botany पादप शास्त्र
Pan Islamism सर्व-इसलामवाद
Panel लकड़ी आदिका चौकोर टुकड़ा, दिल्ला; चौकोर स्थान
Panel of Chairmen सभापति-तालिका

Panic आतंक
Pantheism सर्वेश्वरवाद
Papacy पोपपद
Papal state पोप-राज्य
Paper currency पत्र-चलार्थ
Paper Currency reserve पत्र-चलार्थ-रक्षितकोष
Paper-Setter प्राश्निक
Paper-weight पत्रभारक, पत्रचाप
Papers पत्रजात
par, Above अधिमूल्यपर
Par, At सममूल्यपर
Par, Below बट्टेसे, अवमूल्यपर
Par value सममूल्य
Paradox विरोधाभास
Parachute हवाई छतरी
Paragraph कंडिका, अनुच्छेद, प्रस्तर
Parallel समानांतर; समकक्ष
Parallel government प्रति-सरकार, समकक्ष सरकार
Parallelogram समानांतर चतुर्भुज
Paralyse ठप करना, गतिहीन या संज्ञाशून्य बना देना
Paramount power सार्वभौम सत्ता, सर्वोच्च सत्ता
Parapet मुंडेर
Parasite परजीवी, परोपजीवी, परांगभक्षी
Parboiled rice भुजिया चावल
Parcel पोट, पार्सल
Pardon क्षमा
Parity समार्हता, बराबरी
Park उपवन, संवाह (पुराना शब्द)
Parliament संसद
Parliamentary government पार्लमेंटरी शासन
Parliamentary language संसदीय भाषा, संयत या शिष्ट भाषा
Parliamentary secretary संसद्-सचिव, सभासचिव
Parody अनुकृति काव्य
Parole प्रतीतिवचन; सप्रतिबंध मुक्ति, साधि मुक्ति, सबंध मुक्ति
Parling पदव्याख्या
Partially आंशिक रूपसे, अंशतः
Partially excluded areas अंशतः अपवर्जित क्षेत्र
Particulars विवरण
Parties concerned संबद्ध पक्ष
Partition विभाजन
Partnership भागिता
Parts of speech शब्दभेद
Party पक्ष, दल
Party-caucus दलकी अंतर्गोष्ठी
Party in power अधिकारारूढ दल
Pass v. पास होना या करना, उत्तीर्ण होना;पारित करना
Pass n. प्रवेशपत्र; पारणक; दरी, दर्रा
Passage लेखांश
Passage money मार्गव्यय
Passed पारित, स्वीकृत; उत्तीर्ण
Passive resistance निष्क्रिय प्रतिरोध
Passport पारपत्र, निष्क्रमपत्र, राहदानी
Pasteurised milk कृमिशोधित दुग्ध
Pastureland गोचरभूमि, पशुचर भूमि
Patent एकस्व
Patent medicine एकस्व भेषज
Patent, letters एकस्वपत्र
Pathalogist निदानशास्त्री
Patriarchal पितृसत्तात्मक
Patriarchy पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पितृतंत्र
Patricide पितृहत्या
Patrimony पैतृक धन
Patrol n. परिरक्षी; परिरक्षक, पतरोल; v. रक्षार्थ भ्रमण करना, परिक्रमण करना, गश्त लगाना
Patron संरक्षक
Patronage संरक्षण
Pauper suit अकिंचनवाद
Pawn आधि
Pawner आधिकर्ता
Pawnee आधिग्राही
Payable देय
—at sight दर्शनेदेय; —to bearer वाहकदेय;
—to order आदेशदेय
Payee प्रापक, प्राप्तिकर्त्ता
Payer दाता
Paymaster वेतनदाता
Payment भुगतान, शोधन
Payscale वेतनमान
Paysheet वेतन-फलक
Peace शांति
Peace offensive शांतिप्रयास
Peaceful penetration शांतिपूर्वक प्रवेश या अधिकार करना
Peak production चरमोत्पादन
Peasantry कृषिवर्ग
Pecuniary धन संबंधी
Pedagogical शिक्षाशास्त्रीय
Pedagogy शिक्षणशास्त्र
Pedigree वंशावली, कुलपरंपरा
Pedigree cattle बढ़िया नस्लके पशु
Pegging Act स्थानाबद्धकारी अधिनियम
Penal दंडविषयक; दंडनीय
Penal code दंड संहिता
Penal settlement दंडितोंकी बस्ती
Penalize दंडित करना
Penalty दंड, शास्ति; निग्रह
pending विचाराधीन; लंबित; लंबमान
Pen-down strike लेखनीकर्म-रोधन

Peninsula प्रायद्वीप
Pen-name साहित्यिक उपनाम
Penology दंड-विज्ञान
Penpicture शब्दचित्र
Pension निवृत्तिवेतन, पूर्वसेवावृत्ति
Peon पत्रवाह
—book पत्रवाहपंजिका
Peoples' war लोकयुद्ध
Per capita प्रतिव्यक्ति पीछे
Percentage प्रतिशतता
Per unit प्रति एकक
Peremptory order अनुल्लंघनीय आदेश
Perimetre परिमिति
Period अवधि, —of service सेवाकाल
Periodical सावधिक, नियतकालिक; सावधिक पत्र, सामयिक पत्र
Permanent settlement स्थायी व्यवस्था, स्थायी भूप्रबंध
Permanent tenant स्थायी कृषक
Permission अनुमति, प्रानुमति
Permit प्रानुमतिपत्र
Permutation प्रस्तार; क्रमचय, क्रमविस्तार
Perpendicular लंब
Perpetual शाश्वत
Perpetual succession शाश्वत उत्तराधिकार
Perpetuity सातत्य
Perquisite अनुलाभ, परिलब्धि
Persona grata ग्राह्य व्यक्ति
Persona non-grata अग्राह्य व्यक्ति
Personal Assistant वैयक्तिक सहायक, निजी सहायक
Personal bond वैयक्तिक बंध
Personality व्यक्तित्व
Personal law वैयक्तिक विधि, स्वीय विधि
Personnel सदस्यगण, कर्मचारिगण
Pertinent संगत
Pervasion व्याप्ति
Perverse तर्कविरुद्ध; विकृत, उलटा
Pessimism दुःखवाद, नैराश्यवाद
Petit bourgeois निम्न मध्यवर्ग
Petition प्रार्थनापत्र, याचिका; अर्जी
Petrology खनिज तैलविज्ञान; शिला विज्ञान
Phantom मनोलीला, छायापुरुष
Pharmacopoeia औषधनिर्माणशास्त्र
Pharmacy भेषजालय, औषधालय
Philology भाषाविज्ञान
Phonetics स्वर-विज्ञान
Phoney war नक़ली युद्ध, झूठा युद्ध
Photo छायाचित्र
Phraseology पद-विन्यास; शब्दावली
Physical शारीरिक; भौतिक; प्राकृतिक (भूगोल)
Physically fit शरीरसे योग्य
Physiognomy आकृतिविज्ञान
Picket फौजकी छोटी टुकड़ी
Picketing धरना देना, प्रवेशरोधन
Picnic party वनभोज; प्रमोदगोष्ठी
Piecemeal खंडशः
Piers पोतघाट
Pigeon-hole कोष्ठखंड
Pilot चालक
Pin शूक, कंटिका
Pin-cushion शूकधानी
Pioneer अग्रगामी
Pipette नलिका
Piracy जलदस्युता
Pirate जलदस्यु
Pitch धावनस्थली; उच्चतम स्थान
Placard भित्तिपत्रक
Placenta अपरा, जरायुमूल, पुरइन
Plaint वाद-पत्र
Plaintiff वादी
Plan योजना, उपाय
Plane figure समक्षेत्र, समतलाकृति
,, surface समतल
Planning आयोजन, नियोजन
Plant उद्योग-यंत्रावली, यंत्र-समुच्चय
Planter रोपक
Plaster पलस्तर, स्तरण
Play खेल; नाटक, अभिनय
—ground खेलका मैदान, खेलाधार
Plea तर्क; प्रतिपादन; बहाना
Plea, Admissible ग्राह्य तर्क
Plead पक्ष-समर्थन, वकालत करना, अभिवचन करना
Plead guilty दे० guilty में
Pleader अभिवक्ता, वकील
Pleading अभिवचन
plebian साधारणजन
Plebiscite जनमतसंग्रह
Pledge प्रतिज्ञा, बंधन
Plenary session पूर्णाधिवेशन
Plenipotentiary पूर्णाधिकार-प्राप्त दूत
Plot दुरभियोजन; भूक्षेत्र; कथानक
Plural vote अनेकसंख्यक मत
Pluralism अनेकवाद
Plurisy पार्श्वशूल
Plutarchy धनिकतंत्र
Plutocratic democracy धनिकारूढ लोकतंत्र
Ply wood परतदार लकड़ी
Pneumonia फुफ्फुस-प्रदाह
Point n. बिंदु; प्रश्न; बात; संकेत; विषय
Point v. निर्दिष्ट करना, लक्ष्य करना

Point of order नियमापत्ति, विधानका प्रश्न
Poise अंदसौष्ठव
Politburo केंद्रीय समितिकी अंतरंगगोष्ठी, नीतिनिर्धारिणी समिति (रूस और अन्य देशोंकी कम्युनिस्ट पार्टियोंकी)
Politic, Body राज्य-संस्था
Police आरक्षी, आरक्षक, पुलिस,–force आरक्षक बल, –guard पुलिस गारद
Policy बीमापत्र; कार्यपद्धति
Polish ओप
Polity राज्यपद्धति
Poll मतदान
Poll tax मुंड-कर, व्यक्तिकर
Polling booth मतदान-उपकेंद्र, मतदानकक्ष
Polling station मतदान केंद्र
Polygamy बहुविवाह
Polyglot बहुभाषाज्ञ, बहुभाषाविद्
Polygon बहुभुज
Pontiff रोमन धर्मगुरु (पोप)
Pool गोलक
Pooling एकत्रीकरण, समूहीकरण
Popular Assembly जन-प्रातिनिधिक सभा
Popular front जन-मोरचा
Port पोताश्रय, बंदरगाह
Portfolio मंत्रीका कार्य-विभाग
Portrait प्रतिकृति
Pose ठवन, मुद्रा
Position स्थिति, स्थान; पदवी; योग्यता
Positive विध्यात्मक, निश्चयात्मक
Positivism प्रत्यक्षवाद
Possession अधिकार, कब्जा, स्ववश
Post पद; डाक; स्तम्भ; स्थान, जगह
Postal order पत्रालयिक आदेश, डाकीय आदेश
Postdated उत्तरतिथित
Posted नियत, नियुक्त; पत्रालयित
Post-entry पश्चाद् उल्लेख
Poster भित्तिविज्ञापनक, विज्ञापनपत्रक
Posterity भावी संतान
Post-graduare study स्नातकोत्तर अध्ययन
Posthumous मृत्यूत्तर जात, मृत्यूत्तरप्राप्त
Posting नियुक्ति, स्थापन; पत्रालयित करना
Post-master पत्रपाल, डाकपति
Postmaster General महापत्रपाल, महाडाकपति
Post-mortem शवपरीक्षा
" room चीरघर, शव-परीक्षणालय
Postnatal period प्रसवोत्तर काल
Postman पत्रवितरक, डाकिया
Post office पत्रालय, डाकघर
Post-war युद्धोत्तर
Post-war economy युद्धोत्तर अर्थव्यवस्था
Posture अंगविन्यास, अंगस्थिति, आसन
Potentiality क्षमता; संभाव्यता; दवाकी शक्ति (प्रभावकारिता)
Poultry keeping कुक्कुटादिपालन
Pound पशुनिरोध-गृह, पशुनिरोध-शाला
Poundage निरोध-शुल्क
Power शक्ति; शक्तिशाली देश; अधिकार
Power, Conferment of अधिकार-प्रदान
Power, Exercise of अधिकार-प्रयोग
Power politics अधिकारार्थ कूटनीति; बड़े राष्ट्रोंकी कूटनीति
Power of attorney मुख्तारनामा, प्रतिनिधि-पत्र
Power, To asaume अधिकार ग्रहण करना
Practice व्यवहार, अभ्यास; डाक्टरी, वकालत आदिका काम
Preamble प्रस्तावना
Precaution पूर्वोपाय, पूर्वावधानता
Precautionary अनिष्ट निवारक, पूर्वावधानता हेतुक
Precedence पूर्वता, पूर्ववर्तिता, पूर्वस्थानीयता
Precedent पूर्वदृष्टांत, पूर्वोदाहरण, नजीर,
Precept उपदेश, निदेश
Precluded प्रतिबाधित
Precursor पुरोगामी
Predecessor पूर्वाधिकारी, पूर्वग
Predominant प्रबल, सर्वतोऽधिक, सर्वप्रमुख
Pre-eminent सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम
Pre-emption पूर्वक्रय
Pre-emption, Right of पूर्वक्रयका अधिकार
Prefabricated house factory प्रस्तुतांग-गृह-निर्माणशाला
Preface प्राक्कथन, प्रस्तावना
Preference अधिमान, अधिमान्यता, वरीयता, तरजीह
Preferential treatment पक्षपातपूर्ण (या अधिमान्यता युक्त) व्यवहार
Pregnant सगर्भा, गर्भवती; अर्थगर्भ; से युक्त, से गर्भित
Prehistoric प्रागैतिहासिक
Prejudice प्रतिकूल प्रभाव, पूर्व धारणा
Prejudiced प्रतिकूल धारणायुक्त, पूर्व धारणान्वित
Prelude मंगलाचरण
Premises गृहपरिभाग, गृहोपांत; परिसर
Premium अधिशुल्क; बीमेकी किस्त
Prerogative विशिष्टाधिकार, परमाधिकार
Prescribed प्रदिष्ट; नियत; विहित
Prescription औषधनिर्देश; चिरभोग, चिरभोग-जनित अधिकार
Present v. उपस्थित करना, प्रस्तुत करना; n. उपहार भेंट; .adj. उपस्थित; विद्यमान, वर्त्तमान
Preservation परिरक्षण
Preservation of fruits फल-परिरक्षण
Preside पीठासीन, सभापति होना

Presided by अध्यक्षतामें, सभापतित्वमें
Presidency सभापतिका पद या उसकी कार्यावधि; आहाता, महाप्रांत (ब्रिटिश शासनकालमें)
President सभापति; राष्ट्रपति
President, Deputy उपाध्यक्ष, उपसभापति
President-elect मनोनीत सभापति
Presiding officer अधिष्ठाता
Presidium सोवियत स्थायी कार्य-समिति, प्रेसीडियम
Prevention of crime अपराध-निवारण
Press मुद्रणालय; समाचारपत्र (सामूहिक रूपसे)
Press conference पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलन
Press information bureau पत्रसूचना-विभाग
Press material प्रकाशन-सामग्री
Press note समाचार-सूचना, प्रेस-विज्ञप्ति
Press and platform समाचारपत्र और सभाएँ
Presumption अनुमान, धारणा
Presumptive आनुमानिक
Prevention of Cruelty to Animals Act पशु-निर्दयता-निवारण-अधिनियम
Preventive detention रोधात्मक कारावास, निवारक निरोध
Preventive messures निरोधी व्यवस्था
Previous consent पूर्व सम्मति
Previous sanction पूर्व सम्मोदन, पूर्व स्वीकृति
Prewar युद्ध-पूर्व
Price-control मूल्य-नियंत्रण
Prima-facie प्रथम दृष्टितः, आपाततः
Prime minister प्रधानमंत्री
Primer प्रवेशिका
Primitive society आदिम समाज
Primogeniture अग्रजाधिकार
Princes' chamber नरेन्द्रमण्डल
Principal (*money*) मूलधन
Principal adj. मुख्य, प्रधान; n. आचार्य
Printer मुद्रक
Prior claim प्राथमिक या अग्रिम दावा
Priority अग्राधिकार; प्राथमिकता
Priority list प्राथमिकता-सूची
Prism त्रिपार्श्वकाच
Prison कारावास; बंदीगृह
Prison von कैदी गाड़ी, बंदीयान
Prisoner बंदी
Privacy एकांतता; गुप्तता; एकांतस्थान
Private निजी; n. सामान्य सैनिक
Private enterprise निजी उद्यम
Private member गैर-सरकारी सदस्य
Private secretary अंतरंग-सचिव, निजी सचिव
Privation कष्ट, असुविधा
Privilege विशेषाधिकार, प्राप्ताधिकार, प्राप्त-सुविधा
Privileged classes विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग

Privy council अंतरंग परिषद् ; ब्रिटिश साम्राज्यका सर्वोच्च न्यायालय
Privy purse राजाधिदेय
prize पारितोषिक
Probation परीक्षणकाल
Probation officer परीक्षाकालीन अधिकारी, अस्थायी अधिकारी
Probationer परीक्ष्यमाण
Pro bono publico सर्वजनहिताय
Problem समस्या
Procedure कार्यपद्धति, कार्यविधि, (कार्य-प्रक्रिया)
Procedure, Civil व्यवहार-विधि, व्यवहार-प्रक्रिया
Procedure, Criminal दंडविधि
Proceedings लिखित विवरण, कार्यवाही
Process प्रक्रिया, आदेशिका
Process of unification एकीकरणकी प्रक्रिया
Process-fee आदेशिका-शुल्क
Proclamation उद्घोषणा
Proclamation of emergency आपातकी उद्घोषणा, संकटकालीन स्थितिकी घोषणा
Proconsul उप-वाणिज्यदूत
Procurement वसूली (अन्नकी), अन्नोपलब्धि
Product गुणनफल; उत्पादित वस्तु, उत्पादन
Production उत्पादन
Production of documents लेख्य-प्रस्तुति
Productivity उत्पादनक्षमता, उर्वरता
Profession वृत्ति, व्यवसाय, पेशा
Professional Conduct व्यावसायिक आचरण
Professor प्राध्यापक
Proficiency निपुणता
Profit लाभ
Profit, Excess अतिरिक्त लाभ
Profit-sharing scheme लाभ-विभाजन योजना
Programme कार्यक्रम, (पुरोगम)
Progressive increase उत्तरोत्तर वृद्धि
Progressive tax क्रमशः वर्धमान कर
Prohibited निषिद्ध, प्रतिषिद्ध
Prohibition मद्य-निषेध; प्रतिषेध
prohibition, writ of प्रतिषेध-लेख
Prohibitory निषेधक, प्रतिषेधक
Project परियोजना
Projection प्रक्षेपण
Proletariat सर्वहारा वर्ग
Promissory note प्रतिज्ञापत्रमुद्रा; वचनपत्र
Promotion पदोन्नति; कक्षोन्नति; उन्नयन
Prompt क्षिप्र
Promulgate जारी करना, प्रवर्त्तन करना, प्रख्यापन करना, विघोषित करना
Promulgation प्रवर्त्तन, विघोषण
Pronote ऋणबंधन-पत्र

Proof प्रमाण; शोध्य-पत्र
Proof reader ईक्ष्यवाचक, शोध्य-शोधक
Propaganda प्रचारकार्य, प्रचार
Propagandist प्रचारक
Propagate प्रचार करना
Property संपत्ति; विशेषता, गुण
Property, movable and immovable चल तथा अचल संपत्ति
Property-tax संपत्तिकर
Prophet देवदूत, पैगंबर
Prophylactic Drug रोगनिरोधक द्रव्य
Propitiation प्रसादन
Proportional representation आनुपातिक प्रतिनिधित्व
Proposal प्रस्थापना
Proposer प्रस्थापक
Proposition प्रमेय
Proprietorship स्वामित्व
Prorogue सत्रावसान; (विसर्जन)
Proscribe जब्त करना, प्रतिषिद्ध करना, वारित करना
Prosecution प्राभियोजन; प्राभियोक्ता पक्ष; इस्तगासा
Prosecutor, public राजकीय प्राभियोक्ता
Prosody छन्दःशास्त्र
Prospective भावी
Prospectus विवरणपत्रिका (पाठ्यक्रमादि); नियमावली
Prostitution वेश्याकर्म, वेश्यावृत्ति; दुरुपयोजन
Protection of industries उद्योगोंका संरक्षण
Protective duty संरक्षण कर
Protectorate संरक्षित राज्य
Protest प्रत्याख्यान
Protocol मूलपत्र, मूलसंधिपत्र
Protractor चाँदा, कोणमापक
Provide निवेशित करना
provided परंतु
Provided that पर, उपबंध यह है कि
Provident fund भविष्यनिधि, संचित-कोष, संचित निधि, सुविधायक कोष; संभरण निधि
Provident fund, Contributory अंशदायी संचित-कोष
Province प्रांत, प्रदेश; अधिकारक्षेत्र, कार्यक्षेत्र
Provincial autonomy प्रांतीय स्वराज्य; स्वायत्त शासन
Provincial Homeguards प्रांतीय रक्षादल
Provincialism प्रांतीयता
Provision निवेश; रसद, खाद्यसामग्री; उपबंध
Provision of law विधि-निवेश
Provisional government अस्थायी सरकार
Provisional programme अस्थायी कार्यक्रम
Proviso प्रतिबंध, प्रतिबंधात्मकवाक्य, शर्त, परंतुक
Provost Marshal सैनिक न्यायाधीश

Proximity सन्निकटता, सान्निध्य
Proxy प्रतिपुरुष, प्रतिपत्री
Pseudonym (स्यूडोनिम) छद्मनाम
Psychiatrist मनोरोग-चिकित्सक
Psychology मनोविज्ञान
Psycho-analysis मनोविश्लेषण
Puberty तारुण्यागम
Public accounts committee लोकलेखा-समिति
Public activity लोक कार्यकलाप
Public affairs लोककार्य
Public concern, matter of लोकविषयक बात
Public criticism सार्वजनिक आलोचना
Public debt सरकारी ऋण
Public demands सार्वजनिक अभियाचना
Public entertainment लोक-प्रमोद
Public function सार्वजनिक कृत्य
Public good लोकहित
Public health लोक-स्वास्थ्य
Public holiday सार्वजनिक छुट्टी
Public notification सार्वजनिक अधिसूचना
Public nuisance लोककंटक, लोकपीडक; लोकपीडन
Public opinion लोकमत
Public order सार्वजनिक व्यवस्था
Public relation officer जनसंपर्काधिकारी
Public Safety Act जनरक्षा अधिनियम
Public servant राजकर्मचारी, लोकसेवक
Public Service Commission लोकसेवा-आयोग
Public utility services लोकोपयोगी सेवाएँ, जनोपयोगी सेवाएँ
Publicist सार्वजनिक विषयोंपर लेखादि लिखनेवाला
Publicity प्रसिद्धि, लोकविश्रुति; प्रकास, प्रचार, जनसंवेदन
Public Works Dpt. लोकनिर्माण विभाग
Puisney Judge छोटा जज, उप-न्यायाधीश
Pulley घिरनी, गड़ारी, घिर्री
Pulsation स्पंदन
Pulse दाल; नाड़ी; स्पंदन
Pump उद्वहन यंत्र
Pun श्लेष
punching छिद्रयण
Punctual समयनिष्ठ
Punctuation चिह्नांकन
Punitive दंडात्मक
Punitive tax दंडकर, ताजीरी कर
Purchasing power क्रयशक्ति
Purge परिष्करण, परिष्कार, सफाई
Puritanism विशुद्धिवाद, कठोरतावाद
Purport अभिप्राय
Purporting to be done कर्तुमभिप्रेत
Purpose, charitable पुण्यार्थ

Pyorrhea शीताद (पुराना शब्द)

Q

Quadrangle चतुष्कोण
Quadrilateral चतुर्भुज
Quaint विलक्षण
Qualification योग्यता, अर्हता
Qualified acceptance विशेषित स्वीकृति, सप्रतिबंध स्वीकृति
Quantum प्रमात्रा
Quarantine post रोगप्रतिबंध निरोधा, निरोधा
Quarter चतुर्थांश; त्रिमास; आवास, निवास; आश्रय, क्षमादान; मुहल्ला, वस्ती
Quarterly त्रैमासिक (विवरण इ०); पु० त्रैमासिक पत्र
Quarter-master-general प्रधान-रसद-व्यवस्थापक, प्रधान सैन्यवास-व्यवस्थापक
Quarto चौपेजी, चौपृष्ठी
Quasi अर्ध
Quell शमन करना
Query प्रश्न
Questionaire प्रश्नावली-पत्रक
Quickening अतिसर्पण
Quinquennial पंचवर्षीय
Quisling विभीषण, जयचंद, शत्रुपोषी
Quittance उन्मोचन
Quorum गणपूर्ति, कार्यवाह-संख्या
Quota नियतांश, वंटितांश; अभ्यंश
Quotation अवतरण; बाजारभाव (see rate-quotations)
Quotient भागफल, भजनफल
Quo warranto अधिकार-पृच्छा

R

Race प्रजाति
Racial discrimination प्रजातिगत भेदभाव
Rack टाँड
Radiation दीप्तिप्रसारण; (ताप, प्रकाश या विद्युत्) विकिरण
Radical आमूल परिवर्त्तनवादी, उग्र सुधारवादी
Radicalism आमूल सुधारवाद
Radio programme रेडियोवार्ता, आकाशवाणी-कार्यक्रम
Radio transmitter बेतार यंत्र
Radius अर्धव्यास, त्रिज्या
Raid धावा, छापा
Raider आक्रमणकारी
Railway रेलवे, अयोमार्ग
Rally एक होकर खड़े हो जाना, समवेतन, उपस्थान, समाहृति, समागमन (बालचरोंका)
Rampart प्राकार
Rancour अतिद्वेष, अतिद्रोह
Range पर्वतश्रेणी; माला; पंक्ति; विस्तारक्षेत्र, गतिक्षेत्र; विस्तार
Ranger वनपाल
Rank श्रेणी, पदवी, पदश्री
Rank and file समस्त सामान्य सैनिक; सामान्य जन
Ransom निष्कृतिधन, (पनहा-भोजपुरी)
Ratable करयोग्य
Rate उपशुल्क, उपकर; दर; अनुपात; गति
Rating शुल्क-निरूपण
Ratification अनुसमर्थन, पुष्टिकरण
—of boundaries सीमासंशोधन
Rational युक्तिमूलक
Rationalisation of industry उद्योग-समीकरण; उद्योगकी वैज्ञानिक व्यवस्था; अभिनवीकरण
Rationing समवितरण, नियंत्रित वितरण, खुराकबंदी
Reactionary प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी, प्रतिक्रियात्मक
Reader पाठक; वाचक; पाठोंवाली पुस्तक; पेशकार, उपस्थापक; प्राध्यापक
Reading वाचन, पठन, पठत, पढ़त; अनुमान
Ready money नकद
Real estate स्थावर भूसंपत्ति
Realist यथार्थवादी
Real value वास्तविक अर्हा
Rear पृष्ठभाग
Rearguard अनुबल
Rearguard Action पृष्ठरक्षक युद्ध
Re-armament पुनरस्त्रीकरण
Rebate छूट, अवहार
Rebellion विद्रोह
Recall v. वापस बुलाना, प्रत्याहूत करना; n. प्रत्याह्वयन
Receipt प्राप्ति; रसीद, प्राप्तिका
Receiver आदाता; प्रतिग्राहक, ग्राहकयंत्र, ग्राहकांग
Receiving Apparatus ग्राहकयंत्र
Reception Committee स्वागत-समिति
Recess अल्पावकाश, मध्यावकाश, विश्रांतिकाल
Recession भावका गिरना
Recipient प्राप्तिकर्त्ता, प्रापक
Reciprocal पारस्परिक; परस्परबोधक (सर्वनाम)
Reciprocity पारस्पर्य, पारस्परिकता
Recital आख्यान, पाठ
Reclaim (भूमिका) उद्धार करना; कुपथसे सुपथपर लाना
Recognition प्रस्वीकृति; मान्यता, अभिज्ञा
Recognized प्रस्वीकृत; अभिज्ञात, मान्य
Recollection अनुस्मरण
Recommendation अभिस्ताव, सिफारिश, अनुशंसा
Recommended अभिस्तावित, अनुशंसित
Recompense प्रतिदान देना
Reconciliation फिर राजी करना, समझौता; समाधान, संराधन
Reconnaissance गश्त, पर्यवेक्षण
Reconnaissance plane टोहक (टोह लेनेवाला) विमान
Reconnoitring सामरिक दृष्टिसे की जानेवाली जाँच-

पड़ताल
Record अभिलेख; लेखाजोखा, लिखित विवरण; कीर्त्तिमान
Recorded अभिलिखित
Recording अभिलेखन, ध्वन्यभिलेखन
Record-keeper अभिलेखपाल
Records कागज-पत्र
Recoup हानिपूरण करना
Recovery वसूली, प्रत्यादान, प्रतिलब्धि; स्वास्थ्यलाभ
Recruitment भर्ती
Rectangle आयत
Rectify संशोधन करना, ठीक करना
Rector अधिशिक्षक, मुख्याधिष्ठाता
Recurring expenditure आवर्तक (आवर्ती) व्यय
Redemption ऋणमुक्ति; विमोचन
Redeemable विमोच्य
Redemption charges विमोचन-व्यय
Red letter शुभ; महत्त्वपूर्ण, स्मरणीय
Red rag भड़कानेवाली (उद्वेगकारी) वस्तु
Redtapism दीर्घसूत्रता, अत्यौपचारिकता
Redress प्रतिकार, क्लेशमुक्ति
Reduction कमी, छूट, छँटनी
Redundant व्यर्थ, अनावश्यक
Reenactment पुनरधिनियमन, पुनर्विधायन
Refer निर्देश करना; प्रतिप्रेषण करना
Referee पंच, खेलपंच, अभिनिर्णायक
Reference निर्देश, अभिनिर्देश
Reference book आकर-ग्रंथ (संदर्भ-ग्रंथ),
Referendum निर्वाचकोंके मत लेनेकी पद्धति, जननिर्देश
Reflection प्रतिबिंब
Reflector प्रकाश-परावर्तक, प्रतिफलक
Reflex angle पुनर्युक्त कोण
Reformatory सुधारालय
Refrigerator हिमीकर, प्रशीतक
Refugee शरणार्थी
Rrfugee township शरणार्थी वस्ती
Refund लौटाना, वापसी, (धन) प्रत्यर्पण
Refundable प्रत्यर्पणीय, लौटाये जाने योग्य
Refuting, refutation खंडन
Regal राजोचित; राजकीय
Regalia राजचिह्न
Regency Council राज्यसंचालक परिषद्
Regent प्रतिशासक, राज्यसंरक्षक
Regiment सैन्यदल
Region प्रदेश, प्रक्षेत्र
Regional Council प्रादेशिक परिषद्
Register पंजी; v. पंजीबद्ध करना
Registered पंजीबद्ध, रजिस्ट्रीशुदा, निबद्ध
Registrar लेखकाधिपति; पंजीयक, निबंधक
Registrar (*of a University*) पीठस्थविर, कुलसचिव
Registration पंजायन, दर्ज करना, निबंधन
Regressive taxation प्रतिगामी कर
Regular नियमित, नियमशील
Regular army नियमित सेना
Regulate विनियमन करना
Regulating Act विनियमन-अधिनियम
Regulation विनियम; विनियमन
Regulator विनियमक
Rehabilitation पुनर्वास, पुनर्वासन
Rehearsal पूर्वाभिनय
Reign of terror आतंकका राज्य
Reimbursement भरपायी, अदायगी
Reinforcement कुमक भेजना
Reinforce पुनः प्रचलित करना; कुमक भेजना
Reinstallation पुनरभिषेक, पुनःस्थापन
Re-instate पुनः नियुक्त करना, बहाल करना
Reinstatement पुनर्नियुक्ति, पुनःस्थापन, बहाली
Rejection अस्वीकरण
Rejoinder प्रत्युत्तर
Relative सापेक्ष; n. संबंधी, रिश्तेदार
Relay (पुनः) प्रसारित करना (आकाशवाणीका कार्यक्रम)
Release मुक्ति, छोड़ दिया जाना.
Relevancy सुसंगति
Relevant सुसंगत
Reliability of data आँकड़ोंकी विश्वसनीयता
Relic स्मृतिशेष
Relief सहायता, आराम; पदमोचन
Relief map उभाड़दार नक्शा, उद्गत मानचित्र
Relief work आपत्-सहाय-कार्य
Relieving officer स्थानग्राही अधिकारी
Remand प्रत्यावर्तित करना, लौटा भेजना, हवालात वापस भेजना
Remark अभ्युक्ति, टीका
Remedial measures प्रतिकारक उपाय
Remedy उपचार, साधन
Reminder अनुस्मारक, अनुस्मरण-पत्र
Reminiscence संस्मरण
Remission परिहार, छूट; क्षमादान
Remit भेजना, विप्रेषण
,, a sentence दंडका प्रतिहार करना
Remittance विप्रेषित धन; विप्रेषण
Remitter विप्रेषक
Removal हटाना; पृथक्करण
Remuneration पारिश्रमिक
Renaissance पुनरुत्थान
Renegade स्वमतत्यागी, स्वपक्षत्यागी
Renewal नवीकरण, नवीनीकरण
Renovation नूतनीकरण, नवीकरण
Rent किराया, भाटक, लगान, भूमिकर
Rental भाटक-राशि, कुल लगान
Rent controller किराया-नियंत्रक

Renunciation स्वस्वत्याग, संन्यास
Reorganization पुनस्संघटन
Repairs मरम्मत, सुधार, संस्कार
Reparable सुधारयोग्य, पूरणीय
Reparations क्षतिपूर्ति, हरजाना
Repatriate स्वदेश प्रतिप्रेषण, पुनः स्वदेश लौटाना
Repayable प्रतिदेय, प्रतिशोध्य
Repayment प्रतिशोधन
Repeal विलोपन करना, विलोपीकरण,निरसन,रद्द करना
Repercussion मानसिक प्रतिक्रिया, अप्रत्यक्ष प्रभाव
Repetition पुनरुक्ति, पुनरावृत्ति, आवृत्ति
Replenishment क्षतिपूर्ति करना
Replete विपुल, परिपूर्ण
Report विवरण, विवरणी; सूचना देना; प्रतिवेदन
Reporter संवाददाता, सूचक
Represent निवेदन करना, प्रतिनिधित्व करना
Representation प्रतिनिधित्व, निवेदन
Representative n. प्रतिनिधि
—, adj. प्रातिनिधिक, प्रतिनिधिमूलक
Repression दमन
Reprieve प्रविलंब करना
Reprimand भर्त्सना
Reprinted पुनर्मुद्रित
Reprisal प्रतिपीड़न; प्रतिहरण
Reproduction पुनरुत्पादन
Republic गणराज्य, प्रजातंत्र
Republican गणतंत्रात्मक; गणतंत्रवादी
Repudiate अनंगीकार करना
Repugnance विरोध, घृणा
Repugnant विरुद्ध, प्रतिकूल
Reputed ख्यात, प्रसिद्ध
Request निवेदन, प्रार्थना, अभिज्ञापन
Required अपेक्षित
Requisite standard अपेक्षित मान
Requisition अधिग्रहण, कामके लिए ले लेना, अधियाचन, अपेक्षण
Rescinding निरसन
Rescue बचाना, उद्धार
Rescue-homes सहायतागृह
Research गवेषणा, शोध
Reservation आरक्षण, संरक्षण
Reserve fund आरक्षित कोप
Reserved आरक्षित, संरक्षित
Reserved forest आरक्षित वन
Reserved subject आरक्षित विषय
Reshuffling हेर-फेर, आपरिवर्त्तन
Resident निवासी; आवासिक; आवासी प्रतिनिधि
Residential जहाँ लोग रहते हों, छात्रावासीय (विश्वविद्यालय)
Residential quarters आवासगृह
Residue अवशेष
Residuary अवशिष्ट
Residuary powers अवशिष्ट शक्तियाँ
Resignation पदत्याग; त्यागपत्र; ईश्वरेच्छानुवृत्ति, अविरोधका भाव
Resistance प्रतिरोध
Resolution निश्चय, संकल्प; दृढ़ता
Resolve संकल्प करना; दृढ़ निश्चय करना
Resort आश्रय
Resourcefulness साधनसंपन्नता, प्रत्युत्पन्नमतित्व
Resources साधन; धन; आय
Respectively यथाक्रम, क्रमात्
Respite लघु विराम, फुरसत; क्षणिक स्थगन
Respondent प्रतिवादी
Response उत्तर
Responsible, severally पृथक्-पृथक् उत्तरदायी
Responsive cooperation प्रतिक्रियात्मक सहयोग, सापेक्ष सहयोग
Rest-house विश्रामभवन, विश्रामालय
Restitution प्रत्यानयन; हृतप्रतिदान, प्रत्यर्पण; पूर्वस्थितिस्थापन; क्षतिपूर्त्ति
Restoration पुनरुद्धार; प्रतिदान, हृतप्रत्यर्पण; प्रत्यानयन; पूर्ववत्करण
Restraint संयम
Restrict सीमित करना
Restriction रुकावट, निबंधन, (निरोध)
Resultant परिणामी
Resume one's seat पुनः आसन ग्रहण करना
Resumption पुनर्ग्रहण, पुनरारंभ
Retail फुटकर
Retail price फुटकर मूल्य
Retail sale फुटकर बिक्री
Retailer खुदरा बेचनेवाला
Retire अवसर ग्रहण करना
Retired अवसर-प्राप्त, अवकाश-प्राप्त, निवृत्त
Retirement निवृत्ति, अवसर-ग्रहण
Retort stand ड्ट्टा
Retrenchment छँटनी
Retribution प्रतिफल, प्रतिकार
Retrospective effect, With पूर्वप्रभाव सहित, अनुदर्शी प्रभावसहित, गतकालापेक्षी प्रभावसहित
Return प्रत्याय; प्रतिफल; विवरण; प्रत्यावर्त्तन, पुनरागमन
Returning officer निर्वाचन-अधिकारी
Revaluation पुनर्मूल्यन
Revenue राजस्व, आगमन, मालगुजारी; किसी मदकी आय
Revenue account आगम-लेखा
Revenue court माल न्यायालय
Revenue minister मालमंत्री, राजस्वमंत्री

Revenue year कृषिवर्ष, फसली साल
Reverberation प्रतिनिनाद
Reversal पराजय; विपर्यय
Reverse v. उलट देना, विपर्यय करना, निरसन या अभिशून्यन करना, प्रतिकरण; n. पीठ, पुश्त; adj. उलटा, विपरीत
Reverse council bill प्रतिपरिषद्-विपत्र
Reverses हार, पछाड़
Reversion विपर्यय; प्रत्यावर्त्तन
Reversionary प्रतिवर्ती; उत्तरभोग्य
Reversionary bonus प्रतिवर्ती अधिलाभांश
Reversioner उत्तरभोगी
Revert प्रतिवर्त्तन करना; प्रत्यावर्त्तित होना
Review आलोचन, पुनर्विलोकन
Revision पुनरीक्षण, निगरानी; दोहराना
Revision of scale वेतनक्रमका संशोधन
Revival पुनरुज्जीवन, पुनः प्रचलन
Revive पुनर्जीवित करना; पुनरुद्धार करना, पुनः प्रचलित करना
Revocation निरसन; प्रतिसंहरण
Revolution क्रांति
Revolutionary क्रांतिकारी
Revolutionist क्रांतिवादी
Rewards पारितोषिक; प्रतिफल
Rhetoric अलंकारशास्त्र, रीतिशास्त्र
Rhombus विषमकोण समचतुर्भुज
Rhythmic तालबद्ध
Right n. अधिकार, स्वत्व
Right adj. ठीक, युक्त, उचित; सरल; दक्षिण
Right angle समकोण
Rightist दक्षिणपंथी
Rights, Civic नागरिक अधिकार
Rights, Civil दीवानी अधिकार
Rinderpest खूनी दस्त
Rise उदय; उत्थान, उन्नति, उत्कर्ष
Ritual संस्कार
Rivalry प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता
River valley scheme नदी-घाटी योजना
Robing room परिधान-गृह
Roll सूची, तालिका, नियमावली
Roller बेलन
Rostrum व्याख्यानपीठ
Rotation चक्रानुक्रम; पर्याय
Round दौर; बाढ़; चक्र, चक्कर, रौंद, गश्त
Round-Table Conference गोलमेज-सम्मेलन
Route मार्ग
Routine नित्यक्रम
Rowdyism हुल्लड़बाजी
Royal seal राजमुद्रा
Royalty अधिकार-शुल्क; स्वामित्व, स्वत्वस्व
Rule नियम; शासन
Rule of the road पथनियम
Rule out नियमविरुद्ध घोषित करना
Ruler शासक; रेखक
Ruling व्यवस्था
Rumour जनश्रुति, किंवदंती, प्रवाद
Run धावन
Runway विमानका अवतरण-पथ, धावनमार्ग
Rural ग्राम संबंधी, ग्राम्य
Rural uplift ग्रामोन्नति, ग्राम्यसुधार
Rust गेरुई
Rusticate निस्सारित करना
Rustication निस्सारण

S

Sabotage अंतर्ध्वंस, तोड़फोड़
Sacrifice त्याग; याग, यज्ञ
Safe conduct अभयपत्र
Safe-guard सुरक्षण; परित्राण, रक्षाकवच
Safety-vault सुरक्षित कोष्ठक
Salaried वैतनिक
Salary वेतन
Sale-deed विक्रय-लेख
Sales-tax विक्रीकर
Salesman विक्रयिक
Salesmanship विक्रय-कला
Salient प्रधान, मुख्य
Salvage अंशोद्धार
Salvation Army मोक्ष-सेना, मुक्ति-सेना
Salvo तोपोंकी बाढ़
Sanatorium स्वास्थ्यनिवास, स्वास्थ्यसदन, आरोग्यशाला
Sanction स्वीकृति, संमोदन; दंडोपबंध
Sanction, Military सैनिक अनुज्ञप्ति
Sanctuary शरणस्थान; अभयस्थल
Sanguinary रुधिरप्रिय; रक्तमय
Sanitation स्वच्छता, संमार्जन
Sappers and miners सपर-मैना
Sarcasm व्यंग्य, आक्षेप, ताना
Satrap प्रांतपति, क्षत्रप
Sattelite उपग्रह
Saturated solution संपृक्त द्रावण
Savant प्राज्ञ, पंडित, ज्ञानी
Savings Bank बचत खाता
Savings campaign मितव्ययिता-आन्दोलन
Saviour उद्धारक
Scale पैमाना, अनुमाप; तराजू
Scale, large बड़े पैमानेपर
Scale of salary वेतन-क्रम
Scandal परिवाद, लोकप्रवाद, अपवाद
Scar क्षतचिह्न

Sceptic संदेहवादी, संशयात्मा
Scepticism संदेहवाद, संशयवाद
Sceptre राजदंड
Schedule परिगणना, अनुसूची
Scheduled castes परिगणित जातियाँ, अनुसूचित जातियाँ
Scheduled time निर्धारित समय
Scheduled tribes अनुसूचित जनजातियाँ
Scheme योजना
Schism फूट
Scientific apparatus वैज्ञानिक यंत्र
School शाला; मत, संप्रदाय; अध्ययनशाखा
Scoop news स्वाप्त समाचार; ऐकान्तिक समाचार
Scope विस्तार, क्षेत्र, सीमा
Scorched earth-policy सर्वक्षार नीति
Score गोल करना; रन बनाना; विजयी होना; n. विषय; कारण
Scorpio वृश्चिक राशि
Scramble छीनाझपटी
Screen पट
—, Silver रजतपट
Script लिपि
Scripture धर्मग्रंथ
Scrutiny सूक्ष्मपरीक्षण, संपरीक्षण
Seaborne trade समुद्री व्यापार
Sealed मुद्रांकित, मुहर किया हुआ
Search-light प्रकाश-प्रक्षेपक, अन्वेषक प्रकाश, विदर्शनालोक
Season ticket म्यादी टिकट
Seasonal occupations मौसमी धंधे
Seasoned wood सिझायी लकड़ी
—worker अनुभवी कार्यकर्त्ता (श्रमिक)
Seaworthiness of vessels पोतोंकी यात्रा-क्षमता
Secant छेदक, छेदक रेखा
Secession संबंध-विच्छेद
Second, To अनुमोदन करना
Second chamber द्वितीय वेश्म, अपर सदन
Second person मध्यम पुरुष
Secondary माध्यमिक; गौण
Seconder अनुमोदक
Secret रहस्य; adj. गुप्त
Secret Agent प्रणिधि, गुप्तचर
Secret ballot गुप्त मतदान
Secret service गुप्तचर-विभाग
Secretariat सचिवालय
Secretary सचिव
Secretary, Additional अतिरिक्त सचिव, अपरसचिव
Secretary, Assistant सहायक सचिव
Secretary, Deputy उप-सचिव, प्रति-सचिव
Secretary, Joint संयुक्त सचिव
Secretary, Under अवरसचिव
Secretary of State राज्य मंत्री (ब्रिटेन), परराष्ट्र मंत्री (अमेरिका)
Secretary, Private निजी सचिव (निज-सचिव) स्व सचिव, अंतरंग-सचिव
Secretion स्राव; निस्सारण
Sect उपसंप्रदाय
Sectarianism धार्मिक दलबंदी
Section धारा (नियम); अनुविभाग; खंड
Sector खंड; वृत्तखंड
—of a circle द्वैत्रिय
Secular धर्मनिरपेक्ष, लौकिक
Secure सुरक्षित
Securities साख-पत्र, प्रतिभूतियाँ
Security प्रतिभूति, प्रतिभू (व्यक्ति)
Security Council सुरक्षापरिषद्
Security measure सुरक्षा-व्यवस्था
Security of tenure पदधारण-सुरक्षा
Sedition राजद्रोह
See धर्माध्यक्षका क्षेत्र
Segment of a circle अवधा
Segregation पार्थक्य, पृथक्कीकरण
Seismograph भूकंप-मापक यंत्र
Seismology भूकंपविज्ञान
Select committee प्रवर समिति
Selection (चुनाव) अंतर्वाचन, प्रवरण
Self-contained स्वतःपूर्ण
Self-determination आत्मनिर्णय
Self-government स्वशासन
Self-sufficiency आत्मभरितता
Self-sufficiency plan आत्मभरित योजना
Selling विक्रय
Semi-circle अर्द्धवृत्त
Semi-final उपांत, अंतिमप्राय
Seminar विचारगोष्ठी, विचार-संमेलन; अध्ययन-गोष्ठी
Semi-weekly अर्धसाप्ताहिक
Semitic सामवंशोत्पन्न, अरब-यहूदी
Senate प्रमुखसभा; प्रबंधसमिति
Sender प्रेषक
Senior ज्येष्ठ; पुराना
Seniority ज्येष्ठता, प्राथम्य
Sensation संवेदन; सनसनी
Sensationlism संवेदनवाद
Sense अभिप्राय, भाव, अर्थ, समझदारी; होश, संज्ञा
Sense of the assembly सभाका अभिप्राय या भाव
Sensualism इन्द्रियार्थवाद
Sentence दंडादेश, सजा; वाक्य
Sentence, to uphold सजा बहाल रखना
Sentry प्रहरी, संतरी
Sentimentality भावुकता

Septic पौतिक
Septinial Act सप्तवार्षिक व्यवस्था
Sericulture कोशकीट-पालन
Series माला, श्रृंखला
Serum रक्तांबु, सौम्य
Served अभ्यर्पित (आदेश इ०), तामील
Service सेवा, नौकरी, भृत्या—book सेवापुस्तिका
Service charge सेवा-व्यय
Service, Civil नागरिक राजसेवा
Service, Condition of सेवाकी शर्तें
Servicemen सैनिक
Service of notice सूचनापत्रका तामील होना
Session सूत्र, अधिवेशन; बैठक
Session Court सत्र न्यायालय, दौरा अदालत
Session, termination of सत्रावसान
Set-back (प्रतिकूल स्थिति), प्रगतिरोध
Settlement बस्ती; भूमिव्यवस्था, बन्दोबस्त; निपटारा
Severence of diplomatic relation राजनीतिक संबंध-विच्छेद
Sexual मैथुनिक; कामजनित; लैंगिक
Shade छाया, आभा; आभाभेद
Shadow प्रतिबिंब, छाया
Sham छायिक; अयथार्थ
Sham fight छायायुद्ध
Shampoo संवाह, संवाहन
Share अंश, भाग, हिस्सा
Share-holder हिस्सेदार, भागीदार
Share-market शेयर बाजार
Sheet ताव; फलक
Sheet, Charge आरोपपत्र
Shell गोला (तोपका); कवच (कड़ा छिलका)
Shift पाली
Ship-building industry पोतनिर्माण-उद्योग
Shock treatment सहसोपचार
Shock-troops सहसाक्रामक चमू
Shorthand शीघ्रलिपि, त्वरालिपि
Short-notice question अल्पसूचित प्रश्न
Short term loan अल्पकालीन ऋण, अल्पावधिक ऋण
Shot छर्रा
Show-down बलपरीक्षण, अंतिम परीक्षा
Shrinkage सिकुड़न, आकुंचन
Sign-board नाम-पट्ट, नामपटल
Signal संकेत; सिकंदरा
Signatory हस्ताक्षरकर्ता
Silt पंकराशि
Silver Jubilee रजत-जयंती
—screen रजतपट
Silviculture वनविज्ञान, वनवर्धन
Simile उपमा
Simplification सरलीकरण

Simultaneous समकालिक
Sine die अनिश्चित कालतकके लिए
Single member constituency एक सदस्य-निर्वाची क्षेत्र
Single transferable vote एकल संक्रमणीय मत
Singular एकवचन; अनोखा
Sinking fund ऋणपरिशोधन कोष, निक्षेपनिधि
Sinus नासूर, नाड़ी-व्रण
Sitting उपवेशन, बैठक
Sixers, sixes छक्के, छौवे
Sketch रूपरेखा, रेखाचित्र
Skilled labourer कुशल श्रमिक
Skirmish छिटपुट संघर्ष
Sky-scraper अभ्रंकष, गगनचुम्बी भवन
Slander अपमान-वचन, अपवाद
Slaughter-house पशु-वधालय
Sleeper सिलापट
Sleeping partner उदासीन भागीदार
Sliding scale विसृप अनुमाप
Slogan नारा, घोष
Slum दरिद्रावसति, मलिनावास
Slump मूल्यावपात, अर्धपतन, सस्ती
Slur कलंक
Small cause Court लघुवाद न्यायालय, अदालत-खफीफा
Smoke-screen धूमपट, धूमावरण
Smuggle करापहार, चुंगीचोरी, अवैध प्रेषण (अपहरण —कौटिल्य)
Sniper कपटाघाती, छलाघाती
Snowline हिमरेखा
Soap stone गोरा पत्थर, घीया पत्थर
Social लोकप्रिय; सामाजिक
Social boycott सामाजिक बहिष्कार
Social custom सामाजिक रूढ़ि
Social gathering स्नेहसम्मेलन, प्रीतिसम्मेलन
Social Insurance सामाजिक बीमा
Social order सामाजिक व्यवस्था
Social security सामाजिक सुरक्षा
Social service सामाजिक सेवा
Socialisation समाजीकरण
Socialism समाजवाद
Society समाज
Society for prevention of cruelty to animals (*S. P. C. A.*) पशु-निर्दयता-निवारण-समिति
Soft currency area सुलभ मुद्राक्षेत्र
Soil conservation भूमिसंरक्षण
Soil erosion भूमिकी कटन-छँटन, भूमिका कटाव
Soil, sandy बलुई भूमि, भूड़
Soil, virgin अकृष्टपूर्वा भूमि, बंजर भूमि
Solicit साग्रह प्रार्थना करना

Solid ठोस, पुष्ट
Solitary cell काल-कोठरी; साँसत घर
S. confinement तनहाई कैद, एकांत कारावास
Solubility घुलनशीलता
Solution घोल, द्रावण; हल
Solute घुल्य
Solvent घोलक
Somnambulism निद्राभ्रमण, निद्राचार
Sophistry सिद्धांताभास, युक्त्याभास
Sore व्रण, घाव
Sorter पत्रवियोजक
Sound स्वस्थ, निर्दोष
S. O. S. संकट-संकेत
Sound Recorder ध्वनिसंग्राहक, ध्वन्यभिलेखक
Souvenir स्मृति-चिह्न, स्मृति-उपायन
Sovereign Democratic Republic संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य
Sovereignty प्रभुसत्ता, पूर्णसत्ता
Soviet पंचायत
Speaker अध्यक्ष, प्रमुख
Specialisation विशिष्टीकरण
Specification विनिर्देश
Specimen नमूना, प्रतिरूप
Spectrum वर्णच्छटा, वर्णपट, दृश्याभास
Speculation अटकलबाजी; सट्टा, फाटका
Spelling हिज्जे, वर्त्तनी, अक्षरी, वर्णविवृत्ति
Sphere गोल; कार्यक्षेत्र, प्रभावक्षेत्र
Spine मेरुदंड, पृष्ठवंश, रीढ़
Splinter पत्थर, बम आदिके पतले, नुकीले टुकड़े
Spokesman प्रवक्ता, मुखपात्र
Sporadic raids छिटपुट हमले
Squadron दस्ता
Square वर्ग; चत्वर
Stabilization स्थिरीकरण
Staff कर्मचारिवृंद
Stage प्रक्रम; अवस्थान; रंगमंच, मंच
Stamp अंकपत्र
Stamped अंकपत्रित
Standard प्रमाप, मान, मानक, कोटि, स्तर
Standard of living जीवनयापनका स्तर
Standardization प्रमापीकरण; माननिर्धारण
Standing committee स्थायी समिति
Stand-still agreement यथास्थिति समझौता
Starch श्वेत सार
Starred तारकित, तारांकित
State राज्य
State funds राज्यनिधि
Stately भव्य, प्रौढ़
Statement वक्तव्य, विवरण, कथन
Statesman राज्यनेता, राज्यविशेषज्ञ, राजपुरुष, राष्ट्रनायक, राजनायक
Station अवस्थान, स्टेशन
Stationery लेखनसामग्री
Statistical Adviser सांख्यकीय मंत्रणाकार, आंकिक मंत्रणाकार
Statistician सांख्यिक, आंकिक
Statistics सांख्यिकी, आंकिकी, आँकड़े
Status quo यथापूर्व स्थिति
Statute संविधि
Statutory Rationing संविहित राशन-व्यवस्था
Stay-in strike काम न करो हड़ताल
Steering Committee कर्णधार समिति, संचालन समिति
Stenographer आशुलिपिक
Sterilization निष्कीटण; वंध्यीकरण
Sterilized निष्कीटित; वंध्यीकृत
Sterling balance पौंड पावना
Stipend वृत्ति
Stipulation करार, शर्त्त, अभिसंविदा
Stock संचित राशि; अंश पूँजी; राजऋण; स्कंध
Stock exchange सराफा, श्रेष्ठिचत्वर
Stockist स्कांधिक, भांडारिक
Stock register स्कंध-पंजी
Stoic सुखोपेक्षी
Stone-age प्रस्तर-युग
Stop press छपते-छपते
Storekeeper भंडारी, भांडारपाल
Stores भांडार
Straight angle ऋजुकोण
Strata स्तर
Stratagem दाव-घात, छल-बल
Strategic सामरिक महत्त्ववाला
Strategy रणनीति
Stratified स्तरीभूत
Stretcher विस्तरणी
Stretcher bearer विस्तरणीवाहक
Stricture तीव्रालोचना, निंदात्मक अभ्युक्ति
Strike हट्टताल, हड़ताल, कर्मरोधन
Stringency अर्थसंकट
Student's Lodge छात्रनिकेतन
Studio चित्रशाला; रंगशाला
Study अध्ययन; अध्ययन-कक्ष
Study circle अध्ययन-केंद्र
Sub-division उपविभाग; तहसील
Subject matter विषय-वस्तु, वादविषय
Subjects committee विषय-समिति
Subject to confirmation अभिपुष्टि-सापेक्ष
Sub-judice (न्यायालयके) विचाराधीन, अभिनिर्णयाधीन
Subjugation अधीनीकरण, पराभव
Sublet शिकमी देना
Sublimation उन्नयन; ऊर्ध्वपतन

Submarine जलाभ्यंतरवाहिनी नौका, पनडुब्बी, डुबकनी
Subordinate अधीनस्थ, अवर
Subordinate court अधीन न्यायालय
Subordinate officer अधीन (मातहत) अधिकारी
Subordination अधीनता, परवशता
Sub-registrar उपपंजीयक
Subscribe चंदा देना; अनुहस्ताक्षर करना
Subscribed capital प्रार्थित पूँजी, बिकी हुई पूँजी
Subscriber अभिदाता; पत्रादिका ग्राहक, ग्राहक
Subscription अभिदान, चंदा
Subsection उपधारा
Subsequent अनुवर्ती
Subsidiary सहायक, गौण
Subsidiary occupation सहायक आजीविका
Subsidy आर्थिक सहायता
Subsistence-allowance निर्वाह-भत्ता
Subsoil उपभूमि
Substitute स्थानापन्न व्यक्ति या वस्तु
Substitution प्रतिहस्तापन
Sub-tenant शिकमी काश्तकार
Suburb उपनगर
Subvention to religious associations धर्मादा, धर्मार्थ सहायता
Subversive विध्वंसकारी
Succeed दायाधिकारी होना, उत्तराधिकारी (या उत्तरासीन) होना
Succeeding section उत्तरवर्ती धारा
Succession उत्तराधिकार; आनुपूर्व्य; अभंग परंपरा
Succession certificate उत्तराधिकार प्रमाणक
Successive stages उत्तरोत्तर प्रक्रम
Sue मुकदमा दायर करना, व्यवहार लाना
Suffragate मताधिकारका आंदोलन करना
Suffrage, Adult वयस्क मताधिकार
Suffragette मताधिकारके लिए आंदोलन करनेवाली स्त्री
Suit अभियोग, वाद
Suit, Civil व्यवहारवाद, दीवानी मुकदमा
Suit for injunction निरोधाज्ञा-वाद
Summary trial संक्षिप्त विधिक विचार
Summarily dealt with संक्षेपतः निर्णीत
Summon आह्वान, आह्वाय; आह्वानपत्र, आदेशपत्र
Summon a meeting सभा बुलाना
Sunbath आतपस्नान
Super annuation pension वृद्धावस्थाकी (पचपनसाला) पेंशन
Supercede अवक्रम करना, अधिक्रांत करना
Superficial बहिस्पर्शी, ऊपरी, दिखाऊ
Superintendence अधीक्षण
Superintendent अधीक्षक
Superior प्रवर, वरिष्ठ, श्रेष्ठ
Superiority complex अहम्मन्यता, गुरुम्मन्यता
Supernatural आधिदैविक
Super tax अधिकर
Supervise पर्यवेक्षण
Supplement अनुपूरण; अनुपूरक, क्रोडपत्र
Supplementary अनुपूरक
Supplementary examination अनुपूरक परीक्षा
Supplementary question अनुपूरक प्रश्न
Supplemented अनुपूरित
Supplier पूरक, समायोजक
Supply रसद, संभरण, पूर्ति, (उपलब्धि), समायोजन
Supply officer पूर्त्यधिकारी
Supremacy of law विधि-सर्वोच्चता
Supreme authority सर्वोच्च सत्ता
Supreme command सर्वोच्च कमान, सर्वोच्च समादेश
Supreme Court उच्चतम न्यायालय (सर्वोच्च न्यायालय)
Surcharge अधिभार
Surety प्रतिभू
Surety for appearance दर्शन-प्रतिभू
Surface तल; पृष्ठभाग
Surgeon शल्यचिकित्सक, शल्यकार
Surgery शल्यविद्या, शल्य-शास्त्र; शल्यक्रिया, शल्यचिकित्सा
Surgical Instruments Industry शल्योद्योग
Surplus बचत
Surrender value समर्पण-मूल्य
Survey पर्यालोकन; क्षेत्रमाप
Survival बच रहना, अतिजीवन
Survival of the fittest बलिष्ठातिजीवन
Survivor अतिजीवी
Susceptible ग्रहणक्षम
Suspended निलंबित, अनुलंबित
Suspense account अनुलंब खाता, उचंत खाता
Suspension निलंबन, अनुलंबन
Sustained metaphor सांगरूपक
Suzerain अधिराज
Suzerainty अधिराज्य, अधिराजत्व
Symbol प्रतीक
Symbolism प्रतीकवाद
Symmetrical प्रतिसम; सममित
Symmetry प्रतिसाम्य
Syndicalism संघ-समाजवाद
Synonym पर्याय, समानार्थक शब्द
Synopsis सारांश, (परिचयात्मक) रूपरेखा
Synthesis संश्लेषण, समन्वय
Synthetic products बनावटी या रासायनिक वस्तुएँ

T

Table मेज, पटल; तालिका, सूची, सारिणी
Table of contents विषय-सूची
Tableland उच्च समभूमि
Taboo निषेध, वर्जन

Tabulate तालिकाबद्ध करना
Tabulator गणनक; जोड़क
Tacit मौन
Tacit acceptance मौन स्वीकरण
Tactics कार्य-नीति
Take effect प्रभावी होना
Take part सम्मिलित होना
Talk वक्तृता, भाषण, वार्त्ता
Talkie बोलपट, सवाक् चित्र
Tan चमड़ेको सिझाना, चर्मशोधन
Tangent स्पर्श-रेखा
Tanker तैलवाहक जहाज
Tannery चर्मशोधनालय
Tapioca टैपिओका, दक्षिणी मूल
Target लक्ष्य
Tariff प्रशुल्क, तटकर; तटकर-व्यवस्था, प्रशुल्क-सूची, प्रशुल्क-पद्धति
Tariff Board प्रशुल्कमंडल
Taurus वृषराशि
Tax कर
Tax, Calling आजीविका-कर
Tax, Capitation प्रतिव्यक्ति-कर
Tax, Corporation निगम-कर
Tax, Entertainment प्रमोद-कर, मनोरंजन-कर
Tax-free करमुक्त
Tax, Income आयकर
Tax, Impact of कर-संघात
Taxpayer करदाता
Tax, Sales बिक्री-कर
Tax, Terminal सीमा-कर
Tax, Trade व्यापार-कर
Taxable कर-योग्य
Taxidermist चर्मप्रसाधक
Tear gas अश्रुगैस
Technical पारिभाषिक; प्रौद्योगिक; प्राविधिक, पद्धति-संबंधी; विज्ञान और शिल्पसंबंधी
Technical education शिल्प-शिक्षा, प्रौद्योगिक शिक्षा
Technical objection प्राविधिक आपत्ति
Technical point प्राविधिक प्रश्न
Technical training शिल्प-प्रशिक्षण, प्रौद्योगिक प्रशिक्षण
Technical words पारिभाषिक शब्द
Technician प्राविधिज्ञ, शिल्पी, यंत्री
Technique शैली, कार्यपद्धति, विशेष उपाय, यंत्र-चातुर्य, प्राविधि
Technology शिल्पविज्ञान
Teething दंतोद्भेद, दाँत निकलना
Telegraph तार
Telephone दूरवाणी, दूरभाष, टेलीफोन
Telephone exchange दूरवाणी मिलान-केंद्र
Telepinter दूरमुद्रक
Telescope दूरवीक्षण-यंत्र
Televison दूरदर्शनकारी यंत्र
Temperence मद्यनिषेध
Temperate zone समशीतोष्ण कटिबंध
Temperature तापमान
Tempo प्रवेग, प्रगति
Tenancy Act काश्तकारी कानून, कृषिविधान
Tenant किसान; किरायेदार
Tender प्राक्कलन-पत्र
Tender money सत्यंकार, बयाना
Tenet सिद्धांत
Tentative प्रयोगात्मक, परीक्षात्मक
Tenure पदावधि, धारणावधि
Tenure of land भूधारण-अधिकार
Term कार्यकाल; अवधि; सत्र; (बहु व०) शर्तें
Terminal सात्रिक; आंतिक
Terminal tax आंतिक कर; सीमा-कर
Terminal examination सात्रिक परीक्षा
Termination अवसान, परिसमाप्ति
Terminology परिभाषा-संग्रह, पारिभाषिक शब्दावली
Terrestrial telescope पार्थिव दूरबीन
Territorial Army प्रादेशिक सेना
Territorial waters जलप्रांगण, जलीय क्षेत्र
Terrorist आतंकवादी
Testament मृत्युलेख
Testimony प्रमाणित वक्तव्य या कथन, साक्ष्य
Testimonial प्रमाणपत्र
Test-tube परीक्षण-नलिका, परखनली
Text मूलपाठ
Textile वस्त्र
Textile industry वस्त्रोद्योग
Theism आस्तिकवाद
Theocracy धर्मतंत्र
Thumb impression अंगुष्ठ चिह्न
Theoretical सैद्धांतिक
Theory वाद, सिद्धांत
Therapeutics औषधिविज्ञान
Thermometer तापमापक यंत्र
Thesis अधिनिबंध, निबंध
Ticket प्रवेशपत्र; प्रयोगपत्र, टिकट
Tidal waters ज्वार-जल
Time-barred कालतिरोहित, कालातीत
Timebomb नियत समयपर फूटनेवाला बम, सावधिक प्रस्फोट, नियतकालिक प्रस्फोट
Timefuse नियतकालिक पलीता
Timehonoured चिरसम्मानित, चिरमान्य
Time-table समयसूची, समय-सारिणी, वेलापत्रक; समयविभागपत्र
Title हक, स्वत्व; उपाधि; शीर्षनाम

–page मुखपृष्ठ, मलपृष्ठ
Title deed स्वत्व-संलेख
Titular नाममात्रका, नामधारी
Toilet प्रसाधन; प्रसाधन द्रव्य
Token cut प्रतीक कटौती, प्रतीक न्यूनन
Tolls पथकर
Tool उपकरण, औजार
Tonnage जहाजी वजन टनोंमें, नौप्रभार
Topical talk सामयिक वार्त्ता
Topography स्थानवर्णन
Torrid zone उष्ण कटिबंध
Toss सिक्का उछालकर निर्णय, निक्षेप-निर्णय
Total war सर्वस्व युद्ध, सर्वांगिक युद्ध
Totalitarianism एकदलीय शासनतंत्र
Tour दौरा, पर्यटन
Tournament खेलन-प्रतियोगिता
Toxicology विषविज्ञान
Town planning नगरनिर्माण-योजना, नगर-आयोजन
Town-hall नगरभवन
Track चरणपथ, मार्ग
Trade व्यापार
Trade-dispute व्यापारिक विवाद
Trade-mark व्यापार-चिह्न, मार्का
Trade Union व्यवसाय-संघ, श्रमिक-संघ, कार्मिक-संघ
Trade Unionist श्रमिक-संघी
Traffic यातायात, व्यापार;–police यातायात पुलिस
Traffic in human beings मानवपणन, मानव-क्रय-विक्रय, मानव-व्यापार
Traffic Manager परिवहन-व्यवस्थापक
Trainee प्रशिक्षणार्थी
Training प्रशिक्षण
Training of river courses नदी-मार्ग नियंत्रण
Tramway रथ्यायान
Trance समाधि
Tranquillity प्रशांति, अक्षोभ
Transaction लेन-देन करना, व्यवहार, सौदा
Transcription प्रतिलेखन
Transfer हस्तांतरण; स्थानांतरण, तबादला
Transferable परावर्त्यं; हस्तांतरणीय
Transformation रूपांतर; रूपांतरण
Transformed रूपांतरित
Transgression अतिचरण
Transhipment यानांतरण
Transit, goods in संक्रमित माल
Transit pass रवन्ना, निकासी
Transition संक्रमण, संक्रांति
Transitional period संक्रांतिकाल, संक्रमण-काल
Transmigration देशांतर-गमन; देहांतर-प्रवेश
Transmission दूरविक्षेपण, ध्वनिविक्षेपण, संप्रेषण
Transmit संप्रेषित करना
Transmitter दूर-विक्षेपक
Transmitting station दूर-विक्षेपण-केंद्र
Transparent पारदर्शक
Transplantation स्थानांतर रोपण, अन्यस्थान-रोपण
Transport परिवहन; यातायात
Transportation निर्वासन; परिवहन; द्वीपांतरण
Trapesium समलंब चतुर्भुज
Travelling allowance यात्राधिदेय; सफर-भत्ता
Transversal तिर्यग्रेखा (ज्यामिति)
Trawler मछुआ जहाज
Treason राजद्रोह, अभिद्रोह, देशद्रोह
Treasure-trove निखात-निधि
Treasurer कोषाध्यक्ष, खजांची
Treasury कोषागार, खजाना
Treasury-benches सरकारी पीठ, (बेंचें); मंत्रिवर्ग
Treasury-bills राजकोष-विपत्र, खजानेकी हुंडियाँ
Treatise (साहित्यिक) रचना, निबंध, संदर्भ, पुस्तक
Treaty संधि
Treaty obligations संधि-दायित्व
Trend of market बाजारका रुख
Trespass अपचरण, अनधिकार-प्रवेश
Trespass, criminal दंडनीय अनधिकार-प्रवेश
Trial परीक्षा, परीक्षण; (न्यायिक) विचार
Triangle त्रिभुज, त्रिकोण
–, acuteangled न्यूनकोण त्रिभुज
–, equilateral समत्रिबाहु त्रिभुज
–,isosceles समद्विबाहु त्रिभुज
–, obtuse-angled अधिककोण त्रिभुज
–, right-angled समकोण त्रिभुज
–, scalene विषमबाहु त्रिभुज
Tribal areas कबायली क्षेत्र, जनजाति-क्षेत्र
Tribe जनजाति
Tribunal न्यायाधिकरण
Tribune जनाभिवक्ता
Tributory करद राज्य; सहायक नदी
Tricycle त्रिचक्र यान
Triennial त्रैवार्षिकी
Tripartite treaty त्रिदलीय संधि
Triple boycott त्रिविध बहिष्कार
Tropics उष्ण कटिबंध
Trooper अश्वारोही सैनिक
Trophy विजयोपहार
Truce विराम-संधि
Trump card काटका पत्ता; ब्रह्मास्त्र, विजयास्त्र
Trust न्यास, प्रन्यास, ट्रस्ट
Trustee न्यासी, प्रन्यासी
Tube-well नलकूप
Tuber कंदमूल
Tumour अर्बुद
Turbulent उपद्रवी

Turncoat परपक्षग्राही
Turnover समस्त क्रय-विक्रय; पूर्ण बिक्री
Turpitude नीचता, क्षुद्रता
Turret-gun बुर्ज तोप
Tutelage अभिरक्षण
Typed मुद्रलिखित
Type मुद्र, टाइप
Typewriter मुद्रलेखन यंत्र
Typist मुद्रलेखक, टाइप बाबू
Typographical error मुद्रणसंबंधी भूल
Typography मुद्रणकला, मुद्रण-सौंदर्य

U

Ubiquity of the King राजाकी सर्वव्यापकता
U-boat जर्मन पनडुब्बी
Ulcer व्रण
Ulcerated व्रणित
Ultimate अंतिम
Ultimatum अंतिम चेतावनी, अंतिमेत्थम्
Ultimo गतमास
Ultra vires शक्तिपरस्तात्, शक्तिके परे, अधिकार-सीमाके बाहर
Umbra भूछाया, प्रतिच्छाया
Umpire विपंच; खेलपंच
Unanimous सर्वसम्मत
Unattached असंलग्न
Unauthorized अनधिकारिक; अनधिकृत
Unbecoming अशोभन
Unbiased निष्पक्ष
Uncashed अभुक्त
Unclaimed document अस्वामिक लेखपत्र
Uncultivated अकृषित
Under-developed area अर्द्धोन्नत क्षेत्र, न्यूनोन्नत क्षेत्र
Undergraduate level, On स्नातकपूर्व स्तरपर
Underground गुप्त, अंतर्भौम, भूम्यंतर्गत
Underhand गुप्त, प्रच्छन्न, छलयुक्त
Under-nourishment न्यूनपोषण, अल्पपोषण
Under-secretary सहसचिव, अवरसचिव
Unearned अनर्जित
Undertaking वचन; स्वीकृति; हस्तगृहीत व्यवसाय किंवा योजना
Under-trial अभियोगाधीन
Undischarged अनुन्मुक्त
Uneconomic holding अलाभकर जोत
Unemployment बेकारी
Unequivocal असंदिग्ध
Unicameral एक-सदनात्मक
Uniform विपरिधान, समपरिधान
Unilateral एकपक्षीय
Union संघ
Union list संघसूची
Unit टुकड़ी, इकाई, एकक
Unitary एकात्मक
United National Organization संयुक्त राष्ट्रसंघ
Universal Manhood-suffrage व्यापक पुरुष मताधिकार
University Court विश्वविद्यालय सभा
University Senate विश्वविद्यालय प्रबंध-समिति
Unlawful assembly अवैध सभा
Unofficial गैरसरकारी, बेसरकारी
Unopposed निर्विरोध
Unparliamentary असांसद
Unproductive अनुत्पादक
Unredeemed balance अशोधित शेष
Unseat स्थानच्युत करना, अनासीन करना या होना; स्थानवंचित होना
Unseated वि० अनासीन, स्थानवंचित
Unskilled labour अनिपुण या अकुशल श्रमिक
Unsoundness of mind चित्त-विकृति
Unspent balance अव्ययित शेष
Untoward: अभद्र
Unveil अनावरित करना
Unyielding अटल
Upper House उच्च सदन
Upstart सहसोन्नत व्यक्ति; सकृदुन्नत (क्षिप्रोन्नत) व्यक्ति
Uptodate अद्यावधिक
Upward trend ऊर्ध्वगति
Urban नगर संबंधी
Urgent अविलंब्य, (अत्यावश्यक)
Usage रीति
Usance अवधि
Usury सूदखोरी
Utilitarianism उपयोगितावाद
Utility उपयोगिता
Utopia रामराज्य, काल्पनिक स्वर्ग, (स्वप्नलोक)
Utterance उद्गार, उक्ति

V

Vacancy रिक्तता, रिक्ति
Vacancies रिक्तस्थान
Vacation दीर्घावकाश
Vaccination टीका
Vacuam शून्यस्थल, शून्य
Vagrancy आवारागर्दी, आहिंडन; अनिश्चितता
Vague अस्पष्ट, धूमिल, अनिश्चित
Valid मान्य, विध्यनुकूल
Validation वैधीकरण
Validity मान्यता, विध्यनुकूलता
Valuation मूल्यांकन, मूल्यन, मूल्य-निरूपण
Variable capital परावर्तनीय पूँजी

Variation रूपांतर, विकार, घटबढ़
Variegated चित्र-विचित्र
Vassal अधीन सरदार
—state अधीन राज्य
Vehicle चक्रयान
Vein शिरा
Velocity प्रवेग
Venerial disease यौन रोग, रतिज रोग, फिरंगरोग
Venture उपक्रम
Venue स्थल
Venus शुक्र
Verbal alteration शाब्दिक परिवर्तन
Verbatim अक्षरशः
Verdict अन्तिम निर्णय, अभिनिर्णय
Verification सत्यापन, सत्याकरण
Versatile बहुविद्य, (बहुश्रुत); बहुमुखी
Versed निष्णात
Version, Authorized अधिकृत विवरण
Version, Revised पुनरीक्षित पाठ, संशोधित पाठ
Versus विरुद्ध, बनाम
Vertex शीर्ष
Vested interest निहित स्वार्थ
Veterinary doctor पशुचिकित्सक, शालिहोत्री
Veterinary hospital पशु-चिकित्सालय,घोड़ा अस्पताल
Veto, n. प्रतिषेधाधिकार
Veto, v. प्रतिषेधाधिकारका प्रयोग करना
Via media मध्यपथसे
Vice admiral उपनौकाध्यक्ष
Vice-Chairman उपाध्यक्ष
Vice-Chancellor कुलपति
Vice-regent उप-राजसंरक्षक
Vice-president उपराष्ट्रपति; उपसभापति
Vice versa विपर्येण भी, विपरीततः भी, विलोमतः भी, विपरीत क्रमसे भी
Vicious circle अपचक्र, दुश्चक्र, विषमवृत्त
Vicissitude चढ़ाव-उतार, परिवर्तन
Victuals भोजन-सामग्री, अन्न-सामग्री
View point दृष्टिकोण
Vilification मिथ्यारोपण
Village Council ग्रामपरिषद्
Village uplift ग्रामसुधार, ग्रामोत्थान
Vindictive प्रतिहिंसात्मक
Violation उल्लंघन, अतिक्रमण
Virgin soil अकृष्टपूर्वा भूमि
Virgo कन्याराशि
Visa अनुवेशपत्र, द्रष्टांक, देशागमनका अनुमतिपत्र
Visit दर्शनार्थ गमन
Visitor दर्शक, परिदर्शक; दर्शनार्थी; आगंतुक
Vitamin खाद्योज, जीवनतत्त्व, पोषकतत्त्व, विटामिन
Vitality ओज, जीवनशक्ति
Viva voce मौखिक परीक्षा
Valuepayable articles मूल्यादेय वस्तुएँ
Vocal music कंठ-संगीत
Vocation व्यवसाय
Vocational training व्यवसाय-प्रशिक्षण
Voicc, Active कर्तृवाच्य
—Passive कर्मवाच्य
—Impersonal भाववाच्य
Void adj. शून्य, रिक्त; n. रिक्तता
Volatile वाष्पशील; अस्थिर, चंचल
Voluntarily स्वेच्छापूर्वक, स्वेच्छया
Voluntary स्वैच्छिक, स्वेच्छादत्त, स्वेच्छाप्रेरित, स्वेच्छाकृत
Voluntary association स्वेच्छाकृत संयोग
Volunteer स्वयंसेवक
Volunteer corps स्वेच्छा-सैनिक-दल
Votable मतदेय
Vote n. मत; v. मत देना
Vote, Casting निर्णायक मत
Vote, List system of मतकी सूची-प्रणाली
Vote of censure निंदा-प्रस्ताव
Vote of credit प्रत्ययानुदान
Vote on account लेखानुदान
Voter मतदाता
Voter-list मतदाता-सूची
Voucher खर्चका पुरजा, प्रमाणक
Vulnerability जेयता, दुर्बलता, भेद्यता

W

Wage मजदूरी, भृति
Wage, Living निर्वाह-भृति, जीने योग्य मजूरी
Wager बाजी, पण; ठाननेवाला
Wagon मालगाड़ीका डब्बा
Waiting-room प्रतीक्षागृह, प्रतीक्षालय
Waive आग्रह न करना, छोड़ देना
Walkout सभात्याग
Walk over अनायासिक विजय , सरल विजय
Wall Street न्यूयार्कके शेयरबाजारका स्थान
Wanted आवश्यकता है
Want of confidence विश्वासका अभाव
War, Cold ठंढी लड़ाई, "शीत युद्ध"
War-criminals युद्धापराधी
War-efforts युद्धोद्योग, युद्ध-प्रयत्न
War-monger युद्धोत्तेजक, (युद्धपिपासु)
War-mongering युद्धोत्तेजन
War, Offensive आक्रमणात्मक युद्ध
War of attrition धैर्यनाशक युद्ध
War of aggression आक्रमणात्मक युद्ध
War of Independence स्वातंत्र्य-युद्ध
War of liberation मुक्तियुद्ध

War of nerves आतंकयुद्ध, आतंकप्रसार-युद्ध
Ward हल्का, नगरभाग; (कारागृह या चिकित्सालयका) कक्ष, भवनांग; अभिरक्ष्य बालक या बालिका, अभिरक्षित
Ward-master कक्षाधिपाल, छात्रावासादिका संरक्षक
Warden छात्राभिरक्षक; क्षेत्राभिरक्षक
Warder कक्षापाल
Warfare युद्धकार्य
Warrant अधिपत्र
Warship रणपोत, युद्धपोत
Waste land परती भूमि
Wastage छीजन, छीज
Wasting disease क्षयकारी रोग
Watch and ward पहरा और प्रतिपालन (रक्षण)
—police चौकी पुलिस
Watch-word प्रहरी-संकेत; दलसिद्धांत
Water-channel जलप्रणाली
Water-colour जलीय रंग, जलरंग
Water-fall जलप्रपात
Water-proof जिसपर पानीका असर न हो, जलावरोधक, जलवारक
Water-mark श्वेतांक
Water pump जलोत्तोलक यंत्र, जलोद्वहन यंत्र
Watertight compartment सर्वथा पृथक्-पृथक् खंड
Water-works पानीकल,
Waterways जलमार्ग, जलपथ
Wavelength तरंग-दैर्घ्य
Ways and means उपाय और साधन
Weapon शस्त्र
Weather forecast ऋतु-अनुमान
Weather report ऋतु-वृत्तांत, मौसिमका हाल, दिन-विकृति-विवरण
Wedge व्यूहभेद, दरार
Weightage अधिक प्रतिनिधित्व
Welcome address अभिनंदनपत्र
Welfare centre जन-कल्याण-केंद्र
Welfare state कल्याणकारी राज्य, जनहितैषी राज्य
Whale तिमिंगिल
Wharf जहाज घाट
Wheatmeal सूजी
Wheedle फुसलाना
Whereas यतः, चूँकि
Whip सचेतक, चेतक
Whirlwind बवंडर
Whitepaper श्वेतपत्र
White-wash लीपा-पोती, अयथार्थ विवरण देकर अपराध या दोष छिपानेकी चेष्टा
Whole-time officer समग्रकालीन पदाधिकारी
Wholesale थोक, राशिगत
„ trade स्तोमक व्यापार, थोक व्यापार
Wicket यष्टित्रय, यष्टि; खेलाड़ी; धावन-स्थलीकी स्थिति
Wicket-keeper यष्टि-रक्षक
Will इच्छापत्र, वसीयत
Wind-direction हवाका रुख
Winding up समापन
Wing Commander पार्श्वनायक, विमान-सेनाधिकारी
Wireless license नितंत्र-अनुज्ञा
Wireless network बेतार-जाल, नितंत्र-जाल
Wirepullers सूत्र-संचालक
Wit and humour सुभाषित और विनोद
Withdrawl प्रत्याहार
With effect from से लगाकर, से शुरू कर
With retrospective effect विगत अवधिसे, पूर्व-प्रभाव सहित
Withhold consent सहमति रोकना
Women's Auxiliary Service महिला-सहायक-व्यवस्था
Woodapple कैथ
Wording शब्दावली
Wordwar शब्दयुद्ध
Work, Contributional अंशदायी कर्म
Working expenses कार्यसंचालन-व्यय
Working committee कार्यसमिति
Working day कार्यदिवस
Workman's Compensation Act श्रमजीवि-क्षतिपूर्ति अधिनियम
Works कार्यशाला; कृतियाँ
Workshop कर्मशाला, कारखाना
Wreckage भग्नावशेष, ध्वंसावशेष
Writ लेख, निर्देशपत्र, आदेश
Writ certiorari उत्प्रेषण लेख, उत्प्रेषणादेश
Writing लेख, लेखन, लिखावट; ग्रंथ-रचना
Write off बट्टेखाते डालना
Wrong अपकार, अन्याय
Wrongful confinement अवैध कारावास, अवैध निरोधन

X

X-ray क्षकिरण, पारदर्शी किरण

Y

Yankee अमेरिकानिवासी, अमेरिकी
Year-book वर्षबोध, अब्दकोश, अब्द-पुस्तक
Yearly वार्षिक
Yellow peril पीत जातियोंका आतंक, पीतातंक
Yellow press व्यर्थकी बदनामी फैलानेवाले संवादपत्र, प्रोत्तेजक समाचारपत्र
Yeomanry कृषक अश्वदल
Younger कनिष्ठ
Yours faithfully भवन्निष्ठ
Yours obediently भवदनुगत

Yours Sincerely भवदनुरत

Z

Zamindary abolition जमींदारी-उन्मूलन, जमींदारी-समाप्ति
Zenith शीर्षविंदु, ऊर्ध्वविंदु
Zero hour संकटका क्षण; नियुक्त क्षण, निर्धारित क्षण; सुघड़ी, अभियानवेला
Zionism यहूदीवाद
Zodaic भचक्र, राशिचक्र
Zone कटिबंध; क्षेत्र, अंचल
Zone, Demilitarized सेनामुक्त (सेनाविहीन) अंचल
Zone, Neutral निष्पक्ष अंचल
Zoology जंतु-विज्ञान

अवशिष्ट पारिभाषिक शब्द

Air-hostess स्वागतिका
Convassing पक्षप्रचार
Circumlocution वाग्जाल
Corrigendum शुद्धिपत्र
Roaming ambassador पर्यटक राजदूत
Traditionalism परंपरा-पालकता

अनुमाप—पु० (स्केल) मापनेका साधन; (मानचित्रादि बनाते समय) निश्चित दूरीके लिए मानी हुई इकाई, पैमाना।

अनौपचारिक—वि० [सं०] (इनफार्मल) जिसमें निर्धारित नियमों, रीतियो, उपचारों आदिका अनुपालन न किया गया हो, लिहाज़ न रखा गया हो।

अभिनिर्देश—पु० [सं०] (कन्सल्टेशन, रेफरेन्स) किसी शब्दके अर्थ, प्रयोग, स्वरूप आदिके संबंधमें शंका उत्पन्न होनेपर या किसी घटना, व्यक्ति आदिके संबंधमें विशेष जानकारी प्राप्त करनेके लिए किसी कोश या अन्य आकर-ग्रंथको खोलकर उसमें दिये हुए विवरण, व्याख्या आदिसे सहायता लेनेका कार्य।

आनंदमास—पु० [सं०] (हनीमून) (पश्चिममें) विवाह होनेके ठीक बादका लगभग एक मासका वह समय जो वर-वधू द्वारा, प्रायः किसी रमणीक स्थानमें जाकर सैर-सपाटे तथा आनंद-मौजमें बिताया जाता है, 'प्रमोदकाल'।

एकसूत्रीकरण—पु० [सं०] (को-आर्डिनेशन) समान स्तरपर लाने, परस्पर समुचित रूपसे संबद्ध करने आदिका कार्य।

ऐकांतिक समाचार—पु० [सं०] (स्कूप न्यूज) दे० 'स्वाप्त समाचार'।

औपचारिक—वि० [सं०] (फार्मल) जिसमें निर्दिष्ट नियमों, रीतियों या उपचारादिका पालन किया गया हो या जो उनके अनुरूप हो।

कीर्तिमान—पु० [सं०] तैराकी, खेल-कूद आदिमें उत्कृष्टता, कुशलताकी अभिलिखित पराकाष्ठा।

छिद्रयण—पु० (पंचिंग) किसी नुकीली चीजसे छेद कर देनेका कार्य।

जातिसंहार नीति—स्त्री० [सं०] (जेनोसाइड) दे० 'वंश-संहार नीति'।

न्यूनवयस्क—वि० [सं०] (माइनर) दे० 'अवयस्क'।

परंपरा-पालकता—स्त्री० [सं०] (ट्रैडिशनलिज्म) पुरानी परिपाटीको बनाये रखनेकी प्रवृत्ति।

प्रमोदकाल—पु० [सं०] (हनीमून) दे० 'आनंदमास'।

वंशसंहार-नीति—स्त्री० [सं०] (जेनोसाइड) किसी वंश, जाति या संप्रदाय-विशेषके सामूहिक संहार या विनाशकी नीति, जातिसंहार-नीति।

वाग्जाल—पु० [सं०] (सरकमलोक्यूशन) सीधी-सादी बातको टेढ़े-मेढ़े ढंगसे कहना, शब्द-बाहुल्यका प्रयोग कर असली बात छिपा जाना।

संचालन-समिति—स्त्री० [सं०] (स्टीयरिंग कमिटी) दे० 'कर्णधार-समिति'।

सर्वात्मक राष्ट्र—पु० [सं०] (टोटैलिटैरियन स्टेट) वह राष्ट्र या राज्य जहाँ केवल एक ही दल, शासक-दल, का आधिपत्य हो जिसको परिधिमें नागरिकोंका सार्वजनिक जीवन ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता हो।

परिशिष्ट

छूटे हुए अन्य शब्द

अ

अंगारकाडी†–स्त्री० दियासलाई।

अंगारपेटी†–स्त्री० दियासलाईकी डिबिया।

अँगेट–स्त्री० अंगदीप्ति–'एड़ी तें सिखा लौं है अनूठियै अँगेट आछी'–घन०।

अंछ*–स्त्री० अक्षि, आँख (रासो)।

अंजर*–वि० उज्ज्वल।

अंतरद्वंद्व–पु० [सं०] दे० 'अंतर्द्वंद्व'।

अंतरा*–पु० अंतर, बीच–'पारसमें अरु संतमें बड़ो अंतरो जान। वह लोहा कंचन करै यह पुनि आप समान।'

अंमि*–पु० अमृत; अँबिया, आमका छोटा फल।

अंशकालिक–वि० [सं०] थोड़े समयसे, पूरे समयके कुछ भागसे, जिसका संबंध हो (नौकरी, सेवा); किसी काममें पूरा समय न देकर थोड़ा समय लगानेवाला (पार्ट टाइम) (कार्यकर्ता)।

अंषि, अंषी*–स्त्री० आँख, अक्षि।

अकती†–स्त्री० अक्षयतृतीयाका त्योहार (वैशाख-शुक्ला तृतीया) जिस दिन नववधूसे उसकी सखियाँ, नँनद आदि उसके पतिका नाम पूछती हैं या उसे कागजपर लिख देनेका आग्रह करती हैं (बुंदेलखंडका रिवाज),–'तुम नाम लिखावती हो हमपै हम नाम कहा कहो लीजिये जू। ···कवि 'किंचित्' औसर जो अकती सकती नहीं हाँ पर कीजिये जू।'–कवि० कौ०।

अकस*–अ० अकस्मात् (रासो)।

अकि*–अ० अथवा, या फिर–'आगि जरौं अकि पानी परौं'–घन०।

अकिलैनि*–स्त्री० अनन्य प्रेमिका–'कान्ह! परे बहुतायतमैं अकिलैनिकी बेदन जानौ कहा तुम'–घन०।

अक्षरपूजक–वि० [सं०] धार्मिक पुस्तकोंमें लिखी बातोंका अक्षरशः पालन करनेवाला।

अगर*–पु० आगार, घर–'जे संसार-अँधियार अगरमें भये मगनवर'–काव्यांगकौ०।

अगराई*–स्त्री० अग्रता, श्रेष्ठता–'गिरा अगराई गुन-गरिमा-गगन कौं'–घन०।

अगसर–अ० आगे,–'अगसर खेती, अगसर भार, घाघ कहैं ये कबहुँ न हार'–अमर०।

अगाद*–वि० अगाध।

अगिलाई*–स्त्री० अग्निदाह–'जोन्ह नहीं सु नई अगिलाई'–घन०।

अग्ग*–वि०, अ० दे० 'अग्र'।

अग्निकांड–पु० [सं०] आग लगानेकी घटना, आगजनी।

अचाह*–वि० जिसकी चाह करनेवाला कोई न हो–'चाह-आलवाल औ अचाहके कलपतरु'–घन०।

अचिज्ज*–पु० आश्चर्य, अचंभा।

अचौन*–पु० दे० 'अचवन'।

अच्छ*–वि० अच्छा, सुंदर–'मानहु विधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिवे काज'–बि०।

अच्छिर*–पु० अक्षर (रासो)।

अछग*–वि० अछक, अतृप्त।

अजोतर*–वि० स्वच्छंद।

अज्ज*–अ० आज।

अज्जान*–अ० आजानु, घुटनेतक।

अझूना*–पु० आग–'बारि दियौ हियेमैं उद्वेगको अझूनो है'–घन०।

अटक†–स्त्री० जरूरत–'तीसरीकी अटक भी क्या है। तुम्हारे और भैयाके लिए एक ही मछहरी बहुत है'–मृग०।

अटाला†–पु० अट्टालिका, महल।

अठी*–पु० सिपाही, योद्धा (रासो)।

अढ़ना*–अ० क्रि० लगना–'रीझनि भीजे सुधारत स्याम सदा घन आनँद ऐंड़ अढ़ी है'–घन०।

अढ़ी*–वि० स्त्री० करनेवाली; युक्त।

अतिभारित–वि० (ओव्हर-लोडेड) जिसपर उचितसे अधिक भार लाद दिया गया हो।

अतिसंधान–पु० [सं०] (ओव्हर-हिटिंग, ओव्हर-शूटिंग) उचित लक्ष्यसे आगे निशाना लगाना।

अत्त*–वि० आप्त, प्राप्त।

अत्यंतातिशयोक्ति–स्त्री० [सं०] अतिशयोक्तिका एक भेद—जहाँ कारणका आरंभ होनेके पूर्व ही कार्यका हो जाना वर्णित किया जाय।

अथाही†–स्त्री० वसूली, उगाही।

अदब्ब*–पु० दे० 'आदाब'।

अधिवासी किसान–पु० वह किसान जो भूमिधर, सीरदार अथवा काश्तकार शरहमुअइअनसे लगानपर खेत लेकर जोतता है। वह उसे जीवनभर जोतता रह सकता है पर हस्तांतरित नहीं कर सकता।

अधीजना*–अ० क्रि० अधीर होना।

अधोटी†–स्त्री० गाय, भैंस आदिकी खालका आधा दाम जो लाश फेंकनेपर चमारसे लिया जाय।

अननुकूल–वि० [सं०] जो अनुकूल न हो; प्रतिकूल, उलटा।

अननुपालन–पु० (नॉनकम्प्लायेंस) किसी आज्ञा, आदेश

आदिका पालन न करना ।

अनसह*–वि० दे० 'अनसहत' ।

अनिमेखी*–अ० निरंतर ।

अनिस*–अ० अनिश, लगातार, अहर्निश–'कृस्नकथा आनंद-रसायन । गावत अनिस ब्यास द्वैपायन'–घन० ।

अनुपयोगिता–स्त्री० [सं०] उपयोगी न होना, निरर्थकता ।

अनुबंध–पु० [सं०] (कंट्रैक्ट, कंट्रैक्टका फार्म) बंधनपत्र, शर्तनामा,–'लेखकों और प्रकाशकोंके बीच एक आदर्श अनुबंधका मसविदा प्रकाशित किया'–'आज' ।

अनुमानतः(तस्)–अ० [सं०] अनुमानसे ।

अनुरणित–वि० [सं०] प्रतिध्वनित; झंकृत ।

अनेही*–वि० अस्नेही, जो स्नेह न करे ।

अनोट–पु० पैरके अँगूठेका एक आभूषण, अनवट ।

अनौँठा*–वि० अनूठा । [स्त्री० अनौठी] ।

अपछरी*–स्त्री० अप्सरा, देवांगना ।

अपढार*–वि० बेढंगे तरहसे ढलनेवाला–'अस जो अपढार ढरै न ढरै'–घन० ।

अपरस*–वि० अलिप्त, अनासक्त, दूर–'अपरस रहत सनेह तगातें नाहिन मन अनुरागी'–सूर; नीरस ।

अप्पान*–पु० अपान, अपनापन, आत्मज्ञान ।

अफनाना–अ० क्रि० ऊब उठना, घबराना, साँस रुकने जैसा अनुभव होना; दे० मूलमें ।

अबर*–वि० अपर, अन्य ।

अभिनै*–पु० दे० 'अभिनय' ।

अभिरक्ष्य–पु० [सं०] (वार्ड) दे० 'प्रपन्न' ।

अमग्ग*–पु० अमार्ग, कुपथ ।

अमरभनित*–पु० देववाणी ।

अमली–वि० दे० मूलमें । **मु०** –**जामा पहनाना**–कार्यरूप देना, कार्यमे परिणत करना ।

अमिलताई*–स्त्री० अम्लता, खटाई; कपट, दूर-दूर रहनेका स्वभाव–'मिलत न क्यों हूँ भरे रावरी अमिलताई'–घन० ।

अमीच*–अ० बिना मृत्युके ही–'सुख या दुख-बीच अमीच मरै'–घन० ।

अमूमन्–अ० अनुमानतः; बहुत करके ।

अमैँड*–वि० मर्यादारहित ।

अमैँडई*–स्त्री० शरारत ।

अमैँडा*–वि० मर्यादा न माननेवाला–'आपनो आनन जान अमैँडे'–घन० ।

अरबरानि*–स्त्री० घबराहट, हड़बड़ी–'लोचैं वही मूरति अरबरानि आवरें'–घन० ।

अरबीला*–वि० अड़ियल, अड़नेवाला–'घूमत घुरत अरबीले न मुरत'–घन०; दे० मूलमें ।

अरीझना*–अ० क्रि० उलझना, बँध जाना ।

अरुट्ठ*–वि० रुष्ट, जो रूठ गया हो ।

अरुणाभ–वि० [सं०] लाल आभायुक्त, लालिमा लिये हुए ।

अरैल*–वि० दे० 'अड़ियल' ।

अर्थगर्भ–वि० [सं०] अर्थपूर्ण, जिसमें विशिष्ट अर्थ निहित हो ।

अर्द्धांगी(गिन्)–पु० [सं०] पक्षाघातका रोगी, वह जिसे लकवा मार गया हो; दे० मूलमें ।

अलकलड़ा*–वि० दे० 'अलकलड़ैता' ।

अलल्ल*–पु० घोड़ा (रासो) ।

अलानाहक†–अ० नाहक, व्यर्थ ।

अलेख*–पु० अदृश्य, निराकार ब्रह्म–'भूल्यौ कहा तू अलेखहि लेखि लै'–घन०; देवता–'सितासित अरुनारे पानिपके राखिबेकों तीरथके पति हैं अलेख लखि हारे हैं'–दास ।

अल्पजनतंत्र–पु० [सं०] थोड़ेसे लोगों द्वारा शासित राज्य ।

अल्लोल*–वि० लोल, चंचल ।

अवक्षयकोष–पु० [सं०] (डिप्रीशियेशन फंड) दे० 'मूल्य-ह्रास कोष' (घिसाई कोष) ।

अवगरा*–वि० सूझबूझवाला ।

अवगरी*–वि० स्त्री० बुद्धिमती ।

अवगहना*–स० क्रि० थहाना ।

अवधनरेश–पु० [सं०] दे० 'अवधेश' ।

अवधारना–स० क्रि० दे० मूलमें; मानना–'उपजै जहँ जिय दुष्टता सु असूया अवधारु'–भाव० ।

अवसन–वि० [सं०] वस्त्रहीन, विवस्त्र ।

अवसरवादिता–स्त्री० [सं०] अवसरसे लाभ उठानेकी प्रवृत्ति ।

अशोभक–पु० [सं०] माणिक्यका एक दोष, दे० 'लहसुन'।

असरार–वि० बेहोश–'कैसो कहि कहि कूकिये ना सोइये असरार'–साखी ।

असाडा*–सर्व० हमारा–'आनँद-जीवन ज्या न असाडी ज्यारिया'–घन० ।

असानूँ*–सर्व० हमको ।

असार*–पु० असवार, सवार ।

अस्तप्राय–वि० [सं०] डूबता हुआ; मरता हुआ–'किनारे-पर पड़े हुए अस्तप्राय सुअरको देखने लगा'–मृग० ।

अस्थिर*–वि० स्थिर ।

अहप्पति*–पु० अहिपति, शेषनाग ।

अहागति*–स्त्री० आनंदकी स्थिति ।

अहियान*–पु० शेषशायी विष्णु । –**पदी**–स्त्री० (विष्णुके पदसे उद्भूत) गंगा–'देवनदी अहियानपदी महिमान बदी स्तुति साखि बिसेखी'–घन० ।

अहुराना*–स० क्रि० खींच देना, हटा देना–'फिरि फिरि पट तानैं तऊ बहुरथौं अहुराऊँ'–घन० ।

अहुरि-बहुरि*–अ० अहुर-बहुरकर, किसी प्रकार बचकर ।

आ

आंकिक–पु० [सं०] (स्टेटिशियन) सांख्यिक ।

आँस†–स्त्री० मूछोंका आरंभिक रूप, रोमावलीकी हलकी-सी रेखा, मस–'अटल युवक था । आँसें भीग चुकी थीं'–मृग० ।

आँसना†–अ० क्रि० खटकना, गड़ना, चुभना ।

आँह*–अ० भरोसे–'रह्यो न काम कछू काहू सों पालत आस रावरी आँह'–घन० ।

आकाशवाणी–स्त्री० [सं०] रेडियो द्वारा प्रसारित वाणी। –**केंद्र**–पु० वह स्थान जहाँसे रेडियो द्वारा वार्त्ता, समाचार, संगीत आदि प्रसारित किया जाय।

आगजनी–स्त्री० उपद्रवकारियों द्वारा घर, दूकान आदिमें आग लगा देनेका कार्य।

आगपेटी–स्त्री० दियासलाईकी डिबिया।

आगौ*–वि० अग्रगण्य, बढ़ा हुआ–'जान कहाय अजाननि आगौ'–घन०।

आजना*–स० क्रि० बिछाना–'पदकमय मंडल मनोहर मृदुल आसन आजि'–घन०।

आढ़ौ*–अ० बीचमें।

आत्मतृप्त–वि० [सं०] जो अपने आपमें संतुष्ट हो।

आत्मतृप्ति–स्त्री० [सं०] अपनी अंतरात्माका संतोष, आत्मसन्तोष।

आत्मसंतोष–पु० [सं०] आत्मतृप्ति, आत्मतुष्टि।

आदित*–पु० आदित्य, सूर्य।

आनबान–स्त्री० प्रतिष्ठा, मर्यादा; दे० मूलमें।

आपचारना*–अ० क्रि० मनमानी करना–'कै बिसासी आपचारचौ'–घन०।

आब्रत*–पु० दे० 'आवर्त'।

आमरू–पु० वह श्मशान जहाँ मृत व्यक्तियोंके शरीर कौओं, गिद्धों आदिके खानेके लिए यों ही फेंक दिये जाते हैं।

आमोदयात्रा–स्त्री० [सं०] (ट्रिप) आनंदके लिए, मन बहलानेके लिए की गयी छोटी-सी यात्रा।

आरति*–स्त्री० लालसा–'मोहन सोँह न जोहनकी लगियै रहै आँखिनके उर आरति'–घन०।

आर्त्तिनाशन–पु० [सं०] क्लेश दूर करना, कष्ट-निवारण। वि० कष्टनिवारक।

आलमपनाह–पु० जहाँपनाह, बादशाह आदिका संबोधन।

आवरा†–पु० आवरण, खोल, गिलाफ; ढकनेवाली चादर।* वि० शिथिल, दीन, व्याकुल। [स्त्री० 'आवरी'।] –'मोहमैं आवरी ह्वै बुधि बावरी'–घन०।

आवर्तनी–स्त्री० दोहरानेकी क्रिया।

आवस*–स्त्री० ऊमस, औंस (भाप ?)।

आसिष्य*–पु० आशीष, आशीर्वाद।

आसेतुहिमाचल–वि० [सं०] सेतुबंध रामेश्वरसे हिमालयतक विस्तीर्ण (भारत, राज्य)।

आहि*–अ० क्रि० है–'जानैको आहि बसै केहि ग्रामा'– –सुदामा०।

इ

इंद्रथ:*–स्त्री० इंद्रिय।

इंसान–पु० दे० 'इनसान'।

इक़बाली गवाह–पु० अपराधि-साक्षी या राज-साक्षी।

इकसार*–अ० समान ढंगसे।

इकौसैँ*–अ० अकेले, एकांतमें।

इग्यारी*–स्त्री० अगियारी; अग्न्याधान; आरती।

इछु*–वि० इच्छुक।

इत्थूँ*–अ० यहाँ।

इमरतीचाल, इमरतीदार–वि० इमरतीके ढंगकी बनावटवाला।

ई

ईक्ष्यवाचक–पु० [सं०] (प्रूफरीडर) दे० 'शोध्य शोधक'।

ईश्वरीय–वि० [सं०] ईश्वर द्वारा किया गया, दिया गया या भेजा गया; दे० मूलमें।

उ

उकताहट–स्त्री० अधीरता, जल्दबाजी–'घर जानेकी उकताहटमें थे'–अमर०।

उकलाना*–अ० क्रि० अकुलाना, व्याकुल होना–'आवण कह गये अजहुँ न आये जिवड़ो अति उकलावै'–मीरा।

उखनींद*–स्त्री० उखड़ी, उचटी नींद।

उगचना*–अ० क्रि० बढ़ना।

उग्गार*–पु० उद्गार, वमन; विचार या भावकी अभिव्यक्ति।

उझिल*–स्त्री० उमड़ाव–'रूपकी उझिल आछे आननपै नयी नयी'–घन०।

उड़नतश्तरी–स्त्री०, **उड़नथाल**–पु० उड़नेवाली तश्तरी जैसा एक आधुनिक युद्धोपकरण।

उडीकना*–स० क्रि० प्रतीक्षा करना।

उतू*–पु० बेलबूटा निकालनेका औजार; बेलबूटा; बुनावट।

उत्कर्णता–स्त्री० [सं०] सुननेकी उत्सुकता–'वाक्य सुननेकी हुई उत्कर्णता'–साकेत।

उत्तमंग*–पु० उत्तमांग, सिर।

उत्तरप्रदेश–पु० [सं०] दिल्ली पंजाब और बिहारके बीचका प्रदेश जिसे ब्रिटिश शासनकालमें संयुक्तप्रांत कहते थे।

उथराई*–स्त्री० उठान–'नैननि बोरति रूपके भौंर अचंभे भरी छतिया उथराई'–घन०।

उथराना*–अ० क्रि० किंचित् उठना, उन्नत होना।

उदियाना*–अ० क्रि० व्याकुल होना, परेशान होना, थक जाना।

उद्रपात्र*–पु० उदरपात्र; वह व्यक्ति जिसके पास उदरके सिवा और कोई बरतन न हो।

उनचालीस–†–वि०, पु० दे० 'उनतालीस'।

उनतालीस–वि० एक कम चालीस। पु० ३९की संख्या।

उनमनी*–स्त्री० दे० 'उन्मनी'।

उनारी†–स्त्री० दे० 'उन्हारी'।

उन्हारी†–स्त्री० चैतमें तैयार होनेवाली फसल, चैती, रबी (बुंदेल०)।

उपदेष्टा(ष्टृ)–पु० [सं०] दे० 'उपदेशक'।

उपनेत*–वि० उत्पन्न–'कीनी नेम-धरम-कहानी उपनेत है'–घन०।

उपासी*–वि० उपासक।

उबटबटा*–पु० उद्वर्त्म, ऊबड़खाबड़ रास्ता; गलत रास्ता, कुपंथ।

उबटा–† पु० रास्तेमें उभड़े हुए छोटे पत्थरसे लगनेवाली पाँवकी चोट, ठोकर; धक्का, आघात।

उम्भौ*–वि० उभय, दोनों ।

उमड़ाव–पु० उमड़नेका भाव या क्रिया ।

उमसे*–अ० उन्मन भावसे (रासो) ।

उरझेरी*–स्त्री० हृदयकी व्याकुलता ।

उरमंडन*–पु० प्रियतम (हृदयका आभूषण)–'गाढ़े भुजदंडनके बीच उरमंडन कों धारि…'–घन० ।

उररना*–अ० क्रि० उमंगित होना ।

उर्वर–वि० जिससे बहुतसे विचार, सुझाव आदि निकलें (–मस्तिष्क) ।

उलटवाँसी–स्त्री० कवितामें ऐसी उक्ति जिसमें सामान्यसे उलटी बात कही गयी हो ।

उलाहू*–पु० उछाह, उल्लास, उमंग–'मिले मग आनि अनेक उलाहू'–घन० ।

उसवास†–पु० प्रवेग, प्रवृत्ति ।

उसार–† स्त्री० कामधंधा, सेवा, पशुओंका गोबर आदि हटाकर सफाई करना–'समय कम है । ढोरोंकी उसार करनी है'–मृग० ।

उहट*–स्त्री० उचाट, ऊब जानेकी क्रिया–'अति रसमगन उहट नहिं मानत कबहुँ होति हाहा मनवारी'–घन० ।

उही*–सर्व० दे० 'उहै' ।

ऊ

ऊक*–अ० आगेकी ओर, मुँहके बल ।

ऊखिल*–वि० अनजान, पराया–'ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरिनमें'–घन० ।–ताई–स्त्री० परायापन ।

ऊठ*–स्त्री० उठान–'घूघरिवारियै ऊठ उमैंठी'–घन०; दीप्ति–'मुखकी ऊठ औरई कछु अंतरको रस बांहिर छलक्यौ'–घन०; उमंग–'रिस-रूसनैं रूखियै ऊठ अनूठियै'–घन० ।

ऊवना†–अ० क्रि० सुशोभित होना, शोभा पाना–'गहने पहिने रहो । कुँवर साहब भी तो देख लें, कैसी ऊब रही हो'–मृग० ।

ऊबनी†–स्त्री० (कन्यापक्षके) द्वारकी शोभा बढ़ानेकी रस्म, द्वारचार (बुंदेल०) ।

ऊभा*–वि० खड़ा ।

ऊमटना*–अ० क्रि० उमड़ना–'काली पीली घटा ऊमटी बरस्यौ एक घरी'–मीरा ।

ऊरस*–वि० दे० 'उरस' ।

ऊसीजना*–अ० क्रि० उसनना, सीझना–'अंग उसीजै उदेगकी आवस'–घन० ।

ऋ

ऋतुरौन*–पु० ऋतुरमण, वसंत–'गावत कोकिल रँगभरे, धावत छवि ऋतुरौन'–काव्यांगकौ० ।

ऋतुवती*–वि० स्त्री० रजस्वला, ऋतुमती ।

ए

एन, ऐन†–पु० गायका थन ।

ऐ

ऐंचा†–वि० तिरछा, दूसरी तरफ खिंचा हुआ (ऐंची आँख) ।

ऐ परि*–अ० फिर भी–'ऐ परि यों मरियैगो मसोसनि'–घन० ।

ऐराक*–पु० इराक देशका घोड़ा ।

ऐहिकतापरक–वि० [सं०] (सेक्यूलर) जिसका संबंध सांसारिक बातोंसे हो ।

ओ

ओगण*–पु० अवगुण–'म्हाँमें ओगण घणा छै हो प्रभुजी थे ही सतो तो सहो'–मीरा ।

ओछना*–स० क्रि० पोंछना, साफ कर देना–'ललित कपोलनि ओछैंऊ पाछैं लाली लसति सुहाई है'–घन० ।

ओटपाय*–पु० उपद्रव–'कैसे गनै बनै जे ऽन ओटपाय तबके'–घन० ।

ओलंदेजी–वि० हालैंड देशका ।

ओषजन–पु० 'आक्सिजन' नामक गैस जिसके योगसे पानी बनता है ।

औ

औँघाई–स्त्री० उँघाई, झपकी, नींद ।

औँड़ना*–अ० क्रि० उमड़ना, बढ़ना, उमड़ना ।

औँस*–स्त्री० ऊमस ।

औघूरना*–अ० क्रि० घूमना–'घर लागै औघूरि कहे मन कहा बँधावै'–सूर ।

औटपाई*–स्त्री० दे० 'ओठपाय' ।

औठैँ*–अ० वहाँ–'म्हानै तौ थारी औलू सतावै थे औठैँ बिलमाया'–घन० ।

औलू*–स्त्री० विरहकी स्मृति ।

औषदि*–स्त्री० दे० 'औषधि' ।

क

कंतरि*–पु० कांतार, वन ।

कंतार*–पु० कांतार, वन, जंगल ।

कंदरिया†–स्त्री० जड़, मूल ।

कंदू*–पु० कीचड़–'अगनि जु लागी नीरमें कंदू जलिया झारि'–साखी ।

कंद्रप*–पु० कंदर्प, कामदेव ।

कंपोटर†–पु० कंपाउंडर, मलहम-पट्टी करनेवाला या दवा तैयार कर देनेवाला डाक्टरका सहायक ।

कंमोद*–पु० कुमुद ।

कंसकड़ोरन†–स्त्री० सिरके बाल पकड़कर घसीटना–'दारी, झोंटा पकड़कर कंसकड़ोरन करूँगी बहुत मुँह चलाया तो'–अमर० ।

कग्ग*–पु० काग, काक, कौआ ।

कग्गद*–पु० कागद, कागज; पत्र, चिट्ठी ।

कचक†–स्त्री० कुचल जाने, दब जानेकी चोट ।

कच्चा–वि० दे० मूलमें । मु० कच्ची गोलियाँ खेलना–बेवकूफीमें समय बिताना ।

कछना*–स० क्रि० पहनना, धारण करना ।

कटाली*–स्त्री० कटारी, काटनेवाली ।

कटिस्नान–पु० [सं०] टबमें बैठकर किया जानेवाला एक तरहका स्नान जिसमें केवल कटि तथा पेड़ूका भाग पानीमें डुबाया जाता है, शेष भाग पानीकी सतहसे ऊपर रहता है (प्राकृतिक चिकित्सा) ।

कठण*–वि० कठिन, विकट–'लागी सो ही जाणै कठण लगण दी पीर'–मीरा ।

कठतार*–पु० दे० 'कठताल' ।

कठप्रेम*–पु० प्रियके उदासीन रहनेपर भी उससे किया जानेवाला प्रेम–'नेह कथैं सठनीर मथैं हठकै कठप्रेमको नेम निबाहैं'–घन० ।

कत्तिन–स्त्री० सूत कातनेका काम करनेवाली स्त्री ।

कत्ती–पु० सूत कातनेवाला ।

कथकाली, कथाकाली–स्त्री० नृत्यकी एक विशिष्ट शैली ।

कदन*–पु० कष्ट, पीड़ा–'अब पिय कपट न करियै हरियै कदनकों'–घन०; दे० मूलमें ।

कदी*–अ० कभी, कधी ।

कद्दव–पु० कर्दम, कीचड़ ।

कनव्रत*–पु० कण चुननेकी आदत ।

कनय*–पु० कनिक, आटा; दे० मूलमें ।

कनसुई–स्त्री० गोबरकी गौर फेंककर सगुन विचारना ।

कनौड़*–पु० संकोच ।

कनौड़ना*–अ० क्रि० दबना–'काहूकी कानि कनौड़त कै कों'–घन० ।

कपित्थपत्रक–पु०, **कपित्थपर्णी**–स्त्री० [सं०] एक क्षुप, स्वरसा ।

कपोतनी*–स्त्री० कपोती, कबूतरी–'करमें विकल कपोतनी, तरुपै विकल कपोत'–'माधुरी' पत्रिका ।

करछौंह–पु० हलका काला रंग ।

करतली*–स्त्री० कैंची, कतरनी–'निसि बासर मग करतली लिये काल कर वाहि । कागद सम भइ आयु तव, छिन-छिन कतरत ताहि'–ध्रुवदास ।

करधौनी†–स्त्री० दे० 'करधनी' ।

करिहाँ, करिहाँउँ*–स्त्री० कटि, कमर–'कै गयी काटि करेजनिके कतरे-कतरे पतरे करिहाँकी'–पद्माकर;–'नलिन खंड दुइ तस करिहाँउँ'–प० ४०१ ।

करिहैयाँ*–स्त्री० दे० 'करिहाँ' (पूर्ण०) ।

करूर*–वि० क्रूर, कठोर, निष्ठुर ।

कलमुँडी†–स्त्री० कलैया (कलमुँडी खाकर–'गद्यभारती') ।

कलामुख–पु० चंद्रमा (दास०) ।

कलाही–†स्त्री० कलाई, पहुँचेका निचला भाग ।

कलोल–स्त्री० लहर, तरंग–'सूर यह सुख गोप-गोपी पियत अमृत कलोल'–सूर ।

कल्लिय*–स्त्री० कली, पुष्पकलिका ।

कल्लोलिनी–वि० स्त्री० [सं०] कल्लोल, क्रीड़ा करनेवाली, कलकल ध्वनि करनेवाली–'इस प्यारी नदीकी कल्लोलिनी धारको अपने पास रक्खूँ'–मृग० ।

कवनी*–वि० कमनीय, सुंदर ।

कसीसना*–स० क्रि० खींचना–'साँस हियें न समाय सकोचनि हाय इते पर बान कसीसत'–घन० ।

कसुंभ*–पु० कुसुंभी रंग ।

कांती–स्त्री० एक प्रकारका घटिया लोहा जिसमें मिट्टीकी मिलावट होती है, जो रेलिंग, कड़ाही आदि बनानेके काम आता है ।

काँवरी*–स्त्री० दे० 'कामरी' ।

काई*–अ० काऊ, कभी–'सूरदास ऐसे अलि जगमें तिनकी गति नहि काई'–सूर ।

काछैँ*–अ० दे० 'काछे' ।

कानीहौद–स्त्री० दे० 'कांजीहाउस' (पशु-बंदीगृह) ।

काफ़िर–पु० [अ०] मुसलिम धर्मको न माननेवाला; दे० मूलमें ।

कामदार†–पु० जायदादका प्रबंध करनेवाला अधिकारी–'कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब करूँ दरबार' –मीरा ।

कामदुह*–वि० दे० 'कामदुघ' ।

कार्यवाही(हिन्)–वि०, पु० [सं०] कार्यका भार उठानेवाला ।

कार्याध्यक्ष–पु० [सं०] नगरपालिकाका वह प्रधानाधिकारी जो प्रशासन-संबंधी कार्योंकी देख रेख करता है ।

काला कानून–पु० लोकमतके विरुद्ध बनाया गया कानून (ब्रिटिश शासनकालका आर्डिनैंस) ।

काली*–पु० कालिय नाग ।

काष्ठौषधि–स्त्री० [सं०] जड़ी-बूटी जो दवाके काममें प्रयुक्त हो ।

किंमति*–स्त्री० दे० 'कीमत' ।

किनर-मिनर†–स्त्री० नाक-भौं सिकोड़ने, हीला-हवाला करनेका भाव या ध्वनि–'अन्न देनेमें वे किनर-मिनर कर रहे थे'–मृग० ।

किन्नर–पु० गाने-बजानेवाली एक जाति ।

किमखाब–पु० 'कमख्वाब' ।

किरचा*–पु० दे० 'किरच' ।

किरना*–अ० क्रि० विमुख होना–'अब तौ ऐसियै जिय आई प्रीतमके पनतें क्यौं किरिहौं'–घन०; कष्ट सहना–'मन बुधि चित अहँकार एक तुम करहु कृपा कितहूँ न किरौं'–घन० ।

किलपना†–अ० क्रि० बिलख-बिलखकर रोना, विलाप करना, हाय-हाय करना, छटपटाना, कलपना, भीतर ही भीतर व्याकुल होना (अमर०) ।

किलोर*–स्त्री० किलोल, कल्लोल, लहर ।

किलोवाट–पु० [अं०] बिजलीका परिमाण जो १००० वाटके बराबर होता है ।

किल्विषी(षिन्)–वि० [सं०] पापी; दोषयुक्त ।

कीचर*–पु० दे० 'कीचड़'–आँखिन बरौनिनमें कीचर छपानो है'–वेनी ।

कीरतिदा*–स्त्री० यशोदा ।

कुंजरमनि*–पु० गजमुक्ता–'कुंजरमनि कंठा कलित उरन्ह तुलसिका माल'–मीरा ।

कुंजा*–पु० क्रौंच पक्षी–'अंबर कुंजाँ कुरलियाँ गरज भरे सब ताल'–साखी ।

कुंठा–स्त्री० चिढ़, क्रोध–'अपनी कुंठा उतार रही थी' ।

कुंडलित–वि० [सं०] चक्करके रूपमें लपेटा हुआ ।

कुक्कड़ी*–स्त्री० मुर्गी (कबीर); दे० मूलमें ।

कुचिया†–स्त्री० छोटी टिकिया; कम बढ़ायी हुई रोटी ।

कुची†–स्त्री० कूची, ब्रश; कुंजी–'ज्ञान कपाट कुची जनु खोलत'–राम० ।

कुचील*–वि० मैला, गंदा–'बसन कुचील, चिहुर लपटाने, देह पीतांबर बरनी'–सूर।

कुज्जा†–पु० पुरवा, मिट्टीका प्याला जैसा पात्र (कबीर), दे० मूलमें।

कुटनई†–स्त्री० कुटनपन, कुटनीका कार्य।

कुटवार†–पु० गाँवका चौकीदार, (कोट्टपाल, कोतवाल), गोड़इत।

कुटवाल*–पु० कोट्टपाल, कोतवाल।

कुडिया*–स्त्री० टोपी।

कुढ़–स्त्री० कुढ़न, खीझ।

कुत्ता–पु० खटका (तालेका कुत्ता)।

कुपच†–पु० अपच, अजीर्ण।

कुबील*–वि० ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा–'राज पंथते टारि बतावत उरझ कुबील कुपैंडो'–सूर।

कुम्हैडा*–पु० कुम्हड़ा–'सूरजदास समाय कहाँ लौं अजके बदन कुम्हैडो'–सूर।

कुरुखि–स्त्री० तिरछी चितवन, कटाक्ष–'बार बार अवलोकि कुरुखियन कपट नेह मन हरत हमारे'–सूर।

कुरुरना*–अ० क्रि० पक्षियोंका बोलना–'मोरे अँगनवाँ चननकर गछिया ताहि चढ़ काग कुरुरयेरे'–विद्या०।

कुलंग†–स्त्री० छलांग।

कुलरा*–पु० कुटुंब, परिवार–'यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा नाती'–मीरा।

कुलाच–स्त्री० कलैया, सिर नीचे, पाँव ऊपर कर उलट जाना–'नटिनी कुलाचें खाने लगी'–मृग०।

कुलिया†–स्त्री० तंग गली, कोलिया।

कुलिस*–पु० वज्र; हीरा।

कुल्ला–पु० एक तरहकी ऊँची या कटोरानुमा टोपी (शेखर०)।

कुल्हरा†–पु० लकड़ी काटने, फाड़नेका औजार, कुल्हाड़ा, टाँगा।

कुल्हरी†–स्त्री० छोटा कुल्हाड़ा, टाँगी।

कुसर*–स्त्री० दे० 'कुशल'।

कुसरात*–स्त्री० 'कुसलात'।

कुसी*–स्त्री० खुशी, आनंद (मीरा)।

कुह*–पु० अंधकार।

कुहकुहाना–अ० क्रि० कोयलका बोलना, कूकना–'कुहकुहाय आये बसंत ऋतु अंत मिलै कुल अपने जाय'–सूर।

कूकस–पु० भूसी–'कूकसके कूटे कहूँ निकसत कन है' सुंद०।

केशकर्तनालय–पु० [सं०] (हेयर कटिंग हाउस) सिरके बाल कटवानेकी दुकान।

कैदु*–अ० कदाचित्।

कोकहर–पु० चंद्रमा।

कोथली*–स्त्री० कोठरी।

कोरदार–वि० किनारदार; नुकीला।

कोरिया*–स्त्री० झोपड़ी–'ढूँढ़ि फिरे घर कोउ न बतावै स्वपच कोरिया लों'–सूर; दे० मूलमें।

कोरी–स्त्री० कोड़ी, बीसका समूह।

कौमार्य–पु० [सं०] कौमार, कुँवारापन; (प्रायः अविवाहित लड़कीके संबंधमें प्रयुक्त)। मु०–भंग करना–किसी लड़की या अक्षतयोनि महिलासे प्रथम बार समागम करना।

क्रद्दम*–पु० कर्दम, कीचड़; कष्ट, विपत्ति।

क्रीत*–स्त्री० कीर्ति, यश–'हौं कहा कहौं सूरके प्रभुकी निगम कहत जाकी क्रीत'–सूर।

क्रीलना*–अ० क्रि० क्रीड़ा करना।

क्रीला*–स्त्री० क्रीड़ा–'जा बनमें क्रीला करी, दाझत है बन सोइ'–साखी।

क्षुरी–स्त्री० [सं०] छुरी, क्षुरिका।

ख

खँगार–पु० एक जाति।

खँगोरिया†–स्त्री० (दरिद्र ग्रामीणोंके पहननेकी) चाँदीकी हँसुली।

खँडरू–पु० फर्शपर बिछानेका कपड़ा, जाजिम।

खंडवर्षा–स्त्री० [सं०] वह वर्षा जो नगरादिके एक भागमें हो, दूसरेमें न हो।

खँडहल†–पु० दे० 'खँडहर'।

खखरिया†–स्त्री० एक नमकीन पकवान जो पापड़ जैसा होता है।

खखेना*–स० क्रि० दे० 'खखेटना'।

खगमगी*–स्त्री० धँसन।

खजमजाना–अ० क्रि० (तबीयतका) कुछ अस्त-व्यस्त-सा होना, अस्वस्थता जैसी प्रतीति होना।

ख़बरनवीस–पु० [फ़ा०] समाचार लिखनेवाला कर्मचारी।

ख़ब्तुलहवास–वि० (ऐबसेंटमाइंडेड) जिसके होश-हवास ठिकाने न हों; जिसका ध्यान किसी दूसरी ओर हो।

खर–वि० खरा, ज्यादा सिंका हुआ (सेंवरका उलटा)।

खरहरी–वि० स्त्री० (खाट) जिसपर कोई कपड़ा आदि न बिछाया गया हो ('निखहर')–'नींद न जाने खरहरी खाट'।

खरी*–वि० स्त्री० उत्कट–'खरी अभिलाषनि सुजान पिय भेटिहौं'–घन०; दे० मूलमें।

खल नायक–पु० [सं०] (विलेन) नाटक या उपन्यासके मुख्य नायकका वह प्रतिद्वंद्वी जो उसकी लक्ष्य-प्राप्तिमें बाधाएँ उपस्थित करता रहता है और जो दुष्प्रवृत्तियोंका प्रतीक होता है।

खाँद†–पु० पदचिह्न, जानवरके खुर आदिके निशान–'जानवरोंके खाँद तो मिलते हैं, पर दिखलाई पूँछतक नहीं पड़ती'–मृग०।

खाकसाही*–स्त्री० काली राख, छार (भू०)।

खाद्यनलिका–स्त्री० [सं०] (एलिमेंटरी कैनाल) दे० 'पोषिका'।

खिंड जाना†–अ० क्रि० छितरा जाना, बिखर जाना; बह जाना।

खिआल†–पु० हँसी, मजाक, खियाल।

खियरानि*–स्त्री० खेदभरी स्थिति।

खिलवती*–पु० घनिष्ठ मित्र।

खिवना*–अ० क्रि० चमकना–'बिजुरी-सी खिवैं इकलौ छतियाँ'–घन०।

खिसना*–अ० क्रि० टपक पड़ना; खिसक जाना, चला-

जाना (सूर)।

खिसारा†–वि० खीसोंवाला (जंगली सुअर)।

खिसौंहा*–वि० लज्जित सा; खिसियाया हुआ या क्रुद्ध-सा।

खीली†–स्त्री० पानका बीड़ा।

खीसना*–स० क्रि० नष्ट करना–'तुमहीं जु दीसि परी सोई देखौ पनहिं न खीसत हौ'–घन०।

खुरखुर–स्त्री० साँस लेते समय, कफ आदि रहनेके कारण, होनेवाली आवाज, घरघराहट।

खुसफुसाना†–अ० क्रि० दे० 'फुसफुसाना'।

खेवइया*–पु० दे० 'खेवैया'।

खोँच*–पु० झोली, कोँछ।

खोपनि*–स्त्री० फटना–'हिय-खोपनि पोपनि कोंपनि झालरि'–घन०।

खौरना*–स० क्रि० छेड़छाड़ करना–'मोही सों जबतब खौरत हौ सब मिलि करैं चवाव'–घन०।

खौरी*–वि० स्त्री० कष्टदायिनी, बुरी–'यह बैरिनि बँसुरिया अति ही खौरी है'–घन०।

ग

गटकीला–वि० निगल जानेवाला, खा जानेवाला।

गटा†–पु० नेत्रगोलक, डेला।

गढ़ास*–स्त्री० गढ़न–'मान-मवास गढ़ासकी घाटी'–घन०।

गढ़ासी*–वि०, पु० विद्रोही, विप्लवी–'बाँधि लिये कुल-नेम गढ़ासी'–घन०।

गणतंत्रदिवस–पु० [सं०] गणतंत्र स्थापित होनेके स्मारक-रूपमें माना जानेवाला दिन या उस संबंधमें होनेवाला समारोह (२६ जनवरी)।

गणवेश–पु० [सं०] वरदी, विपरिधान।

गताधि–वि० [सं०] निश्चित, चिंताविहीन ('तुमुल')।

गद*–पु० स्थूलता, मोटापन (रतन०)।

गदेली†–स्त्री० हथेली–'लाखीने हाथकी गदेली पसार दी'–मृग०।

गभरू*–वि० प्रिय ; दे० 'गबरू'।

गमकना*–अ० क्रि० उत्साहपूर्ण होना (भू०)।

गमि*–स्त्री० दे० 'गम' (पहुँच)–'अगम अगोचर गमि नहीं तहाँ जगमगै जोति'–साखी

गरंथ*–पु० ग्रंथ, पुस्तक (प०)।

गरबाहीँ†–स्त्री० दे० 'गलबाहीँ' ('गल'के साथ')।

गरैँठी*–वि० स्त्री० टेढ़ी–'सोहै सुजान गुमान गरैँठी'–घन०।

गरयारी*–स्त्री० दे० 'गलियारी'।

गलदश्रु-भावुकता–स्त्री० [सं०] (मॉडलिन सेंटिमेंटलिज्म) छोटी-छोटी बातमें भी आँसू ला देनेवाली भावुकता।

गल्ल*–पु० हल्ला, शोर; दे० मूलमें।

गवरि*–स्त्री० गौरी, पार्वती।

गह*–स्त्री० टेक।

गहबर*–पु० निकुंज, गुप्तस्थान; दे० 'गह्वर'।

गहबरनि*–स्त्री० व्याकुलता, अफनाहट–'गहकि-गहकि गहबरनि गरें मचै'–घन०।

गहमह*–स्त्री० चहल-पहल–'गोकुल गरयारिनमैं महा गहमह माँची'–घन०।

गहमहई*–स्त्री० प्रचुरता, धूमधड़क्का–'घर घर चुहल चैनकी रहई। जित तित गोधनकी गहमहई।'–घन०।

गारड़ू*–पु० दे० 'गारुडी'।

गारो*–पु० घर–'गोबरको गारो सु तौ मोहिं लगै प्यारो …'–रसखानि।

गाला*–पु० ढेर, पुंज (कलस०)।

गितार*–पु० एक बाजा।

गिरंद*–पु० फंदा।

गिरँदा*–वि० फंदा डालनेवाला।

गिरोही–पु० दलका आदमी, संगी, साथी,–'काली सिंहका कोई गिरोही'–अमर०।

गिलावा†–पु० गारा, कीचड़।

गिलोल–स्त्री० दे० 'गुलेल'।

गीड†–पु० दे० 'गीडर'।

गीडर†–पु० आँखका मैल, कीचड़–'थूकरु लार भरयो मुख दीसत आँखिनमें गीडर नाकमें सेढो'–सुंद०।

गुंजलिका–स्त्री० फेंट, शिकंजा–'वह अजगरकी तरह उसे अपनी गुंजलिकामें लपेटनेके लिए चल पड़ी'–गुनाहोंके देवता।

गुड़–पु० दे० मूलमें। **मु०–गोबर करना**–चौपट करना, नष्ट करना। **–गोबर होना**–बर्बाद होना, नष्ट होना–'तुम्हारी भूलसे ही सब गुड़ गोबर हो गया'।

गुड़ला†–पु० नमक डालकर बनाया हुआ गीला भात।

गुड़िया–स्त्री० छोटे-छोटे पाँव–'छोटी-छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी छबीली'–सूर।

गुड़ी–स्त्री० सिकुड़न, सिलवट।

गुणचिह्न-अंकन–पु० [सं०] (क्वालिटी मार्किंग) घी, करघे-के कपड़े आदिपर उनकी उत्तमताका सूचक अंक डालना, निशान बनाना।

गुणन-चिह्न–पु० [सं०] गुणन या गुणाका सूचक चिह्न-विशेष (×)।

गुणा–पु० गणितमें जोड़नेकी एक संक्षिप्त रीति जिससे कोई संख्या कई बार जोडनेके बजाय एक बारमें ही उतनी गुनी बढ़ा ली जा सकती है।

गुणाकार–अ० गुणनके चिह्न जैसा, उस तरह; एक दूसरे-को काटकर, स्पर्श कर जाते हुए–'नटने बाँसोंको गुणाकार गाड़कर रस्सेको कसकर तान लिया'–मृग०। वि० गुणित-के चिह्न जैसा, कैंचीनुमा।

गुनकारी*–वि० दे० 'गुणकारी'।

गुना†–पु० बेसनका बना एक पकवान।

गुपुत*–स्त्री० गूढ बात, रहस्य–'ऊधो बूझति गुपुत तिहारी'–सूर।

गुप्तांग–पु० [सं०] स्त्री या पुरुषके गुप्त अंग, उपस्थ।

गुरुअई–स्त्री० दे० 'गुरुडम'; दे० मूलमें।

गुरझ*–स्त्री० गाँठ–'ममता गुरझैं उरझावत क्यौं?'–घन०।

गुरझनि*–स्त्री० गाँठ–'राग भरे हियमैं बिराग-गुरझनि है'–घन०।

गुरझियाना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'गुरचियाना'। स॰ क्रि॰ उलझाना, गाँठ डालना।

गुराइ, गुराउ*–पु॰ तोप ढोनेकी गाड़ी।

गुलटप्पा†–पु॰ गप्प।

गुलफ*–पु॰ गुल्फ, टखना।

गुह*–वि॰ गुंफित, गुहा।

गूथना–†पु॰ गोफन, ढेलवाँस–'गूथने घुमा-घुमाकर चिड़ियोंको भगाना'–मृग॰।

गैंड़ी–स्त्री॰ बाँसके दो डंडे जिनमेंसे प्रत्येकपर खड़ाऊँ जैसा एक-एक पावदान लगा रहता है–इनपर चढ़कर लोग चलते-फिरते, कूदते-फाँदते हैं (अंग्रेजी 'स्टिल्ट')।

गौंदा†–पु॰ मिट्टीका साना हुआ ढेर या पिंड, लौंदा।

गोदर*–वि॰ गदराया हुआ; यौवनके कारण भरा हुआ।

गोभा*–पु॰ अंकुर;प्राकट्य, अभिव्यक्ति। स्त्री॰ दे॰ मूलमें।

गोराधार*–वि॰ दे॰ 'गोलाधार'।

गोला†–पु॰ एक तरहका बड़ा कंडा–'अँगीठीके पेटमें गोला डालो'–जिंदगी॰।

गोलाबारी*–स्त्री॰ तोपसे की जानेवाली गोलोंकी वर्षा।

गोष*–पु॰ गवाक्ष, गोखा, खिड़की।

ग्रब्ब*–पु॰ गर्व, घमंड, दर्प। **–हन**–वि॰ गर्वघ्न, घमंड दूर करनेवाला, दर्पहारी।

ग्रिह*–पु॰ गृह, घर–'तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है ग्रिह अँगणो न सुहाई रे'–मीरा।

घ

घँघोना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'घँघोरना'।

घट्ट*–स्त्री॰ घटा–'सुभट-ठट्ट घन-घट्ट सम, मर्दहिं रच्छन तुच्छ'।

घढ़ना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'घड़ना'।

घाँ*–पु॰ प्रकार, तरह–'कहिबो न छिपै किहि घाँ सुगमै' –घन॰।

घियरा*–पु॰ घी।

घुमेरी*–स्त्री॰ बेसुध होनेकी स्थिति, बेहोशी–'निसि-द्यौस घुमेरिनि भौँरि परयौ'–घन॰।

घुरना*–अ॰ क्रि॰ कसना–'घुरि आसकी पास उसासगरें जु परी–घन॰।

घूठन*–अ॰ घुटनोंके बल।

घूमरा*–वि॰ नशीला, मदयुक्त–'केसरि खौरि घूमरे नैना बिथुरी अलक बदन रँग भीनौ'–घन॰।

घेँटी†–स्त्रीं॰ चना आदिका ढोंडा जिसके भीतर दाना रहता है, ढेंढी–'खेतके चने हरी-पीली घेंटियोंसे लद गये'–अमर॰।

च

चंपना*–स॰ क्रि॰ दबाना, चाँपना, चढ़ बैठना।

चकचोढ़ा*–पु॰ चकाचौंध।

चच्चर*–पु॰ चाँचर, होलीके समय गाया जानेवाला गीत।

चच्छ–पु॰, **चच्छि***–स्त्री॰ चक्षु, आँख।

चड़ाका†–पु॰ चटककर टूटनेका शब्द।

चतुरस्र पांडित्य–पु॰ [सं॰] चौमुखी विद्वत्ता, चारों दिशाओंमें व्याप्त ज्ञान।

चतुर्दश–वि॰ [सं॰] दे॰ 'चतुर्'के साथ मूलमें। **–पदी**–स्त्री॰ चौदह पदोंवाला एक छंद जो अंग्रेजीके 'सॉनेट'के अनुकरणपर चलाया गया है।

चपरना*–अ॰ क्रि॰ फुरती करना।

चपरावना*–स॰ क्रि॰ बहकाना–'चोरी करि चपरावत सौँ हनि काहे कौँ इतनो फोफट फाँकत'–घन॰।

चलापन*–पु॰ चंचलता–'है घन आनँद भौंह-चलापन'।

चहचारा*–पु॰ चहल-पहल–'भोर भयौ लागे बोलन सुकसारौ है चहचारौ'–घन॰।

चहर*–स्त्री॰ बया चिड़िया (मीरा)।

चार सौ बीस–पु॰ पुलिस अधिनियमकी वह धारा जिसमें धोखादेही, चालबाजी, छल-छंदादिका सहारा लेनेवालेको दंड देनेका विधान है। वि॰ धूर्त, धोखेबाज।

चार सौ बीसी–स्त्री॰ धोखेबाजी, छलप्रपंच, धूर्तता।

चारिका–स्त्री॰ पदक्षेप–'उनके कुंठ नृत्यकी प्रत्येक चारिका' –हजारीप्र॰; भिक्षाके लिए जाना।

चितारना*–स॰ क्रि॰ ध्यानमें लाना, याद करना–'रे पपइया प्यारे कबको बैर चितारयो'–मीरा।

चित्रोत्पला–[सं॰] गोदावरी नदी।

चिनौती†–स्त्री॰ चुनौती, ललकार (मृग॰)।

चिरौल–पु॰ एक पेड़–'रेंवजे, चिरौल इत्यादिके पेड़ इधर-उधर उगे थे'–अमर॰।

चिहुरार–पु॰ चिकुरभार, केशराशि।

चीतांबर*–पु॰ चित्रांबर, विचित्र वस्त्रवाला।

चीनिया केला–पु॰ दे॰ 'चिनिया केला'।

चुँहटना*–स॰ क्रि॰ चिकोटी काटना–'चुँहुटि जगाई अधराति औटपाई आनि'–घन॰।

चुक*–वि॰ किंचित्।

चुहट*–स्त्री॰ कसक–'तेरे नैन-सुभट चुहट-चोट लागें बीर' –घन॰।

चूँटना†–अ॰ क्रि॰ चींटीकी तरह चिपक जाना।

चेजारा*–पु॰ चुनाईका काम करनेवाला, राज–'कोई चेजारा चिणि गया मिल्या न दूजी बार'–साखी।

चेतक*–वि॰ जादूभरा–'घात लै अनूठी भरैं चेतक चितौन-मूठी'–घन॰।

चौंच–स्त्री॰ दे॰ मूलमें। **मु॰ (दो-दो) चौंचें होना**–कहा सुनी होना।

चोम*–पु॰ जोम, घमंड।

चोरबजारिया–पु॰ चोरबाजारी द्वारा रुपया कमानेवाला।

चौखटा†–पु॰ देहयष्टि, शरीरका ढाँचा–'आपने भी क्या दिलकश चौखटा पाया है!'

चौखाना†–पु॰ चौखूँटे खानोंवाला कपड़ा।

चौचँद*–पु॰ रसकेलि, क्रीड़ा, कौतुक–'कै रस चाँचरि चौचँदमैं छतियापर छैल नखच्छत छाए'–घन॰; दे॰ मूलमें।

चौडोल*–पु॰ पालकी; दे॰ मूलमें।

चौमुखी–वि॰ चारोंओर होनेवाला, जानेवाला (–प्रतिभा, –विकास)।

छ

छंद*–पु० उपाय–'फंदकी मृगीलौं छंद छूटिवेको नेकौ नाहिं'–घन०।

छकिहारी*–स्त्री० छाक ले जानेवाली।

छकौंहीं*–वि० स्त्री० छका देनेवाली; संतुष्ट; मस्त कर देनेवाली–'प्यार सों छकौंहीं ढरकौंही मृदु वानि-वस'–घन०।

छग्गर*–पु० सग्गड़, शकट।

छपका†–पु० ठप्पेका छापा हुआ बड़ा फूल आदि; बड़ा-सा धब्बा।

छरद*–स्त्री० छर्दि, वमन–'जवतें अक्रूर लै गये मधुपुरी भई विरह तन वाय छरद'–सूर।

छराय*–पु० दे० 'छलावा'।

छलमलना*–अ० क्रि० छलकना–'वंसीधुनि घनघोर रूपजल छलमलै'–घन०।

छाँदा†–पु० परोसा; दे० मूलमें।

छाती–स्त्री० देखो मूलमें। मु० –का काँटा–पु० हमेशा खटकने या दुःख देनेवाली चीज।

छानी*–वि० स्त्री० छन्न, छिपी हुई–'छानी वात उघाड़ै छै'–घन०।

छायापात्र–पु० [सं०] घी या तेलसे भरी हुई वह कटोरी आदि जिसमें अपने शरीरकी छाया देखी जाती है (अरिष्ट-निवारणार्थ)।

छायावान–पु० सायवान (अहिल्या०)।

छिंछ*–वि० छूँछा; दे० मूलमें।

छिकना–अ० क्रि० रुकना, छेका जाना–'रूप अलबेली सुनवेली एरी तेरी आँखैं ताकि छाकि मारैं हुरिहाई न कहूँ छिकै'–घन०।

छित*–वि० सित, श्वेत।

छियना*–स० क्रि० छूना–'देखि जियौ, न छियौ घन-आनँद'।

छीजना*–स० क्रि० छूना–'आनँद घन रसरासि पायकै क्यौं जग-छीलर छीजै'। अ० क्रि० दे० मूलमें।

छुटौती†–स्त्री० छुड़ाने, रिहा करानेका कार्य या उसके बदले लिया जानेवाला धन,–'तव छोड़ा जब घरसे छुटौती-के पैसे मँगवाकर उन्हें दिये'–अहिल्या०; दे० मूलमें।

छूँछना†–पु० वाहर निकला हुआ दरी आदिका लंवा रेशा, फुचड़ा।

छेकना–स० क्रि० दे० 'छेँकना'।

छेवला†–पु० पलाशका पेड़, जिसके पत्तोंसे पत्तल और दोने वनाये जाते हैं।

छेहरा*–पु० विरह–'कह्यौ न परत कछु रह्यौ न परत है सह्यौ न परत छिन छेहरा'–घन०।

छोत्ति*–स्त्री० स्पर्श।

ज

जंत*–पु० जंतु, जीव, व्यक्ति।

जंबूनद*–पु० दे० 'जांबूनद' (सोना)।

ज़खीरा–[अ०] पेड़-पौधे या बीज मिलनेका स्थान; दे० मूलमें।

जटना*–स० क्रि० जुड़ जाना–'करौसु ज्यौं चित चरन जटै'–घन०।

जन-जीवन–पु० [सं०] जनताका जीवन, सर्वसाधारणके रहन-सहनका ढंग।

जनसेवा-आयोग–पु० (पब्लिक सर्विस कमीशन) दे० 'लोकसेवा-आयोग'।

जमार*–पु० यमद्वार।

ज़रा-मना–अ० थोड़ा-वहुत।

जरूला*–वि० गभुआरे केशवाला; जटुलयुक्त, लच्छनवाला।

जलघरा–पु० पानीके घड़े रखनेका स्थान।

जलतरोई, जलतुरई–स्त्री० मछली (साधुओंकी भाषा)।

जलबम–पु० (डेप्थचार्ज) दे० 'जलप्रस्फोट'।

जलवायु–पु० [सं०] (क्लाइमेट) किसी स्थानकी गर्मी, जाड़ा, वर्षा आदि सूचित करनेवाली वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्रभाव वहाँकी आवादी तथा वनस्पति आदिपर पड़ता है, आवहवा।

जलावतरण–पु० [सं०] (लांचिंग) दे० 'पोतसंतरण'।

जसु*–स्त्री० यशोदा।

जसो*–स्त्री० यशोदा।

जिंद*–स्त्री० जिंदगी–'जिंद असाडी ज्यारी है'–घन०।

जिमींदार†–पु० दे० 'जमींदार'।

जिलाधीश–पु० दे० 'जिला मजिस्ट्रेट'।

जिलापालिका–स्त्री० (डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड) दे० 'जिलाबोर्ड'।

जिवड़ा*–पु० हृदय (मीरा)।

जिवारी*–वि० स्त्री० जिलानेवाली–'आयी है दिवारी चीते काजनि जिवारी प्यारी'–घन०।

जिवावन*–वि० जिलानेवाला।

जी-हुजूरी–स्त्री० 'जी-हुजूर, जी-हुजूर' कहते रहनेका भाव, खुशामद।

जुंबिश–स्त्री० गति, हरकत, हिलना।

जुग्गिनी*–स्त्री० योगिनीपुरी, दिल्ली।

जुलपित्ती–स्त्री० एक रोग जिसमें शरीरपर लाल-लाल चकत्ते निकल आते हैं, दे० 'जुड़पित्ती'।

जुव्वन*–पु० यौवन–'दिन दिन अवढ्ढि जुव्वन घटय, कंत वसंत न गम करहु'–रासो।

जुसाँदा†–पु० दे० 'जोशाँदा' (काढा)।

जूँरा*–स्त्री० जरा, वृद्धावस्था।

जूपी*–पु० यज्ञस्तंभ(यूप)से बँधा हुआ पशु, बलिपशु।

जूरना†–अ० क्रि० जुरना, उपलब्ध होना।

जृंभकास्त्र–पु० [सं०] जृंभक नामक अस्त्र जिसका प्रयोग करनेसे शत्रुको जँभाई आने लगती है, वह शिथिल पड़ जाता है।

जोगिनी†–स्त्री० सहारा लेनेकी लकड़ी, ठकोरी।

जौंरा*–स्त्री० जरा।

ज्यारा*–वि० जिलानेवाला। [स्त्री० 'ज्यारी'।]:–'भान-की दुलारी घन आनँद जीवन-ज्यारी'–घन०।

ज्यौ*–पु० जी, जान–'बूड़त ज्यौ घन आनँद सोचि'–घन०। अ० दे० मूलमें।

झ

झँपना–अ० क्रि० दे० 'झपना'; दे० मूलमें।

झकूटा†–पु० छोटी झाड़ी।

झमारना–स० क्रि० झाँवर कर देना; जलसे भर देना–'आनँदको घन रंग झलनि झमारई'–घन०।

झरना कलम–स्त्री० दे० 'फाउंटेन पेन'।

झराँ*–पु० खो जाने, चुरा जानेकी क्रिया या भाव–'सो धन झराँ गयौ'–घन०।

झराहर*–पु० ज्वालाधर, सूर्य।

झाँझ†–स्त्री० (भाँगका) नशा–'ऐसा न हो कि झाँझ हो जाये जरा गहरी'–जिंदगी०।

झाई*–स्त्री० दे० 'झाँई'।

झाझ*–पु० जहाज–'राम नामका झाझ चलास्याँ भवसागर तर जास्याँ'–मीरा।

झाला*–पु० बकवाद–'काहेको झाला लै मिलवत कौन चोर तुम डाँडे'–सूर।

झिंझरी–स्त्री० जालीदार खिड़की।

झिनझिनी†–स्त्री० दे० 'झुनझुनी'।

झीम–स्त्री० उनींदे व्यक्तिका नींदपर काबू पानेके प्रयत्नमें झूम जाना, ऊँघ (दे० झूम), झपकी।

झूखना*–अ० क्रि० दुःखी होना, संतप्त होना–'अवधि गनत इक टक मग जोवत तब एती नहिं झूखी'–सूर।

झूलना*–अ० क्रि० समाप्त हो जाना–'मति बावरी है रही झूलिहै जू'–घन०।

झौर*–पु० दे० 'झौंर'।

ट

टग*–स्त्री० टकटकी–'टग लाय रहीं पल पाँवड़े कै'–घन०।

टन्नाना†–अ० क्रि० 'टनटन' आवाज करना।

टपरा†–पु० घास-फूस, टीन आदिसे छाया छोटा घर, झोपड़ा–'टीनवाले टपरोंके सामने चौड़ा मैदान था'–अमर०।

टपरिया†–स्त्री० झोपड़ी, मँड़ैया–'कित गयी प्रभु मोरी टूटी टपरिया हीरा मोती लाल कसे'–मीरा।

टाकर*–स्त्री० ताकना, टकटकी; जगना।

टापा*–पु० टीका, तिलक –'रामनाम जाणैं नहीं आये टापा दीन–'साखी।

टिकटघर–पु० (बुकिंग आफिस) रेलके स्टेशनका या सिनेमा, सरकस आदिके अहातेका वह स्थान या कमरा जहाँ गाड़ीमें बैठने, सरकस आदिमें प्रविष्ट होनेका अनुमतिपत्र पैसा देकर प्राप्त किया जा सकता है।

टिपटाप–वि० जीवनके हर क्षेत्रमें–वेशभूषा, रहन-सहन आदिमें–नियम और व्यवस्थाका कड़ाईसे पालन करनेवाला (आदमी)।

टीकी*–स्त्री० टिकुली, बिंदी–'काजल टीकी हम सब त्याग्या, त्याग्यो छै बाँधन जूड़ो'–मीरा।

टुंग†–पु० पहाड़की गोल चोटी–'मदनमहलकी छाँहमें दो टुंगोंके बीच। जमा गड़ी कई लाखकी दो सोनेकी ईंट'।

टूटदार–वि० जिसके हिस्से अलग-अलग कर एकमें मिला देनेसे पुनः समूची वस्तु तैयार हो जाय, मोड़दार, फोल्डिंग, सफरी (मेज, कुरसी इ०)।

टँटा†–पु० दे० 'टँटर'। मु० (कार्नीके)–पर सिंदूरकी बिंदी (बुंदेल०)–कुरूप स्त्रीका अपनी कुरूपता दूर करनेके प्रयत्नमें और अधिक असुंदर बन जाना; और भी भद्दी लगनेवाली चीज।

टैंठी*–वि० स्त्री० चंचल (स्त्री)–'नाक चढ़ाएई डोलत टैंठी'–घन०।

टोट*–स्त्री० कमी (त्रुटि)–'प्यासकी न टोट है'–घन०।

टौंडिक*–वि० शरारती।

टौंड़िक*–वि० पेटू।

टौरिया†–स्त्री० छोटी पहाड़ी, बड़े-बड़े पत्थरोंवाला टीला।

ट्यूबवेल–पु० [अं०] दे० 'नलकूप'।

ठ

ठटवारी*–स्त्री० टट्टी–'मुरली मधुर चेंपकर काँपो मोरचंद्र ठटवारी'–सूर।

ठठना†–अ० क्रि० (काँटे, तीर आदिका) चुभकर रह जाना, गड़ जाना; दे० 'ठटना'।

ठिक*–पु० स्थैर्य–'जासों नहीं ठहरै ठिक मानको'–घन०।

ठिया†–पु० जंगली पशुओंके रहने, ठहरनेका स्थान (मृग०)।

ठिलठिलाना†–अ० क्रि० जोरसे हँसना।

ठोठ†–वि० ठूँठा; निराला।

ड

डँगरा†–पु० खरबूजा (बुंदेल०)।

डंडना*–स० क्रि० दंड देना।

डँडा*–पु० बाहु–'गोरे डँडा पहुँचानि बिलोकत'–घन०।

डंडूल*–स्त्री० आँधी–'करसेती माला जपै हिरदे बहै डंडूल'–साखी।

डरारी*–वि० स्त्री० डरावनी–'पापिनि डरारी भारी'–घन०।

डवा*–पु० थैला (कटोरा ?)–'बिषको डवा है कै उदेगको अँवा है'–घन०।

डाँवर†–पु० डामर, अलकतरा।

डाक-शुल्क–पु० (पोस्टेज) चिट्ठी-पत्री आदिपर टिकटके रूपमें लगनेवाला महसूल।

डागल*–पु० ऊबड़-खाबड़ भूमि–'डागल ऊपरि दौड़णाँ, सुख नींदड़ी न सोइ'–साखी।

डाढा*–वि० गहरा, दृढ़।

डिंडिमघोष–पु० [सं०] डुग्गी पिटवाना, डुगडुगी पिटवाकर घोषित करना।

डिडकार–स्त्री० (साँड़ आदिके) डकरने, जोरसे बोलनेकी आवाज, दहाड़–'अरनेने जोरकी डिडकार लगायी'–मृग०।

डेढ़िया–पु० (अनाज) उधार देनेका वह प्रकार जिसमें फसलपर मूलका ड्योढ़ा वसूल किया जाता है।

ढ

ढरकौंहाँ*–वि० ढरक जानेवाला, अनुकूल–'ढरकौंहैं देखि त्रिवस बकि परी मौन'–घन० ।

ढरहरा*–वि० अनुकूल, द्रवीभूत–'कहा कहौं कृपाकी ढरनि ढरहरे हौं'–घन० ।

ढलवारि*–स्त्री० हँसी-ठट्ठा ।

ढाठी†–स्त्री० 'ढट्ठी' ।

ढिल्ली*–स्त्री० दिल्ली नामकी प्राचीन नगरी । –वै–पु० दिल्लीपति ।

ढिल्लेस*–पु० दिल्लीश्वर, दिल्लीपति ।

ढी†–स्त्री० (नदी, नालोंका) ऊँचा किनारा ।

ढैंका†–पु० दे० 'झोंझ' ।

ढेलेबाज–पु० ढेला फेंककर मारनेवाला; ढेलेसे निशाना मारनेवाला ।

ढौरी*–स्त्री० ढंग, ढब–'गौरी गाय ढौरी सों बुलावै गौरी गायकों''–घन० ।

ढौली*–स्त्री० दे० 'ढौरी' ।

त

तंत्रवाद्य–पु० [सं०] वीणा, सारंगी आदि तारवाले बाजे, तंतुवाद्य ।

तँवारा*–पु० दे० 'तँवारी' ।

तखड़ी†, तखरिया†–स्त्री० तराजू ।

ततूरी†–स्त्री० पैरोंमें तप्त भूमिके स्पर्श या गरम धूल लग जानेके कारण होनेवाली तापकी अनुभूति–'मजदूर लू और ततूरीमें काम कर रहे थे'–मृग० । (संस्कृत 'ततुरि' =अग्नि ।)

तनजेब–पु० दे० 'तंजेब' ।

तबलावादक–पु० तबला बजानेकी कला जाननेवाला, तबलिया, तबलची ।

तबलावादन–पु० तबला बजानेका कार्य या कला ।

तबेली*–स्त्री० दे० 'तलबेली' ।

तयना*–स० क्रि० तपाना, संतप्त करना–'आनँद घन जग सुजस छाइकै पतित पपीहै निपट न तैयै' ।

तरेड़–स्त्री० दरार–'आत्मविश्वासमें संदेहकी तरेड़ डाल दी'–जिंदगी० ।

तरेरना*–स० क्रि० थपेड़ा देना–'उपावकी नाव तरेरति तोरति'–घन० ।

तवा–पु० छातीके बचावका साधन जो तवेके आकारका होता है–'योधा झिलमटोप और तवे चढ़ाये हुए थे'–मृग० ।

तापतौटी*–स्त्री० तापजन्य व्याकुलता–'परम मरम अपरस तापतौटीके'–घन० ।

तामियाँ†–वि० ताँबे जैसा, लाल, तामड़ा ।

तारक–पु० [सं०] छपाईमें तारे जैसा चिह्न (*); दे० मूलमें ।

तारा*–पु० ताला–'टरें टारैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मन-मोहन-मोहके तारे'–घन०; दे० मूलमें ।

तिगलिया†–पु० वह स्थान जहाँ तीन रास्ते या तीन गलियाँ आकर मिलती हों, तिराहा ।

तिमिर*–पु० तैमूर–'तिमिर-बंस-हर अरुनकर आयो सजनी भोर'–भू० ।

तिलक–पु० [सं०] किसी ग्रंथपर लिखी गयी टीका या भाष्य–'स्वतंत्र ग्रंथ नहीं, टीकापर टीका, तिलकपर तिलक, लिखे जा रहे थे'–हजारीप्र० ।

तिलोनी*–वि० स्त्री० फुलेलसे सुगंधित–'अंग अति लोनी लसै ललित तिलोनी सारी'–घन० ।

तिस*–स्त्री० तृष्णा, लालसा; प्रेम–'तिस उपजावति प्यासहि नासि'–घन० ।

ती*–अ० क्रि० थी–'बिरंचि बिचारि कै जाति रची ती'–घन० ।

तुजनूँ*–सर्व० तुझको ।

तुबक*–स्त्री० दे० 'तुपक' (तोप) ।

तुल्ल*–वि० तुल्य, बराबर ।

तुसाडाँ*–सर्व० तुम्हारा ।

तूल-तूफान–पु० हो-हल्ला, उत्पात ।

तृकुटी*–स्त्री० दे० 'त्रिकुटी' ।

तेली†–स्त्री० पेउसी (बुंदेल०) ।

तैंडा*–सर्व० तेरा ।

तोन*–पु० तूण, तूणीर ।

त्रसरैनि*–स्त्री० दे० 'त्रसरेणु' ।

त्रिवृता–स्त्री० [सं०] एक लता, निसोथ, त्रिवृत् ।

थ

थंभा*–पु० दे० 'थंभ' ।

थरसना*–अ० क्रि० त्रस्त होना, थहरना–'आवरी बावरी ह्वै थरसै'–घन० ।

थाँवरा*–पु० दे० 'थाँवला' (थाला) ।

थाकि*–स्त्री० थकावट, क्लांति–'कबीर हरिरस यों पिया, बाकी रही न थाकि'–साखी ।

थावरा*–पु० थाला ।

थुथराई*–स्त्री० थोड़ा होना, कम पड़ना–'जान-महा-गरुवे-गुन मैं घन आनँद हेरि रह्यौ थुथराई'–घन० ।

थुथराना*–अ० क्रि० थोड़ा होना, कम पड़ना ।

थूमा†–पु० लकड़ीका अनगढ़ खंभा, टेक ।

थेगली*–स्त्री० कंथा; दे० 'थिगली' ।

द

दंगह*–वि० दंग करनेवाला, अद्भुत (रासो) ।

दंतचिकित्सक–पु० [सं०] (डेंटिस्ट) दाँतोंकी चिकित्सा करनेवाला तथा हिलते, टूटे दाँत उखाड़ने, नकली दाँत लगानेवाला ।

दंतचिकित्सा–स्त्री० [सं०] (डेंटिस्ट्री) दाँतोंकी दवा करनेकी विद्या या कला ।

दईजार–वि० (दैव द्वारा जलाया हुआ), अभागा, शैतान (स्त्रियों द्वारा गालीके रूपमें प्रयुक्त–'सबेरे ही दईजारी मशीनोंको देखने निकली'–अमर०) ।

दगाती*–वि० दगाबाज–'छल बल करि नहिं काहू पकरत दौरि दगाती'–घन० ।

दच्छिनता*–स्त्री० दक्षिणता, अपनी सभी नायिकाओंसे समान प्रेम रखनेका गुण ।

दझ्झना*–अ० क्रि० दग्ध होना।

दप्प*–पु० दर्प, घमंड।

दब*–स्त्री० दाव, दबाव, रोब, शासन–'कहा करौं कछु बनि नहिं आवै अति गुरुजनकी दब री'–घन०।

दरकीला–वि० आसानीसे टूट-फूट जानेवाला, भुरभुरा।

दरबर*–स्त्री० उतावली–'अहो हरि आये महा हरबरमैं, कहा बनि आवै टहल दरबरमैं'–घन०।

दरबराना*–अ० क्रि० छटपटाना–'देखनकौं दग दरबरात'–घन०।

दह–पु० नदी किनारेका (मटमैले पानीका) छिछला गड्ढा–'सुअर और अरने भैंसे नदी किनारे किसी दहमें लोर रहे होंगे'–मृग०।

दही–पु० दे० मूलमें। मु०–(हाथ, मुँहमें),–जमा रहना–निष्क्रिय हो जाना या रहना; परस्पर बातचीत न होना–'७-८ दिनतक दोनोंके मुँहमें दही जमा रहा'–प्रेम०।

दा*–प्र० का–'नंददा सोहना'–घन०।

दाझणा*–पु० जलन, दाह–'आठ पहरका दाझणा मोपै सह्या न जाइ'–कबीर।

दातुरी*–स्त्री० दानकी वृत्ति–'दानी बड़े पै न माँगे बिन हरै दातुरी'–घन०।

दान–पु० [फा०] रखनेकी चीज या पात्र, आधार (समासमें–जैसे कलमदान, पानदान, पीकदान)।

दामणी*–स्त्री० दामिनी, बिजली–'चहुँदिस चमकै दामणी गरजै घन भारी हो'–मीरा।

दायबी*–वि० दावँ, अवसरकी खोजमें रहनेवाला–'मन बसमैं न रोकैं रहै दायबी'–घन०।

दारुजात–पु० भ्रमर, भौंरा (सूर)।

दावत-तवाजा–पु० [अ०] खान-पान, आदर-सत्कार आदि।

दिग्द्योतक यंत्र–[सं०] दे० 'दिग्दर्शक यंत्र' कुतुबनुमा।

दीवानी–वि० [फा०] रुपये और जायदाद-संबंधी (–मुकदमा)। –अदालतस्त्री०,–न्यायालय–पु० वह अदालत जिसमें जायदाद-संबंधी मुकदमोंपर विचार हो।

दुखदागर*–पु० दुःखका नाश करनेवाला–'पालागौं द्वारका सिधारौ बिरहिनिके दुखदागर'–सूर।

दुखहाई*–वि० स्त्री० दुःखकी मारी–'न खुली मुँदी जानि परैं कछु ये दुखहाई जगेपर सोवति हैं'–घन०।

दुगध*–पु० दुग्ध, दूध। –नदीस*–पु० दुग्धसमुद्र, क्षीरसागर–'इंद्रको अनुज हेरै दुगध-नदीसको'–भू०।

दुग्धशाला–स्त्री० [सं०] दे० 'डेरी'।

दून–स्त्री० दो पहाड़ोंके बीचकी जगह, घाटी (अमर०)।

देन–स्त्री० दे० मूलमें; वह उपयोगी या अमूल्य वस्तु जो किसीको दी जाय या दी गयी हो–'जगतको जो हम सबसे बड़ी देन दे सकते हैं, वह यही आदर्श है'–राजेंद्रप्र०।

देयासिनि*–स्त्री० झाड़-फूँक करनेवाली (विद्यापति)।

देवता–पु० [सं०] दे० मूलमें। मु०–कूच कर जाना–अत्यंत भीत हो जाना, होश गायब हो जाना।

देसड़ा, देसड़*–पु० दे० 'देस'।

देहवंत*–वि० शरीरवाला। पु० देहधारी, प्राणी।

दोसत*–पु० दोस्त, मित्र (साखी)।

दोही*–स्त्री० दुहाई–'फिरी दग रावरे रूप की दोही'–घन०।

दौँची†–स्त्री० ठोकर लगनेसे धातुके बर्त्तनमें पड़ी हुई पचकन, चिपटापन।

द्रप्पन*–पु० दर्पण–'द्रप्पनसम आकास स्रवत जल अमृत हिमकर'–(रासो)।

द्वाभा–स्त्री० सवेरे या संध्याके समयका वह मंद प्रकाश जब सूर्य क्षितिज रेखाके नीचे हो (ट्वाइलाइट)।

ध

धकना*–अ० क्रि० तप्त होना, धिकना–'जरनि बुझौं दुख-जाल धकौं'–घन०।

धक्याना*–अ० क्रि० जलना–'जियरा उड्यौ सो डोलै हियरा धक्यौई करै'–धन०।

धजी*–स्त्री० धज्जी, टुकड़ा।

धनवाद–पु० [सं०] (मनीसूट) वह मुकदमा जिसमें धनके लिए दावा किया गया हो।

धरनि*–स्त्री० दे० मूलमें; टेक–'ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी'–सूर।

धाँगना†–स० क्रि० कुचलना, रौंदना।

धीजना*–अ० क्रि० ठहरना–'चाह बढ़्यौ चित चाकचढ़्यौ सो फिरै तित ही इत नेकु न धीजै'–घन०।

धुनक*–पु० धनुष; धनुर्धर।

धुनाई–स्त्री० पिटाई, मरम्मत।

धुपधूप*–वि० दगदगा, साफ, चोखा–'मेरो मन, मेरो अलि, लोचन लै जो गये धुपधूप'–सूर।

धुराधुर*–पु० आधार–'प्रान पपीहनिके घन आनँद होत आए हौ धुराधुर'।

धूताई*–स्त्री० धूर्तता, चालाकी–'साँची कहहु देहु स्रवननि सुख, छाँडहु जिया कुटिल धूताई'–सूर।

धूम*–अ० तेजीसे।

धैन*–स्त्री० धेनु।

धौताल*–वि० शरारती–'होरीके दिन चारिकतें तुम भये हो निपट धौताल हो'–घन०।

ध्रम्म*–पु० दे० 'धर्म'।

ध्वनिघनत्व–पु० [सं०] (फ्रीक्वेंसी) प्रति सेकंडमें उत्पन्न की जानेवाली ध्वनिकी आवर्तनीके अनुसार मानी जानेवाली ध्वनिकी घनता।

न

नगड़िया–स्त्री० एक तरहका छोटा-सा नगाड़ा, डुग्गी।

नन*–अ० मत–'नन करहु गवन नन भवन तजि, कंत दुसह दारुन सरद'–रासो।

नबी*–वि० नवीन।

नभोनंदिनी–स्त्री० प्रतिध्वनि (विरहिणीव्रजा०)।

नरवै*–पु० नरपति, राजा (रासो)।

नवसर*–वि० नयी उम्रका।

नवैयत–स्त्री० (टेन्यूर) भूमि या संपत्ति रखनेकी अवधि और शर्तें।

नाँवरा*–पु० नाम।

नाँसी*–स्त्री० मारनेका स्वभाव–'जा मुख हाँसी लसी घन आनँद कैसें सुहाति बसी तहाँ नाँसी'–घन०।

नाती*–पु० नातेदार, संबंधी (मीरा)।

नालि*–स्त्री० चिता–'विरहणि थी तौ क्यू रही, जली न पिवके नालि'–साखी।

निखरक*–अ० बेखटक–'निधरक जान अलबेले निखरक ओर'–धन०।

निखरहर, निखहर–वि० विछौंनेसे रहित।

निगडहस्त–वि० [सं०] (हैंडकफ्ड) जिसके हाथमें हथकड़ी पड़ी हो।

निगुड़वा*–वि० दे० 'निगोड़ा'।

निचीता*–वि० निश्चित।

निझनक*–वि० निर्जन, नीरव।

निपाँख*–वि० पंखसे हीन; सहायकसे रहित (ला०)–'निपाँख करि छोरि देहु'–घन०।

निपेटी*–वि० स्त्री० भुक्खड़–'अघाति न आँखि निपेटी'–घन०।

निबेसित*–वि० निवेशित।

निरज*–वि० रजोहीन, निर्मल।

निरजास*–पु० दे० 'निरजोस'–'लह्यौ परम रसको निरजास। श्री ब्रज वृंदाविपिन बिलास'–घन०।

निरवद्य–पु० [सं०] तीन योगशक्तियोंमेंसे एक (शेष दो सावद्य और सूक्ष्म हैं); दे० मूलमें।

निराना*–अ० क्रि० दे० 'नियराना'।

निरालंब नारीसदन–पु० [सं०] (डेस्टिट्यूट-वीमेंस होम) असहाय नारियोंकी सहायताके लिए स्थापित संस्था।

निरिनि*–अ० निकट–'निरिनि रहत ब्रजमंडन जिनके। हरि-हित-सहित मनोरथ इनके।'–घन०।

निरैठी*–वि० स्त्री० मस्त–'लाड़नि निरैठी मति बोलनि हरैं हरी'–घन०।

निर्गम-निषेधाज्ञा–स्त्री० [सं०] (करफ्यूआर्डर) दंगा फसाद या उपद्रवादिके समय आरक्षाधिकारियों द्वारा घरसे बाहर निकलनेकी मनाही करनेवाली आज्ञा।।

निर्झर लेखनी–स्त्री० [सं०] दे० 'फाउंटेनपेन'।

निर्दल सम्मेलन–पु० [सं०] ऐसे नेताओं, कार्यकर्ताओं आदिका सम्मेलन जिनका संबंध किसी दल-विशेषसे न हो।

निर्बरा†–वि० धुँधला, अस्पष्ट–'एक आकार दिखलाई पड़ा। साफ नहीं, निर्वरा'–मृग०।

निर्यातन–पु० [सं०] दे० मूलमें; उत्पीड़न, कष्ट देना–'यह निर्यातन अब और न सहेंगे'–'पथके दावेदार'।

निर्वनीकरण–पु० [सं०] (डीफॉरेस्टेशन) दे० 'वन नाशन'।

निष्प्रभाव–वि० [सं०] जिसका कोई प्रभाव न रह गया हो, जिसका प्रभाव नष्ट या रुद्ध कर दिया गया हो, अप्रभावी।

निसवादिल*–वि० दे० 'निसवादला'।

निस्यौंना*–अ० क्रि० निश्चित होना–'अनंगके रंग निस्यौं करि'–घन०।

नींव–स्त्री० दे० 'नीवँ'।

नीबू–पु० दे० मूलमें। मु० –नमक चटाना–ठेंगा दिखाना, कुछ भी न देना, निराश करना, कोरा जवाब देना। –नमक चाटना–निराश होना, प्रायः कुछ भी न पाना।

नीलकाँटा–पु० एक झाड़।

नीसार*–पु० (संस्कृत 'नीशार') आवरण, पर्दा (रासो)।

नेरी*–अ० थोड़ा भी–'...पत्याति न नेरी'–घन०।

नैत*–पु० सुअवसर।

नैनी*–स्त्री० नैनू, नवनीत–'किसीकी नैनी ले भागे तो किसीकी छाछ फैला दी'–केशवप्र०।

नोअना, नोना*–स० क्रि० गायके पैरमें रस्सी बाँधना–'कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोइ चोखाई गाय'–सूर।

नौथारी†–पु० निमंत्रित व्यक्ति।

न्यौज*–पु० दे० 'नेवज'।

न्रप*–पु० नृप, राजा।

प

पंख–पु० दे० मूलमें। मु० –परेवा बना डालना–बातका बतंगड़ बना देना, छोटी-सी चीजको तूल दे देना, मामूली-सी बातको बहुत बढ़ा देना (अमर०)।

पंग*–पु० कन्नौज नरेश जयचंद (रासो)। –जा–स्त्री० संयोगिता।

पंचशील–पु० [सं०] अंतरराष्ट्रीय शांतिरक्षाके वे पाँच सिद्धांत या शील जिनकी घोषणा पहले-पहल जवाहरलाल नेहरू तथा चाऊ एन लाईके संयुक्त वक्तव्यमें की गयी थी। पाँचों शील ये हैं–(१) राज्यकी अविच्छिन्नता और प्रभुत्वके लिए परस्पर समादर; (२) परस्पर अनाक्रमणका आश्वासन; (३) भीतरी बातोंमें अहस्तक्षेप; (४) समता और पारस्परिक लाभ; (५) शांतिमय सह-अस्तित्व।

पंचाली–स्त्री० पांचाली, द्रौपदी; दे० मूलमें।

पक्का–वि० दे० मूलमें। –पानी–पु० गेहुआँ रंग।

पगड़ै*–अ० प्रभातमें–'सघली रैनि आनँदघन बरस्या पगड़ैं म्हाँ पर छाया' (पगड़ा, पगरा = सवेरा)।

पचना*–अ० क्रि० परेशान होना–'वृथा रुचि बीच पच्यौपरि क्यों ?'–घन०; दे० मूलमें।

पछियाना–अ० क्रि० पीछे-पीछे चलना। स० क्रि० पीछा करना।

पटकना*–अ० क्रि० परेशान होना–'ऐसी कौन बावरी सयान लैन पटकै'–घन०।

पटपरा†–पु० पहाड़के ऊपरकी समतल भूमि।

पटम*–पु० छल-छंद–'काहेकौं एतौ पटम रचत हौ मन रूखे मुँह चिकने बैन'–घन०।

पटरोल*–पु० पट्टवस्त्र, रेशमी वस्त्र।

पटेला–पु० चूड़ीका काम देनेवाला (चाँदीका) चिपटा कड़ा।

पतंगी*–वि० स्त्री० रंग-बिरंगी–'गोरे तन पहिरि पतंगी सारी, झमकि झमकि गावैं गारी'–घन०।

पतिलीन*–वि० प्रतिष्ठाहीन–'गतिहीननकी पतिलीननकी रति'–घन०।

पतोखी–स्त्री० रातमें बोलनेवाली एक चिड़िया।

पत्ती–स्त्री० दे० मूलमें; दे० 'ब्लेड'।

पत्यानि*–स्त्री० विश्वास–'झूठी बतियानिकी पत्यानिते उदास ह्वै कै'–घन०।

पत्रचाप–पु० (पेपरवेट) लकड़ी, शीशे, पत्थर आदिका वह छोटा टुकड़ा जिसका प्रयोग कागजपत्रोंको दवाये रखने, हवामें उड़ जानेसे रोकनेके लिए किया जाता है, पत्रभारक।

पत्रभारक–पु० (पेपरवेट) दे० 'पत्रचाप'।

पथ्थार*–पु० प्रस्तार, विस्तार (रासो)।

पदवीदान-समारोह–पु० [सं०] दे० 'समावर्तन संस्कार'।

पदावनति–स्त्री० [सं०] (डीग्रेडेशन) ऊँचे पदसे हटाकर नीचे पदपर कर दिया जाना, तनज्जुली।

पद्दु–पु० दे० 'पद'; बदला।

पद्मविभूषण–पु० [सं०] किसी असामान्य या विशिष्ट सेवाके लिए स्वतंत्र भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला एक सम्मान।

पय*–पु० पद, चरण–'पयलग्गि प्रानपति बीनवों नाह नेह मुझ चित धरहु'–रासो।

पया†–पु० दस सेर अनाजकी तौलवाला बरतन (अमर०)।

परगनाधीश–पु० दे० 'परगना हाकिम'।

परगना-हाकिम–पु० [अ०] परगनेकी देखरेख करनेवाला प्रधान अधिकारी, परगनाधीश।

परमुखापेक्षिता–स्त्री० [सं०] दूसरेका मुँह जोहने, दूसरे पर निर्भर रहनेकी प्रवृत्ति–'मनुष्यको परमुखापेक्षिताके दलदलसे निकालना'''साहित्यका लक्ष्य'–हजारीप्र०।

परमुखापेक्षी(क्षिन्)–वि० [सं०] दूसरेका मुँह जोहनेवाला।

परिमार्जनीय–वि० [सं०] जिसकी त्रुटियाँ दूर करना आवश्यक हो, संशोध्य।

परीसना*–स० क्रि० परोसना–'आनँद घन पिय न्यौति पपीहनि प्यास परीसत हौ'–घन०; स्पर्श करना–'मधुर त्रिभंगी जौं लौं कृपान परीसई'–घन०।

परैना–पु० पशुओंको हाँकनेका एक हथियार।

पर्नसालिका*–स्त्री० कुटिया।

पर्वतारोही दल–पु० पहाड़की ऊँचाई आदिका पता लगानेके लिए अभियान करनेवाला दल।

पलायनवाद–पु० [सं०] (एस्केपिज्म) वह मतवाद जिसमें जीवनकी वास्तविकता और कठिनाइयोंसे भागनेकी प्रवृत्तिको प्रश्रय दिया जाता है।

पलायनवादी(दिन्)–वि०, पु० [सं०] पलायनवादका सहारा लेनेवाला (कवि, लेखक इ०)।

पशुवंदीगृह–पु० दे० 'कांजी-हाउस'।

पसर–स्त्री० दे० मूलमें। मु० **–चराना**–पशुओंको रातमें चुपकेसे थोड़ी देरके लिए किसीके खेतमें चराना।

पांडुरित–वि० [सं०] जो पीला बना दिया गया हो–'वदनचंद्रके लोध्र रेणुसे गंगाका जल पांडुरित हो जाता था'–हजारीप्र०।

पाज*–पु० बंधन, बाँध–'ब्रजतिय-हिय-सरवर रसभरे। लाज-पाज तजि उमगनि ढरे।'–घन०।

पाटण*–पु० पत्तन, नगर।

पातालतोड़–वि० बहुत गहरा (कुँआ)।

पानी–पु० दे० मूलमें। मु० **–पानी करना**–किसीका क्रोध शांत करना।

पानुस*–पु० दे० 'फानूस'।

पिटना–अ० क्रि० पछाड़ दिया जाना, हार खाना–'इस चुनावमें कैथलिक लीग बुरी तरह पिटी'।

पियाल†–पु० दे० 'प्रियाल'।

पिसण*–वि० पु० पिशुन।

पीरक*–वि० दे० 'पीडक'।

पुज्जना*–अ० क्रि० पूजना, पूरा होना।

पुत्तारी*–पु० पुत्र, सुत।

पुत्ति*–स्त्री० पुत्री, लड़की।

पुन्निम*–स्त्री० पूर्णिमा।

पुप्फ*–पु० पुष्प, फूल।

पुरवा*–वि० पूर्ण करनेवाला–'चलि राधे वृंदावन विहरन औसर बन्यौ है मनोरथ-पुरवा'–घन०।

पुरालिपि–स्त्री० [सं०] पुरातन कालमें प्रचलित लिपि। **–शास्त्र**–पु० प्राचीन लिपियोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

पुलिस–स्त्री० दे० मूलमें। **–काररवाई**–स्त्री० किसी स्थानमें शांति स्थापित करनेके लिए की गयी सख्त कारखाई। **–राज**–पु० पुलिसका शासन, दबदबा या आतंक।

पुहप्प*–पु० पुष्प।

पुहवै*–पु० प्रभु, स्वामी।

पूर*–पु० दे० मूलमें; धारा–'उगिलत हो पयपूरको निगलत सो तमतांम'।

पूर्णकालिक–वि० [सं०] जो पूरे समय काम करे, जो पूरे समयके लिए नियुक्त किया गया हो; पूरे समयसे जिसका संबंध हो।

पेटनटा–पु० पेटके लिए नाचनेवाला।

पेया–स्त्री० [सं०] शर्बत, मदिरा आदि पेय पदार्थ।

पेशबंदी–स्त्री० [फा०] बचावकी युक्ति जो पहलेसे की जाय; दे० मूलमें।

पैँछर*–अ० पीछे-पीछे।

पैरहन†–पु० कश्मीरियोंका लबादा जैसा लंबा पहनावा (शेखर०)।

पैसंगां*–स्त्री० पेशीनगोई, भविष्यवाणी।

पोला†–पु० एक त्योहार जिसमें बैलोंकी पूजा होती है और उनकी दौड़ करायी जाती है।

प्रकाशनाधिकार–पु० [सं०] (कॉपीराइट) दे० 'कृतिस्वाम्य'।

प्रग्रिह*–पु० परिग्रह।

प्रछेद*–पु० प्रस्वेद, पसीना।

प्रजरंत*–वि० प्रज्वलित, जलता हुआ।

प्रतग्याँ*–स्त्री० प्रतिज्ञा।

प्रतपि*–वि० प्रत्यक्ष।

प्रतिनमस्कार–पु० [सं०] नमस्कारके जवाबमें किया गया नमस्कार, प्रत्यभिवादन।

प्रतिपूयिक, प्रतिपौतिक–वि० जो सड़न या मवाद न उत्पन्न होने दे (ऐंटी-सेप्टिक)।

प्रपन्न–पु० [सं०] (वार्ड) वह व्यक्ति जो नाबालिग होनेके कारण अपने अभिभावकके अधीन हो, अभिरक्ष्य ।

प्रबंधसंचालक–पु० [सं०] किसी संस्थाके प्रबंधादिकी देख-रेख करनेवाला संचालक ।

प्रब्बत*–पु० पर्वत ।

प्रम*–वि० परम ।

प्रमोधना*–स० क्रि० प्रबोधना, समझाना ।

प्रयत्नशील–वि० [सं०] प्रयत्नमें लगा हुआ, जो प्रयत्न कर रहा हो ।

प्रयोगवाद–पु० [सं०] (एक्सपेरिमेंटलिज्म) भाषा, विषय, भाव, छंद, आदि संबंधी पुरानी परंपराके विरोधी नये-नये प्रयोग करते रहनेकी साहित्यिकों, कवियोंकी प्रवृत्ति जिसकी तहमें पाठकोंको चौंका देनेकी लालसा भी, अज्ञात रूपसे, विद्यमान रहती है ।

प्रवेशद्वार–पु० [सं०] भीतर जानेका द्वार या रास्ता ।

प्रालेयपर्वत–पु० [सं०] हिमालय पहाड़ ('श्यामापुर') ।

प्रीतिपेय–पु० [सं०] (टोस्ट) किसीकी स्वास्थ्य-कामनासे ग्रहण किया जानेवाला पेय ।

फ़

फटफटिया, फटफटैया–स्त्री० (फटफट आवाज करनेवाली) मोटर-साइकिल ।

फटीचर†–वि० जो मैले-कुचैले कपड़े पहने हो, भद्दी वेशभूषा, सूरत-शक्लवाला–'शकल सूरत. फटीचर और नाम रख दिया मनोहरदास'–नया जीवन ।

फनमाली*–पु० शेषनाग–'कालिका-कृपान, मुंडमालीके त्रिशूलसे हैं, रामचंद्र-बान फनमालीके जहरसे'–लछिराम ।

फनाली*–स्त्री० फनोंका समूह–'कालीकी फनालीपै नचत बनमाली है'–पद्माकर ।

फाँफट*–पु० कूड़ाकरकट ।

फाउंटेन पेन–पु० [अं०] वह कलम जिसकी नलिकामें स्याही भर देनेसे लिखते समय उसे बार-बार दावातमें डुबाना नहीं पड़ता, झरना कलम, निर्झर लेखनी ।

फ़ुकली–स्त्री० दे० 'फोकली' ।

फ़ुनि*–अ० पुनि, पुनः ।

फूलड़िया†–स्त्री० जूती–'फाटी तो फूलड़िया पाँव उभाणे चलतै चरण धसे'–मीरा ।

फूलेड़ा–पु० एक उत्सव जो चैत सुदी एकादशीको मनाया जाता है और जिसमें श्रीकृष्णके लिए फूलोंका झूला बनाया जाता है ।

फूलभाँग–स्त्री० एक तरहकी भाँग ।

फूला–पु० पक्षियोंका एक रोग ।

फूवा–स्त्री० दे० 'फुआ' ।

फूहा†–पु० रूईका गाला ।

फेंदा–पु० अरुई नामक तरकारी ।

फेनदुग्धा–स्त्री० दूधफेनी नामक पौधा जो औषधके काम आता है ।

फेनमेह–पु० एक प्रकारका प्रमेह जिसमें फेन जैसा वीर्य थोड़ा-थोड़ा करके गिरता है ।

फेनिका–स्त्री० सुतफेनी नामक मिठाई ।

फेनिल–पु० रीठा ।

फैक्टरी–स्त्री० कारखाना ।

फैयाज–वि० उदार ।

फौतीनामा–पु० मृत व्यक्तियोंके नाम पता आदिकी वह सूची जो नगरपालिकाकी चौकीपर तैयार की जाती है ।

फ्रेम–पु० शीशे या तसवीर आदिके चारो तरफ़ लगाया जानेवाला चौखटा ।

ब

बंकनाल–स्त्री० सुनारोंकी महीन फुँकनी जिसे मुँहसे फूककर दीयेकी लौसे बारीक टुकड़ोंकी जुड़ाई की जाती है ।

बंदर भबकी–स्त्री० दे० 'बंदरघुड़की' ।

बँध-छुड़ाई–स्त्री० विवाहके अंतमें बंदनवारके पत्तेकी गाँठ खोलनेकी रस्म । इसे वधूकी रुखसतके पूर्व वर खोलता है और नेग माँगता है ।

बँधिया–स्त्री० छोटा बाँध या मेंड़–'खेत भर गया तो एक ओरसे बँधिया काटकर फालतू पानी निकाल दिया'–मृग० ।

बंब*–स्त्री० अहंकार–'धंधा ही में मरि गया बाहर हुई न बंब'–साखी ।

बक†–पु० वाक्, वाणी, वाक्य, बोल । मु० –फटना–मुँहसे आवाज या बोल निकलना–'क्या कहूँ, बक नहीं फटता'–मृग० ।

बकेल–स्त्री० पलास (छेवले)की जड़ जिसे कूटकर रस्सीकी तरह प्रयुक्त करते हैं, बकौंडा (बुंदेल०) ।

बकौंडा†–पु० दे० 'बकेल' ।

बखर†–पु० एक तरहका हल ।

बगड़ी*–स्त्री० बाग, बगीचा ।

बगदना–†अ० क्रि० * लौटना; दे० मूलमें ।

बगदर†–पु० मच्छर (बुंदेल०) ।

बगदाना†–स० क्रि० ढकेल देना, धक्का देकर गिरा देना; बिगाड़ना; बहकाना, भटकाना ।

बगर†–पु० (पशुओंका) झुंड, समूह–'ढोरोंका एक पूरा बगर सामने पेश कर दिया'–अमर० ।

बग्ग, बग्गु*–पु० बाग, लगाम, वेल्गा ।

बजकना†–अ० क्रि० बजबजा उठना, सड़नेके कारण बुलबुले ऊपर फेंकने लगना ।

बटना*–अ० क्रि० बँट जाना, समाप्त हो जाना–'पनकी पटिहै वह जौ बटिहै'–घन०; हटना, बहकना 'चित्त कहूँ न काहू भाँति बटै'–घन० ।

बटिया†–स्त्री० बँटाई, बँटैया, जमीनकी वह व्यवस्था जिसमें मालिकको लगानके रूपमें पैदावारका नियत भाग मिले ।

बड्डु*–वि० बड़ा ।

बदेस*–पु० विदेश ।

बनक*–स्त्री० मैत्री–'जासों अनबन मोहिं, तासों बनक बनी तुम्हें'–घन० ।

बनराँव*–पु० बड़ा जंगल; बड़ा वृक्ष–'चंदनकी कुटकी भली ना बबूल बनराँव'–कबीर ।

बन्ना†–पु० बनरा, दूल्हा ।

बमेक*–पु० विवेक।

बरदाश्त–स्त्री० सहनेकी शक्ति या भाव, सहनशक्ति, सहन।

बरबटी†–स्त्री० बोड़ा (छत्तीस०)

बरबराना†–अ० क्रि० दे० ‘बड़बड़ाना’।

बरसाइन†–स्त्री० हर साल बच्चा देनेवाली गाय।

बरीसानु*–पु० राधाका जन्मस्थान बरसाना।

बर्त्तना–अ० क्रि० से व्यवहार करना ‘निवासियोंके साथ वर्त्तनेमें तीन बातोंका ध्यान रखा जाता’–अंताराष्ट्रिय वि०।

बर्दाश्त–स्त्री० दे० ‘बरदाश्त’।

बलकनि*–स्त्री० प्रवाह, उल्लास, जोश–‘रस-बलकनि उनमदि न कहूँ सके’–घन०।

बलांगक–पु० [सं०] वसंत ऋतु।

बल्लभी*–स्त्री० दे० मूलमें; छत–‘ताकी बर बल्लभी, बिचित्र अति ऊँची, जासों निपटै नजीक सुरपतिको अगार है’ (काव्यांगकौ०)।

बस*–वि० सुवासित।

बसेंडा†–पु० पतला बाँस।

बहरना*–अ० क्रि० बीतना, कटना (समय)–‘बहरि परै नहिं समै गमै जियरा’–घन०।

बहराना*–अ० क्रि० बहरा हो जाना–‘रूई दियें रहौगे कहाँ लौं बहरायबेकी’–घन०। स० क्रि० दे० मूलमें।

बहुपदी बिक्रीकर–पु० दे० ‘प्रतिपद बिक्रीकर’।

बाँधल*–वि० बँधा हुआ, बद्ध–‘गुन बाँधिल होइ न छोटियै जू’–घन०।

बाढ़ी*–पु० बढ़ई–‘बाढ़ी आवत देखिकर तरुवर डोलन लाग’–कबीर।

बापरना†–स० क्रि० व्यवहार करना, काममें लाना।

बाबल*–पु० बाबुल, पिता, बाबा–‘बावल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखायी म्हारी बाँह’–मीरा।

बारस*–वि०, पु० दे० ‘बारह’–‘बारस मास जहाँ चौमासो’–घन०। † स्त्री० द्वादशी।

बारै*–वि०, पु० बारह।

बालपक्षाघात–पु० [सं०] (इनफैनटाइल पैरालिसिस) बच्चोंको होनेवाला पक्षाघात।

बालिस गाड़ी–स्त्री० (बैलास्ट ट्रेन) गिट्टी तथा सड़क बनानेका सामान ढोकर ले जानेवाली रेलगाड़ी।

बावदूकता*–स्त्री० वाग्मिता।

बिगसना†–अ० क्रि० दे० मूलमें; फूटना, फटना, छितरा जाना–‘मिट्टीका लड्डू छातीपर जाकर बिगस गया’–मृग०।

बिगूता*–वि० उलझा हुआ।

बिटंबे*–स्त्री० विडंबना।

बिड़ौ*–पु० विटप।

बिडौजा–पु० दे० विडौजा (इंद्र)।

बितुंडे*–पु० वितंडावाद।

बितुनना*–स० क्रि० रेशा-रेशा अलग कर देना–‘हाय ब्रज ब्यौहार-गति अति मतिहिं बितुनति घूम’–घन०।

बिदकाना†–स० क्रि० (मुँह) टेढ़ा-मेढ़ा बनाना, चिढ़ाना, बिचकाना–‘स्त्रियाँ मुँह बिदकाकर हँस पड़ीं’–मृग०; दे० मूलमें।

बिभछ*–पु० वीभत्स रस–‘श्रृंगार बीर करुना बिभछ भय अद्भुत हसंत सम’–रासो।

बिरबिराना†–स० क्रि० शिकायतकी तरह धीरे-धीरे कुछ कहना।

बिसारी*–वि० स्त्री० विषयुक्त–‘साँपिनि निसा बिसारी’–घन०।

बिसास*–पु० विश्वासघात–‘विष भोए बिषम-बिसास-बान-हत हैं–घन०।

बिस्वाससँगाती*–वि०, पु० विश्वासघाती–‘छोड़ गया बिस्वाससँगाती प्रेमकी बाती बराय’–मीरा।

बिहित*–पु० बिहिश्त, स्वर्ग–‘बिहित न मेरे चाहिये बाझ पियारे तुझ’–साखी।

बीतनि*–स्त्री० क्षणभंगुरता–‘बीतनिको रूप तूँ ठहरि हेरि गये बीते’–घन०।

बीनवना*–स० क्रि० बिनती करना–‘पय लग्गि प्रानपति बीनवौं’–रासो।

बुर्जुआ–पु० [फा०] धनिक मध्यम वर्ग (व्यापारी तथा बड़ा वेतन पानेवाले लोग)। वि० इससे संबंध रखनेवाला।

बुल्लना*–स० क्रि० बोलना–‘सकुच न हिय छिन एक बचन मनमाने बुल्लैं’–रासो।

बूची*–वि० स्त्री० कनकटी।

बृंदा*–स्त्री० राधा–‘चंद्रमल्ली-पुंजकी नवकुंज विहरत आय। जहाँ बृंदा अति भली बिधि रची बनक बनाय।’–घन०।

बेडिया†–पु० एक तरहका नट।

बो†–स्त्री० वधू, पत्नी (भाईजी-बो=(भौजी),: जेठानी; रामा-बो, इत्यादि)।

बोहना–† अ० क्रि०, स० क्रि० (बीज) बोना, खेतमें बीज छिटकना (अमर०)।

बोहनी†–स्त्री० बीज बोने, छिड़कनेकी क्रिया–‘जुताइयाँ हुईं और बोहनी भी’–अमर०।

ब्लेड–पु० [अं०] इस्पातका चौकोर पतला पत्तर या टुकड़ा जिससे डाढ़ी बनानेका काम लिया जाता है, पत्ती।

भ

भकभूर*–वि० उजड्ड, मूढ़–‘प्रेम-चीर-कथा कहै कहा भकभूर सौं’–घन०।

भकुरना†–अ० क्रि० नाराज होना, रूठना, क्षुब्ध होकर मुँह डाल लेना–‘निन्नीने मनाया, अरी ठहर भी, यों ही भकुरने लगी’–मृग०।

भगरड़ी*–पु० भंग।

भग्नहृदय–वि० [सं०] जिसका हृदय, दुःखादिके कारण, टूट गया हो; निराश; उदास।

भटभटी*–स्त्री० देखते हुए भी न दिखाई पड़ना–‘भटभटी लागै जौ पै बीच बारुनी बसै’–घन०।

भटभेर*–पु० दे० ‘भटभेरा’।

भठ*–वि० भ्रष्ट–‘साधु-मतो क्यों मानै दुरमति जाकी सबै सयान पर्‍यो भठ’–घन०।

भड्डु–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति जो भविष्य बतलानेका काम करती है; इस जातिका व्यक्ति–‘भड्डु

कहै सुन भड्डुरी बिन बरसे ना जाय'।

भदूना†—पु० ढेर (मृग०)।

भद्रा—स्त्री० [सं०] दे० मूलमें। मु० —उतारना—मरम्मत करना, सजा देना।

भया*—पु० भैया, भाई।

भरका—पु० नदी किनारेका ढालवाँ हिस्सा (?)—'वे दोनों नदीके भरकेमें उतर गयीं'—मृग०; खड्ड।

भवनदीर्घिका—स्त्री० [सं०] घरका भीतरी तालाब।

भाँभी*—वि० स्त्री० घूमनेवाली।

भाँवना†—स० क्रि० घुमाना, मथना (मट्ठा भावना), बिलोना; दे० मूलमें।

भाँवरा*—पु० आवर्त, भँवर; परिक्रमा।

भाड़ैत†—वि० भाड़ेपर काम करनेवाला, भृतिभोगी।

भारतरत्न—पु० [सं०] प्रगाढ पांडित्य, अद्वितीय राष्ट्रसेवा, विश्वशांतिके प्रयत्नादिके लिए भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला सबसे बड़ा सम्मान। सन् १९५५ तक यह इन लोगोंको दिया जा चुका है—सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, सी० वी० रमण, राजगोपालाचारी, डाक्टर भगवान्‌दास, धोंडो केशव कर्वे, जवाहरलाल नेहरू।

भारती—स्त्री० [सं०] दे० मूलमें; मडन मिश्रकी पत्नी।

भारिक—पु० [सं०] (पोर्टर) (रेलयात्रियोंका) सामान, कपड़े आदि बोझ ढोनेवाला।

भास*—स्त्री० दे० 'भाषा'।

भासा*—स्त्री० दे० 'भाषा'।

भित्तिपत्रक—पु० [सं०] (प्लैकार्ड) दीवारपर चिपकाया जानेवाला वह कागज जिसके एक ही ओर बड़े अक्षरोंमें विज्ञापन, सूचना आदि छपी हो या हाथसे लिखी गयी हो।

भीँचना†—स० क्रि० दबाना, काटना; दे० मूलमें।

भीजना*—अ० क्रि० बढ़ना—'जीव सूक्यौ जाय ज्यौं ज्यौं भीजत सरवरी'—घन०।

भीजा*—वि० सरस, सुखी—'भीजे घन आनँद बिराजौं निधरक तुम'—घन०।

भीमरा*—वि० स्त्री० भयानक आकार-प्रकारवाली—'फेरि भीमरा कृष्णा गाही'—छत्र०।

भुथराई*—स्त्री० भोथरा होना, कुंदपना—'पैने कटाछनि ओज मनोजके बानन बीच बिंधी भुथराई'—घन०।

भुथराना—अ० क्रि० दे० 'भोथराना'।

भुल्लना*—स० क्रि०, अ० क्रि० भूलना।

भुसना*—अ० क्रि० दे० 'भूँसना' (भूँकना)—'हस्ती चढ़ि नहिं डोलिये कूकर भुसैं जु लाख'—साखी।

भूँरा*—पु० भ्रमर।

भूतागति*—स्त्री० भूतका-सा व्यापार, विलक्षण बात—'दौरि परैं न निगोड़ी थकै बड़ी भूतागति है'—घन०।

भूमिधर किसान—पु० वह काश्तकार जो दसगुना लगान जमाकर भूमिका स्वामी बन गया हो और सीधे सरकारको लगान देने लगा हो।

भेड़ना†—स० क्रि० भिड़ा देना, सटा देना, ओठँगाना —'किवाड़ भेड़कर पत्नी चली गयी'—मनो, नव० ५५।

भेला*—पु० साँप—'भेला पाया श्रम सों भवसागरके माँह। जो छाड़ौं तो डूबिहौं, गहौं तो डसिहै बाँह'—कबीर।

भैरव-वाहन—पु० [सं०] कुत्ता, श्वान।

भोजल*—पु० भवजल, भवसागर।

भोथराना—अ० क्रि० भोथरा होना।

भोम*—स्त्री० भूमि, धरती—'जित जाऊँ तित पाणी पाणी हुई सब भोम हरी'—मीरा।

भौँड़ूँ*—पु० टीला, कगार।

भौँरहाई*—स्त्री० भौँरोंका मँड़राना—'आरस बिभावरी ह्वै होत भौँरहाई है'—घन०।

भ्रत्तार*—पु० भर्तार, पति।

म

मंजन*—पु० स्नान; मालिश—'मंजन कै नित न्हाय कै अंग अँगोछि कै बार झुरावन लागी'—ललित०; माँजना, रगड़ना; दे० मूलमें।

मंदल*—पु० मृदंग (घन०)।

मंदिलरा*—पु० मृदंग—'मंदिलरा बाजै रंग सो'—घन०।

मगसर*—पु० मार्गशीर्ष, अगहन—'मगसर' ठंढ बहोती पड़ै मोहि बेगि सम्हालो हो'—मीरा।

मगारना*—स० क्रि० जलाना—'बिरह अंगारनि मगारि हिय होरी-सी'—घन०।

मछहरी†—स्त्री० दे० 'मसहरी'।

मटीला†—वि० मटियाला, मटमैला (मृग०)।

मठा-मूसल—पु० मठा (तक्र) और मूसल जैसी बेमेल बातें (मठा-मूसलकी धमकना=बेमेल बातें करना, मृग०)।

मतवाद—पु० [सं०] वह मत जो वादका रूप ग्रहण कर ले।

मता, मतो*—पु० सलाह, उपदेश, सम्मति; सुमति—'बिना मतेको राज गयो रावणको साँई'—गिरिधर।

मदअंतिका*—स्त्री० दे० 'मदयंतिका'।

मदीला†—वि० मदभरा, उन्मादकारी (मदीली चितवन, अमर०); दे० मूलमें।

मद्यनिर्माणशाला—स्त्री० [सं०] (डिस्टिलरी) शराब तैयार करनेकी जगह, अभिस्रावणी।

मधुयामिनी—स्त्री० [सं०] वर-वधूकी प्रथम मिलनरात्रि।

मध्याह्नभोजन—पु० [सं०] (लंच) दोपहरमें किया जानेवाला मुख्य भोजन।

मनसायन†—वि० जहाँ चहल-पहल हो। पु० दे० मूलमें।

मनस्कार—पु० [सं०] किसी विषयके प्रति मनकी आसक्ति, चित्ताभोग; दे० मूलमें।

ममान, ममाना—पु० मामाका घर।

ममियाउर†—पु० दे० 'ममियौरा'।

मरकत-मंदर—पु० नीलमका पहाड़—'मरकत-मंदरपर संगमी रतनहार, लहरैं तरंगदार गंगा-यमुनाकी हैं' —लछिराम।

मरक्कत-सैल*—पु० नीलमका पहाड़—'मानो मरक्कत-सैल बिसाल मैं फैलि चली बर बीर-बहूटी'—तुलसी।

मरमराहट—स्त्री० दबी आवाजमें, अपने आप, असंतोष प्रकट करनेकी क्रिया; असंतोष प्रकट करनेके लिए दबी आवाजमें कहे गये शब्द—'लूटमारके अंशने सिपाहियोंकी मरमराहट बंद कर दी'—मृग०; डाल, आदिके टूटनेकी

आवाज।

मरवट*–पु०.मुँहपर रेखाएँ बनाना–'अंजन आँजि माँडि मुख मरवट फिरि मुख हेरौ री'–घन०।

मलपात्र–पु० [सं०] शौच जानेके लिए स्टूल आदिके नीचे रखा जानेवाला चीनी मिट्टीका पात्र, कमोड।

मसरना*–स० क्रि० मसलना–'कुँवर कान्ह जमुनामैं न्हात। मसरत सुभग साँवरे गात।'–घन०।

मसलन–स्त्री० मसलनेकी क्रिया, रगड़, मर्दन–'मैं वह हलका-सी मसलन हूँ जो बनती कानोंकी लाली'–कामायनी।

महालील*–वि० महा लीला करनेवाला।

महावायुपति–पु० (एयर मार्शल) वायु सेनाका सबसे बड़ा अधिकारी।

महिमंड*–वि० महिमामंडित–'खोजैं सिद्ध चारन मुनीस महिमड है'–घन०।

महुर*–वि० मधुर (रासो)।

महाछ*–पु० दे० 'महोच्छव'।

माँगपट्टी–स्त्री० बाल सँवारना, केश-रचना, माँगचोटी।

मांगल्य–पु० [सं०] मांगलिक द्रव्य–'वेदाध्यायी ब्राह्मणोंके उत्क्षिप्त मांगल्यसे राजमार्ग भर गया होगा'–हजारीप्र०।

माँडना*–स० क्रि० फैला देना, रखना (मँडाना, छत्तीस०)–'चौपडि माँडी चौहटै अरध उरध बाजार'–साखी।

माँहि*–अ० हृदयके भीतर, अपने ही अंदर–'सब अँधियारा मिटि गया जब दीपक देख्या माँहि'–साखी।

माइल*–वि० दे० 'मायल'।

मागद*–पु० दे० 'मागध'।

माचिस–स्त्री० दे० 'दियासलाई'।

मादकद्रव्यविभाग–पु० [सं०] (एक्साइज डिपार्टमेंट) गाँजा, भाँग आदि मादक द्रव्योंपर नियंत्रण रखनेवाला सरकारी विभाग।

माद्री–स्त्री० [सं०] कृष्णकी एक पत्नीका नाम; दे० मूलमें।

मामी–स्त्री० स्वीकृति; दे० मूलमें। मु० **–भरना**–हामी भरना, समर्थन करना–'वेद भरत हैं मामी'–घन०।

मिंबर–पु० मसजिदके बीचमें बना वह ऊँचा स्थान जिसपर खड़े होकर इमाम धार्मिक भाषण करता है।

मिग*–पु० मृग, हरिण।

मिड़ना*–अ० क्रि० चिपक जाना–'घन आनँद एँड़िनि आनि मिड़ै'।

मिलकाना, मुलकाना†–स० क्रि० दे० 'मलकाना'।

मीडकी*–स्त्री० मेढकी।

मील–पु० दे० मूलमें। **–के पत्थर**–दूरी या प्रगति बतानेवाले चिह्न।

मुंचित*–वि० मुक्त, खुला।

मुंजली*–वि० स्त्री० मूंजकी।

मुंस†–पु० पति, शौहर, खसम (बुंदेल०–तिरस्कारमें प्रयुक्त)–'मुंस पूतको कोसनेमें नहीं लजाती'–अमर०।

मुँहअधियारे†–अ० दे० 'मुँहअँधेरे'।

मुँहझौंसा–वि० जिसका मुँह झुलस दिया गया हो (एक गाली)।

मुँहाचही*–स्त्री० बोलचाल; (प्रेमी-प्रेमिकाका) परस्पर मुख देखते रहने, नित्य साथ बने रहनेकी अवस्था–'जीवन मुँहाचहीको नीको'–सूर (?); दे० मूलमें।

मुकलावा–पु० गौना।

मुखनी†–स्त्री० मुख्य स्त्री या कार्यकर्त्री–'हमारे गोलकी मुखनी है यह'–मृग०।

मुखबंधनी–स्त्री० (मजिल) शैतान घोड़े, गाय आदिका मुँह बाँधनेके लिए पहनायी जानेवाली जाली, जाबा।

मुखारी†–स्त्री० मुखाकृति; ऊपर या सामनेका भाग; दतुअन।

मुखिल–वि० खलल डालनेवाला, बाधक ('गबन')।

मुगुध*–वि० दे० 'मुग्ध'। **–तिय**–स्त्री० मुग्धा नायिका–'कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनि-पुनि चंदन जानि'–ललित०।

मुछाड़िया–पु० बड़ी मूछोंवाला, मुछैल, मुछंदर।

मुजनूँ*–सर्व० मुझको।

मुडवरिया†– स्त्री० सिरहाना।

मुनगा–पु० सहिजन, शोभांजन।

मुर्रा†–पु० पाँवमें पहननेका एक तरहका ऐंठनदार छड़ा; दे० मूलमें।

मुलकित*–वि० पुलकित, प्रसन्न; दे० मूलमें।

मुश्क–स्त्री० दे० मूलमें। मु० **मुश्कें बाँध लेना**–बाहोंपर रस्सी कसकर कब्जेमें कर लेना, गिरफ्तार कर लेना।

मुसका–पु० दे० 'जाबा'।

मुसुक्का†–स्त्री० मुश्क, कंधेसे कोहनीतकका हिस्सा।

मुहर*–वि० मुखर।

मूँदड़ी*–स्त्री० मुद्रिका, मुँदरी, अँगूठी।

मूँड़†–पु० दे० मूलमें। मु० **नौ–का हो जाना**–बहुत शक्तिशाली और जबरदस्त हो जाना।

मूझना*–अ० क्रि० मूर्च्छित होना–'सोचनि जूझत मूझत ज्यौं'–घन०।

मूली–स्त्री० दे० मूलमें। मु० **–गाजर समझना**–तुच्छ समझना, (किसीको) कुछ भी न गिनना।

मूसली–स्त्री० छोटा मूसल; खरलमें डालकर मसाला आदि कूटनेका पत्थर या लोहेका बट्टा या छोटा डंडा–'इमामदस्तेकी मूसली उठा लाया और लगा तालेपर दनादन प्रहार करने'–मनो०, नव० ५५।

मँडडा*–सर्व० मेरा।

मेघपुष्प–पु० [सं०] कृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एकका नाम।

मेहरवा*–पु० मेह, बादल–'उमड़ि-उमड़ि घुमड़ि-घुमड़ि रस राखिलौ नेह-मेहरवा'–घन०।

मेहरा*–पु० वृष्टि, बादल–'उघरि-उघरि अब बरसन लाग्यो अचरजको यह मेहरा'–घन०।

मैँडा*–सर्व० मेरा।

मैँनूँ*–सर्व० मुझको।

मैवासा*–पु० दे० 'मवास'।

मौन*–पु० मोयन, घीका मेल।

म्रग, म्रग्ग*–पु० मृग।

य

यंत्रतोप–स्त्री० दे० 'मशीनगन'।

यज्ञवेदिका–स्त्री० [सं०] यज्ञकी वेदी।

यथाशीघ्र–अ० [सं०] जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी।

यननूँ*–सर्व० इनको।

युद्धपरिषद–स्त्री० युद्धका संचालन करनेके लिए स्थापित राजनेताओंकी परिषद।

युवराजी–स्त्री० [सं०] युवराजकी पत्नी।

युवराज्ञी–स्त्री० [सं०] वह युवती (ज्येष्ठ कन्या) जो युवराजका पद ग्रहण करे (जैसे ब्रिटेनमें प्रिंसेज ऑफ वेल्स)।

युवरानी*–स्त्री० दे० 'युवराज्ञी'।

यौगिक–वि० [सं०] योग-संबंधी; दे० मूलमें।

र

रँगना–स० क्रि० दे० मूलमें। **रँगा सियार**–पु० सज्जन बना हुआ व्यक्ति, पाखंडी।

रखीसर*–पु० ऋषीश्वर (कबीर)।

रगमगा*–वि० रंजित।

रज*–पु० राजत्व, महत्त्व–'अंजन यहै सूझहू यहै। ब्रजरज-सरन गहै रज रहै।'–घन०।

रतौहाँ*–वि० रागमय, रक्ताक्त–'नाहर आय बसंत भयौ नखकेसू रतौहैं किये हिये खौंपनि'–घन०।

रत्नकार–पु० जौहरी–'मारवाड़ी रत्नकारोंको लूटा'–भा० वै० विकास।

रफ*–पु० सुंदर ढंग–'पियके अनुराग सुहाग भरी रतिहेरैं न पावति रूप-रफै'–घन०।

रमड़ना*–अ० क्रि० बरसना–'घमड़ि सुर-रस रमड़ि नित आनंद घन–आसार'।

रमतूला–पु० सिंगा नामक बाजा, धुधका।

रमेना*–अ० क्रि० रमना।

रम्मट–पु० युद्धके समय बजाया जानेवाला बाजा–'ये तुरही, रम्मट, धौंसे'–मृग०।

रवानी*–वि० स्त्री० आनंद-प्रवाहमें मग्न–'आज देखौं भाँति भाँति रावल रवानी है'–घन०।

रसम*–स्त्री० रश्मि, किरण–'छूटी छबि-रसमैं चटक चोखे बसमैं'–घन०।

रसमसाना*–अ० क्रि० रसमसा होना, रस बरसना–'सदा स्यामघन इत रसमसै'–घन०।

रसाना*–स० क्रि० आनंदित करना–'तिन्हैं रुचै सोई करौं रसियानि रसाऊँ'–घन०। अ० क्रि० दे० मूलमें।

रसायनिक–पु० कीमियागर; दे० मूलमें।

रसिया†–पु० एक तरहका गीत (जो बुंदेलखंडमें प्रायः होलीके समय गाया जाता है)।

रसोत*–स्त्री० रसमयता–'कौन घरी रूपके रसोत जगमगौगे' ?–घन०; दे० मूलमें।

रह*–पु० रथ (रासो)।

रहठानि*–स्त्री० रहनेका स्थान–'जामैं चलि जायबे बनाई रहठानि है'–घन०।

रहस्यवाद–पु० [सं०] चिंतन, मनन द्वारा ईश्वरसे प्रत्यक्ष संपर्क-स्थापनकी प्रवृत्ति; आत्मा-परमात्माके अभेदकी अनुभूति और अव्यक्तके प्रति आत्मनिवेदन।

राँकव*–वि० रंक–'राँकव कौन सुदामा हूतें आप समान करे'–सूर।

राँध–वि० परिपक्व बुद्धिवाला (प०); दे० मूलमें।

राखदानी–स्त्री० सिगरेट, चुरुट आदिकी राख गिरानेका तश्तरीनुमा पात्र।

राचना*–वि० रचनेवाला। [स्त्री० राचनी।]

राजतंत्र–पु० [सं०] वह शासनप्रणाली जिसमें राज-(स्टेट)का अधिपति राजा हो।

राजभत्ता–पु०, **राजवृत्ति**–स्त्री० (प्रिवीपर्स) दे० 'राजाधिदेय'।

राजसात्करण–पु० (कानफिस्केशन) दे० 'समपहरण'।

रानना†–स० क्रि० स्वीकार करना, कबूलना।

रामलड्डू–पु० प्याज (साधुओंकी भाषा)।

रायसा–पु० किसी वीर पुरुष या सती नारीका यशोगीत; दे० मूलमें।

रारि*–स्त्री० दे० 'रार'–'रारि-सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें'–भूधर।

रावल*–पु० राधाका ममियौरा।

राष्ट्रध्वज–पु०, **राष्ट्रपताका**–स्त्री० [सं०] किसी देशका राष्ट्रीय झंडा।

रिँगावना*–स० क्रि० दे० 'रिँगा[illegible]

रिक्शा–पु० दे० 'रिकशा'।

रिगाना†–स० क्रि० चिढ़ाना।

रिझोना*–वि० रीझनेवाला।

रिणवास*–पु० रनिवास।

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी......
पु०सं० 2024
भारती पुस्तकालय

रितौना*–स० क्रि० दे० 'रितवना'।

रिपटना†–अ० क्रि०ः रपटना, फिसलना, खिसलना–'चंद्रमाकी रिपटती हुइ झिलमिल'–मृग०।

रियायती–वि० दे० 'रिआयती'। **–छुट्टी**–स्त्री० दे० 'रिआयती रुखसत'।

रिलना*–अ० क्रि० भरभराकर एक ओरको गिर पड़ना; दे० मूलमें।

रीगना†–अ० क्रि० चिढ़ना।

रीतिग्रंथ–पु० [सं०] नायिकाभेद, नखशिख, बारहमासा, अलंकार आदिका विवेचन करने तथा उनके उदाहरण प्रस्तुत करनेवाली रचना।

रुचता*–वि० दे० 'रुचित'।

रुरना*–अ० क्रि० शोभित होना, छा जाना–'दसननि जोतिजाल मोतीमाल-सी रुरै'–घन०।

रूम*–पु० रोम, लोम (मीरा)।

रूमानी–वि० दे० 'रोमानी'।

रूहिर*–पु० रुधिर, रक्त।

रेँवजा, रेँवझा–पु० एक पेड़ जो कुछ-कुछ बबूलके पेड़से मिलता है।

रेडियो–पु० [अं०] एक तरहका विद्युद्-यंत्र जिसकी सहायतासे बिना तारके ही वार्त्ता, संगीत, समाचार आदि बहुत दूर-दूरतक प्रसारित किया जा सकता है; वह यंत्र जिससे आकाशवाणी केंद्र द्वारा प्रसारित ऐसा समाचार,

संगीत आदि सुना जा सके।

रौंत*–स्त्री० ठकुराई।

रोचना–स्त्री० टीका, तिलक।

रोडवेज–पु० [अं०] सरकारी मोटर गाड़ियों द्वारा यात्रियों के गमनागमनकी नियमित व्यवस्था।

रोहिणीकांत–पु० [सं०] चंद्रमा।

ल

लगान–स्त्री० जंगलमें शिकारकी टोहमें बैठनेके लिए ठीक किया गया स्थान–'जंगलमें लगान कहाँ-कहाँ है, किसको कहाँ बैठना है, निश्चित हो गया'–मृग०।

लगुवा*–पु० प्रेमी, लागू–'लटुवा भयो फिरत दिन-रजनी लगुवा गोरी भोरीके'–घन०।

लज्जी*–स्त्री० प्रियतमा (रासो)।

लड़कना*–अ० क्रि० ललकना–'जुगल कुँवरकों लड़कि लड़ावै। परम प्रेमरस पारस पावै।'–घन०।

लड़ैया†–पु० सियार (बुंदेल०)। [**हाथ भर–नौ गज पूँछ**–आवश्यकतासे बड़े वस्त्रादि धारण करना, अपने वित्त या सामर्थ्यसे बाहर कोई काम करना। इससे मिलती-जुलती कहावत है 'वित्तेभरके वित्तनमियाँ सवा हाथकी डाढ़ी'।]

लपटीला*–वि० रपटीला, पिच्छल, फिसलनवाला–'ऊँची नीची राह लपटीली, पाँव नहीं ठहराइ'–मीरा।

लपेटा–पु० पगड़ी–'केसरी लपेटा छैल विधिसों लपेटे' –घन०; दे० मूलमें।

लवढ़ना*–अ० क्रि० लिपट जाना–'ज्यौं मैं खोले किवार त्यौंही आनि लवढ़ि गौ गरैं'–घन०।

लवना*–अ० क्रि० चमकना–'चटक-चोप चपला हिय लवै'–घन०।

लहाछेह*–स्त्री० शीघ्रता–'लहाछेह कहा धौं मचाय रहे ब्रजमोहन हौ उखनींद भरे हौ'–घन०। वि० मूसलधार, द्रुतगतिवाली (वर्षा)। पु० दे० मूलमें।

लाँझ*–स्त्री० लंघन, बाधा।

लाइ*–स्त्री० प्रेमकी लगन; दे० मूलमें।

लागू*–पु० प्रेमी–'साँवलिया मेरे मनको लागू नित इत आवै'–घन०।

लाल कुरतीवाला दल–पु० भारतके असहयोग आंदोलनके समय सीमाप्रांतका वह राष्ट्रीय दल जिसके नेता सीमांत गांधी खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ थे और जिसके सदस्य लाल कुरते पहना करते थे।

लावारा†–वि० आवारा।

लुखरो†–स्त्री० लोखड़ी, लोमड़ी (बुंदेल०)।

लुथ्थि*–स्त्री० लोथ।

लूँण–पु० नमक–'खूब खाँड़ है खीचड़ी माँहि पड़ै टुक लूँण'–साखी।

लेखन-हड़ताल–स्त्री० (पेन-डाउन स्ट्राइक) दे० 'लेखनी कर्मरोधन'।

लेखांश, लेख्यांश–पु० [सं०] (पैसेज) किसी लेखादिका अंश।

लोखरिया†–स्त्री० लोखड़ी, लोमड़ी (बुंदेल०)।

लोध्ररेणु–पु० [सं०] लोध्र वृक्षके फूलकी बुकनी जिसका प्रयोग अंगरागकी तरह किया जाता था।

लौहपुरुष–पु० [सं०] दृढ़ निश्चयवाला व्यक्ति, जो कठिनाइयों, बाधाओं या किसीकी धमकियोंसे विचलित न हो।

व

वयोत्तर–वि० (ओव्हर-एज) जिसकी उम्र अधिक हो गयी हो, जो निर्धारित वयसे अधिकका हो।

वर्चस्व–पु० शक्ति, तेज, (संस्कृत वर्चस्); प्राबल्य, प्राधान्य–'राघवनका उत्साह उसके शारीरिक बल और मानसिक वर्चस्वसे सीमित था'–अमर०।

वहै*–सर्व० वह ही, वही।

वाक्यखंड–पु० [सं०] दे० 'उपवाक्य'।

वाट–पु० [अं०] बिजलीके प्रकाश या चालक शक्तिकी एकाई।

वातजात–पु० [सं०] वायुपुत्र, हनुमान्।

वापी–स्त्री० [सं०] बावली; दे० मूलमें।

वायुपति–पु० (एयर वाइस मार्शल) वायुसेनाका उच्चाधिकारी जो महावायु पतिसे छोटा होता है।

वारिचरकेतु–पु० [सं०] मीनकेतन, कामदेव–'कोपेउ तबहिं वारिचरकेतू'–रामा०।

वाल्हा*–पु० प्रियतम, वल्लभ–'मीरा कहे गोपिनको वाल्हो, हमसूँ भयो ब्रह्मचारी'–मीरा।

वासुकि-सुता–स्त्री० [सं०] सुलोचना (तुमल)।

विखंडीकरण–पु० [सं०] (फ्रैगमेंटेशन) खेतोंका टुकड़ोंमें विभाजित किया जाना।

वितन*–वि० दे० 'वितनु'।

वित्थार*–पु० विस्तार, फैलाव।

विपरिधान–पु० [सं०] विशेष प्रकारका परिधान, वरदी, गणवेश।

विलयन–पु० [सं०] विलीन होनेकी क्रिया, विलय; दे० मूलमें।

विलुलितकेशा–वि० स्त्री० [सं०] जिसके सिरके बाल बिखरे हों (स्त्री)।

विवदिषा–स्त्री० [सं०] बोलनेकी इच्छा।

विवदिषु–वि० [सं०] बोलनेका इच्छुक।

विशेषांक–पु० [सं०] किसी सामयिक पत्रादिका वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसरपर, विशेष प्रकारकी उपयोगी सामग्रीके साथ प्रकाशित किया गया हो।

वेधक–वि० [सं०] घाव करनेवाला (वि०)। दे० मूलमें।

वैतसी वृत्ति–स्त्री० [सं०] बेंतकी तरह झुक जानेकी आदत, नम्रताकी प्रवृत्ति।

वैभिन्न्य–पु० [सं०] विभिन्नता।

वैया–प्र० एक प्रत्यय=वाला (कोई काम करनेवाला)।

वैलती*–स्त्री० ओलती, ओरी–'आनँद घन कितहूँ किनि बरसौ ये बरुनी वैलतियाँ'।

वैशाखी–स्त्री० [सं० वरसाक्षी] बरातके आगमन तथा कन्यादानकी रस्म शुरू होनेके बीच जनवासेमें जाकर वरको देखने और उसे सम्मानित करनेकी रीति।

वैशेषिक–वि० [सं०] विशेष विषय-संबंधी; दे० मूलमें।

वोढ़ना*–स० क्रि० दे० 'ओढ़ना'–'वोढ़ै काला कापड़ा नाँव धरावै सेत'–साखी ।

वोहथ्थ*–पु० वोहित्थ, जहाज़ ।

व्यंजनतालिका–स्त्री० [सं०] (मेनू) (होटल इत्यादिमें) परोसे जा सकने योग्य व्यंजनोंकी सूची, व्यंजिनी, व्यंजनिका ।

व्यंजना–स्त्री० [सं०] व्यक्त करनेकी क्रिया; दे० मूलमें ।

व्यंजनिका–स्त्री० (मेनू) दे० 'व्यंजनतालिका' ।

व्यंजिनी–स्त्री० [सं०] (मेनू) (होटलमें तैयार) व्यंजनोंका समूह (जैसे कमलिनी=कमलसमूह); दे० 'व्यंजनतालिका' ।

व्याघ्रमुख–वि० [सं०] बाघ जैसे मुखवाला; (मकान) जिसका सामनेका भाग चौड़ा और पीछेका सकरा हो, गोमुखका उलटा (ऐसा मकान अमंगलकारी माना जाता है) ।

व्यापक*–स्त्री० व्यापकता–'मधुकरके पठये ते तुम्हरी व्यापक न्यून परी'–सूर ।

व्यावहारिक–वि० [सं०] व्यवहारमें आने लायक; दे० मूलमें ।

व्रात जाति–स्त्री० [सं०] झुंड बनाकर चलनेवाली जाति ।

व्हेल–पु० [अं०] दे० 'ह्वेल' ।

श

शंक*–स्त्री० शंका, संदेह ।

शय्या–स्त्री० [सं०] वीरगतिप्राप्त योद्धाके लिए निर्मित बाणोंकी शय्या ।

शहना–पु० लगान वसूल करनेवाला सरकारी कर्मचारी –'राज्यका शहना आया, छटवाँ अंश ले गया'–मृग०; कोतवाल ।

शाखाकार्यालय–पु० [सं०] किसी व्यापारिक संस्था या अन्य संस्थाका वह छोटा कार्यालय जो प्रधान कार्यालयके मातहत या उसके नियन्त्रणमें हो ।

शानीला–वि० शानदार, रोबवाला ।

शाल–स्त्री० शल्य, एक तरहकी बरछी (कविप्रि०) ।

शिंजित–पु० [सं०] झंकार, ध्वनि ('साकेत'); वि० दे० मूलमें ।

शिकरम–स्त्री० एक तरहकी घोड़ागाड़ी ।

शिकारा–पु० कश्मीरी ढंगकी लंबी नाव जिसके बीचमें सायादार बैठनेका स्थान होता है (शेखर०) ।

शिक्षाशास्त्र–पु० [सं०] शिक्षाविधिका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।

शिरमौर–पु० सरदार, श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिशुगृह–पु०, **शिशुशाला**–स्त्री० [सं०] वह कमरा, भवन या स्थान जहाँ धात्रियोंकी देखरेखमें, छोटे बच्चे रहते हों ।

शीर्षस्थ–वि० [सं०] शीर्षस्थानीय, चोटीका, प्रधान ।

शीलभंग–पु० [सं०] (आउटरेजिंग दि मॉडेस्टी ऑफ) किसी किशोरी या युवतीके साथ अनुचित छेड़छाड़ ।

शुक्रिया–अ० [फा०] धन्यवाद ! दे० मूलमें ।

शुद्ध लाभ–पु० [सं०] (नेट प्रॉफिट) लागत या कुल खर्चा काटनेके बाद होनेवाला लाभ ।

श्रृंगारना*–स० क्रि० सजाना, भूषित करना; सँवारना ।

शेल*–पु० शल्य, बरछी (कविप्रि०) ।

शोध्यशोधक–पु० [सं०] (प्रूफरीडर) शोध्यपत्र (प्रूफ) पढ़कर उसकी अशुद्धियाँ दूर करनेवाला कर्मचारी, 'ईक्ष्यवाचक' ।

श्यामपट्ट–पु० [सं०] विद्यालयोंकी प्रत्येक कक्षामें रहनेवाला वह काला तख्ता जिसपर खरिया मिट्टीसे लिखकर अध्यापक गणित आदिके प्रश्न विद्यार्थियोंको समझाता है ।

श्रमप्रमुख–पु० [सं०] दे० 'फोरमैन' ।

श्रमिकसंघ–पु० दे० श्रमसंघ ।

श्रावना*–स० क्रि० बहाना, टपकाना ।

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि.........
पु०सं० 2024
भारती पुस्तकालय

ष

षटदस*–पु० सोलहो श्रृंगार ।

स

सँकीर*–वि० संकीर्ण ।

संक्रमण–पु० [सं०] एक स्थिति या अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश; हस्तांतरण; दे० मूलमें ।

संख्या–स्त्री० [सं०] लिखे गये पत्रों या सामयिक पत्रादिपर दिया गया क्रमांक; किसी सामयिक पत्रादिकी विशिष्ट संख्या या क्रमांकवाली प्रति; दे० मूलमें।

संख्याविभाग–पु० [सं०] (स्टैटिक्स डिपार्टमेंट) जनन-मरण, उत्पादन आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े तैयार करनेवाला विभाग ।

संग–स्त्री० दे० 'साँग'–'विथै संग सौं फोरि डारै करेजा' –सुजा० ।

संघात*–अ० संग या साथमें–'धुआँ उठै मुख साँस सँघाता'–प०; पु० दे० मूलमें ।

संजमना*–स० क्रि० एकत्र करना, बटोरना–'पलटि पट संजमत केसनि मृदुल अंग अँगोछि'–घन० ।

सँडास*–स्त्री० सँडसी (प०) ।

संद*–पु० सनंदन–'महा आधार सनक सुक संदके' –घन० ।

संधि–स्त्री० [सं०] दो शब्दोंके साथ-साथ आनेपर एकके अंतिम और दूसरेके प्रथम वर्णके मिलनेसे होनेवाला विकार; ये तीन तरहकी होती हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि; दे० मूलमें । **–तटी***–स्त्री० संधिस्थल –'सोभासुमेरुकी संधितटी किधौं'–घन० ।

संपै*–स्त्री० शंपा, बिजली; दे० मूलमें ।

संभरवै, संभरेस*–पु० पृथ्वीराज ।

संरक्षण–पु० [सं०] (प्रोटेक्शन) विदेशी मालपर कर आदि लगाकर देशी उद्योग-व्यवसायको बाहरकी अनुचित प्रतियोगितासे बचाना ।

संविधानज्ञ–पु० [सं०] (कांस्टिट्यूशनैलिस्ट) संविधानकी जानकारी रखनेवाला; दे० 'संविधानशास्त्री' ।

संविधानशास्त्री(स्त्रिन्)–पु० [सं०] (कांस्टिट्यूशनैलिस्ट) संविधानका विशेषज्ञ, उसकी बारीकियोंको समझनेवाला, संविधानज्ञ ।

संसारयात्रा–स्त्री० [सं०] संसारमें रहना, जीवन बिताना;

जिंदगी।

संहर्ता(र्तृ)—पु० [सं०] लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी—'राज्यकी उगाहीके लिए संहर्ता आये'—मृग०।

संहिता—स्त्री० [सं०] (कोड) अधिनियमों, विधियों आदिका क्रमबद्ध संग्रह।

सकती*—स्त्री० दे० मूलमें; जबरदस्ती—'कवि किंचित औसर जो अकती सकती नहीं हाँ पर कीजिये जू'—कवि० कौ०।

सख्त*—स्त्री० कठिनाई, विपत्ति—'मुझ पै परी अब सख्त'—सुजान।

सग*—वि० सगा, अपना।

सगर†—पु० सागर; तालाब—'काहे क बाबुल सगर खोदायेउ'—गीत।

सघली*—वि० स्त्री० सब, सारी।

सछंद*—वि० सपरिकर।

सज़ावार—वि० [फा०] दंड पाने योग्य, दंडनीय—'फकत इस सजाके सजावार हैं हम'।

सठ*—स्त्री० दे० 'साँठि'—'किहि गौं हठ कै सठ-हानि लई'—घन०।

सतपत्र*—पु० कमल।

सतवाँसा—पु० गर्भस्थितिके सातवें मासमें होनेवाला उत्सव; दे० मूलमें।

सतिमा*—स्त्री० सौतेली माँ।

सतेस*—स्त्री० फुरती, शीघ्रता।

सत्तमी*—स्त्री० सप्तमी।

सत्ति*—स्त्री० शक्ति।

सनिया—पु० रेशमी पटका या छोटी धोती—'सनिया पहरकर ही चौकेमें जाता था'—गुनाहोंका देवता।

सपरस*—वि० स्पृश्य, छूतसे युक्त—'अपरस ठौर तहाँ सपरस जाइ कैसें'—घन०।

सबार, सबारा*—पु० दे० 'सवेरा'।

सबी*—स्त्री० शबीह, छवि, चित्र—'चतुर चितेरे तुव सबी लिखत न हिय ठहराय'—रसनिधि।

समग्ग—वि० समग्र, पूरा, सब।

समताई*—स्त्री० समता, बराबरी।

समथ*—वि० समर्थ।

समप्पन*—पु० दे० 'समर्पण'।

समाचार-प्रसारण—पु० [सं०] आकाशवाणी द्वारा समाचारोंका प्रसारित किया जाना।

समानांतर सरकार—स्त्री० साथ-साथ काम करनेवाली सरकार, एक सरकारके रहते हुए भी उसके विरुद्ध स्थापित प्रति पक्षियोंकी अन्य सरकार जो उसकी बराबरीसे काम करे।

समुही*—अ० दे० 'समुहैं'।

समोना†—स० क्रि० समन्वय करना, पटरी या मेल बैठाना—'ऊपरके खंडसे दूसरे खंडको समोनेके लिए'—मृग०; दे० मूलमें। * अ० क्रि० मिलना, अनुरक्त होना।

समोय*—अ० अनुरक्त होकर—'बनमाली कहाँ धौं समोय चले'—घन०।

सयन*—स्त्री० सैन्य, सेना—'तट कालिंदी तहँ विमल, करि मुकाम नृपराज। सथ्थ सयन सामंत भर, सूर जु आये साज'—रासो।

सयल*—वि० सकल, सब।

सरक*—स्त्री० वेदना—'प्रेम सरक सबके उर सलै' घन०; दे० मूलमें।

सरकफूँद, सरफूँद†—स्त्री० एक तरहका सरकनेवाला फंदा, जिसे किसी चीजपर डालकर खींचनेसे वह उसे जकड़ ले (बुंदेल०, सरकबाँसी, भोजपुरी)।

सरवरना*—स० क्रि० उपमा देना।

सरलीकरण—पु० [सं०] कठिन विषयको आसान बना देना; किसी जटिल या कठिन भिन्नको सरल रूपमें परिणत कर देना (ग०)।

सरहंग—पु० सेनापति; कोतवाल।

सरित्त*—स्त्री० सरिता, नदी।

सरोतर*—वि० साफ, स्पष्ट।

सरौट*—स्त्री० सिलवट, शिकन—'मुरझो बिन ढंग अनंग सरौटनि'—घन०।

सर्वेसर्वा—वि० प्रधान कर्ताधर्ता; दे० मूलमें।

सल्लना*—स० क्रि० सालना, दुःख देना।

सवाती*—स्त्री० स्वाती नक्षत्र—'सूरदास प्रभु प्रानहिं राखहु ह्वै कै बूँद-सवातीं'—सू०।

सशस्त्र—वि० [सं०] जिसमें शस्त्रोंका प्रयोग हुआ हो; दे० मूलमें।

ससक*—स्त्री० सिसक।

ससिरिपु*—पु० दिन—'ससिरिपु बरष सूर-रिपु युगवर, हर-रिपु किये फिरै घात'—सू०।

ससिहर*—स्त्री० शिशिर ऋतु—'कहि नारि पीय बिन कामिनी रिति ससिहर किम जीजियइ'—रासो।

ससील*—वि० सुशील, शीलसंपन्न।

सह अस्तित्वका सिद्धांत—पु० (प्रिंसिपल ऑफ को-एग्जिस्टेंस) वह राजनीतिक सिद्धांत जो यह स्वीकार करता है कि विभिन्न प्रकारकी प्रणालियोंसे शासित और विभिन्न प्रकारके सिद्धांतोंसे अनुप्राणित राज एक दूसरेके साथ शांतिपूर्वक रह सकते हैं, सहभावका सिद्धांत।

सहभाव—पु० [सं०] (को-एग्जिस्टैंस) दे० 'सहअस्तित्वका सिद्धांत'।

सहभोज—पु० [सं०] (विभिन्न जातियों, श्रेणियोंके) बहुतसे आदमियोंका एक साथ बैठकर भोजन करना।

सहसकर*—पु० सूर्य—'दुहीं करसों सहसकर मानियतु तोहिं, दुहीं बाहुसों सहसबाहु जानियतु है'—भू०।

सहस्राब्द—पु०, —स्त्री० [सं०] हजार वर्षोंका समय।

सहिँदोली*—स्त्री० सखी।

सहेटी*—वि० स्त्री० अभिसारिणी—'दीठि भयी मिलि ईठि सुजान न देहि क्यों पीठि जो दीठि सहेटी'—घन० [सहेट =संकेतस्थल]।

सहोणी*—स्त्री० सखी।

साकत्ति*—स्त्री० शक्ति।

साता*—स्त्री० शांति—'रूम रूम साता भइ उरमें मिटि गयी फेरा-फेरी'—मीरा।

साथरई*—पु० स्रस्तर, कुशासन।

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसंधान
तिथि......
पु०सं० 2524

साधा*—पु० साध, उत्कंठा—'साधा तन हेरियै'—घन०।

साधिकार—अ० अधिकार सहित, अधिकारपूर्वक। वि० अधिकारसे युक्त, जिसके पीछे कोई अधिकार हो।

सापना*—पु० स्वप्न—'सापनेमें बिछुरे हरि हेरि हरैंइ हरैं हरिनीदृग रोवै'—भावबि०।

सापेक्षतावाद—पु० (थ्यूरी ऑफ रिलेटिविटी) आइन्स्टाइनका यह सिद्धांत कि प्रकाशको छोड़कर अन्य सब वस्तुओंकी गति सापेक्ष है और उसी तरह दिक्, काल तथा पदार्थकी मात्रा भी सापेक्ष होती है। [गति बढ़नेपर मात्रा भी बढ़ती है और दिक् तथा कालका मापन वे जिस प्रणालीमें घूम रहे हैं, उस प्रणालीकी गतिपर निर्भर रहता है।]

साबुत—वि० दे० 'साबूत'।

साबूत—वि० समूचा, पूरा, अखंड; दुरुस्त।

साभार—अ० [सं०] आभारके साथ, एहसान प्रकट करते हुए।

सामरिकवाद—पु० सामरिक तैयारी—सैन्य संख्या बढ़ाने, शस्त्रादिकी वृद्धि करने पर जोर देनेवाला सिद्धांत।

सामानघर—पु० (लगेज आफिस) रेल-स्टेशन, बस-स्टेशन आदिका वह कमरा जहाँ मुसाफिरोंका सामान तौलकर महसूल लेने, सुरक्षित रखने आदिकी व्यवस्था होती है।

सामानदान—पु० [फा०] (मोटर इत्यादिमें पीछेकी ओर बनी) सामान रखनेकी जगह।

सामान्या—स्त्री० [सं०] वारांगणा, वेश्या।

सामिष भोजनालय—पु० (नॉन-वेजिटेरियन रिफ्रेशमेंट रूम) वह भोजनालय जहाँ मांस या मांसके बने पदार्थ भी भोजनार्थ उपलब्ध हों।

सामुद्रिक विमान—पु० (सी प्लेन) जलपरसे उड़कर जलपर ही उतर सकनेवाला हवाई जहाज।

सामुद्रिक शक्ति—स्त्री० (सी पावर) किसी देशकी नौ सेना—युद्धपोतादि—की शक्ति।

सायमाश—पु० (डिनर) (श्वेतांग जातियोंमें) संध्याको किया जानेवाला मुख्य भोजन।

सारंगहर*—पु० शार्ङ्गधर, विष्णु।

सार†—स्त्री० शाला; पशुशाला, ढोर बाँधनेकी जगह—'पशुओंको सारमें बाँधनेके बाद उन्होंने सारा वृत्तांत सुनाया'—मृग०। —पु० वस्त्र।

सावधानी—स्त्री० सावधानता, सतर्कता, होशियारी।

सिंधुनंदन—पु० चंद्रमा।

सिज्या*—स्त्री० शय्या।

सिट्टी—स्त्री० दे० मूलमें। मु० —भूल जाना—घबराहटके मारे कुछ बोल न सकना, सिटपिटा जाना।

सितक्षार—पु० एक तरहका सोहागा।

सितून—पु० [फा०] खंभा, मीनार, थूनी।

सिराँह*—स्त्री० शीतलता—'आनँद घन दुखताप मेंटियै कीजै कृपा-सिराँह'—घन०।

सिरायना*—स० क्रि० दे० 'सिरावना'।

सिरावन*—वि० ठंडा या दूर करनेवाला—'जीव-जिवावन ताप-सिरावन है, रसमय घन आनँद छायौ'—घन०। पु० दे० मूलमें।

सिलाम*—पु० सलाम, प्रणाम (मीरा)।

सीनातोड़—पु० कुश्तीका एक पेंच।

सीमंतनी*—स्त्री० दे० 'सीमंतिनी'।

सीरक*—वि० ठंडा—'सोइ करौ ज्यों मिटै हृदयको दाह परै उर सीरक'—सू०।

सीवनी—स्त्री० शिश्नके नीचेकी रेखा।

सुकना*—अ० क्रि० सूखना, सूख जाना—'सुकत सरोवर मचत कीच तलफंत मीन तन'—रासो०।

सुधारशाला—स्त्री० (रिफार्मेटरी) दे० 'सुधारालय'।

सुबर*—पु० सुभट।

सुभंत*—वि० शोभित।

सुरसुरी*—स्त्री० सुरसरी, गंगा।

सुरहुरी†—स्त्री० पानी, भात आदिका खाद्य-नलिकाके बजाय श्वास-नलिकामें चढ़ जाना या उससे होनेवाली संवेदना।

सुरी*—स्त्री० छुरी।

सुलभ गणक—पु० (रेडीरेकनर) वह पुस्तक जिसमें दी हुई विभिन्न सारणियोंकी सहायतासे ब्याज, वेतन, आदिका हिसाब लगानेमें आसानी हो।

सुलिप*—वि० स्वल्प।

सुवर्णकोष, सुवर्णनिचय—पु० [सं०] (गोल्ड रिजर्व) कागजी मुद्राके समुचित अनुपातमें सरकारी खजानेमें रखा जानेवाला सुवर्णभंडार।

सुवर्णिम—वि० [सं०] दे० 'स्वर्णिम'।

सुविधाधिकार—पु० (राइट ऑफ ईजमेंट) दे० 'सुखाधिकारवाद'।

सुसारना*—स० क्रि० समझाना, समझाकर कहना—'दीजो उनहिं सुसारि उरहनों संधि-संधि समझाय'—सू०।

सुही*—वि० स्त्री० लाल—'सुही माल हाल रूप गुन न परै गनै'—घन०।

सुहूँ*—वि० पूरा, ठीक, शुद्ध—'कहियै तौ समै लहियै न सुहूँ'—घन०।

सूचना-पट्ट—पु० [सं०] (नोटिस बोर्ड) लकड़ी लोहे आदिका वह पटल जिसपर आवश्यक सूचनाएँ लिख दी जायँ या लिखकर चिपका दी जायँ।

सूचा*—स्त्री० छेदनेवाली वस्तु।

सूर-रिपु*—स्त्री० रात्रि (सू०)।

सवार*—पु० शैवाल।

सैनी*—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति।

सोँझ†—स्त्री० जमीनकी साझेदारीकी व्यवस्था; साझेदारी।

सोहँन*—अ० दे० 'सौँह'।

सौँतना*—स० क्रि० संचित करना।

सौडि*—स्त्री० शय्या—'दरसन भया दयालका सूलि भई सुख सौडि'—साखी।

सौनि*—स्त्री० स्वर्णकांति—'आनन समान छवि-छाँहपै छिपैयै सौनि'—घन०।

सौबर*—पु० सुवर्ण—'रावरकी छवि बरनौं कैसे। सौबरको घर सोहत जैसें।'—घन०।

स्कंदन—पु० (कोग्यूलेशन) द्रव-पदार्थका जम जाना, ठोस रूप ग्रहण कर लेना।

स्यारी†–स्त्री० कातिक-अगहनमें तैयार होनेवाली फसल, खरीफ (बुंदेल०)।

स्रौन*–पु० दे० 'श्रवण'।

स्वक्षालन-शौचालय–पु० [सं०] (फ्लश लैट्रिन) वह पैखाना जिसे साफ करनेके लिए मेहतरकी आवश्यकता न हो, जो पानी गिरा देनेसे अपने आप साफ हो जाय।

स्वर्णजयंती–स्त्री० [सं०] (गोल्डन जुबिली) किसी संस्थाकी स्थापना या किसीके शासन, विवाहित जीवन आदिके पचासवें वर्षका उत्सव।

स्वाध्याय सदन–पु० (स्टडी रूम) दे० 'अध्ययन कक्ष'।

स्वावना*–स० क्रि० सुलाना–'जागि-जागि स्वावत हौ' –घन०।

स्वेच्छोपहार–पु० [सं०] (फ्री गिफ्ट) स्वेच्छासे दानमें या उपहारमें दी गयी वस्तु।

ह

हँकनी†–स्त्री० बैलोंको हाँकनेका एक तरहका डंडा जिसमें एक कील लगी रहती है, पैना।

हटतार*–स्त्री० सिलसिला; टकटकी–'वह रूपकी रासि लखी तबतें सखी आँखिनकैं हटतार भई'–घन०।

हत्थि*–पु० हाथी।

हमरकाब–वि० [फा०]साथ-साथ सवारी करनेवाला–'साथ भी होता वीर रक्षक शरीरका, हमरकाब'–निराला।

हरई*–स्त्री० हल्कापन–'जिहिके परिभार पहार दवै, जग माँझ भई तिनतें हरई'–घन०।

हराहर*–स्त्री० छीना-झपटी–'दिन होरी-खेलकी हराहर भर्‍यो हो सुतौ'–घन०।

हरिखंड–पु० मोरपंख–'कबहुँक इत पग धारि सिधारौ धरि हरिखंड सुवेस'–सू०।

हरीछाल केला–पु० हरे छिलकेवाला एक तरहका केला जो बंबइया केला भी कहलाता है। (चिनिया केला पीला होता है।)

हहागति*–स्त्री० दुर्दशा।

हियैल*–स्त्री० पछेली।

हींडना†–स० क्रि० घँघोलकर गंदा करना (भोज०); हुड़कना (बुंदेल०)।

हुतात्मा(त्मन्)–वि०, पु० [सं०] (मार्टर) किसी अच्छे कार्यमें अपनेको बलि कर देनेवाला, शहीद।

हुरकनी†–स्त्री० वेश्या।

हुरिहाई–स्त्री० होली खेलनेवाली।

हेट*–पु० सहेट, संकेतस्थल।

होतर*–वि० होने योग्य।

होमर–पु० ग्रीक भाषाका प्राचीन कवि, जिसने 'इलियड' तथा 'ओडिसी' नामक महाकाव्योंकी रचना की थी (८५० ईसवी पूर्व)।

होर*–पु० ओर, मार्ग।

होहल्ला–पु० शोरगुल, हुल्लड़।

हौन*–पु० अपनाप्त।

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी..........
पुस्तक 224
भारती पुस्तकालय

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि.........
पुस्तक 2224
भारती पुस्तकालय

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी..............
पु०सं०..............
* भारती पुस्तकालय *